

श्रीः

# शब्दार्थकौस्तुभः

(प्रायौगिक संस्कृत-कर्णाटक शब्दकोशः)

ಸಂಸ್ಕೃತ-ಕನ್ನಡ ತಬ್ಬಕೋಶ

ಸಂಪುಟ ೧

ಪದಗಳು : ಅ-ಉ

ಸಾಹಿತ್ಯ ವಿದ್ವಾನ್

ಚಕ್ರವರ್ತಿ ಶ್ರೀನಿವಾಸ ಗೋಪಾಲಾಚಾರ್ಯ

ಬಾಪ್ಪೊ ಪ್ರಕಾಶನ

ಬೆಂಗಳೂರು ಪ್ರೆಸ್, ಬೆಂಗಳೂರು



# ಸಂಕ್ಷೇಪತಾಕ್ಷರಾಣಿ

ಈ ಶಬ್ದಕೋಶದಲ್ಲಿ ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ ಸಂಕ್ಷೇಪತಾಕ್ಷರಗಳ ವಿವರಣೆ

Abbreviations Used in this Dictionary

ಗ್ರಂಥಗಳು, ಗ್ರಂಥಕರ್ತರು ಮತ್ತು ನಿಘಂಟು (ಕೋಶ) ಗಳು

|                 |                           |             |                            |
|-----------------|---------------------------|-------------|----------------------------|
| ಅಂ              | .. ಅಧ್ಯಾಯ:                | ಕಷ್ಯಪಂ      | .. ಕಷ್ಯಪಸंहಿತಾ             |
| ಅಗ್ನಿಪುಂ        | .. ಅಗ್ನಿಪುರಾಣಮ್           | ಕಾತ್ಯಾಂ     | .. ಕಾತ್ಯಾಯನ:               |
| ಅತ್ರಿಸಂ         | .. ಅತ್ರಿಸंहಿತಾ            | ಕಾದಂ        | .. ಕಾದಂಬರಿ                 |
| ಅನರ್ಥಂ          | .. ಅನರ್ಥರಾಘವಮ್            | ಕಾಮಂ ನಿಯಂ   | .. ಕಾಮಂದಕೀಯನೀತಿಸಾರ:        |
| ಅನುಂ            | .. ಅನುಶಾಸನಪರ್ವ            | ಅಥವಾ        |                            |
| ಅಭಿಂ            | .. ಅಭಿಧಾವೃತ್ತಿಮಾತೃಕಾ      | ಕಾಮಂದಂ      |                            |
| ಅಭಿಂ ಚಿಂ        | .. ಅಭಿಧಾನಚಿಂತಾಮಣಿ: (ನಿಘಂ) | ಕಾಮಿಕಾಂ     | .. ಕಾಮಿಕಾಗಮ:               |
| ಅಭಿಂ ರಂ         | .. ಅಭಿಧಾನರತ್ನಮಾಲಾ (ನಿಘಂ)  | ಕಾರಿಂ       | .. ಕಾರಿಕಾವಲಿ               |
| ಅಮಂ             | .. ಅಮರಕೋಶ: (ನಿಘಂ)         | ಕಾಲಾಂ       | .. ಕಾಲಾಮೃತಮ್               |
| ಅಮರಂ            | .. ಅಮರಶತಕಮ್               | ಕಾಲಿಕಾಪುಂ   | .. ಕಾಲಿಕಾಪುರಾಣಮ್           |
| ಅವಂತೀಖಂ         | .. ಅವಂತೀಖಂಡ:              | ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ   | .. ಕಾವ್ಯಪ್ರಕಾಶ:            |
| ಅಷ್ಟಾಂಗಂ        | .. ಅಷ್ಟಾಂಗಹೃದಯಮ್          | ಕಾವ್ಯಾಂ     | .. ಕಾವ್ಯಾದಶ:               |
| ಆತ್ಮಸಿಂ         | .. ಆತ್ಮಸಿದ್ಧಿ:            | ಕಾಂಸೂಂ      | .. ಕಾವ್ಯಾಲಂಕಾರಸೂತ್ರವೃತ್ತಿ: |
| ಆದಿಂ            | .. ಆದಿಪರ್ವ                | ಅಥವಾ        |                            |
| ಆದಿತ್ಯಹಂ        | .. ಆದಿತ್ಯಹೃದಯಮ್           | ಕಾವ್ಯಾಂ ಸೂಂ |                            |
| ಆಪಂ             | .. ಆಪಸ್ತಂಬ:               | ಕಾಶೀಖಂ      | .. ಕಾಶೀಖಂಡ:                |
| ಆಪಂ ಧಂ          | .. ಆಪಸ್ತಂಬಧರ್ಮಸೂತ್ರಮ್     | ಕಿರಾಂ       | .. ಕಿರಾತಾರ್ಜುನೀಯಮ್         |
| ಆಶ್ವಂ           | .. ಆಶ್ವಮೇಧಿಕಪರ್ವ          | ಕುಮಾಂ       | .. ಕುಮಾರಸಂಭವಮ್             |
| ಆಶ್ವಂ ಗುಂ       | .. ಆಶ್ವಲಾಯನಗೃಹ್ಯಸೂತ್ರಮ್   | ಕುವಂ        | .. ಕುವಲಯಾನಂದ:              |
| ಆಶ್ವಂ ಗುಂ ಕಾಂ   | .. ಆಶ್ವಲಾಯನಗೃಹ್ಯಕಾರಿಕಾ    | ಕೂರ್ಮಪುಂ    | .. ಕೂರ್ಮಪುರಾಣಮ್            |
| ಆಶ್ವಂ ಶ್ರೋಂ ಸೂಂ | .. ಆಶ್ವಲಾಯನಶ್ರೋತಸೂತ್ರಮ್   | ಗಜ್ಜಾಲಂ     | .. ಗಜ್ಜಾಲಹರಿ               |
| ಆಹ್ಲಿಕಂ         | .. ಆಹ್ಲಿಕಕಾಂಡ:            | ಗೀತಗೋಂ      | .. ಗೀತಗೋವಿಂದಕಾವ್ಯಮ್        |
| ಉಂ ರಾಂ          | .. ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತಮ್         | ಗೀತಾ        | .. ಶ್ರೀಮದ್ಭಗವದ್ಗೀತಾ        |
| ಉದ್ಗಂ           | .. ಉದ್ಗಟ:                 | ಗೃಹ್ಯಪಂ     | .. ಗೃಹ್ಯಪರಿಶಿಷ್ಟಮ್         |
| ಉದ್ಯೋಗಂ         | .. ಉದ್ಯೋಗಪರ್ವ             | ಗೌತಮಧಂ      | .. ಗೌತಮಧರ್ಮಸೂತ್ರಮ್         |
| ಋಂ              | .. ಋಗ್ವೇದ:                | ಚಕ್ರಂ ಅಥವಾ  | .. ಚಕ್ರದತ್ತ:               |
| ಋಂ ಭಾಂ          | .. ಋಗ್ವೇದಭಾಷ್ಯಮ್          | ಚಕ್ರದಂ      |                            |
| ಋತುಸಂ           | .. ಋತುಸಂಹಾರಕಾವ್ಯಮ್        | ಚಂ ಭಾಂ      | .. ಚಂಪೂಭಾರತಮ್              |
| ಏಕಾಂ            | .. ಏಕಾಕ್ಷರಕೋಶ: (ನಿಘಂ)     | ಚಂ ರಾಂ      | .. ಚಂಪೂರಾಮಾಯಣಮ್            |
| ಕಠಂ             | .. ಕಠೋಪನಿಷತ್              | ಚಂದ್ರಾಂ     | .. ಚಂದ್ರಾಲೋಕ:              |
| ಕಥಾಸಂ           | .. ಕಥಾಸರಿಸಾಗರ:            | ಚರಕಂ        | .. ಚರಕಸंहಿತಾ               |
| ಕಲ್ಪದ್ರುಂ       | .. ಕಲ್ಪದ್ರುಕೋಶ: (ನಿಘಂ)    | ಚಾಣಕ್ಯಂ     | .. ಚಾಣಕ್ಯಶತಕಮ್             |



|                     |                           |
|---------------------|---------------------------|
| चिकित्सा०           | .. चिकित्सास्थानम्        |
| चोरप०               | .. चोरपञ्चाशिका           |
| छन्दोमं०            | .. छन्दोमञ्जरी            |
| छान्दोग्य०          | .. छान्दोग्योपनिषत्       |
| जा० उ०              | .. जाबालोपनिषत्           |
| ज्योतिर्वि०         | .. ज्योतिर्विदाभरणम्      |
| ज्योतिस्०           | .. ज्योतिस्तत्त्वम्       |
| त० स०               | .. तर्कसंग्रहः            |
| तन्त्रसा०           | .. तन्त्रसारः             |
| तत्त्वा०सू०         | .. तत्त्वार्थसूत्रम्      |
| तै० उ०              | .. तैत्तिरीयोपनिषत्       |
| तैत्ति० सं०         | .. तैत्तिरीयसंहिता        |
| त्रिकाण्ड०          | .. त्रिकाण्डशेषः (निघ०)   |
| दशकु०               | .. दशकुमारचरितम्          |
| दयाश०               | .. दयाशतकम्               |
| दशरू०               | .. दशरूपकम्               |
| दा० खं०             | .. दानखण्डः               |
| दीपि०               | .. दीपिका                 |
| देवीपु०             | .. देवीपुराणम्            |
| दे० भा० }<br>ॐ०००   | .. देवीभागवतम्            |
| देवीभा०             |                           |
| देवीमा०             | .. देवीमाहात्म्यम्        |
| द्विरूप०            | .. द्विरूपकोशः (निघ०)     |
| द्रोण०              | .. द्रोणपर्व              |
| धर०                 | .. धरणिः (निघ०)           |
| धर्मसि०             | .. धर्मसिन्धुः            |
| नागा०               | .. नागानन्दम्             |
| नानार्थर०           | .. नानार्थरत्नमाला (निघ०) |
| नारदसं०             | .. नारदसंहिता             |
| निदान०              | .. निदानस्थानम्           |
| नि० ॐ००० }<br>निरु० | .. निरुक्तम्              |
| निर्णया०            | .. निर्णयामृतम्           |
| नीलकं०              | .. नीलकण्ठविजयचम्पूः      |
| नैप०                | .. नैषधीयचरितम्           |
| न्यायसि०            | .. न्यायसिद्धाञ्जनम्      |
| पञ्चतं०             | .. पञ्चतन्त्रम्           |
| पञ्चद०              | .. पञ्चदशी                |

|                                |                        |
|--------------------------------|------------------------|
| पद्मपु० ॐ००० }<br>पाद्मपु०     | .. पद्मपुराणम्         |
| परा०                           | .. पराशरस्मृतिः        |
| पा० शि०                        | .. पाणिनीयशिक्षा       |
| पा० सू०                        | .. पाणिनीयसूत्रम्      |
| पा० यो० सू०                    | .. पातञ्जलयोगसूत्रम्   |
| पाद्मसं०                       | .. पाद्मसंहिता         |
| पु० सू०                        | .. पुरुषसूक्तम्        |
| प्र० रा०                       | .. प्रसन्नराघवम्       |
| प्र० रु०                       | .. प्रतापरुद्रीयम्     |
| प्रबोध०                        | .. प्रबोधचन्द्रोदयम्   |
| बृह०                           | .. बृहज्जातकम्         |
| बृह० ॐ००० }<br>बृहत्           | .. बृहत्कथा            |
| बृहत्सं०                       | .. बृहत्संहिता         |
| बृहदा०                         | .. बृहदारण्यकोपनिषत्   |
| ब्रह्मपु० ॐ००० }<br>ब्राह्मपु० | .. ब्राह्मपुराणम्      |
| ब्रह्मवै०                      | .. ब्रह्मवैवर्तपुराणम् |
| ब्रं० सू०                      | .. ब्रह्मसूत्रम्       |
| भट्टि०                         | .. भट्टिकाव्यम्        |
| भ० ना०                         | .. भरतनाट्यशास्त्रम्   |
| भर्तृ०                         | .. भर्तृहरिसुभाषितम्   |
| भविष्य० ॐ००० }<br>भविष्यपु०    | .. भविष्यपुराणम्       |
| भा०                            | .. माहाभारतम्          |
| भाग०                           | .. भागवतम्             |
| भा० वि० ॐ००० }<br>भामि० वि०    | .. भामिनीविलासः        |
| भावप्र०                        | .. भावप्रकाशः          |
| भाषाप०                         | .. भाषापरिच्छेदः       |
| भीष्म०                         | .. भीष्मपर्व           |
| मत्स्यपु०                      | .. मत्स्यपुराणम्       |
| मनु०                           | .. मनुस्मृतिः          |
| म० वि०                         | .. महावीरचरितम्        |
| माघ०                           | .. माघकाव्यम्          |
| माण्डूक्य०                     | .. माण्डूक्योपनिषत्    |
| मार्क०                         | .. मार्कण्डेयपुराणम्   |
| माल०                           | .. मालविकाग्निमित्रम्  |



|               |                         |
|---------------|-------------------------|
| मालती०        | .. मालतीमाधवम्          |
| मिता०         | .. मिताक्षरा            |
| मुक्ता०       | .. मुक्तावली            |
| मुद्रा०       | .. मुद्राराक्षसम्       |
| मु० चि०       | .. मुहूर्तचिन्तामणिः    |
| मु० मा०       | .. मुकुन्दमाला          |
| मु० द० ॐ      | .. मुहूर्तदर्पणम्       |
| मुह० द०       |                         |
| मृच्छ०        | .. मृच्छकटिकम्          |
| मेघ०          | .. मेघसन्देशः           |
| मेदि०         | .. मेदिनीकोशः (निघ०)    |
| याद०          | .. यादवाभ्युदयः         |
| याज्ञ०        | .. याज्ञवल्क्यस्मृतिः   |
| योगर०         | .. योगरत्नाकरः          |
| योगसु०        | .. योगसुधाकरः           |
| रघु०          | .. रघुवंशम्             |
| रघु० ग०       | .. रघुवीरगद्यम्         |
| रतिमं०        | .. रतिमञ्जरी            |
| रत्न०         | .. रत्नकोशः (निघ०)      |
| रत्नमा०       | .. रत्नमाला (निघ०)      |
| रत्नसा०       | .. रत्नसारः             |
| रत्ना०        | .. रत्नावलिः            |
| रसगं०         | .. रसगङ्गाधरः           |
| रसमं०         | .. रसमञ्जरी             |
| रा० भा०       | .. रामानुजभाष्यम्       |
| राजत०         | .. राजतरङ्गिणी          |
| राजनि०        | .. राजनिघण्टुः (निघ०)   |
| रामा०         | .. रामायणम्             |
| लिङ्गा०       | .. लिङ्गानुशासनम्       |
| लीला०         | .. लीलावती              |
| वन०           | .. वनपर्व               |
| वराहपु०       | .. वराहपुराणम्          |
| वाक्यप०       | .. वाक्यपदीयम्          |
| वाग्भ०        | .. वाग्भटः              |
| वात्स्या० सू० | .. वात्स्यायनकामसूत्रम् |
| वा० पु०       | .. वामनपुराणम्          |
| वायुपु०       | .. वायुपुराणम्          |
| वि० दे० च०    | .. विक्रमाङ्कदेवचरितम्  |
| विक्र०        | .. विक्रमोर्वशीयम्      |

|             |                            |
|-------------|----------------------------|
| विरा०       | .. विराटपर्व               |
| विश्वगु०    | .. विश्वगुणादर्शः          |
| विश्व०      | .. विश्वप्रकाशः (निघ०)     |
| वि० ध०      | .. विष्णुधर्मोत्तरम्       |
| वि० पु०     | .. विष्णुपुराणम्           |
| ॐ           |                            |
| विष्णुपु०   | .. विष्णुरहस्यम्           |
| विष्णुर०    | .. विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् |
| वि० स०      | .. वृत्तरत्नाकरः           |
| वृ० र०      | .. वेणीसंहारम्             |
| वेणी०       | .. वैजयन्ती (निघ०)         |
| वैज०        | .. वैद्यनाथीयम्            |
| वैद्यना०    | .. वैराग्यपञ्चकम्          |
| वैराग्यपं   | .. वैराग्यपञ्चाशत्         |
| वैरा० पं०   | .. वैशेषिकसूत्रम्          |
| वै० सू०     | .. शङ्करदिग्विजयः          |
| शङ्करदि०    | .. शङ्खलिखितः              |
| शङ्खलि०     | .. शतपथब्राह्मणम्          |
| शत० ब्रा०   | .. शब्दार्थकल्पतरुः (निघ०) |
| श० कल्प०    | .. शब्दचिन्तामणिः (निघ०)   |
| शब्दचि०     | .. शब्दभेदप्रकाशः (निघ०)   |
| शब्दभे० ॐ   |                            |
| शब्दभेद०    | .. शब्दरत्नावली (निघ०)     |
| शब्दर०      | .. शल्यपर्व                |
| शल्य०       | .. शाकुन्तलम्              |
| शाकु०       | .. शाङ्करभाष्यम्           |
| शां० भा०    | .. शान्तिपर्व              |
| शान्ति०     | .. शाश्वतकोशः (निघ०)       |
| शाश्व०      | .. शिवपुराणम्              |
| शिवपु०      | .. शिवसहस्रनामस्तोत्रम्    |
| शि० स०      | .. शुक्रनीतिसारः           |
| शुक्र०      | .. श्रुतप्रकाशिका          |
| श्रुतप्र०   | .. षट्पञ्चाशिका            |
| षट्पं०      | .. सङ्गीतदामोदरः           |
| सं० दा०     | .. सच्चरित्ररक्षा          |
| सच्चरित्रर० | .. सनत्कुमारसंहिता         |
| सनत्कु० सं० | .. सभापर्व                 |
| सभा०        | .. सर्वदर्शनसंग्रहः        |
| स० द० सं०   |                            |



|              |                      |           |                           |
|--------------|----------------------|-----------|---------------------------|
| ಸರ್ವಾರ್ಥಂ    | .. ಸರ್ವಾರ್ಥಸಿದ್ಧಿ:   | ಸ್ತೋಂ ರಂ  | .. ಸ್ತೋತ್ರರತ್ನಮ್          |
| ಸಂ ನಾಂ ಭಾಂ   | .. ಸಹಸ್ರನಾಮಭಾಷ್ಯಮ್   | ಸ್ವರ್ಗಾಂ  | .. ಸ್ವರ್ಗಾರೋಹಣಪರ್ವ        |
| ಸಂ ನಾಂ ನಿರುಂ | .. ಸಹಸ್ರನಾಮನಿರುಕ್ತಿ: | ಹಂಸಂ      | .. ಹಂಸಸಂದೇಶ:              |
| ಸಾಂ ಕಾಂ      | .. ಸಾಹಸ್ರಚಾರಿಕಾ      | ಹಠಂ       | .. ಹಠಯೋಗಪ್ರದೀಪಿಕಾ         |
| ಸಾಂ ದಂ       | .. ಸಾಹಿತ್ಯದರ್ಪಣ:     | ಹನುಂ ನಾಂ  | .. ಹನುಮನ್ನಾಟಕಮ್           |
| ಸಿಂ ಕೌಂ      | .. ಸಿದ್ಧಾಂತಕೌಮುದಿ    | ಹಯಗ್ರೀಂ   | .. ಹಯಗ್ರೀವಸ್ತೋತ್ರಮ್       |
| ಸುಂ          | .. ಸುಂದರಕಾಂಡ:        | ಹರಿವಂ     | .. ಹರಿವಂಶ:                |
| ಸುಭಾಂ        | .. ಸುಭಾಷಿತಮ್         | ಹಲಾಂ      | .. ಹಲಾಯುಧ: (ನಿಘಂ)         |
| ಸುಶ್ರುಂ ಅಥವಾ | .. ಸುಶ್ರುತಸಂಹಿತಾ     | ಹಾರಾಂ     | .. ಹಾರಾವಲಿ: (ನಿಘಂ)        |
| ಸುಶ್ರುತಂ     | .. ಸುಶ್ರುತಸಂಹಿತಾ     | ಹಾರೀತಂ    | .. ಹಾರೀತಸ್ಮೃತಿ:           |
| ಸೂತ್ರಂ       | .. ಸೂತ್ರಸ್ಥಾನಮ್      | ಹಿತಂ      | .. ಹಿತೋಪದೇಶ:              |
| ಸೂಂ ಸಿಂ      | .. ಸೂರ್ಯಸಿದ್ಧಾಂತ:    | ಹೇಮಂ      | .. ಹೇಮಕೋಶ: (ನಿಘಂ)         |
| ಸ್ಕಂ         | .. ಸ್ಕಂಧ:            | ಹೇಮಾದ್ರಿಂ | .. ಹೇಮಾದ್ರಿಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತಮ್ |
| ಸ್ಕಾಂದಂ      | .. ಸ್ಕಾಂದಪುರಾಣಮ್     |           |                           |

## ವ್ಯಾಕರಣ ಮತ್ತು ಇತರ ವಿಷಯಗಳ ಸಂಕ್ಷೇಪತಾಕ್ಷರಗಳು

### Grammatical and Other Abbreviations

|           |                   |              |                   |
|-----------|-------------------|--------------|-------------------|
| ಅಕಂ       | .. ಅಕರ್ಮಕ:        | ಕ್ರಿಂ ವಿಂ    | .. ಕ್ರಿಯಾವಿಶೇಷಣಮ್ |
| ಅದಾಂ      | .. ಅದಾದಿ:         | ಕ್ರಥಾಂ       | .. ಕ್ರಥಾದಿ:       |
| ಅಧಿಂ      | .. ಅಧಿಕರಣಂ        | ಗಂ           | .. ಗಣಸೂತ್ರಮ್      |
| ಅನಿಂ      | .. ಅನಿಟ್          | ಗೌರಾಂ        | .. ಗೌರಾದಿತ್ವಾತ್   |
| ಅಭೂತಂ     | .. ಅಭೂತತದ್ಭಾವೇ    | ಚುರಾಂ        | .. ಚುರಾದಿ:        |
| ಅವಾಂ      | .. ಅವಾದಿ:         | ಜಾತಿಂ        | .. ಜಾತಿತ್ವಾತ್     |
| ಅವ್ಯಂ     | .. ಅವ್ಯಯಮ್        | ಜುಹಂ         | .. ಜುಹೋತ್ಯಾದಿ:    |
| ಅವ್ಯಯಿಂ   | .. ಅವ್ಯಯಿಭಾವಸಮಾಸ: | ತನಾಂ         | .. ತನಾದಿ:         |
| ಆಂ ಅಥವಾ   | .. ಆತ್ಮನೇಪದಿ      | ತುಡಾಂ        | .. ತುಡಾದಿ:        |
| ಆತ್ಮಂ     | .. ಆತ್ಮನೇಪದಿ      | ತ್ರಿಂ        | .. ತ್ರಿಲಿಙ್ಗ:     |
| ಉಂ ಅಥವಾ   | .. ಉಣಾದಿ:         | ದಿಂ ಅಥವಾ     | .. ದಿವಾದಿ:        |
| ಉಣಾಂ      | .. ಉಣಾದಿ:         | ದಿವಾಂ        | .. ದಿವಾದಿ:        |
| ಉದಾಂ ಅಥವಾ | .. ಉದಾಹರಣಮ್       | ದ್ವಿವಂ       | .. ದ್ವಿವಚನಮ್      |
| ಉದಾಂ      | .. ಉದಾಹರಣಮ್       | ನಂ           | .. ನಪುंसಕಲಿಙ್ಗ:   |
| ಉಭಂ       | .. ಉಭಯಪದಿ         | ನಂ ತಂ        | .. ನತ್ವತ್ಪುರುಷ:   |
| ಕಂಙಾಂ     | .. ಕಂಙಾದಿ:        | ನಂ ಬಂ        | .. ನತ್ವಬಹುವ್ರೀಹಿ: |
| ಕರಂ       | .. ಕರಣಂ           | ನಾಂ ಧಾಂ ಅಥವಾ | .. ನಾಮಧಾತು:       |
| ಕರ್ತಂ     | .. ಕರ್ತರಿ         | ನಾಮಧಾಂ       | .. ನಾಮಧಾತು:       |
| ಕರ್ಮಂ     | .. ಕರ್ಮಣಿ         | ನಿಘಂ         | .. ನಿಘಂಟು:        |
| ಕರ್ಮಕರ್ತಂ | .. ಕರ್ಮಕರ್ತರಿ     | ನಿಪಾಂ        | .. ನಿಪಾತ:         |
| ಕರ್ಮವ್ಯಂ  | .. ಕರ್ಮವ್ಯತಿಹಾರೆ  |              |                   |







## ಸಡ್ಕತಾಕ್ಷರಾಣಿ

ಈ ಶಬ್ದಕೋಶದ ದ್ವಿತೀಯ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಹೊಸದಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ ಸಂಕೇತಾಕ್ಷರಗಳ ವಿವರಣೆ

Additional Abbreviations used in II Volume of the Dictionary

### ಗ್ರಂಥಗಳು, ಗ್ರಂಥಕರ್ತರು ಮತ್ತು ನಿಘಂಟು (ಕೋಶ) ಗಳು

|            |                     |              |                     |
|------------|---------------------|--------------|---------------------|
| ಅಬ್ಧುತಸಾ೦  | .. ಅಬ್ಧುತಸಾಗರಃ      | ಪ್ರಶ್ನಕೌ೦    | .. ಪ್ರಶ್ನಕೌಮುದಿ     |
| ಅರ್ಥಶಾ೦    | .. ಅರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರಮ್    | ಪ್ರಶ್ನೋಪ೦    | .. ಪ್ರಶ್ನೋಪನಿಷತ್    |
| ಆನಂದಲ೦     | .. ಆನಂದಲಹರಿ         | ಬಾಲ೦         | .. ಬಾಲಕಾಂಡಃ         |
| ಆಶ್ರಮ೦     | .. ಆಶ್ರಮವಾಸಿಕಪರ್ವ   | ಬಾಲಮ೦        | .. ಬಾಲಮನೋರಮಾ        |
| ಉತ್ತರಗೀ೦   | .. ಉತ್ತರಗೀತಾ        | ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡಪು೦ | .. ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡಪುರಾಣಮ್ |
| ಕರ್ಣ೦      | .. ಕರ್ಣಪರ್ವ         | ಭಾಗ೦ ಮಾ೦     | .. ಭಾಗವತಮಾಹಾತ್ಮ್ಯಮ್ |
| ಕರ್ಮಪ್ರ೦   | .. ಕರ್ಮಪ್ರವಚನೀಯಮ್   | ಮುಂಡಕ೦       | .. ಮುಂಡಕೋಪನಿಷತ್     |
| ಕಲ್ಕಿಪು೦   | .. ಕಲ್ಕಿಪುರಾಣಮ್     | ಮೌಸಲ೦        | .. ಮೌಸಲಪರ್ವ         |
| ಕಲ್ಪ೦      | .. ಕಲ್ಪಸ್ಥಾನಮ್      | ರತ್ನ೦        | .. ರತ್ನಮಾಲಾ (ನಿಘ೦)  |
| ಕೃಷಿಪರಾ೦   | .. ಕೃಷಿಪರಾಶರಃ       | ರಾಘವವಿ೦      | .. ರಾಘವವಿಲಾಸಃ       |
| ಗಜೇಂದ್ರಮ೦  | .. ಗಜೇಂದ್ರಮೋಕ್ಷಃ    | ರುದ್ರಯಾ೦     | .. ರುದ್ರಯಾಮಲಮ್      |
| ಗರು೦ ದ೦    | .. ಗರುಡದಂಡಕಃ        | ಲಿಙ್ಗಪು೦     | .. ಲಿಙ್ಗಪುರಾಣಮ್     |
| ಗರುಡಪು೦    | .. ಗರುಡಪುರಾಣಮ್      | ವೇತಾಲಪಂ೦ ವಿ೦ | .. ವೇತಾಲಪಂಚವಿಂಶತಿಃ  |
| ಗೋಚಾರದ೦    | .. ಗೋಚಾರದರ್ಶಿನಿ     | ವೇದಾಂತಸಾ೦    | .. ವೇದಾಂತಸಾರಃ       |
| ಗೋಪಾಲವಿಂ೦  | .. ಗೋಪಾಲವಿಂಶತಿಃ     | ವೇದಾರ್ಥಸಂ೦   | .. ವೇದಾರ್ಥಸಂಗ್ರಹಃ   |
| ಜಾತಕಪ೦     | .. ಜಾತಕಪದ್ಧತಿಃ      | ಶಾರೀರ೦       | .. ಶಾರೀರಸ್ಥಾನಮ್     |
| ಜ್ಯೋತಿಃ೦   | .. ಜ್ಯೋತಿಃಸ್ತತ್ವಮ್  | ಸತೀಖ೦        | .. ಸತೀಖಂಡಃ          |
| ತಿಥ್ಯಾದಿತ೦ | .. ತಿಥ್ಯಾದಿತತ್ವಮ್   | ಸಿದ್ಧಾಂತಶಿ೦  | .. ಸಿದ್ಧಾಂತಶಿರೋಮಣಿಃ |
| ದಶಾವ೦      | .. ದಶಾವತಾರಸ್ತೋತ್ರಮ್ | ಸ್ಮರದಿ೦      | .. ಸ್ಮರದೀಪಿಕಾ       |
| ನಿರ್ಣಯಸಿ೦  | .. ನಿರ್ಣಯಸಿಂಧುಃ     |              |                     |



## ಸಡ್ಕತಾಕರಾಣಿ

ಈ ಶಬ್ದಕೋಶದ ತೃತೀಯ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಹೊಸದಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ ಸಂಕೇತಾಕ್ಷರಗಳ ವಿವರಣೆ  
Additional Abbreviations used in III Volume of this Dictionary

### ಗ್ರಂಥಗಳು, ಗ್ರಂಥಕರ್ತರು ಮತ್ತು ನಿಘಂಟುಗಳು

|              |                     |             |                      |
|--------------|---------------------|-------------|----------------------|
| ಅತ್ರಿಸಂ೦     | .. ಅತ್ರಿಸಂಹಿತಾ      | ಪದಾಡ್ಕ೦     | .. ಪದಾಡ್ಕದೂತಮ್       |
| ಅನಂತಸಂ೦      | .. ಅನಂತಸಂಹಿತಾ       | ಪರಿಭಾ೦ ಶೆ೦  | .. ಪರಿಭಾಷೆಂದುಶೆಖರಃ   |
| ಅಭಿ೦ ಗು೦     | .. ಅಭಿನವಗುಪ್ತಃ      | ಪಾಜ್ವರಾ೦    | .. ಪಾಜ್ವರಾತ್ರಮ್      |
| ಅರ್ಥಶಾ೦      | .. ಅರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರಮ್    | ಭಜಗ೦        | .. ಭಜಗ೦ವಿಂದಸ್ತ೦ತ್ರಮ್ |
| ಆದಿತ್ಯಪು೦    | .. ಆದಿತ್ಯಪುರಾಣಮ್    | ಭೈಷಜ್ಯರ೦    | .. ಭೈಷಜ್ಯರತ್ನಾವಲಿಃ   |
| ಉತ್ತರತಂ೦     | .. ಉತ್ತರತನ್ತ್ರಮ್    | ಮುಹೂ೦ ದಿ೦   | .. ಮುಹೂರ್ದಿಪಿಕಾ      |
| ಉದಾಹತ೦       | .. ಉದಾಹತತ್ವಮ್       | ಯ೦ಗಾ೦       | .. ಯ೦ಗಾರ್ಣವಃ         |
| ಗದಾ೦         | .. ಗದಾಧರೀ           | ವಿವೇಕಚೂ೦    | .. ವಿವೇಕಚೂಡಾಮಣಿಃ     |
| ಗೌತಮಸೂ೦      | .. ಗೌತಮಸೂತ್ರಮ್      | ಶಾಂತಿಶ೦     | .. ಶಾಂತಿಶತಕಮ್        |
| ಚಾತಕಾ೦       | .. ಚಾತಕಾಷ್ಠಕಮ್      | ಶ್ರುತಬ೦     | .. ಶ್ರುತಬ೦ಧಃ         |
| ತತ್ತ್ವವಿ೦    | .. ತತ್ತ್ವವಿವೇಕಃ     | ಸಹ೦ ನಾ೦ ಭಾ೦ | .. ಸಹಸ್ತ್ರನಾಮಭಾಷ್ಯಮ್ |
| ತತ್ತ್ವಸಂ೦    | .. ತತ್ತ್ವಸಂಖ್ಯಾನಮ್  | ಸಾಂ೦ ಸೂ೦    | .. ಸಾಂಖ್ಯಸೂತ್ರಮ್     |
| ತತ್ತ್ವಸಂಗ್ರ೦ | .. ತತ್ತ್ವಸಂಗ್ರಹಃ    | ಸುದರ್ಶ೦     | .. ಸುದರ್ಶನಾಷ್ಠಕಮ್    |
| ದಶಾವತಾರ೦     | .. ದಶಾವತಾರಸ್ತ೦ತ್ರಮ್ | ಸೂತಸಂ೦      | .. ಸೂತಸಂಹಿತಾ         |
| ದಿಧಿ೦        | .. ದಿಧಿತಿಃ          | ಹರ್ಷಚ೦      | .. ಹರ್ಷಚರಿತಮ್        |



## ಸಡ್ಕತಾಕ್ಷರಾಣಿ

ಈ ಶಬ್ದಕೋಶದ ತುರೀಯ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಹೊಸದಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ ಸಂಕೇತಾಕ್ಷರಗಳ ವಿವರಣೆ  
**Additional Abbreviations used in IV Volume of this Dictionary**

### ಗ್ರಂಥಗಳು ಮತ್ತು ಗ್ರಂಥಕರ್ತರು

|  |                     |   |                         |
|--|---------------------|---|-------------------------|
| ಅಲಂ <sup>0</sup> ಕೌಸ್ತು <sup>0</sup>             | .. ಅಲಙ್ಕಾರಕೌಸ್ತುಭಃ  | ಮುಹೂ <sup>0</sup> ದೀ <sup>0</sup>       | .. ಮುಹೂರ್ದೀಪಿಕಾ         |
| ಆನಂ <sup>0</sup> ತೀ <sup>0</sup> ಭಾ <sup>0</sup> | .. ಆನಂದತೀರ್ಥಭಾಷ್ಯಮ್ | ರಙ್ಗರಾ <sup>0</sup> ಭಾ <sup>0</sup>     | .. ರಙ್ಗರಾಮಾನುಜಭಾಷ್ಯಮ್   |
| ಆರ್ಯಸಪ್ತ <sup>0</sup>                            | .. ಆರ್ಯಸಪ್ತಶತೀ      | ರಾಘವಾಭ್ಯು <sup>0</sup>                  | .. ರಾಘವಾಭ್ಯುದಯಮ್        |
| ಉದ್ಭವದೂ <sup>0</sup>                             | .. ಉದ್ಭವದೂತಮ್       | ಲಘುಶಬ್ದೇಂದುಶೇ <sup>0</sup>              | .. ಲಘುಶಬ್ದೇಂದುಶೇಖರಃ     |
| ಐತಂ <sup>0</sup> ಬ್ರಾ <sup>0</sup>               | .. ಐತರೇಯಬ್ರಾಹ್ಮಣಮ್  | ವೇದಾಂತಕೌ <sup>0</sup>                   | .. ವೇದಾಂತಕೌಸ್ತುಭಃ       |
| ಗದಾಪಂ <sup>0</sup>                               | .. ಗದಾಪರ್ವ          | ಶಿವಸಂ <sup>0</sup>                      | .. ಶಿವಸಹಸ್ರನಾಮಸ್ತೋತ್ರಮ್ |
| ನಾಟ್ಯಪ್ರಂ <sup>0</sup>                           | .. ನಾಟ್ಯಪ್ರದೀಪಃ     | ಶುಕ್ರನೀ <sup>0</sup>                    | .. ಶುಕ್ರನೀತಿಃ           |
| ಪ್ರದ್ಯುಂ <sup>0</sup> ವಿಂ <sup>0</sup>           | .. ಪ್ರದ್ಯುಮ್ನವಿಜಯಮ್ | ಶ್ವೇತಾಂ <sup>0</sup> ಉಪಂ <sup>0</sup>   | .. ಶ್ವೇತಾಶ್ವತರೋಪನಿಷತ್   |
| ಬಾಲರಾಂ <sup>0</sup>                              | .. ಬಾಲರಾಮಾಯಣಮ್      | ಸಮಯಪ್ರಂ <sup>0</sup>                    | .. ಸಮಯಪ್ರದೀಪಃ           |
| ಭಾವಪ್ರಕಾಂ <sup>0</sup>                           | .. ಭಾವಪ್ರಕಾಶಿಕಾ     | ಸಾಂ <sup>0</sup> ತತ್ತ್ವಕೌಂ <sup>0</sup> | .. ಸಾಂಖ್ಯತತ್ತ್ವಕೌಮುದೀ   |
| ಮನಂ <sup>0</sup>                                 | .. ಮನೋರಮಾ           | ಸಾರಾಂ <sup>0</sup>                      | .. ಸಾರಾವಲಿಃ             |
| ಮಹಾಭಾಂ <sup>0</sup>                              | .. ಮಹಾಭಾಷ್ಯಮ್       | ಸೂತಸಂ <sup>0</sup>                      | .. ಸೂತಸಂಹಿತಾ            |
| ಮಹೋಪಂ <sup>0</sup>                               | .. ಮಹೋಪನಿಷತ್        | ಸೌಪ್ತಿಕಂ <sup>0</sup>                   | .. ಸೌಪ್ತಿಕಪರ್ವ          |



## ಸಡ್ಕತಾಕರಾಣಿ

ಈ ಶಬ್ದಕೋಶದ ಐದನೆಯ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಹೊಸದಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ ಸಂಕ್ಷೇಪಾಕ್ಷರಗಳ ವಿವರಣೆ  
Additional Abbreviations used in V Volume of this Dictionary

### ಗ್ರಂಥಗಳು

|              |                     |              |                        |
|--------------|---------------------|--------------|------------------------|
| ಕೇನ೦         | .. ಕೇನ೦ಪನಿಷತ್       | ಭ೦ಜಪ್ರ೦      | .. ಭ೦ಜಪ್ರಬಂಧಃ          |
| ಜೈಮಿ೦ ನ್ಯಾಯ೦ | .. ಜೈಮಿನೀಯನ್ಯಾಯಮಾಲಾ | ಮ೦ಹಮು೦       | .. ಮ೦ಹಮುದ್ಗರಃ          |
| ತಕ್ರಕ೦೦      | .. ತರ್ಕಕ೦ಮುದಿ       | ಯ೦ಗಿಯಾಜ್ಞ೦   | .. ಯ೦ಗಿಯಾಜ್ಞವಲ್ಕ್ಯಃ    |
| ನಾರದಪು೦      | .. ನಾರದಪುರಾಣಮ್      | ವಿಕ್ರ೦ ದೇವಚ೦ | .. ವಿಕ್ರಮಾಡ್ಲದೇವಚರಿತಮ್ |
| ನೃಸಿಂಹಪು೦    | .. ನೃಸಿಂಹಪುರಾಣಮ್    | ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಕ೦  | .. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಕರ್ಣಾಮೃತಮ್ |
| ಪಾದು೦ ಸ೦     | .. ಪಾದುಕಾಸಹಸ್ರಮ್    | ಸ್ವರ್ಗಾ೦     | .. ಸ್ವರ್ಗಾರೋಹಣಪರ್ವ     |



## ಸಂಕ್ಷೇಪತಾಕ್ಷರಾಣಿ

ಈ ಶಬ್ದಕೋಶದ ಆರನೆಯ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಹೊಸದಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ ಸಂಕ್ಷೇಪತಾಕ್ಷರಗಳ ವಿವರಣೆ

**Additional Abbreviations used in VI Volume of this Dictionary**

## ಗ್ರಂಥಗಳು

|               |      |                  |               |      |                     |
|---------------|------|------------------|---------------|------|---------------------|
| ಅಷ್ಟಸ್ಥಾನಪಂ   | .... | ಅಷ್ಟಸ್ಥಾನಪರೀಕ್ಷಾ | ವೆಂ ಕೌಂ       | .... | ವೇದಾಂತಕೌಸ್ತುಭಃ      |
| ಆನಂದಲಂ        | .... | ಆನಂದಲಹರಿ         | ವೈದ್ಯಾಂ       | .... | ವೈದ್ಯಾಮೃತಮ್         |
| ಕೃತ್ಯಚಿಂ      | .... | ಕೃತ್ಯಚಿಂತಾಮಣಿಃ   | ಶಬ್ದರಂ        | .... | ಶಬ್ದರತ್ನಾವಲಿ        |
| ಜಟಾಂ          | .... | ಜಟಾಧರಃ           | ಶಾಕಪಾಂ        | .... | ಶಾಕಪಾರ್ಥಿವಾದಿಃ      |
| ಧನ್ವಂ ನಿಂ     | .... | ಧನ್ವಂತರಿನಿಘಂಟುಃ  | ಶೃಂಗಾರತಿಂ     | .... | ಶೃಂಗಾರತೀಲಕಮ್        |
| ಯತೀಂದ್ರಮಂ ದಿಂ | .... | ಯತೀಂದ್ರಮತದೀಪಿಕಾ  | ಶ್ರೀಲಕ್ಷ್ಮೀಚಂ | .... | ಶ್ರೀಲಕ್ಷ್ಮೀಚರಿತ್ರಮ್ |
| ರಸಚಂ          | .... | ರಸಚಂದ್ರಿಕಾ       | ಸ್ತ್ರೀಂ       | .... | ಸ್ತ್ರೀಪರ್ವ          |



॥ श्रीः ॥

श्रीमते हयग्रीवाय नमः ।

## शब्दार्थकौस्तुभः ।

(संस्कृत-कर्णाटक - शब्दकोशः)

संस्कृत-कन्नड-ಶಬ್ದ ಕೌಸ್ತುಭ

लक्ष्मीं तनोतु व्यवधूय चित्ते वितर्कडोलां विविधार्थराशेः ।

लक्ष्मीहयास्यः स्फुरिताक्षमालो लक्ष्मीलसद्वत्सतलः सदा नः ॥

नत्वा लक्ष्मीहयग्रीवौ शब्दव्युत्पत्तिसिद्धये ।

विलिखामि विशुद्धार्थमिमं शब्दार्थकौस्तुभम् ॥

अ

अ अ इदु वರ್णमाले (वर्ण सन्नाम्नाय)यल्लि  
मोदलनेय अक्षर. ಉದಾತ್ತ, ಅನುದಾತ್ತ  
ಮತ್ತು ಸ್ವರಿತಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಭೇದಗಳುಳ್ಳ ಈ  
ಹ್ರಸ್ವಾಕಾರವು ಪುನಃ ಅನುನಾಸಿಕ ಮತ್ತು ಅನನು  
ನಾಸಿಕಗಳೆಂಬ ಭೇದದಿಂದ ಎರಡು ವಿಧವಾಗಿ ಒಟ್ಟು  
ಆರು ವಿಧವಾಗುವುದು.

अ अ (पुं) 1. निष्ठा, वासुदेव. अवति रक्षति—  
अव (रक्षणे) “ङः” । “अकारो वासुदेवः स्यात्”  
एकां । 2. ब्रह्म, ಚತುರ್ಮುಖ. 3. ಪರಮೇಶ್ವರ,  
ಮಹಾದೇವ. 4. ಕಮಠ, ಆಮೆ. 5. ಅಂಗಳ.  
6. ಯುದ್ಧ, ಸಂಗ್ರಾಮ. 7. ಗೌರವ, ಮರ್ಯಾದೆ.  
8. ಅಂತಃಪುರ, ರಾಣಿವಾಸ. 9. ಹೇತು, ಕಾರಣ.  
10. ಭೂಷಣ, ಒಡವೆ. 11. ಚರಣ, ಪಾದ,  
ಕಾಲು. 12. ಪಾರ್ವತಿ, ಗೌರಿ. 13. ಯಾಗ, ಯಜ್ಞ.  
“अकारो ब्रह्मविष्णुवीशकमठेष्वङ्गणे रणे । गौरवेऽन्तःपुरे  
हेतौ भूषणेऽङ्घ्रावुमेज्ययोः” नानार्थरं । 14. ಸುಖ.  
15. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. 16. ಹಗೆ, ಶತ್ರು.

17. गिरी, ಬೆಟ್ಟ. 18. ಭೂಮಿ. 19. ವೃಕ್ಷ, ಮರ.  
20. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. 21. ಮೃಗ, ಜಿಂಕೆ.  
22. ಸಿಂಹ. 23. ವರಾಹ, ಹಂದಿ. 24. ಕರಡಿ.  
25. ಕತ್ತೆಕಿರುಬ, ಶಿವಂಗಿ. 26. ಸೀಮೆಹಸು ಅಥವಾ  
ಕಾಡುಹಸು. “सुखज्ञानमुमारातिगिरिभूमिद्रुमालिषु ।  
मृगसिंहवराहक्षतरक्षुगवयेष्वपि” रत्नं । 27. ಒಂದು  
ಕೃತ್ ಪ್ರತ್ಯಯ. (अव्यं) 28. ಅಭಾವ.  
29. ಪ್ರತಿಷೇಧ. 30. ಅಲ್ಪ, ಸ್ವಲ್ಪ. 31. ಅನುಕಂಪ,  
ದಯೆ. “अः स्वल्पार्थेऽप्यभावेऽपि” हेमं । “अशब्दः  
स्यादभावेऽपि स्वल्पार्थप्रतिषेधयोः । अनुकम्पायां च  
तथा वासुदेवेत्वनव्ययः” मेदिं । “तञ्” ಸಂಬಂಧ  
ವಾದ “अ”ಕಾರವು ಆರು ವಿಧವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು  
ತಿಳಿಸುವುದು. 1. ಸಾದೃಶ್ಯ. 2. ಅಭಾವ.  
3. ಅನ್ಯತ್ವ, ಭೇದ. 4. ಅಲ್ಪತ್ವ. 5. ಅಪ್ರಾಶಸ್ತ್ಯ  
ಮತ್ತು 6. ವಿರೋಧ. ಉದಾ: 1. अब्राह्मणः ।  
2. अपापम् । 3. अतश्चः । 4. अनुदरा कत्या ।  
5. अपशवः । ಮತ್ತು 6. अधर्मः । “तत्सादृश्यमभावश्च



ತದನ್ಯತ್ವಂ ತದಲ್ಪತಾ । ಅಪ್ರಾಶಸ್ತ್ಯಂ ವಿರೋಧಶ್ಚ ನತ್ರರ್ಥಃ  
ಪದ್ ಪ್ರಕೀರ್ತತಾಃ ।

ಅಕ್ರಗ್ನಿನ್ ಅಯುಣಿನ್ (ವಿಂ) ಋಣವಿಲ್ಲದ, ಸಾಲವಿಲ್ಲದ.  
ನ ಕ್ರಗ್ನಿ. [ಕ್ರ ಕಾರಕ್ಕೆ ವ್ಯಂಜನತ್ವವನ್ನು ಒಪ್ಪುವುದ  
ರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ "ನುಡ್" ಆಗುವುದು ಬಂದಿರುವುದಿಲ್ಲ.]

"ದಿವಸಸ್ಯಾಷ್ಟಮೇ ಭಾಗೇ ಶಾಕಂ ಪವತಿ ಯೋ ನರಃ ।  
ಅಕ್ರಗ್ನಿ ಚಾಪ್ರವಾಸೀ ಚ ಸ ರಾತ್ರಿಚರ ಮೋದತೇ" ಭಾಂ ।

ಅಂಶ ಅಂಶ (ಪುಂ) 1. ವಿಭಾಗ, ಪಾಲು. 2. ಒಂದು  
ವಸ್ತುವಿನ ಭಾಗ. ಅಂಶ್ಯತೇ - ಅಂಶ (ವಿಭಾಜನೆ) ಕರ್ಮಂ  
"ಘತ್" (೩-೩-೧೯) । "ಅಂಶೋ ವಿಭಾಜನೇ ಪ್ರೋಕ್ತ ಏಕ-  
ದೇಶೋಽಪಿ ವಸ್ತುನಃ" ಹೇಮಂ । "ಷಟ್ಶಾಂಶವೃತ್ತೇರಪಿ ಧರ್ಮ ಏಷಃ"  
ಶಾಕುಂ ೪-೪ । 3. ಅವಯವ, ಶರೀರದ ಒಂದು  
ಭಾಗ. "ಅಂಶಸ್ತ್ವವಯವೋ ಭಾಗ ಏಕದೇಶಃ" ವೈಜಂ ।

ಅಂಶಕ ಅಂಶಕ (ಪುಂ) 1. ವಿಭಾಗ, ಪಾಲು. ಅಂಶ  
"ಕನ್" (೪-೩-೭೪) । 2. ದಾಯಾದ, ಪಾಲುದಾರ.  
ಅಂಶ ಹಾರಿ "ಕನ್" (೪-೨-೩೯) । "ಅಯಾಂಶಕಃ ।  
ಸಗಂಧಜ್ಞಾತಿದಾಯಾದೌ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । (ನಂ) 3. ದಿನ,  
ದಿನಸ. "ವಾಸ್ತೋ ವ್ಯುಷ್ಟಾಂಶಕೇ ದಿನಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । (ವಿಂ)  
4. ಭಾಗಕೊಡತಕ್ಕವನು. ಅಂಶ (ವಿಭಾಜನೆ) "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಫಲ್" (೪-೧-೪) । ಅಂಶಿಕಾ  
ಅಂಶಿಕಾ.

ಅಂಶಯಿತ್ ಅಂಶಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) ಭಾಗ ಕೊಡತಕ್ಕವನು.  
ಅಂಶ (ವಿಭಾಜನೆ) + ಣಿಕ್ "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩) ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಫಲ್" (೪-೧-೪) । ಅಂಶಯಿತ್ರಿ ಅಂಶಯಿತ್ರಿ.

ಅಂಶಲ ಅಂಶಲ (ವಿಂ) 1. ಭಾಗದಾರ, ಪಾಲುದಾರ.  
ಅಂಶ ಲಾತಿ - ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) ।  
2. ಬಲಶಾಲಿ.

ಅಂಶಿನ್ ಅಂಶಿನ್ (ವಿಂ) ಭಾಗದಾರ, ಪಾಲುದಾರ.  
ಅಂಶೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ - ಅಂಶ "ಫಿನ್" (೪-೨-೧೧೪) ।

ಅಂಶಹರ ಅಂಶಹರ (ವಿಂ) ಭಾಗದಾರ, ಪಾಲುದಾರ.  
ಅಂಶ ಹರತಿ - ಹ್ರ (ಹರಣೆ) "ಅಕ್" (೩-೨-೯) ।

ಅಂಶಾವತಾರ ಅಂಶಾವತಾರ (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳ ಅಂಶ  
ದಿಂದ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಮನುಷ್ಯಾದಿ ರೂಪದಿಂದ ಹುಟ್ಟು  
ವುದು. ಅಂಶಸ್ಯ ಅವತಾರಃ ।

ಅಂಶ ಅಂಶ (ಪುಂ) 1. ಕಿರಣ. 2. ಪ್ರಭೆ, ರಶ್ಮಿ.  
ಅಂಶಯತಿ - ಅಂಶ (ವಿಭಾಜನೆ) "ಕ್ರುಃ" (೩ಂ ೧-೩೭) ।  
"ಽನ್ಮೂಲಿತಂ ತುಲಿಕಯೇವ ಚಿತ್ರಂ ಸೂರ್ಯಾಶುಭಿಃ ಚಿತ್ರಮಿವಾರವಿನ್ದಮ್"  
ಕುಮಾಂ ೧-೩೨ । "ಅಜಲಮಾಸ್ಫಾಲಿತವಲ್ಲಕೀಗುಣಕ್ಷತೋ-

ಜ್ವಲಾಕ್ಷುಷ್ಣನಕ್ಷಾಶುಭಿಃ" ಮಾಧಂ ೧-೯ । 3. ದಾರದ  
ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ಭಾಗ. 4. ವೇಗ. 5. ಪ್ರಕಾಶ.  
6. ಚಂದ್ರ. "ಹೃದಾಶುರಂಶುರಜ್ಜಾರಿರಮೃತಾಶುಃ ಕಲಾನಿಧಿಃ"  
ವೈಜಂ । 7. ಸೂರ್ಯ. "ಚಂಡಾಶುರಂಶುಮಾನಂಶುಸ್ಸಹಸ್ರಾಶುಃ  
ಸದಾಗತಿಃ" ವೈಜಂ ।

ಅಂಶುಕ ಅಂಶುಕ (ಪುಂ) 1. ಕಿರಣ. 2. ಪ್ರಭೆ. ಅಂಶು  
ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ" । (ನಂ) 3. ವಸ್ತು. 4. ಸೂಕ್ಷ್ಮ  
ವಸ್ತು. 5. ಉತ್ತರೀಯ, ಹೊದೆಯುವ ವಸ್ತು.  
ಅಂಶುಭಿಃ ಕಾಶತೇ - ಕಾಶ (ದೀಪ್ತೌ) "ಙಃ" (೩-೨-೧೦೧) ।  
"ಅಂಶುಕಂ ಶಲಕ್ಷಣವಸ್ತು ಸ್ಯಾದ್ವಸ್ತ್ರಮಾತ್ರೋತ್ತರೀಯಯೋಃ" ಮೇದಿಂ ।  
"ಯತ್ರಾಂಶುಕಾಕ್ಷೇಪವಿಲಜ್ಜಿತಾನಾಂ ಯದ್ವಚ್ಚಯಾ ಕಿಪುರಾಜ್ಞಾನಾ-  
ನಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೧೪ । "ಅಂಶುಕಂ ಹೃತವತಾ ತನುವಾಹು-  
ಸ್ವಸ್ತಿಕಾಪಿಹಿತಮುಗ್ಧಕುಚಾಗ್ರಾ" ಮಾಧಂ ೧೦-೪೩ ।

ಅಂಶುಧರ ಅಂಶುಧರ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಧರತಿ - ಧೃಕ್  
(ಧಾರಣೆ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) । ಅಂಶುನಾಂ ಧರಃ ।  
(ವಿಂ) 2. ವೇಗವುಳ್ಳ. 3. ಕಿರಣವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ.

ಅಂಶುಪದ್ಮ ಅಂಶುಪದ್ಮ (ನಂ) ಸಣ್ಣ ದಾರದಿಂದ ತಯಾರಿಸಿದ  
ಪಟ್ಟಿವಸ್ತ್ರ, ರೇಷ್ಮೆ ವಸ್ತ್ರ. ಅಂಶುನಾ ಯುಕ್ತಂ ಪದ್ಮಮ್ ।

ಅಂಶುಮತ್ ಅಂಶುಮತ್ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಅಂಶವೋಽಸ್ಯ  
ಸಂತಿ "ಮತುಃ" (೪-೨-೯೪) । "ಅವಿಭಿಃ ನಿಶಾಕೃತಂ ತಮಃ  
ಪ್ರಭಯಾ ನಾಂಶುಮತಾಪ್ಯುದೀಯತೇ" ಕಿರಾಂ ೨-೩೬ । 2. ಸಗರ  
ಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಮೊಮ್ಮಗ, ಅಸಮಂಜಸನ ಮಗ.  
(ವಿಂ) 3. ಪ್ರಕಾಶವುಳ್ಳ, ಹೊಳೆಯುವ.

ಅಂಶುಮತೀ ಅಂಶುಮತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೂರೇಲಿ ಹೊನ್ನೆ  
ಮರ. 2. ಯಮುನಾನದಿ.

ಅಂಶುಮಲ್ಪಲಾ ಅಂಶುಮಲ್ಪಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಳೆಗಡ.

ಅಂಶುಮಾಲಾ ಅಂಶುಮಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಭಾವಳಿ, ಕಿರಣ  
ಗಳ ಮಾಲೆ.

ಅಂಶುಮಾಲಿನ್ ಅಂಶುಮಾಲಿನ್ (ಪುಂ) 2. ಸೂರ್ಯ.  
ಅಂಶವಃ ಮಾಲೇವ, ಸಾಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಫಿನ್" (೪-೨-೧೧೬) ।  
(ವಿಂ) 2. ಮಾಲೆಯಂತಿರುವ ಕಿರಣಗಳುಳ್ಳ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ  
"ಫಲ್" (೪-೧-೪) । ಅಂಶುಮಾಲಿನಿ - ಮಾಲಿನೀ.

ಅಂಶುಹಸ್ತ ಅಂಶುಹಸ್ತ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಅಂಶುಃ ಹಸ್ತ  
ಇವ ಯಸ್ಯ । [ಸೂರ್ಯನು ಕಿರಣರೂಪವಾದ ತನ್ನ  
ಸಾವಿರ ಹಸ್ತಗಳಿಂದ ಭೂಮಿಯಿಂದ ನೀರನ್ನು ಎಳೆಯು  
ವನು.]

ಅಂಸ ಅಂಸ (ಪುಂ) 1. ಭಾಗ, ಅಂಶ, ಪಾಲು. (ಪುಂಂ)  
2. ಸ್ಪಂದ, ಹೆಗಲು. ಅಂಸ್ಯತೇ ಸಮಾಹನ್ಯತೇ ಭಾರಾದಿನಾ -



ಅಸ (ಸಮಾಧಾತೇ) ಕರ್ಮಂ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೯) ।  
 "ಅಸಲಮ್ಬಿಭಿರಸಲಃ" ಯಾದಂ ೧೬-೫೧ ।  
 ಅಸಕೃತ್ ಅಂಸಕೂಟ (ಪುಂ) 1. ಎತ್ತಿನ ಹೆರಳು. ಅಸಃ ಕೃತ್ ಇವ । 2. ಹೆಗಲು. "ರಾಜನ್ಯೋಚ್ಚಾಸಕೃತ್ಕಯ-ನಪಟುರದ್ದೋರಧಾರಃ ಕುಠಾರಃ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೧-೭ ।  
 ಅಸತ್ರ ಅಂಸತ್ಯ (ನಂ) ಯುದ್ಧ ಕವಚ. ಅಸಂ ತ್ರಾಯತೇ - ತ್ರೈಙ್ (ಪಾಲನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) ।  
 ಅಸಫಲಕ ಅಂಸಫಲಕ (ಪುಂ) ಬೆನ್ನಿನ ಮೇಲುಭಾಗ, ಹಲಗೆಯಂತೆ ಅಗಲವಾದ ಭುಜ. ಅಸಃ ಫಲಕ ಇವ ।  
 ಅಸಭಾರಿಕ ಅಂಸಭಾರಿಕ (ವಿಂ) ಹೆಗಲಿನ ಮೇಲೆ ಗಂಟು ಮೂಟೆಗಳನ್ನು ಹೊರುವವನು. ಅಸಭಾರೆಣ ಹರತಿ "ಠನ್" (೪-೪-೧೬) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಃ" (೪-೧-೪೧) । ಅಸಭಾರಿಕೋ - ಭಾರಿಕೇ.   
 ಅಸಲ ಅಂಸಲ (ವಿಂ) ಬಲಶಾಲಿ, ಶಕ್ತಿವಂತ. ಅಸೋಽ-ಪ್ಯಾಸ್ತಿ "ಲಜ್" (೫-೨-೯೮) । "ಅಸಲಮ್ಬಿಭಿರಸಲಃ" ಯಾದಂ ೧೬-೫೧ ।  
 ಅಸ್ಯ ಅಂಸ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹೆಗಲಿನಲ್ಲಿರುವ, ಹೆಗಲಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಅಸೇ ಭವಃ "ಯತ್" (೪-೩-೫೫) । 2. ವಿಭಾಗಿಸಲ್ಪಡುವ, ಭಾಗಮಾಡಲ್ಪಡತಕ್ಕ. ಅಸ (ಸಮಾಧಾತೇ) ಕರ್ಮಂ "ಯತ್" (೩-೧-೯೭) ।  
 ಅಹತಿ ಅಂಹತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಾನ, ಪಾಪನಿವಾರಣೆ ಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ದಾನ. ಹಂತಿ ದುರಿತಮನಯಾ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) "ಅತಿಃ" ಅಹಾದೇಶಶ್ಚ (೩ಂ ೪-೬೨) । 2. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. "ಅಹತಿಃಸ್ತ್ಯಾಗರೋಗಯೋಃ" ಹೇಮಂ ।  
 ಅಹಸ್ ಅಂಹಸ್ (ನಂ) 1. ಪಾಪ. ಅಹತೇ ಗಚ್ಛತಿ ದಾನಾದಿನಾ - ಅಹಿ (ಗತೌ) "ಅಸುನ್" (೩ಂ ೪-೧೮೮) । 2. ತೊಂದರೆ, ಅಯಾಸ. "ಸಹಸಾ ಸಂಹತಿಮಹಸಾಂ ವಿಹಂತುಮ್" ಕಿ.ರಾಂ ೫-೧೭ । "ಕೃತಃ ಕೃತಾರ್ಥೋಽಸ್ಮಿ ನಿವಹಿತಾಂಹಸಾ" ಮಾಧಂ ೧-೨೯ ।  
 ಅಹಸ್ವತ್ ಅಂಹಸ್ವತ್ (ವಿಂ) ಪಾಪಿಷ್ಠ. ಅಹೋಽಪ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಃ" (೫-೨-೯೪) ।  
 ಅಹಿತಿ ಅಂಹಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಾನ. ಅಹಿ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) ।  
 ಅಹಿ ಅಂಹಿ (ಪುಂ) 1. ಪಾದ, ಕಾಲು. ಅಹತೇ ಗಚ್ಛತ್ಯನೇನ - ಅಹಿ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩ಂ ೪-೬೬) । 2. ಮರದ ಬೇರು. 3. ನಾಲ್ಕು ಸಂಖ್ಯೆ.   
 ಅಹಿಪ ಅಂಹಿಪ (ಪುಂ) ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಅಹಿಣಾ ಮೂಲೇನ ಪಿಪತಿ - ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೪) ।

ಅಹಿಸ್ಕನ್ಧ ಅಂಹಿಸ್ಕಂಧ (ಪುಂ) ಅಂಗಾಲಿನ ಮೇಲು ಭಾಗ. ಅಹಿಃ ಸ್ಕನ್ಧ ಇವ ।  
 ಅಕ ಅಕ (ನಂ) 1. ದುಃಖ. ನ ಕಂ ಸುಖಮ್ । 2. ಪಾಪ. ನ ಕಂ ಸುಖಂ ಯಸ್ಮಾತ್ । (ವಿಂ) 3. ಪಾಪವಿಲ್ಲದ. 4. ದುಃಖ ವಿಲ್ಲದ. ನ ಕಂ ಯಸ್ಯ । "ಅಕಂ ಪಾಪದುಃಖಯೋಃ" ಮೇದಿಂ ।  
 ಅಕಂಪನ ಅಕಂಪನ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. (ವಿಂ) 2. ನಡುಕವಿಲ್ಲದ, ಚಲಿಸದಿರುವ.   
 ಅಕಂಪಿತ ಅಕಂಪಿತ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಬೌದ್ಧ ಭಿಕ್ಷು. (ವಿಂ) 2. ಚಿತ್ತಚಾಂಚಲ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಸ್ಥಿರಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. 3. ನಡುಕವಿಲ್ಲದಿರುವ, ಚಲನೆಯಿಲ್ಲದ. ನ ಕಂಪಿತಂ ಯಸ್ಯ ।  
 ಅಕರ ಅಕರ (ವಿಂ) 1. ಹಸ್ತವಿಲ್ಲದ, ಕೈಯಿಲ್ಲದ. 2. ಕಷ್ಟವಿಲ್ಲದ, ತೆರಿಗೆಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಕರೋ ಯಸ್ಯ । 3. ಕಾರ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಕೆಲಸ ಮಾಡದಿರುವ. ಕರೋತಿ - ಕೃಜ್ "ಅಜ್" (೩-೧-೧೩೪) । ನ ಕರಃ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಅಕರಾ - ರಾ.   
 ಅಕರಣ ಅಕರಣ (ನಂ) ಕೆಲಸಮಾಡದಿರುವಿಕೆ. ಕ್ರಿಯತೇ - ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । ನ ಕರಣಮ್ ।  
 ಅಕರಣಿ ಅಕರಣಿ (ಪುಂ) ಶಾಪ, ಬೈಗಳ. ನ + ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣೇ) "ಅನಿಃ" (೩-೩-೧೧೨) ।  
 ಅಕರುಣ ಅಕರುಣ (ವಿಂ) ದಯೆಯಿಲ್ಲದ, ಕನಿಕರವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಕರುಣಾ ಯಸ್ಯ ।  
 ಅಕರ್ಣ ಅಕರ್ಣ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. (ವಿಂ) 2. ಕಿವಿಯಿಲ್ಲದ. ನ ವಿವೇಕೇ ಕರ್ಣೋ ಯಸ್ಯ । 3. ಕರ್ಣ ನಿಲ್ಲದ. ನ ಕರ್ಣಃ ಯತ್ರ । "ಅನರ್ಜುನಮಕರ್ಣಂ ವಾ ಜಗ-ದದೇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಮ್" ಭಾಂ ।  
 ಅಕರ್ಣ್ಯ ಅಕರ್ಣ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕಿವಿಗೆ ಯೋಗ್ಯವಿಲ್ಲದ. 2. ಕಿವಿಯಿಲ್ಲದ. ನ ಕರ್ಣಮ್ ।  
 ಅಕರ್ತನ ಅಕರ್ತನ (ಪುಂ) 1. ಕುಬ್ಜ, ವಾಮನ, ಕುಳ್ಳ. (ವಿಂ) 2. ಕತ್ತರಿಸದಿರುವ. ಕೃತೌ (ಛದನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । ನ ಕರ್ತನಂ ಯಸ್ಯ ।  
 ಅಕರ್ತು ಅಕರ್ತು (ವಿಂ) ಕೆಲಸಮಾಡದಿರುವವನು, ಅಸ್ವತಂತ್ರ, ಅಡಿಯಾಳು. ನ ಕರ್ತಾ ।  
 ಅಕರ್ತೃತ್ವ ಅಕರ್ತೃತ್ವ (ನಂ) ಅಸ್ವತಂತ್ರತೆ, ಸರಾಧೀನತೆ.   
 ಅಕರ್ಮಕ ಅಕರ್ಮಕ (ವಿಂ) ಕರ್ಮಪದವಿಲ್ಲದ ಧಾತು. ನಾಸ್ತಿ ಕರ್ಮಂ ಯಸ್ಯ "ಕಪ್" । [ಫಲವ್ಯಾಪಾರಯೋರೇಕನಿಷ್ಠತ್ವೇ ಧಾತೋರಕರ್ಮಕತ್ವಮ್ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಅಕರ್ಮಿಕಾ] ಧಾತುಗಳಲ್ಲಿ ಕೆಲವಕ್ಕೆ ಕರ್ಮಪದವಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಕೆಲವಕ್ಕೆ ಕರ್ಮ ಪದದ ವಿವಕ್ಷೆಯಿರುವುದಿಲ್ಲ.



ಮೊದಲನೆಯದು ಕೇವಲ ಅಕರ್ಮಕವೆಂದೂ ಧಾತ್ವರ್ಥಸಂಗೃಹೀತವಾದಕರ್ಮವುಳ್ಳದ್ದೆಂದೂ ಎರಡು ವಿಧ.

ಉದಾ: (1) ಕೇವಲ ಅಕರ್ಮಕ ಆಸ್ತೆ, ಶೇತೆ ಇತ್ಯಾದಿ.

(2) ಧಾತ್ವರ್ಥಸಂಗೃಹೀತಕರ್ಮವುಳ್ಳದ್ದು ಜೀವತಿ—ಪ್ರಾಣಂ ಧಾರಯತಿ, ನೃತ್ಯತಿ—ಗಾತ್ರಂ ವಿಕಿಪತಿ ಇತ್ಯಾದಿ. ಇಲ್ಲಿ ಜೀವ ಧಾತುವಿನಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಣಧಾರಣರೂಪವಾದ ಅರ್ಥವೂ ನೃತಿ ಧಾತುವಿನಲ್ಲಿ ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪಣ ರೂಪವಾದ ಅರ್ಥವೂ ಸಂಗೃಹೀತವಾಗಿದೆ.

ಕೆಲವು ಧಾತುಗಳು ಸಕರ್ಮಕವಾದರೂ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಅಕರ್ಮಕವಾಗುವುವು.

ಉದಾ: वहति भारम्। नदी वहति। ಇಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ वह ಧಾತುವು ಸಕರ್ಮಕ. ಎರಡನೆಯದು ಅಕರ್ಮಕ. “हितान्न यः संशृणुते स किप्रभुः” ಇತ್ಯಾದಿ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿ ಕರ್ಮಪದದ ವಿವಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಶೃಣು ಧಾತುವು ಸಕರ್ಮಕವಾದರೂ ಅಕರ್ಮಕವಾಗಿರುವುದು. “धातोरर्थान्तरे वृत्तेर्धात्वर्थनोपसङ्ग्रहात्। प्रसिद्धेरविवक्षातः कर्मणोऽकर्मिका क्रिया” ಸಿಂ ಕೌಂ.

अकर्मण्य अकर्मण्य (ವಿಂ) ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಲ್ಲದ. ನ ಕರ್ಮಣಿ ಸಾಧು: “यत्” (೪-೪-೯೮)।

अकर्मन् अकर्मन् (ನಂ) 1. ಕೆಲಸವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ಕರ್ಮ. “अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः” ಗೀತಾ ೪-೧೭. 2. ಅಕಾರ್ಯ. (ವಿಂ) 3. ಕೆಲಸವಿಲ್ಲದ, ಸೋಮಾರಿಯಾದ. 4. ಕರ್ತವ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯತೆಯಿಲ್ಲದ. 5. ಕರ್ಮಪದವಿಲ್ಲದ (ಧಾತು).

अकर्मकृत् अकर्मकृत् (ವಿಂ) 1. ಕೆಲಸಮಾಡದಿರುವ. ನ ಕರ್ಮ ಕರೋತಿ—ಕೃ ಕೃ (ಕರಣ) “क्विप्” (೩-೨-೭೬)। 2. ಅಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವ. ಅಕರ್ಮ ಕರೋತಿ—ಕೃ “क्विप्” (೩-೨-೭೬)।

अकर्मशील अकर्मशील (ವಿಂ) ಸೋಮಾರಿ, ಅಲಸ.

अकल अकल (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. ನಾಸ್ತಿ ಕಲಾ ಅವಯವೋ यस्य। (ವಿಂ) 2. ಚತುಃಷಷ್ಟಿ ಕಲಾಶೂನ್ಯ. 3. ಅವಯವಗಳಿಲ್ಲದ.

अकलुष अकलुष (ವಿಂ) 1. ಪಾಪವಿಲ್ಲದ. 2. ಸ್ವಚ್ಛವಾದ, ನಿರ್ಮಲವಾದ. 3. ಕೊಳೆಯಿಲ್ಲದ. ನ ಕಲುಷ ಯಸ್ಯ।

अकल्क अकल्क (ವಿಂ) 1. ಸ್ವಚ್ಛವಾದ, ಗಸಿಯಿಲ್ಲದ. 2. ಪಾಪವಿಲ್ಲದ. 3. ಅಹಂಕಾರವಿಲ್ಲದ. ನ ಕಲ್ಕೋ यस्य। अकल्कता अकल्कता (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸತ್ಯಸಂಧತೆ, ಪ್ರಾಮಾಣಿಕತೆ.

अकल्कन अकल्कन (ವಿಂ) 1. ಗರ್ವವಿಲ್ಲದ, ಅಹಂಕಾರವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಕಲ್ಕನಂ ದम्भो यस्य। 2. ಮೋಸವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ.

अकल्का अकल्का (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಬೆಳದಿಂಗಳು. ನ ಕಲ್ಕೋ ಮಲಂ ಯस्या:।

अकल्प अकल्प (ವಿಂ) 1. ನಿಯಮವಿಲ್ಲದ. 2. ನಿಯಮಕ್ಕೆ ವಿಷಯವಲ್ಲದ. 3. ಅಸದೃಶವಾದ, ಹೋಲಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. 4. ನ್ಯಾಯವಲ್ಲದ. “कल्पः शास्त्रे विधीन्याये” ಶಾಶ್ವಂ.

अकल्पित अकल्पित (ವಿಂ) 1. ನಿಸರ್ಗವಾದ, ಸ್ವಾಭಾವಿಕ, ಅಕೃತ್ರಿಮ. 2. ಮಾಡಲ್ಪಡದಿರುವ. “अकल्पित-प्राशिनिकमन्ववेक्षत” ಯಾದಂ ೧೪-೧೦.

अकल्य अकल्य (ವಿಂ) 1. ಅಸ್ವಸ್ಥ, ಆರೋಗ್ಯವಿಲ್ಲದ. ಕಲಾಸು ಸಾಧು: “यत्” (೪-೪-೯೮)। ನ ಕಲ್ಯ:। (ನಂ) 2. ಸತ್ಯ, ನಿಜ. ಕಲ್ಯತೇ—ಕಲ (ಸಂಖ್ಯಾನೆ) “यत्”। ಕಲ್ಯಂ ಮಿಥ್ಯಾಭೂತಂ—ನ ಕಲ್ಯಮ್। “अनीनयदकल्यसन्धो बन्धनागारम्” ದಶಕುಂ.

अकल्याण अकल्याण (ವಿಂ) 1. ಅದೃಷ್ಟಹೀನ, ನಿರ್ಭಾಗ್ಯ. (ನಂ) 2. ಅನಾರೋಗ್ಯ. 3. ದುಃಖ, ಕಷ್ಟ.

अकस्मात् अकस्मात् (ಅವ್ಯಂ) 1. ಹಠಾತ್ತಾಗಿ, ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾಗಿ. ನ ಕಸ್ಮಾತ್ ಕಿञ्चित्ಕಾರಣಾಧೀನತ್ವಂ ಯತ್ರ। “अकस्मादागन्तुना सह विश्वासो न कर्तव्यः” ಹಿತಂ. 2. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದೆ. “नाकस्मात् शाण्डिली-माता विक्रीणाति तिलैस्तिलान्” ಪञ್ಚತಂ.

अकाण्ड अकाण्ड (ಪುಂ) 1. ರೆಂಬೆಯಿಲ್ಲದ ಮರ. 2. ಅನವಸರ, ಅಸಮಯ, ಅಕಾಲ. “अकाण्डे प्रथनं छेदश्च रसदोषौ” ಸಾಂ ದಂ.

(1) ಅಕಾಲದಲ್ಲಿ ಪ್ರಥನ: ವೇಣೀಸಂಹಾರದ ಎರಡನೇ ಅಂಕದಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ರಾಜರು ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ನಾಶವಾಗುತ್ತಿರುವಾಗ ಭಾನುಮತಿಯೊಡನೆ ದುರ್ಯೋಧನನ ಶೃಂಗಾರವರ್ಣನೆ.

(2) ಅಕಾಲದಲ್ಲಿ ಭೇದ: ಮಹಾವೀರಚರಿತದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀರಾಮ ಮತ್ತು ಪರಶುರಾಮರಿಗೆ ಯುದ್ಧ ನಡೆದು



ವೀರರಸವು ಉದಯಿಸಿರುವಾಗ ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು ವೈವಾಹಿಕ ಕುಕಣ ವಿಸರ್ಜನೆಗಾಗಿ ಕಳುಹಿಸುವುದು. [ಯುದ್ಧಸಮಯದಲ್ಲಿ ಕಂಕಣವಿಸರ್ಜನೆಯ ಪ್ರಸ್ತಾವನು, ಶ್ರೀರಾಮನು ಆ ವ್ಯಾಜದಿಂದ ಹೆದರಿ ಓಡಿ ಹೋಗುವನೆಂಬ ಅರ್ಥಕೊಡುವುದರಿಂದ ಶ್ರೀರಾಮನಲ್ಲಿ ಅಧೈರ್ಯವನ್ನು ಹೇಳಿದಂತಾಗುವುದು.]

(ವಿಂ) 3. ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾದ, ಅನವಸರವಾದ, ಸಮಯವಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಕಾಣ್ಡ ಅವಸರ: यस्य । "ಪುನರ-ಕಾಣ್ಡವಿವರ್ತನದಾರುಣ:" ತಂ ರಾಂ ೪-೧೫ ।

ಅಕಾಣ್ಡೆ ಅಕಾಂಡೇ (ಅವ್ಯಂ) ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾಗಿ, ಕಾರಣವಿಲ್ಲದೆ. "ದರ್ಭಾಕ್ಷುರೇಣ ಚರಣ: ಕ್ಷತ ಇತ್ಯಕಾಣ್ಡೆ" ಶಾಕುಂ ೨-೧೨ ।

ಅಕಾಮ ಅಕಾಮ (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ, ಇಚ್ಛೆಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಕಾಮೋಽಭಿಲಾಪೋ यस್ಯ । 2. ಪ್ರೀತಿಯಿಲ್ಲದ. 3. ಇಷ್ಟವಲ್ಲದ, ಸಮ್ಮತವಲ್ಲದ. 4. ಅರಿವಿಲ್ಲದ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದ, ಪ್ರಾಮಾದಿಕವಾದ.

"ಅಕಾಮೋಪನತೇನೇವ ಸಾಧೋಹಿದಯಮೇನಸಾ" ರಘುಂ ೧೦-೩೯ ।

ಅಕಾಮತಸ್ ಅಕಾಮತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಇಷ್ಟವಿಲ್ಲದೆ, ಮನಸ್ಸಿಲ್ಲದೆ. 2. ಅರಿವಿಲ್ಲದೆ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದೆ.

ಅಕಾಮ "ತಸಿಲ್" (೪-೩-೭) । "ಅಕಾಮತ: ಕೃತಂ ಪಾಪಂ ವೇದಾಭ್ಯಾಸೇನ ಶುಧ್ಯತಿ" ಮನುಂ ೧೧-೪೬ ।

ಅಕಾಯ ಅಕಾಯ (ಪುಂ) 1. ರಾಹು. 2. ಪರಮಾತ್ಮ. ನಾಸ್ತಿ ಕಾಯೋ यस್ಯ । (ವಿಂ) 3. ಶರೀರವಿಲ್ಲದ.

ಅಕಾರ ಅಕಾರ (ಪುಂ) 1. "ಅ" ವರ್ಣ, ವರ್ಣಮಾಲೆಯ ಮೊದಲನೆಯ ಅಕ್ಷರ. [ವಿವರಕ್ಕೆ ಅ ಮತ್ತು ಆ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] (ವಿಂ) 2. ಕೆಲಸ ಮಾಡದಿರುವ. ಕಾರ: ಕ್ರಿಯಾ । ನಾಸ್ತಿ ಕಾರೋ यस್ಯ ।

ಅಕಾರಣ ಅಕಾರಣ (ವಿಂ) 1. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದ. 2. ಉದ್ದೇಶ್ಯವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಕಾರಣಂ यस್ಯ । "ತತೋಽಕಾರಣವೇರೀ ನ: ಕಾರಣಾದಪರೇ ಪರೇ" ನೈಫಂ । (ನಂ) 3. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 4. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದೆ. "ಕಿಮಕಾರಣಮೇವ ದರ್ಶನಂ ವಿಲಪಂತೈ ರತಯೇ ನ ದೀಯತೇ" ಕುಮಾಂ ೪-೭ ।

ಅಕಾರ್ಯ ಅಕಾರ್ಯ (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟಕೆಲಸ. 2. ನಿಸಿದ್ಧವಾದ ಕೆಲಸ. "ಕಿಮಕಾರ್ಯಂ ಕದರ್ಯಾಗಾಮ್" ಹಿತಂ ।

"ಮಾ ನಾಮ ವೇವಲವ್ಯಾದಕಾರ್ಯಂ ಕುರ್ಯಾತ್" ಮೃಚ್ಛಕಂ ।

ಅಕಾಲ ಅಕಾಲ (ಪುಂ) 1. ನಿಸಿದ್ಧಕಾಲ. 2. ಅಸಮಯ, ಅನುಚಿತಕಾಲ. "ಅಕಾಲೇ ಬೋಧಿತೋ ಭ್ರಾತೃ" ರಘುಂ ೧೨-೮೧ ।

(ವಿಂ) 3. ಕಾಲೋಚಿತವಲ್ಲದ, ಅಸಮಯದಲ್ಲಿ ಸಂಭವಿಸಿದ. "ನ ಹ್ಯಕಾಲಭವೋ ಮೃತ್ಯುರೀಕ್ಷಾಕುಪದಮಸ್ಪೃಶಾತ್" ರಘುಂ ೧೫-೪೪ । 4. ಕಷ್ಟವಲ್ಲದ, ಬಿಳುವಾದ. ನ ಕಾಲ: ।

ಅಕಿಂಚನ ಅಕಿಂಚನ (ಪುಂ) ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. ನಾಸ್ತಿ ಕಿಂಚನ ಯಸ್ಯ । "ಅಕಿಂಚನ: ಸನ್ ಪ್ರಭವ: ಸ ಸಂಪದಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೫-೭೭ ।

ಅಕಿಂಚನತಾ ಅಕಿಂಚನತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂನ್ಯಾಸಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ ಸರ್ವದ್ರವ್ಯಪರಿತ್ಯಾಗ. "ವ್ರತಂ ದಾನಂ ಪರಿವ್ರಜ್ಯಾ ತಪಸ್ಯಾ ನಿಯಮಸ್ಥಿತಿ: । ಅಹಿಂಸಾಽಮೃತಾಸ್ತೇಯಬ್ರಹ್ಮಾಕಿಂಚನತಾ ಯಮ:" । 2. ದಾರಿದ್ರ್ಯ.

ಅಕಿಂಚನತ್ವ ಅಕಿಂಚನತ್ವ (ನಂ) 1. ಸರ್ವದ್ರವ್ಯಪರಿತ್ಯಾಗ. 2. ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ನಿರ್ಧನತ್ವ, ಬಡತನ. "ಸ್ಥಾನೇ ಭವಾನೇಕನರಾಧಿಪ: ಸನ್ನಕಿಂಚನತ್ವಂ ಮಖ್ಯಂ ವ್ಯನಕ್ತಿ" ರಘುಂ ೫-೧೬ ।

ಅಕಿಂಚನಿಮನ್ ಅಕಿಂಚನಿಮನ್ (ಪುಂ) ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ಬಡತನ. ಅಕಿಂಚನ "ಇಮನಿನ್" (೫-೧-೧೨೨) ।

ಅಕಿಂಚಿಜ್ಞ ಅಕಿಂಚಿಜ್ಞ (ವಿಂ) ಎನೂ ತಿಳಿಯದ, ಅರಿವಿಲ್ಲದ. ನ ಕಿಂಚಿತ್ ಜಾನಾತಿ - ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩) ।

ಅಕಿಂಚಿತ್ಕರ ಅಕಿಂಚಿತ್ಕರ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ, ಕೆಲಸಮಾಡಲು ಸಾಮರ್ಥ್ಯವಿಲ್ಲದ. 2. ಯಾವ ಕಾರ್ಯವನ್ನೂ ಮಾಡದಿರುವ. ನ ಕಿಂಚಿತ್ ಕರೋತಿ - ಕೃ ಕೃ (ಕರಣಂ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) ।

ಅಕೀರ್ತಿ ಅಕೀರ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪಯಶಸ್ಸು, ಕಳಂಕ, ಅಪಖ್ಯಾತಿ.

ಅಕುಂಠ ಅಕುಂಠ (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಿಲ್ಲದ, ಪ್ರತಿಬಂಧಕವಿಲ್ಲದ. 2. ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಥವಾದ. ನಾಸ್ತಿ ಕುಂಠಾ ಯಸ್ಯ । 3. ಹರಿತವಾದ, ಹದವಾದ. "ಆಶಸ್ತ್ರಗ್ರಹಣಾದ-ಕುಂಠಪರಶೋ:" ವೇಣೀಂ ೨-೨ ।

ಅಕುಂಠಿತ ಅಕುಂಠಿತ (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಿಲ್ಲದ. 2. ಚುರುಕಾದ, ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ. "ಶಾಸ್ತ್ರೇಷ್ವಕುಂಠಿತಾ ಬುದ್ಧಿಮೌರ್ವಿ ಧನುಷಿ ಚಾತತಾ" ರಘುಂ ೧-೧೯ ।

ಅಕುತೋಭಯ ಅಕುತೋಭಯ (ವಿಂ) 1. ಯಾರಿಂದಲೂ ಯಾವ ಕಡೆಯಿಂದಲೂ ಭಯವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಕುತೋಽಪಿ ಭಯಂ ಯಸ್ಯ । 2. ಅಪಾಯರಹಿತವಾದ. "ಮಾದೃಶಾನಾಮಪಿ ಅಕುತೋಭಯ: ಸಂಚಾರೋ ಜಾತ:" ತಂ ರಾಂ ೨ ।

ಅಕುಪ್ಯ ಅಕುಪ್ಯ (ನಂ) 1. ಚಿನ್ನ. 2. ಬೆಳ್ಳಿ. ಕುಪ್ಯಾದನ್ಯತ್ । "ಕುರುಕುಪ್ಯಂ ವಸು ವಾಸವೋಪಮ:" ಕಿರಾಂ ೧-೩೫ ।



ಅಕ್ಕಪಾರ ಅಕ್ಕಾಸಾರ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ. ನ ಕುಂ ಪೃಥ್ವಿ  
ಪಿಪತಿ — ಪ (ಪಾಲನಪೂರಣಯೋಃ) "ಅನ್" (೩-೨-೧)। ದೀರ್ಘಃ  
(೬-೩-೧೩೭)। "ಅಕ್ಕಪಾರೇಕೋದಕಸಮಯವೇತಙ್ಕಜವಃ"  
ದಯಾಸಾಂ 2. ದೊಡ್ಡ ಆಮೆ. ನ ಕ್ಕುಮುಚ್ಚತಿ — ಕ್ತ (ಗತೌ)  
"ಅನ್" (೩-೨-೧)। "ಅಕ್ಕಪಾರಃ ಕುರ್ಮರಾಜಸಮುದ್ರಯೋಃ"  
ಹೇಮಂ 3. ಸೂರ್ಯ.

ಅಕ್ಕಚ್ಚ ಅಕ್ಕಚ್ಚ (ವಿಂ) ಕಷ್ಟವಲ್ಲದ. ನ ಕ್ಕಚ್ಚಮ್.

ಅಕ್ಕತ ಅಕ್ಕತ (ವಿಂ) 1. ಮಾಡಲ್ಪಡದಿರುವ. ಟ್ ಕ್ತ  
(ಕರಣೇ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। ನ ಕ್ತಮ್।  
"ಅಕ್ಕತಸ್ವಸಂಪದಗಮನಾದರಃ ಕ್ಷಣಮ್" ಮಾಘಂ ೧೩-೪೭।  
(ನಂ) 2. ನಿವೃತ್ತಿ, ಕೆಲಸದ ಅಭಾವ. ಕ್ತ ಭಾವೇ  
"ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)।

ಅಕ್ಕತಜ್ಜ ಅಕ್ಕತಜ್ಜ (ವಿಂ) ಕೃತಘ್ನ, ಮಾಡಿದ ಉಪಕಾರ  
ವನ್ನು ನೆನೆಯದವನು. ನ ಕ್ತಂ ಜಾನಾತಿ — ಜಾ  
(ಅವಬೋಧನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೩)।

ಅಕ್ಕತಿನ ಅಕ್ಕತಿನ (ವಿಂ) ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಅಸಮರ್ಥ.  
ನ ಕ್ತೀತಿ।

ಅಕ್ಕತಯ ಅಕ್ಕತಯ (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟಕೆಲಸ, ಅಯೋಗ್ಯ ಕೆಲಸ.  
"ಅಕ್ಕತಯಮಪಿ ಕುರ್ವಾಣಿ ಭುಜ್ಜಾನೋ ವಾ ಯತಸ್ತತಃ" (ವಿಂ)  
2. ಕೆಲಸವಿಲ್ಲದ. ನ ಕ್ತಯಂ ಯಸ್ಯ।

ಅಕ್ಕತರಮ ಅಕ್ಕತರಮ (ವಿಂ) ನಿಸರ್ಗವಾದ, ಸ್ವಾಭಾವಿಕ,  
ಸಹಜ. ಕ್ರಿಯಾ ನಿವೃತ್ತಮ್। ನ ಕ್ತರಮಮ್। "ಅಕ್ಕತರಮಪ್ರೇಮ-  
ರಸಾಭಿರಾಮಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೩೭।

ಅಕ್ಕಶ ಅಕ್ಕಶ (ವಿಂ) 1. ದಪ್ಪವಾದ. 2. ಬಲಶಾಲಿ  
ಯಾದ. 3. ಸಂಪೂರ್ಣ, ತುಂಬಿದ. ನ ಕ್ತಶಃ।  
"ಅಕ್ಕಶಂ ಕುಚಯೋಃ ಕ್ತಶಂ ವಿಲಗ್ನೇ" ಕುವಂ।

ಅಕ್ಕಟ ಅಕ್ಕಟ (ವಿಂ) 1. ಉಳಲ್ಪಡದೆ ಇರುವ.  
2. ಎಳೆಯಲ್ಪಡದಿರುವ. ನ ಕ್ಕಟಮ್।

ಅಕ್ಕಟಪಚ್ಯ ಅಕ್ಕಟಪಚ್ಯ (ವಿಂ) ಉಳಲ್ಪಡದ ಭೂಮಿ  
ಯಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದ. ಅಕ್ಕಟೇ ಕ್ಷೇತ್ರೇ ಪಚ್ಯಂತೇ — ಟ್ ಪಚ್ಯ (ಪಾಕೇ)  
"ಕರಪ್" (೩-೧-೧೧೪)। "ಅಕ್ಕಟಪಚ್ಯಾ ಇವ ಸಸ್ಯಸಂಪದಃ"  
ಕಿರಾಂ ೧-೧೭।

ಅಕ್ಕಣ ಅಕ್ಕಣ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. (ವಿಂ) 2. ಶುಭ್ರ  
ವಾದ, ಬಿಳುವಾದ. ನ ಕ್ಕಣಃ।

ಅಕ್ಕಣಕರ್ಮನ್ ಅಕ್ಕಣಕರ್ಮನ್ (ವಿಂ) ಒಳ್ಳೆಯ  
ಕಾರ್ಯವುಳ್ಳ, ಸದಾಚಾರಸಂಪನ್ನನಾದ. ನ ಕ್ಕಣಂ  
ಕರ್ಮಂ ಯಸ್ಯ।

ಅಕ್ಕೋಟ ಅಕ್ಕೋಟ (ಪುಂ) ಅಡಕೆ ಮರ.

ಅಕ್ಕಾ ಅಕ್ಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಾಯಿ.

ಅಕ್ಕತ ಅಕ್ಕ (ವಿಂ) ಲೇಸನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಅಜ್ಯತೇ — ಅಜ್ಜ (ವ್ಯಕ್ತಾದೌ) "ಕ್ತಃ" (೩ಂ ೩-೮೯)।  
ಅಕ್ಕತ್ರ ಅಕ್ಕ (ನಂ) ಕವಚ. ಅಜ್ಜ "ಫ್ಲನ್" (೩ಂ  
೪-೧೫೮)।

ಅಕ್ಕಮ ಅಕ್ಕಮ (ಪುಂ) 1. ಕ್ರಮವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
ಇದೊಂದು ಕಾವ್ಯದೋಷ. — ವಿನಕ್ಷಿತಾರ್ಥವನ್ನು  
ಕೊಡುವ ಪದವನ್ನು ಆಯಾ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹೇಳದೆ ಬೇರೆ  
ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹೇಳುವುದು ಅಕ್ಕಮವೆನಿಸುವುದು. ಇದ  
ರಿಂದ ಜಾಗ್ರತೆಯಾಗಿ ವಿನಕ್ಷಿತಾರ್ಥಬೋಧನಾಗುವ  
ದಿಲ್ಲ. "ಕಲಾ ಚ ಸಾ ತ್ವಂ ಚ" ಎಂದು ಹೇಳುವುದಕ್ಕೆ  
ಬದಲಾಗಿ "ಕಲಾ ಚ ಸಾ ತ್ವಮಸ್ಯ ಲೋಕಸ್ಯ ಚ ನೇತ್ರಕೋಮದಿ"  
ಎಂದು "ಚ" ಪದವನ್ನು ದೂರದಲ್ಲಿ ಹೇಳುವುದರಿಂದ  
ಅಕ್ಕಮವೆಂಬ ಕಾವ್ಯದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು.  
2. ಚಲನವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ಅಕ್ಕಮಣವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
(ವಿಂ) 4. ಕ್ರಮರಹಿತ. 5. ಚಲನವಿಲ್ಲದ.  
6. ಅಕ್ಕಮಣವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಕ್ರಮಃ ಪರಿಪಾटी ಪಾದಃ  
ಕ್ರಮಣಂ ವಾ ಯಸ್ಯ।

ಅಕ್ಕಾಂತ ಅಕ್ಕಾಂತ (ವಿಂ) ಅಕ್ಕಮಿಸಲ್ಪಡದ, ಜಯಿಸ  
ಲ್ಪಡದ.

ಅಕ್ಕಾಂತಾ ಅಕ್ಕಾಂತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಗ್ಗುಳ್ಳದಗಿಡ, ಮುಳ್ಳು  
ಬದನೆಯ ಗಿಡ.

ಅಕ್ಕಿಯ ಅಕ್ಕಿಯ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. (ವಿಂ) 2. ಕೆಲಸ  
ವಿಲ್ಲದ, ಅಲಸ, ಮಂದಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. 3. ಕರ್ಮ  
(ಮತಸಂಬಂಧವಾದ ಸಂಸ್ಕಾರ) ರಹಿತ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಯಾ-ಯಾ. 4. ನಿಶ್ಚೇಷ, ಸೋಮಾರಿತನ.

ಅಕ್ಕರ ಅಕ್ಕರ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಸ್ನೇಹಿತನಾದ  
ಒಬ್ಬ ಯಾದವ. ಈತನು ಕಂಸನನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿ  
ಜೀವಿಸುತ್ತಿದ್ದನು. ಕಂಸನು ನಾರದರ ಮುಖದಿಂದ  
ರಾಮಕೃಷ್ಣರ ವೃತ್ತಾಂತವನ್ನು ತಿಳಿದು ಚಾಣೂರ  
ಮತ್ತು ಮುಸ್ತಿಕರಿಂದ ಜಟ್ಟಿಯ ಕಾಳಗದಲ್ಲಿ ಕೊಲ್ಲಿ  
ಸುವ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ಶ್ರೀರಾಮಕೃಷ್ಣರನ್ನು ಕರೆತರಲು  
ಈ ಯಾದವನನ್ನು ಕಳುಹಿಸಿದನು. ಈ ಅಕ್ಕರನು  
ಪರಮಾತ್ಮನ ಅಂಶದಿಂದ ಅವತರಿಸಿರುವ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ  
ನನ್ನು ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲೇ ಧ್ಯಾನಮಾಡುತ್ತಾ ಭಕ್ತಿಯಿಂದ  
ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನನ್ನು ಸಂದರ್ಶಿಸಲು ರಾತ್ರಿ ರಥವನ್ನು ಎರಿ  
ಹೊರಟು ಪ್ರಾತಃಕಾಲವೇ ನಂದಗೋಕುಲಕ್ಕೆ  
ಬಂದನು. ಅಲ್ಲಿ ಗೋವುಗಳನ್ನು ಕರೆಯುತ್ತಾ ಅವುಗಳ



ಮಧ್ಯೆ ನಿಂತಿದ್ದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನನ್ನೂ ಬಲರಾಮನನ್ನೂ ಕಂಡು ನಮಸ್ಕರಿಸಿ ಅವರಿಂದ ಯಥೋಚಿತನಾದ ಸತ್ಕಾರವನ್ನು ಹೊಂದಿ ತಾನು ಬಂದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ವಿವರವಾಗಿ ತಿಳಿಸಿದನು. ಅನಂತರ ಅವರ ಅಪ್ಪಣೆ ಪಡೆದು ಅವರನ್ನು ರಥದಲ್ಲಿ ಕುಳ್ಳಿರಿಸಿ ತಾನು ರಥವನ್ನು ಬಿಡುತ್ತಾ ಬರುತ್ತಿರುವಾಗ ಯಮುನಾತೀರದಲ್ಲಿ ಮಾಧ್ಯಾಹ್ನಿಕಕ್ಕಾಗಿ ಅವರ ಅನುಮತಿಹೊಂದಿ ಅವರನ್ನು ರಥದಲ್ಲೇ ಕುಳ್ಳಿರಿಸಿ ತಾನು ಯಮುನಾ ಜಲದಲ್ಲಿಳಿದು ಸ್ನಾನಮಾಡುತ್ತಿರುವಾಗ ನೀರಿನೊಳಗೆ ರಾಮಕೃಷ್ಣರಿಬ್ಬರನ್ನೂ ನೋಡುವನು. ರಥದಲ್ಲಿದ್ದವರು ಇಲ್ಲಿಗೆ ಬರಲು ಕಾರಣವೇನೆಂದು ಆಶ್ಚರ್ಯದಿಂದ ರಥದ ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದು ನೋಡಲು ರಾಮಕೃಷ್ಣರಿಬ್ಬರೂ ಅಲ್ಲಿ ಕುಳಿತಿದ್ದರು. ಪುನಃ ನೀರಿನಲ್ಲಿದ್ದು ಸ್ನಾನಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ತನ್ನ ದಿವ್ಯ ರೂಪವನ್ನು ತೋರಿಸಲು ನಿಜವಾಗಿಯೂ ಇವರು ಪರಮಾತ್ಮನ ಅವತಾರವೆಂದು ಅವರನ್ನು ಬಹಳವಾಗಿ ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಿ ಪೂಜಿಸಿ ಸಾಯಂಕಾಲದೊಳಗೆ ಮಧುರೆಯನ್ನು ತಲುಪಿ ಊರಹೊರಗೆ ಅವರನ್ನು ಇಳಿಸಿ ಅವರ ಅಪ್ಪಣೆಯಂತೆ ನಗರವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸುವನು.

(ವಿಂ) 2. ಕ್ರೂರನಲ್ಲದ, ಸರಳನಾದ. ನ ಕ್ರೂರ:।

ಅಕ್ರೋಧ ಅಕ್ರೋಧ (ಪುಂ) 1. ಕೋಪವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಶಾಂತತೆ. ನ ಕ್ರೋಧ:। (ವಿಂ) 2. ಕೋಪವಿಲ್ಲದ, ಶಾಂತನಾದ. ನ ಕ್ರೋಧೋ यस್ಯ।

ಅಕ್ರೋಧನ ಅಕ್ರೋಧನ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ರಾಜಕುಮಾರ, ಅಯುತಾಯುವಿನ ಮಗ. (ವಿಂ) 2. ಕೋಪವಿಲ್ಲದ.

ಅಕಲಮ ಅಕ್ಷಮ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರಮವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ಶ್ರಮವಿಲ್ಲದ, ಆಯಾಸವಿಲ್ಲದ. ನ ಕರಮೋ यस್ಯ।

ಅಕಿಲಿಷ್ಠ ಅಕ್ಷಿಪ್ಷ (ವಿಂ) 1. ಕ್ಲೇಶಪಡದಿರುವ, ದಣಿಯದಿರುವ, ಆಯಾಸಪಡದಿರುವ. 2. ಕೆಡದಿರುವ, ಶಕ್ತಿ ಕುಂದದಿರುವ. ನ ಕ್ಲಿಷ್ಠ:। "ಅಕಿಲಿಷ್ಠವಾಲತಃಪಲ್ಲವ-ಲೋಭನೀಯಮ್" ಶಾಕುಂ ೬-೨೦।

ಅಕ್ಷ ಅಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ತಾರೆಗಿಡ. ಅಕ್ಷತಿ — ಅಕ್ಷ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಅಕ್ಷ" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಬಂಡಿ, ಗಾಡಿ. 3. ಬಂಡಿಯ ಅಚ್ಚು. 4. ಬಂಡಿಯ ಚಕ್ರ, ಗಾಲಿ. 5. ಅತ್ಯ. 6. ಪಗಡೆಕಾಯಿ. ಅಕ್ಷ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಸ:" (೩ಂ ೩-೬೪)। 7. ರುದ್ರಾಕ್ಷ. "ಅಕ್ಷದಾಮರಚನೋಚಿತೈ: ಫಲೈ:" ಯಾದಂ ೧೭-೩೩। 8. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. 9. ರಾವಣನ ಮಗ. 10. ಗರುಡ. 11. ಜ್ಞಾನ. 12. ನ್ಯಾಯ, ವ್ಯವಹಾರ.

13. ಜಾತ್ಯಂಧ, ಹುಟ್ಟುಕುರುಡ. 14. ಹದಿನಾರು ಮಾಪಗಳ ತೂಕ. (ನಂ) 15. ಇಂದ್ರಿಯ. ಅಕ್ಷಾಂತಿ ವ್ಯಾಪ್ನೋತಿ ವಿಷಯಾನ್ — ಅಕ್ಷ "ಅಕ್ಷ" (೩-೧-೧೩೪)। 16. ಸೌವರ್ಚಲವಣ. 17. ನೇತ್ರ, ಕಣ್ಣು. "ಸರ್ವೇ ತೇನಿಮಿಪೇರಕ್ಷೇಸ್ತಮನ್ಯುತಚೇತಸ:" ರಾಮಾಂ। (ಅಕ್ಷಿಶಬ್ದವು ಸಮಾಸಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ ಜಲಜಾಕ್ಷ:, ಪುಂಡರೀಕಾಕ್ಷ: ಎಂದಾಗುವುದು). 18. ರಸಾಂಜನ. "ಅಕ್ಷೋ ರಥಸ್ಯಾವಯವೇ ವ್ಯವಹಾರೇ ವಿಭೀತಕೇ। ಪಾಶಕೇ ಶಕಟೇ ಕರ್ಷೇ ಜ್ಞಾನೇ ಚಾತ್ಮನಿ ರಾವಣೌ। ಅಕ್ಷಂ ಸೌವರ್ಚಲೇ ತುತ್ಯೇ ಹೃಷೀಕೇ" ಹೇಮಂ। "ಅಕ್ಷೋ ಜ್ಞಾತಾರ್ಥಶಕಟವ್ಯವಹಾರೇಷು ಪಾಶಕೇ। ಕ್ಷದ್ರಾಧೇಂದ್ರಾಕ್ಷಯೋ: ಸರ್ಪೇ ವಿಭೀತಕತರಾವಪಿ। ಚಕ್ರೇ ಕರ್ಷೇ ಪುಮಾನ್ ಕಶೀಶಂ ತುತ್ಯೇ ಸೌವರ್ಚಲೇಂದ್ರಿಯೇ" ಮೇದಿಂ। "ನ್ಯಾಯೋಷ್ಠೋ ವ್ಯವಹಾರೋಽಥ" ವೈಜಂ।

ಅಕ್ಷಕ ಅಕ್ಷಕ (ಪುಂ) ತಿನಿಶವೃಕ್ಷ, ಹುಲಿಗೆಮರ. ಅಕ್ಷ ಇವ ಕಾಯತಿ — ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩)।

ಅಕ್ಷಕೀಲ ಅಕ್ಷಕೀಲ (ಪುಂ) ಬಂಡಿಯ ಕಡಾಣ. ಅಕ್ಷಸ್ಯ ಕೀಲ:। "ಅಕ್ಷಕೀಲೇ ತ್ವಣಿ:" ವೈಜಂ।

ಅಕ್ಷಕೂಟ ಅಕ್ಷಕೂಟ (ಪುಂ) ಕಣ್ಣುಗುಡ್ಡೆಯೊಳಗಿನ ಬೊಂಬೆ, ಪಾಪೆ.

ಅಕ್ಷಗ್ಲಹ ಅಕ್ಷಗ್ಲಹ (ಪುಂ) ಜೂಜಿನ ಪಂದ್ಯದ ವಸ್ತು. ಅಕ್ಷಸ್ಯ ಗ್ಲಹ:।

ಅಕ್ಷಜ ಅಕ್ಷಜ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ನರ್ತನ, ಕುಣಿತ. "ತಾಂಡವೋಸ್ತ್ರೀ ನೃತಲಾಸ್ಯನಟನಾಕ್ಷಜನತನಮ್" ವೈಜಂ। (ನಂ) 3. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಜ್ಞಾನ. ಅಕ್ಷಾತ್ ಇಂದ್ರಿಯಮನ್ನಿಕರ್ಷಾತ್ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭಾವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೧೮)। 4. ಸಿಡಿಲು, ವಜ್ರಾಯುಧ. 5. ವಜ್ರ.

ಅಕ್ಷತ ಅಕ್ಷತ (ಪುಂ) 1. ಯವಧಾನ್ಯ. (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 2. ಅರಿತಿನ ಹಚ್ಚಿದ ಅಕ್ಕಿ, ತೋಫನಾಕ್ಷತೆ. 3. ಅಕ್ಷತೆ, ಮುರುಕಿಲ್ಲದ ಅಕ್ಕಿ. 4. ಲಾಜ, ಪುರಿ, ಅರಳು. ಅಕ್ಷ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। ನ ಅಕ್ಷತಂ ಯೇಷಾಂ ತೇ। "ಸುದಕ್ಷಿಣಾ ಸಾಕ್ಷತಪಾತ್ರಹಸ್ತಾ" ರಘುಂ ೨-೨೧। "ಲಾಜಾ: ಪುಂಭೂಮಿಚಾಕ್ಷತಾ:" ಅಮಂ। (ಸ್ತ್ರೀನಂ) ವೈಜಂ। (ನಂ) 5. ಧಾನ್ಯ, ಕಾಳು. 6. ಅಕ್ಕಿ. "ಕ್ಷುಚಕ್ಷತಂ ತಣ್ಡುಲೇ ಧಾನ್ಯೇ ನನಾ ಲಾಜೇಷು ನಾ ಯವೇ" ವೈಜಂ। 7. ಪಂಡ, ನಪುಂಸಕ. (ವಿಂ) 8. ಗಾಯಹೊಂದದಿರುವ, ವ್ರಣವಿಲ್ಲದ. ನ ಅಕ್ಷತಮ್। "ವಿನಾಶ್ಯ ರಕ್ಷ್ಯಂ ಅಕ್ಷತಮಕ್ಷತೇನ" ರಘುಂ ೨-೪೬। 9. ಒಡೆಯದಿರುವ, ಮುರಿಯದಿರುವ, ಪೂರ್ಣವಾದ. "ಅಕ್ಷತಂ ಚಾಪಿ ಲಾಜೇಷು ತೃತೀಯಪ್ರಕೃತಾವಪಿ। ಅಹಿಸಿತೇಽಪಿ ಚ" ವಿಶ್ವಂ।



ಅಕ್ಷತಾ ಅಕ್ಷತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕನ್ಯೆ, ಪುಷ್ಪವತಿಯಾಗದ ಹುಡುಗಿ, ಪರಿಶುದ್ಧಳಾದವಳು, ಅನುಭವಿಸಲ್ಪಡದವಳು.

ಅಕ್ಷತಯೋನಿ ಅಕ್ಷತಯೋನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕನ್ಯೆ, ಪುಷ್ಪವತಿಯಾಗದ ಹುಡುಗಿ, ಅನುಭವಿಸಲ್ಪಡದವಳು, ಪರಿಶುದ್ಧಳಾದವಳು. "ಸಾ ವೇದಕ್ಷತಯೋನಿ: ಸ್ಯಾತ್" ಮನುಂ ೯-೧೭೬.

ಅಕ್ಷತ್ರ ಅಕ್ಷತ್ರ (ನಂ) 1. ಮಸ್ತಕ, ತಲೆ. "ತೃಣಿಷ್ಣಿ ಶೀರ್ಷಮಕ್ಷತ್ರಮ್" ವೇಜಂ. (ವಿಂ) 2. ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಲ್ಲದ, ರಾಜನಿಲ್ಲದ (ದೇಶ). ನಾಸ್ತಿ ಕ್ಷತ್ರಂ ಯತ್ರ. "ನಾಬ್ರಹ್ಮ ಕ್ಷತ್ರಮುಚ್ಯತೇ ನಾಕ್ಷತ್ರಂ ಬ್ರಹ್ಮ ವಧಂತೆ" ಮನುಂ ೯-೩೨೨.

ಅಕ್ಷದರ್ಶಕ ಅಕ್ಷದರ್ಶಕ (ಪುಂ) 1. ನ್ಯಾಯಾಧಿಪತಿ, ನ್ಯವಹಾರದ ತೀರ್ಪುಗಾರ. ಅಕ್ಷಾಣಾಂ ಕೃಣಾದಾನಾದಿ ವ್ಯವಹಾರಾಣಾಂ ದರ್ಶಕ: - ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩). "ದ್ರಷ್ಟಿರ್ ವ್ಯವಹಾರಾಣಾಂ ಪ್ರಾಡ್ವಿವಾಕೋಷದರ್ಶಕ:" ವೇಜಂ. (ವಿಂ) 2. ಆಟದ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕ.

ಅಕ್ಷದೃಶ್ ಅಕ್ಷದೃಶ್ (ಪುಂ) 1. ನ್ಯಾಯಾಧಿಪತಿ. (ವಿಂ) 2. ಆಟದ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕ. ಅಕ್ಷಾನ್ ಪಶ್ಯತಿ - ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬).

ಅಕ್ಷದೇವಿನ್ ಅಕ್ಷದೇವಿನ್ (ಪುಂ) ಆಟಗಾರ, ಜೂಜುಗಾರ. ಅಕ್ಷೇದೇವ್ಯತಿ - ದಿವು (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) "ಗಿರಿ:" (೩-೨-೭೮).

ಅಕ್ಷದ್ಯು ಅಕ್ಷದ್ಯು (ಪುಂ) ಆಟಗಾರ, ಜೂಜುಗಾರ. ಅಕ್ಷೇದೇವ್ಯತಿ - ದಿವು (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬).

ಅಕ್ಷದ್ಯುತ ಅಕ್ಷದ್ಯುತ (ಪುಂ) 1. ಆಟಗಾರ, ಜೂಜುಗಾರ. ಅಕ್ಷೇದ್ಯುತಂ ಯಸ್ಯ. (ನಂ) 2. ಪಗಡೆಯಾಟ, ಜೂಜು. ಅಕ್ಷೇದ್ಯುತಮ್.

ಅಕ್ಷಧರ ಅಕ್ಷಧರ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಧರತಿ - ಧೃಜ್ (ಧಾರಣ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪). ಅಕ್ಷಸ್ಯ ಧರ: 2. ಚಕ್ರ. 3. ಕಾರಿಗಿಡ. (ವಿಂ) 4. ಚಕ್ರವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ.

ಅಕ್ಷಧುರ್ ಅಕ್ಷಧುರ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಂಡಿಯ ನೋಗ. ಅಕ್ಷಸ್ಯ ಧು:.

ಅಕ್ಷಧೃತ ಅಕ್ಷಧೃತ (ಪುಂ) ಪಗಡೆಯಾಟದಲ್ಲಿ ಮೋಸಗಾರ. ಅಕ್ಷೇ ಧೃತ:.

ಅಕ್ಷಧೃತಲ ಅಕ್ಷಧೃತಲ (ಪುಂ) ಗಾಡಿಯ ಭಾರವನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವ ಎತ್ತು. ಅಕ್ಷಸ್ಯ ಶಕಟಸ್ಯ ಧೃತಿ ಭಾರಂ ಲಾತಿ - ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩).

ಅಕ್ಷಪರಿ ಅಕ್ಷಪರಿ (ಅವ್ಯಂ) ಪಗಡೆಯಾಟದಲ್ಲಿ ಸೋಲುವಂತಾಗುವಂತೆ ದಾಳ ಬೀಳುವುದು. ಅಕ್ಷೇಣ ವಿಪರೀತಂ ವೃತ್ತಮ್.

ಅಕ್ಷಪಾಟಕ ಅಕ್ಷಪಾಟಕ (ಪುಂ) ನ್ಯವಹಾರದಲ್ಲಿ ನಿಪುಣ, ನ್ಯಾಯಾಧಿಪತಿ, ತೀರ್ಪುಗಾರ. ಅಕ್ಷೇ ಪಾಟಯತಿ - ಪಟ (ಭಾಪಾರ್ಥ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩).

ಅಕ್ಷಪಾದ ಅಕ್ಷಪಾದ (ಪುಂ) ಗೌತಮಮುನಿ, ನ್ಯಾಯದರ್ಶನ ಪ್ರವರ್ತಕ. ಅಕ್ಷೇ ನೇತ್ರಂ ದರ್ಶನಸಾಧನತಯಾ ಜಾತ: ಪಾದೋಽಸ್ಯ. [ಗೌತಮಮುನಿಯು, ತನ್ನ ಮತವನ್ನು ದೂಷಿಸಿದ ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯನ್ನು ಕಣ್ಣಿನಿಂದ ನೋಡದಂತೆ ಕೂಡದೆಂದು ಕಾಲಿನಲ್ಲಿ ನೇತ್ರವನ್ನು ತೆರೆದು ಅವರನ್ನು ನೋಡಿದುದಾಗಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಯುಂಟು.]

ಅಕ್ಷಭಾರ ಅಕ್ಷಭಾರ (ಪುಂ) ಬಂಡಿಯ ಹೊರೆ.

ಅಕ್ಷಮ ಅಕ್ಷಮ (ವಿಂ) 1. ಅಸಮರ್ಥ, ಅಶಕ್ತ. ನ ಕ್ಷಮತೇ - ಕ್ಷಮಾ (ಸಹನೆ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪). 2. ಸಹನೆಯಿಲ್ಲದವನು. ನ ಕ್ಷಮಾ ಯಸ್ಯ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) - ಮಾ - ಮಾ 3. ಅಸಹನೆ, ಕೋಪ. ಕ್ಷಮಾ ಭಾವೇ "ಅಕ್" (೩-೩-೧೦೪). ನ ಕ್ಷಮಾ.

ಅಕ್ಷಮಾಲಾ ಅಕ್ಷಮಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜಪಮಾಲಿಕೆ, ರುದ್ರಾಕ್ಷಮಾಲೆ. ಅಕ್ಷಾಣಾಂ ಮಾಲಾ. "ವಿಭಾಂತಮಚ್ಚ-ಸ್ಫಟಿಕಾಕ್ಷಮಾಲಯಾ" ಮಾಘಂ ೧-೯. 2. ವಸಿಷ್ಠ ಮಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿ, ಅರುಂಧತೀದೇವಿ. ಅಕ್ಷಸ್ಯ ಸಪ್ತಾಪಿ ನಕ್ಷತ್ರಚಕ್ರಸ್ಯ ಮಾಲೇವ ಭೂಷಣತ್ವಾತ್.

ಅಕ್ಷಯ ಅಕ್ಷಯ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. 2. ಅಕ್ಷಯ ಸಂವತ್ಸರ. (ವಿಂ) 3. ಮನೆಯಿಲ್ಲದವನು, ಸಂನ್ಯಾಸಿ. 4. ದರಿದ್ರ. ಕ್ಷಯೋ ವಾಸ: ನಾಸ್ತಸ್ಯ. 5. ನಾಶರಹಿತ, ಹಾಳಾಗದ, ಶಾಶ್ವತ. "ಸದೋಪಯೋಗೇಽಪಿ ಗುರುಸ್ತವಮಕ್ಷಯ:" ಮಾಘಂ ೧-೨೮.

ಅಕ್ಷಯಾ ಅಕ್ಷಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಣ್ಯಪ್ರದವಾದ ತಿಥಿ. "ಅಮಾ ವೈ ಸೋಮವಾರೆಣ ರವಿವಾರೆಣ ಸಪ್ತಮಿ. ಚತುರ್ಥಿ ಭೋಮವಾರೆಣ ಅಕ್ಷಯಾದಪಿ ಚಾಕ್ಷಯಾ" ಭವಿಷ್ಯಂ.

ಅಕ್ಷಯತೃತೀಯಾ ಅಕ್ಷಯತೃತೀಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೈಶಾಖಶುಕ್ಲ ತದಿಗೈ. "ವೈಶಾಖಸ್ಯ ಸಿತೇ ಪಕ್ಷೇ ತೃತೀಯಾಕ್ಷಯಸಂಜಿತಾ" ಸ್ಕಾಂದಂ.

ಅಕ್ಷಯಲೋಕ ಅಕ್ಷಯಲೋಕ (ಪುಂ) ಶಾಶ್ವತಲೋಕ, ಸತ್ಯಲೋಕ.

ಅಕ್ಷಯ್ಯ ಅಕ್ಷಯ್ಯ (ವಿಂ) 1. ನಾಶರಹಿತ, ಶಾಶ್ವತ. 2. ನಾಶಪಡಿಸಲಶಕ್ಯವಾದ. ಕ್ಷೇತುಂ ಶಕ್ಯಂ ಅಕ್ಷಯ್ಯಮ್ -



ನ ಕ್ಷಯ್ಯಮ್ । “ತಪಃಪಙ್ಕ್ತಾಭಾಗಮಕ್ಷಯ್ಯಂ ದದತ್ಯಾರಣ್ಯಕಾ ಹಿ ನಃ”  
ಶಾಕುಂ ೨-೧೩ ।

ಅಕ್ಷರ ಅಕ್ಷರ (ಪುಂ) 1. ಪರಬ್ರಹ್ಮ, ಪರಮಾತ್ಮ,  
ನಕ್ಷರತಿ - ಕ್ಷರ (ಚಲನೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ಕ್ಷರಃ  
ಸರ್ವಾಣಿ ಭೂತಾನಿ ಕೂಟಸ್ಯೋಕ್ಷರ ಉಚ್ಯತೇ” ಗೀತಾ ೧೫-೧೬ ।  
2. ವಿಷ್ಣು. 3. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. 4. ಬ್ರಹ್ಮ,  
ಚತುರ್ಮುಖ. (ನಂ) 5. ಪ್ರಣವ, ಒಂಕಾರ.  
6. ಧರ್ಮ. 7. ಪ್ರಕೃತಿ. 8. ತಪಸ್ಸು. 9. ಯಾಗ.  
10. ಅಕಾರಾದಿವರ್ಣ. “ಪ್ರಯತ್ನಲಿಖಿತಾನ್ಯಪಿ ಶ್ರೋತ್ರಿಯಾ-  
ಕ್ಷರಾಣ್ಯಸ್ಫುಟಾನ್ಯೇವ ಭವಂತಿ” ಮುಕ್ತಾಂ ೧ । “ಯದೇಕಮಕ್ಷರಂ  
ಬ್ರಹ್ಮ” ಐದಂ ೧-೪೧ । “ಅಕ್ಷರಾಣಾಮಕಾರೋಽಸ್ಮಿ” ಗೀತಾ  
೧೦-೩೩ । “ಅಹೋ ಸಂದೀಪನಾನ್ಯಕ್ಷರಾಣಿ” ತಂ ರಾಂ ೪ ।  
11. ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ, ಅಪವರ್ಗ. ಅಕ್ಷರಂ ಪ್ರಣವೇ ಧರ್ಮೋ  
ಪ್ರಕೃತೌ ತಪಸಿ ಕೃತೌ । ವರ್ಣೋ ಮೋಕ್ಷೇ ಚ ನಾತ್ವೇಪ ಶಿವವಿಷ್ಣು-  
ವಿರಿಚಿಪು” ನಾನಾಶ್ವರಂ । 12. ಗಗನ, ಅಕಾಶ.  
13. ಅಪಾಮಾರ್ಗ, ಉತ್ತರಣಿಗಡ. 14. ಮೂಲ  
ಕಾರಣ. “ಅಕ್ಷರಂ ಸ್ವಾದಪಾಮಾರ್ಗೋ ಪರಮಬ್ರಹ್ಮವರ್ಣಯೋಃ । ಗಗನೇ  
ಧರ್ಮತಪಸೋರಧವೇ ಮೂಲಕಾರಣೇ” ಹೇಮಂ ।

ಅಕ್ಷರಚಣ ಅಕ್ಷರಚಣ (ಪುಂ) ಲಿಪಿಕಾರ, ಗುಮಾಸ್ತ,  
ಬರವಣಿಗೆಯಲ್ಲಿ ನಿಪುಣ. ಅಕ್ಷರೇಣ ವित्तः - ಅಕ್ಷರ  
“ಚಣ್” (೪-೨-೪೬) ।

ಅಕ್ಷರಚುಚ್ಚು ಅಕ್ಷರಚುಚುಂಚು (ಪುಂ) ಲಿಪಿಕಾರ,  
ಗುಮಾಸ್ತ, ಬರವಣಿಗೆಯಲ್ಲಿ ನಿಪುಣ. ಅಕ್ಷರೇಣ ವित्तः -  
ಅಕ್ಷರ “ಚುಚು” (೪-೨-೪೬) ।

ಅಕ್ಷರಚ್ಯುತಕ ಅಕ್ಷರಚ್ಯುತಕ (ನಂ) ಅಕ್ಷರವನ್ನು  
ತೆಗೆದುಹಾಕುವುದರಿಂದ ಬೇರೆ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡ  
ತಕ್ಕ ವಾಕ್ಯ. “ದೇವ ಯೋಷ್ಮಾಕಸೇನಾಃ ಕರಣ್ಯಃ  
ಪ್ರಸರತ್ಯಸೌ” ಇಲ್ಲಿ “ಕ” ವನ್ನು ತೆಗೆದರೂ ರಣ್ಯಃ ಎಂಬ  
ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ವಾಕ್ಯಾರ್ಥವು ಸಂಗತವಾಗಿರು  
ವುದು.

ಅಕ್ಷರಚ್ಛಂದಸ್ ಅಕ್ಷರಚ್ಛಂದಸ್ (ನಂ) ವರ್ಣವೃತ್ತ,  
ಅಕ್ಷರಸಂಖ್ಯೆಯಿಂದ ರಚಿತವಾದ ವೃತ್ತ.

ಅಕ್ಷರಜನನಿ ಅಕ್ಷರಜನನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲೇಖನಿ.

ಅಕ್ಷರಜೀವಿನ್ ಅಕ್ಷರಜೀವಿನ್ (ಪುಂ) ಬರವಣಿಗೆಯಿಂದ  
ಜೀವಿಸುವವನು. ಅಕ್ಷರೇಣ ತಲ್ಲೇಖನೇನ ಜೀವತಿ - ಜೀವ  
(ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) “ಗಿಣಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ  
“ಜೀವಿ” । -ಜೀವಿನಿ -ಜೀವಿನೀ.

ಅಕ್ಷರತುಲಿಕಾ ಅಕ್ಷರತುಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲೇಖನಿ.

ಅಕ್ಷರಮುಖ ಅಕ್ಷರಮುಖ (ಪುಂ) 1. ವಿದ್ಯಾವಂತ, ಪಂಡಿತ,  
ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ. ಅಕ್ಷರಾಣಿ ಮುಖೇ ಯಸ್ಯ । (ನಂ) 2. “ಅ”  
ವರ್ಣ, ವರ್ಣಮಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ಅಕ್ಷರ.

ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸ ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸ (ಪುಂ) ಲೇಖನ, ಬರ  
ವಣಿಗೆ.

ಅಕ್ಷರಶಸ್ ಅಕ್ಷರಶಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಅಕ್ಷ  
ರಕ್ಕೂ. ಅಕ್ಷರಮಕ್ಷರಮ್ “ಶಸ್” (೪-೪-೪೩) ।

ಅಕ್ಷರಶಿಕ್ಷಾ ಅಕ್ಷರಶಿಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಕ್ಷರಶಾಸ್ತ್ರ.  
2. ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನ.

ಅಕ್ಷರಸಮಾನ್ಯಾಯ ಅಕ್ಷರಸಮಾನ್ಯಾಯ (ಪುಂ) ವ್ಯಾಕ  
ರಣಶಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೆ ಮೂಲಭೂತವಾದ ಹದಿನಾಲ್ಕು ಸೂತ್ರ  
ಗಳು. (ಚತುರ್ದಶಸೂತ್ರೀ) । “ಅಇಋಌ ಋಲೃಕ್ ಏಓಙ್ ಐಔಞ್  
ಹ್ರಸ್ರವತ್ ಲಙ್ ಋಮಙ್ಗನಮ್ ಜಞ್ ಷಙ್ ಘಙ್ ಙಙ್  
ಖಙ್ ಘಙ್ ಘಙ್ ಘಙ್ ಕಪ್ಯ್ ಷಪಸರ್ ಹಲ್” ಈ ಹದಿನಾಲ್ಕು  
ಸೂತ್ರಗಳೂ ಪಾಣಿನಿಮಹರ್ಷಿಯ ತಪಸ್ವಿನಿಂದ  
ಸಂತುಷ್ಟನಾದ ಪರಮೇಶ್ವರನು ನರ್ತನದ ಕೊನೆ  
ಯಲ್ಲಿ ಬಾರಿಸಿದ ಥಕ್ಕೆಯ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ಲಭ್ಯ  
ವಾದುವು.

ಅಕ್ಷರಸಂಸ್ಥಾನ ಅಕ್ಷರಸಂಸ್ಥಾನ (ನಂ) ಬರವಣಿಗೆಯ  
ಕ್ರಮ.

ಅಕ್ಷರಾಜ ಅಕ್ಷರಾಜ (ಪುಂ) ಜೂಜಿನಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತನಾದ  
ವನು, ಜೂಜುಕೋರ.

ಅಕ್ಷರಾಭ್ಯಾಸ ಅಕ್ಷರಾಭ್ಯಾಸ (ಪುಂ) ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಗ್ರಹಿಸು  
ವುದು, ಅಕ್ಷರಸ್ವೀಕಾರ, ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಪ್ರಪ್ರಥಮವಾಗಿ  
ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಕಲಿಸುವ ಒಂದು ಕರ್ಮ. ಅಕ್ಷರಾಭ್ಯಾಸ  
ವನ್ನು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಐದನೆಯ ವರ್ಷದಲ್ಲಿ ಮಾಡಿಸಬೇಕು.  
ಇದಕ್ಕೆ ಉತ್ತರಾಯಣವೂ ದ್ವಿತೀಯಾ, ತೃತೀಯಾ,  
ಪಂಚಮಿ, ಸಪ್ತಮಿ, ದಶಮಿ, ಏಕಾದಶೀ,  
ದ್ವಾದಶೀ, ತ್ರಯೋದಶೀ ಮತ್ತು ಪೂರ್ಣಿಮೆಗಳೂ  
ಸೋಮ, ಬುಧ, ಗುರು ಮತ್ತು ಶುಕ್ರವಾರಗಳೂ  
ಅಶ್ವಿನಿ, ಪುನರ್ವಸು, ಪುಷ್ಯ, ಹಸ್ತ, ಚಿತ್ತ, ಸ್ವಾತಿ,  
ಅನೂರಾಧಾ, ಶ್ರವಣ ಮತ್ತು ರೇವತಿ ನಕ್ಷತ್ರಗಳೂ  
ಪ್ರಶಸ್ತವು. ಗುರು ಶುಕ್ರರು ಅಸ್ತರಾಗದಿರುವಾಗಲೂ  
ಸೂರ್ಯನು ಚರ ಅಥವಾ ಸ್ಥಿರರಾಶಿಯಲ್ಲಿರುವಾಗಲೂ  
ಅಷ್ಟಮಶುದ್ಧಿಯಿರುವ ಚರಲಗ್ನದಲ್ಲೂ ಅಕ್ಷರಾಭ್ಯಾಸ  
ವನ್ನು ನಡೆಸಬೇಕು.

ಅಕ್ಷರೀ ಅಕ್ಷರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವರ್ಷಮತು, ಮಳೆಗಾಲ.

ಅಕ್ಷರೇ ಗಗನಾಭಿಗಂ - ಅಕ್ಷರ (ವ್ಯಾಪ್ತಿಯ) “ಸರಃ” (ತಂ ೩-೭೦)



ಅಕ್ಷವತಿ ಅಕ್ಷವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದ್ಯುತ, ಜೂಜು. ಅಕ್ಷಾ: ಸಾಧನತ್ವೇನ ಸನ್ಯತ್ರ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪)। "ಛೂತೋ-ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್‌ಅಕ್ಷವತಿ ತದ್ವೇದಾ: ಪಶ್ಚಿಮಾದಯ:" ವೈಜಂ।

ಅಕ್ಷವಾಟ ಅಕ್ಷವಾಟಿ (ಪ್ರಂ) 1. ಜೂಜಿನಮನೆ. 2. ಪಗಡೆಯಹಾಸು, ಪಗಡೆಯಾಟದ ಹಲಗೆ. ಅಕ್ಷಾಣಾಂ ವಾಟ:। 3. ಯುದ್ಧರಂಗ, ಮಲ್ಲಭೂಮಿ, ಕುಸ್ತಿಯಾಡುವ ಜಾಗ.

ಅಕ್ಷವಿದ್ ಅಕ್ಷವಿದ್ (ವಿಂ) 1. ಆಟವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವವನು. 2. ವ್ಯವಹಾರವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವವನು, ನ್ಯಾಯದಲ್ಲಿ ನಿಪುಣನಾದವನು. ಅಕ್ಷಾಂ ವೇತ್ತಿ-ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬)।

ಅಕ್ಷವಿದ್ಯಾ ಅಕ್ಷವಿದ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೂಜಿನವಿದ್ಯೆ, ದ್ಯುತ ಕಲೆ.

ಅಕ್ಷವೃತ್ತ ಅಕ್ಷವೃತ್ತ (ಪ್ರಂ) ಆಟದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದವನು. ಅಕ್ಷೇ ವೃತ್ತ:।

ಅಕ್ಷಶೌಂಡ ಅಕ್ಷಶೌಂಡ (ಪ್ರಂ) ದ್ಯುತದಲ್ಲಿ ನಿಪುಣನಾದವನು. ಅಕ್ಷೇಷು ಶೌಂಡ:।

ಅಕ್ಷಸೂತ್ರ ಅಕ್ಷಸೂತ್ರ (ನಂ) 1. ಜಪಮಾಲೆ. 2. ಜಪಮಾಲೆಯನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ ದಾರ. "ಕೃತೋಕ್ಷಸೂತ್ರಪ್ರಣಯಿ ತಯಾ ಕರ:" ಕುಮಾಂ ೪-೧೧।

ಅಕ್ಷಾಗ್ರಕೀಲಕ ಅಕ್ಷಾಗ್ರಕೀಲಕ (ನಂ) ಬಂಡಿಯ ಕಡಾಣೆ, ಚಕ್ರದ ತಡೆಗಾಗಿ ಹಾಕುವ ಮೊಳೆ. ಅಕ್ಷಸ್ಯ ಅಗ್ರೇ ಅಂತೇ ಕೀಲಕ:।

ಅಕ್ಷಾನಹ್ ಅಕ್ಷಾನಹ್ (ನಂ) ಬಂಡಿಯ ಅಚ್ಚುಮರ.

ಅಕ್ಷಾಂತಿ ಅಕ್ಷಾಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಈರ್ಪೆ, ಅಸೂಯೆ, ಅಸಹಿಸ್ಥತೆ, ಹೊಟ್ಟೆಕೆಚ್ಚು. ನ ಅಕ್ಷಾಂತಿ:। (ವಿಂ) 2. ಸಹನೆಯಿಲ್ಲದವನು. ನ ಅಕ್ಷಾಂತಿ: ಯಸ್ಯ।

ಅಕ್ಷಾರಲವಣ ಅಕ್ಷಾರಲವಣ (ನಂ) ಸಮುದ್ರದ ಉಪ್ಪು, ಅಕ್ಕಿತ್ರಿಮವಾದ ಉಪ್ಪು. ಅಕ್ಷಾರಂ ಋಷರಮೃತ್ತಿ-ಕಯಾ ನಿವೃತ್ತಂ ಲವಣಮ್। ನ ಅಕ್ಷಾರಲವಣಮ್।

ಅಕ್ಷಾವಪನ ಅಕ್ಷಾವಪನ (ನಂ) ಪಗಡೆಯಹಾಸು.

ಅಕ್ಷಾವಾಪ ಅಕ್ಷಾವಾಪ (ಪ್ರಂ) ಪಗಡೆಯಾಡುವವನು, ಜೂಜುಗಾರ. ಅಕ್ಷಾನ್ ಆವಪತಿ-ಆ+ಙ್ ವಪ್ (ವಿಜ-ಸಂತಾನೇ) "ಅಪ್" (೩-೨-೧)।

ಅಕ್ಷಿ ಅಕ್ಷಿ (ನಂ) 1. ನೇತ್ರ, ಕಣ್ಣು. ಅಕ್ಷತೇ ವಿಪಯಾನ್-ಅಕ್ಷು (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ವಿಶ್ವ:" (೩ಂ ೩-೧೫೬)। ಬಹುವ್ರೀಹಿ ಸಮಾಸಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ "ಪ್" (೪-೪-೧೧೩)। "ಅಕ್ಷ"

ಎಂದಾಗುವುದು. ಅಕ್ಷಾಕ್ಷ: ಪುಂಡರೀಕಾಕ್ಷ: ಇತ್ಯಾದಿ.

2. ಎರಡು ಸಂಖ್ಯೆ.

ಅಕ್ಷಿಕಮ್ ಅಕ್ಷಿಕಂಪ (ಪ್ರಂ) ನೇತ್ರಸ್ಪರ್ಶ, ಕಣ್ಣಿನ ರೆಪ್ಪೆ ಹಾರುವುದು (ಚಲಿಸುವುದು).

ಅಕ್ಷಿಕೂಟ ಅಕ್ಷಿಕೂಟ (ಪ್ರಂ) 1. ಕಣ್ಣುಗುಡ್ಡೆ. 2. ಕಣ್ಣುಗುಡ್ಡೆಯೊಳಗಿನ ಬೊಂಬೆ, ವಾಪೆ.

ಅಕ್ಷಿಗತ ಅಕ್ಷಿಗತ (ಪ್ರಂ) 1. ವೈರಿ, ಶತ್ರು. ಅಕ್ಷಿಗತ:। "ದ್ವೇಷಸ್ತ್ವಕ್ಷಿಗತೋನಿಷ್ಠ:" ವೈಜಂ। (ವಿಂ) 2. ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ. "ನ ವಿಭಾವಯತ್ಯಕ್ಷಿಗತಾಮಪಿ" ಮಾಘಂ ೧-೮೧।

ಅಕ್ಷಿಬ್ ಅಕ್ಷಿಬ್ (ಪ್ರಂ) 1. ನುಗ್ಗೆಮರ. (ನಂ) 2. ಸಮುದ್ರದ ಉಪ್ಪು. (ವಿಂ) 3. ಮದವಿಲ್ಲದ. "ಅಕ್ಷಿಬ್ ವಶಿರೇ ಶಿಷೌ ನಾಸ್ಮತೇಽಭಿವೇಯವತ್" ಮೇದಿಂ।

ಅಕ್ಷುಣ್ಣ ಅಕ್ಷುಣ್ಣ (ವಿಂ) 1. ಒಡೆಯದಿರುವ. 2. ಜಯಿಸಲ್ಪಡದ. ನ ಅಕ್ಷುಣ್ಣ:। 3. ಪಳಗದಿರುವ, ಸವೆಯದಿರುವ, ಅಭ್ಯಾಸವಾಗದ. "ಅಭೀಕ್ಷಣಮಕ್ಷುಣ್ಣ-ತಯಾತಿತ್ಯುಗಮಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೩೨।

ಅಕ್ಷುಧ್ರ ಅಕ್ಷುಧ್ರ (ವಿಂ) 1. ಸಣ್ಣದಲ್ಲದ, ದೊಡ್ಡದಾದ. 2. ನೀಚವಲ್ಲದ, ಗಂಭೀರವಾದ. "ಅಕ್ಷುಧ್ರಗತಿ-ಶಾಲಿನ್ಯೋ:" ಯಾದಂ ೧-೩೨।

ಅಕ್ಷೇತ್ರ ಅಕ್ಷೇತ್ರ (ನಂ) 1. ಉಪಯೋಗವಿಲ್ಲದ ಭೂಮಿ. 2. ಅಯೋಗ್ಯವಾದ ಭೂಮಿ. 3. ಅಯೋಗ್ಯವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ. 4. ದಾನಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯನಲ್ಲದ ಮನುಷ್ಯ. ಅಪ್ರಶಸ್ತಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್।

ಅಕ್ಷೇತ್ರಿನ್ ಅಕ್ಷೇತ್ರಿನ್ (ಪ್ರಂ) ಭೂಮಿಯಿಲ್ಲದವನು. ನ ಕ್ಷೇತ್ರಿಃ।

ಅಕ್ಷೋಟ ಅಕ್ಷೋಟಿ (ಪ್ರಂ) ಬೆಟ್ಟಗೋಣೆಮರ. ಅಕ್ಷಸ್ಯೇ-ವೋಟಾ: ಪರ್ಣಾನ್ಯಸ್ಯ।

ಅಕ್ಷೋಭ ಅಕ್ಷೋಭ (ವಿಂ) ಉದ್ವೇಗವಿಲ್ಲದ, ಕಳವಳವಿಲ್ಲದ, ಗಾಬರಿಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಕ್ಷೋಭೋ ಯಸ್ಯ।

ಅಕ್ಷೋಮ್ಯ ಅಕ್ಷೋಮ್ಯ (ಪ್ರಂ) 1. ಅಕ್ಷೋಭ್ಯಮುನಿ. 2. ಬುದ್ಧದೇವ. (ವಿಂ) 3. ಪ್ರಶಾಂತ, ಕದಲಿಸಲು ಅಶಕ್ಯ, ತಿರಸ್ಕರಿಸಲು ಅಸಾಧ್ಯ. ಕ್ಷೋಮ್ಯತೇ ವಿಚಾಲ್ಯತೇ-ಕ್ಷುಮ (ಸಂಚಲನೇ)+ ಣಿಕ್ "ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)। ನ ಕ್ಷೋಮ್ಯ:। "ಅಕ್ಷೋಮ್ಯ: ಸ ನವೋಪ್ಯಾಸೀದ್‌ಢಮೂಲ ಇವ ಡ್ರುಮ:" ರಘುಂ ೧೭-೪೪।



ಮಖೋಹಿಣಿ ಅಕ್ಷೌಹಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 21,870 ರಥಗಳು, 21,870 ಆನೆಗಳು, 65,610 ಕುದುರೆಗಳು ಮತ್ತು 1,09,350 ಕಾಲಾಳುಗಳುಳ್ಳ ಸೇನೆ. ಹತ್ತು ಅನೀಕಿನೀ ಸೇನೆ ಸೇರಿದರೆ ಒಂದು ಅಕ್ಷೌಹಿಣೀ ಸೈನ್ಯ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಅನೀಕಿನಿ" ಪದವನ್ನು ನೋಡಿ.] ಅಖಾಗಾಮೂಹಿನಿ — ಒಹ: ಸಮೂಹ: ಸೋಷ್ಯಾಮಸ್ತಿ.

ಅಕ್ಷಣ ಅಕ್ಷ (ನಂ) 1. ಕಾಲ, ಸಮಯ. ಅನುತೇ ವ್ಯಾಪ್ನೋತಿ — ಅಕ್ಷ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ವನ್:" (ತಂ-೩-೧೭) । (ವಿಂ) 2. ಅಖಂಡವಾದ, ಒಡೆಯದಿರುವ.

ಅಖಂಡ ಅಖಂಡ (ವಿಂ) 1. ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ. ನ ಖಂಡಯತೆ — ಖಂಡಿ (ಭೇದನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೯) । "ಅಖಂಡಂ ಪುಣ್ಯಾನಾಂ ಫಲಮಿವ ಚ ತದ್ರೂಪಮನಘಮ್" ಶಾಕುಂ ೨-೧೦ । (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 2. ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ, ಸತತವಾಗಿ. "ಅಖಂಡಮಾಖಂಡಲತುಲ್ಯವಾಮಭಿ:" ಕಿರಾಂ ೧-೨೯ ।

ಅಖಂಡಿತ ಅಖಂಡಿತ (ವಿಂ) 1. ಒಡೆಯಲ್ಪಡದಿರುವ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ. ನ ಖಂಡಿತಮ್ । 2. ಅನುಸ್ಮೃತ, ಸತತವಾದ. "ಅಖಂಡಿತಂ ಪ್ರೇಮ ಲಭಸ್ವ ಪತ್ಯು:" ಕುರಾಂ ೭-೨೮ ।

ಅಖಾತ ಅಖಾತ (ಪುಂ) 1. ಅಕೃತ್ರಿಮಜಲಾಶಯ, ಮನುಷ್ಯರಿಂದ ತೋಡಲ್ಪಡದ ಜಲಾಶಯ. ನ ಖಾತಮ್ । (ವಿಂ) 2. ಅಗೆಯಲ್ಪಡದ.

ಅಖಾದ್ಯ ಅಖಾದ್ಯ (ವಿಂ) ತಿನ್ನಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ. ನ ಖಾದ್ಯಮ್ ।

ಅಖಿನ್ನ ಅಖಿನ್ನ (ವಿಂ) ಕ್ಲೇಶವಿಲ್ಲದವನು, ಆಯಾಸ ವಿಲ್ಲದವನು. ನ ಖಿನ್ನ: । "ಮಖೇಷ್ವಖಿನೋಽನುಮತ: ಪುರೋಽಸಾ" ಕಿರಾಂ ೧-೨೨ ।

ಅಖಿಲ ಅಖಿಲ (ವಿಂ) ಸಮಸ್ತವಾದ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ. ನ ಖಿಲಮಸ್ಯ । "ತೇನ ಸಿಂಹಾಸನಂ ಪಿಶ್ಯಮಖಿಲಂ ಚಾರಿಮಂಡಲಮ್" ರಘುಂ ೪-೪ ।

ಅಖಿಲಾ ಅಖಿಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೇಗಿಲಿನಿಂದ ಉಳಲ್ಪಟ್ಟ ಭೂಮಿ. ಖಿಲ್ಯತೇ ಕಣಶ ಆದೀಯತೇ — ಖಿಲ (ತುಚ್ಛ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧) । ನ ಖಿಲಾ ।

ಅಗ ಅಗ (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. 2. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ನ ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಛ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) । "ಭಗ್ನೋ ನಿವಾಸೋಽಪಿಮಿಹಾಸ್ಯ ಪುಷ್ಪ: ಸದಾನತೋ ಯೇನ ವಿಪಾಣಿ-ನಾಙ:" ಮಾಘಂ ೪-೬೩ । 3. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. 4. ಸೂರ್ಯ. ನ ಗಚ್ಛತಿ ವಕ್ರಾತ್ಯಾ ಪಶ್ಚಿಮಮ್ । (ವಿಂ) 5. ಚಲಿಸದಿರುವ, ನಡೆಯದಿರುವ. ನ ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ "ಛ:"

(ವಾಂ ೩-೨-೪೮) । "ಅಗೋ ಮಹೀರಹೇ ಶಿಲೇ ಭಾಸ್ಕರೇ ಪವನಾಶನೇ" ಮೇದಿಂ । 6. ನಾಭಿ, ಹೊಕ್ಕುಳು. "ಅಗೋ ನಗಶ್ಚ ಭುಜಗೋ ನಾಭೌ ಭೂರ್ಹಿ ಭೂಧರೇ" ನಾನಾಥಂ ।

ಅಗಜ ಅಗಜ (ನಂ) 1. ಶಿಲಾಜತು. (ವಿಂ) 2. ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ಜಾ-ಜಾ. 3. ಪರ್ವತ. ಅಗಾಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾತುರ್ಭವಿ) "ಛ:" (೩-೨-೯೮) ।

ಅಗದ ಅಗದ (ಪುಂ) 1. ಔಷಧ. ನ ಗದೋ ಯಸ್ಮಾತ್ । (ವಿಂ) 2. ಹೋಗವಿಲ್ಲದವನು. ನ ಗದೋ ಯಸ್ಯ ।

ಅಗದ್ಭಾರ ಅಗದಂಭಾರ (ಪುಂ) ವೈದ್ಯ. ಅಗದಂ ಅರೋಗಂ ಕರೋತಿ — ಭು ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಅಘ್" (೩-೨-೧) । "ಮುಮ್" (೬-೩-೭೦) ।

ಅಗಮ ಅಗಮ (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. 2. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ನ ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಅಘ್" (೩-೧-೧೩೪) । (ವಿಂ) 3. ಚಲಿಸದಿರುವ, ನಡೆಯದಿರುವ.

ಅಗಮ್ಯ ಅಗಮ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹೋಗಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ, ಹೋದಲು ಅರ್ಹವಲ್ಲದ. ನ ಗಮ್ಯ: — ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಯತ್" (೩-೧-೯೮) । "ಅಗಮ್ಯಾಃ ಪದವೀಃ ಪ್ರಪಿತುನಾ" ಕಿರಾಂ ೧-೯ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗಮ್ಯಾ — ಮ್ಯಾ. 2. ಕೀಳು ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು.

ಅಗಮ್ಯಾಗಮನ ಅಗಮ್ಯಾಗಮನ (ನಂ) ಕೀಳುಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸಿನ ಸಂಬಂಧ, ಅನರ್ಹಳಾದ ಹೆಂಗಸಿನ ಸಂಬಂಧ.

ಅಗರೀ ಅಗರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೇವತಾಳೆ ಮರ. ನಾಸ್ತಿ ಗರೋ ವಿಷಂ ಯಸ್ಯಾ: । [ದೇವತಾಳೆ ಮರವು ಇಲಿ ಮತ್ತು ಹೆಗ್ಗಣಗಳ ವಿಷವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು.] (ವಿಂ) 2. ವಿಷಹರವಾದ, ವಿಷವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ.

ಅಗರು ಅಗರು (ನಂ) ಅಗುರು ಚಂದನ.

ಅಗರ್ಹಿತ ಅಗರ್ಹಿತ (ವಿಂ) ನಿಂದಿತವಲ್ಲದ, ಶುದ್ಧವಾದ. ನ ಗರ್ಹಿತಮ್ ।

ಅಗಸ್ತಿ ಅಗಸ್ತಿ (ಪುಂ) ಅಗಸ್ತ್ಯಮುನಿ. ಅಗಂ ವಿನ್ಧ್ಯಪರ್ವತಂ ಅಸ್ಯತಿ — ಅಮು (ಶೇಷಣ) "ಕ್ವಿಘ್" (೩-೩-೧೭೪) । ಶಕಂ ।

ಅಗಸ್ಯ ಅಗಸ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಅಗಸ್ತ್ಯಮುನಿ. ಅಗಂ ವಿನ್ಧ್ಯ-ಪರ್ವತಂ ಸ್ತಾಯತಿ — ಸ್ತಯೇ (ಶಬ್ದಸಂಘಾತಯೋ: ) "ಕ:" (೩-೨-೩) । "ಅಗಸ್ಯಚರಿತಾಮಾಶಾಮನಾಶಾಸ್ಯಜಯೋ ಯಯಿ" ರಘುಂ ೪-೪೪ ।

ಅಗಸ್ತ್ಯ ಮಹರ್ಷಿಯ ಚರಿತ್ರೆ: ಉರ್ವಶಿಯನ್ನು ನೋಡಿ ಚಿತ್ರಚಾಂಚಲ್ಯಹೊಂದಿದ ಮಿತ್ರಾ ವರುಣರ ರೇತಸ್ಸು ಒಂದು ಕಲಶದಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದು ಅವರಿಂದ ಇವರು ಜನಿಸಿದರು. ಒಬ್ಬ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಂದ ಬ್ರಹ್ಮೋಪದೇಶಹೊಂದಿ ಬಹಳಕಾಲ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯೆಯಲ್ಲೇ



ಇದ್ದರು. ಒಂದು ದಿನ ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಇವರ ಪಿತ್ಯಗಳು ಒಂದು ಮರದಲ್ಲಿ ತಲೆಕೆಳಗಾಗಿ ತೂಗಾಡುತ್ತಿದ್ದು ದನ್ನು ಕಂಡು, ತಮ್ಮ ಸದ್ಗತಿಗಾಗಿ ಸಂತಾನವನ್ನು ಪಡೆಯಬೇಕೆಂಬ ಅವರ ಪ್ರೇರಣೆಯಿಂದ, ವಿದರ್ಭ ರಾಜನಿಗೆ ತಮ್ಮ ತಪೋಮಹಿಮೆಯಿಂದ ಲೋಪಾ ಮುದ್ರೆಯೆಂಬ ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿ ಪ್ರಾಪ್ತ ವಯಸ್ಸುಳಾದ ಅವಳನ್ನು ಅವಳ ತಂದೆಯ ಅನುಮತಿ ಯಿಂದ ವಿವಾಹಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾರೆ. ಗಂಗಾತೀರ ದಲ್ಲಿ ತಪಸ್ಸುಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಒಂದು ದಿನ ಲೋಪಾ ಮುದ್ರೆಯು ಆಭರಣವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಅವಳನ್ನು ಸಂತೋಷಪಡಿಸಲು ಧನಕ್ಕಾಗಿ ಶ್ರುತಪರ್ವ ರಾಜನಲ್ಲಿ ಹೋಗಿ ಕೇಳಲು ಅವನ ಆದಾಯ ಮತ್ತು ಖರ್ಚು ಸಮನಾಗಿರುವುದನ್ನು ಕಂಡು ಅವನನ್ನೂ ಅದೇ ಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿದ್ದ ಬೃಹದಶ್ವ ಮತ್ತು ಪುರುಕುತ್ಸ ರಾಜರನ್ನೂ ವಾತಾಪಿಯ ಅಣ್ಣನಾದ ಇಲ್ವಲನಲ್ಲಿಗೆ ಕರೆದುಕೊಂಡುಹೋಗುತ್ತಾರೆ. ಅವನು ವಾತಾಪಿಯ ಮಾಂಸದ ವ್ಯಾಜದಿಂದ ಆತಿಥಿಗಳನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವ ನೆಂದು ತಿಳಿದೂ ಅವನ ಆತಿಥ್ಯವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಲು ಒಪ್ಪಿ, ಮಾಂಸದ ರೂಪದಲ್ಲಿ ಒಳಕ್ಕೆ ಸೇರಿ ಹೊಟ್ಟೆ ಯನ್ನು ಭೇದಿಸಿ ಹೊರಬರಲು ಯತ್ನಿಸಿದ ವಾತಾಪಿ ಯನ್ನು "ವಾತಾಪಿ! ಜಿಣ್ಣಿ ಭವ" ಎಂದು ಹೇಳಿ ಕೊಂದುಬಿಡುವರು. ಅದರಿಂದ ಹೆದರಿದ ಇಲ್ವಲನು ಇವರ ಅಪೇಕ್ಷೆಯಂತೆ ಪುಷ್ಕಳವಾದ ಧನವನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಕಳುಹಿಸುತ್ತಾನೆ. ಅವನು ಕೊಟ್ಟ ರಥವನ್ನೇರಿ ಆ ಧನದಿಂದ ಆ ಮೂವರು ರಾಜರನ್ನೂ ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸಿ ಕಳುಹಿಸುತ್ತಾರೆ. ಅನಂತರ ಲೋಪಾಮುದ್ರೆಯನ್ನು ಆಭರಣಗಳಿಂದ ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸಿ ಅವಳಿಂದ ವೃತ್ಯನೆಂಬ ಪುತ್ರನನ್ನು ಪಡೆದು ಪಿತ್ಯಗಳಿಗೆ ಸದ್ಗತಿಯುಂಟು ಮಾಡುತ್ತಾರೆ.

ಅಗಸ್ಯರಿಂದ ಸಮುದ್ರಪಾನ: ಕಾಲಕೇಯ ರೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸರು ಸಮುದ್ರದೊಳಗೆ ಕೋಟಿಕಟ್ಟಿ ಕೊಂಡು ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಭೂಸಂಚಾರಮಾಡುತ್ತಾ ಜನ ರನ್ನು ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಿದ್ದುದನ್ನು ಕಂಡ ದೇವತೆಗಳು ವಿಷ್ಣುವಿನಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾರೆ. ವಿಷ್ಣು ವಿನ ಅಪ್ಪಣೆಯಂತೆ ದೇವತೆಗಳಿಂದ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಅಗಸ್ಯರು ಸಮುದ್ರಪಾನ ಮಾಡಿದುದರಿಂದ ದೇವತೆ ಗಳು ರಾಕ್ಷಸರನ್ನು ಜಯಿಸುವರು. ಭಗೀರಥನ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಗಂಗಾನದಿಯ ನೀರಿನಿಂದ ಪುನಃ ಸಮುದ್ರವು ತುಂಬುವುದು.

ಅಗಸ್ಯಮಹರ್ಷಿಯು ಗೋತ್ರಪ್ರವರ್ತಕರಾದ ಎಂಟುಮಂದಿ ಮುನಿಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬರು: ಜಮದಗ್ನಿ, ಭರದ್ವಾಜ, ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ, ಅತ್ರಿ, ಗೌತಮ, ವಸಿಷ್ಠ, ಕಶ್ಯಪ ಮತ್ತು ಅಗಸ್ಯ ಈ ಎಂಟುಮಂದಿ ಮುನಿಗಳು ಗೋತ್ರಪ್ರವರ್ತಕರು. "ಜಮದಗ್ನಿಭರದ್ವಾಜವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಾತ್ರಿ ಗೌತಮಾಃ | ವಸಿಷ್ಠಕಶ್ಯಪಾಗಸ್ಯಾಃ ಕೃಷಯೋ ಗೌತ್ರಕಾರಕಾಃ" ಕಲ್ಪದ್ವಂ |

2. ಜೆಮ್ಮರ, ತಿಗಡುಮರ. "ಅಗಸ್ಯಸ್ತು ಮುನಿದ್ವಂ | ತ್ರಣಾರಿಃ ಶಿಘ್ರಪುಷ್ಪಃ ಸ್ಯಾತ್" ಕಲ್ಪದ್ವಂ |

ಅಗಸ್ಯವರ್ತ ಅಗಸ್ಯವಟಿ (೨೦) ಹಿಮಾಲಯದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಪವಿತ್ರಸ್ಥಳ.

ಅಗಸ್ಯಸಂಹಿತಾ ಅಗಸ್ಯಸಂಹಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗಸ್ಯ ಮುನಿಯು ರಚಿಸಿದ ಭಗವತ್ಪೂಜಾಶಾಸ್ತ್ರ.

ಅಗಸ್ಯೋದಯ ಅಗಸ್ಯೋದಯ (೨೦) ಅಗಸ್ಯನಕ್ಷತ್ರದ ಉದಯ. ಅಗಸ್ಯನಕ್ಷತ್ರದ ಉದಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ನೀರೆಲ್ಲವೂ ಪ್ರಸನ್ನ (ತಿಳಿ) ವಾಗುವುದು. "ಪ್ರಸಾದೋದ-ಯಾದಮಃ ಕುಮಯೋನಿಮಹೋಜಸಃ" ರಘುಂ ೪-೨೧ |

ಅಗಾಧ ಅಗಾಧ (ವಿಂ) 1. ಗಂಭೀರವಾದ. 2. ಅಳ ವಾದ. ಗಾಢ (ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಯಾಮ್) "ಘ್ನ" | ನಾಸ್ತಿ ಗಾಢಃ ಸ್ಥಿತಿರತ್ರ | "ಶಿಖಿಲವಸುಮಗಾಢೇ ಮಗ್ನಮಾಪತ್ಯಯೋಧಿ" ಕಿರಾಂ ೧-೪೬ |

ಅಗಾರ ಅಗಾರ (ನಂ) ಮನೆ, ಗೃಹ. ಅಗಂ ಕೃಚ್ಛತಿ - ಕೃ (ಗತೌ) "ಅಗ್" (೩-೨-೧) | "ದೀಪ್ರೇಗಾರಮಣಿಭಿ-ದಿವಸಾಯಮಾನೇಃ" ಚಂ ಭಾಂ |

ಅಗುಣ ಅಗುಣ (೨೦) 1. ದೋಷ. ನ ಗುಣಃ | "ಅಗುಣೇಷು ತಸ್ಯ ಧಿಯಮಸ್ತವತಃ" ಕಿರಾಂ ೬-೨೧ | (ವಿಂ)

2. ನಿರ್ಗುಣ, ಗುಣಶೂನ್ಯ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಅಗುಣಾ - ಣಾ.

ಅಗ್ನಿ ಅಗ್ನಿ (ವಿಂ) ವ್ಯಕ್ತವಾದ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ. ನ ಗುಣಃ | "ಅಗ್ನಿಹಾಸಸ್ಕುಟದಂತಕೇಸರಮ್" ಕಿರಾಂ ೮-೩೬ | ಅಲಂಕಾರಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ವ್ಯಂಗ್ಯದ ಒಂದು ಭೇದ. ಎಂಟು ವಿಧವಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ ಪ್ರಯೋಜನಲಕ್ಷ ಣೆಯು ಮತ್ತೆ ಗುಣವ್ಯಂಗ್ಯ ಅಗ್ನಿವ್ಯಂಗ್ಯಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧವಾಗುವುದು. "ವ್ಯಕ್ತವ್ಯಸ್ಯ ಗುಣಗುಣತ್ವಾದ್ ದ್ವಿಧಾ ಸ್ಯುಃ ಕಲಲಕ್ಷಣಾಃ" ಸಾಂ ೬೦ ೨-೧೦ | ಗುಣ ವ್ಯಂಗ್ಯವು ಸಹೃದಯಮಾತ್ರವೇದ್ಯವು. ಅಗ್ನಿವ್ಯ ವ್ಯಂಗ್ಯವು ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅರ್ಥವಾಗತಕ್ಕದ್ದು. "ಉಪದಿಶತಿ ಕಾಮಿನೀನಾಂ ಯೌವನಮದೇವ ಲಲಿತಾನಿ" ಇಲ್ಲಿ ಸ್ತ್ರೀಯರ ಯೌವನಮದವೇ



ಅವರ ಲೀಲೆಗಳನ್ನು ಪ್ರಕಟಿಸುತ್ತದೆ ಎಂದು ಅರ್ಥವು. ಅಜೇತನವಾದ ಯಾವನ ಮದಕ್ಕೆ ಉಪದೇಶ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವು ಇಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ಅದು ಬಾಧಿತವಾಗಿ ಲಕ್ಷಣಿಯಿಂದ ಉದಿಸಿತಿ ಎಂಬ ಪದಕ್ಕೆ ಅವಿಷ್ಕಾರ ವೆಂಬ ಅರ್ಥವು ಅತಿ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತೋರುವುದರಿಂದ ಈ ವ್ಯಂಗ್ಯವು ಅಗೂಢವು.

ಅಗ್ನಿಗಾಂಧ ಅಗೂಢಗಂಧ (ಪುಂ) ಹಿಂಗು. ನ ಗೂಢ ಗಂಧೋ ಯಸ್ಯ |

ಅಗ್ನಿಭಾವ ಅಗೂಢಭಾವ (ವಿಂ) ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ ಅಭಿ ಪ್ರಾಯವುಳ್ಳ. ಅಗೂಢ ಭಾವೋ ಯಸ್ಯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ-ಭಾವಾ-ಭಾವಾ. "ಅಗ್ನಿಭಾವಾಪಿ ವಲೋಕನೇ ಸಾ ನ ಲೋಕನೇ ಮೀಲಯಿತು ವಿವೇಹೇ" ಕಿರಾಂ ೩-೩೬ |

ಅಗೋಚರ ಅಗೋಚರ (ವಿಂ) 1. ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಬೀಳದ, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸದ, ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾದ. 2. ಇಂದ್ರಿಯ ಗಳಿಗೂ ತಿಳಿಯದಿರುವ.

ಅಗ್ನಾಯಿ ಅಗ್ನಾಯಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಯ ಪತ್ನಿ, ಸ್ವಾಹಾ ದೇವಿ. ಅಗ್ನೇ: ಸ್ತ್ರೀ "ಏ" "ಡೀಪ್" ಚ (೪-೧-೩೭) |

ಅಗ್ನಾವಿಷ್ಣು ಅಗ್ನಾವಿಷ್ಣು (ಪುಂ ಡಿಂ ವಂ) ಒಂದೇ ಹವಿಸ್ಸನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವ ಅಗ್ನಿ ಮತ್ತು ವಿಷ್ಣು ದೇವತೆ ಗಳು. ಅಗ್ನಿಶ್ಚ ವಿಷ್ಣುಶ್ಚ "ಆನಡ್" (೬-೩-೨೬) |

ಅಗ್ನಿ ಅಗ್ನಿ (ಪುಂ) 1. ಬೆಂಕಿ. ಅಭಿತಿ - ಅಗಿ (ಗತೌ) "ನಿ:" (೩ಂ ೪-೫೦) | "ಶಮಿತಂ ಶುಕ್ಲಮಿವಾಗ್ನಿ-ಶ್ಚಿತ್ತಿ:" ಕಿರಾಂ ೧-೩೨ | 2. ಅಗ್ನಿದೇವತೆ. 3. ದಕ್ಷಿಣ, ಗಾರ್ಹಪತ್ಯ ಮತ್ತು ಆಹವನೀಯ ಗಳೆಂಬ ಅಗ್ನಿತ್ರಯ. 4. ಜಾತರಾಗ್ನಿ, ಆಹಾರ ವನ್ನು ಜೀರ್ಣಮಾಡುವ ಒಂದು ಶಕ್ತಿ. 5. ಮೂರು ಸಂಖ್ಯೆ. 6. ಚಿನ್ನ. 7. ಚಿತ್ರಕ, ಚಿತ್ರಮೂಲ. 8. ಹರಳುಗಿಡ. "ಅಗ್ನಿವೇಶ್ವಾನರೇಽಪಿ ಸ್ಯಾಚ್ಚಿತ್ರಕಾಸ್ಯೌಷಧೌ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ | 9. ಗೇರುಮರ. "ಅಥ ಬಲ್ಲಾತಕೀ ತ್ರಿಫು | ಪರ್ಯಾಯೋನ್ಯಕಂಯೋಶ್ಚಾಪಿ ವಾತಾರಿ: ಸ್ಯಾದರಹಕರ:" ಕಲ್ಪದ್ರೂಂ |

ಅಗ್ನಿಕಣ ಅಗ್ನಿಕಣ (ಪುಂ) ಬೆಂಕಿಯ ಕಿಡಿ. ಅಗ್ನೇ: ಕಣ: |

ಅಗ್ನಿಕರ್ಮನ್ ಅಗ್ನಿಕರ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯ, ಹೋಮ, ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರ. 2. ಅಗ್ನಿಯ ಪೂಜೆ. 3. ಅಗ್ನಿವೈದ್ಯ, ಅಗ್ನಿರಕ್ಷಿ, ಬರೆಹಾಕುವುದು.

ಅಗ್ನಿಕಲಾ ಅಗ್ನಿಕಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆಂಕಿಯ ಒಂದು ಭಾಗ.

ಅಗ್ನಿಕಾಠ ಅಗ್ನಿಕಾಠ (ನಂ) 1. ಬೆಂಕಿಯನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ ಕಟ್ಟಿಗೆ, ಹೋಮಾಗ್ನಿಯನ್ನು ಉತ್ಪತ್ತಿ ಮಾಡುವ ಅರಣಿ. 2. ಅಗುರುಕಾಠ. ಅಗ್ನೇಝೀಪನ ಕಾಠಮ್ |

ಅಗ್ನಿಕುಂಡ ಅಗ್ನಿಕುಂಡ (ನಂ) ಹೋಮಕ್ಕಾಗಿ ಅಗ್ನಿ ಯನ್ನು ಪ್ರತಿಷ್ಠಿಸುವ (ಇಡುವ) ಸ್ಥಾನ (ಒಂದು ಜಾಗ) ಅಗ್ನೇರಾಧಾನಾಥ ಕುಂಡಮ್ |

ಅಗ್ನಿಕುಮಾರ ಅಗ್ನಿಕುಮಾರ (ಪುಂ) ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಸಣ್ಣುಬ.

ಅಗ್ನಿಕೇತು ಅಗ್ನಿಕೇತು (ಪುಂ) ಧೂಮ, ಹೋಗೆ. ಅಗ್ನೇ: ಕೇತುರಿವ |

ಅಗ್ನಿಕೋಣ ಅಗ್ನಿಕೋಣ (ಪುಂ) ಆಗ್ನೇಯದಿಕ್ಕು, ಪೂರ್ವ ಮತ್ತು ದಕ್ಷಿಣದಿಕ್ಕುಗಳ ಮಧ್ಯದ ವಿದಿಕ್ಕು. ಅಗ್ನಿದೇವತಾಕ: ಕೋಣ: |

ಅಗ್ನಿಗರ್ಭ ಅಗ್ನಿಗರ್ಭ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯಕಾಂತ ಶಿಲೆ. 2. ಅರಣಿ, ಯಜ್ಞದ ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡುವ ಕಾಠ (ಮರದತುಂಡು). ಅಗ್ನಿಗರ್ಭೋ ಯಸ್ಯ | 3. ಅಗ್ನಿ ಜಾರದಮರ.

ಅಗ್ನಿಗರ್ಭಾ ಅಗ್ನಿಗರ್ಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶಮಿಲತೆ. "ಅವೇಹಿ ತನಯಾಂ ಬ್ರಹ್ಮತಗ್ನಿಗರ್ಭಾ ಶಮಿಮಿವ" ಶಾಕುಂ ೪-೩ | 2. ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ. ಅಗ್ನಿ: ಅಗ್ನೇರ್ವಾ ಗರ್ಭೋ ಯಸ್ಯಾ: | 3. ಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತೀಲತೆ. ಅಗ್ನಿರಿವ ಗರ್ಭೋ ಮಧ್ಯಭಾಗೋ ಯಸ್ಯಾ: |

ಅಗ್ನಿಗೃಹ ಅಗ್ನಿಗೃಹ (ನಂ) ಹೋಮಗೃಹ, ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವ ಮನೆ.

ಅಗ್ನಿಚಿತ್ ಅಗ್ನಿಚಿತ್ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿಯನ್ನು (ಉಪಾಸಿಸುವವನು) ಪೂಜಿಸುವವನು, ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರಿ. ಅಗ್ನಿಮಚೇ-ಷಿತ್ - ಚಿತ್ (ಚಯನ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೯೧) | "ಯತಿभि: ಸಾರ್ಥಮನಗ್ನಿಮಗ್ನಿಚಿತ್" ರಘುಂ ೮-೨೫ |

ಅಗ್ನಿಚಿತ್ಯಾ ಅಗ್ನಿಚಿತ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವುದು, ಯಾಗಾಗ್ನಿಯನ್ನು ಕಾಪಾಡುವುದು.

ಅಗ್ನಿಜ ಅಗ್ನಿಜ (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಸಣ್ಣುಬ. (ನಂ) 2. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. (ವಿಂ) ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನವಾದ. ಅಗ್ನೇರ್ಜಯಿತೆ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುರ್ಭವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೯೮) |

ಅಗ್ನಿಜನ್ಮನ್ ಅಗ್ನಿಜನ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಸಣ್ಣುಬ. (ನಂ) 2. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ಅಗ್ನೇರ್ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 3. ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ.



ಅಗ್ನಿಜಿಹ್ವ ಅಗ್ನಿಜಿಹ್ವ (ಪುಂ) 1. ವರಾಹರೂಪಿಯಾದ  
ವಿಷ್ಣು. 2. ದೇವತೆ. (ವಿಂ) 3. ಅಗ್ನಿಯಂತೆ  
ನಾಲಿಗೆಯುಳ್ಳವನು.

ಅಗ್ನಿಜಿಹ್ವಾ ಅಗ್ನಿಜಿಹ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಗ್ನಿಯ ಶಿಖೆ,  
ಅಗ್ನಿಯ ನಾಲಿಗೆ. ಅಗ್ನಿಯ ಏಳು ಜಿಹ್ವೆಗಳು:  
"ಕರಾಲಿ ಭೂಮಿನಿ ಶ್ವೇತಾ ಲೋಹಿತಾ ನೀಲಲೋಹಿತಾ | ಸುವರ್ಣಾ  
ಪಶರಾಗಾ ಚ ಜಿಹ್ವಾಃ ಸಪ್ತ ವಿಭಾವಸೌಃ" | 2. ಗಜ  
ಹಿಪ್ಪಲಿ.

ಅಗ್ನಿಜ್ವಾಲಾ ಅಗ್ನಿಜ್ವಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಗ್ನಿಯ ಜಿಹ್ವೆ,  
ಬೆಂಕಿಯ ಉರಿ. 2. ಗಜಹಿಪ್ಪಲಿ.

ಅಗ್ನಿತಪಸ್ ಅಗ್ನಿತಪಸ್ (ಪುಂ) 1. ಸಂಚಾನ್ನಗಳ  
ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿಂತು ತಪಸ್ಸುಮಾಡುವವನು. ಅಗ್ನಿभिः  
ತಪ್ಯತೇ—ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) "ಅಸುನ್" (ಉಂ ೪-೧೮೮) |  
(ವಿಂ) 2. ಬೆಂಕಿಯಂತೆ ಬಿಸಿಯುಂಟುಮಾಡುವ.  
ಅಗ್ನಿರಿವ ತಪತಿ |

ಅಗ್ನಿತೇಜಸ್ ಅಗ್ನಿತೇಜಸ್ (ನಂ) 1. ಅಗ್ನಿಯಪ್ರಕಾಶ.  
(ವಿಂ) 2. ಅಗ್ನಿಯಂತೆ ಪ್ರಕಾಶವುಳ್ಳ. ಅಗ್ನೇರಿವ ತೇಜೋ  
ಯಸ್ಯ |

ಅಗ್ನಿತ್ರಯ ಅಗ್ನಿತ್ರಯ (ನಂ) ದಕ್ಷಿಣಾನ್ನಿ, ಗಾರ್ಹಪತ್ಯ  
ಮತ್ತು ಅಹವನೀಯಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಅಗ್ನಿ.

ಅಗ್ನಿದ ಅಗ್ನಿದ (ಪುಂ) 1. ಮನೆಗೆ ಬೆಂಕಿಯಿಟ್ಟು ಸುಡು  
ವವನು. [ಈತನಿಗೆ ಆತತಾಯಿಯೆಂದು ಹೆಸರು.]  
ಅಗ್ನಿ ಗೃಹಾದೌ ದದಾತಿ—ಓ ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) |  
"ಅಗ್ನಿದೌ ಗರದಶ್ಚೈವ ಶಸ್ತ್ರಪಾಣಿಧನಾಪಹಃ | ಕ್ಷೇತ್ರದಾರಾಪಹಾರಿ  
ಚ ಪಡೇತೇ ಹ್ಯಾತತಾಯಿನಃ" ಎಂದು ಆತತಾಯಿಗಳು ಆರು  
ಬಗೆ. 2. ಜಾತರಾಗ್ನಿಯನ್ನು ಹೆಚ್ಚುಮಾಡುವ  
ಔಷಧ; ಲೇಕ್ಕ ಮುಂತಾದುದು.

ಅಗ್ನಿದಾಧ ಅಗ್ನಿದಗ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ  
ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಬೆಂಕಿಯಿಂದ ಸುಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಗ್ನಿನಾ ದಾಧಃ |

ಅಗ್ನಿದಮನಿ ಅಗ್ನಿದಮನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಆಂ  
ಸುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮುಳ್ಳುಗಿಡ. ಅಗ್ನಿದಮ್ಯತೇಽ-  
ನಯಾ—ದಮು (ಉಪಶಮೇ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭) |

ಅಗ್ನಿದಾತ್ ಅಗ್ನಿದಾತ್ಯ (ಪುಂ) ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ ಅಗ್ನಿ  
ಯಿಂದ ಸುಡುವವನು.

ಅಗ್ನಿದೀಪನ ಅಗ್ನಿದೀಪನ (ವಿಂ) ಜಾತರಾಗ್ನಿಯನ್ನು  
ಹೆಚ್ಚಿಸುವ ಔಷಧ.

ಅಗ್ನಿದೀಪ್ತಾ ಅಗ್ನಿದೀಪ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜ್ಯೋತಿಷ್ವತೀಲತೆ,  
ಮಿಂಚುಬಳ್ಳಿಗಿಡ. ಅಗ್ನಿಃ ಜಠರಾಗ್ನಿಃ ದೀಪ್ತೌ ಯಸ್ಯಾಃ |

ಅಗ್ನಿದ್ವತ ಅಗ್ನಿದ್ವತ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿಯೇ ದ್ವತನಾಗಿ  
ಉಳ್ಳ ಯಜ್ಞ. 2. ದೇವತೆ. ಅಗ್ನಿಃ ದ್ವತೌ ಯಸ್ಮಿನ್  
ಯಸ್ಯ ವಾ |

ಅಗ್ನಿದೇವ ಅಗ್ನಿದೇವ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ. 2. ಅಗ್ನಿಯ  
ಉಪಾಸಕ. ಅಗ್ನಿದೇವೋಽಸ್ಯ |

ಅಗ್ನಿದೇವಾ ಅಗ್ನಿದೇವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೃತ್ತಿಕಾ ನಕ್ಷತ್ರ.  
ಅಗ್ನಿದೇವೋಽಸ್ಯಾಃ | [ಕೃತ್ತಿಕಾ ನಕ್ಷತ್ರಕ್ಕೆ ಅಗ್ನಿಯು  
ದೇವತೆ.]

ಅಗ್ನಿನಕ್ಷತ್ರ ಅಗ್ನಿನಕ್ಷತ್ರ (ನಂ) ಕೃತ್ತಿಕಾ ನಕ್ಷತ್ರ.  
ಅಗ್ನೇಃ ನಕ್ಷತ್ರಮ್ |

ಅಗ್ನಿನೇತೃ ಅಗ್ನಿನೇತೃ (ಪುಂ) ದೇವತೆ. ಅಗ್ನಿಃ ನೇತಾ  
ಯಸ್ಯ |

ಅಗ್ನಿಪದ ಅಗ್ನಿಪದ (ನಂ) 1. ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಪ್ರತಿಷ್ಠಿ  
ಸುವ ಪಥ. ಅಗ್ನೇಃ ಪದಮ್ | 2. ಅಗ್ನಿವಾಚಕಪದ, ಅಗ್ನಿ  
ಯೆಂಬ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಪದ.

ಅಗ್ನಿಪರ್ವತ ಅಗ್ನಿಪರ್ವತ (ಪುಂ) ಜ್ವಾಲಾಮುಖಿ, ಬೆಂಕಿ  
ಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಬೆಟ್ಟ.

ಅಗ್ನಿಪುಚ್ಛ ಅಗ್ನಿಪುಚ್ಛ (ಪುಂ) ಯಜ್ಞ ಶಾಲೆಯ ಹಿಂಭಾಗ.

ಅಗ್ನಿಪುರಾಣ ಅಗ್ನಿಪುರಾಣ (ನಂ) ಹದಿನೆಂಟು ಪುರಾಣ  
ಗಳಲ್ಲೊಂದು, ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ ಪ್ರಣೀತವಾದ  
ಹದಿನೆಂಟು ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲಿ ಎಂಟನೆಯ ಪುರಾಣ.  
ಈ ಪುರಾಣದಲ್ಲಿ ಪರಮಾತ್ಮನ ಅವತಾರ, ಸೃಷ್ಟಿ  
ಕ್ರಮ, ವಿಷ್ಣುಪೂಜೆ, ಅಗ್ನಿಪೂಜೆ, ದೀಕ್ಷೆ, ಅಭಿಷೇಕ,  
ಮಂಟಪಲಕ್ಷಣ, ದೇವಾಲಯನಿರ್ಮಾಣಕ್ರಮ,  
ಸಾಲಗ್ರಾಮಲಕ್ಷಣ ಮತ್ತು ಪೂಜೆ, ದೇವರಪ್ರತಿಷ್ಠೆ,  
ಗಂಗಾದಿಪುಣ್ಯಾರ್ಥಗಳ ಮಹಿಮೆ, ಉದ್ವಾರ್ಥೋ  
ಲೋಕವರ್ಣನೆ, ಯಂತ್ರ ಮಂತ್ರ ಔಷಧಗಳು,  
ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಧರ್ಮ, ವೈದಿಕ ಮತ್ತು ಸ್ಮಾರ್ತ ಕರ್ಮ  
ಗಳು, ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ, ನರಕನಿರೂಪಣ, ಸಂಧ್ಯಾವಿಧಿ,  
ಗಾಯತ್ರಿಯ ಅರ್ಥ, ರಾಜ್ಯಾಭಿಷೇಕಕ್ರಮ, ರಾಜ  
ಧರ್ಮ, ರತ್ನಲಕ್ಷಣ, ಧನುರ್ವಿದ್ಯೆ, ಛಂದಶ್ಶಾಸ್ತ್ರ,  
ಸಾಹಿತ್ಯ, ಪುರಾಣಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ ಮುಂತಾದ ವಿಷಯ  
ಗಳು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ.

ಅಗ್ನಿಪ್ರಣಯನ ಅಗ್ನಿಪ್ರಣಯನ (ನಂ) 1. ಶಾಸ್ತ್ರಕ್ರಮ  
ದಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಯ ಸಂಸರಣ. 2. ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಬೇರೆ  
ಕಡೆಗೆ ಒಯ್ಯುವುದು. ಅಗ್ನೇಃ ಪ್ರಣಯನಮ್ |



ಅಗ್ನಿವಾಹು ಅಗ್ನಿಬಾಹು (ಪುಂ) ಧೂಮ, ಹೊಗೆ. ಅಗ್ನಿ: ವಾಹುರಿವ |

ಅಗ್ನಿಭ ಅಗ್ನಿಭ (ನಂ) 1. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ಅಗ್ನಿರಿವ ಭಾತಿ — ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) “ಕ:” (೩-೨-೪) | 2. ಕೃತ್ರಿಕಾ ನಕ್ಷತ್ರ. ಅಗ್ನಿ: ಭಮ್ |

ಅಗ್ನಿಭು ಅಗ್ನಿಭು (ನಂ) ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ.

ಅಗ್ನಿಭೂ ಅಗ್ನಿಭೂ (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪಣ್ಡುಖ. ಅಗ್ನಿಭವತಿ — ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “ಕಿವ್” (೩-೨-೧೭೯) | (ವಿಂ) 2. ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ.

ಅಗ್ನಿಭೂತಿ ಅಗ್ನಿಭೂತಿ (ಪುಂ) 1. ಕೊನೆಯತೀರ್ಥಂಕರರ ಶಿಷ್ಯ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಅಗ್ನಿಯ ಶಕ್ತಿ. 3. ಅಗ್ನಿಯ ಕಾಂತಿ. (ವಿಂ) 4. ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ.

ಅಗ್ನಿಮಣಿ ಅಗ್ನಿಮಣಿ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯಕಾಂತಶಿಲೆ. ಅನ್ಯುತ್ಥಾಪಕೋ ಮಣಿ: |

ಅಗ್ನಿಮತ್ ಅಗ್ನಿಮತ್ (ಪುಂ) 1. ಆಹಿತಾಗ್ನಿ, ಶಾಸ್ತ್ರೀಯ ವಾದ ಅಗ್ನಿಯುಳ್ಳವನು, ಪತ್ನಿಯುಳ್ಳ ದ್ವಿಜ. ಅಗ್ನಿ-ರಸ್ತಯಸ್ಯ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪) | “ದಾರಾಸ್ವಗ್ನಿ ವಿನಿ-ಕ್ಷಿಪ್ಯ ಪ್ರವಸೇದಗ್ನಿಮಾನ್ ದ್ವಿಜ:” | (ವಿಂ) 2. ಒಳ್ಳೆಯ ಜಾತರಾಗ್ನಿ ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ, ಜೀರ್ಣಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ.

ಅಗ್ನಿಮತ್ ಅಗ್ನಿಮತ್ (ಪುಂ) 1. ಯಾಗಕ್ಕಾಗಿ ಅರಣಿ ಯಿಂದ ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಕಡೆಯುವ ಯಾಜ್ಞಕ. ಅಗ್ನಿ ಮಥ್ನಾತಿ — ಮತ್ಯ (ವಿಲೋಡನೆ) “ಕಿವ್” (೩-೨-೭೬) | 2. ಅರಣಿಯನ್ನು ಕಡೆಯುವ ಮಂತ್ರ. ಅಗ್ನಿ: ಮತ್ಯತೇಜೇನ — ಮತ್ಯ ಕರಂ “ಕಿವ್” (೩-೨-೭೬) |

ಅಗ್ನಿಮತ್ಯ ಅಗ್ನಿಮತ್ಯ (ಪುಂ) 1. ನರುವಲಗಿಡ, ನೆಲ್ಲಿಗಿಡ. ಅಗ್ನಿ: ಮತ್ಯತೇಜೇನ — ಮತ್ಯ (ವಿಲೋಡನೆ) “ಘಜ್” (೩-೩-೧೨೧) | 2. ಅರಣಿಯನ್ನು ಕಡೆಯುವ ಮಂತ್ರ.

ಅಗ್ನಿಮಾನ್ಯ ಅಗ್ನಿಮಾನ್ಯ (ನಂ) ಜಾತರಾಗ್ನಿಯ ಶಕ್ತಿಯು ಕಡಿಮೆಯಾಗುವಿಕೆ. ಅಗ್ನಿ: ಜಠರಾನಲಸ್ಯ ಮಾನ್ಯಮ್ |

ಅಗ್ನಿಮಿತ್ರ ಅಗ್ನಿಮಿತ್ರ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬರಾಜ, ಪುಷ್ಪಮಿತ್ರನ ಮಗ.

ಅಗ್ನಿಮುಖ ಅಗ್ನಿಮುಖ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. ಅಗ್ನಿಮುಖ-ಮಿವ ಯಸ್ಯ | [ಯಾಗಗಳಲ್ಲಿ ದೇವತೆಗಳನ್ನುದ್ದೇಶಿಸಿ ಕೊಡುವ ಹವಿಸ್ಸನ್ನು ಅಗ್ನಿಯು ಸ್ವೀಕರಿಸಿ ದೇವತೆ ಗಳಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.] “ಅಗ್ನಿಮುಖಾ ವೈ ದೇವಾ:” ಶ್ರುತಿ: | 2. ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರಿಯಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಅಗ್ನಿ: ಮುಖಂ ಪ್ರಧಾನಂ ಯಸ್ಯ | 3. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಅಗ್ನಿ:

ಶಾಪಾಗ್ನಿ: ಮುಖೇ ಯಸ್ಯ | (ನಂ) 4. ಜಾತರಾಗ್ನಿಯ ನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಒಂದು ಔಷಧ, ಒಂದು ಚೂರ್ಣ, ಲೇಹ್ಯ ಮುಂತಾದುದು. ಅಗ್ನಿಜಠರಾನಲಸ್ಯ ಮುಖಮ್ | ಈ ಚೂರ್ಣದ ಯೋಗ: ಇಂಗು 1 ಭಾಗ ಬಜೆ 2 ಭಾಗ ಹಿಪ್ಪಲಿ 3 ಭಾಗ ಹಸಿಶುಂಠಿ 4 ಭಾಗ ಓಮ 5 ಭಾಗ ಅಳಲೆಕಾಯಿ 6 ಭಾಗ ಚಿತ್ರಮೂಲ 7 ಭಾಗ ಮತ್ತು ಚಂಗಲುಕೋಷ್ಠ 8 ಭಾಗ. ಇವು ಗಳನ್ನು ಚೂರ್ಣಮಾಡಿ ಮೊಸರಿನಕೆನೆ ಮಧ್ಯ ಅಥವಾ ಬಿಸಿನೀರಿನಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸಿ ಸೇವಿಸಬೇಕು. ಇದರಿಂದ ಅಜೀರ್ಣ, ಪ್ಲೀಹ, ಅರ್ಶಸ್ಸು (ಮೂಲವ್ಯಾಧಿ), ಶ್ಲೇಷ್ಮರೋಗ, ಗುಲ್ಮ, ಕಾಸ, ಶ್ವಾಸ ಮತ್ತು ಕ್ಷಯ ಇವುಗಳ ಪರಿಹಾರವಾಗುವುದು. 5. ಪಾಕಶಾಲೆ, ಅಡಿಗೆಮನೆ. 6. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. 7. ಚಿತ್ರ ಮೂಲದಗಿಡ. 8. ಕುಸುಂಭದ ಹೂವು. “ಭವೇದಗ್ನಿ-ಮುಖೋ ದೇವೇ ವಿಪ್ರೇ ಭಲ್ಲಾತಕೇ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ | ಅಥಾಗ್ನಿಮುಖಮುದ್ವಿಷ್ಟಂ ಕುಸುಂಭೇ ಕುಡ್ಕುಮೇಷಿ ಚ” ಮೇದಿಂ |

ಅಗ್ನಿಮುಖಿ ಅಗ್ನಿಮುಖೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೇರುಮರ. ಅಗ್ನಿರಿವ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯಾ: “ಕೋಪ್” (೪-೧-೪೧) | 2. ಗಾಯತ್ರೀಮಂತ್ರ. ಅಗ್ನಿರಿವ ಮುಖಂ ಮುಖತ್ವೇನ ಕಲ್ಪಿತಂ ಯಸ್ಯಾ: | “ಕದಾಚಿದಪಿ ನೋ ವಿಧ್ವಾನ್ ಗಾಯತ್ರೀಮದಕೇ ಜಪೇತ್ | ಗಾಯತ್ರೀಮುಖೀ ಯಸ್ಮಾತ್ತಸ್ಮಾದುತ್ಥಾಯ ತಾಂ ಜಪೇತ್” ಗೋಮಿಲ: | 3. ನೀರು ಹಿಪ್ಪಲಿ. 4. ಬೆಣ್ಣೆ ಬಿದಿರುಸೊಪ್ಪು. 5. ಚಂದ್ರನ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ರೇಖೆ. 6. ಅಪ್ಯುತಬಳ್ಳಿ. 7. ಸೋಮಲತೆ. 8. ಚಂದ್ರನ ಕಲೆ (ಹದಿನಾರನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ). “ಲಾಙ್ಗಲಿಕಾಪ್ಯುಪಧೌ ಚ ವಿಶಲ್ಯಾಪಾಂ ಚ ಯೋಷಿತಿ | ಇಂದ್ರಲೇಖಾಮೃತಾಸೋಮಲತಾಶಶಿಕಲಾಸು ಚ” ಮೇದಿಂ |

ಅಗ್ನಿರಜಸ್ ಅಗ್ನಿರಜಸ್ (ಪುಂ) 1. ಕೆಂಪುಬಣ್ಣದ ಇಂದ್ರಗೋಪವೆಂಬ ಹುಳ. ಅಗ್ನಿರಿವ ರಜ್ಯತೇ ದೀಪ್ಯತೇ — ರಜ್ಜ (ರಾಗೇ) “ಅಸುನ್” (೩ಂ ೪-೧೮೮) | (ನಂ) 2. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 3. ಅಗ್ನಿಯ ಶಕ್ತಿ.

ಅಗ್ನಿರಹಸ್ಯ ಅಗ್ನಿರಹಸ್ಯ (ನಂ) ಅಗ್ನಿಯ ಉಪಾಸನೆಯ ಕ್ರಮವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ.

ಅಗ್ನಿರೂಪ ಅಗ್ನಿರೂಪ (ನಂ) 1. ಬೆಂಕಿಯ ಸ್ವಭಾವ. 2. ಅಗ್ನಿಪುರುಷನ ಸ್ವರೂಪ. (ವಿಂ) 3. ಅಗ್ನಿಗೆ ಸಮಾನವಾದ ರೂಪವುಳ್ಳ.

ಅಗ್ನಿವಧು ಅಗ್ನಿವಧೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಯ ಪತ್ನಿ, ಸ್ವಾಹಾ ದೇವಿ. ಅಗ್ನಿ: ವಧು: |



ಅಗ್ನಿವರ್ಣ ಅಗ್ನಿವರ್ಣ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಒಬ್ಬ ರಾಜ. "ಅಗ್ನಿವರ್ಣಮಭಿಷಿಚ್ಯ ರಾಘವಃ" ರಘುಂ ೧೯-೧. 2. ಬೆಂಕಿಯ ಬಣ್ಣ. (ವಿಂ) 3. ಬೆಂಕಿಗೆ ಸಮಾನವಾದ ವರ್ಣವುಳ್ಳ.

ಅಗ್ನಿವರ್ಧಕ ಅಗ್ನಿವರ್ಧಕ (ಪುಂ) 1. ಜಾತರಾಗ್ನಿಯನ್ನು ಬಲಪಡಿಸುವ ಔಷಧ. (ವಿಂ) 2. ಪುಷ್ಟಿಕರವಾದ.

ಅಗ್ನಿವಾಹ ಅಗ್ನಿವಾಹ (ಪುಂ) 1. ಧೂಮ, ಹೊಗೆ. 2. ಮೇಕೆ, ಆಡು. ಅಗ್ನಿಂ ವಾಹಯತಿ ಗಮಯತಿ — वह (प्रापणे) + णिच् "अण्" (३-२-१) । (विं) 3. ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ವಹಿಸಿರುವ.

ಅಗ್ನಿವಾಹನ ಅಗ್ನಿವಾಹನ (ನಂ) ಮೇಕೆ, ಆಡು. ಅಗ್ನೇ: ವಾಹನम् ।

ಅಗ್ನಿವಿದ್ ಅಗ್ನಿವಿದ್ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರಿ. 2. ಅಗ್ನಿಯ ಉಪಾಸನಾಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನರಿತವನು. ಅಗ್ನಿಂ वेत्ति — विद (ज्ञाने) "क्विप्" (३-२-६१) ।

ಅಗ್ನಿವಿಶ್ ಅಗ್ನಿವಿಶ್ (ಪುಂ) ಇದ್ದಿಲು. "अङ्गारोऽस्त्री प्रशान्ताचिरिङ्गालः कारिकाग्निविद्" ವೇಜಂ ।

ಅಗ್ನಿವೀರ್ಯ ಅಗ್ನಿವೀರ್ಯ (ನಂ) 1. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 2. ಅಗ್ನಿಯ ಶಕ್ತಿ.

ಅಗ್ನಿಶರಣ ಅಗ್ನಿಶರಣ (ನಂ) ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವ ಗೃಹ, ಹೋಮಗೃಹ, ಯಜ್ಞಶಾಲೆ.

ಅಗ್ನಿಶಾಲಾ ಅಗ್ನಿಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೋಮಗೃಹ, ಯಜ್ಞಶಾಲೆ.

ಅಗ್ನಿಶಿಖ ಅಗ್ನಿಶಿಖ (ಪುಂ) 1. ದೀಪ. 2. ಆಕಾಶ ಬಾಣ. 3. ಬಾಣ. 4. ಕುಸುಬೆಗಿಡ. 5. ಕುಂಕುಮ ಕೇಸರಿ. (ನಂ) 6. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. (ವಿಂ) 7. ಅಗ್ನಿಯಂತೆ ಆಗ್ರವುಳ್ಳ. 8. ಅಗ್ನಿಯಂತೆ ಜಟಿಯುಳ್ಳ. ಅಗ್ನಿರಿವ ಶಿಖಾ यस्य ।

ಅಗ್ನಿಶಿಖಾ ಅಗ್ನಿಶಿಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಗ್ನಿಯ ಜ್ವಾಲೆ, ಬೆಂಕಿಯ ಉರಿ. 2. ನೀರು ಹಿಪ್ಪಲಿ. 3. ಕೋಲು ಕುಟುಕನ ಗಿಡ. 4. ಬೆಣ್ಣೆ ಬಿದಿರಿನ ಸೊಪ್ಪು. 5. ಸೋಮಲತೆ. 6. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. 7. ಚಂದ್ರನ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ರೇಖೆ. 8. ಚಂದ್ರನ ಕಲೆ (ಹದಿನಾರ ನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ). "अग्निशिखा लाङ्गलिक्या-मिन्दुलेखेन्दुखण्डके। गुडूचीसोमलतयोः" हेमಂ ।

ಅಗ್ನಿಷ್ಠೋಮ ಅಗ್ನಿಷ್ಠೋಮ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡುವ ಯಾಗ, ಜ್ಯೋತಿಷ್ಠೋಮದ

ಒಂದು ಅಂಗಯಾಗ. ಅಗ್ನೇ: ಸ್ತೋಮ: ಸ್ತುತಿಸಾಧನಂ यत्र ।

2. ಆರನೇ ಮನುವಿನ ಮಗ.

ಅಗ್ನಿಸಂಸ್ಕಾರ ಅಗ್ನಿಸಂಸ್ಕಾರ (ಪುಂ) ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಸಂಸ್ಕಾರ.

ಅಗ್ನಿಸತ್ಯಾಶ ಅಗ್ನಿಸಂಕಾಶ (ವಿಂ) ಅಗ್ನಿಗೆ ಸಮಾನ ವಾದವರ್ಣವುಳ್ಳ, ಅಗ್ನಿಗೆ ಸಮಾನವಾದ ತೇಜಸ್ಸುಳ್ಳ.

ಅಗ್ನಿಸಂಭವ ಅಗ್ನಿಸಂಭವ (ನಂ) 1. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. (ವಿಂ) 2. ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ.

ಅಗ್ನಿಸಖ ಅಗ್ನಿಸಖ (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಅಗ್ನೇ: सखा "टच्" (५-४-९१) ।

ಅಗ್ನಿಸಾಕ್ಷಿಕ ಅಗ್ನಿಸಾಕ್ಷಿಕ (ವಿಂ) ಅಗ್ನಿಯೇ ಸಾಕ್ಷಿ ಯಾಗಿ ಉಳ್ಳ ಕೆಲಸ, ಅಗ್ನಿಯ ಮುಂದೆ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ. ಅಗ್ನಿ: साक्षी यत्र । "चक्रेऽग्निसाक्षिकं सख्यम्" रामाಂ ।

ಅಗ್ನಿಸಾತ್ ಅಗ್ನಿಸಾತ್ (ಅವ್ಯಂ) ಅಗ್ನಿಗೆ ಅಧೀನವಾಗಿ. "न चकार शरीरमग्निसात्" ರಘುಂ ೮-೭೨ ।

ಅಗ್ನಿಸಾರ ಅಗ್ನಿಸಾರ (ನಂ) ರಸಾಂಜನ, ಕಣ್ಣಿನ ಮುಲಾಮು, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಹಾಕುವ ಅಂಜನ.

ಅಗ್ನಿಸೂತ್ರ ಅಗ್ನಿಸೂತ್ರ (ನಂ) ಮೌಂಜೀಮೇಖಲೆ, ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಗಳು ನಡುವಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಮೌಂಜಿ.

ಅಗ್ನಿಸ್ತಮ್ನ ಅಗ್ನಿಸ್ತಂಭ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿಶಕ್ತಿಯತಡೆ. ಅಗ್ನೇ: स्तम्भः । 2. ಅಗ್ನಿಯ ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ತಡೆಗಟ್ಟುವ ಮಂತ್ರ. 3. ಅಗ್ನಿಯ ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ತಡೆಗಟ್ಟುವ ಮಣಿ. 4. ಅಗ್ನಿಯ ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ತಡೆಗಟ್ಟುವ ಔಷಧ. ಅಗ್ನಿ: स्तम्भतेऽनेन — स्तम्भ (रोधने) (सौत्रो धातुः) "घञ्" (३-३-१२१) ।

ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರ ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ. (ನಂ) 2. ಹವಿಸ್ಸು. "अग्निहोत्रोऽग्निहविषोः" मेदि० । 3. ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯ, ಹೋಮ. ಅಗ್ನಿ: हूयतेऽत्र ।

ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರಹವನಿ ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರಹವನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೋಮದಲ್ಲಿ ಹವಿಸ್ಸನ್ನು ತೆಗೆಯಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಸವಟು. ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರ: अग्नि: हूयतेऽनया — हु (दानादनयोः) "ल्युट्" (३-३-११७) । 2. ಹವಿಸ್ಸನ್ನು ತೆಗೆಯುವ ಮಕ್ಕು, — ಮಂತ್ರ.

ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರ ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರ ವುಳ್ಳವನು, ವಿಹಿತಕಾಲದಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವವನು. ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರमस्यास्ति "इति:" (५-२-११५)



ಅಗ್ನಿಧ್ ಅಗ್ನೀಧ್ (ಪುಂ) ಮುತ್ವಿಕ್ಕು, ಯಾಜಕ. ಅಗ್ನಿ-  
ಮಿಧೇ — ಇ ಇನ್ವಿ (ದೀಪ್ತೌ) “ವಿವ್” (೩-೨-೭೬) ।

ಅಗ್ನಿವರಣ ಅಗ್ನೀವರುಣ (ಪುಂ ಡಿಂ ವಂ) ಒಂದೇ ಹವಿ  
ಸ್ವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವ ಅಗ್ನಿ ಮತ್ತು ವರುಣ ದೇವತೆ  
ಗಳು. ಅಗ್ನಿಶ್ಚ ವರುಣಶ್ಚ “ಇತ್” (೬-೩-೨೭) ।

ಅಗ್ನಿಷೋಮ ಅಗ್ನೀಷೋಮ (ಪುಂ ಡಿಂ ವಂ) ಒಂದೇ  
ಹವಿಸ್ವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವ ಅಗ್ನಿ ಮತ್ತು ಸೋಮದೇವತೆ  
ಗಳು. ಅಗ್ನಿಶ್ಚ ಸೋಮಶ್ಚ “ಇತ್” (೬-೩-೨೭) ।

ಅಗ್ನಿಷೋಮೀಯ ಅಗ್ನೀಷೋಮೀಯ (ವಿಂ) ಅಗ್ನಿ ಮತ್ತು  
ಸೋಮದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಅಗ್ನಿಷೋಮಿ ದೇವತೆ  
ಅಸ್ಯ “ಛಃ” (೪-೨-೩೨) ।

ಅಗ್ನೇಂದ್ರ ಅಗ್ನೇಂದ್ರ (ಪುಂ ಡಿಂ ವಂ) ಒಂದೇ ಹವಿಸ್ವನ್ನು  
ಸ್ವೀಕರಿಸುವ ಅಗ್ನಿ ಮತ್ತು ಇಂದ್ರದೇವತೆಗಳು. ಅಗ್ನಿಶ್ಚ  
ಇಂದ್ರಶ್ಚ “ಆನಙ್” (೬-೩-೨೬) । ಗುಣಃ (೬-೧-೮೭) ।

ಅಗ್ನಿಗಾರ ಅಗ್ನಿಗಾರ (ನಂ) ಅಗ್ನಿಗೃಹ, ಹೋಮಾಗ್ನಿ  
ಯನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಿಡುವ ಗೃಹ. ಅಗ್ನಿಃ ಅಗಾರಮ್ ।  
“ವಸಂಶ್ಚತುರ್ಥೋಗ್ನಿರಿವಾಗ್ನಿಗಾರೇ” ರಘುಂ ೪-೨೫ ।

ಅಗ್ನಿಧಾನ್ ಅಗ್ನಿಧಾನ್ (ನಂ) ಅಗ್ನಿಯ ಸ್ಥಾಪನೆ,  
ಅಗ್ನಿಯಪ್ರತಿಷ್ಠೆ. ಅಗ್ನಿಧಾನ್ಮ ।

ಅಗ್ನಿಹಿತ ಅಗ್ನಿಹಿತ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರ, ವೈದಿ  
ಕಾಗ್ನಿಯುಳ್ಳ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಅಹಿತಾಃ ಅಧಾನ್ಯೇನ ಸಂಸ್ಕೃತಾಃ  
ಅಗ್ನಯೋ ಯೇನ । ಪರಿನಿಪಾತಃ (೨-೨-೩೭) ।

ಅಗ್ನಿಪಾತ ಅಗ್ನಿಪಾತ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿಯಿಂದ  
ಸೂಚಿತವಾದ ಅನಿಷ್ಟ. 2. ಅನಿಷ್ಟಸೂಚಕವಾದ  
ಬೆಂಕಿಯ ಸುರಿಮಳೆ. 3. ಧೂಮಕೇತು. ಅಗ್ನಿಃ  
ಉತ್ಪಾತಃ ।

ಅಗ್ನಿಪ್ರಸ್ಥಾನ ಅಗ್ನಿಪ್ರಸ್ಥಾನ (ನಂ) 1. ಅಗ್ನಿಯ  
ಪ್ರಾಜ್ಞೆ. ಅಗ್ನಿಪ್ರಸ್ಥಾನಮ್ । 2. ಅಗ್ನಿಪ್ರಾಜ್ಞೆಯ ಮಂತ್ರ.  
ಅಗ್ನಿಪ್ರಸ್ಥಾನೀಯತೇಜೇನ — ಷ್ಟಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೭) ।

ಅಗ್ರ ಅಗ್ರ (ಪುಂ) 1. ನೋಡದಿರುವ ವಸ್ತುವನ್ನು  
ಕಾಣುವ ಸ್ಪಷ್ಟ, — ಕನಸು. “ಸಂಸ್ಕಾರಮಾತ್ರಜಃ ಸ್ವಪ್ನಃ  
ಕಾಮಿಕೋ ರಸಕೋಽಪಿ ಚ । ಅದೃಷ್ಟಜಸ್ತ್ವತ್ರಾಚಾಗ್ರಃ” ವೈಜಂ ।  
(ನಂ) 2. ಉದ್ವೇಗಭಾಗ, ಮೇಲುಭಾಗ. ಅಗ್ರ  
(ಕುಟಿಲಾಂ ಗತೌ) “ರನ್” (೩ಂ ೨-೨೯) । “ಪಶ್ಯಾನಿ  
ಯಸ್ಯಾಗ್ರಸರೋಹಾಣಿ” ಕುಮಾಂ ೧-೧೬ । 3. ಮುಂಭಾಗ,  
ಎದುರುಭಾಗ. “ಆನೀತಮಗ್ರೇ ನಿಜಬಂಧನಾರ್ಥಮ್” ಯಾದಂ  
೪-೩೪ । 4. ಆಲಂಬನ, ವಿಶ್ರಾಂತಿಸ್ಥಾನ. 5. ಸಮೂಹ,

ಗುಂಫು. 6. ಅಗ್ರಭಾಗ, ತುದಿ. “ಪ್ರಣತಿಸ್ತಾನೇಕಲತಾ-  
ಭುಜಾಗ್ರಾನ್” ಮಾಘಂ ೪-೭ । 7. ಒಂದು ಪಲದತೂಕ.  
8. ಬ್ರಾಹ್ಮಣಭೋಜನ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣಭೋಜನಕ್ಕಾಗಿ  
ಬಿಟ್ಟಿರುವ ವೃತ್ತಿ, ದಾನ. 9. ಉತ್ಕರ್ಷ, ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ,  
ಮೇಲ್ಮೈ. 10. ಪ್ರಾಂತಭಾಗ, ಸಮೀಪಪ್ರದೇಶ.  
“ಹರ್ಮ್ಯಾಗ್ರಸಂಘತೃಣಾಕ್ಷುರೇಷು” ರಘುಂ ೬-೪೭ । (ವಿಂ)  
11. ಮೊದಲನೆಯ, ಪ್ರಧಾನ, ಮುಖ್ಯ, ಪ್ರಮುಖ.  
12. ಅಧಿಕ, ಹೆಚ್ಚಾದ. 13. ಮೊದಲನೆಯ, ಒಂದ  
ನೆಯ. “ಅಗ್ರಂ ಪುರಸ್ತಾದ್ವಪರಿ ಪರಿಮಾಣೇ ಪಲಸ್ಯ ಚ ।  
ಆಲಂಬನೇ ಸಮುಹೇ ಚ ಪ್ರಾಂತೇ ಚ ಸ್ಥಾನಪುಂಸಕಮ್ । ಅಧಿಕೇ ಚ  
ಪ್ರಧಾನೇ ಚ ಪ್ರಥಮೇ ಚಾಭಿಧೇಯವತ್” ಮೇದಿಂ ।

ಅಗ್ರಕಾಯ ಅಗ್ರಕಾಯ (ಪುಂ) ದೇಹದ ಪೂರ್ವಭಾಗ.  
ಅಗ್ರಶ್ಚಾಸೌ ಕಾಯಶ್ಚ ।

ಅಗ್ರಗ ಅಗ್ರಗ (ವಿಂ) ಮುಂದೆಹೋಗುವ, ಮುಂದೆ ನಡೆ  
ಯುವ. ಅಗ್ರೇ ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ಙಃ” (ವಾಂ  
೩-೨-೪೮) ।

ಅಗ್ರಗಣ್ಯ ಅಗ್ರಗಣ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಧಾನ, ಮುಖ್ಯ.  
2. ಮೊದಲು ಎಣಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಅಗ್ರೇ ಗಣ್ಯತೇ —  
ಗಣ (ಸಂಖ್ಯಾನೇ) “ಯತ್” (೩-೧-೯೭) ।

ಅಗ್ರಗಾಮಿನ್ ಅಗ್ರಗಾಮಿನ್ (ವಿಂ) ಮುಂದೆಹೋಗುವ,  
ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವ. ಅಗ್ರೇ ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ಲ (ಗತೌ)  
“ಗಿಣಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೫) ।  
ಅಗ್ರಗಾಮಿನಿ — ಗಾಮಿನೀ.

ಅಗ್ರಜ ಅಗ್ರಜ (ಪುಂ) ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರ, ಹಿರಿಯಣ್ಣ.  
“ಅಗ್ರಜೇನ ಹರಿಣಾ ಹರಿಃ ಸ್ವಯಮ್” ಯಾದಂ ೧೭-೫ ।

ಅಗ್ರಜನ್ಮನ್ ಅಗ್ರಜನ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ.  
2. ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರ. (ವಿಂ) 3. ಮೊದಲು  
ಹುಟ್ಟಿದ. ಅಗ್ರೇ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ ।

ಅಗ್ರಜಾತ ಅಗ್ರಜಾತ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. 2. ಜ್ಯೇಷ್ಠ  
ಸಹೋದರ. ಅಗ್ರೇ ಜಾತಃ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ತಾ — ತಾ. 3.  
ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರ. (ವಿಂ) 4. ಮೊದಲು ಹುಟ್ಟಿದ.

ಅಗ್ರಜಾತಿ ಅಗ್ರಜಾತಿ (ಪುಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಅಗ್ರಾ ಶ್ರೇಷ್ಠಾ  
ಜಾತೀಯಸ್ಯ ।

ಅಗ್ರಣಿ ಅಗ್ರಣಿ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಅಗ್ರಂ ನಯತಿ  
ದೇವಮ್ಯಃ । 2. ಪ್ರಭು, ಯಜಮಾನ. 3. ವಿಷ್ಣು.  
“ಅಗ್ರಣಿಗ್ರಾಮಿಣಿಃ ಶ್ರೀಮಾನ್” ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ)  
4. ಶ್ರೇಷ್ಠ. 5. ಮುಂದಾಳು. “ಅಥಾಕ್ಷಿರಸಮಗ್ರಣ್ಯಮ್”  
ಕುಮಾಂ ೬-೬೫ ।



ಅಗ್ರತಸ್ ಅಗ್ರತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಮುಂದೆ, ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ.  
ಅಗ್ರೆ "ತಸಿ:" (೪-೪-೪೪)। "ಧನುರ್ಮತಾಮಗ್ರತ ಏವ  
ರಕ್ಷಿಣಾಮ್" ರಘುಂ ೩-೩೯।

ಅಗ್ರತಃಸರ ಅಗ್ರತಃಸರ (ವಿಂ) ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವ,  
ಮುಂದಾಳಾಗಿರುವ. ಅಗ್ರತಃ ಸರತಿ ಗಂಚತಿ - ಸ್ಮ (ಗತೌ)  
"ಠ:" (೩-೨-೧೮)।

ಅಗ್ರನಾಸಿಕಾ ಅಗ್ರನಾಸಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂಗಿನ ತುದಿ.

ಅಗ್ರಪಾದ ಅಗ್ರಪಾದ (ಪುಂ) ಮುಂಗಾಲು, ಕಾಲಿನ  
ಮುಂಭಾಗ. "ನವಕಿಸಲಯರಾಗೇಣಾಪ್ರಪಾದೇನ ಬಾಲಾ"  
ಮಾಲಂ ೩-೧೨।

ಅಗ್ರಪೂಜಾ ಅಗ್ರಪೂಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ರಮರ್ಯಾದೆ,  
ಮೊದಲನೆಯ ಮರ್ಯಾದೆ. ಅಗ್ರೆ ಪೂಜಾ।

ಅಗ್ರಭಾಗಿನ್ ಅಗ್ರಭಾಗಿನ್ (ವಿಂ) ಮೊದಲನೇ ಹಕ್ಕು  
ದಾರ, ವಾರಸುದಾರ. ಅಗ್ರೆ ಭಾಗೀ। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್"  
(೪-೧-೪)। ಅಗ್ರಭಾಗಿನಿ-೨೯.

ಅಗ್ರಭುಜ್ ಅಗ್ರಭುಜ್ (ವಿಂ) (ಎಲ್ಲರಿಗಿಂತಲೂ) ಮುಂಚೆ  
ಉಟಮಾಡುವವನು, ತಿಂಡಿಪೋತ, ಹೊಟ್ಟೆಬಾಕ.  
ಅಗ್ರೆ ಭುಜ್ಕೆ - ಭುಜ (ಪಾಲನಾಭ್ಯವಹಾರಯೋಃ) "ವಿವಪ್"  
(೩-೨-೭೬)।

ಅಗ್ರಭೂ ಅಗ್ರಭೂ (ಪುಂ) ಹಿರಿಯವನು, ಮೊದಲು ಹುಟ್ಟಿ  
ದವನು, ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರ. ಅಗ್ರೆ ಭವತಿ - ಭೂ  
(ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬)।

ಅಗ್ರಮಾಂಸ ಅಗ್ರಮಾಂಸ (ನಂ) ಹೃದಯದೊಳಗಿನ  
(ಮುಖ್ಯವಾದ) ಮಾಂಸ. ಅಗ್ರಂ ಮುಖ್ಯಂ ಮಾಂಸಮ್।

ಅಗ್ರಯಣ ಅಗ್ರಯಣ (ನಂ) ಮಾರ್ಗಶಿರಮಾಸದಲ್ಲಿ  
ಹೊಸಧಾನ್ಯ ಬಂದಮೇಲೆ ಮಾಡುವ ಯಾಗ. [ಪ್ರತಿ  
ವರ್ಷದಲ್ಲೂ ಹೊಸಧಾನ್ಯ ಬಂದಾಗ ಮೊದಲು ದೇವತೆ  
ಗಳಿಗೆ ಅರ್ಪಿಸಿ ಅನಂತರ ನಾವು ಉಪಯೋಗಿಸಬೇಕು.  
ಇದಕ್ಕೆ "ನವಾಗ್ರಯಣ" ಸ್ಥಾಲೀಪಾಕವೆಂದು  
ಹೆಸರು.] ಅಗ್ರಂ ಅಯನಾತ್ उत्तरायणात्। ಶಕಂ। ತತ್ಕಾಲೋ-  
ಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭)।

ಅಗ್ರಯಾನ್ ಅಗ್ರಯಾನ್ (ನಂ) 1. ಮುಂದೆಹೋಗುವ  
ಸೈನ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಮುಂದೆಹೋಗುವ. ಅಗ್ರೆ ಯಾನ್  
ಯಸ್ಯ।

ಅಗ್ರಯಾಪಿನ್ ಅಗ್ರಯಾಪಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಮುಂದೆ  
ಹೋಗುವ. 2. ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ. ಅಗ್ರೆ ಯಾಪಿ - ಯಾ  
(ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಞಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)।

ಅಗ್ರಯೋಧಿನ್ ಅಗ್ರಯೋಧಿನ್ (ಪುಂ) ಮುಖ್ಯವೀರ,  
ಸೈನ್ಯದಮುಂದೆ ನಿಂತು ಯುದ್ಧಮಾಡುವವನು. ಅಗ್ರೆ  
ಸ್ಥಿತ್ವಾ ಯುಧ್ಯತಿ - ಯುಧ (ಸಂಪ್ರಹಾರೇ) "ಞಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)।

ಅಗ್ರರಂಧ್ರ ಅಗ್ರರಂಧ್ರ (ನಂ) ಮುಂಭಾಗದ ರಂಧ್ರ,  
ಮುಂದಿನ ಸಂಧು. ಅಗ್ರೆ ರಂಧ್ರಮ್। "ವಾಸಾನಾಸಾಪ್ರರಂಧ್ರಂ  
ವಿಶತಿ ಫಣಿಪತೌ ಭೋಗಸಂಕೋಚಭಾಜಿ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೨।

ಅಗ್ರಸಂಧಾನೀ ಅಗ್ರಸಂಧಾನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಮರಾಜನ  
ಪಟ್ಟಿ, ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಪೂರ್ವಜನ್ಮದ ಕರ್ಮಕ್ಕೆ ತಕ್ಕ  
ಫಲಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಪಟ್ಟಿ. ಅಗ್ರೆ ಫಲೋತ್ಪತ್ತಿಃ ಪ್ರಾಕ್  
ಸಂಧೀಯತೇ ಶುಭಾಶುಭಫಲಂ ಜಾಯತೇಜಯಾ - ಸಮ್ + ಙು ಧಾನ್  
(ಧಾರಣೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೪)।

ಅಗ್ರಸಂಧ್ಯಾ ಅಗ್ರಸಂಧ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲದ  
ಮುಂಚಿನ ಕಾಲ. ಅಗ್ರಂ ಸಂಧ್ಯಾಯಾಃ। 2. ಪ್ರಾತಃಸಂಧ್ಯಾ  
ಸಮಯ. ಅಗ್ರಾ ಚಾಸೌ ಸಂಧ್ಯಾ ಚ।

ಅಗ್ರಸರ ಅಗ್ರಸರ (ಪುಂ) ಮುಂದಾಳು, ಮುಂದೆ ಹೋರಾ  
ಡುವ ವೀರ. ಅಗ್ರೆ ಸರತಿ - ಸ್ಮ (ಗತೌ) "ಠ:" ಬಾಹುಂ।  
"ಹರಿಹಯಾಪ್ರಸರೇಣ ಧನುರ್ಮತಾ" ರಘುಂ ೧-೨೩।

ಅಗ್ರಹ ಅಗ್ರಹ (ಪುಂ) 1. ಯತಿ, ಸಂನ್ಯಾಸಿ. ನ ಗ್ರಹಃ  
ಪರಿಗ್ರಹೋ ಯಸ್ಯ। (ವಿಂ) 2. ಜ್ಞಾನಶೂನ್ಯ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ  
ಯಿಲ್ಲದ. ನ ಗ್ರಹೋ ಜ್ಞಾನಂ ಯಸ್ಯ।

ಅಗ್ರಹಸ್ತ ಅಗ್ರಹಸ್ತ (ಪುಂ) ಮುಂಗೈ, ಕೈಯ ತುದಿ.  
ಅಗ್ರಚಾಸೌ ಹಸ್ತಶ್ಚ। "ಅಥಾಗ್ರಹಸ್ತೇ ಮುಕುಲೀಕೃತಾಙ್ಗುಲಿ"  
ಕುಮಾಂ ೪-೬೩।

ಅಗ್ರಹಾಯಣ ಅಗ್ರಹಾಯಣ (ಪುಂ) ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷಮಾಸ,  
ಹೊಸಧಾನ್ಯ ಬರುವ ಕಾಲ, ವರ್ಷಾರಂಭ. ಅಗ್ರಃ ಶ್ರೇಷ್ಠಃ  
ಹಾಯನೋ ಕ್ರಿಹಿರತ್ರ - ಣತ್ವಮ್ (೮-೪-೩)।

ಅಗ್ರಹಾರ ಅಗ್ರಹಾರ (ಪುಂ) 1. ರಾಜರುಗಳಿಂದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ  
ರಿಗೆ ದಾನವಾಗಿ ಕೊಡಲ್ಪಡುವ ಜಮೀನು ಅಥವಾ  
ಗ್ರಾಮ. ಅಗ್ರಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಭೋಜನಂ ತದರ್ಥಂ ಹೀಯತೇ ಪೃಥಕ್  
ಕ್ರಿಯತೇ ರಾಜಧನಾತ್ - ಅಗ್ರ + ಹ್ವ (ಹರಣೇ) ಕರ್ಮಂ "ಘಜ್"  
(೩-೩-೧೯)। 2. (ಜಮೀನಿನ ಬೆಳೆಯಿಂದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ  
ರಿಗೆ ದಾನಕೊಡುವ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ತೆಗೆದಿಡುವ) ಧಾನ್ಯ.  
3. (ಗುರುಕುಲದಿಂದ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮುಗಿಸಿಕೊಂಡು  
ಬಂದ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣರಿಗೆ ಕೊಡುವ ಭೂಮಿ, ಗ್ರಾಮ  
ಅಥವಾ ವೃತ್ತಿ.

ಅಗ್ರಾಕ್ಷಿ ಅಗ್ರಾಕ್ಷಿ (ನಂ) ಅಪಾಂಗ, ಕಡೆಗಣ್ಣು. ಅಗ್ರಂ ಚ  
ತತ್ ಅಕ್ಷಿ ಚ। "ಅಗ್ರಾಕ್ಷಾ ವೀಕ್ಷಮಾಣಸ್ತು ತಿರ್ಯಗ್ಮಾತರ-  
ಮಬ್ರವೀತ್" ರಾಮಾಂ।



ಅಗ್ರಾಮ್ಯ ಅಗ್ರಾಮ್ಯ (ವಿಂ) 1. ನಗರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಸುಶಿಕ್ಷಿತನಾದ, ಸಭ್ಯತೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. 2. ಸುಂದರವಾದ, ಚೆಲುವಾಗಿರುವ. ಗ್ರಾಮೇ ಭವ: "ಯ:" (೪-೨-೧೪)।  
ನ ಗ್ರಾಮ್ಯ:।

ಅಗ್ರಾಸನ ಅಗ್ರಾಸನ (ನಂ) 1. ಶ್ರಾದ್ಧದಲ್ಲಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ಕಲ್ಪಿತವಾದ ಆಸನ. ಅಗ್ರಂ ಅರ್ಪಾದಿನಾತ್ ಪೂರ್ವಂ ಕಲ್ಪಿತಮಾಸನಮ್। 2. ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ ಆಸನ, ಮೊದಲನೆಯ ಆಸನ. "ಮಾಮಗ್ರಾಸನತೋಽವಕೃಷ್ಣಮವಶಂ ಯೇ ದೃಷ್ಟವಂತ: ಪುರಾ" ಮುಕ್ತಾಂ ೧-೧೨।

ಅಗ್ರಾಹ್ಯ ಅಗ್ರಾಹ್ಯ (ವಿಂ) 1. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಆಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ಪ್ರತಿಗ್ರಹಕ್ಕೆ ಅನರ್ಹವಾದ. ನ ಗ್ರಾಹ್ಯಮ್।

ಅಗ್ರಿಮ ಅಗ್ರಿಮ (ಪುಂ) 1. ಮೊದಲನೆಯವನು, ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರ. ಅಗ್ರೇ ಭವ: "ಡಿಮ್" (ವಾಂ ೪-೩-೨೩)। (ವಿಂ) 2. ಉತ್ತಮ, ಶ್ರೇಷ್ಠ. 3. ಮೊದಲನೆಯ. "ಅಗ್ರಿಮಂ ವಿಶತಾಂ ಸ್ಕಂಧಮಾಮೂಲಮಹಿತಾಂ ಚಮಮ್" ಯಾದಂ ೧೬-೧೨।

ಅಗ್ರಿಯ ಅಗ್ರಿಯ (ಪುಂ) 1. ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರ. ಅಗ್ರೇ ಭವ: "ಯ:" (೪-೪-೧೧೭)। (ವಿಂ) 2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ. 3. ಮೊದಲು ಹುಟ್ಟಿದ.

ಅಗ್ರೀಯ ಅಗ್ರೀಯ (ಪುಂ) 1. ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರ. (ವಿಂ) 2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ. ಅಗ್ರೇ ಭವ: "ಛ:" (೪-೪-೧೧೭)। 3. ಮೊದಲು ಹುಟ್ಟಿದ.

ಅಗ್ರೇ ಅಗ್ರೇ (ವಿಂ ಪ್ರಂ ಅವ್ಯಂ) 1. ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ, ಎದುರಿಗೆ. 2. ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ, ಮೊದಲು. "ಪ್ರತಾಪೋಽಗ್ರೇ ತತ: ಶಬ್ದ: ಪರಾಗಸ್ತದನಂತರಮ್" ರಘುಂ ೪-೩೦। 3. ಮುಂಚಿತವಾಗಿ, ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ. 4. ಅನಂತರ, ಬಳಿಕ, ತರುವಾಯ. "ಸ್ಪಷ್ಟಮಗ್ರೇ ಭವಿಷ್ಯತಿ"। 5. ಸಮಕ್ಷದಲ್ಲಿ, ಸಾನ್ನಿಧ್ಯದಲ್ಲಿ.

ಅಗ್ರೇಗ ಅಗ್ರೇಗ (ವಿಂ) 1. ಮುಂದೆಹೋಗುವ, ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವ. ಅಗ್ರೇ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಙ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)। 2. ಮುಂದಾಳು, ಯಜಮಾನ.

ಅಗ್ರೇಗ್ ಅಗ್ರೇಗ್ (ವಿಂ) ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ಹೋಗುವ. (ಸೇವಕ ಮುಂತಾದವನು).

ಅಗ್ರೇದಿಧಿಷು ಅಗ್ರೇದಿಧಿಷು } (ಪುಂ) ದಿಧಿಷುವನ್ನು  
ಅಗ್ರೇದಿಧಿಷು ಅಗ್ರೇದಿಧಿಷು }  
ಮದುವೆಯಾದವನು, ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರನ ಮರಣಾನಂತರ ಅವನ ಪತ್ನಿಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾದವನು,

ದಿಧಿಷುವೇ ಯಾವನ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಯಜಮಾನನೆಯೋ ಅವನು. (ಎರಡುಸಲ ಮದುವೆಯಾದವಳು ದಿಧಿಷು). ದಿಧಿ ಧೇಯ ಸ್ಯತಿ ತ್ಯಜತಿ ಇಂದ್ರಿಯದೊಬ್ಬಲ್ಯಾತ್—ಷೋ (ಅಂತ-ಕರ್ಮಣಿ) "ಕು:" (೩೦ ೧-೧೩)। ಅಗ್ರೇ ಪ್ರಧಾನಂ ದಿಧಿಷುರಸ್ಯ।

'ಭ್ರಾತುರ್ಮತಸ್ಯ ಜಾಯಾಂ ಸಂಸಕ್ತೋ ದಿಧಿಷುಪತಿ:। ಸ ತು ಸ್ಯಾದಗ್ರ ದಿಧಿಷುಯೋಽನುಜೋ ರಮತೇ ತಯಾ। ಸ್ಯಾದಗ್ರೇದಿಧಿಷುರಾಸೌ ಸ್ಯಾದಗ್ರೇ-ದಿಧಿಷುರಪಿ" ವೇಜಂ। "ಸ ತು ದ್ವಿಜೋಽಗ್ರೇದಿಧಿಷು: ಸೇವ ಯಸ್ಯ ಕುರುಮ್ಬಿನಿ" ಅಮಂ।

ಅಗ್ರೇದಿಧಿಷು ಅಗ್ರೇದಿಧಿಷೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರಿಯು ಮದುವೆಯಾಗುವುದಕ್ಕೆ ಮುಂಚೆ ಮದುವೆಯಾದವಳು. "ಯಾ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಯಾಮನೂಡಾಯಾಮೂಡಾಗ್ರೇದಿಧಿಷುರಸೌ" ವೇಜಂ।

ಅಗ್ರೇದಿಧಿಷುಪತಿ ಅಗ್ರೇದಿಧಿಷೂಪತಿ (ಪುಂ) ಅಕ್ಕನ ಮದುವೆಗೆ ಮುಂಚೆ ಮದುವೆಯಾದವಳ ಗಂಡ.

ಅಗ್ರೇವಣ ಅಗ್ರೇವಣ (ನಂ) ಅರಣ್ಯದ ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ. ವನಸ್ಪಾಗ್ರೇ। ಪರಿನಿಪಾತ: (೨-೨-೩೧)। ಣತ್ವಮ್ (೮-೪-೪)। "ಠ್ವಾಧ್ವಾನಮನಲ್ಪಕೋಪಮಕರೋದಗ್ರೇವಣಂ ರಾವಣಮ್" ಚಂ ರಾಂ ೩-೪೭।

ಅಗ್ರೇಸರ ಅಗ್ರೇಸರ (ವಿಂ) ಮುಂದೆ ಹೋಗುವ, ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವ. ಅಗ್ರೇ ಸರತಿ—ಸೃ (ಗತೌ) "ಙ:" (೩-೨-೧೮)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। ಅಗ್ರೇಸರೀ—ರೀ. "ವಿಭೂತಿ-ಮಗ್ರೇಸರೇದವಾದಾ:" ಯಾದಂ ೨-೩೫।

ಅಗ್ರ್ಯ ಅಗ್ರ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರ. ಅಗ್ರೇ ಭವ: "ಯತ್" (೪-೪-೧೧೬)। "ಸ್ವಸುತಮಗ್ರ್ಯಮಸುಯತ ರೋಹಿಣಿ" ಯಾದಂ ೩-೪೫। (ವಿಂ) 2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ. "ವಧೂವರಂ ಪುಷ್ಯತಿ ಕಾಂತಿಮಗ್ರ್ಯಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೭೮। 3. ಮೊದಲು ಹುಟ್ಟಿದ.

ಅಗ್ರ ಅಗ್ರ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ರಾಸುರ, ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. (ನಂ) 2. ಪಾಪ. ಅಜ್ಞತೇ ಗಚ್ಛತಿ ದಾನಾದಿನಾ—ಅಗ್ರಿ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಅಗ್ರಿವಿಧಿವಿಧಿವಿಧಿ ಪಟಿಯಸಿ:" ಮಾಧಂ ೧-೧೮। 3. ದುಃಖ. "ಅಗ್ರಿಂ ವಿಕರ್ಮಪಹಂತ್ಯಾಣಿ ಶ್ರೇಯ: ಪರಿಸ್ತುತಿ ತನೋತಿ ಕೀರ್ತಿಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೭। 4. ಅಶೌಚ.

ಅಗ್ರಕೃತ್ ಅಗ್ರಕೃತ್ (ವಿಂ) 1. ಪಾಪಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಡೆಸುವವನು. 2. ಕೇಡಿಗ, ಕೇಡಾಳಿ. ಅಗ್ರಂ ಪಾಪಂ ಕರೋತಿ—ಙ್ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) "ಕಿವಿಪ್" (೩-೨-೧೭೮)।

ಅಗ್ರಜನ —ನಾಶನ ಅಗ್ರಜ್ಞ —ನಾಶನ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠ. (ವಿಂ) 2. ಪಾಪವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ ಜವ



ಮತ್ತು ದಾನ್. ಅಭಿ ಹಂತಿ — ಹನ (ಹಿಸಾದೊ) “ಕ:” (ವಾಂ ೩-೨-೪) । ಅಭಿ ನಾಶಯತಿ — ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಅಭಿಜಿನ್ ಅಭಿಜಿನ್ (ಪುಂ) ದೇವರು ಮತ್ತು ಅತಿಥಿಗಳ ಉದ್ದೇಶವಿಲ್ಲದೆ ಕೇವಲ ಆತ್ಮಾರ್ಥ (ತನಗಾಗಿ) ಪಾಕಮಾಡಿ ತಿನ್ನುವವನು. ಅಭಿ ಭುಂಕ್ತೇ — ಭುಜ (ಪಾಲನಾದೊ) “ಣಿತಿ:” (೩-೨-೭೮) । “ಭುಂಜತೇ ತೇ ತ್ವಂ ಪಾಪಾ ಯೇ ಪಚಂತ್ಯಾತ್ಮಕಾರಣಾತ್” ಗೀತಾ ೩-೧೩ ।

ಅಭಿಮರ್ಷಣ ಅಭಿಮರ್ಷಣ (ವಿಂ) ಸಕಲ ಪಾಪಗಳ ನಾಶಕ್ಕಾಗಿ ಜಪಿಸುವ ಮಂತ್ರ. ಮೃಷ್ಯತೇಜೇನ — ಮೃಷ (ತಿದಿತಿಯಾಮ್) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭) । ಅಭಿಮರ್ಷಣ: । (ಪುಂ) ಅಭಿಮರ್ಷಣೋ ಮನ್ತ್ರ: । (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಭಿಮರ್ಷಣೀ ಋಕ್ । ಡಿಲ್ವಾತ್ “ಡಿಪ್” (೪-೧-೧೪) ।

ಅಭಿರುದ್ ಅಭಿರುದ್ (ಪುಂ) 1. ಪಾಪವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ ಮಂತ್ರ. ಅಭಿ ರೋದಿತಿ ಯಸ್ಮಾತ್ ಸ್ವಕರ್ಮಾಕ್ಷಮತಯಾ — ರದಿರ್ (ಅಶ್ರುವಿಮೋಚನೆ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬) । (ವಿಂ) 2. ಪಾಪವನ್ನು ತುಳಿಯಲು ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆ ಮಾಡುವ ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದೆ ದುಃಖಿಸುವ. ಅಭಿ ರೋದಿತಿ — ರದಿರ್ ಕರ್ತಂ “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬) ।

ಅಭಿಮ ಅಭಿಮ (ಪುಂ) 1. ಅನುಷ್ಠತೆ, ಶೈತ್ಯ. ನಂ ತಂ । (ವಿಂ) 2. ಶೀತವಾಗಿರುವ, ಅನುಷ್ಠವಾದ. “ಅಭಿಮ-ಧರ್ಮೋದಕವಿಂದುಮೌಕ್ತಿಕೇರಲಚ್ಚಕಾರಾಸ್ಯ ವಧೂರಹಸ್ಕರ:” ಮಾಘಂ ೧-೪೮ ।

ಅಭಿಲ ಅಭಿಲ (ವಿಂ) ಪಾಪನಾಶಕ, ಪಾಪವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. ಅಭಿ ನಿವರ್ತಯಿತುಂ ಲಾತಿ — ಲಾ (ಆದಾನೆ) “ಕ:” (೩-೨-೩) ।

ಅಭಿವತ್ ಅಭಿವತ್ (ವಿಂ) ಪಾಪದಿಂದಕೂಡಿದ. ಅಭಿಮ-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೧೪) ।

ಅಭಿಯುಸ್ ಅಭಿಯುಸ್ (ಪುಂ) ಪಾಪಕೃತ್ಯದಿಂದ ಜೀನಿಸಿರುವವನು. ಅಭಿ ಪಾಪಸಾಧನಮಾಯುರಸ್ಯ ।

ಅಭಿಷ್ಠ ಅಭಿಷ್ಠ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಜಾಪತಿ, ಬ್ರಹ್ಮ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ಣ್ಯಾ — ಣ್ಯಾ. 2. ಹಸು, ಆಕಳು. ನ ಹನ್ಯತೇ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತಿಯೊ) “ಯಕ್” (೩ಂ ೪-೧೧೧) ನಿಪಾಂ ।

ಅಭಿಷ್ಠ ಅಭಿಷ್ಠ (ನಂ) 1. ಮದ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ದುರ್ಗಂಧ ವಸ್ತು. ನ ಧಾತುಮಹ: — ಧಾ (ಗಂಧೋಪಾದಾನೆ) “ಯತ್” (೩-೧-೯೭) ।

ಅಜ್ಞ ಅಜ್ಞ (ಪುಂ) 1. ಲಾಂಛನ, ಗುರುತು, ಚಿಹ್ನೆ. “ರತಿವಲಯಪದಾಕ್ಷೇ ಚಾಪಮಾಸಜ್ಯ ಕಂಠೇ” ಕುಮಾಂ ೨-೬೪ ।

2. ಕಳಂಕ. ಅಜ್ಞತೇಜೇನ — ಅಜಿ (ಲಕ್ಷಣೆ) “ಘ” (೩-೩-೧೨೧) । “एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्ज-तीन्दो: किरणेष्विवाङ्क:” ಕುಮಾಂ ೧-೩ । (ಪುಂಂ)

3. ಉತ್ಸಂಗ, ತೊಡೆ. “ಅಜ್ಞಾಪಯಾವಕ್ತುಮುದೀರಿತಾಶಿ: ಸಾ ಮಂಡನಾನ್ಮಂಡನಮನ್ವಭುಂಕ್ತ” ಕುಮಾಂ ೭-೪ । 4. ನಾಟಕದ ಒಂದು ಭಾಗ. “ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷನೇತೃಚರಿತೋ ಬಿಂದುವ್ಯಕ್ತಿಪುರಸ್ಕೃತ: । ಅಜ್ಞೋ ನಾನಾಪ್ರಕಾರಾರ್ಥಸಂವಿಧಾನರಸಾಶ್ರಯ:” । 5. ನಾಟಕಾದಿ ಹತ್ತು ರೂಪಕಗಳಲ್ಲೊಂದು. “उत्सृष्टिकाङ्क एकाङ्को नेतार: प्राकृता नरा: । रसोऽत्र करुण: स्थायी बहुस्त्री-परिदेवितम् । प्रख्यातमिति वृत्तं च कविर्बुद्ध्या प्रपञ्चयेत्” ಸಾಂ ೬೦ । 6. ಚಿತ್ರಯುದ್ಧ. 7. ಸಮಾಪ. “ಪ್ರೇಮೋಪ-ಕಂಠಂ ಮುಹುರಜ್ಞಭಾಜೋ ರತ್ನಾವಲೀರಮ್ಬುಧಿರಾವಬಂಧ” ಮಾಘಂ ೩-೩೬ । 8. ಸ್ಥಾನ. 9. ಪಾಪ. 10. ದುಃಖ. 11. ಅಪರಾಧ, ತಪ್ಪು. 12. ರೀತಿ, ಗೆರಿ. 13. ಅಲಂಕಾರ, ಒಡನೆ, ಭೂಷಣ. “ಅಜ್ಞ: ಸ್ಥಾನೇಽಂತಿಕೇ ಮಂತೌ ರೂಪಕೋತ್ಸರ್ಗಲಕ್ಷಮಸು । ನಾಟಕಾದಿ-ಪರಿಚ್ಛೇದೇ ಚಿತ್ರಯುದ್ಧೇ ಚ ಭೂಷಣೇ” ವಿಶ್ವಂ । “ಅಜ್ಞೋ ರೂಪಕ-ಭೇದಾಗಶಿವಹರೇಖಾಜಿಭೂಷಣೇ । ರೂಪಕಾಂಶಾಂತಿಕೋತ್ಸರ್ಗೇ ಸ್ಥಾನೇಽಜ್ಞಂ ಪಾಪದುಃಖಯೋ:” ಮೇದಿಂ । 14. ಶರೀರ, ದೇಹ. 15. ಸರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. 16. ಸಂಖ್ಯೆ, ಅಂಕ. 17. ಬುದ್ಧಿ. “ಅಜ್ಞೋ ನಾಟಕವಿಚ್ಛೇದೇ ಸಂಖ್ಯಾಯಾಂ ಯುಧಿ ಭೂಷಣೇ । ಸಮೀಪೇ ರೂಪಕೇ ಸ್ಥಾನೇ ಮತಾವುತ್ಸರ್ಗಚಿಹ್ನಯೋ:” ನಾನಾಶರಂ । ಮೇದಿನಿಯಲ್ಲಿ ಪಾಪ ಮತ್ತು ದುಃಖ ಎಂಬ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ನಪುಂಸಕಲಿಂಗದಲ್ಲಿದೆ.

ಅಜ್ಞತಿ ಅಂಕತಿ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಅಜ್ಞತಿ ಗಚ್ಛತಿ — ಅಜ್ಞ (ಗತೌ) “ಅತಿ:” ಕಾದೇಶಶ್ಚ (೩ಂ ೪-೬೧) । “ನಮ: ಪ್ರಾಣೋಽಜ್ಞತಿ: ಸರ: । ಆಶುಗ: ಪವನ: ಸ್ಪರ್ಶ:” ವೇಜಂ । 2. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 3. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. 4. ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರ. “ಅಜ್ಞತಿರ್ವಹ್ನಿವೇಷಸೋ: । ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರಿಣಿ” ಹೇಮಂ ।

ಅಜ್ಞಧಾರಣ ಅಂಕಧಾರಣ (ನಂ) 1. ಗುರುತನ್ನು ಹೊಂದುವುದು, ಗುರುತುಹಾಕಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 2. ತಪ್ಪು ಮುದ್ರಾಧಾರಣ, ವೈಷ್ಣವಮತದ ಗುರುತಾದ ಶಂಖ ಚಕ್ರಾದಿಧಾರಣ. ಅಜ್ಞಸ್ಯ ಧಾರಣಮ್ — ಧವ್ (ಧಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪) । ಭಾವೇ ಯುಚಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಅಜ್ಞಧಾರಣಾ — ಣಾ.

ಅಜ್ಞನ ಅಂಕನ (ನಂ) 1. ಗುರುತು, ಚಿಹ್ನೆ. ಅಜ್ಞತೇ-ಜೇನ — ಅಜಿ (ಲಕ್ಷಣೆ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭) ।



"ಸ್ನೇಹಾಕ್ಷುನಾನಿ ಮಮ ಮುಖದೃಶಶ್ಚ ಕಂಠೇ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೪೮।

2. ಗುರುತುಹಾಕುವುದು, ಮುದ್ರೆಹಾಕುವುದು.

ಅಕ್ಷುತೇ - ಅಕಿ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । ಭಾವೇ  
ಯುಚಿ ಅಕ್ಷುನಾ - ನಾ.

ಅಕ್ಷುಪಾಲಿ-ಲಿ ಅಂಕಸಾಲಿ - ಲೀ(ಸ್ವೀಂ) 1. ತೊಡೆಯ  
ತುದಿ, ಅಂಕಸೀಲ. ಅಕ್ಷುಸ್ಯ ಪಾಲಿ: । 2. ಔಷಧ.  
3. ದಾದಿ, ಉಪಮಾತೆ. "ಅಥ ಗದದ್ರುಹಿ । ಧಾತ್ಯಾಂ  
ಪಾಲ್ಯಾಂ ಚಾಕ್ಷುಪಾಲಿ:" ವೇಜಂ । 4. ಅಲಿಂಗನ. "ತಾವದ್ರಾಹಂ  
ವಿತರ ಸಕೃದಪ್ಯಕ್ಷುಪಾಲಿ ಪ್ರಸೀದ" ಮಾಲತೀಂ ೮-೨।

ಅಕ್ಷುಪೂರಣ ಅಂಕಪೂರಣ (ನಂ) ಅಂಕಗಳನ್ನು ತುಂಬು  
ವುದು. ಅಕ್ಷುನಾಂ ಪೂರಣಮ್ ।

ಅಕ್ಷುಬಂಧ ಅಂಕಬಂಧ (ಪುಂ) ತೊಡೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟಿಕೊಂಡು  
ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಅಕ್ಷುಸ್ಯ ಬಂಧ: ।

ಅಕ್ಷುಲೋಪ ಅಂಕಲೋಪ (ಪುಂ) ಕಳೆಯುವಿಕೆ, ವಜಾ  
ಮಾಡುವುದು, ವ್ಯವಕಲನ. ಅಕ್ಷುಸ್ಯ ವಿಯೋಜ್ಯಸಂಖ್ಯಾಯಾ:  
ಲೋಪ: ।

ಅಕ್ಷುಸ್ ಅಂಕಸ್ (ನಂ) 1. ಶರೀರ, ದೇಹ. 2. ಚಿಹ್ನೆ,  
ಗುರುತು. ಅನ್ವು (ಗತೀ) "ಅಸುನ್" ಕಾದೇಶಶ್ಚ (೩ಂ  
೪-೨೧೫) ।

ಅಕ್ಷುಾವತಾರ ಅಂಕಾವತಾರ (ಪುಂ) ನಾಟಕ (ರೂಪಕ)  
ಗಳಲ್ಲಿ ಮುಂದಿನ ಅಂಕದ ಪ್ರಾರಂಭದ ವಿಷಯವನ್ನು  
ಸೂಚಿಸುವ ಒಂದು ಕಥಾಭಾಗ, ಹಿಂದಿನ ಅಂಕದ  
ಕೊನೆಯ ಕಥಾಭಾಗವೇ ಮುಂದಿನ ಅಂಕದ ಪ್ರಾರಂಭ  
ದಲ್ಲೂ ಸೇರಿದಹಾಗೆ ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಡುವಂತೆ ಪೂರ್ವಾಂ  
ಕಾಂತ ಸಾತ್ರದಿಂದ ಮಾಡುವ ಮುನ್ನೂಚನೆ. ಅವ+ತ್  
(ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) ಭಾವೇ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮) । "ಅಕ್ಷುಂತೇ  
ಸೂಚಿತ: ಪಾತ್ರೇಸ್ತದಕ್ಷುಸ್ಯಾವಿಭಾಗತ: । ಯತ್ರಾಕ್ಷುಸ್ವತರತ್ಯೇಷೋ-  
ಽಕ್ಷುಾವತಾರ ಇತಿ ಸ್ಮೃತ:" ಸಾಂ ೬೦ ೬-೫೮ । ಮಾಲವಿ  
ಕಾಗ್ನಿಮಿತ್ರದಲ್ಲಿ "ತೇನ ಹಿ ದ್ವಾವೇವ ವಗೌ ಪ್ರೇಕ್ಷಾಗೃಹೇ  
ಸಂಗೀತರಚನಾಂ ಕೃತ್ವಾ ತತ್ರಭವತೋದ್ದೃತಂ ಪ್ರೇಷಯತಮ್ । ಅಥವಾ  
ಮೃದಙ್ಗಶಬ್ದ ಉಪಸ್ಥಾಪಯಿಷ್ಯತಿ" ಎಂಬ ಮೊದಲನೇ  
ಅಂಕದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ವಿದೂಷಕನ ವಾಕ್ಯವು ಅಂಕಾವ  
ತಾರವು. ಅವ+ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೫) । -ಅವತರಣಮ್ - ಅವತರಣಮ್ ।

ಅಕ್ಷುತ ಅಂಕಿತ (ನಂ) 1. ಗುರುತು, ಚಿಹ್ನೆ. ಅಕಿ  
(ಲಕ್ಷಣೇ) ಭಾವೇ "ಕ್ಲ:" (೩-೩-೧೧೪) । (ವಿಂ)  
2. ಗುರುತುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು. ಅಕಿ (ಲಕ್ಷಣೇ) "ಕ್ಲ:"  
(೩-೨-೧೦೨) ।

ಅಕ್ಷುನ್ ಅಂಕನ್ (ವಿಂ) ಮೃದಂಗ, ಮದ್ದಳೆ (ಮುಂತಾ  
ಯದು). ಅಕ್ಷು: ಅಲಿಂಗನಸಾಧನತ್ವೇನಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:"  
(೫-೨-೧೧೫) ।

ಅಕ್ಷುರ ಅಂಕುರ (ಪುಂ) 1. ಮೊಳಕೆ. ಅಕಿ  
(ಲಕ್ಷಣೇ) "ಊರ್" (೩ಂ ೧-೩೮) । "ಬೀಜಾಕ್ಷುರ:  
ಪ್ರಾಗುದಯಾದಿವಾಮ್ಭ:" ಕುಮಾಂ ೩-೧೮ । 2. ಜಲ, ನೀರು.  
3. ರಕ್ತ. 4. ಕೂದಲು. 5. ಮೊಗ್ಗು. "ಚೃತಾಕ್ಷುರಾ-  
ಸ್ವಾದಕಷಾಯಕಂಠ: ಪುಂಸ್ಕೋಕಿಲೋ ಯನ್ಮಧುರಂ ಚುಕುಜ್" ಕುಮಾಂ  
೩-೩೨ । "ಅಕ್ಷುರೋ ರುಧಿರೇ ಲೋಮಿನಿ ಪಾನೀಯೇಽಭಿನವೋದ್ವಿಧಿ"  
ಮೇದಿಂ ।

ಅಕ್ಷುರಕ ಅಂಕುರಕ (ಪುಂ) ಸಶುಪಕ್ಷ್ಯಾದಿಗಳ ನಾಸ  
ಸ್ಥಾನ.

ಅಕ್ಷುರಿತ ಅಂಕುರಿತ (ವಿಂ) ಮೊಳಕೆ ಹೊರಟಿರುವ,  
ಅಂಕುರಿಸಿದ. ಅಕ್ಷುರೋಸ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತಚ್" (೫-೨-೩೬) ।

ಅಕ್ಷುಶ ಅಂಕುಶ (ಪುಂ) ಅನೆಯನ್ನು ತಿಕ್ಕಿಸಲು ಉಪ  
ಯೋಗಿಸುವ ಮುಳ್ಳುಕೋಲು, ಮೊನೆಯಾದ ಮತ್ತು  
ತುದಿಯಲ್ಲಿ ಬಗ್ಗಿದ ಕಬ್ಬಿಣದ ಆಯುಧ. ಅಕ್ಷುಶೇನೆನ -  
ಅಕಿ (ಲಕ್ಷಣೇ) "ಊಶ್" (೩ಂ ೪-೧೦೬) । "ಅಕ್ಷುಶೇನ  
ನಿಶಿತೇನ ಹಸ್ತಿಪ:" ಯಾದಂ ೧೭-೬೭ ।

ಅಕ್ಷುಶಗ್ರಹ ಅಂಕುಶಗ್ರಹ (ಪುಂ) ಮಾವಟಗ. ಅಕ್ಷುಶಸ್ಯ  
ಗ್ರಹ: -ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।  
"ಅನ್ವೇತುಕಾಮೋಽವಮತಾಕ್ಷುಶಗ್ರಹ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೧೬ ।

ಅಕ್ಷುಶದುರ್ಧರ ಅಂಕುಶದುರ್ಧರ (ಪುಂ) ದುಷ್ಟಗಜ,  
ಅಂಕುಶಕ್ಕೂ ಅಡಗದ ಅನೆ. ಅಕ್ಷುಶೇನ ದುರ್ಧರ: ।

ಅಕ್ಷುಶಧಾರಿನ್ ಅಂಕುಶಧಾರಿನ್ (ಪುಂ) ಮಾವಟಗ.  
ಧರತಿ - ಧೃಜ್ (ಧಾರಣೇ) "ಞಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) ।  
ಅಕ್ಷುಶಸ್ಯ ಧಾರಿ ।

ಅಕ್ಷುಶಮುಕ್ತಾ ಅಂಕುಶಮುಕ್ತಾ (ಸ್ವೀಂ) ಅಂಕುಶಾ  
ಕಾರದ ಮುದ್ರೆ, ತಂತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಒಂದು ಮುದ್ರೆ.  
[ನೆಟ್ಟಿಗೆ ಬಿಚ್ಚಿದ ಮಧ್ಯಮ ಬೆರಳಿನ ಮಧ್ಯದ ಗಿಣ್ಣಿಗೆ  
ಸರಿಯಾಗಿ ತರ್ಜನಿ ಬೆರಳನ್ನು ಸ್ವಲ್ಪ ಬಗ್ಗಿಸಿ ತೋರು  
ವುದು ಅಂಕುಶ ಮುದ್ರೆಯು.] "ಶೃಜ್ವಿಂ ಚ ಮಧ್ಯಮಾಂ  
ಕೃತ್ವಾ ತನ್ಮಧ್ಯಂ ಪರ್ವಮೂಲತ: । ತರ್ಜನಿಂ ಕಿಂಚಿದಾಕುಂಚೇತ್ ಸಾ  
ಮುಕ್ತಾಕ್ಷುಶಸಂಜಿತಾ" ।

ಅಕ್ಷುರ ಅಂಕೂರ (ಪುಂ) 1. ಮೊಳಕೆ. ಅಕಿ (ಲಕ್ಷಣೇ)  
"ಊರ:" (೩ಂ ೪-೯೦) । "ವಾತಾಕ್ಷುರಾಜಿಹೀರ್ಷಾದಿರವಿವೃತ-  
ಕಣಾಶೃಂಗಭೂಮುಜಙ್ಗಮ್" ಚಂಪಾಂ 2. ಜಲ, ನೀರು.



3. ಮೊಗ್ಗು. 4. ರಕ್ತ. 5. ಕೂದಲು. "ಅಕ್ಷರಸ್ವಕ್ಕುರ-  
ಸ್ತುಲೈ" ದ್ವಿರೂಪಂ.

ಅಕ್ಕೋಟ ಅಂಕೋಟೆ (ಪುಂ) ಅಂಕೋಲೆಗಿಡ. ಅಕಿ  
(ಲಕ್ಷಣ) "ಆಟ:" ಬಾಹುಂ.

ಅಕ್ಷುಚ ಅಂಕ (ಪುಂ) ಮೃದಂಗ, ತೊಡೆಯಮೇಲಿಟ್ಟು  
ಬಾರಿಸುವ ವಾದ್ಯ. ಅಕ್ಷುಚ್ಛೇ ಭವ: "ಯತ್"  
(೪-೩-೪೪) | "ಮೃದಜ್ಞಾ ಮುರಜಾಭೇದಾಸ್ತ್ವಕ್ಷುಚಾಲಿಕ್ಷುಚೋ-  
ರ್ಧ್ವಕಾಸ್ತ್ರಯ:" ಅಮಂ.

ಅಕ್ಷ ಅಂಗ (ನಂ) 1. ಅವಯವ. 2. ದೇಹ, ಶರೀರ.  
ಅಗಿ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಅಕ್ಷಾನಿ ವಧ್ವಾ:  
ಕುಲವೃದ್ಧನಾರ್ಯ: ಪ್ರಸಾಧನೇರಂತರಯಾಂಬಭುವು:" ಯಾದಂ ೧೩-೮೨ |  
3. ಉಪಾಯ. "ಸರ್ವಕಾರ್ಯಶರೀರೇಷು ಮುಕ್ತವಾಕ್ಷಸ್ಕನ್ಧಪಂಚ-  
ಕಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೨೮ | "ಮನ್ತ್ರೋ ಯೋಧಾ ಇವಾಧೀರ:  
ಸರ್ವಾಕ್ಷೇ: ಸಂವೃತೇರಪಿ" ಮಾಘಂ ೨-೨೯ | 4. ಒಂದು ಭಾಗ,  
ವಸ್ತುವಿನ ಒಂದು ಅಂಶ, ಸಂಸ್ಥೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ.  
ಉದಾ: (ಕ) ಸೇನಾಂಗಗಳು ನಾಲ್ಕು: (1) ಆನೆ,  
(2) ಕುದುರೆ, (3) ರಥ ಮತ್ತು (4) ಕಾಲಾಳು. "ಹಸ್ತ-  
ಶ್ವರಥಪಾದಾತಂ ಸೇನಾಕ್ಷಮ್" ಅಮಂ | "ಸರ್ವೇಬಲಾಕ್ಷೇಂದ್ರದಪ್ರಧಾನೇ:"  
ರಘುಂ ೭-೪೯ | (ಖ) (1) ಮಂತ್ರಾಂಗಗಳು ಐದು:  
೧. ಸಹಾಯಾ:, ೨. ಸಾಧನೋಪಾಯಾ:, ೩. ದೇಶಕಾಲವಿಭಾಗ:,  
೪. ವಿನಿಪಾತಪ್ರತೀಕಾರ: ಮತ್ತು ೫. ಸಿದ್ಧಿ: | [(1) ಕಾರ್ಯದ  
ಆರಂಭೋಪಾಯ, (2) ಪುರುಷಸಂಪತ್ತು ಮತ್ತು  
ದ್ರವ್ಯಸಂಪತ್ತು, (3) ದೇಶ ಮತ್ತು ಕಾಲಗಳ ವಿಭಾಗ,  
(4) ಅನರ್ಥಗಳ ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆ ಮತ್ತು (5) ಕಾರ್ಯ  
ಸಿದ್ಧಿ:] (2) ಜ್ಯೋತಿಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಪಂಚಾಂಗಗಳು:  
(1) ತಿಥಿ, (2) ವಾರ, (3) ನಕ್ಷತ್ರ, (4) ಯೋಗ  
ಮತ್ತು (5) ಕರಣ. (3) ಸಂಗೀತದ ತಾಳಾಂಗಗಳು  
ಐದು: (1) ಅನುದ್ರುತ, (2) ದ್ರುತ, (3) ಲಘು,  
(4) ಗುರು ಮತ್ತು (5) ಪಲ್ಲತ. (ಗ) ವೇದಾಂಗಗಳು  
ಆರು: (1) ಶಿಕ್ಷೆ, (2) ವ್ಯಾಕರಣ, (3) ಛಂದಸ್ಸು,  
(4) ನಿರುಕ್ತ, (5) ಜ್ಯೋತಿಷ ಮತ್ತು (6) ಕಲ್ಪ.  
(ಘ) (1) ರಾಜ್ಯಾಂಗಗಳು ಏಳು: (1) ಸ್ವಾಮಿ,  
(2) ಅಮಾತ್ಯ, (3) ಸುಹೃತ್ತು, (4) ಕೋಶ (ಬೊಕ್ಕಸ),  
(5) ರಾಷ್ಟ್ರ, (6) ದುರ್ಗ (ಕೋಟೆ) ಮತ್ತು (7) ಬಲ  
(ಸೈನ್ಯ). (2) ವೃಕ್ಷಾಂಗಗಳು ಏಳು: (1) ಸ್ತಂಭ  
(ಬುಡದಿಂದ ಕೊಂಬೆಯವರೆಗೂ ಇರುವ ದೂಲ),  
(2) ಕೊಂಬೆ, (3) ಪರ್ಣ (ಎಲೆ), (4) ಪುಷ್ಪ,  
(5) ಫಲ, (6) ಮೂಲ (ಬೇರು) ಮತ್ತು (7) ನಲ್ಲುಲ  
(ತೊಗಟೆ, ಸಿಪ್ಪೆ). (ಙ) (1) ಯೋಗಾಂಗಗಳು

ಎಂಟು: (1) ಯಮ, (2) ನಿಯಮ, (3) ಆಸನ,  
(4) ಪ್ರಾಣಾಯಾಮ, (5) ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರ, (6) ಧಾರಣ,  
(7) ಧ್ಯಾನ ಮತ್ತು (8) ಸಮಾಧಿ. (2) ನಮಸ್ಕಾರದ  
ಅಂಗಗಳು ಎಂಟು: (1) ಭುಜಗಳು, (2) ಪಾದಗಳು,  
(3) ಮಂಡಿಗಳು, (4) ವಕ್ಷಸ್ಸು (ಎದೆ), (5) ಲಲಾಟ  
(ಹಣೆ), (6) ದೃಷ್ಟಿ, (7) ಮನಸ್ಸು ಮತ್ತು  
(8) ಮಾತು. [ಈ ಎಂಟು ಅಂಗಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ  
ನಮಸ್ಕಾರವು ಸಾಷ್ಟಾಂಗಪ್ರಾಣಾಮವೆನಿಸಿಕೊಳ್ಳು-  
ವುದು.] "ದೋಮ್ಯಾಂ ಪದ್ಮಾಂ ಚ ಜಾನುಮ್ಯಾಮುರಸಾ ಶಿರಸಾ  
ದೃಶಾ | ಮನಸಾ ವಚಸಾ ಚೇತಿ ಪ್ರಣಾಮೋಷ್ಠಾಕ್ಷ ಇರೀತಿ:"  
ವೇದನಾಂ ಆಹ್ವಿಕಂ | (ಚ) ನಾಟಕೀಯಾಂಗಗಳು  
ಅರವತ್ತನಾಲ್ಕು: ಉಪೇಷ:, ಪರಿಕರ:, ಪರಿನ್ಯಾಸ:,  
ವಿಲೋಚನಮ್, ಯುಕ್ತಿ:, ಪ್ರಾಪ್ತಿ: ಇತ್ಯಾದಿ 64 ಅಂಗಗಳು.  
[ಸಾಂ ದಂ 6ನೇ ಪರಿಚ್ಛೇದ ನೋಡಿ.] 5. ಅಪ್ರಧಾನ,  
ಅನುಖ್ಯ. ಉದಾ: ಅಂಗರಸಗಳು. "ಅಕ್ಷಿ  
ರೋದ್ರಸಸ್ತತ್ರ ಸರ್ವಾಕ್ಷಾನಿ ರಸಾ: ಪುನ:" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೪೨ |  
6. ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರೀಕ್ತವಾದ ಅಂಗಸಂಜ್ಞೆ —  
ಯಾವುದಾದರೊಂದು ಶಬ್ದಸ್ವರೂಪವು ಅದರ ಮುಂದೆ  
ಒಂದು ಪ್ರತ್ಯಯವು ವಿಹಿತವಾದರೆ ಅಂಗಸಂಜ್ಞೆ  
ಯನ್ನು ಹೊಂದುವುದು. ಉದಾ: ರಾಮ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ  
"ಠ" ಪ್ರತ್ಯಯವು ವಿಹಿತವಾದಾಗ ರಾಮ ಎಂಬ ಶಬ್ದ  
ಸ್ವರೂಪವು ಅಂಗಸಂಜ್ಞೆಯನ್ನು ಹೊಂದುವುದು.  
7. ಚಿತ್ತ, ಮನಸ್ಸು. 8. ಲಗ್ನ. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) |  
9. ಅಂಗದೇಶ ಮತ್ತು ಅಂಗದೇಶವಾಸಿಗಳು (ಅವ್ಯಂ)  
10. ಸಂಬೋಧನ. "ಅಕ್ಷ, ಅಸ್ತಿ ಕರಿಚಿದ್ರಿದಮದಂಕೋ  
ನಾಮಾತ್ರಭವತ:" ದಶಕುಂ | ಮತ್ತು ಕೋಶಕಾರರು  
11. ಜಾಗ್ರತೆಯಾಗಿ. 12. ಪುನಃ, ಮತ್ತೆ. 13.  
ಸಂಗಮ. 14. ಅಸೂಯೆ ಮತ್ತು 15. ಹರ್ಷ,  
ಸಂತೋಷ ಇಷ್ಟು ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿಯೂ "ಅಕ್ಷ" ಶಬ್ದ  
ವನ್ನು ಹೇಳಿರುವರು. "ಕ್ಷಿಪ್ರೇ ಚ ಪುನರರ್ಥೇ ಚ ಸಕ್ಷಮಾಸೂಯ-  
ಯೋಸ್ತಥಾ | ಹರ್ಷೇ ಸಂಬೋಧನೇ ಚೈವ ಹ್ಯಕ್ಷಶಬ್ದ: ಪ್ರಯುಜ್ಯತೇ" |  
(ವಿಂ) 16. ಅವಯವಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಅವಯವ  
ಗಳುಳ್ಳ, ಅಂಗವುಳ್ಳ. ಅಕ್ಷಾನ್ಯಸ್ಯ ಸಂತಿ ಅಕ್ಷಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ  
ವಾ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) | "ಉಪಾಯಗಾತ್ರಯೋರಕ್ಷವಾನಕ್ಷ  
ಉಚ್ಯತೇ" ಶಾಶ್ವಂ |

ಅಕ್ಷಕರ್ಮ ಅಂಗಕರ್ಮ (ನಂ) 1. ದೇಹಾಲಂಕಾರ,  
ಮೈಯನ್ನು ಉಜ್ಜಿ ಗಂಧ ಮೊದಲಾದವುಗಳನ್ನು  
ಬಳಿಯುವುದು. ಅಕ್ಷಸ್ಯ ಕರ್ಮ ಮದನಾನುಲೇಪನಾದಿಪರಿಕರ್ಮ |  
2. ಪ್ರಧಾನವಾದ ಯಾಗಕ್ಕೆ ಅಂಗಭೂತವಾದ ಇತರ  
ಕಾರ್ಯ.



ಅಕ್ಷಜ ಅಂಗಜ (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. ಅಕ್ಷಾತ್  
ಜಾಯತೆ — ಜನಿ (ಪ್ರಾತುಭವಿ) “ಓ:” (೩-೨-೯೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ಓಃ” (೪-೧-೪)। ಅಕ್ಷಜಾ-ಜಾ. ಪುತ್ರ, ಮಗಳು.  
2. ರೋಮ, ಮೈಕೂದಲು. 3. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ.  
ಅಕ್ಷಾತ್ ಮನಸ: ಜಾಯತೆ। 4. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. (ನಂ)  
5. ರಕ್ತ. (ವಿಂ) 6. ದೇಹದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ.  
“ಅಕ್ಷಜಂ ರವಿರೇನ ಜ್ಞಕೇಶಪುತ್ರಗದೇಶು ನಾ” ಮೇದಿಂ।

ಅಕ್ಷಣ ಅಂಗಣ (ನಂ) 1. ಅಂಗಳ, ತೊಟ್ಟಿ, ಗೋಡೆ  
ಗಳಿಂದ ಅಥವಾ ಕಟ್ಟಡಗಳಿಂದ ಸುತ್ತುವರಿದಿರುವ  
ಪ್ರದೇಶ. ಅಕ್ಷತ್ಯತ್ರ — ಅಗಿ (ಗತೌ) ಅಧಿಂ “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೭)। “ಆರೋಹಣಾನ್ಯಜ್ಞವೇದಿಕಾನಾಮ್” ಯಾದಂ  
೪-೨೫। 2. ಗಾಡಿ, ರಥ, ವಾಹನ. ಅಕ್ಷಯತೇಜೇನ —  
ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)। 3. ಗಮನ, ಸಂಚಾರ.  
ಅಕ್ಷಯತೆ — ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। 4. ಮೈದಾನ,  
ಅಂಗಳ. ಕ್ರೀಡಾಕ್ಷಣಮ್, ಸಭಾಕ್ಷಣಮ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಅಕ್ಷತಿ ಅಂಗತಿ (ಪುಂ) 1. ಗಾಡಿ, ರಥ. ಅಕ್ಷತಿ  
ಯಾತ್ಯನೇನ — ಅಗಿ (ಗತೌ) “ಅತಿ:” ಬಾಹುಂ। 2. ವಿಷ್ಣು.  
3. ಬ್ರಹ್ಮ. 4. ಅಗ್ನಿ. 5. ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರ.

ಅಕ್ಷದ ಅಂಗದ (ಪುಂ) 1. ವಾಲಿಯ ಮಗ. (ನಂ)  
2. ತೋಳಿನ ಅಭರಣ, ವಂಕೆ. ಅಕ್ಷಂ ದಾಯತಿ ಶೋಧ-  
ಯತಿ — ದೈಪ್ (ಶೋಧನೆ) “ಕ:” (೩-೨-೩)। “ತಮಜ್ಞದೇ  
ಮಂದರಕೂಟಕೋಟಿವ್ಯಾಘಟನೋತ್ಪತ್ತಿನಯಾ ಮಣಿನಾಮ್” ಮಾಘಂ ೩-೬।  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) — ದಾ — ದಾ. 3. ದಕ್ಷಿಣದಿಗ್ಗಜದ ಪತ್ನಿ.  
4. ಪುರುಷನನ್ನು ಅವೇಕ್ಷಿಸುವ ಹೆಂಗಸು. ಅಕ್ಷಂ  
ದದಾತಿ — ತು ದಾನ್ (ದಾನೇ) “ಕ:” (೩-೨-೩)। (ವಿಂ)  
5. ದೇಹವನ್ನು ಕೊಡುವ, ದೇಹವನ್ನು ಒಪ್ಪಿಸುವ.

ಅಕ್ಷನಾ ಅಂಗನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಂಗಸು. 2. ಸುಂದರ  
ವಾದ ದೇಹವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಪ್ರಶಸ್ತಾನ್ಯಜ್ಞಾನ್ಯಸ್ಯಾ: —  
ಅಕ್ಷಾತ್ಕಲ್ಯಾಣೇ (ಗಂ) “ನ:” (೪-೨-೧೦೦)। “ತರು-  
ಕಿಸಲಯಜಾಲಮಗ್ರಹಸ್ತೆ: ಪ್ರಸಮಮನೀಯತ ಭಜ್ನಮಜ್ಞನಾನಾಮ್”  
ಮಾಘಂ ೭-೨೯।

ಅಕ್ಷನಾಪ್ರಿಯ ಅಂಗನಾಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) ಅಶೋಕ ಪೃಕ್ಷ.  
ಅಕ್ಷನಾಪ್ರಿಯ: ಪ್ರಿಯ:।

ಅಕ್ಷನ್ಯಾಸ ಅಂಗನ್ಯಾಸ (ಪುಂ) ಮಂತ್ರೋಚ್ಚಾರಣ  
ಪೂರ್ವಕ ಹೃದಯ ಮುಂತಾದ ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಹಸ್ತ  
ಸ್ಪರ್ಶದಿಂದ ಮಾಡುವ ನ್ಯಾಸ.

ಅಕ್ಷಪಾಲಿ ಅಂಗಪಾಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಲಿಂಗನ. ಅಕ್ಷಂ  
ಪಾಲಯತೇ — ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೇ) “ಓ:” (೩-೨-೯೮)।

ಅಕ್ಷಪಾಲಿಕಾ ಅಂಗಪಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಾದಿ, ಉಪ  
ಮಾತೆ, ಸಾಕುತಾಯಿ. ಪಾಲಯತಿ — ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೇ)  
“ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩)। ಅಕ್ಷಸ್ಯ ಪಾಲಿಕಾ।

ಅಕ್ಷಭೂ ಅಂಗಭೂ (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. ಅಕ್ಷಾತ್  
ದೇಹಾತ್ ಭವತಿ — ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “ವಿವ್” (೩-೨-೭೬)।  
“ಹಿರಣ್ಯಗರ್ಭಾಕ್ಷಭುವಂ ಮುನಿ ಹರಿ:” ಮಾಘಂ ೧-೧। 2. ಕಾಮ,  
ಮನ್ಮಥ. ಅಕ್ಷಾತ್ ಮನಸ: ಭವತಿ — ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “ವಿವ್”  
(೩-೨-೧೭೯)। (ವಿಂ) 3. ದೇಹದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ.

ಅಕ್ಷಭಜ್ಜ ಅಂಗಭಂಗ (ಪುಂ) ಮೈಮುರಿಯುವಿಕೆ, ನಿದ್ರೆ  
ಯಿಂದ ಎದ್ದ ಬಳಿಕ ಮೈಯನ್ನು ಚಾಚಿ ಮುರಿಯುವಿಕೆ.  
ಅಕ್ಷಾನ್ತಾ ಭಜ್ಜ:। “ಆತ್ಮವ್ಯಾಪಾರಗುರ್ವಿ ಜನಿತಜಲಲವಾ  
ಜಮ್ಭಿತ: ಸಾಕ್ಷಭಜ್ಜ:” ಮುद्रಾಂ ೩-೨೧।

ಅಕ್ಷಮದ ಅಂಗಮದ (ಪುಂ) 1. ಮೈಯನ್ನು ಜ್ವಪ  
ಸೇವಕ. ಅಕ್ಷಂ ಮದ್ರಾತಿ — ಮದ (ಕ್ಷೋದೇ) “ಅನ್” (೩-೨-೧)।  
2. ಮೈಯನ್ನು ಜ್ವಪಿಸಿಕೆ. ಭಾವೇ “ಘ್” (೩-೩-೧೮)।

ಅಕ್ಷಮದಕ ಅಂಗಮದಕ (ಪುಂ) 1. ಮೈಯನ್ನು ಜ್ವಪ  
ಸೇವಕ. ಅಕ್ಷಸ್ಯ ಮದಕ: — ಮದ (ಕ್ಷೋದೇ) “ಫುಲ್”  
(೩-೧-೧೩೩)। (ವಿಂ) 2. ಮೈಯನ್ನು ಜ್ವಪವನು.

ಅಕ್ಷಮದಿನ್ ಅಂಗಮದಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಮೈಯನ್ನು  
ಜ್ವಪ ಸೇವಕ. ಅಕ್ಷಸ್ಯ ಮದೀ — ಮದ (ಕ್ಷೋದೇ) “ಞಿ:”  
(೩-೧-೧೩೪)। (ವಿಂ) 2 ಮೈಯನ್ನು ಜ್ವಪವನು.  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಓಃ” (೪-೧-೪)। ಅಕ್ಷಮದಿನಿ — ಸೇ.

ಅಕ್ಷಯಜ ಅಂಗಯಜ್ಞ (ಪುಂ) ಅಂಗಭೂತವಾದ ಪಂಚ  
ವಿಧ ಯಜ್ಞ, ಪ್ರಧಾನಯಾಗಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದ ಯಜ್ಞ.  
ಅಕ್ಷಿಭೂತ: ಯಜ್ಞ:। “ರಕ್ಷಾಸಿ ವೇದಿ ಪರಿತೋ ನಿರಾಸ್ಥದಕ್ಷಾನ್ಯ-  
ಯಾಕ್ಷಿಧಮಿತ: ಪ್ರಧಾನಮ್” ಮೃದ್ವಿಂ ೧-೧೨।

ಅಕ್ಷರಕ್ಷಕ ಅಂಗರಕ್ಷಕ (ಪುಂ) ಮೈಗಾನಲುಗಾರ.  
ಅಕ್ಷಸ್ಯ ರಕ್ಷಕ: — ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩)।

ಅಕ್ಷರಕ್ಷಣ ಅಂಗರಕ್ಷಣ (ನಂ) ದೇಹಸಂರಕ್ಷಣೆ, ಶರೀರ  
ವನ್ನು ಕಾಪಾಡುವುದು. ಅಕ್ಷಸ್ಯ ರಕ್ಷಣಮ್।

ಅಕ್ಷರಕ್ಷಿಣಿ ಅಂಗರಕ್ಷಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕವಚ. ಅಕ್ಷಂ  
ರಕ್ಷಯತೇಜಯಾ — ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)।

ಅಕ್ಷರಾಗ ಅಂಗರಾಗ (ಪುಂ) 1. ದೇಹಕ್ಕೆ ಪೂಸಿಕೊಳ್ಳುವ  
ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ, ವಾಸನೆಯ ಪುಡಿ. ಅಕ್ಷಂ ರಜಯತೇಜೇನ —  
ರಜ (ರಾಗೇ) ಕರಂ “ಘ್” (೩-೩-೧೨೧)।

“ಪಾಂಡುಚೋಷಮಂಸಾಪಿತಲಂಬಹಾರ: ಕಲ್ಪತಾಕ್ಷರಾಗೋ ಹರಿ-  
ಚಂದನೇನ” ರಘುಂ ೬-೬೦। 2. ವಾಸನೆಯ ಪುಡಿಯನ್ನು  
ಮೈಗೆ ಹಚ್ಚುವುದು.



ಅಜ್ಞರಾಜ್ ಅಂಗರಾಜ್ (ಪುಂ) 1. ಅಂಗದೇಶದ ದೊರೆ.  
2. ಕರ್ಣ. ಅಜ್ಞೇಷು ರಾಜತೇ - ರಾಜ್ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕ್ವಿಪ್" (3-2-61)।

ಅಜ್ಞರಾಜ ಅಂಗರಾಜ (ಪುಂ) 1. ಅಂಗದೇಶದ ದೊರೆ.  
2. ಕರ್ಣ. ಅಜ್ಞಾನಾಂ ರಾಜಾ "ಟಕ್" (4-4-91)।

ಅಜ್ಞರೂ ಅಂಗರುಹ (ನಂ) ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಕೂದಲು. ಅಜ್ಞೇ ರೋಹತಿ - ರೂ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ ಚ) "ಕ್ವಿಪ್"।

ಅಜ್ಞರೂ ಅಂಗರುಹ (ನಂ) ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಕೂದಲು. ಅಜ್ಞೇ ರೋಹತಿ - ರೂ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ ಚ) "ಕ:" (3-1-134)। "ವಿಹಜ್ಜರಾಜಾಜ್ಞರೂರೀವಾಯತೇ:" ಮಾಘಂ 1-೭।

ಅಜ್ಞಲೇಪ ಅಂಗಲೇಪ (ಪುಂ) 1. ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ, ವಾಸನೆಯ ಪುಡಿ. ಅಜ್ಞಂ ಲಿಪ್ಯತೇಜೇನ - ಲಿಪ (ಉಪದೇಹೇ) ಕರಂ "ಘ್" (3-3-121)। 2. ಮೈಗೆ ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯವನ್ನು ಹಚ್ಚುವುದು. ಲಿಪಿ ಭಾವೇ "ಘ್"। ಅಜ್ಞಸ್ಯ ಲೇಪ:।

ಅಜ್ಞವಿಕಲ ಅಂಗವಿಕಲ (ವಿಂ) ಅಂಗಹೀನ. ಅಜ್ಞೇನ ವಿಕಲ:।

ಅಜ್ಞವಿಕ್ಷೇಪ ಅಂಗವಿಕ್ಷೇಪ (ಪುಂ) 1. ಸೃತ್ಯ. ಅಜ್ಞಸ್ಯ ವಿಕ್ಷೇಪ: ಚಲನಂ ಯತ್ರ। 2. ಮೈಯನ್ನು ಅಡಿಸುವಿಕೆ. ಅಜ್ಞಸ್ಯ ವಿಕ್ಷೇಪ:।

ಅಜ್ಞವಿಧಾ ಅಂಗವಿಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇದಾಂಗಗಳು. [ವಿವರಕ್ಕೆ ಅಜ್ಞ ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಅಜ್ಞವಿಧಿ ಅಂಗವಿಧಿ (ಪುಂ) ಪ್ರಧಾನಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಅಂಗ ಭೂತವಾದ ಕಾರ್ಯ. ಅಜ್ಞಸ್ಯ ಪ್ರಧಾನೋಪಕಾರಿಣ: ವಿಧಿ: ವಿಧಾನಮ್।

ಅಜ್ಞವೈಕೃತ ಅಂಗವೈಕೃತ (ನಂ) ಮನೋಭಾವವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಅಭಿನಯ, ಕಣ್ಣು ಕೈ ಮೊದಲಾದವುಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ಸನ್ನೆ. ಅಜ್ಞೇನ ಅಜ್ಞಚೇಷ್ಟಯಾ ವೈಕೃತಮ್।

ಅಜ್ಞವೈಗುಣ್ಯ ಅಂಗವೈಗುಣ್ಯ (ನಂ) ಅಂಗಭೂತವಾದ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಕುಂದನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದು. ಅಜ್ಞಸ್ಯ ವೈಗುಣ್ಯಮ್ ಅನ್ಯಥಾಕರಣಮ್।

ಅಜ್ಞಶುದ್ಧಿ ಅಂಗಶುದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೈಯನ್ನು ಶುದ್ಧಿಗೊಳಿಸುವ ಸಾಬೂನು ಮುಂತಾದುದು. ಶುಧ (ಶೀಘ್ರ) ಕರಂ "ಕ್ವಿಪ್" (3-3-104)। 2. ಮೈಯನ್ನು ತೊಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಅಜ್ಞಸ್ಯ ಶುದ್ಧಿ:।

ಅಜ್ಞಸಂಸ್ಕಾರ ಅಂಗಸಂಸ್ಕಾರ (ಪುಂ) 1. ದೇಹವನ್ನು ಶುದ್ಧಿಮಾಡುವ ಸ್ನಾನ ಮೊದಲಾದುದು. ಅಜ್ಞ

ಸಂಸ್ಕಿಯತೇಜೇನ - ಸಮ್ + ಕೃ (ಕರಣೇ) ಕರಂ "ಘ್" (3-3-121)। 2. ನಾಸನೆಯುಡಿಯಿಂದ ದೇಹಕ್ಕೆ ಲೇಪನಮಾಡುವುದು, ದೇಹವನ್ನು ಶೃಂಗರಿಸುವುದು. ಅಜ್ಞಸ್ಯ ಸಂಸ್ಕಾರ: - ಸಮ್ + ಕೃ ಭಾವೇ "ಘ್" (3-3-104)। (ವಿಂ) 3. ದೇಹವನ್ನು ಶೃಂಗರಿಸುವವನು. ಅಜ್ಞಂ ಸಂಸ್ಕರೋತಿ - ಸಮ್ + ಕೃ "ಅಙ್" (3-2-1)।

ಅಜ್ಞಸಂಸ್ತ್ರಿಯಾ ಅಂಗಸಂಸ್ತ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇಹವನ್ನು ಅಲಂಕರಿಸುವುದು, ದೇಹದ ಶೃಂಗಾರ. ಅಜ್ಞಸ್ಯ ಸಂಸ್ತ್ರಿಯಾ।

ಅಜ್ಞಸಂಹತಿ ಅಂಗಸಂಹತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅವಯವಗಳ ಸಮೂಹ. ಅಜ್ಞಾನಾಂ ಅವಯವಾನಾಂ ಸಂಹತಿ:। "ಸ್ಥೇಯಸೀ ದಧತಮಜ್ಞಸಂಹತಿಮ್" ಕಿರಾಂ 13-40।

ಅಜ್ಞಹಾನಿ ಅಂಗಹಾನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಂಗಭೂತವಾದ ಕಾರ್ಯದ ನ್ಯೂನತೆ (ಕೊರತೆ). 2. ಅವಯವನಾಶ.

ಅಜ್ಞಹಾರ ಅಂಗಹಾರ (ಪುಂ) ಸೃತ್ಯವಿಶೇಷ, ಹಸ್ತಾದಿಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ಅಭಿನಯ. ಅಜ್ಞಸ್ಯ ಹಾರ: ಹರಣಮ್ - ಹ್ರ (ಹರಣೇ) "ಘ್" (3-3-104)। "ಪ್ರಯೋಗಮಾಂ ಲಲಿತಾಜ್ಞಹಾರಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೧೧।

ಅಜ್ಞಹೀನ ಅಂಗಹೀನ (ಪುಂ) 1. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. (ವಿಂ) 2. ಅವಯವಗಳಿಂದ ಹೀನನಾದ, ಅಂಗ ಶೂನ್ಯ. ಅಜ್ಞೇನ ಹೀನ:। [ತಾಯಿಯು ಗರ್ಭಧರಿಸಿದಾಗ ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದುದನ್ನು (ಬಯಕೆಯನ್ನು) ಒದಗಿಸದಿದ್ದರೆ ಜನಿಸುವ ಮಗುವು ಅಂಗಹೀನವಾಗುವುದು.] "ಇಂದ್ರಿಯಾರ್ಥಾಸ್ತು ಯಾನ್ ಯಾನ್ ಸಾ ಭೋಕ್ತುಮಿच्छತಿ ಗರ್ಭಿಣಿ। ಗರ್ಭಾಭಿಭಯಾತ್ತಾಸ್ತಾನ್ ಭಿಷಗಾಹುತ್ಯ ದಾಪಯೇತ್ || ಸಾ ಪ್ರಾಪ್ತದೌಹದಾ ಪುತ್ರಂ ಜನಯೇತ್ ಗುಣಾನ್ವಿತಮ್। ಅಲಬ್ಧದೌಹದಾ ಗರ್ಭಂ ಲಭೇತಾತ್ಮನಿ ವಾ ಭಯಮ್। ಯೇಷು ಯೇಷ್ವಿಂದ್ರಿಯಾರ್ಥೇಷು ದೌಹದೇ ವೈ ವಿಮಾನನಾ। ಜಾಯೇತ ತತ್ಸುತಸ್ಯಾರ್ಥಿತ್ವಾಸ್ತಿಸ್ಮಿನ್ ಸ್ತಿಸ್ಮಿನ್ ಸ್ತಾಯೇಂದ್ರೀಯೇ" ಸುಶ್ರುಂ। 3. ಅಂಗಕ್ಕೆ ಲೋಪವುಂಟಾದ ಪ್ರಧಾನಕಾರ್ಯ.

ಅಜ್ಞಾಜ್ಞಿಭಾವ ಅಂಗಾಂಗಿಭಾವ (ಪುಂ) ಗೌಣಮುಖ್ಯ ಭಾವ, ಉಪಕಾರ್ಯೋಪಕಾರಕಭಾವ, ಪ್ರಧಾನ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೂ ಅಂಗಕಾರ್ಯಕ್ಕೂ ಇರುವ ಸಂಬಂಧ. ಅಜ್ಞಸ್ಯ ಅಜ್ಞಿನಶ್ಚ ಭಾವ:।

ಅಜ್ಞಾಧಿಪ ಅಂಗಾಧಿಪ (ಪುಂ) 1. ಅಂಗದೇಶದ ದೊರೆ, ಕರ್ಣ. 2. ಲಗ್ನಾಧಿಪತಿ. "ಅಜ್ಞಾಧಿಪೇ ಬಲಿನಿ ಸರ್ವ-ವಿಭೃತಿಸಂಪನ್"।

ಅಜ್ಞಾಧೀಶ ಅಂಗಾಧೀಶ (ಪುಂ) 1. ಅಂಗದೇಶದ ದೊರೆ, ಕರ್ಣ. 2. ಲಗ್ನಾಧಿಪತಿ.



ಅಜ್ಞಾಧೀಶ್ವರ ಅಂಗಾಧೀಶ್ವರ (ಪುಂ) 1. ಅಂಗದೇಶದ ದೊರೆ, ಕರ್ಣ. 2. ಲಗ್ನಾಧಿಪತಿ.

ಅಜ್ಞಾರ ಅಂಗಾರ (ಪುಂ) 1. ಇದ್ದಲು. 2. ಅರ್ಧ ಬೆಂದಿರುವ ಕಟ್ಟಿಗೆ, ಕೊಳ್ಳೆ. ಅಜ್ಞತಿ ಗಚ್ಛತ್ಯಜ್ಞಾರ: — ಅಗಿ (ಗತೌ) "ಆರ್ನ್" (ತಂ ೩-೧೩೪)। "ಅಜ್ಞಾರ-ಚುಮ್ಬಿತಮಿವ ವ್ಯಥಮಾನಮಾಸ್ತೇ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೨। "ಉಣ್ಣಿ ದಹತಿ ಚಾಜ್ಞಾರ: ಶೀತ: ಕೃಣ್ಣಾಯತೇ ಕರಮ್"। 3. ಬೆಂಕಿಯ ಕೆಂಡ. 4. ಅಂಗಾರಕ, ಕುಜಗ್ರಹ. "ಕುಜಾರ-ಮಜ್ಜಲಾಜ್ಞಾರಾ:" ವೈಜಂ। "ಅಜ್ಞಾರೋಸ್ತೃ ಪ್ರಶಾಂತಾ-ಚಿರಜ್ಞಾಲ: ಕಾರಿಕಾಗ್ನಿವಿಡ್" ವೈಜಂ।

ಅಜ್ಞಾರಕ ಅಂಗಾರಕ (ಪುಂ) 1. ಇದ್ದಲು. 2. ಅರ್ಧ ಬೆಂದಿರುವ ಕಟ್ಟಿಗೆ, ಕೊಳ್ಳೆ. 3. ಕುಜಗ್ರಹ. ಅಂಗಾರಕ-ಗ್ರಹದಶಾಸಂವತ್ಸರಗಳು ಏಳು (7).

ಇತರ ಗ್ರಹಗಳ ದಶೆಗಳಲ್ಲಿ ಅಂಗಾರಕನ ಅಂತರ್ದಶಾ (ಭುಕ್ತಿ) ಮಾನ:

| ದಶೆ       | ವರ್ಷ | ಮಾಸಗಳು | ದಿನಗಳು |
|-----------|------|--------|--------|
| ರವಿದಶೆ    | .. - | 4      | 6      |
| ಚಂದ್ರದಶೆ  | .. - | 7      | -      |
| ಅಂಗಾರಕದಶೆ | .. - | 4      | 27     |
| ರಾಹುದಶೆ   | .. 1 | -      | 18     |
| ಗುರುದಶೆ   | .. - | 11     | 6      |
| ಶನಿದಶೆ    | .. 1 | 1      | 9      |
| ಬುಧದಶೆ    | .. - | 11     | 27     |
| ಕೇತುದಶೆ   | .. - | 4      | 27     |
| ಶುಕ್ರದಶೆ  | .. 1 | 2      | -      |

ಅಂಗಾರಕ ಮಹಾದಶೆಯಲ್ಲಿ ತನ್ನ (ಸ್ವ) ಮತ್ತು ಇತರ ಗ್ರಹಗಳ ಅಂತರ್ದಶಾ (ಭುಕ್ತಿ) ಮಾನ:

|             | ವರ್ಷ | ಮಾಸಗಳು | ದಿನಗಳು |
|-------------|------|--------|--------|
| ಸ್ವಭುಕ್ತಿ   | .. - | 4      | 27     |
| ರಾಹುಭುಕ್ತಿ  | .. 1 | -      | 18     |
| ಗುರುಭುಕ್ತಿ  | .. - | 11     | 6      |
| ಶನಿಭುಕ್ತಿ   | .. 1 | 1      | 9      |
| ಬುಧಭುಕ್ತಿ   | .. - | 11     | 27     |
| ಕೇತುಭುಕ್ತಿ  | .. - | 4      | 27     |
| ಶುಕ್ರಭುಕ್ತಿ | .. 1 | 2      | -      |
| ರವಿಭುಕ್ತಿ   | .. - | 4      | 6      |
| ಚಂದ್ರಭುಕ್ತಿ | .. - | 7      | -      |

4. ಮಂಗಳವಾರ. 5. ಗೋರಂಟೆಮರ. "ಅಜ್ಞಾರಕ: ಕುಜೇಪಿ ಸ್ಯಾಧ್ಯಾಕಾಷ್ಠೇ ಕುರಣಕೇ" ಮೇದಿಂ।

ಅಜ್ಞಾರಕಾರಿನ್ ಅಂಗಾರಕಾರಿನ್ (ಪುಂ) ಮಾರಾಟಕ್ಕಾಗಿ ಇದ್ದಲನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. ಅಜ್ಞಾರಂ ಕರೋತಿ — ತು ಕೃತ್ (ಕರಣೇ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮)।

ಅಜ್ಞಾರಕಮಣಿ ಅಂಗಾರಕಮಣಿ (ಪುಂ) ಹವಳ. ಅಜ್ಞಾರಕಸ್ಯ ಪ್ರಿಯ: ಮಣಿ:। "ಮಾಣಿಕ್ಯಂ ಭಾಸ್ಕರೇ ದೇಯಂ ಚಂದ್ರೇ ಮುಕ್ತಾಂ ಪ್ರದಾಪಯೇತ್। ಪ್ರವಾಲಂ ಚ ಕುಜೇ ದद्याತ್" ಎಂದಿರುವುದರಿಂದ ಅಂಗಾರಕ ಪ್ರೀತಿಗಾಗಿ ಹವಳದ ದಾನ ಮಾಡಬೇಕು.

ಅಜ್ಞಾರಧಾನಿ ಅಂಗಾರಧಾನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿ ಸ್ವಿಕೆ. ಅಜ್ಞಾರಾ ಧೀಯಂತೇಷ್ಯಾಮ್ — ತು ಧಾತ್ (ಧಾರಣೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)।

ಅಜ್ಞಾರಧಾನಿಕಾ ಅಂಗಾರಧಾನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿ ಸ್ವಿಕೆ. ಅಜ್ಞಾರಾ ಧೀಯಂತೇಷ್ಯಾಮ್ — ತು ಧಾತ್ (ಧಾರಣೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। "ಕನ್" (೫-೪-೫)।

ಅಜ್ಞಾರಶಕಟಿ ಅಂಗಾರಶಕಟೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿ ಸ್ವಿಕೆ. ಅಜ್ಞಾರಾಣಾಂ ಶಕಟಿ।

ಅಜ್ಞಾರಾವಕ್ಷೇಪಣ ಅಂಗಾರಾವಕ್ಷೇಪಣ (ನಂ) ಬೆಂಕಿ ಕೆಂಡವನ್ನು ತೆಗೆದುಹಾಕುವ ದೊಡ್ಡ ಆವೆ. ಅಜ್ಞಾರೋಷ-ಕ್ಷಿಪ್ಯತೇಜೇನ — ಕ್ಷಿಪು ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭)।

ಅಜ್ಞಾರಿಕಾ ಅಂಗಾರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಬ್ಬಿನಜಲ್ಲೆ. 2. ಮುತ್ತುಗದ ಮೊಗ್ಗು. "ಭವೇದಜ್ಞಾರಿಕಾಚಕ್ಷುಷ್ಣೇ ಕಿಶುಕಕೋರಕೇ" ಮೇದಿಂ।

ಅಜ್ಞಾರೀಯ ಅಂಗಾರೀಯ (ವಿಂ) ಇದ್ದಲಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಇದ್ದಲನ್ನು ತಯಾರಿಸಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ (ಮರ). ಅಜ್ಞಾರೆಭ್ಯ: ಏತಾನಿ "ಃ:" (೫-೧-೧೨)।

ಅಜ್ಞಾರ್ಯಾ ಅಂಗಾರ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇದ್ದಲಿನ ರಾಶಿ. ಅಜ್ಞಾರಾಣಾಂ ಸಮೂಹ: "ಯ:" (೪-೨-೪೯)।

ಅಜ್ಞಿಕಾ ಅಂಗಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಂಗಿ, ರವಿಕೆ, ಕುಪ್ಪಸ. ಅಜ್ಞಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಙಿ:" (೫-೨-೧೧೫)। ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಕನ್" (೫-೪-೨೯)।

ಅಜ್ಞಿನ್ ಅಂಗಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಅವಯವಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. 2. ದೇಹದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 3. ಪ್ರಧಾನ, ಮುಖ್ಯ. ಅಜ್ಞಾನ್ಯಸ್ಯ ಸಂತಿ "ಙಿ:" (೫-೨-೧೧೫)।

ಅಜ್ಞಿರಸ್ ಅಂಗಿರಸ್ (ಪುಂ) ಅಂಗಿರಸ್ಸೆಂಬ ಋಷಿ. ಅಗಿ (ಗತೌ) "ಅಸಿ:" ಇಹಾಂಗಮಶ್ಚ (ತಂ ೪-೨೩೫)। [ಈ ಋಷಿಯು ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಾನಸಪುತ್ರರಲ್ಲೊಬ್ಬರು. ಮಹಾಭಾರತದಲ್ಲಿ ಈ ಋಷಿಯು ಅಗ್ನಿಪುತ್ರರೆಂದು ಹೇಳಿರುತ್ತೆ.] "ಅಥಾಜ್ಞಿರಸಮಗ್ರಣ್ಯಮ್" ಕುಮಾಂ ೬-೬೫।



ಅಕ್ಷರೀಕರಣ ಅಂಗೀಕರಣ (ನಂ) 1. ಅಂಗೀಕಾರ, ಸ್ವೀಕಾರ. 2. ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಮ್ಮತಿ. 3. ಕರಾರು. ಅಕ್ಷರೀಕ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಅಕ್ಷರೀಕಾರ ಅಂಗೀಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಸ್ವೀಕಾರ, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. 2. ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಮ್ಮತಿ. 3. ಕರಾರು. ಅಕ್ಷರೀಕೃತ - ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) ಭಾವೇ "ಘ" (3-3-114)।

ಅಕ್ಷರೀಕೃತ ಅಂಗೀಕೃತ (ವಿಂ) 1. ಸ್ವೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಒಪ್ಪಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮ್ಮತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಕ್ಷರೀಕ "ಕ್" (3-2-102)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಅಕ್ಷರೀಕೃತಾ - ಕಾ. "ಅಕ್ಷರೀಕೃತಾಮಾದಿಮದಮ್ಪತಿಮ್ಯಾಮ್" ಯಾದಂ 13-101।

ಅಕ್ಷು ಅಂಗು (ಪುಂ) 1. ಹಸ್ತ, ಕೈ. 2. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. "ಪತಙ್ಗಃ ಪತಗಃ ಪ್ಲಾವಿ ಪತತ್ಯಕ್ಷುಪತತ್ರಯಃ" ವೈಜಂ।

ಅಕ್ಷುಲ ಅಂಗುಲ (ಪುಂ) 1. ಬೆರಳು. ಅಕ್ಷುಲಾತಿ - ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕಃ" (3-2-3)। 2. ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಳೇಮರ. "ಶ್ರೀವೃಕ್ಷೇ ಪಿಪ್ಪಲೋಽವತ್ಯಃ ಪ್ಲಕ್ಷಶ್ಚಲದ-ಲೋಽಕ್ಷುಲಃ" ವೈಜಂ। (ಪುಂ) 3. ಅಂಗುಷ್ಠ, ಹೆಬ್ಬೆರಳು. ಅಕ್ಷುಲ ಪಾಣೌ ಲೀಯತೇ - ಲೀಡ್ (ಸಂಶ್ಲೇಷಣೆ) "ಡಃ" ಬಾಹುಂ। "ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ತು ಮಧ್ಯಮಾಕ್ಷುಲಸ್ತ್ವಕ್ಷುಲಃ" ವೈಜಂ। 4. ಒಂದು ಅಂಗುಲ, ಎಂಟು ಬಾರ್ಲಿ ಕಾಳುಗಳ ಉದ್ದ. "ಅಕ್ಷುಲೋಽಸ್ತೃತಿ ಯವಾ ಅಷ್ಟೌ" ವೈಜಂ।

ಅಕ್ಷುಲಿ ಅಂಗುಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬೆರಳು. ಅಗಿ (ಗತೌ) "ಉಲಿಃ" (3-2-4)। "ಉದ್ವೇಜಯತ್ಯಕ್ಷುಲಿಪಾಣಿ-ಭಾಗಾನ್" ಕುಮಾಂ 1-111। 2. ಆನೆಯ ಸೊಂಡಿಲಿನ ತುದಿ.

ಅಕ್ಷುಲಿತ್ರ ಅಂಗುಲಿತ್ರ (ನಂ) (ಬಿಲ್ಲಿನ ಹೆದೆಯನ್ನು ಎಳೆಯುವಾಗ ಗಾಯವಾಗದಿರಲು) ಬೆರಳಿಗೆ ಹಾಕಿಕೊಳ್ಳುವ ಚರ್ಮದ ಮುಚ್ಚಳ. ಅಕ್ಷುಲಿತ್ರಾಢಯತೇ - ತ್ರೈಡ್ (ಪಾಲನೆ) "ಕಃ" (3-2-3)।

ಅಕ್ಷುಲಿತ್ರಾಣ ಅಂಗುಲಿತ್ರಾಣ (ನಂ) ಬೆರಳಿಗೆ ಹಾಕಿಕೊಳ್ಳುವ ಚರ್ಮದ ಮುಚ್ಚಳ. ಅಕ್ಷುಲಿತ್ರಾಢಯತೇ - ತ್ರೈಡ್ (ಪಾಲನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಅಕ್ಷುಲಿಮುಡ್ರಾ ಅಂಗುಲಿಮುಡ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುದ್ರೆಯ ಉಂಗುರ, ಸಂಕೇತಾಕ್ಷುರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಅಂಗುಷ್ಠಾಭರಣ. ಅಕ್ಷುಲಃ ಮುಡ್ರಾ ರಾತಿ - ರಾ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (3-2-3)।

ಅಕ್ಷುಲಿಮೋಟನ ಅಂಗುಲಿಮೋಟನ (ನಂ) ಚುಟಕಿ, ಶಬ್ದವಾಗುವಂತೆ ಬೆರಳುಗಳ ಉಜ್ಜುವಿಕೆ. ಅಕ್ಷುಲಿಮೋಟನಂ ಮರ್ದನಮ್।

ಅಕ್ಷುಲಿಸಂಜ್ಞಾ ಅಂಗುಲಿಸಂಜ್ಞಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆರಳಿನ ಸನ್ನೆ. ಅಕ್ಷುಲಿಸಂಜ್ಞಾ ಅಂಗುಲಿಸಂಜ್ಞಾ (ಪುಂ) ಬೆರಳಿನ ಸನ್ನೆಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಚಿಹ್ನೆ. ಅಕ್ಷುಲಿಯಾ ಸಂದಿಶ್ಯತೇ - ಸಮ್ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) ಭಾವೇ "ಘ" (3-3-114)।

ಅಕ್ಷುಲಿ ಅಂಗುಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆರಳು. ಅಕ್ಷುಲಿತಿ - ಅಗಿ (ಗತೌ) "ಉಲಿಃ" (3-2-4)। "ತ್ಯಾಜ್ಯೋ ದುಃಪ್ರಿಯೋಽಪ್ಯಾಸೀದಕ್ಷುಲಿವೋರಗತಾ" ರಘುಂ 1-24।

ಅಕ್ಷುಲಿಯ ಅಂಗುಲೀಯಾ (ನಂ) ಉಂಗುರ. ಅಕ್ಷುಲಿ ಭವಮ್ "ಛಃ" (4-3-62)। "ತವ ಸುಚರಿತಮಕ್ಷುಲಿಯ ನೂನಮ್" ಶಾಕುಂ 6-111।

ಅಕ್ಷುಲಿಯಕ ಅಂಗುಲೀಯಕ (ನಂ) ಉಂಗುರ. ಅಕ್ಷುಲಿಯ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"। "ದೇಶಾಪೇಕ್ಷಾಸ್ತಥಾ ಯುಂ ಯಾತಾಽಽದಾ-ಯಾಽಕ್ಷುಲಿಯಕಮ್" ಭट्टಿಂ 6-49।

ಅಕ್ಷುಲಿ ಅಂಗುಷ್ಠ (ಪುಂ) ಹೆಬ್ಬೆರಳು. ಅಕ್ಷುಲಿ ಪಾಣೌ ತಿಷ್ಠತಿ - ಷಾ (ಗತಿ ನಿವೃತ್ತಿ) "ಕಃ" (3-2-4)। "ಅಭ್ಯುನ್ನತಾಕ್ಷುಲಿಢನಖಪ್ರಭಾಃ" ಕುಮಾಂ 1-33।

ಅಕ್ಷುಲಿ ಅಂಗುಷ್ಠ (ಪುಂ) ಹೆಬ್ಬೆರಳಿನ ಉಂಗುರು. ಅಕ್ಷುಲಿ ಭವಃ "ಯತ್" (4-3-44)।

ಅಕ್ಷುಲಿ ಅಂಗುಷ್ಠ (ಪುಂ) 1. ಬಾಣ. 2. ನಕುಲ, ಕೇರ, ಮುಂಗುಸಿ. ಅಗಿ (ಗತೌ) "ಉಲಿಃ" ಬಾಹುಂ।

ಅಕ್ಷುಲಿ ಅಂಗುಷ್ಠ (ನಂ) ಸಾಪ. ಅಕ್ಷುಲಿ ನರಕಮನೇನ - ಅಗಿ (ಗತೌ) "ಅಸುನ್" (3-2-4)।

ಅಕ್ಷುಲಿ ಅಂಗುಷ್ಠ (ಪುಂ) 1. ಸಾದ, ಕಾಲು. ಅಗಿ (ಗತೌ) "ಕ್ರಿನ್" (3-2-4)। 2. ಮರದ ಬೇರು. 3. ಶ್ಲೋಕದ ನಾಲ್ಕನೇ ಒಂದು ಭಾಗ, ಸಾದ.

ಅಕ್ಷುಲಿ ಅಂಗುಷ್ಠ (ಪುಂ) ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಅಕ್ಷುಲಿ ಪಾಣೌ ಮೂಲೇನ ಪಿಬತಿ - ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕಃ" (3-2-4)।

ಅಕ್ಷುಲಿ ಅಂಗುಷ್ಠ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸರಿಹೊನ್ನೆಗಿಡ. ಅಕ್ಷುಲಿ ಪಾಣೌ ಪಾಣಿನ್ಯಸ್ಯಾಃ "ಛಿಃ" (4-1-64)।

ಅಕ್ಷುಲಿ ಅಂಗುಷ್ಠ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸರಿಹೊನ್ನೆಗಿಡ. ಅಕ್ಷುಲಿ ಅಂಗುಷ್ಠ (ವಿಂ) ಕಣ್ಣಿಲ್ಲದವನು, ಕುರುಡ. ನ ವಿಶೇಷತಃ ಚಕ್ಷುಃ ಸ್ಯಾತ್।

ಅಕ್ಷುಲಿ ಅಂಗುಷ್ಠ (ವಿಂ) ಸಾಧು, ಸೌಮ್ಯ, ಶಾಂತ.

ಅಕ್ಷುಲಿ ಅಂಗುಷ್ಠ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಾಧುವಾದ ಹಸು. "ಸ್ಯಾದಕ್ಷುಲಿ ತು ಸುಕರಾ" ಅಮಂ।



ಅಚತುರ ಅಚತುರ (ವಿಂ) 1. ನಾಲ್ಕು ಇಲ್ಲದ. ಅವಿಷ್ಣು-  
ಮಾನಾನಿ ಚತ್ವಾರಿ ಯಸ್ಯ — ನಿಪಾಂ (೪-೪-೭೭) 2. ದಡ್ಡ.  
ನ ಚತುರ: |

ಅಚಪಲ ಅಚಪಲ (ವಿಂ) ಚಾಪಲ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಸ್ಥಿರಮನ  
ಸ್ವಲ್ಪ. ನ ಚಪಲ: |

ಅಚರ ಅಚರ (ಪುಂ) 1. ಸ್ಥಿರ ಲಗ್ನ, ಸ್ಥಿರ ರಾಶಿ.  
[ವೃಷಭ, ಸಿಂಹ, ವೃಶ್ಚಿಕ ಮತ್ತು ಕುಂಭ ಇವು ಸ್ಥಿರ  
ರಾಶಿಗಳು.] (ವಿಂ) 2. ಸ್ಥಿರವಾದ, ಚಂಚಲವಲ್ಲದ.  
3. ಚಲನೆಯಿಲ್ಲದ, ಸಂಚಾರವಿಲ್ಲದ, ಸ್ಥಾವರ. ನ ಚರತಿ  
— ಚರ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಅತಶ್ಚರಾಚರಂ  
ವಿಶ್ವಮ್" ಕುಮಾಂ ೨-೪ |

ಅಚಲ ಅಚಲ (ಪುಂ) 1. ಬೆಟ್ಟ, ಪರ್ವತ. ನ ಚಲತಿ —  
ಚಲ (ಕಂಪನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಅಚಲ ಣ  
ಭವಾನಿವ ರಾಜತೇ" ಮಾಘಂ ೪-೨೧ | 2. ಈಶ್ವರ, ಶಿವ.  
3, ಎಳು, ಸಪ್ತಸಂಖ್ಯೆ. 4. ಅಗಲ, ಚಲಕ. "ಅಚಲಸ್ತು  
ಗಿರಿಕೀಲಯೋ:" ಹೇಮಂ | (ವಿಂ) 5. ಚಲಿಸದಿರುವ,  
ಸ್ಥಿರವಾದ. "ಅಚಲನಲಿನಲಕ್ಷ್ಮೀಹಾರಿ ನಾಲಂ ಬಭೂವ"  
ಕಿರಾಂ ೬-೪೭ | "ಅಚಲಾ ಕಮಲಾ ಕಸ್ಯ ಕಸ್ಯ ಮಿತ್ರಂ  
ಮಹೀಪತಿ: | ಶರೀರಂ ಚ ಸ್ಥಿರಂ ಕಸ್ಯ ಕಸ್ಯ ವಶ್ಯಾ ವರಾಜ್ಞನಾ" |

ಅಚಲಕನ್ಯಾ ಅಚಲಕನ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾರ್ವತಿ, ಪರ್ವತ.  
ರಾಜನ ಮಗಳು. ಅಚಲಸ್ಯ ಕನ್ಯಾ |

ಅಚಲಕೀಲಾ ಅಚಲಕೀಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ.  
ಅಚಲಾ: ಕೀಲಾ ಇವ ಯಸ್ಯಾ: |

ಅಚಲಜ ಅಚಲಜ (ವಿಂ) ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅಚಲೇ  
ಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೯೭) |

ಅಚಲಜಾ ಅಚಲಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾರ್ವತಿ. ಅಚಲಾತ್  
ಹಿಮಾಚಲಾತ್ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ "ಜ:" (೩-೨-೯೮) |

ಅಚಲತ್ವಿಷ್ ಅಚಲತ್ವಿಷ್ (ಪುಂ) 1. ಕೋಗಿಲೆ. ಅಚಲಾ  
ಸ್ಥಿರಾ ತ್ವಿಟ್ ಕಾಂತಿರಯಸ್ಯ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಗಟ್ಟಿಬಣ್ಣ.  
ಅಚಲಾ ಚ ಸಾ ತ್ವಿಟ್ ಚ | (ವಿಂ) 3. ಗಟ್ಟಿ ಬಣ್ಣವುಳ್ಳ.  
ಅಚಲಾ ತ್ವಿಟ್ ವರ್ಣ: ಯಸ್ಯ |

ಅಚಲದ್ವಿಷ್ ಅಚಲದ್ವಿಷ್ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ, ಪರ್ವತಗಳ  
ಶತ್ರು. ಅಚಲಾನ್ ದ್ವೇಷಿ — ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) "ವಿವ್" (೩-೨-೬೧) |

ಅಚಲರಾಜ ಅಚಲರಾಜ (ಪುಂ) ಪರ್ವತರಾಜ, ಹಿಮಾ  
ಲಯ. ಅಚಲಾನಾಂ ರಾಜಾ "ರಾಜ್" (೪-೪-೯೧) |

ಅಚಲಾ ಅಚಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೂಮಿ. ನ ಚಲತಿ — ಚಲ  
(ಕಂಪನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |

ಅಚಾಪಲ ಅಚಾಪಲ (ನಂ) 1. ಸ್ಥಿರತೆ. ಚಪಲಸ್ಯ ಭಾವ:  
"ಅಪ್" (೪-೧-೧೨೨) | ನ ಚಾಪಲಮ್ | (ವಿಂ) 2.  
ಅಚಂಚಲವಾದ, ಸ್ಥಿರವಾದ. ನ ಚಾಪಲಂ ಯಸ್ಯ |

ಅಚಾಪಲ್ಯ ಅಚಾಪಲ್ಯ (ನಂ) 1. ಸ್ಥಿರತೆ. ಚಪಲಸ್ಯ ಭಾವ:  
"ಅಪ್" (೪-೧-೧೨೪) | (ವಿಂ) 2. ಸ್ಥಿರವಾದ,  
ಅಚಂಚಲವಾದ. ನ ಚಾಪಲ್ಯಂ ಯಸ್ಯ |

ಅಚಿವಕಣ ಅಚಿವಕಣ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೇಮವಿಲ್ಲದ, ಸ್ನೇಹ  
ವಿಲ್ಲದ. 2. ನುಣುಪಲ್ಲದ. 3. ಒರಟಾಗಿರುವ.

ಅಚಿತ್ ಅಚಿತ್ (ವಿಂ) ಜಡವಾದ, ಜೇತನವಲ್ಲದ.  
ನ ಚಿತ್ |

ಅಚಿತ್ತ ಅಚಿತ್ತ (ವಿಂ) 1. ಬುದ್ಧಿಯಿಲ್ಲದವನು, ಮಂಕನು.  
ನಾಸ್ತಿ ಚಿತ್ತಂ ಯಸ್ಯ | 2. ಗಮನವಿಡದ. ನಾಸ್ತಿ ಚಿತ್ತಂ ಯತ್ರ |

ಅಚಿಂತನೀಯ ಅಚಿಂತನೀಯ (ವಿಂ) ಬುದ್ಧಿಗಮ್ಯವಿಲ್ಲದ,  
ಯೋಚಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಊಹಿಸಲು ಅಸಾಧ್ಯ  
ವಾದ. ಚಿಂತಯಿತುಮಶಕ್ಯ: — ಚಿತಿ (ಸ್ಮರ್ತ್ಯಾಮ್) "ಅನೀಯರ್"  
(೩-೧-೯೬) | "ಅಚಿಂತನೀಯಸ್ತು ತವ ಪ್ರಭಾವ:" ರಘುಂ ೪-೩೩ |

ಅಚಿಂತಿತ ಅಚಿಂತಿತ (ವಿಂ) ಯೋಚಿಸಲ್ಪಡದಿರುವ,  
ಅನಿರೀಕ್ಷಿತ, ಅಕಸ್ಮಿಕ. ನ ಚಿಂತಿತ: | "ಅಚಿಂತಿತಾನಿ  
ದು:ಖಾನಿ ಯಥೇವಾಯಾಂತಿ ದೇಹಿನಾಮ್ | ಸುಖಾನ್ಯಪಿ ತಥಾ ಮನ್ಯೇ"  
ವ್ಯಾಸ: |

ಅಚಿಂತ್ಯ ಅಚಿಂತ್ಯ (ವಿಂ) ಬುದ್ಧಿಗಮ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಊಹಿಸಲು  
ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ. ನ ಚಿಂತಯಿತುಂ ಶಕ್ಯ: — ಚಿತಿ (ಸ್ಮರ್ತ್ಯಾಮ್)  
+ ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಯತ್" (೩-೧-೯೭) | "ಅಚಿಂತ್ಯಚಿಂತ್ಯೇ-  
ರವತಾರನಾಟಕೈ:" ಯಾದಂ ೧೪-೩೪ |

ಅಚಿರ ಅಚಿರ (ನಂ) 1. ಈಜಿನಕಾಲ, ಸಮಾಪಕಾಲ,  
ಅಲ್ಪಕಾಲ. (ವಿಂ) 2. ಕ್ಷಣಿಕ, ಸ್ವಲ್ಪಕಾಲದ.  
3. ನವೀನ, ಹೊಸದಾದ.

ಅಚಿರ ಅಚಿರ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಜಾಗೃತಿಯಾಗಿ. 2. ಹೊಸ  
ದಾಗಿ. "ಅಚಿರಾಧಿಷ್ಠಿತರಾಜ್ಯ: ಪ್ರಕೃತಿಷ್ವರೂಢಮೂಲ್ಯತ್ವಾತ್"  
ಮಾಲಂ ೧-೮ |

ಅಚಿರದ್ವಿತಿ ಅಚಿರದ್ವಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿದ್ಯುತ್ತು,  
ಮಿಂಚು. ಅಚಿರಾ ದ್ವಿತೀಯಸ್ಯಾ: | "ಅಚಿರದ್ವಿತಿಭಾಸ್ವ-  
ರೋಽಥ ಚಂದ್ರ:" ಯಾದಂ ೧೪-೧೧೯ | 2. ಕ್ಷಣಿಕವಾದ  
ಕಾಂತಿ. ಅಚಿರಾ ಚ ಸಾ ದ್ವಿತಿಶ್ಚ | (ವಿಂ) 3. ಕ್ಷಣಿಕ  
ವಾದ ಕಾಂತಿಯುಳ್ಳ. ಅಚಿರಾ ದ್ವಿತೀಯಸ್ಯ |

ಅಚಿರಪ್ರಭಾ ಅಚಿರಪ್ರಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿದ್ಯುತ್ತು,  
ಮಿಂಚು. ಅಚಿರಾ ಪ್ರಭಾ ಯಸ್ಯಾ: | 2. ಕ್ಷಣಿಕವಾದ  
ಕಾಂತಿ. ಅಚಿರಾ ಚ ಸಾ ಪ್ರಭಾ ಚ |



ಅಚಿರಸ್ಯ ಅಚಿರಸ್ಯ (ಅವ್ಯಂ) ಅಲ್ಪಕಾಲ.

ಅಚಿರಾಂಶು ಅಚಿರಾಂಶು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು.

ಅಚಿರಾ: ಅಂಶವೋ ಯಸ್ಯಾ: | "ಅಚಿರಾಂಶುವಿಲಾಸವಚ್ಚಲಾ  
ನನು ಲಕ್ಷ್ಮೀ: ಫಲಮಾನುಷಜ್ಞಿಕಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೧೯ |

ಅಚಿರಾತ್ ಅಚಿರಾತ್ (ಅವ್ಯಂ) ಜಾಗೃತೆಯಾಗಿ, ತಡ  
ವಿಲ್ಲದೆ. "ಅಚಿರಾಜ್ಜಿತಮೀನಕೇತನೋ ವಿಲಸನ್ ವೃಷಿಗಣ-  
ನಮಸ್ಕೃತ:" ಮಾಘಂ ೧೬-೪೮ |

ಅಚಿರಾಭಾ ಅಚಿರಾಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು.

ಅಚಿರಾ ಆಭಾ ಯಸ್ಯಾ: |

ಅಚಿರಾಯ ಅಚಿರಾಯ (ಅವ್ಯಂ) ಜಾಗೃತೆಯಾಗಿ, ತಡ  
ವಿಲ್ಲದೆ. ನ ಚಿರಾಯ |

ಅಚಿರೇಣ ಅಚಿರೇಣ (ಅವ್ಯಂ) ಜಾಗೃತೆಯಾಗಿ, ತಡವಿ  
ಲ್ಲದೆ. ನ ಚಿರೇಣ | "ಅಚಿರೇಣ ಪರಸ್ಯ ಭಯಸಿಂ ವಿಪರೀತಾಂ  
ವಿಗಣಯ್ಯ ಚಾತ್ಮನ:" ಕಿರಾಂ ೨-೯ |

ಅಚೇತನ ಅಚೇತನ (ವಿಂ) 1. ಜೇತನವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರಜ್ಞೆ  
ಯಿಲ್ಲದ, ಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದ. ನ ಚೇತನಾ ಜ್ಞಾನಂ ಯಸ್ಯ |  
2. ಜೀವವಿಲ್ಲದ, ಜಡವಾದ. ನ ಚೇತನಾ ಚೈತನ್ಯಂ ಯಸ್ಯ |  
"ಕಾಮಾರ್ತಾ ಹಿ ಪ್ರಕೃತಿಕೃಪಣಾಃ ಚೇತನಾಚೇತನೇಷು" ಮೇಘಂ ೧-೪ |  
3. ಅರಿವಿಲ್ಲದ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. "ಬುದ್ಧಿಶತಮಚೇತನೇ  
ನಷ್ಟಮ್" ಹಿತಂ ೨-೧೬೧ |

ಅಚೇತಸ್ ಅಚೇತಸ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಜ್ಞೆಯಿಲ್ಲದ, ಜ್ಞಾನ  
ವಿಲ್ಲದ. 2. ಜೀವವಿಲ್ಲದ, ಜಡ. 3. ಮಾನಸ್ಸಿಲ್ಲದ.  
4. ಅರಿವಿಲ್ಲದ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. ನ ವಿಶತೇ ಚೇತೋ  
ಯಸ್ಯ |

ಅಚೇಷ್ಠ ಅಚೇಷ್ಠ (ವಿಂ) ಪ್ರಯತ್ನಶೂನ್ಯ, ವ್ಯಾಪಾರ  
ಶೂನ್ಯ. ನಾಸ್ತಿ ಚೇಷ್ಠಾ ಯಸ್ಯ |

ಅಚೈತನ್ಯ ಅಚೈತನ್ಯ (ನಂ) 1. ಜಡತೆ, ಅರಿವಿಲ್ಲದಿರು  
ವಿಕೆ, ಜ್ಞಾನಶೂನ್ಯತೆ. ನ ಚೈತನ್ಯಮ್ | (ವಿಂ) 2. ಜಡ,  
ನಿರ್ಜೀವ, ಜ್ಞಾನಶೂನ್ಯ. ನ ಚೈತನ್ಯಂ ಯಸ್ಯ |

ಅಚ್ಛ ಅಚ್ಛ (ಪುಂ) 1. ಕರಡಿ. 2. ಸ್ಫಟಿಕ. (ವಿಂ)  
3. ನಿರ್ಮಲ, ಶುದ್ಧ, ಪ್ರಸನ್ನ, ತಿಳಿಯಾದ. ನ  
ಚ್ಛಯತಿ ದೃಷ್ಟಿಮ್—ಛೋ (ಛೇದನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೪) |  
"ವಿಭಾಂತಮಚ್ಛಸ್ಫಟಿಕಾಕ್ಷಮಾಲಯಾ" ಮಾಘಂ ೧-೯ |  
(ಅವ್ಯಂ) 4. ಅಭಿಮುಖ್ಯ, ಎದುರು. ನ ಚ್ಛಯತಿ ದೃಷ್ಟಿ  
ಸಮುಖತ್ವಾತ್—ಛೋ (ಛೇದನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೪) | "ಅಚ್ಛೋ  
ಭಲ್ಲುಕೇ ಸ್ಫಟಿಕೇಽಮಲೇಽಚ್ಛೋಽಭಿಮುಖೇಽವ್ಯಯಮ್" ಹೇಮಂ |

ಅಚ್ಛಗತ್ಯ ಅಚ್ಛಗತ್ಯ (ಅವ್ಯಂ) ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ಹೋಗಿ,  
ಎದುರಾಗಿ ಹೋಗಿ. ಅಚ್ಛಂ ಅಭಿಮುಖಂ ಗತ್ವಾ (೧-೪-೬೯) |

ಅಚ್ಛಂದಸ್ ಅಚ್ಛಂದಸ್ (ವಿಂ) 1. ವೇದಾಧ್ಯಯನ  
ವಿಲ್ಲದವನು, ಉಪನಯನವಾಗದಿರುವ (ಹುಡುಗ).  
2. ವೇದಾಧ್ಯಯನವಿಲ್ಲದ (ಶೂದ್ರ). ನಾಸ್ತಿ ಛಂದೋ  
ವೇದೋಽಸ್ಯ | 3. ಭಂದಸ್ಸಿಲ್ಲದ, ವೃತ್ತನಿಯಮವಿಲ್ಲದ,  
(ಗದ್ಯಕಾವ್ಯ). ನಾಸ್ತಿ ಛಂದೋ ಯತ್ರ | 4. ಅಭಿಪ್ರಾಯ  
ವಿಲ್ಲದ.

ಅಚ್ಛಬಲ್ಲ ಅಚ್ಛಬಲ್ಲ (ಪುಂ) ಕರಡಿ. ಅಚ್ಛಂ ಅಭಿಮುಖ್ಯೇನ  
ಬಲ್ಲತೇ—ಬಲ್ಲ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |

ಅಚ್ಛಾವಾಕ ಅಚ್ಛಾವಾಕ (ಪುಂ) 1. ಮೊರೆ ಯಿಡು  
ವವನು, ಪ್ರಾರ್ಥನೆಮಾಡುವವನು, ಮುತ್ತಿಕ್ಕು.  
ಉಚ್ಯತೇ—ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) "ವಚ್" (೩-೩-೧೮) | ಅಚ್ಛಂ  
ವಾಕೋ ಯಸ್ಯ | ಪೃಷಂ | (ವಿಂ) 2. ಎದುರು ಮಾತ  
ನಾಡುವವನು.

ಅಚ್ಛಾವಾಕೀಯ ಅಚ್ಛಾವಾಕೀಯ (ನಂ) 1. ಮುತ್ತಿಕ್ಕಿಗೆ  
ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಕಾರ್ಯ, ಪ್ರಾರ್ಥನೆ. ಅಚ್ಛಾವಾಕಸ್ಯ  
ಭಾವ: ಕರ್ಮ ವಾ "ಛ:" (೪-೧-೧೩೪) | (ವಿಂ) 2.  
ಅಚ್ಛಾವಾಕಶಬ್ದದಿಂದ ಕೂಡಿದ (ಸೂಕ್ತ). ಅಚ್ಛಾವಾಕ-  
ಶಬ್ದೋಽಸ್ಮಿನ್ನಸ್ತಿ—ಮತ್ತರ್ಥ "ಛ:" (೪-೨-೪೯) |

ಅಚ್ಛಿದ್ರ ಅಚ್ಛಿದ್ರ (ನಂ) 1. ದೋಷವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ,  
ತಪ್ಪಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ಒಡೆಯದಿರುವ,  
ಅಖಂಡವಾದ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ. 3. ರಂಧ್ರವಿಲ್ಲದ,  
ತೂತಿಲ್ಲದಿರುವ. 4. ಕೆಡದಿರುವ, ನಾಶವಾಗದಿರುವ,  
ದೋಷವಿಲ್ಲದ. ನ ಚ್ಛಿದ್ರಂ ಯತ್ರ |

ಅಚ್ಛಿನ್ನ ಅಚ್ಛಿನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾದ, ಸತತ  
ವಾದ, ತಡೆಯಿಲ್ಲದ, ಎಡಬಿಡದ. ನ ಚ್ಛಿನ್ನಮ್ |  
"ಅಚ್ಛಿನ್ನಾಮಲಸಂತಾನಾ: ಸಮುದ್ರೋಽನಿವಾರಿತಾ: | ಪುನಂತಿ  
ಲೋಕಾನ್ ಪುನರ್ಯತ್ನಾತ್ ಕೀರ್ತಯ: ಸರಿತಶ್ಚ ತೇ" ಕುಮಾರಂ ೬-೬೯ |  
2. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಡದ.

ಅಚ್ಛೇದ್ಯ ಅಚ್ಛೇದ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಆತ್ಮ, ಜೀವ. ನ ಚ್ಛೇದ-  
ಮಹಂತಿ. "ಅಚ್ಛೇದೋಽಯಮದಾಹೋಽಯಮ್" ಗೀತಾ ೨-೨೪ |  
(ವಿಂ) 2. ಕತ್ತರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ.

ಅಚ್ಛೇದಿಕ ಅಚ್ಛೇದಿಕ (ವಿಂ) ಕತ್ತರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಲ್ಲದ. ಛೇದಂ ನಿಯಮಹಂತಿ "ಠಕ್" (೪-೧-೬೪) | ನ ಚ್ಛೇದಿಕ: |

ಅಚ್ಛೋದ ಅಚ್ಛೋದ (ನಂ) ಒಂದು ಸರಸ್ಸು. ಅಚ್ಛಮುದಕಂ  
ಯತ್ರ |

ಅಚ್ಛೋದ್ಯ ಅಚ್ಛೋದ್ಯ (ಅವ್ಯಂ) ಎದುರಿನಲ್ಲಿ ಹೇಳಿ.  
ಅಚ್ಛಮ್ ಅಭಿಮುಖಮ್ ಉದಿತ್ವಾ—ಅಚ್ಛ+ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ  
ವಾಚಿ) "ತವಾ" "ಲ್ಯಪ್" (೧-೪-೬೯) |



ಅಚ್ಯುತ ಅಚ್ಯುತ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ನಾಸ್ತಿ ಚ್ಯುತಂ ಸ್ವಪದಾತ್ ಯಸ್ಯ। "ಜವೇನ ಪಿಠಾದುದತಿಷ್ಠದಚ್ಯುತಃ" ಮಾಘಂ ೧-೧೨। (ವಿಂ) 2. ಸ್ಥಿರವಾದ, ಶಾಶ್ವತವಾದ. ನ ಚ್ಯುತಃ। 3. ಬೀಳದಿರುವ, ಕಳಚಿಕೊಳ್ಳದ.

ಅಚ್ಯುತಾಗ್ರಜ ಅಚ್ಯುತಾಗ್ರಜ (ಪುಂ) 1. ಬಲರಾಮ. ಅಚ್ಯುತಸ್ಯಾಗ್ರಜಃ। 2. ಇಂದ್ರ. [ಉಪೇಂದ್ರವತಾರದಲ್ಲಿ; "ಉಪೇಂದ್ರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಅಚ್ಯುತಾತ್ಮಜ ಅಚ್ಯುತಾತ್ಮಜ (ಪುಂ) ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ಅಚ್ಯುತಸ್ಯಾತ್ಮಜಃ।

ಅಚ್ಯುತಾವಾಸ ಅಚ್ಯುತಾವಾಸ (ಪುಂ) ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಣ್ಯಮರ.

ಅಚ್ಯುತಿ ಅಚ್ಯುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚ್ಯುತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಬೀಳದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ಚ್ಯುತಿಯಿಲ್ಲದ, ನಾಶವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಚ್ಯುತಿಯಸ್ಯ।

ಅಜ ಅಜ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ಈಶ್ವರ. 3. ಬ್ರಹ್ಮ. 4. ಜೀವ. ನ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭಾವಿ) "ಃ" (೩-೨-೧೦೧)। "ನ ಹಿ ಜಾತೋ ನ ಜಾಯೇಹಂ ನ ಜನಿಷ್ಯೇ ಕದಾಚನ। ಕ್ಷೇತ್ರಜಃ ಸರ್ವಭೂತಾನಾಂ ತಸ್ಮಾದಹಂಜಃ ಸ್ಮೃತಃ" ಭಾಂ। "ಅಜಃ ಸ್ವಜನ್ಮಾರ್ಹತಯಾನುಮೇನೇ ಯಾಮೃತಮಿತಿ ಯಾದವಭಾವಮಿच्छನ್" ಯಾದಂ ೨-೯೫। "ಅಜೋ ನಿದ್ರಾಃ ಶಾಶ್ವತೋಽಯಂ ಪುರಾಣೋ ನ ಹನ್ಯತೇ ಹನ್ಯಮಾನೇ ಶರೀರೇ" ಗೀತಾ ೨-೨೦। 5. ಅಡು, ಹೋತ. ಅಜತಿ—ಅಜ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। 6. ಮೇಷರಾಶಿ. 7. ಚಂದ್ರ. 8. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ಆತ್ ವಿಷ್ಣೋರ್ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭಾವಿ) "ಃ" (೩-೨-೯೮)। 9. ಅಂತರಿಕ್ಷ, ಅಕಾಶ. 10. ಅಜಮಹಾರಾಜ, ರಘುವಿನ ಮಗ, ದಶರಥನ ತಂದೆ, ಶ್ರೀರಾಮನ ತಾತ. "ಬ್ರಾಹ್ಮೋ ಮೂರ್ತೇ ಕಿಲ ತಸ್ಯ ದೇವಿ ಕುಮಾರಕಲ್ಪಂ ಸುಪುತ್ರೇ ಕುಮಾರಮ್। ಅತಃ ಪಿತಾ ಬ್ರಹ್ಮಣ ಏವ ನಾಮ್ನಾ ತಮಾತ್ಮಜನ್ಮಾನಮಜಂ ಚಕಾರ" ರಘುಂ ೫-೩೬। 11. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. "ಅಜಃ ಪಿತಾಮಹೇಜಾದೌ ಛಾಗೇ ವಿಷ್ಣೌ ಹರೇ ರವೌ" ವೈಜಂ। "ಅಜಃ ಛಾಗೇ ಹರೇ ವಿಷ್ಣೌ ರಘುಜೇ ವೇಧಸಿ ಸ್ಮರೇ" ಹೇಮಂ। (ವಿಂ) 12. ಹುಟ್ಟಿದಿರುವ.

ಅಜಕವ ಅಜಕವ (ಪುಂ) ಶಿವಧನುಸ್ಸು. ಅಜಕೌ ವಾತಿ—ವಾ (ಗತಿಗಂಧನಯೋಃ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)।

ಅಜಕಾ ಅಜಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಡು. ಅಜ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"। 2. ಅಡಿನ ಹಿಕ್ಕು, ಅಡಿನ ಸಗಣೆ. 3. ಅಜಾಗಲಸ್ತನ, ಅಡಿನ ಕತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಜೋಲಾಡುವ ಮಾಂಸಖಂಡ.

ಅಜಕಾವ ಅಜಕಾವ (ನಂ) 1. (ಮರದಿಂದ ತಯಾರಿಸಿದ) ಯಜ್ಞವಾತ್ರ. 2. ಕಣ್ಣುಗುಡ್ಡೆಯೊಳಗಿನ ಒಂದು ರೋಗ. (ಪುಂ) 3. ಶಿವಧನುಸ್ಸು.

ಅಜಗ ಅಜಗ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಅಜೇನ ಬ್ರಹ್ಮಣಾ ಗೀಯತೇ—ಗ (ಶಬ್ದೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೪)। 2. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಅಜೇನ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)।

ಅಜಗನ್ಧಾ ಅಜಗಂಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾರಂ ಬೇಳೆಗಿಡ. ಅಜಸ್ಯೇವ ಗಂಧೋಽಸ್ಯಾಃ।

ಅಜಗಂಧಿನಿ ಅಜಗಂಧಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುರುಟೆಗಿಡ. ಅಜಸ್ಯ ಗಂಧೋ ಲೇಶೋಽಸ್ಯಸ್ಯಾಃ "ಃ" (೫-೨-೧೧೫)। "ಓಷ್" (೪-೧-೫)।

ಅಜಗರ ಅಜಗರ (ಪುಂ) ದೊಡ್ಡಹಾವು. ಗಿರತಿ—ಗ (ನಿಗರಣೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಅಜಸ್ಯ ಗರಃ।

ಅಜಗವ ಅಜಗವ (ನಂ) ಈಶ್ವರನ ಧನುಸ್ಸು. ಅಜಗೋ ವಿಷ್ಣುಃ ಶರತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ವಃ" (೫-೨-೧೧೦)।

ಅಜಜೀವ ಅಜಜೀವ (ಪುಂ) ಕುರುಬ, ಕುರಿಗಳಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಅಜೇಜೀವಃ ಜೀವನಸ್ಯ।

ಅಜಜೀವಿಕ ಅಜಜೀವಿಕ (ಪುಂ) ಕುರುಬ, ಕುರಿಗಳಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಅಜಾಃ ಜೀವಿಕಾ ಜೀವನೋಪಾಯೋಽಸ್ಯ।

ಅಜಡ ಅಜಡ (ವಿಂ) ಜಡವಲ್ಲದ, ಸ್ವಯಂಪ್ರಕಾಶವಾದ. ನ ಜಡಃ ಅಜಡಃ ಆತ್ಮಾ। ಅಜಡಾ ಧಿಃ। ಅಜಡಂ ಬ್ರಹ್ಮ।

ಅಜಡಾ ಅಜಡಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಸುಗುನ್ನಿಗಿಡ.

ಅಜಞಾ ಅಜಞಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ಅಡುಗಳಿಗೆ ಹಿತವಾದ) ಜಾಜಿಗಿಡ. ಅಜೇಞ್ಯೋ ಹಿತಾ—ಅಜ (ಗತೀಕ್ಷೇಪಣಯೋಃ) "ಞ್" (೫-೧-೮)।

ಅಜದೇವತಾ ಅಜದೇವತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ, ಅಡುಗಳ ದೇವತೆ. ಅಜಸ್ಯ ದೇವತಾ। "ರೌದ್ರಿ ಧೇನುರ್ವಿನಿರ್ದಿಷ್ಟಾ ಛಾಗ ಆಗ್ನೇಯ ಉಚ್ಯತೇ" ವಿಂ ಥಂ।

ಅಜನನಿ ಅಜನನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜನ್ಮವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಹುಟ್ಟದಿರುವಿಕೆ. ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭಾವಿ) "ಅನಿಃ" (೩-೩-೧೧೨)। ನ ಜನನಿಃ। "ತಸ್ಯಾಜನನಿರೇವಾಸ್ತು ಜನನೀಕಲೇಶಕಾರಿಣಃ" ಮಾಘಂ ೨-೪೫।

ಅಜನ್ಮನ್ ಅಜನ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ಮೋಕ್ಷ, ಪುನರ್ಜನ್ಮವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಾಸ್ತಿ ಜನ್ಮ ಯತ್ರ। "ತಸ್ಮಾತ್ಸ ಯೋಗಾದಿಗಮ್ಯ ಯೋಗಮಜನ್ಮನೇಽಕ್ರೂಪತ ಜನ್ಮಭೀಃ" ರಘುಂ ೧೮-೩೩। (ವಿಂ) 2. ಜನ್ಮವಿಲ್ಲದ, ಉತ್ಪತ್ತಿರಹಿತ, ಹುಟ್ಟಿಲ್ಲದ.



ನಾಸ್ತಿ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ । “ಪುರುಷಸ್ಯ ಪದೇಷ್ವಜನ್ಮನಃ ಸಮತೀತಂ ಚ  
ಭವತ್ವ ಭಾವಿ ಚ” ರಘುಂ ೮-೭೮ ।

ಅಜನ್ಯ ಅಜನ್ಯ (ನಂ) ಉತ್ಪಾತ, ಅನಿಷ್ಟಸೂಚಕ  
ಧೂಮಕೇತು ಮೊದಲಾದುದು. ನ ಜನೇ ಸಾಧು “ಯತ್”  
(೪-೪-೯೮) । “ಅಜನ್ಯಂ ಕಲಿಬಮುತ್ಪಾತಃ” ಅಮಂ ।

ಅಜಪ ಅಜಪ (ಪುಂ) 1. ಕುರುಬ, ಕುರಿಕಾಯುವವನು.  
ಅಜಾನ್ ಪಾತಿ-ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) “ಕಃ” (೩-೨-೩) ।  
(ವಿಂ) 2. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಜಪಿಸದವನು.

ಅಜಪತಿ ಅಜಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಮೇಕೆ.  
2. ಮೇಷರಾಶಿಯ ಅಧಿಪತಿ, ಕುಜಗ್ರಹ.

ಅಜಪಥ ಅಜಪಥ (ಪುಂ) ಅಡುಗಳು ಕಾಲಿಡಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ ದಾರಿ, ಅಡು ಸಂಚರಿಸಲು ತಕ್ಕ ದಾರಿ. ಅಜಸ್ಯ  
ತನ್ವರಣಯೋಗ್ಯಃ ಪನ್ಥಾಃ “ಅಃ” (೪-೪-೭೪) ।

ಅಜಪದ ಅಜಪದ (ಪುಂ) “ಅಜೈಕಪಾದ್” ಎಂಬ  
ರುದ್ರ. ಅಜಸ್ಯೇವ ಪದಮಸ್ಯ ।

ಅಜಪಾ ಅಜಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) “ಹಂಸ” ವೆಂಬ ಮಂತ್ರ.  
ಪ್ರಯತ್ನೇನ ನ ಜಪ್ಯಾ-ಜಪ (ಮಾನಸೇ ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ)+  
ಗಿನ್ “ಅಚ್” । (ಪ್ರಯತ್ನವಿಲ್ಲದೆ ಉಚ್ಚರಿಸಬಹುದಾದ  
ಮಂತ್ರ.)

ಅಜಪಾದ ಅಜಪಾದ (ಪುಂ) 1. “ಅಜೈಕಪಾದ್” ಎಂಬ  
ರುದ್ರ. 2. ರುದ್ರದೇವತಾಕವಾದ ಪೂರ್ವಾಭಾದ್ರಾ  
ನಕ್ಷತ್ರ.

ಅಜಪಾಲ ಅಜಪಾಲ (ಪುಂ) ಕುರುಬ, ಕುರಿ ಕಾಪಾಡು  
ವವನು. ಅಜಾನ್ ಪಾಲಯತಿ-ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಗಿನ್  
“ಅನ್” (೩-೨-೧) ।

ಅಜಬಂಧು ಅಜಬಂಧು (ಪುಂ) ಮಂಕ, ದಡ್ಡ, ಕುರಿಯಂತೆ  
ಮಂಕುಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. ಅಜಸ್ಯ ಬಂಧುರಿವ ।

ಅಜಬಕ್ಷ ಅಜಬಕ್ಷ (ಪುಂ) ನಾರಂಬೇಳೆಗಿಡ. ಅಜೇಭಂಜಯತೇ-  
ಬಕ್ಷ (ಅದನೇ) “ಬಕ್” (೩-೩-೧೯) । [ಇದರ  
ಸೊಪ್ಪನ್ನು ಆಡುಗಳು ಬಹಳ ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ತಿನ್ನು  
ವುವು.]

ಅಜಮಾರ ಅಜಮಾರ (ಪುಂ) 1. ಕಟುಕ, ಆಡುಗಳನ್ನು  
ಕೊಂದು ಜೀವಿಸುವವನು. ಅಜಾನ್ ಮಾರಯತಿ-ಮೃಡ್  
(ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೆ) + ಗಿನ್ “ಅನ್” (೩-೨-೧) । 2. ಕಟು  
ಕರ ದೇಶ, ಈಗಿನ ಅಜ್ಮೀರ. [ಈ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಪೂರ್ವ  
ದಲ್ಲಿ ಇಂತಹ ಕಟುಕರೇ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿದ್ದರು].

ಅಜಮೀಡ ಅಜಮೀಡ (ಪುಂ) 1. ಅಜ್ಮೀರ. 2. ಪೂರು  
ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಹಸ್ತಿಯೆಂಬ ರಾಜನ ಮಗ.

3. ಯುಧಿಷ್ಠಿರ, ಧರ್ಮರಾಜ. “ಧರ್ಮಪುತ್ರೋಜಮೀಡಃ  
ಸ್ಯಾತ್ ಕರ್ಣನಿಜಯುಧಿಷ್ಠಿರೋ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಅಜಮುಖ ಅಜಮುಖ (ಪುಂ) ದಕ್ಷಬ್ರಹ್ಮ. ಅಜಸ್ಯ ಮುಖಮೇವ  
ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ । [ದಕ್ಷಯಜ್ಞದಲ್ಲಿ ವೀರಭದ್ರನು ಈಶ್ವರನ  
ಆಜ್ಞೆಯಂತೆ ದಕ್ಷನ ಕುತ್ತಿಗೆಯನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿ ಬಿಸಾಡಿ  
ದಾಗ ಪರಶಿವನು ಒಂದು ಟಗರಿನ ಕುತ್ತಿಗೆಯನ್ನು  
ದಕ್ಷನ ಮುಂಡಕ್ಕೆ ಜೋಡಿಸಿದನು.]

ಅಜಮೋದಾ ಅಜಮೋದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಜವಾನ, ಓಮ.  
ಅಜಸ್ಯ ಮೋದ ಇವ ಮೋದೋ ಯಸ್ಯ ।

ಅಜಮಭ ಅಜಮಭ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಕಪ್ಪೆ.  
(ವಿಂ) 3. ದಂತವಿಲ್ಲದ, ಹಲ್ಲಿಲ್ಲದಿರುವ. 4. ಊಟ  
ವಿಲ್ಲದಿರುವ. ನಾಸ್ತಿ ಜಮ್ಭೋ ದಂತೋ ಯಸ್ಯ । “ರದಾಮ್ಯ-  
ವಹತೀ ಜಮ್ಭೋ” ಶಾಶ್ವಂ ।

ಅಜಯ ಅಜಯ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ. ಅಜೇನ ಚಾಣೇನ ಯಾತಿ-  
ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಕಃ” (೩-೨-೪) । 2. ಪರಾಜಯ,  
ಸೋಲು. (ವಿಂ) 3. ಜಯವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಜಯೋ  
ಯಸ್ಯ । 4. ಪರಾಜಯವಿಲ್ಲದ, ಸೋಲಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ  
ಪರೇಜಯೋ ಯಸ್ಯ । ನ ಜೀಯತೇ ಇತಿ ವಾ ।

ಅಜಯ್ಯ ಅಜಯ್ಯ (ವಿಂ) ಜಯಿಸಲು ಅಶಕ್ಯನಾದ.  
ಜೇತುಂ ಶಕ್ಯಃ-ನ ಜಯಃ । “ರಾಜಾಮಜಯೋಜನಿ ಪುಂಡರೀಕಃ”  
ರಘುಂ ೧೮-೮ ।

ಅಜರ ಅಜರ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. ನಾಸ್ತಿ ಜರಾ ಯಸ್ಯ ।  
2. ಪರಮಾತ್ಮ. (ವಿಂ) 3. ಜರೆಯಿಲ್ಲದ, ಮುಪ್ಪಿ  
ಲ್ಲದ, ನಾಶವಿಲ್ಲದ. “ಪುರಾಣಮನಘಸ್ಮೃಷ್ಟಂ ದಯಾಲುಮಜರಂ  
ವಿದುಃ” ರಘುಂ ೧೦-೧೯ ।

ಅಜರಾ ಅಜರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನಂತನ ಗೊಂಡೆಸೊಪ್ಪು.  
ನಾಸ್ತಿ ಜರಾ ಯಸ್ಯಾಃ । [ಈ ಸೊಪ್ಪು ಧಾತುವೃದ್ಧಿಯ  
ನ್ನುಂಟುಮಾಡಿ ಜರೆಯನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು.]  
2. ಹಲ್ಲಿ, ಗಾಳಿ. 3. ಕೊನ್ನಾರಿಗಡ್ಡೆಯ ಒಂದು  
ಭೇದ.

ಅಜಯ್ಯ ಅಜಯ್ಯ (ವಿಂ) ನಾಶವಾಗದ (ಸ್ನೇಹ),  
ಅಪಾಯವಿಲ್ಲದ (ಮೈತ್ರಿ). ನ ಜೀಯತಿ-ಜೃಃ (ವಯೋಹಾನಿ)  
“ಯತ್” (೩-೧-೧೦೪) । “ತೇನ ಸಂಜ್ಞತಮಾರ್ಯಣ ರಾಮಾಜಯಂ  
ಕುರು ದ್ರುತಮ್” ಭದ್ರಂ ೬-೪೩ ।

ಅಜಶೃಂಗಾ ಅಜಶೃಂಗೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಲಮುರಿಗಿಡ.  
ಅಜಸ್ಯೇವ ಶೃಂಗಮಸ್ಯಾಃ ।

ಅಜಸ್ರ ಅಜಸ್ರ (ವಿಂ) 1. ಸತತವಾದ, ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನ  
ವಾದ, ಎಡಬಿಡದ. ನ ಜಸ್ಯತಿ-ಜಸು (ಮೋಕ್ಷಣೆ)



“ರ:” (೩-೨-೧೬೭)। “ಅಜಸ್ರದೀಕ್ಷಾಪ್ರಯತಸ್ಯ ಮಹುರೋ:”  
ರಘುಂ ೩-೪೪)। (ಅವ್ಯಂ) 2. ಸತತವಾಗಿ, ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನ  
ವಾಗಿ, ಎಡಬಿಡದೆ. “ಅಜಸ್ರಮಾಸ್ಕಾಲಿತವಲ್ಲಕೀಗುಣ-  
ಸತೋಜ್ವಲಾಕ್ಷುಷಣಸಾಂಭಿನ್ನಯಾ” ಮಾಘಂ ೧-೯।

ಅಜಹತ್ಸ್ವಾರ್ಥ ಅಜಹತ್ಸ್ವಾರ್ಥ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ವಾರ್ಥವನ್ನು  
ಬಿಡದೆ ಬೇರೆ ಅರ್ಥವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವೆ ಲಕ್ಷಣೆ.  
ಅಜಹತ್ ಸ್ವಾರ್ಥೋ ಮುಖ್ಯಾರ್ಥೋ ಯಾಮ್। ಉದಾ: “ಕುಂತಾ:  
ಪ್ರವಿಶಂತಿ” ಇಲ್ಲಿ ಅಚೇತನವಾದ ಕುಂತಗಳಿಗೆ  
ಪ್ರವೇಶವು ಅಸಂಭವವಾದ್ದರಿಂದ ಕುಂತಧಾರಿಗಳಾದ  
ಪುರುಷರು ಲಕ್ಷಣೆಯಿಂದ ಬೋಧಿಸಲ್ಪಡುವರು. ಇಲ್ಲಿ  
ಮುಖ್ಯವಾದ ಕುಂತಪದಾರ್ಥಕ್ಕೂ ಉಪಾದಾನವಿರು  
ವುದರಿಂದ ಇದು ಅಜಹತ್ಸ್ವಾರ್ಥಲಕ್ಷಣೆಯೆನಿಸು  
ವುದು.

ಅಜಹಲಿಕ್ಷ ಅಜಹಲ್ಲಿಂಗ (ಪುಂ) ನಿಯತಲಿಂಗವುಳ್ಳ  
ಶಬ್ದ, ವಿಶೇಷವು ಬೇರೆ ಲಿಂಗವಾದರೂ ತನ್ನ ಲಿಂಗ  
ವನ್ನು ಬಿಡದಿರುವ ವಿಶೇಷಣ ಶಬ್ದ. ಅಜಹತ್ ಲಿಕ್ಷಂ  
ಯ ಸ:। ಉದಾ: “ವೇದಾ: ಪ್ರಮಾಣಮ್” ಇಲ್ಲಿ ವೇದಶಬ್ದವು  
ಪುಲ್ಲಿಂಗವಾದರೂ ಪ್ರಮಾಣ ಶಬ್ದವು ನಿಯತಲಿಂಗ  
ವಾದ್ದರಿಂದ “ಪ್ರಮಾಣಮ್” ಎಂದೇ ಇರುವುದು. ಪುಲ್ಲಿಂಗ  
ವಾಗಿ ಮಾರ್ಪಡುವುದಿಲ್ಲ.

ಅಜಾ ಅಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಡು, ಮೇಕೆ. 2. ಕುರಿ.  
ಅಜ “ಠಾಪ್” (೪-೧-೪)। 3. ಬಾಹುಜಿಗೆ ಗಿಡ.  
4. ಅತಿಬಜೆ. “ಅಜಾ ಮಹಿಷಧಿ ಜ್ಞೇಯಾ” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ।  
5. ಹಾವುಮೆಕ್ಕೆಗಿಡ. “ಪಯೋಜನಾಭಾರತಿ ಸ್ಯಾಕ್ಷಿಶಾಲಾ  
ಮುಕ್ತುಲಾಪ್ಯಥ” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ।

ಅಜಾಗರ ಅಜಾಗರ (ಪುಂ) 1. ಎಚ್ಚರವಿಲ್ಲದವನು. ನಾಸ್ತಿ  
ಜಾಗರೋ ಯಸ್ಯ। 2. ಗರಗದ ಗಿಡ. ನಾಸ್ತಿ ಜಾಗರೋ ಯಸ್ಮಾತ್।

ಅಜಾಗಲಸ್ತನ ಅಜಾಗಲಸ್ತನ (ಪುಂ) ಆಡಿನ ಕುತ್ತಿಗೆ  
ಯಲ್ಲಿ ಜೋಲಾಡುವ ಮಾಂಸಖಂಡ. [ಯೋಗ್ಯತೆ  
ಯಿಲ್ಲದ್ದು, ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ್ದು ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ  
ಇದರ ಪ್ರಯೋಗ.] “ಅಜಾಗಲಸ್ತನಸ್ಯೇವ ತಸ್ಯ ಜನ್ಮ  
ನಿರರ್ಥಕಮ್”।

ಅಜಾಜಿ ಅಜಾಜೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜೀರಿಗೆ. ಅಜಮಜತಿ  
ಕ್ಷಿಪತಿ — ಅಜ (ಗತಿಕೋಪಣಯೋ:) “ಅಞ್” (೩-೨-೧)।  
“ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೫)। 2. ಕಲ್ಲುಹತ್ತಿಗಿಡ.

ಅಜಾಜಿವ ಅಜಾಜೀವ (ಪುಂ) 1. ಕುರುಬ, ಕುರಿಯನ್ನು  
ಕಾಯುವವನು. 2. ಕುರಿಯನ್ನು ಮಾರಿ ಜೀವಿಸು  
ವವನು. ಅಜಾ ಆಜಿವೋ ಯಸ್ಯ।

ಅಜಾತ ಅಜಾತ (ವಿಂ) ಹುಟ್ಟದಿರುವ, ಜನ್ಮತಾಳ  
ದಿರುವ. ನ ಜಾತ:।

ಅಜಾತಕಕ್ರುದ್ ಅಜಾತಕಕುಂದ್ (ಪುಂ) ಹೆರಳು ಸಂಪೂರ್ಣ  
ವಾಗಿ ಬೆಳೆಯದಿರುವ ಕರು, ಹೋರಿ. ನ ಜಾತಂ ಕಕ್ರುದಂ  
ಯಸ್ಯ “ಅ” ಲೋಪ: (೪-೪-೧೪೬)।

ಅಜಾತದಂತ ಅಜಾತದಂತ (ಪುಂ) 1. ಹಲ್ಲು ಹುಟ್ಟಿ  
ದಿರುವ ಮಗು. ನ ಜಾತಾ ದಂತಾ ಯಸ್ಯ। (ನಂ) 2. ಹಲ್ಲು  
ಹುಟ್ಟದಿರುವ ವಯಸ್ಸು. ನ ಜಾತಾ ದಂತಾ ಯಸ್ಮಿನ್ ವಯಸಿ।

ಅಜಾತಶತ್ರು ಅಜಾತಶತ್ರು (ಪುಂ) ಯುಧಿಷ್ಠಿರ, ಧರ್ಮ  
ರಾಜ. ನ ಜಾತ: ಶತ್ರುರಸ್ಯ।

ಅಜಾತಾರಿ ಅಜಾತಾರಿ (ಪುಂ) ಯುಧಿಷ್ಠಿರ, ಧರ್ಮರಾಜ.  
ನ ಜಾತೋರಿ: ಯಸ್ಯ। “ಹಂತ ಜಾತಮಜಾತಾರೆ ಪ್ರಥಮೇನ ತ್ವಯಾ-  
ರಿಣಾ” ಮಾಘಂ ೨-೧೦೨।

ಅಜಾತಿ ಅಜಾತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನುತ್ಪತ್ತಿ, ಜನ್ಮಾಭಾವ,  
ಹುಟ್ಟದಿರುವಿಕೆ. ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-  
೯೪)। ನಂ ತಂ। (ವಿಂ) 2. ಜನ್ಮವಿಲ್ಲದ, ಹುಟ್ಟಿಲ್ಲದ.  
3. ಜಾತಿಯಿಲ್ಲದ. ನ ಜಾತೀಯಸ್ಯ। 4. ಸನಾತನ, ನಿತ್ಯ.

ಅಜಾದನಿ ಅಜಾದನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಳ್ಳುಗುಳ್ಳದ ಗಿಡ.  
ಅಜೇರಯತೇ — ಅದ (ಮಕ್ಷಣೇ) ಕರ್ಮಂ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೩)।  
“ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೫)।

ಅಜಾನತ್ ಅಜಾನತ್ (ವಿಂ) ತಿಳಿಯದಿರುವ. ನ ಜಾನಾತಿ—  
ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೇ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। “ಗುಣಾಂತರ-  
ಮಜಾನನ್ ಕಿನಿಮಿತ್ತಂ ತ್ವಮಾಭರಣಂ ದದಾಸಿ?” ಮಾಲಂ ೨।  
ಅಜಾನಿಕ ಅಜಾನಿಕ (ಪುಂ) ಕುರುಬ, ಕುರಿಯಿಂದ  
ಜೀವಿಸುವವನು. ಅಜೇನ ಆನೋ ಜೀವನಂ ಅಸ್ಯಸ್ಯ “ಠನ್”  
(೪-೨-೧೧೫)।

ಅಜಾವಿಕ ಅಜಾವಿಕ (ನಂ) ಆಡು ಮತ್ತು ಕುರಿ.  
ಅಜಾಶ್ಚ ಅವಯಶ್ಚ। ನಿಪಾಂ (೨-೪-೧೧)। “ಅಜಾವಿಕಂ  
ಸೇಕಶಫಂ ನ ಜಾತು ವಿಪಮಂ ಭಜೇತ್” ಮನುಂ ೯-೧೧೯।

ಅಜಾಪವ ಅಜಾಪಕ್ವ (ನಂ) ಒಂದು ಟಿಪ್ಪಣಿ, ಕ್ಷಯ ಕಾಸ  
ಮತ್ತು ಕೆಮ್ಮಲು ಇವುಗಳಿಗಾಗಿ ಆಡಿನ ಹಾಲು ಮತ್ತು  
ಮೂತ್ರ ಮುಂತಾದವುಗಳಿಂದ ತಯಾರಿಸುವ ಒಂದು  
ತುಪ್ಪ. “ಶಾಗಶಕ್ತುಸಮೂಕ್ಷೀರೇದ್ದೇನಾ ಚ ಸಾಧಿತಂ ಸರ್ಪಿ:।  
ಸಕ್ಷಾರಂ ಯಕ್ಷಮಹರಂ ಕಾಸಸವಾಸೋಪಶಾಂತಯೇ ಪರಮಮ್” ಚಕ್ರಂ।

ಅಜಿ ಅಜಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಚಾರ, ಗಮನ, ನಡೆ. ಅಜ  
ಕ್ತಿನ್ (೩-೩-೯೪)। (ವಿಂ) 2. ಚಲಿಸುವ, ಹೋಗುವ,  
ನಡೆಯುವ. ಅಜತಿ — ಅಜ (ಗತಿಕೋಪಣಯೋ:) “ಃ”  
(೩ಂ ೪-೧೩೯)।



ಅಜಿತ ಅಜಿತ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ನ ಜಿತ:। “ಅಜಿತಮೇಕ-  
ಮಗೋಚರಯತ್ ಸ್ವಯಮ್” ಯಾದಂ ೩-೩। 2. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ.  
3. ಒಬ್ಬ ತೀರ್ಥಂಕರರು. 4. ಬುದ್ಧದೇವ. (ವಿಂ)  
5. ಜಯಿಸಲ್ಪಡದ. “ಅಜಿತಸ್ತೀಯಕೃದ್ವೇದೇ ಬುದ್ಧೇ ವಿಷ್ಣಾ-  
ವನಿಜಿತೇ” ಹೇಮಂ।

ಅಜಿನ ಅಜಿನ (ನಂ) 1. ಚರ್ಮ, ತೊಗಲು. 2.  
ಜಿಂಕೆಯ ಚರ್ಮ. ಅಜತಿ — ಅಜ (ಗತಿಕೋಪಣಯೋಃ)  
“ಇನಚ್” (ಉಂ ೨-೪೯)। “ಅಥಾಜಿನಾಷಾಧರ: ಪ್ರಗಲ್ಭ-  
ವಾಕ್” ಕುಮಾಂ ೫-೩೦। “ಅಜಿನಂ ಚರ್ಮ ಕೃತ್ತಿ: ಸ್ತ್ರೀ” ಅಮಂ।

ಅಜಿನಪತ್ರಾ ಅಜಿನಪತ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಪಟದ ಹಕ್ಕಿ,  
ಕತ್ತಲೆಹಕ್ಕಿ, ಬಾವಲಿ. ಅಜಿನಮಿವ ಪತ್ರಮಸ್ಯಾ:।

ಅಜಿನಯೋನಿ ಅಜಿನಯೋನಿ (ಪುಂ) ಜಿಂಕೆ. ಅಜಿನಸ್ಯ  
ಯೋನಿ: ಪ್ರಭವ:। (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣುಜಿಂಕೆ.

ಅಜಿರ ಅಜಿರ (ನಂ) 1. ಚತ್ವರ, ಅಂಗಳ, ಮನೆಯ  
ಮುಂಭಾಗದ ಬಯಲು. ಅಜಂತಿ ಕ್ಷಿಪಂತ್ಯತ್ರ ಧಾನ್ಯಾ-  
ದಿಕಮ್ — ಅಜ (ಗತಿಕೋಪಣಯೋಃ) “ಕಿರಚ್” (ಉಂ ೧-೫೩)।  
“ತದೀಯಮಾಸ್ಥಾನನಿಕೇತನಾಜಿರಮ್” ಕಿರಾಂ ೧-೧೬।  
2. ಕಪ್ಪೆ. 3. ಗಾಳಿ. 4. ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಗೋಚರ  
ವಾಗುವ ವಿಷಯ. 5. ದೇಹ, ಶರೀರ. (ವಿಂ)  
6. ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆಯುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ರಾ-ರಾ.  
7. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. “ಅಜಿರಂ ಪ್ರಾಜ್ಞೇ ವಾತೇ ವಿಪಯೇ ದದುರೇ  
ತನೌ! ಸ್ತ್ರೀ ಚಂಡ್ಯಾಮ್” ಮೇದಿಂ।

ಅಜಿಹ್ವ ಅಜಿಹ್ವ (ವಿಂ) ಸರಳವಾದ, ವಕ್ರವಲ್ಲದ.  
ನ ಜಿಹ್ವಾ: — ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) “ಮನ್” (ಉಂ ೧-೧೪೧)।  
“ಅಜಿಹ್ವಮೋಜಿಷ್ಠಮೋಘಮಬಲಮಮ್” ಕಿರಾಂ ೧೪-೫೭।

ಅಜಿಹ್ವಗ ಅಜಿಹ್ವಗ (ಪುಂ) 1. ಬಾಣ. ಅಜಿಹ್ವಮೃಜು  
ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಙ:” (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)।  
(ವಿಂ) 2. ಸರಳವಾಗಿ ನಡೆಯುವ, ನೇರವಾಗಿ ನಡೆ  
ಯುವ.

ಅಜಿಹ್ವ ಅಜಿಹ್ವ (ಪುಂ) 1. ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. ನಾಸ್ತಿ  
ಜಿಹ್ವಾ ಯಸ್ಯ। [ಅಗ್ನಿಯು ರಸಾತಲದಲ್ಲಿರುವ ವಿಷಯ  
ವನ್ನು ಕಪ್ಪೆಗಳು ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ತಿಳಿಸಲು ಅಗ್ನಿಗೆ  
ಕೋಪವುಂಟಾಗಿ ಕಪ್ಪೆಗಳಿಗೆ ನಾಲಿಗೆ ಹೋಗಲೆಂದು  
ಶಾಪಕೊಟ್ಟುದಾಗಿ ಭಾರತದ ಆನುಶಾಸನಿಕ ಪರ್ವ  
ದಲ್ಲಿ ಕಥೆಯಿರುವುದು.] (ವಿಂ) 2. ನಾಲಿಗೆಯಿಲ್ಲ  
ದಿರುವ.

ಅಜಿಗ್ಂ ಅಜಿಗ್ಂ (ನಂ) 1. ಅಗ್ನಿಯು ಕಡಿಮೆಯಾಗು  
ವುದರಿಂದ ಅಹಾರವು ಅರಗದಿರುವುದು. “ಅಜಿಗ್ಂ

ಭೇಜಂ ವಾರಿ ಜಿಗ್ಂ ವಾರಿ ಬಲಪ್ರದಮ್”। (ವಿಂ) 2. ಪಚನ  
ವಾಗದ, ಅರಗದಿರುವ.

ಅಜಿವ ಅಜೀವ (ವಿಂ) ಜೀವವಿಲ್ಲದ, ಅಜೀತನ. (ಘಟ,  
ಪಟ ಮುಂತಾದುದು.) ನಾಸ್ತಿ ಜೀವೋ ಯಸ್ಯ।

ಅಜೇಯ ಅಜೇಯ (ನಂ) 1. ವಿಷಹರವಾದ ಒಂದು  
ಶುಷ್ಕ, ಔಷಧ. “ಪಿಬೇದ್ವೃತಮಜೇಯಾಹ್ಯಮ್” ಸುಶ್ರುಂ।  
(ವಿಂ) 2. ಜಯಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ. ನ ಜೇತುಂ ಯೋಗ್ಯ:  
— ಜಿ (ಜಯೇ) “ಯತ್” (೩-೩-೧೬೯)।

ಅಜೇಕಪಾದ್ ಅಜೇಕಪಾದ್ (ಪುಂ) 1. ರುದ್ರದೇವತಾಕ  
ವಾದ ಪೂರ್ವಭಾದ್ರಾ ನಕ್ಷತ್ರ. ಅಜಸ್ಯ ಏಕ: ಪಾದ  
ಇವ ಪಾದೋ ಯಸ್ಯ। 2. ಏಕಾದಶರುದ್ರರಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕನೇ  
ರುದ್ರ.

ಅಜ್ಜುಕಾ ಅಜ್ಜುಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ನಾಟ್ಯ ಸಂಕೇತದಲ್ಲಿ)  
ನೇಶ್ಯಾಂಗನೆ. ಅಜಯತಿ — ಅಜ (ಪ್ರತಿಯನ್ತೇ) “ಉಕ್ತನ್”  
ರಸ್ಯ ಜ: ವಾಹುಂ। [ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಇದರ  
ಪ್ರಯೋಗ.]

ಅಜ್ಜಟಾ ಅಜ್ಜಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಿರಿನೆಲ್ಲಿಗಿಡ. ಅತ್  
(ಆಶ್ಚರ್ಯವ್ಯಯಮ್) ಜಟ: ಸಂಭಾತೋಽಸ್ಯಾಮ್।

ಅಜ್ಜಲ ಅಜ್ಜಲ (ನಂ) ಗುರಾಣಿ, ಶತ್ರುಗಳ ಕತ್ತಿಯ  
ಏಟನ್ನು ತಡೆಯುವ ಚರ್ಮದ ಹಲಗೆ.

ಅಜ್ಜ ಅಜ್ಜ (ವಿಂ) 1. ಜ್ಞಾನಶೂನ್ಯ, ಅರಿವಿಲ್ಲದವನು.  
ನ ಜಾನಾತಿ — ಜಾ (ಅವಬೋಧನೆ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೫)।  
2. ಮೂರ್ಖ, ಮೂಢ, ತಿಳಿಗೇಡಿ. “ಅಜ್ಜ: ಸುಖ-  
ಮಾರಾಧ್ಯ: ಸುಖತರಮಾರಾಧ್ಯತೇ ವಿಶೇಷಜ್ಞ:” ಭರ್ತಂ। 3. ಜೀವ  
ವಿಲ್ಲದ, ಜಡ, ಅಜೀತನ.

ಅಜ್ಞಾತ ಅಜ್ಞಾತ (ವಿಂ) ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ. ನ ಜ್ಞಾತ:।  
“ಅಜ್ಞಾತಕುಲಶೀಲಸ್ಯ ವಾಸೋ ದೇಯೋ ನ ಕಸ್ಯಚಿತ್” ಹಿತೋಂ।

ಅಜ್ಞಾತವಾಸ ಅಜ್ಞಾತವಾಸ (ಪುಂ) ಯಾರಿಗೂ ತಿಳಿಯದೆ  
ವಾಸಮಾಡುವುದು.

ಅಜ್ಞಾನ ಅಜ್ಞಾನ (ನಂ) 1. ತಿಳಿಗೇಡಿತನ, ಮೂರ್ಖತನ.  
2. ಅವಿದ್ಯೆ. ನ ಜ್ಞಾನಮ್। [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಅವಿದ್ಯಾ” ಪದ  
ದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] (ವಿಂ) 3. ಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ  
ಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಜ್ಞಾನಂ ಯಸ್ಯ।

ಅಜ್ಞಾನಿನ್ ಅಜ್ಞಾನಿನ್ (ವಿಂ) ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು.  
ನ ಜ್ಞಾನಿ।

ಅಜಮನ್ ಅಜಮನ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಸು. ಅಜತಿ ಗಚ್ಛತಿ ಸ್ವಗ್-  
ಮನಯಾ — ಅಜ (ಗತಿಕೋಪಣಯೋಃ) ಕರಂ “ಮನಿನ್” (ಉಂ  
೪-೧೪೪)।



ಅಜ್ಞತಿ ಅಂಚಿತಿ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 2. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. (ವಿಂ) 3. ಹೋಗತಕ್ಕ, ಸಂಚರಿಸುವ. ಅಜ್ಞು (ಗತೌ) "ಅತಿ:" (ಉಂ ೪-೬೧)। "ಕೃಶಾನುವಾತಿಸಾರಥಿ:। ಬ್ರಹ್ಮಿಭುಜಿ: ಪಚಿಸ್ಸಾಚಿಶಿಚಿರಿವಂಚತಿ-ರಂಚತಿ:" ವೈಜಂ।

ಅಜ್ಞನ ಅಂಚನ (ನಂ) ಅರ್ಚನೆ, ಪೂಜೆ. ಅಜ್ಞು (ಗತಿಪೂಜನಯೋ:) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಪೂಜಾರ್ಚನಾ ನಮಸ್ಯಾರ್ಚಾ ಸಪರ್ಯೇಜ್ಯಾರ್ಹಣಾಜ್ಞನಮ್" ವೈಜಂ।

ಅಜ್ಞಲ ಅಂಚಲ (ಪುಂ) ಕೊನೆ, ಅಂಚು. ಅಜ್ಞತಿ ಪ್ರಾಂತಮ್ — ಅಜ್ಞು (ಗತಿಪೂಜನಯೋ:) "ಕಲ್:" (ಉಂ ೧-೧೦೬)।

ಅಜ್ಞಿತ ಅಂಚಿತ (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಜ್ಞು (ಗತಿಪೂಜನಯೋ:) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಗತೇಭು ಲೀಲಾಜ್ಞಿತವಿಕ್ರಮೇಭು" ಕುಮಾಂ ೧-೩೪। 2. ಬಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಉನ್ನದ್ವಚ್ಛೋಜ್ಞಿತಸವ್ಯಜಾನು:" ರಘುಂ ೧೮-೫೧। 3. ಮನೋಹರವಾದ. "ದಿವಸಮುಖೋಚಿತಮಜ್ಞಿತಾಕ್ಷಿಪಕ್ಷಮಾ" ರಘುಂ ೫-೭೬।

ಅಜ್ಞನ ಅಂಜನ (ಪುಂ) 1. ಪಶ್ಚಿಮದಿಕ್ಕಿನ ದಿಗ್ಗಜ. 2. ಒಂದು ಪರ್ವತ. ಅಜ್ಞನವರ್ಗೋಸ್ತಸ್ಯ "ಅಚ್" (೫-೨-೧೨೭)। 3. ಹಲ್ಲಿ, ಗಾಳಿ. 4. ಚರತೆ. 5. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. (ನಂ) 6. ಕಣ್ಣಿನ ಕಪ್ಪು, ಕಾಡಿಗೆ. ಅಜ್ಞತೇಜೇನ ನಯನಮ್ — ಅಜ್ಞ (ವ್ಯಕ್ತಿಶಲಕ್ಷಣಕಾಂತಿಗತಿಪು) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ವಿಲೋಚನಂ ದಕ್ಷಿಣಮಜ್ಞನೇನ ಸಂಭಾವ್ಯ ತದ್ವಜ್ಞಿತವಾಮನೇನಾ" ರಘುಂ ೭-೮। 7. ಸೌವೀರಾಂಜನ. 8. ಕಣ್ಣಿಗೆ ಹಾಕುವ ಬಣ್ಣ. 9. ರಸಾಂಜನ. "ಅಜ್ಞನಂ ಕಜ್ಜಲೇ ಚಾಕೌ ಸೌವೀರೇ ಚ ರಸಾಜ್ಞನೇ। ಪುಸಿ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾದಿಗಜಯೋ:" ಮೇದಿಂ। 10. ರಾತ್ರಿ. 11. ವ್ಯಂಜನಾ ವೃತ್ತಿ, ಅಲಂಕಾರಿಕರು ಹೇಳಿರುವ ಅಭಿಧಾ ಮತ್ತು ಲಕ್ಷಣಾವೃತ್ತಿಗಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದ (ಶಬ್ದದ) ಒಂದು ಶಕ್ತಿ. "ಅನೇಕಾರ್ಥಸ್ಯ ಶಬ್ದಸ್ಯ ವಾಚಕತ್ವೇ ನಿಯನ್ವಿತೇ। ಸಂಯೋಗಾದೇರವಾಚ್ಯಾರ್ಥಭಿಕ್ಕದ್ವಾಪೃತಿರಜ್ಞನಮ್" ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ। 12. ಮಾಲಿನ್ಯ, ಮಾಸಲು. 13. ಮಸಿ, ಶಾಯಿ. "ಅಜ್ಞನಂ ಮಸೌ। ರಸಾಜ್ಞನೇತೌ ಸೌವೀರೇಽಥಾಜ್ಞನೋ ದಿಙ್ಮತಙ್ಗಜೇ" ಹೇಮಂ। "ಅಜ್ಞನಸ್ತು ಚಿತ್ರಕೋ ಲೋಹಲಾಹಲ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। "ಅಹಿಬುಧ್ಯೋ ರೇರಿಹಾಣೋಽಹಿಬುಧ್ನ: ಕಪಿಶೋ-ಜ್ಞನ:" ಕಲ್ಪದ್ರುಂ।

ಅಜ್ಞನಾ ಅಂಜನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉತ್ತರದಿಗ್ಗಜದ ಪತ್ನಿ. 2. ಹನುಮಂತನ ತಾಯಿ.

ಅಜ್ಞನಗಿರಿ ಅಂಜನಗಿರಿ (ಪುಂ) ವೇಂಕಟಾಚಲ, ತಿರು ಪತಿ ಬೆಟ್ಟ.

ಅಜ್ಞನಾದ್ರಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿ (ಪುಂ) ವೇಂಕಟಾಚಲ, ತಿರು ಪತಿ ಬೆಟ್ಟ.

ಅಜ್ಞನಾವತಿ ಅಂಜನಾವತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಈಶಾನ್ಯದಿಗ್ಗಜದ ಪತ್ನಿ. ಅಜ್ಞನಮಸ್ತಸ್ಯಾ: "ಮತುಪ್" (೫-೨-೧೪)। ದೀರ್ಘ: (೬-೩-೧೧೯)।

ಅಜ್ಞಲಿ ಅಂಜಲಿ (ಪುಂ) 1. ಬೊಗಸೆ, ಬೋಡಿಸಿದ ಕೈಗಳ ಸಂಪುಟ. ಅಜ್ಞತೇ ವ್ಯಜ್ಯತೇ ಭಕ್ತಿರನೇನ — ಅಜ್ಞ (ವ್ಯಕ್ತಿಶಲಕ್ಷಣಕಾಂತಿಗತಿಪು) "ಅಲಿಪ್" (ಉಂ ೪-೨)। "ಆಸಾಂ ಜಹಾಸಾಜ್ಞಲಿಮಪ್ಯಪೂರ್ವಮ್" ಯಾದಂ ೪-೪೮। 2. ಬಳ್ಳಿ. "ಪ್ರಸುತೋಽಸ್ತೃ ದ್ವಿಮುಷ್ಟಿಕೇ। ಪ್ರಸುತೌ ಡಾವಜ್ಞಲಿ: ಸ್ಯಾತ್" ವೈಜಂ। 3. ನಾಲ್ಕುಕಿಡಿ, ನಾಲ್ಕುಮುಷ್ಟಿ. "ಮಾಘ: ಶಾಣಸ್ತಲಂ ಮುಷ್ಟಿರಜ್ಞಲಿ: ಪ್ರಸ್ಥ ಆಡಕ:। ದ್ರೋಣೋ ಗೋಣಿ ಚ ಸಾರೀ ಚ ಕ್ರಮಾದೇತಂಚತುರ್ಗುಣಮ್" ವೈಜಂ।

ಅಜ್ಞಲಿಕಾ ಅಂಜಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚೆಟ್ಟಿಲಿ, ಮಂಡಿಲಿ.

ಅಜ್ಞಸ್ ಅಂಜಸ್ (ನಂ) 1. ವೇಗ. 2. ಬಲ. 3. ಯುಕ್ತತೆ, ಔಚಿತ್ಯ. ಅಜ್ಞ (ವ್ಯತ್ಯಾದೌ) "ಅಸುನ್" (ಉಂ ೪-೧೮೮)। ಅಜ್ಞಸಾಕೃತಮ್। (೬-೩-೩) ಸೂತ್ರ ನೋಡಿ.

ಅಜ್ಞಸ ಅಂಜಸ (ವಿಂ) ಸರಳವಾದ, ವಕ್ರವಲ್ಲದ, ಪ್ರಾಮಾಣಿಕವಾದ.

ಅಜ್ಞಸಾ ಅಂಜಸಾ (ಅವ್ಯಂ) 1. ವೇಗವಾಗಿ, ಜಾಗ್ರತೆ ಯಾಗಿ. ಅಜ್ಞನಂ — ಅಜ್ಞ (ವ್ಯತ್ಯಾದೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಅಜ್ಞಂ ಸ್ಯತಿ — ಷೋ (ಅಂತಕರ್ಮಣಿ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ನಿಜವಾಗಿ, ವಾಸ್ತವ ವಾಗಿ. "ಸಾಕ್ಷಾದೃಷ್ಟೋಽಸಿ ನ ಪುನರ್ವಿಷಸ್ತ್ವಾಂ ವಯಮಜ್ಞಸಾ" ಕುಮಾಂ ೬-೨೨।

ಅಜ್ಞಿಷ್ಠ ಅಂಜಿಷ್ಠ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಅಜ್ಞ (ವ್ಯತ್ಯಾದೌ) "ಇಷ್ಠಚ್" (ಉಂ ೪-೨)।

ಅಜ್ಞಿ ಅಂಜೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರಿಯುವ ಕಲ್ಲು, ಬೀಸುವ ಕಲ್ಲು, ಪುಡಿಮಾಡುವ ಯಂತ್ರ.

ಅಟ ಅಟಿ (ವಿಂ) ಸಂಚರಿಸುವ, ಅಲೆದಾಡುವ. ಅಟತಿ — ಅಟ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।

ಅಟನ ಅಟಿನ (ನಂ) ಸಂಚಾರ, ಅಲೆದಾಟ, ಓಡಾಟ. ಅಟ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಸರ್ವಜ್ಞತ್ವ-ಮಧೀಶ್ವರತ್ವಮಗಮತ್ವಾಂ ಮಾಂ ಚ ಭಿಕ್ಷಾಡನಮ್" ಕುವಂ ಪುಂ ೫೧।

ಅಟನಿ ಅಟಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧನುಸ್ಸಿನ ಅಗ್ರಭಾಗ, ಬಿಲ್ಲಿನ ತುದಿ. ಅಟತಿ ಗುಣೋಽ — ಅಟ (ಗತೌ) "ಅನಿ:" ಬಾಹುಂ।



ಅಟರೂಪ ಅಟರೂಪ (ಪುಂ) ಆಡುಸೋಗಿಗಿಡ. ಅಟಾನ್  
ವ್ಯಾಪ್ತಾನ್ ರೋಗಾನ್ ರೋಪತಿ - ರೂಪ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ:"  
(3-1-134) । ಪೃಷೋಂ ।

ಅಟವಿ ಅಟವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರಣ್ಯ, ಕಾಡು, ಅಟನ್ಯತ್ರ -  
ಅಟ (ಗತೌ) "ಅವಿ:" । "ಅಟವೀಸಂಪದಮಂಬುವಾಹ-  
ಯಂತಿಮ್" ಯಾದಂ 14-69 ।

ಅಟಾಡಾ ಅಟಾಟ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಿರುಗಾಟ, ಅಲೆದಾಟ,  
ಸಂಚಾರ. ಅಟನಮ್ - ಅಟ (ಗತೌ) "ಶ:" ಯಕ್ ಚ  
(ವಾಂ 3-3-101) ನಿಪಾಂ ।

ಅಟ ಅಟ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಮಹಡಿಯ ಮೇಲುಭಾಗ,  
ಉಪ್ಪರಿಗೆಯ ಕೋಣೆ, ಮೇಲಣ ಕೊಠಡಿ. ಅಟಚತೆ  
ಅನಾದ್ರಿಯತೇಜ್ಯತ್ರ - ಅಟ (ಅನಾದರೆ) "ಏತ್" (3-3-121) ।  
2. ಮಂಚ. 3. ರೇಷ್ಮೆವಸ್ತ್ರ. 4. ಉಪ್ಪರಿಗೆ ಮನೆ.  
5. ಪ್ರವಾಹ. 6. ಅಂಗಡಿ ಬೀದಿ, ವ್ಯಾಪಾರಸ್ಥಳ.  
(ನಂ) 7. ಅನ್ನ. (ವಿಂ) 8. ಎತ್ತರವಾದ.  
9. ಹೆಚ್ಚಾದ. 10. ಶುಷ್ಕವಾದ, ಒಣಗಿದ. "ಅಟಂ  
ಭಕ್ತೇ ಚ ಶುಷ್ಕೇ ಚ ಕ್ಷಾಮೇಜ್ಯರ್ಥೇ ಗೃಹಾಂತರೇ" ವಿಶ್ವಂ ।  
"ಅಟೋ ಹೃದ್ರಾಡಾಲಕಯೋಭೃಶೇ । ಚತುಷ್ಕಮಕ್ತಯೋ:" ಹೇಮಂ ।  
"ಅಟಸ್ತ್ವಡಾಲಕೇ ಪುರೇ ಭೃಶಶುಷ್ಕೇಜ್ಯಯಂ ತ್ರಿಪು । ಅಟತ್ವನ್ತೇ"  
ನಾನಾರ್ಥಂ ।

ಅಟಸ್ಥಲಿ ಅಟ್ಯಸ್ಥಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಪ್ಪರಿಗೆ ಮನೆಗಳುಳ್ಳ  
ಪಟ್ಟಣ. ಅಟಪ್ರಧಾನಾ ಸ್ಥಲೀ ।

ಅಟಹಾಸ ಅಟ್ಯಹಾಸ (ಪುಂ) ಗಟ್ಟಿಯಾದ ನಗು, ಶಬ್ದ  
ವಾಗುವಂತೆ ನಗುವಿಕೆ. ಅಟೇನ ಅತಿಶಯೇನ ಹಾಸ: - ಹಸೆ  
(ಹಸನೆ) "ಏತ್" (3-3-124) ।

ಅಟಹಾಸಿನ್ ಅಟ್ಯಹಾಸಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಈಶ್ವರ, ಶಿವ.  
(ವಿಂ) 2. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ನಗುವವನು. ಅಟಂ ಹಸತಿ  
"ಗಿತಿ:" (3-1-134) ।

ಅಟಾಲಕ ಅಟ್ಯಾಲಕ (ಪುಂ) ಮೇಲಿನ ಕೊಠಡಿ, ಉಪ್ಪರಿಗೆ.

ಅಟಾಲಿಕಾ ಅಟ್ಯಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾಳಿಗೆಮನೆಯ  
ಮೇಲು ಭಾಗ, ಮಹಡಿಯ ಮೇಲಿನ ಬಯಲು  
ಪ್ರದೇಶ. "ತಲಿನ್ಯಡಾಲಿಕೇ ಸಮೇ । ಚಂದ್ರಶಾಲಾ ಶಿರೋಗೃಹಮ್"  
ವೈಜಂ ।

ಅಟಾಲಿಕಾಕಾರ ಅಟ್ಯಾಲಿಕಾಕಾರ (ಪುಂ) ಕಾಮಾಟಗ,  
ಗಾರಿಕೆಲಸದವನು.

ಅಣಕ ಅಣಕ (ವಿಂ) ಅಧಮ, ನೀಚ, ಅಲ್ಪ, ಕೆಟ್ಟ  
ವನು. ಅಣತಿ - ಅಣ (ಶಬ್ದೇ) "ಞ್" (3-1-133) ।

"ನಿಕ್ರೂಷಾಣಕಕುತ್ಸಿತಾ:" ವೈಜಂ ।

ಅಣವೀನ ಅಣವೀನ (ನಂ) ಕಿರುನವಣೆ ಬೆಳೆಯಲು  
ಯೋಗ್ಯವಾದ ಭೂಮಿ. ಅಣುನಾಂ ಭವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ - ಅಣು  
"ಏತ್" (4-2-4) ।

ಅಣವ್ಯ ಅಣವ್ಯ (ನಂ) ಕಿರುನವಣೆ ಬೆಳೆಯಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ ಭೂಮಿ. ಅಣುನಾಂ ಭವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ - ಅಣು "ಯತ್"  
(4-2-4) ।

ಅಣಿ ಅಣಿ (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಡಾಣೆ, ಬಂಡಿಯ ಚಕ್ರದ  
ತಡೆಗಾಗಿ ಹಾಕುವ ಆಣೆ. 2. ಸೂಜಿ ಮೊದಲಾದುವು  
ಗಳ ತುದಿ. 3. ಎಲೆ, ಗಡಿ. ಅಣತಿ - ಅಣ (ಶಬ್ದೇ)  
"ಐನ್" (3-1-112) । "ಅಣಿರಾಣಿವದಧಾಗ್ರಕೀಲಾಶ್ರಿ-  
ಸೀಮಸು ದ್ವಯೋ:" ಮೇದಿಂ ।

ಅಣಿಮನ್ ಅಣಿಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಸೂಕ್ಷ್ಮತೆ, ತೆಳು  
ವಾಗಿರುವಿಕೆ. 2. ಪರಮಾಣುರೂಪ. 3. ಈಶ್ವರನ  
ಎಂಟು ಸಿದ್ಧಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಅಣಿರಾಣಿ: "ಐಮನಿನ್"  
(4-1-112) । "ಅಣಿಮಾದಿಗುಣೋಪೇತಮಸ್ಪೃಷ್ಟಪುಷ್ಪಾಂತರಮ್"  
ಕುಮಾಂ 6-64 ।

ಅಣಿಮಾಂಡವ್ಯ ಅಣಿಮಾಂಡವ್ಯ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಮಹರ್ಷಿ.  
[ಈತನು ಚಿಕ್ಕಂದಿನಲ್ಲಿ ನೋಣಗಳನ್ನು ಹಿಡಿದು ಸಾಯಿಸು  
ತ್ತಿದ್ದನು. ನಯಸ್ಸಾದಮೇಲೆ ಈತನು ಸಮಾಧಿಯಲ್ಲಿ  
ದ್ದಾಗ ಒಂದು ದಿನ ಕೆಲವು ಕಳ್ಳರು ಇವನ ಆಶ್ರಮ  
ದಲ್ಲಿ ಅವಿತುಕೊಳ್ಳಲು ರಾಜಪುರುಷರು ಆ ಕಳ್ಳರೊಡನೆ  
ಈತನನ್ನೂ ಎಳೆದುಕೊಂಡು ರಾಜನಲ್ಲಿಗೆ ಕರೆದೊಯ್ದು  
ರಾಜನ ಅಪ್ಪಣೆಯಂತೆ ಈತನನ್ನೂ ಅವರೊಡನೆ  
ಕೂಲಕ್ಕೇರಿಸಿದರು. ಕಳ್ಳರೆಲ್ಲರೂ ಸತ್ತರೂ ಈತನು  
ಬದುಕಿದ್ದುದನ್ನು ಕಂಡು ರಾಜನು ಹೆದರಿ ಕೂಲ  
ದಿಂದಿಳಿಸಿ ನಮಸ್ಕರಿಸಿ ಕ್ಷಮೆಯನ್ನು ಬೇಡಿದನು.  
ಅಣಿಮಾಂಡವ್ಯನು ಕೂಲವನ್ನು ಮುರಿದು ಕೈಯಲ್ಲಿ  
ಹಿಡಿದುಕೊಂಡು ಹೊರಟು ಶರೀರವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದನು.  
ಆಗ ಯಮದೂತರು ಬಂದು ಈತನನ್ನು ಯಮನಲ್ಲಿಗೆ  
ಕರೆದೊಯ್ಯಲಾಗಿ "ನಾನು ಯಾವ ಪಾಪವನ್ನೂ  
ಮಾಡದಿದ್ದರೂ ನನ್ನನ್ನೇಕೆ ಇಲ್ಲಿಗೆ ಕರೆತಂದರು"  
ಎಂದು ಕೇಳಿದನು. "ನೀನು ಬಾಲ್ಯದಲ್ಲಿ ನೋಣಗಳನ್ನು  
ಹಿಡಿದು ಕೊಲ್ಲುತ್ತಿದ್ದೆಯಾದ್ದರಿಂದ ನಿನಗೆ ನರಕ ಪ್ರಾಪ್ತ  
ವಾಯಿತು" ಎಂದು ಯಮಧರ್ಮರಾಯನು ಹೇಳಲು,  
"ಬಾಲ್ಯದಲ್ಲಿ ಮಕ್ಕಳು ಮಾಡುವ ಪಾಪಕ್ಕೆ ತಾಯಿ  
ತಂದೆಗಳು ಭಾಗಿಗಳೆಂಬ ಧರ್ಮಸೂಕ್ಷ್ಮವನ್ನರಿಯದೆ  
ನನಗೆ ಈ ಶಿಕ್ಷೆಯನ್ನು ಕೊಟ್ಟಿದ್ದರಿಂದ ನೀನು ಭೂಲೋಕ  
ದಲ್ಲಿ ಕೂದ್ರನಾಗಿ ಹುಟ್ಟು" ಎಂದು ಶಾಪನಿತ್ತನು.



ಅದರಿಂದ ಯಮನು ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ವಿದುರನಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದನು.]

ಖಣಿಷ ಅಣಿಷ್ಠ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಸಣ್ಣದಾದ, ಬಹಳ ತೆಳುವಾದ. ಅತಿಶಯೇನ ಅಣು: "ಇಠನ್" (೪-೩-೪೪)।

ಖಣಿಯಸ್ ಅಣೀಯಸ್ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಸಣ್ಣದಾದ, ಬಹಳ ತೆಳುವಾದ. ಅತಿಶಯೇನ ಅಣು: "ಇಯಸ್ತು" (೪-೩-೪೭)। "ಖಣಿಯಸೇ ವಿಶ್ವವಿಧಾರಿಣೇ ನಮಃ" ಕಿರಾಂ ೧೮-೪೧।

ಖಣು ಅಣು (ಪುಂ) 1. ಕಿರುನವಣೆ, ಸಣ್ಣ ಭತ್ತ. ಅಣತಿ — ಅಣ (ಶಬ್ದ) "ತಃ" (ತಂ ೧-೮)। 2. ಸಣ್ಣ ಭಾಗ, ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಭಾಗ. (ವಿಂ) 3. ಅಲ್ಪ, ಸೂಕ್ಷ್ಮ, ಸಣ್ಣ. "ಖಣುರಪ್ಯಪಹಂತಿ ವಿಗ್ರಹಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೪೧। "ಖಣುರ್ವಿಹಿ-ವಿಶೇಷೇ ಸ್ಯಾತ್ಪುನಿ ಸೂಕ್ಷ್ಮೇಽಭಿಧೇಯವತ್" ಮೇದಿಂ।

ಖಣುಕ ಅಣುಕ (ಪುಂ) 1. ಕಿರುನವಣೆ, ಸಣ್ಣ ಭತ್ತ, ಶಾಮೆ ಮೊದಲಾದ ಧಾನ್ಯ. ಅಣು ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"। (ವಿಂ) 2. ಸೂಕ್ಷ್ಮ, ಅಲ್ಪ, ಸಣ್ಣ.

ಖಣುತ್ವ ಅಣುತ್ವ (ನಂ) ಸಣ್ಣದಾಗಿರುವಿಕೆ. ಅಣೋಭಿವ: "ತ್ವಃ" (೪-೧-೧೧೯)।

ಖಣುಧಮ ಅಣುಧರ್ಮ (ಪುಂ) ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ಧರ್ಮ, ತೆಳುಯಲಾಗದ ಧರ್ಮ.

ಖಣುಭಾ ಅಣುಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು. ಅಣವಿ ಭಾ ಕಾಂತಿ: ಯಸ್ಯಾ:।

ಖಣುಮಾತ್ರ ಅಣುಮಾತ್ರ (ವಿಂ) ಅಣುವಿನ ಗಾತ್ರವುಳ್ಳ, ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಪರಿಮಾಣವುಳ್ಳ. ಅಣು: ಪರಿಮಾಣಂ ಯಸ್ಯ — ಅಣು "ಮಾತ್ರನ್" (೪-೨-೩೭)। "ಖಣುಮಾತ್ರಮಿದಂ ಸಹೇತ ವೋಡು ನ ಹಿ ವಿಶ್ವಮ್ಭರಮಣ ಮಾಮಿತೀವ" ಚಂ ಭಾಂ ೩-೬೬।

ಖಣುವೀಕ್ಷಣ ಅಣುವೀಕ್ಷಣ (ನಂ) ಸೂಕ್ಷ್ಮದರ್ಶಕ ಯಂತ್ರ, ಭೂತಗನ್ನಡಿ. ಅಣು: ವೀಕ್ಷಯತೇಜೇನ — ವಿ + ಕ್ಷ (ದರ್ಶನ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)।

ಖಣುಕ್ಷಿತಿ ಅಣುಕ್ಷಿತಿ (ಪುಂ) ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಧಾನ್ಯ, ಸಣ್ಣ ಭತ್ತ, ಕಿರು ನೆಲ್ಲು, ನವಣೆ ಮೊದಲಾದುದು. ಅಣುಕ್ಷಾಸೌ ಕ್ಷಿತಿಶ್ಚ।

ಖಂಡ ಅಂಡ (ನಂ) 1. ವೃಷಣ, ಬೀಜ. 2. ಮೊಟ್ಟೆ, ತಟ್ಟೆ. ಅಮತ್ಯಸ್ಮಾತ್ — ಅಮ (ಗತಿಶಬ್ದಸಂಭಕ್ತಿಃ) "ಛಃ" (ತಂ ೧-೧೧೧)। 3. ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡ, ಪ್ರಪಂಚಕ್ಕೆ ಆಶ್ರಯವಾದ ಕೋಶ. "ತದಂಡಮಭವದ್ವೈಮ ಸಹಸ್ರಾಂಶುಸಮ-ಪ್ರಭಮ್" ಮನುಂ ೧-೯। 4. ವೀರ್ಯ, ಧಾತು. 5. ಕಸ್ತೂರಿಮೃಗದ ಹೊಕ್ಕಳಿನ ಗ್ರಂಥಿ. "ಅಂಡ

ಮುಕ್ತೇ ಚ ಪೇಶ್ಯಾಂ ಚ" ಮೇದಿಂ। "ಅಂಡಂ ಸ್ವಗಾದಿಕೋಶ-ಸ್ಯಾನ್ಮುಕ್ತೇ ವೀರ್ಯೇಽಪಿ ಚ ಕ್ವಚಿತ್" ವಿಶ್ವಂ।

ಅಂಡಕ ಅಂಡಕ (ನಂ) ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡ, ಜಗತ್ತಿಗೆ ಆಶ್ರಯ ವಾದ ಕೋಶ. "ಜಗದಂಡಕೇತರಖಂಡಮಿವ" ಮಾಘಂ ೯-೯।

ಅಂಡಕಾಹ ಅಂಡಕಟಾಹ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡದಮೇಲಿನ ಹೊದಿಕೆ, —ಆವರಣ.

ಅಂಡಕೋಶ ಅಂಡಕೋಶ (ಪುಂ) ವೃಷಣ, ಬೀಜ. ಅಂಡಯೋ: ಕೋಶಃ।

ಅಂಡಜ ಅಂಡಜ (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. 2. ಸರ್ಪ, 3. ಮೀನು. 4. ಓತಿಕೇತ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಜಾ-ಜಾ. 5. ಕಸ್ತೂರಿ. (ವಿಂ) 6. ಮೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅಂಡೇ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುರ್ಭವಿ) "ಛಃ" (೩-೨-೯೭)। "ಅಂಡಜೋ ಮತ್ಸ್ಯೇ ಸ್ವಗೋ ಕಸ್ತೂರಿಕಾಂಡಜಾ" ವೈಜಂ। ಮೇದಿನೀಕಾರರು "ಕಸ್ತೂರಿ" ಎಂಬರ್ಥದಲ್ಲಿಯೂ ಪುಲ್ಲಿಂಗವೆಂದು ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ. "ಅಂಡಜೋ ಮೃಗನಾಭೌ ಸ್ಯಾತ್ಸರಡೇಽಸೌ ಸ್ವಗೋ ಜಾಘೇ" ಮೇದಿಂ।

ಅಂಡಜಾತ ಅಂಡಜಾತ (ಪುಂ) "ಅಂಡಜ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅಂಡಾಲು ಅಂಡಾಲು (ಪುಂ) ಮೀನು.

ಅಂಡುಕ ಅಂಡುಕ (ಪುಂ) 1. ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. "ಭೇಕೇ ಶಾಲು: ಪ್ಲವವ್ಯಜ್ಞಶಾಲೂರಾಂಡುಕಕೇಂಡುಕಾಃ" ವೈಜಂ। 2. ಟಿಟ್ಟುಭಪಕ್ಷಿ. "ಟಿಟ್ಟುಭಸ್ತು ಕಡುಕವಾಣ ಉಪಾದಶಯನೋಂಡುಕಃ" ವೈಜಂ। 3. ಅಂಡಕೋಶ. "ಫೇಲಕೋ ವೃಷಣೋಂಡುಕಃ" ವೈಜಂ।

ಅತ್ ಅತ್ (ಪುಂ) ಸತತಗಮನ, ಎಡಬಿಡದ ಸಂಚಾರ. ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನ) "ಕ್ವಿಪ್" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮)।

ಅತಟ ಅತಟಿ (ಪುಂ) 1. ಬೆಟ್ಟದ ಎತ್ತರವಾದ ಜಾಗ, ಕಮರಿ. ನಾಸ್ತಿ ತಟಂ ಯಸ್ಯ। "ಅಸನಿವೃತ್ಯೈ ತದತಿತಮೇತೇ ಮನೋರಥಾನಾಮತಟಾಃ ಪ್ರಪಾತಾಃ" ಶಾಕುಂ ೬-೧೦। (ವಿಂ) 2. ದಡವಿಲ್ಲದ, ತೀರವಿಲ್ಲದ.

ಅತಟಪ್ರಪಾತ ಅತಟಪ್ರಪಾತ (ಪುಂ) ಭರದಿಂದ ಬೀಳುವ ಪ್ರವಾಹ, ದಡವಿಲ್ಲದೆ ಹದ್ದುಮೀರಿದ ಜಲಪಾತ. ಅತಟಶ್ಚಾಸೌ ಪ್ರಪಾತಶ್ಚ।

ಅತಥಾ ಅತಥಾ (ಅವ್ಯಂ) ಹಾಗಲ್ಲದೆ, ಆ ರೀತಿಯಲ್ಲಲ್ಲದೆ. ನ ತಥಾ।

ಅತಥೋಚಿತ ಅತಥೋಚಿತ (ವಿಂ) ಹಾಗೆ ಯೋಗ್ಯ ವಲ್ಲದೆ. ನ ತಥಾ ಉಚಿತಃ।

ಅತದ್‌ ಅತದರ್‌ (ವಿಂ) 1. ಅದಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದೆ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಅದಕ್ಕೆ ತಕ್ಕುದಲ್ಲದೆ, ಅಯೋಗ್ಯ ರೀತಿ ಯಲ್ಲಿ.



ಅತದ್ಗುಣ ಅತದ್ಗುಣ (ಪ್ರಂ) ಒಂದು ಅಲಂಕಾರ, ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ತನ್ನೊಡನೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಮತ್ತೊಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಗುಣವನ್ನು ಹೊಂದದಿರುವುದು ಅತದ್ಗುಣವು. "ಸಂಗತಾನ್ಯಗುಣಾನನ್ವೀಕಾರಮಾಹುರ-ತದ್ಗುಣಮ್" ಕುವಂ ಪ್ರಂ ೧೫೦.

ಅತದ್ಗುಣಸಂವಿಜ್ಞಾನ ಅತದ್ಗುಣಸಂವಿಜ್ಞಾನ (ಪ್ರಂ) ಬಹು ವ್ರೀಹಿಸಮಾಸದ ಒಂದು ಭೇದ. ತಸ್ಯ ಗುಣಾಃ | ತದ್ಗುಣಾನಾಂ ಸಂವಿಜ್ಞಾನಂ ನ ಯತ್ರ | "ದೃಷ್ಟಸಮುದ್ರಮಾನಯ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಸಮುದ್ರ ಪದಾರ್ಥಕ್ಕೆ ಆನಯನದಲ್ಲಿ ಅನ್ವಯ ವಿಲ್ಲದೆ ಸಮುದ್ರವನ್ನು ನೋಡಿದವನಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಅನ್ವಯ ವಿರುವುದರಿಂದ "ಅತದ್ಗುಣಸಂವಿಜ್ಞಾನ" ಬಹುವ್ರೀಹಿ.

ಅತನು ಅತನು (ಪ್ರಂ) 1. ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ. (ವಿಂ) 2. ದೊಡ್ಡ ದಾದ. "ಅತನುಕುಚಭರಾನತೇನ ಭಯಃ" ಮಾಘಂ ೭-೬೬. 3. ಹೆಚ್ಚಾದ.

ಅತನ್ತ್ರ ಅತನ್ತ್ರ (ವಿಂ) 1. ಕಾರಣಕ್ಕೆ ಅಧೀನವಲ್ಲದ, ನಿಯಮಕ್ಕೆ ವಿಷಯವಲ್ಲದ, ಅಂಕೆಯಿಲ್ಲದ. ನ ತನ್ತ್ರ ಕಾರಣಂ ಯಸ್ಯ | 2. ಅವಿವಕ್ಷಿತ, ಪ್ರಕೃತವಲ್ಲದ, ಪ್ರಧಾನವಲ್ಲದ.

ಅತನ್ದ್ರ ಅತನ್ದ್ರ (ವಿಂ) 1. ನಿರ್ದ್ರೆಯಿಲ್ಲದ. 2. ಸೋಮಾರಿ ತನವಿಲ್ಲದ. 3. ದಣವಿಲ್ಲದ, ಆಯಾಸವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ತನ್ದ್ರಾ ಯಸ್ಯ |

ಅತನ್ದ್ರಿತ ಅತನ್ದ್ರಿತ (ವಿಂ) 1. ನಿರ್ದ್ರೆಬಾರದ. ನ ತನ್ದ್ರಾ ಜಾತಾಸ್ಯ "ಇತಚ್" (೪-೨-೩೬) | 2. ಆಲಸ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಸೋಮಾರಿತನವಿಲ್ಲದ. "ದದ್ದುರಶೇಷಮತನ್ದ್ರಿತಚೇತಸಃ" ಯಾದಂ ೩-೬ | "ಅತನ್ದ್ರಿತಾ ಸಾ ಸ್ವಯಮೇವ ವೃಕ್ಷಕಾನ್" ಕುಮಾಂ ೪-೧೪ |

ಅತಪಸ್ ಅತಪಸ್ (ವಿಂ) 1. ತಪಸ್ಸಿಲ್ಲದವನು. 2. ಅಧಾರ್ಮಿಕ. 3. ಮತಸಂಬಂಧವಾದ ನಿಯಮವನ್ನಾಚರಿಸದವನು.

ಅತಪ್ತ ಅತಪ್ತ (ವಿಂ) ಸುಡಲ್ಪಡದ, ಬಿಸಿಮಾಡಲ್ಪಡದ, ಕಾಯಿಸಲ್ಪಡದ. ನ ತಪ್ತಃ |

ಅತಪ್ತತನು ಅತಪ್ತತನು (ಪ್ರಂ) ತಪ್ತ ಮುದ್ರಾಧಾರಣ ವಿಲ್ಲದವನು, ವೈಷ್ಣವ ಗುರುತಾದ ಶಂಖಚಕ್ರಾದಿಗಳನ್ನು ಧರಿಸದ ಶರೀರವುಳ್ಳವನು. ಅತಪ್ತಾ ತನುರ್ಯಸ್ಯ |

ಅತರ್ಕ ಅತರ್ಕ (ವಿಂ) 1. ಸಂಶಯವಿಲ್ಲದ. 2. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ತರ್ಕೋ ಯಸ್ಯ | 3. ಊಹೆಯಿಲ್ಲದ. 4. ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ. "ತರ್ಕಾಃ ಕಾಂಕ್ಷಾವಿತರ್ಕೋಹಾಃ" ವೈಜಂ |

ಅತರ್ಕಿತ ಅತರ್ಕಿತ (ವಿಂ) ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾದ, ಆಕಸ್ಮಿಕ, ಊಹಿಸಲ್ಪಡದ. ನ ತರ್ಕಿತಮ್ |

ಅತಲ ಅತಲ (ನಂ) 1. ಪಾತಾಳಲೋಕದ ಏಳು ವಿಭಾಗಗಳಲ್ಲೊಂದು, ಏಳು ಪಾತಾಳಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ಲೋಕ. ಅಸ್ಯ ಭೂಷಣಸ್ಯ ತಲಮ್ | ಪೃಷಂ | ಇದ-ಮೋತ್ವಮ್ | ಸಪ್ತ ಪಾತಾಳಲೋಕಗಳು: ಅತಲ, ವಿತಲ, ಸುತಲ, ತಲಾತಲ, ಮಹಾತಲ, ರಸಾತಲ ಮತ್ತು ಪಾತಾಳ. (ವಿಂ) 2. ಬುಡವಿಲ್ಲದ, ಅಡಿಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ತಲಂ ಯಸ್ಯ |

ಅತಲಸ್ಪರ್ಶ ಅತಲಸ್ಪರ್ಶ (ವಿಂ) ಆಳವಾದ, ನೆಲ ಕಾಣಿಸದ, ತಳಭಾಗವು ಕಾಣದಿರುವ. ನ ತಲಸ್ಯ ಸ್ಪರ್ಶೋ ಯತ್ರ |

ಅತಲಸ್ಪರ್ಶಿನ್ ಅತಲಸ್ಪರ್ಶಿನ್ (ವಿಂ) ಬುಡವನ್ನು ಮುಟ್ಟಿದ. ನ ತಲಂ ಸ್ಪೃಶತಿ - ಸ್ಪೃಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೆ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೭೮) |

ಅತಲಸ್ಪೃಶ್ ಅತಲಸ್ಪೃಶ್ (ವಿಂ) ಬುಡವನ್ನು ಮುಟ್ಟಿದ. ನ ತಲಂ ಸ್ಪೃಶತಿ - ಸ್ಪೃಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೆ) "ಕವನ್" (೩-೨-೪೮) |

ಅತಸ್ ಅತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಈ ಕಾರಣದಿಂದ, ಇವನಿಂದ, ಇವಳಿಂದ, ಇದರಿಂದ. ಇದಮ್ "ತಸಿಲ್" (೪-೩-೭) |

"ಅತೋಽತ್ರ ಕಿಂಚಿದ್ಭವತೀತಿ ಬಹುಕ್ಷಮಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೪೦ | 2. ಇವನಿ(ಳ) ಗಿಂತಲೂ, ಇದಕ್ಕಿಂತಲೂ. "ತ್ವಯ್ಯತೋಽನ್ಯನ್ ಜಾನೇ" ಮುಂ ಮಾಂ |

ಅತಸ ಅತಸ (ಪ್ರಂ) 1. ನಾಯು, ಗಾಳಿ. ಅತತಿ - ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೆ) "ಅಸಚ್" (೩-೩-೧೧೭) | 2. ಆತ್ಮ, ಜೀವ. "ಅತತೀತ್ಯತಸೋ ವಾಯುರಾತ್ಮಾ. ಚ" ಸಿಂ ಕೌಂ | 3. ನಾರುಮಡಿ. 4. ಆಯುಧ. "ಅತಸಃ ಕ್ಷೌರಂ ಪ್ರಹರಣಂ ವಾಯುಶ್ಚ" ಮಾಘಂ ಧಾತುಂ |

ಅತಸೀ ಅತಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಂಜಿಯನಾರು. 2. ಅಗಸೆ ಗಿಡ. 3. ಅಗಸೆನಾರು. ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೆ) "ಅಸಚ್" (೩-೩-೧೧೭) "ಜಿಃ" (೪-೧-೪೧) | "ಲಕ್ಷ್ಮಿ-ವಿದ್ಯುಲ್ಲಸಿತಮತಸೀಗುಚ್ಚಸಚ್ಚಾಯಕಾಯಮ್" ಚಂ ರಾಂ ೧-೨೨ |

ಅತಿ ಅತಿ (ಅವ್ಯಂ) ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ ದ್ಯೋತಕವಾಗಿ ಪದಗಳ ಹಿಂದೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವ ಒಂದು ಅನ್ವಯ.

1. ಬಹಳ, ಮಿತಿಯಿರದ. "ಅತಿಕೋಮಲಮೇಕಮನ್ಯತಃ" ಮಾಘಂ ೧೬-೧೮ | 2. ಉತ್ಕರ್ಷ, ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ. 3. ಪೂಜೆ, ಗೌರವ, ಮರ್ಯಾದೆ. 4. ಅತಿಕ್ರಮಣ, ಮಾರುವಿಕೆ. 5. ಪರಾಕ್ರಮ, ಶಕ್ತಿ. "ಅತಿರಾಧವರಾವಣಂ ತದಾನಿಮ್" ಯಾದಂ ೧೪-೧೨೧ | "ಅತಿಶಬ್ದಃ ಪ್ರಶಂಸಾयां ಪ್ರಕರ್ಷೇ ಲಕ್ಷಣೇಽಪಿ ಚ | ನಿತಾಂತಾಸಂಪ್ರತಿಷೇಪವಾಚಕೋಽಪ್ಯೇಷ ದರ್ಶಿತಃ" ಮೇದಿಂ |

ಅತಿಕಥ ಅತಿಕಥ (ವಿಂ) 1. ಹೇಳಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ. 2. ನಂಬಲು ಅರ್ಹವಲ್ಲದ. 3. ಕಳೆದುಹೋದ.



**ಅತಿಕಥಾ ಅತಿಕಥಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅತಿಶಯೋಕ್ತಿ, ಸ್ವಭಾವ ವನ್ನು ಮೀರಿ ಹೇಳುವುದು. ಅತ್ಯುಕ್ತಕಾ ಕಥಾ |

**ಅತಿಕಥಾ ಅತಿಕಥ** (ವಿಂ) ದುಷ್ಕೃತುರಗ, ಅಡಗಿಸಲಾಗದ ಕುದುರೆ, ಚಾವಟಿಯ ಎಟಿಗೂ ಬಗ್ಗದ ಕುದುರೆ.

ಅತಿಕಾಂತ: ಕಶಾಮ್ |

**ಅತಿಕಾಯ ಅತಿಕಾಯ** (ಪುಂ) 1. ರಾವಣನ ಮಗ. (ವಿಂ) 2. ಅಳತೆ ಮೀರಿದ ದೇಹವುಳ್ಳ. ಅತ್ಯುಕ್ತಕ: ಕಾಯೋ ಯಸ್ಯ |

**ಅತಿಕೃಚ್ಛ ಅತಿಕೃಚ್ಛ** (ನಂ) 1. ಚಾಂದ್ರಾಯಣ ವ್ರತವನ್ನೂ ಮೀರಿದ ಒಂದು ವ್ರತ, ಹನ್ನೆರಡು ದಿವಸ ಗಳಲ್ಲಿ ನಡೆಸಬಹುದಾದ ಒಂದು ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ. ಅತಿಕಾಂತಂ ಕೃಚ್ಛಮ್ | "एकैकं ग्रासमश्नीयात् अहाणि त्रीणि पूर्ववत् | अहं चोपवसेदन्त्यमतिकृच्छं चरन् द्विजः" मनु० ११-११३ | 2. ಬಹಳ ಕಷ್ಟ. ಅತಿಶಯಿತ ಕೃಚ್ಛಮ್ | (ವಿಂ) 3. ಬಹಳ ಕಷ್ಟವುಳ್ಳ.

**ಅತಿಕೃತ ಅತಿಕೃತ** (ವಿಂ) ಎಲ್ಲೆಮೀರಿ ನಡೆಸಿದ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಮಾಡಿದ. ಅತಿಕ್ರಮೇಣ ಕೃತಮ್ |

**ಅತಿಕೃತಿ ಅತಿಕೃತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎಲ್ಲೆಮೀರಿ ಕೆಲಸಮಾಡು ಎಕೆ. ಅತಿ+ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಕ್ತಿನ್" (३-३-९४) |

**ಅತಿಕ್ರಮ ಅತಿಕ್ರಮ** (ಪುಂ) 1. ಕ್ರಮವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ನಡೆಯುವಿಕೆ. ಅತಿಕಾಂತ: ಕ್ರಮಮ್—ಅತಿ+ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ರೇಪ) "ಕ್ರಮ್" (३-३-१८) | 2. ಉಲ್ಲಂಘನೆ, ಶಿಸ್ತು ಮೀರುವಿಕೆ. 3. ಅಜ್ಞಾಭಂಗ. 4. ಅತಿಕ್ರಮ ಪ್ರವೇಶ. ಅಪ್ಪಣೆಮೀರಿ ನಡೆಯುವಿಕೆ. 5. ಕಳೆದು ಹೋಗುವಿಕೆ (ಕಾಲ). ಕಾಲಾತೀತ: | 6. ಹಿಂದುಳಿಸುವಿಕೆ, ದಾಟಿಹೋಗುವಿಕೆ, ಮುಂದೆ ಸಾಗುವಿಕೆ.

**ಅತಿಕ್ರಮಣ ಅತಿಕ್ರಮಣ** (ನಂ) "ಅತಿಕ್ರಮ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅತಿ+ಕ್ರಮ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (३-३-११५) |

**ಅತಿಕ್ರಮಣೀಯ ಅತಿಕ್ರಮಣೀಯ** (ವಿಂ) ಮೀರಬಹುದಾದ, ಉಲ್ಲಂಘಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. "ಅನತಿಕ್ರಮಣೀಯಃ ಸುಹೃದಾಕಯಮ್" ಶಾಕುಂ २ |

**ಅತಿಕಾಂತ ಅತಿಕಾಂತ** (ವಿಂ) 1. ಮೀರಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಲ್ಲಂಘಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2 ಕಳೆದುಹೋದ, ಗತಿಸಿದ. "ಅತಿಕಾಂತಪಾರ್ಥಿವಗುಣಾನ್" ಮುद्रಾಂ १ |

**ಅತಿಕಾಂತಿ ಅತಿಕಾಂತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಅತಿಕ್ರಮ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅತಿ+ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ರೇಪ) "ಕ್ತಿನ್" (३-३-९४) |

**ಅತಿಕ್ರುದ್ಧ ಅತಿಕ್ರುದ್ಧ** (ವಿಂ) ಬಹಳ ಕೋಪಗೊಂಡ. ಅತಿ+ಕ್ರುಧ (ಕೋಪ) "ಕ್ರು:" (३-२-१०२) |

**ಅತಿಕ್ರೂರ ಅತಿಕ್ರೂರ** (ವಿಂ) ಬಹಳ ಕ್ರೂರ, ನಿರ್ದಯ, ಕರುಣೆಯಿಲ್ಲದವನು.

**ಅತಿಗಂಧ ಅತಿಗಂಧ** (ಪುಂ) 1. ದೊಡ್ಡಗಲ್ಲ, ಅಗಲವಾದ ಕೆನ್ನೆ. 2. ವಿಷ್ಕಂಭ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ಯೋಗಗಳಲ್ಲೊಂದು [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಯೋಗ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] (ವಿಂ) 3. ಅಗಲವಾದ ಕೆನ್ನೆಯುಳ್ಳವನು.

**ಅತಿಗಂಧ ಅತಿಗಂಧ** (ಪುಂ) 1. ಸಂಪಿಗೆಮರ. ಅತಿಶಯಿತೋ ಗಂಧೋ ಯಸ್ಯ | 2. ಗಂಧಕ. (ವಿಂ) 3. ಹೆಚ್ಚು ವಾಸನೆಯುಳ್ಳ.

**ಅತಿಗರ್ವಿತ ಅತಿಗರ್ವಿತ** (ಪುಂ) ಹೆಚ್ಚು ಗರ್ವದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು, ಹೆಚ್ಚು ಕೊಬ್ಬಿದವನು.

**ಅತಿಗವ ಅತಿಗವ** (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಮೂರ್ಖ, ಮಂಕ, ಹೆಡ್ಡು, ವಿವೇಚನಾಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದವನು. ಅತಿಕಾಂತೋ ಗಾಮ್ | [ಬುದ್ಧಿಯಲ್ಲಿ ಹಸುವನ್ನೂ ಮೀರಿದವನು.] 2. ಅವರ್ಣನೀಯ, ವರ್ಣನಾತೀತ, ವರ್ಣಿಸಲಾಗದ. ಅತಿಕಾಂತೋ ಗಾಂ ವಾಚಮ್ |

**ಅತಿಗುರು ಅತಿಗುರು** (ಪುಂ) 1. ಪೂಜ್ಯ, ಗೌರವಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದವನು. ಅತಿಶಯಿತೋ ಗುರು: [ತಾಯಿ, ತಂದೆ ಮತ್ತು ಆಚಾರ್ಯ ಇವರು ಅತಿಗುರುಗಳು.] "अयः पुरुषस्यातिगुरवो भवन्ति पिता माताचार्यश्च" | (ವಿಂ) 2. ಹೆಚ್ಚು ಭಾರವುಳ್ಳ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ವಾ "ಕೀಪ್" (४-१-४४) | -ಗುರ್ವಿ-ಗುರ್ವೀ -ಗುರು: -ಗುರು: |

**ಅತಿಗ್ರಹ ಅತಿಗ್ರಹ** (ಪುಂ) 1. ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯ ಮತ್ತು ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಗಳು. ಅತಿಶಯಿತೋ ಗ್ರಹೋ ಜ್ಞಾನಂ ಯೇಷಾಮ್ | 2. ಹೆಚ್ಚು ಜ್ಞಾನ, ಉತ್ತಮವಾದ ಜ್ಞಾನ. ಅತಿಶಯಿತೋ ಗ್ರಹ: | (ವಿಂ) 3. ತಿಳಿಯಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯನ್ನು ಮೀರಿದ. ಅತಿಕಾಂತೋ ಗ್ರಹಮ್ |

**ಅತಿಚರಾ ಅತಿಚರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1 ಬೆಟ್ಟದಾವರೆ. ಅತ್ಯಥಂ ಚರತಿ ವ್ಯಾಪ್ನೋತಿ—ಅತಿ+ಚರ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (३-१-१३४) | 2. ನೆಲದಾವರೆ.

**ಅತಿಚಾರ ಅತಿಚಾರ** (ಪುಂ) ಗ್ರಹಗಳು ಬೇರೆ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವುದು, ಕುಜಾದಿಗ್ರಹಗಳು ಆಯಾ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಕ್ಲೃಪ್ತಕಾಲದಲ್ಲಿರದೆ ಬೇರೆ ರಾಶಿಗಳಿಗೆ ಹೋಗಿ ಸೇರುವುದು. ಅತಿಕ್ರಮ್ಯ ಚಾರ: ರಾಶ್ಯಂತರಗಮನಮ್ |

**ಅತಿಚಾರಿನ್ ಅತಿಚಾರಿನ್** (ಪುಂ) ಅತಿಚಾರವುಳ್ಳ ಗ್ರಹ, ಕ್ಲೃಪ್ತಕಾಲದಲ್ಲಿ ತಾನಿರಬೇಕಾದ ರಾಶಿಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬೇರೆ ರಾಶಿಗೆ ಹೋಗುವ ಗ್ರಹ. ಅತಿಕ್ರಮ್ಯ ಚರತಿ—ಚರ (ಗತೌ) "ಗಿಣಿ:" (३-१-१३४) |



ಅತಿವಿರ ಅತಿಚಿರ (ಅವ್ಯಂ) ಬಹಳಕಾಲ.

ಅತಿಚ್ಛತ್ರ ಅತಿಚ್ಛತ್ರ (ಪುಂ) ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯುವ ಭತ್ತಿ  
ಯಂತಿರುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹುಲ್ಲು. ಅತಿಕ್ರಾಂತ-  
ಚ್ಛತ್ರಮ್ |

ಅತಿಚ್ಛತ್ರಾ ಅತಿಚ್ಛತ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡುಸಬ್ಬಸಿಗೆ.

ಅತಿಚ್ಛಂದ ಅತಿಚ್ಛಂದ-ದಸ್-ದಸ್ (ನಂ) 1. ಛಂದಸ್ಸಿನ  
ನಿಯಮವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬರೆದ ವೃತ್ತ. ಅತಿಕ್ರಾಂತ  
ಛಂದಃ | (ವಿಂ) 2. ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ಮೀರಿದವನು.  
3. ವೇದವಿಹಿತವಾದ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟವನು. ಛಂದಃ  
ಅಭಿಪ್ರಾಯೋ ವೇದೋ ವಾ ತಂ — ತದತಿಕ್ರಾಂತಃ |

ಅತಿಜವ ಅತಿಜವ (ಪುಂ) 1. ಬಹಳ ವೇಗ. ಅತಿಶಯಿತೋ  
ಜವಃ | (ವಿಂ) 2. ಬಹಳ ವೇಗವಾದ. ಅತಿಶಯಿತೋ  
ಜವೋ यस್ಯ |

ಅತಿಜಾಗರ ಅತಿಜಾಗರ (ಪುಂ) 1. ಕಪ್ಪು ಬಕಪಕ್ಷಿ.  
ಅತಿಶಯಿತೋ ಜಾಗರೋ ನಿद्रಾಭಾವೋ यस್ಯ | (ವಿಂ) 2. ನಿದ್ರೆ  
ಯಿಲ್ಲದವನು, ನಿದ್ರೆ ಬಾರದವನು.

ಅತಿತಮಾಮ್ ಅತಿತಮಾಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಬಹಳವಾಗಿ,  
ಹೆಚ್ಚಾಗಿ. ಅತಿ+ತಮಃ "ಆಮುಃ" (೪-೪-೧೧) |

ಅತಿತರಾಮ್ ಅತಿತರಾಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಬಹಳವಾಗಿ,  
ಹೆಚ್ಚಾಗಿ. ಅತಿ+ತರಃ "ಆಮುಃ" (೪-೪-೧೧) |

"ನೃತ್ತಾದಸ್ಯಾಃ ಸ್ಥಿತಮತಿತರಾಂ ಕಾಂತಮೃಜ್ವಾಯತಾರ್ಥಮ್" ಮಾಲಂ  
೨-೬ |

ಅತಿತೀಕ್ಷಣ ಅತಿತೀಕ್ಷಣ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಚುರುಕಾದ,  
ಬಹಳ ಹರಿತವಾದ. ಅತಿಶಯೇನ ತೀಕ್ಷಣಮ್ |

ಅತಿತೃಣಾ ಅತಿತೃಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅತ್ಯಾಶೆ, ಕಾರ್ಪಣ್ಯ,  
ದುರಾಸೆ.

ಅತಿಥಿ ಅತಿಥಿ (ಪುಂ) 1. (ಪರಿಕರವಾಗಿ ಮಾರ್ಗಮಧ್ಯ  
ದಲ್ಲಿ) ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾಗಿ ಮನೆಗೆ ಬಂದು ತಂಗಿದವನು.

ಅತಿತಿ — ಅತಿ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೇ) "ಇಥಿನ್" (೩ಂ-೪-೨) |

"ಅಶ್ವನಿನೋಽತಿಥಿಜ್ಞೇಯಃ" ಸ್ಮೃತಿಃ | "ಏಕರಾತ್ರಂ ಹಿ ನಿವಸನ್  
ಹೃತಿಥಿಬ್ರಾಹ್ಮಣಃ ಸ್ಮೃತಃ | ಅನಿತ್ಯಾಸ್ಯ ಸ್ಥಿತಿಯಸ್ಮಾತ್ ತಸ್ಮಾ-  
ದತಿಥಿರುಚ್ಯತೇ" ಮನುಂ ೩-೧೧೨ | "ಇಮಂ ಜೀವಿತಸರ್ವಸ್ವೇನಾ-  
ಪ್ಯತಿಥಿವಿಶೇಷಂ ಕೃತಾರ್ಥಂ ಕರಿಷ್ಯತಿ" ಶಾಕುಂ ೧ | 2. ಕುಶ  
ಮಹಾರಾಜನ ಮಗ.

ಅತಿಥಿಪೂಜಾ ಅತಿಥಿಪೂಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅತಿಥಿ ಸತ್ಕಾರ,  
ಅತಿಥಿಗಳನ್ನು ಆದರಿಸುವುದು.

ಅತಿಥಿಸತ್ಕರ್ಯಾ ಅತಿಥಿಸತ್ಕರ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ಸತ್ಕಾರಃ  
— ಸತ್ಕಾರಃ (ಪುಂ) "ಅತಿಥಿಪೂಜಾ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ಅತಿದಾನ ಅತಿದಾನ (ನಂ) ಅಧಿಕವಾಗಿ ಕೊಡುವಿಕೆ,  
ಎಲ್ಲೆ ಮೀರಿದ ದಾನ. ಅತಿಶಯಿತಂ ದಾನಮ್ |

ಅತಿದಾಹ ಅತಿದಾಹ (ಪುಂ) ಬಹಳ ಮೊಡ್ಡ ಉರಿ, ಉಗ್ರ  
ವಾದ ಉರಿ. ಅತಿಶಯೇನ ದಹಯತೇನೇನ — ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣಂ)  
ಕರಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧) |

ಅತಿದೀಶ ಅತಿದೀಶ (ವಿಂ) ಅತಿದೇಶ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು,  
[ಒಂದರ ಧರ್ಮವನ್ನು ಮತ್ತೊಂದರಲ್ಲಿ ಹೇಳುವುದು  
ಅತಿದೇಶ] ವರ್ಗಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಅತಿ+ದೀಶ (ಅತಿ-  
ಸರ್ಜನೆ) "ಕ್" (೩-೨-೧೦೨) |

ಅತಿದೇಶ ಅತಿದೇಶ (ಪುಂ) ವರ್ಗಾಯಿಸುವಿಕೆ, ಒಂದರ  
ಧರ್ಮವನ್ನು ಮತ್ತೊಂದರಲ್ಲಿ ಹೇಳುವುದು. ಅತಿ-  
ದೀಶ್ಯತೇ — ಅತಿ+ದೀಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) ಕರಂ "ಘ್"  
(೩-೩-೧೧) | "ಅನ್ಯತ್ರೈವ ಪ್ರಣೀತಾಯಾಃ ಕೃತ್ಯನಾಯಾ ಧರ್ಮಸಂಹತೇಃ |  
ಅನ್ಯತ್ರ ಕಾರ್ಯತಃ ಪ್ರಾಪ್ತಿರತಿದೇಶಸ್ಯ ಉಚ್ಯತೇ" | ಮೀಮಾಂಸಕ  
ಮತರೀತ್ಯಾಃ (1) ಶಾಸ್ತ್ರಾತಿದೇಶ. (2) ಕಾರ್ಯಾತಿ  
ದೇಶ. (3) ನಿಮಿತ್ತಾತಿದೇಶ. (4) ವ್ಯಸದೇಶಾತಿ  
ದೇಶ ಮತ್ತು (5) ರೂಪಾತಿದೇಶಗಳೆಂದು ಅತಿದೇಶವು  
ಐದು ವಿಧ. ವೈಯಾಕರಣ ಮತದಲ್ಲಿ ತಾದಾತ್ಮ್ಯಾತಿ  
ದೇಶವೂ ಸೇರಿ ಆರು ವಿಧ.

ಅತಿದೂರ ಅತಿದೂರ (ವಿಂ) ಬಹಳ ದೂರದ.

ಅತಿದೂರತಸ್ ಅತಿದೂರತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಬಹಳ ದೂರದಿಂದ.

ಅತಿಧನ್ವನ್ ಅತಿಧನ್ವನ್ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ಯೋಧ.  
ಅತ್ಯುತ್ಕೃಷ್ಟಂ ಧನ್ಯಸ್ಯ "ಅನಃ" (೪-೪-೧೩೨) | (ವಿಂ)  
2. ಮರುಭೂಮಿಯನ್ನು ದಾಟಿದವನು. ಅತಿಕ್ರಾಂತಃ  
ಧನ್ವಾನಮ್ |

ಅತಿಧೃತಿ ಅತಿಧೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಹಳ ಧೈರ್ಯ.  
2. ಬಹಳ ಸಂತೋಷ. 3. ಹತ್ತೊಂಭತ್ತನೆಯ  
ಛಂದಸ್ಸು. 4. ಹತ್ತೊಂಭತ್ತು ಸಂಖ್ಯೆ. (ವಿಂ)  
5. ಹೆಚ್ಚು ಧೈರ್ಯವುಳ್ಳವನು. ಅತಿಶಯಿತಾ ಧೃತಿಯಸ್ಯ |

ಅತಿನಿದ್ರಾ ಅತಿನಿದ್ರಾ (ಅವ್ಯಂ) 1. ನಿದ್ರೆಗೆ ಯೋಗ್ಯ  
ವಲ್ಲದ ಕಾಲ. ನಿद्रಾ ಸಂಪ್ರತಿ ನ ಯುಜ್ಯತೇ (೨-೧-೬) |  
(ವಿಂ) — ಡ-ದ್ರ. 2. ನಿದ್ರೆಯಿಲ್ಲದ, ನಿದ್ರೆಯನ್ನು  
ಮೀರಿದ. ಅತಿಕ್ರಾಂತೋ ನಿದ್ರಾಮ್ | 3. ಹೆಚ್ಚು ನಿದ್ರೆ  
ಯುಳ್ಳ. ಅತಿಶಯಿತಾ ನಿದ್ರಾ ಯಸ್ಯ |

ಅತಿನಿದ್ರಾ ಅತಿನಿದ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಹಳ ನಿದ್ರೆ, ಹೆಚ್ಚು  
ನಿದ್ರೆ. ಅತಿಶಯಿತಾ ನಿದ್ರಾ |

ಅತಿನಿರ್ಹರಿನ್ ಅತಿನಿರ್ಹರಿನ್ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಮನೋ  
ಹರವಾದ, ಆಕರ್ಷಕವಾದ, ಮನಸ್ಸನ್ನು ಸೆಳೆಯುವ.



ಅತಿನು ಅತಿನು (ವಿಂ) ನಾವೆಯನ್ನು ಮಾರಿದ, ಹಡಗನ್ನು ದಾಟಿದ (ವಸ್ತು). ನಾವಮತಿಕ್ರಾಂತಮ್।

ಅತಿಪತನ ಅತಿಪತನ (ನಂ) 1. ಮಾರುವಿಕೆ. 2. ಕಳೆಯುವಿಕೆ (ಕಾಲ). 3. ಹದ್ದುಮಾರುವಿಕೆ, ಎಲ್ಲೆ ಮಾರುವಿಕೆ.

ಅತಿಪತ್ತಿ ಅತಿಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. (ಕಾಲ) ಮಾರುವಿಕೆ. ಕಾಲಾತಿಪತ್ತಿ:। 2. ಅನಿಷ್ಟತ್ವ, (ಕೆಲಸವು) ನೆರವೇರದಿರುವಿಕೆ. ಕ್ರಿಯಾತಿಪತ್ತಿ:। “ಕ್ರಿಯಾಯಾ ಅನಿಷ್ಟಪತ್ತಿ:” ಸಿಂ ಕೌಂ। (ವಿಂ) 3. ಸೇನೆಯನ್ನು ಮಾರಿದ. ಪತ್ತಿ ಸೇನಾಂ (ಪದಾತಿ) ಅತಿಕ್ರಾಂತ:।

ಅತಿಪಥಿನ್ ಅತಿಪಥಿನ್ (ಪುಂ) ಸುಪಥ, ಒಳ್ಳೆಯ ದಾರಿ. ಅತಿ ಪೂಜಿತ: ಪನ್ಥಾ:।

ಅತಿಪನ್ನ ಅತಿಪನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಅತಿಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಾರಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಕಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ತಪ್ಪಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಉಲ್ಲಂಘಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ದಾಟಲ್ಪಟ್ಟ. ಅತಿ+ಪದ (ಗತೌ) “ಕ್ರ:” (೩-೨-೧೦೨)।

ಅತಿಪರಿಚಯ ಅತಿಪರಿಚಯ (ಪುಂ) ಹೆಚ್ಚು ಪರಿಚಯ, ಹೆಚ್ಚು ಸರಿಗೆ. ಅತಿಶಯಿತ: ಪರಿಚಯ:। “ಅತಿಪರಿಚಯಾದವಜ್ಞಾ ಸಂತತಗಮನಾದನಾದರೋ ಭವತಿ”।

ಅತಿಪರ ಅತಿಪರ (ಪುಂ) 1. ಬಲಿಷ್ಠನಾದ ಶತ್ರು. ಅತಿಶಯಿತ: ಪರ:। (ವಿಂ) 2. ಶತ್ರುವನ್ನು ಜಯಿಸಿದ. ಪರಮತಿಕ್ರಾಂತ:।

ಅತಿಪರೋಕ್ಷ ಅತಿಪರೋಕ್ಷ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ. ಅತಿಕ್ರಾಂತಂ ಪರೋಕ್ಷಮ್। 2. ಬಹಳ ದೂರದ, ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗದ. ಅತ್ಯಂತಂ ಪರೋಕ್ಷಮ್।

ಅತಿಪಾತ ಅತಿಪಾತ (ಪುಂ) 1. ಅತಿಕ್ರಮ, ಮಾರುವಿಕೆ. ಅತಿಕ್ರಮ್ಯ ಪಾತ:। “ಅಹೋ ಕಾಲಾತಿಪಾತ:” ಮಾಲತೀಂ ೨। 2. ತಪ್ಪುವಿಕೆ, ಕಳೆಯುವಿಕೆ. “ನ ಚೇದನ್ಯಕಾರ್ಯಾತಿಪಾತ: ತತ್ಪ್ರವಿಶ್ಯ ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಯತಾಮಾತಿಯೇಯ: ಸತ್ಕಾರ:” ಶಾಕುಂ ೧। 3. ಆಗುಹೋಗು, ಸಂಭವ, ಘಟನೆ. 4. ವಿರೋಧ, ಪ್ರತಿಭಟನೆ. 5. ಕ್ರಮಮಾರುವಿಕೆ.

ಅತಿಪಾತಕ ಅತಿಪಾತಕ (ನಂ) ಮಹಾಪಾಪ, ಮಾತೃಗಮನಾದಿಗಳಿಂದಂಟಾಗುವ ಮಹಾಪಾತಕ.

ಅತಿಪಾತಿತ ಅತಿಪಾತಿತ (ವಿಂ) ಕಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅತಿಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಅತಿಪಾತಿತಕಾಲಸಾಧನಾ ಸ್ವಶರೀರೇಂದ್ರಿಯಗತಾಪನಿ” ಕಿರಾಂ ೨-೪೨।

ಅತಿಪಾತಿನ್ ಅತಿಪಾತಿನ್ (ವಿಂ) ಮಾರತಕ್ಕ, ಅತಿಕ್ರಮಿಸುವ. ಅತಿಕ್ರಮ್ಯ ಪತತಿ - ಪಲ್ (ಗತೌ) “ಗಿಣಿ:”

(೩-೧-೧೩೪)। “ತತಾರ ವಿಶ್ವಾ: ಪವನಾತಿಪಾತಿಭಿರ್ದಿಶೋ ಹರಿರ್ದಿಹರಿತಾಮಿವೇಶ್ವರ:” ರಘುಂ ೩-೩೦।

ಅತಿಪ್ರಗೇ ಅತಿಪ್ರಗೇ (ಅವ್ಯಂ) ಬಹಳ ಮುಂಜಾನೆ, ಬೆಳಿಗ್ಗೆ ಬಹಳ ಮುಂಚಿತವಾಗಿ. “ಪ್ರಗೇ ಪ್ರಾತ: ಪ್ರಭಾತೇ” ಅಮಂ।

ಅತಿಪ್ರಬಂಧ ಅತಿಪ್ರಬಂಧ (ಪುಂ) ಸಾತತ್ಯ, ಎಡಬಿಡದೆ ಮುಂದುವರಿಯುವಿಕೆ. “ಅತಿಪ್ರಬಂಧಪ್ರಹಿತಾಸ್ತವೃಷ್ಟಿಭಿ:” ರಘುಂ ೩-೪೮।

ಅತಿಪ್ರಮಾಣ ಅತಿಪ್ರಮಾಣ (ನಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಅಳತೆ, ದೊಡ್ಡ ಆಕಾರ. (ವಿಂ) 2. ಅಳತೆಯನ್ನು ಮಾರಿದ, ದೊಡ್ಡ ಆಕಾರವುಳ್ಳ. “ಅತಿಪ್ರಮಾಣಾ ಬಲಿನ: ದೀರ್ಘ-ಜಿಹ್ವಾನಖಾಸ್ತಥಾ” ರಾಮಾಂ।

ಅತಿಪ್ರವೃದ್ಧ ಅತಿಪ್ರವೃದ್ಧ (ವಿಂ) ಬಹಳ ದೊಡ್ಡದಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವ. ಅತ್ಯಂತಂ ಪ್ರವೃದ್ಧ:।

ಅತಿಪ್ರಶ್ನ ಅತಿಪ್ರಶ್ನ (ಪುಂ) ಹದ್ದುಮಾರಿದ ಪ್ರಶ್ನೆ, ಅನುಚಿತವಾದ ಪ್ರಶ್ನೆ. ಅತಿಕ್ರಮ್ಯ ಮರ್ಯಾದಾಂ ಪ್ರಶ್ನ:।

ಅತಿಪ್ರಸಕ್ತ ಅತಿಪ್ರಸಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರೀತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಪಡದ.

ಅತಿಪ್ರಸಕ್ತಿ ಅತಿಪ್ರಸಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎಲ್ಲೆ ಮಾರಿದ ಅಕ್ಕರೆ, ಅತಿಶಯವಾದ ಪ್ರೇಮ (ಅನುರಾಗ). 2. ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಪಡದಿರುವಿಕೆ. 3. ಹೆಚ್ಚು ಮಾತು, ಅಧಿಕೋಕ್ತಿ.

ಅತಿಪ್ರಸಕ್ತ ಅತಿಪ್ರಸಕ್ತ (ಪುಂ) 1. “ಅತಿಪ್ರಸಕ್ತಿ” ಪದದ ಅರ್ಥ. 2. ಬಹಳ ವಿಸ್ತಾರ. “ಅಲಮತಿ-ಪ್ರಸಕ್ತೇನ” ಮುದ್ರಾಂ ೧। 3. ಸಮಾಪಸಂಬಂಧ. “ಅತಿಪ್ರಸಕ್ತಾಢಿಹಿತಾಗಸೋ ಮುಹು:” ಕಿರಾಂ ೮-೩೩।

ಅತಿಪ್ರೌಢ ಅತಿಪ್ರೌಢ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಬೆಳೆದಿರುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪ್ರೌಢಾ-ಪ್ರೌಢಾ. 2. ವಿವಾಹ ಕಾಲವನ್ನು ಹೊಂದಿದ ಕನ್ಯೆ, ಹತ್ತು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸು ಮಾರಿದ ಕನ್ಯೆ. [ಹೆಂಗಸರಿಗೆ 10 ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಾದರೆ ಅತಿ ಪ್ರೌಢೆಯೆನಿಸುವರು.]

ಅತಿಬಲ ಅತಿಬಲ (ನಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಶಕ್ತಿ, ಉನ್ನತ ಪರಾಕ್ರಮ. 2. ಸೈನ್ಯ. (ವಿಂ) 3. ಹೆಚ್ಚು ಪರಾಕ್ರಮವುಳ್ಳ, ಅಧಿಕಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ. “ಜಯತೀತಿಬಲೋ ರಾಮೋ ಲಕ್ಷ್ಮಣಶ್ಚ ಮಹಾಬಲ:” ರಾಮಾಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ-ಲಾ. 4. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮಹರ್ಷಿಯು ಶ್ರೀರಾಮನಿಗೆ ಉಪದೇಶಿಸಿದ ವಿದ್ಯೆ. “ಬಲೇನ ತಪಸಾಂ ಲಬ್ಧೇ ಬಲೇತ್ಯತಿಬಲೇತಿ ಚ” ಚಂ ರಾಂ ೧-೭೦। ಈ ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸಿ, ಇದರ ಪಠನಿಂದ ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಹಸಿವು ಬಾಯಾರಿಕೆಯೂ



ಆಗುವುದಿಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳಿದರು. “ಕೃತ್ಯಿಪಾಸೇ ನ ತೇ ರಾಮ  
ಭವಿಷ್ಯಂತೇ ನರೋತ್ತಮ | ಬಲಾಮತಿಬಲಾಂವೈ ಪಠತಃ ಪಥಿ  
ರಾಘವ” ರಾಮಾಂ |

ಅತಿವ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ ಅತಿಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ  
ವನ್ನು ಮೀರಿದವನು, ಶಾಸ್ತ್ರವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಹೆಂಗಸಿ  
ನೊಡನೆ ಸಂಬಂಧ ಬೆಳೆಸಿದವನು. ಅತಿಕಾಂತೋ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಮ್ |

ಅತಿಭಾರ ಅತಿಭಾರ (ಪುಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಭಾರ (ಹೊರೆ).  
ಅತಿಶಯಿತೋ ಭಾರಃ | “ಕೋತಿಭಾರಃ ಸಮರ್ಥನಾಮ” ಪञ्ಚತಂ  
೧-೨೨ | 2. ಅತಿಶಯ, ಅಧಿಕೃ. “ಪ್ರಾತಃ ಪ್ರಾಪ್ತುಂ ರಥೋ ಮೇ  
ಪುನರिति मनसि न्यस्तचिन्तातिभारः” ರತ್ನಾಂ ೩-೪ |  
3. ವೇಗ.

ಅತಿಭಾರಗ ಅತಿಭಾರಗ (ಪುಂ) ಹೇಸರಗತ್ತಿ, ಒಂದು  
ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯ ಪ್ರಾಣಿ. ಅತಿಭಾರೇಣ ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ಯ  
(ಗತೌ) “ತಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) |

ಅತಿಭೀ ಅತಿಭೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎದ್ದುತ್ತು, ಮಿಂಚು.  
ಅತಿಬಿಹೇತೃಸ್ಯಾಃ - ವಿ ಭೀ (ಭಯೇ) “ಕಿವ್” (೩-೨-೬೧) |  
2. ಹೆಚ್ಚು ಭಯ.

ಅತಿಭೂಮಿ ಅತಿಭೂಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅತಿಶಯ, ಅಧಿಕೃ.  
“ಅಥ ಸವಿಶೇಷದರ್ಶನೇನಾತಿಭೂಮಿ ಸ್ವಲ್ಪ ಗಮಿಷ್ಯತಿ ತಸ್ಯಾ  
ಅಭಿನಿವೇಶಃ” ಮಾಲತೀಂ ೨ | (ವಿಂ) 2. ಎಲ್ಲೆಯನ್ನು  
ಮೀರಿದ. 3. ಭೂಮಿಯನ್ನು ದಾಟಿದ. (ಅವ್ಯಂ)  
4. ಎಲ್ಲೆ ಮೀರಿ.

ಅತಿಮಜ್ಜಲ ಅತಿಮಂಗಳ (ಪುಂ) 1. ಬಿಲ್ವಮರ.  
(ವಿಂ) 2. ಬಹಳ ಮಂಗಳವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.  
ಅತಿಮಜ್ಜಲೇ ಸಾಧು “ಯತ್” (೪-೪-೯೮) |

ಅತಿಮರ್ಯ ಅತಿಮರ್ಯ (ವಿಂ) ಮನುಷ್ಯನನ್ನು ಮೀರಿದ.  
“ಅತಿಮರ್ಯಬಲಾ ವಿರಾಟಶಲ್ಯದ್ರುಪದಾಘಾಃ” ಯಾದಂ ೧೪-೪೦ |

ಅತಿಮರ್ಯಾದಿ ಅತಿಮರ್ಯಾದಿ (ವಿಂ) 1. ಹದ್ದು ಮೀರಿ  
ದವನು, ಎಲ್ಲೆ ದಾಟಿದವನು. ಅತಿಕಾಂತೋ ಮರ್ಯಾದಾಮ್ |  
2. ಅತಿಶಯವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಎಲ್ಲೆ  
ಮೀರಿ.

ಅತಿಮಾತ್ರ ಅತಿಮಾತ್ರ (ನಂ) 1. ಅತಿಶಯ, ಅಧಿಕೃ.  
ಮಾತ್ರಾಮತಿಕಾಂತಮ್ | (ವಿಂ) 2. ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅಧಿಕ  
ವಾದ. 3. ಪ್ರಮಾಣವನ್ನು ಮೀರಿದ, ಅಳತೆಮೀರಿದ.  
“ಮುನಿವ್ರತೇಸ್ತಾಮತಿಮಾತ್ರಕಶಿತಾಮ್” ಕುಮಾಂ ೪-೪೮ |  
(ಅವ್ಯಂ) 4. ಅಳತೆಮೀರಿ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ, ಅಧಿಕವಾಗಿ.

ಅತಿಮಾನ ಅತಿಮಾನ (ಪುಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಅಭಿಮಾನ,  
ಅಹಂಕಾರ. ಅತ್ಯಂತೋ ಮಾನಃ ಅಭಿಮಾನಃ | (ವಿಂ)

2. ಪ್ರಮಾಣವನ್ನು ಮೀರಿದ, ಬಹಳ ದೊಡ್ಡದಾದ.  
ಮಾನಂ ಪ್ರಮಾಣಮತಿಕಾಂತಃ |

ಅತಿಮಾನುಷ ಅತಿಮಾನುಷ (ವಿಂ) 1. ಮನುಷ್ಯನನ್ನು  
ಮೀರಿದ, ಮನುಷ್ಯನ ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಮೀರಿದ. ಮಾನುಷ-  
ಮತಿಕಾಂತಃ | 2. ಮನುಷ್ಯನ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮೀರಿದ.  
3. ಮನುಷ್ಯನ ಆಕಾರವನ್ನು ಮೀರಿದ.

ಅತಿಮಾರುತ ಅತಿಮಾರುತ (ಪುಂ) ಸುಂಟರಗಾಳಿ, ಬಿರು  
ಗಾಳಿ.

ಅತಿಮಿತ್ರ ಅತಿಮಿತ್ರ (ನಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಸ್ನೇಹಿತ.  
ಅತ್ಯಂತಂ ಮಿತ್ರಮ್ | 2. ಪರಮಮೈತ್ರತಾರೇ, ಜನ್ಮತಾರೇ  
(ಜನ್ಮನಕ್ಷತ್ರ) ಯಿಂದ ಒಂಭತ್ತನೆಯ, ಹದಿನೆಂಟ  
ನೆಯ ಮತ್ತು ಇಪ್ಪತ್ತನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ.

ಅತಿಮುಕ್ತ ಅತಿಮುಕ್ತ (ಪುಂ) 1. ಮಾಧವೀಲತೆ, ಕಾಡು  
ಇರುವಂತಿಗೆ. ಅತಿಕಾಂತೋ ಮುಕ್ತಾಮ್ | 2. ಹುಲಿಗೆಮರ.  
(ವಿಂ) 3. ಮುಕ್ತಿ ಹೊಂದಿದ, ಮೋಕ್ಷ ಪಡೆದ.  
ಅತಿಶಯೇನ ಮುಕ್ತಃ |

ಅತಿಮುಕ್ತಕ ಅತಿಮುಕ್ತಕ (ಪುಂ) 1. ತಾಳೆಗಿಡ.  
2. ತೂಬರೆಮರ, ಜಗಳದಮರ. (ವಿಂ) 3. ಮೋಕ್ಷ  
ಹೊಂದಿದ.

ಅತಿಮುಕ್ತಿ ಅತಿಮುಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಂಧವಿಮೋಚನೆ,  
ಸಂಸಾರದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ.

ಅತಿಮೃತ್ಯು ಅತಿಮೃತ್ಯು (ಪುಂ) 1. ಮುಕ್ತಿ, ಮೋಕ್ಷ.  
(ವಿಂ) 2. ಮೃತ್ಯುವನ್ನು ಮೀರಿದ.

ಅತಿಮೋದಾ ಅತಿಮೋದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಜ್ಜಾಜಿ ಗಿಡ.  
ಅತಿಶಯಿತೋ ಮೋದೋ ಗಂಧೋ ಯಸ್ಯಾಃ | (ವಿಂ) 2. ಹೆಚ್ಚು  
ವಾಸನೆಯುಳ್ಳ.

ಅತಿರಂಹಸ್ ಅತಿರಂಹಸ್ (ನಂ) 1. ಬಹಳ ವೇಗ. (ವಿಂ)  
2. ಬಹಳ ವೇಗವುಳ್ಳ. “ಅಥ ರಾಜೇವ ದುಷ್ಯಂತಃ ಸಾರಣ್ಣೇ-  
ಣಾತಿರಂಹಸಾ” ಶಾಕುಂ ೧-೪ |

ಅತಿರಕ್ತ ಅತಿರಕ್ತ (ಪುಂ) 1. ಬಹಳ ಕೆಂಪುಬಣ್ಣ.  
(ವಿಂ) 2. ಬಹಳ ಕೆಂಪುಬಣ್ಣವುಳ್ಳ. 3. ಬಹಳ  
ಅನುರಾಗವುಳ್ಳ. “ಅತಿರಕ್ತಭಾವಮುಪಗಮ್ಯ” ಮಾಘಂ  
೧೪-೯ |

ಅತಿರಥ ಅತಿರಥ (ಪುಂ) ಅಪ್ರತಿಮ ವೀರ, ರಣಧೀರ,  
ರಥಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚು ಪರಾಕ್ರಮವುಳ್ಳ ಯೋಧ.  
“ಅಮಿತಾನ್ ಯೋಧಯೇಶ್ವರಾಃ ಸಂಪ್ರೋಕ್ತೋತಿರಥಸ್ತು ಸಃ” |

ಅತಿರಹಸ ಅತಿರಹಸ (ಪುಂ) ಬಹಳ ವೇಗ, ಮಿತಿಮೀರಿದ  
ವೇಗ.



ಅತೀರಸಾ ಅತಿರಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಣ್ಣ ರಾಶಿ. 2. ಹೆಚ್ಚು ರಟ್ಟೆ ಮರ.

ಅತೀರಾಗ ಅತಿರಾಗ (ಪುಂ) ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರೀತಿ, ಉತ್ಸಾಹ. "ಪ್ರಭುಭೂಮಿವನತ್ರಯಸ್ಯ ಯಃ ಶಿರೋಽತೀರಾಗಾದೃಶಮಂ ಚಿಕಿತ್ಸಿಃ" ಮಾಘಂ ೧-೪೯.

ಅತೀರಾಜ ಅತಿರಾಜ (ವಿಂ) ರಾಜನನ್ನು ಮೀರಿರುವ. ಅತೀಕ್ರಾಂತೋ ರಾಜಾನಮ್ "ಠಕ್" (೪-೪-೯೧)।

ಅತೀರಾಜನ್ ಅತಿರಾಜನ್ (ಪುಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ದೊರೆ, ಉತ್ತಮನಾದ ರಾಜ. ಅತಿಶಯಿತೋ ರಾಜಾ। "ನ ಪೂಜನಾತ್" (೪-೪-೬೯) "ಠಕ್" ನ ಭವತಿ।

ಅತೀರಾತ್ರ ಅತಿರಾತ್ರ (ಪುಂ) ಒಂದು ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ನಡೆಸ ಬಹುದಾದ ಯಾಗ.

ಅತೀರಿಕ್ತ ಅತಿರಿಕ್ತ (ನಂ) 1. ಅತಿಶಯ, ಅಧಿಕ. ಅತಿ+ರಿಚಿರ್ (ವಿರೇಚನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. 3. ಅಧಿಕ, ಹೆಚ್ಚಾದ. 4. ಮೀರಿದ, ಮೀಗಲಾದ. ಅತೀರಿಚ್ಯತೇ ಸ್ಮ। ಅತಿ+ರಿಚಿರ್ (ವಿರೇಚನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೦೨)। "ಸರ್ವಾತಿ-ರಿಕ್ತಸಾರೇಣ ಸರ್ವತೇಜೋಽಗಿಭಾವಿನಾ" ರಘುಂ ೧-೧೪। 5. ಭಿನ್ನವಾದ, ಬೇರೆಯಾದ. "ನ ವೃಕ್ಷವ್ಯತಿರಿಕ್ತ-ಸಾಧನಃ" ಕುಮಾರಂ ೪-೨೨। 6. ಶೂನ್ಯವಾದ.

ಅತೀರುಚ್ ಅತಿರುಚ್ (ಪುಂ) 1. ಜಾನುವಾರದೇಶ, ಮಂಡಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಸುಂದರಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು. 3. ಹೆಚ್ಚು ಕಾಂತಿ. (ವಿಂ) 4. ಹೆಚ್ಚು ಕಾಂತಿಯುಳ್ಳ.

ಅತೀರೂಪ ಅತಿರೂಪ (ಪುಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರ. ಅತೀಕ್ರಾಂತೋ ರೂಪಃ। (ನಂ) 2. ಸುಂದರವಾದ ರೂಪ. ಅತಿಶಯಿತ ರೂಪಃ। (ವಿಂ) 3. ರೂಪವಿಲ್ಲದ (ವಾಯು). ರೂಪಮತಿ-ಕ್ರಾಂತಃ।

ಅತೀರೇಕ ಅತಿರೇಕ (ಪುಂ) 1. ಅತಿಶಯ, ಅಧಿಕ. "ತೇಜೋಃ ಕನಕನಿಕಾಳರಾಜಿಗೋರೇರಾಯಾಮಃ ಕ್ರಿಯತ ಇವ ಸ್ಮ ಸಾತಿರೇಕಃ" ಕಿರಾಂ ೭-೬। 2. ಭೇದ, ವೈತ್ಯಾಸ. 3. ಪ್ರಾಧಾನ್ಯ. 4. ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ. ಅತಿ+ರಿಚಿರ್ (ವಿರೇಚನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)।

ಅತೀರೋಧಾನ ಅತಿರೋಧಾನ (ನಂ) ಪ್ರಕಾಶ, ಮರೆ ಯಾಗದಿರುವಿಕೆ.

ಅತೀರೋಮಶ ಅತಿರೋಮಶ (ಪುಂ) ಕಾಡು ಮೇಕೆ. "ಇಡೀಕಸ್ತು ಶಾಲವಾಹ್ಯೋ ವನಚ್ಛಾಗೋಽತಿರೋಮಶಃ" ಹಾರಾಂ।

ಅತೀರೋಹಿತ ಅತಿರೋಹಿತ (ವಿಂ) 1. ಮರಿಯಾಗದ, ಪ್ರಕಾಶವಾದ, ಸ್ಫುಟವಾದ. ನ ತೀರೋಹಿತಃ। 2. ಬಹಳ ಕೆಂಪಾದ. ಅತ್ಯಂತ ರೋಹಿತಃ।

ಅತೀಲಕ್ಷಣ ಅತಿಲಂಘನ (ನಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಉಪವಾಸ. 2. ಮೀರುವಿಕೆ, ಉಲ್ಲಂಘನೆ, ಅಪರಾಧ, ಅತಿಕ್ರಮ. "ಅತೀಲಕ್ಷಣಮಸ್ಯುಪೇತು ಕೋ ವಾ ಗುಣಕಮಂಶ್ರುತಶಾಲಿನಾಮಮೀ-ಷಾಮ್" ಧಾತಂ ೧೪-೪೦।

ಅತೀಲಕ್ಷಿತ ಅತಿಲಂಘಿತ (ವಿಂ) ಮೀರಲ್ಪಟ್ಟ, ಅತಿ ಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅತೀಲಕ್ಷಿನ್ ಅತಿಲಂಘಿನ್ (ವಿಂ) ಅತಿಕ್ರಮಿಸುವ, ಮೀರುವ, ತಪ್ಪುಮಾಡುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಢಿಪ್"। ಅತೀಲಕ್ಷಿಣಿ-ಲಂಘಿಣಿ. "ನತಂಕೀರಭಿನಯಾತಿಲಕ್ಷಿಣಿಃ" ರಘುಂ ೧೯-೧೪।

ಅತಿವಕ್ತು ಅತಿವಕ್ತು (ವಿಂ) 1. ಮಾತಾಳಿ, ಮಾತು ಗಾರ, ಹೆಚ್ಚು ಮಾತಾಡುವವನು. ಅತಿವಕ್ತಿ-ಅತಿ+ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣ) "ತುನ್" (೩-೩-೧೩೪)। 2. ಮಾತಾಡಲು ಅರಿತವನು, ಭಾಷಣದಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಥನು.

ಅತಿವಕ್ತು ಅತಿವಕ್ತು (ಪುಂ) 1. (ಸೂರ್ಯನು ಸಪ್ತಮ ಮತ್ತು ಅಷ್ಟಮ ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿರುವಾಗ) ಮಜುಗತಿ ಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ವಕ್ರಗತಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿದ ಅಂಗಾರಕ ಮೊದಲಾದ ಐದು ಗ್ರಹಗಳು. (ವಿಂ) 2. ಬಹಳ ವಕ್ರವಾದ, ಬಹಳ ಡೊಂಕಾಗಿರುವ.

ಅತಿವಯಸ್ ಅತಿವಯಸ್ (ವಿಂ) ಮುದಿಯಾದ, ಬಹಳ ವಯಸ್ಸಾದ. ಅತೀಕ್ರಾಂತೋ ವಯಃ।

ಅತಿವರ್ಣಾಶ್ರಮಿನ್ ಅತಿವರ್ಣಾಶ್ರಮಿನ್ (ಪುಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾದಿ ವರ್ಣವನ್ನೂ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾದ್ಯಾಶ್ರಮವನ್ನೂ ಬಿಟ್ಟಿರುವವನು.

ಅತಿವರ್ತನ ಅತಿವರ್ತನ (ನಂ) 1. ನಿಯಮ ಮೀರಿ ನಡೆಯುವಿಕೆ, ಹದ್ದು ಮೀರುವಿಕೆ. 2. ಕ್ಷಮೆಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ಅಪರಾಧ. ಅತಿಕ್ರಮ್ಯ ದಂಡಂ ವರ್ತತೇ - ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)। "ಯಾನಸ್ಯ ಚೈವ ಯಾತುಶ್ಚ ಯಾನಸ್ವಾಮಿನ ಏವ ಚ। ದಶಾತಿವರ್ತನಾನ್ಯಾಹುಃ ಶೇಷೇ ದಂಡೋ ವಿಧೀಯತೇ"॥ "ಛಿನ್ನನಸ್ಯೇ ಭಗನಯುಗೇ ತಿರ್ಯಕ್ ಪ್ರತಿಮುಖಾಗತೇ। ಅಕ್ಷಭಜ್ಞೇ ಚ ಯಾನಸ್ಯ ಚಕ್ರಭಜ್ಞೇ ತಥೈವ ಚ॥ ಛೇದನೇ ಚೈವ ಯನ್ತ್ರಾಣಾಂ ಯೋಜನರಸ್ಯೋಸ್ತಥೈವ ಚ। ಆಕ್ರೋಶೋ ಚಾಪ್ಯಪೇಹೀತಿ ನ ದಂಡಂ ಮನುರಬ್ರವೀತ್" ಮನುಂ ೮-೨೯೦-೨೨। ಎಂದು ಮನುಸ್ಮೃತಿಯಲ್ಲಿ ಕ್ಷಮ್ಯವಾದ ಅಪರಾಧಗಳು ಹತ್ತು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. (ವಿಂ) 3. ಜೀವನೋಪಾಯವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡವನು. ವರ್ತನಮತೀಕ್ರಾಂತಃ।

ಅತಿವರ್ತನ್ ಅತಿವರ್ತನ್ (ವಿಂ) 1. ಮೀರಿರುವ. 2. ಮುಂದೆಸಾಗಿದ. ಅತೀತ ವರ್ತತೇ - ವೃತು (ವರ್ತನೆ)



“ಗಿಣಿ:” (೩-೧-೧೩೪)। “ಸ್ಥಿತಮುತ್ರತೆ ತುಹಿನಶಲಶಿರಸಿ  
ಭುವನಾತಿವರ್ತಿನಾ” ಕಿರಾಂ ೧೨-೨೧।

ಅತಿವಾದ ಅತಿವಾದ (ಪ್ರಂ) 1. ಅತ್ಯುಕ್ತಿ, ಹೆಚ್ಚು ಮಾತು.  
2. ಅಪ್ರಿಯವಾದ ಮಾತು, ನಿಂದೆ, ಬೈಗಳು.  
3. ಕಠಿನವಾದ ಮಾತು. ಅತಿ+ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ  
ವಾಚಿ) “ಘ” (೩-೩-೧೮)।

ಅತಿವಾದಿನ್ ಅತಿವಾದಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಎಲ್ಲೆ ಮಾರಿ  
ಮಾತಾಡುವವನು, ಹೆಚ್ಚು ಮಾತಾಡುವವನು.  
2. ತನ್ನ ಮತವನ್ನು ಸ್ಥಿರಪಡಿಸುವವನು. ಸರ್ವಾನತಿಕ್ರಮ್ಯ  
ವದತಿ—ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಗಿಣಿ:” (೩-೧-೧೩೪)।

ಅತಿವಾಹ ಅತಿವಾಹ (ಪ್ರಂ) 1. ಸೂಕ್ಷ್ಮಶರೀರದಲ್ಲಿರುವ  
ಜೀವನು ಬೇರೆ ಶರೀರವನ್ನು ಸೇರುವುದು. ಅತೀತ  
ದೇಹಮನ್ಯದೇಹೇ ವಾಹ:। (ವಿಂ) 2. ನಹಿಸುವ, ಎತ್ತಿ  
ಕೊಳ್ಳುವ.

ಅತಿವಾಹಕ ಅತಿವಾಹಕ (ಪ್ರಂ) ಸೂಕ್ಷ್ಮಶರೀರದಿಂದ  
ಜೀವನನ್ನು ಬೇರೆ ಶರೀರಕ್ಕೆ ಕರೆದೊಯ್ಯುವ  
ದೇವತೆ. ಅತಿವಾಹಯತಿ—ಅತಿ+ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೇ) “ಘ”  
(೩-೧-೧೩೩)।

ಅತಿವಾಹನ ಅತಿವಾಹನ (ನಂ) 1. ಒಯ್ಯುವಿಕೆ.  
2. ಕಳುಹಿಸಿಕೊಡುವಿಕೆ. 3. ಕಳೆಯುವಿಕೆ.

ಅತಿವಾಹಿಕ ಅತಿವಾಹಿಕ (ಪ್ರಂ) 1. ಸೂಕ್ಷ್ಮಶರೀರ.  
ಅತಿವಾಹೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಠನ್” (೪-೨-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2.  
ಒಯ್ಯಲು ಸಮರ್ಥ, ನಹಿಸಲು ಶಕ್ತ, ಒಪ್ಪಿಸಿ  
ಕೊಡಲು ಶಕ್ತ.

ಅತಿವಾಹಿತ ಅತಿವಾಹಿತ (ನಂ) 1. ಸೂಕ್ಷ್ಮಶರೀರ.  
(ವಿಂ) 2. ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಹಿಸಿಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಒಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಅತಿ+ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೇ)+ಣಿಕ್ “ಕ್ತ:”  
(೩-೨-೧೦೨)।

ಅತಿವಿಕಟ ಅತಿವಿಕಟ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಭಯಂಕರವಾದ.

ಅತಿವಿಷಾ ಅತಿವಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅತಿಬಜೆ. ವಿಷಮತಿ-  
ಕ್ರಾಂತಾ।

ಅತಿವೃತ್ತ ಅತಿವೃತ್ತ (ವಿಂ) 1. ಮಾರಿದ, ಮಿಗಿಲಾದ.  
“ಅತ್ರಾಂತರೇ ಕಿಮಪಿ ವಾಗ್ವಿಭವಾತಿವೃತ್ತಮಾಚಾರ್ಯಕಂ ವಿಜಯಿ  
ಮಾನ್ಮಥಮಾವಿರಾಸೀತ್” ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೯। 2. ಕಳೆದು  
ಹೋದ. ಅತಿಕ್ರಮ್ಯ ವರ್ತತೇ—ಅತಿ+ವೃತು (ವರ್ತನೇ) “ಕ್ತ:”  
(೩-೪-೭೨)।

ಅತಿವೃತ್ತಿ ಅತಿವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉದ್ವೃತ್ತತೆ, ಮಾರಿ  
ನಡೆಯುವಿಕೆ, ದುಷ್ಟತನ. ಅತಿ+ವೃತು (ವರ್ತನೇ) “ಕ್ತಿನ್”

(೩-೩-೧೪)। “ಅತಿವೃತ್ತಿಮವೇಷ್ಯ ತಸ್ಯ ಧೋರಾಮ್” ವಾದಂ  
೧೪-೭೪।

ಅತಿವೃದ್ಧ ಅತಿವೃದ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಮುದಿಯಾದ.  
2. ಬಹಳ ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿದ. ಅತ್ಯಂತ ವೃದ್ಧ:।

ಅತಿವೃಷ್ಟಿ ಅತಿವೃಷ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಚ್ಚು ಮಳೆ, ಮಿತಿ  
ಮಾರಿದ ಮಳೆ, ಆರು ವಿಧ ಈತಿಬಾಧೆಗಳಲ್ಲೊಂದು.  
ಆರು ವಿಧ ಈತಿಬಾಧೆಗಳು: “ಅತಿವೃಷ್ಟಿರನಾವೃಷ್ಟಿ-  
ಮೃಷಕಾ: ಶಲಭಾ: ಖಗಾ:। ಅತ್ಯಾಸನ್ನಾಶ್ಚ ರಾಜಾನ್: ಷಡೇತಾ  
ಇತಯ: ಸ್ಮೃತಾ:”।

ಅತಿವೇಧ ಅತಿವೇಧ (ಪ್ರಂ) ಎಕಾದಶಿ ತಿಥಿಗೆ ದಶಮಾ  
ತಿಥಿಯ ಸಂಬಂಧ. [ಈವೇಧೆಯು ಆರುಣೋದಯ  
ದಲ್ಲಿದ್ದರೆ ಒಂದುವರೆ ಘಳಿಗೆಯೂ ಸೂರ್ಯೋದಯ  
ವಾದ ನಂತರವಾದರೆ ಎರಡು ಘಳಿಗೆಯೂ ಇರುವುದು.]

ಅತಿವೇಲ ಅತಿವೇಲ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚಾದ, ಎಲ್ಲೆ  
ಮಾರಿದ. 2. ದಡನನ್ನು ದಾಟಿದ. ಅತಿಕ್ರಾಂತೋ ವೇಲಾಮ್।

ಅತಿವ್ಯಥನ ಅತಿವ್ಯಥನ (ನಂ) ಬಹಳ ತೊಂದರೆಪಡಿಸುವಿಕೆ.  
ಅತಿವ್ಯಥಾ ಅತಿವ್ಯಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಹಳ ತೊಂದರೆ.

ಅತಿವ್ಯಯ ಅತಿವ್ಯಯ (ಪ್ರಂ) ಹೆಚ್ಚು ಖರ್ಚು, ಮಿತಿ  
ಮಾರಿದ ವೆಚ್ಚ. ಅತಿಶಯಿತೋ ವ್ಯಯ:। “ಅತಿವ್ಯಯಾತ್  
ಸ್ವಲ್ಪಕಾಲಾಕ್ಷಿಪ್ಯದಥಂಪರಿಕ್ಷಯಾತ್”।

ಅತಿವ್ಯಾಪ್ತಿ ಅತಿವ್ಯಾಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಹರಡು  
ವಿಕೆ. 2. ತರ್ಕಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷಣದ ಒಂದು ದೋಷ,  
ಲಕ್ಷಣವು ತಾನಿರಬೇಕಾದ ಲಕ್ಷ್ಯವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬೇರೆ  
ಕಡೆ ಸಂಬಂಧಿಸುವುದು, ಲಕ್ಷಣವು ತನಗೆ ಸಂಬಂಧಿ  
ಸದ ಕಡೆಯೂ ಇರುವುದು. ಸೃಷ್ಟಿ ಗೌ: ಎಂಬ ಗೋವಿನ  
ಲಕ್ಷಣಕ್ಕೆ ಮಹಿಷದಲ್ಲಿಯೂ ಶೃಂಗಿತ್ವವಿರುವುದರಿಂದ  
ಅತಿವ್ಯಾಪ್ತಿ.

ಅತಿಶಕ್ತವರೀ ಅತಿಶಕ್ತವರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅತಿಶಕ್ತವರೀ ಛಂದಸ್ಸು,  
ವೃತ್ತ ರತ್ನಾಕರದಲ್ಲಿ ಹದಿನೈದನೆಯ ಛಂದಸ್ಸು,  
ಹದಿನೈದು ಅಕ್ಷರಗಳ ಪಾದವುಳ್ಳ ಛಂದಸ್ಸು.

ಅತಿಶಕ್ತಿತಾ ಅತಿಶಕ್ತಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪರಾಕ್ರಮ.

ಅತಿಶಯ ಅತಿಶಯ (ಪ್ರಂ) 1. ಅಧಿಕ, ಹೆಚ್ಚಿಗೆ.  
ಅತಿಶೇತೆ—ಅತಿ+ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) “ಅಕ್” (೩-೩-೪೬)।  
(ವಿಂ) 2. ಅಧಿಕ, ಹೆಚ್ಚಾದ. “ಅತಿಶಯಪರಿಣಾಹವಾನ್  
ವಿತೇನೆ” ಮಾಘಂ ೭-೪। 3. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. ಅತಿಶಯೋಽ-  
ಸ್ಯಸ್ಯ “ಅಕ್” (೪-೨-೧೨೭)।

ಅತಿಶಯನ ಅತಿಶಯನ (ನಂ) 1. ಮಾರುವಿಕೆ. 2. ಹೆಚ್ಚು  
ವಿಕೆ. ಅತಿ+ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪)।



ಅತಿಶಯಾನ ಅತಿಶಯಾನ (ವಿಂ) 1. ಮಾರುವ, 2. ಹೆಚ್ಚಾಗುವ. ಅತಿ+ಶೀಙ್ (ಸ್ವಪ್ನೆ) "ಶಾನಕ್" (3-2-124)।

ಅತಿಶಯಿತ ಅತಿಶಯಿತ (ವಿಂ) 1. ಅಧಿಕವಾದ. 2. ಮಾರಿದ. ಅತಿ+ಶೀಙ್ (ಸ್ವಪ್ನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। "ಅತಿಶಯಿತವನಾಂತರಶ್ರುತಿನಾಮ್" ಕಿರಾಂ 10-6।

ಅತಿಶಯಿನ್ ಅತಿಶಯಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. 2. ಅಧಿಕವಾದ. ಅತಿಶಯೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ - ಅತಿಶಯ "ಇನಿ:" (4-2-114)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಅತಿಶಯಿನಿ-29. "ಶ್ರಿಯಮತಿ-ಶಯಿನಿ ಸಮೇತ್ಯ ಜಗ್ಮು:" ಕಿರಾಂ 10-24।

ಅತಿಶಯೋಕ್ತಿ ಅತಿಶಯೋಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅರ್ಥಾ ಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಅತಿಶಯೇನ ಉಕ್ತಿಯಂತ್ರ. 2. ಅಧಿಕವಾದ ಮಾತು. ಅತಿಶಯಾ ಉಕ್ತಿ:

ಅತಿಶಸ್ತ ಅತಿಶಸ್ತ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ.

ಅತಿಶಾಯನ ಅತಿಶಾಯನ (ನಂ) 1. ಅಧಿಕ, ಹೆಚ್ಚಿಗೆ, 2. ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ, ಮೇಲ್ಮೈ.

ಅತಿಶಯಿನ್ ಅತಿಶಯಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಮಾರುವ. 2. ಮಿತಿಮಾರಿದ, ಹೆಚ್ಚಾದ.

ಅತಿಶೋಭನ ಅತಿಶೋಭನ (ವಿಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. 2. ಬಹಳ ಕಾಂತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಅತಿಶಯೇನ ಶೋಭನ:

ಅತಿಶ್ವ ಅತಿಶ್ವ (ವಿಂ) 1. ಶಕ್ತಿಯಲ್ಲಿ ನಾಯಿಯನ್ನು ಮಾರಿದವನು. ಅತಿಕ್ರಾಂತ: ಶ್ವಾನಮ್। 2. ನಾಯಿ ಗಿಂತಲೂ ಕೇಳಾದ.

ಅತಿಶ್ವನ್ ಅತಿಶ್ವನ್ (ಪುಂ) ಉತ್ತಮಜಾತಿಯ ನಾಯಿ.

ಅತಿಸಕ್ತಿ ಅತಿಸಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಸಂಬಂಧ, ಸಮಾಪ ಸಂಬಂಧ. 2. ಅತಿಶಯವಾದ ಪ್ರೀತಿ. "ಅತಿಸಕ್ತಿಮೇತ್ಯ ವರುಣಸ್ಯ ದಿಶಾ ಭೃಗುಮನ್ವರಜ್ಯದತುಷಾರಕರ:" ಮಾಘಂ 9-7।

ಅತಿಸಂಧ ಅತಿಸಂಧ (ವಿಂ) 1. ಮರ್ಯಾದೆಯನ್ನು ಮಾರಿದ. 2. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯನ್ನು ಮಾರಿದ, ಮಾತಿಗೆ ತಪ್ಪಿದ. ಅತಿಕ್ರಾಂತ: ಸಂಧಾಂ ಮರ್ಯಾದಾಂ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾಂ ವಾ।

ಅತಿಸಂಧಾತ್ ಅತಿಸಂಧಾತ್ಯ (ವಿಂ) ವಂಚಕ, ಮೋಸ ಗಾರ. ಅತಿ+ಸಂ+ಠ್ ಧಾತ್ (ಧಾರಣೆ) "ತೃನ್" (3-2-134)।

ಅತಿಸಂಧಾನ ಅತಿಸಂಧಾನ (ನಂ) ವಂಚನೆ, ಮೋಸ. ಅತಿಸಂಧೀಯತೇ - ಅತಿ+ಸಂ+ಠ್ ಧಾತ್ (ಧಾರಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಅತಿಸಂಧ್ಯಾ ಅತಿಸಂಧ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲಕ್ಕೆ ಸಮಾಪಕಾಲ. ಅತ್ಯಾಸನ್ನಾ ಸಂಧ್ಯಾ ಯಸ್ಯಾ:।

ಅತಿಸರ ಅತಿಸರ (ಪುಂ) ಹೆಚ್ಚು ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವವನು, ಮುಂದಾಳು. ಅತಿಸರತಿ - ಸ್ (ಗತೌ) "ಅಕ್" (3-1-134)।

ಅತಿಸರ್ಗ ಅತಿಸರ್ಗ (ಪುಂ) 1. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. ಅತಿ-ಸೃಜಯತೇ - ಅತಿ+ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗೇ) "ವತ್" (3-3-12)। "ಸೃಷ್ಟುರ್ವರಾತಿಸರ್ಗಾಂತು ಮಯಾ ತಸ್ಯ ದುರಾತ್ಮನ:" ರಘುಂ 10-42. 2. ಕಾಮಚಾರಾನುಜ್ಞೆ, ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದಿ ರಲು ಅನುಮತಿ. "ಅತಿಸರ್ಗ: ಕಾಮಚಾರಾನುಜ್ಞಾ" ಸಿಂ ಕೌಂ। (ವಿಂ) 3. ಸೃಷ್ಟಿಯನ್ನು ಮಾರಿದ, ಸೃಷ್ಟಿಗೆ ಒಳಪಡದ, ನಿತ್ಯವಾದ. 4. ಮುಕ್ತ, ಮೋಕ್ಷ ಹೊಂದಿದ. ಸರ್ಗ ಸೃಷ್ಟಿಮತಿಕ್ರಾಂತ:।

ಅತಿಸರ್ಜನ ಅತಿಸರ್ಜನ (ನಂ) ದಾನ. ಅತಿ+ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। "ತತ್ತದೀಯವಿಶಿಖಾತಿ-ಸರ್ಜನಾತ್" ಕಿರಾಂ 13-47।

ಅತಿಸರ್ಪಣ ಅತಿಸರ್ಪಣ (ನಂ) ಬಲವಂತದ ಚಲನೆ.

ಅತಿಸರ್ವ ಅತಿಸರ್ವ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. ಅತಿಕ್ರಾಂತ: ಸರ್ವಾನ್। (ವಿಂ) 2. ಸರ್ವಾತೀತ, ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಮಾರಿಸಿ ದವನು.

ಅತಿಸಾಂತಪನ ಅತಿಸಾಂತಪನ (ನಂ) ಬಹಳ ಉಗ್ರವಾದ ಒಂದು ವ್ರತ. ಅತಿಕ್ರಾಂತ ಸಾಂತಪನಮ್।

ಅತಿಸಾಯಮ್ ಅತಿಸಾಯಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಸಾಯಂಕಾಲಕ್ಕೆ ಸನ್ನಿಹಿತಕಾಲ.

ಅತಿಸಾರ ಅತಿಸಾರ (ಪುಂ) ಒಂದು ರೋಗ. ಅತಿಸಾರ-ಯತಿ ಮಲಮ್।

ಅತಿಸಾರಿಕಿನ್ ಅತಿಸಾರಿಕಿನ್ (ವಿಂ) ಅತಿಸಾರ ರೋಗ ವೃದ್ಧಿವನು. ಅತಿಸಾರೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114)।

ಅತಿಸೃಷ್ಟ ಅತಿಸೃಷ್ಟ (ವಿಂ) ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ, ದಾನಮಾಡ ಲ್ಪಟ್ಟ. ಅತಿ+ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

ಅತಿಸೌರಭ ಅತಿಸೌರಭ (ಪುಂ) 1. ಬಹಳ ವಾಸನೆ ಯುಳ್ಳ ಮಾವಿನಮರ. ಅತಿಶಯಿತ ಸೌರಭಮಸ್ಯ। (ನಂ) 2. ಬಹಳವಾಸನೆ. (ವಿಂ) 3. ಬಹಳ ವಾಸನೆ ಯುಳ್ಳ.

ಅತಿಸೌಹಿತ ಅತಿಸೌಹಿತ (ನಂ) ಬಹಳ ತೃಪ್ತಿ.

ಅತಿಸ್ತುತಿ ಅತಿಸ್ತುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಿತಿಮಾರಿದ ಹೊಗಳಿಕೆ, ಇಲ್ಲದ ಮತ್ತು ಸಲ್ಲದ ಗುಣಗಳ ಪ್ರಶಂಸೆ. ಅತಿಶಯಿತಾ ಸ್ತುತಿ:।



ಅತಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅತಿವ್ಯಕ್ತಿ (ಪುಂ) 1. ಅತಿವ್ಯಕ್ತಿ ವರ್ಣಗಳು, ಹೆಚ್ಚು ಸ್ವಲ್ಪಪ್ರಯತ್ನವಿಲ್ಲದೆ ಉಚ್ಚರಿಸಬಹುದಾದ ಯ, ವ, ರ, ಲ ವರ್ಣಗಳು. 2. ಅಧಿಕವ್ಯಕ್ತಿ. (ವಿಂ) 3. ಕೃಪಣ, ಜಿಪುಣ.

ಅತಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅತಿವ್ಯಕ್ತಿ (ಪುಂ) ಬಹಳ ಸ್ನೇಹ, ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರೇಮ. "ಅತಿವ್ಯಕ್ತಿ: ಪಾಪಶಾಕ್ಷಿ" ಶಾಕುಂ ೪.

ಅತಿಹಸಿತ ಅತಿಹಸಿತ (ನಂ) ಗಟ್ಟಿಯಾದ ನಗು, ಹೆಚ್ಚು ಶಬ್ದವಾಗುವಂತೆ ನಗುವಿಕೆ.

ಅತಿಕ್ಷಣ ಅತಿಕ್ಷಣ (ವಿಂ) 1. ಬಿಸಿಯಲ್ಲದ. 2. ಜೂಪ ಲ್ಲದ, ಹರಿತವಲ್ಲದ. "ಅಸ್ತೇರತಿಕ್ಷಣಕಠಿನೇಜಗಜಯತಿ ಮನ್ಮಥ:" ಚಂದ್ರಾಂ ೧.

ಅತಿತ ಅತಿತ (ವಿಂ) 1. ಅತಿಕ್ರಮಿಸಿ ಮುಂದೆ ಹೋದ. ಅತಿ+ಇನ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) "ಅತಿತ-ದರ್ಶಾಮಿವ ಚಂದ್ರಲೇಖಾಮ್" ಧಾತಂ ೧೩-೩೩. 2. ಮೀರಿದ, ಒಳಪಡದ. "ಪರಿಚ್ಛೇದಾತಿತ: ಸಕಲವಚನಾನಾಮವಿಷಯ:" ಮಾಲತೀಂ ೧-೩೩. "ಅತಿತಸಂಖ್ಯಾ ವಿಹಿತಾ ಮಮಾಗ್ನಿನಾ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೧೦.

ಅತಿತನೌಕ ಅತಿತನೌಕ (ವಿಂ) ಹಡಗನ್ನು ದಾಟಿದ, ಹಡಗನ್ನು ಅತಿಕ್ರಮಿಸಿ ಬಂದ. ಅತಿತಾ ನೌಕೇನ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೫೧).

ಅತಿಂದ್ರ ಅತಿಂದ್ರ (ವಿಂ) ಇಂದ್ರನನ್ನು ಮೀರಿದ. ಅತಿಕ್ರಾಂತ: ಇಂದ್ರಮ್.

ಅತಿಂದ್ರಿಯ ಅತಿಂದ್ರಿಯ (ವಿಂ) ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಂದ ತಿಳಿಯಲಾಗದ, ಅಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ, ಪರೋಕ್ಷ. ಇಂದ್ರಿಯ-ಮತಿಕ್ರಾಂತಮ್. "ಅತಿಂದ್ರಿಯಜ್ಞಾನನಿಧಿರ್ಮುಖ:ಸದ:" ಮಾಧಂ ೧-೧೧.

ಅತಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅತಿವ್ಯಕ್ತಿ (ಅವ್ಯಂ) ಬಹಳ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ. ಅತಿ ಚ ಇವ ಚ. "ಅಂಶುಪಾಣಿಭಿರತಿವ್ಯಕ್ತಿ ಪಿಪಾಸು:" ಕಿರಾಂ ೯-೩.

ಅತುಲ ಅತುಲ (ಪುಂ) 1. ತಿಲಕವೃಕ್ಷ, ಕ್ಯಾಸರಿಕೆ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 2. ಸಮವಲ್ಲದ, ಅಸಮಾನ, ಅನುಪಮ. ನಾಸ್ತಿ ತುಲಾ ಯಸ್ಯ.

ಅತುಲ್ಯ ಅತುಲ್ಯ (ವಿಂ) ಅಸಮಾನ, ಅಸಮಾನ, ಸಮ ವಲ್ಲದ. ನ ತುಲ್ಯ:

ಅತುಷ ಅತುಷ (ಪುಂ) ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಧಾನ್ಯ. ನಾಸ್ತಿ ತುಷಾ ಯಸ್ಯ.

ಅತುಹಿನ ಅತುಹಿನ (ವಿಂ) ಉಷ್ಣವಾದ, ಬಿಸಿಯಾದ. ನ ತುಹಿನ:

ಅತುಹಿನರಶ್ಮಿ ಅತುಹಿನರಶ್ಮಿ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ನ ತುಹಿನ: ರಶ್ಮಿ: ಯಸ್ಯ. 2. ಬಿಸಿಯಾದ ಕಿರಣ. ಅತುಹಿನರಶ್ಮಿ ರಶ್ಮಿಶ್ಚ.

ಅತುಹಿನರಶ್ಮಿ ಅತುಹಿನರಶ್ಮಿ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ನ ತುಹಿನಾ ರಶ್ಮಿ: ಯಸ್ಯ. "ಅತುಹಿನರಶ್ಮಿನಾಸೌ ಕೇವಲಂ ನೋದಯಾದಿ:" ಮಾಧಂ ೧೧-೪೬. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಬಿಸಿಯಾದ ಕಿರಣ. ಅತುಹಿನಾ ಚ ಸಾ ರಶ್ಮಿಶ್ಚ.

ಅತುಣಾದ ಅತುಣಾದ (ಪುಂ) ಹುಲ್ಲನ್ನು ತಿನ್ನದ ಮತ್ತು ಹಾಲನ್ನು ಕುಡಿಯುವ ಕರು. ನ ತುಣಮತಿ-ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ) "ಅನ್" (೩-೨-೧).

ಅತುಪ್ತಿ ಅತುಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಸಂತೋಷ, ಸಂತೋಷ ವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ತೃಪ್ತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ತುಪ್ತಿ: (ವಿಂ) 3. ತೃಪ್ತಿಯಿಲ್ಲದ. 4. ಸಂತೋಷವಿಲ್ಲದ. ನ ತುಪ್ತಿಯಸ್ಯ.

ಅತೇಜಸ್ ಅತೇಜಸ್ (ನಂ) 1. ಅಂಧಕಾರ, ಕತ್ತಲೆ. ನ ತೇಜ: (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶವಿಲ್ಲದ. 3. ಬಲಹೀನ, ದುರ್ಬಲ. ನಾಸ್ತಿ ತೇಜೋ ಯಸ್ಯ.

ಅತ್ಕ ಅತ್ಕ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಯಾಣಿಕ. 2. ಅವಯವ. ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೇ) "ಕನ್" (೩ಂ ೩-೪೩). ಅತ್ಕ: ಪಥಿಕ: ಶರೀರಾವಯವಶ್ಚ. ಸಿಂ ಕೌಂ.

ಅತ್ತಾ ಅತ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಾಯಿ. ಅತತಿ ಸತತಂ ಸಂಬಧನಾತಿ. 2. ಜೈಷ್ಠ ಸಹೋದರಿ.

ಅತ್ತಿ ಅತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಾಯಿ. ಅತತೇ ಸದಾ ಸಂಬಧ್ಯತೇ — ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೇ) "ಕ್ತಿಶ್" (೩-೩-೧೭೪). 2. ಜೈಷ್ಠ ಸಹೋದರಿ.

ಅತ್ತಿಕಾ ಅತ್ತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಾಯಿ. 2. ಜೈಷ್ಠ ಸಹೋದರಿ. ಅತ್ತೇವ — ಅತ್ತಾ "ಕನ್" (೪-೩-೯೭).

ಅತ್ತ ಅತ್ತ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ) "ತುಶ್" (೩-೧-೧೩೩). (ವಿಂ) 2. ಉಚಿತಮಾಡುವ. "ಅರಕ್ಷಿತಾರಮತ್ತಾರಂನೃಪವಿಧಾದಧೋಗತಿಮ್" ಮನುಂ ೮-೩೦೯.

ಅತ್ತ ಅತ್ತ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೇ) "ನ:" (೩ಂ ೩-೬). 2. ಯುದ್ಧ.

ಅತ್ಯಜ್ಞ ಅತ್ಯಜ್ಞ (ವಿಂ) ಬೆರಳಿನ ಪ್ರಮಾಣ ಕೈಂತ್ಯೂ ಅಧಿಕವಾದ. ಅತಿಕ್ರಾಂತೋಜ್ಞಲಿಮ್ ತತ್ಪರಿ-ಮಾಣಮ್ — ಅತಿ+ಅಜ್ಞಲಿ "ಅಶ್" (೪-೪-೮೬).

ಅತ್ಯಜ್ಞ ಅತ್ಯಜ್ಞ (ವಿಂ) ದಾರಿಯನ್ನು ದಾಟಿದ, ಮುಂದೆ ಸಾಗಿದ. ಅತಿಕ್ರಾಂತೋಜ್ಞಾನಮ್ "ಅಶ್" (೪-೪-೮೫).



ಅತ್ಯಮ್ಯನ್ ಅತ್ಯಮ್ಯನ್ (ಪುಂ) ಸುಪಥ, ಒಳ್ಳೆಯ ದಾರಿ.  
ಅತಿಶಯಿತೋಷ್ವಾ। "ನ ಪೂಜನಾತ್" ಇತಿ ಅಚ್ ನ ಭವತಿ।

ಅತ್ಯಂತ ಅತ್ಯಂತ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅಧಿಕವಾದ, ಅತಿಶಯವಾದ. ಅತಿಕ್ರಾಂತೋತ್ತಮಃ। "ನಿರ್ನಾಪ್ತ ಸಾತ್ಯಂತ-ಹಿಮೋತ್ಕಿರಾನಿಲಾಃ" ಕುಮಾರಂ ೪-೨೬। 2. ಘಾತರಹಿತ. 3. ಅಂತ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಕೊನೆಯಿಲ್ಲದ. (ಅವ್ಯಂ) 4. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ, ಅಧಿಕವಾಗಿ. 5. ದ್ರಾವ್ಯವಾಗಲಿ, ಎಂದೆಂದಿಗೂ. ಅಂತಸ್ತಾತ್ಯಯಃ। "ಅತ್ಯಂತಮೇವ ಚದಿರೇಕ್ಷಣ-ವಲ್ಲಭಾಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೨೩।

ಅತ್ಯಂತಕೋಪನ ಅತ್ಯಂತಕೋಪನ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಕೋಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ. ಅತ್ಯಂತ ಕ್ರೂಪತಿ - "ಯುಕ್" (೩-೨-೧೫೧)। "ಚಂಡಸ್ವತ್ಯಂತಕೋಪನಃ" ಅಷ್ಕಂ।

ಅತ್ಯಂತಗಾಮಿನ್ ಅತ್ಯಂತಗಾಮಿನ್ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಸಂಚಾರ ಶೀಲ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ನಡೆಯುವವನು. ಅತ್ಯಂತ ಗಂಚತಿ - ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೭೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಗಾಮಿನಿ - ಗಾಮಿನೀ.

ಅತ್ಯಂತಸಂಯೋಗ ಅತ್ಯಂತಸಂಯೋಗ (ಪುಂ) 1. ಎಡಬಿಡದ ಸಂಬಂಧ. 2. ವ್ಯಾಪ್ತಿ. ಅಂತಮವಸಾನಮತಿಕ್ರಾಂತಃ ಸಂಯೋಗಃ।

ಅತ್ಯಂತಾಭಾವ ಅತ್ಯಂತಾಭಾವ (ಪುಂ) ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಅತ್ಯಂತಃ ಅಂತಮತಿಕ್ರಾಂತಃ ನಿತ್ಯಃ ಅಭಾವಃ। ಉದಾಃ: ಪಟಾಭಾವಃ, ಪಟಾಭಾವಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಅತ್ಯಂತಿಕ ಅತ್ಯಂತಿಕ (ನಂ) 1. ಬಹಳ ಸಮಾಪ. ಅತಿಶಯಿತಮಂತಿಕಮ್। 2. ಬಹಳ ದೂರ. ಅತಿಕ್ರಾಂತ-ಮಂತಿಕಮ್। (ವಿಂ) 3. ಬಹಳ ವೇಗವಾಗಿ ಹೋಗುವ. ಅತ್ಯಂತ ಗಂಚತಿ - "ಠಕ್" (೪-೪-೮)। 4. ಬಹಳ ಸಮಾಪದಲ್ಲಿರುವ. 5. ಬಹಳ ದೂರದಲ್ಲಿರುವ.

ಅತ್ಯಂತೀನ ಅತ್ಯಂತೀನ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಸಂಚಾರದ ಸ್ವಭಾವದ. ಅತ್ಯಂತ ಗಾಮಿ "ಃ" (೪-೨-೧೧)।

ಅತ್ಯಮ್ಲ ಅತ್ಯಮ್ಲ (ಪುಂ) 1. ಹುಡುಗ ಮರ. ಅತಿ-ಶಯಿತೋಷ್ವಾ ಯಸ್ಯ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಮ್ಲಾ -ಮ್ಲಾ. 2. ತೋಟ ಮಾದಳದ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 3. ಬಹಳ ಹುಳಿಯಾದ.

ಅತ್ಯಯ ಅತ್ಯಯ (ಪುಂ) 1. ಅತಿಕ್ರಮ, ಮಾರುವಿಕೆ, 2. ವಿನಾಶ. ಅತಿ+ಃ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬)। 3. ಕಷ್ಟ. 4. ದೋಷ. 5. ದಂಡನೆ, ಶಿಕ್ಷೆ. "ಅತ್ಯಯೋಽತಿಕ್ರಮೇ ದೋಷೇ ವಿನಾಶೇ ದಂಡಕೃಚ್ಛಯೋಃ" ಹೇಮಂ।

ಅತ್ಯರ್ಥ ಅತ್ಯರ್ಥ (ನಂ) 1. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ, ಅಧಿಕ. (ವಿಂ) 2. ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅತಿಶಯವಾದ. ಅರ್ಥ ವಿಷಯಮತಿಕ್ರಾಂತಃ।

(ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ, ಅತಿಶಯವಾಗಿ. "ಅತ್ಯರ್ಥ ದುರೂಪಸದಾದುಪೇತ್ಯ ದೂರಮ್" ಕಿರಾಂ ೭-೯।

ಅತ್ಯಲ್ಪ ಅತ್ಯಲ್ಪ (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಕಡಿಮೆಯಾದ. 2. ಬಹಳ ಸಣ್ಣದಾದ.

ಅತ್ಯಲ್ಪ ಅತ್ಯಲ್ಪ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹದಿನೇಳನೆಯ ಭಂದಸ್ಸು, ಹದಿನೇಳು ಅಕ್ಷರಗಳ ಪಾದವುಳ್ಳ ಭಂದಸ್ಸು.

ಅತ್ಯಲ್ಪ ಅತ್ಯಲ್ಪ (ವಿಂ) ಒಂದು ದಿನ ಮಾರಿದ, ಒಂದು ದಿನದ ಕಾಲಕಳೆದ. ಅಹರತಿಕ್ರಾಂತಃ "ಠಕ್" (೪-೪-೯೧)। ಅಹ್ಲಾದೇಶಃ (೪-೪-೮೮)।

ಅತ್ಯಾಕಾರ ಅತ್ಯಾಕಾರ (ಪುಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಆಕಾರ, ದೊಡ್ಡ ಶರೀರ. ಅತಿಶಯಿತ ಆಕಾರಃ। 2. ತಿರಸ್ಕಾರ. ಅತಿಶಯೇನಾಕಾರಃ। "ಅತ್ಯಾಕಾರಃ ಪರಿಭವಸ್ತಿರಸ್ಕಾರೋಽಪ್ಯ-ನಾದರಃ" ವೈಜಂ। (ವಿಂ) 3. ದೊಡ್ಡ ಶರೀರವುಳ್ಳ. ಅತಿಶಯಿತ ಆಕಾರೋ ಯಸ್ಯ।

ಅತ್ಯಾಗ ಅತ್ಯಾಗ (ಪುಂ) 1. ದಾನವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ತ್ಯಾಗಃ (ವಿಂ) 2. ದಾನವಿಲ್ಲದ. ನ ತ್ಯಾಗೋ ಯತ್ರ।

ಅತ್ಯಾಚಾರ ಅತ್ಯಾಚಾರ (ಪುಂ) 1. ಅಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ, ನಿಸಿದ್ಧವಾದ ಕೆಲಸಮಾಡುವುದು. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 2. ಆಚಾರವನ್ನು ಮಾರಿ, ಸಂಪ್ರದಾಯವನ್ನು ಉಲ್ಲಂಘಿಸಿ. ಆಚಾರಮತಿಕ್ರಮ್ಯ।

ಅತ್ಯಾಜ್ಯ ಅತ್ಯಾಜ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಬಿಡಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. 2. ಬಿಡಲು ಅರ್ಹವಲ್ಲದ. ನ ತ್ಯಕ್ತುಂ ಶಕ್ಯಮ್ "ಞತ್" (೩-೧-೧೨೪)।

ಅತ್ಯಾದಾನ ಅತ್ಯಾದಾನ (ನಂ) 1. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ತೆಗೆದು ಕೊಳ್ಳುವುದು. ಅತಿಶಯಿತಮಾದಾನಮ್। (ವಿಂ) 2. ತೆಗೆದು ಕೊಳ್ಳದಿರುವ. "ಆದಾನಮತಿಕ್ರಾಂತಃ।

ಅತ್ಯಾಧಾನ ಅತ್ಯಾಧಾನ (ನಂ) 1. ಅತಿಕ್ರಮಣ, ಉಲ್ಲಂಘನೆ. 2. ಹೊರಿಸುವಿಕೆ, ಆರೋಪಣೆ. ಅತಿ+ಆ+ಙ್ (ಧಾರಣಾದೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 3. ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರನಿಗೆ ಮುಂಚೆ (ಅವನನ್ನು ಮಾರಿ) ವಿನಾಹವಾಗಿ ಅಗ್ನಿ ಕಾರ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ಮಾಡುವುದು. ಅತಿಕ್ರಮ್ಯ ಜ್ಯೇಷ್ಠಮಾಧಾನಮ್। (ಅವ್ಯಂ) 4. ಅಗ್ನಿಯ ನಾಶ, ಯಾಗಾಗ್ನಿಯನ್ನು ರಕ್ಷಿಸದಿರುವುದು. ಆಧಾನ-ಸ್ತಾತ್ಯಯಃ ಅವ್ಯಯಿಂ (೨-೧-೬)।

ಅತ್ಯಾಯ ಅತ್ಯಾಯ (ಪುಂ) 1. ಅಧಿಕಲಾಭ, ಹೆಚ್ಚು ವರಮಾನ. ಅತಿ+ಅಯ (ಗತೌ) "ಘಕ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಅತಿಕ್ರಮಣ, ಉಲ್ಲಂಘನೆ, ಮಾರುವಿಕೆ.



ಅತ್ಯಾಯು ಅತ್ಯಾಯು (ನಂ) ಯಜ್ಞ ಸಂಬಂಧವಾದ ಒಂದು ಪಾತ್ರ.

ಅತ್ಯಾರೂಢ ಅತ್ಯಾರೂಢ (ನಂ) 1. ಬಹಳ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ. 2. ಬಹಳ ಮೇಲಕ್ಕೇರುವಿಕೆ. 3. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಬೆಳೆಯುವಿಕೆ. 4. ಉತ್ಕರ್ಷ, ಘನತೆ, ದೊಡ್ಡಸ್ತಿಕೆ. ಅತಿ+ಆ+ರೂ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಧುರ್ಭಾವಿ ಚ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-118). (ವಿಂ) 5. ಬಹಳ ಮೇಲಕ್ಕೇರಿದ. 6. ಬಹಳ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ. ಅತಿ+ಆ+ರೂ ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (3-4-92). 7. ಬಹಳ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಬೆಳೆದ. ಅತ್ಯಂತಮಾರೂಢ: "ಅತ್ಯಾರೂಢೋ ಹಿ ನಾರೀಣಾಮಕಾಲಜ್ಞೋ ಮನೋಭವ:" ರಘುಂ 12-33.

ಅತ್ಯಾರೂಢಿ ಅತ್ಯಾರೂಢಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಅತ್ಯಾರೂಢ" ಪದದ (ನಂ) ದ ಅರ್ಥ. ಅತಿ+ಆ+ರೂ ಭಾವೇ "ಕ್ತಿನ್" (3-3-118).

ಅತ್ಯಾಶ ಅತ್ಯಾಶ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಆಸೆಯುಳ್ಳ. ಅತಿಶಯಿತಾ ಆಶಾ ಯಸ್ಯ.

ಅತ್ಯಾಶಾ ಅತ್ಯಾಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಹಳ ಆಸೆ, ಮಿತಿಮೀರಿದ ಆಸೆ. ಅತಿಶಯಿತಾ ಆಶಾ.

ಅತ್ಯಾಶ್ರಮ ಅತ್ಯಾಶ್ರಮ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಆಶ್ರಮ, ಸಂನ್ಯಾಸಾಶ್ರಮ. ಅತಿಶಯಿತ: ಆಶ್ರಮ: (ವಿಂ) 2. ಆಶ್ರಮವನ್ನು ಮೀರಿದ, ಆಶ್ರಮ ಧರ್ಮಗಳನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದ. ಅತಿಕ್ರಾಂತ: ಆಶ್ರಮಾನ್.

ಅತ್ಯಾಹಿತ ಅತ್ಯಾಹಿತ (ನಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಭೀತಿ, ಮಹಾ ಭಯ. ಅತಿವಾಧೀಯತೆ ಸ್ಮ ಮನಸಿ. 2. ಅಪಾಯ. "ಅತ್ಯಾಹಿತಮ್ ಅತ್ಯಾಹಿತಮ್" ಮಾಲತೀಂ 3. 3. ಆತುರದ ಕಾರ್ಯ, ಅವಿಚಾರಿತಕೃತ್ಯ. "ಪಾಂಡುಪುತ್ರೇನ ಕಿಮಪ್ಯತ್ಯಾಹಿತಮಾಚರಿತಂ ಭವೇತ್" ವೇಣೀಂ 2.

ಅತ್ಯುಕ್ತ ಅತ್ಯುಕ್ತ (ನಂ) ಅಧಿಕವಾದ ಮಾತು, ಹೆಚ್ಚು ಮಾತು.

ಅತ್ಯುಕ್ತಾ ಅತ್ಯುಕ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎರಡನೆಯ ಭಂದಸ್ಸು. 2. ಎರಡು ಸಂಖ್ಯೆ.

ಅತ್ಯುಕ್ತಿ ಅತ್ಯುಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಧಿಕವಾದ ಮಾತು, ಹೆಚ್ಚಿನ ಮಾತು. 2. ಅನ್ಯಾಯದ ಮಾತು. 3. ಇಲ್ಲದ ಸಲ್ಲದ ಗುಣಗಳ ವರ್ಣನೆ. ಅತಿಶಯೇನ ಉಕ್ತಿ: 4. ಅರ್ಥಾಲ್ಪಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. "ಅತ್ಯುಕ್ತಿ-ರಕ್ಷತಾತತ್ಯಶೌರ್ಯೋದಾರ್ಯಾದಿವರ್ಣನಮ್" ಚಂದ್ರಾಂ.

ಅತ್ಯುಗ್ರ ಅತ್ಯುಗ್ರ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಕ್ರೂರವಾದ.

ಅತ್ಯುಚ್ಛ್ರಿತ ಅತ್ಯುಚ್ಛ್ರಿತ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಎತ್ತರವಾದ. ಅತ್ಯಂತಮುಚ್ಛ್ರಿತ:.

ಅತ್ಯುಕ್ತ ಅತ್ಯುಕ್ತ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಹೆಚ್ಚಾದ, ಬಹಳ ಉಗ್ರವಾದ. "ಅತ್ಯುಕ್ತ: ಪುಣ್ಯಪಾಪೇರಿಹೇವ ಫಲಮನುತೆ".

ಅತ್ಯುಕ್ತ ಅತ್ಯುಕ್ತ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. ಅತ್ಯಂತಮುಕ್ತ:.

ಅತ್ಯುಹ ಅತ್ಯುಹ (ಪುಂ) ನೀರುಕಾಗೆ. ಅತಿಶಯೇನ ಊಹೇ ಊಹ (ವಿತರ್ಕ) "ಅಚ್" (3-1-134).

ಅತ್ರ ಅತ್ರ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಇಲ್ಲಿ, ಈ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ. ಅಸ್ಮಿನ್ - ಇದಮ್ "ತ್ರಲ್" (4-3-10). "एष चात्र समया सरोजिनीमेकतानयति चित्तचक्षुषी" यादಂ 19-30. 2. ಈ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ. "अतोऽत्र किञ्चिद्भवती बहुक्षमाम्" ಕುಮಾಂ 4-40. (ವಿಂ) 3. ಇತರರಿಂದ ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡದ (ಕ್ಷತ್ರಿಯ). ನ ತ್ರಾಯತೇ-ತ್ರೈಙ್ (ಪಾಲನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-3).

ಅತ್ರತ್ಯ ಅತ್ರತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಈ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿರುವ, ಈ ಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಅತ್ರ ಭವ: "ತ್ಯಪ್" (4-2-104). "दौरात्म्याद्रक्षसस्तांतु नात्रत्या: श्रद्धु: प्रजा:" ರಘುಂ 14-92. 2. ಈ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಅತ್ರ ಜಾತ: "ತ್ಯಪ್".

ಅತ್ರಪ ಅತ್ರಪ (ವಿಂ) ನಾಚಿಕೆಯಿಲ್ಲದ, ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದ. नास्ति त्रपा लज्जा यस्य.

ಅತ್ರಭವತ್ ಅತ್ರಭವತ್ (ವಿಂ) ಪೂಜ್ಯ. ಇದಮ್ ಪ್ರಥಮಾರ್ಥ "ತ್ರಲ್" (4-3-14). ಅತ್ರಭವಾನ್. "आसने तावदत्र-भवतो:" "सङ्गीतरचनां कृत्वा अत्रभवतो दूतं प्रेषयतम्" ಮಾಲಂ 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (4-1-6). -ಭವತೀ. "यद्यत्रभवत्या शोभनं भणितं तत इदं पारितोषिकं प्रयच्छामि" ಮಾಲಂ 2.

ಅತ್ರಸ್ತ ಅತ್ರಸ್ತ (ವಿಂ) ಭಯಪಡದಿರುವ, ಹೆದರದ. ನ ತ್ರಸ್ತ: "जुगोपात्मानमत्रस्तो भजे धर्ममनातुर:" ರಘುಂ 1-21.

ಅತ್ರಾಂತರೇ ಅತ್ರಾಂತರೇ (ಅವ್ಯಂ) ಎತನ್ನದ್ದೆ, ಇಷ್ಟರಲ್ಲಿ. "अत्रान्तरे किमपि वाग्विभवातिवृत्तवैचित्र्यम्" ಮಾಲತೀಂ 1-26.

ಅತ್ರಾಸ ಅತ್ರಾಸ (ಪುಂ) 1. ಭಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ತ್ರಾಸ: (ವಿಂ) 2. ಭಯವಿಲ್ಲದಿರುವ, ಹೆದರಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. ನ ತ್ರಾಸೋ ಯಸ್ಯ.

ಅತ್ರಿ ಅತ್ರಿ (ಪುಂ) 1. ಸಪ್ತಮುಷಿಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ ಮುಷಿ. "अथ नयनसमुत्थं ज्योतिरत्रैरिव द्यौ:" ರಘುಂ 2-94. (ವಿಂ) 2. ನುಂಗುವ, ನಾಶಪಡಿಸುವ. ಅತ್ತಿ-ಅದ (ಭಕ್ಷಣೆ) "ತ್ರಿಪ್" (30 4-62).



ಖತ್ರಿನ್ ಅತ್ರಿನ್ (ಪುಂ) "ಅತ್ರಿ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅದ (ಮಧ್ಯ) "ತ್ರಿನಿ:" (ತಂ ೪-೬೮) ।

ಖತ್ರಿಜಾತ ಅತ್ರಿಜಾತ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ, ಅತ್ರಿಮಹರ್ಷಿಯ ಪುತ್ರ. ಅತ್ರಿನೇತ್ರಾತ್ ಜಾತ: ।

ಖತ್ರಿನೇತ್ರಜ ಅತ್ರಿನೇತ್ರಜ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. "ಅತ್ರಿನೇತ್ರಾತ್ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತವಿ) "ಃ:" (೩-೨-೧೮) ।

ಖತ್ರಿಸಂಹಿತಾ ಅತ್ರಿಸಂಹಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅತ್ರಿಮಹರ್ಷಿ ವಿರಚಿತವಾದ (ವರ್ಣಾಶ್ರಮಾಚಾರಾದಿಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸ ತಕ್ಕ) ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ ಗ್ರಂಥ.

ಅಥ ಅಥ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಮಂಗಳ. "ಅಥ ಯೋಗಾನುಶಾಸನಮ್" ಪಾಂ.ಯಂ ಸೂಂ ೧-೧. 2. ಅನಂತರ, ತರುವಾಯ, ಬಳಿಕ. "ಅಥಾತೋ ಬ್ರಹ್ಮಜಿಜ್ಞಾಸಾ" (ಬ್ರಂ ಸೂಂ ೧-೧-೧) । "ಅಥೇಪ್ಸಿತಂ ಭರ್ತುರಪಸ್ಥಿತೋದಯಮ್" ರಘುಂ ೩-೧. 3. ಪ್ರಾರಂಭ. "ಅಥ ಯೋಗಾನುಶಾಸನಮ್" ಪಾಂ.ಯಂ ಸೂಂ ೧-೧. 4. ಪ್ರಶ್ನೆ. "ಅಥೈಕಧೇನೋರಪರಾಧಚಂಡಾದ್ಗುರೋ: ಕೃಶಾನುಪ್ರತಿಮಾದಿಭೇಷಿ" ರಘುಂ ೨-೪೯. 5. ಎಲ್ಲ, ಸಕಲ. "ಅಥಾತೋ ಧರ್ಮ ವ್ಯಾಖ್ಯಾಸ್ಯಾಮ:" । 6. ಸಂಶಯ, ಏಕಲ್ಪ. "ಶಬ್ದೋ ನಿಯೋಜ್ಯಾನಿಯ:" । 7. ಸಮುಚ್ಚಯ. "ಭೀಮೋಽರ್ಜುನ:" । 8. ಸಕಲಾಂತರ, ಮತಾಂತರ. ಅರ್ಥ (ಯಾಚ್ಛಾಸ್ಯಾಮ್) "ಃ:" (ವಾಂ ೩-೨-೧೦೧) । ಪೂಂ. "ಅಥ ಕ್ಷಮಾಮೇವ ನಿರಸ್ತವಿಕ್ರಮಶ್ಚಿರಾಯ ಪರ್ಯೇಷಿ ಸುಖಸ್ಯ ಸಾಧನಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೪೪. "ಅಥ ಚೇದವಧಿ: ಪ್ರತೀಕ್ಷಯತೇ" ಕಿರಾಂ ೨-೧೬. 9. ಅಧಿಕಾರ. "ಅಥಾತೋ ಸಂಶಯೇ ಸ್ವಾತಾಮಾಧಿಕಾರೇ ಚ ಮಜ್ಜಲೇ । ವಿಕಲ್ಪಾನಂತರಪ್ರಶ್ನಕಾತ್ಸರ್ವಾರ್ಥಸಮುಚ್ಚಯೇ" ಮೇದಿಂ. ।

ಅಥಿಕಿಮ್ ಅಥಿಕಿಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. "ಅಪಿ ವೃಷಲಮನುರಕ್ತಾ: ಪ್ರಕೃತಯ: ? । ಅಥಿಕಿಮ್" ಮುಡಾಂ ೧. ।

ಅಥರ್ವಣ ಅಥರ್ವಣ (ಪುಂ) 1. ಅಥರ್ವವೇದ, ನಾಲ್ಕು ನೆಯ ವೇದ. 2. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. "ಜಟಾಕಿರೋಽಥರ್ವಣ ನದಿವಧನಗುಡಾಕೇಶೋಗ್ರಕಾಲಜ್ವರಾ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. ।

ಅಥರ್ವನ್ ಅಥರ್ವನ್ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮನ ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಪುತ್ರ. [ಕಲ್ಪಾಂತರದಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮನು ಈ ಮುಷಿಯನ್ನು ಮೊದಲು ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ವೇದೋಪದೇಶಮಾಡಿದನು.] ಮುಂಡಕಂ. । 2. ವಸಿಷ್ಠಮುಷಿ. "ಕೃತಪದಪಡ್ವಿಕ್ತರಥರ್ವಣೇವ ವೇದ:" ಕಿರಾಂ ೧೦-೧೦. 3. ಶಿವ. 4. ಅಥರ್ವಮಂತ್ರ. "ಜಿಷ್ಣುಂ ಜೇತೇರಥರ್ವಿಭಿ:" ರಘುಂ ೧೭-೧೩. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 5. ಅಥರ್ವಕುಲದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವರು.

ಅಥರ್ವವಿದ್ ಅಥರ್ವವಿದ್ (ಪುಂ) 1. ವಸಿಷ್ಠಮುಷಿ. 2. ಅಥರ್ವವೇದೋಕ್ತಕರ್ಮಾಚರಣೆಯುಳ್ಳವನು, ಅಥರ್ವವೇದ ತಿಳಿದವನು. ಅಥರ್ವವೇದ ತದ್ವಕ್ತ ಕರ್ಮ ವಾ ವೇತ್ತಿ - ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) "ವಿವ್" (೩-೨-೬೧) । "ಗುರುಣಾ-ಽಥರ್ವವಿದಾ ಕೃತಕ್ರಿಯ:" ರಘುಂ ೮-೪. ।

ಅಥರ್ವಶಿಖಾ ಅಥರ್ವಶಿಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) - ಶಿರಸ್ - ಶಿರಸ್. (ನಂ) ಅಥರ್ವವೇದದ ಉಪನಿಷತ್ತು. ಅಥರ್ವಣೋ ವೇದಸ್ಯ ಶಿಖೇವ ಶಿರ ಇವ ವಾ ಬ್ರಹ್ಮವಿದ್ಯಾಪ್ರತಿಪಾದಕತ್ವಾತ್ ।

ಅಥರ್ವಾಂಗಿರಸ ಅಥರ್ವಾಂಗಿರಸ (ಪುಂ) 1. ಅಥರ್ವ ಮುನಿ ಮತ್ತು ಅಂಗಿರಸ್ಸು. ಅಥರ್ವಾ ಚಾಂಗಿರಾಶ್ಚ । (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ಅಥರ್ವ ಮತ್ತು ಅಂಗಿರಸ್ಸುಗಳ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವರು.

ಅಥರ್ವಾಧಿಪ ಅಥರ್ವಾಧಿಪ (ಪುಂ) ಅಥರ್ವ ಶಾಖಾಧಿಪ, ಬುಧ. ಅಥರ್ವಣೋಧಿಪ: । "ಸಾಮಶಾಖಾಧಿಪೋ ಭೂಮಿ: ಶಶಿಜೋಽಥರ್ವವೇದರಾಟ್" ।

ಅಥರ್ವಾ ಅಥರ್ವಾ (ಅವ್ಯಂ) ಮತಾಂತರ, ಸಕಲಾಂತರ. "ಅಥರ್ವಾಭಿನಿವಿಷ್ಟಬುದ್ಧಿಷು ವ್ರಜತಿ ವ್ಯರ್ಥಕತಾಂ ಸುಭಾಷಿತಮ್" ಮಾಧಂ ೧೬-೪೩. ।

ಅಥೋ ಅಥೋ (ಅವ್ಯಂ) "ಅಥ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅರ್ಥ (ಯಾಚ್ಛಾಸ್ಯಾಮ್) "ಓ" ಬಾಹುಂ ರಲೋಪ: ಪೂಂ. "ಅಥೋ ಶರಸ್ತೇನ ಮದರ್ಥಮುಜ್ಜಿತ:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೧೭. ।

ಅದೃಷ್ಟ ಅದೃಷ್ಟ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ವ, ಹಾವು. (ವಿಂ) 2. ಕೋರೆ ಹಲ್ಲುಗಳಲ್ಲದ.

ಅದಕ್ಷ ಅದಕ್ಷ (ವಿಂ) ಅಸಮರ್ಥ, ಜಡ, ಮಂದ ಸ್ವಭಾವದ.

ಅದಕ್ಷಿಣ ಅದಕ್ಷಿಣ (ಪುಂ) 1. ದಕ್ಷಿಣೆಯಿಲ್ಲದ (ಯಾಗ). "ಮೃತೋ ಯಜ್ಞಸ್ತದಕ್ಷಿಣ:" ಪञ್ಚತಂ. । (ನಂ) 2. ಎಡಭಾಗ. (ವಿಂ) 3. ಅನುಕೂಲವಲ್ಲದ. 4. ಸಾಮರ್ಥ್ಯವಿಲ್ಲದ.

ಅದಾಧ ಅದಾಧ (ವಿಂ) 1. ಸುಡಲ್ಪಡದ. 2. ಶಾಸ್ತ್ರ ದಂತೆ ಅಗ್ನಿ ಸಂಸ್ಕಾರ ಮಾಡಲ್ಪಡದ. ನ ದಾಧ: ।

ಅದೃಡ್ಯ ಅದೃಡ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಶಿಕ್ಷೆಗೆ ಅರ್ಹವಲ್ಲದ. ದೃಡಮಹತಿ "ಯತ್" (೪-೧-೬೬) । ನ ದೃಡ್ಯ: । "ಅದೃಡ್ಯಾನ್ ದೃಡಯನ್ ರಾಜಾ ದೃಡ್ಯಾಂಶ್ಚೈವಾಪ್ಯದೃಡಯನ್" ಮನುಂ ೮-೧೨೮. 2. ಶಿಕ್ಷೆಗೆ ಒಳಗಾಗದ. "ಪಿತಾಚಾರ್ಯ: ಸುಹೃನ್ಮಾತಾ ಭಾರ್ಯಾ ಪುತ್ರ: ಪುರೋಹಿತ: । ನಾದೃಡ್ಯೋ ನಾಮ ರಾಜೋಽಸ್ತಿ ಯ: ಸ್ವಧರ್ಮೇ ನ ತಿಷ್ಠತಿ" ಮನುಂ ೮-೩೩೪. । "ಅದೃಡ್ಯಾ ಹಸ್ತಿನೋಽಶ್ವಾಶ್ಚ ಪ್ರಜಾಪಾಲಾ ಹಿ ತೇ ಸ್ಮೃತಾ: । ಅದೃಡ್ಯಾ: ಕಾಣಕುಣಾಶ್ಚ ವೃಷಭ: ಕೃತಲಕ್ಷಣ:" ಸ್ಮೃತಿ: ।



ಅದತ್ತ ಅದತ್ತ (ನಂ) 1. ವ್ಯರ್ಥವಾದ ದಾನ, ಕೆಲವು ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲಿ ಕೊಟ್ಟು ಪುನಃ ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದು ಕೊಳ್ಳಬಹುದಾದ ದಾನ. (ವಿಂ) 2. ದಾನಮಾಡಲ್ಪಡದ, ಕೊಡಲ್ಪಡದ. ನ ದತ್ತಃ। (ಸ್ತ್ರೀಂ)-ತಾ-ತಾ. 3. ವಿವಾಹವಾಗದ ಕನ್ಯೆ.

ಅದತ್ತಪೂರ್ವ ಅದತ್ತಪೂರ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿವಾಹವು ನಿಶ್ಚಯವಾಗದ ಕನ್ಯೆ, ವಿವಾಹಕ್ಕಾಗಿ ವಾಗ್ದಾನ ಮಾಡಲ್ಪಡದ ಕನ್ಯೆ. "ಅದತ್ತಪೂರ್ವಾಶಿಕ್ಷಯತೇ" ಮಾಲತೀಂ ೪। (ವಿಂ) 2. ಹಿಂದೆಕೊಡಲ್ಪಡದ.

ಅದತ್ತಾದಾಯಿನ್ ಅದತ್ತಾದಾಯಿನ್ (ವಿಂ) ಕೊಡದಿರುವುದನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ಅದತ್ತಮಾದತ್ತೇ - ಆ + ತ್ವ ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೨೮)। "ಅದತ್ತಾದಾಯಿನೋ-ಹಸ್ತಾತ್ ಲಿಪ್ಸೇತ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ಧನಮ್। ಯಾಜನಾಧ್ಯಯನೇನಾಪಿ ಯಥಾ ಸ್ತೇನಸ್ತಥೈವ ಸಃ"।

ಅದದ್ರಚಙ್ಚ ಅದದ್ರಚಙ್ಚ (ವಿಂ) ಇದನ್ನು ಹೊಂದುವ, ಇದರ ಕಡೆಗೆ ಹೋಗುವ. ಅಮುಮಙ್ಚತಿ - ಅಙ್ಚು (ಗತೌ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೨)। "ಅದ್ರಿ" ಆದೇಶಃ (೮-೨-೮೦)।

ಅದನ ಅದನ (ನಂ) 1. ಭೋಜನ, ಊಟಮಾಡುವುದು. ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಆಹಾರ, ಊಟದ ಪದಾರ್ಥ. ಅದತೇ ಸ್ಮ-ಅದ ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩)। "ಪ್ರತ್ಯವಸಾನಮಶನಂ ಭೋಜನಂ ಜೇಮನಾದನೇ" ವೈಜಂ।

ಅದಂತ ಅದಂತ (ಪುಂ) 1. ಪೂಷನೆಂಬ ಸೂರ್ಯ. ನಾಸ್ತಿ ದಂತೋಽಸ್ಯ। [ದಕ್ಷಯಜ್ಞಸಮಯದಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನು ಹಾಸ್ಯಮಾಡಿದುದರಿಂದ ವೀರಭದ್ರನು ಸೂರ್ಯನ ದಂತ(ಹಲ್ಲು)ಗಳನ್ನು ಉದುರಿಸಿದನು.] "ಪೂಣಶ್ಚಾಪಾತ-ಯದಂತಾನ್ ಕಾಲಿಙ್ಗಸ್ಯ ಯಥಾ ಬಲಃ। ಶಪ್ಯಮಾನೇ ಗರಿಮಣಿ ಯೋಹಸದೃಶಯನ್ ದತಃ" ಭಾಗಂ ಸ್ಕಂ ೪-೫-೨೧। 2. ಜಿಗಣೆ. (ವಿಂ) 3. ಹೀರುವವನು. 4. ದಂತವಿಲ್ಲದ, ಹಲ್ಲುಗಳಿಲ್ಲದ. 5. ಹಲ್ಲು ಹುಟ್ಟಿದಿರುವ. 6. ಅಕಾರಾಂತ (ಶಬ್ದ ಮುಂತಾದುದು). ಅತ್ ಅಂತೇ ಯಸ್ಯ।

ಅದಭ್ರ ಅದಭ್ರ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚಾದ, ಬಹಳ. ನ ದಭ್ರಃ। "ಅದಭ್ರದಭಿಮಿಧಿಶಯ್ಯ ಸ ಸ್ಥಲೀಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೩೮। "ಅದಭ್ರಸತ್ರಾಜಿತಭವಿತಯನ್ವಿತಃ" ಯಾದಂ ೧೪-೧।

ಅದಭಿ ಅದಭಿ (ಪುಂ) 1. ಸತ್ಯಸಂಧತೆ, ಪ್ರಾಮಾಣಿಕತೆ, ಕಪಟವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ದಭಿಃ। (ವಿಂ) 2. ಕಪಟವಿಲ್ಲದವನು, ಸತ್ಯಸಂಧ, ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ.

ಅದಮ್ಯ ಅದಮ್ಯ (ವಿಂ) ಅಡಗಿಸಲು ಶಕ್ಯವಲ್ಲದ. ನ ದಮ್ಯತೇ - ದಮು (ಉಪಶಮೇ) "ಯತ್" (೩-೧-೯೮)।

ಅದಯ ಅದಯ (ವಿಂ) 1. ದಯೆಯಿಲ್ಲದ, ಕರುಣೆಯಿಲ್ಲದ, ಕನಿಕರವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ದಯಾ ಯಸ್ಯ। (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 2. ದಯೆಯಿಲ್ಲದೆ, ಕನಿಕರವಿಲ್ಲದೆ. "ಅದಯಮಿವ ಕರಾಗ್ರೇಣ ನಿಷ್ಪಿಡ್ಯ ಸದ್ವಃ" ಮಾಘಂ ೧೧-೬೨।

ಅದರ್ಶನ ಅದರ್ಶನ (ನಂ) 1. ದರ್ಶನಾರ್ಥವ, ನೋಡದಿರುವಿಕೆ. ನ ದರ್ಶನಮ್। "ಅದರ್ಶನೇಷ್ಟಾಮಿತರೇಷು ದತ್ತೇ" ಯಾದಂ ೧೮-೯೩। 2. ಲೋಪ, ವಿನಾಶ. 3. ಅಂತರ್ಧಾನ, ಮರೆಯಾಗುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 4. ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗದ, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸದ. 5. ನೇತ್ರವಿಲ್ಲದ, ಕಣ್ಣಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ದರ್ಶನಂ ಯಸ್ಯ।

ಅದಸ್ ಅದಸ್ (ತ್ರಿಂ) ಇವನು, ಇವಳು, ಇದು. ಈ ಶಬ್ದವು ದೂರದಲ್ಲಿರುವ ಮನುಷ್ಯನಲ್ಲಿ ಅಥವಾ ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವುದು. (ಪುಂ) ಅಸೌ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಸೌ (ನಂ) ಅದಃ। "ಇದಮಸ್ತು ಸನ್ನಿಹೃಷ್ಣಂ ಸಮೀಪತರವತಿಚೇತದೋ ರೂಪಮ್। ಅದಸಸ್ತು ವಿಪ್ರಕೃಷ್ಣಂ ತದಿತಿ ಪರೋಕ್ಷೇ ವಿಜಾನೀಯಾತ್"। ಕೃಮವಾಗಿ ಉದಾಹರಣೆ: "ಅಸಾವಹಚ್ಚಾರಪರೆದುರಾತ್ಮಭಿಃ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೧-೨೪। "ಅಸೌ ಪುನಃ ವಿಪಮರಚಿತೇಕಭಾಗಾಂ ತಾಮೇವ ಬಹುಮನ್ಯಮಾನಾ ಪ್ರತಿಗೃಹೀತ-ವತೀ" ಮಾಲತೀಂ ೧। "ಅದಸ್ತ್ವಯಾ ನುತ್ತಮನುತ್ತಮಂ ತಮಃ" ಮಾಘಂ ೧-೨೭। ಕೆಲವು ಕಡೆ ಈ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಸನ್ನಿಹೃಷ್ಣಾರ್ಥದಲ್ಲಿಯೂ ಪ್ರಯೋಗವುಂಟು. "ಅಮಿ ಚ ಕಥಮಾದಿತಾಃ ಪ್ರತಾಪಕ್ಷತಿಶೀತಲಾಃ" ಕುಮಾಂ ೨-೨೪। "ಅಮುಂ ಪುರಃ ಪಶ್ಯಸಿ ದೇವದಾರುಮ್" ರಘುಂ ೨-೩೬। "ಪ್ರಾಪ್ತಾ ಶುಕ್ರಶ್ರೇಣಿರಸೌ ವಿಭಾತಿ" ಯಾದಂ ೧೮-೭೬। "ತದ್" ಶಬ್ದದಂತೆ "ಅದಸ್" ಶಬ್ದವೂ "ಯದ್" ಶಬ್ದದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಪೂರ್ತಿಗೊಳಿಸುವುದು. "ಯ ಏಷ ಲೋಕತ್ರಯಸೂತ್ರಧಾರಃ ಪರ್ಯಪಿಪಾಶಾಣಿ ಚರಾಚರಾಣಿ। ಆನಂತಯತ್ಯದ್ರುತಚೇಷ್ಟಿತೋಽಸೌ ಮನತೇ ಕ್ಷೇಲಂ ನವನೀತಕಾಕ್ಷೀ" ಯಾದಂ ೪-೨೭। "ಯಸ್ಯ ತ್ವಂ ಯಶ್ಚ ಹೃದಯಸ್ತೇ ಯಸ್ಯಾಸೌ ತಸ್ಯ ಯಸ್ತಥಾ। ನಾಥ ತ್ವತ್ಪದಮಾಢ್ಯ ನ ಪುನಸ್ತೇ-ನಿವರ್ತಯತೇ" ಯಾದಂ ೧೬-೧೧೯। "ತದ್" ಶಬ್ದದಂತೆ "ಅದಸ್" ಶಬ್ದಕ್ಕೂ ಪ್ರಸಿದ್ಧಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗವುಂಟು. "ಯೋಽಪ್ಯಸೌ ಕುಮಾರಸೇವಕೋ ರಾಜಸೇನಃ ಸೋಽಪಿ ತವ ಪ್ರಸಾದಾತ್" ಮುಡ್ರಾಂ ೩।

ಅದಾತ್ ಅದಾತ್ಯ (ವಿಂ) ದಾನಮಾಡದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ದೀಪ್" (೪-೧-೬)। ಅದಾತ್ರಿ - ತ್ರೀ.

ಅದಾನ ಅದಾನ (ಪುಂ) 1. ಮದೋದಕವಿಲ್ಲದ ಅನೇ. ನ ದಾನಂ ಯಸ್ಯ। (ನಂ) 2. ದಾನದ ಅಭಾವ, ದಾನ ಮಾಡದಿರುವಿಕೆ. ನ ದಾನಮ್। (ವಿಂ) 3. ದಾನವಿಲ್ಲದ



ಅವಾಂತ ಅದಾಂತ (ವಿಂ) ಇಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹವಿಲ್ಲದ, ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ಜಯಿಸದ. ನ ದಾಂತಃ।

ಅದಾಯ ಅದಾಯ (ಪುಂ) ದಾಯಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯನಲ್ಲದವನು, ಅಸ್ತಿಯ ಭಾಗಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಲ್ಲದವನು, ಪತಿತನಾದ ಜ್ಞಾತಿ. ನಾಸ್ತಿ ದಾಯೋ ಯಸ್ಯ। "ಅದಾಯಾದ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಅದಾಯಾದ ಅದಾಯಾದ (ಪುಂ) 1. ತಂದೆಯ ಅಸ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಭಾಗಹೊಂದಲು ಅರ್ಹರಲ್ಲದ (1) ಪತಿತಜ್ಞಾತಿ (2) ಕ್ಲೇಬ, ಪಂಡ, ನಪುಂಸಕ (3) ಜನ್ಮವ್ಯಾಧಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮಕ್ಕಳು (4) ಉನ್ಮತ್ತ (ಹುಚ್ಚು) (5) ಜಡ (6) ಮೂಗ ಮತ್ತು (7) ಅಂಗಹೀನರು.

"ಅನಂಶೌ ಕ್ಲಿಬಪತಿತೌ ಜಾತ್ಯನ್ಧವಧಿರೌ ತಥಾ। ಉನ್ಮತ್ತ-ಜಡಮುಕಾಶ್ಚ ಯೇ ಚ ಕೇಚಿನ್ನಿರಿದ್ರಿಯಾಃ" ಮನುಂ ೯-೨೦೧।

2. ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಪುತ್ರರಲ್ಲಿ ಆಯವಿಧ ಪುತ್ರರು.

"ಕಾಂತೀನಶ್ಚ ಸಹೋದಶ್ಚ ಕ್ರಿತಃ ಪೌನರ್ಮವಸ್ತಥಾ। ಸ್ವಯಂದತ್ತಶ್ಚ ಶೋದ್ರಶ್ಚ ಷಡದಾಯಾದವಾನ್ಧವಾಃ" ಮನುಂ ೯-೧೬೦।

ಅದಾಯಿಕ ಅದಾಯಿಕ (ವಿಂ) ದಾಯಾದರಿಲ್ಲದ, ಜ್ಞಾತಿಗಳಿಲ್ಲದ ದಾಯಮಹಂತಿ - ದಾಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೬೩)। ನ ದಾಯಿಕೋ ಯಸ್ಯ।

ಅದಾಸ ಅದಾಸ (ಪುಂ) ಸ್ವತಂತ್ರ.

ಅದಾಸ್ಯ ಅದಾಸ್ಯ (ನಂ) ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ.

ಅದಾಹ್ಯ ಅದಾಹ್ಯ (ವಿಂ) 1. ದಹಿಸಲು ಅಶಕ್ಯ. (ಅತ್ಮ) ನ ದಾಹುಂ ಶಕ್ಯಃ। "ಅಚ್ಛೇದ್ಯೋಷ್ಯಮದಾಹ್ಯೋಷ್ಯಮಕಲೇದ್ಯೋಷ್ಯೋಷ್ಯ ಏವ ಚ" ಗೀತಾ ೨-೨೪। 2. ದಹಿಸಲು ಅನರ್ಹ, ಪತಿತ. ನ ದಾಹುಮಹಃ।

ಅದಿತಿ ಅದಿತಿ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. 2. ಮೃತ್ಯು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಅದಿತಿದೇವಿ, ದೇವತೆಗಳ ತಾಯಿ, ದಕ್ಷಿಣಾಹುತನ ಮಗಳು. 4. ಸೃಷ್ಟಿ, ಭೂಮಿ. ನ ದೀಯತೇ ಲಕ್ಷಣಯತೇ - ದೌ (ಅವಲಕ್ಷಣದ) "ಕ್ತಿಚ್" (೩-೩-೧೭೪)। ಋಷಮ್ (೭-೪-೪೦)। ದಿತಿಭಿನ್ನಾ ಅದಿತಿಃ। 5. ಪಾರ್ವತಿ.

"ಅದಿತಿಃ ಶೈಲಕನ್ಯಾಪಾಂ ಪೃಥಿವ್ಯಾಂ ದೇವಮಾತರಿ" ವೇಜಂ।

ಅದಿತಿಜ ಅದಿತಿಜ (ಪುಂ) ದೇವತೆ. ಅದಿತೇಜಯಿತೆ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುರ್ಭವಿ) "ಜಃ" (೩-೨-೯೮)।

ಅದಿತಿನಂದನ ಅದಿತಿನಂದನ-ಪುತ್ರ-ಪುತ್ರ (ಪುಂ) ದೇವತೆ.

ಅದೀನ ಅದೀನ (ವಿಂ) 1. ಧೈರ್ಯಗಡದ, ಹೆದರದ. 2. ಧನಿಕ, ಸಿರಿವಂತ. 3. ಬಲಶಾಲಿ, ಪರಾಕ್ರಮಿ.

ಅದೀಪಿತ ಅದೀಪಿತ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸಲ್ಪಡದ. ನ ದೀಪಿತಮ್। "ಅದೀಪಿತಂ ವೈದ್ಯುತಜಾತವೇದಸಾ" ಕಿರಾಂ ೪-೨೯।

ಅದೀಯಮಾನ ಅದೀಯಮಾನ (ವಿಂ) ಕೊಡಲ್ಪಡದ.

ನ ದೀಯತೇ - ತ್ವದಾಜ್ (ದಾನೇ) "ಶಾನ್" (೩-೨-೧೨೪)।

ಅದೂರ ಅದೂರ (ನಂ) 1. ಸಮೀಪ. ನ ದೂರಮ್। "ಪರಸ್ಪರಾ-ಕ್ಷಿಸಾದೃಶ್ಯಮದೂರೋಜ್ಜಿತವರ್ಮಮ್" ರಘುಂ ೧-೪೦। (ವಿಂ) 2. ಸಮೀಪದ.

ಅದೃಶ್ ಅದೃಶ್ (ವಿಂ) 1. ಕುರುಡ, ಕಣ್ಣಿಲ್ಲದವನು. ನಾಸ್ತಿ ದೃಕ್ ಯಸ್ಯ। 2. ನೋಡದಿರುವ.

ಅದೃಶ್ಯ ಅದೃಶ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. "ಅದೃಶ್ಯೋವ್ಯಕ್ತ-ರೂಪಶ್ಚ ಸಹಸ್ರಜಿದನಂತಜಿತ್" ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 2. ಅಗೋಚರ, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸದ. ನ ದೃಶ್ಯಮ್। "ಅದೃಶ್ಯಂ ಮಂದಪುಷ್ಪಾನಾಮಮಂದಪ್ರೀತಿದಾಯಿನಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೬-೩।

ಅದೃಷ್ಟ ಅದೃಷ್ಟ (ನಂ) 1. ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸದಿರುವುದು, ದೈವಕೃತವಾದದ್ದು, ಪುಣ್ಯಪಾಪಗಳು, ವಿಧಿ, ಹಣೆ ಬರಹ. 2. ಬೆಂಕಿ, ನೀರು ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಭಯ. "ಅದೃಷ್ಟಂ ವಹ್ನಿತೋಯಾದಿ (ಭಯಮ್)" ಅಮಂ। (ವಿಂ) 3. ಕಾಣಲ್ಪಡದ, ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ.

ಅದೃಷ್ಟಪೂರ್ವ ಅದೃಷ್ಟಪೂರ್ವ (ವಿಂ) ಹಿಂದೆ ನೋಡದಿರುವ. ನ ಪೂರ್ವ ದೃಷ್ಟಃ। "ಅದೃಷ್ಟಪೂರ್ವಂ ಹೃಪಿತೋಽಸ್ಮಿ ದೃಷ್ಟಾ" ಗೀತಾ ೧೧-೪೫। "ಅದೃಷ್ಟಪೂರ್ವಂ ಭುವಿ ಪೂತನಾದೇಃ" ಯಾದಂ ೪-೩೯।

ಅದೃಷ್ಟಾಂತ ಅದೃಷ್ಟಾಂತ (ವಿಂ) ಕೊನೆ ಕಾಣಿಸದಿರುವ, ಬಹಳ ದೂರದ, ಬಹಳ ಕಾಲದ. ನ ದೃಷ್ಟಃ ಅಂತಃ ಯಸ್ಯ। "ಅದೃಷ್ಟಾಂತಮಭ್ಯುದೃಷ್ಟಮ್" ಯಾದಂ ೧೬-೧೦೧।

ಅದೃಷ್ಟಿ ಅದೃಷ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕ್ರೂರವಾದ ನೋಟ. 2. ಕೋಪದ ನೋಟ. 3. ನೋಡದಿರುವಿಕೆ. ನ ದೃಷ್ಟಿಃ। ವಿರೋಧೇ ಅಭಾವೇ ವಾ ನಂ ತಂ। (ವಿಂ) 2. ಕಣ್ಣಿಲ್ಲದ, ಕುರುಡ.

ಅದೇಯ ಅದೇಯ (ವಿಂ) ಕೊಡಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ, ಕೊಡತಕ್ಕುದಲ್ಲದ. ನ ದಾತುಂ ಯೋಗ್ಯಮ್। "ಅದೇಯಮಾಸೀತ್ ತ್ರಯಮೇವ ಭೂಪತೇಃ ಶಶಿಪ್ರಭಂ ಚತುರ್ಮುಖೇ ಚ ಚಾಮರೇ" ರಘುಂ ೩-೨೬। ದಾನಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದವು: ಪತ್ನಿ, ಪುತ್ರ, ನಿಕ್ಷೇಪ, ಹೋಮಾಗ್ನಿ ಮುಂತಾದುವು. ಇವನ್ನು ಎಂತಹ ಕಷ್ಟಕಾಲದಲ್ಲಿಯೂ ಇತರರಿಗೆ ದಾನಮಾಡ ಕೂಡದು.

ಅದೇವ ಅದೇವ (ವಿಂ) 1. ದೇವತೆಗಳಿಲ್ಲದ. ನಂಬಂ। 2. ದೇವತೆಗಳಂತಿರುವ. ನ ದೇವಃ। ಸಾದೃಶ್ಯೇ ನಂ ತಂ।

ಅದೇವಮಾತೃಕ ಅದೇವಮಾತೃಕ (ಪುಂ) ಮಳೆಯ ನೀರೇ ಆಧಾರವಾಗಿಲ್ಲದ ಪ್ರದೇಶ, ನದಿಯ ನೀರಿನ ಆಸರೆ ಯಿಂದ ಬೆಳೆಯುವ ಪ್ರದೇಶ. ದೇವ ಏವ ಮಾತಾ ಯಸ್ಯ ಸಃ



ದೇವಮಾತೃಕಃ; ಸ ನ ಭವತೀತ್ಯದೇವಮಾತೃಕಃ । “ವಿತನ್ವತಿ  
ಕ್ಷೇಮದೇವಮಾತೃಕಾಶ್ಚರಾಯ ತಸ್ಮಿನ್ ಕುರವಶ್ಚಕಾಸತಿ”  
ಕಿರಾಂ ೧-೧೭ ।

ಅದೇಶ ಅದೇಶ (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟಜ್ಞಾನ. 2. ಅಶುದ್ಧ  
ಪ್ರದೇಶ. “ನಾದೇಶೇ ತರ್ಪಣಂ ಕುರ್ಯಾತ್ ನ ಸಂಖ್ಯಾಂ ನಾಪಿ ಪೂಜನಮ್”  
ಸ್ಮೃತಿಃ । ಚಾತುರ್ವರ್ಣ್ಯವ್ಯವಸ್ಥೆಯಿಲ್ಲದ ದೇಶವು  
ವಾಸಕ್ಕೆ ಅಯೋಗ್ಯವು.

ಅದೇವ ಅದೇವ (ನಂ) 1. ದೇವತೆಯಿಲ್ಲದ ಶ್ರಾದ್ಧ, ನಿತ್ಯ  
ಶ್ರಾದ್ಧ. ದೇವ ವೈಶ್ವದೇವಿಕಂ ಶ್ರಾದ್ಧಮ್; ತನ್ನಾಸ್ತಿ ಯತ್ರ ।  
(ವಿಂ) 2. ಅದೃಷ್ಟಶೂನ್ಯ.

ಅದೋಷ ಅದೋಷ (ಪುಂ) 1. ದೋಷಾಭಾವ, ದೋಷ  
ವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ದೋಷಃ । “ಕಿಮಿತ್ಯದೋಷೇಣ ತಿರಸ್ಕೃತಾ  
ವಯಮ್” ಕಿರಾಂ ೧೪-೧೧ । (ವಿಂ) 2. ದೋಷವಿಲ್ಲದ.  
ನಾಸ್ತಿ ದೋಷೋ ಯಸ್ಮಿನ್ । “ತದದೋಷೋ ಶಬ್ದಾರ್ಥೋ ಸಗುಣಾವನ-  
ಲಕ್ಷಕೃತೀ ಪುನಃ ಕ್ವಾಪಿ” ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ ೧ ।

ಅದ್ಗ ಅದ್ಗ (ನಂ) ಪುರೋಡಾಶ, ಹವಿಸ್ಸು. ಅದ್ಗತೇ ದೇವಃ  
— ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ) “ಗನ್” (ಉಂ ೧-೧೨೦) ।

ಅದ್ಧಾ ಅದ್ಧಾ (ಅವ್ಯಂ) ಸತ್ಯ, ನಿಜ. ಅತಂ ಸತತಗಮನಂ  
ದಧಾತಿ — ಡು ಧಾಜ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ವಿಚ್” (೩-೨-  
೧೫) । “ಅದ್ಧಾ ಶ್ರಿಯಂ ಪಾಲಿತಸಂಕ್ಲರಾಯ” ರಘುಂ ೧೩-೬೫ ।

ಅದ್ಭುತ ಅದ್ಭುತ (ನಂ) 1. ಆಶ್ಚರ್ಯ, ವಿಸ್ಮಯ.  
ಅದ್ (ಆಶ್ಚರ್ಯವ್ಯಯಮ್) ತಸ್ಯ ಭವನಮ್ । ಅದ್ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್)  
“ಛುತಚ್” (ಉಂ ೫-೧) । “ತರ್ಕಾತಿಗಂ ತಾದೃಶಮದ್ಭುತಂ ನಃ”  
ಯಾದಂ ೨-೨೨ । 2. ಅದ್ಭುತರಸ, ನವರಸಗಳ  
ಮಿಶ್ರಣ. ಅದ್ಭುತರಸಕ್ಕೆ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ ವಿಸ್ಮಯ.  
ಇದು ಗಂಧರ್ವ ದೇವತಾಕವಾದುದು. ಬಣ್ಣ ಹಳದಿ.  
ಆಶ್ಚರ್ಯಕರವಾದ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು ಅಲಂಬನ  
ವಿಭಾವ. ಆಶ್ಚರ್ಯಕರವಾದ ಕೆಲಸವು ಉದ್ದೀಪನ  
ವಿಭಾವ. ಚಕಿತ, ಸ್ಪೇದ, ರೋಮಾಂಚ, ಗದ್ಗದಸ್ವರ,  
ನೇತ್ರವಿಕಾಸ ಮುಂತಾದುವು ಅನುಭಾವಗಳು. ಹರ್ಷ,  
ವಿತರ್ಕ, ಸಂಭ್ರಾಂತಿ ಮುಂತಾದುವು ವ್ಯಭಿಚಾರಿಭಾವ.  
ಈ ವಿಭಾವಾನುಭಾವ ವ್ಯಭಿಚಾರಿಭಾವಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ  
ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ (ವಿಸ್ಮಯ)ವು ಅದ್ಭುತ ರಸತ್ವವನ್ನು  
ಹೊಂದುವುದು. ಸಾಂ ದಂ ೩-೨೪೨-೪೫ । 3. ವೈಶ್ವ  
ದೇವದ ಅಗ್ನಿ. “ಮಹಿಮಾಸ್ತು ವಿವಾಹಾಗ್ನಿವೈಶ್ವದೇವಾಗ್ನಿ-  
ರದ್ಭುತಃ” ವೇಜಂ । (ವಿಂ) 4. ಆಶ್ಚರ್ಯಕರವಾದ.

ಅದ್ವನಿ ಅದ್ವನಿ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಅತ್ತಿ ಸರ್ವಾನ್ — ಅದ  
(ಭಕ್ಷಣೇ) “ಅನಿಃ” ಮುಡ್ ಚ (ಉಂ ೨-೧೦೪) ।

ಅದ್ವರ ಅದ್ವರ (ವಿಂ) ತಿಂಡಿಬಾಕ, ಯಾವಾಗಲೂ  
ತಿನ್ನುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಅತ್ತಿ — ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ) “ಕಮರಚ್”  
(೩-೨-೧೬೦) ।

ಅದ್ಯ ಅದ್ಯ (ಅವ್ಯಂ) ಈಗ, ಈ ದಿನ. ಇದಮ್ “ಛಃ”  
ಅಶ್ ಚ ನಿಪಾಂ (೫-೩-೨೨) । “ಅದ್ಯ ಕ್ರಿಯಾಃ ಕಾಮದುಘಾಃ  
ಕ್ರತುನಾಮ್” ಕಿರಾಂ ೩-೬ । “ಕೃಷ್ಣ ತ್ವದೀಯಪದಪದ್ವಜ-  
ಪಂಜರಾಂತಮದೈವ ಮೇ ವಿಶತು” ಮುಂ ಮಾಂ ।

ಅದ್ಯತನ ಅದ್ಯತನ (ಪುಂ) 1. ಈ ದಿನ, ಈಗಿನ ಕಾಲ.  
(ವಿಂ) 2. ಈಗಿನಕಾಲದ, ಈಗ ಉಂಟಾದ. ಅದ್ಯ  
ಭವಃ “ಛಃ” (೪-೩-೨೩) ।

ಅದ್ಯಶ್ವಿನ ಅದ್ಯಶ್ವಿನ (ವಿಂ) ಈ ದಿನವೋ ಅಥವಾ  
ನಾಳೆಯೋ ಆಗಬಹುದಾದ. ಅದ್ಯ + ಶ್ವಸ್ “ಛಃ”  
(೫-೨-೧೩) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಅದ್ಯಶ್ವಿನಾ — ನಾ. ಈ ದಿನವೋ  
ನಾಳೆಯೋ ಪ್ರಸವಿಸಬಹುದಾದ ಹೆಂಗಸು, ಪೂರ್ಣ  
ಗರ್ಭಿಣಿ. “ಅದ್ಯಶ್ವಿನಾ ತು ಸಾ ಯಾ ಸ್ಯಾದದ್ಯಶ್ವಃ ಪ್ರಸವೋನ್ಮುಖೀ”  
ವೇಜಂ ।

ಅದ್ಯಾಪಿ ಅದ್ಯಾಪಿ (ಅವ್ಯಂ) ಈಗಲೂ ಕೂಡ. “ಅಪಸೃಪ್ಯ  
ಪುರೋಭಾಗಾದದ್ಯಾಪಿ ನ ನಿವರ್ತತೇ” ಯಾದಂ ೧೬-೩೬ ।

ಅದ್ರವ ಅದ್ರವ (ವಿಂ) ದ್ರವವಲ್ಲದ, ಗಟ್ಟಿಯಾದ.  
ನಾಸ್ತಿ ದ್ರವೋ ಯಸ್ಮಿನ್ । “ಅದ್ರವಂ ಮूर्ತಿಮತ್ಪ್ರಾಜ್ಞಮ್”  
ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ಅದ್ರವ್ಯ ಅದ್ರವ್ಯ (ನಂ) 1. ಅಯೋಗ್ಯವಸ್ತು, ಗುಣ  
ಹೀನ, ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಬಾರದ ಪದಾರ್ಥ. ನ ದ್ರವ್ಯಮ್ ।  
ಅಪ್ರಾಶಸ್ತೇ ನಂತಂ । “ವಿನೇತುರದ್ರವ್ಯಪರಿಗ್ರಹೇವ ಬುದ್ಧಿಲಾಭವಂ  
ಪ್ರಕಾಶಯತಿ” ಮಾಲಂ ೧ । 2. ಸತ್ತ್ವ ಮೊದಲಾದ ಹತ್ತು  
ಗುಣಗಳು. ಇವು ಸತ್ತ್ವ, ರಜಸ್ಸು, ತಮಸ್ಸು, ಶಬ್ದ,  
ಸ್ಪರ್ಶ, ರೂಪ, ರಸ, ಗಂಧ, ಸಂಯೋಗ ಮತ್ತು  
ಶಕ್ತಿಗಳೆಂದು ಹತ್ತು ಬಗೆ. ನ್ಯಾಯಸಿಂ ।

ಅದ್ರಿ ಅದ್ರಿ (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ)  
“ಕ್ರಿನ್” (ಉಂ ೪-೬೫) । “ತಸ್ಮಿನ್ನದ್ರೋ ಕತಿಚಿದಬಲಾ-  
ವಿಪ್ರಯುಕ್ತಃ ಸ ಕಾಮಿ” ಮೇಘಂ ೧-೨ । 2. ಬಂಡೆ, ದೊಡ್ಡ  
ಕಲ್ಲು. 3. ಸೂರ್ಯ. 4. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. “ಅದ್ರಿಃ  
ಶಿಲದ್ರುಮಾಕೌ ನಾ” ಮೇದಿಂ । 5. ಮೇಘ, ಮೋಡ.  
6. ಸಪ್ತಸಂಖ್ಯೆ, ಏಳು. 7. ಸೋಮಲತೆಯನ್ನು  
ಅರೆಯುವ ಕಲ್ಲು.

ಅದ್ರಿಕನ್ಯಾ ಅದ್ರಿಕನ್ಯಾ — ತನಯಾ — ತನಯಾ — ಸುತಾ  
— ಸುತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪರ್ವತರಾಜನ ಮಗಳು, ಪಾರ್ವತಿ.

ಅದ್ರಿಕರ್ಣಿ ಅದ್ರಿಕರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಷ್ಣು ಕ್ರಾಂತಿಗಿಡ.



**ಅವಿಕೀಲ ಅದ್ವೀಕೀಲ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಕಂಭಪರ್ವತ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ-ಲಾ. 2. ಭೂಮಿ. ಅದ್ವಯ: ಕುಲಪರ್ವತಾ: ಕೀಲಾ ಇವ ಯಸ್ಯಾ:।

**ಅವಿಜ ಅದ್ವಿಜ** (ಪುಂ) 1. ದಾವಾನಲ, ಕಾಳ್ಕಿಚ್ಚು. 2. ಪರಮಾತ್ಮ. (ನಂ) 3. ಶಿಲಾಜತು. (ವಿಂ) 4. ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅದ್ರಿ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃಭಾವಿ) "ತ:" (೩-೨-೯೭)। 5. ಸೂರ್ಯನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ.

**ಅವಿಜಾ ಅದ್ವಿಜಾ-ಜಾತಾ-ಜಾತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾರ್ವತಿ.

**ಅವಿವಿಷ್ ಅದ್ವಿದ್ವಿಷ್** (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ಅದ್ರಿ ದ್ವೇಷಿ - ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೬೧)।

**ಅವಿದ್ರೋಣಿ ಅದ್ವಿದ್ರೋಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗರಿನದಿ, ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ನದಿ. ಅದ್ರೆ: ದ್ರೋಣಿರಿವ. 2. ಕಣಿವೆ.

**ಅವಿಪತಿ ಅದ್ವಿಪತಿ-ರಾಜ-ರಾಜ** (ಪುಂ) ಪರ್ವತರಾಜ, ಹಿಮಾಚಲ. ಅದ್ರಿಣಾಂ ಪತಿ: ರಾಜಾ ವಾ। ಅದ್ರಿ+ರಾಜನ್ "ಟವ್" (೪-೪-೯೧)। "ಸನಿಶ್ಚರೋದ್ಧಾರ ಇವಾದ್ರಿರಾಜ:" ರಘುಂ ೬-೬೦।

**ಅವಿಭಿಡ್ ಅದ್ವಿಭಿಡ್** (ಪುಂ) (ಪರ್ವತಗಳ ರೆಕ್ಕೆಗಳನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿದ) ಇಂದ್ರ. ಅದ್ರಿ ಭಿನತ್ತಿ - ಭಿಡಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೬೧)।

**ಅವಿಭೂ ಅದ್ವಿಭೂ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಾರ್ವತಿ. ಅದ್ರೇಭವತಿ - ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೧೭೧)। (ವಿಂ) 2. ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅದ್ರಿ ಭವತಿ - ಭೂ "ಕಿವಪ್"।

**ಅವಿಷುತ ಅದ್ವಿಷುತ** (ಪುಂ) ಸೋಮರಸ. ಅದ್ರಿಭಿ: ಷಾವಿಭಿ: ಸುತ: ಅಭಿಷುತ:।

**ಅವಿಸಾರ ಅದ್ವಿಸಾರ** (ಪುಂ) 1. ಕಬ್ಬಿಣ. (ವಿಂ) 2. ಬೆಟ್ಟದಂತೆ ಬಹಳ ಕಠಿನವಾದ.

**ಅವಿಸಾರಮಯ ಅದ್ವಿಸಾರಮಯ** (ವಿಂ) 1. ಕಬ್ಬಿಣದಿಂದ ತಯಾರಾದ. 2. ಅತಿಕಠಿನವಾದ.

**ಅವಿನ್ದ್ರ ಅದ್ವೀಂದ್ರ-ಇನ್ದ್ರ-ಈಶ** (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತರಾಜ, ಹಿಮಾಚಲ. 2. ಕೈಲಾಸಾಧಿಪತಿ, ಈಶ್ವರ. 3. ಪರ್ವತ ಶ್ರೇಷ್ಠ.

**ಅವೋಹ ಅದ್ವೋಹ** (ಪುಂ) 1. ದ್ರೋಹಾಭಾವ, ವಂಚನೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ದ್ರೋಹ:। (ವಿಂ) 2. ದ್ರೋಹವಿಲ್ಲದ, ವಂಚನೆಯಿಲ್ಲದ.

**ಅವ್ಯಂತ್ಯ ಅದ್ವ್ಯಂತ್ಯ** (ವಿಂ) ದ್ವ್ಯಂತ್ಯಗಳಿಲ್ಲದ, ದ್ವ್ಯಂತ್ಯಗಳನ್ನು ಮೀರಿದ. [ಸುಖದುಃಖ, ರಾಗದ್ವೇಷ, ಶೀತಉಷ್ಣ ಮುಂತಾದುವು ದ್ವ್ಯಂತ್ಯಗಳು.]

**ಅದ್ವಯ ಅದ್ವಯ** (ಪುಂ) 1. ಬುದ್ಧದೇವ. 2. ಜೀನಾತ್ಮ ಮತ್ತು ಪರಮಾತ್ಮರ ಐಕ್ಯ ಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು, ಅದ್ವೈತಿ. ನಾಸ್ತಿ ದ್ವಯಂ ಯಸ್ಯ। (ನಂ) 3. ಎರಡಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಅಭೇದ. 4 ಬ್ರಹ್ಮಾತ್ಮೈಕ್ಯ ಜ್ಞಾನ, ಅದ್ವೈತ.

**ಅದ್ವಯವಾದಿನ್ ಅದ್ವಯವಾದಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಬುದ್ಧದೇವ. ಅದ್ವಯಂ ವದತಿ - ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಣಿನಿ:" (೩-೩-೧೭೦)। 2. ಬ್ರಹ್ಮಾತ್ಮೈಕ್ಯವಾದಿ, ಅದ್ವೈತಿ.

**ಅದ್ವಾರ ಅದ್ವಾರ** (ನಂ) 1. ಗುಪ್ತವಾರ್ಗ, ರಹಸ್ಯದ ದಾರಿ, ಎಲ್ಲರ ಸಂಚಾರಕ್ಕೆ ಏರ್ಪಡದ ದಾರಿ. 2. ಸಂಚಾರಕ್ಕೆ ಅನರ್ಹವಾದ ದಾರಿ. "ಅದ್ವಾರೆಣ ಮಹಾಬಾಹು: ಪ್ರಾಕಾರಮಭಿಪುಪ್ಲುವೇ" ರಾಮಾಂ।

**ಅದ್ವಿತೀಯ ಅದ್ವಿತೀಯ** (ಪುಂ) 1. ಪತ್ತಿಯಿಲ್ಲದವನು, ವಿಧುರ. ನ ದ್ವಿತೀಯಾ ಯಸ್ಯ। (ನಂ) 2. ಪರಬ್ರಹ್ಮ, ಪರಮಾತ್ಮ, ಸಜಾತೀಯ ವಿಜಾತೀಯ ಭೇದಶೂನ್ಯ. ನ ದ್ವಿತೀಯಂ ಯಸ್ಯ। "ಏಕಮೇವಾದ್ವಿತೀಯಂ ಬ್ರಹ್ಮ"। (ವಿಂ) 3. ಸಮಾನವಿಲ್ಲದ. 4. ಜೊತೆಗಾರನಿಲ್ಲದ, ಅಸಹಾಯ.

**ಅದ್ವೇಷ ಅದ್ವೇಷ** (ಪುಂ) 1. ದ್ವೇಷವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ದ್ವೇಷ:। (ವಿಂ) 2. ದ್ವೇಷವಿಲ್ಲದ. ನ ದ್ವೇಷೋ ಯಸ್ಯ।

**ಅದ್ವೈತ ಅದ್ವೈತ** (ನಂ) 1. ಅಭೇದ. ದ್ವಿಧಾ ಇತಮ್ ದ್ವೈತಮ್। ದ್ವೈತಮೇವ ದ್ವೈತಂ ಭೇದ:। ನಂ ತಂ। "ಅದ್ವೈತಂ ಸುಖದುಃಖ-ಯೋರನುಗತಂ ಸರ್ವಸ್ವಿವಸ್ಥಾಸು ಯತ್" ತಂ ರಾಂ ೧-೩೯। 2. ಬ್ರಹ್ಮ, ಪರಮಾತ್ಮ. ನಾಸ್ತಿ ದ್ವೈತಂ ಭೇದೋ ಯತ್ರ। ದ್ವೇ ಇತೇ ಗತೇ ಯಸ್ಮಾತ್ ತದ್ದ್ವೈತಮ್। ದ್ವೈತಮೇವ ದ್ವೈತಮ್। ನ ದ್ವೈತಂ ಯಸ್ಯ ವಾ। ಸುಖದುಃಖಾದಿವಿಜಿತಮ್। (ವಿಂ) 3. ಭೇದವಿಲ್ಲದ.

**ಅದ್ವೈತದರ್ಶನ ಅದ್ವೈತದರ್ಶನ** (ನಂ) ಆಸ್ತಿಕ ದರ್ಶನಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ವೇದಾಂತ ದರ್ಶನದ ಒಂದು ಭೇದ, ಜೀವನಿಗೂ ಈಶ್ವರನಿಗೂ ಅಭೇದವನ್ನು ಹೇಳುವ ಶ್ರೀ ಶಂಕರಾಚಾರ್ಯರ ಸಿದ್ಧಾಂತ. ದ್ವಿಧಾ ಇತಮ್ ದ್ವೈತಮ್। ದ್ವೈತಮೇವ ದ್ವೈತಂ ಭೇದ:। ನ ದ್ವೈತಮ್ ಅದ್ವೈತಮ್। ತತ್ಪ್ರತಿಪಾದಕಂ ದರ್ಶನಮ್। ಅದ್ವೈತದರ್ಶನದ ಸ್ವರೂಪ: ಜೀವ-ಈಶ್ವರ ಜಡ-ಈಶ್ವರ ಜೀವ-ಜಡವಸ್ತು ಈ ರೀತಿ ಪರಸ್ಪರ ಭೇದವನ್ನು ಹೇಳುವುದು ದ್ವೈತವು. ಇವುಗಳಿಗೆ ಪರಸ್ಪರ ಭೇದವಿಲ್ಲದಿರುವುದೇ ಅದ್ವೈತವು.

ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಯಾವಾಗಲೂ ಬಾಧೆಯಿಲ್ಲದೆ ಪರಮಾರ್ಥವಾಗಿ ಎಲ್ಲೆಡೆಯಲ್ಲಿಯೂ ಇರುವ ವಸ್ತು ಮೊಂದೇ ನಿಜವು. ಅದೇ ಬ್ರಹ್ಮ. ವ್ಯವಹಾರದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಜಗತ್ತೆಲ್ಲವೂ ಇರುವುದೇ ಹೊರತು ಅದು



ನಿಜವಲ್ಲ. ಅದು ಕೇವಲ ಭ್ರಾಂತಿ. ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನದಿಂದ ಈ ಭ್ರಾಂತಿಯು ಹೋದರೆ ಈ ಭೇದವೂ ಹೋಗುವುದು. ಅಲ್ಲಿಯವರೆಗೆ ಎಲ್ಲವೂ ನಿಜವಾಗಿ ತೋರುವುದು. ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನದಿಂದ ಎಲ್ಲವೂ ಮಿಥ್ಯೆಯಾಗಿ ತೋರಿದರೂ ಬ್ರಹ್ಮವು ಮಾತ್ರ ಸತ್ಯವಾಗಿ ತೋರುವುದರಿಂದ ರಜ್ಜುವಿನಲ್ಲಿ ಸರ್ಪವನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸುವಂತೆ ಬ್ರಹ್ಮಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದುದೆಲ್ಲವೂ ಬ್ರಹ್ಮದಲ್ಲಿ ಅಜ್ಞಾನ (ಅವಿದ್ಯೆ) ದಿಂದ ಕಲ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟದ್ದೆಂದೂ ಜಗತ್ತೆಲ್ಲವೂ ಮಿಥ್ಯೆಯೆಂದೂ ಬ್ರಹ್ಮವೊಂದೇ ನಿಜವೆಂದೂ ಈ ಸಿದ್ಧಾಂತದ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. "ಮಾಯಾಮಾತ್ರಮಿದಂ ದೈತಮದೈತಂ ಪರಮಾರ್ಥತಃ" ಮಾಣ್ಡುಕ್ಯಂ. ಈ ರೀತಿ ಜೀವಬ್ರಹ್ಮರಿಗೆ ಅಭೇದವನ್ನು ಹೇಳುವುದೇ ಅದ್ವೈತವು. ಇದೇ ಬ್ರಹ್ಮಾತ್ಮೈಕ್ಯವಾದವು. "ಅಹಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಸ್ಮಿ" | "ಅಯಮಾತ್ಮಾ ಬ್ರಹ್ಮ" | "ಸರ್ವಂ ಖಲವಿದಂ ಬ್ರಹ್ಮ" | "ನೆಹ ನಾನಾಸ್ತಿ" | "ನೆತಿ ನೇತಿ" | ಇತ್ಯಾದಿ ವಾಕ್ಯಗಳು ಬ್ರಹ್ಮವೇ ಸಕಲ ಪ್ರಪಂಚವೆಂಬ ಅಂಶವನ್ನೂ ಜೀವಬ್ರಹ್ಮರಿಗೆ ಏಕೈಕವನ್ನೂ ಹೇಳುವವು. ಇದೇ ಅದ್ವೈತದರ್ಶನದ ಸ್ವರೂಪ.

ಮಾಯೆ: ಮಾಯೆಯು ಬ್ರಹ್ಮದಲ್ಲಿ ಅನಾದಿಯಾಗಿ ಅನಿರ್ವಾಚ್ಯವಾಗಿ ಕಲ್ಪಿತವಾಗಿದೆ. ಇದನ್ನು ಬ್ರಹ್ಮವೆಂದಾಗಲೀ ಅದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯೆಂದಾಗಲೀ ಹೇಳಲಾಗುವುದಿಲ್ಲ. ಇದನ್ನು ಸತ್ ಅಥವಾ ಅಸತ್ ಎಂದಾಗಲೀ ಸಾವಯವ ಅಥವಾ ನಿರವಯವವೆಂದಾಗಲೀ ಹೇಳಲಾಗುವುದಿಲ್ಲ. ಅದುದರಿಂದ ಇದು ಅನಿರ್ವಾಚ್ಯವು. ಇದರಿಂದಲೇ ಪ್ರಪಂಚ-ಈಶ್ವರ ಜೀವ-ಈಶ್ವರ ಇತ್ಯಾದಿ ಭೇದವು ಕಲ್ಪಿತವಾಗಿದೆ. ಇದೇ ಅವಿದ್ಯೆ.

ಸಂಸಾರ: ಜೀವನು ಅನಾದಿಕಾಲದಿಂದಲೂ ಹಿಂದಿನ ಅನೇಕ ಜನ್ಮಗಳ ಕರ್ಮಾನುಸಾರ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ದೇಹವನ್ನು ಪಡೆದು ಅಂತಃಕರಣದಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದು ತನ್ನ ಪ್ರತಿಬಿಂಬಕ್ಕೂ ತನಗೂ ಭೇದ ತಿಳಿಯದೆ ಅಜ್ಞಾನದಿಂದ ಅಂತಃಕರಣವೇ ತಾನು ಎಂದು ಭ್ರಮಿಸುತ್ತಾನೆ. ಅದರ ಮೂಲಕ ದೇಹದಲ್ಲಿಯೂ ನಾನು ಎಂಬ ಭ್ರಾಂತಿಯುಂಟಾಗುವುದು. ಇದರಿಂದ ನಾನು ನನ್ನದು ಎಂಬ ಭ್ರಾಂತಿಯುಂಟಾಗಿ ನಿಜಸ್ವರೂಪಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದೆ ತನ್ನ ದೇಹಾದಿಗಳಿಗೆ ಆಗುವ ಸುಖದುಃಖವೆಲ್ಲವೂ ತನ್ನವೆಂದು ತಿಳಿದು ವಿಹಿತ ಮತ್ತು ನಿಸಿದ್ಧ ಕರ್ಮಾಚರಣೆಯಿಂದ ಸ್ವರ್ಗನರಕಾದಿಗಳನ್ನು ಪಡೆಯುತ್ತಿರುತ್ತಾನೆ. ಇದೇ ಸಂಸಾರವು. ಇದು ಅವಿದ್ಯಾ ದೃಷ್ಟಿ.

ಮುಕ್ತುಷಾಯ: ಈ ಜೀವನು (ಫಲಾವೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದೆ) ಕೇವಲ ಈಶ್ವರಾರ್ಪಣಬುದ್ಧಿಯಿಂದ

ಮಾಡಿದ ವಿಹಿತಕರ್ಮಾಚರಣೆಯಿಂದ ಸಂಸಾರದಲ್ಲಿ ಅಸಾರತ್ವಬುದ್ಧಿಯೂ ಕರ್ಮಫಲದಲ್ಲಿ ಪ್ರಬಲ ವೈರಾಗ್ಯವೂ ಆದರಿಂದ ಗೃಹ ಪುತ್ರ ಕಳತ್ರಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ಜಿಹಾಸೆಯೂ ಉಂಟಾಗಿ ತನ್ನ ದೇಹದಲ್ಲಿಯೂ ಅಭಿಮಾನ ತೋರಿದು ಸದ್ಗುರುವನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿ ಅವನ ಉಪದೇಶ ಪಡೆದು ಶ್ರವಣ ಮನನ ನಿದಿಧ್ಯಾಸನಗಳ ಸಹಾಯದಿಂದ ಪರಬ್ರಹ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ ಹೊಂದಿ ಅಜ್ಞಾನ (ಅವಿದ್ಯೆಯ) ನಿವಾರಣೆಮಾಡಿಕೊಂಡು ಅದರ ಮೂಲಕ ಸಂಸಾರದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆಹೊಂದಿ ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಪಡೆಯುವನು. ಇದೂ ಅವಿದ್ಯಾ ದೃಷ್ಟಿಯೇ.

ಮುಕ್ತಿ: ಮುಕ್ತಿಯು ಜೀವನ್ಮುಕ್ತಿ ಮತ್ತು ವಿದೇಹ ಕೈವಲ್ಯಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. (1) ಜೀವನ್ಮುಕ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಜೀವನಿಗೆ ಬ್ರಹ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವಾದರೂ ಪ್ರಾರಬ್ಧಕರ್ಮ ಮುಗಿಯುವತನಕ ದೇಹವು ಬಿದ್ದು ಹೋಗದೆ ಹಾಗೆಯೇ ಇರುವುದು. ಆಗ ರಾಗದ್ವೇಷ ಅಭಿಮಾನಗಳ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಕೇವಲ ಪ್ರಾರಬ್ಧಕರ್ಮಬಲದಿಂದ ಇವನ ವ್ಯವಹಾರವೆಲ್ಲವೂ ನಡೆಯುವವು. (2) ವಿದೇಹ ಕೈವಲ್ಯದಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವಾದ ಮೇಲೆ ಪ್ರಾರಬ್ಧಕರ್ಮಸಂಬಂಧ ಕಳೆದು ಸ್ಥೂಲ ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಮತ್ತು ಕಾರಣಶರೀರಗಳು ನಾಶವಾಗಿ ಜೀವನು ನಿಜರೂಪದಿಂದಲೇ ಇರುವನು. ಈ ಮೂರು ಶರೀರಗಳೂ ನಾಶವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಪುನಃ ಸಂಸಾರ ಸಂಬಂಧವು ಜೀವನಿಗೆ ಇರುವುದಿಲ್ಲ. ಇವೆಲ್ಲವೂ ಅವಿದ್ಯಾ ಕಾರ್ಯವೇ. "ತಮೇತಮವಿಶಾಖ್ಯಮಾತ್ಮಾನಾತ್ಮನೋ-ರಿತರೆತರಾಧ್ಯಾಸಂ ಪುರಸ್ಕೃತ್ಯ ಸರ್ವಂ ಪ್ರಮಾಣಪ್ರಮೇಯವ್ಯವಹಾರಾಃ ಲೌಕಿಕಾ ವೈದಿಕಾಃಚ ಪವೃತ್ತಾಃ, ಸರ್ವಾಣಿ ಚ ಶಾಸ್ತ್ರಾಣಿ ವಿಧಿಪ್ರತಿಷೇಧಮೋಕ್ಷಪರಾಣಿ" ಅಧ್ಯಾಸಭಾಷ್ಯಮ್ | ಇದೇ ಅದ್ವೈತದರ್ಶನದ ಸಾರ.

ಅಡ್ವೈತವಾದಿನ್ ಅದ್ವೈತವಾದಿನ್ (೨೦) 1. ಬ್ರಹ್ಮಾತ್ಮೈಕ್ಯವಾದಿ. 2. ಬುದ್ಧದೇವ.

ಅಧಿಕರಣ ಅಧಃಕರಣ (೧೦) 1. ತಿರಸ್ಕಾರ. 2. ಕಡಿಮೆ ಮಾಡುವುದು. 3. ಕೆಳಗೆ ಮಾಡುವುದು. ಅಧ: ಕರಣಮ್ - ತು ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) "ಲ್ಯುತ್" (೩-೩-೧೧೪) |

ಅಧಿಕಾಯ ಅಧಃಕಾಯ (೨೦) ಶರೀರದ ಕೆಳಭಾಗ, ಹೊಕ್ಕಳಿನ ಕೆಳಪ್ರದೇಶ. ಅಧ: ಅಧರಂ ಕಾಯಸ್ಯ |

ಅಧಿಕಾರ ಅಧಃಕಾರ (೨೦) 1. ಕಡಿಮೆ ಮಾಡುವುದು. 2. ಕೆಳಗೆ ಮಾಡುವುದು. 3. ತಿರಸ್ಕಾರ. ಅಧ: ಕರಣಮ್ - ತು ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) "ಋತ್" (೩-೩-೧೧೮) |



ಅಭಿಪ್ರಾಯ ಅಧಃಕ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅವಮಾನ, ತಿರಸ್ಕಾರ.

“ಸಹತೇ ನ ಜನೋಪ್ಯಧಾಕ್ರಿಯಾಮ್” ಕಿರಾಂ ೨-೪೭.

ಅಭಿಪ್ರಾಯ ಅಧಃಕ್ರಿಯಾ (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟು.

2. ಕೆಳಮುಖವಾಗಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಬಗ್ಗಿಸಿಡಲ್ಪಟ್ಟು.

ಅಭಿಪ್ರಾಯ ಅಧಃಪುಷ್ಪೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬೆಂಡೇಗಿಡ.

2. ಕಾಡು ಸಬ್ಬಸಿಗಿಡ.

ಅಭಿಪ್ರಾಯ ಅಧಃತಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಳಗೆ ಮಲಗುವುದು,

ಹಾಸಿಗೆಯಿಲ್ಲದೆ ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಮಲಗುವುದು.

ಅಧನ ಅಧನ (ವಿಂ) ಧನವಿಲ್ಲದ, ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. ನಾಸ್ತಿ

ಧನಂ ಯಸ್ಯ. “ಅಧನೋ ಹಿ ಧನಂ ಲಬ್ಧ್ವಾ ತೃಣವನ್ಮನ್ಯತೇ ಜಗತ್”.

“ಅಧನೋಽಯಂ ಧನಂ ಲಬ್ಧ್ವಾ ಮಾತೃಶ್ಚಂದ್ರನಂ ಮಾಂ ಸ್ಮರೇತ್. ಇತಿ

ಕಾರುಣಿಕೋ ನೂನಂ ಧನಂ ಮೇ ಭೂರಿನಾದದಾತ್” ಭಾಗಂ ೧೦-೮೧-೨೦.

ಅಧನ ಅಧನ (ಪುಂ) 1. ದೀನ, ನಿರ್ಗತಿಕ. (ವಿಂ)

2. ಮೇಲೆ ಪಡೆಯದ, ಪುಣ್ಯವಾಡದ. “ಹಂತ ಧಿಙ್

ಮಾಮಧನ್ಯಮ್” ತಂ ರಾಂ ೧-೪೨.

ಅಧಮ ಅಧಮ (ವಿಂ) ನಿಂದ್ಯ, ಬಹಳ ಕೆಳದರ್ಜೆಯ,

ಕೆಟ್ಟ. ಅವತ್ಯಸ್ಮಾದಾತ್ಮಾನಮ್ — ಅವ “ಅಮಃ” (ತಂ ೪-೪೪).

ನಿಪಾಂ. “ಯಾಚ್ಛಾ ಮೋಘಾ ವರಮಧಿಗುಣೇ ನಾಥಮೇ ಲಬ್ಧಕಾಮಾ”

ಮೇಘಂ ೧-೬.

ಅಧಮಭೂತಕ ಅಧಮಭೂತಕ (ಪುಂ) ಅಳು, ಚಾಕರ,

ಹೊರೆಯುವ ಕೂಲಿಯವನು. ಅಧಮಶ್ಚಾಸೀ ಭೂತಕಶ್ಚ.

“ಉತ್ತಮಸ್ತ್ವಾಯುಧೋಪೇತಃ ಮಧ್ಯಮಸ್ತು ಕೃಷಿವಲಃ. ಅಧಮೋ

ಭಾರವಾಹಿ ಸ್ಯಾದಿತ್ಯೇವಂ ತ್ರಿವಿಧೋ ಭೂತಃ” ಎಂದು ಭೃತ್ಯನು

ಮೂರು ಬಗೆ.

ಅಧಮಣಿ ಅಧಮಣಿ (ಪುಂ) ಸಾಲಗಾರ, ಸಾಲ ತೆಗೆದ

ವನು. ಅಧಮಂ ಋಣಂ ಯಸ್ಯ. “ಉತ್ತಮಣಿಧಮಣಿೌ ದ್ವೌ ಪ್ರಯೋಕ್ತೃ-

ಗ್ರಾಹಕೌ ಕ್ರಮಾತ್” ಅಮಂ.

ಅಧಮಣಿಕ ಅಧಮಣಿಕ (ಪುಂ) ಸಾಲಗಾರ, ಸಾಲ

ತೆಗೆದವನು.

ಅಧಮಣಿನ್ ಅಧಮಣಿನ್ (ಪುಂ) ಸಾಲಗಾರ, ಸಾಲ

ತೆಗೆದವನು.

ಅಧಮಾಙ್ಗ ಅಧಮಾಙ್ಗ (ನಂ) ಚರಣ, ಕಾಲು. ಅಧಮಂ

ಚ ತತ್ ಅಙ್ಗಂ ಚ.

ಅಧಮಾರ್ಥ ಅಧಮಾರ್ಥ (ನಂ) ಹೊಕ್ಕಳಿನ ಕೆಳಭಾಗ,

ದೇಹದ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಧಭಾಗ. ಅಧಮಂ ಚ ತತ್ ಅರ್ಥಂ ಚ.

ಅಧಮಾರ್ಥ ಅಧಮಾರ್ಥ (ವಿಂ) ದೇಹದ ಕೆಳಭಾಗ

ದಲ್ಲುಂಟಾದ, ದೇಹದ ಕೆಳಭಾಗಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.

ಅಧಮಾರ್ಥಂ ಭವಮ್ “ಯತ್” (೪-೩-೪).

ಅಧರ ಅಧರ (ಪುಂ) 1. ಕೆಳತುಟೆ. ನ ಧ್ರಿಯತೇ — ಧೃಙ್

(ಅವಸ್ಥಾನೇ) “ಘಃ” (೩-೩-೧೧೮). “ಅಧರೋಽವಿಭಾಗ-

ರೇಖಿಕಾ ಸುದೃಶೋಽಸ್ಯಾ ವದನೇಽಸ್ತಿ ವಾನವಾ” ಚಂ ಭಾಂ ೨-೩೯.

(ವಿಂ) 2. ಹೀನವಾದ, ನೀಚವಾದ. 3. ಕೆಳಭಾಗದ.

“ಅಸಿತಮಧರವಾಸೋ ವಿಭ್ರತಃ ಸೀರಪಾಣಿಃ” ಕಿರಾಂ

೪-೩೮. “ಅಧರೋಽನುಧ್ವಂಹಿನೋಽಠ” ಹೇಮಂ. 4. ಹಿಂದಿನ,

ಮೊದಲಿನ.

ಅಧರಕಾಯ ಅಧರಕಾಯ (ಪುಂ) ದೇಹದ ಕೆಳಭಾಗ,

ಹೊಕ್ಕಳಿನ ಕೆಳಭಾಗ. ಅಧರಂ ಕಾಯಸ್ಯ.

ಅಧರತಸ್ ಅಧರತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಕೆಳಭಾಗ. 2. ಕೆಳ

ಭಾಗದಿಂದ. 3. ಕೆಳಭಾಗದಲ್ಲಿ. ಅಧರ “ತಸಿಃ”

(ವಾಂ ೪-೪-೪೪).

ಅಧರಪಾನ ಅಧರಪಾನ (ನಂ) ಚುಂಬನ, ಅಧರಾಮೃತ

ವನ್ನು ಕುಡಿಯುವುದು.

ಅಧರಮಧು ಅಧರಮಧು (ನಂ) ಅಧರಾಮೃತ, ತುಟೆಯ

ರಸ.

ಅಧರಾಚ್ ಅಧರಾಚ್ (ವಿಂ) ಕೆಳಗಡೆ ಹೋಗುವ.

ಅಧರಾಂ ದಕ್ಷಿಣಾಂ ದಿಶಮಶ್ಚತಿ — ಅಶ್ಚು (ಗತೌ) “ಕಿವನ್”

(೩-೨-೪೯). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಜಿಪ್” (೪-೧-೬). ಅಧರಾಚೀ

ಅಧರಾಚೀ.

ಅಧರಾಚೀನ ಅಧರಾಚೀನ (ವಿಂ) ಕೆಳಗಡೆ ಇರುವ,

ಕೆಳಭಾಗದಲ್ಲುಂಟಾದ. ಅಧರಾಚಿ ಭವಂ “ಃ”

(೪-೪-೮).

ಅಧರಾತ್ ಅಧರಾತ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಕೆಳಭಾಗ. 2. ಹಿಂದಿನ

ಕಾಲ. 3. ಕೆಳಭಾಗದಿಂದ. 4. ಹಿಂದಿನಕಾಲ

ದಿಂದ. 5. ಕೆಳಭಾಗದಲ್ಲಿ. 6. ಹಿಂದಿನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ.

ಅಧರ “ಆತಿಃ” (೪-೩-೩೪).

ಅಧರೀಕೃತ ಅಧರೀಕೃತ (ವಿಂ) 1. ಮಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು,

ಕೇಳುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಅವಮಾನ

ಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

ಅಧರೇಣ ಅಧರೇಣ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಕೆಳಭಾಗ. 2. ಕೆಳಭಾಗ

ದಿಂದ. 3. ಕೆಳಭಾಗದಲ್ಲಿ. ಅಧರ “ಏನ್” (೪-೩-೩೪).

ಅಧರೇಣ್ ಅಧರೇಣ್ (ಅವ್ಯಂ) ಹಿಂದಿನ ದಿನದಲ್ಲಿ.

ಅಧರ “ಏಣ್” (ವಾಂ ೪-೩-೨೨).

ಅಧರೋತ್ತರ ಅಧರೋತ್ತರ (ನಂ) 1. ಕೇಳುಮೇಲು.

2. ಕೆಳಭಾಗ ಮತ್ತು ಮೇಲುಭಾಗ. 3. ನೀಚವಾದ

ಉತ್ತರ. ಅಧರಂ ಚ ಉತ್ತರಂ ಚ. ಏಕವಚನಾಃ (೨-೪-೧೨).

“ಶ್ರುತಂ ಭವದ್ವಿರಧರೋತ್ತರಮ್” ಶಾಕುಂ ೪.



**ಅಧರ್ಮ ಅಧರ್ಮ** (ಪುಂ) 1. ಪಾಪ. 2. ಪಾಪಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ಅಕಾರ್ಯ, ನಿಷಿದ್ಧಕಾರ್ಯಚರಣೆ. ಧಿಯತೇಜೇನ - ಧೃ (ಧಾರಣೆ) "ಮನ್" (ಽಽಂ ೧-೧೩೭) । ವಿರೋಧೇ ನಂ ತಂ । "ಅಧರ್ಮನಿಘನೇರಧುನಾ ಧರ್ಮಸೇತುವಿಭೇದಕೈಃ" ಯಾದಂ ೧-೩೯ । ಅಧರ್ಮಗಳು ಮತ್ತು ಅವುಗಳಿಂದ ಮನುಷ್ಯನಿಗೊದಗುವ ಶಿಕ್ಷೆ : ಪತಿತನಿಂದ ದಾನ ತೆಗೆದುಕೊಂಡರೆ "ಅಧೀತ್ಯ ಚತುರೋ ವೇದಾನ್ ದ್ವಿಜೋ ಮೋಹ-ಸಮನ್ವಿತಃ । ಪತಿತಾತ್ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಯಾಥ ಕ್ಷರಯೋನೌ ಪ್ರಜಾಯತೇ । ಕ್ಷರೋ ಜೀವತಿ ವರ್ಷಾಣಿ ದಶ ಪञ್ಚ ಚ ಭಾರತ । ಕ್ಷರೋ ಮೃತೋ ಬಲಿವದ್ಃ ಸಪ್ತವರ್ಷಾಣಿ ಜೀವತಿ । ಬಲಿವದೋ ಮೃತಶ್ಚಾಪಿ ಜಾಯೇತ ಬ್ರಹ್ಮರಾಕ್ಷಸಃ । ಬ್ರಹ್ಮರಾಕ್ಷಶ್ಚ ಮಾಸಾಂಸ್ತ್ರೀನ್ ತತೋ ಜಾಯೇತ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಃ" ॥ ಗುರುಪತ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಅಪರಾಧಮಾಡಿದ ಶಿಷ್ಯನಿಗೆ "ಮನಸಾಪಿ ಗುರೋರ್ಮಯಿ ಯಃ ಶಿಷ್ಯೋ ಯಾತಿ ಪಾಪಕೃತ್ । ಸ ತ್ವಾನ್ ಪ್ರತಿ ಸಂಸಾರಾನಧರ್ಮೇಹ ಚೇತಸಾ । ಶ್ವಯೋನೌ ತು ಸ ಸಂಭೂತಸ್ತ್ರೀಣಿ ವರ್ಷಾಣಿ ಜೀವತಿ । ತತ್ರಾಪಿ ನಿಧನಂ ಪ್ರಾಪ್ತಃ ಕೃಮಿಯೋನೌ ಪ್ರಜಾಯತೇ । ಕೃಮಿಭಾವಮನುಪ್ರಾಪ್ತೋ ವರ್ಷಮೇಕಂ ತು ಜೀವತಿ । ತತಸ್ತು ನಿಧನಂ ಪ್ರಾಪ್ತೋ ಬ್ರಹ್ಮಯೋನೌ ಪ್ರಜಾಯತೇ ॥" ವಿನಾಹ, ಯಜ್ಞ ಮತ್ತು ದಾನ ಇವುಗಳಿಗೆ ವಿಘ್ನವುಂಟುಮಾಡುವವನಿಗೆ "ಉಪಸ್ಥಿತೇ ವಿವಾಹೇ ತು ಯಜ್ಞೇ ದಾನೇಽಥವಾ ವಿಭೋ । ಮೋಹಾತ್ಕರೋತಿ ಯೋ ವಿಘ್ನಂ ಸ ಮೃತೋ ಜಾಯತೇ ಕೃಮಿಃ । ಕೃಮಿರ್ಜೀವತಿ ವರ್ಷಾಣಿ ದಶ ಪञ್ಚ ಚ ಭಾರತ । ಅಧರ್ಮಸ್ಯ ಕ್ಷಯಂ ಕೃತ್ವಾ ತತೋ ಜಾಯೇತ ಮಾನವಃ ॥" ಇತ್ಯಾದಿ ಇತ್ಯಾದಿ. ಹರಿವಂ । (ನಂ) 3. ಪರಬ್ರಹ್ಮ, ಪರಮಾತ್ಮ. ಧರ್ಮೋ ಗುಣಃ ಸ ನಾಸ್ತಿ ಯಸ್ಯ । (ನಿರ್ಗುಣ, ಗುಣರಹಿತ.)

**ಅಧರ್ಮಚಾರಿನ್ ಅಧರ್ಮಚಾರಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಧರ್ಮ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡದ, ಪಾಪಕೃತ್ಯಗಳನ್ನು ನಡೆಸುವ. ನ ಧರ್ಮಂ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೭೮) ।

**ಅಧರ್ಮಮಯ ಅಧರ್ಮಮಯ** (ವಿಂ) ಪಾಪಭೂಯಿಷ್ಠ, ಪಾಪಮಯವಾದ. ಅಧರ್ಮೇಣ ಪ್ರಚುರಃ "ಮಯ" (೪-೩-೧೪೩) ।

**ಅಧರ್ಮಾತ್ಮನ್ ಅಧರ್ಮಾತ್ಮನ್** (ಪುಂ) ಪಾಪಾತ್ಮ, ಪಾಪ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನೆಸಗುವವನು. ಅಧರ್ಮಪ್ರಧಾನಃ ಆತ್ಮಾ ಯಸ್ಯ ।

**ಅಧರ್ಮಿನ್ ಅಧರ್ಮಿನ್** (ವಿಂ) ಪಾಪವುಳ್ಳ, ಪಾಪಾತ್ಮ, ಪಾತಕಿಯಾದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) ।  
ಅಧರ್ಮಿಣಿ - ಣೀ.

**ಅಧರ್ಮಿಣಿ ಅಧರ್ಮಿಣಿ** (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ಪಾಪದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಅತಿಶಯೇನ ಅಧರ್ಮಿ "ಇಠನ್" (೫-೩-೫೫) ।

**ಅಧರ್ಮ್ಯ ಅಧರ್ಮ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಧರ್ಮಕಾರ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಪಾಪಕಾರ್ಯವುಳ್ಳ. ಧರ್ಮಾದಿನಪೇತೋ ಧರ್ಮ್ಯಃ "ಯತ್" (೪-೪-೯೨) । ಸ ನ ಭವತಿ । 2. ನ್ಯಾಯವಲ್ಲದ, ಧರ್ಮಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಾದ.

**ಅಧವಾ ಅಧವಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಧವೆ, ವಿತಂತ್ರು. ನಾಸ್ತಿ ಧವಃ ಪತಿಯಸ್ಯಾಃ ।

**ಅಧಶ್ಚರ ಅಧಶ್ಚರ** (ಪುಂ) 1. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ. ಅಧಃ ಕ್ಷನಿತ್ವಾ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಛಃ" (೩-೨-೧೬) । (ವಿಂ) 2. ಕೆಳಭಾಗದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. ಅಧಃ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಛಃ" (೩-೨-೧೬) ।

**ಅಧಶ್ಚೋರ ಅಧಶ್ಚೋರ** (ಪುಂ) ಕಳ್ಳ, ಕನ್ನವನ್ನು ಕೊರೆದು ಕಳುವವನು. ಅಧಃ ಕ್ಷನಿತ್ವಾ ಚೋರಯತಿ - ಚುರ (ಸ್ತೇಯೇ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಅಧಸ್ ಅಧಸ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಕೆಳಗೆ, ಕೆಳಭಾಗದಲ್ಲಿ. 2. ಪಾತಾಳಲೋಕ. ಅಧರ "ಅಸಿಃ" ಅಥ್ ಆದೇಶಶ್ಚ (೫-೩-೩೯) । "ಅಧಸ್ತಥೋರ್ಧ್ವಂ ಪುರತೋಽಥ ಪೃಷ್ಠತಃ" ಕುಮಾಂ ೧೪-೨೧ ।

**ಅಧಸ್ತನ ಅಧಸ್ತನ** (ವಿಂ) ಕೆಳಗಿರುವ, ಕೆಳಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ. ಅಧೋ ಭವಃ "ಛಃ" (೪-೩-೨೩) ।

**ಅಧಸ್ತರಾಮ್ ಅಧಸ್ತರಾಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಬಹಳ ಕೆಳಗೆ. ಅತಿಶಯೇನ ಅಧಃ "ತರಪ್" (೫-೩-೫೭) । "ಆಮುಃ" (೫-೪-೧೧) ।

**ಅಧಸ್ತಾತ್ ಅಧಸ್ತಾತ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಕೆಳಭಾಗ. 2. ಕೆಳಭಾಗದಿಂದ. 3. ಕೆಳಭಾಗದಲ್ಲಿ. ಅಧರ "ಅಸ್ತಾತಿಃ" (೫-೪-೪೦) । ಅಥ್ ಆದೇಶಃ (೫-೩-೩೯) ।

**ಅಧಾಮಾಗ್ವ ಅಧಾಮಾಗ್ವ** (ಪುಂ) ಉತ್ತರಣೆಗಿಡ.

**ಅಧಾರ್ಮಿಕ ಅಧಾರ್ಮಿಕ** (ವಿಂ) ಪಾಪಾತ್ಮ, ಪಾಪ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವ. ಧರ್ಮೇಣ ಚರತಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೮) । ನಂ ತಂ ।

**ಅಧಿ ಅಧಿ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಮೇಲೆ. [ಇದು ಯಾವುದಾದರೊಂದು ಧಾತುವಿನ ಅಧವಾ ಪದದ ಹಿಂದೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವುದು.] ಅಧಿ + ಕೃಙ್ ಅಧಿಕಾರಃ, ಅಧಿ + ಣಾ ಅಧಿಷ್ಠಾನಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ. 2. ಮೇಲುಭಾಗ. "ಅಧಿವಿಠಪಿ ಸಲೀಲಮಗ್ರಪುಷ್ಪಗ್ರಹಣಪದೇನ ಚಿರಂ ವिलम्ಬ್ಯ ಕಾಚಿತ್" ಮಾಘಂ ೭-೩೫ । "ಅಧಿಜಾನು ಬಾಹುಮುಧಾಯ" ಮಾಘಂ ೯-೫೪ । 3. ಅತಿಶಯವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. "ಏತस्ಮಿನ್ನಧಿಕ-ಪಯಃಶ್ರಿಯಂ ವಹತ್ಯಃ ಸಂಕ್ಲೋಭಂ ಪವನಭುವಾ ಜವೇನ ನೇತಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೫೯ । 4. ಐಶ್ವರ್ಯ. ಅಧಿಪತಿಃ । 5. ಅಧಿಕಾರ.



“ಅಧಿ ಸ್ಯಾದಧಿಕಾರೇ चापीश्वरे च निगद्यते” मेदि०।  
6. ಹೀನ, ನಿಕ್ಕಷ್ಟ, ಕೇಳು. “ಅಧಿ हरौ सुराः”।  
7. ಪ್ರಾಧಾನ್ಯ, ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ. ಅಧಿದೇವತಾ, ಅಧಿರಾಜಃ  
ಇತ್ಯಾದಿ. 8. ಅಂಕೆ, ಹತೋಟಿ. ಅಧೀನಃ। 9. ಸ್ಮರಣ,  
ನೆನಪು. ಮಾತುರಧ್ಯೇತಿ। 10. ವಿಷಯವಾಗಿ, ಸಂಬಂಧ  
ವಾಗಿ. ಅಧಿಕೃಷ್ಣಮ್, ಅಧಿರಾಮಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ. 11. ಅಧ್ಯ  
ಯನ. ಉಪಾಧ್ಯಾಯಾದಧೀತಿ। [ಈ ಮೇಲೆ ಹೇಳಿದ ಎಲ್ಲಾ  
ಅರ್ಥಗಳಿಗೂ ಈ “ಅಧಿ” ಎಂಬುದು ದ್ಯೋತಕ  
ವಾಗಿರುವುದು.]

**ಅಧಿಕ ಅಧಿಕ (ವಿಂ)** 1. ಹೆಚ್ಚಾದ. “इयमधिकमनोज्ञा  
बलकेनापि” शाकु० १-१७। 2. ದೊಡ್ಡದಾದ,  
ಹಿರಿದಾದ. “धनबन्धुवयःक्रियादिमात्रैरधिकेष्वप्यचम-  
क्रिया विहत्यै” याद० १५-६७। 3. ಹೇರಳವಾದ,  
ಧಾರಾಳವಾದ. “श्वासः प्रमाणाधिकः” शाकु० १-२६।  
4. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಮಿಗಿಲಾದ, ಉನ್ನತವಾದ. “सेना-  
ज्ञातेभ्योऽधिका (बुद्धिः)” मुद्रा० १-२५। 5. ಅಸಾ  
ಧಾರಣ, ವಿಶೇಷ. “इज्याध्ययनदानानि वैश्यस्य  
अत्रियस्य च। प्रतिग्रहोऽधिको विप्रे याजनाध्यापने तथा”  
याज्ञ० ५-११८। 6. ಮುಂದಿನ, ಅನಂತರದ (ಕಾಲ).  
“वैश्यस्य अधिके ततः” मनु० २-६५। (अव्य०)  
7. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ, ಮಿಗಿಲಾಗಿ. “स राज्यं गुह्या दत्तं  
प्रतिपद्याधिकं वभौ” रघु० ४-१।

**ಅಧಿಕತರ ಅಧಿಕತರ (ವಿಂ)** 1. ಶ್ರೇಷ್ಠ, ಬಹಳ  
ಉತ್ಕೃಷ್ಟ. 2. ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಮಿಗಿಲಾದವನೊಬ್ಬನು,  
ಎರಡರಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚಾದ ಒಂದು. ಅನಯೋರಮತಿಶಯೇನಾ-  
ಧಿಕಃ “तरप्” (५-३-५७)। “क्लेशोऽधिकतरस्तेषाम्”  
गीता १२-५।

**ಅಧಿಕತಮ ಅಧಿಕತಮ (ವಿಂ)** 1. ಶ್ರೇಷ್ಠ. 2. ಬಹು  
ಮಂದಿಗಳಲ್ಲಿ ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದವನೊಬ್ಬನು. ಅಯಮೇವಾಮತಿ-  
ಶಯೇನಾಧಿಕಃ “तमप्” (५-३-५५)।

**ಅಧಿಕಮಾಸ ಅಧಿಕಮಾಸ (ಪುಂ)** ಮಲಮಾಸ. (ಶೂನ್ಯ  
ಮಾಸ) [ಸಂಕ್ರಮಣವಿಲ್ಲದ ಮಾಸವು ಮಲಮಾಸ.  
ಚೈತ್ರಾದಿಮಾಸಗಳಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನು ಯಾವ ಮುಂದಿನ  
ರಾಶಿಯನ್ನೂ ಪ್ರವೇಶಿಸದೆ ಇದ್ದಲ್ಲಿಯೇ ಇದ್ದರೆ  
ಅದು ಸಂಕ್ರಾಂತಿವರ್ಜಿತಮಾಸವು (ಮಲಮಾಸವು).  
ಈ ಮಲಮಾಸವು ಯಾವ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೂ ಪ್ರಶಸ್ತವಲ್ಲ.]  
“पक्षद्वयेऽपि संक्रान्तिर्यदि न स्यात् सितेऽसिते। तदा  
तन्मासि विहितमुत्तरे मासि कारयेत्”।

**ಅಧಿಕರಣ ಅಧಿಕರಣ (ನಂ)** 1. ನೇಮಕ. 2. ಸಂಬಂಧ.  
ಅಧಿಕೃತೇಜ್ಞೇನ — ಅಧಿ+ಙ್ ಕೃ (ಕರಣ) ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್”  
(३-३-११७)। “रामाधिकरणाः कथाः” रामा०।  
3. ಸ್ಥಾನ, ಜಾಗ. 4. ಆಧಾರ, ಆಶ್ರಯ. “तत्पुरुषः  
समानाधिकरणः कर्मधारयः” पा० सू० (१-२-४२)।  
“घृताधिकरणं पात्रम्”। “ज्ञानाधिकरणम् आत्मा”।  
5. ಗ್ರಂಥಭಾಗ, ಅಧ್ಯಾಯ. 6. ನ್ಯಾಯಸ್ಥಾನ.  
7. ದ್ರವ್ಯ. “विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि”  
पा० सू० (२-४-१३)। अद्रव्यवाचिनाम् सि० कौ०।  
8. (ಮೀಮಾಂಸಾಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಐದು ಅಂಗಗಳಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ಒಂದು ವಾಕ್ಯ ಸಮುದಾಯ. ಅಧಿಕರಣಾಂಗ  
ಗಳು: ವಿಷಯ, ವಿಶಯ (ಸಂಶಯ), ಪೂರ್ವ  
ಪಕ್ಷ, ಉತ್ತರ ಮತ್ತು ನಿರ್ಣಯಗಳೆಂದು ಐದು.  
9. (ನ್ಯಾಯಕರಣಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಕರ್ತೃ ಕರ್ಮಗಳ ಮೂಲಕ  
ಕ್ರಿಯೆಗೆ ಇರುವ ಆಧಾರ. “आधारोऽधिकरणम्”  
पा० सू० (१-४-४५)।

**ಅಧಿಕರಣಿಕ ಅಧಿಕರಣಿಕ (ಪುಂ)** ನ್ಯಾಯಾಧಿಪತಿ.  
ಅಧಿಕರಣಮಾಶ್ರಯತಯಾಸ್ತಸ್ಯ “ठन्” (५-२-११५)।

**ಅಧಿಕಾರಿ ಅಧಿಕಾರಿ (ವಿಂ)** ಹೆಚ್ಚು ಸಂಪತ್ತುಳ್ಳವನು.  
ಅಧಿಕಾ ऋद्विरस्य। “ऋद्धिमन्तमधिकारिहृत्तरः” रघु०  
१९-५।

**ಅಧಿಕರ್ಮನ್ ಅಧಿಕರ್ಮನ್ (ಪುಂ)** 1. ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕ,  
ಮೇಲ್ವಿಚಾರಣೆಯಲ್ಲಿ ನೇಮಕವಾದವನು. (ನಂ) 2.  
ಹೆಚ್ಚು ಕೆಲಸ, ಅಧಿಕಕಾರ್ಯ. ಅಧಿಕಂ ಕರ್ಮ।  
(ವಿಂ) 3. ಹೆಚ್ಚು ಕಾರ್ಯವುಳ್ಳವನು.

**ಅಧಿಕರ್ಮಕರ ಅಧಿಕರ್ಮಕರ (ವಿಂ)** 1. ಹೆಚ್ಚು ಕೆಲಸ  
ಮಾಡುವ. 2. ಉಸ್ತುವಾರಿ ನೋಡುವ. ಅಧಿಕಂ  
ಕರ್ಮ ಕರೋತಿ — ಙ್ ಕೃ (ಕರಣ) “टः” (३-२-२०)।

**ಅಧಿಕರ್ಮಕೃತ್ ಅಧಿಕರ್ಮಕೃತ್ (ವಿಂ)** 1. ಹೆಚ್ಚು  
ಕೆಲಸಮಾಡುವ. 2. ಕೆಲಸದ ಉಸ್ತುವಾರಿ ನೋಡುವ.

**ಅಧಿಕಾಜ್ಞ ಅಧಿಕಾಂಗ (ನಂ)** 1. ನಡುಕಟ್ಟು, ನಡುವಿನ  
ಪಟ್ಟಿ. ಅಜ್ಞಾದಧಿಕಮ್। ಮಯೂರಂ। (ವಿಂ) 2. ಅಧಿಕ  
ವಾದ ಅಂಗವುಳ್ಳ, ಅಳತೆಮೀರಿದದೇಹವುಳ್ಳ. ಅಧಿಕ-  
मङ्गं यस्य।

**ಅಧಿಕಾಮ ಅಧಿಕಾಮ (ಪುಂ)** ಬಲವಾದ ಆಸೆ, ಹೆಚ್ಚು  
ಆಸೆ.

**ಅಧಿಕಾರ ಅಧಿಕಾರ (ಪುಂ)** 1. ಮೇಲ್ವಿಚಾರಣೆ, ಪಾಠ  
ಪಠ್ಯ, ಯಾಜಮಾನ್ಯ. ಅಧಿ+ಙ್ ಕೃ (ಕರಣ) “घञ्”



(೩-೩-೧೮)। "ಅಧಿಕಾರವಿಲಂಬಿತಾಪವರ್ಗಸ್ಥಿರಸಜ್ಜಾದಪ-  
ಕೌತುಕಸ್ತ್ರಿವರ್ಗಂ" ಯಾದಂ ೧೫-೭। 2. ಕೆಲಸ, ಕಾರ್ಯ,  
ಅವಶ್ಯಕತೆ. "ತೇನ ಶಿಲ್ಪಾಧಿಕಾರೇ ಯೋಗ್ಯಂ ದಾರಿಕೇತಿ  
ಭಗಿನ್ಯಾ" ದೇವ್ಯಾ ಉಪಾಯನಂ ಪ್ರೇಷಿತಾ" ಮಾಲಂ ೧।  
"ಸ್ವಾಧಿಕಾರಾತ್ಪ್ರಮತ್ತಃ" ಮೇಘಂ ೧-೧। 3. ಪ್ರಭುತ್ವ,  
ರಾಜತ್ವ, ಅಧಿಪತ್ಯ, ಆಡಳಿತ. "ಕ್ಷಣಾದಾಪುಷ್ಪಾನ್  
ಸ್ವಾಧಿಕಾರಭೂಮೌ ವರ್ತಿಷ್ಯತೇ" ಶಾಕುಂ ೭। 4. ಸ್ವಾಮಿತ್ವ,  
ಒಡೆತನ. "ಅಧಿಕಾರಃ ಫಲೇ ಸ್ವಾಮ್ಯಮಧಿಕಾರಿ ಚ ತತ್ಪ್ರಭುಃ"  
ಸಾಂ ದಂ ೬-೪೩। 5. ಯೋಗ್ಯತೆ, ಅರ್ಹತೆ, ಕೆಲಸ  
ವನ್ನು ಮಾಡುವ ಮತ್ತು ಅದರ ಫಲವನ್ನು ಅನುಭವಿ  
ಸುವ ಅರ್ಹತೆ. [ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ಯಜನ, ಯಾಜನ;  
ಅಧ್ಯಯನ, ಅಧ್ಯಾಪನ; ದಾನ, ಪ್ರತಿಗ್ರಹ. ಇವು  
ಗಳಲ್ಲಿ ಅಧಿಕಾರ (ಅರ್ಹತೆ)ವುಂಟು. ಕ್ಷತ್ರಿಯ  
ಮತ್ತು ವೈಶ್ಯನಿಗೆ ಯಜನ, ಅಧ್ಯಯನ ಮತ್ತು ದಾನ  
ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಅಧಿಕಾರವುಂಟು.] ಇತ್ಯಾದಿ.  
6. ಮಾನ್ಯತೆ, ಹಿರಿಮೆ. "ಹೃತಾಧಿಕಾರಾಂ ಮಲಿನಾಂ ಪಿಂಡ-  
ಮಾತ್ರೋಪಜೀವಿನೀಮ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೭೦। 7. ವಿಶೇಷಾಧಿಕಾರ,  
ಸ್ವಾಮ್ಯ, ಹಕ್ಕು. 8. ಪ್ರಯತ್ನ, ಪ್ರಯಾಸ. "ಕರ್ಮಣ್ಯ-  
ವಾಧಿಕಾರಸ್ತೇ ಮಾ ಫಲೇಷು ಕದಾಚನ" ಗೀತಾ ೨-೪೭। 9. ಗಣನೆ,  
ಎಣಿಕೆ. "ಸಂಸತ್ಸು ಜಾತೇ ಪುರುಷಾಧಿಕಾರೇ ನ ಪೂರಣಿ ತಂ  
ಸಮುಪೇತಿ ಸಂಖ್ಯಾ" ಕಿರಾಂ ೩-೫೧। 10. ಸ್ಥಾನ, ಪದವಿ.  
(ಧರ್ಮನಿರ್ಣಯ ನೋದಲಾದುವುಗಳ ತೀರ್ಮಾನ  
ಪೀಠ) "ನಿರ್ಣಯಾಧಿಕಾರೇ ಬ್ರವೀಮಿ" ಮಾಲಂ ೧। 11. ಪ್ರಕ  
ರಣ, ಸಂದರ್ಭ. ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತಾಧಿಕಾರಃ। 12. ವ್ಯಾಕರಣ  
ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ ಆರು ವಿಧ ಸೂತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು  
ವಿಧ, ಮುಂದಿನ ಅನೇಕ ವಿಧಿಸೂತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಅನುವೃತ್ತ  
ವಾಗಿ ತನ್ನ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಸೂತ್ರ. ಉದಾಃ  
"ಧಾತೋಃ" (೩-೧-೧೧)। ಆತೃತೀಯಸಮಾಪ್ತೇರಧಿಕಾರೋಪ್ಯಮ್।  
"ಕೃತ್ಯಾಃ" (೩-೧-೧೫)। ಅಧಿಕಾರೋಪ್ಯಮ್ ಷ್ವುಲಃ ಪ್ರಾಕ್  
ಸಿಂ ಕೌಂ। ಇತ್ಯಾದಿ. ಆರು ವಿಧ ಸೂತ್ರಗಳುಃ  
"ಸಂಜ್ಞಾ ಚ ಪರಿಭಾಷಾ ಚ ವಿಧಿನಿಯಮ್ ಏವ ಚ। ಅತಿರೇಷೋಽ-  
ಧಿಕಾರಶ್ಚ ಷಡ್ವಿಧಂ ಸೂತ್ರಮೀರಿತಮ್"।

ಅಧಿಕಾರವತ್ ಅಧಿಕಾರವತ್ (ವಿಂ) ಉನ್ನತೋದ್ಯೋಗಿ,  
ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕ. "ನ ನಿಷ್ಪ್ರಯೋಜನಮಧಿಕಾರವಂತಃ ಪ್ರಭುಃ-  
ರಾಹುಂತೇ" ಮುद्रಾಂ ೩।

ಅಧಿಕಾರವಿಧಿ ಅಧಿಕಾರವಿಧಿ (ಪುಂ) ವಿಹಿತಕಾರ್ಯ  
ಗಳನ್ನು ಮಾಡಲು ಅರ್ಹತೆಯ ನಿರ್ಣಯ, ಯೋಗ್ಯ  
ತಾನುಸಾರ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಿರ್ಣಯಿಸುವುದು.  
"ಜ್ಯೋತಿಷ್ಠೋಮೇನ ಸ್ವರ್ಗಕಾಮೋ ಯಜೇತ" ಇಲ್ಲಿ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಠೋಮೇ

ಯಾಗದ ಫಲವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವವನು ಸ್ವರ್ಗವನ್ನು  
ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನಾದ್ದರಿಂದ ಅವನೇ ಈ ಯಾಗವನ್ನು  
ಮಾಡಬೇಕೆಂದು ವಿಧಿ. "ರಾಜಾ ರಾಜಸೂಯೇನ ಯಜೇತ"  
ಇಲ್ಲಿ ರಾಜಸೂಯಯಾಗದ ಫಲವನ್ನು ಅನುಭವಿಸು  
ವವನು ರಾಜನಾದ್ದರಿಂದ ರಾಜಸೂಯವನ್ನು ರಾಜನೇ  
ಮಾಡಬೇಕೆಂದು ವಿಧಿ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಅಧಿಕಾರಿನ್ ಅಧಿಕಾರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಉದ್ಯೋಗದಲ್ಲಿರು  
ವವನು, ಉನ್ನತೋದ್ಯೋಗಿ. 2. ಯಜಮಾನ.  
ಅಧಿಕಾರ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫)। (ವಿಂ) 3. ಅಧಿ  
ಕಾರವುಳ್ಳ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಅಧಿಕಾರಿಣಿ-ಕಾರಿಣೀ. "ಕೃತಾತ್ರ  
ದೇವಿ ವಚನಾಧಿಕಾರಿಣಿ" ನೇಷಂ। 4. ಯೋಗ್ಯತೆಯುಳ್ಳ,  
ಅರ್ಹತೆಯುಳ್ಳ. "ತಪಸ್ಯನಾಧಿಕಾರಿತ್ವಾತ್ ಪ್ರಜಾಢಾಂ  
ತಮಘಾವಹಮ್" ರಘುಂ ೧೫-೫೧। 5. ಒಡೆಯ, ಸ್ವಂತ  
ಗಾರ. 6. ಅರ್ಹ, ಶಕ್ತ. 7. ಹಕ್ಕುದಾರ,  
ವಾರಸುದಾರ.

ಅಧಿಕಾರಿತಾ ಅಧಿಕಾರಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಧಿಕಾರ,  
ಪ್ರಭುತ್ವ. 2. ಒಡೆತನ. 3. ಹಕ್ಕು, ವಾರಸು.  
4. ಅರ್ಹತೆ, ಯೋಗ್ಯತೆ.

ಅಧಿಕೃಚ್ಛ ಅಧಿಕೃಚ್ಛ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ತಿಂಗಳು  
ಕಾಲ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಬಹಳ ಕಷ್ಟವಾದ ವ್ರತ.  
(ನಂ) 2. ಬಹಳ ಕಷ್ಟ. (ವಿಂ) 3. ಬಹಳ ಕಷ್ಟ  
ವಾದ.

ಅಧಿಕೃತ ಅಧಿಕೃತ (ಪುಂ) 1. ಆದಾಯ ಮತ್ತು ವೆಚ್ಚ  
ವನ್ನು ನೋಡಿಕೊಳ್ಳಲು ನೇಮಿಸಿರುವ ಅಧಿಕಾರಿ,  
ಅಧ್ಯಕ್ಷ, ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕ. 2. ನಿಯಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಅಧಿ+ಙ್ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಸಂಭಾವನಾ  
ಹ್ಯಧಿಕೃತಸ್ಯ ತನೋತಿ ತೇಜಃ" ಕಿರಾಂ ೬-೪೬। 3. ಪ್ರಭುತ್ವ  
ವುಳ್ಳ, ಸ್ವಾಮಿತ್ವವುಳ್ಳ. (ವಿಂ) 4. ಅರ್ಹತೆಯುಳ್ಳ.

ಅಧಿಕೃತಿ ಅಧಿಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಧಿಕಾರ, ಪ್ರಭುತ್ವ,  
ಒಡೆತನ. ಅಧಿ+ಙ್ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪)।

ಅಧಿಕೃತ್ಯ ಅಧಿಕೃತ್ಯ (ಅವ್ಯಂ) ಕುರಿತು, ಸಂಬಂಧಿಸಿ,  
ಉದ್ದೇಶಿಸಿ. ಅಧಿ+ಙ್ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) "ಲ್ಯಪ್"  
(೭-೧-೩೭)। "ಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯ ಶಾಂತಿಮಧಿಕೃತ್ಯ ಕೃತ್ಯವಿತ್" ರಘುಂ  
೧೧-೬೨।

ಅಧಿಕರ್ಮ ಅಧಿಕರ್ಮ (ಪುಂ) ಅತಿಕ್ರಮಿಸಿ ಬರುವುದು,  
ಮೇಲೆಬೀಳುವುದು, ಉಲ್ಲಂಘಿಸುವುದು, ಧಾಳಿಮಾಡು  
ವುದು. ಅಧಿ+ಕ್ರಮ್ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। -ಕ್ರಮಣಮ್  
-ಕ್ರಮಣಮ್.



**ಅಧಿಕೃತ ಅಧಿಕೃತ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ನಿಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಅಕ್ಷೇಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಧಿ+ಕ್ಷಿಪು (ನಿರಸನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ನ ಮೇ ಪಾದರಜಸಾ ತುಲ್ಯ ಇತ್ಯಧಿಕೃತ:" ಮಾಲಂ 1. 5. ಮೇಲೆ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಅಧಿಕೃತ ಅಧಿಕೃತ (ಪುಂ)** 1. ಪ್ರೇರಣೆ. 2. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. 3. ಮೇಲೆ ಇಡುವುದು. 4. ಎಸೆಯೋಣ. 5. ತಿರಸ್ಕಾರ. ಅಧಿ+ಕ್ಷಿಪು (ನಿರಸನೆ) ಭಾವೇ "ಘ್" (3-3-102). "ಭವಾದೃಶೋಪಮದಾಜನೋದಿತಂ ಭವತ್ಯಧಿಕೃತ ಇವಾನುಶಾಸನಮ್" ಕಿರಾಂ 1-20.

**ಅಧಿಗತ ಅಧಿಗತ (ವಿಂ)** 1. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಧಿ+ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಅಧಿಗತಂ ವಿಧಿವದದಪಾಲಯತ್" ರಘುಂ 9-2. 2. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಲಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕಿಮಿತ್ಯೇವಂ ಪೃಚ್ಛಸ್ಯನಧಿಗತರಾಮಾಯಣ ಇವ" ತಂ ರಾಂ 6-30.

**ಅಧಿಗಮ ಅಧಿಗಮ (ಪುಂ)** 1. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. 2. ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಹೊಂದುವಿಕೆ. "ಯದಾ ಚ ತಸ್ಯಾಧಿಗಮೇ ಅಗತ್ಯತೇ:" ಕುಮಾಂ 4-49. 3. ಪಡೆಯುವಿಕೆ, ಸಂಪಾದನೆ. "ಸ್ಥಾಪಯಂತಿ ತು ಯಾ ವೃದ್ಧಿ ಸಾ ತತ್ರಾಧಿಗಮಂ ಪ್ರತಿ" ಮನುಂ 6-146. 4. ಅಂಗೀಕಾರ, ಸ್ವೀಕಾರ. ಅಧಿ+ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಘ್" (3-3-102).

**ಅಧಿಗಮ್ಯ ಅಧಿಗಮ್ಯ (ವಿಂ)** ಹೊಂದತಕ್ಕ, ಪಡೆಯುವ. ಅಧಿ+ಗಮ್ (ಗತೌ) "ತೃ" (3-1-133). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (4-1-5). ಅಧಿಗಮ್ಯ - ಗಂತ್ರಿ.

**ಅಧಿಗಮ್ಯ ಅಧಿಗಮ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಹೊಂದಲು ಶಕ್ಯವಾದ, ಪಡೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಅಧಿ+ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಯತ್" (3-1-102). (ಅವ್ಯಂ) 2. ಹೊಂದಿ, ಪಡೆದು, ಸಂಪಾದಿಸಿ. 3. ಅರಿತು, ತಿಳಿದು. ಅಧಿ+ಗಮ್ (ಗತೌ) "ತ್ವಾ" "ಲ್ಯಪ್" (3-1-30). "ಅಧಿಗಮ್ಯ ಗುಹ್ಯಕಗಣಾದಿತಿ" ಕಿರಾ 6-30.

**ಅಧಿಗುಣ ಅಧಿಗುಣ (ಪುಂ)** 1. ಅಧಿಕಗುಣ, ಅತಿಶಯವಾದ ಗುಣ. ಅಧಿಕೋ ಗುಣಃ. (ವಿಂ) 2. ಅಧಿಕಗುಣವುಳ್ಳ. ಅಧಿಕೋ ಗುಣೋ यस್ಯ. "ಯಾಚ್ಛಾ ಮೋಘಾ ವರಮಧಿಗುಣೇ ನಾಥಮೇ ಲಬ್ಧಕಾಮಾ" ಮೇಘಂ 1-6. (ನಂ) 3. ಹೆದೆಯೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಧನುಸ್ಸು. ಅಧಿಗತೋ ಗುಣೋ ಯೇನ. "ಅಧಿಗುಣಶರಾಸನಂ ಜನಾಃ" ಕಿರಾಂ 12-14.

**ಅಧಿಜಿಹ್ವ ಅಧಿಜಿಹ್ವ (ಪುಂ)** 1. ಹಾವು, ಸರ್ಪ. ಅಧಿಕಾ ಜಿಹ್ವಾ यस್ಯ. [ದರ್ಭೆಯಮೇಲಿಟ್ಟಿದ್ದ ಅಮೃತವನ್ನು

ಪಾನಮಾಡಲು ಹೋದಾಗ ದರ್ಭೆಯ ಚೂಪಾದ ಅಗ್ರದಿಂದ ಸರ್ಪಗಳ ನಾಲಿಗೆಯು ಎರಡು ಭಾಗವಾಯಿತು.] ಭಾಂ ಆದಿಂ 36. (ಅವ್ಯಂ) 2. ನಾಲಿಗೆಯಲ್ಲಿ. ಜಿಹ್ವಾಯಾಮಧಿಜಿಹ್ವಮ್.

**ಅಧಿಜಿಹ್ವಿಕಾ ಅಧಿಜಿಹ್ವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಿರುನಾಲಿಗೆ. ಅಧಿಜಿಹ್ವಾ ಜಿಹ್ವಾ - ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (4-4-29).

**ಅಧಿಜ್ಯ ಅಧಿಜ್ಯ (ನಂ)** ಹೆದೆಯೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಧನುಸ್ಸು. ಅಧಿಜ್ಯಾ ಜ್ಯಾ ಯತ್ರ.

**ಅಧಿಜ್ಯಕಾರ್ಮಿಕ ಅಧಿಜ್ಯಕಾರ್ಮಿಕ - ಧನ್ವನ್ - ಧನ್ವನ್ (ವಿಂ)** ಹೆದೆಯೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಧನುಸ್ಸುಳ್ಳ. ಅಧಿಜ್ಯಂ ಕಾರ್ಮಿಕಂ ಯಸ್ಯ. ಅಧಿಜ್ಯಂ ಧನ್ವಯಸ್ಯ "ಅನಙ್" (4-4-132). "ಕೃಷ್ಣಸಾರೆ ದದಚ್ಚಕ್ಷುಸ್ತ್ವಯಿ ಚಾಧಿಜ್ಯಕಾರ್ಮಿಕೇ" ಶಾಕುಂ 1-6. "ಅಧಿಜ್ಯಧನ್ವಾ ವಿಚಾರ ದಾವಮ್" ರಘುಂ 2-6.

**ಅಧಿತಿಷ್ಠತ್ ಅಧಿತಿಷ್ಠತ್ (ವಿಂ)** 1. ಮಿರುವ, ಅತಿಕ್ರಮಿಸುವ. ಅಧಿ+ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಶತ್" (3-2-124). "ತನ್ವಾಪವಿದಾ ಯೋಗೇಂದ್ರಲಾನ್ಯಧಿತಿಷ್ಠತಾ" ಮಾಘಂ 2-66. 2. ಇರುವ, ವಾಸಮಾಡುವ.

**ಅಧಿತೃಕಾ ಅಧಿತೃಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಬೆಟ್ಟದ ಮೇಲುಭಾಗದ ಭೂಮಿ. ಅಧಿ "ತ್ಯಕನ್" (4-2-34). "ಕಮಪಿ ಕಾಶ್ವನಭೂದಧಿತೃಕಾ" ಯಾದಂ 3-12.

**ಅಧಿದಂತ ಅಧಿದಂತ (ಪುಂ)** 1. ಹಲ್ಲಿನ ಮೇಲೆ ಹುಟ್ಟಿರುವ ಹಲ್ಲು. ಅಧಿಜ್ಯಾ ದಂತಃ. (ವಿಂ) 2. ಅಂತಹ ಹಲ್ಲುಳ್ಳವನು. ಅಧಿಜ್ಯಾ ದಂತೋ ಯಸ್ಯ.

**ಅಧಿದೀಧಿತಿ ಅಧಿದೀಧಿತಿ (ವಿಂ)** ಅಧಿಕ ಕಾಂತಿಯುಳ್ಳ, ಹೆಚ್ಚು ತೇಜಸ್ಸುಳ್ಳ. ಅಧಿಕಾ ದೀಧಿತಿಯಸ್ಯ. "ನಿರ್ದಾಧಾಮಾನಮಿವಾಧಿದೀಧಿತಿಮ್" ಮಾಘಂ 1-24.

**ಅಧಿದೇವ ಅಧಿದೇವ (ಪುಂ)** - ದೇವತಾ - ದೇವತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೇವದೇವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಅಧಿಕೃತೋ ದೇವಃ ಯೇನ. 2. ಇಷ್ಟದೇವತೆ, ರಕ್ಷಿಸುವ ದೇವತೆ, ಕಾಪಾಡುವ ದೇವತೆ. ಅಧಿಷ್ಠಾತಾ ದೇವಃ. ಅಧಿಷ್ಠಾತ್ರಿ ದೇವತಾ ವಾ. "ಯಾಚೇ ಪಾದುಕೇ ಪಶ್ಚಾತ್ ಕರ್ತುಂ ರಾಜ್ಯಾಧಿದೇವತೇ" ರಘುಂ 12-10. (ಅವ್ಯಂ) 3. ದೇವತೆಗಳಲ್ಲಿ.

**ಅಧಿದೇವನ ಅಧಿದೇವನ (ನಂ)** ಅರಿದ ಹಲಗೆ, ಪಗಡೆಯ ಹಾಸು. ಅಧಿ ಉಪರಿ ದೀವ್ಯತೇ ಯತ್ರ - ದಿವು (ಕಿಡಾದಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-116).

**ಅಧಿದೇವತ ಅಧಿದೇವತ (ನಂ)** ಅಧಿದೇವತೆ, ರಕ್ಷಿಸುವ ದೇವತೆ, ಇಷ್ಟದೇವತೆ. ಅಧಿಷ್ಠಾತೃ ದೇವತಮ್.



ಅಧಿನಾಥ ಅಧಿನಾಥ (ಪುಂ) ಅಧೀಶ್ವರ, ಸಾಮಂತ ರಾಜರನ್ನು ಗೆದ್ದ ರಾಜ (ಚಕ್ರವರ್ತಿ). ಅಧಿಕೋ ನಾಥ: |

ಅಧಿಪ ಅಧಿಪ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಅಧಿ ಪಾತಿ — ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೬) | “ಸಾ ಭೂರಾಣಾಮಧೀನ ತಸ್ಯಾಂ ಸಮಾಧಿಮತ್ಯಾಮುದಪಾದಿ ಭವ್ಯಾ” ಕುಮಾಂ ೧-೨೨ | “ಶ್ರಿಯ: ಕುರುಣಾಮಧಿಪಸ್ಯ ಪಾಲನೀಮ್” ಕಿರಾಂ ೧-೧ |

ಅಧಿಪತಿ ಅಧಿಪತಿ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಅಧಿಕ: ಪತಿ: | “ತತೋ ಭುಜ್ಜಾಧಿಪತೇ: ಫಣಾಗ್ರೇ:” ಕುಮಾಂ ೩-೫೯ |

ಅಧಿಪಾ ಅಧಿಪಾ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಅಧಿ ಪಾತಿ — ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) “ವಿಕ್” (೩-೨-೭೫) |

ಅಧಿಪುರುಷ ಅಧಿಪುರುಷ (ಪುಂ) ಪರಮಾತ್ಮ. ಅಧಿಕ: ಉತ್ತಮ: ಪುರುಷ: |

ಅಧಿಪೇಷಣ ಅಧಿಪೇಷಣ (ನಂ) ಅರಿಯುವ ಕಲ್ಲು, ಪುಡಿ ಮಾಡುವ ಕಲ್ಲು. ಅಧಿ+ಪಿಷ (ಸಂಚೂರ್ಣನೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭) |

ಅಧಿಪ್ರಜ ಅಧಿಪ್ರಜ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಮಕ್ಕಳುಳ್ಳ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಅಧಿಪ್ರಜಾ — ಸೃಜಾ. ಅಧಿಕಾ ಪ್ರಜಾ ಯಸ್ಯ ಯಸ್ಯಾ ವಾ | (ಅವ್ಯಂ) 2. ಪುತ್ರವಿಷಯವಾದ. ಪ್ರಜಾಯಾಮಧಿಪ್ರಜಮ್ |

ಅಧಿವಲ ಅಧಿವಲ (ನಂ) 1. ನಾಟಕೀಯ ಒಂದು ಅಂಗ. 2. ವಿರೋಧ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಆಡುವ ಪರಸ್ಪರ ಸಮಾಧಾನ ವಚನ, ಸಂಧಾನದ ಮಾತು. “ಅಧಿವಲ-ಮಹಿಸನ್ಧಿಚ್ಛಲೇನ ಯ:” ಸಾಂ ದಂ ೬-೯೯ |

ಅಧಿಭೂ ಅಧಿಭೂ (ಪುಂ) ಪ್ರಭು, ನಾಯಕ, ಸ್ವಾಮಿ, ಯಜಮಾನ. ಅಧಿಭವತಿ — ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “ವಿಕ್” (೩-೨-೧೭೯) |

ಅಧಿಭೂತ ಅಧಿಭೂತ (ಅವ್ಯಂ) ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನು ಕುರಿತು, ಪ್ರಾಣಿಗಳ ವಿಷಯವಾಗಿ. ಭೂತೇಷು — ವಿಭಕ್ತಯಥೆ ಅವ್ಯಯಿಂ | “ಅಧಿಭೂತಂ ಕಿಮುಚ್ಯತೇ” ಗೀತಾ ೮-೧ |

ಅಧಿಭೋಜನ ಅಧಿಭೋಜನ (ನಂ) 1. ಮಿತಿವಾರಿದ ಉಟೆ. ಅಧಿಕಮತ್ಯಂತಂ ಭೋಜನಮ್ | (ವಿಂ) 2. ಹೆಚ್ಚು ಬೆಲೆಬಾಳುವ, ಅಧಿಕ ಬೆಲೆಯುಳ್ಳ. ಅಧಿಕಂ ಭೋಜನಂ ಧನಂ ಯಸ್ಯ | ಭೋಜನಂ ಧನಮಿತಿ ನಿರುಕ್ತಮ್ |

ಅಧಿಮನ್ಯ ಅಧಿಮಂಥ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ವಿಧ ನೇತ್ರ ರೋಗ. ಅಧಿಕಂ ಮನ್ಯತೇಜನೇನ — ಮನ್ಯ (ವಿಲೋಡನೆ) ಕರಂ “ಘ್” (೩-೩-೧೨೧) | 2. ಯಜ್ಞದ ಅಗ್ನಿಗಾಗಿ ಅರಣಿಯನ್ನು ಕಡೆಯುವುದು. ಮನ್ಯ ಭಾವೇ “ಘ್” (೩-೩-೧೮) |

ಅಧಿಮನ್ಯನ ಅಧಿಮಂಥನ (ನಂ) ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಉಂಟು ಮಾಡಲು ಕಡೆಯುವ ಅರಣಿ. ಅಧಿಕಂ ಮನ್ಯತೇಜನೇನ — ಮನ್ಯ (ವಿಲೋಡನೆ) ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭) |

ಅಧಿಮಾಸ ಅಧಿಮಾಸ (ನಂ) 1. ಕಣ್ಣಿನ ಬಿಳಿ ಗುಡ್ಡೆಯ ಮೇಲೆ ಹೆಚ್ಚು ಮಾಂಸವು ಬೆಳೆದುಂಟಾಗುವ ಒಂದು ರೋಗ. 2. ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಮಾಂಸಗ್ರಂಥಿಯು ಬೆಳೆದುಂಟಾಗುವ ಒಂದು ರೋಗ. ಅಧಿಕಂ ಮಾಸಂ ಯತ್ರ |

ಅಧಿಮಾಸಕ ಅಧಿಮಾಸಕ (ಪುಂ) ದಂತಮೂಲದಲ್ಲಿ ಮಾಂಸವು ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಬೆಳೆದುಂಟಾಗುವ ವ್ರಣ, ವೆಸಡಿನ ಹುಣ್ಣು.

ಅಧಿಮಾತ್ರ ಅಧಿಮಾತ್ರ (ವಿಂ) ಅತಿಶಯವಾದ, ಮಿತಿ ವಾರಿದ. ಅಧಿಕಂ ಪ್ರಮಾಣಮಸ್ಯ — ಪ್ರಮಾಣಂ “ಮಾತ್ರ” (೫-೨-೩೭) |

ಅಧಿಮಾಸ ಅಧಿಮಾಸ (ಪುಂ) ಅಧಿಕಮಾಸ, ಮಲಮಾಸ. ಅಧಿಕ: ಅತಿರಿಕ್ತ: ಮಾಸ: | [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಅಧಿಕಮಾಸ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಅಧಿಯಜ್ಞ ಅಧಿಯಜ್ಞ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರ ಬ್ರಹ್ಮ. ಅಧಿಕೃತೋ ಯಜ್ಞೋ ಯಸ್ಮಾತ್ | “ಅಧಿಯಜ್ಞೋಽಹಮೇವಾತ್ರ ದೇಹೇ ದೇಹಭೃತಾಂ ವರ” ಗೀತಾ ೮-೪ | (ಅವ್ಯಂ) 2. ಯಜ್ಞ ವನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ, ಯಜ್ಞದ ವಿಷಯವಾಗಿ. ಯಜ್ಞ-ಮಧಿಕೃತಯ — ಅವ್ಯಯಿಂ |

ಅಧಿಯೋಗ ಅಧಿಯೋಗ (ಪುಂ) ಪ್ರಯಾಣ ಸಂಬಂಧ ವಾದ ಶುಭಮುಹೂರ್ತ. ಅಧಿಕ: ಉತ್ತಮ: ಯೋಗ: | [ಪ್ರಯಾಣಲಗ್ನದಿಂದ 4, 5, 7, 9 ಅಥವಾ 10 ನೇ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಬುಧ, ಗುರು ಮತ್ತು ಶುಕ್ರರಲ್ಲಿ ಯಾರಾದರೂ ಇಬ್ಬರಿದ್ದರೆ ಈ ಶುಭ ಯೋಗವೆಂದು ತಿಳಿಯ ಬೇಕು.] ಸುಂ ಚಿಂ |

ಅಧಿಯೋಧ ಅಧಿಯೋಧ (ಪುಂ) 1. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಹೋರಾಡುವವನು, ಮುಂದೆ ನಿಂತು ಯುದ್ಧಮಾಡುವವನು. ಅಧಿಕಯೇನ ಯುಧ್ಯತೇ — ಅಧಿ+ಯುಧ (ಸಂಪ್ರಹಾರೇ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) | (ಅವ್ಯಂ) 2. ಯೋಧನಲ್ಲಿ. ಯೋಧೇ — ವಿಭಕ್ತಯಥೆ ಅವ್ಯಯಿಂ |

ಅಧಿರಥ ಅಧಿರಥ (ಪುಂ) ಸಾರಥಿ. ಅಧ್ಯಾಹ್ನ: ರಥಮ್ |

ಅಧಿರಾಜ್ ಅಧಿರಾಜ್ (ಪುಂ) 1. ಚಕ್ರವರ್ತಿ, ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯಾಧಿಪತಿ. ಅಧಿರಾಜತೇ — ಅಧಿ+ರಾಜ್ (ದೀಪ್ತೌ) “ವಿಕ್” (೩-೨-೬೧) | (ವಿಂ) 2. ಅಧಿಕಕಾಂತಿಯುಳ್ಳ, ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ. ಅಧಿಕಂ ರಾಜತೇ — ರಾಜ್ “ವಿಕ್” (೩-೨-೬೧) |



ಅಧಿರಾಜ ಅಧಿರಾಜ (ಪುಂ) ಚಕ್ರವರ್ತಿ, ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯಾಧಿಪತಿ. ಅಧಿಕೋ ರಾಜಾ. "ಶಿಲಾಧಿರಾಜತನಯಾ ನ ಯೌ ನ ತಸ್ಥೌ" ಕುಮಾಂ ೪-೮೫.

ಅಧಿರಾಜ್ಯ ಅಧಿರಾಜ್ಯ (ನಂ) ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯ; ಗಣರಾಜ್ಯ. ಅಧಿಕಂ ರಾಜ್ಯಮ್. "ಭವಾನಿವ ಭೂತಲೇ ಮಲಯಕೇತುಃ ಅಧಿರಾಜ್ಯ-ಮಾರೋಪಿತಃ" ಮುದ್ರಾಂ ೩.

ಅಧಿರಾಷ್ಟ್ರ ಅಧಿರಾಷ್ಟ್ರ (ನಂ) ರಾಜ್ಯ, ಸಂಸ್ಥಾನ. ಅಧಿಕೃತಂ ರಾಷ್ಟ್ರಂ ಯತ್ರ.

ಅಧಿರೂಢ ಅಧಿರೂಢ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತಿರುವ. ಅಧಿ+ರೂ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾದುರ್ಭಾವಿ ಚ) ಕರಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨). "ಪುರಾಧಿರೂಢಃ ಶಯನಂ ಮಹಾಧನಂ ವಿವೋಧ್ಯಸೇ ಯಃ ಸ್ತುತಿಗೀತಿಮಜ್ಞಲೈಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೩೮.

ಅಧಿರೋಪಣ ಅಧಿರೋಪಣ (ನಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆರಿಸುವುದು. 2. ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು. ಅಧಿ+ರೂ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾದುರ್ಭಾವಿ ಚ) +ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

ಅಧಿರೋಪಿತ ಅಧಿರೋಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಧಿ+ರೂ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾದುರ್ಭಾವಿ ಚ) +ಣಿಕ್ ಕರಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨).

ಅಧಿರೋಹಣ ಅಧಿರೋಹಣ (ನಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತುವುದು. 2. ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು. ಅಧಿ+ರೂ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾದುರ್ಭಾವಿ ಚ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

ಅಧಿರೋಹಣಿ ಅಧಿರೋಹಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಏಣಿ, ಸೋಪಾನ, ಮೆಟ್ಟಿಲು, ಹಂತ. ಅಧಿರೂಹತೇಜನಯಾ — ಅಧಿ+ರೂ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾದುರ್ಭಾವಿ ಚ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫).

ಅಧಿಲೋಕ ಅಧಿಲೋಕ (ಅವ್ಯಂ) ಲೋಕದಲ್ಲಿ. ಲೋಕ — ವಿಭಂ ಅವ್ಯಯಿಂ.

ಅಧಿವಕ್ತೃ ಅಧಿವಕ್ತೃ (ಪುಂ) 1. ವಕೀಲ, ಒಂದು ಪಕ್ಷ ವಹಿಸಿ ಮಾತಾಡುವವನು. 2. ವಾಗ್ಮಿ, ಹೆಚ್ಚು ಮಾತಾಡುವವನು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾತಾಡುವವನು. ಅಧಿ+ವಕ್ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) "ತೃನ್" (೩-೨-೧೩೫).

ಅಧಿವಚನ ಅಧಿವಚನ (ನಂ) 1. ವಕಾಲತ್ತು, ಏಕ ಪಕ್ಷದ ಮಾತು. 2. ಹೆಸರು, ಅಭಿಧಾನ.

ಅಧಿವಾಕ ಅಧಿವಾಕ (ಪುಂ) ವಕಾಲತ್ತು, ಏಕಪಕ್ಷದ ಮಾತು, ಒಂದೇಪಕ್ಷವನ್ನು ಹಿಡಿದು ಆಡುವ ಮಾತು.

ಅಧಿವಾಸ ಅಧಿವಾಸ (ಪುಂ) 1. ಸ್ಥಿತಿ, ವಾಸ, ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನ ಸ್ಥಿತಿ. ಅಧಿ+ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮). "ಸತತಾಧಿವಾಸಸುಭಗಾಪಿತಸ್ತನಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೫-೮.

2. ಸೌರಭ, ವಾಸನೆ, ಪರಿಮಳ. "ಕಕುಚಿಕನ್ಯಾ-ವಕ್ತ್ರಾಂತರ್ವಾಸಿಲಬ್ಧಾಧಿವಾಸಯಾ" ಮಾಘಂ ೨-೨೦. 3. ಯಾಗದ ಹಿಂದಿನ ದಿನದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ದೇವತಾ ಸ್ಥಾಪನೆ. 4. ಧೂಪದಹೊಗೆಯಿಂದ ವಾಸನೆ ಕಟ್ಟುವಿಕೆ. "ಅಧಿವಾಸಃ ಸ್ಯಾನ್ನಿವಾಸೇ ಸಂಸ್ಕಾರೇ ಧೂಪನಾದಿಭಿಃ" ಹೇಮಂ.

ಅಧಿವಾಸನ ಅಧಿವಾಸನ (ನಂ) 1. ಗಂಧಮಾಲ್ಯಾದಿಗಳಿಂದ ವಾಸನೆಕಟ್ಟುವುದು. ಅಧಿ+ವಸ (ನಿವಾಸೇ) +ಣಿಕ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). 2. ಯಾಗದ ಹಿಂದಿನ ದಿನದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ದೇವತಾಸ್ಥಾಪನೆ.

ಅಧಿವಾಸಿತ ಅಧಿವಾಸಿತ (ವಿಂ) 1. ವಾಸನೆಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಧಿ+ವಸ (ನಿವಾಸೇ) +ಣಿಕ್ ಕರಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). 2. ಉಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಯಾಗದ ಹಿಂದಿನ ದಿನದಲ್ಲಿ ಸ್ಥಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ದೇವತೆ). ಅಧಿ+ವಸ (ನಿವಾಸೇ) +ಣಿಕ್ ಕರಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨).

ಅಧಿವಾಸಿನ್ ಅಧಿವಾಸಿನ್ (ವಿಂ) 1. ವಾಸಮಾಡುವ. 2. ವಾಸನೆಕೊಡುವ.

ಅಧಿವಾಹನ ಅಧಿವಾಹನ (ನಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆರಿಸುವುದು. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುವುದು. (ಅವ್ಯಂ) 3. ವಾಹನವನ್ನು ಕುರಿತು. ವಿಭಂ ಅವ್ಯಯಿಂ.

ಅಧಿವಿಕರ್ತನ ಅಧಿವಿಕರ್ತನ (ನಂ) ಕತ್ತರಿಸುವಿಕೆ.

ಅಧಿವಿಘ ಅಧಿವಿಘ (ಅವ್ಯಂ) ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕುರಿತು, ವಿದ್ಯೆಯ ವಿಷಯವಾಗಿ. ವಿಧಾಮಧಿಕೃತ್ಯ.

ಅಧಿವಿನ್ನಾ ಅಧಿವಿನ್ನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಪತ್ನಿ, ಹಿರಿಯ ಹೆಂಡತಿ, ಮೊದಲು ಮದುವೆಯಾದ ಹೆಂಡತಿ. ಅಧಿ ಉಪರಿ ವಿನ್ನಂ ಲಾಭೋಽಸ್ಯಾಃ. (ವಿಂ) 2. ಮೊದಲು ಹೊಂದಿದ. "ಅವೃಣೋದನಘಾ ಕೀರ್ತಿರಧಿವಿನ್ನಾಪ್ಸರೋಗಣಾನ್" ಯಾದಂ ೧೬-೧೯.

ಅಧಿವೇತ್ತವ್ಯಾ ಅಧಿವೇತ್ತವ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತನ್ನ ಪತಿಯು ಮತ್ತೊಂದು ಮದುವೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲು ಅರ್ಹತೆಯುಳ್ಳವಳು. ಅಧಿವೇದಯಿತುಮಹಿ — ವಿಢ್ಲ್ (ಲಾಭೇ) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬).

ಅಧಿವೇತ್ ಅಧಿವೇತ್ (ಪುಂ) ಹಿರಿಯಹೆಂಡತಿ ಇರುವಾಗ ಮತ್ತೊಂದು ಮದುವೆಯಾಗುವವನು. ಅಧಿ+ವಿಢ್ಲ್ (ಲಾಭೇ) "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩).

ಅಧಿವೇದ ಅಧಿವೇದ (ಪುಂ) 1. ಮತ್ತೊಂದು ಮದುವೆಯಾಗುವಿಕೆ. ಅಧಿ+ವಿಢ್ಲ್ (ಲಾಭೇ) ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮). (ಅವ್ಯಂ) 2. ವೇದವನ್ನು ಕುರಿತು, ವೇದದ ವಿಷಯವಾಗಿ. ವೇದಮಧಿಕೃತ್ಯ.



ಅಧಿವೇದನ ಅಧಿವೇದನ (ನಂ) ಮತ್ತೊಂದು ಮದುವೆ ಯಾಗುವಿಕೆ. ಅಧಿ+ವಿದ್ (ಲಾಭ) ಭಾವ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಅಧಿವೇದನೀಯಾ ಅಧಿವೇದನೀಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತನ್ನ ಪತಿಯು ಮತ್ತೊಂದು ವಿವಾಹ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲು ಅರ್ಹನಾದ ಹೆಂಗಸು. ಅಧಿ+ವಿದ್ (ಲಾಭ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-16)।

ಅಧಿಶಯಾನ ಅಧಿಶಯಾನ (ವಿಂ) ಮಲಗಿರುವ. ಅಧಿ+ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನ) "ಗಾನಕ್" (3-2-124)।

ಅಧಿಶ್ರವಣ ಅಧಿಶ್ರವಣ (ನಂ) ಅಡಿಗೆ ಮಾಡಿಸುವುದು. ಅಧಿ+ಶ್ರಾ (ಪಾಕೆ)+ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಅಧಿಶ್ರಯ ಅಧಿಶ್ರಯ (ಪುಂ) ಒಲೆಯ ಮೇಲೆ ಟ್ಟು ಅಡಿಗೆ ಮಾಡುವುದು. ಅಧಿ+ಶ್ರೀಜ್ (ಪಾಕೆ) "ಅಕ್" (3-3-46)।

ಅಧಿಶ್ರಯಣ ಅಧಿಶ್ರಯಣ (ನಂ) 1. ಒಲೆಯ ಮೇಲೆ (ಅಡಿಗೆ ಮಾಡಲು) ಇಡುವುದು. ಅಧಿ+ಶ್ರಯಣ (ಪಾಕಾರ್ಥ) ಸ್ಥಾಪನಮ್ — ಅಧಿ+ಶ್ರೀಜ್ (ಪಾಕೆ) ಭಾವ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ಅಡಿಗೆಯ ಮನೆ, ಮಹಾನಸ. ಅಧಿ+ಶ್ರೀಜ್ ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಅಧಿಶ್ರಯಣಿ ಅಧಿಶ್ರಯಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಲೆ. ಅಧಿ+ಶ್ರೀಜ್ (ಪಾಕೆ) ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। "ಡೀಪ್" (4-1-14)।

ಅಧಿಶ್ರಯಣೀಯ ಅಧಿಶ್ರಯಣೀಯ (ವಿಂ) ಅಡಿಗೆ ಮಾಡಲು ಅರ್ಹನಾದ, ಬೇಯಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ (ಪಾತ್ರೆ ಮಾಡಲಾದುದು).

ಅಧಿಶ್ರಿತ ಅಧಿಶ್ರಿತ (ವಿಂ) ಆಶ್ರಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಧಿ+ಶ್ರಿತ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "ವಿಲೋಚನೇ ವಿಭ್ರದಧಿಶ್ರಿತಶ್ರಿಣಿ ಸ ಪುಂಡರೀಕಾಕ್ಷ ಇತಿ ಸ್ಫುಟೋಽಭವತ್" ಮಾಘಂ 1-24।

ಅಧಿಶ್ರೀ ಅಧಿಶ್ರೀ (ವಿಂ) 1. ಅಧಿಕ ಕಾಂತಿಯುಳ್ಳ. 2. ಅಧಿಕವಾದ ಐಶ್ವರ್ಯವುಳ್ಳ. ಅಧಿಕಾ ಶ್ರೀಯಸ್ಯ। "ಸಮಾದಿದೇಶಾಧಿಕೃತಾನಧಿಶ್ರೀಃ" ರಘುಂ 9-29।

ಅಧಿಷ್ಠಾತೃ ಅಧಿಷ್ಠಾತೃ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಧಾನ, ನಾಯಕ, ಅಧ್ಯಕ್ಷ. 2. ವ್ಯವಸ್ಥಾಪಕ. ಅಧಿ+ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ತುಕ್" (3-1-133)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-4)। ಅಧಿಷ್ಠಾತೃ - ತ್ರೀ.

ಅಧಿಷ್ಠಾನ ಅಧಿಷ್ಠಾನ (ನಂ) 1. ಸಮಾಪದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ. ಅಧಿ+ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) ಭಾವ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

2. ಆಶ್ರಯ. 3. ವಾಸಸ್ಥಾನ. ಅಧಿ+ಷ್ಠಾ ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 4. ಚಕ್ರ, ಬಂಡಿಯ ಗಾಲಿ. ಅಧಿ+ಷ್ಠಾ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 5. ನಿಯಂತ್ರಣಶಕ್ತಿ. 6. ಸಾನ್ನಿಧ್ಯ, ಸಾಮಾನ್ಯ. 7. ರಾಜ್ಯ, ಅಧಿಪತ್ಯ. 8. ಪಟ್ಟಣ. 9. ಪ್ರಭಾವ. 10. ಆಕ್ರಮಣ. "ಅಧಿಷ್ಠಾನಂ ಪುರೇ ಚಕ್ರೇ ಪ್ರಭಾವೇಽಧ್ಯಾಸನೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ। 11. (ವೇದಾಂತಿಗಳ ಮತದಲ್ಲಿ) ಭ್ರಾಂತಿಗೆ ಕಾರಣ ಭೂತವಾದ ಅಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ವಿಷಯ, ಭ್ರಾಂತಿಯನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ವಿಷಯ, ಆರೋಪದ ಅಧಿಕರಣ.

ಅಧಿಷ್ಠಿತ ಅಧಿಷ್ಠಿತ (ವಿಂ) 1. ಆಶ್ರಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ, ಎರಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಧಿ+ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "ವಿಲೋಕ್ಯ ವೃದ್ಧೋಕ್ಸಮಧಿಷ್ಠಿತಂ ತ್ವಯಾ" ಕುಮಾಂ 4-90। 2. ಸಮಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ईश्वराधिष्ठिताः सर्वे स्वं स्वं कार्यं हि कुर्वते"। 3. ವಾಸ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ದನುಕಬನ್ಧಾಧಿಷ್ಠಿತೋ ದण्डकारण्यभागः" ತಂ ರಾಂ 1। 4. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ವೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "अचिराधिष्ठितराज्यः शत्रुः प्रकृतिष्वरुद्धमूलत्वात्" ಮಾಲಂ 1-8। 5. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಸ್ತುವಾರಿ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೇಲ್ವಿಚಾರಣೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "आर्यान्धती वसिष्ठाधिष्ठितेषु रघुकुलकदम्बकेषु" ತಂ ರಾಂ 2। 6. ನಡೆಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಾರ್ಗ ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಂದೆ ಒಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟ. "वसिष्ठाधिष्ठिता देव्यो गता राघव-मातरः" ತಂ ರಾಂ 1-31।

ಅಧಿಹರಿ ಅಧಿಹರಿ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಹರಿಯ ವಿಷಯವಾಗಿ, ಹರಿಯ ಸಂಬಂಧವಾಗಿ. ಹರಿಮಧಿಕೃತ್ಯ। 2. ಹರಿಯಲ್ಲಿ. ಹರೀ — ವಿಭಂ ಅವ್ಯಯಿಂ।

ಅಧೀಕಾರ ಅಧೀಕಾರ (ಪುಂ) "ಅಧಿಕಾರ" ಪದದ ಅರ್ಥ. "स्वागतं स्वानधीकारान्" ಕುಮಾಂ 2-18।

ಅಧೀತ ಅಧೀತ (ನಂ) 1. ಅಧ್ಯಯನ, ವ್ಯಾಸಂಗ. ಅಧಿ+ಇಡ್ (ಅಧ್ಯಯನ) ಭಾವ "ಕ್ತಃ" (3-3-114)। (ವಿಂ) 2. ಕಲಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಧಿ+ಇಡ್ (ಅಧ್ಯಯನ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "कदम्बमालाभिरधीतलास्यः" ಯಾದಂ 2-98।

ಅಧೀತಿ ಅಧೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಧ್ಯಯನ, ವ್ಯಾಸಂಗ, ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ. ಅಧಿ+ಇಡ್ (ಅಧ್ಯಯನ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)। "अधीतिबोधाचरणप्रचारणैः" ನೆಪಂ 1-4। 2. ಸ್ಮರಣೆ, ನೆನಪು. ಅಧಿ+ಇಕ್ (ಸ್ಮರಣೆ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)।



ಅಧೀತಿನ್ ಅಧೀತಿನ್ (ಪುಂ) ಕಲಿತವನು, ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು. ಅಧೀತಮನೇ "ಇನಿ:" (೪-೨-೮೮)। "ಅಧೀತಿನೋ ಯತ್ರ ಮಮ ತ್ರಿವೇದ್ಯಾಂ" ಯಾದಂ ೧೮-೬೨। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪)। ಅಧೀತಿನಿ - ೨೯. "ಕೃತಾಭಿಷೇಕಾಂ ಹೃತಜಾತವೇದಸಂ ತ್ವಗುತ್ತರಾಸಂಜ್ಞವತೀಮಧೀತಿ-ನೀಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೧೬।

ಅಧೀನ ಅಧೀನ (ವಿಂ) ಅಸ್ತುತಂತ್ರ, ಆಶ್ರಿತ, ಒಬ್ಬನ ವಶದಲ್ಲಿರುವ. ಅಧಿಗತ: ಇನ: ಸ್ವಾಮಿ ಅನೇನ। "ನಿರಾಸ್ಪದಂ ಪ್ರಶ್ನಕೃತ್‌ಹಲಿತ್ವಮಸ್ಮಾಸ್ವಧೀನಂ ಕಿಮು ನಿ:ಸ್ಪೃಹಾಣಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೯। "ಇಕ್ಷ್ವಾಕುಣಾಂ ದುರಾಪೇಶ್ಯೇ ತ್ವದಧೀನಾ ಹಿ ಸಿದ್ಧಯ:" ರಘುಂ ೧-೭೨।

ಅಧೀರ ಅಧೀರ (ವಿಂ) 1. ಭಯವುಳ್ಳ, ಧೈರ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಅಂಜುಪುರಕ, ಹೇಡಿ. ಧೀರೋ ನ ಭವತಿ। 2. ಚಂಚಲ, ಚಪಲಚಿತ್ತವುಳ್ಳ. 3. ಅಸ್ಥಿರ, ಚಂಚಲ. "ಅಶಕ್ತುನ್ ಸೋದಮಧೀರಲೋಚನ:" ಮಾಘಂ ೧-೪೩। (ಸ್ತ್ರೀಂ)-ರಾ-ರಾ. 4. ಮಿಂಚು. 5. ಅಧೀರನಾಯಿಕೆ. ಇವಳ ಲಕ್ಷಣ: "ಪ್ರಿಯಂ ಮಧ್ಯಾ ದಹೇದ್ರೋಪಾದಧೀರಾ ಪಠ್ಯೋಕ್ತಿಭಿ:" ಸಾಂ ದಂ।

ಅಧೀವಾಸ ಅಧೀವಾಸ (ಪುಂ) ದೀರ್ಘಕವಚ, ದೇಹವನ್ನು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಮರೆಮಾಡುವ ಉದ್ದದ ಕವಚ.

ಅಧೀಶ ಅಧೀಶ (ಪುಂ) ಸಾರ್ವಭೌಮ, ಚಕ್ರವರ್ತಿ, ಅಧಿಪತಿ. ಅಧಿಕ: ಇಶ:। "ದಿಶಾಮಧೀಶಾಂಚತುರೋ ಯತ-ಸ್ತುರಾನಪಾಸ್ಯ ತಂ ರಾಗಹೃತಾ: ಸಿಘೇವಿರೇ" ಮಾಘಂ ೧-೪೪।

ಅಧೀಶ್ವರ ಅಧೀಶ್ವರ (ಪುಂ) ಸಾರ್ವಭೌಮ, ಚಕ್ರವರ್ತಿ, ಅಧಿಪತಿ. ಅಧಿಕ: ಇಶ್ವರ:।

ಅಧೀಷ್ಠ ಅಧೀಷ್ಠ (ಪುಂ) 1. ಗೌರವಪೂರ್ವಕವಾದ ಪ್ರಾರ್ಥನೆ. ಅಧಿ+ಇಷು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। ಅಧೀಷ್ಠ: ಸತ್ಕಾರಪೂರ್ವಕೋ ವ್ಯಾಪಾರ: ಸಿಂಕೌಂ (೩-೩-೧೬೧)। (ವಿಂ) 2. ಗೌರವಪೂರ್ವಕ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಧಿ+ಇಷು ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅಧುನಾ ಅಧುನಾ (ಅವ್ಯಂ) ಈಗ, ಈ ಕಾಲದಲ್ಲಿ. ಅಸ್ಮಿನ್ ಕಾಲೇ - ಇದಮ್ ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಅಧುನಾ" (೪-೩-೧೭)। "ಪ್ರಮ-ದಾನಾಮಧುನಾ ವಿಡಮ್ಬನಾ" ಕಿರಾಂ ೪-೧೨।

ಅಧುನಾತನ ಅಧುನಾತನ (ವಿಂ) ಈಗಿನಕಾಲದ, ಈ ಕಾಲಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಅಧುನಾ ಭವ: "ತೃಲ್" ತುಡ್ ಚ (೪-೩-೨೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೪)। -ತನಿ-ತನೀ.

ಅಧುರ ಅಧುರ (ವಿಂ) 1. ಭಾರವಿಲ್ಲದ, ಹೊರೆಯಿಲ್ಲದ. 2. ಧನವಿಲ್ಲದ, ಐಶ್ವರ್ಯವಿಲ್ಲದ. 3. ನಡುಕವಿಲ್ಲದ. 4. ಧೂಪವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಧೂಮಿರ: ವಿದ್ವಾಂ ಕಮ್ಪ: ಧೂಪೋ ವಾ ಯಸ್ಯ "ಅ:" (೪-೪-೭೪)। "ಧೂನಿ ಧೂಪೇ ಸ್ತ್ರೀ ತು ಕಮ್ಪೇ ವಿದ್ವಾಂ ಭಾರೆ ಯುಗಾಪ್ರಯೋ:" ನಾನಾರ್ಥರಂ।

ಅಧೂಮಕ ಅಧೂಮಕ (ಪುಂ) ಹೊಗೆಯಿಲ್ಲದ ಬೆಂಕಿ, ಉರಿಯುತ್ತಿರುವ ಬೆಂಕಿ. ನಾಸ್ತಿ ಧೂಮಿ ಯತ್ರ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೪೪)।

ಅಧೃತ ಅಧೃತ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ನ ಧೃತ: [ಸರ್ವೇಷಾಂ ಧಾರಕತ್ವೇನ ನ ಕೇನಾಪಿ ಧೃತ:] "ಅಧೃತ: ಸ್ವಧೃತ: ಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯ:" ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 2. ಧರಿಸಲ್ಪಡದ.

ಅಧೃತಿ ಅಧೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂತೋಷವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ಬಿಗಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ಅಧೈರ್ಯ. ನ ಧೃತಿ:। (ವಿಂ) 4. ಧೈರ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಹೇಡಿ. ನ ಧೃತಿಯಸ್ಯ।

ಅಧೃಷ್ಟ ಅಧೃಷ್ಟ (ವಿಂ) 1. ಸಂಕೋಚ ಸ್ವಭಾವದ, ಲಜ್ಜೆಯುಳ್ಳ. ನ ಧೃಷ್ಟ:। 2. ಧೈರ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಭಯ ಸ್ವಭಾವದ. 3. ಜಯಿಸಲ್ಪಡದ, ಎದುರಿಸಲ್ಪಡದ.

ಅಧೃಷ್ಯ ಅಧೃಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅಜ್ಞೇಯ, ಜಯಿಸಲಾಗದ, ಎದುರಿಸಲಾಗದ. ನ ಧೃಷ್ಯ:। "ಅಧೃಷ್ಯಶ್ಚಾಭಿಗಮ್ಯಶ್ಚ ಯಾದೋರತ್ನೇರಿವಾಣವ:" ರಘುಂ ೧-೧೬। 2. ಧೈರ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಭಯಸ್ವಭಾವದ. 3. ಲಜ್ಜೆಯುಳ್ಳ, ನಾಚಿಕೆಯುಳ್ಳ.

ಅಧೇನು ಅಧೇನು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಾಲು ಕರೆಯದ ಹಸು. ಧೀಯತೇ - ಧೇ (ಪಾನೇ) "ನು:" (೩-೩-೩೪)। ನಂ ತಂ।

ಅಧೈಯ ಅಧೈಯ (ನಂ) 1. ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ಧೈರ್ಯವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಧೈಯಂ ಯಸ್ಯ।

ಅಧೋಕ್ಷ ಅಧೋಕ್ಷ (ವಿಂ) 1. ಗಾಡಿಯ ಕೆಳಗಿರುವ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಗಾಡಿಯ ಕೆಳಗೆ.

ಅಧೋಕ್ಷಜ ಅಧೋಕ್ಷಜ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಅಧ: ಕೃತಮ್ ಅಕ್ಷಜಮೇಂದ್ರಿಯಕಂ ಜ್ಞಾನಂ ಯೇನ, ಅಕ್ಷಾತ್ ಇಂದ್ರಿಯಾತ್ ಜಾಯತೇ ಅಕ್ಷಜ-ಮಿಂದ್ರಿಯಜನ್ಯಂ ಜ್ಞಾನಂ ಅಧ: ಅಕ್ಷಜಂ ಯೇನೇತಿ ವಾ। "ನಿಶಮ್ಯ ತಾ: ಶೇಷಗವೀರಭಿಧಾತುಮಧೋಕ್ಷಜ:" ಮಾಘಂ ೨-೬೮।

ಅಧೋಗತಿ ಅಧೋಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುವುದು, ಇಳಿಕೆ, ಕ್ಷೀಣಗತಿ. 2. ಇಳಿಜಾರು, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯುವುದು. 3. ನರಕ ಪ್ರಾಪ್ತಿ.

ಅಧೋಗಾಮಿನ್ ಅಧೋಗಾಮಿನ್ (ವಿಂ) 1. ನರಕಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ. 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯುವ. ಅಧ: ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಗಿಮಿ:" (೩-೨-೭೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪)। ಅಧೋಗಾಮಿನಿ - ಗಾಮಿನೀ.



ಅಧೋಜಾನು ಅಧೋಜಾನು (ನಂ) 1. ಮಂಡಿಯ ಕೆಳ ಭಾಗ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಮಂಡಿಯ ಕೆಳಗೆ.

ಅಧೋಜಿಹ್ವಿಕಾ ಅಧೋಜಿಹ್ವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆರುನಾಲಿಗೆ.

ಅಲ್ಪಾ ಜಿಹ್ವಾ "ಕನ್" (೪-೩-೮೪)। ಅಧ: ಜಿಹ್ವಿಕಾ।

ಅಧೋದಾರು ಅಧೋದಾರು (ನಂ) ನಿಲುವಿನ ಕೆಳಭಾಗದ ಮರ.

ಅಧೋದೃಷ್ಟಿ ಅಧೋದೃಷ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೆಳನೋಟ. (ವಿಂ) 2. ಕೆಳನೋಟವುಳ್ಳ. 3. ಯೋಗಾಭ್ಯಾಸ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಮೂಗಿನ ತುದಿಯಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ದೃಷ್ಟಿ ಯುಳ್ಳ. ಅಧ: ದೃಷ್ಟಿರಸ್ಯ.

ಅಧೋಭಕ್ತ ಅಧೋಭಕ್ತ (ನಂ) ಉಟವಾದಮೇಲೆ ಕುಡಿಯುವ ನೀರು. ಅಧ: ಭಕ್ತಂ ಯಸ್ಮಾತ್.

ಅಧೋಭಾಗ ಅಧೋಭಾಗ (ಪುಂ) 1. ದೇಹದ ಕೆಳಭಾಗ. 2. ಕೆಳಭಾಗ.

ಅಧೋಭುವನ ಅಧೋಭುವನ (ನಂ) ಪಾತಾಳಲೋಕ. ಅಧಶ್ಚ ತದ್ಭುವನಂ ಚ।

ಅಧೋಮುಖ ಅಧೋಮುಖ (ನಂ) 1. (ಜ್ಯೋತಿಶಾಸ್ತ್ರ ದಲ್ಲಿ) ಕೆಳಮುಖವಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವ ನಕ್ಷತ್ರ; ಮೂಲ, ಆಶ್ಲೇಷ, ಕೃತ್ತಿಕೆ, ವಿಶಾಖೆ, ಭರಣಿ, ಮಖೆ, ಪೂರ್ವ ಫಲ್ಗುನಿ, ಪೂರ್ವಾಷಾಢ ಮತ್ತು ಪೂರ್ವಾಭಾದ್ರಾ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು ಕೆಳಮುಖವುಳ್ಳವುಗಳು. (ವಿಂ) 2. ಕೆಳ ಮುಖವಾದ. 3. ಬಗ್ಗಿದ ಮುಖವುಳ್ಳ. ಅಧ: ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ। "ಅಧೋಮುಖೇಽರ್ಧಮುಖೇಽಪಿ ಪತ್ರಿಮಿ:" ರಘುಂ ೩-೪೭। 4. ತಲೆಕೆಳಗಾದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಅಧೋಮುಖಾ-ಮುಖಾ-ಮುಖಿ-ಮುಖೀ. 5. ಬೆಂಡೆಗಿಡ.

ಅಧೋಲೋಕ ಅಧೋಲೋಕ (ಪುಂ) ಪಾತಾಳಲೋಕ.

ಅಧೋವಾಯು ಅಧೋವಾಯು (ಪುಂ) ಅಪಾನವಾಯು, ಕೆಳಮುಖವಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವ ವಾಯು. ಅಧೋಗಾಮಿ ವಾಯು:।

ಅಧ್ಯಕ್ಷ ಅಧ್ಯಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಸಭಾನಾಯಕ, ಅಗ್ರಾಸನಾಧಿ ಪತಿ. 2. ಅಧಿಪತಿ, ಒಡೆಯ, ಪ್ರಭು. "ಯದಧ್ಯಕ್ಷೋ ಜಗತಾಂ ವಯಮಾರೋಪಿತಾಸ್ತವಯಾ" ಕುರ್ಮಾಂ ೬-೧೭। 3. ಮುಖ್ಯಾಧಿಕಾರಿ, ಇಲಾಖೆಯ ಮೊಕ್ಷೇಸರ. ಅಧಿಗತೋಷ್ಣಂ ವ್ಯವಹಾರಮ್। (ನಂ) 4. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಜ್ಞಾನ. ಅಧಿಗತ-ಮಕ್ಷಮಿन्द्रಿಯಮ್। (ವಿಂ) 5. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಜ್ಞಾನ ಗೋಚರ ವಾದ. 6. ವ್ಯಾಪಕ, ಎಲ್ಲದರಲ್ಲಿಯೂ ಹರಡಿರುವ. ಅಧಿ ಉಪರಿ ಅಕ್ಷಗತಿ ವ್ಯಾಪ್ನೋತಿ - ಅಕ್ಷ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।

ಅಧ್ಯಕ್ಷರ ಅಧ್ಯಕ್ಷರ (ಅವ್ಯಂ) ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಕುರಿತು, ಅಕ್ಷರಗಳ ವಿಷಯವಾಗಿ. ಅಕ್ಷರೇಷು ಅಧ್ಯಕ್ಷರಮ್ ವಿಭಂ ಅವ್ಯಯಿಂ (೨-೧-೬)।

ಅಧ್ಯಗ್ನಿ ಅಧ್ಯಗ್ನಿ (ನಂ) 1. ವಿವಾಹಸಮಯದಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಯ ಮುಂದೆ ಹೆಂಗಸರಿಗೆ ಕೊಡುವ ಧನ, ಸ್ತ್ರೀ ಧನ, ಆರು ವಿಧ ಸ್ತ್ರೀಧನಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಅಧ್ಯಗ್ನಿ-ಧ್ಯಾವಾಹನಿಕಂ ದತ್ತಂ ಚ ಪ್ರೀತಿಕರ್ಮಣಿ। ಭ್ರಾತೃಮಾತೃಪಿತೃಪ್ರಾಪ್ತಂ ಷಡ್ವಿಧಂ ಸ್ತ್ರೀಧನಂ ಸ್ಮೃತಮ್" ಮನುಂ ೯-೧೯೪। (ಅವ್ಯಂ) 2. ಅಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ. 3. ಅಗ್ನಿಯ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ. ಅಗ್ನೌ ಅಗ್ನೇ: ಸಮೀಪೇ ವಾ। ವಿಭಂ ಸಾಮೀಪ್ಯೇ ವಾ ಅವ್ಯಯಿಂ।

ಅಧ್ಯಧೀನ ಅಧ್ಯಧೀನ (ಪುಂ) 1. ಅಧಿಕವಾದ ಆಕ್ಷೇಪಣೆ, ಹೆಚ್ಚು ದೋಷಾರೋಪಣೆ. 2. ಹೆಚ್ಚು ತಿರಸ್ಕಾರ.

ಅಧ್ಯಧೀನ ಅಧ್ಯಧೀನ (ವಿಂ) ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಪರಾಧೀನ ನಾದ, ಚಾಕರ, ಗುಲಾಮ. ಅಧಿಕಮಧೀನ:।

ಅಧ್ಯಯ ಅಧ್ಯಯ (ಪುಂ) 1. ಅಧ್ಯಯನ, ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ, ಶಿಕ್ಷಣ. 2. ಸ್ಮರಣೆ, ನೆನಪು. ಅಧಿ+ಇಡ್ (ಅಧ್ಯಯನೇ) ಇಕ್ (ಸ್ಮರಣೇ) ವಾ ಭಾವೇ "ಅಚ್" (೩-೩-೪೬)।

ಅಧ್ಯಯನ ಅಧ್ಯಯನ (ನಂ) ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ, ಕಲಿಯುವಿಕೆ, ಶಿಕ್ಷಣ, ವೇದಾಭ್ಯಾಸ. ಅಧಿ+ಇಡ್ (ಅಧ್ಯಯನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ಯದೇದಾಧ್ಯಯನಂ ತಥೋಪನಿಷದಾಂ ಸಾಂಖ್ಯಸ್ಯ ಯೋಗಸ್ಯ ಚ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೦।

ಅಧ್ಯರ್ಥ ಅಧ್ಯರ್ಥ (ವಿಂ) ಅರ್ಥದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಅರ್ಥ ಭಾಗದೊಡನೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. ಅಧಿಕಮರ್ಥಂ ಯಸ್ಯ। "एकाधिकं हरेज्येष्ठः पुत्रोऽध्यर्थं ततोऽनुजः" ಮನುಂ ೯-೧೧೭।

ಅಧ್ಯವಸಾನ ಅಧ್ಯವಸಾನ (ನಂ) 1. ನಿರ್ಧಾರ, ಅವಧಾರಣ, ನಿಶ್ಚಯ. 2. ಪ್ರಯತ್ನ. ಅಧಿ+ಅವ+ಘ (ಅಂತರ್ಮಣಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।

ಅಧ್ಯವಸಾಯ ಅಧ್ಯವಸಾಯ (ಪುಂ) 1. ನಿಶ್ಚಯ, ಅವಧಾರಣ, ನಿರ್ಣಯ. 2. ಪ್ರಯತ್ನ. 3. ಉತ್ಸಾಹ, ದೃಢಸಂಕಲ್ಪ. ಅಧಿ+ಅವ+ಘ (ಅಂತರ್ಮಣಿ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮)।

ಅಧ್ಯವಸಾಯಿನ್ ಅಧ್ಯವಸಾಯಿನ್ (ವಿಂ) 1. ದೃಢ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ನಿಶ್ಚಯವುಳ್ಳ. 2. ಉತ್ಸಾಹವುಳ್ಳ. 3. ಪ್ರಯತ್ನವುಳ್ಳ. ಅಧ್ಯವಸಾಯೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)।



**ಅಭ್ಯವಸಿತ ಅಧ್ಯವಸಿತ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಯತ್ನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಅಧಿ+ಅವ+ಘ (ಅಂತ-ಕರ್ಮಣಿ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।

**ಅಭ್ಯವಹನನ ಅಧ್ಯವಹನನ** (ನಂ) ಕುಟ್ಟಿದ ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಮತ್ತೆ ಕುಟ್ಟುವುದು. ಅಧಿ ಉಪರಿ ಅವಹನನಮ್ ।

**ಅಭ್ಯಶನ ಅಧ್ಯಶನ** (ನಂ) ಅಧಿಕ ಭೋಜನ, ಮಿತಿ ಮೀರಿದ ಊಟ. ಅಧಿಕಮಶನಮ್ । [ತಿಂದ ಆಹಾರವು ಜೀರ್ಣವಾಗುವುದಕ್ಕೆ ಮುಂಚೆ ಮತ್ತೆ ಊಟಮಾಡುವುದು.] "ಸಾಜಿಣಿಂ ಭುಜ್ಯತೇ ಯತ್ ತದಭ್ಯಶನಮುಚ್ಯತೇ" ಸುಶ್ರುಂ ।

**ಅಭ್ಯಸ್ತ ಅಧ್ಯಸ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಅನ್ಯಾಯವಾಗಿ ತಪ್ಪು ಹೊರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ತಪ್ಪಾಗಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟು. ಅಧಿ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । ಶುಕ್ತೌ ರಜತ-ಮಧ್ಯಸ್ತಮ್ ।

**ಅಭ್ಯಾತ್ಮ ಅಧ್ಯಾತ್ಮ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಆತ್ಮನನ್ನು ಕುರಿತು, ಆತ್ಮನ ಸಂಬಂಧವಾಗಿ. 2. ದೇಹವನ್ನು ಕುರಿತು, ದೇಹದ ಸಂಬಂಧವಾಗಿ. 3. ಪರಬ್ರಹ್ಮನನ್ನು ಕುರಿತು, ಪರಬ್ರಹ್ಮ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಆತ್ಮಾನಮಧಿಕೃತ್ಯ ।

**ಅಭ್ಯಾತ್ಮಜ್ಞಾನ ಅಧ್ಯಾತ್ಮಜ್ಞಾನ** (ನಂ) ಆತ್ಮಜ್ಞಾನ, ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನ.

**ಅಭ್ಯಾತ್ಮವಿದ್ಯಾ ಅಧ್ಯಾತ್ಮವಿದ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬ್ರಹ್ಮವಿದ್ಯೆ, ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವರೂಪಪ್ರತಿಪಾದಕ ಉಪನಿಷತ್ತು. ಆತ್ಮಾನಂ ಬ್ರಹ್ಮ ಅಧಿಕೃತ್ಯ ವಿದ್ಯಾ । "ತೃಯಿ ವಿಗ್ರಹವತ್ಯೇವ ಸಮಮಧ್ಯಾತ್ಮ-ವಿದ್ಯಾ" ಮಾಲಂ ೧-೧೪ ।

**ಅಭ್ಯಾತ್ಮದೃಶ ಅಧ್ಯಾತ್ಮದೃಶ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನ. ಅಭ್ಯಾತ್ಮಂ ದೃಕ್ । "ಗೃಹಿತಮಧ್ಯಾತ್ಮದೃಶಾ ಕಥಂಚನ" ಮಾಘಂ ೧-೩೩ । (ವಿಂ) 2. ಆತ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು. ಅಭ್ಯಾತ್ಮಂ ಪश्यತಿ - ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) "ವಿವ್" (೩-೨-೧೦೮) ।

**ಅಭ್ಯಾತ್ಮಯೋಗ ಅಧ್ಯಾತ್ಮಯೋಗ** (ಪುಂ) ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲಿ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಇಡುವುದು, ಬಾಹ್ಯ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಮನಸ್ಸಿಡದೆ ಮಾಡುವ ಪರಮಾತ್ಮನ ಧ್ಯಾನ. ಆತ್ಮಾನಮಧಿಕೃತ್ಯ ಯೋಗಃ । "ಅಭ್ಯಾತ್ಮಯೋಗಾಧಿಗಮೇನ ದೇವಂ ಮತ್ವಾ ಧೀರೋ ಹರ್ಷಶೋಕೋ ಜಹಾತಿ" ।

**ಅಭ್ಯಾತ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ ಅಧ್ಯಾತ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ** (ನಂ) ಆತ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ. ಅಭ್ಯಾತ್ಮಪ್ರತಿಪಾದಕಂ ಶಾಸ್ತ್ರಮ್ ।

**ಅಧ್ಯಾಪಕ ಅಧ್ಯಾಪಕ** (ಪುಂ) 1. ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿಸುವವನು, ಉಪಾಧ್ಯಾಯ. 2. ಗುರು, ಉಪದೇಶಕ.

ಅಧ್ಯಾಪಯತಿ - ಅಧಿ+ಇಡ್ (ಅಧ್ಯಯನೇ)+ಞಿಕ್ "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

**ಅಧ್ಯಾಪನ ಅಧ್ಯಾಪನ** (ನಂ) ಶಿಕ್ಷಣ, ಉಪದೇಶ.

ಅಧಿ+ಇಡ್ (ಅಧ್ಯಯನೇ)+ಞಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

"ಅಧ್ಯಾಪನಂ ಚ ತ್ರಿವಿಧಂ ಧರ್ಮಾರ್ಥಮುಕ್ತಕಾರಣಮ್ । ಶುಶ್ರೂಷಾಕಾರಣಂ ಚೇತಿ ತ್ರಿವಿಧಂ ಪರಿಕೀರ್ತಿಸತಃ" ಹಾರೀತಂ । ಉಪದೇಶವು ಧರ್ಮಕ್ಕಾಗಿಯೂ ಅರ್ಥಕ್ಕಾಗಿಯೂ ಶುಶ್ರೂಷೆಗಾಗಿಯೂ ಮೂರು ವಿಧವಾಗಿ ನಡೆಯತಕ್ಕದ್ದು. ಧರ್ಮಾರ್ಥಗಳಾಗಲೀ ಶುಶ್ರೂಷೆಯಾಗಲೀ ಇಲ್ಲದವನಿಗೆ ವಿದ್ಯಾದಾನ ಮಾಡಕೂಡದು. ಮತ್ತು ಅಧರ್ಮದಿಂದ ಉಪದೇಶ ಮಾಡುವುದೂ ಅಧರ್ಮದಿಂದ (ಮರ್ಯಾದೆ ಮೀರಿ) ಪ್ರಶ್ನೆಮಾಡುವುದೂ ಮನಃಕಾಲುಷ್ಯಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದುದರಿಂದ ಅಂತಹ ಉಪದೇಶವು ಕೂಡದು. "ಯೋಽಧರ್ಮೇಣಾಹಂ ಯಶ್ಚಾಧರ್ಮೇಣ ಪುಚ್ಛತಿ । ತಯೋರನ್ಯತರಃ ಪ್ರತಿ ವಿವೇಕಂ ವಾಧಿಗಚ್ಛತಿ" ಹಾರೀತಂ ।

**ಅಧ್ಯಾಪಿತ ಅಧ್ಯಾಪಿತ** (ವಿಂ) ಕಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಓದಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಅಧಿ+ಇಡ್ (ಅಧ್ಯಯನೇ)+ಞಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । "ಅಧ್ಯಾಪಿತಸ್ಯೋಶನಸಾಪಿ ನೇತಿಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೬ ।

**ಅಧ್ಯಾಪ್ಯ ಅಧ್ಯಾಪ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಕಲಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ, ಪಾಠಹೇಳಲು ಅರ್ಹನಾದ (ಶಿಷ್ಯ). ಅಧ್ಯಾಪಯಿತುಮಹಃ-ಅಧಿ+ಇಡ್ (ಅಧ್ಯಯನೇ)+ಞಿಕ್ "ಯತ್" (೩-೧-೯೭) । (ಅವ್ಯಂ) 2. ಉಪದೇಶಮಾಡಿ, ಕಲಿಸಿ. ಅಧಿ+ಇಡ್+ಞಿಕ್ "ಯಪ್" (೩-೧-೩೭) । 3. ಹೊಂದಿ, ಪಡೆದು. ಅಧಿ+ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಲ್ಯಪ್" (೩-೧-೩೭) ।

**ಅಧ್ಯಾಯ ಅಧ್ಯಾಯ** (ಪುಂ) 1. ಅಧ್ಯಯನ, ವ್ಯಾಸಂಗ. ಅಧಿ+ಇಡ್ (ಅಧ್ಯಯನೇ) "ಯತ್" (೩-೩-೨೧) । 2. ಗ್ರಂಥಗಳಲ್ಲಿ ಆಯಾ ಪ್ರಕರಣಗಳನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸುವ ಭಾಗ.

**ಅಧ್ಯಾರೂಢ ಅಧ್ಯಾರೂಢ** (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಿದ, ಹತ್ತಿದ. 2. ಆಕ್ರಮಿಸಿದ. 3. ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ, ಮೇಲಾದ. ಅಧಿ+ಆ+ಠ್ (ವಿಜಯಾದೌ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) । 4. ಹತ್ತಲ್ಪಟ್ಟು. 5. ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಅಧಿ+ಆ+ಠ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । "ಅತೋಽಧ್ಯಾರೂಢಾನಾಂ ಪದಮಸುಜನದ್ವೇಷಜನನಮ್" ಮುದ್ರಾಂ ೫-೧೨ ।

**ಅಧ್ಯಾರೋಪ ಅಧ್ಯಾರೋಪ** (ಪುಂ) ಮಿಥ್ಯಾಜ್ಞಾನ, ತಪ್ಪು ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ಭ್ರಾಂತಿ, ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಮತ್ತೊಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಜ್ಞಾನ. [ರಜ್ಜು (ಹಗ್ಗ)ವಿನಲ್ಲಿ ಸರ್ಪದ



ಬುದ್ಧಿಯಂತೆ.] ಅಧಿ+ಆ+ಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ)+ಣಿಕ್  
“ಘ್” (೩-೩-೧೯)।

ಅಧ್ಯಾರೋಪಣ ಅಧ್ಯಾರೋಪಣ (ನಂ) 1. ಅಧಿಕಪಡಿಸು  
ವುದು, ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎರಿಸುವುದು.  
3. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಬಿತ್ತುವುದು. ಅಧಿ+ಆ+ಹ (ಬೀಜ-  
ಜನ್ಮಾದೌ)+ಣಿಕ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೯)। ಹಸ್ಯ “ಫ:”  
(೭-೩-೪೩)।

ಅಧ್ಯಾವಾಹನಿಕ ಅಧ್ಯಾವಾಹನಿಕ (ನಂ) ಸ್ತ್ರೀಧನ, ಪತಿ  
ಗೃಹಕ್ಕೆ ಹೊರಟುಬರುವಾಗ ತಂದೆಯ ಮನೆಯಲ್ಲಿ  
ಹೆಂಗಸಿಗೆ ಕೊಡುವ ಧನ. ಅಧ್ಯಾವಾಹನ ಪಿತೃಗೃಹಾತ್  
ಭರ್ತೃಗೃಹಾಗಮನಕಾಲೆ ಲಬ್ಧಂ ಧನಮ್। ಅಧಿ+ಆ+ಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ)  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೯)। “ಠ್” (೪-೩-೧೧)।  
“ಯತ್ಪುನಲಂಭತೇ ನಾರೀ ನಿಯಮಾನಾ ಹಿ ಪಿತೃಕಾತ್। ಅಧ್ಯಾವಾಹ-  
ನಿಕಂ ನಾಮ ಸ್ತ್ರೀಧನಂ ಪರಿಕೀರ್ತಿಸತಮ್” ಕಾತ್ಯಾಂ।

ಅಧ್ಯಾಸ ಅಧ್ಯಾಸ (ಪುಂ) ಮಿಥ್ಯಾಜ್ಞಾನ, ಭ್ರಾಂತಿ,  
ತಪ್ಪು ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ಇಲ್ಲದೇ ಇರತಕ್ಕ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ  
ಇದ್ದಹಾಗೆ ತೋರುವುದು. ಅಧಿ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ)  
“ಘ್” (೩-೩-೧೮)। [ಸರ್ಪವಲ್ಲದ ರಜ್ಜುವಿನಲ್ಲಿ  
ಸರ್ಪದ ಭ್ರಾಂತಿಯಂತೆ ಜಗತ್ತಿನ ಸ್ವರೂಪವಲ್ಲದ  
ಬ್ರಹ್ಮನಲ್ಲಿ ಜಗತ್ತಿನ ಆರೋಪವು ಅಧ್ಯಾಸವೆನಿಸು  
ವುದು.]

ಅಧ್ಯಾಸನ ಅಧ್ಯಾಸನ (ನಂ) 1. ವಾಸಸ್ಥಾನ. ಅಧಿ+  
ಆಸ (ಉಪವೇಶನ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೯)। (ಅವ್ಯಂ)  
2. ಆಸನದಲ್ಲಿ, ಪೀಠದಲ್ಲಿ. ಆಸನೇ ವಿಭಂ ಅವ್ಯಯಿಂ  
(೨-೧-೬)।

ಅಧ್ಯಾಸಿತ ಅಧ್ಯಾಸಿತ (ನಂ) 1. ಆಕ್ರಮಣ, ಹಿಡಿಯು  
ವಿಕೆ. ಅಧಿ+ಆಸ (ಉಪವೇಶನ) ಭಾವೇ “ಕ್ತ:” (೩-೩-  
೧೯)। “ಧೇವಾ ತದಧ್ಯಾಸಿತಕಾತರಾಕ್ಷಾ” ರಘುಂ ೨-೪೨।  
(ವಿಂ) 2. ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಅಧಿ+ಆಸ “ಕ್ತ:” (೩-೩-೧೦೨)। “ಅಧ್ಯಾಸಿತಾ  
ಯೋಗಿಭಿರಸ್ಯ ನಿಯಮಮ್” ಯಾದಂ ೧೮-೮।

ಅಧ್ಯಾಹಾರ ಅಧ್ಯಾಹಾರ (ಪುಂ) 1. ಊಹೆ. 2. ಅರ್ಥ  
ಪೂರ್ತಿಗಾಗಿ ಸಾಲದಿರುವ ಪದ ಅಥವಾ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು  
ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಅಧ್ಯಾಹರೀಯತೆ ಅಧಿ+ಆ+ಹ್ (ಹರಣೆ)  
“ಘ್” (೩-೩-೧೮)।

ಅಧ್ಯುಕ್ತ ಅಧ್ಯುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಎರಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಐಶ್ವರ್ಯವುಳ್ಳ, ಸಮೃದ್ಧ, ಧನಾಧ್ಯ  
ನಾದ. ಅಧಿ ಉಪರಿ ಉಚ್ಛ್ರಾ:

ಅಧ್ಯುಕ್ತ ಅಧ್ಯುಕ್ತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿರಿಯ ಹೆಂಡತಿ, ಅನೇಕ  
ಪತ್ನಿಯುಳ್ಳವನ ದೊಡ್ಡ ಹೆಂಡತಿ. ಅಧಿ ಉಪರಿ  
ಉಚ್ಛ್ರಾಹನಮಸ್ಯಾ:।

ಅಧ್ಯುಕ್ತ ಅಧ್ಯುಕ್ತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತುಂಬಿದಕೆಚ್ಚಲುಳ್ಳ  
ಹಸು. ಅಧಿಕಮೂಲೋ ಯಸ್ಯಾ:—ಋಷಿ “ಅನತ್”  
(೪-೪-೧೩)। “ಠಿ” (೪-೧-೨೪)।

ಅಧ್ಯೇತವ್ಯ ಅಧ್ಯೇತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಲು  
ಅರ್ಹನಾದ. 2. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಓದಬೇಕಾದ. ಅಧಿ+  
ಇತ್ (ಅಧ್ಯಯನ) “ತವ್ಯ:” (೩-೧-೯೬)।

ಅಧ್ಯೇಷಣಾ ಅಧ್ಯೇಷಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿಜ್ಞಾಪನೆ,  
ಪ್ರಾರ್ಥನೆ, ಆಚಾರ್ಯರನ್ನು ಗೌರವದಿಂದ ಬೇಡು  
ವುದು. ಅಧಿ+ಇಷ (ಆಮೋಕ್ಷಣ) “ಯುಕ್” (ವಾಂ ೩-೩-  
೧೦೭)। ಈ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಅಧ್ಯೇಷಣಂ ಎಂದು ನಪುಂಸಕ  
ಲಿಂಗದಲ್ಲಿಯೂ ಪ್ರಯೋಗವುಂಟು. 2. ಅಧಿಕವಾದ  
ಪ್ರಾರ್ಥನೆ, ಹೆಚ್ಚು ಬೇಡಿಕೆ.

ಅಧಿ ಅಧಿ (ವಿಂ) ತಡೆಯಲಾಗದ, ಎದುರಿಸಲಾಗದ,  
ಅಜೇಯವಾದ.

ಅಧಿಗ್ ಅಧಿಗ್ (ವಿಂ) ಎದುರಿಸಲಾಗದ ಸಂಚಾರ  
ವುಳ್ಳ.

ಅಧ್ರುವ ಅಧ್ರುವ (ವಿಂ) 1. ಚಂಚಲವಾದ, ಚಲಿಸುವ  
ಸ್ವಭಾವದ. 2. ಅಸ್ಥಿರವಾದ, ಶಾಶ್ವತವಲ್ಲದ.  
3. ನಿಶ್ಚಯವಿಲ್ಲದ, ಸಂದೇಹಾಸ್ಪದವಾದ. ನ ಧ್ರುವಮ್।  
“ಯೋ ಧ್ರುವಾಣಿ ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ ಅಧ್ರುವಾಣಿ ನಿವೇಶತೇ। ಧ್ರುವಾಣಿ  
ತಸ್ಯ ನಶ್ಯಂತಿ ಅಧ್ರುವಂ ನಷ್ಟಮೇವ ಹಿ” ಹಿತಂ। ನಿಶ್ಚಿತ  
ವಾದ (ಕರಗತವಾದ) ಸ್ವಲ್ಪ ಪ್ರಯೋಜನವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು  
ಸಂದೇಹಾಸ್ಪದವಾದ ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಯೋಜನಕ್ಕಾಗಿ  
ನಿರೀಕ್ಷಿಸುವವನು (ಆಸೆಪಡುವವನು) ಕರಗತವಾದ  
ಪ್ರಯೋಜನವನ್ನೂ ಕಳೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು.

ಅಧ್ರುಷ ಅಧ್ರುಷ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಗಂಟಲು ರೋಗ,  
ರಕ್ತವು ಕೆಡುವುದರಿಂದ ಬರುವ ಉದಲು.

ಅಧ್ವಗ ಅಧ್ವಗ (ಪುಂ) 1. ಪಥಿಕ, ದಾರಿ ನಡೆಯುವವನು.  
ಅಧ್ವಾನಂ ಗಚ್ಛತಿ ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ಠ:” (೩-೨-೪೮)।  
“ಸಂತಾನಕತರಕ್ಷಾಯಾಮುಪ್ತವಿಧಾಧರಾಧ್ವಗಮ್” ಕುರ್ಮಾಂ ೬-೪೬।  
2. ಉಷ್ಣ, ಒಂಟೆ. “ಲಂಬೀಷಾಧ್ವಗವಾಸಂತಕುಲನಾಶ-  
ಮಧುಧಿಪಾ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 3. ಸೂರ್ಯ. 4. ಹೇಸರ  
ಗತ್ತೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)—ಗಾ-ಗಾ. 5. ಗಂಗಾನದಿ.

ಅಧ್ವಗತ್ ಅಧ್ವಗತ್ (ಪುಂ) ದಾರಿ ನಡೆಯುವವನು, ಪಥಿಕ.  
ಅಧ್ವಾನಂ ಗಚ್ಛತಿ ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ವಿವಪ್” (೩-೨-೭೬)।



**ಅಧ್ಯನ್ ಅಧ್ಯನ್** (ಪುಂ) 1. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. ಅತಿ ಬಲಂ (ಪಶಿಕಾನಾಮ್) — ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ) “ಕ್ರನಿಪ್” “ಧ” ಚ (ತಂ ೪-೧೧೫). “ಅಪಿ ಲಕ್ಷಿತಮಧ್ವಾನಂ ಬುಬುಧೇ ನ ಬುಧೋಪಮಃ” ರಘುಂ ೧-೪೭. 2. ಆಕಾಶ, ವಾಯು ಮಂಡಲ. 3. ಕಾಲ [ಕಾಲವು ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ನುಂಗುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು]. “ಅಧ್ವಾ ಕಾಲವರ್ಮನೋಃ” ಹೇಮಂ. 4. ಪ್ರಯಾಣ. “ಅವ್ವಸು ತ್ರಿಪು ವಿಸೃಷ್ಟಮೆಥಿಲಃ” ರಘುಂ ೧೧-೫೭.

**ಅಧ್ವನೀನ ಅಧ್ವನೀನ** (ವಿಂ) 1. ಪಥಿಕ, ದಾರಿ ನಡೆಯುವವನು. ಅಧ್ವಾನಮಲಂ ಗಚ್ಛತಿ “ಃ” (೪-೨-೧೬). 2. ದಾರಿ ನಡೆಯಲು ಸಮರ್ಥ.

**ಅಧ್ವನ್ಯ ಅಧ್ವನ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಪಥಿಕ, ದಾರಿ ನಡೆಯುವವನು. 2. ದಾರಿ ನಡೆಯಲು ಸಮರ್ಥ. ಅಧ್ವಾನಮಲಂ ಗಚ್ಛತಿ “ಯತ್” (೪-೨-೧೬).

**ಅಧ್ವಪತಿ ಅಧ್ವಪತಿ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಅಧ್ವನಿ ಪತಿಃ. [ರಾತ್ರಿಯ ವೇಳೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಯಾಣವು ನಿಷಿದ್ಧ. ಹಗಲು ಮಾತ್ರ ಜನರು ಪ್ರಯಾಣ ಮಾಡುವುದರಿಂದ ಸೂರ್ಯನು ಪಥಿಕರ ರಕ್ಷಕನಾಗಿರುವನು.] (ವಿಂ) 2. ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಕಾಪಾಡುವ.

**ಅಧ್ವರ ಅಧ್ವರ** (ಪುಂ) 1. ಯಾಗ, ಯಜ್ಞ. ಅಧ್ವಾನಂ ರಾತಿ — ರಾ (ಆದಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೩). “ತಮಧ್ವರೇ ವಿಶ್ವಜಿತಿ ಕಿತ್ತಿಶಂ ನಿಃಶೇಷವಿಶ್ರಾಣಿತಕೋಶಜಾತಮ್” ರಘುಂ ೪-೧. 2. ಅಷ್ಟವಸುಗಳ ಪೈಕಿ ಎರಡನೆಯ ವಸು.

**ಅಧ್ವರಮಿಮಾಂಸಾ ಅಧ್ವರಮಿಮಾಂಸಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಾಗದ ವಿಧಾನವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ, ಮಿಮಾಂಸಾಶಾಸ್ತ್ರ.

**ಅಧ್ವರ್ಯು ಅಧ್ವರ್ಯು** (ಪುಂ) ಯಜುರ್ವೇದವನ್ನು ತಿಳಿದ ಋತ್ವಿಜ್ಞ, ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಹೋಮವನ್ನು ಮಾಡುವ ಋತ್ವಿಜ್ಞ. ಅಧ್ವರಮಿಚ್ಛತಿ “ಕೃಚ್” (೩-೧-೮). “ಃ” (೩-೨-೧೭೦).

**ಅಧ್ವಶಲ್ಯ ಅಧ್ವಶಲ್ಯ** (ಪುಂ) ಉತ್ತರಣೆ ಗಿಡ, ಮುಳ್ಳು ತ್ತರಣೆ. ಅಧ್ವನಿ ಶಲ್ಯಮಿವ [ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಹೋಗುವಾಗ ಇದರ ಮುಳ್ಳು ಬಟ್ಟೆಗೆ ಅಂಟಿಕೊಳ್ಳುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.]

**ಅಧ್ವಾತಿ ಅಧ್ವಾತಿ** (ವಿಂ) ಪಥಿಕ, ದಾರಿ ನಡೆಯುವವನು. ಅಧ್ವಾನಮತತಿ — ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೇ) “ಇನ್” (ತಂ ೪-೧೭೦).

**ಅಧ್ವಾಯನ ಅಧ್ವಾಯನ** (ನಂ) ಯಾತ್ರೆ, ಪ್ರಯಾಣ. ಅಧ್ವನಿ ಅಯನಂ ಗತಿಃ.

**ಅನ ಅನ** (ಪುಂ) ಪ್ರಾಣವಾಯು, ಶ್ವಾಸ, ಉಸಿರು. ಅನಿತಿ — ಅನ (ಪ್ರಾಣನೇ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪).

**ಅನಕ ಅನಕ** (ವಿಂ) ನೀಚ, ಅಧಮ, ಕೆಳದರ್ಜೆಯವನು.

**ಅನಕ್ಷ ಅನಕ್ಷ** (ವಿಂ) 1. (ಕಣ್ಣು ಮೊದಲಾದ) ಇಂದ್ರಿಯ ಎಲ್ಲದವನು. 2. ಚಕ್ರವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಅಕ್ಷಂ ನೇತ್ರಾದಿಕ-ಮಿಂದ್ರಿಯಂ ಚಕ್ರಂ ವಾ ಯಸ್ಯ. 3. ಕಣ್ಣಿಲ್ಲದವನು, ಕುರುಡ. ನಾಸ್ತಿ ಅಕ್ಷಿ ಯಸ್ಯ “ಷಚ್” (೪-೪-೧೧೩).

**ಅನಕ್ಷರ ಅನಕ್ಷರ** (ನಂ) 1. ನಿಂದಾವಚನ, ಆಕ್ಷೇಪಣೆ, ಬೈಗಳು. ಅಪ್ರಶಸ್ತಾನ್ಯಕ್ಷರಾಣಿ ಯತ್ರ. (ವಿಂ) 2. ಅಕ್ಷರವಿಲ್ಲದ, ವಿದ್ಯೆಯಿಲ್ಲದ, ಮೂರ್ಖ. 3. ಮಾತಾಡಲಾರದವನು, ಮೂಗ. ನ ಸನ್ಯಕ್ಷರಾಣಿ ಯಸ್ಯ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 4. ಮೌನವಾಗಿ, ಮಾತಿಲ್ಲದೆ. “ಅನಕ್ಷರ-ವ್ಯಜ್ಜಿತದೌಹದೇನ” ರಘುಂ ೧೪-೨೬.

**ಅನಕ್ಷಿ ಅನಕ್ಷಿ** (ನಂ) ಅಪ್ರಶಸ್ತವಾದ ಕಣ್ಣು, ನೋಟದ ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ ಕಣ್ಣು. ಅಪ್ರಶಸ್ತಮಕ್ಷಿ.

**ಅನಗಾರ ಅನಗಾರ** (ಪುಂ) 1. ಸಂನ್ಯಾಸಿ, ಯತಿ. (ವಿಂ) 2. ಮನೆಯಿಲ್ಲದವನು. ನಾಸ್ತ್ಯಗಾರಂ ಯಸ್ಯ.

**ಅನಗ್ನಿ ಅನಗ್ನಿ** (ಪುಂ) 1. ಸಂನ್ಯಾಸಿ, ಯತಿ. 2. ಅಗ್ನಿ ಕಾರ್ಯ (ಔಪಾಸನಾದಿಗಳು) ವನ್ನಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳದ ಗೃಹಸ್ಥ. ನಾಸ್ತಿ ಅಗ್ನಿಃ ಶ್ರೌತಃ ಸ್ಮಾರ್ತೌ ವಾ ಯಸ್ಯ. “ಅನಗ್ನಿರನಿಕೇತಃ ಸ್ಯಾನ್ಮುನಿರ್ಮೂಲಫಲಾಶನಃ” ಮನುಂ ೬-೨೫. 3. ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ. 4. ವಿಧುರ, ವೈದಿಕಾಗ್ನಿಯಿಲ್ಲದವನು. 5. ಅಧಾರ್ಮಿಕ. 6. ಅಗ್ನಿಸಂಸ್ಕಾರವಿಲ್ಲದ ಯಾಗ. (ವಿಂ) 7. ಜಠರಾಗ್ನಿಯಿಲ್ಲದ, ಅಜೀರ್ಣ ರೋಗವುಳ್ಳ.

**ಅನಗ್ನಿದಾಘ ಅನಗ್ನಿದಾಘ** (ವಿಂ) ಅಗ್ನಿಸಂಸ್ಕಾರವಿಲ್ಲದ, ಬೆಂಕಿಯಿಂದ ಸುಡಲ್ಪಡದ.

**ಅನಘ ಅನಘ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. “ಅನಘೋ ವಿಜಯೋ ಜೇತಾ” ವಿಂ ಸಂ. 2. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. 3. ಬಿಳಿ ಸಾಸುವೆ. (ವಿಂ) 4. ರಮ್ಯವಾದ, ಸುಂದರವಾದ, ದೋಷವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಅಘಂ ಯಸ್ಯ. “ಅಥಾಗಮಾನಾಮನಘೇನ ಭೂಮ್ನಾ” ಯಾದಂ ೨-೧. 5. ದುಃಖವಿಲ್ಲದ, ಸಂತೋಷವುಳ್ಳ. “ಅನಘ-ಸ್ವಾಗತಸ್ಮಿತಮ್” ಯಾದಂ ೧-೭೫. “ಅನಘಸ್ಥಿತಮಂತಿಮಾಮವಸ್ಥಾಮ್” ಯಾದಂ ೧೫-೧೩೧. 6. ಪಾಪವಿಲ್ಲದ, ದೋಷವಿಲ್ಲದ. “ಅವೇಮಿ ಚೈನಾಮನಘೇತಿ ಕಿಂತು” ರಘುಂ ೧೪-೪೦. 7. ಸುರಕ್ಷಿತವಾದ, ಯಾವ ತೊಂದರೆಯೂ ಇಲ್ಲದ. “ಕಚ್ಚಿನ್ಮಗ್ನಿಗಾಮನಘಾ ಪ್ರಸೂತಿಃ” ರಘುಂ ೫-೭.



8. ಶುದ್ಧವಾದ, ಸ್ವಚ್ಛವಾದ, ಕಲ್ಮಷವಿಲ್ಲದ, ದೋಷವಿಲ್ಲದ. "ಧರ್ಮಸ್ಯ ಸ್ಥಿತಿಮನಃ ವಿಧಾತುಕಾಮಃ" ಯಾದಂ ೧-೧೦೦.

ಅನರ್ಜ ಅನಂಗ (ಪುಂ) 1. ಮನ್ಮಥ. ನಾಸ್ತಿ ಅರ್ಜಮಾಕಾರೋ यस್ಯ। "ತಾಂ ವೀಕ್ಷ್ಯ ಲೀಲಾಚತುರಾಮನರ್ಜಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೪೭। (ನಂ) 2. ಆಕಾಶ, ಗಗನ. 3. ಚಿತ್ತ, ಮನಸ್ಸು. "ಅನರ್ಜೋ ಮದನೇ ಅರ್ಜಮಾಕಾಶಮನಸೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ।

ಅನರ್ಜಕೃಷ್ಣಾ ಅನಂಗಕೃಷ್ಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸುರತ, ಕಾಮಲೀಲೆ. ಅನರ್ಜನ ಕೃಷ್ಣಾ। 2. ಒಂದು ವೃತ್ತ.

ಅನರ್ಜದ ಅನಂಗದ (ವಿಂ) 1. ಅಂಗದವಿಲ್ಲದ, ತೋಳಿನ ಆಭರಣವಿಲ್ಲದ. 2. ಕಾಮವಿಕಾರವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. "ದಶನೇ ದೌಹದಾತೌ ಚ ದ್ವಯೋರಾಸೀದನರ್ಜದಾ" ಚಂ ಭಾಂ।

ಅನರ್ಜಲೇಖ ಅನಂಗಲೇಖ (ಪುಂ) ಪ್ರೇಮಪತ್ರ, ಕಾಮವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಕಾಗದ. ಅನರ್ಜವ್ಯಂಜಕೋ ಲೇಖಃ। "ಅನರ್ಜಲೇಖಕ್ರಿಯಯೋಗಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೭।

ಅನರ್ಜಶತ್ರು ಅನಂಗಶತ್ರು (ಪುಂ) ಶಿವ, ಈಶ್ವರ.

ಅನರ್ಜ ಅನಚ್ಛ (ವಿಂ) 1. ಕೊಳೆಯಾದ. 2. ತಿಳಿಯಲ್ಲದ, ನಿರ್ಮಲವಲ್ಲದ. ನ ಅರ್ಜಃ।

ಅನರ್ಜನ ಅನಂಜನ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ನಾಸ್ತಿ ಅರ್ಜನಂ ದೋಷೋ यस್ಯ। (ನಂ) 2. ಪರಬ್ರಹ್ಮ. 3. ಗಗನ, ಆಕಾಶ, ವಾಯುಮಂಡಲ. (ವಿಂ) 4. ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ, ಸಂಪರ್ಕವಿಲ್ಲದ. 5. ದೋಷವಿಲ್ಲದ, ಕಳಂಕವಿಲ್ಲದ. 6. ಅಂಜನವಿಲ್ಲದ, ಕಾಡಿಗೆ (ಕಣ್ಣು ಕಪ್ಪು)ಯಿಲ್ಲದ. "ನೆತ್ರೇ ದೂರಮನರ್ಜನೇ ಪುಲಕಿತಾ ತನ್ವೀ-ತವಯಂ ತನುಃ" ಅಮರಂ।

ಅನರ್ಜಜಿಹ್ವಾ ಅನಡುಜ್ಜಿಹ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆಂಡೆಗಿಡ. ಅನರ್ಜಹೋ ಜಿಹ್ವೇವ।

ಅನರ್ಜ್ಜ ಅನಡುಹ್ (ಪುಂ) 1. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. 2. ವೃಷಭರಾಶಿ. ಅನಃ ಶಕಟಂ ವಹತಿ। ನಿಪಾಂ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಹ್ವ" (೪-೧-೪೧)। ಅನರ್ಜ್ಜಿ-ಡುಹೀ-ಅನರ್ಜ್ಜಾಹೀ-ಡುಹೀ. ಆಕಳು, ಹಸು.

ಅನರ್ಜ ಅನಣು (ಪುಂ) 1. ದಪ್ಪಧಾನ್ಯ (ಕಡಲೆ, ಬಟಾಣಿ ಮೊದಲಾದುವು). (ವಿಂ) 2. ಸ್ಥೂಲವಾದ, ದಪ್ಪವಾದ.

ಅನರ್ತಕ್ರಮಣೀಯ ಅನತಿಕ್ರಮಣೀಯ (ವಿಂ) ಮಾರಲಾಗದ, ಉಲ್ಲಂಘಿಸಲಾಗದ. "ಅನರ್ತಕ್ರಮಣೀಯಾತೇ ಶಾಸನಾತ್ಸುರನಾಯಕ" ಕುಮಾಂ ೧೦-೬।

ಅನರ್ತಿಚಿರ ಅನತಿಚಿರ (ವಿಂ) ಬಹಳಕಾಲದ್ದಲ್ಲದ, ತತ್ಕಾಲದ. "ಅನರ್ತಿಚಿರೋಜ್ಜಿತಸ್ಯ ಜಲದೇನ" ಮಾಘಂ ೪-೪೧।

ಅನರ್ತಿರಿಕ್ತ ಅನತಿರಿಕ್ತ (ವಿಂ) ಅಧಿಕವಲ್ಲದ, ಬೇರೆಯಲ್ಲದ. ನ ಅರ್ತಿರಿಕ್ತಮ್।

ಅನರ್ತಿಲಕ್ಷಣ ಅನತಿಲಂಘನ (ನಂ) ಮಾರದಿರುವುದು, ದಾಟದಿರುವುದು.

ಅನರ್ತಿಲಕ್ಷಣೀಯ ಅನತಿಲಂಘನೀಯ (ವಿಂ) 1. ದಾಟಲರ್ಹವಲ್ಲದ, ಮಾರಲರ್ಹವಲ್ಲದ. ಅರ್ತಿಲಕ್ಷಣೀಯಮಹಿ ನ ಭವತಿ - ಅತಿ+ಲಘಿ(ಗತೌ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೩-೧೬೯)। 2. ದಾಟಿಲ್ಲದದ, ಮಾರಿಲ್ಲದದ. ನ ಅರ್ತಿಲಕ್ಷಣೀಯತೇ - ಲಘಿ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)।

ಅನರ್ತಿವಿಲಿಖಿತಾ ಅನತಿವಿಲಿಖಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಾವ ಕಾಶನಾಗದಿರುವಿಕೆ. 2. ಮೂವತ್ತೈದು ವಾಗ್ಗುಣಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ವಿಧ.

ಅನರ್ಥಾ ಅನರ್ಥಾ (ಅವ್ಯಂ) ಅನಿಶ್ಚಯ.

ಅನರ್ಥಾಪುರಷ ಅನರ್ಥಾಪುರುಷ (ಪುಂ) 1. ಅಪ್ರಾಮಾಣಿಕ, ನಂಬಿಕೆಯಿಲ್ಲದ ಪುರುಷ. 2. ದೇವ ಮತ್ತು ಪಿತೃ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವಾಸವಿಲ್ಲದವನು. ನ ಅರ್ಥಾ ಪುರಷಃ।

ಅನರ್ಥ ಅನರ್ಥ (ಪುಂ) 1. ಬಳಸಾಸುವೆ. (ವಿಂ) 2. ತಿನ್ನಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ. ನ ಅರ್ಥಃ।

ಅನರ್ಥತನ ಅನರ್ಥತನ (ಪುಂ) 1. ಹಿಂದಿನ ಮತ್ತು ಮುಂದಿನ ಕಾಲ, ಭೂತ ಮತ್ತು ಭವಿಷ್ಯತ್ಕಾಲ. ನ ಅರ್ಥತನಃ। [ಹಿಂದಿನ ರಾತ್ರಿಯ ಉತ್ತರಾರ್ಧ ಮತ್ತು ಮುಂದಿನ ರಾತ್ರಿಯ ಪೂರ್ವಾರ್ಧದಿಂದ ಕೂಡಿದ (ದಿವಸವು) ಮಧ್ಯಕಾಲವು ಅರ್ಥತನ. ಇದಕ್ಕೆ ಭಿನ್ನ ಕಾಲವು ಅನರ್ಥತನ.] (ವಿಂ) 2. ಈಗಿನದಲ್ಲದ, ಹಿಂದಿನ ಅಥವಾ ಮುಂದಿನ ಕಾಲದ.

ಅನರ್ಥಿಕಾರ ಅನರ್ಥಿಕಾರ (ಪುಂ) ಹಕ್ಕಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಬಾಧ್ಯತೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

ಅನರ್ಥಿಕಾರಚರ್ಚಾ ಅನರ್ಥಿಕಾರಚರ್ಚಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಧಿಕಾರವಿಲ್ಲದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಚರ್ಚೆ, ತನಗೆ ಸಂಬಂಧಪಡದ (ಮತ್ತೊಬ್ಬರ) ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಚರ್ಚಿಸುವುದು.

ಅನರ್ಥೀಕೃತ ಅನರ್ಥೀಕೃತ (ವಿಂ) ಅಧಿಕಾರ ಹೊಂದದ, ಹಕ್ಕುಪಡೆಯದ. ನ ಅರ್ಥೀಕೃತಃ।

ಅನರ್ಥಿಗತ ಅನರ್ಥಿಗತ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲ್ಪಡದ. 2. ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ. ನ ಅರ್ಥಿಗತಃ।

ಅನರ್ಥೀನ ಅನರ್ಥೀನ (ವಿಂ) ಸ್ವತಂತ್ರ, ಇತರರಿಗೆ ಅಧೀನ ನಲ್ಲದವನು. ನ ಅರ್ಥೀನಃ।

ಅನರ್ಥೀನಕ ಅನರ್ಥೀನಕ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬರಿಗೂ ಅಧೀನನಲ್ಲದೆ ತನ್ನ ಮನೆಯಲ್ಲೇ ಸ್ವತಂತ್ರನಾಗಿ ಕೆಲಸಮಾಡುವ



ಬಡಗಿ. ನ ಅಧೀನಃ ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕನ್" (೪-೪-೪)।

"ಕೌರತಸೋಜಧೀನಕಃ" ಅಮಂ।

ಅನುಪ್ರಾಸ ಅನಧ್ಯಕ್ಷ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಲ್ಲದ, ಅಗೋಚರವಾದ. 2. ಯಜಮಾನನಿಲ್ಲದ, ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕನಿಲ್ಲದ.

ಅನುಪ್ರಾಸ ಅನಧ್ಯಯನ (ನಂ) ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸದ ವಿರಾಮ, ವ್ಯಾಸಂಗದ ವಿಶ್ರಾಂತಿ.

ಅನುಪ್ರಾಸ ಅನಧ್ಯಾಯ (ಪುಂ) 1. ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸದ ವಿರಾಮ, ವ್ಯಾಸಂಗದ ವಿಶ್ರಾಂತಿ. ನ ಅಧ್ಯಾಪಕಾಧ್ಯಯನಮ್। 2. ಅಧ್ಯಯನದ ವಿರಾಮಕಾಲ, ವ್ಯಾಸಂಗದ ಬಿಡುಗಡೆ. ನ ಅಧೀಯತೆ ಅಸ್ಮಿನ್ ಕಾಲೇ—ಅಧಿ+ಇಡ್ (ಅಧ್ಯಯನೇ) ಅಧಿಂ "ವಜ್" (೩-೩-೧೨೨)।

ಅನು ಅನನ (ನಂ) ಜೀವನ, ಉಸಿರಾಡುವಿಕೆ, ಜೀವಿಸಿರುವುದು. ಅನ (ಪ್ರಾಣನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅನುಗತ ಅನನುಗತ (ವಿಂ) 1. ಅಸಾಧಾರಣ(ಧರ್ಮ), ಸಮಾನತೆಯನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ(ವಿಶೇಷಧರ್ಮ). ನ ಅನುಗತಃ। 2. ಹಿಂಬಾಲಿಸದ, ಅನುಸರಿಸಿ ಹೋಗದಿರುವ. 3. ಅಧೀನನಲ್ಲದ, ಸ್ವತಂತ್ರನಾದ.

ಅನುಗಮ ಅನನುಗಮ (ಪುಂ) (ಸಮಾನತೆಯನ್ನು ಹೋಗಿಸುವ) ಸಾಧಾರಣ ಧರ್ಮದ ಅಭಾವ. ನ ಅನುಗಮಃ।

ಅನುಭಾವಕ ಅನನುಭಾವಕ (ವಿಂ) ಗ್ರಹಿಸಲು ಅಸಮರ್ಥ, ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಅಶಕ್ತ. ನ+ಅನು+ಭೂ (ಘಟಾಯಾಮ್) "ತಕಜ್" (೩-೨-೧೪೪)।

ಅನುಭಾವಕತಾ ಅನನುಭಾವಕತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗ್ರಹಣ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಧಾರಣಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಅನುಭಾವಕ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)।

ಅನಂತ ಅನನ್ತ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ನಾಸ್ತಿ ಅಂತೋ ಗುಣಾನಾಂ ಯಸ್ಯ। "ಅನಂತಗರ್ಭಮಿವಲೋಕಯ ದೇವಿಮ್" ಯಾದಂ ೨-೩೬। [ಸಿದ್ಧರು, ಗಂಧರ್ವರು, ಅಪ್ಸರಸ್ಸು ಮೊದಲಾಗಿ ಯಾರೂ ಪರಮಾತ್ಮನ ಗುಣಗಳ ಎಲ್ಲೆಯನ್ನು ತಿಳಿಯಲಾಗದಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.] 2. ಅದಿಶೇಷ, ಸರ್ವರಾಜ. 3. ಬಲರಾಮ [ಅದಿಶೇಷನ ಅವತಾರ]. 4. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 5. ಲಕ್ಷ್ಮೀಗಿಡ. (ನಂ) 6. ಆಕಾಶ. 7. ಪರಬ್ರಹ್ಮ [ಕಾಲದೇಶವಸ್ತುಪರಿಚ್ಛೇದರಹಿತ]. "ಸತ್ಯಂ ಜ್ಞಾನಮನಂತಂ ಬ್ರಹ್ಮ" ತೇಂ ೩ಂ ೨-೧। (ವಿಂ) 8. ಕೊನೆಯಿಲ್ಲದ, ಅವಧಿಯಿಲ್ಲದ. "ಅನಂತೇನಾಪ್ಯನೇಹಸಾ" ಯಾದಂ ೧೬-೧೧೪। 9. ಅಳತೆಯಿಲ್ಲದ, ಇಯತ್ತಾರಹಿತವಾದ. "ಅನಂತಾ ವಾಡ್ಮಯಸ್ಯಾಹೋ ಗೇಯಸ್ಯೇವ

ವಿಚಿತ್ರತಾ" ಮಾಘಂ ೨-೪೨। 10. ಸಮಸ್ತ, ಸಕಲ. "ಅನಂತರಲಪ್ರಭವಸ್ಯ ಯಸ್ಯ ಹಿಮಂ ನ ಸೌಭಾಗ್ಯವಿಲೋಪಿ ಜಾತಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೩।

ಅನಂತಚತುರ್ದಶಿ ಅನಂತಚತುರ್ದಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಛಾಂದ್ರಪದ ಶುಕ್ಲ ಚತುರ್ದಶಿ. ಅನಂತಸ್ಯ ಚತುರ್ದಶಿ। [ವಿಷ್ಣುವಿನ ವಿಶೇಷ ಪೂಜೆಯ ದಿವಸ.]

ಅನಂತಜಿತ್ ಅನಂತಜಿತ್ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಅನಂತಾನಿ ಭೂತಾನಿ ಜಿತವಾನ್। "ಸಹಸ್ರಜಿದನಂತಜಿತ್" ವಿಂ ಸಂ।

ಅನಂತತೃತೀಯಾ ಅನಂತತೃತೀಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಛಾಂದ್ರಪದ, ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷ ಮತ್ತು ವೈಶಾಖ ಮಾಸದ ಶುಕ್ಲ (ಪಕ್ಷದ) ತದಿಗೆ. "ನಮಸ್ಯೇ ವಾಘ ವೈಶಾಖೇ ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷಯಾ ಪುನಃ। ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷತೃತೀಯಾಂ....। ರತ್ನಾನಂತತೃತೀಯಾ ಸುತಾನಂದಫಲಪ್ರದಾ" ಪದ್ಯಪುಂ।

ಅನಂತದೃಷ್ಟಿ ಅನಂತದೃಷ್ಟಿ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. 2. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. ಅನಂತಾ ದೃಷ್ಟಯೋ ಯಸ್ಯ।

ಅನಂತದೇವ ಅನಂತದೇವ (ಪುಂ) ಶೇಷಕಾಯಿಯಾದ ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಅನಂತೇ ದೀವ್ಯತಿ—ದಿವ್ಯ (ಶ್ರೀಗಾದಿ) "ವಜ್" (೩-೧-೧೩೪)।

ಅನಂತಮೂಲ ಅನಂತಮೂಲ (ಪುಂ) ಅನಂತನಗೊಂಡೆ ಗಿಡ. ಅನಂತಾನಿ ಮೂಲಾನಿ ಯಸ್ಯ।

ಅನಂತರ ಅನಂತರ (ಪುಂ) 1. ಹಿಂದಿನ ಮತ್ತು ಮುಂದಿನ ಕಾಲ ಅಥವಾ ದೇಶ. (ವಿಂ) 2. ವ್ಯವಧಾನವಿಲ್ಲದ, ಬಿಡುವಿಲ್ಲದ, ಕಾಲದ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದ, ಎಡೆಯಿಲ್ಲದ. 3. ಸೇರಿದಂತಿರುವ, ಸಮಾಪದಲ್ಲಿರುವ, ಸನ್ನಿಹಿತವಾದ. ನಾಸ್ತಿ ಅಂತರಂ ವ್ಯವಧಾನಂ ಯಸ್ಯ। "ವಸಮೇಕೋ ನೃಪತೀನನಂತರಾನ್" ರಘುಂ ೮-೧೯। "ಅಭಿಭೂಯ ಹರತ್ಯನಂತರಃ ಶಿಶಿಲಂ ಕೂಲಮಿವಾಪಗಾರಯಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೪೩। 4. ಉತ್ತರ ಕಾಲದ, (ಮುಂದಿನ) ಸಮಾಪ ಕಾಲದ. "ಗರ್ಜಿತಾನಂತರಾಂ ವೃಷ್ಟಿ ಸೌಭಾಗ್ಯೇನ ಜಿಗಾಘ ಸಃ" ಕುಮಾಂ ೨-೪೩। (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 5. ಅಮೇಲೆ, ಉತ್ತರ ಕಾಲದಲ್ಲಿ. ನಾಸ್ತಿಯಂತರಂ ಯಥಾಸ್ಥಾತಥಾ। "ಪುರಾಣಪತ್ರಾಪಗಮಾದನಂತರಮ್" ರಘುಂ ೩-೪।

ಅನಂತರಜ ಅನಂತರಜ (ಪುಂ) 1. ಮುಂದಿನ ವರ್ಣದ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಮಗ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಅಥವಾ ವೈಶ್ಯ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿಯೂ ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಗೆ ವೈಶ್ಯ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿಯೂ ಜನಿಸಿದ ಮಗ. ಅನಂತರಸ್ಯಾಂ ಅನಂತರವರ್ಣಾಂ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುರ್ಭವಿ) "ಃ" (೩-೨-೯೭)। 2. ಜೈಷ್ಠ ಮತ್ತು ಕನಿಷ್ಠ



ಸಹೋದರ. ಅನಂತರೇ ಜಾತ: — ಜನಿ "ಓ:" (೩-೨-೯೭)।  
 ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಅನಂತರಜಾ ಅನಂತರಜಾ.  
 ಅನಂತರಯ ಅನಂತರಯ (ಪುಂ) ದೂರಮಾಡದಿರುವಿಕೆ,  
 ಬಿಟ್ಟುಕೊಡದಿರುವಿಕೆ. ನ ಅಂತರಯ: ದೂರೀಕರಣಮ್।  
 ಅನಂತರಾಯ ಅನಂತರಾಯ (ವಿಂ) ವಿಘ್ನವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರತಿ  
 ಬಂಧಕವಿಲ್ಲದ. ನ ಅಂತರಾಯ: ಯಸ್ಯ।  
 ಅನಂತರೀಯ ಅನಂತರೀಯ (ವಿಂ) ಉತ್ತರಕಾಲದ,  
 ಮುಂದಿನ ಕಾಲದ.  
 ಅನಂತರೂಪ ಅನಂತರೂಪ (ಪುಂ) ಪರಮಾತ್ಮ, ವಿಷ್ಣು.  
 ಅನಂತಾನಿ ರೂಪಾಣ್ಯಸ್ಯ। "ಅನಂತರೂಪೋಜಂತಶ್ರೀಜಿತಮನ್ಯು-  
 ಭಯಾಪಹ:" ವಿಂ ಸಂ।  
 ಅನಂತವಿಜಯ ಅನಂತವಿಜಯ (ಪುಂ) ಧರ್ಮರಾಜನ  
 ಶಂಖ. ಅನಂತಾನ್ ವಿಜಯತೇಜನೇನ। "ಅನಂತವಿಜಯಂ ರಾಜಾ  
 ಕುಂತಿಪುತ್ರೋ ಯುಧಿಷ್ಠಿರ:" ಗೀತಾ ೧-೧೬।  
 ಅನಂತವೀರ್ಯ ಅನಂತವೀರ್ಯ (ಪುಂ) ಇಪ್ಪತ್ತಮೂರನೆಯ  
 (ಜೈನ) ತೀರ್ಥಂಕರರ ಹೆಸರು.  
 ಅನಂತವ್ರತ ಅನಂತವ್ರತ (ನಂ) ಭಾದ್ರಪದ ಶುಕ್ಲ ಚತು  
 ರ್ದಶೀದಿವಸ ಮಾಡುವ ವ್ರತ.  
 ಅನಂತಶಯನ ಅನಂತಶಯನ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಶೇಷ  
 ಶಾಯಿ. ಅನಂತ: ಶಯನಂ ಯಸ್ಯ। (ನಂ) 2. ತಿರುವಾಂ  
 ಕೂರು. 3. ಶ್ರೀರಂಗ. 4. ಶ್ರೀರಂಗಪಟ್ಟಣ.  
 5. ಶಿವಸಮುದ್ರ. 6. ತಿರುಪತಿ, ಗೋವಿಂದರಾಜ  
 ಪಟ್ಟಣ. ಅನಂತ: ಶೇತೇಜ್ರ — ಶೀಙ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಲ್ಯುಟ್"  
 (೩-೩-೧೧೭)।  
 ಅನಂತಶೀರ್ಷ ಅನಂತಶೀರ್ಷ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ವಾಸುಕಿ.  
 (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ಶೀರ್ಷ — ಶೀರ್ಷಾ. 3. ವಾಸುಕಿಯ ಪತ್ನಿ.  
 ಅನಂತಶ್ರೀ ಅನಂತಶ್ರೀ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಅನಂತಾ  
 ಅಪರಿಮಿತಾ ಶ್ರೀಯಸ್ಯ। "ಅನಂತರೂಪೋಜಂತಶ್ರೀ:" ವಿಂ ಸಂ।  
 ಅನಂತಾ ಅನಂತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನಂತನಗೊಂಡಿ ಗಿಡ.  
 2. ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ. ನಾಸ್ತಿಯಂತೋಜ್ಞಾ:। 3. ಪಾರ್ವತಿ.  
 4. ಗರಿಕೆಹುಲ್ಲು. 5. ನಸುಗುನ್ನಿ ಗಿಡ. 6. ಬೆಣ್ಣೆ  
 ಬಿದುರು ಸೊಪ್ಪು. 7. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. 8. ನರುವಲು  
 ಗಿಡ. 9. ಸೊಗದೆಬೇರು. 10. ಹಿಪ್ಪಲಿ. 11. ಬಿಳಿ  
 ಗರಿಕೆ. 12. ಕರಿ ಜೀರಿಗೆ. 13. ತಿಲಕಸಂಧಿ.  
 14. ಅಳಲೆಗಿಡ. 15. ನೆಲ್ಲಿಗಿಡ. 16. ಪೂರ್ಣಿಮೆ,  
 ಹುಣ್ಣಿಮೆ. "ಅನಂತಾ ತು ಗುಡ್ಡುಚಿ ಭೂದುರಾಲಭಾ। ವಿಶಲ್ಯಾ  
 ಲಾಙ್ಗಲಿ ದೂರ್ವಾ ಶಾರಿವಾ ಹೈಮವತ್ಯಪಿ" ಹೇಮಂ। "ಅನಂತಾ  
 ಚ ವಿಶಲ್ಯಾಃ ಶಾರಿವಾದ್ದುರ್ವಯೋರಪಿ। ಕಣಾದುರಾಲಭಾಪಥ್ಯಾ-

ಪಾರ್ವತ್ಯಾಮಲಕೀಫು ಚ। ವಿಶ್ವಮ್ಭರಾಗುಡ್ಡುಚ್ಯೋ: ಸ್ಯಾತ್" ಮೇದಿಂ।  
 "ಅನಂತಾ ಪೂರ್ಣಿಮಾ ದೂರ್ವಾ ಯವಾಃ ಶಾರಿವಾ ಮಹಿ" ವೈಜಂ।  
 ಅನನ್ಯ ಅನನ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕೊನೆಯಿಲ್ಲದ, ನಾಶವಿಲ್ಲದ,  
 ನಿತ್ಯವಾದ. 2. ಕೊನೆಯಿಲ್ಲದ.  
 ಅನಂದ ಅನಂದ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷ ಪಡಿಸಿದ.  
 2. ದುಃಖವುಂಟುಮಾಡುವ. ನ ನಂದಯತಿ — ಟು ನದಿ  
 (ಸಮೃದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಅನಂದಾ  
 ನಾಮ ತೇ ಲೋಕಾ:" ಕಠಂ ೧-೨।  
 ಅನನ್ಯ ಅನನ್ಯ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ನಾಸ್ತಿಯನ್ಯ-  
 ದಸ್ಮಾತ್। (ವಿಂ) 2. ಬೇರೆಯಿಲ್ಲದ, ಒಂದೇ ಆದ,  
 ವ್ಯತ್ಯಾಸವಿಲ್ಲದ. ನ ಅನ್ಯ:। 3. ಬೇರೆಯಾಗಿಲ್ಲದ,  
 ಒಂದಾಗಿರುವ, ಅವಿನಾಭೂತವಾದ, ಎಡಬಿಡದೆ  
 ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. "ಅನನ್ಯಾ ರಾಘವೇಣಾಹಂ ಭಾಸ್ಕರೇಣ ಪ್ರಭಾ  
 ಯಥಾ"। "ಸಾ ಹಿ ಸತ್ಯಾಭಿಸಂಧಾನಾ ತಥಾನನ್ಯಾ ಚ ಭರ್ತೇರಿ"  
 ರಾಮಾಂ। 4. ಅದ್ವಿತೀಯ, ಕೇವಲ, ಬೇರೊಬ್ಬನಿಲ್ಲದ,  
 ಅಸಹಾಯ. ನಾಸ್ತಿ ಅನ್ಯೋ ಯಸ್ಯ। 5. ಬೇರೊಬ್ಬರನ್ನೂ  
 ಧ್ಯಾನಮಾಡದ. ನಾಸ್ತಿ ಅನ್ಯೋ ಧ್ಯಾನವಿಷಯೋ ಯಸ್ಯ।  
 6. ಬೇರೆ ಯಾವ ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯೂ ಇಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ  
 ಅನ್ಯೋ ವಿಷಯೋ ಯಸ್ಯ। "ಅನನ್ಯಾಶ್ಚಿಂತಯಂತೋ ಮಾಂ ಯೇ ಜನಾ:  
 ಪರ್ಯುಪಾಸತೇ" ಗೀತಾ ೧-೨೨।  
 ಅನನ್ಯಗತಿಕ ಅನನ್ಯಗತಿಕ (ವಿಂ) ಬೇರೆ ಉಪಾಯ  
 ವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಅನ್ಯಾ ಗತಿಯಸ್ಯ। ಸಮಾಸಾಂತ: "ಕಪ್"  
 (೪-೪-೧೪೪)। "ಅನನ್ಯಗತಿಕೇ ಜನೇ ವಿಗತಪಾತಕೇ ಚಾತಕೇ"  
 ತದ್ಭಂ।  
 ಅನನ್ಯಜ ಅನನ್ಯಜ (ಪುಂ) ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ಅನನ್ಯೋ ವಿಷ್ಣು:  
 ತತೋ ಜಾತ: — ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭಾವಿ) "ಓ:" (೩-೨-೯೮)।  
 ಅನನ್ಯದೃಷ್ಟಿ ಅನನ್ಯದೃಷ್ಟಿ (ವಿಂ) ಬೇರೆ ಕಡೆ ದೃಷ್ಟಿ  
 ಯಿಲ್ಲದ, ಒಂದೇ ಕಡೆ ದೃಷ್ಟಿಯುಳ್ಳ. ನಾಸ್ತಿಯನ್ಯತ್ರ  
 ದೃಷ್ಟಿಯಸ್ಯ। "ಅನನ್ಯದೃಷ್ಟಿ: ಸವಿತಾರಮೈಕತ" ಕುಮಾಂ ೪-೨೦।  
 ಅನನ್ಯಪೂರ್ವ ಅನನ್ಯಪೂರ್ವ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೇರೆ ಯಾರಿಂದಲೂ  
 ಅನುಭವಿಸಲ್ಪಡದ. ಅನ್ಯ: ಪೂರ್ವೋ ಯಸ್ಯಾ: ಸಾ ಅನ್ಯಪೂರ್ವಾ।  
 ನ ಅನ್ಯಪೂರ್ವಾ। "ತಥಾಪ್ಯನನ್ಯಪೂರ್ವೇ ತಸ್ಮಿನ್ನಾಸೀದ್ವಸುಧರಾ"  
 ರಘುಂ ೪-೭।  
 ಅನನ್ಯಭಾಜ್ ಅನನ್ಯಭಾಜ್ (ವಿಂ) ಬೇರೆ ಯಾರನ್ನೂ  
 ಸೇರದಿರುವ, ಇತರರನ್ನು ಸೇವಿಸದಿರುವ. ನ ಅನ್ಯ  
 ಭಜತೇ — ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಫಿವ:" (೩-೨-೬೨)।  
 "ಅನನ್ಯಭಾಜಂ ಪತಿಮಾಪ್ನುಹೀತಿ ಸಾ ತಥ್ಯಮೇವಾಭಿಹಿತಾ ಭವೇನ"  
 ಕುಮಾಂ ೩-೬೩।



**ಅನನ್ಯಮನಸ್** ಅನನ್ಯಮನಸ್ (ವಿಂ) ಬೇರೆ ಯಾವುದ ರಲ್ಲಿಯೂ ಮನಸ್ಸಿಲ್ಲದ, ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಚಿತ್ತೈಕಾಗ್ರ್ಯವುಳ್ಳ. ನಾಸ್ತೀನ್ಯತ್ರ ಮನಃ ಯಸ್ಯ |

**ಅನನ್ಯಲಭ್ಯ** ಅನನ್ಯಲಭ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಇತರ ವಿಷಯ ಗಳಲ್ಲಿ ಹೊಂದಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. ನ ಅನ್ಯೇಷು ಲಭ್ಯಃ |

“ಅನನ್ಯಲಭ್ಯಾಂ ಲಭತೇ ಸ್ಮ ತೃಪ್ತಿಮ್” ಯಾದಂ ೧೩-೪ |

2. ಬೇರೆ ಉಪಾಯದಿಂದ ಹೊಂದಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. ನ ಅನ್ಯೇನ ಲಭ್ಯಃ | “ಅನನ್ಯಲಭ್ಯಾಮಲಭಂತ ಪೌರಾಃ” ಯಾದಂ ೧೩-೬೫ |

3. ಬೇರೊಬ್ಬರಿಂದ ಹೊಂದಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ.

**ಅನನ್ಯವಿಷಯ** ಅನನ್ಯವಿಷಯ (ವಿಂ) 1. ಬೇರೊಬ್ಬರಿಗೂ ಸಂಬಂಧಪಡದ, ತನಗೇ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. 2. ಮತ್ತೊಂದು ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸದ.

**ಅನನ್ಯವೃತ್ತಿ** ಅನನ್ಯವೃತ್ತಿ (ವಿಂ) 1. ಏಕಾಗ್ರಚಿತ್ತವುಳ್ಳ, ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ನ ಅನ್ಯಸ್ಮಿನ್ ವೃತ್ತಿರಿಯಸ್ಯ | 2. ಬೇರೆ ಜೀವನೋಪಾಯವಿಲ್ಲದ. ನ ಅನ್ಯಾ ವೃತ್ತಿರಿಯಸ್ಯ |

**ಅನನ್ಯಸಾಧಾರಣ** ಅನನ್ಯಸಾಧಾರಣ (ವಿಂ) ಇತರರಿಗೆ ಸಮಾನವಲ್ಲದ, ಇತರರ ಗುಣಕ್ಕಿಂತಲೂ ಮಿಗಿಲಾದ ಗುಣವುಳ್ಳ. ನ ಅನ್ಯಸ್ಯ ಸಾಧಾರಣಃ ಅನ್ಯಧರ್ಮಸ್ಯ ಸದೃಶಃ |

“ಪುಂಸಾಮನನ್ಯಸಾಧಾರಣಮೇವ ಕರ್ಮ” ಕುಮಾಂ ೩-೧೯ |

**ಅನನ್ವಯ** ಅನನ್ವಯ (ಪುಂ) 1. ಅನನ್ವಯಾಲಂಕಾರ, ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ; ಅತ್ಯುತ್ಕೃಷ್ಟಗುಣ ವುಳ್ಳೋಣದರಿಂದ ಬೇರೊಂದು ಉಪಮಾನವಸ್ತು ವಿಲ್ಲದ ಒಂದೇ ವಸ್ತುವಿಗೆ ಉಪಮಾನತ್ವ ಮತ್ತು ಉಪಮೇಯತ್ವವರ್ಣನೆಯು ಅನನ್ವಯಾಲಂಕಾರ. “ಉಪಮಾನೋಪಮೇಯತ್ವಂ ಯದೇಕಸ್ಯೇವ ವಸ್ತುನಃ | ಇಂದುರಿಂದುರಿವ ಶ್ರೀಮಾನಿತಾದೌ ತದನನ್ವಯಃ” ಚಂದ್ರಾಂ | 2. ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲ ದಿರುವಿಕೆ, (ಪದಾರ್ಥಗಳಿಗೆ) ಪರಸ್ಪರ ಅನ್ವಯವಿಲ್ಲ ದಿರುವಿಕೆ.

**ಅನನ್ವಿತ** ಅನನ್ವಿತ (ವಿಂ) ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ, ಒಂದು ವಿಷಯದಿಂದ (ಸಂಬಂಧಪಡದ) ಮತ್ತೊಂದು ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಹಾರುವ.

**ಅನಪಕರ್ಮ** ಅನಪಕರ್ಮ (ನಂ) ದಾನ ಮಾಡಿದು ದನ್ನು, ತೆಗೆದುಕೊಂಡವನು ಅನರ್ಹನೆಂದಾಗಲಿ ಕೋಪ ದಿಂದಾಗಲಿ ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಅಪಕರ್ಮ ಅಪಾಕರಣಮ್ | ಅಭಾವೇ ನಂ ತಂ | “ಸಂಭೂಯ ಚ ಸಮುತ್ಥಾನಂ ದತ್ತಸ್ಯಾನಪಕರ್ಮ ಚ” ಮನುಂ ೮-೪ | ದತ್ತಸ್ಯ ಧನಸ್ಯಾಪಾತ್ರ- ಬುದ್ಧಿಶಾ ತ್ರೋಧಾದಿನಾ ವಾ ಗ್ರಹಣಮ್ ಇತಿ ಕುಲ್ಲೂಕಃ |

**ಅನಪತ್ಯ** ಅನಪತ್ಯ (ವಿಂ) ಮಕ್ಕಳಿಲ್ಲದವನು. ನಾಸ್ತಿ ಅಪತ್ಯಂ ಯಸ್ಯ | “ಅನಪತ್ಯಶ್ಚ ಕಿಲ ತಪಸ್ವಿ” ಶಾಕುಂ ೬ |

**ಅನಪತ್ಯತಾ** ಅನಪತ್ಯತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಕ್ಕಳಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಅನಪತ್ಯಸ್ಯ ಭಾವಃ | “ನೂನಮನಪತ್ಯತಾ ಮಾಂ ವತ್ಸಲಯತಿ” ಶಾಕುಂ ೭ |

**ಅನಪತ್ರಪ** ಅನಪತ್ರಪ (ವಿಂ) ಲಚ್ಚೆಯಿಲ್ಲದ, ನಾಚಿಕೆ ಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಅಪತ್ರಪಾ ಯಸ್ಯ | “ಅನ್ಯೇಪಿ ಕವಯಃ ಕಾಮಂ ಬಭೂವುರನಪತ್ರಪಾಃ” ಯಾದಂ ೧-೪ |

**ಅನಪಾಯ** ಅನಪಾಯ (ವಿಂ) ಅಪಾಯರಹಿತ, ಹಾನಿ ಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತೀನ್ಯಪಾಯೋ ಯಸ್ಯ | “ಪ್ರಣಮನ್ಯನಪಾಯಮುತ್ಥಿತಮ್” ಕಿರಾಂ ೨-೧೧ |

**ಅನಪಾಯಿನ್** ಅನಪಾಯಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಅಪಾಯರಹಿತ, ನಾಶರಹಿತ. ಅಪಾಯಿ ನ ಭವತಿ | “ಅನಪಾಯಿ ನಿಬರ್ಹಣಂ ದ್ವಿಪಾಂ ನ ತಿತೀಕ್ಷಾಸಮಮಸ್ತಿ ಸಾಧನಮ್” ಕಿರಾಂ ೨-೪೩ | “ಚಲೇಷ್ವರ್ಥೇಷು ಲುಬ್ಧೇನ ನ ಯಶಸ್ವಿನಪಾಯಿಪು” ಮುದ್ರಾಂ ೫-೧೪ | 2. ಸ್ಥಿರವಾದ, ಅಚಲವಾದ. “ಅನಪಾಯಿನಿ ಸಂಶ್ರಯದ್ರುಮೇ ಗಜಭಗ್ನೇ” ಕುಮಾಂ ೪-೩೧ |

**ಅನಪಾವತ್** ಅನಪಾವತ್ (ವಿಂ) ಹಿಂತಿರುಗದ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಬರದಿರುವ. ನ ಅಪಾವತ್ ಪುನರಾಗಮನಂ ಯಸ್ಯ |

**ಅನಪೇಕ್ಷ** ಅನಪೇಕ್ಷ (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ, ಆಸೆ ಯಿಲ್ಲದಿರುವ, ನಿಃಸ್ಪೃಹ. 2. ಉದಾಸೀನ, ತಟಸ್ಥ. 3. ಇತರರ ಸಹಾಯವನ್ನಪೇಕ್ಷಿಸದ. ನ ಅಪೇಕ್ಷತೇ | (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 4. ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದೆ, ಆಸೆಯಿಲ್ಲದೆ. “ಲಕ್ಷ್ಮಿಂ ತನೋತು ನಿತರಾಮಿತರಾನಪೇಕ್ಷಮ್” ಚಂ ರಾಂ ೧-೧ |

**ಅನಪೇಕ್ಷಾ** ಅನಪೇಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉದಾಸೀನತೆ. 2. ನಿಃಸ್ಪೃಹತೆ. 3. ಉಪೇಕ್ಷೆ, ಅಲಕ್ಷ್ಯ, ಅನಾದರ.

**ಅನಪೇತ** ಅನಪೇತ (ವಿಂ) 1. ಬಿಡಲ್ಪಡದ, ಕೂಡಿ ಕೊಂಡಿರುವ. ನ ಅಪೇತಃ | “ಔಶವ್ಯದಿನಪೇತಮಿದೃಶಮಯಂ ಲೋಕೋತ್ಕೃತಃ ಸೇವತೇ” ಮುದ್ರಾಂ ೧-೧೪ | 2. ಹೋಗದಿರುವ. 3. (ಕಾಲ) ಕಳೆಯದಿರುವ, ಅತಿಕ್ರಮಿಸದಿರುವ, ಮೀರದಿರುವ. “ಅನಪೇತಕಾಲಮಭಿರಾಮಕಥಾಃ ಕಥಯಾಂ ಬಭೂವುರिति ಗೋತ್ರಭಿದೇ” ಕಿರಾಂ ೬-೩೦ |

**ಅನಭಿಜ್ಞ** ಅನಭಿಜ್ಞ (ವಿಂ) ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದ, ಅರಿವಿಲ್ಲದ. ಅಭಿಜಾನಾತಿ — ಅಭಿ+ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೫) | ನ ಅಭಿಜ್ಞಃ | “ಅನಭಿಜ್ಞಾಸ್ತಮಿಸ್ತ್ರಾಣಾಂ ದುರ್ದಿನ್ಯೇಷ್ವಭಿಸಾರಿಕಾಃ” ಕುಮಾಂ ೬-೪೩ |

**ಅನಭಿಭವ** ಅನಭಿಭವ (ಪುಂ) 1. ತಿರಸ್ಕಾರವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, 2. ಸೋಲಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.



ಅನಭಿಮತ ಅನಭಿಮತ (ವಿಂ) 1. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡದ. 2. ಸೋರಿಸಲ್ಪಡದ, ಜಯಿಸಲ್ಪಡದ. ನಂ ತಂ ।

ಅನಭಿಮತ ಅನಭಿಮತ (ಪುಂ) 1. ಶತ್ರು, ವೈರಿ, ಹಗೆ. ನ ಅಭಿಮತಃ । (ವಿಂ) 2. ಸಮ್ಮತವಿಲ್ಲದ, ಒಪ್ಪಿಗೆ ಯಿಲ್ಲದ.

ಅನಭಿಲಷಿತ ಅನಭಿಲಷಿತ (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡದ.

ಅನಭಿಲಾಷ ಅನಭಿಲಾಷ (ಪುಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಅರುಚಿ. ನ ಅಭಿಲಾಷಃ । ನಂ ತಂ । (ವಿಂ) 2. ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ, ಇಚ್ಛೆಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಅಭಿಲಾಷೋ यस್ಯ ।

ಅನಭಿವ್ಯಕ್ತ ಅನಭಿವ್ಯಕ್ತ (ವಿಂ) ಅಸ್ಪಷ್ಟ, ಅಸ್ಪಷ್ಟ. ನ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಃ । “ಅಥಿಪ್ರತ್ಯಯಿನೋರಾಸೀದನಭಿವ್ಯಕ್ತರೂಪತಾ” ಯಾದಂ ೧೬-೮೦ ।

ಅನಭಿಶಸ್ತ ಅನಭಿಶಸ್ತ (ವಿಂ) ನಿಂದೆಗೆ ಸಿಲುಕದ, ಅವಮಾದಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗದ. ನ ಅಭಿಶಸ್ತಃ ।

ಅನಭಿಶಸ್ತ ಅನಭಿಶಸ್ತ (ವಿಂ) ನಿಂದೆಗೆ ಅರ್ಹನಲ್ಲದ, ಶ್ಲಾಘನೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದ. ಅಭಿಶಸ್ತಿ ನಿಂದಾಮಹಂತಿ “ಯತ್” (೪-೧-೬೬) । ನಂ ತಂ ।

ಅನಭಿಸಂಧಾನ ಅನಭಿಸಂಧಾನ (ನಂ) ಉದ್ದೇಶವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

ಅನಭಿಸಂಧಿ ಅನಭಿಸಂಧಿ (ಪುಂ) ಫಲೋದ್ದೇಶವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ತಾತ್ಪರ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವುದು.

ಅನಭಿಸಂಹಿತ ಅನಭಿಸಂಹಿತ (ವಿಂ) ಫಲೋದ್ದೇಶದಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಡದ.

ಅನಭಿಹಿತ ಅನಭಿಹಿತ (ವಿಂ) ಹೇಳಲ್ಪಡದ, ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಲ್ಪಡದ.

ಅನಮ್ಯಾವೃತ್ತಿ ಅನಮ್ಯಾವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಸಲ, ಪುನಃ ಪುನಃ ಮಾಡದಿರುವಿಕೆ. ನ ಅಮ್ಯಾವೃತ್ತಿರಮ್ಯಾಸಃ । “ಮನಾಗನಮ್ಯಾವೃತ್ತಾ ವಾ ಕಾಮಂ ಧಾಮ್ಯತು ಯಃ ಕಾಮಿ” । ಮಾಘಂ ೨-೪೩ ।

ಅನಮ್ಯಾಶ ಅನಮ್ಯಾಶ (ಪುಂ) 1. ದೂರ. (ವಿಂ) 2. ದೂರದಲ್ಲಿರುವ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿಲ್ಲದಿರುವ.

ಅನಮ್ಯಾಶಾಮಿತ್ಯ ಅನಮ್ಯಾಶಾಮಿತ್ಯ (ವಿಂ) ದೂರದಲ್ಲಿ ವರ್ಜಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. ಅನಮ್ಯಾಶಂ ಇತ್ಯಃ “ಮುಮ್” (ವಾಂ ೬-೩-೨೦) ।

ಅನಮ ಅನಮ (ಪುಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ಇತರರಿಗೆ ನಮಸ್ಕರಿಸದವನು. ನ ನಮತ್ಯನ್ಯಾನ್ — ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ ಚ) “ಅವ್” (೩-೧-೧೩೪) । ನಂ ತಂ । “ವನತ್ರಜಸ್ತವನಮೋ ವಿಪ್ರೋ ವಂಜ್ಯೇಷಃ ಕಠೋ ದ್ವಿಜಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಅನಮ್ರ ಅನಮ್ರ (ವಿಂ) ಗರ್ವದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಅಹಂಕಾರವುಳ್ಳ. ನ ನಮ್ರಃ । “ಅನಮ್ರಾಣಾಂ ಸಮುದ್ಭವಸ್ತಸ್ಮಾತ್ಸಿಂಧು-ರಯಾದಿವ” ರಘುಂ ೪-೩೫ ।

ಅನಯ ಅನಯ (ಪುಂ) 1. ದುಷ್ಟತನ, ಕೇಡಿತನ. “ಅನಯೋ ನಯಸಂಕಾಶೋ ಹೃದಯಾತ್ರಾಪಸರ್ಪತಿ” ಪञ्ಚತಂ । 2. ಅಪ್ರಮಾಣಕತೆ. “ಸಮೃದ್ಧಿರನಯಾದಿನಯತಿ” ಪञ್ಚತಂ ೧-೧೬೯ । 3. ವಿಪತ್ತು, ತೊಂದರೆ. ನ ಅಯಃ । “ಸರ್ವತಃ ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಣೀಯಾದ್ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ತವನಯಂ ಗತಃ” ಮನುಂ ೧೦-೧೦೨ । 4. ದುರ್ದೈವ, ದುರ್ದೈವ. 5. ಪಗಡೆಯಾಟದ ಒಂದು ಭೇದ. 6. ವ್ಯಸನ. “ಅನಯೋಽಭಿಮದೇವೇ ಸ್ಯಾದ್ವಿಪದ್ವಚಸನ-ಯೋರಪಿ” ಹೇಮಂ । (ವಿಂ) 7. ನೀತಿಯಿಲ್ಲದ.

ಅನರಣ್ಯ ಅನರಣ್ಯ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ.

ಅನರ್ಗಲ ಅನರ್ಗಲ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತಿಬಂಧಕವಿಲ್ಲದ, ಅಡಚಣೆಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಅರ್ಗಲಂ ಪ್ರತಿಬಂಧಕಂ ಯಸ್ಯ । “ತುರಗ್ಗಮುತ್ಸೃಷ್ಟಮನರ್ಗಲಂ ಪುನಃ” ರಘುಂ ೩-೩೯ । 2. ಅಗಲ ಮರವಿಲ್ಲದ.

ಅನರ್ಥ ಅನರ್ಥ (ವಿಂ) ಅಮೂಲ್ಯವಾದ, ಬಹಳ ಬೆಲೆ ಬಾಳುವ, ಬೆಲೆಕಟ್ಟಲಾಗದ. ನ ಅರ್ಥೋ ಮೂಲ್ಯಂ ಯಸ್ಯ । “ಅನರ್ಥರತ್ನಾಭರಣಪ್ರಧಾನಾಮ್” ಯಾದಂ ೧೩-೪೩ ।

ಅನರ್ಥರಾಘವ ಅನರ್ಥರಾಘವ (ನಂ) ಮುರಾರಿಕವಿ ಪ್ರಣೀತವಾದ ಒಂದು ನಾಟಕ.

ಅನರ್ಥ್ಯ ಅನರ್ಥ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅಮೂಲ್ಯವಾದ, ಬೆಲೆ ಕಟ್ಟಲಾಗದ, ಬಹಳ ಬೆಲೆಬಾಳುವ. ಅರ್ಥಂ ಮೂಲ್ಯಮಹಂತಿ “ಯತ್” (೪-೧-೬೬) । ನಂ ತಂ । 2. ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಪೂಜ್ಯನಾದ, ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವವರಿಲ್ಲದ. ನ ಅರ್ಥ್ಯಃ ಪೂಜ್ಯೋ ಯಸ್ಯ । “ಅನರ್ಥ್ಯಮರ್ಥ್ಯೇಣ ತಮದ್ರಿಣಾಥಃ” ಕುಮಾರಂ ೧-೫೮ ।

ಅನರ್ಥ ಅನರ್ಥ (ಪುಂ) 1. ಅನಿಷ್ಟ, ವಿಪತ್ತು, ತೊಂದರೆ, ಕೆಡಕು. ನ ಅರ್ಥಃ ಪ್ರಯೋಜನಮ್ । ವಿರೋಧೇ ನಂ ತಂ । “ಯೌವನಂ ಧನಸಂಪತ್ತಿಃ ಪ್ರಭುತ್ವಮವಿವೇಕಿತಾ । ಏಕೈಕಮಪ್ಯನರ್ಥಾಯ ಕಿಮ್ ಯತ್ರ ಚತುಷ್ಟಯಮ್” ಹಿತಂ । 2. ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ ವಿಷಯ. 3. ಅಸಂಬಂಧತೆ, ಮೂರ್ಖತನ. 4. ವಿಷ್ಣು. ನ ಅರ್ಥಃ ಅಭಿಲಾಷೆ ಯಸ್ಯ । [ಪರಮಾತ್ಮನು ಪರಿಪೂರ್ಣಮನೋರಥನು.] “ಅರ್ಥೋನರ್ಥೋ ಮಹಾಕೋಶಃ” ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ) 5. ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ. “ಶುನಃ ಪುಂಜಮಿವಾನರ್ಥಂ ಪಾಂಡಿತ್ಯಂ ಧರ್ಮವಜಿತಮ್” ಪञ್ಚತಂ ೩-೯೭ । 6. ನಿರ್ಭಾಗ್ಯ, ದುರದೃಷ್ಟ. 7. ಹಾನಿಕರ, ಕೆಡಕಿನ. 8. ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ, ವಿವಕ್ಷಿತಾರ್ಥರಹಿತವಾದ. 9. ಅರ್ಥಹೀನ, ದರಿದ್ರ, ಬಡವ.



**ಅನರ್ಥಕ ಅನರ್ಥಕ** (ನಂ) 1. ಅಸಂಬಂಧವಾದ ಮಾತು, ಹೊಂದಿಕೆಯಿಲ್ಲದ ಮಾತು. ನ ವಿಶೇಷಾರ್ಥೋಪಭವೋ ಯತ್ರ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೫೧). (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ. ನ ಅರ್ಥ: ಪ್ರಯೋಜನಂ ಯಸ್ಯ.

**ಅನರ್ಥಕರ ಅನರ್ಥಕರ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ ಕೆಲಸಮಾಡುವ. 2. ಕೆಡಕುಮಾಡುವ. ಅನರ್ಥಸ್ಯ ಕರ:.

**ಅನರ್ಥಾಂತರ ಅನರ್ಥಾಂತರ** (ನಂ) 1. ಸಮಾನವಾದ ಅರ್ಥ, ಒಂದೇ ಅರ್ಥ. ಅನ್ಯೋನ್ಯ: ಅರ್ಥಾಂತರಮ್. ನ ಅರ್ಥಾಂತರಮ್. ನಂ ತಂ. (ವಿಂ) 2. ಸಮಾನವಾದ ಅರ್ಥವುಳ್ಳ, ಬೇರೆ ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ.

**ಅನರ್ವಿಶ್ ಅನರ್ವಿಶ್** (ವಿಂ) 1. ಹೋಗಬೇಕಾದ ಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ಹೋಗಲು ಅಶಕ್ತನಾದ. ಅರಂ ಗನ್ತವ್ಯಪ್ರದೇಶಂ ವಿಶತಿ ಅರ್ವಿಶ್. ನಂ ತಂ. 2. ಗಾಡಿಯನ್ನು ಹತ್ತಿಕೊಂಡು ಸೌದೆ ಮೊದಲಾದುದನ್ನು ತರಲು ಕಾಡಿಗೆ ಹೋಗುವವನು. ಅನಸಾ ಶಕಟೇನ ವಿಶತಿ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ.

**ಅನರ್ಹ ಅನರ್ಹ** (ವಿಂ) 1. ಅಯೋಗ್ಯ, ಅರ್ಹತೆಯಿಲ್ಲದ. 2. ಅನನುರೂಪ, ಅಯುಕ್ತ, ತಕ್ಕುದಲ್ಲದ.

**ಅನಲ ಅನಲ** (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ನ ಅಲ: ಪರ್ಯಾಪ್ತಿಯಸ್ಯ. ಅನಿತಿ — ಅನ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ಕಲ:" ವಾ (ತಂ ೧-೧೦೬). [ಬೆಂಕಿಗೆ ಎಷ್ಟು ಅಹಾರವನ್ನು ಕೊಟ್ಟರೂ ತೃಪ್ತಿಯಾಗುವುದಿಲ್ಲ] "ನಾಗ್ನಿಸ್ತುಪ್ಯತಿ ಕಾಶಾ ನಾಮ್". "ಅನಲಸ್ಕಂಧವಿನಿಸ್ಸುತಂ ಸ್ಫುಲಿಂಜಮ್" ಯಾದಂ ೧೫-೧೦೯. 2. ಜಠರಾಗ್ನಿ, ಜೀರ್ಣಮಾಡುವಶಕ್ತಿ. 3. ದೇಹದೊಳಗಿರುವ ಪಿತ್ತರಸ. 4. ಅಷ್ಟವಸುಗಳಲ್ಲಿ ಎದನೆಯ ವಸು. 5. ಚಿತ್ರಕವೃಕ್ಷ, ಚಿತ್ರಮೂಲದ ಗಿಡ. 6. ಗೇರುಮರ. 7. ಮೂರು ಸಂಖ್ಯೆ. 8. ಕೃತ್ತಿಕಾ ನಕ್ಷತ್ರ. 9. ಜೀವ. 10. ಎಷ್ಟು, ವಾಸುದೇವ. 11. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. "ಅನಲೋ ಬಾಸುದೇವೇನಾವನಲೋ ವಸುವಾತಯೋ:" ವಿಶ್ವಂ. (ವಿಂ) 12. ತೃಪ್ತಿಯಿಲ್ಲದ.

**ಅನಲದೀಪನ ಅನಲದೀಪನ** (ವಿಂ) ಜಠರಾಗ್ನಿಯನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವ, ಜೀರ್ಣಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಅಧಿಕಪಡಿಸುವ. ಅನಲಂ ದೀಪಯತಿ — ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪).

**ಅನಲಪ್ರಭಾ ಅನಲಪ್ರಭಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಿಂಚುಬಳ್ಳಿ, ಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತೀಲತೆ. ಅನಲಸ್ಯ ಪ್ರಭೇವ ಪ್ರಭಾ ಯಸ್ಯಾ: 2. ಬೆಂಕಿಯ ಪ್ರಕಾಶ.

**ಅನಲಪ್ರಿಯಾ ಅನಲಪ್ರಿಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಯ ಪತ್ನಿ, ಸ್ವಾಹಾದೇವಿ.

**ಅನಲ್ಪ ಅನಲ್ಪ** (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚಾದ, ಬಹಳ, ಅನೇಕ. ನ ಅಲ್ಪ: "ಛದೀಯಸೀಮಪಿ ಧನಾಮನಲ್ಪಮುಣಕಲ್ಪಿತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೭೪.

**ಅನವಗತಿ ಅನವಗತಿ** (ವಿಂ) ಅನಿಂದಿತವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಶುದ್ಧವಾದ.

**ಅನವಗ್ರಹ ಅನವಗ್ರಹ** (ವಿಂ) ಪ್ರತಿಬಂಧಕವಿಲ್ಲದ, ತಡೆಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಅವಗ್ರಹೋ ಯಸ್ಯ. "ಸುಕುಮಾರಕಾಯಮನವಗ್ರಹ: ಸ್ಮರ:" ಮಾಲತೀಂ ೧-೪೨.

**ಅನವಚ್ಛಿನ್ನ ಅನವಚ್ಛಿನ್ನ** (ವಿಂ) 1. ಅಳತೆಯಿಲ್ಲದ, ಎಲ್ಲೆಯಿಲ್ಲದ. 2. ಅಪರಿಮಿತ, ಅಪಾರವಾದ. 3. ಸಂದಿಗ್ಧವಾದ, ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾದ, ಅನಿಶ್ಚಿತವಾದ. 4. ಅವ್ಯಾಪಕ.

**ಅನವಯ ಅನವಯ** (ವಿಂ) ದೋಷವಿಲ್ಲದ. ನೋದತೇ ನೋಚತೇ ಇತ್ಯವಯಮ್. ನ ಅವಯಮ್. "ಮುದಮವಹದನವಯಾಂ ತಾಮವಯಾದೇತ:" ರಘುಂ ೭-೭೦.

**ಅನವಧಾನ ಅನವಧಾನ** (ನಂ) 1. ಅಜಾಗರೂಕತೆ, ಪ್ರಮಾದ, ಉದಾಸೀನತೆ. ನ ಅವಧೀಯತೇ ಮನ: ಕರ್ತವ್ಯ-ಕರ್ಮಣಿ. ನಂ ತಂ. (ವಿಂ) 2. ಜಾಗರೂಕತೆಯಿಲ್ಲದ, ಉದಾಸೀನ, ಅಶ್ರದ್ಧೆಯುಳ್ಳ. ನ ಅವಧಾನಂ ಯಸ್ಯ.

**ಅನವಧಾನತಾ ಅನವಧಾನತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಮಾದ, ಅಶ್ರದ್ಧೆ, ಕರ್ತವ್ಯಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಅಲಕ್ಷ್ಯ ಮತ್ತು ಅಕರ್ತವ್ಯ (ಮಾಡಬಾರದ) ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರವೃತ್ತಿ. "ಕರ್ತವ್ಯಾಕರಣಂ ಯತ್ರಾಕರ್ತವ್ಯಸ್ಯಾಥವಾ ಕ್ರಿಯಾ. ಉಚ್ಯತೇ ದ್ವಿತಯಂ ತತ್ರ ಪ್ರಮಾದೋಜನವಧಾನತಾ".

**ಅನವಧಾರಿತ ಅನವಧಾರಿತ** (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ. ನ ಅವಧಾರಿತಮ್. "ಅನವಧಾರಿತಶಿರಿವಿಹಾರಯಾ" ಯಾದಂ ೩-೪೦. 2. ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಡದ, ನಿರ್ಧರಿಸಲ್ಪಡದ.

**ಅನವಬೃದ್ಧ ಅನವಬೃದ್ಧ** (ವಿಂ) ಅರಿಯಲ್ಪಡದ, ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ. ನ ಅವಬೃದ್ಧ: "ಅನವಬೃದ್ಧಜನಾರ್ದನಕನ್ಯಕಾ ವಿನಿಮಯ:" ಯಾದಂ ೩-೪೮.

**ಅನವಬೋಧ ಅನವಬೋಧ** (ಪುಂ) ಅರಿವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

**ಅನವಮ ಅನವಮ** (ವಿಂ) 1. ನ್ಯೂನಾತಿರೇಕವಿಲ್ಲದ, ಹೆಚ್ಚುಕಡಿಮೆಯಿಲ್ಲದ, ಸಮಾನವಾದ. ನ ಅವಮ: "ಸುಧರ್ಮಾನಿವಮಾಂ ಸಭಾಮ್" ರಘುಂ ೧೭-೨೭. 2. ಒಂಭತ್ತು ನೆಯದಲ್ಲದ.

**ಅನವರತ ಅನವರತ** (ವಿಂ) 1. ವಿಶ್ರಾಂತಿಯಿಲ್ಲದ, ನಿರಂತರವಾದ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 2. ನಿರಂತರವಾಗಿ.



ವಿಶ್ರಾಂತಿಯಿಲ್ಲದೆ. ನಾಸ್ತೀವರತಂ ಯತ್ರ। “ಅನವರತ  
ಧನುರ್ಯಾಸ್ಫಾಲನಕ್ರೂಪವಾಮ್” ಶಾಕುಂ ೨-೪।

ಅನವರಾರ್ಥ ಅನವರಾರ್ಥ (ವಿಂ) ಮುಖ್ಯವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠ  
ವಾದ. ಅನವರಸ್ಮಿನ್ ಅರ್ಥ ಭವ: “ಯತ್” (೪-೩-೪)।  
ನಂ ತಂ।

ಅನವಲಂಬ ಅನವಲಂಬ (ಪುಂ) 1. ಅಸಹಾಯತೆ, ಆಶ್ರಯ  
ವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ನೆರವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ಅವಲಂಬ:।  
(ವಿಂ) 2. ಆಶ್ರಯವಿಲ್ಲದ, ಸಹಾಯವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ  
ಅವಲಂಬೋ ಯಸ್ಯ। “ನ ಪರಂ ಪಥಿ ಪಕ್ಷಪಾತಿತಾಜನವಲಂಬೇ  
ಕಿಮು ಮಾದೃಶೋಪಿ ಸಾ” ನೈಷಂ ೨-೪೨।

ಅನವಲಂಬನ ಅನವಲಂಬನ (ನಂ) 1. ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ,  
ಆಶ್ರಯಿಸದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ಆಶ್ರಯವಿಲ್ಲದ,  
ಸಹಾಯವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತೀವಲಂಬನಂ ಯಸ್ಯ।

ಅನವಸರ ಅನವಸರ (ಪುಂ) 1. ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
2. ಅಯೋಗ್ಯವಾದ ಸಮಯ, ಅನುಚಿತಕಾಲ,  
ಅಕಾಲ. ನ ಅವಸರ: ಉಚಿತ: ಕಾಲ:। “ಕಂ ಯಾಚೇ ಯತ್ರ  
ತತ್ರ ಧ್ರುವಮನವಸರಸ್ತು ಏವಾರ್ಥಿಭಾವ:” ಮಾಲತೀಂ ೯-೩೦।  
(ವಿಂ) 3. ಅಯೋಗ್ಯಕಾಲದ, ಅನುಚಿತಕಾಲದ,  
ಅಕಾಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಅವಸರ: ಉಚಿತ: ಕಾಲೋ ಯಸ್ಯ।

ಅನವಸಾನ ಅನವಸಾನ (ವಿಂ) ಅಂತ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಕೊನೆ  
ಯಿಲ್ಲದ, ನಾಶವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಅವಸಾನಂ ಯಸ್ಯ।

ಅನವಸಿತ ಅನವಸಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಮಾಪ್ತಿಹೊಂದದ,  
ಕೊನೆಯನ್ನು ಮುಟ್ಟದಿರುವ. 2. ಅನಿಶ್ಚಿತವಾದ.

ಅನವಸ್ಕರ ಅನವಸ್ಕರ (ವಿಂ) ಕೊಳೆಯಿಲ್ಲದ, ಶುಚಿ  
ಯಾದ, ಕಶ್ಮಲವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಅವಸ್ಕರೋ ಯಸ್ಯ।

ಅನವಸ್ಥ ಅನವಸ್ಥ (ವಿಂ) ಚಂಚಲವಾದ, ಅಸ್ಥಿರವಾದ.  
ನಾಸ್ತೀವಸ್ಥಾ ಸ್ಥಿತೀಯಸ್ಯ। “ಕಚಿದಯಮನವಸ್ಥ: ಸ್ಥಾಸ್ತು-  
ತಾಮೇತಿ ವಾಯು:” ಮಾಘಂ ೧೧-೨೮।

ಅನವಸ್ಥಾ ಅನವಸ್ಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಾಂಚಲ್ಯ, ಅಸ್ಥಿರತೆ.  
ನ ಅವಸ್ಥಾ। 2. ತಾರ್ಕಿಕ ಮತದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವ  
ಒಂದು ದೋಷ, ಉಪಪಾದ್ಯ ಉಪಪಾದಕಗಳಿಗೆ  
(ಕಾರ್ಯಕಾರಣಗಳಿಗೆ) ಕೊನೆಯಿಲ್ಲದಿರುವುದು.  
“ಏವಮಪ್ಯನವಸ್ಥಾ ಸ್ವಾಧ್ಯಾ ಮೂಲಕ್ಷತಿಕಾರಿಣಿ” ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ।  
3. ಕಾಮಾತುರತೆ, ಅತಿಕಾಮೋಚ್ಛೇ.

ಅನವಸ್ಥಾನ ಅನವಸ್ಥಾನ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ.  
(ನಂ) 2. ಚಾಂಚಲ್ಯ, ಅಸ್ಥಿರತೆ, ಅನಿಶ್ಚಯ. “ಜಯ-  
ಪರಾಜಯಾನವಸ್ಥಾನಾತ್” ದಶಕುಂ। (ವಿಂ) 3. ಚಂಚಲ  
ವಾದ, ಅಸ್ಥಿರವಾದ.

ಅನವಸ್ಥಿತ ಅನವಸ್ಥಿತ (ವಿಂ) 1. ಚಂಚಲವಾದ,  
ಅಸ್ಥಿರವಾದ. ನ ಅವಸ್ಥಿತ:। 2. ಕಾಮಾತುರವುಳ್ಳ,  
ವೈಭಿಷಾರಿ. “ಚತುರ್ಣಾಮಪಿ ವರ್ಣಾನಾಂ ನಾರೀಹ್ವಾನವಸ್ಥಿತಾ:”  
ಮನುಂ ೧೨-೧೩೮। 3. ನಿಲ್ಲಲು ಅಸಮರ್ಥನಾದ.  
“ಮಿತ್ರಕಾರ್ಯಮಪದಿಷ್ಯ ಪಾರ್ವತ: ಪ್ರಸ್ಥಿತಂ ತಮನವಸ್ಥಿತಂ  
ಪ್ರಿಯಾ:” ರಘುಂ ೧೯-೩೧।

ಅನವಸ್ಥಿತ ಅನವಸ್ಥಿತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಾಂಚಲ್ಯ, ಅಸ್ಥಿರತೆ.  
ನ ಅವಸ್ಥಿತ:।

ಅನವಹರ ಅನವಹರ (ವಿಂ) ಕಾಟಿಲ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಸರಳ  
ವಾದ, ಕಪಟವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ.

ಅನವಾಪ್ತ ಅನವಾಪ್ತ (ವಿಂ) ಹೊಂದಲ್ಪಡದ, ಸಂಪಾದಿಸ  
ಲ್ಪಡದ. “ನಾನವಾಪ್ತಮವಾಪ್ತವ್ಯಂ ವರತಂ ಏವ ಚ ಕರ್ಮಣಿ”  
ಗೀತಾ ೩-೨೨।

ಅನವೇಕ್ಷಕ ಅನವೇಕ್ಷಕ (ವಿಂ) 1. ಪರ್ಯಾಲೋಚಿಸದ,  
ವಿವೇಚನೆಮಾಡದ, ವಿಮರ್ಶಮಾಡದ. ನ ಅವೇಕ್ಷಕ:।  
2. ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕನಿಲ್ಲದ, ಉಸ್ತುವಾರಿ ನೋಡುವವ  
ನಿಲ್ಲದ. ನ ಅವೇಕ್ಷಕ: ಯಸ್ಮಿನ್।

ಅನವೇಕ್ಷಾ ಅನವೇಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ,  
ಉದಾಸೀನತೆ. ನ ಅವೇಕ್ಷಾ। ನಂ ತಂ।

ಅನಶನ ಅನಶನ (ನಂ) 1. ಉಪವಾಸ. ಅಶಯತೆ — ಅಶ  
(ಭೋಜನೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫)। ನ ಅಶನಮ್।  
(ವಿಂ) 2. ಭೋಜನವಿಲ್ಲದ, ಊಟವಿಲ್ಲದ. ನ ಅಶನಂ  
ಯಸ್ಯ।

ಅನಶ್ವರ ಅನಶ್ವರ (ವಿಂ) ಸ್ಥಿರವಾದ, ಶಾಶ್ವತವಾದ, ನಿತ್ಯ  
ವಾದ. ಷಷ್ಠಿ (ಅದರ್ಶನೆ) “ಕರಪ್” (೩-೨-೧೬೩)। ನಂ ತಂ।

ಅನಸ್ ಅನಸ್ (ನಂ) 1. ಗಾಡಿ, ಬಂಡಿ. ಅನಿತಿ  
ಚಿತ್ತಕರೋತಿ — ಅನ (ಪ್ರಾಣನೆ) “ಅಸುನ್” (೩-೪-೧೮೮)।  
“ಮನಸಾ ನ ಬಕಂ ಲಿಲೇಹ ರಾತ್ಯಾಮನಸಾ ಧಾರಿತಮನ್ವರಾಶಿಮೇವ”  
ಚಂ ಭಾಂ। 2. ಅನ್ನ. ಅನಿತಿ ಜೀವತ್ಯನೇನ। (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
3. ತಂದೆ ಅಥವಾ ತಾಯಿ.

ಅನಸೂಯ ಅನಸೂಯಾ (ವಿಂ) ಅಸೂಯೆಯಿಲ್ಲದ, ಇತರರ  
ಗುಣದಲ್ಲಿ ದ್ವೇಷವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಅಸೂಯಾ ಯಸ್ಯ। “ಶ್ರದ್ಧಾ-  
ವಾನನಸೂಯಶ್ಚ” ಗೀತಾ ೧೮-೭೧। ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್”।  
—ಯಕ: —ಯಕ:

ಅನಸೂಯಾ ಅನಸೂಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಸೂಯೆಯಿಲ್ಲ  
ದಿರುವಿಕೆ, ಇತರರ ಗುಣದಲ್ಲಿ ದ್ವೇಷವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
ನ ಅಸೂಯಾ। “ನ ಗುಣಾನ್ ಗುಣಿನೋ ಹಂತಿ ಸ್ತೌತಿ ಚಾನ್ಯಗುಣಾ-  
ನಪಿ। ನ ಹಸೇಚ್ಚಾನ್ಯದೋಷಾನ್ವ ಸಾನಸೂಯಾ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ”।



2. ಶಕುಂತಲೆಯ ಸಖಿ. 3. ಅನಸೂಯೆ, ಅತ್ರಿ ಮಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿ. [ಅನಸೂಯೆಯು ಮಹಾ ಪತಿವ್ರತೆ. ಒಂದು ಸಲ ಬ್ರಹ್ಮ ವಿಷ್ಣು ಮಹೇಶ್ವರರು ಅನಸೂಯೆಯ ಪಾತಿವ್ರತ್ಯವನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸಲೋಸುಗ ತಮಗೆ ನಗ್ನಳಾಗಿ ಉಟಕ್ಕೆ ಬಡಿಸಬೇಕೆಂದು ಕೇಳು ವರು. ಆಗ ಅನಸೂಯೆಯು ಕಮಂಡಲುವಿನ ತೀರ್ಥ ದಿಂದ ಅವರನ್ನು ಪ್ರೋಕ್ಷಿಸಲು ಆ ತ್ರಿಮೂರ್ತಿಗಳೂ ಶಿಶುಗಳಾಗುವರು. ಮೂರು ಶಿಶುಗಳನ್ನೂ ತೊಟ್ಟಿಲಿ ನಲ್ಲಿ ಮಲಗಿಸಿ ನಗ್ನಳಾಗಿಯೇ ಹಾಲು ಮೊದಲಾದು ವನ್ನು ಕೊಡುತ್ತಿದ್ದಳು. ಹೀಗೆ ಅನೇಕ ದಿನಗಳು ಕಳೆದರೂ ತಮ್ಮ ಪತಿಗಳು ಬರದಿದ್ದುದರಿಂದ ಲಕ್ಷ್ಮಿ, ಸರಸ್ವತಿ ಮತ್ತು ಪಾರ್ವತಿ ಇವರು ಅನಸೂಯೆಯಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ನಿಮ್ಮ ನಿಮ್ಮ ಪತಿಗಳನ್ನು ನೀವೇ ಕರೆದುಕೊಳ್ಳಬಹುದೆಂದು ತೊಟ್ಟಿಲುಗಳಲ್ಲಿ ಶಿಶುಗಳನ್ನು ತೋರಿಸಿದಾಗ ಅವರು ತಮ್ಮ ಪತಿಗಳ ಗುರುತನ್ನು ಕಂಡುಹಿಡಿಯಲಾರದೆ ಹೋಗುವರು. ಆಗ ಪುನಃ ಕಮಂಡಲುವಿನ ತೀರ್ಥದಿಂದ ಪ್ರೋಕ್ಷಿಸಲು ತ್ರಿಮೂರ್ತಿಗಳಿಗೂ ನಿಜರೂಪವುಂಟಾಗಲು ಅವರು ತಮ್ಮತಮ್ಮ ಪತಿಗಳೊಡನೆ ನಿಜಲೋಕಗಳಿಗೆ ತೆರಳುವ ರೆಂದು ಅನಸೂಯೆಯ ಪಾತಿವ್ರತ್ಯದ ವಿಷಯವಾಗಿ ಕಥೆಯಿರುವುದು.]

ಅನಸುಯ ಅನಸೂಯು (ವಿಂ) ಅಸೂಯೆಯಿಲ್ಲದ, ಇತರರ ಗುಣದಲ್ಲಿ ದ್ವೇಷವಿಲ್ಲದ. "ಇದಂ ತು ತೇ ಗುಹ್ಯತಮಂ ಪ್ರವಕ್ಷ್ಯಾ-  
ಮ್ಯನಸುಯವೇ" ಗೀತಾ ೯-೧.

ಅನಹಂಕಾರಿನ್ ಅನಹಂಕಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಅಹಂಕಾರ ವಿಲ್ಲದ, ಗರ್ವವಿಲ್ಲದ.

ಅನಹಂಕೃತ ಅನಹಂಕೃತ (ವಿಂ) ಅಹಂಕಾರಪಡದ.

ಅನಹಂಕೃತಿ ಅನಹಂಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಹಂಕಾರವಿಲ್ಲ ದಿರುವಿಕೆ. ನಂ ತಂ. (ವಿಂ) 2. ಅಹಂಕಾರವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಅಹಂಕೃತೀಯಸ್ಯ.

ಅನಹನ್ ಅನಹನ್ (ನಂ) ಅಪ್ರಶಸ್ತದಿವಸ, ಕೆಟ್ಟದಿವಸ. ಅಪ್ರಾಶಸ್ತೇ ನಂ ತಂ.

ಅನಾಕಾರ ಅನಾಕಾರ (ವಿಂ) ಆಕಾರವಿಲ್ಲದ, ರೂಪ ವಿಲ್ಲದ (ಆಕಾಶ ಮೊದಲಾದುದು). ನಾಸ್ತಿ ಆಕಾರೋಸ್ಯ.

ಅನಾಕಾಲ ಅನಾಕಾಲ (ಪುಂ) ದುರ್ಭಿಕ್ಷುಕಾಲ. ಆ ಸಮ್ಯಕ್ ಅನ್ನಾದಿಸಂಪನ್ನಃ ಕಾಲಃ ಅಕಾಲಃ. ನಂ ತಂ.

ಅನಾಕುಲ ಅನಾಕುಲ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಥಿರಚಿತ್ತನಾದ, ಚಲಿ ಸದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. 2. ಕದಲದಿರುವ, ಸ್ಥಿರನಾದ.

3. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಚದುರದಿರುವ, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿದ. ನ ಅಕುಲಃ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 4. ಚಲ್ಲಾಪಿಲ್ಲಿಯಾಗದೆ, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿ. "ಅನುಶಾಸತಮಿತ್ಯನಾಕುಲಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೪೪.

ಅನಾಕೃತ ಅನಾಕೃತ (ವಿಂ) ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡದ, ತಡೆಯ ಲ್ಪಡದ.

ಅನಾಕ್ರಾಂತ ಅನಾಕ್ರಾಂತ (ವಿಂ) ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಡದ, ಸ್ವಾರ್ಥಿನಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಡದ.

ಅನಾಕ್ರಾಂತಾ ಅನಾಕ್ರಾಂತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಳ್ಳುಗುಳ್ಳದಗಿಡ.

ಅನಾಗ ಅನಾಗ (ವಿಂ) ಪಾಪವಿಲ್ಲದ. ನ ಆ ಸಮ್ಯಕ್ ಗಚ್ಛತಿ ಸ್ವರ್ಗಮನೇನ ನಾಗಃ ಅಧರ್ಮಃ. ನ ನಾಗಃ ಯಸ್ಯ.

ಅನಾಗತ ಅನಾಗತ (ನಂ) 1. ಭವಿಷ್ಯತ್ಕಾಲ. (ವಿಂ)

2. ತಲುಪದಿರುವ, ಬರದಿರುವ, ಆಗಮಿಸದಿರುವ.

"ತಾವದ್ವಯಸ್ಯ ಭೇದವ್ಯಂ ಭಾವದ್ವಯಮನಾಗತಮ್" ಹಿತೋಂ.

3. ಹಿಂದೆ ಹೊಂದಲ್ಪಡದ, ಮುಂದೆ ಉಂಟಾಗಬಹು ದಾದ. "ಸರ್ವೋ ಹಿ ನೋಪಗತಮಪ್ಯವಚೀಯಮಾನಂ ವರ್ಧಿಷ್ಯುಮಾಶ್ರಯ-  
ಮನಾಗತಮಭ್ಯುಪೇತಿ" ಮಾಘಂ ೪-೧೪.

ಅನಾಗತವಿಧಾತ್ ಅನಾಗತವಿಧಾತ್ಯ (ಪುಂ) ಮುಂದೆ ಒದಗಬಹುದಾದ ಕಷ್ಟಗಳಿಗೆ ಮೊದಲೇ ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆ ಯನ್ನು ನಡೆಸುವವನು. ಅನಾಗತಸ್ಯ ಭವಿಷ್ಯತಃ ಅನಿಷ್ಟಸ್ಯ ವಿಧಾತಾ ಪ್ರತಿವಿಧಾತಾ. "ಅನಾಗತವಿಧಾತಾ ಚ ಪ್ರತ್ಯುತ್ಪನ್ನ-  
ಮತಿಸ್ತಥಾ. ಛಾವಿಮಿ ಸುಖಮೇಧೇತೇ ಯದ್ಭವಿಷ್ಯೋ ವಿನಶ್ಯತಿ" ಹಿತೋಂ.

ಅನಾಗತವಿಧಾನ ಅನಾಗತವಿಧಾನ (ನಂ) ಮುಂದೆ ಒದಗ ಬಹುದಾದ ತೊಂದರೆಗೆ ಮಾಡುವ ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆ, ತೊಂದರೆ ಬರುವ ಮುನ್ನವೇ ನಡೆಯಿಸುವ ಪರಿಹಾರ ಕ್ರಮ. ಅನಾಗತಸ್ಯ ಭವಿಷ್ಯತೋನಿಷ್ಟಸ್ಯ ವಿಧಾನಂ ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಾ.

ಅನಾಗತಾತೆವಾ ಅನಾಗತಾರ್ತವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮತುಮತಿ ಯಾಗದ ಕನ್ಯೆ. ಅನಾಗತಮಾರ್ತವಂ ಯಸ್ಯಾಃ.

ಅನಾಗತಿ ಅನಾಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನಾಗಮನ, ಬರದಿರುವಿಕೆ.

ಅನಾಗಮ ಅನಾಗಮ (ಪುಂ) 1. ಆಸ್ತಿಯನ್ನು ಸ್ವಾರ್ಥಿನ ಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಆಗಬೇಕಾದ ಕ್ರಯಪತ್ರ ಮೊದಲಾ ದುವುಗಳಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ಬರದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 3. ಆಗಮಿಸದಿರುವ, ಬರದಿರುವ.

ಅನಾಗಮ್ಯ ಅನಾಗಮ್ಯ (ವಿಂ) ಹೊಂದಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗ ದಿರುವ, ಸಮಾಪಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಲ್ಲದ, ದುರ್ಗಮವಾದ.

ಅನಾಗಸ್ ಅನಾಗಸ್ (ವಿಂ) 1. ಅಪರಾಧವಿಲ್ಲದ.

2. ಪಾಪವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಆಗಃ ಯಸ್ಯ. "ಆತೆತ್ರಾಣಾಯ ವಃ  
ಶಸ್ತ್ರಂ ನ ಪ್ರಹರ್ತುಮನಾಗಸಿ" ಶಾಕುಂ ೧-೧೦.



ಅನಾಚಾರ ಅನಾಚಾರ (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟನಡತೆ, ಕೆಟ್ಟ ಸಂಪ್ರದಾಯ. ನ ಅಪ್ರಶಸ್ತ: ಆಚಾರ:। “ಸರ್ವದೇಶೋಪನಾ-  
ಚಾರ: ಪಥಿ ತಾಮ್ಬಲಚರ್ವಣಮ್” ಸ್ಮೃತಿ:। 2. ರೂಢಿಯಿಲ್ಲ  
ದಿರುವಿಕೆ, ಸಂಪ್ರದಾಯಶೂನ್ಯತೆ. [ವಿಹಿತವಾದುದನ್ನು  
ಮಾಡದಿರುವುದೂ ನಿಷಿದ್ಧವಾದುದನ್ನು ಮಾಡುವುದೂ  
ಅನಾಚಾರವು.]

ಅನಾಜ್ಞಾತ ಅನಾಜ್ಞಾತ (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ.

ಅನಾತಪ ಅನಾತಪ (ಪುಂ) 1. ಛಾಯೆ, ನೆರಳು.  
(ವಿಂ) 2. ಬಿಸಿಲಿಲ್ಲದ.

ಅನಾತುರ ಅನಾತ ರ (ವಿಂ) 1. ಆಶುರವಿಲ್ಲದ, ತವಕ  
ವಿಲ್ಲದ. “ಅನಾತುರೋತ್ಕೃಷ್ಟಯೋ: ಪ್ರಸಿಧ್ಯತಾ” ಮಾಲಂ  
೩-೧೫। 2. ದೋಗವಿಲ್ಲದ, ಆದೋಗ್ಯವುಳ್ಳ. “ಜುಗೋ-  
ಪಾತ್ಮಾನಮವಸ್ತೋ ಭೇಜೆ ಧರ್ಮನಾತುರ:” ರಘುಂ ೧-೨೧।

ಅನಾತ್ಮಜ ಅನಾತ್ಮಜ್ಞ (ವಿಂ) 1. ಆತ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನರಿ  
ಯದ, ಆತ್ಮಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದ. 2. ತನ್ನ ಸ್ವರೂಪವನ್ನರಿ  
ಯದ, ತನ್ನ ಯೋಗ್ಯತೆಯನ್ನು ತಿಳಿಯದ, ಮೂರ್ಖ.  
ನ ಆತ್ಮಾನಂ ಜಾನಾತಿ-ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) “ಕ:” (೩-೨-೩)।  
“ಕಥಂ ಕಾರ್ಯವಿನಿಮಯೇನ ಮಯಿ ವ್ಯವಹರತುನಾತ್ಮಜ:” ಮಾಲಂ ೧।

ಅನಾತ್ಮನ್ ಅನಾತ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಆತ್ಮಭಿನ್ನ, ತನಗಿಂತಲೂ  
ಬೇರೆಯವನು, ಇತರನು. 2. ಅಪಕೃಷ್ಣವಾದ ಭೌತಿಕ  
ದೇಹ. ನ ಅನ್ಯ: ಅಪ್ರಶಸ್ತೋ ವಾ ಆತ್ಮಾ। “ಅಪ್ರಾಪ್ತ:  
ಪ್ರಾಪ್ಯತೇ ಯೋಷ್ಯಮತ್ಯಂತಂ ತ್ಯಜ್ಯತೇಷವಾ। ಜಾನಿಯಾತ್ತಮನಾತ್ಮಾನಂ  
ಬುದ್ಧಯಂತಂ ವಪುರಾದಿಕಮ್”। (ವಿಂ) 3. (ತನ್ನ) ಮನಸ್ಸನ್ನು  
ಅಂಕೆಯಿಲ್ಲದ, ಮನಸ್ಸನ್ನು ಬಿಗಿಹಿಡಿಯದ.  
“ಅನಾತ್ಮನಸ್ತು ಶತ್ರುತ್ವೇ ವರ್ತತಾತ್ಮವಂ ಶತ್ರುವತ್” ಗೀತಾ ೬-೬।

ಅನಾತ್ಮವತ್ ಅನಾತ್ಮವತ್ (ವಿಂ) ಇಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹ  
ವಿಲ್ಲದ, ಜಿತೇಂದ್ರಿಯನಲ್ಲದ. ನ ಆತ್ಮಾ ವಸ್ಯತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ  
“ಮತುಃ” (೫-೨-೧೪)।

ಅನಾಥ ಅನಾಥ (ವಿಂ) 1. ಒಡೆಯನಿಲ್ಲದ, ಯಜಮಾನ  
ನಿಲ್ಲದ. 2. ಸಹಾಯಕನಿಲ್ಲದ, ರಕ್ಷಕನಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ  
ನಾಥ: ಯಸ್ಯ। “ನಾಥವಂತಸ್ತವಯಾ ಲೋಕಾಸ್ತವಮನಾಥಾ ವಿಪ-  
ತ್ಯಸೇ” ತಂ ರಾಂ ೧-೪೩।

ಅನಾದರ ಅನಾದರ (ಪುಂ) 1. ಪರಿಭವ, ತಿರಸ್ಕಾರ,  
ಅವಮಾನಪಡಿಸುವಿಕೆ. ನ ಆದರ:। ವಿರೋಧೇ ನಂ ತಂ।  
“ಅನಾದರಾಕೃಷ್ಣಮೂಲಖಲಂ ತತ್” ಯಾದಂ ೪-೩೭। 2.  
ಪರಮಾತ್ಮ. ನ ಆದರೋ ಯಸ್ಯ। ಅವಾಪ್ತಸಮಸ್ತಕಾಮತ್ವೇನ  
ಆದರ್ದವ್ಯಾಭಾವಾತ್। (ವಿಂ) 3. ಆದರವಿಲ್ಲದ, ಗೌರವ  
ವಿಲ್ಲದ.

ಅನಾದಿ ಅನಾದಿ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. ನ ಆದಿರ್ಯಸ್ಯ।  
2. ಹಿರಣ್ಯಗರ್ಭ, ಬ್ರಹ್ಮ. ನ ಆದಿರ್ಯಸ್ಮಾತ್।  
3. (ಅದ್ವೈತಿಗಳ ಮತದಲ್ಲಿ) ಅನಾದಿಷಟ್ಕು.  
[(1) ಜೀವ, (2) ಈಶ, (3) ಶುದ್ಧ ಜೈತನ್ಯ,  
(4) ಜೀವೇಶ್ವರಭೇದ, (5) ಮಾಯೆ ಮತ್ತು  
(6) ಮಾಯಾಜೈತನ್ಯ ಸಂಬಂಧ ಇವು ಆರೂ ಅನಾದಿ  
ಗಳು.] (ವಿಂ) 4. ಆದಿಯಿಲ್ಲದ, ಉತ್ಪತ್ತಿಯಿಲ್ಲದ,  
ಶಾಶ್ವತವಾದ, ನಿತ್ಯವಾದ. “ಜಗದಾದಿರನಾದಿಷ್ಟಂ  
ಜಗದೀಶೋ ನಿರೀಶ್ವರ:” ಕುಮಾಂ ೨-೯।

ಅನಾದೀನವ ಅನಾದೀನವ (ವಿಂ) 1. ನಿರ್ದೋಷವಾದ.  
“ಯದ್ವಾಸುದೇವನಾದೀನಮನಾದೀನವಮೀರಿತಮ್” ಮಾಘಂ ೨-೨೨।  
2. ಕೋಪವಿಲ್ಲದ. 3. ಕ್ಲೇಶವಿಲ್ಲದ. 4. ದುಃಖ  
ದಲ್ಲಿ ಕೊನೆಗಾಣದ, ಸುಖಾಂತವಾದ. “ಆದೀನವ:  
ಪುನರ್ದೋಷೇ ಪರಿಕಿಲಿಷ್ಠದುರಂತಯೋ:” ಹೇಮಂ। “ರೋಪೇವಾದೀ-  
ನವಾಶ್ರವೌ” ವೈಜಂ।

ಅನಾದೃತ ಅನಾದೃತ (ನಂ) 1. ಅವಮಾನ, ತಿರಸ್ಕಾರ.  
ಆ+ದೃ (ಆದರೆ) ಭಾವೇ “ಕ್ತ:” (೩-೩-೧೧೪)। ನಂ ತಂ।  
(ವಿಂ) 2. ಪ್ರೀತಿಸಲ್ಪಡದ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡದ.  
“ಅನಾದೃತಸ್ತನ್ಯರಸೇಮೈಕುಂದ:” ಯಾದಂ ೪-೮೫। 3. ತಿರ  
ಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನ ಆದೃತ:।  
ಅನಾದೇಯ ಅನಾದೇಯ (ವಿಂ) ಸ್ವೀಕರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಲ್ಲದ. “ಅನಾದೇಯಸ್ಯ ಚಾದಾನಾದಾದೇಯಸ್ಯ ಚ ವರ್ಜನಾತ್”  
ಮನುಂ ೮-೧೭೧।

ಅನಾದೇಶ ಅನಾದೇಶ (ಪುಂ) 1. ಉಪದೇಶವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
2. ಅಪ್ಪಣೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ಆದೇಶ:। ಅಭಾವೇ  
ನಂ ತಂ।

ಅನಾದೇಶಕರ ಅನಾದೇಶಕರ (ವಿಂ) 1. ಅಪ್ಪಣೆಯಂತೆ  
ನಡೆಯದಿರುವ, ಅಪ್ಪಣೆಯನ್ನು ನೆರವೇರಿಸದಿರುವ  
ಸ್ವಭಾವದ. ನ ಆದೇಶಂ ಕರೋತಿ-ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ಕ:”  
(೩-೨-೨೦)। 2. ಉಪದೇಶಮಾಡದ, ಸಲಹೆಕೊಡದ.

ಅನಾಥ ಅನಾಥ (ವಿಂ) 1. ಭುಜಿಸಲು ಅನರ್ಹವಾದ,  
ತಿನ್ನಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ. ನ ಆಹಮ್। 2. ಮೊದಲನೆಯ  
ದಲ್ಲದ.

ಅನಾಧಾರ ಅನಾಧಾರ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. “ಅಶೋಘಾ-  
ಧಾರಮೇಕಂ ತ್ವಾಮನಾಧಾರಮಧೀಯತೇ” ಯಾದಂ ೧೬-೧೧೨।  
(ವಿಂ) 2. ಆಶ್ರಯವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಆಧಾರೋ ಯಸ್ಯ।

ಅನಾಧಿ ಅನಾಧಿ (ವಿಂ) ಮನೋನ್ಮಥೆಯಿಲ್ಲದ. ನ ಆಧಿ-  
ರ್ಯಸ್ಯ। “ಧನುರಧಿಜ್ಯಮನಾಧಿರಪಾದೇ” ರಘುಂ ೯-೫೪।



ಅನಾಥೃಷ್ಠ ಅನಾಥೃಷ್ಠ (ವಿಂ) ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡದ, ಎದುರಿಸಲ್ಪಡದ, ಜಯಿಸಲ್ಪಡದ. ನ ಆಥೃಷ್ಠಃ |

ಅನಾಥೃಷ್ಯ ಅನಾಥೃಷ್ಯ (ವಿಂ) ತಿರಸ್ಕರಿಸಲಾಗದ, ಎದುರಿಸಲಾಗದ, ಜಯಿಸಲಾಗದ.

ಅನಾಪಿ ಅನಾಪಿ (ವಿಂ) 1. ಬಂಧುಗಳಿಲ್ಲದ. 2. ಸ್ನೇಹಿತ ರಿಲ್ಲದ. ಆಪ್ಯತೇ—ಆಪ್ತ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) ಕರ್ಮಂ “ಇನ್” (ತಂ ೪-೧೧೭) | ಆಪಿ: ಆಪ್ತ: | ನ ಆಪಿಯಸ್ಯ |

ಅನಾಪ್ತ ಅನಾಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲ್ಪಡದ. 2. ಫಲ ವನ್ನು ಹೊಂದದ, ಕೊನೆಯನ್ನು ಮುಟ್ಟದ. 3. ಆಪ್ತ ನಲ್ಲದ, ಸ್ನೇಹಿತನಲ್ಲದ. 4. ಬಂಧುವಲ್ಲದ. 5. ಜಾಣ ನಲ್ಲದ, ನಿಪುಣತೆಯಿಲ್ಲದ. “ಯುಗ್ಮಸ್ಯಾ: ಪ್ರಾಜ್ಞೇಜಾಪ್ತೇ ಸರ್ವ ದೃಢಾಃ ಶತಂ ಶತಮ್” ಮನುಂ ೮-೨೯೪ |

ಅನಾಮಕ ಅನಾಮಕ (ಪುಂ) 1. ಮಲಮಾಸ, ಅಧಿಕ ಮಾಸ. 2. ಅನಾಮಿಕೆಯೆಂಬ ಬೆರಳು, ಉಂಗುರದ ಬೆರಳು. (ನಂ) 3. ಅರ್ಕೋರೋಗ, ಮೂಲವ್ಯಾಧಿ. (ವಿಂ) 4. ಹೆಸರಿಲ್ಲದವನು, ಹೆಸರು ಪಡೆಯದವನು, ಅಪ್ರಸಿದ್ಧ.

ಅನಾಮನ್ ಅನಾಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಮಲಮಾಸ, ಅಧಿಕ ಮಾಸ. 2. ಉಂಗುರದ ಬೆರಳು, ಅನಾಮಿಕೆಯೆಂಬ ಬೆರಳು. (ನಂ) 3. ಅರ್ಕೋರೋಗ, ಮೂಲವ್ಯಾಧಿ. (ವಿಂ) 4. ಅಪ್ರಸಿದ್ಧ, ಹೆಸರು ಪಡೆಯದವನು.

ಅನಾಮಯ ಅನಾಮಯ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಈಶ್ವರ. ನ ಆಮಯ: ಯಸ್ಮಾತ್ | [ಪರಮಾತ್ಮನು ಸಕಲವಿಧವಾದ ರೋಗಗಳನ್ನೂ ಪರಿಹರಿಸುವವನು.] (ನಂ) 2. ಆರೋಗ್ಯ. ಅಮ (ರೋಗ) ಭಾವೇ “ಘ್” (೩-೩-೧೮) | ಆಮಂ ಋಣಾವಸ್ಥಾಂ ಯಾತಿ ಪ್ರಪ್ತೋತ್ಯನೇನ—ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೇ) “ಙ:” (ವಾಂ ೩-೨-೧೦೧) | ಆಮಯಸ್ಯಾಭಾವ: | “ಸ ಭವಂತ-ಮನಾಮಯಪ್ರಶ್ನಂಪೂರ್ವಕಮಾಹ” ಶಾಕುಂ ೪ | “ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ಕುಶಲಂ ಪುಣ್ಯಕ್ಷತ್ರವಂಧುಮನಾಮಯಮ್” ಮನುಂ ೨-೧೨೭ | (ವಿಂ) 3. ರೋಗವಿಲ್ಲದ, ಉಪದ್ರವವಿಲ್ಲದ, ಸೌಖ್ಯವುಳ್ಳ. “ಜನ್ಮ-ಬಂಧವಿನಿರ್ಮುಕ್ತಾ: ಪದಂ ಗच्छಂತ್ಯನಾಮಯಮ್” ಗೀತಾ ೨-೪೧ |

ಅನಾಮಾ ಅನಾಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನಾಮಿಕೆ, ಉಂಗುರದ ಬೆರಳು, ಹೆಸರನ್ನು ಹಿಡಿದು ಕರೆಯಲು ಅನರ್ಹವಾದ ಬೆರಳು. ನ ಅಪ್ರಶಸ್ತಂ ನಾಮ ಯಸ್ಯಾ: “ಙಾಪ್” (೪-೧-೧೩) | [ಈಶ್ವರನು ಈ ಬೆರಳಿನಿಂದ ಬ್ರಹ್ಮನ ತಿರಸ್ಸನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.]

ಅನಾಮಿಕಾ ಅನಾಮಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಂಗುರದ ಬೆರಳು, ಅನಾಮಿಕೆಯೆಂಬ ಬೆರಳು, ಹೆಸರನ್ನು ಹಿಡಿದು ಕರೆ

ಯಲು ಅನರ್ಹವಾದ ಬೆರಳು. ನ ನಾಮ ಇಹನಯ-ಮಸ್ಯಾ: | ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” | “ಪುರಾ ಕವೀನಾಂ ಮನನಾಪ್ರಸಜ್ಞೇ ಕನಿಷ್ಠಿಕಾವಿಷ್ಣಿತಕಾಲಿದಾಸಾ | ಅವಾಪಿ ತತುಲ್ಯಕವೇರಮಾವಾ-ದನಾಮಿಕಾ ಸಾರ್ಥವತೀ ಬಭೂವ” |

ಅನಾಯಕ ಅನಾಯಕ (ವಿಂ) ಯಜಮಾನನಿಲ್ಲದ, ಕ್ರಮ ಗೆಟ್ಟು, ಶಿಸ್ತು ಇಲ್ಲದ.

ಅನಾಯತ ಅನಾಯತ (ವಿಂ) ಉದ್ದವಾಗಿಲ್ಲದ, ಹ್ರಸ್ವ ವಾಗಿರುವ, ತುಂಡಾಗಿರುವ. ನ ಆಯತ: |

ಅನಾಯತ್ತ ಅನಾಯತ್ತ (ವಿಂ) ಅಧೀನವಲ್ಲದ, ಸ್ವತಂತ್ರ ವಾದ. ನ ಆಯತ: | “ಏತಾವಜ್ಜನ್ಮಸಾಫಲ್ಯಂ ಯದನಾಯತ್ತ-ವೃತ್ತಿಃ” ಹಿತೌಂ ೨-೨೨ |

ಅನಾಯನ ಅನಾಯನ (ನಂ) 1. ಎಕಾಂತ. (ವಿಂ) 2. ಎಕಪ್ರಕಾರವಾದ, ವಿಕಾರವನ್ನು ಹೊಂದದ, ಬದಲಾ ವಣೆ ಹೊಂದದಿರುವ. ನ ಆಯನಂ ಚಾಲನಂ ಯತ್ರ |

ಅನಾಯಾಸ ಅನಾಯಾಸ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಯತ್ನವಿಲ್ಲ ದಿರುವಿಕೆ. 2. ಆಯಾಸವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಸೌಲಭ್ಯ, ಸೌಕರ್ಯ. (ವಿಂ) 3. ಕ್ರಮವಿಲ್ಲದ, ಆಯಾಸ ವಿಲ್ಲದ. 4. ಪ್ರಯತ್ನವಿಲ್ಲದ.

ಅನಾಯಾಸಕೃತ ಅನಾಯಾಸಕೃತ (ನಂ) 1. ಆಯಾಸ ವಿಲ್ಲದೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನಾಯಾಸೇನ ಅಲ್ಪಪ್ರಯತ್ನೇನ ಕೃತಮ್ | (ವಿಂ) 2. ಸುಲಭವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅನಾಯುಷ್ಯ ಅನಾಯುಷ್ಯ (ನಂ) 1. ಆಯುಸ್ಸಿಗೆ ಹಿತ ವಲ್ಲದ ಭೋಜನ, ಅತಿಭೋಜನ. ನ ಆಯುಷೇ ಹಿತಮ್— ಆಯುಸ್ “ಯತ್” (೪-೧-೪) | ನಂ ತಂ | (ವಿಂ) 2. ದೀರ್ಘಾಯುಸ್ಸಿಗೆ ತೊಂದರೆಯುಂಟುಮಾಡುವ, ದೀರ್ಘಾಯುಸ್ಸಿಗೆ ಅಹಿತವಾದ.

ಅನಾರತ ಅನಾರತ (ನಂ) 1. ಎಡಬಿಡದ ಸಂಬಂಧ, ವಿರಾಮವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ವಿಚ್ಛೇದವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ವಿರಾಮವಿಲ್ಲದ, ಎಡಬಿಡದ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3. ವಿರಾಮವಿಲ್ಲದೆ, ಎಡಬಿಡದೆ. ಅವಿಶಮಾನಮಾರತಂ ವಿರಾಮ: ಯಸ್ಮಿನ್ | “ಅನಾರತಂ ತೇನ ಪದೇಪು ಲಘ್ವಿತಾ:” ಕಿರಾಂ ೧-೧೪ |

ಅನಾರಮ್ಭ ಅನಾರಂಭ (ಪುಂ) ಪ್ರಾರಂಭಿಸದಿರುವಿಕೆ, ಪ್ರಯತ್ನಪಡದಿರುವಿಕೆ. ನ ಆರಮ್ಭ: | ಅಭಾವೇ ನಂ ತಂ | “ವಿಕಾರಂ ಸ್ವಲ್ಪ ಪರಮಾರ್ಥತೋಜ್ಞಾತ್ವಾನಾರಮ್ಭ: ಪ್ರತೀಕಾರಸ್ಯ” ಶಾಕುಂ ೩ |

ಅನಾರೋಗ್ಯ ಅನಾರೋಗ್ಯ (ನಂ) 1. ಆರೋಗ್ಯವಿಲ್ಲದಿರು ವಿಕೆ, ದೀನ, ರೋಗ. ನ ಆರೋಗ್ಯಮ್ | (ವಿಂ) 2. ರೋಗಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ. ನ ಆರೋಗ್ಯಂ ಯಸ್ಮಾತ್ |



ಅನಾರ್ಜವ ಅನಾರ್ಜವ (ಪುಂ) 1. ರೋಗ. ನಾಸ್ತಿ ಆರ್ಜವಂ ಯಸ್ಮಿನ್. (ನಂ) 2. ವಕ್ರತೆ, ಕುಟಿಲತೆ. 3. ಕಪಟ, ಮೋಸ. (ವಿಂ) 4. ವಕ್ರವಾದ, ಕುಟಿಲವಾದ. ನ ಆರ್ಜವಂ ಯಸ್ಯ.

ಅನಾರ್ತವ ಅನಾರ್ತವ (ವಿಂ) 1. ಋತುವಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದಿರುವ, ಆಯಾ ಋತುವಿಗೆ ಸಂಬಂಧಪಡದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವಾ-ವಾ. 2. ಋತುಮತಿಯಾಗದ ಕನ್ಯೆ.

ಅನಾರ್ಯ ಅನಾರ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಆರ್ಯನಲ್ಲದವನು, ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆಯಿಲ್ಲದವನು. 2. ಆರ್ಯನಿಲ್ಲದ ದೇಶ.

ಅನಾರ್ಯಕ ಅನಾರ್ಯಕ (ನಂ) ಅಗರುಮರ.

ಅನಾರ್ಯಕರ್ಮನ್ ಅನಾರ್ಯಕರ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ನೀಚ ಕಾರ್ಯ, ಕೆಟ್ಟಕೆಲಸ. (ವಿಂ) 2. ಕೆಟ್ಟಕೆಲಸ ಮಾಡುವ. ಅನಾರ್ಯ ಕರ್ಮ ಯಸ್ಯ.

ಅನಾರ್ಯಜ ಅನಾರ್ಯಜ (ನಂ) 1. ಮ್ಲೇಚ್ಛದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಅಗರುಮರ. ಅನಾರ್ಯ ದೇಶ ಭವಮ್. (ವಿಂ) 2. ನೀಚನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ.

ಅನಾರ್ಯತೀತ ಅನಾರ್ಯತೀತ (ಪುಂ) ನೆಲಬೇವಿನಮರ. ಅನಾರ್ಯಪ್ರಿಯ: ತೀತ:.

ಅನಾರ್ಥ ಅನಾರ್ಥ (ವಿಂ) 1. ವೇದದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡದ, ಅವೈದಿಕ. ಋಷಿವೇದ: ತತ್ರೋಕ್ತ: ಆರ್ಥ: | ನ ಆರ್ಥ: | ನಂ ತಂ | 2. ಋಷಿಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಪಡದ. 3. ಋಷಿಗಳಿಂದ ಕಾಣಲ್ಪಡದ. ಋಷಿಣಾ ದೃಷ್ಟಮ್ ಆರ್ಥಮ್ | ನಂ ತಂ |

ಅನಾಲಂಬ ಅನಾಲಂಬ (ಪುಂ) 1. ಆಶ್ರಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ಆಲಂಬ: | (ವಿಂ) 2. ಆಶ್ರಯವಿಲ್ಲದ, ಆಧಾರವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಆಲಂಬೋ ಯಸ್ಯ | "ಕಥಂಕಾರಮನಾಲಂಬಾ ಕೀರ್ತಿರ್ಮಧಿರೋಹತಿ" ಮಾಘಂ ೨-೪೨ |

ಅನಾಲೋಚಿತ ಅನಾಲೋಚಿತ (ವಿಂ) 1. ಯೋಚಿಸಲ್ಪಡದ, ಆಲೋಚಿಸಲ್ಪಡದ, ಉಪೇಕ್ಷೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನ ಆಲೋಚಿತಮ್ | "ಅನಾಲೋಚಿತಕಾರ್ಯಸ್ಯ ವಾಙ್ಮಾಲಂ ವಾಗ್ಮಿನೋ ವೃಥಾ" ಮಾಘಂ ೨-೨೭ | 2. ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾದ. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ವಿಮರ್ಶೆಮಾಡಲ್ಪಡದ.

ಅನಾವಿಧ್ವ ಅನಾವಿಧ್ವ (ವಿಂ) 1. ಇರಿಯಲ್ಪಡದ, ವೆಜ್ಜಮಾಡಲ್ಪಡದ, ರಂಧ್ರಮಾಡಲ್ಪಡದ, ಗಾಯಮಾಡಲ್ಪಡದ. 2. ವಕ್ರವಲ್ಲದ, ಬಗ್ಗಿಲ್ಲದ. ನ ಆವಿಧ್ವ: | "ಅನಾವಿಧ್ವಂ ರತ್ನಂ ಮಧು ನವಮನಾಸ್ವಾದಿತರಸಮ್" ಶಾಕುಂ ೨-೧೦ |

ಅನಾವಿಲ ಅನಾವಿಲ (ವಿಂ) ಅಕಲುಷ, ಕಲಕದಿರುವ, ಪ್ರಸನ್ನವಾದ, ನಿರ್ಮಲವಾದ. ನಂ ತಂ | "ಅನಾವಿಲಧಿಯಾಮಂತಶ್ಚಿಂತಾಮಣಿರಿವ ಸ್ಫುರನ್" ಪಾದಂ ೧-೪೨ |

ಅನಾವೃತ ಅನಾವೃತ (ವಿಂ) ಆವರಿಸಲ್ಪಡದ, ಸುತ್ತುವರಿಯಲ್ಪಡದ.

ಅನಾವೃತ್ತ ಅನಾವೃತ್ತ (ವಿಂ) 1. ಮೊದಲನೆಯ ಸಲ ಬಂದಿರುವ. 2. ಮತ್ತೆ ಬರದಿರುವ. ನಂ ತಂ |

ಅನಾವೃತ್ತಿ ಅನಾವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪುನಃ ಆಗಮಿಸದಿರುವಿಕೆ, ಮತ್ತೆ ಬರದೆ ಇರುವಿಕೆ. 2. ಬಂಧವಿಮೋಚನೆ, ಮೋಕ್ಷ, ಸಂಸಾರದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ. ನಂ ತಂ |

ಅನಾವೃಷ್ಟಿ ಅನಾವೃಷ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಳೆಯು ಬರದಿರುವಿಕೆ, ಆರುವಿಧ ಈತೆಬಾಧೆಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಅತಿವೃಷ್ಟಿ-ರನಾವೃಷ್ಟಿರ್ಮುಪಕಾ: ಶಲಭಾ: ಶುಕಾ: | ಅತ್ಯಾಸನ್ನಾಶ್ವ ರಾಜಾನ: ಪಡೇತಾ ಇತಯ: ಸ್ಮೃತಾ: |"

ಅನಾಶ ಅನಾಶ (ವಿಂ) 1. ಆಶೆಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಆಶಾ ಯಸ್ಯ | 2. ನಾಶವಿಲ್ಲದ, ಹಾಳಾಗದ, ಶಾಶ್ವತವಾದ. ನಾಸ್ತಿ ನಾಶೋ ಯಸ್ಯ |

ಅನಾಶಕ ಅನಾಶಕ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಭೋಜನವಿಲ್ಲದ. ಆ ಸಮ್ಯಕ್ ಆಶಾ: ಅಶನಮ್ - ಆ+ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಋ" (೩-೩-೧೮) | ತನ್ನಾಸ್ತಿ ಯಸ್ಯ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೪೪) | 2. ನಾಶಹೊಂದದ, ಶಾಶ್ವತವಾದ, ಅನಶ್ವರ. ನ ನಾಶೋ ಯಸ್ಯ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೪೪) | 3. ನಾಶಪಡಿಸದ.

ಅನಾಶಿನ್ ಅನಾಶಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಸರಮಾತ್ಮ. 2. ಜೀವಾತ್ಮ. ನ ನಶ್ಯತಿ - ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) "ಣಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮) | "ಅನಾಶಿನೋಽಪ್ರಮೇಯಸ್ಯ" ಗೀತಾ ೨-೧೮ | (ವಿಂ) 3. ಅನಶ್ವರವಾದ, ಶಾಶ್ವತವಾದ.

ಅನಾಶು ಅನಾಶು (ವಿಂ) 1. ನಾಶರಹಿತ, ಶಾಶ್ವತವಾದ. ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) "ಊ" | ನಂ ತಂ | 2. ನ್ಯಾಪಿಸದಿರುವ, ಪಸರಿಸದಿರುವ, ಹಬ್ಬದಿರುವ. 3. ನಿಧಾನವಾದ, ಸಾವಕಾಶವಾದ. ಅಶ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಊ" (ಊ ೧-೧) | ನಂ ತಂ |

ಅನಾಶ್ಯ ಅನಾಶ್ಯ (ವಿಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸಲು ಅನರ್ಹವಾದ. 2. ನಾಶಪಡಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ.

ಅನಾಶ್ರಮಿನ್ ಅನಾಶ್ರಮಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಗೃಹಸ್ಥಾ ದ್ಯಾಶ್ರಮವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸದವನು, ಯಾವ ಆಶ್ರಮದ ಧರ್ಮವನ್ನೂ ಆಚರಿಸದವನು. ನ ಆಶ್ರಮಿ | ನಂ ತಂ | "ಅನಾಶ್ರಮಿ ನ ತಿಷ್ಠೇತ್ ಕ್ಷಣಮೇಕಮಪಿ ದ್ವಿಜ:" ಸ್ಮೃತಿ: | 2. ವಿಧುರ, ಅಪತ್ತೀಕ.



ಅನಾಶ್ರಯ ಅನಾಶ್ರಯ (ಪುಂ) 1. ಆಶ್ರಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಬೇರೆಯಾಗದಿರೋಣ. (ವಿಂ) 2. ಆಶ್ರಯವಿಲ್ಲದ.

ಅನಾಶ್ರವ ಅನಾಶ್ರವ (ವಿಂ) ಅವಿಧೇಯ, ಮೊಂಡ, ಚಂಡಿಮೋರೆ. ನ ಆಶ್ರವ: "ದೃಷ್ಟದೋಷಮಪಿ ತನ್ನ ಸೌಜ್ಯಜತ್ಸಜ್ಜವಸ್ತು ಮಿಷಜಾಮನಾಶ್ರವ:" ರಘುಂ ೧೯-೪೯.

ಅನಾಶ್ರಿತ ಅನಾಶ್ರಿತ (ವಿಂ) 1. ಆಶ್ರಯಪಡೆಯದ, ಬೇರೆಯಾಗಿರುವ, ಅಧೀನನಲ್ಲದ, ಸ್ವತಂತ್ರ. ನ ಆಶ್ರಿತ: 2. ಅವಲಂಬಿಸದ, ಇತರ ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ. "ಅನಾಶ್ರಿತ: ಕರ್ಮಫಲಂ ಕಾರ್ಯ ಕರ್ಮ ಕರೋತಿ ಯ:" ಗೀತಾ ೬-೧.

ಅನಾಶ್ವಸ್ ಅನಾಶ್ವಸ್ (ವಿಂ) ಉಟಮಾಡದ, ಸುಖ ಪಡದ. ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಕ್ಸು:" (೩-೨-೧೦೯). ನಂ ತಂ. "ಇಚ್ಛತಾಶಿತುಮನಾಶುಪಾ ನ ಚ" ಮಾಘಂ ೧೪-೪೯.

ಅನಾಶ್ವಾಸ ಅನಾಶ್ವಾಸ (ಪುಂ) ವಿಶ್ವಾಸವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಅದರವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ಆಶ್ವಾಸ: ನಂ ತಂ.

ಅನಾಸ್ ಅನಾಸ್ (ವಿಂ) ಮುಖದ ವ್ಯಾಪಾರವಿಲ್ಲದ, ಬಾಯಿಯ ಕೆಲಸವಿಲ್ಲದ, ಮಾತಾಡುವ ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ. ಆಸ್ಯತೇ ನಿರಾಸ್ಯತೇನೇನ ಆ: ಮುಖಮ್. ತನ್ನಾಸ್ತಿ ಸಾಧನ-ತ್ವೇನಾಸ್ಯ.

ಅನಾಸಾದಿತ ಅನಾಸಾದಿತ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲ್ಪಡದ, ಸಂಪಾದಿಸಲ್ಪಡದ. 2. ಸಮಾಪಿಸಲ್ಪಡದ, ಭೇಟಿ ಯಾಗದ.

ಅನಾಸಿಕ ಅನಾಸಿಕ (ವಿಂ) 1. ಹರಕುಮೂಗುಳ್ಳ. 2. ವಿಕಾರವಾದ ಮೂಗುಳ್ಳ. ನಾಸ್ತಿ ನಾಸಿಕಾ ಯಸ್ಯ.

ಅನಾಸ್ಥಾ ಅನಾಸ್ಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನಾದರ, ಉಪೇಕ್ಷೆ, ಉದಾಸೀನತೆ. ನ ಆಸ್ಥಾ. ನಂ ತಂ. "ಬ್ರೂತ ಯೇನಾತ್ರ ವ: ಕಾರ್ಯಮನಾಸ್ಥಾ ಬಾಹ್ಯವಸ್ತುಃ" ಕುಮಾಂ ೬-೬೩. 2. ಅಪ ಮಾನ, ಅವಮರ್ಯಾದೆ. (ವಿಂ) 3. ಉದಾಸೀನ ನಾದ, ತಟಸ್ಥನಾದ.

ಅನಾಸ್ವಾದ ಅನಾಸ್ವಾದ (ಪುಂ) 1. ಅರುಚಿ, ಸಪ್ಪೆ. (ವಿಂ) 2. ಸಪ್ಪೆಯಾದ, ರುಚಿಯಿಲ್ಲದ, ಸಾರವಿಲ್ಲದ.

ಅನಾಸ್ವಾದಿತ ಅನಾಸ್ವಾದಿತ (ವಿಂ) ರುಚಿನೋಡಲ್ಪಡದ, ಸವಿಯಲ್ಪಡದ. ನ ಆಸ್ವಾದಿತಮ್. "ಮಧು ನವಮನಾ-ಸ್ವಾದಿತರಸಮ್" ಶಾಕುಂ ೨-೧೦.

ಅನಾಹತ ಅನಾಹತ (ನಂ) 1. ಉಡದ ಮತ್ತು ಕತ್ತರಿಸದ ಹೊಸ ಬಟ್ಟೆ, ನೂತನ ವಸ್ತ್ರ. ನ ಆಹತಮ್. 2. ತಂತ್ರ ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಹೃದಯದೊಳಗಿನ ಒಂದು ಪದ್ಮ. (ವಿಂ) 3. ಹೊಡೆಯಲ್ಪಡದ, ಗಟ್ಟಿಸಲ್ಪಡದ.

ಅನಾಹಾರ ಅನಾಹಾರ (ಪುಂ) 1. ಉಪವಾಸ, ನಿರಶನ, ಲಂಘನ. ನ ಆಹಾರ: "ಅನಾಹಾರೆಣಾತ್ಮಾನಂ ವ್ಯಾಪಾದ-ಯಿಷ್ಯಾಮಿ" ಹಿತಂ. (ವಿಂ) 2. ವಿಷಯೋಪಭೋಗ ರಹಿತನಾದ.

ಅನಾಹಾರ್ಯ ಅನಾಹಾರ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅಕ್ಕಿ, ತಿಮ್ಮ, ಸ್ವಭಾವಸಿದ್ಧವಾದ. 2. ತರಲು ಸಾಧ್ಯವಲ್ಲದ. 3. ತಿನ್ನಲು ಅರ್ಹವಲ್ಲದ. 4. ತರಲು ಅರ್ಹವಲ್ಲದ.

ಅನಾಹುತ ಅನಾಹುತ (ವಿಂ) ಆಮಂತ್ರಣವಿಲ್ಲದ, ಆಹ್ವಾನವಿಲ್ಲದ, ಕರೆಯಲ್ಪಡದ. ನ ಆಹುತ: "ಅನಾಹುತೋಽಪ್ಪರಂ ಗಚ್ಛೇತ್".

ಅನಿಕೇತ ಅನಿಕೇತ (ಪುಂ) 1. ಸಂನ್ಯಾಸಿ, ಯತಿ, ಸ್ಥಿರ ವಾದ ಮನೆಯಿಲ್ಲದವನು. ನಾಸ್ತಿ ನಿಕೇತೋ ನಿಯಮೇನ ನಿವಾಸೋ ಯಸ್ಯ. "ಅನಗ್ನಿರನಿಕೇತ: ಸ್ಯಾದ್ಗ್ರಾಮಮನ್ಯಾಯ-ಮಾಶ್ರಯೇತ್" ಮನುಂ ೬-೪೩. (ವಿಂ) 2. ವಾಸಗೃಹವಿಲ್ಲದ, ಮನೆಯಿಲ್ಲದ. "ಅನಿಕೇತ: ಸ್ಥಿರಮತಿ:" ಗೀತಾ ೧೨-೧೯.

ಅನಿಗೀರ್ಣ ಅನಿಗೀರ್ಣ (ವಿಂ) 1. ತಿನ್ನಲ್ಪಡದ, ನುಂಗ ಲ್ಪಡದ. 2. ಮರಿಮಾಚಲ್ಪಡದ, ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡ ಲ್ಪಡದ. ನ ನಿಗೀರ್ಣ:

ಅನಿಗ್ರಹ ಅನಿಗ್ರಹ (ಪುಂ) 1. ನಿರ್ಬಂಧವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಹತೋಟಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದಿರುವಿಕೆ. "ಅನಿಗ್ರಹಾಚ್ಛೇಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ ನರ: ಪತನಮುಚ್ಛತಿ" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೨೧೯. 2. ಖಂಡನೆಮಾಡದಿರುವಿಕೆ, ನಿರಾಕರಿಸ ದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 3. ನಿರ್ಬಂಧವಿಲ್ಲದ, ಹತೋಟಿ ಯಿಲ್ಲದ, ಸ್ವತಂತ್ರವಾದ.

ಅನಿಚ್ಛಾ ಅನಿಚ್ಛಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉಪೇಕ್ಷೆ, ಉದಾಸೀನತೆ. ನ ಇಚ್ಛಾ. "ಸ್ಫುಟಾಮನಿಚ್ಛಾಂ ವಿವರೀತುಮುತ್ಸುಕಾಮ್" ನೈಷಂ ೯-೧. 2. ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. "ಜಾತಿಭ್ರಂಶಕರಂ ಕರ್ಮ ಕೃತ್ವಾನ್ಯತಮಮಿಚ್ಛಯಾ. ಚರೇತ್ಸಾಂತಪನಂ ಕೃಚ್ಛಂ ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯ-ಮನಿಚ್ಛಯಾ" ಮನುಂ ೧೧-೧೨೪.

ಅನಿತ ಅನಿತ (ವಿಂ) 1. ಬದುಕಿರುವ, ಜೀವಿಸಿರುವ. ಅನ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). 2. ಹೊಂದ ದಿರುವ, ತಲುಪದಿರುವ. ನ ಇತ: 3. ಹೊಂದಲ್ಪಡದ, ಪಡೆಯಲ್ಪಡದ.

ಅನಿತ್ಯ ಅನಿತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ನಶ್ವರ, ನಾಶಸ್ವಭಾವದ. ನ ನಿತ್ಯ: "ತತ್ರ ಗಂಧವತೀ ಪೃಥಿವೀ. ಸಾ ದ್ವಿವಿಧಾ. ನಿತ್ಯಾಽನಿತ್ಯಾ ಚ. ನಿತ್ಯಾ ಪರಮಾಣುರೂಪಾ. ಅನಿತ್ಯಾ ಕಾರ್ಯರೂಪಾ" ತಂ ಸಂ. 2. ಅಸ್ಥಿರ, ಸಂದಿಗ್ಧ, ಅನಿಶ್ಚಿತ ವಾದ. "ಅನಿತ್ಯೋ ವಿಜಯೋ ಯಸ್ಮಾತ್ ದೃಶ್ಯತೇ ಯುಧ್ಯಮಾನಯೋ:."



ಪರಾಜಯಶ್ಚ ಸಂಭವೇ ತಸ್ಮಾದ್ವಿವರ್ಜಯೇತ್" ಮನುಂ ೭-೧೯೯।  
3. ಅಕಸ್ಮಿಕ, ನೈಮಿತ್ತಿಕ, ಆಗಾಗ್ಗೆ ಸಂಭವಿಸುವ.  
4. ನಿಶ್ಚಯವಲ್ಲದ, ವಿಶೇಷರೀತಿಯು. "ಆನಾಪ್ಯೋಽನಿತೇ"  
ಪಾಂಸುಂ (೩-೧-೧೨೭)। "ಸ ಹಿ ಗಾರ್ಹಪತ್ಯಾದಾನಿ-  
ವತೇಽನಿತೀಶ್ಚ ಸತತಮಪ್ರಜ್ವಲನಾತ್" ಸಿಂ ಕೌಂ। (ಅವ್ಯಂ)  
5. ಆಗಾಗ್ಗೆ, ನೈಮಿತ್ತಿಕವಾಗಿ, ಸಮಯಬಂದಾಗ.  
"ಅನಿತಂ ಹಿ ಸ್ಥಿತೋ ಯಸ್ಮಾತ್ ತಸ್ಮಾದತಿಥಿಹ್ಯುಚ್ಯತೇ"  
ಮನುಂ ೩-೧೦೨।

ಅನಿರ ಅನಿದ್ರ (ವಿಂ) 1. ನಿದ್ರೆಯಿಲ್ಲದ. 2. ಜಾಗ-  
ರೂಕ, ಎಚ್ಚರಿಕೆಯುಳ್ಳ. (ಶಾಖಂ)। ನಾಸ್ತಿ ನಿद्रಾ  
ಯಸ್ಯ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ದ್ರಾ-ದ್ರಾ. 3. ನಿದ್ರೆಯ ಅಭಾವ,  
ನಿದ್ರೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 4. ಎಚ್ಚರಿಕೆ, ಜಾಗರೂಕತೆ.

ಅನಿಂದಿತ ಅನಿಂದಿತ (ವಿಂ) ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ, ನಂದಿಸ-  
ಲ್ಪಡದ, ಸಾಧುವಾದ. ನ ನಿಂದಿತಃ।

ಅನಿಮೃತ ಅನಿಮೃತ (ವಿಂ) 1. ಚಂಚಲವಾದ.  
"ಭುವನಿಮೃತವೇಲಾವಿಚಿವಾಹುಃ ಪಯೋಧಿಃ" ಕಿರಾಂ ೩-೬೦।  
2. ರಹಸ್ಯವಲ್ಲದ, ಶೋಕಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ. ನ ನಿಮೃತಃ।

ಅನಿಮಿತ್ತ ಅನಿಮಿತ್ತ (ನಂ) 1. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
2. ಅವಶಕುನ. (ವಿಂ) 3. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದ, ಆಧಾರ  
ವಿಲ್ಲದ, ಅಕಸ್ಮಿಕ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 4. ನಿಮಿತ್ತವಿಲ್ಲದೆ,  
ಕಾರಣವಿಲ್ಲದೆ. "ಅನಿಮಿತ್ತಮಿಂದುವದನೇ ಕಿಮತ್ರಭವತಃ  
ಪರಾಙ್ಮುಖಿ ಭವಸಿ" ಮಾಲಂ ೧-೧೮।

ಅನಿಮಿಷ ಅನಿಮಿಷ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. "ನಿಮಿಷೋಽನಿಮಿಷಃ  
ಸಖಿ" ವಿಂ ಸಂ। 2. ದೇವತೆ. ನಾಸ್ತಿ ನಿಮಿಷಃ  
ಚಕ್ಷುಃಸ್ಪಂದನಂ ಯಸ್ಯ। "ಭುವನಿಮಿಷಾಪೇ ಕಚ್ಚಿದಾರೋಪ್ಯ  
ಸೀತಾಂ ಕುಶಿಕತನಯವಾಕ್ಯಾದಯಹೀದ್ರಾಮಮದ್ರಃ" ಚಂ ರಾಂ  
೧-೧೮೪। 3. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. "ಅನಿಮಿಷಃ  
ಸುರಮತ್ಸಯೋಃ" ಹೇಮಂ। (ವಿಂ) 4. ಕಣ್ಣಿನ ರೆಪ್ಪೆಯು  
ಚಲಿಸದಿರುವ, ನೇತ್ರಸ್ಪಂದನವಿಲ್ಲದ.

ಅನಿಮಿಷಾಚಾರ್ಯ ಅನಿಮಿಷಾಚಾರ್ಯ (ಪುಂ) ದೇವಗುರು,  
ಬೃಹಸ್ಪತಿ. ಅನಿಮಿಷಾಣಾಂ ದೇವಾನಾಮಾಚಾರ್ಯಃ।

ಅನಿಮೇಷ ಅನಿಮೇಷ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. 2. ದೇವತೆ.  
3. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. ನಾಸ್ತಿ ನಿಮೇಷಃ ಚಕ್ಷುಃಸ್ಪಂದನಂ  
ಯಸ್ಯ। (ವಿಂ) 4. ಕಣ್ಣಿನ ರೆಪ್ಪೆಯು ಚಲಿಸದಿರುವ  
ನೇತ್ರಸ್ಪಂದನವಿಲ್ಲದ. "ಇತೇಸ್ತಮಕ್ಷಣಾಮನಿಮೇಷವೃತ್ತಿಮಿಃ"  
ಋಂ ೩-೪೩।

ಅನಿಯತ ಅನಿಯತ (ವಿಂ) 1. ಅನಿಶ್ಚ, ಅಸ್ಥಿರ.  
ನ ನಿಯತಃ। "ರತ್ಯಾದಯೋಽನಿಯತೇ ರಸೇ ಸ್ಯುರ್ವ್ಯಮಿಚಾರಿಣಃ"

ಸಾಂ ೬೦। 2. ನಿಯಂತ್ರಣವಿಲ್ಲದ, ನಿರ್ಬಂಧಕ್ಕೊಳ-  
ಗಾಗದ. 3. ಅನಿಶ್ಚಿತ, ಕ್ಲೃಪ್ತವಲ್ಲದ. "ಅನಿಯತ-  
ವೇಲಮಾಹಾರೋಽಯತೇ" ಶಾಕುಂ ೨।

ಅನಿಯತವೃತ್ತಿ ಅನಿಯತವೃತ್ತಿ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಥಿರವಾದ  
ಜೀವನವಿಲ್ಲದ. 2. ಸ್ಥಿರವಾದ ವರಮಾನವಿಲ್ಲದ.

ಅನಿಯನ್ತ್ರಣ ಅನಿಯಂತ್ರಣ (ನಂ) 1. ನಿರ್ಬಂಧವಿಲ್ಲ  
ದಿರುವಿಕೆ, ಹತೋಟಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2.  
ನಿಯಮನವಿಲ್ಲದ, ಅಂಕೆಯಿಲ್ಲದ, ಸ್ವತಂತ್ರವಾದ.  
"ಅನಿಯನ್ತ್ರಣಾನುಯೋಗೋ ನಾಮ ತಪಸ್ವಿಜನಃ" ಶಾಕುಂ ೧।

ಅನಿಯಮ ಅನಿಯಮ (ಪುಂ) 1. ಅಂಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
2. ಕಟ್ಟಳೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ನಿಶ್ಚಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
(ವಿಂ) 4. ಅಂಕೆ ಅಥವಾ ಕಟ್ಟಳೆಯಿಲ್ಲದ.

ಅನಿರಾಕೃತ ಅನಿರಾಕೃತ (ವಿಂ) ತಡೆಯಲ್ಪಡದ.  
ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಡದ, ನಿವಾರಿಸಲ್ಪಡದ. ನಂ ತಂ।  
"ಅನಿರಾಕೃತತಾಪಸಂಪದಮ್" ಮಾಘಂ ೧೬-೨೪।

ಅನಿರುದ್ಧ ಅನಿರುದ್ಧ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರದ್ಯುಮ್ನನ ಮಗ.  
2. ವಿಷು ; ವಾಸುದೇವ, ಸಂಕರ್ಷಣ, ಪ್ರದ್ಯುಮ್ನ,  
ಅನಿರುದ್ಧರೆಂಬ ಪರಮಾತ್ಮನ ನಾಲ್ಕು ವ್ಯೂಹಗಳಲ್ಲಿ  
ಒಂದು ವ್ಯೂಹಭೇದ. "ಅನಿರುದ್ಧಃ ಸುರಾನಂದೋ ಗೋವಿಂದೋ  
ಗೋವಿಂದಾಂ ಪತಿಃ" ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 3. ತಡೆಯ-  
ಲ್ಪಡದ.

ಅನಿರ್ದೇಶಾಹ ಅನಿರ್ದೇಶಾಹ (ವಿಂ) ಹತ್ತು ದಿನಗಳು  
ಕಳೆಯದಿರುವ. ನ ನಿರ್ದೇಶಾಹಾನಿ ದಶಾಹಾನಿ ಯಸ್ಯ। "ಅನಿ-  
ರ್ದೇಶಾಹಾಂ ಗಾಂ ಸ್ತುತಾಂ" ಮನುಂ ೮-೨೪೨।

ಅನಿರ್ದಿಷ್ಟ ಅನಿರ್ದಿಷ್ಟ (ವಿಂ) ಅನಿಶ್ಚಿತವಾದ, ವಿವರಿಸ-  
ಲ್ಪಡದ, ವಿಸ್ತರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಡದ.

ಅನಿರ್ದೇಶ್ಯ ಅನಿರ್ದೇಶ್ಯ (ವಿಂ) ವಿವರಿಸಲು ಶಕ್ಯವಲ್ಲದ,  
ವಿಸ್ತರಿಸಿ ಹೇಳಲು ಸಾಧ್ಯವಲ್ಲದ. ನ ನಿರ್ದೇಶ್ಯಂ ಶಕ್ಯಮ್।  
ನಿರ್+ದಿಷ್ಯ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಏತ್" (೩-೧-೧೨೪)।  
"ಅನಿರ್ದೇಶ್ಯವಪುರ್ವಿಣ್ಣುಃ" ವಿಂ ಸಂ।

ಅನಿರ್ಧಾರಿತ ಅನಿರ್ಧಾರಿತ (ವಿಂ) ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಡದ,  
ತೀರ್ಮಾನಿಸಲ್ಪಡದ.

ಅನಿವಚನೀಯ ಅನಿವಚನೀಯ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ.  
(ನಂ) 2. ಜಗತ್ತು, ಪ್ರಪಂಚ. 3. ಅಜ್ಞಾನ. [ಅದ್ವೈತ  
ದರ್ಶನದಲ್ಲಿ ಜಗತ್ತು ಮತ್ತು ಅಜ್ಞಾನಗಳು ಕ್ರಮವಾಗಿ  
ಬಾಧೆ ಮತ್ತು ಪ್ರಕಾಶಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವುದರಿಂದ  
ಅನಿವಚನೀಯಗಳು.] (ವಿಂ) 4. ಉಚ್ಚರಿಸ-  
ಲಾಗದ, ಹೇಳಲಾಗದ. ನ ನಿವಚ್ಚುಂ ಶಕ್ಯಃ।



ಅನಿವಚನೀಯತ್ಯಾತಿ ಅನಿವಚನೀಯಶ್ಚಾತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೇಳಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ ವಸ್ತುಗಳ ತೋರಿಕೆ. [ಭ್ರಾಂತಿ ಯಿಂದ ತೋರಿಬರುವ ಜಗತ್ತು ಮತ್ತು ಅಜ್ಞಾನಗಳು ಸತ್ತು ಮತ್ತು ಅಸತ್ತುಗಳೆಂದು ಹೇಳಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ. “ಸತ್” ಎಂದರೆ ಬ್ರಹ್ಮನಂತೆ ಕಾಲತ್ರಯದಲ್ಲಿಯೂ ಬಾಧೆಯಿಲ್ಲದಿರುವುದು. “ಅಸತ್” ಎಂದರೆ ಎಂದೆಂದಿಗೂ ತೋರದಿರುವುದು. ಪ್ರಪಂಚ ಮತ್ತು ಅಜ್ಞಾನಗಳು ಯಾವಾಗಲೂ ತೋರಿಬರುವುದರಿಂದ “ಅಸತ್” ಎಂದು ಹೇಳಲಾಗುವುದಿಲ್ಲ. ಬಾಧವಿರುವುದರಿಂದ “ಸತ್” ಎಂದೂ ಹೇಳಲಾಗುವುದಿಲ್ಲವಾದ ಕಾರಣ ಜಗತ್ತು ಮತ್ತು ಅಜ್ಞಾನಗಳು ಅನಿವಚನೀಯಗಳಾಗಿ ತೋರಿಬರುವುವು. ಇದಕ್ಕೆ ಅನಿವಚನೀಯ ಶ್ಚಾತಿಯೆಂದು ಹೆಸರು.]

ಅನಿರ್ವಾಣ ಅನಿರ್ವಾಣ (ವಿಂ) ಸ್ನಾನವಿಲ್ಲದ, ಮೈ ತೊಳೆಯದಿರುವ. ನ ನಿರ್ವಾಣಿ (ಗಜ) ಮಜ್ಜನಂ ಯಸ್ಯ। “ನಿರ್ವಾಣಿ ನಿವೃತ್ತಿ ಮೋಕ್ಷೇ ವಿನಾಶೇ ಗಜಮಜ್ಜನೇ” ಯಾದವಃ। “ಅರ್ಹುರ್ದಮಿವಾಲಾನಮನಿರ್ವಾಣಸ್ಯ ದಂತಿನಃ” ರಘುಂ ೧-೩೧।

ಅನಿರ್ವಾಹ ಅನಿರ್ವಾಹ (ಪುಂ) 1. ನೆರವೇರಿಸದಿರುವಿಕೆ, ಪೂರ್ತಿಮಾಡದಿರುವಿಕೆ. 2. ಅಸಂಗತಿ, ಹೊಂದಿಕೆ ಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ಬಡತನ.

ಅನಿರ್ವಿಣ್ಣ ಅನಿರ್ವಿಣ್ಣ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. “ಅನಿರ್ವಿಣ್ಣಃ ಸದಾಮರ್ಷಿ” ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 2. ಖೇದವಿಲ್ಲದ. 3. ದಣವಿಲ್ಲದ, ಆಯಾಸವಿಲ್ಲದ. 4. ಧೈರ್ಯಗಡದ.

ಅನಿರ್ವಿದ್ ಅನಿರ್ವಿದ್ (ವಿಂ) 1. ಆಯಾಸವಿಲ್ಲದ, ದಣವಿಲ್ಲದ. 2. ಖೇದವಿಲ್ಲದ. ನ ನಿರ್ವಿದತೇ—ನಿರ್+ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) “ವಿವ್” (೩-೨-೬೧)। “ಅನಿರ್ವಿದಾ ಯಾ ವಿದಧೇ ವಿಧಾತ್ರಾ” ಮಾಘಂ ೩-೩೪।

ಅನಿರ್ವೃತಿ ಅನಿರ್ವೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಸುಖ. 2. ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ಬಡತನ. ನಂ ತಂ। (ವಿಂ) 3. ಸುಖವಿಲ್ಲದ. 4. ಬಡತನವುಳ್ಳ. ನ ನಿರ್ವೃತಿಃ ಯಸ್ಯ।

ಅನಿರ್ವೇದ ಅನಿರ್ವೇದ (ಪುಂ) ಖೇದವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಕುಗ್ಗದಿರುವಿಕೆ. ನಂ ತಂ। “ಅನಿರ್ವೇದಃ ಶ್ರಿಯೋ ಮೂಲಮನಿರ್ವೇದಃ ಪರಂ ಸುಖಮ್” ರಾಮಾಂ।

ಅನಿಲ ಅನಿಲ (ಪುಂ) 1. ಗಾಳಿ, ವಾಯು. ಅನಿಲ-ನೇನ—ಅನ (ಪ್ರಾಣನೇ) “ಇಲಿ” (೩ಂ ೧-೪೪)। “ಪ್ರಾಣಾನಾ-ಮನಿಲೇನ ವೃತ್ತಿಃಚಿತಾ ಸತ್ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷೇ ವನೇ” ಶಾಕುಂ ೭-೧೨। 2. ವಾಯುದೇವತೆ. 3. ವಿಷ್ಣು. “ಅಹಃಸಂತಂಕೋ ಬಹಿರನಿಲೋ ಧರಣಿಧರಃ” ವಿಂ ಸಂ।

ಅನಿಲಸಖ ಅನಿಲಸಖ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಅನಿಲಸ್ಯ ಸಖಾ “ಟಿ” (೪-೪-೧೧)।

ಅನಿಲಾಂತಕ ಅನಿಲಾಂತಕ (ಪುಂ) ಇಂಗುದೀವೃಕ್ಷ, ಇಂಗಲದಗಿಡ. ಅನಿಲಸ್ಯ ವಾತರೋಗಸ್ಯ ಅಂತಕಃ।

ಅನಿಲಾಮಯ ಅನಿಲಾಮಯ (ಪುಂ) ವಾತರೋಗ. ಅನಿಲಾದಾಮಯಃ।

ಅನಿವರ್ತನ್ ಅನಿವರ್ತನ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ನ ನಿವರ್ತೇ—ನಿ+ವೃತು (ವರ್ತನೆ) “ಣಿ” (೩-೨-೩೮)। “ಅನಿ-ವರ್ತೀ ನಿವೃತ್ತಾತ್ಮಾ ಸಂಸೇವಾ ಕ್ಷೇಮಕೃಚ್ಛಿವಃ” ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 2. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತಿರುಗದ, ಹಿಮ್ಮೆಟ್ಟದಿರುವ, ಸಾಹಸಿಕ.

ಅನಿವಿಶಮಾನ ಅನಿವಿಶಮಾನ (ವಿಂ) (ಒಂದು ಜಾಗದಲ್ಲಿ ಕೂಡದೆ) ಯಾವಾಗಲೂ ತಿರುಗಾಡುತ್ತಿರುವ.

ಅನಿಶ ಅನಿಶ (ವಿಂ) 1. ಬಿಡುವಿಲ್ಲದ, ಎಡಬಿಡದ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 2. ಯಾವಾಗಲೂ, ಬಿಡುವಿಲ್ಲದೆ. “ಶತ್ರುಣಾಮನಿಶಂ ವಿನಾಶಪಿಶುನಃ” ಮಾಘಂ ೧-೩೫।

ಅನಿಷ್ಠ ಅನಿಷ್ಠ (ನಂ) 1. ಅಕುಭ. 2. ವಿಪತ್ತು, ತೊಂದರೆ. 3. ಅಪರಾಧ, ತಪ್ಪು. ನ ಇಷ್ಠಮ್—ಇಷು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) “ಕಃ” (೩-೩-೧೧೪)। “ಸವತ್ಯನಿಷ್ಠಾದಪಿ ನಾಮ ದುಃಸಹಾನ್ಮನಸ್ವಿನೀನಾಂ ಪ್ರತಿಪತ್ತಿರೀದೃಶಿ” ಕುಮಾಂ ೪-೪೨। (ವಿಂ) 4. ಅವೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡದ. 5. ಅಪ್ರಿಯವಾದ. 6. ಕೆಟ್ಟಸ್ವಭಾವದ, ದುಷ್ಟವಾದ.

ಅನಿಷ್ಪತ್ತಿ ಅನಿಷ್ಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಸಮಾಪ್ತಿ, ಕೊನೆಗಾಣದಿರುವಿಕೆ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗದಿರುವಿಕೆ.

ಅನಿಷ್ಪನ್ನ ಅನಿಷ್ಪನ್ನ (ವಿಂ) ಅಸಮಾಪ್ತ, ಕೊನೆಗಾಣದ, ಅಸಂಪೂರ್ಣ.

ಅನೀಕ ಅನೀಕ (ನಂ) 1. ಯುದ್ಧ. ನ ನಿಯತೇಽಪಸಾಯಂತೇ-ಸ್ಮಾತ್—ಗೀತ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) “ವಿವ್” ಕಮ್ ಚ। 2. ಸೈನ್ಯ, ಸೇನೆ. ಅನಿಲನೇನ—ಅನ (ಪ್ರಾಣನೇ) “ಇಕನ್” (೩ಂ ೪-೧೭)। “ಅನೀಕಂ ರಣಸೈನ್ಯಯೋಃ” ಹೇಮಂ।

ಅನೀಕನೆತು ಅನೀಕನೆತು (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣುಕೈನೇನ. “ಅನೀಕನೆತಾರಮವೇಷತಾರಾತ್” ಯಾದಂ ೨-೨೩। 2. ಸ್ಕಂದ, ಪಣ್ಡು.

ಅನೀಕಸ್ಥ ಅನೀಕಸ್ಥ (ಪುಂ) 1. ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ನಿಂತಿರುವ ಸೇನೆ. 2. ಅಂಗರಕ್ಷಕ, ಮೈಗಾವಲಿನವನು. 3. ಮಾವಟಗ, ಆನೆಯ ಶಿಕ್ಷಕ. 4. ನಗಾರಿ, ರಣಭೇರಿ. ಅನೀಕೇ ತಿಷ್ಠತಿ—ಶಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) “ಕಃ” (೩-೨-೪)। 5. ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು. “ಅನೀಕಸ್ಥೋ ರಣಗತೇ ಹಸ್ತಿ



ಶಿಕ್ಷಾವಿವಕ್ಷಣೆ | ರಾಜರಕ್ಷಿಣಿ ಚಿಹ್ನೆ ಚ ವೀರಮದಲಕೇಷಿ  
ಚ" ಮೇದಿಂ |

ಅನೀಕಿನಿ ಅನೀಕಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೇನೆ, ದಂಡು, ಪಡೆ.  
ಅನೀಕಂ ರಣೋಸ್ತಿ ಪ್ರಯೋಜನತ್ವೇನಾಸ್ಯಾ: — ಅನೀಕ "ಇತಿ:"  
(೪-೨-೧೧೫) | "ಸಮಂ ಸಮಂತತೋ ರಾಜಾಮಾಪತಂತೀರನೀ-  
ಕಿನೀ:" ಮಾಘಂ ೧೯-೧೦ | 2. ಸೇನೆಗಳ ಗುಂಪು,  
ಅನೆ ರಥ ಕುದುರೆ ಮತ್ತು ಕಾಲಾಳುಗಳ ಒಂದು  
ಗುಂಪು, ಅಕ್ಕಾಹಿಣಿಯ ಹತ್ತನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗದ  
ಸೈನ್ಯ.

ಸೇನೆಗಳ ಗುಂಪುಗಳಲ್ಲಿ ಅನೆ ರಥ ಕುದುರೆ  
ಮತ್ತು ಕಾಲಾಳುಗಳ ಸಂಖ್ಯಾವಿನರ — ಇವು  
ಕ್ರಮವಾಗಿ ಒಂದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಒಂದು ಮೂರರಷ್ಟು  
ಅಧಿಕವಾಗಿರುವುವು.

ಸೇನೆಗಳ ಗುಂಪು ಅನೆಗಳು ರಥಗಳು ಕುದುರೆ ಕಾಲಾಳು  
ಗಳ ಹೆಸರು ಗಳು ಗಳು

|           |       |       |       |        |
|-----------|-------|-------|-------|--------|
| ಪತ್ರಿ     | 1     | 1     | 3     | 5      |
| ಸೇನಾಮುಖ   | 3     | 3     | 9     | 15     |
| ಗುಲ್ಮ     | 9     | 9     | 27    | 45     |
| ಗಣ        | 27    | 27    | 81    | 135    |
| ವಾಹಿನೀ    | 81    | 81    | 243   | 405    |
| ಶ್ವತನಾ    | 243   | 243   | 729   | 1215   |
| ಚಮೂ       | 729   | 729   | 2187  | 3645   |
| ಅನೀಕಿನೀ   | 2187  | 2187  | 6561  | 10935  |
| ಅಕ್ಕಾಹಿಣೀ | 21870 | 21870 | 65610 | 109350 |

(ಅಕ್ಕಾಹಿಣಿಯು ಅನೀಕಿನಿಯ ಹತ್ತರಷ್ಟು ಅಧಿಕವಾಗಿ  
ರುವುದು.) "ಏಕಂಭೇಕರಥಶ್ಚದ್ವಾ ಪತ್ತಿ: ಪञ्ಚಪದಾತಿಕಾ |  
ಪತ್ಯಜ್ಞೈ: ತ್ರಿಗುಣೈ: ಸರ್ವೈ: ಕ್ರಮಾದಾಖ್ಯಾ ಯೋತ್ತರಮ್ | ಸೇನಾಮುಖಂ  
ಗುಲ್ಮಗಣಿ ವಾಹಿನೀ ಪತನಾ ಚಮೂ: | ಅನೀಕಿನೀ ದಶಾನೀ-  
ಕಿನ್ಯಕ್ಷೋಹಿಣೀ" ಅಮಂ |

ಅನೀತಿ ಅನೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದುರಾಚಾರ, ಅಧರ್ಮ,  
ಅನ್ಯಾಯ. (ವಿಂ) 2. ಈತಿಬಾಧೆಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ  
ಇತಿರಿಸ್ಯ | 3. ದುರಾಚಾರವುಳ್ಳ, ನ್ಯಾಯವಿಲ್ಲದ,  
ಧರ್ಮವಿಲ್ಲದ. ನ ನೀತಿರಿಸ್ಯ |

ಅನೀಶ ಅನೀಶ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಸರ್ವೇಶ್ವರ. ನಾಸ್ತಿ  
ಇಶ: ಸ್ವಾಮಿ ಯಸ್ಯ | "ಅನೀಶ: ಶಾಶ್ವತ: ಸ್ಥಿರ:" ವಿಂ  
ಸಂ | 2. ಯಜಮಾನನಲ್ಲದವನು, ಒಡೆಯನಲ್ಲದವನು.  
ನ ಇಶ: ಸ್ವಾಮಿ | "ಮಮ ಗಾತ್ರಾಣಾಮನೀಶೋಽಸ್ಮಿ ಸಂವೃತ್ತ:"  
ಶಾಕುಂ ೨ | (ವಿಂ) 3. ಸ್ವಾಮಿಯಿಲ್ಲದ, ಒಡೆಯನಿಲ್ಲದ.  
"ಸರ್ವಪ್ರಭುರನೀಶಸ್ತವಮೇಕಸ್ತ್ವಂ ಸರ್ವರೂಪಭಾಕ್" ರಘುಂ ೧೦-೨೦ |  
4. ಅಸ್ವತಂತ್ರ, ಪರಾಧೀನ. 5. ಅಸಮರ್ಥ,  
ಕೈಯಲ್ಲಾಗದ, ಅಶಕ್ತ.

ಅನೀಶ್ವರ ಅನೀಶ್ವರ (ನಂ) 1. ಈಶ್ವರನಿಲ್ಲದ ಜಗತ್ತು,  
ಸಾಂಖ್ಯರು ಒಪ್ಪಿರುವ ನಿರೀಶ್ವರ ಜಗತ್ತು. ನ ಇಶ್ವರ:  
ನಿಯಂತಾ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಈಶ್ವರನಿಗೆ ಸಂಬಂಧ  
ಪಡದ. "ಧ್ಯಾನೇನಾನೀಶ್ವರಾನ್ ಗುಣಾನ್" ಮನುಂ ೬-೨೨ |  
3. ಈಶ್ವರನಿಲ್ಲದ. 4. ಒಡೆಯನಿಲ್ಲದ, ಯಜಮಾನ  
ನಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಇಶ್ವರ: ಯಸ್ಯ | 5. ಅಸಮರ್ಥ. "ಶಯಿತಾ  
ಸವಿಧೇಽಪ್ಯನೀಶ್ವರಾ" ಭಾಮಿಂ ವಿಂ ೨-೧೮೨ |

ಅನೀಶ್ವರವಾದ ಅನೀಶ್ವರವಾದ (ಪುಂ) ನಿರೀಶ್ವರವಾದ,  
ನಾಸ್ತಿಕಮತ, ದೇವರನ್ನು ಒಪ್ಪದಿರುವ ಮತ.

ಅನೀಶ್ವರವಾದಿನ್ ಅನೀಶ್ವರವಾದಿನ್ (ವಿಂ) ನಾಸ್ತಿಕ  
ಮತಾವಲಂಬಿ, ದೇವರಿಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳುವವನು.

ಅನೀಹ ಅನೀಹ (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ, ಆಸೆ  
ಯಿಲ್ಲದ. 2. ಉದಾಸೀನ, ಅಸಡ್ಡೆಯ, ಯಾವ  
ಕಾರ್ಯವೂ ಇಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಇಹಾ ಯಸ್ಯ |

ಅನೀಹಾ ಅನೀಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನಾದರ, ಉಪೇಕ್ಷೆ,  
ಉದಾಸೀನತೆ, ಅನುತ್ಸಾಹ. "ಪ್ರಭುಶಕ್ತಿ ದ್ವಿಷತಾ-  
ಮನೀಹಯಾ" ಕಿರಾಂ ೨-೧೦ | 2. ಆಸೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

ಅನು ಅನು (ಅವ್ಯಂ) 1. ತರುವಾಯ, ಬಳಿಕ, ಅಮೇಲೆ.  
ಅನಿತಿ — ಅನ (ಪ್ರಾಣೇ) "ಃ" ಬಾಹುಂ | "ಕ್ರಮೇಣ  
ಸುಪ್ತಾಮನು ಸಂವಿವೇಶ" ರಘುಂ ೨-೨೪ | "ತಂ ಗಚ್ಛಂತ್ಯನು ಯೇ  
ವಿಪತ್ತಿಪು ಸದಾ" ಮುರಾಂ ೧-೧೪ | 2. ಉದ್ದಕ್ಕೂ,  
ದೀರ್ಘವಾಗಿ. "ವಹತ್ಯಯೋಧ್ಯಾಮನು ರಾಜಧಾನೀಮ್" ರಘುಂ  
೧೩-೬೧ | "ಗಜ್ಜಾಮನು ಚತು:ಶತಾನ್" ಭಾಂ | 3. ಜೊತೆ  
ಯಲ್ಲಿ, ಸಂಗಡ, ಒಡನೆ. "ಽಮಾಸ್ತನೋದ್ಭೇದಮನು ಪ್ರವೃದ್ಧೋ  
ಮನೋರಥೋ ಯ: ಪ್ರಥಮಂ ಬಭೂವ" ಕುರಾಂ ೭-೨೪ | 4. ಕಡಿಮೆ  
ಯಾದ, ಹೀನವಾದ. "ಮಿತ್ರಲಾಭಮನು ಲಾಭಸಂಪದ:"  
ಕಿರಾಂ ೧೩-೪೨ | 5. ನಿಕ್ಕಷ್ಟ, ಅಧಮ, ನೀಚ.  
"ಅನು ಹರಿ ಸುರಾ:" | 6. ಭಾಗ, ಪಾಲು. "ಲಕ್ಷ್ಮೀಹರಿ-  
ಮನು" | 7. ವೀಪ್ಸೆ, ವ್ಯಾಪ್ತಿ, ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳು  
ಒಂದಿದ್ದ ಕಡೆ ಮತ್ತೊಂದಿರಬೇಕೆಂಬ ನಿಯಮ.  
ಅನುದಿವಸಮ್ ಅನುವಕ್ಷಮ್ | 8. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ.  
"ಅನುನದಿ ಶುಶ್ರುವಿರೇ ಕ್ಷತಾನಿ ತಾಭಿ:" ಮಾಘಂ ೭-೨೪ |  
9. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಸಾಮ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ. "ಸರ್ವಂ ಮಾಮನು  
ತೇ ಪ್ರಿಯಾವಿರಹಿತಾಂ ತ್ವಂ ತು ವ್ಯಥಾ ಮಾನುಭು:" ವಿಕ್ರಂ ೪-೨೫ |  
"ಅನುಗಜಿತಸಂದಿಗ್ಧಾ:" ಕುರಾಂ ೬-೪೦ | 10. ಅನುರೂಪ  
ವಾದ, ಹೊಂದುವ, ಯುಕ್ತವಾದ, ಅನುಕೂಲ  
ವಾದ. "ತಥೈವ ಸೋಽಮೃದನ್ವರ್ಥೋ ರಾಜಾ ಪ್ರಕೃತಿರಂಜನಾತ್"  
ರಘುಂ ೪-೧೨ | 11. ಅಭಿಮುಖ್ಯ, ಎದುರು. "ಮಾತರ-  
ಮನುಧಾವತಿ ಕೃಣಾ:" | 12. ಅನುಷ್ಠಾನ, ಆಚರಣೆ.



“ಪ್ರಜಾಪತಿಃ ಕಲ್ಪಿತಯಜ್ಞಭಾಗಂ ಶೈಲಾಧಿಪತ್ಯಂ ಸ್ವಯಮನ್ವ-  
ತಿಷ್ಠತ್” ಕುಮಾಂ ೧-೧೭। 13. ಲಕ್ಷಣ, ಜ್ಞಾಪಕ,  
ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು, “ವೃಕ್ಷಮನು ವಿद्यೋತತೇ ವಿಚ್ಯುತ್”। [ಇಲ್ಲಿ  
ಮಿಂಚಿನಿಂದ ವೃಕ್ಷವು ಗೋಚರವಾಗುವುದರಿಂದ  
ಮಿಂಚು ನಷ್ಟವಾದನಂತರವೂ ಮಿಂಚು ಹೊಳೆದ  
ಪ್ರದೇಶವು ವೃಕ್ಷದಿಂದ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವುದು. ಅದುದ  
ರಿಂದ ಮಿಂಚನ್ನು ತಿಳಿಯಲು ವೃಕ್ಷವು ಗುರುತಾಯಿತು.]  
14. ಉಪಾಸನೆ, ಸೇವೆ. “ಅನ್ವಾಸಿತಮರ್ಹತಯಾ ಸ್ವಾಹ್ಯೇವ  
ಹವಿರ್ಭುಜಮ್” ರಘುಂ ೧-೫೬। 15. ಅನುಕ್ರಮ, ಒಂದಾದ  
ಮೇಲೊಂದು (ಕ್ರಮವಾಗಿ) ಬರುವಿಕೆ. 16. ಅಪ್ರ  
ಧಾನ, ಮುಖ್ಯವಲ್ಲದ. ಅನುಬಂಧ:। [ಈ ಎಲ್ಲಾ ಅರ್ಥ  
ಗಳಿಗೂ “ಅನು” ವು ದ್ಯೋತಕವಾಗಿರುವುದು.]

ಅನುಕ ಅನುಕ (ವಿಂ) ಕಾಮುಕ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ,  
ಕಾಮಾತುರವುಳ್ಳವನು. ಅನುಕಾಮಯತೆ — ಅನು “ಕನ್”  
(೪-೨-೭೪)।

ಅನುಕಥನ ಅನುಕಥನ (ನಂ) 1. ಅನಂತರ ಹೇಳುವುದು,  
ತರುವಾಯ ನಿರ್ದೇಶಿಸುವುದು. 2. ಸಂಭಾಷಣೆ.

ಅನುಕಂಪಕ ಅನುಕಂಪಕ (ವಿಂ) ದಯೆತೋರಿಸುವವನು.  
ಅನುಕಂಪತೆ—ಅನು+ಕಪಿ (ಚಲನೆ) “ಫಲ್” (೩-೧-೧೩೩)।

ಅನುಕಂಪನ ಅನುಕಂಪನ (ನಂ) 1. ದಯೆ, ಕರುಣೆ,  
ಕನಿಕರ. ಅನುಕಂಪಯತೆ—ಅನು+ಕಪಿ (ಚಲನೆ) ಭಾವೆ  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। (ವಿಂ) 2. ದಯಾಶೀಲ,  
ಕರುಣೆಯ ಸ್ವಭಾವದ. ಕರ್ತಂ “ಯುಕ್” (೩-೨-೧೪೮)।

ಅನುಕಂಪಾ ಅನುಕಂಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಯೆ, ಕರುಣೆ. ಅನು+  
ಕಪಿ (ಚಲನೆ) “ಅ:” (೩-೩-೧೦೩)। “ಭಕ್ತಿಯಾ ಗುರೌ  
ಮಯನುಕಂಪಯಾ ಚ” ರಘುಂ ೨-೬೩।

ಅನುಕಂಪ್ಯ ಅನುಕಂಪ್ಯ (ವಿಂ) 1. ವೇಗವುಳ್ಳ. 2. ದಯೆ  
ತೋರಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. ಅನುಕಂಪಿತುಮಹ:। “ದ್ವಹಿತರ-  
ಗನುಕಂಪ್ಯಾಮದ್ರಿರಾದಾಯ ದೋಷ್ಯಾನ್” ಕುಮಾಂ ೩-೭೬।

ಅನುಕಂಪ್ರ ಅನುಕಂಪ್ರ (ವಿಂ) ದಯೆ ತೋರಿಸುವ  
ಸ್ವಭಾವದ, ಕನಿಕರದ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ. ಅನು+ಕಪಿ  
(ಚಲನೆ) “ರ:” (೩-೨-೧೬೭)।

ಅನುಕರಣ ಅನುಕರಣ (ನಂ) 1. ಅನುಕರಿಸುವುದು,  
ಅನುಕರಿಸುವುದು, (ಒಬ್ಬನು) ಮಾಡಿದಂತೆ ಮಾಡು  
ವುದು. ಅನುಕ್ರಿಯತೆ—ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-  
೧೧೫)। “ತವ ಸುಚರಿತೈಕದೇಶಸ್ಯಾನುಕರಣಂ ಕಿಲೈತತ್”  
ಮೃದಾಂ ೭। 2. ನಕಲು, ಪ್ರತಿಕೃತಿ. ಅನುಕ್ರಿಯತೆನೆನ —  
ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)।

ಅನುಕರಣ ಅನುಕರಣ (ಗುಂ) 1. ನಟ. ಅನುಕರೋತಿ—  
ಅನು+ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ತನ್” (೩-೨-೧೩೫)। (ವಿಂ)  
2. ಅನುಕರಿಸುವವನು, (ಒಬ್ಬನು) ಮಾಡಿದಂತೆ  
ಮಾಡುವವನು.

ಅನುಕರ್ಷ ಅನುಕರ್ಷ (ಗುಂ) 1. ಬಂಡಿಯ ನೊಗದ  
ಕೆಳಗಿನ ತೋಳುಮರ. [ಈ ಮರವು ಗಾಡಿಯ  
ಹಿಂಭಾಗದಿಂದ ಹಿಡಿದು ಅಚ್ಚಿನ ಮೇಲೆ ಹಾದು  
ನೊಗದವರೆಗೂ ಉದ್ದಕ್ಕೂ ಅಖಂಡವಾಗಿರುವುದು.  
ಇದರ ಮೇಲೆ ನೊಗವನ್ನಿಟ್ಟು ಕಟ್ಟುವರು.] ಅನುಕ್ರಿಯತೆ  
ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) “ಘ್” (೩-೩-೧೧೯)। 2. ಕರ್ಷಣೆ,  
ಎಳೆಯುವುದು. “ಅನುಕರ್ಷೋ ರಥಸ್ಯಾಧ:ಸ್ಥಿತೇ ದಾರಣಿ  
ಕರ್ಷಣೆ” ನಾನಾರ್ಥರಂ।

ಅನುಕರ್ಷಣ ಅನುಕರ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಆಕರ್ಷಣ, ಎಳೆಯು  
ವಿಕೆ. 2. ಹಿಂದಿನ ವಾಕ್ಯದಿಂದ ಬೇಕಾದ ಪದಗಳನ್ನು  
ಮುಂದಿನ ವಾಕ್ಯದ ಅನ್ವಯಕ್ಕಾಗಿ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳು  
ವುದು. [ಇದಕ್ಕೆ ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಅನುವೃತ್ತಿ  
ಯೆಂದು ಹೆಸರು.] ಅನು+ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೫)।

ಅನುಕಲ್ಪ ಅನುಕಲ್ಪ (ಗುಂ) 1. ಗೌಣ, ಅಪ್ರಧಾನ,  
ಪ್ರತಿನಿಧಿ, ಮುಖ್ಯಕಲ್ಪಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೀನವಾದ ವಿಧಿ.  
ಅನು ಹೀನ: ಕಲ್ಪ:।

ಅನುಕಲ್ಪತಾ ಅನುಕಲ್ಪತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪ್ರಧಾನತೆ.  
ಅನುಕಲ್ಪಸ್ಯ ಭಾವ:। “ವ್ಯಧಿತ ಕಲ್ಪತರೋರನುಕಲ್ಪತಾಮ್”  
ಯಾದಂ ೩-೬೫।

ಅನುಕಾಮ ಅನುಕಾಮ (ಗುಂ) 1. ಅನುರೂಪವಾದ  
ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಯುಕ್ತವಾದ ಆಸೆ. ಅನುರೂಪ: ಕಾಮ:।  
(ವಿಂ) 2. ಅಪೇಕ್ಷೆಗೆ ಅನುರೂಪವಾದ, ಆಸೆಗೆ  
ತಕ್ಕಂತಿರುವ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3. ಅಪೇಕ್ಷೆಗೆ ತಕ್ಕಂತೆ,  
ಆಸೆಗೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ. ಕಾಮಸ್ಯ ಸದೃಶಮ್।

ಅನುಕಾಮೀನ ಅನುಕಾಮೀನ (ವಿಂ) ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ  
ನಡೆಯುವ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ. ಕಾಮಸ್ಯ ಸದೃಶಮ್; ಅನುಕಾಮಂ  
ಗच्छತಿ—ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಃ” (೪-೨-೧೧೧)।

ಅನುಕಾರ ಅನುಕಾರ (ಗುಂ) ಅನುಕರಿಸುವುದು, ಅನುಕರಿಸು  
ವುದು, ಹೋಲುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ಅನು+ಙ್ ಕೃತ್  
(ಕರಣ) “ಘ್” (೩-೩-೧೧೮)। “ಸುಲಭಾನುಕಾರ: ಸ್ವಲ್ಪ  
ಜಗತಿ ವೇಧಸೌ ನಿರ್ಮಾಣಸಂನಿವೇಶ:” ಮಾಲತೀಂ ೯।

ಅನುಕಾರಿನ್ ಅನುಕಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಇತರರಿಗೆ ಸದೃಶ  
ವಾಗಿ ಮಾಡುವ, ಅನುಕರಿಸುವ, ಹೋಲುವ.  
ಅನುಕರೋತಿ—ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ಞಿ:” (೩-೨-೭೮)।



“ಆಮೋದಮುಪಜಿಘ್ರಂತೌ ಸ್ವನಿಃಶ್ವಾಸಾನುಕಾರಿಣಮ್” ರಘುಂ  
೧-೪೩. ಸ್ವಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೫) । -ರಿಣಿ-ರಿಣೀ.  
“ದಧತ್ಸನ್ಧ್ಯಾಘ್ರಣವ್ಯೋಮಸ್ಫುರತ್ತಾರಾನುಕಾರಿಣಿಃ” ಮಾಧಂ  
೨-೧೮.

ಅನುಕಾರ್ಯ ಅನುಕಾರ್ಯ (ವಿಂ) ಹೋಲಲು ಅರ್ಹ  
ವಾದ, ಅನುಕರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಅನು+ಡು ಕೃತ್  
(ಕರಣ) “ಘ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪) । [ನಾಟಕದಲ್ಲಿ  
ನಾಯಕಾದಿಗಳು ಅನುಕಾರ್ಯರು.]

ಅನುಕಾಲ ಅನುಕಾಲ (ವಿಂ) 1. ಕಾಲಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತಹ,  
ಸಮಯೋಚಿತವಾದ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 2. ಸಮಯೋಚಿತ  
ವಾಗಿ, ಕಾಲಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ.

ಅನುಕೀರ್ತನ ಅನುಕೀರ್ತನ (ನಂ) ಸ್ತುತಿ, ಸ್ತೋತ್ರ.  
“ಸಾಙ್ಗಂ ಭವತಿ ತತ್ಸರ್ವಂ ಹರೇನಾಮಾನುಕೀರ್ತನಾತ್” ।

ಅನುಕೂಲ ಅನುಕೂಲ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ.  
“ಅನುಕೂಲಃ ಶತಾವರತಃ” ವಿಂ ಸಂ. 2. ನಾಯಕರಲ್ಲಿ  
ಒಂದು ಭೇದ, ಒಬ್ಬಳೇ ನಾಯಕಿಯಲ್ಲಿ ಅನುರಾಗ  
ವುಳ್ಳವನು. “ಅನುಕೂಲಸ್ತವೇಕನಿರತಃ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೩೭.  
(ನಂ) 3. ಸಹಾಯಕ, ಉಪಕಾರ. 4. ದಯೆ, ಪ್ರೀತಿ.  
(ವಿಂ) 5. ಸಹಾಯಕ, ಉಪಕಾರಮಾಡುವ. “ಮಂದಂ  
ಮಂದಂ ನುದತಿ ಪವನಶ್ಚಾನುಕೂಲೋ ಯಥಾ ತ್ವಾಮ್” ಮೇಘಂ ೧-೯.  
6. ಸ್ನೇಹಭಾವವುಳ್ಳ, ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ. “ಸದಾನುಕೂಲೇಷು  
ಹಿ ಕುರ್ವಂತಿ ರತಿಮ್” ಕಿರಾಂ ೧-೫. 7. ದಯೆಯುಳ್ಳ.  
8. ಒಪ್ಪುವಂತಹ, ಅನುರೂಪವಾದ, ಯೋಗ್ಯವಾದ.  
“ಕುಶಲವಿರಚಿತಾನುಕೂಲವೇಷಃ” ರಘುಂ ೫-೭೬. 9. ಹಿತ  
ವಾದ, ಸುಖಕರವಾದ.

ಅನುಕೂಲತ್ವ ಅನುಕೂಲತ್ವ (ನಂ) ಅನುಗುಣ್ಯ, ಅನು  
ಕೂಲತೆ. - ಅನುಕೂಲಸ್ಯ ಭಾವಃ. “ಪವನಸ್ಯಾನುಕೂಲತ್ವಾತ್  
ಪ್ರಾರ್ಥನಾಸಿದ್ಧಿಶಂಸಿನಃ” ರಘುಂ ೧-೪೨.

ಅನುಕೃತ ಅನುಕೃತ (ವಿಂ) ಅನುಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೋಲಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) ।

“ಅನುಕೃತಶಿಖರೌಘಶ್ರೀಭಿರಮ್ಯಾಗತೇಸ್ಸೌ” ಮಾಧಂ ೪-೬೮.

ಅನುಕೃತಿ ಅನುಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೋಲಿಕೆ, ಅನುಕರಿಸು  
ವಿಕೆ. ಅನು+ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) ।

“ಧೂಮೋದ್ಗಾರಾನುಕೃತಿಢಿಪುಣಾಃ” ಮೇಘಂ ೨-೬.

ಅನುಕ್ತ ಅನುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಹೇಳಲ್ಪಡದ, ಉಚ್ಛರಿಸ  
ಲ್ಪಡದ, ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಡದ. ನ ಉಕ್ತಃ. “ಅಸಾವನುಕ್ತೋಽಪಿ  
ಸಹಾಯ ಏವ” ಕುಮಾಂ ೩-೨೧. 2. ಅಖ್ಯಾತಪ್ರತ್ಯ  
ಯಾದಿಗಳಿಂದ ಹೇಳಲ್ಪಡದ. [ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ

ಹೇಳುವಂತೆ ಕರ್ಮವು ತಿಜ್ಞಾ ಕೃತ್ ತದ್ವಿ ತ ಮತ್ತು  
ಸಮಾಸಗಳಿಂದ ಉಕ್ತವಾಗಿದ್ದರೆ ಅಂತಹ ಪ್ರಾತಿಪದಿಕ  
ಗಳ ಮೇಲೆ ಪ್ರಥಮಾ ವಿಭಕ್ತಿಯು ಬರುವುದು.  
ಉದಾಃ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಹರಿಃ ಸೇವ್ಯತೆ. ಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾ ಸೇವಿತಃ ।  
ಶತೇನ ಕ್ರೀತಃ ಶತಯಃ । ಆಹುತೋ ವಾನರೋ ಯಃ ಸಃ ಆಹುತವಾನರಃ ।  
ಈ ರೀತಿ ಕರ್ಮವು ಹೇಳಲ್ಪಡದಿದ್ದರೆ ದ್ವಿತೀಯಾ  
ವಿಭಕ್ತಿಯು ಬರುವುದು. ಉದಾಃ ಹರಿಃ ಭಜತಿ  
ಇತ್ಯಾದಿ.]

ಅನುಕ್ರಮ ಅನುಕ್ರಮ (ಪುಂ) 1. ಕ್ರಮ, ಪರಂಪರೆ,  
ಒಂದಾದಮೇಲೆ ಮತ್ತೊಂದು ಬರುವಿಕೆ, ಪರ್ಯಾಯ.  
“ಪ್ರಚಕ್ರಮೇ ವಕ್ತುಮನುಕ್ರಮಜ್ಞಾ” ರಘುಂ ೬-೭೦. (ವಿಂ)  
2. ಕ್ರಮವಾದ, ಪರಂಪರೆಯ. ಅನುಗತಃ ಕ್ರಮಮ್ ।  
(ಅವ್ಯಂ) 3. ಕ್ರಮವಾಗಿ, ಪರಂಪರೆಯಾಗಿ. ಕ್ರಮಮನತಿ-  
ಕ್ರಮ್ಯ । ಯಥಾರ್ಥವ್ಯಯಿಂ ।

ಅನುಕ್ರಮಣಿ ಅನುಕ್ರಮಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಷಯಸೂಚಿ,  
ಗ್ರಂಥದ ಕ್ರಮವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಪಟ್ಟಿ. ಅನುಕ್ರಮ್ಯತೇಽನಯಾ  
- ಅನು+ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಧೇ) ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭) ।

ಅನುಕ್ರೋಶ ಅನುಕ್ರೋಶ (ಪುಂ) 1. ದಯೆ, ಕನಿಕರ,  
ಇತರರ ಕಷ್ಟವನ್ನು ನೋಡಿ ಮರುಕಗೊಳ್ಳುವಿಕೆ.  
ಅನುಕ್ರೋಶತನೇನ ಅನು+ಕ್ರೂ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೇ ಚ) “ಘಕ್”  
(೩-೩-೧೨೧) । “ಅಪಾಙ್ಗಾಃ ಪರಿಪಾತ್ಯಂತಾಮನುಕ್ರೋಶಾನು-  
ವರ್ತಿನಃ” ಯಾದಂ ೧೬-೨೪. (ವಿಂ) 2. ಒಂದು ಕ್ರೋಶ  
(ಎರಡು ಮೈಲಿ) ದಷ್ಟೇ ದೂರ ನಡೆದವನು. ಅನುಗತಃ  
ಕ್ರೋಶಮ್ ।

ಅನುಕ್ಷಣ ಅನುಕ್ಷಣ (ವಿಂ) 1. ಯಾವಾಗಲೂ ಇರುವ,  
ಪ್ರತಿಕ್ಷಣದಲ್ಲೂ ಉಂಟಾಗುವ. ಕ್ಷಣಮನುಗತಃ । (ಅವ್ಯಂ)  
2. ಯಾವಾಗಲೂ, ಪ್ರತಿಕ್ಷಣದಲ್ಲೂ. ಕ್ಷಣೇ ಕ್ಷಣೇ ।

ಅನುಖ್ಯಾತಿ ಅನುಖ್ಯಾತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ವರೂಪಾವಿಷ್ಕರಣ,  
ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರದಿಂದ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸು  
ವುದು.

ಅನುಗ ಅನುಗ (ವಿಂ) 1. ಸಹಚರ, ಸಂಗಡಿಗ, ಒಡನಾಡಿ,  
ಜೊತೆಗಾರ. 2. ಸೇವಕ, ಅಳು, ಅನುಚರ. “ತತ್ಪೂತ-  
ನಾಥಾನುಗ ನಾಹಸಿ ತ್ವಮ್” ರಘುಂ ೨-೫೮. 3. ಹಿಂಬಾಲಿ  
ಸುವ, ಹಿಂದೆ ನಡೆಯುವ. ಅನುಗಚ್ಛತಿ - ಅನು+ಗಮ್  
(ಗತೌ) “ಙಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) । “ಗೀತಾನುಗಂ  
ವಾರಿಮದ್ಭವಾಧಮ್” ರಘುಂ ೧೬-೬೪.

ಅನುಗಙ್ಗ ಅನುಗಂಗೆ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಗಂಗಾನದಿಯ  
ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ. ಗಙ್ಗಾಯಾ ಅನು. 2. ಗಂಗಾನದಿಯಲ್ಲಿ.



ಗಜ್ಞಾಯಾಮ್ — ವಿಭಂ ಅವ್ಯಯಿಂ । 3. ಗಂಗಾನದಿಯಷ್ಟು ಉದ್ದವಿರುವ. “ಅನುಗಜ್ಞಂ ವಾರಾಣಸಿ” ।

ಅನುಗತ ಅನುಗತ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂಬಾಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಕ್ತಃ” (3-2-102) । “ಅನುಗತ-ಮಲಿವೃದ್ಧೇಗಂಧಮಿತ್ತಿವಿಹಾಯ” ರಘುಂ 12-102 । 2. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ, ಕೂಡಿರುವ. “ಶಿವಮಿವಾನುಗತಂ ಗಜಚರ್ಮಣಾ” ಕಿರಾಂ 4-2 । 3. ಹಿಂಬಾಲಿಸುವ, ಅನುಸರಿಸುವ, ಅಜ್ಞೆವಾಲಿಸುವ. ಅನು+ಗಮ್ “ಕ್ತಃ” (3-4-62) । “ರಾಮಾದೇಶಾದನುಗತಾ ಸೇನಾ ತಸ್ಯಾರ್ಥಸಿದ್ಧಯೇ” ರಘುಂ 14-9 । 4. ಹೊಂದಿಕೆಯಾಗುವ, ತಾಳೆಯಾಗುವ, ಸಮಕೂಡುವ, ಒಪ್ಪುವ. “ಮೃದ್ಜಾನುಗತಸಂಜ್ಞಿತಮಧುರಃ ಪೌರಾಣಾಂ ಸಮುಚ್ಚರತಿ ಚರ್ಚರೀಭವತಿಃ” ರತ್ನಾಂ 1 । 5. ಸದೃಶವಾದ, ಸಮಾನವಾದ, ಹೋಲುವ. 6. ಅಧೀನ, ವಿಧೇಯ. “ಸ್ವಮತಮನುಗತಸ್ತ್ವಂ ತು ಮಹ್ಯದದಾಸಿ” ಮುರಾಂ 4-19 ।

ಅನುಗತಿ ಅನುಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಿಂಬಾಲಿಸುವಿಕೆ. 2. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ. 3. ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಮ್ಮತಿ, ಹೊಂದಿಕೆ. ಅನು+ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಕ್ತಿನ್” (3-3-94) ।

ಅನುಗಮ ಅನುಗಮ (ಪುಂ) 1. ಹಿಂಬಾಲಿಸುವಿಕೆ, ಅನುಸರಣ. ಅನು+ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಅಪ್” (3-3-48) । 2. ಹೊಂದಿಕೆ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. 3. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ.

ಅನುಗಮನ ಅನುಗಮನ (ನಂ) 1. ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯುವುದು, ಹಿಂಬಾಲಿಸುವಿಕೆ. ಅನು+ಗಮ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114) । “ವನ್ಯವೃತ್ತಿರಿಮಾಂ ಶಶ್ವದಾತ್ಮಾನು-ಗಮನೇನ ಗಾಮ್” ರಘುಂ 1-88 । 2. ಸಹಗಮನ, ಪತಿಯ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಮರಣಹೊಂದುವುದು.

ಅನುಗವ ಅನುಗವ (ಪುಂ) ಎತ್ತಿನ ಉದ್ದಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾದ ಗಾಡಿ, ಎತ್ತಿಗೆ ಅನುಗುಣವಾದ ಉದ್ದವುಳ್ಳ ಗಾಡಿ. ಗೋ: ಅನು ಗೋ: ಸದೃಶ ಆಯಾಮೋ यस್ಯ — ಸಮಾಸಾಂತ: “ಅಚ್” (4-4-83) । ನಿಪಾಂ ।

ಅನುಗವೀನ ಅನುಗವೀನ (ವಿಂ) ಗೋಪಾಲಕ, ಗೋವುಗಳನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯುವವನು. ಗೋ: ಪಶ್ಚಾತ್ ಅನುಗು । ಅನುಗು ಅಲಂ ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಖಃ” (4-2-14) ।

ಅನುಗಾಮಿನ್ ಅನುಗಾಮಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂಬಾಲಕ, ಹಿಂದೆಹೋಗುವ, ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯುವ. 2. ಸಂಗಡಿಗ, ಜೊತೆಗಾರ. ಅನು+ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಗಿಣಿಃ” (3-2-68) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (4-1-4) । —ಗಾಮಿನಿ — ಗಾಮಿನೀ.

ಅನುಗುಣ ಅನುಗುಣ (ವಿಂ) 1. ಅನುಕೂಲವಾದ. 2. ಅನುರೂಪವಾದ, ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಹೊಂದಿಕೆಯಿರುವ, ಒಪ್ಪುವಂತಿರುವ, ಮೆಚ್ಚುವಂತಿರುವ. “ಅದ್ವೈತಂ ಸುಖದುಃಖಯೋರನುಗುಣಂ ಸರ್ವಸ್ವಿವಸ್ಥಾಸು ಯತ್” ತಂ ರಾಂ 1-39 । 4. ಗುಣದಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ, ಗುಣದಲ್ಲಿ ಅನುರಾಗವುಳ್ಳ. ಅನುಗತಃ ಗುಣಮ್ । (ಅವ್ಯಂ) 5. ಗುಣದಲ್ಲಿ. ಗುಣೇ — ವಿಭಂ ಅವ್ಯಯಿಂ । 6. ಗುಣವನ್ನು ಮೀರಿದೆ. ಗುಣಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ । 7. ಅನುಸಾರವಾಗಿ, ಸರಿಯಾಗಿ, ಒಪ್ಪುವಂತೆ.

ಅನುಗುಣಾ ಅನುಗುಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಂತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ವೀಣೆ. ಅನುಗತಾ ಗುಣಂ ತನ್ತ್ರೀಸೂತ್ರಮ್ । 2. ಗುಣದಲ್ಲಿ ಅನುರಾಗವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು.

ಅನುಗುಪ್ತ ಅನುಗುಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೇ) “ಕ್ತಃ” (3-2-102) । 2. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಾಪಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅನುಗ್ರಹಿತ ಅನುಗ್ರಹಿತ (ವಿಂ) ಅನುಗ್ರಹಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ದಯೆತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಗ್ರಹ (उपादाने) “ಕ್ತಃ” (3-2-102) ।

ಅನುಗ್ರಹ ಅನುಗ್ರಹ (ಪುಂ) 1. ಅನುಕೂಲ್ಯ, (ಹಿತವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಮತ್ತು ಅಹಿತವನ್ನು ನಿವಾರಿಸುವ) ದಯೆ. ಅನು+ಗ್ರಹ (उपादाने) “ಅಪ್” (3-3-48) । “ಪ್ರಲಯೇಷ್ವಪಿ ದೀರ್ಘಾಯುಃ ಪ್ರತಿಭೂತ್ವದನುಗ್ರಹಃ” ಧಾಡಂ 1-49 । 2. ಸಾಹಾಯ್ಯ, ಉಪಕಾರ. 3. ಅಂಗೀಕಾರ, ಸ್ವೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. 4. ದೀನದಲಿತರ ಪೋಷಣೆ. (ವಿಂ) 5. ಸೂರ್ಯಾದಿ ಗ್ರಹಗಳನ್ನು ಹಿಂಬಾಲಿಸುವ (ಇತರ ಗ್ರಹಗಳು).

ಅನುಗ್ರಹಣ ಅನುಗ್ರಹಣ (ನಂ) “ಅನುಗ್ರಹ” ಪದದ 1-4 ಅರ್ಥ. ಅನು+ಗ್ರಹ (उपादाने) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114) ।

ಅನುಗ್ರಾಹಕ ಅನುಗ್ರಾಹಕ (ವಿಂ) 1. ಹಿತವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ದಯೆತೋರಿಸುವ. 2. ಉಪಕಾರಮಾಡುವ. ಅನು+ಗ್ರಹ (उपादाने) “ಫುಲ್” (3-1-133) ।

ಅನುಗ್ರಾಹ್ಯ ಅನುಗ್ರಾಹ್ಯ (ವಿಂ) 1. ದಯೆತೋರಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. 2. ಸಾಹಾಯ್ಯ ಪಡೆಯಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. ಅನು+ಗ್ರಹ (उपादाने) “ಫ್ಯತ್” (3-1-124) । “ಯದಿ ತೇಽಹಮನುಗ್ರಾಹ್ಯೋ ಯದಿ ಸ್ಮರಸಿ ಮೇ ಗುಣಾನ್” ರಾಮಾಂ ।

ಅನುಚರ ಅನುಚರ (ವಿಂ) 1. ಸೇವಕ, ಅಳು, ಪರಿಚಾರಕ. ಅನುಚರತಿ — ಅನು+ಚರ (ಗತಿಭಕ್ಷಣಯೋಃ) “ಅಚ್” (3-1-134) । “ಅನುಚರೇಣ ಧನಾಧಿಪತೇರಥೋ” ಕಿರಾಂ 4-16 ।



2. ಸಂಗಡಿಗ, ಜೊತೆಗಾರ. 3. ಹಿಂಬಾಲಕ, ಹಿಂದೆ ನಡೆಯುವವನು. "ವ್ರತಾಯ ತೇನಾನುಚರೇಣ ಧೇನೋ:" ರಘುಂ ೨-೪೧. 4. ದೂತನನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ. ಅನುಗತ: ಚರಂ ದ್ರುತಮ್ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | -ಚರೀ-ಚರೀ.

ಅನುಚಿತ ಅನುಚಿತ (ವಿಂ) 1. ಅಯುಕ್ತವಾದ, ಅಸಮಂಜಸವಾದ, ಅಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ಅಪರಿಚಿತವಾದ, ಹೊಸದಾದ, ಮಾಮೂಲಲ್ಲದ. "ಅಮ್ಯಸ್ತೇ-ಪ್ಯುಚಿತಂ ನ್ಯಾಯ್ಯೇಷಿ" ವೈಜಂ. "ಅನುಚಿತನುಪುರವಿರಹಂ ನಾಹಿಸಿ ತಪನೀಯಪೀಠಿಕಾಲಮ್ಬಿ" ಮಾಲಂ ೪-೩.

ಅನುಚಿಂತನ ಅನುಚಿಂತನ (ನಂ) 1. ಸ್ಮರಣೆ, ನೆನಪು. 2. ಯಾವಾಗಲೂ ಚಿಂತಿಸುವುದು, ವಿರಾಮವಿಲ್ಲದ ಚಿಂತೆ. ಅನು+ಚಿತಿ (ಸ್ಮತ್ಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) |

ಅನುಚಿಂತಾ ಅನುಚಿಂತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಾವಾಗಲೂ ಚಿಂತಿಸುತ್ತಿರುವುದು. ಅನು+ಚಿತಿ (ಸ್ಮತ್ಯಾಮ್) "ಅಡ್" (೩-೩-೧೦೫) |

ಅನುಚಿಂತಿತ ಅನುಚಿಂತಿತ (ವಿಂ) ಚಿಂತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ಮರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಚಿತಿ (ಸ್ಮತ್ಯಾಮ್) "ಕ್ಲ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ಅನುಚಿಂತಿತಮಾತ್ರಸ್ತಮುಪತಸ್ಥೇ ಸ್ವಗೋಶ್ವರ:" ಯಾದಂ ೧೬-೫೧ |

ಅನುಚ್ಚ ಅನುಚ್ಚ (ವಿಂ) 1. ಎತ್ತರವಲ್ಲದ, ಉನ್ನತವಲ್ಲದ, ಕುಳುಗಿರುವ. ನ ಉಚ್ಚ: | ವಿರೋಧೇ ನಂ ತಂ | 2. ಗೃಹಗಳ ನೀಚಸ್ಥಾನ. [ವಿವರಗಳಿಗೆ "ಉಚ್ಚ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಅನುಚ್ಛಿತ್ತಿ ಅನುಚ್ಛಿತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾಶವಾಗದಿರುವಿಕೆ. ಉದ್+ಛಿದಿರ್ (ಛಿವೀಕರಣ) "ಕ್ಲಿನ್" (೩-೩-೯೪) | ನಂ ತಂ |

ಅನುಚ್ಛಿಷ್ಟ ಅನುಚ್ಛಿಷ್ಟ (ವಿಂ) ಶುದ್ಧವಾದ, ಎಂಜಲಲ್ಲದ, ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡದ, ತಿಂದು ಮಿಗಿಸಲ್ಪಡದ. ಉದ್+ಶಿಷ (ಅಸರ್ವೋಪಯೋಗ) "ಕ್ಲ:" (೩-೨-೧೦೨) | ನಂ ತಂ |

ಅನುಜ ಅನುಜ (ಪುಂ) ಕಿರಿಯ ಸಹೋದರ, ತರುವಾಯ ಹುಟ್ಟಿದವನು, ತಮ್ಮ. ಅನು ಪಶ್ಚಾತ್ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃಭಾವಿ) "ಙ:" (೩-೨-೯೯) | "ಪ್ರವಿಶ್ಯ ಕೃಷ್ಣಾಸದನಂ ಮಹಿಭುಜಾ ತದಾಽಽವಚಕ್ಷೇಜ್ಜನುಜಸನ್ನಿಧೌ ವಚ:" ಕಿರಾಂ ೧-೨೬ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ಜಾ-ಜಾ. ತಂಗಿ, ಸಹೋದರಿ.

ಅನುಜನ್ಮನ್ ಅನುಜನ್ಮನ್ (ಪುಂ) ತಮ್ಮ, ಕಿರಿಯ ಸಹೋದರ. ಅನು ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ | "ಜನನಾಥ ತವಾನು-ಜನ್ಮನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೧೭ |

ಅನುಜಾತ ಅನುಜಾತ (ಪುಂ) 1. ತಮ್ಮ, ಕಿರಿಯ ಸಹೋದರ. (ವಿಂ) 2. ಅನಂತರ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅನು+ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃಭಾವಿ) "ಕ್ಲ:" (೩-೪-೭೨) | "ಅಸೌ ಕುಮಾರಸ್ತಮಜೋಜ್ಜಾತ:" ರಘುಂ ೬-೭೮ |

ಅನುಜೀವಿನ್ ಅನುಜೀವಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಸೇವಕ, ಆಳು, ಭೃತ್ಯ. ಅನುಜೀವಿನ್ ಶೀಲಮಸ್ಯ—ಅನು+ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣ) "ಣಿತಿ:" (೩-೨-೭೮) | "ನ ವಚ್ಚನೀಯಾ: ಪ್ರಭವೋಜ್ಜು-ಜೀವಿಮಿ:" ಕಿರಾಂ ೧-೪ | 2. ಆಶ್ರಿತ, ಇತರರ ಆಶ್ರಯದಿಂದ ಜೀವಿಸುವ, ಪರಾಧೀನ, ಅಸ್ವತಂತ್ರ.

ಅನುಜೀವ್ಯ ಅನುಜೀವ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಯಜಮಾನ. (ವಿಂ) 2. ಆಶ್ರಯವನ್ನು ನೀಡುವ, ಆಶ್ರಯಿಸಲ್ಪಡುವ. ಅನುಜೀವ್ಯತೇಽಸೌ—ಅನು+ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣ) "ಞತ್" (೩-೧-೧೨೪) |

ಅನುಜ್ಞಾ ಅನುಜ್ಞಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನುಮತಿ, ಸಮ್ಮತಿ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. ಅನು+ಜ್ಞಾ (ನಿಯೋಗ) "ಅಡ್" (೩-೩-೧೦೬) | "ಋಷೇರನುಜ್ಞಾಮಧಿಗಮ್ಯ ಮಾತ:" ರಘುಂ ೨-೬೬ | 2. ಆಜ್ಞೆ, ಅಪ್ಪಣೆ. "ರಹಸ್ಯನುಜ್ಞಾಮಧಿಗಮ್ಯ ಭೂತ:" ಕಿರಾಂ ೧-೩ |

ಅನುಜ್ಞಾತ ಅನುಜ್ಞಾತ (ವಿಂ) 1. ಅಪ್ಪಣೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಅನುಮತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮ್ಮತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಜ್ಞಾ (ನಿಯೋಗ) "ಕ್ಲ:" (೩-೨-೧೦೨) |

ಅನುಜ್ಞಾಪಕ ಅನುಜ್ಞಾಪಕ (ವಿಂ) 1. ಅಪ್ಪಣೆ ಮಾಡುವವನು. 2. ಅನುಮತಿಕೊಡುವವನು. ಅನು+ಜ್ಞಾ (ನಿಯೋಗ) +ಣಿಕ್ "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |

ಅನುಜ್ಞಾಪನ ಅನುಜ್ಞಾಪನ (ನಂ) 1. ಅಪ್ಪಣೆಮಾಡುವಿಕೆ. 2. ಅನುಮತಿಕೊಡುವಿಕೆ. ಅನು+ಜ್ಞಾ (ನಿಯೋಗ) +ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) |

ಅನುಜ್ಯೇಷ್ಠ ಅನುಜ್ಯೇಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಜ್ಯೇಷ್ಠನ (ಹಿರಿಯನ) ತರುವಾಯ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಅನುಗತ: ಜ್ಯೇಷ್ಠಮ್ | (ಅವ್ಯಂ) 2. ಜ್ಯೇಷ್ಠನ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ. ಜ್ಯೇಷ್ಠಸ್ಯಾನುಪೂರ್ವ್ಯಂ | 3. ಹಿರಿಯನನ್ನು ಮೀರದೆ. ಜ್ಯೇಷ್ಠಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ | ಯಥಾರ್ಥವ್ಯಯಿಂ |

ಅನುತರ ಅನುತರ (ನಂ) ನದಿಯನ್ನು ದಾಟಲು ಕೊಡುವ ಶುಲ್ಕ, ದೋಣಿಯ ಬಾಡಿಗೆ, ನದಿಯನ್ನು ದಾಟಿಸಿದ ಕೂಲಿ. ಅನುತೀರ್ಯತೇಜೇನ—ಅನು+ತ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) ಕರಂ "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭) |

ಅನುತರ್ಪ ಅನುತರ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಮದ್ಯವಾನ. 2. ನೀರಡಿಕೆ, ಬಾಯಾರಿಕೆ. 3. ಅವೇಕ್ಷೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ. ಅನುತೃಪ್ಯತೇ—ಅನು+ತಿ ತೃಪಾ (ಪಿಪಾಸಾಯಾಮ್) "ಘಕ್" (೩-೩-೧೮) |



(ನಂ) 4. ಮದ್ಯ. ಅನುತರ್ಪಣೇ ಇದಮ್ — ಕರಂ “ಘ” (3-3-19). 5. ಮದ್ಯಪಾನದ ಪಾತ್ರೆ. ಅನುತರ್ಪಣೇನ — ಕರಂ “ಘ” (3-3-121). “ಸಾನುತರ್ಪಮನುತರ್ಪದೇನ” ಮಾಘಂ 10-2. “ಮದ್ಯೇನುತರ್ಪ ತತ್ಪಾನೇ ಪಾತ್ರೆ ತೃಣಾಭಿ-  
ಲಾಪಯೋ:” ವಿಶ್ವಂ. ಅನುತರ್ಪ: ಸುರಾಪಾನಪಾತ್ರೆ ತೃಣಾಭಿ-  
ಲಾಪಯೋ:” ನಾನಾರ್ಥಂ.

ಅನುತರ್ಪಣ ಅನುತರ್ಪಣ (ನಂ) 1. ಮದ್ಯ. ಅನು+  
ತಿ ತೃಣಾ (ಪಿಪಾಸಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114).  
2. ಮದ್ಯಪಾನದ ಪಾತ್ರೆ. ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-110).  
ಅನುತಪ್ತ ಅನುತಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಕಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಸಿ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಪಶ್ಯಾತ್ತಾಪಹೊಂದಿದ, ಮರುಗಿದ.  
ಅನುತಾಪ ಅನುತಾಪ (ಪುಂ) 1. ಪಶ್ಯಾತ್ತಾಪ, ಅನುಚಿತ  
ಕಾರ್ಯದಿಂದಂಟಾದ ದುಃಖ. ಅನು+ತಪ (ಸಂತಾಪೇ)  
ಭಾವೇ “ಘ” (3-3-12). “ಯಸ್ಯಾ: ಕರಿಷ್ಯಾಮಿ  
ದ್ವಾನುತಾಪಂ ಪ್ರವಾಲಶಯಾಶರಣಂ ಶರೀರಮ್” ಕುಮಾಂ 3-2.  
2. ಬಿಸಿ, ಕಾವು.

ಅನುತಾಪನ ಅನುತಾಪನ (ವಿಂ) ಪಶ್ಯಾತ್ತಾಪವುಂಟು  
ಮಾಡುವ. ಅನು+ತಪ (ಸಂತಾಪೇ)+ಣಿಕ್ “ಲ್ಯು:”  
(3-1-134).

ಅನುತಾಪಿನ್ ಅನುತಾಪಿನ್ (ವಿಂ) ಪಶ್ಯಾತ್ತಾಪವುಳ್ಳ,  
ಮರುಗುವ, ಅನುಚಿತಕಾರ್ಯದಿಂದ ದುಃಖಪಡುವ.  
ಅನುತಾಪೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (4-2-114).

ಅನುತ್ಕ ಅನುತ್ಕ (ವಿಂ) ಉತ್ಸಾಹವಿಲ್ಲದ, ಇಷ್ಟವಾದು  
ದನ್ನು ಹೊಂದಲು ತವಕಪಡದಿರುವ. ನ ಉತ್ಕ:.

ಅನುತ್ತಮ ಅನುತ್ತಮ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಎಲ್ಲದ  
ಕ್ಕಿಂತಲೂ ಉನ್ನತವಾದ, ಸರ್ವೋತ್ತಮವಾದ.  
ನಾಸ್ತಿ ಉತ್ತಮೋ ಯಸ್ಮಾತ್. “ಅನುತ್ತಮಾದುತ್ತರಮಾರ್ಯಧಾನ್:”  
ಯಾದಂ 12-124.

ಅನುತ್ತರ ಅನುತ್ತರ (ನಂ) 1. ಜವಾಬು ಕೊಡದಿರುವುದು,  
ಉತ್ತರ ಹೇಳದಿರುವುದು. “ಭವತ್ಯವಜ್ಞಾ ಚ ಭವತ್ಯ-  
ನುತ್ತರಾತ್” ನೈಫಂ 9-24. (ವಿಂ) 2. ಉತ್ತಮ, ಸರ್ವ  
ಶ್ರೇಷ್ಠ, ಅನುಪಮ. ನ ವಿಧತೇ ಉತ್ತರ: ಯಸ್ಮಾತ್.  
“ಅನುತ್ತರಾಣಿ ವಿಲಸಿತಾನಿ” ದಶಕುಂ. 3. ಉತ್ತರ  
ವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರತಿಯಿಲ್ಲದ, ಜವಾಬಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಉತ್ತರಂ  
ಯಸ್ಯ. 4. ಅಪಕೃಷ್ಟವಾದ, ಉತ್ತಮವಲ್ಲದ, ಶ್ರೇಷ್ಠ  
ವಲ್ಲದ. ನ ಉತ್ತರ:.

ಅನುತ್ತರಙ್ಗ ಅನುತ್ತರಂಗೆ (ವಿಂ) ಅಚಂಚಲ, ಸ್ಥಿರ  
ವಾದ, ಅಲೆಗಳಿಂದ ಚಲಿಸದ (ಅಲೆಗಳು ಹುಟ್ಟಿ

ದಿರುವ). ನ ಉತ್ತರಙ್ಗಾ: ಯಸ್ಮಿನ್. “ಅಪಾಮಿವಾಧಾರ-  
ಮನುತ್ತರಙ್ಗಮ್” ಕುಮಾಂ 3-42.

ಅನುತ್ಪತ್ತಿ ಅನುತ್ಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉತ್ಪತ್ತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
ನ ಉತ್ಪತ್ತಿ: ನಂ ತಂ. (ವಿಂ) 2. ಉತ್ಪತ್ತಿಯಿಲ್ಲದ.  
ಅನುತ್ಪತ್ತಿಕ ಅನುತ್ಪತ್ತಿಕ (ವಿಂ) ಉತ್ಪತ್ತಿಯಿಲ್ಲದ,  
ಹುಟ್ಟಿಲ್ಲದ. ನ ಉತ್ಪತ್ತಿರಸ್ಯ.

ಅನುತ್ಪನ್ನ ಅನುತ್ಪನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಜನ್ಮವಲ್ಲದ, ಹುಟ್ಟಿಲ್ಲದ.  
2. ಇನ್ನೂ ಹುಟ್ಟದಿರುವ, ಇನ್ನೂ ಉಂಟಾಗದಿರುವ.  
ಅನುತ್ಪಾದ ಅನುತ್ಪಾದ (ಪುಂ) 1. ಉತ್ಪತ್ತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ,  
ಹುಟ್ಟು ಇಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ಉತ್ಪತ್ತಿಯಿಲ್ಲದ.  
ಅನುತ್ಸಾಹ ಅನುತ್ಸಾಹ (ಪುಂ) 1. ಉತ್ಸಾಹವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ,  
ದೊಡ್ಡ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯತ್ನವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. “ಧ್ರುವ-  
ಮೇತದವೇಹಿ ವಿದ್ವಿಷಾಂ ತದನುತ್ಸಾಹಹತಾ ವಿಪತ್ತಯ:” ಕಿರಾಂ.  
2-22. (ವಿಂ) 2. ಉತ್ಸಾಹವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರಯತ್ನ  
ವಿಲ್ಲದ.

ಅನುತ್ಸಿಕ್ತ ಅನುತ್ಸಿಕ್ತ (ವಿಂ) ಗರ್ವವಿಲ್ಲದ, ಕೊಬ್ಬಿ  
ಲ್ಲದ, ದರ್ಪವಿಲ್ಲದ, ಅಹಂಕಾರವಿಲ್ಲದ. ನಂ ತಂ.

ಅನುತ್ಸುಕ ಅನುತ್ಸುಕ (ವಿಂ) ಶಾಂತನಾದ, ತವಕವಿಲ್ಲದ,  
ಇಷ್ಟವಾದುದನ್ನು ಪಡೆಯಲು ಹೆಚ್ಚು ಆತುರವಿಲ್ಲದ.

ಅನುತ್ಸುತ್ರ ಅನುತ್ಸುತ್ರ (ವಿಂ) ಸೂತ್ರವನ್ನು ಮಾರದ,  
ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಮಾರದಿರುವ. ಉತ್ಕ್ರಾಂತ: ಸೂತ್ರಂ ವ್ಯಾಕರಣ  
ಸೂತ್ರಂ ನೈತಿಶಾಸ್ತ್ರಂ ವಾ ಉತ್ಸುತ್ರ: ನಂ ತಂ. “ಅನುತ್ಸುತ್ರ-  
ಪದನ್ಯಾಸಾ ಸದೃಶಿ: ಸನ್ನಿವೃದ್ಧಿ:” ಮಾಘಂ 2-112.

ಅನುತ್ಸೇಕ ಅನುತ್ಸೇಕ (ಪುಂ) 1. ಗರ್ವವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ,  
ದರ್ಪವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಅಹಂಕಾರವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
(ವಿಂ) 2. ಗರ್ವವಿಲ್ಲದ, ದರ್ಪವಿಲ್ಲದ, ಅಹಂಕಾರ  
ವಿಲ್ಲದ.

ಅನುತ್ಸೇಕಿನ್ ಅನುತ್ಸೇಕಿನ್ (ವಿಂ) ಗರ್ವವಿಲ್ಲದ,  
ಅಹಂಕಾರವಿಲ್ಲದ. ನ ಉತ್ಸೇಕೀ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀಪ್”  
(4-1-4). -ಕಿನೀ-ಕೀ. “ಭೂಯಿಷ್ಠಂ ಭವ ದಕ್ಷಿಣಾ  
ಪರಿಜನೇ ಮಾಯೇವನುತ್ಸೇಕಿನೀ” ಶಾಕುಂ 4-16.

ಅನುದ ಅನುದ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೇರಕನಲ್ಲದ. ನುದತಿ — ಣುದ  
(ಪ್ರೇರಣೆ) “ಕ:” (3-1-134). ನಂ ತಂ. 2. ಅನು  
ರೂಪವಾದುದನ್ನು ಕೊಡುವ. ಅನು ದದಾತಿ — ಅನು+  
ದಾತ್ (ದಾನೇ) “ಕ:” (3-1-136).

ಅನುದಕ ಅನುದಕ (ಪುಂ) 1. ಮರುಭೂಮಿ, ಉಷರ  
ಭೂಮಿ. ನಾಸ್ತಿ ಉದಕಂ ಯತ್ರ. 2. ಸ್ವಲ್ಪ ನೀರುಳ್ಳ ಕೊಳ.  
ನ ಅಲ್ಪಂ ಉದಕಂ ಯತ್ರ. 3. ಜಲತರ್ಪಣವಿಲ್ಲದ ಶ್ರಾದ್ಧ.



ಅನುದ್ರ ಅನುದ್ರ (ವಿಂ) 1. ಎತ್ತರವಲ್ಲದ, ಉನ್ನತವಲ್ಲದ. 2. ಮೃದುವಾದ, ಮೆದುವಾದ, ಮೆತ್ತಗಿರುವ. 3. ತೀಕ್ಷ್ಣವಲ್ಲದ, ಹರಿತವಲ್ಲದ. ನ ತದ್ರ-ಮಸ್ಯ. 4. ಬಹಳ ಉನ್ನತವಾದ, ಹೆಚ್ಚು ಎತ್ತರವಾದ. ನಾಸ್ತಿ ತದ್ರೋ ಯಸ್ಮಾತ್.

ಅನುದರ ಅನುದರ (ವಿಂ) ಕೃಶವಾದ ಉದರವುಳ್ಳ, ತೆಳುವಾದ ಹೊಟ್ಟೆಯುಳ್ಳ. ನ ಅಲ್ಪಂ ತದರಂ ಯಸ್ಯ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಟಾಪ್" ಅನುದರಾ ಕನ್ಯಾ.

ಅನುದಾತ ಅನುದಾತ (ಪ್ರಂ) 1. ಅನುದಾತಸ್ವರ, ತಗ್ಗಿದ ಸ್ವರ, ತಾಲ್ಪಾದಿ ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಕೆಳಭಾಗದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಸ್ವರ. "ನೀಚೇನುದಾತಃ" ಪಾಂ ಸೂಂ. [ವಿವರಗಳಿಗೆ "ಸ್ವರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] (ವಿಂ) 2. ಔದಾರ್ಯವಿಲ್ಲದವನು, ದೊಡ್ಡ ಮನಸ್ಸಿಲ್ಲದವನು.

ಅನುದಾರ ಅನುದಾರ (ವಿಂ) 1. ಲೋಭಿ, ಜಿಪುಣ, ಕೃಪಣ. 2. ದೊಡ್ಡದಲ್ಲದ. ನ ತದಾರಃ. 3. ತ್ಯಾಗಶೀಲ, ದಾನಿ, ಹೆಚ್ಚು ದಾನದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. ನ ತದಾರೋ ಯಸ್ಮಾತ್. 4. ಪತ್ತಿಯನ್ನು ಅನುಸರಿಸುವ, ಪತ್ತಿಯನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿರುವ. ಅನುಗತೋ ದಾರಾನ್. 5. ಅನುರೂಪಳಾದ ಪತ್ತಿಯುಳ್ಳ. ಅನು ದಾರಾ ಯಸ್ಯ.

ಅನುದಿತ ಅನುದಿತ (ಪ್ರಂ) 1. ಸೂರ್ಯನು ಸ್ವಲ್ಪಮಾತ್ರ ಉದಯಿಸಿರುವ ಕಾಲ. ನ ಅಲ್ಪಂ ತದಿತಃ. "ತದಿತೇ-ನುದಿತೇವ ಸಮಯಾಭ್ಯುಷಿತೇ ತಥಾ" ಮನುಂ ೨-೧೫. (ವಿಂ) 2. ಉದಯಿಸದಿರುವ, ಹುಟ್ಟದಿರುವ. ನ ತದಿತಃ. 3. ಹೇಳಲ್ಪಡದ. ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). ನಂ ತಂ.

ಅನುದಿನ ಅನುದಿನ (ಅವ್ಯಂ) ಪ್ರತಿದಿನವೂ. ದಿನೇ ದಿನೇ - ವೀಕ್ಷಾಯಾಮ್ ಅವ್ಯಯಿಂ.

ಅನುದೃಷ್ಟಿ ಅನುದೃಷ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನುಕೂಲವಾದ ದೃಷ್ಟಿ. ಅನುಕೂಲಾ ದೃಷ್ಟಿಃ. (ವಿಂ) 2. ಅನುಕೂಲದೃಷ್ಟಿಯುಳ್ಳ. ಅನುಕೂಲಾ ದೃಷ್ಟಿರಸ್ಯ.

ಅನುದೃತ ಅನುದೃತ (ವಿಂ) ನಮ್ರ, ವಿನಯಶೀಲ, ಶಾಂತವಾದ. ನ ತದೃತಃ. "ಅನುದೃತಾಕಾರತಯಾ ವಿವಿಕ್ತಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೩.

ಅನುದರಣ ಅನುದರಣ (ನಂ) 1. ಬೇರೆ ಜಾಗಕ್ಕೆ ಬದಲಾಯಿಸದೆ ಇರುವಿಕೆ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ತೆಗೆಯದಿರುವಿಕೆ. ನ ತದರಣಮ್. 2. ಸ್ಥಾಪಿಸದಿರುವಿಕೆ, ಸ್ಥಿರಪಡಿಸದಿರುವಿಕೆ.

ಅನುದಾರ ಅನುದಾರ (ಪ್ರಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ತೆಗೆಯದಿರುವಿಕೆ. 2. ಸಾಲವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. "ಸ್ಯಾದೃಣಂ ಪರ್ಯುದ್ವಚನಮ್."

ತದ್ವೃದ್ಧಿಕಮ್ವಾರಃ" ವೇಜಂ. 3. ವಿಭಾಗಮಾಡದಿರುವಿಕೆ, ಪಾಲು ಹಂಚದಿರುವಿಕೆ. ನ ತದಾರಃ.

ಅನುದೃತ ಅನುದೃತ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಡದ. 2. ವಿಭಾಗಮಾಡಲ್ಪಡದ.

ಅನುದೃತ ಅನುದೃತ (ವಿಂ) 1. ಧೈರ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಮೃದು ಸ್ವಭಾವದ. 2. ಗರ್ವವಿಲ್ಲದ. ನಂ ತಂ.

ಅನುದೃತ ಅನುದೃತ (ವಿಂ) 1. ಉದ್ಯೋಗವಿಲ್ಲದ, ಸೋಮಾರಿ, ಕೆಲಸಮಾಡದ, ಜಡ. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಡದ.

ಅನುದೃತ ಅನುದೃತ (ಪ್ರಂ) 1. ಕೆಲಸವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಸೋಮಾರಿತನ. ನ ತದೃತಃ. ನಂ ತಂ. (ವಿಂ) 2. ಸೋಮಾರಿಯಾದ, ಜಡ, ಕೆಲಸವಿಲ್ಲದ. ನ ತದೃತೋ ಯಸ್ಯ.

ಅನುದೃತ ಅನುದೃತ (ನಂ) 1. ಪುನಃ ಆಟವಾಡುವುದು, ಎರಡನೇಸಲದ ಆಟ. ಅನು+ದಿವು (ಶ್ರೀಢಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪). 2. ಮಹಾಭಾರತದಲ್ಲಿ ಸಭಾಪರ್ವದ ಒಂದು ಭಾಗ, ಅನುದೃತಪರ್ವ, ದೃತವಿಷಯವನ್ನು ಕುರಿತು ರಚಿಸಿದ ಗ್ರಂಥ.

ಅನುದೃತ ಅನುದೃತ (ಪ್ರಂ) 1. ಸೋಮಾರಿತನ. ನ ತದೃತಃ. (ವಿಂ) 2. ಸೋಮಾರಿತನವುಳ್ಳ, ಕೆಲಸವಿಲ್ಲದಿರುವ. ನ ತದೃತೋ ಯಸ್ಯ.

ಅನುದೃತ ಅನುದೃತ (ನಂ) 1. ಅರ್ಥದ್ರುತ ತಾಳ. [ಅರ್ಥಮಾತ್ರೆಯ ಉಚ್ಚಾರಣೆಯಕಾಲವು ದ್ರುತ. ದ್ರುತದ ಅರ್ಥಕಾಲವು ಅನುದೃತ.] (ವಿಂ) 2. ಹಿಂಬಾಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೆನ್ನಟ್ಟಿ ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ದ್ರು (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ಅನುದೃತಃ ಸಂಯತಿ ಯೇನ ಕೇವಲಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೫೨.

ಅನುದ್ವಾಹ ಅನುದ್ವಾಹ (ಪ್ರಂ) 1. ಮದುವೆಯಾಗದಿರುವಿಕೆ, ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ. ನ ತದ್ವಾಹಃ. ನಂ ತಂ. (ವಿಂ) 2. ಮದುವೆಯಾಗದಿರುವ. ನಾಸ್ತಿ ತದ್ವಾಹೋ ಯಸ್ಯ.

ಅನುದ್ವಿಗ್ನ ಅನುದ್ವಿಗ್ನ (ವಿಂ) 1. ನಿಶ್ಚಿಂಕ, ಭಯವಿಲ್ಲದ. 2. ನಿಶ್ಚಿಂತನಾದ. 3. ದುಃಖಗೊಳ್ಳದ. ನ ತದ್ವಿಗ್ನಃ.

ಅನುದ್ವಿಗ್ನ ಅನುದ್ವಿಗ್ನ (ಪ್ರಂ) 1. ಭಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ಚಿಂತೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ದುಃಖವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ತದ್ವಿಗ್ನಃ. ನಂ ತಂ. "ಅನುದ್ವಿಗ್ನಕರಂ ವಾಕ್ಯಂ ಸತಾಂ ಸ್ವಾಭಾವಿಕಂ ಮತಮ್". (ವಿಂ) 4. ಭಯವಿಲ್ಲದ. 5. ಚಿಂತೆಯಿಲ್ಲದ. 6. ದುಃಖವಿಲ್ಲದ, ನೋವಿಲ್ಲದ.

ಅನುಧಾವನ ಅನುಧಾವನ (ನಂ) 1. ಹಿಂಬಾಲಿಸಿ ಹೋಗುವಿಕೆ, ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯುವಿಕೆ. 2. ತತ್ತ್ವವನ್ನು



ತೀಯುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಅನುಸರಣ. 3. ತತ್ತ್ವಾನ್ವೇಷಣ.  
4. ಶುದ್ಧಮಾಡುವಿಕೆ, ತೋರಿಸುವಿಕೆ.

ಅನುಧ್ಯಾ ಅನುಧ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯದನ್ನು ಕುರಿತು  
ಚಿಂತನೆ, ಒಳ್ಳೆಯದನ್ನು ಕೋರುವಿಕೆ. 2. ಅನುಗ್ರಹ,  
ಹಿತದ ಬಯಕೆ. 3. ಅಸಕ್ತಿ. ಅನು+ಧ್ಯೆ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್)  
“ಅಡ್” (3-3-106)।

ಅನುಧ್ಯಾತ ಅನುಧ್ಯಾತ (ವಿಂ) ಧ್ಯಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು,  
ಚಿಂತಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಅನು+ಧ್ಯೆ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) “ಕ್ತಃ”  
(3-2-102)।

ಅನುಧ್ಯಾನ ಅನುಧ್ಯಾನ (ನಂ) ಎಡಬಿಡದ ಚಿಂತೆ,  
ಯಾವಾಗಲೂ ಯೋಚಿಸುತ್ತಿರೋಣ, ಸತತ ಧ್ಯಾನ.  
ಅನು+ಧ್ಯೆ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114)। “ಯಾ  
ನಃ ಪ್ರೀತಿವಿರೂಪಾಕ್ಷ ತ್ವದನುಧ್ಯಾನಸಮ್ಮವಾ” ಕುಮಾಂ 6-21।

ಅನುಧ್ಯೇಯ ಅನುಧ್ಯೇಯ (ವಿಂ) 1. ಅನುಗ್ರಹಮಾಡಲು  
ಅರ್ಹನಾದ, ಶುಭವನ್ನು ಕೋರಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ.  
ಅನು+ಧ್ಯೆ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) “ಯತ್” (3-1-97)। “ಅನು-  
ದ್ಯುರನುಧ್ಯೇಯಂ ಸಾನ್ನಿಧ್ಯೈಃ ಪ್ರತಿಮಾಗತೈಃ” ರಘುಂ 17-36।  
2. ಧ್ಯಾನಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಧ್ಯಾನಮಾಡ  
ಲ್ಪಡುವ.

ಅನುನಯ ಅನುನಯ (ಪುಂ) 1. ವಿನಯ, ನಮ್ರತೆ,  
ಸೌಜನ್ಯ, ಸರಳತೆ. 2. ಸಂಧಾನ, ಸಮಾಧಾನ,  
ವಿರೋಧಿಗಳ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಒಲಿಸುವಿಕೆ, ಕೋಪವನ್ನು  
ಹೋಗಲಾಡಿಸುವಿಕೆ. ಅನು+ನಿ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಅಚ್”  
(3-3-46)। “ಕಥಂ ನು ಶಕ್ಯೋಽನುನಯೋ ಮಹರ್ಷಿಃ” ರಘುಂ  
2-48। 3. ಪ್ರಾರ್ಥನೆ, ಯಾಚನೆ. “ಅನುನಯಮ-  
ಗೃಹೀತ್ವಾ ವ್ಯಾಜಮುಪ್ತಾ ಪರಾಶಿ” ಮಾಘಂ 11-9। 4. ನಮ  
ಸ್ಕಾರ. “ಪ್ರಣಿಪಾತಸ್ತ್ವನುನಯಃ ಪ್ರಣತಿಃ” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ।

ಅನುನಾದ ಅನುನಾದ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರತಿಧ್ವನಿ, ಅನುಸರಿಸಿದ  
ಸದ್ದು. 2. ಅನುರೂಪವಾದ ಧ್ವನಿ. ಅನುರೂಪೋ ನಾದಃ।  
“ಗುಹ್ಯತರಕಲನುಪುರಾನುನಾದಮ್” ಮಾಘಂ 9-18।

ಅನುನಾದಿನ್ ಅನುನಾದಿನ್ (ವಿಂ) ಪ್ರತಿಧ್ವನಿಯನ್ನು  
ಕೊಡುವ, ಅನುಸರಿಸಿ ಶಬ್ದವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.  
ಅನುನದತಿ — ಅನು+ನದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) “ಣಿನಿಃ”  
(3-2-68)। “ಗಂಭೀರೇಣಾನುನಾದಿನಾ” ರಾಮಾಂ।

ಅನುನಾಯಿಕಾ ಅನುನಾಯಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾಯಿಕೆಯನ್ನು  
ಅನುಸರಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ ಸಖಿ, ದಾಸಿ ಮೊದಲಾದ  
ಹೆಂಗಸು. “ಸಖಿ ಪ್ರವ್ರಜಿತಾ ದಾಸೀ ಪ್ರೇಷ್ಯಾ ಧಾತ್ರೇಯಿಕಾ  
ತಥಾ। ಅನ್ಯಾಶ್ಚ ಶಿಲ್ಪಕಾರಿಣ್ಯೋ ವಿಜ್ಞೇಯಾಹ್ಯನುನಾಯಿಕಾಃ”।

ಅನುನಾಸಿಕ ಅನುನಾಸಿಕ (ವಿಂ) ಮೂಗಿನ ಮೂಲಕ  
ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಮೂಗನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಹೊರಡುವ  
(ವರ್ಣ). ಅನುಗತೋ ನಾಸಿಕಾಮ್। “ಮುಖಸಹಿತನಾಸಿಕಯಾ  
ಉಚ್ಚಾರ್ಯಮಾಣೋ ವರ್ಣಃ ಅನುನಾಸಿಕಸಂಜಃ ಸ್ಯಾತ್” ಸಿಂ ಕೌಂ।  
[ಸ್ವರವರ್ಣಗಳು, ಯ ವ ಲ, ಮತ್ತು ವರ್ಣಿಯ  
ಪಂಚಮಾಕ್ಷರಗಳು ಇವುಗಳಿಗೆ ಅನುನಾಸಿಕಸಂಜ್ಞೆ  
ಯುಂಟು.]

ಅನುನೀತಿ ಅನುನೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಮಾಧಾನಗೊಳಿಸುವಿಕೆ,  
ಕೋಪವು ಶಾಂತವಾಗುವ ರೀತಿಯನ್ನು ಅನುಸರಿಸು  
ವಿಕೆ. ಅನು+ನಿ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಕ್ತಿನ್” (3-3-94)।

ಅನುನೇಯ ಅನುನೇಯ (ವಿಂ) 1. ಅನುನಯಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ,  
ಸಮಾಧಾನಗೊಳಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. ಅನು+ನಿ (ಪ್ರಾಪಣೆ)  
“ಯತ್” (3-1-97)। 2. ಬೇಡಲು ಅರ್ಹನಾದ.

ಅನುಪಥಿತ ಅನುಪಥಿತ (ನಂ) 1. ಅನುಸರಿಸಿ ಪಠಿಸು  
ವುದು, ಗುರುವು ಹೇಳಿಕೊಟ್ಟಂತೆ ಹೇಳುವುದು. ಅನು+  
ಪಠ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (3-3-114)।  
(ವಿಂ) 2. ಅನುಸರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು. ಅನು+ಪಠ ಕರ್ಮಂ  
“ಕ್ತಃ” (3-2-102)।

ಅನುಪಥಿತನ್ ಅನುಪಥಿತನ್ (ವಿಂ) ಗುರುವಿನ ಪಾಠ  
ವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು. ಅನುಪಥಿತ-  
ಮನೇನ “ಇನಿಃ” (4-2-68)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀಪ್”  
(4-1-4)। —ಪಥಿತಿನಿ —ಪಥಿತಿನೀ.

ಅನುಪತನ ಅನುಪತನ (ನಂ) ಅನುಸರಿಸಿ ಹೋಗುವುದು,  
ಬಳಕೆ ಹೋಗುವುದು. ಅನು+ಪಠ (ಗತೌ) ಭಾವೇ  
“ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114)।

ಅನುಪತಿ ಅನುಪತಿ (ಅವ್ಯಂ) ಪತಿಯ ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ.  
ಪತ್ಯುಃ ಸಮೀಪೇ — ಸಾಮೀಪ್ಯೇಽವ್ಯಯಿಂ।

ಅನುಪಥ ಅನುಪಥ (ಪುಂ) 1. ಅನುಕೂಲವಾದ ಮಾರ್ಗ.  
ಅನುಕೂಲಃ ಪಥಾಃ “ಅಃ” (4-4-94)। (ವಿಂ) 2. ಮಾರ್ಗ  
ವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿರುವ. ಪಥಾನಮನುಗತಃ। (ಅವ್ಯಂ) 3.  
ಮಾರ್ಗದ ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ. ಪಥಃ ಸಮೀಪೇ ಸಾಮೀಪ್ಯೇಽವ್ಯಯಿಂ।  
4. ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ. ಪಥಿ — ಸಪ್ತಮ್ಯಥೇಽವ್ಯಯಿಂ।

ಅನುಪದ ಅನುಪದ (ನಂ) 1. ಅನುಕೂಲವಾದ ಸ್ಥಳ.  
ಅನುರೂಪಂ ಪದಮ್। 2. ಸಂಗೀತದ ಪಲ್ಲವಿ. (ಅವ್ಯಂ) 3.  
ಅನಂತರ, ಬಳಿಕ, ತರುವಾಯ. ಪದಸ್ಯ ಪಶ್ಚಾತ್ —  
ಪಶ್ಚಾದರ್ಥೇ ಅವ್ಯಯಿಂ। “ಅಮೋಘಾಃ ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಣಂತಾವಧ್ಯಾನ್-  
ಪದಮಾಶಿಷಃ” ರಘುಂ 1-44। 4. ಕಾಲಿನ ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ.  
ಸಾಮೀಪ್ಯೇಽವ್ಯಯಿಂ।



ಅನುಪದವಿ ಅನುಪದವಿ (ವಿಂ) 1. ದಾರಿಯನ್ನು ಅನುಸರಿಸುವ. ಪದವೀಮನುಗತಃ। (ಅವ್ಯಂ) 2. ದಾರಿಯ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ. ಪದವ್ಯಾಃ ಸಮೀಪೇ। 3. ದಾರಿಯಲ್ಲಿ. ಪದವ್ಯಾಮ್। ಸಪ್ತಮ್ಯರ್ಥೋಽಯಮಿಂ।

ಅನುಪದವಿ ಅನುಪದವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನುಕೂಲವಾದ ಮಾರ್ಗ, — ದಾರಿ, — ರಸ್ತೆ. ಅನುಕೂಲಾ ಪದವೀ। 2. ಕಾಲುದಾರಿ. ಅನು ಅಪ್ರಧಾನಾ ಪದವೀ।

ಅನುಪದಿಕ ಅನುಪದಿಕ (ವಿಂ) ಅನುಸರಿಸುವ, ಹಿಂಬಾಲಿಸುವ, ಅನಂತರದಲ್ಲಿ ಹೋಗುವ. ಅನುಪದಮಸ್ತಸ್ಯ ಗನ್ತೃತ್ವೇನ "ಠ್" (೪-೨-೧೧೪)।

ಅನುಪದಿನ್ ಅನುಪದಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಅನುಸರಿಸುವ, ಹಿಂಬಾಲಿಸುವ. 2. ಹುಡುಕುವ, ವಿಚಾರಿಸುವ, ಶೋಧಿಸುವ. ಅನುಪದ "ಙಿಃ" (೪-೨-೯೦)। "ಉದಿತೇ ತತಃ ಸಪದಿ ಲಘುಪದಃ ಕ್ಷಣದಾಕರೇಽನುಪದಿಭಿಃ ಪ್ರಯಯೇ" ಮಾಘಂ ೯-೩೦।

ಅನುಪದಿಷ್ಠ ಅನುಪದಿಷ್ಠ (ವಿಂ) ಉಪದೇಶ ಮಾಡಲ್ಪಡದ. ನ ಅನುಪದಿಷ್ಠಃ।

ಅನುಪದೀನಾ ಅನುಪದೀನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾದರಕ್ಷೆ, ಮೋಚಾ, ಜೋಡು, ಕಾಲಿನ ಉದ್ದಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾದ ಮೆಟ್ಟು. ಅನುಪದಂ ಬದ್ಧಾ — ಅನುಪದ "ಃ" (೪-೨-೯)।

ಅನುಪಧಿ ಅನುಪಧಿ (ವಿಂ) ನಿಷ್ಕಪಟವಾದ, ವಂಚನೆಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಅನುಪಧಿಃ। "ರಹಸ್ಯಂ ಸಾಧುನಾಮನುಪಧಿ ವಿಶುದ್ಧಂ ವಿಜಯತೇ" ತಂ ರಾಂ ೨-೨।

ಅನುಪನೀತ ಅನುಪನೀತ (ಛಂ) 1. ಉಪನಯನ ಸಂಸ್ಕಾರವಿಲ್ಲದ ಬಾಲಕ. (ವಿಂ) 2. ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ತರಲ್ಪಡದ.

ಅನುಪಪತ್ತಿ ಅನುಪಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಸಂಗತಿ, ಹೊಂದಿಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ಯುಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ಕಷ್ಟ, ತೊಂದರೆ, ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ಬಡತನ.

ಅನುಪಪನ್ನ ಅನುಪಪನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಉಪಪತ್ತಿಯಿಲ್ಲದ. 2. ಯುಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ, ಉಪಾಯವಿಲ್ಲದ. 3. ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ.

ಅನುಪಲ್ಲವ ಅನುಪಲ್ಲವ (ವಿಂ) ತೊಂದರೆಯಿಲ್ಲದ, ನಾಶವಿಲ್ಲದ. "ಶ್ರುತಿಭಿರಪ್ಯನುಪಲ್ಲವನೀತಿಭಿಃ" ಧಾತಂ ೩-೮।

ಅನುಪಬಾಧ ಅನುಪಬಾಧ (ವಿಂ) ತೊಂದರೆಯಿಲ್ಲದ, ಪ್ರತಿಬಂಧಕವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಅನುಪಬಾಧಾ ಯಸ್ಯ।

ಅನುಪಮ ಅನುಪಮ (ವಿಂ) ಅಸಮಾನವಾದ, ಹೋಲಿಕೆಯಿಲ್ಲದ, ಉತ್ಕೃಷ್ಟವಾದ. ನಾಸ್ತಿ ಅನುಪಮಾ ಸಾದೃಶ್ಯಂ ಯಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್। — ಮಾ — ಮಾ.

ಅನುಪಮಾ ಅನುಪಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಹೆಣ್ಣಾನೆ, ಕುಮ್ಮದವೆಂಬ ದಿಗ್ಗಜದ ಪತ್ನಿ.

ಅನುಪಮೇಯ ಅನುಪಮೇಯ (ವಿಂ) ಹೋಲಿಕೆಯಿಲ್ಲದ; ಅಪ್ರತಿಮ, ಅದ್ವಿತೀಯ. ನ ಅನುಪಮೇಯತಃ — ಅನು + ಮಾಙ್ (ಮಾನೇ) "ಯತ್" (೩-೧-೯೭)।

ಅನುಪಯುಕ್ತ ಅನುಪಯುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡದ, ಅನುಭವಿಸಲ್ಪಡದ. 2. ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ. 3. ಉಪಯೋಗವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ.

ಅನುಪಯೋಗ ಅನುಪಯೋಗ (ಛಂ) 1. ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಅನುಕೂಲವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ಅನುಕೂಲವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ, ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ.

ಅನುಪರತ ಅನುಪರತ (ವಿಂ) 1. ಮರಣಹೊಂದದ. 2. ವಿರಾಮವಿಲ್ಲದ, ವಿಶ್ರಾಂತಿಯಿಲ್ಲದ, ಬಿಡುವಿಲ್ಲದ. 3. ನಿವೃತ್ತಿಯಿಲ್ಲದ, ವಿಷಯಾಭಿಲಾಷೆಯಿಂದ ಹಿಂತಿರುಗದ. 4. ಮುಗಿಯದ, ಸಮಾಪ್ತಿಹೊಂದದ.

ಅನುಪಲಕ್ಷಿತ ಅನುಪಲಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ. 2. ಊಹಿಸಲ್ಪಡದ. 3. ನೋಡಲ್ಪಡದ. ನಂ ತಂ।

ಅನುಪಲಬ್ಧ ಅನುಪಲಬ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಲಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡದ, ಇಂದ್ರಿಯದಿಂದ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ. 2. ಹೊಂದಲ್ಪಡದ. ನ ಅನುಪಲಬ್ಧಃ।

ಅನುಪಲಬ್ಧಿ ಅನುಪಲಬ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಡೆಯದಿರುವಿಕೆ, ಹೊಂದದಿರುವಿಕೆ. 2. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ ಕಾಣದಿರುವಿಕೆ, ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಂದ ಗ್ರಹಿಸದಿರುವಿಕೆ. ನ ಅನುಪಲಬ್ಧಿಃ। ಅಭಾವೇ ನಂ ತಂ। 3. ಅಭಾವವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ (ನಿರಾವಾಂಸಕರ) ಒಂದು ಪ್ರಮಾಣ.

ಅನುಪವೀತ ಅನುಪವೀತ (ಛಂ) 1. ಉಪನಯನವಿಲ್ಲದ ಬಾಲಕ. (ವಿಂ) 2. ಯಜ್ಞೋಪವೀತವಿಲ್ಲದ. ನ ಅನುಪವೀತಂ ಯಸ್ಯ।

ಅನುಪಶಮ ಅನುಪಶಮ (ಛಂ) 1. ಶಾಂತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ವಿಷಯಾಭಿಲಾಷೆಯಿಂದ ನಿವೃತ್ತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ಅನುಪಶಮಃ ಶಾಂತಿಃ ನಿವೃತ್ತಿರ್ವಾ। ನಂ ತಂ।

ಅನುಪಸೇಚನ ಅನುಪಸೇಚನ (ನಂ) ಮೊಸರು ಸಂಚಾರ ಹುಳಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳೊಡನೆ ಬೆರೆಸದ ಅನ್ನ, ಯಾವ ವ್ಯಂಜನವೂ ಇಲ್ಲದ ಅನ್ನ. ನಾಸ್ತಿ ಅನುಪಸೇಚನಂ ವ್ಯಂಜನಂ ಯಸ್ಯ।

ಅನುಪಸ್ಕಾರ ಅನುಪಸ್ಕಾರ (ಛಂ) ಅಧ್ಯಾಹಾರದೋಷವಿಲ್ಲದೆ ಇರುವಿಕೆ, ಪದಗಳ ಲೋಪವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. "ಸಾಕಾಕ್ಷಮನುಪಸ್ಕಾರಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೧-೩೮।



ಅನುಪಸ್ಕೃತ ಅನುಪಸ್ಥಿತ (ವಿಂ) 1. ಬೇಯಿಸಲ್ಪಡದ. 2. ಒಗ್ಗರಿಸಲ್ಪಡದ. 3. ವಿಚಾರಹೊಂದದ, ಚೋಕ್ಯ, ಶುದ್ಧವಾದ, ಪರಿಷ್ಕರಿಸಲ್ಪಡದ. ಉಪ+ತು ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಕ:" (3-2-102)। ಸುಡ್ (6-1-139)। ನಂ ತಂ। 4. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಪ್ರಯೋಜನವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸದೆ. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾರ್ಥೇ ಗವಾರ್ಥೇ ವಾ ದೇಹತ್ಯಾಗೋಽನುಪಸ್ಕೃತ:" ಮನುಂ 10-62।

ಅನುಪಸ್ಥಾನ ಅನುಪಸ್ಥಾನ (ನಂ) 1. ಅಧಾನ, ಇಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಗೈರುಹಾಜರಿ, ಬರದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ಹಾಜರಾಗಿಲ್ಲದ.

ಅನುಪಸ್ಥಾಪನ ಅನುಪಸ್ಥಾಪನ (ನಂ) 1. ಹಾಜರುಪಡಿಸದಿರುವಿಕೆ, ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ತರದಿರುವಿಕೆ. 2. ಜ್ಞಾಪಿಸದಿರುವಿಕೆ.

ಅನುಪಸ್ಥಾಪಿತ ಅನುಪಸ್ಥಾಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಹಾಜರುಪಡಿಸಲ್ಪಡದ, ತರಲ್ಪಡದಿರುವ, ಎದುರಿಗೆ ತೋರಿಸಲ್ಪಡದ. 2. ಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಡದ.

ಅನುಪಸ್ಥಿತ ಅನುಪಸ್ಥಿತ (ವಿಂ) 1. ಹಾಜರಾಗದ, ಬರದಿರುವ, ಸಮಾಪದಲ್ಲಿಲ್ಲದ, ತತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿಲ್ಲದ. 2. ಜ್ಞಾಪಕವಿಲ್ಲದ, ನೆನಪಿಲ್ಲದ.

ಅನುಪಸ್ಥಿತಿ ಅನುಪಸ್ಥಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೈರುಹಾಜರಿ, ಬರದಿರುವಿಕೆ, ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ ಇಲ್ಲದಿರೋಣ. 2. ನೆನಪಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಮರವು, ಮರೆಯುವಿಕೆ. ನ ಉಪಸ್ಥಿತಿ:। ನಂ ತಂ।

ಅನುಪಹತ ಅನುಪಹತ (ನಂ) 1. ಹೊಸದಾದ ಮತ್ತು ಉಪಯೋಗಿಸದ ಬಟ್ಟೆ. "ಅನುಪಹತಮತಿಥವಲಂ ದ್ವುಕಲಯುಗಲಮ್" ಕಾದಂ। (ವಿಂ) 2. ಕೆಡಿಸಲ್ಪಡದ. 3. ಗಾಯ ಮಾಡಲ್ಪಡದ. 4. ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡದ, ಹೊಸದಾದ.

ಅನುಪಾತ ಅನುಪಾತ (ಪ್ರಂ) 1. ತೈರಾಶಿಕ [ಗಣಿತ]. ಅನುರೂಪ: ತ್ರೈರಾಶಿಕೇನ ಪಾತ:। 2. ಹಿಂಬಾಲಿಸುವುದು. ಅನು ಪರಾತ್ ಪಾತ:। "ಉಪವನಪವನಾನುಪಾತದಶೈ:" ಮಾಘಂ 9-29।

ಅನುಪಾತಕ ಅನುಪಾತಕ (ನಂ) ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯೆ ಮೊದಲಾದ ಮಹಾಪಾತಕಕ್ಕೆ ಸಮವಾದ ಪಾಪ. ಅನುಪಾತಯತಿ ನರಕಂ ಗಮಯತಿ - ಅನು + ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಫುಲ್" (3-1-133)। [ಇಂತಹ ಪಾಪಗಳು 35 ಬಗೆಯಾಗಿ ವಿಷ್ಣು ಸ್ಮೃತಿಯಲ್ಲಿ ವಿವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ.]

ಅನುಪಾತಕಿನ್ ಅನುಪಾತಕಿನ್ (ವಿಂ) ಮಹಾಪಾತಕಗಳಿಗೆ ಸಮವಾದ ಪಾಪವುಳ್ಳ. ಅನುಪಾತಕಮಸ್ಯಸ್ಯ "ಇತಿ:" (4-2-114)।

ಅನುಪಾತಿನ್ ಅನುಪಾತಿನ್ (ವಿಂ) ಅನುಸರಿಸಿ ಬರುವ, ಹಿಂಬಾಲಿಸುವ. ಅನುಪತತಿ - ಅನು + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಣಿತಿ:" (3-2-102)।

ಅನುಪಾನ ಅನುಪಾನ (ನಂ) 1. ಔಷಧದ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಅಥವಾ ಔಷಧ ಸೇವಿಸಿದ ಮೇಲೆ ಕುಡಿಯುವ ಪಾನೀಯ (ನೀರು, ಹಾಲು ಮೊದಲಾದುದು). ಅನು ಸಹ ಪರಾತ್ ಪೀಯತೇ - ಅನು + ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-113)। (ಅವ್ಯಂ) 2. ನೀರಿನ ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ. ಪಾನಸ್ಯ ಜಲಸ್ಯ ಸಮೀಪೇ। ಸಾಮೀಪ್ಯೇಽವ್ಯಯಿಂ।

ಅನುಪಾನೀಯ ಅನುಪಾನೀಯ (ನಂ) ಔಷಧದ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಅಥವಾ ಸೇವಿಸಿದ ಮೇಲೆ ಕುಡಿಯುವ ನೀರು, ಹಾಲು ಮೊದಲಾದುದು.

ಅನುಪಾಲಯತ್ ಅನುಪಾಲಯತ್ (ವಿಂ) ಉಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಉದಾಸೀನತೆಯಿಂದ ಕಾಣುವ. "ಅನುಪಾಲಯತಾಮುದೇಷ್ಯತೀಂ ಪ್ರಭುಶಕ್ತಿ ದ್ವಿಪತಾಮನೀಹಯಾ" ಕಿರಾಂ 2-10।

ಅನುಪೂರ್ವ ಅನುಪೂರ್ವ (ವಿಂ) 1. ಕ್ರಮವಾಗಿ ಬಂದ, ಕ್ರಮವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿದ. 2. ಮುಂದೆ ಇರುವವನನ್ನು ಹಿಂಬಾಲಿಸಿ ಬಂದ. ಅನುಗತ: ಕ್ರಮಂ ಪೂರ್ವಂ ವಾ। "ವೃತ್ತಾನುಪೂರ್ವಂ ಚ ನ ಚಾತಿರ್ದೀರ್ಘಂ" ಕುಮಾಂ 1-34।

ಅನುಪೂರ್ವಶಸ್ ಅನುಪೂರ್ವಶಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಕ್ರಮವಾಗಿ, ಒಂದಾದ ಮೇಲೆ ಒಂದಾಗಿ, ಒಬ್ಬರ ಹಿಂದೆ ಒಬ್ಬರಾಗಿ, ವರಸೆಯಾಗಿ. ಅನುಪೂರ್ವ "ಶಸ್" (4-4-43)।

ಅನುಪೇತ ಅನುಪೇತ (ವಿಂ) 1. ಅನುಪನೀತ, ಉಪನಯನ ವಿಲ್ಲದವನು, ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸಕ್ಕಾಗಿ ಗುರುಗಳ ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಹೋಗದಿರುವ. 2. ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಹೋಗದಿರುವ.

ಅನುಪ್ತ ಅನುಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಬಿತ್ತಲ್ಪಡದ (ಬೀಜ). 2. ಬಿತ್ತನೆಯಾಗದಿರುವ (ನೆಲ).

ಅನುಪ್ರದಾನ ಅನುಪ್ರದಾನ (ನಂ) 1. ದಾನ, ಕಾಣಿಕೆ. 2. ಧನಗಳನ್ನು ಹೊರಡಿಸುವ ಬಾಹ್ಯಪ್ರಯತ್ನ. ಅನುಪ್ರದೀಯತೇನ - ಅನು + ಪ್ರ + ದಾನ್ (ದಾನೇ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-116)। "ಖಯಾಂ ಯಮಾ: ಖಯಂ ಕೃಷ್ಣಾಂ ವಿಸರ್ಗಾ: ಶರ ಏವ ಚ। ಏತೇ ಶ್ವಾಸಾನುಪ್ರದಾನಾ ಅಘೋಷಾಶ್ಚ ವಿವೃಣ್ವತೇ" ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಅನುಪ್ರವಚನ ಅನುಪ್ರವಚನ (ನಂ) ಗುರುವು ಹೇಳಿ ಕೊಟ್ಟಂತೆ ಹೇಳುವುದು, ಗುರುವಿನ ಉಚ್ಚಾರಣೆಯನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಹೇಳುವುದು. ಅನುರೂಪಂ ಪ್ರವಚನಮ್, ಅನು ಪರಾತ್ ಪಾಪಂ ಪ್ರವಚನಮ್।



ಅನುಪ್ರವಚನೀಯ ಅನುಪ್ರವಚನೀಯ (ಪುಂ) ಉಪದೇಶಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ ಮಂತ್ರದ ಸಿದ್ಧಿಗಾಗಿ ಅದರ ಅಂಗವಾಗಿ  
ತಿಷ್ಠನೆಗೆ ಮಾಡುವ ಒಂದು ಸಂಸ್ಕಾರ. ಅನುಪ್ರವಚನ  
ಪ್ರಯೋಗಮಸ್ಯ "ಛ:" (೪-೧-೧೧೧)।

ಅನುಪ್ರವೇಶ ಅನುಪ್ರವೇಶ (ಪುಂ) 1. ಒಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸು  
ವುದು. ಅನು+ಪ್ರ+ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಛ:" (೩-೩-೧೮)।  
"ಪುಷಿ ವೃದ್ಧಿ ಹರಿದ್ವದೀಧಿತೇರನುಪ್ರವೇಶಾದಿವ ಬಾಲ-  
ಚಂದ್ರಮಾ:" ರಘುಂ ೩-೨೨। 2. ಅನುಸರಿಸುವುದು,  
ಹೊಂದಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಸೇರಿಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಮಜತೇ  
ವಿದೇಶಮಧಿಕೇನ ಜಿತಸ್ತದನುಪ್ರವೇಶಮಯ ವಾ ಕುಶಲ:" ಮಾಘಂ  
೧-೪೮।

ಅನುಪ್ರದನ ಅನುಪ್ರದ (ಪುಂ) ಅನಂತರದ ಪ್ರಶ್ನೆ, ಹಿಂದಿನ  
ವಿಷಯವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿದ ಪ್ರಶ್ನೆ, ಹಿಂದೆ ಹೇಳಿದ್ದಕ್ಕೆ  
ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಕೇಳಿಕೆ.

ಅನುಪ್ರಸಕ್ತಿ ಅನುಪ್ರಸಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಹಳ ಸಮೀಪ  
ಸಂಬಂಧ, ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಹೊಂದಿಕೆಯಾಗುವ ಯುಕ್ತಿ  
ಯುತವಾದ ಸಂಬಂಧ.

ಅನುಪ್ರಾಸ ಅನುಪ್ರಾಸ (ಪುಂ) ಒಂದು ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರ,  
ರಸಾದಿಗಳಿಗೆ ಅನುಕೂಲವಾದ ಸಜಾತೀಯ ವರ್ಣಗಳ  
ಆವೃತ್ತಿ, ಒಂದೇ ಜಾತಿಯ ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಮತ್ತೆ  
ಮತ್ತೆ ಉಪಯೋಗಿಸುವುದು. ಅನುಗತ: ರಸಾದಿನುಗುಣ:  
ಪ್ರಕೃಷ್ಠ: ಆಸ: ಸಮವರ್ಣೋಚ್ಚಾರಣಮ್। "ಅನುಪ್ರಾಸ: ಶಬ್ದಸಾಮ್ಯಂ  
ವೈಷಮ್ಯೇಷು ಸ್ವರಸ್ಯ ಯತ್" ಸಾಂ ದಂ ೧೦-೩। [ಅನು  
ಪ್ರಾಸವು ಭೇದಾನುಪ್ರಾಸ, ವೃತ್ತಾನುಪ್ರಾಸ, ಶ್ರುತಾನು  
ಪ್ರಾಸ, ಅಂತ್ಯಾನುಪ್ರಾಸ ಮತ್ತು ಲಾಟಾನುಪ್ರಾಸ  
ಗಳೆಂದು ಐದು ವಿಧ.] ಉದಾ: "ಆದಾಯ ವಕುಲ-  
ಗಂಧಾನಂಧೀಕುರ್ವಂಪದೇ ಪದೇ ಭರಮಾನ್। ಅಯಮೇತಿ ಮಂದಮಂದಂ  
ಕಾವೇರಿವಾರಿಪಾವನ: ಪವನ:" ಸಾಂ ದಂ ೧। [ವಿವರಕ್ಕೆ  
ಆಯಾ "ಅನುಪ್ರಾಸ" ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಅನುಪ್ಲವ ಅನುಪ್ಲವ (ಪುಂ) 1. ಸಂಗಡಿಗ, ಜೊತೆಗಾರ,  
ಸಹಾಯಕ. 2. ಸೇವಕ, ಅಳು. ಅನು ಪಶ್ಚಾತ್ ಪ್ಲವತೇ  
ಪ್ಲವ್ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಸಾನುಪ್ಲವ:  
ಪ್ರಭುರಪಿ ಕ್ಷಣದಾಚರಣಾಮ್" ರಘುಂ ೧೩-೭೫।

ಅನುಬದ್ಧ ಅನುಬದ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಸೇರಿರುವ.  
2. ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ ಮುಂದುವರಿದ, ಅನುವರ್ತಿಸಿರುವ.  
"ನಿತ್ಯಾನುಬದ್ಧಕುಲವೇರ:" ವೇಣೀಂ ೧।

ಅನುಬಂಧ್ಯಮಾನ ಅನುಬಂಧ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ಪ್ರಾರ್ಥಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ, ಬೇಡಲ್ಪಡುವ, ಯಾಚಿಸಲ್ಪಡುವ.

ಅನು+ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ)+ಯಕ್ "ಶಾನ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
"ತಯಾ ಚಾನುಬಂಧ್ಯಮಾನಸ್ತಾಂ ವಕುಲಮಾಲಾಮಾತಮನ: ಕಂಠಾದವತಾಯಾ  
ದತ್ತವಾನ್" ಮಾಲತೀಂ ೧।

ಅನುಬಂಧ ಅನುಬಂಧ (ಪುಂ) 1. ಸಂಬಂಧ, ಹೊಂದಿಕೆ.  
ಅನುಬಂಧ್ಯತೇ—ಅನು+ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಛ:" (೩-೩-೧೮)।  
"ಯಸ್ಯಾಂ ಮನಶ್ಚಕ್ಷುಷೋರನುಬಂಧಸ್ತಸ್ಯಾಮೃದ್ಧಿ:" ಮಾಲತೀಂ ೨।  
2. ಎಡಬಿಡದ ಸಂಬಂಧ. "ಸಾನುಬಂಧಾ: ಕಥಂ ನ ಸ್ಯು:  
ಸಂಪದೋ ಮೇ ನಿರಾಪದ:" ರಘುಂ ೧-೬೪। 3. ಗ್ರಂಥದ  
ಆರಂಭದಲ್ಲಿ ಹೇಳುವ ಅಧಿಕಾರಿ, ವಿಷಯ, ಸಂಬಂಧ  
ಮತ್ತು ಪ್ರಯೋಜನಗಳೆಂಬ ಅನುಬಂಧ ಚತುಷ್ಟಯ.  
ಅನುಬಂಧ್ಯತೇಜೇನ—ಅನು+ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) ಕರಂ "ಛ:"  
(೩-೩-೧೨೧)। 4. ಮುಂದೆ ಉಂಟಾಗುವ ಶುಭ ಮತ್ತು  
ಅಶುಭ ಫಲಗಳು. ಅನುಬಂಧ್ಯತೇ ಅನುಬಂಧ್ಯತೇ—ಅನು+ಬಂಧ  
ಕರಂ "ಛ:" (೩-೩-೧೨೧)। "ಅನುಬಂಧಮಜಾನಂತ: ಕರ್ಮಣಾ-  
ಮವಿಚಾಲಿತಾ:" ರಾಮಾಂ ೧। 5. "ಇತ್" ಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ  
ವರ್ಣ. ಗಂಟ, ಪಲ್, ಯನ್ ಇತ್ಯಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ಲ ಮತ್ತು  
ನ್ ಇತ್ಯಾದಿ ವರ್ಣಗಳು ಅನುಬಂಧಗಳು. "ರಿಪುರಾಪ  
ಪರಾಭವಾಯ ಮಧ್ಯಂ ಪ್ರಕೃತಿಪ್ರತ್ಯಯಯೋರಿವಾನುಬಂಧ:" ಕಿರಾಂ  
೧೩-೧೧। 6. ದೋಷೋತ್ಪಾದನ, ದೋಷವನ್ನುಂಟು  
ಮಾಡುವುದು. 7. ಮುಖ್ಯವಾದ ವಿಷಯದೊಡನೆ  
ಹೊಂದಿಕೊಂಡು ಬರುವ ಅಪ್ರಧಾನ ವಿಷಯ.  
8. ಕಾರಣ, ಉದ್ದೇಶ, ಅಭಿಪ್ರಾಯ. "ಅನುಬಂಧಂ  
ಪರಿಜ್ಞಾಯ ದೇಶಕಾಲೋ ಚ ತತ್ವತ:। ಸತ್ವಾಪರಾಧೋ ಚಾಲೋಕ್ಯ  
ದೃಢಂ ದೃಢಚೇಪು ಪಾತಯೇತ್" ಮನುಂ ೮-೧೨೬। 9. ಅನು  
ಸರಣ, ಅನುಸರಿಸಿ ಬರುವಿಕೆ. "ಶಾಂತಜ್ವರೋಷಿ  
ಶೋಚ್ಯ: ಸ್ಯಾದನುಬಂಧಭಯಾತ್ತರ:" ಸುಶ್ರುತಂ ೧। 10. ತಾಯಿ  
ತಂದೆಗಳ ನಡತೆಯನ್ನು ಅನುಸರಿಸುವವನು.  
11. ಆರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. 12. ವಾತಪಿತ್ತಾದಿ ದೋಷ  
ಗಳ ಅಪ್ರಾಧಾನ್ಯ. 13. ಶಿಶು. 14. ಲೇಶ, ಚೂರು,  
ಸ್ವಲ್ಪ. "ಅನುಬಂಧ: ಶಿಶೋ ದೋಷೋತ್ಪಾದೇ ಮುಖ್ಯಾನುಬಂಧಿನಿ।  
ವಿನದವೇ ಪ್ರಕೃತ್ಯಾದೋ ಪ್ರವೃತ್ತಸ್ಯಾನುಬಂಧಿನೇ" ಮೇದಿಂ ೧।

ಅನುಬಂಧನ ಅನುಬಂಧನ (ನಂ) ಸಂಬಂಧ, ಪರಂಪರೆ,  
ವರಿಸೆ. ಅನು+ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅನುಬಂಧಿನ್ ಅನುಬಂಧಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂಬಂಧವುಳ್ಳ.  
2. ಹಿಂಬಾಲಿಸುವ. 3. ಜೊತೆಗಾರ, ಸಂಗಡಿಗ.  
ಅನು+ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಣಿನಿ:" (೩-೨-೭೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಜಿಪ್" (೪-೧-೫)। -ಬಂಧಿನಿ-ಬಂಧಿನೀ. "ಅನಯೋ:  
ಸರಸರಮಣಿಯಾನುಬಂಧಿನೀ ಸ್ತ್ರೀಜನಕಯಾ" ಮಾಲತೀಂ ೧।



4. ಮಿತ್ರವಾದ, ಬೆರೆತಿರುವ. "ನೀಲಕಂಠಕೇಕಾನು-  
ಬಂಧಿನಾ ಮಂದ್ರಹಂಕೃತೇನ ಮಾನುಮನ್ಯತೇ" ಮಾಲತೀಂ ೧।
5. ಸಮೃದ್ಧಿಹೊಂದುವ, ಏಳಿಗೆಹೊಂದುವ, ಎಡಬಿಡದೆ  
ಬೆಳೆಯುವ. "ಪ್ರವಾಲಮಾಸಾಮನುವನ್ಧಿ ಬೀರ್ವಾಮ್" ಕುಮಾಂ  
೪-೩೪।

ಅನುವಂಶಿ ಅನುಬಂಧೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತೃಷ್ಣೆ, ಆಸೆ.  
2. ಬಿಕ್ಕಳಿಕೆ. ಅನುವಂಶ್ಯತೆ ಅತಿಶ್ವಾಸೇನ ವ್ಯಾಪ್ರಿಯತೇಜಯಾ —  
ಅನು+ವಂಶ (ವಂಶನೇ) ಕರಂ "ಘಙ್" (೩-೩-೧೨೧)।  
ಗೌರಾಂ "ಡೀಘ್" (೪-೧-೪೧)। "ಅನುವಂಶಿ ತೃಷಾ ಹಿಂಕಾ"  
ಹೇಮಂ।

ಅನುವಂಶ್ಯ ಅನುಬಂಧ್ಯ (ವಿಂ) ಕೊಲ್ಲಲು ಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಅನು+ವಂಶ (ವಂಶನೇ) "ಞತ್" (೩-೧-೧೨೪)। "ಗೌರನು-  
ವಂಶ್ಯಃ" ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ।

ಅನುಬಲ ಅನುಬಲ (ನಂ) ಹಿಂಗಾವಲು ಸೈನ್ಯ, ಸಹಾಯಕ  
ಸೈನ್ಯ. ಅನು ಪಶ್ಚಾತ್ ಸ್ಥಿತಂ ಬಲಮ್।

ಅನುಬೋಧ ಅನುಬೋಧ (ಪುಂ) 1. ಪುನರಾರೋಚನೆ,  
ಕಾರ್ಯವಾದನಂತರ ಮತ್ತೆ ಯೋಚಿಸುವುದು, ಸ್ಮರಣೆ,  
ನೆನಪು. 2. ವಾಸನೆಯು ಕಡಿಮೆಯಾದ ಚಂದನ  
ಮೊದಲಾದುವಕ್ಕೆ ಪುನಃ ವಾಸನೆ ಕಟ್ಟುವುದು, ಸುಗಂಧ  
ದ್ರವ್ಯಗಳಿಂದ ಮತ್ತೆ ವಾಸನೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದು.  
ಅನು+ಬುಧ (ಅವಗಮನೇ) ಭಾವೇ "ಘಙ್" (೩-೩-೧೮)।

ಅನುಭವ ಅನುಭವ (ಪುಂ) 1. ಬುದ್ಧಿ, ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ.  
ಅನು+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಘಙ್" (೩-೩-೪೦)। [ಎಲ್ಲಾ  
ನಡವಳಿಕೆಗಳಿಗೂ ಕಾರಣವಾದ ತಿಳಿವಳಿಕೆಯೇ  
(ಜ್ಞಾನವೇ) ಬುದ್ಧಿಯೆನಿಸುವುದು. ಆ ಬುದ್ಧಿಯು  
ಸ್ಮೃತಿ ಮತ್ತು ಅನುಭವಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಅನು  
ಭವವು ಯಥಾರ್ಥಾನುಭವ ಮತ್ತು ಅಯಥಾರ್ಥಾನು  
ಭವಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಆ ಯಥಾರ್ಥಾನುಭವವೂ  
ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ, ಅನುಮಿತಿ, ಉಪಮಿತಿ ಮತ್ತು ಶಾಬ್ದ  
ಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ನೈಯಾಯಿಕರು ಈ ನಾಲ್ಕು  
ವಿಧ ಜ್ಞಾನವನ್ನೂ ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಸಂಸ್ಕಾರಜನ್ಯ  
ಜ್ಞಾನಂ ಸ್ಮೃತಿಃ। ತದ್ವಿಜ್ಞಾನಂ ಜ್ಞಾನಮನುಭವಃ। ಇತ್ಯಾದಿ ತಂ ಸಂಂ।  
ವೇದಾಂತಿಗಳೂ ಮೀಮಾಂಸಕರೂ ಈ ನಾಲ್ಕರ ಜೊತೆಗೆ  
ಅರ್ಥಾಪತ್ತಿ ಮತ್ತು ಅನುಪಲಬ್ಧಿಗಳೆಂದು ಹೆಚ್ಚಾಗಿ  
ಎರಡನ್ನು ಸೇರಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಆಲಂಕಾರಿಕರು ಮತ್ತು  
ಪೌರಾಣಿಕರು ಈ ಆರರ ಜೊತೆಗೆ ಸಂಭವ ಮತ್ತು  
ಐತಿಹ್ಯಗಳೆಂಬ ಪ್ರಮಾಣಗಳನ್ನು ಅಂಗೀಕರಿಸಿರು  
ತ್ತಾರೆ. ವೈಶೇಷಿಕರೂ ಬೌದ್ಧರೂ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ ಮತ್ತು

ಅನುಮಿತಿಗಳನ್ನು ಮಾತ್ರ ಒಪ್ಪುತ್ತಾರೆ. ಚಾರ್ವಾಕರು  
ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವನ್ನು ಮಾತ್ರ ಒಪ್ಪುತ್ತಾರೆ. ಸಾಂಖ್ಯರು  
ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ, ಅನುಮಾನ ಮತ್ತು ಶಾಬ್ದ ಪ್ರಮಾಣಗಳನ್ನು  
ಮಾತ್ರ ಅಂಗೀಕರಿಸುತ್ತಾರೆ.] 2. ಮನಗಂಡದ್ದು,  
ಮನವರಿಕೆಯಾದುದು, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದಿರು  
ವುದು. "ಅನುಭವಂ ವಚಸಾ ಸಖಿ ಲುಪ್ತಸಿ" ನೈಷಂ ೪-೧೦೪।  
3. ಅಭಿಪ್ರಾಯ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. 4. ಪ್ರಯತ್ನದ ಫಲ,  
ಪರಿಣಾಮ.

ಅನುಭಾವ ಅನುಭಾವ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಭಾವ, ಮಹಿಮೆ.  
ಅನುಭಾವಯತಿ — ಅನು+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್)+ಞಿಙ್ "ಅಙ್"  
(೩-೧-೧೩೪)। "ತವಾನುಭಾವೋಽಮವೇದಿ ಯನ್ಮಯಾ ನಿಗೂಢತತ್ವಂ  
ನಯತ್ವಂ ವಿಧಿಯಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೬। 2. ರಾಜನ  
ತೇಜಸ್ಸು, ಬೋಧಕ ಮತ್ತು ದಂಡಿಸುವ ಅಧಿಕಾರ  
ಪ್ರಯುಕ್ತವಾದ ತೇಜಸ್ಸು. "ಅನುಭಾವವಿಶೇಷಾತ್  
ಸೇನಾಪರಿವೃತಾವಿವ" ರಘುಂ ೧-೩೭। 3. ಅಲಂಕಾರ  
ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ ರಸಸೂಚಕವಾದ ಮತ್ತು ಮನ  
ಸ್ಸಿನ ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವ ದೃಷ್ಟಿ,  
ಭೃತ್ರಿಭಂಗ ಇತ್ಯಾದಿ ಜೇಷ್ಠ. "ಭಾವಂ ಮನೋಗತಂ ಸಾಕ್ಷಾತ್  
ಸ್ವಗತಂ ವ್ಯಜ್ಜಯಂತಿ ಯೇ। ತೇಽನುಭಾವಾ ಇತಿ ಖ್ಯಾತಾಃ"।  
4. ಹಿರಿಯರ ಬುದ್ಧಿನಿಶ್ಚಯ, ವೃದ್ಧರ ದೃಢಸಂಕಲ್ಪ.  
"ಅನುಭಾವವತಾ ಗುಣಸ್ಥಿರತ್ವಾತ್" ಕಿರಾಂ ೧೩-೧೪।  
"ಅನುಭಾವಃ ಪ್ರಭಾವೇ ಸ್ಯಾನ್ನಿಶ್ಚಯೇ ಭಾವಸೂಚನೇ" ಮೇದಿಂ।

ಅನುಭಾವಕ ಅನುಭಾವಕ (ವಿಂ) ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವ,  
ಬೋಧಿಸುವ. ಅನುಭಾವಯತಿ ಬೋಧಯತಿ — ಅನು+ಭೂ  
(ಸತ್ತಾಯಾಮ್)+ಞಿಙ್ "ಞ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಅನುಭಾವನ ಅನುಭಾವನ (ನಂ) ಅಭಿನಯ, ಅನುಭವ  
ವನ್ನು ಹೊರಪಡಿಸುವಿಕೆ, ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ತಿಳಿಯ  
ಪಡಿಸುವಿಕೆ.

ಅನುಭಾವಿನ್ ಅನುಭಾವಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಮನೋಗತ  
ವನ್ನು ಜೇಷ್ಠಗಳಿಂದ ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವ. 2. ಸಾಕ್ಷಾ  
ತ್ಕಾರವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಅನುಭಾವಯತಿ — ಅನು+ಭೂ  
(ಸತ್ತಾಯಾಮ್)+ಞಿಙ್ "ಞಿಙಿಃ" (೩-೨-೭೮)। 3. ಕನಿಷ್ಠ,  
ಕಿರಿಯನು. ಅನು ಪಶ್ಚಾತ್ ಭವತಿ। 4. ಪ್ರಭಾವಶಾಲಿ,  
ಮಹಿಮೆಯುಳ್ಳ. 5. ದೃಢಸಂಕಲ್ಪವುಳ್ಳ. ಅನುಭಾವಿಃ-  
ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪)। 6. ಸಾಕ್ಷಿ,  
ಎದುರಿಗೆ ನೋಡಿದವನು. ಅನುಭವಯತಿ — ಅನು+ಭೂ  
"ಞಿಙಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)। "ಅನುಭಾವಿ ತು ಯಃ ಕಶ್ಚಿತ್  
ಕುರ್ಯಾತ್ಸಾಧ್ಯಂ ವಿವಾದಿನಾಮ್" ಮನುಂ ೮-೬೯।



ಅನುಭಾಷಣ ಅನುಭಾಷಣ (ನಂ) ಬಳಕೆ ಮಾಡುವುದು, ಒಬ್ಬರ ಭಾಷಣಾನಂತರ ಭಾಷಣಮಾಡುವುದು.

ಅನು ಪದಾತ್ ಭಾಷಣಮ್ |

ಅನುಭೂ ಅನುಭೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನುಭವ, ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ಅನು+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ರಿಪ್" (ವಾಂ 3-3-94) | (ವಿಂ) 2. ಅನುಭವವುಳ್ಳ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯುಳ್ಳ. ಕತಂ "ಕ್ರಿಪ್" (3-2-96) |

ಅನುಭೂತ ಅನುಭೂತ (ವಿಂ) 1. ಅನಂತರ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅನು+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ರ:" (3-4-92) | 2. ಅನುಭವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ರ:" (3-2-102) |

ಅನುಭೂತಿ ಅನುಭೂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನುಭವ, ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ಅನು+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ರಿನ್" (3-3-94) | [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಅನುಭವ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಅನುಮತ ಅನುಮತ (ವಿಂ) 1. ಒಪ್ಪಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮ್ಮತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅನುಮೋದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಕ್ರ:" (3-2-102) | "ಸಮ್ಯಗ್ವಿನಿಯಾನುಮತೋ ಗೃಹಾಯ" ರಘು 4-10 | 2. ಅಪ್ಪಣೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಮಲೇಷ್ವಲಿಖಿತೋ-ನುಮತ: ಪುರೋಧಸಾ" ಕಿರಾಂ 1-22 |

ಅನುಮತಿ ಅನುಮತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಮ್ಮತಿ, ಅನುಮೋದನೆ. 2. ಅಪ್ಪಣೆ, ಅಜ್ಞೆ. ಅನು+ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಕ್ರಿನ್" (3-3-94) | "ಅನುಮತ್ಯಾ ಮುನಿಮುಖ್ಯಸಂಮತೇ ಚ" ಯಾದಂ 14-94 | 3. (ಒಂದು ಕಲೆಯು ಕಡಿಮೆಯಾದ ಚಂದ್ರನುಳ್ಳ) ಶುಕ್ಲ ಚತುರ್ದಶಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪೂರ್ಣಿಮಾ ತಿಥಿ. ಅನುಮನ್ಯತೇ ಕಲಾಹೀನತ್ವೇಽಪಿ ಪೂರ್ಣಿಮಾವಿಹಿತಯಾಗಾದಿಕರಣಾಯ ಅನುಜಾಯತೇಽಸ್ಯಾಮ್ - ಅನು+ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಕ್ರಿಚ್" (3-3-104) |

ಅನುಮತಿಪತ್ರ ಅನುಮತಿಪತ್ರ (ನಂ) ಅನುಮೋದನೆಯ ಕಾಗದ, ಒಪ್ಪಿತದ ಕಾಗದ, ಕರಾರುಪತ್ರ.

ಅನುಮನನ ಅನುಮನನ (ನಂ) ಅನುಮೋದನೆ, ಸಮ್ಮತಿ, ಒಪ್ಪಿಗೆ.

ಅನುಮನ್ತು ಅನುಮಂತು (ವಿಂ) 1. ಅನುಮೋದಿಸುವ, ಸಮ್ಮತಿಸುವ, ಒಪ್ಪಿಗೆಯಾಯುವ. 2. ಅಪ್ಪಣೆ ಮಾಡುವ. ಅನು+ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) "ತೃಚ್" | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-4) | -ಮನ್ತ್ರಿ-ಮನ್ತ್ರಿ.

ಅನುಮನ್ತ್ರಣ ಅನುಮಂತ್ರಣ (ನಂ) ಮಂತ್ರೋಚ್ಚಾರಣ ಪೂರ್ವಕವಾದ ಸಂಸ್ಕಾರ.

ಅನುಮರಣ ಅನುಮರಣ (ನಂ) 1. ಪತಿಯು ದೇಶಾಂತರದಲ್ಲಿ ಮೃತಿಯಾದ ವಾರ್ತೆಯನ್ನು ಕೇಳಿ ಪತ್ನಿಯು ಆತನ ಪಾದುಕೆಗಳೊಡನೆ ಸೇರಿ ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗಮಾಡುವುದು. [ಇಂತಹ ಮರಣ ಕ್ಷತ್ರಿಯರಿಗೆ ಮಾತ್ರ. ಬ್ರಾಹ್ಮಣರಿಗೆ ಸಹಗಮನದ ವಿಧಿಯಿರುವುದು.] 2. ಸಹಗಮನ, ಪತಿಯ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಸಂಸ್ಕಾರ ಹೊಂದುವುದು.

ಅನುಮಾ ಅನುಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನುಮಾನ, ತರ್ಕ, ಪರಾಮರ್ಶದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಜ್ಞಾನ, ಊಹೆ. ಅನು+ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ಅಡ್" (3-3-106) | [ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾದಿ ನಾಲ್ಕು ಜ್ಞಾನಗಳಲ್ಲೊಂದು. ವಿವರಕ್ಕೆ "ಅನುಮಿತಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಅನುಮಾತು ಅನುಮಾತು (ವಿಂ) ತರ್ಕಿಸುವ, ಊಹಿಸುವ. ಅನು+ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ತೃಚ್" (3-1-133) | "ನ ಹಿ ಕರಿಣಿ ದೃಷ್ಟೇ ಚಿತ್ತಕಾರೇಣ ತಮನುಮಿಮತೇಽನುಮಾತಾರ:" |

ಅನುಮಾನ ಅನುಮಾನ (ನಂ) 1. ಅನುಮಿತಿಗೆ ಕಾರಣ, ಊಹೆಗೆ ಕಾರಣ, ವ್ಯಾಪ್ಯವಸ್ತುವೊಂದರ ಜ್ಞಾನದಿಂದ ವ್ಯಾಪಕವಸ್ತುವಿದೆಯೆಂಬ ನಿಶ್ಚಯ. ಅನು+ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-110) | [ವ್ಯಾಪ್ಯವಾದ ಧೂಮವ್ಯಾಪಕವಾದ ವಹ್ನಿ (ಬೆಂಕಿ) ಇವೆರಡನ್ನೂ ಮಹಾನಸದಲ್ಲಿ ನೋಡಿದವನಿಗೆ ಪರ್ವತಾದಿಗಳಲ್ಲೂ ಧೂಮದರ್ಶನದಿಂದ "ವಹ್ನಿಮಾನ್ ಪವಂತ: ಧೂಮಾತ್" ಎಂಬ ನಿಶ್ಚಯವುಂಟಾಗುವುದು. ಇದು ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾದಿ ನಾಲ್ಕು ವಿಧಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ಅನುಮಿತಿ ಜ್ಞಾನವುಂಟಾಗಲು ಕಾರಣ.] 2. ತರ್ಕ, ಊಹೆ. ಮಾತೇ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114) | 3. ಅನುಮಿತಿ ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ಧೂಮ ಮೊದಲಾದುದು. ಅನುಮೀಯತೇನ - ಅನು+ಮಾಡ್ ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-110) | 4. ಯುಕ್ತಿ. "ಅನುಮಾನೇನ ನ ಚಾಗಮ: ಕತ:" ಕಿರಾಂ 2-28 | 5. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಸಾಮ್ಯ. "ಆತ್ಮನೋ ಹೃದಯಾನುಮಾನೇನ ಪ್ರೇಕ್ಷತೇ" ಶಾಕ್ರಂ 4 |

ಅನುಮಾಪಕ ಅನುಮಾಪಕ (ವಿಂ) ತರ್ಕಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ, ಅನುಮಿತಿ ಜ್ಞಾನವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಅನುಮಾಪಯತಿ - ಅನು+ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ)+ಞಿಚ್ "ಞ್ಚಲ್" (3-1-133) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ಮಾಪಿಕಾ-ಮಾಪಿಕಾ.

ಅನುಮಾಸ ಅನುಮಾಸ (ಅವ್ಯಂ) ಪ್ರತಿನಾಸದಲ್ಲೂ. ವೀಕ್ಷಾಯಾಮವ್ಯಯಿಂ |

ಅನುಮಿತ ಅನುಮಿತ (ವಿಂ) ಅನುಮಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಊಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ಕ್ರ:" (3-2-102) |



ಅನುಮಿತಿ ಅನುಮಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪರಾಮರ್ಶದಿಂದಂಟಾ ಗುವ ಜ್ಞಾನ, ಅನುಭವದ ನಾಲ್ಕು ಭೇದಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಅನು+ಮಾ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। "ಯತ್ರ ಭೂಮಸ್ತತ್ರಾಗ್ನಿಃ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಧೂಮವಿದ್ದ ಕಡೆ ಅಗ್ನಿಯೂ ಇರುವುದೆಂಬ ಇವೆರಡರ ಸಾಹಚರ್ಯಕ್ಕೆ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯೆಂದು ಹೆಸರು. ಇಂತಹ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪಕ್ಷಧರ್ಮತಾ (ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಉಹಿಸಲು ಕಾರಣವಾದ ಧೂಮವು ಪರ್ವತಾದಿಗಳಲ್ಲಿರುವಿಕೆಯು) ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಪರಾಮರ್ಶ ವೆಂದು ಹೆಸರು.

ಅನುಮಿತಸಾ ಅನುಮಿತ್ಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಹಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಅನುಮಾತುಮಿಚ್ಛಾ—ಅನು+ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ)+ಸನ್ ಭಾವೇ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨)।

ಅನುಮೃತ ಅನುಮೃತ (ವಿಂ) ಮೃತಿಯಾದದ, ದುಃಖ ದಿಂದ ಮರಣಹೊಂದಿದ.

ಅನುಮೇಯ ಅನುಮೇಯ (ವಿಂ) 1. ಉಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು-ಮೀಯತೇಷು—ಅನು+ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಯತ್" (೩-೧-೯೭)। 2. ಉಹಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. "ಏತಾವತಾ ನನ್ವನುಮೇಯಶೋಭಿ ಕಾಂಚೀಗುಣಸ್ಥಾನಮನಿಂದಿತಾಯಾಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೩೭। 3. ಉಹಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ.

ಅನುಮೋದ ಅನುಮೋದ (ಪುಂ) ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಮ್ಮತಿ. ಅನು+ಮುದ (ಹರ್ಷೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)।

ಅನುಮೋದನ ಅನುಮೋದನ (ನಂ) 1. ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಮ್ಮತಿ. ಅನು+ಮುದ (ಹರ್ಷೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಅನುಮೋದನ-ಜಾತಮೌಲಿಕಮ್ಪಃ" ಯಾದಂ ೧೫-೭೭। (ವಿಂ) 2. ಒಪ್ಪುವ, ಸಮ್ಮತಿಸುವ. ಅನು+ಮುದ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)।

ಅನುಮೋದಿತ ಅನುಮೋದಿತ (ವಿಂ) ಒಪ್ಪಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮ್ಮತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಮುದ (ಹರ್ಷೇ) "ಕ್" (೩-೨-೧೦೨)। "ಶ್ರುಯಂತೆ ಪರಿಣಿತಾಸ್ತಾಃ ಪಿತೃಭಿಃಚಾನುಮೋದಿತಾಃ" ಶಾಕುಂ ೩-೨೦।

ಅನುಯಾತ ಅನುಯಾತ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂಬಾಲಿಸಿ ಹೋಗಿರುವ, ಅನುಸರಿಸಿ ಹೋಗಿರುವ. ಅನು+ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಕ್" (೩-೪-೭೨)। 2. ಹಿಂಬಾಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅನುಸರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಯಾ ಕರ್ಮಂ "ಕ್" (೩-೨-೧೦೨)। "ಆಕಾಶ-ಗಜ್ಜಾರತಿರಪ್ಸರೋಭಿವೃತೋ ಮಸ್ತವಾನನುಯಾತಲಿಲಃ" ರಘುಂ ೧೬-೭೧।

ಅನುಯಾತ್ ಅನುಯಾತ್ಯ (ವಿಂ) ಹಿಂಬಾಲಕ, ಹಿಂದೆ ನಡೆಯುವ, ಅನುಸರಿಸಿ ಹೋಗುವ. ಅನು+ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ತುಕ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಅನುಯಾತ್ರ ಅನುಯಾತ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಭೃತ್ಯವರ್ಗ, ಅನುಯಾಯಿವರ್ಗ, ಪರಿವಾರ. ಅನುಗತಾ ಯಾತ್ರಾ ಯೇನ। "ತ್ಯಕ್ತಭೋಗಸ್ಯ ಮೇ ರಾಜನ್ ವನೇ ವನ್ಯೇನ ಜೀವತಃ। ಕಿಂ ಕಾರ್ಯ-ಮನುಯಾತ್ರೇಣ" ರಾಮಾಂ। (ವಿಂ) 2. ಹಿಂಬಾಲಕ, ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯುವ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಯಾತ್ರೆಯಲ್ಲಿ. ಯಾತ್ರಾಯಾಮ್—ವಿಭಂ ಅವ್ಯಯಿಂ। 4. ಯಾತ್ರೆಯ ಅನಂತರದಲ್ಲಿ. ಯಾತ್ರಾಯಾಃ ಪಶ್ಚಾತ್—ಅವ್ಯಯಿಂ (೨-೧-೬)।

ಅನುಯಾತ್ರಾ ಅನುಯಾತ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನಂತರದ ಯಾತ್ರೆ, ಮರುಪ್ರಯಾಣ. ಅನುಗತಾ ಯಾತ್ರಾ।

ಅನುಯಾಯಿನ್ ಅನುಯಾಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಸೇವಕ, ಪರಿಜನ, ಹಿಂಬಾಲಕ, ಅನುಚರ. ಅನು ಪಶ್ಚಾತ್ ಯಾತಿ ಗಚ್ಛತಿ—ಅನು+ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೭೮)। "ನ್ಯಘೇವಿ ಶೋಷಾಪ್ಯನುಯಾಯಿವರ್ಗಃ" ರಘುಂ ೨-೪। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। —ಯಾಯಿನಿ—ಯಾಯಿನೀ. (ವಿಂ) 2. ಸದೃಶ, ಸಮಾನವಾದ. 3. ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯುವ, ಹಿಂಬಾಲಿಸಿ ಹೋಗುವ.

ಅನುಯಾಸ್ಯತ್ ಅನುಯಾಸ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಅನುಸರಿಸಿ ಹೋಗಿ ಲಿರುವ, ಹಿಂಬಾಲಿಸಲಿರುವ. ಅನು+ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೇ) ಲೃಟಃ "ಶತ್" (೩-೩-೧೪)। "ಅನುಯಾಸ್ಯನ್ಮುನಿತನಯಾಂ ಸಹಮಾ ವಿನಯೇನ ವಾರಿತಪ್ರಸರಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೨೫।

ಅನುಯುಕ್ತ ಅನುಯುಕ್ತ (ವಿಂ) ಪ್ರಶ್ನೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ಕ್" (೩-೨-೧೦೨)। "ವಯಸ್ಯಯಾಽಭಾವವಿದಾನುಯುಕ್ತಾ" ಯಾದಂ ೨-೧೭।

ಅನುಯೋಕ್ತ ಅನುಯೋಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಕೇಳುವವನು, ಪ್ರಶ್ನೆ ಮಾಡುವವನು. 2. ಸಂಬಳ ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಪಾಠಹೇಳುವವನು. ಅನು+ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ತುಕ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। —ಯೋಕ್ತೃ-ಯೋಕ್ತೃಃ.

ಅನುಯೋಗ ಅನುಯೋಗ (ಪುಂ) ಪ್ರಶ್ನೆ, ಕೇಳಿಕೆ. ಅನು+ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ವಾರ್ತಾನುಯೋಗ-ಮಧುರಾಕ್ಷರಯಾ ಚ ವಾಚಾ" ರಘುಂ ೧೩-೭೧।

ಅನುಯೋಗಕೃತ್ ಅನುಯೋಗಕೃತ್ (ಪುಂ) 1. ಆಚಾರ್ಯ, ಉಪಾಧ್ಯಾಯ, ಪ್ರಶ್ನೆಯ ವಿಷಯದ ಸಂಶಯವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವವನು. ಅನುಯೋಗಂ ಪ್ರದನವಿಷಯಸಂಶಯಂ ಕೃಂತತಿ—ಕೃತೀ (ಛೇದನೆ) "ಕ್ತಿಪ್" (೩-೨-೭೬)। (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಶ್ನೆಮಾಡುವ, ಕೇಳುವ. ಅನುಯೋಗಂ ಕರೋತಿ—ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣೇ) "ಕ್ತಿಪ್" (೩-೨-೭೬)।



ಅನುಯೋಗಿನ್ ಅನುಯೋಗಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತ್ಯಮಾಡು ವವನು. 2. ಸಂಬಂಧವುಳ್ಳ. "ಮೂಲಂ ಪಟವತ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಘಟವು ಪ್ರತಿಯೋಗಿ. ಭೂತಲವು ಅನುಯೋಗಿ.

ಅನುಯೋಜನ ಅನುಯೋಜನ (ನಂ) 1. ಪ್ರತ್ಯ, ಕೇಳಿಕೆ. ಅನು+ಯುಜಿರ್ (ಯೋ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ಅನಂತರ ಸೇರಿಸುವಿಕೆ. ಅನು ಪಶ್ಚಾತ್ ಯೋಜನಮ್.

ಅನುಯೋಜ್ಯ ಅನುಯೋಜ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸೇವಕ, ಎಫೇಯ. "ವಾಸವಾನುಯೋಜ್ಯೋ ದುಷ್ಯಂತಃ ಪ್ರಣಮತಿ" ಶಾಕುಂ ೭. 2. ಪ್ರತ್ಯಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ.

ಅನುರಕ್ತ ಅನುರಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಅನುರಾಗದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಅಪಿ ಕೃಷ್ಣಮನುರಕ್ತಾಃ ಪ್ರಕೃತಯಃ" ಮದ್ರಾಂ 1. 2. ಅನುಕೂಲವಾದ. "ಗುಣಾನುರಕ್ತಾಮನುರಕ್ತಸಾಧನಃ" ಕಿರಾಂ 1-31. 3. ಕೆಂಪಾಗಿರುವ, ಕೆಂಪಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಣ್ಣ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅನುರಕ್ತಿ ಅನುರಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನುರಾಗ, ಪ್ರೀತಿ, ಪ್ರೇಮ. ಅನು+ರಜ್ಜ (ರಾಜೆ) "ಕ್ಲಿನ್" (3-3-94).

ಅನುರಜ್ಜನ ಅನುರಂಜನ (ನಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವಿಕೆ. ಅನು+ರಜ್ಜ (ರಾಜೆ) ಖೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). "ಯುಕ್ತಃ ಪ್ರಜಾನಾಮನುರಜ್ಜನೇ ಸ್ಯಾಃ" ತಂ ರಾಂ 1-11. (ವಿಂ) 2. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವ. ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134).

ಅನುರಜ್ಜಿತ ಅನುರಂಜಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರೀತಿ ಹೊರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ರಜ್ಜ (ರಾಜೆ) + ಣಿನ್ "ಕಃ" (3-2-102). 2. ಪುನಃ ಬಣ್ಣ ಹಾಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅನುರಣನ ಅನುರಣನ (ನಂ) 1. ಧ್ವನಿ, ಅನುಸರಿಸಿದ ಶಬ್ದ, ಗಂಟೆಯ ಶಬ್ದದಿಂದಂಟಾದ ನಾದಸಂತಾನ. 2. ವ್ಯಂಜನಾರೂಪವಾದ ಶಬ್ದದ ಒಂದು ಶಕ್ತಿ. ಅನು+ರಣ (ಶಬ್ದ) ಖೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 3. ಪ್ರತಿ ಧ್ವನಿ.

ಅನುರತ ಅನುರತ (ವಿಂ) ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ, ಅನುರಾಗವುಳ್ಳ. ಅನು+ರಮ (ಶ್ರೇಡಾಯಾಮ್) "ಕಃ" (3-4-92). "ವರ್ಮಾನುರತಮರ್ಯಶಃ ಶಾಂತಂ ಸುನೃತಮಾಪಿಣಮ್" ಭಾಂ.

ಅನುರತಿ ಅನುರತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನುರಾಗ, ಪ್ರೀತಿ. ಅನು+ರಮ (ಶ್ರೇಡಾಯಾಮ್) "ಕ್ಲಿನ್" (3-3-94).

ಅನುರಸ ಅನುರಸ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರತಿಧ್ವನಿ, ಎದುರು ಶಬ್ದ. (ವಿಂ) 2. ರಸವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿದ. ರಸಮನುಷತಃ.

ಅನುರಸಿತ ಅನುರಸಿತ (ನಂ) 1. ಪ್ರತಿಧ್ವನಿ, ಎದುರು ಧ್ವನಿ. (ವಿಂ) 2. ಅನುಸರಿಸಿ ಶಬ್ದಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ರದ್ಧಿವೇನುರಸಿತಸ್ಯ ಪುಷ್ಕರಸ್ಯ" ಮಾಲಂ 1-21.

ಅನುರಾಗ ಅನುರಾಗ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರೀತಿ, ಸ್ನೇಹ. ಅನು+ರಜ್ಜ (ರಾಜೆ) "ಘಬ್" (3-3-114). "ಪ್ರಿಯಾನುರಾಗಸ್ಯ ಮನಃಸಮುಕ್ತತಃ" ರಘುಂ 3-10. 2. ಆರುಣ್ಯ, ಕೆಂಪು. "ಅನುರಾಗವಂತಮಪಿ ಲೋಚನಯೋಃ" ಮಾಧಂ 1-10. 3. ಆಸಕ್ತಿ, ಶ್ರದ್ಧೆ.

ಅನುರಾಗಿನ್ ಅನುರಾಗಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ, ವಿಶ್ವಾಸವುಳ್ಳ, ಸ್ನೇಹವುಳ್ಳ. 2. ಶ್ರದ್ಧೆಯುಳ್ಳ, ಆಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳ. ಅನುರಾಗ "ಇನಿಃ" (4-2-114). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಹೀಪ್" (4-1-4). -ರಾಗಿಣಿ-ರಾಗಿಣೀ. "ವಶ್ಯಾಂವಾ-ನನುರಾಗಿಣಿಮ್" ಸಾಂ ದಂ.

ಅನುರಾತ್ರ ಅನುರಾತ್ರ (ವಿಂ) 1. ರಾತ್ರಿಯನ್ನು ಅನುಸರಿಸುವ. ಅನುಗತೋ ರಾತ್ರಿಮ್ "ಅಚ್" (4-4-46). (ಅವ್ಯಂ) 2. ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ. 3. ಪ್ರತಿ ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿಯೂ. ವೀಪ್ಸಾಯಾಮ್ ಅವ್ಯಯಿಂ.

ಅನುರಾಧಾ ಅನುರಾಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನುರಾಧಾ ನಕ್ಷತ್ರ, ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಹದಿನೇಳನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ. ಅನುಗತಾ ರಾಧಾಂ ವಿಶಾಖಾಮ್. ಅನುರಾಧಾ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು ಧನಿಕನಾಗಿಯೂ ಪರದೇಶದಲ್ಲಿ ವಾಸ ಮಾಡತಕ್ಕವನೂ ಹಸಿವನ್ನು ತಡೆಯದವನೂ ಸಂಚಾರ ಸ್ವಭಾವದವನೂ ಆಗುತ್ತಾನೆ. "ಆಡ್ಯೋ ವಿದೇಶವಾಸೀ ಕ್ಷುಭಾಲರತನೋನುರಾಧಾಸು" ಬೃಹಂ.

ಅನುರೂಪ ಅನುರೂಪ (ವಿಂ) 1. ಸದೃಶವಾದ, ಸಂಹೋಲುವ, ಸಂಸಮಾನವಾದ. 2. ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಒಪ್ಪುವ, ಸರಿಯಾದ. ಅನುಗತೋ ರೂಪಮ್. "ಅಪಾನುರೂಪಾಮಿ-ನಿವೇಶತೋಪಿಣಾ" ಕುಮಾಂ 4-9.

ಅನುರೋಧ ಅನುರೋಧ (ಪುಂ) 1. ಅನುಸರಣ, ಅನುವರ್ತನ, ಹೊಂದಿಕೊಂಡು ನಡೆಯುವಿಕೆ, ಅನುಕೂಲವಾಗಿರುವುದು. ಅನು+ರೂಢಿರ್ (ಆವರಣ) "ಘಬ್" (3-3-114). "ಇತ್ಯಾಧಾರಾನುರೋಧಾತ್ ತ್ರಿಪುರವಿಜಯಿನಃ ಪಾತು ಬೋ ದುಃಖನೃತ್ಯಮ್" ಮದ್ರಾಂ 1-2. 2. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವಿಕೆ, ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸುವಿಕೆ. 3. ಇಷ್ಟವನ್ನು ಪಡೆಯುವ ಆಸೆ. ಖೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). -ರೋಧನಮ್-ರೋಧನಂ.

ಅನುರೋಧಿನ್ ಅನುರೋಧಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಅನುವರ್ತಿಯಾದ, ಅನುಸರಿಸುವ. 2. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವ. ಅನು+ರೂಢಿರ್ (ಆವರಣ) "ಣಿಃ" (3-1-134). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಹೀಪ್" (4-1-4). -ರೋಧಿನಿ-ರೋಧಿನೀ.



ಅನುಲಾಪ ಅನುಲಾಪ (ಪುಂ) ಪುನಃ ಮಾತನಾಡುವುದು, ಪುನರುಕ್ತಿ. ಅನು+ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಃ ವಾಚಿ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)।

ಅನುಲಿಪ್ತ ಅನುಲಿಪ್ತ (ವಿಂ) ಗಂಧ ಮೊದಲಾದುವು ಗಳಿಂದ ಪೂಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಅನು+ಲಿಪ (ಉಪದೇಹೇ) "ಃ" (೩-೩-೧೦೨)।

ಅನುಲೇಪ ಅನುಲೇಪ (ಪುಂ) 1. ಲೇಪನ ಮಾಡುವಿಕೆ, ಬಳಿಯುವಿಕೆ, ಪೂಸುವುದು, ಹಚ್ಚುವುದು. ಅನು-ಲಿಪ್ಯತೇ—ಅನು+ಲಿಪ (ಉಪದೇಹೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಗಂಧ, ಚಂದನ. 3. ಮುಲಾಮು. ಅನುಲಿಪ್ಯತೇ ಅನೇನ—ಕರಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)।

ಅನುಲೇಪಕ ಅನುಲೇಪಕ (ವಿಂ) ಹಚ್ಚುವ, ಬಳಿಯುವ, ಪೂಸುವ. ಅನುಲಿಪ್ಯತಿ—ಅನು+ಲಿಪ (ಉಪದೇಹೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪)। —ಲೇಪಿಕಾ—ಲೇಪಿಕಾ.

ಅನುಲೇಪನ ಅನುಲೇಪನ (ನಂ) 1. ಹಚ್ಚುವುದು, ಪೂಸುವುದು, ಬಳಿಯುವುದು. ಅನು+ಲಿಪ (ಉಪದೇಹೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಗಂಧ, ಚಂದನ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ಅನುಲೇಪನಾನಿ ಕುಸುಮಾನ್ಯ-ಬಲಾಃ" ಮಾಘಂ ೧-೨೪।

ಅನುಲೇಪಿನ್ ಅನುಲೇಪಿನ್ (ವಿಂ) ಹಚ್ಚುವ, ಬಳಿಯುವ, ಪೂಸುವ. ಅನು+ಲಿಪ (ಉಪದೇಹೇ) "ಞಿಃ" (೩-೩-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್"। —ಲೇಪಿನಿ—ಲೇಪಿನಿ.

ಅನುಲೋಮ ಅನುಲೋಮ (ವಿಂ) 1. ಯಥಾಕ್ರಮವಾದ, ಅನುಕೂಲವಾದ, ನಿಯಮಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಾದ. ಅನುಗತಂ ಲೋಮ "ಅಞ್" (೫-೪-೭೫)। (ಅವ್ಯಂ) 2. ಅನುಕೂಲವಾಗಿ, ನಿಯಮಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ, ಕ್ರಮವಾಗಿ. ಲೋಮ ಅನತಿಕ್ರಮ್ಯ।

ಅನುಲೋಮಜ ಅನುಲೋಮಜ (ಪುಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣಜಾತಿಯ ಪುರುಷನಿಗೆ ಮುಂದಿನಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು, ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾದಿ ಜಾತಿಯವನಿಗೆ ಕ್ಷತ್ರಿಯಾದಿ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಿಶ್ರ ಜಾತಿಯವನು. [ಬ್ರಾಹ್ಮಣನು ಮದುವೆಯಾದ ಕ್ಷತ್ರಿಯ, ವೈಶ್ಯ ಮತ್ತು ಕೂದ್ರ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲೂ, ಕ್ಷತ್ರಿಯನು ಮದುವೆಯಾದ ವೈಶ್ಯ ಮತ್ತು ಕೂದ್ರ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲೂ ವೈಶ್ಯನು ಮದುವೆಯಾದ ಕೂದ್ರ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲೂ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಿಶ್ರ ಜಾತಿಯವನು ಅನುಲೋಮಜನು.]

ಅನುಲೋಮಾ ಅನುಲೋಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾದಿ ಜಾತಿಯವನನ್ನು ಮದುವೆಯಾದ ಕ್ಷತ್ರಿಯಾದಿ ಮುಂದಿನಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು. "ಸಕಾಮಾಸ್ವನುಲೋಮಾಸು ನ ದೋಷಸ್ತ್ವನ್ಯಥಾ ದಮಃ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೨೮೮।

ಅನುಲೋಮಾರ್ಥ ಅನುಲೋಮಾರ್ಥ (ವಿಂ) ಅನುಕೂಲವಾದ ಅರ್ಥವುಳ್ಳ, ಅನುಕೂಲವಾದ ಅಭಿಪ್ರಾಯವುಳ್ಳ. ಅನುಲೋಮಃ ಅನುಕೂಲೋರ್ಥೋ ಯಸ್ಯ। "ಜಡಾನಪ್ಯನುಲೋಮಾರ್ಥಿನ್ ಪ್ರವಾಚಃ ಕೃತಿರ್ನಾ ಗಿರಃ" ಮಾಘಂ ೨-೨೫।

ಅನುವಂಶ ಅನುವಂಶ (ಪುಂ) 1. ವಂಶಾವಳಿಯ ಪಟ್ಟಿ, ಪರಂಪರೆಯ ಸೂಚಿ. ಅನುಸೃತೋ ವಂಶಮ್। (ಅವ್ಯಂ) 2. ವಂಶದಲ್ಲಿ. ವಂಶೇ—ವಿಷಂ ಅವ್ಯಯಿಂ।

ಅನುವಕ್ತೃ ಅನುವಕ್ತೃ (ವಿಂ) ಅನುಸರಿಸಿ ಹೇಳುವ, ಗುರುವು ಹೇಳಿದಂತೆ ಹೇಳುವ. ಅನು ಅನುರೂಪಂ ವಕ್ತಿ ವದತಿ—ಅನು+ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೇ) "ತುಚ್" (೩-೩-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫)। —ವಕ್ತೃ—ವಕ್ತೃ.

ಅನುವಕ್ತೃ ಅನುವಕ್ತೃ (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಡೊಂಕಾದ, ಹೆಚ್ಚು ಬಗ್ಗಿರುವ. 2. ಹೆಚ್ಚು ವಕ್ರವಾದ, ಮುಂದಿನ ರಾಶಿಯಿಂದ ಹಿಂದಿನ ರಾಶಿಗೆ ಕ್ರಮತಪ್ಪಿಬರುವ (ಗ್ರಹ).

ಅನುವಚನ ಅನುವಚನ (ನಂ) ಅನುಸರಿಸಿ ಹೇಳುವುದು, ಗುರುವು ಹೇಳಿದಂತೆ ಹೇಳುವುದು.

ಅನುವರ್ತನ ಅನುವರ್ತನ (ನಂ) 1. ಅನುಸರಿಸುವಿಕೆ. 2. ಹಿಂಬಾಲಿಸುವಿಕೆ. 3. ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಹಿಂದಿನ ಸೂತ್ರಗಳಿಂದ ಬೇಕಾದ ಪದಗಳನ್ನು ಮುಂದಿನ ಸೂತ್ರಗಳಿಗೆ (ಸೂತ್ರಾರ್ಥವು ಪೂರ್ಣವಾಗುವುದಕ್ಕಾಗಿ) ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಅನು+ವೃತ್ತ (ವರ್ತನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅನುವರ್ತಿನ್ ಅನುವರ್ತಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂದೆ ನಡೆಯುವ. 2. ಹಿಂಬಾಲಿಸುವ, ಅನುಸರಿಸುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫)। —ವರ್ತಿನಿ—ವರ್ತಿನಿ. "ಸಸರೀರಾ ಗತಾ ಸ್ವಗಂ ಭರ್ತಾರಮನುವರ್ತಿನಿ" ರಾಮಾಂ।

ಅನುವಾಕ ಅನುವಾಕ (ಪುಂ) 1. ವೇದದ ಭಾಗ, ವೇದದ ಅಧ್ಯಾಯ. 2. ವೇದಪಠನ. 3. (ಗಾನವಿಲ್ಲದ) ಮುಗ್ಧೇದದ ಅಥವಾ ಯಜುರ್ವೇದದ ಸಮೂಹ.

ಅನುವಾಕ್ಯಾ ಅನುವಾಕ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮತ್ತಿಕ್ಕುಗಳು (ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಹವಿಸ್ಸನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಲು) ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಕರೆಯುವ ಮಂತ್ರ (ಮಕ್ಕು). ಅನುಚ್ಯತೇ—ಅನು+ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೇ) "ಞ್" (೩-೩-೧೨೪)। "ಅದ್ವಿತಾಮನಪಶಬ್ದಮುಚ್ಚಕೇ-ವಾಕ್ಯಲಕ್ಷಣವಿದೋಽನುವಾಕ್ಯಾ" ಮಾಘಂ ೧೪-೨೦।



ಅನುವಾಚನ ಅನುವಾಚನ (ನಂ) 1. (ಗುರುವು) ತಾನು ಹೇಳಿದಂತೆ ಶಿಷ್ಯನಿಂದ ಹೇಳಿಸುವುದು. 2. (ಯಜ್ಞದಲ್ಲಿ) ಅಧ್ಯಯುಗಗಳು ಹೋತೃಗಳಿಂದ ಮಂತ್ರಗಳನ್ನು ಹೇಳಿಸುವುದು. ಅನು+ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅನುವಾತ ಅನುವಾತ (ಪ್ರಂ) ಶಿಷ್ಯನ ಕಡೆಯಿಂದ ಗುರುವಿನ ಕಡೆಗೆ ಬೀಸುವ ಗಾಳಿ, ಎದುರಾಗಿ ಬೀಸುವ ಗಾಳಿ. ಅನುಗತೌ ವಾತಃ। "ಪ್ರತಿವಾತೇಽನುವಾತೇ ಚ ನಾಸೀತ ಗುಣಾ ಸಹ" ಮನುಂ ೨-೨೦೩।

ಅನುವಾದ ಅನುವಾದ (ಪ್ರಂ) 1. ಹೇಳಿದ ವಿಷಯವನ್ನು ಮತ್ತೆ ಹೇಳುವುದು. ಅನು+ವದ "ವತ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಗ್ರಂಥದ ಪರಿವರ್ತನೆ, ಭಾಷಾಂತರ. 3. ಅರ್ಥವಾದದ ಒಂದು ಭೇದ, ಪ್ರಮಾಣಾಂತರದಿಂದ ಸಿದ್ಧವಾದ ವಿಷಯವನ್ನು ಪುನಃ ಹೇಳುವುದು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಅರ್ಥವಾದ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಅನುವಾದಕ ಅನುವಾದಕ (ವಿಂ) ಅನುವಾದಮಾಡುವ, ವಿವರಿಸುವ, ಭಾಷಾಂತರಮಾಡುವ. ಅನುವದತಿ - ಅನು+ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಞ್" (೩-೩-೧೩೩)।

ಅನುವಾದಿನ್ ಅನುವಾದಿನ್ (ವಿಂ) ಅನುವಾದಮಾಡುವ, ಅನುವಾದಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಭಾಷಾಂತರಮಾಡುವ. ಅನುವದತಿ - ಅನು+ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಞಿನ್" (೩-೨-೭೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೀಪ್"। -ವಾದಿನಿ -ವಾದಿನೀ.

ಅನುವಾದ್ಯ ಅನುವಾದ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅನುವಾದಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ, ಭಾಷಾಂತರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ವಿವರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಉದ್ದೇಶ್ಯ. ಅನು+ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಞ್" (೩-೧-೧೨೪)। ಒಂದು ವಿಷಯವನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಮತ್ತೊಂದನ್ನು ವಿಧಿಸಬೇಕು. "ಅದೇಙ್ ಗುಣಃ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಅಕಾರ, ಏಕಾರ ಮತ್ತು ಓಕಾರಗಳನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಗುಣಸಂಜ್ಞೆಯು ವಿಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. "ಅನುವಾದಮನುಕ್ತವೇ ನ ವಿಧೇಯಮುದೀರಯೇತ್"। "ವೃದ್ಧಿ-ರಾದೇಚ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ವಿಧೇಯವಾದ ವೃದ್ಧಿಪದವು ಅನಂತರ ಹೇಳಲ್ಪಡಬೇಕಾಗಿದ್ದರೂ ಮಂಗಳಾರ್ಥಕವಾದುದರಿಂದ ಮೊದಲು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ.

ಅನುವಾಸನ ಅನುವಾಸನ (ಪ್ರಂ) 1. ಪಿಚಕಾರಿ, ಔಷಧಪ್ರಯೋಗಮಾಡುವ ಕೊಳವೆ, "ಎನಿಮಾ"ಕೊಡುವ ಚುಂಗಾಣಿ. ಅನು+ವಸ (ನಿವಾಸೇ) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ದ್ವಿವಾ ವಸ್ತಿಃ ಪರಿಜ್ಞೇಯೋ ನಿರುಹರಚಾನು-

ವಾಸನಮ್। ಕಛಾಯಾಣಿನ್ರಿಹಃ ಸ್ಯಾತ್ ಸ್ನೇಹಾಘೇರನುವಾಸನಮ್"। (ನಂ) 2. ಧೂಪ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ವಾಸನೆ ಕಟ್ಟುವುದು. 3. ಪಿಚಕಾರಿಯ ಕೆಲಸ, ಪಿಚಕಾರಿಯಿಂದ ಔಷಧಪ್ರಯೋಗ, ಬಸ್ತಿಕ್ರಿಯೆ. ಅನು+ವಸ (ನಿವಾಸೇ) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅನುವಾಸಿತ ಅನುವಾಸಿತ (ವಿಂ) 1. ವಾಸನೆಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಪಿಚಕಾರಿಯಿಂದ(ಔಷಧಾದಿಗಳ) ಪ್ರಯೋಗ ನಡೆಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಸ್ತಿಕ್ರಿಯೆಯಿಂದ ಚಿಕಿತ್ಸೆ ನಡೆಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ವಸ (ನಿವಾಸೇ) + ಣಿच् "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅನುವಿಧಾನ ಅನುವಿಧಾನ (ನಂ) 1. ಅಧೀನತೆ, ವಿಧೇಯತೆ, ಆಜ್ಞಾಪಾಲನೆ. 2. ಅನಂತರದ ಕೆಲಸ.

ಅನುವಿಧಾಯಿನ್ ಅನುವಿಧಾಯಿನ್ (ವಿಂ) 1. ವಿಧೇಯ, ನಮ್ರ. 2. ಅನಂತರ ಕೆಲಸಮಾಡುವ. 3. ಸದೃಶವಾದ, ಹೋಲುವ. ಅನುವಿಧತೇ - ಅನು+ವಿ+ತು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) "ಞಿನ್" (೩-೨-೭೮)। "ನಿಜ-ವಭೂವಸಿತಾನುವಿಧಾಯಿನಿ" ಮಾಘಂ ೬-೨೩। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ವಿಧಾಯಿನಿ-ವಿಧಾಯಿನೀ.

ಅನುವಿಡ್ಧ ಅನುವಿಡ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಇರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿವಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಪಸರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವ್ಯಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೆಣೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೂಡಿರುವ. ಅನು+ವ್ಯಥ (ತಾಡನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಸರಸಿಜಮನುವಿಡ್ಧಂ ಶೈವಲೇನಾಪಿ ರಮ್ಯಮ್" ಶಾಕುಂ ೧-೧೭। "ಸಂಲಕ್ಷ್ಯತೇ ವಿವಿಧ-ರತ್ನಕರಾನುವಿಡ್ಧಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೪೯।

ಅನುವೃತ್ತ ಅನುವೃತ್ತ (ವಿಂ) 1. ಮುಂದುವರೆದ, ಹಿಂದಿನ ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದಂತೆ ಮುಂದೆ ಸಾಗಿದ. 2. ವರ್ತುಲಾಕಾರವಾದ, ಗುಂಡಾಗಿರುವ. 3. ಚರಿತ್ರೆಯನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿದ. 4. ಶೀಲಕ್ಕೆ ಹೊಂದಿಕೊಂಡಿರುವ. 5. (ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಹಿಂದಿನ ಸೂತ್ರಗಳಿಂದ ಮುಂದಿನ ಸೂತ್ರಗಳಿಗೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ ಪದ ಮೊದಲಾದುದು. 6. ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯುವ, ಅಧೀನವಾದ.

ಅನುವೃತ್ತಿ ಅನುವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನುಸರಣೆ, ಸೇವೆ. ಅನು+ವೃತ್ತ (ವರ್ತನೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। "ತವಾನು-ವೃತ್ತಿ ನ ಚ ಕರ್ತುಮುತ್ಸಾಹೇ" ಕುಮಾಂ ೫-೬೫। 2. ಹಿಂದಿನ ಸೂತ್ರಗಳಿಂದ ಮುಂದಿನ ಸೂತ್ರಾರ್ಥಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ ಪದಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. 3. ವಿಧೇಯತೆ, ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯುವಿಕೆ. "ಅನುವೃತ್ತಿಃ ಸಾಧ್ಯಾಃ" ಮಾಘಂ ೨-೧೦೫। 4. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ. 5. ನೆನಪು, ಜ್ಞಾಪಕ.



ಅನುವೇಶ ಅನುವೇಶ (ಪುಂ) ಸಂಸರ್ಗ, ಸಂಬಂಧ. ಅನು+  
ವಿಧ (ವಿಧಾನೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)।

ಅನುವೇಲ ಅನುವೇಲ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪ್ರತಿಕ್ಷಣದಲ್ಲಿಯೂ.  
ವೇಲಾಂ ವೇಲಾಮ್। "ತಸ್ಯಾನುವೇಲಂ ವ್ರಜತೋಽಧಿವೇಲಮ್"  
ಮಾಘಂ ೩-೭೯। 2. ದಡದಲ್ಲಿ, ತೀರದಲ್ಲಿ. ವೇಲಾಮ್।  
ವಿಭಂ ಅವ್ಯಯಿಂ।

ಅನುವೇಲಿತ ಅನುವೇಲಿತ (ನಂ) 1. ಘಾಯಕ್ಕೆ ಕಟ್ಟುವ  
ಪಟ್ಟಿ, ಘಾಯವ ಕಟ್ಟು. (ವಿಂ) 2. ವಕ್ರವಾದ,  
ಕ್ರಮವಾಗಿ ಬಗ್ಗಿರುವ.

ಅನುವೇಶ ಅನುವೇಶ (ಪುಂ) 1. ಹಿಂಬಾಲಿಸುವಿಕೆ,  
ಅನಂತರ ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು. 2. ಹಿರಿಯನಿಗಿಂತ  
ಕಿರಿಯವನು ಮುಂಚೆ ಮದುವೆಯಾಗುವುದು.  
"ಯವೀಯಸೋನುವೇಶೋ ಹಿ ಜ್ಯೇಷ್ಠಸ್ಯ ವಿಧಿಲೋಪಕಃ" ಭಾಂ।  
3. ನೆರೆಮನೆಯ ಪಕ್ಕದಮನೆ.

ಅನುವೇಶ್ಯ ಅನುವೇಶ್ಯ (ಪುಂ) ನೆರೆಮನೆಯ ಪಕ್ಕದಮನೆ  
ಯಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವವನು, ತನ್ನ ಮನೆಯಿಂದ  
ಮೂರನೆಯ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವವನು. ಅನುಕ್ರಮಣ  
ವೇಶಮಹಂತಿ - ವೇಶ "ಯತ್" (೪-೩-೪೪)।

ಅನುವ್ಯಾಧ ಅನುವ್ಯಾಧ (ಪುಂ) ಸಂಸರ್ಗ, ಸಂಬಂಧ.  
ಅನು+ವ್ಯಾಧ (ತಾಡನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ಮುಖಾಮೋದಂ  
ಮದಿರಯಾ ಕೃತಾನುವ್ಯಾಧಮುಡಮನ್" ಮಾಘಂ ೨-೨೦।

ಅನುವ್ರಜತ್ ಅನುವ್ರಜತ್ (ವಿಂ) ಅನುಸರಿಸಿ ಬರುವ,  
ಹಿಂಬಾಲಿಸುವ. ಅನು+ವ್ರಜ (ಗತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
"ನಿವರ್ತ್ಯ ಸೋನುವ್ರಜತಃ ಕೃತಾನತೀನ್" ಮಾಘಂ ೧-೧೧।

ಅನುವ್ರಜನ ಅನುವ್ರಜನ (ನಂ) ಹಿಂಬಾಲಿಸುವಿಕೆ,  
ಅನುಸರಿಸಿ ಬರುವುದು. ಅನು+ವ್ರಜ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೫)।

ಅನುವ್ರಜ್ಯಾ ಅನುವ್ರಜ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯು  
ವುದು. 2. ಸೇವೆ. ಅನು+ವ್ರಜ (ಗತೌ) "ಕೃಪ್"  
(೩-೩-೧೮)। "ಅನುವ್ರಜ್ಯಾ ಚ ಶುಶ್ರೂಷಾ ಯಾವದಧ್ಯಯನಂ ಗುರೋಃ"  
ಮನ್ವಂ ೨-೨೪೧।

ಅನುವ್ರತ ಅನುವ್ರತ (ವಿಂ) ಅನುರಕ್ತ, ಅನುರಾಗವುಳ್ಳ,  
ಅನುಕೂಲ ಧರ್ಮಾಚರಣೆಯುಳ್ಳ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಅನುವ್ರತಾ  
ಅನುವ್ರತಾ. "ಅನುವ್ರತಾಂ ರಾಮಮತೀವ ಮೆಥಿಲಿಮ್" ರಾಮಾಂ।  
"ಅನುವ್ರತಾ ಕಾಮಕಲಾಸ್ವಧೀತಿತೀ" ಯಾದಂ ೧೪-೭೨।

ಅನುಶಯ ಅನುಶಯ (ಪುಂ) 1. ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪ. ಅನು+ಶೀಡ್  
(ಸ್ವಪ್ನೆ) "ಅಚ್" (೩-೩-೪೬)। "ತತಃ ಸಪತ್ನಾಪನಯ-  
ಸ್ಮರಣಾನುಶಯಸ್ಕುರಾ" ಮಾಘಂ ೨-೧೪। 2. ಕ್ರೋಧ,

ಕೋಪ. "ಯಸ್ಮಿನ್ನನುಶಯಾ ಸದೇವ" ಮಾಲತೀಂ ೬-೧।  
3. ದ್ವೇಷ, ವೈರ. 4. ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಕೊಂಡ ವಸ್ತುವಿನ  
ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಅಸಮಾಧಾನ, ಕ್ರಯದಲ್ಲಿ ಮೋಸ  
ನಡೆದಿರುವುದೆಂದು ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪ. "ಕ್ರೋತ್ವಾ ಮೂಲ್ಯೇನ  
ಯಃ ಪಣ್ಯಂ ಕ್ರೇತಾ ನ ಬಹು ಮನ್ಯತೇ। ಕ್ರೋತಾನುಶಯ ಇತ್ಯೇತದ್ವಿವಾದ-  
ಪದಮುಚ್ಯತೇ"। "ಕ್ರೋತ್ವಾ ಮೂಲ್ಯೇನ ಯತ್ ಪಣ್ಯಂ ದುಃಕ್ರೇತಂ ಮನ್ಯತೇ  
ಕ್ರಯಿ। ವಿಕ್ರೇತುಃ ಪ್ರತಿದೇಯಂ ತತಃ ಸ್ಮಿನ್ನೇವಾಹ್ನಿವಿಕ್ಷತಮ್"  
ನಾರದಂ। 5. ಸ್ವರ್ಗಪ್ರಾಪ್ತಿಗಾಗಿ ಮಾಡಿದ ಪುಣ್ಯ  
ಕರ್ಮದ ಕೇಸ, ಸ್ವರ್ಗಾನುಭವಾನಂತರ ಭೂಮಿಗೆ  
ಪತನವಾಗುವ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಪುಣ್ಯಫಲದ ಉಳಿಕೆ.  
"ಕೃತಾತ್ಯಯೇನುಶಯವಾನ್ ದೃಷ್ಟಸ್ಮೃತಿಭ್ಯಾಂ ಯಥೇತಮನೇವಂ ಚ"  
ಶಂ ಸುಂ ೩-೧।

ಅನುಶಯಾನ ಅನುಶಯಾನ (ವಿಂ) 1. ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪಪಡುವ.  
2. ದ್ವೇಷಿಸುವ. ಅನು+ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೆ) "ಶಾನಚ್"  
(೩-೨-೧೨೪)।

ಅನುಶಯಾನಾ ಅನುಶಯಾನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪರಕೀಯ  
ನಾಯಿಕೆಯ ಒಂದು ಭೇದ.

ಅನುಶಯಿನ್ ಅನುಶಯಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪ  
ವುಳ್ಳ. 2. ದ್ವೇಷವುಳ್ಳ. ಅನುಶಯೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ"  
(೪-೨-೧೧೫)।

ಅನುಶಾಸಕ ಅನುಶಾಸಕ (ವಿಂ) 1. ಶಿಕ್ಷಕ, ದಂಡವನ್ನು  
ವಿಧಿಸುವವನು. 2. ಆಜ್ಞೆ ಮಾಡುವವನು. 3. ತಿಳಿಸು  
ವವನು. 4. ಆಳುವವನು. ಅನು+ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟೌ)  
"ಷ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಅನುಶಾಸತ್ ಅನುಶಾಸತ್ (ವಿಂ) 1. ಆಳುವ, ದೊರೆ  
ತನ ಮಾಡುವ. ಅನು+ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟೌ) "ಶತ್"  
(೩-೨-೧೨೪)। 2. ತಿಳಿಸುವ, ಉಪದೇಶ ಮಾಡುವ.  
"ಅನುಶಾಸತಮಿತಿನಾಕುಲಂ ನಯವತ್ಮಕುಲಮರ್ಜುನಾಗ್ರಜಮ್" ಕಿರಾಂ  
೨-೪೪। 3. ಶಿಕ್ಷಿಸುವ, ದಂಡಿಸುವ. 4. ಆಜ್ಞೆ ಮಾಡುವ.

ಅನುಶಾಸನ ಅನುಶಾಸನ (ನಂ) 1. ಉಪದೇಶ, ತಿಳಿ  
ವಳಿಕೆ ಕೊಡುವುದು. 2. ಸಲಹೆ ಕೊಡುವುದು. ಅನು-  
ಶಿಷ್ಯತೇ - ಅನು+ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೫)। "ಭವಾದೃಶೇಷು ಪ್ರಮದಾಜನೋದಿತಂ ಭವತ್ಯಧಿ-  
ಕ್ಷೇಪ ಇವಾನುಶಾಸನಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೨೮। 3. ಆಜ್ಞೆ, ಆಪ್ತಣೆ.  
4. ವಿಧಿಶಾಸ್ತ್ರ, ನಿಯಮಶಾಸ್ತ್ರ, ಅಸಾಧು ವಿಷಯ  
ಗಳಿಂದ ಸಾಧುವಿಷಯಗಳನ್ನು ವಿಮರ್ಶಿಸಿ ಹೇಳುವುದು.  
"ಅಥ ಶಬ್ದಾನುಶಾಸನಮ್" "ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನಮ್"  
ಇತ್ಯಾದಿ. ಅನುಶಿಷ್ಯತೇಜೇನ - ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್"। 5. ಶಿಕ್ಷೆ.



ಅನುಶಾಸಿತ ಅನುಶಾಸಿತ (ವಿಂ) 1. ಉಪದೇಶಕ, ತಿಳವಳಿಕೆ ಕೊಡುವವನು. 2. ಶಿಕ್ಷಕ, ದಂಡಿಸುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" -ಶಾಸಿತ್ರಿ-ಶಾಸಿತ್ರಿ.

ಅನುಶಾಸಿನ್ ಅನುಶಾಸಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಉಪದೇಶಕ. 2. ಶಿಕ್ಷಕ. ಅನು+ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟೌ) "ಗಿಣಿ:" (3-2-96) ।

ಅನುಶಾಸ್ತ ಅನುಶಾಸ್ತ (ವಿಂ) 1. ಉಪದೇಶಕ, ತಿಳವಳಿಕೆ ಕೊಡುವವನು. 2. ಶಿಕ್ಷಕ, ದಂಡಿಸುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-4) । -ಶಾಸ್ತ್ರಿ-ಶಾಸ್ತ್ರಿ.

ಅನುಶಿಷ್ಟ ಅನುಶಿಷ್ಟ (ವಿಂ) 1. ಉಪದೇಶ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿಳವಳಿಕೆಯುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ದಂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟೌ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) ।

ಅನುಶಿಷ್ಟಿ ಅನುಶಿಷ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಜ್ಞೆ, ಅಪ್ಪಣೆ. 2. ಉಪದೇಶ, ಶಿಕ್ಷಣ. ಅನು+ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟೌ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94) ।

ಅನುಶೀಲನ ಅನುಶೀಲನ (ನಂ) 1. ಎಡೆಬಿಡದ ಅಭ್ಯಾಸ, ಸತತವಾದ ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ. ಅನುಷ್ಠಾಣಂ ಶೀಲನಮ್ । "ಗುರುಸ್ಥಿರಾಪ್ಯುತ್ತಮವಂಶಜತ್ವಾತ್ ವಿಜ್ಞಾತಸಾರಾಪ್ಯನುಶೀಲನೇನ" ಕಿರಾಂ 16-28 । 2. ವಿಚಾರಣೆ, ತನಿಖೆ.

ಅನುಶೋಕ ಅನುಶೋಕ (ಪುಂ) 1. ದುಃಖ, ವ್ಯಸನ. 2. ಅನುಸರಿಸಿ ದುಃಖಿಸುವುದು, ಅನಂತರ ದುಃಖಿಸುವಿಕೆ. ಅನು+ಶುಚ (ಶೋಕೇ) "ಘ್" (3-3-100) ।

ಅನುಶೋಚನ ಅನುಶೋಚನ (ನಂ) 1. ದುಃಖ. 2. ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪ.

ಅನುಶ್ರವ ಅನುಶ್ರವ (ಪುಂ) ವೇದ. ಅನುಶ್ರವತೇ -ಅನು+ಶ್ರ (ಶ್ರವಣೇ) "ಅಪ್" (3-3-49) । "ಅನುಶ್ರವಾಣಾಮವತಂಸ-ಭೂತಮ್" ,ಯಾದಂ 4-44 ।

ಅನುಷ್ಠಿತ ಅನುಷ್ಠಿತ (ವಿಂ) ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಹೊಂದಿಕೊಂಡಿರುವ. ಅನು+ಷಜ (ಸಜ್ಜೇ) "ಕ್ತ:" (3-4-92) ।

ಅನುಷ್ಠಾ ಅನುಷ್ಠಾ (ಪುಂ) 1. ಸಂಬಂಧ, ಹೊಂದಿಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ, ಸೇರಿರುವಿಕೆ, ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ. 2. ಒಟ್ಟುಗೂಡುವಿಕೆ, ಮಿಶ್ರಣ, ಬೆರಕೆ. 3. ವಾಕ್ಯಾಂತರದಲ್ಲಿರುವ ಪದಗಳೊಡನೆ ಸಂಬಂಧ. 4. ಪ್ರಸಂಗ, ಪ್ರಸಕ್ತಿ, ಹಿಂದಿನ ವಿಷಯದೊಡನೆ ಸಂಬಂಧ. 5. ಒಂದು ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಯತ್ನಿಸಿದಾಗ ಆಗುವ

ಮತ್ತೊಂದು ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ. "ನಿತ್ಯಕ್ರಿಯಾಂ ತಥಾ ಚಾನ್ಯೇ ಹ್ಯನುಷ್ಠಾಫಲಾಂ ಶ್ರುತಿಮ್" । ಅನು+ಷಜ (ಸಜ್ಜೇ) "ಘ್" (3-3-100) ।

ಅನುಷ್ಠಿನ್ ಅನುಷ್ಠಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂಬಂಧವುಳ್ಳ, ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. ಅನುಷ್ಠಾ "ಘ್ನಿ:" (4-2-114) । "ಮಹೀಯಸಾಂ ಮಹತಿ ದಿಗಂತ-ದಂತಿನಾಮನೀಕಜೇ ರಜಸಿ ಮುಖಾನುಷ್ಠಿನ್" ಮಾಘಂ 19-49 । 2. ವ್ಯಾಪಿಸುವ, ಹರಡುವ. "ಶಮಿನೋಽಪಿ ತಸ್ಯ ನವ-ಸಜ್ಜಮನೇ ವಿಭುತಾನುಷ್ಠಿ ಭಯಮೇತಿ ಜನ:" ಕಿರಾಂ 6-34 ।

ಅನುಷ್ಠಿತ ಅನುಷ್ಠಿತ (ವಿಂ) 1. ಯಾವಾಗಲೂ ಸಿಂಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಅನಂತರ ಸೇಚನೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಷಜ (ಫರಣೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) ।

ಅನುಷೇಕ ಅನುಷೇಕ (ಪುಂ) ಪುನಃ ಚಿಮುಕಿಸುವುದು, ಮತ್ತೆ ಸಿಂಪಡಿಸುವುದು. ಅನು+ಷಜ (ಫರಣೇ) "ಘ್" (3-3-100) ।

ಅನುಷ್ಠು ಅನುಷ್ಠು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸರಸ್ವತಿ. 2. ಮಾತು. 3. ಒಂದು ಭಂದಸ್ಸು, ಎಂಟು ಅಕ್ಷರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ನಾಲ್ಕು ಪಾದಗಳುಳ್ಳ ಭಂದಸ್ಸು. ಅನು ನಿರಂತರಂ ಸ್ತುಮ್ನೋತಿ -ಅನು+ಸ್ತುಮ್ (ನಿಷ್ಕೋಷಣೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (3-2-96) ।

ಅನುಷ್ಠ ಅನುಷ್ಠ (ವಿಂ) ಕ್ರಮವಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವ. ಅನುಕ್ರಮೇಣ ತಿಷ್ಠತಿ-ಅನು+ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಕ್ತ:" (3-1-136) ।

ಅನುಷ್ಠಾ ಅನುಷ್ಠಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನುಷ್ಠಾನ, ಆಚರಣೆ, ಅನು+ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಅಙ್" (3-3-106) ।

ಅನುಷ್ಠಾತ್ ಅನುಷ್ಠಾತ್ಯ (ವಿಂ) ಆಚರಿಸುವವನು. ಅನು+ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ತೃತ್" (3-1-133) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-4) । -ತ್ರಿ-ತ್ರಿ.

ಅನುಷ್ಠಾನ ಅನುಷ್ಠಾನ (ನಂ) ಆಚರಣೆ, ಮಾಡುವುದು, ನೆರವೇರಿಸುವುದು, ಕಾರ್ಯನಿರ್ವಾಹ. ಅನು+ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । "ಉಪರಂಧತೇ ತಪೋಽನುಷ್ಠಾನಮ್" ಶಾಕುಂ 4 ।

ಅನುಷ್ಠಿತ ಅನುಷ್ಠಿತ (ವಿಂ) ಆಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತಿಯಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) । "ವಿಕ್ರಿಯಾಯೇ ನ ಕಲ್ಪಂತೇ ಸಂಬಂಧಾಃ ಸದನುಷ್ಠಿತಾಃ" ಕುಮಾಂ 6-29 ।

ಅನುಷ್ಠೇಯ ಅನುಷ್ಠೇಯ (ವಿಂ) ಆಚರಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ, ನಿರ್ವಹಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. ಅನು+ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) ಕರ್ಮಂ "ಯತ್" (3-1-99) । "ಅಸ್ಮಾಭಿರ್ಯದನುಷ್ಠೇಯಂ ಗಂಧರ್ವ-ಸ್ತದನುಷ್ಠಿತಮ್" ಭಾಂ ವನಂ 243-19 ।



ಅನುಷ್ಠ ಅನುಷ್ಠ (ಪುಂ) 1. ತೀತಸ್ಪರ್ಶ. (ನಂ) 2. ಉತ್ಪಲ, ಕನ್ನೈದಿಲೆ, ನೀಲಕಮಲ. (ವಿಂ) 3. ಬಿಸಿ ಯಲ್ಲದ, ತೀತಲವಾದ. ನ ಉಷ್ಣ:। "ಅನುಷ್ಠಾಪೋದಯ-ಮನ್ಯರಾಕ್ಷೀಮ್" ಯಾದಂ ೧೩-೨೪। 4. ಅಲಸ, ಸೋಮಾರಿ, ಕಾರ್ಯಾಸಮರ್ಥ. ಉಷ್ಣೋ ದಕ್ಷ:। ತದನ್ಯ:। ಅನ್ಯಾರ್ಥೇ ನಂ ತಂ। "ಉಷ್ಣೋ ಗ್ರೀಷ್ಮೇ ಪುಮಾನ್ ದಕ್ಷಾಶೀತಯೋರ್ನ್ಯಾಲಿಂಗಕ:" ಮೇದಿಂ।

ಅನುಷ್ಠಾಗು ಅನುಷ್ಠಾಗು (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಅನುಷ್ಠಾ: ಶೀತಲಾ: ಗಾವ: ಕಿರಣಾ: ಯಸ್ಯ।

ಅನುಸಂವತ್ಸರ ಅನುಸಂವತ್ಸರ (ಅವ್ಯಂ) 1. ವರ್ಷದಲ್ಲಿ, ಸಂವತ್ಸರದಲ್ಲಿ. ವಿಭಂ ಅವ್ಯಯಿಂ। 2. ಪ್ರತಿಸಂವತ್ಸರ ದಲ್ಲಿಯೂ. ವೀಪ್ಸಾಯಾ ಅವ್ಯಯಿಂ।

ಅನುಸಂವರಣ ಅನುಸಂವರಣ (ನಂ) ಕ್ರಮವಾಗಿ ಮುಚ್ಚಿಡುವುದು, ಮರೆಮಾಡುವುದು. ಅನು+ಸಂ+ವೃ (ವರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅನುಸಂಹಿತ ಅನುಸಂಹಿತ (ವಿಂ) ಪುನಃ ವಿಚಾರಣೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೇಲ್ಮನಿಖೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಸಂ+ಹೃ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಕ್" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅನುಸಂತತಿ ಅನುಸಂತತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎಡೆಬಿಡದೆ ಮುಂದು ವರಿಯುವಿಕೆ, ಅನುಸೂತವಾಗಿ ನಡೆದುಕೊಂಡು ಬರುವಿಕೆ, ವಿಚ್ಛೇದವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

ಅನುಸಂಧಾತು ಅನುಸಂಧಾತು (ವಿಂ) 1. ವಿಚಾರಣೆ ನಡೆಸುವ, ತನಿಖೆಮಾಡುವ, ಶೋಧಿಸುವ. 2. ಧ್ಯಾನಿಸುವ, ಚಿಂತಿಸುವ, ದೀರ್ಘಾಲೋಚನೆ ಮಾಡುವ.

ಅನುಸಂಧಾನ ಅನುಸಂಧಾನ (ನಂ) 1. ವಿಚಾರಣೆ, ತನಿಖೆ, ಶೋಧನೆ. 2. ಚಿಂತಿಸುವುದು, ಧ್ಯಾನ, ಮನನ, ದೀರ್ಘಾಲೋಚನೆ. ಅನು+ಸಂ+ಧಾನ್ (ಧಾರಣ-ಪೋಷಣಯೋ:) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅನುಸಂಧಾನಿನ್ ಅನುಸಂಧಾನಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಚಿಂತಿಸುವ, 2. ತನಿಖೆ ನಡೆಸುವ.

ಅನುಸಂಧೇಯ ಅನುಸಂಧೇಯ (ವಿಂ) 1. ಅನುಸಂಧಾನ ಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ಅನುಸಂಧಾನ ಮಾಡಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. ಅನುಸಂಧಾತುಮಹಂ ಶಕ್ಯಂ ವಾ—ಅನು+ಸಂ+ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಯತ್" (೩-೧-೯೭)।

ಅನುಸರ ಅನುಸರ (ವಿಂ) 1. ಅನುಚರ, ಸೇವಕ. 2. ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ, ಸಂಗಡಿಗ. ಅನು+ಸೃ (ಗತೌ) "ಃ" ಬಾಹ್ಯಂ। 3. ಹಿಂಬಾಲಕ, ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೧೫)।—ಸರೀ-ಸರೀ.

ಅನುಸರಣ ಅನುಸರಣ (ನಂ) ಹಿಂಬಾಲಿಸುವಿಕೆ, ಅನುಸರಿಸುವಿಕೆ. ಅನು+ಸೃ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಇಂದೋದೇವ್ಯಂ ತ್ವದನುಸರಣವಿಲಾಸಕಾಂತೇವಿಭವತಿ" ಮೇಘಂ ೨-೨೧।

ಅನುಸಾರ ಅನುಸಾರ (ಪುಂ) ಅನುಸರಣ, ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯುವಿಕೆ. ಅನು+ಸೃ (ಗತೌ) "ಛೀಪ್" (೩-೨-೧೮)। "ವರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರಾನುಸಾರೇಣ ಕ್ರೋಧಲೋಭವಿವರ್ಜಿತ:" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧।

ಅನುಸಾರಣಾ ಅನುಸಾರಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನುಸರಿಸಿ ಓಡುವುದು, ಬೆನ್ನಟ್ಟುವುದು, ಓಡಿಸಿಕೊಂಡು ಹೋಗುವುದು. 2. ಹಿಂದೆ ನಡೆಯುವುದು. ಅನು+ಸೃ (ಗತೌ) ಣಿಚ್ "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭)।

ಅನುಸಾರಿನ್ ಅನುಸಾರಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಬೆನ್ನಟ್ಟುವ, ಹಿಂಬಾಲಿಸುವ, ಅನುಸರಿಸಿ ಹೋಗುವ. ಅನುಸರತಿ ಪಶ್ಚಾದ್ವಚ್ಛತಿ—ಅನು+ಸೃ (ಗತೌ) "ಣಿಚಿ:" (೩-೨-೭೮)। "ಮೃಗಾನುಸಾರಿಣಂ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಪಶ್ಯಾಮಿವ ಪಿಪಾಕಿನಮ್" ಶಾಕುಂ ೧-೬।

ಅನುಸೃತ ಅನುಸೃತ (ವಿಂ) ಅನುಸರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಂಬಾಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅನು+ಸೃ (ಗತೌ) "ಕ್" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅನುಸೃತಿ ಅನುಸೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನುಸರಣ, ಹಿಂಬಾಲಿಸುವಿಕೆ. ಅನು+ಸೃ (ಗತೌ) "ಕ್ರಿನ್" (೩-೩-೯೪)। 2. ಸ್ಪೈರಿಣಿ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ, ಅಸಭ್ಯ ಹೆಂಗಸು. ಅನುಸರತಿ ಕುಲಾಂತರಮ್—ಅನು+ಸೃ "ಕ್ರಿಚ್" (೩-೩-೧೦೪)।

ಅನುಸೃಷ್ಟ ಅನುಸೃಷ್ಟ (ವಿಂ) ಹಿಂಬಾಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) "ಕ್" (೩-೨-೧೦೨)। "ಅನುಸೃಷ್ಟಸ್ತದಾ ಕಾಕ: ಜಗಾಮ ವಿವಿಧಾಂ ಗತಿಮ್" ರಾಮಾಂ।

ಅನುಸೃಷ್ಟಿ ಅನುಸೃಷ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕ್ರಮವಾದ ಸೃಷ್ಟಿ. ಅನು+ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) "ಕ್ರಿನ್" (೩-೩-೯೪)। 2. ಬುದ್ಧಿ ವಂತೆಯಾದ ಹೆಂಗಸು. ಅನು+ಸೃಜ "ಕ್ರಿಚ್" (೩-೩-೧೦೪)।

ಅನುಸ್ಮಯ ಅನುಸ್ಮಯ (ನಂ) ಹಿಂಗಾವಲು ಸೈನ್ಯ.

ಅನುಸ್ತರಣ ಅನುಸ್ತರಣ (ನಂ) 1. ಹೊದಿಸುವುದು. ಅನು+ಸ್ತೃ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। (ವಿಂ) 2. ಹೊದಿಸುವ. ಅನು+ಸ್ತೃ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। (ಸ್ತ್ರೀಂ)—ಸ್ತರಣಿ—ಸ್ತರಣಿ. 3. ವೈತರಣಿ ನದಿಯನ್ನು ದಾಟಿಸುವ ಹಸು.

ಅನುಸ್ಮರಣ ಅನುಸ್ಮರಣ (ನಂ) 1. ಸ್ಮೃತಿ, ನೆನಪು, ಜ್ಞಾಪಕ. 3. ಮತ್ತೆ ಸ್ಮರಿಸುವುದು. ಅನು+ಸ್ಮ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।



ಅನುಸ್ತುತ ಅನುಸ್ತುತ (ವಿಂ) ನೆನೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಜ್ಞಾಪಿಸಿ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಸ್ತು (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ಕಥಾಪ್ರಸಂಜ್ಞೇನ ಜನೇದಾಹುತಾದನುಸ್ತುತಾಖಂಡಲಸುನು-ವಿಕ್ರಮ:" ಕಿರಾಂ ೧-೨೪ |

ಅನುಸ್ತುತಿ ಅನುಸ್ತುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ಮರಣೆ, ನೆನಪು. ಅನು+ಸ್ತು (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪) |

ಅನುಸ್ಮೃತ ಅನುಸ್ಮೃತ (ವಿಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಎಡೆಬಿಡದ ಸಂಬಂಧವುಳ್ಳ. 2. ಒಟ್ಟಿಗೆ ನೇಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೇರಿದಂತೆ ಹೊಲಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಷ್ವ (ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |

ಅನುಸ್ಮೃತ ಅನುಸ್ಮೃತ (ವಿಂ) 1. ಸುರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಸ್ಮ (ಗತೌ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಸುರಿದು ಹೋದ, ಸ್ಮರಿಸಿದ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) |

ಅನುಸ್ವಾನ ಅನುಸ್ವಾನ (ಪುಂ) 1. ಅನುರೂಪವಾದ ಶಬ್ದ, ಒಪ್ಪುವ ಧ್ವನಿ. 2. ಪ್ರತಿಧ್ವನಿ, ಎದುರು ಶಬ್ದ. ಅನುರೂಪ: ಅನುಸ್ಮೃತೌ ವಾ ಸ್ವಾನ: |

ಅನುಸ್ವಾರ ಅನುಸ್ವಾರ (ಪುಂ) ಮೂಗಿನ ಸಹಾಯದಿಂದ ಸ್ವರವರ್ಣದನಂತರವೇ ಉಚ್ಚರಿಸಬಹುದಾದ ವರ್ಣ. [ಇದು ಸಂಸ್ಕೃತದಲ್ಲಿ ಬಿಂದುವಿನ (.) ಆಕಾರದಲ್ಲಿಯೂ, ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಸೊನ್ನೆ (0) ಆಕಾರದಲ್ಲಿಯೂ ಇರುವುದು.]

ಅನುಹಾರ ಅನುಹಾರ (ಪುಂ) 1. ಅನುಕರಣ. 2. ಹೋಲಿಕೆ, ಸಾದೃಶ್ಯ. ಅನು+ಹ್ (ಹರಣೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) | 3. ಅನಂತರ ಒಯ್ಯುವುದು.

ಅನುಹಾರ್ಯ ಅನುಹಾರ್ಯ (ವಿಂ) ಹೋಲಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಹೋಲಿಸಲ್ಪಡುವ. ಅನು+ಹ್ (ಹರಣೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) |

ಅನುಕ ಅನುಕ (ಪುಂ) 1. ಹಿಂದಿನ ಜನ್ಮ. 2. ಬೆನ್ನು ಮೂಳೆ. (ನಂ) 3. ಕುಲ, ವಂಶ. 4. ಶೀಲ, ಸ್ವಭಾವ. ಅನುಕಾಯತಿ—ಅನು+ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ:" (೩-೩-೧೩೬) | "ಅನುಕಂ ತು ಕುಲೇ ಶೀಲೇ ಪುನಿ ಸ್ಯಾ-ದ್ರತಜನ್ಮನಿ" ಮೇದಿಂ | 5. ಒಂದು ವಿಧ ಯಜ್ಞದ ಪಾತ್ರೆ.

ಅನುಚಾನ ಅನುಚಾನ (ಪುಂ) 1. ಸಾಂಗವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು, ಗುರುವಿನಿಂದ ಪಡೆಗಸಹಿತ ವೇದವನ್ನು ಕಲಿತವನು. ಅನ್ವವಾಚತ್—ಅನು+ವಚ (ಪರಿ-ಭಾಷಣೇ) "ಕಾನಚ್" (೩-೨-೧೦೯) | ನಿಪಾಂ | "ಇದ-ಮುಚುರನುಚಾನಾ: ಪ್ರೀತಿಕಂಡಕಿತವಚ:" ಕುಮಾಂ ೬-೧೫ |

(ವಿಂ) 2. ವಿನೀತ, ವಿಧೇಯ, ಸಭ್ಯತೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಅನುಚಾನ: ಸಾಂಜ್ಞವೇದಕೋವಿದೇ ವಿನಯಾನ್ವಿತೇ" ಹೇಮಂ |

ಅನುಚೀನ ಅನುಚೀನ (ವಿಂ) ಕ್ರಮವಾದ, ಅನುಲೋಮವಾದ. "ಅನುಲೋಮಮನುಚೀನಮ್" ವೇಜಂ |

ಅನುಚ್ಯ ಅನುಚ್ಯ (ನಂ) 1. ಮಂಚದ ಎರಡು ಪಾರ್ಶ್ವಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಇರುವ ಹಲಗೆ. "ದಕ್ಷಿಣೋತ್ತರಯೋರ್ದಿಘೇ ಷಡ್ವಾಂಜ್ಞೇ ಅನುಚ್ಯಸಂಜ್ಞೇ" ಶಾಂಕರಾಚಾರ್ಯಾ: | (ವಿಂ) 2. ಆಚಾರ್ಯರ ಉಚ್ಚಾರಣೆಯನ್ನನುಸರಿಸಿ ಹೇಳುವ ಪಾಠಭಾಗ.

ಅನುಠ ಅನುಠ (ವಿಂ) 1. ಅವಿವಾಹಿತ, ಮದುವೆಯಾಗದ. 2. ವಹಿಸಲ್ಪಡದ, ಎತ್ತಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಡದ. ನ ಋಠ: | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ಠ-ಠಾ.

ಅನುದಿತ ಅನುದಿತ (ವಿಂ) 1. ಬೇರೆ ಮಾತಿನಿಂದ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಭಾಷಾಂತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಪುನಃ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. (ಪ್ರಮಾಣಾಂತರ ಸಿದ್ಧವಾದ ವಿಷಯ).

ಅನುಠ ಅನುಠ್ಯ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅನುವಾದಮಾಡಿ, ಭಾಷಾಂತರಿಸಿ. ಅನು+ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭) |

ಅನೂನ ಅನೂನ (ವಿಂ) 1. ಪರಿಪೂರ್ಣವಾದ, ತುಂಬಿರುವ. 2. ಸಮಗ್ರವಾದ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ. 3. ಉತ್ತಮವಾದ, ಅಧಮವಲ್ಲದ, ನಿಕ್ಕಷ್ಟವಲ್ಲದ. ನ ಋನ: | "ಅನೂಪರಾಜಸ್ಯ ಗುಣೈರನೂನಾಮ್" ರಘುಂ ೬-೩೭ |

ಅನೂಪ ಅನೂಪ (ಪುಂ) 1. ನೀರಿನಿಂದ ತುಂಬಿದ ಪ್ರದೇಶ, ಜವುಗುಪ್ರದೇಶ. 2. ಮಹಿಷ, ಕೋಣ. 3. ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. "ಅನೂಪೋ ಮಹಿಷೇ ನಾಂಬುಪ್ರಾಯದೇಶೇ ತು ವಾಚ್ಯವತ್" ಮೇದಿಂ | 4. ಅನೆ. 5. ಗೌಜಿಗಹಕ್ಕಿ. 6. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. 7. ಸಮುದ್ರ. 8. ಬಿಲದ ಬಾಯಿ. ಶಂ ಕಲ್ಪಂ | (ಪುಂ ವಂ ವಂ) 9. ಅನೂಪವೆಂಬ ಒಂದು ದೇಶ. ಅನುಗತಾ ಆಪೋ ಯತ್ರ | "ಅನೂಪರಾಜಸ್ಯ ಗುಣೈರನೂನಾಮ್" ರಘುಂ ೬-೩೭ |

ಅನೂಪಜ ಅನೂಪಜ (ನಂ) 1. ಹಸಿಶುಂಠಿ. (ವಿಂ) 2. ಜವುಗುಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅನೂಪೇ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತಭಾವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೧೭) |

ಅನುರಾಧಾ ಅನುರಾಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ) ಅನುರಾಧಾ ನಕ್ಷತ್ರ. ಇದು ಮಿತ್ರದೇವತಾಕವಾದುದು. ಈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ



ಜನಿಸಿದವನು ದಯಾಪರ, ಕೂರ, ಸುಂದರ, ಸನ್ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವವನು. ರಾಜನ ಅಧೀನನು. ಸವಿನುಡಿಯುಳ್ಳವನು (ಮೃದುಭಾಷಿ), ಅಲ್ಪಪುತ್ರನು. ಶಾಂತನು. ಅಧಿಕ ಸೌಖ್ಯವುಳ್ಳವನು. ರಾಜನಿಂದ ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವವನು. ತರುಣಿಯರಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳವನು. ದೇಶಾಂತರದಲ್ಲಿ ಪ್ರವಾಸಮಾಡುವವನು. ಈ ನಕ್ಷತ್ರವು ಋತು, ಪುಂಸವನ, ನಾಮಕರಣ, ಅನ್ನಪ್ರಾಶನ, ಕರ್ಣವೇಧನ, ಚೌಲ, ಉಪನಯನ, ವೇದ ಮತ್ತು ಶಾಸ್ತ್ರಾಭ್ಯಾಸ, ಸಮಾವರ್ತನ, ನಿವಾಹ, ಕೈಲಾಭ್ಯಂಗ, ನವವಸ್ತ್ರ ಮತ್ತು ಅಭರಣ, ಸುವರ್ಣರತ್ನಾದಿ ನವಾಭರಣ ಧಾರಣ, ರಾಜ್ಯಾಭಿಷೇಕ, ರಥ, ಗಜ ಮತ್ತು ಆಂದೋಳಿಕಾ (ಉಯ್ಯಾಲೆ) ಆರೋಹಣ, ಸ್ತಂಭಪ್ರತಿಷ್ಠಾ, ಶಂಕುಸ್ಥಾಪನ, ಪುರನಗರ ಗ್ರಾಮಾದಿ ಪ್ರವೇಶ, ನೃತ್ಯ ಗೀತ ವಾದ್ಯ ಪ್ರಯೋಗ, ಶಿಲ್ಪಶಾಸ್ತ್ರಾಭ್ಯಾಸ, ಕನಕ ಮಣಿ ವಸ್ತ್ರ ಸಂಗ್ರಹ, ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯ ಕೃಷಿ ಪ್ರಾರಂಭ, ಬೀಜಾವಾಪ, ಭೈಷಜ್ಯಕರ್ಮ, ರಾಜದರ್ಶನ, ಶಾಂತಿಕ ಪೌಷ್ಟಿಕ ಯಾತ್ರಾರಂಭ, ಚಾರ್ಣಪ್ರಯೋಗ, ಚಿತ್ರಕರ್ಮ, ಸ್ತ್ರೀಸಂಭೋಗ, ಮಹೋತ್ಸವ ಇವುಗಳಿಗೆ ಪ್ರಶಸ್ತವಾದುದು.

**ಅನುರ ಅನೂರು** (ಫಂ) 1. ಅರುಣ, ಸೂರ್ಯನ ಸಾರಥಿ, ವಿನೋದೇವಿಯ ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಪುತ್ರ. ಅವಿಶ್ರಮಾನಾತ್ಮಕ ಯಸ್ಯ | [ಇವನು ಗರ್ಭದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಇವನ ಬಲತಾಯಿ ಕದ್ರುವಿಗೆ ಮೊದಲು ಮಕ್ಕಳಾದುದರಿಂದ ವಿನತೆಯು ತನ್ನ ಹೊಟ್ಟೆಯನ್ನು ಹಿಸುಕಿದಕಾರಣ ಇವನ ತೊಡೆಯು ಬೆಳೆಯದೆ ಹೋಯಿತು. ಈ ಕಾರಣದಿಂದ ಇವನಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು.] (ವಿಂ) 2. ತೊಡೆಯಿಲ್ಲದ.

**ಅನುರಸಾರಥಿ ಅನೂರುಸಾರಥಿ** (ಫಂ) ಸೂರ್ಯ. **ಅನುರ:** ಸಾರಥಿಯಸ್ಯ. "ಗತಂ ತಿರಶ್ಚಿನಮನುರಸಾರಥಿ:" **ಭಾಷಂ** 1-2.

**ಅನುರ ಅನುಚ** (ಫಂ) 1. ಉಪನಯನವಿಲ್ಲದ ಬಾಲಕ. **ಗಾಸ್ತಿ** ಇತ್ಯಸ್ಯ "ಅ:" (4-4-34). 2. ಮಗ್ನೇದವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡದವನು.

**ಅನುರ ಅನುಜು** (ವಿಂ) 1. ವಕ್ರವಾದ, ಡೊಂಕಾದ. 2. ಶರ, ಮೂರ್ಖ, ಕುಟಿಲಹೃದಯವುಳ್ಳ. **ನ** ಇತ್ಯು: | "ನ ಪಾಣಿಪಾದಚಪಲೋ ನ ನೇತ್ರಚಪಲೋಽನುಜು:" **ಮನುಂ** 4-133.

**ಅನುರ ಅನುಣ** (ವಿಂ) ಮುಣವಿಲ್ಲದ, ಸಾಲವಿಲ್ಲದ. **ನ** ವಿಘತೇ ಇತ್ಯಸ್ಯ | [ಮುಣವೆಂಬುದು ಒಬ್ಬನಿಂದ ದ್ರವ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಪುನಃ ಹಿಂತಿರುಗಿಸ

ತಕ್ಕುದು. ಈ ಮುಣವನ್ನು ತೀರಿಸದಿದ್ದರೆ ಉಪಪಾತಕವುಂಟಾಗುವುದು. ಇದರಂತೆಯೇ ಮುಷಿಮುಣ, ದೇವಮುಣ ಮತ್ತು ಪಿತೃಮುಣಗಳೆಂದು ಮೂರುವಿಧ ಮುಣಗಳುಂಟು. ವೇದಾಧ್ಯಯನದಿಂದ ಮುಷಿಮುಣವನ್ನೂ, ಯಜ್ಞದಿಂದ ದೇವಮುಣವನ್ನೂ, ಪ್ರಜೆ (ಸಂತತಿ) ಯಿಂದ ಪಿತೃಮುಣವನ್ನೂ ತೀರಿಸಬೇಕು. ಈ ಮುಣಗಳನ್ನು ತೀರಿಸದವನಿಗೆ ಮೋಕ್ಷವಿಲ್ಲ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಋಣವತ್" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ದಶಲಕ್ಷಣಕಂ ಧರ್ಮಮನುತಿಷ್ಠನ್ ಸಮಾಹಿತ: | ವೇದಾಂತಂ ವಿಧಿವಚ್ಛತ್ವಾ ಸಂಯಸೇದನೃಣೋ ದ್ವಿಜ:" **ಮನುಂ** 6-14.

**ಅನುಣಿನ್ ಅನುಣಿನ್** (ವಿಂ) ಸಾಲವಿಲ್ಲದವನು, ಸಾಲಗಾರನಲ್ಲದವನು. **ನ** ಇತ್ಯು: | "ಏಕಮಪ್ಯಕ್ಷರಂ ಯಸ್ತು ಗುಃ ಶಿಷ್ಯಂ ಪ್ರವೋಧಯೇತ್ | ಪೃಥಿವ್ಯಾ ನಾಸ್ತಿ ತದ್ದ್ರವ್ಯಂ ಯದ್ವಾ ಸೌಜ್ಞಿಣಿ ಭವೇತ್" | "ಪಂಚಮೇಽಹನಿ ಪಠೇ ವಾ ಶಾಕಂ ಪಚತಿ ಯೋ ನರ: | ಅನುಣಿ ಚಾಪ್ರವಾಸೀ ಚ ಸ ವಾರಿಚರ ಮೋದತೇ" **ಭಾಂ** ವನಂ 314-113.

**ಅನುತ ಅನುತ** (ನಂ) 1. ಸಟಿ, ಸುಳ್ಳು. 2. ಕೃಷಿ, ವ್ಯವಸಾಯ, ಬೇಸಾಯ. **ನ** ಇತ್ಯು: | "ವರ್ಣಿನಾಂ ಹಿ ವಧೋ ಯತ್ರ ತತ್ರ ಸಾಕ್ಷಯನುತಂ ವದೇತ್" **ಯಾಜ್ಞಂ** 2-23. "ಅನುತಂ ವಿತಥೇ ಕೃಪೋ" **ವೆಂಜಂ** 1.

**ಅನುತವಾದಿನ್ ಅನುತವಾದಿನ್** (ವಿಂ) ಸುಳ್ಳುಹೇಳುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಅನುತಂ ವದತಿ — ವದ "ಗಿಣಿ:" (3-2-34). **ಅನೇಕ ಅನೇಕ** (ವಿಂ) ಬಹಳ, ಅಸಂಖ್ಯಾತ, ಒಂದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚಾದ. "ಅನೇಕರಾಜ್ಯವರ್ತಾಪಸಂಕ್ತುಲಮ್" **ಕಿರಾಂ** 1-16.

**ಅನೇಕಧಾ ಅನೇಕಧಾ** (ಅವ್ಯಂ) ಅನೇಕ ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ. ಅನೇಕ ಪ್ರಕಾರ "ಧಾ" (4-3-42). "ತತ್ರೈಕಸ್ಯಂ ಜಗತ್ಕೃತ್ಸಂ ಪ್ರವಿಭಕ್ತಮನೇಕಧಾ" **ಗೀತಾ** 11-13.

**ಅನೇಕಪ ಅನೇಕಪ** (ಫಂ) ಗಜ, ಆನೆ. ಅನೇಕಾಭ್ಯಾಂ ಪಿವತಿ — ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕ:" (3-2-4). "ಮಾಲವನಾಥೋಽಪ್ಯನೇಕಾನೇಕಪಯುತಸನಾಥ:" **ದಶಕುಂ** 1.

**ಅನೇಕಮೂರ್ತಿ ಅನೇಕಮೂರ್ತಿ** (ಫಂ) ಪರಮಾತ್ಮ, ವಿಷ್ಣು. ಅನೇಕಾ ನಾನಾವಿಧಾ ಮೂರ್ತಯೋ ಯಸ್ಯ. "ಅನೇಕಮೂರ್ತಿರವ್ಯಕ್ತ: ಶತಮೂರ್ತಿ: ಶತಾನನ:" **ವಿಂ** ಸಂ 1.

**ಅನೇಕರೂಪ ಅನೇಕರೂಪ** (ಫಂ) ಪರಮಾತ್ಮ, ವಿಷ್ಣು. ಅನೇಕಾನಿ ರೂಪಾಣಿ ಯಸ್ಯ.

**ಅನೇಕಲೋಚನ ಅನೇಕಲೋಚನ** (ಫಂ) 1. ಇಂದ್ರ. 2. ಪರಮಾತ್ಮ, ಈಶ್ವರ.



ಅನೇಕವಿಧ ಅನೇಕವಿಧ (ವಿಂ) ನಾನಾವಿಧವಾದ, ಬಹು ಪ್ರಕಾರವಾದ. ಅನೇಕಾ ವಿಧಾ ಯಸ್ಯ ।

ಅನೇಕಶಸ್ ಅನೇಕಶಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಅನೇಕಸಲ. ಅನೇಕ "ಶಸ್" (೪-೪-೪೩) । "ಅನೇಕಶೋ ನಿಜಿತರಾಜಕಸ್ತ್ವಂ ಪಿತೃನತಾಪ್ಸಿನ್ಪರಕ್ತತಯೇ" ಭೃಂ ೨-೪೨ ।

ಅನೇಕಾಂತ ಅನೇಕಾಂತ (ಪುಂ) 1. ದುಷ್ಟವಾದ ಹೇತು, ಹೇತುಭಾಸಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು, ಸವ್ಯಭಿಚಾರ. (ವಿಂ) 2. ಅನಿಶ್ಚಿತ, ಅಸ್ಥಿರ, ಮಾರ್ಪಡುವ. 3. ನಿಯಮವಿಲ್ಲದ.

ಅನೇಕಾರ್ಥ ಅನೇಕಾರ್ಥ (ವಿಂ) 1. ಒಂದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚು ಅರ್ಥವುಳ್ಳ. ಅನೇಕ ಅರ್ಥಾ ಯಸ್ಯ । "ಅನೇಕಾರ್ಥಸ್ಯ ಶಬ್ದಸ್ಯ ಸಂಯೋಗಾದಿನಿಯನ್ವಿತೇ । ಏಕಾರ್ಥಜ್ಯಧಿಹೇತುರ್ವ್ಯಂಜನಾ ಸಾಂಭಿಧಾಶ್ರಯಾ" ಸಾಂ ದಂ ೨-೧೪ । 2. ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಯೋಜನವುಳ್ಳ. ಅನೇಕ ಅರ್ಥಾ: ಪ್ರಯೋಜನಾನಿ ಯಸ್ಯ ।

ಅನೇಕಮೂಕ ಅನೇಕಮೂಕ (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದವನ್ನು ಕೇಳುವ ಶಕ್ತಿಯೂ ಮಾತನಾಡುವ ಶಕ್ತಿಯೂ ಇಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಏತಃ ಮೂಕಃ ಯಸ್ಮಾತ್ । 2. ಶರ, ಮೂರ್ಖ, ಅಜ್ಞ. "ಅನೇಕಮೂಕಃ ತದಿಷ್ಟಃ ಶರಃ ವಾಕ್ಶ್ರುತಿವರ್ಜಿತಃ" ಮೇದಿಂ ।

ಅನೇಗಸ್ ಅನೇಗಸ್ (ವಿಂ) 1. ಪಾಪವಿಲ್ಲದ. 2. ದೋಷವಿಲ್ಲದ, ತಪ್ಪಿಲ್ಲದ, ಅಪರಾಧವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಏನಃ ಯಸ್ಯ । "ಏನಃ ಪಾಪಾಪರಾಧಯೋಃ" ಮೇದಿಂ ।

ಅನೇಹಸ್ ಅನೇಹಸ್ (ಪುಂ) 1. ಕಾಲ, ಸಮಯ. ನ ಹನ್ಯತೇ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) "ಅಸಿಃ" ಏಹಶ್ಚ (ತಂ ೪-೨೨೪) । (ವಿಂ) 2. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಡದ.

ಅನೇಕಾಗ್ರ ಅನೇಕಾಗ್ರ (ನಂ) 1. ಏಕಾಗ್ರತೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಚಿತ್ತಸ್ಥೈರ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ಏಕಾಗ್ರತೆಯಿಲ್ಲದ, ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮನಸ್ಸಿಲ್ಲದ.

ಅನೇಕಾಂತ ಅನೇಕಾಂತ (ಪುಂ) ದುಷ್ಟಹೇತು, ಹೇತುಭಾಸ.

ಅನೇಕಾಂತಿಕ ಅನೇಕಾಂತಿಕ (ಪುಂ) 1. ದುಷ್ಟಹೇತು, ಹೇತುಭಾಸ. "ಅನೇಕಾಂತೋ ವಿರುದ್ಧಶಾಪ್ಯಸಿದ್ಧಃ ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಿತಃ । ಕಾಲಾತ್ಯಯಾಪದಿಷ್ಟಶ್ಚ ಹೇತುಭಾಸಶ್ಚ ಪञ್ಚಧಾ" ಎಂದು ಹೇತುಭಾಸವು ಐದುವಿಧ. (ವಿಂ) 2. ನಿಶ್ಚಯವಿಲ್ಲದ, ಭರವಸೆಯಿಲ್ಲದ, ಅಸ್ಥಿರ, ಮಾರ್ಪಡುವ.

ಅನೇಕೈ ಅನೇಕೈ (ನಂ) 1. ಅನೇಕವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಬಹುವಾಗಿರುವಿಕೆ. 2. ಒಗ್ಗಟ್ಟಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಏಕಮತ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

ಅನೇತಿಹಾ ಅನೇತಿಹಾ (ವಿಂ) ಐತಿಹ್ಯರೂಪವಾದ ಪ್ರಮಾಣವಿಲ್ಲದ, (ಒಬ್ಬರಿಂದ ಮತ್ತೊಬ್ಬರು ಪರಂಪರೆಯಾಗಿ ಕೇಳುವ) ಪೂರ್ವಕಥಾರೂಪವಾದ ಪ್ರಮಾಣವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಏತಿಹ್ಯಂ ಯತ್ರ । "ಅನಾಗತಮನೇತಿಹ್ಯಂ ಕಥಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಧಿಗಚ್ಛತಿ" ಭಾಂ ।

ಅನೋಕಹ ಅನೋಕಹ (ಪುಂ) ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಅನಸಃ ಶಕಡಸ್ಯ ಅಕಂ ಗತಿಂ ಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) "ಙಃ" (೩-೨-೧೦೧) । "ಅನೋಕಹಾಕಂಪಿತಪುಷ್ಪಗಂಧಿ" ರಘುಂ ೨-೧೩ ।

ಅಂತ ಅಂತ (ಪುಂ) 1. ಸೀಮೆ, ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ. ಅತಿ (ಬಂಧನೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ವನಾಂತಪರ್ಯಂತಮುಪೇತ್ಯ ಸಸ್ಪೃಹಮ್" ನೈಷಂ ೧-೭೫ । "ಪಕ್ಷಾಂತೇ ನಿಷ್ಫಲಾ ಯಾತ್ರಾ" । 2. ನಾಶ. "ವೇರಸ್ಯಾಂತಂ ಕರಿಷ್ಯತಿ" ರಾಮಾಂ । 3. ನಿಶ್ಚಯ. "ನಿರ್ಣಯೋಂತಶ್ಚ ನಿಶ್ಚಯಃ" ವೈಜಂ । "ತುಭಯೋರಪಿ ದೃಷ್ಟೋಂತಸ್ತವನಯೋಸ್ತತ್ತ್ವದರ್ಶಿಭಿಃ" ಗೀತಾ ೨-೧೬ । 4. ಸೆರಗು, ಅಂಚು, ಬಟ್ಟೆಯ ತುದಿ. "ಪವನಪ್ರಣತಿಸಾಂತದೇಶೋ ದುಕೂಲೇ" ಕಾದಂ । 5. ಸಮೀಪ, ಹತ್ತಿರ. "ಗಾಙ್ಗಾಪ್ರಪಾತಾಂತನಿರೂಢಾಸಮ್" ರಘುಂ ೨-೨೬ । 6. ಕೊನೆ, ಸಮಾಪ್ತಿ, ಮುಕ್ತಾಯ. "ಸೇಕಾಂತೇ ಮುನಿಕನ್ಯಾಭಿಃ" ರಘುಂ ೧-೫೧ । "ದಿನಾಂತೇ ನಿಹಿತಂ ತೇಜಃ" ರಘುಂ ೪-೧ । 7. ಪ್ರಾಂತ, ಪ್ರದೇಶ. "ಅಮಂ ವನಾಂತಾದ್ವನಿತಾಪಹಾರಿಣಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೬೮ । 8. ನಿಧನ, ಮರಣ. "ವಾರ್ಧಕೇ ಮುನಿವೃತ್ತಿನಾಂ ಯೋಗೇನಾಂತೇ ತನುತ್ಯಜಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೮ । 9. ಕೊನೆಯಭಾಗ. "ನೇತ್ರೇ ಕರ್ಣಾಂತವಿಶ್ರಾಂತೇ ಕರ್ಣೌ ದೋಸ್ತಮ್ಬದೊಲಿನೌ" ಚಂದ್ರಾಂ । (ನಂ) 10. ಸ್ವರೂಪ. "ಸ್ವರೂಪೇಂತಂ ವಿನಾಶೋ ನಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । (ಪುಂ) 11. ಕೊನೆಯದು, ಉಳಿದಿರುವುದು, ಶೇಷ. 12. ಅವಯವ. "ಅಂತಃ ಸ್ವರೂಪೇ ನಿಕಟೇ ಪ್ರಾಂತೇ ನಿಶ್ಚಯನಾಶಯೋಃ । ಅವಯವೇಷಿ" ಹೇಮಂ । "ಅಂತಃ ಸ್ವರೂಪೇ ನಾಶೋ ನಾ ನಸ್ತೀ ಶೇಷೇಂತಿಕೇ ತ್ರಿಭುಃ" ಮೇದಿಂ । 13. ಒಂದು ಸಂಖ್ಯೆ, 1,000,000,000,000,000,000. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಪರಾಧ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] (ವಿಂ) 14. ಮನೋಹರ, ರಮ್ಯ. "ದಂತೋಜ್ಜ್ವಲಾಸು ವಿಮಲೋಪಲಮೇಖಲಾಂತಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೪೦ । 15. ಸಮೀಪದ, ಹತ್ತಿರದ.

ಅಂತಃಕರಣ ಅಂತಃಕರಣ (ನಂ) ಅಂತರಿಂದ್ರಿಯ, ಬುದ್ಧಿ, ಚಿತ್ತ, ಮನಸ್ಸು. ಅಂತರಮ್ಯಂತರಸ್ಥಂ ಕರಣಮ್ । "ಸತಾಂ ಹಿ ಸಂದೇಹಪದೇಷು ವಸ್ತುಣು ಪ್ರಮಾಣಮಂತಃಕರಣಪ್ರವೃತ್ತಯಃ" ಶಾಕ್ತಂ ೧-೧೯ । [ಅದ್ವೈತಿಗಳು ಮನಸ್ಸು, ಬುದ್ಧಿ, ಅಹಂಕಾರ ಮತ್ತು ಚಿತ್ತಗಳೆಂದು ಅಂತಃಕರಣವು ನಾಲ್ಕುವಿಧವೆಂದು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ.]



ಅಂತಃಕಲಹ ಅಂತಃಕಲಹ (ಪುಂ) ಒಳಜಗಳ, ಅಂತರಿಕ ಅಸಮಾಧಾನ.

ಅಂತಃಕುಟಿಲ ಅಂತಃಕುಟಿಲ (ಪುಂ) 1. ಶಂಖ. (ವಿಂ) 2. ಕುಟಿಲ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ವಕ್ರಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ.

ಅಂತಃಪತಿತ ಅಂತಃಪತಿತ (ವಿಂ) ಒಳಗೆ ಸೇರಿರುವ, ಒಳಹೊಕ್ಕಿರುವ. ಅಂತರಮ್ಯಂತರೇ ಪತಿತಃ।

ಅಂತಃಪದವೀ ಅಂತಃಪದವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುಷುಮ್ನಾ ನಾಡಿಯ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಮಾರ್ಗ.

ಅಂತಃಪಶು ಅಂತಃಪಶು (ಪುಂ) ಊರಿನೊಳಗೆ ಹಸುಗಳಿರುವ ಕಾಲ, ಪೂರ್ವಾಹ್ನ ಮತ್ತು ಸಾಯಂಕಾಲ. ಅಂತಃ ಗ್ರಾಮಮಧ್ಯೆ ಪಶುಯತ್ರ। [ಪೂರ್ವಾಹ್ನ ಮತ್ತು ಸಾಯಂಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಗ್ರಾಮಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಪಶುಗಳಿರುವುವು. ಮಧ್ಯಾಹ್ನಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕಾಡಿಗೆ ಮೇಯಲು ಹೋಗುವುವು.]

ಅಂತಃಪಾತ ಅಂತಃಪಾತ (ಪುಂ) ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಸೇರುವುದು, ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಬೀಳುವುದು.

ಅಂತಃಪಾತಿನ್ ಅಂತಃಪಾತಿನ್ (ವಿಂ) ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಸೇರಿರುವ, ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದಿರುವ. ಅಂತಃ ಪತತಿ - ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। - ಪಾತಿನಿ - ಪಾತಿನೀ.

ಅಂತಃಪುರ ಅಂತಃಪುರ (ನಂ) 1. ರಾಜಸ್ತ್ರೀಯರು ವಾಸ ಮಾಡುವ ಮನೆ, ರಾಣಿವಾಸ, ಅರಮನೆಯ ಒಳಭಾಗದಲ್ಲಿ ಸ್ತ್ರೀಯರಿಗಾಗಿ ಏರ್ಪಟ್ಟ ಮನೆ. 2. ರಾಣಿ, ಮಹಿಷಿ, ಅಂತಃಪುರದ ಸ್ತ್ರೀಯರು. "ಅಂತಃಪುರವಿರಹಪರ್ಯುತುಕಸ್ಯ ರಾಜಯಃ" ಶಾಕುಂ ೩।

ಅಂತಃಪುರಚರ ಅಂತಃಪುರಚರ (ಪುಂ) ಕಂಚುಕಿ, ಅಂತಃಪುರದಲ್ಲಿ ನೇಮಿಸಿರುವ ಕಾವಲುಗಾರ, ಅಂತಃಪುರದ ರಕ್ಷಕ. ಅಂತಃಪುರೇ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಠಃ" (೩-೨-೧೬)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। - ಚರ - ಚರೀ.

ಅಂತಃಪುರಸಹಾಯ ಅಂತಃಪುರಸಹಾಯ (ಪುಂ) ರಾಜನ ಅಂತಃಪುರದ ಸಹಾಯಕ. ಅಂತಃಪುರೇ ಸಹಾಯಃ [ರಾಜನಿಗೆ ಅಂತಃಪುರದಲ್ಲಿ ಕುಬ್ಜ, ಪಂಡ, ಕಿರಾತ, ಮೈಚ್ಛ ಮತ್ತು ಶಕಾರಾದಿಗಳು ಸಹಾಯಕರು. ಸಾಂ ದಂ ೩-೪೩।]

ಅಂತಃಪುರಿಕ ಅಂತಃಪುರಿಕ (ವಿಂ) ಅಂತಃಪುರದಲ್ಲಿ ನಿಯುಕ್ತನಾದವನು. ಅಂತಃಪುರೇ ನಿಯುಕ್ತಃ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೯)।

ಅಂತಃಪ್ರಕೃತಿ ಅಂತಃಪ್ರಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾಜನ ಮಂತ್ರಿ ಮಂಡಲ. ಅಂತರ್ವಿತಿನಿ ಪ್ರಕೃತಿಃ ರಾಜ್ಯಾಜ್ಞಮ್। "ಅಣುರಪ್ಯ-ಪಹಂತಿ ವಿಗ್ರಹಃ ಪ್ರಭುಮಂತಃಪ್ರಕೃತಿಪ್ರಕೋಪಜಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೫೧।

ಅಂತಃಪ್ರಕೋಪ ಅಂತಃಪ್ರಕೋಪ (ಪುಂ) ಒಳಗಡೆಯ ಕೋಪ, ಅಂತರಿಕ ಅಸಮಾಧಾನ, ವೈಮನಸ್ಸು.

ಅಂತಃಪ್ರಜ್ಞ ಅಂತಃಪ್ರಜ್ಞ (ವಿಂ) 1. ಆತ್ಮಾನುಸಂಧಾನದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತನಾದ, ಪರಮಾತ್ಮನ ಧ್ಯಾನದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿದ. ಅಂತಃಸ್ಥಾ ಪ್ರಜ್ಞಾ ಯಸ್ಯ। 2. ಸ್ವಪ್ನಾವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿರುವ (ಆತ್ಮ).

ಅಂತಃಪ್ರವಿಷ್ಟ ಅಂತಃಪ್ರವಿಷ್ಟ (ವಿಂ) 1. ಒಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿರುವ, ಒಳಹೊಕ್ಕಿರುವ. 2. ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ಅಡಗಿರುವ.

ಅಂತಃಶಲ್ಯ ಅಂತಃಶಲ್ಯ (ನಂ) ಮನಸ್ಸಿಗೆ ನೋವುಂಟು ಮಾಡುವ ವಿಷಯ, ಶಲ್ಯದಂತೆ ಮನಸ್ಸನ್ನು ನೋಯಿಸುವ ವಸ್ತು.

ಅಂತಃಸಂಜ್ಞ ಅಂತಃಸಂಜ್ಞ (ವಿಂ) ಒಳಚೈತನ್ಯವುಳ್ಳ ಮರ, ಗಿಡ, ಬಳ್ಳಿ ಮೊದಲಾದುವು; ಮಾತನಾಡಲು ಸಾಮರ್ಥ್ಯವಿಲ್ಲದ ಜೀವಿಗಳು. "ತಮಸಾ ಬಹುರೂಪೇಣ ವೇಷಿತಾಃ ಕರ್ಮ-ಹೇತುನಾ। ಅಂತಃಸಂಜ್ಞಾ ಭವಂತ್ಯೇತೇ ಮುಖದುಃಖಸಮನ್ವಿತಾಃ" ಮನುಂ ೧-೪೯।

ಅಂತಃಸತ್ವಾ ಅಂತಃಸತ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರ್ಭಿಣಿ, ಗರ್ಭವತಿ. ಅಂತಃ ಗರ್ಭೇ ಸತ್ವಂ ಪ್ರಾಣಿ ಯಸ್ಯಾಃ।

ಅಂತಃಸ್ವೇದ ಅಂತಃಸ್ವೇದ (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. ಅಂತಃ ಸ್ವೇದೋ ಮದಜಲಂ ಯಸ್ಯ।

ಅಂತಃಕ ಅಂತಃಕ (ಪುಂ) 1. ಮೃತ್ಯು. ಅಂತಯತಿ - ಅಂತ + ಣಿಕ್ "ಠ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಯಮ. "ಕೃಷಿ-ಪ್ರಭಾವಾನ್ಮಯಿ ನಾಂತಕೋಽಪಿ ಪ್ರಭುಃ ಪ್ರಹರ್ತು ಕಿಮುತಾನ್ಯಹಿಸ್ತಾಃ" ರಘುಂ ೨-೬೨। 3. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಮಾತ್ಮ. "ಮಹೋದಧಿಶಯೋಽಂತಃಕಃ" ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 4. ವಿನಾಶ ಪಡಿಸುವ. "ಕ್ರೋಧಾನ್ವಸ್ತಸ್ಯ ತಸ್ಯ ಸ್ವಯಮಿಹ ಜಗತಾ-ಮಂತಕಸ್ಯಾನ್ತಕೋಽಹಮ್" ವೇಣೀಂ ೩-೩೦।

ಅಂತಃಕರ ಅಂತಃಕರ (ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸುವ. ಅಂತಃ ಕರೋತಿ - ಡುಕ್ರ (ಕರಣೆ) "ಠಃ" (೩-೨-೨೦)।

ಅಂತಃಕರಣ ಅಂತಃಕರಣ (ನಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ನಾಶಪಡಿಸುವ. ಅಂತಃ ಕರೋತಿ - ಡುಕ್ರ (ಕರಣೆ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)। "ಛೃತಂ ಸಮಾಹ್ವಯಂ ಚೈವ ರಾಜಾ ರಾಷ್ಟ್ರಾನ್ವಿವಾರಯತ್। ರಾಜಾನ್ತಕರಣಾವೇತೀ ಹೀ ದೋಷೌ ಪೃಥಿವೀಕ್ಷಿತಾಮ್" ಮನುಂ ೯-೨೨೧।



ಅಂತರಂಗ ಅಂತರಂಗ (ನಂ) 1. ಹೃದಯ, ಮನಸ್ಸು, ಅಂತಃಕರಣ. 2. (ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ) ಪರ ಮತ್ತು ನಿತ್ಯಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಬಾಧಿಸಿ ಬರುವ ಒಂದು ಶಾಸ್ತ್ರ, ಅಂತರಂಗಶಾಸ್ತ್ರ. "ಪರನಿತ್ಯಾಂತರಂಗಾಪಾದಾನಾಮುತ್ತರೋತ್ತರಂ ಬಲೀಯಃ" (ಪರಿಂ ೩೯)। (ವಿಂ) 3. ಬಹಳ ಪ್ರಿಯ ವಾದ, ಪ್ರೇಮಪಾತ್ರವಾದ. ಅಂತರಂ ಸದೃಶಮಂಗ್ಲಂ ಯಸ್ಯ। "ಚರಮಗಿರಿಕುರಂಗೀಶ್ವರಗುಣಭೂತೇನ ಸ್ವಪಿಪಾತೇ ಸುಖಮಿದಾನಿ-ಮಂತರಂಗಃ ಕುರಂಗಃ"। 4. ವಿಶ್ವಾಸಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರನಾದ, ನಂಬಿಕೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದ (ಸ್ನೇಹಿತ). "ಅಂತರಂಗೈಃ ರಾಜ್ಯಭಾರಂ ಸಮರ್ಪ್ಯ" ದಶಕಂ।



ಅಂತರಚಕ್ರ ಅಂತರಚಕ್ರ (ನಂ) 1. ದೇಹದಲ್ಲಿ ಸುಷುಮ್ನಾ ನಾಡಿಯ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಪದ್ಮಾಕಾರದ ಆರು ಚಕ್ರಗಳು. 2. ತನ್ನವರ ಸಮೂಹ, ಆತ್ಮೀಯರ ಗುಂಪು. [ಎವರಕ್ಕೆ "ಚಕ್ರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಅಂತರಜ್ಞ ಅಂತರಜ್ಞ (ವಿಂ) ವಿಶೇಷ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ, ವ್ಯತ್ಯಾಸವನ್ನು ಅರಿತಿರುವ. ಅಂತರಂ ಭೇದಂ ಜಾನಾತಿ - ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ್ತ." (೩-೨-೩)। "ನಾಂತರಜ್ಞಾಃ ಶ್ರಿಯೋ ಜಾತು ಪ್ರಿಯೇರಾಸಾಂ ನ ಭಯತೇ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೨೪।

ಅಂತರತಮ ಅಂತರತಮ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ಹೋಲುವ, ಬಹುಭಾಗ ಸಮಾನವಾಗಿರುವ. "ಸ್ಥಾನೇಂತರತಮಃ" (೧-೧-೪೦)।

ಅಂತರತಸ್ ಅಂತರತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ, ನಡುವೆ. ಅಂತರ "ತಸಿಃ" (ವಾಂ ೪-೪-೪೪)। "ತೃಣಮಂತರತಃ ಕೃತ್ವಾ ರಾವಣಂ ವಾಕ್ಯಮಬ್ರವೀತ್" ರಾಮಾಂ।

ಅಂತರದಿಶ್ ಅಂತರದಿಶ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿದಿಕಕ್ಕು, ಮಧ್ಯದ ದಿಕ್ಕು; ಆಗ್ನೇಯ, ನೈಋತ್ಯ, ವಾಯವ್ಯ ಮತ್ತು ಈಶಾನ್ಯ ದಿಕ್ಕುಗಳು.

ಅಂತರದೃಶ್ ಅಂತರದೃಶ್ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ಪರಮಾತ್ಮಧ್ಯಾನಾಸಕ್ತ. ಅಂತರೇ ಪರಮಾತ್ಮನಿ ದೃಕ್ ಯಸ್ಯ। (ವಿಂ) 2. ವಿಶೇಷವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ, ಭೇದವನ್ನು ಅರಿತಿರುವ. ಅಂತರಂ ಪಶ್ಯತಿ - ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣಂ) "ಕ್ಷಿಪ್" (೩-೨-೭೬)।

ಅಂತರದೇಶ ಅಂತರದೇಶ (ಪುಂ) ಮಧ್ಯದೇಶ, ನಡುವಣ ಪ್ರದೇಶ.

ಅಂತರಪಟ ಅಂತರಪಟ (ಪುಂ) ಇಬ್ಬರ ಮಧ್ಯೆ ಹಿಡಿಯುವ ಬಟ್ಟೆಯ ಪರದೆ, ವಧೂವರರ ಅಥವಾ ಗುರುತಿಸ್ವರ ಸಮಾಗಮಕ್ಕೆ ಮುಂಚೆ ಅವರಿಬ್ಬರ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಹಿಡಿಯುವ ತೆರೆ.

ಅಂತರಪುರುಷ ಅಂತರಪುರುಷ (ಪುಂ) 1. ಅಂತರ್ಯಾಮಿ, ಪರಮಾತ್ಮ. 2. ಮಧ್ಯಸ್ಥನಾದ ಮನುಷ್ಯ.

ಅಂತರಪೂಜಾ ಅಂತರಪೂಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾನಸಿಕ ಪೂಜೆ, ತಂತ್ರೋಕ್ತಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಮನಸ್ಸಿನಿಂದ ಕಲ್ಪಿತವಾದ ಉಪಚಾರಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ಪೂಜೆ.

ಅಂತರಪ್ರಭವ ಅಂತರಪ್ರಭವ (ಪುಂ) ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು, ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು. ಅಂತರಾಮ್ಯಾಂ ಭಿನ್ನವರ್ಣಮಾತಾ-ಪಿತೃಮ್ಯಾಂ ಪ್ರಭವತಿ। "ಅಂತರಪ್ರಭವಾಣಾಂ ಚ ಧರ್ಮಾನ್ವಿ ವಕ್ತು-ಮಹಿಸಿ" ಮನ್ವಂ ೧-೨।

ಅಂತರಯ ಅಂತರಯ (ಪುಂ) 1. ವ್ಯವಧಾನ. (ವಿಂ) 2. ಚಿತ್ತದಲ್ಲಿರುವ, ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿರುವ.

ಅಂತರಶಾಯಿನ್ ಅಂತರಶಾಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ನೆಲೆಸಿರುವ ಜೀವ. (ವಿಂ) 2. ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ.

ಅಂತರಾ ಅಂತರಾ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ, ನಡುವೆ. (1) ಮಾರ್ಗದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ. "ಕುಮಾರ! ಮಮಾಂತಿಕ-ಮುಪಾಗಂಚ್ಛನ್ ಅಂತರಾ ತ್ವದೀಯೇನಾಂತಪಾಲೇನಾವಸ್ಕಂಧ್ಯ ಗೃಹಿತಃ" ಮಾಲಂ ೧। (2) ಮಧ್ಯಕಾಲದಲ್ಲಿ. "ನಾಡಾಂಚ್ಛೇವಾಂತರಾ ತಥಾ"। (3) ಮಧ್ಯೆ ಮಧ್ಯೆ, ಆಗಾಗ್ಗೆ. "ಅಂತರಾ ಪಿತೃಸಕ್ತಮಂತರಾ ಮಾತೃಸಕ್ತಮಾಲಾಪಂ ಕುರ್ವನ್" ಕಾದಂ। (4) ಎರಡರ ನಡುವೆ, ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ. "ಅಂತರಾ ತ್ವಾಂ ಚ ಮಾಂ ಚ ಕಮಣಢಲಃ"। "ಅಂತರಾ ತ್ವಾಂ ಮಾಂ ಹರಿಃ"। 2. ಇಲ್ಲದೆ, ವಿನಾ, ಹೊರತು, ಬಿಟ್ಟು. "ನ ಚ ಪ್ರಯೋಜನಮಂತರಾ ಚಾಣಕ್ಯಃ ಸ್ವಪ್ನೇಽಪಿ ಚೇಷ್ಟತೇ" ಮುಡ್ರಾಂ ೩। 3. ಸನ್ನಿಧಿ, ಸಾಮೀಪ್ಯ, ಹತ್ತಿರ. 4. ಸುತ್ತಲೂ. 5. ಎದುರು. 6. ಸಂಪೂರ್ಣ. 7. ಎರಡು ಕಡೆಯೂ. 8. ಶೀಘ್ರ, ಬೇಗ, ಜಾಗ್ರತೆ. "ಅಂತರಾ ಪುನಃ। ವಿನಾಶಂ ಸನ್ನಿಧೌ ಮಧ್ಯೇಽಭಿತೋಽಭಿಮುಖ-ಕಾತ್ಸರ್ಯಯೋಃ। ಸಮೀಪೋಭಯತಃಶೀಘ್ರೇಷು" ಹೇಮಂ।

ಅಂತರಾತ್ಮನ್ ಅಂತರಾತ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಜೀವಾತ್ಮ. "ಜಾತೋ ಮಮಾಯಂ ವಿಶದಃ ಪ್ರಕಾಶಂ ಪ್ರತ್ಯಪಿತನ್ಯಾಸ ಇವಾಂತರಾತ್ಮಾ" ಶಾಕುಂ ೪-೨೧। 2. ಅಂತರ್ಯಾಮಿ, ಪರಮಾತ್ಮ. "ಅಂತರಾತ್ಮನಿ ನಿವಿಷ್ಟಮಂತರಾ" ಯಾದಂ ೧೭-೧೨೬।

ಅಂತರಾಯ ಅಂತರಾಯ (ಪುಂ) 1. ವಿಘ್ನ, ಪ್ರತಿಬಂಧಕ. ಅಂತರ್ಮಧ್ಯೇ ಅಯನಮ್ - ಅಯ (ಗತೌ) "ಘಕ್" (೩-೩-೧೮)। "ತ್ವಮಂತರಾಯೋ ಭವಸಿ ಚ್ಯುತೋ ವಿಧಿಃ" ರಘುಂ ೩-೪೪। 2. ವ್ಯವಧಾನ, ನಡುವೆ ಬರೋಣ. (ವಿಂ) 3. ವಿಘ್ನವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.

ಅಂತರಾರಾಮ ಅಂತರಾರಾಮ (ಪುಂ) ಒಳಗೇ ಸಂತೋಷ ಪಡುವವನು, ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ಆತ್ಮಾನಂದವನ್ನನುಭವಿಸುವವನು. ಅಂತರೇ ಆತ್ಮನಿ ಆರಮತೇ। "ಯೋಽಂತಃ ಸುಖೋಽಂತರಾರಾಮಃ" ಗೀತಾ ೪-೨೪।

ಅಂತರಾಲ ಅಂತರಾಲ (ನಂ) 1. ಒಳಭಾಗ, ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶ. ಅಂತರಮವಕಾಶಂ ಲಾತಿ - ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)। "ಮೃದುರಂತರಾಲಭುವಮಸ್ತಗಿರೇಃ" ಮಾಘಂ ೧-೨। 2. ಮಿಶ್ರಜಾತಿ, ಬೆರಕೆಜಾತಿ. "ವರ್ಣಾನಾಂ ಸಾಂತರಾಲಾನಾಂ ಸ ಸದಾಚಾರ ಉಚ್ಯತೇ"।

ಅಂತರಾಲದಿಶ್ ಅಂತರಾಲದಿಶ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿದಿಕಕ್ಕು, ಆಗ್ನೇಯ ಮೊದಲಾದ ಮಧ್ಯ ದಿಕ್ಕುಗಳು.



ಅಂತರಿಕ್ಷ ಅಂತರಿಕ್ಷ (ನಂ) ಗಗನ, ಆಕಾಶ. ಅಂತಃ  
ಕಕ್ಷಾಪ್ಯಸ್ಯ | ಪೃಷೋ | "ಅಂತರಿಕ್ಷಮಣಿರ್ದರ್ಪಣಾಂತರೇ" ಯಾದಂ  
೧೭-೨೫ |

ಅಂತರಿತ ಅಂತರಿತ (ವಿಂ) 1. ಒಳಗೆ ಸೇರಿರುವ.  
ಅಂತರ್+ ಇನ್(ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | 2. ಮುಚ್ಚಿ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಂತರ್+ ಣಿಕ್ ಕರ್ಮಂ  
"ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಶ್ರಿಯಃ ಪದನಿಷಣ್ಣಾಃ  
ಕ್ಷೌಮಾಂತರಿತಮೇಖಲೇ" ರಘುಂ ೧೦-೮ | 3. ಮರೆಯಾದ,  
ಅದೃಶ್ಯವಾದ. "ದ್ವಿಪ್ರತಾಪಾಂತರಿತೋಸ್ತೇಜಾಃ" ಕಿರಾಂ  
೩-೪೫ |

ಅಂತರಿಂದ್ರಿಯ ಅಂತರಿಂದ್ರಿಯ (ನಂ) ಅಂತಃಕರಣ,  
ಚಿತ್ತ, ಮನಸ್ಸು.

ಅಂತರೀಕ್ಷ ಅಂತರೀಕ್ಷ (ನಂ) ಗಗನ, ಆಕಾಶ. ಛಾವಾ-  
ಪೃಥಿವ್ಯೋರಂತರೀಕ್ಷಯತೇ -ಅಂತರ್+ ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) "ಘಜ್"  
(೩-೩-೧೯) | "ಅಂತರ್ಜಲೋಮವಗಾಢವತಃ ಕಪೋಲೌ ಹಿತ್ವಾ  
ಕ್ಷಣಂ ವಿತತಪಕ್ಷತಿರಂತರೀಕ್ಷೇ" ಮಾಘಂ ೫-೩೮ |

ಅಂತರೀಪ ಅಂತರೀಪ (ನಂ) ದ್ವೀಪ, ನೀರಿನ ಮಧ್ಯೆ  
ಪ್ರದೇಶ, ನೀರಿನ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ದಿಣ್ಣೆ. ಅಂತರ್ಗತಾ  
ಆಪೋ ಯಸ್ಮಿನ್ "ಅಃ" (೫-೪-೭೪) "ಇತ್" (೬-೩-೯೭) |

ಅಂತರೀಯ ಅಂತರೀಯ (ನಂ) ಕೆಳಗಿನ ಬಟ್ಟೆ, ಉಡುವ  
ಬಟ್ಟೆ. ಅಂತರೇ ಭವಮ್ "ಛಃ" (೪-೨-೧೩೮) |

ಅಂತರೇ ಅಂತರೇ (ಅವ್ಯಂ) ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ, ನಡುವೆ.  
ಅಂತರೇತಿ-ಇನ್(ಗತೌ) "ವಿಕ್" (೩-೨-೭೫) | "ಆವಯೋ-  
ರಂತರೇ ಜಾತಾಃ ಪರ್ವತಾಃ ಸರಿತೌ ದ್ರುಮಾಃ" | "ಮಧ್ಯೇ ಸ್ಯಾದಂತರೇ-  
ಣಾಂತರೇಜ್ಜಂತರಾ" ವೈಜಂ |

ಅಂತರೇಣ ಅಂತರೇಣ (ಅವ್ಯಂ) 1. ವಿನಾ, ಹೊರತು,  
ಬಿಟ್ಟು. ಅಂತರೇತಿ -ಇನ್(ಗತೌ) "ಞಃ" | "ಕ್ರಿಯಾ-  
ಂತರಾಂತರಾಯಮಂತರೇಣ" ಮುದ್ರಾಂ ೩ | 2. ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ, ನಡುವೆ.  
"ಮೃಣಾಲಸೂತ್ರಾಮಲಮಂತರೇಣ" ಮಾಘಂ ೩-೩ |

ಅಂತರ್ಗಡು ಅಂತರ್ಗಡು (ವಿಂ) ನಿರರ್ಥಕವಾದ, ಅಡಿನ  
ಕತ್ತಿನಲ್ಲಿರುವ ಮಾಂಸ ಪಿಂಡದಂತೆ ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ.  
ಅಂತರ್ಮಧ್ಯೇ ಗಢುರಿವ | "ಅಂತರ್ಗಡು ನಿರರ್ಥಕಮ್" ವೈಜಂ |

ಅಂತರ್ಗತ ಅಂತರ್ಗತ (ವಿಂ) 1. ಹೃದಯದಲ್ಲಿರುವ,  
ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿರುವ. ಅಂತಃ ಅಂತಃಕರಣೇ ಗತಃ | "ಅಂತರ್ಗತಂ  
ಪ್ರಾಣಭೃತಾಂ ಹಿ ವೇದ" ರಘುಂ ೨-೪೩ | 2. ದೇಹದಲ್ಲಿರುವ,  
ಶರೀರದಲ್ಲಿರುವ. 3. ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ, ಒಳಗಡೆ  
ಯಿರುವ. "ನಭಃ ಪ್ರತಿಚ್ಛಂದನಿಭೇನ ನೂನಮಂತರ್ಗತಂ ವ್ಯಜ್ಜಯತಿ  
ಸ್ವಧಾಮ್ನಾ" ಯಾದಂ ೧೮-೧೦೬ |

ಅಂತರ್ಗೃಹ ಅಂತರ್ಗೃಹ (ನಂ) 1. ಒಳಗಿನ ಮನೆ, ಮನೆ  
ಯೊಳಗಿನ ಕೊಠಡಿ, ಮಧ್ಯದ ಮನೆ. 2. ಕಾಶಿಯಲ್ಲಿ  
ಒಂದು ಯಾತ್ರಾಸ್ಥಳ. "ಪञ್ಚಕ್ರೋಶಾಂ ಕೃತಂ ಪಾಪಮಂತರ್ಗೃಹೇ  
ವಿನश्यತಿ" | (ಅವ್ಯಂ) 3. ಮನೆಯ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ.

ಅಂತರ್ಜಠರ ಅಂತರ್ಜಠರ (ಅವ್ಯಂ) ಉದರದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ,  
ಹೊಟ್ಟೆಯೊಳಗೆ. ಜಠರಸ್ಯಾಂತಃ |

ಅಂತರ್ದಶಾ ಅಂತರ್ದಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ಜ್ಯೋತಿಃಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ  
ಹೇಳಿರುವ) ಒಂದು ಗ್ರಹದ ಮಹಾದಶೆಯಲ್ಲಿ ಇತರ  
ಗ್ರಹಗಳು ಅಧಿಕಾರ ನಡೆಯಿಸಿ ಫಲಕೊಡುವ  
ಕಾಲ, ಭುಕ್ತಿ. ಅಂತರ್ಗತಾ ದಶಾ ಆಧಿಪತ್ಯಕಾಲಃ |

ಅಂತರ್ದಾಹ ಅಂತರ್ದಾಹ (ಪುಂ) ದೇಹದೊಳಗಿನ ತಾಪ,  
ಬೇಗುದಿ, ಅಂತಃ ಶರೀರಮಧ್ಯೇ ದಾಹಃ ತಾಪಃ |

ಅಂತರ್ದೃಷ್ಟ ಅಂತರ್ದೃಷ್ಟ (ವಿಂ) ದೃಷ್ಟಹೃದಯವುಳ್ಳ,  
ಕೆಟ್ಟ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಹೊರಗಡೆ ಸಾಧುವಾಗಿ ತೋರುವ.  
ಅಂತಃ ಅಂತಃಕರಣೇ ದೃಷ್ಟಃ |

ಅಂತರ್ಧಾರ ಅಂತರ್ಧಾರ (ನಂ) ಒಳಬಾಗಿಲು, ಮನೆಯೊಳ  
ಗಿನ ರಹಸ್ಯವಾದ ಬಾಗಿಲು. ಅಂತರ್ಗತಂ ದ್ವಾರಮ್ |

ಅಂತರ್ಧಾ ಅಂತರ್ಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರೆಯಾಗುವಿಕೆ. ಅಂತರ್+  
ಡು ಧಾಜ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) "ಅಡ್" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೬) |  
"ಅಂತರ್ಧಾಮುಪಯಯುಸ್ತಲಾವಲಿಪು" ಮಾಘಂ ೮-೧೨ |

ಅಂತರ್ಧಾನ ಅಂತರ್ಧಾನ (ನಂ) ಮರೆಯಾಗುವಿಕೆ.  
ಅಂತರ್+ಡು ಧಾಜ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) "ತ್ಯುಟ್" (೩-೩-  
೧೧೫) | "ಅಂತರ್ಧಾನವ್ಯಸನರಸಿಕಾ ರಾತ್ರಿಕಾಪಾಲಿಕೀಯಮ್"  
ಕುವಂ ಪುಂ ೫೯ |

ಅಂತರ್ಧಿ ಅಂತರ್ಧಿ (ಪುಂ) ಮರೆಯಾಗುವಿಕೆ. ಅಂತರ್+ಡು  
ಧಾಜ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕಿಃ" (೩-೩-೯೨) | "ಅಂತರ್ಧಿ  
ದ್ರುತಮಿವ ಕರ್ತುಮಶ್ರುವರ್ಪಃ" ಮಾಘಂ ೮-೪೨ |

ಅಂತರ್ನಗರ ಅಂತರ್ನಗರ (ನಂ) 1. ಅಂತಃಪುರ, ರಾಣಿ  
ವಾಸ. "ದಶಾನನಾಂತರ್ನಗರಂ ದದಶ" ರಾಮಾಂ | (ಅವ್ಯಂ) 2.  
ನಗರದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ, ನಗರದ ಒಳಭಾಗದಲ್ಲಿ. ನಗರ-  
ಸ್ಯಾಂತಃ | ಅನ್ಯಯಿಂ |

ಅಂತರ್ನಿಹಿತ ಅಂತರ್ನಿಹಿತ (ವಿಂ) ಒಳಗೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಒಳಗೆ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಂತಃ ನಿಹಿತಮ್ | "ಅಙ್ಗೇರಂತರ್ನಿಹಿತ-  
ವಚನಃ ಸೂಚಿತಃ ಸಮ್ಯಗರ್ಥಃ" ಮಾಲಂ ೨-೯ |

ಅಂತರ್ಭವಿ ಅಂತರ್ಭವಿ (ಪುಂ) 1. ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಸೇರುವಿಕೆ.  
2. ಮರೆಯಾಗುವಿಕೆ. 3. ಮನೋಭಾವ, ಮನಸ್ಸಿನ  
ಗುಣ, ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿ. ಅಂತರ್+ಭ್ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಘಜ್"  
(೩-೩-೧೮) |



ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸುವಿಕೆ. 2. ಚಿಂತೆ, ಹಂಬಲ. 3. ಧ್ಯಾನ.

ಅಂತರ್+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ "ಯುಕ್" (3-2-100)।

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ವಿಂ) ಮಧ್ಯೆ ಸೇರಿ ಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಮಧ್ಯೆ ಪ್ರವೇಶಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಅಂತರ್+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ "ಕ್" (3-2-102)।

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ವಿಂ) 1. ಒಳಗೆ ಸೇರಿರುವ. 2. ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ. 3. ಮರೆಯಾದ.

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ವಿಂ) 1. ದುಃಖಗೊಂಡ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಚಿಂತೆಯಿಂದ (ಹೊರಗಿನ ವ್ಯಾಪಾರವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು) ಕೊರಗುವ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. 2. ಸಮಾಧಾನಗೊಂಡ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಯೋಚನೆಯಿಲ್ಲದೆ ಪರಮಾತ್ಮನ ಧ್ಯಾನದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ಅಂತಃ ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಮನೋ ಯಸ್ಯ।

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಂತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಪರ್ವಚಕ್ರದಲ್ಲಿರುವ ಮಾತೃಕೆಗಳು, "ಅ" ಕಾರಾದಿ ವರ್ಣಗಳು.

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ಪುಂ) ದೇಹದೊಳಗಿನ (ತಂತ್ರೋಕ್ತವಾದ) ಪದ್ಯಗಳಲ್ಲಿ "ಅ" ಕಾರಾದಿ ವರ್ಣಗಳ ಉಚ್ಚಾರಣ ಪೂರ್ವಕ ಆಯಾ ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ನ್ಯಾಸ. ಇದರ ಕ್ರಮವು ತಂತ್ರಸಾರದಲ್ಲಿ ಈ ರೀತಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ:— "ಛಂದಃ ಪತ್ರಾಂಬುಜೇ ಕಂಠೇ ಸ್ವರಾನ್ ಘೋಷಾ ವಿನ್ಯಸೇತ್ | ದ್ವಾದಶಾಕ್ಷದಹೃತ್ಯಕ್ಷೇ ಕಾದಿನ್ ದ್ವಾದಶ ವಿನ್ಯಸೇತ್ | ದಶಪತ್ರಾಂಬುಜೇ ನಾಭೌ ಡಕಾರಾದಿನ್ಯಸೇದಶ | ಷಟ್ಪತ್ರಮಧ್ಯೇ ಲಿಂಗಸ್ಥೇ ಬಕಾರಾದಿನ್ ನ್ಯಸೇತ್ವ ಷಟ್ | ಆಧಾರೇ ಚತುರೋ ವರ್ಣಾನ್ ನ್ಯಸೇದ್ವಾದಿನ್ ಚತುರ್ದಲೇ | ಹಸ್ತೌ ಭೂಮಧ್ಯಗೇ ಗಂಧೇ ದ್ವಿದಲೇ ವಿನ್ಯಸೇತ್ ಪ್ರಿಯೇ | ತನ್ಮಧ್ಯೇ ಪರವಿಂದು ಚ ಸೃಷ್ಟಿ-ಸ್ಥಿತಲಯಾತ್ಮಕಮ್ | एवं ಸಮಾಹಿತಮನಾ ಧ್ಯಾಯೇನ್ಯಾಸೋಽಯಮಾಂತರಃ" ತನ್ತ್ರಸಾಂ।

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ವಿಂ) ಬಾಹ್ಯ ವ್ಯಾಪಾರವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಪರಮಾತ್ಮನ ಧ್ಯಾನಾಸಕ್ತವಾದ. ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ | "ಅಂತರ್ಮಾನಂ ಚಿತ್ತಮಿವಾನ್ವವಿನ್ದತ್" ಯಾದಂ 1-60।

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ಪುಂ) ಹೊಟ್ಟೆಯೊಳಗೆ ಮೃತವಾದ ಶಿಶು.

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ವಿಂ) ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ. ಅಂತರ್ಮಾನಾ:—ಅಂತರ "ಯತ್" (4-3-44)।

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ಪುಂ) ತಂತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಮಾನಸ ಪೂಜೆ. ಅಂತಃ: ಮನಸಾ ಕೃತೋ ಯಾಗಃ।

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ಪುಂ) ಈಶ್ವರ, ಪರಮಾತ್ಮ [ಒಳಗಡೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಜೀವನನ್ನು ತನ್ನ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರೇರಿಸುವುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಅಂತರ್ಮಾನಾ.]

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ಪುಂ) ಅಂತಃಪುರದಲ್ಲಿ ನಿಯುಕ್ತನಾದ ಅಧಿಕಾರಿ, ಕುಬ್ಜ, ವಾಮನ, ಕಿರಾತ ಮೊದಲಾದವರು. ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಮ್ಯಂತರಗೃಹೇ ನಿಯುಕ್ತಃ "ಠಕ್" (4-4-69)।

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರ್ಭಿಣಿ. ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಗರ್ಭಿಣಿಃ "ನುಕ್" (4-1-32)। "ಮತುಪ್" ನಿಪಾಂ। "ಡೀಪ್" (4-1-4)। "ತಸ್ಯಾಮೇವಾಸ್ಯ ಯಾಮಿನ್ಯಾಮಂತರ್ಮಾನಾ ಪ್ರಜಾವತೀ | ಸುತಾವಸೂತ ಸಂಪನ್ನೋ ಕೌಶದಣ್ಡಾವಿವ ಕ್ಷಿತಿಃ" ರಘುಂ 14-13।

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ವಿಂ) ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ, ಒಳಗಡೆಯಿರುವ. ಅಂತಃ: ವರ್ತತೇ—ವೃತ್ತ (ವರ್ತನೇ) "ಣಿನಿಃ" (3-2-36)।

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ಪುಂ) ಪಂಡಿತ, ಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ರಿತವನು. ಅಂತಃ: ಅಂತಃಕರಣೇ ವಾಣಿ ಶಾಸ್ತ್ರಾತ್ಮಿಕಾ ಯಸ್ಯ।

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ಪುಂ) ಒಳಗಡೆ ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು, ಮಧ್ಯೆ ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು.

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ಪುಂ) ಅಂತಃಪುರ, ರಾಣವಾಸ.

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ಪುಂ) ಅಂತಃಪುರದಲ್ಲಿ ನಿಯುಕ್ತನಾದ ಅಧಿಕಾರಿ. ಅಂತರ್ಮಾನಾ ನಿಯುಕ್ತಃ "ಠಕ್" (4-4-69)।

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ನಂ) 1. ಮನೆಯ ಒಳಭಾಗ. 2. ಅಂತಃಪುರ.

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ಪುಂ) ಅಂತಃಪುರದ ಅಧಿಕಾರಿ. ಅಂತರ್ಮಾನಾ ನಿಯುಕ್ತಃ।

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ಪುಂ) 1. ಬಾಯಿ ಮುಚ್ಚಿ ಕೊಂಡು ನಗುವುದು, ಮುಗುಳುನಗೆ, ಹೊರಕ್ಕೆ ತಿಳಿಯದಂತೆ ಒಳಗೇ ನಗುವುದು. ಅಂತಃ: ಅಪ್ರಕಾಶೋ ಹಾಸಃ "ಅಂತರ್ಮಾನಾಸತ್ಕಪೋಲಫಲಕಾಂ ಭೂತೋಪರಾಂ ಚುಂಬತಿ" ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ। (ವಿಂ) 2. ಗೂಢವಾದ ನಗುವುಳ್ಳ, ಒಳಗೇ ಅಡಗಿಸಿ ಕೊಂಡು ನಗುವ.

ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಅಂತರ್ಮಾನಾ (ವಿಂ) 1. ಮರೆಯಾದ, ಅದೃಶ್ಯವಾದ. ಅಂತರ್+ಙ್ ಧಾತ್ (ಧಾರಣೆ) "ಕ್" (3-2-102) "ಅಂತರ್ಮಾನಾ ಶಶಿನಿ ಸೇವ ಕುಮುದತೀ ಮೇ" ಶಾಕುಂ 4-2। 2. ಗುಪ್ತವಾದ, ರಹಸ್ಯವಾದ.



ಅಂತವತ್ ಅಂತವತ್ (ವಿಂ) 1. ನಶ್ವರವಾದ, ನಾಶ ಸ್ವಭಾವದ, ಕೊನೆಯುಳ್ಳ. ಅಂತೋ ನಾಶೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪)। "ಅಂತವಂತ ಇಮೇ ದೇಹಾ ನಿಯತಸ್ಯೋಕ್ತಾಃ ಶರೀರಣಿಃ" ಗೀತಾ ೨-೧೮। 2. ಎಲ್ಲೆಯುಳ್ಳ, ಅವಧಿಯುಳ್ಳ.

ಅಂತಶ್ಚಿದ್ರ ಅಂತಶ್ಚಿದ್ರ (ವಿಂ) 1. ಒಳಗಡೆ ರಂಧ್ರವುಳ್ಳ, ಒಳಗಡೆ ಟೊಳ್ಳಾಗಿರುವ. ಅಂತಃ ಶ್ಚಿದ್ರಮ್। "ಅಂತಶ್ಚಿದ್ರಾಣಿ ಭೂಯಾಸಿ ಕಂಠಕಾ ಬಹವೋ ಬಹಿಃ" ಕುವಂ ಪುಂ ೩೯। 2. ಒಳಜಗಳವುಳ್ಳ, ಅಂತಃಕಲಹವುಳ್ಳ.

ಅಂತಸದ್ ಅಂತಸದ್ (ಪುಂ) ಶಿಷ್ಯ. ಅಂತೇ ಸಮೀಪೇ ಸಿದತಿ - ಷಡ್ಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) "ಕ್ರಿಪ್" (೩-೨-೬೧)। "ತಮುಪಾಸತೇ ಗುಹಮಿವಾಂತಸದಃ" ಕಿರಾಂ ೬-೩೪।

ಅಂತಃಸಲಿಲ ಅಂತಃಸಲಿಲ (ನಂ) 1. ಭೂಮಿಯೊಳಗಿನ ನೀರು. ಅಂತರಪ್ರಕಾಶಂ ಸಲಿಲಮ್। (ವಿಂ) 2. ಒಳಗಡೆ ನೀರುಳ್ಳ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ನೀರಿನೊಳಗೆ, ನೀರಿನ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ.

ಅಂತಃಸಲಿಲಾ ಅಂತಃಸಲಿಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗುಹ್ಯಗಾಮಿನಿ, ಸರಸ್ವತೀ ನದಿ. ಅಂತರ್ಗತಂ ಸಲಿಲಮಸ್ಯಾಃ।

ಅಂತಸ್ತಾಪ ಅಂತಸ್ತಾಪ (ಪುಂ) 1. ದೇಹದೊಳಗಿನ ಬೇನೆ, ಜ್ವರ. 2. ಚಿಂತೆ, ಯೋಚನೆ.

ಅಂತಾವಸಾಯಿನ್ ಅಂತಾವಸಾಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಮುನಿ, ತಪಸ್ವಿ. ಅಂತೇ ವಯಸಿ ಅವಸ್ಯತಿ ತತ್ತ್ವಮ್। 2. ನಾಸಿತ, ನಾಯಿಂದ, ಕ್ಷೀರಕ. ನಖಾನಾಮಂತಮವಸಾತುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ - ಅಂತ+ಅವ+ಘೋ (ಅಂತಕರ್ಮಣಿ) "ಞಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮)। 3. ಚಂಡಾಲ. ಅಂತಾಯ ಪ್ರಾಣನಾಶಾಯ ಅವಸ್ಯತಿ। 4. ಚಂಡಾಲನಿಗೆ ನಿಷಾದಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಸಂಕರ ಜಾತಿಯವನು. "ಚಂಡಾಲಾತ್ ಪುಲಕಸಿ ಡೊಂಬಂ ನಿಪಾಢಂತಾವಸಾಯಿನಮ್" ವೈಜಂ।

ಅಂತಿ ಅಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ನಾಟಕ ಸಂಕೇತದಲ್ಲಿ) ಜೈಷ್ಠ ಸಹೋದರಿ.

ಅಂತಿಕ ಅಂತಿಕ (ನಂ) 1. ಸಮಾಪ, ಹತ್ತಿರ. ಅಂತೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೪)। "ಸಿಂಹಾಸನಾಂತಿಕ-ಚರಣ ಸಹೋಪಸರ್ಪನ್" ಮಾಲಂ ೧-೧೨। (ವಿಂ) 2. ಸಮಾಪದ, ಹತ್ತಿರದ.

ಅಂತಿಕತಮ ಅಂತಿಕತಮ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಸಮಾಪದ. ಅತಿಶಯೇನಾಂತಿಕಮ್ "ತಮಪ್" (೪-೩-೪೪)। "ನೆದಿಷ್ಟ-ಮಂತಿಕತಮಮ್" ಅಮಂ।

ಅಂತಿಕಾ ಅಂತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. (ನಾಟಕ ಸಂಕೇತದಲ್ಲಿ) ಜೈಷ್ಠ ಸಹೋದರಿ. "ನಾಟಕೋಕ್ತೌ ಚಾಪ್ರಜಾಂತಿಕಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 2. ಒಬ್ಬ. "ಅಧಿಶ್ರಯಣಿ ಚುಲ್ಲರಂತಿಕಾ" ವೈಜಂ।

ಅಂತಿಕಾಂತಿಕ ಅಂತಿಕಾಂತಿಕ (ನಂ) ಹೆಚ್ಚುಸಮೀಪ, ಬಹಳ ಹತ್ತಿರ. "ಅಂತಿಕಾಂತಿಕಗತೇಂದ್ರವಿಸೃಷ್ಟೇ" ಕಿರಾಂ ೯-೨೧।

ಅಂತಿಕಾಶ್ರಯ ಅಂತಿಕಾಶ್ರಯ (ಪುಂ) ಆಶ್ರಯಸ್ಥಾನ, ಅವಲಂಬನಸ್ಥಾನ. [ಲತೆಗಳಿಗೆ ವೃಕ್ಷಗಳು ಆಶ್ರಯ. ಪಂಡಿತರಿಗೆ ರಾಜನು ಆಶ್ರಯ.] "ಉಪಧನವಂತಿಕಾ-ಶ್ರಯಃ" ವೈಜಂ।

ಅಂತಿಮ ಅಂತಿಮ (ವಿಂ) 1. ಕೊನೆಯದಾದ. 2. ಕೊನೆಯಲ್ಲಿರುವ. ಅಂತೇ ಭವಃ "ಡಿಮಚ್" (ವಾಂ ೪-೩-೨೩)। "ಅಜಾತಮೃತಮೂರ್ಖಾಣಾಂ ವರಮಾಶೌ ನ ಚಾಂತಿಮಃ" ಹಿತಂ।

ಅಂತೇವಸತ್ ಅಂತೇವಸತ್ (ಪುಂ) ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ, ಶಿಷ್ಯ. ಅಂತೇ ಸಮೀಪೇ ವಸತಿ - ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಛಂದೋಮಯಿನಾಂ ನಿಲಯಸ್ಯ ವಾಚಾಮಂತೇವಸಂತೋ ಮುನಿಪುಂಜವಸ್ಯ" ಚಂ ರಾಂ।

ಅಂತೇವಾಸಿನ್ ಅಂತೇವಾಸಿನ್ (ಪುಂ) 1. ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ, ಶಿಷ್ಯ. ಅಂತೇ ಸಮೀಪೇ ವಸತಿ - ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ಞಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮)। "ವೇದಮನುಚ್ಯಾಚಾರ್ಯೋಽಂತೇವಾಸಿನಮನುಶಾಸ್ತಿ" ತೈಂ ೩ಂ। 2. ಚಂಡಾಲ. ಗ್ರಾಮಾದೇರಂತೇ ವಸತಿ। (ವಿಂ) 3. ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ. "ಅಂತೇವಾಸಿ ಶಿಷ್ಯೋಽಪಿ ಸ್ಯಾಚ್ಚಂಡಾಲೇ ಪ್ರಾಂತಗೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ।

ಅನ್ಯ ಅನ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಚಂಡಾಲ. ಅಂತೇ ಭವಃ "ಯತ್" (೪-೩-೪೪)। (ವಿಂ) 2. ಕೊನೆಯದಾದ, ಕಡೆಯಲ್ಲಿರುವ, ಕೊನೆಯಲ್ಲುಂಟಾದ. ಅಂತೇ ಭವಮ್। 3. ಅಧಮ, ನೀಚ ಗುಣವುಳ್ಳವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನ್ಯಾ ಅನ್ಯಾ. 4. ಮುಸ್ತೆ, ಕೊನ್ನಾರಿ.

ಅನ್ಯಾಕ್ಷಣ ಅನ್ಯಾಕ್ಷಣ (ನಂ) ಮೂರು ಋಣಗಳಲ್ಲಿ ಕೊನೆಯದು, ಪಿತ್ಯುಷುಣ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಕ್ಷಣವತ್" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಅನ್ಯಜ ಅನ್ಯಜ (ಪುಂ) 1. ಶೂದ್ರ. 2. ಅಗಸ, ಚಮ್ಮಾರ ಮೊದಲಾದ ಏಳು ಜಾತಿಯವರು. "ರಜಕ-ಶ್ಚರ್ಮಕಾರಶ್ಚ ನಟೋ ವರಡ ಏವ ಚ। ಕೇವಲತಮೇದಭಿಲ್ಲಾಶ್ಚ ಸಪ್ತೇತೇ ಚಾನ್ಯಜಾಃ ಸ್ಮೃತಾಃ" ಅತ್ರಿಸಂಂ। (ವಿಂ) 3. ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಢಾಪ್" (೪-೨-೪)। -ಜಾ-ಜಾ.



ಅನ್ಯಜನ್ಮನ್ ಅಂತ್ಯಜನ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಶೂದ್ರ. ಅನ್ಯಂ ಜನ್ಮಾಸ್ಯ | "ಪ್ರತಿಗ್ರಹಸ್ತು ಕ್ರಿಯತೇ ಶೂದ್ರಾದಪ್ಯನ್ಯಜನ್ಮನಃ" ಮನುಂ ೧೦-೧೧ | 2. ಚಂಡಾಲ.

ಅನ್ಯಭ ಅಂತ್ಯಭ (ನಂ) ಕೊನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ, ರೇವತಿ ನಕ್ಷತ್ರ.

ಅನ್ಯವರ್ಣ ಅಂತ್ಯವರ್ಣ (ಪುಂ) 1. ಪದದ ಕೊನೆಯ ಅಕ್ಷರ. 2. ವರ್ಣಮಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಕೊನೆಯ ಅಕ್ಷರ. 3. ಶೂದ್ರ, ನಾಲ್ಕು ವರ್ಣಗಳಲ್ಲಿ ಕೊನೆಯ ವರ್ಣ ದವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಫ" (೪-೧-೪) | -ವರ್ಣ-ವರ್ಣಾ.

ಅನ್ಯಾನುಪ್ರಾಸ ಅಂತ್ಯಾನುಪ್ರಾಸ (ಪುಂ) ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರ ಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. ಪದ್ಯಶಸ್ತ್ರರಸಹಿತವಾದ ವ್ಯಂಜನ ವರ್ಣವು ಪದಾಂತ್ಯದಲ್ಲೂ ಪಾದಾಂತ್ಯದಲ್ಲೂ ಪುನಃ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟರೆ ಅಂತ್ಯಾನುಪ್ರಾಸವಾಗುವುದು. "ವ್ಯಂಜನಂ ಚೇತ್ಯಾವಸ್ಥಂ ಸಹಾಘ್ರೇನ ಸ್ವರೇಣ ತು | ಆವರ್ತಯೇತ್-ನ್ಯಯೋಜ್ಯತ್ವಾದನ್ಯಾನುಪ್ರಾಸ ಉದಾ : ಪದಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ - "ಮಂದಂ ಹಸಂತಃ ಪುಲಕಂ ವಹಂತಃ" | ಪಾದಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ - "ಕೇಶಃ ಕಾಶಸ್ತವಕ-ವಿಕಾಸಃ ಕಾಯಃ ಪ್ರಕಟಿತಕರಮವಿಲಾಸಃ" |

ಅನ್ಯಾವಸಾಯಿನ್ ಅಂತ್ಯಾವಸಾಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಚಂಡಾಲನಿಂದ ಬೇಡರ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು. "ನಿಷಾದಸ್ತ್ರೀ ತು ಚಂಡಾಲಾತ್ ಪುತ್ರಮನ್ಯಾವಸಾಯಿನಮ್" ಮನುಂ ೧೦-೩೯ | 2. ಅಗಸ, ಚಮ್ಮಾರ ಮೊದಲಾದ ಏಳು ಜಾತಿಗೆ ಸೇರಿದವರು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಫಿ" (೪-೧-೪) | -ಅವಸಾಯಿನಿ - ಅವಸಾಯಿನೀ.

ಅನ್ಯಾಶ್ರಮ ಅಂತ್ಯಾಶ್ರಮ (ಪುಂ) ಕೊನೆಯ ಆಶ್ರಮ, ಸಂನ್ಯಾಸಾಶ್ರಮ.

ಅನ್ಯಾಶ್ರಮಿನ್ ಅಂತ್ಯಾಶ್ರಮಿನ್ (ಪುಂ) ಭಿಕ್ಷು, ಸಂನ್ಯಾಸಿ. ಅನ್ಯಾಶ್ರಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇತಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) |

ಅನ್ತ್ರ ಅಂತ್ರ (ನಂ) ಕರುಳು. ಅನ್ಯತೇ ಬध्यತೇ ದೇಹೋನೇನ - ಅತಿ (ಬಂಧನ) "ಫ್ರನ್" (೩೦ ೪-೧೪೯) |

ಅನ್ತ್ರಕೂಜಿತ ಅಂತ್ರಕೂಜಿತ (ನಂ) ಕರುಳಿನ ಒಳಗೆ ಆಗುವ ಶಬ್ದ, ಹೊಟ್ಟೆಯೊಳಗಿನ ಗುಡುಗಾಟ.

ಅನ್ದುಕ ಅಂದುಕ (ಪುಂ) 1. ಕಾಲು ಸರಪಳಿ, ಕಾಲಂದಿಗೆ, ಗೊಲಸು. ಅನ್ದ್ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೪-೪-೪) | 2. ಅನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಸರಪಳಿ.

ಅನ್ದ್ ಅಂದೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಲು ಸರಪಳಿ, (ಹೆಂಗಸರ) ಕಾಲಂದಿಗೆ, ಗೊಲಸು. ಅನ್ಯತೇ ಬध्यತೇನೇನ ಚರಣಮ್ - ಅದಿ (ಬಂಧನ) "ಕುಃ" (೩೦ ೧-೯೩) |

ಅನ್ಧ ಅಂಧ (ನಂ) 1. ಅಂಧಕಾರ, ಕತ್ತಲೆ. ಅನ್ಧಯತಿ - ಅನ್ಧ (ದೃಷ್ಟ್ಯುಪಪಾತೇ) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) | (ವಿಂ) 2. ಕುರುಡ, ಕಣ್ಣಿಲ್ಲದವನು. "ಅನ್ಧಸ್ಯ ದೈವಾದಿವ ದೃಷ್ಟಿಲಾಭಃ" ಯಾದಂ ೨-೬೯ | 3. ಅಮಲು ಮತ್ತು ಆವೇಶಗಳಿಂದ ಮೈಮರೆತವನು. ಮದಾನ್ಧಃ, ಕ್ರೋಧಾನ್ಧಃ, ಕಾಮಾನ್ಧಃ, ಅಜ್ಞಾನಾನ್ಧಃ ಇತ್ಯಾದಿ. "ಅನ್ಧಂ ಸ್ವಾತಿಮಿರೇ ಕಲಿವಂ ಚಕ್ಷುರ್ಹೀನೇಽಭಿಧೇಯವತ್" ಮೇದಿಂ |

ಅನ್ಧಕ ಅಂಧಕ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ, ಅಂಧಕಾಸುರ. 2. ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಶಾಪದಿಂದ ಕುರುಡನಾದ ಉತಥ್ಯ ಮುಷಿಯ ಮಗ. ಅನ್ಧ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" | 3. ಮರಣ, ಸಾವು. "ಕಾಲಧರ್ಮಸ್ತು ದಿಷ್ಟಾಂತೋ ನಿಪಾತೋ ಗಮಿರನ್ಧಕಃ" ವೇಜಂ | 4. ಅಂಧಕವಂಶದ ಮೂಲಪುರುಷನಾದ ಒಬ್ಬ ರಾಜ. 5. ಕತ್ತಲೆ. (ವಿಂ) 6. ಕುರುಡ, ಕಣ್ಣಿಲ್ಲದವನು.

ಅನ್ಧಕರಿಪು ಅಂಧಕರಿಪು (ಪುಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರ, ಶಿವ. ಅನ್ಧಕಸ್ಯ ತತ್ರಾಮಕಸ್ಯಾಸುರಸ್ಯ ರಿಪುಃ | 2. ಸೂರ್ಯ. 3. ಚಂದ್ರ. 4. ಅಗ್ನಿ, ಬಿಂಕೆ. ಅನ್ಧಕಸ್ಯಾನ್ಧಕಾರಸ್ಯ ರಿಪುಃ | ಈ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಅನ್ಧಕಶತ್ರುಃ ಅನ್ಧಕಾರಿ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಅನ್ಧಕಾರ ಅಂಧಕಾರ (ಪುಂ) ಕತ್ತಲೆ. ಅನ್ಧಂ ಕರೋತಿ - ಕ್ಕಾ (ಕರಣ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) | "ಅನ್ಯಾನ್ಧಕಾರಿ ಗಿರಿಗಿಹ್ವರಾಣಾಮ್" ರಘುಂ ೨-೪೬ |

ಅನ್ಧಕೂಪ ಅಂಧಕೂಪ (ಪುಂ) 1. ಕತ್ತಲೆಯಾಗಿರುವ ಬಾವಿ, ಪಾಳು ಬಾವಿ. 2. ಒಂದು ನರಕ. 3. ಅಜ್ಞಾನ, ಮೋಹ.

ಅನ್ಧತಮಸ ಅಂಧತಮಸ (ನಂ) 1. ಕಗ್ಗತ್ತಲೆ, ದಟ್ಟ ವಾದ ಕತ್ತಲೆ. ಅನ್ಧಂ ಚ ತತ್ತಮಸಚ "ಅಕ್" (೪-೪-೭೯) | "ಪ್ರಧ್ವಂಸಿತಾನ್ಧತಮಸಸ್ತತ್ರೋದಾಹರಣಂ ರವಿಃ" ಮಾಘಂ ೨-೩೩ | 2. ಕಗ್ಗತ್ತಲೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ನರಕ.

ಅನ್ಧತಾಮಸ ಅಂಧತಾಮಸ (ನಂ) ಕಗ್ಗತ್ತಲೆ, ದಟ್ಟ ವಾದ ಕತ್ತಲೆ. ಅನ್ಧಂ ಚ ತತ್ತಾಮಸಂ ಚ |

ಅನ್ಧತಾಮಿಸ್ರ ಅಂಧತಾಮಿಸ್ರ (ನಂ) ಕಗ್ಗತ್ತಲೆ, ದಟ್ಟ ವಾದ ಕತ್ತಲೆ. ಅನ್ಧಂ ಚ ತತ್ತಾಮಿಸ್ರಂ ಚ | (ಪುಂ) 2 ಇಪ್ಪತ್ತೊಂದು ನರಕಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡನೆಯದು, ಅತ್ಯಹಂಕಾರದಿಂದ ಕೂಡಿದವನಿಗೆ ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗುವ ನರಕ. "ಅನ್ಧತಾಮಿಸ್ರಾ ಹ್ಯಸೂರ್ಯಾಸ್ತಿ ಲೋಕಾಸ್ತೇಮ್ಯಃ ಪ್ರತಿವಿಧೀಯಂತೇ ಆತ್ಮಮಾತಿನ್ ಇತಿ ಕೃಷಯೋ ಮನ್ಯಂತೇ" ತಂ ರಾಂ ೪ | "ಯಃ ಪರವಿತ್ತಾಪತ್ಯಕಲತ್ರಾಣ್ಯಪಹರತಿ ಸ ಹಿ ಕಾಲಪಾಶಬದ್ಧಃ"



ಯಮಪುಷ್ಪೇರತಿಭಯಾನಕೇಸ್ತಾಮಿಸ್ತೇ ನರಕೇ ಬಲಾನ್ವಿಪಾತ್ಯತೇ।  
ಎವಮೇವಾನ್ವತಾಮಿಸ್ತೇ” भाग० ५-२६।

ಅನ್ಯತ್ವ ಅಂಧತ್ವ (ನಂ) ಕುರುಡುತನ, ವಸ್ತುಗಳನ್ನು  
ನೋಡುವ ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಅನ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: “ತವ:”  
(५-१-११९)।

ಅನ್ಯಪೂತನಾ ಅಂಧಪೂತನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಬಾಲಗ್ರಹ,  
ಸಣ್ಣ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಹಿಡಿಯುವ ಒಂದು ಭೂತ. “ಯೋ  
ದ್ವೇಷಿ ಸ್ತನಮತಿಸಾರಕಾಸಹಿವಕಾಞ್ಚದೊಂಭಿರ್ವರಸಹಿತಾಭಿರಣ್ವ-  
ಮಾನ:। ದುರ್ವಣ: ಸತತಮಧ:ಶಯೋಽಮ್ಲಗಂಧಿಸ್ತಂ ಬ್ರಯುರ್ವರಮಿ-  
ಷಜೋಽನ್ಯಪೂತನಾರ್ತಮ್” सुश्रु०।

ಅನ್ಯಮೂಷಿಕಾ ಅಂಧಮೂಷಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವತಾಳೆ  
ಮರ. ಅನ್ಯಂ ದೃಷ್ಟ್ಯಭಾವಂ ಮುಣಾತಿ—ಮುಪ (ಸ್ತೇಯೇ)  
“ಕಿಕಿನ್” ದೀರ್ಘಚ (उ० २-४२)। [ಇದರ ಸೇವನೆ  
ಯಿಂದ ದೃಷ್ಟಿಶಕ್ತಿಯುಂಟಾಗುವುದು.]

ಅನ್ಯಮಭಿವಿಣ್ಣು ಅಂಧಂಭವಿಷ್ಣು (ವಿಂ) ಕುರುಡನಾಗಿ  
ಆಗುವವನು. ಅನ್ಯೋಽನ್ಯೋ ಭವತಿ—ಅನ್ಯ (ಚ್ಯುತೇ) ಭೂ  
(सत्तायाम्) “ಖಿಣ್ಣು” (३-२-५७)। ಮುಮ್ (६-३-६७)।

ಅನ್ಯಮಭಾವುಕ ಅಂಧಂಭಾವುಕ (ವಿಂ) ಕುರುಡನಾಗಿ  
ಆಗುವವನು. ಅನ್ಯೋಽನ್ಯೋ ಭವತಿ—ಅನ್ಯ (ಚ್ಯುತೇ) ಭೂ  
(सत्तायाम्) “ಖುಕ” (३-२-५७)। ಮುಮ್ (६-३-६७)।

ಅನ್ಯಸ್ ಅಂಧಸ್ (ನಂ) ಅನ್ನ. ಅನ್ಯತೇ—ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ)  
“ಅಸುನ್” ನುಮ್ ಧಕಚ (उ० ४-२०६)। “ದ್ವಿಜಾತಿಶೇಷೇಣ  
ಯದೇತದನ್ಯಸಾ” किरा० १-३९।

ಅನ್ಯು ಅಂಧು (ಪುಂ) 1. ಬಾವಿ. 2. ಪುರುಷನ ಲಿಂಗ,  
ಪುರುಷನ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ. ಅಮಿ (ಗತೌ) “ಕ್ರು:”  
ಧುಕ್ಚ (उ० १-२७)। “ವಾಕ್ಪಾಣಿಪಾದಪಾಪ್ಯನ್ಯುಸಂಜ್ಞಾನ್ಯಾಹು-  
ಮಂತಿಪಿಣ:”।

ಅನ್ನ ಅನ್ನ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. [ಅನ್ನಕ್ಕೆ ಕಾರಣ  
ವಾದ ನೀರಿಗೂ ಕಾರಣವಾದುದರಿಂದ ಸೂರ್ಯನಿಗೆ  
ಈ ಹೆಸರು.] “ಆದಿತ್ಯಾಜ್ಜಾಯತೇ ವೃಷ್ಟಿವೃಷ್ಟೇರನ್ನಂ ತತಃ  
ಪ್ರಜಾ:” मनु० ३-७६। 2. ಅನ್ನ, ಆಹಾರ. ಅನ್ಯತೇ ಸ್ಮ  
—ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ) “ಕ್ರು:” (३-२-१०२)। “ಅನ್ಯತೇಽಸ್ತಿ  
ಚ ಭೂತಾನಿ। ತಸ್ಮಾದನ್ನಂ ತದ್ವಿಚ್ಯತ ಇತಿ” तै० उ०।  
3. ಬೇಯಿಸದ ಅನ್ನ. “ಚಂಡಾಲಾನ್ನಂ ಭುಕ್ತ್ವಾ ತ್ರಿರಾತ್ರ-  
ಮುಪವಸೇತ್”। 4. ಆಹಾರಧಾನ್ಯ. 5. ಭೂಮಿ.  
6. ನೀರು. [ಭೂಮಿ ಮತ್ತು ನೀರು ಎರಡೂ ಬೆಳೆಗೆ  
ಕಾರಣವಾದುದರಿಂದ.] 7. ಭೋಗ್ಯವಸ್ತು, ಸುಖ

ಸಾಧನ. “ಸ್ವಿರ್ಯೋಽನ್ನಂ ಪಶವೋಽನ್ನಂ ಚ ವಿಶೋಽನ್ನಂ ಚ ಮಹೀ-  
ಕ್ಷಿತಾಂ”। 8. ವಿಷ್ಣು. “ಯಜ್ಞಾಂತಕೃತ್ಯಜಗುಹ್ಯಮನ್ನಮನ್ನಾದ  
ಎವ ಚ” वि० स०। (वि०) 9. ಅನ್ನಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅನ್ನಕೋಷ ಅನ್ನಕೋಷ (ನಂ) ಉಗ್ರಾಣ, ಧಾನ್ಯ  
ಗಳನ್ನು ಶೇಖರಿಸಿಡುವ ಸ್ಥಳ, ಕಣಜ.

ಅನ್ನದ ಅನ್ನದ (ವಿಂ) ಅನ್ನವನ್ನು ಕೊಡುವ, ಆಹಾರ  
ವನ್ನು ಕೊಡುವ. ಅನ್ನಂ ದದಾತಿ—ತು ದಾನ್ (दाने) “ಕ್ರು:”  
(३-२-३)। ಸ್ವಿಯಾಮ್ -ದಾ-ದಾ.

ಅನ್ನದಾ ಅನ್ನದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನ್ನಪೂರ್ಣಾದೇವಿ.

ಅನ್ನದಾಸ ಅನ್ನದಾಸ (ಪುಂ) ಅನ್ನದಿಂದ ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ  
ಸೇವಕ.

ಅನ್ನದೋಷ ಅನ್ನದೋಷ (ಪುಂ) 1. ನಿಸಿದ್ಧವಾದ ಅನ್ನ  
ವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡಿದುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ದೋಷ  
(ಪಾಪ). 2. ಅಪಘ್ರಾಹಾರ ಸೇವನೆಯಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ  
ರೋಗರುಜಿನಾದಿರೂಪವಾದ ದೋಷ. 3. ವೈಶ್ಯ  
ದೇವದಿಂದ ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ ಐದು ಅನ್ನ  
ದೋಷಗಳು. [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಪञ्चसूना” ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.]

ಅನ್ನಪಾಕ ಅನ್ನಪಾಕ (ಪುಂ) 1. ಅಡಿಗೆ ಮಾಡುವುದು,  
ಆಹಾರ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಬೇಯಿಸುವುದು. 2. ಹೊಟ್ಟೆ  
ಯಲ್ಲಿ ತಿಂದ ಆಹಾರವು ಜೀರ್ಣವಾಗುವಿಕೆ.

ಅನ್ನಪೂರ್ಣಾ ಅನ್ನಪೂರ್ಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನ್ನಪೂರ್ಣಾದೇವಿ.  
ಅನ್ನಂ ಪೂರ್ಣಂ ಯಾ।

ಅನ್ನಪ್ರಾಶನ ಅನ್ನಪ್ರಾಶನ (ನಂ) ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಮೊದಲು  
ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಅನ್ನವನ್ನು ಉಣಿಸುವುದು.  
ಪ್ರಕೃಷ್ಠಂ ಶಾಸ್ತ್ರಕ್ರಮೇಣ ಪ್ರಥಮಪ್ರಾಶನಂ ಪ್ರಾಶನಮ್। ಅನ್ನಸ್ಯ  
ಪ್ರಾಶನಮ್। [ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಆರು ಅಥವಾ ಎಂಟನೇ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ  
ಅನ್ನಪ್ರಾಶನ ಮಾಡಿಸಬೇಕು.] “ಷಡ್ವಿಂಶಪ್ರಾಶನಂ  
ಮಾಸಿ ಯದ್ವೇಷಂ ಮಜ್ಜಲಂ ಕುಲೇ” मनु० २-३४। “ಅಷ್ಟಮೇ  
ವಾಸ್ಯ ಕರ್ತವ್ಯಂ ಯದ್ವೇಷಂ ಮಜ್ಜಲಂ ಕುಲೇ”।

ಅನ್ನಭಕ್ತ ಅನ್ನಭಕ್ತ (ಪುಂ) ಅನ್ನದಿಂದ ಸೇವಕನಾದ  
ವನು, ಒಬ್ಬರ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಅನ್ನತಂದು ಅವರ ಚಾಕರಿ  
ಮಾಡುವವನು.

ಅನ್ನಮಲ ಅನ್ನಮಲ (ನಂ) 1. ಮದ್ಯ, ಮಾದಕ ದ್ರವ್ಯ.  
2. ಅನ್ನದಮೇಲಿನ ಸಾರ.

ಅನ್ನರಸ ಅನ್ನರಸ (ಪುಂ) 1. ಅನ್ನದ ಸಾರ, ಅನ್ನದಲ್ಲಿ  
ರುವ ಪುಷ್ಟಿಕರ ದ್ರವ್ಯ. 2. ಅನ್ನದ ರುಚಿ. ಅನ್ನಸ್ಯ  
ರಸ: ಸಾರಾಂಶ: स्वादो वा।



ಅಭಿವಿಕಾರ ಅನ್ವವಿಕಾರ (ಪುಂ) ಸಪ್ತಧಾತುಗಳಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯವಾದ ಶುಕ್ರಧಾತು. [ಶೋಣಿತಾದಿಧಾತುಗಳೆಲ್ಲವೂ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಪಾಕಹೊಂದಿ ಶುಕ್ರಧಾತು ವಾಗುವುದರಿಂದ ಇದೇ ಪ್ರಧಾನವಾದುದು.]

ಅಗ್ನಾದ ಅನ್ನಾದ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. "ಯಜ್ಞಾಂತಕೃತ್ಯ-ಗುಹ್ಯಮಗ್ನಿಮಗ್ನಾದ ಎವ ಚ" ವಿಂಸಂ. (ವಿಂ) 2. ಅನ್ನವನ್ನು ತಿನ್ನುವ. ಅಗ್ನಿಮತಿ - ಅದ (ಭಕ್ಷಣ) "ಅನ್" (3-2-1). 3. ಅನ್ನವನ್ನು ಉಟವಾಡಲು ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ, ಜಠರಾಗ್ನಿಯ ಬಲವುಳ್ಳ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಠಾಪ್" (4-1-4) 1-ದಾ-ದಾ.

ಅಗ್ನಾದಿನ್ ಅನ್ನಾದಿನ್ (ವಿಂ) ಅನ್ನವನ್ನು ತಿನ್ನುವ. ಅಗ್ನಿಮತಿ - ಅದ (ಭಕ್ಷಣ) "ಗ್ನಿನ್" (3-2-34). "ಭೇಷಣ ವರ್ತಯೇತ್ರಿಯ ನೈಕಾಗ್ನಾದಿ ಭವೇದ್ರತಿ" ಮನುಂ 2-122. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಠೀಪ್" (4-1-4). ಅಗ್ನಾದಿನಿ-ನೀ.

ಅಗ್ನಾಽಽ ಅನ್ನಾದ್ಯ (ನಂ) 1. ಅನ್ನರೂಪವಾದ ತಿಂಡಿ. (ವಿಂ) 2. ಅನ್ನ ಮೊದಲಾದ.

ಅಗ್ನಾಯುಸ್ ಅನ್ನಾಯುಸ್ (ವಿಂ) ಅನ್ನದಿಂದ ಜೀವಿಸುವ. ಅಗ್ನಿಮಾಯುಜೀವನಸಾಧನಂ ಯಸ್ಯ.

ಅಗ್ನಾಶನ ಅನ್ನಾಶನ (ನಂ) ಅನ್ನಪ್ರಾಶನ, ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಮೊದಲು ಅನ್ನವನ್ನು ಉಣಿಸುವುದು. ಅಗ್ನಸ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರವಿಧಾನೇನ ಆಶನಮ್.

ಅನ್ಯ ಅನ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಇತರ, ಬೇರೆಯಾದ, ಭಿನ್ನವಾದ. ಅನ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ಯಃ" (3ಂ 4-111). "ಅದೃಷ್ಟಾಂತ-ಮಭೂದೃಷ್ಟಮನ್ಯದೃಷ್ಟಾಂತವಜಿತಮ್" ಯಾದಂ 16-101. "ನಾಸ್ತಿ ಜೀವಿತಾದನ್ಯದಭಿಮತಂ ಸರ್ವಜನ್ತುನಾಮ್" ಕಾದಂ. 2. ಮತ್ತೊಂದು, ಮತ್ತೊಬ್ಬ. "ಅನ್ಯೇನ ವಿದಧೇಽರಿಣಾಮತಿ-ಮಾತ್ರಾ ವಲಾಸಿನಾ" ಮಾಘಂ 19-40. 3. ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. "ಅನ್ಯಾನ್ ದಶ ಸುವರ್ಣಾನ್ ಪ್ರಯಚ್ಛ" ಮೃಚ್ಛಂ. 4. ಸಾಮಾನ್ಯ, ಉದಾಹರಣ. "ಸಾಧಾರಣ್ಯಾನಿರಾತಙ್ಕಃ ಕನ್ಯಾಮನ್ಯೋಽಪಿ ಯಾಚತೇ" ಮಂ ವೀಂ 1-31. 5. ಬೇರೆ ರೀತಿಯಾದ, ಇತರ ವಿಲಕ್ಷಣವಾದ. "ಅನ್ಯದುಚ್ಛೃಣ್ವಲ್ ಸತ್ವಮನ್ಯಚ್ಛಾಸ್ತ್ರನಿಯನ್ವಿತಮ್" ಮಾಘಂ 2-62. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಅನ್ಯಾ - ನ್ಯಾ. (ನಂ) ಅನ್ಯತ್ ಅನ್ಯತ್.

ಅನ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ ಅನ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ (ನಂ) 1. ಮತ್ತೊಬ್ಬನ ಪತ್ನಿ. 2. ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ಜಮೀನು. 3. ಪರದೇಶ, ಪರರಾಷ್ಟ್ರ, ಪರರಾಜ್ಯ.

ಅನ್ಯಚಿತ್ತ ಅನ್ಯಚಿತ್ತ (ನಂ) 1. ಬೇರೆ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತವಾದ ಮನಸ್ಸು. (ವಿಂ) 2. ಬೇರೆ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ.

ಅನ್ಯತ್ ಅನ್ಯತ್ (ಅವ್ಯಂ) ಇದಲ್ಲದೆ, ಮತ್ತೆ. "ಅನ್ಯನ್ವ, ಕೃತಕಕಲಹಂ ಕೃತ್ವಾ ಸ್ವತನ್ತ್ರೇಣ ವರ್ತಿತವ್ಯಮಿತ್ಯಾದಿಶಃ" ಮುद्रಾಂ 3.

ಅನ್ಯತಮ ಅನ್ಯತಮ (ವಿಂ) ಬಹುಮಂದಿಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ, ಬಹುಮಂದಿಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವನಾದರೊಬ್ಬ.

ಅನ್ಯತರ ಅನ್ಯತರ (ವಿಂ) ಇಬ್ಬರಲ್ಲೊಬ್ಬ, ಎರಡರಲ್ಲೊಂದು.

ಅನ್ಯತರೇದ್ಯುಸ್ ಅನ್ಯತರೇದ್ಯುಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಮತ್ತೊಂದು ದಿವಸ, ಎರಡರಲ್ಲೊಂದು ದಿವಸ. ಅನ್ಯತರ "ಏದ್ಯುಸ್" (4-3-22).

ಅನ್ಯತಸ್ ಅನ್ಯತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಮತ್ತೊಬ್ಬ ನಿಂದ, ಮತ್ತೊಂದರಿಂದ, ಮತ್ತೊಂದು ಕಡೆಯಿಂದ. ಅನ್ಯಸ್ಮಾತ್ - ಅನ್ಯ "ತಸಿಲ್" (4-3-3). "ನ ಚಾನ್ಯತಸ್ತಸ್ಯ ಶರೀರರಕ್ಷಾ ಸ್ವವೀರ್ಯಗುಪ್ತಾ ಹಿ ಮನೋ ಪ್ರಸೂತಿಃ" ರಘುಂ 2-4. 2. ಬೇರೆ ಕಡೆಗೆ, ಮತ್ತೊಂದೆಡೆಗೆ. "ಗುರೋಽತ್ರ ಪರಿವಾದೋ ನಿಂದಾ ವಾಪಿ ಪ್ರವರ್ತತೇ. ಕರ್ಣೌ ತತ್ರ ಪಿಧಾತವ್ಯೌ ಗನ್ತವ್ಯಂ ವಾ ತತೋಜ್ಯತಃ" ಮನುಂ 2-200. "ಆಯೇ ವ್ರಜಾಮೋಜ್ಯತ ಇತ್ಯರ್ಥನಾಮ್" ರಘುಂ 6-42. 3. ಬೇರೆ ಕಡೆಯಲ್ಲಿ, ಮತ್ತೊಂದೆಡೆಯಲ್ಲಿ. "ತಪನಮಂಡಲದೀಪಿತಮೇಕತಃ ಸತತ-ನೇಶತಮೋವೃತಮನ್ಯತಃ" ಕಿರಾಂ 4-2.

ಅನ್ಯತಸ್ತ್ಯ ಅನ್ಯತಸ್ತ್ಯ (ವಿಂ) ಶತ್ರುಪಕ್ಷದಲ್ಲಿರುವ. ಅನ್ಯತೋ ಭವಃ "ತ್ಯಪ್" (4-2-104).

ಅನ್ಯತ್ರ ಅನ್ಯತ್ರ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಬೇರೆ ಕಡೆ, ಮತ್ತೊಂದೆಡೆಯಲ್ಲಿ. ಅನ್ಯಸ್ಮಿನ್ - ಅನ್ಯ "ತ್ರಲ್" (4-3-10). 2. ಅದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬೇರೆ ಕಡೆಯಲ್ಲಿ. "ಅನ್ಯತ್ರ ರಕ್ಷೋಭವನೋಪಿತಾಯಾಃ ಪರಿಗ್ರಹಾನ್ಮಾನವದೇವ ದೇವ್ಯಾಃ" ರಘುಂ 14-32. 3. ಬೇರೆ ಪ್ರಸಂಗದಲ್ಲಿ, ಬೇರೆ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ. "ಮಧುಪಕೇ ಚ ಯಜ್ಞೇ ಚ ಪಿತುರ್ದೇವತಕರ್ಮಣಿ. ಅನ್ಯತ್ರ ಪಶವೋ ಹಿಸ್ತ್ಯಾ ನಾನ್ಯತ್ರೇತ್ಯಬ್ರವೀನ್ಮನುಃ" ಮನುಂ 4-41.

ಅನ್ಯಥಾ ಅನ್ಯಥಾ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಬೇರೆ ರೀತಿಯಾಗಿ, ಬೇರೆ ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ. ಅನ್ಯ "ಥಾಲ್" (4-3-23). "ಮನ್ತ್ರಮಜ್ಞಮಯಾದ್ರಾಶಾಂ ಕಥಯನ್ತನ್ಯಥಾ ಪುರಃ. ಅನ್ಯಥಾ ವಿವೃತಾರ್ಥೇಃ ಸ್ವರಾಲಾಪೇಃ ಮನ್ತ್ರಿಣಃ" ಮುद्रಾಂ 4-4. 2. ಹಾಗಿಲ್ಲದಿದ್ದಲ್ಲಿ, ಬೇರೆ ರೀತಿಯಾಗಿದ್ದಲ್ಲಿ, ಇಲ್ಲದಿದ್ದರೆ, ಅಥಾವ ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ. "ಶ್ರೀರೇಷಾ ಪಾಣಿರಪ್ಯಸ್ಯಾಃ ಪಾರಿ-ಜಾತಸ್ಯ ಪಲ್ಲವಃ. ಕುತೋಜ್ಯಥಾ ಸ್ವತನ್ತ್ರೇಃ ಸ್ವೇದಚ್ಛಾಮೃತದ್ರವಮ್" ರತ್ನಾಂ 2-13. 3. ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ, ಪ್ರತಿಯಾಗಿ. "ತ್ವಯಾ ಕದಾಚಿದಪಿ ಮಮ ವಚನಂ ನಾನ್ಯಥಾ



ಕೃತಮ್" 4. ಮಿಥ್ಯೆಯಾಗಿ, ಸುಳ್ಳಾಗಿ, ಅಸತ್ಯವಾಗಿ.  
"ಕಿಮನ್ಯಥಾ ಭವಿಷ್ಯತಿ ನಿವೇದಿತಮ್" ಮಾಲಂ ೪। 5.  
ನಿಷ್ಕಾರಣವಾಗಿ, ಕಾರಣವಿಲ್ಲದೆ. "ನಿಷ್ಕಾರಣೇನ್ಯಥಾ  
ಪುನಃ। ವಿತರ್ಕೇ ಚಾಪರಾರ್ಥೇ ಚ" ಮೇದಿಂ।

ಅನೃತಕಾರ್ಮ ಅನೃತಕಾರ್ಮ (ಅವ್ಯಂ) ಬೇರೆ ರೀತಿ  
ಯಾಗಿ ಮಾಡಿ, (ಯೋಗ್ಯವಾದ ಕ್ರಮವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು)  
ಬೇರೆ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಮಾಡಿ. ಅನೃತ+ಛ ಕೃ (ಕರಣಂ)  
"ಞಮುಲ್" (೩-೪-೨೭)।

ಅನೃತಖ್ಯಾತಿ ಅನೃತಖ್ಯಾತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಪ್ಪು ತಿಳಿ  
ವಳಿಕೆ, ಒಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು ಮತ್ತೊಂದು ವಸ್ತು  
ವನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯುವಿಕೆ, ಭ್ರಾಂತಿ. ಅನೃತಾ ಅನೃ-  
ರೂಪೇಣ ಖ್ಯಾತಿಃ ಜ್ಞಾನಮ್। ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಬೇರೆ ವಿಧ  
ವಾದ ಜ್ಞಾನವು ಅನೃತಖ್ಯಾತಿಯೆನಿಸುವುದು. ಶುಕ್ತಿ  
(ಕಪ್ಪೆ ಚಿಪ್ಪು) ಯನ್ನು ನೋಡಿ ರಜತ (ಬೆಳ್ಳಿ) ವೆಂದು  
ತಿಳಿಯುವುದೂ ದಾಸಾಳಿ ಪುಷ್ಪದ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ  
ಸ್ಥಿತಿವನ್ನು ಕೆಂಪು ಸ್ಥಿತಿವೆಂದು ತಿಳಿಯುವುದೂ  
ಅನೃತಖ್ಯಾತಿ (ಭ್ರಾಂತಿ) ಯಾಗುವುದು.

ಅನೃತಾನುಪಪತ್ತಿ ಅನೃತಾನುಪಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಗಿರುವ  
ಕಾರ್ಯವು ಬೇರೆ ಕಾರಣದಿಂದ ಸಂಭವಿಸದಿರುವಿಕೆ.  
ಅನೃತಾ ಅನೃತಾನುಪಪತ್ತಿಃ ಕಾರ್ಯಸಿಂಭವಃ। "ಪಿಂನೋ ದೇವದತ್ತೋ  
ದಿವಾ ನ ಭುಂಕ್ತೇ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಹಗಲು ಊಟಮಾಡದಿರುವ  
ದೇವದತ್ತನು ರಾತ್ರಿ ಊಟ ಮಾಡದಿದ್ದರೆ ಪುಷ್ಪನಾಗಿ  
ರುವುದು ಅಸಂಭವ ಎಂಬ ಜ್ಞಾನವು ಅನೃತಪತ್ತಿ  
ಪ್ರಮಾಣದಿಂದಿರುತ್ತದೆ.

ಅನೃತಾಭಾವ ಅನೃತಾಭಾವ (ಪುಂ) 1. ಬದಲಾವಣೆ,  
ವ್ಯತ್ಯಾಸ, ರೂಪಾಂತರ ಹೊಂದುವುದು. ಅನೃತಾ ಅನೃ-  
ರೂಪೇಣ ಭಾವಃ। 2. ಬೇರೆ ವಿಧವಾದ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

ಅನೃತಾಭೂತ ಅನೃತಾಭೂತ (ವಿಂ) ಬದಲಾವಣೆ  
ಹೊಂದಿದ, ರೂಪಾಂತರ ಹೊಂದಿದ, ವ್ಯತ್ಯಾಸವಾದ.

ಅನೃತಾವೃತ್ತಿ ಅನೃತಾವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೇರೆ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ  
ರುವುದು.

ಅನೃತಾಸಿದ್ಧಿ ಅನೃತಾಸಿದ್ಧಿ (ವಿಂ) 1. ಬೇರೆ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ  
ಸಿದ್ಧವಾದ, ಬೇರೆ ಕಾರಣದಿಂದ ಸಿದ್ಧವಾದ, ಬೇರೆ  
ಪ್ರಮಾಣದಿಂದ ಸಿದ್ಧವಾದ. ಅನೃತಾ ಅನೃತಪ್ರಕಾರೇಣ  
ಸಿದ್ಧಃ। 2. ಅನೃತಾ ಸಿದ್ಧಿಯುಳ್ಳದ್ದು. [ಕಾರ್ಯೋ  
ತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಅವಶ್ಯವಾಗಿರಬೇಕಾದುದನ್ನುಳಿದು  
ಬೇರೆ ಎಲ್ಲವೂ ಅನೃತಾಸಿದ್ಧ. ಘಟಕ್ಕೆ ದಂಡ ಚಕ್ರ  
ಕುಲಾಲ (ಕುಂಬಾರ) ರನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಉಳಿದ ದಂಡತ್ವ,

ದಂಡರೂಪ, ಆಕಾಶ, ಕುಂಬಾರನ ತಂದೆ, ಮಣು  
ಹೊತ್ತು ತರುವ ರಾಸಭ (ಕತ್ತಿ) ಮೊದಲಾದುವು  
ಅನೃತಾ ಸಿದ್ಧಿಗಳು. ದಾರ್ಶನಿಕರು ಇವನ್ನು ಕಾರಣ  
ವನ್ನಾಗಿ ಅಂಗೀಕರಿಸುವುದಿಲ್ಲ.]

ಅನೃತಾಸಿದ್ಧಿ ಅನೃತಾಸಿದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೇರೆ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ  
ಸಿದ್ಧವಾಗುವಿಕೆ, ಬೇರೆ ಕಾರಣದಿಂದ ಸಿದ್ಧಿಸುವುದು.  
2. ನಿಜವಾದ ಕಾರಣವಲ್ಲದಿರುವುದು.

ಅನೃತಾ ಅನೃತಾ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಬೇರೆ ಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಬೇರೆ  
ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ, ಮತ್ತೊಂದು ಸಮಯದಲ್ಲಿ. ಅನೃ  
"ದಾ" (೪-೩-೧೪)। "ಅನೃತಾ ಭೂಷಣಂ ಪುನಃ ಕ್ಷಮಾ  
ಲಜ್ಜೇವ ಯೋಜಿತಃ" ಮಾಘಂ ೨-೪೪। 2. ಒಂದು ಕಾಲದಲ್ಲಿ,  
ಒಂದು ಸಮಯದಲ್ಲಿ, ಒಂದು ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ.

ಅನೃತಾಶಾ ಅನೃತಾಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬೇರೆ ಅಪೇಕ್ಷೆ,  
ಮತ್ತೊಂದು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಅನೃತಾ ಚ ಸಾ ಆಶಾ ಚ "ದ್ವಕ್"  
(೬-೩-೯೯)। ಅನೃತಾಶಾ "ದ್ವಕ್" ನ। ಅನೃತಾಶಾ  
ಅನೃತಾ. 2. ಮತ್ತೊಬ್ಬನ ಆಸೆ, ಮತ್ತೊಂದು  
ವಸ್ತುವಿನ ಆಸೆ.

ಅನೃತಾಶಿಸ್ ಅನೃತಾಶಿಸ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮತ್ತೊಂದು  
ಆಶೀರ್ವಾದ. ಅನೃತಾ ಆಶೀರ್ವಾದಃ "ದ್ವಕ್" (೬-೩-೯೯)।  
ಅನೃತಾಶೀರ್ವಾದಃ "ದ್ವಕ್" ನ। ಅನೃತಾಶೀರ್ವಾದಃ  
ಮತ್ತೊಬ್ಬನ ಆಶೀರ್ವಾದ.

ಅನೃತಾಸ್ಥಾ ಅನೃತಾಸ್ಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮತ್ತೊಂದು  
ಅನುರಾಗ, ಮತ್ತೊಂದು ಭಕ್ತಿ, ಶ್ರದ್ಧೆ. ಅನೃತಾ ಆಸ್ಥಾ  
"ದ್ವಕ್" (೬-೩-೯೯)। ಅನೃತಾಸ್ಥಾ "ದ್ವಕ್" ನ।  
ಅನೃತಾಸ್ಥಾ ಅನೃತಾ. 2. ಮತ್ತೊಬ್ಬನ ಭಕ್ತಿ, ಶ್ರದ್ಧೆ.

ಅನೃತಾಸ್ಥಿತ ಅನೃತಾಸ್ಥಿತ (ವಿಂ) 1. ಮತ್ತೊಬ್ಬನನ್ನು  
ಆಶ್ರಯಿಸಿರುವ, ಮತ್ತೊಬ್ಬನನ್ನು ಸೇರಿರುವ. ಅನೃತಾ-  
ಸ್ಥಿತಃ "ದ್ವಕ್" (೬-೩-೯೯)। ಅನೃತಾಸ್ಥಿತಃ "ದ್ವಕ್"  
ನ। ಅನೃತಾಸ್ಥಿತಃ ಅನೃತಾಸ್ಥಿತಃ. 2. ಮತ್ತೊಬ್ಬನಿಂದ  
ಆಶ್ರಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅನೃತಾಸಿದ್ಧಿ ಅನೃತಾಸಿದ್ಧಿ (ವಿಂ) ಮತ್ತೊಬ್ಬನಿಗೆ  
ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಅನೃತಾ "ಛ" (೪-೨-೧೩೮)। "ದ್ವಕ್"  
(೬-೩-೯೯)। "ಅನೃತಾಸಿದ್ಧಿವಿಶಿಷ್ಟೇ ನ ಕೇವಲಮ್" ಕಿರಾಂ  
೧೩-೪೬।

ಅನೃತಾಸಿದ್ಧಿ ಅನೃತಾಸಿದ್ಧಿ (ವಿಂ) ಮತ್ತೊಂದು ವಿಷಯ  
ದಲ್ಲಿ ಆಸೆಯುಳ್ಳ, ಬೇರೆ ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಬಯಕೆಯುಳ್ಳ.  
ಅನೃತಾಸಿದ್ಧಿಃ "ದ್ವಕ್" (೬-೩-೯೯)। ಅನೃತಾಸಿದ್ಧಿಃ  
"ದ್ವಕ್" ನ। ಅನೃತಾಸಿದ್ಧಿಃ ಅನೃತಾಸಿದ್ಧಿಃ.



ಅನ್ಯದ್ವಿತಿ ಅನ್ಯದ್ವಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮತ್ತೊಂದು ರಕ್ಷಣೆ. ಅನ್ಯಾ ಋತಿ: "ದುಕ್" (೬-೩-೯೯). ಅನ್ಯಸ್ಯೋತಿ: "ದುಕ್" ನ. ಅನ್ಯೋತಿ: ಅನ್ಯೋತಿ. 2. ಮತ್ತೊಬ್ಬನ ರಕ್ಷಣೆ.

ಅನ್ಯದ್ರಾಗ ಅನ್ಯದ್ರಾಗ (ಪುಂ) 1. ಮತ್ತೊಂದರಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿ, ಮತ್ತೊಂದು ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಶ್ರದ್ಧೆ. ಅನ್ಯಸ್ಮಿನ್ ರಾಗ: "ದುಕ್" (೬-೩-೯೯). ಅನ್ಯಸ್ಯ ರಾಗ: "ದುಕ್" ನ. ಅನ್ಯರಾಗ: ಅನ್ಯರಾಗ. 2. ಮತ್ತೊಬ್ಬನ ಪ್ರೀತಿ.

ಅನ್ಯಪುಷ್ಪ ಅನ್ಯಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) ಕೋಗಿಲೆ. ಅನ್ಯೇನ ಕಾಕೇನ ಪುಷ್ಪ: "ಬಲಿಪುಷ್ಪಕುಲಾದಿವಾನ್ಯಪುಷ್ಪ: " ಮಾಧಂ ೨-೧೧೬. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಅನ್ಯಪುಷ್ಪಾ ಅನ್ಯಪುಷ್ಪಾ. "ಅಪ್ಯನ್ಯಪುಷ್ಪಾ ಪ್ರತಿಕೂಲಶಬ್ದಾ" ಕುಮಾಂ ೧-೪೫.

ಅನ್ಯಪೂರ್ವಾ ಅನ್ಯಪೂರ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮತ್ತೊಬ್ಬನನ್ನು ಮದುವೆಯಾದ ವಿತಂತು. ಅನ್ಯ: ಪತಿ: ಪೂರ್ವೋ ಯಸ್ಯಾ: 2. ಮತ್ತೊಬ್ಬನಿಗೆ ನಿಶ್ಚಿತವಾಗಿದ್ದ ಕನ್ಯೆ.

ಅನ್ಯಭೃತ್ ಅನ್ಯಭೃತ್ (ಪುಂ) ವಾಯಸ, ಕಾಗೆ. ಅನ್ಯಂ ಬಿಭರ್ತಿ-ಓ ಭೃತ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ: "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬).

ಅನ್ಯಭೃತ ಅನ್ಯಭೃತ (ಪುಂ) ಕೋಗಿಲೆ. ಅನ್ಯೇನ ಭೃತ: ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಅನ್ಯಭೃತಾ - ಭೃತಾ. "ಕಲಮನ್ಯಭೃತಾಸು ಭಾಷಿತಮ್" ರಘುಂ ೮-೫೯.

ಅನ್ಯಮನಸ್ ಅನ್ಯಮನಸ್ (ವಿಂ) 1. ಚಪಲಚಿತ್ತ, ಚಂಚಲವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. 2. ಬೇರೆಕಡೆ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಬೇರೆ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ಅನ್ಯಸ್ಮಿನ್ ಮನೋ ಯಸ್ಯ. ವಾ "ಕಪ್" (೫-೪-೧೫೪). -ಮನಸ್ಕ: -ಮನಸ್ಕ.

ಅನ್ಯಮಾತೃಕ ಅನ್ಯಮಾತೃಕ (ಪುಂ) ಮಲತಾಯಿಯ ಮಗ. ಅನ್ಯಾ ಮಾತಾ ಯಸ್ಯ "ಕಪ್" (೫-೪-೧೫೩). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಅನ್ಯಮಾತೃಕಾ - ಮಾತೃಕಾ.

ಅನ್ಯಮಾತೃಜ ಅನ್ಯಮಾತೃಜ (ಪುಂ) ಮಲತಾಯಿಯ ಮಗ. ಅನ್ಯಸ್ಯಾ ಮಾತುರ್ಜಾಯಿತೆ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಙ:" (೩-೨-೯೮). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಅನ್ಯಮಾತೃಜಾ - ಮಾತೃಜಾ.

ಅನ್ಯಲಿಙ್ಗ ಅನ್ಯಲಿಙ್ಗ-ಲಿಙ್ಗಕ-ಲಿಙ್ಗಕ (ಪುಂ) ವಿಶೇಷ್ಯಾಧೀನವಾದ ಶಬ್ದ, ವಿಶೇಷ್ಯ ಪದದ ಲಿಂಗವುಳ್ಳ ಶಬ್ದ. ಅನ್ಯಸ್ಯ ಸ್ವವಿಶೇಷ್ಯಸ್ಯ ಲಿಙ್ಗಮಿವ ಲಿಙ್ಗಮಸ್ಯ - ವಾ "ಕಪ್" (೫-೪-೧೫೪). "ಋಷವಾನುಷರೋ ದ್ವಾವಪ್ಯನ್ಯಲಿಙ್ಗೌ" "ಹಿಮ: ಸಪ್ತಾನ್ಯಲಿಙ್ಗಕಾ:" ಅಮಂ.

ಅನ್ಯವಾದಿನ್ ಅನ್ಯವಾದಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಸುಳ್ಳು ಹೇಳುವವನು, ಅಸತ್ಯ ನುಡಿಯುವವನು. 2. ಪ್ರತಿವಾದಿ,

ಎದುರು ಪಕ್ಷದವನು. ಪ್ರತಿಜ್ಞಾತಾರ್ಥಾದಿನ್ಯಥಾ ವದತಿ-ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಣಿನಿ:" (೩-೨-೭೮). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಅನ್ಯವಾದಿನಿ - ವಾದಿನೀ.

ಅನ್ಯಶಾಖ ಅನ್ಯಶಾಖ (ಪುಂ) ತನ್ನ ಶಾಖೆಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬೇರೆ ಶಾಖೆಯ ವೇದವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು. ಅನ್ಯಾ ಶಾಖಾ ವೇದಭಾಗೋ ಯಸ್ಯ.

ಅನ್ಯಸಂಘಮ ಅನ್ಯಸಂಘಮ (ಪುಂ) ಪರಪುರುಷನೊಡನೆ ಅಥವಾ ಪರಸ್ತ್ರೀಯೊಡನೆ ಮಾಡುವ ಸಂಭೋಗ. ಅನ್ಯಸ್ಯಾನ್ಯಸ್ಯಾ ವಾ ಸಂಘಮ:

ಅನ್ಯಸಾಧಾರಣ ಅನ್ಯಸಾಧಾರಣ (ವಿಂ) ಇತರರಿಗೆ ಸಮಾನವಾದ. ಅನ್ಯ: ಸಾಧಾರಣ:

ಅನ್ಯಾದೃಶ ಅನ್ಯಾದೃಶ (ವಿಂ) 1. ಅನ್ಯಾದೃಶವಾದ, ವಿಲಕ್ಷಣವಾದ. 2. ಬೇರೆಯವನಂತೆ ಕಾಣುವ. ಅನ್ಯ ಇವ ಪಶ್ಯತಿ - ಅನ್ಯ + ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) "ಕಸ:" (ವಾಂ ೩-೨-೫೭). ಆತ್ವಮ್ (೬-೩-೯೯).

ಅನ್ಯಾದೃಶ ಅನ್ಯಾದೃಶ (ವಿಂ) 1. ಬೇರೆಯವನಂತೆ ಕಾಣುವ. 2. ಅಸಾಧಾರಣವಾದ, ವಿಲಕ್ಷಣವಾದ. ಅನ್ಯ ಇವ ಪಶ್ಯತಿ - ಅನ್ಯ + ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) "ಕಿನ್" (ವಾಂ ೩-೨-೫೭). ಆತ್ವಮ್ (೬-೩-೯೯).

ಅನ್ಯಾದೃಶ ಅನ್ಯಾದೃಶ (ವಿಂ) 1. ಬೇರೆಯವನಂತೆ ಕಾಣುವ. 2. ವಿಲಕ್ಷಣವಾದ, ಅಸಾಧಾರಣವಾದ. ಅನ್ಯ ಇವ ಪಶ್ಯತಿ - ಅನ್ಯ + ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) "ಕಜ್" (ವಾಂ ೩-೨-೫೭). ಆತ್ವಮ್ (೬-೩-೯೯). "ಕಾಮದೇವೋ-ಛಾನಯಾತ್ರಾಪ್ರತಿನಿವೃತ್ತಂ ಭವಂತಮನ್ಯಾದೃಶಮಿವಾವಧಾರಯಾಮಿ" ಮಾಲತೀಂ ೧. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫). ಅನ್ಯಾದೃಶಿ - ದೃಶೀ.

ಅನ್ಯಾಯ ಅನ್ಯಾಯ (ಪುಂ) 1. ನ್ಯಾಯದ ಅಭಾವ, ನ್ಯಾಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ಔಚಿತ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಅಯೋಗ್ಯತೆ. (ವಿಂ) 3. ನ್ಯಾಯವಲ್ಲದ, ಅಯುಕ್ತವಾದ, ವಿಮರ್ಶೆಮಾಡದ.

ಅನ್ಯಾಯ್ಯ ಅನ್ಯಾಯ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅನುಚಿತವಾದ, ಅಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ನ್ಯಾಯವಲ್ಲದ. ನ ನ್ಯಾಯ್ಯಮ್.

ಅನ್ಯಾರ್ಥ ಅನ್ಯಾರ್ಥ (ಪುಂ) 1. ಬೇರೆ ಅರ್ಥ, ಮತ್ತೊಂದು ಅರ್ಥ. 2. ಬೇರೆ ಪ್ರಯೋಜನ. ಅನ್ಯೋರ್ಥ: (ವಿಂ) 3. ಬೇರೆ ಅರ್ಥವುಳ್ಳ. 4. ಬೇರೆ ಪ್ರಯೋಜನವುಳ್ಳ. ಅನ್ಯೋರ್ಥೋಽಭಿಧೇಯ: ಪ್ರಯೋಜನಂ ವಾ ಯಸ್ಯ.

ಅನ್ಯೂನ ಅನ್ಯೂನ (ವಿಂ) ಕಡಿಮೆಯಾಗದ, ಕಡಿಮೆಯಲ್ಲದ, ಹೀನವಲ್ಲದ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ. ನ ನ್ಯೂನ:



ಅನ್ಯುನಾಧಿಕ ಅನ್ಯುನಾಧಿಕ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ಕಡಿಮೆಯಿಲ್ಲದ, ಸಮವಾದ.

ಅನ್ಯುನಾತಿರಿಕ್ತ ಅನ್ಯುನಾತಿರಿಕ್ತ ಹೆಚ್ಚು ಕಡಿಮೆಯಿಲ್ಲದ, ಸಮವಾದ.

ಅನ್ಯುನಾತಿರೇಕ ಅನ್ಯುನಾತಿರೇಕ (ಛಂ) ಹೆಚ್ಚು ಕಡಿಮೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಸಮನಾಗಿರುವಿಕೆ.

ಅನ್ಯೇದ್ಯುಸ್ ಅನ್ಯೇದ್ಯುಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಮತ್ತೊಂದು ದಿವಸ, ಮರು ದಿವಸ. ಅನ್ಯ "ಏದ್ಯುಸ್" (೪-೩-೨೨) । "ಅನ್ಯೇದ್ಯುರಾತ್ಮಾನುಚರಸ್ಯ ಭಾವಮ್" ರಘುಂ ೨-೨೬ ।

ಅನ್ಯೋಢಾ ಅನ್ಯೋಢಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನ್ಯನಾಯಿಕೆ, ಪರಕೀಯಳು. ಅನ್ಯೇನ ಊಢಾ । "ಯಾತ್ರಾದಿನಿರತಾನ್ಯೋಢಾ ಕುಲಶಾಲಿತತ್ರಾಪಾ" ಸಾಂ ೬೦ ೩-೬೬ ।

ಅನ್ಯೋದಯ ಅನ್ಯೋದಯ (ಛಂ) ಮಲತಾಯಿಯ ಮಗ, ಭಿನ್ನೋದರ. ಅನ್ಯಸ್ಥಿಮದರೇ ಸ್ವಮಾತೃಭಿನ್ನೇ ಗರ್ಭೇ ಭವಃ "ಯತ್" (೪-೩-೪೪) । "ಅನ್ಯೋದಯಸ್ತು ಸಂಸ್ಕೃತೀ ನಾನ್ಯೋದಯೋ ಧನಂ ಹರೇತ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೩೪ ।

ಅನ್ಯೋನ್ಯ ಅನ್ಯೋನ್ಯ (ನಂ) 1. ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಲಂಕಾರ, ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಪರಸ್ಪರ ಉಪಕಾರ ವರ್ಣನೆಯು ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಲಂಕಾರವು. "ಅನ್ಯೋನ್ಯಂ ನಾಮ ಯತ್ರ ಸ್ಯಾದುಪಕಾರಃ ಪರಸ್ಪರಮ್ । ತ್ರಿಯಾಮಾ ಶಶಿನಾ ಭಾತಿ ಶಶಿ ಭಾತಿ ತ್ರಿಯಾಮಯಾ" ಚಂದ್ರಾಂ । (ವಿಂ) 2. ಪರಸ್ಪರವಾದ. ಅನ್ಯ ಕರ್ಮವ್ಯಂ ದ್ವಿತ್ವಮ್ ಸುಖ (ವಾಂ ೮-೧-೧೨) । "ಅನ್ಯೋನ್ಯವ್ಯತಿಕರಣಾಭಿವಿಚಿತ್ರಃ" ಮಾಘಂ ೪-೪೩ । (ಕ್ರಿಂವಿಂ) 3. ಪರಸ್ಪರವಾಗಿ. "ಅನ್ಯೋನ್ಯರಕ್ತಮನಸಾಮಥ್ಯ ಬಿಭ್ರತೀನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೯-೭೪ ।

ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಧ್ಯಾಸ ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಧ್ಯಾಸ (ಛಂ) ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳೊಳಗೆ (ಪರಸ್ಪರ) ಒಂದರ ಧರ್ಮವನ್ನು ಮತ್ತೊಂದರಲ್ಲಿ ತಪ್ಪಾಗಿ ತಿಳಿಯುವುದು.—ಕೈಲಿನಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ಹೋಗುವವನು ತನ್ನಲ್ಲಿರುವ ಚಲನವನ್ನು ರಸ್ತೆಯ ಪಕ್ಕದ ಮರಗಳಲ್ಲಿಯೂ, ಮರಗಳಲ್ಲಿರುವ ನಿಶ್ಚಲತೆಯನ್ನು ತನ್ನಲ್ಲಿಯೂ ತಪ್ಪಾಗಿ ತಿಳಿಯುವುದು ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಧ್ಯಾಸವು. ಅನ್ಯೋನ್ಯಸ್ಥಿನ್ ಅನ್ಯೋನ್ಯತಾದಾತ್ಮ್ಯಾಧ್ಯಾಸಃ ಆರೋಪಃ ।

ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಭಾವ ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಭಾವ (ಛಂ) ಅಭಾವದ ಒಂದು ಭೇದ, ಒಂದು ಮತ್ತೊಂದಲ್ಲದಿರುವುದು, ಪರಸ್ಪರಾಭಾವ. "ಏತಃ ಪತೌ ನ ಭವತಿ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಹೇಗೆ ಘಟವು ಪಟವಾಗುವುದಿಲ್ಲವೋ ಹಾಗೆಯೇ ಪಟವೂ ಘಟವಾಗುವುದಿಲ್ಲ. ಇದೇ ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಭಾವ.

ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಶ್ರಯ ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಶ್ರಯ (ಛಂ) ಒಂದು ಮತ್ತೊಂದನ್ನು (ಪರಸ್ಪರ) ಆಶ್ರಯಿಸಿಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ, (ಪರಸ್ಪರ) ಒಂದರ ಅಧೀನದಲ್ಲಿ ಮತ್ತೊಂದಿರುವಿಕೆ, ಪರಸ್ಪರಾವಲಂಬನ, ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಧೀನತೆ.—ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಶ್ರಯವು ಜ್ಞಾಪ್ತಿ, ಉತ್ಪತ್ತಿ ಮತ್ತು ಸ್ಥಿತಿಗಳ ವಿಷಯವಾಗಿ ಮೂರು ವಿಧ. (1) ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ (ಪರಸ್ಪರ) ಒಂದರ ಜ್ಞಾನವುಂಟಾದರೇನೇ ಮತ್ತೊಂದರ ಜ್ಞಾನವುಂಟಾಗುವುದು ಮೊದಲನೆಯದು. (2) ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ (ಪರಸ್ಪರ) ಒಂದರ ಉತ್ಪತ್ತಿಯು ಮತ್ತೊಂದರ ಉತ್ಪತ್ತಿಯನ್ನು ಅವೇಕ್ಷಿಸಿಕೊಂಡಿರುವುದು ಎರಡನೆಯದು. (3) ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ (ಪರಸ್ಪರ) ಒಂದರ ಬೇಕಾದರೆ ಮತ್ತೊಂದರ ಇರುವಿಕೆಯೂ ಅವಶ್ಯವಾಗಿರಬೇಕಾಗುವುದು ಮೂರನೆಯದು.

ಅನ್ವಕ್ಷ ಅನ್ವಕ್ಷ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾದ, ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗುವ. 2. ಅನುಸರಿಸುವ, ಹಿಂಬಾಲಿಸುವ. ಅನುಗತಮಕ್ಷಮಿन्द्रಿಯಮ್ । (ಅವ್ಯಂ) 3. ಅನಂತರ, ತರುವಾಯ. 4. ಕೂಡಲೆ, ಒಡನೆ. 5. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ, ಕಣ್ಣಿನಿಂದರಿಗೆ. ಅಕ್ಷಣಃ ಸಮೀಪಮ್ । ಅವ್ಯಯಿಂ ।

ಅನ್ವಚ್ ಅನ್ವಚ್ (ವಿಂ) 1. ಅನುಸರಿಸುವ, ಹಿಂಬಾಲಿಸುವ. (ಕ್ರಿಂವಿಂ) 2. ಹಿಂಭಾಗದಲ್ಲಿ, ಹಿಂದುಗಡೆಯಿಂದ. ಅನು ಅನ್ವಚಿತಿ — ಅನ್ವಚ್ (ಗತೌ) "ಕ್ವಿನ್" (೩-೨-೪೯) । "ಪಿದಧಾನಮನ್ವಗುಪಗಮ್ಯ ದೃಶೌ" ಮಾಘಂ ೯-೭೬ । (ಅವ್ಯಂ) 3. ತರುವಾಯ, ಬಳಿಕ, ಅನಂತರ.

ಅನ್ವಯ ಅನ್ವಯ (ಛಂ) 1. ವಂಶ, ಕುಲ. ಅನ್ವೀಯತೆ—ಅನು+ಇನ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಅಚ್" (೩-೩-೪೬) । "ತದನ್ವಯೇ ಶುದ್ಧಿಮತಿ ಪ್ರಸೂತಃ ಶುದ್ಧಿಮತ್ತರಃ" ರಘುಂ ೧-೧೨ । 2. ಕ್ರಮವಾದ ಸಂಬಂಧ, ಒಂದು ವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಪದಾರ್ಥಕ್ಕೆ ಮತ್ತೊಂದು ಪದಾರ್ಥದೊಡನೆ ಇರುವ ಸಂಬಂಧ. 3. ಹಿಂಬಾಲಿಸುವಿಕೆ, ಅನುಸರಿಸುವಿಕೆ. 4. ತಾತ್ಪರ್ಯ, ಅಭಿಪ್ರಾಯ. 5. ಕುಲದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವರು. ಅನು+ಇನ್ (ಗತೌ) ಕರ್ಮಂ "ಅಚ್" । "ಸ ಜೀವಶ್ಚೇವ ಶುದ್ಧತ್ವಮಾಶು ಗಂಚತಿ ಸಾನ್ವಯಃ" ಮನುಂ ೨-೧೬೮ । 6. ಸಂಬಂಧ. "ಧರ್ಮಸುಕರೂಪಸ್ಯ ತವಾಸೌ ಕ್ಷಮಯಾನ್ವಯೇ" ಷಾಡಂ ೧೬-೨೭ । 7. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ. ಅನ್ವೇತಿ ಇಂದ್ರಿಯಮ್ । 8. (ತಾರ್ಕಿಕ ಮತದಲ್ಲಿ) ಹೇತು ಸಾಧ್ಯಗಳ ವ್ಯಾಪ್ತಿ. [ವ್ಯಾಪ್ತಿಯು ಅನ್ವಯವ್ಯಾಪ್ತಿ ಮತ್ತು ವ್ಯತಿರೇಕ ವ್ಯಾಪ್ತಿ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಹೇತು ಸಾಧ್ಯಗಳ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯು ಅನ್ವಯವ್ಯಾಪ್ತಿ. "ಯತ್ರ ಧೂಮಸ್ತಾಗ್ನಿಃ ಯಥಾ ಮಹಾನಸಃ" ಇಲ್ಲಿ ಧೂಮವು ಹೇತು. ಅಗ್ನಿಯು



ಸಾಧ್ಯ. ಇವೆರಡರ ಸಾಹಚರ್ಯವು ಮಹಾನಸದಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ಅನ್ವಯವ್ಯಾಪ್ತಿಯೆನಿಸುವುದು. ಸಾಧ್ಯಭಾವ ಮತ್ತು ಹೇತ್ವಭಾವಗಳ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯು ವ್ಯತಿರೇಕವ್ಯಾಪ್ತಿ. “ಯತ್ರ ವಹ್ನಿಃ ಭಾವಃ ತತ್ರ ಭೂಮಿಭಾವಃ ಯಥಾ ಮಹಾಹ್ನಿಃ” ಇಲ್ಲಿ ಸಾಧ್ಯಭಾವವು ವಹ್ನಿಭಾವ. ಹೇತ್ವಭಾವವು ಭೂಮಿಭಾವ. ಇವೆರಡರ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯು ಹೃದದಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ವ್ಯತಿರೇಕವ್ಯಾಪ್ತಿಯೆನಿಸುವುದು. “ಸಾಧ್ಯೇ ನಿಶ್ಚಿತಮನ್ವಯೇನ ಘಟಿತಮ್” ಮುಕ್ತಾಂ ೪-೧೩. ೧. ಕಾರಣವಿದ್ದಕಡೆ ಕಾರ್ಯವಿರುವಿಕೆ.—ಯಾವುದು ಇರುವಾಗ ಕಾರ್ಯವುಂಟಾಗುವುದೋ ಅದು ಅನ್ವಯ. ಯಾವುದು ಇಲ್ಲದುದರಿಂದ ಕಾರ್ಯವುಂಟಾಗುವುದಿಲ್ಲವೋ ಅದು ವ್ಯತಿರೇಕ. ಯತ್ಸತ್ವೇ ಯತ್ಸತ್ವಮ್ ಅನ್ವಯಃ | ಯದಭಾವೇ ಯದಭಾವೋ ವ್ಯತಿರೇಕಃ | ಈ ಅನ್ವಯವ್ಯತಿರೇಕಗಳಿಂದ ಕಾರ್ಯಕಾರಣಭಾವಗಳನ್ನು ನಿರ್ಣಯಿಸಬೇಕು.

ಅನ್ವಯಜ್ಞ ಅನ್ವಯಜ್ಞ (ವಿಂ) ವಂಶಾವಳಿಯನ್ನರಿತವನು, ವಂಶದ ಚರಿತ್ರೆಯನ್ನು ಬಲ್ಲವನು. ಅನ್ವಯಂ ಜಾನಾತಿ — ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) “ಕಃ” (೩-೨-೩). “ಅಥ ಸ್ತುತೇ ವಂದಿಭಿರನ್ವಯಜ್ಞಃ” ರಘುಂ ೬-೮.

ಅನ್ವಯಬೋಧ ಅನ್ವಯಬೋಧ (ಪುಂ) ಶಾಬ್ದಬೋಧ, ಪದಾರ್ಥಗಳಿಗೆ ಪರಸ್ಪರ ಇರುವ ಸಂಬಂಧದ ಜ್ಞಾನ.

ಅನ್ವಯವ್ಯಾಪ್ತಿ ಅನ್ವಯವ್ಯಾಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೇತುಸಾಧ್ಯಗಳ ವ್ಯಾಪ್ತಿ. ಅನ್ವಯೇನ ವ್ಯಾಪ್ತಿಃ ವ್ಯಾಪನಂ ನಿಯಮೇನ ಸ್ಥಿತಿಃ | [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಅನ್ವಯ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಅನ್ವಯಾಗತ ಅನ್ವಯಾಗತ (ವಿಂ) ವಂಶಪರಂಪರೆಯಿಂದ ಬಂದ, ಕುಲಕ್ರಮವಾಗಿ ಬಂದಿರುವ. ಅನ್ವಯಾದಾಗತಃ | “ಶ್ರುತಂ ಶೌರ್ಯಂ ತಪಃ ಕನ್ಯಾ ಶಿಷ್ಯಯಾಜ್ಞಾನ್ವಯಾಗತಮ್ | ಧನಂ ಸಪ್ತವಿಧಂ ಶುಕ್ಲಮ್” ನಾರದಸಂ |

ಅನ್ವಯ ಅನ್ವಯ (ವಿಂ) ಅರ್ಥಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಾದ, ಅರ್ಥವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಬಂದಿರುವ, ಅರ್ಥಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತಿರುವ. ಅನುಗತಃ ಅರ್ಥಮ್ | “ತಥೈವ ಸೋಮದನ್ವಯೋ ರಾಜಾ ಪ್ರಕೃತಿರಜ್ಜನಾತ್” ರಘುಂ ೪-೧೨.

ಅನ್ವಯಸಂಗ ಅನ್ವಯಸಂಗ (ಪುಂ) ಕಾಮಚಾರಾನುಜ್ಞೆ, ಸ್ನೇಹೈಯಿಂದ ನಡೆಯಲು ಅಪ್ಪಣೆ. ಅಪಿ ಸ್ತುಹಿ, ಅಪಿ ಸಿಂಚ. ಅನ್ವಯಸಂಗಃ ಕಾಮಚಾರಾನುಜ್ಞಾ ಸಿಂ ಕೌಂ |

ಅನ್ವಯಾ ಅನ್ವಯಾಯ (ಪುಂ) ವಂಶ, ಸಂತತಿ, ಸಂತಾನ. ಅನ್ವಯಾಯತೇ ಅನುಸಂಭವತೇ — ಅನು+ಅವ+ಅಯ (ಗತೌ) “ಘ್” (೩-೩-೧೯). “ಪ್ರಾಹು ತೇ ನು ಸದೃಶೀ ದಿವೌಕಸಾ-ಮನ್ವಯಾಯಮವದಾತಮಾಕೃತಿಃ” ಕಿರಾಂ ೧೩-೩೭.

ಅನ್ವಾಟಕಾ ಅನ್ವಾಟಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷಮೊದಲು ನಾಲ್ಕು ತಿಂಗಳ ಕೃಷ್ಣ ನವಮಿ.

ಅನ್ವಹಮ್ ಅನ್ವಹಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಪ್ರತಿ ದಿನವೂ, ನಿತ್ಯವೂ. ಅಹ್ನಿ ಅಹ್ನಿ |

ಅನ್ವಾಖ್ಯಾನ ಅನ್ವಾಖ್ಯಾನ (ನಂ) ಹಿಂದೆ ಹೇಳಿದ ವಿಷಯದ ಅರ್ಥವಿವರಣೆ. ಅನು+ಆ+ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಯನೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) |

ಅನ್ವಾಚಯ ಅನ್ವಾಚಯ (ಪುಂ) ಮುಖ್ಯವಾದ ಕೆಲಸದೊಡನೆ ಮತ್ತೊಂದು (ಗೌಣ, ಅಪ್ರಧಾನ) ಕೆಲಸವನ್ನೂ ಸಾಧಿಸಲು ಹೇಳುವುದು, ಪ್ರಧಾನಕಾರ್ಯದ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಅಪ್ರಧಾನ ಕಾರ್ಯವನ್ನೂ ಮಾಡಲು ಅಪ್ಪಣೆ. (ಪ್ರಧಾನಸ್ಯ) ಪಶ್ಚಾತ್ ಅನ್ಯ ಆಚೀಯತೇ ಬೋಧತೇ ಯತ್ರ — ಅನು+ಆ+ಚಿ (ಚಯನೆ) “ಅಚ್” (೩-೩-೪೬) | “ಭಿಕ್ಷಾಮಠ ಗಾಂ ಚಾನಯ” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಭಿಕ್ಷಾ ಟನೆಯು ಮುಖ್ಯವಾದುದು. ಗವಾನಯನವು ಅನುಷಂಗಿಕ (ಅಪ್ರಧಾನ).

ಅನ್ವಾದೇಶ ಅನ್ವಾದೇಶ (ಪುಂ) ಒಂದು ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಬೋಧಿಸಲು ಹೇಳುವುದನ್ನು ಮತ್ತೊಂದು ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಬೋಧಿಸಲು ಮತ್ತೆ ಹೇಳುವುದು. ಕಿಂಚಿತ್ಕಾರ್ಯವಿಧಾತುಮುಪಾತ್ತಸ್ಯ ಕಾರ್ಯಾಂತರಂ ವಿಧಾತುಂ ಪುನಃಪಾದಾನಮನ್ವಾದೇಶಃ | ಉದಾಃ—“ಅನೇನ ವ್ಯಾಕರಣಮಧೀತಮೇನಂ ಚಂದೋಽಧ್ಯಾಪಯ” ಇತಿ ಸಿಂ ಕೌಂ |

ಅನ್ವಾಧಾನ ಅನ್ವಾಧಾನ (ನಂ) ಯಜ್ಞವೇದಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಸ್ಥಂಧಿಲಕಲ್ಪನಾನಂತರ ಅಗ್ನಿ ಪ್ರತಿಷ್ಠೆ ಮಾಡಿ ಅದರಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಸಮಿತ್ತುಗಳ ಆಧಾನ. ಅನು ಪಶ್ಚಾತ್ ಆಧಾನಮ್ |

ಅನ್ವಾಧಿ ಅನ್ವಾಧಿ (ಪುಂ) 1. ತನ್ನಲ್ಲಿಟ್ಟಿದ್ದ ವಸ್ತು ಅಥವಾ ಧನವನ್ನು ಅದರ ಯಜಮಾನನಿಗೆ ಕೊಡಲು ಮತ್ತೊಬ್ಬನಲ್ಲಿಡುವುದು, ಅನು ಪಶ್ಚಾತ್ ಆಧೀಯತೇ — ಅನು+ಆ+ಙ್ ಧಾತ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಕಿಃ” (೩-೩-೯೨) | “ಅರ್ಥಮಾರ್ಗಣಕಾರ್ಯೇಷು ಅನ್ಯಸ್ಮಿನ್ ವಚನಾನ್ಮಮ | ದತ್ತಾಸ್ತವಮಿತಿ ಯೋ ದತ್ತಃ ಸ ಇಹಾನ್ವಾಧಿರುಚ್ಯತೇ” ಕಾತ್ಯಾಂ | 2. ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪ.

ಅನ್ವಾಧೇಯ ಅನ್ವಾಧೇಯ (ನಂ) ವಿವಾಹಾನಂತರ ವಧುವಿಗೆ ಸತಿಗೃಹದಲ್ಲಿಯೂ ಪಿತೃಗೃಹದಲ್ಲಿಯೂ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ ಹಣ, ಸ್ತ್ರೀ ಧನ. “ವಿವಾಹಾಪರತೋ ಯತು ಲಬ್ಧಂ ಭರ್ತೃಕುಲೇ ಸ್ತ್ರಿಯಾ | ಅನ್ವಾಧೇಯಂ ತದ್ವತ್ ತು ಲಬ್ಧಂ ಬಂಧುಕುಲೇ ತಥಾ” ಕಾತ್ಯಾಂ |



ಅನ್ವಾಯತನ ಅನ್ವಾಯತನ (ಅವ್ಯಂ) ಮನೆಯಲ್ಲಿ, ಮನೆಯೊಳಗೆ, ಮನೆಯ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ.

ಅನ್ವಾರಂಭ ಅನ್ವಾರಂಭ (ವಿಂ) 1. ಯಾಗಾದಿಗಳ ಫಲವು ತನಗೂ ಲಭಿಸಲು ಯಜಮಾನನನ್ನು ಸ್ವರ್ಗಮಾಡಿಕೊಂಡು ಕುಳಿತಿರುವ. 2. ದೇಹದಲ್ಲಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಅನುಸರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅನ್ವಾರಂಭ ಅನ್ವಾರಂಭ (ಪುಂ) ಯಾಗಾದಿಗಳ ಫಲವು ತನಗೂ ಉಂಟಾಗಲು ಯಜಮಾನನನ್ನು ಸ್ವರ್ಗಮಾಡಿಕೊಂಡು ಕೂಡುವುದು.

ಅನ್ವಾರೂಢ ಅನ್ವಾರೂಢ (ವಿಂ) 1. ಹತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಅನಂತರ ಹತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಆ+ಠ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಧುಮಿವಿ ಚ) "ಕ:" (3-2-102)।

ಅನ್ವಾರೋಹ ಅನ್ವಾರೋಹ (ಪುಂ) ಪತಿಯ ಮರಣಾನಂತರ ಪತ್ನಿಯ ಸಹಗಮನ. ಅನು ಪಶ್ಚಾತ್ ಆರೋಹ:।

ಅನ್ವಾಸನ ಅನ್ವಾಸನ (ನಂ) 1. ಸೇವೆ, ಶುಶ್ರೂಷೆ, ಉಪಾಸನೆ, ಅನಂತರ ಕುಳಿತುಕೊಂಡು ಮಾಡುವ ಸೇವೆ. 2. ಅನಂತರ ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವುದು. 3. ದುಃಖ, ಶೋಕ. 4. ಕೈಗಾರಿಕೆಯ ಶಾಲೆ. 5. ವಸ್ತುಕ್ರಿಯೆ. "ಅನ್ವಾಸನಂ ಸ್ನೇಹವಸ್ತೌ ಸೇವಾಯಾಮನುಶೋಚನೇ" ಹೇಮಂ।

ಅನ್ವಾಸಿತ ಅನ್ವಾಸಿತ (ವಿಂ) ಅನಂತರ ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳೋಣದರಿಂದ ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಆಸ (ಉಪವೇಶನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಕ:" (3-2-102)। "ಅನ್ವಾಸಿತಮರುಂಧತ್ಯಾ ಸ್ವಾಹ್ಯೇವ ಹವಿರ್ಭುಜಮ್" ರಘುಂ 1-46।

ಅನ್ವಾಸೀನ ಅನ್ವಾಸೀನ (ವಿಂ) ಅನಂತರ ಕುಳಿತುಕೊಂಡ, ಗುರುಹಿರಿಯರು ಕುಳಿತಮೇಲೆ ಕುಳಿತುಕೊಂಡ. ಅನು ಪಶ್ಚಾತ್ ಆಸೀನ:।

ಅನ್ವಾಹಾರ್ಯ ಅನ್ವಾಹಾರ್ಯ (ನಂ) 1. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಪುರೋಹಿತನಿಗೆ ಕೊಡುವ ದಾನ, ಕಾಣಿಕೆ, ದಕ್ಷಿಣೆ. 2. ಮಾಸಿಕ ಶ್ರಾದ್ಧ, ಪ್ರತಿ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿಯೂ ನಡೆಸುವ ಶ್ರಾದ್ಧ, ಅಮಾವಾಸ್ಯೆಯ ದಿನ ಮಾಡುವ ಶ್ರಾದ್ಧ. ಅನು+ಆ+ಹ್ಮ (ಹರಣೇ) "ಘ್ಯತ್" (3-1-124)। "ಅನ್ವಾಹಾರ್ಯಮಮಾಪಾಸ್ಯಾಶ್ರಾದ್ಧಮಿಷ್ಟೇಶ್ಚ ದಕ್ಷಿಣಾ" ಹೇಮಂ।

ಅನ್ವಿತ ಅನ್ವಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಂಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಅನುಸರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಂಬಾಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಙ್ (ಗತೌ) "ಕ:" (3-2-102)। "ಸ ವೃತ್ತ-ಚೂಲಕಲಕಾಕಪಕ್ಷಕೇರ್ಮಾತ್ಯಪುತ್ರೈ: ಸವಯಿರಿರನ್ವಿತ:" ರಘುಂ 3-26।

ಅನ್ವಿಷ್ಟ ಅನ್ವಿಷ್ಟ (ವಿಂ) 1. ಹುಡುಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಶೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಙ್ (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಕ:" (3-2-102)। "ಯದ್ವಾಪುರನ್ವಿಷ್ಟಮಗೈ: ಕಿರಾತೈ:" ಕುಮಾಂ 1-14। 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅನ್ವೀಕ್ಷಾ ಅನ್ವೀಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪರಾಲ್ಪೋಚನೆ, ವಿಮರ್ಶೆ. 2. ಚಿಂತನೆ, ಆಲೋಚನೆ.

ಅನ್ವೇಷ ಅನ್ವೇಷ (ಪುಂ) 1. ಹುಡುಕುವುದು. 2. ಧ್ಯಾನ, ಚಿಂತನೆ. ಅನು+ಙ್ (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಘ್" (3-3-10)। "ವಯಂ ತತ್ವಾನ್ವೇಷಾನ್ಮಧುಕರ ಹತಾಸ್ತ್ವಂ ಖಲು ಕೃತೌ" ಶಾಕುಂ 1-24।

ಅನ್ವೇಷಣ ಅನ್ವೇಷಣ (ನಂ) 1. ಹುಡುಕುವುದು. 2. ಧ್ಯಾನ, ಚಿಂತನೆ. ಅನು+ಙ್ (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್"। "ರನ್ವೇಷಣದಕ್ಷಾಣಾಂ ದ್ವಿಷಾಮಾಮಿಷತಾಂ ಯಯಿ" ರಘುಂ 12-11।

ಅನ್ವೇಷಣಾ ಅನ್ವೇಷಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹುಡುಕುವುದು. 2. ತತ್ವಾನುಸಂಧಾನ, ವಿಮರ್ಶೆ, ವಿಚಾರ. ಅನು+ಙ್ (ಗತೌ) "ಯುಕ್" (ವಾಂ 3-3-100)।

ಅನ್ವೇಷಿತ ಅನ್ವೇಷಿತ (ವಿಂ) 1. ಹುಡುಕಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಚಿಂತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಧ್ಯಾನಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ವಿಮರ್ಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು+ಙ್ (ಗತೌ) "ಕ:" (3-2-102)।

ಅನ್ವೇಷಿತ್ ಅನ್ವೇಷಿತ್ (ವಿಂ) ಹುಡುಕುವ, ಶೋಧಿಸುವ. ಅನು+ಙ್ (ಗತೌ) "ತನ್" (3-2-134)।

ಅನ್ವೇಷಿನ್ ಅನ್ವೇಷಿನ್ (ವಿಂ) ಹುಡುಕುವ. ಅನು+ಙ್ (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಣಿನ್:" (3-1-134)। "ತೌ ಸೀತಾನ್ವೇಷಿಣೌ ಗೃಧ್ರಂ ಲೂನಪಕ್ಷಮಪಶ್ಯತಾಮ್" ರಘುಂ 12-44। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-4)। ಅನ್ವೇಷಿಣಿ ಅನ್ವೇಷಿಣೀ.

ಅನ್ವೇಷ್ಠ ಅನ್ವೇಷ್ಠ (ವಿಂ) ಹುಡುಕುವವನು. ಅನು+ಙ್ (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ತುಕ್" (3-1-133)।

ಅಪ್ ಅಪ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ ಬಂ ವಂ) ನೀರು, ಜಲ. ಆಪ್ಲ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಕ್ವಿಪ್" ಹ್ರಸ್ವಶ್ಚ (ಛಂ 2-41)। ಅಪ: ಅಪ: ಅಪ್ಪಿ: ಅಪ್ಪಿ: ಅಪ್ಪಿ: ಅಪಾಮ್ ಅಪ್ಪು। "ಅಪ್ ಎವ ಸಸರ್ಜಾದೌ ತಾಸು ವೀರ್ಯಮವಾಸೃಜತ್" ಮನುಂ 1-6।

ಅಪ ಅಪ (ಅವ್ಯಂ) ಒಂದು ಉಪಸರ್ಗ. [ಇದು ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ ದ್ವ್ಯೋತಕವಾಗಿರುವುದು.] 1. ವಿಯೋಗ, ಅಗಲಿಕೆ. ಅಪಯಾತಿ, ಅಪಸರತಿ. 2. ಚಾರ್ಯ, ಕಳ್ಳ, ತನ. ಅಪಹರತಿ. 3. ಸತ್ಯವನ್ನಡಗಿಸುವುದು, ಮರೆಮಾಚುವುದು. ಅಪಲಪತಿ, ಅಪವದತಿ. 4. ಪರಿಹಾಸ್ಯ. ಕುಚೋದ್ಯ. ಅಪಹಸತಿ. 5. ವರ್ಜಿಸುವುದು, ತಳ್ಳಿ ಹಾಕುವುದು, ಬಹಿಷ್ಕರಿಸುವುದು. ಅಪವಿಣ್ಣು ಸಂಸಾರ:।



6. ಹೀನದೇಶಿ ಹೊಂದುವುದು, ಕ್ಷೇಣವಾಗುವುದು. ಅಪಚಯಃ। 7. ವಿಪರೀತ, ವಿರೋಧ. ಅಪಶಬ್ದಃ। 8. ನಿರ್ದರ್ಶನ, ನಿರ್ದೇಶ ಮಾಡುವುದು, ತೋರಿಸುವುದು. ಅಪದಿಶತಿ। 9. ಅಪಕರ್ಷ, ಕೇಳುತ್ತನ. ಅಪಕರ್ಮ। 10. ಕೆಳಗಡೆ, ಕೆಳಮುಖ. ಅಪಾನಃ। 11. ಸಂತೋಷ, ಅನಂದ. "ವರ್ಜನೆ ವಿಕೃತೌ ಚೌರೈ ವಿಪರೀತವಿಯೋಗಯೋಃ। ಅಪಕೃಷ್ಣೇ ಚ ನಿರ್ದೇಶೋ ಹರ್ಷೇ ಚಾಪಃ ಪ್ರಯುಜ್ಯತೇ"।

ಅಪಕರ್ತ ಅಪಕರ್ತೃ (ಪುಂ) 1. ಶತ್ರು, ಹಗೆ, ವೈರಿ. ಅಪ+ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ತೃತ್" (೩-೧-೧೩೩)। (ವಿಂ) 2. ಅಪಕಾರ ಮಾಡುವ, ಹಾನಿಯುಂಟುಮಾಡುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಕರ್ತೃ -ಕರ್ತೃಃ.

ಅಪಕರ್ಮನ್ ಅಪಕರ್ಮಣ್ (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಕೆಲಸ. 2. ದಾನ ಮಾಡಿದುದನ್ನು ಕೋಪದಿಂದಾಗಲಿ, ದಾನ ತೆಗೆದುಕೊಂಡವನು ಅಯೋಗ್ಯನೆಂಬ ಕಾರಣದಿಂದಾಗಲಿ ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. 3. ತೆಗೆದುಕೊಂಡ ಹಣವನ್ನು ಹಿಂತಿರುಗಿಸುವುದು, ಸಾಲ ತೀರಿಸುವುದು. "ತೇಷಾಮಾಪ್ತಮೃಣಾದಾನಂ ನಿಕ್ಷೇಪೋಽಸ್ವಾಮಿವಿಕ್ರಯಃ। ಸಂಭೂಯ ಚ ಸಮುತ್ಥಾನಂ ದತ್ತಸ್ಯಾನಪಕರ್ಮಂ ಚ" ಮನುಂ ೮-೪।

ಅಪಕರ್ಷ ಅಪಕರ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಅಪ+ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಘತ್" (೩-೩-೧೮)। 2. (ಗುಣದಲ್ಲಿ) ಕಡಿಮೆಯಾಗುವುದು, ಹೀನವಾಗುವುದು, ಕೇಳುತ್ತನ. 3. ಮುಂದೆ ಮಾಡಬೇಕಾದ (ಶ್ರಾದ್ಧಾದಿ) ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮುಂಚಿತವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. 4. (ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ) ಮುಂದಿನ ಸೂತ್ರಗಳ ಪದಗಳನ್ನು ಹಿಂದಿನ ಸೂತ್ರಾರ್ಥಾನ್ವಯಕ್ಕಾಗಿ ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಅಪಕರ್ಷಕ ಅಪಕರ್ಷಕ (ವಿಂ) 1. ಎಳೆಯುವ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ. 2. (ಗುಣದಲ್ಲಿ) ಕಡಿಮೆಮಾಡುವ, ಹೀನವಾಗಿಮಾಡುವ, ಕೆಡಿಸುವ. ಅಪ+ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಘಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ದೋಷಾಸ್ತಸ್ಯ (ಕಾವ್ಯಸ್ಯ) ಅಪಕರ್ಷಕಾಃ" ಸಾಂ ೨೦ ೧-೩।

ಅಪಕರ್ಷಣ ಅಪಕರ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. 2. (ಗುಣದಲ್ಲಿ) ಕಡಿಮೆಮಾಡುವುದು, ಹೀನವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ಅಪ+ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। (ವಿಂ) 3. ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ. 4. (ಗುಣದಲ್ಲಿ) ಕಡಿಮೆಮಾಡುವ, ಹೀನವಾಗಿ ಮಾಡುವ, ಕೆಡಿಸುವ. ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)।

ಅಪಕಾರ ಅಪಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಕೆಡಕು, ಪೀಡೆ, ತೊಂದರೆ. ಅಪ+ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಘತ್" (೩-೩-೧೮)। "ಅಪಕಾರಾ-ಪಕಾರೌ ಹಿ ಲಕ್ಷ್ಯಂ ಲಕ್ಷಣಮೇತಯೋಃ" ಮಾಘಂ ೨-೩೭। 2. ಕೆಡಕು ಮಾಡುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಕೇಡುಬಯಸುವುದು. 3. ಇತರರನ್ನು ಪೀಡಿಸುವುದು. "ಅಪಕಾರಃ ಪರಪೀಡನಮ್" ವೇಜಂ।

ಅಪಕಾರಗಿರ್ ಅಪಕಾರಗಿರ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೇಡುಂಟು ಮಾಡುವೆನೆಂಬ ಬೆದರಿಕೆಯ ಮಾತು, ಭಯೋತ್ಪಾದಕ ವಚನ. ಅಪಕಾರೇಣ ಗೀಯತೇ-ಗೃ (ನಿಗರಣ) "ಕ್ವಿಪ್"।

ಅಪಕಾರಿನ್ ಅಪಕಾರಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಅಪಕಾರ ಮಾಡುವ, ಕೆಡಕುಂಟುಮಾಡುವ. 2. ಅಪಕಾರ ವನ್ನು ಬಯಸುವ, ಕೆಡಕನ್ನು ಯೋಚಿಸುವ. ಅಪ+ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಘಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)। "ಅಪ-ಕರ್ತಾರಿಣಾ ಸಂಧಿನಂ ಮಿತ್ರೇಣಾಪಕಾರಿಣಾ" ಮಾಘಂ ೨-೩೭।

ಅಪಕೃತ ಅಪಕೃತ (ನಂ) 1. ಅಪಕಾರ, ಕೆಡಕು. ಅಪ+ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಕೆಡಕು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಂದರೆಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ+ಕೃತ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅಪಕೃತಿ ಅಪಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಪಕಾರ, ಕೆಡಕು. 2. ಕೆಡಕುಂಟುಮಾಡುವ ಯೋಚನೆ. ಅಪ+ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪)।

ಅಪಕೃತ್ಯ ಅಪಕೃತ್ಯ (ನಂ) 1. ಅಪಕಾರ, ಕೆಡಕು. ಅಪ+ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) ಭಾವೇ "ಕೃತ್" (೩-೧-೧೨೦)। 2. ಅಕೃತ್ಯ, ನಿಂದ್ಯವಾದ ಕೆಲಸ. ಅಪಕೃಷ್ಣಂ ಕೃತ್ಯಮ್।

ಅಪಕೃತ್ಯಾ ಅಪಕೃತ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪಕಾರ, ಕೆಡಕು. ಅಪ+ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) ಭಾವೇ "ಕೃತ್" (೩-೩-೧೦೦)।

ಅಪಕೃಷ್ಣ ಅಪಕೃಷ್ಣ (ಪುಂ) 1. ವಾಯಸ, ಕಾಗೆ. "ಶಕ್ರಜಃ ಸತ್ಯವಾಕ್ಕಾಣೋ ಅಪಕೃಷ್ಣೋ ನಗರೀಬಕಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। (ವಿಂ) 2. ನೀಚವಾದ, ಹೀನವಾದ. 3. ಮುಂಚಿತವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಎಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಮುಂದಿನ ಸೂತ್ರದಿಂದ ಹಿಂದಿನ ಸೂತ್ರಾರ್ಥಾನ್ವಯಕ್ಕಾಗಿ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ (ಪದ).

ಅಪಕ್ರಮ ಅಪಕ್ರಮ (ಪುಂ) 1. ಪಲಾಯನ, ಓಡಿ ಹೋಗುವುದು. ಅಪ+ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ) ಭಾವೇ "ಘತ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಓಡಿಹೋಗುವ ಸ್ಥಳದ ಎಲ್ಲೆ. ಅಪ+ಕ್ರಮ ಕರ್ಮಂ "ಘತ್" (೩-೩-೧೯)। "ವಿಕ್ಷಿಪತ್ಯೇಷ ವಿಕ್ಷೇಪಂ ಚಂದ್ರಾದೀನಾಮಪಕ್ರಮಾತ್" ಸೂಂ ಸಿಂ। (ವಿಂ) 3. ಅಕ್ರಮವಾದ, ಕ್ರಮತಪ್ಪದ. ಅಪಗತಃ ಕ್ರಮೋ ಯಸ್ಮಾತ್।



ಅಪಕ್ರಮಣ ಅಪಕ್ರಮಣ (ನಂ) ಓಟ, ಪಲಾಯನ, ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಂಡು ಓಡುವುದು. ಅಪ+ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅಪಕ್ರಿಯಾ ಅಪಕ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪಕಾರ, ಕೆಡಕು. ಅಪ+ಕ್ರು (ಕರಣ) "ಶ:" (೩-೩-೧೦೦)। "ಚತುರ್ಯೋ-ಪಾಯಸಾಘ್ಯೇ ತು ರಿಪೌ ಸಾನ್ವಮಪಕ್ರಿಯಾ" ಮಾಘಂ ೨-೪೪।

ಅಪಕ್ರೋಶ ಅಪಕ್ರೋಶ (ಪುಂ) ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. ಅಪ+ಕ್ರೂ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೇ ಚ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। -ಕ್ರೋಶನಮ್ -ಕ್ರೋಶನಮ್.

ಅಪಕ್ವ ಅಪಕ್ವ (ವಿಂ) 1. ಬಲಿಯಾದ, ಮಾಗದಿರುವ, ಹಣ್ಣಾಗದ. 2. ಬೇಯಿಸಲ್ಪಡದ, ಹಸಿಯಾದ. ನಂ ತಂ।

ಅಪಕ್ಷ ಅಪಕ್ಷ (ವಿಂ) 1. ರೆಕ್ಕೆಯಿಲ್ಲದ. 2. ಸಹಾಯವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಪಕ್ಷೋ ಗರ್ಹ್ ಸಹಾಯೋ ವಾ ಯಸ್ಯ।

ಅಪಕ್ಷಪಾತ ಅಪಕ್ಷಪಾತ (ಪುಂ) ನಿಷ್ಪಕ್ಷಪಾತ, ನ್ಯಾಯ, ಸಮದೃಷ್ಟಿ.

ಅಪಕ್ಷಪಾತಿನ್ ಅಪಕ್ಷಪಾತಿನ್ (ವಿಂ) ಪಕ್ಷಪಾತವಿಲ್ಲದ, ನ್ಯಾಯವಾದ, ಸಮದೃಷ್ಟಿಯುಳ್ಳ.

ಅಪಕ್ಷಯ ಅಪಕ್ಷಯ (ಪುಂ) ಕಡಿಮೆಯಾಗುವುದು, ಕ್ಷೀಣವಾಗುವುದು, ನಾಶವಾಗುವುದು.

ಅಪಕ್ಷೇಪಣ ಅಪಕ್ಷೇಪಣ (ನಂ) 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಹಾಕುವುದು, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಎಸೆಯುವುದು. 2. ಕೆಳಗೆ ಇಡುವುದು. "ಉಕ್ಷೇಪಣಾವ(ಪ)ಕ್ಷೇಪಣಾಕುಚ್ಚನಪ್ರಸಾರಣಗಮನಾನಿ" ಎಂದು ಹೇಳಿರುವ ಐದು ಕರ್ಮಗಳಲ್ಲೊಂದು.

ಅಪಗಂಢ ಅಪಗಂಢ (ಪುಂ) ಶಿಶು, ಬಾಲಕ.

ಅಪಗತ ಅಪಗತ (ವಿಂ) 1. ಪಲಾಯನ ಮಾಡಿದ, ಓಡಿಹೋದ. 2. ಹೊರಟುಹೋದ, ಕಳೆದುಹೋದ. ಅಪ+ಗಮ್ (ಗತೌ) ಕರ್ತಂ "ಕ್:" (೩-೪-೭೨)। "ಅಪಗತನವಯಾವಕೇಶಿಚರಾಯ" ಮಾಘಂ ೭-೬೭।

ಅಪಗಮ ಅಪಗಮ (ಪುಂ) 1. ಪಲಾಯನ, ಓಡಿಹೋಗುವುದು. 2. ಹೋಗುವುದು, ಹೊರಡುವುದು, ಚಲಿಸುವುದು. 3. ಅದೃಶ್ಯವಾಗುವುದು, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸದಿರುವುದು, ನಾಶ ಹೊಂದುವುದು. ಅಪ+ಗಮ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಅಪ್" (೩-೩-೫೮)। "ಪುರಾಣಪತ್ರಾಪಗಮಾದನಂತರಂ ಲತೇವ ಸಂನಿವೃತ್ತಮನೋಜ್ವಲವಾ" ರಘುಂ ೩-೭। 4. ಗತಿಸಿ ಹೋಗುವುದು, ತೀರಿಹೋಗುವುದು.

ಅಪಗತಿ ಅಪಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ದೈವ.

ಅಪಗರ ಅಪಗರ (ಪುಂ) ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ.

ಅಪಗುಣ ಅಪಗುಣ (ವಿಂ) ನಿರ್ಗುಣ, ಗುಣಶೂನ್ಯ. ಅಪಗತಾ ಗುಣಾ ಯಸ್ಮಾತ್। "ವ್ಯಕ್ತಮಪಗುಣ ಗುಣತ್ರಯತಜನ ಪ್ರಯಾಸಮುಪಯಾಸಿ ಕಿ ಮುಖಾ" ಮಾಘಂ ೧೫-೩೨।

ಅಪಗುರಣ ಅಪಗುರಣ (ನಂ) ದ್ರೋಹ, ವಂಚನೆ. ಅಪ+ಗುರಿ (ಉದಮನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅಪಘನ ಅಪಘನ (ಪುಂ) 1. ಅಂಗ, ಅವಯವ. ಅಪಹನ್ಯತೇ -ಅಪ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಅಪ್" (೩-೩-೮೧)। "ಅಙ್ಗಂ ಪ್ರತೀಕೋಜ್ವಯವೋಽಪಘನ:" ಅಮಂ। (ವಿಂ) 2. ಮೋಡವಿಲ್ಲದ. ಅಪಗತೋ ಘನೋ ಯಸ್ಮಾತ್।

ಅಪಘಾತ ಅಪಘಾತ (ಪುಂ) 1. ಹಾನಿ, ತೊಂದರೆ. 2. ದುರಂತ ಮರಣಕ್ಕೆ ಕಾರಣ, ಮರಣಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ಆಕಸ್ಮಿಕ. ಅಪ+ಹನ ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)।

ಅಪಚ ಅಪಚ (ಪುಂ) 1. ಅಡಿಗೆ ಮಾಡಲು ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದವನು. ಪಕ್ತುಮಶಕ್ತ: (೬-೨-೧೫೭)। 2. ಅಯೋಗ್ಯನಾದ ಅಡಿಗೆಯವನು. (ಕೋಪದಿಂದ ಹೇಳುವ ಮಾತು.) ಅಪಚೋ ಜಾಲ್ಮ:। ಸಿಂ ಕೌಂ (೬-೨-೧೫೮)।

ಅಪಚಯ ಅಪಚಯ (ಪುಂ) 1. ಕಡಿಮೆಯಾಗುವುದು, ಕ್ಷೀಣವಾಗುವುದು. ಅಪ+ಚಿ (ಚಯನೇ) "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬)। "ತೇನಾಸ್ಯಾಪಚಯಂ ಯಾಂತಿ ವ್ಯಾಧೇರ್ಮೂಲಾನ್ಯಶೇಷತ:" ಸುಶ್ರುತಂ। 2. ನಷ್ಟ. 3. ಹಾನಿ, ಕೆಡಕು.

ಅಪಚರಿತ ಅಪಚರಿತ (ನಂ) ಅಕಾರ್ಯ, ಕೆಟ್ಟಕೆಲಸ. ಅಪಕೃಷ್ಣಂ ಚರಿತಮ್। "ಆಹೋಸ್ವಿತ್ಪ್ರಸವೋ ಮಮಾಪಚರಿತ-ವಿಶ್ರಮ್ಭಿತೋ ವೀರಧಾಮ್" ಶಾಕುಂ ೫-೯।

ಅಪಚಾಯಿತ ಅಪಚಾಯಿತ (ವಿಂ) ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ+ಚಾಯ (ಪೂಜಾನಿಶಾಮನಯೋ:) "ಕ್:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅಪಚಾರ ಅಪಚಾರ (ಪುಂ) 1. ಅಪರಾಧ, ತಪ್ಪು, ಅಕೃತ್ಯ. ಅಪ+ಚರ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ರಾಜನ್ ಪ್ರಜಾಸು ತೇ ಕಶಿಚದಪಚಾರ: ಪ್ರವರ್ತತೇ" ರಘುಂ ೧೫-೪೭। 2. ನಾಶ. 3. ನಿರ್ಗಮನ, ಪ್ರಯಾಣ. 4. ಲೋಪ, (ಕರ್ಮಾಚರಣೆಯಲ್ಲಿ) ವಿಷಯ ವೈಪರೀತ್ಯದಿಂದಂಟಾಗುವ ದೋಷ. 5. ಅಪಧ್ಯ, ಆಹಾರ ನಿಯಮದ ಉಲ್ಲಂಘನೆ. "ಕೃತಾಪಚಾರೋಽಪಿ ಪರೇನಾವಿಷ್ಕೃತವಿಕ್ರಿಯ:" ಮಾಘಂ ೨-೮೪।

ಅಪಚಾರಿನ್ ಅಪಚಾರಿನ್ (ವಿಂ) ತಪ್ಪು ಕೆಲಸಮಾಡುವ, ಅಪರಾಧ ಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಅಪ+ಚರ (ಗತೌ) "ಘಿಣ್" (೩-೨-೧೪೨)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಚಾರಿಣಿ -ಚಾರಿಣೀ.



ಅಪಚಿಕೀರ್ಷಿ ಅಪಚಿಕೀರ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪಕಾರ ಮಾಡುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಕೆಡಕನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಅಭಿಲಾಷೆ. ಅಪಕರ್ತುಮಿಚ್ಛಾ - ಅಪ+ಙ್ ಕೃ (ಕರಣಂ)+ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨)।

ಅಪಚಿಕೀರ್ಷಿ ಅಪಚಿಕೀರ್ಷು (ವಿಂ) ಅಪಕಾರಮಾಡುವ ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. ಅಪ+ಙ್ ಕೃ (ಕರಣಂ)+ಸನ್ "ಅ:" (೩-೨-೧೬೮)।

ಅಪಚಿತ ಅಪಚಿತ (ನಂ) 1. ಗೌರವ, ಪೂಜೆ, ಮರ್ಯಾದೆ. ಅಪ+ಚಾ (ಪೂಜಾನಿಶಾಮನಯೋಃ)+ಞಿ (ಚಿಭಾವಃ) "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೭-೨-೩೦) ನಿಪಾಂ। 3. ಕಡಿಮೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ+ಚಿ (ಚಯನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅಪಚಿತ ಅಪಚಿತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೂಜೆ, ಗೌರವ. ಅಪಚಾಯತೇ - ಅಪ+ಚಾ (ಪೂಜಾನಿಶಾಮನಯೋಃ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ಆಶಂಸಿತಾಪಚಿತೀಶ್ವರ ಪುರ: ಸುರಾಣಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೬-೪೬। 2. ವ್ಯಯ, ಖರ್ಚು. 3. ಕಡಿಮೆ ಯಾಗುವುದು. 4. ನಾಶ, ಹಾನಿ. 5. ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ. "ಅಪಚಿತವ್ಯಯೇ ಹಾನೌ ಪೂಜಾಂ ನಿಷ್ಕೃತಾವಪಿ" ಹೇಮಂ।

ಅಪಚಿಯಮಾನ ಅಪಚೀಯಮಾನ (ವಿಂ) ಕಡಿಮೆ ಯಾಗುತ್ತಿರುವ, ನಾಶಹೊಂದುತ್ತಿರುವ. ಅಪ+ಚಿ (ಚಯನೇ) "ಶಾನ್" (೩-೨-೧೨೪)।

ಅಪಚ್ಛಾಯ ಅಪಚ್ಛಾಯ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. (ವಿಂ) 2. ನೆರಳಿಲ್ಲದ. 3. ಕಾಂತಿಯಿಲ್ಲದ.

ಅಪಜಯ ಅಪಜಯ (ಪುಂ) ಪರಾಜಯ, ಸೋಲು. ಅಪ+ಜಿ (ಜಯೇ) "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬)।

ಅಪಜರ ಅಪಜರ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. ಅಪಗತಾ ಜರಾ ಯಸ್ಮಾತ್। (ವಿಂ) 2. ಮುಪ್ಪಿಲ್ಲದ.

ಅಪಜಾತ ಅಪಜಾತ (ಪುಂ) ಕೆಟ್ಟಮಗ, ಅಯೋಗ್ಯನಾದ ಮಗ. "ಮಾತೃತುಲ್ಯಗುಣೋ ಜಾತಸ್ತ್ವನುಜಾತಃ ಪಿತುಃ ಸಮಃ। ಅತಿಜಾತೋಽಧಿಕಸ್ತಸ್ಮಾದಪಜಾತೋಽವಮಾಘಮಃ"।

ಅಪಚ್ಛೀಕೃತ ಅಪಚ್ಛೀಕೃತ (ವಿಂ) ಪಂಚೀಕರಣ ಮಾಡಲ್ಪಡದ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಪಚ್ಛೀಕರಣ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಅಪಟಾಂತರ ಅಪಟಾಂತರ (ವಿಂ) ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ವ್ಯವಧಾನವಿಲ್ಲದ, ಮಧ್ಯೆ ತಡೆಯಿಲ್ಲದ, ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಸೇರಿದಂತಿರುವ. ನ ಪಟೇನ ಅಂತರಮತ್ರ।

ಅಪಟಿಮನ್ ಅಪಟಿಮನ್ (ಪುಂ) ಅಸಮರ್ಥತೆ, ಚಟುವಟಿಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಮಂಕುತನ. ಅಪಟ "ಇಮನಿ" (೫-೧-೧೨೨)।

ಅಪಟಿ ಅಪಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೆರೆ, ಪರದೆ, ಜವನಿಕೆ. ಅಪ: ಪಟ: ಪಟಿ। ನಂ ತಂ।

ಅಪಟೀಕ್ಷೇಪ ಅಪಟೀಕ್ಷೇಪ (ಪುಂ) ತೆರೆಯನ್ನು ಪಕ್ಕಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವುದು. ಅಪಟಾ: ಕಾಂಡಪಟಸ್ಯ ಕ್ಷೇಪಃ। [ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಅವಸರವಾಗಿ ಪಾತ್ರಗಳು ಪ್ರವೇಶಿಸಬೇಕಾದರೆ ತೆರೆಯನ್ನು ತಳ್ಳಿಕೊಂಡು ಪ್ರವೇಶಿಸುವ ವಾಡಿಕೆ.]

ಅಪಟು ಅಪಟು (ವಿಂ) 1. ಸಾಮರ್ಥ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ. 2. ದಕ್ಷತೆಯಿಲ್ಲದ, ನೈಪುಣ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಜಾಣ್ಮೆಯಿಲ್ಲದ. "ಸಾ ಕ್ಷಾಂತಾ ಜಘನಸ್ಥಲೇನ ಗುಣಾ ಗತುಂ ನ ಶಕ್ತಾ ವಯಂ ದೋರನೃಜನಾಶ್ರಯೇರಪಟವೋ ಜಾತಾಃ ಸಮ ಇತ್ಯದ್ಭುತಮ್" ಅಮರಂ। 3. ರೋಗಿ. ನ ಪಟುಃ।

ಅಪಂಡಿತ ಅಪಂಡಿತ (ವಿಂ) ಮೂರ್ಖ, ಅಜ್ಞಾನಿ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. "ವಿಭೂಷಣಂ ಮೌನಮಪಂಡಿತಾನಾಮ್" ಭರ್ತಂ ೨-೬।

ಅಪಣ್ಯ ಅಪಣ್ಯ (ವಿಂ) ವಿಕ್ರಯಿಸಲು ಅರ್ಹವಲ್ಲದ, ಮಾರಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ. ನ ಪಣ್ಯಃ। ವಿಕ್ರಯಿಸಲು ಅನರ್ಹವಾದ ವಸ್ತುಗಳು: ಕೃಣವಸ್ತ್ರಮ್, ರತ್ನಃ (ತಗರ), ರತ್ನಮ್, ಗುಡಃ (ಬೆಲ್ಲ), ಗಂಧಃ (ಚಂದನ), ಮಧು (ಜೇನುತುಪ್ಪ), ರಸಃ ಮತ್ತು ಊರ್ಣಿ (ಉಣ್ಣೆ).

ಅಪತನ್ತ್ರಕ ಅಪತನ್ತ್ರಕ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ವಾಯು ರೋಗ, ವೈದ್ಯನಿಗೆ ಸ್ವಾಧೀನವಾಗದ ರೋಗ. ಅಪಗತಂ ತನ್ತ್ರಕಂ ಭಿಷಜಾಮಧೀನತಾ ಯತ್ರ। "ಅಪತನ್ತ್ರಕಾತುರಂ ನಾಪ-ತರ್ಪಯೇತ್" ಸುಶ್ರುತಂ।

ಅಪತರ್ಪಣ ಅಪತರ್ಪಣ (ನಂ) 1. ಉಪವಾಸ. 2. ತೃಪ್ತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

ಅಪತಾನಕ ಅಪತಾನಕ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ವಾಯು ರೋಗ, ಬಿಟ್ಟು ಬಿಟ್ಟು ಬರುವ ವಾಯುರೋಗ, ಮೂರ್ಛಾರೋಗ. ಅಪಕ್ರಮ್ಯ ಅಂತರಾಂತರಾ ತನುತೇ - ತನು (ವಿಸ್ತಾರೇ) ಕರ್ಮಂ "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಅಪತಿ ಅಪತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಡನಿಲ್ಲದ ಹೆಂಗಸು.

ಅಪತಿಕಾ ಅಪತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಡನಿಲ್ಲದ ಹೆಂಗಸು.

ಅಪತ್ನಿ ಅಪತ್ನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮದುವೆ ಇಲ್ಲದ ಹೆಂಗಸು, ಇನ್ನೂ ಗಂಡನನ್ನು ಹೊಂದದ ಹೆಂಗಸು. ನಾಸ್ತಿ ಪತಿ-ಯಸ್ಯಾಃ "ನ:" (೪-೧-೩೪)। "ತೀಪ್" (೪-೧-೫)।

ಅಪತ್ನೀಕ ಅಪತ್ನೀಕ (ವಿಂ) 1. ಕರ್ಮಗಳಿಗೆ ಅನರ್ಹಳಾದ ಪತ್ನಿಯುಳ್ಳವನು. 2. ಪತ್ನಿಯನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡವನು. 3. ಪತ್ನಿಯು ಸಮೀಪದಲ್ಲಿಲ್ಲದೆ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ. (ಪಿತೃಯಜ್ಞ ಮೊದಲಾದವು.)



ಅಪತ್ಯ ಅಪತ್ಯ (ನಂ) 1. ಸಂತತಿ, ಸಂತಾನ. (ಮಗ ಅಥವಾ ಮಗಳು) ನ ಪತಂತಿ ಪಿತರೋ ನರಕೇಜೇನ—ಪಲ್ಕ (ಗತೌ) ಕರಂ "ಯಕ್" (ತಂ ೪-೧೧೧). "ಅಪತ್ಯಭಾವಮಾಪನ್ನ-ಮಾತ್ಮಾನಮಮೃತೋದಧಿ:" ಯಾದಂ ೧೬-೨. "ಅಪತ್ಯೇರಿವ ನಿವಾರ-ಭಾಗಧೇಯೋಚಿತೇರ್ಮಗೈ:" ರಘುಂ ೧-೫೦. 2. ಒಂದು ಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮೊಮ್ಮಗ ಮತ್ತು ಮುಂದಿನ ಪ್ರಜೆ. ಅಪತ್ಯದ ಅಪತ್ಯದ (ವಿಂ) ಸಂತಾನವನ್ನು ಕೊಡುವ, ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಕೊಡುವ ಮಂತ್ರ ಮುಂತಾದುದು. ಅಪತ್ಯಂ ತದ್ವೇತುಂ ಗಮಿ ದದಾತಿ.

ಅಪತ್ಯದಾ ಅಪತ್ಯದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗರ್ಭೋತ್ಪತ್ತಿ ಮಾಡುವ ಔಷಧ. 2. ಗರ್ಭೋತ್ಪತ್ತಿ ಮಾಡುವ ವಿದ್ಯೆ, ಮಂತ್ರ.

ಅಪತ್ಯಪಥ ಅಪತ್ಯಪಥ (ಪುಂ) ಹೆಂಗಸರ ಗುಹ್ಯಸ್ಥಾನ, ಯೋನಿ. ಅಪತ್ಯಸ್ಯ ಪನ್ಥಾ: "ಅ:" (೪-೪-೭೪).

ಅಪತ್ಯಶತ್ರು ಅಪತ್ಯಶತ್ರು (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. [ಹಾವು ಮೊಟ್ಟೆ ಹಾಕಿಕೊಂಡು ಹೋಗಿ ಹಿಂತಿರುಗುವಾಗ ಒಡೆಯದಿರುವ ಮೊಟ್ಟೆಗಳನ್ನು ತಿಂದು ಹಾಕುವುದು.] ಅಪತ್ಯಸ್ಯ ಶತ್ರು: 2. ಹೆಣ್ಣು ನಳ್ಳಿ. 3. ಜೇಳು. ಅಪತ್ಯಂ ಶತ್ರು: ಯಸ್ಯಾ: [ಇವುಗಳ ಗರ್ಭದಿಂದ ಮರಿಯು ಹೊರಕ್ಕೆ ಬರುವಾಗ ತಾಯಿಯ ಹೊಟ್ಟೆಯನ್ನು ಭೇದಿಸಿಕೊಂಡು ಬರುವುದು.]

ಅಪತ್ರ ಅಪತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಅಂಕುರ, ಮೊಳಕೆ. 2. ಬಿದಿರಿನ ಚಿಗುರು. 3. ಎಲೆಗಳಿಲ್ಲದ ಮರ. 4. ರೆಕ್ಕೆಗಳಿಲ್ಲದ ಹಕ್ಕಿ. ನಾಸ್ತಿ ಪತ್ರ ದಲಂ ಪಕ್ಷೋ ವಾ ಯಸ್ಯ.

ಅಪತ್ರಪ ಅಪತ್ರಪ (ವಿಂ) ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದ, ನಾಚಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. ಅಪಗತಾ ತ್ರಪಾ ಯಸ್ಮಾತ್.

ಅಪತ್ರಪಾ ಅಪತ್ರಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಜ್ಜೆ, ನಾಚಿಕೆ. ಅಪ+ತೃಪ್ (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಅಙ್" (೩-೩-೧೦೪). "ಅಪತ್ರಪಾಮಪ್ಸರಸಾಮಕಾರ್ಪಿತ್" ಯಾದಂ ೧೮-೫೫. 2. ಮತ್ತೊಬ್ಬರ ದೆಸೆಯಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಲಜ್ಜೆ. "ಅಪತ್ರಪಾವಿಪ್ಲುತಚೇತಸೋ ಯೇ" ಯಾದಂ ೧೩-೭೬.

ಅಪತ್ರಪಿಣ್ಣು ಅಪತ್ರಪಿಣ್ಣು (ವಿಂ) ಲಜ್ಜೆಯುಳ್ಳ, ನಾಚಿಕೆಯ ಸ್ವಭಾವದ, ಸಂಕೋಚಸ್ವಭಾವದ. ಅಪತ್ರಪತೇ—ಅಪ+ತೃಪ್ (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್) "ಙ್" (೩-೨-೧೩೬). "ಲೋಲಾಕ್ಷೇ ಸುರತಗುರಾವಪತ್ರಪಿಣ್ಣೋ:" ಮಾಘಂ ೮-೪೬.

ಅಪಥ ಅಪಥ (ನಂ) 1. ಕುಮಾರ್ಗ, ಕೆಟ್ಟದಾರಿ. 2. ತಪ್ಪುದಾರಿ, ದುರ್ನಡತೆ. ನ ಪನ್ಥಾ: "ಅ:"

(೪-೪-೭೨). "ಅಪಥೇ ಪದಮರ್ಪಯಂತಿ ಹಿ ಶ್ರುತವಂತೋಽಪಿ ರಜೋನಿಮಿಲಿತಾ:" ರಘುಂ ೯-೭೪. (ವಿಂ) 3. ದಾರಿಯಿಲ್ಲದ (ದೇಶ). ನಾಸ್ತಿ ಪನ್ಥಾ: ಯಸ್ಯ. (ಅವ್ಯಂ) 4. ತಪ್ಪು ದಾರಿಯಲ್ಲಿ. ಅವ್ಯಯಿಂ. ಅಪಥಂ ವರ್ತತೇ. ಸಿಂ ಕೌಂ.

ಅಪಥಿನ್ ಅಪಥಿನ್ (ಪುಂ) ಕೆಟ್ಟದಾರಿ, ಕುಮಾರ್ಗ. ನ ಪನ್ಥಾ: "ಪಥೋ ವಿಭಾಷಾ" (೪-೪-೭೨). "ಅ" ಪ್ರತ್ಯಯಾಭಾವೇ ರೂಪಮ್.

ಅಪಥ್ಯ ಅಪಥ್ಯ (ನಂ) 1. ವೈದ್ಯನು ಹೇಳಿದ ಆಹಾರ ನಿಯಮವನ್ನು ಮೀರಿ ನಡೆಯುವುದು, ಕೆಡಕುಂಟು ಮಾಡುವ ಊಟ. 2. ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಆಹಾರವನ್ನು ಮೀರಿ ನಡೆಯುವುದು, ಅಹಿತವಾದ ವರ್ತನೆ, ನಿಯಮೋಲ್ಲಂಘನೆ. ಪಥ: ಅನಪೇತಮ್ "ಯತ್" (೪-೪-೯೨). ನಂ ತಂ. "ರಾಜಾಪಥ್ಯಕಾರಿ ಕ್ಷಪಣಕೋ ನಗರಾನ್ನಿರ್ವಾಸ್ಯತೇ" ಮುद्रಾಂ ೧.

ಅಪದ ಅಪದ (ಪುಂ) 1. ಕಾಲಿಲ್ಲದ ಹುಳು, ಹರಿದಾಡುವ ಹುಳು. 2. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. (ನಂ) 3. ನಿಂದ್ಯವಾದ ಜಾಗ, ಅಸ್ಥಾನ. 4. ಅರ್ಹವಲ್ಲದ ಜಾಗ. "ಪ್ರೇಮ ಪಶ್ಯತಿ ಭಯಾನ್ಯಪದೇಽಪಿ" ಕಿರಾಂ ೯-೬೦. 5. ಸುಬಂಧ ಅಥವಾ ಶಿಷ್ಯನಿಲ್ಲದ್ದು. ನಾಸ್ತಿ ಪದಂ ಪಾದ: ಸ್ಥಾನಂ ಸುಪ್ತಿಙ್ಕಂತಾತ್ಮಕಂ ವಾ ಯಸ್ಯ. 6. ಆಕಾಶ. ಅಸ್ಯ ವಿಷ್ಣೋ: ಪದಮ್. (ವಿಂ) 7. ಕಾಲಿಲ್ಲದ.

ಅಪದಾನ ಅಪದಾನ (ನಂ) 1. ಶುದ್ಧವಾದ ನಡತೆ, ಪರಿಶುದ್ಧವಾದ ಆಚಾರ. ಅಪದಾಯತಿ ಪರಿಶುಷ್ಯತಿ ಅನೇನ—ಅಪ+ದೈಪ್ (ಶೋಧನೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭). 2. ಹಿಂದೆ ನಡೆದ ಸಂಗತಿ, ಹಿಂದೆ ನಡೆಯಿಸಿದ ಕಾರ್ಯ. "ಅಪದಾನಂ ಕರ್ಮ ವೃತ್ತಮ್" ಅಮಂ.

ಅಪದಾಂತರ ಅಪದಾಂತರ (ವಿಂ) 1. ಅವ್ಯವಹಿತವಾದ. 2. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. 3. ಸನ್ನಿಹಿತವಾದ. ನ ಪದಾಂತರಂ ಯತ್ರ.

ಅಪದಿಶಮ್ ಅಪದಿಶಮ್ (ನಂ ಅವ್ಯಂ) ಎರಡು ದಿಕ್ಕುಗಳ ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶ, ಆಗ್ನೇಯ ಮೊದಲಾದ ವಿದಿಕ್ಕು. ದಿಶಾಯೋರ್ಮಧ್ಯಂ ಅಪದಿಶಮ್. ದಿಶೋರ್ಮಧ್ಯ ಇತಿ ವಿग्रಹೇ "ಡಕ್" (೪-೪-೧೦೭). "ಕಲಿಬಾವ್ಯಯಂತ್ವಪದಿಶಂ ದಿಶೋರ್ಮಧ್ಯೇ ವಿದಿಕ್ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಅಮಂ.

ಅಪದಿಷ್ಟ ಅಪದಿಷ್ಟ (ವಿಂ) ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ+ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಕ್" (೩-೨-೧೦೨).



ಅಪದೇಶ ಅಪದೇಶ (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಾಜ, ನೆಪ. ಅಪದಿಶ್ಯತೇ — ಅಪ+ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮)।  
 “ರಕ್ಷಾಪದೇಶಾನ್ಮುನಿಹೋಮಧೇನೋ: ವನ್ಯಾನ್ವಿನೇಪ್ಯನ್ವಿವ ದೃಷ್ಟ-  
 ಸತ್ವಾನ್” ರಘು ೨-೮। 2. ಛಲ, ಕಪಟ, ವಂಚನೆ.  
 3. ಲಕ್ಷ್ಯ, ಗುರಿ. 4. ಆಕಾರ, ವೇಷ. “ವಿಕಟದೃಷ್ಟಶ್ವಾ-  
 ಪದಾಪದೇಶಕಾಲಗೋಚರಂ ಗತಾ ಮದಯಂತಿಕಾ” ಮಾಲತೀಂ ೮।  
 5. ಹೇತು, ಕಾರಣ. 6. ಸ್ಥಾನ, ಸ್ಥಳ, ಜಾಗ.  
 “ಅಪದೇಶಸ್ತು ಕಾರಣೇ। ವ್ಯಾಜೇ ಲಕ್ಷ್ಯೇಽಪಿ” ಹೇಮಂ। “ಅಪದೇಶಃ  
 ಪದೇ ಲಕ್ಷ್ಯನಿಮಿತ್ತವ್ಯಾಜಯೋರಪಿ” ನಾನಾರ್ಥರಂ।

ಅಪದೇಶ್ಯ ಅಪದೇಶ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕಪಟದಿಂದ ಹೇಳಲ್ಪಡುವ, ಮೋಸದಿಂದ ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. ಅಪ+ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) ಕರ್ಮಂ “ಘ್” (೩-೧-೧೨೪)।  
 2. ಅಯೋಗ್ಯವಾದ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. ಅಪದೇಶೋ ಭವಃ “ಯತ್” (೪-೩-೫೪)।

ಅಪದ್ವಾರ ಅಪದ್ವಾರ (ನಂ) ಕಳ್ಳಬಾಗಿಲು, ಮುಖ್ಯವಾದ ಬಾಗಿಲುಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದ ಒಂದು ಪಕ್ಕದ ಬಾಗಿಲು.

ಅಪಧ್ಯಾನ ಅಪಧ್ಯಾನ (ನಂ) ಕೆಟ್ಟಯೋಚನೆ, ಅರಿಷ್ಟದ ಚಿಂತೆ, ಅಪಕೃಷ್ಣಂ ಧ್ಯಾನಮ್।

ಅಪಧ್ವಂಸ ಅಪಧ್ವಂಸ (ಪುಂ) 1. ಅವನತಿ, ಅಧಃಪತನ, ಕೆಳದರ್ಜೆಗೆ ಬರುವುದು. 2. ನಾಶ. 3. ಧಿಕ್ಕಾರ, ತಿರಸ್ಕಾರ, ಅಪಮಾನ. ಅಪ+ಧ್ವಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮)।

ಅಪಧ್ವಂಸಿನ್ ಅಪಧ್ವಂಸಿನ್ (ವಿಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ. 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಅಪಧ್ವಂಸಯಿತ್ಯು ಶೀಲಮಸ್ಯ — ಅಪ+ಧ್ವಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ)+ಣಿच् “ಣಿನಿಃ” (೩-೨-೭೮)। “ಸರ್ವೇನಸಾಮಪಧ್ವಂಸಿ ಜಪ್ಯಂ ತ್ರಿವಿಧಮಪಂಚಮ್” ಅಮಂ।

ಅಪಧ್ವಸ್ತ ಅಪಧ್ವಸ್ತ (ವಿಂ) 1. ಧಿಕ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ+ಧ್ವಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। 2. ನಿಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಪುಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಧೂಳುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅಪಧ್ವಾನ್ತ ಅಪಧ್ವಾನ್ತ (ವಿಂ) ಕತ್ತಲೆಯಿಲ್ಲದ, ಅಂಧ ಕಾರವಿಲ್ಲದ. ಅಪಗತಂ ಧ್ವಾನ್ತಂ ಯಸ್ಮಾತ್।

ಅಪನಯ ಅಪನಯ (ಪುಂ) 1. ದೂರಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುವುದು, ಬೇರೆ ಕಡೆಗೆ ಸಾಗಿಸುವುದು. 2. ಕೆಟ್ಟ ನೀತಿ, ಕೆಟ್ಟ ನಡತೆ. 3. ಅವಕಾರ. ಅಪ+ಣಿच् (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಅಚ್”

(೩-೩-೫೬)। “ತತಃ ಸಪತ್ನಾಪನಯಸ್ಮರಣಾನುಶಯಸ್ಕುರಾ” ಮಾಘಂ ೨-೨೪।

ಅಪನಯನ ಅಪನಯನ (ನಂ) 1. ಬೇರೆ ಕಡೆಗೆ ಒಯ್ಯುವುದು, ಬೇರೆ ಕಡೆಗೆ ಸಾಗಿಸುವುದು. 2. ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು, ಪರಿಹರಿಸುವುದು. ಅಪ+ಣಿच् (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। “ನಾತಿಶ್ರಮಾಪನಯನಾಯ ನ ಚ ಶ್ರಮಾಯ” ಶಾಕುಂ ೫-೬। 3. ವ್ಯವಕಲನ, ಕಳೆಯುವುದು. (ವಿಂ) 4. ಕಣ್ಣಿಲ್ಲದ, ನೇತ್ರವಿಲ್ಲದ. ಅಪಗತಂ ನಯನಂ ಯಸ್ಯ।

ಅಪನಸ ಅಪನಸ (ವಿಂ) ಮೂಗಿಲ್ಲದ, ನಾಶವಾದ ಮೂಗುಳ್ಳ. ಅಪಗತಾ ನಾಸಿಕಾ ಯಸ್ಯ “ಅಚ್” (೫-೪-೧೧೯)। “ನಸ್” ಆದೇಶಶ್ಚ। “ಅಸಿ ಕೌಶೇಯಮುಕ್ತಮ್ಯ ಚಕಾರಾಪನಸಂ ಮುಕ್ತಮ್” ಭट्टಿಂ ೪-೩೧।

ಅಪನೀತ ಅಪನೀತ (ವಿಂ) 1. ದೂರಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೇರೆ ಕಡೆಗೆ ಸಾಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ+ಣಿच् (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। “ಗೋಚರಂ ಗತಯೋರ್ಭಿತ್ತಿರಪನೀತಾ ತ್ವಯಾಧಮ” ರಾಮಾಂ। 2. ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ನೂಕಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ವಿರುದ್ಧವಾದ, ಅಸಂಗತವಾದ. “ತತ್ತ್ವಧರ್ಮಾಪನೀತಸ್ಯ ದೃಶ್ಯತೇ ಕರ್ಮಣಃ ಫಲಮ್” ರಾಮಾಂ। 4. ಕಿತ್ತುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊಳ್ಳಿ ಹೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುಲಿಗೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅಪನುತಿ ಅಪನುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪರಿಹಾರ, ನಿವಾರಣೆ, ಹೋಗಲಾಡಿಸುವಿಕೆ. 2. ದೂರಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುವುದು. ಅಪ+ಣುದ (ಪ್ರೇರಣೆ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪)।

ಅಪನೋದ ಅಪನೋದ (ಪುಂ) 1. ಪರಿಹಾರ, ನಿವಾರಣೆ, ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು. ಅಪ+ಣುದ (ಪ್ರೇರಣೆ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮)। “ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯಾಪನೋದಾಯ ಮಿತಭುಜ್ಞನಿಯತೇಂದ್ರಿಯಃ” ಮನುಂ ೧೧-೭೬। 2. ದೂರಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವುದು, ದೂರಕ್ಕೆ ಸಾಗಿಸುವುದು.

ಅಪನೋದನ ಅಪನೋದನ (ನಂ) 1. ಹೋಗಲಾಡಿಸುವಿಕೆ, ನಿವಾರಣೆ, ಪರಿಹಾರ. ಅಪ+ಣುದ (ಪ್ರೇರಣೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। “ಏನಸಾಂ ಸ್ಥೂಲಸೂಕ್ಷ್ಮಾಣಾಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಪನೋದನಮ್” ಮನುಂ ೧೧-೨೫೨। (ವಿಂ) 2. ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ, ಪರಿಹರಿಸುವ, ನಿವಾರಿಸುವ. ಅಪ+ಣುದ (ಪ್ರೇರಣೆ) ಕರ್ಮಂ “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪)। “ಪರಾಕೋ ನಾಮ ಕ್ಷುಣ್ಣಾಽಯಂ ಸರ್ವಪಾಪಾಪನೋದನಃ” ಮನುಂ ೧೧-೨೧೫।

ಅಪಪ್ರದಾನ ಅಪಪ್ರದಾನ (ನಂ) ಲಂಚ, ಉತ್ತೋಚ. ಅಪಕೃಷ್ಣಂ ಪ್ರದಾನಮ್।



ಅಪಭ್ರಂಶ ಅಪಭ್ರಂಶ (ವಿಂ) ಭಯವಿಲ್ಲದ, ಹೆದರಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. ಅಪಗತಂ ಭಯಂ ಯಸ್ಮಾತ್. "ತತಃ ಪ್ರಹಸ್ಯಾಪಭಯಃ

ಪುರಂದರಂ ಪುನರ್ಬಾಷಣೇ ತುರಗಸ್ಯ ರಕ್ಷಿತಾ" ರಘುಂ ೩-೫೧.

ಅಪಭಾಷಣ ಅಪಭಾಷಣ (ನಂ) 1. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ, ಹಳೆಯುವುದು. 2. ಮಾನಭಂಗಪಡಿಸುವುದು.

ಅಪಭೀ ಅಪಭೀ (ವಿಂ) ಭಯವಿಲ್ಲದ, ಹೆದರಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. ಅಪಗತಾ ಭೀಯಸ್ಮಾತ್.

ಅಪಭ್ರಂಶ ಅಪಭ್ರಂಶ (ಪುಂ) 1. ಅಧಃಪತನ, ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುವುದು. ಅಪ + ಭ್ರಂಶ (ಅಧಃಪತನ) "ಭ್ರ" (೩-೩-೧೮). 2. ಅಪಶಬ್ದ, ವ್ಯಾಕರಣನಿಯಮಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಾದ ಶಬ್ದ. 3. ಅಶುದ್ಧವಾದ ಭಾಷೆ, ಸಂಸ್ಕೃತಕ್ಕಿಂತಲೂ ದೇರಿಯಾದ ಭಾಷೆ. "ಶಾಸ್ತ್ರೇಷು ಸಂಸ್ಕೃತಾದನ್ಯದಪಭ್ರಂಶತಯೋದಿತಮ್" ಕಾವ್ಯಾಂ ೧-೩೬.

ಅಪಭ್ರಷ್ಟ ಅಪಭ್ರಷ್ಟ (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಗೆಬಿದ್ದಿರುವ. 2. ಅಶುದ್ಧವಾದ, (ಪ್ರಾಂತ್ಯಭಾಷೆ, ನಾಡಿನಭಾಷೆ).

ಅಪಮದ ಅಪಮದ (ಪುಂ) ಕಸ, ಧೂಳು, ಹೊಲಸು, ಕೊಳೆ. ಅಪ + ಮದ (ಕ್ಷೋಧೆ) "ಭ್ರ" (೩-೩-೧೮). "ಹ್ಯಹಸ್ತಿಕರೀಷಾಮ್ಯಾಪಮದಃ ಕೃತೋ ಮಹಾನ್" ರಾಮಾಂ.

ಅಪಮಾನ ಅಪಮಾನ (ಪುಂ) ಅವಮಾನ, ಅಗೌರವ, ಅನಾದರ, ಅವಮರ್ಯಾದೆ. ಅಪ + ಮಾನ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಭ್ರ" (೩-೩-೧೮). "ಮಾನಾಪಮಾನಯೋಸ್ತುತ್ಯಸ್ತುತ್ಯೋ ಮಿತ್ರಾರಿಪಕ್ಷಯೋಃ" ಗೀತಾ ೧೪-೨೫. "ಅರ್ಥನಾಶಂ ಮನಸ್ತಾಪಂ ಗೃಹೇ ದುಃಖಚರಿತಾನಿ ಚ | ವಚನಂವಾಪಮಾನಂವ ಮತಿಮಾನ್-ಪ್ರಕಾಶಯೇತ್".

ಅಪಮಾನಿತ ಅಪಮಾನಿತ (ವಿಂ) ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ + ಮಾನ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨).

ಅಪಮಾರ್ಗ ಅಪಮಾರ್ಗ (ಪುಂ) ದುರ್ಮಾರ್ಗ, ಕೆಟ್ಟದಾರಿ. ಅಪಕೃಷ್ಟೋ ಮಾರ್ಗಃ.

ಅಪಮಾರ್ಜನ ಅಪಮಾರ್ಜನ (ನಂ) ತೋಧನೆ, ಶುದ್ಧಿಗೊಳಿಸುವುದು. ಅಪ + ಮರ್ಜ (ಶುದ್ಧಿ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

ಅಪಮಿತ ಅಪಮಿತ (ವಿಂ) ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ + ಮೇಡ್ (ಪ್ರಣಿದಾನ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨).

ಅಪಮಿತೃಕ ಅಪಮಿತೃಕ (ನಂ) ಮುಣ, ಸಾಲ. ಅಪಮಿತೃಕ ಅಪಮಾನಂ ಸ್ವೀಕೃತ್ಯ ಗೃಹೀತೇ - ಅಪ + ಮೇಡ್ (ಪ್ರಣಿದಾನ) "ಲ್ಯಪ್" (೩-೧-೩೭). "ಇತ್" (೬-೪-೭೦). "ಕನ್".

ಅಪಮುಖ ಅಪಮುಖ (ನಂ) 1. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತಿರುಗಿಸಿದ ಮುಖ. (ವಿಂ) 2. ತಿರುಗಿಸಿದ ಮುಖವುಳ್ಳ.

ಅಪಮೃಧನ್ ಅಪಮೃಧನ್ (ವಿಂ) ತಲೆಯಿಲ್ಲದ (ಶರೀರ), ಮುಂಡ. ಅಪಗತೋ ಮೃಧ್ನಿ ಯಸ್ಯ.

ಅಪಮೃಷಿತ ಅಪಮೃಷಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಹಿಸಲ್ಪಡದ, ಸಹಿಸಲಾಗದ, ತಾಳಲಾಗದ. ಅಪ + ಮೃಷ (ತೀಕ್ಷ್ಣಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ವಿಹಿತಂ ಮಯಾಽಥ ಸದಸೀದಮಪ-ಮೃಷಿತಮಚ್ಯುತಾರ್ಚನಮ್" ಮಾಘಂ ೧೫-೪೬. 2. ತಿಳಿಯಲಿಕ್ಕಾಗದ, ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾದ, ಅರ್ಥವಾಗದ (ಮಾತು). ಅಪಮೃಷಿತಂ ವಾಕ್ಯಮವಿಷ್ಣುಮಿತ್ಯರ್ಥಃ ಸಿಂ ಕೌಂ.

ಅಪಯಶಸ್ ಅಪಯಶಸ್ (ನಂ) ಅಪಕೀರ್ತಿ, ಅಪಖ್ಯಾತಿ, ಅಪವಾದ. ಅಪಕೃಷ್ಟಂ ಯಶಃ. "ಅಪಯಶೋ ಯದಸ್ತಿ ಕಿ ಮೃತ್ಯುನಾ" ಭರ್ತುಂ ೧-೪೪.

ಅಪಯಶಸ್ಕರ ಅಪಯಶಸ್ಕರ (ವಿಂ) ಅಪಕೀರ್ತಿಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ.

ಅಪಯಾನ ಅಪಯಾನ (ನಂ) ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು, ದೂರಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು, ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಂಡು ಹೋಗುವುದು. ಅಪ + ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

ಅಪರ ಅಪರ (ಪುಂ) 1. ಅನೆಯ ಹಿಂದಿನ ಕಾಲು. ಅಪ ರಾತಿ - ರಾ (ದಾನ) "ಕ್ತಃ" (೩-೧-೧೩೬).

"ಬದ್ಧಾಪರಾಣಿ ಪರಿತೋ ನಿಗಡಾನ್ಯಲಾವೀತ್" ಮಾಘಂ ೫-೪೮.

(ನಂ) 2. ಮುಂದಿನ ಕಾರ್ಯ, ಅಪರಕಾರ್ಯ.

(ವಿಂ) 3. ಉತ್ತಮವಾದ, ಅದಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಿಲ್ಲದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. ನಾಸ್ತಿ ಪರೋ ಯಸ್ಮಾತ್. "ಸ್ತ್ರೀರನುಸೃಷ್ಟಿರಪರಾ ಪ್ರತಿಭಾತಿ ಸಾ ಮೇ" ಶಾಕುಂ ೨-೯.

4. ನಿಕ್ಕಷ್ಟವಾದ, ಉತ್ತಮವಲ್ಲದ. ನ ಪರಃ. "ಅಪರೇಯಮಿತಸ್ತ್ವನ್ಯಾಂ ಪ್ರಕೃತಿ ವಿಧಿ ಮೇ ಪರಾಮ್" ಗೀತಾ ೭-೫.

5. ಹೆಚ್ಚು ವ್ಯಾಪ್ತಿಯಿಲ್ಲದ, ಕಡಿಮೆ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯುಳ್ಳ, ಅಲ್ಪಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. ಪರಮಪರಂ ಚೇತಿ ಸಾಮಾನ್ಯಂ ದ್ವಿವಿಧಮ್. ಅಧಿಕ-ದೇಶವೃತ್ತಿ ಪರಮ್. ಅಪರಂ ತು ಅಲ್ಪದೇಶವೃತ್ತಿ.

6. ಭಿನ್ನವಾದ, ದೇರಿಯಾದ, ಇತರ. "ಅನ್ಯೇ ಕೃತಯುಗೇ ಧರ್ಮಸ್ತ್ರೀತಾಂ ದ್ವಾಪರೇಽಪರೇ" ಮನುಂ ೧-೮೫.

7. ಹಿಂಭಾಗದ, ಪಶ್ಚಿಮಭಾಗದ. "ಪೂರ್ವಪರೀ ತೋಯನಿಧಿ ವಗಾಹ್ಯ ಸ್ಥಿತಃ ಪೃಥಿವ್ಯಾ ಇವ ಮಾನದಂಡಃ" ಕುಮಾರಂ ೧-೧.

8. ಮುಂದಿನ, ಅನಂತರದ. "ಅಪರಂ ಭವತೋ ಜನ್ಮ ಪರಂ ಜನ್ಮ ವಿವಸ್ವತಃ" ಗೀತಾ ೪-೪.

9. ಇನ್ನೊಬ್ಬನು, ಮತ್ತೊಬ್ಬನು. [ಒಬ್ಬ ಶಬ್ದವನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸಿದಾಗ ಮತ್ತೊಬ್ಬನು ಎನ್ನುವ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಶಬ್ದವಿದು.] "ಏಕೇ



ಸಮುದ್ರವಲರೇಣುಸಂಹತಿ ಶಿರೋಭಿರಾಜಾಮಪರೇ ಮಹಿಮತಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೪೫। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಾ-ರಾ. 10. ಪಶ್ಚಿಮದಿಕ್ಕು. 11. ಪಶ್ಚಿಮಸಂಧ್ಯೆ. 12. ನಾಲ್ಕು ವೇದಗಳು. 13. ಆರು ವೇದಾಂಗಗಳು. "ದ್ವೇ ವಿಧೇ ವಿದಿತವ್ಯೇ ಇತಿ ಹಸ್ಮ ಬ್ರಹ್ಮವಿದೋ ವದಂತಿ ಪರಾಚೈವಾಪರಾ ಚ ತತ್ರಾಪರಾ ಋಗ್ವೇದೋ ಯಜುರ್ವೇದಃ ಸಾಮವೇದೋಽಥರ್ವವೇದಃ ಶಿಕ್ಷಾ ಕಲ್ಪೋ ವ್ಯಾಕರಣಂ ನಿರುಕ್ತಂ ಛಂದೋ ಜ್ಯೋತಿಷಮಿತಿ" ಶ್ರುತಿಃ। 14. ಗರ್ಭಾಶಯ. (ಅವ್ಯಂ) 15. ಮತ್ತೆ, ಇನ್ನೂ, ಅದಲ್ಲದೆ.

ಅಪರಕತ ಅಪರಕತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೀತಿಯಿಲ್ಲದ, ವಿಶ್ವಾಸವಿಲ್ಲದ, ಅನುರಾಗವಿಲ್ಲದ. ಅಪ+ರಜ್ಜ (ರಾಗೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಅಪಿ ಚಂದ್ರಗುಪ್ತಾದಪರಕಾಃ ಪ್ರಕೃತಯಃ?" ಮುद्रಾಂ ೧। 2. ಕೆಂಪಾಗಿಲ್ಲದ, ಕೆಂಪುಬಣ್ಣವಿಲ್ಲದ. ಅಪಗತೋ ರಕ್ತಃ ರಕ್ತವರ್ಣಃ ಯಸ್ಮಾತ್।

ಅಪರತಿ ಅಪರತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಿಲ್ಲುವಿಕೆ, ನಿಲುಗಡೆ, ವಿರಾಮ. 2. ಅಸಮಾಧಾನ, ಅಸಂತುಷ್ಟಿ, ಬೇಸರ. ಅಪ + ರಮ (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಕ್ಲಿನ್" (೩-೩-೧೪)।

ಅಪರತ್ರ ಅಪರತ್ರ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಬೇರೆಕಡೆಯಲ್ಲಿ. 2. ಬೇರೆ ಕಾಲದಲ್ಲಿ. ಅಪರ "ತ್ರಲ್" (೪-೩-೧೦)।

ಅಪರಥಾ ಅಪರಥಾ (ಅವ್ಯಂ) ಬೇರೆ ರೀತಿಯಾಗಿ, ಬೇರೆ ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ. ಅಪರ "ಥಾಲ್" (೪-೩-೨೩)। "ಅಪರಥಾ-ಪರಥಾವಯವಾಯುಧಃ" ಮಾಘಂ ೬-೪೧।

ಅಪರದಕ್ಷಿಣ ಅಪರದಕ್ಷಿಣ (ಅವ್ಯಂ) ದಕ್ಷಿಣ ಮತ್ತು ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕುಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ, ನಿರ್ಮುತಿ (ಮೂಲೆ) ದಿಕ್ಕು. ಅಪರಸ್ಯಾಃ ದಕ್ಷಿಣಸ್ಯಾಶ್ಚ ಅಂತರಾಲಂ ದಿಕ್। ನಿಪಾಂ (೨-೧-೧೭)।

ಅಪರಪಕ್ಷ ಅಪರಪಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷ, ತಿಂಗಳಿನ ಎರಡನೆಯ ಅರ್ಧ ಭಾಗ. 2. ಭಾದ್ರಪದ ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷ. 3. ಎದುರು ಪಕ್ಷ, ಪ್ರತಿಪಕ್ಷ.

ಅಪರರಾತ್ರ ಅಪರರಾತ್ರ (ಪುಂ) ರಾತ್ರಿಯ ಉತ್ತರಭಾಗ, ರಾತ್ರಿಯ ಎರಡನೆಯ ಅರ್ಧಭಾಗ. ಅಪರಂ ರಾತ್ರೇಃ "ಅಕ್" (೪-೪-೮೭)।

ಅಪರವ ಅಪರವ (ಪುಂ) 1. ಅಪಯಶಸ್ಸು, ಅಪಕೀರ್ತಿ. ಅಪಕೃಷ್ಟೋ ರವಃ। 2. ಕೆಟ್ಟಶಬ್ದ, ಅಶ್ಲೀಲವಾದ ಶಬ್ದ, ಕಠೋರವಾದ ಧ್ವನಿ.

ಅಪರಸ್ಪರ ಅಪರಸ್ಪರ (ವಿಂ) 1. ಪರಸ್ಪರವಲ್ಲದ, ಅನ್ಯೋನ್ಯವಲ್ಲದ. 2. ಕ್ರಿಯಾಸಾತತ್ಯವುಳ್ಳ, ಎಡೆ ಬಿಡದ ಕೆಲಸವುಳ್ಳ. ಅಪರೇ ಚ ಪರೇ ಚ (ಸಾತತ್ಯೇನ ಗच्छन्ति) "ಸುಡ್" (೬-೧-೧೪೪)। "ಅಪರಸ್ಪರಾಃ

ಸಾರ್ಥಿ ಗच्छन्ತಿ" ಸಿಂ ಕೌಂ। (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3. ಸತತವಾಗಿ, ಎಡೆಬಿಡದೆ (ಕೆಲಸ). ಅಪರಸ್ಪರಂ ಗच्छन्ತಿ।

ಅಪರಾಗ ಅಪರಾಗ (ಪುಂ) ದ್ವೇಷ, ಪ್ರೀತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಅಪ + ರಜ್ಜ (ರಾಗೇ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮)। "ಆಯಂ, ಏತೇಷಾಮಪರಾಗಹೇತುನ್ ಶ್ರುತುಮಿच्छಾಮಿ" ಮುद्रಾಂ ೩। "ಅಪರಾಗ-ಸಮೀರಣೇರಿತಃ ಕ್ರಮಶೀರ್ಣಾಕುಲಮೂಲಸಂತತಿಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೫೦। ಅಪರಾಜ್ಞ ಅಪರಾಜ್ಞ (ನಂ) ಗುಣೇಭೂತವ್ಯಂಗ್ಯ ಕಾವ್ಯ, ಎರಡನೆಯ (ಮಧ್ಯಮ) ತರಗತಿಯ ಕಾವ್ಯ. ಅಪರಸ್ಯ ರಸಾದೇರಜ್ಞಮ್। "ಅಯಂ ಸ ರಸನೋತ್ಕರ್ಷಿ ಪೀನಸ್ತನವಿಮರ್ದನಃ। ನಾಮ್ಯುಜ್ಜವನಸ್ಪರ್ಶಿ ನೇವೀವಿಸಂಸನಃ ಕರಃ" ಇಲ್ಲಿ ಶೃಂಗಾರ ರಸವು ಕರುಣರಸಕ್ಕೆ ಅಂಗವಾಗಿರುವುದು.

ಅಪರಾಜಿತ ಅಪರಾಜಿತ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ಈಶ್ವರ. "ಅಪರಾಜಿತಃ ಸರ್ವಸಹೋ ನಿಯಂತಾ ನಿಯಮೋ ಯಮಃ" ವಿಂ ಸಂ। "ಹರೀಶಾವಪರಾಜಿತೌ" ವೈಜಂ। (ವಿಂ) 3. ಜಯಿಸಲ್ಪಡದ, ಸೋಲಿಸಲ್ಪಡದ. ನ ಪರಾಜಿತಃ।

ಅಪರಾಜಿತಾ ಅಪರಾಜಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ವಿಜಯದಶಮಿಯ ದಿನ ಜಯಗಳಿಸಲು ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ ದೇವತೆ. "ದಶಮ್ಯಾಂ ಚ ನರೇಃ ಸಮ್ಯಕ್ ಪೂಜನೀಯಾಪರಾಜಿತಾ। ಕ್ಷೇಮಾರ್ಥಂ ವಿಜಯಾರ್ಥಂ ಚ ಪೂರ್ವೋಕ್ತವಿಧಿನಾ ನರೇಃ। ನವಮೀಶೇಷ-ಯುಕ್ತಾಯಾಂ ದಶಮ್ಯಾಮಪರಾಜಿತಾ। ದದಾತಿ ವಿಜಯಂ ದೇವಿ ಪೂಜಿತಾ ಜಯವರ್ಧಿನಿ" ಸ್ಕಾಂದಂ। 2. ಗರಿಕೆ ಹುಲ್ಲು. 3. ಶೇಫಾಲಿಕಾ ವೃಕ್ಷ, ಕರಿಲಕ್ಕಿಗಿಡ. 4. ಹೊನ್ನೇಮರ. 5. ತಕ್ಕಿಲೆ ಗಿಡ. 6. ಹಕ್ಕರಿಕೆ ಗಿಡ, ಕಡಿಯಾಲದ ಮರ. 7. ವಿಷ್ಣು ಕ್ರಾಂತಿ ಗಿಡ. 8. ಉತ್ತರ ಪೂರ್ವ ದಿಕ್ಕುಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಈಶಾನ್ಯ ದಿಕ್ಕು. "ಅಪರಾಜಿತಾಂ ವಾಸ್ಥಾಯ ಬ್ರಜೇದ್ವಿಶಮಜಿಹ್ವಾಗಃ" ಮನುಂ ೬-೩೧। 9. ಸತ್ಯ ಲೋಕದ ಪ್ರಧಾನ ನಗರ. "ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕಸ್ಸತಪಲೋಕಸ್ತತ್ರ ಪುರ್ಯಪರಾಜಿತಾ" ವೈಜಂ।

ಅಪರಾಧ ಅಪರಾಧ (ನಂ) 1. ಅಪರಾಧ, ತಪ್ಪು. ಅಪ+ರಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ)ಭಾವೇ "ಕಃ" (೩-೩-೧೧೪)। "ನ ತು ಗ್ರೀಷ್ಮಸ್ಯೈವಂ ಸುಭಗಮಪರಾಧಂ ಯುವತಿಪು" ಶಾಕುಂ ೩-೧। (ವಿಂ) 2. ಅಪರಾಧ ಮಾಡಿದ, ತಪ್ಪು ಮಾಡಿದ. ಅಪ+ರಾಧ ಕರ್ಮಂ "ಕಃ" (೩-೪-೭೨)। "ಕೃತವತ್ಯಸಿ ನಾವಧೀರಣಾಮಪರಾಧೇಽಪಿ ಯದಾ ಚಿರಂ ಮಯಿ" ರಘುಂ ೮-೪೮। 3. ಸ್ತುತಿತವಾದ, ತಪ್ಪಿದ, ಜಾರಿದ, ಗುರಿತಪ್ಪಿದ. "ನಿಮಿತ್ತಾದಪರಾಧೇಽಪಿ ಧಾನುಷ್ಯಸ್ಯೇವ ವಲಗಿತಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೨೭।



ಅಪರಾಧ ಅಪರಾಧ (ಛಂ) ತಪ್ಪು, ಅಕ್ಕತ್ಯ, ದೋಷ. ಅಪ+ರಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ಅಪರಾಧ-ಶತಕ್ಷಮಂ ನೃಪ: ಕ್ಷಮಯಾತ್ಯೇತಿ ಭವಂತಮೇಕಯಾ" ಮಾಘಂ ೧೬-೪೮।

ಅಪರಾಧಿನ್ ಅಪರಾಧಿನ್ (ವಿಂ) ಅಪರಾಧವುಳ್ಳ, ತಪ್ಪಿತವುಳ್ಳ, ತಪ್ಪು ಮಾಡಿದ. "ಅಪರಾಧ" ಇತಿ: (೪-೨-೧೧೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪)। -ರಾಧಿನಿ -ರಾಧಿನೀ.

ಅಪರಾಂತ ಅಪರಾಂತ (ಛಂ) 1. ಒಂದು ದೇಶ, ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕಿನ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿರುವ ದೇಶ. ಅಪರಸ್ಯಾ: ಪಶ್ಚಿಮಾಘಾ: ಸೀಮಾಭೂತೋ ದೇಶ:। 2. ಪಾಶ್ಚಾತ್ಯರು, ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ ಜನರು. 3. ಪಶ್ಚಿಮ ದೇಶದ ರಾಜರು.

"ತಸ್ಯಾನೀಕೈವಿಸರ್ಪಿಙ್ಗಿರಪರಾಂತಜಯೋತ್ತಮ:" ರಘುಂ ೪-೪೩।

"ಅಪರಾಂತಮಹಿಪಾಲವ್ಯಾಜೇನ ರಘವೇ ಕರಮ್" ರಘುಂ ೪-೪೮।

ಅಪರಾಹ್ಲ ಅಪರಾಹ್ಲ (ಛಂ) 1. ಹಗಲಿನ ಎರಡನೇ ಅರ್ಧ ಭಾಗ. ಅಹ್ಲ: ಅಪರಮ್—ಏಕದೇಶಿತಗುಣಸಮಾಸ: (೨-೨-೧)।

"ಅಪರಾಹ್ಲಶೀತಲತರೇಣ ಶನೈ:" ಮಾಘಂ ೯-೪। 2. (ಹಗಲಿನ ಐದು ಭಾಗಗಳಾದ) ಪ್ರಾತಃ ಸಂಗವ ಮಧ್ಯಾಹ್ನ ಅಪರಾಹ್ನ ಮತ್ತು ಸಾಯಾಹ್ನಗಳಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕನೆಯದು.

ಅಪರಾಹ್ಲತನ ಅಪರಾಹ್ಲತನ (ವಿಂ) 1. ಅಪರಾಹ್ನವನ್ನು ಸಹಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಅಪರಾಹ್ನವನ್ನು ಸಹಿಸಲು ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ. ಅಪರಾಹ್ಲ: ಸೋದೋಷ್ಯ "ಠ್ಯು:" (೪-೩-೪೨)।

ಅಪರಾಹ್ಲೇ ಭವ: ಜಾತೋ ವಾ ವಾ "ಠ್ಯು:" (೪-೩-೨೪)।

ಅಪರಾಹ್ಲೇತನಮ್। ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಅಲುಕ್ (೬-೩-೧೭)। ಪಕ್ಷೇ

"ಠ್ಯು:" (೪-೩-೧೧)। ಆಪರಾಹ್ಲಿಕಮ್। 2. ಅಪರಾಹ್ನದಲ್ಲಿರುವ, ಅಪರಾಹ್ನದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ.

ಅಪರಿಕಲಿತ ಅಪರಿಕಲಿತ (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ.

2. ನೋಡಲ್ಪಡದ. 3. ಕೇಳಲ್ಪಡದ. 4. ಪಠ್ಯಾ ಲೋಚಿಸಲ್ಪಡದ. ನ ಪರಿಕಲಿತ:।

ಅಪರಿಕ್ರಮ ಅಪರಿಕ್ರಮ (ಛಂ) 1. ಸುತ್ತಲೂ ಸಂಚರಿಸದಿರುವಿಕೆ. ಪರಿತ: ಕ್ರಮ: ಕ್ರಮಣಮ್। ನಂ ತಂ। (ವಿಂ)

2. ಸುತ್ತಲೂ ಸಂಚರಿಸದ. 3. ಉದ್ಯೋಗಶೀಲನಲ್ಲದ, ಶ್ರಮಪಡುವ ಸ್ವಭಾವವಿಲ್ಲದ, ಆಸಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ.

ಅಪರಿಗತ ಅಪರಿಗತ (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ.

2. ಹೊಂದಲ್ಪಡದ.

ಅಪರಿಗ್ರಹ ಅಪರಿಗ್ರಹ (ಛಂ) 1. ಸ್ವೀಕರಿಸದಿರುವಿಕೆ, ಬೇಡನೆನ್ನುವುದು. 2. ಪಾತಂಜಲ ಯೋಗದಲ್ಲಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ ಒಂದು ವಿಧ ಯಮ, ಅಷ್ಟಾಂಗ ಯೋಗಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ಯಮದ ಒಂದು ಭೇದ. ನ ಪರಿಗ್ರಹ:।

"ಅಹಿಸಾಸತ್ಯಾಸ್ತೇಯಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾಪರಿಗ್ರಹಾ: ಯಮಾ:" ಪಾಂ ಯಂ ಸೂಂ ೨-೩೦। 3. ಯತಿ, ಸಂನ್ಯಾಸಿ, ಸರ್ವಸಂಗ ಪರಿತ್ಯಾಗಮಾಡಿದವನು. ನಾಸ್ತಿ ಪರಿಗ್ರಹೋ ಯಸ್ಯ। "ನಿರಾಶೀರಪರಿಗ್ರಹ:" ಗೀತಾ ೬-೧೦। 4. ಪತ್ನಿಯಿಲ್ಲದವನು.

ಅಪರಿಚಿತ ಅಪರಿಚಿತ (ವಿಂ) ಪರಿಚಯವಿಲ್ಲದ, ಮೊದಲು ತಿಳಿಯದಿರುವ, ಗುರುತಿಲ್ಲದ. ನ ಪರಿಚಿತ:।

ಅಪರಿಚ್ಛದ ಅಪರಿಚ್ಛದ (ವಿಂ) ದಂದ್ರ, ನಿರ್ಗತಿಕ, ಜೀವನಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ (ಸರಿಯಾದ) ಉಪಕರಣವಿಲ್ಲದವನು. ನ ಪರಿಚ್ಛದೋ ಯಸ್ಯ। ಅಪ್ರಾಶಸ್ತೇ ನಂ ಬಂ।

ಅಪರಿಚ್ಛಿನ್ನ ಅಪರಿಚ್ಛಿನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ, ಪರಿಶೀಲಿಸಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ, ಭೇದವರಿಯಲ್ಪಡದ. 2. ಇಷ್ಟೆಂದು ತಿಳಿಯಲಾಗದ,—ಅಳತೆ ಮಾಡಲಾಗದ. 3. ಎಡೆಬಿಡದೆ ಮುಂದುವರಿದ, ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾದ.

ಅಪರಿಚ್ಛೇದ ಅಪರಿಚ್ಛೇದ (ಛಂ) 1. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತಿಳಿಯದಿರುವಿಕೆ, ತಾರತಮ್ಯವನ್ನು ಆರಿಯದಿರುವಿಕೆ. 2. ಮುಂದುವರಿಯುವಿಕೆ, ಮುಂದೆ ಸಾಗುವಿಕೆ. 3. ತೀರ್ಮಾನವಾಗದಿರುವಿಕೆ, ಸಂಶಯ ಪರಿಹಾರವಾಗದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 4. ಇಯ ತ್ತಾ ಶೂನ್ಯವಾದ, ಇಷ್ಟೆಂದು ಅಳತೆಯಿಲ್ಲದ.

ಅಪರಿಣತ ಅಪರಿಣತ (ವಿಂ) 1. ಮಾಗದಿರುವ, ಬಲಿಯದಿರುವ, ಹಣ್ಣಾಗದಿರುವ. 2. ನಿಷ್ಣಾತನಲ್ಲದ, ಪರಿಶ್ರಮವಿಲ್ಲದ. 3. ರೂಪಾಂತರವನ್ನು ಹೊಂದದ, ಉಚಿತ ಪರಿಣಾಮವನ್ನು ಹೊಂದದ. ನ ಪರಿಣತ:।

ಅಪರಿಣಯ ಅಪರಿಣಯ (ಛಂ) ವಿವಾಹವಾಗದಿರುವಿಕೆ, ಮದುವೆಯಾಗದಿರುವಿಕೆ.

ಅಪರಿತೋಷ ಅಪರಿತೋಷ (ಛಂ) 1. ಸಂತೋಷವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ತೃಪ್ತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ಪರಿತೋಷ:।

ಅಪರಿಪಕ್ವ ಅಪರಿಪಕ್ವ (ವಿಂ) 1. ಪಕ್ವವಾಗದ, ಬೇಯಿಸಲ್ಪಡದ. 2. ರೂಪಾಂತರವನ್ನು ಹೊಂದದ, ಉಚಿತ ಪರಿಣಾಮವನ್ನು ಹೊಂದದ. 3. ಮಾಗದ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹಣ್ಣಾಗದ. 4. ಚೆನ್ನಾಗಿ ವಿಮರ್ಶಿಸುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವಿಲ್ಲದ (ಬುದ್ಧಿ).

ಅಪರಿಮಾಣ ಅಪರಿಮಾಣ (ನಂ) 1. ಅಳತೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಪರಿಮಾಣವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ಪರಿಮಾಣವಿಲ್ಲದ, ಅಳತೆಯಿಲ್ಲದ, ಅಪಾರವಾದ. ನಾಸ್ತಿ ಪರಿಮಾಣಂ ಯಸ್ಯ।



ಅಪರಿಮಿತ ಅಪರಿಮಿತ (ವಿಂ) ಅಳತೆಯಿಲ್ಲದ, ಅಪಾರವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ.

ಅಪರಿಮೇಯ ಅಪರಿಮೇಯ (ವಿಂ) 1. ಅಳೆಯಲಾಗದ, ಇಯತ್ತಾಶೂನ್ಯವಾದ, ಅಳತೆಯಿಲ್ಲದ. "ಅಥ ಕದಾಚಿದ-  
ಪರಿಮೇಯಮಾಯಾಭಯಾನಕಯುಧಸಮುದತದೈತಬಲಾವಸ್ಕಂದಕಾಂದಿಶೀಕ-  
ಬೃಂದಾರಕಾನೀಕಪರಿವಾರ್ಯಮಾಣರಯಃ ಪಙ್ಕ್ತಿರಯಃ" ಚಂ ರಾಂ |  
2. ಅಳೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ. ನ ಪರಿಮಾತುಂ ಶಕ್ಯಮಹಂ ವಾ |

ಅಪರಿವಿಷ್ಟ ಅಪರಿವಿಷ್ಟ (ವಿಂ) ಬಡಿಸಲ್ಪಡದ.

ಅಪರಿವೃತ ಅಪರಿವೃತ (ವಿಂ) 1. ಸುತ್ತುವರಿಯಲ್ಪಡದ, ಬೇಲಿ ಹಾಕದಿರುವ (ಜಮೀನು). 2. ಹೊದಿಸಲ್ಪಡದ, ಮುಚ್ಚಲ್ಪಡದ.

ಅಪರಿಷ್ಕಾರ ಅಪರಿಷ್ಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಶುದ್ಧಿಮಾಡದಿರುವಿಕೆ, ತೊಳೆಯದಿರುವಿಕೆ. 2. ಅಲಂಕರಿಸದಿರುವಿಕೆ.

ಅಪರಿಷ್ಕೃತ ಅಪರಿಷ್ಕೃತ (ವಿಂ) 1. ಶುದ್ಧಿಮಾಡಲ್ಪಡದ, ತೊಳೆಯಲ್ಪಡದ, ಮೆರುಗು ಹಾಕಲ್ಪಡದ. 2. ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಡದ, ಶೃಂಗರಿಸಲ್ಪಡದ. ನ ಪರಿಷ್ಕೃತಃ |

ಅಪರಿಹರಣೀಯ ಅಪರಿಹರಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಬಿಡಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. 2. ಬಿಡಲು ಅಯೋಗ್ಯವಾದ. ನ ಪರಿಹೃತುಂ ಶಕ್ಯಮಹಂ ವಾ — ಪರಿ+ಹೃ (ಹರಣೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | 3. ಹೋಗಲಾಡಿಸಲು ಆಗದ. 4. ನಿವಾರಿಸಲು ಅರ್ಹವಲ್ಲದ.

ಅಪರಿಹಾರ್ಯ ಅಪರಿಹಾರ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಪರಿಹರಿಸಲಾಗದ. 2. ಬಿಡಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. 3. ಪರಿಹರಿಸಲು ಅರ್ಹವಲ್ಲದ. 4. ಬಿಡಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ. ನ ಪರಿಹೃತುಂ ಶಕ್ಯಮಹಂ ವಾ — ಪರಿ+ಹೃ (ಹರಣೆ) "ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) |  
"ತಸ್ಮಾದಪರಿಹಾರ್ಯೇಣ ತ್ವಂ ಶೋಚಿತುಮಹಂಸಿ" ಗೀತಾ ೨-೨೭ |

ಅಪರೀಕ್ಷಿತ ಅಪರೀಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) ಪರೀಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡದ, ವಿಮರ್ಶಿಸಲ್ಪಡದ. ನಂ ತಂ |

ಅಪರೂಪ ಅಪರೂಪ (ವಿಂ) ಕೋಪವಿಲ್ಲದ. ಅಪಗತಾ ರುತ್ಯ ಸ್ಯ | "ಅಪರೂಪಾ ಪರೂಪಾಕ್ಷರಮೀರಿತಾ" ರಘುಂ ೯-೮ |

ಅಪರೂಪ ಅಪರೂಪ (ವಿಂ) 1. ಕಠಿನವಲ್ಲದ, ಕ್ರೂರವಲ್ಲದ. ನ ಪರೂಪಃ | 2. ಕೋಪವಿಲ್ಲದ, ಶಾಂತನಾದ. ಅಪಗತಾ ರೂಪಾ ಸ್ಯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ರೂಪಾ -ರೂಪಾ.

ಅಪರೂಪ ಅಪರೂಪ (ನಂ) 1. ವಿಕಾರವಾದ ರೂಪ, ಕುರೂಪ. (ವಿಂ) 2. ವಿಕಾರವಾದ ರೂಪವುಳ್ಳ, ಕುರೂಪವುಳ್ಳ.

ಅಪರೇದ್ಯುಸ್ ಅಪರೇದ್ಯುಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಮಾರನೆಯ ದಿನ, ಮರುದಿನವ. ಅಪರ "ಏದ್ಯುಸ್" (೪-೩-೨೨) |

ಅಪರೋಕ್ಷ ಅಪರೋಕ್ಷ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾದ, ದೃಶ್ಯವಾದ, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣುವ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ, ಎದುರಿಗೆ.

ಅಪರೋಕ್ಷಾನುಭೂತಿ ಅಪರೋಕ್ಷಾನುಭೂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ ಜ್ಞಾನ. 2. ಶ್ರೀ ಶಂಕರಾಚಾರ್ಯರು ರಚಿಸಿದ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ.

ಅಪರೋಧ ಅಪರೋಧ (ಪುಂ) ತಡೆ, ನಿರೋಧ. ಅಪ+ಠಿರ್ (ಆವರಣೆ) "ಠಿರ್" (೩-೩-೧೮) |

ಅಪರೋಪ ಅಪರೋಪ (ಪುಂ) ಸಮೂಲನಾಶ, ಬುಡ ಸಹಿತ ಕಿತ್ತುಹಾಕುವುದು. "ಶ್ರುತ್ವಾ ಸ್ವಾಮ್ಯಪರೋಪರೋದ್ರ-  
ವಿಷಮಾನ್" ಮುद्रಾಂ ೨-೨೧ |

ಅಪರ್ಣ ಅಪರ್ಣ (ವಿಂ) ಪರ್ಣವಿಲ್ಲದ, ಎಲೆಯಿಲ್ಲದ. ನ ಪರ್ಣಾನಿ ಸ್ಯ |

ಅಪರ್ಣಾ ಅಪರ್ಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾರ್ವತಿ. ನಾಸ್ತಿ ಪರ್ಣಂ ವೃತ್ತಿ-  
ಸಾಧನಂ ಯಸ್ಯಾಃ | [ಪಾರ್ವತಿಯು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುವಾಗ ಮರದಿಂದ ಬಿದ್ದ ಎಲೆಗಳ ಆಹಾರವನ್ನೂ ಬಿಟ್ಟಿದ್ದರಿಂದ ಅಪರ್ಣೆಯೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು.] "ಸ್ವಯಂ ವಿಶೀರ್ಣದ್ರುಮ-  
ಪರ್ಣವೃತ್ತಿತಾ ಪರಾಹಿ ಕಾಞ್ಚಾ ತಪಸಸ್ತಯಾ ಪುನಃ | ತದಪ್ಯಪಾ-  
ಕೀರ್ಣಮತಃ ಪ್ರಿಯವದಾಂ ವದಂತ್ಯಪರ್ಣೇತಿ ಚ ತಾಂ ಪುರಾವಿದಃ" ಕುಮಾಂ ೪-೨೮ |

ಅಪರ್ತು ಅಪರ್ತು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುಟ್ಟು ನಿಂತಿರುವ ಹೆಂಗಸು. ಅಪಗತಃ ಕೃತುಃ ಸ್ತ್ರೀಪುಷ್ಪಂ ಯಸ್ಯಾಃ | (ವಿಂ) 2. ಅಕಾಲದ, ಮುತುನಿಯಮವನ್ನು ಮೀರಿದ.

ಅಪರ್ಯಂತ ಅಪರ್ಯಂತ (ವಿಂ) ಎಲೆಯಿಲ್ಲದ, ಅವಧಿಯಿಲ್ಲದ, ಕೊನೆಯಿಲ್ಲದ, ಅಪಾರವಾದ. ನಾಸ್ತಿ ಪರ್ಯಂತೋ ಯಸ್ಯ | "ತದಕ್ಷಯಮಪರ್ಯಂತಂ ದುರ್ಜಯಂ ವಾನರಂ ಬಲಮ್" ರಾಮಾಂ |

ಅಪರ್ಯಾಪ್ತಿ ಅಪರ್ಯಾಪ್ತಿ (ವಿಂ) 1. ಅಪಾರವಾದ, ಅಪರಿಮಿತವಾದ, ಅಳತೆಯನ್ನು ಮೀರಿದ. "ಜಗತ್ಯ-  
ಪರ್ಯಾಪ್ತಿಸಹಸ್ರಭಾನುನಾ ನ ಯನ್ನಿಯಂತುಂ ಸಮಭಾವಿ ಭಾನುನಾ" ಮಾಘಂ ೧-೨೭ | 2. ಸಾಕಾಗದ, ಕಡಿಮೆಯಾದ, ಅಸಂಪೂರ್ಣವಾದ. 3. ಅಸಮರ್ಥವಾದ, ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ. "ಅಪರ್ಯಾಪ್ತಿಂ ತದಸ್ಮಾಕಂ ಬಲಂ ಭೀಷ್ಮಾಭಿರಕ್ಷಿತಮ್" ಗೀತಾ ೧-೧೦ |

ಅಪರ್ಯಾಪ್ತಿ ಅಪರ್ಯಾಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಾಕಾಗದಿರುವಿಕೆ, ಕಡಿಮೆಯಾಗಿರುವಿಕೆ, ಅಸಂಪೂರ್ಣತೆ. 2. ಅಶಕ್ತತೆ, ಅಸಾಮರ್ಥ್ಯ. 3. ಅಳತೆಯನ್ನು ಮೀರಿರುವಿಕೆ.

ಅಪರ್ಯಾಪಿ ಅಪರ್ಯಾಪಿ (ಪುಂ) 1. ಕ್ರಮವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ಕ್ರಮವಿಲ್ಲದ. 3. ಪರ್ಯಾಯವಿಲ್ಲದ, ಸಮಾನವಾದ ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ (ಶಬ್ದ).



ಅಪರ್ಯುಷಿತ ಅಪರ್ಯುಷಿತ (ವಿಂ) ಹೊಸದಾದ, ಹಿಂದಿನ ದಿನದಲ್ಲದ, ಹಳಸದ.

ಅಪರ್ವನ್ ಅಪರ್ವನ್ (ವಿಂ) 1. ಗ್ರಂಥಗಳಲ್ಲದ, ಗೆಣ್ಣುಗಳಲ್ಲದ (ಕೋಲು). 2. ಪರ್ವ (ಅಧ್ಯಾಯ)ಗಳಲ್ಲದ ಗ್ರಂಥ.

ಅಪಲ ಅಪಲ (ನಂ) 1. ಅಗುಳಿ, ಚಿಲಕ. ಅಪಲಾತಿ ಗೃಹಾ-  
ತ್ಯತ್ರ — ಅಪ+ಲಾ (ಆದಾನೇ) “ಕ:” (3-1-136)।

(ವಿಂ) 2. ಮಾಂಸವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಪಲಂ ಮಾಂಸಂ ಯಸ್ಯ।

ಅಪಲಪನ ಅಪಲಪನ (ನಂ) ಮುಚ್ಚುಮರೆ, ಸತ್ಯವನ್ನಡಗಿಸುವಿಕೆ. ಅಪಲಪ್ಯತೇ — ಅಪ+ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114)। “ದೇನ್ಯಾದ್ವಿಮುಖದರ್ಶನಾಪಲಪನೇ: ಪಿಂಡಾರ್ಥಮಾಸ್ಯತ:” ಮುद्रಾಂ 3-18।

ಅಪಲಪಿತ ಅಪಲಪಿತ (ನಂ) 1. ಮುಚ್ಚುಮರೆ, ಸತ್ಯವನ್ನಡಗಿಸುವಿಕೆ, ನಿಜವನ್ನು ಮರೆಮಾಚುವುದು. ಅಪಲಪನಮ್ — ಅಪ+ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ “ಕ:” (3-3-114)। (ವಿಂ) 2. ಮರೆಮಾಚಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅಪಲಾಪಿನ್ ಅಪಲಾಪಿನ್ (ವಿಂ) ಸತ್ಯವನ್ನಡಗಿಸುವ, ನಿಜವನ್ನು ಮರೆಮಾಚುವ. ಅಪಲಪತಿ — ಅಪ+ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಣಿಣಿ:” (3-2-98)।

ಅಪಲಾಪಿಕಾ ಅಪಲಾಪಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅತ್ಯಾಸೆ, ಕ್ರಮವಿಾರಿದ ಆಸೆ. ಅಪ+ಲಪ (ಕಾಂತಿ) “ಫ್ವಚ್” (3-3-111)।

ಅಪಲಾಪಿನ್ ಅಪಲಾಪಿನ್ (ವಿಂ) ಅತ್ಯಾಸೆಯುಳ್ಳ. ಅಪ+ಲಪ (ಕಾಂತಿ) “ಧಿಣುನ್” (3-2-188)।

ಅಪಲಾಪಕ ಅಪಲಾಪಕ (ವಿಂ) ಅತ್ಯಾಸೆಪಡುವ. ಅಪ+ಲಪ (ಕಾಂತಿ) “ಉಕಾ” (3-2-158)।

ಅಪವರಕ ಅಪವರಕ (ನಂ) ಕೊರಡಿ, ಕೋಣೆ, ಕಿರುಮನೆ. ಅಪವ್ರಿಯತೇ — ಅಪ+ವೃಕ್ (ವರಣೇ) “ವುನ್” (ಉಂ 4-34)।

ಅಪವರ್ಗ ಅಪವರ್ಗ (ಪುಂ) 1. ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ. ಅಪ+ವೃಜಿ (ವರ್ಜನೇ) “ಘಕ್” (3-3-121)। “ಸ್ತುತಿಭಿ: ಕತಿಚಿತ್ತಿವರ್ಗಮ್ಚ್ಛಂತ್ಯಪವರ್ಗಂ ಚ ಯಮೇಕಮಾಶ್ರಿತಾಭಿ:” ಯಾದಂ 14-48। 2. ತ್ಯಾಗ, ದಾನ. 3. ಸಮಾಪ್ತಿ, ಕೊನೆ.

“ಸಾಫಲ್ಯಮಸ್ತ್ರೇ ರಿಪುಪೋಷಸ್ಯ ಕೃತ್ವಾ ಗತೇ ಭಾಗ್ಯ ಇವಾಪ-  
ವರ್ಗಮ್” ಕಿರಾಂ 16-49। 4. ವಿಸರ್ಜಿಸುವುದು, ಬಿಡುವುದು, ತೊರೆಯುವುದು, ತ್ಯಜಿಸುವುದು. “ಮುಷ್ಠೇರಸ-  
ಭೇದ ಇವಾಪವರ್ಗಂ” ಕಿರಾಂ 16-20। 5. ಕ್ರಿಯೆ, ಕೆಲಸ.

6. ಕೆಲಸದಿಂದಾಗುವ ಪ್ರಯೋಜನ, ಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿ. 7. ಕ್ರಿಯಾಸಾಫಲ್ಯ. “ಸ್ಯಾದಪವರ್ಗಸ್ತ್ಯಾಗೋ ಮೋಕ್ಷೋ ಕಾರ್ಯ-

ವಸಾನೇ ಸಾಫಲ್ಯೇ” ಮೇದಿಂ। “ಅಪವರ್ಗ: ಕ್ರಿಯಾಮುಕ್ತಯೋ: ಕ್ರಿಯಾಸಾಧ್ಯಫಲಾಗಮೇ” ನಾನಾರ್ಥಂ।

ಅಪವರ್ಜನ ಅಪವರ್ಜನ (ನಂ) 1. ವಿಸರ್ಜಿಸುವುದು, ಬಿಡುವುದು, ತ್ಯಜಿಸುವುದು. ಅಪ+ವೃಜಿ (ವರ್ಜನೇ) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114)। 2. ತ್ಯಾಗ, ದಾನ. 3. ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ. “ಅಪವರ್ಜನಂತು ದಾನೇ ನಿರ್ವಾಣತ್ಯಾಗಯೋರಪಿ” ಮೇದಿಂ।

ಅಪವರ್ಜಿತ ಅಪವರ್ಜಿತ (ವಿಂ) 1. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ+ವೃಜಿ (ವರ್ಜನೇ) “ಕ್ತ:” (3-2-102)। 2. ಪರಿಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಅಪವರ್ಜಿತವಿಫಲವೇ ಶುಚಿ ಹೃದಯಗ್ರಾಹಿಣಿ ಮಜ್ಜಲಾಸ್ಪದೇ” ಕಿರಾಂ 2-26। 3. ದಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅಪವರ್ತನ ಅಪವರ್ತನ (ನಂ) 1. ವರ್ಗಾಯಿಸುವಿಕೆ, ಬದಲಾವಣೆ. 2. ಅಪಹರಣ, ಕಸಿದುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಅಪ+ವೃತು (ವರ್ತನೇ) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114)। 3. (ಗಣಿತಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಯಾವುದಾದರೂ ಒಂದು ಪೂರ್ಣಾಂಕವನ್ನು ನಿಶೇಷವಾಗಿ ಭಾಗಿಸುವ ಇತರ ಸಣ್ಣ ಸಂಖ್ಯೆಗಳು. ಉದಾ: 15 ಎಂಬ ಸಂಖ್ಯೆಯನ್ನು 5 ಮತ್ತು 3 ಭಾಗಿಸುತ್ತವೆ. ಇವು 15ರ ಅಪವರ್ತನಗಳು. ಇಲ್ಲಿ 5 ಮತ್ತು 3 ಇವುಗಳಿಗೆ ಬೇರೆ ಅಪವರ್ತನಗಳಿಲ್ಲ. ಇಂತಹ ಸಂಖ್ಯೆಗಳು ಅವಿಭಾಜ್ಯಗಳು. 12ರ ಅಪವರ್ತನಗಳು 6, 2; 3, 4; 3, 2, 2 ಇವು. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ 6 ಮತ್ತು 4 ಸಂಖ್ಯೆಗಳು 3, 2 ಮತ್ತು 2, 2ನ್ನು ಅಪವರ್ತನಗಳನ್ನಾಗಿ ಹೊಂದಿರುತ್ತವೆ. ಮಹತ್ತಮ ಸಾಮಾನ್ಯ ಅಪವರ್ತನ ಮತ್ತು ಲಘುತಮ ಸಾಮಾನ್ಯ ಅಪವರ್ತನಗಳು: ಕೆಲವು ಸಂಖ್ಯೆಗಳನ್ನು ನಿಶೇಷವಾಗಿ ಭಾಗಿಸುವ ಒಂದೇ ದೊಡ್ಡ ಸಂಖ್ಯೆಯು ಮಹತ್ತಮ ಸಾಮಾನ್ಯ ಅಪವರ್ತನ (ಮ. ಸಾ. ಅ.). ನಾಲ್ಕಾರು ಸಂಖ್ಯೆಗಳಿಂದ ನಿಶೇಷವಾಗಿ ಭಾಗಿಸಲ್ಪಡುವ ಒಂದೇ ಸಂಖ್ಯೆಯು ಲಘುತಮ ಸಾಮಾನ್ಯ ಅಪವರ್ತನ (ಲ. ಸಾ. ಅ.). ಉದಾ: 48, 60, 84, 120 ರ ಮ. ಸಾ. ಅ. = 12. ಇವುಗಳ ಲ. ಸಾ. ಅ. ವು = 1680.

ಅಪವಾದ ಅಪವಾದ (ಪುಂ) 1. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. ಅಪ+ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಘಕ್” (3-3-121)। “ಕೋಪವಾದ: ಸ್ತುತಿಪದೇ ಯದಶೀಲೇಷು ಚञ್ಚಲಾ:” ಕಿರಾಂ 11-24। 2. ಮಿಥ್ಯಾವಾದ, ನಿಜವನ್ನು ಮರೆಸಿ ಸುಳ್ಳು ಹೇಳುವುದು. “ಗುಣಾಪವಾದೇನ ತದನ್ಯರೋಪಣಾತ್” ಕಿರಾಂ



೧೪-೧೨. 3. ಅಜ್ಞೆ, ಅಜ್ಞೆ. "ತತೋಪವಾದೇನ ಪತಾಕಿನಿಪತೇಶ್ಚಾಲ ನಿಹದಿವತಿ ಮಾಚಮ್:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೨೭. 4. ವಿಶೇಷಶಾಸ್ತ್ರ, ಬಾಧಕಶಾಸ್ತ್ರ. ಅಪೋದತೇ ಸಾಮಾನ್ಯಶಾಸ್ತ್ರಮನೇನ — ಅಪ+ವದ "ವಜ್" (೩-೩-೧೨೧). "ಅಪವಾದ ಇವೋತ್ಸರ್ಗ ವ್ಯಾವರ್ತಯಿತುಮೀಶ್ವರ:" ರಘುಂ ೧೫-೭. 5. ವಿಶ್ವಾಸ, ಪ್ರೀತಿ. 6. ಸಣ್ಣ ವಾದ್ಯ, ಕಿರುಗಂಟಿ ಮೊದಲಾದುದು. "ಮಧುಕರೇರಪವಾದಕರೇರಿವ" ಮಾಘಂ ೬-೯. 7. ನಂಬಿಕೆ. "ಅಪವಾದಸ್ತು ನಿರ್ದೇಶೋ ನಿಂದಾವಿಸ್ತಮ್ಭಯೋ-ರಪಿ" ಹೇಮಂ. 8. ಅಪಕೀರ್ತಿ.

ಅಪವಾದಕ ಅಪವಾದಕ (ವಿಂ) 1. ನಿಂದಿಸುವವನು, ದೂಷಿಸುವವನು. ಅಪ + ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಫ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩). 2. ವಿಶೇಷಶಾಸ್ತ್ರ.

ಅಪವಾದಿನ್ ಅಪವಾದಿನ್ (ವಿಂ) ನಿಂದಕ, ದೂಷಿಸುವವನು. ಅಪ + ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮). "ಮಂದೋತ್ಸಾಹ: ಕೃತೋಽಸ್ಮಿ ಮೃಗಯಾಪವಾದಿನಾ ಮಾದ್ರವ್ಯೇನ" ಶಾಕುಂ ೨.

ಅಪವಾರಣ ಅಪವಾರಣ (ನಂ) 1. ಅಂತರ್ಧಾನ್, ಮರೆ ಯಾಗುವಿಕೆ. ಅಪ + ವೃಜ್ (ಆವರಣೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). 2. ಮರೆಮಾಡುವುದು, ಅಚ್ಚಾದನ, ಮುಚ್ಚುವುದು. (ವಿಂ) 3. ಮರೆಮಾಡುವ, ಮುಚ್ಚುವ. ಅಪವಾರಯತಿ — ಅಪ+ವೃಜ್+ಗಿಣಿ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪).

ಅಪವಾರಿತ ಅಪವಾರಿತ (ನಂ) 1. ಅಪ್ರಕಾಶ, ರಹಸ್ಯ. 2. (ನಾಟಕದಲ್ಲಿ) ಒಂದು ಕಡೆ ತಿರುಗಿಕೊಂಡು ಮತ್ತೊಬ್ಬನಿಗೆ ಹೇಳುವುದು, ಇತರರಿಗೆ ಕೇಳಿಸದಂತೆ ರಹಸ್ಯವನ್ನು ಹೇಳುವುದು. "ತದ್ಭವೇದಪವಾರಿತಮ್ | ರಹಸ್ಯಂತು ಯದನ್ಯಸ್ಯ ಪರಾವೃತ್ಯ ಪ್ರಕಾಶ್ಯತೇ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೩೮. (ವಿಂ) 3. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ + ವೃಜ್ (ಆಚ್ಛಾದನೇ) + ಗಿಣಿ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).

ಅಪವಾರ್ಯ ಅಪವಾರ್ಯ (ಅವ್ಯಂ) ಮರೆಮಾಡಿ. ಅಪ + ವೃಜ್ (ಆಚ್ಛಾದನೇ) + ಗಿಣಿ "ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭). "ತ್ರಿಪತಾಕಾಕರೇಣಾನ್ಯಾನಪವಾರ್ಯಾಂತಿರಾ ಕಥಾಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೩೯.

ಅಪವಾಹ ಅಪವಾಹ (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾಗದಿಂದ ಮತ್ತೊಂದು ಜಾಗಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುವುದು, ಸ್ಥಳಾಂತರಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಹೋಗುವುದು. ಅಪಸಾರ್ಯ ವಾಹ: ಸ್ಥಾನಾಂತರನಯನಮ್.

ಅಪವಾಹನ ಅಪವಾಹನ (ನಂ) ಪರದೇಶದಿಂದ ಜನರನ್ನು ತನ್ನ ದೇಶಕ್ಕೆ ಕರೆತರುವುದು. ಅಪ + ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೇ) + ಗಿಣಿ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). "ಸ್ವದೇಶಂ ವದ್ಯೇದ್ರಾಜಾ ಪರದೇಶಾಪವಾಹನಾತ್" ಹಿತಂ.

ಅಪವಾಹ್ಯ ಅಪವಾಹ್ಯ (ವಿಂ) 1. ದೂರಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯಲ್ಪಡುವ. ಅಪ + ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಫ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪). (ಅವ್ಯಂ) 2. ದೂರಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಿ. ಅಪ + ವಹ + ಗಿಣಿ "ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭).

ಅಪವಿಘ್ನ ಅಪವಿಘ್ನ (ವಿಂ) ವಿಘ್ನರಹಿತವಾದ, ಅಡ್ಡಿಯಿಲ್ಲದ. ಅಪಗತೋ ವಿಘ್ನೋ ಯಸ್ಮಾತ್. "ಶತಂ ಕ್ಷುಣ್ಣಾ-ಮಪವಿಘ್ನಮಾಪ" ರಘುಂ ೩-೩೮.

ಅಪವಿಘ್ನ ಅಪವಿಘ್ನ (ಪುಂ) 1. ಹನ್ನೆರಡುವಿಧ ಪುತ್ರರಲ್ಲೊಬ್ಬ, ತಾಯಿ ತಂದೆಗಳಿಂದ ತೃಪ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ತಂದು ಸಾಕಲ್ಪಟ್ಟ ಮಗ. (ವಿಂ) 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪರಿಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ + ವ್ಯಘ (ತಾಡನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). "ರಕ್ಷೋವಿಪ್ರಕೃತಾವಾಸ್ತಾಮಪವಿಘ್ನಶುಚಾವಿವ" ರಘುಂ ೧೦-೭೪. 4. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತೃಪ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಪವಿಘ್ನಗದೋ ಬಾಹು-ಭಂಗಶಾಖ ಇವ ದ್ರುಮ:" ಕುಮಾಂ ೨-೨೨.

ಅಪವಿಧ್ಯಾ ಅಪವಿಧ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅವಿದ್ಯೆ, ಅಜ್ಞಾನ. "ತತ್ತ್ವಸ್ಯ ಸಂವಿತ್ತಿರಿವಾಪವಿಧ್ಯಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೬-೩೨. 2. ನೀಚವಿದ್ಯೆ. ಅಪಕೃಷ್ಣಾ ವಿಧ್ಯಾ.

ಅಪವ್ಯಯ ಅಪವ್ಯಯ (ಪುಂ) 1. ವ್ಯರ್ಥವಾದ ಖರ್ಚು, ದುಬಾರಿ ಖರ್ಚು, ಅನ್ಯಾಯವಾದ ಖರ್ಚು. ಅಪಕೃಷ್ಣಾ ವ್ಯಯ: 2. ನಿಜವನ್ನು ಮರೆಮಾಚುವುದು, ಸತ್ಯವನ್ನು ಅಡಗಿಸುವುದು.

ಅಪಶಾಙ್ಕ ಅಪಶಾಙ್ಕ (ವಿಂ) 1. ಸಂದೇಹವಿಲ್ಲದ, ಸಂಶಯ ರಹಿತವಾದ. ಅಪಗತಾ ಶಾಙ್ಕಾ ಯಸ್ಯ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 2. ಸಂದೇಹವಿಲ್ಲದೆ, ಸಂಶಯರಹಿತವಾಗಿ. "ಅಪಶಾಙ್ಕ-ಮಜ್ಜಪರಿವರ್ತನೋಚಿತಾ:" ಮಾಘಂ ೪-೪೭.

ಅಪಶಬ್ದ ಅಪಶಬ್ದ (ಪುಂ) 1. ಅನುಲೋಮಜಾತಿಯವನು. "ವರ್ಣಮಾತ್ರಾನುಲೋಮಾ ಯೇ ಷಟ್ತೇಽಪಶಬ್ದಸಂಜಿತಾ:" ವೈಜಂ. (ವಿಂ) 2. ನೀಚ, ಅಧಮ, ಕೆಳದರ್ಜೆಯವನು. ಅಪ + ಶಬ್ದ (ಶಾತನೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). "ನಿಹಿನೋಽಪಶಬ್ದೋ ಜಾಲ್ಮ:" ಅಮಂ.

ಅಪಶಬ್ದ ಅಪಶಬ್ದ (ಪುಂ) 1. ಅಪಭ್ರಂಶಶಬ್ದ, ತಪ್ಪಾಗಿ ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ಶಬ್ದ, ವ್ಯಾಕರಣ ನಿಯಮಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಾದ ಶಬ್ದ. 2. ನಿಂದಾವಚನ, ಬೈಗಳು,



ದೂಷಣೆ. "ಪ್ರಾಪಾಕ್ಷಣೋಗಲದಪಶಬ್ದಮಂಜನಾಮ್ಭ:" ಮಾಘಂ ೮-೪೩.

ಅಪಶು ಅಪಶು (ಪುಂ) 1. ಹಸು ಮತ್ತು ಕುದುರೆಗಳ ಗಿಂತ ಬೇರೆಯಾದ ತೀರ್ಯಗ್ಜಂತು. 2. ಶ್ರೇಷ್ಠ ನಲ್ಲದ ಪಶು. (ವಿಂ) 3. ಪಶುಗಳಲ್ಲದ, ಗೋವುಗಳಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಪಶುಯೇತ್ರ.

ಅಪಶುಚ್ ಅಪಶುಚ್ (ವಿಂ) ಶೋಕರಹಿತವಾದ, ದುಃಖವಿಲ್ಲದ. ಅಪಗತಾ ಶುಕ್ ಯಸ್ಯ.

ಅಪಶೋಕ ಅಪಶೋಕ (ವಿಂ) ಶೋಕರಹಿತವಾದ, ದುಃಖವಿಲ್ಲದ. ಅಪಗತ: ಶೋಕೋ ಯಸ್ಮಾತ್.

ಅಪಶಿಮ ಅಪಶಿಮ (ವಿಂ) 1. ಮೊದಲನೆಯ, ಮೊದಲಿಗ, ಅಗ್ರೇಷರ. ನ ಪಶಿಮ: "ಶಿಶ್ರಿಯೇ ಸುಮನಸಾಮಪಶಿಮ: ಪಶಿಮೇ ವಯಸಿ ನೈಮಿಶಂ ವಶೀ" ರಘುಂ ೧೯-೧. 2. ಕೊನೆಯದಲ್ಲದ. "ಪ್ರಸಾದತು ಮಹಾರಾಜೋ ಮಮಾನೇನಾಪಶಿಮೇನ ಪ್ರಣಯೇನ" ವೇಣೀಂ ೬. 3. ಅಧಿಕವಾದ, ಮಿತಿಮೀರಿದ. "ಅಪಶಿಮಾಮಿಮಾಂ ಕಷ್ಟಾಮಾಪದಂ ಪ್ರಾಪ್ತವತ್ಯಹಮ್" ರಾಮಾಂ.

ಅಪಶ್ಯತ್ ಅಪಶ್ಯತ್ (ವಿಂ) ನೋಡದಿರುವ, ಕಾಣದಿರುವ. ನ ಪಶ್ಯತಿ - ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಅಪಶ್ಯದ್ವಿರಿವೇಶಾನಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೫-೨. "ಅಪಶ್ಯತೋಽಭವದತಿದುಃಖಿತಂ ಮನ: ಸುಚಕ್ಷುಷ: ಪ್ರವಿಚರತೋ ಮಹಾತ್ಮನ:" ರಾಮಾಂ.

ಅಪಶ್ರೀ ಅಪಶ್ರೀ (ವಿಂ) 1. ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. ಅಪಗತಾ ಶ್ರೀ: ಸಂಪದಸ್ಯ. 2. ಕಾಂತಿಯಿಲ್ಲದ. ಅಪಗತಾ ಶ್ರೀ: ಶೋಭಾ ಯಸ್ಮಾತ್. "ಕುಮುದವನಮಪಶ್ರಿ ಶ್ರೀಮದಮ್ಭೋಜಪಂಡಮ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೬೪.

ಅಪಠ ಅಪಠ (ನಂ) ಅಂಕುಶದ ತುದಿ. ಅಪ + ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೬). "ಅಪಠಂತವ-ಕ್ಷುಶಸ್ಯಾಗ್ರಮ್" ವೈಜಂ.

ಅಪಠು ಅಪಠು (ಪುಂ) 1. ಕಾಲ, ಸಮಯ. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದ, ವಿರುದ್ಧವಾದ. 3. ಅನುಕೂಲವಾದ. 4. ಎಡಭಾಗದ. ಅಪ + ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ್ರು:" (೩ಂ ೧-೨೫). "ಅಪಠು: ಪುಂಸಿ ಕಾಲೇ ಚ ವಾಮೇ ಸ್ಯಾದನ್ಯಲಿಙ್ಗಕ:" ಮೇದಿಂ. (ಅವ್ಯಂ) 5. ತಪ್ಪಾಗಿ, ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ, ಸುಳ್ಳಾಗಿ. "ತವ ಧರ್ಮರಾಜ ಇತಿ ನಾಮ ಕಥಮಿದಮಪಠು ಪಠಯತೇ" ಮಾಘಂ ೧೫-೧೭. 6. ತಪ್ಪಿಲ್ಲದೆ, ನಿರ್ದೋಷವಾಗಿ. 7. ಸುಂದರವಾಗಿ, ಅಂದವಾಗಿ. "ಪ್ರತಿಕೂಲಾನುಕೂಲಾರ್ಥೇ ಅಪಠುರಮಪಠು ಚ" ವೈಜಂ. "ಅಪಠು ಚಾರೋ ನಿರ್ದೋಷೇ" ಹೇಮಂ.

ಅಪಸ್ ಅಪಸ್ (ನಂ) 1. ಕೆಲಸ, ಕಾರ್ಯ. ಆಪ್ಲ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಅಸುನ್" ಹ್ರಸ್ವಶ್ಚ (೩ಂ ೪-೨೦೭). 2. ಪವಿತ್ರಕಾರ್ಯ, ಧರ್ಮಕಾರ್ಯ. 3. ನೀರು. (ವಿಂ) 4. ಕಾರ್ಯನಿರತನಾದ, ಪ್ರಯತ್ನಶೀಲ.

ಅಪಸದ್ ಅಪಸದ್ (ವಿಂ) ಅಧಮ, ನೀಚ, ಸಾಮಾನ್ಯ. "ಪಾಪೇ ತ್ವಧಮಾಪಸದಧ್ರುವಾ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಅಪಸರ ಅಪಸರ (ಪುಂ) 1. ನಿರ್ಗಮನ, ಹೊರಡುವಿಕೆ. ಅಪ + ಸ್ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೩-೧೧೮). 2. ಪ್ರತಿಗ್ರಹ, ಸ್ವೀಕಾರ, ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. "ನಿರನ್ವಯೋಽನಪಸರ: ಪ್ರಾಪ್ತ: ಸ್ಯಾತ್" ಮನುಂ ೮-೧೯೮.

ಅಪಸರಣ ಅಪಸರಣ (ನಂ) ನಿರ್ಗಮನ, ಹೊರಡುವಿಕೆ. ಅಪ + ಸ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

ಅಪಸರ್ಗ ಅಪಸರ್ಗ (ಪುಂ) 1. ತ್ಯಾಗ, ದಾನ. 2. ವಿಸರ್ಜನ, ತ್ಯಜಿಸುವುದು. ಅಪ + ಸ್ (ವಿಸರ್ಗ) ಭಾವೇ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮).

ಅಪಸರ್ಪ ಅಪಸರ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಗೂಢಚಾರ. ಅಪಸರ್ಪತಿ - ಅಪ + ಸ್ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಸರ್ಪಾಘಿ-ರಾಜೋಽಭುಜೋಽಪಸರ್ಪಂ ಪಪ್ರಚ್ಛ ಭದ್ರಂ ವಿಜಿತಾರಿಭದ್ರ:" ರಘುಂ ೧೪-೩೧. 2. ಅಪಸರಣ, ನಿರ್ಗಮನ, ಹೊರಡುವಿಕೆ. ಅಪ + ಸ್ಪಲ್ ಭಾವೇ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮).

ಅಪಸರ್ಪಣ ಅಪಸರ್ಪಣ (ನಂ) ನಿರ್ಗಮನ, ಹೊರಡುವಿಕೆ, ಹಿಂತಿರುಗುವಿಕೆ. ಅಪ + ಸ್ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

ಅಪಸವ್ಯ ಅಪಸವ್ಯ (ನಂ) 1. ಶರೀರದ ಬಲಭಾಗ. ಅಪಕ್ರಾಂತಂ ಸವ್ಯಾತ್. (ವಿಂ) 2. ವಿರುದ್ಧವಾದ, ಪ್ರತಿ ಕೂಲವಾದ. 3. ಬಲಭಾಗದ.

ಅಪಸಾರ ಅಪಸಾರ (ಪುಂ) 1. ದೂರಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವುದು. 2. ಬಹಿಷ್ಕಾರ, ಹೊರದೂಡುವುದು. ಅಪ + ಸ್ (ಗತೌ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮). 3. ಓಡಿಹೋಗುವುದು, ಪಲಾಯನ. "ವ್ಯಾಪ್ತಂ ಲೋಕೇಽದುಃಖಲಮ್ಯಾಪಸಾರಮ್" ಮಾಘಂ ೧೮-೪೦. ಅಪ + ಸ್ + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). -ಸಾರಣಮ್ - ಸಾರಣಂ. ಭಾವೇ "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭). -ಸಾರಣಾ - ಸಾರಣಾ.

ಅಪಸಾರಿತ ಅಪಸಾರಿತ (ವಿಂ) 1. ದೂರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಬಹಿಷ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊರದೂಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ + ಸ್ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).

ಅಪಸ್ಕರ ಅಪಸ್ಕರ (ಪುಂ) ರಥದ ಅವಯವ, ರಥದ ಭಾಗ. "ಅಪಸ್ಕರೋ ರಥಾಙ್ಗಮ್" ಪಾಂ ಸೂಂ (೬-೧-೧೪೯).



ಅಪಸ್ನಾತ ಅಪಸ್ನಾತ (ವಿಂ) ಮೃತನಿಗಾಗಿ ಸ್ನಾನ ಮಾಡಿದ, ಮರಣಕ್ಕಾಗಿ ಸ್ನಾನಮಾಡಿದ. ಅಪಕೃಷ್ಣ ಸ್ನಾತ:।

ಅಪಸ್ನಾನ ಅಪಸ್ನಾನ (ನಂ) 1. ಮರಣವಾರ್ತೆಯನ್ನು ಕೇಳಿ ಮಾಡುವ ಸ್ನಾನ. ಅಪಕೃಷ್ಣ ಸ್ನಾನಮ್। 2. ಸ್ನಾನ ಮಾಡಿ ನಿಂತ ನೀರು, ಮೈ ತೊಳೆದ ನೀರು. ಅಪಕ್ರಾಂತ: ಸ್ನಾನಾತ್। “उद्वर्तनमपस्नानं विष्मूत्रे रक्तमेव च। श्लेष्मनिष्ठघृतवान्तानि नाधितिष्ठेत्तु कामतः” मनु० ४-१३२।

ಅಪಸ್ಪಶ ಅಪಸ್ಪಶ (ವಿಂ) 1. ಗೂಢಚಾರನಿಲ್ಲದ. ಅಪಗತ: ಸ್ಪಶ: ಯಸ್ಮಾತ್। “शब्दविद्येव नो भाति राजनीति-रपस्पशा” माघ० २-११२। 2. ಪಸ್ಪಶ ಗ್ರಂಥವಿಲ್ಲದ. ಅಪಸ್ಮಾರ ಅಪಸ್ಮಾರ (ಪುಂ) ಮೂರ್ಛೆ ರೋಗ. ಅಪ-ಸ್ಮಾರಯತಿ - ಅಪ+ಸ್ಮ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್)+ಣಿच् “अच्” (३-१-१३४)।

ಅಪಸ್ಮಾರಿನ್ ಅಪಸ್ಮಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಮೂರ್ಛೆ ರೋಗ ವುಳ್ಳ.

ಅಪಹತ ಅಪಹತ (ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ+ಹನ (ಹಿಸಾಗಲ್ಯೋ:) “कः” (३-२-१०२)।

ಅಪಹತಿ ಅಪಹತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. ಅಪ+ಹನ (ಹಿಸಾಗಲ್ಯೋ:) ಭಾವೆ “किन्” (३-३-९४)।

ಅಪಹರ ಅಪಹರ (ವಿಂ) ಅಪಹರಿಸುವ, ಕದಿಯುವ. ಅಪ+ಹ್ (ಹರಣೆ) “अच्” (३-१-१३४)।

ಅಪಹರಣ ಅಪಹರಣ (ನಂ) 1. ಕದಿಯುವುದು, ಕಳ್ಳತನ. 2. ಒಯ್ಯುವುದು, ಸ್ಥಳಾಂತರಕ್ಕೆ ಬದಲಾಯಿಸುವುದು. ಅಪ+ಹ್ (ಹರಣೆ) “ल्युट्” (३-३-११५)।

ಅಪಹರಣೀಯ ಅಪಹರಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಅಪಹರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ಅಪಹರಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ಅಪಹರಿಸಲ್ಪಡುವ. ಅಪಹರ್ಮಹೆ ಶಕ್ಯಮ್ ಅಪಹ್ರಿಯತೆ ವಾ - ಅಪ+ಹ್ (ಹರಣೆ) “अनीयर्” (३-१-९६)। 4. ಒಯ್ಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. 5. ಒಯ್ಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 6. ಒಯ್ಯಲ್ಪಡುವ.

ಅಪಹರ್ತು ಅಪಹರ್ತು (ವಿಂ) ಅಪಹಾರಮಾಡುವ, ಕದಿಯುವ, ಕಳ್ಳತನಮಾಡುವ. ಅಪ+ಹ್ (ಹರಣೆ) “तृच्” (३-१-१३३)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “डीप्” (४-१-५)। -ಹರ್ತೃ-ಹರ್ತೃಃ.

ಅಪಹಸನ ಅಪಹಸನ (ನಂ) ಅಪಹಾಸ್ಯ, ಕುಚೋದ್ಯ. ಅಪ+ಹಸೆ (ಹಸನೆ) “ल्युट्” (३-३-११५)।

ಅಪಹಸಿತ ಅಪಹಸಿತ (ನಂ) 1. ಅಪಹಾಸ್ಯ, ಕುಚೋದ್ಯ. ಅಪ+ಹಸೆ (ಹಸನೆ) ಭಾವೆ “कः” (३-३-११४)। (ವಿಂ) 2. ಅಪಹಾಸ್ಯಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ಮಂ “कः” (३-२-१०२)।

ಅಪಹಸ್ತ ಅಪಹಸ್ತ (ಪುಂ) ಹೊರದೂಡಲು ಕುತ್ತಿಗೆಯ ಮೇಲೆ ಇಟ್ಟಿರುವ ಹಸ್ತ, ತಳ್ಳಲು ಕತ್ತಿನ ಮೇಲೆ ಇಟ್ಟಿರುವ ಕೈ. ಅಪಸಾರಣಾಯ ಉದತೋ ಹಸ್ತ:।

ಅಪಹಸ್ತಿತ ಅಪಹಸ್ತಿತ (ವಿಂ) 1. ಕುತ್ತಿಗೆಯ ಮೇಲೆ ಕೈಯಿಟ್ಟು ನೂಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಕತ್ತುಹಿಡಿದು ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪಹಸ್ತೋಽಸ್ಯ ಸಂಜ್ಞಾತ: “इतच्” (५-२-३६)। 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಪಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅಪಹಾರ ಅಪಹಾರ (ಪುಂ) 1. ಹಾನಿ, ನಾಶ. ಅಪ+ಹ್ (ಹರಣೆ) “घञ्” (३-३-१८)। “अपहारस्त्वपचयः” अम०। 2. ಬೋರ, ಕಳ್ಳ. 3. ಜೂಜು ಮತ್ತು ಯುದ್ಧಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಕೊಡುವ ವಿರಾಮ. 4. ಆಹ್ವಾನದ ಮೇಲೆ ಹೋದಕಡೆ ಅವಶ್ಯಕೊಡಬೇಕಾದ ವಸ್ತು. 5. ಮೊಸಕೆ. “अपहारः पुनश्चोरे द्यूतयुद्धादिविश्रमे। निमन्त्रणोपनेतव्यद्रव्ये ग्राहाख्ययादसि” वैज०। 6. ತೆಗೆದುಹಾಕುವುದು, ಕಿತ್ತೊಗೆಯುವುದು. “कर्ण-नासापहारेण भगिनी मे विरूपिता” रामा०। 7. ಮರೆ ಮಾಡುವುದು, ನಿಜವನ್ನು ಮುಚ್ಚುವುದು, ವಂಚಿಸುವುದು. “कथमात्मानं निवेदयामि। कथं वात्मापहारं करोमि” शाकु०। 8. ಒಯ್ಯುವುದು, ಬೇರೆಕಡೆಗೆ ಸಾಗಿಸುವುದು.

ಅಪಹಾರಕ ಅಪಹಾರಕ (ವಿಂ) 1. ಅಪಹರಿಸುವ, ಕದಿಯುವ. ಅಪಹರತಿ - ಅಪ+ಹ್ (ಹರಣೆ) “ण्वल्” (३-१-१३३)। 2. ಬೇರೆಕಡೆಗೆ ಒಯ್ಯುವ, ಸ್ಥಳಾಂತರಕ್ಕೆ ಬದಲಾಯಿಸುವ. 3. ಮರೆಮಾಚುವ, ವಂಚಿಸುವ. 4. ನಾಶಪಡಿಸುವ. ಅಪ+ಹ್ “णितिः” (३-२-७८)। ಅಪಹಾರಿನ್ - ಹಾರಿನ್. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “डीप्” (४-१-५)। -ಹಾರಿಣಿ-ಹಾರಿಣೀ.

ಅಪಹಾಸ ಅಪಹಾಸ (ಪುಂ) ಕಾರಣವಿಲ್ಲದೆ ನಗುವುದು. ಅಪ+ಹಸೆ (ಹಸನೆ) ಭಾವೆ “घञ्” (३-३-१८)। “अपहासः परमाददे महद्भिः” याद० १५-१०८।

ಅಪಹೃತ ಅಪಹೃತ (ವಿಂ) 1. ಕದಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಒಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ+ಹ್ (ಹರಣೆ) “कः” (३-२-१०२)।

ಅಪಹ್ನವ ಅಪಹ್ನವ (ಪುಂ) 1. ಸತ್ಯವನ್ನಡಗಿಸುವಿಕೆ, ಇರುವುದನ್ನು ಅದಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳುವುದು. ಅಪ+ಹ್ನ (ಹರಣೆ)



(ಅಪನಯನೆ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭) 1. ಪ್ರೇಮ, ಪ್ರೀತಿ, ಸ್ನೇಹ. 3. ಸ್ತುತಿ, ಸ್ತೋತ್ರ, ಹೊಗಳಿಕೆ. "ಸ್ತುತಿಸ್ತೋತ್ರಾಪಹ್ಲವಿ" ವೈಜಂ. 4. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ; ಇರುವುದನ್ನು ಅದಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳಿ ಅದನ್ನೇ ಮತ್ತೊಂದು ವಿಷಯವನ್ನಾಗಿ ವರ್ಣಿಸುವುದು ಅಪಹ್ನುತ್ವಾಲಂಕಾರ. ["ಅಪಹ್ರುತಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಅಪಹ್ರುತಿ ಅಪಹ್ನುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸತ್ಯವನ್ನಡಗಿಸುವಿಕೆ, ಇರುವುದನ್ನು ಅದಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳುವುದು. 2. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ; ಇರುವುದನ್ನು ಅದಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳಿ ಅದನ್ನೇ ಮತ್ತೊಂದು ವಿಷಯವನ್ನಾಗಿ ವರ್ಣಿಸುವುದು ಅಪಹ್ನುತ್ವಾಲಂಕಾರ. "ಪ್ರಕೃತಂ ಯನ್ನಿಷಿದ್ಧವ್ಯಾನ್ಯತ್ಸಾಧ್ಯತೇ ಸಾತ್ವಪಹ್ರುತಿಃ" ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ.

ಅಪಾಂಗಮ್ ಅಪಾಂಗಭರ್ತ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 2. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. "ವಹ್ನಿವಾತಾವಾಂಗಮೌ" ವೈಜಂ.

ಅಪಾನಪಾತ್ ಅಪಾಂನಪಾತ್ (ಪುಂ) ಯಜ್ಞದೇವತೆ. ಅಪೋ ನ ಪಾತಯತಿ. ಷಷ್ಠಾ ಅಲ್ಪಕ್ (೬-೩-೧೪).

ಅಪಾನಿಧಿ ಅಪಾಂನಿಧಿ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ. ಷಷ್ಠಾ ಅಲ್ಪಕ್ (೬-೩-೧೪). 2. ವಿಷ್ಣು. "ಅಪಾನಿಧಿರಧಿಷ್ಠಾನಮಪ್ರಮತ್ತಃ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಃ" ವಿಂ ಸಂ.

ಅಪಾಂಪತಿ ಅಪಾಂಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ. 2. ವರುಣ. ಷಷ್ಠಾ ಅಲ್ಪಕ್ (೬-೩-೧೪). "ಅಪಾಂಪತಿನಿತ್ಯಮವಿನ್ವನೇನ" ಯಾದಂ ೧೮-೪೫.

ಅಪಾಂಯೋನಿ ಅಪಾಂಯೋನಿ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ. ಷಷ್ಠಾ ಅಲ್ಪಕ್ (೬-೩-೧೪).

ಅಪಾಕ ಅಪಾಕ (ಪುಂ) 1. ಪಚನವಾಗದಿರುವಿಕೆ. 2. ಅಜೀರ್ಣ, ಅಗ್ನಿಯ ಮಾಂದ್ಯದಿಂದ ಆಹಾರವು ಜೀರ್ಣವಾಗದಿರುವಿಕೆ. 3. ಅಜೀರ್ಣರೋಗ. (ವಿಂ) 4. ಬೇಯಿಸಲ್ಪಡದ, ಪಕ್ವವಾಗದ.

ಅಪಾಕಜ ಅಪಾಕಜ (ವಿಂ) 1. ಪಾಕದಿಂದುಂಟಾಗದ. 2. ಸ್ವಭಾವ ಸಿದ್ಧವಾದ, ಪ್ರಕೃತಿ ಸಿದ್ಧವಾದ. ಪಾಕಾ-ಜ್ಜಾಯತೇ-ಜನಿ(ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಙ:" (೩-೨-೯೮) ನಂ ತಂ.

ಅಪಾಕರಣ ಅಪಾಕರಣ (ನಂ) 1. ತಿರಸ್ಕಾರ, ನಿರಾಕರಣೆ. 2. ದೂರಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವುದು. 3. ಬಹಿಷ್ಕರಿಸುವುದು. ಅಪ+ಆ+ಙ್ ಕೃ (ಕರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೮).

ಅಪಾಕರಿಣ್ಯ ಅಪಾಕರಿಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ದೂರಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವ ಸ್ವಭಾವದ. 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಅಪ+ಆ+ಙ್ ಕೃ (ಕರಣ) "ಙ್ಕುಚ್" ಬಾಹಂ.

ಅಪಾಕಮನ್ ಅಪಾಕಮನ್ (ನಂ) ಸಾಲದ ಸಂದಾಯ, ಸಾಲವನ್ನು ತೀರಿಸುವಿಕೆ.

ಅಪಾಕೃತ ಅಪಾಕೃತ (ವಿಂ) 1. ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಿದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಲಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ದೂರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ+ಆ+ಙ್ ಕೃ (ಕರಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ತವಿ ಪೂಜನಂ ಜಗತಿ ಜಾಲ್ಮ ಕೃತಮಿ-ದಮಪಾಕೃತೇ ಗುಣಃ" ಮಾಘಂ ೧೪-೩೩. 3. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅಪಾಕೃತಿ ಅಪಾಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಿರಸ್ಕಾರ. 2. ನಿವಾರಣೆ, ಪರಿಹಾರ. 3. ಅಪಕಾರದಿಂದುಂಟಾಗುವ ಚಿತ್ತವಿಕಾರ, ಕಳವಳ. ಅಪ+ಆ+ಙ್ ಕೃ (ಕರಣ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪). "ನಿಶಮ್ಯ ಸಿದ್ಧಿ ದಿಷಿತಾಮಪಾ-ಕೃತಿಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೨೭.

ಅಪಾಙ್ಕ್ತ ಅಪಾಂಕ್ತ (ವಿಂ) ಒಂದೇ ಪಂಕ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ಭೋಜನಾದಿಗಳನ್ನು ಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯನಲ್ಲದವನು. "ಅಪಾಙ್ಕ್ತದಾನೇ ಯೋ ದಾತುಂಭವತ್ಯುರ್ವ್ವಂ ಫಲೋದಯಃ" ಮನುಂ ೩-೧೬೯.

ಅಪಾಙ್ಕ್ತೇಯ ಅಪಾಂಕ್ತೇಯ (ವಿಂ) ಪಂಕ್ತಿಗೆ ಯೋಗ್ಯನಲ್ಲದ, ಪಂಕ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ಭೋಜನಾದಿಗಳನ್ನು ಮಾಡಲು ಅರ್ಹನಲ್ಲದ. ನ ಪಙ್ಕ್ತಿಮಹತಿ "ಙ್ಕ್" "ಏತಾನ್ವಿಗರ್ಹಿತಾಚಾರಾನಪಾಙ್ಕ್ತೇಯಾನ್ ದ್ವಿಜಾಧಮಾನ್" ಮನುಂ ೩-೧೬೭.

ಅಪಾಙ್ಕ್ತ ಅಪಾಂಕ್ತ (ವಿಂ) ಒಂದೇ ಪಂಕ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ಭೋಜನಾದಿಗಳನ್ನು ಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯನಲ್ಲದ. ಪಙ್ಕ್ತಿ "ಅನ್" (೪-೧-೮೬). "ಽನ್" (ವಾಂ ೭-೩-೩೧). "ಅಪಾಙ್ಕ್ತಯೋ ಯಾವತಃ ಪಾಙ್ಕ್ತಯಾ-ನ್ಮುಜ್ಜಾನಾನನುಪದಯತಿ" ಮನುಂ ೩-೧೭೬.

ಅಪಾಙ್ಗ ಅಪಾಂಗ (ಪುಂ) 1. ಕಡೆಗಣ್ಣು, ಕಣ್ಣಿನ ಕೊನೆಯ ಭಾಗ. ಅಪ ಅಙ್ಗತಿ-ಅಗಿ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಅಪಾಙ್ಗಾಃ ಪರಿಪಾತ್ಯಂತಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೬-೨೪. 2. ತಿಲಕ, ಪುಂಡ್ರ. "ಅಪಾಙ್ಗೋ ನೇತ್ರಾಂತ-ಪುಂಡ್ರಯೋಃ" ಹೇಮಂ. (ವಿಂ) 3. ಅಂಗವಿಹೀನ, ಊನವಾದ ಅವಯವಗಳುಳ್ಳ. ಅಪಗತಾನ್ಯಙ್ಗಾನ್ಯಸ್ಯ.

ಅಪಾಙ್ಗದರ್ಶನ ಅಪಾಂಗದರ್ಶನ (ನಂ) ಕಡೆಗಣ್ಣಿನ ನೋಟ, ಕಡೆಗಣ್ಣಿನಿಂದ ನೋಡುವುದು. ಅಪಾಙ್ಗೇನ ದರ್ಶನಮ್.

ಅಪಾಚ್ ಅಪಾಚ್ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ, ಹಿಮ್ಮೆಟ್ಟುವ. 2. ಅಪ್ರಕಾಶವಾದ, ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾದ. ಅಪಾಚ್ವತಿ-ಅಚ್ವ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೨-೪೯).



(ಅವ್ಯಂ) 3. ಹಿಂಭಾಗಕ್ಕೆ. 4. ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿಗೆ. 5. ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕಿಗೆ.

ಅಪಾಚಿ ಅಪಾಚೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಕ್ಷಿಣದಿಕ್ಕು. 2. ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕು. ಅಪಾಚ್ವತಿ ಸೂರ್ಯಮ್ — ಅಪ + ಅಚ್ವ (ಗತೌ) "ಕ್ವಿನ್" (3-2-49)। "ಕೀಪ್" (4-1-6)।

ಅಪಾಚಿನ ಅಪಾಚೀನ (ವಿಂ) 1. ದಕ್ಷಿಣದಿಕ್ಕಿನ. 2. ಪಶ್ಚಿಮದಿಕ್ಕಿನ. ಅಪಾಚ್ಯಾ ಭವ: "ಕ್ವ:" (4-4-2)। 3. ಹಿಂಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ. 4. ಅಪ್ರಕಾಶವಾದ, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣದ.

ಅಪಾಚ್ಯ ಅಪಾಚ್ಯ (ವಿಂ) ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ, ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅಪಾಚ್ಯಾ ಭವ: "ಯತ್" (4-2-101)।

ಅಪಾಟವ ಅಪಾಟವ (ನಂ) 1. ಅಕುಶಲತೆ, ಚುರುಕಿಲ್ಲ ದಿರುವಿಕೆ. ನ ಪಾಟವಮ್। 2. ಅಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಅಶಕ್ತತೆ. 3. ರೋಗ, ಬೇನೆ, ಜಾಡ್ಯ. ನಾಸ್ತಿ ಪಾಟವಂ ಯತ್ರ। (ವಿಂ) 4. ಅಕುಶಲ, ಚತುರನಲ್ಲದ, ಅಸಮರ್ಥ.

ಅಪಾಣಿನೀಯ ಅಪಾಣಿನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಪಾಣಿನಿ ಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಹೇಳಲ್ಪಡದ, ಪಾಣಿನಿ ಸೂತ್ರಗಳಿಗೆ ಅನುಗುಣವಲ್ಲದ. 2. ಪಾಣಿನಿಯ ಗ್ರಂಥ (ಅಷ್ಟಾಧ್ಯಾಯಿ) ವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡದವನು.

ಅಪಾತ್ರ ಅಪಾತ್ರ (ನಂ) 1. ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಬಾರದ ಪಾತ್ರೆ. 2. ದಾನಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯನಲ್ಲದ ಮನುಷ್ಯ. "ಅದೇಶಕಾಲೇ ಯದಾನಮಪಾತ್ರೇಮ್ಯಶ್ಚ ದೀಯತೇ। ಅಸತ್ಕೃತಮವಶಾತ್ ತತ್ತಾಮಸ-ಮುದಾಹೃತಮ್" ಗೀತಾ 17-22।

ಅಪಾತ್ರಿಕರಣ ಅಪಾತ್ರಿಕರಣ (ನಂ) 1. ಅಯೋಗ್ಯ ನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. 2. ಅನರ್ಹನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವ ಪಾಪಕೃತ್ಯ. "ನಿಂದಿತೇಮ್ಯೋ ಧನಾದಾನಂ ವಾಣಿಜ್ಯಂ ಶೂದ್ರ-ಸೇವನಮ್। ಅಪಾತ್ರಿಕರಣಂ ಜ್ಞೇಯಮಸತ್ಯಸ್ಯ ಚ ಭಾಷಣಮ್" ಎಂದು ಅನರ್ಹತೆಯ ಕಾರಣಗಳು ನಾಲ್ಕು. ಮನುಂ 11-69।

ಅಪಾದಾನ ಅಪಾದಾನ (ನಂ) 1. ಅವಹಾರ, ಕಸಿದು ಕೊಳ್ಳುವುದು. 2. ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ ಅಪಾದಾನ ಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳದ್ದು. "ಉಪಮಪಾಯೇಪಾದಾನಮ್" ಅಪಾಯವೆಂದರೆ ವಿಶ್ಲೇಷ (ವಿಯೋಗ) ವೆಂದರ್ಥ. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವುದಾದರೊಂದಕ್ಕೆ ಅಗಲಿಕೆ (ವಿಯೋಗ, ವಿಶ್ಲೇಷ) ಯುಂಟಾದಾಗ ಚಲಿಸದೆ ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವುದು ಅಪಾದಾನ ಸಂಜ್ಞೆಯನ್ನು ಹೊಂದುವುದು. ಈ ಅಪಾದಾನ ಸಂಜ್ಞೆಯಿರುವ ಪದಕ್ಕೆ ಪಂಚಮೀವಿಭಕ್ತಿ

ಬರುವುದು. ವೃಕ್ಷಾತ್ ಫಣಿ ಪತತಿ ಎಂಬಲ್ಲಿ ವೃಕ್ಷದಲ್ಲಿರುವ ಪರ್ಣಕ್ಕೆ ವಿಶ್ಲೇಷವುಂಟಾದಾಗ ವೃಕ್ಷ ಪದಕ್ಕೆ ಅಪಾದಾನ ಸಂಜ್ಞೆ ಬಂದು ಪಂಚಮೀವಿಭಕ್ತಿ ಬರುವುದು. ಹೀಗೆಯೇ, (1) ಜುಗುಪ್ಸೆ, (2) ವಿರಾಮ, (3) ಪ್ರಮಾದ, (4) ಭಯ, (5) ತ್ರಾಣ (ರಕ್ಷಣೆ), (6) ಪರಾಜಯ (ಸೋಲು), (7) ಉತ್ಪತ್ತಿ (ಹುಟ್ಟು), (8) ವಾರಣ (ತಡೆ) ಮತ್ತು (9) ಅಂತರ್ಧಾನ (ಮರೆಯಾಗುವಿಕೆ) ಈ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಕೊಡುವ ಧಾತುಗಳ ಯೋಗವಿದ್ದಲ್ಲಿ ಇವುಗಳಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ ವಿಷಯಗಳೂ, (10) ಶಾಸ್ತ್ರ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿಸುವ ಗುರುವೂ, (11) ವಸ್ತುವಿನ ಪ್ರಥಮ ಪ್ರಕಾಶಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದುದೂ ಅಪಾದಾನ ಸಂಜ್ಞೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿ ಪಂಚಮೀವಿಭಕ್ತಿಯನ್ನು ಹೊಂದುವುವು. ಕ್ರಮವಾಗಿ ಉದಾ: (1) ಪಾಪಾಜ್ಞುಗುಪ್ತೇ। (2) ಪಾಪಾದಿರಮತಿ। (3) ಧರ್ಮಾತ್ ಪ್ರಮಾಣತಿ। (4) ಚೋರಾದಿಭೇತಿ। (5) ವ್ಯಾಘ್ರಾತ್ಪ್ರಾಯತೇ। (6) ಸಿಂಹಾತ್ಪ್ರಾಜಯತೇ। (7) ಬ್ರಹ್ಮಣಃ ಪ್ರಜಾಃ ಪ್ರಜಾಯಂತೇ। (8) ಯವೇಮ್ಯೋ ಗಾಂ ವಾರಯತಿ। (9) ಮಾತುನಿಲೀಯತೇ ಕೃಷ್ಣಃ। (10) ಉಪಾಧ್ಯಾಯಾದಧೀತೇ। (11) ಹಿಮವತೋ ಗಜ್ಞಾ ಪ್ರಭವತಿ।

ಅಪಾನ ಅಪಾನ (ಪುಂ) 1. ದೇಹದಲ್ಲಿರುವ ಪಂಚ ಪ್ರಾಣ ವಾಯುಗಳೊಂದು. ಅಪಸಾರಣೇನ ಅನಿತ್ಯನೇನ—ಅಪ + ಅನ (ಪ್ರಾಣೇ) "ಏನ್" (3-3-121)। (ನಂ) 2. ಗುದ, ಮಲದ್ವಾರ. 3. ವೃಷಣ, ಅಂಡಕೋಶ. "ಅಪಾನೋ ದೇಹಜೋ ವಾಯುರಪಾನಂ ವೃಷಣೇ ಗುದೇ" ವೈಜಂ।

ಅಪಾನನ ಅಪಾನನ (ನಂ) 1. ಶ್ವಾಸೋಚ್ಛ್ವಾಸ. 2. ಮಲಮೂತ್ರಾದಿಗಳ ವಿಸರ್ಜನೆ. ಅಪ + ಅನ (ಪ್ರಾಣೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಅಪಾಮಾಗ್ ಅಪಾಮಾಗ್ (ಪುಂ) ಉತ್ತರೇಣ ಗಿಡ. ಅಪಕೃಷ್ಣ: ಆ ಸಮಂತಾತ್ ಮಾರ್ಗೋಸ್ಯ।

ಅಪಾಯ ಅಪಾಯ (ಪುಂ) 1. ವಿಶ್ಲೇಷ, ಅಗಲಿಕೆ. ಅಪ + ಇನ್ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (3-3-46)। 2. ಪಲಾಯನ, ಓಟ. 3. ನಾಶ. "ನಾಶಸ್ತ್ವಪಕ್ರಮೋಪಾಯಃ" ವೈಜಂ। "ಮಾಲತ್ಯಪಾಯಮಧಿಗಮ್ಯ ವಿರಕ್ತಚೇತಾಃ" ಮಾಲತೀಂ 10-9। 4. ಹಾನಿ, ಕೇಡು, ದುರ್ಘಟನೆ. "ಉಪಾಯಂ ಚಿಂತಯೇತ್ ಪ್ರಾಜಸ್ತಥಾಪಾಯಂ ಚ ಚಿಂತಯೇತ್" ಪञ्ಚತಂ।

ಅಪಾಯಿನ್ ಅಪಾಯಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಅಪಾಯವುಳ್ಳ. 2. ಅಗಲಿಕೆಯುಳ್ಳ. 3. ನಾಶವುಳ್ಳ, ನಶ್ವರವಾದ. ಅಪಾಯೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (4-2-114)। "ಆಗಮಾ-ಪಾಯಿನೋಽನಿತ್ಯಾಃ" ಗೀತಾ 2-14।



ಅಪಾರ ಅಪಾರ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ. (ನಂ) 2. ನದಿಯ ಎದುರು ದಡ. (ವಿಂ) 3. ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅಧಿಕವಾದ. ನಾಸ್ತಿ ಪಾರಂ ಯಸ್ಯ। "ಅಪಾರಹರ್ಷಾದಿನವಾಮವಸ್ಥಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೩-೬೧। 4. ಅವಧಿಯಿಲ್ಲದ, ಎಲ್ಲೆಯಿಲ್ಲದ. 5. ತೀರವಿಲ್ಲದ, ದಡವಿಲ್ಲದ. 6. ಬಹಳ ಕಷ್ಟವಾದ. 7. ಅಗಾಧವಾದ, ಆಳವಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಾ -ರಾ. 8. ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ.

ಅಪಾರ್ಥ ಅಪಾರ್ಥ (ಪುಂ) 1. ಅಸಂಬಂಧವಾದ ಅರ್ಥ. (ನಂ) 2. ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ ಮಾತು, ಅಸಂಬಂಧವಾಕ್ಯ. "ಸಮುದಾಯಾರ್ಥಗುಣ್ಯಂ ಯತ್ತದಪಾರ್ಥಮಿತಿವಿಶೇಷತಃ" ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ. (ವಿಂ) 3. ವ್ಯರ್ಥವಾದ, ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ. ಅಪಗತೋರ್ಥಃ ಪ್ರಯೋಜನಂ ಯಸ್ಮಾತ್।

ಅಪಾವರ್ತನ ಅಪಾವರ್ತನ (ನಂ) 1. ಸುತ್ತುವುದು, ತಿರುಗುವಿಕೆ, ಪ್ರದಕ್ಷಿಣೆ. 2. ತಿರಸ್ಕಾರ. 3. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಓಡುವುದು, ಹಿಮ್ಮೆಟ್ಟುವುದು. ಅಪ+ಆ+ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 4. ಭೂಮಿಯಮೇಲೆ ಹೊರಳಾಡುವುದು.

ಅಪಾವೃತ ಅಪಾವೃತ (ವಿಂ) 1. ಆವರಣ ತೆಗೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅನಾವೃತವಾದ. 2. ತೆರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ. "ಯದ್ವಚನಾಚೋಪಪನ್ನಂ ಸ್ವರ್ಗದ್ವಾರಮಪಾವೃತಮ್" ಗೀತಾ ೨-೩೨। 3. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಸ್ವತಂತ್ರ, ನಿರ್ಬಂಧವಿಲ್ಲದ. ಅಪಗತಮಾವೃತಮಾವರಣಂ ಯಸ್ಯ। "ತ್ವಂ ಬ್ರಹ್ಮ ಪರಮಂ ಸಾಕ್ಷಾದನಾ-ಶ್ಚಂತಮಪಾವೃತಮ್" ಭಾಗಂ ೧೧-೧೬-೧।

ಅಪಾವೃತಿ ಅಪಾವೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆವರಣ ತೆಗೆಯುವುದು, ನೋಟದ ವಿಘ್ನ (ತಡೆ) ವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು. 2. ತೆರೆಯುವುದು, ಬಿಚ್ಚುವುದು. 3. ಮುಚ್ಚುವುದು, ಮರೆಮಾಡುವುದು. ಅಪ+ಆ+ವೃತ್ (ವರಣೆ) "ಕ್ಲಿನ್" (೩-೩-೧೪)।

ಅಪಾವೃತ್ತ ಅಪಾವೃತ್ತ (ವಿಂ) 1. ತಿರುಗಿದ, ಸುತ್ತಿದ. 2. ಹಿಮ್ಮೆಟ್ಟಿದ, ಓಡಿಹೋದ. ಅಪ+ಆ+ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। 3. ಪರಾಜುಖವಾದ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತಿರುಗಿದ. "ಪುರಃ ಸೂರ್ಯದಿಪಾವೃತ್ತಾಂ ಚಾಯಾಮಿವ ಮಹಾತರಃ" ಕಿರಾಂ ೧೫-೩೩।

ಅಪಾವೃತ್ತಿ ಅಪಾವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಿರುಗುವಿಕೆ, ಸುತ್ತುವಿಕೆ. 2. ಹಿಮ್ಮೆಟ್ಟುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಓಡುವುದು. ಅಪ+ಆ+ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ಲಿನ್" (೩-೩-೧೪)।

ಅಪಾಶ್ರಯ ಅಪಾಶ್ರಯ (ಪುಂ) 1. ಆಶ್ರಯ, ಆಭಯ ಸ್ಥಾನ. 2. ಮಂಚ, ಪರ್ಯಂಕ. 3. ಚಪ್ಪರ, ಅಂಗಳದ

ಮೇಲ್ಭಾವಣೆ. (ವಿಂ) 4. ಆಶ್ರಯವಿಲ್ಲದ, ಸಹಾಯವಿಲ್ಲದ. ಅಪಗತ ಆಶ್ರಯೋ ಯಸ್ಯ।

ಅಪಾಸಜ್ಜ ಅಪಾಸಂಗೆ (ಪುಂ) ಬತ್ತಳಿಕೆ. ಅಪ+ಆ+ಪಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)।

ಅಪಾಸನ ಅಪಾಸನ (ನಂ) 1. ಎಸೆಯುವುದು. 2. ತಳ್ಳುವುದು, ನೂಕುವುದು. 3. ವಧೆ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. ಅಪ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅಪಾಸಿತ ಅಪಾಸಿತ (ವಿಂ) 1. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಕೊಲ್ಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ)+ಣಿच् "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅಪಾಸೃತ ಅಪಾಸೃತ (ವಿಂ) 1. ದೂರವಾದ, ಬಿಟ್ಟು ಹೊರಟಿರುವ. 2. ಓಡಿಹೋದ. ಅಪ+ಆ+ಸು (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)।

ಅಪಾಸ್ತ ಅಪಾಸ್ತ (ವಿಂ) 1. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ನಿರಸ್ತ-ಗಾಮ್ಭೀರ್ಯಮಪಾಸ್ತಪುಷ್ಪಕಮ್" ಮಾಧಂ ೧-೫೫। 4. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಸ್ತಾಪಾಸ್ತಸಮಸ್ತಭಾಸಿ ನಭಸಃ ಪಾರಂ ಪ್ರಯಾತೇ ರವೌ" ರತ್ನಾಂ ೧-೨೩। 5. ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಪಾಸ್ತ-ಸಮಸ್ತಾಶಮಪಿ ತಪಗತದಕ್ಷಿಣಾಶಮ್" ಚಂ ರಾಂ ೩।

ಅಪಾಸ್ಯ ಅಪಾಸ್ಯ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಎಸೆದು. 2. ಹೋಗಲಾಡಿಸಿ. 3. ತ್ಯಜಿಸಿ, ಬಿಟ್ಟು. ಅಪ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭)। "ಕಿಮಿತ್ಯಪಾಸ್ಯಾಭರಣಾನಿ ಯೌವನೇ" ಕುಮಾಂ ೫-೪೪।

ಅಪಿ ಅಪಿ (ಅವ್ಯಂ) 1. ನಿಂದೆ, ಬೈಗಳು. "ವಿಗ್ಧೇವದತ್ತಮ್ ಅಪಿ ಸ್ತುಯಾದ್ವೃಷಲಮ್"। 2. ಪದಾರ್ಥ. "ಸರ್ಪಿಣೋಽಪಿ ಸ್ಯಾತ್"। 3. ಸಂಭಾವನೆ, ಹೆಚ್ಚು ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ತೋರಿಸಿಕೊಡುವ ಅತಿಶಯೋಕ್ತಿ. ಸಂಭಾವನಂ ಶಕ್ತಿಯುಕ್ತರ್ಥ-ಮಾವಿಷ್ಕರ್ತುಮಿತ್ಯುಕ್ತಿಃ ಸಿಂ ಕೌಂ। "ಅಪಿ ಸ್ತುಯಾದ್ವಿಷ್ಣುಮ್"। 4. ಕಾಮಚಾರಾನುಜ್ಞೆ, ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ ನಡೆಯಲು ಅನುಮತಿ. "ಅಪಿ ಸ್ತುಹಿ"। 5. ಸಮುಚ್ಚಯ. "ಅಪಿ ಸ್ತುಹಿ, ಅಪಿ ಸಿಂಚ್"। "ಅಸ್ತಿ ಮೇ ಸೋದರಸ್ತೇಹೋಪೇತೇಷು" ಶಾಕ್ರುಂ ೧। [ಈ ಮೇಲಿನ ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ ದ್ವೈತಕವಾದಾಗ "ಅಪಿ" ಶಬ್ದವು ಕರ್ಮಪ್ರವಚನೀಯ ಸಂಜ್ಞೆಯನ್ನು ಹೊಂದುವುದು.] "ಅಪಿಃ ಪದಾರ್ಥಸಂಭಾವನಾ-ನ್ವವಸರ್ಗಗರ್ಹಸಿಮುಚ್ಚಯೇಷು" ಪಾಂ ಸೂಂ (೧-೪-೧೬)। 6. ಪ್ರಶ್ನೆ. "ಅಪಿ ಕ್ರಿಯಾರ್ಥಂ ಸುಲಭಂ ಸಮಿತುಕುಶಮ್?" ಕುಮಾಂ ೫-೩೩। 7. ಪ್ರತ್ಯಾಶೆ, ನಿರೀಕ್ಷಣೆ. "ಅಪಿ



ನಾಮ ದುರಾತ್ಮಾ ರಾಕ್ಷಸೋ ಗೃಹೀತ !” ಮುಧ್ರಾಂ ೧. ೮. ಶಂಕೆ, ಸಂದೇಹ, ಸಂಶಯ. “ಅಪಿ ಚೋರೋ ಭವೇತ್? ಅಪಿ ದೇವದತ್ತೋ ಗಚ್ಛೇತ್?” 9. ಆದರೂ, ಆದಾಗ್ಯೂ. “ಅಪಿ ದೃಷ್ಟಮಪಿ ಶ್ರುತಂ ಪ್ರಭಾವಂ ಭವದೀಯಂ ಭವಿನಸ್ತಮೋಽಭಿಮುತಾ:” ಯಾದಂ ೧೫-೨೫. 10. ಅನಿರ್ದಿಷ್ಟ, ಅನಿರ್ವಾಚ್ಯ. “ಸ್ವಸ್ತಿ, ಯಥಾಸ್ಥಾನೇ ಕುತೋಽಪಿ ಕೋಽಪಿ ಕಮಪಿ ಪುರುಷವಿಶೇಷಮವಗಮಯತಿ” ಮುಧ್ರಾಂ ೫. “ವ್ಯತಿಷಜತಿ ಪದಾರ್ಥಾನಾಂತರ: ಕೋಽಪಿ ಹೇತು:” ಉಂ ರಾಂ ೬-೧೨.

ಅಪಿಗೋಣ ಅಪಿಗೋಣ (ವಿಂ) 1. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅಪಿಚ ಅಪಿಚ (ಅವ್ಯಂ) ಮತ್ತೆ, ಇದಲ್ಲದೆ. “ಅಪಿಚ, ದುರಾರಾಧ್ಯಾ ಹಿ ರಾಜಲಕ್ಷ್ಮೀ: ಆತ್ಮವದ್ವಿರಪಿ” ಮುಧ್ರಾಂ ೩. ಅಪಿ ಚ ಇವು ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಪದಗಳೆಂದು ಕೆಲವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

ಅಪಿತ್ ಅಪಿತ್ (ವಿಂ) ಇತ್ ಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ “ಪ”ಕಾರವಿಲ್ಲದ. “ಸಾರ್ವಧಾತುಕಮಪಿತ್” ಪಾಂ ಸೂಂ (೧-೨-೪). 1.

ಅಪಿತು ಅಪಿತು (ಅವ್ಯಂ) 1. ಆದರೆ (ವಿರೋಧದ್ವ್ಯೇತಕ). “ಅಪಿತು ತ್ರಪಯಾ ನ ತಾಸ್ತದ್ವಕ್ತೃಸ್ತ ಇಮೇ ನನ್ವಿಹ ಚೇತಸಾ ನಮಂತಿ” ಯಾದಂ ೧೫-೬೦. 2. ಹಾಗಾದರೆ.

ಅಪಿಧಾನ ಅಪಿಧಾನ (ನಂ) 1. ಮುಚ್ಚುವುದು, ಮರೆಮಾಡುವುದು. ಅಪಿ+ಙ್ ಧಾನ್ (ಧಾರಣೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫). “ನೇಕಜಲದಕ್ಷತ್ರಾಪಿಧಾನಂ ಜಗತ್” ಮೃಚ್ಛಂ ೫-೨೪. (ವಿಂ) 2. ಮುಚ್ಚುವ, ಮರೆಮಾಡುವ (ಸಾಧನ). ಧಾನ್ ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭). “ಅಮೃತಾಪಿಧಾನಮಸಿ” 1.

ಅಪಿಹಿತ ಅಪಿಹಿತ (ವಿಂ) 1. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪಿ+ಙ್ ಧಾನ್ (ಧಾರಣೆ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨). 2. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಡದ, ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಡದ. ನ ಪಿಹಿತಮ್.

ಅಪೀತಿ ಅಪೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಳಯ, ವಿನಾಶ. “ಅಪೀತೌ ತದ್ವತ್ ಪ್ರಸಕ್ತಾದಸಮಂಜಸಮ್” ಖಂ ಸೂಂ ೨-೧-೮. 2. ಲಯ, ಕರಗುವಿಕೆ. 3. ಸಂಗ್ರಾಮ, ಯುದ್ಧ.

ಅಪೀವ್ಯ ಅಪೀವ್ಯ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಸುಂದರವಾದ, ಅತಿ ಸೊಗಸಾದ. “ಅಪೀವ್ಯದರ್ಶನಂ ಶಶ್ವತ್ಸರ್ವಲೋಕನಮಸ್ಕೃತಮ್. ಸತ್ಯಂ ವಯಸಿ ಕೇಶೋರೇ ಭೃತ್ಯಾನುಗ್ರಹಕಾತರಮ್” ಭಾಗಂ 1.

ಅಪುಸ್ ಅಪುಸ್ (ಪುಂ) ಕ್ಲೇಬ, ಪಂಡ, ನಪುಂಸಕ. ನ ಪುಮಾನ್. [ಪುರುಷನ ವೀರ್ಯವು ಬಲವಾಗಿದ್ದರೆ

ಪುಂಶಿಶುವೂ, ಹೆಂಗಸಿನ ವೀರ್ಯವು ಬಲವಾಗಿದ್ದರೆ ಸ್ತ್ರೀಶಿಶುವೂ, ಇಬ್ಬರದೂ ಸಮಬಲವಾಗಿದ್ದರೆ ಹೆಣ್ಣುಗಂಡು ಅವಳಿಯಾಗಲಿ ನಪುಂಸಕಶಿಶುವಾಗಲಿ ಜನಿಸುವುದು. ಇಬ್ಬರದೂ ಕ್ಷೀಣಬಲವಾಗಿದ್ದರೆ ಗರ್ಭಧಾರಣೆಯೇ ಆಗುವುದಿಲ್ಲ.] “ಪುಮಾನ್ ಪುಂಸೋಽಧಿಕೇ ಶುಕ್ರೇ ಸ್ತ್ರೀ ಭವತ್ಯಧಿಕೇ ಸ್ತ್ರೀಯಾ:। ಸಮೇಽಪುಮಾನ್ ಪುಂಸ್ತ್ರೀಯೌ ವಾ ಕ್ಷೀಣೇಽಲ್ಪೇ ಚ ವಿಪರ್ಯಯ:” ಮನುಂ ೩-೪೯.

ಅಪುಂಸ್ಕಾ ಅಪುಂಸ್ಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುರುಷನಿಲ್ಲದ ಹೆಂಗಸು, ಪತಿಯಿಲ್ಲದವಳು. ನ ಪುಮಾನ್ ಯಸ್ಯಾ:।

ಅಪುಣ್ಯ ಅಪುಣ್ಯ (ನಂ) 1. ಪಾಪ. (ವಿಂ) 2. ಪುಣ್ಯವಿಲ್ಲದ.

ಅಪುಣ್ಯಕೃತ್ ಅಪುಣ್ಯಕೃತ್ (ವಿಂ) 1. ಪಾಪಕೃತ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವ. ಅಪುಣ್ಯಂ ಕರೋತಿ. 2. ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡದ. ನ ಪುಣ್ಯಂ ಕರೋತಿ. “ಗೃಹಾನುಪೇತುಂ ಪ್ರಣಯಾದ-ಭಿಷವೋ ಭವಂತಿ ನಾಪುಣ್ಯಕೃತಾಂ ಮನೀಷಿಣ:” ಮಾಘಂ ೧-೧೪.

ಅಪುತ್ರ ಅಪುತ್ರ (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪುತ್ರನಿಲ್ಲದ, ಮಗನಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಪುತ್ರೋ ಯಸ್ಯ ಯಸ್ಯಾ ವಾ। “ಅಪುತ್ರೋಜನೇನ ವಿಧಿನಾ ಸುತಾಂ ಕುರ್ವೀತಿ ಪುತ್ರೀಕಾಮ್। ಯದಪತ್ಯಂ ಭವೇದಸ್ಯಾಂ ತನ್ಮಮ ಸ್ಯಾತ್ಸವಧಾಕರಮ್” ಮನುಂ ೯-೧೨೭. 2. ಅಯೋಗ್ಯನಾದ ಮಗ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಮ್ -ತ್ರಾ -ತ್ವಾ. “ಕಪ್” (೫-೪-೧೫೪). ಅಪುತ್ರಕ: ಅಪುತ್ರಕ:। ಸ್ತ್ರೀಯಾಮ್ ಅಪುತ್ರೀಕಾ ಅಪುತ್ರೀಕಾ.

ಅಪುನರ್ ಅಪುನರ್ (ಅವ್ಯಂ) ಒಂದು ಸಲ. ನ ಪುನ:।

ಅಪುನರಾವೃತ್ತಿ ಅಪುನರಾವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಿಂದಿರುಗದಿರುವಿಕೆ, ಪುನಃ ಬರದಿರುವಿಕೆ. 2. ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ. (ವಿಂ) 3. ಪುನಃ ಬರದಿರುವ, ಹಿಂದಿರುಗದಿರುವ. ನ ಪುನರಾವೃತ್ತಿರಸ್ಯ.

ಅಪುನರ್ಭವ ಅಪುನರ್ಭವ (ಪುಂ) 1. ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ. 2. ಮತ್ತೆ ಹುಟ್ಟದಿರುವಿಕೆ, ಪುನಃ ಬರದಿರುವಿಕೆ. ನ ಪುನರ್ಭವ:। “ಹಿತೌ ಲಿಙ್ಗೇ ಪ್ರಶಮನೇ ರೋಗಾಣಾಮಪುನರ್ಭವೇ। ಜ್ಞಾನಂ ಚತುರ್ವಿಧಂ ಯಸ್ಯ ಸ ರಾಜಾಹೋ ಭಿಷಕ್ತಮ:” ಚರಕಂ 1. 3. ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನ, ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನ. 4. ಪರಿಹಾರ, ನಿವಾರಣೆ. (ವಿಂ) 5. ಪುನರ್ಜನ್ಮವಿಲ್ಲದ, ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನಿ.

ಅಪುಷ್ಠ ಅಪುಷ್ಠ (ನಂ) 1. ಒಂದುವಿಧ ಅರ್ಥದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪದ, ಪ್ರಕೃತಾರ್ಥಕ್ಕೆ ಉಪಕಾರಕವಲ್ಲದ ಪದ. [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಅಪುಷ್ಠತಾ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] (ವಿಂ) 2. ಪೋಷಣೆಮಾಡಲ್ಪಡದ. 3. ಮೃದುವಾದ, ಗಟ್ಟಿಯಲ್ಲದ (ಧ್ವನಿ).



ಅಪುಷ್ಪತಾ ಅಪುಷ್ಪತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಅರ್ಥದೋಷ, ವಿವಕ್ಷಿತಾರ್ಥಕ್ಕೆ ಉಪಕಾರಕವಲ್ಲದ ಅರ್ಥ. ಅಪುಷ್ಪತಾ ಭಾವ:। "ವಿಲೋಕ್ಯ ವಿಸರ್ಜತೇ ವ್ಯೋಮಿನಿ ವಿಷ್ಣು ಮುಚ್ಚ ಕ್ಷಂ ಪ್ರಿಯೆ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ವಿಸರ್ಜತ ಸದಾರ್ಥವಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಪ್ರಕೃತಾರ್ಥವುಂಟಾಗುವುದರಿಂದ ಅದು ಅಪುಷ್ಪತಾಜಕವಾಗಿರುವುದು.

ಅಪುಷ್ಪಕಲದ ಅಪುಷ್ಪಫಲದ (ಪ್ರಂ) 1. ಪನಸ, ಹಲಸಿನ ಮರ. 2. ಉದುಂಬರ, ಅತ್ತಿಮರ. ಅಪುಷ್ಪ: ಸನ್ ಕಲಂ ದದಾತಿ - ತು ಬಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩)।

ಅಪೂಜಾ ಅಪೂಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶಾಸ್ತ್ರಮರ್ಯಾದೆಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಮಾಡುವ ಪೂಜೆ. 2. ಆಗೌರವ. 3. ಅನಿಶ್ವಾಸ. 4. ಪೂಜೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

ಅಪೂಜಿತ ಅಪೂಜಿತ (ವಿಂ) 1. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಡದ. 3. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡದ. ನ ಪೂಜಿತ:।

ಅಪೂತ ಅಪೂತ (ವಿಂ) 1. ಪವಿತ್ರವಲ್ಲದ, ಪರಿಶುದ್ಧವಲ್ಲದ. 2. ವ್ರಾತ, ಸಂಸ್ಕಾರವಿಲ್ಲದವನು.

ಅಪೂಪ ಅಪೂಪ (ಪ್ರಂ) 1. ಹಿಟ್ಟಿನಿಂದ ಮಾಡುವ ರೊಟ್ಟಿ, ದೋಸೆ, ಹೋಳಿಗೆ, ಕಜ್ಜಾಯ ಮೊದಲಾದುದು. ನ ಪೂಯತೇ - ಪೂಯಿ (ವಿಸರಣೆ) "ಪ:" ಬಾಹುಂ (೩-೩-೧)। 2. ಪುರೋಡಾಶ. "ವೃಥಾಕುಶರಸಂಯಾವಂ ಪಾಯಸಾಪೂಪಮೇವ ಚ" ಮನುಂ ೪-೭।

ಅಪೂರ್ಣ ಅಪೂರ್ಣ (ನಂ) 1. ಪೂರ್ಣವಾಗದಿರುವಿಕೆ, ಅಸಂಪೂರ್ಣತೆ. ಪ (ಪಾಲನಪೂರಣಯೋ) ಭಾವೇ "ಕ:" (೩-೩-೧೧೪)। ನಂ ತಂ। (ವಿಂ) 2. ಪೂರ್ಣವಲ್ಲದ, ಪೂರ್ತಿಯಾಗಿಲ್ಲದ, ತುಂಬಿಲ್ಲದ. "ಅಪೂರ್ಣಂ ಏವ ಪಂಚರಾತ್ರೇ ದೋಹದಸ್ಯ" ಮಾಲಂ ೩।

ಅಪೂರ್ಣಕಾಲ ಅಪೂರ್ಣಕಾಲ (ಪ್ರಂ) 1. ಪೂರ್ತಿಯಾಗದ ಕಾಲ, ಸಾಕಾಗದಷ್ಟುಕಾಲ. (ವಿಂ) 2. ಅಕಾಲದ, ಅನಿಯತಕಾಲದ.

ಅಪೂರ್ವ ಅಪೂರ್ವ (ನಂ) 1. ಜನ್ಮಾಂತರದಲ್ಲಿ ಅನುಭವಿಸಲ್ಪಡುವ ಸುಖ ದುಃಖಾದಿಗಳಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ ಪುಣ್ಯಪಾಪಗಳು, ವಿಹಿತ ಮತ್ತು ನಿಸಿದ್ಧಕರ್ಮಗಳೆಂದುಂಟಾದ ಅದೃಷ್ಟ. [ವಿಹಿತ ಕರ್ಮಾಚರಣೆಯಿಂದಂಟಾದುದು ಪುಣ್ಯ. ನಿಸಿದ್ಧಕರ್ಮಾಚರಣೆಯಿಂದಂಟಾದುದು ಪಾಪ. ಈ ರೀತಿ ಅಪೂರ್ವ (ಅದೃಷ್ಟ)ವು ಎರಡು ವಿಧ. ಪ್ರಾರಬ್ಧ, ಫಲದಾನೋನ್ಮುಖ ಮತ್ತು ಸಂಚಿತಗಳೆಂದು ಪುಣ್ಯ ಪಾಪಗಳೆರಡೂ ಮೂರು ವಿಧ. ಈ ಜನ್ಮವೆತ್ತಿದ ಮೊದಲುಗೊಂಡು

ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿರುವುದು ಪ್ರಾರಬ್ಧವು. ಬಹುಕಾಲದಿಂದ ಕೂಡಿಟ್ಟಿರುವ ಅನೇಕ ಅದೃಷ್ಟ (ಪುಣ್ಯ ಪಾಪ)ಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಫಲಕೊಡುವುದಕ್ಕೆ ಸಿದ್ಧವಾಗಿರುವುದು ಫಲದಾನೋನ್ಮುಖವು. ಈ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಪ್ರಾರಂಭವಾಗದೆ ಮತ್ತು ಫಲೋನ್ಮುಖವಾಗಿಯೂ ಇಲ್ಲದೆ ಅನೇಕ ಜನ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಕೂಡಿಟ್ಟಿರುವುದು ಸಂಚಿತವು. ಕರ್ಮವು ಅಚೇತನವೆಂದೂ ಅದಕ್ಕೆ ಫಲಕೊಡುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವಿಲ್ಲವೆಂದೂ ಕೆಲವರ ವಾದವುಂಟು. ಕರ್ಮವು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟರೆ "ಅಪೂರ್ವ"ವೆಂಬುದು ಉತ್ಪತ್ತಿಯಾಗುತ್ತದೆ. ಇದು ಫಲ ಕೊಡುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಏರ್ಪಟ್ಟಿದ್ದು ಫಲಕೊಟ್ಟನಂತರ ನಾಶಹೊಂದುವುದು. ಇದನ್ನೇ ಕರ್ಮವೀಯುವ ಫಲವಾಗಿ ಪರಿಗಣಿಸತಕ್ಕದ್ದೆಂದು ಸಮಾಧಾನ. ಭೌತಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ, ಯಾವ ಕೆಲಸವನ್ನು ಮಾಡಿದರೂ "ಎಂಟ್ರೊಪಿ" ಎಂಬುದುಂಟಾಗುತ್ತದೆ. ಇದು ಏರುವ ಬೀಜೋಕ್ತಿ. ಎಂದ ಮೇಲೆ ಇದಕ್ಕೊಂದು ಉಚ್ಚಮಟ್ಟವುಂಟು. ಅದನ್ನು ಹೊಂದಿದ ಕೂಡಲೆ ವಿಶ್ವದಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ನಡೆಯುವುದಸಾಧ್ಯ. ಆಗ ಪ್ರಳಯವೆಂದು ಹೇಳಿರುತ್ತೆ. ಈ "ಎಂಟ್ರೊಪಿ"ಯು ಅಪೂರ್ವವೆನ್ನಬಹುದು.] (ವಿಂ) 2. ಹೊಸದಾದ, ಹಿಂದಿನದಲ್ಲದ, ಹಿಂದೆ ಅನುಭವಿಸದ. "ಅಪೂರ್ವೇವ ತತ್ಕಾಲಸಮಾಗಮಸಕಾಮಯಾ" ಮಾಘಂ ೧೯-೮೪। 3. ಆಶ್ಚರ್ಯಕರವಾದ, ವಿಚಿತ್ರವಾದ, ವಿಲಕ್ಷಣವಾದ. "ಅಪೂರ್ವಂ ಹರೇರ್ಮಯಾ ತ್ರಿಗುಣಾ ರಜ್ಜುರೂಪಿಣಿ। ಯಯಾ ಮುಕ್ತೋ ನ ಚಲತಿ ಬದ್ಧೋ ಭಾವತಿ ಭಾವತಿ" ತತ್ವಂ। 4. ಮೊದಲನೆಯದಲ್ಲದ. 5. ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ. "ವಿದಿತೇಷ್ಯಪೂರ್ವಂ ಇವ ತತ್ರ ಹರಿ:" ಕಿರಾಂ ೬-೩. 6. "ಅ" ವರ್ಣವೇ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿರುವ. 7. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕು, -ದೇಶ, -ಕಾಲಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನವಾದ.

ಅಪೂರ್ವಪತಿ ಅಪೂರ್ವಪತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೊದಲು ಗಂಡನಿಲ್ಲದವಳು, ಹಿಂದೆ ಮದುವೆಯಾಗದವಳು, ಕನ್ಯೆ, ಕುಮಾರಿ. ನ ಪೂರ್ವ: ಪತಿಯಸ್ಯಾ:।

ಅಪೂರ್ವವಿಧಿ ಅಪೂರ್ವವಿಧಿ (ಪ್ರಂ) ಹೊಸ ಕಟ್ಟಿಗೆ, ಹೊಸ ಆಜ್ಞೆ, ಬೇರೆ ಪ್ರಮಾಣದಿಂದ ಹೇಳಲ್ಪಡದ ವಿಧಿ. "ಜ್ಯೋತಿಷ್ಠಿಮೇನ ಸ್ವರ್ಗಕಾಮೋ ಯಜೇತ" ಎಂಬ ವಾಕ್ಯದಿಂದ ಪ್ರಮಾಣಾಂತರದಿಂದ ಅಪ್ರಾಪ್ತವಾದ ವಿಧಿಯು ಬೋಧಿಸಲ್ಪಡುವುದು. ಈ ವಿಧಿಯು ಕರ್ಮವಿಧಿ, ಗುಣವಿಧಿ, ವಿನಿಯೋಗವಿಧಿ ಮತ್ತು ಪ್ರಯೋಗವಿಧಿಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕುವಿಧ.



ಅಪುಕ್ತ ಅಪುಕ್ತ (ಪುಂ) 1. (ಬೇರೆ ಅಕ್ಷರದಿಂದ ಕೂಡದೇ ಇರುವ) ಒಂದೇ ವರ್ಣದ ಸ್ಪರ್ಶ. "ಅಪುಕ್ತ ಏಕಾಕ್ಷರಪ್ರತ್ಯಯಃ" ಪಾಂ ಸೂಂ (೧-೨-೪೧)। (ವಿಂ) 2. ಕೂಡಿಕೊಂಡಿರದೆ, (ಮತ್ತೊಂದರೊಡನೆ) ಸೇರಿಕೊಂಡಿರದೆ, ಒಂಟಿಯಾದ. ಪೃಚ್ಛಿ (ಸಂಪರ್ಕ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। ಪುಕ್ತಃ। ನಂ ತಂ।

ಅಪೇಕ್ಷಣೀಯ ಅಪೇಕ್ಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ, ಇಚ್ಛಿಸಲ್ಪಡುವ, ಪ್ರಿಯವಾದ, ಇಷ್ಟವಾದ. ಅಪ+ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ಅನೀಯ್" (೩-೧-೯೬)। 2. ನಿರೀಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ, ನಿರೀಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ.

ಅಪೇಕ್ಷಮಾಣ ಅಪೇಕ್ಷಮಾಣ (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಇಚ್ಛಿಸುವ, ಆಸೆಪಡುವ. ಅಪ+ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ಶಾನಿ" (೩-೨-೧೨೪)। "ಭವತ್ಕೃತಾಂ ಭೂತಿಮಪೇಕ್ಷಮಾಣಃ" ಕಿರಾಂ ೩-೪೯।

ಅಪೇಕ್ಷಾ ಅಪೇಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಇಚ್ಛೆ, ಆಸೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಅಪ+ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩)। "ಅಧ್ಯಾತ್ಮರತಿರಾಸಿನೋ ನಿರಪೇಕ್ಷೋ ನಿರಾಮಿಷಃ" ಮನುಂ ೬-೪೯। 2. ಅವಶ್ಯಕತೆ, ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಬೇಕಾಗಿರುವಿಕೆ. "ಸ್ಫುಲಿಂಗಾವಸ್ಥಯಾ ವಹ್ನಿರೇಧಾಪೇಕ್ಷ ಇವ ಸ್ಥಿತಃ" ಶಾಕುಂ ೭-೧೫। "ಸೋಹಮವಸಿತಪ್ರತಿಜ್ಞಾಭರೋಽಪಿ ವೃಷಲಾಪೇಕ್ಷಯಾ ಶಸ್ತ್ರಂ ಧಾರಯಾಮಿ" ಮುಡ್ರಾಂ ೧। 3. ಅನ್ವಯ, ತಮ್ಮ ತಮ್ಮ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಕೊಡತಕ್ಕ ಪದಗಳಿಗೆ ಇರುವ ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧ; ಪದಗಳಿಗೆ ಸಮಾಸ ಬರಲು ಈ ಸಂಬಂಧವು ಮುಖ್ಯವಾದುದು. ಈ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ ಕಡೆ ಸಮಾಸ ಬರುವುದಿಲ್ಲ. ಮತ್ತು ಪ್ರತ್ಯಯವೂ ಬರುವುದಿಲ್ಲ. "ಸಾಪೇಕ್ಷೇ ಪ್ರತ್ಯಯೋ ನ ಸ್ಯಾತ್ ಸಮಾಸೋ ವಾ ಕಥಂಚನ। ಸಾಪೇಕ್ಷಂ ತದ್ವಿಜಾನೀಯಾದಸಮಸ್ತ-ವಿಶೇಷಣಮ್"। ಉದಾ: "ಋಷಸ್ಯ ರಾಜಃ ಪುರುಷಃ" ಇಲ್ಲಿ ಸಮಾಸವು ಬರುವುದಿಲ್ಲ. "ಪ್ರವೀರಂ ಪುತ್ರಮಾತ್ಮನ ಇಚ್ಛತಿ" ಇಲ್ಲಿ "ಕಾಮ್ಯಿ" ಪ್ರತ್ಯಯವೂ ಬರುವುದಿಲ್ಲ. 4. ಗಮನ, ಲಕ್ಷ್ಯ, ಎಚ್ಚರಿಕೆ, ಜಾಗರೂಕತೆ. "ದೇಶಾಪೇಕ್ಷಾಸ್ತಥಾ ಯುಂ ಯಾತಾಽಽದಾಯಾಜ್ಞುಲೀಯಕಮ್" ಭಟ್ಟಿಂ ೭-೪೯। 5. ನಿರೀಕ್ಷಣೆ, ಕಾಯುವಿಕೆ. 6. ಅವಲಂಬನೆ, ಆಶ್ರಯ, ಅಧೀನತೆ. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್"। ಅಪೇಕ್ಷಣಮ್ ಅಪೇಕ್ಷಣಮ್.

ಅಪೇಕ್ಷಿತ ಅಪೇಕ್ಷಿತ (ನಂ) 1. ಇಚ್ಛೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಆಸೆ. ಅಪ+ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಇಚ್ಛಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ+ಇಕ್ಷ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 3. ನಿರೀಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಎದುರು

ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಗಮನಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಎಚ್ಚರಿಕೆಯಿಂದ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅಪೇಕ್ಷಿನ್ ಅಪೇಕ್ಷಿನ್ (ವಿಂ) ಆಸೆಯುಳ್ಳ, ಆಸೆಪಡುವ. ಅಪೇಕ್ಷತೇ - ಅಪ+ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)। "ಪ್ರಯೋಜನಾಪೇಕ್ಷಿತಯಾ ಪ್ರಭುಣಾಂ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಲಂ ಗೌರವಮಾಶ್ರಿತೇಷು" ಕುಮಾಂ ೩-೧।

ಅಪೇಕ್ಷ್ಯ ಅಪೇಕ್ಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ, ಇಚ್ಛಿಸಲ್ಪಡುವ. ಅಪ+ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ಞ್" (೩-೧-೧೨೪)। (ಅವ್ಯಂ) 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ, ಆಸೆಪಟ್ಟು. ಅಪ+ಇಕ್ಷ "ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭)। "ಕಿಮಪೇಕ್ಷ್ಯ ಫಲಂ ಪಯೋಧರಾನ್ ಧ್ವನತಃ ಪ್ರಾರ್ಥಯತೇ ಮೃಗಾಧಿಪಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೨೧।

ಅಪೇತ ಅಪೇತ (ವಿಂ) 1. ಓಡಿಕೊಂಡ, ಹೊರಟು ಹೋದ. ಅಪ+ಇಙ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। 2. ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿವಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ+ಇಙ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಅಪೇತಯುಧಾಭಿನಿವೇಶಸೌಮ್ಯೋ ಹರಿಹರಪ್ರಸ್ಥಮಥ ಪ್ರತಸ್ಥೇ" ಮಾಧಂ ೩-೧। "ಅಪೇತ-ಭಾರಾಮತಿವೇದಮಾನುಷಃ" ಯಾದಂ ೧೪-೩೪।

ಅಪೇಯ ಅಪೇಯ (ವಿಂ) ಪಾನಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಲ್ಲದ (ಮದ್ಯ ಮುಂತಾದುದು). ನ ಪಾತುಂ ಯೋಗ್ಯಮ್ - ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಯತ್" (೩-೧-೯೭)। ಪಾನಮಾಡಲು ಅನರ್ಹವಾದುವು: ಲವಣಮಿಶ್ರವಾದ ಹಾಲು, ಕರುಹಾಕಿದ ಹತ್ತು ದಿವಸದೊಳಗೆ ಹಸುವಿನ ಹಾಲು, ಶೂದ್ರೋಚ್ಛಿಷ್ಟ, ಸ್ತ್ರೀಯರ ಉಚ್ಛಿಷ್ಟ, ಚಂಡಾಲಸ್ಪೃಷ್ಟ, ಚಂಡಾಲರು ತೋಡಿದ ಬಾವಿಯ ನೀರು, [ಆಪತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಈ ನೀರೂ ಸ್ನಾನಪಾನಾದಿಗಳಿಗೆ ಯೋಗ್ಯವು.] ಶೂದ್ರ ಮತ್ತು ಚಂಡಾಲರ ಪಾತ್ರಿೆಯಲ್ಲಿರುವ ನೀರು. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಅಪೋಗಂಡ ಅಪೋಗಂಡ (ವಿಂ) 1. ಅಂಗಹೀನ. ಅಪಸಿ ಕರ್ಮಣಿ ಗಂಡಃ ತ್ಯಾಜ್ಯಃ। "ವಿಕಲಾಙ್ಗಂತು ಸರ್ವತ್ರ ಧರ್ಮಕಾರ್ಯೇಷು ವರ್ಜಯೇತ್" ಸ್ಮೃತಿಃ। "ವಿಕಲಾಙ್ಗಸ್ತ್ವಪೋಗಂಡಃ" ಅಮಂ। 2. ಅಂಜುಬುರುಕ, ಹೇಡಿ, ಬಹಳ ಭಯಸ್ಪೃಭಾವದವನು. 3. ಶಿಶು, ಮಗು. "ಅಪೋಗಂಡೋತಿಭಿರೋ ಸ್ಯಾಚ್ಚಿಶುಕೇ ವಿಕಲಾಙ್ಗಕೇ" ಹೇಮಂ। 4. ತ್ರಿವಳಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಅಪೋಗಂಡಸ್ತು ವಲಿಭೇ ವಿಕಲಾಙ್ಗೇ ಶಿಶಾವಪಿ" ಮೇದಿಂ। 5. ಹದಿನಾರು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸು ಕಳೆದವನು. "ಬಾಲ ಆಪೋಡಶಾಢರ್ಷಾಽಪೋಗಂಡ ಇತಿ ಕಥ್ಯತೇ" ನಾರದಂ। ತದ್ವಿಂಶೋಪೋಗಂಡಃ।

ಅಪೊಡ ಅಪೊಡ (ವಿಂ) ತೃಪ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ+ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।



ಅಪೊಹ ಅಪೋಹ (ಛಂ) 1. ಪರಿತ್ಯಾಗ, ವರ್ಜಿಸುವುದು.  
2. ಸಂಶಯಪರಿಚ್ಛೇದ, ಸಂದೇಹವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವುದು.

ಅಪೊಹನೀಯ ಅಪೋಹನೀಯ (ವಿಂ) ಸಂಶಯವನ್ನು (ತಕ್ಕ ಕಾರಣಗಳಿಂದ) ಪರಿಹರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.  
ಅಪ+ಊಹ (ವಿತಕ್) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬)।

ಅಪೊಹ್ಯ ಅಪೋಹ್ಯ (ವಿಂ) 1. ವರ್ಜಿಸಲ್ಪಡುವ, ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಡುವ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ನಿವಾರಿಸಿ, ಹೋಗಲಾಡಿಸಿ.

ಅಪೌರುಷ ಅಪೌರುಷ (ನಂ) 1. ಪರಾಕ್ರಮವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಹೇಡಿತನ, ಅಧೈರ್ಯ, ಪುಕ್ಕಲು. (ವಿಂ) 2. ಪರಾಕ್ರಮವಿಲ್ಲದ, ಹೇಡಿ, ಅಧೀರ. ನಾಸ್ತಿ ಪೌರುಷಮಸ್ಯ।

ಅಪೌರುಷೇಯ ಅಪೌರುಷೇಯ (ನಂ) 1. ದಿವ್ಯಶಕ್ತಿ, ಅಮಾನುಷ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಅಮಾನುಷವಾದ, ಮನುಷ್ಯಕಲ್ಪಿತವಲ್ಲದ. ಪುರುಷೇಣ ಕೃತಂ ಪೌರುಷೇಯಮ್ - ಪುರುಷ "ಢ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೦)। ನಂ ತಂ।

ಅಪ್ಚರ ಅಪ್ಚರ (ವಿಂ) ಜಲಚರಪ್ರಾಣಿ. ಅಪ್ಪು ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಢ್" (೩-೨-೧೬)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಢಿಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಚರೀ-ಚರೀ.

ಅಪ್ಪತಿ ಅಪ್ಪತಿ (ಛಂ) 1. ವರುಣ. 2. ಸಮುದ್ರ. ಅಪಾಂ ಪತಿಃ।

ಅಪ್ಪಿತ್ತ ಅಪ್ಪಿತ್ತ (ನಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಅಪಾಂ ಪಿತ್ತಮಿವ। 2. ಚಿತ್ರಮೂಲದ ಗಿಡ.

ಅಪ್ರಕಮ್ಯ ಅಪ್ರಕಂಪ (ಛಂ) 1. ಚಲನೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ಪ್ರಕಮ್ಯಃ। 2. ಚಲನೆಯಿಲ್ಲದ. ನ ಪ್ರಕಮ್ಯೋ ಯಸ್ಯ।

ಅಪ್ರಕರ್ಷ ಅಪ್ರಕರ್ಷ (ಛಂ) 1. ಹೀನವಾಗಿರುವುದು, ಕಡಿಮೆಯಾಗಿರುವುದು. (ವಿಂ) 2. ಹೀನವಾದ, ಕಡಿಮೆಯಾದ, ಪ್ರಶಸ್ತವಲ್ಲದ.

ಅಪ್ರಕಾಂಡ ಅಪ್ರಕಾಂಡ (ಛಂ) ದಂಟಿಲ್ಲದ ಗಿಡ, ಲತೆ ಪೊದೆ ಮೊದಲಾದುದು. ನ ಪ್ರಕಾಂಡೋಸ್ಯ।

ಅಪ್ರಕಾಶ ಅಪ್ರಕಾಶ (ಛಂ) 1. ರಹಸ್ಯ, ಗುಟ್ಟು. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶವಲ್ಲದ, ರಹಸ್ಯವಾದ, ಗುಟ್ಟಾದ. "ಪ್ರಕಾಶಶ್ಚಾಪ್ರಕಾಶಶ್ಚ ಲೋಕಾಲೋಕ ಇವಾಚಲಃ" ರಘುಂ ೧-೬೮। (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3. ರಹಸ್ಯವಾಗಿ, ಗುಟ್ಟಾಗಿ.

ಅಪ್ರಕಾಶ್ಯ ಅಪ್ರಕಾಶ್ಯ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಲು ಅರ್ಹವಲ್ಲದ, ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡಲ್ಪಡತಕ್ಕ ವಿಷಯಗಳು: "ಜನ್ಮಕ್ಷಿಂ ಮೈಶುನಂ ಮನ್ತ್ರೋ ಗೃಹ್ಚಿಕ್ಷಿದ್ರಂ ಚ ವಚ್ಚನಮ್। ಆಯುರ್ಧನಾಪಮಾನಂ ಸ್ತ್ರೀ ನ ಪ್ರಕಾಶ್ಯಾನಿ ಸರ್ವಥಾ"।

ಅಪ್ರಕೃತ ಅಪ್ರಕೃತ (ನಂ) 1. ಉಪಮಾನ. [ಪ್ರಕೃತ ಉಪಮೇಯ. ಅಪ್ರಕೃತ ಉಪಮಾನ.] 2. ಮುಖ್ಯವಲ್ಲದ, ಅಪ್ರಧಾನವಾದ. 3. ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸದ, ಅಸಮಂಜಸವಾದ.

ಅಪ್ರಕೃತಿ ಅಪ್ರಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಾಂಖ್ಯಮತಸಿದ್ಧವಾದ ಪ್ರಕೃತಿಭಿನ್ನ (ಪುರುಷ). 2. ವಿಕೃತಿ, ಪ್ರಕೃತಿಯ ಕಾರ್ಯ. (ವಿಂ) 3. ಸ್ವಭಾವಶೂನ್ಯ, ನಿಸರ್ಗವಲ್ಲದ, ಸ್ವಾಭಾವಿಕವಲ್ಲದ.

ಅಪ್ರಕೃಷ್ಣ ಅಪ್ರಕೃಷ್ಣ (ವಿಂ) ಪ್ರಶಸ್ತವಲ್ಲದ, ನೀಚವಾದ.

ಅಪ್ರಗಲ್ಭ ಅಪ್ರಗಲ್ಭ (ವಿಂ) ಅಧೀರ, ಸಂಕೋಚದ ಸ್ವಭಾವದವನು. "ಛೃಷ್ಣಃ ಪಾರ್ಶ್ವೇ ವಸತಿ ನಿಯತಂ ದ್ವರತರಚಾ-ಪ್ರಗಲ್ಭಃ" ಹಿತೋಂ।

ಅಪ್ರಗುಣ ಅಪ್ರಗುಣ (ವಿಂ) 1. ಚಿದರಿದ, ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾದ. 2. ಪ್ರಶಸ್ತಗುಣವಿಲ್ಲದ. ನ ವಿವೃತೇ ಪ್ರಕೃಷ್ಣೋ ಗುಣೋ ಯಸ್ಯ।

ಅಪ್ರಜ ಅಪ್ರಜ (ಛಂ) 1. ಪ್ರಜೆಯಿಲ್ಲದವನು, ಸಂತಾನವಿಲ್ಲದವನು, ಪುತ್ರರೂಪದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವನು. "ಆತ್ಮಾ ವೈ ಪುತ್ರನಾಮಾಸಿ" ಎಂಬ ಶ್ರುತಿಯಂತೆ ತಾನೇ ಪುತ್ರರೂಪದಿಂದ ಜನಿಸುವುದರಿಂದ ನ ಪ್ರಜಾಯತೇ ಆತ್ಮರೂಪೇಣ ಎಂಬ ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಯಿಂದ ಸಂತಾನವಿಲ್ಲದವನು ಅಪ್ರಜನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಅಪ್ರಜಾ ಅಪ್ರಜಾ. ಮಕ್ಕಳಿಲ್ಲದವಳು, ಬಂಜೆ.

ಅಪ್ರಜಸ್ ಅಪ್ರಜಸ್ (ಛಂ) ಪ್ರಜೆಯಿಲ್ಲದ, ಮಕ್ಕಳಿಲ್ಲದ. ನ ಪ್ರಜಾ ಸಂತತಿಯಸ್ಯ "ಅಸಿಚ್" (೪-೪-೧೨೨)। "ಅತಿತಾಯಾಮಪ್ರಜಸಿ ಬಾಂಧವಾಸ್ತದವಾನ್ಯುಯಃ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೪೪।

ಅಪ್ರಜಾತಾ ಅಪ್ರಜಾತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಂಜೆ, ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಹಡೆಯದವಳು. ನ ಪ್ರಜಾತಾ।

ಅಪ್ರಣೀತ ಅಪ್ರಣೀತ (ವಿಂ) ಪವಿತ್ರಗೊಳಿಸಲ್ಪಡದ, ಶುದ್ಧಿಮಾಡಲ್ಪಡದ, ಶಾಸ್ತ್ರವಿಧಾನದಿಂದ ಸಂಸ್ಕಾರಹೊಂದದ. (ಅಗ್ನಿ ಮುಂತಾದುದು.)

ಅಪ್ರತರ್ಕ್ಯ ಅಪ್ರತರ್ಕ್ಯ (ವಿಂ) ಊಹಿಸಲು ಶಕ್ಯವಲ್ಲದ, ಅನುಮಾನದಿಂದ ತಿಳಿಯಲಾಗದ. "ಅಪ್ರತರ್ಕ್ಯತರಸೋ ಗರ್ಹತಮತಃ" ಯಾದಂ ೧೭-೬೧।

ಅಪ್ರತಿಕರ ಅಪ್ರತಿಕರ (ವಿಂ) ನಂಬಿಕೆಯವನು, ವಿಶ್ವಾಸಪಾತ್ರ, ಅನುಕೂಲವಾಗಿರುವ.

ಅಪ್ರತಿಕರ್ಮನ್ ಅಪ್ರತಿಕರ್ಮನ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತೀಕಾರಮಾಡಲು ಶಕ್ಯವಲ್ಲದ. 2. ಪ್ರತೀಕಾರವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ



ಪ್ರತಿಕರ್ಮ ಪ್ರತೀಕಾರೋ यस್ಯ । 3. ಸಮಾನವಾದ ಕೆಲಸವಿಲ್ಲದ.  
 ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙಾಪ್" (೪-೧-೧೩) । ಅಪ್ರತಿಕರ್ಮ-ಕರ್ಮಾಫ.  
 ಅಪ್ರತಿಕ್ರಿಯ ಅಪ್ರತಿಕ್ರಿಯ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆ  
 ಯಿಲ್ಲದ. 2. ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆ ಮಾಡಲು ಶಕ್ಯವಿಲ್ಲದ.  
 ನಾಸ್ತಿ ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಾ ಯಸ್ಯ ।  
 ಅಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಾ ಅಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆ  
 ದಿರುವಿಕೆ. ನಂ ತಂ ।  
 ಅಪ್ರತಿಗ್ರಾಹ್ಯ ಅಪ್ರತಿಗ್ರಾಹ್ಯ (ವಿಂ) ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು  
 ಯೋಗ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಸ್ವೀಕರಿಸಲು ಅರ್ಹವಿಲ್ಲದ. ನ  
 ಪ್ರತಿಗ್ರಾಹ್ಯಂ ಯೋಗ್ಯಮ್ ।  
 ಅಪ್ರತಿಘ ಅಪ್ರತಿಘ (ವಿಂ) ಜಯಿಸಲಾಗದ, ಪ್ರತಿಘ  
 ಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಪ್ರತಿಘಾ ಯಸ್ಯ ।  
 ಅಪ್ರತಿವಿಧ ಅಪ್ರತಿವಿಧ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಎದುರಾಳಿಯಿಲ್ಲದ,  
 ಎದುರಿಸುವವನಿಲ್ಲದ. 2. ಸಮಾನವಿಲ್ಲದ, ಈಡಿಲ್ಲದ.  
 "ಪೋಷಣಿ ಚಾಪ್ರತಿವಿಧ್ಯಃ ಶರಣಂ ಜಹಿ ರಾವಣಿಮ್" ರಾಮಾಂ ।  
 ಅಪ್ರತಿಪಕ್ಷ ಅಪ್ರತಿಪಕ್ಷ (ವಿಂ) 1. ವಿರೋಧಿಯಿಲ್ಲದ,  
 ಶತ್ರುಗಳಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಃ ಶತ್ರುಯಸ್ಯ । 2. ಅಸ  
 ದೃಶ್ಯ, ಅಸಮಾನ. ನಾಸ್ತಿ ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಃ ಸದೃಶೋ ಯಸ್ಯ ।  
 ಅಪ್ರತಿಪತ್ತಿ ಅಪ್ರತಿಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನಂಗೀಕಾರ,  
 ಅಸಮ್ಮತಿ. 2. ಅನಿಶ್ಚಯ, ಏನು ಮಾಡಬೇಕೆಂಬ  
 ನಿರ್ಧಾರವಿಲ್ಲದಿರುವುದು, ಗಾಬರಿ, ಗಡಿಬಿಡಿ. "ಯುಃ  
 ಕ್ಷಣಾದಪ್ರತಿಪತ್ತಿಮೂಢತಾಂ ಮಹಾನುಭಾವಃ ಪ್ರತಿಹಂತಿ ಪೋಷಮ್"  
 ಕಿರಾಂ ೧೪-೪೩ । 3. ಅಪ್ರತಿಭೆ, ಸ್ಫೂರ್ತಿಯಿಲ್ಲದಿರು  
 ವುದು. 4. ತಾತ್ಪಾರ, ಅನಾದರ, ಅಲಕ್ಷ್ಯ.  
 ಅಪ್ರತಿಪನ್ನ ಅಪ್ರತಿಪನ್ನ (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ.  
 2. ಸ್ವೀಕರಿಸಲ್ಪಡದ, ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಡದ, ಸಮ್ಮತಿಸ  
 ಲ್ಪಡದ.  
 ಅಪ್ರತಿಬದ್ಧ ಅಪ್ರತಿಬದ್ಧ (ವಿಂ) ತಡೆಯಲ್ಪಡದ, ಎದು  
 ರಿಸಲ್ಪಡದ. ನ ಪ್ರತಿಬದ್ಧಃ ।  
 ಅಪ್ರತಿಬಂಧ ಅಪ್ರತಿಬಂಧ (ಪುಂ) 1. ತಡೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ,  
 ವಿರೋಧವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ತಡೆಯಿಲ್ಲದ,  
 ವಿರೋಧವಿಲ್ಲದ. ನ ಪ್ರತಿಬಂಧೋ ಯಸ್ಯ ।  
 ಅಪ್ರತಿಬಲ ಅಪ್ರತಿಬಲ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತಿಪಕ್ಷವಿಲ್ಲದ,  
 ಶತ್ರುಗಳಿಲ್ಲದ. 2. ಪ್ರಬಲನಾದ, ಹೆಚ್ಚು ಬಲಶಾಲಿ  
 ಯಾದ. ನಾಸ್ತಿ ಪ್ರತಿಬಲೋ ಯಸ್ಯ ಯಸ್ಮಾದ್ವಾ ।  
 ಅಪ್ರತಿಭ ಅಪ್ರತಿಭ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತಿಭೆಯಿಲ್ಲದವನು,  
 ಸ್ಫೂರ್ತಿಯಿಲ್ಲದವನು. 2. ಸಂಕೋಚ ಸ್ವಭಾವದ.  
 3. ಅಪ್ರಗಲ್ಬ, ಧೈರ್ಯವಿಲ್ಲದ.

ಅಪ್ರತಿಭಾ ಅಪ್ರತಿಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬುದ್ಧಿಯು ಹೊಳೆಯ  
 ದಿರುವುದು, ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಹೊಸ ಹೊಸದಾಗಿ  
 ಉತ್ತರಕೊಡಲು ಸ್ಫೂರ್ತಿಯುಂಟಾಗದಿರುವುದು.  
 2. ಸಂಕೋಚ.  
 ಅಪ್ರತಿಮ ಅಪ್ರತಿಮ (ವಿಂ) ಸಮಾನವಿಲ್ಲದ, ಅಸದೃಶ,  
 ಈಡಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಪ್ರತಿಮಾ ಉಪಮಾ ಯಸ್ಯ । "ತ್ವಾಮಪ್ರತಿಮ-  
 ಕರ್ಮಣಿಮಪ್ರತಿವಿಧಮಾಹವೇ" ರಾಮಾಂ ।  
 ಅಪ್ರತಿಯೋಗಿನ್ ಅಪ್ರತಿಯೋಗಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಸಮಾನ  
 ವಿಲ್ಲದ, ಅಸದೃಶ. 2. ಎದುರಾಳಿಯಿಲ್ಲದ, ಶತ್ರುಗಳಿಲ್ಲದ.  
 ಅಪ್ರತಿರಥ ಅಪ್ರತಿರಥ (ವಿಂ) 1. ಶತ್ರುಗಳಿಲ್ಲದ,  
 ಎದುರಾಳಿಯಿಲ್ಲದ. ನ ವಿರಥೇ ಪ್ರತಿರಥೋ ಯಸ್ಯ ।  
 "ದೌರ್ಯಂತಿಮಪ್ರತಿರಥಂ ತನಯಂ ನಿವೇಶ್ಯ" ಶಾಕುಂ ೪-೧೯ ।  
 2. ಅಪ್ರತಿಮ, ಸಮಾನವಿಲ್ಲದ, ಅಜೇಯ.  
 ಅಪ್ರತಿರೂಪ ಅಪ್ರತಿರೂಪ (ವಿಂ) ಅಪ್ರತಿಮ, ಸಮಾನ  
 ವಿಲ್ಲದ, ಅಸದೃಶ. ನಾಸ್ತಿ ಪ್ರತಿರೂಪಃ ತುಲ್ಯರೂಪೋ ಯಸ್ಯ ।  
 ಅಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ಅಪ್ರತಿಷ್ಠಾ (ನಂ) 1. (ಸ್ವಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿರುವ)  
 ಪರಬ್ರಹ್ಮ. (ವಿಂ) 2. ಆಶ್ರಯವಿಲ್ಲದ. 3. ಪ್ರಶಸ್ತ  
 ವಿಲ್ಲದ, ನಿಂದ್ಯವಾದ. 4. ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ.  
 "ಸೋಮವಿಕ್ರಯಿಣಿ ವಿಷ್ಣುಃ ಪಿಷಜೇ ಪುಷ್ಯಶೋಣಿತಮ್ । ನಷ್ಟಂ  
 ದೇವಲಕೇ ದತ್ತಮಪ್ರತಿಷ್ಠಂ ತು ವಾಡುಷಿ" ಮನುಂ ೩-೧೮೦ ।  
 5. ಅಸ್ಥಿರವಾದ. 6. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದ.  
 ಅಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ಅಪ್ರತಿಷ್ಠಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಸ್ಥಿರತೆ, ಚಾಂಚಲ್ಯ.  
 ಅಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಅಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ (ವಿಂ) ಅಸ್ಥಿರವಾದ, ಚಂಚಲ  
 ವಾದ.  
 ಅಪ್ರತಿಶ್ರುತ ಅಪ್ರತಿಶ್ರುತ (ವಿಂ) ಒಪ್ಪಲ್ಪಡದ, ಅಂಗೀ  
 ಕರಿಸಲ್ಪಡದ.  
 ಅಪ್ರತಿಹತ ಅಪ್ರತಿಹತ (ವಿಂ) 1. ಇತರರಿಂದ ಎದುರಿಸ  
 ಲ್ಪಡದ, ತಡೆಯಲ್ಪಡದ. 2. ಕೆಡಿಸಲ್ಪಡದ, ಭಂಗ  
 ಪಡಿಸಲ್ಪಡದ.  
 ಅಪ್ರತೀಕ ಅಪ್ರತೀಕ (ನಂ) 1. ಪರಬ್ರಹ್ಮ (ನಿರಾಕಾರ).  
 (ವಿಂ) 2. ಅವಯವವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಪ್ರತೀಕೋಽವಯವೋ ಯಸ್ಯ ।  
 ಅಪ್ರತೀಕ್ಷ ಅಪ್ರತೀಕ್ಷ (ವಿಂ) ನಿರೀಕ್ಷಿಸದಿರುವ, ಎದುರು  
 ನೋಡದಿರುವ. ನ ಪ್ರತೀಕ್ಷತೇ-ಪ್ರತಿ+ಕ್ಷಿ (ದರ್ಶನೆ)  
 "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) ।  
 -ಕ್ಷಿಮಾಣಃ -ಈಕ್ಷಮಾಣಃ ।  
 ಅಪ್ರತೀಕ್ಷಾ ಅಪ್ರತೀಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಿರೀಕ್ಷಿಸದಿರುವ  
 ವುದು, ಪ್ರತ್ಯಾಶೆಯಿಂದ ಎದುರು ನೋಡದಿರುವುದು.  
 ನಂ ತಂ ।



ಅಪ್ರತಿತ ಅಪ್ರತಿತ (ಪ್ರಂ) 1. ಒಂದು ಶಬ್ದದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪದ. [ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರೋತ್ಥಾ ಸರಿಯಾಗಿ ದ್ದರೂ ಲೋಕವ್ಯವಹಾರದಲ್ಲಿಯೂ ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿಲ್ಲದ ಪದವು ಅಪ್ರತಿತವೆಂದು ದೋಷಯುಕ್ತವಾದುದು. "ಅಪ್ರತಿತವೇಕದೇಶಮಾತ್ರಪ್ರಸಿದ್ಧವು" ಸಾಂ. ೧೦. "ಯೋಗೇನ ದಲಿತಾಶಯಃ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪ್ರಕೃತಿ ಪುರುಷರ ಅಭೇದಚಿಂತನೆಯಿಂದ ನಾಶವಾದ ವಾಸನೆಯುಳ್ಳ ಎಂದರ್ಥವು. "ಕಲೇಶಕರ್ಮವಿಪಾಕಾಶಯೇರಪರಾಮೃಷ್ಠಃ ಪುರುಷ-ವಿಶೇಷ ಇವರಃ" (ಪಾಂ. ಯಂ. ಸಂ. ೧-೨೪) ಎಂಬ ಸೂತ್ರದಲ್ಲಿ ಆಶಯ ಪದವು ವಾಸನೆ (ಸಂಸ್ಕಾರ) ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದರಿಂದಲೂ ಯೋಗ ಶಾಸ್ತ್ರಮಾತ್ರಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ ಆಶಯ ಪದವು ಇತರರಿಗೆ ಅರ್ಥವಾಗದಿರುವುದರಿಂದಲೂ ಅಪ್ರತಿತವೆಂದು ದೋಷಯುಕ್ತವಾದುದು.] (ವಿಂ) 2. ಹಿಮ್ಮೆಟ್ಟಿದಿರುವ, ಓಡಿ ಹೋಗದಿರುವ. 3. ತಿಳಿಯಲಾಗದ, ಅರ್ಥವಾಗದ. 4. ಪ್ರಸಿದ್ಧವಲ್ಲದ.

ಅಪ್ರತಿತತ್ವ ಅಪ್ರತಿತತ್ವ (ನಂ) ಪ್ರಸಿದ್ಧವಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. [ನಿವರಕ್ಕೆ "ಅಪ್ರತಿತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಅಪ್ರತಿತಿ ಅಪ್ರತಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಪ್ರಸಿದ್ಧಿ. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯದಿರುವಿಕೆ, ಅಸ್ಪಷ್ಟತೆ.

ಅಪ್ರತಿಪ ಅಪ್ರತಿಪ (ವಿಂ) ವಿರುದ್ಧವಲ್ಲದ, ಅನುಕೂಲವಾದ.

ಅಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ ಅಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ (ವಿಂ) ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಂದ ತಿಳಿಯಲಾಗದ, ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗದ.

ಅಪ್ರತ್ಯಯ ಅಪ್ರತ್ಯಯ (ಪ್ರಂ) 1. ಅನಿಶ್ವಾಸ, ಅಪನಂಬಿಕೆ. 2. ಅಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ಪ್ರತ್ಯಯೋ ವಿಶ್ವಾಸೋ ಜ್ಞಾನಂ ವಾ। (ವಿಂ) 3. ನಂಬಿಕೆಯಿಲ್ಲದ, ವಿಶ್ವಾಸವಿಲ್ಲದ. "ಬಲವದಪಿ ಶಿಕ್ಷಿತಾನಾಮಾತ್ಮನ್ಯಪ್ರತ್ಯಯಂ ಚೇತಃ" ಶಾಕುಂ. ೧-೨. 4. ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. 5. ಪ್ರಕೃತಿ, ಸುಬಾದಿಪ್ರತ್ಯಯವಿಲ್ಲದ (ಕೇವಲ ಪ್ರಾತಿಪದಿಕ ರೂಪವಾದ) ಶಬ್ದಸ್ವರೂಪ. 6. ಉಳಿಯದಿರುವ (ಕ್ರಿಪ್, ಕ್ಲಿನ್, ವಿಕ್ ಇತ್ಯಾದಿ) ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು. [ಇವು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಉಪ್ತವಾಗುವುದರಿಂದ ಅಪ್ರತ್ಯಯಗಳು.] "ವಿಷ್ಣುಏವಯೋಶ್ಚ ಟೇರಣ್ವತಾವಪ್ರತ್ಯಯೇ" ಪಾಂ. ಸಂ. (೬-೩-೧೨)।

ಅಪ್ರಧಾನ ಅಪ್ರಧಾನ (ನಂ) 1. ಪ್ರಧಾನಕರ್ಮದ ಅಂಗ. (ವಿಂ) 2. ಮುಖ್ಯವಲ್ಲದ, ಗೌಣ, ಎರಡನೆಯ ದರ್ಜೆಯ. 3. ಕೆಳಮಟ್ಟದ, ಕೆಳದರ್ಜೆಯ.

ಅಪ್ರಧುಷ್ಯ ಅಪ್ರಧುಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಮಾರಲು ಶಕ್ಯವಲ್ಲದ. 2. ಜಯಿಸಲಾಗದ, ಎದುರಿಸಲಾಗದ. ನ ಪ್ರಧುಷಿತುಂ ಶಕ್ಯಃ। "ಯಸ್ಯಾಪ್ರಧುಷ್ಯಃ ಪ್ರಭವಸ್ತವಮುಚ್ಛೇಃ" ಮಾಲಂ. ೪-೧೭।

ಅಪ್ರಭು ಅಪ್ರಭು (ವಿಂ) 1. ಅಸಮರ್ಥ, ಅಶಕ್ತ, ಯೋಗ್ಯತೆಯಿಲ್ಲದವನು. ನ ಪ್ರಭವತಿ - ಪ್ರ + ಭು (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಛುಃ" (೩-೨-೧೮೦)। 2. ರಾಜನಿಲ್ಲದ (ದೇಶ).

ಅಪ್ರಮತ್ತ ಅಪ್ರಮತ್ತ (ಪ್ರಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. "ಅಪಾನಿಧಿರ-ಧಿಷ್ಠಾನಮಪ್ರಮತ್ತಃ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಃ" ವಿಂ. ಸಂ. (ವಿಂ) 2. ಜಾಗರೂಕ, ಎಚ್ಚರಿಕೆಯುಳ್ಳ. 3. (ಮದ್ಯಪಾನದಿಂದ) ಮದಿಸಿದವನಲ್ಲದ.

ಅಪ್ರಮಾದ ಅಪ್ರಮಾದ (ಪ್ರಂ) 1. ಎಚ್ಚರಿಕೆ, ಜಾಗರೂಕತೆ. (ವಿಂ) 2. ಎಚ್ಚರಿಕೆಯುಳ್ಳ, ಜಾಗರೂಕತೆಯುಳ್ಳ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3. ಎಚ್ಚರಿಕೆಯಿಂದ, ಜಾಗರೂಕತೆಯಿಂದ. ನ ವಿವ್ರತೇ ಪ್ರಮಾದಃ ಯಸ್ಮಿನ್ ಕರ್ಮಣಿ।

ಅಪ್ರಮಾದಿನ್ ಅಪ್ರಮಾದಿನ್ (ವಿಂ) ಎಚ್ಚರಿಕೆಯುಳ್ಳ, ಜಾಗರೂಕನಾದ. ನ ಪ್ರಮಾದೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ।

ಅಪ್ರಮಿತ ಅಪ್ರಮಿತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಸಿದ್ಧನಲ್ಲದವನು. 2. ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅಪರಿಮಿತವಾದ, ಅಳತೆಮೀರಿದ. 3. ಪ್ರಮಾಣಗಳಿಂದ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ.

ಅಪ್ರಮೃಷ್ಠ ಅಪ್ರಮೃಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಸಹಿಸಲ್ಪಡದ. ನ + ಪ್ರ + ಮೃಷ (ಸಹನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಉಜ್ಜಲ್ಪಡದ, ಶುದ್ಧಮಾಡಲ್ಪಡದ. ಮೃಜು (ಘಡ್ಡೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 3. ಅಳಿಸಲ್ಪಡದ, ತೊಳೆಯಲ್ಪಡದ. 4. ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ. ಮೃಶ (ಆಮಶೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅಪ್ರಮೃಷ್ಯ ಅಪ್ರಮೃಷ್ಯ (ವಿಂ) ತೊಂದರೆಪಡಿಸಲಾಗದ, ಬಾಧಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. ಪ್ರ + ಮೃಷ "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)।

ಅಪ್ರಮೇಯ ಅಪ್ರಮೇಯ (ನಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಪರಮಾತ್ಮ. [ಪರಬ್ರಹ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಯಾವ ಪ್ರಮಾಣದಿಂದಲೂ ತಿಳಿಯಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ.] (ವಿಂ) 2. ಅಳಿಯಲಾಗದ. ನ ಪ್ರಮಾತುಂ ಯೋಗ್ಯಮ್। 3. ತಿಳಿಯಲಾಗದ, ತಿಳಿಯಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. 4. ನಿರ್ಣಯಿಸಲಾಗದ, ಹೀಗೆಂದು ಹೇಳಲಾಗದ.

ಅಪ್ರಯತ್ನ ಅಪ್ರಯತ್ನ (ಪ್ರಂ) 1. ಪ್ರಯತ್ನವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಉದಾಸೀನತೆ. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಯತ್ನವಿಲ್ಲದ, ಉದಾಸೀನನಾದ. "ಅಪ್ರಯತ್ನಃ ಸುಖಾರ್ಥೇ ಭ್ರಾತಾರಿ ಭರಾಶಯಃ" ಮನುಂ. ೬-೨೬।



ಅಪ್ರಯುಕ್ತ ಅಪ್ರಯುಕ್ತ (ನಂ) 1. ಶಾಸ್ತ್ರಕಾರರಿಂದ ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದ್ದರೂ ಕವಿಗಳಿಂದ ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡದ ಪದ. "ತಥಾ ಮನ್ಯೇ ದೈವತೋಽಸ್ಯ ಪಿಶಾಚೋ ರಾಕ್ಷಸೋಽಪಿ" "ಎಂಬಲ್ಲಿ ದೈವತ ಪದವು ಅಮರಸಿಂಹನಿಂದ ಪುನಃಪುನಃಕದಲ್ಲಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿದ್ದರೂ ಯಾವ ಕವಿಯೂ ಪುಲ್ಲಿಂಗದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸದಿರುವುದರಿಂದ ಅಪ್ರಯುಕ್ತತ್ವ ದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು. (ವಿಂ) 2. ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡದ. 3. ಅಕ್ರಮವಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

ಅಪ್ರಲಮ್ಬ ಅಪ್ರಲಂಬ (ನಂ) 1. ವೇಗ, ಶೀಘ್ರತೆ. (ವಿಂ) 2. ವೇಗವಾದ, ಚುರುಕಾದ.

ಅಪ್ರವರ್ತಕ ಅಪ್ರವರ್ತಕ (ವಿಂ) 1. ಜಡ, ಮಂದ, ಕೆಲಸಮಾಡದಿರುವ, ಸೋಮಾರಿ. 2. ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಪ್ರೇರಕನಲ್ಲದ, ಕೆಲಸವನ್ನು ಮಾಡಿಸದ.

ಅಪ್ರವರ್ತನ ಅಪ್ರವರ್ತನ (ನಂ) ಕೆಲಸಮಾಡದಿರುವಿಕೆ, ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ತೊಡಗದಿರುವಿಕೆ.

ಅಪ್ರವರ್ತನ್ ಅಪ್ರವರ್ತನ್ (ವಿಂ) ಕೆಲಸಮಾಡದಿರುವ, ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ತೊಡಗದಿರುವ, ಸೋಮಾರಿ. ನ ಪ್ರವರ್ತನೆ—ಪ್ರ+ವೃತ್ತ (ವರ್ತನೆ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೧-೧೩೪)।

ಅಪ್ರವೃತ್ತಿ ಅಪ್ರವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಡತೆ, ನಿಶ್ಚಲತೆ, ಕೆಲಸ ಮಾಡದಿರುವಿಕೆ, ಸೋಮಾರಿತನ.

ಅಪ್ರಶಸ್ತ ಅಪ್ರಶಸ್ತ (ವಿಂ) 1. ಶ್ಲಾಘ್ಯವಲ್ಲದ, ಗುಣ ಹೀನ, ನಿಷ್ಪ್ರಯೋಜಕ. 2. ನಿಂದಿತವಾದ, ತುಚ್ಛವಾದ, ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಬಾರದ. ನ ಪ್ರಶಸ್ತ:।

ಅಪ್ರಸಕ್ತ ಅಪ್ರಸಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಸಂಬಂಧಪಡದ, ಅಪ್ರಕೃತವಾದ. 2. ಆಗ್ರಹವಿಲ್ಲದ, ಸೌಮ್ಯವಾದ. 3. ಸೇರಿಕೊಂಡಿಲ್ಲದ. 4. ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ವಿಷಯವಾಗದ.

ಅಪ್ರಸಕ್ತಿ ಅಪ್ರಸಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊಂದಿಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ಶಾಂತತೆ, ಸೌಮ್ಯತೆ. 4. ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ವಿಷಯವಾಗದಿರುವಿಕೆ.

ಅಪ್ರಸಂಗ ಅಪ್ರಸಂಗ (ಛಂ) 1. ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಹೊಂದಿಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 3. ಅಸಂಗತವಾದ, ಹೊಂದಿಕೆಯಿಲ್ಲದ.

ಅಪ್ರಸನ್ನ ಅಪ್ರಸನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಸ್ವಚ್ಛವಲ್ಲದ, ತಿಳಿಯಲ್ಲದ, ಬಗ್ಗಡವಾದ. 2. ಅಸಂತುಷ್ಟ, ಸಂತೋಷಪಡದ. 3. ಮನಃಕಾಲುಷ್ಯವುಳ್ಳ. "ಅಪ್ರಸನ್ನಮಪರಾಧರೀ ಪತ್ಯಾ" ಮಾಘಂ ೧೦-೧೪। 4. ತೃಪ್ತಿಯಿಲ್ಲದ, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಸಮಾಧಾನವಿಲ್ಲದ.

ಅಪ್ರಸಾದ ಅಪ್ರಸಾದ (ಛಂ) 1. ಅಸಮಾಧಾನ. 2. ಪ್ರೀತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ಕೋಪ.

ಅಪ್ರಸಾದ್ಯ ಅಪ್ರಸಾದ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಬಹಳ ಕೋಪದಿಂದ ಕೂಡಿದ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸದೆ.

ಅಪ್ರಸಿದ್ಧ ಅಪ್ರಸಿದ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಪಡೆಯದ, ಮುಖ್ಯವಲ್ಲದ. ನ ಪ್ರಸಿದ್ಧ:। "ಅಪ್ರಸಿದ್ಧಂ ಯಶಸೇ ಹಿ ಪುನಾಮನನ್ಯಸಾಧಾರಣಮೇವ ಕರ್ಮ" ಕುಮಾರಂ ೩-೧೯। 2. ರೂಢವಲ್ಲದ, ಬಳಕೆಯಲ್ಲಿಲ್ಲದ (ಪದ). [ಶಾಸ್ತ್ರಸಮ್ಮತವಾಗಿದ್ದರೂ ರೂಢಿಯಲ್ಲಿಲ್ಲದ ಪದಗಳ ಪ್ರಯೋಗವು ದೋಷಯುಕ್ತವಾದುದು.]

ಅಪ್ರಾಸ್ತಾವಿಕ ಅಪ್ರಾಸ್ತಾವಿಕ (ವಿಂ) ಪ್ರಕೃತವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಪಡದ, ಅಸಂಗತವಾದ, ಬೇರೆ ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.

ಅಪ್ರಸ್ತುತ ಅಪ್ರಸ್ತುತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕೃತ ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಪಡದ, ಬೇರೆ ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. 2. ಅಬದ್ಧಕಂತೆ, ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ ಮಾತು. "ರೇಗೋರ್ಮಾ ಕಿಮಪ್ರಸ್ತುತಂ ಲಪಸಿ" ಪञ्ಚತಂ ।

ಅಪ್ರಸ್ತುತಪ್ರಶಂಸಾ ಅಪ್ರಸ್ತುತಪ್ರಶಂಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ; ಅಪ್ರಸ್ತುತ (ಅಪ್ರಕೃತ) ವಾದ ಅರ್ಥವರ್ಣನೆಯಿಂದ ಪ್ರಸ್ತುತ (ಪ್ರಕೃತ) ವಾದ ಅರ್ಥಕ್ಕೆ ಪ್ರತೀತಿಯುಂಟಾದಲ್ಲಿ ಅಪ್ರಸ್ತುತ ಪ್ರಶಂಸಾಲಂಕಾರವು. ಇದು

1. ಕಾರ್ಯವು ಪ್ರಸ್ತುತವಾದರೆ ಅಪ್ರಸ್ತುತ ಕಾರಣದ ವರ್ಣನೆ
2. ಕಾರಣವು ,, ಅಪ್ರಸ್ತುತ ಕಾರ್ಯದ ವರ್ಣನೆ
3. ಸಾಮಾನ್ಯವು ,, ಅಪ್ರಸ್ತುತ ವಿಶೇಷ ವರ್ಣನೆ
4. ವಿಶೇಷವು ,, ಅಪ್ರಸ್ತುತ ಸಾಮಾನ್ಯ ವರ್ಣನೆ
5. ಸಮಾನವಿಷಯವು ,, ಅಪ್ರಸ್ತುತ ಸಮಾನವಿಷಯ ವರ್ಣನೆ.

ಈ ರೀತಿ ಐದು ವಿಧವಾಗುವುದು. "ಕಾರ್ಯೇ ನಿಮಿತ್ತೇ ಸಾಮಾನ್ಯೇ ವಿಶೇಷೇ ಪ್ರಸ್ತುತೇ ಸತಿ। ತದನ್ಯಸ್ಯ ವಚಸ್ತುಲ್ಯೇ ತುಲ್ಯಸ್ಯೇತಿ ಚ ಪञ್ಚಧಾ" ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ ।



ಅಪ್ರಹತ ಅಪ್ರಹತ (ನಂ) 1. ಚಲುವೆಮಾಡಲ್ಪಡದ ಬಟ್ಟೆ.

“ईषद्वीतं नवं श्वेतं सदशं यन्न धारितम्। निर्णयका-  
क्षालितं चाप्रहतं वास उच्यते”। (ವಿಂ) 2. ನೇಗಿಲಿ

ನಿಂದ ಉಳಲ್ಪಡದ ಭೂಮಿ, ಬಂಜರು ಭೂಮಿ.

ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಅಪ್ರಹತಾ ಅಪ್ರಹತಾ. (ವಿಂ) 3. ಖಿಲವಾಗದ,  
ನಾಶವಾಗದ, ಗಾಯವಾಗದ, ಸವೆಯದ.

ಅಪ್ರಹಿತ ಅಪ್ರಹಿತ (ವಿಂ) ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡದ. ನ ಪ್ರಹಿತ:।

ಅಪ್ರಾಕರಣಿಕ ಅಪ್ರಾಕರಣಿಕ (ವಿಂ) ಅಪ್ರಸ್ತುತವಾದ,  
ಪ್ರಕೃತವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಪಡದ.

ಅಪ್ರಾಕೃತ ಅಪ್ರಾಕೃತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕೃತಿಗೆ ಸಂಬಂಧ  
ಪಡದ, ಪ್ರಕೃತಿಯ ಕಾರ್ಯವಲ್ಲದ. 2. ಅಸಾಧಾರಣ  
ವಾದ, ಲೋಕೋತ್ತರವಾದ. 3. ಸ್ವಾಭಾವಿಕವಲ್ಲದ,  
ಅನೈಸರ್ಗಿಕವಾದ.

ಅಪ್ರಾಪ್ತ ಅಪ್ರಾಪ್ತ (ವಿಂ) ಪ್ರಧಾನವಲ್ಲದ, ಮುಖ್ಯ  
ವಲ್ಲದ.

ಅಪ್ರಾಣ ಅಪ್ರಾಣ (ಪ್ರಂ) 1. ಈಶ್ವರ, ಪರಮಾತ್ಮ.  
“अप्राणो ह्यमनाः शुभ्रो ह्यक्षरात्परतः परः” ಶ್ರುತಿ:।  
(ವಿಂ) 2. ಪ್ರಾಣವಿಲ್ಲದ.

ಅಪ್ರಾಪ್ತ ಅಪ್ರಾಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲ್ಪಡದ,  
ಪಡೆಯದಿರುವ. 2. ಸೇರದಿರುವ, ತಲುಪದಿರುವ.  
3. ಪ್ರಮಾಣಾಂತರದಿಂದ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ. 4. ವಿವಾ  
ಹಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ವಯಸ್ಸನ್ನು ಹೊಂದದಿರುವ.

ಅಪ್ರಾಪ್ತಕಾಲ ಅಪ್ರಾಪ್ತಕಾಲ (ನಂ) 1. ಆಕ್ರಮವಾದ  
ವಾದ, ಕ್ರಮತಪ್ಪಿ ಮಾಡುವ ಚರ್ಚೆ. [ಸಭಾಕಂಪ  
ದಿಂದಾಗಲಿ ಭ್ರಾಂತಿಯಿಂದಾಗಲಿ ವಾದಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿ  
ಸಿದ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ, ಹೇತು, ಉದಾಹರಣೆ, ಉಪನಯ  
ಮತ್ತು ನಿಗಮನಗಳೆಂಬ ಪಂಚಾವಯವಗಳನ್ನು  
ಕ್ರಮತಪ್ಪಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವುದು ಅಪ್ರಾಪ್ತಕಾಲ  
ವೆನಿಸುವುದು.] ಶಬ್ದೋಪನಿಷತ್: ಶಬ್ದತ್ವಾತ್ ಎನ್ನುವ ಬದಲು  
ಶಬ್ದತ್ವಾತ್ ಶಬ್ದೋಪನಿಷತ್: ಎಂದು ಹೇಳುವುದು ಅಪ್ರಾಪ್ತ  
ಕಾಲವು. (ವಿಂ) 2. ಅಸಮಯದ, ಕಾಲೋಚಿತ  
ವಲ್ಲದ. “अप्राप्तकालं वचनं बृहस्पतिरपि ब्रुवन्।  
लभते बुद्धयवज्ञानमपमानं च पुष्कलम्” ಪञ್ಚತಂ ೧-೬೩।

ಅಪ್ರಾಪ್ತಿ ಅಪ್ರಾಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಡೆಯದಿರುವಿಕೆ.  
2. ಸೇರದಿರುವಿಕೆ, ತಲುಪದಿರುವಿಕೆ.

ಅಪ್ರಾಮಾಣಿಕ ಅಪ್ರಾಮಾಣಿಕ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಮಾಣದಿಂದ  
ಸಿದ್ಧವಲ್ಲದ. 2. ಪ್ರಮಾಣವನ್ನರಿಯದ. 3. ನಂಬಿಕೆ  
ಯಿಲ್ಲದ, ವಿಶ್ವಾಸಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರವಲ್ಲದ. ನ ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ:।

ಅಪ್ರಿಯ ಅಪ್ರಿಯ (ನಂ) 1. ದುಃಖ. “न प्रहृष्येत्प्रियं  
प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम्” ಗೀತಾ ೪-೨೦। (ವಿಂ)  
2. ಇಷ್ಟವಲ್ಲದ, ಪ್ರೀತಿಯಿಲ್ಲದ.

ಅಪ್ರಿಯವದ ಅಪ್ರಿಯವದ (ವಿಂ) ಕಠಿನವಾಗಿ ಮಾತನಾ  
ಡುವ, ಬಿರುಸಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವ, ಮನನೋಯು  
ವಂತೆ ಮಾತನಾಡುವ. ಅಪ್ರಿಯ ವದತಿ - ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ  
ವಾಚಿ) “खच्” (೩-೨-೩೮)।

ಅಪ್ರಿಯವಾದಿನ್ ಅಪ್ರಿಯವಾದಿನ್ (ವಿಂ) ಕಠಿನವಾಗಿ  
ಮಾತನಾಡುವ, ಮನನೋಯುವಂತೆ ಮಾತನಾಡುವ.  
ಅಪ್ರಿಯ ವದತಿ-ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “णिनि:” (೩-೨-೪೮)।

ಅಪ್ರೀತಿ ಅಪ್ರೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಗೆತನ, ದ್ವೇಷ, ವೈರ,  
ಶತ್ರುತ್ವ. 2. ವ್ಯಸನ, ದುಃಖ.

ಅಪ್ರೇಮನ್ ಅಪ್ರೇಮನ್ (ಪ್ರಂ) 1. ದ್ವೇಷ, ಶತ್ರುತ್ವ.  
(ವಿಂ) 2. ಪ್ರೀತಿಯಿಲ್ಲದ, ದ್ವೇಷವುಳ್ಳ. ನ ಪ್ರೇಮ यस्य।

ಅಪ್ರೌಢ ಅಪ್ರೌಢ (ವಿಂ) 1. ಗರ್ವವಿಲ್ಲದ. 2. ನಮ್ಮ,  
ಸಾಧು, ಸೌಮ್ಯ, ವಿನೀತ. 3. ಬೆಳೆಯದ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ  
ಹೊಂದದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪ್ರೌಢಾ-ಪ್ರೌಢಾ. 4. ಮದುವೆ  
ಯಾಗದ ಕನ್ಯೆ. 5. ಸದ್ಯಃ ಮದುವೆಯಾದ ಕನ್ಯೆ,  
ಸಂಪೂರ್ಣ ತಾರುಣ್ಯಹೊಂದದ ಕನ್ಯೆ. 6. ಮುಗ್ಧ  
ನಾಯಕೆ, ಹೊಸ ತಾರುಣ್ಯ ಮತ್ತು ಕಾಮವಿಕಾರ  
ಹೊಂದಿರುವ ನಾಯಕೆ.

ಅಪ್ಸರಸ್ ಅಪ್ಸರಸ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ ಬಂ ವಂ) ದೇವಲೋಕದ  
ವೇಶ್ಯೆಯರು. ಅದ್ವಯ: ಸರಂತಿ - ಸ್ (ಗತೌ) “असुन्”  
(ತಂ ೪-೧೩೭)। “अप्यु निर्मथनादेव रसात्तस्माद्वर-  
स्त्रियः। उत्पेतुर्मनुजश्रेष्ठ तस्मादप्सरसोऽभवन्”।  
“अप्सरस्यु निखिलास्वलक्षितां रूपसम्पदमसौ तवा-  
द्भुताम्” ಯಾದಂ ೧೭-೨೬।

ಅಫಲ ಅಫಲ (ಪ್ರಂ) 1. ಇಂದ್ರ. 2. ಹೋತ, ಆಡು.  
(ವಿಂ) 3. ಗೊಡ್ಡು, ಬಂಜೆ, ಫಲಿಸದ, ಫಲಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ಫಲವಿಲ್ಲದ (ಮರ ಮುಂತಾದುದು). 4. ನಿಷ್ಫಲವಾದ,  
ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ. “यथा षण्डोऽफलः स्त्रीषु यथा  
गौर्गवि चाफला। यथा चाज्ञोऽफलं दानं तथा मर्त्योऽ-  
नृचोऽफलः” ಮನುಂ ೨-೧೪೮। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಫಲಾ-ಫಲಾ.  
5. ಹತ್ತಿಗಿಡ. “केसराबदराऽफला कार्पासी” ವೈಜಂ।  
6. ಲೋಳಿಸರ, ಕತ್ತಾಳೆಗಿಡ.

ಅಬದ್ಧ ಅಬದ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಅಸಂಬಂಧವಾದ, ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ.  
2. ಕಟ್ಟಲ್ಪಡದ. 3. ನಿರ್ಬಂಧವಿಲ್ಲದ, ಅಂಕೆಯಿಲ್ಲದ,  
ಸ್ವತಂತ್ರ, ಮುಕ್ತ.



ಅಬದ್ಧಮುಖ ಅಬದ್ಧಮುಖ (ವಿಂ) ಅಪ್ರಿಯವನ್ನು ಹೇಳುವವನು, ದುರ್ಮುಖ, ದುರ್ಭಾಷೆಯಾದವನು. ನ ಬದ್ಧನಿಯಮಿತಂ ಮುಖಮಸ್ಯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ವಾ "ಢಿಷ್" (೪-೧-೪೪) | -ಮುಖಾ-ಮುಖಾ, -ಮುಖಿ-ಮುಖಿ.

ಅಬದ್ಧಕ ಅಬದ್ಧಕ (ನಂ) 1. ಯಾವ ಆಧಾರವೂ ಇಲ್ಲದೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ ಸಾಲ. (ವಿಂ) 2. ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡದ, ನಿರ್ಬಂಧದಲ್ಲಿಡದ, ಕಟ್ಟುಮಾಡದ.

ಅಬದ್ಧನ ಅಬದ್ಧನ (ನಂ) 1. ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ, ನಿರ್ಬಂಧವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ಬಂಧನವಿಲ್ಲದ, ಸಂಕೋಲೆಯಿಲ್ಲದ, ಸ್ವತಂತ್ರ.

ಅಬದ್ಧುರ ಅಬದ್ಧುರ (ವಿಂ) 1. ದೀನವಾದ. 2. ಎತ್ತರವಾಗಿಯೂ ಬಗ್ಗಿಯೂ ಇಲ್ಲದ, ಹಳ್ಳತಿಟ್ಟಿಲ್ಲದ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3. ದೀನವಾಗಿ, ಕೋಪ ಮತ್ತು ದುಃಖದಿಂದ. "ಸನಯನಾಂಬುಸಖೀಜನಸಂಭ್ರಮಾದ್ವಿಧುರಬದ್ಧುರಬದ್ಧುರಮೇಷತ" ಮಾಘಂ ೬-೨೯ |

ಅಬಲ ಅಬಲ (ಪುಂ) 1. ವಲಸೆಗಿಡ. (ನಂ) 2. ದೌರ್ಬಲ್ಯ, ಬಲಹೀನತೆ. (ವಿಂ) 3. ದುರ್ಬಲ, ಬಲಹೀನನಾದ. ನಾಸ್ತಿ ಬಲಂ ಯಸ್ಯ |

ಅಬಲಾ ಅಬಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಂಗಸು. ಅಲ್ಪಂ ಬಲಂ ಯಸ್ಯಾ | ಅಲ್ಪಾರ್ಥೆ ನನ್ | "ಸಕಠಿನಕುಚ್ಚುಕಪ್ರಣೋದಂ ಪ್ರಿಯಮಬಲಾ ಸವಿಲಾಸಮನ್ವಿಯಾಯ" ಮಾಘಂ ೭-೧೯ |

ಅಬಾಧ ಅಬಾಧ (ಪುಂ) 1. ವಿಘ್ನವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ತಡೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ತೊಂದರೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 3. ತಡೆಯಿಲ್ಲದ, ಆತಂಕವಿಲ್ಲದ. 4. ಬಾಧೆಯಿಲ್ಲದ, ತೊಂದರೆಯಿಲ್ಲದ, ಪೀಡೆಯಿಲ್ಲದ.

ಅಬಾಧಕ ಅಬಾಧಕ (ವಿಂ) 1. ವಿಘ್ನವನ್ನುಂಟುಮಾಡದ, ಅನುಕೂಲವಾದ. 2. ತೊಂದರೆಯಿಲ್ಲದ, ಪೀಡೆಯಿಲ್ಲದ.

ಅಬಾಧಿತ ಅಬಾಧಿತ (ವಿಂ) ತೊಂದರೆಪಡಿಸಲ್ಪಡದ, ಪೀಡಿಸಲ್ಪಡದ. ನ ಬಾಧಿತಃ |

ಅಬಾಲಿಶ ಅಬಾಲಿಶ (ವಿಂ) ಬಾಲಕನಲ್ಲದ, ಹುಡುಗನಲ್ಲದ. "ಅಬಾಲಿಶೋ ಬಾಲಿಶವತ್ಪ್ರಜಾನಾಮ್" ಯಾದಂ ೪-೭ |

ಅಬಿನ್ಧನ ಅಬಿನ್ಧನ (ಪುಂ) ಬಡಬಾಗಿ. ಆಪಃ ಇನ್ಧನಮಸ್ಯ | "ಅಬಿನ್ಧನಂ ವಹ್ನಿಮಸೌ ವಿಭತಿ" ರಘುಂ ೧೩-೪ |

ಅಬುಧ ಅಬುಧ (ವಿಂ) 1. ಮುಂಕ, ದಡ್ಡ, ಹೆಡ್ಡ. 2. ಮೂರ್ಖ, ತಿಳಿಗೇಡಿ.

ಅಬುಧಿ ಅಬುಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅವಿವೇಕ, ತಿಳಿಗೇಡಿತನ. 2. ದಡ್ಡತನ, ಮಂಕು.

ಅಬುಧ ಅಬುಧ (ಪುಂ) 1. ಮೂರ್ಖ, ತಿಳಿಗೇಡಿ. "ಋತೋಽನ್ಯಮುಖದಪಂಗೋ ಯದಬುಧೋ ಜನಃ ಸೇವಿತಃ" ಕುವಂ ಪುಂ ೪೬ | 2. ಹೆಡ್ಡ, ಮುಂಕ, ಪೆದ್ದ. "ಅಬುಧಃ ಕೃತಮಾನಸವಿದಃ" ಮಾಘಂ ೧೬-೪೭ |

ಅಬೋಧ ಅಬೋಧ (ಪುಂ) 1. ಅಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. "ನಿಸರ್ಗದುರ್ಬೋಧಮಬೋಧವಿವಲವಾಃ ಕ ಭೂಪತೀನಾಂ ಚರಿತಂ ಕ ಜನ್ತವಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೬ | 2. ಗೋಚರವಾಗದಿರುವಿಕೆ, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸದಿರುವಿಕೆ. "ಜಲದಕಾಲಮಬೋಧಕೃತಂ ದಿಶಾಮ್" ಮಾಘಂ ೬-೪೧ | (ವಿಂ) 3. ಅಜ್ಞಾನಿ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. ನ ಬೋಧೋ ಯಸ್ಯ |

ಅಬೋಧಗಮ್ಯ ಅಬೋಧಗಮ್ಯ (ವಿಂ) ಬುದ್ಧಿಗೆ ಮಾರಿದ, ಊಹಾತೀತ.

ಅಜ್ಜ ಅಜ್ಜ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. 2. ಧನ್ವಂತರಿ. 3. ನೀರುಹಲಸಿನಗಿಡ. ಅಪ್ಸು ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಮವಿ) "ಢಃ" (೩-೨-೯೭) | (ಪುಂ) 4. ಕಂಬು, ಶಂಬ. (ನಂ) 5. ಲವಣ, ಉಪ್ಪು. 6. ಕಮಲ, ತಾವರೆ. "ಲವಣಾಮ್ಬುಜಯೋರಜ್ಜಂ ಕಲಿಬೇ ಶಂಖೇ ತು ಪುಂಸಿ ವಾ | ಪುಂಸ್ಯೇವ ನಿಚುಲೇ ಶೀತರಸಮೌ ಧನ್ವಂತರಾವಪಿ" ನಾನಾರ್ಥರಂ | 7. ನೂರುಕೋಟಿ, ಹತ್ತುಸಾವಿರ ಲಕ್ಷ, 1,00,00,00,000. 8. ಕಣಗಿಲೆಗಿಡ. (ವಿಂ) 9. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಜ್ಜಾ ಅಜ್ಜಾ. 10. ಲಕ್ಷ್ಮಿ.

ಅಜ್ಜಜ ಅಜ್ಜಜ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಅಜ್ಜಾತ್ ವಿಣ್ಣೋರ್ನಾಭಿಕಮಲಾತ್ ಜಾತಃ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಮವಿ) "ಢಃ" (೩-೨-೯೮) | [ವಿಷ್ಣುವಿನ ನಾಭಿಕಮಲದಿಂದ ಚತುರ್ಮುಖಬ್ರಹ್ಮನು ಹುಟ್ಟಿದನು.]

ಅಜ್ಜಬಂಧು ಅಜ್ಜಬಂಧು -ಬಾಂಧವ -ಬಾಂಧವ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ.

ಅಜ್ಜನಯನ ಅಜ್ಜನಯನ -ಲೋಚನ-ಲೋಚನ (ವಿಂ) ಕಮಲದಂತೆ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ. ಅಜ್ಜೇ ಇವ ನಯನೇ ಲೋಚನೇ ವಾ ಯಸ್ಯ |

ಅಜ್ಜಭವ ಅಜ್ಜಭವ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಅಜ್ಜೇ ಭವಃ |

ಅಜ್ಜಭೂ ಅಜ್ಜಭೂ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಅಜ್ಜಾತ್ ಭವತಿ - ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ರಿಪ್" |

ಅಜ್ಜಭೋಗ ಅಜ್ಜಭೋಗ (ಪುಂ) 1. ತಾವರೆಯ ದಂಟು. 2. ತಾವರೆಯ ಬೀಜಕೋಶ. 3. ಕವಡೆ. ಅಜ್ಜಸ್ಯ ಶಕ್ತಸ್ಯ ಭೋಗಃ ಅವಯವ ಇವ ಭೋಗೋ ಯಸ್ಯ |

ಅಜ್ಜಯೋನಿ ಅಜ್ಜಯೋನಿ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಅಜ್ಜಂ ವಿಣ್ಣುನಾಭಿಕಮಲಂ ಯೋನಿರೂಪಿತಸ್ಥಾನಂ ಯಸ್ಯ |



ಅಜ್ಞವಾಹನ ಅಬ್ಜವಾಹನ (ಛಂ) 1. ಚಂದ್ರಮೌಳಿ, ಈಶ್ವರ, ವೃಷಭವಾಹನ. ಅಜ್ಞ ಇವ ಶಂಖ ಇವ ಶುಭ್ರೋ ವೃಷಭೋ ವಾಹನಮಸ್ಯ। "ಮಿಹಿರಾಣಿ ಜಗದ್ವಿನಿಷ್ಠಾಕ್ಷಿಣೀಕೋ-  
ಅಜ್ಞವಾಹನಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವಾಹನಾ -ವಾಹನಾ.

2. ಲಕ್ಷ್ಮೀ, ಅಜ್ಞಂ ಕಮಲಂ ವಾಹನಮಿವ ಯಸ್ಯಾಃ।

ಅಜ್ಞಿನಿ ಅಬ್ಜಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಮಲಲತೆ. 2. ಕಮಲ  
ಗಳ ಸಮೂಹ. ಅಜ್ಞ "ಇತಿ:" (೪-೨-೪೧)।

3. ಪುಷ್ಕರಿಣಿ, ಸರಸ್ವತಿ. ಅಜ್ಞ "ಇತಿ:" (೪-೧-೧೩೧)।

ಅಜ್ಞ ಅಬ್ಜ (ಛಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಅಪಃ ದದಾತಿ -  
ತು ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)। 2. ಮುಸ್ತಿ,  
ಕೊನ್ನಾರಿಗಡ್ಡೆ. 3. ವರ್ಷ, ಸಂವತ್ಸರ. ಆಪ್ಯಂತೇ  
ಋತುಮಾಸಾದಯೋ ಯೇನ - ಆಪ್ಲಾ (ವ್ಯಾಪ್ತಾ) "ದನ್" ಹ್ರಸ್ವಶ್ಚ  
ನಿಪಾಂ (೩ಂ ೪-೧೮)। ಸಂವತ್ಸರವು (1) ಬ್ರಾಹ್ಮ,  
(2) ದಿವ್ಯ, (3) ಪಿತ್ರ, (4) ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯ,  
(5) ಬಾರ್ಹಸ್ಪತ್ಯ, (6) ಸೌರ, (7) ಸಾವನ,  
(8) ಚಾಂದ್ರ ಮತ್ತು (9) ಆರ್ಕ್ಷಗಳೆಂದು ಒಂಭತ್ತು  
ವಿಧ. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಮನುಷ್ಯಲೋಕದ ವ್ಯವಹಾರಕ್ಕೆ  
ಕೊನೆಯ ನಾಲ್ಕು ಸಂವತ್ಸರಗಳು ಮಾತ್ರ ಸಂಬಂಧ  
ಪಟ್ಟಿವೆ.

(1) ಬ್ರಾಹ್ಮಸಂವತ್ಸರ: ಮನುಷ್ಯನ ಒಂದು  
ಸೌರವರ್ಷ ಅಥವಾ 365½ ದಿನಗಳು ದೇವತೆಗಳಿಗೆ  
ಒಂದು ದಿನ. ಮನುಷ್ಯನ 360 ವರ್ಷಗಳು ದೇವತೆ  
ಗಳಿಗೆ ಒಂದು ವರ್ಷ.

| ಯುಗಮಾನ     |             |              |
|------------|-------------|--------------|
| ದೇವವರ್ಷಗಳು |             | ಮಾನುಷವರ್ಷಗಳು |
| 4,800      | ಕೃತಯುಗ      | 17,28,000    |
| 3,600      | ತೃತೀಯಯುಗ    | 12,96,000    |
| 2,400      | ದ್ವಾಪರಯುಗ   | 8,64,000     |
| 1,200      | ಕಲಿಯುಗ      | 4,32,000     |
| 12,000     | ಚತುರ್ಯುಗಮಾನ | 43,20,000    |

ಈ ಯುಗಮಾನಗಳ ಆರನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗವು  
ಸಂಧ್ಯಾ ಸಂಧ್ಯಾಂಶಗಳು. ಅದನ್ನು ಕಳೆದರೆ 4,000,  
3,000, 2,000 ಮತ್ತು 1,000 ದೇವವರ್ಷಗಳು  
ಯುಗಮಾನ.

ಬ್ರಾಹ್ಮನ ದಿನ (ಹಗಲು) ಮಾನ

(ದೇವತೆಗಳ 1,000 ಚತುರ್ಯುಗಗಳು)

| ದೇವವರ್ಷಗಳು  | ಮಾನುಷವರ್ಷಗಳು   |
|-------------|----------------|
| 1,20,00,000 | 4,32,00,00,000 |

ಬ್ರಾಹ್ಮನ ರಾತ್ರಿಮಾನ

| ದೇವವರ್ಷಗಳು  | ಮಾನುಷವರ್ಷಗಳು   |
|-------------|----------------|
| 1,20,00,000 | 4,32,00,00,000 |

| ಬ್ರಾಹ್ಮನ ಒಂದು ದಿನದ (ಅಹೋರಾತ್ರ) ಮಾನ |                |
|-----------------------------------|----------------|
| 2,40,00,000                       | 8,64,00,00,000 |

ಬ್ರಾಹ್ಮನ ಒಂದು ವರ್ಷದ ಮಾನ

(ಬ್ರಾಹ್ಮಸಂವತ್ಸರ)

|                |                    |
|----------------|--------------------|
| 8,64,00,00,000 | 31,10,40,00,00,000 |
|----------------|--------------------|

ಬ್ರಾಹ್ಮನ ಆಯುಸ್ಸು

|                  |                      |
|------------------|----------------------|
| 864,00,00,00,000 | 3110,40,00,00,00,000 |
|------------------|----------------------|

[ಬ್ರಾಹ್ಮನ ಆಯುಸ್ಸಿಗೆ ಪರವೆಂದು ಹೆಸರು.]

(2) ದಿವ್ಯ ಸಂವತ್ಸರ: ಮನುಷ್ಯರ 365½ ದಿನ  
ಗಳು ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಒಂದು ದಿನ. [ಉತ್ತರಾಯಣ  
ಹಗಲು, ದಕ್ಷಿಣಾಯನ ರಾತ್ರಿ.] 360 ಮಾನುಷ  
ವರ್ಷಗಳು ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಒಂದು ವರ್ಷ (ದಿವ್ಯಾಬ್ದ).

(3) ಪಿತ್ರ ಸಂವತ್ಸರ: ಮನುಷ್ಯರ ಒಂದು  
ತಿಂಗಳು ಪಿತ್ರದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಒಂದು ಅಹೋರಾತ್ರ  
(ಒಂದು ದಿನ)ವಾಗುವುದು. [ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷ ಹಗಲು,  
ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷ ರಾತ್ರಿ.] ಮನುಷ್ಯರ 360 ತಿಂಗಳು ಅಥವಾ  
10,800 ದಿನಗಳು ಪಿತ್ರಗಳಿಗೆ ಒಂದು ವರ್ಷ.

(4) ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯಾಬ್ದ (ಮನ್ವಂತರಮಾನ):  
ಬ್ರಾಹ್ಮನ ಒಂದು ಹಗಲಿನ ಹದಿನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು  
ಭಾಗ, ಒಂದು ಮನುವಿನ ಕಾಲ. (ಒಂದು ಮನ್ವಂತರ)

| ದೇವವರ್ಷಗಳು | ಮಾನುಷವರ್ಷಗಳು |
|------------|--------------|
| 8,52,000   | 30,67,20,000 |

ಮಾನುಷಮಾನರೀತ್ಯಾ ಸಂಧ್ಯಾ ಸಂಧ್ಯಾಂಶಗಳಲ್ಲಿ  
ಕಳೆದುಹೋಗುವ ಅಧಿಕ ಕಾಲವೂ ಸೇರಿ 308,571,428  
ಮಾನುಷವರ್ಷಗಳಾಗುವುವು.

(5) ಬಾರ್ಹಸ್ಪತ್ಯಾಬ್ದ : ಬ್ರಾಹ್ಮಸ್ವತಿಯು  
ಒಂದೊಂದು ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲೂ ಇರುವ ಕಾಲಕ್ಕೆ ಬಾರ್ಹ  
ಸ್ಪತ್ಯಾಬ್ದವೆಂದು ಹೆಸರು. ಸರಿಯಾದ ಚಾರದಲ್ಲಿದ್ದರೆ  
ಒಂದು ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿರುವುದು ಒಂದು ವರ್ಷ ಕಾಲ.  
ಅತಿಚಾರ ಮತ್ತು ವಕ್ರಚಾರಗಳಿಂದ ಹೆಚ್ಚು ಕಡಿಮೆ  
ಯಾಗುವುದೂ ಉಂಟು. ಸೌರಮಾನದಿನಗಣನೆ  
ಯಂತೆ ಬ್ರಾಹ್ಮಸ್ವತಿಯು ಧ್ವಾದಶರಾಶಿಗಳಲ್ಲೂ ಸಂಚರಿ  
ಸಲು 4332 ದಿನಗಳು ಬೇಕಾಗುವುವು.

(6) ಸೌರಸಂವತ್ಸರ: ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಒಂದು  
ಅಹೋರಾತ್ರವು ಸೌರದಿನವೆನಿಸುವುದು. ಹೀಗೆ  
ಒಂದು ವರ್ಷಕ್ಕೆ 360 ದಿನಗಳಾಗುವುವು. ಆದರೆ



ಸೂರ್ಯನು ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲೂ (12 ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ) ಸಂಚರಿಸುವ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸ್ವಲ್ಪ ಹೆಚ್ಚು ಕಡಿಮೆಯಾಗಿ ಒಂದು ವರ್ಷಕ್ಕೆ 365 ದಿನಗಳು 6 ಗಂಟೆಗಳು ಕೆಲವು ನಿಮಿಷಗಳು (ಸುಮಾರು 365½ ದಿನಗಳು) ಆಗುವವು. ಸೂರ್ಯನು ಮೇಷರಾಶಿಯನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿದಾಗ ಮೇಷಮಾಸ ಮೊದಲುಗೊಂಡು ವರ್ಷ ಪ್ರಾರಂಭವಾಗುವುದು.

(7) ಸಾವನಸಂವತ್ಸರ: ಸೂರ್ಯೋದಯವಾದಾಗಿನಿಂದ ಮರುದಿನದ ಸೂರ್ಯೋದಯದವರೆಗೆ ಒಂದು ಸಾವನದಿನವಾಗುವುದು. ಹೀಗೆ 30 ದಿನಗಳಿಗೆ ಒಂದು ಸಾವನಮಾಸವೂ 360 ದಿನಗಳಿಗೆ ಒಂದು ಸಾವನಸಂವತ್ಸರವೂ ಆಗುವುದು.

(8) ಚಾಂದ್ರಸಂವತ್ಸರ: ಶುಕ್ಲಪ್ರತಿಪತ್ತು ಮೊದಲುಗೊಂಡು ಮೂವತ್ತು ತಿಥಿಗಳಿಗೆ ಒಂದು ಚಾಂದ್ರಮಾಸ. ಹೀಗೆ ಹನ್ನೆರಡು ತಿಂಗಳಿಗೆ ಒಂದು ಚಾಂದ್ರಸಂವತ್ಸರ. ಆದರೆ ಚಂದ್ರನು ಅಶ್ವಿನ್ಯಾದಿ 27 ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲೂ (12 ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ) ಸಂಚರಿಸುವಾಗ ತಿಥಿಗಳ ಕಾಲದ ಹೆಚ್ಚು ಕಡಿಮೆಯಿಂದ 30 ದಿನಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಕಡಿಮೆಯಾಗಿ ಸೌರಮಾನದ ಗಣನೆಗಿಂತ ಕಡಿಮೆಯಾಗಬಹುದಾದುದರಿಂದ ಸುಮಾರು ಮೂರು ವರ್ಷಗಳಿಗೊಮ್ಮೆ ಒಂದು ತಿಂಗಳು ಅಧಿಕಮಾಸವೆಂದು ಪರಿಗಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಸೌರಮಾನಕ್ಕನುಗುಣವಾಗಿ ಸರಿಹೊಂದುವುದು.

(9) ಆರ್ಕ್ಷಸಂವತ್ಸರ: ಅಶ್ವಿನ್ಯಾದಿ ಒಂದೊಂದು ನಕ್ಷತ್ರದ ಕಾಲಕ್ಕೂ ಒಂದು ಆರ್ಕ್ಷದಿನವೆಂದೂ ಈ ರೀತಿ 27 ನಕ್ಷತ್ರಗಳಕಾಲಕ್ಕೆ ಒಂದು ತಿಂಗಳೆಂದೂ ಇಂತಹ 12 ತಿಂಗಳಿಗೆ ಒಂದು ಆರ್ಕ್ಷಸಂವತ್ಸರವೆಂದೂ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವುದು. ಪ್ರತಿ ತಿಂಗಳಿನ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ದಿನದ ನಕ್ಷತ್ರದ ಹೆಸರೇ ಆಯಾ ತಿಂಗಳ ಹೆಸರು. ಚಿತ್ರಾ ನಕ್ಷತ್ರದ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಜೈತ್ರವೆಂದೂ ವಿಶಾಖಾ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ವೈಶಾಖವೆಂದೂ ಮುಂತಾಗಿ ತಿಳಿಯಬೇಕು. ಹೀಗೆ ಉಳಿದುವನ್ನು ಸೂರ್ಯಸಿದ್ಧಾಂತದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ ತಿಳಿಯಬಹುದು.

ಅವ್ಯಯ ಅಬ್ಬಪ (ಛಂ) ವರ್ಷಾಧಿಪತಿ. ಅಬ್ಬಂ ಪಾತಿ - ಪಾ (ರಸಣಿ) "ಕ:" (3-2-3)।

ಅವ್ಯಸಾರ ಅಬ್ಬಸಾರ (ಛಂ) ಕರ್ಪೂರ. ಅಬ್ಬಸ್ಯ ಮುಸ್ತಾಯಾ: ಸಾರ:।

ಅವ್ಯಬಾಹನ ಅಬ್ಬವಾಹನ (ಛಂ) ಇಂದ್ರ. ಅಬ್ಬೋ ಮೆಥೋ ಬಾಹನಮಸ್ಯ।

ಅವ್ಯಿ ಅಬ್ಬಿ (ಛಂ) 1. ಸಾಗರ, ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಆಪ: ಧೀಯಂತೇಽಸ್ಮಿನ್ - ತು ಧಾನ್ (ಧಾರಣೆ) "ಕಿ:" (3-2-93)। "ವಿಧಾಯ ತಾಕರ್ಯಂ ಗಗನಾಧಿಪತಂ ಸಾರ್ಥಂ ಮಯಾ ದೇವಿ ಸಮಾಜಂತೀಮ್" ಯಾದಂ 18-116। 2. ಸರಸ್ವತಿ, ಕೊಳ. 3. ಕೆರೆ. 4. ನಾಲ್ಕು ಮತ್ತು ಏಳು ಸಂಖ್ಯೆ.

ಅವ್ಯಿಕನ್ಯಾ ಅಬ್ಬಿಕನ್ಯಾ - ತನಯಾ - ತನಯಾ, - ಸುತಾ - ಸುತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲಕ್ಷ್ಮಿ. "ವಿಶ್ವದೇಹದ್ವಿತೀರಾವ್ಯಿಕನ್ಯಾ" ಯಾದಂ 4-46।

ಅವ್ಯಿಕಫ ಅಬ್ಬಿಕಫ (ಛಂ) ಸಮುದ್ರದ ನೊರೆ.

ಅವ್ಯಿಜ ಅಬ್ಬಿಜ (ಛಂ) 1. ಚಂದ್ರ. 2. ಶಂಖ. (ಛಂ ಛಿಂ ವಂ) 3. ಅಶ್ವಿನೀದೇವತೆಗಳು. (ವಿಂ) 4. ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) - ಜಾ - ಜಾ. 5. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. ಅಖೌ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃಭವಿ) "ಹ:" (3-2-99)।

ಅವ್ಯಿನಗರೀ ಅಬ್ಬಿನಗರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದ್ವಾರಕಾಪಟಣ. ಅಖೌ ತತ್ತೀರೇ ನಗರೀ।

ಅವ್ಯಿಮಣ್ಡಕೀ ಅಬ್ಬಿಮಂಡೂಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುತ್ತಿನ ಚಿವ್ವು. ಅವ್ಯಿ ಮಣ್ಡಯತಿ - ಮಡಿ (ಭೂಷಾಯಾಮ್) "ಝನ್" (3ಂ 4-42)। "ಙೀಷ್" (4-1-41)।

ಅವ್ಯಿಶಯ ಅಬ್ಬಿಶಯ (ಛಂ) ವಿಷ್ಣು. ಅಖೌ ಶೇತೇ - ಶೀಙ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಅಞ್" (3-2-46)। [ಜಗತ್ತಿನ ಪ್ರಳಯಾನಂತರ ಪರಮಾತ್ಮನು ಅಬ್ಧಿಯಲ್ಲಿ ಮಲಗಿ ಯೋಗನಿದ್ರೆಯಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.]

ಅವ್ಯಗ್ನಿ ಅಬ್ಬಗ್ನಿ (ಛಂ) ಬಡಬಾಗ್ನಿ.

ಅವ್ಯಾಕ್ಷ ಅಬ್ಬಾಕ್ಷ (ಛಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. (ವಿಂ) 2. ನೀರು ಕುಡಿದು ಜೀವಿಸುವ. ಅಪೋ ಮಕ್ಷಯತಿ - ಮಕ್ಷ (ಅದನೇ) "ಅಞ್" (3-2-1)।

ಅವ್ಯಾಹ್ನ ಅಬ್ಬಾಹ್ನ (ಛಂ) 1. ಸಂಹಾರ ಮಾಡಕೂಡದೆಂಬ ಮಾತು. ಬ್ರಹ್ಮಾಣಿ ಸಾಧು ಬ್ರಹ್ಮಾಣ್ಯಂ ಶಾಂತತಾ "ಯತ್" (4-4-98)। ತನ್ನಭವತಿ। "ಅವ್ಯಾಹ್ನಮವ್ಯಾಹ್ನೋಕ್ತೌ" ಅಮಂ। 2. ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಭಯಂಕರವಾಗಿ ಕೂಗಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. "ಅವ್ಯಾಹ್ನಮವ್ಯಾಹ್ನಮ್" ಶಾಕುಂ 6। 3. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನು ಮಾಡಬಾರದ ಕಾರ್ಯ, ಹಿಂಸೆ. (ವಿಂ) 4. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ಹಿತವಾಗಿಲ್ಲದ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ಅವಾಯಕರವಾದ.

ಅವ್ಯಾಹ್ನ ಅಬ್ಬಾಹ್ನ್ (ವಿಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಲ್ಲದ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣರಹಿತವಾದ. ನ ಬ್ರಹ್ಮಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ಯತ್ರ। "ನಾಬ್ರಹ್ಮಾ ಕ್ಷತ್ರಮುಚ್ಛೋತಿ ನಾಕ್ಷತ್ರಂ ಬ್ರಹ್ಮಾ ವರ್ಧತೇ" ಮನುಂ 9-322।



ಅಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಅಬ್ರಾಹ್ಮಣ (ಪುಂ) 1. ನೀಚಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ಪತಿತ ನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ನ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ: । अप्राशस्त्ये न० त० ।

"अब्राह्मणास्तु षट् प्रोक्ता ऋषिणा तत्त्ववादिना । आद्यो राजभृतस्तेषां द्वितीयः क्रयविक्रयी । तृतीयो बहुयाज्यः स्याच्चतुर्थो ग्रामयाजकः । पञ्चमस्तु वृत्तस्तेषां ग्रामस्य नगरस्य च । अनागतां तु यः पूर्वा सादित्यां चैव पश्चिमाम् । नोपासीत द्विजः सन्ध्यां स षष्ठोऽब्राह्मणः स्मृतः" ಎಂದು ಅಬ್ರಾಹ್ಮಣನು ಆರು ವಿಧ. (ವಿಂ)

2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಲ್ಲದ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ರಹಿತವಾದ.

3. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಲ್ಲದವನು, ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ಸಮಾನ ನಾದವನು, ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಂತೆ ತೋರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವನು.

ಅಖಿಕ್ಷ ಅಬ್ಲಿಂಗ (ನಂ) ಜಲವೇ ದೇವತೆಯಾಗುಳ್ಳ ಮಂತ್ರ. अपां लिङ्गं बोधनसामर्थ्यं यत्र ।

ಅಭಕ್ತ ಅಭಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಭಕ್ತನಲ್ಲದ, ಸೇವಕನಲ್ಲದವನು.

न भक्तः । 2. ಬೇರೆಮಾಡಲ್ಪಡದ, ಪ್ರತ್ಯೇಕಿಸಲ್ಪಡದ.

ಅಭಕ್ಷಣ ಅಭಕ್ಷಣ (ನಂ) ತಿನ್ನದಿರುವುದು, ಊಟಮಾಡ ದಿರುವುದು.

ಅಭಕ್ಷ್ಯ ಅಭಕ್ಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ನಿಸಿದ್ಧವಾದ ಆಹಾರ,

ಊಟಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ ಆಹಾರ. न भक्षयितुं

योग्यम् । ವಸ್ತುವಿನ ಸ್ವಭಾವ, ಕಾಲದೇಶಗಳ ಸಂಬಂಧ,

ಬೇರೆ ವಸ್ತುವಿನ ಸಂಪರ್ಕ, ನಿಸಿದ್ಧವಾದ ಲೋಹ

ಸಂಬಂಧ ಮತ್ತು ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಪಾಕ—ಈ ಕಾರಣದಿಂದ

ಆಹಾರವು ಅಭಕ್ಷ್ಯವಾಗುವುದು. ವಸ್ತುಸ್ವಭಾವ

ದಿಂದ ದುಷ್ಪವಾದ ಆಹಾರ: "लशुनं गृञ्जनं चैव

पलाण्डुः कवकानि च । अभक्ष्याणि द्विजातीनाममेध्य-

प्रभवाणि च । अनिर्देशाया गोः क्षीरमौष्ट्रमेकशफं तथा ।

आविकं सन्धिनीक्षीरं विवत्सायाश्च गोः पयः । मनु० ५-५,

८ । ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಅಭಕ್ಷ್ಯವಾದ

ಆಹಾರ: "राजान्नं तेज आदत्ते शूद्रान्नं ब्रह्मवर्चसम् ।

आयुः सुवर्णकारान्नं यशश्चर्मविकर्तितः । कारुकान्नं प्रजा

हन्ति बलं निर्णेजकस्य च । गणान्नं गणिकान्नं च लोकेभ्यः

परिक्रुन्तति । नाद्यात् शूद्रस्य पक्वान्नं विद्वानश्चादिनो

द्विजः । आददीताममेवास्मादवृत्तावेकरात्रिकम्" मनु०

४-२१८, १९, २३ । ವಸ್ತುಸಂಪರ್ಕದಿಂದ ಅಭಕ್ಷ್ಯ

ವಾದ ಆಹಾರ: ಬೆಲ್ಲ ಮತ್ತು ಸಕ್ಕರೆ ಬೆರೆಸಿದ

ಹಿಂದಿನ ದಿನದ ಮೊಸರೂ ಕೇಶ, ಕ್ರಿಮಿ ಮುಂತಾದುವು

ಗಳೊಡನೆ ಪಕ್ವವಾದ ಅನ್ನವೂ ಅಭಕ್ಷ್ಯಗಳು.

ಕೈಯಿಂದ ತೆಗೆದುಕೊಂಡಲ್ಪಟ್ಟ ಜೇನುತುಪ್ಪ, ಕಾಕಂಬಿ,

ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಶಾಕ (ಪಲ್ಯ ಮುಂತಾದುದು) ಗೋರಸ

(ಹಾಲು, ಮೊಸರು) ಉಪ್ಪು, ತುಪ್ಪ ಇವು ಅಭಕ್ಷ್ಯ

ಗಳು. ಇವನ್ನು ಪಾತ್ರೆಗಳಲ್ಲಿ ಕೊಡಬೇಕು ಅಥವಾ

ಸೌಟಿನಿಂದ ಬಡಿಸಬೇಕು. "माक्षिकं फाणितं शाकं

गोरसं लवणं घृतम् । हस्तदत्तानि भुक्त्वा च भोक्ता

सान्तपनं चरेत्" । ಲೋಹ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಅಭಕ್ಷ್ಯ

ವಾದ ಆಹಾರ: ಕಂಚಿನ ಪಾತ್ರೆಯಲ್ಲಿ ಎಳನೀರನ್ನೂ

ತಾಮ್ರದ ಪಾತ್ರೆಯಲ್ಲಿ ಬೆಲ್ಲದ ಪದಾರ್ಥವನ್ನೂ ಇಡ

ಕೂಡದು. ಇವು ಅಭಕ್ಷ್ಯವಾಗುವುವು. "नारिकेलोदकं

कांस्ये ताम्रपात्रे गुडस्तथा । सुरातुल्यं भवेदेतत् ताम्रे

गव्यं घृतं विना" । 2. ತಿನ್ನಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ.

3. ಊಟಮಾಡಲು ನಿಸಿದ್ಧವಾದ.

ಅಭಜ್ಞ ಅಭಂಗ (ಪುಂ) 1. ಒಡೆಯದಿರುವುದು, ಮುರಿಯ

ದಿರುವುದು. 2. ಅಭಂಗಶ್ಲೇಷ, ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರವಾದ

ಶ್ಲೇಷದ ಒಂದು ಭೇದ. "पुनस्त्रिधा सभङ्गोऽथाभङ्ग-

स्तदुभयात्मकः" सा० द० १०-१२ । ಉದಾ:

"पायात्स स्वयमन्वकक्षयकरस्त्वां सर्वदोमाधवः" ।

ಅಭಜ್ಞರ ಅಭಂಗುರ (ವಿಂ) ಸ್ಥಿರವಾದ, ನಾಶವಾಗದ.

भञ्जो (आमर्दने) "घुरच्" (३-२-१६१) । न

भङ्गुरः । "अभङ्गुरविभूतिर्नस्तरङ्गयतु मङ्गलम्" ।

ಅಭದ್ರ ಅಭದ್ರ (ನಂ) 1. ದುಃಖ. 2. ಅಮಂಗಳ.

(ವಿಂ) 3. ಅಶುಭದ, ಮಂಗಳವಲ್ಲದ.

ಅಭಯ ಅಭಯ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ, ವಿಷ್ಣು. न

भयमस्मात् । 2. ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನ. 3. "अभयं"

ವೆಂಬ ಪ್ರಯಾಣದ ಒಂದು ಶುಭಯೋಗ. "यत्रैकादश-

गश्चन्द्रो भानुर्वा प्रबलः शुभः । अभयो नाम योगोऽ-

यमरिभूतविनाशकृत्" । 4. ಆತ್ಮನಿಷ್ಠ, ತಪಸ್ವಿ.

5. ಭಯವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ ಅಭಯಹಸ್ತ,

ಅಭಯವಚನ. (ನಂ) 6. ಭಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಧೈರ್ಯ.

"यो दत्त्वा सर्वभूतेभ्यः प्रव्रजत्यभयं गृहात् । तस्य

तेजोमया लोका भवन्ति ब्रह्मवादिनः" मनु० ६-३९ ।

7. ರಕ್ಷಣೆ, ಕಾಪಾಡುವಿಕೆ. 8. ಲಾಮಂಚದ ಬೇರು.

"अभयं नलदं सेव्यममृणालं जलाशयम्" अम० ।

(स्त्री०) -या-या. 9. ಅಳಲೆಗಿಡ. "अभयमुशी-

राभीत्योरभया तु हरीतकी" हेम० । (ವಿಂ) 10.

ಭಯವಿಲ್ಲದ, ಹೆದರಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. "अभयं नलदे स्त्री तु

पथ्यायां निर्भये त्रिषु" नानार्थर० ।

ಅಭಯಕೃತ್ ಅಭಯಕೃತ್ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಿಸುವ, ಕಾಪಾ

ಡುವ. अभयं त्राणं करोति । 2. ಭಯಂಕರವಲ್ಲದ,

ಶಾಂತವಾದ, ಸೌಮ್ಯವಾದ.



ಅಭಯಚ್ಛರ ಅಭಯಂಕರ (ವಿಂ) ಭಯವನ್ನುಂಟು ಮಾಡದ, ಶಾಂತವಾದ, ಸೌಮ್ಯವಾದ. ನಂ ತಂ |

ಅಭಯದ ಅಭಯದ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಿಸುವವನು, ಧೈರ್ಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವವನು. ಅಭಯಂ ದದಾತಿ ಅಭಯವಚನಂ ದತ್ವಾ ರಕ್ಷತಿ—ಓ ದಾನ್ (ದಾನೇ) “ಕ:” (೩-೨-೩) |

ಅಭಯದಕ್ಷಿಣಾ ಅಭಯದಕ್ಷಿಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಭಯ ರೂಪವಾದ ರಕ್ಷಣೆ, ರಕ್ಷಣೆಯ ಭರವಸೆಯ ಮಾತು.

2. ಭಯದಿಂದ ಕಾಪಾಡಿದವನಿಗೆ ಕೊಡುವ ದಕ್ಷಿಣೆ.

ಅಭಯಮುद्रಾ ಅಭಯಮುದ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಂತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಒಂದುವಿಧ ಮುದ್ರೆ, ಅಭಯವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಮುದ್ರೆ. ಅಭಯಾರ್ಥಿ ಮುದ್ರಾ |

ಅಭಯಯಾಚನಾ ಅಭಯಯಾಚನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಭಯದ ಬೇಡಿಕೆ, ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಪ್ರಾರ್ಥನೆ. ಅಭಯಾರ್ಥಿ ಯಾಚನಾ |

“ಬಹುತಾಮಭಯಯಾಚನಾಂಜಲಿ:” ರಘುಂ ೧೧-೭೮ |

ಅಭಯವಚನ ಅಭಯವಚನ (ನಂ) ರಕ್ಷಣೆಯ ಭರವಸೆಯ ಮಾತು, ಕಾಪಾಡುವುದಾಗಿ ನೀಡುವ ಅಭಯಹಸ್ತ.

ಅಭವ ಅಭವ (ಪುಂ) 1. ಹುಟ್ಟದಿರುವಿಕೆ, ಜನ್ಮಪಡೆಯದಿರುವಿಕೆ. ನ ಭವ: उत्पत्ति: | 2. ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ. ನ ವಿद्यते ಭವ: उत्पत्तिर्यत्र | “ಪ್ರಾಪ್ತುಮಭವಮಭಿವಾ-  
ಙ್ಘತಿ ವಾ ವಯಮಸ್ಯ ನೋ ವಿಷಹಿತುಂ ಕ್ಷಮಾ ಉ:” ಕಿರಾಂ ೧೨-೩೦ | 3. ವಿನಾಶ. “ಭವಾಯ ಸರ್ವಭೂತಾನಾಮಭವಾಯ ಚ ರಕ್ಷಸಾಮ್” ರಾಮಾಂ |

ಅಭವ್ಯ ಅಭವ್ಯ (ನಂ) 1. ದುರದೃಷ್ಟ, ಕೆಟ್ಟ ಅದೃಷ್ಟ. (ವಿಂ) 2. ಅದೃಷ್ಟಹೀನ, ಭಾಗ್ಯಹೀನ. “ಉಪನತ-  
ಮವಧೀರಯನ್ತಭವ್ಯಾ:” ಕಿರಾಂ ೧೦-೫೧ | 3. ಮಂಗಳವಲ್ಲದ.

ಅಭಾವ ಅಭಾವ (ಪುಂ) 1. ಅಸತ್ತೆ, ಇಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಂ ತಂ | “ಅಸ್ತಿ ಪುತ್ರೋ ವಶೋ ಯಸ್ಯ ಭೃತ್ಯೋ ಭಾರ್ಯಾ ತಥೈವ ಚ | ಅಭಾವೇ ಸತಿ ಸಂತೋಷ: ಸ್ವರ್ಗಸ್ಥೋಽಸೌ ಮಹೀಯತೇ” ಚಾಣಕ್ಯ: | 2. (ತಾರ್ಕಿಕಮತದಲ್ಲಿ) ದ್ರವ್ಯಾದಿ ಸಪ್ತ ಪದಾರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. “ದ್ರವ್ಯಗುಣಕರ್ಮಸಾಮಾನ್ಯವಿಶೇಷ-  
ಸಮವಾಯಾಭಾವಾ: ಸಪ್ತ ಪದಾರ್ಥಾ:” ತಂಸಂ | ಅಭಾವವು ಪ್ರಾಗಭಾವ, ಪ್ರಧ್ವಂಸಾಭಾವ, ಅತ್ಯಂತಾಭಾವ ಮತ್ತು ಅನೈಕೋನ್ಯಾಭಾವಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. 3. ಕೊರತೆ, ಬಡತನ. 4. ನಾಶ. (ವಿಂ) 5. ಸ್ಥಾಯಿ ಭಾವವಿಲ್ಲದ. 6. ಅನುರಾಗವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರೀತಿಯಿಲ್ಲದ.

ಅಭಾವನೀಯ ಅಭಾವನೀಯ (ವಿಂ) ಚಿಂತಿಸುವುದಕ್ಕೂ ಶಕ್ಯವಲ್ಲದ. ನ ಭಾವಯಿತುಂ ಶಕ್ಯಮ್ |

ಅಭಾಷಣ ಅಭಾಷಣ (ನಂ) ಮೌನ, ಮಾತನಾಡದಿರುವಿಕೆ.

ಅಭಿ ಅಭಿ (ಅವ್ಯಂ) [ಇದು ಕ್ರಿಯಾಪದದೊಡನೆ ಸೇರಿದಾಗ ಉಪಸರ್ಗಸಂಜ್ಞೆಯನ್ನೂ, ಸುಬಂತ್ವದೊಡನೆ ಸೇರಿದಾಗ ಕರ್ಮ ಪ್ರವಚನೀಯ ಸಂಜ್ಞೆಯನ್ನೂ ಹೊಂದಿ ಆಯಾ ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ ದ್ಯೋತಕವಾಗುವುದು.]

1. ಲಕ್ಷಣ, ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು. “ಹರಿಮಭಿ ವರ್ತತೇ” |

2. ಪ್ರಕಾರಾಂತರವನ್ನು ಹೊಂದುವುದು. “ಭಕ್ತೋ ಹರಿಮಭಿ” | ಭಕ್ತೋ ಭಕ್ತಿರೂಪಂ ಪ್ರಕಾರವಿಶೇಷಂ ಪ್ರಾಪ್ತವಾನ್ | ಹರಿವಿಷಯಕಭಕ್ತಿಮಾನಿತ್ಯರ್ಥ: | 3. ವೀಕ್ಷೆ, ವ್ಯಾಪ್ತಿ.

“ದೇವದೇವಮಭಿಸಿಂಚತಿ” | ಕೃತ್ಸನ್ ದೇವಮಭಿಸಿಂಚತೀತ್ಯರ್ಥ: |

4. ಅಭಿಮುಖ್ಯ, ಎದುರು. “ಅಭಿವೇದ್ಯಂ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಸು-  
ರಾಸೀತ್ಕಾರ್ಯದ್ವಯಾಕುಲ:” ಮಾಘಂ ೨-೧ | 5. ಇಚ್ಛೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ.

“ಅಭಿಲಾಷಮುದೀರಿಸೇಂದ್ರಿಯ: ಸ್ವಸುತಾಯಾ-  
ಮಕರೋತ್ಪ್ರಜಾಪತಿ:” ಕುಮಾಂ ೪-೪೧ | 6. ಸುತ್ತಲೂ.

“ಅಮೃತಗ್ರಾಹಣನಪ್ರಭಾಭಿ:” ಕುಮಾಂ ೧-೩೩ |

7. ಸೌಮ್ಯತೆ, ಗಾಂಭೀರ್ಯ, ಔದಾರ್ಯ, ಘನತೆ. “ಜಾತ್ಯಸ್ತೇನಾಭಿಜಾತೇನ ಶೂರ: ಶೌರ್ಯವತಾ ಕುಶ:” ರಘುಂ ೧೭-೪ |

8. ಒಳಕ್ಕೆ, ಒಳಗಡೆಗೆ. “ಭ್ರಶ್ಯದ್ವಿಜಲಮಭಿ  
ಭೂಷಣೈರ್ವಧುನಾಮಜ್ಜೇಮ್ಯೋ ಗುರುಭಿರಮಜ್ಜಿ ಲಜ್ಜಯೇವ” ಮಾಘಂ ೮-೬೦ |

9. ತಿಕ್ಕುಣ, ಕಲಿಯುವುದು. “ಅಮ್ಯಸ್ಯಂತಿ  
ತಟಾಘಾತಂ ನಿಜಿತೇರಾವತಾ ಗಜಾ:” ಕುಮಾಂ ೨-೫೦ |

10. ಮುಂಭಾಗ, ಸಮೀಪ. “ಪ್ರಿಯಮಭಿ ಕುಸುಮೋದತಸ್ಯ  
ಬಾಹೋ:” ಮಾಘಂ ೭-೪೦ | 11. ವಚನ, ಮಾತು.

“ಅಭಿಧಾಯ ರೂಕ್ಷಮಿತಿ ಮಾ ಸ್ಮ ಗಮ ಇತಿ ಪೃಥಾಸುತೇರಿತಾಮ್”  
ಮಾಘಂ ೧೫-೬೭ | 12. ಸಪ್ತವ್ಯರ್ಥ. “ಅಭಿಗೌರಿ

ರತಾಸಕ್ತಮ್” ಕುಮಾಂ ೧೦-೭ | 13. ಭಾಗ, ಪಾಲು.

“ಯದತ್ರ ಮಮಾಭಿಷ್ಯಾತ್ ತದೀಯತಾಮ್” ಸಿಂ ಕೌಂ | 14.

ಪೂಜೆ. “ಅಭಿವಾದಯತೇ” | 15. ಉಟ, ಭೋಜನ.

“ಅಮ್ಯವಹರತಿ” | “ಅಭೀತ್ಯಂಭೂತಕಥನೇಽಪ್ಯಭಿ ವೀಕ್ಷಾಭಿ-  
ಮುಖ್ಯಯೋ:” ವಿಶ್ವಂ | “ಅಭೀತ್ಯಂಭೂತಕಥನೇ ಚಾಭಿಮುಖ್ಯಾಭಿ-

ಲಾಘಯೋ:” ಮೇದಿಂ |

ಅಭಿಕ ಅಭಿಕ (ವಿಂ) ಕಾಮುಕ, ಪ್ರೀತೀಲ. ಅಭಿ-  
ಕಾಮಯತೇ — “ಕನ್” (೫-೨-೭೪) | “ಸೋಽಧಿಕಾರಮಭಿಕ: ಕುಲೋಚಿತಂ ಕಾಶ್ಚನ ಸ್ವಯಮವರ್ತಯತ್ಸಮಾ:” ರಘುಂ ೧೯-೪ |

ಅಭಿಕಾಕ್ಷಾ ಅಭಿಕಾಂಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಚ್ಛೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಅಭಿ + ಕಾಕ್ಷಿ (ಕಾಕ್ಷಾಯಾಮ್) “ಅ:” (೩-೩-೧೦೩) |



ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ (ವಿಂ) ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ. ಅಭಿ + ವ್ಯಕ್ತಿ (ಕಾಡ್ವಾಯಾಮ್) "ಕ್ರ:" (3-2-102)।

ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ (ವಿಂ) ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ. ಅಭಿ + ವ್ಯಕ್ತಿ (ಕಾಡ್ವಾಯಾಮ್) "ಗಿರಿ:" (3-2-96)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (4-1-14)। -ಕಾಡ್ವಾಯಾಮ್ -ಕಾಡ್ವಾಯಾಮ್.

ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ (ಪುಂ) 1. ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ, ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ. ಅಭಿ + ಕಮ್ (ಕಾಂತಿ) "ವ್ಯ" (3-3-18)। (ವಿಂ) 2. ಕಾಮಿಸುವ, ಪ್ರೀತಿಸುವ, ಕಾಮುಕ. ಅಭಿ + ಕಮ್ (ಕಾಂತಿ) + ಗಿಡ್ "ಅವ್" (3-1-134)। "ಯಾವೇ ತ್ವಾಮಭಿವ್ಯಕ್ತಿಮಾಹಂ ತಸ್ಮಾತ್ಕುರ ಮಮ ಪ್ರಿಯಮ್" ಭಾಂ.

ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. 2. ಧಾಳಿ, ಮೇಲೆಬೀಳುವುದು. 3. ಧೈರ್ಯದಿಂದ ಶತ್ರುಗಳ ಮೇಲೆ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಹೊರಡುವುದು. 4. ಎರುವುದು, ಹೆಚ್ಚುವುದು. ಅಭಿ + ಕಮ್ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) ಭಾವೇ "ವ್ಯ" (3-3-18)। "ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ರಣೇ ಯಾನಮಭಿವ್ಯಕ್ತಸ್ಯ ರಿಪುನ್ ಪ್ರತಿ"। "ಆರೋಹಣಂ ತ್ವಮಭಿವ್ಯಕ್ತಿ:" ಅಭಿಂ ವಿಂ. (ನಂ) 5. ಯುದ್ಧ. ಅಭಿ + ಕಮ್ ಅಭಿಂ "ವ್ಯ" (3-3-121)। (ವಿಂ) 6. ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ಮಂ "ವ್ಯ" (3-3-19)। "ನೆಹಾಭಿವ್ಯಕ್ತಿಮನಾಶೋಽಸ್ತಿ ಪ್ರತ್ಯವಾಯೋ ನ ವಿವ್ರತೇ" ಗೀತಾ 2-41.

ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ (ನಂ) 1. ಧಾಳಿ, ಮೇಲೆ ಬೀಳುವುದು. ಅಭಿ + ಕಮ್ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ.

ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಧಾಳಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿ + ಕಮ್ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಕ್ರ:" (3-2-102)।

ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. 2. ಧಾಳಿ; ಮೇಲೆಬೀಳುವುದು. ಅಭಿ + ಕಮ್ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಕ್ರಿನ್" (3-3-94)। ದೀರ್ಘ: (3-4-14)।

ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭಿಸುವ, ಉಪಕ್ರಮಿಸುವ. ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿಮನೇನ "ಇನಿ:" (4-2-44)। 2. ಧಾಳಿಮಾಡುವ, ಮೇಲೆಬೀಳುವ.

ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ (ಪುಂ) 1. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. 2. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಕಿರುಚುವುದು, ಚೀರಾಟ. ಅಭಿ + ಕ್ಷಾ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೇ ಚ) "ವ್ಯ" (3-3-18)।

ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ (ವಿಂ) 1. ನಿಂದಿಸುವ, ದೂಷಿಸುವ. 2. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗಿಕೊಳ್ಳುವ, ಕಿರುಚುವ. ಅಭಿ + ಕ್ಷಾ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೇ ಚ) "ವ್ಯ" (3-3-18)।

ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಂತಿ, ಪ್ರಕಾಶ, ಹೊಳವು, ಶೋಭೆ. ಅಭಿ + ವ್ಯಾ (ಪ್ರಕಾಶನೇ) "ಅಙ್" (3-3-106)। "ಕಾಪ್ಯಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ತಯೋರಾಸೀದ್ವಜತೋ: ಶುದ್ಧ-ವೇಷಯೋ:" ರಘುಂ 1-46। 2. ಕೀರ್ತಿ, ಯಶಸ್ಸು. 3. ಹೆಸರು. 4. ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ, ಮಹಿಮೆ. 5. ಬುದ್ಧಿ. "ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ತು ಶೋಭಾಂ ಕೀರ್ತಿಸಂಜಯೋ:" ಹೇಮಂ.

ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ (ವಿಂ) ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾದ, ಹೆಸರು ಪಡೆದ, ಕೀರ್ತಿಶಾಲಿಯಾದ.

ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ (ನಂ) ಕೀರ್ತಿ, ಯಶಸ್ಸು.

ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ (ವಿಂ) ಹೊರಡುವ, ಎದುರಾಗಿ ಹೋಗುವ. ಅಭಿ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಶತ್" (3-2-124)। "ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಯದ್ವುಜ್ಜವಂ ದಿದ್ವು:" ಯಾದಂ 14-11.

ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ (ವಿಂ) 1. ಎದುರಾಗಿ ಹೋದ. 2. ಅನುಕೂಲವಾಗಿ ಒದಗಿದ. ಅಭಿ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಕ್ರ:" (3-4-92)। 3. ಸೇವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಕೂಡಿರುವ, ಸಹಿತವಾದ. "ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿಮುಖ್ಯಾ ತದಾನಿರುದ್ಧಮ್" ಯಾದಂ 18-134.

ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ (ವಿಂ) ಹೊಂದಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಸಮಾಪಿಸಲ್ಪಡುವ. ಅಭಿ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ತವ್ಯ:" (3-1-96)।

ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ (ವಿಂ) 1. ಎದುರಾಗಿ ಹೋಗುವ. 2. ಅನುಕೂಲವಾಗಿ ಹೋಗುವ. 3. ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ಎದುರುಗೊಂಡು ಹೋಗುವ. ಅಭಿ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ತವ್" (3-1-133)।

ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ (ಪುಂ) 1. ಎದುರಾಗಿ ಹೋಗುವುದು, ಆಗಮನ, ಬರುವುದು. "ತವಾಹಂತೋ ನಾಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ತ್ವಂ ಮನೋ ನಿಯೋಗಕ್ರಿಯಯೋತ್ಸುಕಂ ಮೇ" ರಘುಂ 4-11। 2. ಅನುಕೂಲವಾಗಿ ಹೋಗುವುದು, ಅನುಕೂಲ ಪ್ರವೇಶ, ಅನುಕೂಲ ಸಮಾಗಮ. ಅಭಿ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಅಪ್" (3-3-44)।

ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ (ವಿಂ) 1. ಸುಖವಾಗಿ ಹೊಂದಲು ಶಕ್ತನಾದ, ಸುಲಭವಾಗಿ ಸಮಾಪಿಸಬಹುದಾದ. ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿಂ ಶಕ್ಯ: - ಅಭಿ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಯತ್"



(೩-೧-೯೮)। "ಅಭ್ಯಾಸಾಭಿಗಮ್ಯಶ್ಚ ಯಾದೋರಲೇರಿವಾರ್ಣವಃ" ರಘುಂ ೧-೧೬। (ಅವ್ಯಂ) 2. ಹೊಂದಿ, ಎದುರಾಗಿ ಹೋಗಿ. "ಮನುಮೇಕಾಗ್ರಮಾಸೀನಮಭಿಗಮ್ಯ ಮಹರ್ಷಯಃ" ಮನುಂ ೧-೧।

ಅಭಿಗಾಮಿನ್ ಅಭಿಗಾಮಿನ್ (ವಿಂ) ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ಹೋಗುವ, ಸುಲಭವಾಗಿ ಸಮಾಪಿಸುವ. ಅಭಿ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಗಿತಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)। "ಋತುಕಾಲಾಭಿಗಾಮಿ ಸ್ಯಾತ್ ಸ್ವದಾರನಿರತಃ ಸದಾ" ಮನುಂ ೩-೪೫।

ಅಭಿಗುಪ್ತಿ ಅಭಿಗುಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಕ್ಷಣೆ, ಕಾಪಾಡುವುದು. ಅಭಿ + ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।

ಅಭಿಗೋಪ್ತ ಅಭಿಗೋಪ್ತ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಿಸುವ. ಕಾಪಾಡುವ. ಅಭಿತೌ ಗೋಪಾಯತಿ - ಅಭಿ + ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೆ) "ತುತ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಅಭಿಗ್ರಸ್ತ ಅಭಿಗ್ರಸ್ತ (ವಿಂ) 1. ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟ, ನುಂಗಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿ + ಗ್ರಸ್ (ಅದನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅಭಿಗ್ರಹ ಅಭಿಗ್ರಹ (ಪುಂ) 1. ಲೂಟಿಮಾಡುವುದು, ಕೊಳ್ಳೆಹೊಡೆಯುವುದು, ದರೋಡೆ. 2. ಧಾಳಿ, ಮೇಲೆಬೀಳುವುದು. 3. ಗೌರವ, ಮರ್ಯಾದೆ. 4. ಯುದ್ಧ. 5. ದೂರು, ಫರ್ಯಾದು. ಅಭಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೮)। "ಅಭಿಗ್ರಹಸ್ತು ಗೌರವೇ। ಅಭಿಯೋಗೇಽಭಿಗ್ರಹಣೇ" ಹೇಮಂ। "ಅಭಿಹಾರಸ್ತ್ವಭಿಗ್ರಹಃ" ವೇಜಂ।

ಅಭಿಗ್ರಹಣ ಅಭಿಗ್ರಹಣ (ನಂ) "ಅಭಿಗ್ರಹ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅಭಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅಭಿಗರ್ಷಣ ಅಭಿಗರ್ಷಣ (ನಂ) ಪರಸ್ಪರ ಹೊಡೆದಾಟ, ತಿಕ್ಕಾಟ, ದುರಾಗ್ರಹದಿಂದ ಹೋರಾಟ. ಅಭಿ + ಗರ್ಷ (ಸಂಘರ್ಷ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅಭಿಘಾತ ಅಭಿಘಾತ (ಪುಂ) 1. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ನಿಯೋಜಿಸುವುದು, ಬುಡಸಹಿತ ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. ಅಭಿ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಏಟು, ಪೆಟ್ಟು, ಹೊಡೆತ. "ತದಾಭಿಘಾತಾದಿವ ಲಗನಪಕ್ಷೇ" ಕುಮಾಂ ೭-೪೯। 3. ಶಬ್ದವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳ ಸಂಯೋಗ. [ಯಾವ ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳ ಸಂಯೋಗದಿಂದ ಶಬ್ದವುಂಟಾಗುವುದೋ ಮತ್ತು ಆ ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಯಾವ ಸಂಯೋಗವು ಬೇರ್ಪಡಿಸಲು ಕಾರಣವಾಗುವುದೋ ಅಂತಹ ಸಂಯೋಗವೇ ಅಭಿಘಾತವು.]

ಅಭಿಘಾತಕ ಅಭಿಘಾತಕ (ಪುಂ) 1. ಶತ್ರು, ವೈರಿ, ಹಗೆ. (ವಿಂ) 2. ಅಭಿಘಾತವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. 3. ಬುಡಸಹಿತ ನಾಶಮಾಡುವ. ಅಭಿ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) "ಘ್" (೩-೩-೧೩೩)।

ಅಭಿಘಾತಿನ್ ಅಭಿಘಾತಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಶತ್ರು, ವೈರಿ, ಹಗೆ. (ವಿಂ) 2. ಅಭಿಘಾತವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. 3. ಬುಡಸಹಿತ ನಾಶಮಾಡುವ. ಅಭಿ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) "ಗಿತಿಃ" (೩-೨-೭೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಘಾತಿನಿ - ಘಾತಿನೀ.

ಅಭಿಘಾರ ಅಭಿಘಾರ (ಪುಂ) 1. ಘೃತಸೇಚನೆ, ಹನಿಸ್ಸಿಗೆ ತುಪ್ಪಹಾಕುವುದು. 2. ಘೃತಸೇಚನೆಯಿಂದಾಗುವ ಒಂದು ಸಂಸ್ಕಾರ (ಶುದ್ಧಿ). ಅಭಿ + ಘ (ಸೇಚನೇ) + ಗಿತ್ ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। 3. ಘೃತ, ತುಪ್ಪ. ಅಭಿ + ಘ ಕರ್ಮಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೯)।

ಅಭಿಚರ ಅಭಿಚರ (ಪುಂ) 1. ಭೃತ್ಯ, ಸೇವಕ, ಚಾಕರ, ಆಳು. ಅಭಿ + ಚರ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। (ವಿಂ) 2. ಸುತ್ತಲೂ ಸಂಚರಿಸುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪)। -ಚರಾ - ಚರಾ.

ಅಭಿಚರಣ ಅಭಿಚರಣ (ಪುಂ) ಶತ್ರುಗಳ ನಾಶಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಅಭಿಚಾರಕೃತ್ಯ, ಮಾಟ, ಶೈಲನಯಾಗ ಮೊದಲಾದುದು. ಅಭಿ + ಚರ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಕೌಟಿಲ್ಯಃ ಕೋಪನೋಽಪಿ ಸ್ವಯಮಭಿಚರಣೇ ಜ್ಞಾತದ್ವಿಃ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾಮ್" ಮುದಾಂ ೪-೧೨।

ಅಭಿಚರಣೀಯ ಅಭಿಚರಣೀಯ (ವಿಂ) ಮಾಟ ಮೊದಲಾದ ಮಾಂತ್ರಿಕನ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಗುರಿಯಾಗುವ, ಅಭಿಚಾರಕೃತ್ಯಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯನಾದ (ಶತ್ರು). ಅಭಿ + ಚರ (ಗತೌ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)।

ಅಭಿಚಾರ ಅಭಿಚಾರ (ಪುಂ) ಶತ್ರು ಸಂಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಹೋಮ, ಹಿಂಸೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ, ಮಾಟ. ಅಭಿ + ಚರ (ಗತೌ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ಸ್ಫುಟಮಿದಮಭಿಚಾರಮನ್ತ್ರ ಏವ ಪ್ರತಿಯುಕ್ತೇ-ರಭಿಧಾನಮಜ್ಞಾನಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೭-೫೮।

ಅಭಿಚಾರಿನ್ ಅಭಿಚಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಮಾಟವನ್ನು ಮಾಡುವ, ಶತ್ರುವಿಗೆ ಹಿಂಸೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಹೋಮಾದಿಗಳನ್ನು ನಡೆಸುವ. ಅಭಿ + ಚರ (ಗತೌ) "ಗಿತಿಃ" (೩-೨-೭೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಚಾರಿಣಿ - ಚಾರಿಣೀ.

ಅಭಿಚ್ಛಾಯ ಅಭಿಚ್ಛಾಯ (ವಿಂ) 1. ನೆರಳಿಗೆ ಎದುರಾಗಿರುವ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ನೆರಳಿಗೆ ಎದುರಾಗಿ.



**ಅಭಿಜನ ಅಭಿಜನ (ಪುಂ)** 1. ವಂಶ, ಕುಲ. ಅಭಿಜಾಯತೇ  
 ಸ್ಮಿನ್—ಅಭಿ + ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತಭವಿ) “ಘ್” (೩-೩-೧೨೧)।  
 “ಪತಿಂ ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ ದೇವಂ ಭುವನಪತಿಮುಚ್ಛೇರಭಿಜನಮ್” ಮುद्रಾಂ  
 ೬-೬। 2. ಜನ್ಮಭೂಮಿ, ಹುಟ್ಟಿದ ಊರು. 3. ಪೂರ್ವ  
 ಕರು (ತಾತ, ಮುತ್ತಾತ ಮೊದಲಾದವರು) ವಾಸ  
 ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಜಾಗ. “ಯತ್ರ ಪೂರ್ವಾಪಿತಂ ಸೋಽಭಿಜನಃ”  
 ಸಿಂ ಕೌಂ। 4. ಕೀರ್ತಿ, ಯಶಸ್ಸು. ಅಭಿಜಾಯತೇ ಸತ್ಪುರುಷೋ  
 ಭವತಿ ಯೇನ—ಅಭಿ + ಜನಿ ಕರಂ “ಘ್” (೩-೩-೧೨೧)।  
 5. ಸದ್ವಂಶ, ಒಳ್ಳೆಯ ಕುಲ. “ಸ್ತುತಂ ತನ್ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯಂ  
 ಯದಭಿಜನತೋ ಯಚ್ಚ ಗುಣತಃ” ಮಾಲತೀಂ ೨-೧೩। 6. ಕುಲದ  
 ಯಜಮಾನ, ವಂಶದಲ್ಲಿ ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದವನು. “ಭವೇದಭಿ-  
 ಜನಃ ಸ್ವಾತೌ ಜನ್ಮಭೂಮ್ಯಾಂ ಕುಲಧ್ವಜೇ। ಕುಲೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ।

**ಅಭಿಜನನ ಅಭಿಜನನ (ನಂ)** ಸತ್ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವಿಕೆ.

**ಅಭಿಜಯ ಅಭಿಜಯ (ಪುಂ)** ವಿಜಯ, ಜಯಿಸುವುದು,  
 ಗೆಲುವು. ಅಭಿ + ಜಿ (ಜಯೇ) “ಅಚ್” (೩-೩-೪೬)।

**ಅಭಿಜಾತ ಅಭಿಜಾತ (ವಿಂ)** 1. ಸತ್ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ-  
 ದವನು. ಅಭಿಮತಂ ಜಾತಂ ಯಸ್ಯ। “ಜಾತ್ಯಸ್ತೇನಾಭಿಜಾತೇನ ಶೂರಃ  
 ಶೌರ್ಯವತಾ ಕುಶಃ” ರಘುಂ ೧೭-೪। 2. ಪಂಡಿತ, ಜ್ಞಾನಿ.  
 “ಸಂಕೀರ್ಣಂ ನಾಭಿಜಾತೇಷು ನಾಪ್ರಬುದ್ಧೇಷು ಸಂಸ್ಕೃತಮ್”।  
 3. ಮನೋಹರವಾದ, ಮಧುರವಾದ, ಇಂಪಾದ.  
 “ಪ್ರಜಲ್ಪಿತಾಯಾಮಭಿಜಾತವಾಚಿ” ಕುಮಾಂ ೧-೪೪।

**ಅಭಿಜಾತಿ ಅಭಿಜಾತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಜನ್ಮ,  
 ಸತ್ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವುದು.

**ಅಭಿಜಿತ್ ಅಭಿಜಿತ್ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ಒಂದು  
 ಯಾಗ. 3. ಒಂದು ನಕ್ಷತ್ರ. (ನಂ) 4. ಪ್ರಯಾಣಕ್ಕೆ  
 ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ ಒಂದು ಲಗ್ನ. 5. ಅಭಿಜನ್ಮಹೂರ್ತ,  
 ಅಪರಾಹ್ಣ, ಕುತುಪಕಾಲ. “ಅಪರಾಹ್ಣೇ ತು ಸಂಪ್ರಾಪ್ತೇ  
 ಅಭಿಜಿತ್ಸೋಹಿಣೋದಯೇ। ಯದತ್ರ ದೀಯತೇ ಜನ್ತೋಸ್ತದಕ್ಷಯಮುದಾಹೃತಮ್”  
 ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ 1 (ವಿಂ) 6. ಎದುರಿಗೆ ನಿಂತು ಹೋರಾಡಿ  
 ಶತ್ರುವನ್ನು ಜಯಿಸುವ. ಅಭಿ ಜಯತಿ ಶತ್ರುನ್—ಅಭಿ +  
 ಜಿ (ಜಯೇ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೬೧)। 7. ಸಂಪೂರ್ಣ  
 ವಾದ ಜಯಗಳಿಸುವ. ಅಭಿಜಯತೀನೇನ—ಕರಂ “ಕ್ವಿಪ್”।  
 8. ಅಭಿಜಿತ್ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅಭಿಜಿತಿ ಜಾತಃ  
 —ಅಣೋ ಲುಕ್ (೪-೩-೩೬)।

**ಅಭಿಜಿತ ಅಭಿಜಿತ (ಪುಂ)** ಅರ್ಧ ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಬರುವ  
 “ಅಭಿಜಿತ್” ಎಂಬ ಮುಹೂರ್ತ. “ಮುಹೂರ್ತೇಽಭಿಜಿತೇ ಪ್ರಾಪ್ತೇ  
 ಸಾರ್ಧರಾತ್ರೇ ವಿಭೂಷಿತೇ। ದೇವಕೃಜನಯದ್ವಿಣ್ಣುಂ ಯಶೋದಾ ತಾಂ ತು  
 ಕನ್ಯಕಾಮ್” ವಿಷ್ಣುಪುಂ 1.

**ಅಭಿಜ ಅಭಿಜ್ಜ (ವಿಂ)** 1. ತಿಳಿದವನು, ಬಲ್ಲವನು,  
 ಪಂಡಿತ. ಅಭಿಜಾನಾತಿ—ಅಭಿ + ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) “ಕಃ”  
 (೩-೧-೧೩೬)। “ಯದ್ವಾ ಕೌಶಲಮಿन्द्रಸುನುದಮನೇ ತತ್ರಾಪ್ಯಭಿಜ್ಞೋ  
 ಜನಃ” ಉಂ ರಾಂ ೪-೩೪। 2. ನಿಪುಣ, ಚತುರ, ಜಾಣ.

**ಅಭಿಜ್ಞಾ ಅಭಿಜ್ಞಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮೊದಲು ಉಂಟಾದ  
 ತಿಳಿವಳಿಕೆ. 2. ಸ್ಮರಣೆ, ನೆನಪು. ಅಭಿ + ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ)  
 “ಅಜ್” (೩-೩-೧೦೬)।

**ಅಭಿಜ್ಞಾತ ಅಭಿಜ್ಞಾತ (ವಿಂ)** ಹಿಂದಿನ ಗುರುತಿನಿಂದ  
 (ಸ್ಮರಣೆಯಿಂದ) ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಅಭಿಜ್ಞಾನ ಅಭಿಜ್ಞಾನ (ನಂ)** 1. ಲಕ್ಷಣ, ಹಿಂದಿನ  
 ನೆನಪನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಗುರುತು. ಅಭಿಜ್ಞಾಯತೇಽನೇನ—  
 ಅಭಿ + ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) ಕರಂ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭)।  
 “ಉಪಪನ್ನೇರಭಿಜ್ಞಾನೇದಂತಂ ತಮವಗಚ್ಛತ” ರಾಮಾಂ 1. ಸ್ಮರಣೆ,  
 ನೆನಪು. ಅಭಿ + ಜ್ಞಾ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪)।  
 (ವಿಂ) 3. ನೆನಪನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ವಸ್ತು. “ತಸ್ಯ  
 ಭರ್ತುರಭಿಜ್ಞಾನಮಜ್ಞುಲೀಯಂ ದದೌ ಕಪಿಃ” ರಘುಂ ೧೨-೬೨।

**ಅಭಿಜ್ಞಾನಪತ್ರ ಅಭಿಜ್ಞಾನಪತ್ರ (ನಂ)** ಪರಿಚಯಪತ್ರ,  
 ಯೋಗ್ಯತೆಯನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಕಾಗದ, ಶಿವಾಸೀನ  
 ಕಾಗದ, ಗುಣವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಕಾಗದ (Certificate).

**ಅಭಿಜ್ಞಾನಶಾಕುಂತಲ ಅಭಿಜ್ಞಾನಶಾಕುಂತಲ (ನಂ)**  
 ಕಾಳಿದಾಸನ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ “ಶಾಕುಂತಲ” ನಾಟಕ.  
 ಅಭಿಜ್ಞಾನೇನ ಗೃಹೀತಾ ಶಕುಂತಲಾ। ತಾಮಧಿಕೃತ್ಯ ಕೃತಂ ನಾಟಕಮ್  
 “ಅಣ್” (೪-೩-೮೭)। [ದುಷ್ಯಂತಮಹಾರಾಜನು  
 ಕಣ್ವಮಹರ್ಷಿಯ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಶಕುಂತಲೆಯನ್ನು  
 ಗಾಂಧರ್ವ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಮದುವೆಯಾಗಿ ದುರ್ವಾಸ  
 ಮಹರ್ಷಿಯ ಶಾಪದಿಂದ ತಾನು ಶಕುಂತಲೆಯನ್ನು  
 ಮದುವೆಯಾದುದನ್ನೇ ಮರೆತುಬಿಡುವನು. ಆಮೇಲೆ,  
 ಮದುವೆಯಾದಾಗ ತಾನು ಅವಳಿಗೆ ಕೊಟ್ಟಿದ್ದ  
 ಉಂಗುರದ ಗುರುತಿನಿಂದ ಮದುವೆಯಾದುದು ನೆನಪಿಗೆ  
 ಬಂದು ಅವಳನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದ ವಿಷಯವನ್ನು ಕುರಿತು  
 ರಚಿಸಿರುವುದರಿಂದ ಈ ನಾಟಕಕ್ಕೆ “ಅಭಿಜ್ಞಾನಶಾಕುಂತಲಮ್”  
 ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು.]

**ಅಭಿಜ್ಞಾಪಕ ಅಭಿಜ್ಞಾಪಕ (ವಿಂ)** ನೆನಪಿಗೆ ತರುವ,  
 ನೆನಪನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.

**ಅಭಿತಪ್ತ ಅಭಿತಪ್ತ (ವಿಂ)** ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
 ಸುತ್ತಲೂ ಬಿಸಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಅಭಿತಸ್ ಅಭಿತಸ್ (ಅವ್ಯಂ)** 1. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ, ಹತ್ತಿರ  
 ದಲ್ಲಿ. ಅಭಿ “ತಸಿಲ್” (೪-೩-೯)। “ತತೋ ರಾಜಾಬ್ರವೀದ್



ವಾಕ್ಯಂ ಸುಮನ್ವಮಭಿತಃ ಸ್ಥಿತಮ್" ರಾಮಾಂ. 2. ಎದುರಿನಲ್ಲಿ, ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ. "ಅಭಿತಃ ಸದೌಷ್ಯ ಹರಿಪಾಂಡವೌ ರಥಾತ್" ಮಾಘಂ ೧೩-೬೧. 3. ಶೀಘ್ರವಾಗಿ, ಜಾಗೃತೆಯಾಗಿ. 4. ಎರಡು ಕಡೆಯಲ್ಲಿಯೂ. "ಅಭಿತಃ ಕ್ಷುಭಿತಾಂಬುರಾಶಿಧೀರಧ್ವನಿರಾಕುಟಸಮೂಲಪಾದಪೌಘಃ" ಮಾಘಂ ೨೦-೫೭. 5. ಸುತ್ತಲೂ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲಿಯೂ. "ಅಭಿತೋಽಭ್ಯಾಗತಾನ್ ಯೋಧುಃ ಕಿರಾನ್ ರಣವಿಶಾರದಾನ್" ಕುಮಾರಂ ೧೬-೨೧. 6. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ, ಸಮಗ್ರವಾಗಿ. "ಅಭಿತಃ ಶೀಘ್ರಸಾಕಲ್ಯಸಮ್ಮುಖೋಭಯತೋಽಂತಿಕೇ" ವಿಶ್ವಂ.

**ಅಭಿಪ್ರಾಯ ಅಭಿಪ್ರಾಯ (ಪುಂ)** ಹೆಚ್ಚು ಸೆಕೆ, ಅಧಿಕ ಸಂತಾಪ. "ಅಭಿಪ್ರಾಯಸಂಪದಮಥೋಣರಚಿನಿಜತೇಜಸಾಮಸಹಮಾನ ಇವ" ಮಾಘಂ ೯-೧.

**ಅಭಿಪ್ರಾಯ ಅಭಿಪ್ರಾಯ (ವಿಂ)** ಬಹಳ ಕೆಂಪಾದ, ಅಚ್ಚು ಗೆಂಪಾದ. ಅಭಿತಃ ತಾಮ್ರಮ್. "ಅಥಧೂಮಾಭಿತಾಃ ವೃಕ್ಷಶಾಖಾವಲಮ್ಬಿನಮ್" ರಘುಂ ೧೫-೪೯.

**ಅಭಿತೋಮುಖ ಅಭಿತೋಮುಖ (ವಿಂ)** ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗೂ ವ್ಯಾಪಿಸುವ. (ಲಕ್ಷಂ).

**ಅಭಿದರ್ಶನ ಅಭಿದರ್ಶನ (ನಂ)** 1. ಎದುರು ನೋಟ. 2. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ ನೋಡುವುದು. "ಗ್ರಾಮಭಾತೇ ಹಿತಾಭಿಜ್ಞೇ ಪಥಿ ಮೋಘಾಭಿದರ್ಶನೇ" ಮನುಂ ೯-೨೭೪.

**ಅಭಿದ್ರವ ಅಭಿದ್ರವ (ಪುಂ)** ವೇಗವಾಗಿ ಓಡುವುದು. ಅಭಿ+ದ್ರ (ಗತೌ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭). ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). -ದ್ರವಣಮ್ -ದ್ರವಣಮ್.

**ಅಭಿದ್ರಹ ಅಭಿದ್ರಹ (ವಿಂ)** ದ್ರೋಹಮಾಡುವ, ಅಪಕಾರಮಾಡುವ. ಅಭಿ+ದ್ರಹ (ಜಿಘಾಂಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ರಿಪ್" (೩-೨-೬೧).

**ಅಭಿದ್ರೋಹ ಅಭಿದ್ರೋಹ (ಪುಂ)** 1. ಅಪಕಾರ, ತೊಂದರೆ, ಹಿಂಸೆ. ಅಭಿ+ದ್ರಹ (ಜಿಘಾಂಸಾಯಾಮ್) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮). "ಅಭಿದ್ರೋಹೇಣ ಭೂತಾನಾಮರ್ಜಯನ್ ಗತ್ವರೀಃ ಶ್ರಿಯಃ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೨೧. 2. ದೂಷಣೆ, ನಿಂದೆ, ಬೈಗಳು. "ನಾಮಜಾತಿಗ್ರಹಂ ತೇಷಾಮಭಿದ್ರೋಹೇಣ ಕುರ್ವತಃ" ಮನುಂ ೮-೨೭೧. 3. ಮೋಸ.

**ಅಭಿಧರ್ಷಣ ಅಭಿಧರ್ಷಣ (ನಂ)** 1. ಹಿಂಸಿಸುವುದು. 2. ಅಡುಮುವುದು, ಅಡಗಿಸುವುದು. 3. ಭೂತದ ಆವೇಶ.

**ಅಭಿಧಾ ಅಭಿಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಶಬ್ದದಲ್ಲಿರುವ ಸಂಕೇತ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಒಂದು ಶಕ್ತಿ, ಶಬ್ದಕ್ಕಿರುವ ಅರ್ಥವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಮೂರು ವಿಧ ಶಕ್ತಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಅಭಿ+ಡ್ ಧಾಜ್ (ಧಾರಣೆ) ಕರಂ "ಅಡ್" (೩-೩-೧೦೬).

"ವಾಚ್ಯೋಽರ್ಥೋಽಭಿಧಯಾ ಬೋಧ್ಯೋ ಲಕ್ಷ್ಯೋ ಲಕ್ಷಣಯಾ ಮತಃ. | ವ್ಯಕ್ತೋ ವ್ಯಂಜನಯಾ ತಾಃ ಸ್ಯುಃ ತಿಸ್ರಃ ಶಬ್ದಸ್ಯ ಶಕ್ತಯಃ" | ಸಾಂ ದಂ ೨-೩. 2. ಪದ, ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಶಬ್ದ. 3. ನಾಮಧೇಯ, ಹೆಸರು. "ಕುಸುಮವಸಂತಾಪಾಭಿಧಃ" | ಸಾಂ ದಂ ೩-೪೨.

**ಅಭಿಧಾನ ಅಭಿಧಾನ (ನಂ)** 1. ನಾಮಧೇಯ, ಹೆಸರು. ಅಭಿಧೀಯತೇಜನೇ - ಅಭಿ+ಡ್ ಧಾಜ್ (ಧಾರಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). "ತವಾಭಿಧಾನಾದ್ವ್ಯಥತೇ ನತಾನನಃ ಸುತುಃಸಹಾನ್ಮನ್ವಪದಾದಿವೋರಗಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೨೪. 2. ಕಥನ, ಹೇಳುವುದು. ಅಭಿ+ಧಾಜ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). 3. ನಿಘಂಟು, ಶಬ್ದಕೋಶ.

**ಅಭಿಧಾನಿ ಅಭಿಧಾನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ರಜ್ಜು, ಹಗ್ಗ. ಅಭಿಧೀಯತೇ ಆಭಿಮುಖ್ಯೇನ ಧೀಯತೇಜನೇ ಬಂಧನಾಽನಯಾ - ಅಭಿ+ಡ್ ಧಾಜ್ (ಧಾರಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫).

**ಅಭಿಧಾಮೂಲ ಅಭಿಧಾಮೂಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಭಿಧಾ ಮೂಲವಾದ ವ್ಯಂಜನಾವೃತ್ತಿ. ಅಭಿಧಾಮೂಲ ಮತ್ತು ಲಕ್ಷಣಮೂಲಗಳೆಂದು ವ್ಯಂಜನಾವೃತ್ತಿಯು ಎರಡು ವಿಧ. "ಅನೇಕಾರ್ಥಸ್ಯ ಶಬ್ದಸ್ಯ ಸಂಯೋಗಾದಿನಿಯಂತ್ರಿತವಾದಾಗ ಏಕಾರ್ಥೋಽನ್ಯಥಾಹೇತುರ್ವ್ಯಂಜನಾ ಸಾಽಭಿಧಾಮೂಲಾ" ಸಾಂ ದಂ ೨-೧೪. ಅನೇಕಾರ್ಥಗಳುಳ್ಳ ಶಬ್ದದ ಒಂದು ಅರ್ಥವು ಸಂಯೋಗಾದಿಗಳಿಂದ ನಿಯಂತ್ರಿತವಾದಾಗ ಮತ್ತೊಂದು ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಶಕ್ತಿಯು "ಅಭಿಧಾಮೂಲಾ ವ್ಯಂಜನಾ" ಎನಿಸುವುದು. "ಸಶಸ್ತ್ರಚಕ್ರೋ ಹರಿಃ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಶಂಖ ಚಕ್ರಗಳ ಸಂಯೋಗದಿಂದ ಹರಿ ಶಬ್ದವು ವಿಷ್ಣುವಾಚಕವಾಗುವುದು. "ಭೀಮಾರ್ಜುನೌ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಭೀಮನ ಸಾಹಚರ್ಯದಿಂದ ಅರ್ಜುನಪದವು ಪೃಥಾವುತ್ರನಾದ ಅರ್ಜುನವಾಚಕವಾಗುವುದು. ಈ ರೀತಿ ಒಂದು ಅರ್ಥವು ಸಂಯೋಗಾದಿಗಳಿಂದ ನಿಯಂತ್ರಿತವಾದಾಗ ಮತ್ತೊಂದು ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಶಕ್ತಿಗೆ "ಅಭಿಧಾಮೂಲಾ" ಎಂದು ಹೆಸರು. "ಗಾಮಾಕ್ರಮ್ಯ ವಿಭೂತಿಭೂಷಿತತನ್ ರಾಜತ್ಯುಮಾವಲಂಬಃ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪ್ರಕರಣದಿಂದ "ರಮಾವಲಂಬ" ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಉಪಾದೇವಿಯ ಪತಿ ಭಾನುದೇವನೆಂಬ ಅರ್ಥವು ಅಭಿಧಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ನಿಯಂತ್ರಿತವಾಗಲಾಗಿ ವ್ಯಂಜನೆಯಿಂದ "ಗೌರೀಪತಿ" ರೂಪವಾದ ಅರ್ಥವುಂಟಾಗುವುದು. ಇದೇ ಅಭಿಧಾಮೂಲವ್ಯಂಜನೆ.

**ಅಭಿಧಾಯಕ ಅಭಿಧಾಯಕ (ವಿಂ)** ವಾಚಕ ಶಬ್ದ, ಅಭಿಧಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಪದ. ಅಭಿ+ಡ್ ಧಾಜ್ (ಧಾರಣೆ) "ಫಲ್" (೩-೩-೧೩೩).



ಅಭಿಪ್ರಾಯಿನ್ ಅಭಿಧಾಯಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಹೇಳುವ, ಮಾತನಾಡುವ. 2. ಶಬ್ದವನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸುವ. ಅಭಿಪ್ರಾಯಿನ್ — ಅಭಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣೆ) “ಣಿಞಿ:” (3-1-134). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (4-1-5). —ಧಾಯಿನಿ — ಧಾಯಿನೀ.

ಅಭಿಪ್ರಾಯಕ ಅಭಿಧಾವಕ (ವಿಂ) ಎದುರಾಗಿ ಓಡಿ ಹೋಗುವ. ಅಭಿ + ಧಾವು (ಗತಿಸ್ತುಡ್ಧಿ:) “ಫ್ವಲ್” (3-1-133).

ಅಭಿಧಿತ್ಸತ್ ಅಭಿಧಿತ್ಸತ್ (ವಿಂ) ಮಾತಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. ಅಭಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣೆ) + ಸನ್ “ಶತ್” (3-2-124). “ಅಭಿಧಿತ್ಸತಃ ಕಿಮಪಿ ಸಾಹುಬದನವಿಕೃತಂ ವ್ಯಭಾವ್ಯತ” ಮಾಘಂ 14-51.

ಅಭಿಧಿತ್ಸಾ ಅಭಿಧಿತ್ಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೇಳಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಮಾತಾಡಲು ಇಚ್ಛೆ. ಅಭಿಧಾತುಮಿಚ್ಛಾ — ಅಭಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣೆ) + ಸನ್ “ಅ:” (3-3-102).

ಅಭಿಧೇಯ ಅಭಿಧೇಯ (ನಂ) 1. ಅರ್ಥ, ಅಭಿಧಾವ್ಯತ್ಯೆಯಿಂದ ಹೇಳುವ ಶಬ್ದಾರ್ಥ. ಅಭಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣೆ) “ಯತ್” (3-1-97). “ಅಭಿಧೇಯಾವಿನಾಭೂತಪ್ರತೀತಿ-ಲಕ್ಷಣೋಚ್ಯತೇ” ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ. 2. ಗ್ರಂಥದಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಲ್ಪಡುವ ವಿಷಯ.

ಅಭಿಧ್ಯಾ ಅಭಿಧ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಿಂತನೆ, ಆಲೋಚನೆ, ಧ್ಯಾನ. ಅಭಿ + ಧ್ಯೇ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) “ಅಡ್” (3-3-106). 2. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ ಆಸೆ. 3. ಇತರರ ಸ್ವತ್ತನ್ನು ಅಪಹರಿಸುವ ಆಸೆ. “ಅಭಿಧ್ಯಾ ತು ಪರಸ್ವೇಹಾ” ಅಮಿಂ ಚಿಂ.

ಅಭಿಧ್ಯಾನ ಅಭಿಧ್ಯಾನ (ನಂ) “ಅಭಿಧ್ಯಾ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅಭಿ + ಧ್ಯೇ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114).

ಅಭಿನದ್ ಅಭಿನದ್ (ವಿಂ) ಸುತ್ತಲೂ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿತೋ ನದಃ — ಅಭಿ + ಣಹ (ಬಂಧನೆ) “ಕ್ತಃ” (3-2-102). “ಪರೀರ್ಮಹಚಿ ತತಿರ್ಜಲಾನಾಮಭಿನದ್ವಾ ರಸಮಾನಸಾರಸೇನ” ಮಾಘಂ 6-64.

ಅಭಿನಂದ ಅಭಿನಂದ (ಪುಂ) 1. ಆನಂದ, ಸಂತೋಷ. ಅಭಿ + ಡು ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) “ಘನ್” (3-3-118). 2. ಹೊಗಳಿಕೆ, ಪ್ರಶಂಸೆ. 3. ಅಲ್ಪಸುಖ, ಸುಖಲೇಶ. 4. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹ. 5. ಈಶ್ವರ, ಪರಮಾತ್ಮ. ಅಭಿತೋ ನದಃ: ಸುಖಂ ಯಸ್ಮಿನ್. (ವಿಂ) 6. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಕ, ಪ್ರೇರಕ. 7. ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವ. ಅಭಿನಂದ-ಯತಿ — ಅಭಿ + ನದಿ + ಣಿಕ್ “ಅಚ್” (3-1-134).

ಅಭಿನಂದನ ಅಭಿನಂದನ (ನಂ) 1. ಪ್ರಶಂಸೆ, ಹೊಗಳಿಕೆ.

ಅಭಿ + ಡು ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114).

2. ಸಂತೋಷ, ಆನಂದ. (ವಿಂ) 3. ಸಂತೋಷ ಪಡಿಸುವ, ಆನಂದವುಂಟುಮಾಡುವ. 4. ಪ್ರಶಂಸಿಸುವ, ಹೊಗಳುವ. 5. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವ, ಪ್ರೇರಿಸುವ. ಅಭಿ + ನದಿ + ಣಿಕ್ “ಲ್ಯು:” (3-1-134).

ಅಭಿನಂದನೀಯ ಅಭಿನಂದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಹೊಗಳಿಕೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದ. 2. ಹೊಗಳಲ್ಪಡುವ. 3. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ. ಅಭಿ + ಡು ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) “ಅನೀಯರ್” (3-1-96).

ಅಭಿನಂದಿತ ಅಭಿನಂದಿತ (ವಿಂ) 1. ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿ + ಡು ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) “ಕ್ತಃ” (3-2-102). “ಅಭಿನಂದಿತವೃತ್ತಿರಾಯಮಿಶ್ರಃ” ಯಾದಂ 14-94.

ಅಭಿನಂದಿನ್ ಅಭಿನಂದಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡುವ. ಅಭಿ + ಡು ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) “ಣಿಞಿ:” (3-2-98). 2. ಹೊಗಳುವ, ಪ್ರಶಂಸಿಸುವ. 3. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವ. ಅಭಿ + ನದಿ “ಣಿಞಿ:” (3-1-134). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (4-1-5). —ನಂದಿನಿ — ನಂದಿನೀ.

ಅಭಿನಂದ್ಯ ಅಭಿನಂದ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹೊಗಳಿಕೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದ, ಪ್ರಶಂಸೆಗೆ ಯೋಗ್ಯನಾದ. ಅಭಿ + ಡು ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) “ಯತ್” (3-1-97). “ಜನಸ್ಯ ಸಾಕೇತ-ನಿವಾಸಿನಸ್ತೌ ಛಾವಪ್ಯಭೂತಾಮಭಿನಂದ್ಯಸತ್ವೌ” ರಘುಂ 4-31. “ಗೌರಪ್ರಭಾ ಗೌತ್ರಭಿರಾಭಿನಂದ್ಯಾ” ಯಾದಂ 2-51. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಹೊಗಳಿ, ಪ್ರಶಂಸೆಮಾಡಿ. ಅಭಿ + ನದಿ “ಲ್ಯಪ್” (3-1-37).

ಅಭಿನಮ ಅಭಿನಮ (ಅವ್ಯಂ) ಅಂತರಿಕ್ಷಕ್ಕೆ ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ, ಆಕಾಶಕ್ಕೆ ಎದುರಾಗಿ. ಅವ್ಯಯಿಂ (2-1-14). “ಗುರುಕಾವ್ಯಾನುಗಾಂ ವಿಭ್ರಂಚಾಂದ್ರೀಮಭಿನಮಃ ಶ್ರಿಯಮ್” ಮಾಘಂ 2-2.

ಅಭಿನಮ್ರ ಅಭಿನಮ್ರ (ವಿಂ) ಬಗ್ಗಿರುವ, ಎದುರಾಗಿ ಬಗ್ಗಿದ. “ಇಮಾಂ ತಟಾಶೋಕಲತಾಂ ಚ ತನ್ವೀಂ ಸ್ತನಾಭಿರಾಮ-ಸ್ತಬಕಾಭಿನಮ್ರಾಮ್” ರಘುಂ 13-32.

ಅಭಿನಯ ಅಭಿನಯ (ಪುಂ) 1. ಮನಸ್ಸಿನ ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಅಂಗಚೇಷ್ಟೆ (ಶರೀರವ್ಯಾಪಾರ). ಅಭಿನಯತೀರ್ಥಾನ್ ಅನೇನ — ಅಭಿ + ಣಿಕ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಅಚ್” (3-3-56). “ಅಭಿನಯಾನ್ ಪರಿಚೇತುಮಿವೋಚತಾ ಮಲಯ-ಮಾರುತಕಂಪಿತಪಲ್ಲವಾ” ರಘುಂ 9-33. 2. ಇತರರ



(ರಾಮಾದಿಗಳ) ಅವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಅನುಕರಿಸುವುದು, ರಂಗಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಶರೀರವ್ಯಾಪಾರ ಭಾಷಣ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಮತ್ತೊಬ್ಬನು ಮಾಡಿದಂತೆ ಮಾಡುವುದು.

ಇಂತಹ ಅಭಿನಯವು ಆಂಗಿಕ, ವಾಚಿಕ, ಆಹಾರ್ಯ ಮತ್ತು ಸಾತ್ವಿಕಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. (1) ಶರೀರ ವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ ಮಾಡುವ ಅನುಕರಣವು ಆಂಗಿಕವು. (2) ಮಾತಿನಿಂದ ಮಾಡುವುದು ವಾಚಿಕವು. (3) ವೇಷಾದಿಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ಅನುಕರಣವು ಆಹಾರ್ಯವು. (4) ಸ್ತಂಭ, ಪ್ರಳಯ, ರೋಮಾಂಚ ಮೊದಲಾದ ಸಾತ್ವಿಕ ಭಾವಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದ ಅನುಕರಣವು ಸಾತ್ವಿಕಾಭಿನಯ. "ಭವೇದಭಿನಯೋವಸ್ಥಾನು-ಕಾರಃ ಸ ಚತುರ್ವಿಧಃ। ಆತ್ಮಿಕೋ ವಾಚಿಕಃಚೈವಮಾಹಾರ್ಯಃ ಸಾತ್ವಿಕಃ ಸ್ತಥಾ" ಸಾಂ ೬-೨। "ನರ್ತಕೀರಭಿನಯಾತಿ-ಲಕ್ಷಿಣಿಃ" ರಘುಂ ೧೯-೧೪।

**ಅಭಿನವ ಅಭಿನವ** (ಪುಂ) 1. ಮುಖಸ್ತುತಿ, ಎದುರಿಗೆ ಹೊಗಳುವುದು, ಅಧಿಕಪ್ರಶಂಸೆ. (ವಿಂ) 2. ಹೊಸದಾದ, ನವೀನವಾದ, ನೂತನವಾದ. ಅಭಿನಯತೇ - ಅಭಿ+ಞ (ಸ್ತುತೌ) "ಅಫ್" (೩-೩-೪೭)। "ವಿರಚಿತಾ ಮಧುನೋಪವನಶ್ರಿಯಾಮಭಿನವಾ ಇವ ಪತ್ರವಿಶೇಷಕಾಃ" ರಘುಂ ೯-೨೯।

**ಅಭಿನವತಾಮರಸ ಅಭಿನವತಾಮರಸ** (ನಂ) 1. ಹೊಸದಾದ ತಾವರೆ ಹೂವು. 2. ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ಭಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು (ವರ್ಣ) ವೃತ್ತ. "ಅಭಿನವತಾಮರಸಂ ನಜಜಾಘಃ" ವೃಂ ೨೦।

**ಅಭಿನವೋದ್ವಿಡ್ ಅಭಿನವೋದ್ವಿಡ್** (ಪುಂ) ಅಂಕುರ. ಮೊಳಕೆ. ಉದ್ವಿಗತಃ ಭುವಮ್ - ಉದ್+ಭಿವಿಡ್ (ವಿವರಣೆ) "ಕ್ವಿಫ್" (೩-೨-೬೧)। ಅಭಿನವರಚಾಸೌ ಉದ್ವಿಚ್ಚ।

**ಅಭಿನಹನ ಅಭಿನಹನ** (ನಂ) 1. ಸುತ್ತಲೂ ಕಟ್ಟುವುದು, ಭದ್ರವಾಗಿ ಕಟ್ಟುವುದು. 2. ಗಾಯಕ್ಕೆ ಕಟ್ಟುವ ಪಟ್ಟಿ. ಅಭಿ+ಞಹ (ಬಂಧನೆ) ಭಾವೇ ಕರಂ ವಾ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪, ೧೧೭)।

**ಅಭಿನಿಧನ ಅಭಿನಿಧನ** (ವಿಂ) 1. ನಾಶೋನ್ಮುಖವಾದ, ಅವಸಾನವನ್ನು ಎದುರು ನೋಡುವ. ಅಭಿಗತೋ ನಿಧನಮ್। (ಅವ್ಯಂ) 2. ನಾಶಕ್ಕೆ ಎದುರಾಗಿ.

**ಅಭಿನಿಧಾನ ಅಭಿನಿಧಾನ** (ನಂ) ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ಇಡುವುದು. ಅಭಿ+ನಿ+ಙ್ ಭಾನ್ (ಧಾರಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।

**ಅಭಿನಿಮುಕ್ತ ಅಭಿನಿಮುಕ್ತ** (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯಾಸ್ತಮಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ (ಸಂಧ್ಯಾವಂದನಾದಿ) ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ನಿದ್ರಿಸುವವನು. ಅಭಿಮುಕ್ತ ನಿರ್ಮುಕ್ತೋಸ್ತಮಿತೋಸ್ತಮಿ, ಅಭಿ ಸರ್ವಂ ಸಾಯಂತನಂ ಕರ್ಮ ನಿಶ್ಚಯೇನ ಮುಕ್ತಂ ಯೇನ ವಾ। "ಸುಪ್ತೇ ಯಸ್ಮಿನ್ನಸ್ತಮೇತಿ-ಸುಪ್ತೇ ಯಸ್ಮಿನ್ನುದೇತಿ ಚ। ಅಂಶುಮಾನಭಿನಿಮುಕ್ತಾಮ್ಯುದಿತೌ ತೌ ಯಥಾಕ್ರಮಮ್" ಅಮಂ।

**ಅಭಿನಿರ್ಯಾಣ ಅಭಿನಿರ್ಯಾಣ** (ನಂ) ಶತ್ರುವನ್ನು ಜಯಿಸಲು ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ಹೊರಡುವುದು. ಅಭಿ+ನಿರ್+ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।

**ಅಭಿನಿವೃತ್ತ ಅಭಿನಿವೃತ್ತ** (ವಿಂ) ಉಂಟಾದ, ತಯಾರಾದ, ಸಿದ್ಧವಾದ, ಪೂರ್ಣವಾದ.

**ಅಭಿನಿವೃತ್ತಿ ಅಭಿನಿವೃತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಿಷ್ಪತ್ತಿ, ತಯಾರಿಕೆ, ಪರಿಪೂರ್ಣತೆ. ಅಭಿ+ನಿರ್+ವೃತ್ತ (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।

**ಅಭಿನಿವಿಷ್ಟ ಅಭಿನಿವಿಷ್ಟ** (ವಿಂ) 1. ತತ್ಪರನಾದ, ಆಸಕ್ತನಾದ. 2. ಚಿಂತೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಯೋಚನೆಯಲ್ಲಿ ಮಗ್ನನಾದ. 3. ಆಗ್ರಹದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಹೆಠದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಅಭಿ+ನಿ+ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ಅಥವಾಭಿನಿವಿಷ್ಟಬುದ್ಧಿಫು" ಮಾಘಂ ೧೬-೪೩।

**ಅಭಿನಿವೇಶ ಅಭಿನಿವೇಶ** (ಪುಂ) 1. ಆಗ್ರಹ, ಹಠ. ಅಭಿ+ನಿ+ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ಅಪೇತಯುಧಾಭಿನಿವೇಶಸೌಮ್ಯೋ ಹರಿಹರಪ್ರಸ್ಥಮಥ ಪ್ರತಸ್ಥೇ" ಮಾಘಂ ೩-೧। 2. ತತ್ಪರತೆ, ಆಸಕ್ತಿ, ಉತ್ಸಾಹದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪ್ರಯತ್ನ. "ಅಹೋ ನಿರರ್ಥಕವ್ಯಾಪಾರೇಷ್ವಾಭಿನಿವೇಶಃ" ಕಾದಂ।

**ಅಭಿನಿವೇಶಿನ್ ಅಭಿನಿವೇಶಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಆಗ್ರಹವುಳ್ಳ, ಹಠವುಳ್ಳ. 2. ಆಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳ, ಉತ್ಸಾಹದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಅಭಿ+ನಿ+ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಣಿತಿಃ" (೩-೨-೭೮)।

**ಅಭಿನಿಷ್ಕರ್ಮ ಅಭಿನಿಷ್ಕರ್ಮ** (ಪುಂ) ಎದುರಾಗಿ ಹೊರಡುವುದು. ಅಭಿ+ನಿಷ್+ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। -ನಿಷ್ಕರ್ಮಣಮ್ -ನಿಷ್ಕರ್ಮಣಮ್.

**ಅಭಿನಿಷ್ಕಾಂತ ಅಭಿನಿಷ್ಕಾಂತ** (ವಿಂ) ಎದುರಾಗಿ ಹೊರಟ. ಅಭಿ+ನಿಷ್+ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)।



ಅಭಿನಿಷ್ಠಾನ ಅಭಿನಿಷ್ಠಾನ(ಪುಂ) 1. ಅಕ್ಷರ. 2. ವಿಸರ್ಗ, ವರ್ಣಗಳ ಮುಂದೆ ಬರುವ ಎರಡು ಸೊನ್ನೆ. ಅಭಿ+ನಿಃ + ಸ್ತುನ (ದೇವಶಬ್ದ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)।  
"ವರ್ಣಮಾತ್ರೇ ವಿಸರ್ಗೇ ಚಾಭಿನಿಷ್ಠಾನಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಅಭಿನಿಷ್ಠತನ ಅಭಿನಿಷ್ಠತನ (ನಂ) ಎದುರಾಗಿ ಹೊರಡುವುದು. ಅಭಿ+ನಿಃ+ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅಭಿನಿಷ್ಠಪ್ತಿ ಅಭಿನಿಷ್ಠಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ, ನೆರವೇರುವಿಕೆ, ಈಡೇರುವಿಕೆ. ಅಭಿ+ನಿಃ+ಪದ(ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।

ಅಭಿನಿಷ್ಠಪ್ತ ಅಭಿನಿಷ್ಠಪ್ತ (ವಿಂ) ಸಿದ್ಧವಾದ, ನೆರವೇರಿದ, ಈಡೇರಿದ. ಅಭಿ+ನಿಃ+ಪದ(ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)।

ಅಭಿನಿಷ್ಠವ ಅಭಿನಿಷ್ಠವ (ಪುಂ) ನಿಷೇಧ, ಸತ್ಯವನ್ನಡಗಿಸುವಿಕೆ, ಮರೆಮಾಚುವುದು. ಅಭಿ+ನಿ+ಹ್ಲುಟ್ (ಅಪನಯನ) "ಅಫ್" (೩-೩-೫೭)।

ಅಭಿನಿಷ್ಠತ ಅಭಿನಿಷ್ಠತ (ವಿಂ) 1. ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಯುಕ್ತವಾದ, ತಕ್ಕದಾದ. 2. ಕೋಪವುಳ್ಳ, ಕುಪಿತನಾದ. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಅನುಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಭಿನಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 7. ಎದುರಾಗಿ ತರಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿ+ಣಿಃ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨, ೩-೨-೧೦೨)। "ಅಭಿನಿಷ್ಠತಸ್ತು ನ್ಯಾಯೋಷಿಣಿ ಸಂಸ್ಕೃತೇ" ಹೇಮಂ।

ಅಭಿನಿಷ್ಠತ ಅಭಿನಿಷ್ಠತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಭಿನಯ, ಇತರರ ಅವಸ್ಥೆಯ ಅನುಕರಣ. 2. ಯುಕ್ತಿ. ಅಭಿ+ಣಿಃ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। "ಸಾಂತ್ವಪೂರ್ವಮಭಿನಿಷ್ಠತೀತುಕ್ಮ" ಕಿರಾಂ ೧೩-೩೬।

ಅಭಿನೇತವ್ಯ ಅಭಿನೇತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಶರೀರಾದಿ ವ್ಯಾಪಾರಗಳಿಂದ ಅನುಕರಿಸಲ್ಪಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ಅನುಕರಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಎದುರಿಗೆ ಕರೆತರಲ್ಪಡುವ. ಅಭಿ+ಣಿಃ (ಪ್ರಾಪಣ) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬)।

ಅಭಿನೇತೃ ಅಭಿನೇತೃ (ಪುಂ) ನಟ, ಅಭಿನಯಮಾಡುವವನು, ಇತರರ ಅವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಅನುಕರಿಸುವವನು. ಅಭಿ+ಣಿಃ (ಪ್ರಾಪಣ) "ತೃಃ" (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ತೀಫ್" (೪-೧-೫)। -ನೆತ್ರಿ-ನೇತ್ರೀ.

ಅಭಿನೇಯ ಅಭಿನೇಯ (ವಿಂ) 1. ಶರೀರಾದಿ ವ್ಯಾಪಾರಗಳಿಂದ ಅನುಕರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಎದುರಿಗೆ ಕರೆತರಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. ಅಭಿ+ಣಿಃ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಯತ್" (೩-೧-೯೭)। "ದೃಶ್ಯಂ ತತ್ರಾಭಿನೇಯಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧।

ಅಭಿಷ್ಠ ಅಭಿಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಒಡೆಯಲ್ಪಡದ. 2. ಸೀಳಲ್ಪಡದ. 3. ವ್ಯತ್ಯಾಸಹೊಂದದ, ಏಕರೀತಿಯಾದ. "ಅಭಿಷ್ಠವರ್ಣಿ ಗೃಹಿಣೀವ ಭವ್ಯಾ" ಯಾದಂ ೧೮-೮೦।  
4. ಒಡೆಯದಿರುವ, ಅಖಂಡವಾದ, ಪೂರ್ಣವಾದ. "ಅಭಿಷ್ಠಮನ್ಯೋನ್ಯಲಯಾದಕಾರ್ಪಿತ್" ಯಾದಂ ೧೮-೩೫।

ಅಭಿಷ್ಠಪುಟ ಅಭಿಷ್ಠಪುಟ (ಪುಂ) ಹೊಸಚಿಗುರು. ಅಭಿಷ್ಠಪುಟಂ ಯಸ್ಯ। "ದ್ವಾರ್ಯವಾಕ್ತುರಪಲಕ್ಷತವಗಾಭಿಷ್ಠಪುಟೋತ್ತರಾನ್" ರಘುಂ ೧೭-೧೨।

ಅಭಿಪತ್ತಿ ಅಭಿಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಿದ್ಧಿ, ನಿಷ್ಪತ್ತಿ, ಈಡೇರುವಿಕೆ. ಅಭಿ+ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।

ಅಭಿಪನ್ನ ಅಭಿಪನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಎದುರಿಗೆ ಬಂದಿರುವ. ಅಭಿ+ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। 2. ರಕ್ಷಣೆಯನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ ಬಂದಿರುವ, ಮರೆಹೊಕ್ಕಿರುವ. "ಅಭಿಪನ್ನಃ ಶರಣಾರ್ಥಿ" ಅಭಿಂ ವಿಂ। 3. ಅಪತ್ತಿಗೆ ಸಿಲುಕಿದ, ತೊಂದರೆಗೆ ಒಳಗಾದ. 4. ಅಪರಾಧಮಾಡಿದ. 5. ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ನುಂಗಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಭಿಪನ್ನೋಪರಾಧ್ಯೇಭಿದ್ರುತೇ ಗ್ರಸ್ತೇ ವಿಪದ್ಗತೇ" ವಿಶ್ವಂ।  
"ಕಾಲಾಭಿಪನ್ನಾಃ ಸಿದಂತಿ ಸಿಕತಾಸೇತವೋ ಯಥಾ" ರಾಮಾಂ। 6. ಹೊಂದಿರುವ, ಪಡೆದಿರುವ. "ತವಮನ್ಯಮಾಕಾರಮಿವಾಭಿಪನ್ನಃ" ಕಿರಾಂ ೩-೪೫।

ಅಭಿಪ್ರಣಯನ ಅಭಿಪ್ರಣಯನ(ನಂ)ವೇದೋಕ್ತ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಸಂಸ್ಕಾರ. ಅಭಿಪ್ರಣಯನೇನ - ಅಭಿ+ಪ್ರ+ಣಿಃ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅಭಿಪ್ರಣಿತ ಅಭಿಪ್ರಣಿತ (ವಿಂ) ವೇದೋಕ್ತ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಸ್ಕೃತವಾದ (ಅಗ್ನಿ ಮೊದಲಾದುದು). ಅಭಿತಃ ಪ್ರಣಿತಃ। "ಜ್ವಾಲಾಂ ಲೋಕಸ್ಥಿತಯೇ ಸ ರಾಜಾ ಯಥಾಧವೇ ವಹ್ನಿರೀವ ಪ್ರಣಿತಃ" ಭೃಗುಂ ೧-೪।

ಅಭಿಪ್ರಾಯ ಅಭಿಪ್ರಾಯ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಅಭಿಮುಖ (ಪ್ರಲಯ) ಪ್ರತಿ ಜಗದಸ್ಮಿನ್। "ಅಭಿಪ್ರಾಯಃ ಪ್ರಿಯಾರ್ಹೋಽಹಂ ಪ್ರಿಯಕೃತ್ ಪ್ರೀತಿವರ್ಧನಃ" ವಿಂ ಸಂ। 2. ಮನೋಭಾವ, ಉದ್ದೇಶ, ಇಂಗಿತ, ಆಶಯ. ಅಭಿ+ಪ್ರೀಃ (ತರ್ಪಣ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ತೇಷಾಂ ಸ್ವಂ ಸ್ವಮಭಿಪ್ರಾಯಮುಪಲಮ್ಯ ಪೃಥಕ್ ಪೃಥಕ್" ಮನುಂ ೭-೫೭। 3. ಮತ, ಸಲಹೆ. (ವಿಂ) 4. ಎದುರಿಗೆ ಬರುವ, ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಬರುವ. ಅಭಿ+ಪ್ರ+ಙ್ (ಗತೌ) "ಅಃ" (೩-೧-೧೩೪)।

ಅಭಿಪ್ರೇತ ಅಭಿಪ್ರೇತ (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಉದ್ದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿ+ಪ್ರ+ಙ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।



ಅಭಿಪ್ರೇಷು ಅಭಿಪ್ರೇಷ್ಯ (ವಿಂ) ಹೊಂದಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಪಡೆಯುವ ಆಸೆಯುಳ್ಳ. ಅಭಿ+ಪ್ರ+ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ)+ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮)। "ಸಹಾಸನ-ಮಭಿಪ್ರೇಷುರ್ದುಕ್ಟಸ್ಯಾಪಕೃಷ್ಣಜಃ" ಮನುಂ ೮-೨೬೧।

ಅಭಿಪ್ರೋಕ್ಷಣ ಅಭಿಪ್ರೋಕ್ಷಣ (ನಂ) ನೀರು ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಪ್ರೋಕ್ಷಿಸುವುದು, ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ ಮಂತ್ರಿಸಿದ ನೀರನ್ನು ಶುದ್ಧಿಗಾಗಿ ಚೆಮುಕಿಸುವುದು. ಅಭಿ+ಪ್ರ+ಊಷ (ಸೇವನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅಭಿಪ್ಲವ ಅಭಿಪ್ಲವ (ಪುಂ) 1. ಉಪದ್ರವ, ತೊಂದರೆ, ಕ್ಷೋಭೆ. 2. ಜಲಪ್ರಳಯ, ನೀರಿನಲ್ಲಿ ತೇಲುವುದು. ಅಭಿ+ಪ್ಲವ್ (ಗತೌ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪)।

ಅಭಿಪ್ಲುತ ಅಭಿಪ್ಲುತ (ವಿಂ) 1. ಸುತ್ತಲೂ ನೆನಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಅದ್ದಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲಿಯೂ ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವ. ಅಭಿ+ಪ್ಲವ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅಭಿಭವ ಅಭಿಭವ (ಪುಂ) 1. ತಿರಸ್ಕಾರ. 2. ಅಪಮಾನ. ಅಭಿ+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭)। "ಅಭಿ-ಭವೋದಿತಮನ್ಯುವಿದೀಪಿತಃ ಸಮಭಿಸ್ತುಭೃಶಂ ಜವಮೋಜಸಾ" ಕಿರಾಂ ೧೮-೭। "ಅಲಮ್ಯಶೋಕಾಭಿಭವೇಯಮಾಕೃತಿಃ" ಕುಮಾಂ ೫-೪೩। 3. ಪರಾಜಯ, ಸೋಲು. "ರಥೋ-ರಭಿಭವಾಶಿಕ್ಷಿ ಚುಕ್ಷುಃ ದ್ವಿಷತಾಂ ಮನಃ" ರಘುಂ ೪-೨೧। 4. ಕುಗ್ಗುವುದು, ರೋಗಾದಿಗಳಿಂದ ಜ್ಞಾನತಪ್ಪುವುದು. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। -ಭವನಮ್ -ಭವನಮ್.

ಅಭಿಭಾವನ ಅಭಿಭಾವನ (ನಂ) 1. ಸೋಲಿಸುವಿಕೆ. 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸುವುದು. 3. ಅಪಮಾನಗೊಳಿಸುವುದು. ಅಭಿ+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್)+ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅಭಿಭಾವಕ ಅಭಿಭಾವಕ (ವಿಂ) 1. ತಿರಸ್ಕರಿಸುವ. 2. ಅಪಮಾನಗೊಳಿಸುವ. 3. ಜಯಿಸುವ, ಸೋಲಿಸುವ. 4. ಜ್ಞಾನ ತಪ್ಪಿಸುವ. ಅಭಿ+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಅಭಿಭಾವಿನ್ ಅಭಿಭಾವಿನ್ (ವಿ) "ಅಭಿಭಾವಕ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅಭಿ+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಣಿನ್" (೩-೨-೭೮)। "ಸರ್ವಾತಿರಿಕ್ತಸಾರೇಣ ಸರ್ವತೇಜೋಽಭಿಭಾವಿನಾ" ರಘುಂ ೧-೧೩।

ಅಭಿಭಾವುಕ ಅಭಿಭಾವುಕ (ವಿಂ) "ಅಭಿಭಾವಕ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅಭಿ+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಊಕ್" (೩-೨-೧೫೪)।

ಅಭಿಭಾಷಣ ಅಭಿಭಾಷಣ (ನಂ) ಸಂಭಾಷಣೆ, ಎದುರಿಗೆ (ಪರಸ್ಪರ) ಮಾತಾಡುವುದು. ಅಭಿಮುಖ್ಯೇನ ಭಾಷಣಮ್।

ಅಭಿಭಾಷಿನ್ ಅಭಿಭಾಷಿನ್ (ವಿಂ) ಸಂಭಾಷಣೆಮಾಡುವ, ಎದುರಿಗೆ (ಪರಸ್ಪರ) ಮಾತಾಡುವ. ಅಭಿ+ಭಾಷ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಣಿನ್" (೩-೨-೭೮)। "ಪ್ರಸನ್ನ-ಮುಖರಾಗಂ ತಂ ಸ್ಮಿತಪೂರ್ವಾಭಿಭಾಷಿಣಮ್" ರಘುಂ ೧೭-೩೧।

ಅಭಿಭೂ ಅಭಿಭೂ (ವಿಂ) "ಅಭಿಭಾವಕ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅಭಿ+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬)।

ಅಭಿಭೂತ ಅಭಿಭೂತ (ವಿಂ) 1. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಸೋಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಅಪಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿ+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅಭಿಭೂತಿ ಅಭಿಭೂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಿರಸ್ಕಾರ, ಧಿಕ್ಕಾರ. 2. ಅಪಮಾನ, ಪರಾಭವ. 3. ಪರಾಜಯ, ಸೋಲು. ಅಭಿ+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। "ಅಭಿ-ಭೂತಿಭಯಾದಸುನತಃ ಸುಖಮುಜ್ಜಂತಿ ನ ಧಾಮ ಮಾನಿನಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೨೦।

ಅಭಿಭೂಯ ಅಭಿಭೂಯ (ಅವ್ಯಂ) 1. ತಿರಸ್ಕರಿಸಿ, ಧಿಕ್ಕರಿಸಿ. 2. ಸೋಲಿಸಿ. 3. ಅಪಮಾನಗೊಳಿಸಿ.

ಅಭಿಮತ ಅಭಿಮತ (ನಂ) 1. ಇಚ್ಛೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಅಭಿ+ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। "ದ್ವಿಪಾದನ್ಯಸ್ಮಾದಪಿ ಮಧ್ಯಾದಪಿ ಜಲನಿಧೇದಿಶೋಽಪ್ಯಂತಾತ್" ಆನೀಯ ಛಡ್ವಿತಿ ಘಟಯತಿ ವಿಧಿರಭಿಮತಮಭಿಮುಖಿಭೂತಃ" ರತ್ನಾಂ ೧-೬। 2. ಅಭಿಮಾನ. 3. ಅಭಿಪ್ರಾಯ, ಆಶಯ. (ವಿಂ) 4. ಸಮ್ಮತವಾದ, ಪ್ರಿಯವಾದ, ಇಷ್ಟವಾದ. ಅಭಿ+ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಸ ಮಾಧವೇನಾಭಿಮತೇನ ಸಖ್ಯಾ" ಕುಮಾಂ ೩-೨೩। 5. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಭಿಮತಫಲಶಂಸೀ ಚಾರು ಪುಸ್ಕೋರ ಬಾಹುಃ" ಭट्टಿಂ ೧-೧೭। 6. ಅದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರೀತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅಭಿಮತಿ ಅಭಿಮತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅದರ, ಪ್ರೀತಿ. 2. ಅಭಿಮಾನ, ಅಹಂಕಾರ. 3. ಗೌರವ, ಸನ್ಮಾನ. 4. ಅಭಿಲಾಷೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಅಭಿ+ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।

ಅಭಿಮನಸ್ ಅಭಿಮನಸ್ (ವಿಂ) ವ್ಯಗ್ರ, ಆಸಕ್ತ, ತತ್ಪರನಾದ, ನೆಟ್ಟ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ಅಭಿಮುಖಂ ಮನೋ ಯಸ್ಯ। "ಭವತೋಽಭಿಮನಾಃ ಸಮೀಹತೇ ಸರ್ವಃ ಕರ್ತುಮುಪೇತ್ಯ ಮಾನನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೬-೨।

ಅಭಿಮನ್ತವ್ಯ ಅಭಿಮನ್ತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ. ಅಭಿ+ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬)।



ಅಭಿಮನ್ತ ಅಭಿಮಂತ್ರ (ವಿಂ) 1. ಅಹಂಕಾರಪಡುವ, ಹೆಮ್ಮೆಪಡುವ, ಸ್ವಾಭಿಮಾನದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಅಭಿ+ಮನ (ಜ್ಞಾನ) "ತೃ" (3-2-96)। 2. ಪ್ರೀತಿಸುವ. 3. ಗೌರವಿಸುವ.

ಅಭಿಮನ್ತ್ರಣ ಅಭಿಮಂತ್ರಣ (ನಂ) 1. ಮಂತ್ರವನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸಿ ಪವಿತ್ರಗೊಳಿಸುವುದು. 2. ಮಂತ್ರಿಸುವುದು, ಮೋಹಗೊಳಿಸುವುದು, ವಶಪಡಿಸುವುದು. ಅಭಿ+ಮತ್ರಿ (ಗುಪ್ತಪರಿಭಾಷಣ) ಭಾವ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)।

ಅಭಿಮನ್ತ್ರಯ ಅಭಿಮಂತ್ರಯ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಮಂತ್ರವನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸಿ. 2. ಅಭಿಮಂತ್ರಣಮಾಡಿ, ಪವಿತ್ರಗೊಳಿಸಿ. ಅಭಿ+ಮತ್ರಿ (ಗುಪ್ತಪರಿಭಾಷಣ) "ಲ್ಯಪ್" (3-1-39)।

ಅಭಿಮನ್ಯು ಅಭಿಮನ್ಯು (ಪುಂ) ಅರ್ಜುನನ ಮಗನಾದ ಅಭಿಮನ್ಯು, ಶ್ರೀ ಕೃಷ್ಣನ ಸಹೋದರಿಯಾದ ಸುಭದ್ರೆಯ ಮಗ. [ಮಹಾಭಾರತ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಬಹಳ ಪರಾಕ್ರಮಿಯಾದ ಇವನು, ಅರ್ಜುನನು ಸಮೀಪದಲ್ಲಿಲ್ಲದಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕೌರವರಿಂದ ಚಕ್ರವ್ಯೂಹದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಹತನಾದನು.]

ಅಭಿಮರ ಅಭಿಮರ (ಪುಂ) 1. ಯುದ್ಧ. ಅಭಿಮ್ರಿಯತೇಶ್ವ — ಅಭಿ + ಮರ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗ) "ಘ" (3-3-118)। 2. ತನ್ನ ಸೈನ್ಯದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಭಯ. 3. ವಧೆ, ಕೊಲ್ಲುವಿಕೆ. "ಭವೇದಭಿಮರೋ ಯುಧೇ ವಘೇ ಸ್ವಬಲಸಾಧವೇ" ಮೇದಿಂ।

ಅಭಿಮರ್ದ ಅಭಿಮರ್ದ (ಪುಂ) 1. ಪುಡಿಮಾಡುವುದು. 2. ಹಿಂಡುವುದು, ಹಿಸುಕುವುದು. 3. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು, ಧ್ವಂಸಮಾಡುವುದು. ಅಭಿ+ಮರ್ದ (ಕ್ಷೋಧ) ಭಾವ "ಘ" (3-3-118)। 4. ಯುದ್ಧ. 5. ಮದ್ಯ, ಅಭಿ+ಮರ್ದ ಅಧಿಂ "ಘ" (3-3-121)। (ವಿಂ) 6. ಪುಡಿಮಾಡುವ. 7. ನಾಶಪಡಿಸುವ. 8. ಹಿಂಡುವ, ಹಿಸುಕುವ.

ಅಭಿಮರ್ದನ ಅಭಿಮರ್ದನ (ನಂ) "ಅಭಿಮರ್ದ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅಭಿ+ಮರ್ದ (ಕ್ಷೋಧ) "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)।

ಅಭಿಮರ್ಶ ಅಭಿಮರ್ಶ (ಪುಂ) 1. ಸ್ಪರ್ಶ, ಸಂಪರ್ಕ, ಸಂಬಂಧ, ಮುಟ್ಟುವುದು. ಅಭಿ+ಮಶ (ಆಮರ್ಶನೆ) "ಘ" (3-3-118)। "ಫಲದ್ವಿರೂಪಾಂಶುಕರಾಭಿಮರ್ಶಾ-ತ್ಕಾಶನಿವಂ ಧಾಮ ಪತಙ್ಗಕಾಂತಿಃ" ಮಾಘಂ 4-16। 2. ಧಾಳಿ ಮಾಡುವುದು, ಮೇಲೆ ಬೀಳುವುದು. "ಪರಾಭಿಮರ್ಶೋ ನ ತವಾಸ್ತಿ ಕಃ ಕರಂ ಪ್ರಸಾರಯೇತ್ಪನ್ನಗರತನುಚಯೇ" ಕುಮಾಂ 4-43।

ಅಭಿಮರ್ಶಕ ಅಭಿಮರ್ಶಕ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಪರ್ಶಮಾಡುವ, ಮುಟ್ಟುವ. 2. ಧಾಳಿಮಾಡುವ, ಮೇಲೆಬೀಳುವ. ಅಭಿ + ಮಶ (ಆಮರ್ಶನೆ) "ಘಲ್" (3-1-133)। "ನ ದುಷ್ಟಃ ಕಶ್ಚಿದಪ್ಯಾಸೀತ್ಪರದಾರಾಭಿಮರ್ಶಕಃ" ರಾಮಾಂ।

ಅಭಿಮರ್ಶನ ಅಭಿಮರ್ಶನ (ನಂ) "ಅಭಿಮರ್ಶ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅಭಿ+ಮಶ (ಆಮರ್ಶನೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)।

ಅಭಿಮರ್ಶಿನ್ ಅಭಿಮರ್ಶಿನ್ (ವಿಂ) "ಅಭಿಮರ್ಶಕ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅಭಿ+ಮಶ (ಆಮರ್ಶನೆ) "ಣಿನಿಃ" (3-2-98)। "ತ್ವತ್ಕಲತ್ರಾಭಿಮರ್ಶಿ ವೈರಾಸ್ಪದಂ ಧನಮಿತ್ರಃ" ದಶಕುಂ।

ಅಭಿಮಾನ ಅಭಿಮಾನ (ಪುಂ) 1. ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ. ಅಭಿ+ಮನ (ಜ್ಞಾನ) "ಘ" (3-3-118)। "ಮುನಿರಸ್ಮಿ ನಿರಾಗಸಃ ಕೃತೋ ಮೇ ಭಯಮಿತ್ಯೇಷ ನ ಭೂತಯೇಷಿಮಾನಃ" ಕಿರಾಂ 13-9। 2. ದರ್ಪ, ಆತ್ಮಗೌರವ. "ಸದಾಭಿ-ಮಾನೇಕಧನಾ ಹಿ ಮಾನಿನಃ" ಮಾಘಂ 1-69। "ನಿಘ್ನನ್ ಪ್ರಿಯಂ ಪ್ರಾಣಮಿವಾಭಿಮಾನಮ್" ಕಿರಾಂ 3-41। 3. ಪ್ರಣಯ, ಪ್ರೀತಿ. 4. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. "ಉತ್ಸಾಹಾದಿಸಮುದೋಃ ಸಾಧಾರಣ್ಯಾಭಿಮಾನತಃ" ಸಾಂ ದಂ 3-11। 4. ತಪ್ಪು ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ಮಿಥ್ಯಾಜ್ಞಾನ, ತಪ್ಪುಭಾವನೆ. 5. ಹೆಮ್ಮೆ, ಸೊಕ್ಕು, ಕೊಬ್ಬು. "ವಯಂ ಸ್ವಪಕ್ಷಶಿಥಿಲಾಭಿಮಾನಾಃ ಸಂವೃತ್ತಾಃ" ಮಾಲಂ 2। 6. ಹಿಂಸೆ, ತೊಂದರೆ, ಪೀಡೆ. "ಅಭಿಮಾನಸ್ತ್ವಹಂಕೃತೌ। ಹಿಸಾಯಾಂ ಪ್ರಣಯೇ ಜ್ಞಾನೇ" ಹೇಮಂ।

ಅಭಿಮಾನಶಾಲಿನ್ ಅಭಿಮಾನಶಾಲಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಗರ್ವ ವುಳ್ಳ, ಅಹಂಕಾರವುಳ್ಳ. ಅಭಿಮಾನೇನ ಶಾಲತೇ — ಶಾಡ್ (ಶಲಾಧಾಯಾಮ್) "ಣಿನಿಃ" (3-1-133)। "ಪ್ರಭವನ್ಯಭಿ-ಮಾನಶಾಲಿನಾಂ ಮದಮುತ್ತಮಭಯಿತುಂ ವಿಭೂತಯಃ" ಕಿರಾಂ 2-48।

ಅಭಿಮಾನಿತ ಅಭಿಮಾನಿತ (ನಂ) 1. ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ಕೂಡಿಕೆ, ಸಂಭೋಗ, ರತಿ, ಸುರತ. "ಸುರತಂ ತ್ವಭಿ-ಮಾನಿತಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। (ವಿಂ) 2. ಆತ್ಮಗೌರವವುಳ್ಳ. 3. ಅಹಂಕಾರವುಳ್ಳ. ಅಭಿಮಾನೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ "ಇತತ್" (4-2-36)।

ಅಭಿಮಾನಿನ್ ಅಭಿಮಾನಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಅಹಂಕಾರವುಳ್ಳ, ಗರ್ವವುಳ್ಳ. ಅಭಿಮಾನೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (4-2-114)। 2. ಆತ್ಮಗೌರವವುಳ್ಳ, ಸ್ವಾಭಿಮಾನವುಳ್ಳ. "ಗುಣಾನು-ರಕ್ತಾಮನುರಕ್ತಸಾಧನಃ ಕುಲಾಭಿಮಾನಿ ಕುಲಜಾಂ ನರಾಧಿಪಃ" ಕಿರಾಂ 1-31।

ಅಭಿಮಾಯ ಅಭಿಮಾಯ (ಪುಂ) ಅಜ್ಞಾನಿ, ತಿಳಿಗೇಡಿ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. ಮಾಯಾಮಿಗತಃ।



**ಅಭಿಮುಖ ಅಭಿಮುಖ** (ವಿಂ) 1. ಎದುರಾಗಿರುವ. ಅಭಿ-  
ಗತೋಮುಖಮ್ | "ಅಭಿಮುಖೇ ಮಯಿ ಸಂಹತಮೀಕ್ಷಣಮ್" ಶಾಕುಂ  
೨-೧೧ | 2. ಸಮೀಪಿಸಿರುವ. 3. ಎದುರುಗೊಳ್ಳುವ,  
ಎದುರಾಗುವ. "ಪ್ರಸಾದಾಭಿಮುಖೋ ವೇದಾಃ ಪ್ರತ್ಯುವಾಚ  
ದಿವೌಕಸಃ" ಕುಮಾಂ ೨-೧೬ | (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 4. ಎದುರಿ  
ನಲ್ಲಿ, ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ, ಎದುರಾಗಿ. ಅಭಿಗತೋ ಮುಖಮ್ |  
"ಕರ್ಣಂ ದದಾತ್ಯಭಿಮುಖಂ ಮಯಿ ಭಾಷಮಾಣೇ" ಶಾಕುಂ ೧-೨೭ |  
"ತಿಷ್ಠನ್ಮುನೇರಭಿಮುಖಂ ಸ ವಿಕೀರ್ಣಧಾಮನಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೪೯ |

**ಅಭಿಮುಖೀಕರಣ ಅಭಿಮುಖೀಕರಣ** (ನಂ) 1. ಎದು  
ರಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 2. ಸಂಬೋಧನೆ.

**ಅಭಿಮುಖ ಅಭಿಮುಖ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ಪರ್ಶಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು,  
ಮುಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟು. ಅಭಿ+ಮುಖ (ಆಮರ್ಶನೆ) "ಕ್ತಃ"  
(೩-೨-೧೦೨) | 2. ಧಾಳಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಬೆರಸಲ್ಪಟ್ಟು.  
4. ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 5. ಅಳಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟು, ತೊಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟು. ಅಭಿ+ಮುಖ (ಶುದ್ಧಿ) "ಕ್ತಃ"  
(೩-೨-೧೦೨) |

**ಅಭಿಯಾತಿ ಅಭಿಯಾತಿ** (ಪುಂ) ಶತ್ರು, ಹಗೆ, ವೈರಿ.  
ಅಭಿಮುಖಂ (ಪ್ರದ್ವಾರ್ಥ) ಯಾತಿ—ಅಭಿ+ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ್ತಿಚ್"  
(೩-೩-೧೭೪) | "ಅಭಿಯಾತಿಪರಾರಾತಿಪ್ರತ್ಯರ್ಥಿಪರಿಪನ್ಥಿನಃ"  
ಅಮಂ |

**ಅಭಿಯಾತ್ ಅಭಿಯಾತ್** (ಪುಂ) 1. ಶತ್ರು, ವೈರಿ, ಹಗೆ.  
(ವಿಂ) 2. ಎದುರಾಗಿ ಹೋಗುವ. ಅಭಿ+ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ)  
"ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩) |

**ಅಭಿಯಾನ ಅಭಿಯಾನ** (ನಂ) ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ಶತ್ರುವನ್ನು  
ಕುರಿತು ಮಾಡುವ ಪ್ರಯಾಣ. ಅಭಿ+ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ)  
"ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) |

**ಅಭಿಯಾಯಿನ್ ಅಭಿಯಾಯಿನ್** (ವಿಂ) ಎದುರಾಗಿ  
ಹೋಗುವ. ಅಭಿ+ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) |  
"ರಾಮಾಭಿಯಾಯಿನಾಂ ತेषಾಂ ತದೇವಾಸೀದಮಙ್ಗಲಮ್" ರಘುಂ ೧೨-೪೩ |

**ಅಭಿಯುಕ್ತ ಅಭಿಯುಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಅಭಿಜ್ಞ, ಪ್ರವೀಣ,  
ನಿಷ್ಣಾತ, ತಿಳಿದವನು. ಅಭಿ+ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) "ಕ್ತಃ"  
(೩-೨-೧೦೨) | "ನ ಹಿ ಶಕ್ಯತೇ ದೈವಮನ್ಯಥಾಕರ್ತು-  
ಮಭಿಯುಕ್ತೇನಾಪಿ" ಕಾದಂ | 2. ತತ್ಪರ, ಆಸಕ್ತ, ಶ್ರದ್ಧೆ  
ಯುಳ್ಳವನು. "ಸ್ವಸ್ವಕರ್ಮಣ್ಯಧಿಕತರಮಭಿಯುಕ್ತಃ ಪರಿಜನಃ"  
ಮುಡಾಂ ೧ | 3. ಅವಧಾನವುಳ್ಳ, ನೆಟ್ಟಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. "ಭವತು  
ಭೂಭೂಯೋಽಭಿಯುಕ್ತಃ ಸ್ವರವ್ಯಕ್ತಿಮುಪಲಪ್ಸ್ಯೇ" ಮುಡಾಂ ೧ |  
4. (ಶತ್ರುವಿನಿಂದ) ಧಾಳಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ತಡೆದು  
ನಿಲ್ಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ಸ ಹಿ ಭೂಮಿಭಿಯುಕ್ತೋ ಯದ್ವಿಪೇಯಾದಿನಾಶಮ್"

ಮುಡಾಂ ೩-೨೪ | 5. ಅಪರಾಧಿ, ಪ್ರತಿವಾದಿ, ಆಪಾದಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟವನು. 6. ವೃದ್ಧ, ಹಿರಿಯನು.

**ಅಭಿಯುಜ್ ಅಭಿಯುಜ್** (ವಿಂ) 1. ಧಾಳಿಮಾಡುವ,  
ಮೇಲೆಬೀಳುವ. ಅಭಿ+ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) "ಕ್ತಿಚ್"  
(೩-೨-೬೧) | 2. ಶತ್ರು, ವೈರಿ, ಹಗೆ.

**ಅಭಿಯೋಕ್ತ ಅಭಿಯೋಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಎದುರಾಗಿ  
ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಆಪಾದಿಸಲು (ತಪ್ಪು ಹೊರಿಸಲು)  
ಯೋಗ್ಯನಾದ, ತಪ್ಪು ಹೊರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಅಪರಾಧಿ,  
ಪ್ರತಿವಾದಿ. ಅಭಿ+ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) "ತವ್ಯಃ"  
(೩-೧-೯೬) | 3. ಧಾಳಿಮಾಡಲ್ಪಡುವ.

**ಅಭಿಯೋಕ್ತ ಅಭಿಯೋಕ್ತ** (ಪುಂ) 1. ಶತ್ರು, ವೈರಿ,  
ಹಗೆ. ಅಭಿ+ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩) |  
"ತ್ವಯ್ಯುಕ್ತಕೃಷ್ಣಬಲೇಽಭಿಯೋಕ್ತರಿ ನೃಪೇ ನಂದಾನುರಕ್ತೇ ಪುರೇ"  
ಮುಡಾಂ ೪-೧೪ | 2. ವಾದಿ, ಅಪರಾಧಿ ಹೊರಿಸುವವನು.  
"ಅಭಿಯೋಕ್ತಾ ನ ಚೇದ್ಬ್ರಹ್ಮಾದ್ಯೋ ದೃಢಧರ್ಮವಿಧಿಮತಃ" ಮನುಂ  
೮-೧೨ |

**ಅಭಿಯೋಗ ಅಭಿಯೋಗ** (ಪುಂ) 1. ಅಭಿನಿವೇಶ, ಆಸಕ್ತಿ.  
ಅಭಿ+ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) "ಯಜ್" (೩-೩-೧೮) | "ಅಥ  
ಕಸ್ಯಾಂ ಕಲಾಯಾಮಭಿಯೋಗೋ ಭವತಃ?" | 2. ಹೊಸದಾದ  
ಅವಮಾನ, ಸದ್ಯಃ ಒದಗಿದ ಪರಿಭವ. "ಅಭಿಯೋಗಸ್ತು  
ಶಪಥೇ ಸ್ಯಾದಾರ್ಥೇ ಚ ಪರಾಭವೇ" ವಿಶ್ವಂ | "ಅಭಿಯೋಗ  
ಇಮಾನ್ ಮಹಿಮುಜೋ ಭವತಾ ತಸ್ಯ ಕೃತಃ ಕೃತಾವಧೇಃ" ಕಿರಾಂ  
೨-೪೬ | 3. ಧಾಳಿ, ಮೇಲೆ ಬೀಳುವುದು, ಮುತ್ತಿಗೆ  
ಹಾಕುವುದು. "ಸ ಪ್ರಾಪದಪ್ರಾಪ್ತಪರಾಭಿಯೋಗಮ್" ಕುಮಾಂ  
೭-೪೦ | 4. ಆಪಾದನೆ, ತಪ್ಪು ಹೊರಿಸುವುದು. "ಅಭಿ-  
ಯೋಗಮನಿಸ್ತೀಯಂ ನೇನಂ ಪ್ರತ್ಯಭಿಯೋಜಯೇತ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೯ |  
5. ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ಕರೆಯುವುದು. 6. ಉದ್ಯೋಗ,  
ಪ್ರಯತ್ನ. "ನಿಹತ್ಸುಕಾನಾಮಭಿಯೋಗಭಾಜಾಂ ಸಮುತ್ಸುಕೇವಾಙ್ಕ-  
ಮುಪೇತಿ ಸಿದ್ಧಿಃ" ಕಿರಾಂ ೩-೪೦ | 7. ಶಪಥ, ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ.  
8. ತಡೆಗಟ್ಟುವುದು. "ಕ್ಷುಭಿತಂ ವನಗೋಚರಾಭಿಯೋಗಾತ್"  
ಕಿರಾಂ ೧೩-೧೦ | 9. ಅಭ್ಯಾಸ. "ಗುರುಚರ್ಯಾತಿಪಸ್ತನ್ತ್ರ-  
ಮನ್ತ್ರಯೋಗಾಭಿಯೋಗಜಾಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೯-೪೩ |

**ಅಭಿಯೋಗಿನ್ ಅಭಿಯೋಗಿನ್** (ವಿಂ) 1. ವಾದಿ,  
ಅಪರಾಧಿ ಹೊರಿಸುವವನು. ಅಭಿ+ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ)  
"ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೧೪೨) | "ಮಿಥ್ಯಾಭಿಯೋಗೋ ದ್ವಿಗುಣ-  
ಮಭಿಯೋಗಾದನಂ ವಹೇತ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೧ | 2. ಧಾಳಿಕಾರ,  
ಮುತ್ತಿಗೆ ಹಾಕುವವನು, ಮೇಲೆ ಬೀಳುವವನು.  
3. ಆಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು, ಉತ್ಕಟೇಚ್ಛೆಯುಳ್ಳವನು.



ಅಭಿರಕ್ಷಣ ಅಭಿರಕ್ಷಣ (ನಂ) ಸಂಪೂರ್ಣರಕ್ಷಣೆ, ಸುತ್ತಲೂ ಕಾಪಾಡುವುದು. ಅಭಿತೋ ರಕ್ಷಣಮ್ |

ಅಭಿರಕ್ಷಾ ಅಭಿರಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಅಭಿರಕ್ಷಣ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅಭಿ+ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಅ:" (೩-೩-೧೦೩) |

"ಪ್ರಶಾಂತವಾಧಂ ದಿಶತೋಽಭಿರಕ್ಷಯಾ" ಕಿರಾಂ ೧-೧೮ |

ಅಭಿರಕ್ಷಿತ ಅಭಿರಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲಿಯೂ ಕಾಪಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿತೋ ರಕ್ಷಿತಃ |

ಅಭಿರಕ್ಷಿತು ಅಭಿರಕ್ಷಿತು (ವಿಂ) ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಕಾಪಾಡುವ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲಿಯೂ ರಕ್ಷಣೆಯನ್ನು ಕೊಡುವ ಅಭಿತೋ ರಕ್ಷಿತಾ | "ವರ್ಣಾನಾಮಾಶ್ರಮಾಣಾಂ ಚ ರಾಜಾ ಸೃಷ್ಟೋಽಭಿರಕ್ಷಿತಾ" ಮನುಂ ೭-೩೫ |

ಅಭಿರತ ಅಭಿರತ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಆಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳ, ಬಹಳ ಶ್ರದ್ಧೆಯುಳ್ಳ. ಅಭಿ+ರಮು (ಕ್ರೋಡಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | 2. ಸಂತೋಷ, ಆನಂದ ಹೊಂದಿದ. "ರೇಚಿತಂ ಪರಿಜನೇನ ಮಹೀಯಃ ಕೇವಲಾಭಿರತ-ದಮ್ಪತಿ ಧಾಮ" ಮಾಘಂ ೧೦-೫೫ | 3. ವ್ಯಗ್ರ, ಕಾರ್ಯ ತತ್ಪರ. "ಆಸ್ತುತೇಽಭಿನವಪಲ್ಲವಪುಷ್ಪೇರಪ್ಯನಾರತರತಾಭಿ-ರತಾಮ್ಯಃ" ಮಾಘಂ ೧೦-೮೯ |

ಅಭಿರತಿ ಅಭಿರತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶ್ರದ್ಧೆ, ಆಸಕ್ತಿ. 2. ಸಂತೋಷ, ಆನಂದ. ಅಭಿತೋ ರತಿಃ | "ಅವಿಮೃಷ್ಯ-ಮೇತದಭಿಲಷ್ಯ ಸ ದ್ವಿಷತಾಂ ವಧೇನ ವಿಷಯಾಭಿರತಿಮ್" ಕಿರಾಂ ೬-೪೪ |

ಅಭಿರಾಜ್ ಅಭಿರಾಜ್ (ಪುಂ) 1. ಚಕ್ರವರ್ತಿ, ಸಾರ್ವಭೌಮ. (ವಿಂ) 2. ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಕಾಶವುಳ್ಳ, ಬಹಳ ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ. ಅಭಿತೋ ರಾಜತೇ - ರಾಜ್ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧) |

ಅಭಿರಾಡ್ ಅಭಿರಾಡ್ (ವಿಂ) ಸೇವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿ+ರಾಘ (ಸಂಸಿದ್ಧೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ದಶಾನನಾದಿ-ನಭಿರಾಡ್‌ದೇವತಾವಿತಿಗಂವೀರ್ಯಾತಿಶಯಾನ್ ಹಸತ್ಯಸೌ" ಮಾಘಂ ೧-೭೧ |

ಅಭಿರಾಡ್ ಅಭಿರಾಡ್ (ವಿಂ) ಸೇವಿಸುವ, ಆರಾಧಿಸುವ. ಅಭಿ+ರಾಘ (ಸಂಸಿದ್ಧೌ) "ತೃತ್" (೩-೧-೧೩೩) |

ಅಭಿರಾಮ ಅಭಿರಾಮ (ವಿಂ) 1. ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ. ಅಭಿರಮತೇಽಸ್ಮಿನ್ - ಅಭಿ + ರಮು (ಕ್ರೋಡಾಯಾಮ್) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧) | "ರಾಮ ಇತ್ಯಭಿ-ರಾಮೇಣ ವಪುಷಾ ತಸ್ಯ ಚೋದಿತಃ" ರಘುಂ ೧೦-೬೭ | 2. ಮಧುರವಾದ, ಇಂಪಾದ. "ಮನೋಽಭಿರಾಮಾಃ ಶೃಣ್ವಂತೌ

ರಥನೇಮಿಸ್ವನೋನ್ಮುಖೈಃ" ರಘುಂ ೧-೩೯ | (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3. ಸುಂದರವಾಗಿ, ಮನೋಹರವಾಗಿ, ಸೊಗಸಾಗಿ.

"ಶ್ರೀವಾಭಿರಾಮಂ ಮುಹುರನುಪತತಿ ಸ್ಯಂದನೇ ಬದ್ಧದೃಷ್ಟಿಃ ಪಶ್ಚಾರ್ಥೇನ ಪ್ರವಿಷ್ಟಃ ಶರಪತನಭಯಾದ್ಭಯಸಾ ಪೂರ್ವಕಾಯಮ್" ಶಾಕುಂ ೧-೭ |

ಅಭಿರಚಿ ಅಭಿರಚಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಚ್ಛೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ ಅಭಿ ಅತ್ಯಂತಾ ರಚಿಃ | "ಯಶಸಿ ಚಾಭಿರಚಿವ್ಯಸನಂ ಶ್ರುತೌ" ಭರ್ತುಂ ೨-೬೩ |

ಅಭಿರೂಪ ಅಭಿರೂಪ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. ಅಭಿರೂಪಯತಿ ಸರ್ವಮ್ - ಅಭಿ+ರೂಪ (ರೂಪಕ್ರಿಯಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | 3. ಚಂದ್ರ. 4. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ಅಭಿರೂಪಮಸ್ಯ | (ವಿಂ) 5. ಮನೋಹರ ವಾದ, ಸುಂದರವಾದ. "ಉತ್ಕೃಷ್ಟಾಯಾಭಿರೂಪಾಯ ವರಾಯ ಸದೃಶಾಯ ಚ" ಮನುಂ ೯-೮೮ | 6. ಪಂಡಿತ, ಜ್ಞಾನಿ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯುಳ್ಳವನು. ಅಭಿಗತಂ ರೂಪಂ ಯೇನ | "ಅಭಿರೂಪ-ಭೂಯಿಷ್ಠಾ ಪರಿಷದಿಯಮ್" ಶಾಕುಂ ೧ | 7. ಪ್ರಿಯವಾದ, ಅಚ್ಚುಮೆಚ್ಚಾದ. "ಯೋ ಯಃ ಪ್ರದೇಶಃ ಸಖ್ಯಾ ಮೇಽಭಿರೂಪಸ್ತಂ ತಮಾಲಿಖಿತುಕಾಮೋ ಭವೇತ್" ಶಾಕುಂ ೬ | 8. ಯುಕ್ತ ವಾದ, ಯೋಗ್ಯವಾದ, ತಕ್ಕದಾದ, ಸಂಗತವಾದ.

ಅಭಿಲಕ್ಷ್ಯ ಅಭಿಲಕ್ಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಗುರಿಯಿಡಲ್ಪಡುವ, ಉದ್ದೇಶಿಸಲ್ಪಡುವ. ಅಭಿ+ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನಾಕ್ಷುನಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಯತ್" (೩-೧-೯೭) | (ಅವ್ಯಂ) 2. ಲಕ್ಷ್ಯಕ್ಕೆ ಎದುರಾಗಿ ನೋಡಿ, ಗುರಿಯಿಟ್ಟು ನೋಡಿ. ಅಭಿ+ಲಕ್ಷ "ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭) | (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3. ಲಕ್ಷ್ಯಕ್ಕೆ ಎದುರಾಗಿ, ಗುರಿಯ ಕಡೆಗೆ.

ಅಭಿಲಕ್ಷನ ಅಭಿಲಕ್ಷನ (ನಂ) ಹಾರುವುದು, ದಾಟುವುದು, ನೆಗೆಯುವುದು. ಅಭಿ+ಲಘಿ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) |

ಅಭಿಲಕ್ಷಣೀಯ ಅಭಿಲಕ್ಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. ಅಭಿ+ಲಘ (ಕಾಂತೌ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) |

ಅಭಿಲಪಿತ ಅಭಿಲಪಿತ (ನಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಇಚ್ಛೆ, ಆಸೆ. ಅಭಿ+ಲಘ (ಕಾಂತೌ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) | "ಯಥಾಭಿಲಪಿತಮನುಷ್ಠಿಯತಾಮ್" ಪञ्ಚತಂ | (ವಿಂ) 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಇಷ್ಟವಾದ. ಅಭಿ+ಲಘ (ಕಾಂತೌ) (೩-೨-೧೦೨) |

ಅಭಿಲಾಪ ಅಭಿಲಾಪ (ಪುಂ) 1. ಶಬ್ದಪ್ರಯೋಗ, ವಾಕ್ಯ ಪ್ರಯೋಗ, ಮಾತು. ಅಭಿಲಪ್ಯತೇಽನೇನ - ಅಭಿ+ಲಘ



(ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ಭೂಕುಸುಮ-  
ಶರೇಷುಪಾತಮೋಹಾದನವಸಿತಾರ್ಥಪದಾಕುಲೋಽಭಿಲಾಪಃ" ಕಿರಾಂ  
೧೦-೬೧। 2. ವಿವರಣೆ, ವಿಶೇಷ ನಿರ್ದೇಶ. 3. ಪ್ರಕಟನೆ,  
ಘೋಷಣೆ, ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಪಡಿಸುವಿಕೆ.

**ಅಭಿಲಾಪ ಅಭಿಲಾಪ** (ಪುಂ) 1. ಇಚ್ಛೆ, ಆಪೇಕ್ಷೆ, ಆಸೆ.  
ಅಭಿ+ಲಪ (ಕಾಂತೌ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ಅತೋಽ-  
ಭಿಲಾಪೇ ಪ್ರಥಮಂ ತಥಾವಿಧೇ ಮನೋ ಬಬ್ಧಾನ್ಯರಸಾನ್ ವಿಲಕ್ಷ್ಯ  
ಸಾ" ರಘುಂ ೩-೪। 2. ಪ್ರೀತಿ, ಅನುರಾಗ. "ಅಭಿಲಾಪ-  
ಮುದೀರಿತೇಂದ್ರಿಯಃ" ಕುಮಾಂ ೪-೪೧।

**ಅಭಿಲಾಪಿನ್ ಅಭಿಲಾಪಿನ್** (ವಿಂ) ಇಚ್ಛಿಸುವ, ಆಪೇಕ್ಷಿಸು-  
ವ, ಆಸೆಪಡುವ. ಅಭಿ+ಲಪ (ಕಾಂತೌ) "ಞಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)। "ಜಲಾಭಿಲಾಪಿ ಜಲಮಾದದಾನಾಂ ಛಾಯೇವ  
ತಾಂ ಭೂಪತಿರನ್ವಗच्छತ್" ರಘುಂ ೨-೬।

**ಅಭಿಲಾಪುಕ ಅಭಿಲಾಪುಕ** (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ಆಸೆಪಡುವ,  
ಅಧಿಕವಾಗಿ ಆಸೆಪಡುವ. ಅಭಿ+ಲಪ (ಕಾಂತೌ)  
"ಉಕ್" (೩-೨-೧೫೪)। "ರಭಸಾದುದಸ್ತುರಥ ಯುಧಮನುಚಿತ-  
ಮಿಯೋಽಭಿಲಾಪುಕಾಃ" ಮಾಘಂ ೧೫-೫೧।

**ಅಭಿಲಿಖಿತ ಅಭಿಲಿಖಿತ** (ನಂ) 1. ಲೇಖನ, ಬರವಣಿಗೆ.  
ಅಭಿ+ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ) ಭಾವೇ "ಕ್" (೩-೩-೧೧೪)।  
(ವಿಂ) 2. ಬರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಅಭಿವಂದನ ಅಭಿವಂದನ** (ನಂ) ವಿನಯ ಪೂರ್ವಕ  
ನಮಸ್ಕಾರ, ಗೌರವದಿಂದ ಮಾಡುವ ನಮಸ್ಕಾರ.  
ಅಭಿಮುಖಂ ವಂದನಮ್।

**ಅಭಿವರ್ತನ ಅಭಿವರ್ತನ** (ನಂ) ಸಮೀಪಿಸುವುದು,  
ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು, ಎದುರಾಗಿ ಹೋಗುವುದು.  
ಅಭಿ+ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ಅಭಿವರ್ತಿನ್ ಅಭಿವರ್ತಿನ್** (ವಿಂ) ಎದುರಾಗಿರುವ,  
ಅಭಿಮುಖವಾಗಿರುವ. ಅಭಿ+ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಞಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ವರ್ತಿನಿ -ವರ್ತಿನೀ.

**ಅಭಿವರ್ಧನ ಅಭಿವರ್ಧನ** (ನಂ) 1. ಬೆಳೆಸುವುದು, ಹೆಚ್ಚಿಸು-  
ವುದು. ಅಭಿ+ವೃಘು (ವೃದ್ಧಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।  
(ವಿಂ) 2. ಬೆಳೆಸುವ, ಹೆಚ್ಚಿಸುವ. ಅಭಿ+ವೃಘು "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪)। -ವರ್ಧನಾ -ವರ್ಧನಾ.

**ಅಭಿವರ್ಧಿನ್ ಅಭಿವರ್ಧಿನ್** (ವಿಂ) ಬೆಳೆಸುವ, ಹೆಚ್ಚಿಸು-  
ವ. ಅಭಿ+ವೃಘು (ವೃದ್ಧಿ) "ಞಿಃ" (೩-೩-೧೧೫)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ವರ್ಧಿನಿ -ವರ್ಧಿನೀ.

**ಅಭಿವರ್ಷಣ ಅಭಿವರ್ಷಣ** (ನಂ) 1. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲಿಯೂ  
ಮಳೆಯಾಗುವುದು. 2. ಸುತ್ತಲೂ ಚೆಮ್ಮುಕಿಸುವುದು.  
ಅಭಿತೋ ವರ್ಷಣಮ್।

**ಅಭಿವರ್ಷಿನ್ ಅಭಿವರ್ಷಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆ  
ಯಲ್ಲಿಯೂ ಮಳೆಸುರಿಸುವ (ಮೋಡ). 2. ಸುತ್ತಲೂ  
ಚೆಮ್ಮುಕಿಸುವ. ಅಭಿತೋ ವರ್ಷತಿ-ವೃಘು (ಸೇಚನೆ) "ಞಿಃ" (೩-೨-೧೬೮)।

**ಅಭಿವಾದ ಅಭಿವಾದ** (ಪುಂ) ನಮಸ್ಕಾರ, ಪ್ರಣಾಮ.  
ಅಭಿ+ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)।  
"ಪ್ರತ್ಯುತ್ಥಾನಾಭಿವಾದಾಭ್ಯಾಂ ಪುನಸ್ತಾನ್ ಪ್ರತಿಪದ್ಯತೇ" ಮನುಂ  
೨-೧೨೦।

**ಅಭಿವಾದಕ ಅಭಿವಾದಕ** (ವಿಂ) ನಮಸ್ಕರಿಸುವವನು.  
ಅಭಿ+ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)।  
"ಆಯುಷ್ಮಾನ್ ಭವ ಸೌಮ್ಯೇತಿ ವಾಚ್ಯೋ ವಿಪ್ರೋಽಭಿವಾದಕಃ" ಮನುಂ  
೨-೧೨೫।

**ಅಭಿವಾದನ ಅಭಿವಾದನ** (ನಂ) ಗೌರವದಿಂದ ಮಾಡುವ  
ನಮಸ್ಕಾರ, ವಿನಯಪೂರ್ವಕವಾದ ನಮಸ್ಕಾರ,  
ತನ್ನ ಹೆಸರನ್ನು ಹೇಳಿ ನಮಸ್ಕಾರ ಮಾಡುವುದು.  
ಅಭಿಮುಖಂ ವಾಚತೇ ಆಶೀರಣೇನ - ಅಭಿ+ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ  
ವಾಚಿ) + ಞಿಃ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಅಭಿವಾದನ-  
ಶೀಲಸ್ಯ ನಿಯಮಂ ವೃದ್ಧೋಪೇವಿನಃ। ಚತ್ವಾರಿ ಸಂಪ್ರವರ್ಧಂತೇ ಆಯುರ್ವಿಶ್ವಾ  
ಯಶೋ ಬಲಮ್" ಮನುಂ ೨-೧೨೧। [ಹಿರಿಯರನ್ನು ನಿತ್ಯವೂ  
ನಮಸ್ಕರಿಸುತ್ತ ಅವರಿಂದ ಆಶೀರ್ವಾದ ಪಡೆಯುವವನಿಗೆ ಆಯುಸ್ಸು, ವಿದ್ಯೆ, ಕೀರ್ತಿ ಮತ್ತು ಬಲ  
ಇವು ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುವುವು.]

**ಅಭಿವಾದ್ಯ ಅಭಿವಾದ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ನಮಸ್ಕರಿಸಲು  
ಯೋಗ್ಯನಾದ. ಅಭಿವಾದಯಿತುಮಹಃ - ಅಭಿ+ವದ  
(ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಞಿಃ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)।  
(ಅವ್ಯಂ) 2. ಪ್ರಣಾಮಮಾಡಿ, ನಮಸ್ಕರಿಸಿ.

**ಅಭಿವಾಹ್ಯ ಅಭಿವಾಹ್ಯ** (ನಂ) 1. ಒಯ್ಯುವುದು. ಅಭಿ+  
ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೇ) ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ಹವ್ಯ-  
ಕವ್ಯಾಭಿವಾಹ್ಯಾಯ ಸರ್ವಸ್ಯಾಸ್ಯ ಚ ಗುಪ್ತಯೇ" ಮನುಂ ೧-೯೪।  
(ವಿಂ) 2. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ.  
3. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯಲ್ಪಡುವ. ಅಭಿ+ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೇ) +  
ಞಿಃ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)।

**ಅಭಿವಿಧಿ ಅಭಿವಿಧಿ** (ಪುಂ) ವ್ಯಾಪ್ತಿ, ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ,  
ಅಂತರ್ಗತನ. ಅಭಿತೋ ವಿಧಿಃ ವ್ಯಾಪ್ತಿಃ। "ಆಡ್-  
ಮರ್ಯಾದಾಭಿವಿಧ್ಯೋಃ" ಪಾಂಸುಂ (೨-೧-೧೩)। [ಮರಣದಿಯು



ಅವಧಿಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಹೇಳುವುದು. ಅಭಿವಿಧಿಯು ಅವಧಿಯನ್ನು ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಅಲ್ಲಿಯವರೆಗೆ (ಅದನ್ನು ಬಿಟ್ಟು) ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಮರ್ಯಾದೆಯೂ ಅದನ್ನು ಸೇರಿಸಿಕೊಂಡು ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಅಭಿವಿಧಿಯೂ ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವುದು. ಈ ಎರಡು ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿಯೂ "ಆಙ್" ಎಂಬ ಉಪಸರ್ಗವು ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವುದು. ಉದಾ: ಮರ್ಯಾದೆಗೆ "ಆಮುಕ್ತೇ: ಸಂಸಾರ:" ಅಭಿವಿಧಿಗೆ "ಆಬಾಲಂ ಹರಿ-ಭಕ್ತಿ:"

ಅಭಿವಿವಿಧತೆ ಅಭಿವಿವಿಧತೆ (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ವಿನಯ ವುಳ್ಳವನು, ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆಯುಳ್ಳವನು. 2. ಸುಶಿಕ್ಷಿತ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪಳಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅಭಿವಿಶ್ರುತ ಅಭಿವಿಶ್ರುತ(ವಿಂ) ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾದ, ಪ್ರಖ್ಯಾತಿ ಪಡೆದ, ಕೀರ್ತಿವಂತ.

ಅಭಿವೀಕ್ಷಣ ಅಭಿವೀಕ್ಷಣ (ನಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡುವುದು, ಸುತ್ತಲೂ ನೋಡುವುದು. ಅಭಿತೋ ವೀಕ್ಷಣಮ್.

ಅಭಿವೃತ್ತಿ ಅಭಿವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎದುರಾಗಿರುವುದು, ಅಭಿಮುಖವಾಗಿರುವುದು. ಅಭಿ+ವೃತ್ತ (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94).

ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಚ್ಚುವುದು, ಅಧಿಕವಾಗುವುದು, ಏಳಿಗೆ. ಅಭಿ+ವೃದ್ಧಿ (ವೃದ್ಧಿ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94).

ಅಭಿವ್ಯಕ್ತ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತ (ವಿಂ) ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ, ಪ್ರಕಾಶವಾದ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡ. ಅಭಿ+ವಿ+ಅಜ್ಞ (ವ್ಯಕ್ತಾದೌ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಪೂರ್ವಾಭಿವ್ಯಕ್ತ-ಮುಖಪ್ರಸಾದಾ ಶರೀರಬಂಧನೇನ ತಿರೋಬಭವ" ರಘುಂ 16-23.

ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಕಾಣುವಿಕೆ, ಪ್ರಕಟವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಸೂಕ್ಷ್ಮರೂಪದಲ್ಲಿದ್ದು ಸ್ಥೂಲರೂಪದಿಂದ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಅಭಿ+ವಿ+ಅಜ್ಞ (ವ್ಯಕ್ತಾದೌ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94).

ಅಭಿವ್ಯಾಪಕ ಅಭಿವ್ಯಾಪಕ(ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವ, ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವ. ಅಭಿ+ಅಜ್ಞ (ವ್ಯಕ್ತಾದೌ) "ಪ್ಲುಲ್" (3-1-133). 2. ವ್ಯಂಜನಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವ.

ಅಭಿವ್ಯಾಪಿ ಅಭಿವ್ಯಾಪಿ (ವಿಂ) ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗೂ ವ್ಯಾಪಿಸುವ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗೂ ಸಂಬಂಧಿಸುವ, ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡುವ. ಅಭಿ+ವಿ+ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಪ್ಲುಲ್" (3-1-133).

ಅಭಿವ್ಯಾಪಿ ಅಭಿವ್ಯಾಪಿನ್ (ವಿಂ) "ಅಭಿವ್ಯಾಪಕ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅಭಿ+ವಿ+ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಗಿಣಿ:" (3-2-94).

ಅಭಿವ್ಯಾಪ್ತಿ ಅಭಿವ್ಯಾಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡುವಿಕೆ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗೂ ಸಂಬಂಧಪಡುವಿಕೆ. ಅಭಿ+ವಿ+ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94).

ಅಭಿವ್ಯಾಪ್ಯ ಅಭಿವ್ಯಾಪ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡಲ್ಪಡುವ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲಿಯೂ ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವ. ಅಭಿ+ವಿ+ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) ಕರ್ಮಂ "ಪ್ಯತ್" (3-1-124). (ಅವ್ಯಂ) 2. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗೂ ಹರಡಿ, ಸುತ್ತಲೂ ಸೇರಿಸಿಕೊಂಡು. ಅಭಿ+ವಿ+ಆಪ್ "ಲ್ಯಪ್" (3-1-30).

ಅಭಿವ್ಯಾಹಾರ ಅಭಿವ್ಯಾಹಾರ (ಪುಂ) ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ ಉಚ್ಚಾರಣೆ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವುದು. ಅಭಿ+ವಿ+ಆ+ಹ್ (ಹರಣೇ) "ಘ್" (3-3-14).

ಅಭಿಶಂಸನ ಅಭಿಶಂಸನ (ನಂ) 1. ಅಪವಾದ, ದೋಷಾ ರೋಪ, ತಪ್ಪು ಹೊರಿಸುವುದು. ಅಭಿ+ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ಎದುರಿಗೆ ಮಾತಾಡುವುದು. 3. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ ಕಠಿನವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವುದು. "ಅಭಿಶಾಪೋಽಭಿಶಂಸನಮ್" ವೇಜಂ.

ಅಭಿಶಂಸಿನ್ ಅಭಿಶಂಸಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಎದುರಿಗೆ ಕಠಿನವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವ. 2. ಅಪವಾದವನ್ನು ಹೊರಿಸುವ, ಇಲ್ಲದ ದೋಷವನ್ನು ಹೇಳುವ. ಅಭಿ+ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) "ಗಿಣಿ:" (3-2-94). "ಮಿಥ್ಯಾಭಿಶಂಸಿನೋ ದೋಷೋ ದ್ವಿಃ ಸಮೋ ಭೂತವಾದಿನಃ" ಯಾಜ್ಞಂ 3-284.

ಅಭಿಶಂಕಾ ಅಭಿಶಂಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಶಯ, ಸಂದೇಹ. 2. ಭ್ರಾಂತಿ. ಅಭಿ+ಶಂಕಿ (ಶಂಕಾಯಾಮ್) "ಅ:" (3-3-103). "ಉಪೇಯುಷಿ ಕಲ್ಪಲತಾಭಿಶಂಕಯಾ ಕಥಂ ನ್ವಿತಸ್ತ್ರಸ್ಯತಿ ಷಟ್ಪದಾವಲಿ:" ಕಿರಾಂ 6-9.

ಅಭಿಶಂಕಿತ ಅಭಿಶಂಕಿತ (ವಿಂ) 1. ಭ್ರಾಂತಿಗೆ ವಿಷಯವಾದ. 2. ಸಂಶಯಕ್ಕೆ ಒಳಗಾದ. ಅಭಿ+ಶಂಕಿ (ಶಂಕಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (3-2-102).

ಅಭಿಶಾಪ ಅಭಿಶಾಪ (ವಿಂ) ಶಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೆಡಕುಂಟಾಗಲೆಂದು ಹಿರಿಯರ ಶಾಪಹೊಂದಿದ. ಅಭಿ+ಶಾಪ (ಆಕ್ರೋಶೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ನ ನಾಮಗ್ರಹಣಂ ಕುರ್ಯಜ್ಜನಕಸ್ಯ ಗುರೋಸ್ತಥಾ. ಭಾರ್ಯಾ ಅಭಿಶಾಪಸ್ಯ ಕೃಪಣಸ್ಯ ವಿಶೇಷತಃ".



ಅಭಿಶಾಸ್ತ ಅಭಿಶಾಸ್ತ (ವಿಂ) 1. ಎದುರಿಗೆ ಕರೆಯಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಎದುರಿಗೆ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು. ಅಭಿ ಅಭಿಮುಖ್ಯೇನ ಶಾಸ್ತ: 1.

ಅಭಿಶಾಸ್ತ ಅಭಿಶಾಸ್ತ (ನಂ) 1. ಶಾಪ, ಬೈಗಳು. 2. ಹಿಂಸೆ, ತೊಂದರೆಪಡಿಸುವಿಕೆ. ಅಭಿ+ಶಾಸ್ತ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114). (ವಿಂ) 3. ಮಹಾಪಾತಕಿಯೆಂದು ಮಿಥ್ಯಾಪವಾದಕ್ಕೆ ಗುರಿಯಾದ, ಜನರಿಂದ ದೂಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಅಭಿಶಾಸ್ತ ಸ್ಮ - ಅಭಿ+ಶಾಸ್ತ (ಸ್ತುತೌ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಅಭಿಶಾಸ್ತಸ್ಯ ಷಟ್ಸ್ಯ ಪುಂಚಲ್ಯಾ ದಾಮ್ನಿಕಸ್ಯ ಚ | ಶುಕ್ತಂ ಪರ್ಯುಷಿತಂ ಚೈವ ಶೂದ್ರಸ್ಯೋ-ಕ್ಷಿಪ್ತಮೇವ ಚ" ಮನುಂ 4-211. 4. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ತೊಂದರೆಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 5. ಶಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಅಭಿ+ಶಾಸ್ತ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102).

ಅಭಿಶಾಸ್ತಿ ಅಭಿಶಾಸ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲೋಕಾಪವಾದ. 2. ಪರಸ್ತ್ರೀ ಸಂಗಮವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮಿಥ್ಯಾಪವಾದ, -ಚಾಡಿ ಹೇಳುವುದು. 3. ಯಾಚನೆ, ಬೇಡಿಕೆ. ಅಭಿ+ಶಾಸ್ತ (ಸ್ತುತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94). "ಅಭಿಶಾಸ್ತಿ: ಪುನರ್ಲೋಕಾಪವಾದೇ ಪ್ರಾರ್ಥನೇಽಪಿ ಚ" ಹೇಮಂ. 4. ಹಿಂಸೆ, ತೊಂದರೆ. ಅಭಿ+ಶಾಸ್ತ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94).

ಅಭಿಶಾಪ ಅಭಿಶಾಪ (ಪುಂ) 1. ಮಿಥ್ಯಾಪವಾದ, ಚಾಡಿ ಹೇಳುವಿಕೆ. 2. ಶಾಪ, ಬೈಗಳು. ಅಭಿ+ಶಾಪ (ಆಕ್ರೋಶೇ) "ಘ್" (3-3-100).

ಅಭಿಶ್ರವಣ ಅಭಿಶ್ರವಣ (ನಂ) ಶ್ರಾವ್ಯಭೋಜನ ಮಾಡುತ್ತಿರುವಾಗ ಶ್ರವಣಮಾಡಿಸುವ ಮಂತ್ರ.

ಅಭಿಷಜ್ಞ ಅಭಿಷಂಗ (ಪುಂ) 1. ಪರಿಭವ, ಅಪಮಾನ. ಅಭಿ+ಷಜ್ಞ (ಸಜ್ಞೇ) "ಘ್" (3-3-100). "ಜಾತಾ-ಮಿಷಜ್ಞೋ ನೃಪತಿರ್ನಿಷಜ್ಞಾದುದ್ಧತುಮೇಚ್ಛತ್ಪ್ರಸಮೋದ್ಧತಾರಿ:" ರಘುಂ 2-30. 2. ಶಾಪ, ಬೈಗಳು. 3. ಸಂಬಂಧ, ಸಂಪರ್ಕ. "ಮುಹುರತಿ ವರವಿಭ್ರಮಾಭಿಷಜ್ಞಾತ್" ಮಾಘಂ 7-60. 4. ಶಪಥ, ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. "ಅಭಿಷಜ್ಞಸ್ತವಿಷವೇ ಸಜ್ಞ ಆಕ್ರೋಶೇಽಪಿ ಚ" ವೈಜಂ. "ಅಭಿಷಜ್ಞ: ಪುಲ್ಲಿಗಾ: ಪರಾಭವಾಕ್ರೋಶಾಪಯೇಷು" ಮೇದಿಂ.

ಅಭಿಷವ ಅಭಿಷವ (ಪುಂ) 1. ಸೋಮಲತೆಯನ್ನು ಕುಟ್ಟಿ ರಸವನ್ನು ಹಿಂಡುವುದು. 2. ಯಾಗದ ಸಲುವಾಗಿ ಮಾಡುವ ಸ್ನಾನ. 3. ಭಟ್ಟ ಇಳಿಸುವುದು, ಸಾರಾಯಿ ತೆಗೆಯುವುದು. 4. ಸ್ನಾನ. 5. ಸೋಮರಸದ ಪಾನ. 6. ಸೋಮರಸವನ್ನು ಹಿಂಡುವ ಬೆರಳು. 7. ಯಜ್ಞ. ಅಭಿ+ಷವ (ಅಭಿಷವೇ) "ಅಪ್" (3-3-40).

"ಜಪೋಪವಾಸಾಭಿಷವೇರ್ಮುನೀನಾಮ್" ಕಿರಾಂ 3-20. "ಅಭಿಷವ: ಕೃತೌ ಮದಸನ್ಧಾನಸ್ನಾನಯೋರಪಿ" ಹೇಮಂ.

ಅಭಿಷವಣ ಅಭಿಷವಣ (ನಂ) 1. ಸ್ನಾನ. ಅಭಿ+ಷವ (ಅಭಿಷವೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). "ಶಿರಸಾ ಹರಿನ್ಮಣಿನಿಮ: ಸ ವಹನ್ ಕೃತಜನ್ಮನೋಽಭಿಷವಣೇನ ಜಟಾ:" ಕಿರಾಂ 6-23. 2. ಸೋಮರಸವನ್ನು ಹಿಂಡುವುದು.

ಅಭಿಷವಣಿ ಅಭಿಷವಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೋಮಲತೆಯಿಂದ ರಸವನ್ನು ತೆಗೆಯುವ ಸಾಧನ (ಯಂತ್ರ). ಅಭಿ+ಷವ (ಅಭಿಷವೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). "ಡೀಪ್" (4-1-14).

ಅಭಿಷಿಕ್ತ ಅಭಿಷಿಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು (ದೊರೆ). 2. ಸ್ನಾನ ಮಾಡಿದ. ಅಭಿ+ಷಿ (ಕ್ಷರಣೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಸುಧಾರಸೇರಿವಾ-ಮ್ಭೂಭಿರಭಿಷಿಕ್ತೋ ಹುತಾಶನ:" ಕುಮಾಂ 10-39.

ಅಭಿಷಿಷೇಣಯಿಷಾ ಅಭಿಷಿಷೇಣಯಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೇನೆ ಯೊಡನೆ ಶತ್ರುವಿನ ಮೇಲೆ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಹೊರಡುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಅಭಿಷೇಣಯಿತುಮಿಚ್ಛಾ - ಅಭಿ+ಸೇನಾ+ಣಿಚ್+ಸನ್ "ಅ:" (3-3-102).

ಅಭಿಷಿಷೇಣಯಿಷು ಅಭಿಷಿಷೇಣಯಿಷು (ವಿಂ) ಸೇನೆ ಯೊಡನೆ ಶತ್ರುವಿನ ಮೇಲೆ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಹೊರಡುವ ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. ಅಭಿಷೇಣಯಿತುಮಿಚ್ಛು: - ಅಭಿ+ಸೇನಾ+ಣಿಚ್+ಸನ್ "ಃ" (3-2-100). "ಅಭಿಷಿಷೇಣಯಿಷು ಭುವನಾನಿ ಯ:" ಮಾಘಂ 6-64.

ಅಭಿಷುತ ಅಭಿಷುತ (ನಂ) 1. ಗಂಜಿ, ಅಂಬಲಿ. "ಅವಂತಿಸೋಮಂ ರಕ್ಷೋಘ್ನಂ ಶುಕ್ತಾಭಿಷುತಕುಂಜಲಮ್" ವೈಜಂ.

ಅಭಿಷೇಕ ಅಭಿಷೇಕ (ಪುಂ) 1. ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ, ಮುಕುಟಾಭಿಷೇಕ. ಅಭಿ+ಷಿ (ಕ್ಷರಣೇ) ಭಾವೇ "ಘ್" (3-3-100). "ಅಥಾಭಿಷೇಕಂ ರಘುವಂಶಕೇತೋ: ಪ್ರಾರಬ್ಧಮಾ-ನಂದಜಲೇರ್ಜನಯೋ:" ರಘುಂ 14-7. 2. ಸ್ನಾನ. "ಕೃತಾಭಿ-ಷೇಕೇದಿವ್ಯಾಯಾಂ ತ್ರಿಸ್ತೋತಸಿ ಚ ಸಪ್ತಮಿ:" ರಘುಂ 10-63. 3. ಶಾಂತಿಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಪ್ರೋಕ್ಷಣೆ. 4. ದೇವತಾ ಪ್ರತಿಷ್ಠೆಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ವಿಗ್ರಹದ ಅಭಿಷೇಕ. 5. ಪ್ರೋಕ್ಷಣೆ, ನೀರು ಚೆವುಕಿಸುವುದು. 6. ಜಲ, ನೀರು. ಅಭಿಷಿಚ್ಯತೇನೆನ - ಅಭಿ+ಷಿ (ಕ್ಷರಣೇ) ಕರಂ "ಘ್" (3-3-121).

ಅಭಿಷೇಕತ್ ಅಭಿಷೇಕತ್ (ವಿಂ) 1. ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ ಮಾಡುವವನು. 2. ನೀರನ್ನು ಪ್ರೋಕ್ಷಿಸುವವನು. ಅಭಿ+ಷಿ (ಕ್ಷರಣೇ) "ತ್" (3-1-133). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-4). ಅಭಿಷೇಕಿ ಅಭಿಷೇಕಿ.



ಅಭಿವೇಚನ ಅಭಿವೇಚನ (ನಂ) "ಅಭಿವೇಕ" ಪದದ  
ಅರ್ಥ. ಅಭಿ+ವಿಚ (ಕರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।  
"ಅನುಭೂಯ ವಸಿಷ್ಠಸಂಭೃತಃ ಸಲಿಲೇಸ್ತೇನ ಸಹಾಭಿವೇಚನಮ್" ರಘುಂ  
೮-೩ ।

ಅಭಿವೇಚನೀಯ ಅಭಿವೇಚನೀಯ (ವಿಂ) ಅಭಿವೇಕಕ್ಕೆ  
ಯೋಗ್ಯನಾದ. ಅಭಿ + ವಿಚ (ಕರಣ) "ಅನೀಯರ್"  
(೩-೧-೧೬) ।

ಅಭಿವೇಣನ ಅಭಿವೇಣನ (ನಂ) ಶತ್ರುವಿಗೆ ಅಭಿಮುಖ  
ವಾಗಿ ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ದಂಡೆತ್ತಿ ಹೋಗುವುದು. ಅಭಿ+  
ಸೇನಾ+ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

ಅಭಿಷ್ಠವ ಅಭಿಷ್ಠವ (ಪುಂ) 1. ಸ್ತುತಿ, ಸ್ತೋತ್ರ,  
ಹೊಗಳಿಕೆ. 2. ವರ್ಣನೆ. ಅಭಿ+ಷ್ಠು (ಸ್ತುತೌ) "ಅಪ್"  
(೩-೩-೫೭) ।

ಅಭಿಷ್ಠುತ ಅಭಿಷ್ಠುತ (ವಿಂ) 1. ಸ್ತುತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಗಳ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿ+ಷ್ಠು (ಸ್ತುತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।  
"ಸ ದೈತ್ಯಹತ್ಯಾಮಿಚ್ಛದ್ವಿಃ ಸುರೇವಮಭಿಷ್ಠುತಃ" ಯಾದಂ  
೧-೬೫ । 2. ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅಭಿಷ್ಯಂದ ಅಭಿಷ್ಯಂದ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರವಹಿಸುವುದು,  
ಹರಿಯುವುದು. ಅಭಿ+ಸ್ಯಂದ್ (ಪ್ರಸ್ರವಣ) ಭಾವ "ಘಜ್"  
(೩-೩-೧೮) । 2. ಸೋರುವುದು, ತೊಟ್ಟುಕೊಡುವುದು,  
ಜಿನುಗುವುದು. 3. ಅಧಿಕವಾಗುವುದು, ದೊಡ್ಡದಾಗು  
ವಿಕೆ, ವಿಸ್ತಾರವಾಗುವುದು. "ಸ್ವರ್ಗಾಭಿಷ್ಯಂದವಮನಂ  
ಕೃತ್ವೇವೋಪನಿವೇಶಿತಮ್" ಕುಮಾಂ ೬-೩೭ ।

ಅಭಿಷ್ಯಂದನಗರ ಅಭಿಷ್ಯಂದನಗರ (ನಂ) ಶಾಖಾನಗರ,  
ಬಡಾವಣೆ, ನಗರದ ಬೆಳವಣಿಗೆಯಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ  
ಉಪನಗರ. ಅಭಿಷ್ಯಂದೇನ ನಿರ್ಮಿತ ನಗರಮ್ ।

ಅಭಿಷ್ಯಂದಿನ್ ಅಭಿಷ್ಯಂದಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರವಹಿಸುವ,  
ಹರಿಯುವ. 2. ಸೋರುವ, ಜಿನುಗುವ. ಅಭಿಷ್ಯಂದತೇ—  
ಅಭಿ+ಸ್ಯಂದ್ (ಪ್ರಸ್ರವಣ) "ಣಿಞಿಃ" (೩-೨-೭೮) ।

ಅಭಿಷ್ವಜ್ಜ ಅಭಿಷ್ವಜ್ಜ (ಪುಂ) 1. ಸಂಬಂಧ, ಸಂಪರ್ಕ.  
2. ಪ್ರೀತಿ, ಅನುರಾಗ. ಅಭಿ+ಷ್ವಜ್ಜ (ಪರಿಷ್ವಜ್ಜೆ)  
"ಘಜ್" (೩-೩-೧೮) । "ಅಸಕ್ತಿರನಭಿಷ್ವಜ್ಜಃ ಪುತ್ರದಾರ-  
ಗೃಹಾದಿಭು" ಗೀತಾ ೧೩-೯ ।

ಅಭಿಸಂರಬ್ಧ ಅಭಿಸಂರಬ್ಧ (ವಿಂ) ಕೋಪಗೊಂಡ,  
ಕುಪಿತನಾದ. ಅಭಿ+ಸಂ+ರಬ (ರಾಭಸ್ಯ) "ಕ್ತಃ"  
(೩-೪-೭೨) ।

ಅಭಿಸಂರಮ್ ಅಭಿಸಂರಂಭ (ಪುಂ) ಕೋಪ, ರೋಷ.  
ಅಭಿ+ಸಂ+ರಮ (ರಾಭಸ್ಯ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮) ।

ಅಭಿಸಂವೃತ ಅಭಿಸಂವೃತ (ವಿಂ) ಸುತ್ತಲೂ ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಜೆನ್ನಾಗಿ ಹೊದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿ+ಸಂ+ವೃ (ವರಣ) "ಕ್ತಃ"  
(೩-೨-೧೦೨) ।

ಅಭಿಸಂಶ್ರಯ ಅಭಿಸಂಶ್ರಯ (ಪುಂ) ಆಶ್ರಯ, ಆಸರೆ,  
ಆಭಯಸ್ಥಾನ. ಅಭಿತಃ ಸಂಶ್ರಯಃ ।

ಅಭಿಸಂಸಾರಮ್ ಅಭಿಸಂಸಾರಂ (ಅವ್ಯಂ) ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕಲೆತು  
ಎದುರಿಗೆ ಬಂದು, ಗುಂಪು ಗುಂಪಾಗಿ ಎದುರಿಗೆ  
ಬಂದು. ಅಭಿ + ಸಂ + ಸ (ಗತೌ) "ಗಮುಲ್"  
(೩-೪-೨೨) ।

ಅಭಿಸಂತಾಪ ಅಭಿಸಂತಾಪ (ಪುಂ) 1. ಯುದ್ಧ. ಅಭಿ-  
ಸಂತಪ್ಯತೇತ್ — ಅಭಿ+ಸಂ+ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) ಅಭಿಂ "ಘಜ್"  
(೩-೩-೧೨೧) । 2. ಆಕ್ಷೇಪಣೆ, ಬೈಗಳು. ಅಭಿ+  
ಸಂ+ತಪ ಕರಂ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೨೧) । 3. ಜಗಳ,  
ಹೋರಾಟ. 4. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಿಂದಲೂ ಉಂಟಾಗುವ  
ದುಃಖ. ಭಾವ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮) ।

ಅಭಿಸಂಧಾ ಅಭಿಸಂಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಭಿಸಂಧಿ, ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ,  
ದೃಢವಾಗಿ ಹೇಳುವುದು. 2. ಕಪಟ, ಮೋಸ,  
ವಂಚನೆ, ರಕ್ಕು. ಅಭಿ+ಸಂ+ಧು ಧಾಕ್ (ಧಾರಣ) "ಅಙ್"  
(೩-೩-೧೦೬) । 3. ಉದ್ದೇಶ, ಗುರಿ.

ಅಭಿಸಂಧಾನ ಅಭಿಸಂಧಾನ (ನಂ) 1. ವಂಚನೆ,  
ಮೋಸಪಡಿಸುವುದು. ಅಭಿ+ಸಂ+ಧು ಧಾಕ್ (ಧಾರಣ) "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೫) । "ಪರಾಭಿಸಂಧಾನಪರಂ ಯದ್ವಪ್ಯಸ್ಯ  
ವಿವೇಷಿತಮ್" ರಘುಂ ೧೭-೭೬ । 2. ಉದ್ದೇಶ, ಗುರಿ.  
3. ದೃಢವಚನ, ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. 4. ಸಂಧಿವಾಡಿಸುವುದು,  
ಶಾಂತಪಡಿಸುವುದು, ಸಖ್ಯವೇರ್ಪಡಿಸುವುದು.

ಅಭಿಸಂಧಾಯ ಅಭಿಸಂಧಾಯ (ಪುಂ) 1. ಧೈಯ,  
ಉದ್ದೇಶ, ಗುರಿ. ಅಭಿ+ಸಂ+ಧು ಧಾಕ್ (ಧಾರಣ) "ಘಜ್"  
(೩-೩-೧೮) । (ಅವ್ಯಂ) 2. ಧೈಯವಿಟ್ಟು, ಉದ್ದೇಶಿಸಿ.  
3. ವಂಚಿಸಿ, ಮೋಸಪಡಿಸಿ. ಅಭಿ + ಸಂ + ಧಾಕ್  
"ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭) ।

ಅಭಿಸಂಧಿ ಅಭಿಸಂಧಿ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ, ದೃಢವಚನ.  
2. ಧೈಯ, ಉದ್ದೇಶ, ಗುರಿ. ಅಭಿ+ಸಂ+ಧು ಧಾಕ್  
(ಧಾರಣ) "ಕ್ತಿಃ" (೩-೩-೯೨) । "ಸ್ವರ್ಗಾಭಿಸಂಧಿಸುಕೃತಂ  
ವಚ್ಚನಾಮಿವ ಮೇನಿರೇ" ಕುಮಾಂ ೬-೪೭ । 3. ನಂಬಿಕೆ,  
ವಿಶ್ವಾಸ. 4. ನಿಬಂಧನೆ, ವಿಶೇಷವಾದ ಒಪ್ಪಂದ,  
ಕರಾರು, ಪರತ್ತು. "ಅಥಾವಶ್ಯಮೇವ ಮಾಧವಸೇನೋ  
ಮೋಚಯಿತವ್ಯಃ ಶ್ರೂಯತಾಮಯಮಭಿಸಂಧಿಃ" ಮಾಲಂ ೧ ।  
5. ಅಭಿಪ್ರಾಯ.



ಅಭಿಸಂಪಾತ ಅಭಿಸಂಪಾತ (ಪುಂ) 1. ಯುದ್ಧ. ಅಭಿ+  
ಸಮ್+ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಘಜ್" (3-3-121)। "ಜನ್ಯ  
ಸ್ಯಾದಭಿಸಂಪಾತಃ ಸಮದೌ ವಿಪ್ರಹಸ್ತಥಾ" ಹಲಾಂ। 2. ಪತನ,  
ಬೀಳುವುದು. ಭಾವೇ "ಘಜ್" (3-3-12)। 3. ಶಾಪ,  
ಬೈಗಳು.

ಅಭಿಸಂಪನ್ಧ ಅಭಿಸಂಪನ್ಧ (ಪುಂ) ಸಂಪೂರ್ಣ ಸಂಬಂಧ,  
ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲಿಯೂ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ. ಅಭಿ+  
ಸಮ್+ಬನ್ಧ (ಬಂಧನೆ) "ಘಜ್" (3-3-12)।

ಅಭಿಸರ ಅಭಿಸರ (ವಿಂ) 1. ಅನುಚರ, ಸೇವಕ, ಅಂಗ  
ಸೇವಕ. ಅಭಿ+ಸ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (3-1-134)।  
"ಅಥ ಸಾಭಿಸರಂ ಶರೇಸ್ತಪಸ್ವೀ ಸ ತಿರಸ್ಕರ್ತುಮೇಂದ್ರಮನ್ಯವರ್ಷತ್"  
ಮಾಘಂ 20-೮। 2. ಸಹಾಯಕ, ನೆರವಾಗುವವನು,  
ಒಡನಾಡಿ, ಸಂಗಡಿಗ. "ಮನ್ಮಥಾಭಿಸರಾ ತದಾಗಾರಮಭಿ-  
ಸರಾಮಿ" ದಶಕುಂ।

ಅಭಿಸರಣ ಅಭಿಸರಣ (ನಂ) 1. ಎದುರಾಗಿ ಹೋಗುವುದು.  
2. ಪ್ರಣಯಿಯು ಸಂಭೋಗಕ್ಕಾಗಿ ಸಂಕೇತ  
ಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು. ಅಭಿ+ಸ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್"  
(3-3-114)।

ಅಭಿಸರ್ಜನ ಅಭಿಸರ್ಜನ (ನಂ) 1. ದಾಸ, ಧರ್ಮ.  
2. ವಧೆ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. ಅಭಿ+ಸಜ (ವಿಸರ್ಗ) "ಲ್ಯುಟ್"  
(3-3-114)।

ಅಭಿಸಾಯ ಅಭಿಸಾಯ (ಅವ್ಯಂ) ಸಾಯಂಕಾಲಕ್ಕೆ  
ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ. ಸಾಯಮಭಿ - ಅವ್ಯಯಿಂ। (2-1-14)।  
"ಶ್ರಿತೋದಯಾದ್ರೇರಭಿಸಾಯಮುಚ್ಚಕೇರಚ್ಚುರಚ್ಚಂದ್ರಮಸೌಭಿರಾಮತಾಮ್"  
ಮಾಘಂ 1-16।

ಅಭಿಸಾರ ಅಭಿಸಾರ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಣಯಿಯು ಸಂಭೋಗ  
ಕ್ಕಾಗಿ ಸಂಕೇತಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು. ಅಭಿ+ಸ  
(ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಘಜ್" (3-3-12)। 2. ಆಕ್ರಮಣ,  
ಮುತ್ತಿಗೆ. "ಶ್ವೋಭಿಸಾರಃ ಪುರಸ್ಯ ನಃ" ರಾಮಾಂ।  
3. ಬಲ, ಶಕ್ತಿ. 4. ಯುದ್ಧ. 5. ಸಂಕೇತಸ್ಥಾನ.  
ಅಭಿಂ "ಘಜ್" (3-3-121)। (ವಿಂ) 6. ಸಂಗಡಿಗ,  
ಒಡನಾಡಿ. ಅಭಿ+ಸ (ಗತೌ)+ ಣಿಚ್ "ಅಚ್"  
(3-1-134)।

ಅಭಿಸಾರಣ ಅಭಿಸಾರಣ (ನಂ) ಸಂಭೋಗಕ್ಕಾಗಿ  
ನಾಯಿಕೆಯು ನಾಯಕನನ್ನಾಗಲೀ, ನಾಯಕನು  
ನಾಯಿಕೆಯನ್ನಾಗಲೀ ಸಂಕೇತಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಬರಮಾಡಿ  
ಕೊಳ್ಳುವುದು. ಅಭಿ+ಸ (ಗತೌ)+ ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್"  
(3-3-114)।

ಅಭಿಸಾರಿಕಾ ಅಭಿಸಾರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಭೋಗಕ್ಕಾಗಿ  
ಸಂಕೇತಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ ಅಥವಾ ನಾಯಕನನ್ನು  
ಬರಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಹೆಂಗಸು (ನಾಯಿಕೆ). ಅಭಿಸರತಿ  
ಅಭಿಸಾರಯತೇ ವಾ ಕಾಂತಂ ಸಂಕೇತಸ್ಥಾನಮ್ - ಅಭಿ+ಸ  
(ಗತೌ)+ ಣಿಚ್ "ಫ್ವಲ್" (3-1-133)। "ಅಭಿಸಾರಯತೇ  
ಕಾಂತಂ ಯಾ ಮನ್ಮಥವಶಂವದಾ। ಸ್ವಯಂ ವಾಭಿಸರತ್ಯೇಷಾ ಧೀರೇ-  
ರುಕ್ತಾಭಿಸಾರಿಕಾ" ಸಾಂ ದಂ 3-೭6। "ನಿಶಾಸು  
ಭಾಸ್ವತ್ಕಲನುಪುರಾಣಾಂ ಯಃ ಸಂವರೋಽಭೂದಭಿಸಾರಿಕಾಣಾಮ್"  
ರಘುಂ 16-12।

ಅಭಿಸಾರಿನ್ ಅಭಿಸಾರಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಅನುಚರ, ಸೇವಕ.  
ಅಭಿಸರತಿ-ಅಭಿ+ಸ (ಗತೌ) "ಣಿನಿಃ" (3-2-೭೮)।  
2. ಎದುರಿಗೆ ಹೋಗುವ, ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ನಡೆಯುವ.  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-4)। -ಸಾರಿಣಿ - ಸಾರಿಣೀ.

ಅಭಿಸೃಷ್ಟ ಅಭಿಸೃಷ್ಟ (ವಿಂ) 1. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಕೊಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ದಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿ+ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ)  
"ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "ಅಭಿಸೃಷ್ಟಸ್ತದಾ ಕಾಕಃ  
ಪ್ರತಿಪೇದೇ ಸ್ವಮಾಲಯಮ್" ರಾಮಾಂ।

ಅಭಿಹತ ಅಭಿಹತ (ವಿಂ) 1. ಹೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಡಿಯ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಗಾಯಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯಾಃ)  
"ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "ಧಾರಾಭಿರಾತಪ ಇವಾಭಿಹತಂ  
ಸರೋಜಮ್" ಮಾಲಂ 4-3। 2. ನಾಟಲ್ಪಟ್ಟ, ತಗುಲಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ತಾಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಗುಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೆಚ್ಚಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅನ್ಯೋನ್ಯಹಾರಾಭಿಹತೌ ಹರಾಂಶೌ" ಲೀಲಾಂ।

ಅಭಿಹತಿ ಅಭಿಹತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊಡೆಯುವುದು,  
ಬಡಿಯುವುದು, ಗಾಯಗೊಳಿಸುವುದು. 2. ಗುಣಾಕಾರ,  
ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು. ಅಭಿ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯಾಃ) "ಕ್ತಿನ್"  
(3-3-94)।

ಅಭಿಹರಣ ಅಭಿಹರಣ (ನಂ) 1. ವಿವಾಹ ಮೊದಲಾದುವು  
ಗಳಲ್ಲಿ ಕೊಡುವ ಬಳುವಳಿ, ಬಹುಮಾನ, ಉಡುಗೊರೆ.  
2. ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ತರುವುದು. ಅಭಿ+ಹಜ್ (ಹರಣ)  
"ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। "ವ್ಯಾದಿದೇಶ ಗಣಶೋಽಥ ಪಾರ್ಶ್ವ-  
ಗಾನ್ ಕಾರ್ಮುಕಾಭಿಹರಣಾಯ ಮೇಥಿಲಃ" ರಘುಂ 11-43।

ಅಭಿಹಾರ ಅಭಿಹಾರ (ಪುಂ) 1. ಆಕ್ರಮಣ, ಮುತ್ತಿಗೆ.  
2. ಜೌರ್ಯ, ಎದುರಿಗೆ ಕದಿಯುವುದು. 3. ಒಟ್ಟು  
ಗೂಡಿಸುವುದು, ಬೆರಸುವುದು. ಅಭಿ+ಹಜ್ (ಹರಣ)  
"ಘಜ್" (3-3-12)। "ಅಭಿಹಾರೋಽಭಿಯೋಗಃ ತ್ರಿವಿಧಃ  
ಸನ್ನಹನೇಽಪಿ ಚ" ಅಮಂ। 4. ಉದ್ಯಮ, ಪ್ರಯತ್ನ.  
"ಅಭಿಹಾರಃ ಸನ್ನಹನೇ ತ್ರಿವಿಧಃ ಕೋರ್ಮಯೋರಪಿ" ಹೇಮಂ।



ಅಭಿಹಿತ ಅಭಿಹಿತ (ವಿಂ) 1. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿ+ಙ್  
 ಧಾನ್ (ಧಾರಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಏಷಾ  
 ತೇಽಭಿಹಿತಾ ಸಾಂಖ್ಯೇ ಬುದ್ಧಿಯೋಗೇತ್ವಿಮಾಂ ಶೃಣು" ಗೀತಾ  
 ೨-೩೯। 2. ಅಭಿಧಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಬೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅಭಿಹಿತಾನ್ವಯ ಅಭಿಹಿತಾನ್ವಯ (ಪುಂ) ಅಭಿಧಾವೃತ್ತಿ  
 ಯಿಂದ ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಪದಾರ್ಥಗಳ ಸಂಬಂಧ, ಪದಗಳಿಗೆ  
 ಆಯಾ ಪದಾರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಶಕ್ತಿಯಿರುವುದರಿಂದ  
 ಪ್ರತ್ಯೇಕ ಪದಗಳಿಂದ ಬೋಧಿತವಾದ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು  
 ತಾತ್ಪರ್ಯವೆಂಬ ವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಸಂಬಂಧಪಡಿಸಿ ಹೇಳು  
 ವುದು. ಅಭಿಹಿತಾನಾಮಭಿಧಾವೃತ್ತ್ಯಾ ಬೋಧಿತಾನಾಂ (ಪ್ರತ್ಯೇಕ-  
 ಮುಪಸ್ಥಾಪಿತಾನಾಂ) ಪದಾರ್ಥಾನಾಂ ಪರಸ್ಪರಮನ್ವಯಃ। "ತಾತ್ಪರ್ಯಾಽಪಿ  
 ವೃತ್ತಿಮಾಹುಃ ಪದಾರ್ಥಾನ್ವಯಬೋಧನಂ। ತಾತ್ಪರ್ಯಾಽಪಿ ತದರ್ಥಂ ಚ ವಾಕ್ಯಂ  
 ತದ್ಬೋಧಕಂ ಪರಂ" ಸಾಂ ದಂ ೨-೨೦। ಇದು ನೈಯಾಯಿಕರ  
 ಮತ. ಇವರು ಅಭಿಹಿತಾನ್ವಯವಾದಿಗಳು.

ಅಭಿಹೃತಿ ಅಭಿಹೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎದುರಿಗೆ ನಿಂತು ಕೂಗು  
 ವುದು, ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ಕರೆಯುವುದು. ಅಭಿ+ಹ್ವೇ  
 (ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।

ಅಭಿ ಅಭಿ (ವಿಂ) ಭಯವಿಲ್ಲದ, ಹೆದರಿಕೆಯಿಲ್ಲದ.  
 ನಾಸ್ತಿ ಭೀರಸ್ಯ। "ವ್ಯಾಘ್ರಾನಭೀರಭಿಮುಖೋತ್ಪತ್ತಿತಾನ್  
 ಗುಹಾಮ್ಯಃ" ರಘುಂ ೯-೬೩।

ಅಭೀಕ ಅಭೀಕ (ಪುಂ) 1. ಕವಿ. 2. ಯಜಮಾನ.  
 (ವಿಂ) 3. ಕ್ರೂರ. 4. ಭಯವಿಲ್ಲದವನು, ಹೆದರ  
 ದವನು. ನಾಸ್ತಿ ಭೀರಸ್ಯ। "ಅಭೀಕಮತಿಕೇನೆದೇ ಭೀತಾ  
 ನಂದಸ್ಯ ನಾಶನೇ। ಕನತ್ಸಕಾಮಸೇನಾಕೇ ಮಂದಕಾಮಕಮಸ್ಯತಿ"  
 ಮಾಘಂ ೧೯-೭೨। 5. ಕಾಮುಕ, ಕಾಮಾತುರವುಳ್ಳ  
 ವನು. ಅಭಿಕಾಮಯತೇ - ಅಭಿ "ಕನ್" (೪-೨-೭೪)।  
 ನಿಪಾಂ। "ಮೇದಸ್ವಿನಃ ಸರಭಸೋಪಗತಾನಭೀಕಾನ್" ಮಾಘಂ  
 ೪-೬೪। 6. ಉತ್ಸುಕ, ಉತ್ಸಾಹವುಳ್ಳವನು. "ಅಭೀಕಃ  
 ಕಾಮುಕೇ ಕ್ಷುರೇ ನಿರ್ಮಯೇ ತ್ರಿಷು ನಾ ಕವೌ" ಮೇದಿಂ।

ಅಭೀಕ್ಷಣ ಅಭೀಕ್ಷಣ (ವಿಂ) 1. ನಿರಂತರವಾದ, ಎಡೆ  
 ಬಿಡದ. 2. ಅತಿಶಯವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. 3. ಪುನಃ ಪುನಃ  
 ಸಂಭವಿಸುವ, ಬಾರಿ ಬಾರಿಗೂ ಉಂಟಾಗುವ. ಅಭಿಗತಃ  
 ಕ್ಷಣಮ್। ಪೃಷಂ। "ಕ್ಷತೇ ಪ್ರಹಾರಾ ನಿಪತನ್ತ್ಯಭೀಕ್ಷಣಮ್"  
 ಪञ್ಚತಂ ೨-೧೭೮।

ಅಭೀಕ್ಷಣಮ್ ಅಭೀಕ್ಷಣಮ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅತಿಶಯವಾಗಿ,  
 ಹೆಚ್ಚಾಗಿ. ಅಭೀಕ್ಷಣೀತಿ - ಅಭಿ+ಕ್ಷು (ತೇಜನೇ) "ಙಮುಃ"  
 ಬಾಹುಂ। "ಅಭೀಕ್ಷಣಮುಷ್ಣೇರಪಿ ತಸ್ಯ ಸೋಮಣಃ" ಮಾಘಂ  
 ೧-೬೪। 2. ನಿರಂತರವಾಗಿ, ಎಡೆಬಿಡದೆ. "ಉದೀರ್ಣರಾಗ-

ಪ್ರತಿರೋಧಕಂ ಜನೇರಭೀಕ್ಷಣಮಕ್ಷುಣ್ಣತಯಾತಿದುರ್ಗಮಮ್" ಮಾಘಂ  
 ೧-೩೨। 3. ಪುನಃ ಪುನಃ, ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ, ಬಾರಿ  
 ಬಾರಿಗೂ. 4. ಶೀಘ್ರವಾಗಿ, ಜಾಗೃತೆಯಾಗಿ.  
 "ಅಭೀಕ್ಷಣಂ ಕ್ಷಿಪ್ರಪ್ರಕರಣಯೋಃ" ಹೇಮಂ।

ಅಭೀತ ಅಭೀತ (ವಿಂ) 1. ಎದುರಿಗೆ ಬಂದ, ಅಭಿಮುಖ  
 ವಾಗಿ ಬಂದ. ಅಭಿ+ಙ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)।  
 2. ಹೆದರದ, ಭಯಪಡದ. ನ ಭೀತಃ।

ಅಭೀತಿ ಅಭೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಂ ತಂ।  
 2. ಅಭಯಮುದೈ. 3. ಎದುರಿಗೆ ಹೋಗುವುದು,  
 ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು. 4. ಸಮಾಪ, ಹತ್ತಿರ.  
 ಅಭಿ+ಙ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। (ವಿಂ)  
 5. ಭಯವಿಲ್ಲದ, ಹೆದರಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. ನ ಭೀತಿಯಸ್ಯ।

ಅಭೀಪ್ಸಿತ ಅಭೀಪ್ಸಿತ (ನಂ) 1. ಆಸೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ.  
 ಅಭಿ+ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) + ಸನ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)।  
 (ವಿಂ) 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಇಷ್ಟವಾದ. ಅಭಿ+  
 ಆಪ್+ಸನ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅಭೀಪ್ಸು ಅಭೀಪ್ಸು (ವಿಂ) ಆಸೆಪಡುವ, ಪಡೆಯಲು  
 ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, ಹೊಂದಲು ಅಭಿಲಾಷೆಯುಳ್ಳ.  
 ಅಭಿ+ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮)।  
 "ಗೃಹಾನುಪೇತುಂ ಪ್ರಣಯಾದಭೀಪ್ಸವೋ ಭವಂತಿ ನಾಪುಣ್ಯಕೃತಾಂ ಮನೀ-  
 ಷಿಣಃ" ಮಾಘಂ ೧-೧೪।

ಅಭೀರ ಅಭೀರ (ಪುಂ) ಗೋಪಾಲಕ, ಗೊಲ್ಲ. ಅಭಿ ಇರಯತಿ  
 ಗಾಃ - ಅಭಿ+ಇರ್ (ಗತೌ ಕಂಪನೇ ಚ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್"  
 (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬೩)।  
 ಅಭೀರೀ ಅಭೀರೀ.

ಅಭೀರು ಅಭೀರು (ಪುಂ) 1. ಭೈರವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2.  
 ಶತಾವರಿ ಗಡ. (ನಂ) 3. ಯುದ್ಧಭೂಮಿ. (ವಿಂ) 4.  
 ಭಯವಿಲ್ಲದ, ಹೆದರಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. ನ ಭೀರುಃ।

ಅಭೀರುಪತ್ನಿ ಅಭೀರುಪತ್ನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶತಾವರಿ ಗಡ.

ಅಭೀಲಾಪ ಅಭೀಲಾಪ (ಪುಂ) "ಅಭಿಲಾಪ" ಪದದ  
 ಅರ್ಥ. ಅಭಿ+ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಽಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಘಜ್"  
 (೩-೩-೧೮)। ದೀರ್ಘಃ (೬-೩-೧೨೨)।

ಅಭೀಷಜ್ ಅಭೀಷಜಂ (ಪುಂ) "ಅಭಿಷಜ್" ಪದದ  
 ಅರ್ಥ. ಅಭಿ+ಷಜ (ಸಜ್ಜೇ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮)।  
 ದೀರ್ಘಃ (೬-೩-೧೨೨)।

ಅಭೀಷು ಅಭೀಷು (ಪುಂ) 1. ಕಿರಣ, ರಶ್ಮಿ. ಅಭಿ+ಙ್  
 (ಗತೌ) "ಃ" (ಉಂ ೧-೧೩)। "ಪ್ರಕುಲತಾಪಿಚ್ಛನಿಮಿ-  
 ರಭೀಷುಃ" ಮಾಘಂ ೧-೨೨। 2. ಕುದುರೆಯ ಹಗ್ಗ,



ಲಗಾಮು. "ಅಭೀಷ್ಠಃ ಪ್ರಗ್ರಹರೋಚಿಃ" ಹೇಮಂ. 3. ಅನು ರಾಗ, ಪ್ರೀತಿ.

ಅಭೀಷ್ಠ ಅಭೀಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಇಷ್ಟವಾದ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿ+ಇಷು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (3-2-102). "ಅಭೀಷ್ಠಸಿದ್ಧೇರಧಿವೇದೇಯಂ ಯದ್ವಾ ಸವಿತ್ರೀತಿ ಯಥಾರ್ಥಮುಚೇ" ಯಾದಂ 13-97. 2. ಪ್ರಿಯವಾದ, ಪ್ರೀತಿಪಾತ್ರವಾದ. "ಅಭೀಷ್ಠಮಾಸಾಘ ಚಿರಾಯ ಕಾಲೇ ಸಮುದೃತಾಶಂ ಕಮನೀ ಚಕಾಶೇ" ಮಾಘಂ 6-94. 3. ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋ ಹರವಾದ.

ಅಭುಕ್ತ ಅಭುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ತಿನ್ನಲ್ಪಡದ. 2. ಅನುಭವಿಸ ಲ್ಪಡದ. ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-2-102). ನಂ ತಂ. "ನಾಭುಕ್ತಂ ಧೀಯತೇ ಕರ್ಮ ಕಲ್ಪಕೋಟಿಶತೈರಪಿ". 3. ತಿನ್ನದಿರುವ, ಊಟಮಾಡ ದಿರುವ. ಭುಜ ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-3-114). ಭುಕ್ತಂ ಭೋಜನಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (4-2-129). ನಂ ತಂ. "ಅಭುಕ್ತಸ್ಯ ದಿವಾನಿद्रಾ ಪಾಪಾಣಮಪಿ ಜೀರ್ಯತಿ". 4. ಅನು ಭವಿಸದಿರುವ.

ಅಭುಕ್ತಮೂಲ ಅಭುಕ್ತಮೂಲ (ನಂ) ಜ್ಯೇಷ್ಠಾನಕ್ಷತ್ರದ ಕೊನೆಯ ಎರಡು ಘಳಿಗೆ ಮತ್ತು ಮೂಲದ ಮೊದಲ ನೆಯ ಎರಡು ಘಳಿಗೆ ಈ ಕಾಲದೊಳಗಿನದು ಅಭುಕ್ತ ಮೂಲ. "ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಂತೇ ಘಟಿಕೇ ದ್ವೇ ಚ ಮೂಲಾಘಟಿಕಾಢ್ಯಮ್. ಅಭುಕ್ತಮೂಲಮಿತ್ಯಾಹುರ್ಜಾತಿಂ ತತ್ರ ವಿವರ್ಜಯೇತ್".

ಅಭೂತ ಅಭೂತ (ವಿಂ) 1. ಅವಿದ್ಯಮಾನ, ಇಲ್ಲದಿರುವ. ನ ಭೂತಃ. "ಸ್ತುತವ್ಯಶ್ರಾಂತಾಸ್ಯಾಃ ಕ್ಷಿತಿಪತಿಮಭೂತೈರಪಿ ಗುಣಃ" ಮುद्रಾಂ 3-16. 2. ಮಿಥ್ಯೆಯಾದ, ನಿಜವಲ್ಲದ. "ಅಭೂತಮಾಸಂಜಯ ವಿರುದ್ಧಮಿಹಿತಮ್" ಕಿರಾಂ 14-19. 3. ಹಿಂದಿನದಲ್ಲದ.

ಅಭೂತತತ್ತ್ವಾಽವ ಅಭೂತತತ್ತ್ವಾಽವ (ಪುಂ) ಪದಾರ್ಥವು ಹಿಂದಿನ ರೂಪವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಹೊಸ ರೂಪವನ್ನು ತಾಳು ವುದು, ಹಿಂದೆ ಇಲ್ಲದಿದ್ದ ರೂಪವನ್ನು ಹೊಂದುವುದು, ಹಿಂದೆ ಯಾವ ರೂಪದಿಂದಿರಲಿಲ್ಲವೋ (ಈಗ) ಆ ಹೊಸ ರೂಪವನ್ನು ಹೊಂದುವುದು. ಅಭೂತಸ್ಯ ಪ್ರಕೃತಿರೂಪೇಣಾ- ನಾವಿರ್ಭೂತಸ್ಯ ತೇನ ರೂಪೇಣ ಭಾವಃ ತದ್ವಪ್ರಾಪ್ತಿಃ. ಉದಾಃ: ವಶಿಭವತಿ - ಅವಶೋ ವಶಃ ಸಂಪದಮಾನೋ ಭವತಿ, ಬ್ರಹ್ಮಿ ಭವತಿ - ಅಬ್ರಹ್ಮ ಬ್ರಹ್ಮ ಸಂಪದಮಾನಂ ಭವತಿ "ಚ್ವಿಃ" (4-4-50). ದೀರ್ಘಃ (7-4-32).

ಅಭೂತಪೂರ್ವ ಅಭೂತಪೂರ್ವ (ವಿಂ) ಹಿಂದೆ ಇಲ್ಲದಿದ್ದ, ಆಪೂರ್ವವಾದ, ಹೊಸದಾದ, ನವೀನವಾದ. ನ

ಭೂತಪೂರ್ವಃ. "ಭೇಜೇಽಭಿತಃ ಪಾತುಕಸಿದ್ಧಸಿಂಧೋರಭೂತಪೂರ್ವಾ ಶ್ರಿಯ- ಮಮ್ಬುರಾಶೇ" ಮಾಘಂ 3-3.

ಅಭೂತಾಭಿನಿವೇಶ ಅಭೂತಾಭಿನಿವೇಶ (ಪುಂ) ಅಸತ್ಯ ವಾದುದರಲ್ಲಿ ಸತ್ಯವೆಂಬ ಅಭಿಮಾನ, ನಿಜವಲ್ಲದುದ ರಲ್ಲಿ ನಿಜವೆಂಬ ಭಾವನೆ. ಅಭೂತೇಽಭಿನಿವೇಶಃ.

ಅಭೂತಾಹರಣ ಅಭೂತಾಹರಣ (ನಂ) ಕಪಟದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮಾತು, ಅಸತ್ಯದ ಮಾತು, ಮೋಸದ ಮಾತು. ಇದು ಗರ್ಭಸಂಧಿಯ ಒಂದು ಅಂಗ. "ಅಭೂತಾಹರಣಂ ಮಾರ್ಗೋ ರೂಪೋದಾಹರಣಕ್ರಮಾಃ" ಸಾಂ 40 6-94. "ತತ್ರ ವ್ಯಾಜಾಶ್ರಯಂ ವಾಕ್ಯಮಭೂತಾಹರಣಂ ಮತಮ್" ಸಾಂ 40 6-95.

ಅಭೂತಿ ಅಭೂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಭಾವ, ಇಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ಬಡತನ. ನಂ ತಂ. (ವಿಂ) 3. ಐಶ್ವರ್ಯವಿಲ್ಲದ. ನ ಭೂತಿಯಸ್ಯ.

ಅಭೂಮಿ ಅಭೂಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಶ್ರಯವಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಯೋಗ್ಯವಾದ ಸ್ಥಾನವಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಂ ತಂ. "ಅಭೂದ- ಭೂಮಿಃ ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಜನ್ಮನಾಂ ಮಿಶ್ರಾಂ ತನುಜಸ್ತಪನಶ್ಚುತಿರಿದೇಃ" ಮಾಘಂ 1-42. 2. ಪ್ರಶಸ್ತವಲ್ಲದ ಭೂಮಿ. (ವಿಂ) 3. ಭೂಮಿಯಿಲ್ಲದ. 4. ವಿಷಯವಿಲ್ಲದ.

ಅಭೂಮಿಜ ಅಭೂಮಿಜ (ವಿಂ) 1. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ದಿರುವ, ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ನ ಭೂಮಿ ಜಾಯತೇ. 2. ಅಪ್ರಶಸ್ತವಾದ. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದ, ಕೆಟ್ಟ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದ (ಧಾನ್ಯ ಮೊದಲಾದುದು). "ಅಭೂಮಿಜಂ ನವಚ್ಚಾಪಿ ನ ಧಾನ್ಯಂ ಗುಣವತ್ ಸ್ಮೃತಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ.

ಅಭೇದ ಅಭೇದ (ಪುಂ) 1. ಏಕೈಕ, ಭೇದವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಒಂದೇ ಆಗಿರುವಿಕೆ. ನ ಭೇದಃ - ಅಭಾವೇ ನಂ ತಂ. "ವಿಪರ್ಯಭೇದತಾದ್ವೈಪರಾಜ್ಞನಂ ವಿಷಯಸ್ಯ ಯತ್. ರೂಪಕಮ್" ಚಂದ್ರಾಂ. ಗುಣಗುಣಿನೋರಭೇದಃ, ಕಾರ್ಯಕಾರಣಯೋರಭೇದಃ ಇತ್ಯಾದಿ. 2. ಸಮಾಪಸಂಬಂಧ, ಬಿಟ್ಟಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಅವಿಯೋಗ. "ಇಚ್ಛತಾಂ ಸಹ ವಧುಭಿರಭೇದಂ ಯಾಮಿನಿವಿರಹಿಣಾಂ ವಿಹಗಾ- ನಾಮ್" ಕಿರಾಂ 9-13. (ವಿಂ) 3. ಒಂದೇ ಆದ, ಏಕರೂಪವಾದ.

ಅಭೇದ ಅಭೇದ (ನಂ) 1. ವಜ್ರ. (ವಿಂ) 2. ಭೇದಿ ಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಒಡೆಯಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ. ನ ಮೇತುಂ ಶಕ್ಯಮ್ - ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಯತ್" (3-1-124). "ತಾರಾಸ್ಮಿ ವಜ್ರಹೃದಯಾ ವಿಶಿಖೇರಭೇದಾ ಧನ್ವಿ ಕಥಂ ಭವಸಿ ರಾಘವ ಮಾಮವಿಹದಾ" ಚಂ ರಾಂ.



ಅಭೋಜನ ಅಭೋಜನ (ನಂ) 1. ಉಟಮಾಡದಿರುವಿಕೆ, ಉಪವಾಸ. ನಂ ತಂ। "ತೃಣಕಾಞ್ಛಮಾಣಾಂ ಚ ಶುಷ್ಕಾನ್ನಸ್ಯ ಗುಡಸ್ಯ ಚ। ಚಲಚರ್ಮಮಿಷಾಣಾಂ ಚ ತ್ರಿರಾತ್ರಂ ಸ್ಯಾದಭೋಜನಮ್" ಮನುಂ ೧೧-೧೬೬। (ವಿಂ) 2. ಉಟವಿಲ್ಲದ, ಭೋಜನ ವಿಲ್ಲದ. ನ ಭೋಜನಂ ಯಸ್ಯ।

ಅಭೋಜ್ಯ ಅಭೋಜ್ಯ (ವಿಂ) ಉಟಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಲ್ಲದ, ಭುಜಿಸಲು ನಿಷಿದ್ಧವಾದ, ಅಶುದ್ಧವಾದ (ಆಹಾರ). ನ ಭೋಕ್ತುಮರ್ಹಮ್। "ಅಭೋಜ್ಯಮತ್ರಂ ನಾತ್ವಮಾತ್ಮನಃ ಶುದ್ಧಿಮಿಚ್ಛತಾ" ಮನುಂ ೧೧-೧೬೦।

ಅಭೌತಿಕ ಅಭೌತಿಕ (ವಿಂ) ಪಂಚಮಹಾಭೂತಗಳಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದಿರುವ.

ಅಭೌಮ ಅಭೌಮ (ವಿಂ) ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದಿರುವ, ಆಕಾಶಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಭೂಮಿ ಭವಮ್। ನಂ ತಂ। "ಅಭೌಮಸಂಭಾವ್ಯವಿಭೂತಿಯೋಗಮ್" ಯಾದಂ ೧೮-೧೨೪।

ಅಭ್ಯಕ್ತ ಅಭ್ಯಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ತೈಲಾಭ್ಯಂಗವನ್ನು ಮಾಡಿದ, ಎಣ್ಣೆ ಬಳಿದುಕೊಂಡ. ಅಭಿ+ಅಜ್ಜ (ವ್ಯಕ್ತಿಯಾದಿ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಅಭ್ಯಕ್ತಮಿವ ಸ್ನಾತಃ ಶುಚಿರ-ಶುಚಿಮಿವ ಪ್ರಬುದ್ಧ ಇವ ಸುಪ್ತಮ್" ಶಾಕುಂ ೪-೧೧। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುತ್ತಲೂ ಲೇಪನೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅಭ್ಯಗ್ರ ಅಭ್ಯಗ್ರ (ವಿಂ) 1. ನವೀನವಾದ, ಹೊಸದಾದ. 2. ಸಮಾಪದ, ಹತ್ತಿರದ. ಅಭಿಮುಖಮಗ್ರಮಸ್ಯ। "ಉಪ-ಕಣ್ಠಾಂತಿಕಾಮ್ಯರ್ಣಾಮ್ಯಗ್ರಾಃ" ಅಮಂ।

ಅಭ್ಯಜ್ಞ ಅಭ್ಯಜ್ಞ (ಪುಂ) 1. ತೈಲಾಭ್ಯಂಗ, ಮೈಗೆ ಎಣ್ಣೆ ಹಚ್ಚುವುದು. ಅಭಿ+ಅಜ್ಜ (ವ್ಯಕ್ತಿಯಾದಿ) "ಜ್ಞಃ" (೩-೩-೧೮)। "ನಿರ್ನಾಭಿ ಕೌಶೇಯಮುಪಾತ್ತವಾಣಮಭ್ಯಜ್ಞ-ನೇಪಥ್ಯಮಲಂಚಕಾರ" ಕುಮಾಂ ೭-೭। 2. ಬಳಿಯುವುದು, ಲೇಪನೆ ಮಾಡುವುದು. 3. ಮುಲಾಮು, ಲೇಪನೆ ಮಾಡುವ ತೈಲ (ಮೊದಲಾದುದು). ಕರಂ "ಜ್ಞಃ" (೩-೩-೧೨೧)।

ಅಭ್ಯಂಜನ ಅಭ್ಯಂಜನ (ನಂ) 1. ತೈಲ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಮೈಗೆ ಲೇಪನೆಮಾಡುವುದು. 2. ಕಣ್ಣಿಗೆ ಅಂಜನ ಹಾಕುವುದು. 3. ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಡಿಗೆ ಹಚ್ಚುವುದು. 4. ಬಳಿಯುವುದು, ಲೇಪನೆಮಾಡುವುದು. 5. ಲೇಪನೆಮಾಡುವ ತೈಲ. 6. ಮುಲಾಮು. ಅಭಿ+ಅಜ್ಜ (ವ್ಯಕ್ತಿಯಾದಿ) ಭಾವೇ ಕರಂ ವಾ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪, ೧೭)। "ಅಭ್ಯಂಜನಂ ಸ್ನಾಪನಂ ಚ ಗಾತ್ರೋ-ತ್ಸಾದನಮೇವ ಚ। ಗುರುಪತ್ನಿಯಾ ನ ಕಾರ್ಯಾಣಿ ಕೇಶಾನಾಂ ಚ ಪ್ರಸಾಧನಮ್" ಮನುಂ ೨-೨೧೧।

ಅಭ್ಯಂತೀತ ಅಭ್ಯಂತೀತ (ವಿಂ) ಮೃತನಾದ, ಮರಣ ಹೊಂದಿದ. "ಗುರುಃ ತ್ವಮ್ಯಂತೀತೇಷು ವಿನಾ ವಾ ತೇಗೃಹೇ ವಸನ್" ಮನುಂ ೪-೨೪೨।

ಅಭ್ಯಧಿಕ ಅಭ್ಯಧಿಕ (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅವಶ್ಯಕತೆಗಿಂತಲೂ ಅಧಿಕವಾದ. ಅಭಿತೋಷಧಿಕಃ। "ಸತ್ಯಃ ಪ್ರಸೂತಪ್ರಿಯಾಪೀತಾದಭ್ಯಧಿಕಮ್" ತಂ ರಾಂ ೪-೧। 2. ಸರ್ವಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಬಹಳ ಉತ್ಕೃಷ್ಟವಾದ, ಎಲ್ಲರಿಗಿಂತಲೂ ಮಿಗಿಲಾದ. "ನ ತ್ವತ್ಸಮೋಸ್ತ್ಯಭ್ಯಧಿಕಃ ಕೃತೋಜ್ಯಃ" ಗೀತಾ ೧೧-೪೩। 3. ಅಸಾಧಾರಣವಾದ, ಲೋಕೋತ್ತರವಾದ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 4. ಬಹಳ ಅಧಿಕವಾಗಿ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ.

ಅಭ್ಯಧ್ವ ಅಭ್ಯಧ್ವ (ಅವ್ಯಂ) ದಾರಿಯ ಎದುರಿಗೆ, ದಾರಿಯ ಕಡೆಗೆ. ಅಧ್ವನೋಽಭಿಮುಖಮ್ - ಅಭಿ + ಅಧ್ವನ್ "ಡ್" (೪-೪-೧೦೮)। ನಲೋಪಃ (೬-೪-೧೪೪)।

ಅಭ್ಯನುಜ್ಞಾ ಅಭ್ಯನುಜ್ಞಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನುಮತಿ, ಅಪ್ಪಣೆ, ಸಮ್ಮತಿ. ಅಭಿ+ಅನು+ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಅಡ್" (೩-೩-೧೦೬)। "ಅಥಾನುರೂಪಾಭಿನಿವೇಶತೋಪಿಣಾ ಕೃತಾಮ್ಯ-ನುಜ್ಞಾ ಗುರುಣಾ ಗರೀಯಸಾ" ಕುಮಾಂ ೪-೭। "ಪಪೌ ವಸಿಷ್ಠೇನ ಕೃತಾಮ್ಯನುಜ್ಞಃ" ರಘುಂ ೨-೬೯। 2. ಆಜ್ಞೆ, ಅಪ್ಪಣೆ.

ಅಭ್ಯನುಜ್ಞಾತ ಅಭ್ಯನುಜ್ಞಾತ (ವಿಂ) 1. ಅನುಮತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಪ್ಪಿಗೆಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮ್ಮತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿ+ಅನು+ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಅಪ್ಪಣೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅಭ್ಯನುಜ್ಞಾನ ಅಭ್ಯನುಜ್ಞಾನ (ನಂ) 1. ಅನುಮತಿ, ಅನುಜ್ಞೆ, ಸಮ್ಮತಿ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. 2. ಆಜ್ಞೆ, ಅಪ್ಪಣೆ. ಅಭಿ+ಅನು+ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ಭರದ್ವಾಜಾಮ್ಯನುಜ್ಞಾನಾನ್ವಿಚಿತ್ರಕೂಟಸ್ಯ ದರ್ಶನಮ್" ರಾಮಾಂ।

ಅಭ್ಯಂತರ ಅಭ್ಯಂತರ (ನಂ) 1. ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಅಂತರಾಳ, ಒಳಪ್ರದೇಶ. ಅಭಿಗತಮಂತರಮ್। "ನಿಧಾನಗರ್ಭಮಿವ ಸಾಗರಾಮ್ಬರಾಂ ಶಮೀಮಿವಾಮ್ಯಂತರಲೀನಪಾವಕಾಮ್" ರಘುಂ ೩-೯। 2. ಅವಕಾಶ, ಮಧ್ಯಕಾಲ. 3. ಚಿತ್ತ, ಮನಸ್ಸು. (ವಿಂ) 4. ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ, ಒಳಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ, ಒಳಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. "ಅತಃ ಸೋಮ್ಯಂತರಾನ್ವಿತಾನ್ ಪಠಪೂರ್ವಮಜಯದ್ರಿಪುನ್" ರಘುಂ ೧೭-೪೪। 5. ಪರಿಚಯ ಹೊಂದಿದ, ಪ್ರಾವೀಣ್ಯಪಡೆದ, ನೈಪುಣ್ಯಹೊಂದಿದ. "ಸಂಜ್ಞಿತಕೇಽಮ್ಯಂತರೇ ಸ್ವಃ" ಮಾಲಂ ೪। 6. ಸಮಾಪದಲ್ಲಿರುವ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರುವ. "ತ್ಯಕ್ತಾಽಪ್ಯಾಮ್ಯಂತರಾ ಯನ್" ಪञ्ಚತಂ ೧-೨೪೯। (ಅವ್ಯಂ) 7. ಒಳಭಾಗದಲ್ಲಿ, ಮಧ್ಯಭಾಗದಲ್ಲಿ, ಒಳಗಡೆ. 8. ಮಧ್ಯಕಾಲದಲ್ಲಿ.



ಅಮೃತರಾಮ ಅಭ್ಯಂತರಾರಾಮ (ವಿಂ) ಯೋಗಿ, ಆತ್ಮಾರಾಮ, ಪರಮಾತ್ಮಧ್ಯಾನಾಸಕ್ತ. ಅಮೃತರಾಮ: ಆರಂಭಂ ಯಸ್ಯ |

ಅಮೃತಮನ ಅಭ್ಯಮನ (ನಂ) 1. ಎದುರಾಗಿ ನುಗ್ಗುವುದು, ಮುತ್ತಿಗೆ, ಮೇಲೆಬೀಳುವುದು. ಅಭಿ+ಅಮ (ಗತಾದಿಪು) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) | 2. ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ಹೋಗುವುದು. 3. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ.

ಅಮೃತಮಿತ ಅಭ್ಯಮಿತ (ವಿಂ) 1. ವ್ಯಾಧಿಗ್ರಸ್ತ, ರೋಗಿ. ಅಭಿ+ಅಮ (ರೋಗ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) | "ಆತುರೋಽಮೃತಮಿತೋಽಮೃತ:" ಅಮಂ | 2. ಗಾಯಗೊಂಡವನು, ನೋಯಾಳ.

ಅಮೃತಮಿತ್ರ ಅಭ್ಯಮಿತ್ರ (ಅವ್ಯಂ) ಶತ್ರುವಿಗೆ ಎದುರಾಗಿ. ಅಮಿತ್ರಾನಭಿ - ಅವ್ಯಯಿಂ (2-1-14) | "ಹಸಾಹತೇತ್ಯುದ್ಧತ-ಭೀಮಘೋಃ ಸಮುಜ್ಜಿತಾ ಯೋಧಿರಮೃತಮಿತ್ರಮ್" ಕಿರಾಂ 16-5 |

ಅಮೃತಮಿತ್ರೀಣ ಅಭ್ಯಮಿತ್ರೀಣ (ಪುಂ) ಶತ್ರುವಿನ ಕಡೆಗೆ ಧೈರ್ಯದಿಂದ ದಂಡೆತ್ತಿ ನುಗ್ಗುವವನು, ಪೀಠನಾದ ಯೋಧ. ಅಮೃತಮಿತ್ರಮಲಂ ಗಾಮಿ - ಅಮೃತಮಿತ್ರ "ಃ:" (4-2-17) | "ಉದ್ಯೋಗಮೃತಮಿತ್ರೀಣೋ ಯಥೇಷಂ ತ್ವಂ ಚ ಸಂತನು" ಭಟಿಂ 4-47 | ಇದೇ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಅಮೃತಮಿತ್ರ "ಃ:" (4-2-17) | ಅಮೃತಮಿತ್ರೀಯ: ಅಭ್ಯಮಿತ್ರೀಯ: ಅಮೃತಮಿತ್ರ "ಯತ್" (4-2-17) | ಅಮೃತಮಿತ್ರ: ಅಭ್ಯಮಿತ್ರೀಯ: "ಮಾರೀಚೋಽನುಯಂತ್ರಾಸಾದಮೃತಮಿತ್ರೀಯೋ ಭವಾಮಿ ತೇ" ಭಟಿಂ 4-46 |

ಅಮೃತಚನ ಅಭ್ಯರ್ಚನ (ನಂ) ಅನುಗ್ರಹ ಸಂಪಾದನೆಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಪೂಜೆ, ಉಪಾಸನೆ. ಅಭಿ+ಅರ್ಚ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) |

ಅಮೃತಚನಾ ಅಭ್ಯರ್ಚನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಪಾಸನೆ, ಅನುಗ್ರಹ ಸಂಪಾದನೆಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಪೂಜೆ. ಅಭಿ+ಅರ್ಚ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಯುಚ್" (3-3-107) | "ಗಲದ್ವಿ-ರನ್ಯಾ ವಲಯಪ್ರಸುನೇರಮೃತಚನಾಮಾತನುಜೇವ ಶೋರೆ:" ಯಾದಂ 13-49 |

ಅಮೃತಾರ್ಚ ಅಭ್ಯರ್ಚಾರ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂಜೆ. ಅಭಿ+ಅರ್ಚ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಅ:" (3-3-103) |

ಅಮೃತಾರ್ಚಿತ ಅಭ್ಯರ್ಚಿತ (ವಿಂ) ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಆರಾಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿ+ಅರ್ಚ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (3-2-102) | "ಅಮೃತಾರ್ಚಿತಾನಾಂ ತ್ರಿದಶಾತಿಥಿನಾಮ್" ಯಾದಂ 16-62 |

ಅಮೃತಾರ್ಚ್ಯ ಅಭ್ಯರ್ಚ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಪೂಜೆಗೆ ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ. ಅಭಿ+ಅರ್ಚ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಯತ್" (3-1-124) | (ಅವ್ಯಂ) 2. ಪೂಜಿಸಿ, ಆರಾಧಿಸಿ. "ಅಮೃತಾರ್ಚ್ಯ ಕಸ್ಮೇಚಿದುಪಾಶ್ರಿತಾಯ ವಿತೀರ್ಯ ವಿಪ್ರಾಯ ವಿಲೋಚನೇ ಸ್ವೇ" ಚಂ ರಾಂ |

ಅಮೃತಾರ್ಣ ಅಭ್ಯರ್ಣ (ಪುಂ) 1. ಸಮೀಪ, ಹತ್ತಿರ. ಅಮೃತಾರ್ಣೇ-ಅಭಿ+ಅರ್ಣ (ಗತೌ ಯಾಚನೇ ಚ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) | "ಅಮೃತಾರ್ಣಮ್: ಪತನಸಮಯೇ ಪರ್ಣಲಿಖಿತಸಾನುಮ್" ಭಟಿಂ 6-143 | (ವಿಂ) 2. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರುವ. "ತಪತಿ ಪ್ರಾವೃಷಿ ನಿತರಾಮಮೃತಾರ್ಣಜಲಾಗಮೋ ದಿವಸ:" ರತಾಂ 3-10 |

ಅಮೃತಾರ್ಥನ ಅಭ್ಯರ್ಥನ (ನಂ) ಬೇಡಿಕೆ, ಪ್ರಾರ್ಥನೆ, ಕೋರಿಕೆ. ಅಭಿ+ಅರ್ಥ (ಯಾಚನೇ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) |

ಅಮೃತಾರ್ಥನಾ ಅಭ್ಯರ್ಥನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಾರ್ಥನೆ, ಬೇಡಿಕೆ, ಕೋರಿಕೆ. ಅಭಿ+ಅರ್ಥ (ಯಾಚನೇ) + ಣಿಚ್ "ಯುಚ್" (3-3-107) | "ಅಮೃತಾರ್ಥನಾಭಿಭವೇನ ಸಾಧುರ್ಮಾಪ್ಯಸ್ಯ-ಮಿಷ್ಠೇಽಪ್ಯವಲಮ್ಬತೇಽಥ" ಕುಮಾಂ 1-42 |

ಅಮೃತಾರ್ಥನೀಯ ಅಭ್ಯರ್ಥನೀಯ (ವಿಂ) ಎದುರಿಗೆ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲ್ಪಡುವ, ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ ಬೇಡಲ್ಪಡುವ. ಅಭಿ+ಅರ್ಥ (ಯಾಚನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) |

ಅಮೃತಾರ್ಥಿನ್ ಅಭ್ಯರ್ಥಿನ್ (ವಿಂ) ಯಾಚಿಸುವ, ಬೇಡುವ. ಅಭಿ+ಅರ್ಥ (ಯಾಚನೇ) "ಣಿನಿ:" (3-2-96) | ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಕೀಪ್" (4-1-4) | - ಅರ್ಥಿನಿ - ಅರ್ಥಿನೀ.

ಅಮೃತಾರ್ಥ್ಯ ಅಭ್ಯರ್ಥ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲ್ಪಡುವ, ಯಾಚಿಸಲ್ಪಡುವ, ಬೇಡಲ್ಪಡುವ. ಅಭಿ+ಅರ್ಥ (ಯಾಚನೇ) + ಣಿಚ್ "ಯತ್" (3-3-107) | "ಕಾರ್ಯೇಷು ಚೈಕಕಾರ್ಯತ್ವಾದ-ಮೃತಾರ್ಥ್ಯಾಽಸ್ಮಿ ನ ವಜ್ರಿಣಾ" ರಘುಂ 10-40 | (ಅವ್ಯಂ) 2. ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿ, ಯಾಚನೆಮಾಡಿ. ಅಭಿ+ಅರ್ಥ "ಲ್ಯಪ್" (3-1-37) |

ಅಮೃತಾರ್ಥ್ಯಮಾನ ಅಭ್ಯರ್ಥ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ಯಾಚಿಸಲ್ಪಡುವ, ಬೇಡಲ್ಪಡುವ. ಅಭಿ+ಅರ್ಥ (ಯಾಚನೇ) + ಣಿಚ್+ಶಾನಚ್ (3-2-124) | "ಅಮೃತಾರ್ಥ್ಯಮಾನಾ ವಿಬುಧೈಃ ಸಮಗ್ರೈಃ ಪ್ರಹ್ಲವೈಃ ಸುರೇಂದ್ರಪ್ರಮುಖೈರೂಪೇತ" ಕುಮಾಂ 11-1 |

ಅಮೃತಾರ್ಥನ ಅಭ್ಯರ್ಥನ (ನಂ) 1. ಬಹಳವಾಗಿ ಬೇಡಿಸುವುದು. ಅಭಿ+ಅರ್ಥ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್+ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) | 2. ಎದುರಿಗೆ ಯಾಚಿಸುವುದು. ಅಭಿ+ಅರ್ಥ (ಗತೌ ಯಾಚನೇ ಚ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) |



ಅಭ್ಯಾಸದ ಅಭ್ಯಾಸ (ವಿಂ) 1. ಎದುರಿಗೆ ಬೇಡಲ್ಪಟ್ಟು.

ಅಭಿ + ಅದ (ಯಾಚನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

2. ಎದುರಿಗೆ ಬಹಳವಾಗಿ ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಅಭಿ +

ಅದ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

ಅಭ್ಯಾಸದ ಅಭ್ಯಾಸ (ನಂ) 1. ಪೂಜೆ, ಸತ್ಕಾರ.

ಅಭಿ + ಅಹ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

2. ಗೌರವ, ಮರ್ಯಾದೆ.

ಅಭ್ಯಾಸದ ಅಭ್ಯಾಸ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೂಜೆ, ಸತ್ಕಾರ.

ಅಭಿ + ಅಹ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಯುಚ್" (3-3-103)।

2. ಗೌರವ, ಮರ್ಯಾದೆ.

ಅಭ್ಯಾಸದ ಅಭ್ಯಾಸ (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸ

ಲ್ಪಡುವ, ಪೂಜೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದ. 2. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಡುವ.

ಅಭಿ + ಅಹ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)।

ಅಭ್ಯಾಸದ ಅಭ್ಯಾಸ (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟು,

ಸತ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಅಭಿ + ಅಹ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:"

(3-2-102)। 2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉಚಿತವಾದ,

ಯೋಗ್ಯವಾದ. "ಅಭ್ಯಾಸದ ಬಂಧುತುಲ್ಯರೂಪಾ ವೃತ್ತಿವಿಶೇಷಣ

ತಪೋಧನಾನಾಮ್" ಕಿರಾಂ 3-11।

ಅಭ್ಯಾಸದ ಅಭ್ಯಾಸ (ನಂ) ಹೊರಕ್ಕೆ ಎಳೆಯು

ವುದು. ಅಭಿ + ಅವ + ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಲ್ಯುಟ್"

(3-3-114)।

ಅಭ್ಯಾಸದ ಅಭ್ಯಾಸ (ಪುಂ) 1. ಶತ್ರುವಿನ

ಅಕ್ರಮಣ, ಮುತ್ತಿಗೆ. "ಪ್ರಪಾತಸ್ತ್ವಮ್ಯವಸ್ಕಂದೋ ಧಾಟಾ-

ಭ್ಯಾಸಾದನಂ ಚ ಸ:" ಅಭಿಂ ಚಿಂ। 2. ಶತ್ರುವನ್ನು

ಶಕ್ತಿಗುಂದಿದವನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಲು ಹೊಡೆಯುವುದು.

3. ಪ್ರಹಾರ, ಎತ್ತು, ಪೆಟ್ಟು. 4. ಹೊಂದುವುದು,

ತಲುಪುವುದು, ಸೇರುವುದು. 5. ಪ್ರಪಾತ, ಪತನ,

ಬೀಳುವುದು. ಅಭಿ + ಅವ + ಸ್ಕಂದಿರ್ (ಗತಿಶೋಷಣಯೋಃ)

"ಘಜ್" (3-3-102)। ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

-ಸ್ಕಂದನಮ್ - ಸ್ಕಂದನಂ. "ಅಭ್ಯಾಸದ ತ್ವಮ್ಯಾಸಾದನಮ್"

ವೇಜಂ।

ಅಭ್ಯಾಸದ ಅಭ್ಯಾಸ (ನಂ) ಭೋಜನ, ಊಟ.

ಅಭಿ + ಅವ + ಹೃಜ್ (ಹರಣೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಭಾವೇ "ಘಜ್" (3-3-102)। -ಅವಹಾರಃ - ಅವಹಾರಃ।

"ಸರ್ವಮಪ್ಯಾದರಿಕಸ್ಯಾಮ್ಯವಹಾರಃ ಉಪಯುಜ್ಯತೇ" ರತ್ನಾಂ 2।

ಅಭ್ಯಾಸದ ಅಭ್ಯಾಸ (ನಂ) 1. ಆಹಾರ,

ಊಟದ ವಸ್ತು. (ವಿಂ) 2. ತಿನ್ನಲು ಯೋಗ್ಯ

ವಾದ, ಭುಜಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಅಭಿ + ಅವ + ಹೃಜ್

(ಹರಣೇ) ಕರ್ಮಂ "ಪ್ಯತ್" (3-1-124)। "ಸರ್ವತ್ರೋ-

ದರಿಕಸ್ಯಾಮ್ಯವಹಾರ್ಯಮೇವ ವಿಷಯಃ" ವಿಕ್ರಂ 3।

ಅಭ್ಯಾಸದ ಅಭ್ಯಾಸ (ವಿಂ) ಭುಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟು.

ಅಭ್ಯಾಸದ ಅಭ್ಯಾಸ - ಅಭಿ + ಅವ + ಹೃಜ್ (ಹರಣೇ) "ಕ್ತ:"

(3-2-102)।

ಅಭ್ಯಾಸದ ಅಭ್ಯಾಸ (ನಂ) 1. ಅಭ್ಯಾಸ, ಪುನರಾವೃತ್ತಿ.

2. ಶಿಕ್ಷಣ, ಕಲಿಯುವುದು. 3. ಪುನರಾವೃತ್ತಿ,

ಮತ್ತೆ ಮಾಡುವಿಕೆ. ಅಭಿ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೇ) "ಲ್ಯುಟ್"

(3-3-114)। "ವಿದ್ಯಾಮ್ಯಾಸನೇನೈವ ಪ್ರಸಾದಯಿತುಮಹೇಸಿ"

ರಘುಂ 1-66।

ಅಭ್ಯಾಸದ ಅಭ್ಯಾಸ (ವಿಂ) ಅಭ್ಯಾಸಮಾಡಲು

ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಕಲಿಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಅಭಿ +

ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೇ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)।

ಅಭ್ಯಾಸದ ಅಭ್ಯಾಸ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಅಸೂಯೆ

ಪಡುವವನು, ಗುಣದಲ್ಲಿ ದೋಷವನ್ನು ತೋರಿಸು

ವವನು. ಅಭಿ + ಅಸೂಜ್ (ಉಪತಾಪೇ) "ಯಕ್" (3-1-29)।

"ಫುಲ್" (3-1-133)। "ಮಾಮಾತ್ಮಪರದೇಹೇಷು ಪ್ರದಿಪಂತೋ-

ಮ್ಯಸೂಯಕಾಃ" ಗೀತಾ 16-10।

ಅಭ್ಯಾಸದ ಅಭ್ಯಾಸ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಸೂಯೆ, ಇತರರ

ಗುಣ ಮತ್ತು ವೃದ್ಧಿಯಲ್ಲಿ ದೋಷವನ್ನು ಎಣಿಸುವ

ಬುದ್ಧಿ. ಅಭಿ + ಅಸೂಜ್ (ಉಪತಾಪೇ) "ಯಕ್" (3-1-29)।

"ಅಃ" (3-3-102)। ಕೇನಾಮ್ಯಸೂಯಾ ಪದಕಾಙ್ಕ್ಷಿಣಾ ತೇ

ನಿತಾಂತದೋಷಜನಿತಾ ತಪೋಭಿಃ" ಕುಮಾಂ 3-4।

ಅಭ್ಯಾಸದ ಅಭ್ಯಾಸ (ವಿಂ) 1. ಅಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು,

ಕಲಿಯಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಪುನರಾವೃತ್ತಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು.

ಅಭಿ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

"ಶೇಷವೇಷಮ್ಯಸ್ತವಿದ್ಯಾನಾಂ ಯಾವನೇ ವಿಷಯೇಷಿಣಾಮ್" ರಘುಂ

1-66। 3. ದ್ವಿತ್ವಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು ಧಾತುವಿನ ಭಾಗ

ಗಳು, ಅಭ್ಯಾಸಸಂಜ್ಞೆ ಹೊಂದಿರುವ ಧಾತು. "ಉಭೇ

ಅಭ್ಯಾಸಮ್" (6-1-4)। "ನಾಮ್ಯಸ್ತಾಚ್ಚತುಃ" ಪಾಂ ಸುಂ

(9-1-37)।

ಅಭ್ಯಾಸದ ಅಭ್ಯಾಸ (ಅತ್ರಂ) 1. ಅಭ್ಯಾಸಮಾಡಿ, ಕಲಿತು.

2. ಪುನಃ ಅವೃತ್ತಿಮಾಡಿ. ಅಭಿ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೇ)

"ಲ್ಯಪ್" (9-1-37)।

ಅಭ್ಯಾಸದ ಅಭ್ಯಾಸ (ವಿಂ) ಅಪವಾದ ಹೊರಿಸ

ಲ್ಪಟ್ಟು, ಚಾಡಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು, ಇಲ್ಲದುದನ್ನು ಹೇಳಿ

ಅಕ್ಷೇಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಅಭಿ + ಆ + ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಟಣೇ) "ಲ್ಯುಟ್"

(3-3-114)।



ಅಮ್ಯಾಗತ ಅಭ್ಯಾಗತ (ಪುಂ) 1. ಔತಣಗ, ಉಟಕ್ಕೆ ಕರೆದು ಬಂದವನು. ಅಭಿ+ಆ+ಗಲ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (3-4-92). [ಅಹ್ವಾನವನ್ನು ಪಡೆದು ಉಟಕ್ಕೆ ಬಂದವನು ಅಭ್ಯಾಗತ. ಅಹ್ವಾನವಿಲ್ಲದೆ ತಾನಾಗಿ ಉಟಕ್ಕೆ ಬಂದವನು ಅತಿಥಿ.] "ಆಸ್ವಾದಿತಾರ್ಥಕ್ರಮುಕಾ: ಸಮುದ್ರಾದಮ್ಯಾಗತಸ್ಯ ಪ್ರತಿಪತ್ತಿಮೀಯು:" ಮಾಘಂ 3-41. (ವಿಂ) 2. ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ಬಂದ. "ಅಮ್ಯಾಜತೋಮ್ಯಾಗತ-ತೂರ್ಣತರ್ಣಕಾಮ್" ಮಾಘಂ 12-41. 3. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬಂದ.

ಅಮ್ಯಾಗಮ ಅಭ್ಯಾಗಮ (ಪುಂ) 1. ಆಗಮನ, ಬರುವಿಕೆ, ಎದುರಾಗಿ ಬರುವುದು. ಅಭಿ+ಆ+ಗಲ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಅಪ್" (3-3-44). "ಕಾ ತ್ವಂ ಶುಭೇ ಕಸ್ಯ ಪರಿಗ್ರಹೋ ವಾ ಕಿ ವಾ ಮದಮ್ಯಾಗಮಕಾರಣಂ ತೇ" ರಘುಂ 16-4. 2. ಯುದ್ಧ, ಕದನ. ಅಮ್ಯಾಗಮ್ಯತೇಷ್ವ - ಅಧಿಂ "ಅಪ್" (3-3-44). 3. ಸಮೀಪ, ಹತ್ತಿರ. 4. ವೈರ, ವಿರೋಧ, ಹಗೆ, ಶತ್ರುತ್ವ. ಅಮ್ಯಾಗಮ್ಯತೇಜೇನ - ಕರಂ "ಅಪ್" 1. 5. ಏಟು, ಪೆಟ್ಟು, ಹೊಡೆತ. 6. ಎದುರುಗೊಳ್ಳುವುದು. 7. ತಲುಪುವುದು, ಸೇರುವುದು. 8. ಅಕ್ರಮಣ, ಮುತ್ತಿಗೆ. "ಅಮ್ಯಾಗಮೋ ವಿರೋಧಾಜಿಘಾತಾಮ್ಯುದ್ರಮನಾಂತಿಕೇ" ಮೇದಿಂ. "ಅಮ್ಯಾಗಮ: ಸಮರೇಷ್ವಂತಿಕೇ. ಧಾತೇ ರೋಧೇಮ್ಯುದ್ರಮೇ" ಹೇಮಂ.

ಅಮ್ಯಾಗಮನ ಅಭ್ಯಾಗಮನ (ನಂ) 1. ಎದುರುಗೊಳ್ಳುವುದು. 2. ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ಬರುವುದು. ಅಭಿ+ಆ+ಗಲ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). "ಹೇತುಂ ತದಮ್ಯಾಗಮನೇ ಪರೀಪ್ಸು: ಸುಖೋಪವಿಷ್ಟಂ ಮುನಿಮಾಬಭಾಷೇ" ಕಿರಾಂ 3-4.

ಅಮ್ಯಾಗಾರಿಕ ಅಭ್ಯಾಗಾರಿಕ (ವಿಂ) ಗೃಹಕೃತ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದವನು, ಕುಟುಂಬ ವೋಷಣೆಯಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತನಾದವನು. ಅಮ್ಯಾಗಾರೆ ನಿಯುಕ್ತ: "ಠನ್" (4-4-90).

ಅಮ್ಯಾಘಾತ ಅಭ್ಯಾಘಾತ (ಪುಂ) 1. ಧಾಳಿ, ಮೇಲೆ ಬೀಳುವುದು. 2. ಏಟು, ಪೆಟ್ಟು, ಹೊಡೆತ. ಅಭಿ+ಆ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಘ್" (3-3-14). 3. ಕಳ್ಳತನದ ಉಪದೇಶ, ಕಳ್ಳತನ ಮಾಡಲು ಒಡಂಬಡಿಸುವುದು. "ಅಮ್ಯಾಘಾತೇಷು ಮಧ್ಯಸ್ಥಾನ್ ಶಿಷ್ಯಾನ್ವೋರಾನಿವ ಭೂತಮ್" ಮನುಂ 9-292.

ಅಮ್ಯಾಘಾತಿನ ಅಭ್ಯಾಘಾತಿನ (ವಿಂ) ಹೊಡೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಹಿಂಸಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಅಭಿ+ಆ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಘಿನ್ಯು" (3-2-142).

ಅಮ್ಯಾಜತ್ ಅಭ್ಯಾಜತ್ (ವಿಂ) ಎದುರಿಗೆ ಬರುತ್ತಿರುವ. ಅಭಿ+ಆ+ಅಜ (ಗತೌ) "ಶತ್" (3-2-124). "ಅಮ್ಯಾಜತೋಮ್ಯಾಗತತೂರ್ಣತರ್ಣಕಾಮ್" ಮಾಘಂ 12-41.

ಅಮ್ಯಾದಾನ ಅಭ್ಯಾದಾನ (ನಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. 2. ಎದುರಾಗಿ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಅಭಿ ಅಭಿ-ಮುಖೇನಾದಾನಮ್. "ಅಯಾಮ್ಯಾದಾನಮಾರಮ್ಭ:" ವೈಜಂ.

ಅಮ್ಯಾಧಾನ ಅಭ್ಯಾಧಾನ (ನಂ) ಮಂತ್ರ ಪೂರ್ವಕ ಸಮಿತ್ತುಗಳನ್ನು ಅಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಅರ್ಪಿಸುವುದು.

ಅಮ್ಯಾಂತ ಅಭ್ಯಾಂತ (ವಿಂ) ರೋಗನಿವೇಶನಾದವನು, ವ್ಯಾಧಿಗ್ರಸ್ತ. ಅಮ್ಯಮ್ಯತೇ ಸ್ಮ - ಅಭಿ+ಅಮ (ರೋಗೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). ದೀರ್ಘ: (6-4-14). "ಆತುರೋಮ್ಯಮಿತೋಮ್ಯಾಂತ:" ಅಮಂ.

ಅಮ್ಯಾಪತತ್ ಅಭ್ಯಾಪತತ್ (ವಿಂ) ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ಬರುತ್ತಿರುವ. ಅಭಿ+ಆ+ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಶತ್" (3-2-124). "ಅಮ್ಯಾಪತಂತಮಸುರಾಧಿಪಮೀಶಪುತ್ರ:" ಕುಮಾಂ 13-49.

ಅಮ್ಯಾಪತ್ತಿ ಅಭ್ಯಾಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ಬರುವುದು, ಎದುರಿಗೆ ಬರುವುದು. ಅಭಿ+ಆ+ಪವ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94).

ಅಮ್ಯಾಪನ್ನ ಅಭ್ಯಾಪನ್ನ (ವಿಂ) ಎದುರಿಗೆ ಬಂದಿರುವ, ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ಬಂದಿರುವ. ಅಭಿ+ಆ+ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (3-4-92).

ಅಮ್ಯಾಪಾತ ಅಭ್ಯಾಪಾತ (ಪುಂ) ವಿಪತ್ತು, ಅಕಸ್ಮಿಕ, ಅನಾಹುತ, ದುರ್ಘಟನೆ.

ಅಮ್ಯಾಮದ ಅಭ್ಯಾಮದ (ಪುಂ) 1. ಯುದ್ಧ, ಸಮರ, ಕದನ. ಅಭಿ+ಆ+ಮದ (ಕ್ಷೋದೇ) ಅಧಿಂ "ಘ್" (3-3-121). 2. ಹೊಡೆದಾಟ, ಘರ್ಷಣೆ. ಭಾವೇ "ಘ್" (3-3-14).

ಅಮ್ಯಾಯತ್ ಅಭ್ಯಾಯತ್ (ವಿಂ) ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ಬರುತ್ತಿರುವ. ಅಭಿ+ಆ+ಙ್ (ಗತೌ) "ಶತ್" (3-2-124). "ಅಮ್ಯಾಯತ: ಸಂಪ್ರತಿ ಭೂಮಭೂಮ್" ಕಿರಾಂ 16-6.

ಅಮ್ಯಾರೂಢ ಅಭ್ಯಾರೂಢ (ವಿಂ) 1. ಮಿಗಿಲಾದ, ಮಾರಿದ. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎರಿದ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತಿದ. ಅಭಿ+ಆ+ರೂಹ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡುಭವಿ ಚ) "ಕ್ತ:" (3-4-92).

ಅಮ್ಯಾರೋಹ ಅಭ್ಯಾರೋಹ (ಪುಂ) 1. ಎದುರಾಗಿ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತುವುದು. ಅಭಿ+ಆ+ರೂಹ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡುಭವಿ ಚ) "ಘ್" (3-3-14). 2. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಎಳೆಗೆ, ಪ್ರಗತಿ, ಬೆಳವಣಿಗೆ. 3. ಮಂತ್ರವನ್ನು ಜಪಿಸುವುದು, 4. ಸ್ಥಳಾಂತರಕ್ಕೆ ಬದಲಾವಣೆ.



ಅಭ್ಯಾಸ ಅಭ್ಯಾಸ (ಪುಂ) 1. ಪುನರಾವೃತ್ತಿ, ಮತ್ತೆ ಮಾಡುವುದು. ಅಭಿ+ಆ+ವೃತ್ತ (ವರ್ತನೆ) ಭಾವೇ "ಘ್" (3-3-18)। 2. ಪುನಃ ಪುನಃ ಜಪಿಸಲ್ಪಡುವ ಮಂತ್ರ. ಕರ್ಮಂ "ಘ್" (3-3-19)।

ಅಭ್ಯಾಸ ಅಭ್ಯಾಸ (ಪುಂ) 1. ಎದುರಿಗೆ ತರಲ್ಪಟ್ಟ ಹೋಮ ಶೇಷದ ವಸ್ತು. ಅಭಿ+ವೃತ್ತ (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। (ವಿಂ) 2. ಪುನರಾವೃತ್ತಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ.

ಅಭ್ಯಾಸ ಅಭ್ಯಾಸ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುನರಾವೃತ್ತಿ, ಮಾಡಿದ ಕೆಲಸವನ್ನೇ ಮತ್ತೆ ಮಾಡುವುದು. ಅಭಿ+ಆ+ವೃತ್ತ (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-18)। "ಮನಾಗ-ನಮ್ಯಾವೃತ್ತಾ ವಾ ಕಾಮಂ ಕಾಮ್ಯತು ಯಃ ಕಾಮಿ" ಮಾಘಂ 2-43।

ಅಭ್ಯಾಸ ಅಭ್ಯಾಸ (ಪುಂ) 1. ಸಮೀಪ, ಹತ್ತಿರ. ಅಭ್ಯಾಸ-ಅಭಿ+ಅಸು (ವ್ಯಾಪ್ತಿ) "ಘ್" (3-3-19)। "ಚತುರ್ವಿ-ರಿವಾಭ್ಯಾಸೋ ಮಥಾ ಪರಮತೋನುಸುಖಿ" ಕುಮಾರಂ 6-2। 2. ಪಸರಿಸುವುದು, ಹರಡುವುದು, ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು. ಭಾವೇ "ಘ್" (3-3-18)।

ಅಭ್ಯಾಸ ಅಭ್ಯಾಸ (ಪುಂ) 1. ಸಮೀಪ, ಹತ್ತಿರ. ಅಭ್ಯಾಸ-ಅಭಿ+ಅಸು (ವ್ಯಾಪ್ತಿ) "ಘ್" (3-3-19)। "ಮಹೋಮಿ-ಭಿವ್ಯಾಹಿತವಾಞ್ಚಿತಾರ್ಥೋದಿವಾಭ್ಯಾಸಗತೇವಿಲಿಖ್ಯೇ" ಮಾಘಂ 3-40। 2. ಪುನರಾವೃತ್ತಿ, ಮಾಡಿದುದನ್ನು ಮತ್ತೆ ಮಾಡುವುದು. "ಅಭ್ಯಾಸೇನ ಚ ಕೌಂತೇಯ ವೈರಾಗ್ಯೇಣ ಚ ಗೃಹ್ಯತೇ" ಗೀತಾ 6-35। 3. ವೇದ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಆವೃತ್ತಿಮಾಡುವುದು, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಪಠಿಸುವುದು, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಹಿಡಿಯುವಂತೆ ವ್ಯಾಸಂಗ ಮಾಡುವುದು. "ವೇದಾಭ್ಯಾಸಜಃ ಕಥಂ ನು ವಿಷಯವ್ಯಾವೃತ್ತಕೌತುಹಲಃ" ವಿಕ್ರಂ 1-10। 4. ದ್ವಿತ್ವ ಹೊಂದಿದ ಧಾತುವಿನ ಪೂರ್ವ ಭಾಗ. "ಪೂರ್ವಾಭ್ಯಾಸಃ" ಪಾಂ ಸೂಂ (6-1-8)। 5. ಗುಣಾಕಾರ. 6. ಸಂಗೀತದಲ್ಲಿ ಹೇಳುವ ಪಲ್ಲವಿ. 7. ರೂಢಿ, ಚಾಳಿ, ನಡತೆ. "ಅಮೃತಲಾಭಾಸರತಿಂ ವಿಚಿಂತ್ಯ" ಕುಮಾರಂ 4-65। 8. ವ್ಯಾಯಾಮ ಕಲಿಯುವುದು, ಅಂಗಸಾಧನೆ ಮಾಡುವುದು.

ಅಭ್ಯಾಸಯೋಗ ಅಭ್ಯಾಸಯೋಗ (ಪುಂ) ಬಹಳ ಕಾಲದ ಧ್ಯಾನದಿಂದಂಟಾದ ಚಿತ್ತೈಕಾಗ್ರತೆ, ಸಮಾಧಿ. ಅಭ್ಯಾಸೇನ ಯೋಗಃ। "ಅಭ್ಯಾಸಯೋಗೇನ ತತೋ ಮಾಮಿಚ್ಛಾಪ್ತುಂ ಧನಂಜಯ" ಗೀತಾ 12-9।

ಅಭ್ಯಾಸಾದನ ಅಭ್ಯಾಸಾದನ (ನಂ) ಶತ್ರುವನ್ನು ದುರ್ಬಲ ನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಲು ಹೊಡೆಯುವುದು. 2. ಸಮಾಪ

ದಲ್ಲಿದ್ದು. 3. ಶತ್ರುವಿಗೆ ಎದುರಾಗಿ ಹೋಗುವುದು. ಅಭಿ+ಆ+ಪದ್ (ವಿಷರಣಾದೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಅಭ್ಯಾಹಾರ ಅಭ್ಯಾಹಾರ (ಪುಂ) 1. ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ತರುವುದು. 2. ದರೋಡೆ, ಕಳ್ಳತನ, ಎದುರಿಗಿರುವಾಗಲೇ ಅಪಹರಿಸುವುದು. ಅಭಿ+ಆ+ಹ್ (ಹರಣೇ) "ಘ್" (3-3-18)।

ಅಭ್ಯಾಹಿತ ಅಭ್ಯಾಹಿತ (ಪುಂ) 1. ಮಂತ್ರಪೂರ್ವಕ ಸಮಿತ್ತುಗಳಿಂದ ಹೋಮ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಅಗ್ನಿ. (ವಿಂ) 2. ಎದುರಿಗೆ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿ+ಆ+ಹ್ (ಹರಣೇ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

ಅಭ್ಯುಕ್ತ ಅಭ್ಯುಕ್ತ (ವಿಂ) ಎದುರಿಗೆ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಎದುರಿಗೆ ಸೂಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅಭ್ಯುಕ್ಷಣ ಅಭ್ಯುಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಮಂತ್ರಪೂರ್ವಕ ಬೋರಲು (ಕೆಳಮುಖವಾದ) ಕೈಯಿಂದ ನೀರನ್ನು ಚಿಮುಕಿಸುವುದು. ಅಭಿ+ಕ್ಷ+ (ಸೇವನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। "ಉತ್ತಾನೇನೈವ ಹಸ್ತೇನ ಪ್ರೋಕ್ಷಣಂ ಪರಿಕೀರ್ತಿಸಮ್"। 2. ನೀರನ್ನು ಚಿಮುಕಿಸುವುದು, ನೀರನ್ನು ಎರಚುವುದು. "ಪರಸ್ಪರಾ-ಭ್ಯುಕ್ಷಣತತ್ಪರಾಣಾಂ ತಾಸಾಂ ನೃಪೋ ಮಜ್ಜನರಾಗದರ್ಶಿ" ರಘುಂ 16-49।

ಅಭ್ಯುಚ್ಚಯ ಅಭ್ಯುಚ್ಚಯ (ಪುಂ) 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಬೆಳವಣಿಗೆ. 2. ಐಶ್ವರ್ಯ, ಸಂಪತ್ತು. ಅಭಿ+ಛ+ಚಿ (ಚಯೇ) "ಅಞ್" (3-3-46)।

ಅಭ್ಯುತ್ಥಾನ ಅಭ್ಯುತ್ಥಾನ (ನಂ) 1. ಗೌರವದಿಂದ ಎದ್ದು ನಿಂತು ಕೊಳ್ಳುವುದು. 2. ಗೌರವದಿಂದ ಎದ್ದು ಕೊಳ್ಳುವುದು. 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳುವುದು. 4. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಉದ್ಭವಿಸುವಿಕೆ. ಅಭಿ+ಛ+ಛಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। "ಯದಾ ಯದಾ ಹಿ ಧರ್ಮಸ್ಯ ಗ್ಲಾನಿರ್ಭವತಿ ಭಾರತ! ಅಭ್ಯುತ್ಥಾನಮಧರ್ಮಸ್ಯ ತದಾತ್ಮಾನಂ ಸೃಜಾಮ್ಯಹಮ್" ಗೀತಾ 4-7। 5. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಏಳಿಗೆ. "ನವಾಭ್ಯುತ್ಥಾನದರ್ಶಿನಯೋ ನನಂದುಃ ಸಪ್ರಜಾಃ ಪ್ರಜಾಃ" ರಘುಂ 4-3।

ಅಭ್ಯುತ್ಥಾಯಿನ್ ಅಭ್ಯುತ್ಥಾಯಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಗೌರವದಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳುವ. 2. ಗೌರವದಿಂದ ಎದ್ದು ಕೊಳ್ಳುವ. 3. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುವ. ಅಭಿ+ಛ+ಛಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಞಿಞಿಃ" (3-1-134)।

ಅಭ್ಯುತ್ಥಿತ ಅಭ್ಯುತ್ಥಿತ (ವಿಂ) 1. ಗೌರವದಿಂದ ಎದ್ದು ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿ+ಛ+ಛಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದಿರುವ.



ಅಭಿ+ಉ+ಛಾ ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಅಮೃ-  
ತ್ವಿತಾನಿಪಿಶುನೇಸತಿಶೀನಾಶ್ರಮೋಮುಖಾನ್" ರಘುಂ ೧-೫೩।

ಅಮೃತೇಯ ಅಭ್ಯುತ್ಥೇಯ (ವಿಂ) ಪುಷ್ಕ, ಗೌರವಾರ್ಹ,  
ನಮಸ್ಕಾರಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ. ಅಭಿ+ಉ+ಛಾ (ಗತಿ-  
ನಿವೃತ್ತಿ) "ಯತ್" (೩-೧-೯೭)।

ಅಮೃತಪತನ ಅಭ್ಯುತ್ಥಪತನ(ನಂ) 1. ಮೇಲೆ ಹಾರುವುದು,  
ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ಮೇಲೆ ಬೀಳುವುದು. ಅಭಿ+ಉ+  
ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಅಲಕ್ಷಿತಾಮೃತಪತನೋ  
ನೃಪೇಣ ಪ್ರಸಹ್ಯ ಸಿಂಹ: ಕಿಲ ತಾಂ ಚಕರ್ಷ" ರಘುಂ ೨-೨೭।

ಅಮೃದಯ ಅಭ್ಯುದಯ (ಪುಂ) 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಎಳೆಗೆ,  
ಪ್ರಗತಿ. ಅಭಿ+ಉ+ಞ್ (ಗತೌ) "ಅಘ್" (೩-೩-೫೬)।  
"ಬಭೂವ ಸರ್ವಂ ಶುಭಶಾಂತಿ ತತ್ಕ್ಷಣಂ ಭವೋ ಹಿ ಲೋಕಾಮೃದಯಾಯ  
ತಾದೃಶಾಮ್" ರಘುಂ ೩-೧೪। 2. ಕಲ್ಯಾಣ, ಮಂಗಳ,  
ಶ್ರೇಯಸ್ಸು. "ಸರ್ವಥಾ ಸೃಶಾಂತಿ ನ: ಸ್ವಾಮಿನಮಮೃದಯಾ:"  
ರತ್ನಾಂ ೧। 3. ಇಷ್ಟಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ. 4. ಅಭಿವೃದ್ಧಿಗೆ  
ಕಾರಣವಾದ ಒಂದು ಶ್ರಾದ್ಧ, ವೃದ್ಧಿಶ್ರಾದ್ಧ, ನಾಂದೀ  
ಶ್ರಾದ್ಧ. 5. ಮುಂದಿನ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ. 6. ಉತ್ಸವ,  
ಸಂತೋಷ ಸಮಾರಂಭ. "ಪ್ರತಿಷಿಡ್ಧಾಪಿ ಚೇದಾ ತು ಮಥ-  
ಮಮೃದಯೇಷ್ವಪಿ" ಮನುಂ ೯-೮೪।

ಅಮೃದಿತ ಅಭ್ಯುದಿತ (ವಿಂ) 1. ಸೂರ್ಯೋದಯ ಕಾಲ  
ದಲ್ಲಿ ಮಲಗಿ ನಿದ್ರಿಸುವವನು, ಸೂರ್ಯೋದಯ ಕಾಲ  
ದಲ್ಲಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಸಂಧ್ಯಾವಂದನಾದಿ ಕಾರ್ಯ  
ಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ನಿದ್ರಿಸುವವನು. ಅಭಿ ಸರ್ವತ: ಉ  
ಅತಿಶಯೇನ ಇತಂ ಗತಂ ಪ್ರಾತಸ್ತನಂ ಕರ್ಮ ಯಸ್ಮಾತ್। "ಸುಪ್ತೇ  
ಯಸ್ಮಿನ್ನಸ್ತಮೇತಿ ಸುಪ್ತೇ ಯಸ್ಮಿನ್ನದೇತಿ ಚ। ಅಂಶುಮಾನಭಿನಿರ್ಮುಕ್ತಾ-  
ಮೃದಿತೌ ತೌ ಯಥಾಕ್ರಮಮ್" ಅಮಂ 1. 2. ಸುತ್ತಲೂ  
ಉಂಟಾದ.

ಅಮೃದೀರಿತ ಅಭ್ಯುದೀರಿತ (ನಂ) 1. ಹೇಳುವುದು,  
ಮಾತಾಡುವುದು. ಅಭಿ+ಉ+ಞ್ (ಗತೌ ಕರ್ಮಣಿ ಚ)  
"ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಅಭಿ+ಉ+ಞ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೦೨)।  
3. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಎರಚಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಶೇಷತೀರ್ಥೋಪಹೃತಾ:  
ಕಮಂಡಲೋಮಿಧಾಯ ಪಾಣಾವೃಷಿಣಾಮೃದೀರಿತಾ:" ಮಾಘಂ ೧-೧೮।

ಅಮೃದ್ಗತ ಅಭ್ಯುದ್ಗತ (ವಿಂ) 1. ಎದುರುಗೊಳ್ಳಲು  
ಮುಂದೆ ಬಂದಿರುವ, ಸಂಧಿಸಲು ಎದುರಿಗೆ ಬಂದಿರುವ.  
2. ಉದ್ಭವಿಸಿದ, ಉತ್ಪನ್ನವಾದ. ಅಭಿ+ಉ+ಗ್ಮಲ್ (ಗತೌ)  
"ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। 3. ಎದುರುಗೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೦೨)।

ಅಮೃದ್ಗಮ ಅಭ್ಯುದ್ಗಮ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರತ್ಯುತ್ತಾನ,  
ಎದುರುಗೊಳ್ಳುವುದು. 2. ಸಂಭವಿಸುವುದು, ಉದ್ಭವಿಸು  
ವುದು, ಉಂಟಾಗುವುದು. ಅಭಿ+ಉ+ಗ್ಮಲ್ (ಗತೌ)  
"ಅಘ್" (೩-೩-೫೬)। ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।  
-ಗಮನಮ್ -ಗಮನಂ.

ಅಮೃದ್ವತ ಅಭ್ಯುದ್ವತ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಯಾಚಿಸದೆ ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಅಯಾಚಿತವಾಗಿ ಒದಗಿದ. ಅಭಿ+ಉ+ವಮ (ಉಪರಮೇ)  
"ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೦೨)। 3. ಕಾರ್ಯಾಸಕ್ತನಾದ,  
ಉತ್ಸಾಹದಿಂದ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿರುವ. "ಅಮೃ-  
ದ್ವತಸ್ಯ ಕ್ರಮಿತುಂ ಜವೇನ ಗಾಂ ತಮಾಲನೀಲಾ ನಿತರಾಂ ಭೃತಾಯತಿ:"  
ಮಾಘಂ ೧೨-೨೦। 4. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿದ, ಎಳೆಗೆ  
ಪಡೆದ. ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಕುಲಮಮೃದ್ವತ-  
ನೂತನೇಶ್ವರಮ್" ರಘುಂ ೮-೧೫। 5. ಪ್ರವೃತ್ತನಾದ,  
ಯತ್ನಿಸಿದ. "ಚಂಡಿ ಚಂಡಂ ಹಂತುಮಮೃದ್ವತಾ ಮಾಮ್" ಮಾಲಂ  
೩-೨೧।

ಅಮೃದ್ವತ ಅಭ್ಯುದ್ವತ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿ+ಉ+ಹ್ವನ್  
(ಹರಣೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೦೨)। 2. ಅಯಾಚಿತವಾಗಿ  
ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೇಡದೆ ಒದಗಿದ. 3. ಯಾಚಿಸಿದ  
ನಂತರ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅಮೃದ್ವತ ಅಭ್ಯುದ್ವತ (ವಿಂ) ಎತ್ತರವಾದ, ಉನ್ನತ  
ವಾದ. ಅಭಿಮುಖ್ಯೇನ ಉನ್ನತ:। "ಅಮೃದ್ವತಾಕ್ಷುಣ-  
ನಖಪ್ರಭಾಭಿನಿಕ್ಷೇಪಣಾಧಾಗಮಿವೋದ್ರಿರಂತಿ" ಕುಮಾಂ ೧-೩೩।

ಅಮೃದ್ವತಿ ಅಭ್ಯುದ್ವತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಎಳೆಗೆ,  
ಉತ್ಕರ್ಷ.

ಅಮೃಪಗತ ಅಭ್ಯುಪಗತ (ವಿಂ) 1. ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಸಮ್ಮತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿ+ಉ+ಗ್ಮಲ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:"  
(೩-೩-೧೦೨)। 2. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸಮೀಪ  
ವನ್ನು ಹೊಂದಿದ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಹೋಗಿರುವ. 4. ಎದುರಾಗಿ  
ಹೋಗಿರುವ, ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ಬಂದಿರುವ. ಕರ್ತಂ  
"ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)।

ಅಮೃಪಗಮ ಅಭ್ಯುಪಗಮ (ಪುಂ) 1. ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಅಂಗೀಕಾರ,  
ಸಮ್ಮತಿ. ಅಭಿ+ಉ+ಗ್ಮಲ್ (ಗತೌ) "ಅಘ್" (೩-೩-೫೬)।  
"ಕರಿಷ್ಯಾಮ್ಯೇವ ನೋ ಪುನರೀತಿ ಭವೇದಮೃಪಗಮ:" ರತ್ನಾಂ  
೨-೧೯। 2. ಸಮೀಪವನ್ನು ಹೊಂದುವುದು, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ  
ಹೋಗುವುದು. 3. ಭರವಸೆಯ ಮಾತು ಕೊಡುವುದು,  
ವಾಗ್ದಾನಮಾಡುವುದು.



ಅಮ್ಯುಪಪತ್ತಿ ಅಭ್ಯುಪಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನುಗ್ರಹ, ಹಿತಾಚರಣೆ, ಅನಿಷ್ಟವನ್ನು ತೊಲಗಿಸಿ ಒಳ್ಳೆಯದನ್ನು ಮಾಡುವುದು. ಅಭಿ+ಉಪ+ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। "ಅನಯಾಮ್ಯುಪಪತ್ತಾ ಸುಚಿತಾ ತೇ ಭರ್ತುಗೃಹೇ-ನುಭವಿತವ್ಯಾ ರಾಜಲಕ್ಷ್ಮೀರೀತಿ" ಶಾಕುಂ ೪। 2. ರಕ್ಷಣೆ, ಮರೆಹೊಕ್ಕಿದವನನ್ನು ಕಾಪಾಡುವುದು. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾ-ಮ್ಯುಪಪತ್ತೌ ಚ ಶಪಥೇ ನಾಸ್ತಿ ಪಾತಕಮ್" ಮನುಂ ೮-೧೧೨। 3. ಆಶ್ವಾಸನ, ಸಮಾಧಾನ. 4. ಭರವಸೆಯ ಮಾತು ಕೊಡುವುದು, ವಾಗ್ದಾನ ಮಾಡುವುದು.

ಅಮ್ಯುಪಪನ್ನ ಅಭ್ಯುಪಪನ್ನ (ವಿಂ) ಅನುಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಳ್ಳೆಯದುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭಿ+ಉಪ+ಪದ(ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅಮ್ಯುಪಾಯ ಅಭ್ಯುಪಾಯ (ಪುಂ) 1. ಉಪಾಯ, ಯುಕ್ತಿ. ಉಪಾಯತೇಜೇನ — ಉಪ+ಅಯ(ಗತೌ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ತಸ್ಮಿನ್ ಸುರಾಣಾಂ ವಿಜಯಾಮ್ಯುಪಾಯೇ ತವೈವ ನಾಮಾಸ್ತ್ರಗತಿಃ ಕೃತೌ ತ್ವಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೧೯। 2. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ಸಂವಿಧಾಗ್ನಃ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾಸ್ಥಾಪ್ಯ-ಮ್ಯುಪಾಯಃ ಪ್ರತಿಶ್ರವಃ" ವೈಜಂ।

ಅಮ್ಯುಪೇತ ಅಭ್ಯುಪೇತ (ವಿಂ) 1. ಎದುರಾಗಿ ಸಮಾಪ-ವನ್ನು ಹೊಂದಿದ, ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದ. ಅಭಿ + ಉಪ + ಇನ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। 2. ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಪ್ಪಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮ್ಮತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅಮ್ಯುಪೇತ್ಯ ಅಭ್ಯುಪೇತ್ಯ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಎದುರಾಗಿ ಸಮಾಪ-ವನ್ನು ಹೊಂದಿ, ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದು. 2. ಅಂಗೀಕರಿಸಿ, ಸಮ್ಮತಿಸಿ.

ಅಮ್ಯುಪೇಯ ಅಭ್ಯುಪೇಯ (ವಿಂ) ಆಶ್ರಯಿಸಲು ಯೋಗ್ಯ-ನಾದ, ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಹೋಗಲು ಅರ್ಹನಾದ. ಅಭಿ+ಉಪ+ಇನ್ (ಗತೌ) "ಯ್" (೩-೧-೯೭)।

ಅಮ್ಯುಪಿತ ಅಭ್ಯುಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಸೇವಕ, ಆಳು. 2. ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ. ಅಭಿ+ವಸ(ನಿವಾಸೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)।

ಅಮ್ಯುಷ ಅಭ್ಯುಷ(ಪುಂ) 1. ಉಸಲಿ, ಗುಗ್ಗರಿ. ಅಭಿ+ಋಷ (ಋಜಾಯಾಮ್) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ರೊಟ್ಟಿ. 3. ಹುರಿಗಾಳು.

ಅಮ್ಯುಹ ಅಭ್ಯುಹ (ಪುಂ) 1. ತರ್ಕ, ಊಹೆ, ಕಲ್ಪನೆ, ಅನುಮಾನ. ಅಭಿ+ಋಹ(ವಿತರ್ಕೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ಬಹಿಃ ಸರ್ವಾಕಾರಪ್ರವರ್ಣರಮಣೀಯಂ ವ್ಯವಹರನ್ ಪರಾಮ್ಯುಹಸ್ಥಾನಾ-

ನ್ಯಪಿ ತನುತರಾಣಿ ಸ್ಥಗಯತಿ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೭। 2. ಅಧ್ಯಾಹಾರ, ಪದಲೋಪವಿದ್ದಲ್ಲಿ ಬೇಕಾದ ಪದ-ಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಅಮ್ಯುಹ್ಯ ಅಭ್ಯುಹ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಊಹಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಊಹಿಸಿ, ತರ್ಕಿಸಿ, ಕಲ್ಪನೆಮಾಡಿ.

ಅಭ್ರ ಅಭ್ರ (ನಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ನ ಭ್ರಶ್ಯಂತ್ಯಾಪೋ-ಸ್ಮಾತ್ — ಭ್ರಶು (ಅಭಃಪತನೇ) "ಙಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೧೦೧)। "ವಿಚ್ಛಿನ್ನಾಭ್ರವಿಲಾಸಂ ವಾ ವಿಲೀಯೇ ನಗಮೃಧನಿ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೭೯। 2. ಗಗನ, ಆಕಾಶ, ಅಂತರಿಕ್ಷ. "ಆಲೋಕ-ಯಿಷ್ಯನ್ಮುದಿತಾಮಯೋಧ್ಯಾಂ ಪ್ರಾಸಾದಮಭ್ರಲಿಹಮಾರೋಹ" ರಘುಂ ೧೪-೨೯। 3. ಮುಸ್ತಕ, ಕೊನ್ನಾರಿಗೆಡ್ಡೆ. 4. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 5. ಕರ್ಪೂರ. 6. ಕಾಗೆಬಂಗಾರ. 7. ಪೂಜ್ಯ, ಸೊನ್ನೆ. "ಅಭ್ರಂ ಮೇಘೇ ಚ ಗಗನೇ ಧಾತುಭೇದೇ ಚ ಕಾ-ಚನೇ" ಮೇದಿಂ। 8. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ. "ಅಭ್ರಂ ತು ತ್ರಿವಿಧೇ ಗಗನೇಽಬ್ರುದೇ" ಹೇಮಂ।

ಅಭ್ರಕ ಅಭ್ರಕ (ಪಂ) ಕಾಗೆಬಂಗಾರ. ಅಭ್ರಸ್ಯ ಪ್ರತಿಕೃತಿಃ "ಕನ್" (೪-೩-೯೬)। [ಕಾಗೆಬಂಗಾರವು ಪಾರ್ವತಿಯ ರಜಸ್ಸಿನಿಂದಂಟಾದುದು.] "ಅಭ್ರಕಸ್ತವ ಬೀಜಂತು ಮಮ ಬೀಜಂತು ಪಾರದಃ। ಉಭಯೋರ್ಮಲನಂ ದೇವಿ! ಮೃತ್ಯುದಾರಿದ್ರ್ಯ-ನಾಶನಮ್"।

ಅಭ್ರಲಿಹ ಅಭ್ರಂಲಿಹ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. (ವಿಂ) 2. ಗಗನವನ್ನು ಚುಂಬಿಸುವ, ಆಕಾಶವನ್ನು ಮುಟ್ಟುವ, ಬಹಳ ಎತ್ತರವಾದ. ಅಭ್ರಂ ಲೇಹಿ ಸ್ಪೃಶತಿ — ಅಭ್ರ + ಲಿಹ (ಆಸ್ವಾದನೇ) "ಖಸ್" (೩-೨-೩೨)। "ಮುಮ್" (೬-೩-೬೭)। "ಪ್ರಾಸಾದಮಭ್ರಲಿಹಮಾರೋಹ" ರಘುಂ ೧೪-೨೯। "ಅಭ್ರಲಿಹಾನ್ ಫಲವತಸ್ತಟನಾರಿಕೇಲಾನ್ / ಸಹ್ಯಾತ್ಮಜಾಸಲಿಲವೈವಧಿಕಾನಮಸ್ತ" ಚಂ ಭಾಂ।

ಅಭ್ರಘನ ಅಭ್ರಘನ (ಪುಂ) ಮೇಘದ ಸಮೂಹ. "ವರ್ಷಾತೀಯೇನ ಕ್ವಮಭ್ರಘನಾದಿವೇಂದೋಃ" ರಘುಂ ೧೩-೭೭।

ಅಭ್ರಕ್ಷುಷ ಅಭ್ರಂಕ್ಷುಷ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. (ವಿಂ) 2. ಬಹಳ ಎತ್ತರವಾದ, ಆಕಾಶವನ್ನು ತಿಕ್ಕುವ, ಗಗನವನ್ನು ಚುಂಬಿಸುವ. ಅಭ್ರಂ ಕಷತಿ — ಕಷ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಖಕ್" (೩-೨-೪೨)। "ಮುಮ್" (೬-೩-೬೭)। "ಆದಾಯಾ-ಭ್ರಕ್ಷುಷಂ ಪ್ರಾಯಾನ್ಮಲಯಂ ಫಲಶಾಲಿನಮ್" ಭट्टಿಂ ೬-೧೦೩।

ಅಭ್ರನಾಗ ಅಭ್ರನಾಗ (ಪುಂ) ಐರಾವತ, ಇಂದ್ರನ ಆನೆ.

ಅಭ್ರಪಥ ಅಭ್ರಪಥ (ಪುಂ) 1. ಆಕಾಶಮಾರ್ಗ. 2. ವಿಮಾನ. 3. ಆಕಾಶಬುಟ್ಟಿ.



ಅಭ್ರಪಿಶಾಚ ಅಭ್ರಪಿಶಾಚ (ಪುಂ) ಆಕಾಶದ ಭೂತ, ರಾಹುಗ್ರಹ.

ಅಭ್ರಪುಷ್ಪ ಅಭ್ರಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಹಬ್ಬೆಗಿಡ. (ನಂ) 2. ನೀರು. 3. ಗಗನಕುಸುಮ. [ಅಸಂಭವ, ಅಸಾಧ್ಯ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗ.]

ಅಭ್ರಮ ಅಭ್ರಮ (ಪುಂ) 1. ಭ್ರಾಂತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ಭ್ರಮಣ (ತಿರುಗುವಿಕೆ) ವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 3. ಭ್ರಾಂತಿಯಿಲ್ಲದ. 4. ಭ್ರಮಣವಿಲ್ಲದ.

ಅಭ್ರಮಾಂಸಿ ಅಭ್ರಮಾಂಸಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಟಾಮಾಂಸಿ.

ಅಭ್ರಮಾತೃ ಅಭ್ರಮಾತೃ (ಪುಂ) ಐರಾವತ, ಇಂದ್ರನ ಆನೆ. ಅಭ್ರಾತಮಕೋ ಮಾತೃಃ ಅಭ್ರೇ ಮಾತೃಃ ವಾ |

ಅಭ್ರಮಾಲಾ ಅಭ್ರಮಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೇಘಪಂಕ್ತಿ, ಮೋಡಗಳ ಸಾಲು. ಅಭ್ರಾಣಾ ಮಾಲಾ |

ಅಭ್ರಮು ಅಭ್ರಮು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಐರಾವತದ ಪತ್ನಿ.

ಅಭ್ರಮುಲ್ಲಭ ಅಭ್ರಮುಲ್ಲಭ (ಪುಂ) ಐರಾವತ, ಇಂದ್ರನ ಆನೆ.

ಅಭ್ರವರ್ಷ ಅಭ್ರವರ್ಷ (ಪುಂ) ಮಳೆ ಸುರಿಯುವುದು.

ಅಭ್ರಾತೃಕ ಅಭ್ರಾತೃಕ (ವಿಂ) ಸಹೋದರನಿಲ್ಲದವನು. ನ ಭ್ರಾತಾ ಯಸ್ಯ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೫೩) | ಸ್ತ್ರೀಯಾ ಅಭ್ರಾತೃಕಾ.

ಅಭ್ರಾತೃವ್ಯ ಅಭ್ರಾತೃವ್ಯ (ವಿಂ) ಶತ್ರುಗಳಿಲ್ಲದವನು, ಹಗೆ ಯಿಲ್ಲದವನು. ನಾಸ್ತಿ ಭ್ರಾತೃವ್ಯಃ ಶತ್ರುಯಸ್ಯ |

ಅಭ್ರಾವಕಾಶ ಅಭ್ರಾವಕಾಶ (ಪುಂ) ಆಕಾಶದ ಆವರಣ, ಮೇಲಿನ ಛಾವಣಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

ಅಭ್ರಿ ಅಭ್ರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಡಗಿನಲ್ಲಿ ಕಸವನ್ನು ಬಗೆಯುವ ಮರದ ಗುದ್ದಲಿ. 2. ಗುದ್ದಲಿ, ಸಲಿಕೆ, ಪಿಕಾಸಿ. ಅಭ್ರತಿ ಮಲಮಸ್ಮಾತ್-ಅಭ್ರ (ಗತೌ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೮) | "ಅಭ್ರಿ ಕಾಣ್ಯಾಸಿಂ ದಯಾತ್ಸಪಿ ಹತ್ವಾ ದ್ವಿಜೋತ್ತಮಃ" ಮನುಂ ೧೧-೧೩೩ |

ಅಭ್ರಿತ ಅಭ್ರಿತ (ವಿಂ) ಮೋಡದಿಂದ ಕವಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಭ್ರಮಸ್ಯ ಸಂಜಾತಮ್ "ಇತತ್" (೪-೨-೩೬) | "ಪತಿಃ ಪ್ರತಿತಃ ಪ್ರಸವೋನ್ಮುಖಿಂ ಪ್ರಿಯಾಂ ದದಶ ಕಾಲೇ ದಿವಮಭ್ರಿತಾಮಿವ" ರಘುಂ ೩-೧೨ |

ಅಭ್ರಿಯ ಅಭ್ರಿಯ (ವಿಂ) ಮೇಘದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ಮೋಡಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಅಭ್ರೇ ಭವಮ್ "ಘಃ" (೪-೪-೧೧೮) |

ಅಭ್ರೇಷ ಅಭ್ರೇಷ (ಪುಂ) 1. ಚ್ಯುತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಭ್ರೋದನ್ಯಃ - ಅನ್ಯಾರ್ಥ ನಂ ತಂ | 2. ಯುಕ್ತತೆ, ಔಚಿತ್ಯ, ಯೋಗ್ಯ ನಾಗಿರುವುದು. (ವಿಂ) 3. ಚ್ಯುತಿಯಿಲ್ಲದ, ತಪ್ಪದಿರುವ.

ಅಮ್ ಅಮ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಜಾಗ್ರತೆ. 2. ಸ್ವಲ್ಪ. ಅಮ (ಗತ್ಯಾದೌ) "ಕ್ವಿಪ್" |

ಅಮ ಅಮ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾಣ. ಅಮ (ಗತ್ಯಾದೌ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. ಅಮ (ರೋಗೇ) "ಘಕ್" (೩-೨-೧೮) | 3. ಸೇವಕ, ಆಳು. 4. ಬಲ, ಶಕ್ತಿ. (ವಿಂ) 5. ಅಪಕ್ವವಾದ, ಬಲಿತಿಲ್ಲದ, ಮಾಗ ದಿರುವ, ಹಣ್ಣಾಗದ.

ಅಮಜ್ಜಲ ಅಮಂಗಳ (ಪುಂ) 1. ಹರಳುಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಅಶುಭ, ಅರಿಷ್ಟ. "ರಾಮಾಭಿಷಾಢಿನಾಂ ತೇಷಾಂ ತದೇವಾಮೂ-ದಮಜ್ಜಲಮ್" ರಾಮಾಂ | (ವಿಂ) 3. ಅಶುಭವಾದ, ಕೆಟ್ಟ ದಾದ. "ಅಮಜ್ಜಲಾಭ್ಯಾಸರತಿ ವಿವಿನ್ಯ ತಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೬೪ |

ಅಮಜ್ಜಲ ಅಮಂಗಳ (ವಿಂ) ಅಶುಭಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ. ನ ಮಜ್ಜಲಾಯ ಹಿತಮ್ |

ಅಮಂಡ ಅಮಂಡ (ಪುಂ) 1. ಹರಳುಗಿಡ. "ಚಕ್ರುಃ ಪಂಚಾಕ್ಷರಾಮಂಡವರ್ಧಮಾನವ್ಯಡಮ್ಬಕಾಃ" ಅಮಂ | (ವಿಂ) 2. ಕೆನೆಯಿಲ್ಲದ (ಅನ್ನ ಮುಂತಾದುದು). 3. ಅಲಂಕಾರ ವಿಲ್ಲದ, ಶೃಂಗಾರವಿಲ್ಲದ.

ಅಮತ ಅಮತ (ಪುಂ) 1. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. 2. ವೃತ್ತಿ, ಮರಣ. 3. ಕಾಲ, ಸಮಯ. 4. ಧೂಳು, ಕಸ. ಅಮ (ಗತ್ಯಾದೌ) "ಅತಕ್" (೩ಂ ೩-೧೧೦) | (ವಿಂ) 5. ಸಮೃತ್ತ ವಿಲ್ಲದ, ಇಷ್ಟವಿಲ್ಲದ. 6. ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ. ನ ಮತಃ |

ಅಮತಿ ಅಮತಿ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. 2. ಕಾಲ, ಸಮಯ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಬುದ್ಧಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಅಭಾವೇ ನಂ ತಂ | 4. ಕೆಟ್ಟಬುದ್ಧಿ. ಅಪ್ರಾಶಸ್ತೇ ನಂ ತಂ | (ವಿಂ) 5. ಬುದ್ಧಿಯಿಲ್ಲದ. 6. ದುರ್ಜನ, ದುಷ್ಟ, ಕೆಟ್ಟವನು. "ಅಮತಿಃ ಪುಂಸಿ ಕಾಲೇಽಪಿ ದೃಷ್ಟೇ ಹಿಮಕರೇಽಪಿ ಚ" ಶಬ್ದರಂ |

ಅಮತ್ರ ಅಮತ್ರ (ನಂ) 1. ಪಾತ್ರೆ. 2. ಉಟದ ಪಾತ್ರೆ. ಅಮ (ಗತ್ಯಾದೌ) "ಅತ್ರನ್" (೩ಂ ೩-೧೦೪) | 3. ಬಲ, ಶಕ್ತಿ.

ಅಮನಸ್ ಅಮನಸ್ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. "ಅಪ್ರಾಣೋಹ್ಯ-ಮನಾಃ ಶುಭ್ರಃ" ಮುಂಡಕಂ | (ವಿಂ) 2. ಸರಿಯಾದ ಮನಸ್ಸಿಲ್ಲದ. 3. ಬೇರೆ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. 4. ಮನೋನಿಗ್ರಹವಿಲ್ಲದ, ಮನಸ್ಸಿನ ಹತೋಟಿಯಿಲ್ಲದ.

ಅಮನಿ ಅಮನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. ಅಮತಿ ಗಂಠಯತ್ರ - ಅಮ (ಗತ್ಯಾದೌ) ಅಧಿಂ "ಅನಿಃ" (೩ಂ ೨-೧೦೨) | 2. ಗತಿ, ಗಮನ, ಚಲನೆ, ಸಂಚಾರ. ಭಾವೇ "ಅನಿಃ" |



ಅಮನುಷ್ಯ ಅಮನುಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಮನುಷ್ಯಕೃತ್ಯವಿಲ್ಲದವನು, ಹೆಸರಿಗೆ ಮಾತ್ರ ಮನುಷ್ಯನಾದವನು.

2. ಮನುಷ್ಯನಲ್ಲದ (ಗಂಧರ್ವ, ರಾಕ್ಷಸ ಮೊದಲಾದವರು).

ಅಮನೋಗತ ಅಮನೋಗತ (ವಿಂ) ಮನಸ್ಸಿನಿಂದ ಯೋಚಿಸಲ್ಪಡದ, ಅಚಿಂತಿತವಾದ, ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿಲ್ಲದ.

ಅಮನ್ತ್ರಕ ಅಮಂತ್ರಕ (ವಿಂ) 1. ವೇದೋಕ್ತ ಮಂತ್ರವಿಲ್ಲದ (ಕರ್ಮ). 2. ವೇದಮಂತ್ರಾಧಿಕಾರವಿಲ್ಲದವನು.

ಅಮಮ ಅಮಮ (ವಿಂ) ನನ್ನದು ನನಗೆ ಎಂಬ ಅಭಿಮಾನವನ್ನು ತೊರೆದಿರುವ, ಪ್ರಾಪಂಚಿಕ ಸಂಬಂಧವನ್ನು ಬಿಟ್ಟಿರುವ, ಪತ್ನಿ ಪುತ್ರ ಮನೆ ಮಠ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಲ್ಲಿ ಅಭಿಮಾನಶೂನ್ಯನಾದ. ನಾಸ್ತಿ ಮಮೇತ್ಯಭಿಮಾನೋ ಯಸ್ಯ |

ಅಮಮಕಾರ ಅಮಮಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಸ್ವಾರ್ಥತೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ತನ್ನದೆಂಬ ಅಭಿಮಾನಶೂನ್ಯತೆ. (ವಿಂ) 2. ಅಭಿಮಾನವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಮಮಕಾರೋ ಯಸ್ಯ |

ಅಮರ ಅಮರ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. ನ ಮ್ರಿಯತೇ - ಮೃತ್ಯು (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೆ) "ಅಮ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಅಮರಸ್ತೀಕಟಾಕ್ಷಾಣಾಮಪ್ಯಭಜ್ಜರಧನ್ವನಃ" ಯಾದಂ ೧೬-೧೨ | 2. ಅಮರಸಿಂಹ (ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಕವಿ). 3. ಕಳ್ಳಗಿಡ. 4. ಪಾದರಸ. 5. ಮೂಳೆಗಳ ರಾಶಿ, ಎಲುಬುಗಳ ಗುಪ್ತೆ. (ವಿಂ) 6. ಮರಣವಿಲ್ಲದ. "ಅಜರಾಮರವತ್ಪ್ರಾಜ್ಞೋ ವಿಚಾಮಝೆ ಚ ಸಾಧಯೇತ್" ಹಿತೋಂ | "ಅಮರಃ ಸುರೇ | ಸ್ತುಹಿವೃಕ್ಷೇಽಸ್ಥಿಸಂಹಾರೇಽಪಿ" ಹೇಮಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಾ-ರಾ. 7. ಅಮರಾವತೀಪಟ್ಟಣ. 8. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. 9. ಗರಿಕೆಹುಲ್ಲು. 10. ಮನೆಯ ಕಂಬ. 11. ಗರ್ಭಾಶಯ, ಬಸುರು ಉಂಟಾಗುವ ಭಾಗ. 12. ಗರ್ಭನಾಳ, ಹೊಕ್ಕಳ ಕುಡಿ. 13. ಹಾವುಮೆಕ್ಕಿಗಿಡ. "ಅಮರಸ್ವಿದಶೋಽಪ್ಯಸ್ಥಿಸಂಹಾರೇ ಕುಲಿಸದ್ರುಮೇ | ಸ್ತ್ರೀ ಗುಡ್ಡಚ್ಯಮರಾವತಿಯೋಃ ಸ್ಥುಣಾದ್ವಜಿರಾಯುಷು" ಮೇದಿಂ | "ಅಮರನಾಭಿನಾಲಾಘಾ ಗುಡ್ಡಚ್ಯಾಮಪಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಅಮರಕೋಶ ಅಮರಕೋಶ (ಪುಂ) ಅಮರಸಿಂಹನಿಂದ ರಚಿತವಾದ "ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನ" ವೆಂಬ ನಿಘಂಟು.

ಅಮರಣ ಅಮರಣ (ನಂ) ಅಮರತ್ವ, ಸಾಯದಿರುವಿಕೆ.

ಅಮರತರು ಅಮರತರು (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರನ ನಂದನವನದ ನೈಕ್ಷ. 2. ದೇವದಾರು ಮರ. 3. ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷ.

ಅಮರತಾ ಅಮರತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವತ್ವ, ಅಮರತ್ವ, ಮರಣಹೊಂದದಿರುವಿಕೆ.

ಅಮರಕ್ಷಿಜ ಅಮರದ್ವಿಜ (ಪುಂ) ದೇವಲಕ, ದೇವರ ಪೂಜೆಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ಜೀವನಕ್ಕಾಗಿ ದೇವ ಪೂಜಾಕಾರ್ಯವನ್ನಿಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವವನು.

ಅಮರಪುರ ಅಮರಪುರ (ನಂ) ಇಂದ್ರನ ನಗರ, ಅಮರಾವತೀಪಟ್ಟಣ.

ಅಮರಪುಷ್ಪ ಅಮರಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷ. 2. ಜೊಂಡುಹುಲ್ಲು.

ಅಮರಪುಷ್ಪಿಕಾ ಅಮರಪುಷ್ಪಿಕಾ -ಪುಷ್ಪಿ -ಪುಷ್ಪೀ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೆಗ್ಗಿಲುಗಿಡ. 2. ಕೊಳವಳಿಕೆಗಿಡ. 3. ಕಾಡುಸಬ್ಬಸಿಗೆಗಿಡ.

ಅಮರಪ್ರಭು ಅಮರಪ್ರಭು (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ಇಂದ್ರ. ಅಮರಾಣಾಂ ಪ್ರಭುಃ | "ಅಪ್ರಮೇಯೋ ಹೃಷೀಕೇಶಃ ಪದ್ಮನಾಭೋಽಮರಪ್ರಭುಃ" ತ್ರಿಂ ಸಂ |

ಅಮರರತ್ನ ಅಮರರತ್ನ (ನಂ) ಸ್ವಟಕಮಣಿ.

ಅಮರರಾಜ ಅಮರರಾಜ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ಅಮರಾಣಾಂ ರಾಜಾ "ರತ್" (೪-೪-೧೧) |

ಅಮರಲೋಕ ಅಮರಲೋಕ (ಪುಂ) ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ. ಅಮರಸರೀತ್ ಅಮರಸರೀತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವನದಿ, ಗಂಗಾ ನದಿ.

ಅಮರಾಜ್ಞನಾ ಅಮರಾಂಗನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವತಾ ಸ್ತ್ರೀಯರು, ಅಪ್ಸರಸ್ಸುಗಳು. ಅಮರಾಣಾಮಜ್ಞನಾಃ | "ಪುರೀ-ಮವಸ್ಕಂದ ಲುನಿಹಿ ನಂದನಂ ಮುಷಾಣ ರತ್ನಾನಿ ಹರಾಮರಾಜ್ಞನಾಃ" ಮಾಘಂ ೧-೪೧ |

ಅಮರಾದ್ರಿ ಅಮರಾದ್ರಿ (ಪುಂ) ಮೇರುಪರ್ವತ. ಅಮರಾಣಾಮದ್ರಿಃ |

ಅಮರಾಧಿಪ ಅಮರಾಧಿಪ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ, ದೇವತೆಗಳ ಒಡೆಯ. ಅಮರಾಣಾಮಧಿಪಃ |

ಅಮರಾಪಗಾ ಅಮರಾಪಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವನದಿ, ಗಂಗಾ ನದಿ. ಅಮರಾಣಾಮಾಪಗಾ |

ಅಮರಾಲಯ ಅಮರಾಲಯ (ಪುಂ) 1. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ. 2. ಮೇರುಪರ್ವತ.

ಅಮರಾವತೀ ಅಮರಾವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಂದ್ರನ ಪಟ್ಟಣ, ಇಂದ್ರನ ರಾಜಧಾನಿ.

ಅಮರು ಅಮರು (ಪುಂ) ಅಮರು ಶತಕವನ್ನು ಬರೆದ ಕವಿ.



ಅಮರ್ಯ ಅಮರ್ತ್ಯ (ಪುಂ) ದೇವತೆ. ಪ್ರಿಯಂತೋಽಸ್ಮಿನ್ನಿತಿ ಮತೌ  
ಭೂಲೋಕ: - ಮೃಡ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೇ) "ತನ್" (ಉಂ ೩-೮೬)।  
ತತ್ರ ಭವಾ ಅಪಿ ಮರ್ತಾ ಜನಾಃ। ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಯತ್" (ವಾಂ  
೫-೪-೩೬)। ಮರ್ತ್ಯಾಃ। ತದ್ವಿಜ್ಞಾ ಅಮರ್ತ್ಯಾಃ। "ವಿಧತ್ಸವ  
ವಿಪದುದ್ವಿಗ್ನಾನಿಮರ್ತ್ಯಾನಿನುಕಂಪಯಾ" ಯಾದಂ ೧೬-೪೯।

ಅಮರ್ಯಭುವನ ಅಮರ್ತ್ಯಭುವನ (ನಂ) ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವ  
ಲೋಕ. ಅಮರ್ತ್ಯಾಃ ಭುವನಮ್।

ಅಮರ್ಯಾದಿ ಅಮರ್ಯಾದ (ವಿಂ) 1. ಶಾಸ್ತ್ರಮರ್ಯಾದೆ  
ಯನ್ನು ಮಾರಿದ, ನಿಯಮವನ್ನು ಉಲ್ಲಂಘಿಸಿದ.  
"ಅಮರ್ಯಾದಿ: ಕ್ಷುಬ್ಧಶ್ರಮತಿರಸುಯಾಪ್ರಸವಭೂ: ಕೃತಗ್ನೋ ದುರ್ಮಾನಿ  
ಸ್ಮರಪರವಶೋ ವಚನಪರ:" ಸ್ತೋಂ ೨೦। 2. ಎಲ್ಲೆ ಯಿಲ್ಲದ,  
ಮೇರೆಯಿಲ್ಲದ. 3. ಗೌರವವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಮರ್ಯಾದಾ ಯಸ್ಯ।

ಅಮರ್ಯಾದಿ ಅಮರ್ಯಾದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎಲ್ಲೆ ಮಾರುವುದು,  
ಉಲ್ಲಂಘಿಸುವುದು, ಅತಿಕ್ರಮಿಸುವುದು.

ಅಮರ್ಯ ಅಮರ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಕೋಪ. 2. ಸಹನೆಯಿಲ್ಲ  
ದಿರುವಿಕೆ. ಮೃಷ (ತಿದಿತಕ್ಷಾಯಾಮ್) "ಘರ್" (೩-೩-೧೮)।  
"ಅಮರ್ಯಶೂನ್ಯೇನ ಜನಸ್ಯ ಜನ್ತುನಾ ನ ಜಾತಹಾರ್ದೇನ ಚ  
ವಿಧಿಷಾದರ:" ಕಿರಾಂ ೧-೩೩।

ಅಮರ್ಯಣ ಅಮರ್ಷಣ (ವಿಂ) 1. ಸಹನೆಯಿಲ್ಲದ,  
ಅಸಹಿಷ್ಣು. "ವಿಶೇಷಾತ್ಪರಿಪೂರ್ಣಸ್ಯ ಯಾತಿ ಶತ್ನೋರಮರ್ಯಣಃ।  
ಆಭಿಮುಖ್ಯಮ್" ಪञ್ಚತಂ ೧-೩೫೫। 2. ಕುಪಿತನಾದ,  
ಕೋಪಗೊಂಡ. ನ ಮರ್ಯಣೀಲಃ - ಮೃಷ (ತಿದಿತಕ್ಷಾಯಾಮ್)  
ತಾಚ್ಛೀಲ್ಯೇ "ಯುಚ್" (೩-೨-೧೫೧)। "ರಘೋರವಷ್ಟಭಮಯೇನ  
ಪತ್ನಿಣಾ ಹೃದಿ ಕ್ಷತೋ ಗೋತ್ರಭಿದಪ್ರಮರ್ಯಣಃ" ರಘುಂ ೩-೫೩।

ಅಮರ್ಯಿತ ಅಮರ್ಷಿತ (ವಿಂ) ಕೋಪಗೊಂಡ, ಕುಪಿತ  
ನಾದ. ಅಮರ್ಯಾಸ್ಯ ಸಜ್ಜಾತಃ "ಇತಚ್" (೫-೨-೩೬)।  
"ಅಭಿಮನ್ಯುವಧಾಮರ್ಯಿತಃ ಪಾಣ್ಡುಪುತ್ರಃ" ವೇಣೀಂ ೪।

ಅಮರ್ಯಿನ್ ಅಮರ್ಷಿನ್ (ವಿಂ) ಕೋಪವುಳ್ಳ, ಕುಪಿತ  
ನಾಗಿರುವ. ಅಮರ್ಯಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫)।  
"ಅಮರ್ಯಿಣಾ ಕೃತ್ಯಮಿವ ಕ್ಷಮಾಶ್ರಯಂ ಮದೋದ್ಧತೇನೇವ ಹಿತಂ ಪ್ರಿಯಂ  
ವಚ:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೬೩। ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)।  
ಅಮರ್ಯಿಣಿ ಅಮರ್ಷಿಣೀ.

ಅಮಲ (ಅಮಲ) (ನಂ) 1. ಕಾಗೆಬಂಗಾರ. 2. ಸ್ವಚ್ಛ  
ವಾದ, ಕೊಳೆಯಿಲ್ಲದ. 3. ದೋಷವಿಲ್ಲದ, ಕಳಂಕ  
ವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಮಲಂ ಯಸ್ಯ। "ಮಮ ತು ದಯಿತಃ ಶ್ಲಾಘ್ಯ-  
ಸ್ತಾತೋ ಜನನ್ಯಮಲಾನ್ವಯಾ" ಮಾಲತೀಂ ೨-೨। (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಲಾ -ಲಾ. 4. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. "ಅಮಲಾ ಕಮಲಾಃ ಸ್ಯಾದಮಲಂ  
ವಿಶದೇಽಭ್ರಕೇ" ಹೇಮಂ।

ಅಮಲಾತ್ಮನ್ ಅಮಲಾತ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ನಿರ್ಮಲಚಿತ್ತ  
ನಾದ ಯೋಗಿ, ವಿಷಯಾಭಿಲಾಷೆಯನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದ  
ಯೋಗಿ. (ವಿಂ) 2. ನಿರ್ಮಲವಾದ ದೇಹವುಳ್ಳ.  
"ಅಮಲಾತ್ಮಸು ಪ್ರತಿಫಲಗ್ನಭಿತಸ್ತರಣೀಕಪೋಲಕಲಕೇಷು ಮುಹುಃ"  
ಮಾಘಂ ೧-೩೭।

ಅಮಾ ಅಮಾ (ಪುಂ) 1. ಆತ್ಮ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಚಂದ್ರನ  
ಹದಿನಾರನೆಯ ಕಲೆ. 3. ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ ತಿಥಿ. "ದಶೋ-  
ಮಾಮಾವಸೀ ಚ ಸಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। (ಅವ್ಯಂ) 4. ಸಂಗಡ,  
ಒಡನೆ, ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ, ಕೂಡ. 5. ಹತ್ತಿರ, ಸಮೀಪ.  
ನ ಮಾತಿ - ಮಾ (ಮಾನೇ) "ಕ್ರಿಪ್" (೩-೨-೭೬)।  
"ಸ್ಯಾದಮಾ ಸನ್ನಿಧಾನಾರ್ಥೇ ಸಹಾರ್ಥೇ" ಹೇಮಂ।

ಅಮಾಂಸ ಅಮಾಂಸ (ವಿಂ) ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದವನು, ದುರ್ಬಲ.  
ನಾಸ್ತಿ ಮಾಂಸಂ ಯಸ್ಯ।

ಅಮಾತ್ಯ ಅಮಾತ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಸಚಿವ, ಮಂತ್ರಿ. ಅಮಾ ಸಹ  
ವಸತಿ "ತ್ಯಪ್" (೪-೨-೧೦೪)। "ನೃಪೇಷ್ವಮಾತ್ಯೇಷು ಚ  
ಸರ್ವಸಂಪದಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೫। "ಅಮಾತ್ಯವ್ಯಜ್ಜನಾ ರಾಜಾಂ  
ದ್ವಿಷ್ಟಾಸ್ತೇ ಶತ್ರುಸಂಜಿತಾಃ" ಮಾಘಂ ೨-೫೬। (ವಿಂ) 2.  
ಮನೆಯ ಒಡನಾಡಿ, ಕುಟುಂಬಕ್ಕೆ ಸೇರಿದವನು.

ಅಮಾತ್ರ ಅಮಾತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. ನಾಸ್ತಿ ಮಾತ್ರಾ  
ಪರಿಚ್ಛೇದೋ ಯಸ್ಯ। (ನಂ) 2. ಅಳತೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
(ವಿಂ) 3. ಪರಿಮಾಣಶೂನ್ಯವಾದ, ಅಳತೆಯಿಲ್ಲದ,  
ಅಳೆಯಲಾಗದ.

ಅಮಾನನ ಅಮಾನನ (ನಂ) 1. ಅಗೌರವ, ಅವಮರ್ದ್ಯದ.  
(ವಿಂ) 2. ಗೌರವವಿಲ್ಲದ, ಅದರವಿಲ್ಲದ.

ಅಮಾನವ ಅಮಾನವ (ವಿಂ) ಅಮಾನುಷ, ಮನುಷ್ಯ  
ನಲ್ಲದ, ಮನುಷ್ಯನ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ. ಮನೋರಯ ಮಾನವಃ।  
ನಂ ತಂ। "ಅಮಾನವಂ ಜಾತಮಜಂ ಮನೋಃ ಕುಲೇ ಪ್ರಭಾವಿನಂ  
ಭಾವಿನಮಂತಮಾತ್ಮನಃ" ಮಾಘಂ ೧-೬೭।

ಅಮಾನಸ್ಯ ಅಮಾನಸ್ಯ (ನಂ) ಮನಸ್ಸನ್ನು ನೋಯಿಸುವ  
ದುಃಖ. ಮಾನಸೇ ಸಾಧು - ಮಾನಸ "ಯತ್" (೪-೪-೯೮)।  
ಮಾನಸ್ಯಮ್। ನಂ ತಂ।

ಅಮಾಯ ಅಮಾಯ (ಪುಂ) 1. ಪರಬ್ರಹ್ಮ, ಪರಮಾತ್ಮ.  
(ವಿಂ) 2. ಕಪಟವಿಲ್ಲದ, ಮುಜುವಾದ, ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ  
ನಾದ. ನಾಸ್ತಿ ಮಾಯಾ ಯಸ್ಯ।

ಅಮಾಯಾ ಅಮಾಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಾಮಾಣಿಕತೆ, ಕಪಟ  
ವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ಅವಿದ್ಯಾಶೂನ್ಯತೆ.

ಅಮಾಯಿನ್ ಅಮಾಯಿನ್ (ವಿಂ) ಕಪಟವಿಲ್ಲದ,  
ಪ್ರಾಮಾಣಿಕನಾದ.



ಅಮಾವ(ವಾ)ಸ್ಯಾ ಅಮಾವ(ವಾ)ಸ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಮಾವಾಸ್ಯೈ, ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷದ ಹದಿನೈದನೆಯ ತಿಥಿ. ಅಮಾಸಹ ವಸತಶ್ಚಂದ್ರಾಕೌ ಯಸ್ಯಾಮ್—ಅಮಾ+ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ಘ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೨)। ವಾ ಹ್ರಸ್ವಃ। ನಿಪಾಂ।

ಅಮಿತ ಅಮಿತ (ವಿಂ) 1. ಮಿತವಲ್ಲದ, ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅಳತೆಯಿಲ್ಲದ. ಮಾ (ಮಾನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। ನ ಮಿತಃ। 2. ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ. "ಅಮಿತಸ್ಯ ಮಹಿಮ್ನಸ್ತೇ ಪ್ರಯಾತುಂ ಪಾರಮಿಚ್ಛತಾಮ್" ಯಾದಂ ೧-೪೭।

ಅಮಿತಾಶನ ಅಮಿತಾಶನ (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಮಾತ್ಮ. ಅಮಿತಮಶನಾತಿ—ಅಶ (ಭೋಜನೇ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)। "ಮಹೀಧರೋ ಮಹಾಭಾಗೋ ವೇಗವಾನಮಿತಾಶನಃ" ವಿಂ ಸಂ [ಪ್ರಳಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ಪರಮಾತ್ಮನು ಎಲ್ಲ ವನ್ನೂ ನುಂಗುವನು.]

ಅಮಿತೌಜಸ್ ಅಮಿತೌಜಸ್ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ಬಲಶಾಲಿ. ಅಮಿತಮೌಜೋ ಯಸ್ಯ।

ಅಮಿತ್ರ ಅಮಿತ್ರ (ಪುಂ) ಶತ್ರು, ಹಗೆ, ವೈರಿ. ಅಮ(ಗತ್ಯಾದೌ) "ಇತ್ರಃ" (೩ಂ ೪-೧೦೪)। "ಗುಣಾರ್ಜನೋಪಾಯವಿರೂಢಬುದ್ಧಯಃ ಪ್ರಕೃತ್ಯಮಿತ್ರಾ ಹಿ ಸತಾಮಸಾಧವಃ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೨೧।

ಅಮಿಥ್ಯಾ ಅಮಿಥ್ಯಾ (ಅವ್ಯಂ) ಸತ್ಯವಾಗಿ, ನಿಜವಾಗಿ. ನ ಮಿಥ್ಯಾ। "ಕೃಚ್ಛಂ ಮಹತ್ಪೀಠಂ ಇತಿ ಪ್ರಿಯಾರ್ಹಾ ತಾಮುವತುಸ್ತೇ ಪ್ರಿಯಮಪ್ಯಮಿಥ್ಯಾ" ರಘುಂ ೧೪-೬।

ಅಮಿನ್ ಅಮಿನ್ (ವಿಂ) ಅಸ್ಪೃಶ್ಯ, ರೋಗಿ. ಅಮ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫)।

ಅಮಿಷ ಅಮಿಷ (ನಂ) 1. ಲೌಕಿಕಸುಖ. 2. ಭೋಗ್ಯ ವಸ್ತು, ಸುಖದ ಪದಾರ್ಥ. 3. ಮೋಸವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ಮಿಷಃ। (ವಿಂ) 4. ಕಪಟವಿಲ್ಲದ, ಮೋಸವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಮಿಷಶ್ಚಲಂ ಯಸ್ಯ।

ಅಮುಕ್ತ ಅಮುಕ್ತ (ನಂ) 1. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. (ವಿಂ) 2. ಮುಕ್ತಿಹೊಂದದ, ಸಂಸಾರದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆಹೊಂದದ. 3. ಬಿಡಲ್ಪಡದ. ನ ಮುಕ್ತಃ। "ಅಮುಕ್ತಾ ಭವತಾ ನಾಥ ಮುಹೂರ್ಮಪಿ ಸಾ ಪುರಾ" ಸಾಂ ದಂ।

ಅಮುಕ್ತಹಸ್ತ ಅಮುಕ್ತಹಸ್ತ (ವಿಂ) ಜಿವುಣ, ಜೀನ, ಕೃಪಣ, ಲೋಭಿ. ನ ಮುಕ್ತಹಸ್ತೋ ಯಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ—ಹಸ್ತಾ—ಹಸ್ತಾ. "ಸುಸಂಸ್ಕೃತೋಪಸ್ಕರಯಾ ವ್ಯಯೇ ಚಾಮುಕ್ತಹಸ್ತಯಾ" ಮನುಂ ೪-೧೫೦।

ಅಮುಕ್ತಿ ಅಮುಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೋಕ್ಷವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಸಂಸಾರದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆಹೊಂದದಿರುವಿಕೆ. 2. ಬಂಧನ ದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ಮುಕ್ತಿಃ।

ಅಮುತಸ್ ಅಮುತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅಲ್ಲಿಂದ, ಆ ಪ್ರದೇಶ ದಿಂದ, ಅವನಿಂದ, ಅವಳಿಂದ, ಅದರಿಂದ. ಅದಸ್ "ತಸಿಲ್" (ವಾಂ ೪-೪-೪೪)। 2. ಪರಲೋಕ ದಿಂದ.

ಅಮುತ್ರ ಅಮುತ್ರ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅಲ್ಲಿ, ಅವನಲ್ಲಿ, ಅದರಲ್ಲಿ. 2. ಪರಲೋಕದಲ್ಲಿ. ಅದಸ್ "ತ್ರಲ್" (೪-೩-೧೦)। 3. ಜನ್ಮಾಂತರದಲ್ಲಿ, ಬೇರೆ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ. "ತಥೈವ ಯಃ ಕ್ಷಮಾಕಾಲೇ ಕ್ಷತ್ರಿಯೋ ನೋಪಶಾಮ್ಯತಿ। ಅಪ್ರಿಯಃ ಸರ್ವಭೂತಾನಾಂ ಸೋಽಮುತ್ರೇಹ ಚ ನಶ್ಯತಿ"।

ಅಮುದೃಶ್ ಅಮುದೃಶ್—ದೃಕ್ಷ—ದೃಕ್ (ವಿಂ) ಅದ ರಂತಿರುವ, ಅವನಂತಿರುವ. ಅದಸ್+ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) "ಕ್ಷಿನ್" (೩-೨-೬೦)। "ವಸಃ" (೬-೩-೮೯)।

ಅಮೂರ್ತ ಅಮೂರ್ತ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. (ವಿಂ) 2. ಅವಯವರಹಿತ, ಆಕಾರಶೂನ್ಯ. ನ ಮೂರ್ತಃ। "ಕ್ಷಿತಿರ್ಜಲಂ ತಥಾ ತೇಜಃ ಪವನೋ ಮನಃ ಏವ ಚ। ಪರಾಪರತ್ವಮೂರ್ತತ್ವಕ್ರಿಯಾ-ಯೋಗಾಶ್ರಯಾ ಅಮೋ" ಭಾಷಾಪಂ। "ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನಪರಿಮಾಣವತ್ವಂ ಮೂರ್ತತ್ವಮ್" ಮುಕ್ತಾಂ।

ಅಮೂರ್ತಗುಣ ಅಮೂರ್ತಗುಣ (ಪುಂ) ಅಮೂರ್ತವಾದ ಆಕಾರವೊಂದಿರುವುದುಗಳ ಗುಣ. "ಧರ್ಮಾಧರ್ಮಾ ಭಾವನಾ ಚ ಶಬ್ದೋ ಬುದ್ಧಿಚಾದಯೋಽಪಿ ಚ। ಏತೇಽಮೂರ್ತಗುಣಾಃ ಸರ್ವೇ" ಭಾಷಾಪಂ।

ಅಮೂರ್ತಿ ಅಮೂರ್ತಿ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ನಾಸ್ತಿ ಮೂರ್ತಿಃ ಸ್ಥೂಲಭೌತಿಕಮೂರ್ತಿಯಸ್ಯ। "ಅಮೂರ್ತಿರನುಚಿಂತಯೋ ಭಯಕೃದ್ಭಯನಾಶನಃ" ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 2. ಆಕಾರ ರಹಿತವಾದ, ಅವಯವವಿಲ್ಲದ.

ಅಮೂರ್ತಿಮತ್ ಅಮೂರ್ತಿಮತ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. "ವಿಶ್ವಮೂರ್ತಿರ್ಮಹಾಮೂರ್ತಿರ್ದೀಪ್ತಮೂರ್ತಿರಮೂರ್ತಿಮಾನ್" ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 2. ಆಕಾರರಹಿತವಾದ, ಅವಯವ ವಿಲ್ಲದ. ನ ಮೂರ್ತಿಮಾನ್।

ಅಮೂಲ್ಯ ಅಮೂಲ್ಯ (ವಿಂ) ಬೆಲೆಯಿಲ್ಲದ, ಬಹಳ ಬೆಲೆ ಬಾಳುವ, ಬೆಲೆ ಕಟ್ಟಲಾಗದ.

ಅಮೃಣಾಲ ಅಮೃಣಾಲ (ನಂ) ಲಾಮಂಚದ ಬೇರು. ಮೃಣಾಲಮಿವ—ಸಾದೃಶ್ಯೇ ನಂ ತಂ।

ಅಮೃತ ಅಮೃತ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ನ ಮೃತಂ ಮರಣಂ ಯಸ್ಯ। "ಅಮೃತಃ ಶಾಶ್ವತಸ್ಥಾನುರ್ವರಾರೋಹೋ ಮಹಾ-ತಪಾಃ" ವಿಂ ಸಂ। 2. ಧನ್ಯಂತರಿ. 3. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. 4. ದೇವತೆ. 5. ನಕ್ಷತ್ರ ಮತ್ತು ವಾರಗಳ ಯೋಗ ದಿಂದಂಟಾಗುವ ಒಂದು ಯೋಗ. [ಭಾನು-ಹಸ್ತ,



ಸೋಮ-ಶ್ರವಣ, ಕುಜ-ರೇವತಿ, ಬುಧ-ಅನೂರಾಧೆ, ಗುರು-ಪುಷ್ಯ, ಶುಕ್ರ-ಅಶ್ವಿನಿ ಮತ್ತು ಶನಿ-ರೋಹಿಣಿ ಇವುಗಳ ಯೋಗವು ಅಮೃತಯೋಗವು.] 6. ಚಂದ್ರ. (ನಂ) 7. ಅಮೃತ, ಸುಧೆ. ನ ಖ್ಯಂತೇಜೇನ - ಮೃತ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗ) "ತನ್" (ಓಂ ೩-೮೮)। "ದೇವಾಸುರೇರಮೃತ-ಮಮ್ಬುನಿಧಿರ್ಮಮ್ಬು" ಕಿರಾಂ ೫-೩೦। 8. ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ. ನ ಮೃತಂ ಮರಣಂ ಯತ್ರ। "ಸ ಶ್ರಿಯೇಚಾಮೃತಾಯ ಚ" ಅಮಂ। 9. ಸ್ವರ್ಗ. 10. ಜಲ, ನೀರು. 11. ಕ್ಷೀರ, ಹಾಲು. 12. ಯಜ್ಞಶೇಷ. "ವಿಧಿಸೋ ಭುಕ್ತಶೇಷಂ ತು ಯಜ್ಞಶೇಷಂ ತಥಾಮೃತಮ್" ಮನುಂ ೩-೨೮೫। 13. ಯಾಚಿಸಿದ ದೊರೆತ ಭಿಕ್ಷೆ. "ಮೃತಂ ಸ್ಯಾಚಾಚಿತಂ ಭಿಕ್ಷಯಮೃತಂ ಸ್ಯಾಚ-ಯಾಚಿತಮ್" ಮನುಂ ೪-೫। 14. ಘೃತ, ತುಪ್ಪ. "ಅಮೃತಂ ನಾಮ ಯತ್ಸಂತೋ ಮನ್ವಜಿಹ್ವೇಷು ಜುಹ್ವತಿ। ಶೋಭೇವ ಮಂದರಕುಂಭ-ಕುಭಿತಾಮ್ಬೋಧಿವರ್ಣನಾ" ಮಾಧಂ ೨-೧೦೭। 15. ಅನ್ನ, ಆಹಾರ. 16. ಚಿನ್ನ, ಸುವರ್ಣ. 17. ವಾದರಸ. 18. ವಿಷ. 19. ಭೋಜನ, ಊಟ. 20. ಆಕಾಶ, ಗಗನ. 21. ರಸಾಯನ. (ವಿಂ) 22. ಸಿಹಿಯಾದ, ಮಧುರವಾದ. 23. ಮರಣಹೊಂದದ, ಬದುಕಿರುವ. 24. ಅಮರತ್ವಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ. 25. ಮೋಕ್ಷ ಹೊಂದಿದ, ಮುಕ್ತನಾದ. 26. ರಮ್ಯವಾದ, ಸುಂದರ ವಾದ. "ಅಮೃತಂ ಯಜ್ಞಶೇಷಾಮ್ಬುಸುಧಾಮೋಕ್ಷೇಷ್ವಯಾಚಿತೇ। ಅನ್ವ-ಕಾಶ್ಚನಯೋರ್ಜಂಧೋ ಸ್ವೇ ಸ್ವಾದುನಿ ರಸಾಯನೇ। ಧೃತೇ ಹೃದ್ಯೇ ಗೋರಸೇ ಚಾಮೃತೋ ಧನ್ವಂತರೀ ಸುರೇ" ಹೇಮಂ। 27. ನಾಶವಿಲ್ಲದ, ಶಾಶ್ವತವಾದ. "ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಹಿ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಹಮೃತಸ್ಯಾವ್ಯಯಸ್ಯ ಚ। ಶಾಶ್ವತಸ್ಯ ಚ ಧರ್ಮಸ್ಯ ಸುಖಸ್ಯೇಕಾಂತಿಕಸ್ಯ ಚ" ಗೀತಾ ೧೪-೨೭। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತಾ-ತಾ. 28. ವಾರಾಹ ಗಿಡ್ಡೆ. 29. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. 30. ಕಾಡು ಹೆಸರು. 31. ಗಂಕೆ. 32. ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. 33. ತುಲಸಿ. 34. ಹಾವುಮೆಕ್ಕೆ ಗಿಡ. 35. ಹಿಪ್ಪಲಿ. 36. ಅಳಲಿ ಗಿಡ. 37. ಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತೀಲತೆ, ಕಂಗೊಂಗಿಗಿಡ. 38. ನೆಲ್ಲಿಮರ. "ಅಮೃತಾ ಮಾಗಧಿಪಥ್ಯಾಗುಡ್ಡಚ್ಯಾಮಲಕೀಪು ಚ" ಮೇದಿಂ। "ಸ್ಯಾಚಜ್ಞಶೇಷಾಮ್ಬುನಿಧಿರಸಾಯನಕೋರಾಜ್ಯಸೋಮಾನ್ವ-ಸುಧಾಸು ಚಾಮೃತಮ್। ಪಥ್ಯಾಗುಡ್ಡಚ್ಯಾಮಲಕೀಪ್ವಯಂ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ದೇವೇಷು ನಾ ಸ್ವಾದ್ವಿನಾಶಿನೋಸ್ತ್ರಿಷು" ನಾನಾರ್ಥರಂ। 39. ಸೂರ್ಯನ ಕಿರಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. 40. ಶರೀರದೊಳಗಿನ ಒಂದು ನಾಡಿ. "ನಾಡೀನಾಮುದಯಕ್ರಮೇಣ ಜಗತಃ ಪञ್ಚಾಮೃತಾಕರ್ಷಣಾತ್" ಮಾಲತೀಂ ೫-೨।

ಅಮೃತತ್ವ ಅಮೃತತ್ವ (ನಂ) ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ. "ಅಹಿಸಯಾ ಚ ಭೂತಾನಾಮಮೃತತ್ವಾಯ ಕಲ್ಪತೇ" ಮನುಂ ೬-೬೦।

ಅಮೃತಕಿರಣ ಅಮೃತಕಿರಣ -ದೀಧಿತಿ -ದೀಧಿತಿ -ದ್ವಿತಿ -ದ್ಯುತಿ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. "ಅಮೃತದೀಧಿತಿರೇಷ ವಿಧರ್ಮಜೇ ಭಜಸಿ ತಾಪಮಮುಷ್ಯ ಕಿಮಂಶುಭಿಃ" ನೈಷಂ ೪-೧೦೪।

ಅಮೃತಪ ಅಮೃತಪ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಅಮೃತಂ ಪಾತಿ ಅಸುರೇಮ್ಯಃ - ಪಾ (ರಕ್ಷಣ) "ಸೋಮಪೋಽಮೃತಪಃ ಸೋಮಃ" ವಿಂ ಸಂ। 2. ದೇವತೆ. ಅಮೃತಂ ಪಿಬತಿ - ಪಾ (ಪಾನ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)।

ಅಮೃತಯೋಗ ಅಮೃತಯೋಗ (ಪುಂ) ನಾರ ಮತ್ತು ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಯೋಗ (ಸಂಬಂಧ) ದಿಂದುಂಟಾಗುವ ಒಂದು ಶುಭಯೋಗ. [ನಿವರಕ್ಕೆ "ಅಮೃತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಅಮೃತರಸ ಅಮೃತರಸ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. 2. ಸುಧಾರಸ. (ಸ್ತ್ರೀ) -ರಸಾ-ರಸಾ. 3. ಕರಿದ್ರಾಕ್ಷಿ. 4. ಒಂದುವಿಧ ಸಿಹಿದೊಟ್ಟಿ.

ಅಮೃತಲತಾ ಅಮೃತಲತಾ -ವಲ್ಲಿ -ವಲ್ಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ ಗಿಡ.

ಅಮೃತಸಂಭವಾ ಅಮೃತಸಂಭವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ ಗಿಡ.

ಅಮೃತಸಾರ ಅಮೃತಸಾರ (ಪುಂ) ಘೃತ, ತುಪ್ಪ. ಅಮೃತಸ್ಯ ಕೋರಸ್ಯ ಸಾರಃ।

ಅಮೃತಸು ಅಮೃತಸು (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಅಮೃತಂ ಸುತೇ - ಷಟ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭವಿಮೋಚನೆ) "ಕ್ಷಿಪ್" (೩-೨-೬೧)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಅದಿತಿದೇವಿ. ಅಮೃತಾನ್ ಸುತೇ।

ಅಮೃತಾಂಶು ಅಮೃತಾಂಶು (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಅಮೃತಮಿವಾಂ-ಶವೋಽಸ್ಯ।

ಅಮೃತಾಂಶು-ದ್ವಿವ ಅಮೃತಾಂಶು-ದ್ವಿವ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಅಮೃತಾಂಶೋಽನ್ವದ್ರಸ್ಯ ತದ್ಭವೋ ಯಸ್ಮಾತ್। "ಅಮೃತಾಂಶು-ದ್ವಿವೋ ಭಾನುಃ ಶಶವಿಂದುಃ ಸುರೇಶ್ವರಃ" ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 2. ಚಂದ್ರನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅಮೃತಾಂಶೋಽನ್ವದ್ರವತಿ।

ಅಮೃತಾಂಧಸ್ ಅಮೃತಾಂಧಸ್ (ಪುಂ) ದೇವತೆ. ಅಮೃತ-ಮನ್ವೋಽನ್ವಂ ದರ್ಶನಾತ್ ತೃಪ್ತಿಕಾರಕಂ ಯಸ್ಯ। "ನ ವೈ ದೇವಾ ಅಶ್ನಂತಿ ಪಿಬಂತಿ ಏತದೇವಾಮೃತಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ತೃಪ್ಯಂತಿ" ಶ್ರುತಿಃ।

ಅಮೃತಾಶ ಅಮೃತಾಶ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಅಮೃತಂ ಕ್ಷಯಾಭಾವ-ಮಶ್ನುತೇ-ಅಶ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಅಣ್" (೩-೨-೧)। "ಅಮೃತಾಶೋಽ-ಮೃತವಪುಃ" ವಿಂ ಸಂ। 2. ದೇವತೆ. ಅಮೃತಂ ಸುಧಾಮಶ್ನಾತಿ - ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಅಣ್" (೩-೨-೧)।

ಅಮೃತಾಶನ ಅಮೃತಾಶನ (ಪುಂ) ದೇವತೆ. ಅಮೃತಮಶ್ನಾತಿ - ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)।



ಅಮ್ಬರೀಷ ಅಂಬರೀಷ (೨೦) 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. 3. ಸೂರ್ಯ. 4. ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ವಿಷ್ಣುಭಕ್ತನಾದ ಅಂಬರೀಷ ಮಹಾರಾಜ. [ಅಂಬರೀಷ ಮಹಾರಾಜನು ವೈವಸ್ವತ ಮನುವಿನ ಸಂತತಿಯವನಾದ ನಾಭಾಗನ ಮಗ. ಈತನು ವಿಷ್ಣು ಭಕ್ತಾಗ್ರೀಸರನಾಗಿದ್ದನು. ಏಕಾದಶೀ ವ್ರತವನ್ನು ಆಚರಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಈತನ ನಿಯಮವನ್ನು ಭಂಗಪಡಿಸಲು ಒಂದು ದಿನ ದುರ್ವಾಸಮುನಿಯು ದ್ವಾದಶೀಯ ದಿನ ಬೆಳಿಗ್ಗೆ ಈತನ ಮನೆಗೆ ಬಂದು ಭೋಜನಕ್ಕೆ ಆಹ್ವಾನ ಪಡೆದನು. ಸ್ನಾನಕ್ಕಾಗಿ ನದಿಗೆ ಹೋಗಿ ಬಹಳ ಹೊತ್ತಾದರೂ ಬರದಿರಲು ಅಂಬರೀಷನು ಪಾರಣಿಯ ಕಾಲವು ಮೀರುವುದೆಂಬ ಭಯದಿಂದ ಜಲಪಾರಣೆಯನ್ನು ಮಾಡಿದನು. ಆ ಕೂಡಲೇ ದುರ್ವಾಸ ಮುನಿಯು ಬಂದು ಅಂಬರೀಷನನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸಲು ತನ್ನ ಜಟಿಯಿಂದ ಒಂದು ದೇವತೆಯನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದನು. ಆ ಕೂಡಲೇ ವಿಷ್ಣುವಿನ ಚಕ್ರವು ಆ ದೇವತೆಯನ್ನು ದಹಿಸಿಬಿಟ್ಟು ಅಲ್ಲಿದ್ದ ದುರ್ವಾಸ ಮುನಿಯನ್ನು ಅಟ್ಟಿಕೊಂಡು ಹೋಯಿತು. ಮುನಿಯು ಅದರ ತಾಪವನ್ನು ತಡೆಯಲಾರದೆ ಮೂರು ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಓಡುತ್ತಾ ಬಕಲಿ ಬೆಂಡಾಗಿ ಬ್ರಹ್ಮರುದ್ರಾದಿಗಳೆಲ್ಲರನ್ನೂ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದರೂ ಸಾಧ್ಯವಾಗದೆ ಕೊನೆಗೂ ಅದರಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳಲಾರದೆ ಅಂಬರೀಷನನ್ನೇ ಮರೆಹೊಕ್ಕು ಅದರಿಂದ ಪಾರಾದನು.] 5. ಬಾಲಕ. 6. ಅಮಟಿಮರ. 7. ಅಂಬರೀಷನೆಂಬ ಒಂದು ನರಕ. 8. ಅನುತಾಪ. (ನಂ) 9. ಹುರಿಯುವ ಓಡು, ಬಾಣಲಿ. 10. ರಣ, ಯುದ್ಧ. ಅಮ್ಯತೇಷ - ಅಬಿ (ಶಬ್ದ) "ಇಪನ್" ಅಠಾ-ಗಮಶ್ಚ (ತಂ ೪-೨೯)। ನಿಪಾಂ। "ಅಮ್ಬರೀಷಂ ರಣಂ ಪ್ರಾಪ್ತೇಷ್ಯಮ್ಬರೀಷೋ ನೃಪಾಂತರೇ। ಮಾರ್ತಂಡೇ ಖಂಡಪರಶಾವಾ-ಮ್ರಾತಕಕಿಶೋರಯೋಃ" ವಿಶ್ವಂ। "ಅಮ್ಬರೀಷಂ ರಣಂ ಪ್ರಾಪ್ತೇ ಕಲಿಬಂ ಪುನಿ ನೃಪಾಂತರೇ। ನರಕಸ್ಯ ಪ್ರಭೇದೇ ಚ ಕಿಶೋರೇ ಭಾಸ್ಕರೇಷಿ ಚ। ಆಮ್ರಾತಕೇನೃಪಾಪೇ ಚ" ಮೇದಿಂ।



ಅಮ್ಬಕ ಅಂಬುಷ್ಯ (ಗ್ರಂ) 1. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ವೈಶ್ಯ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು. 2. ಚಿಕಿತ್ಸಕ, ವೈದ್ಯ. 3. ಮಾವಟಗ, ಮಾವುತ. (ಗ್ರಂ ಬಂವಂ) 4. ಅಂಬುಷ್ಯದೇಶ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಠಾ-ಷ್ಯಾ. 5. ಕಾಡು ಮಲ್ಲಿಗೆ. 6. ಹಿಪ್ಪಲಿ. 7. ಪುಲ್ಲಂಪುರಿಚಿ.

ಅಮ್ಬಾಠಿಕಾ ಅಂಬುಷ್ಯಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊನ್ನಗೊನ್ನೆ ಸೊಪ್ಪು.

ಅಮ್ಬಾ ಅಂಬಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಾಯಿ. ಅಮ್ಯತೇ ಶಬ್ದತೇ - ಅಬಿ (ಶಬ್ದ) "ಅ:" (೩-೩-೧೦೩). "ಕೃತಾಂಜಲಿಸ್ತತ್ರ ಯದಮ್ಬ ಸತ್ಯಾತ್" ಣ್ಕಂ ೧೪-೧೬. ಇದೇ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಅಮ್ಬಾಡಾ, ಅಮ್ಬಾಲಾ ಪ್ರಯೋಗಗಳೂ ಉಂಟು. 2. ಕಾಶೀ ರಾಜನ ಮಗಳು, ಅಂಬಿಕೆಯ ಸಹೋದರಿ. [ಕಾಶೀ ರಾಜನಿಗೆ ಅಂಬೆ, ಅಂಬಿಕೆ ಮತ್ತು ಅಂಬಾಲಿಕೆಯೆಂಬ ಮೂವರು ಹೆಣ್ಣು ಮಕ್ಕಳಿದ್ದರು. ಭೀಷ್ಮನು ಈ ಮೂವರನ್ನೂ ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯನಿಗೆ ಮದುವೆ ಮಾಡಲು ಕದ್ದೊಯ್ದನು. ಹಿರಿಯಳಾದ ಅಂಬೆಯನ್ನು ಈ ಮೊದಲೇ ಸೌಭನೆಂಬ ರಾಜನಿಗೆ ನಿಶ್ಚಯಮಾಡಿದ್ದರಿಂದ ಅವಳನ್ನು ಆ ಸೌಭನಲ್ಲಿಗೇ ಕಳುಹಿಸಿಕೊಟ್ಟನು. ಅಂಬೆಯು ಪರಪುರುಷನ ಮನೆಯಲ್ಲಿದ್ದು ಬಂದುದರಿಂದ ಸೌಭನು ಅವಳನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಲು ಒಪ್ಪದಿರಲು ಅವಳು ಪುನಃ ಭೀಷ್ಮನಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ ತನ್ನನ್ನು ಅಂಗೀಕರಿಸುವಂತೆ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದಳು. ಭೀಷ್ಮನೂ ತನ್ನ ಆಜೀವ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯೆಯ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯ ಕಾರಣದಿಂದ ನಿರಾಕರಿಸಲು ಮುಂದಿನ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಸೇಡನ್ನು ತೀರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದಾಗಿ ಹೇಳಿ ಈಶ್ವರನಿಂದ ವರ ಪಡೆದು ಶಿಖಂಡಿಯೆಂಬ ಹೆಸರಿನಿಂದ ದ್ರುಪದರಾಜನ ಮಗಳಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿ ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯರ ಮರಣಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗುವಳು.] 3. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 4. ಅಗುರು ಶುಂಠಿ. 5. ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರಿ. "ಅಥ ಭಗಿನಿ ಸ್ವಸಾ. ಸಾ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಮ್ಬಾಪ್ಯವಂತಿ ಚ" ವೈಜಂ. 6. ತಾಯಿ. (ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗ.) "ಆರ್ಯೋ ಮಾರಿಷಮಾರ್ಗಕೌ. ಆಬ್ರಹ್ಮಕಸ್ತು ಪಿತಾಮ್ಬಾ ತು ಮಾತಾ" ವೈಜಂ.

ಅಮ್ಬಾಲಿಕಾ ಅಂಬಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಶೀರಾಜನ ಮೂರನೆಯ ಮಗಳು, ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯನ ಪತ್ನಿ, ಪಾಂಡು ಮಹಾರಾಜನ ತಾಯಿ. [ಶಂತನು ಮಹಾರಾಜನ ಮಗನಾದ ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯನು ಸಂತಾನವಿಲ್ಲದೆ ಕಾಲವಾಗಲು ಅವನ ಹಿರಿಯ ಹೆಂಡತಿಯಾದ ಅಂಬಿಕೆಯಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಸರಿಂದ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನೆಂಬ ಮಗನು ಹುಟ್ಟಿದರೂ ಅವನು ಕುರುಡನಾದುದರಿಂದ ಅವನ ತಾಯಿ

ಯಾದ ಸತ್ಯವತಿಯು ಅವನ ಕಿರಿಯ ಪತ್ನಿಯಾದ ಅಂಬಾಲಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಸಂತಾನಕ್ಕಾಗಿ ತನ್ನ ಹಿರಿಯ ಮಗನಾದ ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯನ್ನು ಪುನಃ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದಳು. ಅವಳ ನಿಯೋಗದಿಂದ ಅಂಬಾಲಿಕೆಯು ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಪಾಂಡುವೆಂಬ ಮಗನನ್ನು ಪಡೆದಳು.]

ಅಮ್ಬಿಕಾ ಅಂಬಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಾಯಿ. 2. ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ. 3. ಸೋದರಮಾವನ ಹೆಂಡತಿ. "ಅಮ್ಬಿಕಾ ಪಾರ್ವತೀಮಾತೃರ್ಭೃತರಾಷ್ಟ್ರಸ್ಯ ಮಾತರಿ" ಮೇದಿಂ. "ಅಮ್ಬಿಕಾ ಮಾತುಲಿಗೀಯೋ:" ನಾನಾರ್ಥಂ. 4. ಕಾಶೀ ರಾಜನ ಎರಡನೆಯ ಮಗಳು, ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ತಾಯಿ, ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯನ ಪತ್ನಿ. [ಶಂತನು ಮಹಾರಾಜನ ಮಗನಾದ ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯನು ಸಂತಾನವಿಲ್ಲದೆ ಕಾಲವಾಗಲು ಅವನ ತಾಯಿಯಾದ ಸತ್ಯವತಿಯು ಅವನ ಪತ್ನಿಯಾದ ಅಂಬಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಸಂತಾನಕ್ಕಾಗಿ ತನ್ನ ಹಿರಿಯ ಮಗನಾದ ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದಳು. ಅವಳ ನಿಯೋಗದಿಂದ ಅಂಬಿಕೆಯು ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನೆಂಬ ಮಗನನ್ನು ಪಡೆದಳು.] 5. ಕಿರಿಯ ಸಹೋದರಿ, ಕಿರಿಯ ತಂಗಿ. "ಅಥ ಭಗಿನಿ ಸ್ವಸಾ. ಸಾ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಮ್ಬಾಪ್ಯವಂತಿ ಚ ಕನಿಷ್ಠಾ ಕನ್ಯಸಾಮ್ಬಿಕಾ" ವೈಜಂ.

ಅಮ್ಬು ಅಂಬು (ಗ್ರಂ) 1. ಜಲ, ನೀರು. ಅಬಿ (ಶಬ್ದ) "ಊ" ಬಾಹುಂ. "ಸ್ವೇದಾಮ್ಬುಸ್ತಪಿತಮಜಾಯತೇತರಸ್ಯಾ:" ಮಾಘಂ ೮-೩೬. "ವಿತತಶೀಕರರಾಶಿಭಿಃಕುಚ್ಚಿತೈಃಪಲರೋಽವಿವೃತಿಭಿರಮ್ಬುಭಿ:" ಕಿರಾಂ ೪-೧೪. 2. ಲಗ್ನದಿಂದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಸ್ಥಾನ.

ಅಮ್ಬುಕಣ ಅಂಬುಕಣ (ಗ್ರಂ) ನೀರಿನ ಹನಿ, ಜಲಬಿಂದು, ನೀರಿನ ತೊಟ್ಟು.

ಅಮ್ಬುಕುಟಕ ಅಂಬುಕುಟಕ (ಗ್ರಂ) ಮೊಸಳೆ. ಅಮ್ಬುನಿ ಕುಟಕಮಿವ.

ಅಮ್ಬುಕಿರಾತ ಅಂಬುಕಿರಾತ (ಗ್ರಂ) ಮೊಸಳೆ. ಅಮ್ಬುನಿ ಕಿರಾತ ಇವ ಹಿಸ್ತ: "ನಕ್ರಸ್ತು ವಾರ್ಭಟ: ಸ್ಯಾದಮ್ಬುಕಿರಾತೋಽಮ್ಬುಕುಟಕ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಅಮ್ಬುಕೋಶ ಅಂಬುಕೋಶ (ಗ್ರಂ) ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ. "ಜಲಕೂರ್ಮಸ್ತಮ್ಬುಕೋಶೋ ವಸಾಡಯ: ಶಿಶುಕಶ್ಚ ಸ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಅಮ್ಬುಕೂರ್ಮ ಅಂಬುಕೂರ್ಮ (ಗ್ರಂ) ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ. ಅಮ್ಬುನ: ಕೂರ್ಮ: "ಶಿಶುಮಾರಸ್ತಮ್ಬುಕೂರ್ಮ ಉಣವೀರ್ಯೋ ಮಹಾವಸ:" ಅಭಿಂ ಚಿಂ.

ಅಮ್ಬುಕೇಸರ ಅಂಬುಕೇಸರ (ಗ್ರಂ) ನಿಂಬೆಗಿಡ.



ಅಮ್ಬುಜ ಅಂಬುಜ -ಜನ್ಮನ್-ಜನ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಶಂಖ. 2. ಚಂದ್ರ. 3. ಕೊಕ್ಕರೆ. 4. ಕರ್ಪೂರ. 5. ನೀರು ಹಲಸಿನಗಿಡ. (ನಂ) 6. ಕಮಲ, ತಾವರೆಹೂವು. ಅಮ್ಬುನಿ ಜಾಯತೆ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಓ:" (3-2-97). ಅಮ್ಬುನಿ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ ವಾ। 7. ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧ. "ಶತಧಾರಂ ಶತಾರಂ ಚಾಭ್ರೋತಂ ಭಿದಿರಮ್ಬುಜಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। (ವಿಂ) 8. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

ಅಮ್ಬುಜಾಸನ ಅಂಬುಜಾಸನ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಆಸನಾ-ಅಸನಾ. 2. ಲಕ್ಷ್ಮಿ.

ಅಮ್ಬುದ ಅಂಬುದ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಅಮ್ಬು ದದಾತಿ - ಡು ದಾನ್ (ದಾನೆ) "ಕ:" (3-2-3). "ಪ್ರವೃದ್ಧಮಂದ್ರಾಮ್ಬುದಧೀರನಾದ: ಕೃಷ್ಣಾಣಂವಾಮ್ಯಣಂಚರೇಕಹಂಸ:" ಮಾಘಂ 3-21. 2. ಕೊನ್ನಾರಿ ಗೆಡ್ಡೆ. (ವಿಂ) 3. ನೀರನ್ನು ಕೊಡುವ.

ಅಮ್ಬುಧರ ಅಂಬುಧರ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಅಮ್ಬುನಿ ಧರ: - ಧನ್ (ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (3-1-134). "ಶರದಮ್ಬುಧರಚ್ಚಾಯಾಗತ್ವಯೋ ಯೌವನಶ್ರಿಯ:" ಕಿರಾಂ 11-12. "ಶರತ್ಪ್ರಮೃಷ್ಠಾಮ್ಬುಧರೋಪರೋಧ:" ರಘುಂ 6-44. 2. ಕೊನ್ನಾರಿ ಗೆಡ್ಡೆ.

ಅಮ್ಬುಧಿ ಅಂಬುಧಿ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಅಮ್ಬುನಿ ಧೀಯಂತೇ - ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣೆ) "ಕಿ:" (3-3-93). "ಬಭೂವ ನಹುಪಸ್ತಸ್ಮಿನ್ ಏರಾವತ ಇವಾಮ್ಬುಧಿ" ಯಾದಂ 1-13. "ರತ್ನಾವಲೀರಮ್ಬುಧಿರಾಬವನ್ಧ" ಮಾಘಂ 3-36. 2. ನೀರು ತುಂಬಿರುವ ಪಾತ್ರೆ, ಬಿಂದಿಗೆ, ಘಟ, ಹೂಜಿ ಮುಂತಾದುದು. 3. ನಾಲ್ಕು ಸಂಖ್ಯೆ.

ಅಮ್ಬುನಿಧಿ ಅಂಬುನಿಧಿ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಅಮ್ಬುನಿ ನಿಧೀಯಂತೇ - ಅಮ್ಬು+ನಿ+ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣೆ) "ಕಿ:" (3-3-93). "ತ್ವರಿತಮಮ್ಬುನಿಧೇರಭಿಸಾರಿಕಾಮ್" ಯಾದಂ 3-39. "ಯೇ ಪಕ್ಷಿಣ: ಪ್ರಥಮಮಮ್ಬುನಿಧಿ ಗತಾಸ್ತೇ" ಮಾಘಂ 5-31.

ಅಮ್ಬುಪ ಅಂಬುಪ (ಪುಂ) 1. ವರುಣ. ಅಮ್ಬುನಿ ಪಾತಿ - ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಕ:" (3-2-3). 2. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. (ವಿಂ) 3. ನೀರನ್ನು ಕುಡಿಯುವ. ಅಮ್ಬುನಿ ಪಿಬತಿ - ಪಾ (ಪಾನೆ) "ಕ:" (3-2-3).

ಅಮ್ಬುಪ್ರಸಾದ ಅಂಬುಪ್ರಸಾದ -ಪ್ರಸಾದನ -ಪ್ರಸಾದನ (ಪುಂ) ಚಿಲ್ಲದಬೀಜ. ಅಮ್ಬುನಿ ಪ್ರಸಾದಯತಿ - ಅಮ್ಬು+ಪ್ರ+ಫಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" "ಲ್ಯು:" ವಾ (3-1-134).

ಅಮ್ಬುಭೃತ್ ಅಂಬುಭೃತ್ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ, ಮುಗಿಲು. ಅಮ್ಬು ಬಿಭತಿ - ಡು ಭೃ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಕ್ರಿಪ್" (3-2-96). 2. ಸಮುದ್ರ. 3. ಕೊನ್ನಾರಿ, ಭದ್ರಮುಸ್ತೆ. (ವಿಂ) 4. ನೀರನ್ನು ಹೊರುವವನು.

ಅಮ್ಬುಮುಚ್ ಅಂಬುಮುಚ್ (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಅಮ್ಬುನಿ ಮುಚ್ಛತಿ - ಮುಚ್ಛ (ಮೋಕ್ಷಣೆ) "ಕ್ರಿಪ್" (3-2-96). "ವಿಗಲಿತಜಲಭಾರಶುಕ್ಲಭಾಸಾಂ ನಿಚಯ ಇವಾಮ್ಬುಮುಚಾಂ ನಗಾಧಿ-ರಾಜ:" ಕಿರಾಂ 4-37.

ಅಮ್ಬುರಾಜ ಅಂಬುರಾಜ (ಪುಂ) 1. ವರುಣ. 2. ಸಮುದ್ರ. ಅಮ್ಬುನಾಂ ರಾಜಾ "ಡಚ್" (4-4-91).

ಅಮ್ಬುರಾಶಿ ಅಂಬುರಾಶಿ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ. ಅಮ್ಬುನಾಂ ರಾಶಿ: ಯತ್ರ। "ಪ್ರಸಕ್ತಪಾತಶ್ಚರಮಾಮ್ಬುರಾಶಿ" ಯಾದಂ 2-39. "ಭರ್ಮಾಗತೇರಮ್ಬುಭಿರಮ್ಬುರಾಶಿ:" ಮಾಘಂ 3-36.

ಅಮ್ಬುರುಹ ಅಂಬುರುಹ (ನಂ) ಕಮಲ, ತಾವರೆಹೂವು. ಅಮ್ಬುನಿ ರೋಹತಿ - ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡುಭವಿ ಚ) "ಕ್ರಿಪ್" (3-2-96). "ವಿಸ್ತೃತವರೇರಮ್ಬುರುಹಾಂ ರಜೋಭಿರ್ಮಮಸ್ವಸುಶ್ಚಿತ್ರ ಇವೋದಭಾರ:" ಮಾಘಂ 3-11.

ಅಮ್ಬುರುಹ ಅಂಬುರುಹ (ನಂ) 1. ಕಮಲ, ತಾವರೆಹೂವು. ಅಮ್ಬುನಿ ರೋಹತಿ - ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡುಭವಿ ಚ) "ಕ:" (3-1-134). "ಶ್ರವಣನಿಯಮಿತೇನ ಕಾಂತಮನ್ಯಾ ಸಮಮಸಿ-ತಾಮ್ಬುರುಹೇಣ ಚಕ್ಷುಷಾ ಚ" ಮಾಘಂ 7-46. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರುಹಾ -ರುಹಾ. 2. ಸ್ಥಲಕಮಲ, ನೆಲದಾವರೆ.

ಅಮ್ಬುರುಹಿಣಿ ಅಂಬುರುಹಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಮಲಲತೆ. 2. ಕಮಲಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇಶ (ಸರೋವರ). ಅಮ್ಬು-ರುಹಾಣ್ಯತ್ರ ಸಂತಿ "ಇನಿ:" (4-2-134). "ನೀಯತೇ ಸ್ಮ ನತಿ-ಮುಜ್ಜಿತಹರ್ಷಂ ಪಕ್ಷುಜಂ ಮುಖಮಿವಾಮ್ಬುರುಹಿಣ್ಯಾ" ಕಿರಾಂ 9-14.

ಅಮ್ಬುವಾಹ ಅಂಬುವಾಹ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಅಮ್ಬುನಿ ವಹತಿ - ವಹ (ಪ್ರಾಪ್ತೆ) "ಅಞ್" (3-2-1). "ರಸನ್ನರೋದೀದ್ಭೂಷಮಮ್ಬುವರ್ಪವ್ಯಾಜೇನ ಯಸ್ಯಾ ಬಹಿರಮ್ಬುವಾಹ:" ಮಾಘಂ 3-41. "ಜಟಾಸ್ತಟಿತ್ವಂತಮಿವಾಮ್ಬುವಾಹಮ್" ಕಿರಾಂ 3-1. 2. ಕೊನ್ನಾರಿ ಗೆಡ್ಡೆ, ಭದ್ರಮುಸ್ತೆ. (ವಿಂ) 3. ನೀರು ಹೊರುವವನು.

ಅಮ್ಬುವಾಹಿನ್ ಅಂಬುವಾಹಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಅಮ್ಬುನಿ ವಹತಿ - ವಹ (ಪ್ರಾಪ್ತೆ) "ಣಿನಿ:" (3-2-96). 2. ಕೊನ್ನಾರಿ, ಭದ್ರಮುಸ್ತೆ. (ವಿಂ) 3. ನೀರನ್ನು ಹೊರುವವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವಾಹಿನಿ -ವಾಹಿನೀ. 4. ಹಡಗಿನಿಂದ ನೀರನ್ನು ಹೊರಕ್ಕೆ ಚೆಲ್ಲಲು ಮಾಡಿರುವ ಮರದ ಪೀಪಾಯಿ.



ಅಮ್ಬವಿಹಾರ ಅಂಬುವಿಹಾರ (ಪುಂ) ಜಲಕ್ರೀಡೆ, ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಆಟವಾಡುವುದು.

ಅಮ್ಬವೇತಸ ಅಂಬುವೇತಸ (ಪುಂ) ನೀರು ಹಬ್ಬಿಗಿಡ.

ಅಮ್ಬಸಂರಣ ಅಂಬುಸಂರಣ (ನಂ) ಜಲಪ್ರವಾಹ, ನೀರು ಹರಿಯುವುದು.

ಅಮ್ಬುಸರ್ಪಿಣಿ ಅಂಬುಸರ್ಪಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಗಣ್ಣೆ, ಜಲಾಕೆ. ಅಮ್ಬುನಿ ಸರ್ಪತಿ - ಸೃಪ್ತ (ಗತೌ) "ಣಿನಿ:" (೩-೨-೭೮)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। "ಪಟಾಲುಕಾ ಜಲೋಕಾಮ್ಬುಸರ್ಪಿಣಿ ವೇಣಿವೇಧಿನಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಅಮ್ಬಕೃತ ಅಂಬುಕೃತ (ನಂ) ಕಳವು ಹೊರಡುವ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಆಡುವ ಮಾತು, ಬಾಯಲ್ಲಿ ಉಗುಳು ತುಂಬಿರುವಾಗ ಆಡುವ ಮಾತು. ಅನಮ್ಬ ಅಮ್ಬ (ತದ್ವುಕ್ತಂ) ಕೃತಮ್। "ಅನುರಸಿತಗುಣಿ ಸ್ತ್ಯಾನಮಮ್ಬಕೃತಾನಿ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೬।

ಅಮ್ಬಸ್ ಅಂಭಸ್ (ನಂ) 1. ಜಲ, ನೀರು. ಅಮ್ಬತೇ - ಅಭಿ (ಶಬ್ದೇ) "ಅಸುನ್" (೩ಂ ೪-೧೮೮)। "ಅಮ್ಬೋಭಿಠ್ಲಕ್ಷಿತ-ತುಙ್ಗರೋಧಸ: ಪ್ರತೀಪನಾಮ್ನಿ: ಕುಸ್ತೇ ಸ್ಮ ನಿಮ್ನಗಾ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೫೭। "ಭಯಾದಿವಾಶ್ಲಿಷ್ಯ ಜಘಾಹತೇಽಮ್ಬಸಿ" ಕಿರಾಂ ೮-೪೬। 2. ದೇವತೆ. 3. ಅಸುರ. 4. ಮನುಷ್ಯ. 5. ಲಗ್ನದಿಂದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಸ್ಥಾನ. 6. ಪಿತೃಲೋಕ. (ದ್ವಿಂ ವಂ) 7. ಆಕಾಶ ಮತ್ತು ಭೂಮಿ.

ಅಮ್ಬಸಾನಿಧಿ ಅಂಭಸಾನಿಧಿ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ. ಷಷ್ಠಾ ಅಲುಕ್ ಬಾಹುಂ। "ಶಿಖಾಭಿರಾಶ್ಲಿಷ್ಠ ಇವಾಮ್ಬಸಾನಿಧಿ:" ಮಾಘಂ ೧-೨೦।

ಅಮ್ಬೋಜ ಅಂಭೋಜ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ. 2. ಶಂಖ. 3. ಕೊಕ್ಕರೆ. 4. ಕರ್ಪೂರ. (ನಂ) 5. ಕಮಲ, ತಾವರೆಹೂವು. ಅಮ್ಬಸಿ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಙ:" (೩-೨-೯೭)। "ಸಂಸರ್ಪಿಭಿ: ಪಯಸಿ ಗೌರಿಕರೇಣು-ರಾಗೇರ್ಮೋಜಗರ್ಭರಜಸಾಙ್ಗನಿಷಾಙ್ಗಿಣಾ ಚ" ಮಾಘಂ ೫-೩೯। (ವಿಂ) 6. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

ಅಮ್ಬೋಜಜನ್ಮನ್ ಅಂಭೋಜಜನ್ಮನ್ -ಜಾತ -ಜಾತ, -ಯೋನಿ -ಯೋನಿ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಅಮ್ಬೋಜೇ ಜನ್ಮಾಸ್ಯ ಜಾತೌ ವಾ ಅಮ್ಬೋಜಂ ಯೋನಿರೂಪತಿ-ಸ್ಥಾನಮಸ್ಯ ವಾ।

ಅಮ್ಬೋಜಿನಿ ಅಂಭೋಜಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಮಲಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇಶ. ಅಮ್ಬೋಜಾನ್ಯತ್ರ ಸಂತಿ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೩೫)। 2. ಕಮಲಗಳ ಸಮೂಹ. 3. ಕಮಲ ಲತೆ.

ಅಮ್ಬೋದ ಅಂಭೋದ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ, ಮುಗಿಲು. ಅಮ್ಬೋ ದದಾತಿ - ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। "ದೃಪ್ತಾರಿಸಂತ್ರಾಸಖಿಲೀಕೃತಾತ್ಸ ಕಥಂಚಿದಮ್ಬೋದ-ವಿಹಾರಮಾಗತಿ" ಕುಮಾಂ ೧೨-೨। 2. ಕೊನ್ನೂರಿ, ಭದ್ರಮುಸ್ತೆ. (ವಿಂ) 3. ನೀರನ್ನು ಕೊಡುವ.

ಅಮ್ಬೋಧರ ಅಂಭೋಧರ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ, ಮುಗಿಲು. 2. ಕೊನ್ನೂರಿ, ಭದ್ರಮುಸ್ತೆ. ಅಮ್ಬಸಾಂ ಧರ:। "ನವೋದಮ್ಬೋಧರಧರದರ್ಶನೇ ಯುಧಾಯ ಕ್ಷೌ ಮಕರೇ ಮಹತ್ತರೇ" ಕುಮಾಂ ೧೪-೯।

ಅಮ್ಬೋಧಿ ಅಂಭೋಧಿ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಅಮ್ಬಾಸಿ ಧೀಯಂತೇಽತ್ರ - ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಕಿ:" (೩-೩-೯೩)। "ಅಪಾರಮಮೃತಾಮ್ಬೋಧಿಮಮನ್ಯಂತ ದಿವೌಕಸ:" ಯಾದಂ ೧-೭೪।

ಅಮ್ಬೋನಿಧಿ ಅಂಭೋನಿಧಿ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಅಮ್ಬಾಸಿ ನಿಧೀಯಂತೇಽತ್ರ - ಅಮ್ಬಸ್ + ನಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣ-ಪೋಷಣಯೋ:) "ಕಿ:" (೩-೩-೯೩)। "ಅಮ್ಬೋನಿಧಿ-ರನ್ತರಯಂತಿ ಧೌಷಾನ್" ಯಾದಂ ೧೮-೧೧೫।

ಅಮ್ಬೋಮುಚ್ ಅಂಭೋಮುಚ್ (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ, ಮುಗಿಲು. ಅಮ್ಬಾಸಿ ಮುಚ್ಛತಿ - ಮುಚ್ಛ (ಮೋಕ್ಷಣೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬)। "ಕಾಲೇ ಕಾಲಿಯಕಾಯಕಾಲವಪುಷ: ಪಾಸುನ್ ಗಜಾಮ್ಬೋಮುಚ:" ಮಾಘಂ ೧೭-೬೯।

ಅಮ್ಬೋರಾಶಿ ಅಂಭೋರಾಶಿ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಅಮ್ಬಸಾಂ ರಾಶಿರ್ಯತ್ರ।

ಅಮ್ಬೋರುಹ್ ಅಂಭೋರುಹ್ -ರುಹ್ -ರುಹ್ (ನಂ) 1. ಕಮಲ, ತಾವರೆಹೂವು. ಅಮ್ಬಸಿ ರೋಹತಿ - ರಹ (ವೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ ಚ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬)। "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫)ವಾ। "ದಧಾನಮಮ್ಬೋರುಹೇಸರಘೃತೀರ್ಜಟಾ: ಶರ-ಚ್ಚಂದ್ರಮರೀಚಿರೋಚಿಷಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೫। "ಅಮ್ಬೋರುಹಾಣಾಮವ-ಲೇಪಸೀಮಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೩-೭೦। 2. ಕೊಕ್ಕರೆ, ನೀರುಹಕ್ಕಿ.

ಅಮ್ಬಯ ಅಮ್ಬಯ (ವಿಂ) 1. ಜಲವಿಹಾರ. 2. ನೀರಿನಿಂದ ತುಂಬಿದ, ನೀರಾಗಿರುವ. ಅಪಾಂ ವಿಕಾರ: "ಮಯಟ್" (ವಾಂ ೪-೩-೧೪೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಮಯಿ -ಮಯಿ.

ಅಮ್ಬ ಅಂಬ (ಪುಂ) 1. ಹುಳಿ, ಅಮ್ಲರಸ, ಆರು ಭೋಜ್ಯ ರಸಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಅಬಿ (ಶಬ್ದೇ) "ಕಲ:" (೩ಂ ೪-೧೦೮)। 2. ಹುಳಿ ಹಬ್ಬಿಗಿಡ. 3. ನಿಂಬಿಗಿಡ. (ನಂ) 4. ಮಜ್ಜೆಗೆ. 5. ನಿಂಬೆ ಹಣ್ಣು. (ವಿಂ) 6. ಹುಳಿಯಾಗಿರುವ, ಅಮ್ಲರಸದಿಂದ ಕೂಡಿದ.



ಅಮಲ ಅಮ್ಲ (ಪ್ರಂ) "ಅಮಲ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅಮ (ಗತ್ಯಾದೌ) "ಕಲಃ" ಬಾಹ್ಯಂ. "ಕಡ್ಡಮಲವಣಾತ್ಯುಣ್-ತೀಕ್ಷ್ಣರೂಪವಿದಾಹಿನಃ. ಆಹಾರಾ ರಾಜಸಸ್ಯೇಷಾಃ" ಗೀತಾ ೧೭-೯.

ಅಮಲಕ ಅಮ್ಲಕ (ಪ್ರಂ) 1. ಗಜನಿಂಬಿಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಗಜನಿಂಬೆಹಣ್ಣು.

ಅಮಲಕೇಸರ ಅಮ್ಲಕೇಸರ (ಪ್ರಂ) 1. ಮಾದಳದಿಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಮಾದಳದ ಹಣ್ಣು.

ಅಮಲಜಂಬೀರ ಅಮ್ಲಜಂಬೀರ (ಪ್ರಂ) 1. ನಿಂಬಿಗಿಡ. (ನಂ) 2. ನಿಂಬೆಹಣ್ಣು.

ಅಮಲನಿಶಾ ಅಮ್ಲನಿಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಜೋರದಿಗಿಡ.

ಅಮಲಪಂಚಕ ಅಮ್ಲಪಂಚಕ (ನಂ) ಐದು ಹುಳಿಯ ಹಣ್ಣುಗಳು. ಅಮಲಾನಾಂ ಪಂಚಕಮ್. "ಜಂಬೀರಂ ನಾಗರಜ್ಜಂ ಚ ತಥಾಮಲಂ ವೇತಸಂ ಪುನಃ. ತಿಂತಿಡಿಂಕಂ ಬೀಜಪೂರಮಮಲಪಂಚಕಂ ಸ್ಮೃತಮ್". ನಿಂಬೆ, ಹೇರಿಕೆ, ಹುಳಿಹಬ್ಬೆ, ಹುಣಿಸೆ ಮತ್ತು ಮಾದಳ ಇವು ಅಮ್ಲಪಂಚಕ.

ಅಮಲಪನಸ ಅಮ್ಲಪನಸ (ಪ್ರಂ) 1. ಗಜನಿಂಬಿಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಗಜನಿಂಬೆಹಣ್ಣು.

ಅಮಲಪಿತ್ತ ಅಮ್ಲಪಿತ್ತ (ನಂ) ಒಂದು ರೋಗ, ತಿಂದ ಆಹಾರವನ್ನು ಹುಳಿಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವ ರೋಗ.

ಅಮಲಪೂರ ಅಮ್ಲಪೂರ (ನಂ) ಹುಣಿಸೆಹಣ್ಣು. ಅಮಲ ಪೂರಯತಿ - ಪೂರ (ಪೂರಣ) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪).

ಅಮಲಫಲ ಅಮ್ಲಫಲ (ಪ್ರಂ) 1. ಹುಣಿಸೆಮರ. (ನಂ) 2. ಹುಣಿಸೆಹಣ್ಣು.

ಅಮಲರಸ ಅಮ್ಲರಸ (ಪ್ರಂ) 1. ಹುಳಿ. (ವಿಂ) 2. ಹುಳಿ ಯಾಗಿರುವ, ಅಮ್ಲರಸದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಅಮಲಲೋಣಿಕಾ ಅಮ್ಲಲೋಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಲ್ಲಂಪುರಿಚಿ ಗಿಡ.

ಅಮಲವರ್ಗ ಅಮ್ಲವರ್ಗ (ಪ್ರಂ) ಹುಳಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ವಸ್ತುಗಳ ಗುಂಪು; ದಾಳಿಂಬೆ, ನೆಲ್ಲಿ, ಮಾದಳ, ಅಮಟೆ, ಬೇಲ, ಕಮರಿಕೆ, ಎಲಚಿ (ಬೋರೆ), ಹುಣಿಸೆ, ಪುಲ್ಲಂಪುರಿಚಿ, ನಿಂಬೆ, ಗಜನಿಂಬೆ, ಹೇರಿಕೆ, ಹುಳಿಹಬ್ಬೆ, ಮೊಸರು, ಮದ್ಯ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಅಮಲವಾಸ್ತುಕ ಅಮ್ಲವಾಸ್ತುಕ (ಪ್ರಂ) ಹುಳಿಹಬ್ಬೆಗಿಡ.

ಅಮಲವೃಕ್ಷ ಅಮ್ಲವೃಕ್ಷ (ಪ್ರಂ) ಹುಣಿಸೆಮರ.

ಅಮಲವೇತಸ ಅಮ್ಲವೇತಸ (ಪ್ರಂ) ಹುಳಿಹಬ್ಬೆಗಿಡ.

ಅಮಲಸಾರ ಅಮ್ಲಸಾರ (ಪ್ರಂ) 1. ನಿಂಬಿಗಿಡ. 2. ಹುಳಿ ಹಬ್ಬೆಗಿಡ. (ನಂ) 3. ಅಂಬಲಿ, ಗಂಜಿ.

ಅಮಲಾನ ಅಮ್ಲಾನ (ಪ್ರಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಗೋರಂಟಿ. (ವಿಂ) 2. ಬಾಡದಿರುವ.

ಅಮಲಿಕಾ ಅಮ್ಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹುಣಿಸೆಮರ. 2. ಪುಲ್ಲಂ ಪುರಿಚಿಗಿಡ. 3. ಹುಳಿಹಣ್ಣು.

ಅಮಲಿ ಅಮ್ಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಲ್ಲಂಪುರಿಚಿ.

ಅಮಲೋದ್ಗಾರ ಅಮ್ಲೋದ್ಗಾರ (ಪ್ರಂ) ಹುಳಿಹಣ್ಣು.

ಅಯ ಅಯ (ಪ್ರಂ) 1. ಪೂರ್ವಜನ್ಮದ ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯ. 2. ಒಳ್ಳೆಯ ಅದೃಷ್ಟ, ಒಳ್ಳೆಯದನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಭಾಗ್ಯ. ಏತಿ ಸುಖಮನೇನ - ಇನ್ (ಗತೌ) "ಏಃ" (೩-೩-೧೧೮). "ಸ ಗುಪ್ತಮೂಲಪ್ರತ್ಯಂತಃ ಶುದ್ಧಪಾಣಿರಯಾ-ನ್ವಿತಃ" ರಘುಂ ೪-೨೬. 3. ಸಗಡೆಯ ದಾಳ. ಅಯತೇ ಜಯಮನೇನ.

ಅಯಃಪಾನ ಅಯಃಪಾನ (ನಂ) (ಪಾಪಮಾಡಿದವರಿಗೆ) ಕರಗಿಸಿದ ಕಬ್ಬಿಣವನ್ನು ಕುಡಿಯಿಸುವ ಒಂದು ನರಕ.

ಅಯಃಶೂಲ ಅಯಃಶೂಲ (ನಂ) 1. ಈಟಿ, ಭರ್ಜಿ, ಕುಂತ, ಕಬ್ಬಿಣದ ಒಂದು ಚೂಪಾದ ಆಯುಧ. 2. ಒಂದು ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ಉಪಾಯ.

ಅಯಜ್ಞಿಯ ಅಯಜ್ಞಿಯ (ವಿಂ) 1. ಯಜ್ಞಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯ ವಲ್ಲದ, ಯಜ್ಞಕರ್ಮಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಲ್ಲದ. ನ ಯಜ್ಞಮಹತಿ - ಯಜ್ಞ "ಏಃ" (೪-೧-೭೧). ನಂ ತಂ. 2. ಯಜ್ಞವನ್ನು ಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಲ್ಲದ. 3. ಯಜ್ಞಕಾಲದಲ್ಲಿ ಆಡಬಾರದ ಅಸಭ್ಯ (ಗ್ರಾಮ್ಯ) ಮಾತು.

ಅಯತ ಅಯತ (ವಿಂ) 1. ಇಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹವಿಲ್ಲದ. ಯಮ್ಯತೇ-ಯಮ (ಆಪರಮೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). ನಂ ತಂ. 2. ಪ್ರಯತ್ನವಿಲ್ಲದ. ಯತತೇ - ಯತಿ (ಪ್ರಯತೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨). ನಂ ತಂ.

ಅಯತಿ ಅಯತಿ (ವಿಂ) ಪ್ರಯತ್ನವಿಲ್ಲದ. "ಅಯತಿಃ ಶ್ರದ್ಧಯೋಪೇತಃ ಯೋಗಾಚ್ಚಲಿತಮಾನಸಃ" ಗೀತಾ ೬-೩೭.

ಅಯತನ ಅಯತನ (ಪ್ರಂ) 1. ಯತ್ನವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಆಯಾಸ ವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ಯತನಃ. "ತದವಾಪ್ನೋತ್ಯಯತನೇನ ಯೋ ಹಿನಸ್ತಿ ನ ಕಿಂಚನ" ಮನ್ವಂ ೪-೪೭. (ವಿ) 2. ಪ್ರಯತ್ನವಿಲ್ಲದ.

ಅಯಥಾ ಅಯಥಾ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಆಯೋಗ್ಯವಾಗಿ. 2. ಇರ ಬೇಕಾದುದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬೇರೆ ರೀತಿಯಾಗಿ, ಅಕ್ರಮ ವಾಗಿ, ಸುಳ್ಳಾಗಿ.

ಅಯಥಾತಥ ಅಯಥಾತಥ (ವಿಂ) ನಿಜವಲ್ಲದ, ಸುಳ್ಳಾದ, ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ. ತಥಾತ್ವಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ ಯಥಾತಥಮ್. ನಂ ತಂ.

ಅಯರ್ಯ ಅಯರ್ಯಾರ್ಥ (ವಿಂ) ಅರ್ಥಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರ ವಲ್ಲದ. ನ ಯರ್ಯಃ. "ಪರೀತ್ಯಕ್ತಾನ್ಯಾರ್ಥೋ ನಿಯತಮಯರ್ಯಃ"



ಕ್ಷಿತಿಪತಿ: " ಮುಧ್ರಾಂ ೩-೪ | 2. ನಿಜವಲ್ಲದ, ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ. " ಅಯಾಚಿತಕ್ರಿಯಾರಂಭ: ಪತಿಭಿ: ಕಿ ತವೇಕ್ಷಿತ: " ಕಿರಾಂ ೧-೧-೫೨ |

ಅಯಾಚಿತಾನುಭವ ಅಯಾಚಿತಾನುಭವ (ಪುಂ) ಅದಲ್ಲದ (ಬೇರೊಂದು) ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಅದು ಎಂಬ ತಪ್ಪು ತಿಳಿವಳಿಕೆ (ಜ್ಞಾನ). ಅಯಾಚಿತಾನುಭವಾನುಭವ: ತದಭಾವತಿ ತತ್ಪ್ರಕಾರಕಾನುಭವೋಪಯಾಚಿತಾನುಭವ: | ನಂ ತಂ | ಶುಕ್ತಿ (ಕಪ್ಪೆಚಿಪ್ಪು) ಯನ್ನು ನೋಡಿ (ಭ್ರಾಂತಿಯಿಂದ) ರಜತ (ಬೆಳ್ಳಿ) ವೆಂದು ತಿಳಿಯುವುದು ಅಯಾಚಿತಾನುಭವ. ಇದನ್ನೇ "ಅಪ್ರಮಾ" ಎನ್ನುವರು.

ಅಯಾಚಿತ ಅಯಾಚಿತವತ್ (ಅವ್ಯಂ) ಅನುರೂಪವಲ್ಲದೆ, ಅಯೋಗ್ಯವಾಗಿ, ಅಕ್ರಮವಾಗಿ, ತಪ್ಪಾಗಿ.

ಅಯನ ಅಯನ (ನಂ) 1. ಗಮನ, ಸಂಚಾರ. ಅಯ (ಗತೌ) "ನ್ಯುತ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. (ಮೇಷಾದಿ ಹನ್ನೆರಡು ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ) ಸೂರ್ಯನ ಗತಿ. [ರಾಶಿ ಚಕ್ರದಲ್ಲಿ ಮಕರ ರಾಶಿಯಿಂದ ಮಿಥುನ ರಾಶಿಯವರೆಗೆ ಸೂರ್ಯನು ಸಂಚರಿಸುವಾಗ ಉತ್ತರಾಯಣ. ಕರ್ಕಾಟಕ ರಾಶಿಯಿಂದ ಧನುರಾಶಿಯವರೆಗೆ ಸಂಚರಿಸುವಾಗ ದಕ್ಷಿಣಾಯನ.] 3. ಅಶ್ವಯುಜ್ಯಾನ್, ಪ್ರಾಪ್ಯಯುಜ್ಯಾನ್. "ಆಂಪೋ ನಾರಾ ಇತಿ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಆಂಪೋ ವೇ ನರಸುನವ: | ತಾ ಯದಸ್ಯಾಯನಂ ಪೂರ್ವೇ ತೇನ ನಾರಾಯಣ: ಸ್ಮೃತ: " ಮನುಂ ೧-೧೦ | 4. ಸೈನ್ಯವ್ಯೂಹದ ಪ್ರವೇಶಮಾರ್ಗ. "ಅಯನೇಷು ಚ ಸರ್ವೇಷು ಯಥಾಭಾಗಮವಸ್ಥಿತಾ: | ಭೀಷಮೇವಾಭಿರಕ್ಷಂತು ಭವಂತ: ಸರ್ವೇ ಏವ ಹಿ" ಗೀತಾ ೧-೧೧ | 5. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. "ಅಗಸ್ಯಚಿಹ್ನಾದಯನಾತ್" ರಘುಂ ೧೬-೪೪ | 6. ಒಂದು ಯಾಗ. 7. ಅಯನಾಭಿಮಾನಿ ದೇವತೆ. 8. ಸಂಕ್ರಾಂತಿಯ ಸಮಯ. [ಕರ್ಕಾಟಕ ಸಂಕ್ರಾಂತಿಯು ದಕ್ಷಿಣಾಯನ. ಮಕರ ಸಂಕ್ರಾಂತಿಯು ಉತ್ತರಾಯಣ.] 9. ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ. "ತಮೇವ ವಿದಿತವಾಸ್ತಿಮೃತ್ಯುಮೇತಿ ನಾನ್ಯ: ಪನ್ಥಾ ಅಯನಾಯ ವಿಚತೇ" ಶ್ರುತಿ: | 10. ಗೃಹ, ಮನೆ. 11. ಸ್ಥಾನ, ಜಾಗ. 12. ಅಯನದ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ.

ಅಯನಕಾಲ ಅಯನಕಾಲ (ಪುಂ) ಮಕರ ಸಂಕ್ರಾಂತಿಯಿಂದ ಕರ್ಕಾಟಕ ಸಂಕ್ರಾಂತಿ ಮತ್ತು ಕರ್ಕಾಟಕ ಸಂಕ್ರಾಂತಿಯಿಂದ ಮಕರ ಸಂಕ್ರಾಂತಿ ಇವುಗಳ ಮಧ್ಯಕಾಲ.

ಅಯಾಚಿತ ಅಯಾಚಿತ (ವಿಂ) ಅಡ್ಡಿಯಿಲ್ಲದ, ನಿರ್ಬಂಧವಿಲ್ಲದ, ತಡೆಯಿಲ್ಲದ, ಸ್ವತಂತ್ರನಾದ.

ಅಯವ ಅಯವ (ಪುಂ) 1. ಮಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಕ್ರಿಮಿ. 2. ಶತ್ರು. ನ ಯತಿ ಸಮ್ಬಂಧಾತಿ - ಯ (ಮಿಶ್ರಣೇಽಮಿಶ್ರಣೇ ಚ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | 3. ಕೃಷ್ಣ ಪಕ್ಷ. (ವಿಂ) 4. ಯವ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ, ತಿಲದಿಂದ ಮಾಡುವ (ಪಿತ್ತ ಕರ್ಮ). ನ ವಿಚತೇ ಯವೋ ಯತ್ರ |

ಅಯಶಸ್ ಅಯಶಸ್ (ನಂ) 1. ಅಪವಾದ, ಅಪಕೀರ್ತಿ, ಅಪಖ್ಯಾತಿ. "ಅಯಶೋಭಿದುರಾಲೋಕೇ ಕೋಪಧಾ ಮರಣಾದೃತೇ" ಮಾಘಂ ೧೯-೫೮ | (ವಿಂ) 2. ಕೀರ್ತಿಪಡೆಯದ, ಹೆಸರು ಪಡೆಯದ.

ಅಯಶಸ್ಕರ ಅಯಶಸ್ಕರ (ವಿಂ) ಅಪಕೀರ್ತಿಯನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ. ಅಯಶ: ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣೇ) "ಃ" (೩-೨-೨೦ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೫-೧-೧೫) | ಅಯಶಸ್ಕರೀ ಅಯಶಸ್ಕರೀ.

ಅಯಶಸ್ಯ ಅಯಶಸ್ಯ (ವಿಂ) ಅಪಕೀರ್ತಿಯನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ, ಅವಮಾನಕರವಾದ, ಕೆಟ್ಟ ಹೆಸರನ್ನು ತರುವ. ಯಶಸೇ ಹಿತಮ್ "ಯತ್" (೫-೧-೫) | ಯಶಸ್ಯಮ್ | ನಂ ತಂ |

ಅಯಶ್ಚೂರ್ಣ ಅಯಶ್ಚೂರ್ಣ. (ನಂ) ಕಬ್ಬಿಣದ ಪುಡಿ, ಕಬ್ಬಿಣದ ಪುಡಿಯಿಂದ ತಯಾರಿಸಿದ ಔಷಧ, ಅಯೋ ಭಸ್ಮ.

ಅಯಸ್ ಅಯಸ್ (ನಂ) 1. ಕಬ್ಬಿಣ. ಅಯ (ಗತೌ) "ಅಸುನ್" (೩ಂ ೪-೧೮೮) | 2. ಉಕ್ಕು.

ಅಯಸ್ಕಂಸ ಅಯಸ್ಕಂಸ (ಪುಂ) ಉಕ್ಕಿನಿಂದ ತಯಾರಾದ ಕುಡಿಯುವ ಬಟ್ಟಲು.

ಅಯಸ್ಕಾಂತ ಅಯಸ್ಕಾಂತ (ಪುಂ) ಸೂಜಿಗಲ್ಲು, ಲೋಹ ಚುಂಬಕ, ಲೋಹಗಳನ್ನು ಆಕರ್ಷಿಸುವ ಕಬ್ಬಿಣದ ಅದುರು. ಅಯಸ್ತು ಕಾಂತ: | "ಶಮ್ಮೋರ್ಯತಧ್ವಮಾಕ್ರಡ್ತುಮಯಸ್ಕಾಂತೇನ ಲೋಹವತ್" ಕುಮಾಂ ೨-೫೯ |

ಅಯಸ್ಕಾರ ಅಯಸ್ಕಾರ (ಪುಂ) ಕಮ್ಮಾರ, ಕಬ್ಬಿಣದ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು. ಅಯ: ಅಯೋವಿಕಾರಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣೇ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) | ಸುಡ್ (೮-೩-೪೬) |

ಅಯಸ್ಕುಮ್ಭ ಅಯಸ್ಕುಮ್ಭ (ಪುಂ) ಕಬ್ಬಿಣದ ಬಿಂದಿಗೆ.

ಅಯಸ್ಕುಶಾ ಅಯಸ್ಕುಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಬ್ಬಿಣದ ಸರಪಳಿ ಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹಗ್ಗ. ಅಯ:ಸಹಿತಾ ಕುಶಾ |

ಅಯಸ್ಕೃತಿ ಅಯಸ್ಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಸ್ಮರೋಗದ ಜಕೆತ್ತೆ.

ಅಯಾಚಿತ ಅಯಾಚಿತ (ನಂ) 1. ಯಾಚಿಸದೆ ದೊರೆತ ಭಿಕ್ಷೆ. (ವಿಂ) 2. ಯಾಚಿಸಲ್ಪಡದ, ಬೇಡಲ್ಪಡದ,



ಅಯಾಜ್ಯ ಅಯಾಜ್ಯ (ವಿಂ) ಯಾಗಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಲ್ಲದ, ಯಾಗಮಾಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಲ್ಲದ, ಪತಿತ. ನ ಯಾಜ-  
ಯಿತುಮಹಃ — ಯಜ(ದೇವಪೂಜಾಯಾಮ್) “ಘೃತ್” (೩-೧-೧೨೪)।  
“ಪತೀತೇನ ಸಹೋಷಿತವಾ ಜಾನ್ತು ಸಂವತ್ಸರಂ ನರಃ। ಮಿಶ್ರಿತಸ್ತೇನ  
ಸೋಮದಾಂತೇ ಸ್ವಯಂ ಚ ಪತೀತೋ ಭವೇತ್। ಯಾಜನಂ ಯೋನಿಸಂಬಂಧಂ  
ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯಂ ಸಹಭೋಜನಮ್। ಕೃತ್ವಾ ಸದ್ಯಃ ಪತತ್ಯೇಷ ಪತೀತೇನ ನ  
ಸಂಶಯಃ”।

ಅಯಾಜ್ಯಯಾಜನ ಅಯಾಜ್ಯಯಾಜನ (ನಂ) (ಯಾಗಕ್ಕೆ)  
ಅನರ್ಹನಾದವರಿಂದ ಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡಿಸುವುದು,  
ಪತಿತನಿಂದ ಯಾಗಮಾಡಿಸುವುದು.

ಅಯಾತಯಾಮ ಅಯಾತಯಾಮ (ವಿಂ) 1. ಹಳೆಯದಲ್ಲದ,  
ಹೊಸದಾದ, ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡದ. 2. ದೋಷ  
ವಿಲ್ಲದ. ನ ಯಾತೋ ಯಾಮೋ ಯಸ್ಯ।

ಅಯಾನ ಅಯಾನ (ನಂ) 1. ಸ್ವಭಾವ. ನ ಯಾನಂ ಚಲನಂ  
ಯಸ್ಯ। 2. ಸಂಚಾರವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 3. ಸಂಚಾರ  
ವಿಲ್ಲದ.

ಅಯಿ ಅಯಿ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಮಾಡುವ  
ಸಂಬೋಧನೆ. “ಅಯಿ, ವಿವೇಕವಿಶ್ರಾಂತಮಭಿಹಿತಮ್”  
ಮಾಲಂ ೧। 2. ದೈನ್ಯದಿಂದ ಮಾಡುವ ಸಂಬೋಧನೆ.  
“ಅಯಿ ಕಬಲಯ ಮಾಮಮ್ ವಿಮುಚ್ಛೇದ್ಯತಿಕರಣಂ ರದತೀಮವೇಕ್ಷಯ  
ಸೀತಾಮ್” ಚಂ ರಾಂ। 3. ಅನುನಯ, ಪ್ರಾರ್ಥನೆ.  
“ಅಯಿ ಸಂಪ್ರತಿ ದೇಹಿ ದರ್ಶನಮ್” ಕುಮಾಂ ೪-೨೮। 4. ಪ್ರಶ್ನೆ,  
ಕೇಳಿಕೆ. “ಅಯಿ ಜೀವಿತನಾಥ ಜೀವಸಿ” ಕುಮಾಂ ೪-೩।  
“ಅಯಿ ಪ್ರಶ್ನಾನುನಯಯೋಸ್ತಥಾ ಸಂಬೋಧನೇಷಿ ಚ” ಮೇದಿಂ।

ಅಯುಕ್ತ ಅಯುಕ್ತ (ಪುಂ) ಎಳೆಲೆ ಬಾಳೆಯಗಿಡ.

ಅಯುಕ್ತ ಅಯುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಅಯೋಗ್ಯವಾದ, ಅನುಚಿತ  
ವಾದ. “ಅಯುಕ್ತರೂಪಂ ಕಿಮತಃ ಪರಂ ವದ” ಕುಮಾಂ ೫-೬೯।  
2. ಸೇರಿಕೊಂಡಿಲ್ಲದ, ಬೇರೆಯಾಗಿರುವ. 3. ಉದಾ  
ಸೀನ, ಕರ್ತವ್ಯಪರಾಜ್ಞು. 4. ಸ್ಥಿರಚಿತ್ತವಿಲ್ಲದವನು,  
ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿ ನಿರೋಧವಿಲ್ಲದವನು. ಶಾಂ ಭಾಂ।  
5. ಶಾಸ್ತ್ರೀಯಕರ್ಮಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯನಲ್ಲದವನು. ರಾಂ ಭಾಂ।  
“ಅಯುಕ್ತಃ ಪ್ರಾಕೃತಃ ಸ್ತಬ್ಧಃ ಶಠೋ ನೈಕೃತಿಕೋಲಸಃ”  
ಗೀತಾ ೧೮-೨೮। 6. ಕಷ್ಟಕ್ಕೊಳಗಾದ, ಪೇಚಾಟಕ್ಕೆ  
ಸಿಲುಕಿದ. 7. ಅವಿನಾಹಿತ, ಮದುವೆಯಿಲ್ಲದವನು.  
ನ ಯುಕ್ತಃ।

ಅಯುಕ್ತಿ ಅಯುಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯುಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
2. ಅಗಲಿಕೆ, ನಿರರ್ಥ. 3. ಅನರ್ಹತೆ, ಅಯೋಗ್ಯತೆ,  
ಅಸಭ್ಯತೆ.

ಅಯುಗ ಅಯುಗ (ನಂ) 1. ವಿಷಮ, ಬೆಸ. (ವಿಂ) 2.  
ನೋಗವಿಲ್ಲದ (ರಥ). 3. ಬೆಸಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ, ಸಮ  
ಸಂಖ್ಯೆಯಿಲ್ಲದ. ನ ಯುಗಮತ್ರ। “ಯುಗಪದಯುಗಸಪ್ತಿಸ್ತುಲ್ಯ-  
ಸಂಖ್ಯೈರ್ಮಯುಲೈಃ” ಮಾಘಂ ೧೧-೬೧।

ಅಯುಗಮ ಅಯುಗಮ (ನಂ) 1. ವಿಷಮ, ಬೆಸ. (ವಿಂ) 2.  
ಬೆಸಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ, ಸಮಸಂಖ್ಯೆಯಿಲ್ಲದ. ನ ಯುಗಮತ್ರ।  
“ಅಥೇಂದ್ರಿಯಕ್ಷೋಭಮಯುಗಮನೇತ್ರಃ” ಕುಮಾಂ ೩-೬೯।

ಅಯುಗಮಚ್ಛದ ಅಯುಗಮಚ್ಛದ (ಪುಂ) ಎಳೆಲೆ ಬಾಳೆಯಗಿಡ.  
ಅಯುಗಮಾಃ ಚ್ಛದಾಃ ಪತ್ರಾಣಿ ಯಸ್ಯ। “ನಯತ್ಯಯುಗಮಚ್ಛದಗಾಂಧಿ-  
ರಾರ್ದ್ರತಾಮ್” ಕಿರಾಂ ೧-೧೬।

ಅಯುಗಮನಯನ ಅಯುಗಮನಯನ - ನೇತ್ರ - ನೇತ್ರ, -ಲೋಚನ  
-ಲೋಚನ (ಪುಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ.  
ಅಯುಗಮಾನಿ ನಯನಾನಿ ನೇತ್ರಾಣಿ ಲೋಚನಾನಿ ವಾ ಯಸ್ಯ।  
“ಅಥೇಂದ್ರಿಯಕ್ಷೋಭಮಯುಗಮನೇತ್ರಃ” ಕುಮಾಂ ೩-೬೯। 2. ಲಕ್ಷ್ಮೀ  
ನರಸಿಂಹ. 3. ಸುದರ್ಶನ, ವಿಷ್ಣು ಚಕ್ರ.

ಅಯುಗಮಬಾಣ ಅಯುಗಮಬಾಣ - ಶರ - ಶರ (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ,  
ಕಾಮ. ಅಯುಗಮಾಃ ಪञ್ಚ ಬಾಣಾಃ ಶರಾ ವಾ ಯಸ್ಯ।

ಅಯುಜ್ ಅಯುಜ್ (ವಿಂ) ವಿಷಮಸಂಖ್ಯೆಯ, ಬೆಸ  
ಸ್ಥಾನದ, ವಿಷಮಸ್ಥಾನದ. “ಅಯುಜ್ವಾ ಚಾರ್ಹಾಸಿನಿ”।  
“ಚಪಲಾವಕ್ತ್ರಮಯುಜೋರ್ನಕಾರಶ್ಚೇತಪಯೋರಾಶಿಃ” ವೃಂ ರಂ।

ಅಯುತ ಅಯುತ (ನಂ) 1. ದಶಸಹಸ್ರ, ಹತ್ತು ಸಾವಿರ.  
(ವಿಂ) 2. ಹತ್ತು ಸಾವಿರವುಳ್ಳ. “ಅಯುತಂ ದಶಸಾಹಸ್ರಮ್”  
ಅಮಂ। 3. ಸೇರಿಕೊಂಡಿಲ್ಲದ, ಬೇರೆಯಾಗಿರುವ, ಮಿಶ್ರ  
ನಲ್ಲದ.

ಅಯುತಸಿದ್ಧಿ ಅಯುತಸಿದ್ಧಿ (ವಿಂ) ಕಾರ್ಯ ಮತ್ತು  
ಕಾರಣಗಳು ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಿರದೆ ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿ ಸಿದ್ಧ  
ವಾದ. ಯುತಃ ಪೃಥಗ್ಭೂತಃ ಸನ್ ಸಿದ್ಧಃ। ನಂ ತಂ। ಕಾರಣ  
ಭೂತವಾದ ಕಪಾಲದ್ವಯಕ್ಕೂ ಕಾರ್ಯವಾದ  
ಘಟಕ್ಕೂ ಅವಿನಾಭಾವವಿರುವುದು. ಈ ಅವಿನಾಭೂತ  
ವಾದ ಕಾರ್ಯಕಾರಣಗಳಿಂದ ಸಿದ್ಧವಾದ ಘಟರೂಪ  
ವಾದ ಕಾರ್ಯವು ಅಯುತಸಿದ್ಧ. ಇದು ಐದು  
ವಿಧಃ (1) ಅವಯವಾವಯವಿ, (2) ಗುಣ-ಗುಣಿ,  
(3) ಕ್ರಿಯೆ-ಕ್ರಿಯಾವತ್, (4) ಜಾತಿ-ವ್ಯಕ್ತಿ ಮತ್ತು  
(5) ನಿತ್ಯದ್ರವ್ಯ-ವಿಶೇಷ.

ಅಯುತಸಿದ್ಧಿ ಅಯುತಸಿದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ಯಕಾರಣ  
ಗಳು ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಿರದೆ ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕಲೆತು ಸಿದ್ಧಿ ಸುವುದು;  
ಕಪಾಲದ್ವಯ ಮತ್ತು ಘಟ ಎರಡೂ ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿ  
ಕೊಂಡು ಘಟರೂಪವಾದ ಕಾರ್ಯವು ಸಿದ್ಧಿ ಸುವುದು.



ಅಯುತಾಜಿತ್ ಅಯುತಾಜಿತ್ (ಪುಂ) ಯದುವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. "ಅಯುತಾಜಿತ್ ಸಹಸ್ರಾಜಿತ್ ಶತಾಜಿದಥ ದಾಸಕಃ" ಹರಿವಂ. 1.

ಅಯುತಾಯು ಅಯುತಾಯು (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ.

ಅಯೇ ಅಯೇ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಸಂಭ್ರಮ. 2. ಆಶ್ಚರ್ಯ. "ಅಯೇ, ಕಥಮಾರ್ಯಃ ಪಾಶ್ಚಾತ್ಯಾಶ್ವತುಃಶಾಲಕಂ ಪ್ರತಿ ಪ್ರಸ್ಥಿತಃ" ವೇಣಿಂ. 3. ಕೋಪ. "ಅಯೇ, ಅಶ್ವಮೇಧ ಇತಿ ವಿಶ್ವ-ಜಯಿನಾಂ ಕ್ಷತ್ರಿಯಾಣಾಂ ಮಹಾನುತ್ಕರ್ಷನಿಕರ್ಷಃ" ತಂ ರಾಂ ೪. 4. ಸ್ಮರಣೆ, ನೆನಪು. "ಅಯೇ, ಕುಸುಮಪುರವೃತ್ತಾಂತಜಃ ಅಹಂ ಭವತ್ಪ್ರಣಿಧಿಶ್ಚೇತಿ ಗತಾರ್ಯಃ" ಮುದ್ರಾಂ ೨. 5. ಭಯ. "ಅಯೇ, ತತ್ಕಥಂ ಸತ್ಯಮೇವ ಕುಪಿತ ಆರ್ಯಃ?" ಮುದ್ರಾಂ ೩. 6. ಸಂಬೋಧನ. "ಅಯೇ, ಕಲೇ, ಭದ್ರಮವ್ಯಾಹತಮ್" ಪ್ರಬೋಧಂ ೨. 7. ದುಃಖ. "ಅಯೇ, ದೇವಪಾದಪದ್ಮೋಪಜೀವಿನೋ-ವಸ್ಥೇಯಮ್" ಮುದ್ರಾಂ ೨. "ಅಯೇ ಕ್ರೋಧವಿಪಾದಯೋಃ ಸಂಭ್ರಮೇ ಸ್ಮರಣೇ ಚ" ಹೇಮಂ.

ಅಯೋಗ ಅಯೋಗ (ಪುಂ) 1. ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಂ ತಂ. 2. ತಿಥಿ ವಾರಾದಿಗಳ ಕೆಟ್ಟಯೋಗ. ಅಪ್ರಾಶಸ್ತೀ ನಂ ತಂ. 3. ವಿಧುರ. "ಅಯೋಗೋ ವಿಧುರೋಽಪಿ ಚ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 4. ಅರುಚಿ, ಅಪ್ರೀತಿ. 5. ಸುತ್ತಿಗೆ, ಕೊಡತಿ. 6. ವಿಯೋಗ. 7. ಕಷ್ಟವಾದ ಪ್ರಯತ್ನ. (ವಿಂ) 8. ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ. "ಅಯೋಗಃ ಕಠಿನೋದ್ರಮೇ | ವಿಶ್ಲೇಷೇ ವಿಧುರೇ ಕುಟೇ" ಹೇಮಂ.

ಅಯೋಗವ ಅಯೋಗವ (ಪುಂ) ಶೂದ್ರನಿಗೆ ವೈಶ್ಯ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಬೆರಕೆಜಾತಿಯವನು. "ಶೂದ್ರಾದಯೋಗವಃ ಕ್ಷತ್ತಾ ಚಂಡಾಲಶ್ರಾಧಮೋ ನೃಣಾಮ್ | ವೈಶ್ಯರಾಜನ್ಯವಿಪ್ರಾಸು ಜಾಯಂತೇ ವರ್ಣಸಂಕರಾಃ" ಮನುಂ ೧೦-೧೨.

ಅಯೋಗವಾಹ ಅಯೋಗವಾಹ (ಪುಂ) ಅನುಸ್ವಾರ, ವಿಸರ್ಗ, ಜಿಹ್ವಾಮೂಲೀಯ ಮತ್ತು ಉಪಧ್ಮಾನೀಯಗಳು. ಇವು ವರ್ಣಸಮಾನಾಯಗಳಲ್ಲಿ ಸೇರದಿದ್ದರೂ ಪತ್ವಣತ್ವ ಮೊದಲಾದ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುವು. ನಾಸ್ತಿ ಯೋಗಃ (ವರ್ಣಸಮಾನಾಯಸೂತ್ರೇಷು) ಸಂಬಂಧೋ ಯೇಷಾಂ ತೇ; ನ ವಿಶ್ಲೇಷತೇ ಯೋಗಃ ಸಂಯೋಗೋ ವರ್ಣಾಂತರೇಣ ಯೇಷಾಂ ತೇ ಇತಿ ವಾ — ತಥಾಭೂತಾಃ ಸಂತಃ ವಾಹಯಂತಿ (ಪ್ರಯೋಗಂ) ನಿಷ್ಪಾದಯಂತಿ | "ಅನುಸ್ವಾರೋ ವಿಸರ್ಗಶ್ಚ ಽಕ ಽಪೌ ಚೈವ ಪರಾಶ್ರಿತೌ | ಅಯೋಗ-ವಾಹಾ ವಿಜ್ಞೇಯಾ ಆಶ್ರಯಸ್ಥಾನಭಾಗಿನಃ" |

ಅಯೋಗ್ಯ ಅಯೋಗ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅನರ್ಹನಾದ. 2. ಅನುಬಂಧನಾದ.

ಅಯೋಗ್ಯ ಅಯೋಗ್ಯ (ನಂ) ಮುಸಲ, ಒನಕೆ. ಅಯಃ ಅಯೋಗ್ಯಸ್ಯ |

ಅಯೋಗ್ಯನ ಅಯೋಗ್ಯನ (ಪುಂ) ಸುತ್ತಿಗೆ, ಚಮ್ಮಟಿಗೆ. ಅಯಾಸಿ ಹನ್ಯಂತೇಜೇನ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) "ಅಪ್" ಧನಾ-ದೇಶಶ್ಚ (೩-೩-೮೨) |

ಅಯೋಜಾಲ ಅಯೋಜಾಲ (ನಂ) 1. ಕಬ್ಬಿಣದ ಒಲೆ. ಅಯೋಮಯಂ ಜಾಲಮ್ | (ವಿಂ) 2. ರಾಕ್ಷಸಸ್ವಭಾವದ. ಅಯ ಇವ ಜಾಲಮಸ್ಯ |

ಅಯೋಧ್ಯ ಅಯೋಧ್ಯ (ವಿಂ) ಯುದ್ಧಮಾಡಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ. ಯೋಧುಂ ಶಕ್ಯಃ — ಯುಧ (ಸಂಪ್ರಹಾರೇ) "ಽಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) | ನ ಯೋಧ್ಯಃ |

ಅಯೋಧ್ಯಾ ಅಯೋಧ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಯೋಧ್ಯಾನಗರ, ಇಕ್ಷ್ವಾಕು ವಂಶದ ದೊರೆಗಳ ರಾಜಧಾನಿ, ಭೂವೈಕುಂಠ, ಮೋಕ್ಷಪ್ರದವಾದ ಏಳು ನಗರಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಅಯೋಧ್ಯಾ ಮಧುರಾ ಮಾಯಾ ಕಾಶೀ ಕಾಶ್ವೀ ಅವಂತಿಕಾ | ಪುರೀ ದ್ವಾರವತೀ ಚೈವ ಸಪ್ತೇತಾ ಮೋಕ್ಷದಾಯಿಕಾಃ" |

ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡ ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡ (ಪುಂ) ಅಯೋಧ್ಯಾನಗರದಲ್ಲಿ ನಡೆದ ವೃತ್ತಾಂತವನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವ (ರಾಮಾಯಣದ) ಗ್ರಂಥ ಭಾಗ.

ಅಯೋನಿ ಅಯೋನಿ (ವಿಂ) ಉತ್ಪತ್ತಿಯಿಲ್ಲದ, ನಿತ್ಯವಾದ. ನಾಸ್ತಿ ಯೋನಿರೂಪಿತಿಸ್ಥಾನಂ ಯಸ್ಯ | "ಜಗದ್ಯೋನಿರಯೋನಿರೂಪಿತಃ ಜಗದಂತೋ ನಿರಂತಕಃ" ಕುಮಾಂ ೨-೯ |

ಅಯೋನಿಜ ಅಯೋನಿಜ (ಪುಂ) 1. ನಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. "ದಿವಿಷ್ಣುಕ್ ಸರ್ವದೃಗ್ವ್ಯಾಸೋ ವಾಚಸ್ಪತಿರಯೋನಿಜಃ" ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ಮನುಷ್ಯಾದಿ ದೇಹದಲ್ಲಿ ಉತ್ಪತ್ತಿಹೊಂದದ, ಹೆಂಗಸರ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ; ಅಗಸ್ತ್ಯ ಮಹರ್ಷಿ, ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರು, ದ್ರೌಪದಿ, ಸೀತೆ ಮುಂತಾದವರು ಅಯೋನಿಜರು. 3. ಶಾಖದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಹುಳು, ನೋಡ ಮೊದಲಾದುವು.

ಅಯೋಮಲ ಅಯೋಮಲ (ನಂ) ಕಬ್ಬಿಣದ ಕೆಳುಬು, ಕಬ್ಬಿಣದ ಮೇಲೆ ಹಿಡಿಯುವ ತುಕ್ಕು.

ಅಯೋಮುಖ ಅಯೋಮುಖ (ಪುಂ) 1. ಬಾಣ. (ವಿಂ) 2. ತುದಿಯಲ್ಲಿ ಕಬ್ಬಿಣವುಳ್ಳ, ಕಬ್ಬಿಣದ ಮೂತಿ ಯುಳ್ಳ (ನೇಗಿಲು ಮುಂತಾದುದು). ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ವಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೪) | — ಮುಖಾ-ಮುಖಾ — ಮುಖಿ-ಮುಖೀ. 3. ಕಬ್ಬಿಣದಂತೆ ಕಠಿನವಾದ ಮೂತಿಯುಳ್ಳ (ಹಕ್ಕಿ ಮೊದಲಾದುದು);



ಅಯೋಹದಯ ಅಯೋಹದಯ (ವಿಂ) ಕಬ್ಬಿಣದಂತೆ ಕಠಿನವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಕನಿಕರವಿಲ್ಲದ, ನಿರ್ದಯ " ನಾದ. ಅಯ ಇವ ಹೃದಯಂ ಯಸ್ಯ |

ಅಯೋಗಿಕ ಅಯೋಗಿಕ (ಪುಂ) ಪುಣ್ಯತೃಪ್ತಿಯಿಂದ ಸಿದ್ಧ ವಾಗದ ಶಬ್ದ, ಅವಯವಾರ್ಥವಿಲ್ಲದ ಶಬ್ದ.

ಅರ ಅರ (ಪುಂ) 1. ಚಕ್ರದ ಅರೆಕಾಲು, ಚಕ್ರದ ಅಂಚಿಗೂ ಗುಂಬಕ್ಕೂ ಮಧ್ಯೆ ಇರುವ ಮರದ ಪಟ್ಟಿ ಅಥವಾ ಕಬ್ಬಿಣದ ಸಲಾಕೆ. ಇಯತಿ ಗಚ್ಛತ್ಯನೇನ - ಋ (ಗತೌ) "ಅವ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಗುಣಜ್ವಲಾ-ಮುಜ್ಜವಲನಾಭಿಚಕ್ರಾ ವಿರಾಜಮಾನಾ ನವಯೋದರಶ್ರಿಯಾ" ಮಾಘಂ ೧೨-೮ | 2. ಶೈವಾಲ, ಪಾಚಿ. 3. ಒಂದು ಮೂಲೆ. (ವಿಂ) 4. ತೇಘ್ರತೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ತೇಘ್ರವಾಗಿ ನಡೆಯುವ. (ಅವ್ಯಂ) 5. ತೇಘ್ರವಾಗಿ, ಜಾಗೃತೆಯಾಗಿ. "ಅರಮಜ್ಜೇ ರಥಾಙ್ಗಸ್ಯ ಶೀಘ್ರಶೀಘ್ರಗಯೋರಪಿ" ಶಾಶ್ವಂ | "ಅರಮರಚಯತಾಮುಭಾವಸಿಮ್ಯಾಂ ಪಿಸಿತಭುಜಂ ಭುಜ-ಭಾರಹೀನಮೇನಮ್" ಚಂ ರಾಂ |

ಅರಘಟ ಅರಘಟ (ಪುಂ) 1. ರಾಟಿ, ಬಾವಿಯಿಂದ ನೀರು ಸೇರಲು ಹಾಕಿರುವ ಚಕ್ರ. 2. ದೊಡ್ಡಬಾವಿ, ಅಳವಾದ ಬಾವಿ. ಅರಂ ಶೀಘ್ರಂ ಘಟಯತೇ ಚಾಲ್ಯತೇತ್ಸೌ | "ಕೋಟಾರಘಟಹೃದಾಶ್ಚ" ಅಮಂ | "ತದಾಕರ್ಣ್ಯ ತು ಅರಘಟ-ಮಾರ್ಗಮಹಮಾಶ್ರಿತ" ಪಂಚತಂ |

ಅರಜಸ್ ಅರಜಸ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪುಷ್ಪವತಿಯಾಗದ ಹೆಂಗಸು, ಕನ್ಯೆ. (ವಿಂ) 2. ಧೂಳಿಲ್ಲದ, ಕೊಳೆಯಿಲ್ಲದ, ಶುದ್ಧವಾದ. 3. ಕಾಮಕ್ರೋಧಾದಿಗಳಿಲ್ಲದ, ರಜೋಗುಣವಿಲ್ಲದ.

ಅರಜ್ಜು ಅರಜ್ಜು (ನಂ) ಕಾರಾಗೃಹ, ಸೆರೆಮನೆ. ನಾಸ್ತಿ ರಜ್ಜುಬಂಧನಸಾಧನಂ ಯತ್ರ |

ಅರಣಿ ಅರಣಿ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಋಚ್ಛತಿ - ಋ (ಗತೌ) "ಅನಿ:" (೩ಂ ೨-೧೦೨) | 2. ಅಗ್ನಿಮಂಥವೃಕ್ಷ, ಬೆಂಕಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಒಂದು ಮರ. 3. ಬೆಂಕಿ, ಅಗ್ನಿ. 4. ಚಕಮಕಿ ಕಲ್ಲು, ಅಗ್ನಿಶಿಲೆ. (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 5. ಯಾಗದ ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಮರದ ತುಂಡು. "ನಿರ್ಮಥ್ಯದಾರಣಿ-ತ್ವರಣಿರ್ದಯೋ:" ಅಮಂ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ವಾ "ಙೀಃ" (ಗಂ ೪೦) | ಅರಣಿ ಅರಣಿ. ಅರಣಿ: ಅರಣಿ: | "ಅರಣಿಸಂಭವ-ಪಾವಕಸಂಭವಾದಭಜತಾಧ್ವರವೇದಿರವಿ ಶ್ರಿಯಮ್" ಯಾದಂ ೩-೪೬ |

ಅರಣಿಕೇತು ಅರಣಿಕೇತು (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿಮಂಥವೃಕ್ಷ.

ಅರಣಿಸುತ ಅರಣಿಸುತ (ಪುಂ) ಶುಕಮಹರ್ಷಿ. [ವ್ಯಾಸ ಮಹರ್ಷಿಯು ಒಂದು ದಿನ ಪೃತಾಚೆಯೆಂಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸನ್ನು ಕಂಡು ಮೋಹಿಸಿದಾಗ ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಕಡೆಯಲು ಇಟ್ಟಿದ್ದ ಅರಣಿಯಮೇಲೆ ಮಹರ್ಷಿಯ ರೇತಸ್ಸು ಬಿದ್ದಿತು. ಆ ಅರಣಿಯನ್ನು ಕಡೆಯಲು ಶುಕಮಹರ್ಷಿಯು ಜನಿಸಿದರು.] "ಋಷಿರಪ್ಸರಸಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಸಹಸಾ ಕಾಮಮೋಹಿತ: | ಅರಣ್ಯಾಮೇವ ಸಹಸಾ ತಸ್ಯ ಶಕ್ರ-ಮವಾಪತತ್ | ಸೌರ್ವಿಶಾಂಕೇನ ಮನಸಾ ತಥೈವ ದ್ವಿಜಸತ್ತಮ: | ಅರಣಿಂ ಮಮನ್ಯ ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿ: ತಸ್ಯಾಂ ಜಜ್ಞೇ ಶುಕೋ ನೃಪ | ಶುಕೇ ನಿರ್ಮಥ್ಯ-ಮಾನೇ ಸ ಶುಕೋ ಜಜ್ಞೇ ಮಹಾತಪಾ:" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೩೩೨-೩, ೪, ೮, ೯ |

ಅರಣ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ನಂ) 1. ವನ, ಕಾಡು. ಅಯಂತಿ - ಋ (ಗತೌ) "ಅನ್ಯ:" (೩ಂ ೩-೧೦೨) | "ಆರಣ್ಯಕಾನಾಂ ಪ್ರಭವ: ಫಲಾನಾಮರಣ್ಯಜಾತಾನಿ ಫಲಾನ್ಯಿಭೀಷತ್" ಯಾದಂ ೪-೩೦ | 2. ತೇಗದ ಮರ.

ಅರಣ್ಯಕಂದಲಿ ಅರಣ್ಯಕಂದಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡು ಬಾಳೆಗಿಡ.

ಅರಣ್ಯಕಾಂಡ ಅರಣ್ಯಕಾಂಡ (ಪುಂ) ಶ್ರೀರಾಮನ ಅರಣ್ಯ ಸಂಚಾರದ ವಿಷಯವನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವ ರಾಮಾಯಣದ ಗ್ರಂಥಭಾಗ.

ಅರಣ್ಯಕಾರ್ಪಾಸಿ ಅರಣ್ಯಕಾರ್ಪಾಸಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡು ಹತ್ತಿಗಿಡ.

ಅರಣ್ಯಚಟಕ ಅರಣ್ಯಚಟಕ (ಪುಂ) ಕಾಡುಗುಬ್ಬಿಟ್ಟ.

ಅರಣ್ಯಚಂದ್ರಿಕಾ ಅರಣ್ಯಚಂದ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಬೀಳುವ ಬೆಳದಿಂಗಳು; ಉಪಯೋಗವಿಲ್ಲದ ಸಂವತ್ಸರ, ರೂಪ ಮುಂತಾದುದು ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಬೀಳುವ ಬೆಳದಿಂಗಳಿ ನಂತೆ ನಿಷ್ಪ್ರಯೋಜನವೆಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗ.

ಅರಣ್ಯಚರ ಅರಣ್ಯಚರ (ವಿಂ) ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. ಅರಣ್ಯೇ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಠ:" (೩-೨-೧೬) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಃ" (೪-೧-೧೪) | -ಚರೀ -ಚರೀ.

ಅರಣ್ಯಧರ್ಮ ಅರಣ್ಯಧರ್ಮ (ಪುಂ) ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ಧರ್ಮ. [ಗೃಹಸ್ಥನು ಮುಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಗೃಹವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿ ಪತ್ನೀಸಹಿತನಾಗಿ ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುತ್ತಾ ಕಂದಮೂಲಾದಿಗಳನ್ನೇ ಆಹಾರವನ್ನಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುತ್ತಿರಬೇಕು. ಜಿತೇಂದ್ರಿಯನಾಗಿದ್ದು ಕೊಂಡು ಕಾಲತ್ರಯದಲ್ಲಿಯೂ ಸ್ನಾನಮಾಡುತ್ತಾ ಜಟಾವಲ್ಕಲಧಾರಣ, ಯಜ್ಞಯಾಗಾದಿಗಳ ಅನುಷ್ಠಾನ ಇವುಗಳೊಡನೆ ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯ, ಜಪ, ತಪಸ್ಸು ಇತ್ಯಾದಿಗಳಲ್ಲಿ



ನಿರತನಾಗಿರಬೇಕು. ಇತ್ಯಾದಿ, ಇತ್ಯಾದಿ. ಇದೇ ನಾನಪ್ರಸಂಗಮ್.] "ಗೃಹಸ್ಥಸ್ತು ಯದಾ ಪಶ್ಯೇದ್ವಲಿಪಲಿತ-  
ಮಾತಮನಃ। ಅಪತ್ಯಸ್ಯೈವ ಚಾಪತ್ಯಂ ತದಾರಣ್ಯಂ ಸಮಾಶ್ರಯೇತ್॥  
ಸಂತೃಪ್ತೌ ಗ್ರಾಮ್ಯಮಾಹಾರಂ ಸರ್ವಂ ಚೈವ ಪರಿಚ್ಛಿದಮ್। ಪುತ್ರೇಷು ಭಾರ್ಯಾ  
ನಿಕ್ಷಿಪ್ಯ ವನಂ ಗಚ್ಛೇತ್ಸಹೈವ ವಾ॥ ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರಂ ಸಮಾಧಾಯ  
ಗೃಹ್ಯಂ ಚಾಪ್ತಪರಿಚ್ಛಿದಮ್। ಗ್ರಾಮಾದರಣ್ಯಂ ನಿಃಸೃತ್ಯ ನಿವಸೇ-  
ನ್ವಿತೇಂದ್ರಿಯಃ॥ ಮುನ್ಯತ್ರೈವಿವಿಧಮೇಧ್ಯಃ ಶಾಕಮೂಲಫಲೇನ ವಾ।  
ಏತಾನೇವ ಮಹಾಯಜ್ಞಾಶ್ಚಿವಪೇದಿಧಿಪೂರ್ವಕಮ್" ಮನುಂ ೬-೨-೫।

ಅರಣ್ಯಮಕ್ಷಿಕಾ ಅರಣ್ಯಮಕ್ಷಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡುನೋಣ.

ಅರಣ್ಯಮಾರ್ಜಾರಿ ಅರಣ್ಯಮಾರ್ಜಾರಿ (ಪುಂ) ಕಾಡುಬೆಕ್ಕು.

ಅರಣ್ಯಮುಗ್ಧ ಅರಣ್ಯಮುಗ್ಧ (ನಂ) ಕಾಡುಹೆಸರು.

ಅರಣ್ಯಮುದಿತ ಅರಣ್ಯಮುದಿತ(ಪುಂ) ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ  
ರೋದನ, ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಅಳುವುದು; ಅರಣ್ಯರೋದನ  
ವನ್ನು ಕೇಳುವವರು ಯಾರೂ ಇಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ  
ಅದು ನಿಷ್ಪ್ರಯೋಜಕವಾಗುವಂತೆ ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ  
ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಇವರ ಪ್ರಯೋಗ.

ಅರಣ್ಯವಾಸ ಅರಣ್ಯವಾಸ (ವಿಂ) ಕಾಡಿನ ವಾಸ.

ಅರಣ್ಯವಾಸಿನ್ ಅರಣ್ಯವಾಸಿನ್ (ವಿಂ) ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ವಾಸ  
ಮಾಡುವ (ಮುಷಿ ಮೊದಲಾದವರು). ಅರಣ್ಯೇ ವಸತಿ-  
ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ಣಿತಿ:" (೩-೨-೭೮)।

ಅರಣ್ಯಸೂಕರ ಅರಣ್ಯಸೂಕರ (ಪುಂ) ಕಾಡುಹಂದಿ.

ಅರಣ್ಯಶವನ್ ಅರಣ್ಯಶವನ್ (ಪುಂ) ಕಾಡುನಾಯಿ, ವೃಕ,  
ತೋಳ.

ಅರಣ್ಯಪಟಿ ಅರಣ್ಯಪಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಶುದ್ಧ ಪಟಿ.  
"ಜ್ಯೇಷ್ಠೇ ಮಾಸಿ ಸಿತೇ ಪಕ್ಷೇ ಪಟಿ ಯಾರಣ್ಯಸಂಜಿತಾ।

ವ್ಯಜನೇಕಕರಾಸ್ತಸ್ಯಾಮಟಂತಿ ವಿಪಿನೇ ಸ್ತ್ರೀಯಃ"।

ಅರಣ್ಯಾಧ್ಯಕ್ಷ ಅರಣ್ಯಾಧ್ಯಕ್ಷ (ಪುಂ) ಅರಣ್ಯವನ್ನು  
ರಕ್ಷಿಸಲು ರಾಜನಿಂದ ನಿಯುಕ್ತನಾದ ಅಧಿಕಾರಿ  
(Chief Conservator of Forests).

ಅರಣ್ಯಾನಿ ಅರಣ್ಯಾನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೊಡ್ಡ ಕಾಡು, ವಿಸ್ತಾರ  
ವಾದ ಅಡನೆ. ಮಹದರಣ್ಯಮ್ - "ಆನುಕ್" "ಙೀಪ್"  
ಚ (೪-೧-೪೯)।

ಅರಣ್ಯಾಯುಕ್ತ ಅರಣ್ಯಾಯುಕ್ತ (ಪುಂ) 1. ಮುನಿ, ಮುಷಿ.  
ಅರಣ್ಯಮೋಕೋ ಯಸ್ಯ। "ವೇಕಲವ್ಯಂ ಮಮ ತಾವದೀದೃಶಮಿದಂ ಸ್ತೇಹಾದ-  
ರಣ್ಯಾಯುಕ್ತಃ" ಶಾಕುಂ ೪-೫। 2. ವಾನಪ್ರಸ್ಥ, ಸಂಸಾರ  
ವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿ ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವವನು.

ಅರತ ಅರತ(ವಿಂ) 1. ನಿರತ, ವೈರಾಗ್ಯವುಳ್ಳವನು, ಉದಾ  
ಸೀನ, 2. ಅನುರಾಗವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರೀತಿಯಿಲ್ಲದ. ನ ರತಃ।

ಅರತಿ ಅರತಿ (ಪುಂ) 1. ಕ್ರೋಧ, ಕೋಪ. ಕ್ಷ (ಗತೌ)  
"ಅತಿ:" (೩ಂ ೪-೬೦)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಸಂತೋಷ  
ವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ನೆಮ್ಮದಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ರಮು (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್)  
"ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। ನಂ ತಂ। 3. ಪ್ರೀತಿಯಿಲ್ಲ  
ದಿರುವಿಕೆ. "ವಿವಿಕ್ತದೇಶಸೇವಿತ್ವಮರತಿರ್ಜನಸಂಸದಿ" ಗೀತಾ  
೧೩-೧೦। 4. ನೋವು, ದುಃಖ. 5. ಯಾವುದರಲ್ಲಿಯೂ  
ಇಚ್ಛೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಬೇಸರ, ಹತ್ತು ಮನ್ಮಥಾವಸ್ಥೆ  
ಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ದೃಢಮನಃಸಂಕ್ಷುಬ್ಧಸಂಕಲ್ಪಾ ಜಾಗರಃ ಕೃಷತಾಽ-  
ರತಿಃ। ಹಿತಾಗೋನ್ಮಾದಮುಚ್ಛಂತಾ ಇತ್ಯನಂಜನದಶಾ ದಶ"।  
(ವಿಂ) 6. ಪ್ರೀತಿಯಿಲ್ಲದ, ಅನುರಾಗವಿಲ್ಲದ.

ಅರಲಿ ಅರಲಿ (ಪುಂ) 1. ಕಿರುಬೆರಳು ನೀಡಿದ ಒಂದು  
ಗುದ್ದುಮೊಳ, ಮೊಳಕೆಯಿಂದ ಹಿಡಿದು ಕಿರುಬೆರಳಿನ  
ತುದಿಯವರೆಗಿನ ಅಳತೆ. 2. ಮೊಳಕೆ. 3. ಬಾಹು,  
ತೋಳು. "ಅರಲಿನಾ ಸಪ್ರಕೋಠತತಾಙ್ಗುಲಿಕರೇಽಪಿ ಚ।  
ಕಫೋಣಾವಪಿ" ಮೇದಿಂ।

ಅರರ ಅರರ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. (ನಂ) 2. ಕಬ್ಬಿಣ.  
3. ಕವಾಟ, ಬಾಗಿಲು. (ಸ್ತ್ರೀನಂ) ವೇಜಂ। 4. ಬಿದಿರಿನ  
ಒರೆ, ಗವಸಣಿಗೆ. 5. ಮುಚ್ಚಳ, ಒರೆ, ಕೋಶ.  
ಇಯತಿ - ಕ್ಷ (ಗತೌ) "ಅರನ್" (೩ಂ ೩-೧೩೨)।  
"ನ ನಾ ಕವಾಟೇ ಕಲಿ ಲೋಹೇ ಸೋಮೇ ಸ್ಯಾದರರಃ ಪುಮಾನ್" ವೇಜಂ।  
"ಅರರಂ ಛದಕಪಾಟಯೋಃ" ಮೇದಿಂ।

ಅರರಿ ಅರರಿ (ಪುಂ) ಕವಾಟ, ಬಾಗಿಲು. "ಕಪಾಟೋಽ-  
ರರಿಃ ಕುವಾಟಃ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ಅರರು ಅರರು (ಪುಂ) 1. ಶತ್ರು. 2. ಆಯುಧ. ಕ್ಷ (ಗತೌ)  
"ಅರುಃ" (೩ಂ ೪-೭೯)।

ಅರವಿಂದ ಅರವಿಂದ (ಪುಂ) 1. ತಾಮ್ರಲೋಹ.  
2. ಕೊಕ್ಕರೆ, ನೀರುಹಕ್ಕಿ. (ನಂ) 3. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ,  
ತಾವರೆ. ಅರಾಣಿ ಅರಸದೃಶಾನಿ ದಲಾನಿ ವಿಂದತಿ -  
ಅರ + ವಿದ್ಲ್ (ಲಾಭೇ) "ಶಃ" (೩-೧-೧೩೮)।  
"ಸರಸೀಪ್ವರವಿಂದಾನಾಂ ವೀಚಿವಿಕ್ಷೋಭಶೀತಲಮ್" ರಘುಂ  
೧-೪೩। "ಕ್ರೀಡಾಹಂತಂ ಕ್ಷಿಪ್ರಮಿವಾರವಿಂದಮ್" ಯಾದಂ ೨-೪೧।  
4. ಕೆಂದಾವರೆ. 5. ಕನ್ನಡದಿಲೆ, ನೀಲಕಮಲ.

ಅರವಿಂದನಾಭ ಅರವಿಂದನಾಭ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಅರವಿಂದಂ  
ನಾಭೌ ಯಸ್ಯ "ಅಚ್" (೫-೪-೭೫)।

ಅರವಿಂದಾಕ್ಷ ಅರವಿಂದಾಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. (ವಿಂ)  
2. ಕಮಲದಂತೆ ಕಣ್ಣುಳ್ಳ. ಅರವಿಂದೇ ಇವ ಅಕ್ಷಿಣಿ  
ಯಸ್ಯ "ಪಚ್" (೫-೪-೧೧೩)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್"  
(೪-೧-೪೯)। - ಅಕ್ಷಿ - ಅಕ್ಷಿಃ.



ಅರವಿಂದಿನಿ ಅರವಿಂದಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಮಲಲತೆ. 2. ಕಮಲಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇಶ. 3. ಕಮಲಗಳ ಸಮೂಹ. ಅರವಿಂದ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೩೫)। "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫)।

ಅರಸ ಅರಸ (ವಿಂ) 1. ರಸವಿಲ್ಲದ. 2. ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ. 3. ಸಮೈಯಾದ. ರಸ್ಯತೇ - ರಸ(ಆಸ್ವಾದನಸ್ತೇಹನಯೋ:) + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬)। ನಂ ಬಂ।

ಅರಸಿಕ ಅರಸಿಕ (ವಿಂ) ರಸವನ್ನರಿಯದ, ರಸಸ್ವರೂಪ ವನ್ನು ತಿಳಿಯದ. ರಸೋಽಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೫)। ನಂ ತಂ। "ಅರಸಿಕೇಷು ರಸಸ್ಯ ನಿವೇದನಂ ಶಿರಸಿ ಮಾ ಲಿಖ ಮಾ ಲಿಖ ಮಾ ಲಿಖ"।

ಅರಾಜಕ ಅರಾಜಕ (ಪುಂ) ರಾಜನಿಲ್ಲದ ದೇಶ. ನಾಸ್ತಿ ರಾಜಾ ಯತ್ರ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೫೪)।

ಅರಾತಿ ಅರಾತಿ (ಪುಂ) 1. ಶತ್ರು, ಹಗೆ, ವೈರಿ. ನ ರಾತಿ ಸುಖಮ್ - ರಾ(ದಾನೇ)"ಕ್ತಿಚ್" (೩-೩-೧೭೪)। "ಅರಾತಿ-ಪಕ್ಷಾಣವಮಂದರಾಭೇ" ಯಾದಂ ೧೩-೮೪। "ಅರಾತಿಭಿರ್ಯುಧಿ ಸಹಯುಧವನೋ ಹತಾನ್" ಮಾಘಂ ೧೭-೩೪। 2. ಜಾತಕದ ಕುಂಡಲಿಯಲ್ಲಿ ತನ್ನಾದಿ ಭಾವಗಳ ಪೈಕಿ ಆರನೆ ಯದು. [ಆರನೆಯದು ಶತ್ರುಸ್ಥಾನ.] 3. ಆರು ಸಂಖ್ಯೆ.

ಅರಾಲ ಅರಾಲ (ಪುಂ) 1. ಮದಿಸಿದ ಆನೆ. 2. ಸರ್ಪ ರಸ, ಮತ್ತಿಮರದ ಹಾಲು. (ವಿಂ) 3. ವಕ್ರವಾದ, ಕುಟಲವಾದ, ಡೊಂಕಾದ. ಋ (ಗತೌ) "ವಿಚ್" (೩-೨-೭೫)। ಅರಮಾಲಾತಿ - ಆ+ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕ:" (ವಾಂ ೩-೨-೫)। "ಅರಾಲ: ಕುಟಿಲೇ ಸರ್ಜರಸೇ ಸಮದದಂತಿನಿ" ಮೇದಿಂ। "ಕರೋತಿ ಲಕ್ಷ್ಯಂ ವಿರಮಸ್ಯ ಚಕ್ಷುಷೋ ನ ವಕ್ರಮಾತ್ಮಮೀಯಮರಾಲಪಕ್ಷಮಣ:" ಕುಮಾಂ ೫-೪೯। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ -ಲಾ. 4. ವೇಶ್ಯೆ, ಸೂಳೆ, ಸ್ವೈರಿಣಿ.

ಅರಿ ಅರಿ (ಪುಂ) 1. ಶತ್ರು, ವೈರಿ, ಹಗೆ. ಇಯತಿ ವಿರೋಧಮ್ - ಋ(ಗತೌ)"ಇ:" (೩ಂ ೪-೧೩೮)। "ಅರಿಷ್ಠ ಹಿ ವಿಜಯಾರ್ಥಿನ: ಕ್ಷಿತಿಶಾ: ವಿದಧತಿ ಸೋಪಧಿ ಸಂಧಿದ್ವಿಷ-ಣಾನಿ" ಕಿರಾಂ ೧-೪೫। 2. ಕಾಮ ಕ್ರೋಧ ಲೋಭ ಮೋಹ ಮದ ಮಾತ್ಸರ್ಯಗಳೆಂಬ ಮನುಷ್ಯನ ಶತ್ರು ವರ್ಗ. 3. ಲಗ್ನದಿಂದ ಆರನೆಯ ಸ್ಥಾನ, ಶತ್ರು ಸ್ಥಾನ. 4. ಆರು ಸಂಖ್ಯೆ.

ಅರಿಚಿಂತನ ಅರಿಚಿಂತನ (ನಂ) ಶತ್ರುರಾಷ್ಟ್ರದ ವಿಷಯ ವಾಗಿ ಮಾಡುವ ಯೋಚನೆ. "ತನ್ವಂ ಸ್ವರಾಷ್ಟ್ರಚಿಂತಾ ಸ್ಯಾದಾವಾಪಸ್ತವಿರಿಚಿಂತನಮ್" ವೈಜಂ।

ಅರಿತ್ರ ಅರಿತ್ರ (ನಂ) 1. ಹಡಗುಗಳನ್ನು ನಡೆಸುವ ಜಲೈ. ಋಚ್ಚತಯೇನ - ಋ (ಗತೌ) "ಇವ:" (೩-೨-೧೮೪)। "ಲೋಲೇರರಿತ್ರೇಶ್ವರಣೇರಿವಾಭಿತ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೭೧। 2. ಹಡಗಿನ ಚುಕ್ಕಾಣಿ, ಲಂಗರು. (ವಿಂ) 3. ಶತ್ರು ಗಳಿಂದ ಕಾಪಾಡುವ. ಅರಿಮ್ಯ: ತ್ರಾಯತೇ-ತೈಡ್(ಪಾಲನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೪)।

ಅರಿಂದಮ ಅರಿಂದಮ (ವಿಂ) ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಅಡಗಿಸುವ. ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಕುಗ್ಗಿಸುವ. ಅರಿನ್ ದಾಮ್ಯತಿ - ಅರಿ+ದಮ್ (ಉಪಶಮೇ) "ಖಚ್" (೩-೨-೪೬)। "ಮುಮ್" (೬-೩-೬೭)।

ಅರಿಭದ್ರ ಅರಿಭದ್ರ (ಪುಂ) ಅರಿಶ್ರೇಷ್ಠ, ಬಹಳ ಬಲಶಾಲಿ ಯಾದ ಶತ್ರು. "ಸರ್ಪಾಧಿರಾಜೋರ್ಮುಜೋಽಪಸಂ ಪಪ್ರಚ್ಛ ಭದ್ರಂ ವಿಜಿತಾರಿಭದ್ರ:" ರಘುಂ ೧೪-೩೧।

ಅರಿಮೇದ ಅರಿಮೇದ (ಪುಂ) ಕೆಟ್ಟ ವಾಸನೆಯುಳ್ಳ ಕಗ್ಗಲಿ ಮರ.

ಅರಿಷಡ್ವರ್ಗ ಅರಿಷಡ್ವರ್ಗ (ಪುಂ) ಕಾಮ ಕ್ರೋಧ ಲೋಭ ಮೋಹ ಮದ ಮಾತ್ಸರ್ಯಗಳೆಂಬ ಆರು ಶತ್ರುಗಳ ಗುಂಪು.

ಅರಿಷ್ಠ ಅರಿಷ್ಠ (ಪುಂ) 1. ಬೇವಿನ ಮರ. 2. ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳಿ. 3. ಹದ್ದು. 4. ಕಾಗೆ, ನಾಯಕ. 5. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಿಂದ ಹತನಾದ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. "ಅರಿಷ್ಠಾಣರ್ಮುಖೇಷ್ವಲ-ಕ್ಷಿತಮ್" ಯಾದಂ ೧೪-೧೧।(ನಂ) 6. ಅಶುಭ. 7. ಮಜ್ಜೆಗೆ, ಕಡೆದು ನೀರು ಬೆರಸಿದ ಮೊಸರು. 8. ಅಶುಭ ಸೂಚನೆ. "ಅರಿಷ್ಠಮಾಶುಚ್ಛ ವಿಪಾಕದಾರುಣಮ್" ಕುಮಾಂ ೧೫-೨೬। 9. ಸಾವಿನ ಲಕ್ಷಣ, ಮರಣದ ಕುರುಹು. 10. ಶುಭ, ಕ್ಷೇಮ. 11. ಮದ್ಯ. 12. ಸೂತಿಕಾ ಗೃಹ, ಪ್ರಸವಗೃಹ, ಹೆರಿಗೆಯ ಮನೆ. "ಅರಿಷ್ಠಶಯ್ಯಾಂ ಪರಿತೋ ವಿಸಾರಿಣಾ" ರಘುಂ ೩-೧೫। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಶಾ -ಷ್ಠಾ. 13. ಕಟುಕ ರೋಹಿಣಿ. (ವಿಂ) 14. ಸುಖವಾದ, ಕ್ಷೇಮವಾದ, ತೊಂದರೆಯಿಲ್ಲದ. "ಅರಿಷ್ಠಂ ಗಚ್ಛ ಪನ್ಥಾನಮ್" ರಾಮಾಂ। "ಅರಿಷ್ಠೋ ಲಶುನೇ ನಿಮ್ಬೇ ಫೇನಿಲೇ ಕಾಕಕಡ್ಕಯೋ:। ಅರಿಷ್ಠಮಶುಭೇ ತಕ್ರೇ ಸುತಿಕಾಗಾರ ಆಸವೇ। ಶುಭೇ ಮರಣಚಿಹ್ನೇ ಚ" ಮೇದಿಂ।

ಅರಿಷ್ಠತಾತಿ ಅರಿಷ್ಠತಾತಿ (ವಿಂ) ಶುಭವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವವನು. ಅರಿಷ್ಠಂ ಕರೋತಿ - ಅರಿಷ್ಠ "ತಾತಿಲ್" (೪-೪-೧೪೩)।

ಅರಿಷ್ಠದೃಷ್ಟಿ ಅರಿಷ್ಠದೃಷ್ಟಿ (ವಿಂ) ಅಶುಭ ಚಿಹ್ನೆಯಿಂದ ಕಳವಳಗೊಂಡ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ಅರಿಷ್ಠೇನ ದೃಷ್ಟಾ-ಧೀಯಸ್ಯ। "ವಿವಶೋಽರಿಷ್ಠದೃಷ್ಟಿ:" ಅಮಂ।



ಅರಿಷ್ಠನೇಮಿ ಅರಿಷ್ಠನೇಮಿ (ಪುಂ) 1. ವಿನತಾದೇವಿಯ ಮಗ. "ತಾರ್ಕ್ಯಶ್ಚಾರಿಷ್ಠನೇಮಿಶ್ಚ ಗಢಶ್ಚ ಮಹಾಬಲಃ | ಅರುಣಶ್ಚಾರುಣಿಶ್ಚೈವ ವಿನತಾಯಾಃ ಸುತಾಃ ಸ್ಮೃತಾಃ" ಹರಿವಂ | 2. ಒಬ್ಬ ಜೈನತೀರ್ಥಂಕರರ ಹೆಸರು.

ಅರಿಷ್ಠಿ ಅರಿಷ್ಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕ್ಷೇಮ, ಶುಭ. ನ ರಿಷ್ಠಿಃ | ನಂ ತಂ |

ಅರುಚಿ ಅರುಚಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ಸಂತೋಷವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

ಅರುಣ ಅರುಣ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಋಚ್ಛತಿ - ಋ (ಗತೌ) "ಉನ್" (ಉಂ 3-60) | "ರಾಗೇಣ ಬಾಲಾ-ರುಣಕೋಮಲೇನ" ಕುಮಾಂ 3-30 | 2. ಸೂರ್ಯನ ಸಾರಥಿ. ಅರುಣೋ ವರ್ಣೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ - ಅರುಣ "ಅಚ್" (4-2-123) | "ಆವಿಷ್ಕೃತಾರುಣಪುರಃಸರ ಏಕತೋರ್ಕಃ" ಶಾಕುಂ 4-1 | 3. ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣ, ಸಂಧ್ಯಾರಾಗ. 4. ಎಳೆಗೆಂಪು. 5. ಎಣ್ಣೆಗೆಂಪು, ಕಪ್ಪು ಬೆರೆತ ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣ. 6. ಒಂದು ಜಾತಿ ಕುಷ್ಮರೋಗ. 7. ಕಾಕಂಬಿ, ಬೆಲ್ಲದ ಪಾಕ. 8. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. 9. ದ್ವಾದಶಾದಿತ್ಯ ರಲ್ಲೊಬ್ಬ. "ಅರುಣೋ ಮಾಧಮಾಸೇ ವೈ" ಆದಿತ್ಯಹಂ | 10. ಸುರಗಿ ಮರ, ಸುರಹೊನ್ನೆಮರ. 11. ಬುಧ ಗ್ರಹ. 12. ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲದ ಮೇಘ. (ನಂ) 13. ಕುಂಕುಮ ಕೇಸರಿ. 14. ಜಿನ್ನ, ಸುವರ್ಣ. 15. ತಾಮ್ರ ಲೋಹ. "ವಿಷಾರುಣಾಣಾಂ ತಾಮ್ರಮರುಣಃ ಸೂರ್ಯಸಾರಥೌ | ಅವ್ಯಕ್ತರಾಗೋ ಶಶಿಜೋ ಸಂಧ್ಯಾಶ್ರೇ ಲೋಹಿತೇ ರವೌ" ವೈಜಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಗಾ-ಣಾ. 16. ಮಂಜಿಷ್ಠೆ. 17. ಅತಿಬಜೆ. 18. ಸಾವೆ. 19. ಕೆಂಪು ತಿಗಡೆಮರ. 20. ಗುಲಗಂಜಿ ಬಳ್ಳಿ. 21. ಒಂದು ನದಿ. 22. ಹಾವು ಮೆಕ್ಕಿ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 23. ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣದ, ಎಳೆಗೆಂಪಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಅರುಣಜಲಜರಾಜೀಮುಗ್ಧಹಸ್ತಾಗ್ರಪಾದಾ" ಮಾಘಂ 11-40 | "ಅರುಣಾಧರಸಾಭಿಲಾಷವಂಶಾಂ ಕರುಣಾಂ ಕಾರಣ-ಮಾನುಷಿಂ ಭಜಾಮಿ" ಯಾದಂ 14-69 | 24. ಎಣ್ಣೆಗೆಂಪಾದ. 25. ಮೂಕ, ಮಾತಾಡಲಾರದವನು. 26. ಚಿಂತಾಕ್ರಾಂತನಾದ. "ಅರುಣೋವ್ಯಕ್ತರಾಗೋಽಕಂ ಸಂಧ್ಯಾರಾಗೋಽಕಸಾರಥೌ | ನಿಃಶಬ್ದೇ ಕಪಿಲೇ ಕುಂಠಭೇದೇ ನಾ ಗುಣಿನಿ ತ್ರಿವೃ | ಅರುಣಾತಿವಿಷಾ ಇಯಾಮಾ ಮಜ್ಜಿಷ್ಠಾ ತ್ರಿವೃತಾಸು ಚ" ಮೇದಿಂ | "ಮಜ್ಜಿಷ್ಠಾತಿವಿಷಾರುಣಾ | ತ್ರಿವ್ವಾರಕ್ತೇ ವ್ಯಾಕುಲೇ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಅರುಣಪ್ರಿಯಾ ಅರುಣಪ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ— (1) ಸಂಜ್ಞಾದೇವಿ. (2) ಭಾಯಾದೇವಿ.

ಅರುಣನಯನ ಅರುಣನಯನ - ನೇತ್ರ - ನೇತ್ರ, - ಲೋಚನ - ಲೋಚನ (ಪುಂ) 1. ಪಾರಾವತ, ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ. (ವಿಂ) 2. ಕೆಂಪಾದ ಕಣ್ಣುಳ್ಳ. ಅರುಣ ನಯನೇ ನೇತ್ರೇ ಲೋಚನೇ ವಾ ಯಸ್ಯ |

ಅರುಣಸಾರಥಿ ಅರುಣಸಾರಥಿ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಅರುಣಃ ಸಾರಥಿರಯಸ್ಯ |

ಅರುಣಾತ್ಮಜ ಅರುಣಾತ್ಮಜ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯನ ಮಗ— (1) ಶನಿದೇವ. (2) ಸುಗ್ರೀವ. (3) ಯಮ. (4) ಕರ್ಣ. (5) ಸಾವರ್ಣಮನು. (ದ್ವಿಂ ವಂ) (6) ಅಶ್ವಿನೀ ಕುಮಾರರು. 2. ಸೂರ್ಯನ ಸಾರಥಿಯಾದ ಅರುಣನ ಮಗ—(1) ಜಟಾಯು. (2) ಸಂಪಾತಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜಾ -ಜಾ. ಸೂರ್ಯನ ಮಗಳು— (1) ಯಮುನಾನದಿ. (2) ತಪತೀನದಿ.

ಅರುಣಾನುಜ ಅರುಣಾನುಜ - ಅವರಜ - ಅವರಜ (ಪುಂ) ಅರುಣನ ತಮ್ಮ, ಗರುಡ. ಅರುಣಸ್ಯಾನುಜಃ ಅವರಜೋ ವಾ | ಅರುಣಿತ ಅರುಣಿತ (ವಿಂ) ಕೆಂಪಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅರುಣ "ಐತಚ್" (4-2-36) | "ಸ್ತನಾಙ್ಗರಾಗಾರುಣಿತಾಚ್ಚ ಕಂದುಕಾತ್" ಕುಮಾಂ 4-11 | "ಅರುಣಿತಾಖಿಲಶಿಲವನಾ ಮುಹುಃ" ಮಾಘಂ 6-21 |

ಅರುಣೋದಯ ಅರುಣೋದಯ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯೋದಯಕ್ಕೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕು ಘಳಿಗೆಯ ಕಾಲ. "ಚತುರ್ದಶಿ ಘಟಿಕಾಃ ಪ್ರಾತರರುಣೋದಯ ಉಚ್ಯತೇ" | 2. ಅರುಣನ ಆವಿರ್ಭಾವ, ಅರುಣನು ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ.

ಅರುಣೋದಯವಿಧಾ ಅರುಣೋದಯವಿಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರುಣೋದಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ದಶಮೀ ತಿಥಿಯ ಸಂಬಂಧ ವುಳ್ಳ ಏಕಾದಶೀ ತಿಥಿ. ಅರುಣೋದಯೇ ವಿಧಾ | "ದಶಮೀ ಶೇಷಸಂಯುಕ್ತಾ ಯದಿ ಸ್ಯಾದರುಣೋದಯೇ | ವೈಷ್ಣವೇನ ನ ಕರ್ತವ್ಯಂ ತದ್ವಿನೈಕಾದಶೀತ್ರತಮ್" ಭವಿಷ್ಯಂ |

ಅರುಣೋದಯಸಪ್ತಮಿ ಅರುಣೋದಯಸಪ್ತಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾಘ ಶುಕ್ಲ ಸಪ್ತಮಿ, ರಥಸಪ್ತಮಿ. "ಮಾಘೇ ಮಾಸಿ ಸಿತೇ ಪಕ್ಷೇ ಸಪ್ತಮಿ ಕೋಟಿಭಾಸ್ಕರಾ | ದದಾತ್ಸನಾನಾರ್ಥದಾನಾಮ್ಯಾ-ಮಾಪುರಾರೋಗ್ಯಸಂಪದಃ" ಭವಿಷ್ಯಂ | [ಈ ದಿನ ಅರುಣೋದಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನ ಅರ್ಘ್ಯಪ್ರದಾನಾದಿಗಳಿಂದ ಪುಣ್ಯವುಂಟಾಗುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.]

ಅರುಣೋಪಲ ಅರುಣೋಪಲ (ಪುಂ) ಪದ್ಮರಾಗ, ಮಾಣಿಕ್ಯ. ಅರುಣ್ತು ಅರುಣ್ತು (ವಿಂ) ಮನಸ್ಸನ್ನು ನೋಯಿಸುವ, ಮರ್ಮಭೇದಕವಾದ. ಅರುಣಿ ತುದತಿ - ಅರುಸ್ + ತುದ (ವ್ಯಯೇ) "ಖಶ್" (3-2-34) | ಮುಮಾಗಮಃ (6-3-57) | "ಅರುಣ್ತುಮಿವಾಲಾನಮನಿವಾಣಸ್ಯ ದಂತಿನಃ" ರಘುಂ 1-91



ಅರಣ್ಯತೀ ಅರುಂಧತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಸಿಷ್ಠ ಮಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿ. “ಅನ್ವಾಸಿತಮರಣ್ಯತೀ ಸ್ವಾಹಯೇವ ಹವಿರ್ಭುಜಮ್” ರಘುಂ ೧-೫೬. “ಆರ್ಯಾಪ್ಯರಣ್ಯತೀ ತತ್ರ ವ್ಯಾಪಾರಂ ಕರ್ತುಮರ್ಹತಿ” ಕುಮಾಂ ೬-೩೨. [ಸಪ್ತರ್ಷಿ ಮಂಡಲದಲ್ಲಿ ವಸಿಷ್ಠ ಮಹರ್ಷಿಯ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಅರುಂಧತೀ ದೇವಿಯು ನಕ್ಷತ್ರ ರೂಪದಲ್ಲಿರುವಳು. ವಿವಾಹ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ವಧಾವರರಿಗೆ ಅರುಂಧತೀ ನಕ್ಷತ್ರವನ್ನು ತೋರಿಸುತ್ತಾರೆ.] 2. ಜಹ್ನು, ನಾಲಿಗೆ. “ಅರಣ್ಯತೀ ಭವೇಜ್ಜಿಹ್ವಾ ಧ್ರುವೋ ನಾಸಾಗ್ರಮುಚ್ಯತೇ” ಕಾಶೀಖಂ.

ಅರಣ್ಯತೀಜಾನಿ ಅರುಂಧತೀಜಾನಿ (ಪುಂ) ವಸಿಷ್ಠ ಮಹರ್ಷಿ. ಅರಣ್ಯತೀ ಜಾಯಾ ಯಸ್ಯ “ನಿಙ್” (೪-೪-೧೩೪).

ಅರಣ್ಯತೀದರ್ಶನನ್ಯಾಯ ಅರುಂಧತೀದರ್ಶನನ್ಯಾಯ (ಪುಂ) ಮೊದಲು ಸ್ಥೂಲವಾಗಿ ಸುಲಭವಾದ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಸಿ ಅನಂತರ ವಿಮರ್ಶೆಯಿಂದ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು. [ಅರುಂಧತಿಯನ್ನು ತೋರಿಸಲು ಮೊದಲು ಅಕ್ಕಪಕ್ಕದ ಸ್ಥೂಲವಾದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳನ್ನು ತೋರಿಸಿ ಅನಂತರ ಅವುಗಳ ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿರುವ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ಅರುಂಧತೀನಕ್ಷತ್ರವನ್ನು ತೋರಿಸುವಂತೆ.]

ಅರಣ್ಯ ಅರುಲ (ನಂ) 1. ಜಲ, ನೀರು. 2. ದೋಣಿ. “ಅರಣ್ಯಂ ಸಲಿಲೇ ಪೋತೇಪಿ” ವೇಜಂ.

ಅರಣ್ಯಕರ ಅರುಷ್ಕರ (ಪುಂ) 1. ಗೇರುಮರ. ಅರು: ಕ್ರಾಂ ಕರೋತಿ — ಡು ಕೃಷ್(ಕರಣೆ) “ಠ:” (೩-೨-೨೧). (ವಿಂ) 2. ಗಾಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.

ಅರುಸ್ ಅರುಸ್ (ಪುಂ) 1. ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 2. ಕೆಂಪು ಕಗ್ಗಲಿ ಮರ. (ಪುಂ) 3. ವ್ರಣ, ಹುಣ್ಣು. 4. ಗಾಯ. (ನಂ) 5. ಮರ್ಮಸ್ಥಾನ. ಇ (ಗತೌ) “ಉಸಿ:” (೩ಂ ೨-೧೧೭).

ಅರೂಪ ಅರೂಪ (ನಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ. 2. ಕುರೂಪ. (ವಿಂ) 3. ರೂಪವಿಲ್ಲದ. 4. ಸೌಂದರ್ಯವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ರೂಪ ಯಸ್ಯ.

ಅರೂಪಹಾರ್ಯ ಅರೂಪಹಾರ್ಯ (ವಿಂ) ಸೌಂದರ್ಯ ದಿಂದ ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲಾಗದ. ರೂಪಣ ಸೌಂದರ್ಯಣ ಹಾರ್ಯೋ ನ ಭವತಿ. “ಅರೂಪಹಾರ್ಯಂ ಮದನಸ್ಯ ನಿಗ್ರಹಾತ್ ಪಿಣಾಕರ್ಮಾಣಿ ಪತಿಮಾಪ್ನುಮಿಚ್ಛತಿ” ಕುಮಾಂ ೪-೪೩.

ಅರೂಪ ಅರೂಪ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ, 2. ಒಂಧು ಜಾತಿಯ ಹಾವು.

ಅರೆ ಅರೆ (ಅವ್ಯಂ) 1. ನೀಚಸಂಬೋಧನೆ. “ಅರೆ ಕುಮ್ಮಿರಕ, ಕಥಯ ಕುತ್ರ ತ್ವಯೇತದ್ರಾಜಕೀಯಮಜ್ಞುಲೀಯಕಂ ಸಮಾಸಾದಿತಮ್” ಶಾಕುಂ ೬. 2. ಕೋಪದ ಸಂಬೋಧನೆ. “ಅರೆ ಮೂ, ಜಾತ್ಯಾ ಕಾಮಮವಧ್ಯೋಹಮ್. ಇಯಂ ಸಾ ಜಾತಿ: ಪರಿತ್ಯಕ್ತಾ” ವೇಣಿಂ ೩. 3. ಅಸೂಯೆ, ಹೊಟ್ಟೆಕಿಚ್ಚು. “ಅರೇ-ಪಾಕೃತ್ಯಸೂಯಯೋ:” ಮೇದಿಂ.

ಅರೋಕ ಅರೋಕ (ಪುಂ) 1. ಕಾಂತಿಯಿಲ್ಲದ, ಪ್ರಕಾಶ ಶೂನ್ಯವಾದ, ಕಳೆಗುಂದಿದ. ರುಚಿ (ದೀಪ್ತೌ) “ಛ” (೩-೩-೧೮). ರೋಕೋ ದೀಪ್ತಿ: ನ ರೋಕೋ ಯಸ್ಯ. 2. ರಂಧ್ರವಿಲ್ಲದ, ತೂತಿಯಿಲ್ಲದ.

ಅರೋಗ ಅರೋಗ (ಪುಂ) 1. ಆರೋಗ್ಯ, ರೋಗವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ರೋಗ: “ನ ನಾಮಮಾತ್ರೇಣ ಕರೋತೀರೋಗಮ್” ಹಿತೋಂ ೧-೧೬೭. (ವಿಂ) 2. ರೋಗವಿಲ್ಲದ. ನ ರೋಗೋ ಯಸ್ಯ.

ಅರೋಗಿನ್ ಅರೋಗಿನ್ (ವಿಂ) ರೋಗವಿಲ್ಲದ, ಆರೋಗ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ನ ರೋಗಿ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಓಪ್” (೪-೧-೪). ಅರೋಗಿಣಿ ಅರೋಗಿಣೀ.

ಅರೋಚಕ ಅರೋಚಕ (ಪುಂ) ಒಂದು ರೋಗ, ಯಾವ ಆಹಾರದಲ್ಲಿಯೂ ಆಪೇಕ್ಷೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡದ ರೋಗ, ಜಠರಾಗ್ನಿಯು ಕುಂದಿರುವಿಕೆ, ಅಜೀರ್ಣ ರೋಗ.

ಅರೋಚಕಿನ್ ಅರೋಚಕಿನ್ (ವಿಂ) ಅಜೀರ್ಣರೋಗವುಳ್ಳ.

ಅರ್ಕ ಅರ್ಕ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಅರ್ಚಂತೇ — ಅರ್ಚ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) “ಕ:” (೩ಂ ೩-೪೦). “ಜಗತ್ಪವಿತ್ರೇರಪಿ ತಂ ನ ಪಾದೇ: ಸ್ಪಷ್ಟಂ ಜಗತ್ಪೂಜ್ಯಮಯುಜ್ಯತಾರ್ಕ:” ಮಾಘಂ ೩-೨. 2. ವಿಷ್ಣು. “ಅರ್ಕೋ ವಾಜಸನಿ: ಸೃಜ್ಞಿ” ವಿಂ ಸಂ. 3. ಇಂದ್ರ. 4. ಸ್ವರ್ಣ. 5. ತಾಮ್ರಲೋಹ. 6. ಭಾನುವಾರ. 7. ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 8. ಶುಕ್ಲ ಸಪ್ತಮಿ. 9. ಪಂಡಿತ. 10. ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರ. 11. ಹರಳು ಗಿಡ. 12. ಉತ್ತರಫಲ್ಗುಣಿ ನಕ್ಷತ್ರ. 13. ಹನ್ನೆರಡು ಸಂಖ್ಯೆ. 14. ಕಷಾಯ. “ಅರ್ಕೋರ್ಜಕಪರ್ಣೆ ಸ್ಫಟಿಕೇ ರವಿ ತಾಮ್ರೇ ದಿವಸ್ಪತೌ” ಮೇದಿಂ. “ಅರ್ಕೋ ಮಧೋನಿ ಸ್ಫಟಿಕೇ ಜ್ಯೇಷ್ಠಭ್ರಾತರಿ ಭಾಸ್ಕರೇ. ಶುಭ್ರೇರ್ಜಕಪಾದಪೇ” ನಾನಾರ್ಥಂ. (ವಿಂ) 15. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ, ಪೂಜಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.

ಅರ್ಕಕ್ಷೇತ್ರ ಅರ್ಕಕ್ಷೇತ್ರ (ನಂ) ಸಿಂಹರಾಶಿ. ಅರ್ಕಸ್ಯ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್.

ಅರ್ಕಜ ಅರ್ಕಜ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯನ ಮಗ—(1) ಶನಿವೇನ. (2) ಯಮ. (3) ಸುಗ್ರೀವ. (4) ಕರ್ಣ. (5) ಸಾವರ್ಣಿಮನು. (ವಿಂ ೪ಂ) (6) ಅಶ್ವಿನೀ



ಕುಮಾರರು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜಾ-ಜಾ. ಸೂರ್ಯನ

ಮಗಳು—(1) ಯಮುನಾನದಿ. (2) ತಪತೀನದಿ.

ಅಕಾಂಕ್ಷಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾತುಭವಿ) "ಙ:" (3-2-98)।

ಅಕೃತನಯ ಅರ್ಚತನಯ -ಪುತ್ರ-ಪುತ್ರ, -ಸುತ-ಸುತ,

-ಸುತು-ಸೂನು (ಪುಂ) "ಅಕೃಜ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ಅಕೃತನಯನ ಅರ್ಚನಯನ -ನೇತ್ರ-ನೇತ್ರ (ಪುಂ) 1. ವಿರಾಟ

ಪುರುಷ. (ವಿಂ) 2. ಸೂರ್ಯನಂತೆ ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ

ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ.

ಅಕೃಪತ್ರ ಅರ್ಚಪತ್ರ -ಪಣಿ-ಪರ್ಣ (ಪುಂ) 1. ಎಕ್ಕದಗಿಡ.

ಅಕೃ ಇವ ತೀಕ್ಷ್ಣಂ ಪತ್ರಂ ಪಣಿಂ ವಾ ಯಸ್ಯ। (ನಂ) 2. ಎಕ್ಕದ ಎಲೆ.

ಅಕೃಪಾದಪ ಅರ್ಚಪಾದಪ (ಪುಂ) ಎಕ್ಕದಗಿಡ.

ಅಕೃಪ್ರಿಯಾ ಅರ್ಚಪ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ—

(1) ಭಾಯಾದೇವಿ. (2) ಸಂಜ್ಞಾದೇವಿ.

ಅಕೃಬಂಧು ಅರ್ಚಬಂಧು (ಪುಂ) 1. ಬುದ್ಧದೇವ. 2. ಕಮಲ,

ತಾವರೆಹೂವು. ಅಕೃ ಬಂಧುಯಸ್ಯ।

ಅಕೃಮ ಅರ್ಚಮ (ನಂ) 1. ಉತ್ತರಫಲ್ಗುನೀ ನಕ್ಷತ್ರ,

ಸೂರ್ಯದೇವತಾಕನಕ್ಷತ್ರ. 2. ಸೂರ್ಯನೇ ಅಧಿಪತಿ

ಯಾದ ಸಿಂಹರಾಶಿ.

ಅಕೃವಿವಾಹ ಅರ್ಚವಿವಾಹ (ಪುಂ) ಮೂರನೆಯ ವಿನಾಹ

ವನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಮೊದಲು ಎಕ್ಕದಗಿಡವನ್ನು

ಕನ್ಯೆಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿ (ಭಾವಿಸಿ) ಅದರೊಡನೆ ಮಾಡಿ

ಕೊಳ್ಳುವುದು. [ಇದರಿಂದ ಮೂರನೆಯ ವಿನಾಹವು

ನಾಲ್ಕನೆಯದಾಗುವುದು.] "ಚತುರ್ಥಾದಿವಿವಾಹಾರ್ಥ ತೃತೀಯೇಕಂ

ಸಮುದ್ರಹೇತ್. ಆದಿತ್ಯದಿವಸೇ ವಾಪಿ ಹಸ್ತಾರ್ಥೇ ವಾ ಶನೇಶ್ವರೇ।

ಶುಭೇ ದಿನೇ ವಾ ಪೂರ್ವಾಹ್ನೇ ಕುರ್ಯಾದಿಕವಿವಾಹಕಮ್" ಕಶ್ಯಪಂ।

ಅಕೃವೇದ ಅರ್ಚವೇದ (ಪುಂ) ತಾಳೇಶಪತ್ನಿ ಗಿಡ.

ಅಕೃವ್ರತ ಅರ್ಚವ್ರತ (ನಂ) 1. ಮಾಘಶುಕ್ಲ ಸಪ್ತಮಿ

(ರಥಸಪ್ತಮಿ)ಯ ದಿನ ಮಾಡುವ ಸೂರ್ಯನ ಪೂಜೆ.

2. ರಾಜನು ಪ್ರಜೆಗಳಿಂದ ಕಂದಾಯ (ತೆರಿಗೆ) ತೆಗೆದು

ಕೊಳ್ಳುವುದು. ಅಕೃಸ್ಯೇವ ವ್ರತಮ್। [ಸೂರ್ಯನು ಲೋಕ

ರಕ್ಷಣಾರ್ಥವಾಗಿ ಎಂಟು ತಿಂಗಳುಕಾಲ ಭೂಮಿಯಿಂದ

ನೀರನ್ನು ಎಳೆದುಕೊಂಡು ಅಮೇಲೆ ಅಧಿಕವಾಗಿ ಮಳೆ

ಯನ್ನು ಸುರಿಸುವಂತೆ ರಾಜನು ಪ್ರಜೆಗಳ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ

ಗಾಗಿಯೇ ಪ್ರಜೆಗಳಿಂದ ಎಂಟು ತಿಂಗಳು ಕಾಲ (ಕಂತಿನ

ರೂಪದಲ್ಲಿ) ಕಂದಾಯವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವನು.

ಇದಕ್ಕೆ ಅರ್ಚವ್ರತವೆಂದು ಹೆಸರು.] "ಅಷ್ಟೈ ಮಾಸಾನ್

ಯಾದಿತ್ಯಃ ತಾಯಂ ಗೃಹ್ಣಾತಿ ರಶ್ಮಿಭಿಃ। ತಥಾ ಹರೇತಕರಂ

ರಾಷ್ಟ್ರಾನ್ವಿತಮಕೃತಂ ಹಿತಮ್" ಮನುಂ 9-304। "ಸಹಸ್ರ-

ಗುಣಮುತ್ಸಾಷ್ಟುಮಾದತ್ತೇ ಹಿ ರಸಂ ರವಿಃ" ರಘುಂ 1-181।

ಅಕೃಷಮನ್ ಅರ್ಚಾಶ್ಚನ್ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯಕಾಂತ ಶಿಲೆ.

2. ಪದ್ಮರಾಗ, ಮಾಣಿಕ್ಯ.

ಅಕೃಂದ್ರಸಂಗಮ ಅರ್ಚೇಂದುಸಂಗಮ (ಪುಂ) ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ,

ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರರು ಒಂದೇ ರಾಶಿಯಲ್ಲಿ ಸೇರುವದಿನ.

ಅಕೃಂದ್ರ ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತತೋಷ್ಠ ಸಮ್+ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಘಃ"

(3-3-118)।

ಅಕೃಪಲ ಅರ್ಚೇಪಲ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯಕಾಂತ ಶಿಲೆ.

2. ಪದ್ಮರಾಗ, ಮಾಣಿಕ್ಯ.

ಅಕೃಯ ಅರ್ಚ್ಯ (ವಿಂ) ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ, ಪೂಜಿಸಲು

ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಅಕೃ (ಸ್ತವನೇ) "ಘತ್" (3-1-124)।

ಅಗಲ ಅರ್ಗಲ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಗಲ, ಚಿಲಕ, ಲಾಳ

ಮುಂಡಿಗೆ. 2. ಬಾಗಿಲು. ಅರ್ಜಯೇ - ಅರ್ಜ (ಅರ್ಜನೇ)

"ಕಲಚ್" (3-1-106)। ಕುತ್ವಮ್ (3-3-43)।

"ಪುರಾಗಲಾದೀರ್ಭುಜೋ ಬುಭೂಜ" ರಘುಂ 18-4। (ವಿಂ) 3.

ತರಂಗ, ಅಲೆ. "ಅಗಲಸ್ತ್ರಿಫು ಕಲ್ಪೋಲೇಂತರ್ದಂಡಾವಾರಯೋ-

ನೇನಾ" ಮೇದಿಂ।

ಅಗಲಿಕಾ ಅರ್ಗಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗಲ, ಚಿಲಕ, ಮರದ

ಅಡ್ಡ ಪಟ್ಟಿ.

ಅರ್ಚ ಅರ್ಘ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಬೆಲೆ, ಕ್ರಯ. ಅರ್ಹತೇಜೇನ

-ಅರ್ಹ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಘಃ" (3-3-121)। ಕುತ್ವಮ್

(3-3-43)। "ಮಣಿಮುಕ್ತಾಪ್ರವಾಲಾನಾಂ ಲೋಹಾನಾಂ ತಾನ್ತವಸ್ಯ

ಚ। ಗಂಧಾನಾಂ ಚ ರಸಾನಾಂ ಚ ವಿಷಾದಿರ್ಬಲಾವಲಮ್" ಮನುಂ

9-329। 2. ಪೂಜೆ, ಪೂಜಾಕಾರ್ಯ. "ಸ ಪ್ರತ್ಯಗ್ರೈಃ

ಕುಟಜಕುಸುಮೈಃ ಕಲ್ಪಿತಾರ್ಘ್ಯೈಃ ತಸ್ಮೈ" ಮೇಘಂ 1-4।

ಅರ್ಘ್ಯ ಅರ್ಘ್ಯ (ನಂ) 1. ಪೂಜಾದ್ರವ್ಯ, ಪೂಜೆಗೆ ಬೇಕಾದ

ಪತ್ರಪುಷ್ಪ ಮೊದಲಾದವು. 2. ಪೂಜಾಸಂಬಂಧ

ವಾದ ಉಪಚಾರಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಅರ್ಘ್ಯದಮ್ "ಯತ್"

(4-4-24)। (ವಿಂ) 3. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ, ಪೂಜೆಗೆ

ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಅರ್ಹತೇ-ಅರ್ಹ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಘತ್"

(3-1-124)। ಕುತ್ವಮ್ (3-3-43)। "ತಾನರ್ಘ್ಯಾನಿರ್ಘ್ಯ-

ಮಾದಾಯ ದ್ವಾರಾತ್ ಪ್ರತ್ಯುದಯೌ ಗಿರಿಃ" ಕುಮಾರಂ 6-40।

"ತಮರ್ಘ್ಯಮರ್ಘ್ಯಾದಿಕಯಾದಿಪುರುಷಃ" ಮಾಘಂ 1-14।

ಅರ್ಚಕ ಅರ್ಚಕ (ಪುಂ) ಪೂಜಿಸುವವನು, ಆರಾಧಿಸು

ವವನು, ಆರಾಧಕ. ಅರ್ಚ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಘಲ್"

(3-1-133)। "ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ ವ್ರತೀ ಚ ಸ್ಯಾದ್ಗುರುದೇವದ್ವಿಜಾ-

ರ್ಚಕಃ" ಮನುಂ 11-224। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಅರ್ಚಿಕಾ ಅರ್ಚಿಕಾ.



ಅರ್ಚನ ಅರ್ಚನ (ನಂ) ಪೂಜೆ, ಆರಾಧನೆ. ಅರ್ಚ (ಪೂಜಾಯಾಮ್)  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। ಅರ್ಚ+ಣಿಕ್ “ಯುಕ್”  
(೩-೩-೧೦೭)। ಅರ್ಚನಾ ಅರ್ಚನಾ.

ಅರ್ಚನೀಯ ಅರ್ಚನೀಯ (ವಿಂ) ಪೂಜಾರ್ಹನಾದ, ಪೂಜೆಗೆ  
ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ. ಅರ್ಚ (ಪೂಜಾಯಾಮ್)  
“ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೧೬)। “ಅರ್ಚನೀಯಚರಣಾಮ್ಬುಜೇ  
ಭವತ್ಯಾತತಾಪಿದವೀಮುಪೇಯುಷಾಮ್” ಯಾದಂ ೧೭-೧೧೫।

ಅರ್ಚಿ ಅರ್ಚಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೂಜೆ, ಆರಾಧನೆ. ಅರ್ಚ  
(ಪೂಜಾಯಾಮ್) “ಅ:” (೩-೩-೧೦೩)। 2. ಪ್ರತಿಮೆ,  
ವಿಗ್ರಹ, ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ ಮೂರ್ತಿ. “ಅರ್ಚಿ ಪೂಜಾ-  
ಪ್ರತಿಮಯೋ:” ವೇಜಂ। [ಪೂಜೆಗಾಗಿ ನಿರ್ಮಿತವಾದ  
ವಿಗ್ರಹಕ್ಕೆ ಅರ್ಚಿಯೆಂದು ಹೆಸರು. ಈ ವಿಗ್ರಹವು  
ಸ್ವಯಂವ್ಯಕ್ತ, ದೈವ, ಆರ್ಷ ಮತ್ತು ಮಾನುಷವೆಂದು  
ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. (1) ಪುರಾಣಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ತಾನಾಗಿ  
ಆವಿರ್ಭವಿಸಿದುದಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿದ್ದು ಸ್ವಯಂವ್ಯಕ್ತ.  
(2) ದೇವತೆಗಳು ಪ್ರತಿಷ್ಠಿಸಿದುದು ದೈವ. (3) ಮುಷ್ಯಾದಿ  
ಸಿದ್ಧವುರುಷರು ಪ್ರತಿಷ್ಠೆ ಮಾಡಿದುದು ಆರ್ಷ.  
(4) ಮಾನುಷರಿಂದ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿಸಲ್ಪಟ್ಟುದು ಮಾನುಷ.  
ಈ ಅರ್ಚಿಯು ಪರವ್ಯಾಹಾದಿ ರೂಪದಿಂದ ಇರುವ  
ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಒಂದು ಪ್ರಕಾರ. (ಅವತಾರಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು). [ಪರ, ವ್ಯಾಹ, ಅಂತರ್ಯಾಮಿ, ವಿಭವ  
ಮತ್ತು ಅರ್ಚಿಗಳೆಂದು ಪರಮಾತ್ಮನು ಭಕ್ತಾನುಗ್ರಹ  
ಕ್ಕಾಗಿ ಐದು ವಿಧವಾಗಿ ಅವತಾರ ಹೊಂದುವನು  
ಎಂದು ಪಾಂಚರಾತ್ರ ಮತ್ತು ವೈಖಾನಸಾಗಮಗಳಲ್ಲಿ  
ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. ಶೈವಾಗಮದಲ್ಲಿ ಪರಮೇಶ್ವರನು ಬೇರ  
ಮತ್ತು ಲಿಂಗ ರೂಪದಲ್ಲಿದ್ದುಕೊಂಡು ಭಕ್ತರನ್ನು ಅನು-  
ಗ್ರಹಿಸುವುದಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. ವಿವರಕ್ಕೆ “ವೇರ”  
ಮತ್ತು “ಲಿಂಗ” ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಈ ಐದು ವಿಧ  
ಅವತಾರಗಳಲ್ಲಿ ಅರ್ಚಾವತಾರದಲ್ಲೇ ಭಕ್ತಾನುಗ್ರಹವು  
ಅತಿಶಯವಾಗಿ ತೋರುವುದು. ಪರಮಾತ್ಮನ  
ಭಕ್ತರ ಅನುಗ್ರಹಕ್ಕಾಗಿ ಅವರವರಿಗೆ ಇಷ್ಟವಾದ  
ಶಿಲೆ ಲೋಹಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ರಾಮ, ಕೃಷ್ಣ, ಭೈರವ,  
ಆಂಜನೇಯ, ವೃಷಭ ಇತ್ಯಾದಿ ರೂಪಗಳಿಂದ  
ಅಪ್ರಾಕೃತ ದಿವ್ಯಮಂಗಳ ವಿಗ್ರಹವುಳ್ಳವನಾಗಿ  
ಮನೆ, ಗ್ರಾಮ, ನಗರ, ಬೆಟ್ಟ ಇತ್ಯಾದಿ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿ  
ತನ್ನ ಭಕ್ತರಾದ ಮಾನುಷರಿಗೆ ಗೋಚರನಾಗಿದ್ದು  
ಕೊಂಡು ಸಕಲ ಜಗತ್ತಿಗೂ ಕಲ್ಯಾಣವುಂಟುಮಾಡು-  
ವನು.]

ಅರ್ಚಿ ಅರ್ಚಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆಂಕಿಯ ಉರಿ, ಜ್ವಾಲೆ. ಅರ್ಚ  
(ಪೂಜಾಯಾಮ್) “ಇನ್” (೩ಂ ೪-೧೧೮)। “ಆಸೀದಾಸತ್ರ-  
ನಿರ್ವಾಣ: ಪ್ರದೀಪಾರ್ಚಿರವೋಪಸಿ” ರಘುಂ ೧೨-೧।

ಅರ್ಚಿಚಯಿಷಾ ಅರ್ಚಿಚಯಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂಜಿಸಲು  
ಅವೇಕ್ಷೆ, ಆರಾಧಿಸಲು ಇಚ್ಛೆ. ಅರ್ಚ (ಪೂಜಾಯಾಮ್)+  
ಣಿಕ್+ಸನ್ “ಅ:” (೩-೩-೧೦೨)।

ಅರ್ಚಿಚಯಿಷು ಅರ್ಚಿಚಯಿಷು (ವಿಂ) ಪೂಜಿಸಲು  
ಅವೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, ಆರಾಧಿಸಲು ಇಷ್ಟವುಳ್ಳ. ಅರ್ಚಯಿಷು-  
ಮಿಚ್ಛು:—ಅರ್ಚ (ಪೂಜಾಯಾಮ್)+ಣಿಕ್+ಸನ್ “ಃ:”  
(೩-೨-೧೬೮)। “ಯಷ್ಟುಮಿಚ್ಛಸಿ ಪಿತೃಣ ಸಾಮ್ಪ್ರತಂ ಸಂವೃತೌಃ-  
ಚಿವಯಿಷುರ್ದಿವೌಕಸ:” ಕಿರಾಂ ೧೩-೬೫।

ಅರ್ಚಿತ ಅರ್ಚಿತ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. “ಅರ್ಚಿಷ್ಠಾನರ್ಚಿತ:  
ಕುಂಭೋ ವಿಶುದ್ಧಾತ್ಮಾ ವಿಶೋಧನ:” ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 2.  
ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ, ಆರಾಧಿಸಲ್ಪಡುವ. ಅರ್ಚ (ಪೂಜಾಯಾಮ್)  
“ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೮೮)। “ಅನರ್ಥಮರ್ಥ್ಯಣ ತಮದ್ರಿಣಾಥ:  
ಸ್ವಗೌಕಸಾಮರ್ಚಿತಮರ್ಚಯಿತ್ವಾ” ಕುಮಾಂ ೧-೫೮। 3. ಪೂಜಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ಮ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)।

ಅರ್ಚಿಷ್ಠತ್ ಅರ್ಚಿಷ್ಠತ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. “ಅರ್ಚಿಷ್ಠಾ-  
ನರ್ಚಿತ: ಕುಂಭ:” ವಿಂ ಸಂ। 2. ಸೂರ್ಯ. 3. ಅಗ್ನಿ,  
ಬೆಂಕಿ. ಅರ್ಚಿಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್” (೫-೨-೧೪)।  
(ವಿಂ) 4. ಉರಿಯುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ.

ಅರ್ಚಿಸ್ ಅರ್ಚಿಸ್ (ಪುಂ) 1. ಕಿರಣ, ರಶ್ಮಿ. 2. ಅಗ್ನಿ,  
ಬೆಂಕಿ. (ನಂ) 3. ಬೆಂಕಿಯ ಉರಿ, ಜ್ವಾಲೆ. ಅರ್ಚ  
(ಪೂಜಾಯಾಮ್) “ಇಸಿ:” (೩ಂ ೨-೧೦೮)। 4. ಕಾಂತಿ,  
ಪ್ರಕಾಶ. “ಪ್ರಶಮಾದಿಚಿಷಾಮೇತದನ್ತುರ್ದೀರ್ಣಸುರಾಯುಧಮ್” ಕುಮಾಂ  
೨-೨೦।

ಅರ್ಚ್ಯ ಅರ್ಚ್ಯ (ವಿಂ) ಪೂಜಾರ್ಹ, ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ.  
ಅರ್ಚ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) “ಞ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪)। “ಮಹತ್ಪ್ರಯುಕ್ತಾಶ್ಚ  
ಮಹತ್ಸಾಖಾಂ ತಮರ್ಚ್ಯಮಾರಾದಭಿವರ್ಮತಮಾನಮ್” ರಘುಂ ೨-೧೦।

ಅರ್ಚಕ ಅರ್ಚಕ (ಪುಂ) 1. ಬಿಳಿಗಗ್ಗರೆ ಗಿಡ. ಅರ್ಚ (ಅರ್ಚನೆ)  
“ಞ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩)। (ವಿಂ) 2. ಸಂಪಾದಿಸು-  
ವವನು.

ಅರ್ಚನ ಅರ್ಚನ (ನಂ) ಸಂಪಾದನೆ. ಅರ್ಚ (ಪ್ರತಿಯತ್ನೆ)  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

ಅರ್ಚಿತ ಅರ್ಚಿತ (ಪುಂ) 1. ಪಾಂಡುವಿನ ಮಗನಾದ  
ಅರ್ಜುನ, ಕುಂತಿಯ ಪುತ್ರ. [ದುವಾಸ ಮಹರ್ಷಿಯು  
ಉಪದೇಶಿಸಿದ ಮಂತ್ರದ ಮಹಿಮೆಯಿಂದ ಇಂದ್ರನ  
ಅನುಗ್ರಹ ಪಡೆದ ಕುಂತಿಯಲ್ಲಿ ಅರ್ಜುನನು



ಹುಟ್ಟಿದನು. ಇವನಿಗೆ (1) ದ್ರೌಪದಿ, (2) ಸುಭದ್ರೆ, (3) ಉಲಾಪಿ ಮತ್ತು (4) ಚಿತ್ರಾಂಗದೇಯೆಂಬ ನಾಲ್ವರು ಪತ್ನಿಯರು. (1) ಶ್ರುತಕೀರ್ತಿ, (2) ಅಭಿಮನ್ಯು, (3) ಇರಾವಂತ ಮತ್ತು (4) ಬಭ್ರುವಾಹನನೆಂಬ ನಾಲ್ವರು ಮಕ್ಕಳು. ಇವನು ಮಹಾ ಪರಾಕ್ರಮಶಾಲಿಯಾಗಿ ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರಿಂದ ಧನುರ್ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿತು ಅವರ ಪ್ರಿಯ ಶಿಷ್ಯನಾದನು. ಈ ವಿದ್ಯೆಯ ಪ್ರಾವೀಣ್ಯದಿಂದ ಮತ್ಸ್ಯಯಂತ್ರವನ್ನು ಭೇದಿಸಿ ದ್ರೌಪದಿಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾದನು. ಅಬುದ್ಧಿ ಪೂರ್ವಕವಾಗಿ (ಆಕಸ್ಮಿಕವಾಗಿ) ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯ ಉಲ್ಲಂಘನೆಯಿಂದ ಇವನು ಕೆಲವುಕಾಲ ತೀರ್ಥಯಾತ್ರೆಯನ್ನು ಕೈಗೊಂಡು ಆ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಚಿತ್ರಾಂಗದೇಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ಇರಾವಂತನೆಂಬ ಮಗನನ್ನೂ, ಉಲಾಪಿಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ಬಭ್ರುವಾಹನನನ್ನೂ, ಸುಭದ್ರೆಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ಅಭಿಮನ್ಯುವೆಂಬ ಪುತ್ರನನ್ನೂ ಪಡೆದನು. ಖಾಂಡವವನ ದಹನದಿಂದ ಪ್ರೀತನಾದ ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ಗಾಂಡೀವ ಧನುಸ್ಸನ್ನು ಪಡೆದನು. ಕೆಲವುಕಾಲ ದೇವಲೋಕದಲ್ಲಿದ್ದು ಚಿತ್ರಸೇನನೆಂಬ ಗಂಧರ್ವನಿಂದ ಗಾಂಧರ್ವ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿದನು. ಕಿರಾತರೂಪಿಯಾದ ಪರಮೇಶ್ವರನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಮಾಡಿ ಅನಂತರ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷನಾದ ಪರಮೇಶ್ವರನನ್ನು ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಿ ಪಾಶುಪತಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಪಡೆದನು. ನಿವಾತಕವಚ ಮತ್ತು ಕಾಲಕೇಯರನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದುದರಿಂದ ಇವನ ಪರಾಕ್ರಮಕ್ಕೆ ಮೆಚ್ಚಿ ಪುತ್ರವಾತ್ಸಲ್ಯದಿಂದ ಇಂದ್ರನು ಇವನಿಗೆ ಅಭೇದ್ಯವಾದ ಕವಚವನ್ನೂ ಕಿರೀಟವನ್ನೂ ಕೊಟ್ಟನು. ಇವನನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಉರ್ವಶಿಯಿಂದ “ನಪುಂಸಕನಾಗು” ಎಂಬ ಶಾಪ ಹೊಂದಿದನು. ಈ ಷಂಡವೇಷದಿಂದಲೇ ಬೃಹನ್ನಕಿಯೆಂಬ ಹೆಸರಿನಿಂದ ವಿರಾಟನಗರದಲ್ಲಿ ಅಜ್ಞಾತವಾಸ ಮಾಡಿದನು. ಉತ್ತರ ಗೋಗ್ರಹಣದಲ್ಲಿ ದ್ರೋಣ, ಅಶ್ವತ್ಥಾಮ ಮೊದಲಾದವರನ್ನು ಜಯಿಸಿ ಓಡಿಸಿದನು. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಸಹಾಯಪಡೆದು ದುಃಶಾಸನಾದಿಗಳನ್ನು ಲೀಲೆಯಿಂದ ಜಯಿಸಿದನು. ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಪರ್ಜನ್ಯಾಸ್ತ್ರ ಪ್ರಯೋಗದಿಂದ ಜಲವನ್ನು ತರಿಸಿ ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯರ ಬಾಯಾರಿಕೆಯನ್ನು ಪರಿಹರಿಸಿದನು. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಸಾರಥ್ಯವನ್ನು ಪಡೆದು ಯುದ್ಧರಂಗಕ್ಕೆ ಬಂದಾಗ ಬಂಧುವರ್ಗವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಕೊಂದು ತಾನು ರಾಜ್ಯ ಸಂಪಾದಿಸಬೇಕೆಲ್ಲವೆಂದು ಯುದ್ಧವಿಮುಖನಾಗಲು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಿಂದ ಶ್ರೀ ಭಗವದ್ಗೀತೆಯ ಉಪದೇಶಹೊಂದಿ

ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಅದ್ಭುತ ಜಯವನ್ನು ಪಡೆದನು. ಶಿಖಂಡಿಯನ್ನು ಮುಂದಿಟ್ಟು ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯರನ್ನೂ ಬಾಣ ಪ್ರಯೋಗದಿಂದ ಕೆಡವಿ ಅವರಿಗೆ ಬಾಣಗಳಿಂದ ತಲೆ ದಿಂಬನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಟ್ಟನು. ಕರ್ಣಾದಿಗಳನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿಕೊನೆಗೆ ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗದ ಕುದುರೆಯೊಡನೆ ಹೊರಟು ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಬಭ್ರುವಾಹನನಿಂದ ಹತನಾಗಿ ಉಲಾಪಿಯು ತಂದ ಸಂಜೀವಿನೀ ಮಣಿಯಿಂದ ಬದುಕಿದನು. ಇತ್ಯಾದಿ, ಇತ್ಯಾದಿ. ಇವನಿಗೆ ಅರ್ಜುನ, ಫಲ್ಗುನ, ಜಿಷ್ಣು, ಕಿರೀಟ, ಶ್ವೇತವಾಹನ, ಬೀಭತ್ಸು, ವಿಜಯ, ಕೃಷ್ಣ, ಸವ್ಯಸಾಚಿ ಮತ್ತು ಧನಂಜಯ ನೆಂದು ಹತ್ತು ಹೆಸರು. “ಅಜ್ಞಾನ: ಕಲ್ಗುನೋ ಜಿಣ್ಣು: ಕಿರೀಟಿ ಶ್ವೇತವಾಹನ:। ಬಿಭತ್ಸುರ್ವಿಜಯ: ಕೃಷ್ಣ: ಸವ್ಯಸಾಚಿ ಧನಂಜಯ:” ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೪೦-೧। ಅರ್ಜುನನ ದಶನಾಮ ನಿರ್ವಚನ: ವಿರಾಟಪರ್ವ—೪೦ ನೆಯ ಅಧ್ಯಾಯ (ಮೇಲಿನ ಶ್ಲೋಕದಲ್ಲಿರುವ ಹೆಸರಿನ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ) (1) ಭೂಮಂಡಲದಲ್ಲಿ ನನ್ನ ಬಣ್ಣಕ್ಕೆ ಸರಿಯಾದ ಬಣ್ಣವು ಯಾರಲ್ಲಿಯೂ ದೊರೆಯುವುದಿಲ್ಲ ವಾದುದರಿಂದಲೂ ನನ್ನ ಕೆಲಸವೆಲ್ಲ ಶುದ್ಧವಾದುದರಿಂದಲೂ ನನಗೆ “ಅರ್ಜುನ” ನೆಂದು ಹೆಸರು. “पृथिव्यां चतुरन्तायां वर्णो मे दुर्लभः समः। करोमि कर्म शुक्लं च तस्मान्मामर्जुनं विदुः” ೨೦। (2) ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಫಲ್ಗುನೀ ನಕ್ಷತ್ರಗಳೆಂಬ ನಾಲ್ಕು ಚುಕ್ಕಿಗಳ ಪೈಕಿ ಉತ್ತರಫಲ್ಗುನಿಯೆಂಬ ಎರಡು ಚುಕ್ಕಿಗಳ ಸಮಸೂತ್ರದಲ್ಲಿ ನಾನು ಹುಟ್ಟಿದುದರಿಂದ ನನ್ನನ್ನು “ಫಲ್ಗುನ” ನೆಂದು ಕರೆಯುವರು. “उत्तराम्यां कल्गुनीम्यां नक्षत्राम्यामहं दिवा। जातो हिमवतः पृष्ठे तेन मां कल्गुनं विदुः” ೧೬। (3) ನಾನು ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಯಾರಿಗೂ ಸಿಕ್ಕದೆ ಯಾರಿಂದಲೂ ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡದೆ ಇರುವುದರಿಂದಲೂ, ಇಂದ್ರನ ಮಗನಾದುದರಿಂದಲೂ ನಾನು “ಜಿಷ್ಣು” ವೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾದೆನು. “अहं दुरापो दुर्धर्षो दमनः पाकशासनिः। तेन देवमनुष्येषु जिण्णुर्नाम्नास्मि विश्रुतः” ೨೧। (4) ನಿವಾತಕವಚಾದಿ ದಾನವರೊಡನೆ ನಾನು ಯುದ್ಧ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಇಂದ್ರನು ಪ್ರಕಾಶಮಾನನಾದ ಕಿರೀಟವೊಂದನ್ನು ನನ್ನ ತಲೆಯ ಮೇಲೆ ಅಲಂಕರಿಸಿದನಾದುದರಿಂದ ನನ್ನನ್ನು “ಕಿರೀಟಿ” ಯೆನ್ನುವರು. “पुरा शक्रेण मे दत्तं युध्यतो दानवर्षभिः। किरीटं मूर्ध्नि सूर्याभं तेनाहुर्मां किरीटिनम्” ೧೭। (5) ನಾನು ಯುದ್ಧಮಾಡುವಾಗ ಸುವರ್ಣಭೂಷಾಲಂಕೃತವಾದ ಶ್ವೇತಾಶ್ವಗಳು ನನ್ನ



ರಥಕ್ಕೆ ಕಟ್ಟಲ್ಪಡುವಕಾರಣ “ಶ್ವೇತವಾಹನ”  
ನೆನೆಸಿಕೊಂಡೆನು. “ಶ್ವೇತಾ: ಕಾಚನಸನ್ನಾಹಾ ರಥೇ ಯುಜ್ಯಂತಿ  
ಯೇ ಹಯಾ:। ಸಂಗ್ರಾಮೇ ಯುಜ್ಯಮಾನಸ್ಯ ತೇನಾಹಂ ಶ್ವೇತವಾಹನ:”  
೧೫। (6) ನಾನು ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಅಸಹ್ಯವಾದ ಕೆಲಸ  
ಮಾಡುವುದಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ “ಬೀಭತ್ಸು” ನೆಂದು  
ನನಗೆ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಯುಂಟಾಯಿತು. “ನ ಕುರ್ಯಾ ಕರ್ಮ ಬಿಭತ್ಸಂ  
ಯುಜ್ಯಮಾನ: ಕಥಂಚನ। ತೇನ ದೇವಮನುಷ್ಯೇಷು ಬಿಭತ್ಸುರೀತಿ  
ವಿಶ್ರುತ:” ೧೬। (7) ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಶತ್ರುಗಳನ್ನು  
ಎದುರಿಸಿಹೋಗಿ ಅವರನ್ನು ಜಯಿಸದೆ ಹಿಂತಿರುಗುವು  
ದಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ನನ್ನನ್ನು “ವಿಜಯ” ನೆನ್ನು  
ವರು. “ಅಭಿಪ್ರಯಾಮಿ ಸಂಗ್ರಾಮೇ ಯದಹಂ ಯುಧದುರ್ಮದಾನ್।  
ನಾಜಿತ್ವಾ ವಿನಿವರ್ತಾಮಿ ತೇನ ಮಾಂ ವಿಜಯಂ ವಿಧು:” ೧೭।  
(8) ನಾನು ಬಣ್ಣದಲ್ಲಿ ಕಪ್ಪಾದರೂ ನಿರ್ಮಲನಾದುದ  
ರಿಂದ ನಮ್ಮ ತಂದೆಯು ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ನನಗೆ  
“ಕೃಷ್ಣ” ನೆಂದು ಹೆಸರಿಟ್ಟನು. “ಕೃಷ್ಣಾ ಇತ್ಯೇವ ದಶಮಂ  
ನಾಮ ಚಕ್ರೇ ಪಿತಾ ಮಮ। ಕೃಷ್ಣಾವದಾತಸ್ಯ ಸತ: ಪ್ರಿಯತ್ವಾ-  
ದಾಲಕಸ್ಯ ವೇ” ೨೨। (9) ನಾನು ಎರಡು ಕೈಗಳಿಂದಲೂ  
ಗಾಂಡೀವವನ್ನು ಸೆಳೆಯುವುದರಲ್ಲಿ ಚತುರನಾದುದ  
ರಿಂದ ನನಗೆ “ಸವ್ಯಸಾಚಿ”ಯೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು.  
“ತುಮೇ ತುಲ್ಯಕರ್ಮಣಿ ಗಾಂಡೀವಸ್ಯ ವಿಕರ್ಷಣೇ। ಭುಜೌ  
ಮೇ ಭವತ: ಸಕ್ಷುಚೇ ಪರಸೇನೈವಿನಾಶಿನೌ। ತಯೋ: ಸವ್ಯೋ-  
ಧಿಕಸ್ತಸ್ಮಾತ್ಸವ್ಯಸಾಚೀತಿ ಮಾಂ ವಿಧು:” ೨೩, ೨೪।  
(10) ದೇಶವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಗೆದ್ದು ಧನವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿ  
ಅದರ ನಡುವೆ ಇರುವೆನಾದುದರಿಂದ ನನ್ನನ್ನು  
“ಧನಂಜಯ” ನೆಂದು ಕರೆಯುವರು. “ಸರ್ವಾನ್  
ಜನಪದಾನ್ ಜಿತ್ವಾ ವಿದ್ವಾನ್ಮಾಧಾಯ ಕೇವಲಮ್। ಮಧ್ಯೇ ಧನಸ್ಯ  
ತಿಷ್ಠಾಮಿ ತೇನಾಹುರ್ಮಾಂ ಧನಂಜಯಮ್” ೨೫। 2. ಕಾರ್ತ  
ವೀರ್ಯಾರ್ಜುನ, ಕೃತವೀರ್ಯನ ಮಗ; ಇವನಿಗೆ  
“ಸಹಸ್ರಾರ್ಜುನ” ನೆಂದೂ ಹೆಸರು. [ಕಾರ್ತ  
ವೀರ್ಯಾರ್ಜುನನು ದತ್ತಾತ್ರೇಯನ ವರಪ್ರಸಾದ  
ದಿಂದ ಸಾವಿರ ಬಾಹುಗಳನ್ನೂ ದಿವ್ಯವಾದ ಸುವರ್ಣ  
ರಥವನ್ನೂ ಪಡೆದನು. ಈತನು ಯುದ್ಧಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ಮಾತ್ರ ಸಹಸ್ರ ಬಾಹುವಾಗಿಯೂ, ಉಳಿದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ದ್ವಿಬಾಹುವಾಗಿಯೂ ಜನರ ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳು  
ತ್ತಿದ್ದನು. ಇವನು ಬಹಳ ಪರಾಕ್ರಮಿ ಮತ್ತು  
ವಿದ್ವಾಂಸನು. ಸುಮಾರು 85,000 ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ  
ಧರ್ಮದಿಂದ ರಾಜ್ಯನಾಳಿದನು. ಇವನ ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿ  
ಯಾವನಾದರೊಬ್ಬನು ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಯಾವ ಅಕಾರ್ಯ  
ವನ್ನು ಮಾಡಲು ಯೋಚಿಸಿದರೂ ಆ ಕೂಡಲೆ ರಾಜನು

(ಕಾರ್ತವೀರ್ಯನು) ಧನುರ್ಧಾರಿಯಾಗಿ ಎದುರಿಗೆ  
ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡು ಶಿಕ್ಷಿಸುತ್ತಿದ್ದನು. ಇವನು ಎಲ್ಲಾ  
ದೇಶಗಳನ್ನೂ ಗೆದ್ದು ಸಾವಿರಾರು ಯಾಗಗಳನ್ನು  
ಮಾಡಿರುತ್ತಾನೆ. ಇವನ ಸ್ಮರಣೆಮಾಡಿದರೆ ಕಳೆದು  
ಹೋದ ವಸ್ತುವೆಲ್ಲವೂ ಸಿಕ್ಕುವುವು. “ಕಾರ್ತವೀರ್ಯಜಿತು  
ನಾಮ ರಾಜಾ ಬಾಹುಸಹಸ್ರವಾನ್। ತಸ್ಯ ಸ್ಮರಣಮಾತ್ರೇಣ ಹೃತ್  
ನಷ್ಟಂ ಚ ಲಭ್ಯತೇ”। ಇಂದ್ರಾದಿ ಸಕಲ ದೇವತೆಗಳನ್ನೂ  
ಗೆದ್ದ ರಾವಣನನ್ನು ಈತನು ಒಂದು ಸಲ ಹಿಡಿದು  
ತನ್ನ ನಗರಕ್ಕೆ ತಂದು ಸೆರೆಮನೆಯಲ್ಲಿ ಕ್ರಿಮಿಕೇಟೆ  
ಗಳಂತೆ ಒಂದು ಮೂಲೆಯಲ್ಲಿ ಬಿಸಾಡಿದ್ದನು. ಒಂದು  
ಸಲ ಜಮದಗ್ನಿಯ ಧೇನುವನ್ನು ಬಲಾತ್ಕಾರವಾಗಿ  
ಎಳೆದುದರಿಂದ ಪರಶುರಾಮನಿಂದ ಇವನು ಹತನಾ  
ದನು.] 3. ಕೆಂಪು ಮತ್ತಿಮರ. ಅರ್ಜುನ (ಅರ್ಜುನ) “ತನು”  
(ತಂ ೨-೪೮)। “ಅನಾದರಾಕೃಷ್ಟಮುಲಖಲಂ ತದಾಬರ್ಜುನೌ  
ಶಿಲನಿಭೌ ಬಮಂಜ” ಯಾದಂ. ೪-೩೭। 4. ತಾಯಿಯ  
ಏಕಮಾತ್ರ ಪುತ್ರ. 5. ನವಿಲು. “ಅರ್ಜುನ: ಕಕುಭೇ ಪಾರ್ಥ  
ಕಾರ್ತವೀರ್ಯಮಯೂರಯೋ:। ಮಾತುರೇಕಸುತೇಷು ಸ್ಯಾತ್ ಪುಲ್ಲಿಂಗೋ  
ಧವಲೇಜ್ಯವತ್” ಮೇದಿಂ। (ನಂ) 6. ತೃಣ, ಹುಲ್ಲು.  
7. ಒಂದು ನೇತ್ರರೋಗ. (ವಿಂ) 8. ಬಿಳುವಾದ,  
ಶುಭ್ರವಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)-ನಿ-ನೀ. 9. ಹಸು, ಆಕಳು.  
10. ಅನಿರುದ್ಧನ ಪತ್ನಿ, ಉಷಾದೇವಿ. 11. ಬಾಹುದಾ  
ನದಿ. 12. ತಲೆಹಿಡಕಿ, ಸೂಳೆಯನ್ನು ವಿಟನೆೊಡನೆ  
ಕೂಡಿಸುವ ಹೆಂಗಸು. “ನಪುಂಸಕಂ ತೃಣೇ ನೇತ್ರಗದೇ ಚಾಪ್ಯರ್ಜುನೌ  
ಗವಿ। ತಪಾಃ ಬಾಹುಧಾನ್ಯಾ ಕುಡ್ವಿನ್ಯಾಮಪಿ ಚ ಕವಚಿತ್”  
ಮೇದಿಂ।

ಅರ್ಣ ಅರ್ಣ (ಪುಂ) ವರ್ಣ, ಅಕ್ಷರ. “ಅಸ್ತ್ರಿಯೌ ವರ್ಣಮಣಿ  
ಚ” ವೇಜಂ।

ಅರ್ಣವ ಅರ್ಣವ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಅರ್ಣಸ್ಯತ್ರ  
ಸಂತಿ - ಅರ್ಣಸ್ “ವ:” ಸಲೋಪಶ್ಚ (ವಾಂ ೪-೨-೧೦೯)।  
“ಪ್ರವೃದ್ಧಮಂದ್ರಾಂಬುಧೀರನಾದ: ಕೃಷ್ಣಾಣಿವಾಮೃಣಚರೇಕಹಂಸ:”  
ಮಾಘಂ ೩-೨೧। “ಯಾದೋರತನೇರಿವಾಣವ:” ರಘುಂ ೧-೧೬।

ಅರ್ಣಸ್ ಅರ್ಣಸ್ (ನಂ) ಜಲ, ನೀರು. ಇ (ಗತೀ)  
“ಅಸುನ್” ನುಡ್ ಚ. (ತಂ ೪-೧೯೬)। “ಗಾಂಧೀಪ-  
ನಿರ್ಮಿಸ್ಮಿತಶಮ್ಭುಕನ್ವರಾಸವರ್ಣಮಣಿ: ಕಥಮನ್ಯಥಾಸ್ಯ ತತ್”  
ಮಾಘಂ ೧೨-೬೯।

ಅರ್ಣಸ್ವತ್ ಅರ್ಣಸ್ವತ್ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು.  
ಅರ್ಣಸಿ ಸಂತ್ಯತ್ರ “ಮತುಃ” (೪-೨-೧೪)। (ವಿಂ) 2.  
ಜಲಸಹಿತವಾದ, ನೀರಿನಿಂದಕೂಡಿದ.



ಅರ್ಥೋದ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ.  
2. ಕೊನ್ನಾರಿಗಡ್ಡೆ, ಮುಸ್ತಕ. ಅರ್ಣಾಸಿ ದದಾತಿ — ಡು  
ದಾಜ್ (ದಾನೆ) “ಕ:” (೩-೨-೩)। (ವಿಂ) 3. ನೀರನ್ನು  
ಕೊಡುವ.

ಅರ್ಣಿಭವ ಅರ್ಣಿಭವ (ಪುಂ) 1. ಶಂಖ. (ವಿಂ) 2.  
ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅರ್ಣಿಸಿ ಭವ:।

ಅರ್ತನ ಅರ್ತನ (ನಂ) 1. ಜುಗುಪ್ಸೆ. 2. ನಿಂದೆ, ಬೈಗಳು,  
ವಾಗ್ದಂಡನೆ. ಋತಿ(ಸೌತ್ರಾತು: “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

ಅರ್ತಿ ಅರ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೀಡೆ, ಬಾಧೆ. 2. ಧನುಸ್ಸಿನ  
ಅಗ್ರಭಾಗ, ಬಿಲ್ಲಿನ ತುದಿ. ಅರ್ತ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಕ್ತಿನ್”  
(ವಾಂ ೩-೩-೧೪)। “ನಾನ್ ವಾಚ್ಛತಿ ನೋ ನಿರಾಮುಪೇತ್ಯತಿ-  
ನಿಪಿಡಿತಿ:” ಸುಶ್ರುತಂ।

ಅರ್ತಿಕಾ ಅರ್ತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರಿ, ಅಕ್ಕ.  
(ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಪ್ರಯೋಗ.)

ಅರ್ಥ ಅರ್ಥ (ಪುಂ) 1. ದ್ರವ್ಯ, ಧನ, ಹಣ, ಐಶ್ವರ್ಯ.  
ಅರ್ಥ್ಯತೆ — ಅರ್ಥ (ಉಪಯಾಚ್ಛಾಯಾಮ್) “ಛತ್” (೩-೩-೧೯)।

“ತ್ಯಾಗಾಯ ಸಂಭೂತಾರ್ಥಿನಾಂ ಸತ್ಯಾಯ ಮಿತಭಾಷಿಣಾಮ್” ರಘುಂ  
೧-೭। “ನಿಷ್ಕೃಮಯಂ ಚಕಮೇ ಕುಬೇರಾತ್” ರಘುಂ ೫-೨೬।

2. ವಿಷಯ, ಉದ್ದೇಶ, ಗುರಿ. “ನ ಹಿ ಬುದ್ಧಿಗುಣೇನೈವ  
ಸುಹೃದಾಮರ್ಥದರ್ಶನಮ್” ಮಾಲಂ ೪-೬। 3. ಶಬ್ದಶಕ್ತಿಯಿಂದ  
ತಿಳಿಯಿಸಲ್ಪಡುವ ಅರ್ಥ, ಶಬ್ದವು ಅಭಿಧಾದಿಶಕ್ತಿ  
ಗಳಿಂದ ತಿಳಿಯಿಸುವ ಅರ್ಥ. [ವಾಚ್ಯ, ಲಕ್ಷ್ಯ  
ಮತ್ತು ವ್ಯಂಗ್ಯಗಳೆಂದು ಅರ್ಥವು ಮೂರು ವಿಧವಾಗಿ  
ಶಬ್ದದಿಂದ ಜೋಡಿಸಲ್ಪಡುವುದು. ಎವರಕ್ಕೆ ಆಯಾ  
ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] “ಅರ್ಥೋ ವಾಚ್ಯಶ್ಚ ಲಕ್ಷ್ಯಶ್ಚ  
ವ್ಯಕ್ತಶ್ಚೇತಿ ತ್ರಿಧಾ ಮತ:। ವಾಚ್ಯೋರ್ಯೋಽಭಿಧಯಾ ಬೋಧ್ಯೋ  
ಲಕ್ಷ್ಯೋ ಲಕ್ಷಣಯಾ ಮತ:। ವ್ಯಕ್ತೋ ವ್ಯಕ್ತನಯಾ ತಾ: ಸ್ಯು:  
ತಿಸ್ತ: ಶಬ್ದಸ್ಯ ಶಕ್ತಯ:” ಸಾಂ ದಂ ೨-೨, ೩। “ವಾಗರ್ಥಾವಿವ  
ಸಂಪೃಕ್ತೌ ವಾಗರ್ಥಪ್ರತಿಪತ್ತಯೇ” ರಘುಂ ೧-೧। 4. ವಸ್ತು,  
ಪದಾರ್ಥ. “ಅರ್ಥೋ ಹಿ ಕನ್ಯಾ ಪರಕೀಯ ಏವ” ಶಾಕುಂ  
೪-೨೧। 5. ಕಾರಣ, ನಿಮಿತ್ತ. “ತದ್ವಕ್ಷ ಸಿದ್ಧಯೇ  
ಕುರು ದೇವಕಾರ್ಯಮರ್ಥೋಽಯಮರ್ಥಾಂತರಲಮ್ಯ ಏವ” ಕುಮಾಂ ೩-೧೮।

6. ನಿವೃತ್ತಿ, ತಡೆ, ಅಡ್ಡಿ. “ಮಶಕಾರ್ಥೋ ಭೂಮ:”।

7. ಯಾಚನೆ, ಬೇಡಿಕೆ. 8. ವಿಷ್ಣು. “ಅರ್ಥೋಽನರ್ಥೋ  
ಮಹಾಕೋಶ:” ವಿಂ ಸಂ। 9. ಲಗ್ನದಿಂದ ಎರಡನೆಯ  
ಸ್ಥಾನ. 10. ಫಲ, ಪರಿಣಾಮ. 11. ಅಪೇಕ್ಷೆ,  
ಅಭಿಲಾಷೆ. 12. ನಿಜಸ್ಥಿತಿ, ವಸ್ತುಸ್ವಭಾವ.

13. ಪ್ರಕಾರ, ವಿಧ, ಬಗೆ. 14. ವಿಷಯ, ಸ್ತುತಿಪಾದ

ನೆಯ ವಸ್ತು. “ತಯಾ ಭವತೋಽವಿನಯಮಂತರೇಣ ಪರಿಗೃಹೀತಾರ್ಥಾ  
ಕೃತಾ ದೇವಿ” ಮಾಲಂ ೪। 15. ಪ್ರಯೋಜನ, ಕಾರ್ಯ.

“ಸೇನಾ ಪರಿಚ್ಛದಸ್ತಸ್ಯ ದ್ವಯಮೇವಾರ್ಥಸಾಧನಮ್” ರಘುಂ ೧-೧೯।

16. ರಾಜನ ತಂತ್ರಾವಾಪಗಳು. (ಸ್ವಪರರಾಷ್ಟ್ರಗಳ  
ಚಿಂತೆ.) 17. ವ್ಯವಹಾರ. 18. ಶಾಸ್ತ್ರ. “ಅರ್ಥ:  
ಪ್ರಕಾರೇ ವಿಷಯೇ ವ್ಯವಹಾರೇ ಪ್ರಯೋಜನೇ। ಅಭಿಧೇಯೇ ಭವೇ ಶಾಸ್ತ್ರೇ  
ವಸ್ತುಹೇತುನಿವೃತ್ತಿಷು” ನಾನಾರ್ಥರಂ।

ಅರ್ಥಗತ ಅರ್ಥಗತ (ಪುಂ) 1. ಅರ್ಥದೋಷ, ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ  
ರುವ (ಕಾಂಕ್ಷ) ದೋಷ. ಅಪುಷ್ಪತ್ವಮ್, ದುಷ್ಕಮತಾ,

ಶಾಮ್ಯತ್ವಮ್, ವ್ಯಾಹತತ್ವಮ್, ಅಶಲೀಲತ್ವಮ್, ಕಷ್ಟತ್ವಮ್,  
ಅನವೀಕೃತತ್ವಮ್, ನಿರ್ಹೇತುತ್ವಮ್, ಪ್ರಕಾಶಿತವಿರೂಪತ್ವಮ್, ಸಂದಿ-

ಗತ್ವಮ್, ಪುನಃಕೃತತ್ವಮ್ ಮುಂತಾದುವು ಅರ್ಥದೋಷ  
ಗಳು. ಸಾಂ ದಂ ೭-೧-೧೨। (ವಿಂ) 2. ಅರ್ಥದಲ್ಲಿರುವ.

ಅರ್ಥಗೌರವ ಅರ್ಥಗೌರವ (ನಂ) ಅರ್ಥಗಾಂಭೀರ್ಯ,  
ಗಂಭೀರವಾದ ಬಹಳ ಅರ್ಥಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ.

ಅರ್ಥಸ್ಯ ಗೌರವಮ್। “ಸ್ಫುಟತಾ ನ ಪದೇರಪಾಕೃತಾ ನ ಚ ನ  
ಸ್ವೀಕೃತಮರ್ಥಗೌರವಮ್” ಕಿರಾಂ ೨-೨೭।

ಅರ್ಥಹನ ಅರ್ಥಹನ (ವಿಂ) ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ.  
ಅರ್ಥ ಹಂತಿ — ಹನ(ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) “ಕ:” (ವಾಂ ೩-೨-೫)।

ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ — ಛಿ — ಫ್ಲೀ. “ವ್ಯಾಧಿತಾ ವಾವಿವೇತ್ತವ್ಯಾ ಹಿಸ್ತಾರ್ಥಛಿಂ  
ಚ ಸರ್ವದಾ” ಮನುಂ ೯-೮೦।

ಅರ್ಥಚಿಂತಾ ಅರ್ಥಚಿಂತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಾಜನ ತಂತ್ರ  
ವಾಪ ರೂಪವಾದ ಚಿಂತೆ. (ತನ್ನ ಮತ್ತು ಪರರಾಷ್ಟ್ರ  
ಗಳ ಚಿಂತೆ.) 2. ದ್ರವ್ಯಚಿಂತೆ. 3. ಕಾರ್ಯಚಿಂತೆ.

ಅರ್ಥಜ್ಞ ಅರ್ಥಜ್ಞ (ವಿಂ) ಪ್ರಯೋಜನವನ್ನು ಅರಿತಿರುವ,  
ಕಾರ್ಯಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ. ಅರ್ಥ ಜಾನಾತಿ — ಜಾ

(ಅವಬೋಧನೆ) “ಕ:” (೩-೨-೩)।

ಅರ್ಥತಸ್ ಅರ್ಥತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅರ್ಥಾನುಸಾರವಾಗಿ.  
2. ಅರ್ಥದಿಂದ. ಅರ್ಥ “ತಸಿ:” (ವಾಂ ೫-೪-೪೪)।

“ಯತ್ರೋದ್ಭವಮುದಾರತಾ ಚ ವಚಸಾಂ ಯಚ್ಚಾರ್ಥತೋ ಗೌರವಮ್”  
ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೦। 3. ನಿಜವಾಗಿ, ವಸ್ತುಸ್ವಭಾವ

ದಿಂದ. “ಆಕಾಶಸಾಮ್ಯಂ ದಧುರ್ಮವರಾಣಿ ನ ನಾಮತ: ಕೇವಲ-  
ಮರ್ಥತೋಽಪಿ” ಮಾಘಂ ೩-೫೬। 4. ನಿಮಿತ್ತದಿಂದ, ಕಾರಣ

ದಿಂದ. 5. ಧನಕ್ಕಾಗಿ, ಹಣಕ್ಕೋಸ್ಕರ. “ಔವರ್ಯಾ-  
ದನಪೇತಮೀಶ್ವರಮಯಂ ಲೋಕೋಽರ್ಥತ: ಸೇವತೇ” ಮುद्रಾಂ ೧-೧೪।

ಅರ್ಥದ ಅರ್ಥದ (ಪುಂ) 1. ಕುಬೇರ. 2. ಶಿಷ್ಯ, ಗುರುವನ್ನು  
ಗುರುದಕ್ಷಿಣೆಯಿಂದ ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ.

(ವಿಂ) 3. ಅರ್ಥವನ್ನು ಆರಿಸುವ, ಹಣವನ್ನು



ಕೊಡುವ. ಅರ್ಥ ದದಾತಿ -ಓ ದಾನ್ (ದಾನ) "ಕ:" (3-2-3). "ಆಪ್ತ: ಶಕ್ತೋಽರ್ಥ: ಸಾಧು: ಸ್ವೋಽಪ್ಯಾಪ್ಯಾ ದಶ ಧರ್ಮತ:" ಮನು 2-109.

ಅರ್ಥದರ್ಶನ ಅರ್ಥದರ್ಶನ (ನಂ) 1. ಕಾರ್ಯಜ್ಞಾನ, ಕಾರ್ಯಸ್ವರೂಪದ ತಿಳಿವಳಿಕೆ. 2. ವಸ್ತುವಿನ ತೋರು ವಿಕೆ. ಅರ್ಥಸ್ಯ ದರ್ಶನಮ್. "ಸುಕೃತ: ಪರಿಶುದ್ಧ ಆಗಮ: ಕುಠ್ತೇ ದೀಪ ಇವಾರ್ಥದರ್ಶನಮ್" ಕಿರಾಂ 2-33.

ಅರ್ಥದೋಷ ಅರ್ಥದೋಷ (ಪುಂ) "ಅರ್ಥಗತ" ಪದದ 1 ನೆಯ ಅರ್ಥ.

ಅರ್ಥನಾ ಅರ್ಥನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಾಚನೆ, ಬೇಡಿಕೆ, ಭಿಕ್ಷೆ. ಅರ್ಥ (ಯಾಚ್ನಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ "ಯುಕ್" (3-3-100). "ಅರ್ಥನಾ ಮಯಿ ಭವದ್ಭಿರೀವಾಸ್ಯ ಕರ್ತುಮರ್ಹತಿ ಮಯಾಪಿ ಭವತ್ಸು" ನೆಪಂ 4-111.

ಅರ್ಥಪತಿ ಅರ್ಥಪತಿ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ಅರ್ಥಾನಾಂ ಪತಿ: "ಅರ್ಥಮಿರ್ಥಪತಿರ್ವಿಚಿಮಾದೇ ವದತಾಂ ವರ:" ರಘುಂ 1-49. "ಕಿಂಚಿದ್ವಿಹಸ್ಯಾರ್ಥಪತಿ ಬಭಾಷೇ" ರಘುಂ 2-46. 2. ಕುಬೇರ, ಧನದ ಅಧಿಪತಿ.

ಅರ್ಥಪ್ರಕೃತಿ ಅರ್ಥಪ್ರಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಧಾನಕಾರ್ಯದ ಕಾರಣ, ಮುಖ್ಯ ಪ್ರಯೋಜನದ ಹೇತು. [ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಪ್ರಧಾನಫಲಕ್ಕೆ ಕಾರಣಭೂತವಾದ ಬೀಜ, ಬಿಂದು, ಪತಾಕಾ, ಪ್ರಕರಣ ಮತ್ತು ಕಾರ್ಯಗಳೆಂದು ಐದು ಅರ್ಥಪ್ರಕೃತಿಗಳು ಇರುವುವು. ಇವು ಆರಂಭ, ಯತ್ನ, ಪ್ರಾಪ್ತ್ಯಾಶಾ, ನಿಯತಾಪ್ತಿ ಮತ್ತು ಫಲಾಗಮಗಳೆಂಬ ಐದು ಅವಸ್ಥೆಗಳೊಡನೆ ಸೇರಿ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಮುಖ್ಯ, ಪ್ರತಿಮುಖ್ಯ, ಗರ್ಭ, ಅವಮರ್ಶ ಮತ್ತು ನಿರ್ವಹಣ ಗಳೆಂದು ಐದು ಸಂಧಿಗಳಾಗುವುವು.] "ಬೀಜಬಿಂದು-ಪತಾಕಾಪ್ರಕರಣೀಕಾರ್ಯಲಕ್ಷಣಾ: | ಆರಮ್ಭಯಲಪ್ರಾಪ್ತ್ಯಾಶಾ-ನಿಯತಾಪ್ತಿಫಲಾಗಮಾ: | ಅರ್ಥಪ್ರಕೃತಯ: ಪञ्च ಪञ್ಚಾವಸ್ಥಾ-ಸಮನ್ವಿತಾ: | ಯಥಾಸಂಖ್ಯೇನ ಜಾಯಂತೇ ಮುಖಾद्या: ಪञ्च ಸಂಖ್ಯಯ:" ದಶಾರ್ಕಂ |

ಅರ್ಥಪ್ರಯೋಗ ಅರ್ಥಪ್ರಯೋಗ (ಪುಂ) ರಾಜ್ಯಾಡಳಿತ, ಸರ್ಕಾರವನ್ನು ನಡೆಸುವುದು, ಸ್ವಪರರಾಷ್ಟ್ರಗಳ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದುಕೊಂಡು ವ್ಯವಹಾರ ನಡೆಸುವುದು. 2. ಸಾಲಕೊಡುವುದು ಮತ್ತು ವ್ಯಾಪಾರ ಇವುಗಳಿಂದ ಧನವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವ ಉದ್ಯೋಗ, ಬಡ್ಡಿ ಸಂಪಾದನೆಗಾಗಿ ಸಾಲಕೊಡುವುದು.

ಅರ್ಥಪ್ರಾಪ್ತಿ ಅರ್ಥಪ್ರಾಪ್ತಿ (ವಿಂ) 1. ಅರ್ಥಲಬ್ಧವಾದ, ಉಪಾತ್ತ ಶಬ್ದದಿಂದ ತಿಳಿಯದೆ ಅದರ ಅರ್ಥದಿಂದ

ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಕಾರ್ಯಾಂತರದಿಂದ ಲಬ್ಧವಾದ, ಬೇರೆ ಕಾರ್ಯದ ಸಂದರ್ಭದಿಂದ ಒದಗಿದ.

ಅರ್ಥವತ್ ಅರ್ಥವತ್ (ವಿಂ) 1. ಅರ್ಥದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಅರ್ಥಗರ್ಭಿತವಾದ. ಅರ್ಥೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (4-2-94). 2. ಧನಿಕ, ಹಣವಂತ, ಐಶ್ವರ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ತೇನಾರ್ಥವಾನ್ ಲೋಭಪರಾಡ್ಭುಖೇನ ತೇನ ಘನತಾ ವಿಘನಭಯಂ ಕ್ರಿಯಾವಾನ್" ರಘುಂ 14-23. 3. ಪ್ರಯೋಜನಸಹಿತ ವಾದ, ಫಲದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಸಫಲವಾದ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-4). -ವತೀ-ವತೀ. "ಕರೋತಿ ಯೋಷೋ-ಜನಾತಿರಿಕ್ಷಾಂ ಸಂಭಾವನಾಮರ್ಥವತೀಂ ಕ್ರಿಯಾಭಿ:" ಕಿರಾಂ 3-41. (ಅವ್ಯಂ) 4. ಅರ್ಥದಂತೆ, ಅರ್ಥಕ್ಕೆ ಸರಿಯಾಗಿ. 5. ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ. ಅರ್ಥ "ವತಿ:" (4-1-114).

ಅರ್ಥವಾದ ಅರ್ಥವಾದ (ಪುಂ) 1. ಸ್ತುತಿವಾಕ್ಯ, ಹೊಗಳ ಕೆಯ ಮಾತು, ಪ್ರಶಂಸಾವಚನ. 2. ನಿಂದಾವಚನ. ಅರ್ಥಸ್ಯ ಪ್ರಯೋಜನಸ್ಯ ವಾದ: | ಅರ್ಥವಾದವು ಸ್ವಾರ್ಥಪ್ರತಿ ಪಾದನೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಜನಹೊಂದದೆ ಲಕ್ಷಣೆಯಿಂದ ವಿಧ್ಯರ್ಥದ ಪ್ರಶಂಸೆ ಅಥವಾ ನಿಂದೆಯ ಮೂಲಕ ಪುರುಷನನ್ನು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಜಾಗೃತಿಯಾಗಿ ಪ್ರವರ್ತಿಸು ವಂತೆಯೂ ಅಥವಾ ತೊಡಗದಂತೆಯೂ ಮಾಡುವುದು. ಇದರ ಪ್ರಶಂಸಾ ಅಥವಾ ನಿಂದಾಪರವಾದ ವಾಕ್ಯಕ್ಕೆ ಅರ್ಥವಾದವೆಂದು ಹೆಸರು. "ಆದಿನಕಾಮಸ್ತಂಧುಲಂ ಪಚೇತ, ತೃಪ್ತಿಕಾಮಸ್ತಂಧುಲೋದನಂ ಭುಜ್ಜೀತ" ಇತ್ಯಾದಿ ಪಾಕಕರಣ ರೂಪವಾದ ವಿಧ್ಯರ್ಥಕ್ಕೆ "ತಂಧುಲಪಾಕ ಕೃಷಿಭಿ: ಪೂರ್ವ ಸ್ವರ್ಗಾರ್ಥ ಕೃತ: | ಆದಿನಮಮೃತಮ್" ಇತ್ಯಾದಿ ವಾಕ್ಯವು ಪ್ರಶಂಸಾರೂಪವಾಗಿದ್ದು ಪಾಕಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರವರ್ತಿಸು ವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ಮತ್ತು ಇದು ನಿಂದೆಯ ಮೂಲಕ ನಿಸಿದ್ಧವಾದ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗದಂತೆ ಮಾಡುವುದು. "ಕಫಜ್ವರಪೀಡಿತೋ ದುಗ್ಧಂ ನ ಪಿಬೇತ್" ಇತ್ಯಾದಿ ದುಗ್ಧಪಾನ ನಿಷೇಧರೂಪವಾದ ವಿಧ್ಯರ್ಥಕ್ಕೆ "ಪಶುಭಿರ್ಮುಕ್ತೀತನಾಪತ್ಯತೃಣಾದಿನಾ ದುಗ್ಧಂ ಜನ್ಯತೇ, ತಚ್ಚ ವಿಷರೂಪಮ್" ಇತ್ಯಾದಿ ವಾಕ್ಯವು ನಿಂದಾರೂಪವಾಗಿದ್ದು ಪಾನಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರವರ್ತಿಸದಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ಈ ಅರ್ಥವಾದವು (1) ಗುಣವಾದ:, (2) ಅನುವಾದ: ಮತ್ತು (3) ಭೂತಾರ್ಥವಾದ: ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ವಿಶೇಷ್ಯ ವಿಶೇಷಣಗಳಿಗೆ ಸಾಮಾನಾಧಿಕರಣ್ಯದಿಂದ ಅನ್ವಯಕ್ಕೆ ಬಾಧೆ (ವಿರೋಧ) ಬಂದಲ್ಲಿ ಗುಣವಾದವೆನಿಸುವುದು. "ಸಿಹೋ ಮಾಣವಕ:" | ಪ್ರಮಾಣಾಂತರದಿಂದ ವಿಷಯವು ಸಿದ್ಧವಾದಲ್ಲಿ ಅನುವಾದವೆನಿಸುವುದು: "ನಾನ್ತರಿಕ್ಷೋ



ಅಗ್ನಿಶ್ವೇತವ್ಯ:” “ಅಗ್ನಿಹಿಮಸ್ಯ ಷೇಷಜಮ್” । ವಿರೋಧ ಮತ್ತು ಪ್ರಮಾಣಾಂತರದಿಂದ ಸಿದ್ಧಿ ಇವುಗಳಲ್ಲದಿದ್ದಲ್ಲಿ (ಸಿದ್ಧವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಹೇಳುವಲ್ಲಿ) ಭೂತಾರ್ಥವಾದವು. “ಇಂದ್ರೋ ವೃತ್ತಹನ್” ಇತ್ಯಾದಿ. “ವಿರೋಧಿ ಗುಣವಾದ: ಸ್ಯಾದನುವಾದೋವಧಾರಿತೇ । ಭೂತಾರ್ಥವಾದಸ್ತದ್ವಾದಾನಾವರ್ಯ-ವಾದಸ್ವಿಧಾ ಮತ:” ॥ 3. ಗ್ರಂಥದ ತಾತ್ಪರ್ಯವನ್ನು ನಿರ್ಣಯಿಸುವ ಆರು ಲಿಂಗ (ಉಪಕರಣ)ಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. “ಉಪಕ್ರಮೋಪಸಂಹಾರಾವಮ್ಯಾಸೋಪ್ಪವಂತಾಫಲಮ್ । ಅರ್ಥವಾದೋಪಪತ್ತಿ ಚ ಹೇತುಸ್ತಾತ್ಪರ್ಯನಿರ್ಣಯೇ” ॥

ಅರ್ಥವಿಧಿ ಅರ್ಥವಿಧಿ (ವಿಂ) 1. ಕಾರ್ಯಜ್ಞ, ಕಾರ್ಯದ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಬಲ್ಲವನು, ಚತುರ, ಬುದ್ಧಿವಂತ. ಅರ್ಥ ವೇತ್ತಿ—ವಿದ (ಜ್ಞಾನಿ) “ಕ್ವಿಪ್” (3-2-61) । 2. ಅರ್ಥವನ್ನು ಬಲ್ಲವನು, ಶಬ್ದಾರ್ಥವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. “ಅವೇಕ್ಷ್ಯ ಧಾತೋಗಮನಾರ್ಥಮರ್ಥವಿಚ್ಛಕಾರ ನಾಮ್ನಾ ರಘುಮಾತ್ಮಸಂಭವಮ್” ರಘುಂ 3-21 ।

ಅರ್ಥವೃದ್ಧಿ ಅರ್ಥವೃದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧನವೃದ್ಧಿ, ಐಶ್ವರ್ಯವು ಅಧಿಕವಾಗುವಿಕೆ.

ಅರ್ಥವ್ಯಯ ಅರ್ಥವ್ಯಯ (ಪುಂ) ಹಣದ ಖರ್ಚು, ಹಣದ ವೆಚ್ಚ.

ಅರ್ಥವ್ಯಯಜ್ಞ ಅರ್ಥವ್ಯಯಜ್ಞ (ವಿಂ) ಕಾಲ ದೇಶ ಮತ್ತು ಪಾತ್ರಾಪಾತ್ರಗಳನ್ನು ವಿಮರ್ಶಿಸಿ ಹಣವನ್ನು ಖರ್ಚು ಮಾಡುವವನು, ಹಣದ ಖರ್ಚಿನ ಕ್ರಮವನ್ನರಿತವನು.

ಅರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರ ಅರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರ (ನಂ) 1. ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರ, ರಾಜ ನೀತಿ, ದಂಡನೀತಿ. ಅರ್ಥಸ್ಯ ಧನಾದೇ: ಪ್ರಾಪಕಂ ಶಾಸ್ತ್ರಮ್ । “ಇಹ ಖಲು ಅರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರಕಾರಾ: ತ್ರಿವಿಧಾಂ ಸಿದ್ಧಿಮುಪವರ್ಣಯಂತಿ” ಮುಕ್ತಾಂ 3 । 2. ಮಂತ್ರ ತಂತ್ರಗಳ ಪ್ರಯೋಗದಿಂದ ಮಾಡುವ ಹಿಂಸಾಕೃತ್ಯ (ಮಾಟ, ಶೂನ್ಯ)ಗಳನ್ನು ನಿರೂಪಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ.

ಅರ್ಥಶೌಚ ಅರ್ಥಶೌಚ (ನಂ) ದ್ರವ್ಯಶುದ್ಧಿ, ನ್ಯಾಯ ಮಾರ್ಗದಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಿದ ಧನದ ಪರಿಶುದ್ಧತೆ. “ಸರ್ವೇಷಾಮೇವ ಶೌಚಾನಾಮರ್ಥಶೌಚಂ ಪರಂ ಸ್ಮೃತಮ್” ಮನುಂ 4-106 ।

ಅರ್ಥಸಂಗ್ರಹ ಅರ್ಥಸಂಗ್ರಹ (ಪುಂ) ಹಣದ ಸಂಪಾದನೆ, ಹಣದ ಕೂಡಿಕೆ, ಧನದ ಶೇಖರಣೆ.

ಅರ್ಥಸಮಾಜ ಅರ್ಥಸಮಾಜ (ಪುಂ) 1. ಹಣದ ರಾಶಿ. 2. ಅನೇಕಾರ್ಥಗಳ ಗುಂಪು. 3. ಕಾರಣಗಳ ಸಮೂಹ. ಅನೇಕ ಕಾರಣಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ಕಾರ್ಯವು ಯಾವುದೊಂದು ಪ್ರತ್ಯೇಕ

ಕಾರಣಕ್ಕೂ ಸಂಬಂಧಪಡುವುದಿಲ್ಲ. ಉದಾ: ನೀಲವರ್ಣತವಮ್ । ಇಲ್ಲಿ ಘಟತ್ವವು ದಂಡ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಕಾರ್ಯ. ನೀಲತ್ವವು ನೀಲಕಪಾಲದ್ವಯದ ಕಾರ್ಯ. ಹೀಗೆ ನೀಲತ್ವವೂ ಘಟತ್ವವೂ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಕಾರಣಜನ್ಯವಾದುದರಿಂದ ನೀಲಘಟತ್ವವು ಯಾವುದೊಂದು ಕಾರಣದಿಂದಲೂ ಹುಟ್ಟಿಲ್ಲ. ಅದುದರಿಂದ ನೀಲಘಟತ್ವವು ಅರ್ಥಸಮಾಜಗ್ರಸ್ತವು.

ಅರ್ಥಸಮಾಹಾರ ಅರ್ಥಸಮಾಹಾರ (ಪುಂ) 1. ಹಣದ ಸಂಪಾದನೆ. 2. ನಿಧಿ, ನಿಕ್ಷೇಪ, ಹಣದ ಕೂಡಿಕೆ.

ಅರ್ಥಸಿದ್ಧಿ ಅರ್ಥಸಿದ್ಧಿ (ವಿಂ) 1. ಉಪಾತ್ತವಾದ ಶಬ್ದಗಳ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಉಂಟಾಗದೆ ಪೂರ್ವೋತ್ತರ ಸಂಬಂಧ (ಸನ್ನಿವೇಶದ ಟಿಚಿತ್ಯ)ದಿಂದ ಸಿದ್ಧವಾದ, ಅನ್ವಯ ಲಬ್ಧವಾದ. 2. ಪ್ರಯೋಜನ (ಫಲ)ವನ್ನು ಪಡೆದ. 3. ಧನವನ್ನು ಪಡೆದ.

ಅರ್ಥಸಿದ್ಧಿ ಅರ್ಥಸಿದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ, ಕಾರ್ಯವು ಕೈಗೂಡುವಿಕೆ. ಅರ್ಥಸ್ಯ ಕಾರ್ಯಸ್ಯ ಸಿದ್ಧಿ: । “ಅರ್ಥಸಿದ್ಧಯೆ ಹರಿಶ್ಚಂಕ ಗಂಠ ಸೌಮ್ಯ ಯಥಾಸುಖಮ್” ರಾಮಾಂ ।

ಅರ್ಥಹರ ಅರ್ಥಹರ (ವಿಂ) ಹಣವನ್ನು ಪಡೆಯುವವನು, ಹಿರಿಯರಿಂದ ಅಸ್ತಿಯನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ಅರ್ಥ ಹರತಿ—ಹ್ವ (ಹರಣೆ) “ಅಚ್” (3-2-9) ।

ಅರ್ಥಹೀನ ಅರ್ಥಹೀನ (ವಿಂ) 1. ದರಿದ್ರ, ಧನಹೀನ, ಬಡವ. ಅರ್ಥೇನ ಹೀನ: । 2. ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ (ಶಬ್ದ).

ಅರ್ಥಾಗಮ ಅರ್ಥಾಗಮ (ಪುಂ) 1. ಅರ್ಥಲಾಭ, ಧನ ಲಾಭ, ವರಮಾನ. ಅರ್ಥಸ್ಯಾಗಮ: । “ಅರ್ಥಾಗಮೋ ನಿದ್ಯ-ಮರೋಗಿತಾ ಚ” ಹಿತೋಂ । 2. ಸಂದರ್ಭವಿಶೇಷದಿಂದ ಮತ್ತೊಂದು ಅರ್ಥವುಂಟಾಗುವಿಕೆ. 3. ದ್ರವ್ಯ ಸಂಪಾದನೆಗೆ ಕಾರಣವಾದ ವ್ಯಾಪಾರ. ಅರ್ಥ ಆಗಮ್ಯತೇಜೇನ ।

ಅರ್ಥಾಂತರ ಅರ್ಥಾಂತರ (ನಂ) 1. ಬೇರೆ ಅರ್ಥ. 2. ಬೇರೊಂದು ಕಾರಣ. ಅನ್ಯೋರ್ಥ: । “ತದ್ವಚ್ಛ ಸಿದ್ಧಯೆ ಕ್ವುರ ದೇವಕಾರ್ಯಮರ್ಥೋಪಮರ್ಥಾಂತರಲಮ್ಯ ಏವ” ಕುಮಾಂ 3-12 । 3. ತರ್ಕಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಒಂದು ದೋಷ, ನಡೆಸಿದ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಪ್ರಕೃತ ಕಾರ್ಯ ಸಿದ್ಧಿಸದೆ ಬೇರೊಂದು ಕಾರ್ಯವು ಸಿದ್ಧಿಸುವಿಕೆ.

ಅರ್ಥಾಂತರನ್ಯಾಸ ಅರ್ಥಾಂತರನ್ಯಾಸ (ಪುಂ) ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ, ಒಂದು ಅರ್ಥವು ಸಿದ್ಧಿಸುವುದಕ್ಕಾಗಿ (ದೃಢಪಡುವುದಕ್ಕಾಗಿ) ಅದರ ಸಮರ್ಥನ ರೂಪವಾದ ಮತ್ತೊಂದು ಅರ್ಥವನ್ನು ಹೇಳುವುದು.



ಅರ್ಥಾಂತರಂ ನ್ಯಸ್ಯತೇ — ನಿ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣಂ) “ಛ” (3-3-121)। “ಉಕ್ತಿರರ್ಥಾಂತರನ್ಯಾಸಃ ಸ್ಯಾತ್ಸಾಮಾನ್ಯ ವಿಶೇಷಯಃ” ಚಂದ್ರಾಂ। ಸಾಮಾನ್ಯಾರ್ಥದಿಂದ ವಿಶೇಷಾರ್ಥಸಮರ್ಥನರೂಪ, ವಿಶೇಷಾರ್ಥದಿಂದ ಸಾಮಾನ್ಯಾರ್ಥಸಮರ್ಥನರೂಪಗಳೆಂದು ಅರ್ಥಾಂತರ ನ್ಯಾಸವು ಎರಡು ವಿಧ. ಉದಾ: (1) “ಹನುಮಾನವಿ-  
ಮತರದ್ಭುಕಂ ಕಿ ಮಹಾತ್ಮನಾಮ್”। (2) “ಗುಣವತ್ಪು-  
ಸಂಸರ್ಗಾಘಾತಿ ಸ್ವಲ್ಪೋಪಿ ಗೌರವಮ್। ಪುಷ್ಪಮಾಲಾನುಷ್ಣೇಣ  
ಸುತ್ರಂ ಶಿರಸಿ ಧಾರಯತೇ”।

ಅರ್ಥಾಪತ್ತಿ ಅರ್ಥಾಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ಅಂಶದಿಂದ ಮತ್ತೊಂದು ಅಂಶವನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸುವುದು, ಉಪಪಾದ್ಯವಾದ ಅರ್ಥದಿಂದ ಅದರ ಉಪಪಾದಕ ಜ್ಞಾನವುಂಟಾಗುವಿಕೆ [ಯಾವುದಿಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ಯಾವ ಒಂದು ಕಾರ್ಯವು ಉಂಟಾಗುವುದಿಲ್ಲವೋ ಅದು ಉಪಪಾದಕ. ಅದರಿಂದಾಗುವ ಕಾರ್ಯವು ಉಪಪಾದ್ಯ.] ಅನುಪಪದ್ಯಮಾನ (ಕಾರಣವಿಲ್ಲದೆ ಉಂಟಾಗದಿರುವ) ಅರ್ಥದಿಂದ ಅದರ ಉಪಪಾದಕ (ಕಾರಣ) ಕಲ್ಪನೆ. ಅರ್ಥಸ್ಯ ಶಬ್ದತಃ ಅನುಕ್ತಸ್ಯ ಆಪತ್ತಿಃ ಸಿದ್ಧಿಃ (ಕಲ್ಪನಾ)। “ಪಿನೋ ದೇವದತ್ತೋ ದಿವಾ ನ ಭುಂಕ್ತೇ” ಎಂಬಲ್ಲಿ ದೇವದತ್ತನು ಪುಷ್ಪನಾಗಿದ್ದಾನೆ. ಹಗಲು ಊಟಮಾಡುವುದಿಲ್ಲವೆಂದು ತಿಳಿದರೆ ರಾತ್ರಿ ಭೋಜನವಿಲ್ಲದೆ ಪುಷ್ಟಿಬರಲಾರದೆಂದು ರಾತ್ರಿ ಭೋಜನವನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸುತ್ತೇವೆ. ಇಲ್ಲಿ ಪೀನತ್ವವು (ಪುಷ್ಟಿಯು) ಉಪಪಾದ್ಯ. ಹಗಲು ಭೋಜನವಿಲ್ಲದೆ ದೇವದತ್ತನಿಗೆ ರಾತ್ರಿ ಭೋಜನ ಕಲ್ಪನೆಯು ಉಪಪಾದಕ. ಇದೇ ಅರ್ಥಾಪತ್ತಿ ಪ್ರಮಾಣ. ನೈಯಾಯಿಕರು ಅರ್ಥಾಪತ್ತಿಯನ್ನು ಅನುಮಾನ ಪ್ರಮಾಣದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸುತ್ತಾರೆ. ಮೀಮಾಂಸಕರು ಹಗಲು ಭೋಜನ ಮಾಡದಿರುವಾಗ ಉಂಟಾದ ಪೀನತ್ವವು (ಪುಷ್ಟಿಯು) ರಾತ್ರಿ ಭೋಜನವಿಲ್ಲದೆ ಸಂಭವಿಸುವುದಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ರಾತ್ರಿ ಭೋಜನದಲ್ಲಿ ಈ ಪೀನತ್ವವೇ ಪ್ರಮಾಣವೆಂದೂ ಇದು ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾದಿ ಪ್ರಮಾಣಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಅತಿರಿಕ್ತವಾದ ಬೇರೊಂದು ಪ್ರಮಾಣವೆಂದೂ ಅಭಿಪ್ರಾಯಪಡುತ್ತಾರೆ. “ದಿವಾಽಭುಜ್ಜಾನತ್ವೇ ಸತಿ ಪೀನತ್ವಂ ರಾತ್ರಿಭೋಜನಮನ್ತರೇಣ ನೋಪಪದ್ಯತೇ। ಅತಃ ಪೀನತ್ವಾನುಪಪತ್ತಯಾ ಅರ್ಥಾಪತ್ತಿರೇವ ರಾತ್ರಿಭೋಜನೇ ಪ್ರಮಾಣಮ್ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾದಿಮ್ಯೋ ಹಿಂತ್ಯಮ್, ರಾತ್ರಿಭೋಜನಸ್ಯ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾದಿವಿಷಯತ್ವಾತ್। 2. ಒಂದು ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರ; ಬಹಳ ಕಷ್ಟವಾದ ಕಾರ್ಯದ ವರ್ಣನೆಯಿಂದ ಸುಲಭವಾದ ಕಾರ್ಯದ ಸಿದ್ಧಿವರ್ಣನೆಯು “ಅರ್ಥಾಪತ್ತಿ”

ಅಲಂಕಾರವಾಗುವುದು. ಇದು ಕೈಮುಖಿಕ ನ್ಯಾಯದಿಂದ ಸಿದ್ಧಿಸುವುದು. ಮೇಲೆ ಹೇಳಿದ ಅರ್ಥಾಪತ್ತಿಗಿಂತಲೂ ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಬರುವ ಇದು ವಿಲಕ್ಷಣವಾದುದರಿಂದ ಕಾವ್ಯಾರ್ಥಾಪತ್ತಿಯೆಂದು ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ. “ಕೈಮುಖಿಕೇನಾರ್ಥಸಂಸಿದ್ಧಿಃ ಕಾವ್ಯಾರ್ಥಾಪತ್ತಿರಪ್ಯತೇ। ಸ ಜಿತಸ್ತ್ವ-  
ನ್ಮುಖೇನೇಂದುಃ ಕಾ ವಾರ್ತಾ ಸರಸೀರಹಾಮ್”॥

ಅರ್ಥಿಕ ಅರ್ಥಿಕ (ಪುಂ) ಸ್ತುತಿಪಾಠಕ, ಹೊಗಳುಬಿಟ್ಟ. ಅರ್ಥಿನ ಎವ ಅರ್ಥಿಕಾಃ। “ವೆತಾಲಿಕಾ ಬೋಧಕರಾ ಅರ್ಥಿಕಾಃ ಸೌಖ್ಯಸುಪ್ತಿಕಾಃ” ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ಅರ್ಥಿತ ಅರ್ಥಿತ (ವಿಂ) ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಯಾಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೇಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅರ್ಥ (ಉಪಯಾಚ್ಛಾಯಾಮ್) “ಕ್ತಃ” (3-2-102)।

ಅರ್ಥಿತಾ ಅರ್ಥಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಾರ್ಥನೆ, ಯಾಚನೆ, ಬೇಡಿಕೆ. ಅರ್ಥಿನೋ ಭಾವಃ “ತಲ್” (4-1-119)। “ಅಪ್ಯಸುಪ್ರಣಯಿನಾಂ ರಥೋಃ ಕುಲೇ ನ ವ್ಯಹನ್ಯತ ಕದಾಚಿದರ್ಥಿತಾ” ರಘುಂ 11-21. 2. ಇಚ್ಛೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಬಯಕೆ. “ಯಥಾರ್ಥಿತಾ ನಿರ್ದಿತವಾಚ್ಯಶಲ್ಯಾನ್ ಪ್ರಾಣಾನ್ ಮಯಾ ಧಾರಯಿತುಂ ಚಿರಂ ವಃ” ರಘುಂ 14-42. ಅರ್ಥಿನ್ “ತ್ವಃ” (4-2-119)। ಅರ್ಥಿತ್ವಮ್ ಅರ್ಥಿತ್ವಂ. “ಅರ್ಥಿತ್ವೇ ಪ್ರಕಟೀಕೃತೇಽಪಿ ನ ಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿಃ ಪ್ರಭೋಃ” ಮಂ ಬಿಂ 2-9।

ಅರ್ಥಿನ್ ಅರ್ಥಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಯಾಚಕ, ಭಿಕ್ಷುಕ, ಬೇಡುವವನು. ಅರ್ಥಯತೇ — ಅರ್ಥ (ಉಪಯಾಚ್ಛಾಯಾಮ್) “ಣಿಢಿಃ” (3-1-134)। “ಯಥಾವಿಧಿ ಹುತಾಗ್ನಿನಾಂ ಯಥಾಕಾಮಾರ್ಚಿತಾರ್ಥಿನಾಮ್” ರಘುಂ 1-6. 2. ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. ಅಸನ್ನಿಹಿತೋಽರ್ಥೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇತಿಃ” (ವಾಂ 4-2-134)। 3. ಸೇವಕ, ಆಳು. 4. ವಾದಿ, ವ್ಯಾಜ್ಯ ಹೂಡುವವನು. “ಸ ಧರ್ಮಸ್ಥಸಖಃ ಶಶ್ವದರ್ಥಿಪ್ರತ್ಯರ್ಥಿನಾಂ ಸ್ವಯಮ್। ದದರ್ಶ ಸಂಶಯಚ್ಛೇದಾನ್ ವ್ಯವಹಾರಾನತಂದ್ರಿತಃ” ರಘುಂ 17-39. 5. ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, ಆಸೆಯುಳ್ಳ. ಅರ್ಥೋಽಪೇಕ್ಷಾಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ — ಅರ್ಥ “ಇತಿಃ” (4-2-114)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ತೀಪ್” (4-1-114)। ಅರ್ಥಿನೋ ಅರ್ಥಿಣೀಃ।

ಅರ್ಥಿಭಾವ ಅರ್ಥಿಭಾವ (ಪುಂ) ಯಾಚನೆ, ಬೇಡಿಕೆ. ಅರ್ಥಿನೋ ಭಾವಃ। “ಕಂ ಯಾಚೇ ಯತ್ರ ತತ್ರ ಧ್ರುವಮನವಸರಗ್ರಸ್ತಃ ಉಪಾರ್ಥಿಭಾವಃ” ಮಾಲತೀಂ 9-30।

ಅರ್ಥಿಸಾತ್ ಅರ್ಥಿಸಾತ್ (ಅವ್ಯಂ) ಯಾಚಕನಿಗೆ ಸಂಪೂರ್ಣ ಅರ್ಥನವಾಗಿ. ಅರ್ಥಿನ್ “ಸಾತಿಃ” (4-4-42)। “ವಿಭಜ್ಯ ಮೇಹನ್ ಯದರ್ಥಿಸಾತ್ಕೃತೋ ನ ಸಿಂಧುರಸ್ತರ್ಗಜಲವ್ಯಯಮೇಹಃ” ನೆಲಂ 1-16।



ಅರ್ಯೋಪಕ್ಷೇಪಕ ಅರ್ಥೋಪಕ್ಷೇಪಕ (ಪುಂ) ನಾಟಕದ ಒಂದು ಅಂಗ. ಅರ್ಥಾನ್ತರಾಪತ್ತಿ—ಅಪ+ಕ್ಷಿಪು(ನಿರಸನೆ) “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩)। ವಿಷ್ಣುಮಃ: ಕೂಲಿಕಾ ಅಕ್ಷಾಸ್ಯಮ್ ಪ್ರವೇಶಕ: ಅಕ್ಷಾವತಾರ: ಎಂದು ಅರ್ಥೋಪಕ್ಷೇಪಕಗಳು ಐದು. [ನಾಟಕದ ಅಂಕಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ ಪ್ರದರ್ಶಿಸಲು ಅನುಚಿತವಾದ ಮತ್ತು ನೀರಸವಾದ ಕಥಾವಸ್ತುಗಳನ್ನು ವಿಷ್ಣುಮಃ ಐದು ಅರ್ಥೋಪಕ್ಷೇಪಕಗಳ ಮೂಲಕ ಸೂಚಿಸಬೇಕು.]

ಅರ್ಯೋಪಪತ್ತಿ ಅರ್ಥೋಪಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ, ಕಾರ್ಯ ಕೈಗೂಡುವಿಕೆ. ಅರ್ಥಸ್ಯ ಉಪಪತ್ತಿ:। “ಸ್ವಾರ್ಥೋಪಪತ್ತಿ ಪ್ರತಿ ದುರ್ಬಲಾಶಸ್ತಮಿತ್ಯವೋಚದ್ವರತಂತುಶಿಷ್ಯ:” ರಘುಂ ೪-೧೨।

ಅರ್ಥ್ಯ ಅರ್ಥ್ಯ (ನಂ) 1. ಶಿಲಾಜತು. (ವಿಂ) 2. ಪಂಡಿತ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯುಳ್ಳವನು. 3. ಅರ್ಥಸಹಿತವಾದ, ಅರ್ಥಗರ್ಭಿತವಾದ. ಅರ್ಥಾದಿನಪೇತ:—ಅರ್ಥ “ಯತ್” (೪-೪-೯೨)। “ವಾಗ್ಗೀಶಂ ವಾಗ್ಗಿರರ್ಥ್ಯಾಭಿ: ಪ್ರಣಿಪತ್ಯೋಪತಸ್ಥಿರೇ” ಕುಮಾಂ ೨-೩। “ಅರ್ಥ್ಯಮಿಥಂಪತಿರ್ವಿಚಿಮಾದದೇ ವದತಾಂ ವರ:” ರಘುಂ ೧-೪೯। 4. ನ್ಯಾಯವಾದ, ಯೋಗ್ಯವಾದ, ತಕ್ಕದಾದ. 5. ಯಾಚಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 5. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. “ಅರ್ಥ್ಯಂ ಶಿಲಾಜತುನ್ಯರ್ಥ್ಯಾಂ ಬುಧೇ ನ್ಯಾಯ್ಯೇ ಚ ವಾಚ್ಯವತ್” ಮೇದಿಂ।

ಅರ್ಧ — ಗತೌ ಯಾಚನೇ ಚ (ಮ್ವಾಂ ಪಂ ಸೇಂ) ಅರ್ಧಂತಿ। ಆನರ್ಧಂ। ಆದೀತ್। ಕರ್ಮಂ ಅರ್ಧಂತಿ। 1. ನಡೆ, ಚಲಿಸು. 2. ಯಾಚಿಸು, ಬೇಡು, ಪ್ರಾರ್ಥಿಸು. “ಸ್ವಸ್ತು ತೇ ನಿಗಲಿತಾಮ್ಬುಗಂ ಶರದ್ಧನಂ ನಾರ್ದಂತಿ ಚಾತಕೋಽಪಿ” ರಘುಂ ೪-೧೭।

ಅರ್ಧ — ಹಿಸಾಯಾಮ್ (ಚುಂ ೩ಂ ಸೇಂ) ಅರ್ಧಯತಿ, —ತೇ। ಅರ್ಧಂತಿ, —ತೇ। ಆದಿದತ್, —ತೇ। ಹಿಂಸಿಸು, ಪೀಡಿಸು. “ಅವ್ಯರ್ಣಂ ಗಿರಿಕೂಟಾಭಾನಮ್ಯರ್ಣಾನಾದಿದದ್ದುತಮ್” ಮೃತ್ರಿಂ ೯-೧೯।

ಅರ್ಧನ ಅರ್ಧನ (ನಂ) 1. ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ಪೀಡಿಸುವುದು. 2. ಯಾಚಿಸುವುದು, ಬೇಡುವುದು. 3. ಗಮನ, ಚಲನೆ, ನಡಿಗೆ. 4. ಕೊಲ್ಲುವುದು. ಅರ್ಧ (ಗತೌ ಯಾಚನೇ ಹಿಸಾಯಾಂ ಚ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 5. ಹಿಂಸಿಸುವ, ಪೀಡಿಸುವ. ಅರ್ಧ “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪)। “ಸೃಜಸ್ವೇತಿ ತದೋವಾಚ ಬಲಂ ಪರಬಲಾದನಮ್” ರಾಮಾಂ।

ಅರ್ಧನಾ ಅರ್ಧನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಾರ್ಥನೆ, ಬೇಡುವುದು, ಯಾಚನೆ. 2. ಗಮನ, ನಡಿಗೆ, ಚಲನೆ. ಅರ್ಧ (ಗತೌ ಯಾಚನೇ ಚ) + ಣಿಚ್ “ಯುಚ್” (೩-೩-೧೦೭)। 3. ಹಿಂಸೆ, ಪೀಡೆ.

ಅರ್ಧಿತ ಅರ್ಧಿತ (ನಂ) 1. ಒಂದು ವಿಧವಾದ ವಾತ ರೋಗ. (ವಿಂ) 2. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅರ್ಧ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)। 3. ಯಾಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅರ್ಧ(ಯಾಚನೇ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)। “ಅರ್ಧಿತಂ ಯಾಚಿತೇಽಪಿ ಸ್ವಾಧಾತವ್ಯಾಧೌ ಚ ಹಿಸಿತೇ” ಮೇದಿಂ।

ಅರ್ಧ ಅರ್ಧ (ಪುಂ) 1. ಶಕಲ, ಜೂರು, ಮುರುಕು, ತುಂಡು, ಒಂದು ಭಾಗ. “ಪಶ್ಚಾರ್ಧೇನ ಪ್ರವಿಷ್ಟ: ಶರಪತನ-ಭಯಾದ್ಭಯಸಾ ಪೂರ್ವಕಾಯಮ್” ಶಾಕುಂ ೧-೪। (ನಂ) 2. ಸಮಾರ್ಧ, ಸರಿಯಾಗಿ ಅರ್ಧಭಾಗ. ಕ್ಷಣೋತ್ಪನ್ನೇವ — ಕ್ಷು (ವೃದ್ಧಿ) ಕರಂ “ಘ್” (೩-೩-೧೨೧)। “ಅರ್ಧ: ಕ್ಷಣೇ ಸಮಾಶೇಷಮ್” ಹೇಮಂ। 3. ಗೃಹ, ಮನೆ, ವಾಸಸ್ಥಾನ, ಜಾಗ. ಕ್ಷು ಅಧಿಂ “ಘ್” (೩-೩-೧೨೧)। 4. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಏಳಿಗೆ. ಕ್ಷು ಭಾವೇ “ಘ್” (೩-೩-೧೮)।

ಅರ್ಧಗಜ್ಞಾ ಅರ್ಧಗಂಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾವೇರೀನದಿ. ಅರ್ಧಗಜ್ಞಾಃ।

ಅರ್ಧಗುಚ್ಛ ಅರ್ಧಗುಚ್ಛ (ಪುಂ) ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು ಎಳೆಗಳುಳ್ಳ ಹಾರ.

ಅರ್ಧಗರ್ಭ ಅರ್ಧಗರ್ಭ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯನ ಕಿರಣ. ಅರ್ಧವತ್ಸರಸ್ಯಾರ್ಧಂ ಗರ್ಭಂ ಗರ್ಭಸ್ಥಾನೀಯಮುದಕಂ ಯಸ್ಯ। [ಸೂರ್ಯನ ಕಿರಣಗಳು ಮಾರ್ಗಶಿರ ಅರ್ಧವಾ ಪುಷ್ಯಮಾಸದ ಆದಿಯಲ್ಲಿ ಭೂಮಿಯಿಂದ ನೀರನ್ನು ಎಳೆದುಕೊಂಡು ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಗರ್ಭವನ್ನುಂಟುಮಾಡುತ್ತವೆ.]

ಅರ್ಧಚಂದ್ರ ಅರ್ಧಚಂದ್ರ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರನ ಅರ್ಧಭಾಗ. ಅರ್ಧ ಚಂದ್ರಸ್ಯ। “ಶಬ್ದಮೀಶ್ವರ ಇತ್ಯುಚ್ಛೇ: ಸಾರ್ಧಚಂದ್ರಂ ವಿಭಜಿತಿ ಯ:” ಕುಮಾಂ ೬-೭೪। 2. ಅರ್ಧಚಂದ್ರಾಕಾರದ ಉಗುರಿನ ಗಾಯ, ನಖಕ್ಷತ. 3. ನವಿಲುಗರಿಯಲ್ಲಿರುವ ಅರ್ಧಚಂದ್ರಾಕಾರದ ಗುರುತು. 4. ಅರ್ಧಚಂದ್ರನಂತೆ ಮುಖ (ತುದಿ)ವುಳ್ಳ ಬಾಣ. 5. ಕತ್ತುಹಿಡಿದು ನೂಕಲು ಅರ್ಧಚಂದ್ರಾಕಾರವಾಗಿ ಮಾಡುವ ಹಸ್ತ, ಗಳಹಸ್ತ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಚಂದ್ರಾ —ಚಂದ್ರಾ. 6. ತಿಗಡೆಮರ. “ಅರ್ಧಚಂದ್ರಸ್ತು ಗಲಹಸ್ತೇನ್ದುಖಣ್ಡಯೋ:। ಚಂದ್ರಕೇ ಬಾಣಭೇದೇ ಚಾರ್ಧಚಂದ್ರಾ ತ್ರಿವೃತಾಭಿಧಿ” ಹೇಮಂ।

ಅರ್ಧಚಂದ್ರಕ ಅರ್ಧಚಂದ್ರಕ (ಪುಂ) ನವಿಲುಗರಿಯಲ್ಲಿರುವ ಅರ್ಧಚಂದ್ರಾಕಾರದ ಗುರುತು.

ಅರ್ಧಚೋಲಕ ಅರ್ಧಚೋಲಕ (ಪುಂ) ಕುಪ್ಪಸ, ಕಂಚುಕ, ರವಿಕೆ.



ಅರ್ಧಜರತೀಯ ಅರ್ಧಜರತೀಯ (ಪುಂ) ಅರ್ಧಮುದುಕಿ ಯಂತಿರುವ ಒಂದು ನ್ಯಾಯ, ಕೆಲವು ಅಂಶದಲ್ಲಿ ಸಿದ್ಧ ವಾದ ಕೆಲವು ಅಂಶದಲ್ಲಿ ಅಸಿದ್ಧವಾದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ನ್ಯಾಯ, ಕೆಲವು ಅಂಶದಲ್ಲಿ ಉಪಯುಕ್ತವಾಗಿದ್ದು ಕೆಲವು ಅಂಶದಲ್ಲಿ ಅಪ್ರಯೋಜಕವಾದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ನ್ಯಾಯ. [ವೃದ್ಧಿ (ಮುದುಕಿ)ಯ ಮುಖವು ಸುಂದರ ವಾಗಿದ್ದು ಸ್ತನಾದಿಗಳೆಲ್ಲವೂ ಗಳಿತವಾಗಿದ್ದರೆ ಹೇಗೆ ಉಪಭೋಗಯೋಗ್ಯವೋ ಹಾಗೆ ಕೆಲವು ಭಾಗವು ಉಪಯುಕ್ತವಾಗಿದ್ದು ಉಳಿದ ಭಾಗವು ಅಪ್ರಯೋಜಕ ವಾಗಿದ್ದರೆ ಅದು ಸರ್ವಥಾ ತ್ಯಾಜ್ಯವೆನ್ನುವ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯದ ಪ್ರಯೋಗ.] “ಅಥ ಮುಖಮಾತ್ರಂ ಜರತೀಯಾ: ಕಾಮಯತೆ ನಾಜ್ಞಾನೀತಿ ಸೌಖ್ಯಮರ್ಧಜರತೀಯನ್ಯಾಯ: ಸ ಚಾತ್ರ ನ ಯುಕ್ತ:” ।

ಅರ್ಧಜಾಹ್ನವೀ ಅರ್ಧಜಾಹ್ನವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾವೇರೀ ನದಿ. ಅಥ ಜಾಹ್ನವೀ: । [ಕಾವೇರೀಸ್ನಾನದಿಂದ ಗಂಗಾಸ್ನಾನದ ಅರ್ಧಫಲವುಂಟಾಗುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.]

ಅರ್ಧನಾರೀಶ ಅರ್ಧನಾರೀಶ -ಕೇಶವರ-ಈಶ್ವರ (ಪುಂ) ಅರ್ಧ ಪಾರ್ವತಿಯ ಮತ್ತು ಅರ್ಧ ಈಶ್ವರನ ದೇಹ ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪರಮೇಶ್ವರನ ಒಂದು ರೂಪ. ಅಥ ನಾರ್ಯಾ: । ಅರ್ಧನಾರೀಯುಕ್ತ ಕೇಶ: ಕೇಶವರೋ ವಾ । [ಭೃಂಗಿಯೆಂಬ ಗಣನಾಯಕನು ಮೋಕ್ಷಾರ್ಥಿಯಾಗಿ ಪಾರ್ವತಿಯ ರೂಪವನ್ನು ಅಸಡ್ಡೆಮಾಡಿ ಶಿವನನ್ನೇ ಧ್ಯಾನಿಸಲಾಗಿ ಕುಪಿತಳಾದ ಪಾರ್ವತಿಯು ಭೃಂಗಿಯ ತೇಜಸ್ಸನ್ನು ಕುಗ್ಗಿಸಲು ಶಿವನು ತನ್ನ ದಂಡಾಯುಧವನ್ನು ಭೃಂಗಿಗೆ ಆಸರೆಯಿತ್ತನು. ಪಾರ್ವತಿಯು ಇನ್ನೂ ಸಿಟ್ಟುಗೊಂಡು ತಪಸ್ಸುಮಾಡಿ ಈಶ್ವರನ ಅರ್ಧಾಂಗವನ್ನು ಸೂರೆ ಗೊಂಡಳು. ಶಿವಪುಂ] ।

ಅರ್ಧನಾವ ಅರ್ಧನಾವ (ನಂ) ಅರ್ಧ ಹಡಗು. ಅಥ ನಾವ:- ನೌ “ಠಕ್” (೪-೪-೧೦೦) ।

ಅರ್ಧನಿಶಾ ಅರ್ಧನಿಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರ್ಧರಾತ್ರಿ. ಅಥ ನಿಶಾಯಾ: ।

ಅರ್ಧಪಣ ಅರ್ಧಪಣ (ಪುಂ) ನಲವತ್ತು ಕವಡೆಗಳ ಬೆಲೆಯುಳ್ಳ ಒಂದು ನಾಣ್ಯ. [ಇಪ್ಪತ್ತು ಕವಡೆಗಳು ಒಂದು ಕಾಕಣ. ನಾಲ್ಕು ಕಾಕಣಗಳು ಒಂದು ಪಣ. ಒಂದು ಪಣಕ್ಕೆ 80 ಕವಡೆಗಳ ಬೆಲೆ.] “ಅಶೀತಿಭಿವರಾಡಕ: ಪಣ ಇತ್ಯಭಿಧೀಯತೆ” ।

ಅರ್ಧಪಾದಿಕ ಅರ್ಧಪಾದಿಕ (ವಿಂ) ಅರ್ಧ ಕಾಲನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಲು ಅರ್ಹ, ಅರ್ಧಕಾಲನ್ನು ಕತ್ತರಿಸುವ ಶಿಕ್ಷೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದವನು. ಅರ್ಧಪಾದಮಹಂತಿ - “ಠಕ್” (೪-೧-೬೩) । “ಗೌಘ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸಂಸ್ಥಾಸು ಕ್ಷುರಿಕಾಯಾಶ್ಚ ಭೇದನೇ । ಪಶುನಾಂ ಹರಣೇ ಚೈವ ಸದಾ: ಕಾರ್ಯೋರ್ಧಪಾದಿಕ:” ಮನುಂ ೮-೩೨೫ ।

ಅರ್ಧಪುಲಾಯಿತ ಅರ್ಧಪುಲಾಯಿತ (ಪುಂ) ಕುದುರೆಯ ನಾಗಾಲೋಟ, ಅಶ್ವಗತಿಯ ಒಂದು ಭೇದ. ಪುಲಾಯಿತಾ ಅಯಿತಂ ಗತಿ: ಪುಲಾಯಿತಮ್ - ಅಯ (ಗತೌ) ಭಾವೇ “ಕ್ತ:” (೩-೩-೧೧೪) । ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: “ಶತಾರ್ಧಾಂಶಕ್ರಮಾದ್ನೇ-ಮಂಡಲಾಯಿತವಲಿತೇ: । ಅನ್ಮುಖಸ್ಯಾಶ್ವಮುಖಸ್ಯ ಗತಿರರ್ಧ-ಪುಲಾಯಿತಮ್ ।

ಅರ್ಧಭಾಗ ಅರ್ಧಭಾಗ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಅರ್ಧ, ಏಕದೇಶ. “ತದರ್ಧಭಾಗೇನ ಲಭಸ್ವ ಕಾಡ್ಕಿತಂ ವರಂ ತಮಿ-ಚ್ಚಾಮಿ ಚ ಸಾಧು ವೇದಿತುಮ್” ಕುಮಾಂ ೪-೪೦ ।

ಅರ್ಧಭಾಜ್ ಅರ್ಧಭಾಜ್ (ವಿಂ) ಅರ್ಧಭಾಗವನ್ನು ಹೊಂದುವ, ಅರ್ಧಭಾಗವನ್ನು ಹೊಂದಲು ಹಕ್ಕು ದಾರನಾದ. ಅಥ ಭಜತಿ - ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) “ಕ್ರಿಪ್” (೩-೨-೭೬) । “ನಿಧಿನಾಂ ತು ಪುರಾಣಾನಾಂ ಧಾತುನಾಮೇವ ಚ ಕ್ಷಿತೌ । ಅರ್ಧಭಾಗಕ್ಷಣಾದ್ರಾಜಾ ಭೂಮೇರಧಿಪತಿರ್ಹಿ ಸ:” ಮನುಂ ೮-೩೯ ।

ಅರ್ಧಭ್ರಮ (ಕ) ಅರ್ಧಭ್ರಮ (ಕ) (ಪುಂ) ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ, ಅರ್ಧಪಾದ ಅರ್ಧಶ್ಲೋಕಗಳ ಭ್ರಮಣವಿರುವ ಒಂದು ಬಂಧ. “ಆಹುರರ್ಧಭ್ರಮಂ ನಾಮ ಶ್ಲೋಕಾರ್ಧಭ್ರಮಣಂ ಯದಿ” । ಉದಾ:

|    |    |     |    |     |    |     |    |
|----|----|-----|----|-----|----|-----|----|
| ಅ  | ಭಿ | ಕ   | ಮ  | ತಿ  | ಕೆ | ನೆ  | ಢೆ |
| ಭಿ | ತಾ | ನ   | ಂದ | ಸ್ಯ | ನಾ | ಶ   | ನೆ |
| ಕ  | ನ  | ತ್ಸ | ಕಾ | ಮ   | ಸೆ | ನಾ  | ಕೆ |
| ಮ  | ಂದ | ಕಾ  | ಮ  | ಕ   | ಮ  | ಸ್ಯ | ತಿ |

ಮಾಘಂ ೧೯-೭೨ ।

ಅರ್ಧಮಾಣವಕ ಅರ್ಧಮಾಣವಕ (ಪುಂ) ಹನ್ನೆರಡು ಎಳೆಗಳ ದಾರ. ಅಥ ಮಾಣವಕಸ್ಯ । “ದ್ವಾದಶಸ್ತವರ್ಧಮಾಣವ:” ವೈಜಂ ।

ಅರ್ಧಮಾತ್ರಕ ಅರ್ಧಮಾತ್ರಕ (ನಂ) “ಹಲ್” ವರ್ಣ, ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರ. “ಏಕಮಾತ್ರೋ ಭವೇದ್ಹ್ರಸ್ವ: ದ್ವಿಮಾತ್ರೋ ದೀರ್ಘ ಉಚ್ಯತೆ । ತ್ರಿಮಾತ್ರಸ್ತು ಪ್ಲುತೋ ಜ್ಞೇಯ: ವ್ಯಂಜನಂ ತ್ವರ್ಧಮಾತ್ರಕಮ್” ।



ಅರ್ಧಮಾತ್ರಾ ಅರ್ಧಮಾತ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರ  
ವನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸುವ ಕಾಲ.

ಅರ್ಧಮಾಸ ಅರ್ಧಮಾಸ (ಪುಂ) ಒಂದು ತಿಂಗಳಿನ ಅರ್ಧ  
ಭಾಗ, ಒಂದು ಪಕ್ಷ, ಹದಿನೈದು ದಿನಗಳು. ಅರ್ಧ  
ಮಾಸಸ್ಯ.

ಅರ್ಧಯಾಮ ಅರ್ಧಯಾಮ (ಪುಂ) ಹಗಲಿನ ಅರ್ಧವಾ  
ರಾತ್ರಿಯ ಎಂಟನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ, ಮೂರು  
ಮುಕ್ಕಾಲು ಘಳಿಗೆ, ಒಂದುವರೆ ಗಂಟೆಯ ಕಾಲ,  
ಅರ್ಧಜಾವ. ಅರ್ಧ ಯಾಮಸ್ಯ.

ಅರ್ಧರಥ ಅರ್ಧರಥ (ಪುಂ) ಜೆನ್ನಾಗಿ ನುರಿಯದ ಯೋಧ,  
ಒಳ್ಳೆಯ ಅನುಭವ ಪಡೆಯದ ರಥಿಕ. ರಥೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ —  
“ಅಕ್” (೪-೨-೧೨೭). ಅರ್ಧ: ಅಸಂಪೂರ್ಣ: ರಥಿ. “ರಥೋ  
ರಥೋಽಭಿಮಾನಿ ಚ ವಿಮುಖಶ್ರಾಪಿ ದೃಶ್ಯತೇ. ಧೃಣಿ ಕರ್ಣ: ಪ್ರಮಾದಿ  
ಚ ತೇನ ಸೋಽರ್ಧರಥೋ ಮತ:” ಭಾಂ. ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೬೮-೯.

ಅರ್ಧರಾತ್ರ ಅರ್ಧರಾತ್ರ (ಪುಂ) ನಡುರಾತ್ರಿ, ಮಧ್ಯರಾತ್ರಿ.  
ಅರ್ಧ ರಾತ್ರಿ: “ಅಕ್” (೪-೪-೮೭). “ಅರ್ಧರಾತ್ರಿ  
ಸ್ತಿಮಿತಪ್ರದೀಪೇ ಶಯ್ಯಾಗೃಹೇ ಸುಪ್ತಜನೇ ಪ್ರಬುದ್ಧ:” ರಘುಂ ೧೬-೪.

ಅರ್ಧವಿಸರ್ಗ ಅರ್ಧವಿಸರ್ಗ (ಪುಂ) ಜಿಹ್ವಾಮೂಲೀಯ  
ಮತ್ತು ಉಪಧ್ಮಾನೀಯ. [ಕ ಳಗಳಿಗೆ ಹಿಂದಿನ  
ವಿಸರ್ಗವು ಜಿಹ್ವಾಮೂಲೀಯ. ಪ ಳಗಳಿಗೆ ಹಿಂದಿನ  
ವಿಸರ್ಗವು ಉಪಧ್ಮಾನೀಯ.] ಉದಾ: ಽಕ ಽಕ  
ಽಪ ಽಪ.

ಅರ್ಧವೀಕ್ಷಣ ಅರ್ಧವೀಕ್ಷಣ (ನಂ) ಅರೆನೋಟ, ವಾರೆ  
ನೋಟ, ಕಟಾಕ್ಷ.

ಅರ್ಧಶತ ಅರ್ಧಶತ (ನಂ) ಐವತ್ತು. ಅರ್ಧ ಶತಸ್ಯ.

ಅರ್ಧಸಮ ಅರ್ಧಸಮ (ನಂ) ವರ್ಣವೃತ್ತದ ಒಂದು  
ಭೇದ, 1, 3 ನೆಯ ಪಾದಗಳೂ, 3, 4 ನೆಯ ಪಾದ  
ಗಳೂ ಸಮವಾಗಿರುವ ಒಂದು ವೃತ್ತ. “ಸಮಮರ್ಧಸಮ  
ವೃತ್ತಂ ವಿಷಮಂ ಚ ತ್ರಿಧಾ ಮತಮ್. ಪ್ರಥಮಾಙ್ಗುಲಿಸಮೋ ಯಸ್ಯ  
ತೃತೀಯಶ್ರರಣೋ ಭವೇತ್. ದ್ವಿತೀಯಸ್ತುರ್ಯವದ್ವೃತ್ತಂ ತದರ್ಧಸಮಮುಚ್ಯತೇ”  
ವೃಂ ೨೦.

ಅರ್ಧಸೀರಿನ್ ಅರ್ಧಸೀರಿನ್ (ಪುಂ) ರೈತ, ಬೇಸಾಯಗಾರ,  
ತಾನು ಮಾಡಿದ ವ್ಯವಸಾಯಕ್ಕಾಗಿ ಅರ್ಧ ಫಲವನ್ನು  
ಪಡೆಯುವವನು. ಅರ್ಧ ಸೀರಸ್ಯ. ಸೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:”  
(೪-೨-೧೧೫). “ಶ್ರುದ್ರೇಷು ದಾಸಗೋಪಾಲಕುಲಮಿತ್ರಾರ್ಧಸೀರಿಣ:”  
ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೧೬೬.

ಅರ್ಧಹರ ಅರ್ಧಹರ (ವಿಂ) ಅರ್ಧಭಾಗವನ್ನು ಆಕ್ರಮಿ  
ಸುವ, ಅರ್ಧಭಾಗವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ. ಅರ್ಧ

ಹರತಿ — ಹ್ರ (ಹರಣೆ) “ಅಕ್” (೩-೨-೯). ಸ್ತ್ರಿಯಾ  
—ಹರಾ—ಹರಾ. “ಸಮಾದಿದೇಶೈಕವಧುಂ ಭವಿತ್ರಿ ಪ್ರೇಕ್ಷಣಾ ಶರೀರಾರ್ಥ-  
ಹರಾಂ ಹರಸ್ಯ” ಕುಮಾಂ ೧-೫೦.

ಅರ್ಧಹಾರ ಅರ್ಧಹಾರ (ಪುಂ) ಅರವತ್ತನಾಲ್ಕು (64)  
ಎಳೆಗಳ ಹಾರ. “ಅರ್ಧಹಾರಶ್ಚತುಃಪಠಿ:” ವೈಜಂ.

ಅರ್ಧಾಂಶ ಅರ್ಧಾಂಶ (ಪುಂ) ಒಂದು ಅರ್ಧ, ಅರ್ಧ  
ಭಾಗ.

ಅರ್ಧಾರ್ಧ ಅರ್ಧಾರ್ಧ (ಪುಂ) ಅರ್ಧದಲ್ಲಿ ಅರ್ಧಭಾಗ,  
ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. ಅರ್ಧಮರ್ಧಸ್ಯ. “ಚರೋರ್ಧಾರ್ಧ-  
ಭಾಗಾಭ್ಯಾಂ ತಾಮಯೋಜಯತಾಮುಖೇ” ರಘುಂ ೧೦-೫೬.

ಅರ್ಧಾಸಿನ ಅರ್ಧಾಸಿನ (ನಂ) 1. ಪೀಠದ ಅರ್ಧ ಭಾಗ.  
ಅರ್ಧಮಾಸನಸ್ಯ. “ಉಪೇಯುಷ: ಸ್ವಾಮಪಿ ಮूर्ತಿಮಧ್ಯಾಮರ್ಧಾಸಿನಂ  
ಗೋತ್ರಭಿದೋಽಧಿತಠೌ” ರಘುಂ ೬-೭೩. 2. ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ  
ಮಾಡುವ ದಾನ.

ಅರ್ಧೇಂದ್ರ ಅರ್ಧೇಂದ್ರ (ಪುಂ) 1. ಅರ್ಧಚಂದ್ರ, ಚಂದ್ರನ  
ಅರ್ಧಭಾಗ. 2. ಅರ್ಧಚಂದ್ರಾಕಾರದ ಮುಖವುಳ್ಳ  
ಒಂದು ಬಾಣ. 3. ಅರ್ಧಚಂದ್ರಾಕಾರದ ಉಗುರಿನ  
ಗುರುತು, ನಖಕ್ಷತ. 4. ನವಿಲಿನ ಗರಿಯಲ್ಲಿರುವ  
ಅರ್ಧಚಂದ್ರಾಕಾರದ ಗುರುತು. 5. ಕತ್ತುಹಡಿದು  
ನೂಕಲು ಅರ್ಧಚಂದ್ರಾಕಾರವಾಗಿ ಮಾಡುವ ಹಸ್ತ,  
ಗಳಹಸ್ತ. 6. ಪ್ರೌಢಸ್ತ್ರೀಯ ಯೋನಿಯಲ್ಲಿ ಬೆರಳ  
ನ್ನಿಡುವುದು. “ಅರ್ಧೇಂದ್ರರ್ದಿವಂದ್ರೇ ಸ್ಯಾದ್ಗಲಹಸ್ತನಖಾಕ್ಷಯೋ: |  
ಅರ್ಧೇಂದ್ರ: ಸ್ಯಾದತಿಪ್ರೋಢಸ್ತ್ರೀಯೋನ್ಯಜ್ಞುಲಿಯೋಜನೇ” ಮೇದಿಂ.

ಅರ್ಧೋದಕ ಅರ್ಧೋದಕ (ನಂ) ಅರ್ಧ ಮೈ ಮುಳುಗು  
ವಷ್ಟು ನೀರು, ನೀರಿನಲ್ಲಿ ನಿಂತುಕೊಂಡಾಗ ನಾಭಿಯ  
ವರೆಗೆ ಬರುವ ನೀರು.

ಅರ್ಧೋದಯ ಅರ್ಧೋದಯ (ಪುಂ) ಒಂದು ಪುಣ್ಯಕಾಲ,  
ತಿಥಿ ವಾರಾದಿಗಳ ಯೋಗದಿಂದಂಟಾಗುವ ಒಂದು  
ಪರ್ವಕಾಲ. ಅರ್ಧಸ್ಯ ಸಮೃದ್ಧಸ್ಯ ಪುಣ್ಯಸ್ಯ ಉದಯೋ ಯತ್ರ |  
[ಪುಷ್ಯ ಅಥವಾ ಮಾಘ ಮಾಸದಲ್ಲಿ ಅನುವಾಸ್ಯೆ,  
ಭಾನುವಾರ, ಶ್ರವಣನಕ್ಷತ್ರ ಮತ್ತು ವ್ಯತಿಪಾತ  
ಇವುಗಳು ಸೇರಿದರೆ ಅರ್ಧೋದಯ ಪುಣ್ಯಕಾಲವೆಂದು  
ತಿಳಿಯಬೇಕು.] “ಮಾಘೇ ಮಾಸಿ ಅಮಾವಾಸ್ಯಾ ಯದಿ ಅಕಂಯುತಾ  
ಭವೇತ್. ನಕ್ಷತ್ರೇ ಶ್ರವಣೇ ದೇವಿ ವ್ಯತಿಪಾತೋ ಭವೇದ್ವದಾ |  
ಅರ್ಧೋದಯ: ಸ ವಿಜ್ಞೇಯ: ಸೂರ್ಯಪರ್ವಶತೈ: ಸಮ: | ದಿವೇವ ಯೋಗ:  
ಶಸ್ತೋಽಯಂ ನ ಚ ರಾತ್ರೀ ಕದಾಚನ” ಸ್ಕಾಂದಂ. “ಅಮಾಕಂ-  
ಪಾತಶ್ರವಣೈರ್ಯುಕ್ತಾ ಚೆತ್ಯುಷಮಾಘಯೋ: | ಅರ್ಧೋದಯ: ಸ ವಿಜ್ಞೇಯ:  
ಕೋಟಿಸೂರ್ಯಗ್ರಹೈ: ಸಮ:” ನಿರ್ಣಯಂ.



ಅರ್ಥೋದಾಸನ ಅರ್ಥೋದಾಸನ (ನಂ) ಯೋಗಾಸನ  
ನದ ಒಂದು ಭೇದ, ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಎರಡು ಹಸ್ತ  
ಗಳನ್ನು ಮಾತ್ರ ಉರಿ ದೇಹವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಮೇಲೆ  
ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲಿಸುವ ಒಂದು ಆಸನ. "ಅರ್ಥೋದಾಸನಂ  
ನಾಥ ಸರ್ವಾಂಗೈಃ ಖೇ ನಿಯೋಜಯೇತ್ | ಕೇವಲಂ ಹಸ್ತಯುಗಲಂ  
ಭೂವ್ಯವೃಷ್ಟಮಿತಿ ಷಠಿತಿ" |

ಅರ್ಥೋಕ ಅರ್ಥೋಕ (ಪುನಂ) ಹೆಂಗಸರ ಒಳಲಂಗ,  
ಪಾವಡೆ, ಮಂಡಿಯವರೆಗೂ ಇರುವ ಒಳ  
ಲಂಗ. ಅರ್ಥೋಕ ಕಾಶತೆ - ಕಾಶ್ರು (ದೀಪ್ತ) "ಃ"  
(ವಾಂ ೩-೨-೧೦೧) | "ಅರ್ಥೋಕ ವರಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಸ್ಯಾಚ್ಚಂಡಾ-  
ತಕಮಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಅಮಂ |

ಅರ್ಥ ಅರ್ಥ (ವಿಂ) 1. ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.  
ಋಷಿ (ವೃದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್ "ಯತ್" (೩-೧-೯೭) | 2. ಅರ್ಥದ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. ಅರ್ಥಸ್ಯದಮ್ | 3. ಅರ್ಥದಲ್ಲಿರುವ.  
ಅರ್ಥ ಭವ: |

ಅರ್ಪಣ ಅರ್ಪಣ (ನಂ) 1. ಇಡುವುದು, ಇರಿಸುವುದು.  
ಋ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | ಪುಗಾಗಮ: |  
2. ಮೇಲೆ ಇಡುವುದು. "ಕೇಲಾಸಗೌರಂ ವೃಷಮಾರೂಢೋ:  
ಪಾದಾರ್ಪಣಾನುಗ್ರಹಪೂತಪೃಷ್ಠಮ್" ರಘುಂ ೨-೩೪ | 3. ಕೊಡು  
ವುದು, ಅರ್ಪಿಸುವುದು, ದಾನಮಾಡುವುದು. "ಸೇಯಂ  
ಸ್ವದೇಹಾರ್ಪಣನಿಷ್ಕ್ರಯೇಣ ನ್ಯಾಯಾ ಮಯಾ ಮೋಚಯಿತುಂ ಭವತು:"  
ರಘುಂ ೨-೪೪ | 4. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕೊಡುವುದು, ಹಿಂತಿರುಗಿಸಿ  
ಕೊಡುವುದು. 5. ಇರಿಯುವುದು, ಕೊರೆಯುವುದು,  
ತಿವಿಯುವುದು. "ತೀಕ್ಷ್ಣತುಂಡಾರ್ಪಣಗ್ರೀವಾಂ ನಕ್ಷೆ: ಸರ್ವಾ  
ವ್ಯದಾರಯತ್" ರಾಮಾಂ | 6. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಅರ್ಪಿತೇಶ್ವ-  
ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | 7. ಮಂತ್ರ. ಅರ್ಪಿತೇಶ್ವ-  
ನೆನ - ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | 8. ಹವಿಸ್ಸು.  
ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩) |

ಅರ್ಪಿತ ಅರ್ಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ, ದಾನಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಋ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |  
ಪುಗಾಗಮ: | "ಅರ್ಪಿತಂ ರಸಿತವತ್ಯಪಿ ನಾಮಗ್ರಾಹಮನ್ಯ-  
ಯುತೇದಯಿತೇನ" ಮಾಘಂ ೧೦-೨೭ | 2. ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
3. ಮೇಲೆ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಹರಿವಕ್ರೇಣ ತೇನಾಸ್ಯ ಕಂಠೇ  
ನಿಷ್ಕಮಿವಾರ್ಪಿತಮ್" ಕುಮಾಂ ೨-೪೯ | "ಭಕ್ತಿಭಿರ್ವಹುವಿಧಾಭಿ-  
ರಪಿತಾ ಭಾತಿ ಭೂತಿರೀವ ಮತ್ತಹಸ್ತಿನ:" ಕುಮಾಂ ೮-೬೯ |

ಅರ್ಬು ಅರ್ಬು (ಪುನಂ) 1. ದಶಕೋಟಿ, ಹತ್ತುಕೋಟಿ.  
(ಪುಂ) 2. ಮಾಂಸಪಿಂಡ, ಎರಡು ತಿಂಗಳಿನ ಗರ್ಭ  
ಪಿಂಡ. "ಪ್ರಥಮೇ ಮಾಸಿ ಸಂಕಲೇದಭೂತೋ ಧಾತುರ್ವಿಮುಂಚಿತ:" |

ಮಾಸ್ಯವುಂದಂ ದ್ವಿತೀಯೇ ತು ತೃತೀಯೇಂದ್ರಿಯೈರುತ:" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೭೪  
3. ಪಶ್ಚಿಮಭಾರತದ ಒಂದು ಪರ್ವತ. "ಅರ್ಬುದೋ  
ಮಾಂಸಪುರೈಃ ದಶಕೋಟಿಃ ನ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ | ಮಹಿಧರವಿಶೇಷೇ ನಾ"  
ಮೇದಿಂ | 4. ಮಾಂಸಗ್ರಂಥಿ ಬೆಳೆದುಂಟಾಗುವ ಒಂದು  
ರೋಗ. "ಅರ್ಬು: ಪರ್ವತೇ ಮಾಂಸಕೀಲಕೇ ದಶಕೋಟಿಃ" ಹೇಮಂ |  
5. ಮೇಘ, ಮೋಡ.

ಅರ್ಮ ಅರ್ಭ (ಪುಂ) 1. ಬಾಲಕ, ಮಗು, ಶಿಶು. ಋ (ಗತೌ)  
"ಭನ್" (೩ಂ ೩-೧೪೨) | (ವಿಂ) 2. ಚಿಕ್ಕದಾದ,  
ಸಣ್ಣದಾದ.

ಅರ್ಮಕ ಅರ್ಭಕ (ಪುಂ) 1. ಬಾಲಕ, ಮಗು, ಶಿಶು.  
ಋಣೋತಿ ವೃದ್ಧಿ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ-ಋಷಿ (ವೃದ್ಧಿ) "ವುನ್" ಭಕಾರಾ-  
ದೇಶಶ್ಚ (೩ಂ ೪-೪೩) | "ಅನರ್ಥವೇಭವಮರ್ಭಕಮುದ್ರಹನ್"  
ಯಾದಂ ೩-೨೯ | "ಶ್ರುತಸ್ಯ ಯಾದಯಮಂತಮರ್ಭಕ:" ರಘುಂ  
೩-೨೧ | 2. ಹೆಂಗಸರ ಗರ್ಭ. (ವಿಂ) 3. ಕೃಶವಾದ,  
ತೆಳ್ಳಗಿರುವ, ಬಡವಾದ, ಬಾಡಿರುವ. 4. ಮೂರ್ಖ-  
ನಾದ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದ, ವಿವೇಕವಿಲ್ಲದ. 5. ಚಿಕ್ಕ  
ದಾದ, ಸಣ್ಣದಾದ. 6. ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. "ಅರ್ಥಾರ್ಮಕ-  
ಸ್ತ್ರೀಃ | ದರಿದ್ರೇ ಬಾಲಕೇ ಮೂರ್ಖೇ ಜಡೇ ಭ್ರೂಣೇ ತು ಪುಂಸ್ಯಯಮ್"  
ನಾನಾರ್ಥಂ | "ಅರ್ಮಕ: ಕಥಿತೋ ಬಾಲೇ ಮೂರ್ಖೇಽಪಿ ಚ ಕೃಶೇಽಪಿ  
ಚ" ಮೇದಿಂ |

ಅರ್ಮನ್ ಅರ್ಮನ್ (ನಂ) ಒಂದು ವಿಧ ನೇತ್ರರೋಗ.

ಅರ್ಯ ಅರ್ಯ (ಪುಂ) 1. ವೈಶ್ಯ, ಮೂರನೆಯ ವರ್ಣ  
ದವನು. 2. ಯಜಮಾನ, ಸ್ವಾಮಿ. ಋ (ಗತೌ) "ಯತ್"  
(೩-೧-೧೦೩) | "ಸ್ಯಾದಯ: ಸ್ವಾಮಿವೇಶ್ಯಯೋ:" ಹೇಮಂ |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ವಿಕಲ್ಪೇನ "ಆನುಕ್" "ಡೀಪ್" ಚ (ವಾಂ ೪-೧-೪೯) |  
ಅರ್ಯ ಅರ್ಯಾ ಅರ್ಯಾಣಿ ಅರ್ಯಾಣೀ. ವೈಶ್ಯಜಾತಿಯ  
ಹೆಂಗಸು ಅಥವಾ ಯಜಮಾನಿ, ಒಡತಿ. ಅರ್ಯ  
"ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೮) | ಅರ್ಯ ಅರ್ಯಾ. ವೈಶ್ಯನ ಪತ್ನಿ.  
(ವಿಂ) 3. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ.

ಅರ್ಯಮನ್ ಅರ್ಯಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಅರ್ಯ +  
ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ಕನಿ:" (೩ಂ ೧-೧೪೭) | ನಿಪಾಂ |  
"ಅರ್ಯಮಪ್ರಭುತಿಭಿಶ್ಚ ಸಂಹತ:" ಯಾದಂ ೧೭-೬೯ |  
2. ದ್ವಾದಶಾತಿತ್ಯರಲ್ಲೊಬ್ಬ. ["ಆದಿತ್ಯ" ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.] 3. ಪಿತೃದೇವತೆ. "ಸೂರಸೂರ್ಯಮಾದಿತ್ಯ-  
ದ್ವಾದಶಾತ್ಮದಿವಾಕರಾ:" ಅಮಂ | "ಅರ್ಯಮಾ ತು ಪುಮಾನ್ ಸೂರ್ಯ  
ಪಿತೃದೇವಾಂತರೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ | 4. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ  
ಗಿಡ. 5. ಸೂರ್ಯದೇವತಾಕವಾದ ಉತ್ತರ ಫಲ್ಗುನೀ  
ನಕ್ಷತ್ರ.



ಅವತ್ ಅವರ್ತ್ (ವಿಂ) ಹಿಂಸಿಸುವ, ಪೀಡಿಸುವ. ಅವ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬)। ಅವಂತಿ ಅವರ್ತೀ.

ಅವನ್ ಅವರ್ನ್ (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. ಇ (ಗತೌ) "ವನಿಪ್" (೩-೨-೭೫)। "ಉತ್ತೇರುತ್ತಾಲಕ್ಷುರಾರವಂ ದ್ರುತಾಃ ಕಲ್ಯಾಣಕೃತಪ್ರಗ್ರಹಮವಂತಾಂ ವಜಾಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೩೧। 2. ಇಂದ್ರ. 3. ಹಸುವಿನ ಕಿವಿಯ ಅಳತೆ. (ವಿಂ) 4. ಅಧಮವಾದ, ತುಚ್ಛವಾದ, ನೀಚವಾದ. "ಅರ್ವಾ ಖೇಷಮೇ" ಹೇಮಂ। "ಅರ್ವಾ ತುರಗ್ಗಮೇ ಪುಸಿ ಕುತ್ಸಿತೇ ವಾಚ್ಯಲಿಙ್ಗಕಃ" ಮೇದಿಂ। 5. ಸಂಚಾರಸ್ವಭಾವದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಅವಂತಿ ಅವರ್ತೀ. ಅವರೀ ಅವರ್ತೀ. 1. ಹೆಣ್ಣು ಕುದುರೆ. 2. ಕುಟ್ಟಿನಿ, ತಲೆಹಿಡಕೆ. "ಅವಂತಿ ಕುಮ್ಮದಾಸ್ಯಾಂ ಚ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಅರ್ವಾ ಅವರ್ಚ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಮುಂಚಿನಕಾಲ, -ಕಾಲ ದಿಂದ, -ಕಾಲದಲ್ಲಿ. 2. ಈಚಿನದೇಶ, -ದೇಶದಿಂದ, -ದೇಶದಲ್ಲಿ. ಅವಂತಮಶ್ವತಿ -ಅಶ್ವ (ಗತೌ) "ಕ್ರಿನ್" (೩-೨-೫೯)। "ಅಸ್ತಾತಿಃ" (೫-೩-೨೭)। ತಸ್ಯ ಲಕ್ (೫-೩-೩೦)।

ಅರ್ವಾಚೀನ ಅವರ್ಚೀನ (ವಿಂ) 1. ಈಚಿನ ಕಾಲದ, ನವೀನ ಕಾಲದ. ಅರ್ವಾಕ್ ಭವಃ ವಾ "ಃ" (೫-೪-೮)। 2. ಅನಂತರ ಹುಟ್ಟಿದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಅರ್ವಾಚೀನಾ ಅವರ್ಚೀನಾ.

ಅಶ್ ಅವರ್ತ್ (ನಂ) 1. ಮೂಲವ್ಯಾಧಿ. (ವಿಂ) 2. ವಾಸಾತ್ಮ, ವಾಪಿ. ಅಶಸ್ - ಪೃಥಂ ಸಲೋಪಃ।

ಅಶಸ್ ಅವರ್ಸ್ (ನಂ) ಮೂಲವ್ಯಾಧಿ. ಇ (ಗತೌ) "ಅಸುನ್" (೩ಂ ೪-೧೯೫)।

ಅಶಸ್ ಅವರ್ಸ್ (ವಿಂ) ಮೂಲವ್ಯಾಧಿಯುಳ್ಳವನು. ಅಶಾಸಿ ಸನ್ತಯಸ್ಯ "ಅಚ್" (೫-೨-೧೨೭)। "ಅಶೋರೋಗ-ಯುತೋಶಸ್" ಅಮಂ।

ಅಶಿನ್ ಅವರ್ನ್ (ವಿಂ) ಮೂಲವ್ಯಾಧಿಯುಳ್ಳವನು. ಅಶಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫)।

ಅಶೋನ್ ಅವರ್ಷ್ಣ (ಪುಂ) 1. ಸೂರಣದ ಗೆಡ್ಡೆ. ಅಶೋ ಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) "ಠಕ್" (೩-೨-೫೩)। (ನಂ) 2. ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ ನೀರು ಬೆರಸಿದ ಮೊಸರು. "ಅಥ ಘೋಲಃ ಪಾದಾನ್ವುಸಂಯುತಃ। ತತ್ರ ಕದ್ವರ-ಮಶೋನ್ಮ" ವೈಜಂ। (ವಿಂ) 3. ಮೂಲವ್ಯಾಧಿಯನ್ನು ಗುಣಪಡಿಸುವ (ಮನುಷ್ಯೇತರ ವಸ್ತು).

ಅಶೋಹಿತ ಅವರ್ಷಿತ (ಪುಂ) 1. ಗೇರುಮರ. ಅಶೋಹಿತಃ। [ಗೋಡಂಬಿಯು ಮೂಲವ್ಯಾಧಿಯನ್ನು ಗುಣ

ಪಡಿಸುವುದು.] (ವಿಂ) 2. ಮೂಲವ್ಯಾಧಿಗೆ ಹಿತಕರ ವಾದ.

ಅರ್ಷಣ ಅರ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಗಮನ, ಚಲನ. ಇ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಣೀ. 2. ಗಮನೋಪಾಯ, ಗಾಡಿ, ಗಮನಸಾಧನ, ವಾಹನ. 3. ದುಡಿತದಿಂದ ಕೂಡಿದ ನೋವು, ಚುಚ್ಚುವ ನೋವು.

ಅಹೆ-ಪೂಜಾಯಾಮ್ (ಮ್ವಾಂ ಪಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)।

|                   |            |             |
|-------------------|------------|-------------|
| ೧. ಲಟ್-ಅಹಂತಿ      | ಅಹಂತಃ      | ಅಹಂತಿಃ।     |
| ಅಹಂತಿ             | ಅಹಂತಃ      | ಅಹಂತಃ।      |
| ಅಹಂತಿಮಿ           | ಅಹಂತಿವಃ    | ಅಹಂತಿಮಃ।    |
| ೨. ಲಿಟ್-ಆನಹಂ      | ಆನಹಂತುಃ    | ಆನಹಂತುಃ।    |
| ಆನಹಂತಿ            | ಆನಹಂತುಃ    | ಆನಹಂತುಃ।    |
| ಆನಹಂ              | ಆನಹಂತಿ     | ಆನಹಂತಿಮಃ।   |
| ೩. ಲುಟ್-ಅಹಿತಾ     | ಅಹಿತಾರೋ    | ಅಹಿತಾರಃ।    |
| ಅಹಿತಾಸಿ           | ಅಹಿತಾಸ್ಯಃ  | ಅಹಿತಾಸ್ಯಃ।  |
| ಅಹಿತಾಸಿಮಿ         | ಅಹಿತಾಸ್ಯವಃ | ಅಹಿತಾಸ್ಯಮಃ। |
| ೪. ಲುಟ್-ಅಹಿಷ್ಯತಿ  | ಅಹಿಷ್ಯತಃ   | ಅಹಿಷ್ಯಂತಿಃ। |
| ಅಹಿಷ್ಯಸಿ          | ಅಹಿಷ್ಯತಃ   | ಅಹಿಷ್ಯತಃ।   |
| ಅಹಿಷ್ಯಾಮಿ         | ಅಹಿಷ್ಯಾವಃ  | ಅಹಿಷ್ಯಾಮಃ।  |
| ೫. ಲೋಟ್-ಅಹಂತು     | ಅಹಂತಾಮ್    | ಅಹಂತುಃ।     |
| ಅಹಂತಾತ್           |            |             |
| ಅಹಂ               | ಅಹಂತಮ್     | ಅಹಂತಃ।      |
| ಅಹಂತಾತ್           |            |             |
| ಅಹಂತಿ             | ಅಹಂತಿ      | ಅಹಂತಿಮಃ।    |
| ೬. ಲಿಟ್-ಅಹಂತಿ     | ಅಹಂತಾಮ್    | ಅಹಂತುಃ।     |
| ಅಹಂತಃ             | ಅಹಂತಮ್     | ಅಹಂತಃ।      |
| ಅಹಂತಮಿ            | ಅಹಂತಿ      | ಅಹಂತಿಮಃ।    |
| ೭. ಲಿಟ್-ಅಹಂತಿ     | ಅಹಂತಾಮ್    | ಅಹಂತುಃ।     |
| ಅಹಂತಃ             | ಅಹಂತಮ್     | ಅಹಂತಃ।      |
| ಅಹಂತಮಿ            | ಅಹಂತಿ      | ಅಹಂತಿಮಃ।    |
| ೮. ಆಶೀಲಿಟ್-       | ಅಹಂತಾಮ್    | ಅಹಂತುಃ।     |
| ಅಹಂತಿ             | ಅಹಂತಾಮ್    | ಅಹಂತುಃ।     |
| ೯. ಲುಟ್-ಅಹಂತಿ     | ಅಹಂತಾಮ್    | ಅಹಂತುಃ।     |
| ೧೦. ಲುಟ್-ಅಹಿಷ್ಯತಿ | ಅಹಿಷ್ಯತಾಮ್ | ಅಹಿಷ್ಯಂತುಃ। |

1. ಹೊಂದಲು ಅರ್ಹನಾಗು, ಪಡೆಯಲು ಯೋಗ್ಯ ನಾಗು. "ಗುರೋಗುರೋ ಸನ್ನಿಹಿತೇ ಗುರುವನ್ಮಾನಮಹಂತಿ" ಮನುಂ ೨-೨೦೫। 2. ಶಕ್ತನಾಗು, ಸಮರ್ಥನಾಗು. "ವಿನಾಶ-ಮವ್ಯಯಸ್ಯಾಸ್ಯ ನ ಕಶ್ಚಿತ್ ಕರ್ತುಮಹಂತಿ" ಗೀತಾ ೨-೧೭।



“ಅನುಬೋಗೇನ ತೈಲಾನಿ ತಿಲೇಮ್ಯೋ ನಾಪ್ತುಮಹಂತಿ” ಹಿತೋಂ ।  
3. ಕೃಪೆವಾಡು, ದಯೆತೋರು. “ಆರ್ಯಾಪ್ಯರುಂಧತೀ ತತ್ರ  
ವ್ಯಾಪಾರಂ ಕರ್ತುಮಹಂತಿ” ಕುಮಾಂ ೬-೩೨ । 4. ಬಾಡ್ಯನಾಗು,  
ಹಕ್ಕುಡಾರನಾಗು. “ನನು ಗರ್ಭಃ” ಪಿಶ್ಯಂ ರಿಕ್ವಮಹಂತಿ ”  
ಶಾಕುಂ ೬ । 5. ಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯನಾಗು, ತಕ್ಕವ  
ನಾಗು. “ಅರ್ಯನಾ ಮಯಿ ಭವದ್ವಿರಿವಾಸ್ಯಂ ಕರ್ತುಮಹಂತಿ  
ಮಯಾಪಿ ಭವತ್ಸು” ನೈಷಂ ೪-೧೧೨ । 6. ಸಮಾನವಾಗು,  
ಹೋಲು. “ಸರ್ವೇ ತೇ ಜಪಯಜ್ಞಸ್ಯ ಕಲಾಂ ನಾಹಂತಿ ಷೋಡಶೀಮ್”  
ಮನುಂ ೨-೮೬ ।

ಕರ್ಮಣಿ:— ಅಹಂತೆ । ಆನಹೆ । ಅಹಿತಾ ।  
ಅಹಿಷ್ಯತೆ । ಅಹಂತಾಮ್ । ಅಹಂತ ।  
ಅಹಂತೆ । ಅಹಿಷಿಷ್ಠ । ಅಹಿ ।  
ಅಹಿಷ್ಯತ ।

ಣಿಚಿ:—೧. ಅಹಂತಿ, -ತೆ । ೨. ಅಹಂತಾಂಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ । ೩. ಅಹಂತಿತಾ । ೪. ಅಹಂತಿಷ್ಯತಿ, -ತೆ ।  
೫. ಅಹಂತು, -ತಾಮ್ । ೬. ಅಹಂತು, -ತ । ೭. ಅಹಂತೇ, -ತ ।  
೮. ಅಹಂತು, ಅಹಂತಿಷಿಷ್ಠ । ೯. ಅಹಂತು, -ತ । ೧೦. ಅಹಂ-  
ಯಿಷ್ಯತ್, -ತ । “ಸಗ್ವಿಣಂ ತಲ್ಪ ಆಸೀನಮಹಂತೇತ್ರಥಮಂ ಗವಾ”  
ಮನುಂ ೩-೩ । “ರಾಮಂ ವರೀತುಂ ಪರಿರಕ್ಷಣಾರ್ಥಂ ರಾಜಾಽಽಜಿಹತಂ  
ಮಧುಪರ್ಕಪಾಣಿಃ” ಭದ್ರಿಂ ೧-೧೭ ।

ಪ್ಯಂತಾತ್ ಕರ್ಮಣಿ:—೧. ಅಹಂತೆ । ೨. ಅಹಂತಾಂಚಕ್ರೆ,  
-ಬಭೂವೆ, -ಆಸೆ । ೩. ಅಹಂತಿತಾ, ಅಹಿತಾ । ೪. ಅಹಂತಿಷ್ಯತೆ,  
ಅಹಿಷ್ಯತೆ । ೫. ಅಹಂತಾಮ್ । ೬. ಅಹಂತೆ । ೭. ಅಹಂತೆ ।  
೮. ಅಹಂತಿಷಿಷ್ಠ, ಅಹಿಷಿಷ್ಠ । ೯. ಅಹಿ । ೧೦. ಅಹಂತಿಷ್ಯತ,  
ಅಹಿಷ್ಯತ ।

ಸನಿ:—೧. ಅಹಂತಿಷಿತಿ । ೨. ಅಹಂತಿಷಾಂಚಕಾರ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ । ೩. ಅಹಂತಿಷಿತಾ । ೪. ಅಹಂತಿಷಿಷ್ಯತಿ ।  
೫. ಅಹಂತಿಷಿಷು । ೬. ಅಹಂತಿಷಿಷು । ೭. ಅಹಂತಿಷಿಷು ।  
೮. ಅಹಂತಿಷಿಷಾತ್ । ೯. ಅಹಂತಿಷಿಷಿತ್ । ೧೦. ಅಹಂತಿಷಿಷ್ಯತ್ ।

ಕೇವಲಾತ್ ಕೃತ್ಸು:—ತವ್ಯ:—ಅಹಿತವ್ಯ: । ಅನೀಯರ್—  
ಅಹಂತೀಯ: । ಪ್ಯತ್—ಅಹಂತ: । ಕರ್ಮಂ ಕ್ತ:—ಅಹಿತ: । ಕ್ತವತು:—  
ಅಹಿತವಾನ್ । ಶತು—ಅಹಂತು; ಅಹಂತೀ । ಶಾನಕ್—ವ್ಯತ್ಯಹಮಾಣ: ।  
ಅಹಿಷ್ಯನ್; ಅಹಿಷ್ಯತೀ, ಅಹಿಷ್ಯಂತೀ । ತುಮ್ನ್—ಅಹಿತುಮ್ ।  
ಭಾವೆ—ಅಹಿತಮ್ । ಲ್ಯುಡ್—ಅಹಂತಮ್ । ಯುಕ್—ಅಹಂತಾ ।  
ಕ್ವಾ—ಅಹಿತವಾ । ಲ್ಯಪ್—ಸಮಹ್ಯ । ಣಮುಲ್—ಅಹಂತಮ್ ।  
ಅಹಿತವಾಹಿತವಾ ।

ಪ್ಯಂತಾತ್ ಕೃತ್ಸು:—ತವ್ಯ:—ಅಹಂತಿತವ್ಯ: । ಅನೀಯರ್—  
ಅಹಂತೀಯ: । ಪ್ಯತ್—ಅಹಂತ: । ಕರ್ಮಂ ಕ್ತ:—ಅಹಿತ: ।  
ಕ್ತವತು:—ಅಹಿತವಾನ್ । ಶತು—ಅಹಂತು; ಅಹಂತೀ । ಶಾನಕ್—

ಅಹಂತಮಾಣ: । ಅಹಂತಿಷ್ಯನ್; ಅಹಂತಿಷ್ಯತೀ, ಅಹಂತಿಷ್ಯಂತೀ ।  
ತುಮ್ನ್—ಅಹಂತಿತುಮ್ । ಭಾವೆ ಕ್ತ:—ಅಹಿತಮ್ । ಲ್ಯುಡ್—ಅಹಂತಮ್ ।  
ಯುಕ್—ಅಹಂತಾ । ಕ್ವಾ—ಅಹಂತಿತವಾ । ಲ್ಯಪ್—ಸಮಹ್ಯ ।  
ಣಮುಲ್—ಅಹಂತಮ್ । ಕ್ವಾ—ಅಹಂತಿತವಾಹಿತವಾ ।

ಅಹೆ ಅರ್ಹ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. ಅಹೆ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) “ಘನ್”  
(೩-೩-೧೯) । 2. ವಿಷ್ಣು. “ಅಭಿಪ್ರಾಯ: ಪ್ರಿಯಾಹೋಜ್ಞಃ”  
ವಿಂ ಸಂ । 3. ಕೃಯ, ಬೆಲೆ, ಮೂಲ್ಯ. “ಮಹಾಹಂ-  
ಶಯ್ಯಾಪರಿವರ್ತನಂ ಚ್ಯುತ: ಸ್ವಕೇಶಪುಷ್ಪೇರಪಿ ಯಾ ಸ್ಮ ದ್ವಯತೆ”  
ಕುಮಾಂ ೪-೧೨ । 4. ಪೂಜೆ, ಗೌರವ. ಭಾವೆ “ಘನ್”  
(೩-೩-೧೮) । 5. ಗತಿ, ಗಮನ, ಚಲನ. (ವಿಂ) 6.  
ಗೌರವಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಪೂಜೆಗೆ ಅರ್ಹವಾದ.  
“ಪ್ರಾತಿವೇಶ್ಯಾನುವೇಶ್ಯೌ ಚ ಕಲ್ಯಾಣೇ ವಿಶತಿ ದ್ವಿಜೇ । ಅಹವಿ-  
ಭೋಜಯನ್ವಿಪ್ರೋ ದಂಡಮಹಂತಿ ಮಾಷಕಮ್” ಮನುಂ ೮-೩೯೨ ।  
7. ಹಕ್ಕುಡಾರ. “ನಿಯುಕ್ತಾಯಾಮಪಿ ಪುಮಾನ್ನಾರ್ಯಾ ಜಾತೋಽ-  
ವಿಧಾನತ: । ನೈವಾಹ: ಪೈತೃಕಂ ರಿಕ್ವಂ ಪತಿಸ್ತೋತ್ಪಾದಿತೋ ಹಿ ಸಃ”  
ಮನುಂ ೯-೧೪೪ । “ತಸ್ಮಾನ್ನಾರ್ಹಾ ವಯಂ ಹಂತುಂ ಧಾರ್ತರಾಷ್ಟ್ರಾನ್  
ಸ್ವಬಾಂಧವಾನ್” ಗೀತಾ ೧-೩೭ । 8. ಬೆಲೆಬಾಳುವ.  
9. ಯೋಗ್ಯವಾದ, ತಕ್ಕದಾದ. “ಸ ಭೂಯೋರ್ಹೋ  
ಮಹಿಭುಜಾಮ್” ಪಶ್ವತಂ ೧-೮೭ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಹಾ—ಹರ್ಹ.  
10. ಪೂಜೆ, ಗೌರವ. ಅಹೆ ಭಾವೆ “ಅ:” (೩-೩-೧೦೩) ।  
“ಅವಹಿತಹೃದಯೋ ವಿಧಾಯ ಸೋಽಹಮಿಷಿವದೃಷಿಪ್ರವರೇ ಗುರು-  
ಪದಿಷ್ಠಾಮ್” ಕಿರಾಂ ೨-೪೮ ।

ಅಹೆಣ ಅರ್ಹಣ (ನಂ) ಪೂಜೆ, ಸತ್ಕಾರ, ಗೌರವ. ಅಹೆ  
(ಪೂಜಾಯಾಮ್) ಭಾವೆ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪) । “ಪ್ರತಿ-  
ಪತ್ತುಮಜ್ಞಂ ಘಟತೆ ಚ ನ ತವ ನೃಪಯೋಗ್ಯಮಹಂತಮ್” ಮಾಧಂ  
೧೪-೨೨ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಹೆ + ಣಿಕ್ ಭಾವೆ “ಯುಕ್”  
(೩-೩-೧೦೭) । —ಣಾ —ಣಾ. “ಅಹೆಣಾಮಹಂತೆ ಚಕ್ರಮುನಯೋ  
ನಯಚಕ್ಷುಷೇ” ರಘುಂ ೧-೪೪ ।

ಅಹೆಣೀಯ ಅರ್ಹಣೀಯಂ (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸಲು ಅರ್ಹ  
ನಾದ, ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ. ಅಹೆ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) ಕರ್ಮಂ  
“ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । 2. ಪೂಜಾದ್ರವ್ಯ.

ಅಹೆತ್ ಅರ್ಹತ್ (ಪುಂ) 1. ಬುದ್ಧದೇವ. 2. ಒಬ್ಬ  
ಜೈನಾಚಾರ್ಯರು. “ಸರ್ವಜ್ಞೋ ಜಿತರಾಗಾದಿದೋಷ-  
ಸ್ತ್ರಲೋಕ್ಯಪೂಜಿತ: । ಯಥಾಸ್ಥಿತಾರ್ಥವಾದೀ ಚ ದೇವೋಽಹಂ  
ಪರಮೇಶ್ವರ:” । 3. ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಗೌರವಾರ್ಹನಾದ,  
ಪೂಜೆಗೆ ಯೋಗ್ಯನಾದ. ಅಹೆ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) “ಶತು”  
(೩-೨-೧೩೩) । “ಅಹೆಣಾಮಹಂತೆ ಚಕ್ರಮುನಯೋ ನಯಚಕ್ಷುಷೇ”  
ರಘುಂ ೧-೪೪ ।



ಅಹಂತ ಅಹಂತ (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಕುಶ್ವರ. 2. ಬೌದ್ಧ ಸಂನ್ಯಾಸಿ. 3. ಬುದ್ಧದೇವ. ಅಹಂ (ಪೂಜಾಮ್) "ಇಚ್" ಬಾಹುಂ. "

ಅಹಂ ಅಹಂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂಜೆ, ಗೌರವ, ಸತ್ಕಾರ. ["ಅಹಂ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಅಹಿತ ಅಹಿತ (ನಂ) 1. ಪೂಜೆ, ಗೌರವ, ಸತ್ಕಾರ. ಅಹಂ (ಪೂಜಾಮ್) ಭಾವೇ "ಕ್ತ" (3-3-114). (ವಿಂ) 2. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸತ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಹಂತೆ - ಅಹಂ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ" (3-2-102).

ಅಲ - ಭೂಷಣಪರ್ಯಾಪ್ತಿವಾರಣೇಷು (ಮ್ವಾಂ ೪೦ ಸಕಂ ಸೇಂ) ।

|             |       |        |
|-------------|-------|--------|
| 1. ಲಡ್-ಅಲತಿ | ಅಲತ:  | ಅಲಂತಿ. |
| ಅಲಸಿ        | ಅಲಯ:  | ಅಲಯ.   |
| ಅಲಾಮಿ       | ಅಲಾವ: | ಅಲಾಮ:  |

|            |       |       |
|------------|-------|-------|
| 2. ಲಿಡ್-ಅಲ | ಅಲತು: | ಅಲತು. |
|------------|-------|-------|

|               |         |         |
|---------------|---------|---------|
| 3. ಲುಡ್-ಅಲಿತಾ | ಅಲಿತಾರೌ | ಅಲಿತಾರ: |
|---------------|---------|---------|

|                 |          |            |
|-----------------|----------|------------|
| 4. ಲಡ್-ಅಲಿಷ್ಯತಿ | ಅಲಿಷ್ಯತ: | ಅಲಿಷ್ಯಂತಿ. |
|-----------------|----------|------------|

|              |        |        |
|--------------|--------|--------|
| 5. ಲೋಡ್-ಅಲತು | ಅಲತಾಮ್ | ಅಲಂತು. |
| ಅಲತಾತ್       |        |        |

|             |        |       |
|-------------|--------|-------|
| 6. ಲಡ್-ಅಲತ್ | ಅಲತಾಮ್ | ಅಲನ್. |
|-------------|--------|-------|

|               |         |        |
|---------------|---------|--------|
| 7. ಲಿಡ್-ಅಲೇತ್ | ಅಲೇತಾಮ್ | ಅಲೇಯು. |
|---------------|---------|--------|

|             |         |             |          |
|-------------|---------|-------------|----------|
| 8. ಅಶೀಲಿಡ್- | ಅಲ್ಯಾತ್ | ಅಲ್ಯಾಸ್ತಾಮ್ | ಅಲ್ಯಾಸು: |
|-------------|---------|-------------|----------|

|               |           |        |
|---------------|-----------|--------|
| 9. ಲುಡ್-ಅಲೀತ್ | ಅಲಿಷ್ಠಾಮ್ | ಅಲಿಷು: |
|---------------|-----------|--------|

|                   |            |           |
|-------------------|------------|-----------|
| 10. ಲುಡ್-ಅಲಿಷ್ಯತ್ | ಅಲಿಷ್ಯತಾಮ್ | ಅಲಿಷ್ಯನ್. |
|-------------------|------------|-----------|

1. ಅಲಂಕರಿಸು, ಶೃಂಗರಿಸು. 2. ಸಮರ್ಥನಾಗು, ಶಕ್ತನಾಗು. 3. ತಡೆಗಟ್ಟು, ನಿವಾರಿಸು, ಹೋಗಲಾಡಿಸು.

ಭಾವೇ:- 1. ಅಲ್ಯತೇ. 2. ಅಲೇ. 3. ಅಲಿತಾ. 4. ಅಲಿಷ್ಯತೇ. 5. ಅಲ್ಯತಾಮ್. 6. ಅಲ್ಯತ. 7. ಅಲ್ಯತೇ. 8. ಅಲಿಷ್ಯತೇ. 9. ಅಲಿ. 10. ಅಲಿಷ್ಯತ.

ಗಿಚ್ಛಿ:- 1. ಅಲಯತಿ, -ತೇ. 2. ಅಲಯಾಂಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ, -ಬಭೂವ, -ಆ. 3. ಅಲಯಿತಾ. 4. ಅಲಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ. 5. ಅಲಯತು, -ತಾಮ್. 6. ಅಲಯತ್, -ತ. 7. ಅಲಯೇತ್, -ತ. 8. ಅಲ್ಯಾತ್, ಅಲಯಿಷ್ಯತೇ. 9. ಅಲಿಲತ್, -ತ. 10. ಅಲಯಿಷ್ಯತ್, -ತ.

ಪ್ರಯೋಗ:- 1. ಅಲ್ಯತೇ. 2. ಅಲಯಾಂಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ, -ಬಭೂವ, -ಆಸೇ. 3. ಅಲಯಿತಾ, ಅಲಿತಾ. 4. ಅಲಯಿಷ್ಯತೇ, ಅಲಿಷ್ಯತೇ. 5. ಅಲ್ಯತಾಮ್. 6. ಅಲ್ಯತ. 7. ಅಲ್ಯತೇ. 8. ಅಲಯಿಷ್ಯತೇ, ಅಲಿಷ್ಯತೇ. 9. ಅಲಿ.

ಅಲಿಷ್ಯತಾಮ್. ಅಲಯಿಷ್ಯತಾಮ್. 10. ಅಲಯಿಷ್ಯತ, ಅಲಿಷ್ಯತ.

ಸನಿ:- 1. ಅಲಿಲಿಷ್ಯತಿ. 2. ಅಲಿಲಿಷ್ಯಾಂಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ. 3. ಅಲಿಲಿಷ್ಯತಾ. 4. ಅಲಿಲಿಷ್ಯತಿ. 5. ಅಲಿಲಿಷ್ಯತು. 6. ಅಲಿಲಿಷ್ಯತ್. 7. ಅಲಿಲಿಷ್ಯತೇ. 8. ಅಲಿಲಿಷ್ಯತಾಮ್. 9. ಅಲಿಲಿಷ್ಯತಾಮ್. 10. ಅಲಿಲಿಷ್ಯತಾಮ್.

ಕೇವಲಾತ್ ಕೃತ್ಸು:- ತವ್ಯ:- ಅಲಿತವ್ಯಮ್. ಅನೀಯರ್-ಅಲನೀಯಮ್. ಪ್ಯತ್-ಅಲ್ಯಮ್. ಕರ್ಮಂ ಕ್ತ:- ಅಲಿತ: ಕೃವತು:- ಅಲಿತವಾನ್. ಶತ್-ಅಲನ್; ಅಲಂತಿ. ಅಲಿಷ್ಯನ್; ಅಲಿಷ್ಯತೀ, ಅಲಿಷ್ಯಂತೀ. ತುಮುನ್-ಅಲಿತುಮ್. ಭಾವೇ ಕ್ತ:- ಅಲಿತಮ್. ಲ್ಯುಡ್-ಅಲನಮ್. ಕ್ವಾ-ಅಲಿತವಾ. ಲ್ಯಪ್-ಸಮಲ್ಯ. ಣಮುಲ್-ಅಲಮಾಲಮ್. ಅಲಿತವಾಲಿತವಾ.

ಪ್ರಯೋಗ:- ಅಲಯಿತವ್ಯ: ಅಲನೀಯ: ಅಲ್ಯ: ಅಲಿತ: ಅಲಿತವಾನ್. ಅಲಯನ್; ಅಲಯಂತೀ. ಅಲಯಮಾನ: ಅಲಯಿಷ್ಯನ್; ಅಲಯಿಷ್ಯತೀ, ಅಲಯಿಷ್ಯಂತೀ. ಅಲಯಿಷ್ಯಮಾಣ: ಅಲಯಿತುಮ್. ಅಲಿತಮ್. ಅಲನಮ್. ಅಲಯಿತವಾ. ಉಪಾಲ್ಯ. ಅಲಮಾಲಮ್. ಅಲಯಿತವಾಲಯಿತವಾ.

ಅಲ ಅಲ (ನಂ) 1. ಲೋಕ, ಕೊಂಡಿಯ ಮುಳ್ಳು. 2. ಹರಿತಾಳ, ಅರಿದಳ. "ವೃಷ್ಟಿಕೋ ದ್ರುಣ ಅಲ್ಯಾಲಿ: ಅಲಂ ತತ್ಪುಷ್ಕಲಕಂಠಕ:" ಅಭಿಂ ಚಿಂ.

ಅಲಕ ಅಲಕ (ಪುಂ) 1. ಉಂಗುರಗೂದಲು, ಗುಂಗುರುಗೂದಲು. ಅಲತಿ - ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ) "ವುನ್" (3-5-35). 2. ಮುಂಗುರುಳ್ಳು. "ತದಾಪ್ರಭೃತ್ಯುನ್ಮದನಾ ಪಿತುಗೃಹೇ ಲಲಾಟಿಕಾಚಂದನಧೂಸರಾಲಕಾ" ಕುಮಾಂ ೪-೪೪. 3. ವಾಸನೆಯ ಪುಡಿ, ಮೈಗೆ ಪುಡಿ (ಹಾಕಿ) ಕೊಳ್ಳುವ ಸುಗಂಧ ಚೂರ್ಣ. 4. ಹುಚ್ಚುನಾಯಿ.

ಅಲಕನಂದಾ ಅಲಕನಂದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗಾನದಿ. ಅಲಕಪ್ರಭಾ ಅಲಕಪ್ರಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಬೇರನ ಪಟ್ಟಣ. ಅಲಕಾ ಅಲಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕುಬೇರನ ಪಟ್ಟಣ. "ಅಲಕಾಮತಿವಾಹೈವ ವಸತಿ ವಸುಸಂಪದಾಮ್" ಕುಮಾಂ 6-37. 2. ಎಂಟೊಂದ ಹತ್ತು ವಯಸ್ಸಿನೊಳಗಿನ ಕನ್ಯೆ.

ಅಲಕಾಧಿಪ ಅಲಕಾಧಿಪ - ಅಧಿಪತಿ - ಅಧಿಪತಿ (ಪುಂ) ಕುಬೇರ. ಅಲಕಾಧಿಪ: ಅಧಿಪತಿರ್ವಾ. "ಅಲಕಾಧಿಪ-ಭೃತ್ಯದರ್ಶಿತಂ ಶಿವಮುರ್ವಿಧಿರವತ್ಸಮಂ ಸಂಪ್ರಯಾನ್" ಕಿರಾಂ 3-49.

ಅಲಕ್ತ - ಕ ಅಲಕ್ತ - ಕ (ಪುಂ) ಅರಗು, ಒಂದು ಮರದ ರಸ (ಅಂಟು). ನ ರಕ್ತೋಷ್ಮಾತ್. ರಸ್ಯ ಲ: (ವಾಂ 6-2-10). ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" ವಾ. "ನ್ಯಸ್ತಾಲಕ್ತಕ ರಕ್ತಮಾಲ್ಯವಸನಾ" ಮಾಲತೀಂ ೪-24.



ಅಲಕ್ಷಣ ಅಲಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟಲಕ್ಷಣ. 2. ಕಾರಣ  
ವಲ್ಲದ ಹೇತು. (ವಿಂ) 3. ಸುಂದರವಲ್ಲದ. 4. ಗುರು  
ತಿಲ್ಲದ. 5. ಕೆಟ್ಟಲಕ್ಷಣವುಳ್ಳ.

ಅಲಕ್ಷಿತ ಅಲಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) ನೋಡಲ್ಪಡದ, ಕಾಣಲ್ಪಡದ.  
ನ ಲಕ್ಷಿತ: "ಅಲಕ್ಷಿತಾಮೃತನೋ ನೃಪೇಣ" ರಘುಂ ೨-೨೭.

ಅಲಕ್ಷಮನ್ ಅಲಕ್ಷ್ಮನ್ (ವಿಂ) ಗುರುತಿಲ್ಲದ, ಚಿಹ್ನೆಯಿಲ್ಲದ.  
ನ ಲಕ್ಷಮ ಯಸ್ಯ.

ಅಲಕ್ಷ್ಮೀ ಅಲಕ್ಷ್ಮೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿಪತ್ತು, ತೊಂದರೆ,  
ಕಷ್ಟ. 2. ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ದುರ್ಗತಿ, ಬಡತನ. "ಕಾಮಾನ್  
ದ್ರುಧೇ ವಿಪ್ರಕರ್ಪಂತಲಕ್ಷ್ಮೀಮ್" ತಂ ರಾಂ ೪-೩೧.

ಅಲಕ್ಷ್ಮೀಕ ಅಲಕ್ಷ್ಮೀಕ (ವಿಂ) 1. ದರಿವ್ರ, ಬಡವ,  
ನಿರ್ಗತಿಕ. ನ ವಿಧತೆ ಲಕ್ಷ್ಮೀಯಸ್ಯ "ಕಪ್". 2. ತೊಂದರೆ  
ಗೊಳಗಾದವನು. 3. ಕಾಂತಿಹೀನನಾದ.

ಅಲಕ್ಷ್ಯ ಅಲಕ್ಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅದೃಶ್ಯವಾದ, ನೋಡ  
ಲಾಗದ, ನೋಡಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. 2. ಗುರುತಿಸ  
ಲಾಗದ. 3. ಲಕ್ಷ್ಯವಲ್ಲದ, ಕ್ಷುಲ್ಲಕ, ಅಲ್ಪ.  
4. ಕಪಟವಿಲ್ಲದ, ವಂಚನೆಯಿಲ್ಲದ, ವಾಸ್ತವವಾದ.  
5. ವಿವಕ್ಷಿತವಲ್ಲದ, ಉದಾಸೀನವಾದ. 6. (ಬಾಣಕ್ಕೆ)  
ಗುರಿಯಿಲ್ಲದ. ನಂ ತಂ. 7. ಲಕ್ಷಣಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ  
ತೋರದ (ಅರ್ಥ). 8. ಲಕ್ಷಣಸಮನ್ವಯವಾಗ  
ಬಾರದ ಜಾಗ. "ಶೃಂಗಿತವಂ ಗೋಲಕ್ಷಣಮ್" ಈ ಲಕ್ಷಣಕ್ಕೆ  
ಮಹಿಷವು ಅಲಕ್ಷ್ಯ.

ಅಲಕ್ಷ್ಯಗತಿ ಅಲಕ್ಷ್ಯಗತಿ (ವಿಂ) ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣದ  
ಗಮನವುಳ್ಳ, ನೋಡಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ ಚಲನೆಯುಳ್ಳ.  
ಅಲಕ್ಷ್ಯಾ ಗತಿಯಸ್ಯ.

ಅಲಕ್ಷ್ಯಜನ್ಮತಾ ಅಲಕ್ಷ್ಯಜನ್ಮತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಿಳಿಯ  
ಲಾಗದ ಜನ್ಮ, ಅವ್ಯಕ್ತವಾದ ಉತ್ಪತ್ತಿ. ಅಲಕ್ಷ್ಯಜನ್ಮನೋ  
ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯). "ವಪುರ್ವಿರೂಪಾಕ್ಷಮಲಕ್ಷ್ಯ-  
ಜನ್ಮತಾ ದಿಗಮ್ಬರತ್ವೇನ ನಿವೇದಿತಂ ವಸು" ಕುಮಾಂ ೪-೭೨.

ಅಲಕ್ಷ್ಯಜನ್ಮನ್ ಅಲಕ್ಷ್ಯಜನ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ತಿಳಿಯ  
ಲಾಗದ ಹುಟ್ಟು, ಅವ್ಯಕ್ತವಾದ ಉತ್ಪತ್ತಿ. ನಂ ತಂ.  
(ವಿಂ) 2. ತಿಳಿಯಲಾಗದ ಉತ್ಪತ್ತಿಯುಳ್ಳ, ಅವ್ಯಕ್ತ  
ವಾದ ಜನ್ಮವುಳ್ಳ. ಅಲಕ್ಷ್ಯಂ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ.

ಅಲಕ್ಷ್ಯವಾಕ್ ಅಲಕ್ಷ್ಯವಾಕ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಸ್ಪಷ್ಟ  
ವಾದ ಮಾತು. (ವಿಂ) 2. ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾದ ಮಾತುಳ್ಳ.  
ಅಲಕ್ಷ್ಯಾ ವಾಕ್ ಯಸ್ಯ.

ಅಲಗದ ಅಲಗದ (ಪುಂ) 1. ನೀರುಹಾವು. ಲಗತಿ -  
ಲಗೇ (ಸಜ್ಜೆ) "ಕ್ರಿಪ್" (೩-೨-೧೭೮). ಅದಯತಿ -

ಅದ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಅವ್" (೩-೧-೧೩೪). ಲಕ್  
ಚಾಸಾವದಶ್ಚ. ಲಗನ: ಸನ್ ಪಿಡಕ ಇತ್ಯಥ: ನಿವಿಪತ್ವಾ-  
ತದ್ವಿಶ್ವೋಲ್ಲಗದ: [ನೀರುಹಾವು ಮೈಗೆ ಸುತ್ತಿಕೊಂಡು  
ಪೀಡಿಸುವುದಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.] (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ರ್ವಾ -ರ್ವಾ. 2. ಜಲಾಕೆ, ಜಿಗಣೆ, ರಕ್ತವನ್ನು ಹೀರುವ  
ಒಂದು ಹುಳು.

ಅಲಘು ಅಲಘು (ಪುಂ) 1. ಗುರುವರ್ಣ, ಗುರುಸಂಜ್ಞೆ  
ಯುಳ್ಳ ಅಕ್ಷರ. (ವಿಂ) 2. ಹಗುರವಲ್ಲದ, ಭಾರ  
ವಾದ. ನ ಲಘು: "ಜಘನಮಲಘುಪೀವರೋ ಕುಚ್ಚಾದುರನಿವಿರೀಸ  
ನಿತಮ್ಬಭಾರಖೇದಿ" ಮಾಘಂ ೭-೨೦. 3. ಉದ್ದವಾದ,  
ದೊಡ್ಡದಾದ. "ಅಲಘುಚರಣಾಕುಟಗ್ರಾಹಾಂ ವಿಷಾಣಿಭಿರ್ಮದೇ:"  
ಮಾಘಂ ೧೨-೭೭. 4. ದೊಡ್ಡದಾದ, ಸಣ್ಣದಲ್ಲದ.  
5. ವೇಗವಾದ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 6. ವೇಗವಾಗಿ. "ಅಲಘು-  
ಚಲಿತಜಂಞಾಪಾತನಿಷೇಷದೋಷಾತ್" ಚಂ ರಾಂ. 7. ಉದ್ದ  
ವಾಗಿ. 8. ದೊಡ್ಡದಾಗಿ. 9. ಭಾರವಾಗಿ.

ಅಲಕ್ಷರಣ ಅಲಂಕರಣ (ನಂ) 1. ಅಲಂಕಾರ, ಶೃಂಗಾರ.  
ಅಲಮ್+ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪).  
2. ಭೂಷಣ, ಒಡವೆ. ಅಲಂಕೃತೇನೇನ - ಕರಂ  
"ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭). "ಸೃಜತಿ ತಾವದಶೇಷಗುಣಾಕರಂ  
ಪುಷ್ಪರತ್ನಮಲಕ್ಷರಣಂ ಭುವ:" ಭರ್ತಂ ೧-೮೬.

ಅಲಕ್ಷರಿಣ್ಣು ಅಲಂಕರಿಷ್ಣು (ವಿಂ) 1. ಅಲಂಕಾರ  
ಮಾಡುವವನು, ಶೃಂಗರಿಸುವವನು. ಅಲಮ್+ಡು ಕೃತ್  
(ಕರಣ) "ಇಣ್ಣುಕ್" (೩-೨-೧೩೬). 2. ಅಲಂಕಾರ  
ಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು.

ಅಲಕ್ಷರ್ತು ಅಲಂಕರ್ತೃ (ವಿಂ) ಅಲಂಕಾರ ಮಾಡುವವನು,  
ಶೃಂಗರಿಸುವವನು. ಅಲಮ್+ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ತನ್"  
(೩-೨-೧೩೪). ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪). -ಕರ್ತೃ  
-ಕರ್ತೃ.

ಅಲಕ್ಷರ್ಮಿಣ ಅಲಂಕರ್ಮಿಣ (ವಿಂ) ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ  
ದಕ್ಷನಾದ, ಕೆಲಸ ಮಾಡುವುದರಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಥನಾದ.  
ಕರ್ಮಣಿ ಕ್ರಿಯಾಯೇ ಅಲಮ್ - ಅಲಂಕರ್ಮನ್ "ಖ:" (೪-೪-೭).  
"ಕರ್ಮಕ್ಷಮೋಲ್ಲಕ್ಷರ್ಮಿಣ: ಕ್ರಿಯಾವಾನ್ ಕರ್ಮಸೂತ್ರತ:" ಅಮಂ.

ಅಲಕ್ಷಾರ ಅಲಂಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಭೂಷಣ, ಒಡವೆ.  
ಅಲಂಕೃತೇನೇನ - ಅಲಮ್+ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಖಕ್"  
(೩-೩-೧೧೯). 2. ಅಲಂಕಾರ, ಶೃಂಗಾರ. 3. ಅಲಂಕಾರ  
ಶಾಸ್ತ್ರ. 4. ಶಬ್ದ ಮತ್ತು ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರ, ಶಬ್ದಾರ್ಥ  
ಗಳಿಗೆ ಹೆಚ್ಚು ಕಾಂತಿಯನ್ನು ಕೊಡುವ ಒಂದು  
ಧರ್ಮ. "ಕಾವ್ಯಶೋಭಾಕರಾನ್ ಧರ್ಮನಿಲಕ್ಷಾರಾನ್ ಪ್ರವಕ್ಷತೇ"



ಕಾವ್ಯಾಂ ೨-೧। (೧) ಅನುಪ್ರಾಸ ಯಮಕಾದಿಗಳು ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರ. (೨) ಉಪಮಾ ರೂಪಕ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾದಿಗಳು ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರ.

**ಅಲಂಕೃತ ಅಲಂಕೃತ** (ವಿಂ) ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಶೃಂಗರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಲಂ+ಠ ಕೃ (ಕರಣಂ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಅಲಂಕೃತಾನಾಂ ಋಜುತಾಗುಣೇನ ಗುರುಪದ್ವಿಂ ಗತಿಮಾಸ್ಥಿತಾನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೭-೨೯।

**ಅಲಂಕೃತಿ ಅಲಂಕೃತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ೧. ಅಲಂಕಾರ, ಶೃಂಗಾರ. ಅಲಂ+ಠ ಕೃ (ಕರಣಂ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। ೨. ಶಬ್ದ ಮತ್ತು ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರ. "ತದದೋಷೋ ಶಬ್ದಾಯೋ ಸಗುಣಾವನಲಂಕೃತೀ ಪುನಃ ಕ್ವಾಪಿ" ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ।

**ಅಲಂಕೃತಿಯಾ ಅಲಂಕೃತಿಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಲಂಕಾರ ಮಾಡುವುದು, ಶೃಂಗರಿಸುವುದು. ಅಲಂ+ಠ ಕೃ (ಕರಣಂ) ಭಾವೇ "ಶ:" (೩-೩-೧೦೦)।

**ಅಲಂಕೃತ ಅಲಂಕೃತ** (ನಂ) ಮಾರದಿರುವಿಕೆ, ಅತಿಕ್ರಮಿಸದಿರುವಿಕೆ. ನ ಲಂಕೃತಮ್।

**ಅಲಂಕೃತನೀಯ ಅಲಂಕೃತನೀಯ** (ವಿಂ) ಅತಿಕ್ರಮಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ, ಮಾರಲಾಗದ. ನ ಲಂಕೃತಯಿತುಂ ಯೋಗ್ಯಮ್। "ಅಲಂಕೃತನೀಯಂ ಪ್ರಕೃತಾವಪಿ ಸ್ಥಿತಂ ನಿವಾತನಿಷ್ಕಮ್ಪಮಿವಾ-ಪಗಾಪತಿಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೪-೩೭।

**ಅಲಂಕೃತನೀಯತಾ ಅಲಂಕೃತನೀಯತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ೧. ಅತಿಕ್ರಮಿಸಲು ಆಗದಿರುವಿಕೆ, ಮಾರಲು ಶಕ್ಯವಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಅಲಂಕೃತನೀಯ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। "ಅಲಂಕೃತನೀಯತಾಹೇತು-ಋಭಯಂ ತನ್ಮನಸ್ವಿನಿ" ಮಾಘಂ ೨-೪೮। ೨. ಪೂಜ್ಯತೆ, ಗೌರವಾರ್ಹತೆ.

**ಅಲಂಕೃತ ಅಲಂಕೃತ** (ವಿಂ) ೧. ದಾಟಲಾಗದ. ೨. ಅತಿಕ್ರಮಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಮಾರಲಾಗದ. ನ ಲಂಕೃತಯಿತುಂ ಶಕ್ಯಮ್। "ಅಲಂಕೃತಂ ತತ್ತದ್ವಿಧೀಕ್ಷ್ಯ ಯದ್ದುರ್ವಮಹಿಮತಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೧-೬೦। ೩. ಅಸಾಧ್ಯವಾದ, ಸಡೆಯಲಾಗದ. "ಉಪಹಿತಪರಮಪ್ರಭಾವಧಾಮ್ನಾಂ ನ ಹಿ ಜಯಿನಾಂ ತಪಸಾಮಲಂಕೃತ-ಮಸ್ತಿ" ಕಿರಾಂ ೧೦-೬।

**ಅಲಂಕೃತ (ಞ್) ರ ಅಲಂಕೃತ (ಜ್) ರ** (ಪುಂ) ಮಣ್ಣಿನ ಹೂಜಿ. ಅಲಂ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಜೃಗಾತಿ-ಜ್ (ವಯೋಹಾನೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।

**ಅಲಂಕೃತ ಅಲಂಕೃತ** (ವಿಂ) ಹೊಂದಲು ಅನರ್ಹವಾದ, ಪಡೆಯಲು ಅಯೋಗ್ಯವಾದ. ನ ಲಂಕೃತಮಹ್। "ಅಲಂಕೃತ-ಶೋಕಾಭಿಭವೇಯಮಾಕೃತಿವಿಮಾನನಾ ಸುಖ ಕುತಃ ಪಿತುಗೃಹೇ" ಕುಮಾರಂ ೪-೪೩।

**ಅಲಂಕೃತ ಅಲಂಕೃತ** (ಪುಂ) ಪರ್ವಕಾಲ, ಪುಣ್ಯಕಾಲ, ಅಪೂರ್ವವಾಗಿ ಒದಗುವ ತಿಥಿ ವಾರ ನಕ್ಷತ್ರಾದಿಗಳು ಸೇರುವ ಕಾಲ; ಅರ್ಧೋದಯ, ಮಹೋದಯ ಮುಂತಾದುವು.

**ಅಲಂಕೃತ ಅಲಂಕೃತ** (ಅವ್ಯಂ) ೧. ಭೂಷಣ, ಅಲಂಕಾರ, ಒಡವೆ. ೨. ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಶಕ್ತಿ. ೩. ಪರ್ಯಾಪ್ತಿ, ಸಾಕಾಗುವಿಕೆ. ೪. ತಡೆ, ನಿಷೇಧ. ಅಲ (ಭೂಷಣಪರ್ಯಾಪ್ತಿ-ವಾರಣೇಷು) "ಅಮ್" ಬಾಹುಂ। "ಅಲಂ ವಿವಾದೇನ ಯಥಾಶ್ರುತಂ ತ್ವಯಾ ತಥಾವಿಧವಸ್ತಾವದಶೇಷಮಸ್ತು ಸಃ" ಕುಮಾರಂ ೪-೮೨। ೫. ಅತಿಶಯವಾಗಿ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ, ಬಹಳವಾಗಿ, ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ. "ಕುಃ ತಾತ ತಪಾಸ್ಯಮಾರ್ಗದಾಯಿ ವಿಜಯಾಪೇತಲ-ಮನ್ವಶಾನ್ಮುನಿರ್ಮಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೩-೧೩।

**ಅಲಂಕೃತ ಅಲಂಕೃತ** (ಪುಂ) (ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ) ಶತ್ರುಪಕ್ಷದ ಸೈನ್ಯದ ಯಜಮಾನ (ಸೇನಾಪತಿ). ಅಲಂ ಪುರಾಣಾಯ - ಅಲಂಕೃತ "ತಃ" (೪-೪-೭)।

**ಅಲಂಕೃತ ಅಲಂಕೃತ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ೧. "ಸಾಕು" ಎಂಬ ಬುದ್ಧಿ, ತೃಪ್ತಿ. ೨. ಸಾಕಾದಷ್ಟು ಬುದ್ಧಿ, ತಕ್ಕಷ್ಟು ಬುದ್ಧಿ. ೩. ಮಿಥ್ಯಾಜ್ಞಾನ, ತಪ್ಪು ತಿಳಿವಳಿಕೆ.

**ಅಲಂಕೃತ ಅಲಂಕೃತ** (ಪುಂ) ೧. ವಮನ, ವಾಂತಿ. ೨. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. ೩. ರಾವಣನ ಮಂತ್ರಿ ಪ್ರಹಸ್ತ. "ಅಲಂಕೃತಂ ತಥಾ ಯುಧೇ ವಿಚರಂತಮಭಿತವತ್" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ)-ಷಾ-ಷಾ. ೪. ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸು. "ಅಲಂಕೃತಾಯಾ-ಮಿಕ್ಷವಾಕೋಜಾತಿಃ ಕಶ್ಚಿನ್ಮಹೀಪತಿಃ" ಚಂ ರಾಂ। ೫. ತಡೆಯ ಗೆರೆ, ಇತರರ ಪ್ರವೇಶವನ್ನು ತಡೆಗಟ್ಟುವ ನೀರಿನ ಗೆರೆ. ೬. ಮಂಗರವಳ್ಳಿ. "ಅಲಂಕೃತಃ ಪ್ರಹಸ್ತೇ ಚ ಛದಂತೇ ರಾಕ್ಷಸಾಂತರೇ। ಅಲಂಕೃತಾ ತು ಮುಂಡೀಯಾ ಸ್ವರ್ಗವಾರಾಙ್ಗನಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ।

**ಅಲಂಕೃತ ಅಲಂಕೃತ** (ವಿಂ) ಸಮರ್ಥ, ಶಕ್ತಿ. ಅಲಂಭವನಶೀಲಃ - ಅಲಂ+ಭು "ಗ್ತುಃ" (೩-೨-೧೩೯)। "ವಿನಾಪ್ಯಸ್ಮದಲಂಕೃತಾರಿಜ್ಯಾಯೇ ತಪಸಃ ಸುತಃ" ಮಾಘಂ ೨-೯।

**ಅಲಂಕೃತ ಅಲಂಕೃತ** (ಪುಂ) ೧. ಹುಚ್ಚುನಾಯಿ. ಅಲಂಕೃತೇ-ಅಲಂಕೃತ (ಸ್ತವನೇ) "ಛತ್" (೩-೩-೧೧೯)। ೨. ಬಿಳಿ ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. ೩. ಹಂದಿಯ ಆಕಾರದ ಎಂಟು ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಮೃಗ. ೪. ಪುತ್ರ, ಮಗ. ೫. ಒಬ್ಬ ರಾಜ. [ಈತನು ತನ್ನನ್ನು ಯಾಚಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ತನ್ನ ಎರಡು ಕಣ್ಣುಗಳನ್ನೂ ಸ್ವಲ್ಪವೂ ಅನುಮಾನಿಸದೆ ದಾನಮಾಡಿ ಅವನ ಇಷ್ಟವನ್ನು ಪೂರ್ತಿಮಾಡಿದನು.] "ಅಮ್ಯರ್ಯಂ ಕಸ್ಮೇಚಿದುಪಾಶ್ರಿತಾಯ ವಿತೀಯಂ ವಿಪ್ರಾಯ ವಿಲೋಚನೇ"



ಸ್ವೇ। ಅಪೂರಯತ್ಕಶ್ವಿದಲಕಸಂಜಃ ಪ್ರಾಜಃ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾಂ ಪ್ರಥಿತಪ್ರಭಾವಃ”  
 ಚಂ ರಾಂ। 6. ಗುಂಗೆಹುಳು, ಕರ್ಣನು ಪರಶುರಾಮ  
 ನನ್ನು ತೊಡೆಯ ಮೇಲೆ ಮಲಗಿಸಿಕೊಂಡಿದ್ದಾಗ ಅವನ  
 ತೊಡೆಯನ್ನು ಕೊರೆದ ಹುಳು. “ರೋಮಭಿಃ ಸನ್ನಿ-  
 ಕ್ಷಾಙ್ಗಮಲಕಂ ನಾಮ ನಾಮತಃ” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೩-೧೩।  
 (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ -ಕಾರ್. 7. ಮದಾಲಸೆಯೆಂಬ ಒಬ್ಬ  
 ಅಪ್ಸರಸ್ಸು. “ಅಥಾತ್ಮಜೇ। ಮದಾಲಸಾಯಾಂ ಸ್ವೇತಾರ್ಕೆಂಪ್ಯಲಕೋ  
 ಭ್ರಾಂತಶುನ್ಯಪಿ” ನಾನಾರ್ಥಂ।

ಅಲಸ ಅಲಸ (ಪುಂ) 1. ಕಾಲಿನ ಬೆರಳು ಸಂದಿಯ ಹುಣ್ಣು,  
 ವ್ರಣ, ಕೆಸರಿನ ಹುಣ್ಣು. (ವಿಂ) 2. ಸೋಮಾರಿ,  
 ಮೈಗಳ್ಳ, ಕೆಲಸಮಾಡದವನು. ನ ಲಸತಿ - ಲಸ  
 (ಶ್ಲೇಷಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ಅವ್ಯವಸಾಯಿನಮಲಸಂ  
 ದೇವಪರಂ ಸಾಹಸಾಂಚ ಪರಿಹೀನಮ್। ಪ್ರಮದೇವ ವೃದ್ಧಪತಿ ನೇಚ್ಚತ್ಯುಪ-  
 ಗೃಹೀತುಂ ಲಕ್ಷ್ಮೀಃ” ಹಿತೋಂ। 3. ಬಳಿದ, ಆಯಾಸ  
 ಗೊಂಡ. “ಅಲಸಪದಮನೋರಮಂ ಪ್ರಕೃತ್ಯಾ ಜಿತಕಲಹಂಸವಭು-  
 ಗತಿ ಪ್ರಯಾತಮ್” ಕಿರಾಂ ೧೦-೬೦। 4. ಬೇಸರವುಳ್ಳ,  
 ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ದ್ವೇಷವುಳ್ಳ. “ಗಮನಮಲಸಂ ಶೂನ್ಯಾ ದೃಷ್ಟಿಃ  
 ಶರೀರಮಸೌಖ್ಯವಮ್” ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೦। 5. ಮಂದಸ್ವಭಾವ  
 ದವನು, ಜಡಪ್ರಕೃತಿಯುಳ್ಳವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸಾ-ಸಾ.  
 6. ಹಂಸಪದೀಲತೆ. “ಅಲಸಾ ಹಂಸಪದಾಂ ನಾ ಪಾದರೋಗ  
 ದ್ರುಭೇದಯೋಃ” ಮೇದಿಂ।

ಅಲಸಕ ಅಲಸಕ (ಪುಂ) ಹೊಟ್ಟೆಯ ರೋಗ, ಉದರ  
 ವ್ಯಾಧಿ, ಒಂದು ವಿಧ ಅಜೀರ್ಣ ರೋಗ. “ಪ್ರಯಾತಿ  
 ನೋರ್ಧ್ವಂ ನಾಥಸ್ತಾತ್ ಆಹಾರೋ ನ ಚ ಪಚ್ಯತೇ। ಆಮಾಶಯೋಽ-  
 ಲಸೀಭೂತಸ್ತೇನ ಸೋಲಸಕಃ ಸ್ಮೃತಃ” ಭಾವಪ್ರಂ।

ಅಲಾತ ಅಲಾತ (ನಂ) ಅರ್ಧಬೆಂದ ಮರ, ಕೊಳ್ಳಿ,  
 ಅರ್ಧ ಉರಿದ ಕಟ್ಟಿಗೆ. ನ ಲಾತಮಸ್ಯ। “ಕುಸ್ತೇಽಸ್ಮಿನ್ನಮೋ-  
 ವೇಽಪಿ ನಿರ್ವಾಣಾಲಾತಲಾಭವಮ್” ಕುಮಾಂ ೨-೨೩।

ಅಲಾಬ್ ಅಲಾಬಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೋರೆಗಿಡ. ನ ಲಮ್ವತೇ -  
 ಲವಿ (ಅವಸಂಸನೆ) “ಋಃ” (೩ಂ ೧-೮೭)। (ನಂ) -ಬ-  
 -ಬು. 2. ಸೋರೆಕಾಯಿ. 3. ಸೋರೆ ಬುರುಡೆ.

ಅಲಾರ ಅಲಾರ (ನಂ) ಬಾಗಿಲು. ಶಬ್ದರಂ।

ಅಲಿ ಅಲಿ (ಪುಂ) 1. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಅಲತಿ ದಂಶನೆ  
 ಸಮರ್ಥೋ ಭವತಿ-ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ) “ಇನ್” (೩ಂ ೪-೧೧೮)।  
 “ಗಂಢೋಡ್ವಿನಾಲಿಮಾಲಾಮುಖರಿತಕುಭಸ್ತಾಂಢವೇ ಶೂಲಪಾಣಿಃ”  
 ಮಾಲತೀಂ ೧-೨। 2. ವೃಶ್ಚಿಕ, ಚೀಳು. 3. ವಾಯುಸ,  
 ಕಾಗೆ. 4. ಕೋಗಿಲೆ. 5. ಮದ್ಯ. 6. ವೃಶ್ಚಿಕ  
 ರಾಶಿ. “ಅಲಿಃ ಸುರಾಪುಷ್ಪಲಿಹೋಃ” ಮೇದಿಂ।

ಅಲಿಕ ಅಲಿಕ (ನಂ) ಹಣೆ, ಲಲಾಟ, ನೊಸಲು.  
 ಅಲತಿ - ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ) “ಇನ್” (೩ಂ ೪-೨೭)।  
 “ಲಲಾಟಮಲಿಕಂ ಗೋಧಿಃ” ಅಮಂ।

ಅಲಿಗಡ್ಡ ಅಲಿಗಡ್ಡ (ಪುಂ) ನೀರುಹಾವು. ಅಲಿರಿವ  
 ಗೃಹ್ಣೋತಿ-ಗೃಹ್ (ಅಭಿಕಾಡ್ವಾಯಾಮ್) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)।  
 ಅಲಿಜಿಹ್ವಾ ಅಲಿಜಿಹ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆರುನಾಲಿಗೆ, ಅಣ್ಣಾಲಿಗೆ,  
 ನಂಗಲು, ಅಲಿರಿವ ಕುದ್ರಾ ಜಿಹ್ವಾ।

ಅಲಿಜ್ಜರ ಅಲಿಜ್ಜರ (ಪುಂ) ಮಣ್ಣಿನ ಹೂಜಿ. ಅಲಿ  
 ಜಯತಿ - ಜೃಷ್ (ವಯೋಹಾನೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)।  
 “ಅಲಿಜ್ಜರಃ ಸ್ಯಾನ್ಮಣಿಕಃ” ಅಮಂ।

ಅಲಿದ್ವರ್ವಾ ಅಲಿದ್ವರ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉದ್ದವಾಗಿ ಬಳ್ಳಿ  
 ಯಂತೆ ಬೆಳೆಯುವ ಗರುಕೆ.

ಅಲಿನ್ ಅಲಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಅಲಂ ವೃಕ್ಷಿಕ-  
 ಲಾಙ್ಗಲಂ ತದಿವಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ-“ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪)। “ಮಲಿನಿ-  
 ಮಾಙ್ಗಲಿನಿ ಮಾಧವಯೋಷಿತಾಮ್” ಮಾಘಂ ೬-೪। 2. ವೃಶ್ಚಿಕ,  
 ಚೀಳು. ಅಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ - “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪)।

ಅಲಿನ್ದ ಅಲಿನ್ದ (ಪುಂ) 1. ಮನೆಯ ಬಾಗಿಲ ಮುಂದಿನ  
 ಜಗುಲಿ. 2. ಮನೆಯ ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ಚತುರಶ್ರ  
 (ಚಚ್ಚಾಕ) ವಾದ ಒಂದು ಪ್ರದೇಶ. ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ)  
 “ಕಿನ್ದಚ್” ವಾಹುಂ। “ಯಸ್ಯಾಮಲಿನ್ದೇಷು ನ ಚಕ್ರೇವ ಮುಘಾಙ್ಗನಾ-  
 ಗೋಮಯಗೋಮುಖಾನಿ” ಮಾಘಂ ೩-೪೮।

ಅಲಿಪಕ ಅಲಿಪಕ (ಪುಂ) 1. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ.  
 2. ಕೋಗಿಲೆ. 3. ನಾಯಿ. “ಅಲಿಪಕೋ ಭೃಗ್ಗುಕೋಕಿಲ-  
 ಕುಕ್ಕುರೇ” ಮೇದಿಂ।

ಅಲಿಪ್ರಿಯ ಅಲಿಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) 1. ರಕ್ತಕಮಲ, ಕೆಂದಾವರೆ.  
 ಅಲಿನಾಂ ಪ್ರಿಯಃ। (ವಿಂ) 2. ದುಂಬಿಗಳಿಗೆ ಪ್ರಿಯವಾದ,  
 ಭ್ರಮರಗಳಿಗೆ ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
 -ಯಾ-ಯಾ. 3. ತುತ್ತೂರಿಹೂವು.

ಅಲಿಮಕ ಅಲಿಮಕ (ಪುಂ) 1. ಕಮಲದ ಕುಸುಮ.  
 2. ಹಿಪ್ಪೆಮರ. 3. ಕೋಗಿಲೆ. 4. ಮಂಡೂಕ,  
 ಕಪ್ಪೆ. 5. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. “ಭವೇದಲಿಮಕೋ ಭೇಕೇ  
 ಪಿಕೇಙ್ಗಲೋ ಪದ್ಮಕೇಸರೇ। ಮಧುಕೇಽಪಿ” ಮೇದಿಂ।

ಅಲಿಕ ಅಲಿಕ (ನಂ) 1. ಹಣೆ, ಲಲಾಟ, ನೊಸಲು.  
 ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ) “ಕೀಕನ್” (೩ಂ ೪-೨೫)। ನಿಪಾಂ।  
 “ದಿಶಾಮಲಿಕಾಲಕಭೃಗ್ಗತಾಂ ಗತಸ್ತ್ರಯೀವಧೂರ್ಣತಮಾಲಪಲ್ಲವಃ”  
 ಕಾದಂ। 2. ಮಿಥ್ಯೆ, ಸುಳ್ಳು. “ತಥಾ ಸ ಮಹಾರಾಜೋ  
 ನಾಲಿಕಮಧಿಗಚ್ಛತಿ” ರಾಮಾಂ। 3. ಸ್ವರ್ಗ. (ವಿಂ) 4.  
 ಅಪ್ರಿಯವಾದ. 5. ಅಸತ್ಯವಾದ, ಸುಳ್ಳಾದ.



ಅಲ್ಪ ಅಲು (ಪುಂ) ನೀರಿನ ಸಣ್ಣ ಪಾತ್ರೆ, ಸಣ್ಣ ಹೂಜಿ.  
ಅಲೋಕ ಅಲೋಕ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಳಯ, ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶ.

"ರಕ್ಷ ಸರ್ವಾನಿಮಾಲ್ಯಲೋಕಾನಾಂ ಕರ್ತುಮಹಿಸಿ" ರಾಮಾಂ.  
2. ಪಾತಾಳಲೋಕ. 3. ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ ಜಗತ್ತು,  
ಧಾರ್ಮಿಕ ಪ್ರಪಂಚ. (ವಿಂ) 4. ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣದಿರುವ,  
ಅಪ್ರಕಾಶವಾದ. "ಪ್ರಕಾಶಶ್ಚಾಪ್ರಕಾಶಶ್ಚ ಲೋಕಾಲೋಕ  
ಛವಾಚಲ:" ರಘುಂ ೧-೬೮.

ಅಲೌಕಿಕ ಅಲೌಕಿಕ (ವಿಂ) 1. ಲೋಕದಲ್ಲಿಲ್ಲದ,  
ಲೋಕದಲ್ಲಿ ತಿಳಿಯದ, ಲೋಕಾತೀತವಾದ, ಲೋಕಕ್ಕೆ  
ಸಂಬಂಧಪಡದ. ಲೋಕೇ ವಿದಿತ: "ಠ್" (೪-೧-೪೪).  
ನಂ ತಂ. 2. ಅಸಾಧಾರಣವಾದ, ಲೋಕಸಾಮಾನ್ಯ  
ವಲ್ಲದ, ಉತ್ಕೃಷ್ಟವಾದ.

ಅಲ್ಪ ಅಲ್ಪ (ವಿಂ) 1. ಸ್ವಲ್ಪ, ಕೊಂಚ. ಅಲ (ಭೂಷಣಾದಿ)  
"೪:" ಬಾಹುಂ. "ಕ ಸೂರ್ಯಪ್ರಭವೋ ವಂಶ: ಕ್ವಚಾಲ್ಪವಿಷಯಾ  
ಮತಿ:" ರಘುಂ ೧-೨. "ಅಲ್ಪಸ್ಯ ಹೇತು: ಬಹು ಹಾತುಮಿಚ್ಛನ್  
ವಿಚಾರಮೂಢ: ಪ್ರತಿಭಾಸಿ ಮೇ ತ್ವಮ್" ರಘುಂ ೨-೪೭.  
2. ಚಿಕ್ಕದಾದ, ಸಣ್ಣದಾದ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3. ಸ್ವಲ್ಪ  
ವಾಗಿ, ಕೊಂಚವಾಗಿ. 4. ಚಿಕ್ಕದಾಗಿ, ಸಣ್ಣದಾಗಿ.

ಅಲ್ಪಕ ಅಲ್ಪಕ (ಪುಂ) 1. ತೀಟಕಸಂಧಿ ಮರ. (ನಂ) 2.  
ಸ್ವಲ್ಪ, ಕೊಂಚ. (ವಿಂ) 3. ಚಿಕ್ಕದಾದ, ಸಣ್ಣದಾದ.  
ಅಲ್ಪ ಎವ ಅಲ್ಪಕ: ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್". ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಅಲ್ಪಿಕಾ  
ಅಲ್ಪಿಕಾ. 4. ತುಚ್ಛವಾದ, ನೀಚವಾದ, ನಿಂದ್ಯವಾದ.  
"ನಾಗ್ನಿಪರಿಸ್ಪೃಷ್ಠಿಮಪಿ ಅಲ್ಪಕಾ: ಪ್ರತಿಪದಂತಿ" ತಂ ರಾಂ ೪.  
"ಪರದೋಷಕಥಾಭಿರಲ್ಪಕ: ಸ್ವಜನಂ ತೋಷಯಿತುಂ ಕಿಲೇಚ್ಛತಿ"  
ಮಾಘಂ ೧೬-೨೮.

ಅಲ್ಪಕ್ರೀತ ಅಲ್ಪಕ್ರೀತ (ವಿಂ) ಕೊಂಚ ಬೆಲೆಗೆ ಕೊಂಡು  
ಕೊಂಡ, ಅಗ್ಗದ ಬೆಲೆಗೆ ತೆಗೆದುಕೊಂಡ. ಅಲ್ಪೇನ  
ಕ್ರೀತಮ್. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೪೦). -ತೀ-ಕೀ.

ಅಲ್ಪಗಂಧ ಅಲ್ಪಗಂಧ (ನಂ) 1. ರಕ್ತೋತ್ಪಲ, ಕೆಂದಾವರೆ.  
(ವಿಂ) 2. ಕೊಂಚ ವಾಸನೆಯುಳ್ಳ. ಅಲ್ಪೋ ಗಂಧೋ  
ಯಸ್ಯ.

ಅಲ್ಪಜ್ಞ ಅಲ್ಪಜ್ಞ (ವಿಂ) ಕೊಂಚಮಾತ್ರ ತಿಳಿದಿರುವ,  
ಅಲ್ಪಜ್ಞಾನವುಳ್ಳ. ಅಲ್ಪಂ ಜಾನಾತಿ - ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ)  
"ಕ:" (೩-೨-೩).

ಅಲ್ಪತನ್ಮ ಅಲ್ಪತನ್ಮ (ವಿಂ) 1. ತೆಳುವಾದ ಮೈಯುಳ್ಳ.  
2. ಬಡವಾದ, ದುರ್ಬಲ. 3. ಕುಳ್ಳ, ವಾಮನ,  
ಗಿಡ್ಡ. ಅಲ್ಪಾ ತನ್ಮಯಸ್ಯ. "ಪೃಥಿವಿ: ಕಿರಾತೋಽಲ್ಪತನ್ಮದುರ್ಬಲಸ್ತು  
ಕೃಷಾಸ್ತನ್ಮ:" ವೇಜಂ.

ಅಲ್ಪದ ಅಲ್ಪದ (ವಿಂ) ಕೊಂಚಕೊಡತಕ್ಕ, ಔದಾರ್ಯ  
ವಿಲ್ಲದ, ಕೊಡುಗೈಯಿಲ್ಲದ. ಅಲ್ಪಂ ದದಾತಿ - ತ್ವ ದಾನ್  
(ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩).

ಅಲ್ಪದೃಷ್ಟಿ ಅಲ್ಪದೃಷ್ಟಿ (ವಿಂ) 1. ಸಂಕುಚಿತವಾದ  
ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಕ್ಷುದ್ರವಾದ ಹೃದಯವುಳ್ಳ. 2. ಮಂದ  
ದೃಷ್ಟಿಯುಳ್ಳ, ದೂರದ ನೋಟವಿಲ್ಲದ, ದೂರದ ವಸ್ತು  
ವನ್ನು ನೋಡುವ ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ. ಅಲ್ಪಾ ದೃಷ್ಟಿರಸ್ಯ.

ಅಲ್ಪಧೀ ಅಲ್ಪಧೀ -ಬುದ್ಧಿ -ಬುದ್ಧಿ -ಮತಿ -ಮತಿ  
(ವಿಂ) ಅಲ್ಪವಾದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ, ಕೊಂಚ ತಿಳಿವಳಿಕೆ  
ಯುಳ್ಳ. ಅಲ್ಪಾ ಧೀ: ಬುದ್ಧಿ: ಮತಿರ್ವಾ ಯಸ್ಯ.

ಅಲ್ಪಪ್ರಾಣ ಅಲ್ಪಪ್ರಾಣ (ಪುಂ) 1. ಅಲ್ಪಪ್ರಾಣ ವಾಯುವಿನ  
ವ್ಯಾಪಾರವುಳ್ಳ ವರ್ಣ, ಅಲ್ಪಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಉಚ್ಚರಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ ಅಕ್ಷರ; ಕಾದಿಪಂಚವರ್ಣದ ಅಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ  
ಒಂದು, ಮೂರು ಮತ್ತು ಐದನೆಯ ಅಕ್ಷರಗಳೂ  
ಯಮ (ಪೂರ್ವಸದೃಶವರ್ಣ) ಸಹಿತವಾದ ಒಂದು  
ಮತ್ತು ಮೂರನೆಯ ಅಕ್ಷರಗಳೂ ಯನ್ (ಯವರಲ)  
ವರ್ಣಗಳೂ ಅಲ್ಪಪ್ರಾಣಾಕ್ಷರಗಳು. "ಅಯುಗ್ಮಾ  
ವರ್ಗಯಮಗಾ ಯನ್ಶಾಲ್ಪಾಸವ: ಸ್ಮೃತಾ:" ಸಿಂ ಕೌಂ.  
2. ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸುವ ಬಾಹ್ಯಪ್ರಯತ್ನಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು. ವಿವಾರ:, ಸಂವಾರ:, ಸ್ವಾಸ:, ನಾದ:, ಧೋಷ:,  
ಅಧೋಷ:, ಅಲ್ಪಪ್ರಾಣ:, ಮಾಪ್ರಾಣ:, ತದಾತ್ತ:, ಅನುತದಾತ್ತ:  
ಮತ್ತು ಸ್ವರಿತ: ಎಂದು ಬಾಹ್ಯಪ್ರಯತ್ನವು ಹನ್ನೊಂದು  
ವಿಧ. (ವಿಂ) 3. ಅಲ್ಪಬಲವುಳ್ಳ, ಅಲ್ಪಪ್ರಾಣವಾಯು  
ವುಳ್ಳ, ಬಹಳ ಕಷ್ಟದಿಂದ ಉಸಿರಾಡುವ, ಉಬ್ಬಿಸ  
ರೋಗವುಳ್ಳ. ಅಲ್ಪ: ಹ್ರಸ್ವ: ಪ್ರಾಣ: ಪ್ರಾಣವಾಯುಯಸ್ಯ.

ಅಲ್ಪಮಾರಿಷ ಅಲ್ಪಮಾರಿಷ (ಪುಂ) ಚೆಲುಕೇರೆ ಸೊಪ್ಪು.  
"ತಣ್ಡುಲಿಯೋಽಲ್ಪಮಾರಿಷ:" ಅಮಂ.

ಅಲ್ಪಮೂಲ್ಯ ಅಲ್ಪಮೂಲ್ಯ (ವಿಂ) ಕೊಂಚ ಬೆಲೆಯುಳ್ಳ,  
ಅಗ್ಗದ ಬೆಲೆಯುಳ್ಳ. ಅಲ್ಪಂ ಮೂಲ್ಯಂ ಯಸ್ಯ.

ಅಲ್ಪವಯಸ್ ಅಲ್ಪವಯಸ್ (ವಿಂ) ಚಿಕ್ಕವಯಸ್ಸಿನ,  
ಪ್ರಾಯದ ವಯಸ್ಸುಳ್ಳ. ಅಲ್ಪಂ ವಯೋ ಯಸ್ಯ.

ಅಲ್ಪವಾದಿನ್ ಅಲ್ಪವಾದಿನ್ (ವಿಂ) ಕೊಂಚ ಮಾತಾಡುವ  
ಸ್ವಭಾವದ, ಮಾನಶೀಲ, ಮಿತಭಾಷಿ. ಅಲ್ಪಂ ವದತಿ -  
ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಞಿತಿ:" (೩-೨-೩೮). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
"ಕೀಪ್" (೪-೧-೪). -ವಾದಿನಿ -ವಾದಿನೀ.

ಅಲ್ಪವಿಧ ಅಲ್ಪವಿಧ (ವಿಂ) ಅಲ್ಪವಿದ್ಯೆಯುಳ್ಳ, ಕೊಂಚ  
ತಿಳಿವಳಿಕೆಯುಳ್ಳ. ಅಲ್ಪಾ ವಿಧಾ ಯಸ್ಯ. "ಅಲ್ಪವಿಧೋ  
ಮಹಾಗರ್ವಿ:"



ಅಲ್ಪಶಸ್ ಅಲ್ಪಶಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಕೊಂಚವಾಗಿ. [ಅನಿಷ್ಟ ಕಾಲದ ದಾನದಲ್ಲಿ ಈ ಪ್ರಯೋಗ]. ಅಲ್ಪ "ಶಸ್" (೪-೪-೪೨) ।

ಅಲ್ಪಾಯುಸ್ ಅಲ್ಪಾಯುಸ್ (ಪುಂ) 1. ಅಡು, ಮೇಕೆ. [ಪಶುಪ್ರಾಣಿಗಳಲ್ಲಿ ಅಡು ಬಹಳ ಕೊಂಚಕಾಲ ಬದುಕುವ ಪ್ರಾಣಿ]. (ವಿಂ) 2. ಕಡಿಮೆ ಆಯುಸ್ಸುಳ್ಳ, ಕೊಂಚಕಾಲ ಬದುಕುವ. ಅಲ್ಪಮಾಯುಸ್ಯ । [ದುರಾಚಾರ ವುಳ್ಳ ಮನುಷ್ಯನನ್ನು ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲರೂ ದೂಷಿಸುವರು. ಅನೇಕ ಕಷ್ಟನಷ್ಟಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತಾನೆ. ರೋಗರುಜಿನಗಳಿಂದ ನರಳುತ್ತಾನೆ. ಅವನ ಜೀವಿತ ಕಾಲವೂ ಬಹಳ ಕಡಿಮೆಯಾದುದು.] "ದुरಾಚಾರೋ ಹಿ ಪುಷ್ಪೋ ಲೋಕೇ ಭವತಿ ನಿಂದಿತಃ । ದುಃಖಭಾಗೀ ಚ ಸತತಂ ವ್ಯಾಧಿತೋಽಲ್ಪಾಯುರೇವ ಚ" ಮನುಂ ೪-೧೫೭ ।

ಅಲ್ಪಾರಮ್ಭ ಅಲ್ಪಾರಂಭ (ಪುಂ) ಸ್ವಲ್ಪವಾಗಿ ಆರಂಭಿಸುವಿಕೆ, ಕ್ರಮವಾಗಿ ದೊಡ್ಡದಾಗುವಂತೆ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಚಕ್ರಪ್ರಮಾಣದಲ್ಲಿ ಆರಂಭಿಸುವುದು. ಅಲ್ಪಶ್ರಾಸಾ-ವಾರಮ್ಭಶ್ಚ । "ಅಲ್ಪಾರಮ್ಭಃ ಕ್ಷೇಮಕರಃ" ।

ಅಲ್ಪಾಹಾರಿನ್ ಅಲ್ಪಾಹಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಮಿತವಾಗಿ ಊಟ ಮಾಡುವ, ಕೊಂಚ ಆಹಾರ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ. ಅಲ್ಪಾಹಾರೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) ।

ಅಲ್ಪಿಷ್ಠ ಅಲ್ಪಿಷ್ಠ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಅಲ್ಪವಾದ, ಬಹಳ ಕೊಂಚವಾದ, ಅತಿ ಸಣ್ಣದಾದ. ಅತಿಶಯೇನ ಅಲ್ಪಃ "ಇಷ್ಠನ್" (೪-೩-೪೮) ।

ಅಲ್ಪೀಯಸ್ ಅಲ್ಪೀಯಸ್ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಕೊಂಚವಾದ, ಬಹಳ ಚಿಕ್ಕದಾದ, ಅತಿಸಣ್ಣದಾದ. ಅತಿಶಯೇನ ಅಲ್ಪಃ "ಇಯಸುನ್" (೪-೩-೪೮) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪) । -ಸಿ-೫೬.

ಅವ — ರಕ್ಷಣಗತಿಕಾಂತಿಪ್ರೀತಿಸ್ತೃಪ್ಯವಗಮಪ್ರವೇಶಶ್ರವಣ-ಸಾಮರ್ಥ್ಯಯಾಚನಕ್ರಿಯೇಚ್ಛಾದೀಪ್ಯವಾಪ್ಯಾಲಿಙ್ಗನಹಿಸಾ-ದಾನಭಾಗವೃದ್ಧಿಷು (ಭವಾಂ ೧೦ ಸಕಂ ಸೇಂ) ।

|       |           |           |             |
|-------|-----------|-----------|-------------|
| ಲಟ್—  | ಅವತಿ      | ಅವತಃ      | ಅವಂತಿ ।     |
|       | ಅವಸಿ      | ಅವಥಃ      | ಅವಥ ।       |
|       | ಅವಾಮಿ     | ಅವಾವಃ     | ಅವಾಮಃ ।     |
| ಲಿಟ್— | ಆವ        | ಆವತುಃ     | ಆವುಃ ।      |
|       | ಆವಿಥ      | ಆವಿಥುಃ    | ಆವ ।        |
|       | ಆವ        | ಆವಿವ      | ಆವಿಮ ।      |
| ಲೂಟ್— | ಅವಿತಾ     | ಅವಿತಾರೋ   | ಅವಿತಾರಃ ।   |
|       | ಅವಿತಾಸಿ   | ಅವಿತಾಸ್ಥಃ | ಅವಿತಾಸ್ಥ ।  |
|       | ಅವಿತಾಸ್ಮಿ | ಅವಿತಾಸ್ವಃ | ಅವಿತಾಸ್ಮಃ । |

|       |           |           |             |
|-------|-----------|-----------|-------------|
| ಲೂಟ್— | ಅವಿಷ್ಯತಿ  | ಅವಿಷ್ಯತಃ  | ಅವಿಷ್ಯಂತಿ । |
|       | ಅವಿಷ್ಯಸಿ  | ಅವಿಷ್ಯಥಃ  | ಅವಿಷ್ಯಥ ।   |
|       | ಅವಿಷ್ಯಾಮಿ | ಅವಿಷ್ಯಾವಃ | ಅವಿಷ್ಯಾಮಃ । |

|       |                    |        |         |
|-------|--------------------|--------|---------|
| ಲೋಡ್— | ಅವತು }<br>ಅವತಾತ್ } | ಅವತಾಮ್ | ಅವಂತು । |
|       | ಅವ }<br>ಅವತಾತ್ }   | ಅವತಮ್  | ಅವತ ।   |
|       | ಅವಾನಿ              | ಅವಾವ   | ಅವಾಮ ।  |

|      |      |        |        |
|------|------|--------|--------|
| ಲಙ್— | ಆವತ್ | ಆವತಾಮ್ | ಆವನ್ । |
|      | ಆವಃ  | ಆವತಮ್  | ಆವತ ।  |
|      | ಆವಮ್ | ಆವಾವ   | ಆವಾಮ । |

|           |        |         |          |
|-----------|--------|---------|----------|
| ವಿಧಿಲಿಙ್— | ಅವೇತ್  | ಅವೇತಾಮ್ | ಅವೇಯುಃ । |
|           | ಅವೇಃ   | ಅವೇತಮ್  | ಅವೇತ ।   |
|           | ಅವೇಯಮ್ | ಅವೇವ    | ಅವೇಮ ।   |

|          |          |             |            |
|----------|----------|-------------|------------|
| ಆಶೀಲಿಙ್— | ಅವ್ಯಾತ್  | ಅವ್ಯಾಸ್ತಾಮ್ | ಅವ್ಯಾಸುಃ । |
|          | ಅವ್ಯಾಃ   | ಅವ್ಯಾಸ್ತಮ್  | ಅವ್ಯಾಸ್ತ । |
|          | ಅವ್ಯಾಸಮ್ | ಅವ್ಯಾಸ್ವ    | ಅವ್ಯಾಸ್ಮ । |

|       |        |           |          |
|-------|--------|-----------|----------|
| ಲೂಟ್— | ಆವೀತ್  | ಆವಿಷ್ಠಾಮ್ | ಆವಿಷುಃ । |
|       | ಆವೀಃ   | ಆವಿಷ್ಠಮ್  | ಆವಿಷ್ಠ । |
|       | ಆವಿಷಮ್ | ಆವಿಷ್ವ    | ಆವಿಷ್ಮ । |

|       |          |            |            |
|-------|----------|------------|------------|
| ಲೂಟ್— | ಆವಿಷ್ಯತ್ | ಆವಿಷ್ಯತಾಮ್ | ಆವಿಷ್ಯನ್ । |
|       | ಆವಿಷ್ಯಃ  | ಆವಿಷ್ಯತಮ್  | ಆವಿಷ್ಯತ ।  |
|       | ಆವಿಷ್ಯಮ್ | ಆವಿಷ್ಯಾವ   | ಆವಿಷ್ಯಾಮ । |

1. ರಕ್ಷಿಸು, ಕಾಪಾಡು. "ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾಭಿಃ ಪ್ರಪನ್ನಸ್ತನುಭಿರವತು ವಸ್ತಾಭಿರಪ್ಪಾಭಿರೀಶಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೧ । 2. ಚಲಿಸು, ಹೋಗು, ನಡೆ. 3. ಇಚ್ಛಿಸು, ಅವೇಕ್ಷಿಸು. 4. ಪ್ರೀತಿಸು. "ಕ್ಷತ್ರಿಯಾಂತಕರಣೋಽಪಿ ವಿಕ್ರಮಸ್ತೇನ ಮಾವತಿ ನಾಜಿತೇ ತ್ವಯಿ" ರಘುಂ ೧೧-೭೫ । 5. ತೃಪ್ತಿಸು. 6. ಕೇಳು, ಶ್ರವಣಮಾಡು. 7. ಗ್ರಹಣಮಾಡು, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳು. 8. ಪ್ರವೇಶಿಸು. 9. ಯಾಚಿಸು, ಬೇಡು. 10. ತಿಳಿ, ಅರಿ. 11. ಮಾಡು. 12. ಅವೇಕ್ಷಿಸು, ಹುಟ್ಟಿಸು. 13. ಹೊಂದು, ಪಡೆ. 14. ಆಲಿಂಗಿಸು, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳು. 15. ಸಮರ್ಥನಾಗು, ಶಕ್ತಿಹೊಂದು. 16. ಹಿಂಸಿಸು. 17. ಭಾಗಹೊಂದು. 18. ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದು. ಈ ಎಲ್ಲಾ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲೂ ಪ್ರಯೋಗಗಳು ಅತಿ ದುರ್ಲಭವಾದುದರಿಂದ ಅವನ್ನು ಇಲ್ಲಿ ಕೊಡಲಾಗಿದೆ. ಆಯಾ ಅರ್ಥಗಳ ಸಂದರ್ಭಾನುಸಾರ ಈ ಧಾತುವು ಸಕರ್ಮಕ ಅಥವಾ ಅಕರ್ಮಕವಾಗುವುದು.



ಭಾವೇ:-ಅವ್ಯತೇ। ಅವೇ। ಅವಿತಾ। ಅವಿಷ್ಯತೇ।  
ಅವ್ಯತಾಮ್। ಅವ್ಯತ। ಅವ್ಯತೇ। ಅವಿಷಿಷ್ಟ। ಆವಿ।  
ಆವಿಷ್ಯತ।

ಪ್ರಯಾತ:-ಆವಯತಿ, -ತೇ। ಆವಯಾಂಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಆವಯಿತಾ, -ಸಿ, -ಸೇ, -ಹೇ। ಆವಯಿಷ್ಯತಿ,  
-ತೇ। ಆವಯತು, -ತಾಮ್। ಆವಯತ್, -ತ। ಆವಯೇತ್, -ತ।  
ಆವಯಾತ್, ಆವಯಿಷಿಷ್ಟ। ಆವಯತ್, -ತ। ಆವಯಿಷ್ಯತ್,  
-ತ।

ಪ್ರಯಾತ ಕರ್ಮಣಿ:-ಆವ್ಯತೇ। ಆವಯಾಂಚಕರ, -ಬಭೂವ,  
-ಆಸೇ। ಆವಯಿತಾ -ಸೇ, -ಹೇ। ಆವಿತಾ -ಸೇ, -ಹೇ।  
ಆವಯಿಷ್ಯತೇ, ಆವಿಷ್ಯತೇ। ಆವ್ಯತಾಮ್। ಆವ್ಯತ। ಆವ್ಯತೇ।  
ಆವಯಿಷಿಷ್ಟ, ಆವಿಷಿಷ್ಟ। ಆವಿ ಆವಿಷಾತಾಮ್ ಆವಯಿ-  
ಷಾತಾಮ್। ಆವಯಿಷ್ಯತ ಆವಿಷ್ಯತ।

ಸನಿ:-ಅವಿವಿಷತಿ। ಅವಿವಿಷಾಂಚಕಾರ, -ಬಭೂವ,  
-ಆಸ। ಅವಿವಿಷಿತಾ। ಅವಿವಿಷಿಷ್ಯತಿ। ಅವಿವಿಷತು।  
ಆವಿವಿಷತ್। ಅವಿವಿಷೇತ್। ಅವಿವಿಷ್ಯಾತ್। ಆವಿವಿಷಿತ್।  
ಆವಿವಿಷಿಷ್ಯತ್।

ಕೇವಲಾತ್ ಕೃತ್ಸು:-ತವ್ಯ:-ಅವಿತವ್ಯಮ್। ಅನೀಯರ್-  
ಅವನೀಯಮ್। ಪ್ಯತ್-ಆವ್ಯಮ್। ಕರ್ಮಂ ಕ್ತ:-ಅವಿತ:-  
ಕ್ತವತು:-ಅವಿತವಾನ್। ಶತು-ಅವನ್ ಅವಂತಿ। ಅವಿಷ್ಯನ್  
ಅವಿಷ್ಯಂತಿ। ತುಮುನ್-ಅವಿತುಮ್। ಭಾವೇ ಕ್ತ:-ಅವಿತಮ್।  
ಲ್ಯುಟ್-ಅವನಮ್। ಕ್ತವಾ-ಅವಿತ್ವಾ। ಲ್ಯಪ್-ಸಮವ್ಯ। ಣಮುಲ್-  
ಆವಮಾವಮ್। ಅವಿತ್ವಾವಿತ್ವಾ।

ಪ್ರಯಾತ ಕೃತ್ಸು:-ಆವಯಿತವ್ಯ:-। ಆವನೀಯ:-। ಆವ್ಯ:-  
ಆವಿತ:-। ಆವಿತವಾನ್। ಆವಯನ್ ಆವಯಂತಿ। ಆವಯಮಾನ್:-  
ಆವಯಿಷ್ಯನ್ ಆವಯಿಷ್ಯತೀ ಆವಯಿಷ್ಯಂತಿ। ಆವಯಿಷ್ಯಮಾಣ:-  
ಆವಯಿತುಮ್। ಆವಿತಮ್। ಆವನಮ್। ಆವಯಿತ್ವಾ।  
ಉಪಾಯ:-। ಆವಮಾವಮ್। ಆವಯಿತ್ವಾವಯಿತ್ವಾ।

ಅವ ಅವ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅಲಂಕಾರ, ಅಶ್ರಯ. "ಪ್ರಾರಂಭೇ-  
ಸ್ಥಿಮ್ ಸ್ವಾಮಿನೋ ವೃದ್ಧಿಹೇತೋ ದೇವೇನೇತ್ಯಂ ದತ್ತಹಸ್ತಾವಲಂಬೇ"  
ರತ್ನಾಂ ೧-೮. 2. ವ್ಯಾಪ್ತಿ, ಹರಡುವಿಕೆ. "ಹಂಸೀವ  
ಕೃಷ್ಣ ತೇ ಕೀರ್ತಿ: ಸ್ವರ್ಗಜ್ಞಾಮವಗಾಹತೇ" ಚಂದ್ರಾಂ।  
3. ತಿರಸ್ಕಾರ, ಅಗೌರವ, ಅನಾದರ. "ಅವಜಾನಾಸಿ  
ಮಾಂ ಯಸ್ಮಾದತಸ್ತೇ ನ ಭವಿಷ್ಯತಿ। ಮತ್ಪ್ರಸೂತಿಮನಾರಾಧ್ಯ ಪ್ರಜೇತಿ  
ತ್ವಾಂ ಶಶಾಪ ಸಾ" ರಘುಂ ೧-೭೭. 4. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ.  
"ಕೃತಾಪರಾಧಮಿವಾವಗಚ್ಛತಿ ಆತ್ಮಾನಮ್" ಕಾದಂ।  
5. ಅಶ್ರಯ. ಅವಧಾರಣಮ್। 6. ಕೆಳಮುಖ, ಕೆಳಕ್ಕೆ  
ಇಳಿಯುವುದು. "ಯಾನಾಜ್ಜನ: ಪರಿಜನೇರವತಾರ್ಯಮಾಣಾ  
ರಾಜೀನೇರಾಪನಯನಾಕುಲಸೌವಿದಲ್ಲಾ:" ಮಾಘಂ ೫-೧೭।

7. ನಿಯೋಗ. 8. ಹೀನ, ನಿಕ್ಕಷ್ಟ, ಕಡಿಮೆ.  
"ಪ್ರತಿಕೃತುಂ ಪ್ರಕೃಷ್ಟಸ್ಯ ನಾವಕೃಷ್ಣೇನ ಯುಜ್ಯತೇ" ರಾಮಾಂ।  
9. ಶುದ್ಧಿ. ಅವದಾತ:-। 10. ಪರಾಭವ, ಅವಮಾನ  
ಗೊಳಿಸುವಿಕೆ. ಶತ್ರುನವಹಂತಿ। 11. ರಕ್ಷಣೆ, ಕಾಪಾಡು  
ವುದು. 12. ವಿರೋಧ. [ಈ ಎಲ್ಲ ಅರ್ಥಗಳಿಗೂ  
"ಅವ"ವು ದ್ಯೋತಕವಾಗಿರುವುದು.] ಕೆಲವು ಕಡೆ  
"ಅವ"ದ ಅಕಾರಕ್ಕೆ ಲೋಪವಿರುವುದೂ ಉಂಟು.  
"ವಷ್ಟಿ ಭಾಗುರೀರಲ್ಲೋಪಮವಾಪ್ಯೋಪಸರ್ಗಯೋ:" ಸಿಂ ಕೌಂ।  
"ಪೂರ್ವಪರೋ ತೋಯನಿಧಿ ವಗಾಹ್ಯ ಸ್ಥಿತ: ಪೃಥಿವ್ಯಾ ಇವ  
ಮಾನದಂಡ:" ಕುಮಾಂ ೧-೧।

ಅವಕಟ ಅವಕಟ (ನಂ) 1. ವೈರೋಧ, ವಿರೋಧ,  
ವೈರೋಧ್ಯ: ಅವ "ಕಟಕ್" (೫-೨-೩೦)। (ವಿಂ) 2.  
ವಿರುದ್ಧವಾದ, ಪ್ರತಿರೋಧವಾದ.

ಅವಕಟಾ ಅವಕಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಕಾರಗೋಪನ, ಮರೆ  
ಮಾಚುವುದು, ತಕ್ಕು, ಮೋಸ. "ಆಕಾರಗೋಪನಾಯಾ-  
ಮಪಟೀಕಾಪ್ಯವಕಟಾಪಿ ಸ್ತ್ರೀ" ವೈಜಂ।

ಅವಕರ ಅವಕರ (ಪುಂ) ಕಸ, ಧೂಳು. ಅವಕೀರ್ಯತೇ -  
ಅವ+ಕ (ವಿಕೋಪೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭)। "ಅವಕರ-  
ನಿಕರಂ ವಿಕಿರತಿ"। "ಅವಕರಶೋಧನೇನ ಗೃಹಂ ಶುಧ್ಯತಿ"।  
ಅವಕರ್ಣನ ಅವಕರ್ಣನ (ನಂ) ಅನಾದರದಿಂದ ಕೇಳು  
ವುದು, ತಿರಸ್ಕಾರ ಬುದ್ಧಿಯಿಂದ ಕೇಳುವುದು. ಅವ+  
ಕರ್ಣ (ಭೇದನೆ)+ ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।  
"ವಾಚಮನುನಯಪರಾಂ ಸ ತತ: ಸಹಸಾವಕರ್ಣ್ಯ ನಿರಿಯಾಯ ಸಂಸದ:"  
ಮಾಘಂ ೧೫-೬೭।

ಅವಕಾಶ ಅವಕಾಶ (ಪುಂ) 1. ಸುಸಮಯ, ಸುಸಂಧಿ,  
ಸುಯೋಗ. ಅವ+ಕಾಶ (ದೀಪ್ತೌ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮)।  
"ತತ್ರ ಮೇ ಸಾಹಾಯ್ಯದಾನಾವಕಾಶ:" ದಶಕುಂ। 2. ಸ್ಥಳ,  
ಜಾಗ. "ಅವಕಾಶಂ ಕಿಲೋದನ್ವಾನ್ ರಾಮಾಯಾಮೃತೋ ದದೌ"  
ರಘುಂ ೪-೫೮. 3. ನೆಲೆ, ಅಶ್ರಯ. "ನ ಸೂಕ್ಷ್ಮತನ್ತೋರಪಿ  
ತಾವಕಸ್ಯ ತತ್ರಾವಕಾಶೋ ಭವತ: ಕಿಮು ಸ್ಯಾತ್" ರತ್ನಾಂ ೨-೧೪।  
4. ಕಾಲದ ಅಂತರ, ಕಾಲದ ಮಧ್ಯಭಾಗ. 5. ಭಿದ್ರ,  
ರಂಧ್ರ, ತೂತು, ಕಂಡಿ.

ಅವಕೀರ್ಣ ಅವಕೀರ್ಣ (ವಿಂ) 1. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರೆ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ+ಕ (ವಿಕೋಪೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।  
"ಕಿಮಪೇತಿ ರಜೋಭಿರೋವೇರವಕೀರ್ಣಸ್ಯ ಮಣೇರ್ಮಹಾರ್ಥತಾ"  
ಮಾಘಂ ೧೬-೨೭. 2. ಎರಚಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ನಾಶಪಡಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಾಳುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಭಂಗಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ತಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೆಳದರ್ಜೆಗೆ ಇಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.



ಅವಕೀರ್ಣಿನ್ ಅವಕೀರ್ಣಿನ್ (ವಿಂ) ಪ್ರತಭಂಗವುಳ್ಳ, ಸ್ತೋಮಗಮಾದಿಗಳಿಂದ ಪ್ರತವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸಿ ಕೊಂಡ. ಅವಕೀರ್ಣಿ ವಿಕ್ಷಿಪ್ತಮನೇ "ಇನಿ:" (೪-೨-೮೮)। "ಮಾಹುತಂ ಪುರುಹುತಂ ಚ ಗುರುಂ ಪಾವಕಮೇವ ಚ। ಚತುರೋ ವ್ರತಿನೋಽಮ್ಯೇತಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ತೇಜೋವಕೀರ್ಣಿನ್:" ಮನುಂ ೧೧-೧೨೧। "ಅವಕೀರ್ಣಿ ತು ಕಾಣೇನ ಗರ್ದಭೇನ ಚತುಷ್ಪಥೇ। ಪಾಕಯಜ್ಞವಿಧಾನೇನ ಮಜೇತ ನಿರ್ವೃತ್ತಿ ನಿಶಿ:" ಮನುಂ ೧೧-೧೧೮।

ಅವಕೃಷ್ಣ ಅವಕೃಷ್ಣ (ವಿಂ) 1. ನಿಶ್ಚಯವಾದ, ಹೀನವಾದ, ಕೆಳದರ್ಜೆಯ. ಅವ+ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಪ್ರತಿಕರ್ತುಂ ಪ್ರಕೃಷ್ಣಸ್ಯ ನಾವಕೃಷ್ಣೇನ ಯುಜ್ಯತೇ" ರಾಮಾಂ। 2. ಎಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊರಕ್ಕೆ ತರಲ್ಪಟ್ಟ. "एकाकिनापि हि मया रभसावकृष्टनिस्त्रिशदीधितिसदाभरभासुरेण" ನಾಗಾಂ। 3. ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಒಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ಥಳಾಂತರ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಕೂಲಿಕಾರ, ಜೀತಗಾರ, ಗುಡಿಸುವುದು ಮುಂತಾದ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು. "पणौ देयोऽवकृष्टस्य षड्कृष्टस्य वेतनम्। षाण्मासिकस्तथा-च्छादो धान्यद्रोणस्तु मासिक:" ಮನುಂ ೭-೧೨೬।

ಅವಕಲ್ಪ ಅವಕಲ್ಪ (ವಿಂ) 1. ನಿಶ್ಚಿತವಾದ, ವ್ಯವಸ್ಥಿತವಾದ, ತೀರ್ಮಾನಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ+ಕಲ್ಪ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಅಧಿಕಾರಿ, ಅರ್ಹ.

ಅವಕಲ್ಪಿ ಅವಕಲ್ಪಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಭವ, ಆಗು ಹೋಗು. 2. ನಿಶ್ಚಯ, ತೀರ್ಮಾನ. 3. ಅಧಿಕಾರ, ಅರ್ಹತೆ. ಅವ+ಕಲ್ಪ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। "अनवकल्पितरसभावना" ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಅವಕೇಶಿನ್ ಅವಕೇಶಿನ್ (ಪುಂ) ಫಲಿಸದ ಗೊಡ್ಡುಮರ, ಆಯಾ ಮತುಗಳಲ್ಲೂ ಫಲಬಿಡದ ಮರ. ಅವ ನಿರ್ಗತಂ ಕಂ ಸುಖಂ ಯಸ್ಮಾತ್ ಅವಕಂ ಫಲಶೂನ್ಯತಾಮೀಷ್ಠೇ - ಅವಕ+ಕೇಶಿ (ಕೇಶವಯೆ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮)। "वन्ध्योऽफलोऽव-केशी च" ಅಮಂ। "निन्द्यते पितृभिस्तप्तैर्निरपत्य-धनः पुमान्। अध्वनीनैरतिश्रान्तेरवकेशीव पादपः" ಚಂ ಭಾಂ।

ಅವಕೋಕಿಲ ಅವಕೋಕಿಲ (ವಿಂ) ಕೋಗಿಲೆಯಿಂದ ಕರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವಕೃಷ್ಣ: ಕೋಕಿಲಯಾ।

ಅವಕ್ತವ್ಯ ಅವಕ್ತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹೇಳಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ. ವಕ್ತು ಯೋಗ್ಯಮ್। ನ ವಕ್ತವ್ಯಮ್। 2. ಮಿಥ್ಯೆಯಾದ, ಸಟಿಯಾದ, ಸುಳ್ಳಾದ. 3. ವರ್ಣಿಸಲಾಗದ, ಹೇಳಲಾಗದ.

ಅವಕ್ರಂದ ಅವಕ್ರಂದ (ಪುಂ) 1. ರೋದನ, ಅಳುವಿಕೆ. ಅವ+ಕ್ರದಿ (ರೋದನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। (ವಿಂ) 2. ಮೆಲ್ಲಗೆ ಅಳುವ. ಅವ+ಕ್ರದಿ "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। -ಕ್ರಂದನಮ್ - ಕ್ರಂದನಮ್.

ಅವಕ್ರಮ ಅವಕ್ರಮ (ಪುಂ) 1. ಇಳಿಕೆ, ಅವರೋಹಣ. 2. ಇಳಿಕೆ, ಕ್ಷೀಣವಾಗುವಿಕೆ, ಕಡಿಮೆಯಾಗುವಿಕೆ. ಅವ+ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)।

ಅವಕ್ರಯ ಅವಕ್ರಯ (ಪುಂ) 1. ಮೂಲ್ಯ, ಬೆಲೆ. ಅವಕ್ರಿಯತೇಜೇನ - ಅವ+ಕ್ರು ಕ್ರೀನ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯ) "ಅಕ್" (೩-೩-೪೬)। "मूल्यं वस्तोऽप्यवक्रयः" ಅಮಂ। 2. ಬಾಡಿಗೆ, ಕೂಲಿ. 3. ಬಾಡಿಗೆಗೆ ಕೊಡುವುದು. "विक्रयावक्रयाधानयाचितेषु पणान् दश" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೨೩೮। 4. ವರ್ತಕರು ಸರ್ಕಾರಕ್ಕೆ ಕೊಡುವ ವ್ಯಾಪಾರ ತೆರಿಗೆ.

ಅವಕ್ಷಯ ಅವಕ್ಷಯ (ಪುಂ) ವಿನಾಶ, ಪ್ರಳಯ, ಧ್ವಂಸ. ಅವ+ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯ) ಭಾವೇ "ಅಕ್" (೩-೩-೪೬)। "लब्धं रक्षेदवक्षयात्" ಹಿತಂ ೨-೮।

ಅವಕ್ಷಿಪ್ತ ಅವಕ್ಷಿಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಸಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ದೂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಅಕ್ಷೇಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ+ಕ್ಷಿಪು (ನಿರಸನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅವಕ್ಷಿಣ ಅವಕ್ಷಿಣ (ವಿಂ) ಕೃಶವಾದ, ಬತ್ತಿಹೋದ, ಸೊರಗಿರುವ. ಅವ+ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)।

ಅವಕ್ಷುತ ಅವಕ್ಷುತ (ವಿಂ) ವೇಲೆ ಸೀನಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ+ಕ್ಷು ಕ್ಷು (ಶಬ್ದ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। ಯಾವ ವಸ್ತುವಿನ ಮೇಲೂ ಸೀನಬಾರದು. ಸೀನಲ್ಪಟ್ಟ ವಸ್ತುವನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸಲಾರದು. "अनचितं वृथामांसमवी-रायाश्च योषितः। द्विषदन्नं नगर्यन्नं पतितान्नमवक्षुतम्" ಮನುಂ ೪-೨೧೩।

ಅವಕ್ಷೇಪ ಅವಕ್ಷೇಪ (ಪುಂ) 1. ದೂಷಣೆ, ನಿಂದೆ. 2. ಅಕ್ಷೇಪಣೆ. 3. ಬೈಗಳು. 4. ಎಸೆಯುವಿಕೆ, ಬಿಸಾಡುವಿಕೆ. ಅವ+ಕ್ಷಿಪು (ನಿರಸನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। -ಕ್ಷೇಪಣಮ್ - ಕ್ಷೇಪಣಮ್. 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಎಸೆಯುವುದು, "उत्क्षेपणं ततोऽवक्षेपणमाकुञ्चनं तथा। प्रसारणं च गमनं कर्मा-प्येतानि पञ्च च" (ಭಾಷಾಪಂ) ಎಂದು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದು ಕರ್ಮಗಳಲ್ಲೊಂದು. (ವಿಂ) 2. ಎಸೆಯುವ ಸಾಧನ, ಕವಣಿ ಮೊದಲಾದುದು. ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೪)। -ಕ್ಷೇಪಣಿ - ಕ್ಷೇಪಣಿ. 3. ಕಳ್ಳಂಗಡಲೆ. 4. ಲಗಾಮು, ಕಡಿವಾಣ.



ಅವಲಂಕಾರ ಅನುಬಂಧನ (ನಂ) ಭಾಗಮಾಡುವುದು.

ಅವ + ಲಂಕ (ಭೇದನೆ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅವಲಾತ ಅನುಬಂಧನ (ನಂ) ಕೋಟಿಯ ಸುತ್ತಲೂ ಮಾಡುವ (ತೋಡುವ) ಆಳವಾದ ಕಂದಕ.

ಅವಲಾತ ಅನುಬಂಧನ (ಪುಂ) ನಿಂದ್ಯವಾದ ಉಟ, ಕೆಟ್ಟ ಆಹಾರ. ಅವಕೃಷ್ಣ: ಸ್ವಾದ:।

ಅವಗಣನ ಅನುಗಣನ (ನಂ) 1. ಅಗೌರವ, ಅನಾದರ, ತಿರಸ್ಕಾರ, ಅವಮರ್ಯಾದೆ. ಅವ + ಗಣ (ಸಂಖ್ಯಾನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ.

ಅವಗಣಿತ ಅನುಗಣಿತ (ವಿಂ) ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ + ಗಣ (ಸಂಖ್ಯಾನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಅವಗಣಿತಮವಮತಾಽವಜಾತೇ ಅವಮಾನಿತಂ ಚ ಪರಿಭೂತೇ" ಅಮಂ।

ಅವಗುಣ ಅನುಗುಣ (ಪುಂ) ಮುಖದ ಮೇಲೆ ಏಳುವ ಬಕ್ಕೆ, ಗಲ್ಲದ ಮೇಲಿನ ಚರ್ಮದ ಒಂದು ಗಂಟು.

ಅವಗತ ಅನುಗತ (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ತಿಳಿದಿರುವ, ಅರಿತಿರುವ. "ತದೇವ ಧ್ಯಾನಾದವಗತೋಽಸ್ಮಿ" ಶಾಕುಂ ೭। 3. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿದಿರುವ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ. ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)।

ಅವಗತಿ ಅನುಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ಜ್ಞಾನ, ಅರಿವು. ಅವ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। 2. ನಿಶ್ಚಯ ಜ್ಞಾನ. "ಬ್ರಹ್ಮಾವಗತಿರ್ಹಿ ಪುರುಷಾರ್ಥ: ; ಬ್ರಹ್ಮಾವಗತಿರ್ಹಿ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾತಾ" ಶಾಂ ಭಾಂ।

ಅವಗಮ ಅನುಗಮ (ಪುಂ) 1. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. 2. ನಿಶ್ಚಯ ಜ್ಞಾನ. ಅವ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾವಗಮಂ ಧರ್ಮ್ಯ ಸುಸುಖಂ ಕರ್ತುಮವ್ಯಯಮ್" ಗೀತಾ ೯-೨। ಭಾವೆ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। -ಗಮನಮ್ -ಗಮನಮ್.

ಅವಗಾಡ ಅನುಗಾಡ (ವಿಂ) 1. ಒಳಕ್ಕೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿರುವ, ಒಳಕ್ಕೆ ಇಳಿದಿರುವ. ಅವ + ಗಾಹ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಅಮೃತತಾ ಪುರಸ್ತಾದವಗಾಡಾ ಜಘನಗೌರವಾತ್" ಶಾಕುಂ ೩-೭। 2. ಮುಳುಗಿರುವ, ನಾಟಿರುವ. 3. ಮುಳುಗಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ನಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. (ನೀರು, ಜಲಾಶಯ.) "ಅವಗಾಡಾ ಚ ಪೀತಾ ಚ (ಗಜ್ಞಾ) ಪುನಾತ್ಯಾಸಪ್ತಮಂ ಕುಲಮ್" ಭಾಂ।

ಅವಗಾಡ ಅನುಗಾಡ (ಪುಂ) ಮರದ ಪೀಪಾಯಿ, ದೋಣಿಯಿಂದ ನೀರನ್ನು ಹೊರಕ್ಕೆ ಚೆಲ್ಲುವ ಒಂದು ಮರದ ಕೊಟ್ಟೆ. ಹಲಾಂ।

ಅವಗಾಹ ಅನುಗಾಹ (ಪುಂ) 1. ಸ್ನಾನ. ಅವ + ಗಾಹ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ಸುಭಗಸಲಿಲಾವಗಾಹಾ: ಪಾಡಲಿಸಂಸರ್ಗಸುರಭಿವನವಾತಾ:" ಶಾಕುಂ ೧-೩। 2. (ನೀರಿನ) ಒಳಕ್ಕೆ ಪ್ರವೇಶ, (ನೀರಿಗೆ) ಇಳಿಯುವುದು, (ನೀರಿನಲ್ಲಿ) ಮುಳುಗುವುದು. "ಜಲಾವಗಾಹಕೃಷ್ಣಮಾತ್ರಶಾಂತಾ" ರಘುಂ ೪-೪೭। 3. ಸ್ನಾನಮಾಡುವ ಸ್ಥಳ. ಅಧಿಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। ಭಾವೆ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। -ಗಾಹನಮ್ -ಗಾಹನಮ್. "ಸಂಭಿನ್ನೇರಿಭತುರಗಾವಗಾಹನೇನ ಪ್ರಾಪ್ಯೋರ್ವೀರನು ಪದವೀ ವಿಮಾನಪಡ್ಕತಿ:" ಕಿರಾಂ ೭-೧೧।

ಅವಗಾಹ್ಯ ಅನುಗಾಹ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಒಳಕ್ಕೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ಸ್ನಾನಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಅವ + ಗಾಹ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೪)। (ಅವ್ಯಂ) 3. ಒಳಕ್ಕೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ, ಒಳಕ್ಕೆ ಇಳಿದು. 4. ಸ್ನಾನಮಾಡಿ. ಅವ + ಗಾಹ "ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭)।

ಅವಗೀತ ಅನುಗೀತ (ನಂ) 1. ಲೋಕಾಪವಾದ. 2. ನಿಂದಾಪರವಾದ ಪದ್ಯ, ದೂಷಣಕಾಮ್ಯ. 3. ಹಾಸ್ಯ, ಗೀಲಿ, ಲೇವಡಿ. ಅವ + ಗೆ (ಶಬ್ದ) "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 4. ನಿಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ದೂಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ + ಗೆ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ವಿಧುರಂ ಕಿಮತ: ಪರಂ ಪರೇವಗೀತಾಂ ಗಮಿತೇ ದಶಾಮಿಮಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೭। 5. ನೀಚ, ದುಷ್ಟ. "ಅವಗೀತಂತು ನಿವಾದಿ ದುಷ್ಟಗಾಹಿತ-ಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ। 6. ಅಪಸ್ವರದಲ್ಲಿ ಹಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 7. ಬಾರಿ ಬಾರಿಗೆ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅವಗೀತಂತು ನಿವಾದಿ ಮಹದಂತೇ ವಿಗಾಹಿತೇ" ವಿಶ್ವಂ।

ಅವಗುಣ ಅನುಗುಣ (ಪುಂ) ಕೆಟ್ಟಗುಣ, ದೋಷ. ಅವಕೃಷ್ಣೋ ಗುಣ:।

ಅವಗುಣನ ಅನುಗುಣನ (ನಂ) 1. ಮುಖಪರದೆ, ಮುಸುಕು, ಬುರುಕೆ, ಮುಖಪಟ್ಟಿ. ಅವ + ಗುಣಿ (ವೇಷ್ಠನೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ಅಪನೇಷ್ಯಾಮಿ ತಾವತ್ತೇ-ವಗುಣನಮ್" ಶಾಕುಂ ೪। 2. ತೆರೆ, ಪರದೆ, ಅಂತರಪಟ್ಟಿ. 3. ಹೆಂಗಸರು ಮುಖಪರದೆ ಹಾಕಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಭಾವೆ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 4. ಧೂಳುಹೊಡೆಯುವ ಪೊರಕೆ, ಕಸಬರಿಕೆ.

ಅವಗುಣಿಕಾ ಅನುಗುಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುಖಪರದೆ, ಮುಖಪಟ್ಟಿ, ಬುರುಕೆ. ಅವ + ಗುಣಿ (ವೇಷ್ಠನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೩)। "ಠಾಪ್" (೪-೧-೪)। 2. ತೆರೆ, ಪರದೆ. "ವಿರಿಕ್ಷಿಣ್ಯವಗುಣಿಕಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।



ಅವಗುಣಿತ ಅವಗುಣಿತ(ವಿಂ) 1. ಮುಸುಕುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಖಪರದೆ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ+ಗುಣಿ (ವೇಷಣೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। 2. ಪುಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೂರ್ಣ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅವಗ್ರಹ ಅವಗ್ರಹ (ಪುಂ) 1. ಅನಾವೃಷ್ಟಿ, ಮಳೆಯಿಲ್ಲ ದಿರುವಿಕೆ, ಬರ. ಅವ+ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) "ಅಪ್" (3-2-46)। "ತಪ:ಕೃಶಾಮ್ಯುಪಪತ್ಯಸೇ ಸಖಿ ವೃಷೇವ ಸೀತಾ ತದವಗ್ರಹಕತಾಮ್" ಕುಮಾಂ 4-61। "ವೃಷ್ಟಿರ್ಭವತಿ ಸಸ್ಯಾನಾಮವಗ್ರಹವಿಶೋಷಣಾಮ್" ರಘುಂ 1-62। 2. ಪದ ಗಳಿಗೆ ಸಂಧಿಯಿಲ್ಲದೆ ಬಿಡಿಸಿ ಹೇಳುವುದು. 3. ಅಂಕೆ, ಆತಂಕ, ನಿರ್ಬಂಧ, ಅಡ್ಡಿ, ಅಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ. 4. ನಿಗ್ರಹ, ಶಿಕ್ಷೆ. "ಸ್ವಯಂ ವಿಧಾತಾ ಸುರದೇವರಕ್ಷಸಾ-ಮನುಗ್ರಹಾವಗ್ರಹಯೋರ್ದೃಷ್ಟಯಾ" ಮಾಘಂ 1-31। 5. ಸಂಧಿ ಕಾರ್ಯದಿಂದ ವರ್ಣಲೋಪವುಂಟಾದಾಗ ಉ ಮತ್ತು ಓ ಕಾರಗಳ ಮುಂದೆ ಅ ಕಾರಕ್ಕೆ ಬದಲಾಗಿ ಉಪ ಯೋಗಿಸುವ 's' ಚಿಹ್ನೆ. 6. ಆನೆಯ ಹಣೆ. "ಅವಗ್ರಹೋ ವೃಷ್ಟಿರೋಧೇ ಪ್ರತಿಬಂಧೇ ಗಜಾಲಿಕೇ" ಮೇದಿಂ। 7. ಪ್ರಕೃತಿ, ಸ್ವಭಾವದಿಂದಿರುವಿಕೆ, ಬದಲಾವಣೆಹೊಂದದಿರುವಿಕೆ. "ಅವಗ್ರಹ: ಸ್ಯಾತ್ಪ್ರಕೃತಿಭಾವವೃಷ್ಟಿವಿಬಂಧಯೋ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 8. ಆನೆಗಳ ಗುಂಪು. 9. ಒಂದು ವಿಧವಾದ ತಪ್ಪು ತಿಳಿವಳಿಕೆ. "ಅವಗ್ರಹೋ ಜ್ಞಾನಭೇದೇ ಹೃದ್ವಾತನ್ಯೇ ಗಜಾಲಿಕೇ" ಹೇಮಂ। 10. ಆನೆಯನ್ನು ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡುವ ಅಂಕುಶ. ಅವಗೃಹ್ಯತೇಜೇನ - ಅವ+ಗ್ರಹ ಕರಂ "ಘ್" (3-2-121)।

ಅವಗ್ರಹಣ ಅವಗ್ರಹಣ (ನಂ) 1. ಪ್ರತಿಬಂಧಕ, ತಡೆ, ಅಡ್ಡಿ. 2. ಅನಾದರ, ತಿರಸ್ಕಾರ. ಅವ+ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-2-114)। "ಅವಗ್ರಹಣಮಿತ್ಯೇತತ್ ಪ್ರತಿರೋಧೇಷ್ಯನಾದರೇ" ಮೇದಿಂ।

ಅವಗ್ರಾಹ ಅವಗ್ರಾಹ (ಪುಂ) ಅನಾವೃಷ್ಟಿ, ಮಳೆಯಿಲ್ಲ ದಿರುವಿಕೆ, ಬರ. ಅವ+ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) ವಾ "ಘ್" (3-2-41)। ದೇವಸ್ಯ ಅವಗ್ರಹ: ಅವಗ್ರಾಹ:। ದೇವಕರ್ತೃಕ-ಮವರ್ಷಣಮಿತ್ಯರ್ಥ:। ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಅವಘಟ ಅವಘಟ (ಪುಂ) 1. ರಂಧ್ರ, ಬಿಲ್. 2. ಬೀಸುವ ಕಲ್ಲು, ಅಕ್ಕಿ ರಾಗಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಬೀಸಿ ಹಿಟ್ಟು ಮಾಡುವ ಕಲ್ಲು. ಅವ+ಘಟ (ಚಲನೆ) ಕರಂ ಅಧಿಂ ವಾ "ಘ್" (3-2-121)। "ಅವಘಟಾವಟೌ ತುಲ್ಯೌ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಅವಘಟನ ಅವಘಟನ (ನಂ) 1. ಬೀಸುವಿಕೆ, ಅಕ್ಕಿ ರಾಗಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಬೀಸಿ ಹಿಟ್ಟುಮಾಡುವಿಕೆ.

ಅವ+ಘಟ (ಚಲನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-2-114)। 2. ಧಾನ್ಯ ವನ್ನು ಕುಟ್ಟುವುದು.

ಅವಘಟಿತ ಅವಘಟಿತ (ವಿಂ) 1. ಬೀಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಟ್ಟು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪುಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ+ಘಟ (ಚಲನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। 2. ಗಟ್ಟಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ದಮ್ಮಸುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಅನ್ನದ ಗಂಜಿಯಿಂದ ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ (ಬಟ್ಟಿ). "ಸ್ವತ: ಶುಢ: ಪಟೌ ಧೌತೋಽಗ್ನಿಪ್ತೋಽವಘಟಿತ:" ಪञ्चದಶಿ।

ಅವಘಾತ ಅವಘಾತ (ಪುಂ) 1. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಕುಟ್ಟಿ ವುದು. 2. ಹೊಡೆಯುವಿಕೆ. 3. ಅನಾಹುತ, ಅಕಸ್ಮಿಕ. ಅವ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:) "ಘ್" (3-2-114)।

ಅವಘುಷಿತ ಅವಘುಷಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಾರಲ್ಪಟ್ಟ, ಡಂಗೂರ ಹೊಡೆದು ಪ್ರಸಿದ್ಧಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡ ಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ+ಘುಷಿರ್ (ವಿಶಬ್ದನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

ಅವಘುಷ್ಣ ಅವಘುಷ್ಣ (ವಿಂ) ಹೊಸೆದು ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ+ಘುಷಿರ್ (ಅವಿಶಬ್ದನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। ಅವಘುಷ್ಣಾ ರಜ್ಜು:।

ಅವಘ್ಣಾನ ಅವಘ್ಣಾನ (ನಂ) ಸುತ್ತಲೂ ತಿರುಗು ವುದು. ಅವ+ಘ್ಣಂ (ಭ್ರಮಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-2-114)।

ಅವಘ್ಣಯತ್ ಅವಘ್ಣಯತ್ (ವಿಂ) ಸುತ್ತಲೂ ತಿರುಗಿಸುವ. ಅವ+ಘ್ಣಂ (ಭ್ರಮಣೆ) "ಶತ್" (3-2-124)।

ಅವಘೋಷಣ ಅವಘೋಷಣ (ನಂ) ಡಂಗೂರ ಹೊಡೆಯು ವುದು, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಸಾರಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವುದು. ಅವ+ಘುಷಿರ್ (ವಿಶಬ್ದನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-2-114)। ಅವ+ಘುಷಿರ್+ಣಿಕ್ "ಯುಕ್" (3-2-103)। -ಘೋಷಣಾ -ಘೋಷಣಾ.

ಅವಚನ ಅವಚನ (ನಂ) 1. ನಂದೆ, ದೂಷಣೆ. 2. ಮೌನ, ಮಾತಾಡದಿರುವಿಕೆ. ನಂ ತಂ। (ವಿಂ) 3. ಮಾತಾಡ ದಿರುವ, ಮೌನದಿಂದಿರುವ. ನ ವಾಚಯತಿ - ವಚ (ಪರಿ-ಭಾಷಣೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯು:" (3-1-134)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಅವಚನಾ ಅವಚನಾ. "ಪಾರ್ವತೀಮವಚನಾಮಸೂಯಯಾ ಪ್ರತ್ಯುಪೇತ್ಯ ಪುನರಾಹ ಸಸ್ಮಿತಮ್" ಕುಮಾಂ 4-50।

ಅವಚನೀಯ ಅವಚನೀಯ (ವಿಂ) ಅವಾಚ್ಯವಾದ, ಹೇಳಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ, ಅಶ್ಲೀಲವಾದ. ನ ವಚನೀಯಮ್। "ಸಮವರ್ಣಂ ದ್ವಿಜಾತೀನಾಂ ದ್ವಾದಶೈವ ವ್ಯತಿಕರ್ಮೇ। ವಾದೇಷ್ವ-ವಚನೀಯೇಷು ತದೇವ ದ್ವಿಗುಣಂ ಭವೇತ್" ಮನುಂ 4-269।

ಅವಚಯ ಅವಚಯ (ಪುಂ) (ಕಳ್ಳತನದಿಂದ) ಹಣ್ಣು ಹೂವು ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಕೇಳುವುದು, ಬಿಡಿಸು



ವುದು, ಕೊಯ್ಯುವುದು. ಅವ+ಚಿನ್ (ಚಯನೆ) "ಅಚ್" (೩-೩-೪೬)। "ಅವಚಯಪರಿಭೋಗವಂತಿ ಹಿಸ್ತಃ ಸಹಚರಿತಾನ್ಯ-ಮೃಗಾಣಿ ಕಾನನಾನಿ" ಕಿರಾಂ ೧೦-೪।

ಅವಚಾಯ ಅವಚಾಯ (ಪುಂ) ಕೈಯಿಂದ ಹೂವು ಹಣ್ಣು ಮುಂತಾದುವನ್ನು ಕೀಳುವುದು. ಅವ+ಚಿನ್ (ಚಯನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೪೦)। ಪುಷ್ಪಾವಚಾಯಃ, ಫಲಾವಚಾಯಃ। "ಅವಿರತಕ್ರುಮಾವಚಾಯಸೇದಾನ್ರಿಹಿತಭುಜಾಲತಯೈಕಯೋಪಕಂಠಮ್" ಮಾಘಂ ೭-೭೧।

ಅವಚಾರ ಅವಚಾರ (ಪುಂ) 1. ಅವರೋಹಣ ಸ್ಥಳ, ಇಳಿಯುವ ಜಾಗ. (ವಿಂ) 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯುವ, ಕೆಳಮುಖವಾಗಿ ಹೋಗುವ. ಅವ+ಚರ (ಗತೌ) "ಘ್"।

ಅವಚಾರಣ ಅವಚಾರಣ (ನಂ) 1. ಚಲಿಸುವಿಕೆ, ನಡೆಯುವಂತೆ ಮಾಡುವಿಕೆ. ಅವ+ಚರ (ಗತೌ)+ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಉಪ್ಪನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ ಒಂದು ವಿಧಾನ.

ಅವಚಿಕಿ (ಚಿ) ಷಾ ಅವಚಿಕೀ (ಚೀ) ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೈಯಿಂದ ಬಿಡಿಸಲು ಇಚ್ಛೆ, -ಕೊಯ್ಯಲು ಆಸೆ. ಅವಚೇತುಮಿಚ್ಛಾ - ಅವ+ಚಿನ್ (ಚಯನೆ)+ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨)।

ಅವಚಿಕಿ (ಚಿ) ಷು ಅವಚಿಕೀ (ಚೀ) ಷು (ವಿಂ) ಕೈಯಿಂದ ಬಿಡಿಸಲು ಇಚ್ಛೆಯುಳ್ಳ, ಕೊಯ್ಯಲು ಆಸೆಯುಳ್ಳ. ಅವ+ಚಿನ್ (ಚಯನೆ)+ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮)।

ಅವಚಿತ ಅವಚಿತ (ವಿಂ) ಕೈಯಿಂದ ಬಿಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ+ಚಿನ್ (ಚಯನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಅವಚಿತ-ಬಲಿಪುಷ್ಪಾ ವೇದಿಸಮಾಗದಕ್ಷಾ ನಿಯಮವಿಧಿಜಲಾನಾಂ ಬಹಿಷಾಂ ಚೋಪನೆತ್ರಿ" ಕುಮಾಂ ೧-೬೦।

ಅವಚೂಡ (ಲ) ಅವಚೂಡ (ಲ) (ಪುಂ) 1. ಧ್ವಜದ ವಸ್ತ್ರ, ರಥದ ಮೇಲೆ ತೂಗಾಡುವ ಬಟ್ಟೆ. ಅವನತಾ ಚೂಡಾ ಅಗ್ರಂ ಯಸ್ಯ। ಡಸ್ಯ ವಾ ಲಃ। "ವಿಭ್ರಾಣಯಾ ಬಹಲ-ಯಾವಕಪಿಚ್ಛಾಪಿಚ್ಛಾವಚೂಡಮನುಮಾಧವಧಾಮ ಜಗ್ಮುಃ" ಮಾಘಂ ೪-೧೩। 2. ಧ್ವಜದ ಕೆಳಗೆ ಜೋಲಾಡುತ್ತಿರುವ ಚಾಮರ ಮುಂತಾದುದು. "ಅವಾಪ ಬಾಲಯೋಚಿತನೀಲಕಂಠ-ಪಿಚ್ಛಾವಚೂಡಾಕಲನಾಮಿವೋರಃ" ಮಾಘಂ ೩-೪।

ಅವಚೂರ್ಣನ ಅವಚೂರ್ಣನ (ನಂ) 1. ಪುಡಿಮಾಡುವಿಕೆ, ಅರೆಯುವುದು. 2. ಗಾಯದ ಮೇಲೆ ಔಷಧದ ಪುಡಿಯನ್ನು ತೂರಿ ಗಾಯವನ್ನು ಒಣಗಿಸುವಿಕೆ. ಅವ+ಚೂರ್ಣ (ಸಂಕೋಚೇ)+ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।

ಅವಚೂರ್ಣಿತ ಅವಚೂರ್ಣಿತ (ವಿಂ) ಅರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಪುಡಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ+ಚೂರ್ಣ (ಸಂಕೋಚೇ)+ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅವಚೂಲಕ ಅವಚೂಲಕ (ನಂ) 1. ಚಾಮರ. "ಚಾಮರಂ ರೋಮಗುತ್ಸಂ ಚ ಕೇಶರಂ ಚಾವಚೂಲಕಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 2. ನವಿಲು ಗರಿಯಿಂದ ತಯಾರಿಸಿದ ಬೀಸಣಿಗೆ.

ಅವಚ್ಛಿನ್ನ ಅವಚ್ಛಿನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೇರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಂಗಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ+ಚ್ಛಿಡ್ (ವಿಚ್ಛಿಂ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಉಪಾಧಿ (ಆಶ್ರಯಭೇದ)ಗಳಿಂದ ಭೇದ ತೋರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಶೇಷ ಗುಣಗಳಿಂದ ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಘಟಾಕಾಶ ಮತ್ತು ಮಠಾಕಾಶಗಳಲ್ಲಿ ಆಕಾಶವೊಂದೇ ಇದ್ದರೂ ಘಟ ಮಠ ರೂಪವಾದ ಉಪಾಧಿಗಳು ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾದುದರಿಂದ ಘಟಾವಚ್ಛಿನ್ನ ಆಕಾಶ ಮತ್ತು ಮಠಾವಚ್ಛಿನ್ನ ಆಕಾಶಗಳು ಬೇರೆ ಬೇರೆಯೆಂದು ವ್ಯವಹರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತವೆ. "ಅವಚ್ಛಿನ್ನಸ್ಯ ಭಿನ್ನಸ್ಯ ಜರಾಮರಣ-ಧರ್ಮಿಣಃ। ಮಮ ಬ್ರವೀತಿ ದೇವೀಯಂ ಸತ್ಯಾನಂದವಿದಾತ್ಮತಾಮ್" ಪ್ರಬೋಧಂ ೬-೨೬। 3. ನಿರ್ಣಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಇಷ್ಟೆಂದು ತೀರ್ಮಾನಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅವಚ್ಛುರಿತ ಅವಚ್ಛುರಿತ (ನಂ) 1. ಅಟ್ಟಿಹಾಸ. ಅವ+ಚ್ಛುರ (ಚ್ಛೇದನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಬೆರಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅವಚ್ಛೇದ ಅವಚ್ಛೇದ (ಪುಂ) 1. ನಿರ್ಣಯ, ನಿಶ್ಚಯ. 2. ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ. 3. ವ್ಯಾಪ್ತಿ. 4. ಇಷ್ಟೆಂದು ಮಿತಿಗೊಳಿಸುವಿಕೆ. ಅವ+ಚ್ಛಿಡ್ (ವಿಚ್ಛಿಂ) ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। 5. ಅವಯವ, ಏಕದೇಶ. ಅವ+ಚ್ಛಿಡ್ ಕರಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। ಒಂದು ವಸ್ತುವು ಒಂದೇ ಅಧಿಕರಣದಲ್ಲಿ ಏಕದೇಶದಲ್ಲಿದ್ದು ಮತ್ತೊಂದು ಪ್ರದೇಶ(ಅವಯವ)ದಲ್ಲಿದ್ದಿದ್ದರೆ ಅದು ಅವ್ಯಾಪ್ಯವೃತ್ತಿಯಾಗುವುದು. ಅಂತಹ ಅವ್ಯಾಪ್ಯ ವೃತ್ತಿತ್ವವನ್ನು ಉಪಪಾದಿಸಲು ಸಹಕಾರಿಯಾದುದು ಅವಯವ. "ಅಗ್ರೇ ವೃಕ್ಷಃ ಕಪಿಸಂಯೋಗಿ ನ ಮೂಲೇ" ವೃಕ್ಷದ ತುದಿಯಲ್ಲಿ ಕಪಿಸಂಯೋಗವಿದ್ದು ಮೂಲ (ಬುಡ)ದಲ್ಲಿದ್ದವೆಂಬ ಅವ್ಯಾಪ್ಯವೃತ್ತಿತ್ವವನ್ನು ಉಪಪಾದಿಸಲು ಸಹಕಾರಿಯಾದ ಅವಯವ (ಅಗ್ರ)ವು ಅವಚ್ಛೇದವೆನಿಸಲ್ಪಡುವುದು.

ಅವಚ್ಛೇದಕ ಅವಚ್ಛೇದಕ (ವಿಂ) ಅವ್ಯಾಪ್ಯವೃತ್ತಿತ್ವ ನಿಯಾಮಕಃ—ಒಂದು ಅಧಿಕರಣದಲ್ಲಿ ತಾನಿರುವ



ಏಕದೇಶವು ತನಗೆ ಅವಚ್ಛೇದಕವೆನಿಸುವುದು. "ಅಶ್ವೇ  
• ವೃಕ್ಷ: ಕಪಿಸಂಯೋಗಿ ನ ಮೂಲೇ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಒಂದು ಮರದಲ್ಲಿ  
ಕಪಿಸಂಯೋಗವಿರುವ ಅಗ್ರಭಾಗವು ಕಪಿಸಂಯೋ  
ಗಕ್ಕೂ, ಕಪಿಸಂಯೋಗಾಭಾವವಿರುವ ಮೂಲವು  
(ಬುಡವು) ಕಪಿಸಂಯೋಗಾಭಾವಕ್ಕೂ ಅವಚ್ಛೇದಕ  
ವಾಗುವುದು.

ಅವಚ್ಛೇದ ಅವಚ್ಛೇದ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ. 2. ನಿಶ್ಚಯಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ, ಗೊತ್ತು  
ಮಾಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಅವ + ಛಿದ್ರಿ (ಛೇದನಾರ್ಥಕ)  
"ಞ್" (3-3-169). 2. "ಅವಚ್ಛಿನ್ನ" ಪದದ  
ಅರ್ಥ. ಅವ + ಛಿದ್ರಿ "ಞ್" (3-1-124).

ಅವಜಯ ಅವಜಯ (ಪುಂ) ಪರಾಜಯ, ಸೋಲು.  
ಅವ + ಜಿ (ಜಯೇ) "ಅಜ್" (3-3-46). "ಅಸ್ತ್ರಂ  
ಹರಾಧಾಪ್ತವತಾ ದುರಾಪಂ ಯೇನೇಂದ್ರಲೋಕಾವಜಯಾಯ ದೃಪ್ತ:" ರಘುಂ  
6-62.

ಅವಜಿತಿ ಅವಜಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಜಯ, ಸೋಲಿಸುವಿಕೆ,  
ಪರಾಜಯಹೊಂದಿಸುವಿಕೆ. ಅವ + ಜಿ (ಜಯೇ) "ತಿನ್"  
(3-3-94). "ಹೃತವೀತರಾಗಮನಸಾಂ ನನು ವ: ಸುಖಸಜ್ಜಿನಂ  
ಪ್ರತಿ ಸುಖಾವಜಿತಿ:" ಕಿರಾಂ 6-43.

ಅವಜ್ಞಾ ಅವಜ್ಞಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನಾದರ, ತಿರಸ್ಕಾರ,  
ಅಪಮಾನ. ಅವ + ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಅಜ್"  
(3-3-106). "ಅವಜ್ಞಯಾ ಯದಹಸದ್ವಚ್ಛಕೇವಲ: ಸಮುಲ್ಲಸ-  
ದೃಶನಮಯುಕ್ತಮಂಡಲ:" ಮಾಧಂ 10-4.

ಅವಜ್ಞಾತ ಅವಜ್ಞಾತ (ವಿಂ) 1. ಉದಾಸೀನತೆಯಿಂದ  
ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಅಪಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಗೌರವ  
ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ + ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ್ತ:"  
(3-2-102). "ಆಸಸಾದ ಹರೇ: ಸ್ಥಾನಮವಜ್ಞಾತಶಿ-  
ವಿಷ್ಠಪಮ್" ಯಾದಂ 16-21.

ಅವಜ್ಞಾನ ಅವಜ್ಞಾನ (ನಂ) 1. ತಿರಸ್ಕಾರ, ಅನಾದರ.  
2. ಅಪಮಾನ, ಅಗೌರವ. ಅವ + ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ)  
"ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). "ಇಹಿಸಿತಂ ತದವಜ್ಞಾನಾಢಿಢಿ  
ಸಾರ್ಗಲಮಾತ್ಮನ:" ರಘುಂ 1-71.

ಅವಟ ಅವಟ (ಪುಂ) 1. ಗರ್ಜ, ಹಳ್ಳ, ಗುಂಡಿ, ಗುಳಿ.  
ಅವ (ರಕ್ಷಣಾದೌ) "ಅಟ್" (3-4-41). "ರಕ್ಷಸಾಂ  
ಗತಸತ್ವಾನಾಮೇಷ ಧರ್ಮ: ಸನಾತನ: ಅವಟೇ ಯೇ ನಿಧಿಯಂತೇ  
ತೇಷಾಂ ಲೋಕಾ: ಸನಾತನಾ:" ರಾಮಾಂ. 2. ಬಿಳಿ, ಗುಹೆ.  
3. ಕೂಪ, ಬಾವಿ. 4. ಶರೀರದ ತಗ್ಗಾದ ಭಾಗ;  
ಕಣ್ಣು, ಕಂಠಮೂಲ ಮುಂತಾದುದು. "ಅವಟಶ್ಚೈವ-

ಮೇತಾನಿ ಸ್ಥಾನಾನ್ಯತ್ರ ಶರೀರಕೇ" ಯಾಜ್ಞಂ 3-98. 5. ಬಂದ್ರ  
ಜಾಲಿಕ, ಗಾರುಡಿಗಾರ, ಕಣ್ಣು ಕಟ್ಟು ಮಾಡು  
ವವನು. "ಅವಟ: ಕೂಪಖಲಯೋಗತೇ ಕುಹಕಜೀವಿನಿ" ಹೇಮಂ.  
6. ಹಕ್ಕಿಯಮರಿ. "ಪಕ್ಷಿಪೋತಸ್ತು ಫಿಲ್ಲಾಕಶ್ಚಂಪುಕ:  
ಫಿಲ್ಲಾಕಾವಟಿ" ವೇಜಂ. 7. ಇವೃತ್ತನಾಲ್ಕು ಅಂಗುಲ  
ಗಳು. "ಕಿಂಕು: ಸ್ಯಾದವಟಿ ಹಸ್ತ: ಚತುರ್ವಿಂಶತಿರಂಗುಲಾ:  
ವೇಜಂ. 8. ನಾಯಕ, ಕಾಗೆ. 9. ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳಿ.  
10. ಬೇವಿನಮರ. (ವಿಂ) 11. ದುರ್ಜನ. "ಕಾಕೇ  
ನಿಮ್ಬೇ ಚ ಲಶುನೇ ಗತೇ ಕೂಪೇ ಖಲೇವಟ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.  
12. ಕ್ಷೀಣವಾದ, ದುರ್ಬಲವಾದ. "ಅವಟ: ಸ್ಯಾತ್ಸಿಖಲೇ  
ಗತೇ ಕೂಪೇ ಕುಹಕಜೀವಿನಿ" ಮೇದಿಂ.

ಅವಟಿ ಅವಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗರ್ಜ, ಹಳ್ಳ, ಗುಳಿ, ಗುಂಡಿ.  
2. ಕೂಪ, ಬಾವಿ. 3. ರಂಧ್ರ, ಸಂದು, ಬಿರುಕು.  
ಅವಟಿ ಅವಟಿ (ವಿಂ) ಬಗ್ಗಿದಮೂಗುಳ್ಳಿ. ಅವನಂತ  
ನಾಸಿಕಾಯಾ: "ಟಿಟ್" (4-2-31). ಅವಟಿಟ್.  
ತದ್ವುಕ್ತಾಪ್ಯವಟಿಟಾ (ನಾಸಿಕಾ). ಸಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಜ್"  
(4-2-127). "ಅವಟಿಟೋವನಾಡಶ್ಚಾವಭಟಿ ನತನಾಸಿಕೇ"  
ಅಮಂ.

ಅವಟು ಅವಟು (ಪುಂ) 1. ಹಳ್ಳ, ಗುಳಿ. 2. ಬಾವಿ.  
ಅವಟಿಕತೇ—ಅವ + ಟಿಕ್ (ಗತೌ) "ಡು:" (ವಾಂ 3-2-180).  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಕುತ್ತಿಗೆಯ ಹಿಂಭಾಗ. "ಅವಟು: ಕಥಿತೌ  
ಘಾಟಾಕೂಪಗತೇಷು ಸೂರಿಮಿ:" ವಿಶ್ವಂ. (ವಿಂ) 4. ವಟು  
ವಲ್ಲದ, ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಯಲ್ಲದ. ನ ವಟು.

ಅವತಂಸ ಅವತಂಸ (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಣಭರಣ, ಕಿವಿಯಲ್ಲಿ  
ಧರಿಸುವ ಒಡವೆ. ಅವತಂಸಯತೇಜೇನ — ಅವ + ತಸಿ  
(ಅಲಂಕಾರೇ) "ಘನ್" (3-3-121). "ಯವಾಕ್ಷುರಾಪಾಂಡು-  
ಕಪೋಲಶೋಭಿ ಮಯಾವತಂಸ: ಪರಿಕಲ್ಪಿತಸ್ತೇ" ರಘುಂ 13-49.  
2. ಶಿರೋಭೂಷಣ, ತಲೆಯಲ್ಲಿ ಧರಿಸುವ ಆಭರಣ.  
"ಗಣಾ ನಮೇರಪ್ರಸವಾವತಂಸಾ ಭೂರ್ಜತ್ವಚ: ಸ್ಪರ್ಶವತೀರ್ದಧಾನಾ:"  
ಕುಮಾಂ 1-44. 3. ಆಭರಣ, ಒಡವೆ, ಭೂಷಣ.  
"ಲವಣ್ಣಮಾಲಾಕಲಿತಾವತಂಸಾಸ್ತೇ ನಾರಿಕೇಲಾಂತರಪ: ಪಿಬಂತ:"  
ಮಾಧಂ 3-41. "ಯಶಾವತಂಸಾಮುಭಯತ್ರ ಭೂತಿಮ್" ಕಿರಾಂ  
3-11. ಅವತಂಸಯತಿ — ಅವ + ತಸಿ + ಣಿಚ್ "ಞ್" (3-1-133).  
—ತಂಸಕ — ತಂಸಕ. "ಕಪೋಲಸಂಶ್ಲೇಷಿ  
ವಿಲೋಚನತ್ವಿಷಾ ವಿಭೂಷಯಂತೀಮವತಂಸಕೋತ್ಪಲಮ್" ಕಿರಾಂ 4-9.

ಅವತಂಸಿತ ಅವತಂಸಿತ (ವಿಂ) ಭೂಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ + ತಸಿ (ಅಲಂಕಾರೇ) "ಕ್ತ:"  
(3-2-102).



ಅವತತ ಅವತತ (ವಿಂ) ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಹಬ್ಬಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಪಸರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಅವ + ತನು (ವಿಸ್ತಾರೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಲತಾಶತೇರವತತಾಮ್" ರಾಮಾಂ.

ಅವತತಿ ಅವತತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಬ್ಬುವಿಕೆ, ಹರಡುವಿಕೆ. ಅವ + ತನು (ವಿಸ್ತಾರೇ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94). "ಪ್ರಾಲೇಯತತಿಮ್ಲಾನಪಲಾಶಾಂಜ ಇವ ಹೃದ:" ಕಿರಾಂ 11-4.

ಅವತಮಸ ಅವತಮಸ (ನಂ) 1. ಕಿರುಗತ್ತಲೆ. ಅವಕ್ಷಿಣ್ ತಮ: "ಅಚ್" (4-4-69). 2. ಕತ್ತಲೆ, ಅಂಧಕಾರ. "ಅವತಮಸಭಿದಾಯೆ ಭಾಸ್ವತಾಮ್ಯುದ್ರತೇನ ಪ್ರಸಭಮುಗುಣೋಪ್ತೋ ದರ್ಶನೀಯೋಪ್ಯಪಾಸ್ತ:" ಮಾಧಂ 11-56. 3. ಮಬ್ಬು, ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿರುವಿಕೆ.

ಅವತರ ಅವತರ (ಪುಂ) 1. ಇಳಿಯುವಿಕೆ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬರುವಿಕೆ. 2. ಪ್ರವೇಶ. ಅವ + ತ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) "ಅಪ್" (3-3-56). "ಭಯಸ್ಯ ಪೂರ್ವತರಸ್ತರಸ್ವಿನಾ ಮನಸ್ಸು ಯೇನ ದೃಸದಾಂ ನ್ಯಥೀಯತ" ಮಾಧಂ 1-43.

ಅವತರಣ ಅವತರಣ (ನಂ) 1. ಇಳಿಯುವಿಕೆ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬರುವಿಕೆ. 2. ಬೇರೆ ರೂಪವನ್ನು ಹೊಂದಿ ಬರುವಿಕೆ. 3. ತೀರಪ್ರದೇಶದಿಂದ ನೀರಿನೊಳಕ್ಕೆ ಇಳಿದುಬರುವಿಕೆ. ಅವ + ತ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 4. ಇಳಿಯುವ ಸೋಪಾನ, ಮೆಟ್ಟಿಲು. ಅವತೀಯತೇಜೇನ-ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-116). 5. ಲೋಕರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ದೇವತೆಗಳು ತಮ್ಮ ಅಂಶದಿಂದ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವುದು. 6. ಅವತರಣಿಕೆ, ಪೀಠಿಕೆ, ಉಪೋದ್ಘಾತ.

ಅವತರಣಿ ಅವತರಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಸ್ತಾವನೆ, ಉಪೋದ್ಘಾತ, ಪೀಠಿಕೆ. ಅವತೀಯತೇ ಗ್ರಂಥೋಜಯಾ - ಅವ + ತ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-116). "ಡೀಪ್" (4-1-14). ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕ್ನ್" -ತರಣಿಕಾ -ತರಣಿಕಾ. 2. ಪರಿವಿಡಿ, ರೀತಿ, ಅನುಕ್ರಮ.

ಅವತಾನ ಅವತಾನ (ಪುಂ) 1. ಲತೆಗಳ ಹೆಂಟು. 2. ಕೆಳಮುಖ. 3. ಸಂತಾನ, ಪರಂಪರೆ. ಅವ + ತನು (ವಿಸ್ತಾರೇ) "ಘಜ್" (3-3-121). "ಲತಾಶತೇರವತತಾಮವತಾನಶತೇಸ್ತಥಾ" ರಾಮಾಂ.

ಅವತಾರ ಅವತಾರ (ಪುಂ) 1. ಇಳಿಯುವಿಕೆ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬರುವಿಕೆ. 2. ರೂಪಾಂತರ ಹೊಂದಿ ಬರುವಿಕೆ. ಅವ + ತ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) "ಘಜ್" (3-3-120). "ಧರ್ಮಾ-ಕಾಮಮೋಕ್ಷಾಣಾಮವತಾರ ಇವಾಙ್ಗವಾನ್" ರಘುಂ 10-64. 3. ದೇವತೆಗಳು ಲೋಕರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ತಮ್ಮ ಅಂಶದಿಂದ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವುದು, ವಿಷ್ಣುವಿನ ಮತ್ಸ್ಯಾಭಾವ

ತಾರ. "ಮತ್ಸ್ಯ: ಕೂರ್ಮೋ ವರಾಹಶ್ಚ ನಾರಸಿಂಹೋಽಪಿ ವಾಮನ: | ರಾಮೋ ರಾಮಶ್ಚ ಕೃಷ್ಣಶ್ಚ ಬುದ್ಧ: ಕಲ್ಕೀ ಚ ತೇ ದಶ" | 4. ಇಳಿಯುವ ಸ್ಥಳ, ನದಿಗೆ ಇಳಿಯುವ ಮಾರ್ಗ, ಸೋಪಾನ. "ಹೃದೇ ಗಜೇನ ಸರಿತ: ಸರಪಾವತಾರೇ ರಿಕೋದಪಾತ್ರಕರಮಾಸ್ತ ಚಿರಂ ಜನೋಃ:" ಮಾಧಂ 4-33. 5. ಭಾಷಾಂತರ ಪರಿವರ್ತನೆ. 6. ಪ್ರಸ್ತಾವನೆ, ಪೀಠಿಕೆ. 7. ಪುಣ್ಯತೀರ್ಥ, ಪವಿತ್ರವಾದ ನದಿ (ಮುಂತಾದುದು). "ಅವತಾರೋಽವತರಣೋ ಪುಷ್ಕರಿಣ್ಯಾದಿತೀರ್ಥಯೋ:" ಮೇದಿಂ.

ಅವತಾರಕ ಅವತಾರಕ (ವಿಂ) ಇಳಿಸುವ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಕರೆತರುವ. ಅವ + ತ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) "ಫ್ಲುಲ್" (3-1-133). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ತಾರಿಕಾ -ತಾರಿಕಾ.

ಅವತಾರಣ ಅವತಾರಣ (ನಂ) 1. ಮೇಲಿನಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಸುವಿಕೆ, ಗಾಡಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಇಳಿಸುವಿಕೆ. ಅವ + ತ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). "ಕ್ರಿಯತಾಂ ಯದಿ ಶಕ್ನೋಪಿ ಗಜ್ಜಾಯಾ ಅವತಾರಣಮ್" ರಾಮಾಂ. 2. ಭೂತಗಳು ಕಾಣಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು, ಭೂತಗಳನ್ನು ಹಿಡಿಯುವಿಕೆ. 3. ಗ್ರಂಥದ ಪೀಠಿಕೆ, ಪ್ರಸ್ತಾವನೆ. 4. ಪೂಜೆ, ಭಜನೆ, ಅರ್ಚನೆ. 5. ಬಟ್ಟೆಯ ಸೆರಗು. "ಅಥಾವತಾರಣೇ ವಸ್ತ್ರಾಂಚಲಾರ್ಚನೇ ಭೂತಾವೇಶೇ" ಹೇಮಂ.

ಅವತಾರಿಕಾ ಅವತಾರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೀಠಿಕೆ, ಪ್ರಸ್ತಾವನೆ, ಉಪೋದ್ಘಾತ.

ಅವತಾರ್ಯಮಾಣ ಅವತಾರ್ಯಮಾಣ (ವಿಂ) ಮೇಲಿನಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಸಲ್ಪಡುವ, ಗಾಡಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಇಳಿಸಲ್ಪಡುವ. ಅವ + ತ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಶಾನ್" (3-1-124). "ಯಾನಾಜ್ಜನ: ಪರಿಜನೇ-ರವತಾರ್ಯಮಾಣಾ ರಾಜೀನೇರಾಪನಯನಾಕುಲಸೌವಿದಲ್ಲಾ:" ಮಾಧಂ 4-16.

ಅವತೀರ್ಣ ಅವತೀರ್ಣ (ವಿಂ) 1. ಇಳಿದಿರುವ, ಮೇಲಿನಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ. ಅವ + ತ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) "ಕ್ತ:" (3-4-62). "ಕೌಬೇರದಿಭಾಗಮಪಾಸ್ಯ ಮಾರ್ಗ-ಮಾಗಸ್ತಯಮುಣ್ಣಾಂಶುರಿವಾವತೀರ್ಣ:" ಮಾಧಂ 3-1. 2. ನೀರಿನೊಳಕ್ಕೆ ಇಳಿದಿರುವ. 3. ಬೇರೆ ರೂಪದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿರುವ. 4. ಭಾಷಾಂತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

ಅವತೋಕಾ ಅವತೋಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರ್ಭಸ್ತಾವವಾದ ಹೆಂಗಸು ಅಥವಾ ಹಸು. ಅವಗಲಿತಂ ತೋಕಂ ಯಸ್ಯಾ: |

ಅವತ್ತ ಅವತ್ತ (ವಿಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು (ಹವಿಸ್ಸು). ಅವ + ದೌ (ಅವಕ್ಷಣ್ಡನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). 2. ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಅವ + ಡು ದಾಕ್ (ದಾನೇ) "ಕ್ತ:" |



ಅವದಂಶ ಅವದಂಶ(ಪುಂ) ಬಾಯಾರಿಕೆಯುಂಟುಮಾಡುವ  
ಆಹಾರ, ಹುರಿಗಾಳು ಮುಂತಾದ ಕಾರದ ತಿಂಡಿ.  
ಅವದ್ವಯತೆ — ಅವ + ದಂಶ (ದಶನೆ) ಕರ್ಮಂ “ಘ್”  
(೩-೩-೧೯) ।

ಅವದಾಘ ಅವದಾಘ (ಪುಂ) ಬೇಸಿಗೆಕಾಲ, ಗ್ರೀಷ್ಮಮುತ್ತು,  
ಅವ + ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣಂ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮) ।

ಅವದಾತ ಅವದಾತ (ಪುಂ) 1. ಬಿಳುಪು. 2. ಹಳದಿಬಣ್ಣ.  
ಅವ + ದೈಪ್ (ಶೋಧನೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) । (ವಿಂ) 3.  
ಬಿಳುಪಾದ. 4. ಹಳದಿಬಣ್ಣದ. 5. ಶುದ್ಧವಾದ,  
ಶುಭ್ರವಾದ. 6. ನಿಷ್ಕಳಂಕವಾದ, ದೋಷವಿಲ್ಲದ.  
“ಸ ವಂಶಸ್ಯಾವದಾತಸ್ಯ ಶಶಾಂಕಸ್ಯೇವ ಲಾಂಛನಮ್” ಕಿರಾಂ  
೧೧-೭೫ । 7. ಮನೋಹರವಾದ, ಸುಂದರವಾದ.  
“ಅವದಾತಂ ತು ವಿಮಲೇ ಮನೋಜ್ಞೇ ಸಿತಪೀತಯೋಃ” ಹೇಮಂ ।

ಅವದಾನ ಅವದಾನ (ನಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸುವಿಕೆ, ತುಂಡು  
ಮಾಡುವಿಕೆ. 2. ಪರಾಕ್ರಮ, ಶಕ್ತಿ. ಅವ + ದೌ  
(ಅವಕ್ಷಣನೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । “ನೈಋತಗ್ನಮಥ  
ಮನ್ವವನ್ಮುನೇಃ ಪ್ರಾಪದಸ್ತ್ರಮವದಾನತೋಪಿತಾತ್” ರಘುಂ ೧೧-೨೧ ।  
“ದೃಷ್ಟಾವದಾನಾದ್ವಯತೋಽರಿಲೋಕಃ ಪ್ರಭವಂಸಮೇತಿ ವ್ಯಥಿತಾಂಚ  
ತೇಜಃ” ಕಿರಾಂ ೧೭-೧೬ । 3. ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ನಡೆಸಿದ  
ಕೆಲಸ, ಕೀರ್ತಿಯನ್ನು ತರುವ ಶ್ಲಾಘ್ಯವಾದ ಕೆಲಸ.  
ಅವ + ದೈಪ್ (ಶೋಧನೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।  
“ವಿಶ್ವಾವಸುಪ್ರಾಗ್ರಹರೇಃ ಪ್ರವೀಣಃ ಸಂಗೀಯಮಾನತ್ರಪುರಾವದಾನಃ”  
ಕುಮಾಂ ೭-೪೮ । “ವೀರ್ಯೋತ್ಸಾಹಶ್ಲಾಘಿ ಕೃತ್ವಾವದಾನಂ ಸಂಗ್ರಾಮಾಘ್ರೇ  
ಮಾನಿನಾಂ ಲಜ್ಜಿತಾನಾಮ್” ಮಾಘಂ ೧೮-೧೬ । 4. ಲಾಮಂಚದ  
ಬೇರು. “ಅವದಾನಂ ಖಂಡನೇ ಸ್ಯಾದಿತವೃತ್ತೇ ಚ ಕರ್ಮಣಿ”  
ಮೇದಿಂ ।

ಅವದಾರಕ ಅವದಾರಕ (ಪುಂ) 1. ಗುದ್ದಲಿ, ಸಲಿಕೆ,  
ಪಿಕಾಶಿ. (ವಿಂ) 2. ಸೀಳುವ, ಬಿರಿಯುವಂತೆ ಮಾಡುವ,  
ಹೋಳುಮಾಡುವ. ಅವ + ದ್ (ವಿದಾರಣಂ) + ಣಿಕ್  
“ಫ್ಲು” (೩-೧-೧೩೩) ।

ಅವದಾರಣ ಅವದಾರಣ (ನಂ) 1. ಸೀಳುವುದು, ಹೋಳು  
ಮಾಡುವುದು, ಕತ್ತರಿಸುವುದು. ಅವ + ದ್ (ವಿದಾರಣಂ) +  
ಣಿಕ್ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । “ಅವದಾರಣಕಾಲೇ  
ತು ಪೃಥಿವೀ ನಾವದೀಯತೇ” ರಾಮಾಂ । 2. ಗುದ್ದಲಿ,  
ಸಲಿಕೆ, ಪಿಕಾಶಿ. ಅವ + ದ್ (ವಿದಾರಣಂ) + ಣಿಕ್ “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೫) ।

ಅವದಾಹ ಅವದಾಹ (ಪುಂ) 1. ಲಾಮಂಚದ ಬೇರು.  
ಅವಸಾದಿತೋ ದಾಹೋ ಯೇನ । 2. ಸಂತಾಪ, ಜ್ವರದ ತಾಪ.

ಅವದೀರ್ಣ ಅವದೀರ್ಣ (ವಿಂ) 1. ಒಡೆದಿರುವ, ಸೀಳಾ  
ಗಿರುವ, (ಬಾಯಿಬಿಟ್ಟು) ಎರಡು ಭಾಗವಾಗಿರುವ.  
ಅವ + ದ್ (ವಿದಾರಣಂ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) । “ಅವ-  
ದೀರ್ಣಶುಕ್ತಿಪುಟಮುಕ್ತಮೌಕ್ತಿಕಪ್ರಕರೇರಿವ ಪ್ರಿಯರಥಾಙ್ಗಮಜ್ಞನಾಃ”  
ಮಾಘಂ ೧೩-೩೭ । 2. ಕರಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ದ್ರವವಾಗಿ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ + ದ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) ।

ಅವದೋಹ ಅವದೋಹ (ಪುಂ) 1. ಕ್ಷೀರ, ಹಾಲು.  
ಅವದುಹ್ಯತೆ — ಅವ + ದುಹ (ಪ್ರಪೂರಣಂ) “ಘ್” (೩-೩-೧೯) ।  
“ಅವದೋಹಃ ಪಯಃ ಕ್ಷೀರಮ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 2. ಹಾಲು  
ಕರೆಯುವಿಕೆ. ಅವ + ದುಹ ಭಾವೇ “ಘ್” (೩-೩-೧೮) ।

ಅವದ್ಯ ಅವದ್ಯ (ನಂ) 1. ದೋಷ. ನೋಡತೆ ನೋಡತೆ — ವದ  
(ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಯತ್” (೩-೧-೧೦೧) । ನಿಪಾಂ ।  
“ಇತಿ ಶಿರಸಿ ಸ ವಾಮಂ ಪಾದಮಾಧಾಯ ರಾಜಾಮುದವಹದನವಯಾಂ  
ತಾಮವದ್ಯಾದಪೇತಃ” ರಘುಂ ೭-೭೦ । 2. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ.  
3. ಪಾಪ. 4. ಲಜ್ಜೆ, ನಾಚಿಕೆ. (ವಿಂ) 5. ನಿಂದ್ಯ  
ವಾದ, ದೂಷಣೆಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ. 6. ತುಚ್ಛವಾದ,  
ನೀಚವಾದ. “ಪುರಾಣಮಿತ್ಯೇವ ನ ಸಾಧು ಸರ್ವಂ ನ ಚಾಪಿ  
ಕಾವ್ಯಂ ನವಮಿತ್ಯವದ್ಯಮ್” ಮಾಲಂ ೧-೨ ।

ಅವದ್ಯತ್ ಅವದ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಖಂಡಿಸುವ, ಕತ್ತರಿಸುವ,  
ತುಂಡುಮಾಡುವ. ಅವ + ದೌ (ಅವಕ್ಷಣನೆ) “ಶತ್”  
(೩-೨-೧೨೪) । “ಅವದ್ಯನ್ ಪತ್ರಿಣಃ ಶಮ್ಮೋಃ ಸಾಯಕೇರವ-  
ಸಾಯಕೇಃ” ಕಿರಾಂ ೧೫-೩೭ ।

ಅವದ್ಯೋತನ ಅವದ್ಯೋತನ (ನಂ) ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವಿಕೆ.  
ಅವ + ದ್ಯುತ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿಕ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।

ಅವಧಾನ ಅವಧಾನ (ನಂ) 1. ಲಕ್ಷ್ಯ, ಗಮನ, ಆಸಕ್ತಿ.  
ಅವ + ಡ್ಘಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।  
“ಅವಧಾನೇನ ಪರಸ್ಪರಂ ಜಿಗೀಷಾ” ಯಾದಂ ೧೫-೧೨೨ ।  
2. ಎಕಾಗ್ರತೆ, ನೆಟ್ಟುಮನಸ್ಸಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. “ಶೃಣುತ  
ಜನಾ ಅವಧಾನಾತ್ ಕ್ರಿಯಾಮಿಮಾಂ ಕಾಲಿದಾಸಸ್ಯ” ವಿಕ್ರಂ ೧-೨ ।

ಅವಧಾರಣ ಅವಧಾರಣ (ನಂ) 1. ನಿಶ್ಚಯ, ನಿರ್ಧಾರಣ.  
ಅವ + ಧ್ವಾನ್ (ಧಾರಣಂ) + ಣಿಕ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।  
2. ವಾಗ್ವಲ, ದೃಢವಚನ. 3. ಮಿತಿಗೊಳಿಸುವಿಕೆ,  
ಇಷ್ಟೆಂದು ನಿರ್ಣಯಿಸುವಿಕೆ. 4. ವಿಶೇಷ ಗುಣಗಳ  
ಕಾರಣ ಇತರ ವಸ್ತುಗಳಿಂದ ಬೇರ್ಪಡಿಸುವಿಕೆ.  
ಅವ + ಧ್ವಾನ್ + ಣಿಕ್ “ಯುಕ್” (೩-೩-೧೦೭) । —ಧಾರಣಾ  
—ಧಾರಣಾ.

ಅವಧಾರಣೀಯ ಅವಧಾರಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ನಿಶ್ಚಯಿಸಲು  
ಅರ್ಹವಾದ, ನಿರ್ಣಯಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಅವ +



ಛ್ (ಧಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೩-೧೬೯)।  
2. ನಿರ್ಣಯಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ, ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಡುವ.  
ಅವ + ಛ್ ಕರ್ಮಂ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। "ವಿಷ್ಣೋ-  
ರಿವಾಸ್ಯಾನವಧಾರಣೀಯಮಿದೃಕ್ತಯಾ ರೂಪಮಿತ್ತಯಾ ವಾ"  
ರಘುಂ ೧೩-೫।

ಅವಧಾರಿತ ಅವಧಾರಿತ (ವಿಂ) 1. ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರ್ಧಾರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ + ಛ್ (ಧಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಚಯಸ್ವಿವಾಮಿತ್ಯವಧಾರಿತಂ ಪುರಾ ತತಃ ಶರೀರೀತಿ ವಿಭಾವಿತಾಕೃತಿಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೩।  
2. ವಿಶೇಷಗುಣ ಪ್ರಯುಕ್ತ ಇತರ ವಸ್ತುಗಳಿಂದ ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅವಧಾರ್ಯ ಅವಧಾರ್ಯ (ವಿಂ) 1. ನಿಶ್ಚಯಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಹೀಗೆಂದು ನಿರ್ಣಯಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಅವ + ಛ್ (ಧಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಯತ್" (೩-೧-೯೬)। "ಪರಿಣತಿರವಧಾರ್ಯಾ ಯತ್ನತಃ ಪಂಡಿತೇನ" ಭರ್ತುಂ ೨-೯೯। (ಅವ್ಯಂ) 2. ನಿಶ್ಚಯಿಸಿ, ನಿರ್ಣಯಿಸಿ. ಅವ + ಛ್ + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯಪ್" (೩-೧-೯೭)।

ಅವಧಿ ಅವಧಿ (ಪುಂ) 1. ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ, ಮೇರೆ, ಸರಹದ್ದು. ಅವ + ಡು ಧಾಜ್ (ಧಾರಣೆ) "ಕಿಃ" (೩-೩-೯೨)। "ಅವಧಿ ದರ್ಶನೀಯಾನಾಮಾಕಲ್ಪಮನಘಂ ದಿವಃ" ಯಾದಂ ೧೬-೧೮।  
2. ಕಾಲ, ಸಮಯ. "ಅಥ ಚೇದವಧಿಃ ಪ್ರತೀಕ್ಷಯತೇ ಕಥಮಾವಿಷ್ಕೃತಜಿಹ್ವಾವೃತ್ತಿನಾ" ಕಿರಾಂ ೨-೧೬। 3. ಚಿತ್ತೈ ಕಾಗ್ರತೆ, ಅವಧಾನ, ಗಮನ, ಲಕ್ಷ್ಯ. 4. ಬಿಲ, ಗುಳಿ, ಗುಂಡಿ. 5. ಉತ್ತರಾವಧಿ, ಮುಂದಿನಕಾಲದ ಗಡು, ವಾಯಿದೆ. "ಅವಧಿಃ ಸ್ವವಧಾನೇ ಸ್ಯಾತ್ಸೀಮ್ನಿ ಕಾಲೇ ಬಿಲೇ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ।

ಅವಧಿಮತ್ ಅವಧಿಮತ್ (ವಿಂ) 1. ಎಲ್ಲೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಮಿತಿಯುಳ್ಳ. 2. ವಾಯಿದೆಯುಳ್ಳ, ಕಾಲದ ಗಡು ವುಳ್ಳ. ಅವಧಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪)।

ಅವಧೀಯಮಾನ ಅವಧೀಯಮಾನ (ವಿಂ) ಗಮನಿಸಲ್ಪಡುವ, ಆಸಕ್ತಿಯಿಡಲ್ಪಡುವ. ಅವ + ಡು ಧಾಜ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)।

ಅವಧೀರಣಾ ಅವಧೀರಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅವಮಾನ. 2. ತಿರಸ್ಕಾರ. ಅವಧೀರ (ಅವಜ್ಞಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭)। "ಶಠ ಇತಿ ಮಯಿ ತಾವದಸ್ತು ತೇ ಪರಿಚಯ-ವತ್ಯವಧೀರಣಾ ಪ್ರಿಯೇ" ಮಾಲಂ ೩-೨೦। "ಅಯಂ ಸ ತೇ ತಿಷ್ಠತಿ ಸಜ್ಜಮೋತ್ಸುಕೋ ವಿಶಾಙ್ಕಸೇ ಭೀರು ಯತೋಜ್ವಧೀರಣಾಮ್" ಶಾಕುಂ ೩-೧೧।

ಅವಧೀರತ ಅವಧೀರತ (ವಿಂ) 1. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅವಧೀರತದ್ವಿಧಾಙ್ಗಿ-ಮಧುರಾಯಾಂ ಮನೋ ದಧೇ" ಯಾದಂ ೧-೯೮। "ಅವಧೀರತ-ಶಾರದಾರವಿಂದೋ ಚರಣೌ ತೇ ಮರಣೇಽಪಿ ಚಿಂತಯಾಮಿ" ಮುಂ ಮಾಂ। ಅವಧೀರ (ಅವಜ್ಞಾಯಾಮ್) ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅವಧೂಕ ಅವಧೂಕ (ಪುಂ) ಪತ್ನಿಯಿಲ್ಲದವನು. ನಾಸ್ತಿ ವಧೂರಸ್ಯ। "ಕಪ್"।

ಅವಧೂತ ಅವಧೂತ (ಪುಂ) 1. ಸಂನ್ಯಾಸಿ, ಬೈರಾಗಿ, ಜಗತ್ತಿನ ಸಂಬಂಧವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದ ವಿರಕ್ತ, ವರ್ಣಾಶ್ರಮ ಧರ್ಮಗಳನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿ ಪರಮಾತ್ಮಧ್ಯಾನಾಸಕ್ತನಾದ ಒಬ್ಬ ಯೋಗಿ. "ಯೋ ವೀಲಕ್ಷ್ಯಾಶ್ರಮಾನ್ ವರ್ಣಾನ್ ಆತ್ಮನೈವ ಸ್ಥಿತಃ ಪುಮಾನ್। ಅತಿವರ್ಣಾಶ್ರಮೀ ಯೋಗೀ ಅವಧೂತಃ ಸ ಉಚ್ಯತೇ"। (ವಿಂ) 2. ಅಲುಗಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕದಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ + ಛ್ (ಕಂಪನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಅವಧೂತಪಕ್ಷಜಪರಾಗಕಣಾಸ್ತನುಜಾಹ್ನವೀಸಲಿಲವೀಚಿಭಿದಃ" ಕಿರಾಂ ೬-೩। 3. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರಾಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅನ್ವನೈಪುರವಧೂತವಿಗ್ರಹಸ್ತಂ ದುಸ್ತಹವಿಯೋಗ-ಮಜ್ಞನಾಃ" ರಘುಂ ೧೯-೪೩। 4. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಕೊಡವಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅವಧೂನನ ಅವಧೂನನ (ನಂ) 1. ಅಲುಗಾಡಿಸುವಿಕೆ, ಅಲ್ಲಾಡಿಸುವಿಕೆ, ಕದಲಿಸುವಿಕೆ. ಅವ + ಛ್ (ಕಂಪನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। ನುಗಾಗಮಃ (ವಾಂ ೭-೪-೨)। "ವಿಡಮ್ವಯಂತೀ ದದೃಶೋ ವಧೂಜನೇರಮಂದದೃಷ್ಟಿಂ ಕರಾವಧೂನನಮ್" ಕಿರಾಂ ೮-೬। 2. ನಡುಕ, ತತ್ತರ, ಕಂಪನ. 3. ಕೊಡುವಿಕೆ. 4. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸುವಿಕೆ. 5. ತಿರಸ್ಕರಿಸುವಿಕೆ.

ಅವಧೂತ ಅವಧೂತ (ವಿಂ) ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಷ್ಕರ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ + ಛ್ (ಧಾರಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅವಧೇಯ ಅವಧೇಯ (ನಂ) 1. ಲಕ್ಷ್ಯ, ಗಮನ, ಅವಧಾನ, ಆಸಕ್ತಿ. ಅವ + ಡು ಧಾಜ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಯತ್" (೩-೧-೯೭)। (ವಿಂ) 2. ಇಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ತಿಳಿಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 4. ನಂಬಲು ಅರ್ಹವಾದ.

ಅವಧ್ಯ ಅವಧ್ಯ (ವಿಂ) ಕೊಲ್ಲಲಾಗದ, ಕೊಲ್ಲಲು ಅರ್ಹನಲ್ಲದ, ವಧೆಗೆ ಅನರ್ಹನಾದ. ವಧಮಹಂತಿ - ವಧ "ಯಃ" (೫-೧-೬೬)। ನಂತಂ। "ದೇಹಿ ನಿಯಮವಧ್ಯೋಽಯಂ ದೇಹೇ ಸರ್ವಸ್ಯ ಭಾರತ" ಗೀತಾ ೨-೩೦। "ಅವಧ್ಯಾಂ ಚ ಸ್ತ್ರಿಯಂ ಪ್ರಾಹುಸ್ತೀರ್ಯಗ್ನೋನಿಗತಾಸ್ವಪಿ"। ವಧೆಗೆ ಅನರ್ಹರಾದವರನ್ನು ಕೊಂದರೆ ಸಾಕು. "ಯಾವಾನವಧ್ಯಸ್ಯ ವಧೇ ತಾವಾನ್ವಧ್ಯಸ್ಯ



ಮೋಕ್ಷಣೇ। ಅಧರ್ಮೋ ನೃಪತೇದೃಷ್ಟೋ ಧರ್ಮಸ್ತು ವಿನಿಯಚ್ಛತಃ”  
ಮನುಂ ೧-೨೪೯।

ಅವಧ್ವಂಸ ಅವಧ್ವಂಸ (ಪುಂ) 1. ಬಿಡುವುದು, ಪರಿತ್ಯಾಗ.  
2. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ, ಬೈಗಳು. 3. ಪುಡಿಮಾಡು  
ವುದು, ಧೂಳುಮಾಡುವುದು. ಅವ + ಧ್ವಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ)  
“ ಧ್ವ” (೩-೩-೧೮)। “ಅವಧ್ವಂಸಸ್ತು ನಿಂದಾಪಾಂ ಪರಿತ್ಯಾಗೋಽ-  
ವಚ್ಛರ್ಣನೆ” ಹೇಮಂ। 4. ನಾಶ.

ಅವಧ್ವಂಸ ಅವಧ್ವಂಸ (ವಿಂ) 1. ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಬಿಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಪುಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಚೂರ್ಣಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು.  
3. ನಿಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ದೂಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ನಾಶಪಡಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟು. ಅವ + ಧ್ವಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)।

ಅವನ ಅವನ (ನಂ) 1. ರಕ್ಷಿಸುವುದು, ಕಾಪಾಡುವುದು.  
ಅವ (ರಕ್ಷಣಾದೌ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಸಂತೋಷ  
ಪಡಿಸುವಿಕೆ, ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸುವಿಕೆ. 3. ತೃಪ್ತಿ. 4. ಪ್ರೀತಿ.  
5. ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. 6. ಪ್ರವೇಶ. 7. ಯಾಚನೆ.  
8. ಆಲಿಂಗನ. 9. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಏಳಿಗೆ. 10. ಪ್ರಕಾಶ  
ಪಡಿಸುವಿಕೆ. 11. ಹಿಂಸೆ, ತೊಂದರೆ. 12. ಹೊಂದುವಿಕೆ.  
ಪಡೆಯುವಿಕೆ.

ಅವನತ ಅವನತ (ವಿಂ) 1. ಬಗ್ಗಿರುವ, ಕೆಳಮುಖವಾದ.  
ಅವ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨)। “ಅವನತ-  
ವದನೆಂದುರಿಚ್ಛತೀವ್ಯವಧಿಮಧೀರತಯಾ ಯದಾಸ್ಥಿತಾಸ್ಮೇ”  
ಮಾಘಂ ೭-೩೮। 2. ಅಸ್ತಹೊಂದಿದ, ಮುಳುಗಿದ.  
“ರಜನಿರವನತೇಂದುಲಂಜಯಾಧೋಮುಖೀವ” ಮಾಘಂ ೧೦-೯೧।  
3. ನಮಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ವಿನಯವುಳ್ಳ, ವಿಧೇಯತೆ  
ಯುಳ್ಳ.

ಅವನತಿ ಅವನತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಗ್ಗಿರುವಿಕೆ. “ದಧತ್ಯಾ  
ಶಾಲಿನಾಮವನತಿಮುದಾರೆ ಸತಿ ಫಲೇ” ಮುद्रಾಂ ೩-೮।  
2. ವಿಧೇಯತೆ, ನಮ್ರತೆ, ವಿನಯ. 3. ಅಸ್ತಮಯ,  
ಮುಳುಗುವಿಕೆ. ಅವ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) “ಕ್ತಿನ್”  
(೩-೩-೯೪)। “ಗತವತ್ಸವರಾಜತ ಜಪಾಕ್ರುಮುಸ್ತಬಕಚ್ಛುತೌ  
ದಿನಕರೇವನತಿಮ್” ಮಾಘಂ ೯-೮। 4. ಸ್ತೂಷಾಮ,  
ನಮಸ್ಕಾರ. 5. ಕ್ಷೀಣಗತಿಹೊಂದುವಿಕೆ, ಇಳಿಮುಖ  
ವಾಗುವಿಕೆ.

ಅವನದ್ಧ ಅವನದ್ಧ (ನಂ) 1. ಮೃದಂಗ. (ವಿಂ) 2. ಕಟ್ಟ  
ಲ್ಪಟ್ಟು, ಗಂಟುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು. ಅವ + ಣಹ (ವಂಧನೆ) “ಕ್ತಃ”  
(೩-೨-೧೦೨)। “ಚರ್ಮಾವನದ್ಧಂ ದುರ್ಗಂಧಿ ಪೂರ್ಣಂ ಮೃತ್ಪುರೀಷಯೋಃ”  
ಮನುಂ ೬-೭೬। 3. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ, ಸುತ್ತಲೂ ಆವರಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟು, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯೂ ಸಂಬಂಧಹೊಂದಿರುವ.

“ತಾಂಬೂಲೀಲತಾವನದ್ಧಪೂಗ್ವಣ್ಡಮಣ್ಡಿತಃ” ಕಾದಂ। 4. ಒಟ್ಟಿಗೆ  
ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. “ಹರಿತಪತ್ರಮಯೀವ ಮರ್ದಣಃ  
ಸಗವನದ್ಧಮನೋರಮಪಲ್ಲವಾ” ಮಾಘಂ ೬-೫೩। 5. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟು,  
ನೆಡಲ್ಪಟ್ಟು. “ನಿಸರ್ಗರಕ್ತೇರ್ವಲಯಾವನದ್ಧತಾಮ್ರಾಶ್ಮರಶ್ಮಿ-  
ಚ್ಛುರಿತೇನೇನಾಪ್ರೇಃ” ಮಾಘಂ ೩-೭। 6. ಲೇಪನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು,  
ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟು. “ಸ್ತಾನಾವನದ್ಧಧನಶೋಣಿತಶೋಣಪಾಣಿಃ”  
ವೇಣೀಂ ೧-೨೧।

ಅವನಮ್ರ ಅವನಮ್ರ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಬಗ್ಗಿರುವ. ಅವ + ಣಮ  
(ಪ್ರಹ್ಲವೇ) “ರಃ” (೩-೨-೧೬೭)। “ಪರ್ಯಾಪ್ತಿಪುಷ್ಪಸ್ತ-  
ಬಕಾವನಮ್ರಾ ಸಂಚಾರಿಣಿ ಪಲ್ಲವಿನಿ ಲತೇವ” ಕುಮಾಂ ೩-೫೪।  
ಅವನಯ ಅವನಯ (ಪುಂ) 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವುದು.  
2. ಕೆಳಗೆಹಾಕುವುದು. ಅವ + ಣೀಞ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) “ಅಞ್”  
(೩-೩-೫೬)।

ಅವನಾಟ ಅವನಾಟ (ವಿಂ) ಬಗ್ಗಿದ ಮೂಗುಳ್ಳು. ಅವನತ  
ನಾಸಿಕಾಯಾಃ “ನಾಟಞ್” (೫-೨-೩೧)। ಅವನಾಟಮ್।  
ತಯೋಗಾನ್ತಾನಾಸಿಕಾಪ್ಯವನಾಟಾ। ಸಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಅಞ್”  
(೫-೨-೧೨೭)।

ಅವನಾಮ ಅವನಾಮ (ಪುಂ) ಬಗ್ಗಿ ನಮಸ್ಕರಿಸುವಿಕೆ.  
ಅವ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) “ಧ್ವ” (೩-೩-೧೮)। “ಇತಿ  
ಕೃತವಚನಾಯಾಃ ಕಶ್ಚಿದಮ್ಯೇತಯ ಬಿಮ್ಯದ್ಗಲಿತನಯನವಾರೇರ್ಯಾತಿ  
ಪಾದಾವನಾಮಮ್” ಮಾಘಂ ೧೧-೩೫।

ಅವನಾಯ ಅವನಾಯ (ಪುಂ) 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ತರುವುದು,  
ತಳ್ಳುವುದು, ನೂಕುವುದು. ಅವ + ಣೀಞ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ)  
“ಧ್ವ” (೩-೩-೧೮)।

ಅವನಿ ಅವನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭೂಮಿ. ಅವಂ (ರಕ್ಷಣೇ)  
“ಅನಿಃ” (೩ಂ ೨-೧೦೨)। “ಅವನಿತನಯಭಿತಾನ್  
ಪ್ರೀಣಯನ್ನಾದಿತೇಯಾನ್” ಯಾದಂ ೧೬-೧೪೪। “ಅವನಿಭಾರ-  
ನಿರಾಕರಣಾರ್ಥಿನಾಮ್” ಯಾದಂ ೩-೨೧। 2. ಬೆರಳು. ವಾ  
“ಡೀಪ್” (ಗಂ ೫೦)। ಅವನಿ ಅವನೀ. “ನಿವತ್ಸಯತೋ  
ವಿಶ್ವಪತೇರವನ್ಯಾಮ್” ಯಾದಂ ೨-೪೬।

ಅವನೀತನಯ ಅವನೀತನಯ -ಸುತ -ಸುತ (ಪುಂ)  
ಭೂಮಿಯ ಮಗ (1) ಕುಜ, ಅಂಗಾರಕ.  
(2) ನರಕಾಸುರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತನಯಾ-ತನಯಾ. -ಸುತಾ  
-ಸುತಾ. ಭೂಮಿಯ ಮಗಳು, ಸೀತಾದೇವಿ.

ಅವನಿಧ ಅವನಿಧ (ಪುಂ) ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಅವನಿ  
ಧರತಿ -ಧ್ವ (ಧಾರಣೇ) “ಕಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೫)।  
“ಸ್ಫುಟಮೇವ ಸಮಸ್ತಮಾಪದಾ ತದಿದಾನಿಮವನಿಧಮುಖ್ಯಮ್”  
ಮಾಘಂ ೧೬-೭೮।



ಅವನಿ (ನಿ) ಪತಿ ಅವನಿ (ನಿ) ಪತಿ -ಪಾಲ (ಕ)

-ಪಾಲ (ಕ) -ಭೃತ್ -ಭೃತ್ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ, ಭೂಮಿಯನ್ನು ಪಾಲಿಸುವವನು. ಅವನ್ಯಾ: ಪತಿ: ಪಾಲ: (ಕ:) ವಾ। ಅವನಿ ವಿಭಿತಿ -ಓ ಭೃತ್ (ಧಾರಣ-ಪೋಷಣಯೋ:) "ಕ್ರಿಪ್" (೩-೨-೬೧)। "ಹರೀಶ್ವರ ಯುಗದೀರ್ಘ-ದೊಂಬಿರಸೇಸ್ತದೀರ್ಘ: ಪತಿರವನಿಪತೀನಾಂ ತೇಶ್ವಕಾಶೇ ಚತುರ್ಭಿ:" ರಘುಂ ೧೦-೮೬।

ಅವನಿಶ ಅವನೀಶ -ಇಶ್ವರ -ಈಶ್ವರ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಅವನ್ಯಾ ಇಶ ಇಶ್ವರೋ ವಾ।

ಅವನೇಜನ ಅವನೇಜನ (ನಂ) 1. ತೊಳೆಯುವುದು, ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು. 2. ಶ್ರಾದ್ಧದಲ್ಲಿ ದರ್ಭೆಯ ಮೇಲೆ ನೀರನ್ನು ಪ್ರೋಕ್ಷಿಸುವುದು. ಅವ+ಣಿಜಿರ್ (ಶೋಚೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅವಂತಿ ಅವಂತಿ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಮಾಳವದೇಶ. 2. ಮಾಳವದೇಶದ ದೊರೆಗಳು. 3. ಮಾಳವದೇಶದ ಜನರು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅವಂತಿ ಅವಂತಿ ಅವಂತೀ. 4. ಮಾಳವದೇಶದ ರಾಜಧಾನಿಯಾದ ಉಜ್ಜಯಿನಿ ನಗರ. [ಈ ನಗರಕ್ಕೆ ಇದು ಮಹಾಭಾರತ ಕಾಲದ ಹೆಸರು. ಸಾಂಡವರ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಇಲ್ಲಿ ವಿದಾನ್ಯವಿಂದ ರೆಂಬ ಸಹೋದರರು ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಆಳುತ್ತಿದ್ದರು. ರಾಜಸೂಯ ಯಾಗದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಸಹದೇವನು ಇವರನ್ನು ಜಯಿಸಿ ಕಪ್ಪವನ್ನು ಪಡೆದನು.] "ವಿಂದಾ-ನುವಿಂದಾವಂತಯೋ ಸೇನ್ಯೇನ ಮಹತಾವೃತೌ। ಜಿಗಾಯ ಸಮರೇ ವೀರಾವಾಶ್ವಿನೇಯ: ಪ್ರತಾಪವಾನ್" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೩೨-೧೧। ಇದು ಮೋಕ್ಷಪ್ರದನಾದ ಏಳು ಪಟ್ಟಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಅಯೋಧ್ಯಾ ಮಥುರಾ ಮಾಯಾ ಕಾಶೀ ಕಾಶ್ಚಿರವಂತಿಕಾ। ಪುರೀ ದ್ವಾರವತೀ ಚೈವ ಸಪ್ತೇತಾ ಮೌಖದಾಯಿಕಾ:"। ಇಲ್ಲಿ ಬಲರಾಮ ಮತ್ತು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣರು ಸಾಂದೀಪನಿ ಮುನಿಯಲ್ಲಿ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿದರು. "ವಿದಿತಾಖಿಲ-ವಿಜ್ಞಾನೌ ಸರ್ವಜ್ಞಾನಮಯಾವಪಿ। ಶಿಷ್ಯಾಚಾರ್ಯಕ್ರಮಂ ವೀರೌ ಸ್ಥಾಪಯಂತೌ ಯದ್ವತ್ತಮೌ। ತತ: ಸಾಂದೀಪನಿ ಕಾಶ್ಯಮವಂತಿಪುರ-ವಾಸಿನಮ್। ವಿಷ್ಣುರ್ವಿಜಯಾಂ ಜಗಮತುರ್ಬಾಲೌ ಕೃತೋಪನಯನಕ್ರಮೌ। ವೇದಾಭ್ಯಾಸಕೃತಪ್ರೀತೌ ಸಂಕರ್ಮಜನಾರ್ದನೌ। ತಸ್ಯ ಶಿಷ್ಯತ್ವ-ಮಮ್ಯೇತೃ ಗುರುವೃತ್ತಿಪರೌ ಹಿತೌ। ದರ್ಶಯಾಂಚಕ್ರತುರ್ವೀರಾವಾಚಾರ-ಮಖಿಲೇ ಜನೇ। ಸರಹಸ್ಯಂ ಧನುರ್ವೇದಂ ಸಸಂಗ್ರಹಮಧೀಯತಾಂ। ಅಹೋರಾತ್ರಚತು:ಷ್ಠಾ ತದ್ಭೂತಮಭೂದ್ವಿಜಃ। ಸಾಂದೀಪನಿರಸಂ-ಭಾಷ್ಯಂ ತಯೋ: ಕರ್ಮಾತಿಮಾನುಷಮ್। ವಿಚಿಂತ್ಯ ತೌ ತದಾ ಮೇನು ಪ್ರಾಪ್ತೌ ಚಂದ್ರದಿವಾಕರೌ" ವಿಂ ಪುಂ ೫-೨೧। ಇದಕ್ಕೆ ಉಜ್ಜಯಿನಿ, ವಿಶಾಲಾ, ಮಹಾಕಾಲವನ, ಕುಶಸ್ಥಲಿ,

ಪದ್ಮಾವತಿ ಎಂಬ ಹೆಸರುಗಳೂ ಉಂಟು. ಅವಂತಿ: "ಅವಂತಿನಾಥೋಽಯಮುದ್ರಬಾಹುರ್ವಿಶಾಲವಕ್ಷಾಸ್ತನುತ್ಪತ್ತಮಧ್ಯ:" ರಘುಂ ೬-೩೨। ಉಜ್ಜಯಿನಿ: "ಪ್ರಾಜ್ಯೋತಿಷಾ: ಕಾಮರೂಪಾ: ಮಾಲವಾ: ಸ್ಯುರವಂತಯ:" "ಉಜ್ಜಯಿನಿ ಸ್ಯಾ-ದ್ವಿಶಾಲಾಜ್ವಂತಿ ಪುಷ್ಪಕರಣ್ಡಿನಿ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ। ವಿಶಾಲಾ: "ಪ್ರಾಪ್ಯಾವಂತಿನುದಯನಕಥಾಕೋವಿದಗ್ರಾಮವೃದ್ಧಾನ್ಪೂರ್ವೋದ್ದಿಷ್ಟಾಮನುಸರ ಪುರೀಂ ಶ್ರೀವಿಶಾಲಾಂ ವಿಶಾಲಾಮ್" ಮೇಘಂ ೧-೩೦। ಮಹಾಕಾಲವನ: "ಅಸೌ ಮಹಾಕಾಲನಿಕೇತನಸ್ಯ ವಸನ್ತದ್ವೇ ಕಿಲ ಚಂದ್ರಮಾಲೇ:" ರಘುಂ ೬-೩೪। [ಅಸೌ ಅವಂತಿನಾಥ: ರಘುಂ ವ್ಯಾಖ್ಯಾ] ಕುಶಸ್ಥಲಿ: [ಕಲ್ಪದ ಆದಿಯಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮನು ದೈತ್ಯ ದಾನವರಾಕ್ಷಸ ಮುಂತಾದ ವರನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದನಂತರ ಅವರೆಲ್ಲರೂ ಮದಿಸಿ ಪರಸ್ಪರ ಕಾದಾಡುತ್ತಿರಲು ಜಗತ್ತೆಲ್ಲವೂ ರೀತಿನೀತಿ ವಿಹೀನ ವಾಯಿತು. ಆಗ ಚತುರ್ಮುಖನು ಏನೂ ತೋಚದೆ ಸರ್ವೇಶ್ವರನಾದ ಮಹಾವಿಷ್ಣುವನ್ನು ಧ್ಯಾನಿಸತೊಡಗಿದನು. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವು ಪ್ರಸನ್ನನಾಗಿ "ನಿನ್ನ ಅಧಿಕಾರಕ್ಕೊಳಪಡದ ಪ್ರದೇಶವನ್ನು ತೋರಿಸು" ಎನಲು ಬ್ರಹ್ಮನು ಪವಿತ್ರಪ್ರದೇಶಗಳನ್ನು ತೋರಿಸುತ್ತಾ ಒಂದೊಂದರಿಂದಲೂ ಒಂದೊಂದು ಹಿಡಿ ಕುಶ (ದರ್ಭೆ) ವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಾ ಚೈವನಾಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಬಂದು ಈ ಕುಶಗಳಿರುವ ಕಡೆಯಲ್ಲೇ ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಂತು ಲೋಕಕ್ಕೆ ಮವನ್ನುಂಟುಮಾಡಬೇಕೆಂದು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲು ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣನು ವಸಂತಮಾಸದ ರೂಪದಿಂದ ಅಲ್ಲಿಗೆ ನೆಲೆಸಿದನು. ಇದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ "ಕುಶಸ್ಥಲಿ" ಯೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಇದಕ್ಕೆ ಮುಂಚೆ "ಕನಕಶೃಂಗ" ವೆಂದು ಹೆಸರಿದ್ದಿತು.] "ಕುಶಸ್ಥಲಿಂ ಸಂಸ್ಥಿತಂ ಏವ ದೇವ ಇತ್ಯಂ ವಿಧಾತ್ರಾ ಪುರುಷೋತ್ತಮ: ಸ್ತುತ:। ಸ್ಥಲಿಂ ಕುಶೇರಾಸ್ತರಿತಾಮುಪಾವಿಶಕ್ರುಶಸ್ಥಲಿಂ ದೇವ-ಮುನೀಂದ್ರಸೇವಿತಾಮ್" ಸ್ಕಾಂದಂ ಅವಂತೀಖಂ ೪೧-೨೯। ಪದ್ಮಾವತಿ: [ದುಷ್ಯರಾದ ದಾನವರೆಲ್ಲರೂ ಒಮ್ಮೆ ಭೂಲೋಕದ ಸಕಲ ರತ್ನಗಳನ್ನೂ ಅಪಹರಿಸಿ ಬಹಳ ತೊಂದರೆ ಕೊಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ದೇವದಾನವರೆಲ್ಲರೂ ಸೇರಿ ರತ್ನಗಳನ್ನೂ, ಅಮೃತವನ್ನೂ ಪಡೆಯಲು ಸಮುದ್ರಮಥನ ಮಾಡತೊಡಗಿದರು. ಮೊದಲು ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿಯು ಹುಟ್ಟಿದಳು. ನಾರದರ ಮಾತಿನಂತೆ ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿಯನ್ನು ಮಹಾಕಾಲವನ (ಉಜ್ಜಯಿನಿ) ದಲ್ಲಿ ನೆಲೆಸುವಂತೆ ಹೇಳಿ ಪುನಃ ಸಮುದ್ರವನ್ನು ಕಡೆಯಲು ಕೌಸ್ತುಭ, ಚಂದ್ರ, ಧನ್ವಂತರಿ, ಅಮೃತ, ಅನೇಕ ರತ್ನಗಳು, ಉಚ್ಚೈಶ್ರವಸ್ಸು, ಐರಾವತ



ಮುಂತಾದುವೆಲ್ಲಾ ಹುಟ್ಟಿದುವು. ವಿಷ್ಣುವಿನ ಚಮತ್ಕಾರದಿಂದ ಅಮೃತವನ್ನು ದೇವತೆಗಳೇ ಹಂಚಿ ಕೊಂಡು ಹೃಷ್ಯಚಿತ್ತರಾಗಿ “ನಾವು ಈ ಉಜ್ಜಯಿನಿಗೆ ಬಂದು ಈ ರತ್ನಗಳೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಪಡೆದೆವು. ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿಯೂ ಇಲ್ಲಿ ನೆಲೆಸಿರುವಳು. ಈ ಕಾರಣದಿಂದ ಈ ನಗರಕ್ಕೆ ‘ಪದ್ಮಾವತಿ’ಯೆಂಬ ಹೆಸರಾಗಲಿ” ಎಂದು ಹೇಳಿದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರಾಯಿತು.]

“उज्जयिनीं समासाद्य जाता रत्नभुजो वयम्। पद्मायाश्च निवासेन यस्मात्सर्वमुखावहा। तस्मात्सर्वेषु कालेषु पद्मा वसतु निश्चला। अद्यप्रभृति पूरेषा पद्मावतीति च स्मृता” स्कान्द० अवन्तीख० ४४-३३, ३४।

ಅವಂತಿಸೋಮ ಅವಂತಿಸೋಮ (ನಂ) ಗಂಜಿ, ಅಂಬಲಿ.

अवन्तिषु सोम इव। अवन्तिषु सूयते वा।

अवन्ध्य अवन्ध्य (वि०) 1. ಫಲಸಹಿತವಾದ, ಫಲದಿಂದ ತುಂಬಿದ, ಪಲವತ್ತಾದ, ಫಲಿಸುವ (ಮರ). बघ्नाति फलानि इति वन्ध्यः (वययोरभेदः)। न वन्ध्यः। 2. ವೃಥಾವಲ್ಲದ, ಸಫಲವಾದ. “अवन्ध्यकोपस्य निहन्तुरापदां भवन्ति वस्याः स्वयमेव देहिनः” किरा० १-३३। (स्त्री०) अवन्ध्या अवन्ध्या. ಪುತ್ರವತಿ ಯಾದ ಹೆಂಗಸು.

अवपक्व अवಪಕ್ವ (वि०) ಕಡಿಮೆ ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡ್ಡಾದಿಡ್ಡಿಯಾಗಿ ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

अवपतन अवಪತನ (ನಂ) ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯುವಿಕೆ.

अवपन्न अवಪನ್ನ (वि०) 1. ಬೆರಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಿಶ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. अव+पद (गती) “क्तः” (३-२-१०२)। 2. ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಕೆಟ್ಟಿರುವ, ಸಂಸರ್ಗದಿಂದ ದೂಷಿತವಾದ. “केशकीटावपन्नं च पदा स्पृष्टं च कामतः” मनु० ४-२०७।

अवपाक अवಪಾಕ (ಪುಂ) 1. ಅಪೂರ್ಣವಾದ ಪಾಕ, ಅಡ್ಡಾದಿಡ್ಡಿಯಾಗಿ ಬೇಯಿಸುವಿಕೆ. अव+ङ् पचष् (पाके) भावे “घञ्” (३-३-१८)। (वि०) 2. ಅಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೇಯಿಸಲ್ಪಡದ. कर्म० “घञ्” (३-३-१९)।

अवपात अवಪಾತ (ಪುಂ) 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳುವುದು. अव+पलृ (गती) “घञ्” (३-३-१८)। 2. ಬೀಳಿಸುವಿಕೆ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಹಾಕುವಿಕೆ. अव+पलृ+णिच् “अच्” (३-३-५६)। “शस्त्रावपातो गर्भस्य पातने चोत्तमो दमः” याज्ञ० २-१७७। 3. ಹಳ್ಳ, ಗುಳಿ,

ಗುಂಡಿ. अव+पलृ अधि० “घञ्” (३-३-१२१)। “खभ्रोऽवपातः” कल्पद्रु०। 4. ಆನೆಯನ್ನು ಹಿಡಿಯಲು ಹುಲ್ಲು ಸೊವ್ವುಗಳಿಂದ ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ ಹಳ್ಳ. “अवपातस्तु हस्त्यर्थे गते छत्रे तृणादिना” वैज०। “रोधांसि निघ्नन्नवपातमग्नः करीव वन्यः परुषं ररास” रघु० १६-७८।

अवपातन अवಪಾತನ (ನಂ) ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವುದು, ನೂಕುವುದು, ಉರುಳಿಸುವುದು. अव+पलृ (गती)+णिच् “ल्युट्” (३-३-११५)।

अवपात्र अवಪಾತ್ರ (ವಿಂ) ಇತರರ ಊಟಕ್ಕೆ ಅನರ್ಹವಾದ ಊಟದ ಪಾತ್ರೆಯುಳ್ಳ ಮೇಚ್ಛ, ಚಂಡಾಲ ಮೊದಲಾದವರು.

अवपात्रित अवಪಾತ್ರಿತ (ವಿಂ) ಜಾತಿಭ್ರಷ್ಟನಾದ, ಪಾಪಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಯಿಂದ ಬಂಧುಗಳಿಂದ ಒಂದೇ ಪಾತ್ರೆಯಲ್ಲಿ ಸಾನಭೋಜನಾದಿಗಳಿಗೆ ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ. अवपात्र (कृत्यर्थे)+णिच् “क्तः” (३-२-१०२)।

अवपाशित अवಪಾಶಿತ (ವಿಂ) ಸುತ್ತಲೂ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಲೆಯೊಳಗೆ ಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. अव समन्तात् पाशोऽस्य सञ्जातः “इतच्” (५-२-३६)।

अवपीड अवಪೀಡ (ಪುಂ) 1. ಒತ್ತುವಿಕೆ. 2. ಒಂದುವಿಧ ಮೂಗಿನ ಚಿಕಿತ್ಸೆ. “प्रतिवर्षोऽवपीडश्च नस्यं प्रशमनं तथा। शिरोविरेचनं चेति नस्तः कर्म च पञ्चधा”। (वि०) 3. ಒತ್ತುವ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಅದುಮುವ. अव+पीड (अवगाहने) “अच्” (३-१-१३४)।

अवपीडन अवಪೀಡನ (ನಂ) 1. ಒತ್ತುವಿಕೆ, ಅದುಮುವಿಕೆ. अव+पीड (अवगाहने)+णिच् “ल्युट्” (३-३-११५)। 2. ಸೀನುಬರಿಸುವ ವಸ್ತು. अव+पीड+णिच् “युच्” (३-३-१०७)। -पीडना-पೀडना. 3. ಹಿಂಡುವಿಕೆ, ಹಿಡುಕುವಿಕೆ. “अङ्गावपीडनायां च व्रणशोणितयोस्तथा। समुत्थानव्ययं दाप्यः सर्वदण्डमथापि वा” मनु० ८-२८७।

अवप्लुत अवಪ್ಲುತ (ವಿಂ) 1. ಒದ್ದೆಯಾದ, ಸುತ್ತಲೂ ತೋಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. अव+प्लुङ् (गती) “क्तः” (३-२-१०२)। 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಹಾರಿದ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿದಿರುವ. “अवप्लुतो महातेजाः प्राकारं तस्य वेश्मनः” रामा०।

अवबद्ध अवಬದ್ಧ (ವಿಂ) ಸುತ್ತಲೂ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲಿಯೂ ಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. अव+बन्ध (बन्धने)



“ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)। “ಸದೃಶತ್ವಾದ್ಭಸಂಸಂಜ್ಞಿನೀತ್ವಂ  
ನೀತ್ವಾ ಕಾಮಂ ಗೌರವೇಣಾವಬದ್ಧಾ” ಮಾಘಂ ೧೮-೧೯।

**ಅವಬಂಧ ಅವಬಂಧ** (ಪುಂ) 1. ಸುತ್ತಲೂ ಕಟ್ಟುವಿಕೆ,  
ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲಿಯೂ ಬಂಧಿಸುವಿಕೆ. ಅವ + ಬಂಧ  
(ಬಂಧನೆ) ಭಾವೇ “ಘ್” (೩-೩-೧೮)। 2. ಒಂದುವಿಧ  
ನೇತ್ರರೋಗ, ನೋಟದ ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ತಡೆಯತಕ್ಕ  
ಕಣ್ಣಿನ ಒಂದು ರೋಗ.

**ಅವಬಾಹುಕ ಅವಬಾಹುಕ** (ಪುಂ) ತೋಳುಗಳಲ್ಲಿ ಬರುವ  
ಸೆಳೆತ, ತೋಳುಗಳಿಗೆ ಬರುವ ಒಂದುವಿಧ ವಾತರೋಗ.  
ಅವಬದ್ಧೋ ಬಾಹುಯೇನ। “ಅಸದೇಶಸ್ಥಿತೋ ವಾಯುಃ ಶೋಷಯಿತ್ವಾಂಸ-  
ಬಂಧನಮ್। ಶಿರಾಸ್ವಾಕುಂಭ್ಯ ತತ್ರಸ್ಥೋ ಜನಯತ್ಯವಬಾಹುಕಮ್”  
ಸುಶ್ರುತಂ।

**ಅವಬುದ್ಧ ಅವಬುದ್ಧ** (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿವಳಿಕೆಯುಳ್ಳವನು,  
ಬಲ್ಲವನು. ಅವ + ಬುದ್ಧ (ಅವಗಮನೆ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೮೮)।  
2. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ + ಬುದ್ಧ ಕರ್ಮಂ  
“ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)।

**ಅವಬೋಧ ಅವಬೋಧ** (ಪುಂ) 1. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ,  
ಅವ + ಬುದ್ಧ (ಅವಗಮನೆ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮)। “ಔತ್ಸುಕ್ಯ-  
ಹೇತು ವಿವೃಣೋಷಿ ನ ತ್ವಂ ತತ್ತ್ವಾವಬೋಧಕಫಲೋ ನ ತರ್ಕ:”  
ಮಾಲಂ ೩-೧೦। 2. ಎಚ್ಚರಿಕೆ, ಜಾಗರಾವಸ್ಥೆ, ಎಚ್ಚರ,  
ಜಾಗರಣೆ. “ಯಿ ತು ಸ್ವಪ್ನಾವಬೋಧೌ ತೌ ಭೂತಾನಾಂ  
ಪ್ರಲಯೋದಯೌ” ಕುಮಾರಂ ೨-೮। 3. ತತ್ತ್ವದ ಉಪದೇಶ,  
ತಿಳಿವಳಿಕೆ ಕೊಡುವುದು, ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನವುಂಟುಮಾಡು  
ವುದು. “ಅವಬೋಧವಾರಿ ರಜಸಃ ಶಮನಮ್” ಕಿರಾಂ ೬-೪೧।

**ಅವಬೋಧಕ ಅವಬೋಧಕ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಅವಬೋಧ-  
ಯತಿ — ಅವ + ಬುದ್ಧ (ಅವಗಮನೆ) + ಣಿच् “ಫ್ವಲ್”  
(೩-೧-೧೩೩)। 2. ಸ್ತುತಿಪಾಠಕ, ರಾಜನನ್ನು ನಿದ್ಧಿ  
ಯಿಂದ ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸುವ ಹೊಗಳುಭಟೆ. 3. ಉಪ  
ದೇಶಕೊಡುವ ಗುರು. ಉಪಾಧ್ಯಾಯ. (ವಿಂ) 4.  
ತಿಳಿಸುವ, ಸೂಚಿಸುವ. “ನಿಜಪರಾಕ್ರಮಾವಬೋಧಕಾನಿ  
ಚರಿತಾನಿ” ದಶಕುಂ। 5. ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸುವ, ನಿದ್ಧಿ  
ಯಿಂದೆಬ್ಬಿಸುವ. 6. ಉಪದೇಶಕ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ  
ಕೊಡುವ.

**ಅವಬೋಧನ ಅವಬೋಧನ** (ನಂ) 1. ತಿಳಿಸುವಿಕೆ, ಜ್ಞಾಪಕ  
ಕೊಡುವಿಕೆ. ಅವ + ಬುದ್ಧ (ಅವಗಮನೆ) + ಣಿच् ಭಾವೇ  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

**ಅವಭಜಿತ ಅವಭಜಿತ** (ವಿಂ) 1. ಹುರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ.  
2. ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ + ಭಜ (ಪಾಕ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)।

**ಅವಭಾಷಣ ಅವಭಾಷಣ** (ನಂ) ಮಾತಾಡುವುದು, ಹೇಳು  
ವುದು. ಅವ + ಭಾಷ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೫)।

**ಅವಭಾಸ ಅವಭಾಸ** (ಪುಂ) 1. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ.  
ಅವ + ಭಾಸ್ (ದೀಪ್ತೌ) ಭಾವೇ “ಘ್” (೩-೩-೧೮)।  
2. ಪ್ರಕಾಶ, ಕಾಂತಿ, ಬೆಳಕು. 3. ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ,  
ಮೈದೋರುವಿಕೆ, ವ್ಯಕ್ತವಾಗಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ.  
“ಯೇನಾಸ್ಯ ತತ್ತ್ವೇಷು ಕೃತಾವಭಾಸೇ ಸಮುನ್ಮಿಮೀಲೇವ ಚಿರಾಯ ಚಕ್ಷುಃ”  
ಕಿರಾಂ ೩-೨೬। 4. ಮಿಥ್ಯಾಜ್ಞಾನ, ತಪ್ಪುತಿಳಿವಳಿಕೆ.  
“ಶುಕ್ತಿಕಾಯಾ ರಜತವದವಭಾಸ:”।

**ಅವಭಾಸಕ ಅವಭಾಸಕ** (ನಂ) 1. ಜಗತ್ತೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಪ್ರಕಾಶ  
ಗೊಳಿಸುವ ಪರಬ್ರಹ್ಮ, ಪರಮಾತ್ಮ. ಅವಭಾಸಯತಿ —  
ಅವ + ಭಾಸ್ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿच् “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩)।  
“ಯದಾದಿತ್ಯಗತಂ ತೇಜೋ ಜಗದ್ಭಾಸಯತೇಽಖಿಲಮ್। ಯಚ್ಚಂದ್ರಮಸಿ  
ಯಚ್ಚಾಮ್ನೋ ತತ್ತೇಜೋ ವಿದಿ ಮಾಮಕಮ್” ಗೀತಾ ೧೫-೧೨।  
(ವಿಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವ.

**ಅವಭಾಸಿತ ಅವಭಾಸಿತ** (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಅವ + ಭಾಸ್ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿच् “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)।

**ಅವಭಾಸಿನ್ ಅವಭಾಸಿನ್** (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆ  
ಯುವ. ಅವಭಾಸತೇ — ಅವ + ಭಾಸ್ (ದೀಪ್ತೌ) “ಣಿಣಿ:”  
(೩-೧-೧೩೪)।

**ಅವಭುಗ್ನ ಅವಭುಗ್ನ** (ವಿಂ) ಬಗ್ಗಿರುವ, ಕುಗ್ಗಿರುವ,  
ಬಗ್ಗಿ ಡೊಂಕಾಗಿರುವ. ಅವ + ಭುಜಿ (ಕೌಟಿಲ್ಯೇ) “ಕ್ತ:”  
(೩-೪-೭೨)। ತಸ್ಯ ನತ್ವಮ್ (೮-೨-೪೫)। “ತೀರತರಲ-  
ಜಲರಾಶಿಜಲಾಮವಭುಗ್ನಭೌಗಿಫಣಮಂಡಲಾಂ ಭುವಮ್” ಮಾಘಂ  
೧೫-೫೪।

**ಅವಭೃಥ ಅವಭೃಥ** (ಪುಂ) 1. ಮುಖ್ಯ ಯಾಗದ ಕೊನೆ  
ಯಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಇಷ್ಟಿ. ಅವಭ್ರಿಯತೇಜೇನ — ಅವ + ಭೃತ್  
(ಭರಣೇ) “ಕ್ಥನ್” (೩ಂ ೨-೩)। 2. ಅವಭೃಥ ಸ್ನಾನ,  
ಯಾಗದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಸ್ನಾನ. “ಭುವಂ ಕೋಣೇನ  
ಕುಂಡೋದ್ಧಿ ಮೇಧೇನಾವಭೃಥಾದಪಿ” ರಘುಂ ೧-೮೪।

**ಅವಭ್ರಟ ಅವಭ್ರಟ** (ವಿಂ) ಬಗ್ಗಿದ ಮೂಗುಳ್ಳ. ಅವನತಂ  
ನಾಸಿಕಾಯಾ: “ಭ್ರಟ್” (೫-೨-೩೧)। ಅವಭ್ರಟಮ್। ತದ್ವಿಘಾ-  
ಗ್ರಾಸಿಕಾಪ್ಯವಭ್ರಟಾ। ಸಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಅಚ್” (೫-೨-೧೨೭)।  
“ಅವಟಿಡೋಜನಾಡಕಾವಭ್ರಟೋ ನತನಾಸಿಕೇ” ಅಮಂ।

**ಅವಮ ಅವಮ** (ಪುಂ) 1. ಪಿತ್ತಗಳ ಒಂದು ಗುಂಪು.  
ಅವ (ರಕ್ಷಣಾದೌ) “ಅಮ:” (೩ಂ ೫-೫೪)। (ನಂ) 2.  
ಪಾಪ. 3. ಅವಮದಿನ, (ಚಾಂದ್ರ ಮತ್ತು ಸೌರ



ಮಾಸಗಳ ದಿನಗಳು ಸರಿಹೊಂದುವಂತೆ) ಕ್ಷಯ ಹೊಂದಿದ ತಿಥಿ, ಮೂರು ತಿಥಿಗಳು ಸೇರುವ ಒಂದು ದಿನ. (ವಿಂ) 4. ನೀಚ, ಅಧಮ. 5. ಕೆಳದರ್ಜೆ ಯವನು. 6. ಪಾಪಾತ್ಮ.

ಅವಮತ ಅವಮತ (ವಿಂ) 1. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ+ಮನ(ಜ್ಞಾನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

ಅವಮತಾಕ್ಷುಶ ಅವಮತಾಂಕುಶ (ಪುಂ) 1. ಮದಿಸಿದ ಆನೆ, ಅಡಗಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ ಆನೆ. ಅವಮತಾಕ್ಷುಶೋ ಯೇನ। (ವಿಂ) 2. (ಲಾಕ್ಷಂ) ಸ್ವೇಚ್ಛಾಪ್ರವೃತ್ತಿಯುಳ್ಳವನು, ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ ನಡೆಯುವವನು.

ಅವಮತಿ ಅವಮತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅವಮಾನ, ಅವ+ಮನ (ಜ್ಞಾನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (3-2-114)। "ಅವಮತಿಮನುಕಂಘ್ರೇ ಮಂದಚಿತ್ತೇಷು ವಿಂದನ್" ದಯಾಶಂ। 2. ಅನಾದರ, ತಿರಸ್ಕಾರ.

ಅವಮತಿಥಿ ಅವಮತಿಥಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ಒಂದು ತಿಥಿಯು ಲುಪ್ತವಾಗುವಂತೆ) ಮೂರು ತಿಥಿಗಳ ಸಂಬಂಧವಿರುವ ಒಂದು ದಿನ. "ಸ್ಯುಸ್ತಿಃಸ್ತಿಥಯೋ ವಾರೆ ಏಕಸ್ಮಿನ್ನವಮತಿಥಿ:"।

ಅವಮದಿನ ಅವಮದಿನ (ನಂ) ಮೂರು ತಿಥಿಗಳ ಸಂಬಂಧವಿರುವ ಒಂದು ದಿನ, ಎರಡು ತಿಥಿಗಳ ಕೊನೆಯಭಾಗದ ಸಂಬಂಧವುಳ್ಳ ದಿನ. "ತಿಥ್ಯಂತದ್ವಯಮೇಕೋ ದಿನವಾರೋ ಯತ್ರ ತದ್ಭವತ್ಯವಮದಿನಮ್"।

ಅವಮಂತವ್ಯ ಅವಮಂತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ತಿರಸ್ಕಾರಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ. 2. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. ಅವ+ಮನ (ಜ್ಞಾನೆ) "ತವ್ಯ:" (3-2-116)। "ಬಾಲೋಽಪಿ ನಾವಮಂತವ್ಯೋ ಮನುಷ್ಯ ಇತಿ ಭೂಮಿಪ:" ಮನುಂ ೭-೮।

ಅವಮನ್ತ ಅವಮಂತ (ವಿಂ) 1. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸುವವನು. 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸುವವನು, ಅನಾದರದಿಂದ ಕಾಣುವವನು. ಅವ+ಮನ (ಜ್ಞಾನೆ) "ತೃಕ್" (3-1-133)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ತೃಪ್" (4-1-4)। -ಮನ್ತ್ರಿ -ಮಂತ್ರಿ.

ಅವಮರ್ದ ಅವಮರ್ದ (ಪುಂ) 1. ಪೀಡೆ, ಬಾಧೆ, ನೋವು. 2. ರಾಜ್ಯಾಂಗದಲ್ಲಿ ನಡೆಸಬೇಕಾದ ಉಪಾಯ, ಧಾಳಿಯಿಂದ ಶತ್ರುವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. ಅವ+ಮೃದ(ಕ್ಷೋದೆ) "ಘ್" (3-2-114)। ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-2-115)। -ಮರ್ದನಮ್ -ಮರ್ದನಮ್. 1. ಒತ್ತುವುದು, ಹಿಡುಕುವುದು, ಹಿಂಡುವುದು. 2. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 3. ಮರ್ದಿಸುವ, ಹಿಡುಕುವ, ಹಿಂಡುವ. ಅವ+ಮೃದ "ಲ್ಯು:" (3-1-134)।

ಅವಮರ್ಶ ಅವಮರ್ಶ (ಪುಂ) 1. ನಾಟಕದ ಪಂಚಸಂಧಿಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. 2. ಸ್ಪರ್ಶ, ಸಂಬಂಧ, ಸಂಪರ್ಕ. 3. ಆಲೋಚನೆ. ಅವ+ಮೃಶ (ಆಮರ್ಶನೆ) "ಘ್" (3-2-114)। "ಮುಖಂ ಪ್ರತಿಮುಖಂ ಗರ್ಭಃ ಸಾವಮರ್ಶೋಪಸಂಹೃತಿ:"।

ಅವಮಾನ ಅವಮಾನ (ಪುಂ) 1. ಅವಮಾನ, ಅಗೌರವ. 2. ತಿರಸ್ಕಾರ. ಅವ+ಮನ (ಜ್ಞಾನೆ) "ಘ್" (3-2-114)। "ಅಥಾವಮಾನೇನ ಪಿತುಃ ಪ್ರಯುಕ್ತಾ ದಕ್ಷಸ್ಯ ಕನ್ಯಾ ಭವಪೂರ್ವಪತ್ನೀ" ಕುಮಾಂ 1-21।

ಅವಮಾನನ ಅವಮಾನನ (ನಂ) 1. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸುವುದು, ಅಗೌರವಪಡಿಸುವುದು. ಅವ+ಮನ (ಜ್ಞಾನೆ) + ಣಿಕ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-2-115)। 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸುವುದು, ಅನಾದರದಿಂದ ಕಾಣುವುದು. "ಶೌರೀರವನಿ-ಪತಿಭಿರ್ನಿಖಿಲೈರವಮಾನನಾರ್ಥಮಿಹ ಕಿ ನಿಮನ್ವಿತೆ:" ಮಾವಂ 14-18। ಅವ+ಮನ+ಣಿಕ್ "ಯುಕ್" (3-2-109)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಮಾನನಾ -ಮಾನನಾ.

ಅವಮಾನನೀಯ ಅವಮಾನನೀಯ (ವಿಂ) 1. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಅನಾದರಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ. 2. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. ಅವ+ಮನ (ಜ್ಞಾನೆ) + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-116)।

ಅವಮಾನಿತ ಅವಮಾನಿತ (ವಿಂ) 1. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ+ಮನ (ಜ್ಞಾನೆ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102)। ಮಾನ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಕ್ತೋ" ವಾ।

ಅವಮಾನ್ಯ ಅವಮಾನ್ಯ (ವಿಂ) 1. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. ಅವ+ಮನ (ಜ್ಞಾನೆ) "ಞ್ಯತ್" (3-1-124)। "ನಾವಮಾನ್ಯೋ ಭವದ್ವಿಶ್ವ ಹರಿರ್ಧೀರಪರಾಕ್ರಮ:" ರಾಮಾಂ।

ಅವಮಾರ್ಜನ ಅವಮಾರ್ಜನ (ನಂ) 1. ತೊಳೆಯುವುದು, ಶುದ್ಧಿಮಾಡುವುದು. ಅವ+ಮೃಜ್ (ಶುದ್ಧಿ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-2-115)। 2. ತೊಳೆಯುವ; ನೀರು, ಗುಡಿಸುವ ಪೊರಕೆ ಮುಂತಾದುದು. ಅವ+ಮೃಜ್ + ಣಿಕ್ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-2-116)। ಭಾವೇ "ಯುಕ್" (3-2-109)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಮಾರ್ಜನಾ -ಮಾರ್ಜನಾ.

ಅವಮೂರ್ಛ ಅವಮೂರ್ಛ (ವಿಂ) ಬಗ್ಗಿದ ತಲೆಯುಳ್ಳ, ತಲೆಯನ್ನು ತಗ್ಗಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ. ಅವನತೋ ಮೂರ್ಛಾ ಯಸ್ಯ।

ಅವಮೂರ್ಛಶಯ ಅವಮೂರ್ಛಶಯ (ವಿಂ) 1. ಮಗುಚೆ ಕೊಂಡು ಮಲಗುವವನು, ಕೆಳಮುಖವಾಗಿ ಮಲಗುವವನು. ಅವಮೂರ್ಛಾ ಸನ್ ಶೇತೇ -ಶೀಘ್ರ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಅಕ್"।



(ವಾಂ ೩-೨-೧೪) 1. ಕೆಳಮುಖವಾಗಿ ಮಲಗುವ ಸ್ವಭಾವದ (ಮನುಷ್ಯ). "ಉತ್ತಾನಶಯಾ ದೇವಾ ಅವಮೂರ್ಘಶಯಾ ಮನುಷ್ಯಾಃ" 1. [ಗರ್ಭದಲ್ಲಿರುವಾಗ ಮನುಷ್ಯನು ಅಧೋ ಮುಖವಾಗಿ ಮಲಗುವನು.]

**ಅವಮೋಚನ** ಅವಮೋಚನ (ನಂ) ಬಂಧನದಿಂದ ಬಿಡಿಸುವುದು. ಅವ + ಮುಚ್ಚ (ಮೋಕ್ಷಣಂ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) 1.

**ಅವಮೋಟನ** ಅವಮೋಟನ (ನಂ) 1. ಅರೆಯುವುದು, ಬೀಸುವುದು. 2. ಮರ್ದಿಸುವುದು, ಜಜ್ಜುವುದು. ಅವ + ಮುಟ (ಸಂಚೂರ್ಣಂ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) 1.

**ಅವಯವ** ಅವಯವ (ಪ್ರಂ) 1. ಶರೀರದ ಒಂದು ಅಂಗ; ಕೈ, ಕಾಲು ಮುಂತಾದುದು. ಅವ ಯತಿ - ಅವ + ಯ (ಮಿಶ್ರಣಂ ಮಿಶ್ರಣಂ ಚ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) 1. "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭) ವಾ 1. "ಮುಖಾವಯವಲನಾಂ ತಾಂ ನೈಶ್ವಂತಾ ಯತ್ಪುರೋ ದಧುಃ" ರಘುಂ ೧೨-೪೩. 2. ಒಂದು ಭಾಗ, ವಸ್ತುವಿನ ಒಂದು ಭಾಗ, ಏಕದೇಶ. 3. (ತಾರ್ಕಿಕರ) ನ್ಯಾಯಾಂಗ. [ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ, ಹೇತು, ಉದಾಹರಣ, ಉಪನಯ ಮತ್ತು ನಿಗಮನಗಳೆಂದು ವಾದದ ಪಂಚಾವಯವಗಳು. ಇವೇ ನ್ಯಾಯಾಂಗಗಳು.] 4. ಉಪಾಯ, ಸಾಧನ, ಉಪಕರಣ. 5. ಪ್ರತಿಜ್ಞಾದಿ ಐದು ಅವಯವಗಳ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ.

**ಅವಯವಿನ್** ಅವಯವಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತಿಜ್ಞಾದಿ ಪಂಚಾವಯವಗಳನ್ನೊಳಗೊಂಡ (ತಾರ್ಕಿಕರ ವಾದ). 2. ಒಂದು ಸಂಪೂರ್ಣ ವಸ್ತು, ನಾನಾಭಾಗಗಳನ್ನೊಳಗೊಂಡ ಒಂದು ಪೂರ್ಣವಸ್ತು. ಅವಯವಾಃ ಸಂತಯಸ್ಯ "ಛನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) 1.

**ಅವರ** ಅವರ (ಪ್ರಂ) 1. ಅನಂತರದ ಕಾಲ, ಮುಂದಿನ ಕಾಲ. 2. ಹಿಂಭಾಗದ ದೇಶ. ಅವರಾತಿ - ರಾ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೬) 1. (ನಂ) 3. ಅನೆಯ ತೊಡೆಯ ಹಿಂಭಾಗ. (ವಿಂ) 4. ಕೊನೆಯದಾದ, ಕಡೆಯದಾದ. 5. ಅಧಮವಾದ, ನಿಕೃಷ್ಟವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಲ್ಲದ. ನ ವರಃ 1. "ದ್ವೇಷಾ ಹವರಂ ಕರ್ಮ ಬುದ್ಧಿಯೋಗಾದ್ವನಂಜಯ" ಗೀತಾ ೨-೪೯. 6. ಹಿಂಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ. 7. ಕಿರಿದಾದ, ಚಿಕ್ಕದಾದ. 8. ಬಹಳ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ. ನಂ ಬಂ 1.

**ಅವರಜ** ಅವರಜ (ಪ್ರಂ) 1. ಕಿರಿಯ ಸಹೋದರ. ಅವರಸ್ಮಿನ್ ಕಾಲೇ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಛಃ"

(೩-೨-೧೭) 1. "ಸೌಮಿತ್ರಿಣಾ ಸಾವರಜೇನ ಮಂದಮಾಧುತಬಾಲ-ವ್ಯಜನೋ ರಥಸ್ಥಃ" ರಘುಂ ೧೪-೧೧. 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾದಿ ನಾಲ್ಕು ವರ್ಣಗಳಲ್ಲಿ ಕೊನೆಯ ವರ್ಣದವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜಾ -ಜಾ. (1) ಕಿರಿಯ ಸಹೋದರ.

"ರಾವಣಾಕರಜಾ ತತ್ರ ರಾಘವಂ ಮದನಾತುರಾ" ರಘುಂ ೧೨-೩೨. (2) ಶೂದ್ರ ಹೆಂಗಸು. (ವಿಂ) 3. ಅನಂತರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. "ಆತ್ಮಭೂರವರಜಾ-ಖಿಲಪ್ರಜಃ ಸ್ವರ್ಪತೇರವರಜತ್ವಮಾಯಯಿ" ಮಾಘಂ ೧೪-೭೪.

**ಅವರತ** ಅವರತ (ವಿಂ) ವಿಶ್ರಾಂತಿಪಡೆದ, ವಿರಾಮ ಹೊಂದಿದ. ಅವ + ರಮ (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) 1.

**ಅವರತಸ್** ಅವರತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಹಿಂಭಾಗದಲ್ಲಿ. 2. ಅನಂತರದಲ್ಲಿ. 3. ಕೆಳಗೆ. ಅವರ "ಅತಸುಚ್" (೪-೩-೨೯) 1.

**ಅವರತಿ** ಅವರತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿಶ್ರಾಂತಿ, ವಿರಾಮ. 2. ನಿವೃತ್ತಿ, ನಿಲ್ಲಿಸುವಿಕೆ, ಸಾಕುಮಾಡುವಿಕೆ. ಅವ + ರಮ (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) 1. 3. ಬೇಜಾರು.

**ಅವರವರ್ಣ** ಅವರವರ್ಣ (ಪ್ರಂ) 1. ಕೊನೆಯ ವರ್ಣದವನು, ಶೂದ್ರ. 2. ಕೊನೆಯವರ್ಣ. -ವರ್ಣಜ -ವರ್ಣಜ. ಕೊನೆಯ ವರ್ಣದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅವರವರ್ಣಂ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಛಃ" (೩-೨-೧೭) 1.

**ಅವರವ್ರತ** ಅವರವ್ರತ (ಪ್ರಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಅರ್ಕ ವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದಗಿಡ. (ವಿಂ) 3. ಅಧಮ, ನೀಚ. ಅವರಮ್ ಅಧಮಂ ವ್ರತಮಸ್ಯ 1.

**ಅವರಶಿಲ** ಅವರಶಿಲ (ಪ್ರಂ) ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ ಬೆಟ್ಟ, ಅಸ್ತಪರ್ವತ.

**ಅವರಸ್ತಾತ್** ಅವರಸ್ತಾತ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಹಿಂಭಾಗದಲ್ಲಿ. 2. ಕೆಳಭಾಗದಲ್ಲಿ. 3. ಅನಂತರದಲ್ಲಿ, ಬಳಿಕ. 4. ಮುಂದಿನಕಾಲದಲ್ಲಿ. 5. ಹಿಂದಿನ ದೇಶದಲ್ಲಿ. 6. ಹಿಂದಿನ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ. [ಇದಲ್ಲದೆ ಪ್ರಥಮಾ ಮತ್ತು ಪಂಚಮಾವಿಭಕ್ತೃರ್ಥಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಇದರ ಪ್ರಯೋಗವುಂಟು.]

**ಅವರಾಧ್ಯ** ಅವರಾಧ್ಯ (ನಂ) 1. ಕೊನೆಯ ಅರ್ಧಭಾಗ. 2. ಬಹಳ ಕಡಿಮೆ ಭಾಗ, ಕನಿಷ್ಠಪರಿಮಾಣ. 3. ಶರೀರದ ಹಿಂಭಾಗ.

**ಅವರಾಧ್ಯ** ಅವರಾಧ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ. ಅವರಾಧ್ಯಂ ಭವಃ "ಯತ್" (೪-೩-೪೪) 1. 2. ಕೊನೆಯ ಅರ್ಧಭಾಗದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ.



ಅವರೋಣ ಅವರೋಣ (ವಿಂ) ತರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಧಕ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಅವರಿಯತೆ ಸ್ಮ - ಅವ + ರಿಡ್ (ಸ್ರವಣ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। "ಅವರೋಣೋ ಧಿವಕ್ತುಶ್ಚ" ಅಮಂ।

ಅವರಿಯಸ್ ಅವರಿಯಸ್ (ವಿಂ) ಬಹಳ ನಕ್ಕು ನಗುವುದು. ನ ವರಿಯಾನ್। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (4-1-6)। ಅವರಿಯಸಿ ಅವರಿಯಸೀ.

ಅವರೂಗ ಅವರೂಗ (ವಿಂ) 1. ರೋಗದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಅವ + ರೂಜ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। 2. ಮುರಿದಿರುವ, ಒಡೆದುಹೋಗಿರುವ. ಅವ + ರೂಜ (ಭಜ್ಜೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। "ಅವರೂಗತುಙ್ಗ-ಸುರದಾಹತರೋ" ಕಿರಾಂ 6-4।

ಅವರೂಡ ಅವರೂಡ (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟು. ಅವ + ರೂಢಿ (ಆವರಣ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। 2. ರಹಸ್ಯವಾದ, ಇತರರಿಗೆ ತಿಳಿಯದಂತಿರುವ. "ಅಸ್ತಿ ಕಶ್ಚಿದ್ರಾಜ-ಸುನುರವರೂಡಶ್ಚರನ್" ದಶಕುಂ। 3. ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಯಾರಿಗೂ ತಿಳಿಯದಂತೆ ಗೋಪ್ಯವಾಗಿಡಲ್ಪಟ್ಟು. "ತಾಸಾಂ ಚೇದವರೂಡಾನಾಂ ಚರಂತೀನಾಂ ಮಿಥೋ ವನೇ। ಯಾಮುತ್ಸುಲ್ಯ ವೃಕೋ ಹನ್ಯಾನ್ ಪಾಲಸ್ತತ್ರ ಕಿಲ್ವಿಷಿ" ಮನುಂ 6-236। 4. ಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ತಡೆದಿಡಲ್ಪಟ್ಟು. 5. ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಮುತ್ತಿಗೆ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು.

ಅವರೂಡ ಅವರೂಡ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಡೆ, ಅಡ್ಡಿ. 2. ಮುತ್ತಿಗೆ, ಆಕ್ರಮಣ. ಅವ + ರೂಢಿ (ಆವರಣ) "ಕ್ತಿನ" (3-3-94)।

ಅವರೂಡ ಅವರೂಡ (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿದಿರುವ. ಅವ + ರೂಹ ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (3-4-92)। 3. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಕೆತ್ತುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು. ಅವ + ರೂಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

ಅವರೋಧ ಅವರೋಧ (ಪುಂ) 1. ಅಂತಃಪುರ, ರಾಣಿವಾಸ. ಅವರೂಢ್ಯತೇಷ್ವ - ಅವ + ರೂಢಿ (ಆವರಣ) "ಘ್" (3-3-121)। "ತೇನಾವರೋಧಪ್ರಮದಾಸಖೇನ ವಿಗಾಹಮಾನೇನ ಸರಿದ್ಧರಾಂ ತಾಮ್" ರಘುಂ 16-91। 2. ಅಂತಃಪುರದ ಹೆಂಗಸು, ಮಹಿಷಿ, ರಾಜನ ಪತ್ನಿ. ಅವರೂಢ್ಯತೆ ಸ್ಮ - ಅವ + ರೂಢಿ ಕರ್ಮಂ "ಘ್" (3-3-121)। "ಕಾಕುತ್ಸ್ಥ-ಶ್ಚಿರವಿರಹೋತ್ಸುಕಾವರೋಧಾನ್ ರಾಜನ್ಯಾನ್ ಸ್ವಪುರನಿವೃತ್ತಯೇ-ನುಮೇನೆ" ರಘುಂ 4-69। 3. ತಡೆ, ಅಡ್ಡಿ, ಪ್ರತಿಬಂಧಕ. ಅವ + ರೂಢಿ ಭಾವೇ "ಘ್" (3-3-121)। 4. ಮುತ್ತಿಗೆ, ಆಕ್ರಮಣ. 5. ಮರೆಯಾಗುವಿಕೆ. "ಅವರೋಧಸ್ತಿರೋಧಾನೇ ರಾಜವಾರೇಷು ತದ್ಗ್ರಹೇ" ಮೇದಿಂ। 6. ರಾಜನ ಅರಮನೆ.

7. ಹಳ್ಳ, ತಗ್ಗು ಪ್ರದೇಶ, ಗುಳಿ. 8. ಕೈಸೆರೆ, ಪೈದು, "ಅವರೋಧಸ್ತು ನೃಪೌಕಸಿ। ಶುದ್ಧಾಂತೇ ಚ ತಿರೋಧಾನೇ ಗರ್ತಾದೌ ರೋಧನೇಽಪಿ ಚ" ಹೇಮಂ। "ಅವರೋಧೋ ರಾಜಗೃಹೇ ಶುದ್ಧಾಂತೇಽ-ಪ್ಯವರೋಧನೇ" ನಾನಾರ್ಥಂ। 9. ಕಾವಲುಗಾರ. 10. ಆಚ್ಛಾದನ, ಹೊದಿಕೆ. 11. ಬೇಲಿ, ಮುಳುನ ಆವರಣ. ಅವ + ರೂಢಿ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। -ರೋಧನಮ್ -ರೋಧನವತ್. "ಕಂಠಾವಸಕ್ತಮುದುಬಾಹುಲತಾ-ಸ್ತುರಜ್ಞಾದ್ರಾವಾವರೋಧನವಧೂರವತಾರಯಂತಃ" ಮಾಘಂ 4-18।

ಅವರೋಧಕ ಅವರೋಧಕ (ಪುಂ) 1. ಕಾವಲುಗಾರ. (ನಂ) 2. ಬೇಲಿ. ಅವ + ರೂಢಿ (ಆವರಣ) "ಫುಲ್" (3-1-133)। (ವಿಂ) 3. ತಡೆಗಟ್ಟುವ, ಅಡ್ಡಿ ಮಾಡುವ. 4. ಮುತ್ತಿಗೆ ಹಾಕುವ. "ಸುಧನ್ವಾ ವೀರ್ಯವಾನ್ ರಾಜಾ ಮಿಥಿಲಾಮವರೋಧಕಃ" ರಾಮಾಂ।

ಅವರೋಧಿಕ ಅವರೋಧಿಕ (ಪುಂ) 1. ಕಂಚುಕೆ, ಅಂತಃಪುರದ ರಕ್ಷಕ. ಅವರೋಧೇ ನಿಯುಕ್ತಃ "ಠಕ್" (4-4-69)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರೋಧಿಕಾ -ರೋಧಿಕಾ. ಅಂತಃಪುರದ ಹೆಂಗಸು, ರಾಜನ ಪತ್ನಿ. ಅವರೋಧೋ ವಾಸತ್ವೇನಾಸ್ತೃತ್ಯಾಃ। "ವಲ್ಗಾದ್ಗರೀಯಃಸ್ತನಕಮ್ಪ್ರಕಚ್ಚುಕಂ ಯಯಸ್ತುರಜ್ಞಾಧಿರೂಢಿ-ವರೋಧಿಕಾಃ" ಮಾಘಂ 12-20।

ಅವರೋಧಿನ್ ಅವರೋಧಿನ್ (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯುವ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವ, ವಿಘ್ನವುಂಟುಮಾಡುವ. 2. ಮುತ್ತಿಗೆ ಹಾಕುವ, ಆಕ್ರಮಿಸುವ. ಅವರೂಢಿ - ಅವ + ರೂಢಿ (ಆವರಣ) "ಞಿನಿಃ" (3-1-134)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (4-1-4)। -ರೋಧಿನಿ -ರೋಧಿನೀ.

ಅವರೋಪಣ ಅವರೋಪಣ (ನಂ) 1. ಕೀಳುವುದು, ಕೆತ್ತು ಹಾಕುವುದು. 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಸುವುದು. ಅವ + ರೂಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) + ಣಿಚ್ (ಪುಕ್) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಅವರೋಪಿತ ಅವರೋಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಕೆತ್ತುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು. ಅವ + ರೂಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) + ಣಿಚ್ (ಪುಕ್) "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

ಅವರೋಹ ಅವರೋಹ (ಪುಂ) 1. ಇಳಿಕೆ, ಇಳಿಯುವುದು, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬರುವುದು. ಅವ + ರೂಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಘ್" (3-3-121)। 2. ಆರೋಹಣ, ಮೇಲಕ್ಕೇರುವಿಕೆ. 3. ಸ್ವರ್ಗ. ಅವರೋಹತ್ಯಸ್ಮಾತ್। [ಪುಣ್ಯದ ಫಲವನ್ನನು ಭವಿಸಿದನಂತರ ಸ್ವರ್ಗದಿಂದ ಭೂಮಿಗೆ ಇಳಿಯುವುದ ರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.] "ಕ್ಷಿಣೇ ಪುಣ್ಯೇ ಮರ್ತ್ಯಲೋಕಂ ವಿಶಂತಿ"। "ಸ್ವಲೋಕೋ ದೇವಲೋಕಃ ಸ್ಯಾದವರೋಹಃ ಫಲೋದಯಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 4. ಲತೆ, ಬುಡದಿಂದ ಮರದ ಮೇಲಿನವರೆಗೂ ಹಬ್ಬುವ



ಬಳ್ಳಿ. "ಅವರೋಹಣಾರೋಹೇ ಚ ಲತೋದ್ರಮೇ" ಮೇದಿಂ. 5. ಮರದ ರೆಂಬೆಗಳಿಂದ ಭೂಮಿಯವರೆಗೂ ಇಳಿಯುವ ಬಿಳಲು (ಆಲದ ಮರದ ಬಿಳಲು). "ಅವರೋಹಣಾಕೀರ್ಣಿ ವಟಮಾಸಾಽಽ ತಸ್ಯತುಃ" ರಾಮಾಂ. 6. ಸಂಗೀತದ ಅವರೋಹಣ, ಸ್ವರಗಳ ಇಳಿಕೆ. ಅವ+ಠ್ಹ "ಘಃ" (3-3-114)।

ಅವರೋಹಣ ಅವರೋಹಣ (ನಂ) ಇಳಿಯುವಿಕೆ, ಮೇಲಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬರುವಿಕೆ. ಅವ+ಠ್ಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಅವರೋಹಣಾಶ್ಚ ಅವರೋಹಣಾಶ್ಚ (ಪುಂ) ವಟವೃಕ್ಷ, ಆಲದಮರ.

ಅವರೋಹಣಾಶ್ಚಿನ್ ಅವರೋಹಣಾಶ್ಚಿನ್ (ಪುಂ) ವಟವೃಕ್ಷ, ಆಲದಮರ. ಅವರೋಹಾಃ ಅಧೋಗಚ್ಛಂತಿಃ ಶಾಖಾಃ ಸಂತ್ಯಸ್ಯ "ಙಿಃ" (4-2-114)।

ಅವರೋಹಿಕಾ ಅವರೋಹಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಶ್ವಗಂಧಾಲತೆ. ಅವರೋಹತಿ ಅಧೋಗಚ್ಛತಿ—ಅವ+ಠ್ಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಞ್" (3-1-133)। "ಠಾಪ್" (4-1-4)। ಅತಃ ಇತ್ವಮ್ (3-3-44)।

ಅವರೋಹಿನ್ ಅವರೋಹಿನ್ (ಪುಂ) 1. ವಟವೃಕ್ಷ, ಆಲದ ಮರ. ಅವರೋಹತಿ—ಅವ+ಠ್ಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಞಿಃ" (3-2-66)। (ವಿಂ) 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (4-1-4)। -ರೋಹಿಣಿ-ರೋಹಿಣೀ.

ಅವರ್ಗ ಅವರ್ಗ (ಪುಂ) 1. "ಅ" ಕಾರಕ್ಕೆ ಸಮನಾದ ಸ್ವರವರ್ಣಗಳ ಗುಂಪು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಅ" "ಆ" ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] (ವಿಂ) 2. ಸಮೂಹವಿಲ್ಲದ, ಗುಂಪಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ವರ್ಗಃ ಸಮೂಹೋ ಯಃ।

ಅವರ್ಗೀಯ ಅವರ್ಗೀಯ (ವಿಂ) ಅವರ್ಗೀಯ ವ್ಯಂಜನ, ಕಾದಿ ಪಂಚವರ್ಗ (ಕವರ್ಗ, ಚವರ್ಗ, ಟವರ್ಗ, ತವರ್ಗ ಮತ್ತು ಪವರ್ಗ)ಗಳಿಗೆ ಸೇರಿದ ವ್ಯಂಜನ ವರ್ಣಗಳು. ಯ ರ ಲ ವ ಶ ಷ ಸ ಹ ವರ್ಣಗಳು ಅವರ್ಗೀಯ ವ್ಯಂಜನಗಳು.

ಅವರ್ಣ ಅವರ್ಣ (ಪುಂ) 1. ಹ್ರಸ್ವ ದೀರ್ಘ ಪುಲ್ಕ ಮೊದಲಾದ ಹದಿನೆಂಟು ಭೇದಗಳುಳ್ಳ "ಅ" ವರ್ಣ. "ಅ ಇತ್ಯಷ್ಟಾದಶಾನಾಂ ಸಂಜ್ಞಾ" ಸಿಂ ಕೌಂ. 2. ಅಪವಾದ, ಅಪಕೀರ್ತಿ. ವರ್ಣ್ಯತೇ—ವರ್ಣ (ವರ್ಣನೆ) "ಘ್" (3-3-114)। ವರ್ಣಃ ಸ್ತುತಿಃ। ನ ವರ್ಣಃ। ವಿರೋಧೇ ನಂ ತಂ। "ಸೌದ್ ನ ತತ್ಪೂರ್ವಮವರ್ಣಮಿಶ್ರಂ ಆಲಾನಿಕಂ ಸ್ಥಾಣುಮಿವ ಡ್ರಿಪೇಂದ್ರಃ" ರಘುಂ 14-36. 3. ನಂದೆ, ಬೈಗಳು. "ನ ಚಾವದ್ಭರ್ತುರವರ್ಣಮಾರ್ಯಾ ನಿರಾಕರಿಣೋರ್ವಜಿನಾದೃತೇಷಿ" ರಘುಂ 14-49।

ಅವರ್ತನ ಅವರ್ತನ (ನಂ) 1. ಅಸತ್ತೆ, ಅಭಾವ, ಇಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ಜೀವನೋಪಾಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಹೊಟ್ಟೆ ಪಾಡಿಗೆ ಗತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಂ ತಂ। (ವಿಂ) 3. ಜೀವನೋಪಾಯವಿಲ್ಲದ. ನ ವರ್ತನಂ ಯಸ್ಯ।

ಅವರ್ತಮಾನ ಅವರ್ತಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಇಲ್ಲದಿರುವ. 2. ಹಿಂದಿನಕಾಲದ, ಈಗಿನದಲ್ಲದ. 3. ಮುಂದಿನ ಕಾಲದ.

ಅವಲಕ್ಷ ಅವಲಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಬಿಳುಪು. ಅವಲಕ್ಷತೇ—ಅವ+ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನಾಕ್ಷುನಯೋಃ) "ಘ್" (3-3-114)। [ಇಲ್ಲಿ "ಅವ" ದ "ಅ" ಕಾರಕ್ಕೆ ವಿಕಲ್ಪವಾಗಿ ಲೋಪವನ್ನು (ವಷ್ಟಿ ಭಾಗುರೀಲೋಪಮವಾಪ್ಯೋಪಸರ್ಗಯೋಃ) ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ "ವಲಕ್ಷಃ" ಎಂದೂ ರೂಪವುಂಟು.] (ವಿಂ) 2. ಬಿಳುವಾದ, ಬಿಳುಬಣ್ಣದ.

ಅವಲಕ್ಷಣ ಅವಲಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟಲಕ್ಷಣ, ಕೆಟ್ಟ ಚಿಹ್ನೆ. (ವಿಂ) 2. ಕೆಟ್ಟಲಕ್ಷಣವುಳ್ಳ, ದುರ್ಲಕ್ಷಣವುಳ್ಳ. ಅವ ನಿಕ್ರುಷ್ಠಂ ಲಕ್ಷಣಂ ಯಸ್ಯ।

ಅವಲಗ್ನ ಅವಲಗ್ನ (ಪುಂ) 1. ದೇಹದ ಮಧ್ಯಭಾಗ, ನಡುವು, ಸೊಂಟ. ಲಗ್ನ (ಸಜ್ಜೆ) "ಕ್" (3-2-114)। ಅವಕೃಷ್ಠಂ ಲಗ್ನಮ್। (ವಿಂ) 2. ಸಂಬಂಧಿಸಿರುವ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವ. "ವಿಪುಲತರ-ನಿರಂತರಾವಲಗ್ನಸ್ತನ್ಮಹಿತಪ್ರಿಯವಕ್ಷಸಾ ಲಲಮ್ಬೇ" ಮಾಘಂ 3-31।

ಅವಲಂಬ ಅವಲಂಬ (ಪುಂ) 1. ಆಶ್ರಯ, ಸಹಾಯ, ಒತ್ತಾಸೆ. ಅವ+ಲಬಿ (ಅವಸಂಸನೇ) "ಘ್" (3-3-114)। 2. ಸಹಾಯಪಡೆಯುವಿಕೆ, ಆಶ್ರಯಹೊಂದುವಿಕೆ. "ತಸ್ಯ ಪಾಂಡುರವದನಾಲ್ಪಭೂಷಣಾ ಸಾವಲಂಬಗಮನಾ ಮೃದುಸ್ವನಾ" ರಘುಂ 19-40. 3. ಊರುಗೋಲು, ಒತ್ತುಗಂಬ. ಅವ+ಲಬಿ ಕರಂ "ಘ್" (3-3-121)। (ವಿಂ) 4. ಜೋಲಾಡುವ, ತೂಗಾಡುವ. ಕರಂ "ಅಚ್" (3-1-134)। -ಲಂಬನ-ಲಂಬನ. (ನಂ) 1. ಆಶ್ರಯ, ಒತ್ತಾಸೆ. ಅವ+ಲಬಿ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। "ಅವಲಂಬನಾಯ ದಿನಭರ್ತುರಭೂತ ಪತಿಷ್ಯತಃ ಕರಸಹಸ್ರಮಪಿ" ಮಾಘಂ 9-6. 2. ಊರುಗೋಲು, ಒತ್ತುಗಂಬ. ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 3. ಒಬ್ಬರನ್ನು ಸೇರುವಿಕೆ, ಆಶ್ರಯಪಡೆಯುವಿಕೆ. "ಹಿರಣ್ಯಾವಲಂಬನದ್ವಾರೇಣ" ಕಾದಂ।

ಅವಲಂಬಿತ ಅವಲಂಬಿತ (ವಿಂ) 1. ಆಶ್ರಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅವಲಂಬಿತೇಲಿಲಿಪಾಣಿಪಲ್ಲವಃ ಅಯತಿ ಸ್ಮ ಮೇಧಮಿವ



ಮೇಘವಾಹನ: " ಮಾಘಂ ೧೩-೧೮. 2. ತೂಗಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ + ಲಬಿ (ಅವಸಂಸನೆ) " ಕ್ತ: " (೩-೩-೧೦೨). 3. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿದಿರುವ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ. ಅವ + ಲಬಿ ಕರ್ತಂ " ಕ್ತ: " (೩-೪-೭೨). (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 4. ತೇಳ್ವಾ, ಜಾಗೃತೆಯಾಗಿ.

ಅವಲಂಬಿನ್ ಅವಲಂಬಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಆಶ್ರಯಹೊಂದಿದ, ಸಹಾಯಪಡೆದಿರುವ, ಒತ್ತಾಸೆಯುಳ್ಳ. ಅವಲಂಬೋ-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ " ಇನಿ: " (೪-೨-೧೧೫). 2. ಆಶ್ರಯಕೊಟ್ಟಿರುವ, ಆಸರೆಯನ್ನಿತ್ತಿರುವ. ಅವ + ಲಬಿ " ಣಿನಿ: " (೩-೧-೧೩೪). " ತಾಮೇಕತಸ್ತವ ವಿಭತಿ ಗುಣವಿನಿಧಸ್ತಸ್ಯಾ ಭವಾನಪರಧುರ್ಯಪದಾವಲಂಬಿ " ರಘುಂ ೪-೬೬. " ಅಸ್ತಾಚಲ-ಚೂಡಾವಲಂಬಿನಿ ಭಗವತಿ ಭಾಸಾನಿಧೌ " ಕಾದಂ. 3. ತೂಗಾಡುವ, ಜೋಲಾಡುವ. " ಅಥ ಭೂಮಿತಾಮ್ರಾಕ್ಷಂ ವೃಕ್ಷ-ಶಾಖಾವಲಂಬಿನಮ್ " ರಘುಂ ೧೪-೪೯.

ಅವಲಿಪ್ತ ಅವಲಿಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಗರ್ವವುಳ್ಳ, ಅಹಂಕಾರವುಳ್ಳ, ಕೊಬ್ಬಿದ. ಅವ + ಲಿಪ (ಅಪದೇಹ) " ಕ್ತ: " (೩-೨-೧೦೨). " ಕೇನಾನ್ಯೇನಾವಲಿಪ್ತಾ ನವ ನವತಿಶತದ್ರವ್ಯ-ಕೋಡಿಶ್ವರಾಸ್ತೇ " ಮುದ್ರಾಂ ೩-೨೭. 2. ಲೇಪನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸುತ್ತಲೂ ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅವಲಿಡ ಅವಲಿಡ (ವಿಂ) 1. ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ + ಲಿಹ (ಆಸ್ವಾದನೆ) " ಕ್ತ: " (೩-೨-೧೦೨). " ದರ್ಶನವಿಲಿಡ: ಶ್ರಮವಿವೃತಮುಖಭ್ರಂಶಿಭಿ: ಕೀರ್ಣವರ್ಮಾ ಪಶ್ಯೋದಗ್ರಪ್ಲುತತ್ವಾದ್ವಿಯತಿ ಬಹುತರಂ ಸ್ತೋಕಮುರ್ವ್ಯಾ ಪ್ರಯಾತಿ " ಶಾಕುಂ ೧-೭. 2. ರುಚಿ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ನೆಕ್ಕಲ್ಪಟ್ಟ, " ಲೋಚ ಲೋಚ " ಎಂದು ಕುಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಸುತ್ತಲೂ ನ್ಯಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲಿಯೂ ಸುತ್ತುವರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. " ಅವಲಿಡಸನಾಭಿರಶ್ವಸೇನ: ಪ್ರಸಭಂ ಕ್ಷಾಣ್ಡವಜಾತವೇದಸಾ ವಾ " ಕಿರಾಂ ೧೩-೧೧.

ಅವಲುಚ್ಚನ ಅವಲುಚ್ಚನ (ನಂ) 1. ಭೇದನ, ಕತ್ತರಿಸುವಿಕೆ. 2. ಉತ್ಪಾಟನ, ಕಿತ್ತುಹಾಕುವಿಕೆ. 3. ಕೆದರಿಸುವಿಕೆ, ಬಿಚ್ಚಿರುವಿಕೆ. 4. ಒಯ್ಯುವಿಕೆ, ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಹೋಗುವುದು. ಅವ + ಲುಚ್ಚ (ಅಪನಯನೆ) " ಲ್ಯುಟ್ " (೩-೩-೧೧೫).

ಅವಲುಠನ ಅವಲುಠನ (ನಂ) 1. ನೆಲದ ಮೇಲೆ ಬಿದ್ದು ಹೊರಳಾಡುವಿಕೆ. ಅವ + ಲುಠಿ (ಸ್ತೇಯ) " ಲ್ಯುಟ್ " (೩-೩-೧೧೫). 2. ಕಳ್ಳತನ.

ಅವಲುಪ್ತ ಅವಲುಪ್ತ (ವಿಂ) ಲೋಪಹೊಂದಿದ, ನಾಶವಾದ. ಅವ + ಲಪ್ (ಛೇದನೆ) " ಕ್ತ: " (೩-೪-೭೨).

ಅವಲೇಪ ಅವಲೇಪ (ಪುಂ) 1. ಗರ್ವ, ಕೊಬ್ಬು, ಅಹಂಕಾರ. ಅವ + ಲಿಪ (ಅಪದೇಹ) " ಘ್ " (೩-೩-೧೮). " ಅವಲೇಪ-ಭರಾಕ್ರಾಂತಾ ಮುರಲೋಕತರಂಗಿಣಿ " ಚಂ ರಾಂ. " ದಂಟಾಭಜ್ಜಂ ಮುಗಾಣಾಮಧಿಪತಯ ಇವ ವ್ಯಕ್ತಮಾನಾವಲೇಪಾ: " ಮುದ್ರಾಂ ೩-೨೨. 2. ಭೂಷಣ, ಒಡವೆ. 3. ಲೇಪನ, ಬಳಿಯುವಿಕೆ. " ಅವಲೇಪಸ್ತು ಗರ್ವೇ ಸ್ಯಾಲೇಪನೇ ಭೂಷಣೇಪಿ ಚ " ಮೇದಿಂ. 4. ಮುತ್ತಿಗೆ, ಧಾಳಿ, ಆಕ್ರಮಣ. " ಕಿ ಭವತೀನಾಮ-ಸುರಾವಲೇಪೇನಾಪರಾಧಮ್ " ವಿಕ್ರಂ ೧. 5. ಸಂಗ, ಸಂಬಂಧ. " ಅವಲೇಪ: ಸಜ್ಜಗವಯೋ: " ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಅವಲೇಪನ ಅವಲೇಪನ (ನಂ) 1. ಲೇಪನ, ಬಳಿಯುವಿಕೆ. 2. ಕೊಬ್ಬು, ಗರ್ವ. ಅವ + ಲಿಪ (ಅಪದೇಹ) " ಲ್ಯುಟ್ " (೩-೩-೧೧೫). 3. ಗಂಧ, ಚಂದನ. 4. ಎಣ್ಣೆ, ತೈಲ. ಕರಂ " ಲ್ಯುಟ್ " (೩-೩-೧೧೫).

ಅವಲೇಹ ಅವಲೇಹ (ಪುಂ) 1. ನೆಕ್ಕುವುದು, " ಲೋಚ ಲೋಚ " ಎಂದು ಕುಡಿಯುವುದು. ಅವ + ಲಿಹ (ಆಸ್ವಾದನೆ) " ಘ್ " (೩-೩-೧೮). 2. ಲೇಹ, ಲೇಹ್ಯ. ಕರಂ " ಘ್ " (೩-೩-೧೯).

ಅವಲೇಹನ ಅವಲೇಹನ (ನಂ) ನಾಲಿಗೆಯಿಂದ ನೆಕ್ಕುವಿಕೆ. ಅವಲೇಹ ಅವಲೇಹ್ಯ (ವಿಂ) ನೆಕ್ಕಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ನಾಲಿಗೆಯಿಂದ ಕುಡಿಯಲು ಅರ್ಹವಾದ.

ಅವಲೋಕ ಅವಲೋಕ (ಪುಂ) 1. ನೋಟ, ದೃಷ್ಟಿ. 2. ನೋಡುವಿಕೆ. ಅವ + ಲೋಕ (ದರ್ಶನೆ) " ಘ್ " (೩-೩-೧೮). " ಅವಲೋಕ ಏವ ನೃಪತೇ: ಸ್ಮ ದೂರತೋ ರಮಸಾ-ದ್ರಥಾದವತರೀತುಮಿಚ್ಛತ: " ಮಾಘಂ ೧೩-೭.

ಅವಲೋಕನ ಅವಲೋಕನ (ನಂ) 1. ನೋಟ, ದೃಷ್ಟಿ. 2. ನೋಡುವುದು, ದೃಷ್ಟಿಯಿಡುವುದು. ಅವ + ಲೋಕ (ದರ್ಶನೆ) " ಲ್ಯುಟ್ " (೩-೩-೧೧೫). " ಅವಲೋಕನಾಯ ಮುರವಿಧಿಷಾಂ ದ್ವಿಷ: ಪಠಪ್ರಣಾಧವಿಹಿತೋಪಹೃತಯ: " ಮಾಘಂ ೧೩-೩೦. 3. ನೇತ್ರ, ಕಣ್ಣು. ಕರಂ " ಲ್ಯುಟ್ " (೩-೩-೧೧೫). " ಯೋಗನಿದ್ರಾಂತವಿಶದೇ: ಪಾವನೇರವಲೋಕನೇ: " ರಘುಂ ೧೦-೧೪.

ಅವಲೋಕಮಾನ ಅವಲೋಕಮಾನ (ವಿಂ) ನೋಡುತ್ತಿರುವ. ಅವ + ಲೋಕ (ದರ್ಶನೆ) " ಶಾನ್ " (೩-೨-೧೨೪).

ಅವಲೋಕಿತ ಅವಲೋಕಿತ (ನಂ) 1. ನೋಟ, ದೃಷ್ಟಿ. ಅವ + ಲೋಕ (ದರ್ಶನೆ) ಭಾವ " ಕ್ತ: " (೩-೩-೧೧೫). (ವಿಂ) 2. ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ + ಲೋಕ " ಕ್ತ: " (೩-೨-೧೦೨).



ಅವಲೋಕಿನ್ ಅವಲೋಕಿನ್ (ವಿಂ) ನೋಡುವ, ವೀಕ್ಷಿಸುವ. ಅವ+ಲೋಕ (ದರ್ಶನ) "ಣಿನ್" (೩-೧-೧೨೪)।  
"ಅವಮಿ ಸೌಭಾಗ್ಯಮದೇನ ವಜ್ಜಿತಂ ತವ ಪ್ರಿಯಂ ಯಶ್ಚತುರಾವಲೋಕಿನ್" ಕುಮಾರಂ ೪-೪೯।

ಅವಲೋಪ ಅವಲೋಪ (ಪುಂ) 1. ನಾಶ. 2. ಕತ್ತರಿಸುವಿಕೆ, ಕುಂದುಮಾಡುವಿಕೆ. 3. ಅಧರವುಂಡನ, ಚುಂಬನ. ಅವ+ಲುಪ್ (ಹಿಡಿದು) ಭಾವ "ಘ" (೩-೩-೧೮)।  
"ಯದಧಯದಧರಾವಲೋಪನೃತ್ಯಕ್ರವಲಯಸ್ವನಿತೇನ ತದ್ವಿವ್ರೇ" ಮಾಘಂ ೭-೪೫।

ಅವಲೋಮ ಅವಲೋಮ (ವಿಂ) ಅನುಕೂಲವಾದ. ಅವಗತಂ ಲೋಮ "ಅ" (೪-೪-೭೫)।

ಅವಲಗ್ನ ಅವಲಗ್ನ (ಪುಂ) 1. ಸೋಮರಾಜೇಲತೆ, ಬಾಹುಜಿಗೆ ಗಿಡ. 2. ಅಸದ್ಭಾವದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ, ನೀಚ ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅವಲೋಕನೋಪನಾಜಾತಃ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಮವಿ) "ಃ" (೩-೩-೧೮)।

ಅವಲಂಕಾರ ಅವಲಂಕಾರ (ನಂ) ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಮರೆ ಯಾಗುವುದು. ಅವ+ಲಂಕ (ಲೇಖನ) ಭಾವ "ಲ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅವಲಾಸ ಅವಲಾಸ (ಪುಂ) 1. ನಿದ್ರೆ, ದೂಷಣೆ. 2. ಅರಸಾರ, ಅನಾದರ. 3. ಅಪಕೀರ್ತಿ, ಅಪವಾದ. ಅವ+ಲಾಸ (ವ್ಯಕ್ತಿಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಘ" (೩-೩-೧೮)।

ಅವಶ ಅವಶ (ವಿಂ) 1. ಪರತಂತ್ರ, ಇತರರಿಗೆ ಅಧೀನ ನಾದ. "ಭೂತಗ್ರಾಮಮಿಮಂ ಕೃತ್ಸನಮವಶಂ ಪ್ರಕೃತೇವಂಶಾತ್" ಗೀತಾ ೧-೮. 2. ಪರಾಧೀನನಲ್ಲದ, ಸ್ವತಂತ್ರನಾದ. 3. ಪ್ರತಿ ಕೂಲವಾದ. ನಾಸ್ತಿ ವಶ ಸ್ವಸ್ಯ ಪರಸ್ಯ ವಾ ಆಯತ್ತತ್ವಂ ವಸ್ಯ। "ಮಧುರೇವಶಾನಿ ಲಘುಯನ್ತಪಿ ತಿರಿಯಂಜಿವ ಶಮಂ ನಿರೀಕ್ಷಿತಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೫೫। 4. ಅಸಮರ್ಥ, ಪ್ರತಿ ಕಾರಾಶಕ್ತ. "ಮಾಮಗ್ರಾಸನತೋಜ್ವಕೃಷ್ಣಮವಶಂ ಯೇ ದೃಷ್ಟವಂತಃ ಪುರಾ" ಮುದ್ರಾಂ ೧-೧೨।

ಅವಶಿರಸ್ ಅವಶಿರಸ್ (ವಿಂ) ಬಗ್ಗಿದ ತಲೆಯುಳ್ಳ. ಅವನತಂ ಶಿರೋ ಯಸ್ಯ।

ಅವಶಿಷ್ಟ ಅವಶಿಷ್ಟ (ನಂ) 1. ಉಳಿಕೆ, ಶೇಷ. ಅವ+ಶಿಷ (ಅಸರ್ವೋಪಯೋಗ) "ಕ್" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಉಳಿದಿರುವ, ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. ಅವ+ಶಿಷ "ಕ್" (೩-೪-೭೨)। "ಆರಣ್ಯಕೋಪಾತ್ತಫಲಪ್ರಸೂತಿಃ ಸ್ತಾಮ್ಬೇನ ನಿವಾರ ಇವಾವಶಿಷ್ಟಃ" ರಘುಂ ೪-೧೫।

ಅವಶಿಷ್ಠ ಅವಶಿಷ್ಠ (ಪುಂ) 1. ಕ್ರಮತಃ ಮಲಗುವಿಕೆ, ಮೊಗುಟಿಕೊಂಡು ಮಲಗುವಿಕೆ. [ವೈದ್ಯಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ

ಈ ರೀತಿ ಮಲಗುವುದು ದೋಷವೆಂದು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ.]  
"ಅವಾಕ್ಶೀರ್ಷಿ ದೀರ್ಘನ್ಯುಜ್ಜೋತ್ತಾನಸಂಕುಚಿತದೇಹಸ್ಥಿತತಾ ದಕ್ಷಿಣ- ಪಾರ್ಶ್ವಸ್ಥಾಯಿನಃ ಪ್ರದಾನಮಿತಿ ಸಪ್ತ ಶಯ್ಯಾದೋಷಃ" ಸುಶ್ರುತಂ 1.  
2. ಒಂದುವಿಧ ನೇತ್ರರೋಗ. (ವಿಂ) 3. ಬಗ್ಗಿದ ತಲೆಯುಳ್ಳ. ಅವನತಂ ಶಿರೋ ಯಸ್ಯ - ವಾ "ಕ" (೪-೪-೧೫೪)। -ಶಿರ್ಷಕ -ಶೇಷಕ. "ಅತಿಪೀಡಿತವ- ದೋಷಾನ್ ವಿಧಿ ಚಾಪ್ಯವಶಿರ್ಷಕೇ" ಸುಶ್ರುತಂ 1.

ಅವಶೋಷ ಅವಶೋಷ (ಪುಂ) 1. ಶೇಷ, ಉಳಿಕೆ. ಅವ+ಶಿಷ (ಅಸರ್ವೋಪಯೋಗ) "ಘ" (೩-೩-೧೮)। (ವಿಂ) 2. ಅವಶಿಷ್ಟವಾದ, ಉಳಿದಿರುವ. "ಸ ನಂದಿನೀಸ್ತನ್ಯ- ಮನಿಂದಿತಾತ್ಮಾ ಸದ್ವತ್ಸಲೋ ವತ್ಸಹುತಾವಶೋಷಮ್" ರಘುಂ ೨-೬೯।

ಅವಶೋಷ ಅವಶೋಷ (ಪುಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಒಣಗುವಿಕೆ. ಅವ+ಶುಷ (ಶೋಷಣೆ) ಭಾವ "ಘ" (೩-೩-೧೮)।

ಅವಶ್ಯ ಅವಶ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅಧೀನನಲ್ಲದ, ಸ್ವತಂತ್ರನಾದ. 2. ಅಡಗಿಸಲು ಶಕ್ಯವಲ್ಲದ, ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲಾಗದ. 3. ಅನಿವಾರ್ಯ, ಅಪರಿಹಾರ್ಯ, ತಪ್ಪಿಸಲಾಗದ. ನ ವಶ್ಯಃ।

ಅವಶ್ಯಮ್ ಅವಶ್ಯಮ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅಗತ್ಯವಾಗಿ, ಅವಶ್ಯ ವಾಗಿ, ಅನಿವಾರ್ಯವಾಗಿ. 2. ನಿಜವಾಗಿ, ನಿಃಸಂದೇಹ ವಾಗಿ. ಅವಶ್ಯಾಯತೇ - ಅವ+ಶ್ಯಙ್ (ಗತೌ) "ಙ"।  
"ತಾಂ ಚಾವಶ್ಯಂ ದಿವಸಗಣನಾತತ್ಪರಾಮೇಕಪತ್ನೀಮ್" ಮೇಘಂ ೧-೧೦।

ಅವಶ್ಯಪುತ್ರ ಅವಶ್ಯಪುತ್ರ (ಪುಂ) ಶಿಕ್ಷಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ ಮಗ, ಅಧೀನನಲ್ಲದ ಮಗ, ಅವಿಧೇಯನಾದ ಮಗ.

ಅವಶ್ಯಾ ಅವಶ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ವತಂತ್ರಳಾದ ಹೆಂಗಸು.

ಅವಶ್ಯಾಯ ಅವಶ್ಯಾಯ (ಪುಂ) 1. ಹಿಮ, ಹೆಪ್ಪುಗಟ್ಟಿದ ಮಂಜು, ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಮಂಜು. ಅವ+ಶ್ಯಙ್ (ಗತೌ) "ಙ" (೩-೧-೧೪೧)। "ಅವಶ್ಯಾಯಕಣಾಸ್ತಾವಾ- ಇಚ್ಛಾಮುಕ್ತಾಫಲತ್ವಿಷಃ" ಭಟ್ಟಿಂ ೬-೮೦। 2. ಗರ್ವ, ಅಭಿಮಾನ, ಅಹಂಕಾರ. "ಅವಶ್ಯಾಯಸ್ತು ನಿಹಾರೇಷ್ಯಾಭಿ- ಮಾನೇಷಿ ಪುಸ್ಯಯಮ್" ಮೇದಿಂ 1.

ಅವಶ್ರಯಣ ಅವಶ್ರಯಣ (ನಂ) ಅಡಗಿಯಾದನಂತರ ಒಲೆಯ ಮೇಲಿನಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಸುವುದು. ಅವ+ಶ್ರೀ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಲ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅವಶ್ಯಾ ಅವಶ್ಯಾ (ವಿಂ) 1. ಆಶ್ರಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಆಶ್ರಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಹತ್ತಿರದ. 4. ತಡೆಯ ಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಲ್ಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ+ಸ್ತನ್ (ರೋಧನೆ) "ಕ್" (೩-೨-೧೦೨)। ಸ್ತನ್ (೮-೩-೬೮)। "ಅವಶ್ಯಾಽವಿಧೂರೇ ಸ್ಯಾದಾಕ್ರಾಂತೇ ಚಾವಲಮ್ಬಿತೇ" ಮೇದಿಂ 1.



ಅವಷ್ಟಮ್ಯ ಅವಷ್ಟಭ್ಯ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಆಶ್ರಯಿಸಿ. 2. ತಡೆದು. ಅವ+ಸ್ತನ್ಮು (ರೋಧನೆ) "ಲ್ಯಪ್" (೩-೧-೩೭)। ಷತ್ವಂ (೮-೩-೬೮)।

ಅವಷ್ಟಮ್ಯ ಅವಷ್ಟಂಭ (ಪುಂ) 1. ಆಶ್ರಯ, ಆಸರೆ, ಒತ್ತಾಸೆ. "ಖಜ್ಜಲತಾವಷ್ಟಮನಿಶ್ಚಲಃ" ಮಾಲತೀಂ ೩। 2. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. 3. ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ. 4. ಕಂಬ. 5. ತಡೆ, ವಿಘ್ನ, ಅಡ್ಡಿ. 6. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 7. ಸಂಭ್ರಮ. ಅವ+ಸ್ತನ್ಮು (ರೋಧನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ಅವಷ್ಟಮ್ಯಃ ಸುವರ್ಣಂ ಚ ಸ್ತಮ್ಭಪ್ರಾರಂಭ-ಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ।

ಅವಷ್ಟಮ್ಯನ ಅವಷ್ಟಂಭನ (ನಂ) 1. ಆಶ್ರಯ, ಆಸರೆ, ಒತ್ತಾಸೆ. 2. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. ಅವ+ಸ್ತನ್ಮು (ರೋಧನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। ಷತ್ವಂ (೮-೩-೬೮)।

ಅವಸ ಅವಸ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ಅವತಿ - ಅವ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಅಸಕ್" (೩-೩-೧೧೬)। 2. ಸೂರ್ಯ. 3. ಎಕ್ಕದಗಿಡ, ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ. 4. ಫಲಾಹಾರದ ವಸ್ತು, ಪ್ರಯಾಣಕಾಲದಲ್ಲಿ ದಾರಿಯ ಆಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ತೆಗೆದು ಕೊಳ್ಳುವ ತಿಂಡಿ, ಬುತ್ತಿ.

ಅವಸಕ್ತ ಅವಸಕ್ತ (ನಂ) 1. ಸಂಸರ್ಗ, ಸಂಬಂಧ. ಅವ+ಪಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। 3. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಕರ್ಣಾವಿಸಕ್ತಾಮಲದಂತಪತ್ರಂ ಮಾತಾ ತದೀಯಂ ಮುಖಮುತ್ರಮಯ್ಯ" ಕುಮಾಂ ೭-೨೩।

ಅವಸಕ್ತಿಕಾ ಅವಸಕ್ತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪರ್ಯಂಕ, ಮಂಚ. "ಪರ್ಯಂಕಸ್ತವಸಕ್ತಿಕಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 2. (ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವಾಗ) ತೊಡೆಗಳನ್ನು ಮಡಿಸಿಕೊಂಡು (ಬೆನ್ನಿಗೆ ಸೇರಿಸಿ) ಸುತ್ತಲೂ ಹಾಕುವ ಬಟ್ಟೆಯ ಕಟ್ಟು. ಅವವಂಧೇ ಸಕ್ತಿನಿ ಯಾ। "ಯೋಗಪದ್ವಸ್ತು ಚೀನಾ ಸ್ಯಾತ್ ಪರ್ಯಸ್ತಿರವಸಕ್ತಿಕಾ" ವೈಜಂ।

ಅವಸಂಧೀನ ಅವಸಂಧೀನ (ನಂ) (ಮೇಲಿನಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ) ಹಕ್ಕಿಗಳ ಇಳಿಯುವಿಕೆ, ಹಕ್ಕಿಗಳ ಗತಿಭೇದ, ಹಕ್ಕಿಗಳು ಹಾರುವ ಒಂದು ಕ್ರಮ. ಅವ+ಸಮ್+ಡೀಡ್ (ವಿಹಾಯಸಾ ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)।

ಅವಸನ್ನ ಅವಸನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಧೈರ್ಯಗುಂದಿದ, ಕುಗ್ಗಿದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಕಡಿಮೆಯಾದ ಉತ್ಸಾಹವುಳ್ಳ. "ಯಾತಮವನಿಮವಸನ್ನಭುಜಾತ್" ಮಾಘಂ ೧೫-೮೫। 2. ತನ್ನ ಕರ್ತವ್ಯನಿರ್ವಾಹದಲ್ಲಿ ಆಸಮರ್ಥನಾದ. 3. ಸಮಾಪ್ತಿ

ಹೊಂದಿದ, ಕೊನೆಗೊಂಡ. "ಅವಸನ್ನತಾಪಮತಮಿಸ್ಸ-ಮಭಾತ್" ಮಾಘಂ ೧-೧೨। 4. ಮುಳುಗಿಹೋದ. 5. ಕಳೆದು ಹೋದ. ಅವ+ಪದ್ಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ಪಿತ್ರೋಃ ಸಕಾಶಮವಸನ್ನದೃಶೋನಿನಾಯ" ರಘುಂ ೧-೭೭।

ಅವಸರ ಅವಸರ (ಪುಂ) 1. ಅವಕಾಶ, ಸಮಯ, ಸಂದರ್ಭ. ಅವ+ಸ್ಮ (ಗತೌ) "ಅಪ್" ಬಾಹುಂ। "ಭವದ್ವಿರಾಮವಸರಪ್ರದಾನಾಯ ವಚಾಂಸಿ ನಃ" ಮಾಘಂ ೨-೮। 2. ಸರಿಯಾದಕಾಲ, ಸಕಾಲ, ಸದವಕಾಶ. "ವಿಮಾನ-ಶೃಂಗಾಪ್ಯವಗಾಹಮಾನಃ ಶಶಂಸಿ ಸೇವಾವಸರಂ ಸುರೇಮ್ಯಃ" ಕುಮಾಂ ೭-೪೦। 3. ಪ್ರಸಂಗ, ಪ್ರಸ್ತಾವ, ಪೀಠಿಕೆ. 4. ಸಂವತ್ಸರ. 5. ಮಳೆ. 6. ಸ್ಥಳ, ಜಾಗ, ಎಡೆ. "ದ್ರುತಮೇತ್ಯ ಪುಷ್ಪಧನುಷೋ ಧನುಷಃ ಕುಮುದೇಽಜ್ಞನಾಮನಸಿ ಚಾವಸರಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೪೧। 7. ಮಂತ್ರಾಲೋಚನೆ. 8. ವಿರಾಮ, ಪುರುಸತ್ವ. "ಅವಸರೋ ವತ್ಸರೇ ಕ್ಷಣೇ" ಹೇಮಂ। "ಅಥಾವಸರಃ ಪುಮಾನ್। ಪ್ರಸ್ತಾವೇ ಮನ್ವಭೇದೇ ಚ ವರ್ಷಣೇ ಚಾಪಿ ಕೀರ್ತಿತಃ" ಮೇದಿಂ।

ಅವಸರ್ಪ ಅವಸರ್ಪ (ಪುಂ) ಗೂಢಚಾರ, ಗುಪ್ತ ಬಾತ್ಮೀ ದಾರ. ಅವಸರ್ಪತಿ - ಅವ+ಸ್ಮಲ್ (ಗತೌ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪)।

ಅವಸರ್ಪಣ ಅವಸರ್ಪಣ (ನಂ) ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯುವಿಕೆ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬರುವಿಕೆ. ಅವ+ಸ್ಮಲ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅವಸರ್ಪಿನ್ ಅವಸರ್ಪಿನ್ (ವಿಂ) ಕೆಳಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯುವ. ಅವ+ಸ್ಮಲ್ (ಗತೌ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಸರ್ಪಿಣಿ - ಸರ್ಪಿಣೀ.

ಅವಸರ್ಪಿಣಿ ಅವಸರ್ಪಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೈನರ ಕಲ್ಪಕಾಲದ ಒಂದು ಭಾಗ. [ಜೈನರ ಕಾಲವು ಉತ್ಪರ್ಪಿಣಿ ಮತ್ತು ಅವಸರ್ಪಿಣಿಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಇವೆರಡೂ ಸೇರಿ ಒಂದು ಕಲ್ಪವೆನಿಸುವುದು. ಉತ್ಪರ್ಪಿಣೀ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮನುಷ್ಯರ ವೃದ್ಧಿಯೂ ಅವಸರ್ಪಿಣೀ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಹ್ರಾಸ (ಅವನತಿ)ವೂ ಉಂಟಾಗುವುವು. ಉತ್ಪರ್ಪಿಣಿಯಲ್ಲಿ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಮನುಷ್ಯರ ಅನುಭವ (ಉಪಭೋಗ); ಆಯುಃಪ್ರಮಾಣ, ಶರೀರೋತ್ಪೇಧ ಇವುಗಳ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಯಾಗುವುದು. ಅವಸರ್ಪಿಣಿಯಲ್ಲಿ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಇವುಗಳ ಹ್ರಾಸ (ಅವನತಿ)ವುಂಟಾಗುವುದು. ಇದರಲ್ಲಿ (1) (ಉತ್ತಮಭೋಗಭೂಮಿಯ ಲಕ್ಷಣವುಳ್ಳ) ಸುಷಮಸುಷಮ, (2) (ಮಧ್ಯಮಭೋಗಭೂಮಿಯ



ಗುಣವುಳ್ಳ) ಸುಷಮ, (3) (ಜಘನ್ಯ ಭೋಗಭೂಮಿಯ ಗುಣವುಳ್ಳ) ಸುಷಮದುಃಷಮ, (4) ದುಃಷಮ ಸುಷಮ, (5) ದುಃಷಮ ಮತ್ತು (6) ದುಃಷಮ ದುಃಷಮಗಳೆಂದು ಆರು ಭಾಗಗಳುಂಟು. "ಭರತ-ರಾವತಯೋರ್ವಿಹಿಹಾಸಿ ಷಡ್ಸಮಯಾಮ್ಯಾಮೃತಸ್ಯವಸಾರ್ಥಿಮ್ಯಾಮ್" ಸರ್ವಾಂ 3-26. ಮೊದಲನೆಯ ಮೂರು ಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಹತ್ತು ವಿಧ ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷಗಳಿದ್ದು ಜನರಿಗೆ ಸಕಲಾಭೀಷ್ಟಗಳನ್ನೂ ನೀಡುತ್ತವೆ. ಮೂರನೆಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಈ ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷಗಳ ಶಕ್ತಿಯೂ, ಪ್ರಕಾಶವೂ ಕುಂದುತ್ತ ಬರುವುವು. ಈ ಕಾಲದ ಕೊನೆಯ ಘಟ್ಟದಲ್ಲಿ 14 ಮಂದಿ ಮನುಗಳು ಹುಟ್ಟಿ ಜನರಿಗೆ ಧೈರ್ಯವನ್ನು ಹೇಳಿ ಕಾಲದ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ವಿವರಿಸುವರು. ಈ ಮನುಗಳಿಗೆ ಕುಲಧರರೆಂದೂ ಕುಲಂಕರರೆಂದೂ ಹೆಸರು. ಇವರಲ್ಲಿ 14 ನೆಯ ಮನುವೇ ನಾಭಿರಾಜರು. ನಾಭಿರಾಜರ ಪತ್ನಿ ಮರುದೇವಿ. ಆದಿ ತೀರ್ಥಂಕರರಾದ ಋಷಭಸ್ವಾಮಿಯೇ ಇವರ ಪುತ್ರರು. ಯಶಸ್ವತೀದೇವಿ ಮತ್ತು ಸುನಂದಾದೇವಿಯರು ಋಷಭಸ್ವಾಮಿಯ ಪತ್ನಿಯರು. ಯಶಸ್ವತೀದೇವಿಯಲ್ಲಿ ಭರತ ಮೊದಲಾದ 100 ಮಂದಿ ಗಂಡುಮಕ್ಕಳೂ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣ್ಯಂ ಬ ಹೆಣ್ಣುಮಕ್ಕಳೂ ಜನಿಸುವರು. ಸುನಂದಾದೇವಿಯಲ್ಲಿ ಬಾಹುಬಲಿ(ಶ್ರೀಗೋಮಟೇಶ್ವರ) ಎಂಬ ಪುತ್ರನೂ, ಸುಂದರಿಯೆಂಬ ಮಗಳೂ ಜನಿಸುವರು. ಇಲ್ಲಿಗೆ ಮೂರನೆಯ ಕಾಲವು ಮುಗಿಯುವುದು. 4 ನೆಯ ಕಾಲವಾದ ದುಃಷಮಸುಷಮದಲ್ಲಿ 63 ಶಲಾಕಾಪುರುಷರು ಅವತರಿಸುವರು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಶಾಲಾಕಾಪುರುಷ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಇವರಲ್ಲಿ 20ನೆಯ ತೀರ್ಥಂಕರರಾದ ಮುನಿಸುವ್ರತರ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣಕಥೆಯು ನಡೆಯಿತು. ರಾಮನು ಎಂಟನೆಯ ಬಲಭದ್ರ. ಎಂಟನೆಯ ವಾಸುದೇವನಾದ ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ಎಂಟನೆಯ ಪ್ರತಿವಾಸುದೇವನಾದ ರಾವಣನನ್ನು ಸಂಹರಿಸುವನು. 22 ನೆಯ ತೀರ್ಥಂಕರರಾದ ನೇಮಿನಾಥರ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಹಾಭಾರತ ಕಥೆಯು ನಡೆಯಿತು. ನೇಮಿನಾಥರು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ ಪರಮಾತ್ಮನ ದೊಡ್ಡ ಪ್ರನಾದ ಸಮುದ್ರವಿಜಯ ಮಹಾರಾಜನ ಮಗ. ನೇಮಿನಾಥರು ತಮ್ಮ ವಿವಾಹಕಾಲದ ಸಂಭಾರಗಳನ್ನು ನೋಡಿ ವೈರಾಗ್ಯಹೊಂದಿ ತಪಸ್ಸಿಗೆ ಹೊರಟ ನಂತರ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಿಗೆ ರಾಜ್ಯಪ್ರಾಪ್ತಿಯಾಗುವುದು. 23 ನೆಯ ತೀರ್ಥಂಕರರಾದ ಪಾರ್ಶ್ವನಾಥರು ಕ್ರಿ. ಪೂ. 8 ನೆಯ ಶತಮಾನದಲ್ಲಿಯೂ, 24 ನೆಯ ತೀರ್ಥಂಕರ

ರಾದ ಮಹಾವೀರ(ವರ್ಧಮಾನ)ಸ್ವಾಮಿಯು ಕ್ರಿ. ಪೂ. 6 ನೆಯ ಶತಮಾನದಲ್ಲಿಯೂ ಇದ್ದರು. ಕ್ರಿ. ಪೂ. 527 ಕ್ಕೆ 4 ನೆಯ ಕಾಲದ ಸಮಾಪ್ತಿ. 5 ನೆಯ ಕಾಲವಾದ ದುಃಷಮದಲ್ಲಿ ಮಹಾವೀರಸ್ವಾಮಿಯ ನಿರ್ವಾಣದ ನಂತರ ಗೌತಮಗಣಧರರು, ಸುಧರ್ಮಗಣಧರರು, ಜಂಬುಸ್ವಾಮಿ ಗಣಧರರು ಹೀಗೆ ಮೂವರು ಗಣಧರರು ಕ್ರಮವಾಗಿ ಮುಕ್ತಿಪಡೆದರು. ಇವರ ನಂತರ 5 ಮಂದಿ ಶ್ರುತಕೇವಲಿಗಳು 100 ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಧರ್ಮಪ್ರಚಾರ ಮಾಡುವರು. ಶ್ರವಣಬೆಳ್ಳೂಳದ ಚಂದ್ರಗಿರಿ ಪರ್ವತದ ಮೇಲೆ ತಪಸ್ಸುಮಾಡಿ ಸಮಾಧಿ ಹೊಂದಿದವರು ಅಂತಿಮಶ್ರುತಕೇವಲಿಯಾದ ಭದ್ರಬಾಹು ಸ್ವಾಮಿಗಳು. ಇವರು ಮೌರ್ಯಚಕ್ರವರ್ತಿ ಚಂದ್ರಗುಪ್ತನ ಗುರುಗಳು. ಭದ್ರಬಾಹುಸ್ವಾಮಿಯ ಮುಖ್ಯ ಶಿಷ್ಯರು ವಿಶಾಖಾಚಾರ್ಯರು. 6 ನೆಯದಾದ ದುಃಷಮದುಃಷಮದಲ್ಲಿ ಬಹಳ ಕಷ್ಟ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಯು ಏರ್ಪಡುವುದು. ಇಲ್ಲಿಗೆ ಅಹಿಂಸಾಧರ್ಮವೆಲ್ಲಾ ಕ್ಷಯ ಹೊಂದಿ ಹಿಂಸೆಯು ಮೂಡಿ ಪ್ರಳಯವಾಗುವುದು.]

ಅವಸಾದ ಅವಸಾದ (ಗುಂ) 1. ನಾಶ, ಧ್ವಂಸ. ಅವ+ಷಡ್ಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) "ಘ್" (3-3-18). "ಘೇವಿಸಾದೇನ ಹೃತಪ್ರಸಾದಾ ವ್ಯವಹಿಪೇನೇವ ನಿದಾಘಸಿಂಧುಃ" ಕಿರಾಂ 3-38. 2. ಅಶಕ್ತತೆ, ಅಸಾಮರ್ಥ್ಯ. 3. ದಣವು, ಆಯಾಸ. "ಕಿಮಿವಾವಸಾದಕರಮಾತ್ಮವತಾಮ್" ಕಿರಾಂ 6-19. 4. ಅಳಿವು, ಮುಳುಗಿಹೋಗುವುದು. "ಛುರಂ ಗುರ್ವಿ ವೋಡ್ಲ ಸ್ಥಿತಮನವಸಾದಾಯ ಜಗತಃ" ಕಿರಾಂ 18-49. 5. ಪರಾಜಯ, ಸೋಲು. "ಅಲಂ ಸ್ವಪಕ್ಷಾವಸಾದಶಾಕ್ಷಯಾ" ಮಾಲಂ 1. 6. ಅವಸಾನ, ಕೊನೆ, ಸಮಾಪ್ತಿ.

ಅವಸಾದಕ ಅವಸಾದಕ (ವಿಂ) 1. ಅಸಾಮರ್ಥ್ಯವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ. ಅವ+ಷಡ್ಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ)+ಣಿಕ್ "ಞ್" (3-1-133). "ಏಷ ಶೋಕಃ ಪರಿತ್ಯಕ್ತಃ ಸರ್ವಕಾರ್ಯಾವಸಾದಕಃ" ರಾಮಾಂ. 2. ಸಮಾಪ್ತಿಯನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ, ಕೊನೆಗಾಣಿಸುವ. 3. ಸೋಲಿಸುವ, ಪರಾಜಯಗೊಳಿಸುವ. 4. ನಾಶಗೊಳಿಸುವ. 5. ದುಃಖವುಂಟುಮಾಡುವ. 6. ದಣವುಂಟುಮಾಡುವ.

ಅವಸಾದನ ಅವಸಾದನ (ನಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸುವಿಕೆ. 2. ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಅಸಾಮರ್ಥ್ಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವಿಕೆ. ಅವ+ಷಡ್ಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ)+ಣಿಕ್ "ಲ್ಯಡ್" (3-3-114). 3. ದುರ್ಬಲನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವಿಕೆ. 4. ಪರಾಜಯಗೊಳಿಸುವಿಕೆ, ಸೋಲಿಸುವಿಕೆ. 5. ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸುವಿಕೆ. 6. ದುಃಖವುಂಟುಮಾಡುವಿಕೆ. 7. ವೈಯಲ್ಲಿ



ದಪ್ಪನಾಗಿ ಎದ್ದಿರುವ ಕುರು ಮೊದಲಾದ ವೃಣವು ಸಣ್ಣದಾಗಲು ಮಾಡುವ ಚಿಕಿತ್ಸೆ, ಮಾಂಸಗ್ರಂಥಿಯನ್ನು ಹೊರತೆಗೆಯಲು ಮಾಡುವ ಚಿಕಿತ್ಸೆ.

“उत्सन्नमृदुमांसानां कृणानामवसादनम्” सुश्रुತಂ ।

ಅವಸಾನ ಅವಸಾನ (ನಂ) 1. ವಿರಾಮ, ನಿಲ್ಲಿಸುವಿಕೆ.

ಅವ+ಘ (ಅಂತಕರ್ಮಣಿ) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-115) ।

“विरामोऽवसानम्” पा० सू० (1-4-110) । 2. ಕೊನೆ, ಸಮಾಪ್ತಿ.

“दोहावसाने पुनरेव दोग्ध्रीं भेजे भुजोच्छिन्न-रिपुनिषण्णाम्” रघु० 2-23 । 3. ಮುಗಿಸುವಿಕೆ, ಕೊನೆಗಾಣಿಸುವಿಕೆ.

4. ಮೃತ್ಯು, ಮರಣ, ಕೊನೆಗಾಲ.

“दिष्टान्तोऽस्तं कालघर्मोऽवसानम्” अभि० चि० ।

5. ಸೀಮೆ, ಗಡಿ, ಎಲ್ಲೆ.

“अन्तोऽवसानं सीमा च मर्यादाऽपि च सीमनि” अभि० चि० ।

ಅವಸಾಯ ಅವಸಾಯ (ಪುಂ) 1. ಸಮಾಪ್ತಿ, ಕೊನೆ.

ಅವ+ಘ (ಅಂತಕರ್ಮಣಿ) “ಞಃ” (3-1-141) । “परितः प्रसभेन नीयमानः शरवर्षैरवसायमाश्रयाशः” माघ० 20-92 । 2. ಶೇಷ, ಉಳಿಕೆ.

3. ಮುಗಿಸುವಿಕೆ, ಕೊನೆಗಾಣಿಸುವಿಕೆ, ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸುವಿಕೆ.

4. ನಿಶ್ಚಯ, ನಿರ್ಧಾರ.

“अथावसायः शेषे स्यात् समाप्तौ निश्चयेऽपि च” मेदि० । (अव्य०) 5. ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸಿ, ಕೊನೆಗಾಣಿಸಿ.

6. ನಿಶ್ಚಯಿಸಿ, ನಿರ್ಣಯ ಮಾಡಿ.

ಅವ+ಘ “ಲ್ಯಪ್” (9-1-39) ।

ಅವಸಾಯಕ ಅವಸಾಯಕ (ವಿಂ) 1. ನಿಶ್ಚಯಿಸುವ, ನಿರ್ಣಯಮಾಡುವ.

2. ಮುಗಿಸುವ, ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸುವ.

ಅವ+ಘ (ಅಂತಕರ್ಮಣಿ) “ಞ್ವಲ್” (3-1-133) ।

ಅವಸಾಯಿತ ಅವಸಾಯಿತ (ವಿಂ) 1. ಮುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

2. ನಿರ್ಣಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅವ+ಘ (ಅಂತಕರ್ಮಣಿ) + ಣಿच् “ಕ್ತಃ” (3-2-102) ।

ಅವಸಿಕ್ತ ಅವಸಿಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೋಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಿಮುಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅವ+ಫಿಚ (ಕ್ಷರಣೆ) “ಕ್ತಃ” (3-2-102) । 2. ನೆನಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒದ್ದೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅವಸಿತ ಅವಸಿತ (ನಂ) 1. ಗಮನ, ಗತಿ.

2. ಅವಸಾನ, ಕೊನೆ.

3. ಒಕ್ಕಿದ ಧಾನ್ಯ.

(ವಿಂ) 4. ಮುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅವ+ಘ (ಅಂತಕರ್ಮಣಿ) “ಕ್ತಃ” (3-2-102) । “वचस्यवसिते तस्मिन् ससजं गिरमात्मभूः” कुमा० 2-43 । “अवसितललितक्रियेण

बाह्वोः” माघ० 9-64 । 5. ಮುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರ್ವಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಾಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

“सोऽहमिदानीमवसितप्रतिज्ञा-भरोऽपि वृषलापेक्षया शस्त्रं धारयामि” मुद्रा० 1 ।

6. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ.

7. ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

8. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪಕ್ಕವಾಗಿರುವ, ಹಣ್ಣಾಗಿರುವ.

“अवसितं समाप्ते निश्चितेऽपि च” नानार्थर० । “अवसितं गतौ । श्रद्धे

ज्ञातेऽवसाने च” हेम० । 9. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡ್ಡಿ ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

10. ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಸಂಬಂಧಹೊಂದಿದ.

नदीमन्ववसिता सेना । नद्या सह सम्बद्धेत्यर्थः सि०

कौ० । “भवेदवसितं ज्ञाते गतौ रुद्धावसानयोः” विश्व० ।

ಅವಸೃಷ್ಟ ಅವಸೃಷ್ಟ (ವಿಂ) 1. ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ, ದಾನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅವ+ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) “ಕ್ತಃ” (3-2-102) ।

2. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

3. ಹೊರಟಿರುವ.

ಅವಸೇಕ ಅವಸೇಕ (ಪುಂ) 1. ಸ್ನಾನ.

2. ಚಿಮುಕಿಸುವುದು, ಸಿಂಪಡಿಸುವುದು.

ಅವ+ಫಿಚ (ಕ್ಷರಣೆ) “ಘ್” (3-3-14) । 3. ಒಂದು ಬಗೆ ನೇತ್ರರೋಗ.

ಅವಸೇಚನ ಅವಸೇಚನ (ನಂ) 1. ಸುತ್ತಲೂ ಚಿಮುಕಿಸುವಿಕೆ.

ಅವ+ಫಿಚ (ಕ್ಷರಣೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-115) ।

2. ರಕ್ತವನ್ನು ಸುರಿಸುವಿಕೆ, ರಕ್ತಸ್ರಾವಣ.

ಅವಸೇಯ ಅವಸೇಯ (ವಿಂ) 1. ನಿರ್ಣಯಿಸಲ್ಪಡುವ, ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಡುವ.

2. ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ, ಮುಗಿಸಲ್ಪಡುವ.

ಅವ+ಘ (ಅಂತಕರ್ಮಣಿ) “ಯತ್” (3-1-99) ।

ಅವಸ್ಕಂದ ಅವಸ್ಕಂದ (ಪುಂ) 1. ಆಕ್ರಮಣ, ಮುತ್ತಿಗೆ.

2. ಇಳಿಕೆ, ಇಳಿಯುವಿಕೆ.

ಅವ+ಸ್ಕಂದಿರ್ (ಗತಿ-ಶೋಷಣಯೋಃ) ಭಾವೆ “ಘ್” (3-3-14) । “लतानुपातं कुसुमान्यगृह्णात् स नद्यवस्कन्दमुपास्पृशच्च” भट्टि० 2-11 । 3. ಸೇನಾನಿವೇಶನ, ಸೇನೆಗಳ ತಿಬಿರ.

ಅವ+ಸ್ಕಂದಿರ್ ಅಧಿಂ “ಘ್” (3-3-121) ।

ಅವಸ್ಕಂದನ ಅವಸ್ಕಂದನ (ನಂ) 1. ಆಕ್ರಮಣ, ಮುತ್ತಿಗೆ.

2. ಇಳಿಯುವಿಕೆ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬರುವಿಕೆ.

ಅವ+ಸ್ಕಂದಿರ್ (ಗತಿಶೋಷಣಯೋಃ) ಭಾವೆ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-115) ।

ಅವಸ್ಕಂದಿತ ಅವಸ್ಕಂದಿತ (ವಿಂ) 1. ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುತ್ತಿಗೆಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ.

2. ಖಂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರಾಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅವ+ಸ್ಕಂದಿರ್ (ಗತಿಶೋಷಣಯೋಃ) “ಕ್ತಃ” (3-2-102) । 3. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿದಿರುವ. ಕತಂ “ಕ್ತಃ” (3-4-92) ।



ಅವಸ್ಕರ ಅವಸ್ಕರ (ಪುಂ) 1. ಸಗಣೆ, ಲದ್ದಿ, ಹಿಕ್ಕೆ, ಮಲ, ವಿಸ್ತೆ, ಪುರೇಷ. 2. ಗುಹ್ಯಪ್ರದೇಶ. 3. ಕಸ. ಅವ+ಕ್ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಅಪ್" (3-3-47). "ಅವಸ್ಕರೋಪಿ ವರ್ವಸ್ಕೇ ಗುಹ್ಯೇ" ಮೇದಿಂ. 4. ಕಸದರಾಶಿ, ಗೊಬ್ಬರದ ಗುಪ್ತೆ, ತಿಪ್ಪೆ.

ಅವಸ್ಕರಕ ಅವಸ್ಕರಕ (ಪುಂ) 1. ಕ್ರಿಮಿ, ಹುಳ. (ವಿಂ) 2. ಕಸದರಾಶಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅವಸ್ಕರೇ ಜಾತ: "ವುನ್" (4-3-26).

ಅವಸ್ತರಣ ಅವಸ್ತರಣ (ನಂ) ಹೊರಭಾಗದಲ್ಲಿ ಹರಡುವುದು. ಅವ+ಸ್ತು (ಆಚ್ಛಾದನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

ಅವಸ್ತಾತ್ ಅವಸ್ತಾತ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಕೆಳಗಡೆ, ಕೆಳಗಡೆಯಿಂದ, ಕೆಳಗಡೆಯಲ್ಲಿ. 2. ಹಿಂದಿನಕಾಲ, ಹಿಂದಿನಕಾಲದಿಂದ, ಹಿಂದಿನಕಾಲದಲ್ಲಿ. 3. ಹಿಂಭಾಗ, ಹಿಂಭಾಗದಿಂದ, ಹಿಂಭಾಗದಲ್ಲಿ. ಅवर "ಅಸ್ತಾತಿ:" "ಅವ್" ಆದೇಶಶ್ಚ (4-3-41).

ಅವಸ್ತಾರ ಅವಸ್ತಾರ (ಪುಂ) 1. ಜವನಿಕೆ, ತೆರೆ, ಪರದೆ. 2. ಚಾವೆ. 3. ಹೊದಿಕೆ. ಅವ+ಸ್ತು (ಆಚ್ಛಾದನೆ) "ಫಲ್" (3-3-19).

ಅವಸ್ತು ಅವಸ್ತು (ನಂ) ಅಯೋಗ್ಯವಸ್ತು, ಅನರ್ಹವಾದ ಪದಾರ್ಥ. ನ ವಸ್ತು. ಕೃತ್ಸಿತಾರ್ಥ ನಂ ತಂ. "ಅವಸ್ತು-ನಿರ್ಬಂಧಪರೇ ಕಥಂ ನು ತೇ" ಕುಮಾಂ 4-66.

ಅವಸ್ಥಾ ಅವಸ್ಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಲದಿಂದ ಉಂಟಾದ ಶರೀರದ ವಿಶೇಷ ಧರ್ಮ; ಬಾಲ್ಯ, ಕೌಮಾರ, ಯೌವನ ಮೊದಲಾದ ದೇಹದ ವಿಶೇಷ ಧರ್ಮ. ಅವ+ಷ್ಠಾ (ಗತಿनिवृत्तौ) "ಅಙ್" (3-3-106). "ಬಯೋವಸ್ಥಾಂ ತಸ್ಯಾ: ಸೃಣುತ ಮುಹೂರೋ ಯತ್ರ ಮದನ: ಪ್ರಗಲ್ಭಾಪಾರಶ್ಚರತಿ ಹೃದಿ ಮುಗ್ಧಶ್ಚ ವಪುಷಿ" ಮಾಲತೀಂ 9-29. 2. ಸ್ಥಿತಿ, ಇರುವಿಕೆ. 3. ಕಾಲಕೃತವಾದ ಪರಿಣಾಮ; ಈ ಅವಸ್ಥೆಯು (ಭಾವ ವಿಕಾರವು) ಜಾಯತೇ, ಅಸ್ತಿ, ವರ್ಧತೇ, ವಿಪರಿಣಮತೇ, ಅಪಕ್ಷೀಯತೇ, ನಶ್ಯತಿ ಎಂದು ಆರು ವಿಧವೆಂದು ಯಾಸ್ಕರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. "ಅವಿद्याಸ್ಮಿತಾರಾಗದ್ವೇಷಾಭಿನಿವೇಶಾ:" ಎಂದು ಐದು ವಿಧವೆಂದು ಯೋಗಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವುದು. ಅನಾಗತಾವಸ್ಥಾ, ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಾವಸ್ಥಾ, ಅತಿರೋಹಿತಾವಸ್ಥಾ ಹೀಗೆ ಮೂರು ವಿಧವೆಂದು ಸಾಂಖ್ಯರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

ಅವಸ್ಥಾನ ಅವಸ್ಥಾನ (ನಂ) 1. ಸ್ಥಿತಿ, ಇರುವಿಕೆ. 2. ವಾಸಮಾಡುವಿಕೆ. ಅವ+ಷ್ಠಾ (ಗತಿनिवृत्तौ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). "ವಡತಲೆ ಚತುರ್ಮಂಡಲಾವಸ್ಥಾನೇನ ಅವಸ್ಥಿತ:"

ಪञ्ಚತಂ 1. 3. ವಾಸಸ್ಥಳ, ಮನೆ. ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

ಅವಸ್ಥಾಪನ ಅವಸ್ಥಾಪನ (ನಂ) ಇರಿಸುವಿಕೆ, ಇಡುವಿಕೆ. ಅವ+ಷ್ಠಾ (ಗತಿनिवृत्तौ) + ಣಿच् (ಪುಕ್) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

ಅವಸ್ಥಾಪಿತ ಅವಸ್ಥಾಪಿತ (ವಿಂ) ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ+ಷ್ಠಾ (ಗತಿनिवृत्तौ) + ಣಿच् (ಪುಕ್) "ಕ್:" (3-2-102).

ಅವಸ್ಥಾಯಿನ್ ಅವಸ್ಥಾಯಿನ್ (ವಿಂ) ಇರುವ, ವಾಸ ಮಾಡುವ. ಅವ+ಷ್ಠಾ (ಗತಿनिवृत्तौ) "ಣಿನಿ:" (3-1-134). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-4). -ಸ್ಥಾಯಿನಿ -ಸ್ಥಾಯಿನೀ.

ಅವಸ್ಥಿತ ಅವಸ್ಥಿತ (ವಿಂ) 1. ಇರುವ, ನಿಂತಿರುವ, ಉಳಿದಿರುವ. ಅವ+ಷ್ಠಾ (ಗತಿनिवृत्तौ) "ಕ್:" (3-4-62). "ಯಾನೇವ ಹತ್ವಾ ನ ಜಿಜಿವಿಷಾಮಸ್ತೇ-ವಸ್ಥಿತಾ: ಪ್ರಮುಖೇ ಧಾರ್ತರಾಷ್ಟ್ರಾ:" ಗೀತಾ 2-6. "ತತ್ಕಥಯ ಕಥಮಿನ್ಯಂತಂ ಕಾಲಮವಸ್ಥಿತಾ ಮಯಾ ವಿನಾ ಭವತೀ" ವಿಕ್ರಂ 4. "ಕಶ್ಚಿದ್ವಿಭಾಗಮವಸ್ಥಿತೇಽಪಿ ಸ್ವಸನ್ನಿವೇಶಾದ್-ವ್ಯತೀಲಕ್ಷಿಣೀವ" ರಘುಂ 6-19. 2. ವಾಸವಾಗಿರುವ, ನೆಲೆಸಿರುವ. 3. ನಿರತನಾದ, ಉದ್ಯುಕ್ತನಾದ. "ಪ್ರಿಯಾ ಭವಂತಿ ಲೋಕಸ್ಯ ಸ್ವೇ ಸ್ವೇ ಕರ್ಮಣ್ಯವಸ್ಥಿತಾ:" ಮನುಂ 6-42. 4. ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವ, ದೃಢವಾಗಿರುವ. 5. ಅವಲಂಬಿಸಿರುವ, ಆಶ್ರಯಿಸಿರುವ. "ಮಯಿ ಸೃಷ್ಟಿಹಿ ಲೋಕಾನಾಂ ರಕ್ಷಾ ಯುಷ್ಮಾಸ್ವವಸ್ಥಿತಾ" ಕುಮಾಂ 2-26. 6. ತೀರ್ಮಾನವಾದ, ನಿಶ್ಚಿತವಾದ. "ವಿಪರ್ಯಯೇ ತು ಪಿತುರಸ್ಯಾ: ಸಮೀಪನಯನಮವಸ್ಥಿತಮೇವ" ಶಾಕುಂ 4.

ಅವಸ್ಥಿತ ಅವಸ್ಥಿತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ಥಿತಿ, ಇರುವಿಕೆ. ಅವ+ಷ್ಠಾ (ಗತಿनिवृत्तौ) "ಕ್ಲಿನ್" (3-3-94). 2. ವಾಸಸ್ಥಾನ, ಮನೆ. "ನಿಯತಮಿಹ ಸರ್ವಾತ್ಮನಾ ಕೃತಾವಸ್ಥಿತಿನಾ ಭಗವತಾ ವರ್ಮಣ ನ ಸ್ಮರ್ಯತೇ ಕೃತಯುಗಸ್ಯ" ಕಾದಂ 66.

ಅವಸ್ಥಂದನ ಅವಸ್ಥಂದನ (ನಂ) ಸ್ತವಿಸುವಿಕೆ, ಸುರಿಯುವಿಕೆ, ಸೋರುವಿಕೆ. ಅವ+ಸ್ಥನ್ (ಪ್ರಸವಣಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

ಅವಸ್ಥಂಸನ ಅವಸ್ಥಂಸನ (ನಂ) ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳುವುದು. ಅವ+ಸ್ಥಂ (ಅವಸ್ಥಂಸನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

ಅವಸ್ಥಂಸಿತ ಅವಸ್ಥಂಸಿತ (ವಿಂ) ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ+ಸ್ಥಂ (ಅವಸ್ಥಂಸನೆ) + ಣಿच् "ಕ್:" (3-2-102).



ಅವಸ್ತ ಅವಸ್ತ (ವಿಂ) ಕೆಳಗೆಬಿದ್ದ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಜಾರಿ ಬಿದ್ದ. ಅವ+ಸು (ಅವಸಂಸೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅವಹ ಅವಹ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರವಾಹವಿಲ್ಲದ, ನದಿಯು ಹರಿಯದಿರುವ (ದೇಶ). वह (ಪ್ರಾಪಣ) "ಅವ್" (೩-೧-೧೩೪)। ನಂ ೩೦। 2. ವಹಿಸದಿರುವ, ಹೊರದಿರುವ.

ಅವಹತ ಅವಹತ (ವಿಂ) 1. ಬಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಕ್ಕಲ್ಪಟ್ಟ, ತೆನೆ ಬಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಕುಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ (ಬತ್ತ).

ಅವಹತಿ ಅವಹತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತೆನೆ ಬಡಿಯುವುದು, ಧಾನ್ಯ ಒಕ್ಕುವುದು. 2. ಕುಟ್ಟುವಿಕೆ. ಅವ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।

ಅವಹನ ಅವಹನ (ನಂ) 1. ತೆನೆ ಬಡಿಯುವಿಕೆ, ಧಾನ್ಯ ಒಕ್ಕುವುದು. 2. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಕುಟ್ಟುವಿಕೆ. ಅವ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 3. ಶ್ವಾಸ ಕೋಶ. ಅವಹನ್ಯತೇ ಶೋಣಿತಮನೇನ - ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೬)।

ಅವಹರಣ ಅವಹರಣ (ನಂ) 1. ಬೇರೆ ಕಡೆಗೆ ಒಯ್ಯುವುದು. 2. ಸೇನೆಗಳನ್ನು ರಣಕ್ಷೇತ್ರದಿಂದ ಶಿಬಿರಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುವುದು. 3. ತತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ (ಹಂಗಾಮಿಯಾಗಿ) ಯುದ್ಧವನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು. 4. ಸುಲಿಗೆಮಾಡುವುದು. ದೋಚಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಅಪಹರಿಸುವುದು. ಅವ+ಹ್ರ (ಹರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅವಹಸ್ತ ಅವಹಸ್ತ (ಪುಂ) ಕೈಯ ಹಿಂಭಾಗ. ಅवरं हस्तस्य। "अवहस्तो हस्तपृष्ठतः" अभि० चि०।

ಅವಹಾರ ಅವಹಾರ (ಪುಂ) 1. ಜೋರ, ಕಳ್ಳ. 2. ಒಂದು ಜಲಚರಪ್ರಾಣಿ. अव + ह्र (ಹರಣ) "ಗ್:" (೩-೧-೧೪೧)। "नक्रे चोरेऽवहारः स्यात्" त्रिकाण्ड०। 3. ಹಾವುವಿನಾಣು. 4. ತತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ (ಹಂಗಾಮಿಯಾಗಿ) ಯುದ್ಧವನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು. 5. ಸೇನೆಯನ್ನು ರಣಕ್ಷೇತ್ರದಿಂದ ಶಿಬಿರಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುವುದು. "ततोऽवहारः सैन्यानां तव तेषां च भारत" भा० भीष्म० ४८-१२०। "क्रियतामवहारोऽस्माद्युद्धाद् ब्राह्मणसंवृतात्" भा०। 6. ದ್ಯುತ, ಜೂಜು. "अवहारो भवेच्चोरे द्यूते ग्राह्याय्यादसि। निमन्त्रणोपनेतव्यद्रव्ये युद्धादिविश्रमे" नानार्थर०। 7. ವಿರಾಮ, ವಿಶ್ರಾಂತಿ, ನಿಲುಗಡೆ. 8. ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ತರಲ್ಪಡುವ ವಸ್ತು. 9. ಜೂಜು, ಯುದ್ಧ ಮುಂತಾದುವುಗಳ ವಿರಾಮ. 10. ನಿಮಂತ್ರಣ

ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ಕೊಡುವ ದ್ರವ್ಯ. "अवहारः पुमान् चोरे द्यूतयुद्धादिविश्रमे। निमन्त्रणोपनेतव्यद्रव्ये ग्राह्याय्यादसि" मेदि०।

ಅವಹಾರಕ ಅವಹಾರಕ (ವಿಂ) 1. ಮೊಸಳೆ. 2. ಬೇರೆ ಕಡೆಗೆ ಒಯ್ಯುವ, ಇನ್ನೊಂದು ಕಡೆಗೆ ಸಾಗಿಸುವ. अव + ह्र (ಹರಣ) "ಫ್ಲುಟ್" (೩-೧-೧೩೩)। 3. ಯುದ್ಧದಿಂದ ಸೈನ್ಯವನ್ನು ತಡೆಯುವ. 4. ನಿಲ್ಲಿಸುವ, ತಡೆಯುವ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವ.

ಅವಹಾರ್ಯ ಅವಹಾರ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಬೇರೆ ಕಡೆಗೆ ಸಾಗಿಸಲ್ಪಡುವ. अव + ह्र (ಹರಣ) "ಫ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)। 2. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಕೊಡಲ್ಪಡುವ, ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಕೊಡಬೇಕಾದ. "आधिश्चोपनिधिश्चोभी न कालात्ययमर्हतः। अवहार्यो भवेतां तो दीर्घकालमवस्थितो" मनु० ८-१४५। 3. ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ, ದಂಡವಿಧಿಸಲ್ಪಡುವ. "अवहार्यो भवेच्चैव सान्वयः षट्शतं दमम्" मनु० ८-१९८। 4. ಹಿಂತಿರುಗಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕೊಡಲು ಅರ್ಹವಾದ.

ಅವಹಾಸ ಅವಹಾಸ (ಪುಂ) 1. ಹಾಸ್ಯ, ವಿನೋದ, ಗೇಲಿ. अव + हसे (ಹಸನೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु" गीता ११-४२। 2. ಮುಗುಳುನಗೆ, ಮಂದಹಾಸ, ಮಂದಸ್ಥಿತ.

ಅವಹಾಸ್ಯ ಅವಹಾಸ್ಯ (ವಿಂ) ನಗಲ್ಪಡುವ, ಗೇಲಿಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ನಕಲಿಮಾಡಲ್ಪಡುವ. अव + हसे (ಹಸನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಫ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)।

ಅವಹಿತ ಅವಹಿತ (ವಿಂ) ಅವಧಾನವಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಜಾಗರೂಕವಾದ, ಎಚ್ಚರವಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. अव + ह्र धाव् (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "अवहित-हृदयो विधाय सोऽर्हामृषिवदृषिप्रवरे गुरुपदिष्टाम्" किरा० २-५८)।

ಅವಹಿತಾ ಅವಹಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭಯ, ಲಜ್ಜೆ ಮುಂತಾದುವುಗಳಿಂದ ಹರ್ಷ ಮೊದಲಾದ ಅನುಭಾವಗಳನ್ನು (ಹೊರಕ್ಕೆ ತೋರಿಸದೆ) ಅಡಗಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. न बहिः तिष्ठति - ष्ठा (गतिनिवृत्तौ) "कः" (३-२-४)। ಇದು 33 ವ್ಯಭಿಚಾರಿಭಾವಗಳಲ್ಲೊಂದು. "भयगौरवलज्जादेर्हर्षाद्याकारगुप्तिरवहित्था" सा० द० ३-१५८। "एवंवादिनि देवर्षौ पार्श्वे पितुरधोमुखी। लीलाकमलपत्राणि गणयामास पार्वती" कुमा० ६-८४।



ಅವಹೇಲ (ಲಾ) ಅವಹೇಳ (ಫಾ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನಾದರ, ತಿರಸ್ಕಾರ. ಅವ+ಹೇ (ಅನಾದರೇ) "ಕ:" (ವಾಂ ೩-೩-೪೮)। "ಅಹ್" (೩-೩-೧೦೩) ವಾ। ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। -ಹೇಸನಮ್-ಹೇಳನಮ್.

ಅವಹೇಲಿತ ಅವಹೇಳಿತ (ವಿಂ) ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅನಾದರದಿಂದ ಕಾಣಲ್ಪಟ್ಟ, ಅವ+ಹೇ (ಅನಾದರೇ) "ಕ:" (೩-೩-೧೦೨)।

ಅವಹ್ನರ ಅವಹ್ನರ (ಪುಂ) 1. ಕುಟಿಲಮಾರ್ಗ, ತಕ್ಕು, ವಂಚನೆ, ಮೋಸ. (ವಿಂ) 2. ಕುಟಿಲವಾದ, ವಕ್ರವಾದ. ಹ್ನ (ಕೌಟಿಲ್ಯ ಸಂವರಣೆ ಚ) "ಘ:" (೩-೩-೧೧೮)।

ಅವಾಕ್ (ಚ್) ಅವಾಕ್ (ಚ್) (ವಿಂ) 1. ಮೂಗ, ಮಾತನಾಡದವನು. ನಾಸ್ತಿ ವಾಕ್ ಯಸ್ಯ। ಅವಾಕ್ ಅವಾಚಿ ಅವಾಚಿ:। (ಅವ್ಯಂ) 2. ದಕ್ಷಿಣದಿಕ್ಕು, ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನಿಂದ, ದಕ್ಷಿಣದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ. 3. ದಕ್ಷಿಣದೇಶ, ದಕ್ಷಿಣದೇಶದಿಂದ, ದಕ್ಷಿಣದೇಶದಲ್ಲಿ. ಅವ+ಅಚ್ಚು (ಗತೌ) "ಕ್ವಿನ್" (೩-೨-೪೯)। "ಅಸ್ತಾತಿ:" (೪-೩-೨೭)। ಅಚ್ಚೇಲ್ಕು (೪-೩-೩೦)। ಅವಾಚಿ ದಿಕ್; ಅವಾಚ್ಯಾ ದಿಶ:, ಅವಾಚ್ಯಾ ದಿಶಿ। ಅವಾಙ್ ದೇಶ:, ಅವಾಚಿ ದೇಶಾತ್, ಅವಾಚಿ ದೇಶೇ।

ಅವಾಕ್ಪುಷ್ಪಿ ಅವಾಕ್ಪುಷ್ಪೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡುಸಬ್ಬಸಿಗೆ. ಅವಾಚ್ಚಿ ಅಧೋಮುಖಾನಿ ಪುಷ್ಪಾಪ್ಯಸ್ಯಾ: "ಡೀಫ್" (೪-೧-೪೧)।

ಅವಾಕ್ಶಾಖ ಅವಾಕ್ಶಾಖ (ಪುಂ) (ಶ್ರೀ ಭಗವದ್ಗೀತೆ ಯಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ) ಸಂಸಾರ, ಕೆಳಮುಖವಾದ ರೆಂಬೆ ಗಳುಳ್ಳ ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ. ಅವಾಚ್ಯ: ಶಾಖಾ ಯಸ್ಯ। "ಋಷ್-ಮೂಲಮಘ:ಶಾಖಮಶ್ವತ್ಯಂ ಪ್ರಾಹುರವ್ಯಯಮ್। ಛಂದಾಸಿ ಯಸ್ಯ ಪರ್ಣಾನಿ ಯಸ್ತಂ ವೇದ ಸ ವೇದವಿತ್" ಗೀತಾ ೧೪-೧।

ಅವಾಕ್ಶಿರಸ್ ಅವಾಕ್ಶಿರಸ್ (ವಿಂ) ಬಗ್ಗಿದ ತಲೆಯುಳ್ಳ. ಅವಾಕ್ ಶಿರೋ ಯಸ್ಯ। "ಶ್ರಾದ್ಧಂ ಭುಕ್ತ್ವಾ ಯ ತಚ್ಚಿಷ್ಟಂ ವೃಥಲಾಯ ಪ್ರಯಚ್ಛತಿ। ಸ ಮೂಢೋ ನರಕಂ ಯಾತಿ ಕಾಲಸೂತ್ರಮವಾಕ್ಶಿರಾ:" ಮನುಂ ೩-೨೪೯।

ಅವಾಪ್ರ ಅವಾಗ್ರ (ವಿಂ) ಬಗ್ಗಿದ ತಲೆಯುಳ್ಳ, ಬಗ್ಗಿದ ಕುದಿಯುಳ್ಳ. ಅವನತಮಗ್ರಂ ಯಸ್ಯ।

ಅವಾಙ್ ಅವಾಙ್ (ಪುಂ) 1. ದಕ್ಷಿಣದೇಶ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)-ಚಿ-ಚೀ. 2. ದಕ್ಷಿಣದಿಕ್ಕು. (ವಿಂ) 3. ಅಧೋಮುಖವಾದ, ಕೆಳಮುಖವಾದ. ಅವಾಚ್ಚತಿ - ಅವ+ಅಚ್ಚು (ಗತೌ) "ಕ್ವಿನ್" (೩-೨-೪೯)। ಅವಾಙ್ ಅವಾಚ್ಚಿ ಅವಾಚ್ಚಿ:

ಅವಾಙ್ಮನಸಗೋಚರ ಅವಾಙ್ಮನಸಗೋಚರ (ಪುಂ) ಪರಮಾತ್ಮ, ಹೇಳಲೂ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲೂ ಅಶಕ್ಯನಾದ ಈಶ್ವರ. ವಾಕ್ ಚ ಮನಶ್ಚ ವಾಙ್ಮನಸೇ। ತಯೋರ್ಗೋಚರೋ ನ ಭವತಿ।

ಅವಾಙ್ಮುಖ ಅವಾಙ್ಮುಖ (ವಿಂ) ಬಗ್ಗಿದ ತಲೆಯುಳ್ಳ. ಅವಾಕ್ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ। "ತಸ್ಯುಸ್ತೇವಾಙ್ಮುಖಾ: ಸರ್ವೇ ಫಲಿತಾ ಇವ ಶಾಲಯ:" ರಘುಂ ೧೪-೮೭। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೪೪)।

ಅವಾಚಿ ಅವಾಚೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಕ್ಷಿಣದಿಕ್ಕು. ಅವಾಚ್ಚಿಸಿ - ಅವ+ಅಚ್ಚು (ಗತೌ) "ಕ್ವಿನ್" (೩-೨-೪೯)। "ಡೀಫ್" (೪-೧-೬)।

ಅವಾಚೀನ ಅವಾಚೀನ (ವಿಂ) ದಕ್ಷಿಣದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. ಅವಾಚ್ಯಾ ಭವ: - ಅವಾಕ್ "ಕ್ವ:" (೪-೪-೮)। ಅಮರ ಕಾರನು ದಕ್ಷಿಣ ಮೊದಲಾದ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ "ಅವಾಗಭವಮವಾಚೀನಮುದೀನಮುದಗಭವಮ್। ಪ್ರತ್ಯಗಭವಂ ಪ್ರತೀವೀನಂ ಪ್ರಾಚೀನಂ ಪ್ರಾಗಭವಂ ತ್ರಿಪು" ಎಂದು ಹೇಳಿರುತ್ತಾನೆ. "ವಿಭಾಷಾಚ್ಚೇರದಿಕ್ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಪಾಂ ಸೂಂ (೪-೪-೮)। ಎಂಬ ಸೂತ್ರದಿಂದ ಈ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ "ಕ್ವ" ಪ್ರತ್ಯಯವನ್ನು ವಿಧಿಸಿರುವುದಿಲ್ಲ.

ಅವಾಚ್ಯ ಅವಾಚ್ಯ (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟಮಾತು. ನ ವಕ್ತುಂ ಯೋಗ್ಯಮ್ - ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) "ಘ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)। "ಅವಾಚ್ಯಂ ವದತೋ ಜಿಹ್ವಾ ಕಥಂ ನ ಪತಿತಾ ತವ" ರಾಮಾಂ। (ವಿಂ) 2. ಹೇಳಲು ಅನರ್ಹವಾದ. 3. ಹೇಳಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. 4. ಅಭಿಧಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ತಿಳಿಸಲು ಆಗದ.

ಅವಾಚ್ಚಿತ ಅವಾಂಚಿತ (ವಿಂ) ಬಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ+ಅಚ್ಚು (ಗತೌ)+ಗಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ತುಣ-ವಾಚ್ಚಯಾ ಮುಹುರವಾಚ್ಚಿತಾನನಾನ್ವಿಚಯೇಷು ಯತ್ರ ಹರಿತಾಶ್ಮ-ವೇಶಮನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೩-೪೬।

ಅವಾಂತರ ಅವಾಂತರ (ವಿಂ) ಪ್ರಧಾನಕಾರ್ಯದ ಮಧ್ಯೆ ಬರುವ (ಕಾರ್ಯ), ಮುಖ್ಯಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಉಪ ಸ್ವಂಭವವಾದ ಅಂಗಭೂತವಾದ (ಕಾರ್ಯ). ಅವಗತ-ಮಂತರಂ ಮಧ್ಯಮ್। "ಪಿಬ ನಿಮ್ಬಂ ಪ್ರದಾಸ್ಯಾಮಿ ಸ್ವಲ್ಪ ತೇ ಖಂಡಲಙ್ಕುಕಾನ್। ಪಿಬಿತ್ವಮುಕ್ತ: ಪಿಬತಿ ತಿಕ್ತಮಪ್ಯತಿಬಾಲಕ:"। ಇಲ್ಲಿ ಸಿಹಿ ತಿಂಡಿಯು ದೊರೆಯುವುದು ಮಾತ್ರ ಫಲವಲ್ಲ. ತಂದೆಯು ಸಿಹಿ ತಿಂಡಿಯನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಬೇವಿನ ಎಣ್ಣೆಯನ್ನು ಕುಡಿಸುವುದರಿಂದ ಮುಖ್ಯ ಫಲವಾದ ಆರೋಗ್ಯವೂ ದೊರಕುವಂತೆ ವೇದವೂ ಅವಾಂತರ



ಫಲಗಳ ಆಸೆಯನ್ನು ತೋರಿಸಿ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಮಾಡಿಸುವುದರಿಂದ ಪ್ರಧಾನ ಫಲವಾದ ಮೋಕ್ಷವೂ ದೊರಕುವುದು.

ಅವಾಂತರದಿಶ್ "ಅವಾಂತರದಿಶ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿದಿಕೃ, ಈಶಾನ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಮೂಲೆ ದಿಕ್ಕುಗಳು. ಅವಾಂತರಾ ದ್ವಯೋರ್ದಿಶೋರ್ಮಧ್ಯೆ ದಿಕ್.

ಅವಾಂತರದೇಶ ಅವಾಂತರದೇಶ (ಪುಂ) ನಡುಭಾಗ, ಮಧ್ಯ ಪ್ರದೇಶ.

ಅವಾಪಿತ ಅವಾಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಬಿತ್ತಲ್ಪಡದ, ಬೀಜ ವನ್ನು ಬಿತ್ತದೆ ನೆಟ್ಟು ಬೆಳೆಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಗಿಡ). 2. ಕತ್ತರಿಸ ಲ್ಪಡದ (ಕೂದಲು). ಡ್ ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನೇ) + ನಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102) | ನಂ ತಂ | 3. ಹೊಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ + ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) + ನಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102) | "ಫಣಿಭಾಷಿತಭಾಷ್ಯಫಕ್ಕಿಕಾ ವಿಷಮಾ ಕುಂಡಲನಾಮವಾ- ಪಿತಾ" ನೆಪಂ 2-95 |

ಅವಾಪ್ತ ಅವಾಪ್ತ (ವಿಂ) ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ + ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) | "ನಾನವಾಪ್ತಮವಾಪ್ತವ್ಯಂ ವರ್ತೆ ಎವ ಚ ಕರ್ಮಣಿ" ಗೀತಾ 3-22 |

ಅವಾಪ್ತವ್ಯ ಅವಾಪ್ತವ್ಯ (ವಿಂ) ಹೊಂದಲ್ಪಡುವ, ಅವಶ್ಯ ವಾಗಿ ಪಡೆಯಬೇಕಾದ. ಅವ + ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ತವ್ಯ:" (3-1-96) | "ಅನವಾಪ್ತಮವಾಪ್ತವ್ಯಂ ನ ತೇ ಕಿಂಚನ ವಿಧತೇ" ರಘುಂ 10-31 |

ಅವಾಪ್ತಿ ಅವಾಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊಂದುವಿಕೆ, ಪಡೆಯುವಿಕೆ. ಅವ + ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94) | "ತಪಃ ಕಿಲೇದಂ ತದವಾಪ್ತಿಸಾಧನಂ ಮನೋರಥಾನಾಮಗತಿರ್ನ ವಿಧತೇ" ಕುಮಾಂ 4-64 |

ಅವಾಪ್ಯ ಅವಾಪ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲ್ಪಡುವ, ಹೊಂದ ಬೇಕಾದ, ಪಡೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಅವ + ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಪ್ಯತ್" (3-1-124) | "ಜ್ಯೇಷ್ಠತಾ ಚ ನಿವರ್ತೇತ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾವಾಪ್ಯಂ ಚ ಯದ್ವನಮ್" ಮನುಂ 11-145 | (ಅವ್ಯಂ) 2. ಹೊಂದಿ, ಪಡೆದು. ಅವ + ಆಪ್ಲ್ "ಲ್ಯಪ್" (3-1-30) |

ಅವಾಮ ಅವಾಮ (ನಂ) 1. ಬಲಭಾಗ. ನ ವಾಮಮ್ | 2. ಅನುಕೂಲವಾದ, ಪ್ರತಿಕೂಲವಲ್ಲದ. 3. ಸುಂದರ ವಲ್ಲದ.

ಅವಾಯ ಅವಾಯ (ಪುಂ) ಅಂಗ, ಅವಯವ. ಅವ + ಇನ್ (ಗತೌ) "ಘತ್" |

ಅವಾರ ಅವಾರ (ನಂ) ನದಿಯ ಸಮೀಪದ ದಡ, ಹೊಳೆಯ ಈಚೆ ದಡ. ಅರ್ವಾಕ್ತೀರಮ್ ಅವ ಅರ್ಯತೇ — ಇ (ಗತೌ) ಕರ್ಮಂ "ಘತ್" (3-3-19) | ನ ವಾರ್ ಅಸ್ತೃತ್ವ ವಾ "ಅಚ್" (4-2-120) |

ಅವಾರಣ ಅವಾರಣ (ನಂ) 1. ತಡೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಅಡ್ಡಿ ಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಂ ತಂ | (ವಿಂ) 2. ತಡೆಯಿಲ್ಲದ, ಅಡ್ಡಿ ಯಿಲ್ಲದ. ನ ವಾರಣಂ ಯಸ್ಯ |

ಅವಾರಣೀಯ ಅವಾರಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಲಾಗದ, ಅಡ್ಡಿ ಪಡಿಸಲಾಗದ. ನ ವಾರಯಿತುಂ ಶಕ್ಯಃ | 2. ಹೋಗ ಲಾಡಿಸಲು ಶಕ್ಯವಲ್ಲದ, ಗುಣ.

ಅವಾರಪಾರ ಅವಾರಪಾರ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಅವಾರಂ ಪಾರಂ ಚ ಅರ್ವಾಕ್ತೀರಮ್ ಉತ್ತರತೀರಂ ಚ ಸ್ತೋಷ್ಯ "ಅಚ್" (4-2-120) |

ಅವಾರಪಾರೀಣ ಅವಾರಪಾರೀಣ (ವಿಂ) ತೀರವನ್ನು ಮುಟ್ಟುವ, ದಡವನ್ನು ತಲುಪುವ. ಅವಾರಪಾರೆ ಗಚ್ಛತಿ "ಃ" (4-2-93) |

ಅವಾರಿತ ಅವಾರಿತ (ವಿಂ) ತಡೆಯಲ್ಪಡದ, ಅಡ್ಡಿ ಪಡಿಸ ಲ್ಪಡದ. ನ ವಾರಿತಃ | "ಗ್ರಾಮೇಷು ಸೈನ್ಯೇರಕರೋದವಾರಿತಃ ಕಿಮವ್ಯವಸ್ಥಾಂ ಚಲಿತೋಽಪಿ ಕೇಶವಃ" ಮಾಘಂ 12-36 |

ಅವಾರೀಣ ಅವಾರೀಣ (ವಿಂ) ನದಿಯ ಈಚೆ ದಡವನ್ನು ಮುಟ್ಟುವ. ಅವಾರಮರ್ವಾಕ್ತೀರಂ ಗಚ್ಛತಿ "ಃ" (ವಾಂ 4-2-93) |

ಅವಾರ್ಯ ಅವಾರ್ಯ (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಲಾಗದ, ಅಡ್ಡಿ ಪಡಿಸಲಾಗದ. 2. ನಿವಾರಿಸಲಾಗದ, ಗುಣಪಡಿಸ ಲಾಗದ. "ಉಪದ್ರವೈಸ್ತು ಯೇ ಜುಷ್ಠಾ ವ್ಯಾಧಯೋ ಯಾನ್ತೃವಾರ್ಯತಾಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ |

ಅವಾವಟ ಅವಾವಟ (ಪುಂ) ಸಜಾತೀಯ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಉಪಪತ್ತಿಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಗ. "ದ್ವಿತೀಯೇನ ತು ಯಃ ಪಿತ್ರಾ ಸರ್ವಗರ್ಭಾಂ ಪ್ರಜಾಯತೇ | ಅವಾವಟ ಇತಿ ಸ್ವಾತೌ ಶೂದ್ರಧರ್ಮಾ ಸ ಜಾತೀತಃ" ಸ್ಮೃತಿಃ |

ಅವಾಸಸ್ ಅವಾಸಸ್ (ವಿಂ) ನಗ್ನ, ದಿಗಂಬರ, ಬಟ್ಟೆ ಯಿಲ್ಲದವನು. ನಾಸ್ತಿ ವಾಸೋ ವಸ್ತ್ರಂ ಯಸ್ಯ |

ಅವಾಸ್ತವ ಅವಾಸ್ತವ (ವಿಂ) 1. ನಿಜವಲ್ಲದ, ಸುಳ್ಳಾದ. 2. ಅಯೋಗ್ಯವಾದ, ಯುಕ್ತಿಗೆ ವಿರುದ್ಧವಾದ, ಆಧಾರ ರಹಿತ. ನ ವಾಸ್ತವಮ್ |

ಅವಿ ಅವಿ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಅವತಿ — ಅವ (ರಕ್ಷಣಾದೌ) "ಇನ್" (3ಂ 4-110) | 2. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 3. ಕುರಿ, ಟಿಗರು. "ಮಹಾನ್ಯಪಿ ಸಮೃದ್ಧಾನಿ



ಗೋಪ್ಯಾವಿಧನಧಾನ್ಯತಃ। ಸ್ತ್ರೀಸಂಬಂಧೇ ದಶತಾನಿ ಕುಲಾನಿ  
ಪರಿವರ್ಜಯೇತ್" ಮನುಂ ೩-೬। 4. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ.  
5. ಯಜಮಾನ. 6. ಇಲಿಯ ಚರ್ಮದ ಕಂಬಳ.  
"ಅವಿನಾಥೇ ರಥೇ ಮೇಘೇ ಶೈಲಮೃಷಿಕಕಂಬಲೇ" ಮೇದಿಂ।  
7. ಪ್ರಾಕಾರ, ಮನೆಯ ಸುತ್ತಗೋಡೆ, ಆವರಣದ  
ಗೋಡೆ. 8. ಮನೆ. 9. ಕಾಂತಿ, ಪ್ರಕಾಶ. 10. ವಾಯು,  
ಗಾಳಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 11. ಭೂಮಿ. 12. ಮುತ್ತುಮತಿ  
ಯಾದ ಹೆಂಗಸು, ರಜಸ್ವರ. 13. ಕುರಿ. "ಅವಿನಾ  
ಥವಂತೇ ಸೂರ್ಯ ಮೇಘೇ ಮೃಷಿಕಕಂಬಲೇ। ಪ್ರಾಕಾರೇ ಭವನೇ ಭಾಸಿ  
ಸ್ತ್ರೀ ತು ಪುಷ್ಪವತೀಭುವೋಃ" ನಾನಾರ್ಥರಂ। "ಅವಿಭೃಪುಷ್ಪವತೀಃ  
ಸ್ತ್ರೀ ವಾಯುಪ್ರಾಕಾರಭಾಃಸು ನಾ" ವೇಜಂ। "ಮೇಘಿ ಸ್ವಾಜ್ವಾಲ-  
ಕಿನ್ಯವಿಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಅವಿಕ ಅವಿಕ** (ಪುಂ) "ಅವಿ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅವಿ  
ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ" (೪-೪-೨೮)।

**ಅವಿಕಟ ಅವಿಕಟ** (ಪುಂ) 1. ಕುರಿಗಳ ಮಂದೆ, ಟಗರು  
ಗಳ ಗುಂಪು. ಅವಿನಾಂ ಸಜ್ಜಾತಃ "ಕಟಕ್" (ವಾಂ  
(೪-೨-೨೯)। (ವಿಂ) 2. ಉಗ್ರವಲ್ಲದ, ಸೌಮ್ಯವಾದ.  
ನ ವಿಕಟಃ।

**ಅವಿಕಟೋರಣ ಅವಿಕಟೋರಣ** (ಪುಂ) ಟಗರುಗಳ ಗುಂಪಿ  
ನಿಂದ ರಾಜನಿಗೆ ಕೊಡಬೇಕಾದ ಟಗರು ರೂಪವಾದ  
ಕಾಣಿಕೆ, -ಕಪ್ಪ, -ತೆರಿಗೆ. ಅವಿಕಟೇ ಮೇಘಸಜ್ಜಾತೇ ದೇಯಃ  
ಉರಣಃ।

**ಅವಿಕಲ್ಪನ ಅವಿಕಲ್ಪನ** (ವಿಂ) ಆತ್ಮಶ್ಲಾಘನೆ ಮಾಡಿ  
ಕೊಳ್ಳುವವನು. ನ ವಿಕಲ್ಪನಃ। "ವಿಧಾಂಸೋಪ್ಯವಿಕಲ್ಪನಾ  
ಭವಂತಿ" ಮುದ್ರಾಂ ೩।

**ಅವಿಕಲ ಅವಿಕಲ** (ವಿಂ) 1. ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ, ಉನ್ನತ  
ವಲ್ಲದ, ಕೆಡದಿರುವ, ಕಡಿಮೆಯಾಗದಿರುವ. ನ ವಿಕಲಃ।  
"ಇಹಾಯಾತಃ ಸಂಪ್ರತ್ಯವಿಕಲಶರಚ್ಚಂದ್ರವದನಃ" ಮಾಲತೀಂ  
೨-೧೧। 2. ಕ್ರಮಬದ್ಧವಾದ, ನಿಯಮಾನುಸಾರ  
ವಾದ, ಅಸಂಗತವಲ್ಲದ, ಹೊಂದಿಕೆಯಾದ. "ಗತ-  
ಮನುಗತವಿಂಶೇಕತಾಂ ವೇಣುನಾದೈಃ ಕಲಮವಿಕಲತಾಲಂ ಗಾಯಕಂಶ್ರೋ-  
ತೋಃ" ಮಾಧಂ ೧೧-೧೦। (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3. ಸಂಪೂರ್ಣ  
ವಾಗಿ, ಪೂರ್ಣವಾಗಿ. "ರಕ್ಷೋಭಿಃ ಸುರಮನುಜೈರ್ದಿತೈಃ ಸುತೈರ್ವಾ  
ಖಲೋಕೈಷ್ವವಿಕಲಮಾಪ್ತಮಾಧಿಪತ್ಯಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೮-೩೬।

**ಅವಿಕಲ್ಪ ಅವಿಕಲ್ಪ** (ಪುಂ) 1. ವಿಕಲ್ಪವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ,  
ಇದು ಅಥವಾ ಅದು ಎಂಬ ಬದಲಾವಣೆಯಿಲ್ಲದಿರು  
ವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ವಿಕಲ್ಪವಿಲ್ಲದ, ಇದಾಗಲಿ ಅದಾಗಲಿ  
ಎಂಬ ಬದಲಾವಣೆಗೆ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3.

ವಿಕಲ್ಪವಿಲ್ಲದಂತೆ, ಅನುಮಾನಕ್ಕೆ ಎಡೆಯಿಲ್ಲದಂತೆ,  
ಸಂಶಯವಿಲ್ಲದೆ.

**ಅವಿಕಾರ ಅವಿಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ವಿಕಾರವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ,  
ಬದಲಾವಣೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ವಿಕಾರವಿಲ್ಲದ,  
ಬದಲಾವಣೆಯಿಲ್ಲದ.

**ಅವಿಕಾರ್ಯ ಅವಿಕಾರ್ಯ** (ವಿಂ) ವಿಕಾರಹೊಂದದ,  
ಬದಲಾವಣೆಹೊಂದಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ, ಸ್ವಸ್ವರೂಪದ  
ವಿಕಾರವನ್ನು ಹೊಂದುವ ಸುವರ್ಣಾದಿಗಳಂತೆ ಯಾವ  
ವಿಕಾರವನ್ನೂ ಹೊಂದದ. ನ ವಿಕಾರ್ಯಃ। "ಅವ್ಯಕ್ತೋ-  
ಯಮಚಿಂತ್ಯೋಽಯಮವಿಕಾರ್ಯೋಽಯಮುಚ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೨-೨೫।

**ಅವಿಕೃತ ಅವಿಕೃತ** (ವಿಂ) ವಿಕಾರಹೊಂದದ, ಬದಲಾ  
ವಣೆ ಹೊಂದದ. ನ ವಿಕೃತಃ।

**ಅವಿಕೃತಿ ಅವಿಕೃತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಾಂಖ್ಯರು ಹೇಳುವ  
ಮೂಲಪ್ರಕೃತಿ. "ಮೂಲಪ್ರಕೃತಿರವಿಕೃತಿಃ" ಸಾಂ ಕಾಂ ೩।  
[ವಿವರಕ್ಕೆ "ಪ್ರಕೃತಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ವಿಕಾರ  
ವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 3. ವಿಕಾರವಿಲ್ಲದ, ವಿಕಾರ  
ಹೊಂದದ.

**ಅವಿಕ್ರಿಯ ಅವಿಕ್ರಿಯ** (ವಿಂ) ವಿಕಾರವಿಲ್ಲದ, ವಿಕಾರ  
ಹೊಂದದ. ನಾಸ್ತಿ ವಿಕ್ರಿಯಾ ವಿಕಾರೋ ಯಸ್ಯ। "ದೇಶೇ  
ದೇಶೇ ಗುಣೇವೇವಮವಸ್ಥಾಸ್ತವಮವಿಕ್ರಿಯಃ" ರಘುಂ ೧೦-೧೭।

**ಅವಿಕೃತ ಅವಿಕೃತ** (ವಿಂ) ಕ್ರಿಯೆಗೆ ತೆಗೆದುಕೊಂಡರೂ  
(ಒಪ್ಪಿಗೆಯಿಲ್ಲವಾದರೆ) ನಿರ್ದಿಷ್ಟಕಾಲದಲ್ಲಿ ಹಿಂತಿರುಗಿ  
ಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ವಸ್ತು. [ಕ್ರಿಯೆಗೆ ಕೊಂಡ  
ವಸ್ತುವು ಸರಿಯಲ್ಲವೆಂದು ಪಶ್ಯತ್ವಾಪವೃಂಟಾದರೆ  
ಕೊಂಡನಂತರ ಹತ್ತು ದಿನಗಳೊಳಗಾಗಿ ಹಿಂತಿರುಗಿಸ  
ಬೇಕು. ಕೊಟ್ಟವನೂ ಅದನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಪಡೆಯ  
ಬೇಕು. ಇಂತಹ ವಸ್ತುವು ಅವಿಕೃತವು]. "ಕ್ರೀತ್ವಾ  
ವಿಕೀಯ ವಾ ಕಿಂಚಿತ್ ಯಸ್ಯೇಹಾನುಶಯೋ ಭವೇತ್। ಸೌಜ್ಞತದರ್ಶಾ-  
ಹಾತದ್ವಯಂ ದಧಾಚ್ಚೇವಾದದೀತ ವಾ" ಮನುಂ ೮-೨೨೨।

**ಅವಿಕ್ರೇಯ ಅವಿಕ್ರೇಯ** (ವಿಂ) ವಿಕ್ರಯಿಸಲು ಅನರ್ಹ  
ವಾದ, ಮಾರಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ. ನ ವಿಕ್ರೇಯಂ ಯೋಗ್ಯಮ್।

**ಅವಿಕ್ಷತ ಅವಿಕ್ಷತ** (ವಿಂ) 1. ನಾಶಹೊಂದದ.  
2. ಕೆಡಿಸಲ್ಪಡದ. ನ ವಿಕ್ಷತಃ। "ವಿಕ್ರೇತುಃ ಪ್ರತಿದೇಯಂ  
ತತ್ತಸ್ಮಿನ್ನೇವಾಹ್ನಯವಿಕ್ಷತಮ್"।

**ಅವಿಗೃಹಿತ ಅವಿಗೃಹಿತ** (ವಿಂ) ನಿಂದಿಸಲ್ಪಡದ, ದೂಷಿಸ  
ಲ್ಪಡದ. ನ ವಿಗೃಹಿತಃ।

**ಅವಿಗಿತ ಅವಿಗಿತ** (ವಿಂ) ನಿಂದಿಸಲ್ಪಡದ, ದೂಷಿಸ  
ಲ್ಪಡದ. ನ ವಿಗಿತಃ।



ಅವಿಗ್ನ ಅವಿಗ್ನ (ಪುಂ) 1. ಕಮಂಕೆ ಗಡ. (ವಿಂ) 2. ಭಯಪಡದ, ಹೆದರದ, ಕಳವಳಪಡದ. ಓ ವಿಜಿ (ಭಯಚಲನಯೋ:) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)।

ಅವಿಗ್ರಹ ಅವಿಗ್ರಹ (ಪುಂ) 1. ನಿತ್ಯಸಮಾಸ. ನಾಸ್ತಿ ವಿಗ್ರಹೋ ವೃತ್ಯರ್ಥವಿಬೋಧಕಂ ವಾಕ್ಯಂ यस್ಯ। (ವಿಂ) 2. ದೇಹ ವಿಲ್ಲದ, ಶರೀರವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ವಿಗ್ರಹೋ ದೇಹೋ यस್ಯ। "ಅವಿಗ್ರಹಸ್ಯಾಪ್ಯತುಲೇನ ಹೇತುನಾ ಸಮೇತಭಿನ್ನದ್ವಯಮುತಿ ತಿಷ್ಠತ:" ಕಿರಾಂ ೧೮-೩೩। 3. ತಿಳವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದ, ಅರಿವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ವಿಶೇಷಣ ಗ್ರಹೋ ಯಸ್ಯ।

ಅವಿಘ್ನ ಅವಿಘ್ನ (ನಂ) 1. ವಿಘ್ನವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಅಡ್ಡಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ವಿಘ್ನಸ್ಯಾಭಾವಃ। ಅವ್ಯಯಿಂ। "ಅವಿಘ್ನ-ಮಸ್ತು ತೇ ಸ್ಥೇಯಾಃ ಪಿತೇವ ಧುರೀ ಪುತ್ರೀಣಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೯೧। "ಅವಿಘ್ನಮಸ್ತು ಸಾವಿತ್ರೀ: ಪ್ರದಾನೇ ದುಹಿತುಸ್ತವ" ಭಾಂ ವನಂ ೨೯೫-೩೨। (ವಿಂ) 2. ವಿಘ್ನವಿಲ್ಲದ, ತಡೆಯಿಲ್ಲದ, ಪ್ರತಿಬಂಧಕವಿಲ್ಲದ. "ಸೋಹಮವಿಘ್ನಕ್ರಿಯೋ-ಪಲಮಾಯ ಧರ್ಮಾರಣ್ಯಮಿದಮಾಯಾತ:" ಶಾಕುಂ ೧।

ಅವಿಚಲಿತ ಅವಿಚಲಿತ (ವಿಂ) ಚಲಿಸದಿರುವ, ಸ್ಥಿರವಾದ. ನ ವಿಚಲಿತಃ। "ಅವಿಚಲಿತಮನೋಭಿಃ ಸಾಧಕೈರ್ಮೃಗ್ಯಮಾಣಃ ಸ ಜಯತಿ ಪರಿಣದ್ಭಃ ಶಕ್ತಿಭಿಃ ಶಕ್ತಿನಾಥಃ" ಮಾಲತೀಂ ೫-೧।

ಅವಿಚಾರ ಅವಿಚಾರ (ಪುಂ) 1. ವಿಚಾರವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ವಿಮರ್ಶೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಅವಿವೇಕ. ನ ವಿಚಾರಃ। 2. ಕುರಿಗಳು ಸಂಚರಿಸಲು (ಮೇಯಲು) ಯೋಗ್ಯವಾದ ದೇಶ. ಅದೀನಾಂ ಚಾರೋ ಯತ್ರ। (ವಿಂ) 3. ವಿಚಾರವಿಲ್ಲದ, ವಿವೇಚನೆಯಿಲ್ಲದ, ವಿಮರ್ಶೆಯಿಲ್ಲದ. ನ ವಿಚಾರೋ ಯತ್ರ।

ಅವಿಚಾರಣೀಯ ಅವಿಚಾರಣೀಯ (ವಿಂ) ವಿಮರ್ಶಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ, ವಿಚಾರಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಲ್ಲದ. ನ ವಿಚಾರಯಿತುಮಹಃ। "ಪ್ರತ್ಯಗ್ರಹೀದಗ್ರಜಶಾಸನಂ ತದಾಜ್ಞಾ ಗುರುಣಾಮವಿಚಾರಣೀಯಾ" ರಘುಂ ೧೪-೪೬।

ಅವಿಚಾರಿತ ಅವಿಚಾರಿತ (ವಿಂ) 1. ವಿಮರ್ಶೆಮಾಡಲ್ಪಡದ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ವಿಚಾರಮಾಡಲ್ಪಡದ. ನ ವಿಚಾರಿತಃ। (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 2. ವಿಚಾರಮಾಡದೆ, ವಿವೇಚನೆಯಿಲ್ಲದೆ. "ಸ ಕಿಂ ಭೃತ್ಯಃ ಸ ಕಿಂ ಮನ್ತ್ರೀ ಯ ಆದಾವೇವ ಭೂಪತಿಮ್। ಯುದ್ಧೋದ್ಯೋಗಂ ಸ್ವಭೂತ್ಯಾಗಂ ನಿರ್ದಿಶತ್ಯವಿಚಾರಿತಮ್" ಹಿತೋಂ।

ಅವಿಚಾರಿನ್ ಅವಿಚಾರಿನ್ (ವಿಂ) ವಿಚಾರಮಾಡದ, ಹಿಂದುಮುಂದು ನೋಡದೆ ಕೆಲಸಮಾಡುವ. ನ ವಿಚಾರಯಿತುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ "ಞಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ಚಾರಿಣಿ -ಚಾರಿಣೀ,

ಅವಿಚಾಲಿತ ಅವಿಚಾಲಿತ (ವಿಂ) 1. ಚಲಿಸಲ್ಪಡದ, ಕದಲಿಸಲ್ಪಡದ. 2. ಸೋಲಿಸಲ್ಪಡದ, ಜಯಶಾಲಿಯಾದ. ನ ವಿಚಾಲಿತಃ। "ಅವಿಚಾಲಿತಚಾರುಕರ್ಯೋರನು-ರಾಗಾದುಪಗುಣಯೋಃ ಶ್ರಿಯಾ" ಮಾಘಂ ೧೬-೭೦।

ಅವಿಚಾಲ್ಯ ಅವಿಚಾಲ್ಯ (ವಿಂ) ಸ್ಥಿರವಾದ, ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದದ, ಕದಲಿಸಲಾಗದ. ನ ವಿಚಾಲ್ಯಃ। "ಅವಿಚಾಲ್ಯಮೇತದ್ಭುಕ್ತಂ ತಥ್ಯಂ ಚ ಭವತಾ ವಚಃ" ಭಾಂ ವನಂ।

ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನ ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಬೇರೆಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡದ, ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಡದ. 2. ಅಖಂಡವಾದ, ನಿರಂತರವಾದ, ಎಡೆಬಿಡದ. ನ ವಿಚ್ಛಿನ್ನಃ। "ಅನ್ವ-ಮೀಯತ ಕಲ್ಯಾಣಂ ತಸ್ಯಾವಿಚ್ಛಿನ್ನಸಂತತಿ" ರಘುಂ ೧೭-೧೧।

ಅವಿಚ್ಛೇದ ಅವಿಚ್ಛೇದ (ಪುಂ) 1. ವಿಚ್ಛೇದವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ನಿರಂತರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಅಖಂಡವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಸೇರಿದಂತಿರುವಿಕೆ. ನ ವಿಚ್ಛೇದಃ। "ಗಣೇರವಿಚ್ಛೇದನಿರೂಪಮಾಬಭೌ-ವನಂ ನಿರೂಚ್ಛವಾಸಮಿವಾಕುಲಾಕುಲಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೪-೩೨। (ವಿಂ) 2. ಎಡೆಬಿಡದ, ನಿರಂತರವಾದ, ಸೇರಿದಂತಿರುವ, ವಿಚ್ಛೇದವಿಲ್ಲದ. ನ ವಿಚ್ಛೇದೋ ಯಸ್ಯ।

ಅವಿಜ್ಞಾತ ಅವಿಜ್ಞಾತ (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ. ನ ವಿಜ್ಞಾತಃ। "ಅವಿಜ್ಞಾತಪ್ರಬಂಧಸ್ಯ ವಚೋ ವಾಚಸ್ಪತೇರಪಿ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೪೩।

ಅವಿಜ್ಞಾತ ಅವಿಜ್ಞಾತ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. "ಅವಿಜ್ಞಾತಾ ಸಹಸ್ರಾಂಶುಃ" ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 2. ಅರಿಯದವನು, ತಿಳವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬)। -ಜ್ಞಾತೃ -ಜ್ಞಾತೃಃ.

ಅವಿಜ್ಞೇಯ ಅವಿಜ್ಞೇಯ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. (ವಿಂ) 2. ತಿಳಿಯಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. ನ ವಿಜ್ಞಾತುಂ ಶಕ್ಯಃ।

ಅವಿತ ಅವಿತ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಾಪಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ (ರಕ್ಷಣಾದೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ತ್ರಾಣಂ ತ್ರಾತಂ ರಕ್ಷಿತಮವಿತಂ ಗೋಪಾಯಿತಂ ಚ ಗುಪ್ತಂ ಚ" ಅಮಂ।

ಅವಿತಥ ಅವಿತಥ (ನಂ) 1. ಸತ್ಯ, ನಿಜ. ನ ವಿತಥಮ್। ವಿರೋಧೇ ನಂ ತಂ। "ತದವಿತಥಮವಾದೀಯನ್ಮಮ ತ್ವಂ ಪ್ರಿಯೇತಿ ಪ್ರಿಯಜನಪರಿಭುಕ್ತಂ ಯದ್ಕೂಲಂ ದಧಾನಃ" ಮಾಘಂ ೧೧-೩೩। (ವಿಂ) 2. ಸಫಲವಾದ, ವೃದ್ಧವಲ್ಲದ. "ತಥೇತಿ ತಸ್ಯಾವಿತಥಂ ಪ್ರತೀತಃ ಪ್ರತ್ಯಗ್ರಹೀತಸಂಗರಮಗ್ರಜನ್ಮಾ" ರಘುಂ ೫-೨೬। 3. ಸತ್ಯವಾದ, ನಿಜವಾದ. "ಅವಿತಥಾ ವಿತಥಾಃ ಸಖಿ ಮಾ ಗಿರಃ" ಮಾಘಂ ೬-೧೮। (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 4. ಸತ್ಯವಾಗಿ, ನಿಜವಾಗಿ,



ಅವಿತ್ ಅವಿತ್ಯ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಕ, ಕಾಪಾಡುವವನು.  
ಅವ (ರಕ್ಷಣಾದೌ) "ತತ್" (೨-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ತೀಪ್" (೪-೧-೬)। ಅವಿತ್ರಿ ಅವಿತ್ರಿಃ.

ಅವಿತ್ತ ಅವಿತ್ತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಸಿದ್ಧನಲ್ಲದವನು, ಹೆಸರು  
ಪಡೆಯದವನು. ನ ವित्त: ಪ್ರಸಿದ್ಧ:। 2. ದರಿದ್ರ,  
ಬಡವ. ನ ವित्तं यस्य।

ಅವಿತ್ತಿ ಅವಿತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜ್ಞಾನಶೂನ್ಯತೆ, ಅರಿವಿಲ್ಲ  
ದಿರುವಿಕೆ. 2. ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ಬಡತನ. 3. ಹೊಂದ  
ದಿರುವಿಕೆ, ಪಡೆಯದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 4. ಜ್ಞಾನ  
ವಿಲ್ಲದ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. 5. ಮೂರ್ಖ. (ಅವ್ಯಂ) 6.  
ಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದೆ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದೆ. ನಾಸ್ತಿ ವित्ति:  
ಜ್ಞಾನಂ यस್ಯ। 7. ಸಂಪಾದನೆಯಿಲ್ಲದೆ, ಜೀವನಕ್ಕೆ  
ಮಾರ್ಗವಿಲ್ಲದೆ. ನಾಸ್ತಿ ವित्ತಿರ್ಲಭೋ यस್ಯ।

ಅವಿತ್ಯಾ ಅವಿತ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಾಜಿಗಡ. ಅವಿತ್ಯೋ ಹಿತಾ  
"ವ್ಯನ್" (೪-೧-೮)।

ಅವಿದಾಘ ಅವಿದಗ್ಧ (ವಿಂ) 1. ದಡ್ಡ, ಮಡ್ಡಿ, ಹೆಡ್ಡೆ.  
ನ ವಿದಾಘ:। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸುಡಲ್ಪಡದ.

ಅವಿವಿತ ಅವಿದಿತ (ವಿಂ) ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ. ನ ವಿದಿತ:।  
"ಅವಿದಿತಗತಯಾಮಾ ರಾತ್ರಿರೇವ ವ್ಯರಂಸೀತ್" ತಂ ರಾಂ ೧-೨೭।

ಅವಿದುಘ ಅವಿದುಗ್ಧ (ನಂ) ಕುರಿಯಹಾಲು. ಅವೇ:  
ದುಘಮ್।

ಅವಿದ್ವ ಅವಿದ್ವಾರ (ನಂ) 1. ಸಾಮಾನ್ಯ, ಹತ್ತಿರ.  
(ವಿಂ) 2. ಸಮೀಪದ, ಹತ್ತಿರದ. (ಅವ್ಯಂ) 3.  
ಸಮೀಪದಿಂದ, ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ, ಇತ್ಯಾದಿ. ಅವಿದ್ವೇಣ,  
ಅವಿದ್ವಾತ್, -ದ್ವರತ:, -ದ್ವರೇ।

ಅವಿದ್ವ ಅವಿದ್ವ (ವಿಂ) ತೂತುಕೊರೆಯಲ್ಪಡದ, ರಂಧ್ರ  
ಮಾಡಲ್ಪಡದ. ವ್ಯಥ (ತಾಡನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।  
ನಂ ತಂ।

ಅವಿದ್ವಕರ್ಣ ಅವಿದ್ವಕರ್ಣ (ಪುಂ) ಮೈಚ್ಚು, ಯವನ.

ಅವಿದ್ವಕರ್ಣಿ ಅವಿದ್ವಕರ್ಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗುರುಶುಂಠಿ ಗಡ.

ಅವಿಧ್ಯ ಅವಿದ್ಯ (ವಿಂ) ವಿದ್ಯೆಯಿಲ್ಲದ, ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ  
ಮಾಡದ, ಮೂರ್ಖ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ವಿದ್ಯಾ  
ಜ್ಞಾನಂ यस್ಯ। "ಅವಿದ್ಯಾನಾಂ ತು ಸರ್ವೇಷಾಮಿಹಾತಶ್ಚೇದನಂ ಭವೇತ್।  
ಸಮಸ್ತತ್ರ ವಿಭಾಗ: ಸ್ಯಾದಪಿತ್ಯ ಇತಿ ಧಾರಣಾ" ಮನುಂ  
೧-೨೦೪।

ಅವಿಧ್ಯಮಾನ ಅವಿದ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ಇಲ್ಲದಿರುವ. ನ  
ವಿಧ್ಯಮಾನ:। "ಅವಿಧ್ಯಮಾನೇ ಪಿತ್ರಂಶೇ ಸ್ವಾಂಶಾದುದ್ಭವಾ ವಾ  
ಪುನ:। ಅವಶ್ಯಕಾರ್ಥಾ: ಸಂಸ್ಕಾರಾ: ಪ್ರಾತುಭಿ: ಪೂರ್ವಸಂಸ್ಕೃತೆ:"।

ಅವಿಧ್ಯಾ ಅವಿಧ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿಗೇಡಿತನ,  
ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ವಿದ್ಯಾ। ವಿರೋಧೇ ನಂ ತಂ।  
2. (ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತಿಗಳ ಮತದಲ್ಲಿ) ವಿದ್ಯೆಗಿಂತಲೂ  
ಬೇರೆಯಾದ ಕರ್ಮ. [ಈ ಕರ್ಮದಿಂದಲೇ ಜೀತನನ  
ಧರ್ಮಭೂತಜ್ಞಾನದ ಸಂಕೋಚವಾಗುವುದು.  
ಅದರಿಂದ ಅಹಂಕಾರಮಮಕಾರಗಳುಂಟಾಗುವುವು.]

"ತತ್ ಮೃತ್ಯುಮವಿಧ್ಯಾ" ಬೃಹದಾಂ। "ಅವಿಧ್ಯಾ ಕರ್ಮಸಂಜ್ಞಾ  
ತೃತೀಯಾ ಶಕ್ತಿರೀಕೃತೇ। ಯಾ ಕ್ಷೇತ್ರಜ್ಞಶಕ್ತಿ: ಸಾ ವೇಷಿತಾ  
ನೃಪ ಸರ್ವಗಾ। ಸಂಸಾರತಾಪಾನಖಿಲಾನವಾನ್ಮೃತಿಸಂತತಾನ್।  
ತಯಾ ತಿರೋಹಿತತ್ವಾಂಶ ಶಕ್ತಿ: ಕ್ಷೇತ್ರಜ್ಞಸಂಜ್ಞಿತಾ। ಸರ್ವಭೂತೇಷು  
ಭೂಪಾಲ ತಾರತಮ್ಯೇನ ಲಕ್ಷ್ಯತೇ" ವಿಂ ಪುಂ ೬-೭-೬೧-೬೩।

3. (ಅದ್ವೈತಿಗಳ ಮತದಲ್ಲಿ) ವಿದ್ಯೆಗೆ (ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ)  
ವಿರೋಧಿಯಾದ ಅಜ್ಞಾನ, ಮಾಯೆ, ಭ್ರಾಂತಿ, ಮಿಥ್ಯಾ  
ಜ್ಞಾನ. [ಈ ಅವಿದ್ಯೆಯಿಂದ, ಮಿಥ್ಯಾಭೂತವಾದ  
ಜಗತ್ತು ಸತ್ಯವೆಂಬಂತೆ ತೋರುವುದೆಂದು ಅಭಿಪ್ರಾಯ  
ಪಡುತ್ತಾರೆ. "ಅಹಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಸ್ಮಿ" ಎಂಬ ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವರೂಪ  
ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ನಾಹಂ ಬ್ರಹ್ಮ ಎಂಬ ಜ್ಞಾನವು (ಅವಿದ್ಯೆಯು)  
ವಿರೋಧಿಯಾದುದು. ಈ ಸಿದ್ಧಾಂತದಲ್ಲಿ ಜೀವ ಬ್ರಹ್ಮ  
ಇಬ್ಬರೂ ಒಂದೇ. ಆದರೆ ಅವಿದ್ಯೆಯಿಂದ ಅಹಂ ಕರ್ತಾ,  
ಅಹಂ ಭೋಕ್ತಾ, ಅಹಂ ಸುಖಿ, ಅಹಂ ದು:ಖಿ, ಅಹಂ ಜಾನಾಮಿ  
ಇವೇ ಮೊದಲಾದ ಅಹಂಕಾರಮಮಕಾರ  
ಗಳಿಂದ ಜೀವಾತ್ಮನು ಕರ್ತೃತ್ವ ಭೋಕ್ತೃತ್ವಾದಿ  
ಧರ್ಮಗಳುಳ್ಳವನೆಂದು ತಿಳಿಯುವುದು ಅವಿದ್ಯಾ  
ಮೂಲಕವಾದುದು. "ಮಾಯೋಪಾಧಿರಯಂ ಜೀವ: ಅವಿಧ್ಯೋ-  
ಪಾಧಿರೀಶ್ವರ:"। ಒಂದು ಚಂದ್ರಬಿಂಬವು ದೃಷ್ಟಿ  
ದೋಷದಿಂದ ಅನೇಕವಾಗಿ ತೋರಿಬರುವಂತೆ ಬ್ರಹ್ಮ  
ನೆಂಬ ಒಂದು ವಸ್ತು ಅವಿದ್ಯೆ (ಮಾಯೆ)ಯಿಂದ  
ಜೀವ ಬ್ರಹ್ಮ ಎಂದು ಬೇರೆಬೇರೆಯಾಗಿ ತೋರಿ  
ಜೀವನು ದೇಹ, ಇಂದ್ರಿಯ ಮತ್ತು ಅಂತಃಕರಣ  
ಗಳೊಡನೆ ಬೆರೆತು ತಾನೇ ದೇಹಾದಿ ಸಂಘಾತನೆಂದು  
ಭ್ರಮಿಸಿ ಅಹಂಕಾರ ಮಮಕಾರವುಳ್ಳವನಾಗಿ ಜನ್ಮ  
ಜರಾಮರಣ ಮೊದಲಾದ ದು:ಖವನ್ನು ಅನುಭವಿಸು  
ತ್ತಿರುವನು. ರಜ್ಜು (ಹಗ್ಗ)ವಿನಲ್ಲಿ ತೋರುವ ಸರ್ಪ  
ದಂತೆಯೂ, ಶುಕ್ತಿ (ಕವ್ವೆಚಿಪ್ಪು)ಯಲ್ಲಿ ತೋರುವ  
ರಜತ (ಬೆಳ್ಳಿ)ದಂತೆಯೂ ಕರ್ತೃತ್ವಾದಿ ಧರ್ಮಗಳು  
ಆತ್ಮನಲ್ಲಿ ವಾಸ್ತವವಾಗಿ ಇಲ್ಲವಾದರೂ ತೋರುತ್ತವೆ.  
ಇಲ್ಲದೇ ಇರುವ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ಇರುವಂತೆ ತೋರುವುದೇ  
ಅಧ್ಯಾಸ ಆರೋಪಗಳು. ಇವು ಅವಿದ್ಯಾ ಮೂಲಕ  
ವಾದುವು.] 4. (ಯೋಗಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಐದು ವಿಧವಾದ



ಕೈಶಗಳಲ್ಲೊಂದು. [ಅವಿಧಾ, ಅಸ್ಮಿತಾ, ರಾಗಃ, ಛೇಃ, ಅಭಿನಿವೇಶ: (ಪಾಂ ಯಂ ಸ್ತಂ ೨-೩) ಎಂದು ಕೈಶಗಳು ಐದು ವಿಧ. "ಅನಿತ್ಯಾಶುಚಿದುಃಖಾನಾತ್ಮಸು ನಿಯತಶುಚಿ-ಸುಖಾತ್ಮಸ್ಯಾತಿರವಿಧಾ" ಪಾಂ ಯಂ ಸ್ತಂ ೨-೪. ಅದಲ್ಲದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಅದು ಎಂಬ ಬುದ್ಧಿಯು ಅವಿದ್ಯೆಯು. ಅನಿತ್ಯವಾದ ಸ್ವರ್ಗಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ನಿತ್ಯತ್ವಾಭಿಮಾನವುಂಟಾಗಿ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಮಾಡುವುದೂ ಅಶುಚಿಯಾದ ದೇಹದಲ್ಲಿ ಶುಚಿತ್ವಬುದ್ಧಿಯೂ "ಸ್ಥಾನಾದಿಜಾ-ದ್ವುಪಶ್ಚಿತ್ತಾನ್ವಿಷ್ಣುಂದಾನಿಧನಾದಪಿ। ಕಾಯಮಾಧೇಯಶೌಚತ್ವಾ-ತ್ಪಣ್ಡಿತಾ ಹ್ಯಶುಚಿ ವಿಧುಃ"। ದುಃಖಪ್ರಾಯವಾದ ಸ್ವರ್ಗ ಚಂದನಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ಸುಖತ್ವಭ್ರಾಂತಿಯೂ ಅನಾತ್ಮವಾದ ದೇಹಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ಆತ್ಮಬುದ್ಧಿಯೂ ಅವಿದ್ಯೆಯು.]

**ಅವಿಧಾ ಅವಿಧಾ** (ಅವ್ಯಂ) ಅನಾಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಸಹಾಯಕ್ಕಾಗಿ ಕರೆಯಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ವಿಕಾರಸ್ವರೂಪ ಶಬ್ದ.

**ಅವಿಧಾನ ಅವಿಧಾನ** (ನಂ) 1. ನಿಯಮವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ನಿರ್ದಿಷ್ಟವಾದ ನಿಯಮವನ್ನು ಮೀರುವಿಕೆ, ಅಕ್ರಮ ವರ್ತನೆ. ನಂ ತಂ। "ಅವಿಧಾನೇನ ಯತ್ ಕುರ್ಯಾತ್ತತ್ಸರ್ವಂ ವಿಫಲಂ ಭವತ್"। (ವಿಂ) 2. ನಿಯಮರಹಿತವಾದ, ಅಕ್ರಮವಾದ.

**ಅವಿಧಿ ಅವಿಧಿ** (ಪುಂ) 1. ಅಕ್ರಮ, ನಿಯಮವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ವಿಧಿಃ। ಅಭಾವೇ ನಂ ತಂ। "ಯಜಂತೇ ನಾಮಯಜ್ಞೇ ಸ್ತೇ ದಮ್ಹೇನಾವಿಧಿಪೂರ್ವಕಮ್" ಗೀತಾ ೧೬-೧೭। (ವಿಂ) 2. ನಿಯಮರಹಿತವಾದ, ಕ್ರಮಬದ್ಧವಲ್ಲದ. ನ ವಿಧಿಯಸ್ಯ।

**ಅವಿಧೇಯ ಅವಿಧೇಯ** (ವಿಂ) 1. ಹತೋಟಿಯಲ್ಲಿಡಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಹೇಳಿದಮಾತಿನಂತೆ ನಡೆಯದ, ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಲ್ಲದ. ನ ವಿಧಾತುಂ ಶಕ್ಯಃ - ವಿ+ಙ್ ಧಾನ್ (ಧಾರಣ-ಪೋಷಣಯೋಃ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೭)। 2. ಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ, ಮಾಡಲು ಸಾಧ್ಯವಲ್ಲದ, ಮಾಡಲ್ಪಡದ.

**ಅವಿಧೇಯತಾ ಅವಿಧೇಯತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅವಿಧೇಯತೆ, ಹೇಳಿದಂತೆ ನಡೆಯದಿರುವಿಕೆ, ಹತೋಟಿಯಲ್ಲಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಪ್ರತಿಕೂಲವಾಗಿರುವಿಕೆ. ವಿಧೇಯಸ್ಯ ಭಾವಃ। ನಂ ತಂ। "ಮಮ ವಿಮೃಶತಃ ಕಾರ್ಯಾರಮ್ಹೇ ವಿಧೇರವಿಧೇಯತಾಂ ಸಹಜಕುಟಿಲಾಂ ಕೌಟಿಲ್ಯಸ್ಯ ಪ್ರವಿಂಶತಯತೋ ಮತಿಮ್" ಮುದ್ರಾಂ ೪-೨।

**ಅವಿನ ಅವಿನ** (ಪುಂ) ಅಧ್ವರ್ಯು, ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಯಜುರ್ವೇದವನ್ನು ಬಲ್ಲ ಮುತ್ವಿಕೃ. ಅವತಿ ಯಜಮ್ - ಅವ

(ರಕ್ಷಣೆ) "ಇನಿ" (ತಂ ೨-೪೭)। ಅವಿನೋಽಪ್ಯಯಃ। ಸಿಂ ಕೌಂ।

**ಅವಿನಯ ಅವಿನಯ** (ಪುಂ) 1. ವಿನಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಉದ್ಧಟತನ. ನ ವಿನಯಃ। ಅಭಾವೇ ನಂ ತಂ। "ಅಯಮಾ-ಚರತ್ಯವಿನಯಂ ಮುಧಾಸು ತಪಸ್ವಿಕನ್ಯಾಸು" ಶಾಕುಂ ೧-೨೧। 2. ದುರ್ವರ್ತನೆ, ಅಸಭ್ಯತೆ, ಅಪರಾಧ, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. "ಬಹವೋಽವಿನಯಾನ್ರಾಜಾಃ ಸಪರಿ-ಚ್ಛದಾಃ" ಮನುಂ ೭-೪೦। "ವೇನೋ ನಷ್ಟೋಽವಿನಯಾನ್ರಾಜಾಃ ಪಾರ್ಥಿವಃ" ಮನುಂ ೭-೪೧। (ವಿಂ) 3. ವಿನಯವಿಲ್ಲದ, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಲ್ಲದ, ಅಸಭ್ಯ. ನ ವಿನಯೋ ಯಸ್ಯ।

**ಅವಿನಶ್ವರ ಅವಿನಶ್ವರ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. (ವಿಂ) 2. ನಾಶದ ಸ್ವಭಾವದಲ್ಲದ, ಸ್ಥಿರವಾದ, ನಿತ್ಯವಾದ. ನ ವಿನಶ್ವರಃ। ವಿರೋಧೇ ನಂ ತಂ।

**ಅವಿನಾಭಾವ ಅವಿನಾಭಾವ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದನ್ನು (ವ್ಯಾಪಕವನ್ನು) ಬಿಟ್ಟು ಇನ್ನೊಂದು (ವ್ಯಾಪ್ಯವು) ಇಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳು (ವ್ಯಾಪ್ಯ ವ್ಯಾಪಕಗಳು) ಯಾವಾಗಲೂ ಒಂದೇ ಕಡೆ ಇರುವಿಕೆ, ವ್ಯಾಪ್ತಿ. ವಿನ್ಯಾಸಃ ನ ಭಾವಃ ಸ್ಥಿತಿಃ। 2. ಸಂಬಂಧ.

**ಅವಿನಾಭೂತ ಅವಿನಾಭೂತ** (ವಿಂ) ಒಂದು (ವ್ಯಾಪ್ಯವು) ಇನ್ನೊಂದನ್ನು (ವ್ಯಾಪಕವನ್ನು) ಬಿಡದೆ ಯಾವಾಗಲೂ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಒಂದನ್ನು ಇನ್ನೊಂದು ಅಗಲದೆ ಒಂದೇ ಕಡೆ ಇರುವ. ನ ವಿನ್ಯಾಸಃ ವ್ಯಾಪಕಂ ವಿನ್ಯಾಸಃ ಭೂತಃ ಸ್ಥಿತಿಃ।

**ಅವಿನಾಶಿನ್ ಅವಿನಾಶಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಬ್ರಹ್ಮ. 2. ನಶ್ವರವಲ್ಲದ, ಸ್ಥಿರವಾದ, ನಿತ್ಯವಾದ. ನ ವಿನ್ಯಾಸಃ। "ಅವಿನಾಶಿ ತು ತದ್ವಿಧಿ ಯೇನ ಸರ್ವಮಿದಂ ತತಮ್। ವಿನ್ಯಾಸಮವ್ಯಯಸ್ಯಾಸ್ಯ ನ ಕರಿಚ್ಛತ್ಕರ್ತುಮರ್ಹತಿ" ಗೀತಾ ೨-೧೭। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ತೀಪ್" (೪-೧-೪)। ಅವಿನಾಶಿನಿ ಅವಿನಾಶಿನೀ.

**ಅವಿನೀತ ಅವಿನೀತ** (ವಿಂ) 1. ಅವಿಧೇಯ, ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಲ್ಲದ, ಹತೋಟಿಯಿರುವ. 2. ಉದ್ಧಟ, ದುಡುಕು ಸ್ವಭಾವದ. 3. ಅಸಭ್ಯ, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಲ್ಲದ. ನ ವಿನೀತಃ। "ವೃತೇ ವಿನೀತಮವಿನೀತಶಾಸಿಮಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೩-೨೪। 4. ಅಶಿಸ್ತವಾದ, ಪಳಗಿಸಲ್ಪಡದ. "ನಾವಿನೀತೇವ್ರಜೇದ್ಧುಯೇನ ಚ ಧುತ್ವಾಧಿಪಿಡಿತಿಃ। ನ ಮಿಶ್ರ-ಶೃಂಗಾಕ್ಷಿಪುರೇನ ವಾಲಧಿವಿರೂಪಿತಃ" ಮನುಂ ೪-೬೭।

**ಅವಿನೀತಾ ಅವಿನೀತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ವೈರಿಣಿ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ, ಅಸಭ್ಯ ಹೆಂಗಸು.



**ಅವಿನಿಯ ಅವಿನೀಯ** (ವಿಂ) ಕಪಟವಿಲ್ಲದ, ಹೃತ್ಪೂರ್ವಕವಾದ. ನ ವಿನೀಯ: ಕಲ್ಕ: यस्य। “ಅವಿನೀಯಸಂಭ್ರಮ-ವಿಕಾಸಿಭಕ್ತಿभि:” ಮಾಘಂ ೧೩-೨೪।

**ಅವಿನೇಯ ಅವಿನೇಯ** (ವಿಂ) ಶಿಕ್ಷಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಅಡಗಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ. ನ ವಿನೇತುಂ ಶಕ್ಯ:।

**ಅವಿಪಾಕ ಅವಿಪಾಕ** (ಪ್ರಂ) 1. ಫಲರೂಪವಾಗಿ ಪರಿಣಮಿಸದ ಪಾಪ ಪುಣ್ಯಗಳು, ಫಲೋನ್ಮುಖವಾಗದ ಧರ್ಮಾಧರ್ಮಗಳು. ವಿಶೇಷಣ ಪಚ್ಯಂತೆ ಫಲರೂಪೇಣ — ವಿ+ಛುಪಚ್ (ಪಾಕೇ) “ಘ್” (೩-೩-೧೯)। 2. ಪಾಕವಾಗದಿರುವಿಕೆ, ತಿಂದ ಆಹಾರವು ಜೀರ್ಣವಾಗದಿರುವಿಕೆ, ಅಜೀರ್ಣರೋಗ. ನಾಸ್ತಿ ವಿಪಾಕೋ ಯತ್ರ। 3. ಜೆನ್ನಾಗಿ ಬೇಯದಿರುವಿಕೆ, ಅನ್ನವು ಸರಿಯಾಗಿ ಪಕ್ವವಾಗದಿರುವಿಕೆ.

**ಅವಿಪಾಲ ಅವಿಪಾಲ** (ಪ್ರಂ) ಕುರುಬ, ಕುರಿಯನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನು. ಅವಿನ್ ಪಾಲಯತಿ — ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿವ್ “ಅನ್” (೩-೨-೧)।

**ಅವಿಪುಲ ಅವಿಪುಲ** (ವಿಂ) ದೊಡ್ಡದಲ್ಲದ, ಸಣ್ಣದಾದ, ಚಿಕ್ಕದಾದ, ಸಂಕುಚಿತವಾದ, ಇಕ್ಕಟ್ಟಾದ.

**ಅವಿಪ್ಲುತ ಅವಿಪ್ಲುತ** (ವಿಂ) ನಷ್ಟವಾಗದ, ನಾಶಹೊಂದದ. ನ ವಿಪ್ಲುತ: ನಷ್ಟ:। “ಅವಿಪ್ಲುತಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ: ಸರ್ವಣಿ ಸ್ತ್ರಿಯಮುದ್ರೇತ್”।

**ಅವಿಭಕ್ತ ಅವಿಭಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಬೇರೆಮಾಡಲ್ಪಡದ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿರುವ, ಭಾಗಮಾಡಲ್ಪಡದ. “ಅವಿಭಕ್ತ ಸ್ಥಾವರಂ ಯತ್ ಸರ್ವೇಷಾಮೇವ ತದ್ಭವೇತ್”। 2. ಭಾಗಹೊಂದದ, ಅಸ್ತಿಯನ್ನು ಪಾಲುವುದಕ್ಕೊಳ್ಳದೆ ಒಂದೇ ಕುಟುಂಬದಲ್ಲಿರುವ (ಸೋದರರು). “ಅವಿಭಕ್ತಾ ವಿಭಕ್ತಾ ವಾ ಸಪಿಂಡಾ: ಸ್ಥಾವರೇ ಸಮಾ:”। 3. ಒಡೆಯಲ್ಪಡದ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ.

**ಅವಿಭಾವಿತ ಅವಿಭಾವಿತ** (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ. 2. ಯೋಚಿಸಲ್ಪಡದ. 3. ನೋಡಲ್ಪಡದ. ನ ವಿಭಾವಿತ:। “ಅವಿಭಾವಿತೇಷುವಿಷಯ: ಪ್ರಥಮಂ ಮದನೋಽಪಿ ನೂನಮಭವತ್ತಮಸಾ” ಮಾಘಂ ೯-೪೦।

**ಅವಿಮುಕ್ತ ಅವಿಮುಕ್ತ** (ನಂ) 1. ಕಾಶೀಕ್ಷೇತ್ರ. ನ ವಿಮುಕ್ತಮ್। “ಮುನೇ ಪ್ರಲಯಕಾಲೇಽಪಿ ನ ತತ್ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಕದಾಚನ। ವಿಮುಕ್ತಂ ನ ಶಿವಾಮ್ಬಾಂ ಯದವಿಮುಕ್ತಂ ತತೋ ವಿಧು:” ಕಾಶೀಖಂ। 2. ತಲೆಗೂ ಗಲ್ಲಕ್ಕೂ ನಡುವಣ ಭಾಗ. “ಯ ಏಷೋ-ನಂತೋಽವ್ಯಕ್ತ ಆತ್ಮಾ ಸೋಽವಿಮುಕ್ತೇ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ:” ಜಾಂ ೩೦। (ವಿಂ) 3. ಬಿಡಲ್ಪಡದ, ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಡದ.

**ಅವಿಮೃಷ್ಯ ಅವಿಮೃಷ್ಯ** (ವಿಂ) ವಿಚಾರಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಸಂದೇಹಪಡಲು ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದ. ನ ವಿಮೃಷ್ಯಮ್। “ಅವಿಮೃಷ್ಯಮೇತದಭಿಲಷ್ಯತಿ ಸ ದ್ವಿಷತಾಂ ವಧೇನ ವಿಷಯಾಭಿ-ರತಿಮ್” ಕಿರಾಂ ೬-೪೪।

**ಅವಿಯುಕ್ತ ಅವಿಯುಕ್ತ** (ವಿಂ) ಬೇರೆಯಾಗಿಲ್ಲದ, ಅಗಲದಿರುವ, ಯಾವಾಗಲೂ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. ನ ವಿಯುಕ್ತ:।

**ಅವಿಯೋಗ ಅವಿಯೋಗ** (ಪ್ರಂ) 1. ವಿಯೋಗವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಅಗಲದಿರುವಿಕೆ. ಅಭಾವೇ ನಂ ತಂ। 2. ಸಂಬಂಧ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 3. ವಿಯೋಗವಿಲ್ಲದ, ಅಗಲದಿರುವ. 4. ಸಂಬಂಧಹೊಂದಿರುವ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. ನ ವಿಯೋಗೋ यस್ಯ।

**ಅವಿಯೋಗವ್ರತ ಅವಿಯೋಗವ್ರತ** (ನಂ) ಪತಿ ಪತ್ನಿಯರು ಅಗಲದಿರಲು ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷ ಶುಕ್ಲ ತೃತೀಯಾ (ತದಿಗೆ) ದಿವಸ ಮಾಡುವ ಒಂದು ವ್ರತ.

**ಅವಿರತ ಅವಿರತ** (ನಂ) 1. ವಿರಾಮವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಕಾಲಾವಕಾಶವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ವಿರತಂ ವಿರಾಮ: ಭಾವೇ “ಕ್ತ:”। ಅಭಾವೇ ನಂ ತಂ। (ವಿಂ) 2. ವಿರಾಮವಿಲ್ಲದ, ನಿಲುಗಡೆಯಿಲ್ಲದ. 3. ಅನುಸ್ಮೃತವಾದ, ಎಡೆಬಿಡದೆ ನಡೆಯುವ. “ಅವಿರತರತಲೀಲಾಸಜಾತಶ್ರಮಾಣಾಮುಪಶಮ-ಮುಖ್ಯಾಂತಂ ನಿ:ಸಹೇಽಙ್ಗೇಽಙ್ಗನಾನಾಮ್” ಮಾಘಂ ೧೧-೧೭। (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 4. ಎಡೆಬಿಡದೆ, ನಿರಂತರವಾಗಿ, ವಿರಾಮವಿಲ್ಲದೆ. “ಅವಿರತೋಽಜಿತವಾರಿವಿಪಾಣ್ಡುಭಿವಿರಹಿತೈರವಿರ-ದ್ಯುತೀತೇಜಸಾ” ಕಿರಾಂ ೪-೬।

**ಅವಿರತಿ ಅವಿರತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿರಾಮವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ನಿಲುಗಡೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ಎಡೆಬಿಡದ ಸಂಬಂಧ, ನಿರಂತರತೆ. 3. ವಿಷಯಾಭಿಲಾಷೆ, ಅತಿಕಾಮುಕತೆ, ಅತಿಯಾದ ಕಾಮೇಚ್ಛೆ. ವಿರಾಮೋ ವಿರತಿ: — ವಿ+ರಮ್ (ಕೃಡಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪)। ನಂ ತಂ। (ವಿಂ) 4. ವಿರಾಮವಿಲ್ಲದ, ಎಡೆಬಿಡದ, ನಿರಂತರವಾದ. ನಾಸ್ತಿ ವಿರತೀರಿಸ್ಯ।

**ಅವಿರಲ ಅವಿರಲ** (ವಿಂ) 1. ನಿಬಿಡವಾದ, ಸಾಂದ್ರವಾದ, ಘನವಾದ, ದಟ್ಟವಾದ. ನ ವಿರಲ:। “ಅಧ್ಯುಪುಚ್ಚುತ-ಕುಸುಮಾಚಿತಾಂ ಸಹಾಯಾ ವೃತ್ತಾರೆರವಿರಲಶಾಢಲಾಂ ಧರಿತ್ರಿಮ್” ಕಿರಾಂ ೭-೨೬। 2. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಹೊಂದಿಕೊಂಡಿರುವ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3. ನಿಬಿಡವಾಗಿ, ಸಾಂದ್ರವಾಗಿ, ದಟ್ಟವಾಗಿ. “ಸಂಭಿನ್ನಾಮವಿರಲಪಾತಿಭಿರ್ಮಯುಕ್ತೇರ್ನಿಲಾನಾಂ ಭೂಮುಪಮೇಖಲಂ ಮಣಿನಾಮ್” ಕಿರಾಂ ೭-೨೩।



ಅವಿರಾಮ ಅವಿರಾಮ (ಗುಂ) 1. ವಿರಾಮವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ನಿಲುಗಡೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ತಡೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ವಿರಾಮವಿಲ್ಲದ, ಎಡೆಬಿಡದ, ಸತತವಾದ.

“ಅನಿಮಿಷಮವಿರಾಮಾ ರಾಗಿಣಾಂ ಸರ್ವರಾತ್ರಂ ಗ್ಲಾನಿಧುವನಲಿಲಾ: ಕೌತುಕೇನಾತಿವೀಕ್ಷ್ಯ” ಮಾಘಂ ೧೧-೧೮. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3. ಎಡೆಬಿಡದೆ, ವಿರಾಮವಿಲ್ಲದೆ.

ಅವಿರೂಢ ಅವಿರುದ್ಧ (ವಿಂ) 1. ವಿರೋಧವಿಲ್ಲದ. 2. ತಡೆಯಲ್ಪಡದ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸಲ್ಪಡದ. 3. ಅನುಗುಣವಾದ, ಅನುರೂಪವಾದ, ತಕ್ಕದಾದ. ನ ವಿರೂಢ:.

ಅವಿರೋಧ ಅವಿರೋಧ (ಗುಂ) 1. ಸಮ್ಮತಿ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. 2. ಅಡ್ಡಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ತಡೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ಅನುಗುಣ, ಹೊಂದಿಕೆ, ಸಾಮಂಜಸ್ಯ. ನ ವಿರೋಧ:.

“ಶ್ರುತಿस्ಮೃತಿವಿರೋಧೇ ತು ಶ್ರುತಿರೇವ ಗರೀಯಸಿ। ಅವಿರೋಧೇ ತಯೋ: ಕಾರ್ಯಂ ಸ್ಮಾರ್ತಂ ವೈದಿಕವತ್ ಸದಾ” ಸ್ಮೃತಿ:.

ಅವಿಲಕ್ಷಣ ಅವಿಲಕ್ಷಣ (ವಿಂ) ಭೇದವಿಲ್ಲದ, ವ್ಯತ್ಯಾಸವಿಲ್ಲದ, ಸಮಾನವಾದ. ನ ವಿಲಕ್ಷಣ:। ವಿರೋಧೇ ನಂ ತಂ।

ಅವಿಲಕ್ಷ್ಯ ಅವಿಲಕ್ಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಲಕ್ಷ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಗುರಿಯಿಲ್ಲದ. 2. ಉದ್ದೇಶವಿಲ್ಲದ. 3. ಕಪಟವಿಲ್ಲದ. 4. ಪ್ರತೀಕಾರವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ವಿಶೇಷಣ ಲಕ್ಷ್ಯಂ ವ್ಯಾಜ: ಉದ್ದೇಶ್ಯಂ ಶರಣಂ ವಾ ಯಸ್ಯ।

ಅವಿಲಂಬ ಅವಿಲಂಬ (ಗುಂ) 1. ಶೀಘ್ರತೆ. ನ ವಿಲಂಬ:। (ವಿಂ) 2. ವಿಲಂಬವಿಲ್ಲದ, ಸಾವಕಾಶವಿಲ್ಲದ, ತಡವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ವಿಲಂಬೋ ಯಸ್ಯ। (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3. ತಡವಿಲ್ಲದೆ, ಜಾಗ್ರತೆಯಾಗಿ.

ಅವಿಲಂಬಿತ ಅವಿಲಂಬಿತ (ವಿಂ) 1. ತಡವಿಲ್ಲದ, ಸಾವಕಾಶವಿಲ್ಲದ. ನ ವಿಲಂಬಿತಮ್। (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 2. ಜಾಗ್ರತೆಯಾಗಿ, ಶೀಘ್ರವಾಗಿ, ತಡವಿಲ್ಲದೆ.

ಅವಿಲಾ ಅವಿಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕುರಿ. ಅವ (ರಕ್ಷಣೆ) “ಇಲಕ್” ಬಾಹುಂ। “ಮೇಷಿ ತು ಕುರರೀ ರಜಾ। ಜಾಲಕಿನ್ಯ-ವಿಲಾ ವೇಣಿ” ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ಅವಿವಕ್ಷಿತ ಅವಿವಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) 1. ಹೇಳಲು ಇಷ್ಟವಿಲ್ಲದ. ವಕ್ತುಮಿಷ್ಟಮ್। ನಂ ತಂ। 2. ಉದ್ದೇಶವಿಲ್ಲದ, ಗುರಿಯಿಲ್ಲದ, ಲಕ್ಷ್ಯವಿಲ್ಲದ.

ಅವಿವಾದ ಅವಿವಾದ (ಗುಂ) 1. ಏಕಮತ್ಯ, ವಿರುದ್ಧವಾದ ಮಾತಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ವಿರೂಢೋ ವಾದ: ಕಥನಂ ವಿವಾದ:। ನಂ ತಂ। 2. ವ್ಯವಹಾರವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಚರ್ಚೆಯಿಂದ ಜಗಳವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ವಿರೂಢೋ ವಾದ: ವ್ಯವಹಾರ: ವಿವಾದ:। ನಂ ತಂ। 3. ವಿರೋಧವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ವಿರೂಢೋ ವಾದ:

ವಿವಾದ: ವಿರೋಧ:। ನಂ ತಂ। (ವಿಂ) 4. ಸಂದೇಹಕ್ಕೆ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದ, ನಿರ್ಣಯವಾದ. ನಾಸ್ತಿ ವಿರೂಢೋ ವಾದೋ ಯತ್ರ।

ಅವಿವಾಹಿತ ಅವಿವಾಹಿತ (ವಿಂ) ಮದುವೆಯಾಗದ. ನ ವಿವಾಹಿತ:.

ಅವಿವಿಕ್ತ ಅವಿವಿಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿರದ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಬೆರೆತಿರುವ. 2. ವಿವೇಕತೂಷ್ಣನಾದ, ವಿವೇಚನೆಯಿಲ್ಲದ, ವಿಚಾರಮಾಡದ. 3. ರಹಸ್ಯವಾಗಿಲ್ಲದ, ಜನನಿಬಿಡವಾದ. ನ ವಿವಿಕ್ತಮ್। 4. ಪರಿಶುದ್ಧವಲ್ಲದ. “ವಿವಿಕ್ತಂ ತ್ರಿಷ್ವ-ಸಂಪೃಕ್ತೇ ರಹ:ಪೂರ್ವವಿವೇಕಿಷು” ಮೇದಿಂ। 5. ವಿವೇಚನೆಯಿಂದ ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದ.

ಅವಿವೇಕ ಅವಿವೇಕ (ಗುಂ) 1. ವಿವೇಕವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ವಿವೇಚನೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ವಿಮರ್ಶೆ ಮಾಡದಿರುವಿಕೆ. ವಿವೇಕ: ಭೇದಕಥಮೇಣ ಜ್ಞಾನಮ್। ಅಭಾವೇ ನಂ ತಂ। “ಸಹಸಾ ವಿದಧೀತ ನ ಕ್ರಿಯಾಮವಿವೇಕ: ಪರಮಾಪದಾಂ ಪದಮ್” ಕಿರಾಂ ೨-೩೦। 2. ದುಡುಕು, ಆತುರಪಡುವಿಕೆ. 3. ಅಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿಗೇಡಿತನ, ಮಿಥ್ಯಾಜ್ಞಾನ.

ಅವಿವೇಕಿನ್ ಅವಿವೇಕಿನ್ (ವಿಂ) 1. ವಿವೇಕವಿಲ್ಲದ, ವಿಮರ್ಶೆ ಮಾಡದ. ವಿವೇಕೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪)। ನಂ ತಂ। 2. ಮಿಥ್ಯಾಜ್ಞಾನವುಳ್ಳ, ತಿಳಿಗೇಡಿ, ಅಜ್ಞಾನಿ. 3. ದುಡುಕುವ, ಆತುರದ ಸ್ವಭಾವದ.

ಅವಿಶೇಷ ಅವಿಶೇಷ (ಗುಂ) 1. ವ್ಯತ್ಯಾಸವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಸಮಾನವಾಗಿರುವಿಕೆ. ನ ವಿಶೇಷ: ಭೇದಕಥಮ:। ಅಭಾವೇ ನಂ ತಂ। 2. ಅಭೇದ, ಏಕೈಕ, ತಾದಾತ್ಮ್ಯ. (ವಿಂ) 3. ಭೇದವಿಲ್ಲದ, ವ್ಯತ್ಯಾಸವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ವಿಶೇಷೋ ಯಸ್ಯ।

ಅವಿಶೇಷಿತ ಅವಿಶೇಷಿತ (ವಿಂ) ಭೇದವಿಲ್ಲದ, ವ್ಯಾವರ್ತಕ ಧರ್ಮದಿಂದ ಭೇದ ತೋರಿಸಲ್ಪಡದ. ನ ವಿಶೇಷಿತ:.

ಅವಿಶ್ರಾಂತ ಅವಿಶ್ರಾಂತ (ವಿಂ) 1. ವಿರಾಮವಿಲ್ಲದ. 2. ಸತತವಾದ, ಎಡೆಬಿಡದ. ವಿ+ಶ್ರಮ್ (ತಪಸಿ ಸೇದೇ ಚ) “ಕ್ರ:” (೩-೪-೭೨)। ನಂ ತಂ। (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3. ವಿರಾಮವಿಲ್ಲದೆ. 4. ಸತತವಾಗಿ, ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ, ಎಡೆಬಿಡದೆ.

ಅವಿಶ್ವಸನೀಯ ಅವಿಶ್ವಸನೀಯ (ವಿಂ) ನಂಬಿಕೆಗೆ ಅರ್ಹನಲ್ಲದ, ನಂಬಿಕೆಯಿಡಲು ಯೋಗ್ಯನಲ್ಲದ. ವಿಶ್ವಸಿತುಂ ಯೋಗ್ಯ: — ವಿ+ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೇ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬)। ನಂ ತಂ।



ಅವಿಶ್ವಸ್ತ ಅವಿಶ್ವಸ್ತ (ವಿಂ) ನಂಬದಿರುವ. ನ ವಿಶ್ವಸ್ತ:।

“ನ ವಿಶ್ವಸೇದವಿಶ್ವಸ್ತೇ ವಿಶ್ವಸ್ತೇ ನಾತಿವಿಶ್ವಸೇತ್” ಹಿತಂ।

ಅವಿಶ್ವಾಸ ಅವಿಶ್ವಾಸ (ಪುಂ) 1. ಅಪನಂಬಿಕೆ, ನಂಬಿಕೆ

ಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ವಿಶ್ವಾಸ:। ಅಭಾವೇ ನಂ ತಂ।

2. ವಿಶ್ವಾಸವಿಲ್ಲದ, ನಂಬಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. 3. ನಂಬ

ಲಾಗದ. ನ ವಿಶ್ವಾಸೋ ಯಸ್ಮಿನ್।

ಅವಿಶ್ವಾಸಿನ್ ಅವಿಶ್ವಾಸಿನ್ (ವಿಂ) ನಂಬಿಕೆಯಿಡದಿರುವ,

ನಂಬದಿರುವ, ನಂಬಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. ನ ವಿಶ್ವಸಿತಿ — ವಿ +

ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) “ಗಿಣಿ:” (೩-೧-೧೩೪)।

ಅವಿಷ ಅವಿಷ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಅವ (ರಕ್ಷಣೆ)

“ಟಿಷ್” (೩ಂ ೧-೪೫)। 2. ರಾಜ, ದೊರೆ. 3. ಗಗನ,

ಆಕಾಶ. (ವಿಂ) 4. ವಿಷರಹಿತವಾದ. 5. ಕಾವಾ

ಡುವ, ರಕ್ಷಕ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ಖಿ — ಸೀ. 6. ನದಿ, ಹೊಳೆ.

7. ಸ್ವರ್ಗ. 8. ಭೂಮಿ.

ಅವಿಷಯ ಅವಿಷಯ (ಪುಂ) 1. ಗೋಚರವಾಗದಿರುವಿಕೆ,

ಕಾಣಿಸದಿರುವಿಕೆ. 2. ವಿಷಯವಾಗದಿರುವಿಕೆ,

ಉದ್ದೇಶವಾಗದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 3. ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳದ,

ಇಂದ್ರಿಯಕ್ಕೆ ಗೋಚರವಾಗದ. 4. ಉದ್ದೇಶವಿಲ್ಲದ,

ಗುರಿಯಿಲ್ಲದ. “ಪರಿಚ್ಛೇದಾತಿತ: ಸಕಲವಚನಾನಾಮವಿಷಯ:

ಪುನರ್ಜನ್ಮನಯಸ್ಮಿನ್ನನುಭವಪಥಂ ಯೋ ನ ಗತವಾನ್” ಮಾಲತೀಂ

೧-೩೩।

ಅವಿಷಯ ಅವಿಷಯ (ವಿಂ) 1. ಸಹಿಸಲು ಆಶಕ್ಯವಾದ,

ಸಹಿಸಲಾಗದ. 2. ಎದುರಿಸಲಾಗದ, ತಡೆಯ

ಲಾಗದ, ಜಯಿಸಲಾಗದ. ನ ವಿಶೇಷಣ ಸಹ್ಯ:।

ಅವಿಷಯ ಅವಿಷಯ (ಪುಂ) 1. ಆಶ್ರಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ,

ಒತ್ತಾಸೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಂ ತಂ। (ವಿಂ) 2. ಆಶ್ರಯ

ವಿಲ್ಲದ, ಒತ್ತಾಸೆಯಿಲ್ಲದ, ಆಸರೆಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ

ವಿಷಯೋ ಯಸ್ಯ।

ಅವಿಸಂವಾದ ಅವಿಸಂವಾದ (ಪುಂ) ಅನುಗುಣವಾಗಿರುವಿಕೆ,

ಪ್ರಮಾಣಕ್ಕೆ ಸರಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ, ವಿರೋಧವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

ನ ವಿಸಂವಾದ: ಪ್ರಮಾಣಾನುಗುಣ:। ವಿರೋಧೇ ನಂ ತಂ।

ಅವಿಸಂವಾದಿನ್ ಅವಿಸಂವಾದಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಅನುಗುಣ

ವಾಗಿರುವ, ಪ್ರಮಾಣಕ್ಕೆ ಸರಿಯಾಗಿರುವ, ಸರಿಯಾಗಿ

ಒಪ್ಪುವ, ಸಂಶಯವಿಲ್ಲದ. ನ ವಿಸಂವಾದಿ. ವಿರೋಧೇ

ನಂ ತಂ। “ಅಭಿನಂದಿತವೃತ್ತಿರಾಯಮಿಶ್ರೇರವಿಸಂವಾದಿಭಿ-

ರಾಗಮೋದಿತೇಷು” ಯಾದಂ ೧೫-೧೪। 2. ಅಭಂಗುರವಾದ,

ಭಂಗಹೊಂದದ, ನಾಶಹೊಂದದ. “ಅನುಭಾವತಾ ಗುರ

ಸ್ಥಿರತ್ವಾದವಿಸಂವಾದಿ ಧನುರ್ಧನಂಜಯೇನ” ಕಿರಾಂ ೧೩-೧೫।

ಅವಿಸರ್ಗಿನ್ ಅವಿಸರ್ಗಿನ್ (ಪುಂ) 1. ನಿರಂತರವಾಗಿ

ಕಾಯುವ ಜ್ವರ, ನಿಲ್ಲದೆ ಬರುತ್ತಿರುವ ಜ್ವರ. ಅವಿಸರ್ಗಿ

ಅವಿಸರ್ಜನಶೀಲ:। [ಎಳುದಿನ, ಹತ್ತು ದಿನ ಮತ್ತು

ಹನ್ನೆರಡು ದಿನಗಳ ವಾಯಿದೆ ಜ್ವರವು ನಿಲ್ಲದೆ ಕಾಯು

ವುದರಿಂದ ಅವಿಸರ್ಗಿಯೆಂದು ಹೆಸರು.] “ಸಪ್ತಾಹಂ ವಾ

ದಶಾಹಂ ವಾ ದ್ವಾದಶಾಹಮಪಿ ವಾ। ಸಂತತ್ಯಾ ಯೋವಿಸರ್ಗಿ

ಸ್ಯಾತ್ಸಂತತ: ಸ ನಿಗದ್ಯತೇ” ಸುಶ್ರುತಂ। ಇಂತಹ ಜ್ವರವು

ಸುಖಸಾಧ್ಯವು. “ಸಂತತಜ್ವರ ಏವಾನ್ಯ: ಸ್ವಲ್ಪದುರ್ಬಲ-

ಕಾರಣ:। ಏಕದೋಷೋ ದ್ವಿದೋಷೋ ವಾ ಸುಖಸಾಧ್ಯ: ಪ್ರಕೀರ್ತಿತ:”।

(ವಿಂ) 2. ಬಿಡದಿರುವ, ಬಿಟ್ಟುಹೋಗದಿರುವ.

ಅವಿಸ್ಪೃಷ್ಠ ಅವಿಸ್ಪೃಷ್ಠ (ನಂ) ಅಸ್ಪೃಷ್ಯವಾದ ಮಾತು,

ಸ್ಪೃಟವಲ್ಲದ ಮಾತು. ನ ವಿಸ್ಪೃಷ್ಠಮ್।

ಅವಿಸ್ಮರಣ ಅವಿಸ್ಮರಣ (ನಂ) ಮರೆಯದಿರುವಿಕೆ, ನೆನಪು,

ಸ್ಮರಣೆ. ನ ವಿಸ್ಮರಣಮ್। ಅಭಾವೇ ನಂ ತಂ।

ಅವಿಸ್ಮೃತ ಅವಿಸ್ಮೃತ (ವಿಂ) ಮರೆಯದಿರುವ, ಸ್ಮರಿಸ

ಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅವಿಸ್ಮೃತಿ ಅವಿಸ್ಮೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ಮರಣೆ, ಮರೆಯದಿರು

ವಿಕೆ, ನೆನಪು. ನ ವಿಸ್ಮೃತಿ:। “ಅವಿಸ್ಮೃತಿತ್ವಚ್ಚರಣಾರ-

ವಿನ್ದೇ ಭವೇ ಭವೇ ಮೇಷ್ಟು ಭವತ್ಪ್ರಸಾದಾತ್” ಮುಂ ಮಾಂ।

ಅವಿಹಿತ ಅವಿಹಿತ (ವಿಂ) 1. ಮಾಡಲ್ಪಡದ. 2. ಶಾಸ್ತ್ರ

ದಲ್ಲಿ ಹೇಳಲ್ಪಡದ, ನಿಷಿದ್ಧವಾದ. ನ ವಿಹಿತಮ್।

ಅವೀ ಅವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯತುಮತಿ, ರಜಸ್ವಲೆ. ಅವತ್ಯಾತ್ಮಾನ

ಲಜ್ಜಯಾ — ಅವ (ರಕ್ಷಣೆ) “ಕೇ:” (೩ಂ ೩-೧೫೮)।

ಅವೀಚಿ ಅವೀಚಿ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ನರಕ. “ವೀಚಿ:

ಸ್ವಲ್ಪತರಜ್ಞೇ ಸ್ಯಾದವಕಾಶೋ ಸುಖೇಽಪಿ ಚ” ವಿಶ್ವಂ।

“ಯಸ್ತ್ವಿಹಾನೃತಂ ವದತಿ ಸಾಕ್ಷ್ಯೇ ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯೇ ದಾನೇ ವಾ ಸ ವೇ

ಪ್ರೇತ್ಯ ನರಕೇ ಅವೀಚಿಮತ್ಯಧ:ಶಿರಾ ನಿರವಕಾಶೋ ಯೋಜನಶತೋ-

ಚ್ಚಾಪಾತ್ ಗಿರಿಮೂರ್ಧನ: ಸಂಪಾತ್ಯತೇ। ಯತ್ರ ಜಲಮಿವ ಸ್ಥಲಮಶ್ವ-

ಪೃಷ್ಠಮವಭಾಸತೇ ತದವೀಚಿಮತ್ತಿಲಶೋ ವಿಶೀರ್ಯಮಾಣಶರೀರೋ

ನ ಪ್ರಿಯಮಾಣ: ಪುನರಾರೋಪಿತೋ ನಿಪತತಿ” ಭಾಗಂ ೫-೨೬।

(ವಿಂ) 2. ಅಲೆಗಳಿಲ್ಲದ, ತರಂಗಗಳಿಲ್ಲದ.

ಅವೀರ ಅವೀರ (ವಿಂ) 1. ಮಕ್ಕಳಿಲ್ಲದ. 2. ಹೆಣ್ಣುಗ,

ಹೆಂಗಸಿನ ಸ್ವಭಾವದ, ಹೇಡಿ, ಬಲವಿಲ್ಲದ.

ಅವೀರಾ ಅವೀರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪತಿ ಮತ್ತು ಪುತ್ರರಿಲ್ಲದ

ಹೆಂಗಸು. ನ ವೀರಾ। “ಪತಿಪುತ್ರವತೀ ನಾರೀ ವೀರಾ ಪ್ರೋಕ್ತಾ

ಮನೀಷಿಭಿ:”।

ಅವೇಕ್ಷಕ ಅವೇಕ್ಷಕ (ಪುಂ) 1. ಮೇಲ್ವಿಚಾರಣೆ ನಡೆಸು

ವವನು. 2. ನೋಡುವವನು. 3. ಪರೀಕ್ಷಿಸುವವನು,



ತನಿಖೆಮಾಡುವವನು. 4. ಯೋಚಿಸುವವನು.

ಅವ+ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ಫ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಅವೇಕ್ಷಣ ಅವೇಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ದರ್ಶನ, ಅವಲೋಕನ, ನೋಡುವುದು. "ದೂರಾವೇಕ್ಷಣಂ ಹಾಸಃ ಸಂಪ್ರಸುತೋ ಸಾದರೋ ಭುಷಮ್ | ಪರೋಕ್ಷೇಽಪಿ ಗುಣಶಲಾಘಾ ಸ್ಮರಣಂ ಪ್ರಿಯವಸ್ತುಭಿಃ" ಹಿತಂ | 2. ಎಚ್ಚರದಿಂದ ನೋಡುವುದು. 3. ಮೇಲ್ವಿಚಾರಣೆ ನಡೆಸುವುದು, ಕಾಯುವುದು. 4. ಗಮನಿಸುವುದು, ಆಸಕ್ತಿಯಿಂದ ನೋಡುವುದು. ಅವ+ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ನಿಗೃಹ್ಯ ಶೋಕಂ ಸ್ವಯಮೇವ ಧೀಮಾನ್ ವರ್ಣಾಶ್ರಮಾವೇಕ್ಷಣಜಾಗೃಕಃ" ರಘುಂ ೧೪-೮೫।

ಅವೇಕ್ಷಣೀಯ ಅವೇಕ್ಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ನೋಡಲ್ಪಡುವ, ನೋಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಅವ+ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬)। "ನಿರ್ವಾಸಿತಾಪ್ಯೇವಮತಸ್ತ್ವಯಾಹಂ ತಪಸ್ವಿ-ಸಾಮಾನ್ಯಮವೇಕ್ಷಣೀಯಾ" ರಘುಂ ೧೪-೬೭। 2. ಆಲೋಚಿಸಲ್ಪಡುವ, ಆಲೋಚಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.

ಅವೇಕ್ಷಮಾಣ ಅವೇಕ್ಷಮಾಣ (ವಿಂ) ಅವಲೋಕಿಸುತ್ತಿರುವ, ನೋಡುತ್ತಿರುವ. ಅವ+ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಸ್ಫುಟಿಭವದ್ಗ್ರಾಮವಿಶೇಷಮುಚ್ಚೇನಾಮವೇಕ್ಷಮಾಣಂ ಮಹತೀಂ ಮುಹುರ್ಮುಹುಃ" ಮಾಘಂ ೧-೧೦।

ಅವೇಕ್ಷಾ ಅವೇಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೋಡುವುದು. 2. ಗಮನಿಸುವುದು, ಆಸಕ್ತಿಯಿಂದ ನೋಡುವುದು. 3. ಮೇಲ್ವಿಚಾರಣೆ ನಡೆಸುವುದು. 4. ಎಚ್ಚರದಿಂದ ಕಾಯುವುದು. ಅವ+ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩)। "ಅಲಂಘ್ಯಮಿच्छೇದ್ವೇನ ಲಂಘ್ಯಂ ರಕ್ಷೇದವೇಕ್ಷಯಾ | ರಕ್ಷಿತಂ ವರ್ಧಯೇದ್-ವೃದ್ಧಯಾ ವೃದ್ಧಂ ಪಾತ್ರೇಷು ನಿಕ್ಷಿಪೇತ್" ಮನುಂ ೭-೧೦೧।

ಅವೇಕ್ಷಿತ ಅವೇಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) 1. ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ+ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಅವೇಕ್ಷಿತಾನಾಯತ-ವಲ್ಗಮಗ್ರೇ ತುರಗ್ಗಿಭಿರ್ಯತನಿರುದ್ಧವಾಹೈಃ" ಮಾಘಂ ೩-೩೦। 2. ಆಲೋಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅವೇಕ್ಷಿತು ಅವೇಕ್ಷಿತು (ವಿಂ) 1. ಮೇಲ್ವಿಚಾರಣೆ ನಡೆಸುವ. 2. ನೋಡುವ. 3. ಪರೀಕ್ಷಿಸುವ, ತನಿಖೆ ನಡೆಸುವ. 4. ಯೋಚಿಸುವ. ಅವ+ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ತುಕ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಇಕ್ಷಿತ್ರಿ -ಈಕ್ಷಿತ್ರಿ.

ಅವೇಕ್ಷ್ಯ ಅವೇಕ್ಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ನೋಡಲು ಅರ್ಹವಾದ, ನೋಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಆಲೋಚಿಸಲ್ಪಡುವ. ಅವ+ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ಫ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)। (ಅವ್ಯಂ) 3. ನೋಡಿ.

4. ಆಲೋಚಿಸಿ. ಅವ + ಇಕ್ಷ "ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭)।

"ಅವೇಕ್ಷ್ಯ ನೂನಂ ಚತುರಃ ಪುಮರ್ಥಾನಿನನ್ಯಲಮ್ಯಾನಲಭಂತ ಪೌರಾಃ" ಯಾದಂ ೧೩-೬೫।

ಅವೇಕ್ಷ್ಯ ಅವೇಕ್ಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಯಲಾಗದ, ತಿಳಿಯಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. ನ ವೇದಃ | 2. ಹೊಂದಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಪಡೆಯಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಛಾ-ಛಾ, 3. ಮದುವೆಯಾಗಲು ಅರ್ಹವಲ್ಲದ ಹೆಂಗಸು. "ವ್ಯಭಿಚಾರೆಣ ವರ್ಣಾನಾಮವೇಕ್ಷಾವೇದನೇನ ಚ | ಸ್ವಕರ್ಮಣಾಂ ಚ ತ್ಯಾಗೇನ ಜಾಯಂತೇ ವರ್ಣಸಂಕರಾಃ" ಮನುಂ ೧೦-೨೪।

ಅವೇಲ ಅವೇಲ (ಪುಂ) 1. ಅಪಲಾಪ, ಸತ್ಯವನ್ನು ಅಡಗಿಸುವಿಕೆ, ಸುಳ್ಳು ಹೇಳುವುದು. (ವಿಂ) 2. ನೇಲೆಯಿಲ್ಲದ, ಸಮಯವಿಲ್ಲದ. 3. ಎಲ್ಲೆಯಿಲ್ಲದ, ಮೇರೆಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ವೇಲಾ ಯತ್ರ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ-ಲಾ. 4. ಅಕಾಲ, ಅಸಮಯ. 5. ಅಡಿಕೆ ಪುಡಿ. "ಅವೇಲ-ಸ್ವಪಲಾಪೇ ಸ್ಯಾದವೇಲಾ ಪೂಗ್ವರ್ಣಕೇ" ವಿಶ್ವಂ |

ಅವೇಧ ಅವೇಧ (ವಿಂ) 1. ವಿಧಿಯಿಂದ ಪ್ರಾಪ್ತವಲ್ಲದ, ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಲ್ಲದ. ವಿಧೇರಾಗತಃ "ಅಞ್" (೪-೩-೭೪)। "ಅವೇಧಂ ಪञ್ಚಮಂ ಕುರ್ವನ್ ರಾಜೋ ದण्डೇನ ಶುದ್ಧಯತಿ"।

ಅವೇಧವ್ಯ ಅವೇಧವ್ಯ (ನಂ) ಸೌಮಂಗಳ್ಯ, ಪತಿಯೊಡನೆ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. ಅಭಾವೇ ನಂ ತಂ |

ಅವೇಮತ್ಯ ಅವೇಮತ್ಯ (ನಂ) 1. ಐಕಮತ್ಯ, ಒಗ್ಗಟ್ಟು. ಅಭಾವೇ ನಂ ತಂ | 2. ಭಿನ್ನಾಭಿಪ್ರಾಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 3. ಭಿನ್ನಾಭಿಪ್ರಾಯವಿಲ್ಲದ. ನ ವೇಮತ್ಯಂ ಯತ್ರ |

ಅವೇಯಾತ್ಯ ಅವೇಯಾತ್ಯ (ನಂ) 1. ಧೈರ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ದಿಟ್ಟತನವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಗಡುಸಾಗಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ವಿಯಾತಸ್ಯ ಭಾವಃ ವೇಯಾತ್ಯಮ್ | ನಂ ತಂ | (ವಿಂ) 2. ಧೈರ್ಯವಿಲ್ಲದ, ದಿಟ್ಟತನವಿಲ್ಲದ.

ಅವೇರಾಗ್ಯ ಅವೇರಾಗ್ಯ (ನಂ) 1. ವಿಷಯಾಭಿಲಾಷೆ, ವೈರಾಗ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ವೇರಾಗ್ಯಂ ವಿಷಯವಿತೃಣಾ | ಅಭಾವೇ ನಂ ತಂ | 2. ಸಾಂಖ್ಯರು ಹೇಳುವ ಧರ್ಮಾಧರ್ಮಾದಿ ಎಂಟು ವಿಧ ಪ್ರಕೃತಿ ಧರ್ಮಗಳಲ್ಲೊಂದು.

ಅವೋಕ್ಷಣ ಅವೋಕ್ಷಣ (ನಂ) ಅರ್ಥಬಗ್ಗಿಸಿದ ಕೈಯಿಂದ ನೀರನ್ನು ಪ್ರೋಕ್ಷಿಸುವುದು, ಹಸ್ತವನ್ನು ಸ್ವಲ್ಪ ಓರೆ ಮಾಡಿ ನೀರು ಚಿಮುಕಿಸುವುದು. ಅವ+ಊಷ (ಸೇವನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಉತ್ತಾನೇನೈವ ಹಸ್ತೇನ ಪ್ರೋಕ್ಷಣಂ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಮ್ | ನ್ಯಞ್ಚತಾಮ್ಯುಕ್ಷಣಂ ಪ್ರೋಕ್ಷಣಂ ತಿರಸ್ಕಾರಾವೋಕ್ಷಣಂ ಸ್ಮೃತಮ್" |



ಅವೋದ ಅವೋದ (ಪುಂ) 1. ನೀರು ಚಿಮುಕಿಸುವುದು, ತೇನ ಮಾಡುವುದು. ಅವ+उदी (ಕಲೇದನೆ) ಭಾವೇ "घञ्" (६-४-२९)। ನಲೋಪಸ್ಯ ನಿಪಾಂ। (ವಿಂ) 2. ತೇನವಾದ, ಒದ್ದೆಯಾದ.

ಅವೋಷ ಅವೋಷ (ಪುಂ) ಬಿಸಿಯಾದ ಅನ್ನ. ಅವ+उष (ದಾಹೇ) ಕರ್ಮಂ "क." (३-१-१३५)।

ಅವ್ಯಕ್ತ ಅವ್ಯಕ್ತ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ಶಿವ, ಮಹೇಶ್ವರ. (ನಂ) 3. ಸಾಂಖ್ಯರು ಹೇಳುವ ಪ್ರಧಾನ, ಮೂಲ ಪ್ರಕೃತಿ. 4. ಅಜ್ಞಾನ. 5. ಬ್ರಹ್ಮ. 6. ಸುಷುಪ್ತವಸ್ಥಾ. 7. ಜೀವ, ಆತ್ಮ. "अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकारोऽयमुच्यते। तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि" ಗೀತಾ २-२५। 8. ಸ್ವಭಾವ. (ವಿಂ) 9. ಸ್ವಪ್ನವಲ್ಲದ, ಅಸ್ಪೃಶ್ಯವಾದ, ವಿಶದವಲ್ಲದ. ನಂ. ತಂ। "अव्यक्तवर्णरमणीयवचःप्रवृत्तिम्" ಶಾಕುಂ ७-१७। 10. ಅಗೋಚರವಾದ, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸದ, ಅತಿ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ. "अव्यक्तः शङ्करे विष्णावव्यक्तं महाबादिके। आत्मन्यपि स्यादव्यक्तमस्फुटे त्वभिधेयवत्" ಶಿವಶಂ. (ಅವ್ಯಂ) 11. ಅಸ್ಪೃಶ್ಯವಾಗಿ. 12. ಅಗೋಚರವಾಗಿ, ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿ.

ಅವ್ಯಕ್ತರಾಗ ಅವ್ಯಕ್ತರಾಗ (ಪುಂ) ಎಳೆಗೆಂಪು, ಉದಯ ಕಾಲದ ಕೆಂಪು.

ಅವ್ಯಕ್ತಲಿಂಗ ಅವ್ಯಕ್ತಲಿಂಗ (ಪುಂ) 1. ಸಂನ್ಯಾಸಿ. (ನಂ) 2. ಸಾಂಖ್ಯೋಕ್ತವಾದ ಮಹತ್ತತ್ತ್ವ. ಅವ್ಯಕ್ತಸ್ಯ ಲಿಂಗಮನುಷ್ಯಮಪಕಮ್। 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಲಕ್ಷಣಗಳು ತಿಳಿಯದ ರೋಗ. ಅವ್ಯಕ್ತ ಲಿಂಗಮಸ್ಯ।

ಅವ್ಯಗ್ರ ಅವ್ಯಗ್ರ (ವಿಂ) 1. ಶಾಂತ, ಸ್ಥಿರಚಿತ್ತ. 2. ತತ್ಪರ ನಲ್ಲದ, ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ನಿರತನಲ್ಲದ. 3. ಉದಾಸೀನ, ತಟಸ್ಥ.

ಅವ್ಯಂಗ ಅವ್ಯಂಗ (ವಿಂ) 1. ಅಂಗಹೀನವಲ್ಲದ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ङ्गा -गा. 2. ನಸುಗುನ್ನಿ ಗಡ.

ಅವ್ಯಂಜನ ಅವ್ಯಂಜನ (ಪುಂ) 1. ಕೊಂಬಿಲ್ಲದ ಪಶು, ಕೊಂಬು ಹುಟ್ಟಿದಿರುವ ಹಸು ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಾಣಿ. (ವಿಂ) 2. ಲಕ್ಷಣವಿಲ್ಲದ, ಗುರುತಿಲ್ಲದ. 3. ಒಳ್ಳೆಯ ಲಕ್ಷಣವಿಲ್ಲದ. 4. ವ್ಯಂಜನಾವೃತ್ತಿಯಿಲ್ಲದ. नास्ति व्यञ्जना व्यञ्जनावृत्तिर्यत्र।

ಅವ್ಯಂಥ ಅವ್ಯಂಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಸುಗುನ್ನಿ ಗಡ. नास्ति विगतमण्डं बीजमस्याः।

ಅವ್ಯಥ ಅವ್ಯಥ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ನ ವ್ಯಥತೇ ಪದ್ಮಾಂ ನ ಸञ्चलति—व्यथ (भयसञ्चलनयोः) "अच्" (३-१-१३४)। (ವಿಂ) 2. ವ್ಯಥೆಯಿಲ್ಲದ, ದುಃಖವಿಲ್ಲದ. "लब्धस्पर्शं भूव्यधादव्यथेन स्थित्वा किञ्चिदन्तयोरन्तराले" ಮಾಘಂ १८-४७। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -था -ठा. 3. ಶುಂಠಿ. 4. ಅಳಲೆಕಾಯಿ. 5. ಬೆಟ್ಟದಾವರೆ. "अव्यथो निर्व्यथे सर्पे चारटीपथ्ययोः स्त्रियाम्" ಮೇದಿಂ।

ಅವ್ಯಥಾ ಅವ್ಯಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುಃಖವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ವ್ಯಥಾ।

ಅವ್ಯಥಿನ್ ಅವ್ಯಥಿನ್ (ವಿಂ) 1. ವ್ಯಥೆಯಿಲ್ಲದ, ದುಃಖವಿಲ್ಲದ. 2. ಭಯವಿಲ್ಲದ, ಹೆದರಿಕೆಯಿಲ್ಲದ.

ಅವ್ಯಥಿಷ ಅವ್ಯಥಿಷ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಸಮುದ್ರ. ನ+व्यथ (भयसञ्चलनयोः) "टिप्" (उ० १-४९)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -व्यथिषी -व्यथिषी. 3. ರಾತ್ರಿ. 4. ಭೂಮಿ. "अव्यथिषोऽग्निसूर्ययोः। अव्यथिषी धरारात्र्योः" ಸಿಂ ಕೊಂ.

ಅವ್ಯಪೇಕ್ಷಾ ಅವ್ಯಪೇಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಜಾಗರೂಕತೆ, ಉದಾಸೀನತೆ, ಎಚ್ಚರಿಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ವಿಶೇಷಾಪೇಕ್ಷಾ। "बाष्पासारा हेमकाञ्चीगुणेन श्रोणीविम्बादव्यपेक्षाच्युतेन" ಮಾಲಂ ३-२१। 2. ಎಕಾರ್ಥಿಭಾವ ರೂಪವಾದ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಪ್ರಕ್ರಿಯಾ ದಶೆಯಲ್ಲಿ ಪದಗಳಿಗೆ ಪ್ರತ್ಯೇಕ ಅರ್ಥವಿರುವುದರಿಂದ ಸಮುದಾಯದಲ್ಲಿ ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಶಕ್ತಿ. (ವಿಂ) -क्ष -क्ष. 3. ಅಧಿಕ ಆವೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ, ಹೆಚ್ಚು ಆಸೆಯಿಲ್ಲದ.

ಅವ್ಯಭಿಚರಿತ ಅವ್ಯಭಿಚರಿತ (ವಿಂ) 1. ವ್ಯಭಿಚಾರ ರೂಪವಾದ ದೋಷವಿಲ್ಲದ (ಹೇತು). ವ್ಯಭಿಚಾರವು ಅನ್ವಯವ್ಯಭಿಚಾರ: व्यतिरेकव्यभिचारश्च ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಸಾಧ್ಯಾಭಾವವದ್ವೃತ್ತಿತ್ವ ಸ್ವಸಮಾನಾಧಿಕರಣಾಭಾವ-ಪ್ರತಿಯೋಗಿಸಾಮಾನಾಧಿಕರಣ್ಯ ಚ ಎಂದು ಅನ್ವಯ ವ್ಯಭಿಚಾರವೂ ಎರಡು ವಿಧ. "धूमवान् वल्ले:" ಎಂಬಲ್ಲಿ ವಹ್ನಿರೂಪವಾದ ಹೇತುವು ದುಷ್ಟ (ವ್ಯಭಿಚಾರ ರೂಪವಾದ ದೋಷಾಕ್ರಾಂತ) ವಾದುದು. ಧೂಮವಿಲ್ಲದ ತಪ್ತಾಯಃಪಿಂಡ (ಕಾಯಿಸಿದ ಕಬ್ಬಿಣದ ತುಂಡು)ದಲ್ಲಿ ವಹ್ನಿಯಿರುವುದರಿಂದಲೂ ವಹ್ನಿಯಿರುವ ತಪ್ತಾಯಃಪಿಂಡದಲ್ಲಿ ಧೂಮವಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದಲೂ ವಹ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಎರಡು ವಿಧ ವ್ಯಭಿಚಾರಗಳೂ ಇರುವುವು. 2. ಅನುಕೂಲವಾದ, ವಿರೋಧವಿಲ್ಲದ, ಅಬಾಧಿತವಾದ.



ಅವ್ಯಭಿ (ಭಿ) ಚಾರ ಅವ್ಯಭಿ (ಭಿ) ಚಾರ (ಛಂ) 1. ಅಗಲದಿರುವಿಕೆ, ಬೇರೆಯಾಗದಿರುವಿಕೆ, ವಿರಹವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. "ಅನ್ಯೋನ್ಯಸ್ಯಾವ್ಯಭಿಚಾರೋ ಭವೇದಾಮರಣಾಂತಿಕಃ" ಮನುಂ ೧-೧೦೧. 2. ಬಾಧೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಅನುಕೂಲವಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ಸಿರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ನಿಶ್ಚಲವಾಗಿರುವಿಕೆ.

ಅವ್ಯಭಿಚಾರಿನ್ ಅವ್ಯಭಿಚಾರಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಅನುಕೂಲವಾದ, ವಿರುದ್ಧವಲ್ಲದ. ವಿ+ಅಭಿ+ಚರ (ಗತಿಭಕ್ಷಣಯೋಃ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫). -ಚಾರಿಣಿ-ಚಾರಿಣೀ. "ಭವೇದವ್ಯಭಿಚಾರಿಣ್ಯೋ ಭರ್ತುರಿಷ್ಟೇ ಪತಿವ್ರತಾಃ" ಕುಮಾಂ ೬-೮೬. 2. ಸತ್ಯವಾದ, ನಿಜವಾದ. "ಯದ್ವಚ್ಯತೇ ಪಾರ್ವತಿ ಪಾಪವೃತ್ತಯೇ ನ ರೂಪಮಿತ್ಯ-ವ್ಯಭಿಚಾರಿ ತದ್ವಚಃ" ಕುಮಾಂ ೫-೩೬. 3. ನಿಶ್ಚಲವಾದ, ಸ್ಥಿರವಾದ.

ಅವ್ಯಯ ಅವ್ಯಯ (ಛಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ನ ವೀಯತೇ ನ ವ್ಯಪಗಮ್ಯತೇ ಚೇತನೋಽಸ್ಮಾತ್ - ವಿ+ಇಞ್ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬). "ಅವ್ಯಯಃ ಪುರುಷಃ ಸಾಕ್ಷಿ ಕ್ಷೇತ್ರಜ್ಞೋಽಕ್ಷರ ಏವ ಚ" ವಿಂ ಸಂ. 2. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. (ನಂ) 3. ಪರಬ್ರಹ್ಮ. 4. ಅವ್ಯಯ, ಎಲ್ಲಾ ಲಿಂಗ, ವಿಭಕ್ತಿ ಮತ್ತು ವಚನಗಳಲ್ಲೂ (ರೂಪವ್ಯತ್ಯಾಸ ಹೊಂದದೆ) ಒಂದೇ ರೂಪವುಳ್ಳ ಶಬ್ದ. "ಸದೃಶಂ ತ್ರಿಘ್ನ ಲಿಙ್ಗೈಃ ಸರ್ವಾಸು ಚ ವಿಭಕ್ತಿಃ | ವಚನೇಷು ಚ ಸರ್ವೇಷು ಯತ್ರವ್ಯಯೇತಿ ತದವ್ಯಯಮ್" (ವಿಂ) 5. ನಾಶಹೊಂದದ, ಶಾಶ್ವತವಾದ. 6. ವ್ಯತ್ಯಾಸಹೊಂದದ, ವಿಕಾರಹೊಂದದ. "ವೇದಾವಿನಾಶಿನಂ ನಿದ್ರಾಂ ಯ ಏನಮಜಮವ್ಯಯಮ್" ಗೀತಾ ೨-೨೧. 7. ಶಾಶ್ವತ ಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವ. 8. ವ್ಯಯವಿಲ್ಲದ, ಖರ್ಚಿಲ್ಲದ.

ಅವ್ಯಯಾತ್ಮನ್ ಅವ್ಯಯಾತ್ಮನ್ (ವಿಂ) ನಾಶದ ಸ್ವಭಾವವಲ್ಲದ, ನಾಶಹೊಂದದ ಸ್ವಭಾವದ. ಅವ್ಯಯ ಆತ್ಮಾ ಸ್ವಭಾವೋ ಯಸ್ಯ |

ಅವ್ಯಯಿಭಾವ ಅವ್ಯಯಿಭಾವ (ಛಂ) ಅವ್ಯಯವಲ್ಲದ ಶಬ್ದವನ್ನು ಅವ್ಯಯವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವ ಒಂದು ಸಮಾಸ. ಅನವ್ಯಯಮವ್ಯಯಂ ಭವತ್ಯನೇನ - ಅವ್ಯಯ + ಚಿ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಛತ್" (೩-೩-೨೪). ಕೃಣ್ಣಸ್ಯ ಸಮೀಪಮ್ ಉಪಕೃಣ್ಣಮ್ ವಿಣ್ಣೋಃ ಪಶ್ಚಾತ್ ಅನುವಿಣ್ಣು ಇತ್ಯಾದಿ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿ ಕೃಣ್ಣ ವಿಣ್ಣು ಶಬ್ದಗಳು ಅವ್ಯಯವಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಸಾಮಾನ್ಯ ಮತ್ತು ಪಶ್ಚಾತ್ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಅವ್ಯಯತ್ವವು ಬಂದಿರುವುದು. "ಛಂದೋ ದ್ವಿಗುರಪಿವಾಹಂ ಮದ್ರೇಹೇ ನಿದ್ರಾಂ ಮವ್ಯಯಿಭಾವಃ | ತತ್ಪುರುಷ! ಕರ್ಮಧಾರಯ ಯೇನಾಹಂ ಸ್ಯಾಂ ಬಹುವಿಹಿಃ" ಉದ್ಗಂ. 1.

ಅವ್ಯಯ ಅವ್ಯಯ (ವಿಂ) 1. ವ್ಯರ್ಥವಲ್ಲದ, ಸಾರ್ಥಕವಾದ, ಪ್ರಯೋಜನಸಹಿತವಾದ. 2. ಸಫಲವಾದ, ಕೈಗೊಂಡಿದ, ಸಿದ್ಧಿಸಿದ. ನ ವ್ಯರ್ಥಃ |

ಅವ್ಯಲಿಕ ಅವ್ಯಲಿಕ (ವಿಂ) 1. ಸತ್ಯವಾದ, ನಿಜವಾದ. 2. ಪ್ರಿಯವಾದ, ಹಿತವಾದ. ನ ವ್ಯಲಿಕಃ | ವಿರೋಧೇ ನಂ ತಂ | "ಇತ್ಯಂ ಗಿರಃ ಪ್ರಿಯತಮಾ ಇವ ಸೌವ್ಯಲಿಕಾಃ | ಶುಶ್ರಾವ ಸೂತತನಯಸ್ಯ ತದಾ ವ್ಯಲಿಕಾಃ" ಮಾಘಂ ೫-೧ |

ಅವ್ಯವಧಾನ ಅವ್ಯವಧಾನ (ನಂ) 1. ಸಾಮಾನ್ಯ, ಮಧ್ಯೆಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ. [ವ್ಯವಧಾನವು ಕಾಲ, ದೇಶ ಭೇದದಿಂದ ಎರಡು ವಿಧ. ಎಡೆಬಿಡದೆ ಸತತವಾಗಿ ಕೆಲಸ ನಡೆಯುವುದಕ್ಕೆ ಕಾಲಕೃತ ಅವ್ಯವಧಾನವೆಂದೂ, ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳ ನಡುವೆ ಮತ್ತಾವುದೂ ಅಡ್ಡಬರದೆ ಸಮಾಪಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವುದಕ್ಕೆ ದೇಶಕೃತ ಅವ್ಯವಧಾನವೆಂದೂ ಹೆಸರು.] (ವಿಂ) 2. ಸಮಾಪದ, ಹತ್ತಿರದ.

ಅವ್ಯವಸಾಯ ಅವ್ಯವಸಾಯ (ಛಂ) 1. ಉದ್ಯೋಗವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಕೆಲಸವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಪ್ರಯತ್ನವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ನಿಶ್ಚಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಂ ತಂ | (ವಿಂ) 3. ನಿಶ್ಚಯವಿಲ್ಲದ, ನಿರ್ಧಾರವಿಲ್ಲದ. 4. ಉದ್ಯೋಗವಿಲ್ಲದ. ನ ವ್ಯವಸಾಯೋ ಯಸ್ಯ |

ಅವ್ಯವಸಾಯಿನ್ ಅವ್ಯವಸಾಯಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಉದ್ಯೋಗವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರಯತ್ನವಿಲ್ಲದ. 2. ನಿಶ್ಚಯವಿಲ್ಲದ, ನಿರ್ಣಯವಿಲ್ಲದ. "ಬಹುಶಾಖಾ ಹ್ಯನಂತಾಃಚ ಬುದ್ಧಯೋಽವ್ಯವಸಾಯಿನಾಮ್" ಗೀತಾ ೨-೪೧ |

ಅವ್ಯವಸ್ಥ ಅವ್ಯವಸ್ಥ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಥಿರವಲ್ಲದ, ಚಂಚಲವಾದ, ಚಲಿಸುವ. "ಸ್ಥಲಾರವಿಂದಶ್ರಿಯಮವ್ಯವಸ್ಥಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೩೩. 2. ನಿಶ್ಚಯವಿಲ್ಲದ, ಭರವಸೆಯಿಲ್ಲದ, ಅನಿಯತವಾದ. "ಅವ್ಯವಸ್ಥಾ ಹಿ ದೃಶ್ಯತೇ ಯುಕ್ತೇ ಜಯಪರಾ-ಜಯೋ" ರಾಮಾಂ ಸುಂ. "ವ್ಯುಹಾವುಭೌ ತಾವಿತರೇತರಸ್ಮಾತ್ ಭಜ್ಜಂ ಜಯಂ ಚಾಪತುರವ್ಯವಸ್ಥಮ್" ರಘುಂ ೭-೫೪. 3. ಎಲ್ಲೆಯಿಲ್ಲದ, ಮಿತಿಯಿರದ. 4. ಕಟ್ಟಳೆಯಿಲ್ಲದ, ನಿಯಮರಹಿತವಾದ, ಶಾಸ್ತ್ರವಿರುದ್ಧವಾದ.

ಅವ್ಯವಸ್ಥಾ ಅವ್ಯವಸ್ಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಿಶ್ಚಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ಅಕ್ರಮ, ನಿಯಮಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಾಗಿರುವಿಕೆ. "ಗ್ರಾಮೇಷು ಸಂಯೋಗಕರೋದವಾರಿತಃ ಕಿಮವ್ಯವಸ್ಥಾಂ ಚಲಿತೋಽಪಿ ಕೇಶವಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೩೬ |

ಅವ್ಯವಸ್ಥಿತ ಅವ್ಯವಸ್ಥಿತ (ವಿಂ) 1. ಶಾಸ್ತ್ರಮರ್ಯಾದೆಯಿಲ್ಲದ, ನಿಯಮರಹಿತವಾದ. 2. ಅಸ್ಥಿರವಾದ,



ಚಂಚಲವಾದ. ವಿ+ಅವ+ಱಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। ನಂ ತಂ। "ಅವ್ಯವಸ್ಥಿತವಿತ್ತಸ್ಯ ಪ್ರಸಾದೋಽಪಿ ಭಯಂಕರಃ"। 3. ಶಾಶ್ವತವಲ್ಲದ, ಅನಿತ್ಯವಾದ.

ಅವ್ಯವಹಾರ್ಯ ಅನ್ಯವಹಾರ್ಯ (ವಿಂ) "ವ್ಯವಹರಿಸಲು ಅನರ್ಹನಾದ, ಅಪಾಂಕ್ತೇಯ, ಭೋಜನ ಶಯನ ವಾನಾದಿಗಳಿಗೆ ಅರ್ಹನಲ್ಲದ (ಪತಿತ, ಸಮಾಜದಿಂದ ಬಹಿಷ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನು). ವಿ+ಅವ+ಹ್ರಃ (ಹರಣ) "ಘ್ರತ್" (೩-೧-೧೨೪)।

ಅವ್ಯವಹಿತ ಅನ್ಯವಹಿತ (ವಿಂ) ಸಮಾಪದ, ಹತ್ತಿರದ, ಸಾಕ್ಷಾತ್ ಸಂಬಂಧಹೊಂದಿದ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. ನಂ ತಂ।

ಅವ್ಯವಹತ ಅನ್ಯವಹತ (ವಿಂ) ವ್ಯವಹರಿಸಲ್ಪಡದ.

ಅವ್ಯಸನ ಅನ್ಯಸನ (ನಂ) 1. ಸನ್ಮಾರ್ಗ, ಸದಾಚಾರ. 2. ಪಾಪವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ದೋಷವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ಕ್ಷೇಮ, ಶುಭ. (ವಿಂ) 4. ದೋಷವಿಲ್ಲದ, ಪಾಪವಿಲ್ಲದ. 5. ಸದಾಚಾರವುಳ್ಳ. 6. ದುಃಖವಿಲ್ಲದ. 7. ಆಸಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ. 8. ಏಳುವಿಧ ವ್ಯಸನವಿಲ್ಲದ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ವ್ಯಸನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಅವ್ಯಸ್ತ ಅನ್ಯಸ್ತ (ವಿಂ) 1. ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಡದ, ಬಿಡಿಸಲ್ಪಡದ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. 2. ವ್ಯತ್ಯಾಸಹೊಂದದ, ಮಾರ್ಪಾಡಾಗದ. 3. ಎಸೆಯಲ್ಪಡದ, ಬಿಸಾಡಲ್ಪಡದ. ನ ವ್ಯಸ್ತಃ।

ಅವ್ಯಾಕುಲ ಅನ್ಯಾಕುಲ (ವಿಂ) ಕಳವಳವಿಲ್ಲದ, ಚಿತ್ತಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯವುಳ್ಳ, ನೆಮ್ಮದಿಯುಳ್ಳ.

ಅವ್ಯಾಕೃತ ಅನ್ಯಾಕೃತ (ನಂ) 1. (ಸಾಂಖ್ಯ ಮತದಲ್ಲಿ) ಪ್ರಧಾನ, ಮೂಲಪ್ರಕೃತಿ. 2. (ಅದ್ವೈತಿಗಳ ಮತದಲ್ಲಿ) ಜಗತ್ಕಾರಣವಾದ ಬೀಜಭೂತವಾದ ಮಾಯೆ. 3. (ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತಿಗಳ ಮತದಲ್ಲಿ) ನಾನುರೂಪಗಳಿಂದ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತವಲ್ಲದ ಪ್ರಕೃತಿ. "ಅವ್ಯಾಕೃತಾದ್ವ್ಯಾಕೃತವಾನಸಿ ತ್ವಂ ನಾಮಾನಿ ರೂಪಾಣಿ ಚ ಯಾನಿ ಪೂರ್ವಮ್" ಹೃಂ।

ಅವ್ಯಾಜ ಅನ್ಯಾಜ (ಛಂ) 1. ಕಪಟವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ಸ್ವಭಾವದಿಂದಿರುವಿಕೆ, ನಿಸರ್ಗತೆ. "ಇದಂ ಕಿಲಾವ್ಯಾಜಮನೋಹರಂ ವಪುಃ" ಶಾಕ್ತಂ ೧-೧೬। (ವಿಂ) 3. ಕಪಟವಿಲ್ಲದ, ಸರಳವಾದ, ಮುಜುವಾದ. 4. ನಿಸರ್ಗವಾದ, ಕೃತಕವಲ್ಲದ.

ಅವ್ಯಾಪಕ ಅನ್ಯಾಪಕ (ವಿಂ) 1. ವಿಸ್ತಾರವಲ್ಲದ, ಹರಡದಿರುವ. 2. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ, ಪರಿಮಿತಿಯುಳ್ಳ. ನ ವ್ಯಾಪಕಃ।

ಅವ್ಯಾಪಕತ್ವ ಅನ್ಯಾಪಕತ್ವ (ನಂ) ಪ್ರತ್ಯೇಕತೆ, ಬೇರೆಯಾಗಿರುವಿಕೆ, ಪರಿಮಿತಿ, ಒಂಟಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ.

ಅವ್ಯಾಪಿನ್ ಅನ್ಯಾಪಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಹರಡದಿರುವ, ವಿಸ್ತಾರವಲ್ಲದ. 2. ಪರಿಮಿತಿಯುಳ್ಳ, ಇತರ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ. ನ ವ್ಯಾಪ್ನೋತಿ - ವಿ+ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಘಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮)।

ಅವ್ಯಾಪ್ತ ಅನ್ಯಾಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಪರಿಮಿತಿಯುಳ್ಳ, ಒಂದು ಮಿತಿಯಲ್ಲಿರುವ. 2. ಹರಡದಿರುವ, ಹಬ್ಬದಿರುವ, ಪಸರಿಸದಿರುವ, ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾದ. ನ ವ್ಯಾಪ್ತಃ।

ಅವ್ಯಾಪ್ತಿ ಅನ್ಯಾಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೆಲವು ಲಕ್ಷ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷಣವಿಲ್ಲದಿರುವುದು. "ಶಿಖಾಸೂತ್ರವಾನ್ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಃ" ಎಂಬ ಲಕ್ಷಣವು ಶಿಖಾಸೂತ್ರಗಳಿಲ್ಲದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಸಂನ್ಯಾಸಿಯಲ್ಲಿಲ್ಲದುದರಿಂದ ಅಲ್ಲಿ ಅವ್ಯಾಪ್ತಿ. 2. ವ್ಯಾಪಿಸದಿರುವುದು, ಹರಡದಿರುವುದು, ಪಸರಿಸದೆ ಇತರ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

ಅವ್ಯಾಪ್ಯ ಅನ್ಯಾಪ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಹರಡದಿರುವ, ಎಲ್ಲದರ ಸಂಬಂಧ ಪಡೆಯದ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಇಲ್ಲದ. 2. ವ್ಯಾಪ್ತಿಯಿಲ್ಲದ, ಸಾಹಚರ್ಯ ನಿಯಮವಿಲ್ಲದ. ವಹ್ನಿಗೆ ಆಧಾರವಾದ ತಪ್ತಾಯಃ ಪಿಂಡ (ಕಾಯಿಸಿದ ಕಬ್ಬಿಣ)ದಲ್ಲಿ ಧೂಮವಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಧೂಮಕ್ಕೆ ವಹ್ನಿಯು ಅವ್ಯಾಪ್ಯ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಹರಡದೆ, ಹಬ್ಬದೆ, ಪಸರಿಸದೆ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಸಂಪೂರ್ಣ ಸಂಬಂಧಹೊಂದದೆ. ವಿ+ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಲ್ಯಪ್" (೩-೧-೩೭)। ನಂ ತಂ।

ಅವ್ಯಾಪ್ಯವೃತ್ತಿ ಅನ್ಯಾಪ್ಯವೃತ್ತಿ (ವಿಂ) ತನ್ನ ಅಭಾವವಿರುವ ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ತಾನೂ ಇರುವ; ಯಾವುದಾದರೊಂದು ವಸ್ತುವು ತನಗೆ ಅಧಿಕರಣಭೂತವಾದ ಕಾಲ ಅಥವಾ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಸಂಪೂರ್ಣ ಸಂಬಂಧವನ್ನು ಹೊಂದದಿರುವುದು ಅವ್ಯಾಪ್ಯವೃತ್ತಿಯೆನಿಸುವುದು. ಉದಾ: "ಅಗ್ರೇ ವೃಕ್ಷಃ ಕಪಿಸಂಯೋಗಿ ಮೂಲೇ ನ" ಕಪಿಯು ತನಗೆ ಅಧಿಕರಣಭೂತವಾದ ಮರದ ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಸಂಬಂಧಹೊಂದದೆ ಏಕದೇಶದಲ್ಲಿ (ಕೊಂಬೆಯಲ್ಲಿ) ಮಾತ್ರವಿದ್ದು ಬುಡದಲ್ಲಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಅವ್ಯಾವರ್ತಕ ಅನ್ಯಾವರ್ತಕ (ವಿಂ) 1. ಮತ್ತೊಂದರಿಂದ ಬೇರ್ಪಡಿಸದ, ಮತ್ತೊಂದನ್ನು ತಡೆಯದ. 2. ಮತ್ತೊಂದರಿಂದ ಭೇದವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡದ, ವಿಶೇಷಣವಲ್ಲದ. ನ ವ್ಯಾವರ್ತಯತಿ - ವಿ+ಆ+ವೃತ್ (ವರ್ತನೆ) + ಣಿಕ್ "ಘ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।



ಅವ್ಯಾವರ್ತನ ಅವ್ಯಾವರ್ತನ (ನಂ) 1. ಮತ್ತೊಂದರಿಂದ ಬೇರ್ಪಡಿಸದಿರುವಿಕೆ. 2. ಮತ್ತೊಂದರಿಂದ ತಡೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ವ್ಯಾವರ್ತನಮ್ | (ವಿಂ) 3. ಮತ್ತೊಂದರಿಂದ ಬೇರ್ಪಡಿಸದ. 4. ವಿಶೇಷ ಧರ್ಮದಿಂದ ತಡೆಹೊಂದದ. ವಿ+ಆ+ವೃತು (ವರ್ತನೆ)+ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) | ನ ವ್ಯಾವರ್ತನಂ ಯಸ್ಯ |

ಅವ್ಯಾಹತ ಅವ್ಯಾಹತ (ನಂ) 1. ಸತ್ಯವಾದ ಮಾತು. (ವಿಂ) 2. ತಡೆಯಿಲ್ಲದ, ಆತಂಕವಿಲ್ಲದ. ನ ವಿಶೇಷಣಾಹತಃ | "ಅವ್ಯಾಹತಃ ಸ್ವೇರಗತೇಸ್ಸ ತಸ್ಯಾಃ ಸಮ್ರಾಡ್ ಸಮಾರಾಧನತತ್ಪರೋಽಭೂತ್" ರಘುಂ 2-4 | "ಅವ್ಯಾಹತಕ್ಷಿಪ್ರಗತಃ ಸಮುಚ್ಚಿತಾನ್" ಮಾಘಂ 12-66 |

ಅವ್ಯುತ್ಪನ್ನ ಅವ್ಯುತ್ಪನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದಗಳ ಅವಯವಾರ್ಥಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದವನು, ವ್ಯಾಕರಣ ಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದವನು. 2. ಅವಯವಾರ್ಥವಿಲ್ಲದೆ ಕೇವಲ ಸಮುದಾಯದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ (ಶಬ್ದ). [ಉಚಾರದಿನ್ಮುನ್ನವಾದ ಶಬ್ದಗಳಿಗೆ ಕೇವಲ ಸಮುದಾಯದಲ್ಲಿ ಅರ್ಥವಿರುವುದರಿಂದ ಅವು ಅವ್ಯುತ್ಪನ್ನ ಶಬ್ದಗಳು.]

ಅಶಕುನ ಅಶಕುನ (ನಂ) ದುಃಶಕುನ, ಅನಿಷ್ಟವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಉತ್ಪಾತ ಮೊದಲಾದುದು. ಅಪ್ರಾಶಸ್ತಿಯೆ ನಂ ತಂ | "ಕಲಯನ್ನಿವ ಸವ್ಯಖ್ಯೋವತಸ್ತೇಽಶಕುನೇನ ಸ್ಥಲಿತಃ ಕಿಲೇತರೋಽಪಿ" ಮಾಘಂ 9-43 |

ಅಶಕ್ತ ಅಶಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಅಸಮರ್ಥ, ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಅನರ್ಹ, ಕೈಯಲ್ಲಾಗದವನು, ದುರ್ಬಲ. 2. ಅಭಿಧಾ ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ (ಪದ).

ಅಶಕ್ತತಾ ಅಶಕ್ತತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಅನರ್ಹತೆ, ಕೈಯಲ್ಲಾಗದಿರುವಿಕೆ, ದೌರ್ಬಲ್ಯ. ಅಶಕ್ತಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (4-1-119) |

ಅಶಕ್ತಿ ಅಶಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಅನರ್ಹತೆ, ದೌರ್ಬಲ್ಯ. ನ ಶಕ್ತಿಃ | "ಶ್ರಮೇಣ ತದಶಕ್ತಿಯಾ ವಾ ನ ಗುಣಾನಾಮಿಯತ್ತಯಾ" ರಘುಂ 10-32 |

ಅಶಕ್ನುವತ್ ಅಶಕ್ನುವತ್ (ವಿಂ) ಅಸಮರ್ಥನಾದ, ಬಲಹೀನನಾದ. "ಅಶಕ್ನುವನ್ ಸೌಧಮಧೀರಲೋಚನಃ ಸಹಸ್ರ-ರಶ್ಮೇರಿವ ಯಸ್ಯ ದರ್ಶನಮ್" ಮಾಘಂ 1-43 |

ಅಶಕ್ಯ ಅಶಕ್ಯ (ವಿಂ) ಅಸಾಧ್ಯವಾದ, ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ. ಶಕಲ್ (ಶಕ್ತಿ) "ಯತ್" (3-1-99) | ನಂ ತಂ | "ಅಶಕ್ಯಶಕ್ತ್ಯಭಿಚಾರಹೇತುರ್ವಾಣಿ ನ ವೇದಾ ಯದಿ ಸಂತು ಕೇ ತ್" ನೆಫಂ 3-64 |

ಅಶಾಙ್ಕ ಅಶಂಕ (ವಿಂ) 1. ಸಂಶಯವಿಲ್ಲದ. 2. ಭಯವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಶಾಙ್ಕಾ ಯಸ್ಯ |

ಅಶಾಙ್ಕಾ ಅಶಂಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಶಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ಭಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

ಅಶಾಙ್ಕಿತ ಅಶಂಕಿತ (ವಿಂ) 1. ಭಯಪಡದ, ಹೆದರದ. 2. ಸಂದೇಹಪಡದ.

ಅಶನ ಅಶನ (ನಂ) 1. ಭೋಜನ, ಊಟ. ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) | 2. ಆಹಾರ, ಆನ್ನ. ಅಶ ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-113) | 3. ವ್ಯಾಪನೆ, ಹರಡುವಿಕೆ. ಅಶು (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) |

ಅಶನಾಯಾ ಅಶನಾಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೋಜನದ ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಹಸಿವು. ಅಶನಸ್ಯೇಚ್ಛಾ - ಅಶನ "ಕೃತ್" (3-1-4) | "ಅಃ" (3-3-103) |

ಅಶನಾಯಿತ ಅಶನಾಯಿತ (ವಿಂ) ಭೋಜನದ ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, ಹಸಿವುಳ್ಳ. ಅಶನಾಯಾ ಜಾತಾಸ್ಯ "ಇತ್" (4-2-36) |

ಅಶನಿ ಅಶನಿ (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಜ್ರಾಯುಧ. ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಅನಿಃ" (3-3-102) | "ಅಶನಿರಿವ ಕಠೋರಃ ಶೀತ-ಲಾಮೋದಪಙ್ಕ್ತೌ" ಚಂ ರಾಂ | 2. ಸಿಡಿಲು. 3. ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು. "ವಜ್ರೇ ವಿದ್ಯುತಿ ಚಾಶನಿಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | (ಪುಂ) 4. ಇಂದ್ರ. 5. ವಜ್ರ, ಬೆಂಕಿ. 6. ಶತ್ರುವನ್ನು ನಾಶಮಾಡುವ ಅನುಯಾಜವೆಂಬ ಯಾಗ.

ಅಶರಣ ಅಶರಣ (ವಿಂ) 1. ರಕ್ಷಕನಿಲ್ಲದ, ಸಹಾಯಕನಿಲ್ಲದ, ದಿಕ್ಕಿಲ್ಲದ. 2. ಗೃಹವಿಲ್ಲದ, ಮನೆಯಿಲ್ಲದ.

ಅಶರೀರ ಅಶರೀರ (ಪುಂ) 1. ಈಶ್ವರ. 2. ಪರಮಾತ್ಮ. 3. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ನಾಸ್ತಿ ಶರೀರಂ ಯಸ್ಯ | "ನಿಜಮೇಕ್ಷಿ ಮಂದಮನಿಷಂ ನಿಶಿತಃ ಕೃಷಿತಂ ಶರೀರಮಶರೀರಶರೀಃ" ಮಾಘಂ 9-61 | 4. ದೇವತೆ. 5. ಶರೀರಾಭಿಮಾನವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದ ಸಂನ್ಯಾಸಿ, ಜೀವನ್ಮುಕ್ತ. (ವಿಂ) 6. ಶರೀರವಿಲ್ಲದ, ದೇಹವಿಲ್ಲದ.

ಅಶರೀರಿನ್ ಅಶರೀರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. 2. ಈಶ್ವರ. 3. ದೇವತೆ. (ವಿಂ) 4. ಶರೀರವಿಲ್ಲದ, ದೇಹವಿಲ್ಲದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (4-1-5) | ಅಶರೀರಿಣಿ ಅಶರೀರಿಣೀ.

ಅಶಮನ್ ಅಶಮನ್ (ನಂ) 1. ದುಃಖ, ಅಸಂತೋಷ. "ಏಕೋಽಭೂತ್ ತದಶಮಂ ಕೃಷ್ಣಾ ವಿಭಾವರೀಂ ಧ್ವಾಂತಮಿವ ಪ್ರಪೇದೇ" ಕಿರಾಂ 3-35 | (ವಿಂ) 2. ಸುಖವಿಲ್ಲದ, ಸಂತೋಷವಿಲ್ಲದ.



ಅಶಾಂತ ಅಶಾಂತ (ವಿಂ) ನೆಮ್ಮದಿಯಿಲ್ಲದ, ಶಾಂತಿಯಿಲ್ಲದ, ಶಮಗುಣವಿಲ್ಲದ. ನ ಶಾಂತಃ। “ನಾಸ್ತಿ ಬುದ್ಧಿರಯುಕ್ತಸ್ಯ ನ ಚಾಯುಕ್ತಸ್ಯ ಭಾವನಾ। ನ ಚಾಭಾವಯತಃ ಶಾಂತಿರಶಾಂತಸ್ಯ ಕೃತಃ ಸುಖಮ್” ಗೀತಾ ೨-೬೬।

ಅಶಾಂತಿ ಅಶಾಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶಾಂತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ಶಮಗುಣವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಶಾಂತಿರಯಸ್ಯ।

ಅಶಾಶ್ವತ ಅಶಾಶ್ವತ (ವಿಂ) ಅಸ್ಥಿರವಾದ, ನಶ್ವರವಾದ, ಅನಿತ್ಯವಾದ. ನ ಶಾಶ್ವತಃ।

ಅಶಾಸ್ತ್ರ ಅಶಾಸ್ತ್ರ (ನಂ) ವೇದಶಾಸ್ತ್ರವಿರುದ್ಧವಾದ ನಾಸ್ತಿಕ ಮತ.

ಅಶಾಸ್ತ್ರೀಯ ಅಶಾಸ್ತ್ರೀಯ (ವಿಂ) ಶಾಸ್ತ್ರವಿರುದ್ಧವಾದ, ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಹೇಳಲ್ಪಡದ, ನಿಸಿದ್ಧವಾದ. ಶಾಸ್ತ್ರ “ಃ” (೪-೨-೧೧೪)। ನಂ ತಂ।

ಅಶಿಕ್ಷಿತ ಅಶಿಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡದ, ಪಳಗಿಸಲ್ಪಡದ ಅನಿ ಕುದುರೆ ಮುಂತಾದುದು.

ಅಶಿತ ಅಶಿತ (ನಂ) 1. ಅನ್ನ. (ವಿಂ) 2. ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಶ (ಭೋಜನೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)।

ಅಶಿತ್ರ ಅಶಿತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಹವ್ಯ, ಚರು, ದೇವತೆಗಳ ನೈವೇದ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಅನ್ನ. ಅಶ್ವ (ವ್ಯಾಪ್ತಿ ಸಂಪಾತೇ ಚ) “ಇತ್ರಃ” (೩ಂ ೪-೧೩೨)।

ಅಶಿಥಿಲ ಅಶಿಥಿಲ (ವಿಂ) 1. ಸಡಿಲವಲ್ಲದ, ಬಿಗಿಯಾದ, ದೃಢವಾದ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 2. ದೃಢವಾಗಿ, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ, ಬಿಗಿಯಾಗಿ. “ಅಶಿಥಿಲಮಪರಾವಸಜ್ಯ ಕಠಃ ದೃಢಪರೀರಬ್ಧ-ಬೃಹಹಿಃಸ್ತನೇನ” ಮಾಘಂ ೭-೧೬।

ಅಶಿರ ಅಶಿರ (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ. 2. ಸೂರ್ಯ. ಅಶ (ಭೋಜನೆ) “ಕಿರಚ್” (೩ಂ ೧-೪೨)। 3. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. “ಅಶಿರೋ ವೀತಿಹೋತ್ರೇ ಸ್ಯಾದ್ರಾಕ್ಷಸೇ ಭಾಸ್ಕರೇ ಪುಮಾನ್” ಖೇದಿಂ। 4. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಾ-ರಾ. 5. ಹೆಂಗಸು.

ಅಶಿರಸ್ ಅಶಿರಸ್ (ಪುಂ) 1. ತಲೆಯಿಲ್ಲದ ದೇಹ, ಮುಂಡ. (ವಿಂ) 2. ತಲೆಯಿಲ್ಲದ. 3. ಅಗ್ರವಿಲ್ಲದ, ತುದಿಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಶಿರೋ ಯಸ್ಯ।

ಅಶಿವ ಅಶಿವ (ನಂ) 1. ಅಮಂಗಳ. (ವಿಂ) 2. ಶುಭವಲ್ಲದ, ಮಂಗಳವಲ್ಲದ. ನ ಶಿವಮ್। “ಅದಭ್ರದರ್ಭ-ವಿಶಿಷ್ಯ ಸ್ಥಲಿಂ ಜಹಾಸಿ ನಿದ್ರಾಮಶಿವಃ ಶಿವಾಸ್ತೇ” ಕಿರಾಂ ೧-೩೮। 3. ಉಗ್ರವಾದ, ಭಯಂಕರವಾದ. ನಾಸ್ತಿ ಶಿವಂ ಯಸ್ಮಾತ್। -ವಾ-ವಾ. ರಾಕ್ಷಸಿ, ಭೂತ.

ಅಶಿಶಿಷಾ ಅಶಿಶಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೋಜನೇಚ್ಛೆ, ಊಟ ಮಾಡುವ ಆವೇಶ. ಅಶಿಶುಮಿಷಾ - ಅಶ (ಭೋಜನೆ) + ಸನ್ “ಅಃ” (೩-೩-೧೦೬)।

ಅಶಿಷ್ಠ ಅಶಿಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಅಸಾಧು, ಅಸಭ್ಯ, ಅನಾಗರಕ. 2. ನಾಸ್ತಿಕ, ವೇದಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ ನಂಬಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು, ಧರ್ಮದೂಷಕ. 3. ಅಶಿಕ್ಷಿತ. 4. ಕಾಮುಕ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿ.

ಅಶಿಷ್ಠ ಅಶಿಷ್ಠ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. (ವಿಂ) 2. ಹೆಚ್ಚು ಊಟಮಾಡುವ. ಅತಿಶಯೇನ ಅಶಿತಾ “ಇಷ್ಠನ್” (೪-೩-೪೪)।

ಅಶಿಷ್ಯ ಅಶಿಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಶಿಷ್ಯನರ್ಹ, ಕಲಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಲ್ಲದ. 2. ಶಿಷ್ಯನಲ್ಲದ. 3. ವಿಧಿಸಲು ಅರ್ಹನಲ್ಲದ.

ಅಶೀತಿ ಅಶೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎಂಭತ್ತು. ಅಷ್ಟೋ ದಶತಃ ಪರಿ-ಮಾಣಮಸ್ಯ “ತಿಃ” ಪ್ರತ್ಯಯಃ ಅಸ್ಯಾದೇಶಶ್ಚ ನಿಪಾತ್ಯತೇ (೪-೧-೪೯)।

ಅಶುಚ್ ಅಶುಚ್ (ವಿಂ) ಶೋಕವಿಲ್ಲದ, ದುಃಖವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಶುಕ್ ಯಸ್ಯ।

ಅಶುಚಿ ಅಶುಚಿ (ಪುಂ) 1. ಕಪ್ಪುಬಣ್ಣ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಅಪವಿತ್ರತೆ, ಮೈಲಿಗೆ. (ವಿಂ) 3. ಅಪವಿತ್ರವಾದ. 4. ಕೊಳಕಾದ. 5. ಕಪ್ಪಾಗಿರುವ.

ಅಶುಢ ಅಶುಢ (ವಿಂ) 1. ಅಪವಿತ್ರವಾದ. 2. ಕೊಳಕಾದ. 3. ತಪ್ಪಾಗಿರುವ, ದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಅಶುಢಿ ಅಶುಢಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಪವಿತ್ರತೆ, ಮೈಲಿಗೆ. 2. ತಪ್ಪು, ದೋಷ. (ವಿಂ) 3. ಅಪವಿತ್ರವಾದ, ಶುದ್ಧವಲ್ಲದ.

ಅಶುಭ ಅಶುಭ (ನಂ) 1. ಅಮಂಗಳ. “ಯಃ ಸರ್ವತ್ರಾನಭಿಸ್ತೇಹಃ ತತ್ತತ್ಪ್ರಾಪ್ಯ ಶುಭಾಶುಭಮ್। ನಾಭಿನಂದತಿ ನ ದ್ವೇಷಿ ತಸ್ಯ ಪ್ರಜ್ಞಾ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಾ” ಗೀತಾ ೨-೪೭। 2. ವಿಪತ್ತು, ತೊಂದರೆ. 3. ದುರ್ದೈವ, ದುರ್ದರ್ಶಿ. ನ ಶುಭಮ್। ವಿರೋಧೇ ನಂ ತಂ। “ಪ್ರಾಯಃ ಶುಭಂ ಚ ವಿಧಾತೃಶುಭಂ ಚ ಜನ್ತೋಃ ಸರ್ವಂಭವಾ ಭಗವತೀ ಭವಿತವ್ಯತೇವ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೬। (ವಿಂ) 4. ಅಮಂಗಳವಾದ. 5. ಅಪವಿತ್ರವಾದ, ಅಶುದ್ಧವಾದ.

ಅಶೂನ್ಯ ಅಶೂನ್ಯ (ವಿಂ) ಖಾಲಿಯಿಲ್ಲದ, ತುಂಬಿರುವ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ. “ಅಕ್ಷಮಕ್ಷಪರಿವರ್ತನೋಚಿತೇ ತಸ್ಯ ನಿನ್ಯತುರಶೂನ್ಯತಾಮುಖೇ” ರಘುಂ ೧೯-೧೩।

ಅಶ್ವತ ಅಶ್ವತ (ವಿಂ) ಬೇಯಿಸಲ್ಪಡದ, ಅಪಕ್ವವಾದ,



ಅಶೋಕ ಅಶೋಷ (ವಿಂ) 1. ಸಮಸ್ತ, ಸಕಲ, ಸಂಪೂರ್ಣ.

“ಜಗತ್ಪ್ರಕಾಶಂ ತದಶೋಷಮಿಜ್ಯಯಾ ಭವದ್ಗುಣಲಕ್ಷಣಮಿತಿ ಮಮೋದಿತಃ”

ರಘುಂ. 3-481. (ಅವ್ಯಂ) -ಷ, ಅಶೋಷಣ, ಅಶೋಷತಃ.

ಅಶೋಷಂ, ಅಶೋಷೇಣ, ಅಶೋಷತಃ. 2. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ.

“ಅಲಂ ವಿವಾದೇನ ಯಥಾ ಶ್ರುತಸ್ತವಯಾ ತಥಾವಿಧಸ್ತಾವದಶೋಷಮಸ್ತು ಸಃ” ಕುಮಾಂ 4-421. “ಯೇನ ಭೂತಾನ್ಯಶೋಷೇಣ ದಕ್ಷಸ್ಯಾತ್ಮನಯೋ ಮಯಿ” ಗೀತಾ 4-35. “ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಏವ ತು ಗೃಹ್ಣೀಯಾತ್ಪಿತ್ರಾಂ ಧನಮಶೋಷತಃ” ಮನುಂ 9-105.

ಅಶೋಕ ಅಶೋಕ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ಮಗಧದೇಶದ

ಸಾರ್ವಭೌಮನಾದ ಅಶೋಕ ಚಕ್ರವರ್ತಿ. 3. ಅಶೋಕ

ವೃಕ್ಷ. [ನೂಪುರ (ಕಾಲುಗಿಜ್ಜೆ) ಸಹಿತವಾದ

ಹೆಂಗಸರ ಪಾದತಾಡನ (ಕಾಲಿನ ಒಡೆತ, ಏಟು) ದಿಂದ

ಅಶೋಕ ವೃಕ್ಷವು ಆ ಕೂಡಲೆ ಚಿಗುರಿ ಪುಷ್ಪಿಸು

ವುದೆಂದು ಕವಿಸಮಯಸಿದ್ಧ.] “ಅಸುತ ಸಹ್ಯಃ ಕುಸುಮಾ-

ನ್ಯಶೋಕಃ ಸ್ಕಂಧಾತ್ಪ್ರಭೃತ್ಯೇವ ಸಪಲ್ಲವಾನಿ. ಪಾದೇನ ನಾಪೇಕ್ಷತ

ಸುಂದರೀಣಾಂ ಸಂಪರ್ಕಮಾಸಿಂಜಿತನುಪುರೇಣ” ಕುಮಾಂ 3-26.

“ನವಕಿಸಲಯರಾಗೇಣಾರ್ಪಾದೇನ ಬಾಲಾ ಸ್ಫುರಿತನಖರೂಪಾ ದ್ವಿ

ಹಂತುಮರ್ಹಂತ್ಯನೇನ. ಅಕುಸುಮಿತಮಶೋಕಂ ದೋಹದಾಪೇಕ್ಷಯಾ ವಾ

ಪ್ರಣಮಿತಶಿರಸಂ ವಾ ಕಾಂತಮಾರ್ಗಪಿರಾಧಮ್” ಮಾಲಂ 3-12.

4. ವಕುಳ ವೃಕ್ಷ, ಪವಳದ ಗಿಡ. (ನಂ) 5. ಪಾದರಸ.

(ವಿಂ) 6. ಶೋಕವಿಲ್ಲದ, ದುಃಖವಿಲ್ಲದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)

-ಕಾ -ಕಾ. 7. ಕಟುಕರೋಹಿಣಿ. “ಅಶೋಕಸ್ತ್ರಿಣಿ

ನಿಃಶೋಕೇ ಪುಂಸಿ ಕಡ್ಕಲಿಪಾದಪೇ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ತು ಕಡುರೋಹಿಣ್ಯಾಂ

ಪಾರದೇ ಸ್ಯಾನ್ಮಪುಂಸಕಮ್” ಮೇದಿಂ. 8. ಚೈತ್ರ ಶುಕ್ಲ ಪಕ್ಷ.

ಅಶೋಕಪೂರ್ಣಿಮಾ ಅಶೋಕಪೂರ್ಣಿಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಫಾಲ್ಗುಣ

ಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ.

ಅಶೋಕರೋಹಿಣಿ ಅಶೋಕರೋಹಿಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಟುಕ

ರೋಹಿಣಿ.

ಅಶೋಕವನಿಕಾ ಅಶೋಕವನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಶೋಕ

ವನ, ಅಶೋಕ ವೃಕ್ಷಗಳ ತೋಪು.

ಅಶೋಚ್ಯ ಅಶೋಚ್ಯ (ವಿಂ) ದುಃಖಿಸಲು ಅಯೋಗ್ಯ.

ನ ಶೋಚ್ಯಃ -ಶುಚ (ಶೋಕೇ) “ಽಪ್ಯತ್” (3-1-124).

“ಅಶೋಚ್ಯಾನನ್ವಶೋಚಸ್ತ್ವಂ ಪ್ರಜ್ಞಾವಾದಾಂಚ ಭಾಷಸೇ” ಗೀತಾ

2-111.

ಅಶೋಧನ ಅಶೋಧನ (ನಂ) 1. ಶುದ್ಧಿಮಾಡದಿರುವಿಕೆ,

ತೋಳಿಯದಿರುವಿಕೆ. 2. ಸಾಲ ತೀರಿಸದಿರುವಿಕೆ.

ಅಶೋಧಿತ ಅಶೋಧಿತ (ವಿಂ) 1. ಶುದ್ಧಿಮಾಡಲ್ಪಡದ,

ತೋಳಿಯಲ್ಪಡದ. 2. ತೀರಿಸಲ್ಪಡದ (ಸಾಲ).

ಅಶೋಷ್ಯ ಅಶೋಷ್ಯ (ವಿಂ) ಒಣಗಿಸಲಾಗದ. ನ ಶೋಷಯಿತು

ಶಕ್ಯಮ್. “ಅಂಶೋಷ್ಯಮದಾಹ್ಯೋಷ್ಯಮಕಲೇಷೋಷೋಷ್ಯ ಏವ ಚ”

ಗೀತಾ 2-24.

ಅಶೌಚ ಅಶೌಚ (ನಂ) 1. ಅಶುಚಿ, ಅಪವಿತ್ರತೆ, ಕೊಳಕು.

2. ಅಶೌಚ, ಸೂತಕ, ಮೈಲಿಗೆ, ಜನನ ಮತ್ತು

ಮರಣಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದ ಅಶುದ್ಧಿ.

ಅಶೌಚಸಂಕರ ಅಶೌಚಸಂಕರ (ಪುಂ) ಜನನ ಮತ್ತು

ಮರಣಾಶೌಚಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಮತ್ತೊಂದು ಅಶೌಚವು

ಬರುವುದು.

ಅಶ್ನೀತಪಿವತಾ ಅಶ್ನೀತಪಿವತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೋಜನಪಾನ

ಗಳು ಯಥೇಚ್ಛವಾಗಿ ನಡೆಯಲೆಂದು ಉಪಚಾರದ

ಮಾತನ್ನು ಹೇಳುವ ಸಮಾರಂಭ. “ಅಶ್ನೀತ ಪಿವತ

ಇತ್ಯುಚ್ಯತೇ ಯಸ್ಯಾಂ ನಿರ್ದೇಶಕ್ರಿಯಾಯಾಮ್”.

“ಅಶ್ನೀತಪಿವತೀ-ಯಂತೀ ಪ್ರಸಿತಾ ಸ್ಮರಕರ್ಮಣಿ” ಭट्टಿಂ 4-92.

ಅಶ್ಮಗರ್ಭ ಅಶ್ಮಗರ್ಭ (ಪುಂ) ಮರಕತಮಣಿ, ಪಚ್ಚಿಕಲ್ಲು.

ಅಶ್ಮಗರ್ಭಜ ಅಶ್ಮಗರ್ಭಜ (ಪುಂ) 1. ಮರಕತಮಣಿ.

2. ಶಿಲೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ ಬೆಂಕಿ, ಚಕಮಕಿ ಕಲ್ಲಿನಿಂದ

ಹೊರಟ ಬೆಂಕಿ.

ಅಶ್ಮಜ ಅಶ್ಮಜ (ನಂ) 1. ಶಿಲಾಜತು. 2. ಕಬ್ಬಿಣ.

ಅಶ್ಮದಾರಣ ಅಶ್ಮದಾರಣ (ಪುಂ) ಕಲ್ಲನ್ನು ಒಡೆಯುವ

ಉಳಿ. ಅಶ್ಮಾನಂ ದಾರಯತಿ - ದ (ವಿದಾರಣೆ) + ಣಿಚ್

“ಲ್ಯುಃ” (3-1-124).

ಅಶ್ಮನ್ ಅಶ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಶಿಲೆ, ಕಲ್ಲು. ಅಶ್ಮನುತೆ - ಅಶ್ಮ

(ವ್ಯಾಪ್ತೌ ಸಂಘಾತೇ ಚ) “ಮನಿನ್” (3-2-94).

“ನಾರಾಚಕ್ಷೇಪಣಿಯಾಶ್ಮನಿಷ್ಠೇಷೋತ್ಪತ್ತಿತಾನಲಮ್” ರಘುಂ 4-99.

2. ಬೆಟ್ಟ, ಪರ್ವತ. 3. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 4. ಮರಕತ,

ಪಚ್ಚಿ. 5. ಬಂಡೆ, ದೊಡ್ಡ ಕಲ್ಲು. 6. ವಜ್ರಾಯುಧ.

(ವಿಂ) 7. ವ್ಯಾಪಿಸುವ, ಹರಡುವ.

ಅಶ್ಮಂತ ಅಶ್ಮಂತ (ನಂ) 1. ಒಲೆ. 2. ಮೈದಾನ,

ಬಯಲು. ಅಶ್ಮಂತೋಪ್ಯಂತೋಽಶ್ಮ. ಶಕಂ. 3. ಮರಣ.

(ವಿಂ) 4. ಅಶುಭವಾದ. 5. ಅವಧಿಯಿಲ್ಲದ, ಎಲ್ಲೆ

ಯಿಲ್ಲದ, ಗಡುವಿಲ್ಲದ. “ಅಶ್ಮಂತಮಶುಮೇ ಚುಲ್ಯಾಂ ಮರಣೋ-

ನವಧಾವಪಿ. ಕ್ಷೇತ್ರೇಽಪಿ” ಮೇದಿಂ.

ಅಶ್ಮಂತಕ ಅಶ್ಮಂತಕ (ಪುಂ) 1. ಕೋವಿ ದಾರವೃಕ್ಷ,

ಕೆಂಗಾಂಚಾಳಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಒಲೆ. 3. ದೀಪದ

ಮೇಲಿನ ಮುಸುಕು, -ಮುಚ್ಚಳ.

ಅಶ್ಮಯೋನಿ ಅಶ್ಮಯೋನಿ (ಪುಂ) ಮರಕತಮಣಿ, ಪಚ್ಚಿ.

ಅಶ್ಮಾ ಯೋನಿರಸ್ಯ.



ಅಸಮರ ಅಶ್ರುರ (ವಿಂ) ಶಿಲೆಯಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ, ಶಿಲಾ ಮಯವಾದ, ಶಿಲಾಸಂಬಂಧವಾದ. ಅಸಮನ್ "ರ:" (೪-೨-೮೦)।

ಅಸಮರೀ ಅಶ್ರುರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂತ್ರರೋಗ, ಕಲ್ಲಿನಂತೆ ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಮಾಂಸಖಂಡವು ಮೂತ್ರದಲ್ಲಿ ಬೀಳುವ ರೋಗ. ಅಸಮಾನಂ ರಾತಿ - ರಾ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩)।

"ಙೀಪ್" (೪-೧-೪೧)। "ಅಸಮರೀ ಮೂತ್ರಕುಕ್ಷಂ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ।

ಅಸಮರೋಽನ ಅಶ್ರುರೀಘ್ನ (ಪುಂ) ವರುಣವೃಕ್ಷ, ವಲಸೆ ಗಿಡ.

ಅಸಮರೀ ಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಟಕ್" (೩-೨-೪೩)।

ಅಸಮಸಾರ ಅಶ್ರುಸಾರ (ಪುಂ) ಕಬ್ಬಿಣ.

ಅಸಮಾಮ್ ಅಶ್ರುಮ್ (ನಂ) ಮೂತ್ರರೋಗ. ಅಸಮಕಾರಕಮ್ ಅಮಂ।

ಅಸಮೋರ ಅಶ್ರುರ (ಪುಂ) ಮೂತ್ರರೋಗ.

ಅಶ್ರು ಅಶ್ರು (ನಂ) ಕಂಬನಿ, ಕಣ್ಣೀರು. ಅಶ್ರುತೇ - ಅಶ್ರು (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ರಕ್" ಬಾಹುಂ। "ಸಖೀಭಿರಶ್ರುತರಮೀಕ್ಷಿತಾ-ಮಿಮಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೬೧।

ಅಶ್ರುಧಾನ ಅಶ್ರುದ್ಧಾನ (ವಿಂ) ನಂಬದಿರುವ, ವಿಶ್ವಾಸ ವಿಡದಿರುವ. ನ ಶ್ರುಧಾನಃ। "ಅಶ್ರುಧಾನಾಃ ಪುರುಷಾಃ ಬರ್ಮಸ್ಯಾಸ್ಯ ಪರಂತಪಃ। ಅಪ್ರಾಪ್ಯ ಮಾಂ ನಿವರ್ತಂತೇ ಮೃತ್ಯುಸಂಸಾರ-ಬರ್ಮಿನಿ" ಗೀತಾ ೯-೩।

ಅಶ್ರುದ್ಧ ಅಶ್ರುದ್ಧ (ವಿಂ) ನಂಬಿಕೆಯಿಲ್ಲದ, ವಿಶ್ವಾಸವಿಲ್ಲದ.

ಅಶ್ರುದ್ಧಾ ಅಶ್ರುದ್ಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಂಬಿಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ವಿಶ್ವಾಸವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ಶ್ರುದ್ಧಾ। ಅಭಾವೇ ನಂ ತಂ। "ಅಶ್ರುದ್ಧಯಾ ಹುತಂ ದತ್ತಂ ತಪಸ್ತಪ್ತಂ ಕೃತಂ ಚ ಯತ್। ಅಸದಿ-ತ್ಯುಚ್ಯತೇ ಪಾಠ್ಯಂ ನ ಚ ತತ್ಪ್ರೇತ್ಯ ನೋ ಇಹ" ಗೀತಾ ೧೭-೨೮। 2. ಅಪನಂಬಿಕೆ. ವಿರೋಧೇ ನಂ ತಂ। 3. ಆಸೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. "ಶ್ರುದ್ಧಾದರೇ ಚ ಕಾಡ್ಕ್ಷಾಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ।

ಅಶ್ರುದ್ಧೇಯ ಅಶ್ರುದ್ಧೇಯ (ವಿಂ) ನಂಬಲನರ್ಹವಾದ, ನಂಬಬಾರದಾದ. ನ ಶ್ರುದ್ಧೇಯಮ್। "ಕಿಮನೇನಾಶ್ರುದ್ಧೇಯವ್ಯಾಘ-ವನಪ್ರತ್ಯಯಮಾತ್ರಪರಿಗೃಹೀತೇನಾಂಡಜೇನ" ಪञ्ಚತಂ।

ಅಶ್ರುಮ್ ಅಶ್ರುಮ್ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರಮವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಆಯಾಸ ವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ಶ್ರಮವಿಲ್ಲದ, ಆಯಾಸ ವಿಲ್ಲದ, ದುಡಿಮೆಯಿಲ್ಲದ.

ಅಶ್ರುವಣ ಅಶ್ರುವಣ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಥಾವು. [ಸರ್ಪಕ್ಕೆ ಕಣ್ಣುಗಳೇ ಕಿವಿ, ಬೇರೆ ಕಿವಿಯಿಲ್ಲ.] (ನಂ) 2. ಕೇಳದಿರುವಿಕೆ, ಕಿವುಡು. ನಂ ತಂ। (ವಿಂ) 3. ಶ್ರೋತ್ರವಿಲ್ಲದ, ಶ್ರವಣೇಂದ್ರಿಯವಿಲ್ಲದ, ಕಿವುಡ. ನ ಶ್ರವಣಂ ಶ್ರವಣೇಂದ್ರಿಯಂ ಯಸ್ಯ।

ಅಶ್ರುವಾಂತ ಅಶ್ರುವಾಂತ (ನಂ) 1. ವಿಶ್ವಾಂತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ವಿಶ್ವಾಂತವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಅಶ್ರು (ತಪಸಿ ಖೇದೇ ಚ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। ನಂ ತಂ। (ವಿಂ) 2. ಶ್ರಮ ಹೊಂದದ, ಬಳಲದ, ದಣಿಯದ, ಆಯಾಸವಿಲ್ಲದ. 3. ವಿಶ್ವಾಂತವಿಲ್ಲದ, ನಿರಂತರವಾದ. "ಅಶ್ರುವಾಂತಸಂತತಿಭಿ-ರಾಭರಣಪ್ರಕಾಶಃ" ಯಾದಂ ೧೯-೩। (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 4. ವಿಶ್ವಾಂತವಿಲ್ಲದೆ, ಬಿಡುವಿಲ್ಲದೆ, ಸತತವಾಗಿ, ನಿರಂತರವಾಗಿ.

ಅಶ್ರು ಅಶ್ರು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮನೆಯ ಒಂದು ಕೋಣ, ಒಂದು ಮೂಲೆ. ಅಶ್ರು (ವ್ಯಾಪ್ತೌ ಸಂಭಾತೇ ಚ) "ಕ್ರಿ:" (೩ಂ ೪-೬೬)। 2. ಕತ್ತಿಯ ಅಲುಗು, ಕತ್ತಿಯ ಅಂಚು (ಧಾರೆ). ಆಶ್ರೀಯತೇ - ಆ+ಶ್ರಿಬ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಇನ್" ಆಡೋ ಹ್ರಸ್ವಶ್ಚ (೩ಂ ೪-೧೩೭)। "ವೃತ್ರಸ್ಯ ಹಂತುಃ ಕುಲಿಶಂ ಕುಣಿತಾಶ್ರೀವ ಲಕ್ಷ್ಯತೇ" ಕುಮಾಂ ೨-೨೦।

ಅಶ್ರುಕ ಅಶ್ರುಕ (ವಿಂ) 1. ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. ನಾಸ್ತಿ ಶ್ರೀಃ ಸಂಪದಸ್ಯ। 2. ಕಾಂತಿಯಿಲ್ಲದ, ಪ್ರಕಾಶವಿಲ್ಲದ, ಶೋಭೆಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಶ್ರೀಃ ಕಾಂತಿರಯಸ್ಯ। "ಅಶ್ರುಕಾಃ ಕಾಶ್ಚಿ-ದಂತದಿಶ ಇವ ದಧಿರೇ ದಾಹಮುದ್ಭ್ರಾಂತಸತ್ತ್ವಾಃ" ಮಾಘಂ ೧೪-೯೬।

ಅಶ್ರು ಅಶ್ರು (ನಂ) ಕಂಬನಿ, ಕಣ್ಣೀರು. ಅಶ್ರುತೇ - ಅಶ್ರು (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಠ್" (೩ಂ ೪-೨೯)। "ರಘುರ್ಮುಷಂ ವಕ್ಷಸಿ ತೇನ ತಾಡಿತಃ ಪಪಾತ ಭೂಮೌ ಸಹ ಸೇನಿಕಾಶ್ರುಭಿಃ" ರಘುಂ ೩-೬೧।

ಅಶ್ರುತ ಅಶ್ರುತ (ವಿಂ) 1. ಕೇಳಲ್ಪಡದ. ನಂ ತಂ। 2. ಶಾಸ್ತ್ರಾಭ್ಯಾಸವಿಲ್ಲದ, ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಶ್ರುತಂ ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನಂ ಯಸ್ಯ।

ಅಶ್ರುತಿ ಅಶ್ರುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಶ್ರವಣ, ಕೇಳದಿರುವಿಕೆ. 2. ವೇದದ ಪ್ರಮಾಣವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 3. ಕಿವಿಯಿಲ್ಲದ, ಶ್ರವಣೇಂದ್ರಿಯವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಶ್ರುತಿಃ ಶ್ರವಣೇಂದ್ರಿಯಂ ಯಸ್ಯ।

ಅಶ್ರುಪಾತ ಅಶ್ರುಪಾತ (ಪುಂ) ಕಣ್ಣೀರು ಸುರಿಸುವುದು, ಅಳುವಿಕೆ.

ಅಶ್ರೇಯಸ್ ಅಶ್ರೇಯಸ್ (ನಂ) 1. ಕೇಡು, ತೊಂದರೆ, ಕಷ್ಟ. ನ ಶ್ರೇಯಃ। (ವಿಂ) 2. ಹೀನವಾದ, ನೀಚವಾದ, ನ ಶ್ರೇಯಾನ್। 3. ಆಯೋಗ್ಯವಾದ.

ಅಸಲೀಲ ಅಸಲೀಲ (ನಂ) 1. ಅಸಭ್ಯವಾದ ಮಾತು, ಅಸಹ್ಯಕರವಾದ ಮಾತು. ಅಸಲೀಲಾತಿ - ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। ರಸ್ಯ ಲತ್ವಂ (ವಾಂ ೮-೨-೧೮)। ನಂ ತಂ। 2. ಗ್ರಾಮ್ಯಭಾಷೆ. 3. ಒಂದು ವಿಧ ಕಾವ್ಯ



अश्वत्थ अश्वत्थ (पुं) 1. अश्वत्थवृक्ष, अरुण मर.  
(वटायपेक्षया) न श्वश्चिरं तिष्ठति — ष्ठा (गति-



ನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ:" (೩-೨-೪)। ಪೃಷ್ಠಂ। "ಅಶ್ವತ್ಥ:  
ಸರ್ವವೃಕ್ಷಾಣಾಂ ದೇವರ್ಷಿಣಾಂ ಚ ನಾರದ:" ಗೀತಾ ೧೦-೨೬।  
2. ನಂದಿಮರ. 3. ಬಸುರಿಮರ. 4. ಸಂಸಾರ  
ವೃಕ್ಷ. "ಋಗ್ವೇದಮೂಲಮಃಶಾಖಮಶ್ವತ್ಥಂ ಪ್ರಾಹುರವ್ಯಯಮ್। ಛಂದಾಸಿ  
ಯಸ್ಯ ಪರ್ಣಾನಿ ಯಸ್ತಂ ವೇದ ಸ ವೇದವಿತ್" ಗೀತಾ ೧೫-೧।  
5. ಅಶ್ವಿನೀ ನಕ್ಷತ್ರ. 6. ಅಶ್ವಿನೀ ನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ಕಾಲ. ಅಶ್ವತ್ಥೇನ ಅಶ್ವಿನಿನಿಕ್ಷತ್ರೇಣ ಯುಕ್ತ: ಕಾಲ:  
"ಅಣ್" (೪-೨-೩)। ತಸ್ಯ ಲುಪ್ (೪-೨-೪)। ಅಶ್ವತ್ಥೋ  
ಮುಹುರತ: ಸಿಂ ಕೌಂ। 7. ಅರಳಿ ಹಣ್ಣು. ಅಶ್ವತ್ಥಸ್ಯ  
ಫಲಮ್।

ಅಶ್ವತ್ಥಕ ಅಶ್ವತ್ಥಕ (ಪುಂ) 1. ಅರಳಿ ಮರ. ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಕನ್"। 2. ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷವು ಫಲಿಸುವ ಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ಕೊಡುವ ಸಾಲ. ಅಶ್ವತ್ಥಸ್ಯ ಫಲಮಶ್ವತ್ಥ:। ತದ್ವುಕ್ತ:  
ಕಾಲೋಪ್ಯಶ್ವತ್ಥ:। ಅಶ್ವತ್ಥೇ ತತ್ಫಲಕಾಲೇ ದೇಯಮೃಗಮ್—  
ಅಶ್ವತ್ಥ "ಕುನ್" (೪-೩-೪೮)।

ಅಶ್ವತ್ಥಕುಣ ಅಶ್ವತ್ಥಕುಣ (ಪುಂ) ಅರಳಿಯ ಹಣ್ಣು  
ಬಿಡುವಕಾಲ. ಅಶ್ವತ್ಥಸ್ಯ ಪಾಕ: "ಕುಣಪ್" (೪-೨-೨೪)।

ಅಶ್ವತ್ಥಾಮನ್ ಅಶ್ವತ್ಥಾಮನ್ (ಪುಂ) ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರ  
ಪುತ್ರ, ಕೃಪಾಚಾರ್ಯರ ತಂಗಿ ಕೃಪೆಯ ಮಗ.  
ಅಶ್ವತ್ಥೇವ ಸ್ಥಾಮ ಬಲಮಸ್ಯ। [ಇವನು ಹುಟ್ಟಿದಕೂಡಲೆ  
ಕುದುರೆಯಂತೆ ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗಿದುದರಿಂದ ಇವನಿಗೆ  
"ಅಶ್ವತ್ಥಾಮ" ನೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು.] "ಸ ಜಾತಮಾತ್ರೋ  
ಽಪ್ಯನದಶ್ವಥೈವೋಚೈಶ್ರವಾ ಹಯ:। ತಚ್ಚತ್ವಾನ್ತಹಿತಂ ಭೂತ-  
ಮನ್ತರೀಕ್ಷಸ್ಯಮಬ್ರವೀತ್। ಅಶ್ವತ್ಥೇವಾಸ್ಯ ಯತ್ ಸ್ಥಾಮ ನದತ:  
ಪ್ರದಿಶೋ ಗತಮ್। ಅಶ್ವತ್ಥಾಮೇವ ಬಾಲೋಪ್ಯಂ ತಸ್ಮಾನ್ನಾಮ್ನಾ  
ಭವಿಷ್ಯತಿ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೪೦-೪೯। [ಅಶ್ವತ್ಥಾಮನು  
ಕೌರವಸೇನೆಯಲ್ಲಿ ಬಹಳ ಪರಾಕ್ರಮಿಯಾದ ಒಬ್ಬ  
ಯೋಧನು. ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರು ಕಾಲವಾದನಂತರ  
ದುರ್ಯೋಧನನ ಎದುರಿಗೆ ಕರ್ಣನಿಗೂ ಕೃಪನಿಗೂ  
ಬಹಳ ಬಿರುಸಾದ ಮಾತುಗಳು ನಡೆದಾಗ, ಇವನು  
ಕರ್ಣನನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲು ಪ್ರಯತ್ನಿಸಲು ಕೃಪ ದುರ್ಯೋ  
ಧನರು ತಡೆಯುವರು. ಮಹಾಭಾರತ ಯುದ್ಧ  
ವೆಲ್ಲಾ ಪೂರ್ತಿಯಾದ ಮೇಲೆ ಕೌರವಪಕ್ಷಪಾತಿಯಾದ  
ಅಶ್ವತ್ಥಾಮನು ಪಾಂಡವರಮೇಲಿನ ದ್ವೇಷದಿಂದ  
ಅವರ ಶಿಬಿರಕ್ಕೆ ಒಂದು ದಿನ ರಾತ್ರಿ ನುಗ್ಗಿ ಐವರು  
ಉಪಪಾಂಡವರನ್ನೂ, ಧೃಷ್ಟದ್ಯುಮ್ಮನನ್ನೂ ಕೊಂದು  
ಬಿಡುವನು. ಮಾರನೆಯ ದಿನ ದ್ರೌಪದಿಯು ಪುತ್ರ  
ಮರಣವಾರ್ತೆಯನ್ನು ಕೇಳಿ ಹೇಗಾದರೂ ಮಾಡಿ

ಅಶ್ವತ್ಥಾಮನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ಶಿರೋರತ್ನವನ್ನು ತಂದು  
ಕೊಟ್ಟು ಸೇಡು ತೀರಿಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕೆಂದು ಹಠಹಿಡಿದಾಗ,  
ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ ಭೀಮಾರ್ಜುನರು ಹೋಗಿ ಆತನ ಶಿರೋರತ್ನ  
ವನ್ನು ಕಸಿದು ತಂದು ಸಮಾಧಾನ ಪಡಿಸುವರು.  
ಅಶ್ವತ್ಥಾಮನು ಉತ್ತರಿಯ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿದ್ದ ಪರೀಕ್ಷಿ  
ತ್ವನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವುದರಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಬಹಳ  
ಪ್ರಯಾಸದಿಂದ ಪರೀಕ್ಷಿತ್ವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವನು. ಇವನು  
ಬಹಳ ಧೈರ್ಯಶಾಲಿ, ಸಾಹಸಿ ಮತ್ತು ಬಹಳ ಶೂರ.  
ಬಹಳ ಕೋಪದ ಪ್ರಕೃತಿಯವನು. ಓಜಸ್ವಿ ಮತ್ತು  
ತೇಜಸ್ವಿಯಾಗಿದ್ದನು.]

ಅಶ್ವತ್ಥಿಕ ಅಶ್ವತ್ಥಿಕ (ವಿಂ) ಅರಳಿ ಹಣ್ಣನ್ನು ತಿಂದು  
ಜೀವಿಸುವ. ಅಶ್ವತ್ಥೇನ ಚರತಿ—"ಛನ್" (೪-೪-೧೦)।

ಅಶ್ವದಂಟಾ ಅಶ್ವದಂಷ್ಟ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೆಗ್ಗಿಲು ಗಡ.

ಅಶ್ವನಾಯ ಅಶ್ವನಾಯ (ಪುಂ) ಅಶ್ವಪಾಲಕ.

ಅಶ್ವಪ ಅಶ್ವಪ (ಪುಂ) ಅಶ್ವಪಾಲಕ. ಅಶ್ವಂ ಪಾತಿ—ಪಾ  
(ರಕ್ಷಣೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩)।

ಅಶ್ವಪತಿ ಅಶ್ವಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಕೇಕಯರಾಜ. 2. ಕುದುರೆಯ  
ಯಜಮಾನ. 3. ಸಾವಿತ್ರಿಯ ತಂದೆ.

ಅಶ್ವಪಣ್ ಅಶ್ವಪಣ್ (ಪುಂ) 1. ರಥ. ಅಶ್ವಾನಾಂ ಪಣಿ ಗಮನಂ  
ಯತ್ರ। 2. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಅಶ್ವಂ ವ್ಯಾಪಿ ಪಣಿ ಯಸ್ಯ।  
ಅಶ್ವಪಾಲ ಅಶ್ವಪಾಲ (ವಿಂ) ಕುದುರೆಯನ್ನು ಕಾಪಾಡು  
ವವನು. ಅಶ್ವಂ ಪಾಲಯತಿ—ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ)+ಣಿಕ್  
"ಅಣ್" (೩-೨-೧)। "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।  
—ಪಾಲಕ:—ಪಾಲಕ:

ಅಶ್ವಪುಚ್ಛಿ ಅಶ್ವಪುಚ್ಛಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡು ಉದ್ದಿನ ಗಡ.  
ಅಶ್ವಮಹಿಷಿಕಾ ಅಶ್ವಮಹಿಷಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುದುರೆ  
ಮತ್ತು ಎಮ್ಮೆಗಳ ವೈರ. ಅಶ್ವಸ್ಯ ಮಹಿಷಸ್ಯ ಚ  
ಸಮಾಹಾರ:। ಅಶ್ವಮಹಿಷಸ್ಯ ವೇರಮ್ "ಕುನ್" (೪-೩-೧೨೪)।  
ಅಶ್ವಮಾರ ಅಶ್ವಮಾರ (ಪುಂ) ಗನ್ನೇರಕೆ ಗಡ. ಅಶ್ವಂ  
ಮಾರಯತಿ—ಮೃಙ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೆ)+ಣಿಕ್ "ಅಣ್" (೩-೨-೧)।  
"ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। —ಮಾರಕ:—ಮಾರಕ:

ಅಶ್ವಮುಖ ಅಶ್ವಮುಖ (ಪುಂ) ಕಿನ್ನರ, ಕುದುರೆಯ  
ಮುಖವುಳ್ಳ ಮತ್ತು ಮನುಷ್ಯಕಾರದ ಕಿಂಪುರುಷ.  
ಅಶ್ವಸ್ಯ ಮುಖಮಿವ ಮುಖಮಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಢಿಷ್"  
(೪-೧-೬೩)। —ಮುಖಿ—ಮುಖಿ:

ಅಶ್ವಮೇಧ ಅಶ್ವಮೇಧ (ಪುಂ) ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗ. ಅಶ್ವ:  
ಪ್ರಧಾನತಯಾ ಮೇಧ್ಯತೇ ಹಿಸ್ಯತೇಷ್ವ—ಮೇಘ (ಹಿಸನೆ) "ಘನ್"  
(೩-೩-೧೨೧)।



ಅಶ್ವಮೇಧೀಯ ಅಶ್ವಮೇಧೀಯ (ಪುಂ) ಅಶ್ವಮೇಧ  
ಯಾಗಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ ಕುದುರೆ. ಅಶ್ವಮೇಧಾಯ ಹಿತ:  
“ಛ” (೪-೧-೪)।

ಅಶ್ವಯುಜ್ ಅಶ್ವಯುಜ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಶ್ವಿನೀ ನಕ್ಷತ್ರ.  
ಅಶ್ವಂ ಯುನಕ್ತಿ—ಯುಜಿರ್ (ಯೋ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೬೧)।  
2. ಅಶ್ವಯುಜ ಮಾಸ. ಅಶ್ವೇನ ಅಶ್ವಾಕಾರತಯಾ ನಕ್ಷತ್ರೇಣ  
ಯುಜ್ಯತೇ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯತ್ರ—ಅಧಿಂ “ಕ್ವಿಪ್”। 3. ಕುದುರೆ  
ಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ರಥ. (ವಿಂ) 4. ಅಶ್ವಿನೀ  
ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅಶ್ವಯುಜಿ ಜಾತ: “ಅಙ್”  
(೪-೩-೧೬)। ವಾ ಲುಕ್। 5. ರಥಕ್ಕೆ ಕುದುರೆಯನ್ನು  
ಕಟ್ಟುವ.

ಅಶ್ವರತ್ನ ಅಶ್ವರತ್ನ (ನಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಕುದುರೆ.  
2. ಉಚ್ಚೈಶ್ರವಸ್ಸು, ಇಂದ್ರನ ಕುದುರೆ. ಅಶ್ವೋ  
ರತ್ನಮಿವ।

ಅಶ್ವರಾಜ ಅಶ್ವರಾಜ (ಪುಂ) ಉಚ್ಚೈಶ್ರವಸ್ಸು, ಇಂದ್ರನ  
ಕುದುರೆ. ಅಶ್ವಾನಾಂ ರಾಜಾ “ಠಕ್” (೪-೪-೯೧)।

ಅಶ್ವವಾರ ಅಶ್ವವಾರ (ಪುಂ) ಕುದುರೆಯ ಸವಾರ. ಅಶ್ವಂ  
ವಾರಯತಿ—ವೃಜ್ (ವರಣೆ)+ಗಿಚ್ “ಅಙ್” (೩-೨-೧)।  
“ಪರಸ್ಪರೋತ್ಪೀಡಿತಜಾನುಭಾಗಾ ದುಃಖೇನ ನಿಶ್ಚಕ್ರಮುರಶ್ವವಾರಾಃ”  
ಮಾಘಂ ೩-೬೬।

ಅಶ್ವವಾಹ ಅಶ್ವವಾಹ (ಪುಂ) ಕುದುರೆಯ ಸವಾರ. ಅಶ್ವಂ  
ವಾಹಯತಿ—ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ)+ಗಿಚ್ “ಅಙ್” (೩-೨-೧)।  
“ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩)। -ವಾಹಕ:-ವಾಹಕಃ. “ಲ್ಯುಃ”  
(೩-೧-೧೩೪)। -ವಾಹನ:-ವಾಹನಃ.

ಅಶ್ವವಿಕ್ರಯಿನ್ ಅಶ್ವವಿಕ್ರಯಿನ್ (ವಿಂ) ಕುದುರೆಯ  
ವ್ಯಾಪಾರಿ, ಕುದುರೆಯ ಮಾರಾಟಗಾರ. ಅಶ್ವಂ ವಿಕ್ರೇತುಂ  
ಶೀಲಮಸ್ಯ “ಗಿಣಿಃ” (೩-೨-೭೮)।

ಅಶ್ವವೇದ್ಯ ಅಶ್ವವೇದ್ಯ (ಪುಂ) ಕುದುರೆಯ ರೋಗಕ್ಕೆ ಚಿಕಿತ್ಸೆ  
ನಡೆಸುವವನು.

ಅಶ್ವಶಾಸ್ತ್ರ ಅಶ್ವಶಾಸ್ತ್ರ (ನಂ) ಕುದುರೆಯ ಶುಭಾಶುಭ  
ಲಕ್ಷಣವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ.

ಅಶ್ವಸಾದ ಅಶ್ವಸಾದ (ಪುಂ) ಕುದುರೆಯ ಸವಾರ.  
ಅಶ್ವಂ ಸಾದಯತಿ—ಪದಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) +ಗಿಚ್ “ಅಙ್”  
(೩-೨-೧)।

ಅಶ್ವಸಾದಿನ್ ಅಶ್ವಸಾದಿನ್ (ಪುಂ) ಕುದುರೆಯ ಸವಾರ.  
ಅಶ್ವೇ ಸೀದತ್ಯವಶ್ಯಮ್—ಪದಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) “ಗಿಣಿಃ”  
(೩-೩-೧೭೦)। “ಪೂರ್ವಂ ಪ್ರಹರ್ತಾ ನ ಜಘಾನ ಭೂಯಃ ಪ್ರತಿ-  
ಪ್ರಹಾರಾಕ್ಷಮಮಶ್ವಸಾದಿ” ರಘುಂ ೭-೪೭।

ಅಶ್ವಾರೋಹ ಅಶ್ವಾರೋಹ (ಪುಂ) ಕುದುರೆಯ ಸವಾರ.  
ಅಶ್ವಮಾರೋಹತಿ—ಆ+ಠಹ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡುಭವಿ ಚ)  
“ಅಙ್” (೩-೨-೧)। “ಅಶ್ವಾರೋಹಾ ಗಜಾರೋಹಪ್ರಾಣಾನ್  
ಪ್ರಾಸೇರಪಾಹರನ್” ಕುಮಾರಂ ೧೬-೨೯। (ಸ್ತ್ರೀಂ)—ಆರೋಹಾ  
—ಆರೋಹಾ. ಅಶ್ವಗಂಧಿ ಗಿಡ.

ಅಶ್ವಿಕ ಅಶ್ವಿಕ (ವಿಂ) ಕುದುರೆಯ ಮೇಲೆ ಕುಳಿತು  
ಸಂಚರಿಸುವವನು. ಅಶ್ವೇನ ಚರತಿ—ಚರ(ಗತಿಮಕ್ಷಣಯೋಃ)  
“ಛನ್” (೪-೪-೧೦)।

ಅಶ್ವಿನ್ ಅಶ್ವಿನ್ (ಪುಂ ದ್ವಿಂ ವಂ) ಅಶ್ವಿನೀ ದೇವತೆಗಳು,  
ದೇವತೆಗಳ ವೈದ್ಯರು. ಪ್ರಶಸ್ತಾ ಅಶ್ವಾಃ ಸಂತ್ಯನಯೋಃ  
“ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪)। ಅಶ್ವಿನೌ।

ಅಶ್ವಿನಿ ಅಶ್ವಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಶ್ವಿನೀ ನಕ್ಷತ್ರ. ಅಶ್ವಃ  
ಅಶ್ವರೂಪಮಸ್ತಯಸ್ಯಾಃ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪)। “ಙೀಪ್”  
(೪-೧-೪)। 2. ಕುದುರೆಯ ರೂಪವನ್ನು ಧರಿಸಿದ  
ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ, ಅಶ್ವಿನೀ ದೇವತೆಗಳ ತಾಯಿ.

ಅಶ್ವಿನೀಕುಮಾರ ಅಶ್ವಿನೀಕುಮಾರ (ಪುಂ ದ್ವಿಂ ವಂ) ಅಶ್ವ  
ರೂಪವನ್ನು ಹೊಂದಿದ ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ ಸಂಜ್ಞಾ  
ದೇವಿಯ (ಅಶ್ವಿನಿಯ) ಕುಮಾರರು.

ಅಶ್ವೀಯ ಅಶ್ವೀಯ (ನಂ) ಅಶ್ವಸಮೂಹ, ಕುದುರೆಗಳ  
ಗುಂಪು. ಅಶ್ವಾನಾಂ ಸಮೂಹಃ “ಛಃ” (೪-೨-೪೮)।  
“ವಧ್ರಿವಿಧ್ರಾಧೌರಿತೇನ ಪ್ರಯಾತಾಮಶ್ವೀಯಾನಾಮುಚ್ಚಕೇಠ್ವಲಂತಃ”  
ಮಾಘಂ ೧೮-೪।

ಅಷಡಕ್ಷಿಣ ಅಷಡಕ್ಷಿಣ (ಪುಂ) ಮೂರನೆಯವನಿಗೆ  
ತಿಳಿಯದಂತೆ ಇಬ್ಬರು ಮಾತ್ರ ಕಲಿತು ಮಾಡುವ  
ಮಂತ್ರಾಲೋಚನೆ. ನ ಸಂತಿ ಷಡಕ್ಷಿಣಿ ಅತ್ರ “ಃ”  
(೪-೪-೭)।

ಅಷಾಢ ಅಷಾಢ (ಪುಂ) 1. ಅಷಾಢ ಮಾಸ. ಅಷಾಢಯಾ  
ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸಿ ಅಷಾಢಾ—ಸಾ ಯತ್ರ ಮಾಸೇ “ಅಙ್”  
(೪-೨-೨೧)। 2. ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಯು ಹಿಡಿಯುವ  
ಪಾಲಾಶದಂಡ, ಮುತ್ತುಗದ ದಂಡ. ಅಷಾಢಿ ಪೂರ್ಣಿಮಾ  
ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ “ಅಙ್” (೪-೧-೧೧೦)। ಪೃಷೋಂ ಹ್ರಸ್ವಃ।

ಅಷಾಢಾ ಅಷಾಢಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂರ್ವಾಷಾಢಾ ಮತ್ತು  
ಉತ್ತರಾಷಾಢಾ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು.

ಅಷ್ಟಕ ಅಷ್ಟಕ (ನಂ) 1. ಎಂಟು ಅಧ್ಯಾಯಗಳನ್ನೊಳ-  
ಗೊಂಡ ಪಾಠನಿ ಸೂತ್ರ. ಅಷ್ಟೌ ಅಧ್ಯಾಯಾಃ ಪರಿಮಾಣ-  
ಮಸ್ಯ “ಕನ್” (೪-೧-೨೨)। 2. ಎಂಟು ಸಂಖ್ಯೆ.  
(ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 3. ಪಾಠನಿ ಸೂತ್ರಗಳನ್ನು ತಿಳಿದವರು  
ಅಥವಾ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವರು. ಅಷ್ಟಕಂ ಪಾಣಿನಿ-



ಸೂತ್ರಂ ವಿदಂತಿ ಅಧೀಯತೇ ವಾ "ಅನ್" (೪-೧-೪೯) ।  
ತಸ್ಯ ಲುಕ್ (೪-೨-೬೪) । 4. ಮುಗ್ಧೇದದ ಒಂದು  
ಭಾಗ. [ಮುಗ್ಧೇದವು ಎಂಟು ಅಷ್ಟಕಗಳಾಗಿ ಭಾಗಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ.] (ವಿಂ) 5. ಎಂಟರಷ್ಟಾದ, ಎಂಟು ಸಂಖ್ಯೆ  
ಯುಳ್ಳ. ಅಷ್ಟೌ ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ "ಕನ್" ।

ಅಷ್ಟಕರ್ಣ ಅಷ್ಟಕರ್ಣ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ.  
ಅಷ್ಟೌ ಕರ್ಣಾ ಅಸ್ಯ ।

ಅಷ್ಟಕಮನ್ ಅಷ್ಟಕಮನ್ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಅಷ್ಟೌ  
ಕರ್ಮಾಪ್ನಿಸ್ಯ । "ಆದಾನೇ ಚ ವಿಸರ್ಗೇ ಚ ತಥಾ ಪ್ರೇಷನಿವೇಧಯೋಃ ।  
ಪञ್ಚಮೇ ಚಾರ್ಥವಚನೇ ವ್ಯವಹಾರಸ್ಯ ಚಕ್ಷಣೇ । ದण्डಶ್ಚೌಃ ಸದಾ  
ರಕ್ತಸ್ತೇನಾಷ್ಟಗತಿಕೋ ನೃಪಃ" । (1) ಆದಾನಮ್ - ಕರಗ್ರಹಣ.  
(2) ವಿಸರ್ಗಃ - ಭೃತ್ಯಾದಿಗಳಿಗೆ ಧನ ಮೊದಲಾದ ದಾನ.  
(3) ಪ್ರೇಷಃ - ಮಾಡಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಮಂತ್ರಿ  
ಗಳನ್ನು ಆಜ್ಞಾಪಿಸುವುದು. (4) ನಿವೇಧಃ - ವಿರುದ್ಧ  
ಕಾರ್ಯಚರಣೆಯನ್ನು ತಡೆಯುವುದು. (5) ಅರ್ಥವಚನಮ್ -  
ಕರ್ತವ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಂದೇಹವೊದಗಿದಾಗ ರಾಜಾಜ್ಞೆ  
ಯಿಂದಲೇ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಡೆಸುವುದು. (6) ವ್ಯವಹಾರೇ-  
ಷಣಮ್ - ಪ್ರಜೆಗಳ ಮುಣಬಾಧೆಯ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ  
ಪರಿಹಾರಚಿಂತೆ. (7) ದಂಡಃ - ಪರಾಜಯಹೊಂದಿದವ  
ರಿಂದ ಶಾಸ್ತ್ರರೀತಿಯಿಂದ ಧನವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವುದು.  
(8) ಶ್ರುದ್ಧಿಃ - ಸಾಪಕಾರ್ಯವನ್ನೆಸಗಿದಾಗ ಅದರ  
ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ. ಈ ರೀತಿ ರಾಜನ ಕಾರ್ಯಗಳು ಎಂಟು.

ಅಷ್ಟಕಾ ಅಷ್ಟಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷ ಮೊದಲು  
ನಾಲ್ಕು ತಿಂಗಳ ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷದ ಸಪ್ತಮಿ, ಅಷ್ಟಮಿ  
ಮತ್ತು ನವಮಿ ತಿಥಿತ್ರಯ. 2. ಈ ಮೂರು ತಿಥಿ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡತಕ್ಕ ಶ್ರಾದ್ಧ. ಅದಂತಿ ಪಿತ್ರಯೇ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಃ  
ಯಸ್ಯಾಂ - ಅಶ (ಭೋಜನ) "ತಕನ್" ಶಕಾರಸ್ಯ ಷತ್ವಷ್ಟತ್ವೇ  
(೩ಂ ೩-೧೪೮) । 3. ಅಷ್ಟಮಿ ತಿಥಿ. "ಅಮಾವಾಸ್ಯಾ  
ಗೃಹ್ಣಂತಿ ಶಿಷ್ಯಂ ಹಂತಿ ಚತುರ್ದಶಿ । ಬ್ರಹ್ಮಾಷ್ಟಕಾಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯೌ  
ತಸ್ಮಾತ್ತಾಃ ಪರಿವರ್ಜಯೇತ್" ಮನುಂ ೪-೧೧೪ ।

ಅಷ್ಟಕಿಕ ಅಷ್ಟಕಿಕ (ವಿಂ) ಅಷ್ಟಕೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ.  
ಅಷ್ಟಕಾಸ್ತಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೪) ।

ಅಷ್ಟಕಿನ್ ಅಷ್ಟಕಿನ್ (ವಿಂ) ಅಷ್ಟಕಾಶ್ರಾದ್ಧವನ್ನು  
ಮಾಡುವವನು. ಅಷ್ಟಕಾ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) ।

ಅಷ್ಟಕಯ ಅಷ್ಟಕಯ (ವಿಂ) ಎಂಟರಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಅಷ್ಟಕೇನ ಕ್ರೀತಮ್ "ಯತ್" (೪-೧-೨) ।

ಅಷ್ಟಗುಣ ಅಷ್ಟಗುಣ (ಪುಂ) 1. ಎಂಟು ಗುಣಗಳಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. (1) ಸರ್ವಭೂತೇಷು ದಯಾ, (2) ಜ್ಞಾಂತಿಃ,

(3) ಅನಸೂಯಾ, (4) ಶೌಚಮ್, (5) ಅನಾಯಾಸಃ, (6) ಮಜ್ಜಲಮ್,  
(7) ಅಕಾರ್ಪಣ್ಯಮ್ ಮತ್ತು (8) ಅಸ್ಪೃಹಾ ಇವು ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ  
ಎಂಟು ಗುಣಗಳು. (ವಿಂ) 2. ಎಂಟರಿಂದ ಗುಣಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಎಂಟರಷ್ಟು ಹೆಚ್ಚಾದ.

ಅಷ್ಟಚತ್ವಾರಿಂಶ ಅಷ್ಟಚತ್ವಾರಿಂಶ (ವಿಂ) ನಲವತ್ತೆಂಟು  
ನೆಯ. ಅಷ್ಟಚತ್ವಾರಿಂಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ "ಛಟ್" (೪-೨-೪೮) ।  
ಅಷ್ಟಚತ್ವಾರಿಂಶತ್ ಅಷ್ಟಚತ್ವಾರಿಂಶತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಲವ  
ತ್ತೆಂಟು. ಅಷ್ಟಾಭಿರಧಿಕಾ ಚತ್ವಾರಿಂಶತ್ ।

ಅಷ್ಟಚತ್ವಾರಿಂಶತ್ತಮ ಅಷ್ಟಚತ್ವಾರಿಂಶತ್ತಮ (ವಿಂ)  
ನಲವತ್ತೆಂಟನೆಯ. ಅಷ್ಟಚತ್ವಾರಿಂಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ ವಾ "ತಮಟ್"  
(೪-೨-೪೬) । ಪಕ್ಷೇ "ಛಟ್" (೪-೨-೪೮) । ಅಷ್ಟಚತ್ವಾ-  
ರಿಂಶಃ - ಚತ್ವಾರಿಂಶಃ ।

ಅಷ್ಟತಯ ಅಷ್ಟತಯ (ನಂ) 1. ಎಂಟು, ಎಂಟು ಭಾಗ  
ಗಳ ಒಂದು ಸಮೂಹ. (ವಿಂ) 2. ಎಂಟು ಭಾಗ  
ಗಳುಳ್ಳ, ಎಂಟು ಅವಯವಗಳುಳ್ಳ, ಎಂಟು ಸಂಖ್ಯೆ  
ಯುಳ್ಳ. ಅಷ್ಟೌ ಅವಯವಾ ಯಸ್ಯ "ತಯಪ್" (೪-೨-೪೨) ।

ಅಷ್ಟತ್ರಿಕ ಅಷ್ಟತ್ರಿಕ (ನಂ) ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು.

ಅಷ್ಟತ್ರಿಶ ಅಷ್ಟತ್ರಿಶ (ವಿಂ) ಮೂವತ್ತೆಂಟನೆಯ  
ಅಷ್ಟತ್ರಿಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ "ಛಟ್" (೪-೨-೪೮) ।

ಅಷ್ಟತ್ರಿಶತ್ ಅಷ್ಟತ್ರಿಶತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂವತ್ತೆಂಟು.  
ಅಷ್ಟದಲ ಅಷ್ಟದಲ (ನಂ) ಅಷ್ಟದಲ ಪದ್ಮ, ಎಂಟು  
ದಲಗಳುಳ್ಳ ಕಮಲ. ಅಷ್ಟೌ ದಲಾನ್ಯಸ್ಯ ।

ಅಷ್ಟದಿಕ್ಕಾರಿಣಿ ಅಷ್ಟದಿಕ್ಕಾರಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ ಬಂ ಬಂ)  
ಎಂಟು ದಿಗ್ಗಜಗಳ ಪತ್ನಿಯರು; ಅಭ್ರಮು, ಕಪಿಲೆ,  
ಪಿಂಗಲೆ, ಅನುಪಮೆ, ತಾಮ್ರಪರ್ಣಿ, ಶುಭ್ರದಂತಿ,  
ಅಂಗನೆ ಮತ್ತು ಅಂಜನಾವತಿ. ಈ ಹೆಣ್ಣುನೆಗಳು  
ದಿಗ್ಗಜಗಳ ಪತ್ನಿಯರು.

ಅಷ್ಟದಿಕ್ಕಾಲ ಅಷ್ಟದಿಕ್ಕಾಲ (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) ಎಂಟು  
ದಿಕ್ಕುಗಳ ಅಧಿಪತಿಗಳು; (1) ಇಂದ್ರ, (2) ಅಗ್ನಿ,  
(3) ಯಮ, (4) ನಿರ್ಮತಿ, (5) ವರುಣ, (6) ವಾಯು,  
(7) ಕುಬೇರ ಮತ್ತು (8) ಈಶ. ಇವರು ಕ್ರಮವಾಗಿ  
ಎಂಟು ದಿಕ್ಕುಗಳ ಅಧಿಪತಿಗಳು.

ಅಷ್ಟದಿಗ್ಗಜ ಅಷ್ಟದಿಗ್ಗಜ (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) ಎಂಟು ದಿಕ್ಕು  
ಗಳಲ್ಲಿರುವ ಆನೆಗಳು; (1) ಐರಾವತ, (2) ಪುಂಡರೀಕ,  
(3) ವಾಮನ, (4) ಕುಮುದ, (5) ಅಂಜನ,  
(6) ಪುಷ್ಪದಂತ, (7) ಸಾರ್ವಭೌಮ ಮತ್ತು  
(8) ಸುಪ್ರತೀಕ. ಇವು ಪೂರ್ವ ಮೊದಲಾದ ಎಂಟು  
ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿರುವ ಆನೆಗಳು.



ಅಷ್ಟದ್ರವ್ಯ ಅಷ್ಟದ್ರವ್ಯ (ನಂ) ಯಾಗಕ್ಕೆ ಬೇಕಾಗುವ ಎಂಟು ದ್ರವ್ಯಗಳು. "ಅಶ್ವತ್ಥೋದುಂಬರಪ್ಲಕ್ಷನೈಘ್ರೋಧಸಮಿಧ-  
ಸ್ತिला: 1. ಸಿದ್ಧಾರ್ಥಪಾಯಸಾಜ್ಯಾನಿ ದ್ರವ್ಯಾಷ್ಟೌ ವಿದುರ್ಬುಧಾ: " 1.

ಅಷ್ಟಧಾ ಅಷ್ಟಧಾ (ಅವ್ಯಂ) ಎಂಟು ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ, ಎಂಟು ವಿಧವಾಗಿ. ಅಷ್ಟನ್ ಪ್ರಕಾರ "ಘ" (೪-೩-೪೨) 1.  
"ಸುರದ್ವಿಪಾನಾಮಿವ ಸಾಮಯೋನಿಭಿನ್ನೋಷ್ಟಧಾ ವಿಪ್ರಸಸಾರ ವಂಶ:"  
ರಘುಂ ೧೬-೩.

ಅಷ್ಟಧಾತು ಅಷ್ಟಧಾತು (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ಸುವರ್ಣ ಮೊದಲಾದ ಎಂಟು ಧಾತುಗಳು. "ಸ್ವರ್ಣಂ ರೂಪ್ಯಂ ಚ ತಾಮ್ರಂ ಚ  
ರಜ್ಜಂ ಯಶದಮೇವ ಚ 1. ಸೀಸಂ ಲೌಹಂ ರಸಶ್ಚೇತಿ ಧಾತವೋಷ್ಟೌ  
ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ: " 1.

ಅಷ್ಟನ್ ಅಷ್ಟನ್ (ತ್ರಿಂ ಬಂ ವಂ) ಎಂಟು. ಅಶ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ)  
"ಕನಿನ್" (೩ಂ ೧-೧೫೫) 1. ಅಷ್ಟ ಅಷ್ಟೌ. ಅಷ್ಟ ಅಷ್ಟೌ.  
ಅಷ್ಟಭಿಃ, ಅಷ್ಟಾಭಿಃ. ಅಷ್ಟಮ್ಯಃ, ಅಷ್ಟಾಮ್ಯಃ. ಅಷ್ಟಮ್ಯಃ,  
ಅಷ್ಟಾಮ್ಯಃ. ಅಷ್ಟಾನಾಮ್. ಅಷ್ಟಸು, ಅಷ್ಟಾಸು. "ನಿನ್ದಾ-  
ಸ್ವಷ್ಟಾಸು ಚಾನ್ಯಾಸು ಸ್ತ್ರಿಯೋ ರಾತ್ರಿಷು ವರ್ಜಯನ್" ಮನುಂ ೩-೫೦ 1.

ಅಷ್ಟಪದ ಅಷ್ಟಪದ (ಪುಂ) 1. ಶರಭ ಮೃಗ. 2. ಜೇಡರ  
ಹುಳು. ಅಷ್ಟೌ ಪದಾನ್ಯಸ್ಯ 1.

ಅಷ್ಟಮ ಅಷ್ಟಮ (ವಿಂ) ಎಂಟನೆಯ. ಅಷ್ಟಾನಾಂ ಪೂರ್ಣ:  
"ಛಡ್" (೪-೨-೪೮) 1. "ಮಡ್" (೪-೨-೪೯) 1. "ಗರ್ಭಾಷ್ಟಮೇಷ್ಟದೇ  
ಕುರ್ವೀತಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯೋಪನಾಯನಮ್" ಮನುಂ ೨-೩೬ 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) 1. ಅಷ್ಟಮೌ ಅಷ್ಟಮಿ.

ಅಷ್ಟಮಜ್ಜಲ ಅಷ್ಟಮಂಗಳ (ನಂ ಬಂ ವಂ) ಮಂಗಳ ವಸ್ತು  
ಗಳು. ಅಷ್ಟೌ ಮಜ್ಜಲಾನಿ 1. "ಲೋಕೇಽಸ್ಮಿನ್ ಮಜ್ಜಲಾನ್ಯಷ್ಟೌ  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ಗೌಹಿತಾಶನ: 1. ಹಿರಣ್ಯಂ ಸರ್ಪಿರಾದಿತ್ಯ ಆಪೋ ರಾಜಾ  
ತಥಾಷ್ಟಮ:" 1. "ಮೃಗರಾಜೋ ವೃಷೋ ನಾಗ: ಕಲಶೋ ವ್ಯಜನಂ  
ತಥಾ 1. ವೈಜಯಂತೀ ತಥಾ ಭೇರೀ ದೀಪ ಇತ್ಯಷ್ಟಮಜ್ಜಲಮ್" 1.

ಅಷ್ಟಮಭಾವ ಅಷ್ಟಮಭಾವ (ಪುಂ) (ಜಾತಕದಲ್ಲಿ) ಜನ್ಮ  
ಲಗ್ನದಿಂದ ಎಂಟನೆಯ ಸ್ಥಾನ, ತನ್ವಾದಿ ದ್ವಾದಶಭಾವ  
ಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ಆಯುಃಸ್ಥಾನ. ಅಷ್ಟಮೌ ಭಾವ: 1.  
"ಅಷ್ಟಮಂ ಚಾಯುಷ: ಸ್ಥಾನಮಷ್ಟಮಾದಷ್ಟಮಂ ಚ ಯತ್ 1. ತಯೋರಪಿ  
ವ್ಯಯಸ್ಥಾನಂ ಮಾರಕಸ್ಥಾನಮುಚ್ಯತೇ" 1.

ಅಷ್ಟಮೌ ಅಷ್ಟಮೌ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾಡ್ಯ ಮೊದಲಾಗಿ (ಪಕ್ಷದ)  
ಎಂಟನೆಯ ತಿಥಿ. ಅಷ್ಟಮ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) 1.

ಅಷ್ಟಮूर्ತಿ ಅಷ್ಟಮೂರ್ತಿ (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. ಅಷ್ಟೌ  
ಮूर्ತಯೋಷ್ಯ 1. ಪೃಥಿವಿ, ಜಲ, ತೇಜಸ್ಸು, ವಾಯು,  
ಅಕಾಶ, ಯಜಮಾನ (ಯಾಗ ಮಾಡುವವನು),  
ಚಂದ್ರ ಮತ್ತು ಸೂರ್ಯ ಈ ಎಂಟು ಈಶ್ವರನ

ಮೂರ್ತಿಗಳು. "ಯಾ ಸೃಷ್ಟಿ: ಸೃಷ್ಟುರಾಥಾ ವಹತಿ ವಿಧಿಹಿತಂ  
ಯಾ ಹವಿರ್ಯಾ ಚ ಹೋತ್ರೀ ಯೇ ದ್ವೇ ಕಾಲಂ ವಿಧತ: ಶ್ರುತಿವಿಷಯಗುಣಾ  
ಯಾ ಸ್ಥಿತಾ ವ್ಯಾಪ್ಯ ವಿಶ್ವಮ್ 1. ಯಾಮಾಹು: ಸರ್ವವಿಜಪ್ರಕೃತಿರೀತಿ  
ಯಯಾ ಪ್ರಾಣಿನ: ಪ್ರಾಣವಂತ: ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾಭಿಃ ಪ್ರಪನ್ನಸ್ತನುಭಿರವತು  
ವಸ್ತಾಭಿರಷ್ಟಾಭಿರೀಶ:" ಶಾಕುಂ ೧-೧ 1. "ಅವೇಹಿ ಮಾ  
ಕಿಕರಮಷ್ಟಮೂರ್ತ: ಕುಮ್ಮೋದರಂ ನಾಮ ನಿಕುಮ್ಮಮಿತ್ರಮ್" ರಘುಂ  
೨-೩೫ 1. ಪೃಥಿವೀ ಮೊದಲಾದ ಮೂರ್ತಿಗಳಿಗೆ ಕ್ರಮ  
ವಾಗಿ ಈ ಹೆಸರುಗಳು: (೧) ಶಬ್: (೨) ಭವ:, (೩) ರುದ್ರ:,  
(೪) ಉಗ್ರ:, (೫) ಭೀಮ:, (೬) ಪಶುಪತಿ:, (೭) ಮಹಾದೇವ:  
ಮತ್ತು (೮) ಇಶಾನ: 1. (ಸ್ತ್ರೀಂ ಬಂ ವಂ) 2. ಈಶ್ವರನ  
ಪೃಥಿವಿ ಮೊದಲಾದ ಎಂಟು ಮೂರ್ತಿಗಳು.

ಅಷ್ಟಮूर्ತಿಧರ ಅಷ್ಟಮೂರ್ತಿಧರ (ಪುಂ) ಶಿವ, ಈಶ್ವರ.  
ಅಷ್ಟಾನಾಂ ಮೂರ್ತಿನಾಂ ಧರ: 1. "ಆಪ್ಲುತ: ಸ ವಿಮಲೈರ್ಜಲೈರಮೂ-  
ದಷ್ಟಮೂರ್ತಿಧರಮೂರ್ತಿರಷ್ಟಮಿ" ಮಾಧಂ ೧೪-೧೮ 1.

ಅಷ್ಟವರ್ಗ ಅಷ್ಟವರ್ಗ (ಪುಂ) 1. (ಜ್ಯೋತಿಷೋಕ್ತವಾದ)  
ಶುಭಾಶುಭಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ರೇಖಾಕಾರವಾದ  
ಒಂದು ಚಕ್ರ. 2. ವರ್ಣ (ಅಕ್ಷರ)ಗಳ ಎಂಟು  
ಗುಂಪು.

- |           |                      |
|-----------|----------------------|
| (೧) ಅವಗಂ: | (ಅಕಾರಾದಿ 15 ವರ್ಣಗಳು) |
| (೨) ಕವಗಂ: | (ಕಕಾರಾದಿ 5 " )       |
| (೩) ಚವಗಂ: | (ಚಕಾರಾದಿ 5 " )       |
| (೪) ಟವಗಂ: | (ಟಕಾರಾದಿ 5 " )       |
| (೫) ತವಗಂ: | (ತಕಾರಾದಿ 5 " )       |
| (೬) ಪವಗಂ: | (ಪಕಾರಾದಿ 5 " )       |
| (೭) ಯವಗಂ: | (ಯಕಾರಾದಿ 4 " )       |
| (೮) ಶವಗಂ: | (ಶಕಾರಾದಿ 4 " )       |

ಅಷ್ಟಾಂಗ ಅಷ್ಟಾಂಗ (ಪುಂ) 1. ಎಂಟು ಅಂಗಗಳುಳ್ಳ  
ಯೋಗ; ಅಷ್ಟೌ ಅಷ್ಟಾನ್ಯಸ್ಯ 1. (೧) ಯಮ, (೨) ನಿಯಮ,  
(೩) ಆಸನ, (೪) ಪ್ರಾಣಾಯಾಮ, (೫) ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರ,  
(೬) ಧ್ಯಾನ, (೭) ಧಾರಣ ಮತ್ತು (೮) ಸಮಾಧಿ  
ಗಳೆಂದು ಯೋಗದ ಅಂಗಗಳು ಎಂಟು. "ಯಮನಿಯಮಾಸನ-  
ಪ್ರಾಣಾಯಾಮಪ್ರತ್ಯಾಹಾರಧಾರಣಾಧ್ಯಾನಸಮಾಧಯೋಷ್ಟಾವಜ್ಞಾನಿ"  
ಪಾಂ ಯಂ ಸೂಂ ೨-೨೯ 1. [ಇವುಗಳ ಲಕ್ಷಣಕ್ಕೆ ಆಯಾ  
ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ಅಷ್ಟಾಂಗಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ  
ನಮಸ್ಕಾರ. "ದೋಮ್ಯಾಂ ಪದ್ಮ್ಯಾಂ ಚ ಜಾನುಗ್ಯಾಮುರಸಾ ಶಿರಸಾ  
ದೃಶಾ 1. ಮನಸಾ ವಚಸಾ ಚೇತಿ ಪ್ರಣಾಮೋಷ್ಟಾಂಗ ಇರಿತ:"  
ವೈದ್ಯನಾಂ ಆಹ್ಲಿಕಂ 1. 3. ಎಂಟು ವಿಧ ಪೂಜಾ ದ್ರವ್ಯ  
ಗಳು. "ಆಪ: ಕ್ಷೀರಂ ಕುಶಾಘ್ರಂ ಚ ದಧಿ ಸರ್ಪಿ: ಸತಪ್ತುಲಮ್ 1.  
ಯವ: ಸಿದ್ಧಾರ್ಥಕಶ್ಚೇವ ಅಷ್ಟಾಂಗೋಽಘ: ಪ್ರಕೀರ್ತಿತ:" 1.



4. ಎಂಟು ಅಂಗಗಳುಳ್ಳ ಆಯುರ್ವೇದ; (1) ಶಲ್ಯ, (2) ಶಾಲಾಕ್ಯ, (3) ಕಾಯಚಿಕಿತ್ಸೆ, (4) ಭೂತವಿದ್ಯೆ, (5) ಕೌಮಾರಭೃತ್ಯ, (6) ಅಗದತಂತ್ರ, (7) ರಸಾಯನ ತಂತ್ರ ಮತ್ತು (8) ವಾಜೀಕರಣ ತಂತ್ರಗಳೆಂದು ಆಯುರ್ವೇದ ಅಂಗಗಳು ಎಂಟು.

ಅಷ್ಟಾಂಗಶಾಸ್ತ್ರ ಅಷ್ಟಾಂಗಧೂಪ(೪೦) ಜ್ವರ ವಾಸಿಯಾಗಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ಧೂಪ; (1) ನೆಗ್ಗಿಲು ಗಿಡ, (2) ಬೇವಿನಸೊಪ್ಪು, (3) ಬಜೆ, (4) ಚಂಗಲು ಕೋಸು, (5) ಅಳಲೆಕಾಯಿ, (6) ಸಾಸುವೆ, (7) ಯವ ಮತ್ತು (8) ತುಪ್ಪ. ಈ ಎಂಟು ವಸ್ತುಗಳ ಧೂಪದ ಸೇವನೆಯಿಂದ ಜ್ವರವು ವಾಸಿಯಾಗುವುದು.

"ಪಲಕ್ಷುಷಾ ನಿಮ್ಬಪತ್ರಂ ವಚಾ ಕೃಷ್ಣ ಹರಿತಕಿ. ಸರ್ಪಪಾ: ಸಯವಾ: ಸರ್ಪಿರ್ಧುಪನಂ ಜ್ವರನಾಶನಮ್" ಚಕ್ರದಂ.

ಅಷ್ಟಾಂಗಮೆತುನ ಅಷ್ಟಾಂಗಮೈಥುನ (ನಂ) ಸ್ತ್ರೀ ಸಂಬಂಧ ವಾದ ಎಂಟು ವಿಧ ಸುಖಾನುಭವ; ಇದು (1) ಸ್ಮರಣಮ್, (2) ಕೀರ್ತನಮ್, (3) ಕೇಲಿ, (4) ಪ್ರೇಕ್ಷಣಮ್, (5) ಗುಹ್ಯ-ಭಾಷಣಮ್, (6) ಸಂಕಲ್ಪ, (7) ಅಧ್ಯವಸಾಯ: ಮತ್ತು (8) ಕ್ರಿಯಾನಿಷ್ಪತ್ತಿ: ಎಂದು ಎಂಟು ವಿಧ.

ಅಷ್ಟಾದಶ ಅಷ್ಟಾದಶ (ವಿಂ) ಹದಿನೆಂಟನೆಯ. ಅಷ್ಟಾದಶಾಂಗಾಂ ಪೂರಣ: - ಅಷ್ಟಾದಶನ್ "ಛತ್" (೪-೨-೪೮)। "ಅಗಾಹಿತಾ-ಷ್ಟಾದಶಾಂಗಾಂ ಜಿಗಿಷಯಾ ನವದ್ವಯದ್ವಿಪೃಥಗ್ಜಯಶ್ರಿಯಾಮ್" ನೈಋ ೧-೪। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛಿಪ್" (೪-೧-೧೪)। -ದಶೀ-ದಶೀ.

ಅಷ್ಟಾದಶಾಂಗಾನ್ಯ ಅಷ್ಟಾದಶಧಾನ್ಯ (ನಂ ೪೦ ೪೦) ಹದಿನೆಂಟು ವಿಧ ಧಾನ್ಯಗಳು; (1) ಯವ, (2) ಗೋಧೂಮ (ಗೋಧಿ), (3) ಬತ್ತ, (4) ತಿಲ (ಎಳ್ಳು), (5) ಕಂಗು (ನವಣೆ), (6) ಕುಳುತ್ಥ (ಹುರುಳಿ), (7) ಮಾಪ (ಉದ್ದು), (8) ಮುದ್ದ (ಹೆಸರು), (9) ಕಾಡುಕಡಲೆ, (10) ನಿಷ್ಪಾವ (ಅವರೆ), (11) ಶ್ಯಾಮಕ (ಸಾವೆ), (12) ಸರ್ಪಪ (ಸಾಸುವೆ), (13) ಕಾಡು ಗೋಧಿ, (14) ತೃಣಧಾನ್ಯ, (15) ತೋಗರಿ, (16) ನೆಲಗಡಲೆ, (17) ಕಡಲೆ ಮತ್ತು (18) ಚೀನಕ (60 ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಫಲ ಕೊಡುವ ಒಂದು ಬತ್ತ). ಇವು ಹದಿನೆಂಟು ವಿಧ ಧಾನ್ಯ ಗಳು. "ಯವಗೋಧೂಮಧಾನ್ಯಾನಿ ತಿಲಾ: ಕಙ್ಗುಕುಲೃತ್ಯಕಾ:। ಮಾಪಾ ಮುದ್ರಾ ಮಸೂರಾಶ್ಚ ನಿಷ್ಪಾವಾ: ಶ್ಯಾಮಸರ್ಪಪಾ:। ಗವೇಧುಕಾಶ್ಚ ನೋವಾರಾ ಆಡಕಯೋಽಥ ಸತೀನಕಾ:। ಚಣಕಾಶ್ಚಿನಕಾಶ್ಚೈವ ಧಾನ್ಯಾನ್ಯಷ್ಟಾದಶೈವ ತು" ಹೇಮಾದ್ರಿಂ ದಾಂ ಸಂ.

ಅಷ್ಟಾದಶನ್ ಅಷ್ಟಾದಶನ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹದಿನೆಂಟು. ಅಷ್ಟಾಂ ಚ ದಶಾ ಚ।

ಅಷ್ಟಾದಶಪುರಾಣ ಅಷ್ಟಾದಶಪುರಾಣ (ನಂ ೪೦ ೪೦) ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಪ್ರಣೀತವಾದ ಹದಿನೆಂಟು ಮಹಾ ಪುರಾಣಗಳು; (1) ಬ್ರಾಹ್ಮಪುರಾಣ, (2) ಪಾದ್ಮ ಪುರಾಣ, (3) ವಿಷ್ಣುಪುರಾಣ, (4) ಶಿವಪುರಾಣ, (5) ಭಾಗವತಪುರಾಣ, (6) ನಾರದಪುರಾಣ, (7) ಮಾರ್ಕಂಡೇಯಪುರಾಣ, (8) ಅಗ್ನಿಪುರಾಣ, (9) ಭವಿಷ್ಯತ್ಪುರಾಣ, (10) ಬ್ರಹ್ಮವೈವರ್ತಪುರಾಣ, (11) ಲಿಂಗಪುರಾಣ, (12) ವರಾಹಪುರಾಣ, (13) ಸ್ಕಾಂದಪುರಾಣ, (14) ವಾಮನಪುರಾಣ, (15) ಕೂರ್ಮಪುರಾಣ, (16) ಮತ್ಸ್ಯಪುರಾಣ, (17) ಗರುಡಪುರಾಣ ಮತ್ತು (18) ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡಪುರಾಣ. ಇವು ಹದಿನೆಂಟು ಪುರಾಣಗಳು. ಈ ಮಹಾಪುರಾಣ ಗಳ ಗ್ರಂಥಪರಿಮಾಣ: [ಒಂದು ಅನುಷ್ಟುಪ್ ಶ್ಲೋಕ ಅಥವಾ 32 ಅಕ್ಷರಗಳಿಗೆ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ.]

| ಗ್ರಂಥಸಂಖ್ಯೆ            |        |
|------------------------|--------|
| (1) ಬ್ರಾಹ್ಮಪುರಾಣ       | 10,000 |
| (2) ಪಾದ್ಮ ,,           | 55,000 |
| (3) ವಿಷ್ಣು ,,          | 23,000 |
| (4) ಶಿವ ,,             | 24,000 |
| (5) ಭಾಗವತ ,,           | 18,000 |
| (6) ನಾರದ ,,            | 25,000 |
| (7) ಮಾರ್ಕಂಡೇಯಪುರಾಣ     | 9,000  |
| (8) ಅಗ್ನಿ ,,           | 15,400 |
| (9) ಭವಿಷ್ಯತ್ ,,        | 14,500 |
| (10) ಬ್ರಹ್ಮವೈವರ್ತಪುರಾಣ | 18,000 |
| (11) ಲಿಂಗ ,,           | 11,000 |
| (12) ವರಾಹ ,,           | 24,000 |
| (13) ಸ್ಕಾಂದ ,,         | 80,100 |
| (14) ವಾಮನ ,,           | 10,000 |
| (15) ಕೂರ್ಮ ,,          | 17,000 |
| (16) ಮತ್ಸ್ಯ ,,         | 14,000 |
| (17) ಗರುಡ ,,           | 980    |
| (18) ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡ ,,      | 12,000 |

ಅಷ್ಟಾದಶವಿಧ್ಯಾ ಅಷ್ಟಾದಶವಿದ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ ೪೦ ೪೦) ವೇದ ಮೊದಲಾದ ಹದಿನೆಂಟು ವಿದ್ಯೆಗಳು; ಮುಕ್, ಯಜುಸ್ಸು, ಸಾಮ ಮತ್ತು ಅಥರ್ವಗಳೆಂಬ ನಾಲ್ಕು (4) ವೇದಗಳು; ಶಿಕ್ಷೆ, ವ್ಯಾಕರಣ, ಛಂದಸ್ಸು, ನಿರುಕ್ತ, ಜ್ಯೋತಿಷ ಮತ್ತು ಕಲ್ಪಗಳೆಂಬ ಆರು (6) ವೇದಾಂಗಗಳು; ಮೀಮಾಂಸೆ, ನ್ಯಾಯ, ಧರ್ಮ



ಶಾಸ್ತ್ರ ಮತ್ತು ಪುರಾಣ ಇವು ನಾಲ್ಕು (4) ಸೇರಿ ಚತುರ್ವಿಧ (14) ವಿದ್ಯೆಗಳು; ಆಯುರ್ವೇದ, ಧನುರ್ವೇದ, ಗಾಂಧರ್ವವೇದ ಮತ್ತು ಅರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರ ಇವೂ ಸೇರಿ ಹದಿನೆಂಟು ವಿದ್ಯೆಗಳು. "ಅಜ್ಞಾನಿ ವೇದಾಶ್ಚಿತ್ತಾರೋ ಮಿಮಾಂಸಾ ನ್ಯಾಯವಿಸ್ತರಃ। ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರಂ ಪುರಾಣಂ ಚ ವಿಶ್ವಾಹಿತಾ-ಶ್ಚತುರ್ವಿಧಃ। ಆಯುರ್ವೇದೋ ಧನುರ್ವೇದೋ ಗಾಂಧರ್ವೇತಿ ತೇ ತ್ರಯಃ। ಅರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರಂ ಚತುರ್ಥಂ ತು ವಿಶ್ವಾಹಿತಾದಶೈವ ತು" ಹೇಮಾದ್ರಿಂ।

ಅಷ್ಟಾದಶವಿವಾದಪದ ಅಷ್ಟಾದಶವಿವಾದಪದ (ನಂ. ೧೦೦೦)

ಹದಿನೆಂಟು ವಿಧ ವ್ಯವಹಾರ ಸ್ಥಾನಗಳು. ಮನುಷ್ಯರಲ್ಲಿ ಉದ್ಭವಿಸಬಹುದಾದ ವ್ಯವಹಾರಗಳಿಗೆ ಕೆಳಗೆ ಕಂಡ 18 ವಿಧವಾದ ಅವಕಾಶವಿರುವುವು; (1) ಋಣಾದಾನ (ಸಾಲ ಕೊಟ್ಟು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು), (2) ನಿಕ್ಷೇಪ (ತನ್ನ ಹಣವನ್ನು ಇತರರಲ್ಲಿ ಕೊಟ್ಟಿಟ್ಟಿರುವುದು), (3) ಅಸ್ವಾಮಿವಿಕ್ರಯ (ಯಜಮಾನನಲ್ಲದವನಿಂದ ನಡೆಯುವ ಆಸ್ತಿಯ ಮಾರಾಟ), (4) ವರ್ತಕರು ಗುಂಪುಕಟ್ಟಿಕೊಂಡು ನಡೆಸುವ ಕಾರ್ಯ, (5) ದಾನ ಮಾಡಿದುದನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡವನು ಅನರ್ಹನೆಂಬ ಕಾರಣದಿಂದಾಗಲಿ, ಕೋಪದಿಂದಾಗಲಿ ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, (6) ಸೇವಕನಿಗೆ ಸಂಬಳ ಕೊಡದಿರುವುದು, (7) ಮಾತಿನಂತೆ ನಡೆಯದಿರುವಿಕೆ, (8) ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಗಳ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ (ಸರಿಯಾಗಿ ನಡೆದಿಲ್ಲವೆಂದು ತಿಳಿದು) ಉಂಟಾಗುವ ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪ, (9) ಯಜಮಾನ ಮತ್ತು ಸೇವಕರ ಜಗಳ, (10) ಜಮೀನು ಗ್ರಾಮ ವಗೈರೆ ಗಡಿ ವಿವಾದ, (11) ಕಠಿಣವಾದ ಮಾತು ಮತ್ತು ಎಟುಗಳಿಂದ ಕ್ರೂರವಾಗಿ ವ್ಯವಹರಿಸುವಿಕೆ, (12) ಕಳ್ಳತನ, (13) ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ ಮಾಡುವ ದರೋಡೆ, (14) ಸ್ತ್ರೀಯರ ಪರವುರುವ ಸಂಬಂಧ, (15) ಸ್ತ್ರೀ ಪುರುಷರ ಧರ್ಮ ವ್ಯವಸ್ಥೆ, (16) ಪಾಲುಗಾರಿಕೆ, (17) ದ್ಯೂತ (ಪಗಡೆ ಯಾಟ ಮೊದಲಾದ ಜೂಜು), ಮತ್ತು (18) ಅಹವ್ಯಯ (ಕೋಳಿ ಟಿಗರು ಮುಂತಾದುವುಗಳ ಕಾಳಗ). ಇವು ಹದಿನೆಂಟು ವಿಧ ವ್ಯವಹಾರಸ್ಥಾನಗಳು. "ತೇಷಾಮಾ-ಮೃಣಾದಾನಂ ನಿಕ್ಷೇಪೋಸ್ವಾಮಿವಿಕ್ರಯಃ। ಸಂಭೂಯ ಚ ಸಮುತ್ಥಾನಂ ದತ್ತಸ್ಯಾನಪಕರ್ಮಂ ಚ। ವೇತನಸ್ಯೇವ ಚಾದಾನಂ ಸಂವಿದಶ್ಚ ವ್ಯತಿಕ್ರಮಃ। ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಾನುಶಯೋ ವಿವಾದಃ ಸ್ವಾಮಿಪಾಲಯೋಃ। ಸೀಮಾವಿವಾದಧರ್ಮಶ್ಚ ಪಾರುಷ್ಯೇ ದಂಡವಾಚಿಕೇ। ಸ್ತೇಯಂ ಚ ಸಾಹಸಂ ಚೈವ ಸ್ತ್ರೀಸಂಗ್ರಹಣಮೇವ ಚ। ಸ್ತ್ರೀಪುಂಧರ್ಮೌ ವಿಭಾಗಶ್ಚ ಶ್ರುತಮಾಹ್ನಯ ಏವ ಚ। ಪದಾನ್ಯಷ್ಟಾದಶೈತಾನಿ ವ್ಯವಹಾರ-ಸ್ಥಿತಾವಿಹ" ಮನುಂ ೮-೪, ೫, ೬, ೭।

ಅಷ್ಟಾದಶಸ್ಮೃತಿಕಾರಿನ್ ಅಷ್ಟಾದಶಸ್ಮೃತಿಕಾರಿನ್ (ಛಂ. ೧೦೦೦) ಹದಿನೆಂಟು ಸ್ಮೃತಿಗಳನ್ನು ಬರೆದ ಮಹರ್ಷಿಗಳು; (1) ವಿಷ್ಣು, (2) ಪರಾಶರ, (3) ದಕ್ಷ, (4) ಸಂವರ್ತ, (5) ವ್ಯಾಸ, (6) ಹಾರೀತ, (7) ಶಾತಾತಪ, (8) ವಸಿಷ್ಠ, (9) ಯಮ, (10) ಅಪಸ್ತಂಬ, (11) ಗೌತಮ, (12) ದೇವಲ, (13) ಶಂಖಲಿಖಿತ, (14) ಭರದ್ವಾಜ, (15) ಉಶನಸ್ಸು, (16) ಅತ್ರಿ, (17) ಶೌನಕ ಮತ್ತು (18) ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕ್ಯ. ಇವರು ಅಷ್ಟಾದಶ ಸ್ಮೃತಿಕಾರರು. "ವಿಷ್ಣುಃ ಪರಾಶರೋ ದಕ್ಷಃ ಸಂವರ್ತವ್ಯಾಸಹಾರಿತಾಃ। ಶಾತಾತಪೋ ವಸಿಷ್ಠಶ್ಚ ಯಮ-ಪಸ್ತಮ್ಬಗೌತಮಾಃ। ದೇವಲಃ ಶಂಖಲಿಖಿತೋ ಭರದ್ವಾಜೋಽ-ಶೌನಕೋ ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕ್ಯಶ್ಚ ದಶಾಷ್ಟೌ ಸ್ಮೃತಿಕಾರಿಣಃ" ಹೇಮಾದ್ರಿಂ।

ಅಷ್ಟಾದಶೋಪಚಾರ ಅಷ್ಟಾದಶೋಪಚಾರ (ಛಂ. ೧೦೦೦)

ಪೂಜಾಸಂಬಂಧವಾದ ಹದಿನೆಂಟು ಉಪಚಾರಗಳು; (1) ಆಸನ, (2) ಸ್ವಾಗತ, (3) ಪಾದ್ಯ, (4) ಅರ್ಘ್ಯ, (5) ಆಚಮನೀಯ, (6) ಸ್ನಾನ, (7) ವಸ್ತ್ರ, (8) ಉಪವೀತ, (9) ಗಂಧ, (10) ಪುಷ್ಪ, (11) ಆಭರಣ, (12) ಧೂಪ, (13) ದೀಪ, (14) ಭೋಜ್ಯ (ನೈವೇದ್ಯ), (15) ತರ್ಪಣ, (16) ಮಾಲ್ಯಾನುಲೇಪನ, (17) ನಮಸ್ಕಾರ ಮತ್ತು (18) ವಿಸರ್ಜನ. ಇವು ಹದಿನೆಂಟು ವಿಧ ಪೂಜೋಪಚಾರಗಳು. ತನ್ತ್ರಸಾಂ।

ಅಷ್ಟಾದಶಾನ್ವಿಕ ಅಷ್ಟಾದಶಾನ್ವಿಕ (ಛಂ. ೧೦೦೦) ಎಂಟು ಮಂದಿ

ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರ ಪ್ರವರ್ತಕರು; (1) ಇಂದ್ರ, (2) ಚಂದ್ರ, (3) ಕಾಶ್ಯಪ, (4) ಆಪಿಶಲಿ, (5) ಶಾಕಟಾಯನ, (6) ಪಾಣಿನಿ, (7) ಅಮರ ಮತ್ತು (8) ಜೈನೇಂದ್ರ. ಇವರು ಎಂಟು ಮಂದಿ ಅದಿಶಾನ್ವಿಕರು. "ಇಂದ್ರಶ್ಚಂದ್ರಃ ಕಾಶ್ಯಪಃಪಿಶಲಿಃ ಶಾಕಟಾಯನಃ। ಪಾಣಿನ್ಯಮರಜೇನೆಂದ್ರಾಃ ಜಯನ್ಯಷ್ಟಾದಿ-ಶಾನ್ವಿಕಾಃ"।

ಅಷ್ಟಾದಶ ಉಪಪದ (ಛಂ. ೧೦೦೦) 1. ಸ್ಪರ್ಶ, ಚಿಹ್ನೆ. ಅಷ್ಟು

ಲೋಹೇಷು ಪದಂ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಸ್ಯ। "ಅಚೇಷ್ಟತಾಷ್ಟಾದಶಭೂಮಿರೇಣುಃ ಪಾದಾಹತೋ ಯತ್ಸದೃಶಂ ಗರಿಷ್ಠಂ" ಮಾಘಂ ೩-೨೮। 2. ಪಗಡೆಯ ಹಾಸು. ಅಷ್ಟು ಅಷ್ಟು ಪದಾನಿ ಪಡ್ತಾವಸ್ಯ। (ಛಂ. 3. ಶರಭವೃಗ. 4. ಮರ್ಕಟ, ಕಪಿ. 5. ಜೇಡರ ಹುಳು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪದಿ -ಪದೀ. 6. ಕಾಡುಮಲ್ಲಿಗೆ. "ಅಷ್ಟಾದಶೋಸ್ತೀ ಕನಕೇ ಶಾರಾಣಾಂ ಫಲಕೇಽಪಿ ಚ। ಅಷ್ಟಾದಶೋ ಚಂದ್ರಮಲ್ಯಾಂ ಶರಭೇ ಮರ್ಕಟೇ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ।



ಅಷ್ಟಾವಿಂಶ ಅಷ್ಟಾವಿಂಶ (ವಿಂ) ಇಪ್ಪತ್ತೆಂಟನೆಯ.  
ಅಷ್ಟಾವಿಂಶತಿ "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೨-೪೯)।

ಅಷ್ಟಾವಿಂಶತಿ ಅಷ್ಟಾವಿಂಶತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಪ್ಪತ್ತೆಂಟು.  
ಅಷ್ಟಾವಿಂಶತಿ: "ಆತ್" (೬-೨-೪೭)।

ಅಷ್ಟಾವಿಂಶತೀತಮ ಅಷ್ಟಾವಿಂಶತೀತಮ (ವಿಂ) ಇಪ್ಪತ್ತೆಂಟು  
ನೆಯ. ಅಷ್ಟಾವಿಂಶತಿ "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮)। "ತಮಟ್" (೪-೨-೪೯)।

ಅಷ್ಟಾವಕ್ರ ಅಷ್ಟಾವಕ್ರ (ಪುಂ) ಕಹೋಡಮಸಿಯ ಮಗ.  
ಅಷ್ಟಮು ಭಾಗೇಶು ವಕ್ರಃ। ಪೃಷ್ಠಂ ದೀರ್ಘಃ। [ಉದ್ದಾಲಕನೆಂಬ  
ಮುನಿಯು ತನ್ನ ಶಿಷ್ಯನಾದ ಕಹೋಡನು ತನಗೆ  
ಮಾಡಿದ ಶುಕ್ರೋಷಗೆ ಮೆಚ್ಚಿ, ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿಸಿ  
ತನ್ನ ಮಗಳನ್ನೂ ಕೊಟ್ಟು ಮದುವೆ ಮಾಡಿದನು.  
ಆಕೆಯು ಗರ್ಭಿಣಿಯಾಗಿರಲು ಉದರದಲ್ಲಿ ಶಿಶುವು  
ಬೆಳೆಯುತ್ತ, ತಂದೆಯು ಅನವರತವೂ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ  
ವೇದಾಧ್ಯಯನದಿಂದ ತಾನೂ ಉದರದಲ್ಲಿದ್ದಾಗಲೇ  
ವೇದವನ್ನು ಕಲಿತುಕೊಂಡಿತು. ಅಹೋರಾತ್ರವೂ  
ವೇದಾಧ್ಯಯನಮಾಡುತ್ತ ಪತ್ನಿಯನ್ನು ಉದಾಸೀನ  
ನಾಗಿ ಕಾಣುತ್ತಿದ್ದ ತನ್ನ ತಂದೆಯು ಒಂದು ದಿನ  
ಶಿಷ್ಯನೊಡನೆ ಕುಳಿತಿದ್ದಾಗ ಶಿಶುವು ಆತನನ್ನು ಕುರಿತು,  
"ತಂದೆಯೇ, ನಿನ್ನ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ನಾನು ಗರ್ಭ  
ದಲ್ಲೇ ಸಾಂಗವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದೆನು. ನೀನು  
ಈ ರೀತಿ ರಾತ್ರಿಕಾಲದಲ್ಲಿಯೂ ವೇದಾಧ್ಯಯನ  
ಮಾಡುತ್ತ ನಮ್ಮ ತಾಯಿಯ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಉದಾಸೀನ  
ನಾಗಿರುವುದು ಯುಕ್ತವಲ್ಲ"ವೆಂದು ನಂದಿಸಲು,  
ತಂದೆಯು ಕೋಪದಿಂದ "ನೀನು ಅಷ್ಟಾವಕ್ರನಾಗು"  
ಎಂದು ಶಪಿಸಿದನು. ಶಿಶುವು ದೇಹದ ಎಂಟು ಭಾಗ  
ಗಳಲ್ಲಿ ವಕ್ರವಾಗಿ ಜನಿಸಿ ಮುಂದೆ "ಅಷ್ಟಾವಕ್ರ  
ಮಹರ್ಷಿ"ಯೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಪಡೆಯಿತು.] "ಽಪಾಲಃ  
ಶಿಷ್ಯಮಧ್ಯೆ ಮಹರ್ಷಿಃ ಸ ತಂ ಕೋಪಾದುರಸ್ಥಂ ಶಪಾಪ। ಯಸ್ಮಾತ್  
ಕುಸೌ ವರ್ತಮಾನೋ ಬ್ರವೀಷಿ ತಸ್ಮಾದ್ವಕ್ರೋ ಭವಿತಾಸ್ಯಷ್ಟಕೃತ್ವಃ"  
ಭಾಂ ವನಂ ೧೩೪-೧೧।

ಅಷ್ಟಿ ಅಷ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬೀಜ, ಕಾಳು. ಅಸ್ಯತೇ ಭೂಮಿ  
ಕ್ಷಿಪ್ಯತೇ-ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೇ) "ಕ್ಲಿನ್" (೩-೩-೧೪)। ಪೃಷ್ಠಂ।  
2. ವ್ಯಾಪ್ತಿ, ಹರಡುವಿಕೆ, ಹಬ್ಬುವಿಕೆ. ಅಕ್ಷು (ವ್ಯಾಪ್ತೌ)  
"ಕ್ಲಿನ್"। 3. ಸುಖಸಾಧನವಾದ ದೇಹ, ಶರೀರ.  
4. ಹದಿನಾರನೆಯ ಛಂದಸ್ಸು. 5. ಹದಿನಾರು ಸಂಖ್ಯೆ.  
6. ಪಗಡೆಯ ದಾಳ.

ಅಷ್ಟಿವತ್ ಅಷ್ಟಿವತ್ (ಪುಂ) ಮಂಡಿ, ತೊಡೆ ಮತ್ತು  
ಮೊಣಕಾಲುಗಳ ಸಂದು. ಅತಿಶಯಿತಮಸ್ಥಿ ಯಸ್ಮಿನ್  
"ಮತುಪ್" ಅಷ್ಟಿಭಾವಶ್ಚ ನಿಪಾಂ (೮-೨-೧೨)। "ಜಾನುರ್ದವಿ-  
ಷ್ಟಿವದಸ್ತ್ರಿಯಾಂ" ಅಮಂ।

ಅಸ - ಭುವಿ (ಅದಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ)।

|           |  |             |             |
|-----------|--|-------------|-------------|
| ಲಟ್—      | ಅಸ್ತಿ                                    | ಸ್ತಃ        | ಸಂತಿ।       |
|           | ಅಸಿ                                      | ಸ್ಥಃ        | ಸ್ಥ।        |
|           | ಅಸ್ಮಿ                                    | ಸ್ವಃ        | ಸ್ಮಃ।       |
| ಲಿಟ್—     | ಬಭೂವ                                     | ಬಭೂವತುಃ     | ಬಭೂವುಃ।     |
|           | ಬಭೂವಿಥ                                   | ಬಭೂವಥುಃ     | ಬಭೂವ।       |
|           | ಬಭೂವ                                     | ಬಭೂವಿವ      | ಬಭೂವಿಮ।     |
| ಲೂಟ್—     | ಭವಿತಾ                                    | ಭವಿತಾರೌ     | ಭವಿತಾರಃ।    |
|           | ಭವಿತಾಸಿ                                  | ಭವಿತಾಸ್ಥಃ   | ಭವಿತಾಸ್ಥ।   |
|           | ಭವಿತಾಸ್ಮಿ                                | ಭವಿತಾಸ್ವಃ   | ಭವಿತಾಸ್ಮಃ।  |
| ಲೃಟ್—     | ಭವಿಷ್ಯತಿ                                 | ಭವಿಷ್ಯತಃ    | ಭವಿಷ್ಯಂತಿ।  |
|           | ಭವಿಷ್ಯಸಿ                                 | ಭವಿಷ್ಯಥಃ    | ಭವಿಷ್ಯಥ।    |
|           | ಭವಿಷ್ಯಾಮಿ                                | ಭವಿಷ್ಯಾವಃ   | ಭವಿಷ್ಯಾಮಃ।  |
| ಲೋಟ್—     | ಅಸ್ತು }<br>ಸ್ತಾತ್ }<br>ಏಧಿ }<br>ಸ್ತಾತ್ } | ಸ್ತಾಮ್      | ಸಂತು।       |
|           | ಅಸಾನಿ                                    | ಅಸಾವ        | ಅಸಾಮ।       |
| ಲಙ್—      | ಆಸೀತ್                                    | ಆಸ್ತಾಮ್     | ಆಸನ್।       |
|           | ಆಸೀಃ                                     | ಆಸ್ತಮ್      | ಆಸ್ತ।       |
|           | ಆಸಮ್                                     | ಆಸ್ವ        | ಆಸ್ಮ।       |
| ವಿಧಿಲಿಙ್— | ಸ್ಯಾತ್                                   | ಸ್ಯಾತಾಮ್    | ಸ್ಯುಃ।      |
|           | ಸ್ಯಾಃ                                    | ಸ್ಯಾತಮ್     | ಸ್ಯಾತ।      |
|           | ಸ್ಯಾಮ್                                   | ಸ್ಯಾವ       | ಸ್ಯಾಮ।      |
| ಆಶೀಲಿಙ್—  | ಭೂಯಾತ್                                   | ಭೂಯಾಸ್ತಾಮ್  | ಭೂಯಾಸುಃ।    |
|           | ಭೂಯಾಃ                                    | ಭೂಯಾಸ್ತಮ್   | ಭೂಯಾಸ್ತ।    |
|           | ಭೂಯಾಸಮ್                                  | ಭೂಯಾಸ್ವ     | ಭೂಯಾಸ್ಮ।    |
| ಲಙ್—      | ಅಭೂತ್                                    | ಅಭೂತಾಮ್     | ಅಭೂವನ್।     |
|           | ಅಭೂಃ                                     | ಅಭೂತಮ್      | ಅಭೂತ।       |
|           | ಅಭೂವಮ್                                   | ಅಭೂವ        | ಅಭೂಮ।       |
| ಲೃಙ್—     | ಅಭವಿಷ್ಯತ್                                | ಅಭವಿಷ್ಯತಾಮ್ | ಅಭವಿಷ್ಯನ್।  |
|           | ಅಭವಿಷ್ಯಃ                                 | ಅಭವಿಷ್ಯತಮ್  | ಅಭವಿಷ್ಯತ।   |
|           | ಅಭವಿಷ್ಯಾಮ್                               | ಅಭವಿಷ್ಯಾವ   | ಅಭವಿಷ್ಯಾಮಃ। |

ಭಾವೇಃ—ಭೂಯತೇ। ಬಭೂವೇ। ಭವಿತಾ। ಭವಿಷ್ಯತೇ।  
ಭೂಯತಾಮ್। ಅಭೂಯತ। ಭೂಯೇತ। ಭವಿಷ್ಯೇತ। ಅಭಾವಿ।  
ಅಭವಿಷ್ಯತ।



|   |              |                 |               |
|---|--------------|-----------------|---------------|
|   | भावयेत्      | भावयेताम्       | भावयेयुः।     |
| आत्म०   | भावयेत       | भावयेयाताम्     | भावयेरन्।     |
| अशीलिङ्-पर०   |              |                 |               |
|   | भाव्यात्     | भाव्यास्ताम्    | भाव्यासुः।    |
|   | भाव्याः      | भाव्यास्तम्     | भाव्यास्त।    |
|   | भाव्यासम्    | भाव्यास्व       | भाव्यास्म।    |
| आत्म०   | भावयिषीष्ट   | भावयिषीयास्ताम् | भावयिषीरन्।   |
|   | भावयिषीष्ठाः | भावयिषीयास्ताम् | भावयिषीध्वम्। |
|   | भावयिषीय     | भावयिषीवहि      | भावयिषीमहि।   |
| लृङ्-पर०  |              |                 |               |
|   | अबीभवत्      | अबीभवताम्       | अबीभवन्।      |
|   | अबीभवः       | अबीभवतम्        | अबीभवत।       |
|   | अबीभवम्      | अबीभवाव         | अबीभवाम।      |
| आत्म०   | अबीभवत       | अबीभवेताम्      | अबीभवन्त।     |
|   | अबीभवथाः     | अबीभवेशाम्      | अबीभवध्वम्।   |
|   | अबीभवे       | अबीभवादहि       | अबीभवामहि।    |
| लृङ्-पर०  |              |                 |               |
|   | अभावयिष्यत्  | अभावयिष्यताम्   | अभावयिष्यन्।  |
| आत्म०   | अभावयिष्यत   | अभावयिष्येताम्  | अभावयिष्यन्त। |
| प्यन्तात् कर्मणिः—१. भाव्यते भाव्येते भाव्यन्ते।                                      |              |                 |               |
| २. भावयाञ्चक्रे, भावयाम्बभूवे, भावयामासे।   |              |                 |               |
| ३. भावयिता, भाविता। ४. भावयिष्यते, भाविष्यते।   |              |                 |               |
| ५. भाव्यताम्। ६. अभाव्यत। ७. भाव्येत।   |              |                 |               |
| ८. भावयिषीष्ट, भाविषीष्ट। ९. अभावि, अमाविष्ठाः,                                       |              |                 |               |
| अभावयिष्ठाः। अमाविषि, अभावयिषि। १०. अभावि-  |              |                 |               |
| ष्यत, अमाविष्येताम्, अमाविष्यन्त। अभावयिष्यत,   |              |                 |               |
| अभावयिष्येताम्, अभावयिष्यन्त।   |              |                 |               |
| <b>कैवलात् कृत्सुः—तव्यः—भवितव्यम्। अनीयर्-भवनी-</b>                                  |              |                 |               |
| <b>यम्। यत्-भव्यम्। भावे क्तः—भूतम्। क्तवतुः—भूतवान्।</b>                             |              |                 |               |
| <b>शतृ-सन् सन्ती सन्तः, सती। ल्युट्-भवनम्। तुमुन्-</b>                                |              |                 |               |
| <b>भवितुम्। क्त्वा-भूत्वा। ल्यप्-संभूय। णमुल्-भावं</b>                                |              |                 |               |
| <b>भावम्। भूत्वाभूत्वा।</b>   |              |                 |               |
| <b>प्यन्तात् कृत्सुः—भावयितव्यः। भावनीयः। भाव्यः।</b>                                 |              |                 |               |
| <b>भाविताः। भावितवान्। भावयन्, भावयन्ती। शानच्-</b>                                   |              |                 |               |
| <b>भावयमानः। भावयिष्यन्, भावयिष्यती, भावयिष्यन्ती।</b>                                |              |                 |               |
| <b>शानच्-भावयिष्यमाणः। भावयितुम्। भावितम्।</b>  |              |                 |               |
| <b>भावनम्। भावयित्वा। परिभाव्य। भावंभावम्।</b>  |              |                 |               |
| <b>भावयित्वाभावयित्वा।</b>  |              |                 |               |
| <b>असंयत ॐ न संयतः (वि०) १. ॐ न संयतः, ॐ न संयतः। २. ॐ न संयतः, ॐ न संयतः। “असंय-</b> |              |                 |               |
| <b>तात्मना योगो दृष्ट्राप इति मे मतिः” गीता ६-३६।</b>                                 |              |                 |               |



**ಅಸಂಯುತ ಅಸಂಯುಕ್ತ** (ವಿಂ) ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರದ, ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿರುವ. ನ ಸಂಯುಕ್ತ:।

**ಅಸಂಯುತ ಅಸಂಯುತ** (ವಿಂ) ಬೆರಸಲ್ಪಡದ, ಮಿಶ್ರ ಮಾಡಲ್ಪಡದ. ಅ+ಸಂ+ಯು (ಮಿಶ್ರಣೇಮಿಶ್ರಣೇ ಚ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಅಸಂಯುತ ಅಸಂಯುತ** (ವಿಂ) ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರದ, ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿರುವ. ನ ಸಂಯುಕ್ತ:।

**ಅಸಂಯುತ ಅಸಂಯುತ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ನರಕ. "ಯೋಹ್ಯಸ್ಯ ಭರ್ಮಾಪಠೇ ಯಶ್ವೇವಾದಿಶತಿ ವ್ರತಮ್। ಸೋಪವೃತಂ ನಾಮ ತಮ: ಸಹ ತೇನೈವ ಗಚ್ಛತಿ" ಮನುಂ ೪-೮೧। (ವಿಂ) 2. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಡದ, ತೆರೆದಿರುವ. ನ ಸಂಯುಕ್ತ:। "ನಾಸಂವೃತಮುಖ: ಕುರ್ಯಾತ್ ಪುತಂ ಪುಮ್ನಾಂ ತಥೈವ ಚ"।

**ಅಸಂಯುತ ಅಸಂಯುತ** (ಪುಂ) 1. ಸಂದೇಹವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಂ ತಂ। (ವಿಂ) 2. ಸಂದೇಹವಿಲ್ಲದ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3. ಸಂದೇಹವಿಲ್ಲದೆ. "ಅಸಂಯುತಂ ಮಹಾಬಾಹೋ ಮನೋ ದುರ್ನಿಗ್ರಹಂ ಚಲಮ್। ಅಮ್ಯಾಸೇನ ತು ಕೌಂತೇಯ ವೈರಾಗ್ಯೇಣ ಚ ಗೃಹ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೧-೩೫। "ಅಸಂಯುತಂ ಕ್ಷತ್ರಪರಿಗ್ರಹಕ್ಷಮಾ" ಶಾಕುಂ ೧-೨೨।

**ಅಸಂಯುತ ಅಸಂಯುತ** (ವಿಂ) ಸೇರಿಕೊಂಡಿಲ್ಲದ, ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿರುವ. ನ ಸಂಯುಕ್ತ:।

**ಅಸಂಯುತ ಅಸಂಯುತ** (ವಿಂ) 1. ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿಲ್ಲದ, ಬೆರಸಿರದ. ನ ಸಂಯುಕ್ತ:। 2. ಆಸ್ತಿಯ ವಿಭಾಗವಾದ ನಂತರ ಮತ್ತೆ ಒಂದೇ ಕುಟುಂಬದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರದ, ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿರುವ.

**ಅಸಂಯುತ ಅಸಂಯುತ** (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಾಕರಣ ಸಂಸ್ಕಾರವಿಲ್ಲದ ಅವಶಬ್ದ. (ವಿಂ) 2. ಸಂಸ್ಕಾರ ಮಾಡಲ್ಪಡದ, ಪರಿಷ್ಕರಿಸಲ್ಪಡದ. 3. ಗರ್ಭಾಧಾನ ಮೊದಲಾದ ಸಂಸ್ಕಾರವಿಲ್ಲದ. 4. ಬೇರೆ ಗುಣ ಹೊಂದಿಸಲ್ಪಡದ.

**ಅಸಂಯುತ ಅಸಂಯುತ** (ವಿಂ) 1. ಪರಿಚಯವಿಲ್ಲದ, ಹೊಸದಾದ. ನ ಸಂಯುಕ್ತ:। "ಪ್ರಸಹ್ಯ ಚೇತ:ಸು ಸಮಾಸಜನ್ತಮಸಂಸ್ತುತಾನಾಮಪಿ ಭಾವಮಾರ್ಗಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೨। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸ್ತುತಿಸಲ್ಪಡದ.

**ಅಸಂಯುತ ಅಸಂಯುತ** (ಅವ್ಯಂ) ಪುನಃ ಪುನಃ, ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ, ಅನೇಕಾವೃತ್ತಿ. ನ ಸಂಯುಕ್ತ:। "ಅಸಂಯುತಗೃಹೀತಬಹುದೇಹಸಂಭವ-ಸ್ತಾದಸೌ ವಿಭಕ್ತನವಗೋಪುರಾಂತರಮ್" ಮಾಘಂ ೧೩-೨೮।

**ಅಸಂಯುತ ಅಸಂಯುತ** (ವಿಂ) 1. ಆಸಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ, ಆಸೆಯಿಲ್ಲದ, ನಿಷ್ಕ್ರುಹನಾದ. ನ ಸಂಯುಕ್ತ:। "ಜುಗೋಪಾತ್ಮಾನಮತ್ರಸ್ತೋ ಭೇಜೇ ಭರ್ಮನಾತುರ:" ರಘುಂ ೧-೨೧। 2. ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿಲ್ಲದ, ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರದ. "ಆಸೀದಿವೃತ್ತ-

ವದನಾ ಚ ವಿಮೋಚಯಂತಿ ಶಾಖಾಸು ವಲ್ಕಲಮಸಕ್ತಮಪಿ ದ್ರುಮಾಣಾಮ್" ಶಾಕುಂ ೨-೧೨। 3. ವ್ಯಸನಿಯಲ್ಲದ, ತತ್ಪರನಲ್ಲದ, ಫಲಾಭಿಲಾಷಿಯಲ್ಲದ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 4. ವ್ಯಸನಿಯಲ್ಲದೆ, ನಿಮಗ್ನನಾಗದೆ, ಫಲಾಭಿಲಾಷೆಯಿಲ್ಲದೆ. "ಅಸಂಯುತಮಾರಾಧಯತೋ ಯಥಾಯಥಂ ವಿಭಜ್ಯ ಭಕ್ತಯಾ ಸಮಪಕ್ಷಪಾತಯಾ" ಕಿರಾಂ ೧-೧೧। 5. ಪ್ರತಿಬಂಧಕವಿಲ್ಲದೆ, ಅಡ್ಡಿಯಿಲ್ಲದೆ, ತಡೆಯಿಲ್ಲದೆ. "ಅಸಂಯುತಮುಖಾಸಿ ಪಯ: ಕ್ಷರಂತ್ಯಮೂರ್ಘಾಯನಾನಿವ ನಯಂತಿ ಧೇನವ:" ಕಿರಾಂ ೪-೩೧।

**ಅಸಂಯುತ ಅಸಂಯುತ** (ವಿಂ) ಸ್ಥಿರಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. ಸಂಯುಕ್ತ-ಕಸ (ಗತೌ) "ಉಕ್ತಂ" (ಉಂ ೨-೨೯)। ನಂ ತಂ।

**ಅಸಂಯುತ ಅಸಂಯುತ** (ವಿಂ) ಎಣಿಸಲಾಗದ, ಲೆಕ್ಕವಿಲ್ಲದ, ಎಣಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಸಂಖ್ಯಾ ಯಸ್ಯ। "ಅಸಂಖ್ಯೇಶ್ವರದ್ವುತ-ಸ್ತುತ್ಯಾ: ಕ್ರಮ್ಯೇ ರಾಕ್ಷಸಪರ್ವತ:" ಯಾದಂ ೧-೩೯।

**ಅಸಂಯುತ ಅಸಂಯುತ** (ವಿಂ) ಲೆಕ್ಕವಿಲ್ಲದ, ಎಣಿಕೆಯಿಲ್ಲದ, ಹೇರಳವಾದ. ನ ಸಂಖ್ಯಾ:। "ಅಸಂಖ್ಯಾತಾ-ಸ್ತ್ರೋಧವಿಣಿಮದಮತ್ತಸ್ಯ ಚ ರಿಪೋ:" ವೇಣೀಂ ೩-೨೨।

**ಅಸಂಯುತ ಅಸಂಯುತ** (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ನ ಸಂಖ್ಯಾ: ಶಕ್ಯ:। [ಎಣಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ ಮಹಿಮಾಶಯ ವುಳ್ಳವನು.] "ಅಸಂಖ್ಯೇಶ್ವರೋಪಮೇಯಾತ್ಮಾ" ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 2. ಎಣಿಸಲಾಗದ, ಲೆಕ್ಕವಿಲ್ಲದ. 3. ಸಾಮಾನ್ಯ ಜನರಿಂದ ತಿಳಿಯಲಾಗದ.

**ಅಸಂಯುತ ಅಸಂಯುತ** (ಪುಂ) 1. ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಂ ತಂ। "ಅಹಿಸಯೇಂದ್ರಿಯಾಸಂಯುತವೇದಿಕೇಶ್ವೇವ ಕರ್ಮಭಿ:" ಮನುಂ ೬-೭೫। 2. (ಸಾಂಖ್ಯಮತದಲ್ಲಿ) ಪುರುಷ. (ವಿಂ) 3. ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ. 4. ಅಡ್ಡಿಯಿಲ್ಲದ, ಪ್ರತಿಬಂಧಕವಿಲ್ಲದ, ತಡೆಯಿಲ್ಲದ. "ಅಸಂಯುತಮದ್ವಿವಿಪಿ ಸಾರವತ್ತಯಾ ನ ಮೇ ತ್ವದನ್ಯೇನ ವಿಸೌಡಮಾಯುಧಮ್" ರಘುಂ ೩-೬೩।

**ಅಸಂಯುತ ಅಸಂಯುತ** (ವಿಂ) 1. ಅಯುಕ್ತವಾದ, ಅಸಭ್ಯವಾದ, ಅಕ್ರಮವಾದ. 2. ವಿರುದ್ಧವಾದ, ಹೊಂದಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. 3. ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರಸಂಗ ಮೊದಲಾದ ಆರು ವಿಧವಾದ ಸಂಗತಿಯಿಲ್ಲದ.

**ಅಸಂಯುತ ಅಸಂಯುತ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಸಂಬಂಧತೆ, ಅಬದ್ಧ. 2. ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ಅಸಂಗತಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರ; ಕಾರ್ಯಕಾರಣಗಳಿಗೆ ವಿರುದ್ಧವಾದ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಸ್ಥಳಗಳ ವರ್ಣನೆಯು "ಅಸಂಯುತ" ಅಲಂಕಾರವು. "ವಿರುದ್ಧಂ ಭಿನ್ನದೇಶತ್ವಂ ಕಾರ್ಯಹೇತೋರಸಂಯುತ:। ವಿಷಂ ಜಲಧರೈ: ಪೀತಂ ಮುಚ್ಛಿತಾ: ಪಥಿಕಾಙ್ಗನಾ:" ಚಂದ್ರಾಂ।



ಅಸತ್ ಅಸತ್ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. (ನಂ) 2. ಅಸತ್ತು, ಅಭಾವ, ಅವ್ಯಕ್ತತೆ. 3. ಅಸತ್ಯ, ಸುಳ್ಳು. (ವಿಂ) 4. ದೇಶಕಾಲಗಳ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ. ಶಶಶ್ಚಕ್ರಮ್ ಗಗನಾರವಿಂದಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ. 5. ಕಾರ್ಯರೂಪಕ್ಕೆ ಬರದೆ ಅವ್ಯಾಕೃತವಾದ. "ಅಸದ್ವಾ ಇದಮಗ್ರ ಆಸೀತ್" ತೇಂ ೩೦. 6. ಈಗ ಇಲ್ಲದ, ಅತಿೇತವಾದ, ಅನಾಗತವಾದ. "ತಪಾಮ್ಯಹಮಹಂ ವರ್ಷಂ ನಿಗೃಹ್ಣಾಮ್ಯುತ್ಸುಜಾಮಿ ಚ | ಅಮೃತಂ ಚೈವ ಮೃತ್ಯುಶ್ಚ ಸದಸಃಪ್ಚಾಹಮರ್ಜುನ" ಗೀತಾ ೧-೧೯. 7. ಒಳ್ಳೆಯದಲ್ಲದ, ಕೆಟ್ಟದಾದ. "ತಂ ಸಂತಃ ಶ್ರೋತುಮರ್ಹಂತಿ ಸದಸದ್ವ್ಯಕ್ತಿಹೇತವಃ" ರಘುಂ ೧-೧೦. 8. ಕೆಟ್ಟನಡತೆಯುಳ್ಳ, ದುರಾಚಾರವುಳ್ಳ. 9. ಶ್ರದ್ಧೆಯಿಲ್ಲದೆ ಮಾಡುವ (ಕಾರ್ಯ). "ಅಶ್ವದ್ವಯಾ ಹುತಂ ದತ್ತಂ ತಪಸ್ತಾಪ್ತಂ ಕೃತಂ ಚ ಯತ್ | ಅಸದಿತ್ಯುಚ್ಯತೇ ಪಾಠ್ಯಂ ನ ಚ ತತ್ಪ್ರೇತಯ ನೋ ಇಹ" ಗೀತಾ ೧೭-೨೮. 10. ಇಲ್ಲದ, ಸುಳ್ಳಾದ, ನಿಜವಲ್ಲದ. "ಆತ್ಮನೋ ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಭೇದಮಸಂತಂ ಕಃ ಕರಿಷ್ಯತಿ" ಸಂಕ್ಷೇಪ-ಶಾರೀರಕಮ್. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತೀ-ತೀ. ಸ್ವೈರಿಣಿ, ಕುಲಟಿ, ಜಾರಸ್ತ್ರಿ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ.

ಅಸತ್ತಾ ಅಸತ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಸತ್ಯ, ಮಿಥ್ಯೆ, ಸುಳ್ಳು. 2. ಕೆಟ್ಟತನ, ದುರುಳತನ. 3. ಅಸತ್ತು, ಅಭಾವ, ಅವ್ಯಕ್ತತೆ. ಅಸತ್ತಿ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) |

ಅಸತ್ವ ಅಸತ್ವ (ನಂ) 1. ಅಸತ್ಯ, ಮಿಥ್ಯೆ, ಸುಳ್ಳು. 2. ಕೆಟ್ಟತನ, ದುರುಳತನ. 3. ಅವ್ಯಕ್ತತೆ, ಕಾರಣಾ ವಸ್ತಿ, ಅಭಾವ. 4. ರಜೋಗುಣ. 5. ತಮೋಗುಣ. (ವಿಂ) 6. ಬಲವಿಲ್ಲದ, ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಸತ್ವಂ ಬಲಂ ಯಸ್ಯ | 7. ಸತ್ತ್ವಗುಣವಿಲ್ಲದ. ನ ಸತ್ವಂ ಸತ್ವಗುಣೋ ಯಸ್ಯ | 8. ಪ್ರಾಣಿಗಳಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಸತ್ತ್ವಾನಿ ಪ್ರಾಣಿನೋ ಯತ್ರ |

ಅಸತ್ಯ ಅಸತ್ಯ (ನಂ) 1. ಮಿಥ್ಯೆ, ಸುಳ್ಳು. (ವಿಂ) 2. ಸುಳ್ಳಾದ. 3. ಕಾಲ್ಪನಿಕ, ನಿಜವಲ್ಲದ. "ಅಸತ್ಯ-ಕಂಠಾರ್ಪಿತಬಾಹುಬಂಧನಾ" ಕುಮಾಂ ೪-೪೭ |

ಅಸದಾಗಮ ಅಸದಾಗಮ (ಪುಂ) 1. ಅಸತ್ಯಾಪ್ತ, ನಾಸ್ತಿ ಕ ಮತ, ವೇದವನ್ನು ನಂಬದ ಮತ. ಅಸಂಶ್ಚಾಸಾ ವಾಗಮಶ್ಚ | 2. ಅನ್ಯಾಯವಾದ ದ್ರವ್ಯಸಂಪಾದನೆ. 3. ಅಕ್ರಮ ವಾದ ವಸ್ತುಪ್ರಾಪ್ತಿ. ಅಸದ ಆಗಮಃ |

ಅಸದಾಚಾರ ಅಸದಾಚಾರ (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟನಡತೆ. ಅಸಂಶ್ಚಾಸಾ ವಾಚಾರಶ್ಚ | (ವಿಂ) 2. ಕೆಟ್ಟನಡತೆಯುಳ್ಳ. ಅಸನ್ ಆಚಾರೋ ಯಸ್ಯ |

ಅಸದೃಶ ಅಸದೃಶ (ವಿಂ) 1. ಅಸಮಾನ, ಸರ್ವೋತ್ಕೃಷ್ಟ ವಾದ. 2. ಅನನುರೂಪವಾದ, ಹೊಂದಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. 3. ಅಯೋಗ್ಯವಾದ, ಅಕ್ರಮವಾದ.

ಅಸದ್ಗ್ರಹ ಅಸದ್ಗ್ರಹ (ಪುಂ) 1. ಭ್ರಾಂತಿಜ್ಞಾನ, ಮಿಥ್ಯಾ ಜ್ಞಾನ. 2. ಮಕ್ಕಳ ಮೋಡುತನ, ಇಲ್ಲದಿರುವುದನ್ನು ಕೇಳುವ ಹಟ. ಅಸತಿ ಅವಿಧಮಾನೇ ಮಿಥ್ಯಾಭೂತೇ ವಸ್ತುನಿ ಗ್ರಹಃ ಆಗ್ರಹಃ |

ಅಸದ್ವೇತು ಅಸದ್ವೇತು (ಪುಂ) ದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕಾರಣ. "ಭೂಮವಾನ್ ವಹ್ನಿಃ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ವಹ್ನಿಯು ಧೂಮಸಾಧನ ವಾಗಿ (ಹೇತುವಾಗಿ) ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. ಕಾಯಿಸಿದ ಕಬ್ಬಿಣದ ತುಂಡಿನಲ್ಲಿ ಹೊಗೆ (ಧೂಮ) ಯಿಲ್ಲದೆ ಅಗ್ನಿ ಯಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಕಾರಣವು ವ್ಯಭಿಚಾರಿತವಾಗಿದೆ. (ದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದೆ.)

ಅಸದ್ಭಾವ ಅಸದ್ಭಾವ (ಪುಂ) 1. ವಿರುದ್ಧಾಭಿಪ್ರಾಯ. 2. ಅಭಾವ, ಇಲ್ಲದಿರುವುದು.

ಅಸದ್ವೃತ್ತಿ ಅಸದ್ವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದುರಾಚಾರ, ಕೆಟ್ಟ ನಡವಳಿಕೆ. ಅಸತ್ತಿ ವೃತ್ತಿಃ | (ವಿಂ) 2. ದುರಾಚಾರ ವುಳ್ಳ, ಕೆಟ್ಟನಡತೆಯುಳ್ಳ. ಅಸತ್ತಿ ವೃತ್ತಿಃ ಯಸ್ಯ |

ಅಸದ್ವ್ಯವಹಾರ ಅಸದ್ವ್ಯವಹಾರ (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಅಭ್ಯಾಸ, ಕೆಟ್ಟ ಚಾಳಿ, ಕೆಟ್ಟ ನಡವಳಿಕೆ. 2. ಕೆಟ್ಟನಡತೆ ಯುಳ್ಳವರೊಡನೆ ವ್ಯವಹಾರ. (ವಿಂ) 3. ಕೆಟ್ಟನಡತೆ ಯುಳ್ಳ.

ಅಸನ ಅಸನ (ಪುಂ) 1. ಹೊನ್ನೆ ಮರ. ಅಸ್ಯತಿ ರಜಮ್ - ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) | (ನಂ) 2. ಎಸೆಯುವುದು, ಬಿಸಾಡುವುದು. ಅಸು "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) |

ಅಸಂತುಷ್ಟ ಅಸಂತುಷ್ಟ (ವಿಂ) ಸಂತೋಷಹೊಂದದ, ತೃಪ್ತಿಸಿರದ. ನಂ ತಂ | "ಅಸಂತುಷ್ಟೋ ದ್ವಿಜೋ ನಷ್ಟಃ ಸಂತುಷ್ಟಶ್ಚ ಮಹೋಪತಿಃ" |

ಅಸಂತೋಷ ಅಸಂತೋಷ (ಪುಂ) 1. ಅತ್ಯಸ್ತಿ, ಸಂತೋಷ ವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಂ ತಂ | (ವಿಂ) 2. ಸಂತೋಷವಿಲ್ಲದ, ತೃಪ್ತಿಯಿಲ್ಲದ. ನ ಸಂತೋಷೋ ಯಸ್ಯ |

ಅಸನ್ನದ್ಧ ಅಸನ್ನದ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಕೊಬ್ಬಿದ, ಗರ್ವಗೊಂಡ, ಸ್ವಾಭಿಮಾನವುಳ್ಳ, ಅಹಂಕಾರವುಳ್ಳ, ತಾನೇ ಸರ್ವಜ್ಞ ನೆಂದು ತಿಳಿದಿರುವ. 2. ಕವಚ ತೊಟ್ಟು ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಸಿದ್ಧನಾಗಿಲ್ಲದ. ನ ಸನ್ನದ್ಧಃ |

ಅಸನ್ನಿಕರ್ಷ ಅಸನ್ನಿಕರ್ಷ (ಪುಂ) 1. ದೂರ, ಸಮೀಪ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ದೂರದಲ್ಲಿರುವ, ಸಮೀಪ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ. 3. ವಿಷಯಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ ಸಂಯೋಗ ಮೊದಲಾದ ಆರು ವಿಧ ಸಂಬಂಧ ವಿಲ್ಲದ.



**ಅಸನ್ನಿಹಿತ** ಅಸನ್ನಿಹಿತ (ವಿಂ) 1. ದೂರದಲ್ಲಿರುವ.

2. ವಿಷಯಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ ಸಂಯೋಗ ಮೊದಲಾದ ಆರು ವಿಧ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ. ನ ಸನ್ನಿಹಿತಃ।

**ಅಸನ್ನಿಧಿ** ಅಸನ್ನಿಧಿ (ಪುಂ) 1. ದೂರ. (ವಿಂ) 2. ದೂರದಲ್ಲಿರುವ.

**ಅಸನ್ನಿಹಿತ** ಅಸನ್ನಿಹಿತ (ವಿಂ) ದೂರದಲ್ಲಿರುವ, ಸಮಾಪದಲ್ಲಿಲ್ಲದ.

**ಅಸಪ್ತ** ಅಸಪ್ತ (ಪುಂ) 1. ಮಿತ್ರ, ಸುಹೃತ್ತು, ಸ್ನೇಹಿತ. ನಂ ತಂ। (ವಿಂ) 2. ಶತ್ರುವಿಲ್ಲದ, ವೈರಿಯಿಲ್ಲದ.

"ಅಪ್ಯಾ ಭೂವಸಪ್ತಮೃದ್ಧಮ್" ಗೀತಾ ೨-೮।

**ಅಸಪಿಂಡ** ಅಸಪಿಂಡ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಂಶದಲ್ಲಿ ಏಳು ತಲೆಯ ನಂತರ ಹುಟ್ಟಿದವನು, ರಕ್ತಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದವನು. [ಒಂದು ವಂಶದಲ್ಲಿ ಏಳು ತಲೆಯವರೆಗೂ ಹುಟ್ಟುವ ಜ್ಞಾತಿಗಳು ಸಪಿಂಡರು ಮತ್ತು ರಕ್ತಸಂಬಂಧವುಳ್ಳವರು. ಮುಂದಿನ ತಲೆಯವರು ಸಮಾಸೋದಕರು.] "ಸಪಿಂಡತಾ ತು ಪುಣ್ಯ ಸಪ್ತಮೇ ವಿವಿವರ್ತತೇ" ಜನುಂ ೪-೬೦।

**ಅಸಭ್ಯ** ಅಸಭ್ಯ (ವಿಂ) ಸಭೆಗೆ ಯೋಗ್ಯನಲ್ಲದವನು, ನೀಚ, ಅಯೋಗ್ಯ. ಸಭಾಃ ಸಾಧುಃ "ಯಃ" (೪-೪-೧೦೪)। ನಂ ತಂ।

**ಅಸಮ** ಅಸಮ (ವಿಂ) 1. ಸಮಾನವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಸಮೋ ಯಸ್ಯ। 2. ಸಮಾನವಲ್ಲದ. ನ ಸಮಃ। "ಸಮವತಾರಸಮೇ-ರಸಮೇಸ್ತರೇಃ" ಕಿರಾಂ ೪-೭। 3. ಸಮವಲ್ಲದ, ಬೆಸನಾದ (ಸಂಖ್ಯೆ) 1, 3, 5, 7, 9 ಇತ್ಯಾದಿ. 4. ಸಮವಲ್ಲದ, ಹೆಚ್ಚಿಟ್ಟಾದ (ನೆಲ). 5. ವಿಷಮವಾದ, ಇಕ್ಕಟ್ಟಾದ.

**ಅಸಮಗ್ರ** ಅಸಮಗ್ರ (ವಿಂ) ಅಸಂಪೂರ್ಣವಾದ, ಕೊನೆಮುಟ್ಟದ.

**ಅಸಮಂಜ** ಅಸಮಂಜ (ಪುಂ) ಸಗರ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಮಗ.

**ಅಸಮಂಜಸ** ಅಸಮಂಜಸ (ವಿಂ) 1. ಅಸಂಗತವಾದ, ಅಸಂಬಂಧವಾದ, ಸಮಂಜಸವಲ್ಲದ. "ಅಸಮಂಜಸಮಿತಿ ಖಣಾ ತಯಾಪಿ ತರಲಾಯತೇ ಚೇತಃ" ತ್ವಂ 1. 2. ಅವ್ಯಕ್ತವಾದ, ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾದ. "ಸ್ವಲದಸಮಂಜಸಮುಖಜಲ್ಪಿತಂ ತೇ" ಮಾಲತೀಂ ೧೦-೨।

**ಅಸಮನಯನ** ಅಸಮನಯನ -ನೆತ್ರ-ನೇತ್ರ -ಲೋಚನ -ಲೋಚನ (ಪುಂ) ಶಿವ, ಈಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ.

ಅಸಮಾನಿ ನಯನಾನಿ ನೇತ್ರಾಣಿ ಲೋಚನಾನಿ ವಾ ಯಸ್ಯ।

**ಅಸಮಯ** ಅಸಮಯ (ಪುಂ) 1. ಅಕಾಲ, ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ ಕಾಲ. ಅಪ್ರಾಶಸ್ತಿಯೇ ನಂ ತಂ। "ಅಸಮಯೇ ಮತಿಃನಿಷ್ಠಿತಿ

ಧ್ರುವಂ ಕರಗತೇವ ಗತಾ ಯದಿಯಂ ಕುಹಃ" ನೆಫಂ ೪-೪೭। 2. ಕೆಟ್ಟ ಕಾಲ.

**ಅಸಮರ್ಥ** ಅಸಮರ್ಥ (ವಿಂ) 1. ಅಶಕ್ತ, ದುರ್ಬಲ. 2. ಅಯೋಗ್ಯ, ಅನರ್ಹ. 3. ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದೆ ಅನ್ವಯಯೋಗ್ಯತೆಯಿಲ್ಲದ (ಪದ). ಪುಣ್ಯೋ ರಾಜಃ ಭಾರ್ಯಾ ದೇವದತ್ತಸ್ಯ ಎಂಬಲ್ಲಿ ರಾಜಃ ಭಾರ್ಯಾ ಇವುಗಳಿಗೆ ಅನ್ವಯಯೋಗ್ಯತೆಯಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಅಸಮರ್ಥವಾಗಿ ಸಮಾಸ ಬರುವುದಿಲ್ಲ. 4. ಆಯಾ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ (ಪದ).

**ಅಸಮವಾಯಿಕಾರಣ** ಅಸಮವಾಯಿಕಾರಣ (ನಂ) ಗುಣಕ್ರಿಯಾರೂಪವಾದ ಕಾರಣ. ಅಸಮವಾಯಿಕಾರಣವು ಎರಡು ವಿಧ. (1) ಕಾರಣದಲ್ಲಿ ಸಮವಾಯ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಇದ್ದುಕೊಂಡು ಕಾರ್ಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಕಾರಣ. ಉದಾಃ ತನ್ತುಸಂಯೋಗಃ ಪಟಸ್ಯ ಅಸಮವಾಯಿಕಾರಣಮ್। ಕಾರಣವಾದ ತಂತುವಿನಲ್ಲಿ ಸಮವಾಯ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಇರುವ ಸಂಯೋಗವು ಪಟರೂಪ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗುವುದು. (2) ತನ್ನ ಸಮವಾಯಿಕಾರಣದೊಡನೆ ಅದರ ಕಾರಣದಲ್ಲಿ ಸಮವಾಯ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಇದ್ದುಕೊಂಡು ಕಾರ್ಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಕಾರಣ. ಉದಾಃ ತನ್ತುರೂಪಂ ಪಟಗತರೂಪಸ್ಯ ಅಸಮವಾಯಿಕಾರಣಮ್। ಇಲ್ಲಿ ಕಾರ್ಯವು ಪಟರೂಪ. ಅದರ ಕಾರಣ ಪಟ. ಪಟವೂ ತಂತುರೂಪವೂ ಸಮವಾಯಿಕಾರಣದಿಂದ ತಂತುವಿನಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ತಂತುರೂಪವು ಪಟರೂಪಕ್ಕೆ ಅಸಮವಾಯಿಕಾರಣ.

**ಅಸಮಸ್ತ** ಅಸಮಸ್ತ (ನಂ) 1. ವಿಗ್ರಹವಾಕ್ಯ, ಸಮಾಸವಿಲ್ಲದ ಪದಗಳ ಗುಂಪು, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಲ್ಪಡದ ಪದಗಳ ಸಮೂಹ. (ವಿಂ) 2. ಅಸಂಪೂರ್ಣವಾದ, ಸಮಗ್ರವಲ್ಲದ. 3. ಸಂಕ್ಷೇಪಿಸಲ್ಪಡದ. 4. ಬಿಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೇರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಅಸಮಾನ** ಅಸಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಸಮಾನವಿಲ್ಲದ, ಅಸದೃಶವಾದ. 2. ಸಮಾನವಲ್ಲದ.

**ಅಸಮಾಪನ** ಅಸಮಾಪನ (ನಂ) ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸದಿರುವಿಕೆ, ಪೂರ್ತಿಗೊಳಿಸದಿರುವಿಕೆ, ಕೊನೆಮುಟ್ಟಿಸದಿರುವಿಕೆ.

**ಅಸಮಾಪಿತ** ಅಸಮಾಪಿತ (ವಿಂ) ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಡದ, ಕೊನೆಮುಟ್ಟಿಸಲ್ಪಡದ. ನ ಸಮಾಪಿತಮ್। "ಅಸಮಾಪಿತಕೃತ್ಯಸಂಪದಾಂ ಹತವೇಗಂ ವಿನ್ಯಯೇನ ತಾವತಾ" ಕಿರಾಂ ೨-೪೮।



ಅಸಮಾಪ್ತ ಅಸಮಾಪ್ತ (ವಿಂ) ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳ್ಳದ, ಕೊನೆ ಮುಟ್ಟದ, ಪೂರ್ಣವಾಗದ. "ಅಸಮಾಪ್ತಪ್ರತಿಜ್ಞಾಪಿ ಯಾತೇ ತ್ವಯಿ ಮಾಭುಜೇ" ವೇಣೀಂ ೬-೩೩.

ಅಸಮಾಪ್ತಿ ಅಸಮಾಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂರ್ತಿಯಾಗದಿರುವಿಕೆ, ಮುಗಿಯದಿರುವಿಕೆ.

ಅಸಮಾವೃತ್ತ ಅಸಮಾವೃತ್ತ (ಛಂ) ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸವನ್ನು ಪೂರ್ಣಗೊಳಿಸಿ ಗುರುವಿನಿಂದ ಅನುಮತಿ ಪಡೆಯದವನು, ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮಸ್ವೀಕಾರಕ್ಕಾಗಿ ಸಮಾವರ್ತನ ಮಾಡದವನು. ನ ಸಮಾವೃತ್ತ: |

ಅಸಮಾಹಿತ ಅಸಮಾಹಿತ (ವಿಂ) ಏಕಾಗ್ರತೆಯಿಲ್ಲದ, ಚಿತ್ತಸ್ಥೈರ್ಯವಿಲ್ಲದ.

ಅಸಮೀಕ್ಷ್ಯಕಾರಿನ್ ಅಸಮೀಕ್ಷ್ಯಕಾರಿನ್ (ವಿಂ) ವಿವೇಚನೆ ಯಿಲ್ಲದೆ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು, ವಿಚಾರಮಾಡದೆ ಕಾರ್ಯ ನಡೆಸುವವನು. ಅಸಮೀಕ್ಷ್ಯ ಕರ್ತು ಶೀಲಮಸ್ಯ ತ್ವ ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮) |

ಅಸಂಪತ್ತಿ ಅಸಂಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ಬಡತನ. (ವಿಂ) 2. ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. ನಾಸ್ತಿ ಸಂಪತ್ತಿರಸ್ಯ |

ಅಸಂಪನ್ನ ಅಸಂಪನ್ನ (ವಿಂ) ದರಿದ್ರ, ಬಡವ.

ಅಸಂಪೂರ್ಣ ಅಸಂಪೂರ್ಣ (ವಿಂ) 1. ಪೂರ್ಣವಾಗದಿರುವ, ಮುಗಿಯದಿರುವ, ಸಮಾಪ್ತಿಹೊಂದದಿರುವ. 2. ತುಂಬಿರದ, ಕೊಂಚ ಕಡಿಮೆಯಾದ, ನ್ಯೂನವಾದ. "ಕ್ರೂರಗ್ರಹ: ಸಕೇತುರೇಂದ್ರಮಸಂಪೂರ್ಣಮಂಡಲಮಿದಾನಿಮ್" ಮುದ್ರಾಂ ೧-೬ |

ಅಸಂಪೃಕ್ತ ಅಸಂಪೃಕ್ತ (ವಿಂ) ಸೇರಿಕೊಂಡಿಲ್ಲದ, ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿರುವ. ನ ಸಂಪೃಕ್ತ: |

ಅಸಂಪ್ರಜ್ಞಾತ ಅಸಂಪ್ರಜ್ಞಾತ (ವಿಂ) ನಿರ್ವಿಕಲ್ಪಕಸಮಾಧಿ. ನ ಸಮ್ಯಕ್ ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಜ್ಞಾತ: ಭೇದೋ ಯತ್ರ | [ಸಮಾಧಿಯು ಸಂಪ್ರಜ್ಞಾತ ಮತ್ತು ಅಸಂಪ್ರಜ್ಞಾತಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. (1) ಜ್ಞಾನ, ಜ್ಞೇಯ ಮತ್ತು ಜ್ಞಾತೃಗಳ ಭೇದ ತೋರಿದರೂ ಧ್ಯಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಚಿತ್ತವು ಏಕಾಗ್ರವಾಗುವುದು ಸಂಪ್ರಜ್ಞಾತ ಸಮಾಧಿಯೆನಿಸುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ಸವಿಕಲ್ಪಕ ಸಮಾಧಿಯೆಂದು ಹೆಸರು. (2) ಮೇಲಿನ ಭೇದವು ತೋರದೆ ಯಾವ ವ್ಯಾಪಾರವೂ ಇಲ್ಲದೆ ಚಿತ್ತವು ಧ್ಯೇಯವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಲಯವಾಗುವುದು ಅಸಂಪ್ರಜ್ಞಾತ ಸಮಾಧಿಯೆನಿಸುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ನಿರ್ವಿಕಲ್ಪಕಸಮಾಧಿಯೆಂದು ಹೆಸರು. ಸಂಪ್ರಜ್ಞಾತ ಸಮಾಧಿಯು ಏಕಾಗ್ರಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ ಚಿತ್ತಕ್ಕೆ ಮಾತ್ರ ಸಾಧ್ಯ. ಅಸಂಪ್ರಜ್ಞಾತ ಸಮಾಧಿಯು ನಿರೋಧಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ ಚಿತ್ತಕ್ಕೆ ಮಾತ್ರ ಸಾಧ್ಯ.]

ಅಸಂಪ್ರತಿ ಅಸಂಪ್ರತಿ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅಯೋಗ್ಯವಾದ ಕಾಲ. 2. ದೂರದ ಕಾಲ. ನಿಪಾಂ (೨-೧-೧೭) |

ಅಸಂಬಂಧ ಅಸಂಬಂಧ (ನಂ) 1. ಪ್ರಕೃತದ ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ ಮಾತು, ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ ಮಾತು. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಕೃತಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ, ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ.

ಅಸಂಬಂಧ ಅಸಂಬಂಧ (ಛಂ) 1. ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಂ ತಂ | (ವಿಂ) 2. ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಸಂಬಂಧೋ ಯಸ್ಯ |

ಅಸಂಬಾಧ ಅಸಂಬಾಧ (ವಿಂ) 1. ಒತ್ತಡವಿಲ್ಲದ, ವಿರಳವಾದ. 2. ವಿಜನವಾದ, ಜನರಹಿತವಾದ. ನಾಸ್ತಿ ಸಂಬಾಧಾ ಪಿಡಾ ಪ್ರತಿಬಂಧೋ ವಾ ಯತ್ರ | "ಮಾ ಗಾಶ್ವಿರಾಯೇಕಚರ: ಪ್ರಮಾದಂ ವಸತ್ರಸಂಬಾಧಶಿವೇಷಿ ದೇಶೇ" ಕಿರಾಂ ೩-೫೩ |

ಅಸಂಬಾಧಾ ಅಸಂಬಾಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೀಡೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ತೊಂದರೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ಸಮ್ಯಕ್ ಬಾಧಾ |

ಅಸಂಭವ ಅಸಂಭವ (ಛಂ) 1. ಆಗದಿರುವಿಕೆ, ಹುಟ್ಟದಿರುವಿಕೆ, ಅಭಾವ. ನ ಸಂಭವ: ಉತ್ಪತ್ತಿ: | "ಅಸಂಭವಂ ಹೇಮಮೃಗಸ್ಯ ಜನ್ಮ" | "ಹರೀರಾಕ್ರಮಣೇನ ಸಂನತಿ ಕಿಲ ವಿಚಿತ್ರಿತ ಭಿಯೇತ್ಯಸಂಭವ:" ಮಾಘಂ ೧೬-೩೪ | 2. ಉತ್ಪತ್ತಿ ಕಾರಣದ ಅಭಾವ, ಕಾರ್ಯದ ಅತ್ಯಂತಾಭಾವ. (ವಿಂ) 3. ಉತ್ಪತ್ತಿಯಿಲ್ಲದ. 4. ಉತ್ಪತ್ತಿಕಾರಣವಿಲ್ಲದ. 5. "ಅಸಂಭವ"ವೆಂಬ ಒಂದು ದೋಷ. "ಏಕಶಫವತ್ವಂ ಗೋಲಕ್ಷಣಮ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಯವಾದ ಹಸುಗಳಾವುದರಲ್ಲಿಯೂ ಏಕಶಫವತ್ವವಿಲ್ಲದುದರಿಂದ ಇದು ಅಸಂಭವರೂಪ ದೋಷಾಕ್ರಾಂತ. ಅವ್ಯಾಪ್ತಿ, ಅತಿವ್ಯಾಪ್ತಿ ಮತ್ತು ಅಸಂಭವ ಈ ಮೂರು ದೋಷಗಳು ಇಲ್ಲದುದು ಲಕ್ಷಣವೆನಿಸುವುದು.

ಅಸಂಭಾವನಾ ಅಸಂಭಾವನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅವಮರ್ಮಾದೆ. 2. ಸಂದೇಹವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಊಹೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ಇಲ್ಲವೆಂಬ ಭಾವನೆ. [ಇದು ಅದ್ವೈತಿಗಳ ಮತದಲ್ಲಿ ಪ್ರಮಾಣಾಸಂಭಾವನೆ ಮತ್ತು ಪ್ರಮೇಯಾಸಂಭಾವನೆಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಬ್ರಹ್ಮನ ಇರುವಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಮಾಣವೇ ಇಲ್ಲವೆನ್ನುವುದು ಪ್ರಮಾಣಾಸಂಭಾವನೆ. ಬ್ರಹ್ಮನೇ ಇಲ್ಲವೆನ್ನುವುದು ಪ್ರಮೇಯಾಸಂಭಾವನೆ. ಇವೆರಡೂ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಶ್ರವಣ ಮತ್ತು ಮನನದಿಂದ ನಿವೃತ್ತವಾಗುವುವು.]

ಅಸಂಭಾವನೀಯ ಅಸಂಭಾವನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಊಹಾ ತೀತವಾದ, ಊಹಿಸಲಸಾಧ್ಯವಾದ. 2. ಅಸಾಧ್ಯವಾದ, ಆಗದ, ಅಶಕ್ಯವಾದ.



**ಅಸಾಧ್ಯತೆ** ಅಸಂಭೂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಗದಿರುವಿಕೆ, ಹುಟ್ಟದಿರುವಿಕೆ. 2. ಪ್ರಕೃತಿ, ಮಾಯೆ, ಅವ್ಯಾಕೃತ, ಅಗತ್ಯಾರಣ. ಸಮ್ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪). ಅಭಾವೇ ನಂ ತಂ.

**ಅಸಾಧ್ಯತೆ** ಅಸಂಭೃತ (ವಿಂ) 1. ಸ್ವಾಭಾವಿಕವಾದ, ಅಯತ್ನಸಿದ್ಧವಾದ, ಅಕೃತ್ರಿಮವಾದ. "ಅಸಾಧ್ಯತೆ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಮಘಟೇನಾಸವಾಖ್ಯಂ ಕರಣಂ ಮದಸ್ಯ" ಕುಮಾಂ ೧-೩೧. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ವೋಷಿಸಲ್ಪಡದ. 3. ಶೇಖರಿಸಲ್ಪಡದ, ಕೂಡಿಸದ.

**ಅಸಾಧ್ಯತೆ** ಅಸಮ್ಮತ (ವಿಂ) 1. ಒಪ್ಪಿಗೆಯಿಲ್ಲದ, ಸಮ್ಮತವಲ್ಲದ. ನಂ ತಂ. "ಅಸಮ್ಮತ: ಕಸ್ತವ ಮುಕ್ತಿಮಾರ್ಗಂ ಕುಲಸಂಸ್ಥಾಪನಾಭಯಾತ್ಮಪತ್ರ:" ಕುಮಾಂ ೩-೪. 2. ಇಷ್ಟವಿಲ್ಲದ, ದೃಢಕೂಲವಾದ, ವಿರುದ್ಧವಾದ.

**ಅಸಾಧ್ಯತೆ** ಅಸಮ್ಮತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಪ್ಪದಿರುವಿಕೆ. 2. ಇಷ್ಟವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

**ಅಸಾಧ್ಯತೆ** ಅಸಂಮೂಢ (ವಿಂ) ನಿಶ್ಚಯಜ್ಞಾನವುಳ್ಳ, ಛಾಂತಿಸದ. ನಂ ತಂ. "ಸ್ಥಿರಬುದ್ಧಿರಸಮ್ಮತ:" ಗೀತಾ ೪-೨೦.

**ಅಸಾಧ್ಯತೆ** ಅಸಂಮೋಹ (ಪುಂ) 1. ವಾಸ್ತವಿಕಜ್ಞಾನ, ಯಥಾರ್ಥಜ್ಞಾನ. "ಬುದ್ಧಿಜ್ಞಾನಮಸಂಮೋಹ: ಕ್ಷಮಾ ಸತ್ಯಂ ವಚ: ಶಮ:" ಗೀತಾ ೧೦-೪. 2. ಭ್ರಮೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಮರುಳಾಗದಿರುವಿಕೆ.

**ಅಸಾಧ್ಯತೆ** ಅಸವರ್ಣ (ವಿಂ) ಸಜಾತೀಯನಲ್ಲದ, ಬೇರೆ ಜಾತಿಯ. ನ ಸಮಾನೋ ವರ್ಣೋ ಯಸ್ಯ. "ಅಪಿ ನಾಮ ಕುಲಪತೇ-ರಿವಮಸವರ್ಣೋತ್ರಸಂಭವಾ ಸ್ಯಾತ್?" ಶಾಕುಂ ೧.

**ಅಸಾಧ್ಯತೆ** ಅಸಹ (ವಿಂ) ಸಹಿಸದ, ಸಹನೆಯಿಲ್ಲದ. ನ ಸಹತೇ-ವಹ (ಮರ್ಷಣೆ) "ಅವ್" (೩-೩-೧೩೪).

**ಅಸಾಧ್ಯತೆ** ಅಸಹನ (ಪುಂ) 1. ಶತ್ರು, ವೈರಿ, ಹಗೆ. ನ ಸಹತೇ-ವಹ (ಮರ್ಷಣೆ) "ಲ್ಯು:" (೩-೩-೧೩೪). (ನಂ) 2. ಅಸಹನೆ, ಸಹನೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ವಹ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫). ನಂ ತಂ. "ಸೋದರಿಪುಬಲಭರೋಸಹನ: ನ ವಹಾಸ ದತ್ತಕರತಾಲಮುಚ್ಚಕೇ:" ಮಾಘಂ ೧೪-೩೯. (ವಿಂ) 3. ಸಹನೆಯಿಲ್ಲದ.

**ಅಸಾಧ್ಯತೆ** ಅಸಹಮಾನ (ವಿಂ) ಸಹಿಸದ, ಸಹನೆಯಿಲ್ಲದ. ನ ಸಹತೇ-ವಹ (ಮರ್ಷಣೆ) "ಶಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಅಪ್ರಾಪ್ತಮೂರಸಹಮಾನ ಇವಾವಿರಾಸೀತ್" ಚಂ ರಾಂ.

**ಅಸಾಧ್ಯತೆ** ಅಸಹಾಯ (ವಿಂ) 1. ಸಹಾಯವಿಲ್ಲದ, ಇತರರ ಸಹಾಯವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಸಹಾಯೋ ಯಸ್ಯ. 2. ಸಹಾಯಕ

ರಿಲ್ಲದ, ಏಕಾಕಿ, ಒಂಟಿಗ. "ಸೋಸಹಾಯೇನ ಮೃದೇನ ಲುಘೇ-ನಾಕೃತಬುದ್ಧಿನಾ" ಮನುಂ ೭-೩೦.

**ಅಸಾಧ್ಯತೆ** ಅಸಹಿಷ್ಣು (ವಿಂ) ಸಹಿಸದ, ಸಹನೆಯಿಲ್ಲದ, ತಾಳ್ಮೆಯಿಲ್ಲದ. ನ ಸಹಿಷ್ಣು: "ಸ ಸುಶ್ರುವಾಸ್ತದ್ವಚನಂ ಮುಮೋಹ ರಾಜಾಸಹಿಷ್ಣು: ಸುತವಿಪ್ರಯೋಗಮ್" ಭट्टಿಂ ೧-೨೦.

**ಅಸಾಧ್ಯತೆ** ಅಸಹ್ಯ (ವಿಂ) ಸಹಿಸಲಾಗದ, ಸಹಿಸಲಶಕ್ಯವಾದ. ನ ಸಹ್ಯ: "ಅಸಹ್ಯಾಹಂಕಾರನಿವರ್ತಿತ: ಪುರಾ ಪುರಾರಿ-ಮಪ್ರಾಪ್ತಮುಖ: ಶಿಲೀಮುಖ:" ಕುಮಾಂ ೪-೪೪.

**ಅಸಾಧ್ಯತೆ** ಅಸಾಕ್ಷಿಕ (ವಿಂ) ಸಾಕ್ಷಿಯನ್ನು ಹೊಂದದಿರುವ, ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಿ ಯಾರೂ ನೋಡದಿರುವ (ವ್ಯವಹಾರ). ನಾಸ್ತಿ ಸಾಕ್ಷಿ ಸಾಕ್ಷಾದ್ವಕ್ಷಾ ಯಸ್ಯ. "ಕಪ್". "ಅಸಾಕ್ಷಿಕೇಷುತ್ವಯೇಷು ಮಿಥೋ ವಿವದಮಾನಯೋ:" ಮನುಂ ೮-೧೦೯.

**ಅಸಾಧ್ಯತೆ** ಅಸಾಧನ (ನಂ) 1. ಕಾರಣವಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ಉಪಕರಣವಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 3. ಉಪಕರಣವಿಲ್ಲದ, ಉಪಾಯವಿಲ್ಲದ. 4. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದ.

**ಅಸಾಧ್ಯತೆ** ಅಸಾಧಾರಣ (ನಂ) 1. (ತಾರ್ಕಿಕ ಮತದಲ್ಲಿ) ಸಪಕ್ಷ ಅಥವಾ ವಿಪಕ್ಷಗಳಲ್ಲಿಲ್ಲದ ಕಾರಣ, ಮೂರು ವಿಧ ವ್ಯಭಿಚಾರದೋಷಗಳಲ್ಲೊಂದು. 2. ನಿರ್ದಿಷ್ಟವಾದ ಒಂದೇ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ವಿಸ್ತಾರವಾದ ಕಾರಣ. [ಎಲ್ಲಾ ಕಾರ್ಯಗಳಿಗೂ ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಈಶ್ವರ, ಕಾಲ, ಅದೃಷ್ಟ ಮುಂತಾದುವು ಸಾಧಾರಣಕಾರಣವಾಗುವವು. ದಂಡ, ಕುಲಾಲ, ಚಕ್ರ ಮುಂತಾದುವು ಘಟಕ್ಕೆ ಮಾತ್ರ ಕಾರಣವಾಗುವುದರಿಂದ ಅಸಾಧಾರಣ ಕಾರಣವೆನಿಸುವವು.] (ವಿಂ) 3. ಸಾಮಾನ್ಯವಲ್ಲದ, ವಿಶೇಷಗುಣವುಳ್ಳ, ಅಧಿಕಗುಣವುಳ್ಳ. 4. ಮತ್ತೊಬ್ಬರ ಅಧಿಕಾರಕ್ಕೊಳಪಡದ ಕೇವಲ ತನ್ನದೇ ಆದ (ಅಸ್ತಿ ಮತ್ತು ಧನ).

**ಅಸಾಧ್ಯತೆ** ಅಸಾಧು (ವಿಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯದಲ್ಲದ, ಕೆಟ್ಟದಾದ. ನ ಸಾಧು. "ಅತೋಹಸಿ ಕ್ಷಂತುಮಸಾಧು ಸಾಧು ವಾ ಹಿತಂ ಮನೋಹಾರಿ ಚ ದುರ್ಲಭಂ ವಚ:" ಕಿರಾಂ ೧-೪. 2. ದುಷ್ಟನಾದ, ವಾಪಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಯುಳ್ಳ, ನೀಚ. 3. ಅಪಭ್ರಂಶ, ಅಪಶಬ್ದ, ಅಸಂಸ್ಕೃತ ಶಬ್ದ. "ಅಸಾಧುನಾಂ ಪ್ರಯೋಗೇ ತು ಪ್ರತ್ಯವಾಯೋಪಿ ನೋ ತಥಾ" ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್". ಅಸಾಧ್ವಿ ವಾಣಿ. ಅಸಾಧ್ವಿ ನಾರಿ.

**ಅಸಾಧ್ಯತೆ** ಅಸಾಧ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸಾಧಿಸಲಾಗದ, ಶಕ್ಯವಲ್ಲದ. ಸಾಧಯಿತುಮಶಕ್ಯ: 2. ಪ್ರತೀಕಾರ ಮಾಡಲಾಗದ. "ಅಸಾಧ್ಯ: ಕುಸ್ತೇ ಕೋಪಂ ಪ್ರಾಪ್ತೇ ಕಾಲೇ ಗದೋ ಯಥಾ" ಮಾಘಂ ೨-೮೪.



ಅಸಾಮಂಜಸ್ಯ ಅಸಾಮಂಜಸ್ಯ (ನಂ) 1. ಅಯುಕ್ತತೆ. 2. ಅಕ್ರಮ, ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

ಅಸಾಮಯಿಕ ಅಸಾಮಯಿಕ (ವಿಂ) ಅಕಾಲಿಕ, ಸಮಯ ದ್ದಲ್ಲದ, ಅಕಾಲದ. ಸಮಯೋಜ್ಯ ಪ್ರಾಪ್ತ: "ಠ್ಠ" (೪-೧-೧೦೪)। ನಂ ತಂ। "ಕಿಮಸಾಮಯಿಕಂ ವಿತನ್ವತಾ ಮನಸಿ ಕೋಮುಪಾತ್ತರಹಸ:" ಕಿರಾಂ ೨-೪೦।

ಅಸಾಮಾನ್ಯ ಅಸಾಮಾನ್ಯ (ವಿಂ) ಅಸಾಧಾರಣವಾದ, ಸಮಾನವಿಲ್ಲದ, ಹೋಲಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಸಾಮಾನ್ಯಂ ಯಸ್ಯ। "ರಾಮಂ ಸೀತಾಪರিত್ಯಾಗಾದಸಾಮಾನ್ಯಪಾತಿ ಭುವ:" ರಘುಂ ೧೪-೩೯।

ಅಸಾಂಪ್ರತಮ್ ಅಸಾಂಪ್ರತಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಅಯುಕ್ತ, ಅಕ್ರಮ. ನ ಸಾಂಪ್ರತಮ್। "ವಿಷವಕ್ಷೋಽಪಿ ಸಂವಧ್ಯಂ ಸ್ವಯಂ ಚೇತುಮಸಾಂಪ್ರತಮ್" ಕುಮಾಂ ೨-೪೪।

ಅಸಾರ ಅಸಾರ (ಪುಂ) 1. ಹರಳು ಗಿಡ, (ವಿಂ) 2. ಬಲವಿಲ್ಲದ, ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಸಾರೋ ಬಲಂ ಯಸ್ಯ। "ನಿರ್ದರ್ಶನಮಸಾರಾಣಾಂ ಲಘುಬಹುತುಣಂ ನರ:" ಮಾಘಂ ೨-೪೦। 3. ಸಾರವಿಲ್ಲದ, ತಿರುಳಿಲ್ಲದ, ಸತ್ತ್ವವಿಲ್ಲದ. "ಅಸಾರಂ ಸಂಸಾರಂ ಪರಿಮುಷಿತರತ್ನಂ ತ್ರಿಭುವನಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೪-೩೦।

ಅಸಿ ಅಸಿ (ಪುಂ) 1. ಬಿಡ್ಡ, ಕತ್ತಿ. ಅಸ್ಯತೇ - ಅಸು(ಕ್ಷೇಪಣೇ) "ಃನ್" (ತಂ ೪-೧೧೮)। "ಽದ್ಗುಣೇನ ಚಮಸ್ತುರ್ಣಮತಿ- ಮಾತ್ರಾವಿಲಾಸಿನಾ" ಮಾಘಂ ೧೯-೪೦। 2. ಒಂದು ದಿನ. ಅಸ್ಯತಿ ಪಾಪಾನಿ। 3. ಶ್ವಾಸ, ಉಸಿರು. (ಅವ್ಯಂ) 4. ನೀನು. [ನೀನು ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ತಿಜನಪ್ರತಿ ರೂಪಕಾವ್ಯಯ.]

ಅಸಿಕ ಅಸಿಕ (ನಂ) ಕೆಳತುಟಗೂ ಗಲ್ಲಕ್ಕೂ ಮಧ್ಯಭಾಗ. "ದಂತವಸ್ತ್ರಂ ಚ ತತ್ಪ್ರಾಂತೋ ಸುಕಕಣಿ ಅಸಿಕಂ ತ್ವಃ। ಅಸಿಕಾಧಸ್ತು ಚಿಬುಕಮ್" ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ಅಸಿಕವಿ ಅಸಿಕವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಿಕ್ಕ ವಯಸ್ಸಿನ ಅಂತಃ ಪುರದ ದಾಸಿ. ಸಿತಾ ಶುಕ್ಲಕೇಶಾ, ತದ್ವಿಜ್ಞಾಸಿತಾ। ಅಸಿತಾ "ಕನ:" (ವಾಂ ೪-೧-೩೯)। "ಕೀಪ್" (೪-೧-೪)। 2. ಒಂದು ಚಿಕ್ಕ ನದಿ, ಹೊಳೆ. "ಅಸಿಕವಿ ಸ್ಯಾದ- ವೃದ್ಧಾಂತ:ಪುರಪ್ರೇಷ್ಯಾನದೀಭಿದೋ:" ಮೇದಿಂ। 3. ರಾತ್ರಿ.

ಅಸಿಗಂಠ ಅಸಿಗಂಠ (ಪುಂ) ಚಿಕ್ಕ ತಲೆದಿಂಬು. ಅಸಿ: ಕ್ಷಿಪ್ತೋ ಗಂಠೋ ಯತ್ರ।

ಅಸಿಜೀವಿನ್ ಅಸಿಜೀವಿನ್ (ವಿಂ) ಕತ್ತಿಯಿಂದ ಜೀವಿ ಸುವ. ಅಸಿನಾ ಜೀವತಿ - ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಗಿರಿನಿ:" (೩-೨-೭೮)।

ಅಸಿತ ಅಸಿತ (ಪುಂ) 1. ಕಪ್ಪು ಬಣ್ಣ. 2. ಕೃಷ್ಣ ಪಕ್ಷ. 3. ಶನಿಗ್ರಹ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)-ತಾ-ತಾ. 4. ಚಿಕ್ಕ ವಯಸ್ಸಿನ ಅಂತಃಪುರದ ದಾಸಿ. 5. ನೀಲಿ ಗಿಡ.

ಅಸಿತಗ್ರೀವ ಅಸಿತಗ್ರೀವ (ಪುಂ) ಈಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. ಅಸಿತಂ ಗ್ರೀವಾಯಾಂ ಯಸ್ಯ।

ಅಸಿತೋತ್ಪಲ ಅಸಿತೋತ್ಪಲ (ನಂ) ನೀಲಕಮಲ, ಇಂದಿವರ. ಅಸಿತಂ ಚ ತದ್ಉತ್ಪಲಂ ಚ। "ಆನನೇಮಧುರಸೋ ವಿಕಸದ್ವಿ: ನಾಸಿಕಾಭಿರಸಿತೋತ್ಪಲಗಂಧ:" ಮಾಘಂ ೧೦-೮।

ಅಸಿತೋಪಲ ಅಸಿತೋಪಲ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರನೀಲಮಣಿ. ಅಸಿತಶ್ಚಾಸಾವುಪಲಶ್ಚ।

ಅಸಿದ್ಧ ಅಸಿದ್ಧ (ಪುಂ) 1. (ತಾರ್ಕಿಕ ಮತದಲ್ಲಿ) ಐದು ವಿಧ ದುಷ್ಟಹೇತು (ಪಂಚ ಹೇತ್ವಾಭಾಸ)ಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಅನೇಕಾಂತೋ ವಿರೂಢಶ್ಚಾಪ್ಯಸಿದ್ಧ: ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಿತ:। ಕಾಲಾತ್ಯ- ಯಾಪದಿಷ್ಟಶ್ಚ ಹೇತ್ವಾಭಾಸಶ್ಚ ಪञ್ಚವಾ" ಭಾಷಾಪಂ। ಅಸಿದ್ಧವು (1) ಆಶ್ರಯಾಸಿದ್ಧ, (2) ಸ್ವರೂಪಾಸಿದ್ಧ ಮತ್ತು (3) ವ್ಯಾಪ್ತೃತ್ವಾಸಿದ್ಧಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ಉದಾ: (1) ಗಗನಾರವಿಂದಂ ಸುರಭಿ ಅರವಿಂದತ್ವಾತ್ ಸರೋಜ- ರವಿಂದವತ್" ಇಲ್ಲಿ ಆಶ್ರಯವಾದ ಗಗನಾರವಿಂದವು ಅಸಿದ್ಧವಾದುದರಿಂದ ಹೇತುವು ದುಷ್ಟವಾಗಿ ಸರಭ್ಯ ರೂಪವಾದ ಅನುಮಿತಿಗೆ ಪ್ರತಿಬಂಧಕವಾಗುವುದು. (2) "ಶಬ್ದೋನಿತ್ಯಶ್ಚಾಕ್ಷುಷತ್ವಾತ್ ರೂಪವತ್" ಇಲ್ಲಿ ಪಕ್ಷ ವಾದ ಶಬ್ದದಲ್ಲಿ ಚಾಕ್ಷುಷತ್ವ (ಹೇತು)ವು ಅಸಿದ್ಧ ವಾದುದರಿಂದ ಹೇತುವು ಸ್ವರೂಪಾಸಿದ್ಧರೂಪವಾದ ದೋಷಾಕ್ರಾಂತವಾಗಿರುವುದು. (3) "ಪರ್ವತೋ ಭೂಮವಾನ್ ವಹ್ನಿಮತ್ವಾತ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಹೇತುವಾದ ವಹ್ನಿಮತ್ವವು ಸೋಪಾಧಿಕ (ಆದ್ರೇಂಧನ ಸಂಯೋಗರೂಪವಾದ ಉಪಾಧಿಸಹಿತ)ವಾದುದರಿಂದ ಹೇತುವು ವ್ಯಾಪ್ತೃತ್ವಾ ಸಿದ್ಧರೂಪದೋಷಾಕ್ರಾಂತವಾದುದು. (ವಿಂ) 2. ಅನಿಷ್ಟನ್ನವಾದ, ಹುಟ್ಟದಿರುವ. 3. ಅಪಕ್ವವಾದ.

ಅಸಿದ್ಧಿ ಅಸಿದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನಿಷ್ಟಿ, ಕಾರ್ಯವು ನೆರವೇರದಿರುವಿಕೆ, ಕಾರ್ಯವು ಪೂರ್ಣವಾಗದಿರುವಿಕೆ. 2. (ತಾರ್ಕಿಕ ಮತದಲ್ಲಿ) ಆಶ್ರಯಾಸಿದ್ಧಿ ಮೊದಲಾದ ಹೇತುವಿನ ದೋಷ. ಅಸಿದ್ಧಿಯು (1) ಆಶ್ರಯಾಸಿದ್ಧಿ, (2) ಸ್ವರೂಪಾಸಿದ್ಧಿ ಮತ್ತು (3) ವ್ಯಾಪ್ತೃತ್ವಾಸಿದ್ಧಿ ಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. "ಆಶ್ರಯಾಸಿದ್ಧಿರಾಪ್ಯಾ ಸ್ಯಾತ್ ಸ್ವರೂಪಾಸಿದ್ಧಿರಪ್ಯಯ। ವ್ಯಾಪ್ತೃತ್ವಾಸಿದ್ಧಿರಪರಾ ಸ್ಯಾದಸಿದ್ಧಿ- ರತಸ್ತ್ರಿಧಾ" ಭಾಷಾಪಂ। (1) ಪಕ್ಷೇ ಪಕ್ಷತಾವಚ್ಛೇದಕಸ್ಯಾಭಾವ: ಆಶ್ರಯಾಸಿದ್ಧಿ:। "ಕಾಂಚನಮಯ: ಪರ್ವತೋ ವಹ್ನಿಮಾನ್"



ಭೂಮಾತ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ವಿಶೇಷಣವಾಗಿರುವ  
ಶಾಂಚನಮಯತ್ವವು ಇಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಆಶ್ರಯಾ  
ಸಿದ್ಧಿರೂಪವಾದ ದೋಷ. (2) ಪಕ್ಷೆ ವ್ಯಾಪ್ಯತ್ವೇನಾಭಿ-  
ಪ್ರತಪ್ತಾಭಾವಃ ಸ್ವರೂಪಾಸಿದ್ಧಿಃ. "ಹೃದೋ ದ್ರವ್ಯಂ ಭೂಮಾತ್"  
ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪಕ್ಷವಾದ ಹೃದದಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಪ್ಯವಾಗಿ ತಿಳಿದಿರುವ  
ಧೂಮವು ಇಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಸ್ವರೂಪಾಸಿದ್ಧಿರೂಪ  
ವಾದ ದೋಷ. (3) ಸಾಧ್ಯೇ ಸಾಧ್ಯತಾವಚ್ಛೇದಕಸ್ಯಾಭಾವಃ  
ವ್ಯಾಪ್ಯತ್ವಾಸಿದ್ಧಿಃ. "ಕಾಂಚನಮಯವಹ್ನಿಮಾನ್ ಪವಂತಃ"  
ಎಂಬಲ್ಲಿ ಸಾಧ್ಯವಾದ ವಹ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಸಾಧ್ಯತಾವಚ್ಛೇದಕ  
(ಶಾಂಚನಮಯತ್ವ)ವು ಇಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ವ್ಯಾಪ್ಯ  
ತ್ವಾಸಿದ್ಧಿರೂಪವಾದ ದೋಷ.

**ಅಸಿಧಾರಾ ಅಸಿಧಾರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕತ್ತಿಯ ಅಂಚು, ಕತ್ತಿಯ  
ಅಲಗು. ಅಸೇಧಾರಿ. "ರಾಜಸೇವಾ ಮನುಷ್ಯಾಣಾಮಸಿಧಾರಾ-  
ನೇಹನಮ್" ಕುವಂ.

**ಅಸಿಧಾರಾವ್ರತ ಅಸಿಧಾರಾವ್ರತ** (ನಂ) 1. ಕತ್ತಿಯ  
ಅಂಚಿನ ಮೇಲೆ ನಿಲ್ಲುವಷ್ಟು ಕಷ್ಟವಾದ ವ್ರತ. ಅಸಿ-  
ಧಾರಾಯಾಂ ಸ್ಥಿತೀತಿವ ದುಷ್ಕರಂ ವ್ರತಮ್. "ಯತ್ರೈಕಶಯನಸ್ಥಾಪಿ  
ಪ್ರಮದಾ ನೋಪಭುಜ್ಯತೇ. ಅಸಿಧಾರಾವ್ರತಮಿದಂ ವದಂತಿ ಮುನಿ-  
ಪುಂಜನಾಃ". 2. ಸ್ವಲ್ಪ ತಪ್ಪಿದರೂ ಹೆಚ್ಚು ಅನರ್ಥ  
ವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಕೆಲಸ. "ಅಸಿಧಾರಾವ್ರತಮಿದಂ ಸಖೇ  
ಬರೀರಣಾ ಸಹ ಸಂವಾಸಃ" ಹಿತಂ.

**ಅಸಿಧಾವಕ ಅಸಿಧಾವಕ** (ಪುಂ) ಕತ್ತಿಯನ್ನು ಉಜ್ಜಿ  
ಮೆರುಗುಕೊಡುವವನು. ಅಸಿ ಧಾವಯತಿ - ಧಾವು (ಗತಿ-  
ಗುಣಃ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩).

**ಅಸಿಧೇನುಕಾ ಅಸಿಧೇನುಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚೂರಿ, ಚಾಕು,  
ಸಣ್ಣ ಕತ್ತಿ. ಅಸಿಧೇನುರಿವ ಯಸ್ಯಾಃ. ವಾ "ಕಪ್"  
(೪-೪-೧೪೪). ಪಕ್ಷೆ ಅಸಿಧೇನುಃ ಅಸಿಧೇನುಃ.

**ಅಸಿಪತ್ರ ಅಸಿಪತ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಕಬ್ಬು. ಅಸಿರಿವ ತೀಕ್ಷ್ಣಂ  
ಪತ್ರಮಸ್ಯ. 2. ಎರಡುಕಡೆಯೂ ಅಲಗುಳ್ಳ ಕತ್ತಿ.  
3. ಕತ್ತಿಯ ಒರೆ, ಗವಸಣಿಗೆ. 4. ಒಂದು ನರಕ.  
"ಅಸಿಪತ್ರಃ ಕ್ಷಣಿಕೋಪಿ ಪುಮಾನಿಕ್ಷೋ ಚ ನಾರಕೇ" ಮೇದಿಂ.

**ಅಸಿಪತ್ರವನ ಅಸಿಪತ್ರವನ** (ನಂ) ಒಂದು ನರಕ. [ಇಲ್ಲಿ  
ರುವ ಮರದ ಎಲೆಗಳು ಕತ್ತಿಯಂತೆ ಚೂಪಾಗಿವೆ.  
ತನ್ನ ಧರ್ಮವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು, ತನ್ನ ಸಂಪ್ರದಾಯವನ್ನು  
ತ್ಯಜಿಸಿ ಪಾಪಾಂಡಮತವನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸುವವನಿಗೆ  
ಅಸಿಪತ್ರ ನರಕವು ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗುವುದು. ಅಲ್ಲಿ ಇವನು  
ಬಾವಟಿಯ ಏಟು ತಿಂದು ಎರಡು ಕಡೆಯೂ ಅಲಗುಳ್ಳ  
ಅಸಿಪತ್ರದಿಂದ ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಅತಿಯಾದ ವೇದನೆ

ಯಿಂದ ಪದೇ ಪದೇ ಮೂರ್ಛಿತನಾಗಿ ಬೀಳುವನು.]

"ಯಸ್ತ್ವಿಹ ವೇ ನಿಜವೇದಪಥಾದನಾಪದ್ಯಪಗತಃ ಪಾಪಾಣ್ಡಂ ಚೋಪಗತಃ  
ತಮಸಿಪತ್ರವನಂ ಪ್ರವೇಶ್ಯ ಕಶಯಾ ಪ್ರಹರಂತಿ. ತತ್ರಾಹಾಸಾವಿತಸ್ತತೋ  
ಧಾವಮಾನಃ ತುಭಯತೋಧಾರೇಸ್ತಾಲವನಾಸಿಪತ್ರೇಶಿಷ್ಯಮಾನಸರ್ವಾಜ್ಞೋ  
ಹಾ ಹತೋಽಸ್ಮೀತಿ ಪರಮಯಾ ವೇದನಯಾ ಮೃಚ್ಛಿತಃ ಪದೇಪದೇ  
ನಿಪತತಿ ಸ್ವಧರ್ಮಹಾ ಪಾಪಾಣ್ಡಾನುಗತಂ ಫಲಂ ಭುಂಕ್ತೇ" ಭಾಗಂ  
೪-೨೬.

**ಅಸಿಪುಚ್ಛ ಅಸಿಪುಚ್ಛ** (ಪುಂ) ಕಡಲ ಹಂದಿ, ನೀರು ಹಂದಿ.  
ಅಸಿರಿವ ಪುಚ್ಛೋಽಸ್ಯ.

**ಅಸಿಪುತ್ರಿಕಾ ಅಸಿಪುತ್ರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚೂರಿ, ಚಾಕು,  
ಸಣ್ಣ ಕತ್ತಿ.

**ಅಸಿಹೇತಿ ಅಸಿಹೇತಿ** (ವಿಂ) ಕತ್ತಿಯೇ ಆಯುಧವಾಗಿ  
ಉಳ್ಳವನು, ಕತ್ತಿಯಿಂದ ಯುದ್ಧ ಮಾಡುವವನು.  
ಅಸಿಃ ಹೇತಿಃ ಸಾಧನಮಸ್ಯ.

**ಅಸು - ಕ್ಷೇಪಣೆ** (ದಿಂ ಪಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)

|           |           |           |            |
|-----------|-----------|-----------|------------|
| ಲಟ್-      | ಅಸ್ಯತಿ    | ಅಸ್ಯತಃ    | ಅಸ್ಯಂತಿ.   |
|           | ಅಸ್ಯಸಿ    | ಅಸ್ಯಥಃ    | ಅಸ್ಯಥ.     |
|           | ಅಸ್ಯಾಮಿ   | ಅಸ್ಯಾವಃ   | ಅಸ್ಯಾಮಃ.   |
| ಲಿಟ್-     | ಆಸ        | ಆಸತುಃ     | ಆಸುಃ.      |
|           | ಆಸಿಥ      | ಆಸಿಥುಃ    | ಆಸ.        |
|           | ಆಸ        | ಆಸಿವ      | ಆಸಿಮ.      |
| ಲುಟ್-     | ಅಸಿತಾ     | ಅಸಿತಾರೋ   | ಅಸಿತಾರಃ.   |
|           | ಅಸಿತಾಸಿ   | ಅಸಿತಾಸ್ಯಃ | ಅಸಿತಾಸ್ಯ.  |
|           | ಅಸಿತಾಸ್ಮಿ | ಅಸಿತಾಸ್ಮಃ | ಅಸಿತಾಸ್ಮಃ. |
| ಲೃಟ್-     | ಅಸಿಷ್ಯತಿ  | ಅಸಿಷ್ಯತಃ  | ಅಸಿಷ್ಯಂತಿ. |
|           | ಅಸಿಷ್ಯಸಿ  | ಅಸಿಷ್ಯಥಃ  | ಅಸಿಷ್ಯಥ.   |
|           | ಅಸಿಷ್ಯಾಮಿ | ಅಸಿಷ್ಯಾವಃ | ಅಸಿಷ್ಯಾಮಃ. |
| ಲोट-      | ಅಸ್ಯತು    | ಅಸ್ಯತಾಮ್  | ಅಸ್ಯಂತು.   |
|           | ಅಸ್ಯತಾತ್  |           |            |
|           | ಅಸ್ಯ      | ಅಸ್ಯತಮ್   | ಅಸ್ಯತ.     |
|           | ಅಸ್ಯತಾತ್  |           |            |
|           | ಅಸ್ಯಾನಿ   | ಅಸ್ಯಾವ    | ಅಸ್ಯಾಮ.    |
| ಲಙ್-      | ಆಸ್ಯತ್    | ಆಸ್ಯತಾಮ್  | ಆಸ್ಯನ್.    |
|           | ಆಸ್ಯಃ     | ಆಸ್ಯತಮ್   | ಆಸ್ಯತ.     |
|           | ಆಸ್ಯಮ್    | ಆಸ್ಯಾವ    | ಆಸ್ಯಾಮ.    |
| ವಿಧಿಲಿಙ್- | ಅಸ್ಯೇತ್   | ಅಸ್ಯೇತಾಮ್ | ಅಸ್ಯೇಯುಃ.  |
|           | ಅಸ್ಯೇಃ    | ಅಸ್ಯೇತಮ್  | ಅಸ್ಯೇತ.    |
|           | ಅಸ್ಯೇಯಮ್  | ಅಸ್ಯೇವ    | ಅಸ್ಯೇಮ.    |



|            |          |             |           |
|------------|----------|-------------|-----------|
| ಆಶೀರ್ಲಿಙ್— | ಅಸ್ಯಾತ್  | ಅಸ್ಯಾಸ್ತಾಮ್ | ಅಸ್ಯಾಸುಃ। |
|            | ಅಸ್ಯಾಃ   | ಅಸ್ಯಾಸ್ತಮ್  | ಅಸ್ಯಾಸ್ತ। |
|            | ಅಸ್ಯಾಸಮ್ | ಅಸ್ಯಾಸ್ವ    | ಅಸ್ಯಾಸ್ಮ। |
| ಲುಙ್—      | ಆಸ್ಥತ್   | ಆಸ್ಥತಾಮ್    | ಆಸ್ಥನ್।   |
|            | ಆಸ್ಥಃ    | ಆಸ್ಥತಮ್     | ಆಸ್ಥತ।    |
|            | ಆಸ್ಥಮ್   | ಆಸ್ಥಾವ      | ಆಸ್ಥಾಮ।   |
| ಲೃಙ್—      | ಆಸಿಷ್ಯತ್ | ಆಸಿಷ್ಯತಾಮ್  | ಆಸಿಷ್ಯನ್। |
|            | ಆಸಿಷ್ಯಃ  | ಆಸಿಷ್ಯತಮ್   | ಆಸಿಷ್ಯತ।  |
|            | ಆಸಿಷ್ಯಮ್ | ಆಸಿಷ್ಯಾವ    | ಆಸಿಷ್ಯಾಮ। |

1. ಎಸೆ, ಬಿಸಾಡು, ಒಗೆ. 2. ಇಡು, ಹಾಕು.  
“ತತಃ ಪ್ರಜಘಟೇ ಯುಧಂ ಶಸ್ತ್ರಾಪ್ಯಾಸುಃ ಪರಸ್ಪರಮ್” ಭट्टಿಂ  
೧೪-೭೭। “ತस्ಮಿನ್ನಾಸ್ಥದಿಷಿಕಾಸ್ತ್ರಂ ರಾಮೋ ರಾಮಾವಬೋಧಿತಃ”  
ರघುಂ ೧೨-೨೩। “ರಾಮೇ ರಿಪುಃ ಶರಾನಾಜಿಮಹೇಷ್ವಾಸ  
ವಿವಕ್ಷಣೇ” ಮಾಘಂ ೧೯-೫। “ಅಗ್ನೌ ಪ್ರಾಸ್ತಾಹುತಿಃ  
ಸಮ್ಯಗಾದಿತ್ಯಮುಪತಿಷ್ಠತೇ” ಮನುಂ ೩-೭೬।

ಕರ್ಮಣಿಃ—೧. ಅಸ್ಯತೇ ಅಸ್ಯೇತೇ ಅಸ್ಯಂತೇ। ೨. ಆಸೇ  
ಆಸಾತೇ ಆಸಿರೇ। ೩. ಅಸಿತಾ। ೪. ಅಸಿಷ್ಯತೇ।  
೫. ಅಸ್ಯತಾಮ್। ೬. ಅಸ್ಯತ। ೭. ಅಸ್ಯೇತ। ೮. ಅಸಿಸಿಷ್ಠ।  
೯. ಆಸಿ। ೧೦. ಆಸಿಷ್ಯತ।

ಪ್ಯಂತಾತ್ ಕರ್ತರಿಃ—೧. ಆಸಯತಿ। ೨. ಆಸಯಾಂಚಕಾರ,  
—ಚಕ್ರೇ, —ಬಭೂವ, —ಆಸ। ೩. ಆಸಯಿತಾ। ೪. ಆಸಯಿಷ್ಯತಿ।  
೫. ಆಸಯತು। ೬. ಆಸಯತ್। ೭. ಆಸಯೇತ್। ೮. ಆಸ್ಯಾತ್।  
೯. ಆಸಿಸತ್। ೧೦. ಆಸಯಿಷ್ಯತ್।

ಪ್ಯಂತಾತ್ ಕರ್ಮಣಿಃ—೧. ಅಸ್ಯತೇ। ೨. ಆಸಯಾಂಚಕ್ರೇ,  
—ಬಭೂವೇ, —ಆಸೇ। ೩. ಆಸಯಿತಾ, ಆಸಿತಾ। ೪. ಆಸ-  
ಯಿಷ್ಯತೇ, ಆಸಿಷ್ಯತೇ। ೫. ಅಸ್ಯತಾಮ್। ೬. ಅಸ್ಯತ।  
೭. ಅಸ್ಯೇತ। ೮. ಆಸಯಿಷಿಷ್ಠ। ೯. ಆಸಿ ಆಸಿ-  
ಷಾತಾಮ್, ಆಸಯಿಷಾತಾಮ್। ೧೦. ಆಸಯಿಷ್ಯತ, ಆಸಿಷ್ಯತ।

ಸನಿಃ—೧. ಅಸಿಸಿಷತಿ। ೨. ಅಸಿಸಿಷಾಂಚಕಾರ,  
—ಬಭೂವ, —ಆಸ। ೩. ಅಸಿಸಿಷಿತಾ। ೪. ಅಸಿಸಿಷಿಷ್ಯತಿ।  
೫. ಅಸಿಸಿಷತು। ೬. ಅಸಿಸಿಷತ್। ೭. ಅಸಿಸಿಷೇತ್।  
೮. ಅಸಿಸಿಷ್ಯಾತ್। ೯. ಅಸಿಸಿಷಿತ್। ೧೦. ಅಸಿ-  
ಸಿಷಿಷ್ಯತ್।

ಕೇವಲಾತ್ ಕೃತ್ಸುಃ—ತವ್ಯಃ—ಅಸಿತವ್ಯಮ್। ಅನೀಯರ್—  
ಅಸನೀಯಮ್। ಪ್ಯತ್—ಆಸ್ಯಮ್। ಕರ್ಮಂ ಕ್ತಃ—ಅಸ್ತಃ। ಕ್ತವನುಃ—  
ಅಸಿತವಾನ್। ಶತೃ—ಅಸನ್, ಅಸಂತಿ। ಅಸಿಷ್ಯನ್, ಅಸಿಷ್ಯತೀ,  
ಅಸಿಷ್ಯಂತಿ। ತುಮುನ್—ಅಸಿತುಮ್। ಭಾವೇ ಕ್ತಃ—ಅಸ್ತಮ್।  
ಲ್ಯುಟ್—ಅಸನಮ್। ಕ್ತವಾ—ಅಸಿತವಾ, ಅಸ್ತವಾ। ಲ್ಯಪ್—ಪ್ರತ್ಯಸ್ಯ।  
ಣಮುಲ್—ಆಸಮಾಸಮ್।

ಪ್ಯಂತಾತ್ ಕೃತ್ಸುಃ—ಆಸಯಿತವ್ಯಃ। ಆಸನೀಯಃ। ಆಸ್ಯಃ।  
ಆಸಿತಃ। ಆಸಿತವಾನ್। ಆಸಯನ್, ಆಸಯಂತಿ। ಆಸಯ-  
ಮಾನಃ। ಆಸಯಿಷ್ಯನ್, ಆಸಯಿಷ್ಯತೀ, ಆಸಯಿಷ್ಯಂತಿ।  
ಆಸಯಿಷ್ಯಮಾಣಃ। ಆಸಯಿತುಮ್। ಆಸಿತಮ್। ಆಸನಮ್।  
ಆಸಯಿತ್ವಾ। ಉಪಾಸ್ಯ। ಆಸಮಾಸಮ್। ಆಸಯಿತ್ವಾ  
ಆಸಯಿತ್ವಾ।

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥ ಭೇದಗಳು:

(1) ಅತಿ+ಅಸು = ಬಹಳ ದೂರಕ್ಕೆ ಎಸೆ. ಅತ್ಯಸ್ತಃ।  
ಅತ್ಯಾಸಃ। “ಬಹುಭಿಶ್ಚೈಕಮತ್ಯಸ್ಯನ್ ಏಕೇನ ಚ ಬಹುನ್ ಜನಾನ್”  
ಭಾಂ।

(2) ವಿ+ಅತಿ+ಅಸು = ಬದಲಾವಣೆ ಮಾಡು,  
ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಇಡು, ವಿರೋಧವಾಗಿ ಇಡು. ವ್ಯತ್ಯಸ್ತಃ।  
ವ್ಯತ್ಯಾಸಃ। “ವ್ಯತ್ಯಸ್ತಪಾಣಿನಾ ಕಾರ್ಯಮುಪಸಂಗ್ರಹಣಂ ಗುರೋಃ”  
ಮನುಂ ೨-೭೨।

(3) ಅಧಿ+ಅಸು = ಆರೋಪಿಸು, ಅದಲ್ಲದುದನ್ನು  
ಅದನ್ನಾಗಿ (ಸುಳ್ಳಾಗಿ) ತಿಳಿ, ಒಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು  
ಬೇರೆ ವಸ್ತುವನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿ. ಅಧ್ಯಾಸಃ। ಅಧ್ಯಸ್ತಃ। “ಸರ್ವೋ  
ಹಿ ಪುರೋಜ್ವಲಿಪ್ರಕಾಶಃ ವಿಷಯೇ ವಿಷಯಾಂತರಮಧ್ಯಸ್ಥತಿ, ಬಾಹ್ಯಧರ್ಮಾ-  
ನಾತ್ಮನ್ಯಧ್ಯಸ್ಥತಿ”। “ಶುಕ್ಲೋ ರಜತಮಧ್ಯಸ್ತಃ, ಬ್ರಹ್ಮಣಿ  
ಜಗದಧ್ಯಸ್ತಮ್”।

(4) ಅನು+ಅಸು = 1. ಜೊತೆಯಲ್ಲಿಡು. 2. ಅನಂತರ  
ಇಡು. ಅನ್ವಸ್ತಃ।

(5) ಅಪ+ಅಸು = ದೂರಮಾಡು, ನಿವಾರಿಸು, ತಳ್ಳಿ  
ಹಾಕು. ಅಪಾಸ್ತಮ್। ಅಪಾಸ್ಯ। “ನಿರಸ್ತಗಾಂಭೀರ್ಯಮಪಾಸ್ತ-  
ಪುಷ್ಪಕಂ ಪ್ರಕಮ್ಪಯಾಮಾಸ ನ ಮಾನಸಂ ನ ಸಃ” ಮಾಘಂ ೧-೫೫।  
“ಕಿಮಿತ್ಯಪಾಸ್ಯಾಭರಣಾನಿ ಯೌವನೇ ಧೃತಂ ತ್ವಯಾ ವಾರ್ಧಕಶೋಭಿ  
ವಲ್ಕಲಮ್” ಕುಮಾರಂ ೫-೪೪।

(6) ಅಭಿ+ಅಸು = 1. ಅಭ್ಯಾಸ ಮಾಡು, ಕಲಿ.  
2. ಆವೃತ್ತಿ ಮಾಡು, ಪುನಃ ಪುನಃ ಮಾಡು. ಅಭ್ಯಾಸಃ।  
ಅಭ್ಯಸ್ತಮ್। “ಶೇಷೇಭ್ಯಸ್ತವಿಜ್ಞಾನಾಂ ಯೌವನೇ ವಿಷಯೇಷಿಣಾಮ್”  
ರघುಂ ೧-೭। “ಅಭ್ಯಾಸೇನ ತು ಕೌಂತೇಯ ವೈರಾಗ್ಯೇಣ ಚ ಗೃಹ್ಯತೇ”  
ಗೀತಾ ೬-೩೫।

(7) ಉದ್+ಅಸು = 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಸೆ, ಮೇಲಕ್ಕೆ  
ಹಾರಿಸು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತು. ಉದಸ್ಯ। ಉದಸ್ತಮ್।  
“ದಯಿತಾಯ ಸಾಸವಮುದಸ್ತಮಪತದವಸಾದಿನಃ ಕರಾತ್” ಮಾಘಂ  
೧೫-೮೧। 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳು. “ಉದಸ್ತಾಧೋರಣಃ”  
ದಶಕುಂ। 3. ತಳ್ಳಿಹಾಕು, ನಿವಾರಿಸು, ಹೋಗಲಾಡಿಸು.  
“ರಿಪುತಿಮಿರಮುದಸ್ಯೋದೀಯಮಾನಂ ದಿನಾದೌ” ಕಿರಾಂ ೧-೪೬।



(8) ಪರಿ+ಉ+ಅಸು = ವಿಧಿಗೆ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯಕೊಟ್ಟು ನಿಷೇಧಕ್ಕೆ ಅಪ್ರಾಧಾನ್ಯಕೊಡು. ಪರ್ಯುದಾಸಃ। “ಪ್ರಾಧಾನ್ಯಂ ಹಿ ವಿಧೇಯತ್ರ ಪ್ರತಿಪೇಧೋಪಧಾನತಾ। ಪರ್ಯುದಾಸಃ ಸ ವಿಜ್ಞೇಯಃ ಪೂರ್ವರೂಪದೇನ” ನೃ. “ಜುಗೋಪಾತ್ಮಾನಮತ್ರಸ್ತೋ ಭಜೇ ಧರ್ಮ-ಮನಾತುರಃ। ಅಗೃಹ್ಣುರಾದೇ ಸೋರ್ಯಮಸಕ್ತಃ “ಸುಖಮನ್ವಭೂತ್” ಇಲ್ಲಿ ಅತ್ರ ಸ್ತತ್ಪ್ರಾಧಾನ್ಯದಿಗಳನ್ನುದ್ದೇಶಿಸಿ ಅತ್ಯಗೋಪನಾದಿ ಗಳು ವಿಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. “ನೃ.” ಗೆ ಉತ್ತರಪದದೊಡನೆ ಸಂಬಂಧವನ್ನು ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ ಗುಣೀಭಾವವೊಂದಿ ಅಪ್ರಾಧಾನವಾಯಿತು.

(9) ವಿ+ಉ+ಅಸು = ನಿವಾರಿಸು, ತ್ಯಜಿಸು, ತ್ಯಜ್ಯಹಾಕು. ವ್ಯುದಾಸಃ। ವ್ಯುದಸ್ತಃ। ವ್ಯುದಸ್ಯ। “ತ್ವಂತು ಹೇತುನತೀತ್ಯೇತಾನ್ ಕಾಮಕ್ರೋಧೌ ವ್ಯುದಸ್ಯ ಚ” ಭಾಂ. “ಶಕಟ-ವ್ಯುದಾಸತರೂಪಜ್ಞಧರಣಿಧರಧಾರಣಾದಿಕಮ್” ಮಾಘಂ ೧೫-೩೭।

(10) ಉ+ಅಸು = ಸಮೀಪದಲ್ಲಿಡು.

(11) ನಿ+ಅಸು = ಇಡು, ಅರ್ಪಿಸು, ಒಪ್ಪಿಸು. ನ್ಯಾಸಃ। ನ್ಯಸ್ತಃ। “ನ್ಯಾಸಂ ಶುಭಂ ನಿಶ್ಚಿತಯೋಗಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾಃ” ಪಾಠಂ ೧೮-೫೬।

(12) ಉ+ನಿ+ಅಸು = ಹೇಳು, ಉದಾಹರಿಸು, ವಿವರಿಸು. ಉಪನ್ಯಾಸಃ। ಉಪನ್ಯಸ್ತಮ್। ಉಪನ್ಯಸ್ಯ। “ಪ್ರಭವತಿ ನಿಜಸ್ಯ ಕನ್ಯಕಾಜನಸ್ಯ ದೇವ ಇತ್ಯುಭಯಲೋಕಾವಿರುದ್ಧಮುತ್ತರ-ಮುಪನ್ಯಸ್ತಮ್” ಮಾಲತೀಂ ೨।

(13) ಸಮ್+ನಿ+ಅಸು = 1. ತ್ಯಜಿಸು, ವರ್ಜಿಸು, ಬಿಡು. (ಸರ್ವಪರಿತ್ಯಾಗ.) ಸಂನ್ಯಾಸಃ। ಸಂನ್ಯಸ್ಯ। “ಕಾಮ್ಯಾನಾಂ ಕರ್ಮಣಾಂ ನ್ಯಾಸಂ ಸಂನ್ಯಾಸಂ ಕವಯೋ ವಿदುಃ” ಗೀತಾ ೧೮-೨। “ನ ಚ ಸಂನ್ಯಸನಾದೇವ ಸಿದ್ಧಿಃ ಸಮಧಿಗಚ್ಛತಿ” ಗೀತಾ ೩-೪। 2. ಇಡು, ಅರ್ಪಿಸು. “ಮಯಿ ಸರ್ವಾಣಿ ಕರ್ಮಾಣಿ ಸಂನ್ಯಸ್ಯಾಧ್ಯಾತ್ಮಚೇತಸಾ” ಗೀತಾ ೩-೩೦।

(14) ನಿರ್+ಅಸು = 1. ತ್ಯಜಿಸು, ಹೇಳು, ಛಾತ್ರತೆಯಾಗಿ ಹೇಳು. “ನಿರಸ್ತಂ ತ್ವರಿತೋದಿತಮ್” ಅಮಂ. 2. ಹೋಗಲಾಡಿಸು, ನಿವಾರಿಸು. “ನಿರಸ್ತಗಾಂಭೀರ್ಯ-ಮಪಾಸ್ತಪುಷ್ಪಕಂ ಪ್ರಕಮ್ಪಯಾಮಾಸ ನ ಮಾನಸಂ ನ ಸಃ” ಮಾಘಂ ೧-೫೫।

(15) ಪರ+ಅಸು = ನಿರಾಕರಿಸು, ತಿರಸ್ಕರಿಸು. ಪರಾಸ್ತಮ್।

(16) ಪರಿ+ಅಸು = 1. ಹರಡು, ವ್ಯಾಪಿಸು. ಪರ್ಯಸ್ತಃ। “ತತೋಽನುಕುರ್ಯಾದಿಶದಸ್ಯ ತಸ್ಯಾಸ್ತಾಂಪ್ರೀಷ್ಠಪರ್ಯಸ್ತರೂಪಃ ಸ್ಮಿತಸ್ಯ” ಕುಮಾಂ ೧-೪೪। 2. ಸುತ್ತ, ತಿರುಗು. “ಸಾಚೀಕೃತಾ ಪಾಸ್ತರೇಣ ತಸ್ಯೌ ಮುಖೇನ ಪರ್ಯಸ್ತವಿಲೋಚನೇನ” ಕುಮಾಂ ೧-೬೮। 3. ಬೀಳು, ಉರುಳು. “ಭಗನಾಕ್ಷಪರ್ಯಸ್ತರಥಂ ಜನೇನ” ರಘುಂ ೫-೪೯।

(17) ವಿ+ಪರಿ+ಅಸು = 1. ವೃತ್ತಾಸಹೊಂದು, ಬದಲಾವಣೆಹೊಂದು. ವಿಪರ್ಯಾಸಃ। “ವಿಪರ್ಯಾಸಂ ಯಾತೋ ಧನವಿರಲಭಾವಃ ಕ್ಷಿತಿರಹಾಮ್” ಉಂ ರಾಂ ೨-೨೬। 2. ಭ್ರಾಂತಿಹೊಂದು, ತಪ್ಪು, ತಿಳಿ.

(18) ಪ್ರ+ಅಸು = ಇಡು, ಹಾಕು. ಪ್ರಾಸ್ತಮ್। ಪ್ರಾಸ್ಯ। “ಅಗ್ನೌ ಪ್ರಾಸ್ತಾಹುತಿಃ ಸಮ್ಯಗಾದಿತ್ಯಮುಪತಿಷ್ಠತೇ” ಮನುಂ ೩-೭೬।

(19) ಅನು+ಪ್ರ+ಅಸು = ಒಂದೇ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿಡು, ಅನುಗುಣವಾಗಿಡು. ಅನುಪ್ರಾಸಃ। ಅನುಗತತ್ವೇನ ಪ್ರಕರ್ಷಣ ನ್ಯಾಸಃ। ಶಬ್ದಸಾಮ್ಯಮನುಪ್ರಾಸಃ। “ಅನುಪ್ರಾಸಃ ಶಬ್ದಸಾಮ್ಯಂ ವೈಷಮ್ಯೇಽಪಿ ಸ್ವರಸ್ಯ ಯತ್” ಸಾಂ ದಂ।

(20) ವಿ+ಅಸು = 1. ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿಡು, ಬಿಡಿಸಿ ಇಡು, ವಿವರಿಸು. ವ್ಯಾಸಃ। ವ್ಯಸ್ತಃ। 2. ವಿಭಾಗಿಸು, ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಮಾಡು. “ಸ ಚತುರ್ಥಾ ಬಭೌ ವ್ಯಸ್ತಃ ಪ್ರಸವಃ ಪೃಥಿವೀಪತೇ” ರಘುಂ ೧೦-೮೪।

(21) ವಿ+ನಿ+ಅಸು = ಇಡು, ಇರಿಸು. ವಿನ್ಯಾಸಃ। ವಿನ್ಯಸ್ತಃ। “ವಿನ್ಯಸ್ತಮಜ್ಞಲಮಹೌಷಧಿರೀಶ್ವರಾಃ” ಕಿರಾಂ ೫-೩೩।

(22) ಸಮ್+ಅಸು = ಸಂಕ್ಷೇಪಿಸು, ಸಂಗ್ರಹಿಸು, ಚಿಕ್ಕದಾಗಿ ಮಾಡು. ಸಮಾಸಃ। ಸಮಸ್ತಃ। “ಸಿದ್ಧಿಃ ಪ್ರಾಪ್ತೌ ಯಥಾ ಬ್ರಹ್ಮ ತಥಾಪ್ನೋತಿ ನಿಬೋಧ ಮೇ। ಸಮಾಸೇನೈವ ಕೌಂತೇಯ ನಿಷ್ಠಾ ಜ್ಞಾನಸ್ಯ ಯಾ ಪರಾ” ಗೀತಾ ೧೮-೫೦।

ಅಸು ಅಸು (ಪುಂ) 1. ಶ್ವಾಸ, ಉಸಿರು. ಅಸ್ಯತೇ — ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) “ಉನ್” (ಉಂ ೧-೧೦)। 2. ನೀರು, ಜಲ. 3. ಶಾಖ, ಬಿಸಿ. 4. ಚಿತ್ತ, ಮನಸ್ಸು. (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 5. ಪಂಚಪ್ರಾಣವಾಯುಗಳು. “ಅಭಿ-ಮಾನಧನಸ್ಯ ಗತ್ವರೇರಸುಭಿಃ ಸ್ಥಾಸ್ತು ಯಶಶ್ಚಿವಿವಿಧತಃ” ಕಿರಾಂ ೨-೧೯।

ಅಸುಕರ ಅಸುಕರ (ವಿಂ) ಸುಖವಾಗಿ ಮಾಡಲು ಆಗದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಮಾಡಬಹುದಾದ. ಸುಖೇನ ಕ್ರಿಯತೇ — ಸು+ಉ ಕೃ (ಕರಣ) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬)।

ಅಸುಖ ಅಸುಖ (ನಂ) 1. ಸುಖದ ಅಭಾವ, ದುಃಖ. “ತೌ ಧರ್ಮಂ ಪಶ್ಯತಸ್ತಸ್ಯ ಪಾಪಂ ಚಾತಂದ್ರಿತೌ ಸಹ। ಯಾಭ್ಯಾಂ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ ಸಂಪೃಕ್ತಃ ಪ್ರೇತೇಹ ಚ ಸುಖಾಸುಖಮ್” ಮನುಂ ೧೨-೧೯। (ವಿಂ) 2. ಸುಖವಿಲ್ಲದ. 3. ಕಷ್ಟವಾದ, ಅಶಕ್ತವಾದ. “ಶ್ರೇಯಾಸಿ ಲಬ್ಧುಮಸುಖಾನಿ ವಿನಾಂತರಾಯಃ” ಕಿರಾಂ ೫-೪೯।

ಅಸುಖೋದಯ ಅಸುಖೋದಯ (ವಿಂ) ಅಸುಖಕ್ಕೆ ಕಾರಣ ವಾದ, ದುಃಖವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. “ನ ಕರ್ಮ ನಿಷ್ಫಲಂ ಕುರ್ಯಾನ್ನಾಯತ್ಯಾಮಸುಖೋದಯಮ್” ಮನುಂ ೪-೭೦।



ಅಸುಖೋದಕ ಅಸುಖೋದಕ (ವಿಂ) ದುಃಖವೇ ಫಲ  
ವಾಗಿ ಉಳ್ಳ, ದುಃಖವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. "ತದ್ಭವತ್ಯ-  
ಸುಖೋದಕಂ ಜೀವತಶ್ಚ ಮೃತಸ್ಯ ಚ" ಮನುಂ ೧೧-೧೦।

ಅಸುಧಾರಣ ಅಸುಧಾರಣ (ನಂ) ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ, ಬದು  
ಕಿರುವುದು, ಜೀವಿಸಿರುವುದು. ಅಸುನಾಂ ಪ್ರಾಣವಾಯುನಾಂ  
ಧಾರಣಮ್।

ಅಸುಮತ್ ಅಸುಮತ್ (ವಿಂ) ಪ್ರಾಣ. ಅಸವಃ ಸಂತ್ಯಸ್ಯ  
"ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪)। "ಸತತಮಸುಮತಾಮಗಮ್ಯರೂಪಾಃ  
ಪರಿಣತದಿವ್ಯಕರೀಕಾಸ್ತದಿವಿಭಿರ್ಮತಿ" ಮಾಘಂ ೪-೨೯।

ಅಸುರ ಅಸುರ (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ. ಅಸ್ಯಂತಿ ಕ್ಷಿಪಂತಿ  
ದೇವಾನ್ - ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಉನ್" (೩ಂ ೧-೪೨)।  
"ಸುರಾಪ್ರತಿಗ್ರಹಾಢೇವಾಃ ಸುರಾ ಇತ್ಯಭಿವಿಶ್ರುತಾಃ। ಅಪ್ರತಿ-  
ಗ್ರಹಣಾತ್ತಸ್ಯಾ ದೇತೇಯಾಶ್ಚಾಸುರಾಸ್ತಥಾ" ರಾಮಾಂ। "ಸ  
ಮತ್ಸರೇಣಾಸುರ ಇತ್ಯುಪೇಯುಷಾ ಚಿರಾಯ ನಾಮ್ನಃ ಪ್ರಥಮಾಭಿಧೇಯತಾಮ್"  
ಮಾಘಂ ೧-೪೩। 2. ಸೂರ್ಯ. ಅಸ (ದೀಪ್ತೌ)  
"ಉನ್" (೩ಂ ೧-೪೨)। "ಅಸುರಃ ಸೂರ್ಯದೈತಯೋಃ। ಅಸುರಾ  
ರಜನಿವಾಶ್ಯೋಃ" ಹೇಮಂ। 3. ಗಜ, ಆನೆ. "ದಂತಾವಲೋ  
ಮಹಾಕಾಯೋ ವಾರಣಃ ಕುಂಜರೋಽಸುರಃ" ವೈಜಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ರಾ -ರಾ. 4. ರಾತ್ರಿ. 5. ಬಾಚಿ, ಬಡಗಿಯ  
ಒಂದು ಆಯುಧ. -ರೀ -ರೀ. 6. ರಾಕ್ಷಸ ಹೆಂಗಸು,  
ರಕ್ಷಸಿ. 7. ಕರಿ ಸಾಸುವೆ. "ಅಸುರೀ ಕೃಷ್ಣಿಕಾಚಾಸೌ"  
ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ಅಸುರಕ್ಷ ಅಸುರಕ್ಷ (ವಿಂ) 1. ಸುಖವಾಗಿ ಕಾಪಾಡಲು  
ಆಗದೆ. ಸುಖೇನ ರಕ್ಷಯತೇ - ಸು + ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಖಲ್"  
(೩-೩-೧೨೬)। ನಂ ತಂ। "ಶರದಭ್ರಚಲಾಶ್ಚಲೇಂದ್ರಿಯೈ-  
ರಸುರಕ್ಷಾ ಹಿ ಬಹುಚ್ಚಲಾಃ ಶ್ರಿಯಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೩೯।  
2. ಪ್ರಾಣವನ್ನು ಕಾಪಾಡುವ. ಅಸುನ್ ರಕ್ಷತಿ - ರಕ್ಷ  
"ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।

ಅಸುರರಾಜ ಅಸುರರಾಜ -ರಾಜ-ರಾಜ (ಪುಂ) 1. ಅಸುರರ  
ದೊರೆ. 2. ಬಲಿಚಕ್ರವರ್ತಿ. ಅಸುರಾಣಾಂ ರಾಡ್ ರಾಜಾ ವಾ।

ಅಸುರರಿಪು ಅಸುರರಿಪು (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ವಾಸುದೇವ.

ಅಸುರಗುರು ಅಸುರಗುರು (ಪುಂ) ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರು,  
ರಾಕ್ಷಸರ ಗುರು.

ಅಸುರಾಧಿಪ ಅಸುರಾಧಿಪ (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸರ ದೊರೆ,  
ಅಸುರರ ಒಡೆಯ. 2. ಬಲಿಚಕ್ರವರ್ತಿ. ಅಸುರಾಣಾಮಧಿಪಃ।

ಅಸುಸು ಅಸುಸು (ಪುಂ) ಬಾಣ. ಅಸುನ್ ಪ್ರಾಣಾನ್ ಸುವತಿ - ಷ  
(ಪ್ರೇರಣ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧)। "ಸ ಸಾಸಿಃ ಸಾಸುಃ  
ಸಾಸೋ ಯೇಯಾ ಯೇಯಾ ಯಯಾಯಃ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೪।

ಅಸು ಅಸು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಸವಿಸದ ಹೆಂಗಸು. ನ ಸುತೇ - ಷಡ್  
(ಪ್ರಾಣಿಪ್ರಸವೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧)।

ಅಸುಕ್ಷಣ ಅಸುಕ್ಷಣ (ನಂ) ಅನಾದರ, ತಿರಸ್ಕಾರ.  
ಸುಕ್ಷ (ಆದರೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। ಅಭಾವೇ ನಂ ತಂ।

ಅಸುಯಕ ಅಸುಯಕ (ವಿಂ) ಅಸುಯೆಯುಳ್ಳ, ಗುಣ  
ದಲ್ಲಿ ದೋಷವನ್ನು ಎಣಿಸುವ. ಅಸುಜ್ (ಉಪತಾಪ) + ಯಕ್  
"ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಅಹಂಕಾರಂ ಬಲಂ ದರ್ಪಂ ಕಾಮಂ  
ಕ್ರೋಧಂ ಚ ಸಂಶ್ರಿತಾಃ। ಮಾಮಾತ್ಮಪರದೇಹೇಷು ಪ್ರದಿವಿಷಂತೋಽಭ್ಯ-  
ಸುಯಕಾಃ" ಗೀತಾ ೧೬-೧೮।

ಅಸುಯಾ ಅಸುಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಇತರರ ಗುಣದಲ್ಲಿ  
ದೋಷವನ್ನು ಹೇಳುವುದು. ಅಸು (ಉಪತಾಪ) + ಕಂಡ್ವಾದಿ  
ಯಕ್ + "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೬)। ಅಸುಯಾ ಪರಗುಣೇಷು ದೋಷಾಃ-  
ಷ್ಕರಣಮ್ ಸಿಂ ಕೌಂ। "ಅಸುಯಾನ್ಯಗುಣಧೋನಾಮೌದ್ವಯಾ-  
ದಸಹಿಷ್ಣುತಾ" ಸಾಂ ದಂ। "ಅಸುಯೇವ ತನ್ನಾಘಾಃ ಸಪ್ತಧೇವ  
ಪ್ರಸುಸುಬುಃ" ರಘುಂ ೪-೨೩। 2. ದೋಷ, ಕೋಪ.  
"ಆಯೇ, ಬ್ರಜಾಮೌಜ್ಯತ ಇತ್ಯಯೇನಾಂ ವಧೂರಸುಯಾಕುಟಿಲಂ ದದರ್ಶ"  
ರಘುಂ ೬-೮೨।

ಅಸುರ್ಯಪಶ್ಯ ಅಸುರ್ಯಪಶ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸೂರ್ಯನನ್ನು  
ನೋಡದಿರುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪಶ್ಯಾ -ಪಶ್ಯಾ. "ಅಸುರ್ಯಪಶ್ಯ  
ರೂಪಾ ತ್ವಂ ಕಿಮಭೀಹರರಾರ್ಯಸೇ" ಭದ್ರಿಂ ೪-೨೧। 2. ಸೂರ್ಯ  
ನನ್ನೂ ಕಾಣದಿರುವ ರಾಜಪತ್ನಿ, ಪೋಷಣ ಪದ್ಧತಿ  
ಯಲ್ಲಿರುವ ರಾಜಪ್ರಿಯರು. ನ ಸೂರ್ಯ ಪಶ್ಯತಿ - ದೃಶಿರ್  
(ಪ್ರೇಕ್ಷಣ) "ಖಲ್" (೩-೨-೩೬)। "ಮುಮ್" (೬-೩-೬೭)।  
"ಅಸುರ್ಯಪಶ್ಯಾ ರಾಜದಾರಾಃ" ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಅಸೃವಕರ ಅಸೃವಕರ (ಪುಂ) ದೇಹದಲ್ಲಿರುವ ರಸಧಾತು,  
ರಕ್ತಸಾರ, ನಸೆ. ಅಸೃಜಂ ರಕ್ತಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃತ್  
(ಕರಣ) "ಠಃ" (೩-೨-೨೦)। [ಉಟಿಮಾಡಿದ  
ಆಹಾರವು ಮೊದಲು ರಸರೂಪವಾಗುವುದು. ರಸವು  
ರಕ್ತವಾಗಿ ಪರಿಣಮಿಸುವುದು.] "ರಸಾದ್ರಕ್ತಂ ತತೋ ಮಾಸಂ  
ಮಾಸಾನ್ಮೇದಃ ಪ್ರಜಾಯತೇ। ಮೇದಸೋಽಸ್ಥಿ ತತೋ ಮಜ್ಜಾ ಮಜ್ಜಾಃ  
ಶುಕ್ರಂ ತು ಜಾಯತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಸ್ಥಾಂ ೧೪-೧೦।

ಅಸೃಧರಾ ಅಸೃಧರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ರಕ್ತವನ್ನು ಧರಿಸುವ)  
ಚರ್ಮ. ಅಸೃಜೋ ರಕ್ತಸ್ಯ ಧರಾ।

ಅಸೃಧಾರಾ ಅಸೃಧಾರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಕ್ತದ ಪ್ರವಾಹ.  
ಅಸೃಜೋ ಧಾರಾ।

ಅಸೃಗ್ವಹಾ ಅಸೃಗ್ವಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ರಕ್ತ ಸಂಚರಿಸುವ)  
ನಾಡಿ. ವಹ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।  
ಅಸೃಜೋ ವಹಾ। [ನಿವರಕ್ಕೆ "ನಾಡಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.



**ಅಸೃಗ್ವಿಮೋಕ್ಷಣ ಅಸೃಗ್ವಿಮೋಕ್ಷಣ (ನಂ)** ದೇಹದಿಂದ ರಕ್ತವನ್ನು ತೆಗೆಯುವುದು. ಅಸೃಜಃ ರಕ್ತಸ್ಯ ದೇಹಾದಿ-  
ಮೋಕ್ಷಣಮ್ | [ದೇಹದಲ್ಲಿ ರಕ್ತವು ಅಧಿಕವಾಗಿದ್ದರೂ ಅಥವಾ ಕೆಟ್ಟದ್ದರೂ ಅದನ್ನು ಹೊರಕ್ಕೆ ತೆಗೆಯಿ ದೇಹವು ವೈದ್ಯನಿಯಮ.] ರಕ್ತ ಮೋಕ್ಷಣಕಾಲ ಮುಂತಾದುವು: "ತಸ್ಮಾನ್ ಶೀತೇ ನಾಲ್ಪುಣ್ಣೇ ನಾಸ್ವಿತ್ತೇ ನಾತಿತಾಪಿತೇ | ಯವಾಗ್ಂ ಪ್ರತಿಪೀತಸ್ಯ ಶೋಣಿತಂ ಮೋಕ್ಷಯೇದ್ವಿಷಕ್" ಮುಷುತಂ ಸೂತ್ರಸ್ಥಾಂ ೧೪-೩೧ | ರಕ್ತ ಮೋಕ್ಷಣಾ ನಂತರ ದೇಹವು ಶುದ್ಧವಾದುದಕ್ಕೆ ಲಕ್ಷಣ: "ಸಮ್ಯಗತ್ವಾ ಯದಾ ರಕ್ತಂ ಸ್ವಯಮೇವಾವತಿಷ್ಠತೇ | ಶುದ್ಧಂ ತದಾ ವಿಜಾನೀಯಾತ್ ಸಮ್ಯಗ್ವಿಸ್ತಾವಿತಂ ಚ ತತ್ | ಲಾಘವಂ ವೇದನಾ-  
ಶಾಂತಿವ್ಯವಿವೇಗಪರಿಕ್ಷಯಃ | ಸಮ್ಯಗ್ವಿಸ್ತಾವಿತೇ ಲಿಙ್ಗಂ ಪ್ರಸಾದೋ ಮನಸಸ್ತಥಾ" ಮುಷುತಂ ಸೂತ್ರಸ್ಥಾಂ ೧೪-೩೨, ೩೩ | ರಕ್ತ ಮೋಕ್ಷಣದ ಫಲ: "ತ್ವಗದೋಷಾಃ ಗ್ರಂಥಯಃ ಶೋಫಾ ರೋಗಾಃ ಶೋಣಿತಜಾಶ್ಚ ಯೇ | ರಕ್ತಮೋಕ್ಷಣಶೀಲಾನಾಂ ನ ಭವಂತಿ ಕದಾಚನ" ಮುಷುತಂ ಸೂತ್ರಸ್ಥಾಂ ೧೪-೩೪ |

- **ಅಸೃಜ್ ಅಸೃಜ್ (ನಂ)** 1. ಶೋಣಿತ, ರಕ್ತ. ನ ಸೃಜ್ಯತೇ ಇतरರಾಗವತ್ ಸಂಸೃಜ್ಯತೇ—ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) "ಕ್ರಿನ್" (೩-೨-೪೯) | "ಅಸೃಜನೋಸ್ತ್ರಕ್ಷತಿಮಾನವಮಜ್ಜವಸಾದನಮ್" ಮಾಧಂ ೧೯-೭೮ | 2. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. 3. ಕುಜ, ಮಂಗಳಗ್ರಹ.

**ಅಸೃಪಾಟಿ ಅಸೃಪಾಟೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ರಕ್ತಧಾರೆ. ಅಸೃಜಃ ಪಾಟಿ ಪರಿಪಾಟಿ | ಪೃಷೋಂ |

**ಅಸೇಚನಕ ಅಸೇಚನಕ (ವಿಂ)** ರಮಣೀಯ ವಸ್ತು, ಬಹಳ ಪ್ರಿಯವಾದ ವಸ್ತು, ಎಷ್ಟುನೋಡಿದರೂ ತೃಪ್ತಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡದ ವಸ್ತು. ನ ಸಿಚ್ಯತೇ ಮನೋಽ-  
ಪಿಚ (ಕಾರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | "ಕನ್" (೪-೩-೭೪) |

**ಅಸೇವನ ಅಸೇವನ (ನಂ)** 1. ಸೇವೆ ಮಾಡದಿರುವಿಕೆ. 2. ಉದಾಸೀನತೆ. (ವಿಂ) 3. ಸೇವೆಯಿಲ್ಲದ.

**ಅಸೇವಿತ ಅಸೇವಿತ (ವಿಂ)** 1. ಸೇವಿಸಲ್ಪಡದ. 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಅಸೌಮ್ಯ ಅಸೌಮ್ಯ (ವಿಂ)** ಭಯಂಕರವಾದ, ಕುರೂಪದ, ಸುಂದರವಲ್ಲದ. ನ ಸೌಮ್ಯಃ |

**ಅಸೌಮ್ಯಸ್ವರ ಅಸೌಮ್ಯಸ್ವರ (ಪುಂ)** 1. ಭಯಂಕರವಾದ ಸ್ವರ, ಕರ್ಕಶವಾದ ಶಬ್ದ. (ವಿಂ) 2. ಭಯಂಕರ ಶಬ್ದವುಳ್ಳ, ಕ್ರೂರವಾದ ಧ್ವನಿಯುಳ್ಳ. ಅಸೌಮ್ಯಃ ಸ್ವರೋ ಯಸ್ಯ |

**ಅಸೌಖ್ಯ ಅಸೌಖ್ಯ (ನಂ)** 1. ಗುಣಹೀನತೆ, ಯೋಗ್ಯವಾಗಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ಕುರೂಪ, ವಿಕಾರ ರೂಪ. (ವಿಂ) 3. ಬಲಹೀನವಾದ, ತೇಜೋಹೀನವಾದ, ಶಕ್ತಿಹೀನವಾದ. "ಗಮನಮಲಸಂ ಶೂನ್ಯಾ ದೃಷ್ಟಿಃ ಶರೀರಮಸೌಖ್ಯವಂ - ಸ್ವಸಿತಮಧಿಕಂ ಕಿಂವೇತತ್ಸ್ಯಾತ್ ಕಿಮನ್ಯದತೋಽಥವಾ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೦ |

**ಅಸ್ಥಲಿತ ಅಸ್ಥಲಿತ (ವಿಂ)** 1. ತಪ್ಪದಿರುವ. 2. ಸ್ಥಿರವಾದ, ನಿಶ್ಚಲವಾದ. 3. ಮುಗ್ಧರಿಸದಿರುವ, ಜಾರದಿರುವ, ಎಡವದಿರುವ.

**ಅಸ್ತ ಅಸ್ತ (ಪುಂ)** 1. ಅಸ್ತಪರ್ವತ, ಅಸ್ತಾಚಲ, ಸೂರ್ಯನು ಮುಳುಗುವ ಬೆಟ್ಟ. ಅಸ್ತಂತೇ ರವಿಕಿರಣಾ ಅತ್ರ—ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) ಅಧಿಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೬) | "ಯಾತ್ಯೇಕತೋಸ್ತಶಿಖರಂ ಪತಿರೋಷಧೀನಾಮ್" ಶಾಕುಂ ೪-೧ | 2. ಸೂರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹಗಳ ಅಸ್ತಮಯ, ಸೂರ್ಯಾದಿ ಗ್ರಹಗಳ ಮುಳುಗುವಿಕೆ. "ಗತೋಸ್ತಮಕಃ" | (ನಂ) 3. ಸಮಾಪ್ತಿ, ಕೊನೆ. (ವಿಂ) 4. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಸಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಮುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಹೂಡಿಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪಶ್ಯಂತೋಽಧೋಲೋಕಮಸ್ತೇಷುಜಾಲಾಃ" ಮಾಧಂ ೧೮-೨೪ | 7. ಲಗ್ನದಿಂದ ಎಳೆನೇ ಸ್ಥಾನ.

**ಅಸ್ತಕ ಅಸ್ತಕ (ಪುಂ)** ಅಪವರ್ಗ, ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ. ಅಸ್ತ-ಮವಸಾನಂ ಕರೋತಿ—ಅಸ್ತ+ಗಿಚ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |

**ಅಸ್ತಮ್ ಅಸ್ತಮ್ (ಅವ್ಯಂ)** 1. ಕಾಣಿಸದಿರುವಿಕೆ, ಗೋಚರವಾಗದಿರುವಿಕೆ. 2. ನಾಶ. "ವಿಪ್ರೋಪಿತಕುಮಾರಂ ತದ್ರಾಜ್ಯ-ಮಸ್ತಮಿತೇಶ್ವರಮ್" ರಘುಂ ೧೨-೧೧ | "ಅಸ್ತಂಗತೇಷು ತನಯೇಷು ವಿಲೀನಮೋಹೇ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೬-೧ |

**ಅಸ್ತಮನ ಅಸ್ತಮನ (ನಂ)** 1. ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸದಂತೆ ಸಂಚರಿಸುವುದು. 2. ನಾಶಹೊಂದುವುದು. 3. ಸೂರ್ಯಾದಿ ಗ್ರಹಗಳ ಮುಳುಗುವಿಕೆ.

**ಅಸ್ತಮಯ ಅಸ್ತಮಯ (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯಾದಿಗಳ ಮುಳುಗುವಿಕೆ, ಗ್ರಹಗಳು ಕಾಣಿಸದಿರುವಿಕೆ. ಅಸ್ತಮ್+ಇನ್ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೩-೪೬) | "ಸ ಏಷ ಕೈಲಾಸ ಉಪಾಂತಸರ್ಪಿಣಃ ಕರೋತ್ಯಕಾಲಾಸ್ತಮಯಂ ವಿವಸ್ವತಃ" ಕಿರಾಂ ೪-೩೪ | 2. ಪ್ರಳಯ, ನಾಶ. "ಭಾಗ್ಯಾಸ್ತಮಯಮಿವಾಕ್ಷಣೋಃ ಹೃದಯಸ್ಯ ಮಹೋತ್ಸವಾವಸಾನಮಿವ" ಮಾಲಂ ೨-೧೧ | 3. ಮರೆಮಾಡುವುದು, ಕಾಣಿಸದಂತೆ ಅಡಗಿಸುವುದು. "ಕುರ್ವಂತಿ ಸಾಮಂತಶಿಖಾಮಣಿಗಾಂ ಪ್ರಭಾಪ್ರರೋಹಾಸ್ತಮಯಂ ರಜಾಂಸಿ" ರಘುಂ ೬-೩೩ |



ಅಸ್ತಾಚಲ ಅಸ್ತಾಚಲ (ಪುಂ) ಪಶ್ಚಿಮಾದ್ರಿ, ಅಸ್ತಪರ್ವತ.  
ಅಸ್ತಾದ್ರಿ ಅಸ್ತಾದ್ರಿ (ಪುಂ) ಪಶ್ಚಿಮಾದ್ರಿ, ಅಸ್ತಪರ್ವತ.  
ಅಸ್ತಿ ಅಸ್ತಿ (ಅವ್ಯಂ) ಸ್ಥಿತಿ, ಇರುವಿಕೆ. ತಿಡ್ಧಂತಪ್ರತಿರೂಪಕ-  
ಮವ್ಯಯಮ್ |

ಅಸ್ತಿಕಾಯ ಅಸ್ತಿಕಾಯ (ಪುಂ) ಕಾಲತ್ರಯ ಸಂಬಂಧ  
ವುಳ್ಳ ಮತ್ತು ಬಹು ಪ್ರದೇಶ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯುಳ್ಳ ವಸ್ತು.  
ಅಸ್ತಿ ಕಾಯಃ ಸ್ವರೂಪಂ ಯಸ್ಯ | ಇದು ಜೀವಾಸ್ತಿಕಾಯ,  
ಧರ್ಮಾಸ್ತಿಕಾಯ, ಅಧರ್ಮಾಸ್ತಿಕಾಯ, ಆಕಾಶಾಸ್ತಿ-  
ಕಾಯ ಮತ್ತು ಪುದ್ಗಲಾಸ್ತಿಕಾಯಗಳೆಂದು ಐದು ವಿಧ.  
ಕಾಲತ್ರಯದಲ್ಲಿಯೂ ಇರುವುದರಿಂದ ಅಸ್ತಿಯೆಂದೂ,  
ಶರೀರದಂತೆ ಅನೇಕ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ಕಾಯ  
ವೆಂದೂ ವ್ಯವಹಾರ. ಇದು ಜೈನಮತ ಸಿದ್ಧವಾದುದು.

ಅಸ್ತಿಕೀರಾ ಅಸ್ತಿಕ್ಷೀರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಚ್ಚು ಹಾಲುಳ್ಳ  
ಹಸು. ಅಸ್ತಿ ಕೀರಂ ಯಸ್ಯಾಃ ಸಾ ಅಸ್ತಿಕೀರಾ (ಗೌಃ) |

ಅಸ್ತಿತ್ವ ಅಸ್ತಿತ್ವ (ನಂ) ಸ್ಥಿತಿ, ಇರುವಿಕೆ.

ಅಸ್ತಿಮತ್ ಅಸ್ತಿಮತ್ (ವಿಂ) ಧನಿಕ, ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ.  
ಅಸ್ತಿ ವಿಧಮಾನಂ ಧನಂ ಯಸ್ಯ "ಮತುಃ" (೪-೨-೯೪) |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಕೀಃ" (೪-೧-೬) | -ಮತೀ-ಮತೀ.

ಅಸ್ತು ಅಸ್ತು (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅನುಜ್ಞೆ, ಅಪ್ಪಣೆ. 2. ಅಸೂಯೆ,  
ಮಾತ್ಸರ್ಯ. 3. ಪೀಡೆ, ಬಾಧೆ, ತೊಂದರೆ.  
4. ಉತ್ಕರ್ಷ. 5. ಅಂಗೀಕಾರ. 6. ಪ್ರಶಂಸೆ, ಸ್ತುತಿ,  
ಹೊಗಳಿಕೆ. 7. ಸೂಚನೆ, ಲಕ್ಷಣ. 8. ಅಸೂಯೆ  
ಯಿಂದ ಅಂಗೀಕರಿಸುವುದು. 9. ಆಕ್ಷೇಪಣೆ, ನಿಂದೆ.  
ಇದು ತಿಜನ್ ಪ್ರತಿರೂಪಕಾವ್ಯಯ. "ಅಸ್ತು ಸ್ಯಾದಮ್ಯನು-  
ಜ್ಞಾನೇಷ್ಯಸೂಯಾಪಿಡಯೋರಪಿ | ಪ್ರತಿಕೋಪೇ ಪ್ರಶಂಸಾಯಾಂ ಪ್ರಕರ್ಷ  
ಲಕ್ಷಣೇಷಿ ಚ" ಮೇದಿಂ |

ಅಸ್ತುಚ್ಚಾರ ಅಸ್ತುಂಕಾರ (ಪುಂ) ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಮ್ಮತಿ,  
ಅಂಗೀಕಾರ. ಅಸ್ತು+ಕಾರಃ "ಮುಃ" (ವಾಂ ೬-೩-೭೦) |

ಅಸ್ತೇಯ ಅಸ್ತೇಯ (ನಂ) 1. ಕದಿಯದಿರುವಿಕೆ, ಪರ  
ಸ್ವತ್ತನ್ನು ಅಪಹರಿಸದಿರುವಿಕೆ. ನ ಸ್ತೇಯಮ್ | ಇದು  
ಅಷ್ಟಾಂಗಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದಾದ ಯಮದ ಒಂದು  
ಭೇದ. "ಅಹಿಂಸಾಸ್ತೇಯಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾಪರಿಗ್ರಹಾ ಯಮಃ" ಪಾಂ ಯಂ  
ಸೂಂ ೨-೩೨ | "ಲೋಭಸ್ಯ ಪುರತಃ ಕೇಷಿ ಸತ್ಯಾಸ್ತೇಯಾಪರಿ-  
ಗ್ರಹಾಃ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೧-೧೪ |

ಅಸ್ತೋಭ ಅಸ್ತೋಭ (ವಿಂ) ನಿರರ್ಥಕವಲ್ಲದ ಶಬ್ದವುಳ್ಳ,  
ಸಾರ್ಥಕವಾದ ಶಬ್ದವುಳ್ಳ. ನಾಸ್ತಿ ಸ್ತೋಭಃ ನಿರರ್ಥಕಶಬ್ದಃ  
ಯತ್ರ | "ಅಲ್ಪಾಕ್ಷರಮಸಂದಿಗ್ಧಂ ಸಾರವದ್ವಿಶ್ವತೋಮುಖಮ್ | ಅಸ್ತೋಭ-  
ಮನವಯಂ ಚ ಸೂತ್ರಂ ಸೂತ್ರವಿದೋ ವಿದುಃ" |

ಅಸ್ತ್ಯಾನ ಅಸ್ತ್ಯಾನ (ನಂ) 1. ನಿಂದೆ, ಬೈಗಳು. 2. ಒಟ್ಟು  
ಗೂಡಿಸದಿರುವ.

ಅಸ್ತ್ರ ಅಸ್ತ್ರ (ನಂ) 1. ಬಾಣ. ಅಸ್ಯತೇ - ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ)  
"ಛನ್" (ತಂ ೪-೧೫೮) | "ಅಸ್ತ್ರಜ್ವಾಲಾವಲಿಹಪ್ರತಿಬಲ-  
ಜಲಧೇರಂತರೋರ್ವಿಯಮಾಣೇ" ವೇಣೀಂ ೩-೭ | "ಅಸ್ತ್ರಗ್ರಾಮವಿಧೌ  
ಕೃತೀ ನ ಸಮರೇಃ" ವೇಣೀಂ ೪-೧೨ | 2. ಧನುಸ್ಸು,  
ಬಿಲ್ಲು. ಅಸ್ಯತೇಜೇನ - ಕರಂ "ಛನ್" (ತಂ ೪-೧೫೮) |  
"ಅಸ್ತ್ರವೇದಮಧಿಗಮ್ಯ ತತ್ವತಃ ಕಸ್ಯ ಚೇಹ ಭುಜವೀರ್ಯಶಾಲಿನಃ" |  
ಕಿರಾಂ ೧೩-೬೨ | 3. ಆಯುಧ. 4. ಮಂತ್ರಶಕ್ತಿ  
ಯಿಂದ ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವ ಆಯುಧ.

ಅಸ್ತ್ರಜೀವಿನ್ ಅಸ್ತ್ರಜೀವಿನ್ (ವಿಂ) ಆಯುಧದಿಂದ ಜೀವಿ  
ಸುವ, ಆಯುಧವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ ಜೀವನ ಮಾಡುವ.  
(ಯೋಧ, ಸೈನಿಕ.) ಅಸ್ತ್ರೇಣ ಅಸ್ತ್ರವ್ಯಾಪಾರೇಣ ಜೀವತಿ -  
ಅಸ್ತ್ರ + ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೭೮) |

ಅಸ್ತ್ರಧಾರಿನ್ ಅಸ್ತ್ರಧಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಆಯುಧವನ್ನು ಧರಿಸಿ  
ರುವ. (ಯೋಧ, ಸೈನಿಕ.) ಅಸ್ತ್ರಂ ಧಾರಯತಿ - ಅಸ್ತ್ರ + ಧೃಃ  
(ಧಾರಣೆ) + ಗಿಣಿ "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೭೮) |

ಅಸ್ತ್ರಮನ್ತ್ರ ಅಸ್ತ್ರಮಂತ್ರ (ಪುಂ) ಬಾಣವನ್ನು ಬಿಡುವಾಗ  
(ಪ್ರಯೋಗಿಸುವಾಗ) ಮತ್ತು ಉಪಸಂಹರಿಸುವಾಗ  
ಉಚ್ಚರಿಸುವ ಮಂತ್ರ. ಅಸ್ತ್ರಾಗಾಂ ಪ್ರಯೋಗೋಪಸಂಹಾರಯೋರ್ಮನ್ತ್ರಃ |  
"ಉದ್‌ಘಮುಖಃ ಸೋಸ್ತ್ರವಿದಸ್ತ್ರಮನ್ತ್ರಂ ಜಗ್ರಾಹ ತಸ್ಮಾನ್ನಿಗೃಹೀತ-  
ಶಾಪಾತ್" ರಘುಂ ೪-೪೯ |

ಅಸ್ತ್ರಮಾರ್ಜ ಅಸ್ತ್ರಮಾರ್ಜ (ವಿಂ) ಅಸ್ತ್ರಗಳಿಗೆ ಮೆರುಗು  
ಕೊಡುವವನು, ಅಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಉಜ್ಜಿ ಹೊಳಪುಕೊಡತಕ್ಕ  
ವನು. ಅಸ್ತ್ರಂ ಮಾರ್ಜಿ - ಮೃಜುಃ (ಶುದ್ಧಿ) "ಅಙ್" (೩-೨-೧) |  
"ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | -ಮಾರ್ಜಕಃ - ಮಾರ್ಜಕಃ |

ಅಸ್ತ್ರವಿದ್ ಅಸ್ತ್ರವಿದ್ (ವಿಂ) ಬಾಣಪ್ರಯೋಗ ಮತ್ತು  
ಉಪಸಂಹಾರಗಳನ್ನು ಅರಿತಿರುವ. ಅಸ್ತ್ರ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನಿ)  
"ಕ್ವಿಃ" (೩-೨-೭೬) | "ಉದ್‌ಘಮುಖಃ ಸೋಸ್ತ್ರವಿದಸ್ತ್ರ-  
ಮನ್ತ್ರಮ್" ರಘುಂ ೪-೪೯ |

ಅಸ್ತ್ರವಿದ್ಯಾ ಅಸ್ತ್ರವಿದ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಾಣಗಳ ಪ್ರಯೋಗ  
ಮತ್ತು ಉಪಸಂಹಾರಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ವಿದ್ಯೆ. 2. ಧನು  
ವೇದ, ಅಸ್ತ್ರವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ.

ಅಸ್ತ್ರವೇದ ಅಸ್ತ್ರವೇದ (ಪುಂ) ಧನುವೇದ. "ಅಸ್ತ್ರವೇದ-  
ಮಧಿಗಮ್ಯ ತತ್ವತಃ ಕಸ್ಯ ಚೇಹ ಭುಜವೀರ್ಯಶಾಲಿನಃ" ಕಿರಾಂ  
೧೩-೬೨ |

ಅಸ್ತ್ರಾಗಾರ ಅಸ್ತ್ರಾಗಾರ (ನಂ) ಆಯುಧಶಾಲೆ, ಆಯುಧ  
ಗಳನ್ನು ಇಡುವ ಮನೆ.



**ಅಸ್ಥಿಶಾಸ್ತ್ರ ಅಸ್ಥಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಬಿಲ್ಲುಗಾರ, ಧನುಸ್ಸನ್ನು ಹಿಡಿದವನು. 2. ಬಿಲ್ಲುಹಿಡಿದು ಯುದ್ಧಮಾಡುವವನು. ಅಸ್ತ್ರಂ ಧನುರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)।

**ಅಸ್ಥಾನ ಅಸ್ಥಾನಂ** (ನಂ) 1. ಅಯೋಗ್ಯವಾದ ಸ್ಥಾನ, ಕೆಟ್ಟ ಜಾಗ. ಅಪ್ರಶಸ್ತಂ ಸ್ಥಾನಮ್। "ಅಸ್ಥಾನೇ ಪತತಾಮತೀವ ಮಹತಾಮೇತಾದೃಶೀ ಸ್ಯಾದ್ರತಿ:" 2. ಸರಿಯಲ್ಲದ ಸ್ಥಳ, ಸರಿಯಲ್ಲದ ಪಾತ್ರ. "ಅಸ್ಥಾನಂ ಪರಿಭವಸ್ಯ"।

**ಅಸ್ಥಾನೇ ಅಸ್ಥಾನೇ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದೆ. "ಎವಮೇತತ್। ಅಸ್ಥಾನೇ ಕೋಪ ಇತ್ಯನುಪಪತ್ತಂ ತ್ವಯಿ" ಮಾಲಂ ೪। 2. ಅಯೋಗ್ಯ ಕಾಲ, ಅಯೋಗ್ಯ ಸ್ಥಾನ, ಅಯೋಗ್ಯವಾದ ವಿಷಯ. "ಅಸ್ಥಾನೇ ಮಹಾನರ್ಥೋತ್ಸರ್ಗ: ಕ್ರಿಯತೇ" ಮುಡ್ರಾಂ ೩।

**ಅಸ್ಥಾಯಿನ್ ಅಸ್ಥಾಯಿನ್** (ವಿಂ) ಸ್ಥಿರವಲ್ಲದ, ಚಂಚಲವಾದ. ನ ಸ್ಥಾಯಿ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪)।

**ಅಸ್ಥಾವರ ಅಸ್ಥಾವರ** (ವಿಂ) 1. ಚಲಿಸುವ, ಸ್ಥಿರವಾಗಿಲ್ಲದ, ಜಂಗಮವಾದ. 2. ಚಲಿಸುವ ಅಸ್ತಿ. (ಧನಕನಕಾದಿಗಳು.)

**ಅಸ್ಥಿ ಅಸ್ಥಿ** (ನಂ) ಮೂಳೆ, ಎಲುಬು, ಶರೀರದೊಳಗಿನ ಎಳು ಧಾತುಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಅಸ್ಯತೇ - ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ವಿಶನ್" (೩ಂ ೩-೧೪೪)।

ಮನುಷ್ಯನ ಶರೀರದೊಳಗಿರುವ 360 ಎಲುಬುಗಳ ವಿವರ:

|                             |                               |    |
|-----------------------------|-------------------------------|----|
| ದಂತಾ:                       | ಹಲ್ಲುಗಳು                      | 32 |
| ದಂತೋಲ್ಲೂಕಲಾನಿ               | ಹಲ್ಲುಗಳ ಗುಣಿಗಳು               | 32 |
| ನಖಾ:                        | ಉಗುರುಗಳು                      | 20 |
| ಪಾಣಿಪಾದಾಕ್ಷುಲ್ಯ-<br>ಸ್ಥಿಿನಿ | ಕೈಕಾಲುಗಳ ಬೆರಳುಗಳ<br>ಎಲುಬುಗಳು  | 60 |
| ಪಾಣಿಪಾದಶಲಾಕಾ:               | ಅಂಗೈ ಮತ್ತು ಅಂಗಾಲು<br>ಎಲುಬುಗಳು | 20 |
| ಪಾದಶಲಾಕಾ-<br>ಪಿಷ್ಟಿತಾನಿ     | ಹೆಜ್ಜೆಯ ಕೀಲುಗಳು               | 4  |
| ಪಾಣ್ಯೋರಸ್ಥಿನಿ               | ಹಿಮ್ಮಡಿಯ ಮೂಳೆಗಳು              | 2  |
| ಪಾದಯೋಗ್ಲ್ಫಾ:                | ಕಾಲುಗಳ ಪಕ್ಕದ ಗಂಟುಗಳು          | 4  |
| ಮಣಿಕಾ                       | ಮಣಿಕಟ್ಟುಗಳ ಎಲುಬುಗಳು           | 2  |
| ಅರಲ್ಯೊ:                     | ಮೊಣಕೈ ಎಲುಬುಗಳು                | 4  |
| ಅಕ್ಯುಯೊ:                    | ಕಣಕಾಲು                        | 4  |
| ಆನುಕಪಾಲಿಕೆ                  | ಮಂಡಿಚಿಪ್ಪುಗಳು                 | 4  |
| ಊನಲಕಾ                       | ತೊಡೆಯ ಎಲುಬುಗಳು                | 2  |
| ಶಾಹುನಲಕಾ                    | ತೋಳು                          | 2  |

|                         |                                       |     |
|-------------------------|---------------------------------------|-----|
| ಅಂಸಗ್ರಾ:                | ಹೆಗಲು ಎಲುಬುಗಳು                        | 2   |
| ಅಂಸಫಲಕೇ                 | ಹೆಗಲಿನ ಮೇಲುಭಾಗದ<br>ಎಲುಬುಗಳು           | 2   |
| ಅಕ್ಷಕೌ                  | ಕಣ್ಣು ಮತ್ತು ಕಿವಿಗಳ ಮಧ್ಯದ<br>ಎಲುಬುಗಳು  | 2   |
| ಜತ್ರು                   | ಭುಜ ಮತ್ತು ಎದೆ ಮಧ್ಯದ<br>ಎಲುಬು          | 1   |
| ತಾಲುಷಕೇ                 | ದವಡೆ ಎಲುಬುಗಳು                         | 2   |
| ಶ್ರೋಣಿಫಲಕೇ              | ಸೊಂಟದ                                 | 2   |
| ಭಗಾಸ್ಥಿ                 | ಗುಹ್ಯಪ್ರದೇಶದ ಎಲುಬು                    | 1   |
| ಪೃಷ್ಠಾಸ್ಥಿನಿ            | ಬೆನ್ನಿನ ಎಲುಬುಗಳು                      | 45  |
| ಗ್ರೀವಾಯಾಮ್              | ಕುತ್ತಿಗೆ                              | 15  |
| ಊರಸಿ                    | ಎದೆ                                   | 14  |
| ಪಾರ್ಶ್ವಾಸ್ಥಿನಿ          | ಪಕ್ಕಗಳ                                | 24  |
| ಸ್ಥಾಲಕಾನಿ               | ಸ್ಥಾಲಕಗಳು                             | 24  |
| ಸ್ಥಾಲಕಾರ್ಬುದಾನಿ         | ಸ್ಥಾಲಕಾರ್ಬುಡಗಳು                       | 24  |
| ಹನ್ವಸ್ಥಿ                | ಕೆನ್ನೆಗಳ ಮೇಲುಭಾಗದ<br>ಎಲುಬು            | 1   |
| ಹನುಮೂಲಬಂಧನೇ             | ಕೆನ್ನೆಗಳ ಕೆಳಭಾಗದ ಎಲುಬುಗಳು             | 2   |
| ನಾಸಿಕಾಗಂಧಕೂಟ-<br>ಲಲಾಟಮ್ | ಮೂಗು, ಕೆನ್ನೆ ಮತ್ತು ಹಣೆ<br>ಎಲುಬು       | 1   |
| ಶಿರ:ಕಪಾಲಾನಿ             | ತಲೆಯ ಚಿಪ್ಪುಗಳು                        | 4   |
| ಶಾಹ್ವೌ                  | ಹುಬ್ಬು ಮತ್ತು ಕಿವಿಗಳ<br>ಮಧ್ಯದ ಎಲುಬುಗಳು | 2   |
|                         |                                       | 360 |

ಚರಕಂ ಶಾರೀರಂ ೭-೬।

**ಅಸ್ಥಿಕರ ಅಸ್ಥಿಕರ** -ಕೃತ್-ಕೃತ್ (೨ಂ) ಮೇದಸ್ಸು. ಅಸ್ಥಿ ಕರೋತಿ -ಠು ಕೃತ್ (ಕರಣೆ) "ಠ:" (೩-೨-೨೦)। "ಕ್ರಿಪ್" ವಾ (೩-೨-೭೮)।

**ಅಸ್ಥಿಜ ಅಸ್ಥಿಜ** (೨ಂ) ಮಜ್ಜೆ, ಮೂಳೆಯೊಳಗಿನ ಪೊಳ್ಳುಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ ಮೆತ್ತನೆಯ ಕೊಬ್ಬು. ಅಸ್ಥನೋ ಜಾಯತೇ -ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಠ:" (೩-೨-೯೮)।

**ಅಸ್ಥಿತಿ ಅಸ್ಥಿತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಸ್ಥಿರತೆ, ಸ್ಥಿರವಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಅಭಾವೇ ನಂ ತಂ। 2. ಮರ್ಯಾದೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 3. ಸ್ಥಿರವಲ್ಲದ. 4. ಮರ್ಯಾದೆಯಿಲ್ಲದ. ನಂ ಬಂ।

**ಅಸ್ಥಿತುಣ್ಡ ಅಸ್ಥಿತುಂಡ** (೨ಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಅಸ್ಥಿವ ಕಠಿನಂ ತುಣ್ಡಂ ಯಸ್ಯ।



ಅಸ್ಥಿಧನ್ವನ್ ಅಸ್ಥಿಧನ್ವನ್ (ಪುಂ) ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. ಅಸ್ಥಿ  
 ಅಸ್ಥಿಮಯಂ ಧನ್ಯಸ್ಯ "ಅನಙ್" (೪-೪-೧೩೨) ।  
 ಅಸ್ಥಿಪಂಜರ ಅಸ್ಥಿಪಂಜರ (ಪುಂ) ಕಂಕಾಲ, ಎಲುಬಿನ  
 ಗೂಡು. ಅಸ್ಥಿ ಪಂಜರ ಇವ ।  
 ಅಸ್ಥಿಮಕ್ಷ ಅಸ್ಥಿಭಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ನಾಯಿ. 2. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ.  
 ಅಸ್ಥಿ ಮಕ್ಷಯತಿ - ಮಕ್ಷ (ಅದನೆ) "ಅಙ್" (೩-೨-೧) ।  
 ಅಸ್ಥಿಮಾಲಾ ಅಸ್ಥಿಮಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎಲುಬಿನಿಂದ  
 ತಯಾರಿಸಿದ ಸರ. 2. ಎಲುಬುಗಳ ಸಾಲು.  
 ಅಸ್ಥಿಮಾಲಿನ್ ಅಸ್ಥಿಮಾಲಿನ್ (ಪುಂ) ಶಿವ, ಈಶ್ವರ.  
 ಅಸ್ಥಿಮಯಿ ಮಾಲಾಸ್ಯ "ಙಿ:" (೪-೨-೧೧೬) ।  
 ಅಸ್ಥಿರ ಅಸ್ಥಿರ (ವಿಂ) ಸ್ಥಿರವಲ್ಲದ, ಚಂಚಲವಾದ,  
 ಶಾಶ್ವತವಲ್ಲದ.  
 ಅಸ್ಥಿಶೇಷ ಅಸ್ಥಿಶೇಷ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಕೃಶವಾಗಿರುವ,  
 ಮಾಂಸವಿಲ್ಲದೆ ಕೇವಲ ಮೂಳೆ ಮಾತ್ರ ಉಳಿದಿರುವ  
 (ದೇಹ).  
 ಅಸ್ಥಿಸಾರ ಅಸ್ಥಿಸಾರ (ಪುಂ) 1. ಮಜ್ಜೆಯೆಂಬ ಧಾತು.  
 2. ರಕ್ತ ಮಾಂಸಗಳಲ್ಲದ ದೇಹ.  
 ಅಸ್ಥಿಸ್ನೇಹ ಅಸ್ಥಿಸ್ನೇಹ (ಪುಂ) ಮಜ್ಜೆಯೆಂಬ ಧಾತು.  
 ಅಸ್ಥ್ಯಂ ಅಸ್ಥ್ಯಂ (ನಂ) 1. ಸ್ಥಿರವಾಗಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ,  
 ಚಾಂಚಲ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಸ್ಥಿರವಲ್ಲದ, ಚಂಚಲವಾದ.  
 ಅಸ್ನೇಹ ಅಸ್ನೇಹ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರೀತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ವಿಶ್ವಾಸ  
 ವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ತುಪ್ಪ ತೈಲಗಳಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
 3. ಜಿಡ್ಡಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 4. ಪ್ರೀತಿಯಿಲ್ಲದ,  
 ವಿಶ್ವಾಸವಿಲ್ಲದ. 5. ತೈಲವಿಲ್ಲದ. 6. ಜಿಡ್ಡಿಲ್ಲದ.  
 ಅಸ್ಪಂದ ಅಸ್ಪಂದ (ವಿಂ) ಸ್ವಲ್ಪವೂ ಚಲನವಿಲ್ಲದ, ಸ್ಥಿರ  
 ವಾಗಿರುವ. ನ ಸ್ಪಂದೋ यस್ಯ । "ಅಙ್ಗೈರವಜ್ಞಾತಕದಮ್ಬಗೋಲೈ-  
 ರಸ್ಪಂದಮಂದೇನ ವಿಲೋಚನೇನ" ಧಾತಂ ೧೩-೩ ।  
 ಅಸ್ಪಂದನ ಅಸ್ಪಂದನ (ನಂ) 1. ಸ್ವಲ್ಪವೂ ಚಲನವಿಲ್ಲದಿರು  
 ವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ಚಲನವಿಲ್ಲದ, ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವ.  
 ಅಸ್ಪೃಷ್ಠ ಅಸ್ಪೃಷ್ಠ (ವಿಂ) ಅನ್ಯಕ್ತವಾದ, ಅಸ್ಪೃಷ್ಠವಾದ,  
 ಪ್ರಕಾಶವಾಗಿಲ್ಲದ.  
 ಅಸ್ಪೃಶ್ಯ ಅಸ್ಪೃಶ್ಯ (ವಿಂ) ಸ್ಪರ್ಶಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ,  
 ಮುಟ್ಟಲು ಅರ್ಹವಲ್ಲದ, ಆಶುಚಿಯಾದ ವಸ್ತು.  
 ನ ಸ್ಪ್ರಷ್ಟುಮಹ್ - ಸ್ಪೃಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೆ) "ಕೃಪ್" (೩-೩-೧೬೯) ।  
 "ಮಲಮೂತ್ರಪುರೀಷಾಸ್ಥಿನಿರ್ಗತಂ ಹ್ಯಶುಚಿ ಸ್ಮೃತಮ್" । "ಅಸ್ಪೃಶ್ಯ-  
 ಸ್ಪರ್ಶನೇ ಚೈವ ಸದ್ವಿಃ ಸ್ನಾನಂ ಸಮಾಚರೇತ್" ।  
 ಅಸ್ಪೃಹ ಅಸ್ಪೃಹ (ವಿಂ) ಆಸೆಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಸ್ಪೃಹಾ  
 ಯಸ್ಯ ।

ಅಸ್ಪೃಹಾ ಅಸ್ಪೃಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಸೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ಸ್ಪೃಹಾ ।  
 "ಯಥೋತ್ಪನ್ನೇನ ಸಂತೋಷಃ ಕರ್ತವ್ಯೋಽಪ್ಯಲ್ಪವಸ್ತುನಾ । ಪರಸ್ಯಾಚಿಂತ-  
 ಯಿತ್ವಾರ್ಥಂ ಸಾಸ್ಪೃಹಾ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾ" ।

ಅಸ್ಫುಟ ಅಸ್ಫುಟ (ವಿಂ) ಸ್ಪಷ್ಟವಲ್ಲದ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ತೋರ  
 ದಿರುವ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಕಾಣದಿರುವ. ನ ಸ್ಫುಟಃ ।  
 "ಕವಿತ್ಪ್ರಕಾಶಾಂ ಕವಿದಸ್ಫುಟಾರ್ಣಸಮ್" ನೆಪಂ ೯-೪ ।

ಅಸ್ಫುಟವಾಕ್ ಅಸ್ಫುಟವಾಕ್ (ವಿಂ) ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ  
 ಮಾತನಾಡುವ, ತೋದಲುತ್ತು ಮಾತನಾಡುವ. ಅಸ್ಫುಟಾ  
 ವಾಕ್ ಯಸ್ಯ । "ಲೋಹಲಃ ಸ್ಯಾದಸ್ಫುಟವಾಕ್" ಅಮಂ ।

ಅಸ್ಮದ್ ಅಸ್ಮದ್ (ಪುಂ) 1. ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಅಭಿಮಾನವುಳ್ಳ  
 ಜೀವ. ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಮದಿಕ್" (೩ಂ ೧-೧೩೬) ।  
 "ಯಂ ವಯಂ ವಯಂ ಯುಯಿತ್ಯಾಸೀನ್ಮತಿರಾವಯೋಃ । ಕಿಂ ಜಾತಮವುನಾ  
 ಯೇನ ಯುಯಂ ಯುಯಂ ವಯಂ ವಯಮ್" । 2. ಪರಮಾತ್ಮ. "ಅಹಮಾತ್ಮಾ  
 ಗುಡಾಕೇಶ ಸರ್ವಭೂತಾಶಯಸ್ಥಿತಃ" ಗೀತಾ ೧೦-೨೦ । (ವಿಂ) 3.  
 "ನಾನು" ಎಂಬ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಒಂದು  
 ಸರ್ವನಾಮ ಶಬ್ದ. ಸಪ್ತವಿಭಕ್ತಿಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಲಿಂಗ  
 ತ್ರಯಸಮಾನವಾದ ಇದರ ರೂಪ:

|        |           |           |
|--------|-----------|-----------|
| ಅಹಂ    | ಆವಾಮ್     | ವಯಮ್      |
| ಮಾಮ್   | ಆವಾಮ್     | ಅಸ್ಮಾನ್   |
| ಮಾ     | ನಿ        | ನಃ        |
| ಮಯಾ    | ಆವಾಮ್ಯಾಮ್ | ಅಸ್ಮಾಭಿಃ  |
| ಮಹ್ಯಮ್ | ಆವಾಮ್ಯಾಮ್ | ಅಸ್ಮಭ್ಯಮ್ |
| ಮೇ     | ನಿ        | ನಃ        |
| ಮತ್    | ಆವಾಭ್ಯಾಮ್ | ಅಸ್ಮತ್    |
| ಮಮ್    | ಆವಯೋಃ     | ಅಸ್ಮಾಕಮ್  |
| ಮೇ     | ನಿ        | ನಃ        |
| ಮಯಿ    | ಆವಯೋಃ     | ಅಸ್ಮಾಸು   |

ಉದಾಃ (ಪುಂ) "ಸೋಽಹಮಾಜನ್ಮಶುದ್ಧಾನಾಮಾಫಲೋದಯಕರ್ಮ-  
 ಣಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೫ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ತಥಾಪಿ ವಕ್ತುಂ ವ್ಯವಸಾಯ-  
 ಯಂತಿ ಮಾಂ ನಿರಸ್ತನಾರೀಸಮಯಾ ದುರಾಧಯಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೨೮ ।  
 (ನಂ) "ಅಹಮೇವ ಗುರುಃ ಸುದಾರುಣಾನಾಮಿತಿ ಹಾಲಾಹಲ ಮಾಸ್ಮ  
 ತಾತ ದೃಪ್ಯಃ । ನನು ಸಂತಿ ಭವಾದೃಶಾನಿ ಭೂಯೋ ಭುವನೇಽಸ್ಮಿನ್  
 ವಚನಾನಿ ದುರ್ಜನಾನಾಮ್" ।

ಅಸ್ಮದೀಯ ಅಸ್ಮದೀಯ (ವಿಂ) ನಮ್ಮದಾದ, ನಮ್ಮ  
 ಸಂಬಂಧವಾದ. ಅಸ್ಮಾಕಮಿದಮ್ - ಅಸ್ಮದ್ "ಛಃ"  
 (೪-೨-೧೨೪) ।

ಅಸ್ಮದ್ರಚಚ್ ಅಸ್ಮದ್ರಚಚ್ (ವಿಂ) ನಮ್ಮ ಕಡೆಗೆ ತಿರು  
 ಗಿದ, ನಮಗೆ ಅಭಿಮುಖವಾದ. ಅಸ್ಮಾನ್ ಅಚ್ಚತಿ-ಅಚ್ಚು  
 (ಗತೌ) ಅದ್ರಚಾದೇಶಃ (೬-೩-೯೨) । "ಕ್ರಿನ್" (೩-೨-೫೯) ।



**ಅಸ್ಮಿ** ಅಸ್ಮಿ (ಅವ್ಯಂ) ನಾನು. [ತ್ರಿಜನ್ಮಪ್ರತಿರೂಪ ಕಾವ್ಯಯ.]

**ಅಸ್ಮಿತಾ** ಅಸ್ಮಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಹಂಭಾವ, ನಾನು ಎಂಬ ಅಭಿಮಾನ, ಸಾಂಖ್ಯೋಕ್ತವಾದ ಅವಿದ್ಯಾದಿಪಂಚ ವಿಧ ಕ್ಲೇಶಗಳಲ್ಲೊಂದು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಕ್ಲೇಶ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಅಸ್ಮ** ಅಸ್ಮ (ಪುಂ) 1. ಕೋಣ, ಮೂಲೆ. ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ರಕ್" ಬಾಹುಂ. 2. ಕೇಶ, ಕೂದಲು. (ನಂ) 3. ಕಣ್ಣೀರು. 4. ರಕ್ತ. "ಪ್ರಾವತಯನ್ನದೀರಸೋದಿಷಾ ತದೊಪಿತಾಂ ಚ ಸಃ" ಮಾಘಂ ೧೯-೧೧೫. "ಅಸ್ರಃ ಕೋಣ ಕಚೇ ಪುಸಿ ಬಲಿಬಮಶ್ರುಣಿ ಶೋಣಿತೇ" ಮೇದಿಂ.

**ಅಸ್ರಕಂಠ** ಅಸ್ರಕಂಠ (ಪುಂ) ಬಾಣ. ಅಸ್ರಃ ಕೋಣ ಇವ ಕಂಠೋಪ್ರಯ.

**ಅಸ್ರಜ** ಅಸ್ರಜ (ನಂ) ಮಾಂಸ. ಅಸ್ರಾತ್ ರಕ್ತಾತ್ ಜಾಯತೇ — ಅಸ್ರ+ಜನಿ (ಪ್ರಾದುಭವಿ) "ಙಃ" (೩-೪-೯೮).

**ಅಸ್ರಪ** ಅಸ್ರಪ (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ. ಅಸ್ರಂ ರಕ್ತಂ ಪಿಬತಿ—ಅಸ್ರ+ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೪). 2. ರಾಕ್ಷಸ ದೇವತಾಕ ವಾದ ಮೂಲಾನಕ್ಷತ್ರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)—ಪಾ-ಪಾ. 3. ಜಿಗಣೆ, ರಕ್ತವನ್ನು ಹೀರುವ ಒಂದು ಹುಳು. 4. ರಾಕ್ಷಸಿ.

**ಅಸ್ರಜಂಕ** ಅಸ್ರಜಂಕ (ಪುಂ) 1. ಬಿಳಿತುಲಸಿ ಗಿಡ. ಅಸ್ರಂ ರಕ್ತಂ ಅರ್ಜಯತಿ — ಅರ್ಜ (ಪ್ರತಿಯಲೇ) "ಞ್" (೩-೧-೧೩೩). 2. ರಕ್ತವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ದೇಹರಸ. (ವಿಂ) 3. ರಕ್ತವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.

**ಅಸ್ಮ** ಅಸ್ಮ (ನಂ) ಕಣ್ಣೀರು. ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಠ್" (೩ಂ ೪-೨೯).

**ಅಸ್ಯ** ಅಸ್ಯ (ವಿಂ) 1. ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. ನಾಸ್ತಿ ಸ್ವಂ ಯಸ್ಯ. 2. ತನ್ನದಲ್ಲದ, ತನ್ನವನಲ್ಲದ. ನ ಸ್ವಃ ಸ್ವಕೀಯಃ.

**ಅಸ್ಯಕ** ಅಸ್ಯಕ (ವಿಂ) ತನ್ನದಲ್ಲದ, ತನ್ನವನಲ್ಲದ. ಅಸ್ಯ "ಅಕಚ್" (೪-೩-೭೧). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಠಾಪ್". ಅಸ್ಯಿಕಾ ಅಸ್ಯಿಕಾ.

**ಅಸ್ಯಚ್ಛಂದ** ಅಸ್ಯಚ್ಛಂದ (ವಿಂ) ಪರತಂತ್ರ, ಸ್ವತಂತ್ರ ನಲ್ಲದ. ನ ಸ್ವಚ್ಛಂದಃ.

**ಅಸ್ಯತನ್ತ್ರ** ಅಸ್ಯತನ್ತ್ರ (ವಿಂ) ಪರಾಧೀನ, ಸ್ವತಂತ್ರ ನಲ್ಲದ. ನ ಸ್ವತನ್ತ್ರಃ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಅಸ್ಯತನ್ತ್ರಾ ಅಸ್ಯತನ್ತ್ರಾ. "ಅಸ್ಯತನ್ತ್ರಾಃ ಸ್ತ್ರೀಯಃ ಕಾರ್ಯಾಃ ಪುರುಷಃ ಸ್ವೇದಿವಾನಿಶಮ್" ಮೃಂ ೯-೨.

**ಅಸ್ಯಂತ** ಅಸ್ಯಂತ (ಪುಂ) 1. ಸಾವು, ಮರಣ. ಅಸುನಾಮಂತಃ. (ನಂ) 2. ಒಲೆ. (ವಿಂ) 3. ಕೆಟ್ಟಪರಿಣಾಮವುಳ್ಳ.

**ಅಸ್ವಪ್ನ** ಅಸ್ವಪ್ನ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. ನಾಸ್ತಿ ಸ್ವಪ್ನೋ ನಿद्रಾ ಯಸ್ಯ. 2. ನಿದ್ರೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 3. ನಿದ್ರೆಯಿಲ್ಲದ.

**ಅಸ್ವಸ್ಥ** ಅಸ್ವಸ್ಥ (ವಿಂ) 1. ರೋಗಗ್ರೀಡಿತನಾದ. 2. ಚಿತ್ತಕ್ಕೆ ನೆಮ್ಮದಿಯಿಲ್ಲದ.

**ಅಸ್ವಾಚ್ಛನ್ದ** ಅಸ್ವಾಚ್ಛನ್ದ (ನಂ) 1. ಅಸ್ವತಂತ್ರತೆ, ಪರಾಧೀನತೆ. ನಾಸ್ತಿ ಸ್ವಾಚ್ಛನ್ದಂ ಯಸ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಪರಾಧೀನ, ಅಸ್ವತಂತ್ರ.

**ಅಸ್ವಾತನ್ತ್ರ** ಅಸ್ವಾತನ್ತ್ರ (ನಂ) 1. ಪರಾಧೀನತೆ. (ವಿಂ) 2. ಪರಾಧೀನ.

**ಅಸ್ವಾಧ್ಯಾಯ** ಅಸ್ವಾಧ್ಯಾಯ (ಪುಂ) 1. ಅನಧ್ಯಯನ ಕಾಲ, ವೇದಾಧ್ಯಯನಕ್ಕೆ ನಿಸಿದವಾದ ಕಾಲ. ನ ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯೋ ವೇದಾಧ್ಯಯನಂ ಯಸ್ಮಿನ್. (ವಿಂ) 2. ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡದವನು. ನಾಸ್ತಿ ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯೋ ವೇದಾಧ್ಯಯನಂ ಯಸ್ಯ.

**ಅಸ್ವಾಮಿಕ** ಅಸ್ವಾಮಿಕ (ವಿಂ) 1. ಯಜಮಾನನಿಲ್ಲದ. ನ ಸ್ವಾಮಿ ಯಸ್ಯ. "ಅಟವ್ಯಃ ಪವಂತಾಃ ಪುಷ್ಯಾ ನದ್ಯಸ್ತೀರ್ಥಾನಿ ಯಾನಿ ಚ. ಸರ್ವಾಣ್ಯಸ್ವಾಮಿಕಾನ್ಯಾಹುಃ ನ ಹಿ ತेषು ಪರಿಗ್ರಹಃ". 2. ವಾರಸುದಾರನಿಲ್ಲದ (ನಿಧಿ, ಬೊಕ್ಕಸ).

**ಅಸ್ವಾಮಿನ್** ಅಸ್ವಾಮಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಯಜಮಾನನಲ್ಲದವನು, ಒಡೆಯನಲ್ಲದವನು, ಹಕ್ಕಿಲ್ಲದವನು. ನ ಸ್ವಾಮಿ. 2. ಯಜಮಾನನಿಲ್ಲದ, ಒಡೆಯನಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಸ್ವಾಮಿ ಯಸ್ಯ.

**ಅಸ್ವಾಮಿವಿಕ್ರಯ** ಅಸ್ವಾಮಿವಿಕ್ರಯ (ಪುಂ) ಒಡೆಯನಲ್ಲದವನಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ ಮಾರಾಟ. ಅಸ್ವಾಮಿನಾ ಕೃತೋ ವಿಕ್ರಯಃ. "ನಿಕ್ಷಿಪ್ತಂ ವಾ ಪರದ್ರವ್ಯಂ ನಷ್ಟಂ ಲಂಘ್ಯಾಽಪಹೃತ್ಯ ವಾ. ವಿಕ್ರೀಯತೇಽಸಮಕ್ಷಂ ಯತ್ ಸ ಜ್ಞೇಯೋಽಸ್ವಾಮಿವಿಕ್ರಯಃ".

**ಅಸ್ವಾಮ್ಯ** ಅಸ್ವಾಮ್ಯ (ನಂ) 1. ಸ್ವತ್ವವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಹಕ್ಕಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಅಧಿಕಾರವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ಒಡೆತನವಿಲ್ಲದ, ಯಜಮಾನತನವಿಲ್ಲದ. ನ ಸ್ವಾಮ್ಯಂ ಯಸ್ಯ.

**ಅಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯ** ಅಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯ (ನಂ) 1. ನೆಮ್ಮದಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯಮ್. "ವಿಗೃಹ್ಯ ಚಕ್ರೇ ನಮುಚಿದ್ವಿಷಾ ಬಲಿ ಯ ಇತ್ಯ-ಮಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯಮಹದಿವಂ ದಿವಃ" ಮಾಘಂ ೧-೪೧. 2. ಆರೋಗ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ರೋಗ. (ವಿಂ) 3. ನೆಮ್ಮದಿಯಿಲ್ಲದ. 4. ಆರೋಗ್ಯವಿಲ್ಲದ, ರೋಗಬಾಧೆಯುಳ್ಳ.

**ಅಹ** ಅಹ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪೂಜೆ. 2. ಪ್ರಶಂಸೆ, ಹೊಗಳಿಕೆ. 3. ನಿಂದೆ. 4. ಆಜ್ಞೆ, ಅಪ್ಪಣೆ. 5. ನಿಗ್ರಹ. "ಅಹ ಪ್ರಶಂಸಾಕ್ಷಿಪಯೋನಿಯೋ ಚ ವಿನಿಗ್ರಹೇ" ಮೇದಿಂ.

**ಅಹಂ** ಅಹಂಯು (ವಿಂ) ಅಹಂಕಾರದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಗರ್ವಿತನಾದ. ಅಹಂ "ಯುಸ್" (೪-೨-೧೪೦). "ಅಹಂ-



ಯುನಾಽಪಿ ಕ್ಷಿತಿಪಃ ಶುಭಂಯುಕ್ತೇ ವಚಸ್ತಾಪಸಕ್ತುಞ್ಜರೇಣ" ಮೃದ್ವಿಂ  
೧-೨೦।

ಅಹಃಪತಿ ಅಹಃಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಅಹ್ನಃ ಪತಿಃ।  
2. ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

ಅಹಃಶೇಷ ಅಹಃಶೇಷ (ಪುಂ) ಹಗಲಿನ ಕೊನೆಯ ಭಾಗ,  
ಸಾಯಂಕಾಲ. ಅಹ್ನಃಶೇಷಃ।

ಅಹಃಕ್ಷಾರ ಅಹಂಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಗರ್ವ, ನಾನು ಎಂಬ  
ದುರಭಿಮಾನ, ತನ್ನಲ್ಲಿ ಹಿರಿಮೆಯ ಜ್ಞಾನ. ಅಹಮಿತಿ  
ಕ್ರಿಯತೇಜೇನ — ಓ ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಏವ್" (೩-೩-೧೨೧)।  
2. ಅಂತಃಕರಣದ ಒಂದು ಭೇದ. "ಮನೋ ಬುದ್ಧಿರಹಃಕ್ಷಾರ-  
ಶ್ಚಿತ್ತಂ ಕರಣಮಾಂತರಮ್"। 3. ಹೆಮ್ಮೆ, ಸೊಕ್ಕು.

ಅಹಃಕ್ಷಾರಿನ್ ಅಹಂಕಾರಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಅಭಿಮಾನವುಳ್ಳ.  
2. ಗರ್ವದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಅಹಃಕ್ಷಾರೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ"  
(೪-೨-೧೧೪)।

ಅಹಃಕೃತ ಅಹಂಕೃತ (ವಿಂ) 1. ನಾನು ಮಾಡುತ್ತೇನೆ  
ನಾನು ಮಾಡಿದೆನು ಎಂಬ ಭಾವದಿಂದ ಕೂಡಿದ,  
ದುರಭಿಮಾನದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಅಹಮಿತಿ ಕೃತಂ ಯೇನ।  
"ಯಸ್ಯ ನಾಹಃಕೃತೋ ಭಾವಃ ಬುದ್ಧಿರಸ್ಯ ನ ಲಿಪ್ಯತೇ। ಹತ್ವಾಪಿ  
ಸ ಇಮಾಲ್ಲೋಕಾಃ ಹಂತಿ ನ ನಿವೃಢ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೧೮-೧೭।  
2. ಸೊಕ್ಕುಳ್ಳ, ಹೆಮ್ಮೆಪಡುವ, ಜಂಬದಿಂದ ಕೂಡಿದ.  
"ಜಾತಿರೂಪವಯೋಕ್ತವಿಧಾದಿಭಿರಹಃಕೃತಃ" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೧೪೧।

ಅಹಃಕ್ಷತಿ ಅಹಂಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಹಂಕಾರ, ದುರಭಿ  
ಮಾನ, ನಾನು ಮಾಡಿದೆನೆಂಬ ಭಾವ. 2. ಗರ್ವ,  
ಸೊಕ್ಕು, ಹೆಮ್ಮೆ. ಅಹಃ+ಓ ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಕ್ತಿನ್"  
(೩-೩-೧೪)।

ಅಹತ ಅಹತ (ವಿಂ) 1. ಒಗೆಯದ ಬಟ್ಟೆ, ಚಲುವೆಮಾಡ  
ಲ್ಪಡದ ಬಟ್ಟೆ. 2. ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡದ ಬಟ್ಟೆ,  
ಹೊಡೆಯಲ್ಪಡದ ಬಟ್ಟೆ. 3. ಹರಿಯದ ಬಟ್ಟೆ, ಉಟ್ಟು  
ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡದ ಬಟ್ಟೆ. (ವಿಂ) 4. ಹೊಡೆಯ  
ಲ್ಪಡದ, ಬಡಿಯಲ್ಪಡದ.

ಅಹನ್ ಅಹನ್ (ನಂ) 1. ಹಗಲು, ದಿವಸ. ನ ಜಹಾತಿ —  
ಓ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗ) "ಕನಿನ್" (೩ಂ ೧-೧೪೬)। "ಸವ್ಯಾ-  
ಪಾರಾಮಹಿನ್ ನ ತಥಾ ಪಿಡಯೇನ್ಮದ್ವಿಯೋಗಃ" ಮೇಘಂ ೨-೨೪।  
2. ಆಕಾಶ. 3. ಹಗಲು ರಾತ್ರಿ ಸೇರಿದ ಒಂದು ದಿನ.  
4. ಎಷ್ಟು. ಅಹರಿವ। "ಅಹಃ ಸಂವತ್ಸರೋ ವ್ಯಾಲಃ ಪ್ರತ್ಯಯಃ  
ಸರ್ವದರ್ಶನಃ" ವಿಂ ಸಂ।

ಅಹಂತಾ ಅಹಂತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಹಂಭಾವ, ನಾನು ಎಂಬ  
ದುರಭಿಮಾನ. ಅಹಮೋ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)।

ಅಹಮ್ ಅಹಮ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ನಾನು. [ಇದು ಮಾಂಠ  
ವಾದ ವಿಭಕ್ತಿಪ್ರತೀಕರಣವು.] 2. ಅಹಂಕಾರ,  
ದುರಭಿಮಾನ.

ಅಹಮಹಮಿಕಾ ಅಹಮಹಮಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಾನು  
ತಾನು ಎಂಬ ಪರಸ್ಪರ ಅಹಂಕಾರ, ತಾನೇ ಶ್ರೇಷ್ಠ  
ತಾನೇ ಸಮರ್ಥ ಎಂದು ಅಹಂಕಾರಪಡುವಿಕೆ. ಅಹಮಹ-  
ಮಿಕಾಽಪ್ರತ್ಯಯಃ — ವೀಪ್ಸಾಃ ದ್ವಿತ್ವಮ್ (೮-೧-೨)। "ಠನ್"  
(೪-೨-೧೧೬)। "ಅಹಮಹಮಿಕಾ ತು ಸಾ ಸ್ವಾತರಸ್ಪರಂ ಯೋ  
ಮವತ್ಯಹಃಕ್ಷಾರಃ" ಅಮಂ. 2. ನಾನು ಮುಂದು ತಾನು  
ಮುಂದು ಎಂಬ ಸ್ಪರ್ಧೆ. "ಕ್ರಿಯಾಸಾತತ್ಯೇನಾಪ್ಯಹಮಹಮಿಕಾ-  
ಕ್ರಾಂತಮನಸಃ" ಮಂ ವೀಂ ೬-೪೪।

ಅಹಮ್ಪ್ರವಿಕಾ ಅಹಂಪ್ರವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾನು ಮೊದಲು  
ತಾನು ಮೊದಲು ಎಂದು ಸಂಕೋಪದಿಂದ ಸೈನಿಕರ  
ಮುಂದೊಲೆ. ಅಹಮ್ಪ್ರವಮಹಮ್ಪ್ರವಮಿತ್ಯಸ್ಯಾಂ ಕ್ರಿಯಾಯಾಮ್।  
[ನಾನು ತಾನು ಎಂದು ಸ್ಪರ್ಧೆಯಿಂದ ಮಾಡುವ  
ಕೆಲಸ.] "ಸುಗೃಹ್ಯ ದುಗೃಹ್ಯ ಚ ತುಲ್ಯವಿಕರ್ಮಜವಾದಹಮ್ಪ್ರವಿಕಾ  
ಯಿಯಾಸುಃ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೩೨।

ಅಹಮ್ಪ್ರತ್ಯಯ ಅಹಂಪ್ರತ್ಯಯ (ಪುಂ) ನಾನು ನನ್ನದು  
ಎಂಬ ಜ್ಞಾನ. ಅಹಮಿತಿ ಪ್ರತ್ಯಯಃ।

ಅಹಮಭಾವ ಅಹಂಭಾವ (ಪುಂ) ನಾನು ಎಂಬ ದುರಭಿ  
ಮಾನ, ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ. ಅಹಮಿತಿ ಭಾವಃ।

ಅಹಮಮತಿ ಅಹಂಮತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾನು ಎಂಬ ಜ್ಞಾನ,  
ಅವಿದ್ಯೆ, ಅಜ್ಞಾನ. ಅಹಮಿತಿ ಮತಿಃ।

ಅಹಗಣ ಅಹಗಣ (ಪುಂ) ದಿನಗಳ ಗುಂಪು, ದಿನಗಳ  
ಸಮೂಹ. ಅಹಗ್ ಗಣಃ। ರೇಫಃ (೮-೨-೬೯)। ಇದು  
ಸೌರ, ಚಾಂದ್ರ ಮತ್ತು ಸಾವನಗಳೆಂದುಮೂರು ವಿಧ.  
[ಎವರಕ್ಕೆ ಸೂರ್ಯಸಿದ್ಧಾಂತದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಅಹದಿವ ಅಹದಿವ (ಅವ್ಯಂ) ಪ್ರತಿದಿನದಲ್ಲೂ. ಅಹನಿ  
ಚ ದಿವಾ ಚ — ವೀಪ್ಸಾಃ ದ್ವಿತ್ವೋ ನಿಪಾಂ (೪-೪-೭೭)।  
"ವಿಗೃಹ್ಯ ಚಕ್ರೇ ನಮುಚಿದ್ರಿಷಾ ಬಲಿ ಯ ಇತ್ಯಮಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯಮಹದಿವಂ  
ದಿವಃ" ಮಾಘಂ ೧-೪೧।

ಅಹನಿಶ ಅಹನಿಶ (ನಂ) ಹಗಲು ಮತ್ತು ರಾತ್ರಿ,  
ಒಂದು ದಿನ. ಅಹಃಚ ನಿಶಾ ಚ। "ವಿರಮೇತಕ್ಷಿಣಿ ರಾತ್ರಿ  
ತದೇವೈಕಮಹನಿಶಮ್" ಮನ್ವಂ ೪-೯೭।

ಅಹಃಪತಿ ಅಹಃಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ, ಹಗಲಿನ ಒಡೆಯ.  
ಅಹಃ ಪತಿಃ — ರೇಫಃ (ವಾಂ ೮-೨-೬೯)। "ಶಾಖಾಪೃಥಿವ್ಯೋಃ  
ಪ್ರತ್ಯಯಮಹಃಪತಿರಿವಾತಪಮ್" ರಘುಂ ೧೦-೪೪। 2. ಎಕ್ಕದ  
ಗಿಡ.



**ಅಹರ್ವಿ ಅಹರ್ವಣಿ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಅಹೋ ಮಣಿರಿವಿ. 2. ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

**ಅಹರ್ವಣಿ ಅಹರ್ವಣಿ** (ನಂ) ಪ್ರಾತಃಕಾಲ, ದಿವಸದ ಪ್ರಾರಂಭಕಾಲ. ಅಹೋ ಮುಖಮ್.

**ಅಹರ್ವಣಿ ಅಹರ್ವಣಿ** (ವಿಂ) 1. ನೇಗಿಲಿನಿಂದ ಉಳಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ (ಭೂಮಿ), ಸಾಗುವಳಿಗೆ ಅರ್ಹವಲ್ಲದ. 2. ನೇಗಿಲಿನಿಂದ ಉಳಲ್ಪಡದ. ಹಲೇನ ಕೃಷ್ಯಮ್ "ಯತ್" (೪-೪-೯೭) | ನಂ ತಂ |

**ಅಹರ್ವಣಿ ಅಹರ್ವಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೌತಮ ಮಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿ ಅಹರ್ವಣಿದೇವಿ, ನಿಮಿಕ್ಕುಲ ಪುರೋಹಿತನಾದ ಶತಾನಂದ ಮಹರ್ಷಿಯ ತಾಯಿ. [ಗೌತಮ ಮಹರ್ಷಿಯು ಒಂದು ದಿನ ಪ್ರಾತರಾಹ್ನಿಕಕ್ಕಾಗಿ ನದಿಗೆ ತೆರಳಿದಾಗ ಇಂದ್ರನು ಗೌತಮಮುಷಿಯ ವೇಷವನ್ನು ತಾಳಿಬಂದು ಅಹರ್ವಣಿದೇವಿಯನ್ನು ಮೋಹಿಸಿದನು. ಮಹರ್ಷಿಗೆ ಈ ವಿಷಯ ತಿಳಿದು ಅಹರ್ವಣಿಯು ಶಿಲೆಯಾಗುವಂತೆಯೂ, ಇಂದ್ರನ ವೃಷಣವು ಬಿದ್ದು ದೋಗುವಂತೆಯೂ ಶಪಿಸಿ, ಮುಂದೆ ಇಲ್ಲಿಗೆ ಬರಲಿರುವ ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನ ಪಾದಸ್ಪರ್ಶದಿಂದ ಅಹರ್ವಣಿಯ ಶಾಪವಿಮೋಚನೆಯಾಗುವುದೆಂದು ಹೇಳಿ ತಪಸ್ಸಿಗೆ ಹೊರಟರು. ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನು ಆಗಮಿಸಿ ತನ್ನ ಪಾದಧೂಳಿಯಿಂದ ಅಹರ್ವಣಿಗೆ ನಿಜರೂಪವನ್ನುಂಟು ಮಾಡಲು ಶಾಪವಿಮುಕ್ತಳಾದ ಪತ್ನಿಯೊಡನೆ ಗೌತಮ ಮಹರ್ಷಿಯು ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನನ್ನು ಸತ್ಕರಿಸುವರು.] ಈ ಅಹರ್ವಣಿಯು ಪಂಚಪತಿವ್ರತಾಸ್ತ್ರೀಯರಲ್ಲೊಬ್ಬಳು. "ಅಹರ್ವಣಿ ದ್ರೌಪದಿ ಕುಂತಿ ತಾರಾ ಮಂಡೋದರಿ ತಪಾ | ಪಂಚಕನ್ಯಾಃ ಸ್ಮರೇನ್ನಿತ್ಯಂ ಮಹಾಪಾತಕನಾಶಿನಿಃ" |

**ಅಹರ್ವಣಿ ಅಹರ್ವಣಿ** (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ.

**ಅಹರ್ವಣಿ ಅಹರ್ವಣಿ** (ಪುಂ) ಗೌತಮ ಮಹರ್ಷಿಯ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ತೀರ್ಥ.

**ಅಹರ್ವಣಿ ಅಹರ್ವಣಿ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಅಹಃ ಕರೋತಿ—ಕೃ (ಕರಣ) "ಃ" (೩-೨-೨೧) | "ಸಃ" (೮-೩-೪೮) | "ಅಪರ್ಮಮೌದಿಕವಿಂದುಮೌತಿಕೇರಲಚ್ಚಕಾರಾಸ್ಯ ವಧೂರಹರ್ವಣಿಃ" | ಮಾಂ ೧-೪೮ | 2. ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

**ಅಹರ್ವಣಿ ಅಹರ್ವಣಿ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಆಶ್ಚರ್ಯ. 2. ದುಃಖ. 3. ಕಷ್ಟ, ಶ್ರಮ. 4. ಸಂಜೋಧನೆ, ಕರೆ. 5. ಸಂತೋಷ. 6. ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಕೊಡುವ ಶಬ್ದ. ಅಹಂ ಜಹಾತಿ—ಆಹ್ (ತ್ಯಾಗ) "ಃ" (೩-೨-೧೦೧) | "ಅಹೇತೃತ್ಯುತೇ ಕೇರಿ ಪರಿಕ್ಲೇಶಪ್ರಹರ್ಷಯೋಃ | ಸಂಬೋಧನೇಽಪಿ" | ಮೇದಿಂ |

**ಅಹರ್ವಣಿ ಅಹರ್ವಣಿ** (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ನ ಹಾರ್ಯಃ—ಹ್ವ (ಹರಣ) "ಃ" (೩-೧-೧೨೪) | ನಂ ತಂ | (ವಿಂ) 2. ಒಯ್ಯಲಾಗದ, ಕದಿಯಲಾಗದ. 3. ಒಯ್ಯಲನರ್ಹವಾದ. 4. ಭೇದಿಸಲಾಗದ. 5. ದೃಢವಾದ, ಸ್ಥಿರವಾದ. "ವಿಮುಚ್ಯ ಸಾ ಹಾರಮಹಾರ್ಯನಿಶ್ಚಯಾ ವಿಲೋಯಪ್ರವಿಲಿಪ್ತವಂದನಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೮ |

**ಅಹಿ ಅಹಿ** (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಅಹಂತಿ—ಆ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) "ಃ" ಆಡೋ ಹ್ವಸ್ವಶ್ಚ (೩-೪-೧೩೭) | "ಕರೇಣ ಶಮ್ಭೋವಲಯೀಕೃತಾಹಿನಾ ಸಹಿಷ್ಯತೇ ತತ್ಪ್ರಥಮಾವಲಂಬನಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೬೬ | 2. ವೃತ್ತಾಸುರ. 3. ಸೂರ್ಯ. 4. ರಾಹು. 5. ಪಥಿಕ, ಪಾಂಥ. 6. ಆಶ್ಲೇಷಾ ನಕ್ಷತ್ರ. 7. ನೀರು. 8. ಭೂಮಿ. 9. ಕರೆಯುವ ಹಸು. 10. ಸೀಸಲೋಹ. (ವಿಂ) 11. ವ್ಯಾಪಕವಾದ, ಹರಡುವ, ಪಸರಿಸುವ. (ದ್ವಿಂ) 12. ಭೂಮಿ ಮತ್ತು ಆಕಾಶ.

**ಅಹಿಸಾ ಅಹಿಸಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಿಂಸಿಸದಿರುವಿಕೆ, ತೊಂದರೆ ಕೊಡದಿರುವಿಕೆ, ವಾಕ್ಯ ಶರೀರ ಮತ್ತು ಮನಸ್ಸು ಇವುಗಳಿಂದ ಇತರರನ್ನು ನೋಯಿಸದಿರುವಿಕೆ. 2. ಅಷ್ಟಾಂಗಯೋಗದ ಅಂಗವಾದ ಯಮದ ಒಂದು ಭೇದ. "ಅಹಿಸಾಸತ್ಯಾಸ್ತೇಯಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾಪರಿಸ್ರಾಹಾ ಯಮಾಃ" | ಪಾಂ ಯಂ ಸುಂ ೨-೩೦ |

**ಅಹಿಸಾ ಅಹಿಸಾ** (ವಿಂ) ಹಿಂಸಿಸದಿರುವ, ಹಿಂಸಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದವನಲ್ಲದ. ನಂ ತಂ |

**ಅಹಿಚಕ್ಷತ್ರ ಅಹಿಚಕ್ಷತ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಅರ್ಜುನನು ಗೆದ್ದು ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿದ ಒಂದು ದೇಶ. 2. ಬಲಮುರಿ ಗಿಡ, ಕುರುಟೆಗೆ ಗಿಡ.

**ಅಹಿಜಿತ್ ಅಹಿಜಿತ್** (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠ, ಕಾಳಿಯ ಮರ್ಧನ. 2. ಇಂದ್ರ.

**ಅಹಿತ ಅಹಿತ** (ಪುಂ) 1. ಶತ್ರು, ವೈರಿ, ಹಗೆ. ನ ಹಿತಃ | "ಅಹಿತಾನಮಿ ವಾಹಿನ್ಯಾ ಸ ಮಾನಿ ಚತುರಜ್ಞಯಾ" | ಮಾಂ ೧೯-೨೪ | (ನಂ) 2. ನಷ್ಟ, ಹಾನಿ, ಕೇಡು. "ಅಹಿತಂ ನ ವಿಚಿಂತಿತಂ ಮಯೇತತ್" | ಯಾದಂ ೧೪-೨೭ | (ವಿಂ) 3. ಪಥ್ಯವಲ್ಲದ, ಹಿತವಲ್ಲದ. 4. ಅನರ್ಥಕರವಾದ, ಹಾನಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. "ಅಹಿತಾದನಪತ್ರಪತ್ರಸನ್ನತಿ-ಮಾತ್ರೋಜ್ಜಿತತುರಗಾಸ್ತಿಕಃ" | ಮಾಂ ೧೬-೭ |

**ಅಹಿತುಂಡಕ ಅಹಿತುಂಡಕ** (ಪುಂ) ತಾವಾಡಿಗೆ, ಹಾವಿ ನೊಡನೆ ಆಟವಾಡುವವನು. ಅಹಿತುಂಡೇನ ದೀವ್ಯತಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೨) | ಸಂಜ್ಞಾಪೂರ್ವಕತ್ವಾತ್ ವೃದ್ಧಾಭಾವೇ ರೂಪಮ್ |



ಅಹಿವಿಷ್ ಅಹಿವಿಷ್ (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. 2. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. 3. ಮುಂಗಸಿ, ಕೀರ. 4. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಅಹಿ ಸಪ್ತ ದ್ವೇಷಿ.—ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೬೧)। 5. ಇಂದ್ರ. ಅಹಿ ವೃತ್ರಾಸುರಂ ದ್ವೇಷಿ—ದ್ವಿಷ “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೬೧)। “ಸಮಸ್ತಕಾರ್ಯೇ ಗತೇನ ಧುರಂತಾಮಹಿವಿಷ-ಸ್ತದ್ಭವತಾ ನಿಶಮ್ಯತಾಮ್” ಮಾಘಂ ೧-೪೧। ಹೀಗೆಯೇ ಅಹಿದ್ರಹ್ ಅಹಿವಿವಿಷ್ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಅಹಿನಕುಲ ಅಹಿನಕುಲ (ನಂ) ಸರ್ಪಗಳು ಮತ್ತು ಮುಂಗಸಿಗಳು. ಅಹಯಶ್ಚ ನಕುಲಾಶ್ಚ ಏಷಾಂ ಸಮಾಹಾರ: (೨-೪-೯)।

ಅಹಿನಿಮೋಕ ಅಹಿನಿಮೋಕ (ಪುಂ) ಹಾವಿನ ಸೋಲೆ, ಹಾವಿನ ಪೊರೆ.

ಅಹಿಪತಿ ಅಹಿಪತಿ -ರಾಜ-ರಾಜ (ಪುಂ) ಸರ್ಪರಾಜ, ವಾಸುಕಿ.

ಅಹಿಫೇನ ಅಹಿಫೇನ (ಪುಂ) 1. ಹಾವಿನ ನೋರೆ, ಹಾವಿನ ಬಾಯಿ ಜೊಲ್ಲು. 2. ಅಫೀಮು.

ಅಹಿಭಯ ಅಹಿಭಯ (ನಂ) 1. ರಾಜನಿಗೆ ತನ್ನವರಾದ ವಿಶ್ವಾಸಘಾತಕರಿಂದಂಟಾಗುವ ಭಯ. “ಮಹಿಭುಜಾ-ಮಹಿಭಯಂ ಸ್ವಪಕ್ಷಪ್ರಭವಂ ಭಯಮ್” ಅಮಂ 1. 2. ಹಾವಿನ ಭಯ.

ಅಹಿಭಾನು ಅಹಿಭಾನು (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ ಸಂಚಾರಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ವಾಯು.

ಅಹಿಭುಜ್ ಅಹಿಭುಜ್ (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. 2. ಮುಂಗಸಿ, ಕೀರ. 3. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಅಹಿ ಭುಜ್ತೇ—ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ:) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬)।

ಅಹಿಭೃತ್ ಅಹಿಭೃತ್ (ಪುಂ) ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. ಅಹಿ ವಿಭವಿತಿ—ಛು ಭೃತ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋ:) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬)।

ಅಹಿಮ ಅಹಿಮ (ನಂ) 1. ಉಷ್ಣತೆ, ಬಿಸಿ. (ವಿಂ) 2. ಬಿಸಿಯಾದ.

ಅಹಿಮಕರ ಅಹಿಮಕರ -ದ್ಯುತಿ -ದ್ಯುತಿ -ರೂಪಿ -ರೂಪಿ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಅಹಿಮ: ಕರ: ಅಹಿಮಾ ದ್ಯುತಿ: ರೂಪಿರ್ವಾ ಯಸ್ಯ। “ಅಹಿಮರೂಪಿ ಹಿಮಧಾಮ್ನಿ ಯಾತಿ ಚಾಸ್ತಮ್” ಮಾಘಂ ೪-೨೦।

ಅಹಿಮದಂತಿ ಅಹಿಮದಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸರ್ಪಾಕ್ಷಿ, ಈಶ್ವರೀ ಹಂಟು. ಅಹಿಮದಂತಿಜನಯಾ—ಮೃದ (ಕ್ಷೋದೇ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)।

ಅಹಿಮಾರ ಅಹಿಮಾರ -ಮಾರಕ -ಮಾರಕ (ಪುಂ) 1. ಕಗ್ಗಲಿ ಮರ. 2. ಗರುಡ. 3. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. 4. ಮುಂಗಸಿ, ನಕುಲ, ಕೀರ. ಅಹಿ ಮಾರಯತಿ—ಮೃಡ್

(ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೇ) + ಗಿಚ್ “ಅನ್” (೩-೨-೧)। “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) ವಾ।

ಅಹಿಮಾಂಶು ಅಹಿಮಾಂಶು (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಅಹಿಮಾ ಅಂಶವೋಪ್ರಯ. “ದೋಷಾಪಿ ನೂನಮಹಿಮಾಂಶುರಸೌ ಕಿಲೇತಿ” ಮಾಘಂ ೪-೪೬।

ಅಹಿಮೇದ ಅಹಿಮೇದ (ಪುಂ) ಕಗ್ಗಲಿ ಮರ.

ಅಹಿರಿಪು ಅಹಿರಿಪು (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. 2. ಮುಂಗಸಿ, ಕೀರ. 3. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. 4. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ, ಕಾಳಿಯ ಮರ್ದನ. ಅಹಿ: ಸರ್ಪಸ್ಯ ರಿಪು: 5. ಇಂದ್ರ.

ಅಹಿ: ವೃತ್ರಾಸುರಸ್ಯ ರಿಪು:।

ಅಹಿಲತಾ ಅಹಿಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೀಳ್ಯದಲೆಯ ಬಳ್ಳಿ. 2. ಈಶ್ವರೀ ಹಂಟು, ಸರ್ಪಾಕ್ಷಿ ಲತೆ.

ಅಹಿಹನ್ ಅಹಿಹನ್ (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. 2. ಇಂದ್ರ. ಅಹಿ ಸಪ್ತ ವೃತ್ರಾಸುರಂ ವಾ ಹತವಾನ್—ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬)।

ಅಹೀನ ಅಹೀನ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪರಾಜ, ವಾಸುಕಿ. ಅಹೀನಾ ಇನ: ಸ್ವಾಮಿ। 2. ಅನೇಕ ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡಬಹುದಾದ ಯಾಗ. ಅಹೋಭಿ: ಸಾಧ್ಯತೇ “ಃ” (೪-೧-೮೭)। ದ್ವಿಗಹೀನ: ತ್ರಿಗಹೀನ: ಇತ್ಯಾದಿ. (ವಿಂ) 3. ಬಿಡದಿರುವ. 4. ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ, ಕಡಿಮೆಯಾಗಿಲ್ಲದ, ನ್ಯೂನತೆ ಯಿಲ್ಲದ. 5. ನಿಶ್ಚಿಷ್ಟವಲ್ಲದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ.

ಅಹೀಂದ್ರ ಅಹೀಂದ್ರ (ಪುಂ) ಸರ್ಪರಾಜ, ವಾಸುಕಿ. ಅಹೀನಾ-ಮಿಂದ್ರ:। “ಅಹೀಂದ್ರದಾಮಭಿರ್ಮಿರಿಸಲಮ್ಬಿಭಿರಿಸಲ:” ಯಾದಂ ೧೬-೪೧।

ಅಹೇ ಅಹೇ (ಅವ್ಯಂ) 1. ವಿಯೋಗ, ಅಗಲಿಕೆ. 2. ದುಃಖ. 3. ನಿಂದೆ—ಇವುಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಶಬ್ದ.

ಅಹೇರು ಅಹೇರು (ಪುಂ) ಶತಮೂಲಿ ಗಿಡ, ಶತಾವರಿ ಗಿಡ.

ಅಹೋ ಅಹೋ (ಅವ್ಯಂ) ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಶಬ್ದ: 1. ಆಶ್ಚರ್ಯ. “ಅಹೋ ಸ್ಥಿರ: ಕೋಪಿ ತವೇಪ್ಸಿತೋ ಯುವಾ ಚಿರಾಯ ಕರ್ಣೋತ್ಪಲಶೂನ್ಯತಾಂ ಗತೇ” ಕುಮಾಂ ೪-೪೭।

“ಅಹೋ ಮಹತ್ಸತ್ತ್ವಮಹೋ ಪರಾಕ್ರಮ:” ಯಾದಂ ೧೪-೨೪।

2. ದಯೆ, ಕನಿಕರ, ಕರುಣೆ. “ಅಹೋ ದುರಂತಾ ಬಲವ-ದಿರೋಧಿತಾ” ಕಿರಾಂ ೧-೨೩। 3. ನಿಂದೆ, ಬೈಗಳು.

4. ಕರೆ, ಸಂಬೋಧನೆ. “ಅಹೋ ಅಹೋ ದೇವಗಣಾ: ಸುರೇಂದ್ರ-ಮುಖ್ಯಾ: ಶೃಣುಧ್ವಂ ವಚನಂ ಮಮೇತೇ” ಕುಮಾಂ ೧೨-೪೪।

5. ತೋಕ, ದುಃಖ. 6. ಅಸೂಯೆ, ಹೊಟ್ಟೆಕಿಚ್ಚು.

7. ಸಂದೇಹ, ಸಂಶಯ. 8. ಪ್ರಶಂಸೆ, ಹೊಗಳಿಕೆ.

9. ಪಾದಪೂರಣ. 10. ಸಂತೋಷ, ತೃಪ್ತಿ. “ಅಹೋ



ಭಿಗಯೆ ಶೋಕೇ ಚ ಕರ್ಣಾರ್ಥವಿಷಾದಯೋಃ | ಸಮ್ಬೋಧನೇ ಪ್ರಶಂಸಾयां  
ವಿಸ್ಮಯೇ ಪಾದಪೂರಣೇ | ಅಸೂಯಾयां ವಿತರ್ಕೇ ಚ " ಮೇದಿಂ |

**ಮಹೋರಾತ್ರ ಅಹೋರಾತ್ರ** (ಪುಂ) ಹಗಲು ರಾತ್ರಿ ಇವು  
ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ದಿನ. ಅಹರ್‌ಚ ರಾತ್ರಿಚ ಅನಯೋಃ  
ಸಮಾಹಾರ: " ಅಚ್ " (೪-೪-೮೭) |

**ಮಹೋಬತ ಅಹೋಬತ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಸಂಜೋಧನ, ಕರೆ.  
2. ದಯೆ, ಕನಿಕರ. 3. ಅಶ್ವರ್ಯಾ—ಈ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು  
ಕೊಡುವ ಶಬ್ದ. "ಅಹೋಬತ ಮಹತ್ಪಾಪಂ ಕರ್ತುಂ ವ್ಯವಸಿತಾ  
ವಯಮ್" ಗೀತಾ ೧-೪೫ | "ಅಹೋಬತಾಸಿ ಸ್ಪೃಹಣೀಯವೀಯಃ"  
ಕುಮಾಂ ೩-೨೦ |

**ಅಹ್ಲಾಯ ಅಹ್ಲಾಯ** (ಅವ್ಯಂ) ತೀವ್ರವಾಗಿ, ಜಾಗೃತ  
ಯಾಗಿ, ತತ್‌ಕ್ಷಣದಲ್ಲಿ. "ಅಹ್ಲಾಯ ಕೋಪಕಲ್ಪಣಾ ವಿಕಟಂ  
ವಿಹಸ್ಯ" ಕುಮಾಂ ೧೭-೨೫ | "ಅಹ್ಲಾಯ ತಾವದರ್ಶನೇನ ತಮೋ  
ನಿರಸ್ತಮ್" ರಘುಂ ೫-೭೧ |

**ಅಹ್ಲಿಕ ಅಹ್ಲಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಕ್ಷವಣಕ, ಜೈನ (ದಿಗಂಬರ)  
ಸಂನ್ಯಾಸಿ. (ವಿಂ) 2. ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದ, ನಾಚಿಕೆಯನ್ನು  
ತೃಪ್ತಿಸಿದ. ನಾಸ್ತಿ ಹೀಯಸ್ಯ |

**ಅಹ್ಲಲ ಅಹ್ಲಲ** (ಪುಂ) 1. ಗೇರುಮರ. (ವಿಂ) 2. ವಿಹ್ವಲ  
ನಲ್ಲದ, ಸ್ಥಿರಚಿತ್ತನಾದ, ಧೈರ್ಯಶಾಲಿ.

ಇತಿ "ಅ" ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್ |

## ಆ

**ಆ ಆ** ಇದು ವರ್ಣಮಾಲೆ (ವರ್ಣಸಮಾಮಾಯ) ಯಲ್ಲಿ  
ಎರಡನೆಯ ಅಕ್ಷರ. ಉದಾತ್ತ, ಅನುದಾತ್ತ ಮತ್ತು  
ಸ್ವಂತಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಭೇದಗಳುಳ್ಳ ಈ ದೀರ್ಘ  
ಕಾರವು ಪುನಃ ಅನುನಾಸಿಕ ಮತ್ತು ಅನನುನಾಸಿಕ  
ಗಳೆಂಬ ಭೇದದಿಂದ ಎರಡು ವಿಧವಾಗಿ ಒಟ್ಟು ಆರು  
ವಿಧವಾಗುವುದು.

**ಆ ಆ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಸ್ಮೃತಿ, ಸ್ಮರಣೆ, ನೆನಪು. ಆಪ್ಲ್  
(ಆಪ್ತೌ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೧೭೮) | "ಆ ಎವಂ ಕಿಲ  
ತತ್" | 2. ವಾಕ್ಯಾರ್ಥಸೂಚನೆ. "ಆ ಎವಂ ಮನ್ಯಸೇ"  
(ಪೂರ್ವ ಮೆವಂ ಮನ್ಯಸೇ ಇದಾನಿಮೇವಂ ಮನ್ಯಸೇ ಇತ್ಯರ್ಥಃ) | 3. ಅನು  
ಕಂಪ, ದಯೆ. 4. ಸಮುಚ್ಚಯ, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸುವಿಕೆ.  
[ಇದು ಪ್ರಗೃಹ್ಯಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ ಅವ್ಯಯವಾದುದರಿಂದ  
ಮೇಲಿನ ವಾಕ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಧಿ ಬಂದಿರುವುದಿಲ್ಲ.] "ಆ  
ಶ್ವಗುಹಂ ಸ್ಮೃತೌ ವಾಕ್ಯೇನುಕ್ತಮ್ಪಾयां ಸಮುಚ್ಚಯೇ" ಮೇದಿಂ |

**ಆಕರ್ಮ ಆಕರ್ಮ** (ಪುಂ) 1. ಸ್ವಲ್ಪ ನಡುಕ. ಆ+ಕಪಿ  
(ಚಲನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) | 2. ಸ್ವಲ್ಪ ಚಲನೆ.

**ಆಕರ್ಮನ ಆಕರ್ಮನ** (ನಂ) 1. ಸ್ವಲ್ಪ ನಡುಕ. 2. ಸ್ವಲ್ಪ  
ಚಲನೆ. ಆ+ಕಪಿ (ಚಲನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |  
(ವಿಂ) 3. ಸ್ವಲ್ಪ ನಡುಕವುಳ್ಳ, ಸ್ವಲ್ಪ ನಡುಕದ  
ಸ್ವಭಾವದ. 4. ಸ್ವಲ್ಪ ಚಲನೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.  
ಆ+ಕಪಿ (ಚಲನೆ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) |

**ಆಕರ್ಮಿತ ಆಕರ್ಮಿತ** (ನಂ) 1. ಸ್ವಲ್ಪ ಅಲ್ಲಡುವಿಕೆ.  
ಸ್ವಲ್ಪ ನಡುಗುವಿಕೆ. ಆ+ಕಪಿ (ಚಲನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ"  
(೩-೩-೧೧೪) | (ವಿಂ) 2. ಸ್ವಲ್ಪ ಅಲ್ಲಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಸ್ವಲ್ಪ ನಡುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ+ಕಪಿ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |  
"ಪುಕ್ತಸ್ತುಪಾರೇಗಿರಿನಿರ್ಜರಾಣಾಮನೋಹಾಕರ್ಮಿತಪುಷ್ಪಗಂಧಿ"  
ರಘುಂ ೨-೧೩ |

**ಆಕರ ಆಕರ** (ಪುಂ) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. ಆ+ಡು ಕೃಜ್  
(ಕರಣೇ) "ಘಃ" (೩-೩-೧೧೮) | "ತತೋ ಮಂದಾನಿಲೋ-  
ದ್ಭೂತಕಮಲಾಕರಶೋಭಿನಾ" ಕುಮಾಂ ೨-೨೯ | 2. ಗಣ,  
ಜಿನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿ ಮುಂತಾದುವುಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನ.  
ಆಕೀರ್ಯಂತೇ ಧಾತವೋಽತ್ರ — ಆ+ಕ್ (ವಿಕೋಪೇ) "ಅಪ್"  
(೩-೩-೫೭) | "ದಿಲಿಪಮುನುರ್ಮಣಿರಾಕರೋದ್ಭವಃ ಪ್ರಯುಕ್ತಃ  
ಸಂಸ್ಕಾರ ಇವಾಧಿಕಂ ಬಭೌ" ರಘುಂ ೩-೧೮ |

**ಆಕರಿಸ್ ಆಕರಿಸ್** (ಪುಂ) ರಾಜನಿಂದ ನೇಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ  
ಗಣಯ ಅಧಿಕಾರಿ. ಆಕರೇ ನಿಯುಕ್ತಃ "ಠಕ್" (೪-೪-೬೯) |  
(Superintendent of Mines).

**ಆಕರಿಸ್ ಆಕರಿಸ್** (ವಿಂ) 1. ಗಣಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ,  
ಗಣಯೇ ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನವಾಗಿ ಉಳ್ಳ. 2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ  
ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನವುಳ್ಳ. ಆಕರ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫) |  
"ದಧತಮಾಕರಿಸಿಃ ಕರಿಸಿಃ ಕತಃ ಸಮವತಾರಸಮೇರಸಮೇಸ್ತಃ"  
ಕಿರಾಂ ೫-೭ |



ಆಕರ್ಷ ಅಕರ್ಷ (ಅವ್ಯಂ) ಕೆವಿಯವರೆಗೂ. ಕರ್ಣಮಿ-  
ವ್ಯಾಪ್ಯ | ಅವ್ಯಯಿಂ | "ಆಕರ್ಷಮುಲ್ಲಸಿತಮಮ್ಬು ವಿಕಾಸಿಕಾಶ-  
ನಿಕಾಶಮಾಪ ಸಮತಾಂ ಸಿತಚಾಮರಸ್ಯ" ಮಾಧಂ ೪-೩೫ |

ಆಕರ್ಷಣ ಅಕರ್ಷಣ (ನಂ) ಶ್ರವಣಮಾಡುವುದು, ಕೇಳು-  
ವುದು. ಆ+ಕರ್ಣ (ಭೇದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |  
"ದ್ರುತಂ ವಿಧುಯಾದಭೂತಾನಯಾ ಮುದಾ ತದಾಕರ್ಷಣಸಜ್ಜಕರ್ಣಯಾ"  
ನೈಷಂ ೧-೩೫ |

ಆಕರ್ಷಿತ ಅಕರ್ಷಿತ (ವಿಂ) ಕೇಳಲ್ಪಟ್ಟು. ಆ+ಕರ್ಣ  
(ಭೇದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಅಸ್ಮಿನ್  
ಧನಾಧೀಶ್ವರರಾಜಧಾನ್ಯಾಮಾಕರ್ಷಿತಂ ಹೈಮವತೀಸಖೇನ" ಯಾದಂ  
೧೮-೨೪ |

ಆಕರ್ಷ ಅಕರ್ಷ (ಪುಂ) 1. ದ್ಯೂತ, ಜೂಜು. 2. ಪಗಡೆ  
ಕಾಯಿ. 3. ಪಗಡೆಯಾಟದ ಹಲಗೆ (ಹಾಸು).  
ಆಕೃಷ್ಯತೇ - ಆ+ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೧) |  
4. ಅಕರ್ಷಿಸುವಿಕೆ, ಎಳೆಯುವಿಕೆ. ಆ+ಕೃಷ ಭಾವೇ  
"ಘ್" (೩-೩-೧೮) | 5. ಒರೆಗಲ್ಲು. 6. ಸಾಣೆಕಲ್ಲು.  
ಆಕೃಷ್ಯತೇ - ಅಧಿಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧) | 7. ಕಣ  
ದಲ್ಲಿ ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಬೇರ್ಪಡಿಸಿ ಹುಲ್ಲು ಕಡ್ಡಿಗಳನ್ನು  
ಎಳೆಯಲು ಅಂಕುಶದಂತೆ ಮಾಡಿರುವ ಕೋಲು.  
ಆ+ಕೃಷ ಕರಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧) | 8. ಧನುರ್ವಿದ್ಯಾ  
ಭ್ಯಾಸಕ್ಕಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ವಸ್ತು. 9. ಅಯು-  
ಸ್ಯಾಂತ, ಸೂಜಿಗಲ್ಲು. 10. ಇಂದ್ರಿಯ. (ವಿಂ) 11.  
ಅಕರ್ಷಿಸುವ, ಎಳೆಯುವ. ಆ+ಕೃಷ ಕರಂ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |  
"ಆಕರ್ಷಂ ದೃತ ಇಂದ್ರಿಯೇ | ಪಾಶಕೇ ಸಾರಿಫಲಕೇ  
ಕೋದಂಡಾಮ್ಯಾಸವಸ್ತುನಿ | ಆಕರ್ಷಣೇಽಪಿ ಪುಂಸಿ ಸ್ಯಾತ್"  
ಮೇದಿಂ |

ಆಕರ್ಷಕ ಅಕರ್ಷಕ (ಪುಂ) 1. ಅಯುಸ್ಯಾಂತ, ಸೂಜಿಗಲ್ಲು.  
2. ಕಣದಲ್ಲಿ ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಬೇರ್ಪಡಿಸಿ ಹುಲ್ಲು ಕಡ್ಡಿ-  
ಗಳನ್ನು ಎಳೆಯಲು ಅಂಕುಶದಂತೆ ಮಾಡಿರುವ  
ಕೋಲು. ಆಕರ್ಷತಿ - ಆ+ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಫ್ಲು" (೩-೧-೧೩೩) | (ವಿಂ) 3. ಎಳೆಯುವವನು.

ಆಕರ್ಷಣ ಅಕರ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಎಳೆಯುವಿಕೆ, ಸೆಳೆಯು-  
ವಿಕೆ. ಆ+ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |  
2. ಮೋಹಗೊಳಿಸುವಿಕೆ, ನಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ.  
3. ನಶೀಕರಣಸಾಧನವಾದ ಒಂದು ಕಾರ್ಯ. ಆಕೃಷ್ಯತೇ-  
ನೇನ - ಆ+ಕೃಷ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |

ಆಕರ್ಷಣಿ ಅಕರ್ಷಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಂತ್ರೋಕ್ತವಾದ  
ಒಂದು ವಿಧ ಮುದ್ರೆ. 2. ಗಡದಿಂದ ಹಣ್ಣು ಹೂವು

ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಮಾಡಿರುವ  
ತುದಿಯಲ್ಲಿ ಬಗ್ಗಿರುವ ಕೋಲು, ದೋಟೆ, ಕೊಕ್ಕೆ  
ಕೋಲು. ಆಕೃಷ್ಯತೇಜಯಾ - ಆ+ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) ಕರಂ  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) |

ಆಕರ್ಷಿನ್ ಅಕರ್ಷಿನ್ (ವಿಂ) ಎಳೆಯುವವನು. ಆಕರ್ಷತಿ-  
ಆ+ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಞಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | ಆಕರ್ಷಿಣಿ ಅಕರ್ಷಿಣೀ.

ಆಕಲನ ಅಕಲನ (ನಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಆಸೆ. 2. ಅನು-  
ಸಂಧಾನ, ವಿಮರ್ಶೆ, ವಿಚಾರ. 3. ಗ್ರಹಣ, ತಿಳಿದು  
ಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. 4. ಲೆಕ್ಕ, ಎಣಿಕೆ. 5. ಹಿಡಿಯುವಿಕೆ,  
ಸ್ವಾಧೀನಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಬಂಧನ. "ಸೇವ್ಯೋಽಪಿ  
ಸಾನುನಯಮಾಕಲನಾಯ ಯತ್ರಾ" ಮಾಧಂ ೪-೪೨ |

ಆಕಲಿತ ಅಕಲಿತ (ವಿಂ) 1. ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.  
ಆ+ಕಲ (ಶಬ್ದಸಂಖ್ಯಾನಯೋಃ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |  
2. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟು. "ಸುವರ್ಣಸೂತ್ರಾಕಲಿತಾಧರಾಮ್ಬರಾಂ ವಿಡಂಬಯಂತಂ  
ಶಿತಿವಾಸಸಸ್ತನುಮ್" ಮಾಧಂ ೧-೬ | 3. ವಿಮರ್ಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

ಆಕಲ್ಪ ಅಕಲ್ಪ (ಪುಂ) 1. ವೇಷ, ಉಡುಪು ಮತ್ತು  
ತೊಡುಪು. 2. ಭೂಷಣ, ಒಡವೆ, ಅಲಂಕಾರ.  
ಆ+ಕಲ್ಪ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) + ಣಿಚ್ "ಘ್" (೩-೩-೧೮) |  
"ಅವಧಿ ದರ್ಶನೀಯಾನಾಮಾಕಲ್ಪಮನಘಂ ದಿವಃ" ಯಾದಂ ೧೬-೧೮ |  
(ಅವ್ಯಂ) 3. ಕಲ್ಪಕಾಲದವರೆಗೂ, ಕಲ್ಪಕಾಲಪರ್ಮಂತ.

ಆಕಾಷ ಅಕಾಷ (ಪುಂ) 1. ಸಾಣೆಕಲ್ಲು. 2. ಒರೆಗಲ್ಲು.  
ಆಕಾಪತಿ - ಆ+ಕಾಪ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |

ಆಕಾಸ್ಮಿಕ ಅಕಾಸ್ಮಿಕ (ವಿಂ) 1. ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ ಉಂಟಾದ,  
ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾದ. 2. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದ. ಅಕಸ್ಮಾತ್ ಭವಃ  
"ಠಕ್" (೪-೪-೩೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) |  
ಆಕಾಸ್ಮಿಕೀ ಅಕಾಸ್ಮಿಕೀ. "ಅತರ್ಕಿತಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರಲೇಶಾ-  
ಮಾಕಾಸ್ಮಿಕೀಮಾದ್ರಿಯತಾನುಕಮ್ಯಾಮ್" ಯಾದಂ ೨೦-೮೭ |

ಆಕಾಡ್ಕಾ ಅಕಾಂಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಸೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ.  
ಆ+ಕಾಕ್ಷಿ (ಕಾಡ್ಕಾಯಾಮ್) "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩) |  
2. ವಾಕ್ಯಾರ್ಥವು ಪೂರ್ತಿಯಾಗಲು ಬೇಕಾದ ಪದಗಳ  
ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಅವಶ್ಯವಾಗಿರಬೇಕಾದ ಪದಗಳ ಅಭಾವ  
ದಿಂದ ಅರ್ಥಪೂರ್ತಿಯಾಗದಿರುವಿಕೆ. "ಅಭಿಧಾನಾ-  
ಪರ್ಯವಸಾನಮಾಕಾಡ್ಕಾ" ಶಬ್ದಚಿಂ | "ಪದಸ್ಯ ಪದಾಂತರಾ-  
ಭಾವಪ್ರಯುಕ್ತಾನವಯಾನನುಭಾವಕತ್ವಮ್ ಆಕಾಡ್ಕಾ" ತಂ ಸಂ |  
"ಆಕಾಡ್ಕಾ ಪ್ರತೀತಿಪರ್ಯವಸಾನವಿರಹಃ" ಸಾಂ ದಂ ೨ |  
"ಗೌರವಃ ಪುರುಷೋ ಹಸ್ತೀ" ಇಲ್ಲಿನ ಪದಗಳಿಗೆ ಪದಾಂತ  
ರಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಅಕಾಂಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲ.



ಆಕಾಶಕೃಷಿತ ಅಕಾಂಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

ಆ+ಕಾಕ್ಷಿ (ಕಾಡ್ಕಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಆಕಾಶಕೃಷಿನ್ ಅಕಾಂಕ್ಷಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ,

ಅಸಿಯುಳ್ಳ. ಆ+ಕಾಕ್ಷಿ (ಕಾಡ್ಕಾಯಾಮ್) "ಗಿಣಿ:"

(೩-೧-೧೩೪)। "ಅಫಲಾಕಾಡ್ಕಿಭಿರ್ಯಜ್ಞೋ ವಿಧಿದೃಷ್ಟೋ ಯ

ಇತ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೧೭-೧೧. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪)।

ಆಕಾಶಕೃಷಿಣಿ ಅಕಾಂಕ್ಷಿಣೀ. "ತಂ ಭಾವಾರ್ಥಂ ಪ್ರಸವಸಮಯಾ-

ಕಾಡ್ಕಿಣಿಣಾಂ ಪ್ರಜಾಣಾಮ್" ರಘುಂ ೧೯-೪೭. 2. ಕೇಳುವ,

ಪ್ರಶ್ನಮಾಡುವ.

ಆಕಾರ ಅಕಾರ (ಪುಂ) 1. ರೂಪ, ಮೂರ್ತಿ. ಆ+ಕೃ ಕೃ

(ಕರಣೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ನೋಟ, ತೋರಿಕೆ,

ಮುಖಭಾವ, ಮುಖಚಹರೆ. "ಆಕಾರಸದೃಶಪ್ರಜ್ಞ: ಪ್ರಜ್ಞಯಾ

ಸಪ್ರಭಾಗಮ:" ರಘುಂ ೧-೧೪. 3. ಮನೋಭಾವವನ್ನು

ಸೂಚಿಸುವ ಮುಖರಾಗಾದಿಗಳು, ಹೊರಗಿನ ರೂಪ.

ಆ+ಕೃ ಕೃ ಕರಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ತಸ್ಯ

ಸಂಭೂತಮನ್ತ್ರಸ್ಯ ಗುಡಾಕಾರೇಜ್ಜಿತಸ್ಯ ಚ" ರಘುಂ ೧-೨೦. 4. ಸೂಚನೆ, ಸಂಜ್ಞೆ, ಸನ್ನೆ. 5. "ಆ" ಎಂಬ ಅಕ್ಷರ.

ಆಕಾರಗುಪ್ತಿ ಅಕಾರಗುಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮನೋಭಾವ

ವನ್ನು ಮುಚ್ಚುವುದು. 2. ಅನುರಾಗಾದಿಗಳಿಂದ

ಉಂಟಾದ ಜೇಷ್ಠ್ಯವನ್ನು ಮರೆಮಾಚುವುದು.

ಆಕಾರಸ್ಯ ಗುಪ್ತಿ:

ಆಕಾರಗೋಪನ ಅಕಾರಗೋಪನ (ನಂ) "ಆಕಾರಗುಪ್ತಿ"

ಪದದ ಅರ್ಥ.

ಆಕಾರಣ ಅಕಾರಣ (ನಂ) ಅಹ್ವಾನ, ಕರೆ. ಆ+ಕೃ ಕೃ

(ಕರಣೆ)+ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ತೇಶ್ಚ

ಖಣಿಮದ್ರಾಕಾರಣಾಯ ಕಶಿಚ್ಚಿತ್ ಪ್ರೇಷಿತ:" ಪञ್ಚತಂ. 1.

ಆಕಾರಣಾ ಅಕಾರಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಹ್ವಾನ, ಕರೆ. ಆ+

ಕೃ ಕೃ (ಕರಣೆ)+ಣಿಚ್ "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭)।

ಆಕಾರಿತ ಅಕಾರಿತ (ವಿಂ) ಕರೆಯಲ್ಪಟ್ಟು. ಆ+ಕೃ ಕೃ

(ಕರಣೆ)+ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಆಕಾಲಿಕ ಅಕಾಲಿಕ (ವಿಂ) 1. ಅಕಾಲದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ.

ಖಗಾಲೇ ಭವ: "ಠಕ್" (೪-೩-೬೦)। 2. ಅಲ್ಪಕಾಲದ,

ಕ್ಷಣಿಕವಾದ. ಸಮಾನಕಾಲಾವಾಹಂತಿ ಯಸ್ಯ ಆಕಾಲಿಕ:

ಸಮಾನಕಾಲ "ಇಕ್" ಆಕಾಲಾದೇಶಶ್ಚ ನಿಪಾಂ (೪-೧-೧೧೪)।

ಆಕಾಶವಿನಾಶೀತ್ಯರ್ಥ: ಆಕಾಲಿಕ: ಸ್ತನಯಿಲು: "ವಿದ್ಯು-

ಸ್ತನಿತವರ್ಷೇ ಮಹೋಲ್ಕಾನಾಂ ಚ ಸಂಪ್ಲವೇ. ಆಕಾಲಿಕಮನ-

ವ್ಯಾಯಮೇತೇ ಮನುರಬ್ರವೀತ್" ಮನುಂ ೪-೧೦೩. ಆಕಾಲ "ಠನ್"

(ವಾಂ ೪-೧-೧೧೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಠಾಪ್" (೪-೧-೪)।

ಆಕಾಲಿಕಾ। ಇಕ್ ಪ್ರತ್ಯಯೇ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೪)।

ಆಕಾಲಿಕಿ ಅಕಾಲಿಕೀ. ಮಿಂಚು ಮುಂತಾದುದು.

"ತಪಸ್ವಿನ: ಸ್ಥಾಪುನೋಕಸಸ್ತಾಮಾಕಾಲಿಕೀ ವೀಕ್ಷ್ಯ ಮಧು-

ಪ್ರವೃತ್ತಿಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೩೪।

ಆಕಾಶ ಅಕಾಶ (ಪುಂ) 1. ಗಗನ, ಅಂತರಿಕ್ಷ, ಪಂಚ

ಭೂತಗಳಲ್ಲೊಂದು, ನವದ್ರವ್ಯಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಆಸಮ-

ನ್ತಾತ್ ಕಾಶಂತೇ ಸೂರ್ಯದಯೋಽ - ಕಾಶ್ವ (ದೀಪ್ತೀ) "ಘ್"

(೩-೩-೧೨೧)। "ಆಕಾಶಂ ಕಾಶಪುಷ್ಪಂ ಚ ವಿಮಿಶಿತವತಾ

ಭಸ್ಮನಾ ಶುಕ್ಲಯಂತಿ" ಮುದ್ರಾಂ ೩-೨೦. [ಶಬ್ದವು ಅಕಾಶದ

ವಿಶೇಷ ಗುಣ. ಸಂಖ್ಯೆ, ಪರಿಮಾಣ, ಪೃಥಕ್ತ್ವ,

ಸಂಯೋಗ ಮತ್ತು ವಿಭಾಗಗಳು ಸಾಮಾನ್ಯ ಗುಣ

ಗಳು.] 2. ರಂಧ್ರ, ಛಿದ್ರ. 3. ಶೂನ್ಯ, ಸೊನ್ನೆ, ಪೂಜ್ಯ.

ಆಕಾಶಗ ಅಕಾಶಗ (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. (ವಿಂ) 2.

ಅಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. ಆಕಾಶೇ ಗಂಚತಿ - ಗಮ್

(ಗತೀ) "ಙ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)।

ಆಕಾಶಗಜ್ಞಾ ಅಕಾಶಗಂಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗಾನದಿ,

ದೇವನದಿ. "ಉಭೌ ಯದಿ ವ್ಯೋಮಿನಿ ಪೃಥಕ್ಪ್ರವಾಹಾವಾಕಾಶಗಜ್ಞಾ-

ಪಯಸ: ಪತೇತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೩-೮. 1.

ಆಕಾಶದೀಪ ಅಕಾಶದೀಪ (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕಮಾಸದಲ್ಲಿ

ಸಾಯಂಕಾಲ ಎತ್ತರವಾದ ಕಂಬದ ತುದಿಯಲ್ಲಿ

ಹಚ್ಚುವ ದೀಪ. 2. ಕಂಬದ ತುದಿಯಲ್ಲಿನ ದೀಪ.

ಆಕಾಶಭಾಷಿತ ಅಕಾಶಭಾಷಿತ (ನಂ) 1. ಅಕಾಶದಿಂದ

ಹೊರಡುವ ಮಾತು, ದೇವತೆಗಳು ಅದೃಶ್ಯರಾಗಿ

ಅಕಾಶದಲ್ಲಿ ಆಡುವ ಮಾತು. ಆಕಾಶೇ ಭಾಷಿತಮ್।

2. ಬೇರೊಂದು ಪಾತ್ರಪ್ರವೇಶವೇ ಇಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಅಕಾಶ

ದಲ್ಲಿ ಯಾರೋ ಮಾತನಾಡಿದಂತೆ ಭಾವಿಸಿ ಅದನ್ನು

ಅನುವಾದ ಮಾಡುತ್ತ ಉತ್ತರಕೊಟ್ಟು ಮಾತನಾಡು

ವುದು. "ಕಿಂ ಬ್ರವೀಷ್ಯೇವಮಿತ್ಯಾದಿ ವಿನಾ ಪಾತ್ರಂ ಬ್ರವೀತಿ ಯತ್।

ಶ್ರುತ್ವೇವಾನುಕ್ತಮಪ್ಯೇಕಸ್ತತ್ಸ್ಯಾದಾಕಾಶಭಾಷಿತಮ್" ಸಾಂ ೬೦. 1.

ಆಕಾಶಯಾನ ಅಕಾಶಯಾನ (ನಂ) ವಿಮಾನ. ಆಕಾಶೇ

ಯಾನ್ತೀನೇನ - ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪)।

ಆಕಾಶವಚನ ಅಕಾಶವಚನ (ನಂ) "ಆಕಾಶಭಾಷಿತ"

ಪದದ ಅರ್ಥ.

ಆಕಾಶವರ್ತಮನ್ ಅಕಾಶವರ್ತಮನ್ (ನಂ) 1. ಅಕಾಶ

ಮಾರ್ಗ, ವಿಮಾನ ಮೊದಲಾದುವು ಸಂಚರಿಸುವ

ಮಾರ್ಗ. (ವಿಂ) 2. ಅಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ.

ಆಕಾಶವಾಣಿ ಅಕಾಶವಾಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಶರೀರವಾಕ್ಯ,

ಅಕಾಶದಲ್ಲಿ ದೇವತೆಗಳು ಅದೃಶ್ಯರಾಗಿ ಆಡುವ ಮಾತು.



ಆಕಾಶಸ್ಪಟಿಕ ಅಕಾಶಸ್ಪಟಿಕ (ಪುಂ) ಅಲಿಕಲ್ಲು, ಅನಿಕಲ್ಲು.

ಆಕಿಚ್ಚನ ಅಕಿಚ್ಚನ (ನಂ) ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ದುರ್ಗತಿ, ಬಡತನ. ಅಕಿಚ್ಚನಸ್ಯ ಭಾವ: "ಆಖ್" (೪-೧-೧೨೪)।

ಆಕೀರ್ಣ ಅಕೀರ್ಣ (ವಿಂ) ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ, ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆಕೀರ್ಯಂತೆ - ಆ+ಕ್ (ವಿಕ್ಷೇಪ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

"ಆಕೀರ್ಣಮೃಷಿಪತ್ನಿನಾಮುಜದ್ವಾರರೋಧಿಭಿಃ" ರಘುಂ ೧-೪೦।

ಆಕುಚ್ಚನ ಅಕುಚ್ಚನ (ನಂ) ಸಂಕೋಚ, ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ, ಅಡಕಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಆ+ಕ್ರುಚ್ (ಕೌಟಿಲ್ಯಾಲ್ಪಿಭಾವಯೋಃ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೧-೧೧೪)। [ಇದು ನ್ಯಾಯಮತದಲ್ಲಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ ಐದು ಕರ್ಮಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಎವರಕ್ಕೆ "ಅವಕ್ಷೇಪಣ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಆಕುಚ್ಚಿತ ಅಕುಚ್ಚಿತ (ವಿಂ) 1. ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡಕಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ವಕ್ರವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ+ಕ್ರುಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ನತಾಂಸಮಾಕುಚ್ಚಿತಸವ್ಯಪಾದಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೭೦।

ಆಕುಟಲ ಅಕುಟಲ (ವಿಂ) ಸ್ವಲ್ಪ ವಕ್ರವಾದ, ಸ್ವಲ್ಪ ತಿರುಗಿಸಿರುವ. ಆ ಇಷತ್ ಕುಟಲಃ। "ತಂ ತಾವದಾಕುಟಲಪಶ್ಮವಿಲಗ್ನಮಥ" ಶಾಕುಂ ೭-೨೪।

ಆಕುಲ ಅಕುಲ (ವಿಂ) 1. ಹರಡಿರುವ, ಚೆದರಿರುವ, ಕೆದರಿರುವ. ಆ+ಕುಲ (ಸಂಸ್ಥಾನೇ ಬಂಧುಃ ಚ) "ಕ್ತ:" (೩-೧-೧೩೪)। "ವಿಲಮ್ಬಮಾನಾಕುಲಕೇಶಪಾಶಯಾ ಕಯಾಚಿದಾವಿಷ್ಕೃತವಾಹುಮೂಲಯಾ" ಕಿರಾಂ ೮-೧೮। 2. ಚಿಂತಾಕ್ರಾಂತವಾದ. "ಅಭಿವೇದ್ಯ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಸುರಾಸೀತ್ಕಾರ್ಯದಯಾಕುಲಃ" ಮಾಘಂ ೨-೧। 3. ಕ್ಲೇಶದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 4. ತುಂಬಿರುವ, ಪೂರ್ಣವಾದ. "ಪ್ರಚಲದ್ವಿಮಮಾಲಾಕುಲಮ್" ಭರ್ತಂ ೧-೩। 5. (ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ) ಮಗ್ನನಾದ, (ಕಾರ್ಯ) ತತ್ಪರನಾದ. "ವಿಭವಗುರುಭಿಃ ಕಲ್ಯಾಣಸ್ತಸ್ಯ ಪ್ರತಿಕ್ಷಣಮಾಕುಲಾ" ಶಾಕುಂ ೪-೨೮। (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 6. ದಿಗ್ಭ್ರಮೆಹೊಂದಿ, ತಬ್ಬಿಬ್ಬಾಗಿ, ಕಕ್ಕಾಬಿಕ್ಕಿಯಾಗಿ. "ಕಿಮೇತದಿತ್ಯಾಕುಲಮೀಕ್ಷಿತಂ ಜನೈಃ" ಮಾಘಂ ೧-೨।

ಆಕುಲಿತ ಅಕುಲಿತ (ವಿಂ) 1. ಕ್ಲೇಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಂದರೆಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಚೆದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಲ್ಲಾಸಿಲ್ಲಿಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ+ಕುಲ (ಸಂಸ್ಥಾನೇ ಬಂಧುಃ ಚ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಮಾರ್ಗಾಚಿಲವ್ಯತಿಕರಾ-ಕುಲಿತೇವ ಸಿಂಧುಃ ಶಿಲಾಧಿರಾಜತನಯಾ ನ ಯಯಿ ನ ತಸ್ಯೈ" ಕುಮಾಂ ೪-೮೪। 3. ಕೆದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಾರುಮಾರು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ಥಳಪಲ್ಲಟಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಮನೋಜ್ಞ

ಏವ ಪ್ರಮದಾಮುಖಾನಾಮಮೋವಿಹಾರಾಕುಲಿತೋಽಪಿ ವೇಶಃ" ರಘುಂ ೧೬-೬೭। 4. ದಿಗ್ಭ್ರಮೆಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಬ್ಬಿಬ್ಬಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಆಕುಲೀಕೃತ ಅಕುಲೀಕೃತ (ವಿಂ) 1. ತುಂಬಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ದಿಗ್ಭ್ರಮೆಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ತೊಂದರೆಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನೋಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನಾಕುಲಃ ಆಕುಲಃ ಕೃತಃ - ಆಕುಲ+ಚ್ವಿ+ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 4. ಚೆದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಆಕುಣಿತ ಅಕುಣಿತ (ವಿಂ) ಸ್ವಲ್ಪ ಬಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ವಲ್ಪ ಸಂಕೋಚಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ+ಕುಣ (ಸಂಕೋಚೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಮದನಶರಶಲ್ಯವೇದನಾಕುಣಿತವಿಭಾಗೇನ" ಕಾದಂ।

ಆಕೂತ ಅಕೂತ (ನಂ) ಅಭಿಪ್ರಾಯ, ಅಶಯ. ಆ+ಕ್ (ಶಬ್ದೇ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। "ಇತಿರೀತಾಕೂತಮನೀಲವಾಜಿನಂ ಜಯಾಯ ದೂತಃ ಪ್ರತೀತರ್ಯ ತೇಜಸಾ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೨೬। "ಛಂದೋಽಭಿಪ್ರಾಯ ಆಕೂತಂ ಮತಭಾವಾಶಯಾ ಅಪಿ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ಆಕೂತಿ ಅಕೂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಶಯ, ಅಭಿಪ್ರಾಯ. ಆ+ಕ್ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।

ಆಕೃತಿ ಅಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರೂಪ, ಮೂರ್ತಿ. ಆ+ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। "ಕಿಮಿವ ಹಿ ಮಧುರಾಣಾಂ ಮಂಥನಂ ನಾಕೃತೀನಾಮ್" ಶಾಕುಂ ೧-೧೭। "ಗೋವರ್ಧನಸ್ಯಾಕೃತಿರನ್ವಕಾರಿ" ಮಾಘಂ ೩-೪। 2. ದೇಹ, ಶರೀರ. 3. ಮಾದರಿ, ಲಕ್ಷಣ. 4. ಸುಂದರವಾದ ನೋಟ. "ನ ಹ್ಯಾಕೃತಿಃ ಸುಸದೃಶಂ ವಿಜಹಾತಿ ವೃತ್ತಮ್" ಮೃಚ್ಛಂ ೯-೧೬। 5. ಜಾತಿ, ಬಗೆ. 6. ಜಾತಿಯ ಅಭಿವ್ಯಂಜಕವಾದ ಅವಯವಗಳ ಜೋಡಣೆ.

ಆಕೃಷ್ಣ ಅಕೃಷ್ಣ (ವಿಂ) ಎಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಕರ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ+ಕ್ರುಷ (ವಿಲೇಖನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಆಕೃಷ್ಣಪ್ರತನುವಪುಲಂತೇಸ್ತರದ್ವಿಃ ತಸ್ಯಾಮ್ಬಸ್ತದಥ ಸರೋ ಮಹಾಣ್ವಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೮-೨೪।

ಆಕೃಷ್ಣಿ ಅಕೃಷ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎಳೆತ, ಅಕರ್ಷಣ. ಆ+ಕ್ರುಷ (ವಿಲೇಖನೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।

ಆಕೇಕರಾ ಅಕೇಕರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರ್ಧ ತೆರೆದು ಅರ್ಧ ಮುಚ್ಚಿದ ದೃಷ್ಟಿ, ಕಡೆಗಣ್ಣಿನ ಕಡೆ ಮುಚ್ಚಿಕೊಂಡು ಉಳಿದ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ತೆರೆದುಕೊಂಡು ಕಣ್ಣಿನ ಗುಡ್ಡೆಗಳನ್ನು ತಿರುಗಿಸುತ್ತ ನೋಡುವ ನೋಟ. "ಆಕುಚ್ಚಿತ-ಪುಟಾಪಾಙ್ಗಸಜ್ಜತಾರ್ಥನಿಮೇಷಿಣಿ। ಮುಹ್ಯಾವೃತ್ತತಾರಾ ಚ ದೃಷ್ಟಿ-



ರಾಕೇಕರಾ ಸ್ಮೃತಾ"। "ಆಕೇಕರಾಣಾಮನವಸ್ತದಾನೀಮೇಕ್ಷಣಂ  
ನವ್ಯಮಬ್ಧಹುನಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೩-೯। "ನಿವ್ರಾಣ್ಡೇದಾಭಿತಾಮ್ರಾ  
ಪಿರಮವತು ಹರೇದೃಷ್ಟಿರಾಕೇಕರಾ ವಃ" ಮುರಾಂ ೩-೨೧।

**ಆಕ್ರಂದ ಅಕ್ರಂದಂ** (ಪುಂ) 1. ಆಹ್ವಾನ, ಕರೆ. ಆ+ಕ್ರದಿ  
(ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೇ ಚ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಶಬ್ದ,  
ಧ್ವನಿ, ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಕೂಗು. "ಆಕ್ರಂದೇ ಚಾಪ್ಯಪೇಹೀತಿ  
ನ ದಣಂ ಮನುರಬ್ರವೀತ್" ಮನುಂ ೮-೨೯೨। 3. ಭಯಂಕರ  
ವಾದ ಯುದ್ಧ. 4. ಶಬ್ದವುಂಟಾಗುವಂತೆ ರೋದನ.  
"ತಾಸಾಮಾಕ್ರಂದಶಬ್ದೇನ ಸಹಸೋದ್ಭ್ರಾಂತಲೋಚನಃ" ರಾಮಾಂ।  
5. ಸ್ಫೋಟ, ವಿಘ್ರ, ಗೆಳೆಯ. 6. ಪಾಸ್ವಿಗ್ರಾಹಣಗಿ  
ಹಿಂಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ ರಾಜ. ಕರ್ಮಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೯)।  
[ಒಂದು ದಿಕ್ಕಿಗೆ ಗೆಲ್ಲಲು ಹೋಗಿರುವ ರಾಜನನ್ನು  
ಹಿಂಬಾಲಿಸಿ ಹೋಗುವ ಶತ್ರುವು ಪಾಸ್ವಿಗ್ರಾಹಣಂ.]  
"ಗಾಣಿಗ್ರಾಹಾಸ್ತತಃ ಪಶ್ಚಾದಾಕ್ರಂದಸ್ತದನಂತರಮ್। ಆಸಾರಾ-  
ವನಯೋಶ್ಚೇವ ವಿಜಿಗಿಷೋಸ್ತು ಪೃಥತಃ"। 7. ಸಹೋದರ.  
ಆ+ಕ್ರದಿ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಆಕ್ರಂದಃ ಕ್ರಂದನೇ  
ಹ್ವಾನೇ ಮಿತ್ರದಾರುಣಯುದ್ಧಯೋಃ। ಭ್ರಾತರೈವ ಚ ಪುಂಸಿ ಸ್ಯಾತ್"  
ಮೇಡಿಂ। 8. ಅಳುವ ಜಾಗ.

**ಆಕ್ರಂದನ ಅಕ್ರಂದನ** (ನಂ) 1. ಆಹ್ವಾನ, ಕರೆ. 2. ಶಬ್ದ  
ವುಂಟಾಗುವಂತೆ ರೋದನ. ಆ+ಕ್ರದಿ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೇ  
ಚ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। (ವಿಂ) 3. ಕರೆಯುವ.  
4. ಅಳುವ. ಆ+ಕ್ರದಿ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)।

**ಆಕ್ರಂದಿಕ ಅಕ್ರಂದಿಕ** (ವಿಂ) ಅಳುವ ಜಾಗಕ್ಕೆ ಓಡಿ  
ಹೋಗುವ. ಆಕ್ರಂದಂ ರೋದನಸ್ಥಾನಂ ಧಾವತಿ - "ಠ್" (೪-೪-೩೮)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। ಆಕ್ರಂದಿಕೀ  
ಅಕ್ರಂದಿಕೀ.

**ಆಕ್ರಂದಿನ್ ಅಕ್ರಂದಿನ್** (ವಿಂ) ರೋದನಪೂರ್ವಕ  
ಆಹ್ವಾನಮಾಡುವ, ಅಳುತ್ತ ಕರೆಯುವ. ಆಕ್ರಂದತಿ -  
ಆ+ಕ್ರದಿ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೇ ಚ) "ಣಿನ್" (೩-೧-೧೩೪)।  
"ಪರಸ್ಪರಾಕ್ರಂದಿನಿ ಚಕ್ರವಾಕಯೋಃ ಪುರೋ ವಿಯುಕ್ತೇ ಮಿಥುನೇ  
ಕೃಪಾವತೀ" ಕುಮಾಂ ೫-೨೬।

**ಆಕ್ರಮ ಅಕ್ರಮ** (ಪುಂ) 1. ಆಕ್ರಮಣ. 2. ಮುತ್ತುವಿಕೆ,  
ಮೇಲೆಬೀಳುವಿಕೆ. ಆ+ಕ್ರಮು (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)।  
3. ಪರಾಕ್ರಮ, ಶೌರ್ಯ. 4. ಶಕ್ತಿಯಿಂದ  
ಹೊಂದುವಿಕೆ, ಸ್ವಾಧೀನಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. 5. ವ್ಯಾಪ್ತಿ,  
ಹರಡುವಿಕೆ. 6. ಸೋಲಿಸುವಿಕೆ. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।  
-ಕ್ರಮಣಮ್ -ಕ್ರಮಣಂ. "ಹರೀರಾಕ್ರಮಣೇನ  
ಸಂನತಿ ಕಿಲ ಬಿಭ್ರೀತ ಭೀತೀಸಂಭವಃ" ಮಾಧಂ ೧೬-೩೪।

**ಆಕ್ರಮ್ಯಮಾಣ ಅಕ್ರಮ್ಯಮಾಣ** (ವಿಂ) ಮುತ್ತಲ್ಪಡುವ,  
ಮುತ್ತಿಗೆಹಾಕಲ್ಪಡುವ, ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಡುವ. ಆ+ಕ್ರಮು  
(ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಅಸಹ್ಯ-  
ವೇಗೇಸ್ಸಹಸಾ ಬಲೋಘೇರಾಕ್ರಮ್ಯಮಾಣಾ ಬಲಿನಾಂ ಯದ್ನಾಮ್" ಯಾದಂ  
೨೦-೧೭।

**ಆಕ್ರಾಂತ ಅಕ್ರಾಂತ** (ವಿಂ) 1. ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ.  
2. ಮುತ್ತಿಗೆಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ+ಕ್ರಮು (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ)  
"ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 3. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ನೋಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ನನಾಮ ಮಧ್ಯೋರ್ತಗುಹ್ವ-  
ಭಾಜಾ ನಿತಾಂತಮಾಕ್ರಾಂತ ಇವಾಙ್ಗನಾನಾಮ್" ಮಾಧಂ ೩-೧೫।  
4. ಅತಿಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಾರಲ್ಪಟ್ಟ. "ಆಕ್ರಾಂತಾ  
ತೀಲಕಕ್ರಿಯಾಪಿ ತೀಲಕೇಲಗ್ನದ್ವಿರೇಫಾಙ್ಗನಃ" ಮಾಲಂ ೩-೫।  
5. ವ್ಯಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ತಸ್ಯೇದಮಾಕ್ರಾಂತವಿಮಾನಮಾರ್ಗಮ್"  
ರಘುಂ ೧೩-೩೭। 6. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ. "ತಾಮ್ಹಮಾರೋಪ್ಯ  
ಕೃಶಾಙ್ಗಯಷ್ಟಿ ವರ್ಣಾಂತಿರಾಕ್ರಾಂತಪಯೋಧರಾಗ್ರಾಮ್" ರಘುಂ  
೧೪-೨೭।

**ಆಕ್ರಾಂತಿ ಅಕ್ರಾಂತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಕ್ರಮಣ, ಹಿಡಿಯುವಿಕೆ.  
ಆ+ಕ್ರಮು (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।  
"ಆಕ್ರಾಂತಿಸಂಭಾವಿತಪಾದಪೀಠಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೧೧। 2. ಮೇಲೆ  
ಬೀಳುವಿಕೆ, ಮುತ್ತಿಗೆಹಾಕುವಿಕೆ. 3. ತುಂಬುವುದು,  
ಆವರಿಸುವುದು. "ನಾಲಕ್ಷುರ್ವಂತಿ ರಥ್ಯಾಃ ಪೃಥುಜಘನ-  
ಭರಾಕ್ರಾಂತಿಮಂದೈಃ ಪ್ರಯಾತೈಃ" ಮುರಾಂ ೩-೧೦। 4. ಶೌರ್ಯ,  
ಪರಾಕ್ರಮ, ಬಲ. "ಆಕ್ರಾಂತಿತೋ ನ ವಶಮೇತಿ ಮಹಾನ್  
ಪರಸ್ಯ" ಮಾಧಂ ೫-೪೧।

**ಆಕ್ರೋಡ ಅಕ್ರೋಡ** (ಪುಂ) 1. ಕ್ರೋಡಾಸ್ಥಾನ, ಆಟವಾಡುವ  
ಜಾಗ, ಉದ್ಯಾನ ಮೊದಲಾದುದು. ಆಕ್ರೋಡಂತ್ಯತ್ರ -  
ಆ+ಕ್ರೋಡ್ (ವಿಹಾರೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ಆಕ್ರೋಡ-  
ಪರ್ವತಾಸ್ತೇನ ಕಲ್ಪಿತಾಸ್ತೇಷು ವೇಶಮಸು" ಕುಮಾಂ ೨-೪೩।  
(ವಿಂ) 2. ಆಟದ ಸ್ವಭಾವದ, ಆಟವಾಡುವ. ಆ+ಕ್ರೋಡ್  
ಕರ್ಮಂ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।

**ಆಕ್ರೋಡತ್ ಅಕ್ರೋಡತ್** (ವಿಂ) ಕ್ರೋಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಆಟ  
ವಾಡುತ್ತಿರುವ. ಆ+ಕ್ರೋಡ್ (ವಿಹಾರೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।

**ಆಕ್ರೋಡನ ಅಕ್ರೋಡನ** (ನಂ) ಕ್ರೋಡೆ, ಆಟ. ಆ+ಕ್ರೋಡ್  
(ವಿಹಾರೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ಆಕ್ರೋಡಿನ್ ಅಕ್ರೋಡಿನ್** (ವಿಂ) ಆಟವಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದ.  
ಆ+ಕ್ರೋಡ್ (ವಿಹಾರೇ) "ಘಿನ್" (೩-೨-೧೪೨)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಙೀಪ್" (೪-೧-೬)। ಆಕ್ರೋಡಿನಿ ಅಕ್ರೋಡಿನೀ.



ಆಕೃಷ್ಣ ಅಕ್ರೂಷ್ಯ (ನಂ) 1. ಕಠಿನವಾದ ಮಾತು, ಬೈಗಳು.  
 ಆ+ಕ್ರುಷ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೆ ಚ) "ಕ್ತ:" (3-3-114).  
 2. ಕೋಪಗೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಕರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ದೂಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
 ಆ+ಕ್ರುಷ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102).  
 "ಭೇರಿಭಿರಾಕೃಷ್ಣಮಹಾಗುಹಾಮುಖ:" ಮಾಘಂ 12-27.

ಆಕ್ರೋಶ ಅಕ್ರೋಶ (ಪುಂ) 1. ಕೂಗಾಟ, ಬೇರಾಟ, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 2. ಆಕ್ರೋಶಣೆ, ವಾಗ್ವಂದನೆ. 3. ಬೈಗಳು, ಶಾಪ. ಆ+ಕ್ರುಷ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೆ ಚ) "ಘ್" (3-3-114).

ಆಕ್ರೋಶಕ ಅಕ್ರೋಶಕ (ವಿಂ) 1. ಕೂಗಾಡುವವನು. 2. ನಿಂದಿಸುವವನು, ದೂಷಿಸುವವನು. 3. ಬೈಯುವವನು. ಆ+ಕ್ರುಷ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೆ ಚ) "ಘ್" (3-1-133).

ಆಕ್ರೋಶನ ಅಕ್ರೋಶನ (ನಂ) 1. ಶಾಪ, ಬೈಗಳು. 2. ಕೂಗಾಟ. ಆ+ಕ್ರುಷ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೆ ಚ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

ಆಕ್ರೋಷ ಅಕ್ರೋಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಬೈಯುವವನು. 2. ನಿಂದಿಸುವವನು, ದೂಷಿಸುವವನು. 3. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗಾಡುವವನು. ಆ+ಕ್ರುಷ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೆ ಚ) "ತೃಕ್" (3-1-133).

ಆಕ್ರೋದ ಅಕ್ರೋದ (ಪುಂ) ನೆನಸುವುದು, ಒದ್ದೆಮಾಡುವುದು, ತೇವಮಾಡುವುದು. ಆ+ಕ್ರುಷ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೆ ಚ) "ಘ್" (3-3-114).

ಆಕ್ಷಯತಿಕ ಅಕ್ಷಯತಿಕ (ವಿಂ) ಪಗಡೆಯಾಟದಿಂದ ಉಂಟಾದ (ವೈರ ಮುಂತಾದುದು). ಅಕ್ಷಯತೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (4-4-19).

ಆಕ್ಷಪಾಟಿಕ ಅಕ್ಷಪಾಟಿಕ (ಪುಂ) 1. ಜೂಜಾಟದ ಅಧ್ಯಕ್ಷ, ಆಟದ ತೀರ್ಪುಗಾರ. 2. ನ್ಯಾಯಾಧೀಶ, ತೀರ್ಪುಗಾರ. ಅಕ್ಷಪಾಟೇ ನಿಯುಕ್ತ: "ಠಕ್" (4-4-19).

ಆಕ್ಷರ ಅಕ್ಷರ (ಪುಂ) ವೈಭಿಚಾರದ ದೋಷಾರೋಪಣೆ, — ಅಪವಾದ. ಆ+ಕ್ಷರ (ಸञ्ಚಲನೆ) + ಣಿಕ್ "ಘ್" (3-3-114).

ಆಕ್ಷರಣ ಅಕ್ಷರಣ (ನಂ) ವೈಭಿಚಾರದ ದೋಷಾರೋಪಣೆ, — ಅಪವಾದ. ಆ+ಕ್ಷರ (ಸञ್ಚಲನೆ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಣಾ-ಣಾ. ಆ+ಕ್ಷರ+ಣಿಕ್ "ಯುಕ್" (3-3-109).

ಆಕ್ಷಾರಿತ ಅಕ್ಷಾರಿತ (ವಿಂ) ವೈಭಿಚಾರದೋಷದಿಂದ ದೂರಲ್ಪಟ್ಟವನು. ಆಕ್ಷಾರ್ಯತೇ—ಆ+ಕ್ಷರ (ಸञ್ಚಲನೆ) +

ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಆಕ್ಷಾರಿತ: ಖಾರಿತೋ-ಭಿಷಸ್ತೇ" ಅಮಂ.

ಆಕ್ಷಿಕ ಅಕ್ಷಿಕ (ವಿಂ) 1. ಪಗಡೆಯಾಟವಾಡುವವನು. ಅಕ್ಷೇಣ ದೀವ್ಯತಿ — ಅಕ್ಷ "ಠಕ್" (4-4-2). 2. ಪಗಡೆಯಾಟದಿಂದ ಜಯಿಸುವವನು. ಅಕ್ಷೇಣ ಜಯತಿ "ಠಕ್" (4-4-2). 3. ಪಗಡೆಯಾಟದಿಂದ ಜಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಕ್ಷೇಣ ಜಿತಮ್ "ಠಕ್" (4-4-2).

ಆಕ್ಷಿಪ್ತ ಅಕ್ಷಿಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಆಕ್ಷೇಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ+ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). 2. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಸಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ+ಕ್ಷಿಪ (ನಿರಸನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). 3. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಆಕ್ಷಿಪ್ತಸಂಪಾತ-ಮಪೇತಶೋಭಮ್" ಕಿರಾಂ 16-41. 4. ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಆಕ್ಷಿಪ್ತಾ ಅಪಿ ದಂತಿನ್ದ್ರ: ಕೋಪನೇ: ಪತಯ: ಪರಮ್" ಕುಮಾಂ 16-33. 5. ಅಪಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಆಕ್ಷಿಪ್ತ-ಚಾಪಾವರಣೇಷು ಜಾಲಕಿಂತ್ರೋತ್ತಮಾಸಿ: ಸ ಮಧೇಷ್ವಧುತ:" ಕಿರಾಂ 17-49. 6. ಗಾಬರಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 7. ಅರ್ಥಾಪತ್ತಿ ಪ್ರಮಾಣದಿಂದ ಸಿದ್ಧವಾದ. "ಘನೋ ದೇವದತ್ತೋ ದಿವಾ ನ ಭುಕ್ತೇ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ದೇವದತ್ತನ ಪೀನತ್ವವು ರಾತ್ರಿ ಭೋಜನವಿಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ಕೂಡುವುದಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ರಾತ್ರಿ ಭೋಜನವು ಅಕ್ಷಿಪ್ತವಾಗುವುದು. 8. ದೂಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಆಕ್ಷೇಪ ಅಕ್ಷೇಪ (ಪುಂ) 1. ಹೆದರಿಸುವಿಕೆ. 2. ಎಸೆಯುವುದು, ಬಿಸಾಡುವುದು. 3. ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಆ+ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಘ್" (3-3-114). "ವದನಮಪಹರಂತಿ ತತ್ಕೃತಾಕ್ಷೇಪ-ಮಿಶ:" ಕುಮಾಂ 17-94. 4. ತಿರಸ್ಕಾರ. "ವಿರುದ್ಧಮಾಕ್ಷೇಪ-ವಚಸ್ತಿತಿಕ್ಷಿತಮ್" ಕಿರಾಂ 18-24. 5. ಅಪವಾದ. 6. ನಿಕ್ಷೇಪ, ಕೂಡುಹಣ, ನಿಧಿ. 7. ಇಡುವಿಕೆ, ಹಚ್ಚುವಿಕೆ. "ಗೋರೋಚನಾಕ್ಷೇಪನಿತಾಂತಗೌರೇ" ಕುಮಾಂ 17-17. 8. ಅನುಮಾನ. "ಗಾಮಾನಯ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಗೋತ್ವ ಕರ್ಮಕಾನಯನವು ಗೋಕರ್ಮಕ ಅನಯನವಿಲ್ಲದೆ ಆಗುವುದಿಲ್ಲವೆಂದು ಅನುಪಪತ್ತಿಜ್ಞಾನದಿಂದ ಗೋತ್ವಕ್ಕೆ ಆಶ್ರಯವಾದ ವೈಕ್ರಿಯ ಜ್ಞಾನವು ಅನುಮಾನಲಬ್ಧವಾದುದು. 9. ಅರ್ಥಾಪತ್ತಿ ಪ್ರಮಾಣದಿಂದ ಕಲ್ಪಿಸುವಿಕೆ. 10. ಒಂದು ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರ; ವಿಮರ್ಶೆ ಮಾಡಿದ ನಂತರ ತಾನು ಹೇಳಿದ ಮಾತನ್ನು ನಿಷೇಧಿಸುವುದು ಅಕ್ಷೇಪಾಲಂಕಾರ. "ಆಕ್ಷೇಪ: ಸ್ವಯಮುಕ್ತಸ್ಯ ಪ್ರತಿಷೇಧೋ ವಿಚಾರಣಾತ್. ಚಂದ್ರ! ಸಂದರ್ಶಯಾತ್ಮಾನಮಥವಾಸ್ತಿ ಪ್ರಿಯಾಮುಖಮ್" ಚಂದ್ರಾಂ.



**ಪಾಲಕ ಅಕ್ಷೇಪಕ (ಪುಂ)** 1. ವ್ಯಾಧ, ಬೇಡರವನು. 2. ಒಂದು ವಾತರೋಗ. 3. ಒಂದು ಅರ್ಧಸಿದ್ಧಿಯ ಉಪಪಾದಕವಾಗಿ ಹೇಳುವ ಹೇತು. "ಪಿನೋ ದೇವದತ್ತೋ ವಿವಾ ನ ಮುಕ್ತೇ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪೀನತ್ವವು ರಾತ್ರಿ ಭೋಜನ ರೂಪವಾದ ಅರ್ಧಸಿದ್ಧಿಯ ಉಪಪಾದಕವಾಗಿ (ಹೇತುವಾಗಿ) ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. (ವಿಂ) 4. ನಿಂದಿಸುವವನು, ದೂಷಿಸುವವನು. 5. ಎಸೆಯುವವನು. 6. ಎಳೆಯುವವನು, ಆಕರ್ಷಿಸುವವನು. "ಆಕ್ಷೇಪಕೋನಿಲವ್ಯಾಧೌ ವ್ಯಾಧೇ ನಿಂದಾಕರೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ.

**ಪಾಲಕ ಅಕ್ಷೇಪಣ (ನಂ)** "ಆಕ್ಷೇಪ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಪಾ+ಕ್ಷಿಪ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

**ಪಾಲಕ ಅಕ್ಷೇಪಿನ್ (ವಿಂ)** "ಆಕ್ಷೇಪಕ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಪಾ+ಕ್ಷಿಪ "ಣಿನಿ:" (ಪ್ರೇರಣೆ) (3-2-68).

**ಪಾಲ ಅಖ (ಪುಂ)** ಸನಿಕೆ, ಗುದ್ದಲಿ. ಆಖನತ್ಯನೇನ — ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಙ:" (ವಾಂ 3-3-124).

**ಪಾಲಕ ಅಖಿಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸಣ್ಣ ಗುದ್ದಲಿ, ಕೈಗುದ್ದಲಿ. ಪಾಲ ಅಲ್ಪಾರ್ಥ "ಕನ್"। ಗೌರಾಂ "ಙೀಪ್" (4-1-41).

**ಪಾಲಕ ಅಖಂಡಲ (ಪುಂ)** ಇಂದ್ರ, ದೇವತೆಗಳ ಒಡೆಯ. ಪಾಲಕಂಡಯತಿ ಪರ್ವತಾನ್ — ಖಡಿ (ಭೇದನೆ) "ಕಲಕ್" (3-1-106). "ಅಖಂಡಮಾಖಂಡಲತುಲ್ಯಧಾಮಭಿ:" ಕಿರಾಂ 1-291.

**ಪಾಲನ ಅಖನ (ಪುಂ)** ಸನಿಕೆ, ಗುದ್ದಲಿ. ಆಖನತ್ಯನೇನ — ಪಾ+ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಘ:" (3-3-124). ಧವಿ ಪಾಲನ: ಅಖನಃ.

**ಪಾಲನಿಕ ಅಖನಿಕ (ಪುಂ)** 1. ಜೋರ, ಕಳ್ಳ. 2. ಸನಿಕೆ, ಗುದ್ದಲಿ. ಆಖನತ್ಯನೇನ — ಪಾ+ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಙಕ:" (ವಾಂ 3-3-124). 3. ವರಾಹ, ಹಂದಿ. 4. ಮೂಷಿಕ, ಇಲಿ. ಪಾ+ಖನು "ಙಕನ್" (3-2-46). (ವಿಂ) 5. ಅಗೆಯುವವನು. "ಭವೇದಾಖನಿಕಶ್ಚೋರೈ ಸೂಕರೈ ಮುಷಿಕೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ.

**ಪಾಲನಿಕವಕ ಅಖನಿಕವಕ (ಪುಂ)** 1. ಸನಿಕೆ, ಗುದ್ದಲಿ. ಪಾ+ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಙಕವಕ" (ವಾಂ 3-3-124). 2. ಜೋರ, ಕಳ್ಳ. 3. ಮೂಷಿಕ, ಇಲಿ. 4. ವರಾಹ, ಹಂದಿ. (ವಿಂ) 5. ಅಗೆಯುವವನು.

**ಪಾಲರ ಅಖರ (ಪುಂ)** ಸನಿಕೆ, ಗುದ್ದಲಿ. ಆಖನತ್ಯನೇನ — ಪಾ+ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಙರ:" (ವಾಂ 3-3-124).

**ಪಾಲನ ಅಖಾನ (ಪುಂ)** 1. ಸನಿಕೆ, ಗುದ್ದಲಿ. ಆಖನತ್ಯನೇನ — ಪಾ+ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಘಕ್" (3-3-124). 2. ಸುತ್ತಲೂ ಅಗೆಯುವಿಕೆ. ಪಾ+ಖನು ಭಾವೇ "ಘಕ್"।

**ಪಾಲ ಅಖು (ಪುಂ)** 1. ಮೂಷಿಕ, ಇಲಿ. ಪಾಲನತಿ — ಪಾ+ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಙು:" (3-1-33). "ಮಹ್ಯಾ-ಶಯಾಹಿಮಂಜುಷಾಂ ದೃಷ್ಟಾಸ್ತೇನ ಭಕ್ಷಿತ:" ಚಂದ್ರಾಂ. "ಅತುಂ ವಾಂಞತಿ ಶಾಂಭವೋ ಗಣಪತೇರಾಸ್ತು ಖುಧಾರ್ತ: ಫಣಿ" ಪಂಚತಂ. 2. ಜೋರ, ಕಳ್ಳ. 3. ವರಾಹ, ಹಂದಿ. 4. ಸನಿಕೆ, ಗುದ್ದಲಿ. 5. ಕೃಪಣ, ಜಿಪುಣ. "ವಿಭವೇ ಸತಿ ನೇವಾತಿ ನ ದದಾತಿ ಜುಹೋತಿ ನ। ತಮಾಹುರಾಸ್ತುಮ್"। "ಆಖನಿಕಸ್ತ್ವಾಖುರಿವ ಕಿರಾವುನ್ದುರ್ದುರಯೋ:" ಹೇಮಂ. 6. ದೇವತಾಳೆ ಮರ.

**ಪಾಲಕ ಅಖುಕರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಇಲಿಕೆವಿ ಗಡ. ಪಾಲಕ: ಮುಷಿಕಸ್ಯ ಕರ್ಣ ಇವ ಪರ್ಣಮಸ್ಯಾ:। "ಙೀಪ್" (4-1-44).

**ಪಾಲಕ ಅಖುಗ (ಪುಂ)** ಗಣಪತಿ, ವಿನಾಯಕ. ಪಾಲಕುನಾ ಗಂಞತಿ — ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಙ:" (ವಾಂ 3-2-48).

**ಪಾಲಕ ಅಖುಘಾತ (ಪುಂ)** ಇಲಿಯನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವ ಕುದುರೆ.

**ಪಾಲಕ ಅಖುಪರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಇಲಿಕೆವಿ ಗಡ.

**ಪಾಲಕ ಅಖುಪಾಷಾಣ (ಪುಂ)** ಲೋಹಕಾಂಡ, ಸೂಜಿಗಲ್ಲು, ಲೋಹಗಳನ್ನು ಆಕರ್ಷಿಸುವ ಕಬ್ಬಿಣದ ಅದುರು.

**ಪಾಲಕ ಅಖುಭುಜ (ಪುಂ)** ಮಾರ್ಜಾರ, ಬೆಕ್ಕು. ಪಾಲಕು ಭುಜ್ಕೇ — ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ:) "ಕ್ವಿಪ್" (3-2-108).

**ಪಾಲಕ ಅಖುವಿಷಹಾ (ಪುಂ)** ದೇವತಾಳೆ ಮರ.

**ಪಾಲಕ ಅಖೇಟ (ಪುಂ)** ಬೇಟೆ. ಪಾಲಕೇಟೇತ್ರ — ಪಾ+ಖೇಟ (ಪ್ರಾಪ್ತೇ) "ಘಕ್" (3-3-124). ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"। ಪಾಲಕೇಟಕ: ಅಖೇಟಕಃ. 1. ಬೇಟೆಗಾರ. 2. ಬೇಟೆ.

**ಪಾಲಕ ಅಖ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಹೇಳುವಿಕೆ. 2. ನಾಮ ಧೇಯ. ಪಾಲಕೇಯೇನ ಪಾ+ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೇ) "ಅಙ್" (3-3-106). "ಉಮೇತಿ ಮಾತ್ರಾ ತಪಸೋ ನಿಷಿದ್ಧಾ ಪಶ್ಚಾ-ದ್ವುಮಾಖ್ಯಾಂ ಸುಮುಖೀ ಜಗಾಮ" ಕುಮಾಂ 1-261.

**ಪಾಲಕ ಅಖ್ಯಾತ (ನಂ)** 1. ಧಾತುವಿನ ಮುಂದೆ ವಿಧಿ ಸಲ್ಪಡುವ "ತಿಙ್" ಪ್ರತ್ಯಯ. (ವಿಂ) 2. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಪಾ+ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಆಶ್ವಾಸ್ಯ ರಾಮಾವರಜ: ಸತೀ ತಾಮಾಖ್ಯಾತವಾಲ್ಮೀಕಿನಿಕೇತಮಾರ್ಗ:" ರಘುಂ 14-48. 3. ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ.

**ಪಾಲಕ ಅಖ್ಯಾತವ್ಯ (ವಿಂ)** ಹೇಳಲ್ಪಡುವ, ಹೇಳ ಬೇಕಾದ. ಪಾ+ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೇ) "ತವ್ಯ:" (3-1-96). "ಪಾಲಕೇತವ್ಯಂ ತು ತತ್ತಸ್ಮೈ ಪೃಚ್ಛತೇ ಯದಿ ಪೃಚ್ಛತಿ" ಮನುಂ 11-17.



ಆಖ್ಯಾತಿ ಅಖ್ಯಾತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೇಳುವುದು. ಆ+ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) 2. ಪ್ರಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವುದು. 3. ಯಶಸ್ಸು, ಕೀರ್ತಿ. 4. ಹೆಸರು.

ಆಖ್ಯಾತ್ ಅಖ್ಯಾತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹೇಳುವವನು. 2. ಉಪದೇಶಕ, ಉಪಾಧ್ಯಾಯ. ಆ+ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩) 1. "ಆಖ್ಯಾತೋಪಯೋಗ" ಪಾಂ ಸೂಂ (೧-೪-೨೯) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) 1. ಆಖ್ಯಾತ್ರಿ ಅಖ್ಯಾತ್ರಿಃ.

ಆಖ್ಯಾನ ಅಖ್ಯಾನ (ನಂ) 1. ಹೇಳುವುದು. ಆ+ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) 1. ಪೂರ್ವಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳುವುದು. "ಆಖ್ಯಾನಂ ಪೂರ್ವಕತೋಕ್ತಿಃ" ಸಾಂ ದಂ 1. 3. ಕಲ್ಪಿತ ಕಥೆ.

ಆಖ್ಯಾನಕ ಅಖ್ಯಾನಕ (ನಂ) ಕಥೆ, ಕಲ್ಪಿತವಾದ ಸಣ್ಣ ಕಥೆ, ಉಪಕಥೆ. "ಕದಾಚಿದಾಖ್ಯಾನಕಾಖ್ಯಾಯಿಕೇತಿಹಾಸ-ಪುರಾಣಾಕರ್ಣನೇನ" ಕಾದಂ 1.

ಆಖ್ಯಾಯಕ ಅಖ್ಯಾಯಕ (ಪುಂ) 1. ದೂತ, ಸಂದೇಶವನ್ನು ತಿಳಿಸುವವನು. ಆ+ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) "ಪ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) 1. "ಆಖ್ಯಾಯಿಕೇಮ್ಯಃ ಶ್ರುತಸುನುವೃತ್ತಿಃ" ಭट्टಿಂ ೨-೪೪. (ವಿಂ) 2. ಹೇಳುವ, ತಿಳಿಸುವ.

ಆಖ್ಯಾಯಿಕಾ ಅಖ್ಯಾಯಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಥಾರ್ಥವಾದ ಕಥೆ, ನಿಜವಾಗಿ ನಡೆದ ಕಥೆ, ಹರ್ಷಚರಿತ ಮುಂತಾದ ಗದ್ಯಕಾವ್ಯ. ಆ+ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) "ಪ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) 1. [ಗದ್ಯಕಾವ್ಯವು ಕಥಾ ಮತ್ತು ಆಖ್ಯಾಯಿಕಾ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಕಾದಂಬರಿಯು ಕಥೆ. ಹರ್ಷಚರಿತವು ಅಖ್ಯಾಯಿಕೆ.] "ಅಪಾದಃ ಪದಸಂತಾನೋ ಗದ್ಯಮಾಖ್ಯಾಯಿಕಾ ಕಥಾ 1. ಇತಿ ತಸ್ಯ ಪ್ರಭೇದೋ ದ್ವಿ" ಕಾವ್ಯಾಂ ೧-೨೩ 1.

ಆಖ್ಯಾಯಿನ್ ಅಖ್ಯಾಯಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಹೇಳುವವನು, ತಿಳಿಸುವವನು. ಆ+ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) "ಗ್ನಿನ್" (೩-೨-೭೮) 1. "ರಹಸ್ಯಾಖ್ಯಾಯಿವ ಸ್ವನತಿ ಮೃದು ಕರ್ಣಾಂತಿಕ-ಚರಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೨೦ 1.

ಆಖ್ಯೇಯ ಅಖ್ಯೇಯ (ವಿಂ) ಹೇಳಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ತಿಳಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಆಖ್ಯಾತುಂ ಯೋಗ್ಯಮ್—ಆ+ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) "ಯತ್" (೩-೧-೯೧) 1. "ಶಬ್ದಾಖ್ಯೇಯಂ ಯದಪಿ ಕಿಲ ತೇ ಯಃ ಸಖಿನಾಂ ಪುರಸ್ತಾತ್" ಮೇಘಂ ೨-೪೦ 1.

ಆಗತ ಅಗತ (ನಂ) 1. ಆಗಮನ, ಬರುವಿಕೆ. ಆ+ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) 1. 2. ಸಂಭವ, ಸಂಭವಿಸಿ, ಆಗು. (ವಿಂ) 3. ಬಂದಿರುವ. "ಆಗತಾನಗಣಿತ-ಪ್ರತಿಯಾತಾನ್" ಮಾಘಂ ೧೦-೨೦ 1. 4. ಸಂಭವಿಸಿರುವ. "ಆಗತೇಯಮಸಮೀಕ್ಷಕಾರಿತಾ" ಯಾದಂ ೧೭-೧೧೧ 1. 5. ಸಂವಾದಿಸಿದ, ಗಳಿಸಿದ. ಆ+ಗಮ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) 1.

ಆಗತವತ್ ಅಗತವತ್ (ವಿಂ) ಬಂದಿರುವ, ಆಗಮಿಸಿರುವ. ಆ+ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨) 1.

ಆಗತಿ ಅಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಗಮನ, ಬರುವಿಕೆ. ಆ+ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) 1. "ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ-ಪ್ರಿಯತಮಾಗತಯಃ" ಮಾಘಂ ೯-೪೩ 1. 2. ಹೊಂದುವಿಕೆ, ಪಡೆಯುವಿಕೆ.

ಆಗಂತವ್ಯ ಅಗಂತವ್ಯ (ವಿಂ) ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಬರಬೇಕಾಗಿರುವ. ಆ+ಗಮ್ (ಗತೌ) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬) 1.

ಆಗಂತು ಅಗಂತು (ಪುಂ) 1. ಅತಿಥಿ, ಮನೆಗೆ ಹೊಸದಾಗಿ ಬಂದು ಇಳಿದುಕೊಂಡಿರುವವನು. ಆಗच्छति—ಆ+ಗಮ್ (ಗತೌ) "ತುನ್" (೩-೧-೬೯) 1. "ಮೇನೇ ಯಥಾ ತತ್ರ ಜನಃ ಸಮೇತೋ ವೇದರ್ಮಮಾಗಂತುಮಜಂ ಗೃಹೇಶಮ್" ರಘುಂ ೫-೬೨ 1. (ವಿಂ) 2. ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ ಮನೆಗೆ ಬಂದಿರುವ, ಅಪರಿಚಿತನಾದ. "ಆಗಂತುನಾ ಸಹ ಮೇತ್ರೀ ನ ಕಾರ್ಯಾ" ಹಿತಂ 1. ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಕನ್" ಆಗಂತುಕಃ ಅಗಂತುಕಃ. "ತವಯಾ ಚ ಮೂಲಭೂತಾನಪಾಸ್ಯಾಯಮಾಗಂತುಕಃ ಪುರಸ್ಕೃತಃ" ಹಿತಂ 1.

ಆಗಂತುಜ ಅಗಂತುಜ (ವಿಂ) ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ ಉಂಟಾದ ದೋಷ ಮೊದಲಾದುದು. ಆಗಂತುಃ ಅಕಸ್ಮಾದುಪಸ್ಥಿತಾತ್ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಜಃ" (೩-೨-೯೮) 1. "ಆಗಂತುಜೇ ಭಿಷಗ್ರೋಗೇ ಶಸ್ತ್ರೇಣೋಕ್ತವ್ಯ ಯತಃ" ಸುಶ್ರುತಂ 1.

ಆಗಮ ಅಗಮ (ಪುಂ) 1. ಬರುವಿಕೆ, ಸೇರುವಿಕೆ, ತಲುಪುವಿಕೆ, ಆಗಮನ. ಆ+ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೮) 1. "ತನೋತಿ ನಸ್ತಾಮುದಿತಾತ್ಮಗೌರವೋ ಗುರುಸ್ತವೇವಾಗಮ ಏಷ ಧೃಷ್ಟ-ತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೩೦ 1. 2. ಶಾಸ್ತ್ರ. "ಆಗಮಾದಿವ ತಮೋಽಪಹಾದಿತಃ ಸಂಭವಂತಿ ಮತಯೋ ಭವಚ್ಛಿದಃ" ಕಿರಾಂ ೫-೨೨ 1. 3. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಜನನ. "ಆಗಮಾಪಾಯಿನೋಽನಿತ್ಯಾ-ಸ್ತಾಸ್ತಿತಿಕಿಷ್ಕಸ್ವ ಭಾರತ" ಗೀತಾ ೨-೧೪ 1. 4. ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಲಾಭ, ಸಂಪಾದನೆ. "ಏಷೋಽಸ್ಯಾ ಮುಧ್ರಾಯಾ ಆಗಮಃ" ಮುಧ್ರಾಂ ೧ 1. 5. ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನ, ಶಾಸ್ತ್ರಪರಿಚಯ, ಶಾಸ್ತ್ರಪರಿಶ್ರಮ. "ಆಕಾರಸದೃಶಪ್ರಜ್ಞಃ ಪ್ರಜ್ಞಯಾ ಸದೃಶಾಗಮಃ 1. ಆಗಮಃ ಸದೃಶಾರಮ್ಭಃ" ರಘುಂ ೧-೧೫ 1. 6. ನ್ಯಾಯ ಸಮ್ಮತವಾದ ಸಂಪಾದನೆ. "ಆಗಮೋಽನ್ಯಧಿಕೋ ಭೋಗಾ-ದ್ವಿನಾ ಪೂರ್ವಕ್ರಮಾಗತಾತ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೨೭ 1. 7. ದಾರ್ಶನಿಕರು ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುವ ಶಬ್ದಪ್ರಮಾಣ. 8. ವೇದ. "ಬಹುಧಾಪ್ಯಾಗಮೈರಿತಾಃ ಪನ್ಥಾನಃ ಸಿದ್ಧಿಹೇತವಃ" ರಘುಂ ೧೦-೨೬ 1. 9. (ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಒಂದು ವರ್ಣದ ಜೊತೆಗೆ ವಿಧಿಸಲ್ಪಡುವ ಮತ್ತೊಂದು ವರ್ಣ. ಇದು (1) ಕೇವಲ, (2) ಕಿತ್, (3) ಟಿತ್ ಮತ್ತು (4) ಮಿತ್ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. (1) ಇತ್ ಸಂಜೆ,







ಸಿದ್ಧಾಂತಗಳೆಂಬ ನಾಲ್ಕು ಭೇದಗಳಿವೆ. ಪಾಂಚರಾತ್ರಾ ಗಮವು ಜ್ಞಾನ, ಯೋಗ, ಕ್ರಿಯಾ ಮತ್ತು ಚರ್ಯಾ ಪಾದಗಳೆಂಬ ನಾಲ್ಕು ಪಾದಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದೆ.

ಶ್ರೀಮದಾನಂದತೀರ್ಥಾಚಾರ್ಯರು ಪಾದ್ಯಸಂಹಿತೆ ಯನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಮಾಧ್ವಸಂಪ್ರದಾಯದ ದೇವ ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಪೂಜೆಗೆ ಅನುಕೂಲಿಸುವಂತೆ ಅಳವಡಿಸಿರುವ ಪಾಂಚರಾತ್ರಾಗಮಭಾಗವು “ತಂತ್ರ ಸಾರಾಗಮ” ವೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ.

2. ವೈಖಾನಸಾಗಮ: ವೈಖಾನಸಾಗಮವು ಲೋಕೋದ್ಧಾರಕ್ಕಾಗಿ ಪರಮಾತ್ಮನ ಅಂಶದಿಂದ ಅವತರಿಸಿದ ಶ್ರೀ ವಿಖನಸಮಹರ್ಷಿಗಳಿಂದ ಭೃಗು, ಅತ್ರಿ, ಮರೀಚಿ ಮತ್ತು ಕಶ್ಯಪರಿಗೆ ಸಂಹಿತಾರೂಪದಲ್ಲಿ ಉಪದಿಷ್ಟವಾದುದು. ಇದು ಸಂಹಿತೆ, ಅಧಿಕರಣ, ತಂತ್ರ ಮತ್ತು ಕಾಂಡಗಳೆಂಬ ನಾಲ್ಕು ಭಾಗಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದೆ. (1) ಮರೀಚಿಮಹರ್ಷಿ ಪ್ರೋಕ್ತವಾದ ಜಯ, ಆನಂದ, ಸಂಜ್ಞಾನ, ವೀರ, ವಿಜಯ ಮುಂತಾದ ಎಂಟು ಆಗಮಗಳಿಗೆ ‘ಸಂಹಿತೆ’ ಯೆಂದು ಹೆಸರು. (2) ಭೃಗುಮಹರ್ಷಿ ಪ್ರೋಕ್ತವಾದ ಖಿಲ, ಖಿಲಾಧಿಕಾರ, ಪುರಾಧಿಕಾರ, ವಾಸಾಧಿಕಾರ, ಅರ್ಚಾಧಿಕಾರ ಮುಂತಾದ ಹತ್ತು ಭಾಗಗಳಿಗೆ ‘ಅಧಿಕರಣ’ ವೆಂದು ಹೆಸರು. (3) ಅತ್ರಿಮಹರ್ಷಿ ಪ್ರೋಕ್ತವಾದ ಪೂರ್ವ ತಂತ್ರ, ವಿಷ್ಣುತಂತ್ರ, ಉತ್ತರತಂತ್ರ ಮತ್ತು ಮಹಾ ತಂತ್ರಗಳೆಂಬ ನಾಲ್ಕು ಭಾಗಗಳಿಗೆ ‘ತಂತ್ರ’ ವೆಂದು ಹೆಸರು. (4) ಕಶ್ಯಪಮಹರ್ಷಿ ಪ್ರೋಕ್ತವಾದ ಸತ್ಯ ಕಾಂಡ, ಧರ್ಮಕಾಂಡ ಮತ್ತು ಜ್ಞಾನಕಾಂಡಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಭಾಗಗಳಿಗೆ ‘ಕಾಂಡ’ ವೆಂದು ಹೆಸರು.

(4) ಜೈನಾಗಮ: ದ್ವಾದಶಾಂಗಾತ್ಮಕ ಜೈನಾಗಮದ ಸ್ವರೂಪ: ಸರ್ವಜ್ಞರಾದ ತೀರ್ಥಂಕರರಿಂದ ಮೊದಲು ಸಮವಸರಣ ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ಗಣಧರಾದಿಯಾಗಿ ಅಲ್ಲಿ ಸೇರಿದ ಭವ್ಯರಿಗೆ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ ವಾಜ್ಮಯವು ಜೈನಾಗಮ, ಜೈನಸಿದ್ಧಾಂತ, ದ್ವಾದಶಾಂಗಶ್ರುತ ಇತ್ಯಾದಿ ಹೆಸರುಗಳಿಂದ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ. ಈ ಜೈನಾಗಮವನ್ನು ಸರ್ವಜ್ಞರಾದ ತೀರ್ಥಂಕರರು ಅನಾದಿಕಾಲದಿಂದ ಅನಂತಕಾಲದವರೆಗೆ ಉಪದೇಶಿಸುತ್ತಲೇ ಇರುತ್ತಾರೆ. ಆದುದರಿಂದ ಇದು ಸಾದಿಯೆಂದೂ, ಅನಾದಿಯೆಂದೂ ಹೇಳಲ್ಪಡುವುದು. ಸರ್ವಜ್ಞರಾದ ತೀರ್ಥಂಕರರು ಉಪದೇಶಿಸಿದ ಶಾಸ್ತ್ರವೇ ಜೈನಾಗಮವು. ಇದು ಅಂಗಬಾಹ್ಯ ಮತ್ತು ಅಂಗಪ್ರವಿಷ್ಟಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ.

ಅಂಗಪ್ರವಿಷ್ಟವು (1) ಆಚಾರಾಂಗ, (2) ಸೂತ್ರ ಕೃತಾಂಗ, (3) ಸ್ಥಾನಾಂಗ, (4) ಸಮವಾಯಾಂಗ, (5) ವ್ಯಾಖ್ಯಾಪ್ರಜ್ಞಾಪಿ, (6) ಜ್ಞಾತೃಕಥಾ, (7) ಉಪಾಸಕಾಧ್ಯಯನ, (8) ಅನುತ್ತರೋಪಪಾದಿಕ, (9) ಅಂತಕೃದ್ದಶಾಂಗ, (10) ಪ್ರಶ್ನವ್ಯಾಕರಣ, (11) ವಿಸಾಕಸೂತ್ರ ಮತ್ತು (12) ದೃಷ್ಟಿವಾದದಶಾಂಗಗಳೆಂಬ ಹನ್ನೆರಡು ಅಂಗಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದೆ. ಎಳನೆಯದಾದ ಉಪಾಸಕಾಧ್ಯಯನಾಂಗದಲ್ಲಿ ದೇವರ ಪ್ರತಿಷ್ಠೆ, ಪೂಜಾಕ್ರಮ, ಶ್ರಾವಕಾಚಾರ, ಯತ್ಯಾಚಾರ ಇತ್ಯಾದಿ ವಿಷಯಗಳು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ.

ಜೈನಾಗಮದಲ್ಲಿ (1) ದೇವ, (2) ಗುರು ಮತ್ತು (3) ಶಾಸ್ತ್ರ ಈ ಮೂರು ಆರಾಧ್ಯದೇವತೆಗಳು.

(1) ದೇವರು: ಅರ್ಹಂತರು ಮತ್ತು ಸಿದ್ಧರು. ಅರ್ಹಂತರಲ್ಲಿ ಭೂತಭವಿಷ್ಯದ್ವರ್ತಮಾನದ 72 ತೀರ್ಥಂಕರರು, ಪಂಚವಿದೇಹದಲ್ಲಿರುವ ವರ್ತಮಾನ ಕಾಲದ ಸೀಮಂಧರ ಯುಗಮಂಧರಾದಿ 20 ತೀರ್ಥಂಕರರು.

(2) ಗುರುಗಳು: ಚತುರಶೀತಿ ಲಕ್ಷಗುಣಸಂಪನ್ನ ಗಣಧರ ಆಚಾರ್ಯಪರಮೇಷ್ಠಿಗಳು, ದ್ವಾದಶಾಂಗ ಪಾಠಕರಾದ ಉಪಾಧ್ಯಾಯ ಪರಮೇಷ್ಠಿಗಳು, ಜ್ಞಾನ ಧ್ಯಾನ ತಪೋರಕ್ತರಾದ ಸರ್ವಸಾಧುಪರಮೇಷ್ಠಿಗಳು.

(3) ಶಾಸ್ತ್ರ: ಜಿನಮುಖೋದ್ಭೂತ ಸ್ಯಾದ್ವಾದನಯಗರ್ಭಿತ ದ್ವಾದಶಾಂಗ ರೂಪವಾದ ಜಿನಭಾರತಿ ಪ್ರತಿಷ್ಠೆ ಮತ್ತು ಪೂಜಾಕ್ರಮಗಳು (1) ಅಕಲಂಕ ಸ್ವಾಮಿರಚಿತ ಅಕಲಂಕಸಂಹಿತೆ, (2) ನೇಮಿಚಂದ್ರ ವಿರಚಿತ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾತಿಲಕ, (3) ಆಶಾಧರಸೂರಿ ವಿರಚಿತ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾತಿಲಕ, (4) ವಸುನಂದಾಚಾರ್ಯರಚಿತ ಸಂಹಿತೆ, (5) ಬ್ರಹ್ಮಸೂರಿ ವಿರಚಿತ ಸಂಹಿತೆ ಮತ್ತು (6) ಭಗವಜ್ಜಿನಸೇನಾಚಾರ್ಯ ವಿರಚಿತ ಆದಿಪುರಾಣ ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ವಿವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ.

ಆಗಮನ ಆಗಮನ (ನಂ) 1. ಬರುವಿಕೆ, ಸೇರುವಿಕೆ. ಆ+ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114)। “ಗತಸ್ಸುಹೌಪ್ಯಾಗಮನಪ್ರಯೋಗಂ ವದೇತಿ ವಕ್ತುಂ ವ್ಯವಸೀಯತೇ ಯಾ” ಮಾಘಂ 1-30. 2. ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಲಾಭ, ಸಂಪಾದನೆ. “ಏತತ್ ಸರ್ವಮಾಖ್ಯಾತಂ ವೇರಸ್ಯಾಗಮನಂ ಮಹತ್” ರಾಮಾಂ. 3. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಜನನ.

ಆಗಮವೃಕ್ಷ ಆಗಮವೃದ್ಧ (೨೦) ಜ್ಞಾನವೃದ್ಧ, ಪರಿಪೂರ್ಣ ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು. ಆಗಮೇನ ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನೇನ ವೃದ್ಧ:।



**ಆಗಮವೇತ್** ಆಗಮವೇತ್ಯು (ವಿಂ) ವೇದವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ, ವೇದಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿರುವ. ಆಗಮಂ ವೇತ್ತಿ - ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "ತು" (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ವೇತ್ತಿ - ವೇತ್ತೀ.

**ಆಗಮವೇದಿನ್** ಆಗಮವೇದಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀ ಶಂಕರಾಚಾರ್ಯರ ಪರಮಗುರುಗಳಾದ ಗೌಡಪಾದಾಚಾರ್ಯರು. (ವಿಂ) 2. ವೇದವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ, ವೇದಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿರುವ. ಆಗಮಂ ವೇತ್ತಿ - ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಜಿನಿ:" (೩-೨-೭೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ವೇದಿನಿ - ವೇದಿನೀ.

**ಆಗಮಾಪಾಯಿನ್** ಆಗಮಾಪಾಯಿನ್ (ವಿಂ) ಉತ್ಪತ್ತಿ ಮತ್ತು ನಾಶಸ್ವಭಾವದ. ಆಗಮಶ್ಚಾಪಾಯಶ್ಚ ಆಗಮಾಪಾಯಿ, ತೀ ವಿಧೇತೇಷ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। "ಆಗಮಾಪಾಯಿನೋನಿತ್ಯಾಸ್ತಾಸ್ತೀತಿಕ್ಷಸ್ವ ಭಾರತ" ಗೀತಾ ೨-೧೪। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಅಪಾಯಿನಿ - ಅಪಾಯಿನೀ.

**ಆಗಮಿನ್** ಆಗಮಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಮುಂದೆ ಬರುವ, ಮುಂದೆ ಉಂಟಾಗುವ, ಭವಿಷ್ಯತ್ ಕಾಲದ. ಆ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಇನಿ:" (೩-೩-೩)। 2. ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನವುಳ್ಳ, ಶಾಸ್ತ್ರಾಭ್ಯಾಸವುಳ್ಳ. ಆಗಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। "ಽವಪಿ ಕಿಲಾಗಮಿನೋ ಪ್ರಯೋಗಿನಿಪುಣೌ ಚ" ಮಾಲಂ ೩। 3. ಆಗಮವು ವಿಧಿಸಲ್ಪಡುವ (ಪ್ರಕೃತಿಪ್ರತ್ಯಯ ಮುಂತಾದುದು). 4. ಬರುವ, ತರುವ, ಸೇರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। ಆಗಮಿನಿ ಆಗಮಿನೀ.

**ಆಗರ ಆಗರ** (ಪುಂ) ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ. ಆಗೀಯಂತೆ ಉದಯಿಸುತ್ತಿರುವ ಚಂದ್ರೋತ್ತರ - ಗು (ನಿಗರಣೇ) "ಅಫ್" (೩-೩-೫೭)।

**ಆಗವೀನ** ಆಗವೀನ (ಪುಂ) (ಹಸುವನ್ನು ಮನೆಗೆ ತಂದು ಸೇರಿಸುವವರೆಗೂ ಅದರ ಯೋಗಕ್ಷೇಮವನ್ನು ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುವ) ಗೋಪಾಲಕ. ಗೋ: ಪತ್ಯಪಂಪಯಂತಂ ಕರ್ಮ ಕರೋತಿ - ಆ + ಗೋ "ಕ:" (೪-೨-೧೪)।

**ಆಗಸ್ ಆಗಸ್** (ನಂ) 1. ಅಪರಾಧ, ತಪ್ಪು, ಅಪಚಾರ. ಇನ್ (ಗತೌ) "ಅಸುನ್" ಆಗಾದೇಶಶ್ಚ (ಉಂ ೪-೨೯೨)। "ಸಹಿಷ್ಯೇ ಶತಮಾಗಾಂಸಿ ಸುನೋಸ್ತ ಇತಿ ಯತ್ವಯಾ" ಮಾಘಂ ೨-೧೦೮। "ಯತ್ತೇ ಚತುರ್ವಿಧಮಕಾರಿ ರಣೇ ತದಾಗ: ಕ್ಷಂತವ್ಯಮಥ ಭವತಾ ಕಠಣಾಣ್ವೇನ" ಚಂ ಭಾಂ। 2. ಪಾಪ. "ಆಗೋಽಪರಾಧೇ ಪಾಪೇಽಪಿ" ಮೇದಿಂ।

**ಆಗಸ್ಕೃತ್** ಆಗಸ್ಕೃತ್ (ವಿಂ) 1. ಅಪರಾಧಿ, ತಪ್ಪು ಮಾಡಿದವನು. ಆಗ: ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣೇ) "ಕ್ರಿಪ್" (೩-೨-೭೬)। "ಅಭ್ಯರ್ಣಮಾಗಸ್ಕೃತಮಸ್ಪೃಶದ್ಧಿ:" ರಘುಂ ೨-೩೨। 2. ಪಾಪಕೃತ್ಯವನ್ನೆಸಗಿದವನು.

**ಆಗಸ್ತೀ ಆಗಸ್ತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕು, ಆಗಸ್ತ್ಯ ಸಂಬಂಧವಾದ ದಿಕ್ಕು. ಅಗಸ್ತೀಸ್ಯೇಯಮ್ "ಅಫ್" (೪-೨-೧೨೦)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)।

**ಆಗಸ್ತ್ಯ ಆಗಸ್ತ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿಭಾಗ. "ಕೌಬೇರ-ದಿಗ್ಭಾಗಮಪಾಸ್ಯ ಮಾಗಮಾಗಸ್ತ್ಯಮುಣ್ಣಾಂಶುರಿವಾವತೀರ್ಣ:" ಮಾಘಂ ೩-೧। 2. ಆಗಸ್ತ್ಯ ಮಹರ್ಷಿಯ ಪುತ್ರ. ಅಗಸ್ತೀರಪತ್ಯಮ್ "ಯಃ" (೪-೧-೧೦೫)। 3. ಆಗಸ್ತ್ಯಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಅಗಸ್ತೀಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಮ್ "ಅಫ್" (೪-೨-೧೧೧)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। ಆಗಸ್ತೀ ಆಗಸ್ತೀ. (ವಿಂ) 4. ಆಗಸ್ತ್ಯ ಸಂಬಂಧವಾದ (ದಿಕ್ಕು ಮೊದಲಾದುದು).

**ಆಗಾರ ಆಗಾರ** (ನಂ) ಗೃಹ, ಮನೆ. ಅಗಾನ್ ವೃಕ್ಷಾನ್ ಸ್ತಂಭಭೂತಾನ್ ಕ್ಷಚ್ಛತಿ - ಕ್ಷ (ಗತೌ) "ಅಫ್" (೩-೨-೧)। **ಆಗಾರಗೋಧಿಕಾ ಆಗಾರಗೋಧಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಲ್ಲಿ, ಗಾಳಿ.

**ಆಗುರ್ (ಗು:) ಆಗುರ್ (ಗು:) (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. ಆ + ಗುರಿ (ಉದಯೇ) - "ಕ್ರಿಪ್"।

**ಆಗುರಣ ಆಗುರಣ** (ನಂ) ಉದ್ಯಮ, ಪ್ರಯತ್ನ. ಆ + ಗುರಿ (ಉದಯೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ಆಗ್ ಆಗ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. ಆ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಡು:" (ಉಂ ೨-೬೮)।

**ಆಗುಣ್ ಆಗುಣ್** (ನಂ) 1. ಪ್ರಯತ್ನ. ಆ + ಗುರಿ (ಉದಯೇ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಯತ್ನವುಳ್ಳ. ಆ + ಗುರಿ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)।

**ಆಗ್ನಾಪೌಷ್ಣ ಆಗ್ನಾಪೌಷ್ಣ** (ವಿಂ) ಅಗ್ನಿ ಮತ್ತು ಪೌಷ್ಣ ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ (ಹವಿಸ್ಸು ಮೊದಲಾದುದು). ಅಗ್ನಿಶ್ಚ ಪೌಷಾ ಚ ಅಗ್ನಾಪೌಷ್ಣೌ, ತೇ ದೇವತೇ ಅಸ್ಯ "ಅಫ್" (೪-೨-೨೪)।

**ಆಗ್ನಾವೇಣವ ಆಗ್ನಾವೇಣವ** (ವಿಂ) ಅಗ್ನಿ ಮತ್ತು ವಿಷ್ಣು ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ (ಹವಿಸ್ಸು ಮೊದಲಾದುದು). ಅಗ್ನಿಶ್ಚ ವಿಷ್ಣುಶ್ಚ ಅಗ್ನಾವೇಣೌ, ತೇ ದೇವತೇಸ್ಯ "ಅಫ್" (೪-೨-೨೪)।

**ಆಗ್ನಿಪದ ಆಗ್ನಿಪದ** (ವಿಂ) 1. ಅಗ್ನಿಯ ಸನ್ನಿಧಿಯಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ. 2. ಅಗ್ನಿಯ ಸನ್ನಿಧಿಯಲ್ಲಿ ಕೊಡುವ ಪದಾರ್ಥ. ಅಗ್ನಿಪದೇ ಕಾರ್ಯ ದೀಯತೇ ವಾ "ಅಫ್" (ವಾಂ ೫-೧-೯೭)।

**ಆಗ್ನಿಮಾರುತ ಆಗ್ನಿಮಾರುತ** (ವಿಂ) ಅಗ್ನಿ ಮತ್ತು ಮರುತ್ತುಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ (ಹವಿಸ್ಸು ಮೊದಲಾದುದು).



ದುದು). ಅಗ್ನಿಶ್ಚ ಮಣ್ವಚ ಅಗ್ನಾಮಸ್ತೌ, ತೇ ದೇವತೇಸ್ಯ  
“ಅನ್” (೪-೨-೨೪) | ಇತ್ (೬-೩-೨೮) |

ಆಗ್ನಿವಾಣಿ ಅಗ್ನಿವಾರುಣ (ವಿಂ) ಅಗ್ನಿ ಮತ್ತು ವರುಣ  
ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ (ಹವಿಸ್ಸು ಮೊದಲಾ  
ದುದು). ಅಗ್ನಿಶ್ಚ ವರುಣಶ್ಚ ಅಗ್ನಿವಾಣಿ, ತೇ ದೇವತೇಸ್ಯ  
“ಅನ್” (೪-೨-೨೪) | ಇತ್ (೬-೩-೨೮) |

ಆಗ್ನಿಷ್ಠೋಮಿಕ ಅಗ್ನಿಷ್ಠೋಮಿಕ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ  
ಷ್ಠೋಮ ಯಾಗವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. 2. ಅಗ್ನಿಷ್ಠೋಮ  
ಯಾಗದ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಗ್ರಂಥದ ಅಧ್ಯಯನ  
ಮಾಡುವ. ಅಗ್ನಿಷ್ಠೋಮಂ ವೇದಿ ತತ್ಪ್ರತಿಪಾದಕಂ ಗ್ರಂಥಮಧೀತೇ  
ವಾ “ಠಕ್” (೪-೨-೬೦) | (ವಿಂ) 3. ಅಗ್ನಿಷ್ಠೋಮ  
ಯಾಗಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.

ಆಗ್ನಿಷ್ಠೋಮಿಕ ಅಗ್ನಿಷ್ಠೋಮಿಕೇ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿ  
ಷ್ಠೋಮ ಯಾಗದ ದಕ್ಷಿಣೆ. ಅಗ್ನಿಷ್ಠೋಮಸ್ಯ ದಕ್ಷಿಣಾ  
“ಠ್” (೪-೨-೯೫) | “ಠೀ” (೪-೨-೯೫) |

ಆಗ್ನಿಧ್ರ ಅಗ್ನಿಧ್ರ (ಪುಂ) 1. ಮತ್ತಿಕ್ಕು, ಯಾಜಕ,  
ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಸಹಾಯಕ. ಅಗ್ನಿಮಿನ್ಧಯತಿ ಅಗ್ನಿತ್ |  
ತಸ್ಯ ಸ್ಥಾನಮಾಗ್ನಿಧ್ರಮ್ | ತಾತ್ಪರ್ಯಾತ್ ಸೋಮಾಗ್ನಿಧ್ರಃ | [ಅಗ್ನಿ  
ಯನ್ನು ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವವನು ಅಗ್ನಿಧ್ರ. ಅವನ  
ಸ್ಥಾನವು ಅಗ್ನಿಧ್ರವು. ಅಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ಮತ್ತಿಕ್ಕು  
ಅಗ್ನಿಧ್ರನು]. (ನಂ) 2. ಅಗ್ನಿಧ್ರನೆಂಬ ಮತ್ತಿಕ್ಕಿನ  
ಸ್ಥಾನ. ಅಗ್ನಿಮಿನ್ಧಯತಿ ಇತಿ ಅಗ್ನಿತ್ | ತಸ್ಯ ಸ್ಥಾನಮ್  
“ರನ್” (ವಾಂ ೪-೩-೧೨೦) | 3. ಅಗ್ನಿಧ್ರನ ಕರ್ಮ  
(ಕೆಲಸ). ಆಗ್ನಿಧ್ರಸ್ಯ ಕರ್ಮ ಭಾವೋ ವಾ “ಅನ್” |

ಆಗ್ನಿಧ್ರಾ ಅಗ್ನಿಧ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಶಾಲೆ, ಅಗ್ನಿಗೆ  
ಯೋಗ್ಯವಾದ ಗೃಹ. ಆಗ್ನಿಧ್ರಸ್ಥಾನಮಹತಿ “ಯತ್” |

ಆಗ್ನೇಂದ್ರ ಅಗ್ನೇಂದ್ರ (ವಿಂ) ಅಗ್ನಿ ಮತ್ತು ಇಂದ್ರ  
ದೇವತೆಗಳಾದ (ಹವಿಸ್ಸು ಮೊದಲಾದುದು). ಅಗ್ನಿಶ್ಚ  
ಇಂದ್ರಶ್ಚ ಅಗ್ನೇಂದ್ರೌ, ತೌ ದೇವತೇಸ್ಯ “ಅನ್” (೪-೨-೨೪) |

ಆಗ್ನೇಯ ಅಗ್ನೇಯ (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪಣ್ಮಖ.  
ಅಗ್ನೇರಪತ್ಯಮ್ | 2. ಅಗ್ನೇಯಮಹರ್ಷಿ. 3. ದಕ್ಷಿಣಾಪಥ  
ದಲ್ಲಿ ಕಪ್ಪಿಂಧಾವಟ್ಟಣಕ್ಕೆ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು  
ದೇಶ. ಈ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಯು ವಾಸಮಾಡುತ್ತಿದ್ದುದ  
ರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. [ಅಗ್ನಿಯು ನೀಲರಾಜನ ಮಗಳನ್ನು  
ಮೋಹಿಸಿ ಆಕೆಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ಆ ರಾಜನ  
ಸಹಾಯಕ್ಕಾಗಿ ಅಲ್ಲಿಯೇ ಕೆಲವು ಕಾಲ ವಾಸಮಾಡು  
ತ್ತಿದ್ದನು.] ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೩೨ | 4. ಅಗ್ನಿಪರ್ವತ.  
(ನಂ) 5. ಚಿನ್ನ, ಸುವರ್ಣ. ಅಗ್ನೇರಪತ್ಯಮ್ | 6. ಕೃತ್ತಿಕಾ

ನಕ್ಷತ್ರ. [ಇದು ಅಗ್ನಿದೇವತಾಕವಾದುದು.] 7. ರಕ್ತ.  
8. ಅಗ್ನಿಯ ಉಪಾಸನೆಯ ಮಂತ್ರ. 9. ಅರಗು.  
10. ಫೃತ, ತುಪ್ಪ. 11. ಒಂದು ವಿಧ ಸ್ನಾನ. “ಆಗ್ನೇಯಂ  
ಭಸ್ಮನಾ ಸ್ನಾನಮ್” | 12. ಅಗ್ನಿದೇವತಾಕವಾದ ಒಂದು  
ಆಸ್ತ್ರ. (ವಿಂ) 13. ಅಗ್ನಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. 14. ಅಗ್ನಿ  
ಯನ್ನು ಅಭಿವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವ. 15. ಜಾತರಾಗ್ನಿಯ  
ನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ಜೀರ್ಣಶಕ್ತಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.  
16. ಅಗ್ನಿದೇವತಾಕವಾದ ಹವಿಸ್ಸು ಮೊದಲಾದುದು.  
17. ಅಗ್ನಿಯ ಭಕ್ತ, ಅಗ್ನಿಯ ಉಪಾಸಕ. ಅಗ್ನೇಭಕ್ತಃ  
“ಠಕ್” (ವಾಂ ೪-೨-೨೪) |

ಆಗ್ನೇಯಿ ಅಗ್ನೇಯಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ವಾಹಾದೇವಿ, ಅಗ್ನಿಯ  
ಪತ್ನಿ. 2. ಅಗ್ನೇಯ ದಿಕ್ಕು, ಪೂರ್ವ ಮತ್ತು  
ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕುಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ. 3. ಪ್ರತಿಪತ್ಯ ತಿಥಿ,  
ಪಕ್ಷದ ಮೊದಲನೆಯ ದಿನ, ಅಗ್ನಿದೇವತಾಕವಾದ ತಿಥಿ.  
“ವಹ್ನಿಷ್ಠಿಹಿಮಾದ್ರಿಜಾ ಗಣಪತಿಃ ಸರ್ಪಃ ಕುಮಾರೋ ರವಿ-  
ಗೌರೀಶೋ ವಸುನಾಗಧರ್ಮಹರಯಃ ಕಾಮಃ ಕಲಿನ್ದ್ರ ಪಿತಾ | ಏತೇ  
ಸರ್ವದಿನಾಧಿಪಾಃ ಸ್ಯುಃ” ಕಾಲಾಂ ೨ |

ಆಗ್ನೇಯಾಧಾನಿಕಿ ಅಗ್ನೇಯಾಧಾನಿಕೇ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನೇಯಾಧಾನ  
ಯಜ್ಞದಕ್ಷಿಣೆ. ಅಗ್ನೇಯಾಧಾನಸ್ಯ ಯಜ್ಞಸ್ಯ ದಕ್ಷಿಣಾ “ಠ್”  
(೪-೨-೯೫) | “ಠೀ” (೪-೨-೯೫) |

ಆಗ್ರಭೋಜನಿಕ ಅಗ್ರಭೋಜನಿಕ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ರಭೋಜ  
ನಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ಭೋಜನಸಂಕ್ರಿಯಲ್ಲಿ  
ಅಗ್ರಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದವನು. ಅಗ್ರಭೋಜನಮಹತಿ —  
“ಠ್” (೪-೨-೬೩) | 2. ಪ್ರಥಮಭೋಜನಕ್ಕೆ ಕುಳ್ಳಿ  
ರಿಸಲ್ಪಡುವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಅಗ್ರಭೋಜನ ನಿಯತ ದೀಯತೇಷ್ವಮ್  
“ಠಕ್” (೪-೪-೬೬) |

ಆಗ್ರಯಣ ಅಗ್ರಯಣ (ಪುಂ) ಹೊಸ ಧಾನ್ಯವು ಬಂದಾಗ  
ದೇವತೆಗಳ ಪ್ರೀತ್ಯರ್ಥವಾಗಿ ಅದರಿಂದ ಮಾಡುವ  
ಯಜ್ಞ. ಅಗ್ರಸ್ಯ ನವಧಾನ್ಯಾದೇಃ ಅಯನಂ (ದೇವಾನ್ ಪ್ರತಿ)  
ಪ್ರಾಪ್ತಂ ಯೇನ ಕರ್ಮಣಾ — ಪೃಷೋಂ | [ಹೊಸ ಧಾನ್ಯವನ್ನು  
ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಅರ್ಪಿಸುವುದಕ್ಕೆ ಮುಂಚೆ ಉಪಯೋಗಿಸ  
ಕೂಡದು.] “ಶಸ್ಯಂ ನಾಶನೀಯಾದಗ್ನಿಹೋತ್ರಮಹುತ್ವಾ” ಆಶ್ವಂ  
ಶ್ರೀಂ ಸ್ತುಂ |

ಆಗ್ರಹ ಅಗ್ರಹ (ಪುಂ) 1. ಆವೇಶ, ಆಸಕ್ತಿ, ದೃಢಸಂಕಲ್ಪ,  
ಹಠ. ಆ+ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) “ಅಪ್” (೩-೩-೫೮) |  
“ಚಲೇಽಪಿ ಕಾಕಸ್ಯ ಪದಾರ್ಪಣಾಗ್ರಹಃ” ನೈಷಂ ೧೨-೨೧ |  
2. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ, ಸ್ವೀಕಾರ. 3. ಅನುಗ್ರಹ,  
ದಯೆ. 4. ಆಕ್ರಮಣ, ಮುತ್ತಿಗೆ, ಹಿಡಿಯುವಿಕೆ.  
“ಆಗ್ರಹೋಽನುಗ್ರಹಾಸತ್ತಯೋರಾಕ್ರಮೇ ಗ್ರಹಣೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ |



**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಗ್ರಹಾರಣ (ಪುಂ) ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷಮಾಸ.**

ಅಗ್ರೇ ಹಾಯನಮಸ್ಯಾ: ಪ್ರಾಕೃತಾಣಿ-ಸಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಸ್ಯತ್ರ  
ಮಾಸೇ "ಅನ್" (೪-೨-೨೧) |

**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಗ್ರಹಾರಣಕ (ನಂ) ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷ**  
ಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ದಿನ ಕೊಡಬೇಕಾದ ಸಾಲ.

ಪ್ರಾಕೃತಾಣ್ಯಾಂ ದೇಯಂ ಕೃಣಾಮ್ "ವು" (೪-೩-೪೦) |

**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಗ್ರಹಾರಣಕ (ಪುಂ) 1. ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷ**  
ಮಾಸ. ಪ್ರಾಕೃತಾಣಿ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಸ್ಮಿನ್ ಮಾಸೇ "ಠಕ್"  
(೪-೨-೨೨) | (ನಂ) 2. ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷಮಾಸದ  
ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ದಿನ ಕೊಡಬೇಕಾದ ಸಾಲ.

**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಗ್ರಹಾರಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷ**  
ಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ಅಗ್ರೇ ಹಾಯನಮಸ್ಯಾ: "ಅನ್"  
(೪-೪-೩೮) | "ಙೀ" (೪-೧-೧೪) |

**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಗ್ರಹಾರಣಿ (ಪುಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಅಗ್ರಹಾರ**  
ನಿಯತಂ ದೀಯತೇ "ಠಕ್" (೪-೪-೬೬) |

**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಘಟ್ಟಕ (ಪುಂ) ಕೆಂಪು ಉತ್ತರೇಣಿ ಗಡ.**  
ಪ್ರಾಕೃತಯತಿ ರೋಗಾನ್-ಘಟ್ಟ (ಚಲನೆ) "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |

**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಘಟ್ಟನ (ನಂ) ಹೊಡೆತ, ತಿಕ್ಕಾಟ, ಉಜ್ಜುವಿಕೆ.**  
ಆ+ಘಟ್ಟ (ಚಲನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಘಟ್ಟನಾ-ಘಟ್ಟನಾ. ಆ+ಘಟ್ಟ+ಞಿ "ಯು" (೩-೩-೧೦೭) |  
"ರಣದ್ವಿರಾಘಟ್ಟನಯಾ ನಮಸ್ವತಃ  
ಪೃಥಿವಿಭಿನ್ನಶ್ರುತಿಮಂಡಲಃ ಸ್ವರಃ" ಮಾಘಂ ೧-೧೦ |

**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಘರ್ಷ (ಪುಂ) ಉಜ್ಜುವಿಕೆ, ತಿಕ್ಕಾಟ. ಆ+ಘರ್ಷ**  
(ಸಂಘರ್ಷ) "ಘ" (೩-೩-೧೮) | "ಗಂಧಸ್ಥಿಲಾಘರ್ಷಗಲನ್ಮದೋದಕ-  
ವದ್ವಮಸ್ಕಂಧನಿಲಾಯಿನೋಜಲಯಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೬೪ | ಭಾವೇ  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | -ಘರ್ಷಣಮ್-ಘರ್ಷಣಮ್.

**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಘರ್ಷಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೂರ್ಚ, ಕುಂಚ,**  
ಕೂಲಿಕೆ. 2. ಉಜ್ಜುವ ವಸ್ತು, ರಬ್ಬರು ಮೊದಲಾ  
ದುದು. ಆಘರ್ಷಯತೇನ ಆ+ಘರ್ಷ (ಸಂಘರ್ಷ) "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೭) | "ಙೀ" (೪-೧-೧೪) |

**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಘಾಟ (ಪುಂ) 1. ಉತ್ತರೇಣಿ ಗಡ. 2. ಗಡಿ,**  
ಎಲ್ಲೆ. 3. ಕೈತಾಳ, ಝಲ್ಲರಿ. (ವಿಂ) 4. ಹೊಡೆ  
ಯುವ. ಆ+ಘಟ (ಚಿಷ್ಟಾಯಾಮ್) "ಘ" (೩-೩-೧೧೯) |

**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಘಾತ (ಪುಂ) 1. ಹೊಡೆತ, ಬಡಿತ, ಎಟು.**  
2. ವಧೆ, ಕೊಲೆ. 3. ಗಾಯ. ಆ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ)  
"ಘ" (೩-೩-೧೮, ೧೯) | 4. ವಧ್ಯಸ್ಥಾನ,  
ಕೊಲೆಮಾಡುವ ಜಾಗ. ಆ+ಹನ ಅಧಿಂ "ಘ" (೩-೩-೧೨೧) |

**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಘಾತನ (ನಂ) 1. ವಧ್ಯಸ್ಥಾನ. ಆ+ಹನ**  
(ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ)+ಞಿ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | 2. ಕೊಲೆ,  
ವಧೆ. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |

**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಘಾರ (ಪುಂ) 1. ಘೃತ, ತುಪ್ಪ. ಆ+ಘ**  
(ಸೇವನೆ)+ಞಿ ಕರ್ಮಂ "ಘ" (೩-೩-೧೧೯) | 2. ಘೃತ  
ಸೇವನೆ, ಅಗ್ನಿಗೆ ವಾಯವ್ಯದಿಂದ ಅಗ್ನಿಯ ದಿಕ್ಕಿನ  
ವರೆಗೂ ನಿರ್ವಹಿಸಿ ದಿಕ್ಕಿನಿಂದ ಈಶಾನ್ಯದವರೆಗೂ  
ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ ಮಾಡುವ ತುಪ್ಪದ ಹೋಮ.

**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಘೂರ್ಣನ (ನಂ) ಸುತ್ತುವಿಕೆ, ತಿರುಗುವಿಕೆ.**  
ಆ+ಘೂರ್ಣ (ಭ್ರಮಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |

**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಘೂರ್ಣತ (ವಿಂ) ಸುತ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿರುಗಿಸ**  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ+ಘೂರ್ಣ (ಭ್ರಮಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಘೋಷಣ (ನಂ) (ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ**  
ಪ್ರಚಾರವಾಗಲು) ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಹೇಳುವುದು, ಸಾರು  
ವುದು, ಡಂಗೂರು ಹೊಡೆಸುವುದು. ಆ+ಘುರ್ಷಿ  
(ವಿಶಬ್ದನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಘೋಷಣಾ  
-ಘೋಷಣಾ. ಆ+ಘುರ್ಷಿ+ಞಿ "ಯು" (೩-೩-೧೦೭) |

**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಘ್ರಾಣ (ನಂ) 1. ವಾಸನೆ ನೋಡುವುದು,**  
ಮುನಿಸೋಡುವುದು. 2. ತೃಪ್ತಿ, ಸಂತೋಷ. ಆ+ಘ್ರಾ  
(ಗಂಧೋಪಾದಾನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | "ತೃಪ್ತಿಃ  
ಸೌಹೃದ್ಯಮಾಘ್ರಾಣಮ್" ಅಭಿಂ ಚಿಂ | (ವಿಂ) 3. ವಾಸನೆ  
ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ+ಘ್ರಾ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |  
ನತ್ವಮ್ (೮-೨-೪೬) | 4. ತೃಪ್ತಿಹೊಂದಿದ. ಕರ್ಮಂ  
"ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) |

**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಘ್ರಾತ (ವಿಂ) ವಾಸನೆ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುನಿಸ**  
ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ+ಘ್ರಾ (ಗಂಧೋಪಾದಾನೇ) "ಕ್ತಃ"  
(೩-೨-೧೦೨) | "ಪ್ರಾಕೃತವತ್ಮನಿಮರಣ್ಯಭಾಗೋಪಾರಣ್ಯಕೇ-  
ರಾಶ್ರಿತಧೇನುಭಾವಃ" ಯಾದಂ ೪-೮೧ |

**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಘ್ರಾಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಮುನಿಸೋಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,**  
ವಾಸನೆನೋಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ+ಘ್ರಾ  
(ಗಂಧೋಪಾದಾನೇ)+ಞಿ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಘ್ರಾಯಕ (ವಿಂ) 1. ವಾಸನೆನೋಡು**  
ವವನು. 2. ತೃಪ್ತಿಹೊಂದುವವನು. ಆ+ಘ್ರಾ (ಗಂಧೋ-  
ಪಾದಾನೇ) "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಪ್ರಾಕೃತಾ  
ಅಘ್ರಾಯಿಕಾ.

**ಪ್ರಾಕೃತ ಅಘ್ರೇಯ (ವಿಂ) 1. ವಾಸನೆನೋಡಲು ಅರ್ಹ**  
ವಾದ. 2. ವಾಸನೆನೋಡಲ್ಪಡುವ. ಆ+ಘ್ರಾ (ಗಂಧೋ-  
ಪಾದಾನೇ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೭) |



ಆಡ್ ಅಜ್ಞ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಸ್ವಲ್ಪ. 2. ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ. "ಆಸಮುದ್ರ-  
ಕ್ಷಿತಿಶಾನಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೫. 3. ಅಭಿವಿಧಿ. "ಸೋಹ್ಮಾಜನ್ಮ-  
ಶುದ್ಧಾನಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೫. 4. ಧಾತುವಿನೊಡನೆ ಸೇರಿ  
ದಾಗ ಕ್ರಿಯಾವಿಶೇಷವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಉಪಸರ್ಗ.  
"ತೇನೋಪಮೀಯತ ತಮಾಲನೀಲಮಾಮುಕ್ತಮುಕ್ತಾಲತಮಸ್ಯ ವಕ್ಷಃ"  
ಮಾಘಂ ೩-೮. "ಆಡೀಪದರ್ಶಯಿಷ್ಯಂತೋ ಸೀಮಾರ್ಥೇ ಧಾತುಯೋಗಜೇ"  
ಅಮಂ.

ಆಡ್ಕುಶಿಕ ಅಂಕುಶಿಕ (ವಿಂ) ಅಂಕುಶವೇ ಆಯುಧ  
ವಾಗಿ ಉಳ್ಳವನು. ಅಡ್ಕುಶಃ ಪ್ರಹರಣಮಸ್ಯ "ಠಕ್"  
(೪-೪-೫೭).

ಆಜ್ಞ ಅಂಗ (ಪುಂ) 1. ಅಂಗದೇಶದ ದೊರೆ. ಅಜ್ಞಾನಾಂ  
ರಾಜಾ. 2. ಅಂಗರಾಜನ ಮಗ. (ನಂ) 3. ಕೋಮಲ  
ವಾದ ಶರೀರ. ಅಜ್ಞ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೫-೪-೩೮).  
(ವಿಂ) 4. (ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಅಂಗಾಧಿಕಾರದಲ್ಲಿ  
ಉಕ್ತವಾದ ಕಾರ್ಯ. "ವಾಣಿದಾಜ್ಞಂ ಬಲೀಯಃ" ಪರಿಂ  
೫೬. 5. ಶಾರೀರಕ, ಶರೀರಸಂಬಂಧವಾದ. ಅಜ್ಞಸ್ಯೇದಮ್  
"ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦). 6. ಅಂಗದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.  
ಅಜ್ಞೇಷು ಭವಃ "ಅನ್".

ಆಜ್ಞಕ ಅಂಗಕ (ಪುಂ) 1. ಅಂಗರಾಜನ ಸೇವಕ.  
2. ಅಂಗದೇಶದ ಸೇವಕ, ಅಂಗದೇಶದ ಭಕ್ತ. ಅಜ್ಞಾಃ  
ಕ್ಷತ್ರಿಯಾಃ ಜನಪದೋ ವಾ ಭಕ್ತೀರಸ್ಯ "ವುಜ್" (೪-೩-೧೦೦).  
(ವಿಂ) 3. ಅಂಗದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅಜ್ಞೇಷು ಭವಃ  
"ವುಜ್" (೪-೨-೧೨೫).

ಆಜ್ಞವಿಧ್ಯ ಅಂಗವಿದ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಶಿಕ್ಷೆ ವ್ಯಾಕರಣ  
ಮೊದಲಾದ ಅಂಗವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ, ವೇದಾಂಗ  
ಗಳನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ. 2. ಅಂಗಸಾಮುದ್ರಿಕವನ್ನು  
ತಿಳಿದಿರುವ. ಅಜ್ಞವಿಧ್ಯಾಂ ವೇತ್ತಿ "ಅನ್" (೪-೨-೫೯).  
3. ಅಂಗವಿದ್ಯೆಯ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಗ್ರಂಥ. ಅಜ್ಞವಿಧ್ಯಾಯಾ  
ವ್ಯಾಖ್ಯಾನೋ ಗ್ರಂಥಃ "ಅನ್" (೪-೩-೬೬). 4. ಅಂಗವಿದ್ಯೆ  
ಯಲ್ಲಿರುವ. "ಅಜ್ಞವಿಧ್ಯಾಯಾಂ ಭವಃ" "ಅನ್" (೬-೩-೬೬).

ಆಜ್ಞವಿಧ್ಯಾ ಅಂಗವಿದ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವ್ಯಾಕರಣ ಮೊದ  
ಲಾದ ಅಂಗವಿದ್ಯೆ. 2. ಸಾಮುದ್ರಿಕಶಾಸ್ತ್ರ. ಆಜ್ಞೀ ಚ  
ಸಾ ವಿಧ್ಯಾ ಚ.

ಆಜ್ಞಾರ ಅಂಗಾರ (ನಂ) ಕೆಂಡದ ರಾಶಿ. ಅಜ್ಞಾರಾಣಾಂ  
ಸಮೂಹಃ "ಅನ್" (೪-೨-೩೮).

ಆಜ್ಞಿಕ ಅಂಗಿಕ (ಪುಂ) ಭಾವಸೂಚಕವಾದ ಅಂಗಗಳ  
ಅಭಿನಯ, ಭಾವಾಭಿನಯ. ಅಜ್ಞೇನ ಅಜ್ಞಚಾಲನೆ  
ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೯). "ಭವೇದಭಿನಯೋವಸ್ಥಾನು-

ಕಾರಃ ಸ ಚತುರ್ವಿಧಃ. ಆಜ್ಞಿಕೋ ವಾಚಿಕಶ್ಚೈವಮಾಹಾರ್ಯಃ  
ಸಾತ್ವಿಕಸ್ತಥಾ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨.

ಆಜ್ಞಿರಸ ಅಂಗಿರಸ (ಪುಂ) 1. ಅಂಗಿರಸ್ಸಿನ ಮಗ—  
(1) ಬೃಹಸ್ಪತಿ. (2) ಉತಥ್ಯ. (3) ಸಂವತ್ಸ.  
ಅಜ್ಞಿರಸೋಽಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೯೨). "ತ್ರಯಸ್ತ್ವಜ್ಞಿರಸಃ  
ಪುತ್ರಾ ಲೋಕೇ ಸರ್ವತ್ರ ವಿಶ್ರುತಾಃ. ಬೃಹಸ್ಪತಿರ್ದತ್ತಿತ್ಯಶ್ಚ ಸಂವತ್ಸಶ್ಚ  
ಧೃತವ್ರತಾಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೭-೫. "ಅಧ್ಯಾಪಯಾಮಾಸ ಪಿತುನ್  
ಶಿಶುರಾಜ್ಞಿರಸಃ ಕವಿಃ. ಪುತ್ರಕಾ ಇತಿಹೋವಾಚ ಜ್ಞಾನೇನ  
ಪರಿಗೃಹ್ಯ ತಾನ್" ಮನುಂ ೨-೧೫೧. 2. ಅರ್ಥವೇದದ  
ಒಂದು ಸೂಕ್ತ. ಅಜ್ಞಿರಸಾ ದೃಷ್ಟಮ್ "ಅನ್" (೪-೨-೭).  
3. ಜೀವಾತ್ಮ.

ಆಚಕ್ಷಾಣ ಅಚಕ್ಷಾಣ (ವಿಂ) ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳುವ.  
ಆಚಕ್ಷಾತೇ — ಆ+ಚಕ್ಷಿಡ್ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಶಾನಕ್"  
(೩-೨-೧೨೪).

ಆಚಕ್ಷುಸ್ ಅಚಕ್ಷುಸ್ (ವಿಂ) ತಿಳಿದವನು, ಪೂರ್ವಕಥೆ  
ಬಲ್ಲವನು. ಆ+ಚಕ್ಷಿಡ್ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಽಸಿಃ"  
(೩ಂ ೨-೧೨೦).

ಆಚತುರ ಅಚತುರ (ಅವ್ಯಂ) ನಾಲ್ಕರವರೆಗೂ, ನಾಲ್ಕು  
ತಲೆಯ ಪರ್ಯಂತ, ವಂಶದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ತಲಾಂತರದ  
ವರೆಗೂ. ಚತುಃಪರ್ಯಂತಮ್ — ಅವ್ಯಯಿಂ. ಆ+ಚತುರ್ "ಠಕ್"  
(೫-೪-೧೦೭).

ಆಚತುರ್ಯ ಅಚತುರ್ಯ (ನಂ) ನಿಪುಣನಾಗಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
ಅಚತುರಸ್ಯ ಭಾವಃ "ವ್ಯಜ್" (೫-೧-೧೨೩).

ಆಚಮನ ಅಚಮನ (ನಂ) 1. ಜಲಪಾನ, (ವೈದಿಕ  
ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಮಾಡುವ ಸಮಯದಲ್ಲಿ) ಶುದ್ಧಿಗಾಗಿ  
ಮಾಡುವ ಮಂತ್ರಪೂರ್ವಕ ಜಲಪಾನ. ಆ+ಚಮ್  
(ಅದನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). ಅಚಮನದ ಕ್ರಮಃ  
"ಆಯತಂ ಪರ್ವಣಾಂ ಕೃತ್ವಾ ಗೋಕರ್ಣಾಕೃತಿಮತ್ಕರಮ್. ಸಂಹತಾಜ್ಞುಲಿನಾ  
ತೋಯಂ ಗೃಹೀತ್ವಾ ಪಾಣಿನಾ ದ್ವಿಜಃ. ಮುಕ್ತಾಜ್ಞುಲಕನಿಷ್ಠಾಭ್ಯಾಂ  
ಶೇಘಣಾಚಮನಂ ಚರೇತ್. ಮಾಷಮಜ್ಜನಮಾತ್ರಾಸ್ತು ಸಂಗೃಹ್ಯ ತ್ರಿಃ  
ಪಿವೇದಪಃ". [ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೀಡಿದ ಬೆರಳುಗಳನ್ನು ಒಟ್ಟಿಗೆ  
ಸೇರಿಸಿ ಕೈಯನ್ನು ಗೋವಿನಕರ್ಣದ ಅಕಾರಕ್ಕೆ ಮಾಡಿ  
ಹಸ್ತದೊಳಗೆ ಉದ್ದಿನಕಾಳು ಮುಳುಗುವಷ್ಟು ಮಾತ್ರ  
ನೀರನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಮಂತ್ರಪೂರ್ವಕ ಮೂರು  
ಸಲ ನೀರನ್ನು ಕುಡಿಯಬೇಕು.] 2. ಅಚಮನದ  
ನೀರು. ಆಚಮ್ಯತೇನೇನ — ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭).

ಆಚಮನಕ ಅಚಮನಕ (ನಂ) 1. ಅಚಮನದ ನೀರು.  
ಆಚಮ್ಯತೇನೇನ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್". ತತಃ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್".  
2. ಬಾಯಿನೀರನ್ನು ಉಗುಳುವ ಪಾತ್ರೆ.



**ಆಚಾರವೇದಿನ್ ಆಚರಣೆಯ (ನಂ)** ಆಚರಣೆಯ ನೇರು, ಆಚರಣೆಯು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಜಲ. ಆಚರಣೆಯು ಹಿತಮ್ "ಛ:" (೪-೧-೪)।

**ಆಚಾರ ಆಚರಣೆ (ಪುಂ)** ಕೂಡಿಸಿರುವುದು, ಶೇಖರಿಸಿರುವುದು, ಸಂಗ್ರಹಿಸುವುದು. ಆ+ಚಿ (ಚಯೇ) "ಚ" (೧-೧-೪೬)।

**ಆಚಾರ ಆಚರಣೆ (ನಂ)** 1. ಕೃತಿ, ಮಾಡುವಿಕೆ. 2. ನಡತೆ, ನಡವಳಿಕೆ, ವರ್ತನೆ, ಆಚಾರ. ಆ+ಚರ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ಅಧೀತಿವೋಧಾಚರಣಪ್ರಚಾರಣಃ: ಷಾಕತಸ್ರಃ ಪ್ರಣಯಪಾಧಿಭಿಃ" ನೈಷಂ ೧-೪। 3. ಸಂಪ್ರದಾಯ, ವಾಡಿಕೆ, ಪದ್ಧತಿ. 4. ರಥ, ಗಾಡಿ. ಆಚರಣೆಯು — ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।

**ಆಚಾರವೇದಿನ್ ಆಚರಣೆಯ (ವಿಂ)** 1. ಆಚರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ. ಆ+ಚರ (ಗತೌ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)।

**ಆಚಾರಿತ ಆಚರಣೆ (ನಂ)** 1. ನಡತೆ, ನಡವಳಿಕೆ, ವರ್ತನೆ. ಆ+ಚರ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಕೊಟ್ಟ ಸಾಲವನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಪಡೆಯುವ ಐದು ಉಪಾಯಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಧರ್ಮೇಣ ವ್ಯವಹಾರೇಣ ಛಲೇನಾಚರಿಸ್ವ" ಮನುಂ ೮-೪೯। [ಪತ್ತಿ ಪುತ್ರ ಮತ್ತು ಹಸುಗಳನ್ನು ಹೊಡೆದು ಬಡಿದು ಮನೆಯ ಬಾಗಿಲಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ಸಾಲಗಾರನು ಕೊಟ್ಟ ಸಾಲವನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಪಡೆಯುವುದು ಆಚರಣೆ.] "ದಾರಪುತ್ರಪಶುನ್ ಹತ್ವಾ ಕೃತ್ವಾ ದಾರೋಪವೇಶನಮ್। ಷಾರ್ಥಿ ಪಾಪ್ಯತೇಶ್ಯಂ ಸ್ವಂ ತದಾಚರಿಸ್ವಮುಚ್ಯತೇ" (ವಿಂ) 3. ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ+ಚರ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಕೃಮಸ್ಯ ಪೂರ್ವಾಚರಿಸ್ವಃ ಕೃತಂ ಶುಭಃ" ಮಾಘಂ ೧-೨೬।

**ಆಚಾರಿತವ್ಯ ಆಚರಣೆ (ವಿಂ)** 1. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ. 2. ಆಚರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಆ+ಚರ (ಗತೌ) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬)।

**ಆಚಾರ್ಯ ಆಚರಣೆ (ವಿಂ)** ಆಚರಣೆಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ದೇಶ. ಆ+ಚರ (ಗತೌ) "ಯತ್" (ವಾಂ ೩-೧-೧೦೦)।

**ಆಚಾರ್ಯ ಆಚಾರಣೆ (ವಿಂ)** ಆಚರಣೆ ಮಾಡಿದವನು. ಆ+ಚಮ (ಅದನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)।

**ಆಚಾರ್ಯ ಆಚಾರಣೆ (ಪುಂ)** 1. ಆಚರಣೆ. ಆ+ಚಮ (ಅದನೇ) "ಯತ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಅನ್ನದಮೇಲಿನ ಕೆಲಸ. 3. ಭಕ್ಷ್ಯ, ತಿಂಡಿ. ಆಚರಣೆಯು — ಆ+ಚಮ ಕರ್ಮಂ "ಯತ್" (೩-೩-೧೮)।

**ಆಚಾರ ಆಚಾರಣೆ (ಪುಂ)** 1. ಆಚರಣೆ, ಆಚರಣೆ. ಆ+ಚರ (ಗತೌ) "ಯತ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆ, ಸದ್ವರ್ತನೆ. "ಆಚಾರಮಾಗಂತುಕದಮ್ಪತಿನಾಮ್" ಪಾದಂ ೧೩-೮೯। [ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ಆಚಾರವೇ ಸರ್ವಶ್ರೇಷ್ಠವಾದುದು. ಸದಾಚಾರವು ಐಶ್ವರ್ಯವನ್ನೂ, ಕೀರ್ತಿಯನ್ನೂ, ಆಯುರ್ವೃದ್ಧಿಯನ್ನೂ ಉಂಟುಮಾಡಿ ಅನಿಷ್ಟಗಳನ್ನು ದೂರಮಾಡುವುದು. ಆಚಾರದಿಂದ ಧರ್ಮವೂ ಧರ್ಮದಿಂದ ಆಯುರ್ವೃದ್ಧಿಯೂ ಉಂಟಾಗುವುವು.] "ಆಚಾರೋ ಭೂತಿಜನನ ಆಚಾರಃ ಕೀರ್ತಿವರ್ಧನಃ। ಆಚಾರಾದ್ವದಂತೇ ಹ್ಯಾಚಾರಾಚಾರೋ ಹಂತ್ಯಲಕ್ಷಣಮ್। ಆಗಮಾನಾಂ ಹಿ ಸರ್ವೇಪಾಮಾಚಾರಃ ಶ್ರೇಷ್ಠ ಉಚ್ಯತೇ। ಆಚಾರಪ್ರಭವೋ ಧರ್ಮಃ ಧರ್ಮಾದಾಯುರ್ವಿವರ್ಧತೇ। ಏತದ್ವಾಸ್ಯಮಾಯುಷ್ಯಂ ಸ್ವರ್ಗ್ಯಂ ಸ್ವಸ್ತಯನಂ ಮಹತ್" ಭಾಂ ಆನುಂ ೧೬೧-೧೭೦, ೭೧, ೭೨। 3. ಸಂಪ್ರದಾಯ, ಪದ್ಧತಿ, ವಾಡಿಕೆ. "ಆಚಾರಲಾಜೈರಿವ ಪೌರಕನ್ಯಾಃ" ರಘುಂ ೨-೧೦। 4. ರೀತಿ, ಕ್ರಮ. 5. ವಿಧಿ, ಕಟ್ಟಳೆ, ನಿಯಮ. "ಆಚಾರ ಇತ್ಯವಹಿತೇನ ಮಯಾ ಗೃಹೀತಾ ಯಾ ವೇತ್ರಯಶ್ಚಿರವರೋಧಗೃಹೇಷು ರಾಜಃ" ಶಾಕುಂ ೪-೩।

**ಆಚಾರದೀಪ ಆಚಾರದೀಪ (ಪುಂ)** ಆರತಿ ಎತ್ತುವ ದೀಪ, ದಿಗ್ವಿಜಯಕ್ಕಾಗಿ ರಾಜನು ಹೊರಟುಬರುವಾಗ ಎತ್ತುವ ಆರತಿಯ ದೀಪ. ಆಚಾರಾರ್ಯೋ ದೀಪಃ।

**ಆಚಾರವತ್ ಆಚಾರವತ್ (ವಿಂ)** ಸದಾಚಾರವುಳ್ಳ, ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆಯುಳ್ಳ. ಪ್ರಶಸ್ತ ಆಚಾರೋಸ್ತಯಸ್ಯ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ವತೀ -ವತಿಃ.

**ಆಚಾರಪೂತ ಆಚಾರಪೂತ (ವಿಂ)** ಸದಾಚಾರದಿಂದ ಪವಿತ್ರನಾದ. ಆಚಾರೇಣ ಪೂತಃ। "ತಮಾತಪಕಲಾಂತಮನಾತ-ಪತ್ರಮಾಚಾರಪೂತಂ ಪವನಃ ಸಿಪೇವೇ" ರಘುಂ ೨-೧೩।

**ಆಚಾರಲಾಜ ಆಚಾರಲಾಜ (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ)** ಸಂಪ್ರದಾಯದಂತೆ ರಾಜನ ಅಥವಾ ಇತರ ಮಹಾಪುರುಷರ ಮೇಲೆ ಗೌರವದಿಂದ ಶುಭವನ್ನು ಕೋರಿ ಎರಚುವ ಆರಳು. "ಅವಾಕಿರನ್ ಬಾಲಲತಾಃ ಪ್ರಸೂನೇರಾಚಾರಲಾಜೈರಿವ ಪೌರಕನ್ಯಾಃ" ರಘುಂ ೨-೨೦।

**ಆಚಾರವೇದಿನ್ ಆಚಾರವೇದಿನ್ (ವಿಂ)** ಸಂಪ್ರದಾಯವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ, ಪದ್ಧತಿಯನ್ನು ಅರಿತಿರುವ. ಆಚಾರಂ ವೇದಿ — ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "ತೃತ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೪)। -ವೇದಿನಿ -ವೇದಿನೀ.

**ಆಚಾರವೇದಿನ್ ಆಚಾರವೇದಿನ್ (ವಿಂ)** ಸಂಪ್ರದಾಯವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ, ಪದ್ಧತಿಯನ್ನು ಅರಿತಿರುವ. ಆಚಾರಂ ವೇದಿ — ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಣಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೪)। -ವೇದಿನಿ -ವೇದಿನೀ.



ಆಚಾರಿನ್ ಅಚಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಸದಾಚಾರಸಂಪನ್ನ, ಶಾಸ್ತ್ರೀಕೃತವಾದ ಕರ್ಮಾಚರಣೆಯುಳ್ಳ. ಆಚಾರೋ-  
-ಸ್ಥಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | ಆಚಾರಿಣಿ ಅಚಾರಿಣೀ.

ಆಚಾರ್ಯ ಅಚಾರ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಉಪಾಧ್ಯಾಯ. ಆ+ಚರ (ಗತೌ) "ಘ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) | 2. ಉಪನಯನ ಮಾಡಿ ಸಾಂಗವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿಸುವ ಗುರು, ಮಂತ್ರೋಪದೇಶಮಾಡುವ ಗುರು. "ಉಪನಯನ ಶಿಷ್ಯಂ ವೇದಮಧ್ಯಾಪಯೇದ್ವಿಜಃ | ಸಾಕ್ಷಂ ಚ ಸರಹಸ್ಯಂ ಚ ತಮಾಚಾರ್ಯಂ ಪ್ರಚಕ್ಷತೇ" ಮನುಂ ೨-೧೪೦ | "ಅನ್ವೇಷಯ್ ದಿತಿಸಿತದಕ್ಷಿಣೋ-  
-ಹಮಾಚಾರ್ಯಸಾಂದೀಪಿನಿಸ್ಸುನುವೃತ್ತಮ್" ಯಾದಂ ೧೮-೧೦೯ | 3. ಶಾಸ್ತ್ರಾರ್ಥಗಳನ್ನು ವಿವರಿಸಿ ತಾನೂ ಶಾಸ್ತ್ರಕ್ಕನು ಗುಣವಾಗಿ ನಡೆದುಕೊಂಡು ಜನರಿಗೆ ಮಾರ್ಗದರ್ಶಿ ಯಾಗಿರುವ ಮತಪ್ರವರ್ತಕ. "ಆಚಿನೋತಿ ಹಿ ಶಾಸ್ತ್ರಾರ್ಥಂ ಆಚಾರೇ ಸ್ಥಾಪಯತ್ಯಪಿ | ಸ್ವಯಮಾಚರತೇ ಯಸ್ಮಾತ್ತಸ್ಮಾದಾಚಾರ್ಯಂ ಉಚ್ಯತೇ" | 4. ಯಜ್ಞದಲ್ಲಿ ಕರ್ವೋಪದೇಶ ಮಾಡುವವನು. (ವಿಂ) 5. ಪೂಜ್ಯ.

ಆಚಾರ್ಯಕ ಅಚಾರ್ಯಕ (ನಂ) 1. ಗುರುತ್ವ, ಗುರುವಿನ ಕಾರ್ಯ, ಶಿಕ್ಷಣ, ಕಲಿಸುವಿಕೆ. 2. ಶಿಕ್ಷಣದ ನೈಪುಣ್ಯ. ಆಚಾರ್ಯಸ್ಯ ಕರ್ಮ ಭಾವೋ ವಾ "ವುನ್" (೪-೧-೧೩೨) | "ತದ್ಭೂರಿಸಾತ್ವಿಕವಿಕಾರಮಪಾಸ್ತಧೈರ್ಮಾಚಾರ್ಯಕಂ ವಿಜಯಿ ಮಾನ್ಮಥಮಾವಿರಾಸೀತ್" ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೯ |

ಆಚಾರ್ಯಭೋಗಿನ್ ಅಚಾರ್ಯಭೋಗೀನ್ (ವಿಂ) ಗುರುವಿನ ಸೌಖ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಕೊಡುವ ಧನ, ಅಚಾರ್ಯನ ಜೀವನಕ್ಕೆ ಹಿತವಾದ ಧನ. ಆಚಾರ್ಯಭೋಗಾಯ ಹಿತಮ್ "ಃ" (೪-೧-೯) |

ಆಚಾರ್ಯಮಿಶ್ರ ಅಚಾರ್ಯಮಿಶ್ರ (ವಿಂ) ಪೂಜ್ಯನಾದ, ಗೌರವಾರ್ಹನಾದ.

ಆಚಾರ್ಯಾ ಅಚಾರ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂತ್ರವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಮಾಡುವವಳು, ವಿದ್ಯೆ ಕಲಿಸುವವಳು. ಆ+ಚರ (ಗತೌ) "ಘ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) |

ಆಚಾರ್ಯಾಣಿ ಅಚಾರ್ಯಾಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಚಾರ್ಯನ ಪತ್ನಿ, ಗುರುಪತ್ನಿ. ಆಚಾರ್ಯಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ-ಆಚಾರ್ಯ "ಆನುಕ್" "ಡೀಪ್" ಚ (೪-೧-೪೯) | "ಶತ್ರುಮೂಲಮನುತ್ವಾಯ ನ ಪುನರ್ದ್ರಷ್ಟು-  
-ಮುತ್ಸಹೇ | ಶ್ಯಮ್ಬಕಂ ದೇವಮಾಚಾರ್ಯಮಾಚಾರ್ಯಾಣಿಂ ಚ ಪಾರ್ವತೀಮ್" ಮಂ.ವಿಂ ೩-೬ |

ಆಚಿಕ್ಷಾಸಾ ಅಚಿಕ್ಷಾಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೇಳಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಆಚಿಕ್ಷಾಸಾ-ಆ+ಚಿಕ್ಷಾ (ಪ್ರಕರ್ತನೆ)+ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩) |

ಆಚಿಕ್ಷಾಸು ಅಚಿಕ್ಷಾಸು (ವಿಂ) ಹೇಳಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಹೇಳಲು ಇಷ್ಟಪಡುವ. ಆಚಿಕ್ಷಾಸು-ಆ+ಚಿಕ್ಷಾ (ಪ್ರಕರ್ತನೆ)+ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩) |

ಆಚಿತ ಅಚಿತ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಬಂಡಿಯ ಹೊರೆ, ಒಂದು ಬಂಡಿಯಲ್ಲಿ ತುಂಬಬಹುದಾದ ಚಿನ್ನ. (ಪುಂ) 2. ಹತ್ತು ಭಾರಗಳ ತೂಕ, 20,000 ಪಲಗಳ ತೂಕ. ಆಚೀಯತೇ-ಆ+ಚಿಕ್ (ಚಯನೆ) "ಕ್" (೩-೨-೧೦೨) | "ಆಚಿತೋ ದಶ ಭಾರಾಃ ಸ್ಯುಃ ಶಾಕಟೋ ಭಾರ ಆಚಿತಃ" ಅಮಂ | ಚಿನ್ನದ ತೂಕ:

|                 |            |
|-----------------|------------|
| 5 ಗುಲಗಂಜಿಗಳ ತೂಕ | 1 ಅದ್ಯಮಾಪಕ |
| 16 ಅದ್ಯಮಾಪಕಗಳು  | 1 ಕರ್ಷ     |
| 4 ಕರ್ಷಗಳು       | 1 ಪಲ       |
| 100 ಪಲಗಳು       | 1 ತುಲ      |
| 20 ತುಲಗಳು       | 1 ಭಾರ      |
| 10 ಭಾರ ಅಥವಾ     |            |
| 200 ತುಲ ಅಥವಾ    | 1 ಅಚಿತ.    |
| 20,000 ಪಲಗಳು    |            |

(ವಿಂ) 3. ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೆದರಲ್ಪಟ್ಟ, ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ. "ವನಾಂತಶಯ್ಯಾಕಠಿನೀಕೃತಾಕೃತೀ ಕಚಾಚಿತೀ ವಿಷ್ವಗಿವಾಗಜೀ ಗಜೀ" ಕಿರಾಂ ೧-೩೬ | 4. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಗಂಟುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅರ್ಧಾಚಿತಾ ಸತ್ವರಮುತ್ಥಿತಾಃ" ಕುಮಾಂ ೭-೬೧ | 5. ತುಂಬಿರುವ. 6. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ. 7. ಒಟ್ಟು ಗೂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 8. ಸಂಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಆಚಿತಿಕ ಅಚಿತಿಕ (ವಿಂ) 1. ಒಂದು ಅಚಿತ ತೂಕದಷ್ಟು ಹಿಡಿಸುವ. 2. ಒಂದು ಅಚಿತಕ್ಕೆ ಸಮವಾದ. 3. ಒಂದು ಅಚಿತದಷ್ಟು ಬೇಯಿಸುವ. ಆಚಿತಂ ಸಂಭವತಿ ಅವಹರತಿ ಪಚತಿ ವಾ "ಠ್" (೪-೧-೫೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | ಆಚಿತಿಕೀ ಅಚಿತಿಕೀ.

ಆಚಿತೀನ್ ಅಚಿತೀನ್ (ವಿಂ) "ಆಚಿತಿಕ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಆಚಿತಂ ಸಂಭವತ್ಯವಹರತಿ ಪಚತಿ ವಾ "ಠ್" (೪-೧-೫೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | ಆಚಿತೀನಾ ಅಚಿತೀನಾ.

ಆಚೂಷಣ ಅಚೂಷಣ (ನಂ) 1. ಬಾಯಿಂದ ಹೀರುವುದು, ನೀರು ಮುಂತಾದುವನ್ನು ಬಾಯೊಳಕ್ಕೆ ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಆ+ಚೂಷ (ಪಾನೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ವಿಷ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ದೇಹದಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ತೆಗೆಯಲು ಮಾಡುವ ಯಂತ್ರವ್ಯಾಪಾರ. 3. ದೇಹದಿಂದ ವಿಷ ಮುಂತಾದುವನ್ನು ಎಳೆಯುವ ಯಂತ್ರ, ಹಿಚಕಾರಿ. ಆ+ಚೂಷ ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) |



**ಆಜ್ಞಾಪನ** ಅಚ್ಛನ್ನ (ವಿಂ) ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ+ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಆಜ್ಞಾಪಕ** ಅಚ್ಛಾದ (ಪುಂ) 1. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. ಆಚ್ಛಾದಿತೇನ-  
ಆ+ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ)+ ಣಿಕ್ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)।  
2. ಹೊದಿಕೆ.

**ಆಜ್ಞಾಪಕ** ಅಚ್ಛಾದಕ (ವಿಂ) 1. ಹೊದಿಸುವ.  
2. ಮುಚ್ಚುವ, ಮರೆಮಾಡುವ. ಆ+ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ)+  
ಣಿಕ್ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೩)।

**ಆಜ್ಞಾಪನ** ಅಚ್ಛಾದನ (ನಂ) 1. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. ಆ+ಛದ  
(ಅಪವಾರಣೆ)+ ಣಿಕ್ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)।  
"ಸಮಾಧೇತಾ: ಸದಾ ಪೂಜ್ಯಾ: ಭೂಷಣಾಚ್ಛಾದನಾಶನೇ:" ಮನುಂ  
೧-೫೯। 2. ಮುಚ್ಚಳ. 3. ಮುಚ್ಚುವಿಕೆ. ಭಾವೇ  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ಆಜ್ಞಾಪಿತ** ಅಚ್ಛಾದಿತ (ವಿಂ) 1. ಹೊದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
2. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ+ಛದ  
(ಅಪವಾರಣೆ)+ ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಆಚ್ಛಾದಿ-  
ವಾಪಾದಿಗಮ್ಬರಮುಚ್ಚಕೈಗಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೧೯।

**ಆಜ್ಞಾಪಿನ್** ಅಚ್ಛಾದಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಮುಚ್ಚುವ, ಮರೆ  
ಮಾಡುವ. ಆ+ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ)+ ಣಿಕ್ "ಣಿತಿ:"  
(೩-೩-೧೩೪)। "ಸ್ತನಯುಗಪರಿಣಾಹಾಚ್ಛಾದಿನಾ ವಲ್ಕಲೇನ"।  
2. ಹೊದಿಸುವ.

**ಆಜ್ಞಾಪ್ಯ** ಅಚ್ಛಾದ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹೊದಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಡುವ, ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಆ+ಛದ  
(ಅಪವಾರಣೆ)+ ಣಿಕ್ "ಯತ್" (೩-೩-೫೭)। (ಅವ್ಯಂ)  
3. ಮುಚ್ಚಿ, ಮರೆಮಾಡಿ. 4. ಹೊದಿಸಿ. ಆ+ಛದ+ಣಿಕ್  
"ಘ್" (೩-೩-೩೭)।

**ಆಜ್ಞಾಪಿತ** ಅಚ್ಛಾದಿತ (ನಂ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ನಗುವಿಕೆ,  
ಶಬ್ದವಾಗುವಂತೆ ನಗುವುದು. ಆ+ಛರ (ಛೇದನೆ) "ಕ್ತ:"  
(೩-೩-೧೧೪)। 2. ಉಗುರಿನಿಂದ ನುಡಿಸಬಹುದಾದ  
ಒಂದು ವಾದ್ಯ. 3. ಉಗುರಿನಿಂದ ಗೀರುವುದು. (ವಿಂ)  
4. ಮಿಶ್ರವಾದ, ಬೆರೆತಿರುವ. 5. ಕೆರಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಹಿಟ್ಟುಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।  
6. ಉಗುರಿನಿಂದ ಗೀರಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸಾಮೋನ್ಮುಖೇನಾಚ್ಛಾರಿತಾ  
ಶಿವೇನ ದತ್ತೇಶ ಕಾಚಿತ್ ಪುಲಕೇನ ಭೇದೇ" ಭಟಂ  
೧೧-೧೪।

**ಆಜ್ಞಾಪಿತಕ** ಅಚ್ಛಾದಿತಕ (ನಂ) 1. ಶಬ್ದವಾಗುವಂತೆ  
ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ನಗುವಿಕೆ. 2. ಉಗುರಿನಿಂದ ಗೀರುವಿಕೆ.  
ಆಜ್ಞಾಪಿತ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ್ತ:"।

**ಆಚ್ಛೇದ** ಅಚ್ಛೇದ (ಪುಂ) 1. ಸುತ್ತಲೂ ಕತ್ತರಿಸುವುದು.  
2. ಸ್ವಲ್ಪ ಕತ್ತರಿಸುವುದು. ಆ+ಛಿದಿರ್ (ಛೇದಿಕರಣೆ)  
"ಘ್" (೩-೩-೧೮)। 3. ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ ತೆಗೆದು  
ಕೊಳ್ಳುವುದು, ಕಿತ್ತುಕೊಳ್ಳುವುದು.

**ಆಚ್ಛೇದನ** ಅಚ್ಛೇದನ (ನಂ) "ಆಚ್ಛೇದ" ಪದದ ಅರ್ಥ.  
ಆ+ಛಿದಿರ್ (ಛೇದಿಕರಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ಆಚ್ಛೋತನ** ಅಚ್ಛೋಟನ (ನಂ) ಚುಟಿಕೆಹಾಕುವುದು,  
ಶಬ್ದವಾಗುವಂತೆ ಬೆರಳುಗಳ ಉಜ್ಜುವಿಕೆ. ಆ+ಛುಟ್  
(ಛೇದನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ಆಚ್ಛೋತಿತ** ಅಚ್ಛೋಟಿತ (ವಿಂ) ಚುಟಿಕೆಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಉಜ್ಜುವಿಕೆಯಿಂದ ಶಬ್ದವಾಡಲ್ಪಟ್ಟ (ಬೆರಳುಗಳು).  
ಆ+ಛುಟ್ (ಛೇದನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಆಚ್ಛೋದನ** ಅಚ್ಛೋದನ (ನಂ) ಬೇಟೆ. ಆಚ್ಛಿವತೇನ -  
ಆ+ಛಿದಿರ್ (ಛೇದಿಕರಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)।  
ಪೃಪಂ।

**ಆಜ** ಅಜ (ಪುಂ) 1. ಎಸೆಯುವಿಕೆ. ಅಜ (ಗತಿಕೋಪಣಯೋಃ)  
ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। (ನಂ) 2. ತುಪ್ಪ. ಆ  
ಅಜ್ಯತೇನ - ಆ+ಅಜ್ಜ (ವ್ಯಕ್ತವಾದಿ) "ಕ್ತ:" (ವಾಂ  
೩-೩-೫೮)। 3. ಅಡಿನ ತುಪ್ಪ. (ವಿಂ) 4. ಅಡಿನ  
ಸಂಬಂಧವಾದ, ಅಡಿನ ಮಾಂಸ ಮೊದಲಾದುದು.  
ಅಜಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ಆಜಕ** ಅಜಕ (ನಂ) ಅಡುಗಳ ಸಮೂಹ. ಅಜಾನಾಂ  
ಸಮೂಹ: "ಕುಜ್" (೪-೨-೩೯)।

**ಆಜಗವ** ಅಜಗವ (ನಂ) 1. ಶಿವನ ಧನುಸ್ಸು. ಅಜಗವ  
ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಞ್" (೫-೪-೩೮)। 2. ಶಿವಧನುಸ್ಸಿನಂತೆ  
ದೃಢವಾದ ಧನುಸ್ಸು. "ತಥೇತ್ಯುಕ್ತ್ವಾ ಪೃಥುರ್ವೈಯೋ ಗೃಹೀತ್ವಾಽಽ-  
ಜಗವಂ ಧನ್ಯು:" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೬೯-೩೦।

**ಆಜನನ** ಅಜನನ (ನಂ) 1. ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ ಜನನ.  
ಆ+ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತಭವಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ತೇಷಾ-  
ಮಾಜನನಂ ಪುಣ್ಯಂ ಕರ್ಮಣ: ಪ್ರೀತಿಮಾವಹೇತ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ।  
(ಅವ್ಯಂ) 2. ಜನ್ಮಪರ್ಯಂತ, ಹುಟ್ಟುವವರೆಗೂ.  
3. ಹುಟ್ಟಿದ ಮೊದಲುಗೊಂಡು. ಜನನಮಭಿವ್ಯಾಪ್ಯ।  
ಅವ್ಯಯಿಂ।

**ಆಜನ್ಮ** ಅಜನ್ಮ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಹುಟ್ಟುವ ಪರ್ಯಂತ.  
2. ಹುಟ್ಟಿದ ಮೊದಲುಗೊಂಡು. ಜನ್ಮಾಭಿವ್ಯಾಪ್ಯ।  
ಅವ್ಯಯಿಂ। "ಸೋಹ್ಮಾಜನ್ಮಶುದ್ಧಾನಾಮಾಫಲೋದಯಕರ್ಮಣಾಮ್"  
ರಘುಂ ೧-೫।

**ಆಜನ್ಮಸುರಭಿಪತ್ರ** ಅಜನ ಸುರಭಿಪತ್ರ (ಪುಂ) ಮರುಗ,



ಆಜಾನ ಅಜಾನ (ಪುಂ) 1. ಜನ್ಮ, ಉತ್ಪತ್ತಿ. ಆ+ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತ) "ಘ" (3-3-18). 2. ಪ್ರಕೃತಿ, ಸ್ವಭಾವ. "ಆಜಾನಸ್ಯದವಲೇಪಮಿವಾದಧಾನೇ:" ಯಾದಂ 18-128. 3. ಜನನಸಾಧನ, ಉತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣ. (ಅವ್ಯಂ) 4. ಹುಟ್ಟಿದ ಮೊದಲುಗೊಂಡು. "ಆಜಾನಪಾವನಶೀರಾಂ ವೃಪಾನಂದವಿಧಾಯಿನಿಮ್" ಚಂ ರಾಂ. 5. ಜನರ ಗುಂಪಿನ ಸುತ್ತಲೂ. ಆಸಮಂತಾತ್ ಜಾನಮ್. 6. ಸ್ವಭಾವವಾಗಿ.

ಆಜಾನಜ ಅಜಾನಜ (ಪುಂ) ಸ್ವಾರ್ಥಕರ್ಮಗಳಿಂದ ದೇವತೆಗಳಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದವರು. [ದೇವತೆಗಳು ಅಜಾನಜರೆಂದೂ ಕರ್ಮದೇವತೆಗಳೆಂದೂ ಸಾಮಾನ್ಯ ದೇವತೆಗಳೆಂದೂ ಮೂರು ಬಗೆ. ಸ್ವಾರ್ಥಕರ್ಮಗಳಿಂದ ದೇವತ್ವ ಸಂಪಾದಿಸಿದ ಅಜಾನಜ ದೇವತೆಗಳಿಗಿಂತಲೂ ವೈದಿಕ ಕರ್ಮಗಳಿಂದ ದೇವತೆಗಳಾದ ಕರ್ಮದೇವತೆಗಳೂ ಅವರಿಗಿಂತಲೂ ಹವಿಸ್ಸಿನ ಭಾಗವನ್ನು ಹೊಂದುವ ಅಧಿಕಾರಪಡೆದ ವಸುರುದ್ರಾದಿ ದೇವತೆಗಳೂ ಶ್ರೇಷ್ಠರು.]

ಆಜಾನದೇವ ಅಜಾನದೇವ (ಪುಂ) ಉತ್ಪತ್ತಿಯಿಂದಲೇ ದೇವತ್ವವನ್ನು ಹೊಂದಿದವರು. ಆಜಾನಂ ಜನ್ಮಾರಮ್ಯ ದೇವ:.

ಆಜಾನೇಯ ಅಜಾನೇಯ (ಪುಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಕುದುರೆ, ಒಳ್ಳೆಯ ಜಾತಿ ಕುದುರೆ. ಆಜೇನ ಕ್ಷೇಪಣೇಯಾ:.

ಆಜಿ ಅಜಿ (ಪುಂ) 1. ಮಾರ್ಗ, ರಸ್ತೆ. ಅಜನ್ಯಸ್ಯಾಮ್ — ಅಜ (ಗತಿಕ್ಷೇಪಣಯೋ:) "ಇ" (ವಾಂ 3-3-108). 2. ದಶರಥ. 3. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಅಜಸ್ಯ ಅಜಮಹಾರಾಜಸ್ಯ ವಿಷ್ಣೋರ್ವಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಇ" (4-1-95). 4. ಆಕ್ಷೇಪ. 5. ನಿಮಿಷ, ಕ್ಷಣ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 6. ಯುದ್ಧ. "ತೇ ತು ಯಾವಂತ ಏವಾಜಿ ತಾವಾಂಶ್ಚ ದದೃಶೇ ಸ ತೈ:" ರಘುಂ 12-45. 7. ಸಮಭೂಮಿ. "ಆಜಿ: ಕ್ಷಣೇ ಸಮಭೂಮಾಂ ಯುಧಿ" ಹೇಮಂ.

ಆಜಿಗೋಷ ಅಜಿಗೋಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಯಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಜಯದಲ್ಲಿ ಆಸೆ. ಆ+ಜಿ (ಜಯೇ)+ಸನ್ "ಅ:" (3-3-102).

ಆಜಿಗೋಷ ಅಜಿಗೋಷಾ (ವಿಂ) ಜಯಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ ಯುಳ್ಳ. ಆ+ಜಿ (ಜಯೇ)+ಸನ್ "ಃ:" (3-2-168).

ಆಜಿಹೋಷಿ ಅಜಿಹೋಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಬರಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ತರಲು ಆಸೆ. ಆಹತುಮಿಚ್ಛಾ — ಆ+ಹ್ (ಹರಣೇ)+ಸನ್ "ಅ:" (3-3-102).

ಆಜಿಹೋಷಿ ಅಜಿಹೋಷಾ (ವಿಂ) ತೆಗೆದುಕೊಂಡುಬರಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. ಆಹತುಮಿಚ್ಛು: — ಆ+ಹ್ (ಹರಣೇ)+ಸನ್ "ಃ:" (3-2-168).

ಆಜಿವ ಅಜೀವ (ಪುಂ) 1. ಶರೀರ ಪೋಷಣೆ, ಹೊಟ್ಟೆ ಪಾಡು. ಆ+ಜಿವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಘ" (3-3-18). 2. ಉದ್ಯೋಗ, ಕಸಬು, ವೃತ್ತಿ, ಜೀವನೋಪಾಯ. ಆಜಿವತ್ಯನೇನ ಕರಂ "ಘ" (3-3-121). "ವಿಶುದ್ಧ ಇದಾನಿಮಾಜಿವ:" ಶಾಕುಂ 6. 3. ಕಸಬುದಾರ. ಆಜಿವತಿ — ಕರಂ "ಅ" (3-1-134). (ಅವ್ಯಂ) 4. ಬದುಕಿರುವವರೆಗೂ. ಜೀವಮಭಿವ್ಯಾಪ್ಯ. ಅವ್ಯಯಿಂ.

ಆಜಿವಕ ಅಜೀವಕ (ಪುಂ) ಭಿಕ್ಷು ಕ, ತಿರುಕ. ಆಜಿವತಿ — ಆ+ಜಿವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಘ" (3-1-133).

ಆಜಿವನ ಅಜೀವನ (ನಂ) 1. ಪೋಷಣೆ, ಹೊಟ್ಟೆ ಪಾಡು. ಆ+ಜಿವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-115). 2. ಉದ್ಯೋಗ, ಕಸಬು, ವೃತ್ತಿ. ಆಜಿವತ್ಯನೇನ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-116).

ಆಜಿವಿಕಾ ಅಜೀವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉದ್ಯೋಗ, ಕಸಬು. ಆ+ಜಿವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ)+ಣಿಕ್ "ಘ" (3-1-133). "ಆಯೇ, ಕಲೇತಿ ಶಿಕ್ಷಿತಾ. ಆಜಿವಿಕೇದಾನಿ ಸಂವೃತ್ತಾ" ಮೃಚ್ಛಂ 2.

ಆಜಿವ್ಯ ಅಜೀವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಜೀವನಕ್ಕಾಗಿ ಆಶ್ರಯಿಸಲ್ಪಡುವವನು. ಆ+ಜಿವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಘ" (3-1-124). 2. ಜೀವನಕ್ಕಾಗಿ ಸೇರಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ದೇಶ.

ಆಜ್ ಅಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೂಲಿ ಕೊಡದೆ ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ ಕೆಲಸ ಮಾಡಿಸುವಿಕೆ. 2. ಭದ್ರವೆಂಬ ಒಂದು ಕರಣ. ಆಜುಘತೇನಯಾ ನರಕಮ್. (ವಿಂ) 3. ಕೂಲಿ ಕೊಡದೆ ಕೆಲಸ ಮಾಡಿಸುವವನು. ಆಜವತಿ — ಆ+ಜ್ (ಗತೌ) "ಕ್ವಿ" (3-2-168). 4. ಕೂಲಿ ಪಡೆಯದೆ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು.

ಆಜ್ ಅಜಾರ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಿಷ್ಠೆ, ಕೂಲಿ ಕೊಡದೆ ಕೆಲಸ ಮಾಡಿಸುವಿಕೆ. ಆ+ಜ್ವರ (ರೋಗೇ) "ಕ್ವಿ" (3-2-168). "ಙ್" (6-4-20). (ವಿಂ) 2. ಸಂತಾಪವುಳ್ಳವನು.

ಆಜ್ಞಾ ಅಜ್ಞಾ (ವಿಂ) 1. ಅಪ್ಪಣೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ+ಜ್ಞ (ಜ್ಞಾನೇ)+ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಆಜ್ಞಾಪ್ತಾಸ್ಮಿ ದೇವ್ಯಾ ಧಾರಿಣ್ಯಾ. ಅಚಿರಪ್ರವೃತ್ತೋಪದೇಶಂ ಛಲಿಕಂ ನಾಮ ನಾಟಕಮಂತರೇಣ ಆರ್ಯಗಣದಾಸಂ ಪ್ರಘ್ನುಮ್" ಮಾಲಂ 1. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ+ಜ್ಞ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102).

ಆಜ್ಞಾಪ್ತಿ ಅಜ್ಞಾಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಜ್ಞೆ, ಅಪ್ಪಣೆ. ಆ+ಜ್ಞ (ಜ್ಞಾನೇ)+ಣಿಕ್ "ಕ್ವಿ" (3-3-94).



**ಆಜ್ಞಾ ಅಜ್ಞಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಪ್ಪಣೆ. ಆ+ಜ್ಞಾ (ನಿಯೋಗಿ)  
“ವಹ” (೩-೩-೧೦೬)। “ಆಜ್ಞಾಮವಾಪ್ಯ ಮಹತೀಂ ದ್ವಿಪತಾಂ  
ನಿಪಾತಾಭಿವೃತ್ಯಂ ತಾಂ ಸಪದಿ ಲಬ್ಧಸುಖಪ್ರಸಾದಃ” ಪ್ರಬೋಧಂ  
೩-೨೪। 2. ಜನ್ಮಲಗ್ನದಿಂದ ಹತ್ತನೆಯ ಸ್ಥಾನ.

**ಆಜ್ಞಾಕರ ಅಜ್ಞಾಕರ** (ವಿಂ) ಸೇವಕ, ಅಳು, ಅಪ್ಪಣೆ  
ಯಂತೆ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು. ಕರೋತಿ—ಓ ಕೃತ್  
(ಕರಣಿ) “ಅವ್” (೩-೧-೧೩೪)। ಆಜ್ಞಾಪಾ: ಕರ:।

**ಆಜ್ಞಾಕಾರಿನ್ ಅಜ್ಞಾಕಾರಿನ್** (ವಿಂ) ಅಪ್ಪಣೆಯಂತೆ  
ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು, ಅಪ್ಪಣೆಯನ್ನು ನಡೆಸುವವನು.

**ಆಜ್ಞಾ ಕರೋತಿ**—ಓ ಕೃತ್ (ಕರಣಿ) “ಗಿಣಿ:” (೩-೧-೧೩೪)।

**ನಿವಾಪ್ಯಾ** “ಕೀಪ್” (೪-೧-೫)। -ಕಾರಿಣಿ-ಕಾರಿಣೀ.

**ಆಜ್ಞಾಚಕ್ರ ಅಜ್ಞಾಚಕ್ರ** (ನಂ) ದೇಹದಲ್ಲಿರುವ ಸುಷುಮ್ನಾ  
ಸಾಧಿಯ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ  
ದ್ವಿದಳಪದ್ಮಾಕಾರದ ಒಂದು ಚಕ್ರ. “ಆಜ್ಞಾಚಕ್ರತದ್ಧವಂ ತು  
ಜ್ಞಾನಗೋಷ್ಠಿಪಿಠಿತಂ ಪರಮ್। ಆಜ್ಞಾಸಂಕ್ರಮಣಂ ತತ್ರ ಗುರೋರಾಜ್ಞೇತಿ  
ಕೀರ್ತಿತಾ”। [ಈ ಅಜ್ಞಾಚಕ್ರದಲ್ಲಿ ಮನಸ್ಸನ್ನು  
ಏಳು ಧ್ಯಾನಮಾಡುತ್ತಿರುವವನಿಗೆ ಸಕಲವಸ್ತುಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವೂ,  
ಕಾಲತ್ರಯಜ್ಞಾನವೂ ಉಂಟಾಗಿ ಅದಕ್ಕೂ  
ದೇವರ ಸಹಸ್ರದಳ ಕಮಲದಲ್ಲಿರುವ ಪರಮ ಗುರುವಾದ  
ಶಕ್ತಿಯರನ “ಇನ್ನುಮುಂದೆ ನೀನು ಈ ರೀತಿ ನಡೆಯು  
ವೀಳು” ಎಂಬ ಆಜ್ಞೆಯು ಈ ಚಕ್ರದಮೇಲೆ ಸಂಕ್ರಾಂತ  
ವಾಗುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ “ಆಜ್ಞಾಚಕ್ರ” ಎಂದು ಹೆಸರು.]

**ಆಜ್ಞಾನ ಅಜ್ಞಾನ** (ನಂ) ಆಜ್ಞೆಯಂತೆ ನಡೆಯುವುದು,  
ಅಜ್ಞೆಯನ್ನು ಪಾಲಿಸುವುದು.

**ಆಜ್ಞಾನುಗ ಅಜ್ಞಾನುಗ** (ಪುಂ) ಅಪ್ಪಣೆಯಂತೆ ನಡೆಯು  
ವವನು. ಆಜ್ಞಾಮನುಗಚ್ಛತಿ—ಆಜ್ಞಾ+ಅನು+ಗಮ್ (ಗತೌ)  
“ಕ” (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)।

**ಆಜ್ಞಾನುಗಾಮಿನ್ ಅಜ್ಞಾನುಗಾಮಿನ್** (ವಿಂ) ಅಪ್ಪಣೆ  
ಯಂತೆ ನಡೆಯುವವನು. ಆಜ್ಞಾಮನುಗಚ್ಛತಿ—ಆ+  
ಗಮ್+ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಗಿಣಿ:” (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ಕೀಪ್” (೪-೧-೫)। -ಅನುಗಾಮಿನಿ-ಅನುಗಾಮಿನೀ.

**ಆಜ್ಞಾನುಪಾಯಿನ್ ಅಜ್ಞಾನುಪಾಯಿನ್** -ಅನುವರ್ತಿನ್  
-ಅನುವರ್ತಿನಿ, -ಅನುಸಾರಿನ್ -ಅನುಸಾರಿನಿ  
(ವಿಂ) ಅಪ್ಪಣೆಯಂತೆ ನಡೆಯುವ, ಅಜ್ಞೆಯನ್ನು  
ಪಾಲಿಸುವ. ಆಜ್ಞಾಮನುಪಾಯಿತಿ ಅನುವರ್ತತೆ ಅನುಸರತಿ ವಾ  
“ಗಿಣಿ:” (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಕೀಪ್” (೪-೧-೫)।  
-ಅನುಪಾಯಿನಿ-ಅನುಪಾಯಿನೀ, -ಅನುವರ್ತಿನಿ-ಅನು  
ವರ್ತಿನೀ, -ಅನುಸಾರಿನಿ-ಅನುಸಾರಿನೀ.

**ಆಜ್ಞಾಪಕ ಅಜ್ಞಾಪಕ** (ವಿಂ) ಅಪ್ಪಣೆ ಮಾಡುವವನು,  
ಯಜಮಾನ. ಆಜ್ಞಾಪಯತಿ—ಆ+ಜ್ಞಾ (ನಿಯೋಗಿ)+  
ಗಿಣಿ “ಫುಲ” (೩-೧-೧೩೩)। “ದಾತುಂ ಕ್ಷಮಾಯಾ ದಯಿತೇ  
ತದಾನಿಮಾಜ್ಞಾಪಕೋ ನೂನಮಭೂದನಜ್ಞಃ” ಧಾಂ ೧೩-೫।

**ಆಜ್ಞಾಪತ್ರ ಅಜ್ಞಾಪತ್ರ** (ನಂ) ಅಪ್ಪಣೆಯ ಕಾಗದ,  
ಶಾಸನಮಾಡಿ ಹೊರಡಿಸುವ ಪತ್ರ. ಆಜ್ಞಾಸೂಚಕಂ ಪತ್ರಮ್।

**ಆಜ್ಞಾಪನ ಅಜ್ಞಾಪನ** (ನಂ) 1. ಅಪ್ಪಣೆ ಮಾಡುವುದು.  
2. ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವುದು. ಆ+ಜ್ಞಾ (ನಿಯೋಗಿ)+ಗಿಣಿ  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

**ಆಜ್ಞಾಭಜ್ಞ ಅಜ್ಞಾಭಜ್ಞ** (ಪುಂ) 1. ಶಾಸನವನ್ನು ಮುರಿ  
ಯುವುದು, ಅಪ್ಪಣೆಯನ್ನು ಮುರಿ ನಡೆಯುವುದು.  
ಆಜ್ಞಾಪಾ ಭಜ್ಞಃ। “ನಾಜ್ಞಾಭಜ್ಞಂ ಸಹಂತೇ ನೃವರ! ನೃಪತಯಸ್ತ್ವಾ-  
ದೃಶಾ: ಸಾರ್ವಭೌಮಾ:” ಮುಡ್ರಾಂ ೩-೨೨। 2. ರಾಜದ್ರೋಹ.

**ಆಜ್ಞಾವಹ ಅಜ್ಞಾವಹ** (ವಿಂ) ವಿಧೇಯ, ಸೇವಕ, ಅಪ್ಪಣೆ  
ಯಂತೆ ನಡೆಯುವವನು. ವಹತಿ—ವಹ (ಪ್ರಾಪಣಿ) “ಅವ್”  
(೩-೧-೧೩೪)। ಆಜ್ಞಾಪಾ ವಹ:।

**ಆಜ್ಯ ಅಜ್ಯ** (ನಂ) ಘೃತ, ತುಪ್ಪ. ಆ+ಅಜ್ಯ  
(ವ್ಯಕ್ತಿರಲಕ್ಷಣವಾಂತಿಗತಿಪು) “ಕಯ್” (ವಾಂ ೬-೧-೭೧)।  
“ಅನ್ವದೀಪಿ ಗರ್ಹತ: ಪ್ರತಾಪವಾನಾಜ್ಯತಿಕ ಇವ ವಹ್ನಿರಾಧವರ:”  
ಧಾಂ ೧೭-೫೫।

**ಆಜ್ಯದೋಹ ಅಜ್ಯದೋಹ** (ನಂ) ಸಾಮವೇದದ ಒಂದು  
ಸೂಕ್ತ.

**ಆಜ್ಯಪ ಅಜ್ಯಪ** (ಪುಂ ವಂ ವಂ) 1. ವೈಶ್ಯರ ಪಿತೃದೇವತೆ  
ಗಳು, ಪುಲಸ್ತ್ಯನ ಪುತ್ರರು. “ಸೋಮಪಾ ನಾಮ ವಿಪ್ರಾಣಾಂ  
ಕ್ಷತ್ರಿಯಾಣಾಂ ಹವಿರ್ಮುಜ:। ವೈದ್ಯಾನಾಮಾಜ್ಯಪಾ ನಾಮ ಶೂದ್ರಾಣಾಂ  
ತು ಸುಕಾಲಿನ:” ಮನುಂ ೩-೧೯೭। (ವಿಂ) 2. ತುಪ್ಪವನ್ನು  
ಕುಡಿಯುವ. ಆಜ್ಯಂ ಪಿವತಿ—ಪಾ(ಪಾನಿ) “ಕ:” (೩-೨-೩)।

**ಆಜ್ಯಪಾತ್ರ ಅಜ್ಯಪಾತ್ರ** (ನಂ) ಹೋಮಕ್ಕಾಗಿ ಕರಗಿಸಿದ  
ತುಪ್ಪವನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವ ಪಾತ್ರೆ.

**ಆಜ್ಯಭುಜ್ ಅಜ್ಯಭುಜ್** (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಆಜ್ಯಂ  
ಮನ್ತ್ರಪೂರ್ವಕಂ ಪ್ರಕ್ಷಿಪ್ತಂ ಸರ್ಪಿ: ಭುಜ್ತೇ—ಭುಜ (ಪಾಲನಾಭ್ಯವ-  
ಹಾರಯಿ: “ಕ್ರಿಪ್” (೩-೧-೭೬)।

**ಆಜ್ಞನ ಅಂಜನ** (ಪುಂ) 1. ಅಂಜನೇಯ, ಹನುಮಂತ.  
ಅಜ್ಞನಾಪಾ ಅಯಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦)। (ನಂ) 2.  
ಸುತ್ತಲೂ ಅಂಜನವನ್ನು ಹಾಕುವಿಕೆ. ಆ+ಅಜ್ಞ  
(ವ್ಯಕ್ತ್ಯಾದೌ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। (ವಿಂ) 3.  
ಕಣ್ಣಿನ ಮುಲಾಮಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಕಾಡಿಗೆ (ಕಣ್ಣಿನ  
ಕಪ್ಪು) ಸಂಬಂಧವಾದ. ಅಜ್ಞನಸ್ಯೇದಮ್।



ಆಜ್ಞಾನೇಯ ಅಂಜನೇಯ (ಪುಂ) ಹನುಮಂತ, ಅಂಜನಾ ದೇವಿಯ ಮಗ. ಅಜ್ಞನಾಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಢಕ್" (೪-೧-೧೨೦)।

ಆರ್ತವಿಕ ಅಟಿವಿಕ (ವಿಂ) 1. ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವವನು, ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವವನು. ಅಟವ್ಯಾಂ ಚರತಿ ಭವೋ ವಾ "ಠಕ್" (೪-೩-೬೭)। "ದಂಡೆ ಸುಹೃತ್ಕುಮಾರಾ-  
ಟವಿಕಾ ಸಾಮಂತಸೇನಿಕಾಧೀಶ್ವ" ಸಾಂ ದಂ 1. 2. ಅರು ವಿಧ ಸೈನ್ಯಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಷಡ್ವಿಂಶ ಬಲಮಾಧಾಯ ಪ್ರತಸ್ಥೇ ದಿಗ್ವಿ-  
ಗಿಷಯಾ" (ರಘುಂ ೪-೨೬) ಎಂಬ ಶ್ಲೋಕದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನದಲ್ಲಿ ಮಲ್ಲಿನಾಥನು "ಮೌಲಂ ಭೃತ್ಯಃ ಸುಹೃತ್ಕೇಣಿಧಿವದಾರ್ತವಿಕಂ ಬಲಮ್" ಎಂದು ಕೋಶಪ್ರಮಾಣವನ್ನು ಕೊಟ್ಟಿರುತ್ತಾನೆ.

ಆರ್ತ ಅಟಿ (ಪುಂ) 1. ಮರಕುಟಿಗ ಹಕ್ಕಿ. ಆ ಅರ್ತತಿ-ಅರ್ತ (ಗತೌ) "ಙ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭)। 2. ಒಂದು ಜಾತಿ ಮೀನು.

ಆರ್ತಿಕನ ಅಟೀಕನ (ನಂ) 1. ಸಣ್ಣ ಕರುಗಳ ಹಾರಾಟ, ಕರುಗಳು ನೆಗೆಯುತ್ತ ನಡೆಯುವುದು. ಆ + ಟೀಕ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ವೇಗವಾಗಿ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳುವುದು.

ಆರ್ತೀಮುಖ ಅಟೀಮುಖ (ನಂ) ಮರಕುಟಿಗ ಹಕ್ಕಿಯ ಮುಖದಂತಿರುವ ಆಯುಧ, ರಕ್ತವನ್ನು ಹೊರ ತೆಗೆಯಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ಶಸ್ತ್ರ. ಆರ್ತಾಃ ಮುಖಮಿವ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ।

ಆರ್ತೋಪ ಅಟೋಪ (ಪುಂ) 1. ದರ್ಪ, ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ. ಆ + ತುಪ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಘ್" (೩-೩-೧೧)। ಪೃಷಂ 1. 2. ಆಡಂಬರ, ತೋರಿಕೆ, ಪ್ರದರ್ಶನ. ಪಟಾರೋಪಃ, ಧನಪಟಾರೋಪಃ। 3. ಸಂರಂಭ, ಸಡಗರ. "ಸಾರೋಪಮುಖಿ-  
ಮನಿಶಂ ನದಂತಃ" ಮಾಘಂ ೩-೭೪। 4. ಹೊಟ್ಟೆಯೊಳಗಿನ ವಾಯುವಿನ ಶಬ್ದ. "ಆಮಾರೋಪಾಪಚಿಶ್ಲೇಷಗುಲಮೇ ತ್ರಿಮಿ-  
ವಿಕಾರಿಣಾಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ 1.

ಆಡಂಬರ ಅಡಂಬರ (ಪುಂ) 1. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. 2. ತುತೂರಿಯ ಶಬ್ದ. 3. ತೋರಿಕೆ, ಪ್ರದರ್ಶನ. 4. ಪ್ರಾರಂಭ. 5. ಸಂರಂಭ. 6. ದರ್ಪ, ಅಹಂಕಾರ. 7. ಅನೇಯ ಗರ್ವನೆ. 8. ಎನೆ, ರೆಪ್ಪೆ. 9. ಯುದ್ಧದ ನಗಾರಿ. ಆ + ಡವಿ (ಧೀಪೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೧)। ಆಡಂಬರಾತಿ - ರಾ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)। "ಆಡಂಬರಃ ಸಮಾರಂಭೇ ಗಜಗರ್ಜಿತತುರೈರಯೋಃ" ವಿಶ್ವಂ 1. "ಆಡಂಬರ-  
ಸ್ತುರೈರಯೋಃ ಸಮಾರಂಭೇ ಗಜಗರ್ಜಿತೇ" ಮೇದಿಂ 1.

ಆಡಿ ಅಡಿ (ಪುಂ) 1. ಮರಕುಟಿಗ ಹಕ್ಕಿ. 2. ಒಂದು ಜಾತಿ ಮೀನು. ಆ + ಅಡಿ (ಅಧೀಮೇ) "ಙ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ವಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೫)। ಆಡಿ ಅಡಿ.

ಆಡು ಅಡೂ (ಪುಂ) ತೆಪ್ಪ. ಅಣ (ಶಬ್ದ) "ಙ್" ಡಶಾ-  
ದೇಶಃ (೩ಂ ೧-೮೬)। ಜಲಪ್ಲವದ್ವಯಮ್ ಸಿಂ ಕೌಂ 1.

ಆಡಕ ಅಡಕ (ಪುಂ) ಒಂದು ಕೊಳಗ. ಆಡೋಕತೇ - ಡೊಕ (ಗತೌ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಪೃಷಂ 1. ಈ ಕೊಳಗವು ದ್ರೋಣದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. ನಾಲ್ಕು ಪ್ರಸ್ಥಗಳ ಅಥವಾ ಹದಿನಾರು ಕುಡವಗಳ ಅಳತೆ.

ಆಡಕಿಕ ಅಡಕಿಕ (ವಿಂ) 1. ಒಂದು ಕೊಳಗ ಧಾನ್ಯವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಹೋಗಬಹುದಾದ. 2. ಒಂದು ಕೊಳಗ ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಇಡಬಹುದಾದ. 3. ಒಂದು ಕೊಳಗ ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಬೇಯಿಸಬಹುದಾದ. ಆಡಕಂ ಸಮಭವತ್ಯವಹರತಿ ಪಚತಿ ವಾ "ಠಕ್" (೪-೧-೫೩)।

ಆಡಕೀ ಅಡಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತೊಗರಿ. 2. ಸುವಾಸನೆಯುಳ್ಳ ಭೂಮಿ.

ಆಡಕೀನ ಅಡಕೀನ (ವಿಂ) "ಆಡಕಿಕ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಆಡಕಂ ಸಮಭವತ್ಯವಹರತಿ ಪಚತಿ ವಾ "ಠಕ್" (೪-೧-೫೩)।

ಆಡ್ಯ ಅಡ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಧನಿಕ, ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ, ಆ + ಧ್ಯ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ಕಃ" (೩-೨-೧೩೬)। ಪೃಷಂ 1. "ಆಡ್ಯೋಽ-  
ಭಿಜನವಾನಸ್ಮಿ ಕೋಽನ್ಯೋಽಸ್ತಿ ಸದೃಶೋ ಮಯಾ" ಗೀತಾ ೧೬-೧೫। 2. ಕೂಡಿರುವ, ತುಂಬಿರುವ. ಧನಾಡ್ಯಃ ಸತ್ಯಾಡ್ಯಃ। 3. ಬೆರೆತಿರುವ, ಮಿಶ್ರವಾದ, 4. ಸಮೃದ್ಧವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ, ಧಾರಾಳವಾದ.

ಆಡ್ಯಕುಲೀನ ಅಡ್ಯಕುಲೀನ (ವಿಂ) ಶ್ರೀಮಂತನ ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಐಶ್ವರ್ಯವಂತನ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಆಡ್ಯಕುಲೇ ಭವಃ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೩೯)।

ಆಡ್ಯಚ್ಚರಣ ಅಡ್ಯಚ್ಚರಣ (ನಂ) ಧನಿಕನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವ ಉಪಾಯ, -ಸಾಧನ, ಐಶ್ವರ್ಯವಂತನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವ ದ್ರವ್ಯಾನುಕೂಲ್ಯ. ಅನಾಡ್ಯಮ್ ಆಡ್ಯಂ ಕರೋತ್ಯನೇನ-ಆಡ್ಯ+ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) "ಝುನ್" (೩-೨-೫೬)। ಮು (೬-೩-೬೭)।

ಆಡ್ಯಚರ ಅಡ್ಯಚರ (ವಿಂ) ಹಿಂದೆ ಧನಿಕನಾಗಿದ್ದವನು, ಈಗ ಬಡವನಾಗಿರುವವನು. ಭೂತಪೂರ್ವಃ ಆಡ್ಯಃ "ಚರಟ್" (೪-೩-೫೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" -ಚರೀ -ಚರೀ.

ಆಡ್ಯತಮ ಅಡ್ಯತಮ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ. ಅತಿಸುಖೇನಾಡ್ಯಃ "ತಮಪ್" (೪-೩-೫೫)।

ಆಡ್ಯಮವಿಷ್ಣು ಅಡ್ಯಂಭವಿಷ್ಣು (ವಿಂ) ಧನಿಕನಾಗಿ ಆಗುವವನು, ದರಿದ್ರನಾಗಿದ್ದು ಐಶ್ವರ್ಯವನ್ನು ಪಡೆಯುವವನು. ಅನಾಡ್ಯಃ ಆಡ್ಯೋ ಭವತಿ "ಖಿಣ್ಣುಕ್" (೩-೨-೫೭)। "ಆಡ್ಯಮವಿಷ್ಣುರೃಷಾ ಕುಮಾರಃ" ಭಟ್ಟಂ ೩-೧।



ಆಡ್ಯಮ್ಭಾವುಕ ಅಡ್ಯಂಭಾವುಕ (ವಿಂ) "ಆಡ್ಯಮ್ಭಾವು" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅನಾಡ್ಯ: ಆಡ್ಯೋ ಭವತಿ "ಉಕ್ತ" (೩-೨-೪೭)। ಮು (೬-೩-೬೭)।

ಆಡ್ಯತಾ ಅಡ್ಯತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಐಶ್ವರ್ಯ, ಸಮೃದ್ಧಿ, ಶ್ರೀಮಂತತನ. ಆಡ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)।

ಆಣಕ ಅಣಕ (ನಂ) 1. ಒಂದು ವಿಧ ಸಂಭೋಗ. "ಆಣಕಂ ಸುರತಂ ನಾಮ ದಂಪತ್ಯೋ: ಪಾರ್ವಸಂಸ್ಥಯೋ:" (ವಿಂ) 2. ಅಧಮ, ನೀಚ. ಅಣತಿ - ಅಣ (ಶಬ್ದ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಕುತ್ಸಾಯಾಂ "ಕನ್" (೪-೩-೭೪)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮)।

ಆಣವ ಅಣವ (ನಂ) ಅಣುತ್ತ. ಅಣೋರ್ಭವಿ: "ಅನ್" (೪-೧-೧೨೨)।

ಆಣವಮಲ ಅಣವಮಲ (ನಂ) ಏಕದಲ್ಲಿ ಅನೇಕತ್ವಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ಮೂಲಮಹಾವಾಯು. [ಈ ಅಣವ ಮಲದಿಂದ ಎಲ್ಲ ಜೀವಗಳೂ ಶಿವಭಾವವನ್ನು ಕಳೆದು ಕೊಂಡು ಜೀವಭಾವವನ್ನು ತಾಳುವುವು.]

ಆಣವೀನ ಅಣವೀನ (ನಂ) ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಧಾನ್ಯಗಳು ಬೆಳೆಯುವ ಭೂಮಿ, ಕಿರುನೆಲ್ಲು ಕಿರುನವಣಿ ಮೊದಲಾದುವು ಬೆಳೆಯುವ ಕ್ಷೇತ್ರ. ಅಣುನಾಂ ಭವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ - ಅನ್ "ಉಕ್ತ" (೪-೨-೧)।

ಆಣವ್ಯ ಅಣವ್ಯ (ನಂ) "ಆಣವೀನ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅಣುನಾಂ ಭವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ "ಯತ್" (೪-೨-೪)।

ಆಣಿ ಅಣಿ (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಂಡಿಯ ಕಡಾಣ, ಚಕ್ರವು ಬೀಳದಂತೆ ತಡೆಗಟ್ಟುವ ಕಬ್ಬಿಣದ ಸಲಾಕೆ, ಗಾಲಿಯ ಕೀಲು. 2. ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ, ಮರ್ಯಾದೆ. 3. ಕತ್ತಿಯ ತುದಿ. ಅಣ (ಶಬ್ದ) "ಇನ್" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮)।

"ಅಣಿರಾಣಿವದಕ್ಷಾಗ್ರಕೀಲಾಶ್ರಿಸಿಮಮು ದ್ವಯೋ:" ಮೇದಿಂ।

ಆಂಡ ಅಂಡ (ಪುಂ) 1. ಹಿರಣ್ಯಗರ್ಭ, ಬ್ರಹ್ಮ. ಅಂಡೇ ಭವ: "ಅನ್" (೪-೩-೪೩)। "ಅಪ್ ಎವ ಸಸರ್ಜಾದೌ ತಾಸು ವೀರ್ಯಮವಾಸೃಜತ್। ತದಂಡಮಭವದ್ವೈಮಂ ಸಹಸ್ರಾಂಶುಸಮಪ್ರಭಮ್। ತಸ್ಮಿನ್ ಜಜ್ಞೇ ಸ್ವಯಂ ಬ್ರಹ್ಮಾ ಸರ್ವಲೋಕಪಿತಾಮಹ:" ಮನ್ ೧-೮, ೯। (ನಂ) 2. ಮೊಟ್ಟೆಗಳ ರಾಶಿ. ಅಂಡಾನಾಂ ಸಮಹ: "ಅನ್" (೪-೨-೩೭)। 3. ಪುರುಷನ ವೃಷಣದ ಕೋಶ. (ವಿಂ) 4. ಮೊಟ್ಟೆಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಹಕ್ಕಿ ಮೊದಲಾದುದು.

ಆಂಡಜ ಅಂಡಜ (ಪುಂ) ಮೊಟ್ಟೆಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ 1. ಹಕ್ಕಿ. 2. ಸರ್ಪ, ಹಾವು ಮುಂತಾದುದು. ಅಂಡಾತ್ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುರ್ಭವಿ) "ಙ:" (೩-೨-೯೬)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್"

(೪-೪-೩೮)। 3. ಹಕ್ಕಿ ಮತ್ತು ಹಾವಿನ ಶರೀರ. ಅಂಡಜಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

ಆಂಡಾಯನ್ ಅಂಡಾಯನ್ (ವಿಂ) ತತ್ತಿಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ, ಮೊಟ್ಟೆಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅಂಡೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್ - ಅಂಡ "ಫಕ್" (೪-೨-೮೦)।

ಆತ್ ಆತ್ (ಪುಂ) "ಆ" ಕರ, ಆ ಎಂಬ ಅಕ್ಷರ. "ವೃದ್ಧಿರಾದೇಚ್" (ಪಾಂ ಸ್ತಂ ೧-೧-೧)।

ಆತ ಆತ (ವಿಂ) ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡಿರುವ. ಆ+ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।

ಆತಕ ಆತಕ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಸರ್ಪ. (ವಿಂ) 2. ಯಾವಾಗಲೂ ಸಂಚರಿಸುವ. ಆ+ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಆತಕ್ಕ ಆತಕ್ಕ (ಪುಂ) 1. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. ಆ+ತಕ್ಕಿ (ಕುಚ್ಛಜೀವನ) "ಘತ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ದೀರ್ಘತೀವ್ರಾಮಯ-ಗ್ರಸ್ತಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ಗಾಮಥಾಪಿ ವಾ। ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಪಥಿ ನಿರಾತಕ್ಕಂ ಕೃತ್ವಾ ತು ಬ್ರಹ್ಮಹಾ ಶುಚಿ:" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೨೪೫। 2. ತಾಪ, ಜ್ವರ. "ಆತಕ್ಕಶ್ರಮಸಾಧ್ಯಸವ್ಯತಿಕರೋತ್ಕಂಪ: ಕಥಂ ಸಹ್ಯ-ತಾಮ್" ಮಂ ವೀಂ ೨-೨೧। 3. ಸಂಶಯ, ಸಂದೇಹ, ಶಂಕೆ. 4. ಭಯ, ದಿಗಿಲು. "ಪುರುಷಾಃ ಪೃಥಿವೀವಿನ್ಯೋ ನಿರಾತಕ್ಕಾ ನಿರೀತಯ:" ರಘುಂ ೧-೬೩। 5. ಮುರಜ ಧ್ವನಿ, ಮೃದಂಗದ ಶಬ್ದ. "ಆತಕ್ಕೋ ರೋಗಸಂತಾಪಶಕ್ಷಾಸು ಮುರಜಧ್ವನಿ" ಮೇದಿಂ।

ಆತಚ್ಚನ ಆತಚ್ಚನ (ನಂ) 1. ಹಾಲಿಗೆ ಹೆಪ್ಪು ಹಾಕುವುದು. 2. ವೇಗ. 3. ತೃಪ್ತಿ ಪಡಿಸುವಿಕೆ. 4. ಹೆಪ್ಪು ಹಾಕುವ ವಸ್ತು. ಆ+ತಚ್ಚು (ಗತೌ) ಭಾವೇ ಕರಂ ವಾ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫, ೧೭)। "ಆತಚ್ಚನಂ ಪ್ರತಿವಾಪ-ಜವನಾಪ್ಯಾಯನೇಷು ಚ" ಮೇದಿಂ।

ಆತತ ಆತತ (ವಿಂ) ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಸ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನೀಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಂದಕ್ಕೆ ಚಾಚಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ+ತನ್ (ವಿಸ್ತಾರ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಶಾಸ್ತ್ರೇಷ್ವವ್ಯಾಹತಾ ಬುದ್ಧಿ: ಸೌವೀಂ ಧನುಷಿ ಚಾತತಾ" ರಘುಂ ೧-೧೯।

ಆತತಾಯಿನ್ ಆತತಾಯಿನ್ (ವಿಂ) ಕೊಲ್ಲುವ ಪ್ರಯತ್ನವುಳ್ಳವನು, ಕೊಲ್ಲುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಆತತೇನ ವಿಸ್ತೀರ್ಣೇನ ಶಸ್ತ್ರಾದಿನಾ ಅಯಿತು ಶೀಲಮಸ್ಯ - ಅಯ (ಗತೌ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮)। [ಇತರರನ್ನು ಹಿಂಸಿಸುವವರು ಆತತಾಯಿಗಳು.] ಇವರು ಆರು ವಿಧ: "ಅಗ್ನಿದೋ ಗರದಶ್ಚೈವ ಶಸ್ತ್ರಪಾಣಿಧನಾಪಹ:। ಕ್ಷೇತ್ರದಾರಹರಶ್ಚೈವ ಪಡೇತೇ ಹ್ಯಾತತಾಯಿನ:"। "ಅರ್ಚನೀಯಚರಣಾಮ್ಬುಜೇ ಭವತ್ಯಾತತಾಯಿ-ಪದವೀಮುಪೇಯುಷಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೭-೧೧೫।



ಆತನು ಆತನು "ತನು" ಧಾತುವಿನಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಆತನ್ವತ್ ಆತನ್ವತ್ (ವಿಂ) 1. ವಿಸ್ತಾರಗೊಳಿಸುವ, ಹೆಚ್ಚು ಮಾಡುವ. ಆ + ತನು (ವಿಸ್ತಾರೇ) "ಶತ್" (3-2-124). "ಆತನ್ವದ್ವಿಧಿಕ್ವು ತತ್ರಾಗ್ರನಾದಂ ಪ್ರಾಪ್ತ-ದ್ದೂರಾದಾಶು ತೀರ್ಣೈರ್ಮುಖಾಘ್ರೈಃ" ಮಾಘಂ 18-64. 2. ಮಾಡುತ್ತಿರುವ.

ಆತನ್ವಾನ ಆತನ್ವಾನ (ವಿಂ) "ಆತನ್ವತ್" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಆ + ತನು (ವಿಸ್ತಾರೇ) "ಶಾನಚ್" (3-2-124). "ಆತನ್ವಾನಂ ಭುಜಗಶಯನೇ ಕಾಮಪಿ ಕ್ಷೌಮಗೋರೇ ನಿद्रಾಮುद्रಾಂ ನಿಖಿಲಜಗತೀರಕ್ಷಣೇ ಜಾಗರೂಕಾಮ್" ಚಂ ರಾಂ.

ಆತಪ ಆತಪ (ಪುಂ) 1. ಬಿಸಿಲು, ಸೂರ್ಯನ ಪ್ರಕಾಶ. ಆತಪತಿ—ಆ + ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) "ಅಚ್" (3-1-134). "ಆತಪೇ ಧೃತಿಮತಾ ಸಹ ವಧ್ವಾ ಯಾಮಿನೀವಿರಹಿಣಾ ವಿಹಗೇನ" ಕಿರಾಂ 9-30. 2. ಪ್ರಕಾಶ. "ಪ್ರಕಾಶಸ್ತು ದ್ಯೌತ ಆಲೋಕ ಆತಪಃ" ವೈಜಂ.

ಆತಪತ್ರ ಆತಪತ್ರ (ನಂ) ಛತ್ರಿ, ಕೊಡೆ. ಆತಪಾತ್ ತ್ರಾಯತೇ—ತ್ರೈಙ್ (ಪಾಲನೆ) "ಕಃ" (3-2-4). "ಆತಪತ್ರಮಥ ತತ್ಪ್ರಚೇತಸೋ ಮಂದರಸ್ಯ ಮಣಿಶೃಂಗಮುನ್ನತಮ್" ಯಾದಂ 17-1. "ರಾಜ್ಯಂ ಸ್ವಹಸ್ತಧೃತದಂಡಮಿವಾತಪತ್ರಮ್" ಶಾಕುಂ 4-6.

ಆತಪವತ್ ಆತಪವತ್ (ವಿಂ) ಬಿಸಿಲಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಆತಪೋಜ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮನುಪ್" (4-2-94). "ಶೃಂಗಾಣಿ ಯಸ್ಯಾತಪವಂತಿ ಸಿದ್ಧಾಃ" ಕುಮಾಂ 1-4.

ಆತಪವಾರಣ ಆತಪವಾರಣ (ನಂ) ಛತ್ರಿ. ಆತಪಂ ವಾರಯತಿ—ವೃತ್ (ವರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134). "ನೃಪತಿಕುಕುಂದಂ ದತ್ವಾ ಯುನೇ ಸಿತಾತಪವಾರಣಮ್" ರಘುಂ 3-70.

ಆತಪಾತ್ಯಯ ಆತಪಾತ್ಯಯ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯನ ಪ್ರಕಾಶ ಕಡಿಮೆಯಾಗುವುದು. ಆತಪಸ್ಯ ಅತ್ಯಯಃ. "ಆತಪಾತ್ಯಯಸಂಕ್ಷಿಪ್ತನಿವಾರಾಸು ನಿಷಾದಿಭಿಃ" ರಘುಂ 1-42. 2. ಸಾಯಂಕಾಲ. ಆತಪಸ್ಯಾತ್ಯಯೋ ಯತ್ರ.

ಆತಪೋಯ ಆತಪೋಯ (ವಿಂ) ಬಿಸಿಲಿಗೆ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ. ಆತಪಸ್ಯಾದ್ಭವಃ "ಛಃ" (4-2-90).

ಆತಪೋದಕ ಆತಪೋದಕ (ನಂ) ಮೃಗತೃಷ್ಣಿಕೆ, ಬಿಸಿಲು ಗುದುರೆ, ಸೂರ್ಯನ ಕಿರಣದಲ್ಲಿ ಕಾಣುವ ನೀರು. ಆತಪೇ ಸೂರ್ಯಕಿರಣೇ ಲಕ್ಷ್ಯಮಾಣಮುದಕಮ್. [ಮರಳುಗಾಡಿನಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನ ಕಿರಣವು ನೀರಿನಂತೆ ಭ್ರಾಂತಿಯನ್ನು ಹುಟ್ಟಿಸುವುದು.]

ಆತರ ಆತರ (ಪುಂ) ನದಿಯನ್ನು ದಾಟಿಸಲು ಕೊಡುವ ಕೂಲಿ. ಆತರತ್ಯನೇನ—ಆ + ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) "ಅಪ್"

(3-3-47). "ತಸ್ಮೈ ಸೌಮಿತ್ರಮೈಶ್ರೀಮಯಮುಪಕೃತವಾನಾತರಂ ನಾವಿಕಾಯ" ಅನರ್ಥಂ.

ಆತಾಪಿ ಆತಾಪಿ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ, ಅಗಸ್ತ್ಯ ಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ತನ್ನ ಲ್ಪಟ್ಟವನು. "ಆತಾಪಿಭಕ್ಷಿತೋ ಯೇನ ವಾತಾಪಿಶ್ಚ ಮಹಾಸುರಃ. ಸಮುದ್ರಃ ಶೋಷಿತೋ ಯೇನ ಸ ಮೇಘಸ್ತ್ಯಃ ಪ್ರಸೀದತು" 1.

ಆತಾಪಿನ್ ಆತಾಪಿನ್ (ಪುಂ) ಉದ್ದವಾದ ರೆಕ್ಕೆಗಳುಳ್ಳ ಹೆದ್ದು. ಇದನ್ನು ಕೆಲವರು ಕೆಂಪು ಕಾಗೆಯೆಂದೂ ಕೆಲವರು ಮುಂಡುಮುಳುಕನಹಕ್ಕಿಯೆಂದೂ ಕರೆಯುವರು. ಆತಾಪಯತಿ—ಆ + ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) + ಣಿಚ್ "ಣಿನಿಃ" (3-1-134).

ಆತಿ ಆತಿ (ಪುಂ) ಮರಕುಟಗ ಹಕ್ಕಿ.

ಆತೀಯ ಆತೀಯ (ನಂ) 1. ಆತಿಥ್ಯ, ಆತಿಥಿಸತ್ಕಾರ. "ಆತೀಯಮನಿವಾರಿತಾತಿಥಿಃ ಕರ್ತುಮಾಶ್ರಮಗುರುಃ ಸ ನಾಶ್ರಮತ್" ಮಾಘಂ 18-38. (ವಿಂ) 2. ಆತಿಥಿಸತ್ಕಾರದಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಥನಾದವನು. ಆತಿಥಿಪು ಸಾಧುಃ "ಢಜ್" (4-4-104). "ಪ್ರತ್ಯುಜ್ಜಗಾಮಾತಿಥಿಭಾತಿಥೇಯಃ" ರಘುಂ 4-2. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-14). ಆತೀಯೋ ಆತಿಥೇಯಿಃ. "ಆತೀಯೋಮಥಾಸಾಧ್ಯ ಸುತಾದಪಚಿತಿ ಹರಿಃ" ಕಿರಾಂ 11-9.

ಆತೀಯ ಆತೀಯ (ಪುಂ) 1. ಆತಿಥಿ. ಆತಿಥಿ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಽಪ್ಯಜ್" (ನಂ) 2. ಆತಿಥಿಸತ್ಕಾರ. ಆತಿಥೇ ಇದಮ್ "ಜ್ಯಃ" (4-4-26). "ತಮಾತಿಥ್ಯಕ್ರಿಯಾಶಾಂತರಥಕ್ಷೋಭಪರಿಶ್ರಮಮ್" ರಘುಂ 1-48.

ಆತೀದೇಶಿಕ ಆತೀದೇಶಿಕ (ವಿಂ) ಆತೀದೇಶದಿಂದ ಬಂದ. ಆತೀದೇಶಾದಾಗತಃ "ಠಜ್" (4-2-114).

ಆತೀವಾಹಿಕ ಆತೀವಾಹಿಕ (ವಿಂ) ಈ ಲೋಕದಿಂದ ಲೋಕಾಂತರಕ್ಕೆ ಕರೆದುಕೊಂಡು ಹೋಗಲು ನೇಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆತೀವಾಹೇ ಇಹಲೋಕಾತ್ ಪರಲೋಕಪ್ರಾಪಣೇ ನಿಯುಕ್ತಃ "ಠಕ್" (4-4-69). [ಕರ್ಮಾಚರಣೆಯಿಂದ ಸ್ವರ್ಗ ಸಂಪಾದಿಸಿದವರನ್ನು ದಕ್ಷಿಣಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಧೂಮಾದಿ ಗಣದೇವತೆಗಳೂ ಜ್ಞಾನದಿಂದ ಮೋಕ್ಷಸಂಪಾದಿಸಿದವರನ್ನು ಉತ್ತರಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಅರ್ಚಿರಾದಿಗಣದೇವತೆಗಳೂ ಈಶ್ವರನಿಂದ ನಿಯುಕ್ತರಾಗಿ ಲೋಕಾಂತರಕ್ಕೆ ಕರೆದುಕೊಂಡು ಹೋಗುವರು.]

ಆತೀಶಯ ಆತೀಶಯ (ನಂ) ಆತಿಶಯ, ಅಧಿಕ, ಬಾಹುಳ್ಯ, ಹೆಚ್ಚಿಗೆ. ಆತೀಶಯ ಏವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಽಪ್ಯಜ್" 1.

ಆತು ಆತು (ಪುಂ) ತೆಕ್ಕ. ಆತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೇ) "ಠಙ್" (3-1-1).



आतुर अतुर (वि०) 1. रोगगर्भितनाद. आतुर-  
तोति - आ + तुर (त्वरणे) "कः" (३-१-१३५)।  
"जराशोकसमाविष्टं रोगायतनमातुरम्" मनु० ६-७७।  
2. नೋयसल्लुप्य, गायगोशसल्लुप्य. 3. पीडित  
ल्लुप्य, पादुपडिसल्लुप्य. "रावणावरजा तत्र राघवं  
मदनानुरा" रघु० १२-३२। 4. ढिठ्ठुक्कवुल्ल, तवक  
पडुव.

आतुरोपक्रमणीय अतुरोपक्रमणीय (पु०)  
1. रोगीय चिकित्सेगारि आयुर्दाय व्याधिय  
स्वरूप मरुत वयस्सु देहकक्त् प्रकृति देह  
मरुत ढिषध इवुगल्लनुसरी मरुतुव केलस.  
आतुरमधिकृत्य उपक्रमणीयम्। 2. रोगीय चिकित्से  
क्रमवन्नु हेरुव ग्रुण्ठ. आतुरोपक्रमणमधिकृत्य  
कृतो ग्रन्थः "छः" (४-३-८८)।

आतोद्य अतुोद्य (न०) विरु. आसमन्तात् तुद्यते -  
तुद (व्यथने) "ण्यत्" (३-१-१२४)। "स्रजमातोद्य-  
शिरोनिवेशिताम्" रघु० ८-३४।

आत् अत्त (वि०) स्त्रिकरिसल्लुप्य, तैगैदुकोल्लुप्य.  
आ + हु दाज् (दाने) "कः" (३-२-१०२)। "आत्-  
देहमिव स्वर्गमासेचनकदर्शनम्" याद० १६-३।

आत्तगर्व अत्तगर्व (वि०) 1. तिरस्कारिसल्लुप्य, रत्तु  
गल्लिंद जयिसल्लुप्य. आत्तः शत्रुणा गृहीतो गर्वः  
यस्य। 2. गर्ववन्नु ह्योदिद. आत्तो गृहीतो  
गर्वो येन।

आत्मकर्मन् अत्तकर्मन् (न०) स्तुंठकैलस, तन्नु  
कत्तव्य. "आत्मकर्मक्षमं देहं क्षात्रो धर्म इवाश्रितः"  
रघु० १-१३।

आत्मकाम अत्तकाम (वि०) 1. अत्तज्ज्ञानवन्नु  
अपेक्षिसुव. 2. अत्तनन्नु अपेक्षिसुव, विरक्त  
नाद, निषयाभिलाषेयन्नु तैरैदिरुव. आत्मान-  
मेव कामयते - कम् (कान्तौ) "अण्" (३-२-१)।

आत्मगत अत्तगत (वि०) 1. तन्नुल्लिरुव. 2. तन्नु  
मनस्सिनल्लिरुव. आत्मनि गतम्। (किं वि०) 3.  
तन्नुल्लिये, बिरैरौबुगो तिलयदन्ते. [रंग  
भूमियल्लि नटरु मत्तारुगो तिलयदन्ते  
मरुतनादिकोल्लुवुदक्के स्तुगत अत्तगतगल्लिंदु  
संज्ञे.] "सर्वश्राव्यं प्रकाशं स्यादश्राव्यं स्वगतं  
मतम्"।

आत्मगुप्त अत्तगुप्त (वि०) तन्नुदल्ले रक्किसल्लुप्य.  
इतररिंद रक्किसल्लुप्य, बिरैरौबुगो रक्किसल्लुप्य  
ल्लिरुव. आत्मना गुप्तः।

आत्मगुप्ता अत्तगुप्ता (स्त्री०) कपितुरचि गिद.  
आत्मना गुप्ता। [इदन्नु मुल्लुप्यदरे नवैयागु  
वुदरिंद यारुगो क गिदवन्नु मुल्लुप्यदिरुव  
कारण क ह्येसु.]

आत्मग्राहिन् अत्तग्राहिन् (वि०) 1. स्वाध्वपर,  
तन्नु ह्येत्तुपडवन्नु मरुत नोडिकोल्लुववन्नु,  
ह्येत्तुपडक. आत्मा गृह्णाति - ग्रह (उपादाने)  
"णिनिः" (३-१-१३४)। 2. अत्तनन्नु तिलद,  
अत्तस्वरूपवन्नु अरितिरुव. आत्मानं गृह्णाति -  
ग्रह "णिनिः" (३-१-१३४)।

आत्मघात अत्तघात (पु०) 1. अत्तहत्त. [अत्त  
हत्तैयु शस्त्रिय मरुत अशस्त्रियगल्लिंदु  
वरुदु विद. मुदुकनगि चिकित्सेयु असार्थ  
नैंदरितु सानादिगल्लिंदु मरुतल्लो अरक्तनगि  
द्वल्लि लुपववासदिंदल्लो बेट्टिद तिरुदिरुद बिरु  
वुदरिंदल्लो अग्न प्रवैशदिंदल्लो नैरिनल्लि  
बिरुवुदरिंदल्लो अत्तहत्तैयु मरुतकोल्लुवुदु  
शस्त्रियवदुदु. क कारणदिंदल्लि मरुत  
बैरै क्रमदल्लि अत्तहत्तैयु अशस्त्रिय मरुत  
दोषवगुवुदु.] "वृद्धः शौचक्रियालुप्तः प्रत्या-  
ख्यातभिपविक्रयः। आत्मानं घातयेद्यस्तु भृग्वन्यन-  
शनाम्युभिः"। 2. पाथुंठमत्त.

आत्मघातिन् अत्तघातिन् (वि०) 1. अशस्त्रिय  
वगि अत्तहत्तैयु मरुतकोल्लुववन्नु. आत्मानं  
हन्ति - हन (हिंसागत्योः) "णिनिः" (३-१-१३४)।  
अशस्त्रियवगि मरुतकोल्लुव अत्तहत्तैयु  
पाथकर. "व्यापादयेत् वृथात्मानं स्वयं योऽन्युदका-  
दिभिः। अवधेनैव मार्गेण आत्मघाती स उच्यते। "आत्म-  
घातिभिरहम्मतिग्रहात्" याद० १७-१३। 2. पाथुंठि,  
वैदमत्तबाह्य. 3. अत्तज्ज्ञान संपादिसद  
बाह्यसुखदल्ले असक्तनगिरुववन्नु, अत्तज्ज्ञान  
संपादिसदवन्नु.

आत्मघोष अत्तघोष (पु०) 1. कागै. 2. कुकुल्लि,  
कैरै. आत्मानं घोषयति (का का का कू इति  
शब्दनात्) घुपिर् (विशब्दने) "अण्" (३-२-१)।



ಆತ್ಮಜ ಆತ್ಮಜ (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. ಆತ್ಮನೋ  
ದೇಹಾಜ್ಞಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತಭವಿ) "ಓ:" (೩-೨-೯೮)।

"ಅಯಾಚಿತದಯಾಸಿಂಧುಮಾತ್ಮಜಸ್ಯ ಶುಭಾಂ ಗತಿಮ್" ಯಾದಂ  
೧೬-೧೧೦. 2. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ಆತ್ಮನೋ ಮನಸೋ  
ಜಾಯತೇ - ಜನಿ "ಓ:" (೩-೨-೯೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಆತ್ಮಜಾ  
ಆತ್ಮಜಾ. 1. ಮಗಳು. 2. ಬುದ್ಧಿ.

ಆತ್ಮಜನ್ಮನ್ ಆತ್ಮಜನ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ.  
ಆತ್ಮನೋ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ। "ಆತ್ಮಾ ವೈ ಪುತ್ರನಾಮಾಸಿ"। "ಅತ  
ಆಹ್ತುಮಿಚ್ಛಾಮಿ ಪಾರ್ವತೀಮಾತ್ಮಜನ್ಮನೇ" ಕುಮಾಂ ೬-೨೮।  
2. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ.

ಆತ್ಮಜ್ಞ ಆತ್ಮಜ್ಞ (ವಿಂ) 1. ತಪಸ್ವಿ, ಆತ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು  
ಅರಿತವನು. 2. ತನ್ನನ್ನು ಅರಿತವನು, ತನ್ನ ಸ್ವರೂಪ  
ವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. ಆತ್ಮಾನಂ ಜಾನಾತಿ - ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ)  
"ಕ:" (೩-೨-೩)।

ಆತ್ಮಜ್ಞಾನ ಆತ್ಮಜ್ಞಾನ (ನಂ) 1. ಆತ್ಮಸ್ವರೂಪದ ಅರಿವು.  
"ಸರ್ವೇಷಾಮಪಿ ಚೈತೇಷಾಮಾತ್ಮಜ್ಞಾನಂ ಪರಂ ಸ್ಮೃತಮ್। ತಜ್ಯಗ್ರಂಥಂ  
ಸರ್ವವಿಜ್ಞಾನಾಂ ಪ್ರಾಪ್ಯತೇ ಹ್ಯಮೃತಂ ಯತ:" ಮನುಂ ೧೨-೮೫।  
2. ತನ್ನ ಸ್ವರೂಪದ ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ಆತ್ಮನೋ ಜ್ಞಾನಮ್।

ಆತ್ಮತತ್ವ ಆತ್ಮತತ್ವ (ನಂ) ಆತ್ಮನ ನಿಜಸ್ವರೂಪ.  
ಆತ್ಮನಸ್ತತ್ವಮ್।

ಆತ್ಮದರ್ಶ ಆತ್ಮದರ್ಶ (ಪುಂ) 1. ದರ್ಶನ, ಕನ್ನಡಿ.  
ಆತ್ಮಾ ದೃಶ್ಯತೇ-ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) "ಘ್ನ" (೩-೩-೧೨೧)।  
"ನಿ:ಶ್ವಾಸಬಾಷ್ಪಾಪಗಮಾತ್ಪ್ರಪತ್ರ: ಪ್ರಸಾದಮಾತ್ಮೀಯಮಿವಾತ್ಮದರ್ಶ:"  
ರಘುಂ ೭-೬೮. 2. ಆತ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ. ಆತ್ಮನೋ ದರ್ಶ:  
ದರ್ಶನಮ್।

ಆತ್ಮದರ್ಶನ ಆತ್ಮದರ್ಶನ (ನಂ) 1. ಆತ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ.  
ಆತ್ಮನೋ ದರ್ಶನಮ್। 2. ಆತ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಕ್ಕೆ ಸಾಧನ,  
ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು ಎದುರಿಗೆ ಕಾಣಲು ಉಪಾಯ. ಆತ್ಮಾ  
ದೃಶ್ಯತೇಜೇನ-ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) ಕರಂ "ಲ್ಪುಡ್" (೩-೩-೧೧೭)।  
[ಆತ್ಮದರ್ಶನಕ್ಕೆ ಕಾರಣಗಳು ಶ್ರವಣ ಮನನ ನಿರ್ದಿ  
ಧ್ಯಾಸನಗಳು.] "ಆತ್ಮಾ ವಾ ಅರೆ ದೃಷ್ಟವ್ಯ: ಶ್ರೋತವ್ಯೋ  
ಮಂತವ್ಯೋ ನಿರ್ದಿಧ್ಯಾಸಿತವ್ಯ:" ಶ್ರುತಿ:।

ಆತ್ಮಧ್ಯಾನ ಆತ್ಮಧ್ಯಾನ (ನಂ) ಪರಮಾತ್ಮನ ಧ್ಯಾನ.  
[ಬೇರೆ ವಿಷಯದ ಜ್ಞಾನದಿಂದ ಅಡ್ಡಿಯುಂಟಾಗದೆ  
ಕೇವಲ ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಧಾರಾಕಾರವಾದ ಜ್ಞಾನ  
ಪರಂಪರೆಯು ಧ್ಯಾನ.] ಆತ್ಮನೋ ಧ್ಯಾನಮ್।

ಆತ್ಮನ್ ಆತ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ, ಬ್ರಹ್ಮ. ಅತ  
(ಸಾತ್ವತ್ಯಗಮನೇ) "ಮನಿನ್" (೩ಂ ೪-೧೫೩)। "ಯಚ್ಚಾಪ್ನೋತಿ

ಯದಾದತ್ತೇ ಯಚ್ಚಾಪ್ನೋತಿ ವಿಷಯಾನಿಹ। ಯಚ್ಚಾಪ್ನೋತಿ ಸಂತತೋ ಭಾವ:  
ತಸ್ಮಾದಾತ್ಮೇತಿ ಕೀರ್ತಯತೇ"। "ಆತ್ಮೇವ ದೃಷ್ಟ: ಸಹಸಾ  
ಪ್ರಜಾನಾಮಾದರ್ಶನೇಚ್ಛಾಮಿತರೇಷು ದತ್ತೇ" ಯಾದಂ ೧೮-೯೩।  
2. ಜೀವಾತ್ಮ. "ಆತ್ಮಾನಂ ರಥಿನಂ ವಿಧಿ ಮನ: ಪ್ರಗ್ರಹಮೇವ  
ಚ। ಇಂದ್ರಿಯಾಣಿ ಹ್ಯಾನಾಹು: ವಿಷಯಾಸ್ತೇಷು ಗೋಚರಮ್।  
ಆತ್ಮೇಂದ್ರಿಯಮನೋಯುಕ್ತಂ ಭೋಕ್ತೇತ್ಯಾಹುರ್ಮನೀಷಿಣ:" ಕಠಂ।

ಆತ್ಮನ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ದಾರ್ಶನಿಕರ ಮತಭೇದ:  
(1) ಚಾರ್ವಾಕಮತ: ಚಾರ್ವಾಕರು ದೇಹವೇ  
ಆತ್ಮವೆಂದು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಪೃಥಿವಿ ಅಪ್ ತೇಜಸ್ಸು  
ಮತ್ತು ವಾಯು ಈ ಭೂತಚತುಷ್ಪಯದಿಂದ ಶರೀರವು  
ಉತ್ಪನ್ನವಾಗಿ ಜೈತನ್ಯವು ಹುಟ್ಟುವುದು. ದೇಹೋ  
ತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಮೊದಲೂ ದೇಹನಾಶಾನಂತರವೂ ಈ ಆತ್ಮ  
ನಿರುವುದಿಲ್ಲವೆಂದು ಇವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. ಸ್ಥೂಲೋಹ್ಮ  
ಕೂಷೋಹ್ಮ ಕೃಣೋಹ್ಮ ಇತ್ಯಾದಿ ವ್ಯವಹಾರವೇ ದೇಹಾತ್ಮ  
ವಾದದಲ್ಲಿ ಪ್ರಮಾಣ.

(2) ಬೌದ್ಧಮತ: ಬೌದ್ಧರಲ್ಲಿ ಮಾಧ್ಯಮಿಕ,  
ಯೋಗಾಚಾರ, ಸೌತ್ರಾಂತಿಕ ಮತ್ತು ವೈಭಾಷಿಕ  
ರೆಂದು ನಾಲ್ಕು ಪಕ್ಷದವರಿರುವರು. ಇವರು ಕ್ರಮ  
ವಾಗಿ ಸರ್ವಶೂನ್ಯತ್ವ, ಬಾಹ್ಯಾರ್ಥಶೂನ್ಯತ್ವ, ಬಾಹ್ಯಾರ್ಥ  
ಧಾನುಮೇಯತ್ವ ಮತ್ತು ಬಾಹ್ಯಾರ್ಥ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷತ್ವ  
ವಾದಿಗಳು. ಮಾಧ್ಯಮಿಕರು ಸತ್ ಅಸತ್ ಸದಸತ್  
ಸದಸದ್ವಿಲಕ್ಷಣ ಈ ನಾಲ್ಕುಕ್ಕಿಂತಲೂ ಅತಿರಿಕ್ತವಾದ  
ಶೂನ್ಯವೇ ಆತ್ಮವೆಂದೂ ಯೋಗಾಚಾರ ಪಕ್ಷದವರು  
ಅಹಂ ಎಂಬ ಭಾವನೆಯಿಂದ ಆತ್ಮವೆನ್ನಲ್ಪಡುವ ಅಲಯ  
ವಿಜ್ಞಾನಸಂತತಿಯೇ ಆತ್ಮವೆಂದೂ ಹೇಳುವರು.  
ಸೌತ್ರಾಂತಿಕರು ಮತ್ತು ವೈಭಾಷಿಕರು ಆತ್ಮನ  
ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಇವರನ್ನೇ ಅನುಸರಿಸಿದರೂ ಸೌತ್ರಾಂತಿ  
ಕರು ವಿಜ್ಞಾನವ್ಯತಿರಿಕ್ತ ಪದಾರ್ಥಗಳೂ ಇವೆಯೆಂದೂ  
ಅವು ಅನುಮೇಯವೆಂದೂ ವೈಭಾಷಿಕರು ಅವೂ  
ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವೆಂದೂ ಅಭಿಪ್ರಾಯಪಡುವರು.

(3) ಜೈನಮತ: ಆತ್ಮನು ಜ್ಞಾನದರ್ಶನಸ್ವರೂಪಿ  
ಯಾದ ಜೈತನ್ಯವಸ್ತು. ಆತ್ಮನು ನಿತ್ಯ. "ಚೇತನಾಲಕ್ಷಣೋ  
ಜೀವ:"। ಆತ್ಮನು ಕರ್ಮಬದ್ಧ (ಸೋಪಾಧಿಕ) ಮತ್ತು  
ಕರ್ಮಮುಕ್ತ (ನಿರುಪಾಧಿಕ) ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ.  
"ಜೀವಾ: ಸಂಸಾರಿಣೋ ಮುಕ್ತಾಶ್ಚ" ತತ್ವಾಂ ಸ್ತಂ। ಕರ್ಮ  
ಮುಕ್ತನಾದ ಆತ್ಮನು ಶುದ್ಧ ಜೈತನ್ಯ. ಸಿದ್ಧ, ಸರ್ವಜ್ಞ,  
ಸರ್ವಲೋಕದರ್ಶಿ. ದೇಹದ ಪರಿಮಾಣವೇ ಆತ್ಮನ  
ಪರಿಮಾಣ. ಇರುವೆಯ ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಇರುವೆಯಷ್ಟೂ  
ಆನೆಯ ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಆನೆಯಷ್ಟೂ ಈ ರೀತಿ ಅಣು



ಗುರುದೇಹ ಪ್ರಮಾಣವುಳ್ಳವನು. ಹಿಂದಿನ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ ಪಾಪಪುಣ್ಯಗಳಿಂದ ಭಾರವಾಗಿ ಸಂಸಾರ ಸಾಗರದಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿ ಸನ್ಯಾಸಜ್ಞಾನಾದಿಗಳಿಂದ ಕರ್ಮವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡು ಲೋಕಾಗ್ರದಲ್ಲಿ ನೆಲೆಸುತ್ತಾನೆ. ಇದೇ ಇವನಿಗೆ ಮುಕ್ತಿಯೆಂದು ಇವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

(4) ನೈಯಾಯಿಕರ ಮತ್ತು ವೈಶೇಷಿಕರ ಮತ: ದೇಹ ಇಂದ್ರಿಯ ಮನಸ್ಸು ಬುದ್ಧಿ ಇವುಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಆತ್ಮನು ಬೇರೆ. ಆತ್ಮನು ನಿತ್ಯ ಮತ್ತು ವಿಭು. ಜೀವಾತ್ಮನು ಪರಮಾತ್ಮನಿಗಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನನು. ಪರಮಾತ್ಮನು ಒಬ್ಬನೇ. ಜೀವಾತ್ಮರು ಅಸಂಖ್ಯಾತರು. ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲಿ ನಿತ್ಯಜ್ಞಾನ, ಕೃತಿ, ಇಚ್ಛೆಗಳಿವೆ. ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿ ಸ್ಥಿತಿಲಯಗಳ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವಿದೆ. ಕುಲಾಲನು ಘಟಕ್ಕೆ ಕಾರಣನಾಗಿರುವಂತೆ ಜಗತ್ಸೃಷ್ಟಿಗೆ ನಿಮಿತ್ತಕಾರಣ. ಇವನು ಸರ್ವಜ್ಞ. ಜೀವಾತ್ಮನು ಜ್ಞಾನ ಇಚ್ಛೆ ಕೃತಿ ಧರ್ಮ ಅಧರ್ಮ ದ್ವೇಷ ಸುಖ ದುಃಖ ಇತ್ಯಾದಿ ಗುಣವುಳ್ಳವನು. ಆತ್ಮನಿಗೆ ಮನಸ್ಸಿನೊಡನೆ ವಿಜಾತೀಯ ಸಂಯೋಗದಿಂದ ಜ್ಞಾನವುಂಟಾಗುವುದು. ದುಃಖಧ್ವಂಸವೇ ಮೋಕ್ಷವೆಂದು ಇವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

(5) ಸಾಂಖ್ಯ ಮತ: ಸಾಂಖ್ಯ ಮತದಲ್ಲಿ ಚತುರ್ವಿಂಶತಿ ತತ್ತ್ವಕ್ಕಿಂತಲೂ ಅತಿರಿಕ್ತನಾದ ಪುರುಷನೇ ಆತ್ಮ. ಆತ್ಮನು ಅಸಂಖ್ಯಾತ, ವಿಭು, ನಿತ್ಯ, ನಿರ್ಗುಣ, ನಿಷ್ಕ್ರಿಯ ಮತ್ತು ನಿರ್ಲಿಪ್ತ. ಆತ್ಮನಿಗೆ ಸುಖದುಃಖಾದಿಗಳ ಸಂಬಂಧವಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಸಂಸಾರ ಭೋಗ ಮತ್ತು ಮೋಕ್ಷಗಳು ಪುರುಷನಲ್ಲಿ ಪ್ರಕೃತಿ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ತೋರುವುವು. ಪ್ರಕೃತಿ ಪುರುಷರ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿ ಮೊದಲಾದ ವ್ಯಾಪಾರಗಳು ನಡೆಯುವುವು. ಪ್ರಕೃತಿಪುರುಷರ ವಿವೇಕ ಜ್ಞಾನದಿಂದ ಬುದ್ಧಿ ತತ್ತ್ವ ನಾಶವೂ ಅದರಿಂದ ಸುಖದುಃಖಗಳ ಭಾಯಾನಾಶವೂ ಉಂಟಾಗಿ ಆತ್ಮನು ಶುದ್ಧನಾಗುವನು. ಇದೇ ಮೋಕ್ಷವು.

(6) ಯೋಗದರ್ಶನ: ಇವರ ಮತದಲ್ಲಿ ಜೀವಾತ್ಮ ಪರಮಾತ್ಮರಿಗೆ ಭೇದವುಂಟು. ಜೀತನ ತತ್ತ್ವವು ಪುರುಷ, ಈಶ್ವರನೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಜೀವಾತ್ಮನೆಂಬ ಪುರುಷನು ಅಸಂಖ್ಯಾತ, ವಿಭು, ಅಜ, ನಿತ್ಯ, ಶಾಶ್ವತ ಮತ್ತು ನಿರ್ಲಿಪ್ತ, ಜ್ಞಾನಸ್ವರೂಪ. ಈಶ್ವರನು ಕ್ಲೇಶ ಕರ್ಮವಿವಾಕಾಶಯಗಳ ಸಂಬಂಧ ವಿಲ್ಲದವನು. ಜೀವರು ಈಶ್ವರ ಪ್ರಣಿಧಾನವೆಂಬ ಈಶ್ವರ ಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಸಮಾಧಿಪಡೆಯುವರು. ಇದೇ ಮೋಕ್ಷ.

(7) ದ್ವೈತದರ್ಶನ: ಈ ದರ್ಶನಕಾರರು ಜೀವಾತ್ಮ ಮತ್ತು ಪರಮಾತ್ಮರಿಗೆ ಭೇದವನ್ನು ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಜೀವನು ಅಣು ಜ್ಞಾನಸ್ವರೂಪ, ಅಸಂಖ್ಯಾತ; ಅಜ, ನಿತ್ಯ, ಶಾಶ್ವತ, ಅಚ್ಛೇದ್ಯ, ಅದಾಹ್ಯ, ಅಕ್ಷೇದ್ಯ ಮತ್ತು ಅಶೋಷ್ಯನು. ಪರಮಾತ್ಮನು (ನಾರಾಯಣನು) ವಿಭು. ಎಲ್ಲರಿಗೂ ನಾರಾಯಣನೇ ನಿಯಾಮಕನು. ಎಲ್ಲರೂ ಅವನ ಆಜ್ಞೆಗೆ ಒಳಪಟ್ಟಿರಬೇಕು. ಜೀವರು ಸುಖಾದಿತಾರ ತಮ್ಯವುಳ್ಳವರೆಂದೂ ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷಭೇದವುಳ್ಳವರೆಂದೂ ಇವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. ಜೀವಾತ್ಮರಲ್ಲಿ ಉತ್ತಮ, ಮಧ್ಯಮ, ಅಧಮ ಭೇದದಿಂದ ಮುಕ್ತಿಯೋಗ್ಯರು, ನಿತ್ಯ ಸಂಸಾರಿಗಳು ತಮೋಯೋಗ್ಯರೆಂದು ಭೇದವಿರುವುದು. ಸಾಧನಾನುಷ್ಠಾನದಿಂದ ಸ್ವರೂಪಾನಂದವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವವರು ಮುಕ್ತಿಯೋಗ್ಯರು. ನಿತ್ಯನರಕ ವೆಂಬ ತಮೋಲೋಕಪ್ರಾಪ್ತಿಗೆ ಸಾಧನ ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಂಡು ನಿತ್ಯ ದುಃಖಾನುಭವಕ್ಕೆ ಸಿದ್ಧರಾಗುವವರು ತಮೋಯೋಗ್ಯರು. ಸಾಧನಾನುಷ್ಠಾನದಿಂದ ನಿತ್ಯ ಸುಖದುಃಖಮಿಶ್ರಾನುಭವಕ್ಕೆ ಸಿದ್ಧರಾಗುವವರು ನಿತ್ಯ ಸಂಸಾರಿಗಳು. ಗುರುಕುಲವಾಸ, ಗುರುಭಕ್ತಿ, ಸಚ್ಚಾಸ್ತ್ರಶ್ರವಣ, ಮನನ, ಸಂಸಾರದುಃಖದರ್ಶನ ದಿಂದಂಟಾಗುವ ವೈರಾಗ್ಯ, ನಿವೃತ್ತಿಧರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನ, ತಾರತಮ್ಯಜ್ಞಾನ, ಪರಮಾತ್ಮಭಕ್ತಿ ಮೊದಲಾದ ಸಾಧನಗಳಿಂದ ಅಪರೋಕ್ಷಜ್ಞಾನವುಂಟಾಗಿ ಅದು ಮೋಕ್ಷಸಾಧನವಾಗುವುದು. ಅಪರೋಕ್ಷ ಜ್ಞಾನದಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನ ಪ್ರಸಾದವುಂಟಾಗಿ ಪ್ರಕೃತಿ ಸಂಬಂಧವಿನಾಶವೆಂಬ ಮುಕ್ತಿ ಸಿದ್ಧಿಸುವುದು. ದೇಹಾವಸಾನಕಾಲದಲ್ಲಿ ಜೀವನು ಬ್ರಹ್ಮನಾಡೀಮೂಲಕ ಹೊರಟು ಅರ್ಚಿರಾದಿ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ಲೋಕಾಧಿಪತಿಗಳಿಂದ ಸತ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಕೊನೆಗೆ ಭಗವಲ್ಲೋಕದಲ್ಲಿ ತಾರತಮ್ಯಾನುಗುಣವಾಗಿ ಸಾಲೋಕ್ಯ, ಸಾವಿಾಪ್ಯ, ಸಾರೂಪ್ಯ ಮತ್ತು ಸಾಯುಜ್ಯರೂಪವಾದ ಮೋಕ್ಷವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವನು.

(8) ಅದ್ವೈತ ಮತ: ಅದ್ವೈತಮತದಲ್ಲಿ ಆತ್ಮನು ಒಬ್ಬನೇ. ಅವನು ನಿತ್ಯ, ವಿಭು, ಅಚ್ಛೇದ್ಯ, ಅಕ್ಷೇದ್ಯ, ಅದಾಹ್ಯ, ನಿತ್ಯಶುದ್ಧ, ನಿತ್ಯಮುಕ್ತ, ನಿರ್ಲಿಪ್ತ ಮತ್ತು ಅಸಂಗನು. ಇವನಿಗೆ ಸ್ಥೂಲ-ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಕಾರಣಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಉಪಾಧಿಗಳುಂಟು. ಮಾಯೆಯೆಂಬ ಕಾರಣೋಪಾಧಿಯುಳ್ಳ ಚೈತನ್ಯದಿಂದ ನಡೆಯುವ ಸೃಷ್ಟಿ ಸ್ಥಿತಿ ಮತ್ತು ಪ್ರಳಯರೂಪಕಾರ್ಯಗಳಿಂದ



ಬ್ರಹ್ಮ ವಿಷ್ಣು ರುದ್ರರೆಂಬ ನಾಮರೂಪ ಭೇದಗಳನ್ನು ಹೊಂದುತ್ತಾನೆ. ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಉಪಾಧಿಗಳಾದ ಶರೀರಗಳಲ್ಲಿ ಅನಾದಿಯಾದ ಅವಿದ್ಯೆಯಿಂದ ನಾನು ನನ್ನದು ಎಂಬ ಅಭಿಮಾನ ಹುಟ್ಟಿ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಜೀವಗಳಾಗಿ ವ್ಯವಹರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಾನೆ. ಒಂದೇ ಆಕಾಶವು ಘಟಮಠರೂಪ ಉಪಾಧಿಭೇದದಿಂದ ಘಟಾಕಾಶ ಮಠಾಕಾಶಗಳೆಂದು ವ್ಯವಹರಿಸಲ್ಪಡುವಂತೆಯೂ ಅನೇಕ ಜಲಾಶಯಗಳಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದ ಅನೇಕ ಸೂರ್ಯಪ್ರತಿಬಿಂಬಗಳು ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಕಾಣುತ್ತಿದ್ದು ನೀರೆಲ್ಲಾ ನಾಶವಾದ ನಂತರ ಎಲ್ಲವೂ ಸೂರ್ಯನಲ್ಲೇ ಏಕೈವಾಗುವಂತೆಯೂ ಆತ್ಮನೂ ಉಪಾಧಿಭೇದದಿಂದ ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿ ತೋರುತ್ತಿದ್ದು ಉಪಾಧಿ ನಾಶಾನಂತರ ಆತ್ಮನೊಬ್ಬನೇ ಉಳಿಯುತ್ತಾನೆ. ಇದೇ ಮೋಕ್ಷ. ಜೀವನು (ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದೆ) ಈಶ್ವರಾರ್ಪಣ ಬುದ್ಧಿಯಿಂದ ಮಾಡಿದ ವಿಹಿತಕರ್ಮಾಚರಣೆಯಿಂದ ಸಂಸಾರದಲ್ಲಿ ಅಸಾರತ್ವ ಬುದ್ಧಿಯೂ, ಕರ್ಮಫಲದಲ್ಲಿ ಪ್ರಬಲ ವೈರಾಗ್ಯವೂ, ಅದರಿಂದ ಗೃಹ ಪುತ್ರಕಳತ್ರಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ಜಿಹಾಸೆಯೂ ಉಂಟಾಗಿ ತನ್ನ ದೇಹದಲ್ಲಿಯೂ ಅಭಿಮಾನ ತೊರೆದು ಸದ್ಗುರುವಿನ ಉಪದೇಶ ಪಡೆದು ಶ್ರವಣಮನನ ನಿಧಿಧ್ಯಾಸನಗಳ ಸಹಾಯದಿಂದ ಪರಬ್ರಹ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ ಹೊಂದಿ ಅಜ್ಞಾನ ನಿವೃತ್ತಿಯಾದ ನಂತರ ಸಂಸಾರಪಾಶದಿಂದ ಮುಕ್ತನಾಗಿ ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಪಡೆಯುವನು. ಇದೇ ಮುಕ್ತಿ.

(9) ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತ: ಇವರು ಜೀವಾತ್ಮನಿಗೂ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೂ ಭೇದವನ್ನು ಹೇಳಿ ಶೇಷ ಶೇಷಿ ಭಾವ ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಜೀವನು ಜ್ಞಾನಸ್ವರೂಪ, ಅಸಂಖ್ಯಾತ, ಅಣು, ಅಜ, ನಿತ್ಯ, ಶಾಶ್ವತ, ಅಚ್ಛೇದ್ಯ, ಅದಾಹ್ಯ, ಅಕ್ಷೇದ್ಯ ಮತ್ತು ಅತೋಷ್ಯನು. ಜೀವರೆಲ್ಲಾ ಪರಮಾತ್ಮನ ಶರೀರ. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ ಜೀತನತ್ವ ಕರ್ತೃತ್ವ ಮೊದಲಾದವು ಈಶ್ವರ ಮತ್ತು ಜೀವರುಗಳಿಗೆ ಸಾಧಾರಣ ಲಕ್ಷಣ. ಶೇಷತ್ವ ಅಧೀಯತ್ವ ವಿಧೇಯತ್ವ ಪರಾಧೀನ ಕರ್ತೃತ್ವ ಪರತಂತ್ರತ್ವ ಮುಂತಾದವು ಜೀವನ ವಿಶೇಷ ಲಕ್ಷಣ. ಜೀವನು ದೇಹ ಇಂದ್ರಿಯ ಮನಸ್ಸು ಪ್ರಾಣ ಇವುಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನನು. ಮಮ ಶರೀರಮ್ (ನನ್ನ ಶರೀರ) ಎಂದು ವ್ಯವಹರಿಸುವುದರಿಂದ ದೇಹಕ್ಕಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನನು. ಚಕ್ಷುಷಾ ಪಶ್ಯಾಮಿ (ಕಣ್ಣಿನಿಂದ ನೋಡುತ್ತೇನೆ), ಶ್ರೋತ್ರೇಣ ಶೃಣಾಮಿ (ಕಿವಿಯಿಂದ ಕೇಳುತ್ತೇನೆ) ಎಂಬ ವ್ಯವಹಾರದಿಂದ ಬಾಹ್ಯೇಂದ್ರಿಯಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನನು. ಮನಸಾ ಜಾನಾಮಿ (ಮನಸ್ಸಿನಿಂದ ತಿಳಿಯು

ತ್ತೇನೆ), ಮಮ ಪ್ರಾಣಾಃ, ಜಾನಾಮ್ಯಹಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ ವ್ಯವಹಾರದಿಂದ ಮನಸ್ಸು ಪ್ರಾಣ ಜ್ಞಾನಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನನು. ಪ್ರತಿಶರೀರದಲ್ಲಿಯೂ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಜೀವನಿರುವನು. "ದೇಹೇಂದ್ರಿಯಮನಃಪ್ರಾಣಧೀನ್ಯೋನ್ಯೋನ್ಯಸಾಧನಃ | ನಿಯೋ ವ್ಯಾಪಿ ಪ್ರತಿಕ್ಷೇತ್ರಮಾತ್ಮಾ ಭಿನ್ನಃ ಸ್ವತಃ ಸ್ಥಿತಿಃ" ಆತ್ಮಸಿಂಹಿ. ಬದ್ಧ ಮುಕ್ತ ನಿತ್ಯರೆಂದು ಜೀವರು ಮೂರು ವಿಧ. ಸಂಸಾರದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಹೊಂದದವರು ಬದ್ಧಜೀವರು. ಪ್ರಕೃತಿಸಂಬಂಧವನ್ನು ಬಿಡಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ ಶುಕ, ವ್ಯಾಸ, ಪರಾಶರ, ಆಳ್ವಾರುಗಳು ಮುಕ್ತರು. ಯಾವಾಗಲೂ ಪ್ರಕೃತಿಸಂಬಂಧವೇ ಇಲ್ಲದ ಅನಂತ, ಗರುಡ, ವಿಷ್ಣುಕೇಸರಿ ಮೊದಲಾದ ಭಗವಂತನ ಪರಿಜನರು ನಿತ್ಯರು. ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದೆ ಭಗವತ್ಪ್ರೀತಿಗೋಷ್ಠರವಾಗಿಯೇ ಕರ್ತವ್ಯಭಾವನೆಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಕರ್ಮ ಯೋಗದಿಂದ ನೇರವಾಗಿಯಾಗಲೀ ಜ್ಞಾನಯೋಗದ ಮೂಲಕವಾಗಲೀ ಆತ್ಮಾವಲೋಕನವು ಸಿದ್ಧಿಸುವುದು. ಅನಂತರ ಭಗವಂತನಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯುವ ಭಕ್ತಿ ಅಥವಾ ಪ್ರಪತ್ತಿ ಎಂಬ ಮೋಕ್ಷೋಪಾಯದಿಂದ ಆತ್ಮನು ಪರಮಾತ್ಮನ ಅನುಗ್ರಹಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರನಾಗಿ ದೇಹಾವಸಾನ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಸುಷುಮ್ನಾನಾಡೀಮಾರ್ಗವಾಗಿ ಸುಖದಿಂದ ಪ್ರಯಾಣಮಾಡಿ ಶ್ರೀ ವೈಕುಂಠದಲ್ಲಿ ಆನಂದಮಯ ದಿವ್ಯಮಂಟಪದಲ್ಲಿ ಸಕಲ ವೈಭವದೊಡನೆ ಬಿಜಯಮಾಡಿಸಿರುವ ಶ್ರೀಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮೀಸಮೇತನಾದ ಶ್ರೀ ಪರವಾಸುದೇವನ ಸಮೀಪವನ್ನು ಹೊಂದಿ ಅಲ್ಲಿ ನಿತ್ಯಸೂರಿಗಳೊಡನೆ ನಿತ್ಯಕಿಂಕರನಾಗಿ ಪರಮಾತ್ಮನು ಭವವೆಂಬ ಅನಂದವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವನು. ಇದೇ ಮುಕ್ತಿ.

(10) ಶಕ್ತಿ ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತ (ವೀರಶೈವ) ಮತ: ಇವರು ಜೀವಾತ್ಮ ಪರಮಾತ್ಮರಿಗೆ ಭೇದವನ್ನು ಹೇಳುವರು. ಜೀವನು ಅಣು, ಪರಮಾತ್ಮನು ವಿಭು. ಜೀವನು ಅಸಂಖ್ಯಾತ. ಜೀವರೆಲ್ಲಾ ಪರಮಾತ್ಮನ (ಲಿಂಗದ) ಅಂಶ (ಅಂಗ), ಸರ್ವಜ್ಞತ್ವ, ನಿತ್ಯತ್ವಸ್ತತ್ವ, ಅನಾದಿಬೋಧಕತ್ವ, ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ, ಅಲುಪ್ತಶಕ್ತಿ ಮತ್ತ್ವ, ಅನಂತಶಕ್ತಿಮತ್ತ್ವ ಇತ್ಯಾದಿ ಪರಮಾತ್ಮನ ವಿಶೇಷ ಲಕ್ಷಣಗಳು. ಅಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ, ಅನಂತತ್ವ, ದೇಹೇಂದ್ರಿಯಾದ್ಯತಿರಿಕ್ತತ್ವ, ಪರಾಧೀನ ಕರ್ತೃತ್ವ, ಅಂಶತ್ವ ಮೊದಲಾದವು ಜೀವನ ಲಕ್ಷಣಗಳು. ಜೀವನು ಜೈತನ್ಯಸ್ವರೂಪ. ಅವನು ಮಾಯೆಯ ಮೂಲಕ ಅಲ್ಪಜ್ಞನೂ ಅಲ್ಪಶಕ್ತಿಯೂ ಅಹಂಕಾರಿಯೂ ಆಗುವನು. ಆಣವಮಲ, ಮಾಯಾಮಲ



ಮತ್ತು ಕಾರ್ಮಿಕಮಲ ಮತ್ತು ಅಹಂಕಾರ ಇವುಗಳ ಮೂಲಕ ಕರ್ಮಬದ್ಧನಾಗಿ ಜನ್ಮಾಂತರಗಳನ್ನು ತಾಳುವನು. ಲಿಂಗಧಾರಣಾತ್ಮಕವಾದ ಶಿವದೀಕ್ಷೆಯಿಂದ ಭಕ್ತ, ಮಹೇಶ, ಪ್ರಸಾದಿ, ಪ್ರಾಣಲಿಂಗಿ, ಶರಣ ಮತ್ತು ಐಕ್ಯಗಳೆಂಬ ಪರಮೋಪಾನಗಳ ಮೂಲಕ ಮಲತ್ರಯ ನಿವೃತ್ತಿಹೊಂದಿದ ನಂತರ ಬ್ರಹ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವಾಗಿ ಮುಕ್ತಿಹೊಂದುವನು. ಈ ಪಾಶಗಳಿಂದ ಬದ್ಧನಾದರೆ ಜೀವನು. ಇವುಗಳಿಂದ ಮುಕ್ತನಾದರೆ ಸದಾಶಿವನಾಗುವನು. ಈ ಪಾಶಗಳಿಂದ ಮುಕ್ತನಾಗುವುದೇ ಮುಕ್ತಿ.

3. ಶರೀರ, ದೇಹ. "ಆತ್ಮಾನಮಾಲೋಕ್ಯ ಚ ಶೋಭಮಾನಮಾದಶಂವಿಮ್ಬೇ ಸ್ತಿಮಿತಾಯತಾಕ್ಷಿ" ಕುಮಾಂ ೭-೨೨.

4. ಯತ್ನ. 5. ಸ್ವಭಾವ. "ತಮಾತ್ಮಸಂಪನ್ನಮನಿನ್ದಿತಾತ್ಮಾ" ರಘುಂ ೧೮-೧೮. 6. ಮನಸ್ಸು, ಚಿತ್ತ. "ಆರೆಭಿರೇಜಿತಾತ್ಮಾನಃ ಪುತ್ರಿಯಾಮಿಷ್ಟಿಮೃತ್ವಿಜಃ" ರಘುಂ ೧೦-೪.

7. ಬುದ್ಧಿ, ಜ್ಞಾನ. "ತಮಾತ್ಮಸಂಪನ್ನಮನಿನ್ದಿತಾತ್ಮಾ ಕೃತ್ವಾ ಯುವಾನಂ ಯುವರಾಜಮೇವ" ರಘುಂ ೧೮-೧೮. 8. ಧೈರ್ಯ.

9. ಸ್ವಯಂ, ತಾನು. "ಆತ್ಮಾನಮಮೃತೋದನ್ವದಂತಸ್ಥಿತಮಮನ್ಯತ" ಯಾದಂ ೧೬-೧೩೮. 10. ಸ್ವರೂಪ. "ಅಥ ವಿಶ್ವಾತ್ಮನೇ ಗೌರೀ ಸಂದಿದೇಶ ಮಿಥಃ ಸಖೀಮ್" ಕುಮಾಂ ೬-೧.

"ತ್ವತ್ಸಮ್ಮಾವಿತಮಾತ್ಮಾನಂ ಬಹುಮನ್ಯಾಮಹೇ ವಯಮ್" ಕುಮಾಂ ೬-೨೦.

11. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 12. ಸೂರ್ಯ. 13. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 14. ಪುತ್ರ, ಮಗ. "ಆತ್ಮಾ ವೈ ಪುತ್ರನಾಮಾಸಿ" 15. ಇಂದ್ರಿಯ. "ಆತ್ಮಾ ಚಿತ್ತೇ ಧೃತೌ ಯತ್ನೇ ಧಿಷಣ್ಯಾಂ ಕಲೇವರೇ. ಪರಮಾತ್ಮನಿ ಜೀವಿಷ್ಣೋ ಹೃತಾಶನಸಮೀರಯೋಃ ಸ್ವಭಾವೇ" ಹೇಮಂ.

ಆತ್ಮನಿನ್ದಾ ಆತ್ಮನಿಂದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತನ್ನನ್ನು ದೂಷಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಆತ್ಮನಿಷ್ಠ ಆತ್ಮನಿಷ್ಠ (ವಿಂ) ಮೋಕ್ಷಾರ್ಥಿ, ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. ಆತ್ಮನಿ ನಿತರಾಂ ತಿಷ್ಠತಿ - ಷ್ಟಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಕಃ" (೩-೨-೪).

ಆತ್ಮನೀನ ಆತ್ಮನೀನ (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. 2. ಸ್ವಾಲ್, ಭಾವಮೈದುನ, ಹೆಂಡತಿಯ ಸಹೋದರ. 3. ವಿದೂಷಕ. (ವಿಂ) 4. ತನಗೆ ಹಿತವಾದ. ಆತ್ಮನೇ ಹಿತಮ್ - ಆತ್ಮನ್ "ಃ" (೪-೧-೯). "ನೈವಾತ್ಮನೀನಮಥವಾ ಕ್ರಿಯತೇ ಮದಾಂಘ್ರಿಃ" ಮಾಘಂ ೪-೪೪. 5. ಜೀತನ, ಜೀವ, ಪ್ರಾಣ ಹೊಂದಿರುವ. "ಆತ್ಮನೀನಃ ಸುತೇ ಸ್ಯಾಲೇ ಪ್ರಾಣಧಾರಿಣಿ ದೃಢಕೇ" ವೈಜಂ.

ಆತ್ಮನೇಪದ ಆತ್ಮನೇಪದ (ನಂ) ಕ್ರಿಯೆಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಫಲವು ಆತ್ಮಗಾಮಿ (ಕರ್ತೃವಿನದು) ಎಂದು ತಿಳಿಸುವುದಕ್ಕಾಗಿರುವ ಪ್ರತ್ಯಯ, ಧಾತುವಿನ ಮುಂದೆ ಬರುವ ತತ್ ಮತ್ತು ಆನ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು. [ತ ಆತಾಮ್ ಜಾ ಥಾಸ್ ಆತಾಮ್ ಧ್ವಮ್ ಇತ್ ವಹಿ ಮಹಿಙ್ ಶಾನಕ್ ಮತ್ತು ಕಾನಕ್] ಆತ್ಮನೇ ಆತ್ಮಾರ್ಥಫಲಬೋಧನಾಯ ಪದಮ್. ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಅಲ್ಪಕ್ (೬-೩-೭).

ಆತ್ಮನೇಪದಿನ್ ಆತ್ಮನೇಪದಿನ್ (ಪುಂ) ಆತ್ಮನೇಪದದ ಪ್ರಕೃತಿಯಾದ ಧಾತು. ಆತ್ಮನೇ ಪದಮಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪). [ಅನುದಾತ್ತಜಿತ ಆತ್ಮನೇಪದಮ್ ಮುಂತಾದ ಸೂತ್ರಗಳಿಂದ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವ ಧಾತುಗಳು ಆತ್ಮನೇಪದಿಗಳು.]

ಆತ್ಮಪ್ರಭ ಆತ್ಮಪ್ರಭ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. (ವಿಂ) 2. ಸ್ವಯಂಪ್ರಕಾಶವುಳ್ಳ. ಆತ್ಮನಾ ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಭಾತಿ.

ಆತ್ಮಪ್ರಭಾ ಆತ್ಮಪ್ರಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತನ್ನ ಪ್ರಕಾಶ. ಆತ್ಮನಃ ಪ್ರಭಾ.

ಆತ್ಮಪ್ರಭವ ಆತ್ಮಪ್ರಭವ (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. 2. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ಆತ್ಮಾ ದೇಹಃ ಮನೋ ವಾ ಪ್ರಭವೋ ಯಸ್ಯ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ - ಪ್ರಭವಾ - ಪ್ರಭವಾ. (೧) ಕನ್ಯೆ, ಮಗಳು. (೨) ಬುದ್ಧಿ. (ವಿಂ) 3. ಆಕಾಶ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಪಂಚ. ಆತ್ಮಾ ಪರಮಾತ್ಮಾ ಪ್ರಭವೋ ಯಸ್ಯ. ಆತ್ಮನ ಆಕಾಶಃ ಸಂಭೂತಃ. ಆಕಾಶಾದ್ರಾಯುಃ. ವಾಯೋರಗ್ನಿಃ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಆತ್ಮಬಂಧು ಆತ್ಮಬಂಧು - ಬಾಂಧವ - ಬಾಂಧವ (ಪುಂ) 1. ಸ್ನೇಹಿತ. 2. ತಾಯಿಯ ಸಹೋದರಿಯ ಮಕ್ಕಳು, ತಂದೆಯ ಸಹೋದರಿಯ ಮಕ್ಕಳು ಮತ್ತು ಸೋದರ ಮಾವನ ಮಕ್ಕಳು. "ಆತ್ಮಮಾತೃಷ್ವಸುಃ ಪುತ್ರಾಃ ಆತ್ಮಪಿತೃಷ್ವಸುಃ ಸುತಾಃ. ಆತ್ಮಮಾತುಲಪುತ್ರಾಶ್ಚ ವಿಜ್ಞೇಯಾ ಹ್ಯಾತ್ಮಬಂಧವಃ" 3. ತನ್ನ ಹಿತವನ್ನು ಸಾಧಿಸುವ ಮನಸ್ಸು. [ತನ್ನ ಯೋಗಕ್ಷೇಮವನ್ನು ವಿಷಯಾನಾಸಕ್ತವಾದ ಮನಸ್ಸೇ ಸಾಧಿಸಬೇಕಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಮನಸ್ಸು ಆತ್ಮಬಂಧು.] "ಆತ್ಮೇವ ಹ್ಯಾತ್ಮನೋ ಬಂಧುರಾತ್ಮೇವ ರಿಪುರಾತ್ಮನಃ" ಗೀತಾ ೬-೪.

ಆತ್ಮಬುದ್ಧಿ ಆತ್ಮಬುದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತನ್ನ ಸ್ವಂತಬುದ್ಧಿ. ಆತ್ಮನೋ ಬುದ್ಧಿಃ. [ಮನುಷ್ಯನು ಸ್ವಬುದ್ಧಿಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯವು ಸುಖಕರ. ಗುರುವಿನ ಸಲಹೆಯಂತೆ ನಡೆದರೆ ಮತ್ತೂ ವಿಶೇಷ. ಪರಬುದ್ಧಿಯಿಂದ (ತಾನು ಯೋಚಿಸದೆ) ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯದಿಂದ ವಿನಾಶ ಹೊಂದುತ್ತಾನೆ.] "ಆತ್ಮಬುದ್ಧಿಃ ಸುಖಾಯೈವ ಗುರುಬುದ್ಧಿಃ ವಿಶೇಷತಃ. ಪರಬುದ್ಧಿವಿನಾಶಾಯ ಸ್ತ್ರೀಬುದ್ಧಿಃ ಪ್ರಲಯಾವಹಾ"



ಆತ್ಮಮ್ ಆತ್ಮಭೂತ (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. ಆತ್ಮನೋ  
 ದೇಹಾತ್ ಭವತಿ - ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ವಿಪ್" (3-2-109).  
 2. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ಆತ್ಮನೋ ಮನಸೋ ಭವತಿ - ಭೂ  
 "ಕ್ವಿಪ್" 1. 3. ಪರಮಾತ್ಮ, ಈಶ್ವರ. ಆತ್ಮನೇವ  
 ಭವತಿ. 4. ಹಿರಣ್ಯಗರ್ಭ, ಬ್ರಹ್ಮ. ಆತ್ಮನೋ ವಿಷ್ಣೋಃ  
 ಸಕಾಶಾತ್ ಆತ್ಮನಾ ಸ್ವಯಮೇವ ವಾ ಭವತಿ. "ವಚಸ್ಯವಸಿತೇ  
 ತಸ್ಮಿನ್ ಸಸರ್ಜ ಗಿರಮಾತ್ಮಮ್" ಕುಮಾಂ 2-43. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
 5. ಕನ್ಯೆ, ಮಗಳು, 6. ಬುದ್ಧಿ, ಜ್ಞಾನ. (ವಿಂ) 7.  
 ಆಕಾಶಾದಿ ಪ್ರಪಂಚ.

ಆತ್ಮಮ್ ಆತ್ಮಭೂತ (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. 2. ಕಾಮ,  
 ಮನ್ಮಥ. ಆತ್ಮನೋ ದೇಹಾನ್ಮನಸೋ ವಾ ಭೂತಃ. (ವಿಂ) 3.  
 ದೇಹದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ. 4. ಮನಸ್ಸಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ.  
 ಆತ್ಮನೋ ಭೂತಃ. 5. ತನ್ನ ಕರ್ತವ್ಯವನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸುವ,  
 ತನಗೆ ಅನುಕೂಲವಾಗಿ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವ.  
 ಅನಾತ್ಮಾ ಆತ್ಮಾ ಸಂಪದಮಾನೋ ಭೂತಃ. [ರಾಜನ ಕರ್ತವ್ಯ  
 ವನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸುವ ಅನುಕೂಲ ಮಂತ್ರಿಯು ರಾಜನ  
 ಆತ್ಮಭೂತನೆಂದು ಲೋಕರೂಢಿ.] (ಸ್ತ್ರೀಂ) - ಭೂತಾ  
 - ಭೂತಾ. 1. ಮಗಳು. 2. ಬುದ್ಧಿ, ಜ್ಞಾನ.

ಆತ್ಮಮ್ ಆತ್ಮಭೂತ (ನಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮಭಾವ, ಬ್ರಹ್ಮ  
 ನಾಗಿ ಆಗುವಿಕೆ, ಮುಕ್ತಿ. ಆತ್ಮನೋ ಭಾವಃ - ಭೂ (ಸತ್ತಾ-  
 ಯಾಮ್) "ಕ್ವಿಪ್" (3-1-109). 2. ಬ್ರಹ್ಮಸಾಯುಜ್ಯ,  
 ಆತ್ಮನ ಸಮಾನಗುಣಗಳನ್ನು ಹೊಂದುವಿಕೆ, ಮುಕ್ತಿ.

ಆತ್ಮಮಯ ಆತ್ಮಮಯ (ವಿಂ) ಆತ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು  
 ಹೊಂದಿದ, ಬ್ರಹ್ಮಭಾವವನ್ನು ಹೊಂದಿದ. ಆತ್ಮಮ್  
 "ಮಯತ್" (4-4-21).

ಆತ್ಮಮಾನಿನ್ ಆತ್ಮಮಾನಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಆತ್ಮಭಿಮಾನ  
 ವುಳ್ಳ, ತಾನೇ ಶ್ರೇಷ್ಠನೆಂಬ ಅಹಂಕಾರವುಳ್ಳ. ಆತ್ಮಮಾನ-  
 ಮುಕ್ತಾರ್ಥೇಣ ಮನ್ಯತೇ--ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಞಿಪಿ:" (3-2-62).  
 2. ಆತ್ಮಗೌರವವುಳ್ಳ. ಆತ್ಮಮಾನೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಞಿಪಿ:"  
 (4-2-114). 3. ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ತನ್ನಂತೆಯೇ ತಿಳಿಯುವ.  
 ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ತೀಪ್" (4-1-4). -ಮಾನಿನಿ - ಮಾನಿನೀ.

ಆತ್ಮಮೂಲ ಆತ್ಮಮೂಲ (ನಂ) ಜಗತ್ತು, ವಿಶ್ವ,  
 ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡ. ಆತ್ಮಾ ಪರಮಾತ್ಮಾ ಮೂಲಮಸ್ಯ.

ಆತ್ಮಮೂಲಿ ಆತ್ಮಮೂಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೀವ್ರಕ ಸಂಧಿ.  
 ಆತ್ಮೇವ ರಕ್ಷಣೆ ಮೂಲಮಸ್ಯಾಃ. "ತೀಪ್" (4-1-41).

ಆತ್ಮಮ್ ಆತ್ಮಮ್ (ವಿಂ) ತನ್ನ ಹೊಟ್ಟೆಯನ್ನು  
 ಮಾತ್ರ ತುಂಬಿಕೊಳ್ಳುವವನು, ಸ್ವಾರ್ಥಪರ. ಆತ್ಮಮ್  
 ವಿಭವಿ - ಭೂ ಭೂ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) "ಞಿನ್" ಮುಗಮಶ್ವ

(3-2-26). "ಆತ್ಮಮ್ ಆತ್ಮಮ್ ಪಿಶಿತೇನೇರಾಣಾಮ್"  
 ಭಟಿಂ 2-33.

ಆತ್ಮಮಾಜಿನ್ ಆತ್ಮಮಾಜಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮಾರ್ಪಣ  
 ಭಾವನೆಯಿಂದ ಜ್ಯೋತಿಷ್ವೇಮಾದಿಯಾಗಗಳನ್ನು  
 ಮಾಡುವವನು, ಆತ್ಮೀಕನಿಷ್ಠನಾದ ಕರ್ಮಯೋಗಿ.  
 ಆತ್ಮಮ್ ಬ್ರಹ್ಮಾರ್ಪಣ ಭಾವಯನ್ ಯಜತೇ - ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾದೌ)  
 "ಞಿಪಿ:" (3-2-62). 2. ಎಲ್ಲಾ ಪ್ರಾಣಿಗಳಲ್ಲಿಯೂ  
 ತನ್ನನ್ನೂ ತನ್ನಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲಾ ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನೂ ಸಮನಾಗಿ  
 ಕಾಣುವವನು. "ಸರ್ವಭೂತೇಷು ಚಾತ್ಮಮ್ ಸರ್ವಭೂತಾನಿ  
 ಚಾತ್ಮಮಿ. ಸಮಂ ಪಶ್ಯನ್ಮಾತ್ಮಮಾಜಿ ಸ್ವಾರಾಜ್ಯಮಧಿಗच्छತಿ"  
 ಮನುಂ 12-91.

ಆತ್ಮಮಯಿನ್ ಆತ್ಮಮಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ.  
 2. ವಿಷ್ಣು. 3. ಈಶ್ವರ, ಶಿವ. 4. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ.  
 ಆತ್ಮಮಾ ಯೋನಿರಸ್ಯ. "ದದಶಂ ಚಕ್ರೀಕೃತಚಾರುಪಂ ಪ್ರಹರ್ತು-  
 ಮಮ್ಯುಚಿತಮಾತ್ಮಮಯಿನ್" ಕುಮಾಂ 3-60.

ಆತ್ಮಮರಾಮ ಆತ್ಮಮರಾಮ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನದಿಂದ  
 ಸಂತೋಷಪಡುವವನು. ಆತ್ಮಮಿ ರಾಮೋ ರಮಣಂ ಯಸ್ಯ.

ಆತ್ಮಮಲಾಭ ಆತ್ಮಮಲಾಭ (ಪುಂ) 1. ಜನ್ಮ, ಉತ್ಪತ್ತಿ,  
 ಹುಟ್ಟು. ಆತ್ಮಮಲಾಭಃ. "ರೂಪಾದಿನ್ ವಿಷಯಾನ್ ನಿರೂಪ್ಯ  
 ಕರಣೇರೇರಾತ್ಮಮಲಾಭಸ್ತ್ವಯಾ" ಮುಡ್ರಾಂ 3-1. 2. ಮುಕ್ತಿ  
 ಪಡೆಯುವಿಕೆ.

ಆತ್ಮಮಲೋಮನ್ ಆತ್ಮಮಲೋಮನ್ (ನಂ) 1. ಮೈಗೂದಲು.  
 2. ಗಡ್ಡ, ದಾಡಿ. ಆತ್ಮಮಲೋಮನ್.

ಆತ್ಮಮವತ್ ಆತ್ಮಮವತ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಆತ್ಮಮಾ ಅಸ್ಮಿನ್  
 (ಸ್ವಾಸ್ಮಿನ್) ಅಸ್ತಿ - ಆತ್ಮಮ್ "ಮತುಪ್" (4-2-94).  
 "ಸ್ವೇ ಮಹಿಮ್ನಿ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾನಾತ್ ಆತ್ಮಮವನ್ಮಿಧೀಯತೇ". "ಅನು-  
 ತಮೋ ದುರಾಧರ್ಮಃ ಕೃತಜ್ಞಃ ಕೃತಿರಾತ್ಮಮವನ್" ವಿಂ ಸಂ.  
 (ವಿಂ) 2. ಚಿತ್ತವನ್ನು ಜಯಿಸಿದ, ಮನೋನಿಗ್ರಹ  
 ವುಳ್ಳ. ಆತ್ಮಮಾ ವಶ್ಯತಯಾಸ್ತ್ಯಸ್ಯ "ಮತುಪ್" (4-2-94).  
 "ಅಥ ವೀಕ್ಷ್ಯ ರಘುಃ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಂ ಪ್ರಕೃತಿಷ್ವಾತ್ಮಮವತ್ತಯಾ"  
 ರಘುಂ 6-10. 3. ವಿಕಾರಹೊಂದದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ,  
 ದೃಢಚಿತ್ತನಾದ. 4. ಆತ್ಮಜ್ಞಾನವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ  
 ಶಾಸ್ತ್ರ, ಆತ್ಮನನ್ನು ತೋರಿಸಿಕೊಡುವ ಶಾಸ್ತ್ರ, ಅಧ್ಯಾತ್ಮ  
 ವಿದ್ಯೆ. ಆತ್ಮಮಾ ಪ್ರಕಾಶತಯಾಸ್ತ್ಯಸ್ಯ. "ಉದಯೇ ಮದವಾಚ್ಯ-  
 ಮುಚ್ಚತಾ ಶ್ರುತಮಾವಿಷ್ಕೃತಮಾತ್ಮಮವತ್ತಯಾ" ರಘುಂ 6-64.  
 (ಅವ್ಯಂ) 5. ತನ್ನಂತೆ, ತನಗೆ ಸಮಾನವಾಗಿ. ಆತ್ಮಮಾ  
 ಮುಲ್ಯಮ್ "ವತಿ:" (4-1-114). "ಆತ್ಮಮವತ್ಸರ್ವಭೂತಾನಿ  
 ಯಃ ಪಶ್ಯತಿ ಸ ಪಂಡಿತಃ".



ಆತ್ಮವಿಕ್ರಯ ಅತ್ಮವಿಕ್ರಯ (ಪುಂ) ತನ್ನ ದೇಹವನ್ನು ಮಾರಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಆತ್ಮನೋ ದೇಹಸ್ಯ ವಿಕ್ರಯಃ।

“ಗೋವಧೋಽಪ್ಯಾಜ್ಯಸಂಯಾಜ್ಯಪಾರದಾರ್ಯಾತ್ಮವಿಕ್ರಯಾಃ” ಮನುಂ ೧೧-೪೯।

ಆತ್ಮವಿದ್ ಅತ್ಮವಿದ್ (ವಿಂ) 1. ಅತ್ಮನನ್ನು ಅರಿತಿರುವ, ಅತ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ. ಆತ್ಮಾನಂ ವೇತ್ತಿ - ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೬೧)। 2. ತನ್ನ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಅರಿತಿರುವ. “ಯ ಇಹಾತ್ಮವಿದೋ ವಿಪಕ್ಷಮಧ್ಯೆ ಸಹ ಸಂವಿದ್ಯುಜೋಽಪಿ ಭುಜಃ ಸ್ಯುಃ” ಮಾಘಂ ೨-೧೧೬।

ಆತ್ಮವಿದ್ಯಾ ಅತ್ಮವಿದ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬ್ರಹ್ಮವಿದ್ಯೆ, ಅಧ್ಯಾತ್ಮವಿದ್ಯೆ, ವೇದಾಂತ, ಪರಮಾತ್ಮನ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ವಿದ್ಯೆ. ಆತ್ಮನೋ ವಿದ್ಯಾ। “ಆನ್ವೀಕ್ಷಿಕೀಂ ಚಾತ್ಮವಿದ್ಯಾಂ ವಾರ್ತಾರಿಮ್ಭಾಂಶ್ಚ ಲೋಕತಃ” ಮನುಂ ೭-೪೩।

ಆತ್ಮವೀರ ಅತ್ಮವೀರ (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. 2. ಭಾವಮೈದುನ, ಹೆಂಡತಿಯ ಸಹೋದರ. 3. ವಿದೂಷಕ. (ವಿಂ) 4. ಹೆಚ್ಚು ಬಲಶಾಲಿ, ಶಕ್ತಿವಂತ. “ಆತ್ಮವೀರಃ ಪ್ರಾಣವತಿ ಸ್ಯಾಲಕೇ ಚ ವಿದೂಷಕೇ” ಮೇದಿಂ।

ಆತ್ಮವೃತ್ತ ಅತ್ಮವೃತ್ತ (ನಂ) ಅತ್ಮಕಥೆ. ಆತ್ಮನೋ ವೃತ್ತಂ ಚರಿತಮ್।

ಆತ್ಮವೃತ್ತಿ ಅತ್ಮವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿ, ಮನಸ್ಸಿನ ಸ್ಥಿತಿ, ಅಂತಃಕರಣದ ಅವಸ್ಥೆ. ಆತ್ಮನೋ ವೃತ್ತಿಃ। “ಜಗಚ್ಛರಣ್ಯಸ್ಯ ನಿರಾಶಿಃ ಸತಃ ಕಿಮೇವಿರಾಶೋಪಹತಾತ್ಮವೃತ್ತಿಭಿಃ” ಕುಮಾರಂ ೪-೭೬। 2. ತನ್ನ ವ್ಯಾಪಾರ, ತನ್ನ ಕೆಲಸ. “ವಿಸ್ಮಾಪಯನ್ ವಿಸ್ಮಿತಮಾತ್ಮವೃತ್ತಿ ಸಿಂಹೋಽಸತ್ವಂ ನಿಜಗಾದ ಸಿಂಹಃ” ರಘುಂ ೨-೩೩। 3. ತನ್ನ ಕೆಲಸ, ತನ್ನ ಉದ್ಯೋಗ, - ಕಸಬು.

ಆತ್ಮಶಕ್ತಿ ಅತ್ಮಶಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮನ ಮಾಯೆ, ಜಗತ್ತನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸುವ ಶಕ್ತಿ. 2. ಅತ್ಮಬಲ, ದೇಹಬಲ. 3. ಮನೋಬಲ. ಆತ್ಮನಃ ಶಕ್ತಿಃ। “ದೇವಂ ನಿಹತ್ಯ ಕುರು ಪೌರೂಷಮಾತ್ಮಶಕ್ತಿಯಾ” ಪञ्ಚತಂಂ।

ಆತ್ಮಶಲ್ಯಾ ಅತ್ಮಶಲ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶತಾವರೀ ಗಿಡ.

ಆತ್ಮಶುದ್ಧಿ ಅತ್ಮಶುದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೇಹಶುದ್ಧಿ. 2. ಮನಃಶುದ್ಧಿ. 3. ಬುದ್ಧಿಶುದ್ಧಿ. ಆತ್ಮನೋ ದೇಹಸ್ಯ ಮನಸಃ ಬುದ್ಧಿರ್ವಾ ಶುದ್ಧಿಃ। ದೇಹವು ನೀರಿನಿಂದಲೂ, ಮನಸ್ಸು ಸತ್ಯ ನುಡಿಯುವುದರಿಂದಲೂ, ಬುದ್ಧಿಯು ಜ್ಞಾನಸಂಪಾದನೆಯಿಂದಲೂ ಶುದ್ಧವಾಗುವುದು. “ಅದ್ವಿಃ ಶುದ್ಧಯಂತಿ ಗಾತ್ರಾಣಿ ಬುದ್ಧಿಜ್ಞಾನಿನಿ ಶುದ್ಧಯತಿ। ಅಹಿಸಯಾ ಚ ಭೂತಾತ್ಮಾ ಮನಃ ಸತ್ಯೇನ ಶುದ್ಧಯತಿ”। 4. ಅತ್ಮನಲ್ಲಿ ಹಿಂದಿನ ಜನ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ ಕರ್ಮಗಳ

ನಾಶದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಶುದ್ಧಿ. “ಯೋಗಿನಃ ಕಮಂ ಕುರ್ವಂತಿ ಸಂಜ್ಞಂ ತ್ಯಕ್ತವಾತ್ಮಶುದ್ಧಯೇ” ಗೀತಾ ೪-೧೧।

ಆತ್ಮಶ್ಲಾಘಾ ಅತ್ಮಶ್ಲಾಘಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಶ್ಲಾಘನ -ಶ್ಲಾಘನ (ನಂ) -ಸ್ತುತಿ-ಸ್ತುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತನ್ನನ್ನು (ತಾನೇ) ಹೊಗಳಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಆತ್ಮನಃ ಶ್ಲಾಘಾ ಶ್ಲಾಘನಂ ಸ್ತುತಿರ್ವಾ।

ಆತ್ಮಸಂಯಮ ಅತ್ಮಸಂಯಮ (ಪುಂ) ಮನೋನಿಗ್ರಹ, ಮನಸ್ಸನ್ನು ಸ್ವಾಧೀನದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಆತ್ಮನೋ ಮನಸಃ ಸಂಯಮಃ। “ಆತ್ಮಸಂಯಮಯೋಗಾಗ್ನೌ ಜುಹ್ವತಿ ಜ್ಞಾನದೀಪಿತೇ” ಗೀತಾ ೪-೨೭।

ಆತ್ಮಸಮುದ್ಭವ ಅತ್ಮಸಮುದ್ಭವ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. 2. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. ಆತ್ಮನಾ ಸಮುದ್ಭವತಿ। 3. ಚತುರ್ಮುಖ, ಬ್ರಹ್ಮ. ಆತ್ಮಾ ಪರಮಾತ್ಮಾ ಸಮುದ್ಭವೋ ಯಸ್ಯ। 4. ಪುತ್ರ, ಮಗ. 5. ಮನ್ಮಥ. ಆತ್ಮಾ ದೇಹಃ ಮನೋ ವಾ ಸಮುದ್ಭವೋ ಯಸ್ಯ। (ವಿಂ) 6. ಪರಮಾತ್ಮನಿಂದ ಉಂಟಾದ ಆಕಾಶ ಮೊದಲಾದುದು. 7. ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ ಸುಖದುಃಖಗಳು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸಮುದ್ಭವಾ -ಸಮುದ್ಭವಾ. 1. ಕನ್ಯೆ, ಮಗಳು. 2. ಬುದ್ಧಿ.

ಆತ್ಮಸಂಭವ ಅತ್ಮಸಂಭವ (ಪುಂ) “ಆತ್ಮಸಮುದ್ಭವ” ಪದದ ಅರ್ಥ. “ಚಕಾರ ನಾಮ್ನಾ ರಘುಮಾತ್ಮಸಂಭವಮ್” ರಘುಂ ೩-೨೧।

ಆತ್ಮಸಂಪನ್ನ ಅತ್ಮಸಂಪನ್ನ (ವಿಂ) ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿ, ಮೇಧಾವಿ. ಆತ್ಮನಾ ಸಂಪನ್ನಃ। “ತಮಾತ್ಮಸಂಪನ್ನಮನಿಂದಿತಾತ್ಮಾ ಕೃತ್ವಾ ಯುವಾನಂ ಯುವರಾಜಮೇವ” ರಘುಂ ೧೮-೧೮।

ಆತ್ಮಸಾತ್ ಅತ್ಮಸಾತ್ (ಅವ್ಯಂ) ತನ್ನ ಅಧೀನವಾಗಿ. ಆತ್ಮನ್ “ಸಾತಿಃ” (೪-೪-೪೪)। ಕೃಮ್ವಸ್ತಿ ಮತ್ತು ಸಮ್ ಪೂರ್ವಕ ಪದ ಧಾತುವಿನ ಯೋಗವಿದ್ದಲ್ಲಿ ಈ ಪ್ರತ್ಯಯ ಬರುವುದು. ಆತ್ಮಸಾತ್ ಕರೋತಿ। ಆತ್ಮಸಾದ್ಭವತಿ। ಆತ್ಮಸಾತ್ಸಂಪದ್ಯತೇ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಆತ್ಮಸಿದ್ಧ ಅತ್ಮಸಿದ್ಧ (ವಿಂ) ತಾನಾಗಿಯೇ ಸಿದ್ಧಿಸಿದ, ಯತ್ನವಿಲ್ಲದೆ ಉಂಟಾದ.

ಆತ್ಮಸುಖ ಅತ್ಮಸುಖ (ನಂ) 1. ಮೋಕ್ಷಸುಖ, ಪರಮಾತ್ಮಪ್ರಾಪ್ತರೂಪವಾದ ಸುಖ. (ವಿಂ) 2. ಅತ್ಮಲಾಭದಿಂದ ಸುಖವುಳ್ಳ.

ಆತ್ಮಸ್ಥ ಅತ್ಮಸ್ಥ (ವಿಂ) 1. ಅತ್ಮನಿಷ್ಠನಾದ, ಪರಮಾತ್ಮಧ್ಯಾನದಲ್ಲಿರುವ, ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನಕ್ಕಾಗಿ ಪ್ರಯತ್ನಪಡುವ. ಆತ್ಮನೇ ತಿಳಿದಿರುತ್ತದೆ - ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) “ಕಃ” (೩-೨-೪)। 2. ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿರುವ. 3. ದೇಹದಲ್ಲಿರುವ.



ಆತ್ಮಹತ್ಯಾ ಅತ್ಮಹತ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗ, ಪ್ರಾಣವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಆತ್ಮನೋ ಹತ್ಯಾ ಹನನಮ್ |

ಆತ್ಮಹನ್ ಅತ್ಮಹನ್ (ವಿಂ) ಪರಮಾತ್ಮಜ್ಞಾನವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸದೆ ಅತ್ಮನನ್ನು ವ್ಯರ್ಥಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವನು, ಪರಮಾತ್ಮನ ನಿಜವಾದ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಅರಿಯದವನು, ಯೋಗ್ಯನಾದ ಗುರುವಿನ ಮೂಲಕ ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನ ಪಡೆದು ಸಂಸಾರಸಾಗರವನ್ನು ದಾಟದೆ ಜನ್ಮವನ್ನು ವ್ಯರ್ಥಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವನು. ಆತ್ಮಾನಂ ಹತವಾನ್—ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) “ಕ್ರಿಪ್” (೩-೨-೭೬) | “ನೃದೇಹಮಾಥಂ ಸುಲಭಂ ಸುದುರ್ಲಭಂ ಪ್ಲವಂ ಸುಕಲ್ಪಂ ಗುರುಕರ್ಣಧಾರಮ್ | ಮಯಾನುಕೂಲೇನ ನಭಸ್ವತೇರಿತಂ ಪುಮಾನ್ ಭವಾನ್ವಿ ನ ತರೇತ್ ಸ ಆತ್ಮಹಾ” ಭಾಗಂ ೧೧-೨೦-೧೭ |

ಆತ್ಮಾಧೀನ ಅತ್ಮಾಧೀನ (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. 2. ವಿದೂಷಕ. 3. ಭಾವಮೈದುನ, ಹೆಂಡತಿಯ ಸಹೋದರ. (ವಿಂ) 4. ಸ್ವತಂತ್ರ. 5. ಶಕ್ತಿವಂತ, ಬಲಶಾಲಿ. ಆತ್ಮಾಧಿ “ಃ” (೪-೪-೭) | “ಆತ್ಮಾಧೀನಃ ಸುತೇ ಪ್ರಾಣಾಧಾರೇ ಸ್ಯಾಲೇ ವಿದೂಷಕೇ” ಹೇಮಂ |

ಆತ್ಮಾನುರೂಪ ಅತ್ಮಾನುರೂಪ (ವಿಂ) ತನಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ, ತನಗೆ ತಕ್ಕದಾದ. ಆತ್ಮನೋನ್ಮುಖಃ | “ತಸ್ಯಾಮಾತ್ಮಾನುರೂಪಾಯಾಮಾತ್ಮಜನ್ಮಸಮುತ್ಸುಕಃ” ರಘುಂ ೧-೩೩ |

ಆತ್ಮಾಪಹಾರಕ ಅತ್ಮಾಪಹಾರಕ (ವಿಂ) ತನ್ನ ವಾಸ್ತವವಿಷಯವನ್ನು ಮರೆಮಾಚುವವನು. ಆತ್ಮಾನಮಪಹರತಿ—ಅಪ+ಹೃ (ಹರಣೇ) “ಫ್ಲುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) | “ಯೋಜ್ಯತಾಸಂತಮಾತ್ಮಾನಮನ್ಯತಾ ಸತ್ಸು ಭಾಷತೇ | ಸ ಪಾಪಕೃತ್ತಮೋ ಲೋಕೇ ಸ್ತೇನ ಆತ್ಮಾಪಹಾರಕಃ” ಮನುಂ ೪-೨೫೫ | “ಗಿಣಿಃ” (೩-೨-೭೮) | -ಅಪಹಾರಿನ್ -ಅಪಹಾರಿನ್. “ಕಿ ತೇನ ಕೃತಂ ಪಾಪಂ ಚೋರೇಣಾತ್ಮಾಪಹಾರಿಣಾ” | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಜಿಪ್” (೪-೧-೫) | -ಅಪಹಾರಿಣಿ -ಅಪಹಾರಿಣೀ |

ಆತ್ಮಾರಾಮ ಅತ್ಮಾರಾಮ (ವಿಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನಕ್ಕಾಗಿ ಧ್ಯಾನಾಸಕ್ತನಾದ (ಯೋಗಿ). ಆತ್ಮೇವಾರಾಮೋ ವನಂ ಯಸ್ಯ | ಆತ್ಮನಿ ಆರಮಂತೇ ವಾ | “ಆತ್ಮಾರಾಮಾ ವಿಹಿತರತಯೋ ನಿವಿಕಲ್ಪೇ ಸಮಾಧೌ” ವೇಣೀಂ ೧-೨೩ | 2. ಬ್ರಹ್ಮಭಾವದಿಂದ ಅನಂದಪಡುತ್ತಿರುವ. ಆತ್ಮನಿ ಆರಾಮಃ ಆನಂದಾನುಭವೋ ಯಸ್ಯ |

ಆತ್ಮಾಶಿನ್ ಅತ್ಮಾಶಿನ್ (ಪುಂ) ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. ಆತ್ಮಾನಂ ಸ್ವಕುಲಮಶನಾತಿ—ಅಶ (ಭೋಜನೇ) “ಗಿಣಿಃ” (೩-೨-೭೮) | [ಮತ್ಸ್ಯಗಳು ತಮಗಿಂತಲೂ ಚಿಕ್ಕ ಮೀನುಗಳನ್ನು ತಿನ್ನುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.] “ಮತ್ಸ್ಯಾ ಇವ ಜನಾನಿತ್ಯಂ ಭಕ್ಷಯಂತಿ ಪರಸ್ಪರಮ್” ರಾಮಾಂ |

ಆತ್ಮಾಶ್ರಯ ಅತ್ಮಾಶ್ರಯ (ಪುಂ) 1. ಆತ್ಮಾವಲಂಬನ, ತನ್ನ ಆಸರೆ. ಆತ್ಮನ ಆಶ್ರಯಃ | 2. ತನ್ನ ಸಿದ್ಧಿಗಾಗಿ ತನ್ನನ್ನೂ ತನ್ನ ಜ್ಞಾನವನ್ನೂ ಆಶ್ರಯಿಸುವಿಕೆ. ಇದೊಂದು ಶಾಸ್ತ್ರದೋಷ. ಆತ್ಮಾ ಆಶ್ರಯೋ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 3. ಸ್ವತಂತ್ರ. ಆತ್ಮೇವಾಶ್ರಯೋ ಯಸ್ಯ | 4. ತನ್ನ ಮನಸ್ಸಿನ ಆಶ್ರಯಪಡೆದ, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಅಧೀನವಾದ.

ಆತ್ಮೀಯ ಅತ್ಮೀಯ (ವಿಂ) ತನ್ನ ಸಂಬಂಧವಾದ, ತನ್ನದಾದ. ಆತ್ಮನಃ ಅಯಂ “ಃ” (೪-೨-೧೧೪) | “ಆತ್ಮೀಯಂ ಪೃಥ್ವಿಭುಜಙ್ಗಕಲ್ಪಿ” ಯಾದಂ ೪-೧೦೦ |

ಆತ್ಮೇಶ್ವರ ಅತ್ಮೇಶ್ವರ (ವಿಂ) ಚಿತ್ತವನ್ನು ಸ್ವಾಧೀನದಲ್ಲಿ ಇಟ್ಟಿರುವ, ಮನೋನಿಗ್ರಹವುಳ್ಳ. ಆತ್ಮನಃ ಇಶ್ವರಃ | “ಆತ್ಮೇಶ್ವರಾಣಾಂ ನ ಹಿ ಜಾತು ವಿಘ್ನಾಃ ಸಮಾಧಿಭೇದಪ್ರಭವೋ ಭವಂತಿ” ಕುಮಾಂ ೩-೪೦ |

ಆತ್ಮೋದಯ ಅತ್ಮೋದಯ (ಪುಂ) ತನ್ನ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ತನ್ನ ಏಳಿಗೆ. ಆತ್ಮನಃ ಉದಯಃ | “ಆತ್ಮೋದಯಃ ಪರಜ್ಞಾನಿಃ ದ್ವಯಂ ನೈತಿರೀತೀಯತೀ” ಮಾಘಂ ೨-೩೦ |

ಆತ್ಮೋದ್ಭವ ಅತ್ಮೋದ್ಭವ (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. 2. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. 3. ದುಃಖ, ಶೋಕ ಮುಂತಾದುದು. ಆತ್ಮಾ ದೇಹಃ ಮನೋ ವಾ ಉದ್ಭವೋ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 4. ದೇಹದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. 5. ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)—ಉದ್ಭವಾ—ಉದ್ಭವಾ. 1. ಕನ್ಯೆ, ಮಗಳು. 2. ಬುದ್ಧಿ, ಜ್ಞಾನ.

ಆತ್ಮೋಪಜೀವಿನ್ ಅತ್ಮೋಪಜೀವಿನ್ (ವಿಂ) ತನ್ನ ಶರೀರಶ್ರಮದಿಂದ (ಕೂಲಿಯಿಂದ) ಜೀವಿಸುವವನು. ಆತ್ಮನಾ ಸ್ವದೇಹವ್ಯಾಪಾರೇಣ ಉಪಜೀವತಿ—ಉಪ+ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೇ) “ಗಿಣಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) |

ಆತ್ಮೋಪಮ ಅತ್ಮೋಪಮ (ಪುಂ) 1. ಮಗ, ಪುತ್ರ. (ವಿಂ) 2. ತನಗೆ ಸಮಾನನಾದ, ತನ್ನಂತಿರುವ, ಆತ್ಮಾ ದೇಹಃ ಉಪಮಾ ಯಸ್ಯ |

ಆತ್ಮೋಪಮ್ಯ ಅತ್ಮೋಪಮ್ಯ (ನಂ) ತನ್ನ ಹೋಲಿಕೆ. ಆತ್ಮನ ಆಪಮ್ಯಮ್ | “ಆತ್ಮೋಪಮ್ಯೇನ ಸರ್ವತ್ರ ಸಮಂ ಪಶ್ಯತಿ ಯೋಜುನ” ಗೀತಾ ೬-೩೨ |

ಆತ್ಯಂತಿಕ ಅತ್ಯಂತಿಕ (ವಿಂ) 1. ಅತ್ಯಂತವಾದ, ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. ಅತ್ಯಂತಂ “ಠಕ್” (೪-೪-೩೪) | “ಸಾ ವಿಘ್ನೋರಿವ ವಿಘ್ನಗುಹಿತಕಸ್ಯಾತ್ಯಂತಿಕಶ್ರೇಯಸೇ” ಮುಡ್ರಾಂ ೨-೧೫ | 2. ಅತ್ಯಂತವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಅತಿಶಯವಾದ. ಅಂತಮತಿಕಾಂತಮತ್ಯಂತಮ್ | ಅತ್ಯಂತಮೇವಾತ್ಯಂತಿಕಮ್ | “ಸುಖಮಾತ್ಯಂತಿಕಂ ಯತದ್ಬುದ್ಧಿಗ್ರಾಹ್ಯಮತೀಂದ್ರಿಯಮ್” ಗೀತಾ ೬-೨೧ |



ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ. ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ ದುಃಖನಿವೃತ್ತಿ. ಮುಂದೆ ಎಂದೆಂದಿಗೂ ಯಾವ ವಿಧವಾದ ದುಃಖವೂ ಸಂಭವಿಸದಿರುವುದು ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ (ಮೋಕ್ಷ).

ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ (ಪುಂ) ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಪ್ರಕಾರಗಳಿಲ್ಲವೆಂದು, ವಿವೇಕಪೂರ್ವಕವಾದ ಪರಮಾತ್ಮೋಪಾಸನೆಯೆಂಬ ಶಸ್ತ್ರದಿಂದ ಆತ್ಮಬಂಧನವನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿ ಅಂತರಾತ್ಮನಾದ ಅಚ್ಯುತನನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವುದು. ಜ್ಞಾನಪ್ರತಿಬಂಧವೇ ಸಂಸಾರಬಂಧನ. ಗಾಳಿಯಿಂದ ಮೇಘಗಳು ಚೆದರಿದೊಡನೆ ಸೂರ್ಯನು ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣುವಂತೆ ಜೀವನಿಗೆ ವಿವೇಚನಾಪೂರ್ವಕವಾದ ಆತ್ಮೋಪಾಸನೆಯಿಂದ ದೇಹವೆಂಬ ಉಪಾಧಿಯು ತಪ್ಪಿದಾಗ ಪರಮಾತ್ಮನ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವುಂಟಾಗುವುದು. ಈ ಉಪಾಸನೆಯೆಂಬ ಶಸ್ತ್ರದಿಂದ, ಪ್ರಕೃತಿಮಯವಾಗಿ ಅಹಂಕಾರಪರಿಣಾಮವೆನಿಸಿಕೊಂಡ ದೇಹಸಂಬಂಧರೂಪವಾದ ಆತ್ಮನ ಬಂಧನವನ್ನೂ ಭೇದಿಸಿ ಅಂತರಾತ್ಮನಾದ ಅಚ್ಯುತನನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವುದೇ ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ. "ಘನೋ ಯದಾಕಂಪಿಭವೋ ವಿವಿಧೀತೇ ಚಕ್ಷುಃ ಸ್ವರೂಪಂ ರವಿಮೀಕ್ಷತೇ ತದಾ | ಯದಾಹ್ಯಹಂಕಾರಃ ಉಪಾಧಿರಾತ್ಮನೋ ಜಿಜ್ಞಾಸಯಾ ನಶ್ಯತಿ ತದ್ವಿಜ್ಞಾನಮಸ್ಮರೇತ್ | ಯದೇವಮೇತೇನ ವಿವೇಕಹೇತುನಾ ಮಾಯಮಾಹಂಕಾರಾತ್ಮಬಂಧನಮ್ | ಛಿತ್ತವಾಚ್ಯುತಾತ್ಮಾನುಭವೋಽವತಿಷ್ಠತೇ ತಮಾಹುರಾತ್ಮನಿಕಮಜ್ಞ ಸಂಪಲವಮ್" ಭಾಗಂ ೧೨-೪-೩೩, ೩೪ |

ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ (ನಂ) ನಿರಂತರವಾದ ಸುಖ, ಶಾಶ್ವತಸುಖ, ಯಾವ ಸುಖದಲ್ಲಿ ಇತರ ಕಾಮಗಳೆಲ್ಲವೂ ಲಯಹೊಂದುವುವೋ ಅಂತಹ ಉತ್ತಮ ಸುಖ, ಆತ್ಮಬುದ್ಧಿಯಿಂದ ಮಾತ್ರ ಪಡೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಸುಖ. ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ ಚ ತತ್ ಸುಖಂ ಚ | "ನಿಗುಣೇ ಬ್ರಹ್ಮಣಿ ಮಯಿ ಧಾರಯನ್ ವಿಶದಂ ಮನಃ | ಪರಮಾನಂದಮಾಪ್ನೋತಿ ಯತ್ರ ಕಾಮೋಽವಸೀಯತೇ" ಭಾಗಂ ೧೧-೧೫-೧೭ | "ಸುಖಮಾತ್ಮನಿಕಂ ಯತ್ತದ್ಬುದ್ಧಿಗ್ರಾಹ್ಯಮತೀಂದ್ರಿಯಮ್" ಗೀತಾ ೬-೨೧ |

ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ (ವಿಂ) ನಾಲ್ಕು ಕಾರಣವಾದ ಕೆಲಸ. ಅತ್ಯಯೋ ನಾಶಃ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೨) | "ಕನ್ವಿಧಾತ್ಮನಿಕಂ ಶ್ರುತ್ವಾ ತದರ್ಥಮನುಚಿಂತಯ ಚ | ಪ್ರಿಯಾಪ್ಯನುಭವನ್ ಶೋಭೇ ನ ತ್ವಮಂತಃಪುರೇ ನೃಪ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೪-೮೮ |

ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ (ಪುಂ) 1. ಅತ್ರಿಮಹರ್ಷಿಯ ಮಗ— (1) ಚಂದ್ರ. (2) ದುರ್ವಾಸಮುನಿ. (3) ದತ್ತಾತ್ರೇಯ. ಅತ್ರಿಗತಿಯು — ಅತ್ರಿ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೨) | 2. ಅತ್ರಿ

ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಯಿ -ಯಾ. 1. ಒಂದು ನದಿ. 2. ಅತ್ರಿಮಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿ. 3. ಅತ್ರಿಮಹರ್ಷಿಯ ಮಗಳು. 4. ರಜಸ್ವಲೆ, ಮತುಮತಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು.

ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ (ಪುಂ) 1. ಅಧರ್ವವೇದವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನ ಧರ್ಮ. 2. ಅಧರ್ವವೇದ. ಅಥರ್ವಣಾ ಪ್ರೋಕ್ತೋ ವೇದಃ ಅಥರ್ವಾ | ತಮಧೀತೇ — ಅಥರ್ವನ್ "ಠಕ್" (೪-೨-೬೩) | ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ: | ತಸ್ಯಾಯಮಾತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ ಧರ್ಮಃ | ಆಮ್ನಾಯೋ ವಾ — ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ "ಅನ್" ಇಕಲೋಪಶ್ಚ (೪-೩-೧೩೩) | 3. ಅಧರ್ವಶಾಪೆಯ ಪುರೋಹಿತ. (ನಂ) 4. ಅಧರ್ವವೇದಮಂತ್ರಗಳ ಗುಂಪು. ಅಥರ್ವಣಾ ಸಮೂಹಃ "ಅನ್" (೪-೨-೩೮) | 5. ಅಧರ್ವವೇದವಿಹಿತ ಕರ್ಮ, ಅಭಿಚಾರಿಕಕೃತ್ಯ. ಅಥರ್ವಣ ಇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) |

ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ ಆತ್ಮನಿವೃತ್ತಿ (ಪುಂ) ಅಧರ್ವವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಅಥರ್ವಣಾ ಪ್ರೋಕ್ತೋ ವೇದಃ ಅಥರ್ವಾ | ತಮಧೀತೇ — ಅಥರ್ವನ್ "ಠಕ್" (೪-೨-೬೩) |

ಆದರ್ಶ ಆದರ್ಶ (ಪುಂ) 1. ಕಚ್ಚುವಿಕೆ. ಆ + ದರ್ಶ (ದರ್ಶನ) ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮) | 2. ದಂತ, ಹಲ್ಲು. ಆದರ್ಶಯತೇಜೇನ ಕರಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧) | 3. ಕಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ ಜಾಗ. ಆದರ್ಶಯತೇಜಃ ಅಧಿಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧) |

ಆದರ್ಶ ಆದರ್ಶ (ಪುಂ) 1. ಉತ್ಸಾಹ, ಕುತೂಹಲ, ಆಸೆ. ಆ + ದೃಙ್ (ಆದರೆ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೮) | "ತದರ್ಶನಾದಭೂ-ಚ್ಛಂಭೋರ್ಮುಖಾನ್ ದಾರಾರ್ಥಮಾದರ್ಶಃ" ಕುಮಾಂ ೬-೧೩ | 2. ಗೌರವ, ಮನ್ನಣೆ, ಮರ್ಯಾದೆ. "ಪ್ರಾಯಃ ಪ್ರತ್ಯಯಮಾಪತ್ತೇ ಸ್ವಗುಣೇಷು-ತ್ತಮಾದರ್ಶಃ" ಕುಮಾಂ ೬-೨೦ | 3. ಯತ್ನ. "ಗೃಹ್ಯನ್ವಪತಾಕಾ-ಶ್ರೀರಪೋರಾದರ್ಶನಿರ್ಮಿತಾ" ಕುಮಾಂ ೬-೪೧ | 4. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. 5. ಪ್ರೀತಿ, ವಿಶ್ವಾಸ. "ಅಮರ್ಷಶೂನ್ಯೇನ ಜನಸ್ಯ ಜನ್ತುನಾ ನ ಜಾತಹಾರ್ದೇನ ಚ ವಿವಿಧಿಪಾದರ್ಶಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೩೩ | ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | ಆದರ್ಶಮ್ ಆದರ್ಶವತ್. 1. ಗೌರವ. 2. ಪ್ರೀತಿ.

ಆದರ್ಶ ಆದರ್ಶ (ವಿಂ) 1. ಗೌರವಾರ್ಹ, ಮರ್ಯಾದೆಗೆ ಯೋಗ್ಯನಾದ. 2. ಪ್ರೀತಿಸಲ್ಪಡುವ. ಆ + ದೃಙ್ (ಆದರೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | "ತವ್ಯಃ" ಆದರ್ಶವ್ಯಃ ಆದರ್ಶವ್ಯಃ.

ಆದರ್ಶ ಆದರ್ಶ (ಪುಂ) 1. ಕನ್ನಡಿ. ಆದರ್ಶಯತೇಜಃ ರೂಪಮ್ — ಆ + ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧) | "ಆದರ್ಶಯತಾ-ದರ್ಶತಲಾಮಲೇಷು ಚ್ಛಾಣೇವ ಯಾ ಸ್ವರ್ಜಲಧೇರ್ಜಲೇಷು" ಮಾಘಂ ೩-೩೫ |



2. ಟೀಕೆ, ಟಿಪ್ಪಣಿ, ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ. ಆದೃಶ್ಯತೆ ಸಮ್ಯಕ್  
ಜಾಯತೆ ಗ್ರಂಥಾರ್ಥೋಽತ್ರ। 3. ಪುಸ್ತಕದ ಮೂಲ ಪ್ರತಿ.  
4. ಮಾದರಿ. 5. ಗ್ರಂಥದ ಪ್ರತಿ. 6. ದೇಶದ ಎಲ್ಲೆ,  
ಗಡಿ. "ಆದರ್ಶೋ ದಂಪಣಿ ಟೀಕಾಪ್ರತಿಪುಸ್ತಕಗ್ರಂಥೋಽಪಿ" ಮೇಡಿಂ।  
ಆ+ದಾತ್-ದಾನೇ (ಜುಂ ತಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) "ಓ ದಾತ್"  
ಧಾತುವಿನಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಆದಾತ್ ಆದಾತ್ಯ (ವಿಂ) ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು, ಸ್ವೀಕರಿಸು  
ವವನು. ಆ+ಓ ದಾತ್ (ದಾನೇ) "ತತ್" (3-1-133)।  
"ಆದಾನನಿತಾಚ್ಚಾದಾತುರಾಹರೇದಪ್ರಯಚ್ಛತಃ" ಮನುಂ 11-14।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-4)। -ದಾತ್ರಿ-ದಾತ್ರಿಃ.

ಆದಾನ ಆದಾನ (ನಂ) 1. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಸ್ವೀಕರಿಸು  
ವುದು. ಆ+ಓ ದಾತ್ (ದಾನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।  
"ಆದಾನಂ ಹಿ ವಿಸರ್ಗಾಯ ಸತಾಂ ವಾರಿಮುಚಾಮಿವ" ರಘುಂ  
4-66। 2. ಕುದುರೆಯ ಅಭರಣ. "ಆದಾನಂ ಗ್ರಹಣೇಽಪಿ  
ಸ್ಯಾದಲಕ್ಷ್ಮೀ ಚ ವಾಜಿನಾಮ್" ಮೇಡಿಂ। 3. ಅಂಗೀಕಾರ,  
ಸಮ್ಮತಿ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. 4. ಬಿಲ್ಲಿನಲ್ಲಿ ಬಾಣವನ್ನು ಹೊಡೆ  
ವುದು. "ಆದಾನಮಿಷೋಜ್ಯಾಯಾಂ ಸಮೂಹನಮ್" ವೇಜಂ।  
5. ಖಾಯಿಲೆಯ ಲಕ್ಷಣ, ಅನಾರೋಗ್ಯದ ಗುರುತು.  
6. ಕತ್ತರಿಸುವಿಕೆ. ಆ+ದಾಪ್ (ಲವನೇ) "ಲ್ಯುಟ್"  
(3-3-114)।

ಆದಾಯ ಆದಾಯ (ಪುಂ) 1. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು,  
ಸ್ವೀಕರಿಸುವುದು. ಆ+ಓ ದಾತ್ (ದಾನೇ) ಭಾವೇ "ಛತ್"  
(3-3-114)। (ಅವ್ಯಂ) 2. ತೆಗೆದುಕೊಂಡು, ಸ್ವೀಕರಿಸಿ.  
ಆ+ಓ ದಾತ್ (ದಾನೇ) "ಲ್ಯಪ್" (3-1-39)। "ಆದಾಯ  
ಶಾಲಿಸ್ತಬಕಾನದೂರಾತ್ ಪ್ರಾಪ್ತಾ ಶುಕಶ್ರೇಣಿರಸೌ ವಿಭಾತಿ"  
ಯಾದಂ 18-66।

ಆದಾಯಚರ ಆದಾಯಚರ (ವಿಂ) ತೆಗೆದುಕೊಂಡು  
ಹೊರಡುವವನು. ಆದಾಯ ಚರತಿ ಚರ (ಗತೌ) "ಠಃ"  
(3-2-19)। "ದ್ವಿಷನ್ ವನೇಚರಾಧ್ಯಾಣಾಂ ತ್ವಮಾದಾಯಚರೋ  
ವನೇ" ಭಟ್ಟಿಂ 4-99। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-14)।  
-ಚರೀ-ಚರೀಃ.

ಆದಾಯಿನ್ ಆದಾಯಿನ್ (ವಿಂ) ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ,  
ಸ್ವೀಕರಿಸುವ. ಆ+ಓ ದಾತ್ (ದಾನೇ) "ಣಿಃ"  
(3-2-68)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-4)। ಆದಾಯಿನಿ  
ಆದಾಯಿನಿಃ.

ಆದಿ ಆದಿ (ಪುಂ) 1. ಮೊದಲು, ಪ್ರಾರಂಭ. ಆ+  
ಓ ದಾತ್ (ದಾನೇ) "ಕಿಃ" (3-3-92)। "ಆದೌ ಲಕ್ಷ್ಮೀರ-  
ಭಜತ ಹರಿಃ ಲಕ್ಷ್ಮಣೀರೂಪದೃಶ್ಯಾ" ಯಾದಂ 14-68।

2. ಕಾರಣ. "ನ ಮೇ ವಿದುಃ ಸುರಗಣಾಃ ಪ್ರಭವಂ ನ ಮಹರ್ಷಯಃ।  
ಅಹಮಾದಿಹಿ ದೇವಾನಾಂ ಮಹರ್ಷಿಣಾಂ ಚ ಸರ್ವಶಃ" ಗೀತಾ 10-2।  
3. ಸಾಮಾನ್ಯ, ಹತ್ತಿರ. 4. ಮೊದಲನೆಯ ಭಾಗ,  
ಪೂರ್ವಾವಯವ. "ಆದಿರನ್ತೇನ ಸಹಿತಾ" ಪಾಂ ಸೂಂ  
1-1-91। 5. ಆಶ್ರಯ, ಅವಲಂಬನ. "ವಿಷ್ಣುರಾದಿಃ  
ಪೃಥಾಸುತೋ ಭೀಷ್ಮಾದಿಶ್ಚ ಸುಯೋಧನಃ। ತೇ ಜಯಂತಿ ರಣೇ ಶತ್ರುನ್  
ಯೇಷಾಂ ವಿಷ್ಣುಃ ಸದಾಶ್ರಯಃ"। (ವಿಂ) 6. ಮೊದಲನೆಯ.  
"ಜಗದಾದಿರನಾದಿಸ್ತ್ವಂ ಜಗದಂತೋ ನಿರಂತಕಃ" ಕುಮಾರಂ 2-9।  
7. ಮುಖ್ಯವಾದ, ಪ್ರಧಾನವಾದ. 8. ಸದೃಶವಾದ,  
"ಭೂದಯೋ ಧಾತವಃ" ಪಾಂ ಸೂಂ 1-3-1।

ಆದಿಕರ್ತ ಆದಿಕರ್ತ (ಪುಂ) ಮೊದಲನೆಯದಾಗಿ ಸೃಷ್ಟಿಸು  
ವವನು, ಆಶ್ರಯ, ಪರಮಾತ್ಮ. ಆದಿಃ ಕರ್ತಾ। "ಗರೀಯಸೇ  
ಬ್ರಹ್ಮಣೋಽಪ್ಯಾದಿಕರ್ತೇ" ಗೀತಾ 11-39।

ಆದಿಕರ್ಮನ್ ಆದಿಕರ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ಮೊದಲನೆಯ  
ಕೆಲಸ, ಕೆಲಸದ ಪ್ರಾರಂಭ, ಕಾರ್ಯದ ಉಪಕ್ರಮ.  
ಬಹಳ ದೀರ್ಘಕಾಲ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಕೆಲಸದ  
ಪ್ರಾರಂಭ. "ಆದಿಕರ್ಮಣಿ ಕ್ತಃ ಕರ್ತೇರಿ ಚ" ಪಾಂ ಸೂಂ  
3-4-91। 2. ಮೊದಲು ನಡೆಸಿದ ಕೆಲಸ.

ಆದಿಕವಿ ಆದಿಕವಿ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ.  
[ವೇದಗಳನ್ನು ತಾನು ಮೊದಲು ತಿಳಿದುಕೊಂಡುದು  
ರಿಂದಲೂ ತಾನೇ ಮೊಟ್ಟಮೊದಲು ಹುಟ್ಟಿದುದು  
ರಿಂದಲೂ ಬ್ರಹ್ಮನು ಆದಿಕವಿ.] "ಜನ್ಮಾಶ್ರಯಃ ಯತೋಜ್ವ-  
ಯಾದಿತರತಶ್ಚಾರ್ಥೇವಭಿಜಃ ಸ್ವರಾತ್ ತೇನ ಬ್ರಹ್ಮ ಹೃದಾ ಯ ಆದಿ-  
ಕವಯೇ ಮುಹ್ಯಂತಿ ಯತ್ಸೂರಯಃ" ಭಾಗಂ 1-1। 2. ವಾಲ್ಮೀಕಿ  
ಮಹರ್ಷಿ. [ಜಗತ್ತಿಗೆಲ್ಲಾ ಕಾವ್ಯಪದ್ಧತಿಯನ್ನು  
ಮೊಟ್ಟಮೊದಲು ತೋರಿಸಿಕೊಟ್ಟವರಿವರು.]

ಆದಿಕಾರಣ ಆದಿಕಾರಣ (ನಂ) 1. ಮೊದಲನೆಯ  
ಕಾರಣ. 2. ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಗೆ ಕಾರಣನಾದ  
ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಬ್ರಹ್ಮ. 3. (ಸಾಂಖ್ಯಮತದಲ್ಲಿ)  
ಮೂಲಪ್ರಕೃತಿ, ಪ್ರಧಾನ. 4. (ಜೈನಮತದಲ್ಲಿ)  
ಪುದ್ಗಲ ರೂಪವಾದ ಪರಮಾಣು. 5. (ನೈಯಾಯಿಕ  
ಮತ್ತು ವೈಶೇಷಿಕ ಮತಗಳಲ್ಲಿ) ನಿಮಿತ್ತಕಾರಣನಾದ  
ಆಶ್ರಯ ಮತ್ತು ಉಪಾದಾನಕಾರಣವಾದ ಪರಮಾಣು.

ಆದಿಕಾವ್ಯ ಆದಿಕಾವ್ಯ (ನಂ) ವಾಲ್ಮೀಕಿರಚಿತವಾದ  
ಶ್ರೀಮದ್ರಾಮಾಯಣ. [ವಾಲ್ಮೀಕಿಮಹರ್ಷಿಯು  
ಛಂದೋಬದ್ಧವಾದ (ಶ್ಲೋಕರೂಪವಾದ) ಶ್ರೀಮ  
ದ್ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ರಚಿಸಿ ಪ್ರಪಂಚಮೆನಾಗಿ ಲೋಕ  
ದಲ್ಲಿ ಪ್ರಚಾರಮಾಡಿದುದರಿಂದ ಇದು ಆದಿಕಾವ್ಯ  
ವೆನಿಸಿತು.]



**ಪಾದಿತಸ್ ಅದಿತಸ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಮೊದಲು, ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ. ಆದೌ—ಆದಿ “ತಸಿ:” (ವಾಂ ೪-೪-೪೪)।

“ಪತೀನ್ ಪ್ರಜಾನಾಮಸೃಜಂ ಮಹರ್ಷಿಣಾದಿತೋ ದಶ” ಮನುಂ ೧-೩೪।

2. ಮೊದಲಿನಿಂದ, ಪ್ರಾರಂಭದಿಂದ.

**ಪಾದಿತಾ ಅದಿತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆದ್ಯತೆ, ಕಾರಣತ್ವ.

2. ಮೊದಲನೆಯದಾಗಿರುವಿಕೆ. “ಆದಿತಾಮಜನನಾಯ ಕೇಹಿನಾಮಂತತಾಂ ಚ ದಧತೇಜನಪಾಯಿನೇ” ಮಾಘಂ ೧೪-೬೪।

**ಪಾದಿತಾಲ್ ಅದಿತಾಳ** (ಪುಂ) ಸಂಗೀತಶಾಸ್ತ್ರೀಶ್ವರವಾದ ಒಂದು ತಾಳ. “ಏಕ ಏವ ಲಘುಯಂತ್ರ ಪಾದಿತಾಲ್: ಸ ಉಚ್ಯತೇ”।

**ಪಾದಿತೇಯ ಅದಿತೇಯ** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ, ಅದಿತಿಯ ಪುತ್ರ. ಅದಿತಿಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ “ಢಕ್” (೪-೧-೧೨೦)।

2. ಸೂರ್ಯ.

**ಪಾದಿತ್ಯ ಅದಿತ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ, ಅದಿತಿಯ ಪುತ್ರ.

2. ಸೂರ್ಯ. ಅದಿತಿಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ “ಞ:” (೪-೧-೮೪)।

“ಜಿಗೀಷುರೇಕೋ ದಿನಕೃದಾದಿತೀಷ್ವಿವ ಕಲ್ಪತೇ” ಮಾಘಂ ೨-೮೧।

**ಪಾದಿತಶಾಸ್ತ್ರರು:** “ಧಾತಾ ಮಿತ್ರೋರ್ಜಮಾ ರುದ್ರ: ವರುಣ: ಕುರ್ಮ ಏವ ಚ। ಭಗೋ ವಿವಸ್ವಾನ್ ಪೂಷಾ ಚ ಸವಿತಾ ದಶಮ: ಸ್ಮೃತ:। ಏಕಾದಶಸ್ತಥಾ ತ್ವಷ್ಟಾ ವಿಷ್ಣುರ್ದಾದಶ ಉಚ್ಯತೇ”। [ಮಾಸ ಭೇದದಿಂದ ಸೂರ್ಯನಿಗೆ ದ್ವಾದಶನಾಮಗಳು.

ಪ್ರಳಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ಈ ಹನ್ನೆರಡು ರೂಪಗಳನ್ನೂ ಏಕ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸ್ವೀಕರಿಸುವನು.] 3. ವಿಷ್ಣು. “ಸ್ವಯಂಭು: ಕಾಮುರಾದಿತ:” ವಿಂ ಸಂ। “ಆದಿತಾನಾಮಹಂ ವಿಷ್ಣು: ಷ್ಯೋತಿಷಾಂ ರವಿರಂಶುಮಾನ್” ಗೀತಾ ೧೦-೨೧। 4. ಆಕಾಶ, ಸೂರ್ಯಲೋಕ. “ಅಗ್ನಿ ಪ್ರಾಸ್ತಾಹುತಿ: ಸಮ್ಯಗಾದಿತ್ಯ-ಮುಪತಿಷ್ಠತೇ। ಆದಿತ್ಯಾಜ್ಜಾಯತೇ ವೃಷ್ಟಿ: ವೃಷ್ಟೇರಣ್ಣ ತತ: ಪ್ರಜಾ:” ಮನುಂ ೩-೭೬। 5. ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 6. ಭಾನು ವಾರ. 7. ಹಸ್ತನಕ್ಷತ್ರ. [ಇದು ಸೂರ್ಯದೇವತಾಕ ವಾದುದು.]

**ಪಾದಿತ್ಯಕೇತು ಅದಿತ್ಯಕೇತು** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯನ ಸಾರಥಿ

ಯಾದ ಅರುಣ. ಆದಿತ್ಯಸ್ಯ ಕೇತು:। 2. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ

ಒಬ್ಬ ಮಗ.

**ಪಾದಿತ್ಯಪತ್ರ ಅದಿತ್ಯಪತ್ರ** (ನಂ) ಎಕ್ಕದಲೆ.

**ಪಾದಿತ್ಯಪುತ್ರ ಅದಿತ್ಯಪುತ್ರ** -ಸುತ-ಸುತ, -ಸುನು-ಸೂನು

(ಪುಂ) ಸೂರ್ಯನ ಮಗ—1. ಶನಿಗ್ರಹ. 2. ಕರ್ಣ.

3. ಸುಗ್ರೀವ. 4. ಯಮ. (ಪುಂ ದ್ವಿವಂ) 5. ಅಶ್ವಿನೀ

ದೇವತೆಗಳು. -ಸುತಾ-ಸುತಾ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೂರ್ಯನ

ಮಗಳು. 1. ಯಮುನಾನದಿ. 2. ತಪತೀನದಿ.

**ಪಾದಿತಾ ಅದಿತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಅವೇಕ್ಷೆ.

ಆದಾತುಮಿಚ್ಛಾ—ಆ + ಡು ದಾತ್ (ದಾನೇ) + ಸನ್ “ಅ:”

(೩-೩-೧೦೨)।

**ಪಾದಿತು ಅದಿತು** (ವಿಂ) ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಅವೇಕ್ಷೆ

ಯುಳ್ಳ. ಆದಾತುಮಿಚ್ಛು:—ಆ+ಡು ದಾತ್ (ದಾನೇ) + ಸನ್

“ಃ” (೩-೨-೧೬೮)। “ಆದಿತುಭಿರ್ನುಪುರಶಿಷ್ಜಿತಾನಿ”

ಕುಮಾಂ ೧-೩೪।

**ಪಾದಿದೇವ ಅದಿದೇವ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಆದೌ ದೀವ್ಯತಿ—

ದಿವು (ಕೌಡಾದೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ಪಾದಿದೇವೋ

ಮಹಾದೇವೋ ದೇವಶ:” ವಿಂ ಸಂ। 2. ಸೂರ್ಯ. 3. ಶಿವ,

ಈಶ್ವರ. 4. ಪರಬ್ರಹ್ಮ, ಮೂಲಕಾರಣ. “ತವಮಾದಿ-

ದೇವ: ಪುರುಷ: ಪುರಾಣ: ತವಮಸ್ಯ ವಿಶ್ವಸ್ಯ ಪರಂ ನಿಧಾನಮ್”

ಗೀತಾ ೧೧-೩೮।

**ಪಾದಿದೇತ್ಯ ಅದಿದೇತ್ಯ** (ಪುಂ) ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪು. “ಪಾದಿದೇತ್ಯೋ

ಮಹಾವೀರ್ಯೋ ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪು: ಪುರಾ” ಭಾಂ ವನಂ ೧೦೧-೨೩।

**ಪಾದಿನ್ ಅದಿನ್** (ವಿಂ) ಭಕ್ತಿಸುವ, ತಿನ್ನುವ. ಅತ್ತಿ—

ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ) “ಞಿತಿ:” (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್

“ತೀಪ್” (೪-೧-೪)। ಪಾದಿನಿ ಅದಿನೀ. “ಪುತ್ರಾದಿನಿ

ತವಮಸಿ ಪಾಪೇ” ಸಿಂ ಕೌಂ।

**ಪಾದಿಪವನ್ ಅದಿಪವನ್** (ನಂ) ಮಹಾಭಾರತದ 18

ಪರ್ವಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯದು.

**ಪಾದಿಪುರಾಣ ಅದಿಪುರಾಣ** (ನಂ) ಎಲ್ಲಾ ಪುರಾಣಗಳಿಗೂ

ಮೂಲಭೂತವಾದ ಪುರಾಣ, ನಾಲ್ಕು ಲಕ್ಷ ಗ್ರಂಥ

ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಬ್ರಹ್ಮಕೃತವಾದ ಪುರಾಣ. ಇದನ್ನೇ

ಮೂಲವಾಗಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಅಷ್ಟಾದಶ ಪುರಾಣಗಳು

ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ರಚಿತವಾದುವು. “ಅಷ್ಟಾದಶ-

ಮನೋಪಮ್ಯಂ ಸಾರಾತ್ಸಾರತರಂ ದ್ವಿಜ। ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡಂ ಚ ಚತುರ್ಲಕ್ಷಂ

ಪುರಾಣತ್ವೇನ ಪಠ್ಯತೇ। ತದೇವ ವ್ಯಸ್ಯ ಗದಿತಮನ್ಯಾಷ್ಟಾದಶಧಾ

ಪೃಥಕ್। ಪಾರಾಶರೇಣ ಮುನಿನಾ ಸರ್ವೇಷಾಮಪಿ ಮಾನದ” ನಾರದ-

ಪುರಾಣೇ ಬ್ರಹ್ಮವಾಕ್ಯಮ್।

**ಪಾದಿಪು (ಪು) ಋಷ ಅದಿಪು (ಪೂ) ರುಷ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮ

ಪುರುಷ, ನಾರಾಯಣ. 2. ಹಿರಣ್ಯಗರ್ಭ. “ತಮರ್ಥ-

ಮರ್ಥಾದಿಕಯಾದಿಪುರುಷ:” ಮಾಘಂ ೧-೧೪।

**ಪಾದಿಮ ಅದಿಮ** (ವಿಂ) ಮೊದಲು ಹುಟ್ಟಿದ, ಮೊದಲ

ನೆಯ. ಆದೌ ಭವ: “ಡಿಮಚ್” (ವಾಂ ೪-೩-೨೩)।

**ಪಾದಿಮತ್ ಅದಿಮತ್** (ವಿಂ) ಪ್ರಾರಂಭವುಳ್ಳ, ಕಾರಣ

ಸಹಿತವಾದ, ಜನ್ಯ. ಪಾದಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ—“ಮತುಪ್”

(೪-೨-೧೪)।



ಆದಿರಾಜ ಅದಿರಾಜ (ಪುಂ) ಪೃಥುಮಹಾರಾಜ. ಆದಿ:  
 ಆದಿ ರಾಜಾ "ಡ್" (೪-೪-೧೧) | ರಾಜರಲ್ಲಿ ಪೃಥುವು  
 ಮೊದಲನೆಯವನು. "ಅಥ ತಸ್ಯ ಪುನರ್ವಿಪ್ರಪುತ್ರಸ್ಯ  
 ಮಹಿಪತೇ | ಬಾಹುಮ್ಯಾಂ ಮಯಮಾನಾಮ್ಯಾಂ ಮಿಥುನಂ ಸಮಪದತ |  
 ತದ್‌ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಮಿಥುನಂ ಜಾತವಿಸ್ಮಯಾ ಗ್ರಹವಾದಿನಃ | ಋಚುಃ ಪರಮ-  
 ಸಂತುಷ್ಟಾಃ ವಿದಿತ್ವಾ ಭಗವತ್ಕಲಾಮ್ | ಏಷ ವಿಷ್ಣೋಃ ಭಗವತಃ  
 ಕಲಾ ಭುವನಪಾಲಿನಿ | ಇತ್ಯುಕ್ತಂ ಲಕ್ಷ್ಮೀಸಂಭೂತಿಃ ಪುರುಷಸ್ಯಾ-  
 ನಪಾಪಿನಿ | ಕ್ಷತ್ರಿಯಃ ಪ್ರಥಮೋ ರಾಜಾಂ ಪುಮಾನ್ ಪ್ರಥಯಿತಾ ಯಶಃ |  
 ಪೃಥುರ್ನಾಮ ಮಹಾರಾಜೋ ಭವಿಷ್ಯತಿ ಪೃಥುಶ್ಚವಾಃ" ಭಾಗಂ ೪-೧-೪ |  
 ಆದಿವರಾಹ ಅದಿವರಾಹ (ಪುಂ) ದಶಾವತಾರಗಳಲ್ಲೊಂ  
 ದಾದ ವಿಷ್ಣುವಿನ ಮೂರನೆಯ ಅವತಾರ.

ಆದಿಶಕ್ತಿ ಅದಿಶಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮನ ಮಾಯಾ  
 ರೂಪವಾದ ಶಕ್ತಿ. 2. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

ಆದಿಶರೀರ ಅದಿಶರೀರ (ನಂ) 1. ಲಿಂಗಶರೀರ, ಪಾಪ  
 ಪುಣ್ಯಗಳನ್ನು ಕೂಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಒಂದು ಶರೀರ.  
 "ಅಯಮಾದಿಶರೀರೇಣ ದೇವಸೃಷ್ಟೇನ ಮಾನವಃ | ಶುಭಾನಾಮಶುಭಾನಾಂ  
 ಚ ಕುಸ್ತೇ ಸಂಚಯಂ ಮಹತ್ | ಆಯುಷೋಽಂತೇ ಪ್ರಹಾಏದಂ ಕ್ಷೀಣಪ್ರಾಪ್ಯಂ  
 ಕಲೇಬರಮ್ | ಸಂಭವತ್ಯೇವ ಯುಗಪದತೋ ನಾಸ್ತಿಯಂತರಾಭವಃ | ತತ್ರಾಸ್ಯ  
 ಸ್ವಕೃತಂ ಕರ್ಮ ಲಾಭೇವಾನುಗತಂ ತದಾ | ಫಲತ್ಯಥ ಸುಖಾರ್ಹೋ ವಾ  
 ದುಃಖಾರ್ಹೋ ವಾಽಪಿ ಜಾಯತೇ" ಭಾಂ ವನಂ ೧೮೬-೨೪, ೨೫,  
 ೨೬ | 2. ಕಾರಣಶರೀರ, ಸೂಕ್ಷ್ಮಶರೀರ.

ಆದಿಷ್ಠ ಅದಿಷ್ಠ (ನಂ) 1. ಉಚ್ಚಿಷ್ಠ, ಉಚ್ಚಿಮಾಡಿ  
 ಉಳಿದ ಅನ್ನ. (ವಿಂ) 2. ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
 "ಅಗ್ರೇ ಭವತ್ ಗುರುರಿವ ಸ್ವಯಮಾನಕಾನಾಮಾದಿಷ್ಠಸಂಪದಿವ  
 ಕಂಧರಯಾ ತವೇಷಃ" ಯಾದಂ ೧೯-೨೩ | 3. ಅಪ್ಪಣೆ  
 ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಕ್ತಃ"  
 (೩-೨-೧೦೨) | "ಆದಿಷ್ಠೋಽಸ್ಮಿ ಮಹಾರಾಜಮಹಾಮೋಹೇನ |  
 ಯಥಾ - "ವತ್ಸ ದಮ್ಭ, ಪ್ರತಿಜ್ಞಾತಮ್ ವಿವೇಕೇನ ಪ್ರಬೋಧದಯಾ |  
 ಪ್ರೇಷಿತಾಶ್ಚ ತೇಷು ತೇಷು ತೀರ್ಥೇಷು ಶಮದಮಾದಯಃ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೨ |  
 4. (ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ) ಅದೇಶಹೊಂದಿದ  
 ವರ್ಣ. ಒಂದು ವರ್ಣದ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಬರುವ  
 ಮತ್ತೊಂದು ವರ್ಣ. ಮುಖಿ + ಉಪಾಸ್ಯಃ = ಮುಖ್ಯುಪಾಸ್ಯಃ  
 ಎಂಬಲ್ಲಿ ಈಕಾರದ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ (ಅದೇಶವಾಗಿ) ಬಂದಿ  
 ರುವ "ಯ" ಕಾರವು ಅದಿಷ್ಠ.

ಆದಿಸರ್ಗ ಅದಿಸರ್ಗ (ಪುಂ) ಜಗತ್ತಿನ ಮೊದಲನೆಯ ಸೃಷ್ಟಿ,  
 ಮಹಾಪ್ರಳಯಾನಂತರ ಪ್ರಪಂಚದ ಆದ್ಯಸೃಷ್ಟಿ.

ಆದಿನವ ಅದಿನವ (ಪುಂ) 1. ದೋಷ, ತಪ್ಪು. ಆ + ದಿಙ್  
 (ಕ್ಷಯೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) | ಆದಿನಸ್ಯ ವಾನಂ ಪ್ರಾಪ್ತಿಃ -

ವಾ (ಗತಿಗನ್ಯನಯಃ) "ಕ್ತಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೧೧೪) |  
 2. ಕ್ಲೇಶ, ಕಷ್ಟ. 3. ದುರಂತ. 4. ರೋಷ, ಕೋಪ.  
 (ವಿಂ) 5. ಕಷ್ಟಪಟ್ಟ, ಕ್ಲೇಶಹೊಂದಿದ. ಕರ್ತಂ "ಕ್ತಃ"  
 (೩-೪-೭೨) | "ಆದಿನವಃ ಪುಮಾನ್ ದೋಷೇ ಪರಿಕ್ಲೇಶದುರಂತಯೋಃ"  
 ಮೇದಿಂ |

ಆ + ದಿಪಿ - ದಿಪಿ (ದಿಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸೇಂ)  
 (1) ಉರಿಸು. (2) ಬೆಂಕಿಯಿಟ್ಟು ಸುಡು.  
 (3) ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸು. (4) ಪ್ರೇರಿಸು, ಹುರಿದುಂಬಿಸು.

ಆದಿಪಕ ಅದಿಪಕ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುವ, ಬೆಳಗಿ  
 ಸುವ. 2. ಹುರಿದುಂಬಿಸುವ, ಪ್ರೇರಿಸುವ, ಉತ್ತೇಜನ  
 ಗೊಳಿಸುವ. ಆದಿಪಯತಿ - ಆ + ದಿಪಿ (ದಿಪ್ತೌ) + ಣಿಕ್  
 "ಫ್ಲು" (೩-೧-೧೩೩) | 3. ಸುಡುವವನು, ದಹಿಸು  
 ವವನು, ಇನ್ನೊಬ್ಬರ ಮನೆಗೆ ಬೆಂಕಿ ಹಚ್ಚುವವನು.  
 "ರಾಜೋ ವಥಂ ಚಿಕೀರ್ಷೆಃ ತಸ್ಯ ಚಿತ್ರೋ ವಧೋ ಭವೇತ್ |  
 ಆದಿಪಕಸ್ಯ ಸ್ತೇನಸ್ಯ ವರ್ಣಸಂಕ್ಷುರಿಕಸ್ಯ ಚ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ  
 ೮೫-೨೨ | 4. ಉರಿಸುವ.

ಆದಿಪನ ಅದಿಪನ (ನಂ) 1. ಪ್ರೇರಣೆ, ಉತ್ತೇಜನ  
 ಗೊಳಿಸುವಿಕೆ. 2. ಬೆಂಕಿಹಚ್ಚುವಿಕೆ. 3. ಪ್ರಕಾಶ  
 ಗೊಳಿಸುವಿಕೆ, ಬೆಳಗಿಸುವುದು. 4. ಉರಿಸುವಿಕೆ. ಆ +  
 ದಿಪಿ (ದಿಪ್ತೌ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |  
 ಆ + ದಿಪಿ + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) | -ದಿಪನಃ  
 -ದಿಪನಃ. (ವಿಂ) "ಆದಿಪಕ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ಆದಿಪಿತ ಅದಿಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
 ಬೆಳಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹುರಿದುಂಬಿಸ  
 ಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ದಿಪಿ (ದಿಪ್ತೌ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |  
 3. ಬೆಂಕಿಹಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಉರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಆದೃತ ಅದೃತ (ವಿಂ) 1. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಪೂಜಿಸ  
 ಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಪ್ರೀತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ದೃಙ್ (ಆದರೆ) "ಕ್ತಃ"  
 (೩-೨-೧೦೨) | "ಆದೃತಾ ನಕ್ಷಪದೇಃ ಪರಿರಮ್ಭಾಶ್ಚುಮ್ಬಿತಾನಿ  
 ಧನದಂತನಿಪಾತೇಃ" ಕಿರಾಂ ೯-೪೯ | 4. ಪ್ರೀತಿಸುವ,  
 ಆದರದಿಂದ ಕಾಣುವ. ಆ + ದೃಙ್ (ಆದರೆ) ಕರ್ತಂ  
 "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | "ಆತ್ಮಾನಮಾದೃತೋ ರಕ್ಷೇತ್  
 ಪ್ರಮಾದಾದ್ವಿ ವಿನಶ್ಯತಿ" ಪञ್ಚತಂ |

ಆದೃತ್ಯ ಅದೃತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಆದರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಪ್ರೀತಿಸ  
 ಲ್ಪಡುವ. 2. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಆದರಿಸಲು  
 ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಪ್ರೀತಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. 4. ಗೌರ  
 ವಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. ಆ + ದೃಙ್ (ಆದರೆ) "ಞ್ಯತ್"  
 (೩-೧-೧೨೪) |



ಆದೇಶ ಆದೇಶ (ವಿಂ) ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.  
 ಆದಾತು ಯೋಗ್ಯ-ಆ + ತು ದಾನ್ (ದಾನ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೭).  
 "ಇತ್" (೩-೪-೬೫). "ಅನಾದೇಶಸ್ಯ ಚಾದಾನಾದೇಶಸ್ಯ ಚ  
 ವರ್ಜನಾತ್" ಮನುಂ ೮-೧೭೧.

ಆದೇಶ ಆದೇಶ (ಉಂ) 1. ಅಪ್ಪಣೆ, ಅಜ್ಜೆ. ಆ + ದಿಶ  
 (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) ಭಾವ "ಘ" (೩-೩-೧೮). "ಆದೇಶ  
 ದೇಶಕಾಲಜಃ ಶಿಷ್ಯಃ ಶಾಸಿತುರಾನತಃ" ರಘುಂ ೧-೧೨.  
 2. ಉಪದೇಶ, ಸಲಹೆ. 3. ಸೂಚನೆ, ಮುಂದಾಗಿ  
 ತಿಳಿಸುವಿಕೆ. 4. (ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ) ಒಂದು ವರ್ಣದ  
 ಅಥವಾ ಧಾತುವಿನ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಮತ್ತೊಂದು ವರ್ಣವು  
 ಅಥವಾ ಧಾತುವು ಬರುವುದು. "ಧಾತೋಃ ಸ್ಥಾನ ಇವಾದೇಶಂ  
 ಸುಗ್ರೀವಂ ಸಂಯೋಜಯತ್" ರಘುಂ ೧೨-೫೮. "ಸ್ಥಾನಿವದಾದೇಶೋಽ-  
 ನಲ್ವಿಧಿ" ಪಾಂ ಸೂಂ ೧-೧-೫೬. "ಅಸ್ತೇರ್ಮುಃ" (೨-೪-೫೨)  
 ಸೂತ್ರದಿಂದ "ಅಸ" ಧಾತುವಿನ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ "ಭೂ"  
 ಧಾತುವಿನ ಆದೇಶವು ಬಂದು ಬಭೂವ ಭವಿತಾ ಭೂಯಾತ್  
 ರೂಪಗಳಾಗಿವೆ. ಸುಧೀ + ತಪಾಸ್ಯಃ ಎಂಬಲ್ಲಿ "ಃ" ಕಾರ  
 ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ "ಯ" ಆದೇಶವು ಬಂದು ಸುಧ್ಯುಪಾಸ್ಯಃ ಎಂಬ  
 ರೂಪವಾಗಿದೆ. 5. (ಜ್ಯೋತಿಷಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಗ್ರಹಗಳ  
 ಯೋಗದಿಂದಂಟಾಗುವ ಶುಭಾಶುಭ ಫಲಗಳು.  
 6. ಭವಿಷ್ಯದ ನುಡಿ, ಮುಂದಾಗುವುದನ್ನು ಹೇಳುವಿಕೆ.  
 "ಅನ್ಯಥಾ ಕ ಸಿದ್ಧಾದೇಶಪ್ರತ್ಯಯಪ್ರಾಥಿತಾಯಾಃ ಸಿಹಲೇಶ್ವರದ್ವಹಿತುಃ  
 ಪ್ರವಹಣಭಜ್ಞನಿಮಗ್ನಾಯಾಃ ಫಲಕಾಸಾದನಮ್" ರತ್ನಾಂ ೧.  
 7. ಉಪದೇಶದಿಂದ ಮಾತ್ರ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ (ಬ್ರಹ್ಮ).  
 ಕರ್ಮಂ "ಘ"।

ಆದೇಶಕ ಆದೇಶಕ (ವಿಂ) 1. ಉಪದೇಶಿಸುವವನು,  
 ಸಲಹೆಕೊಡತಕ್ಕವನು. 2. ಅಪ್ಪಣೆಮಾಡುವವನು.  
 ಆದಿಶತಿ - ಆ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಞ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಆದೇಶನ ಆದೇಶನ (ನಂ) 1. ಅಪ್ಪಣೆ, ಅಜ್ಜೆ. 2. ಉಪ  
 ದೇಶ, ಸಲಹೆ. ಆ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಆದೇಶಿನ್ ಆದೇಶಿನ್ (ಉಂ) 1. ದೈವಜ್ಞ, ಶುಭಾಶುಭ  
 ಫಲವನ್ನು ಹೇಳುವವನು. (ವಿಂ) 2. ಸಲಹೆಗಾರ,  
 ಉಪದೇಶಕ. 3. ಅಪ್ಪಣೆಮಾಡುವ, ಅಜ್ಜೆ ಮಾಡುವ.  
 ಆ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)।

ಆದೇಶ್ಯ ಆದೇಶ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅಪ್ಪಣೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ,  
 ಅಜ್ಜೆ ಪಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಡುವ. ಆ +  
 ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)।

ಆದೇಶ್ಯ ಆದೇಶ್ಯ (ಉಂ) 1. ಯಾಗಮಾಡುವವನು,  
 ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಮುಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನಿಗೆ ಅಪ್ಪಣೆಮಾಡುವವನು,  
 ಯಜಮಾನ. ಆ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ತ್" (೩-೧-೧೩೩)। (ವಿಂ) 2. ಅಜ್ಜೆ ಮಾಡುವ, ಅಪ್ಪಣೆ  
 ಮಾಡುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ತೀ" (೪-೧-೫)। ಆದೇಶ್ಯ  
 ಆದೇಶ್ಯ.

ಆದ್ಯ ಆದ್ಯ (ನಂ) 1. ಧಾನ್ಯ. ಅದ (ಮಳಿಗೆ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)। (ವಿಂ) 2. ಮೊದಲನೆಯ.  
 3. ಮುಖ್ಯ, ಪ್ರಧಾನ, ಶ್ರೇಷ್ಠ. "ಆಸೀನ್ಮಹೀಕ್ಷಿತಾಮಾಘಃ  
 ಪ್ರಣವಃಛಂದಸಾಮಿವ" ರಘುಂ ೧-೧೧. 4. ಪ್ರಾಚೀನವಾದ.  
 ಆದೌ ಭವಃ "ಯತ್" (೪-೩-೫೩)। "ಆದ್ಯಕೋಲಲುಲಿತಃ  
 ಪ್ರಕಂಪನಃ ಕಂಪಿತಾಂ ಮುಹುರನಿಧಿಗಾತಮನಿ" ಮಾಘಂ ೧೪-೪೩.  
 5. ತಿನ್ನಲ್ಪಡುವ. 6. ತಿನ್ನಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.

ಆದ್ಯಕವಿ ಆದ್ಯಕವಿ (ಉಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ.  
 2. ವಾಲ್ಮೀಕಿಮಹರ್ಷಿ. ["ಆದಿಕವಿ" ಪದದಲ್ಲಿ  
 ನೋಡಿ.]

ಆದ್ಯಮಾಪಕ ಆದ್ಯಮಾಪಕ (ಉಂ) ಐದು ಗುಲಗಂಜಿಗಳ  
 ತೂಕ. ಆದ್ಯಃ ಮಾಪಕಃ। "ದಶಾರ್ಥಗುಂಜಂ ಪ್ರವದಂತಿ  
 ಮಾಪಕಮ್"।

ಆದ್ಯಬೀಜ ಆದ್ಯಬೀಜ (ನಂ) ಜಗತ್ತಿನ ಮೂಲಕಾರಣ.—  
 (1) (ಸಾಂಖ್ಯಮತದಲ್ಲಿ) ಮೂಲಪ್ರಕೃತಿ. (2)  
 (ವೇದಾಂತಗಳ ಮತದಲ್ಲಿ) ಪರಬ್ರಹ್ಮ, ಪರಮಾತ್ಮ.  
 (3) (ನ್ಯಾಯ ಮತ್ತು ವೈಶೇಷಿಕಮತಗಳಲ್ಲಿ)  
 ಪರಮಾಣು.

ಆದ್ಯಾ ಆದ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 2. ತಿಂಗಳಿನ  
 ಮೊದಲನೆಯ ದಿವಸ, ಪ್ರತಿಪತ್ತಿ, ಪಾಡ್ಯ.

ಆದ್ಯುನ ಆದ್ಯುನ (ವಿಂ) ಉಂಡಾಡಿ, ಹೊಟ್ಟೆಬಾಕ,  
 ಐಹಿಕಾಮುಷ್ಮಿಕ ಸಾಧಕವಾದ ಕಾರ್ಯವಿಲ್ಲದವನು.  
 ಆ + ದಿವು (ಕ್ರೋಡಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। ಅ-  
 ವಿ-ಜಿಗಿಷಾಸಾಂ ನತ್ವಮ್ (೮-೨-೪೯)। "ಆದ್ಯುನಃ ಸದ್ಗ್ರಹಣೀವ  
 ಪ್ರಾಯೋ ಯದ್ವಿಚಾರಮಿತಿ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೫।

ಆದ್ಯೋಪಾಂತ ಆದ್ಯೋಪಾಂತ (ವಿಂ) ಮೊದಲಿನಿಂದ  
 ಕೊನೆಯವರೆಗಿನ. ಆದ್ಯಾವಧಿ ಉಪಾಂತಃ।

ಆಧಮರ್ಯ ಆಧಮರ್ಯ (ನಂ) ಮುಣಬದ್ಧತೆ, ಮುಣಿತ್ತು,  
 ಸಾಲಗಾರನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಅಧಮರ್ಯಸ್ಯ ಭಾವಃ ಕರ್ಮ ವಾ  
 "ಯತ್" (೫-೧-೧೨೪)।

ಆಧಾರಿಕ ಆಧಾರಿಕ (ವಿಂ) ಅಧರ್ಮಶೀಲ, ಅಧರ್ಮ  
 ವನ್ನು ಆಚರಿಸತಕ್ಕವನು. ಅಧರ್ಮಂ ಚರತಿ "ಠಕ್" (ವಾಂ ೪-೪-೪೧)।



ಆಧರ್ವ ಅರ್ಥ (ಪುಂ) 1. ಬಲಾತ್ಕಾರವಾಗಿ ಹಿಂಸಿಸುವುದು. 2. ತಿರಸ್ಕಾರ. 3. ಅಪಮಾನ, ಅಗೌರವ.

ಆ+ಧೃ (ಪ್ರಸಹನೆ) ಭಾವೇ "ಧ್ವ" (೩-೩-೧೮)।

ಆಧರ್ವಣ ಅರ್ಥ (ನಂ) "ಆಧರ್ವ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ಆ+ಧೃ (ಪ್ರಸಹನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಆಧರ್ವಿತ ಅರ್ಥ (ವಿಂ) 1. ಬಲಾತ್ಕಾರವಾಗಿ ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಅಪಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ+ಧೃ (ಪ್ರಸಹನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಅವೇಯಾತ್ಯೇ ಇತ್.

ಆಧಾತ್ ಆಧಾತ್ಯ (ವಿಂ) ಇಡತಕ್ಕವನು. ಆ+ಡು ಧಾಕ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ತುಕ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಪಾತ್ರವಿಶೇಷೇ ನ್ಯಸ್ತಂ ಗುಣಾಂತರಂ ವ್ರಜತಿ ಶಿಲ್ಪಮಾಧಾತುಃ" ಮಾಲಂ ೧-೬।

ಆಧಾನ ಆಧಾನ (ನಂ) 1. ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಸಂಸ್ಕಾರಪೂರ್ವಕ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿಸುವುದು. 2. ಉಂಟುಮಾಡುವುದು, ಉತ್ಪತ್ತಿ ಮಾಡುವುದು. 3. ಇಡುವುದು, ಇರಿಸುವುದು. 4. ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಬೇರೆ ಗುಣವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದು.

ಆ+ಡು ಧಾಕ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

"ಪ್ರಜಾನಾಂ ವಿನಯಾಧಾನಾದ್ರಕ್ಷಣಾದ್ಭರಣಾದಪಿ। ಸ ಪಿತಾ ಪಿತರ-ಸ್ತಾಸಾಂ ಕೇವಲಂ ಜನ್ಮಹೇತವಃ" ರಘುಂ ೧-೨೪। 5. ಗಿರವಿ, ಅಡವು.

ಆಧಾಯ ಆಧಾಯ (ಪುಂ) 1. ಆಧಾನ, ಇಡುವುದು.

ಆ+ಡು ಧಾಕ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಧ್ವ" (೩-೩-೧೮)।

(ಅವ್ಯಂ) 2. ಇಟ್ಟು, ಇರಿಸಿ. ಆ+ಧಾಕ್ (ಧಾರಣೆ)

"ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭)।

ಆಧಾರ ಆಧಾರ (ಪುಂ) 1. ಬೆಂಬಲ, ಒತ್ತಾಸೆ, ಸಾಹಾಯ್ಯ.

ಆ+ಧೃ (ಅವಸ್ಥಾನೇ) "ಧ್ವ" (೩-೩-೧೮)। 2. ಆಶ್ರಯ, ಅಧಿಕರಣ. ಆ+ಧೃ "ಧ್ವ" (ವಾಂ ೩-೩-೧೨೨)।

"ಅವೃಷ್ಟಿಸಂರಂಭಮಿವಾಂಬುವಾಹಮಪಾಮಿವಾಧಾರಮನುತರಜ್ಞಮ್"

ಕುಮಾಂ ೩-೪೮। 3. ಗಿಡದ ಪಾತಿ. "ಆಧಾರಬಂಧ-

ಪ್ರಮುಖೈಃ ಪ್ರಯತ್ನೈಃ ಸಂವಹಿತಾನಾಂ ಸುತನಿವಿಶೇಷಮ್" ರಘುಂ ೫-೬।

4. ಪಾತ್ರೆ. 5. ಕಾಲುವೆ. 6. ನೀರಿನ ಮಡು, ಹಳ್ಳ.

7. ಅಣೆಕಟ್ಟು, ಸಾಗುವಳಿಯ ಭೂಮಿಗಾಗಿ ನೀರನ್ನು

ಕೂಡಿಸುವ ಸ್ಥಳ. 8. (ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ)

ಕ್ರಿಯೆಗೆ ಕರ್ತೃಕರ್ಮಗಳ ಮೂಲಕ ಆಶ್ರಯಭೂತ

ವಾದ ಅಧಿಕರಣಕಾರಕ. ಅಧಿಕರಣಕಾರಕವು

(1) ಔಪಶ್ಲೇಪಿಕಃ, (2) ವೈಪಯಿಕಃ ಮತ್ತು (3) ಅಭಿವ್ಯಾಪಕಃ

ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ಉದಾಃ (1) ಗಜಗಾಯಾಂ ಘೋಃ।

(2) ಮೋಕ್ಷೇ ಇಚ್ಛಾಸ್ತಿ। (3) ಸರ್ವಸ್ಮಿನ್ನಾತ್ಮಾ।

ಆಧಾರನಿಲಯ ಆಧಾರನಿಲಯ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ (ಧಾರ್ಮಿಕತಯಾ) ಜಗದಾಧಾರಾಣಾಂ ಪ್ರಹ್ಲಾದವಿಭೀಷಣಪಾಂಡವಾದಿನಾಂ ನಿಲಯಃ ಆಸ್ಪದಮ್। "ಆಧಾರನಿಲಯೋ ಧಾತಾ ಪುಷ್ಪಹಾಸಃ ಪ್ರಜಾಗರಃ" ವಿಂ ಸಂ।

ಆಧಾರಾಧೇಯಭಾವ ಆಧಾರಾಧೇಯಭಾವ (ಪುಂ) (ವಸ್ತು ವನ್ನು) ಇಡುವ ಜಾಗ ಮತ್ತು ಇಡಲ್ಪಡುವ ವಸ್ತು ಇವುಗಳಿಗಿರುವ ಸಂಬಂಧ. ಇಡುವ ಜಾಗವು ಆಧಾರ. ಇಡಲ್ಪಡುವ ವಸ್ತುವು ಆಧೇಯ. ಆಧಾರಭೂತವಾದ ಭೂತಲ ಮತ್ತು ಆಧೇಯವಾಗಿರುವ ಘಟಗಳಿಗಿರುವ ಸಂಬಂಧವು ಆಧಾರಾಧೇಯಭಾವವೆನಿಸುವುದು.

ಆಧಿ ಆಧಿ (ಪುಂ) 1. ಮನೋರೋಗ. ಆಧೀಯತೇಜನ — ಆ+ಡು ಧಾಕ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕ್ತಿಃ" (೩-೩-೯೨)। "ಭೂಯಿಷ್ಠಂ ಭವ ದಕ್ಷಿಣಾ ಪರಿಜನೇ ಭಾಗ್ಯೇಷ್ವನುತೇಕಿನಿ ಯಾನ್ತೇವ ಗೃಹಿಣಿಪದಂ ಭುಂಜತಯೋ ವಾಮಾಃ ಕುಲಸ್ಯಾಧಯಃ" ಶಾಕುಂ ೪-೧೭। "ಋಜಂತಿ ಚೇತಃ ಪ್ರಸಂಭಂ ಮಮಾಧಯಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೩೭। 2. ಅಡವು, ಗಿರವಿ. 3. ಸ್ಥಳ, ಜಾಗ, ಆಶ್ರಯ. 4. ವ್ಯಸನ, ದುಃಖ. 5. ಪ್ರತ್ಯಾಶೆ, ನಿರೀಕ್ಷಣೆ. 6. ಜಾಮೀನು, ಈಡು, ಹೊಣೆ. "ಆಧಿಃ ಪುಮಾಂಶ್ಚಿತ್ತ-ಪಿಡಾಪ್ರತ್ಯಾಶಾಬಂಧಕೇಷು ಚ। ವ್ಯಸನೇ ಚಾಪ್ಯಧಿಷ್ಠಾನೇಽಪಿ" ಮೇದಿಂ।

ಆಧಿಕರಣಿಕ ಅಧಿಕರಣಿಕ (ಪುಂ) ನ್ಯಾಯಾಧೀಶ.

ಅಧಿಕರಣೇ ನಿಯುಕ್ತಃ "ಠಕ್" (೪-೪-೬೯)।

ಆಧಿದೈವಿಕ ಅಧಿದೈವಿಕ (ನಂ) ದೇವತೆಗಳಿಂದ ಸಂಭವಿಸಿ ಬಹುದಾದ ದುಃಖ. ದೇವೇಷ್ವಧಿದೈವಮ್ ತತ್ರ ಭವಮ್ "ಠಕ್" (೪-೩-೬೦)। ತುಭಯಪದವೃದ್ಧಿಃ (೭-೩-೨೦)। (1) ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ, (2) ಅಧಿದೈವಿಕ ಮತ್ತು (3) ಆಧಿಭೌತಿಕಗಳೆಂದು ದುಃಖವು ಮೂರು ವಿಧ. ಈ ಮೂರುವಿಧ ದುಃಖಗಳೇ ತಾಪತ್ರಯ.

1. ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕವು ಶರೀರ ಮತ್ತು ಮನಸ್ಸಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ ದುಃಖ. (1) ಆದಿಬಲಪ್ರವೃತ್ತಿ, (2) ಜನ್ಮಬಲಪ್ರವೃತ್ತಿ ಮತ್ತು (3) ದೋಷಬಲಪ್ರವೃತ್ತಿ ಗಳೆಂದು ಇದು ಮೂರು ವಿಧ.

(1) ಶುಕ್ರಶೋಣಿತದೋಷದಿಂದಂಟಾಗುವ ಕುಷ್ಠ ಮೂಲವ್ಯಾಧಿ ಮೊದಲಾದುದು ಆದಿಬಲಪ್ರವೃತ್ತಿ.

(2) ತಾಯಿಯ ಅತ್ಯಾಚರಣೆ ಮೊದಲಾದ ದೋಷ ದಿಂದಂಟಾಗುವ ಶಿಶುವಿನ ಪಂಗುತ್ವ (ಕುಂಟು) ಜಾತ್ಯಂಧತ್ವ (ಹುಟ್ಟು ಕುರುಡು) ಮೊದಲಾದುದು ಜನ್ಮಬಲಪ್ರವೃತ್ತಿ.



(3) ಭಯ, ದುಷ್ಟಾಹಾರಸೇವನೆ, ದುರಾಚಾರಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ವ್ಯಾಧಿಗಳು ದೋಷಬಲಪ್ರವೃತ್ತಿ.

2. ಅಧಿದೈವಿಕವು (1) ಕಾಲಬಲಪ್ರವೃತ್ತಿ, (2) ದೈವಬಲಪ್ರವೃತ್ತಿ ಮತ್ತು (3) ಸ್ವಭಾವಬಲಪ್ರವೃತ್ತಿಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ.

(1) ಮುತುಧರ್ಮಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಶೀತೋಷ್ಣವಾಯು ಮೊದಲಾದ ಹವಾಮಾನ ಬದಲಾವಣೆಗಳಿಂದ ಸಂಭವಿಸತಕ್ಕ ವ್ಯಾಧಿಗಳು ಕಾಲಬಲಪ್ರವೃತ್ತಿ.

(2) ಭಗವದಪಚಾರ (ದೈವದ್ರೋಹ) ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದಲೂ ಆಭಿಚಾರಿಕ ಕೃತ್ಯದಿಂದಲೂ ಸಂಭವಿಸುವ ಶಿಡ್ಧಿಲಿಪಿ ಹೊಡೆತ ಪಿಶಾಚಾದ್ಯಾವೇಶ ಮುಂತಾದ ದುಃಖವು ದೈವಬಲಪ್ರವೃತ್ತಿ.

(3) ಹಸಿವು ಬಾಯಾರಿಕೆ ಮುಪ್ಪು ಮೊದಲಾದ ದುಃಖವು ಸ್ವಭಾವಬಲಪ್ರವೃತ್ತಿ.

3. ಅಧಿಭೌತಿಕವು ಸಂಘಾತಬಲಪ್ರವೃತ್ತಿವಾದ ದುಃಖ, ದುರ್ಬಲನಾದವನಿಗೆ ಪ್ರಬಲನಾದವನೊಡನೆ ಸಂಭವಿಸುವ ಶಸ್ತ್ರಾಘಾತಾದಿಗಳು, ಹುಲಿ ಆನೆ ಸರ್ಪ ಮುಂತಾದ ದುಷ್ಟಪ್ರಾಣಿಗಳಿಂದ ಸಂಭವಿಸುವ ದುಃಖಗಳು. ಸುಶ್ರುತಂ ಸ್ತಂ ೨೪. [ಇನ್ನೂ ವಿವರಕ್ಕೆ ಸುಶ್ರುತ ಸಂಹಿತೆಯಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಆಧಿಪತ್ಯ ಅಧಿಪತ್ಯ (ನಂ) 1. ರಾಜತ್ವ, ಪ್ರಭುತ್ವ, ಸಾರ್ವಭೌಮತ್ವ. ಅಧಿಪತೇರ್ಭವಿ: "ಯಕ್" (೪-೧-೧೨೮). "ಪ್ರಜಾಪತಿ: ಕಲ್ಪಿತಯಜ್ಞಭಾಗಂ ಶೈಲಾಧಿಪತ್ಯಂ ಸ್ವಯಮನ್ವತಿಷ್ಠತ್" ಕುಮಾಂ ೧-೧೭. 2. ಪ್ರಜಾಸಂರಕ್ಷಣಾದಿ ರಾಜನ ಕರ್ತವ್ಯ. ಅಧಿಪತೇ: ಕರ್ಮ "ಯಕ್" (೪-೧-೧೨೮).

ಆಧಿಭೌತಿಕ ಅಧಿಭೌತಿಕ (ನಂ) ಶಸ್ತ್ರಾಘಾತಾದಿಗಳಿಂದ ಮತ್ತು ದುಷ್ಟಪ್ರಾಣಿಗಳಿಂದ ಸಂಭವಿಸುವ ದುಃಖ. ಭೂತೇಷ್ವಧಿಭೂತಂ, ತತ್ರ ಭವಮ್ "ಠಕ್" (ವಾಂ ೪-೩-೬೦).

ಆಧಿರಾಜ್ಯ ಅಧಿರಾಜ್ಯ (ನಂ) ಅಧಿಪತ್ಯ, ಪ್ರಭುತ್ವ, ರಾಜತ್ವ, ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯ. ಅಧಿಕೋ ರಾಜಾ ಅಧಿರಾಜ: ತಸ್ಯ ಭಾವ: ಕರ್ಮ ವಾ "ಽಯಕ್" (೪-೧-೧೨೪). "ಪಿತುರನಂತರಂ ಮಮಾಧಿರಾಜ್ಯಪದಸ್ಯ ಪ್ರಥಮಮಥಂ ಭವತೇ ವಿತೀರ್ಯ ತತ: ಪರಮಥಂ ಮಹಮನುಭವಿಷ್ಯಾಮಿತಿ" ಚಂ ಭಾಂ ೨.

ಆಧಿವೇದನಿಕ ಅಧಿವೇದನಿಕ (ನಂ) ದ್ವಿತೀಯಾದಿ ವಿವಾಹ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲು ಮೊದಲನೆಯ ಪತ್ನಿಯ ಸಂತೋಷಾರ್ಥವಾಗಿ ಪತಿಯು ಕೊಡುವ ಸ್ತೀರ್ಧನ. ಅಧಿವೇದನೇ ದೀಯತೇ - "ಠಕ್" (೪-೧-೯೬). "ಅಧಿ-ವಿತ್ತಸ್ತ್ರಿಯೇ ದತ್ತಾದಾಧಿವೇದನಿಕಂ ಸಮಮ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೪೮.

ಆಧುನ ಅಧುನ (ವಿಂ) ಅಲ್ಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಧುನ್ (ಕಂಪನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).

ಆಧುನಿಕ ಅಧುನಿಕ (ವಿಂ) 1. ಈ ಕಾಲದ, ಈಗಿನ ಕಾಲದ, ಹೊಸದಾದ, ಹಳೆಯದಲ್ಲದ. 2. ಈಗ ಉಂಟಾದ, ಈಗ ಇರತಕ್ಕ. ಅಧುನಾ ಭವ: "ಠಕ್" (೪-೩-೧೧).

ಆಧೀಷ್ಠ ಅಧೀಷ್ಠ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಿರಸ್ಕಾರ. 2. ಅಪಮಾನ. 3. ಮೇಲೆ ಬೀಳುವುದು, ಧಾಳಿ ಮಾಡುವುದು, ಹಿಂಸಿಸುವುದು. ಆ + ಧೀಷ (ಪ್ರಸಹನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪).

ಆಧೀಯ ಅಧೀಯ (ವಿಂ) 1. ಇಡಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಒಂದು ಆಧಾರವನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿರುವ. ಆಧಾತುಂ ಯೋಗ್ಯಮ್ "ಯತ್" (೩-೧-೯೭). 2. ತಯಾರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಡುವ. ಆ + ಧೀಯ ಕರ್ಮಂ "ಯತ್" (೩-೨-೯೭). 3. ಒಂದು ಸಂಸ್ಕಾರದಿಂದ ಸಂಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಅಗ್ನಿ.

ಆಧೀರಣ ಅಧೀರಣ (ಪ್ರಂ) ಮಾವಟೆಗ, ಆನೆಯ ಸಾರಥಿ, ಆನೆಯನ್ನು ನಡೆಯಿಸುವ ಚಾತುರ್ಯವುಳ್ಳವನು. ಆ + ಧೀರ (ಗತಿಚಾತುರ್ಯ) "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪). "ಆಧೀರಣಾನಾಂ ಗಜಸನ್ನಿಪಾತೇ ಶಿರಾಸಿ ಚಕ್ರೇನಿಶಿತೆ: ಕ್ಷುರಾಗ್ರೇ:" ಋಣಂ ೭-೪೬.

ಆಧಿಮಾತ ಅಧಿಮಾತ (ಪ್ರಂ) 1. ಯುದ್ಧ. (ವಿಂ) 2. ಶಬ್ದವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಧ್ವನಿಯುಕ್ತವಾದ. "ಪರೇಷಾಮುತ್ಸೇಯೋ ಭವತಿ ಚಿರಮಾಧಿಮಾತಹೃದಯ:" ತಂ ರಾಂ ೧-೨೯. 3. ದಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಊದಲ್ಪಟ್ಟ, ಉರುವಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಧಿಮಾ (ಶಬ್ದಾಗ್ನಿಸಂಯೋಗಯೋ:) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). 5. ಉಬ್ಬಿರುವ, ಊದಿರುವ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). 6. ಹೊಟ್ಟೆಯುಬ್ಬರದ ರೋಗದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಆಧಿಮಾನ ಅಧಿಮಾನ (ಪ್ರಂ) 1. ವಾಯುರೋಗ. (ನಂ) 2. ಹೊಟ್ಟೆಯುಬ್ಬರ. 3. ತಿಡಿ. ಆ + ಧಿಮಾ (ಶಬ್ದಾಗ್ನಿಸಂಯೋಗಯೋ:) ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭). 4. ಬಡಾಯಿ ಕೊಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಆತ್ಮಶ್ಲಾಘನೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 5. ಉಬ್ಬುವುದು, ಹಿಗ್ಗುವುದು. 6. ಶಬ್ದಮಾಡುವುದು. 7. ಬೆಂಕಿಯನ್ನು ಉಡುವುದು. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫).

ಆಧಿಮಾಪನ ಅಧಿಮಾಪನ (ನಂ) 1. ಶಬ್ದವುಂಟುಮಾಡುವುದು, 2. ಉಬ್ಬಿಸುವುದು. ಆ + ಧಿಮಾ (ಶಬ್ದಾಗ್ನಿಸಂಯೋಗಯೋ:) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫).



ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ ಅಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ (ನಂ) 1. ಮನಸ್ಸು ಮತ್ತು ಶರೀರಗಳ ನಿಮಿತ್ತವಾಗಿ ಸಂಭವಿಸುವ ದುಃಖ. ಆತ್ಮನಿ ಅಧ್ಯಾತ್ಮಮ್ | ಅಧ್ಯಾತ್ಮಂ ಭವಮ್ "ಠಕ್" (ವಾಂ ೪-೩-೬೦) | [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಆಧಿದೈವಿಕ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] (ವಿಂ) 2. ಆತ್ಮನಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಆತ್ಮನನ್ನು ಕುರಿತು ಉಂಟಾದ. 3. ಶರೀರಸಂಬಂಧವಾದ. (ಸ್ತ್ರೀ)-ಕೀ-ಕೇ. 4. ಸಾಂಖ್ಯಮತದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ ಪ್ರಕೃತಿ, ಉಪಾದಾನ, ಕಾಲ ಮತ್ತು ಭಾಗ್ಯಗಳೆಂಬ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ತುಷ್ಟಿಗಳು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ತುಷ್ಟಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಆಧ್ಯಾನ ಅಧ್ಯಾನ (ನಂ) 1. ಸ್ಮರಣೆ, ಉತ್ಸಾಹಪೂರ್ವಕ ನೆನೆಯುವುದು. ಆ + ಧ್ಯ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಚಿಂತೆ.

ಆಧ್ಯಾಸಿಕ ಅಧ್ಯಾಸಿಕ (ವಿಂ) ಭ್ರಾಂಶಿ (ತಪ್ಪು ತಿಳಿ ವಳಿಕೆ)ಯಿಂದ ಕಲ್ಪಿತವಾದ ವಸ್ತು, ಬ್ರಹ್ಮನಲ್ಲಿ ಅಧ್ಯಾಸದಿಂದ ಕಲ್ಪಿತವಾದ ಜಗತ್ತು. ಅಧ್ಯಾಸೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೯) |

ಆನಕ ಆನಕ (ಪುಂ) 1. ಪಟಹ, ತಮಟೆ. ಆನಯತಿ ಸೋಸಾಹಾನ್ ಕರೋತಿ ಯೋವಾನ್ - ಆನ (ಪ್ರಾಣನೆ) + ಣಿಕ್ "ಞ್" (೩-೧-೧೩೩) | "ಆನಕಾನಾಂ ಚ ದಿವ್ಯಾನಾಂ ಕುಂದುಭಿರ್ನಾಂ ಚ ನಿಶ್ವನೇ" ಯಾದಂ ೧-೨೮ | 2. ಮೃದಂಗ, ಮದ್ದಳೆ. 3. ಗುಡುಗಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮೇಘ, ಗರ್ಜಿಸುವ ಮೋಡ. 4. ನಗಾರಿ. (ವಿಂ) 5. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವ. "ಆನಕಃ ಪಠಹೇ ಭೇಯಾ ಮೃದಜ್ಞೇ ಧ್ವನದಮ್ಬುದೇ" ಮೇದಿಂ |

ಆನಕದುಂದುಭಿ ಆನಕದುಂದುಭಿ (ಪುಂ) 1. ವಸುದೇವ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ತಂದೆ. ಆನಕಃ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಕೋ ದುಂದುಭಿರಸ್ಯ | [ಇವನ ಜನನಕಾಲದಲ್ಲಿ ದೇವತೆಗಳು ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಕವಾದ ದುಂದುಭಿಯನ್ನು ಮೋಳಗಿಸಿದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.] (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ದೊಡ್ಡ ನಗಾರಿ.

ಆನತುಹ ಆನತುಹ (ವಿಂ) ವೃಷಭಸಂಬಂಧವಾದ ಗೋಮಯ ತೊಗಲು ಮುಂತಾದುದು. ಅನತುಹಃ ಇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | "ಪ್ರಚ್ಛಿದ್ಯ ಪ್ರಚ್ಛಿದ್ಯ ಪ್ರಾಗಶ್ರಾಂತಮಿಪಿಣಿಃ ಸಹ ಮಾತ್ರೇ ಪ್ರಯಚ್ಛತಿ ತಾನಾನ್ತುಹೇ ಗೋಮಯೇ ನಿರ್ದಧಾತಿ" ಆಶ್ವಂ ಗುಂ ಅಂ ೧ | "ವಿವಾಹಾನಿಮುಪಸಮಾಧಾಯ ಪಶ್ಚಾದ-ಸ್ಯಾನತುಹಂ ಚರ್ಮಸ್ತೀಯ" ಆಶ್ವಂ ಗುಂ ಅಂ ೧ |

ಆನತ ಆನತ (ವಿಂ) 1. ಗೌರವದಿಂದ ನಮಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಅಧೋಮುಖವಾದ, ಬಗ್ಗಿದ ಮುಖವುಳ್ಳ.

3. ಗೌರವದಿಂದ ನಮಸ್ಕರ ಮಾಡಿದ. ಕತಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | "ಆದೇಶಂ ದೇಶಕಾಲಜಃ ಶಿಷ್ಯಃ ಶಾಸಿತುರಾನತಃ" ರಘುಂ ೧-೯೧ | 4. ಬಗ್ಗಿರುವ, ವಿಧೇಯತೆಯಿಂದ ನಮ್ರನಾದ. "ಸ್ಪೃಶನ್ ಕರಣಾನತಪೂರ್ವಕಾಯಂ ಸಂಪ್ರಸ್ಥಿತೋ ವಾಚಮುವಾಚ ಕೌತ್ಸಃ" ರಘುಂ ೫-೩೨ |

ಆನತಿ ಆನತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಗ್ಗಿರುವಿಕೆ. 2. ನಮಸ್ಕಾರ, ವಂದನೆ. ಆ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | "ನಿವೃತ್ಯ ಸೌಜನ್ಯಜತಃ ಕೃತಾನತಿನತೀಂದ್ರಿಯ-ಜ್ಞಾನನಿಧಿರ್ಮಹಸ್ಸದಃ" ಮಾಘಂ ೧-೧೧ | "ಕೃತಾನತಿರ್ವ್ಯಾಹೃತ-ಸಾನ್ವವಾದೇ" ಕಿರಾಂ ೩-೩೧ | 3. ವಿಧೇಯತೆ.

ಆನದ ಆನದ (ನಂ) 1. ತಮಟೆ. 2. ಮೃದಂಗ, ಮದ್ದಳೆ. (ವಿಂ) 3. ಗಂಟುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಣಹ (ಬಂಧನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

ಆನನ ಆನನ (ನಂ) ಮುಖ. ಆ + ಆನ (ಪ್ರಾಣನೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | "ಆನನೇರ್ಮಧುರಸೋ ವಿಕಸದ್ವಿರ್ನಾಸಿಕಾಭಿರಸಿತೋತ್ಪಲಗಂಧಃ" ಮಾಘಂ ೧೦-೮ |

ಆನಂತರ್ಯ ಆನಂತರ್ಯ (ನಂ) ಅವ್ಯವಧಾನ, ಮಧ್ಯೆ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ, ಎಡೆಬಿಡದಿರುವಿಕೆ, ಕಾಲ ಅಥವಾ ದೇಶ ಕೃತವಾದ ಸಾಮೀಪ್ಯ. ಅನಂತರಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಽಪ್ಯಙ್" (೫-೧-೧೨೪) |

ಆನಂತ್ಯ ಆನಂತ್ಯ (ನಂ) 1. ಕೊನೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಎಲ್ಲೆ ಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಅವಧಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ನಾಶವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಅನಂತಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಽಪ್ಯಙ್" (೫-೧-೧೨೪) | 3. (ಸರ್ವತ್ರವ್ಯಾಪಿಸಿರುವುದರಿಂದ) ದೇಶ ಪರಿಚ್ಛೇದವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 4. (ಸರ್ವಕಾಲದಲ್ಲಿಯೂ ಇರುವುದರಿಂದ) ಕಾಲ ಪರಿಚ್ಛೇದವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 5. (ಸಕಲವೂ ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವರೂಪ ಅಥವಾ ಬ್ರಹ್ಮನ ಶರೀರವೇ ಆಗಿರುವುದರಿಂದ) ವಸ್ತು ಪರಿಚ್ಛೇದವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

ಆನಂದ ಆನಂದ (ಪುಂ) 1. ಸಂತೋಷ, ಹರ್ಷ, ಸುಖ. ಆ + ತು ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) "ಞ್" (೩-೩-೧೮) | "ಯದಿಂದಾ-ವಾನಂದಂ ಪ್ರಣಯಿನಿ ಜನೇ ವಾ ನ ಭಜತೇ" ಮಾಲತೀಂ ೩-೯ | 2. ಪರಬ್ರಹ್ಮ. ಆನಂದೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅನ್" (೫-೨-೧೨೭) | 3. ಆನಂದಸಂವತ್ಸರ. 4. ವಿಷ್ಣು. "ಆನಂದೋ ನಂದನೋ ನಂದಃ" ವಿಂ ಸಂ | 5. ದಂಡಕದ ಒಂದು ಭೇದ. 6. ವಾರ ಮತ್ತು ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ಯೋಗ. [ಆದಿತ್ಯಾದಿ ವಾರಗಳಲ್ಲಿ ಅಶ್ವಿನಿ, ಮೃಗಶಿರ್ಷ, ಆಶ್ಲೇಷ, ಹಸ್ತ, ಅನುರಾಧಾ, ಉತ್ತರಾ



ಷಾಢಾ, ಶತಭಿಷೇ ಈ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು ಯಥಾಕ್ರಮವಾಗಿ ಸೇರಿದರೆ ಈ ಯೋಗವು.] (ನಂ) 7. ಮಧ್ಯ. (ವಿಂ) 8. ಆನಂದವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಆ + ನದಿ + ಣಿಚ್ "ಅಚ್". (೩-೧-೧೩೪)।

ಆನಂದಯು ಆನಂದಧು (ಪುಂ) ಆನಂದ, ಸಂತೋಷ, ಸುಖ. ಆ + ಟು ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) ಭಾವೇ "ಅಯುಚ್" (೩-೩-೮೯)।

ಆನಂದನ ಆನಂದನ (ನಂ) 1. ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವಿಕೆ. ಆ + ಟು ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಮಿತ್ರರ ಭೇಟಿಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಕುಶಲ ಪ್ರಶ್ನೆ. "ಆನಂದನ ಸಂಗತಂ ಸ್ಯಾದಪ್ರಚ್ಛತ್ರಂ ಸಭಾಜನಮ್" ವೈಜಂ. (ವಿಂ) 3. ಸಂತೋಷವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಆ + ಟು ನದಿ + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। "ಆನಂದನಾನಿ ಮದನಜ್ವರದೀಪನಾನಿ" ಮಾಲತೀಂ ೯-೪೮।

ಆನಂದಭೇರವ ಆನಂದಭೈರವ (ಪುಂ) ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)—ಭೇರವಿ—ಭೈರವೀ. ಪಾರ್ವತಿ.

ಆನಂದಮಯ ಆನಂದಮಯ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. (ವಿಂ) 2. ಆನಂದದಿಂದ ತುಂಬಿದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)—ಮಯಿ—ಮಯೀ. ದುರ್ಗಾದೇವಿಯ ಮೂರ್ತಿ.

ಆನಂದಿ ಆನಂದಿ (ಪುಂ) 1. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. 2. ಕುತೂಹಲ, ಜಿಜ್ಞಾಸೆ. ಆ + ಟು ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭)।

ಆನಂದಿತ ಆನಂದಿತ (ವಿಂ) ಸಂತೋಷಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಟು ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಆನಂದಿತಾಶೋಭನಾ ಬಭೂವ ಸರ್ವಾಙ್ಗಸಜ್ಜಿನ್ಯಪರೇವ ಲಕ್ಷ್ಮೀ:" ಮಾಘಂ ೩-೧೩।

ಆನಂದಿನ್ ಆನಂದಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಸುಖವುಳ್ಳ, ಸಂತೋಷವುಳ್ಳ. ಆನಂದ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। 2. ಸಂತೋಷವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಆ + ಟು ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್ "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)।

ಆನಮನ ಆನಮನ (ನಂ) 1. ಚಿನ್ನಾಗಿ ಬಗ್ಗುವುದು. ಆ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ನಮಸ್ಕಾರ.

ಆನಮಿತ ಆನಮಿತ (ವಿಂ) 1. ಬಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ವಿಧೇಯನಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ನಮಸ್ಕರಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಶ್ರುತ್ವಾ ವಿಧರ್ಮಪತಿಮಾನಮಿತಂ ಬಲೇಶ್ವ" ಮಾಲಂ ೫-೩।

ಆನಮ್ಯ ಆನಮ್ಯ (ವಿಂ) 1. ನಮಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ. ಆ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೮) (ಅವ್ಯಂ) 2. ನಮಸ್ಕರಿಸಿ. 3. ಬಗ್ಗಿ, ಬಾಗಿ. ಆ + ಣಮ "ಲ್ಯಪ್" (೩-೧-೩೭)। ಣ್ಯಂತಾತ್ "ಲ್ಯಪ್"। ಆನಮಯ್ಯ ಆನಮಯ್ಯ. ಬಗ್ಗಿಸಿ.

ಆನಯ ಆನಯ (ಪುಂ) ತರುವುದು. ಆ + ಣಿಚ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) ಭಾವೇ "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬)। ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। —ನಯನಮ್—ನಯನಮ್.

ಆನತ ಆನತ (ಪುಂ) 1. ಯುದ್ಧ. 2. ನೃತ್ಯಶಾಲೆ, ನಾಟ್ಯಶಾಲೆ, ರಂಗಸ್ಥಳ. ಆನುತ್ಯನ್ಯತ್ರ ಆ + ನೃತೀ (ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪೇ) ಅಧಿಂ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೨೧)। 3. ಸೂರ್ಯ ವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. ಆನತನಾಂ ರಾಜಾ। 4. ಆನತ ದೇಶನಿವಾಸಿ. ಆನತೋಽಭಿಜನೋಽಸ್ಯ। (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 5. ಒಂದು ದೇಶ. (ನಂ) 6. ಜಲ, ನೀರು. "ಆನತೋ ದೇಶಭೇದೇಽಪಿ ನೃತ್ಯಸ್ಥಾನೇ ಜಲೇ ರಣೇ" ಮೇದಿಂ। 7. ನರ್ತನ.

ಆನತಪುರ ಆನತಪುರ (ನಂ) ಆನತದೇಶದ ರಾಜಧಾನಿ, ದ್ವಾರಕಾನಗರ.

ಆನತೀತ ಆನತೀತ (ವಿಂ) ಕುಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನರ್ತನ ಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ನೃತೀ (ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪೇ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಮಹಿಷ್ಮಿರಾನತೀತನಕ್ತಮಾಲೇ" ರಘುಂ ೫-೪೨।

ಆನರ್ಥಕ ಆನರ್ಥಕ (ನಂ) ವೈಯರ್ಥ್ಯ, ವೃಥಾ, ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಅನರ್ಥಕಸ್ಯ ಭಾವ: "ಘಜ್" (೪-೧-೧೨೪)।

ಆನಸೂಯ ಆನಸೂಯ (ವಿಂ) ಅತ್ರಿಪತ್ನಿಯಾದ ಅನಸೂಯಾ ದೇವಿಯಿಂದ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನಸೂಯಾ ದತ್ತಮ್ "ಅನ್" (೪-೨-೯೨)।

ಆನಾಥ್ಯ ಆನಾಥ್ಯ (ನಂ) ಯಜಮಾನನಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಅನಾಥಸ್ಯ ಭಾವ: "ಘಜ್" (೪-೧-೧೨೪)।

ಆನಾಯ ಆನಾಯ (ಪುಂ) ಬಲೆ. ಆನಾಯಂತೇ ಮತ್ಸ್ಯಾದಯೋಽಜೇನ—ಆ + ಣಿಚ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ವಜ್" (೩-೩-೧೨೪)।

ಆನಾಯಿನ್ ಆನಾಯಿನ್ (ವಿಂ) ಮೀನು ಹಿಡಿಯುವವನು, ಬೆಸ್ತರವನು. ಆನಾಯೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। "ಸ ತೀರಭೂಮೌ ವಿಹಿತೋಪಕಾರ್ಯಮಿನ್ಯಾ-ಯಿಮಿಷ್ಟಾಮಪಕೃಷ್ಣನಕ್ರಾಮ್" ರಘುಂ ೧೬-೫೫।

ಆನಾಯ್ಯ ಆನಾಯ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಅವಹನೀಯಸ್ಥಾನದಿಂದ ತೆಗೆದು ದಕ್ಷಿಣಾಗ್ನಿಯಾಗಿ ಸಂಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ ಅಗ್ನಿ. ಆನಾಯೀತೇ—ಆ + ಣಿಚ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಯತ್"



(೩-೧-೧೨೭) 1. ನಿಪಾಂ 1. (ಅವ್ಯಂ) 2. ತರಿಸಿ, ತೆಗೆದು ಕೊಂಡು ಬರುವಂತೆ ಮಾಡಿ. 3. ಕರೆತರುವಂತೆ ಮಾಡಿ. ಆ + ಣಿಞ್ + ಣಿನ್ "ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭) 1. ಆನಾಹ ಆನಾಹ (ಪುಂ) 1. (ಬಟ್ಟಿಯು) ಉದ್ದ, ನೀಳ. 2. 96,000 ಅಂಗುಲಗಳು. 3. ಮಲಬಡ್ಧತೆ. ಆ+ಗಹ (ಬಂಧನೆ) "ಘಙ್" (೩-೩-೧೮) 1. "ಆನಾಹೋ ಮಲವಿಷ್ಠಃ" ವೈಜಂ 1. ಆನಿರುದ್ಧ ಆನಿರುದ್ಧ (ಪುಂ) ಆನಿರುದ್ಧನ ಮಗ. ಅನಿರುದ್ಧಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಅಙ್" (೪-೧-೧೧೪) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) 1. ಆನಿರುದ್ಧಿ ಆನಿರುದ್ಧಿ. ಆನಿರುದ್ಧಿ ಆನಿರುದ್ಧಿ (ಪುಂ) ತಡೆಯಲ್ಪಡದವನ ಮಗ. ಅನಿರುದ್ಧಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಙ್" (೪-೧-೧೫) 1. ಆನಿಲ ಆನಿಲ (ಪುಂ) 1. ವಾಯುಪುತ್ರನಾದ (1) ಆಂಜನೇಯ. (2) ಭೀಮಸೇನ. ಅನಿಲಸ್ಯಾಯಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦) 1. (ವಿಂ) 2. ಆನಿಲಸಂಬಂಧವಾದ, ವಾಯುಸಂಬಂಧವಾದ. 3. ವಾಯುದೇವತಾಕವಾದ (1) ನಕ್ಷತ್ರ (ಸ್ವಾತಿ). (2) ಮಂತ್ರ. (3) ಹವಿಸ್ಸು ಮುಂತಾದುದು. ಆನಿಲ ಆನಿಲ (ಪುಂ) ವಾಯುಪುತ್ರನಾದ 1. ಆಂಜನೇಯ. 2. ಭೀಮಸೇನ. ಅನಿಲಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಙ್" (೪-೧-೧೫) 1. ಆನೀತ ಆನೀತ (ವಿಂ) ತರಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಣಿಞ್ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) 1. "ಆನೀತಮಗ್ರೇ ನಿಜಬಂಧನಾರ್ಥ ದಾಮಾಖಿಲಂ ಸಂಹಿತಮಪ್ಯಪೂರ್ಣಮ್" ಯಾದಂ ೪-೩೪ 1. ಆನೀತಿ ಆನೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತರುವಿಕೆ. ಆ+ಣಿಞ್ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪) 1. ಆನೀಲ ಆನೀಲ (ಪುಂ) 1. ಕಪ್ಪು ಅಂಡಕೋಶವುಳ್ಳ ಕುದುರೆ. "ಆನೀಲಃ ಸ್ಯಾನೀಲಕೋಶಃ" ವೈಜಂ 1. (ವಿಂ) 2. ಸ್ವಲ್ಪ ಕಪ್ಪಿರುವ. ಆನುಕಲ್ಪಿಕ ಆನುಕಲ್ಪಿಕ (ವಿಂ) 1. ಅನುಕಲ್ಪವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ, ಮುಖ್ಯವಲ್ಲದ ಎರಡನೆಯ ಪಕ್ಷವನ್ನು ಅರಿತಿರುವ. ಅನುಕಲ್ಪಂ ವೇತ್ತಿ—"ಠಕ್" (೪-೨-೬೦) 1. 2. ಅನುಕಲ್ಪವನ್ನು ತಿಳಿಯಿಸುವ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವ. ಅನುಕಲ್ಪಂ ತದ್ವಿಚಾರಂ ಗ್ರಂಥಮಧೀತೆ "ಠಕ್" (೪-೨-೬೦) 1. 3. ಅನುಕಲ್ಪದಿಂದ ಹೊಂದಲ್ಪಡುವ. ಅನುಕಲ್ಪೇನ ಲಮ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೩) 1. ಆನುಕೂಲಿಕ ಆನುಕೂಲಿಕ (ವಿಂ) ಅನುಕೂಲ ನಾಗಿರುವ. ಅನುಕೂಲಂ ವಂತೆ "ಠಕ್" (೪-೪-೨೮) 1.

ಆನುಕೂಲ ಆನುಕೂಲ (ನಂ) ಅನುಕೂಲವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಹೊಂದಿಕೆ, ಅನುರೂಪವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಅನುಕೂಲಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಘಙ್" (೪-೧-೧೨೪) 1. ಆನುಗತಿಕ ಆನುಗತಿಕ (ವಿಂ) ಹಿಂಬಾಲಿಸುವಿಕೆ ಯಿಂದಂಟಾದ, ಅನುಸರಣದಿಂದಂಟಾದ. ಅನುಗತೇನ ಅನುಗಮನೇನ ನಿವೃತ್ತಃ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೯) 1. ಆನುಗತ್ಯ ಆನುಗತ್ಯ (ನಂ) ಹಿಂಬಾಲಿಸುವಿಕೆ, ಅನುಸರಿಸುವಿಕೆ. ಅನುಗತಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಘಙ್" (೪-೧-೧೨೪) 1. ಆನುಗುಣಿಕ ಆನುಗುಣಿಕ (ವಿಂ) 1. ಅನುಗುಣವಾಗಿ ತಿಳಿದಿರುವ. 2. ಅನುಗುಣವಾಗಿ ತಿಳಿಯಿಸುವ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವ. ಅನುಗುಣಂ ವೇತ್ಯಧೀತೆ ವಾ "ಠಕ್" (೪-೨-೬೩) 1. ಆನುಗುಣ್ಯ ಆನುಗುಣ್ಯ (ನಂ) ಅನುಗುಣವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಅನುರೂಪವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಹೊಂದಿಕೆ. ಅನುಗುಣಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಘಙ್" (೪-೧-೧೨೪) 1. ಆನುಗ್ರಾಮಿಕ ಆನುಗ್ರಾಮಿಕ (ವಿಂ) ಗ್ರಾಮದ ಹಿಂಭಾಗ ದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ಹಳ್ಳಿಯ ಹಿಂಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ ಗ್ರಾಮಸ್ಯ ಪಶ್ಚಾತ್ ಅನುಗ್ರಾಮಮ್, ಅನುಗ್ರಾಮಂ ಭವಃ "ಠಕ್" (೪-೩-೬೩) 1. ಆನುನಾಶ್ಯ ಆನುನಾಶ್ಯ (ವಿಂ) ನಾಶದ ಅನಂತರ ಉಂಟಾದ. ಅನುನಾಶಂ ವಿನಾಶಸ್ಯ ಪಶ್ಚಾತ್ ಭವಃ "ಘಙ್" (೪-೨-೮೦) 1. ಆನುನಾಸಿಕ್ಯ ಆನುನಾಸಿಕ್ಯ (ನಂ) ಅನುನಾಸಿಕದ ಧರ್ಮ. ಅನುನಾಸಿಕಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಘಙ್" (೪-೧-೧೨೪) 1. "ಪ್ರತಿಜ್ಞಾನುನಾಸಿಕಯಾಃ ಪಾಣಿನೀಯಾಃ" ಸಿಂ ಕೊಂ 1. ಆನುಪಥ್ಯ ಆನುಪಥ್ಯ (ವಿಂ) ಮಾರ್ಗದ ಹಿಂಭಾಗ ದಲ್ಲಿರುವ, ದಾರಿಯ ಹಿಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಅನುಪಥ್ಯಂ ಭವಃ "ಘಙ್" (ವಾಂ ೪-೩-೫೯) 1. ಆನುಪದಿಕ ಆನುಪದಿಕ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂಬಾಲಿಸಿ ಓಡಿ ಬರುವ. ಅನುಪದಂ ಧಾವತಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೩೭) 1. 2. ಪದಪಾಠವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವ. 3. ಪದ ಪಾಠವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ. ಅನುಪದಂ ಅಧೀತೆ ವೇತ್ತಿ ವಾ "ಠಕ್" (೪-೨-೬೦) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಆನುಪದಿಕೋ ಆನುಪದಿಕೀ. ಆನುಪೂರ್ವಿ ಆನುಪೂರ್ವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಕ್ರಮ, ಒಂದಾದ ಮೇಲೆ ಒಂದು ಬರುವಿಕೆ. ಪೂರ್ವಮನುಕ್ರಮ್ಯ ಅನುಪೂರ್ವಿ ಅವ್ಯಯಿಂ ಅನುಪೂರ್ವಿ ಭಾವಃ "ಘಙ್" (೪-೧-೧೨೩) 1. "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧) 1.



ಆನುಪೂರ್ವ್ಯ ಅನುಪೂರ್ವ್ಯ (ನಂ) ಕ್ರಮ, ಪರ್ಯಾಯ. ಅನುಪೂರ್ವ ಭಾವ: "ಏತ್" (೪-೧-೧೨೩). "ವಸೀರಣಾನುಪೂರ್ವ್ಯೇಣ ಶಾಣಕ್ಷೌಮಾವಿಕಾನಿ ಚ" ಮನುಂ ೨-೪೧.

ಆನುಮಾನಿಕ ಅನುಮಾನಿಕ (ವಿಂ) 1. ಅನುಮಾನ ದಿಂದ ಸಿದ್ಧವಾದ, ಉದಾಹರಣೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಅನುಮಾನೇನ ನಿರ್ವೃತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೯). 2. ವ್ಯಾಪ್ತಿವಿಶಿಷ್ಟಲಿಂಗಜ್ಞಾನದಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಅನುಮಾನೇನ ವ್ಯಾಪ್ತಿವಿಶಿಷ್ಟಲಿಂಗಜ್ಞಾನೇನ ನಿರ್ವೃತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೯). ವ್ಯಾಪ್ತಿವಿಶಿಷ್ಟಲಿಂಗಜ್ಞಾನವುಂಟಾಗಿ "ಏವಂತೋ ವಹ್ನಿಮಾನ್" ಎಂಬ ಅನುಮಿತಿಯುಂಟಾಗುವುದು. (ನಂ) 3. ಪ್ರಧಾನ. "ಆನುಮಾನಿಕಮಪ್ಯೇಕೇಷಾಮಿತಿ ಚೇತ್ರ" ಬ್ರಂ ಸೂಂ ೧-೪-೧.

ಆನುಯಾತ್ರಿಕ ಅನುಯಾತ್ರಿಕ (ವಿಂ) ಹಿಂಬಾಲಕ, ಅನುಚರ. ಅನುಯಾತ್ರಾ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯). "ಗೃಹಿತವಿಶೇಷಮಂಡನ: ಪ್ರತೀಕ್ಷಯತಾಮಾನುಯಾತ್ರಿಕೋ ಜನ:" ಮಾಲತೀಂ ೬.

ಆನುರಕ್ತಿ ಅನುರಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನುರಾಗ, ಪ್ರೀತಿ. ಆ + ಅನು + ರಜ್ಜ (ರಾಗೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪).

ಆನುಲೋಮಿಕ ಅನುಲೋಮಿಕ (ವಿಂ) ಅನುಕೂಲ ವಾಗಿರುವ, ಕ್ರಮವಾಗಿರುವ, ಯಥೋಚಿತವಾಗಿರುವ. ಅನುಲೋಮಂ ವರ್ತತೆ "ಠಕ್" (೪-೪-೨೮).

ಆನುಲೋಮ್ಯ ಅನುಲೋಮ್ಯ (ನಂ) ಅನುಕೂಲವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಕ್ರಮವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಅನುಲೋಮಸ್ಯ ಭಾವ: "ಏತ್" (೪-೧-೧೨೪).

ಆನುವಂಶ್ಯ ಅನುವಂಶ್ಯ (ವಿಂ) ವಂಶಕ್ರಮವಾಗಿ ಬಂದಿರುವ, ವಂಶವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಬಂದಿರುವ. ಅನುವಂಶಂ ಭವ: "ಏತ್" (ವಾಂ ೪-೩-೪೯).

ಆನುವೇಶ್ಯ ಅನುವೇಶ್ಯ (ವಿಂ) ನೆರೆಮನೆಯ ಪಕ್ಕದ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ. ಅನುವೇಶಂ ಭವ: "ಏತ್" (ವಾಂ ೪-೩-೪೯).

ಆನುಶ್ರವಿಕ ಅನುಶ್ರವಿಕ (ವಿಂ) ವೇದವಿಹಿತವಾದ ಕರ್ಮ. ಅನುಶ್ರವತೇ ಗುರುಮುಖಾತ್ ಇತಿ ಅನುಶ್ರವೋ ವೇದ: ತತ್ರ ಭವ: "ಠಕ್" (ವಾಂ ೪-೩-೬೦). "ದೃಷ್ಟವದಾನುಶ್ರವಿಕ: ಸ ಹ್ಯವಿಶುದ್ಧಿಕ್ಷಯಾತಿಶಯಯುಕ್ತ:" ಸಾಂ ಕಾಂ ೨.

ಆನುಷ್ಠಾನಿಕ ಅನುಷ್ಠಾನಿಕ (ವಿಂ) ಪ್ರಾಸಂಗಿಕವಾಗಿ ಒದಗಿದ, ಒಂದು ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಲು ಹೊರಟಾಗ ಉದ್ದೇಶವಿಲ್ಲದೆ ಕೈಗೊಂಡು ಮತ್ತೊಂದು ಕಾರ್ಯ, ಅಪ್ರಧಾನವಾದ ಕಾರ್ಯ. ಅನುಷ್ಠಾನೇಣ

ಲಭ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೯೩). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೪). ಆನುಷ್ಠಾನಿಕ ಅನುಷ್ಠಾನಿಕ. "ಭಿಕ್ಷಾಮಡ ಗಾಞ್ವಾನಯ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಭಿಕ್ಷಾಟನವು ಪ್ರಧಾನವಾದ ಕಾರ್ಯ. ಭಿಕ್ಷಾಟನೆಯ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ಹೊರಟವನಿಗೆ ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಗೋಚರವಾದ ಗೋವಿನ ಅನಯನವು ಅನುಷ್ಠಾನಿಕ.

ಆನುಷ್ಠುಮ ಅನುಷ್ಠುಮ (ನಂ) 1. ಅನುಷ್ಠುಮ್ ಛಂದಸ್ಸು, ಎಂಟು ಅಕ್ಷರಗಳ ಪಾದವುಳ್ಳ ಛಂದಸ್ಸು. ಅನುಷ್ಠುಮ್ ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮). (ವಿಂ) 2. ಅನುಷ್ಠುಮ್ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಅನುಷ್ಠುಮ್ ಇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦). 3. ಅನುಷ್ಠುಮ್ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಮಂತ್ರ.

ಆನುಷ್ಯ ಅನುಷ್ಯ (ನಂ) ಮುಣಶೂನ್ಯತೆ, ಸಾಲ ವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಅನುಷ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ಏತ್" (೪-೧-೧೨೪). ಆನುಷ್ಯಸ್ಯ ಅನುಷ್ಯಸ್ಯ (ನಂ) ಕಾರುಣ್ಯ, ದಯಾಳುತ್ವ, ಕ್ರೂರನಾಗಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಅನುಷ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ಏತ್" (೪-೧-೧೨೪). "ಆನುಷ್ಯಸ್ಯಮಥವಾ ನ ಭಜ್ಯತೇ ತಸ್ಯ ಸಂಶ್ರಿತಜನೇಷು ಜಾತುಚಿತ್" ಧಾದಂ ೧೭-೬೬.

ಆನೇತ್ ಅನೇತ್ಯ (ವಿಂ) ಕರೆತರುವ, ಬರಮಾಡುವ. ಆ + ಣೀತ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ತತ್" (೩-೧-೧೩೩). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪). ಆನೇತ್ರಿ ಅನೇತ್ರಿ.

ಆನೇಯ ಅನೇಯ (ವಿಂ) ಕರೆತರಲ್ಪಡುವ. ಆ + ಣೀತ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಅಚ್" (೩-೩-೪೬).

ಆಂತರತಮ್ಯ ಅಂತರತಮ್ಯ (ನಂ) ಸಮೀಪಸಂಬಂಧ, ಹೆಚ್ಚು ಹೋಲಿಕೆ. ಅಂತರತಮಸ್ಯ ಭಾವ: "ಏತ್" (೪-೧-೧೨೪).

ಆಂತರಾಗಾರಿಕ ಅಂತರಾಗಾರಿಕ (ವಿಂ) ಅಂತ: ಪುರದಲ್ಲಿ ನಿಯುಕ್ತನಾದ ಪುರುಷನ ಧರ್ಮ (ಅಂತ: ಪುರದ ರಕ್ಷಣೆ ಮೊದಲಾದುದು). ಅಂತರಾಗಾರಸ್ಯ ಧರ್ಮಮ್ "ಠಕ್" (೪-೪-೪೭).

ಆಂತರಿಕ್ಷ ಅಂತರಿಕ್ಷ (ವಿಂ) ಅಂತರಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ಆಕಾಶದಲ್ಲಿರುವ. ಅಂತರಿಕ್ಷೇ ಭವ: "ಅನ್" (೪-೩-೪೩).

ಆಂತರ್ಗೃಹಿಕ ಅಂತರ್ಗೃಹಿಕ (ವಿಂ) ಮನೆಯೊಳಗಿರುವ. ಅಂತರ್ಗೃಹೇ ಭವ: "ಠಕ್" (೪-೩-೬೭).

ಆಂತರ್ಯ ಅಂತರ್ಯ (ನಂ) 1. ಒಳಗಿನ ಭಾವ, ಹೃದಯದ ಆಶಯ, ಅಭಿಪ್ರಾಯ. ಅಂತರ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ಏತ್" (೪-೧-೧೨೪). 2. ಸಂದೃಶ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ. "ಯತ್ರಾನೇಕವಿಧಮಾಂತರ್ಯ ತತ್ರ ಸ್ಥಾನತ ಆಂತರ್ಯ ಬಲೀಯ:" (ಪರಿಂ ೧೪). 3. ಭೇದ, ವೈಲಕ್ಷಣ್ಯ, ವ್ಯತ್ಯಾಸ.



ಆಂತಿಕಾ ಅಂತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಡೈಷ್ ಸಮೋದರಿ, ಅಕ್ಕು.  
ಆನ್ತ್ರ ಅಂತ್ರು (ನಂ) ಕರುಳು. ಅಮತ್ಯನೇನ-ಅಮ (ಗತೌ)  
"ಕತ್ರ:" (ಛಂ ೪-೧೬೪)। "ಆನ್ತ್ರೇ: ಕಲ್ಪಿತಮಜ್ಜಲ-  
ಪ್ರತಿಸರಾ:" ಮಾಲತೀಂ ೪-೧೮।

ಆಂದೋಲ ಅಂದೋಲ (ಪುಂ) 1. ಉಯ್ಯಾಲೆ, ತೂಗು  
ಮಣೆ. ಆಂದೋಲಯತಿ ಅನೇನ-ಆಂದೋಲ (ದೋಲನೆ) + ಣಿವ್  
ಕರಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। 2. ತೂಗುವಿಕೆ.

ಆಂದೋಲಕ ಅಂದೋಲಕ (ವಿಂ) ತೂಗುವವನು.

ಆಂದೋಲನ ಅಂದೋಲನ (ನಂ) 1. ಉಯ್ಯಾಲೆ,  
ತೂಗುಮಣೆ. ಆಂದೋಲ (ದೋಲನೆ) + ಣಿವ್ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೭)। 2. (ತೂಗುವವನು) ಅಡಿಸುವುದು.

ಆಂದೋಲಿತ ಅಂದೋಲಿತ (ವಿಂ) 1. ಚಂಚಲವಾದ.  
2. ತೂಗಲ್ಪಟ್ಟ. ಆಂದೋಲ (ದೋಲನೆ) + ಣಿವ್ "ಕ್ತ:"  
(೩-೨-೧೦೨)।

ಆಂಧಸಿಕ ಅಂಧಸಿಕ (ಪುಂ) ಅಡಿಗೆಯವನು. ಅಂಧೋ  
ಭಕ್ತಂ ಶಿಲ್ಪಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೪೪)। "ಆರಾಲಿಕಾ  
ಆಂಧಸಿಕಾ ಸೂದಾ ಅಂದಿನಿಕಾ ಗುಣಾ:" ಅಮಂ।

ಆಂಧ್ಯ ಅಂಧ್ಯ (ನಂ) ಕುರುಡು, ಕಣ್ಣು ಕಾಣದಿರುವಿಕೆ.  
ಅಂಧಸ್ಯ ಭಾವ: "ಘ್" (೪-೧-೧೨೪)।

ಆಂಧ್ರ ಅಂಧ್ರ (ಪುಂ ಬಂವಂ) 1. ಆಂಧ್ರದೇಶ, ತೆಲುಗು  
ದೇಶ. 2. ಆಂಧ್ರದೇಶದ ನಿವಾಸಿಗಳು. (ಪುಂ)  
3. ಆಂಧ್ರದೇಶದ ದೊರೆ.

ಆನ್ವಾಹಿಕ ಅನ್ವಾಹಿಕ (ವಿಂ) ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಉಂಟಾ  
ಗುವ, ನಿತ್ಯವೂ ನಡೆಸಬೇಕಾದ. ಅಹನ್ಯಹನಿ ಅನ್ವಹಮ್  
ತತ್ರ ಭವ: "ಠಕ್" (ವಾಂ ೪-೩-೬೦)।

ಆನ್ವೀಕ್ಷಿಕೀ ಅನ್ವೀಕ್ಷಿಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತರ್ಕಶಾಸ್ತ್ರ,  
ನ್ಯಾಯಶಾಸ್ತ್ರ, ನ್ಯಾಯದರ್ಶನ. ಅನು ಶ್ರವಣಾನಂತರಂ  
ಇಕ್ಷಣಂ ಪರೀಕ್ಷಣಮ್ ಅನ್ವೀಕ್ಷಾ, ಸಾ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯಾ: "ಠಕ್"  
(೪-೧-೧೦೯)। 2. ಅಧ್ಯಾತ್ಮವಿದ್ಯೆ. "ಆನ್ವೀಕ್ಷಿಕೀಯಾತ್ಮ-  
ವಿಧ್ಯಾ ಸ್ಯಾದೀಕ್ಷಣಾತ್ಮಸುಖದುಃಖಯೋಃ। ಇಕ್ಷಿಮಾಣಸ್ತಯಾ ತತ್ತ್ವಂ  
ಹರ್ಷಶೋಕೌ ವ್ಯುದಸ್ಯತಿ" ಕಾಮಂ ನಿಯಂ ೨-೧೧।

ಆಪ ಅಪ (ಪುಂ) 1. ಅಷ್ಟ ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. "ಭರೋ  
ಧ್ರುವ: ಸೋಮನಾಮಾ ತಥಾಪೋಷ್ಯನಿಲೋಜಲ:। ಪ್ರತ್ಯುಪಶ್ಚ  
ಪ್ರಭಾಸಶ್ಚ ವಸವೋಽಪಿ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ:" ವಿಷ್ಣುಧಂ। (ನಂ)  
2. ಜಲರಾಶಿ, ನೀರಿನ ಸಮೂಹ. ಅಪಾಂ ಸಮೂಹ: "ಅಘ್"  
(೪-೨-೩೭)।

ಆಪಕ ಅಪಕ (ವಿಂ) ಹೊಂದುವ, ಪಡೆಯುವ. ಆಪ್ತ  
(ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಫ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಆಪಗಾ ಅಪಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನದಿ, ಹೊಳೆ. ಆಪೇನ ಜಲಸಮೂಹೇನ  
ಗಚ್ಛತಿ-ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಙ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)।

"ಶ್ರುತಿಪ್ರಣಯಿನಿ ಸೋಪಮಾಪಗಾಮಾಪಗಾಮಿವ" ಚಂ ರಾಂ ೧।  
ಆಪಗೇಯ ಅಪಗೇಯ (ಪುಂ) ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯರು.  
ಆಪಗಾಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೦)।

ಆಪಣ ಅಪಣ (ಪುಂ) 1. ಅಂಗಡಿ. ಆಸಮಂತಾತ್ ಪಣಂತೇ-  
ಆ + ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರೇ ಸ್ತುತೌ ಚ) "ಘ:" (೩-೩-೧೧೯)।  
ನಿಪಾಂ। "ಪೂರ್ಣಾಪಣಂ ವಿಪಣಿನೋ ವಿಪಣಿವಿಭೇಜು:"  
ಮಾಘಂ ೪-೨೪। 2. ಕ್ರಯ ಮತ್ತು ವಿಕ್ರಯಗಳ  
ವ್ಯವಹಾರ. ಆ + ಪಣ ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)।

ಆಪಣಿಕ ಅಪಣಿಕ (ಪುಂ) 1. ವರ್ತಕ, ಕ್ರಯ ಮತ್ತು  
ವಿಕ್ರಯ ವ್ಯವಹಾರವುಳ್ಳವನು. ಆಪಣೋ ವ್ಯವಹಾರೋ-  
ಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ-"ಠನ್" (೪-೨-೧೧೪)। 2. ವ್ಯಾಪಾರಸ್ಥಳದ  
ತೆರಿಗೆ, ಅಂಗಡಿಯಲ್ಲಿ ವಸೂಲಾಗುವ ವ್ಯಾಪಾರ ತೆರಿಗೆ.  
3. ವೇಟೆ ಧಾರಣೆ, ಮಾರಾಟದ ಪದಾರ್ಥಗಳ ದರ.  
(ವಿಂ) 4. ಅಂಗಡಿಯಿಂದ ಬಂದ, ವ್ಯಾಪಾರಸ್ಥಳದಿಂದ  
ಬಂದ(ಸುಂಕ). ಆಪಣಾಧಾರತ: "ಠಕ್" (೪-೩-೭೪)।

ಆಪತತ್ ಅಪತತ್ (ವಿಂ) ಎದುರಿಗೆ ಓಡಿಬರುವ.  
ಆ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ತಮಾಪತಂತಂ  
ನೃಪತೇರವಧ್ಯ: ವನ್ಯ: ಕರೀತಿ ಶ್ರುತವಾನ್ ಕುಮಾರ:" ರಘುಂ ೪-೪೦।

ಆಪತನ ಅಪತನ (ನಂ) 1. ಸಂಭವ, ಘಟನೆ, ಆಗು  
ಹೋಗು. 2. ಆಗಮನ, ಬರುವಿಕೆ, ತಲುಪುವುದು.  
3. ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ಜ್ಞಾನ. "ಪ್ರಾಕರಣಿಕಾದರ್ಶಾತ್ ಅಪ್ರಾ-  
ಕರಣಿಕಾರ್ಥಸ್ಯಾಪತನಮ್"। 4. ತಾನಾಗಿ ಬೀಳುವುದು,  
ಸ್ವಭಾವವಾಗಿ ಕಳಚಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಆ + ಪಲ್  
(ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।

ಆಪತಿತ ಅಪತಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಂಭವಿಸಿದ,  
ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ ನಡೆದ. 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬಿದ್ದ, ಕಳಚಿ  
ಕೊಂಡ. ಆ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)।  
3. ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ ಬಂದ, ಹಠಾತ್ತಾಗಿ ಬಂದು ಸೇರಿದ.

ಆಪತ್ಕಲ್ಪ ಅಪತ್ಕಲ್ಪ (ಪುಂ) ಅಪತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾಡ  
ಬಹುದಾದ ಕಾರ್ಯದ ವಿಧಿ. ಆಪಾದಿ ಉಚಿತ: ಕಲ್ಪ:  
ವಿಧಿ:। [ಬ್ರಾಹ್ಮಣನು ಅಪತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕ್ಷತ್ರಿಯ  
ವೃತ್ತಿಯನ್ನಾಗಲಿ ವೈಶ್ಯವೃತ್ತಿಯನ್ನಾಗಲಿ ಅವಲಂಬಿಸಿ  
ಜೀವಿಸಬಹುದು.] "ಅಬ್ರಾಹ್ಮಣಾದಧ್ಯಯನಮಾಪತ್ಕಾಲೇ  
ವಿಧೀಯತೇ" ಮನುಂ ೨-೨೪೧।

ಆಪತ್ಕಾಲ ಅಪತ್ಕಾಲ (ಪುಂ) ಕಷ್ಟದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕಾಲ,  
ತೊಂದರೆಯ ಕಾಲ.



ಆಪತ್ಕಾಲಿಕ ಅಪತ್ಕಾಲಿಕ (ವಿಂ) ತೊಂದರೆಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಆಪತ್ಕಾಲೇ ಭವ: "ಠ್" "ಜಿಠೆ" ವಾ (ಗಂ ೪-೨-೧೧೬)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್‌ಠ್‌ "ಜಿಠೆ" (೪-೧-೧೫)। "ಜಿಠೆ ಟಾಪ್" (೪-೧-೪)।—ಕಾಲಿಕಾ—ಕಾಲಿಕಾ—ಕಾಲಿಕಾ.

ಆಪತ್ತಿ ಅಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಪತ್ತು, ತೊಂದರೆ, ಕಷ್ಟ. ಆ + ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। 2. ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಹೊಂದುವಿಕೆ, ಪಡೆಯುವುದು. 3. ಅನಿಷ್ಟಪ್ರಸಂಗ, ಅನಿಷ್ಟಘಟನೆ. 4. ಅನುಪ ಪದ್ಯಮಾನ ಅರ್ಥದಿಂದ ಉಪಪಾದಕಕಲ್ಪನೆ. ["ಅರ್ಥಾಪತ್ತಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಆಪದ್ ಅಪದ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೊಂದರೆ, ಕಷ್ಟ. ಆ + ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ಪಿ" (ವಾಂ ೩-೩-೯೪)। "ಸಹಸಾ ವಿದಧಿತ ನ ತ್ರಿಯಾಮವಿವೇಕ: ಪರಮಾಪದಾಂ ಪದಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೩೦। "ಉಪಪನ್ನಂ ನನು ಶಿವಂ ಸಪ್ತಸ್ವಜ್ಞೇಷು ಯಸ್ಯ ಮೇ। ದೇವೀನಾಂ ಮಾನುಷೀಣಾಂ ಚ ಪ್ರತಿಹರ್ತಾ ತ್ವಮಾಪದಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೬೦।

ಆಪನ್ನ ಅಪನ್ನ (ವಿಂ) 1. ವಿಸತ್ತಿಗೆ ಒಳಗಾಗಿರುವವನು, ಕಷ್ಟಕ್ಕೆ ಸಿಕ್ಕಿರುವವನು. ಆ + ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಆಪನ್ನಾಭಯಸತ್ವೇಷು ದೀಕ್ಷಿತಾ: ಸ್ವಲ್ಪ ಪೌರವಾ:" ಶಾಕುಂ ೨-೧೬। 2. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ.

ಆಪನ್ನಸತ್ವಾ ಅಪನ್ನಸತ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರ್ಭಿಣಿ, ಬಸುರು ಹೆಂಗಸು. ಆಪನ್ನಂ ಸತ್ವಂ ಪ್ರಾಣಿ ಯಾ। "ಸಮಾಪನ್ನ-ಸತ್ವಾಸ್ತಾ ರೇಜುರಾಪಾಂಡುರತ್ವಿಪ:" ರಘುಂ ೧೦-೫೯।

ಆಪಮಿತ್ಯಕ ಅಪಮಿತ್ಯಕ (ವಿಂ) ಬದಲಾವಣೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ, ಒಂದನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಅದಕ್ಕೆ ಬದಲಾಗಿ ಪಡೆದ. ಅಪಮಿತ್ಯ ಪರಿವರ್ತಯ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಕಕ್" (೪-೪-೨೧)।

ಆಪರಾಹ್ಲಿಕ ಅಪರಾಹ್ಲಿಕ (ವಿಂ) 1. ಅಪರಾಹ್ಲದಲ್ಲಿರುವ, ಅಪರಾಹ್ಲದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಅಪರಾಹ್ಲೇ ಭವ: "ಠ್" (೪-೩-೧೧)। 2. ಅಪರಾಹ್ಲಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪರಾಹ್ಲೇನ ನಿವೃತ್ತಂ "ಠ್" (೫-೧-೭೯)।

ಆಪಸ್ ಅಪಸ್ (ನಂ) ಜಲ, ನೀರು. ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಅಸುನ್" (ತಂ ೪-೨೦೭)।

ಆಪಸ್ತಂತ್ರ ಅಪಸ್ತಂತ್ರ (ಪುಂ) ಅಪಸ್ತಂತ್ರಮುಷಿ, ಧರ್ಮ ಶಾಸ್ತ್ರಕಾರರಾದ ಒಬ್ಬ ಮುಷಿ. ಇವರಿಂದ ರಚಿತ ವಾದ ಗ್ರಂಥಗಳು: 1. ಅಪಸ್ತಂತ್ರ ಧರ್ಮಸೂತ್ರ. 2. ಅಪಸ್ತಂತ್ರ ಗೃಹ್ಯಸೂತ್ರ. 3. ಅಪಸ್ತಂತ್ರ ಶ್ರುತ ಸೂತ್ರ.

ಆಪಾಕ ಅಪಾಕ (ಪುಂ) ಅವಿಗೆ ಮನೆ, ಕುಂಬಾರನು ಮಾಡಿದ ಪಾತ್ರೆಗಳನ್ನು ಬೇಯಿಸುವ ಸ್ಥಳ. ಆಸಮಂತಾತ್ ಪರಿವೇಷ್ಯ ಪಚ್ಯತೇ—ಆ + ಡುಪಚ್ (ಪಾಕೇ) "ಘತ್" (೩-೩-೧೨೧)।

ಆಪಾತ ಅಪಾತ (ಪುಂ) 1. ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾದ ಆಗಮನ. ಆ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಘತ್" (೩-೩-೧೮)। "ಗಢಾಪಾತ ವಿಶಿಷ್ಟಮೇಘನಾದಾಸ್ತವನ್ಧನ:" ರಘುಂ ೧೨-೭೬। 2. ವಿವೇಚನೆ ಮಾಡದೆ ಅರ್ಥಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. "ಆಪಾತತೋ ಯದರ್ಥಸ್ಯ ಪೌನಃಕರ್ತೃಣಾ ಭಾಸನಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೧೦-೨। 3. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. "ಶಕ್ತ: ಪರಜನೇ ದಾತಾ ಸ್ವಜನೇ ದು:ಖಜೀವಿನಿ। ಮಧ್ವಾಪಾತೋ ವಿಷಾಸ್ವಾದ: ಸ ಧರ್ಮಪ್ರತಿರೂಪಕ:" ಮನುಂ ೧೧-೯। 4. ವರ್ತಮಾನಕಾಲ, ತತ್ಕಾಲ. "ಆಪಾತರನ್ಯಾ ವಿಪಯಾ: ಪರ್ಯಂತಪರಿತಾಪಿನ:" ಕಿರಾಂ ೧೧-೧೨। "ತದಾತ್ವೇ ಪಾತ ಆಪಾತ:" ವೈಜಂ।

ಆಪಾತಲಿಕಾ ಅಪಾತಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ ಮಾತ್ರಾ ವೃತ್ತದ ಒಂದು ಭೇದ. "ಆಪಾತಲಿಕಾ ಕಥಿತೇಯಂ ಭಾದ್ಗುಣಕಾವಯ ಪೂರ್ವವದನ್ಯತ್" ವೃಂ ೨೦।

ಆಪಾತತಸ್ ಅಪಾತತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ, ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾಗಿ. 2. ವಿವೇಚನೆ ಮಾಡದೆ, ಸರಿಯಾಗಿ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳದೆ. "ಆಪಾತತೋ ಯದರ್ಥಸ್ಯ ಪೌನಃಕರ್ತೃಣಾ ಭಾಸನಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೧೦-೨।

ಆಪಾದ ಅಪಾದ (ಪುಂ) 1. ಆಗಮನ. ಆ + ಪದ (ಗತೌ) "ಘತ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಪ್ರಾಪ್ತಿ. ಹೊಂದುವಿಕೆ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಕಾಲಿನವರಿಗೂ. ಪಾದಮಭಿವ್ಯಾಪ್ಯ। ಅವ್ಯಯಿಂ।

ಆಪಾದನ ಅಪಾದನ (ನಂ) 1. ಸಂಪಾದನೆ. 2. ಅಪಾದನೆ, ತಪ್ಪುಹೊರಿಸುವಿಕೆ, ದೋಷಾ ರೋಪಣೆ. ಆ + ಪದ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಆಪಾನ ಅಪಾನ (ನಂ) 1. ಪಾನಗೋಷ್ಠಿ, ಮಧ್ಯ ಪಾನಕ್ಕಾಗಿ ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕಲೆತು ಕೂಡುವ ಸ್ಥಳ. ಆ ಸಂಭೂಯ ಪಿಬನ್ತ್ಯತ್ರ—ಆ + ಪಾ (ಪಾನೇ) ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। 2. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕಲೆತು ಪಾನ ಮಾಡುವುದು. ಆ + ಪಾ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ತಾಮ್ಬೂಲಿನಾಂ ದಲೇಸ್ತತ್ರ ರಚಿತಾಪಾನಭೂಮಯ:" ರಘುಂ ೪-೪೨।

ಆಪಾಯಿನ್ ಅಪಾಯಿನ್ (ವಿಂ) ಪಾನಮಾಡುವ, ಕುಡಿಯುವ. ಆಪಿಬತಿ—ಆ + ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಣಿನಿ:"



(3-2-98). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-4). ಆಪಾಯಿನಿ  
ಅಪಾಯಿನಿ.

ಆಪಾಲಿ ಅಪಾಲಿ (ಪುಂ) ಹೇನು, ಕೂರೆ. ಆಪಾರ್ಥ (ರಕ್ತ)  
ಪಾನಾರ್ಥ ಅಲತಿ—ಅಲ (ಭೂಷಣಾದಿ) "ಇನ್" (3-4-110).  
ಆಪಿಂಜರ ಅಪಿಂಜರ (ಪುಂ) 1. ಹೊಂಬಣ್ಣ, ಹಳದಿ  
ಬಣ್ಣ. (ನಂ) 2. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ಆ ಇಷತ್  
ಪಿಂಜರಮ್. (ವಿಂ) 3. ಹೊಂಬಣ್ಣದ, ಹಳದಿ ಬಣ್ಣದ.  
"ಆಪಿಂಜರಾ ಬದರಜಃಕಣತ್ವಾತ್" ರಘುಂ 16-41.

ಆಪಿಶಲ ಅಪಿಶಲ (ಪುಂ) 1. ಅಪಿಶಲಿಯ ಗ್ರಂಥವನ್ನು  
ಹಿಡುವ ತಿಷ್ಠ. ಆಪಿಶಲಿನಾ ಪ್ರೋಕ್ತಮಥೀತೆ "ಅನ್"  
(4-2-112). "ಅನ್" (4-2-49). "ಉಕ್"  
(4-2-64).

ಆಪಿಶಾಲಿ ಅಪಿಶಾಲಿ (ಪುಂ) ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರ ಪ್ರವರ್ತಕ  
ರಲ್ಲೊಬ್ಬರು, ಅಷ್ಟ ವೈಯಾಕರಣರಲ್ಲೊಬ್ಬರು.  
ಅಪಿಶಾಲಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಓಜ್" (4-1-94). "ಇಂದ್ರಚಂದ್ರಃ  
ಕಾಶಕೃತ್ಸನಾಪಿಶಾಲಿಃ ಶಾಕಟಾಯನಃ ಪಾಣಿನ್ಯಮರಜೇನೆಂದ್ರಾ  
ಜಯಂತ್ಯಷ್ಟಾದಿಶಾಬ್ದಿಕಾಃ".

ಆಪಿ ಅಪಿ (ವಿಂ) ದೊಡ್ಡದಾದ, ದಪ್ಪನಾದ, ಸ್ಥೂಲ  
ವಾದ. ಆ+ಆಪ್ಯಾಯಿ (ವೃದ್ಧಿ) "ವಿವಪ್" (3-2-96).

ಆಪಿಡ ಅಪಿಡ (ಪುಂ) 1. ಹಾರ, ಪುಷ್ಪಮಾಲೆ.  
ಆಪಿಡಯತಿ—ಆ + ಪಿಡ (ಅವಗಾಹನೆ) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್"  
(3-1-134). 2. ತಲೆಯ ಆಭರಣ, ತಿರೋ  
ಭೂಷಣ. "ಚೂಡಾಪಿಡಕಪಾಲಸಂಕುಲಗಲನ್ಮಂದಾಕಿನಿವಾರಯೋ  
ವಿದ್ಯುತ್ಪ್ರಾಯಲಲಾಟಲೋಚನಶಿಖಿಜ್ವಾಲಾವಮಿಶ್ರತ್ವಿಃ" ಮಾಲತೀಂ  
1-1. (ವಿಂ) 3. ಪೀಡಿಸುವ, ಹಿಂಸಿಸುವ.  
4. ಅಮುಕುವ, ಹಿಡುಕುವ.

ಆಪಿಡನ ಅಪಿಡನ (ನಂ) 1. ಅಮುಕುವುದು,  
ಹಿಡುಕುವುದು, ಹಿಂಸಿಸುವುದು. 2. ನೋಯಿಸುವುದು,  
ಹಿಂಸಿಸುವುದು. 3. ಆಲಿಂಗನ, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುವುದು.  
ಆ + ಪಿಡ (ಅವಗಾಹನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114).

ಆಪಿಡಿತ ಅಪಿಡಿತ (ವಿಂ) 1. ಹಿಡುಕಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಆಲಿಂಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ.  
3. ತಲೆಯ ಆಭರಣದಿಂದ ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಆ + ಪಿಡ (ಅವಗಾಹನೆ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102).  
4. ನೋಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಆಪಿತ ಅಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂಬಣ್ಣದ, ಹಳದಿ  
ಬಣ್ಣದ. ಅಸಮಂತಾತ್ ಪಿತಮ್. 2. ಸ್ವಲ್ಪ ಕುಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ  
ಆ ಇಷತ್ ಪಿತಮ್—ಆ + ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102).

ಆಪಿನ ಅಪಿನ (ಪುಂ) 1. ಕೂಪ, ಬಾವಿ. (ನಂ)  
2. ಹಸು ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಕೆಚ್ಚಲು. ಆ +  
ಆಪ್ಯಾಯಿ (ವೃದ್ಧಿ) "ಕ್ತಃ" (3-4-92). ಪಿಭಾವಃ  
(ವಾಂ 6-1-28). ಆಪಿನೋಽಧುಃ. ಆಪಿನಮುಖಃ.  
ಸಿಂ ಕೌಂ. "ಆಪಿನಭಾರೋಽಹನಪ್ರಯತ್ನಾದ್ಗೃಹ್ಣಿತ್ವಾದ್ವಪುನಿ  
ನರೇಂದ್ರಃ" ರಘುಂ 2-18. (ವಿಂ) 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ದಪ್ಪ  
ನಾಗಿರುವ. 4. ಸ್ವಲ್ಪ ದಪ್ಪನಾಗಿರುವ.

ಆಪುಪಿಕ ಅಪುಪಿಕ (ಪುಂ) 1. ಅಪುಪಗಳ ರಾಶಿ.  
ಅಪುಪಾನಾಂ ಸಮೂಹಃ "ಠಕ್" (4-2-48). (ವಿಂ)  
2. ರೊಟ್ಟಿ ಮಾಡುವವನು, ಮಿಠಾಯಿ ತಯಾರಿಸು  
ವವನು, ತಿಂಡಿಮಾಡುವವನು. ಅಪುಪಃ ಶಿಲ್ಪಮಸ್ಯ  
"ಠಕ್" (4-4-44). 3. ರೊಟ್ಟಿಯನ್ನು ತಿನ್ನುವ  
ಸ್ವಭಾವದವನು. ಅಪುಪಭಕ್ಷಣಂ ಶಿಲಮಸ್ಯ "ಠಕ್"  
(4-4-61). 4. ರೊಟ್ಟಿಯನ್ನು ಮಾರುವವನು.  
ಅಪುಪಃ ಪಯಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (4-4-41). 5. ರೊಟ್ಟಿಯನ್ನು  
ತಿನ್ನುಲು ಹಿತವಾದ (ಬೆಲ್ಲ ಮುಂತಾದುದು). ಅಪುಪ-  
ಭಕ್ಷಣೇ ಸಾಧು "ಠಕ್" (4-4-103). 6. ರೊಟ್ಟಿಯನ್ನು  
ತಿನ್ನುವುದು ಹಿತವಾಗಿರುವ (ಮನುಷ್ಯ). ಅಪುಪಭಕ್ಷಣಂ  
ಹಿತಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (4-4-64).

ಆಪುಪ್ಯ ಅಪುಪ್ಯ (ಪುಂ) ರೊಟ್ಟಿಯನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ  
ಹಿಟ್ಟು. ಅಪುಪಾಯ ಸಾಧುಃ "ಯತ್" (4-4-98).

ಆಪುರ ಅಪುರ (ಪುಂ) 1. ನೀರಿನ ಪ್ರವಾಹ. ಆಪುರಯತಿ  
—ಆ + ಪುರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೇ) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" (3-1-134).  
"ಸ್ವೇದಾಪುರೋ ಯುವತಿಸರಿತಾಂ ವ್ಯಾಪ ಗಂಧಸ್ಥಲಾನಿ" ಮಾಘಂ  
9-94. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತುಂಬುವುದು. ಭಾವೇ "ಘಜ್"  
(3-3-18).

ಆಪುರಣ ಅಪುರಣ (ನಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತುಂಬುವುದು,  
ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ತುಂಬುವುದು. ಆ + ಪುರಿ  
(ಆಪ್ಯಾಯನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114). (ವಿಂ)  
2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತುಂಬುವ. ಆ + ಪುರಿ "ಲ್ಯಃ"  
(3-1-134).

ಆಪುರಿತ ಅಪುರಿತ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟ  
(ಪಾತ್ರೆ). 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಪುರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೇ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ"  
(3-2-102).

ಆಪುರ್ಣ ಅಪುರ್ಣ (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿರುವ. ಆ + ಪುರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೇ) "ಕ್ತಃ"  
(3-2-102).



**ಪಾಪ್ಯಮಾಣ** ಅಪೂರ್ಯಮಾಣ (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ತುಂಬಲ್ಪಡುವ. ಆ + ಪ (ಪಾಲನಪೂರಣಯೋಃ) ಕರ್ಮಂ "ಪಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಆಪೂರ್ಯಮಾಣಮಚಲಪ್ರತಿಷ್ಠಂ ಸಮುದ್ರಮಾಪಃ ಪ್ರವಿಶಂತಿ ಯದ್ವತ್" ಗೀತಾ ೨-೭೦।

**ಪಾಪುಷ** ಅಪೂಷ (ನಂ) ತವರ. ಆ + ಪುಷ (ವೃದ್ಧಿ) "ಪು" (೩-೩-೧೨೧)।

**ಪಾಪುಷಾ** ಅಪುಚ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಜಿಜ್ಞಾಸೆ. 2. ಕುಶಲಪ್ರಶ್ನೆ. 3. ಸಂಭಾಷಣೆ, ಮಾತನಾಡುವುದು, ಆಲಾಪ. ಆ + ಪ್ರಚ್ಛ (ಪ್ರೀತ್ಸಾಯಾಮ್) "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩)।

**ಪಾಪುಷ್ಯ** ಅಪುಚ್ಯ (ಅವ್ಯಂ) ಕೇಳಿ, ಪ್ರಶ್ನೆಮಾಡಿ, ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ. ಆ + ಪ್ರಚ್ಛ (ಪ್ರೀತ್ಸಾಯಾಮ್) "ಸ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭)।

**ಪಾಪೇಕ್ಷಿಕ** ಅಪೇಕ್ಷಿಕ (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ಬಂದ, ಇಷ್ಟದಂತೆ ಲಭಿಸಿದ. ಅಪೇಕ್ಷಯಾ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠವ್" (೪-೧-೭೯)।

**ಪಾಪೋಕ್ತಿಸಮ** ಅಪೋಕ್ತಿಸಮ (ನಂ) ಲಗ್ನದಿಂದ 3, 6, 9 ಮತ್ತು 12 ನೆಯ ಸ್ಥಾನಗಳು. "ತೃತೀಯಂ ಷಷ್ಠನವಮಮನ್ಯಂ ಪಾಪೋಕ್ತಿಸಮಂ ವಿಧುಃ"।

**ಪಾಪೋಮಯ** ಅಪೋಮಯ (ನಂ) 1. ಜಲವಿಕಾರ. (ವಿಂ) 2. ಜಲಮಯವಾದ, ನೀರಿನಿಂದ ತುಂಬಿದ.

ಪಾಪಸ್ ವಿಕಾರಾರ್ಥೆ ಪ್ರಾಚುರ್ಯೇ ವಾ "ಮಯತ್" (೪-೩-೧೪೩)।

**ಪಾಪೋಷಣ** ಅಪೋಷಣ (ನಂ) ಭೋಜನಕ್ಕೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಮತ್ತು ಭೋಜನಾನಂತರ ಆಹಾರಕ್ಕೆ ಆಸ್ತರಣ ಮತ್ತು ಪಿಡಾನರೂಪವಾಗಿ ಮಂತ್ರಪೂರ್ವಕಮಾಡುವ ಜಲಪ್ರಾಶನ(ನೀರು ಕುಡಿಯುವುದು). ಆಪಸ್ + ಅಶ (ಪ್ರಾಶನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। ಭೋಜನಕ್ಕೆ ಮೊದಲು ಪೂರ್ವಾಪೋಷಣ. ಭೋಜನಾನಂತರ ಉತ್ತರಾಪೋಷಣ.

**ಪಾಪಾ** ಅಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ನಂಬಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಶ್ವಾಸವಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಭ್ಯ, ಹಿತವನ್ನು ಬಯಸುವ. ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಕುಮಾರಮೃತ್ಯುಕುಶಲೇರನುಚಿತೇ ಭಿಷಗಿಭಿರಾಪ್ತೇಽಥ ಗರ್ಭಭರ್ಮಣಿ" ಋ. ೩-೧೨। 3. ಪ್ರವೀಣ, ನಿಪುಣ, ಚತುರ. "ಪ್ರಾಜಕೋ ದಂಡಮಹಂತಿ" ಮನುಂ ೮-೨೯೪। 4. ಸಮೀಪಸಂಬಂಧವುಳ್ಳ, ಹೆಚ್ಚು ದೂರವಿರುವುದುಳ್ಳ, ಅಧಿಕ ಸಲಿಗೆಯುಳ್ಳ. "ಆಪ್ತಬಂಧು-ಋತೀರ್ಮ್ ಸುತಃ" ಯಾದಂ ೧೭-೧೨೭। 5. ಬಂಧು,

ನೆಂಟ. "ನಿಗ್ರಹಾತ್ವಸುರಾಪ್ತಾನಾಂ ವಧಾಂವ ಧನದಾನುಜಃ" ಋ. ೧೨-೪೨। 6. ಸರಿಯಾದ ಕಾರಣದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. 7. ಧಾರಾಳವಾದ, ವಿಶೇಷವಾದ, ಹೇರಳವಾದ. "ಯಜೇತ ರಾಜಾ ಕ್ರುತಿರ್ಭಿವಿವಿಧೇ-ರಾಪ್ತದಕ್ಷಿಣಃ" ಮನುಂ ೭-೭೯।

**ಆಪ್ತಕಾಮ** ಅಪ್ತಕಾಮ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. (ವಿಂ) 2. ಇಷ್ಟಾರ್ಥವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ, ಮನೋರಥವನ್ನು ಪಡೆದ. "ಆಪ್ತಕಾಮ! ಸೃಜಸಿ ತ್ರಿಜಗತ್ಕಿಮ್" ನೈಷಂ ೨೧-೧೦೪। 3. ಪ್ರಾಪಂಚಿಕ ಸೌಖ್ಯವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದ, ಜಗತ್ತಿನ ಸಂಬಂಧವನ್ನು ಬಿಟ್ಟಿರುವ, ಮುಕ್ತ. ಆಪ್ತಃ ಪ್ರಾಪ್ತಃ ಕಾಮೋ ಯೇನ।

**ಆಪ್ತವಚನ** ಅಪ್ತವಚನ—ವಾಕ್ಯ—ವಾಕ್ಯ. (ನಂ) ನಂಬಿಕೆಯಾದ ಮಾತು, ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮಾತು.

**ಆಪ್ತವಾಚ್** ಅಪ್ತವಾಚ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೇದ. 2. ಸ್ಮೃತಿ, ಇತಿಹಾಸಾದಿಗಳು. ಆಪ್ತಾ ವಾಕ್। "ಆಪ್ತವಾಗ್ನುಮಾನಾಮ್ಯಾಂ ಸಾಧ್ಯಂ ತ್ವಾಂ ಪ್ರತಿ ಕಾ ಕಥಾ" ಋ. ೧೦-೨೮। 3. ನಂಬಿಕೆಗರ್ಹನಾದವನ ಮಾತು. (ವಿಂ) 4. ನಂಬಿಕೆಯಾದ ಮಾತುಳ್ಳ, ಯಥಾರ್ಥವಾದ ಮಾತುಳ್ಳ. ಆಪ್ತಾ ವಾಗ್ವಸ್ಯ।

**ಆಪ್ತಶ್ರುತಿ** ಅಪ್ತಶ್ರುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೇದ. 2. ಸ್ಮೃತಿ, ಇತಿಹಾಸಾದಿಗಳು.

**ಆಪ್ತಿ** ಅಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊಂದುವಿಕೆ, ಪಡೆಯುವಿಕೆ. 2. ಸಂಬಂಧ, ಸಂಯೋಗ. ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। "ಪ್ರಾಪ್ತಿಸಮ್ಬಂಧಯೋರಾಪ್ತಿಃ" ಶಾಶ್ವಂ। "ಆಪ್ತಿಃ ಸಂಬಂಧಲಾಭಯೋಃ" ಹೇಮಂ। 3. ಸ್ತ್ರೀಸಂಬಂಧ. "ಆಪ್ತಿಃ ಸ್ತ್ರೀಯೋಗಸಂಪ್ರಾಪ್ತಯೋಃ" ಮೇದಿಂ। 4. ಸೇರುವುದು, ತಲುಪುವುದು. 5. ಯುಕ್ತತೆ, ಟಿಚಿತ್ಯ.

**ಆಪ್ಯ** ಅಪ್ಯ (ನಂ) 1. ಜಲವಿಕಾರ, ನೀರಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ ನೋರೆ ಮುಂತಾದುದು. ಅಪಾಮಿದಮ್ "ಅಪ್" (೪-೩-೧೨೦)। ತತಃ ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ವ್ಯಜ್" (ವಾಂ ೭-೩-೩೧)। 2. ಹೊಂದಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಪಡೆಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಆಪ್ತುರ್ಯೋಗ್ಯಮ್—ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ವ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)।

**ಆಪ್ಯಾನ** ಅಪ್ಯಾನ (ನಂ) 1. ಪ್ರೀತಿ, ಅನುರಾಗ. 2. ವೃದ್ಧಿ, ಬೆಳವಣಿಗೆ. (ವಿಂ) 3. ಪ್ರೀತಿ ಹೊಂದಿದ. 4. ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿದ. ಆ + ಆಪ್ಯಾಯಿ (ವೃದ್ಧಿ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। ನತ್ವಮ್ (೮-೨-೪೪)।



ಆಪ್ಯಾಯನ ಅಪ್ಯಾಯನ (ನಂ) 1. ಪ್ರೀತಿಸುವುದು.

2. ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸುವುದು. 3. ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವುದು. ಆ + ಪ್ಯಾಯಿ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 4. ಪ್ರೀತಿ, ಅನುರಾಗ. 5. ವೃದ್ಧಿ, ಬೆಳವಣಿಗೆ. (ವಿಂ)

6. ಬೆಳೆಸುವ, ಅಧಿಕಪಡಿಸುವ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ. ಆ + ಪ್ಯಾಯಿ "ಲ್ಯುಟ್" (3-1-134)।

ಆಪ್ಯಾಯಿತ ಅಪ್ಯಾಯಿತ (ವಿಂ) 1. ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,

2. ಪ್ರೀತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಆ + ಪ್ಯಾಯಿ + ಣಿच् "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "ತದ್ವುಕ್ತಿಭಿಃಸ್ವಾದುತಮಾಭಿರಾಸೀದಾಪ್ಯಾಯಿತೋ ನೂನಮನಾವಿಲಾಭಿಃ" ಯಾದಂ 13-30। 3. ಬೆಳೆಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಆಪ್ರಚ್ಛನ ಅಪ್ರಚ್ಛನ (ನಂ) 1. ಬಂಧುಗಳ ಭೇಟಿಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ (ಪರಸ್ಪರ) ಕುಶಲಪ್ರಶ್ನೆ.

2. ಹೊರಡುವಾಗ ಪಡೆಯುವ ಪಿಪ್ಪಣೆ.

ಆಪ್ರಚ್ಛನ ಅಪ್ರಚ್ಛನ್ಯ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಅಂತರಂಗವಾದ, ಬಹಳ ರಹಸ್ಯವಾದ. ಆ + ಪ್ರ + ಛದಿರ್ (ಅಪವಾರಣೆ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

ಆಪ್ರಪದ ಅಪ್ರಪದ (ಅವ್ಯಂ) ಕಾಲಿನ ತುದಿಯವರೆಗೂ, ತುದಿಗಾಲಿನವರೆಗೂ. ಪ್ರಪದಮಭಿವ್ಯಾಪ್ಯ। ಅವ್ಯಯಿಂ।

ಆಪ್ರಪದೀನ ಅಪ್ರಪದೀನ (ವಿಂ) ಕಾಲಿನ ತುದಿಯ ವರೆಗೂ ಜೋಲಾಡುವ. ಆಪ್ರಪದಂ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ—"ಃ" (4-2-6)।

ಆಪ್ಲವ ಅಪ್ಲವ (ಪುಂ) 1. ಸ್ನಾನ. 2. ನೀರನ್ನು ಚೆಮುಕಿಸುವುದು. ಆ + ಪ್ಲುಙ್ (ಗತೌ) "ಅಪ್" (3-3-49)। (ವಿಂ) 3. ಸ್ನಾನಮಾಡುವ. ಆಪ್ಲವತೇ— ಆ + ಪ್ಲುಙ್ "ಅಪ್" (3-1-134)।

ಆಪ್ಲವನ ಅಪ್ಲವನ (ನಂ) ಸ್ನಾನ. ಆ + ಪ್ಲುಙ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಆಪ್ಲವವ್ರತಿನ್ ಅಪ್ಲವವ್ರತೀನ್ (ಪುಂ) ಸ್ನಾತಕ, ಸಾಂಗ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿ ವಿವಾಹಕ್ಕೆ ಮುಂಚಿತವಾಗಿ ವ್ರತಸ್ನಾನ ಮಾಡಿದವನು, ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾಶ್ರಮ ವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು (ಮುಂದಿನ) ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದವನು. ಆಪ್ಲವಶ್ರಾಸೌ ವ್ರತೀ ಚ। "ಅಲಾಭೇ ಚೈವ ಕನ್ಯಾಯಾಃ ಸ್ನಾತಕವ್ರತಮಾಚರೇತ್"।

ಆಪ್ಲಾವ ಅಪ್ಲಾವ (ಪುಂ) 1. ಸ್ನಾನ. 2. ನೀರನ್ನು ಚೆಮುಕಿಸುವುದು. 3. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿಸುವುದು. 4. ಪ್ರವಾಹ, ತುಂಬಿ ನೀರು ಹರಿಯುವುದು. ಆ + ಪ್ಲುಙ್ (ಗತೌ) "ಘಜ್" (3-3-40)।

ಆಪ್ಲಾವಿತ ಅಪ್ಲಾವಿತ (ವಿಂ) ನೀರಿನ ಪ್ರವಾಹದಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಪ್ಲುಙ್ (ಗತೌ) + ಣಿच् "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

ಆ + ಪ್ಲುಙ್ "ಲ್ಯುಙ್" ಧಾತುವಿನಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಆಪ್ಲುತ ಅಪ್ಲುತ (ಪುಂ) 1. ಸ್ನಾತಕ, ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾ ಶ್ರಮವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸ ದವನು. ಆ + ಪ್ಲುಙ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (3-4-92)।

(ನಂ) 2. ಸ್ನಾನ. ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-3-114)।

(ವಿಂ) 3. ಸ್ನಾನಮಾಡಿದ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ"। "ಆಪ್ಲುತಾ- ಸ್ತೋರಮಂದಾರಕುಸುಮೋತ್ಕಿರವೀಚಿಪು" ಕುಮಾಂ 6-4। 4. ನೆನೆದಿ ರುವ, ಒದ್ದೆಯಾದ, ಚಿಮುಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ"।

"ಯಾವನಾಶಯಾತೇ ವೇದಿರಭಿಘೇಕಜಲಾಪ್ಲುತಾ" ರಘುಂ 19-30।

ಆಪ್ಲುತವ್ರತಿನ್ ಅಪ್ಲುತವ್ರತೀನ್ (ಪುಂ) "ಆಪ್ಲವವ್ರತಿನ್" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಆಪ್ಲುತಸ್ಯ ವ್ರತಮಸ್ತಸ್ಯ "ಃ" (4-2-114)।

ಆಪ್ಲುತ್ಯ ಅಪ್ಲುತ್ಯ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಸ್ನಾನಮಾಡಿ. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ನೆಗೆದು. ಆ + ಪ್ಲುಙ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯಪ್" (3-1-30)।

ಆಪ್ಲುಷ್ಠ ಅಪ್ಲುಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಸ್ವಲ್ಪ ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ ಸಮ್ಯಕ್ ಷಿಷ್ಠ್ ವಾ ಪ್ಲುಷ್ಠಃ— ಆ + ಪ್ಲುಷ (ದಾಹೇ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

ಆವದ್ಧ ಆವದ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. ಆಸಮಂತಾತ್ ವದ್ಧಃ। "ಆವದ್ಧಪ್ರಚುರಪರಾರ್ಥಕಿಕಿಣೀಕಃ" ಮಾಘಂ 6-44।

2. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ವಂಧ (ವಂಧನೇ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "ಮೃಗದ್ವಂದೇಷು ಪಶ್ಯಂತೌ ಸ್ಯಂದನಾ- ವದ್ಧದೃಷ್ಟಿಪು" ರಘುಂ 1-40।

3. ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪಯೋಧಿಮಾವದ್ಧ- ಚಲಜ್ವಲಾವಿಲಂ ವಿಲಕ್ಷ್ಯಚ ಲಕ್ಷ್ಯಾಂ ನಿಕಷಾ ಹನಿಷ್ಯತಿ" ಮಾಘಂ 1-68।

5. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. (ನಂ) 6. ಅಭರಣ, ಒಡವೆ, ಅಲಂಕಾರ.

"ಅಲಕ್ಷಾರೋಪಿ ಚಾವದ್ಧಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 7. ನೋಗಕಟ್ಟು, ನೋಗವನ್ನು ಎತ್ತಿನ ಕತ್ತಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಮಿಡೆ. 8. ಪ್ರೀತಿ.

ಆವಂಧ ಆವಂಧ (ಪುಂ) 1. ನೋಗಕಟ್ಟು. 2. ದೃಢವಾಗಿ ಕಟ್ಟುವುದು. 3. ಪ್ರೀತಿ. ಆ + ವಂಧ (ವಂಧನೇ) ಭಾವೇ ಕರಂ ಅಧಿಂ ವಾ "ಘಜ್" (3-3-18, 121)।

4. ಸಂಬಂಧ. "ಪ್ರೇಮಾವಂಧವಿವಧಿತಾಧಿಕರಸಾ ಪ್ರೀತಿಃಸ್ತು ಯಾ ಸಾ ತ್ವಯಿ" ರತ್ನಾಂ 3-18। ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। ಆವಂಧನಮ್ ಆವಂಧನಮ್.



ಆವಹ ಅಬಹ (ಪುಂ) 1. ಹಿಂಸಿಸುವುದು. ಆ + ಬಹ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಕಿತ್ತು ಒಗೆಯುವುದು. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।  
ಆವಹಣಮ್ ಅಬಹಣಮ್.

ಆವಾಧ ಅಬಾಧ (ಪುಂ) 1. ಪೀಡೆ, ತೊಂದರೆ. 2. ತಡೆ, ಅಡ್ಡಿ. ಆ + ಬಾಧ (ವಿಲೋಡನೆ) ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ನ ಚೇನ ಪಾದತ: ಕುರ್ಯಾನ್ನಿಪ್ರಾಣಾಬಾಧಮಾಚರೇತ್" ಮನುಂ ೪-೫೫।

ಆವಾಧಾ ಅಬಾಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೀಡೆ, ತೊಂದರೆ, ಹಿಂಸೆ. 2. ಕ್ಲೇಶ, ಕಷ್ಟ. ಆ + ಬಾಧ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಅ:" (೩-೩-೧೦೩)।

ಆವರಣ ಅಭರಣ (ನಂ) 1. ಭೂಷಣ, ಒಡವೆ. ಆ + ಭ್ರಿಯತೇಜೇನ-ಆ + ಭ್ರ (ಭರಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)।  
"ಕಿಮಿತ್ಯಪಾಸ್ಯಾಭರಣಾನಿ ಯೌವನೇ ಧೃತಂ ತ್ವಯಾ ವಾರ್ಧಕಶೋಭಿ ವಲ್ಕಲಮ್" ಕುಮಾಂ ೫-೪೪। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪೋಷಿಸುವುದು. ಆ + ಭ್ರ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಆವರಿತ ಅಭರಿತ (ವಿಂ) 1. ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆವರಿಸ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತ್" (೫-೨-೩೬)।

ಆವರ್ಮನ್ ಅಭರ್ಮನ್ (ನಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪೋಷಿಸುವಿಕೆ. ಆ + ತ್ವ ಭ್ರ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಮನಿನ್" (೩-೩-೧೪೫)।

ಆವಾ ಅಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಂತಿ, ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. 2. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ, ಔಪಮ್ಯ. ಆ + ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) "ಅಙ್" (೩-೩-೧೦೬)। "ಮಹತ್ಪ್ರಯುಕ್ತಾಶ್ಚ ಮಹತ್ಸಖಾಭಂ ತಮರ್ಚಮಾರಾದಿಭವತಮಾನಮ್" ರಘುಂ ೨-೧೦।

ಆವಾತಿ ಅಭಾತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರತಿಬಿಂಬ, ಛಾಯೆ. ಆ + ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕ್ತಿಃ" (೩-೩-೧೭೪)।

ಆವಾಣಕ ಅಭಾಣಕ (ಪುಂ) ಲೋಕೋಕ್ತಿ, ಗಾದೆ.

ಆವಾಷಣ ಅಭಾಷಣ (ನಂ) 1. ಪರಸ್ಪರ ಮಾತಾಡುವುದು, ಸಂಭಾಷಣೆ. ಆ + ಭಾಷ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಸಂಬಂಧಮಾಭಾಷಣಪೂರ್ವಮಾಹವೃತ್ತ: ಸನೌ ಸಂಗತಯೋರ್ವಿನಾಂತಿ" ರಘುಂ ೨-೫೮। 2. ಸಂಬೋಧನೆ.

ಆವಾಷ್ಯ ಅಭಾಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಮಾತಾಡಲ್ಪಡುವ, ಮಾತಾಡಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. 2. ಸಂಬೋಧಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. ಆ + ಭಾಷ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಯತ್" (೩-೩-೧೨೪)। (ಅವ್ಯಂ) 3. ಸಂಬೋಧಿಸಿ. 4. ಮಾತನಾಡಿಸಿ. ಆ + ಭಾಷ "ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭)।

ಆವಾಸ ಅಭಾಸ (ಪುಂ) 1. ಹೇತುವಿನಂತೆ ತೋರುವ ಮಿಥ್ಯೆಯಾದ ಹೇತು, ನಿಜವಲ್ಲದ ಹೇತು, ದುಷ್ಟ ಹೇತು. (ಹೇತುವತ್) ಆವಾಸಂತೇ ಇತಿ ಹೇತ್ವಾಭಾಸಾ: ದುಷ್ಠಹೇತವ:। ಹೇತ್ವಾಭಾಸವು (1) ಸವ್ಯಭಿಚಾರ:, (2) ವಿರೋಧ:, (3) ಸತ್ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಿತ:, (4) ಅಸಿದ್ಧ: ಮತ್ತು (5) ಬಾಧಿತ: ಎಂದು ಐದು ವಿಧ. ಇಂತಹ ದುಷ್ಟಹೇತುವಿನ ಜ್ಞಾನವು ಅನುಮಿತಿ ಪ್ರತಿಬಂಧಕವಾಗುವುದು. "ಅನುಮಿತಿಪ್ರತಿಬಂಧಕಯಥಾರ್ಥಜ್ಞಾನವಿಷಯತ್ವಮ್ (ಹೇತ್ವಾಭಾಸ:)" ದೀಪಿಂ। 2. ಹೇತುವಿನ ದೋಷ. (ಹೇತೋ:) ಆವಾಸ:। ಇದು (1) ವ್ಯಭಿಚಾರ:, (2) ವಿರೋಧ:, (3) ಸತ್ಪ್ರತಿಪಕ್ಷ:, (4) ಅಸಿದ್ಧ: ಮತ್ತು (5) ಬಾಧ: ಎಂದು ಐದು ವಿಧ. 3. ಪ್ರತಿಬಿಂಬ, ಸಮಾನವಾಗಿ ತೋರುವ ಛಾಯೆ. ಆವಾಸಮಂತಾತ್ ಭಾಸತೇ-ಆ + ಭಾಸ (ದೀಪ್ತೌ) "ಅಙ್" (೩-೩-೧೩೪)। 4. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ, ಸಾಮ್ಯ. "ನಮಶ್ಚ ಛವಿರಾಭಾಸಮ್" ರಾಮಾಂ। 5. ಉದ್ದೇಶ, ತಾತ್ಪರ್ಯ. 6. ಭ್ರಾಂತಿ, ತಪ್ಪು ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ಮಿಥ್ಯಾ ಜ್ಞಾನ. 7. ಭ್ರಾಂತಿಯ ವಿಷಯ, ತಪ್ಪಾಗಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ (ವಸ್ತು).

ಆವಾಸುರ ಅಭಾಸುರ (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ. ಆ + ಭಾಸ (ದೀಪ್ತೌ) "ಘ್ರಃ" (೩-೩-೧೬೧)।

ಆವಾಸ್ವರ ಅಭಾಸ್ವರ (ಪುಂ) 1. 64 ಗಣದೇವತೆಗಳ ಸಮುದಾಯ. (ವಿಂ) 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ. ಆ + ಭಾಸ (ದೀಪ್ತೌ) "ವರಃ" (೩-೩-೧೭೫)।

ಆವಿಚರಣಿಕ ಅಭಿಚರಣಿಕ (ವಿಂ) 1. ಶತ್ರುನಿಗ್ರಹ ಮತ್ತು ಶತ್ರುವಿರೋಧಗಳಿಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಮಾಟ, ಶೂನ್ಯ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಮಂತ್ರ. 2. ಮಾಟ ಶೂನ್ಯ ಮುಂತಾದುವುಗಳ ಕ್ರಮ. ಅಭಿಚರಣೆ ಪ್ರಯೋಗನಮಸ್ಯ "ಠ್" (೫-೧-೧೦೯)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಚರಣಿಕಿ-ಚರಣಿಕೆ.

ಆವಿಚಾರಿಕ ಅಭಿಚಾರಿಕ (ವಿಂ) "ಆವಿಚರಣಿಕ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅಭಿಚಾರ: ಪ್ರಯೋಗನಮಸ್ಯ "ಠ್" (೫-೧-೧೦೯)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಚಾರಿಕಿ-ಚಾರಿಕೆ.

ಆವಿಜನ ಅಭಿಜನ (ವಿಂ) ವಂಶದಿಂದ ಬಂದ, ವಂಶ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಅಭಿಜನಾದಾಗತ: "ಅಙ್" (೪-೩-೭೪)। "ತಾಂ ಪಾರ್ವತೀಮಾಭಿಜನೇನ ನಾಮ್ನಾ ಬಂಧುಪ್ರಿಯಾಂ ಬಂಧುಜನೋ ಜುಹಾವ" ಕುಮಾಂ ೧-೨೬।



ಆಭಿಜಾತೃ ಅಭಿಜಾತೃ (ನಂ) 1. ಸತ್ಕುಲಪ್ರಸೂತೃ, ಶ್ರೇಷ್ಠಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವಿಕೆ. ಅಭಿಜಾತಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಽ" (೪-೧-೧೨೪)। "ಇತ್ಯನ: ಸಹಸಾಭಿಜಾತೃಜನಿತಾ ಸೇವೇ ದೇವ್ಯಾ: ಪರಮ್" ರತ್ನಾಂ ೩-೧೮। 2. ಪಾಂಡಿತ್ಯ, ವೈದುಷ್ಯ. 3. ನ್ಯಾಯ, ಕ್ರಮ. "ನ್ಯಾಯೇ ಕುಲೀನ-ಬುಧಯೋರಭಿಜಾತಪದಂ ವಿಧು:" ಶಾಶ್ವಂ।

ಆಭಿಜಿತ ಅಭಿಜಿತ (ವಿಂ) "ಅಭಿಜಿತ್" ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅಭಿಜಿತಿ ನಕ್ಷತ್ರೇ ಜಾತ: "ಅಞ್" (೪-೩-೨೫)।

ಆಭಿಧಾ ಅಭಿಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಅಭಿಧಾ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಞ್"।

ಆಭಿಧಾನಿಕ ಅಭಿಧಾನಿಕ (ಪುಂ) ಕೋಶಕಾರ, ನಿಘಂಟುವಿನ ಲೇಖಕ. ಅಭಿಧಾನಂ ವೇತ್ತಿ "ಠಕ್" (೪-೨-೬೩)।

ಆಭಿಮುಖ್ಯ ಅಭಿಮುಖ್ಯ (ನಂ) 1. ಎದುರಾಗುವಿಕೆ, ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ. ಅಭಿಮುಖಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಽ" (೪-೧-೧೨೪)। "ಸೇತೇವೈವಧುವುಜನಸ್ಯ ವಚನೇನೀತಾಭಿಮುಖ್ಯಂ ಪುನ:" ರತ್ನಾಂ ೧-೨। 2. ಅನುಕೂಲವಾಗಿರುವಿಕೆ, ವಿರೋಧವಾಗಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. "ವಿಶೇಷಾದಾಭಿಮುಖ್ಯೇನ ಚರಣಾದ್ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣ:" ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೪ಂ।

ಆಭಿರೂಪಕ ಅಭಿರೂಪಕ (ನಂ) ಸೌಂದರ್ಯ. ಅಭಿ-ರೂಪಸ್ಯ ಭಾವ: "ಬು" (೪-೧-೧೩೩)।

ಆಭಿರೂಪ್ಯ ಅಭಿರೂಪ್ಯ (ನಂ) ಸೌಂದರ್ಯ. ಅಭಿರೂಪಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಽ" (೪-೧-೧೨೪)। "ಅರ್ಚಕಸ್ಯ ತಪೋಯೋಗ-ದರ್ಶನಸ್ಯಾತಿಶಾಯನಾತ್। ಅಭಿರೂಪ್ಯಾಂಚ ಬಿಂಬಾನಾಂ ದೇವ: ಸಾನ್ನಿಧ್ಯಮುಚ್ಛತಿ"।

ಆಭಿಷಿಕ್ತ ಅಭಿಷಿಕ್ತ (ವಿಂ) ಅಭಿಷೇಕದಿಂದಂಟಾದ. ಅಭಿಷಿಕ್ತಮಭಿಷೇಕ:; ಅಭಿಷಿಕ್ತೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಅಞ್" (೪-೨-೭೫)।

ಆಭಿಷೇಚನಿಕ ಅಭಿಷೇಚನಿಕ (ವಿಂ) 1. ಅಭಿಷೇಕದ ವಸ್ತು, ಅಭಿಷೇಕ ಸಂಬಂಧವಾದ ಪದಾರ್ಥ. ಅಭಿ-ಷೇಚನಮಭಿಷೇಕ: ಪ್ರಯೋಗಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯)। "ಆಭಿಷೇಚನಿಕಂ ಯತ್ತೇ ರಾಮಾರ್ಯಮುಪಕಲ್ಪಿತಮ್" ರಾಮಾಂ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। ಆಭಿಷೇಚನಿಕೀ ಅಭಿಷೇಚನಿಕೀ. 2. ಸ್ನಾನಮಾಡುವ ವಿಧಾನ. 3. ಸ್ನಾನದ ಮಂತ್ರ ಮತ್ತು ಸ್ನಾನೋಪಯೋಗಿ ವಸ್ತು. ಅಭಿಷೇಚನಂ ಸ್ನಾನಂ ಪ್ರಯೋಗಮಸ್ಯ "ಠಕ್"। ಸ್ನಾನವು ವಿಳಾ ವಿಧ: "ಮಾನ್ವಂ ಭೂಮಿಂ ತಥಾಗ್ನೇಯಂ

ವಾಯವ್ಯಂ ದಿವ್ಯಮೇವ ಚ। ವಾಣಂ ಮಾನಸಂ ಚೈವ ಸಪ್ತ ಸ್ನಾನಾನ್ಯನುಕ್ರಮಾತ್"। (1) "ಆಪೋಹಿಷ್ಠಾ"ದಿ ಮಂತ್ರ ಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ಪೋಷ್ಣಕೆಯು ಮಾಂತ್ರ. (2) ವೃತ್ತಿಕಾಸನವು ಭೌಮ (ಪಾರ್ಥಿವಸ್ನಾನ). (3) ಭಸ್ಮಲೇಪನದಿಂದ ಮಾಡುವುದು ಆಗ್ನೇಯಸ್ನಾನ. (4) ಧೂಳಿನ ಲೇಪನದಿಂದ ಮಾಡುವುದು ವಾಯವ್ಯ. (5) ಆತಪಸ್ನಾನವು ದಿವ್ಯ ಸ್ನಾನವೆನಿಸುವುದು. (6) ಅವಗಾಹನ (ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿ ಮಾಡುವ) ಸ್ನಾನವು ವಾರುಣವು. (7) ವಿಷ್ಣು ಸ್ಮರಣೆಯು ಮಾನಸಸ್ನಾನವು. "ಆಪೋಹಿಷ್ಠಾದಿಭಿರ್ಮಂತ್ರಂ ಮೃದಾ-ಲಂಬಶ್ಚ ಪಾರ್ಥಿವಮ್। ಆಗ್ನೇಯಂ ಭಸ್ಮನಾ ಸ್ನಾನಂ ವಾಯವ್ಯಂ ರಜಸಾ ಕೃತಮ್। ಯತ್ನು ಸಾತಪರ್ವಣೇ ಸ್ನಾನಂ ತದಿವ್ಯಮುಚ್ಯತೇ। ವಾಣ-ಶ್ಚಾವಗಾಹಶ್ಚ ಮಾನಸಂ ವಿಷ್ಣುಚಿಂತನಮ್" ಯೋಗಿಯಾಜ್ಞವಲ್ಕಯ:।

ಆಭಿಹಾರಿಕ ಅಭಿಹಾರಿಕ (ವಿಂ) 1. ಎದುರುಗೊಳ್ಳಲು ಉಪಯುಕ್ತವಾದ ವಸ್ತು, ಸ್ವಾಗತಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಬಹುಮಾನ ವಸ್ತು. ಅಭಿಹಾರ: ಅಭಿಮುಖ್ಯೇನ ಹರಣಮ್ ಪ್ರಯೋಗಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯)। 2. ಭೇಟಿಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕೊಡುವ ಗೌರವ ಕಾಣಿಕೆ.

ಆಭಿಕ್ಷಯ ಅಭಿಕ್ಷಯ (ನಂ) ಪೌನಃಪುನ್ಯ, ವಿರಾಮ ವಿಲ್ಲದೆ ಕೆಲಸಮಾಡುವುದು, ಎಡೆಬಿಡದೆ ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಮಾಡುವುದು. ಅಭಿಕ್ಷಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಽ" (೪-೧-೧೨೪)।

ಆಭಿರ ಅಭಿರ (ಪುಂ) 1. ಗೋಪಾಲಕ, ಗೊಲ್ಲ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಂದ ವೈಶ್ಯ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಅಂಬಷ್ಟ ಯಲ್ಲಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಂದ ಜನಿಸಿದ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾದುಗ್ರಹಕನ್ಯಾಯಾಮಾವೃತೋ ನಾಮ ಜಾಯತೇ। ಆಭಿರೋ-ಮ್ಬಕನ್ಯಾಯಾಮಾಯೋಗವ್ಯಾಂ ತು ಧಿಗ್ವಣ:" ಮನುಂ ೧೦-೧೫। ಆಸಮಂತಾತ್ ಭಿಯಂ ರಾತಿ-ರಾ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। [ಅಲ್ಪವಾದ ಭೀತಿಯ ಕಾರಣದಿಂದ ಹೆಚ್ಚು ಹೆದರುವ ಸ್ವಭಾವದವನು.] (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ಅಭಿರದೇಶ. 3. ಅಭಿರದೇಶದ ನಿವಾಸಿ. 4. ಅಭಿರದೇಶದ ದೊರೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)-ರೀ-ರೀ. 5. ಗೊಲ್ಲನ ಪತ್ನಿ. ಆಭಿರಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೮)। 6. ಗೊಲ್ಲರ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು. ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩)।

ಆಭಿಲ ಅಭಿಲ (ನಂ) 1. ಕಷ್ಟ, ತೊಂದರೆ. ಆಸಮಂತಾತ್ ಭಿಯಂ ಲಾತಿ-ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। 2. ದುಃಖ, ವೈಸನ. (ವಿಂ) 3. ಕಷ್ಟ ವುಳ್ಳ. 4. ಭಯಂಕರವಾದ. "ಆಭಿಲಾನಿ ಪ್ರಾಣಿನ: ಪ್ರತ್ಯವಸ್ಯನ್ ಕಾಲೋ ಬೂನಂ ವ್ಯಾದವಾವಾನನಾನಿ" ಮಾಘಂ ೧೮-೭೮।



ಆಭುಗ್ನ ಅಭುಗ್ನ (ವಿಂ) ಸ್ವಲ್ಪ ಬಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ  
ಇಷತ್ ಭುಗ್ನಮ್—ಭುಜೋ (ಕೌಡೀಯ) "ಠ್" (೩-೨-೧೦೨)।  
ನತ್ವಮ್ (೮-೨-೪೫)।

ಆಭೂತಸಂಪ್ಲವ ಅಭೂತಸಂಪ್ಲವ (ಪುಂ) ಪ್ರಳಯ ಪರ್ಮಂತ  
ವಿರತಕ್ಕ ಲೋಕ, ಸತ್ಯಲೋಕ, ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕ.  
"ಆಭೂತಸಂಪ್ಲವಂ ಸ್ಥಾನಮಮೃತತ್ವಂ ಹಿ ಭಾಷ್ಯತೇ"।

ಆಭೋಗ ಅಭೋಗ (ಪುಂ) 1. ಪೂರ್ಣವಾಗಿರುವಿಕೆ,  
ತುಂಬಿರುವಿಕೆ. ಆಭುಜ್ಯತೇ—ಆ + ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾ-  
ಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ಠ್ವಿರಕನಕಕುಂಭ-  
ಶ್ರೀಮದಾಭೋಗತುಙ್ಗಸ್ತನವಿನಿಹಿತಹಸ್ತಸ್ವಸ್ತಿಕಾಭಿವಂಧುಃ"  
ಮಾಲತೀಂ ೪-೧೦। 2. ಪ್ರಯತ್ನ. ಆಭುಜ್ಯತೇ  
ಫಲಮನೇನ ಕರಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। 3. ವರುಣನ  
ಭಕ್ತಿ. 4. ಸುಖಾನುಭವ. "ಆಭೋಗೋ ವರುಣಚ್ಚ ತ್ರೇ  
ಪೂರ್ಣತಾಯತನಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ। 5. ವಿಸ್ತಾರ, ಬಹುದೇಶ  
ವ್ಯಾಪ್ತಿ. "ಅಜ್ಜವಲ್ಯಂ ಪರಭಾಗತಃ ಪ್ರಕಟಯತ್ಯಾಭೋಗಮಿಮಂ  
ತಮಃ" ಮಾಲತೀಂ ೫-೧೧। (ಅವ್ಯಂ) 6. ಭೋಗ  
ಪರ್ಯಂತ, ಅನುಭವಿಸುವವರೆಗೂ. ಭೋಗಮನುಭವ-  
ಮಭಿವ್ಯಾಪ್ಯ। ಅವ್ಯಯಿಂ।

ಆಭ್ಯಂತರ ಅಭ್ಯಂತರ (ವಿಂ) ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ, ಒಳ  
ಗಿರುವ, ಅಭ್ಯಂತರೇಭವಃ "ಅಙ್" (೪-೩-೫೩)। 2. ಅಕ್ಷರ  
ಗಳನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸುವ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ವರ್ಣೋತ್ಪತ್ತಿಗೆ  
ಪೂರ್ವಭಾವಿಯಾದ ಬಹಳ ಹತ್ತಿರದ ಪ್ರಯತ್ನ;  
ವರ್ಣೋತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಅಭ್ಯಂತರ ಮತ್ತು ಬಾಹ್ಯಗಳೆಂದು  
ಎರಡು ಪ್ರಯತ್ನಗಳು ಕಾರಣವಾಗುವುವು. ಅಭ್ಯಂತರ  
ದಲ್ಲಿ (1) ಸ್ಪೃಷ್ಟ, (2) ಈಷತ್ ಸ್ಪೃಷ್ಟ, (3) ವಿವೃತ  
ಮತ್ತು (4) ಸಂವೃತಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ಭೇದಗಳು.

| ಪ್ರಯತ್ನ          | ಹುಟ್ಟುವ ವರ್ಣಗಳು                                  |
|------------------|--|
| (1) ಸ್ಪೃಷ್ಟ      | .. ಕಾದಿಮಾಂತ ವರ್ಣಗಳು.<br>(ಪಂಚವರ್ಗೀಯಾಕ್ಷರ<br>ಗಳು). |
| (2) ಈಷತ್ ಸ್ಪೃಷ್ಟ | .. ಯ, ರ, ಲ, ವ, ವರ್ಣಗಳು.                          |
| (3) ವಿವೃತ        | .. ಸ್ವರಗಳು ಮತ್ತು ಶ, ಷ, ಸ,<br>ಹ ವರ್ಣಗಳು.          |
| (4) ಸಂವೃತ        | .. ಪ್ರಯೋಗದಶೆಯಲ್ಲಿರುವ<br>ಹ್ರಸ್ವಾಕಾರ.              |

ಆಭ್ಯವಹಾರಿಕ ಅಭ್ಯವಹಾರಿಕ (ವಿಂ) ಭೋಜನಕ್ಕೆ  
ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಅಭ್ಯವಹಾರೇ ಸಾಧುಃ "ಠ್" (೪-೪-೧೦೩)।

ಆಮ್ಯುದಯಿಕ ಅಭ್ಯುದಯಿಕ (ನಂ) 1. ಅಭ್ಯುದಯ  
ಶ್ರಾದ್ಧ, ನಾಂದೀಶ್ರಾದ್ಧ. ಆಮ್ಯುದಯಃ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ  
"ಠ್" (೫-೧-೧೦೯)। [ಜಾತಕರ್ಮ, ಚೌಲ,  
ಉಪನಯನ, ಪುತ್ರವಿವಾಹ, ನಿಷೇಕ, ಪುಂಸವನಾದಿ  
ಶುಭಕರ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಪಿತೃತ್ವಸ್ತಿಗಾಗಿ ನಾಂದೀ ಶ್ರಾದ್ಧ  
ವನ್ನು ಆಚರಿಸಬೇಕು.] 2. ಕಾಮ್ಯಕರ್ಮ, ಅಸೆ  
ಹುಟ್ಟಿಸಿ ತನ್ನಲ್ಲಿ ಮನುಷ್ಯನು ಪ್ರವರ್ತಿಸುವಂತೆ  
ಮಾಡುವ ಕರ್ಮ, ಸ್ವರ್ಗಾಭಿಲಾಷೆಯಿಂದ ಮಾಡುವ  
ಜ್ಯೋತಿಷೋಮಾದಿ ಯಾಗ. ಆಮ್ಯುದಯಃ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಃ  
ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠ್"।

ಆಮ್ರಿಕ ಅಮ್ರಿಕ (ವಿಂ) ಮರದ ಗುದ್ದಲಿಯಿಂದ  
ಅಗೆಯುವವನು. ಅಮ್ರಚಾ ಖನತಿ—"ಠ್" (೪-೪-೨)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। ಆಮ್ರಿಕೋ ಅಮ್ರಿಕಃ.

ಆಮ್ ಅಮ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ನಿಶ್ಚಯಬುದ್ಧಿ. 2. ಅಂಗೀ  
ಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಮ್ಮತಿ. 3. ಪ್ರತಿವಚನ, ಉತ್ತರ.  
4. ನೆನಪು, ಸ್ಮೃತಿ, ಸ್ಮರಣೆ. ಅಮ (ಗತ್ಯಾದೌ) +  
ಣಿಕ್ "ಕ್ರಿಪ್" (೩-೨-೧೭೮)। "ಆಮ್ ಜ್ಞಾನನಿಶ್ಚಯ-  
ಸ್ಮೃತಯೋಃ" ಮೇದಿಂ।

ಆಮ ಅಮ (ಪುಂ) 1. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. 2. ಅಜೀರ್ಣ  
ರೋಗ. ಅಮ್ಯತೇಜೇನ—ಅಮ (ರೋಗೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)।  
"ಆಹಾರಸ್ಯ ರಸಃ ಸಾರಃ ಯೋ ನ ಪಕ್ವೋಽಗ್ನಿಲಾಭವಾತ್।  
ಆಮಸಂಜ್ಞಾಂ ಸ ಲಬ್ಧಿಮತೇ ವಹುಷ್ಯಾಧಿಸಮಾಶ್ರಯಃ" ಸುಶ್ರುತಂ।  
3. ಮಲಬದ್ಧತೆ. 4. ಹುರಿಗಳು, ಪುರಿ ಮುಂತಾದ  
ಹುರಿದ ಧಾನ್ಯ. (ವಿಂ) 5. ಹಸಿಯಾದ, ಅಪಕ್ವ  
ವಾದ (ಅನ್ನ ಮೊದಲಾದುದು). 6. ಸುಡಲ್ಪಡದ,  
ಬೇಯಿಸಲ್ಪಡದ. (ಹೆಂಚು, ಇಟ್ಟಿಗೆ ಮುಂತಾದುದು).  
7. ಜೀರ್ಣವಾಗದಿರುವ.

ಆಮಗಾಂಧಿ ಅಮಗಾಂಧಿ (ವಿಂ) ಬೇಯಿಸಲ್ಪಡದ ಮಾಂಸದ  
ವಾಸನೆಯುಳ್ಳ. ಆಮಸ್ಯೇವ ಗಾಂಧೀಸ್ಯ "ಐತ್" (೫-೪-೧೩೭)।

ಆಮಜ್ವರ ಅಮಜ್ವರ (ಪುಂ) ಅಜೀರ್ಣಜ್ವರ, ಹೊಸ  
ಜ್ವರ. ಆಮೋಷ್ಯವಃ ಜ್ವರಃ। "ಸ್ವೇದಮಾಮಜ್ವರಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ  
ಕೋಷ್ಮಸಾ ಪರಿವಿಚ್ಛತಿ" ಮಾಘಂ ೨-೫೪।

ಆಮನಸ್ಯ ಅಮನಸ್ಯ (ನಂ) ದುಃಖ, ವ್ಯಸನ. ಅಪ್ರಶಸ್ತಂ  
ಮನೋ ಯಸ್ಯ। ತಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಘ್" (೫-೧-೧೨೪)।

ಆಮನ್ತ್ರ ಅಮಂತ್ರ (ಪುಂ) ಎರಡವುಳ್ಳ, ಹರಳುಗಿಡ.  
ಆಮಾತ್ ಅಜೀರ್ಣಾತ್ ತ್ರಾಯತೇ ಸ್ವತೇಲೇನ—ತೈಙ್ (ಪಾಲನೇ)  
"ಕಃ" (೩-೨-೩)। ಪೃಥಂ।



ಆಮನ್ತ್ರಣ ಆಮಂತ್ರಣ (ನಂ) 1. ಅಪ್ಪಣೆ ಪಡೆಯುವಿಕೆ.

2. ಮರ್ಯಾದೆ, ಉಪಚಾರ, ಅಭಿನಂದನೆ.

3. ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಅನುಮತಿ.

4. ಸಂಭಾಷಣೆ, ಪರಸ್ಪರ ಮಾತನಾಡುವುದು. ಆ +

ಮತ್ರಿ (ಗುಪ್ತಪರಿಭಾಷಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). ಪೃಷಂ.

"ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಮನ್ತ್ರಣಂ ಯತ್ಯಾತ್ಮಜನಾಂತೇ ಜನಾಂತಿಕಮ್"

ಸಾಂ 40. 5. ಆಹ್ವಾನ, ಕರೆ.

ಆಮನ್ತ್ರಯಿತ್ ಆಮಂತ್ರಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕರೆಯುವ,

ಆಹ್ವಾನಮಾಡುವ. 2. ಅಭಿನಂದಿಸುವ, ಮರ್ಯಾದೆ

ತೋರಿಸುವ. 3. ಸಂಭಾಷಣೆಮಾಡುವ, ಪರಸ್ಪರ

ಮಾತನಾಡುವ.

ಆಮನ್ತ್ರಿತ ಆಮಂತ್ರಿತ (ನಂ) 1. ಸಂಜೋಧನ

ಪ್ರಥಮಾವಿಭಕ್ತೃಂತ ಪದ. 2. ಆಹ್ವಾನ, ಕರೆ.

3. ಸಂಜೋಧನೆ. (ವಿಂ) 4. ಕರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಆಹ್ವಾನ

ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಅನಾವಶ್ಯಕವಾದ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ

ನಿಯಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಸಂಜೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಆಮನ್ತ್ರ ಆಮಂತ್ರ (ವಿಂ) 1. ಕರೆಯಲ್ಪಡುವ.

2. ನಿಯಮಿಸಲ್ಪಡುವ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಕರೆದು,

ಆಹ್ವಾನಿಸಿ. 4. ಸಂಜೋಧಿಸಿ. 5. ಅಪ್ಪಣೆಪಡೆದು.

ಆ + ಮತ್ರಿ (ಗುಪ್ತಪರಿಭಾಷಣೆ) "ಲ್ಯಪ್" (3-1-39).

ಆಮಂದ್ರ ಆಮಂದ್ರ (ಪುಂ) 1. ಗಂಭೀರವಾದ ಶಬ್ದ,

ಮೃದುವಾದ ಧ್ವನಿ. ಆ ಕ್ಷಿಪತ್ ಮಂದ್ರಃ. (ವಿಂ)

2. ಗಂಭೀರವಾದ ಶಬ್ದವುಳ್ಳ, ಮೃದುವಾದ ಧ್ವನಿ

ಯುಳ್ಳ. "ಆಮಂದ್ರಾಣಾಂ ಫಲಮವಿಕಲಂ ಲಪ್ಸಯಸೇ ಗಜಿತಾನಾಮ್"

ಮೇಘಂ 1-34.

ಆಮಪಾತ್ರ ಆಮಪಾತ್ರ (ನಂ) ಆನಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಬೇಯಿಸ

ಲ್ಪಡದ ಮಣ್ಣಿನ ಪಾತ್ರೆ. (ಮಡಕ್ಕೆ ಹೊಜಿ ಮುಂತಾ

ದುದು.)

ಆಮಯ ಆಮಯ (ಪುಂ) ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ, ಅಲಸ್ಯ.

ಆಮಂ ಯಾತ್ಯನೇನ-ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕಃ" (ವಾಂ 3-3-48).

"ಸಮೌ ಹಿ ಶಿಷ್ಠೈರಾಮ್ನಾತೌ ವತ್ಸರ್ಯಂತಾವಾಮಯಃ ಸ ಚ"

ಮಾಘಂ 2-10.

ಆಮಯಾವಿನ್ ಆಮಯಾವಿನ್ (ವಿಂ) ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ

ಗ್ರಸ್ತ. ಆಮಯೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ವಿನಿಃ" (ವಾಂ 4-2-121).

"ಗ್ಲಾನಗಲಾಸ್ತು ಆಮಯಾವಿ ವಿಕೃತೌ ವ್ಯಾಧಿತೌಽಪಠಃ"

ಅಮಂ.

ಆಮರಕ್ತ ಆಮರಕ್ತ (ನಂ) ಆಮಶಂಕೆ, ರಕ್ತಭೇದಿ.

ಆಮಮಪಕ್ವಂ ರಕ್ತಮ್.

ಆಮರಣಾಂತಿಕ ಆಮರಣಾಂತಿಕ (ವಿಂ) ಮರಣಕಾಲದ

ವರೆಗಿನ, ಕೊನೆಯಕಾಲದವರೆಗಿನ. "ಅನ್ಯೋನ್ಯಸ್ಯಾ-

ವ್ಯಭಿಚಾರೋ ಭವೇದಾಮರಣಾಂತಿಕಃ" ಮನುಂ 9-101.

ಆಮರ್ದ ಆಮರ್ದ (ಪುಂ) ಬಲಾತ್ಕಾರವಾಗಿ ಎಳೆದು

ಹಿಡಿಸುವುದು. ಆ + ಮರ್ದ (ಕೋದೇ) "ಘಜ್" (3-3-18).

"ಅರ್ಥಪಿತಸ್ತನಂ ಮಾತುರಾಮರ್ದಕಿಲಪ್ತಕೇಸರಮ್" ಶಾಕುಂ 3-14.

ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). ಆಮರ್ದನಮ್ ಆಮರ್ದನಮ್.

ಆಮಶ ಆಮಶ (ಪುಂ) ವಿಮರ್ಶೆ, ಪರ್ಯಾಲೋಚನೆ.

ಆ + ಮಶ (ಆಮಶನೆ) "ಘಜ್" (3-3-18). ಭಾವೇ

"ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). ಆಮಶನಮ್ ಆಮಶನಮ್.

ಆಮಲಕ ಆಮಲಕ (ನಂ) ನೆಲ್ಲಿಕಾಯಿ. ಆಮಲಕಯಾಃ

ಫಲಮ್ "ಮಯಟ್" (4-3-144). ಲುಕ್ (4-3-163).

ಆಮಲಕೀ ಆಮಲಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೆಲ್ಲಿಮರ. ಆಮಲತೇ-

ಆ + ಮಲ (ಧಾರಣೆ) "ಕ್ರುನ್" (3ಂ 2-32). ಜಾತಿಂ

"ಛೀಘ್" (4-1-63).

ಆಮಾವ(ವಾ)ಸ್ಯ ಆಮಾವ(ವಾ)ಸ್ಯ (ವಿಂ) ಅಮಾ

ವಾಸ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅಮಾವ(ವಾ)ಸ್ಯಾಃ ಭವಃ

"ಅಘ್" (4-3-16).

ಆಮಿಕ್ಷಾ ಆಮಿಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಸಿ ಹಾಲಿನಲ್ಲಿ ಮೊಸರು

ಸೇರಿಸಿದ ನಂತರ ಒಡೆದ ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಭಾಗ. ಆಮಿಷ್ಯತೇ

ಸಿಚ್ಯತೇ-ಆ + ಮಿಷು (ಸೇವನೆ) "ಸಕ್" ವಾಹುಂ.

ಆಮಿತ್ರ ಆಮಿತ್ರ (ವಿಂ) 1. ಶತ್ರು ಸಂಬಂಧವಾದ.

ಅಮಿತ್ರಸ್ಯಾಃ "ಅಘ್" (4-3-120). (ಅವ್ಯಂ)

2. ಮಿತ್ರನವರೆಗೂ. 3. ಸೂರ್ಯನವರೆಗೂ. ಮಿತ್ರ-

ಮಭಿವ್ಯಾಪ್ಯ. ಅವ್ಯಯಿಂ.

ಆಮಿತ್ರಿ ಆಮಿತ್ರಿ (ಪುಂ) ಶತ್ರುವಿನ ಮಗ. ಅಮಿತ್ರಸ್ಯಾ-

ಪತ್ಯಮ್ "ಇಜ್" (4-1-94).

ಆಮಿಷ ಆಮಿಷ (ಪುಂ) 1. ಮಾಂಸ. ಆಮಿಷ್ಯತೇ

ಭುಜ್ಯತೇ-ಆ + ಮಿಷು (ಸೇವನೆ) "ಘಜ್" (3-3-19).

"ಉಪಾನಯತ್ ಪಿಂಡಮಿವಾಮಿಷಸ್ಯ" ರಘುಂ 2-49.

"ಉತ್ತರಾಂತಾನಾಮಾಮಿಷಾಯೋಪರಿಷ್ಠಾತ್" ಮಾಘಂ 18-33.

2. ಭೋಗ್ಯವಸ್ತು, ಸುಖಸಾಮಗ್ರಿ. 3. ಅತ್ಯಾಸೆ,

ದುರಾಶೆ. "ಅಧ್ಯಾತ್ಮರತೀರಾಸೀನೋ ನಿರಪೇಕ್ಷೋ ನಿರಾಮಿಷಃ"

ಮನುಂ 6-49. 4. ಲಂಚ. 5. ಸುಂದರಾಕಾರ.

6. ಸ್ತ್ರೀ ಸುಖ, ಸಂಭೋಗ. "ಆಮಿಷಂ ಪುನಃಪುನಃಕಮ್"

ಭೋಗ್ಯವಸ್ತುನಿ ಸಂಭೋಗೇಽಪ್ಯುತ್ಕೋಚೇ ಪಲಲೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ.

"ಆಮಿಷಂ ಪಲಲೇ. ಸುಂದರಾಕಾರರೂಪಾದಿ ಸಂಭೋಗೇ ಲೋಭ-

ಲಚ್ಛಯೋಃ" ಹೇಮಂ.



ಆಮಿಷಪ್ರಿಯ ಅಮಿಷಪ್ರಿಯ. 1. ರಣಹದ್ದು. 2. ಹದ್ದು (ಸಾಮಾನ್ಯ). (ವಿಂ) 3. ಮಾಂಸದಲ್ಲಿ ಅಭಿರುಚಿ ಯುಳ್ಳ.

ಆಮಿಷಾಶಿನ್ ಅಮಿಷಾಶಿನ್ (ವಿಂ) ಮಾಂಸವನ್ನು ತಿನ್ನುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಆಮಿಷಮಶ್ನಾತಿ-ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಣಿತಿ." (3-2-36).

ಆಮಿಷಿ ಅಮಿಷೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಟಾಮಾಂಸಿ.

ಆಮೀಲನ ಅಮೀಲನ (ನಂ) ಕಣ್ಣು ಮುಚ್ಚುವುದು. ಆ + ಮೀಲ (ನಿಮೇಷಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

ಆಮೀಲಿತ ಅಮೀಲಿತ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ (ಕಣ್ಣು). ಆ ಸಮಂತಾತ್ ಮೀಲಿತಮ್-ಆ + ಮೀಲ (ನಿಮೇಷಣೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). 2. ಸ್ವಲ್ಪ ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ ಇಪತ್ ಮೀಲಿತಮ್.

ಆಮುಕ್ತ ಅಮುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ತೊಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಧರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ತೇನೋಪಮೀಯೇತ ತಮಾಲನೀಲಮಾಮುಕ್ತಮುಕ್ತಾಲತಮಸ್ಯ ವಕ್ಷ:" ಮಾಘಂ 3-6. 2. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ.

ಆಮುಕ್ತಿ ಅಮುಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಿಡುವಿಕೆ, ಎಸೆಯುವಿಕೆ. 2. ತೊಡುವುದು, ಧರಿಸುವುದು. 3. ಮುಕ್ತಿ, ಮೋಕ್ಷ. (ಅಭ್ಯಂ) 4. ಮೋಕ್ಷದವರೆಗೂ, ಮುಕ್ತಿ ಪಡೆಯುವವರೆಗೂ. ಆಮುಕ್ತಿ ಆಮುಕ್ತೇರ್ವಾ ಸಂಸಾರ: ಸಿಂ ಕೌಂ.

ಆಮುಖ ಅಮುಖ (ನಂ) 1. ಪ್ರಸ್ತಾವನೆ, ನಾಟಕದ ಒಂದು ಅಂಗ. ಆಮುಖಯತಿ ಅಭಿಮುಖೀಕರೋತಿ ಪರಿಷದ-ಮನೇನ. ಆ + ಮುಖ + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (3-1-134). ನಟಸೂತ್ರಧಾರರು ತಮ್ಮ ಸ್ವಂತ ವ್ಯವಹಾರದಿಂದ ನಾಟಕದ ಕಥಾವಸ್ತುವನ್ನು ಸೂಚಿಸಿ ಮುಂದಿನ ಪಾತ್ರ ಪ್ರವೇಶವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವುದು ಅಮುಖ. "ಸೂತ್ರಧಾರೋ ನಟೋ ಬ್ರೂತೇ ಮಾರಿಷಂ ವಾ ವಿದ್ವಾಕಮ್. ಸ್ವಕಾರ್ಯಪ್ರಸ್ತುತಾಕ್ಷೇಪಿ ಚಿತ್ರೋಕ್ತಯಾ ಯತ್ತದಾಮುಖಮ್. ಪ್ರಸ್ತಾವನಾ ವಾ" ಪ್ರತಾಪಂ. 2. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ.

ಆಮುಷ್ಮಿಕ ಅಮುಷ್ಮಿಕ (ವಿಂ) ಪರಲೋಕಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಪರಲೋಕದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಅಮುಷ್ಮಿನ್ ಭವ: "ಠ್" (4-3-69). ಪೃಪಂ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-15). ಆಮುಷ್ಮಿಕೋ ಅಮುಷ್ಮಿಕೀ. "ನೈವಾಲೋಚ್ಯ ಗರೀಯಸೀರಪಿ ಚಿರಾದಾಮುಷ್ಮಿಕೀರ್ಯತಿತನಾ:" ಸಾಂ ದಂ.

ಆಮುಷ್ಯಕುಲಿಕಾ ಅಮುಷ್ಯಕುಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇವನ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವಿಕೆ. ಅಮುಷ್ಯ ಕುಲಮ್ ಪಠ್ಯಾ ಅಲುಕ್. ಅಮುಷ್ಯಕುಲ "ವೃ" (4-1-133).

ಆಮುಷ್ಯಪುತ್ರಿಕಾ ಅಮುಷ್ಯಪುತ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇವನ ಮಗನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಅಮುಷ್ಯಪುತ್ರ: ಪಠ್ಯಾ ಅಲುಕ್ "ವೃ" (4-1-133).

ಆಮುಷ್ಯಾಯಣ ಅಮುಷ್ಯಾಯಣ (ವಿಂ) ಈ ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಈ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅಮುಷ್ಯಾ-ಪತ್ಯಮ್ "ಫಕ್" (4-1-99). "ತದಾಮುಷ್ಯಾಯಣಸ್ಯ ತತ್ರ ಭವತೋ ಭದ್ರಗೋಪಾಲಸ್ಯ ಪೌತ್ರ:.....ಭವಭೂತಿರ್ನಾಮ ಕವಿ:" ಮಾಲತೀಂ 1.

ಆಮೃಷ್ಠ ಅಮೃಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಮುಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ಪರ್ಶ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಬಲಾತ್ಕಾರವಾಗಿ ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಮೃಷ (ಆಮರ್ಶನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಆಮೃಷ್ಠನ: ಪರೇ: ಪದಮ್" ಕುಮಾಂ 2-31. 3. ಒರೆಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಅಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಆಮೃಷ್ಠಾಸ್ತಿಕಲಕರವ: ಸಜೋ ನಿರಸ್ತಾ: ನೋರಕ್ತಂ ವಸನ-ಮಪಾಕುತೋಽಙ್ಗರಾಗ:" ಮಾಘಂ 6-61. 5. ಉಜ್ಜಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿಕ್ಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಮೃಜ (ಶುದ್ಧಿ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102).

ಆಮೋದ ಅಮೋದ (ಪುಂ) 1. ವಾಸನೆ, ಪರಿಮಳ. ಆ + ಮುದ (ಹರ್ಷ) "ಅಚ್" (3-1-134). "ಆಮೋದಮುಪ-ಜಿಘ್ರಂತೋ ಸ್ವನಿ:ಶ್ವಾಸಾನುಕಾರಿಣಮ್" ರಘುಂ 1-43. 2. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. 3. ಉತ್ತಮ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸಿನ ಉಸಿರಿನ ವಾಸನೆ, ಬಾಯಿಯ ಪರಿಮಳ. "ಆಮೋದವಾಸಿತಚಲಾಧರಪಲ್ಲವೇಷು" ಕಿರಾಂ 9-99. "ಮುಖಾಮೋದಮದಿರಯಾ ಕೃತಾನುವ್ಯಾಧಮುಧಮನ್" ಮಾಘಂ 2-20. "ಪ್ರಮೋದಗಂಧಾವಾಮೋದೋ" ಶಾಶ್ವಂ.

ಆಮೋದನ ಅಮೋದನ (ನಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವುದು, ಆನಂದಪಡಿಸುವುದು. ಆ + ಮುದ (ಹರ್ಷ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ಸುವಾಸನೆಯುಂಟು ಮಾಡುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 3. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವ, ಆನಂದ ಗೊಳಿಸುವ. ಆ + ಮುದ + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (3-1-134). 4. ಸುವಾಸನೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.

ಆಮೋದಿತ ಅಮೋದಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷ ಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಆನಂದವುಂಟು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಸುವಾಸನೆಯುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಮುದ (ಹರ್ಷ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102). 3. ಸಂತೋಷ ಗೊಂಡ. ಆ + ಮುದ + ಸ್ವಾರ್ಥೇ ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-4-92). 4. ಸುವಾಸನೆಯುಳ್ಳ, ಪರಿಮಳವುಳ್ಳ. ಆಮೋದೋಸ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತಚ್" (4-2-36).



ಆಮೋದಿತವತ್ ಅಮೋದಿತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷ  
ಗೊಂಡ, ಆನಂದಪಟ್ಟು. 2. ಸುವಾಸನೆಯುಂಟು  
ಮಾಡಿದ. ಆ + ಮುದ (ಹರ್ಷ) "ಕ್ತವು:" (3-2-102).

ಆಮೋದಿನ್ ಅಮೋದಿನ್ (ವಿಂ) 1. ವಾಸನೆಯುಂಟು  
ಮಾಡುವ ಕೇಸರಿ, ಪಚ್ಚಕರ್ಪೂರ ಮುಂತಾದುದು.  
ಆಮೋದಯತಿ ಸುರಭೀಕರೋತಿ—ಆ + ಮುದ (ಹರ್ಷ) + ಣಿನ್  
"ಣಿನಿ:" (3-2-98). 2. ಸಂತೋಷವುಳ್ಳ.  
3. ಸುವಾಸನೆಯುಳ್ಳ, ಪರಿಮಳವುಳ್ಳ. ಆಮೋದೋಸ್ತಾಸ್ತಿ  
"ಇನಿ:" (4-2-114).

ಆಮ್ನಾತ ಅಮ್ನಾತ (ನಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ಅಭ್ಯಾಸ.  
2. ಒಳ್ಳೆಯ ಅಧ್ಯಯನ. ಆ + ಮ್ನಾ (ಅಮ್ಯಾಸೇ)  
ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114). (ವಿಂ) 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ  
ಅಭ್ಯಾಸಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮನನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ +  
ಮ್ನಾ (ಅಮ್ಯಾಸೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). 4. ಚೆನ್ನಾಗಿ  
ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸಮಿ  
ಹಿ ಶಿಷ್ಟೇರಾಮ್ನಾತೌ ವತ್ಸರ್ಯಂತಾವಾಮಯ: ಸ ಚ" ಮಾಘಂ  
2-10.

ಆಮ್ನಾತಿನ್ ಅಮ್ನಾತಿನ್ (ವಿಂ) 1. ವೇದಾಧ್ಯಯನ  
ಮಾಡಿದವನು. ಆಮ್ನಾತಮನೇನ "ಇನಿ:" (4-2-114).  
2. ವೇದಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿದ, ವೇದವನ್ನು ಆವೃತ್ತಿ  
ಮಾಡಿದ.

ಆಮ್ನಾನ ಅಮ್ನಾನ (ನಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅಭ್ಯಾಸ  
ಮಾಡುವುದು, ಮನನ ಮಾಡುವುದು. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ  
ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವುದು. ಆ + ಮ್ನಾ (ಅಮ್ಯಾಸೇ)  
"ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114).

ಆಮ್ನಾಯ ಅಮ್ನಾಯ (ಪುಂ) 1. ವೇದ. ಆಮ್ನಾಯತೇ  
ಅಮ್ಯಸ್ಯತೇ—ಆ + ಮ್ನಾ (ಅಮ್ಯಾಸೇ) "ಘಜ್" (3-3-119).  
"ಆಮ್ನಾಯಗಂಧರ್ವಚಿರಸ್ಫುರಿತಾಧರೋಽಠಮ್" ಗೋಪಾಲವಿಶತಿ:  
2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅಭ್ಯಾಸ ಮಾಡುವುದು, ಆವೃತ್ತಿ  
ಮಾಡುವುದು, ಮನನ ಮಾಡುವುದು. 3. ಸಂಪ್ರ  
ದಾಯ, ಪರಂಪರಾಗತವಾದ ಆಚಾರ, ಪದ್ಧತಿ,  
ವಾಡಿಕೆ. 4. ಉಪದೇಶ, ಸಲಹೆ. 5. ವಂಶ, ಕುಲ  
"ಆಮ್ನಾಯ: ಕುಲ ಆಗಮೇ. ಉಪದೇಶೋ ಚ" ಹೇಮಂ.

ಆಮ್ಬರೀಷಪುತ್ರಕ ಅಂಬರೀಷಪುತ್ರಕ (ಪುಂ) ಅಂಬರೀಷ  
ಮಹಾರಾಜನ ಮಗನು ವಾಸಮಾಡುವ ದೇಶ.  
ಆಮ್ಬರೀಷಪುತ್ರಸ್ಯ ವಿಷಯೋ ದೇಶ: "ಬುಜ್" (4-2-43).

ಆಮ್ಬಿಕೇಯ ಅಂಬಿಕೇಯ (ಪುಂ) 1. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರ  
2. ಕುಮಾರಸ್ವಾಮಿ, ಸ್ಕಂದ, ಪಣ್ಡುಗ. 3. ಗಣಪತಿ.

ಅಮ್ಬಿಕಾಯಾ: ಪಾರ್ವತಿಯಾ: ತನ್ನಾಮ್ಯಾ ರಾಜಪುತ್ರಿಯಾ ವಾ ಅಪತ್ಯಮ್  
"ಠಕ್" (4-1-120).

ಆಮ್ಬಸಿಕ ಅಂಭಸಿಕ (ಪುಂ) 1. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು.  
(ವಿಂ) 2. ಜಲಚರ, ನೀರಿನಲ್ಲಿರುವ. ಅಮ್ಬಸಿ ಭವ:  
"ಠಕ್" (4-3-92).

ಆಮ್ರ ಅಮ್ರ (ಪುಂ) 1. ಮಾವಿನ ಮರ. ಅಮ್ರತೇ—  
ಅಮ (ಗಲ್ಪಾದೌ) "ರಕ್" ದೀರ್ಘಶ್ಚ (3ಂ 2-16).  
(ನಂ) 2. ಮಾವಿನ ಹಣ್ಣು. ಆಮ್ರಸ್ಯ ಫಲಮ್ "ಅಣ್"  
(4-3-134). ಅಣೋ ಲುಕ್ (4-3-163). "ಮಂದಾನ-  
ಲತ್ವಂ ವಿಷಮಜ್ವರಂ ಚ ರಕ್ತಾಮಯಂ ಬದ್ಧಗುದೋರಂ ಚ |  
ಆಮ್ರಾತಿಯೋಗೋ ನಯನಾಮಯಂ ವಾ ಕರೋತಿ ತಸ್ಮಾದತಿ ತಾನಿ  
ನಾಚಾತ್" |

ಆಮ್ರಕೂಟ ಅಮ್ರಕೂಟ (ಪುಂ) ಒಂದು ಪರ್ವತ.  
"ವಕ್ಷ್ಯತೀಧ್ವಶ್ರಮಪರಿಗತಂ ಸಾನುಮಾನಾಮ್ರಕೂಟ:" ಮೇಘಂ 1-17.  
ಆಮ್ರವಣ ಅಮ್ರವಣ (ನಂ) ಮಾವಿನ ತೋಪು, ಮಾವಿನ  
ಮರಗಳ ತೋಟ. ಆಮ್ರಸ್ಯ ವನಮ್ ಣತ್ವಮ್ (4-4-4).  
"ಸ್ಮರಹಿತಾಶನಮುರ್ಮುರಚೂರ್ಣಿತಾಂ ದಧುರಿವಾಮ್ರವಣಸ್ಯ ರಜ:ಕಣಾ:"  
ಮಾಘಂ 6-6.

ಆಮ್ರಾತಕ ಅಮ್ರಾತಕ (ಪುಂ) 1. ಅಮಟಿ ಮರ.  
ಆಮ್ರಮತತಿ—ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೇ) "ಕುನ್" (3ಂ 4-34).  
(ನಂ) 2. ಅಮಟಿ ಕಾಯಿ.

ಆಮ್ರೇಡನ ಅಮ್ರೇಡನ (ನಂ) ಪುನರುಕ್ತಿ, ಹೇಳಿದ್ದನ್ನೇ  
ಪುನಃ ಹೇಳುವುದು, ಎರಡು ಮೂರಾವೃತ್ತಿ ಹೇಳು  
ವುದು. ಆ + ಋಡ್ (ಉನ್ಮಾದೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114).

ಆಮ್ರೇಡಿತ ಅಮ್ರೇಡಿತ (ನಂ) 1. ಪುನರುಕ್ತಿ, ಹೇಳಿ  
ದ್ದನ್ನೇ ಪುನಃ ಹೇಳುವುದು. ಆ + ಋಡ್ (ಉನ್ಮಾದೇ)  
ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114). (ವಿಂ) 2. ಎರಡು  
ಮೂರಾವೃತ್ತಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ (ಮಾತು) ಆ + ಋಡ್  
ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102). 3. ದ್ವಿಭಾವ  
ಹೊಂದಿದ ಶಬ್ದಸ್ವರೂಪದ ಎರಡನೆಯ ಭಾಗ.  
ಕಾಂಸ್ಕಾನ್ (ಕಾನ್ ಕಾನ್) ಎಂಬಲ್ಲಿ ದ್ವಿರುಕ್ತಿ ಬಂದು  
ಎರಡನೆಯ ಭಾಗವು (ಕಾನ್ ಎಂಬುದು) ಅಮ್ರೇಡಿತ  
ವಾಗುವುದು. (4-1-2).

ಗಾಮ್ಲ ಅಮ್ಲ (ನಂ) ಹುಳಿ, ಹುಳರಸ.  
ಆಮ್ಲಾ ಅಮ್ಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುಣಿಸೆ ಮರ. ಆ ಸಮ್ಯಕ್  
ಅಮ್ಲಾ ಅಮ್ಲರಸಯುಕ್ತಾ | ರಾಜನಿಂ |

ಆಯ ಅಯ (ಪುಂ) 1. ಲಾಭ, ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಹೊಂದು  
ವಿಕೆ. 2. ಆದಾಯ, ಸಂಪಾದನೆ, ದ್ರವ್ಯಲಾಭ.



3. ಜಮಾನಿನಿಂದ ಬರುವ ಕಂದಾಯ, ಭೂಮಿಯ ತೆರಿಗೆ. 4. ಲಗ್ನದಿಂದ ಹನ್ನೊಂದನೆಯ ಸ್ಥಾನ, ಲಾಭಸ್ಥಾನ. 5. ಅಂತಃಪುರದ ರಕ್ಷಕ, ರಾಜಸ್ತ್ರೀಯರ ವಾಸಗೃಹವನ್ನು ಕಾಯುವವನು. 6. ತೆರಿಗೆ, 7. ಗಮನ, ಹೋಗುವಿಕೆ.

ಆಯ:ಶ್ಲೋಕ ಆಯ:ಶ್ಲೋಕ (ವಿಂ) ಕರಿನೋಪಾಯ ದಿಂದ ದ್ರವ್ಯವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸುವವನು, ನಿರ್ಬಂಧ ದಿಂದ ಹಣ ವಸೂಲು ಮಾಡುವವನು. ತೀಕ್ಷ್ಣೋಪಾಯ:ಶ್ಲೋಕ, ಅಯ:ಶ್ಲೋಕ ಅನ್ವಿಚ್ಛತಿ—“ಠಕ್” (೪-೨-೭೬)।

ಆಯತ ಆಯತ (ವಿಂ) 1. ಉದ್ದವಾದ, ದೀರ್ಘವಾದ, ನೀಳವಾದ. ಆ + ಯಮ (ಉಪರಮೆ) “ಕ್ತ” (೩-೨-೧೦೨)। “ಆಯತಾಕ್ಷುಲಿರಭೂದತಿರಿಕ್ತ: ಸುಭ್ರವಾ ಕಶಿಮಶಾಲಿನಿ ಮಧ್ಯೆ” ಮಾಘಂ ೧೦-೬೪। 2. ಎಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. “ಅವೇಕ್ಷಿತಾ-ನಾಯತವಲಗಮ್ರೇ ತುರಗ್ಗಿಭಿರ್ಮಲನಿರ್ದವಾಹೈ:” ಮಾಘಂ ೩-೩೦। 3. ದೂರವಾಗಿ ಎಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಬಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹತೋಟಿಗೆ ತರಲ್ಪಟ್ಟ. (ಅವ್ಯಂ) 5. ಉದ್ದವಾಗಿ, ನೀಳವಾಗಿ.

ಆಯತಚ್ಛದಾ ಆಯತಚ್ಛದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಳಿಗಿಡ. ಆಯತ: ದೀರ್ಘ: ಛದೋಽಸ್ಯಾ:। “ಕದಲಿತ್ವಾಯತಚ್ಛದಾ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಆಯತನ ಆಯತನ (ನಂ) 1. ಯಜ್ಞವೇದಿಕೆ, ಯಾಗದ ಸ್ಥಳ, ಬಲಿಪೀಠ. 2. ಪವಿತ್ರಸ್ಥಳ, ದೇವಾಲಯ, ಯಾತ್ರಾಸ್ಥಳ. ಆಯತಂತೇಽ-ಆ + ಯತಿ (ಪ್ರಯತ್ನೇ) ಅವಿಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)। 3. ವಿಶ್ರಾಂತಿ ಸ್ಥಾನ. 4. ಆಶ್ರಯ, ಮನೆ. “ಸಂಬಂಧಿಭಿರ್ದೋಷಿ ಗಿರೇ: ಕುಲಸ್ಯ ಸ್ನೇಹಸ್ತದೇಕಾಯತನಂ ಜಗಾಮ” ಕುಮಾರಂ ೭-೪। 5. ಕಣಜ, ಉಗ್ರಾಣ, ಧಾನ್ಯ ಶೇಖರಿಸಿಡುವ ಜಾಗ.

ಆಯತಿ ಆಯತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುಂದಿನಕಾಲ, ಭವಿಷ್ಯತ್ತು. ಆ + ಯಮ (ಉಪರಮೆ) “ಕ್ತ” (೩-೩-೧೪)। “ವಿಪದೋಽಭಿಭವಂತ್ಯವಿಕ್ರಮಂ ರಹಯತ್ಯಾಪದ್ವೇತಮಾಯತಿ:” ಕಿರಾಂ ೨-೧೪। 2. ಪ್ರಭಾವ, ಪ್ರತಾಪ. 3. ದೈರ್ಘ್ಯ, ಉದ್ದ, ನೀಳ. 4. ಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವ ಕಾಲ. “ನಿಯತಾ ಲಘುತಾ ನಿರಾಯತೇರಗರೀಯಾನ್ ಪದಂ ನೃಪಶ್ರಿಯ:” ಕಿರಾಂ ೨-೧೪। 5. ಕೆಲಸ, ಕಾರ್ಯ. “ಯಥಾ ಮಿತ್ರಂ ಧ್ರುವಂ ಲಕ್ಷ್ಮಾ ಕೃಷಮಪ್ಯಾಯತಿಕಷಮಮ್” ಮನುಂ ೭-೨೦೮। 6. ಸಂಬಂಧ, ಸಂಗಮ, ಸೇರುವಿಕೆ. 7. ಅಂಕೆ, ಹತೋಟಿ, ಸಂಯಮನ. “ಆಯತಿ: ಸ್ವಾತ್ರಭಾವೋತ್ತರ ಕಾಲಯೋ: ದೈರ್ಘ್ಯಂ ಸಂಕ್ಷೇಪಿ” ಹೇಮಂ।

ಆಯತಿಗವ ಆಯತಿಗವ (ಅವ್ಯಂ) (ಮೇಯಲು ಹೋಗಿರುವ) ಹಸುಗಳು ಮನೆಗೆ ಬರುವ ಕಾಲ, ಸಾಯಂಕಾಲ. ಆಯತೋ ಗಾವೋ ಯಸ್ಮಿನ್ ಕಾಲೇ। ಇತ್ಯಾದೇಶ: ಪುಂಙ್ಮಾಭಾವ: ಸಮಾಸಾಂತಶ್ಚ ನಿಪಾತ್ಯತೇ (೨-೧-೧೭)।

ಆಯತಿಸಮ ಆಯತಿಸಮ (ಅವ್ಯಂ) ಸಂವತ್ಸರಗಳು ಬರುವ ಕಾಲ. ಆಯಂತಿ ಸಮಾ: ಯಸ್ಮಿನ್ ಕಾಲೇ। ನಿಪಾಂ (೨-೧-೧೭)।

ಆಯತ ಆಯತ (ವಿಂ) 1. ಅಧೀನ, ಪರತಂತ್ರ, ಇತರನಿಗೆ ವಶನಾದ. ಆಯತತೇ ಸ್ಮ-ಆ + ಯತಿ (ಪ್ರಯತ್ನೇ) “ಕ್ತ” (೩-೪-೭೨)। “ದೇವಾಯತಂ ಕುಲೇ ಜನ್ಮ ಮದಾಯತಂ ತು ಪೌರೂಷಮ್” ವೇಣೀಂ ೩-೩೭। 2. ಪ್ರಯತ್ನಿಸಿದ, ಯತ್ನ ನಡೆಸಿದ. 3. ನಿರ್ದೇಯ, ಸಾಧು, ನಮ್ರ.

ಆಯತಿ ಆಯತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಧೀನತೆ, ಪರತಂತ್ರತೆ, ಇತರನಿಗೆ ವಶನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಆ + ಯತಿ (ಪ್ರಯತ್ನೇ) “ಕ್ತ” (೩-೩-೧೪)। 2. ಸ್ನೇಹ, ವಾತ್ಸಲ್ಯ, ಪ್ರೀತಿ. 3. ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ. 4. ದಿವಸ. 5. ಬಲ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. “ಆಯತಿಸ್ತು ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಸ್ನೇಹೇ ವಶಿತವೇ ವಾಸರೇ ವಲೇ” ಮೇದಿಂ। 6. ಉಪಾಯ. 7. ಗೌರವ, ಪೂಜ್ಯತೆ. 8. ಪ್ರಭಾವ, ಪ್ರತಾಪ.

ಆಯತಾತಥ್ಯ ಆಯತಾತಥ್ಯ (ನಂ) 1. ಅನೌಚಿತ್ಯ, ಅಯುಕ್ತತೆ, ಅಕ್ರಮವಾಗಿರುವಿಕೆ. ತಥಾತ್ವಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ ಯಥಾತಥಾ ನಿಪಾಂ (೭-೩-೩೧)। ನ ಯಥಾತಥಾ, ಅಯತಾ-ತಥಾ ಭಾವ: “ಪ್ಯಜ್” (೪-೧-೧೨೪)। ವಾ ಪೂರ್ವಪದವೃದ್ಧಿ: (೭-೩-೩೧)। ಉತ್ತರಪದವೃದ್ಧಿ ತು ಅಯಾತಾತಥ್ಯಮ್। “ಗುಣಾನಾಮಾಯತಾತಥ್ಯಾದರ್ಥಂ ವಿಪ್ಲಾವಯಂತಿ ಯೇ” ಮಾಘಂ ೨-೪೬। 2. ಅಸತ್ಯ, ಸುಳ್ಳು.

ಆಯತಾಪುರ್ಯ ಆಯತಾಪುರ್ಯ (ನಂ) ಪೂರ್ವದಂತೆ ಇಲ್ಲ ದಿರುವಿಕೆ, ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದಿರುವಿಕೆ. ನ ಯಥಾಪುರಮ್ ಅಯತಾಪುರಮ್। ತಸ್ಯ ಭಾವ: “ಪ್ಯಜ್” (೪-೧-೧೨೪)। ವಾ ಪೂರ್ವಪದವೃದ್ಧಿ: (೭-೩-೩೧)। ಉತ್ತರಪದವೃದ್ಧಿ ತು ಅಯಾತಾಪುರ್ಯಮ್।

ಆಯದ್ವಸು ಆಯದ್ವಸು (ವಿಂ) ಐಶ್ವರ್ಯವು ಬರಲಿರುವ, ಸಂಪತ್ತು ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗಲಿರುವ. ಆಯತ್ ವಸು ಯಸ್ಯ।

ಆಯಮನ ಆಯಮನ (ನಂ) 1. ದೈರ್ಘ್ಯ, ಉದ್ದ, ನೀಳ. 2. ಅಂಕೆ, ಹತೋಟಿ. 3. ತುಂಡಾಗಿರುವುದನ್ನು ಎಳೆದು ಉದ್ದವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ಆ + ಯಮ (ಉಪರಮೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪)।



ಆಯಸ ಆಯಸ (ನಂ) 1. ಕಬ್ಬಿಣ. ಅಯ ಎವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮)। 2. ಕಬ್ಬಿಣದ ಆಯುಧ. (ವಿಂ) 3. ಲೋಹಮಯನಾದ, ಕಬ್ಬಿಣದಿಂದ ತಯಾರಾದ. ಅಯಸೋ ವಿಕಾರ: "ಅನ್" (೪-೩-೧೩೪)। "ಮೂಢಂ ಬುದ್ಧಮಿವಾತ್ಮಾನಂ ಹೈಮಿಭೂತಮಿವಾಯಸಮ್" ಕುಮಾಂ ೬-೫೫। (ಸ್ತ್ರೀಂ)-ಸೀ-ಸೀ. ಲೋಹಕವಚ, ಯುದ್ಧ ಕವಚ.

ಆಯಸೀಯ ಆಯಸೀಯ (ಪುಂ) 1. ಕಬ್ಬಿಣಕ್ಕೆ ಹತ್ತಿರದ ಪ್ರದೇಶ. ಅಯಸ: ಅದೂರಭವೋ ದೇಶ: "ಅನ್" (೪-೨-೮೦)। (ವಿಂ) 2. ಕಬ್ಬಿಣದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಯಸಾ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಅನ್" (೪-೨-೮೦)।

ಆಯಸ್ಕಾರ ಆಯಸ್ಕಾರ (ಪುಂ) ಕಮ್ಮಾರ, ಕಬ್ಬಿಣದ ಕೆಲಸದವನು. ಅಯಸ್ಕಾರ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮)।

ಆಯಸ್ತ ಆಯಸ್ತ (ವಿಂ) 1. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಸಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಯಸು (ಪ್ರಯತ್ನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಆಯಸ್ತಭೀಮಭುಜಮಂದರವೆಲ್ಲನಾಭಿ:" ವೇಣೀಂ ೬-೯। 2. ಕಷ್ಟಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಆಯಾಸಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಹರಿತವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಾಣೆ ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಯಸು (ಪ್ರಯತ್ನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 4. ಆಯಾಸಗೊಂಡ, ಬಳಲಿದ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಆಯಸ್ತಮೇಷತ ಜನ: ಚಟುಲಾಗ್ರಪಾದಮ್" ಮಾಘಂ ೫-೬। "ಆಯಸ್ತ: ಸುರಸರಿದೋಹ-ಹದವರ್ತನಾ" ಕಿರಾಂ ೭-೩೨।

ಆಯಸ್ಥಾನ ಆಯಸ್ಥಾನ (ನಂ) 1. ತೆರಿಗೆ ವಸೂಲಿಯ ಜಾಗ, ಸುಂಕದ ಕಟ್ಟಿ, ಸುಂಕದ ಚಾವಡಿ. 2. ಲಾಭ ಸ್ಥಾನ, ಲಗ್ನದಿಂದ ಹನ್ನೊಂದನೆಯ ಸ್ಥಾನ.

ಆಯಸ್ಯ ಆಯಸ್ಯ (ಅವ್ಯಂ) ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಯತ್ನಪಟ್ಟು, ಆಯಾಸಗೊಂಡು. ಆ + ಯಸು (ಪ್ರಯತ್ನೆ) "ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭)।

ಆಯಾತ ಆಯಾತ (ನಂ) 1. ಆಧಿಕ್ಯ, ಪುಷ್ಕಳತೆ, ಹೇರಳ. ಆ + ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ದಿವ್ಯಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಸಚರಣಲಾಕ್ಷಾರಾಗಾ: ರಾಗಾಯಾತೇ ನಿಪತ್ತಿತ-ಪುಷ್ಪಾಪಿಡಾ:" ಕಿರಾಂ ೫-೨೩। 2. ಆಗಮನ, ಬರುವಿಕೆ. ಆ + ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। 3. ಆಗಮಿಸಿದ ಸ್ಥಳ, ಬಂದ ಜಾಗ. ಆ + ಯಾ ಅಧಿಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೬)। (ವಿಂ) 4. ಬಂದಿರುವ, ಆಗಮಿಸಿರುವ, ಒಂದು ಸ್ಥಳದಿಂದ ಬೇರೆ ಸ್ಥಳ ಸೇರಿರುವ.

ಆಯಾತಿ ಆಯಾತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಗಮನ, ಬರುವಿಕೆ. ಆ + ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪)।

ಆಯಾಮ ಆಯಾಮ (ಪುಂ) 1. ದೈರ್ಘ್ಯ, ಉದ್ದ, ನೀಳ. ಆ + ಯಮ (ಉಪರಮೆ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೯)। "ತೇನೋದೀಚಿಂ ದಿಶಮನುಸರೇಸ್ತಿಯಾಗಾಯಾಮಶೋಭಿ" ಮೇಘಂ ೧-೫೭। 2. ಹತ್ತೊಂಟಿ, ಅಂಕೆ, ನಿಯಮನ, ತಡೆಯುವಿಕೆ. "ಪ್ರಾಣಾಪಾನಗತಿ ರುದ್ಧಾ ಪ್ರಾಣಾಯಾಮಪರಾಯಣಾ:" ಗೀತಾ ೪-೨೯। 3. ವಿಸ್ತಾರ, ವೈಶಾಲ್ಯ. (ಅವ್ಯಂ) 4. ಯಾಮಪರ್ಮಂತವಾಗಿ. ಯಾಮಮಭಿವ್ಯಾಪ್ಯ। ಅವ್ಯಯಿಂ।

ಆಯಾಮವತ್ ಆಯಾಮವತ್ (ವಿಂ) 1. ವಿಸ್ತಾರವಾದ, ವೈಶಾಲ್ಯವುಳ್ಳ. 2. ಉದ್ದವಾದ, ನೀಳವಾದ. ಆಯಾಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೧೪)। "ಆಯಾಮವದ್ಭಿ: ಕರಿಣಾಂ ಘಟಾಶತೇರಥ: ಕೃತಾಡಾಲಕಪಟ್ಕಿಣ್ವೇಚಕೇ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೬೫।

ಆಯಾಸ ಆಯಾಸ (ಪುಂ) 1. ಬಹಳ ಪ್ರಯತ್ನ. ಆ + ಯಸು (ಪ್ರಯತ್ನೆ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಆಯಾಸ, ದಣವು, ಬಳಲಿಕೆ, ಶ್ರಮ. ಸ್ನೇಹಮೂಲಾನಿ ದು:ಖಾನಿ ದೇಹಜಾನಿ ಭಯಾನಿ ಚ। ಶೋಕಹೃಪೌ ತಥಾಯಾಸ: ಸರ್ವೆ ಸ್ನೇಹಾತ್ಪ್ರವರ್ತತೇ" ಭಾಂ ವನಂ ೨೦೦।

ಆಯಾಸಕ ಆಯಾಸಕ (ವಿಂ) 1. ಆಯಾಸವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ. ಆ + ಯಸು (ಪ್ರಯತ್ನೆ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಆಯಾಸಿನ್ ಆಯಾಸಿನ್ (ವಿಂ) ಆಯಾಸವುಳ್ಳ, ದಣವುಳ್ಳ, ಶ್ರಮದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಬಳಲಿದ. ಆಯಾಸ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫)। "ಕಾಮಂ ಪ್ರಿಯಾ ನ ಸುಲಭಾ ಮನಸ್ತು ತದ್ಭಾವದರ್ಶನಾಯಾಸಿ" ಶಾಕುಂ ೨-೧।

ಆಯಿನ್ ಆಯಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಲಾಭವುಳ್ಳ, ಆದಾಯವುಳ್ಳ. 2. ಸಂಪಾದನೆಯುಳ್ಳ. ಆಯೋ ಲಾಭೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫)।

ಆಯುಕ್ತ ಆಯುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ನಿಯಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಪ್ಪಣೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕುಶಲೋಽನ್ವೇಷಣಸ್ಯಾಹಮಾಯುಕ್ತೋ ದೂತಕರ್ಮಣಿ" ಭಟ್ಟಿಂ ೮-೧೧೫। 2. ಸಂಬಂಧಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 3. ಸ್ವಲ್ಪ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ ಇಷತ್ ಯುಕ್ತ:। "ಆಯುಕ್ತ: ಶಕಟೇ ಗೌ:" ಸಿಂ ಕೌಂ। (ನಂ) 4. ನೇಮಕ, ನೈವಸ್ಥಿ. ಆ + ಯುಜಿರ್ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)।

ಆಯುಧ ಆಯುಧ (ನಂ) ಆಯುಧ, ಶಸ್ತ್ರ, ಆಸ್ತ್ರ. ಆಯುಧ್ಯತೇಜೇನ-ಆ + ಯುಧ (ಸಂಪ್ರಹಾರೇ) ಧವರ್ಥ "ಕ:"



(ವಾಂ ೩-೩-೪೦)। "ಘೃತಾಯುಘೋ ಯಾವದಹಂ ತಾವದನ್ಯಃ ಕಿಮಾಯುಘಃ" ವೇಣೀಂ ೩-೪೬। ಆಯುಧವು ಪ್ರಹರಣ, ಹಸ್ತಮುಕ್ತ ಮತ್ತು ಯಂತ್ರಮುಕ್ತಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. (1) ಖಡ್ಗ ಮುಂತಾದುದು ಪ್ರಹರಣ. (2) ಚಕ್ರ ಮುಂತಾದುದು ಹಸ್ತಮುಕ್ತ. (3) ಬಾಣ ಮುಂತಾದುದು ಯಂತ್ರಮುಕ್ತ.

ಆಯುಜೀವಿನ್ ಆಯುಧಜೀವಿನ್ (ವಿಂ) ಆಯುಧ ದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು, ಯೋಧ, ಭಟ. ಆಯುಧೇನ ಜೀವತಿ—ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಞಿನಿ:" (೩-೨-೨೮)।

ಆಯುಧಮಿಣಿ ಆಯುಧಧರ್ಮಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಯಂತೇ ವೃಕ್ಷ, ತಕ್ಕಲೆ ಗಡ. ಆಯುಧಸ್ಯೇವ ಧರ್ಮೋಽಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)। "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪)।

ಆಯುಧಾಗಾರ ಆಯುಧಾಗಾರ (ನಂ) ಆಯುಧಶಾಲೆ, ಆಯುಧಗಳನ್ನು ಇಡುವ ಮನೆ. ಆಯುಧಾನಾಮಗಾರಮ್। "ಆರ್ಯ, ನೇದಮಾಯುಧಾಗಾರಮ್। ಪಾಶ್ಚಾತ್ಯಾಶ್ವತು:ಶಾಲಕಮಿದಮ್" ವೇಣೀಂ ೧।

ಆಯುಧಾಗಾರಿಕ ಆಯುಧಾಗಾರಿಕ (ವಿಂ) ಆಯುಧ ಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ ನಿಯಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನು, ಆಯುಧಶಾಲೆಯ ಕಕ್ಷಕ. ಆಯುಧಾಗಾರೇ ನಿಯುಕ್ತ: "ಠನ್" (೪-೪-೨೦)।

ಆಯುಧಿಕ ಆಯುಧಿಕ (ವಿಂ) ಆಯುಧದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು, ಯೋಧ, ಭಟ. ಆಯುಧೇನ ಜೀವತಿ—"ಠನ್" (೪-೪-೧೪)।

ಆಯುಧಿನ್ ಆಯುಧಿನ್ (ವಿಂ) ಶಸ್ತ್ರವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ, ಆಯುಧವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. ಆಯುಧಮಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)।

ಆಯುಧೀಯ ಆಯುಧೀಯ (ವಿಂ) ಆಯುಧದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು, ಯೋಧ, ಭಟ. ಆಯುಧೇನ ಜೀವತಿ—"ಃ" (೪-೪-೧೪)।

ಆಯುಧೀಯ ಆಯುಧೀಯ (ಪ್ರಂ) ಗ್ರಹಗಳು ಬಲವಾದ ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿದ್ದು ಹೆಚ್ಚು ಆಯುಸ್ಸನ್ನು ಕೊಡುವುದು. ಆಯುಘೋ ದಾಯ: ದಾನಮ್।

ಆಯುಧೈವ್ಯ ಆಯುಧೈವ್ಯ (ನಂ) 1. ಔಷಧ. 2. ಘೃತ, ತುಪ್ಪ. ಆಯು:ಸಾಧನಂ ದ್ರವ್ಯಮ್। "ಆಯುರ್ವೈ ಧೃತಮ್" ಎಂದಿರುವುದರಿಂದ ಆಯುಸ್ಸಿಗೆ ಘೃತವು ಕಾರಣ.

ಆಯುರ್ಯೋಗ ಆಯುರ್ಯೋಗ (ಪ್ರಂ) ಆಯುಸ್ಸನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವ ಗ್ರಹಗಳ ಒಂದು ಯೋಗ. ಪ್ರಶಸ್ತಸ್ಯಾಯುಘೋ ಜ್ಞಾಪಕೋ ಯೋಗ:।

ಆಯುರ್ವೇದ ಆಯುರ್ವೇದ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಯುರ್ವೇದಿ, ಆಯುಸ್ಸಿನ ಬೆಳವಣಿಗೆ, ಕೆಲವು ದ್ರವ್ಯಗಳ ಸೇವನೆ ಯಿಂದಂಟಾಗುವ ಜೀವಿತಕಾಲದ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ. ಆಯುಘೋ ವೃದ್ಧಿ:। ಕೆಲವು ದ್ರವ್ಯಸೇವನೆಯಿಂದಲೂ, ಪ್ರಾಣಾ ಯಾಮದಿಂದಲೂ ಆಯುಸ್ಸು ಅಭಿವೃದ್ಧಿಯಾಗುವುದು. ಮನುಷ್ಯನ ಪ್ರಾಣವಾಯುವು (ಶ್ವಾಸೋಚ್ಛ್ವಾಸವು) ಒಂದು ದಿನಕ್ಕೆ 21,600 ಸಲವೂ, ಒಂದು ತಿಂಗಳಿಗೆ 6,48,000 ಸಲವೂ, ಒಂದು ವರ್ಷಕ್ಕೆ 77,76,000 ಸಲವೂ, ಒಂದು ಪುರುಷಾಯುಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ (100 ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ) 77,76,00,000 ಸಲವೂ ಆಡುವುದು. ಈ ಪ್ರಾಣವಾಯುವಿನ ನಿರೋಧ (ಪ್ರಾಣಾ ಯಾಮ)ದಿಂದ ಮನುಷ್ಯನ ಆಯುಸ್ಸು ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುವುದು. ಪ್ರಾಣಾಯಾಮ ನಡೆದಷ್ಟು ಕಾಲವೂ ಆಯುರ್ವೇದಿಯೆಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕು. ಈ ರೀತಿ ಪ್ರಾಣವಾಯುವಿನ ವ್ಯಾಪಾರವು ದೇಹಾರೋಗ್ಯವಿರುವಾಗ ಮಾತ್ರ. ರೋಗಗ್ರಸ್ತರಿಗೂ, ಹೆಚ್ಚು ದಾರಿ ನಡೆಯುವವರಿಗೂ ವೇಗವಾಗಿಯೂ ಅಧಿಕಪ್ರಮಾಣದಲ್ಲಿಯೂ ಶ್ವಾಸೋಚ್ಛ್ವಾಸ ನಡೆಯುವುದರಿಂದ ಅಂತಹವರಿಗೆ ಆಯು: ಪ್ರಮಾಣವು ಕಡಿಮೆ. ಮತ್ತು ಮನುಷ್ಯನ ಆಚಾರ ವ್ಯವಹಾರಗಳಿಂದಲೂ ಆಯುಸ್ಸು ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುವುದು. ಸದಾಚಾರವು ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ಸಕಲ ವಿಧವಾದ ಅಭ್ಯುದಯವನ್ನು ಕೊಡುವುದು.

"ಆಚಾರೋ ಭೂತಿಜನನ ಆಚಾರ: ಕೀರ್ತಿವರ್ಧನ:। ಆಚಾರಾದೃಢತೇ ಹ್ಯಾಯುರಾಚಾರೋ ಹಂತ್ಯಲಕ್ಷಣಮ್। ಆಗಮಾನಾಂ ಹಿ ಸರ್ವಭಾಮಾಚಾರ: ಶ್ರೇಷ್ಠ ಉಚ್ಯತೇ। ಆಚಾರಪ್ರಭವೋ ಧರ್ಮೋ ಧರ್ಮಾದಾಯುರ್ವಿವರ್ಧತೇ। ಉತ್ತಮಶಾಸ್ತ್ರಮಾಯುಷ್ಯಂ ಸ್ವರ್ಗ್ಯಂ ಸ್ವಸ್ತಯನಂ ಮಹತ್" ಭಾಂ ಆನುಂ ೧೬೧-೧೭೦, ೭೧, ೭೨।

ಆಯುರ್ವೇದ ಆಯುರ್ವೇದ (ಪ್ರಂ) ಆಯುಸ್ಸನ್ನು ಕೊಡತಕ್ಕ ಶಾಸ್ತ್ರ, ಆರೋಗ್ಯವನ್ನು ಕಾಪಾಡುವ ಶಾಸ್ತ್ರ. ಆಯುರಸ್ಮಿನ್ ವಿಚಿತೇ ಅಸ್ತೀತ್ಯಾಯುರ್ವೇದ:; ಆಯುರ್ವಿಚಿತೇ ಜ್ಞಾಯತೇ ಅನೇನೇತ್ಯಾಯುರ್ವೇದ:; ಆಯುರ್ವಿಚಿತೇ ವಿಚಾರ್ಯತೇಜೇನ, ಆಯುರೇನ ವಿಂದತಿ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ ಇತ್ಯಾಯುರ್ವೇದ: ಇತಿ ವಾ। ಈ ಆಯುರ್ವೇದಕ್ಕೆ ಅಷ್ಟಾಂಗಗಳಿರುವುವು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಅಷ್ಟಾಂಗ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಆಯುಷ್ಕ ಆಯುಷ್ಕ (ವಿಂ) ಉತ್ತಮವಾದ ಆಯುಸ್ಸುಳ್ಳವನು, ದೀರ್ಘಾಯುಸ್ಸುಳ್ಳವನು. ಆಯುಷಾ ಕಾಯತಿ—ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕ:" (೩-೨-೩)।

ಆಯುಷ್ಕಾಮ ಆಯುಷ್ಕಾಮ (ವಿಂ) ಆಯುಸ್ಸನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು, ಹೆಚ್ಚು ಜೀವಿತಕಾಲವನ್ನು ಅಶಿಸುವವನು.



ಆಯುಃ ಕಾಮಯತೇ—ಕಮು (ಕಾಂತೌ) + ಣಿಙ್ “ಅನ್” (೩-೨-೧)। “ಆಯುಷ್ಕಾಮೇನ ವಪ್ತವ್ಯಂ ನ ಜಾತು ಪರಯೋಷಿತಿ” ಮನುಂ ೯-೪೧।

ಆಯುಷೋಮ ಅಯುಷ್ಯೋಮ (ಪುಂ) ಅಯುಷ್ಯ ಹೋಮ, ಅಯುಷ್ಯನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವ ಒಂದು ಯಾಗ. ಆಯುಃ-ಸಾಧನಂ ಸ್ತೋಮಃ।

ಆಯುಷ್ಮತ್ ಅಯುಷ್ಯತ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಕಂಭಾದಿ 27 ಯೋಗಗಳಲ್ಲೊಂದು. [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಯೋಗ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] (ವಿಂ) 2. ದೀರ್ಘಾಯುಸ್ಸುಳ್ಳವನು. ಪ್ರಶಸ್ತುಮಾಯುರಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಃ” (೪-೨-೯೪)। “ಯದಾಜ್ಞಾಪಯ-ತ್ಯಾಯುಷ್ಮಾನ್” ಶಾಕುಂ ೧। “ಆಯುಷ್ಮಂತಂ ಸುತಂ ಸುತೇ ಯಶೋಮೇಧಾಸಮನ್ವಿತಮ್। ಧನವಂತಂ ಪ್ರಜಾವಂತಂ ಸಾತ್ವಿಕಂ ಧಾರ್ಮಿಕಂ ತಥಾ” ಮನುಂ ೩-೨೬೩। 3. ವೃದ್ಧ, ಹೆಚ್ಚು ವಯಸ್ಸಾದವನು.

ಆಯುಷ್ಯ ಅಯುಷ್ಯ (ನಂ) 1. ಆಯುರ್ವೃದ್ಧಿ, ಅಯುಸ್ಸಿನ ಅಧಿಕೃತ. ಆಯುಸ್ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಉಕ್” (೪-೧-೧೨೪)। “ಆಯುಷ್ಯಂ ಪ್ರಾಙ್ಮುಖೋ ಭುಕ್ತೇ ಯಶಸ್ಯ ದಕ್ಷಿಣಾಮುಖಃ। ಶ್ರಿಯಂ ಪ್ರತ್ಯಙ್ಮುಖೋ ಭುಕ್ತೇ ಋತಂ ಭುಕ್ತೇ ಹ್ಯುದಙ್ಮುಖಃ” ಮನುಂ ೨-೪೨। 2. ಜನನವಾದನಂತರ ಮಾಡುವ ಜಾತ ಕರ್ಮ. (ವಿಂ) 3. ಆಯುರ್ವೃದ್ಧಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ ಅಯುಷ್ಯ ಹೋಮ. ಆಯುಃಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ “ಯತ್” (ವಾಂ ೪-೧-೧೧೧)। “ಧನ್ಯಂ ಯಶಸ್ಯಮಾಯುಷ್ಯಂ ಸ್ವರ್ಗ್ಯಂ ವಾತಿಥಿಪೂಜನಮ್” ಮನುಂ ೩-೧೦೬।

ಆಯುಸ್ ಅಯುಸ್ (ನಂ) 1. ಜೀವಿತದ ಕಾಲ, ಬದುಕಿರುವ ಕಾಲ. ಏತಿ—ಙ್ (ಗತೌ) “ಁಸಿಃ” (ಁಂ ೨-೧೧೮)। “ಶೃಙ್ಗಂ ಸದೃಶವಿನಯಾಧಿಕೃತಃ ಪರೇಷಾ-ಮತ್ಯುಚ್ಚಿತಂ ನ ಮಮೇವ ನ ತು ದೀರ್ಘಮಾಯುಃ” ರಘುಂ ೯-೬೨। 2. ಅಯುಸ್ಸು ಬೆಳೆಯಲು ಮಾಡುವ ಅಯುಷ್ಯ ಹೋಮ. ಅಯುಸ್ಸು ಅಲ್ಪ, ಮಧ್ಯ ಮತ್ತು ದೀರ್ಘ ಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ಮೂವತ್ತೆರಡು ವರ್ಷಗಳಿಗೆ ಕಡಿಮೆಯಾದುದು ಅಲ್ಪಾಯುಸ್ಸು. ಎಪ್ಪತ್ತು ವರ್ಷಗಳವರೆಗೆ ಮಧ್ಯಾಯುಸ್ಸು. ಅದಕ್ಕಿಂತ ಮೇಲ್ಪಟ್ಟು ಪೂರ್ಣ (ದೀರ್ಘ)ಯುಸ್ಸು. ಅಯುಷ್ಯಾರಕನು ಶನಿ. ಅಷ್ಟಮ ಭಾವಾಧಿಪತಿಯು ಸ್ವಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿಯೇ ಇದ್ದರೆ ದೀರ್ಘಾಯುಸ್ಸು. ದಶಮ ಭಾವಾಧಿಪತಿಯು ತನ್ನ ಉಚ್ಚಕ್ಷೇತ್ರ, ಸ್ವಕ್ಷೇತ್ರ ಅಥವಾ ಮಿತ್ರಕ್ಷೇತ್ರ ದಲ್ಲಿದ್ದರೂ, ಲಗ್ನಾಧಿಪತಿ, ಅಷ್ಟಮಾಧಿಪತಿ ಮತ್ತು ದಶಮಾಧಿಪತಿಗಳು ಕೇಂದ್ರದಲ್ಲಿದ್ದರೂ (ಸ್ವಕ್ಷೇತ್ರ

ಮೂಲಕ್ಷೇತ್ರಕೋಣ ಮತ್ತು ಸ್ವೋಚ್ಚಕ್ಷೇತ್ರಗಳಲ್ಲಿದ್ದರೆ ಮತ್ತು ವಿಶೇಷ), ಲಗ್ನಾಧಿಪತಿಯು ಕೇಂದ್ರದಲ್ಲಿದ್ದು ಗುರುಶುಕ್ರರೊಡನೆ ಕೂಡಿದ್ದರೂ, ಅಥವಾ ನೋಡ ಲ್ಪಟ್ಟರೂ, ಸಾಪಗ್ರಹಗಳು ಮೂರು, ಆರು ಮತ್ತು ಹನ್ನೊಂದನೆಯ ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿದ್ದರೂ, ಶುಭಗ್ರಹಗಳು ಕೇಂದ್ರ ತ್ರಿಕೋಣಗಳಲ್ಲಿದ್ದರೂ, ಲಗ್ನಾಧಿಪತಿಯು ಬಲಿಷ್ಠನಾಗಿದ್ದರೂ, ಮೂರು ಗ್ರಹಗಳು ಉಚ್ಚ ವಾಗಿದ್ದು ಲಗ್ನದಲ್ಲಿ ಅಷ್ಟಮಾಧಿಪತಿಯು ಇದ್ದರೂ, ಅಷ್ಟಮ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಸಾಪಗ್ರಹಗಳಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ದೀರ್ಘಾಯುಸ್ಸೆಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕು. ವೈದ್ಯಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಆಯುರ್ವೃದ್ಧಿಗೆ ಉಕ್ತವಾದ ಗುಣಗಳು: (1) ದಾನ, (2) ಶೀಲ, (3) ದಯೆ, (4) ಸತ್ಯ, (5) ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ, (6) ಕೃತಜ್ಞತೆ, (7) ಮೈತ್ರಿ ಮತ್ತು 8. ರಸಾಯನ ಸೇವನೆ.

ಪರಮಾಯುಸ್ಸು:

ಮನುಷ್ಯರಿಗೆ ಮತ್ತು

ಅನೆಗಳಿಗೆ 120 ವರ್ಷಗಳು 5 ದಿನಗಳು

ಕುದುರೆಗಳಿಗೆ 32 ವರ್ಷಗಳು

ಒಂಟಿ ಮತ್ತು

ಕತ್ತೆಗಳಿಗೆ 25 ,,

ದನ ಮತ್ತು ಎಮ್ಮೆ

ಗಳಿಗೆ 24 ,,

ಆಡು, ಸೀಮೆಹಸು

ಮತ್ತು ಜಿಂಕೆಗಳಿಗೆ 16 ,,

ನಾಯಿ, ಸಿಂಹ ಮತ್ತು

ಮಾರ್ಜಾರಗಳಿಗೆ 12 ,,

ಆಯೋಧನ ಅಯೋಧನ (ನಂ) 1. ಯುದ್ಧ. ಆ + ಯುಧ (ಸಂಪ್ರಹಾರೇ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪)। “ಆಯೋಧನೇ ಕೃಷ್ಣಗತಿ ಸಹಾಯಮ್” ರಘುಂ ೬-೪೨। 2. ಯುದ್ಧಕ್ಷೇತ್ರ, ರಣರಂಗ. ಆಯುಧತೇಷಾಂ — ಆ + ಯುಧ ಅಧಿಂ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭)। 3. ಕೊಲ್ಲುವುದು, ಕೊಲೆಮಾಡುವುದು. “ಆಯೋಧನಂ ಘಾತನಂ ಸ್ಯಾತ್ ಯುಧಮಾಯೋಧನಂ ಮತಮ್” ಶಾರವಂ।

ಆರ ಆರ (ಪುಂ) 1. ಕುಜಗ್ರಹ. 2. ಶನಿಗ್ರಹ. ಆ-ಋಚ್ಛತಿ—ಋ (ಗತೌ) “ಅಕ್” (೩-೧-೧೩೪)। (ಪುಂ) 3. ಹಿತ್ತಾಳೆ. 4. ಒಂದುಮೂಲೆ, ಕೋಣ. 5. ದೂರ, ಅಂತರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ರಾ-ರಾ. 6. ಚರ್ಮವನ್ನು ಕತ್ತರಿಸುವ ಉಳಿ, ಚರ್ಮಾರನ ಉಳಿ. 7. ಚಾವಟಿ.



“ಆರಾ ಚರ್ಮಪ್ರಸೇದಿತ್ಯಾಂ ಪುನಿ ಭೋಮೇ ಶನೇಶ್ವರೇ” ಮೇದಿಂ ।  
“ಸಂಕ್ರೋಂತಿ ತೇಜಿತಾಶ್ವಸ್ಯ ರಾಗಾದುದ್ಯಮ್ಯಾರಾಮಪ್ರಕಾಯೋ-  
ತ್ಥಿತಸ್ಯ” ಮಾಘಂ ೧೮-೭ ।

ಆರಕುಟ ಅರಕುಟ (ಪುಂ) ಹಿತ್ತಾಳೆ. ಆರಂಕುಟಯತೇ—ಕುಟ  
(ದಾಹೇ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಆರಕ್ಷ ಅರಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಆನೆಯ ಕುಂಭಸ್ಥಳದ  
ಕೆಳಗಿನ ಪ್ರದೇಶ. ಆ + ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) “ಅಚ್”  
(೩-೧-೧೩೪) । “ಆರಕ್ಷಮಗ್ನಮವಮತ್ಯ ಸೃಣಿ ಶಿತಾಗ್ರಮೇಕಃ  
ಪಲಾಯತ ಜವೇನ ಕೃತಾರ್ತನಾದಃ” ಮಾಘಂ ೫-೫ । 2. ಆನೆಯ  
ತಲೆಯ ಚರ್ಮ. 3. ಸೈನ್ಯ. 4. ರಕ್ಷಣೆ. ಆ + ರಕ್ಷ  
ಭಾವೇ “ಘಜ್” (೩-೩-೧೮) । “ತೇಷಾಮಾರಕ್ಷಭೂತಂ ತು ಪೂರ್ವ  
ದೇವಂ ನಿಯೋಜಯೇತ್” ಮನುಂ ೩-೨೦೪ । (ವಿಂ) 5. ರಕ್ಷಕ,  
ಕಾಪಾಡುವವನು. “ಶ್ವತಸಾಹಸ್ರಮಾರಕ್ಷಂ ಮಧ್ಯಮಂ ರಕ್ಷಸಾಂ  
ಕಪಿಃ” ಭಟ್ಟಿಂ ೮-೩೭ ।

ಆರಕ್ಷಕ ಅರಕ್ಷಕ (ಪುಂ) 1. ಕಾವಲುಗಾರ, ಪಹರೆ  
ಯವನು. 2. ನ್ಯಾಯಾಧೀಶ, ನ್ಯಾಯಾಧ್ಯಕ್ಷ.  
(Magistrate).

ಆರಕ್ಷಾ ಅರಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಕ್ಷಣೆ. ಆ + ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ)  
“ಅಃ” (೩-೩-೧೦೩) ।

ಆರಗ್ವಥ ಅರಗ್ವಥ (ಪುಂ) 1. ಕಕ್ಕೆ ಗಿಡ. “ಆರಗ್ವಥೇ  
ರಾಜವೃಕ್ಷಶಮ್ಯಾಕಚತುರಜ್ಜುಲಾಃ” ಅಮಂ । (ನಂ) 2. ಕಕ್ಕೆ  
ಕಾಯಿ.

ಆರಣಿ ಅರಣಿ (ಪುಂ) ಸುಳಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಜಲಾಶಯ,  
ಸುಳಗುಂಡಿ.

ಆರಣೇಯ ಅರಣೇಯ (ಪುಂ) 1. ಶುಕಮಹರ್ಷಿ.  
ಅರಣ್ಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ “ಢಕ್” (೪-೧-೧೨೦) । [“ಅರಣಿ-  
ಸುತ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಆರಣ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಅರಣ್ಯ, ಕಾಡು. 2. ಹಸುವಿನ  
ಸಗಣೆ, ಆಕಳ ತೊಪ್ಪೆ. (ವಿಂ) 3. ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟಿದ, ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಅರಣ್ಯೇ ಭವಃ  
“ಞಃ” (ವಾಂ ೮-೩-೧೦೧) । ಆರಣ್ಯಾಃ ಸುಮನಸಃ,  
ಆರಣ್ಯಃ ಪಶುಃ । ಸಿಂ ಕೌಂ । ಅರಣ್ಯ ಪಶುಗಳು  
ಎಳು ಜಾತಿ—“ಸರಿಸೃಪೌ ರುಕ್ಷಚೈವ ಮಹಿಷೌ ವಾನರಸ್ತಥಾ ।  
ಪೃಷತಕ್ಷೌ ಮೃಗಶ್ಚೈವ ಪಶುವೈ ಸಪ್ತಥಾ ಮತಃ” ।

ಆರಣ್ಯಕ ಅರಣ್ಯಕ (ನಂ) 1. ಅರಣ್ಯಕ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣಕ್ಕೆ  
ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ವೇದದ ಒಂದು ಭಾಗ. ತೈತ್ತಿರೀಯಾರಣ್ಯಕಮ್,  
ಬೃಹದಾರಣ್ಯಕಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ. 2. ಮಹಾಭಾರತದ ವನ  
ಪರ್ವ. 3. ಶ್ರೀಮದ್ರಾಮಾಯಣದ ಅರಣ್ಯಕಾಂಡ.

ಅರಣ್ಯ “ವುಜ್” (೪-೨-೧೨೯) । 4. ಹಸುವಿನ ಸಗಣೆ,  
ಆಕಳ ತೊಪ್ಪೆ. ಅರಣ್ಯ ವಾ “ವುಜ್” (ವಾಂ ೪-೨-೧೨೯) ।  
(ವಿಂ) 5. ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿರುವ—  
(1) ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. (2) ಅಧ್ಯಾಯ. “ಆರಣ್ಯಕಾನಾಂ  
ಪ್ರಮವಃ ಫಲಾನಾಮ್” ಯಾದಂ ೪-೩೦ । (3) ನ್ಯಾಯ.  
(4) ವಿಹಾರ. (5) ಮನುಷ್ಯ. “ಆರಣ್ಯಕೋಪಾತ್ತಫಲಪ್ರಸೂತಿಃ”  
ರಘುಂ ೫-೧೫ । “ತಪಃಪಙ್ಗಮಾಗಮಕ್ಷಯ್ಯ ದದತ್ಯಾರಣ್ಯಕಾ  
ಹಿ ನಃ” ಶಾಕುಂ ೨-೧೩ ।

ಆರಣ್ಯಪರ್ವನ್ ಅರಣ್ಯಪರ್ವನ್ (ನಂ) ಮಹಾಭಾರತದ  
ಅರಣ್ಯಪರ್ವ.

ಆರಣ್ಯಪಶು ಅರಣ್ಯಪಶು (ಪುಂ) ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ  
ಪಶು. [“ಆರಣ್ಯ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಆರತ ಅರತ (ವಿಂ) 1. ನಿವೃತ್ತಿಹೊಂದಿದ, ನಿಂತು  
ಹೋದ. 2. ವಿರಾಮ ಹೊಂದಿದ. ಆ + ರಮು  
(ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) । “ಉದಿತಪಕ್ಷ-  
ಮಿವಾರತನಿಃಸ್ವನೇಃ ಪೃಥುನಿತಮ್ಬವಿಲಮ್ಬಿಭಿರಮ್ಬುದೇಃ” ಕಿರಾಂ  
೫-೬ ।

ಆರತಿ ಅರತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಿವೃತ್ತಿ, ನಿಲ್ಲುವಿಕೆ.  
2. ವಿಶ್ರಾಂತಿ, ವಿರಾಮ. ಆ + ರಮು (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್)  
“ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) ।

ಆರನಾಲ ಅರನಾಳ (ನಂ) ಗಂಜಿ, ಅಂಬಲಿ. ಆರೊ  
ನಾಲೋ ಗಂಧೋ ಯಸ್ಯ । ವಾ “ಕಪ್” (೫-೪-೧೫೪) ।  
ಆರನಾಲಕಮ್ ಅರನಾಳಕಮ್.

ಆರಬ್ಧ ಅರಬ್ಧ (ವಿಂ) ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಪಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಆ + ರಭ (ರಾಭಸ್ಯೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) ।  
“ವ್ರತಯಜ್ಞವಿವಾಹೇಷು ಶ್ರಾದ್ಧೇಹೋಮೇಷ್ವನೇ ಜಪೇ । ಆರಬ್ಧೇ ಸೂತಕಂ ನ  
ಸ್ಯಾದನಾರಬ್ಧೇ ತು ಸೂತಕಮ್” ।

ಆರಭಟ ಅರಭಟಿ (ಪುಂ) ವೀರ, ಶೂರ, ಸಾಹಸಕೃತ್ಯ  
ವೆಸಗುವವನು.

ಆರಭಟಿ ಅರಭಟೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅರಭಟೀವೃತ್ತಿ,  
ಒಂದು ವಿಧವಾದ ಭಾಷೆಯ ಶೈಲಿ, ಒಂದು ಬಗೆ  
ವಾಗ್ಗೋಷಣೆ. ಈ ವೃತ್ತಿಯು ರೌದ್ರ ಮತ್ತು ಬೀಭತ್ಸ  
ರಸಗಳಲ್ಲಿ ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವುದು. “ಆರಭಟಿ  
ಪುನಃ । ರಸೇ ರೌದ್ರೇ ಚ ಬಿಭತ್ಸೇ” ಸಾಂ ದಂ । ಅರಭಟೀ  
ಲಕ್ಷಣ “ಮಾಘೇಂದ್ರಜಾಲಸಂಭ್ರಾಮಕ್ರೋಧೋದ್ಭ್ರಾಂತಾದಿವೇಷಿತಃ ।  
ಸಂಯುಕ್ತಾ ವಧವನ್ವಾದೈರುದ್ಭಾರಭಟಿ ಮತಾ” ಸಾಂ ದಂ ।  
2. ನರ್ತನದ ಒಂದು ರೀತಿ.



ಆರಮ್ಯ ಆರಂಭ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಉಪಕ್ರಮಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಆ + ರಮ (ರಾಮಸ್ಯೆ) "ಘ್" (3-1-124). (ಅವ್ಯಂ) 2. ಉಪಕ್ರಮಿಸಿ, ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ. ಆ + ರಮ "ಲ್ಯಪ್" (3-1-39). 3. ಮೊದಲುಗೊಂಡು. "ಮಾಲತ್ಯಾ: ಪ್ರಥಮಾವಲೋಕನದಿನಾದಾರಮ್ಯ" ಮಾಲತೀಂ 6-3.

ಆರಮಣ ಆರಂಭಣ (ನಂ) 1. ವಿಶ್ರಾಂತಿ, ವಿರಾಮ. ಆ + ರಮ (ಕೃಡಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ವಿಶ್ರಾಂತಿಸ್ಥಾನ. ಆರಮ್ಯತೇಷ್ವ-ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-119).

ಆರಮ್ಭ ಆರಂಭ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. ಆ + ರಮ (ರಾಮಸ್ಯೆ) "ಘ್" (3-3-124). ನುಮಾಗಮ: (3-2-61). "ಚಂಡಾರಮ್ಭ: ಸಮೀರೋ ಬಹತಿ ಪರಿದಿಶಂ ಭೀಕಿ ಸಂಪ್ರಮೇಣ" ವೇಣೀಂ 2-19. "ಆರಮ್ಭಂ ಪ್ರಥಮಂ ಚಕ್ರದೇವದುಂದುಭಯಾದಿವಿ" ರಘುಂ 10-36. 2. ಪ್ರಯತ್ನ. "ಸಕ್ತಾಙ್ಗುಲಿ: ಸಾಯಕಪುಷ್ಪಂ ಏವ ಚಿತ್ರಾಪಿತಾರಮ್ಭ ಇವಾವತಸ್ಥೇ" ರಘುಂ 2-31. 3. ನೇಗ, ತ್ವರಿ, ಶೀಘ್ರತೆ. 4. ಕೆಲಸ, ವ್ಯಾಪಾರ, ಕಾರ್ಯ. "ಆಗಮೈ: ಸದೃಶಾರಮ್ಭ: ಪ್ರಾರಮ್ಭ-ಸದೃಶೋದಯ:" ರಘುಂ 1-14. "ಅಯಥಾವಲಮಾರಮ್ಭ:" ಮಾಘಂ 2-94. 5. ಪ್ರಸ್ತಾವನೆ, ಪೀಠಿಕೆ. 6. ಅಹಂಕಾರ, ದರ್ಪ, ಕೊಬ್ಬು. 7. ವಧೆ, ಕೊಲ್ಲುವಿಕೆ. "ಆರಮ್ಭಸ್ತು ತ್ವರಾಯಾಂ ಸ್ಯಾದುದ್ಯಮೇ ವಧದರ್ಪಯೋ:" ಮೇದಿಂ. (ವಿಂ) 8. ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

ಆರಮ್ಭಣ ಆರಂಭಣ (ನಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. 2. ಪ್ರಯತ್ನ. 3. ಪ್ರಸ್ತಾವನೆ, ಪೀಠಿಕೆ. 4. ಅಹಂಕಾರ, ಗರ್ವ. ಆ + ರಮ (ರಾಮಸ್ಯೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 5. ಉಪಾದಾನ ಕಾರಣ. ಆರಮ್ಯತೇಜೇನ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-119).

ಆರಮ್ಭಣೀಯ ಆರಂಭಣೀಯ (ವಿಂ) ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. ಆ + ರಮ (ರಾಮಸ್ಯೆ) "ಅನೀಯ್" (3-1-96).

ಆರಮ್ಭವಾದ ಆರಂಭವಾದ (ಪುಂ) ನಿತ್ಯವಾದ ಪರಮಾಣುವೇ ಜಗತ್ತಿನ ಉತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣವೆಂದು ಹೇಳುವ ತಾರ್ಕಿಕರವಾದ. "ದ್ರವ್ಯಾಣಿ ದ್ರವ್ಯಾಂತರಮಾರಮ್ಭಂತೇ ಗುಣಾಶ್ಚ ಗುಣಾಂತರಮ್" ವೈಂ ಸೂಂ. "ಪೃಥಿವ್ಯಮ್ಭೋಷಿಣಿ-ವಾಯುನಾಂ ಕರ್ಮಸಂಯೋಜಿತಾಣವ:। ದ್ವ್ಯಣುಕಾದಿಕ್ರಮೇಣಾಂಡಮಾರಮ್ಭಂತೇ ಇದಂ ಮಹತ್"।

ಆರವ ಆರವ (ಪುಂ) ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ. ಆ + ರ (ಶಬ್ದೇ) "ಅಪ್" (3-3-49). "ಋಜ್ವೀರ್ದಧಾನೇರವಮತ್ಯ ಕಂಧರಾ-ಶ್ವಲಾವಚೂಡಾ: ಕಲಘರ್ಷರಾರವ:" ಮಾಘಂ 12-12.

ಆರಾ ಆರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚರ್ಮವನ್ನು ಕತ್ತರಿಸುವ (ಚರ್ಮಾರನ) ಉಳಿ. "ಆರಾ ಚರ್ಮಪ್ರಭೇದಿನ್ಯಾಂ ಪುಂಸಿ ಭೋಮೇ ಶನೇಶ್ವರೇ" ಮೇದಿಂ. 2. ಚಾವಟಿ.

ಆರಾತ್ ಆರಾತ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ದೂರದಲ್ಲಿ. 2. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ. ಆ + ರಾ (ದಾನೇ) "ಆತಿ:" ಬಾಹುಂ. "ಆರಾದ್ಧರಸಮೀಪಯೋ:" ಅಮಂ. "ಕಿ ತಾವತ್ಸರಸಿ ಸರೋಜಮೇತದಾರಾತ್" ಮಾಘಂ 6-29. "ಮರುಪ್ರಯುಕ್ತಾಶ್ಚ ಮರುತ್ಸಖಾಭಂ ತಮರ್ಚ್ಯಮಾರಾದಭಿವರ್ತಮಾನಮ್" ರಘುಂ 2-10.

ಆರಾತಿ ಆರಾತಿ (ಪುಂ) ಶತ್ರು, ವೈರಿ, ಹಗೆ. ಆ + ರಾ (ದಾನೇ) "ಕ್ತಿವ್" (3-3-104).

ಆರಾತೀಯ ಆರಾತೀಯ (ವಿಂ) 1. ದೂರದಲ್ಲಿರುವ. 2. ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರುವ. 3. ದೂರದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. 4. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. 5. ದೂರದಿಂದ ಬಂದ. 6. ಸಮೀಪದಿಂದ ಬಂದ. ಆರಾತ್ ಭವ: ಜಾತ: ಆಗತೋ ವಾ "ಛ:" (4-2-114).

ಆರಾತ್ರಿಕ ಆರಾತ್ರಿಕ (ನಂ) ಆರತಿ, ಮಂಗಳಾರತಿ, (ಕರ್ಪೂರ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ತಟ್ಟಿಯಲ್ಲಿಟ್ಟು ಮಾಡುವ) ನೀರಾಜನ.

ಆರಾಧಕ ಆರಾಧಕ (ವಿಂ) ಅರ್ಚಕ, ಪೂಜೆ ಮಾಡುವವನು. ಆರಾಧನೋತಿ--ಆ + ರಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) "ಫ್ವಲ್" (3-1-133).

ಆರಾಧನ ಆರಾಧನ (ನಂ) 1. ಪೂಜೆ, ಉಪಾಸನೆ. ಆ + ರಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). "ಅಧೋಪಧಾತಂ ಮಧವಾ ವಿಭೂತ್ಯಂ ಭವೋದ್ಭವಾರಾಧನಮಾದಿದೇಶ" ಕಿರಾಂ 11-20. 2. ಸೇವೆ, ಶುಕ್ರಾಪ್ತೆ. "ಆರಾಧನಾ-ಯಾಸ್ಯ ಸಖಿಸಮೇತಾಂ ಸಮಾದಿದೇಶ ಪ್ರಯತಾಂ ತನುಜಾಮ್" ಕುಮಾಂ 1-42. 3. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವಿಕೆ, ತೃಪ್ತಿಯುಂಟುಮಾಡುವಿಕೆ. "ಆರಾಧನಾಯ ಲೋಕಾನಾಂ ಮುಚ್ಛತೋ ನಾಸ್ತಿ ಮೇ ವ್ಯಥಾ" ತಂ ರಾಂ 1-12. 4. ಪೂಜಾ ಸಾಧನ, ಪೂಜೆಯ ಸಲಕರಣೆ. ಆರಾಧ್ಯತೇಜೇನ--ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-119). "ಇದಂ ತು ತೇ ಭಕ್ತಿಗ್ರಂಥಂ ಸತಾಮಾರಾಧನಂ ವಪು:" ಕುಮಾಂ 6-33. 5. ಪಾಕ, ಅಡಿಗೆ ಮಾಡುವುದು, ಬೇಯಿಸುವುದು. 6. ಸಂಸಾದನೆ, ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಲಾಭ. "ಆರಾಧನಂ ಸಾಧನೇ ಸ್ಯಾದವಾಸ್ತೌ ತೋಷಣೇಷಿ ಚ" ಅಮಂ. "ಆರಾಧನಂ ಚ ಪಚನೇ ಪ್ರಾಪ್ತೌ ಸಂತೋಷಣೇಷಿ ಚ" ಮೇದಿಂ.



ಆರಾಧನಾ ಆರಾಧನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೂಜೆ. 2. ಸೇವೆ, ಶುಕ್ರಾಪ್ತ. ಆ + ರಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್ "ಯುಚ್" (3-3-103)।

ಆರಾಧನೀಯ ಆರಾಧನೀಯ (ವಿಂ) ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ, ಪೂಜೆಗೆ ಯೋಗ್ಯನಾದ. ಆ + ರಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) "ಅನೀಯ್" (3-1-16)। "ಸೋಹಂ ಕಥಂ ನಾಮ ತವಾಚರೇಯ-ಮಾರಾಧನೀಯಸ್ಯ ಭೃತೇವಿಧಾತಮ್" ರಘುಂ 16-62।

ಆರಾಧಯಿತ್ ಆರಾಧಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸುವವನು, ಉಪಾಸಕ. 2. ಸೇವಿಸುವವನು, ಶುಕ್ರಾಪ್ತ ಮಾಡುವವನು. 3. ಪರಿಚಾರಕ. ಆ + ರಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) "ತುಚ್" (3-1-133)। "ನನ್ವಯಮಾರಾಧಯಿತಾ ಜನಸ್ತವ ಸಮೀಪೇ ವರ್ತತೇ" ಶಾಕುಂ 31. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-5)। ಆರಾಧಯಿತ್ರಿ ಆರಾಧಯಿತ್ರಿ.

ಆರಾಧಿತ ಆರಾಧಿತ (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಸೇವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ರಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "ರಾಧೇಯಮಾರಾಧಿತಜಾಮದಗ್ನಯಮ್" ಕಿರಾಂ 3-21।

ಆರಾಧ್ಯ ಆರಾಧ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ, ಪೂಜೆಗೆ ಯೋಗ್ಯನಾದ. ಆ + ರಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) "ಘ್ಯತ್" (3-1-124)। (ಅವ್ಯಂ) 2. ಪೂಜಿಸಿ, ಆರಾಧಿಸಿ. ಆ + ರಾಧ "ಲ್ಯಪ್" (3-1-37)। "ಆರಾಧ್ಯ ವಾ ಸಹಸ್ರಾಕ್ಷಮಯಶಃಶಲ್ಯಮುದ್ರೇ" ಕಿರಾಂ 11-79।

ಆರಾಮ ಆರಾಮ (ಪುಂ) 1. ಕೈಶೋಭ, ಉಪವನ, ಉದ್ಯಾನ. ಆರಮ್ಯತೇಜ-ಆ + ರಮ್ (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) "ಘಜ್" (3-3-121)। "ಯೋಜ್ತಃಸುಖೋಜ್ತರಾ-ರಾಮಸ್ತಥಾಂತರ್ಯೋತಿರೇವ ಸಃ" ಗೀತಾ 4-24। ರಾಂ ಭಾಂ। 2. ಕ್ರೀಡೆ, ವಿಹಾರ, ಆಟ. ಗೀತಾ 4-24। ಶಾಂ ಭಾಂ। 3. ಸಂತೋಷ. "ರಾಮಭದ್ರ ಗುಣಾರಾಮ ಭ್ರಾತೃಭಿಷ್ಟವಂ ಪುರಸ್ಕೃತಃ" ಮಂ ವೀಂ 7-40।

ಆರಾಮಿಕ ಆರಾಮಿಕ (ವಿಂ) ತೋಟದ ಕಾವಲುಗಾರ. ಆರಾಮೇ ನಿಯುಕ್ತಃ "ಠಕ್" (4-4-69)।

ಆರಾಲಿಕ ಆರಾಲಿಕ (ಪುಂ) 1. ಅಡಿಗೆಯವನು. (ವಿಂ) 2. ವಕ್ರಗತಿಯುಳ್ಳವನು. ಅರಾಲಂ ಕುಟಿಲಂ ಚರತಿ— "ಠಕ್" (4-4-6)।

ಆರಾವ ಆರಾವ (ಪುಂ) ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ. ಆ + ರ (ಶಬ್ದೇ) "ಘಜ್" (3-3-16)। "ನಾರಾವಂ ವ್ಯತನುತ ಮೇಖಲಾಕಲಾಪಃ ಕಸ್ಮಿನ್ ವಾ ಸಜಲಗುಣೇ ಗಿರಾಂ ಪಡ್ತವಮ್" ಮಾಘಂ 6-45।

ಆರಾವಿನ್ ಆರಾವಿನ್ (ವಿಂ) ಧ್ವನಿಯುಳ್ಳ, ಶಬ್ದ ದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಆರಾವಃ ಶಬ್ದೋಽಸ್ಯತ್ರ "ಇನಿಃ" (4-2-114)। "ಅನೇನ ತನುಮಧ್ಯಯಾ ಮಧುರನುಪುರಾರಾವಿಣಾ" ಮಾಲಂ 3-17।

ಆರಿತ್ರಿಕ ಆರಿತ್ರಿಕ (ವಿಂ) 1. ಹಡಗಿನ ಲಂಗರಿ ನಲ್ಲಿರುವ. 2. ಲಂಗರಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಅರಿತ್ರಿ ಭವಃ ಜಾತೋ ವಾ "ಠಜ್" "ಖಿಠಃ" ಚ (4-2-116)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಠಜಿ "ಡೀಪ್" (4-1-14)। ಆರಿತ್ರಿಕೋ ಆರಿತ್ರಿಕಃ. ಖಿಠೆ "ಠಾಪ್" ಆರಿತ್ರಿಕಾ ಆರಿತ್ರಿಕಾ.

ಆರಿತ್ಸಾ ಆರಿತ್ಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಂಸಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಆ + ರಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) + ಸನ್ "ಅಃ" (3-3-102)।

ಆರಿತ್ಸು ಆರಿತ್ಸು (ವಿಂ) ಹಿಂಸಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. ಆ + ರಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) + ಸನ್ "ಃ" (3-2-166)।

ಆರಿರಾತ್ಸಾ ಆರಿರಾತ್ಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂಜಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಆರಾಧುಮಿಚ್ಛಾ—ಆ + ರಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) + ಸನ್ "ಅಃ" (3-3-102)।

ಆರಿರಾತ್ಸು ಆರಿರಾತ್ಸು (ವಿಂ) ಪೂಜಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. ಆರಾಧುಮಿಚ್ಛುಃ—ಆ + ರಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) + ಸನ್ "ಃ" (3-2-166)।

ಆರಿರಾಧಯಿಷಾ ಆರಿರಾಧಯಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂಜೆ ಮಾಡಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಆರಾಧಯಿತುಮಿಚ್ಛಾ—ಆ + ರಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್ + ಸನ್ "ಅಃ" (3-3-102)।

ಆರಿರಾಧಯಿಷು ಆರಿರಾಧಯಿಷು (ವಿಂ) ಪೂಜೆಮಾಡಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. ಆರಾಧಯಿತುಮಿಚ್ಛುಃ—ಆ + ರಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್ + ಸನ್ "ಃ" (3-2-166)।

ಆರೋಹಣಕ ಆರೋಹಣಕ (ವಿಂ) ಅರೋಹಣ ರಾಜನಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅರೋಹಣೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ವುಜ್" (4-2-60)।

ಆರೂಕ್ಷಾ ಆರೂಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎರಲು ಇಚ್ಛೆ, ಹತ್ತಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಆರೂಕ್ಷುಮಿಚ್ಛಾ—ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಧುಭವಿ ಚ) + ಸನ್ "ಅಃ" (3-3-102)।

ಆರೂಕ್ಷು ಆರೂಕ್ಷು (ವಿಂ) ಎರಲು ಇಚ್ಛೆಯುಳ್ಳ, ಹತ್ತಲು ಇಷ್ಟವುಳ್ಳ. ಆರೂಕ್ಷುಮಿಚ್ಛುಃ—ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) + ಸನ್ "ಃ" (3-2-166)। "ತಮಾರೂಕ್ಷುಂ ತರಲಾಙ್ಗಧಿಪದಮ್" ಯಾದಂ 4-24। "ಕೇಲಾಸಗೌರಂ ವೃಷಮಾರೂಕ್ಷೋಃ ಪಾದಾರ್ಪಣಾನುಗ್ರಹಪೂತಪೃಷ್ಠಮ್" ರಘುಂ 2-34। "ಆರೂಕ್ಷೋಮುನೇಯೋಗಂ ಕರ್ಮ ಕಾರಣಮುಚ್ಯತೇ" ಗೀತಾ 6-3।

ಆರೂಡ ಆರೂಡ (ನಂ) 1. ಹತ್ತುವಿಕೆ, ಎರುವಿಕೆ. ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-3-114)।



“ಅತ್ಯಾರೂಢಂ ರಿಪೋ: ಸೊಡಂ ಚಂದನೇನೇವ ಭೋಗಿನ:” ರಘುಂ ೧೦-೪೨। (ವಿಂ) 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತಿದ, ಎರಿದ. ಕರ್ತಂ “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨)। “ಆರೂಢ: ಪತಿತ ಇತಿ ಸ್ವಸಂಭವೋಽಪಿ” ಮಾಘಂ ೮-೪೪। 3. ಉಂಟಾದ, ಉತ್ಪನ್ನವಾದ. “ತದಾಗಮಾರೂಢಗುರಪ್ರಹರ್ಷ:” ರಘುಂ ೪-೬೧। 4. ಹತ್ತುಲ್ಪಟ್ಟ, ಎರಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)।

“ಆರೂಢೋ ವೃಕ್ಷೋ ಭವತಾ” ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಆರೂಢಿ ಆರೂಢಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹತ್ತುವಿಕೆ, ಎರುವಿಕೆ, ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪)।

ಆರೇಕ ಆರೇಕ (ಪುಂ) 1. ಅಧಿಕ, ಹೆಚ್ಚಿಗೆ. 2. ಸಂಕೋಚಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಚಿಕ್ಕದುಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಆ + ರಿಚ (ವಿಯೋಜನಸಂಪರ್ಚನಯೋ:) “ಛ್” (೩-೩-೧೮)।

ಆರೇಚಿತ ಆರೇಚಿತ (ವಿಂ) ಸಂಕೋಚಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಿಕ್ಕದುಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ರಿಚ (ವಿಯೋಜನಸಂಪರ್ಚನಯೋ:) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)। “ಆರೇಚಿತಭ್ರೂವತುರೇ: ಕಟಾಕ್ಷೇ:” ಕುಮಾಂ ೩-೪।

ಆರೇವತ ಆರೇವತ (ಪುಂ) 1. ಕಡೆಗಡೆ. ಆರೇವಯತಿ ನಿ:ಸಾರಯತಿ ಮಲಮ್—ಆ + ರೇವ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ “ವಿಚ್” (೩-೨-೭೪)। ಆರೇವಮತತಿ—ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೇ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। (ನಂ) 2. ಕಡೆ ಕಾಯಿ.

ಆರೋಗ್ಯ ಆರೋಗ್ಯ (ನಂ) ರೋಗವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಅರೋಗಸ್ಯ ಭಾವ: “ಘ್” (೪-೧-೧೨೪)। “ಆರೋಗ್ಯಂ ಭಾಸ್ಕರಾದಿಚ್ಛೇತ್ ಮೋಕ್ಷಮಿಚ್ಛೇಜ್ಜನಾರ್ದನಾತ್। ಜ್ಞಾನಂ ಮಹೇಶ್ವರಾದಿಚ್ಛೇತ್ ಶ್ರಿಯಮಿಚ್ಛೇದ್ಭುತಾಶನಾತ್”। “ಧರ್ಮಾರ್ಥಕಾಮಮೋಕ್ಷಾಣಾಮಾರೋಗ್ಯಂ ಸಾಧನಂ ಯತ:”।

ಆರೋಗ್ಯವ್ರತ ಆರೋಗ್ಯವ್ರತ (ನಂ) ಆರೋಗ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ವ್ರತ. ಆರೋಗ್ಯಾರ್ಥಂ ವ್ರತಮ್। [ಈ ವ್ರತವನ್ನು ಮಾಡಿ ಶುಕ್ಲ ಸಪ್ತಮಿಯಿಂದ ಒಂದು ವರ್ಷಕಾಲ ಪ್ರತಿ ಶುಕ್ಲ ಸಪ್ತಮೀ ದಿನ ಆಚರಿಸಬೇಕು.] “ಅತ: ಪರಂ ಮಹಾರಾಜ ವ್ರತಮಾರೋಗ್ಯಸಂಜ್ಞಿತಮ್। ಸಿತಾಯಾಂ ಮಾಘಮಾಸಸ್ಯ ಸಪ್ತಮ್ಯಾಂ ಸಮುಪೋಷಿತ:। ಷಷ್ಠ್ಯಾಂ ಚೈವ ಕೃತಾಹಾರ: ಸಪ್ತಮ್ಯಾಮುಪವಾಸಕೃತ್। ಅಷ್ಟಮ್ಯಾಂ ಚೈವ ಭುಂಜೀತ್ ಎಷ್ಠಾ ಎವ ವಿಧಿರ್ಮತ:। ಅನೇನ ವತ್ಸರಂ ಪೂರ್ಣಂ ವಿಧಿನಾ ಯೋಽರ್ಚಯೇದ್ರವಿಮ್। ತಸ್ಯಾರೋಗ್ಯಂ ಧನಂ ಧಾನ್ಯಮಿಹ ಜನ್ಮನಿ ಜಾಯತೇ” ವರಾಹಪುಂ।

ಆರೋಗ್ಯಶಾಲಾ ಆರೋಗ್ಯಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಿಕಿತ್ಸಾ ಗೃಹ, ಆಸ್ಪತ್ರೆ. ಆರೋಗ್ಯಾರ್ಥಾ ಶಾಲಾ। “ಆರೋಗ್ಯಶಾಲಾಂ ಕುರ್ವೀತ ಮಹೋಷಧಿಪರಿಚ್ಛಿದಾಮ್। ವಿದಗಧವೇದಸಂಯುಕ್ತಾಂ ಬಹುನರಸ-ಸಂಯುತಾಮ್। ವೇದಸ್ತು ಶಾಸ್ತ್ರವಿಪ್ರಾಜ್ಞ: ದೃಷ್ಟೋಷಧಿಪರಾಕ್ರಮ:। ಔಷಧಿಮೂಲತತ್ವಜ್ಞ: ಸಮುದ್ರಣಕಾಲವಿತ್। ತ್ಯಾಗಿವದೇಹಿನಾಂ ತದ್ವದನುಕೂಲಪ್ರಿಯವದ:” ಎಂದು ಆಸ್ಪತ್ರೆಯ ನಿರ್ಮಾಣ ಕ್ರಮವು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ.

ಆರೋಗ್ಯಸ್ನಾನ ಆರೋಗ್ಯಸ್ನಾನ (ನಂ) ಆರೋಗ್ಯ ನಂತರ ಮಾಡುವ ಸ್ನಾನ. ಆರೋಗ್ಯನಿಮಿತ್ತಂ ಸ್ನಾನಮ್। ಆರೋಗ್ಯ ಆರೋಗ್ಯ (ವಿಂ) ಅನೆ ಕುದುರೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಮೇಲೆ ಹತ್ತುವವನು (ಸವಾರಿ ಮಾಡುವವನು). ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) “ತೃಚ್” (೩-೧-೧೩೩)। “ಆರೋಗ್ಯ: ಸಮವನತಸ್ಯ ಪೀತಶೇಷೇ” ಕಿರಾಂ ೭-೩೩।

ಆರೋಪ ಆರೋಪ (ಪುಂ) 1. ಹತ್ತಿಸುವಿಕೆ, ಎರಿಸುವಿಕೆ. ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) + ಣಿಚ್ “ಛ್” (೩-೩-೧೮)। ಪಾದೇಶ: (೭-೩-೪೩)। 2. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಮತ್ತೊಂದರ ಜ್ಞಾನ. ಇದು (1) ಕೇವಲಾರೋಪ ಮತ್ತು (2) ಆಹಾರ್ಯಾರೋಪಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. 1. ಭ್ರಾಂತಿ, ಅದಲ್ಲದ ವಸ್ತುವನ್ನು ಅದನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯುವುದು ಕೇವಲಾರೋಪ. ಭ್ರಾಂತಿಯೂ ತಾದಾತ್ಮ್ಯಾರೋಪ ಮತ್ತು ಸಂಸರ್ಗಾರೋಪಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಶುಕ್ತಿಯನ್ನು ರಜತವನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯುವುದು ತಾದಾತ್ಮ್ಯಾರೋಪ. ಜಪಾಕುಸುಮದ ರಕ್ತವರ್ಣವನ್ನು ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಸ್ಪಟಿಕದಲ್ಲಿ ಹೇಳುವುದು ಸಂಸರ್ಗಾರೋಪ. 2. ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳ ಭೇದಜ್ಞಾನವಿದ್ದರೂ ಒಂದರಲ್ಲಿ ಇಲ್ಲದ ಮತ್ತೊಂದರ ಧರ್ಮವನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸಿ ಹೇಳುವುದು ಆಹಾರ್ಯಾರೋಪ. “ಅಯಂ ಹಿ ಭೂರ್ಜಿ: ಸಾಕ್ಷಾತ್ಸೇನ ದಾಧಾ: ಪುರ: ಕ್ಷಣಾತ್” ಎಂಬಲ್ಲಿ ರಾಜ ಮತ್ತು ಧೂರ್ಜಟಿ ಇವರಿಗೆ ಭೇದವು ತೋರಿಬಂದರೂ ರಾಜನಲ್ಲಿಲ್ಲದ ಧೂರ್ಜಟಿತ್ವರೂಪ ಧರ್ಮವನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸಿ ಹೇಳುವುದರಿಂದ ಆಹಾರ್ಯಾರೋಪ. 3. ಗುಣದಲ್ಲಿ ದೋಷವನ್ನು ಹೇಳುವುದು. 4. ಗಿಡ ಮುಂತಾದುವನ್ನು ನೆಟ್ಟು ಬೆಳೆಸುವುದು. 5. ಮೇಲೆ ಇಡುವುದು, ಮೇಲೆ ಹಾಕುವುದು. 6. ತಪ್ಪುಹೊರಿಸುವುದು.

ಆರೋಪಕ ಆರೋಪಕ (ವಿಂ) 1. ಎರಿಸುವವನು. 2. ಗಿಡಗಳನ್ನು ನೆಟ್ಟು ಬೆಳೆಸುವವನು. ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) + ಣಿಚ್ “ಛ್” (೩-೧-೧೩೩)। 3. ಎತ್ತಿ ಇಡುವವನು, ಮೇಲೆ ಇರಿಸುವವನು.



**ಆರೋಪಣ ಆರೋಪಣ** (ನಂ) ಹತ್ತಿಸುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎರಿಸುವುದು. ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। ಮುಂತಾಗಿ "ಆರೋಪ" ಪದದ ಅರ್ಥ. "ಜಾಯಾಪತಿ ಲೌಕಿಕಮೇಷಣೀಯ-ಮಾರ್ಗಾಕ್ಷಿತಾರೋಪಣಮನ್ವಮುತಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೮೮।

**ಆರೋಪಣೀಯ ಆರೋಪಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಆರೋಪಿಸಲ್ಪಡುವ, ಆಪಾದಿಸಲ್ಪಡುವ, ತಪ್ಪುಹೊರಿಸಲ್ಪಡುವ. ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) + ಣಿच् "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬)। 2. ಎರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹತ್ತಿಸಲ್ಪಡುವ.

**ಆರೋಪ್ಯ ಆರೋಪ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಆರೋಪಿಸಲ್ಪಡುವ, ಕಲ್ಪಿಸಲ್ಪಡುವ. ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) + ಣಿच् "ಯತ್" (೩-೧-೧೭)। ಮುಖ್ಯಚಂದ್ರ: ಎಂಬಲ್ಲಿ ಮುಖದಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರತ್ವವು (ಚಂದ್ರನ ಧರ್ಮವು) ಆರೋಪ್ಯವು. 2. ಎರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹತ್ತಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಭ್ರಾಂತಿಯಿಂದ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ.

**ಆರೋಪಿತ ಆರೋಪಿತ** (ವಿಂ) 1. ಆರೋಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಲ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಎರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹತ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ನೆಟ್ಟು ಬೆಳೆಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) + ಣಿच् "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 4. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಪಾಭಿಪಶ್ಯನ್ನಿವ ವಿವಿಧಿಃ ಪುರ: ಪುರೋಧಸಾರೋಪಿತಹೇತಿಸಹಿತ:" ಕಿರಾಂ ೩-೫೬। 5. ಭ್ರಾಂತಿಯಿಂದ ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ತಪ್ಪಾಗಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಆರೋಹ ಆರೋಹ** (ಪುಂ) 1. ಹತ್ತುವುದು, ಎರುವುದು. 2. ಎತ್ತರ, ಔನ್ನತ್ಯ. 3. ಮೊಳಕೆ. 4. ಅಹಂಕಾರ, ಗರ್ವ, ಸೊಕ್ಕು. 5. ಉದ್ಧ, ನೀಳ. 6. (ಸ್ತ್ರೀಯರ) ನಿತಂಬ, ಹೆಂಗಸಿನ ಕಟಿಪ್ರದೇಶ, ಸೊಂಟ. 7. ಇಳಿಯುವುದು, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬರುವುದು. 8. (ಆನೆ ಕುದುರೆ ಮೊದಲಾದವುಗಳ ಮೇಲೆ) ಸವಾರಿಮಾಡುವವನು. ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಘನ್" (೩-೩-೧೮)। "ಆರೋಹಸ್ವವರೋಹೇ ಚ ಧರಾರೋಹಾಕಟಾವಪಿ। ಆರೋಹಣೇ ಗಜಾರೋಹೇ ದೀರ್ಘತ್ವೇ ಚ ಸಮುಚ್ಛ್ರಯೇ" ಮೇದಿಂ।

**ಆರೋಹಣ ಆರೋಹಣ** (ನಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತುವುದು. ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಆರೋಹಣಾರ್ಯ ನವಯೌವನೇನ ಕಾಮಸ್ಯ ಸೋಪಾನಮಿವ ಪ್ರಯುಕ್ತಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೩೯। 2. ಬೀಜವು ಅಂಕುರಿಸುವುದು, ಮೊಳಕೆ ಹೊರಡುವುದು. 3. ಸೋಪಾನ, ಮೆಟ್ಟಿಲು, ಹಂತ. ಆರೋಹಣೇನ-ಆ + ರಹ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ಆರೋಹಣಂ ಸ್ವಾತ್ಸೋಪಾನೇ ಸಮಾರೋಹೇ ಪ್ರಾರೋಹಣೇ" ಮೇದಿಂ। 4. ಸಂಗೀತದ ಸ್ವರಗಳ ಎರಿಕೆ.

**ಆರೋಹಣೀಯ ಆರೋಹಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಹತ್ತಲ್ಪಡುವ, ಹತ್ತಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬)। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತಲು ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವ ಸಾಧನ. ಆರೋಹಣಂ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಛ:" (೪-೧-೧೧೧)।

**ಆರೋಹಿನ್ ಆರೋಹಿನ್** (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತುವವನು, ಎರುವವನು. ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫)। ಆರೋಹಿಣಿ ಆರೋಹಿಣೀ.

**ಆರೋಹಿಣಿ ಆರೋಹಿಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ಜ್ಯೋತಿಷೋಕ್ತವಾದ) ಸೂರ್ಯಾದಿ ಗ್ರಹಗಳ ದಶೆ. ಸೂರ್ಯದಶೆಯಿಂದ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಮುಂದಿನ ಚಂದ್ರಾದಿ ಗ್ರಹಗಳ ದಶೆಗಳು ಆರೋಹಿದಶೆಗಳು. ಶುಕ್ರದಶೆಯಿಂದ ಪುನಃ ಸೂರ್ಯಾದಿ ದಶೆಗಳು ಬಂದರೆ ಅವರೋಹಿದಶೆಗಳು.

**ಆರ್ಕಾಯಣ ಆರ್ಕಾಯಣ** (ನಂ) 1. ಸೂರ್ಯನ ಗತಿ, -ಸಂಚಾರ. (ವಿಂ) 2. ಸೂರ್ಯವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಅಕಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಂ "ಫನ್" (೪-೧-೧೧೦)।

**ಆರ್ಕಿ ಆರ್ಕಿ** (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯನ ಪುತ್ರ - (1) ಶನಿವೇವ, (2) ಯಮ, (3) ಕರ್ಣ, (4) ಸುಗ್ರೀವ ಮತ್ತು (5) ವೈವಸ್ವತಮನು. (ಪುಂ ಛಿಂ ೪ಂ) (6) ಅಶ್ವಿನೀ ಕುಮಾರರು. ಅಕಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಇನ್" (೪-೧-೧೧೫)।

**ಆರ್ಷ ಆರ್ಷ** (ವಿಂ) ನಕ್ಷತ್ರ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಋಷಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ಆರ್ಷ್ಯ ಆರ್ಷ್ಯ** (ವಿಂ) ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿರುವ, ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಋಷೇ ಭವ: "ಯನ್" (೪-೧-೧೦೫)।

**ಆರ್ಗಲ ಆರ್ಗಲ** (ಸ್ತ್ರೀಂ ನಂ) ಅಗಲ, ಬಾಗಿಲಿಗೆ ಹಾಕುವ ತಡೆಯ ಮರ, ತಾವಳು. ಅರ್ಗಲ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್"। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೧೫)। ಆರ್ಗಲಿ ಆರ್ಗಲೀ.

**ಆರ್ಥ ಆರ್ಥ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚೂಪಾದ ಮೂತಿಯುಳ್ಳ ಹಳದಿಬಣ್ಣದ ಒಂದು ಜಾತಿ ಜೇನುಹುಳ.

**ಆರ್ಥ್ಯ ಆರ್ಥ್ಯ** (ನಂ) 1. ಹಳದಿ ಬಣ್ಣದ ಜೇನುಹುಳುವಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ ಜೇನುತುಪ್ಪ. 2. ಜರತ್ತಾರು ಮುಷಿಯ ಆಶ್ರಮದ ಹಿಪ್ಪೆಮರದಿಂದ ಹೊರಟ ರಸ (ಹಾಲು). "ಮಧುಕವಕ್ಷಾ ನಿಯಾಸಿಂ ಜರತ್ಕಾರ್ವಾಶ್ರಮೋದ್ಭವಾ:। ಸವನ್ತ್ಯಾರ್ಥ್ಯ ತದಾಖ್ಯಾತಂ ಸ್ವೇತಕಂ ಮಾಲವೇ ಪುನ:। ತೀಕ್ಷ್ಣತುಣ್ಡಾಸ್ತು ಯಾ: ಪೀತಾ: ಮಕ್ಷಿಕಾ: ಷಡ್ಪದೋಪಮಾ:। ಆರ್ಥಾಸ್ತಾ: ತತ್ಕೃತಂ ಯತ್ ಸ್ಯಾದಾರ್ಥ್ಯಮಿತ್ಯಪರೇ ಜಗು:"।



ಆರ್ಚ ಆರ್ಚ (ವಿಂ) ಪೂಜಾಕಾರ್ಯವುಳ್ಳ, ಭಕ್ತಿಯುಳ್ಳ.  
ಅರ್ಚಿಸ್ತುಸ್ಯ "ಞ:" (೪-೨-೧೦೧)।

ಆರ್ಚಿಕ ಆರ್ಚಿಕ (ವಿಂ) 1. ಮುಗ್ಧೇದದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ,  
ಮುಗ್ಧೇದಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಇತಿ ಭವ: "ಠಕ್"  
(೪-೩-೭೨)। 2. ಮುಕ್ತುಗಳ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ. ಇತಿ  
ವ್ಯಾಖ್ಯಾನೋ ಗ್ರಂಥ: "ಠಕ್" (೪-೩-೭೨)।

ಆರ್ಚಿಕ ಆರ್ಚಿಕ (ಪುಂ) 1. ಮುಚ್ಚಿಕಪರ್ವತ.  
(ವಿಂ) 2. ಮುಚ್ಚಿಕಪರ್ವತಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ,  
ಮುಚ್ಚಿಕ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಇತಿ ಭವ: "ಅಞ್"  
(೪-೩-೪೩)।

ಆರ್ಚಿಕ ಆರ್ಚಿಕ (ವಿಂ) ಸಂಪಾದಿಸುವವನು. ಆ +  
ಅರ್ಚ (ಅರ್ಚನೆ) "ಞ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಪಾರ್ಥ ಏವ  
ಸಹಜೇಷ್ವಲಿಲೇಷು ಪ್ರಾಯಶೋ ಯುಧಿ ಬಲಂ ಶ್ರುತವತ್ಯಾ:। ಅನ್ವಮ್-  
ದಧಿಕಮೀಕ್ಷಣವೃಷ್ಟಿರಾರ್ಚಕಾಂಶಮಿವ ರಾಜಸುತಾಯಾ:" ಚಂ ಭಾಂ।

ಆರ್ಚಿಕ ಆರ್ಚಿಕ (ನಂ) 1. ಸರಳತೆ, ನೇರವಾಗಿರುವಿಕೆ.  
ಇತಿ ಭವ: "ಅಞ್" (೪-೧-೧೨೨)। "ಇಜುತಾ ವಕ್ತಾಂ  
ಪ್ರಾಪ ವಕ್ತಾ ಚ ತಥಾರ್ಚವಮ್" ಚಂ ರಾಂ। 2. ಪ್ರಾಮಾಣಿ-  
ಕತೆ, ವಂಚನೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ವಿಧೇಯತೆ,  
ನಮ್ರತೆ. "ದದಶಂ ಗೋಪಾನುಪಧೇನು ಪಾಂಡವ: ಕೃತಾನುಕಾರಾನಿವ  
ಗೋಭಿರಾರ್ಚವೇ" ಕಿರಾಂ ೪-೧೩।

ಆರ್ಚನಾಯನ ಆರ್ಚನಾಯನ (ಪುಂ) ಆರ್ಚನನ ಗೋತ್ರ  
ದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಅರ್ಚನಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಮ್ "ಫಞ್"  
(೪-೧-೧೧೦)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಫಾಞ್" (೪-೧-೪)।  
ಆರ್ಚನಾಯನಾ ಆರ್ಚನಾಯನಾ.

ಆರ್ಚನಿ ಆರ್ಚನಿ (ಪುಂ) ಆರ್ಚನನ ಮಗ, ಅಭಿಮನ್ಯು.  
ಅರ್ಚನಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಇಞ್" (೪-೧-೯೬)।

ಆರ್ತ ಆರ್ತ (ವಿಂ) 1. ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನೋಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ತೊಂದರೆ ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ದುಃಖಗೊಂಡ, ಕಷ್ಟಕ್ಕೆ  
ಸಿಲುಕಿದ. "ತದೀಯಮಾಕ್ರಂದಿತಮಾರ್ತಸಾಧೋಗುಹಾನಿಬದ್ರಪ್ರತಿ-  
ಶಬ್ದದೀರ್ಘಮ್" ರಘುಂ ೨-೨೮। 3. ರೋಗಿ, ವ್ಯಾಧಿಗ್ರಸ್ತ.  
ಆ + ಇ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ದ್ವೇಷ್ಯೋಽಪಿ  
ಸಂತ: ಶಿಷ್ಟಸ್ತಸ್ಯಾರ್ತಸ್ಯ ಯಥೋಪಮಮ್" ರಘುಂ ೧-೨೮।

ಆರ್ತಗಲ ಆರ್ತಗಲ (ಪುಂ) ನೀರಿ ಹೂವಿನ ಗೋರಂಟಿ.

ಆರ್ತಪಾಣಿ ಆರ್ತಪಾಣಿ (ಪುಂ) ಮತುಪರ್ಣಮಹಾ  
ರಾಜನ ಮಗ. ಇತಿ ಭವ: "ಇಞ್" (೪-೧-೯೫)।

ಆರ್ತವ ಆರ್ತವ (ನಂ) 1. ಮುಟ್ಟು, ರಜಸ್ಸು,  
(ಸ್ತ್ರೀಯರ) ಮತುಕಾಲದ ರಕ್ತಸ್ರಾವ. ಇತಿ ಭವ: "ಅಞ್"  
(೪-೪-೩೮)। "ನೋಪಗಚ್ಛೇತ್ಪ್ರಮತ್ತೋಽಪಿ ಸ್ತ್ರಿಯಮಾರ್ತವದಶನೇ"

ಮನುಂ ೪-೪೦। (ವಿಂ) 2. (ವಸಂತಾದಿ) ಮತು  
ಸಂಬಂಧವಾದ, ಕಾಲಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಇತಿ ಭವ: "ಅಞ್"  
(೪-೧-೧೦೫)। "ಅವಧೀರಿತಾರ್ತವಗುಣಂ  
ಸುಖತಾಂ ನಯತಾ ಕ್ವಾಂ ನಿವಯಮಂಶುಮತ:" ಕಿರಾಂ ೬-೨೫।

ಆರ್ತಿ ಆರ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೀಡೆ, ತೊಂದರೆ. 2. ನೋವು,  
ದುಃಖ. 3. ಧನುಸ್ಸಿನ ಅಗ್ರಭಾಗ, ಬಿಲ್ಲಿನ ತುದಿ.  
4. ವಿನಾಶ, ಅಳಿವು, ಪ್ರಳಯ. "ಆ + ಇ (ಗತೌ)  
"ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। "ಆಪನ್ನಾರ್ತಿಪ್ರಶಮನಫಲಾ:  
ಸಂಪದೋ ಹ್ಯುತ್ತಮಾನಾಮ್" ಮೇಘಂ ೧-೫೩। 5. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ.

ಆರ್ತಿಜ ಆರ್ತಿಜ (ವಿಂ) ಮತ್ತಿಕ್ಕಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
ಇತಿ ಭವ: "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)।

ಆರ್ತಿಜಿನ ಆರ್ತಿಜಿನ (ಪುಂ) 1. ಯಜಮಾನ,  
ಯಾಗಮಾಡುವವನು. ಇತಿ ಭವ: "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)।  
ಯಾಗಮಾಡಿಸುವವನು. ಇತಿ ಭವ: "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)।  
ಯಾಗಮಾಡಿಸುವವನು. ಇತಿ ಭವ: "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)।  
ಯಾಗಮಾಡಿಸುವವನು. ಇತಿ ಭವ: "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)।

ಆರ್ತಿಜ್ಯ ಆರ್ತಿಜ್ಯ (ನಂ) ಮತ್ತಿಕ್ಕಿನ ಕಾರ್ಯ,  
ಯಾಗಮಾಡಿಸುವವನ ಕೆಲಸ. ಇತಿ ಭವ: "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)।  
ಯಾಗಮಾಡಿಸುವವನ ಕೆಲಸ. ಇತಿ ಭವ: "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)।  
ಯಾಗಮಾಡಿಸುವವನ ಕೆಲಸ. ಇತಿ ಭವ: "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)।

ಆರ್ಥ ಆರ್ಥ (ವಿಂ) ಉಪಾತ್ತರಬ್ಧದಿಂದ ಉಂಟಾಗದೆ  
ಆರ್ಥದಿಂದ ಉಂಟಾದ, ಆರ್ಥದಿಂದ ಬಂದ. ಅರ್ಥ-  
ದಾಗತ: "ಅಞ್" (೪-೩-೭೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಫಿಞ್"  
(೪-೧-೧೫)। ಅರ್ಥಿ ಉಪಮಾ। 2. ಅರ್ಥಲಬ್ಧವಾದ  
ವ್ಯಂಜನೆ. ವ್ಯಂಜನೆಯು ಶಾಬ್ದಿ ಮತ್ತು ಅರ್ಥಿ ಎಂದು  
ಎರಡು ವಿಧ. ಕಾಲದೇಶಾನುಸಾರವಾಗಿಯೂ, ಕಾಕು  
ಅಥವಾ ಇತರ ವ್ಯಾಪಾರಗಳಿಂದಲೂ ಹೇಳತಕ್ಕ  
ಮಾತೆಗೆ ಬೇರೊಂದು ಅರ್ಥವುಂಟಾಗುವುದಾದರೆ ಅಲ್ಲಿ  
ವ್ಯಂಜನೆಯು ಅರ್ಥಲಬ್ಧವಾದುದು. "ವಕ್ತೃಬೋಧ್ಯ-  
ವಾಕ್ಯಾನಾಮನ್ಯಸನ್ನಿಧಿವಾಚ್ಯಯೋಃ ಪ್ರಸ್ತಾವದೇಶಕಾಲಾನಾಂ ಕಾಕೋ-  
ಶ್ರೇಷ್ಠಾದಿಕಸ್ಯ ಚ। ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯಾದನ್ಯಮಯಂ ಯಾ ಬೋಧಯೇತ್ಸಾರ್ಥ-  
ಸಮ್ಮವಾ" ಸಾಂ ೬೦ ೨-೧೬, ೧೭।

ಆರ್ಥಿಕ ಆರ್ಥಿಕ (ವಿಂ) 1. ಅರ್ಥದಿಂದ ಉಂಟಾದ,  
ಅರ್ಥದಿಂದ ಬಂದ. ಅರ್ಥದಾಗತ: "ಠಕ್" (೪-೩-೭೪)।  
2. ಅರ್ಥವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ, ದ್ರವ್ಯ (ಧನ)ವನ್ನು  
ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ. ಅರ್ಥ ಗುಣಾತಿ-ಅರ್ಥ "ಠಕ್"  
(೪-೪-೪೦)।

ಆರ್ಥ ಆರ್ಥ (ವಿಂ) 1. ನೆನೆದಿರುವ, ಒದ್ದೆಯಾದ,  
ತೇವವಾದ. ಅರ್ಥೇ ಸ್ಮ-ಅರ್ಥ (ಗತೌ) "ರ್ಕ್" ದೀರ್ಘ



(೩೦ ೨-೧೮)। "ಪ್ರತ್ಯಸಂ ವಿಲುಲಿತಮುಖಂ ಚಿರಾಯ  
ಸ್ನಾನಾದ್ರೈ ವಪುರ್ದವಾಪಯತಿಕಲೇಷಾ" ಮಾಘಂ ೮-೬೮।  
"ಆದ್ರಾಕ್ಷಿತಾರೋಪಣಮನ್ವಭೂತಾಂ" ರಘುಂ ೭-೨೮। 2. ರಸ  
ವತ್ತಾದ, ಹಸಿಯಾದ, ಸಾರವತ್ತಾದ. "ಆದ್ರೈ ದ್ರವ್ಯ  
ದಿವಾ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಸರಸಂ ನೀರಸಂ ತಥಾ। ಸದ್ಗುಣಂ ಗುಣರಸಕಂ  
ದಿವಾ ನೀರಸಮುಚ್ಯತೇ"। 3. ಮೃದುವಾದ, ಕಠಿನವಲ್ಲದ.  
"ಪ್ರೇಮಾದ್ರೈ: ಪ್ರಣಯಸ್ಪೃಶ: ಪರಿಚಯಾದುದ್ಗಾಢರಾಗೋದಯಾ:"  
ಮಾಲತೀಂ ೫-೭। 4. ಹೊಸದಾದ, ಈಚಿನದಾದ.  
"ತೇ ಪುತ್ರಯೋರ್ನಿಶ್ಚಿತಶಸ್ತ್ರಮಾಗಿನಾದ್ರೈನಿವಾಜ್ಞೇ ಸದಯಂ ಸ್ಪೃಶನ್ಯೌ"  
ರಘುಂ ೧೪-೪।

ಆದ್ರೈಕ ಅರ್ಥಕ (ವಿಂ) 1. ಆದ್ರೈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ  
ದವನು. ಆದ್ರೈಯಾ ಜಾತ: "ಬುನ್" (೪-೩-೨೮)। (ನಂ)  
2. ಹಸಿರುಂಟಿ. ಆದ್ರೈಯತಿ ಜಿಹ್ವಾಮ್ "ಕುನ್" (೩೦  
೨-೩೨)। ಆದ್ರೈಯಾ ಭೂಮಿ ಜಾತಂ ವಾ।

ಆದ್ರೈಪದೀ ಅರ್ಥಪದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒದ್ದೆಯಾದ ಕಾಲು  
ಗಳುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು.

ಆದ್ರೈಮಾಘಾ ಅರ್ಥಮಾಘಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡುದ್ದಿನ ಗಿಡ.

ಆದ್ರೈಶಾಕ ಅರ್ಥಶಾಕ (ನಂ) ಹಸಿರುಂಟಿ.

ಆದ್ರೈಲುಖಕ ಅರ್ಥಲುಖಕ (ಪ್ರಂ) ಕೇಶುಗ್ರಹ.

ಆದ್ರೈ ಅರ್ಥ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆರಿದ್ರಾನಕ್ಷತ್ರ, ಅತ್ತಿನಿ  
ಮೊದಲುಗೊಂಡು ಆರನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ. ಇದು ರುದ್ರ  
ದೇವತಾಕವಾದುದು. ಆದ್ರೈನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿ  
ದವನು ಮೂರ್ಖನೂ ಗರ್ವಶಾಲಿಯೂ ಕೃತಘ್ನನೂ  
ಕ್ರೂರನೂ ವಾಪಕಾರ್ಯನಿರತನೂ ಆಗುತ್ತಾನೆ.  
"ಶಠಗಾವಿತ: ಕೃತಘ್ನೋ ಹಿಸ್ತ: ಪಾಪಶ್ಚ ರೋದ್ಧಕ್ಷೋ" ಬೃಹಂ।  
ಈ ನಕ್ಷತ್ರವು ಪ್ರಯಾಣಕ್ಕೆ ನಿಷಿದ್ಧವಾದುದು. ಆದರೆ  
21 ಘಂಟೆಯ ಮೇಲೆ ತಿಲಪಿಷ್ಪಭಕ್ಷಣಮಾಡಿ  
ಹೊರಟರೆ ಶುಭವು. ಆದ್ರೈನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಪ್ರಥಮ  
ರಜಸ್ವಲೆಯಾದರೆ ಕನ್ಯೆಯು ದರಿದ್ರಳಾಗುವಳು.  
ಸೂರ್ಯನು ಹಗಲಿನಲ್ಲಿ ಆರಿದ್ರಾ ಪ್ರವೇಶಮಾಡಿದರೆ  
ಜಗತ್ತಿಗೆ ತೊಂದರೆ. ಸಸ್ಯನಾಶ, ಅಲ್ಪವೃಷ್ಟಿ. ರಾತ್ರಿ  
ಪ್ರವೇಶಿಸಿದರೆ ಕ್ಷೇಮ, ಸುಭಿಕ್ಷ, ಸಸ್ಯವೃದ್ಧಿ ಮತ್ತು  
ಸುವೃಷ್ಟಿಯುಂಟಾಗುವುದು.

ಆರ್ಯಾತುಕ ಅರ್ಥಧಾತುಕ (ನಂ) (ತಿಡ್ ಮತ್ತು ಶ ಕಾರ  
ಇತ್ಯಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು) ಧಾತುವಿನ  
ಮುಂದೆ ವಿಧಿಸಲ್ಪಡುವ ಪ್ರತ್ಯಯ. [ತಿಪ್ ಮೊದಲು  
ಗೊಂಡು ಮಹಿಡ್ ವರೆಗಿನ ಹದಿನೆಂಟು ಆಖ್ಯಾತ ಪ್ರತ್ಯಯ  
ಗಳು ತಿಡ್]।

ಆರ್ಯಾತುಕ ಅರ್ಥರಾತ್ರಿಕ (ವಿಂ) ಅರ್ಥರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ  
ಉಂಟಾದ. ಅರ್ಯಾತುಕ ಭವ:।

ಆರ್ಯಕ ಅರ್ಥಕ (ಪ್ರಂ) 1. ವೈಶ್ಯ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿ  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದು ಸುಸಂಸ್ಕೃತ  
ನಾದವನು, ಅಂಬಷ್ಯನೆಂಬ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು.  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಕೀಷ್" (೪-೧-೬೩)। ಆರ್ಯಕೀ  
ಅರ್ಥಕೀ. 2. ಜಮೀನನ್ನು ಸಾಗುವಳಿಮಾಡಿ  
ಯಜಮಾನನಿಂದ ಅರ್ಥಭಾಗ ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಸಡೆ  
ಯುವ ಹಕ್ಕುಳ್ಳ ರೈತ. ಅರ್ಯಮಹತಿ "ಠಾ" (೫-೧-೬೩)।  
"ಆರ್ಯಕ: ಕುಲಮಿತ್ರಂ ಚ ಗೋಪಾಲೋ ದಾಸನಾಪಿತೌ" ಮನುಂ  
೪-೨೫೩।

ಆರ್ಯ ಅರ್ಥ (ಪ್ರಂ) 1. ಉಪಾಧ್ಯಾಯ, ಗುರು.  
2. ಸ್ನೇಹಿತ, ಮಿತ್ರ. 3. ಸ್ವಾಮಿ, ಯಜಮಾನ.  
೪ (ಗತೀ) "ಘತ್" (೩-೧-೧೨೪)। 4. ಶ್ವಶೂರ,  
ಮಾವ. 5. ಕಂಚುಕಿ. (ವಿಂ) 6. ಕುಲೀನ,  
ಶ್ರೇಷ್ಠ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. 7. ಮಾನ್ಯ, ಪೂಜ್ಯ.  
8. ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದವನು. 9. ಉದಾರ ಚಿತ್ತವುಳ್ಳವನು.  
10. ಸಾಧು, ಶಾಂತಚಿತ್ತ. 11. "ಆರ್ಯ: ಸಾಧೋ  
ಸೌವಿದಲ್ಲೇಷಿ" ವಿಷ್ಣುಂ। 12. ಸದಾಚಾರಸಂಪನ್ನ,  
ಕರ್ತವ್ಯವನ್ನು ಬಿಡದೆ ನಿಷಿದ್ಧವಾದುದನ್ನು ಮಾಡದೆ  
ಇರುವವನು. "ಕರ್ತವ್ಯಮಾಚರನ್ ಕಾರ್ಯಮಕರ್ತವ್ಯಮನಾಚರನ್।  
ತಿಷ್ಠತಿ ಪ್ರಕೃತಾಚಾರೇ ಸ ವಾ ಆರ್ಯ ಇತಿ ಸ್ಮೃತ:"।  
"ಗ್ರಹೀತುಮಾರ್ಯಾನ್ ಪರಿಚಯಯಾ ಮುಹುರ್ಮಹಾನುಭಾವಾ ಹಿ ನಿತಾಂತ-  
ಮರ್ಶಿನ:" ಮಾಘಂ ೧-೧೭। 13. ನ್ಯಾಯವಾದ.  
14. ಹೊಂದಲ್ಪಡತಕ್ಕವನು. 15. ನಾಟಕದಲ್ಲಿ  
ಪೂಜ್ಯನ ಸಂಬೋಧನೆ; ನಟ ಮತ್ತು ಸೂತ್ರಧಾರರು  
ಪರಸ್ಪರವಾಗಿಯೂ ಹಿರಿಯನನ್ನು ಕಿರಿಯನೂ ಇತರ  
ಸಾಮಾನ್ಯ ಜನರು ಅಮಾತ್ಯನನ್ನೂ "ಆರ್ಯ" ಪದದಿಂದ  
ಕರೆಯಬೇಕು. "ರಾಜನಿತ್ಯುಷಿಭಿರ್ವಿಚ್ಯ ಸೌಪತ್ಯಪ್ರತ್ಯಯೇನ  
ಚ। ಸ್ವೇಚ್ಛಯಾ ನಾಮಭಿವಿಪ್ರ: ವಿಪ್ರ ಆರ್ಯೇತಿ ಚೇತರ:।  
ವಾಚ್ಯೋ ನದೀಸುತ್ರಧಾರೋ ಆರ್ಯನಾಮ್ನಾ ಪರಸ್ಪರಮ್" ಸಾಂ ೬೦  
೬-೧೪೫, ೪೬, ೪೭। (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆರ್ಯಾ ಅರ್ಯಾ.  
1. ಪೂಜ್ಯಳು. "ಆರ್ಯಾಪ್ಯರ್ಹತೀ ತತ್ರ ವ್ಯಾಪಾರಂ ಕರ್ತುಮಹತಿ"  
ಕುಮಾಂ ೬-೩೨। 2. ಶ್ರೇಷ್ಠ ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿಯುಳ್ಳ  
ಹೆಂಗಸು. 3. ಸಾರ್ವತ್ರಿಕ. "ಗೌರೀಮಾರ್ಯಾ ತ್ರಿಪುಲ್ವೇಷ  
ಕುಲೀನವ್ಯಾಪ್ಯಸಾಕ್ಷುಃ" ನಾನಾಶಂಕಂ।

ಆರ್ಯಕ ಅರ್ಥಕ (ಪ್ರಂ) 1. ಪಿತಾಮಹ, ತಂದೆಯ  
ತಂದೆ. 2. ಮಾತಾಮಹ, ತಾಯಿಯ ತಂದೆ.



“ಆರ್ಯಕೇಣ ಚ ದೃಷ್ಟಃ ಸ ಪೃಥಾಽಯಾ ಆರ್ಯಕೇಣ ಚ | ತದಾ  
ದೌಹಿತ್ರದೌಹಿತ್ರಃ ಪರಿಷ್ವಕ್ತಃ ಸುಪೀಡಿತಮ್” ಭಾಂ. (ವಿಂ)  
3. ಪೂಜ್ಯ, ಗೌರವಾರ್ಹ. ಆರ್ಯ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್”  
ಇತ್ಯಾದಿ “ಆರ್ಯ” ಪದದ ಅರ್ಥ.

ಆರ್ಯಗೃಹ ಆರ್ಯಗೃಹ್ಯ (ವಿಂ) ಆರ್ಯರಿಂದ ಗೌರವ  
ಪಡುತ್ತಿರುವವನು, ಪೂಜ್ಯರ ಗುಂಪಿಗೆ ಸೇರಿದವನು.  
ಆರ್ಯಗೃಹ್ಯತೇ—ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) “ಕಯ್” (೩-೧-೧೧೯).  
“ತಮಾರ್ಯಗೃಹಂ ನಿಗೃಹೀತಧೇನುರ್ಮನುಷ್ಯವಾಚಾ ಮನುಷ್ಯಶಕೇತುಮ್”  
ರಘುಂ ೨-೩೩.

ಆರ್ಯಧರ್ಮ ಆರ್ಯಧರ್ಮ (ಪುಂ) ಹಿರಿಯರ ಸಂಪ್ರದಾಯ,  
ಸದಾಚಾರ. ಆರ್ಯಣಾ ಧರ್ಮಃ.

ಆರ್ಯಪುತ್ರ ಆರ್ಯಪುತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಪತಿ, ಗಂಡ. ಆರ್ಯಸ್ಯ  
ಶ್ವಶುರಸ್ಯ ಪುತ್ರಃ. 2. ಪೂಜ್ಯರ ಮಗ. 3. ಅಚಾರ್ಯರ  
ಮಗ. ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಈ ಪದವು ವಿಶೇಷವಾಗಿ  
ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವುದು. ನಟಿಯು ಸೂತ್ರಧಾರನನ್ನೂ  
ರಾಣಿಯು ರಾಜನನ್ನೂ ಈ ಪದದಿಂದ ಕರೆಯುವರು.  
“ಆರ್ಯಪುತ್ರ, ಇಮಸ್ಮಿಂ. ಆಜ್ಞಾಪಯತ್ವಾರ್ಯಪುತ್ರಃ ಕೋ ನಿಯೋಗೋ-  
ನ್ಯುಪಯಿತಾಮಿತಿ” ರತ್ನಾಂ ೧. “ಜಯತು ಜಯತ್ವಾರ್ಯಪುತ್ರಃ”  
ಮಾಲಂ ೫.

ಆರ್ಯಭಟ ಆರ್ಯಭಟ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ದೊಡ್ಡ (ಹಿರಿಯ)  
ಜ್ಯೋತಿಷಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞ, ಖಗೋಳಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಬಲ್ಲ  
ಪಂಡಿತ. ಈ ಮಹಾ ಪಂಡಿತನು ಈಗ ನಮ್ಮ  
ದೇಶದಲ್ಲಿ ಬಳಕೆಯಲ್ಲಿರುವ ಬೀಜಗಣಿತವನ್ನು ಬರೆದು  
ದೇಶಕ್ಕೆ ಮಹೋಪಕಾರ ಮಾಡಿದನು. ಈತನು  
ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ 3620 ವರ್ಷಗಳ ನಂತರ ಜನಿಸಿದ  
ದಾಗಿ ತನ್ನ ಗ್ರಂಥದಲ್ಲೇ ಹೇಳಿಕೊಂಡಿರುತ್ತಾನೆ.  
“ಷಟ್ಕವಂದಾನಾಂ ಪಠ್ಯದಾ ವ್ಯತಿತಾಸ್ತ್ರಯಶ್ಚ ಯುಗಪಾದಾಃ |  
ಅಧಿಕಾ ವಿಶತಿರಬ್ದಾಃ ತದಿಹ ಮಮ ಜನ್ಮನೋಪ್ಪ್ರಾಪ್ತಾಃ” |

ಆರ್ಯಮಿತ್ರ ಆರ್ಯಮಿತ್ರ (ಪುಂ) ಪೂಜ್ಯ, ಗೌರವಾನ್ವಿತ,  
ಗೌರವಾರ್ಹ. “ನನ್ವಾರ್ಯಮಿತ್ರಃ ಪ್ರಥಮಮೇವಾಜ್ಞಸಮಭಿಜ್ಞಾನ-  
ಶಾಕುಂತಲಂ ನಾಮಾಪೂರ್ವ ನಾಟಕಂ ಪ್ರಯೋಗೋಪದಿಕ್ರಿಯತಾಮಿತಿ”  
ಶಾಕುಂ ೧.

ಆರ್ಯ ಆರ್ಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಾರ್ವತಿ, ಗೌರಿ.  
2. ಉತ್ತಮ ಹೆಂಗಸು. 3. ಆತ್ಮೆ, ಪತಿಯ ತಾಯಿ.  
4. ಮಾತೃ ಭಂದಸ್ಥನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಋ (ಗತೌ)  
“ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪). “ಆರ್ಯಃ ಸಾಧೌ ಸೌವಿದಲೇ-  
ಷ್ಯಾರ್ಯೋಮಾವೃತ್ತಭೇದಯೋಃ” ವಿಶ್ವಂ. ಆರ್ಯವೃತ್ತ  
ಲಕ್ಷಣಃ “ಲಕ್ಷ್ಮೀತತ್ಸಗುಣಾ ಗೋಪಿತಾ ಭವತಿ ನೇಹ ವಿಷಮೇ

ಜಃ | ಷಟ್ಕವಂ ನಲಘ್ನ ವಾ ಪ್ರಥಮೇಷ್ಠೇ ನಿಯತಮಾರ್ಯಾಃ ||  
ಷಟ್ಕ ದ್ವಿತೀಯಲಾಲೇ ಪರಕೇ ಮುಖಲಾಂಚ ಸ ಯತಿಪದನಿಯಮಃ |  
ಚರಮೇಷ್ಠೇ ಪञ्ಚಮಕೇ ತಸ್ಮಾದಿಹ ಭವತಿ ಷಟ್ಕ ಲಃ” ವೃಂ ೨೦ |  
(೧) ಪಥ್ಯಾ, (೨) ವಿಪುಲಾ, (೩) ಚಪಲಾ, (೪) ಮುಖಚಪಲಾ,  
(೫) ಜಘನಚಪಲಾ, (೬) ಗೀತಿಃ, (೭) ಉಪಗೀತಿಃ,  
(೮) ಉದ್ಗೀತಿಃ, (೯) ಆರ್ಯಗೀತಿಃ ಎಂದು ಆರ್ಯ  
ವೃತ್ತವು ಒಂಭತ್ತು ವಿಧ.

ಆರ್ಯಗೀತಿ ಆರ್ಯಗೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾತೃವೃತ್ತ  
ಗಳಲ್ಲೊಂದು ಭೇದ, ಆರ್ಯ (ವೃತ್ತದ) ಸಾಮಾನ್ಯ  
ಲಕ್ಷಣದ ಪೂರ್ವಾರ್ಧ ಮತ್ತು ಉತ್ತರಾರ್ಧಗಳಲ್ಲಿ  
(ಕ್ರಮವಾಗಿ) 30 ಮತ್ತು 27 ಮಾತೃಗಳ ಜೊತೆಗೆ  
ಒಂದೊಂದು ಗುರುವು ಅಧಿಕವಾಗಿ ಸೇರಿದರೆ  
ಆರ್ಯಗೀತಿಯಾಗುವುದು. “ಆರ್ಯಪೂರ್ವಾಂ ಯದಿ,  
ಗುಣೈಕೇನಾಧಿಕೇನ ನಿಧನೇ ಯುಕ್ತಮ್ | ಇತರತ್ತದ್ವಿವಿಲಿಂ, ದಲಂ  
ಯದೀಯಮುದಿತೇಯಮಾರ್ಯಗೀತಿಃ” ವೃಂ ೨೦ |

ಆರ್ಯವಿರ್ತ ಆರ್ಯವರ್ತ (ಪುಂ) ವಿಂಧ್ಯ ಮತ್ತು ಹಿಮಾ  
ಚಲಗಳ ಮಧ್ಯದ ಪ್ರದೇಶ, ಪೂರ್ವ ಮತ್ತು ಪಶ್ಚಿಮ  
ಸಮುದ್ರಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ದೇಶ. ಆರ್ಯಃ  
ಆವರ್ತಂತೇತ್ರ—ಆ + ವೃತ್ತ (ವರ್ತನೆ) “ವತ್” (೩-೩-೧೨೧).  
“ಆರ್ಯವಿರ್ತಃ ಪುಣ್ಯಭೂಮಿರ್ಮಧ್ಯಂ ವಿನ್ಧ್ಯಹಿಮಾಗಯೋಃ” ಅಮಂ |  
“ಆ ಸಮುದ್ರಾತ್ಕು ವೈ ಪೂರ್ವಾ ಸಮುದ್ರಾತ್ಕು ಪಶ್ಚಿಮಾತ್ | ತಯೋರೇವಾಂತರಂ  
ಗಿರ್ಯೋರಾರ್ಯವಿರ್ತಂ ವಿದುರ್ಬುಧಾಃ” ಮನುಂ ೨-೨೨ |

ಆರ್ಷ ಆರ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಎಂಟು ವಿಧ ವಿವಾಹಗಳಲ್ಲೊಂದು  
ವಿಧ. ಋಷಿವೇದಃ ತಸ್ಯಾಯಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦).  
“ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ದೇವಸ್ತಥೈವಾರ್ಷಃ ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯಸ್ತಥಾಸುರಃ | ಗಾಂಧರ್ವೋ  
ರಾಕ್ಷಸಶ್ಚೈವ ಪೈಶಾಚಶ್ಚಾಷ್ಟಮೋಽಧಮಃ” ಮನುಂ ೩-೨೧ |  
ವರನಿಂದ ಒಂದು ಅಥವಾ ಎರಡು ಗೋಮಿಥುನವನ್ನು  
(ಒಂದು ಹಸು ಒಂದು ಎತ್ತು ಗೋಮಿಥುನ)  
ಧರ್ಮಾರ್ಥವಾಗಿ (ಶುಲ್ಕರೂಪವಾಗಿ ಕೂಡದು)  
ತೆಗೆದುಕೊಂಡು [ಇದು ಪ್ರಾಚೀನ ಪದ್ಧತಿ] ಶಾಸ್ತ್ರ  
ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಕನ್ಯಾದಾನ ಮಾಡುವುದು “ಆರ್ಷ”  
ವಿವಾಹವೆನಿಸುವುದು. “ಏಕಂ ಗೋಮಿಥುನಂ ದ್ವೇ ವಾ ವರಾದಾದಾಯ  
ಧರ್ಮತಃ | ಕನ್ಯಾಪ್ರದಾನಂ ವಿಧಿವದಾರ್ಪಣಂ ಧರ್ಮಃ ಸ ಉಚ್ಯತೇ”  
ಮನುಂ ೩-೨೯ | (ವಿಂ) 2. ಋಷಿಸಂಬಂಧವಾದ.  
ಋಷೇರಿದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦). 3. ಋಷಿಪ್ರಣೀತ  
ವಾದ, ಋಷಿಗಳಿಂದ ದೃಷ್ಟವಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ.  
“ಆರ್ಷ ಧರ್ಮೋಪದೇಶಂ ಚ ವೇದಶಾಸ್ತ್ರಾವಿರೋಧಿನಾ | ಯಸ್ತಕೇಣಾನು-  
ಸಂಧತೇ ಸ ಧರ್ಮವೇದನೇತರಃ” ಮನುಂ ೧೨-೧೦೬ | 4. ವೇದ  
ಸಂಬಂಧವಾದ, ವೇದವಿಹಿತವಾದ. ಋಷಿವೇದಃ



ತಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। ಆರ್ಪಿ ಧರ್ಮಃ  
ಆರ್ಪಃ ಪ್ರಯೋಗಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಆರ್ಪಧರ್ಮ ಅರ್ಪಧರ್ಮ (ಪುಂ) 1. ಮುಷಿಗಳಿಂದ  
ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ ಮಾನವಧರ್ಮ, ವೇದವಿಹಿತವಾದ  
ಧರ್ಮ. 2. ಅರ್ಪವಿವಾಹ, ಎಂಟುವಿಧ ವಿವಾಹ  
ಗಳಲ್ಲೊಂದು.

ಆರ್ಪಭಿ ಅರ್ಪಭಿ (ವಿಂ) ವೃಷಭಸಂಬಂಧವಾದ.  
ಋಷಭಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

ಆರ್ಪಭಿ ಅರ್ಪಭಿ (ಪುಂ) ಮೃಷಭದೇವನ ಮಗ.  
ಋಷಭಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಇನ್" (೪-೧-೯೫)।

ಆರ್ಪಮ್ಯ ಅರ್ಪಮ್ಯ (ಪುಂ) ಗೂಳಿಯಾಗುವ ಹೋರಿ,  
ಗೂಳಿಯಾಗಲು ಅರ್ಹವಾದ ಕರು, ಪಂಡತ್ವಕ್ಕೆ  
ಯೋಗ್ಯವಾದ ಹೋರಿ. ಋಷಭಾಯ ಅಯಮ್ "ತಯಃ"  
(೫-೧-೧೪)। "ಆರ್ಪಮ್ಯಃ ಣ್ವತಾಯೋಗ್ಯಃ" ಅಮಂ।

ಮಾಹತ ಅರ್ಹತ (ಪುಂ) 1. ಜೈನ. (ನಂ) 2. ಜೈನ  
ಮತ. (ವಿಂ) 3. ಜೈನಮತಸಂಬಂಧವಾದ.  
4. ಜೈನಮತಾನುಯಾಯಿ.

ಮಾಹಂತಿ ಅರ್ಹಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯೋಗ್ಯತೆ, ಅರ್ಹತೆ.  
ಮಾಹಂತಿ ಭಾವಃ "ಘ್ನ" ನುಮ್ ಚ (ವಾಂ ೫-೧-೧೨೪)।  
"ಹೀಘ್" (೪-೧-೪೧)। "ಶ್ರೋತ್ರಾಹಂತಿಚಣೈಃ"  
ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಮಾಹಂತ್ಯ ಅರ್ಹಂತ್ಯ (ನಂ) ಯೋಗ್ಯತೆ, ಅರ್ಹತೆ.  
ಮಾಹಂತಿ ಭಾವಃ "ಘ್ನ" ನುಮ್ ಚ (ವಾಂ ೫-೧-೧೨೪)।

ಮಾಲ ಅಲ (ನಂ) 1. ಹರಿದಳ. (ವಿಂ) 2. ಹೆಚ್ಚಾದ,  
ಅಧಿಕವಾದ. ಅಲತಿ—ಆ + ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕಃ"  
(೩-೧-೧೩೬)। "ಅಲಂ ಸ್ಯಾದನಲ್ಪಹರಿತಾಲಯಃ" ಹೇಮಂ।  
3. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ.

ಮಾಲಕಯತ್ ಅಲಕಯತ್ (ವಿಂ) ನೋಡುವವನು.  
ಆ + ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನಾಕ್ಷನಯಃ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್"  
(೩-೨-೧೨೪)। "ರಾಮಂ ಸಲಕ್ಷ್ಮಣಮಾಲಕಯತ್ರೇವಮವೋಚತ"  
ಶಂ ರಾಂ।

ಮಾಲಕಿತ ಅಲಕಿತ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ.  
2. ಅನುಮಾನದಿಂದ ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಲಕ್ಷ  
(ದರ್ಶನಾಕ್ಷನಯಃ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಮಾಲಕಯ ಅಲಕಯ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ.  
2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕಾಣುವ. ಆ ಸಮಂತಾತ್ ಲಕ್ಷ್ಯಮ್।  
3. ಸ್ವಲ್ಪ ಕಾಣುವ, ಸ್ವಲ್ಪ ಮಾತ್ರ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ.  
ಆ ಇತ್ ಲಕ್ಷ್ಯಮ್। "ಉಪಾಂತವಾನಿರವನೋಪಗುಣಾನ್ಯಾಲಕಯ-

ಪಾರಿಪ್ಲವಸಾರಸಾನಿ" ರಘುಂ ೧೩-೩೦। "ಆಲಕಯದಂತ-  
ಮುಕ್ತುಲಾನನಿಮಿತ್ತಹಾಸಿಃ" ಶಾಕುಂ ೭-೧೭। (ಅವ್ಯಂ)  
4. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡಿ. 5. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದು  
ಕೊಂಡು. ಆ + ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನಾಕ್ಷನಯಃ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯಪ್"  
(೭-೧-೩೭)।

ಆಲಪನ ಅಲಪನ (ನಂ) ಮಾತಾಡುವಿಕೆ, ನುಡಿಯುವಿಕೆ,  
ಹೇಳುವಿಕೆ. ಆ + ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಆಲಪನೀಯ ಅಲಪನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ  
ಹೇಳಲ್ಪಡುವ, ಹೇಳಬೇಕಾದ. 2. ಹೇಳಲು ಅರ್ಹ  
ವಾದ. ಆ + ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಅನೀಯರ್"  
(೩-೧-೯೬)। "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬)।—ಲಪಿತವ್ಯಮ್  
—ಲಪಿತವ್ಯವತ್.

ಆಲಪ್ಯ ಅಲಪ್ಯ (ಅವ್ಯಂ) ಹೇಳಿ, ಮಾತನಾಡಿ, ನುಡಿದು.  
ಆ + ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭)।  
"ಆಲಪ್ಯಾಲಮಿದಂ ಬಭ್ರೂಯೆತ್ಸ ದಾರಾನಪಾಹರತ್। ಕಥಾಪಿ  
ಖಲು ಪಾಪಾನಾಮಲಮಶ್ರೇಯಸೇ ಯತಃ" ಮಾಘಂ ೨-೪೦।

ಆಲಬ್ಧ ಅಲಬ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಬೆರಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಿಶ್ರ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಡ್ ಲಬ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತಃ"  
(೩-೨-೧೦೨)। 2. ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿ  
ಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಮುಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಸ್ಪರ್ಶಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಆಲಬ್ಧಿ ಅಲಬ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ಪರ್ಶ, ಮುಟ್ಟುವಿಕೆ.  
2. ಹಿಂಸೆ. ಆ + ಡ್ ಲಬ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತಿನ್"  
(೩-೩-೯೪)।

ಆಲಬನ ಅಲಬನ (ನಂ) 1. ಹಿಂಸೆ, ಕೊಲ್ಲುವುದು.  
2. ಮರ್ದಿಸುವುದು, ಅರೆಯುವುದು, ಪುಡಿಮಾಡು  
ವುದು. 3. ಸ್ಪರ್ಶ, ಮುಟ್ಟುವಿಕೆ. ಆ + ಡ್ ಲಬ್  
(ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಆಲಬನೀಯ ಅಲಬನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಮುಟ್ಟಲ್ಪಡುವ.  
2. ಮರ್ದಿಸಲ್ಪಡುವ, ಅರೆಯಲ್ಪಡುವ. 3. ಹಿಂಸಿ  
ಸಲ್ಪಡುವ. ಆ + ಡ್ ಲಬ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಅನೀಯರ್"  
(೩-೧-೯೬)।

ಆಲಂಭ್ಯ ಅಲಂಭ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಮುಟ್ಟಲ್ಪಡುವ, ಮುಟ್ಟಲು  
ಅರ್ಹವಾದ. 2. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಡುವ, ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಡುವ.  
ಆ + ಡ್ ಲಬ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಘ್ನತ್" (೩-೧-೧೨೪)।  
(ಅವ್ಯಂ) 3. ಮುಟ್ಟಿ, ಸ್ಪರ್ಶಮಾಡಿ. 4. ಹಿಂಸಿಸಿ,  
ವಧೆಮಾಡಿ. ಆ + ಡ್ ಲಬ್ "ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭)।



ಆಲ್ಪಿನ್ ಆಲಂಚಿತ (ವಿಂ) 1. ಧರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅವ  
ಲಂಬನ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಲವಿ (ಅವನಂಸನೆ) "ಕ್ತ:"



(೩-೨-೧೦೨)। “ಆಲಂಬಿತಾ ನಮ್ರಮುಖಿ ಭವತ್ಯಾ”  
ಯಾದಂ ೧೮-೩।

ಆಲಂಬಿನ್ ಆಲಂಬಿಸ್ (ವಿಂ) 1. ಜೋಲಾಡುತ್ತಿರುವ,  
ತೂಗಾಡುತ್ತಿರುವ, ಆಶ್ರಯ ಹೊಂದಿರುವ, ಒತ್ತಾಸೆ  
ಪಡೆದಿರುವ. ಆ + ಲಬಿ (ಅವಸಂಸನೆ) “ಗಿಣಿ:”  
(೩-೧-೧೩೪)। “ದೇವಸೂತಭುಜಾಲಂಬಿ ಜೈತ್ರಮಧ್ಯಾಸ್ತ  
ರಾಘವ:” ರಘುಂ ೧೨-೮೫। 2. ಧರಿಸಿರುವ, ಹೊದಿರುವ.  
“ಗಜಾಜಿನಾಲಂಬಿ ದುಕೂಲಧಾರಿ ವಾ” ಕುಮಾಂ ೫-೭೮।  
3. ಆಶ್ರಯ ಕೊಡುವ, ಒತ್ತಾಸೆಯಿಡುವ.  
ಕುಲಾಲಂಬಿ ಪುತ್ರ:।

ಆಲಂಬ್ಯ ಆಲಂಭ (ಪುಂ) 1. ಸ್ಪರ್ಶ, ಮುಟ್ಟುವಿಕೆ.  
ಆ + ಟ್ಠ ಲಬ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮)।  
“ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಚ ಪ್ರೇಕ್ಷಣಾಲಂಬ್ಯಮುಪಘಾತಂ ಪರಸ್ಯ ಚ। (ವರ್ಜಯೇತ್)”  
ಮನುಂ ೨-೧೭೯। 2. ಹಿಂಸೆ, ಪೀಡಿಸುವಿಕೆ, ಕೊಲ್ಲು  
ವಿಕೆ. “ಆಲಂಬ್ಯಸಮಯೇ ತಸ್ಮಿನ್ ಗೃಹೀತೇಷು ಪಶುವ್ಯಥ।  
ಮಹರ್ಷಯೋ ಮಹಾಭಾಗ ಬಭೂವು: ಕೃಪಯಾನ್ವಿತಾ:” ಭಾಂ।

ಆಲಂಬ್ಯ ಆಲಂಭ (ವಿಂ) ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಡುವ, ಕೊಲ್ಲ  
ಲ್ಪಡುವ. ಆ + ಟ್ಠ ಲಬ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) “ಘ್”  
(೩-೧-೧೨೪)। ನುಮ್ (೭-೧-೬೫)। “ಆಲಂಬ್ಯೋ  
ಗೌ:” ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಆಲಯ ಆಲಯ (ಪುಂ) 1. ಗೃಹ, ಮನೆ. ಆಲಿಯಂತೇಷ್ವ  
—ಆ + ಲೀಡ್ (ಸಂಶ್ಲೇಷಣೆ) “ಘ:” (೩-೩-೧೧೮)।  
“ನ ಹಿ ದುಷ್ಟಾತ್ಮನಾಮಾರ್ಯಾ ನಿವಸಂತ್ಯಾಲಯೇ ಚಿರಮ್” ರಾಮಾಂ।  
“ವಿಯದಾಲಯಾದಪರದಿಕ್ಕಣಿಕಾ” ಮಾಘಂ ೯-೧೦।  
2. ಆಶ್ರಯ, ಆಧಾರ. “ಅಸ್ತೃತರಸ್ಯಾಂ ದಿಶಿ ದೇವತಾತ್ಮಾ  
ಹಿಮಾಲಯೋ ನಾಮ ನಗಾಧಿರಾಜ:” ಕುಮಾಂ ೧-೧। 3. ಸಂಬಂಧ,  
ಸಂಸರ್ಗ. (ಅವ್ಯಂ) 4. ಲಯಪರ್ಯಂತ,  
ಪ್ರಳಯಕಾಲದವರೆಗೆ, ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶದವರೆಗೆ. “ಪಿವತ  
ಭಾಗವತಂ ರಸಮಾಲಯಮ್” ಭಾಗಂ ೧-೧-೩।

ಆಲಯವಿಜ್ಞಾನ ಆಲಯವಿಜ್ಞಾನ (ನಂ) (ಬೌದ್ಧಮತ  
ದಲ್ಲಿ) ನಾನು ಎಂಬ ಭಾವನೆಯಿಂದ ಆತ್ಮವೆನ್ನಲ್ಪಡುವ  
ಸೂಕ್ಷ್ಮಚಿತ್ತ. ಆಲಯಂ ಲಯಪರ್ಯಂತಂ ಸ್ಥಾಯಿ ವಿಜ್ಞಾನಮ್।  
ವಿಜ್ಞಾನಸಂತತಿಯು ಸೂಕ್ಷ್ಮಚಿತ್ತವೆಂಬ ರೂಪದಲ್ಲಿ  
ಕರ್ಮವಾಸನೆಯಿಂದ ಮಾತೃಕುಕ್ಷೆಯನ್ನು (ಗರ್ಭ  
ಕೋಶವನ್ನು) ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು. ಇದೇ ಬೀಜಸ್ಥಾನ  
ದಲ್ಲಿರುವುದು. ಈ ಸೂಕ್ಷ್ಮಚಿತ್ತವು ಅವಿದ್ಯೆ,  
ಸಂಸಾರ, ವಿಜ್ಞಾನ, ನಾಮ, ರೂಪ, ಪಡಾಯ  
ತನ, ಸ್ಪರ್ಶ, ವೇದನಾ, ತೃಷ್ಣಾ, ಭವ, ಜಾತಿ,

ಮರಣ ವ್ಯಾಧಿರೂಪವಾಗಿ ಕಾರ್ಯಕಾರಣಪ್ರಕ್ರಿಯೆ  
ಯನ್ನು ಹೊಂದುವುದು. ಇದೇ ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕಹೇತು  
ನಿಬಂಧನವು. ಇದು ಚಕ್ರರೂಪದಲ್ಲಿ ತಿರುಗುತ್ತಿರು  
ವುದು. “ತತ್ಸಾಧಾಲಯವಿಜ್ಞಾನಂ ಯಜ್ಞವೇದಹಮಾಸ್ಪದಮ್”  
ಸಂ ದಂ ಸಂ। ಇವರ ಮತದಲ್ಲಿ ವಿಜ್ಞಾನಾತಿರಿಕ್ತ  
ವಾದ ಜೀವಾತ್ಮನಿಲ್ಲ.

ಆಲಕ ಆಲಕ (ವಿಂ) ಹುಚ್ಚುನಾಯಿಯ ಸಂಬಂಧ  
ವಾದ (ವಿಷ ಮುಂತಾದುದು). ಅಲಕಸ್ಯೇದಮ್ “ಅಣ್”  
(೪-೩-೧೨೦)। “ಆಲಕ ವಿಷಮಿವ ಸರ್ವತ: ಪ್ರವೃತ್ತಮ್”  
ಠಂ ರಾಂ ೧-೪೦।

ಆಲವಾಲ ಆಲವಾಲ (ನಂ) ಗಡದ ಪಾತಿ, ಗಡದ ಕೆಳಗೆ  
ನೀರು ನಿಲ್ಲುವಂತೆ ಮಾಡಿರುವ ಗುಡೆ. ಆ ಸಮಂತಾಜ್ಜಲ-  
ಲವಮಾಲಾತಿ—ಆ + ಲಾ (ಆದಾನೇ) “ಕ:” (ವಾಂ ೩-೨-೫)।  
“ವಿಶ್ವಾಸಾಯ ವಿಹಂಗಾನಾಮಾಲವಾಲಾಮ್ಬುಪಾಯಿನಾಮ್” ರಘುಂ  
೧-೫೧। “ಆಲವಾಲವಲಯೇಷು ಶಾಖಿನಾಮ್” ಯಾದಂ ೧೭-೨೩।

ಆಲಸ ಆಲಸ (ವಿಂ) ಸೋಮಾರಿ. ಆ ಲಸತಿ ಇಷತ್  
ವ್ಯಾಪ್ರಿಯೇ—ಆ + ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)।

ಆಲಸ್ಯ ಆಲಸ್ಯ (ನಂ) 1. ಸೋಮಾರಿತನ, ಕಾರ್ಯ  
ದಲ್ಲಿ ಉತ್ಸಾಹವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಅಲಸಸ್ಯ ಭಾವ: “ಏಜ್”  
(೫-೧-೧೨೪)। “ಶಕ್ತಸ್ಯ ಚಾಪ್ಯನುತ್ಸಾಹ: ಕರ್ಮಸ್ವಾಲಸ್ಯ-  
ಮುಚ್ಯತೇ” ಸುಶ್ರುತಂ। (ವಿಂ) 2. ಸೋಮಾರಿ, ಕಾರ್ಯ  
ದಲ್ಲಿ ಉತ್ಸಾಹವಿಲ್ಲದ. ಅಲಸ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಏಜ್”।

ಆಲಾನ ಆಲಾನ (ನಂ) 1. ಆನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಕಂಬ.  
ಆಲಿಯತೇಷ್ವ—ಆ + ಲೀಡ್ (ಶ್ಲೇಷಣೆ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭)।  
“ಅರುತುದಮಿವಾಲಾನಮನಿರ್ವಾಣಸ್ಯ ದಂತಿನ:” ರಘುಂ ೧-೭೧।  
2. ಬಂಧನ, ಕಟ್ಟುಹಾಕುವಿಕೆ. ಆ + ಲೀಡ್ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್”  
(೩-೩-೧೧೫)। “ಗಜಾಲಾನಪರಿವಿಲಕ್ಷೇರಕ್ಷೋಟ: ಸಾರ್ಥಮಾನತಾ:”  
ರಘುಂ ೪-೬೯। 3. ಆನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುಹಾಕುವ ಹಗ್ಗ,  
ಸರಪಳಿ. ಆ + ಲೀಡ್ ಕರಂ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭)।

ಆಲಾನಿಕ ಆಲಾನಿಕ (ವಿಂ) ಆನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುಹಾಕುವ  
ಕಂಬ ಮೊದಲಾದುದು. ಆಲಾನಂ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ “ಠಕ್”  
(೫-೧-೧೦೯)। “ಸೌಡು ನ ತತ್ಪೂರ್ವಮವರ್ಣಮೀಶೋ ಆಲಾನಿಕಂ  
ಸ್ಥಾಣುಮಿವ ದ್ವಿಪೇಂದ್ರ:” ರಘುಂ ೧೪-೩೮।

ಆಲಾಪ ಆಲಾಪ (ಪುಂ) 1. ಮಾತಾಡುವುದು. ಆ +  
ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮)।  
“ಪ್ರಕುರ್ವತೇ ವಾರಿದರೋಧನಿರ್ಗತಾ: ಪರಸ್ಪರಾಲಾಪಮಿವಾಮಲಾ ದಿಶ:”  
ಕಿರಾಂ ೪-೩೦। 2. ಸ್ವರಗಳನ್ನು ಸರಿಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ  
ಸಂಗಮ ಮೊದಲಾದ ಅಕ್ಷರ, ರಾಗವನ್ನು ವಿಸ್ತಾರ



ಗೊಳಿಸುವ ಸ್ವರಗಳ ಗುಂಪು. ಆ + ಲಪ ಕರಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ಆಲಾಪಕಾಲಸಮಪಲ್ಲವಿತಾಕ್ಷವೀಣಾ-ಸೌರಮ್ಯಪಾತಿಮಧುಪಾರವಸಡ್ಕುಲಸ್ಯ" ಚಂ ಮಾಂ 3. ಪರಸ್ಪರ ಮಾತಾಡುವುದು. ಆ + ಲಪ + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಅಯೇ, ದಕ್ಷಿಣೇನ ವೃಕ್ಷವಾಟಿಕಾಮಾಲಾಪ ಇವ ಶ್ರಯತೇ" ಶಾಕುಂ ೧।

ಆಲಾಪನ ಅಲಾಪನ (ನಂ) 1. ಪರಸ್ಪರ ಮಾತಾಡುವುದು. ಆ + ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। 2. ಮಾತಾಡುವುದು, ಹೇಳುವುದು. "ನಾಥೇತಿ ನಾಗಶಯನೇತಿ ಜಗನ್ನಿವಾಸೇತ್ಯಾಲಾಪನಂ ಪ್ರತಿಪದಂ ಕುರು ಮೇ ಮುಕುಂದ" ಮುಂ ಮಾಂ ೧। 3. ಸ್ವಸ್ತಿವಾಚನ. 4. ರಾಗವನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸುವ ಸಂಗ ಮಾದಿ ಅಕ್ಷರಗಳ ಗುಂಪು.

ಆಲಾಪ್ಯ ಅಲಾಪ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. 2. ಹೇಳಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಆ + ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಘ್ಯತ್" (೩-೧-೯೭)। (ಅವ್ಯಂ) 3. ಮಾತನಾಡಿಸಿ.

ಆಲಾವರ್ತ ಅಲಾವರ್ತ (ನಂ) ಬಟ್ಟೆಯಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಬೀಸಣಿಗೆ. ಅಲಂ ಪರ್ಯಾಪ್ತಮಾವರ್ತತೇ—ಆ + ವೃತ್ (ವರ್ತನೆ) + ಣಿಚ್ ಕರಂ "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬)। "ವ್ಯಜನಂ ತಾಲವೃತ್ತಂ ತತ್ ಧವಿತ್ರಂ ಮೃಗಚರ್ಮಣಃ। ಆಲಾವರ್ತ ತು ವಸ್ತ್ರಸ್ಯ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ಆಲಾಸ್ಯ ಅಲಾಸ್ಯ (ಪುಂ) ಮೊಸಳೆ. ಅಲಮ್ ಅಧಿಕಮ್ ಆಸ್ಯಂ ಯಸ್ಯ। "ನಕ್ರಃ ಕುಮ್ಮಿರ ಆಲಾಸ್ಯಃ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ಆಲಿ ಅಲಿ (ಪುಂ) 1. ವೃಶ್ಚಿಕ, ಚೀಳು. ಅಲತಿ ದಂಶೋ ಸಮರ್ಥೋ ಭವತಿ—ಆ + ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ) "ಇನ್" (೩-೪-೧೧೮)। 2. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. "ಲೀನಾಲಿಃ ಸುರಕರಿಣಾಂ ಕಪೋಲಕಾಷಃ" ಕಿರಾಂ ೫-೨೬। 3. ಮದ್ಯ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)—ಲಿಃ—ಲಿಃ—ಲಿಃ—ಲಿಃ. 4. ಸಖಿ, ಗೆಳತಿ. "ನಿವಾರ್ಯತಾಮಾಲಿ ಕಿಮಪ್ಯಯಂ ವಠುಃ" ಕುಮಾಂ ೫-೮೩। ಅಲಯತಿ ಭೂಷಯತಿ—ಆ + ಅಲ + ಣಿಚ್ "ಇನ್" (೩-೪-೧೧೮)। 5. ಸೇತುವೆ, ಅಣೆಕಟ್ಟು. ಅಲಯತಿ ವಾರಯತಿ ಜಲಮ್। "ಸೇತೌ ಪಾಲ್ಯಾಲಿಸಂವಾರಾಃ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ। 6. ಪಜ್ಜಿ, ಸಾಲು, ಶ್ರೀಣಿ. "ತೋಯಾಂತ-ಭಾಸ್ಕರಾಲಿವ ರೇಜೇ ಮುನಿಪರಂಪರಾ" ಕುಮಾಂ ೬-೪೯। 7. ರೇಖೆ, ಗೆರೆ. "ವಿಷಮಹರಿಚಂದನಾಲಿನಾ" ಮಾಘಂ। (ವಿಂ) 8. ಶುದ್ಧವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ.

ಆಲಿಖ್ಯತ್ ಅಲಿಖ್ಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಬರೆಯುವ. 2. ಬಣ್ಣ ಬಳೆಯುವ. ಆ + ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ) "ಶತ್" (೩-೧-೧೨೪)।

ಆಲಿಖ್ಯಮಾನ ಅಲಿಖ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಬರೆಯಲ್ಪಡುವ (ಕಾಗದ). 2. ಬಣ್ಣ ಹಾಕಲ್ಪಡುವ (ಚಿತ್ರ). ಆ + ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ) ಕರಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)।

ಆಲಿಲಿಖಿಷಾ ಅಲಿಲಿಖಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬರೆಯುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ. 2. ಬಣ್ಣ ಹಾಕುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಅಲಿಲಿಖಿತು-ಮಿಚ್ಛಾ—ಆ + ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨)।

ಆಲಿಲಿಖಿಷು ಅಲಿಲಿಖಿಷು (ವಿಂ) 1. ಬರೆಯಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. 2. ಬಣ್ಣ ಹಾಕಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. ಆ + ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮)।

ಆಲಿಜ್ಞನ ಅಲಿಂಗನ (ನಂ) ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ದೇಹ ದೊಡನೆ ದೇಹವನ್ನು ಸೇರಿಸುವುದು. ಆ + ಲಿಗಿ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಆಲಿಜ್ಞನಾನ್ಯವಿ-ಕೃತಾಃ ಸ್ಫುಟಮಾಪುರೇವ" ಮಾಘಂ ೫-೧೮। "ಕಾಲಿಜ್ಞನಂ ಭುಜನಿಪಿಡಿತಬಾಹುಮೂಲಮ್" ಪ್ರಬೋಧಂ ೨-೨೨।

ಆಲಿಜ್ಞಿತ ಅಲಿಂಗಿತ (ವಿಂ) ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಲಿಗಿ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಇತ್ಯಾಲಿಜ್ಞಿತಮಾಲೋಕ್ಯ ಜಯಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾ ಷಷ್ಠವಜಮ್" ಮಾಘಂ ೧೯-೨೪।

ಆಲಿಜ್ಞಿನ್ ಅಲಿಂಗಿನ್ (ವಿಂ) ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುವ. ಅಲಿಜ್ಞಿತೇ—ಆ + ಲಿಗಿ (ಗತೌ) "ಞಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)।

ಆಲಿಜ್ಞಚ ಅಲಿಂಗ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಮೃದಂಗ, ಮದ್ದಳೆ. (ವಿಂ) 2. ಅಲಿಂಗಿಸಲ್ಪಡುವ, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಡುವ. ಅಲಿಜ್ಞಯತೇ—ಆ + ಲಿಗಿ (ಗತೌ) "ಘ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)। (ಅವ್ಯಂ) 3. ಅಲಿಂಗಿಸಿಕೊಂಡು, ಅಪ್ಪಿಕೊಂಡು. ಆ + ಲಿಗಿ "ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭)। "ಚತುರಂಗುಲ-ಹೀನೋಽಙ್ಕುಚಾನ್ಮುಖೇ ಚೈಕಾಙ್ಗುಲೇನ ಯಃ। ಯವಾಕೃತಿಃ ಸ ಅಲಿಜ್ಞಚ ಅಲಿಜ್ಞಚ ಸ ಹಿ ವಾಚತೇ"।

ಆಲಿಜ್ಜರ ಅಲಿಂಜರ (ಪುಂ) ಮಣ್ಣಿನ ದೊಡ್ಡ ಪಾತ್ರೆ, ದೊಡ್ಡ ಗಡಿಗೆ. ಅಲಿಜ್ಜರ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಞ್" (೫-೪-೩೮)।

ಆಲಿನ್ ಅಲಿನ್ (ಪುಂ) ವೃಶ್ಚಿಕ, ಚೀಳು. ಅಲಮ-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫)।

ಆಲಿನ್ದ ಅಲಿಂದ (ಪುಂ) 1. ಹೊರಬಾಗಿಲಿನ ಸಮೀಪದ ಕೈಸಾಲೆ, ಮನೆಯ ಮುಂದಿನ ಬಾಗಿಲಿನ ಪಡಸಾಲೆ. 2. ಮನೆಯೊಳಗಿನ ಶಯನವೇದಿಕೆ, ಪಡಸಾಲೆ, ಜಗುಲಿ. ಅಲಿನ್ದ ಏವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಞ್" (೫-೪-೩೮)।



**ಆಲಿಂಪನ** ಆಲಿಂಪನ (ನಂ) 1. ಗೋಡೆಗೆ ಸುಣ್ಣ ಬಳಿಯುವುದು. 2. ಅಕ್ಕಿಯ ಹಿಟ್ಟನ್ನು ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಕದಡಿ ನೆಲಕ್ಕೆ ರಂಗವಲ್ಲಿ ಹಾಕುವುದು.

**ಆಲಿಡ** ಆಲಿಡ (ನಂ) 1. ಸೈನಿಕನು ಯುದ್ಧಮಾಡುವಾಗ ಬಲಗಾಲನ್ನು ಮುಂದಕ್ಕೆ ಇಟ್ಟು ಎಡಮಂಡಿಯನ್ನು ಉರಿಕೊಂಡು ನಿಲ್ಲುವ ರೀತಿ. ಆ + ಲಿಹ (ಆಸ್ವಾದನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-3-114). ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ಸೈನಿಕನು ನಿಲ್ಲುವ ರೀತಿಯು (1) ವೈಶಾಖಮ್, (2) ಮಂಡಲಮ್, (3) ಸಮಪದಮ್, (4) ಆಲಿಡಮ್ ಮತ್ತು (5) ಪ್ರತ್ಯಾಲಿಡಮ್ ಎಂದು ಐದು ವಿಧ. "ಸ್ಥಾನಾನಿ ಧನ್ವಿನಾಂ ಪञ्च ತತ್ರ ವೈಶಾಖಮಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ | ತ್ರಿವಿತಸ್ತುಂತರೀ ಪಾದೌ ಮಂಡಲಂ ತೋರಣಾಕೃತಿ | ಅನ್ವಯಃ ಸ್ಯಾತ್ಸಮಪದಮಾಲಿಡಂ ತು ತತೋಽಪ್ರತಃ | ದಕ್ಷಿಣೇ ವಾಮಮಾಕುಚ್ಯ ಪ್ರತ್ಯಾಲಿಡಂ ವಿಪರ್ಯಯಃ" | "ಅತಿಷ್ಠದಾಲಿಡವಿಶೇಷಶೋಭಿನಾ ವಪುಃ ಪ್ರಕರ್ಷಣ ವಿಡಮ್ಬಿತೇಶ್ವರಃ" ರಘುಂ 3-42. (ವಿಂ) 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ರುಚಿ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಅಸ್ವಾದನೆಯ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಆ + ಲಿಹ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-2-102). 3. ಗಾಯಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ಸೇನಾನ್ಯಮಾಲಿಡಮಿವಾ-ಮುರಾಶ್ರೇಃ" ರಘುಂ 2-39.

**ಆಲಿಡಕ** ಆಲಿಡಕ (ನಂ) ಸಣ್ಣ ಕರುಗಳ ಆಟ, ಕರುಗಳ ಹಾರಾಟ.

**ಆಲಿನ** ಆಲಿನ (ನಂ) 1. ತಗರ, ತವರ. 2. ಸಂಬಂಧ, ಆಲಿಂಗನ. ಆ + ಲಿಙ್ (ಶ್ಲೇಷಣ) "ಕ್ತಃ" (3-3-114). (ವಿಂ) 3. ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟು, ಲೇಪನೆಯ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. 5. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ. "ಸ ನಿವಿಷ್ಯ ಯಥಾಕಾಮಂ ತಡೇವಾಲಿನಚಂದನಿ" ರಘುಂ 4-41.

**ಆಲ್ಯ** ಆಲ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಗೂಬೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಗಿಂಡಿ, ಕೊಳವೆಯಿರುವ ನೀರಿನ ಜೊಂಬು. (ನಂ) 3. ತೆಪ್ಪು, ಹರಿಗೋಲು. 4. ಆಲಾಗೆಡ್ಡೆ. ಆ + ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ್ತಃ" (ವಾಂ 3-2-140). "ಆಲ್ಯಗಲಂತಿಕಾಯಾಂ ಸ್ತ್ರೀ ಬಲಿವಂ ಮಲೇ ಚ ಮಲಕೇ" ಮೇದಿಂ.

**ಆಲ್ಯಕ** ಆಲ್ಯಕ (ಪುಂ) 1. ಅದಿಶೇಷ. 2. ಕರಿಮರ, ಬಲಾರದಮರ. ಆಲ್ಯ ಸಂಜಾಯಾ "ಕನ್" (4-3-94). (ನಂ) 3. ಆಲಾಗೆಡ್ಡೆ. ಆಲ್ಯ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್".

**ಆಲ್ಯುಚನ** ಆಲ್ಯುಚನ (ನಂ) 1. ಹರಿಯುವುದು, ಸೀಳುವುದು, ಸಿಗಿಯುವುದು. 2. ತೆಗೆದುಹಾಕುವುದು, ಕಿತ್ತುಹಾಕುವುದು. ಆ + ಲುಚ (ಅಪನಯನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 3. ಬಿಚ್ಚುವುದು, ಕೆದರುವುದು.

**ಆಲ್ಯುಚಿತ** ಆಲ್ಯುಚಿತ (ವಿಂ) 1. ಕಿತ್ತುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು, ತೆಗೆದುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಹರಿಯಲ್ಪಟ್ಟು, ಸಿಗಿಯಲ್ಪಟ್ಟು, ಸೀಳಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಕೆದರಲ್ಪಟ್ಟು, ಗಂಟು ಬಿಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟು (ಕೂದಲು). ಆ + ಲುಚ (ಅಪನಯನೆ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102).

**ಆಲ್ಯುಠನ** ಆಲ್ಯುಠನ (ನಂ) ದೋಚಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಸುಲಿಗೆ ಮಾಡುವುದು, ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ ಕಿತ್ತುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಆ + ಲುಠಿ (ಸ್ತೇಯ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). ಲುಠಿ ಇತಿ ಪಾಠೇ ಆಲ್ಯುಠನಮಪಿ |

**ಆಲ್ಯ ಆಲ್ಯ** (ಪುಂ) "ಆಲ್ಯ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಆ + ಲ್ಯ "ವಿವಪ್" (3-2-96).

**ಆಲ್ಯನ** ಆಲ್ಯನ (ವಿಂ) 1. ಸ್ವಲ್ಪ ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಆ ಇಪತ್ ಲೂನಮ್—ಆ + ಲ್ಯ (ಛೇದನೆ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102). 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಆ ಸಮ್ಯಕ್ ಲೂನಮ್. "ತೇನಾಮರವಭೂಹಸ್ತಸದಯಾಲೂನಪಲ್ಲವಾಃ" ಕುಮಾಂ 2-41.

**ಆಲೇಖ** ಆಲೇಖ (ಪುಂ) 1. ಪತ್ರ, ಕಾಗದ. 2. ದಸ್ತೆ ನೇಪು. ಆಲಿಖ್ಯತೇಽ—ಆ + ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸ) "ವಕ್" (3-3-121). 3. ಬರವಣಿಗೆ, ಬರೆಹ, ಬರೆಯುವುದು. ಆ + ಲಿಖ ಭಾವೇ "ವಕ್" (3-3-121).

**ಆಲೇಖನ** ಆಲೇಖನ (ನಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬರೆಯುವುದು. 2. ಚಿತ್ರಗಳಿಗೆ ಬಣ್ಣ ಹಾಕುವುದು. ಆ + ಲಿಖ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). (ವಿಂ) 3. ಬರೆಯುವವನು, ಬರಹಗಾರ. 4. ಚಿತ್ರಕ್ಕೆ ಬಣ್ಣ ಹಾಕುವವನು. ಆಲಿಖತಿ—ಆ + ಲಿಖ ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134). (ಸ್ತ್ರೀಂ)—ಲೇಖಿನಿ—ಲೇಖಿನೀ. 5. ಬರೆಯುವ ಸಾಧನ, ಲೇಖಿನಿ, ಬರೆಯುವ ಕಡ್ಡಿ. 6. ಚಿತ್ರಗಳಿಗೆ ಬಣ್ಣ ಹಾಕುವ ಕುಂಚ, ವರ್ತಿ. ಆ + ಲಿಖ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

**ಆಲೇಖ್ಯ** ಆಲೇಖ್ಯ (ನಂ) 1. ಚಿತ್ರ. ಆ + ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರ-ವಿನ್ಯಾಸ) "ವ್ಯತ್" (3-1-124). "ಇತಿ ಸಂರಮ್ಭಿಣಿ ವಾಣಿಬೆಲಸ್ಯಾಲೇಖ್ಯದೇವತಾಃ" ಮಾಘಂ 2-69. (ವಿಂ) 2. ಬರೆಯಲ್ಪಡುವ, ಚಿತ್ರಿಸಲ್ಪಡುವ. ಆ + ಲಿಖ ಕರ್ಮಂ "ವ್ಯತ್" (3-1-124).

**ಆಲೇಖ್ಯಶೇಷ** ಆಲೇಖ್ಯಶೇಷ (ವಿಂ) ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಉಳಿದಿರುವ, ಮೃತಿಯಾದ. ಆಲೇಖ್ಯಮೇವ ಶೇಷೋ ಯಸ್ಯ | "ಆಲೇಖ್ಯಶೇಷಸ್ಯ ಪಿತುರ್ವಿವೇಶ" ರಘುಂ 14-14.



ಬಾಲೇಪ ಆಲೋಚ (ಪುಂ) 1. ಬಳಿಯುವುದು, ಪೂಸು  
ವುದು. 2. ಅಕ್ಕಿಹಿಟ್ಟನ್ನು ಕದಡಿ ನೆಲಕ್ಕೆ ರಂಗವಲ್ಲಿ  
ಹಾಕುವುದು. 3. ನೆಲವನ್ನು ಸಗಡೆಯಿಂದ ಸಾರಿಸು  
ವುದು. ಆ + ಲಿಪ (ಉದೇಹೇ) ಭಾವೇ "ಘಜ್" (3-3-121)।  
4. ಮುಲಾಮು, ಲೇಪನಕ್ಕಿಲ ಮುಂತಾದುದು.  
ಆ + ಲಿಪ ಕರಂ "ಘಜ್" (3-3-121)।

ಆಲೋಕ ಆಲೋಕ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು.  
ಆಲೋಕಯತೇಜೇನ—ಆ + ಲೋಕ (ದರ್ಶನೇ) ಕರಂ "ಘಜ್"  
(3-3-121)। "ಅಸಾರಂ ಸಂಸಾರಂ ಪರಿಮುಷಿತರತ್ನಂ  
ತ್ರಿಭುವನಂ ನಿರಾಲೋಕಂ ಲೋಕಂ ಮರಣಶರಣಂ ಬಾಂಧವ-  
ಜನಮ್" ಮಾಲತೀಂ 4-30। 2. ನೋಟ, ದರ್ಶನ,  
ನೋಡುವುದು. ಆ + ಲೋಕ ಭಾವೇ "ಘಜ್"  
(3-3-121)। "ಯದಾಲೋಕೇ ಸೂಕ್ಷ್ಮಂ ವ್ರಜತಿ ಸಹಸಾ ತದ್ವಿ-  
ಪುಲತಾಮ್" ಶಾಕುಂ 1-9। "ಪ್ರಸ್ತವೇನಾಭಿವರ್ಧಂತೀ  
ವತ್ಸಾಲೋಕಪ್ರವರ್ತಿನಾ" ರಘುಂ 1-64। 3. ಜಯಶಬ್ದ,  
ಹೊಗಳಿಕೆ. "ಯಯಾದೀರಿತಾಲೋಕಃ" ಸುಧರ್ಮನಿವರ್ಮಾ  
ಸಭಾಮ್" ರಘುಂ 13-27।

ಆಲೋಕನ ಆಲೋಕನ (ನಂ) ನೋಟ, ದರ್ಶನ,  
ನೋಡುವುದು. ಆ + ಲೋಕ (ದರ್ಶನೇ) "ಲ್ಯುಟ್"  
(3-3-115)। "ತತಃ ಸ ಸಂಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯ ಶರದ್ಗುಣಶ್ರಿಯಂ  
ಶರದ್ಗುಣಾಲೋಕನಲೋಚಕ್ಷುಷಾ" ಕಿರಾಂ 4-20। "ವ್ರಜತಿ  
ಹಿ ಸಫಲತ್ವಂ ಬಲ್ಲಭಾಲೋಕನೇನ" ಮಾಘಂ 11-33।

ಆಲೋಕನೀಯ ಆಲೋಕನೀಯ (ವಿಂ) ನೋಡಲು  
ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಸುಂದರವಾದ. ಆ + ಲೋಕ (ದರ್ಶನೇ)  
"ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। ಭಾವೇ "ತಲ್" (4-1-119)।  
ಆಲೋಕನೀಯತಾ ಆಲೋಕನೀಯತಾ. "ಚಿತ್ರನೈಸ್ತಾ ಇವ  
ಗತಾಃ ಪ್ರಕಾಮಾಲೋಕನೀಯತಾಮ್" ಕುಮಾರಂ 2-24।

ಆಲೋಕಮಾನ ಆಲೋಕಮಾನ (ವಿಂ) ನೋಡುತ್ತಿರುವ,  
ದರ್ಶನಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಆ + ಲೋಕ (ದರ್ಶನೇ)  
"ಶಾನಚ್" (3-2-124)। "ಆಲೋಕಮಾನಾ ವರಲೋಕ-  
ಲಕ್ಷ್ಮಿಂ ತಾತ್ಕಾಲಿಕೀಮಪ್ಸರಸೋ ರಸೋತ್ಕಾಃ" ನೆಪಂ 10-44।

ಆಲೋಕಯತ್ ಆಲೋಕಯತ್ (ವಿಂ) ನೋಡುತ್ತಿರುವ.  
ಆ + ಲೋಕ (ದರ್ಶನೇ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124)।

ಆಲೋಕಿತ ಆಲೋಕಿತ (ನಂ) 1. ನೋಟ, ದರ್ಶನ.  
ಆ + ಲೋಕ (ದರ್ಶನೇ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-3-114)।  
"ವಿವಿಧಮಹಮಭುವಂ ಪಾತ್ರಮಾಲೋಕಿತಾನಾಮ್" ಮಾಲತೀಂ 1-30।  
(ವಿಂ) 2. ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಆ + ಲೋಕ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ"  
(3-3-102)।

ಆಲೋಕಿತವತ್ ಆಲೋಕಿತವತ್ (ವಿಂ) ನೋಡಿದ.  
ಆ + ಲೋಕ (ದರ್ಶನೇ) "ಕ್ತವತುಃ" (3-2-102)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್"  
(4-1-6)।—ಬತೀ-ವತೀ.

ಆಲೋಕಿತು ಆಲೋಕಿತು (ವಿಂ) ನೋಡುವ. ಆ + ಲೋಕ  
(ದರ್ಶನೇ) "ತುಚ್" (3-1-133)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್"  
(4-1-4)।

ಆಲೋಕಯ ಆಲೋಕಯ (ವಿಂ) 1. ನೋಡಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ, ಸುಂದರವಾದ. ಆ + ಲೋಕ (ದರ್ಶನೇ) "ಘಜ್"  
(3-1-124)। (ಅವ್ಯಂ) 2. ನೋಡಿ, ದರ್ಶನ  
ಮಾಡಿ. ಆ + ಲೋಕ "ಲ್ಯಪ್" (3-1-37)।  
"ಆಲೋಕಯ ವ್ಯವದಧತಂ ಪುರೋ ಮಯೂರಮ್" ಮಾಘಂ 6-11।

ಆಲೋಕಯಮಾನ ಆಲೋಕಯಮಾನ (ವಿಂ) ನೋಡಲ್ಪಡುವ.  
ಆ + ಲೋಕ (ದರ್ಶನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (3-2-124)।  
"ಅಯಂ ಕಥಂ ಸ್ಯಾದಿತಿ ಬಾಲ್ಯಗರ್ಭಮಾಲೋಕಯಮಾನೋ ವನದೇವತಾಭಿಃ"  
ಚಂ ರಾಂ।

ಆಲೋಚಕ ಆಲೋಚಕ (ವಿಂ) ಆಲೋಚನೆ ಮಾಡುವ,  
ಯೋಚಿಸುವ. ಆ + ಲೋಕ (ದರ್ಶನೇ) + ಣಿಚ್ "ಫ್ವಲ್"  
(3-1-133)।

ಆಲೋಚನ ಆಲೋಚನ (ನಂ) 1. ಆಲೋಚನೆ,  
ಯೋಚನೆ, ವಿಚಾರ. 2. ಮನನ, ಧ್ಯಾನ. ಆ +  
ಲೋಕ (ದರ್ಶನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-115)। ಭಾವೇ "ಯುಚ್"  
(3-3-107)। ಆಲೋಚನಾ ಆಲೋಚನಾ  
3. ನೋಟ, ದರ್ಶನ. (ಅವ್ಯಂ) 4. ಆಲೋಚನೆ  
ಪರ್ಯಂತ, ಕಣ್ಣಿನವರೆಗೂ. ಲೋಚನಮಭಿವ್ಯಾಪ್ಯ।  
ಅವ್ಯಯಿಂ। "ಆಲೋಚನಾಂತಂ ಶ್ರವಣೇ ವಿತತಯ" ಕುಮಾರಂ  
6-64।

ಆಲೋಚಯತ್ ಆಲೋಚಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಯೋಚಿ  
ಸುತ್ತಿರುವ, ವಿಚಾರ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಆ + ಲೋಕ  
(ದರ್ಶನೇ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124)। "ಆಲೋಚಯಂತೋ  
ವಿಸ್ತಾರಮಮ್ಭಸಾಂ ದಕ್ಷಿಣೋದಧೇಃ" ಭट्टಿಂ 9-40।

ಆಲೋಚಿತ ಆಲೋಚಿತ (ವಿಂ) ವಿಚಾರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು,  
ವಿವೇಚನೆಯಿಂದ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಆ + ಲೋಕ (ದರ್ಶನೇ)  
"ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "ಅಸಂಶಯಾಲೋಚಿತಕಾರ್ಯನುಷ್ಠಃ"  
ಕಿರಾಂ 3-33।

ಆಲೋಚಿತವತ್ ಆಲೋಚಿತವತ್ (ವಿಂ) ವಿವೇಚನೆ  
ಮಾಡಿದ, ವಿಚಾರಮಾಡಿ ನೋಡಿದ. ಆ + ಲೋಕ  
(ದರ್ಶನೇ) "ಕ್ತವತುಃ" (3-2-102)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್"  
(4-1-6)।—ಬತೀ-ವತೀ.



**ಶಾಲೋಚಿತ ಅಲೋಚಿತ** (ವಿಂ) ಅಲೋಚಿಸುವ, ವಿಚಾರಮಾಡಿ ನೋಡುವ. ಆ + ಲೋಚ (ದರ್ಶನೆ) "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ಶಾಲೋಚ್ಯ ಅಲೋಚ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಅಲೋಚಿಸಲ್ಪಡುವ, ಅಲೋಚಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಆ + ಲೋಚ (ದರ್ಶನೆ) + ಣಿಚ್ "ಣ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)। (ಅವ್ಯಂ) 2. ವಿವೇಚನೆ ಮಾಡಿ, ವಿಚಾರಮಾಡಿ. ಆ + ಲೋಚ (ದರ್ಶನೆ) "ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭)।

**ಶಾಲೋಡನ ಅಲೋಡನ** (ನಂ) 1. ಕಲಕುವುದು, ಕದಲಿಸುವುದು, ಕ್ಷೋಭೆಹೊಂದಿಸುವುದು. ಆ + ಲುಡ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಬೆರಸುವುದು, ಮಿಶ್ರಮಾಡುವುದು.

**ಶಾಲೋಡಿತ ಅಲೋಡಿತ** (ವಿಂ) 1. ಕಲಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಕ್ಷೋಭೆಹೊಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಲುಡ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಅತಿಭರವಾರವಭ್ರಮಿತ-ವಾರಿಸಂಚಯಮಾಯತಮಪಿ ತತ್ಸರಃ ಸಮಂತಾದಾಲೋಡಿತಮ್" ಬೇಣಿಂ ೬। 2. ಬೆರಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಿಶ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಶಾಲೋಡಿತಾಃ ಕಾಞ್ಚನಭೂಪರಾಗಾಃ" ಮಾಘಂ ೩-೨೭।

**ಶಾಲೋಲ ಅಲೋಲ** (ವಿಂ) ಸ್ವಲ್ಪ ಚಂಚಲವಾದ, ಸ್ವಲ್ಪ ಅಲುಗಾಡುತ್ತಿರುವ. ಆ + ಲೋಲ (ಲೋಲ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಶಾಲೋಲಪಾದಪಲತಾಂತರನಿಗಂತಾನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೫-೪೧।

**ಶಾಲೋಲಿತ ಅಲೋಲಿತ** (ವಿಂ) ಸ್ವಲ್ಪ ಅಲುಗಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಲುಲ (ವಿಮರ್ದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಶಾಲೋಲಿತವತ್ ಅಲೋಲಿತವತ್** (ವಿಂ) ಸ್ವಲ್ಪ ಅಲುಗಾಡಿಸಿದ. ಆ + ಲುಲ (ವಿಮರ್ದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಶಾಲೋನಯ ಅವನೇಯ** (ಪುಂ) ಅಂಗಾರಕ, ಕುಜಗ್ರಹ. ಅವನ್ಯಾಃ ಭೂರಪತ್ಯಮ್ "ಡಕ್" (೪-೧-೧೨೦)।

**ಶಾಲೋಪನ ಅವಪನ** (ನಂ) 1. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಬೀಜವನ್ನು ಬಿತ್ತುವುದು. ಆ + ಡ್ ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಇಡುವ ಪಾತ್ರೆ. ಆ + ಡ್ ವಪ್ ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 3. ಬಿತ್ತುವ ಕಾಳು, ಬೀಜ. 4. ವಿವಾಹದಲ್ಲಿ ಸಹೋದರನು ಹೋಮಕ್ಕಾಗಿ ವಧುವಿನ ಕೈಯಲ್ಲಿ ಬೀಜವನ್ನು (ಅರಳನ್ನು) ಹಾಕುವುದು. 5. ಗೋಡೆ ಬೀಳು. ಅಪ್ಯತೇ ಸ್ಥಾಪ್ಯತೇ ಧಾನ್ಯಾದಿರತ್ರ ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಡ್"। 6. ಕೇಶಖಂಡನ, ಕತ್ತರ.

**ಶಾಲೋಕ ಅವರಕ** (ನಂ) 1. ಮುಚ್ಚುಳ. 2. ಪರದೆ, ಮುಸುಕು, ಮುಖಪಟ್ಟಿ. (ವಿಂ) 3. ಮುಚ್ಚುವ, ಮರೆಮಾಡುವ. ಆ + ವಕ್ (ವರಣೆ) "ಫ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ಶಾಲೋಣ ಅವರಣ** (ನಂ) 1. ಮುಚ್ಚುವುದು, ಮರೆಮಾಡುವುದು. ಆ + ವಕ್ (ವರಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಸೂರ್ಯ ತಪತ್ಯಾವರಣಾಯ ದೃಷ್ಟಿಃ ಕಲ್ಪೇತ ಲೋಕಸ್ಯ ಕಥಂ ತಮಿಸ್ತಾ" ರಘುಂ ೫-೧೩। 2. ಮುಚ್ಚುಳ, ಹೊದಿಕೆ. ಆ + ವಕ್ ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಉತ್ಸೃಜ್ಯ ಕುಸುಮಶಯನಂ ನಲಿನೀದಲಕಲ್ಪಿತಸ್ತನಾವರಣಮ್" ಶಾಕುಂ ೩-೧೯। 3. ಅಜ್ಞಾನ. [ಇದು ಜೈತನ್ಯವನ್ನು ಮರೆಮಾಡುವುದು.] 4. ಗುರಾಣಿ, ಕತ್ತಿಯ ಎಟಿನಿಂದ ದೇಹವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವ ಹಲಗೆ. 5. ಬೇಲಿ, ಮರೆ, ಪ್ರಾಕಾರ, ಸುತ್ತುಗೋಡೆ. "ಇಹ ಸಿಂಧವಶ್ಚ ವರಣಾವರಣಾಃ ಕರಿಣಾಂ ಮುಢೇ ಸನಲದಾನಲದಾಃ" ಕಿರಾಂ ೫-೨೫। 6. ಅಡ್ಡಿ, ಆತಂಕ, ತಡೆ. "ಕಾಲೋನಾವರಣಾ-ತ್ಯಯಾತ್ ಪರಿಣತೇ ಯತ್ಪ್ರೇಮಸಾರೆ ಸ್ಥಿತಂ ಭದ್ರಂ ತಸ್ಯ ಸುಮಾನುಷಸ್ಯ ಕಥಮಪ್ಯೇಕಂ ಹಿ ತತ್ಪ್ರಾರ್ಥಯಂತಿ" ಉರಾಂ ೧-೩೯।

**ಶಾಲೋಜನ ಅವರ್ಜನ** (ನಂ) 1. ಬಗ್ಗಿಸುವುದು. 2. ಕೊಡುವುದು, ದಾನ ಮಾಡುವುದು. 3. ಬಿಡುವುದು, ತ್ಯಜಿಸುವುದು. 4. ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 5. ಸಂಪಾದಿಸಿ ಕೊಡುವುದು, ಸಂಗ್ರಹಿಸುವುದು. ಆ + ವಜಿ (ವರ್ಜನೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 6. ಸುರಿಯುವುದು.

**ಶಾಲೋಜಿತ ಅವರ್ಜಿತ** (ವಿಂ) 1. ಬಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ವಜಿ (ವರ್ಜನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಶಾಲೋಜಿತಾ ಕಿಂಚಿದಿವ ಸ್ತನಾಮ್ಯಾಂ ವಾಸೋ ವಸಾನಾ ತರುಣಾಕರಾಗಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೫೪। 2. ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ, ದಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಮತ್ಪರಂ ದುರ್ಲಭಂ ಮತ್ವಾ ನೂನಮಾವರ್ಜಿತಂ ಮಯಾ" ರಘುಂ ೧-೩೭। 3. ತ್ಯಾಗ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಸಂಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಚತುರ್ಧಿಗಾ-ವರ್ಜಿತಸಂಭೃತಾಂ ಯೋ ಮೃತ್ಪಾತ್ರಶೋಷಾಮಕರೋದ್ಭೂತಿಮ್" ರಘುಂ ೬-೭೬। 6. ಸುರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಎರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಪಿ ತ್ವದಾ-ವರ್ಜಿತವಾರಿಸಂಭೃತಂ ಪ್ರವಾಲಮಾಸಾಮನುಬಂಧಿ ವೀರಧಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೫-೩೪।

**ಶಾಲೋಜಿತವತ್ ಅವರ್ಜಿತವತ್** (ವಿಂ) 1. ಬಗ್ಗಿಸಿದ. 2. ಕೊಟ್ಟ, ದಾನಮಾಡಿದ. ಆ + ವಜಿ (ವರ್ಜನೆ) ಕರಂ "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 3. ತ್ಯಾಗಮಾಡಿದ.



4. ವಶಪಡಿಸಿಕೊಂಡ. 5. ಸಂಪಾದಿಸಿದ. 6. ಸುರಿದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). ಆವರ್ತವತೀ ಅವರ್ತವತೀ. "ಮರೀಚಿಮಾವರ್ತವತೀ ಇಲಾಘಸೇ" ದಶಕುಂ.

ಆವರ್ತ ಅವರ್ತ (ಪುಂ) 1. ನೀರಿನ ಸುಳಿ. ಆ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮). "ಆವರ್ತಗತ-ಸಂಭ್ರಾಂತವಿಮಾನಪ್ಲವವಿಪ್ಲವಾ" ಚಂ ರಾಂ. 2. ಕುದುರೆಯ ಬೆನ್ನಿನ ಮೇಲಿನ ಸುಳಿ. 3. ಪುನರಾಲೋಚನೆ. 4. ಮನುಷ್ಯನ ದೇಹದಲ್ಲಿರುವ ಕೂದಲಿನ ಸುಳಿ. 5. ಸಂಶಯ, ಸಂದೇಹ. ಆ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬). 6. ಲೋಕ ವನ್ನು ಕರಗಿಸುವುದು. 7. ಸಂಸಾರ. 8. ಅವರ್ತ ವೆಂಬ ಒಂದು ಮೇಘ. 9. ತಿರುಗುವಿಕೆ, ಸುತ್ತುವಿಕೆ. "ಆವರ್ತಶ್ಚಿಂತನೆ ವಾರಿಭ್ರಮೇ ಚಾವರ್ತನೆ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ. 10. ದೇಹದೊಳಗಿನ ಸುಳಿಯ ಆಕಾರದ ಒಂದು ನಾಡಿ.

ಆವರ್ತಕ ಅವರ್ತಕ (ಪುಂ) 1. ಅವರ್ತಕವೆಂಬ ಒಂದು ಮೇಘ. ಆವರ್ತಕವಸ್ಥಾಂ "ಕನ್"। "ತದೀಯಾಸ್ತೋ-ದೇವ್ಯಾ ಪುಷ್ಕರಾವರ್ತಕಾದಿಪು" ಕುಮಾಂ ೨-೫೦. 2. ಕಣ್ಣಿನ ಹುಬ್ಬುಗಳ ಮೇಲಿನ ತಗ್ಗುಪ್ರದೇಶ. 3. ನೀರಿನ ಸುಳಿ. 4. ಕೂದಲಿನ ಸುಳಿ. 5. ಸುತ್ತುವುದು, ತಿರುಗುವುದು.

ಆವರ್ತನ ಅವರ್ತನ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಆವರ್ತಯತಿ ಸಂಸಾರಚಕ್ರಮ್—ಆ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪). "ಆವರ್ತನೋ ನಿವೃತ್ತಾತ್ಮಾ" ವಿಂ ಸಂ. "ಆವರ್ತನೋಽಸೌ ಸಂಸಾರಚಕ್ರಸ್ಯಾವರ್ತನಾನ್ಮುಹು:" (ನಂ) 2. ತಿರುಗುವುದು, ಸುತ್ತುವುದು. 3. ಕಡೆಯುವುದು, ಕಲಕುವುದು. 4. ಕರಗಿಸುವಿಕೆ. 5. ಪುನಃ ಪುನಃ ಮಾಡುವಿಕೆ, ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಮಾಡುವುದು. ಆ + ವೃತು + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). 6. ಮಧ್ಯಾಹ್ನ ಕಾಲ, ನೆರಳು ಪಶ್ಚಿಮದಿಂದ ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿಗೆ ತಿರುಗುವ ಸಮಯ. [ಮಧ್ಯಾಹ್ನದವರೆಗೂ ನಮ್ಮ ನೆರಳು ಪಶ್ಚಿಮದಿಕ್ಕಿಗೆ ಬೀಳುವುದು. ಅನಂತರ ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿಗೆ ತಿರುಗುವುದು.] ಆ + ವೃತು ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). (ಸ್ತ್ರೀಂ)—ನಿ-ನೀ. 1. ದರ್ಶನ, ನೋಟ. 2. ಮೂಷೆ, ಮೂಸಿ, ಕೂವೆ. ಆವರ್ತಯಂತೆ-ನಯಾ—ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭). "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫).

ಆವರ್ತನೀಯ ಅವರ್ತನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಕರಗಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಕರಗಿಸಲ್ಪಡಬಹುದಾದ. ಆ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬). 2. ಕಡೆಯಲ್ಪಡುವ. 3. ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಡುವ, ಅಧಿಕಪಡಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ.

ಆವರ್ತಿತ ಅವರ್ತಿತ (ವಿಂ) 1. ಕರಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಧಿಕಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಅಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪುನಃ ಪುನಃ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಕಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).

ಆವರ್ತಿಸ್ ಅವರ್ತಿಸ್ (ವಿಂ) 1. ಪುನಃ ಪುನಃ ಸುತ್ತುತ್ತಿರುವ, ಸುತ್ತುಡುತ್ತಿರುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಆ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಣಿನಿ:" (೩-೨-೭೮). "ಆವರ್ತಿಸ್-ಭುವನಾಲ್ಲೋಕಾಃ ಪುನರಾವರ್ತಿನೋಽರ್ಜುನ" ಗೀತಾ ೮-೧೬. 2. ಕರಗಿಸುವ. 3. ಕಡೆಯುವ, ಕಲಕುವ. ಆ + ವೃತು + ಣಿಚ್ "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫). ಆವರ್ತಿಸ್ ಅವರ್ತಿಸ್.

ಆವರ್ತಿನೀ ಅವರ್ತಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಲಮುರಿ ಗಿಡ, ಕುರುಟೆಗೆ ಗಿಡ. 2. ಸುಳಿಯ ಮಡು, ಸುಳಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಗುಂಡಿ (ಮಡು).

ಆವರ್ತಿ ಅವರ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಜ್ಜಿ, ಸಾಲು. ಆವರ್ತೀ—ಆ + ವಲ (ಸಂವರಣ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೮). "ದ್ವಿಜಾವಲಿವ್ಯಾಜನಿಶಾಕರಾಂಶುಭಿಃ" ಮಾಘಂ ೧-೨೫. "ವಿದೂರತಃ ಪ್ರತಿಬಲಕೇತನಾವಲಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೭-೪೪. 2. ಪರಂಪರೆ. ವಾ "ಡೀಪ್" (೧೦೪-೨-೪೫). ಆವರ್ತಿ ಅವರ್ತಿ.

ಆವರ್ತಿತ ಅವರ್ತಿತ (ವಿಂ) 1. ಸ್ವಲ್ಪ ತಿರುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ವಲ (ಸಂವಲನ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). 2. ಸ್ವಲ್ಪ ಚಲಿಸಿರುವ. 3. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಚಲಿಸಿರುವ. ಆ + ವಲ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨).

ಆವಶ್ಯಕ ಅವಶ್ಯಕ (ನಂ) 1. ಅಗತ್ಯ, ಅನಿವಾರ್ಯ ವಿಚಾರ. (ವಿ) 2. ನಿಯತವಾದ, ಅಗತ್ಯವಾಗಿ ಬೇಕಾದ. 3. ಅಗತ್ಯವಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ. ಅವಶ್ಯಕ ಭಾವ: "ವುತ್" (೫-೧-೧೩೩).

ಆವಶ್ಯಪುತ್ರಕ ಅವಶ್ಯಪುತ್ರಕ (ನಂ) ಮಗನು ಅಧೀನ ದಲ್ಲೊದಿರುವಿಕೆ. ನ ವಶ್ಯ: ಅವಶ್ಯ: ಪುತ್ರ: ತಸ್ಯ ಭಾವ: "ವುತ್" (೫-೧-೧೩೩).



**ಆವಸತಿ ಅವಸತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರ್ಧರಾತ್ರಿ, ಸಮರಾತ್ರಿ.   
 ವಸತೀ ಗೃಹೇ ವಸತಿ: ರಾತ್ರಿ:—ಆ ಸಮ್ಯಕ್ ವಸತಿ: |   
 [ಅರ್ಧರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲರೂ ಮನೆಯಲ್ಲೇ ಇರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.]

**ಆವಸಥ ಅವಸಥ** (ನಂ) 1. ವಾಸಸ್ಥಾನ, ಮನೆ.   
 ಆ + ವಸ (ನಿವಾಸೇ) “ಅವ:” (ಓಂ ೩-೧೧೬) |   
 “ನಿವಸವಾವಸಥೇ ಪುರಾಹ್ನಿ:” ಋಘಂ ೮-೭೪ | 2. ವಿಶ್ರಾಂತಿ   
 ಸ್ಥಾನ, ಆಶ್ರಯಸ್ಥಾನ. 3. ಗ್ರಾಮ, ಹಳ್ಳಿ.   
 4. ಆಶ್ರಮ, ತಪಸ್ವಿಗಳ ವಾಸಸ್ಥಳ. 5. ಯಾಗಾಗ್ನಿ   
 ಯನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಿಡುವ ಸ್ಥಳ.

**ಆವಸಥಿಕ ಅವಸಥಿಕ** (ಪುಂ) ಮನೆಯಲ್ಲಿ ವಾಸ   
 ಮಾಡುವವನು, ಗೃಹಸ್ಥ, ಗೃಹಪತಿ. ಆವಸಥೇ   
 ಗೃಹೇ ವಸತಿ “ಊಲ್” (೪-೪-೭೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಜಿಷ್”   
 (೪-೧-೪೧) | ಆವಸಥಿಕೀ ಅವಸಥಿಕೀ.

**ಆವಸಥ್ಯ ಅವಸಥ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಯಾಗಾಗ್ನಿ. 2. ಲೌಕಿಕ   
 ಲಾಗ್ನಿ. 3. ಪಂಚಾಗ್ನಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಆವಸಥ್ಯ-   
 ಸ್ವಾಯಮ್ “ಯತ್” (೪-೩-೪೪) | “ಆವಸಥ್ಯಾಹವನೀಯೌ   
 ಲಕ್ಷಿಣಾಗ್ನಿಃ ಸ್ತಥೈವ ಚ | ಅನ್ವಾಹಾರ್ಯೌ ಗಾಹಪತ್ಯ ಇತ್ಯೇತೇ ಪञ್ಚ   
 ಬ್ರಹ್ಮಣ:” |

**ಆವಸಾನ ಅವಸಾನ** (ವಿಂ) ಗ್ರಾಮದ ಹೊರಗೆ   
 ವಾಸಮಾಡುವ, ಊರಿನಿಂದ ಹೊರಗಡೆ ವಾಸಿಸುವ.   
 ಆವಸಾನಮಭಿಜನೋಸ್ತು “ಅನ್” (೪-೩-೯೦) |

**ಆವಸಿತ ಅವಸಿತ** (ನಂ) 1. ಕಣದಲ್ಲಿ ರಾಶಿಕಾಶಿ   
 ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಿದ (ಒಕ್ಕಿದ) ಧಾನ್ಯ. ಆವಸೀಯತೇ—ಘೌ   
 (ಅಂತರ್ಮಣಿ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) | “ಶ್ರುದ್ಧಮಾವಸಿತಂ   
 ಪಾಣ್ಯಮ್” ಅಮಂ | 2. ಜೆನ್ನಾಗಿ ಹಣ್ಣಾಗಿರುವ   
 ಧಾನ್ಯ. (ವಿಂ) 3. ನಿರ್ಣಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಶ್ಚಯಿಸ   
 ಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಮುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಆವಹ ಅವಹ** (ಪುಂ) 1. ಸಪ್ತ ವಾಯುಗಳಲ್ಲೊಂದು,   
 ಭೂವಾಯು. ಆವಹತಿ ಆಭಿಮುಖ್ಯೇನ ಗಚ್ಛತಿ—ಆ + वह   
 (ಪ್ರಾಪಣೇ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) | “ಆವಹ: ಪ್ರವಹಶ್ಚೈವ   
 ವಿವಹಶ್ಚ ಸಮೀರಣ: | ಪರಾವಹ: ಸಂವಹಶ್ಚ ತದ್ವಹಶ್ಚ ಮಹಾವಹ: |   
 ತಥಾ ಪರಿವಹ: ಶ್ರೀಮಾನ್” ಹರಿವಂ | (ವಿಂ) 2. ಹೊಂದಿ   
 ಸುವ, ಸೇರಿಸುವ, ಉಂಟುಮಾಡುವ. ಆವಹತಿ   
 ಪ್ರಾಪಯತಿ—ಆ + वह (ಪ್ರಾಪಣೇ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) |   
 “ವಶೇಶಾವಹಾ ಭರ್ತುರಲಕ್ಷಣಾಹಮ್” ಋಘಂ ೧೪-೫ |

**ಆವಾಪ ಆವಾಪ** (ಪುಂ) 1. ಬೀಜವನ್ನು ಬಿತ್ತುವುದು.   
 ಆ + वप् (बीजसन्ताने) “घञ्” (೩-೩-೧೮) |

2. ಗಿಡದ ಪಾತಿ. ಆವಪಂತಿ ಜಲಮತ್ರ—ಆ + वप्   
 “घञ्” (೩-೩-೧೨೧) | 3. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಇಡುವ   
 ಪಾತ್ರೆ. 4. ಶತ್ರುರಾಸ್ತ್ರದ ಚಿಂತೆ. “ತನ್ತ್ರಂ   
 ಸ್ವರಾಷ್ಟ್ರಚಿಂತಾಯಾಮಾವಾಪ: ಪರಚಿಂತನೆ” ವೈಜಂ | “ತನ್ತ್ರಾ-   
 ವಾಪವಿದಾ ಯೋಗಮಂಡಲಾನ್ಯವಿತಿಷ್ಠತಾ” ಮಾಘಂ ೨-೮೮ |   
 5. ಪ್ರಧಾನ ಹೋಮ. 6. ಬಳೆ, ಕಡಗ, ಕಂಕಣ.   
 “ಕಡಕೋ ವಲಯಂ ಪಾರಿಹಾರ್ಯಾವಾಪೌ ಚ ಕಡ್ಞಮ್” ಅಭಿಂ   
 ವಿಂ | 7. ಆಕ್ಷೇಪಣೆ. 8. ಹಳ್ಳತಿಟ್ಟಾದ ಪ್ರದೇಶ,   
 ಸಮವಲ್ಲದ ಭೂಮಿ. 9. ಪ್ರಕ್ಷೇಪ, ಇಲ್ಲದುದನ್ನು   
 ಸೇರಿಸುವುದು.

**ಆವಾಪಕ ಆವಾಪಕ** (ಪುಂ) 1. ಬಳೆ, ಕಡಗ, ಕಂಕಣ.   
 ಆ उप्यते—ಆ + वप् (बीजसन्ताने) “घञ्”   
 (೩-೩-೧೯) | ಸಂಜಾಯಾಂ “ಕನ್” (೪-೩-೭೪) | (ವಿಂ)   
 2. ಬೀಜವನ್ನು ಬಿತ್ತುವವನು. 3. ನಾಪಿತ.

**ಆವಾಪನ ಆವಾಪನ** (ನಂ) 1. ಮಗ್ಗ. 2. ನೂಲು   
 ಸುತ್ತುವ ಕಂಡಿಕೆ, ರಾಟೆ. ಆ + वप् (बीजसन्ताने)   
 ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭) | 3. ಕೇಶಖಂಡನ,   
 ಕತ್ತರ. ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) |

**ಆವಾಲ ಆವಾಲ** (ನಂ) ಗಿಡದ ಪಾತಿ. ಆವಲತೇಽ   
 ಮ್ನೋಽನ್—ಆ + वल (सञ्चलने) “घञ्” (೩-೩-೧೨೧) |   
 “ಸ್ಯಾದಾಲವಾಲಮಾವಾಲಮ್” ಅಮಂ |

**ಆವಾಸ ಆವಾಸ** (ಪುಂ) 1. ಮನೆ, ವಾಸಗೃಹ.   
 ಆ + वस (निवासे) “घञ्” (೩-೩-೧೨೧) |   
 “ಆವಾಸೋ ಲಯನಂ ಮನೋಹರಮಭಿಪ್ರಾಯಾನುರೂಪಾ ವಣಿಙ್ನಾರ್ಯೌ   
 ವಾಙ್ಞಿತಕಾಲಮಿಷ್ಟಮಶನಂ ಶಯ್ಯಾ ಮೃದುಪ್ರಸ್ತರಾ:” ಪ್ರಬೋಧಂ   
 ೩-೯ | 2. ಕೋಣೆ, ಕೊಠಡಿ.

**ಆವಾಹನ ಆವಾಹನ** (ನಂ) 1. ದೇವತೆಗಳು ವಿಗ್ರಹ   
 ಮೊದಲಾದುವುಗಳಲ್ಲಿ ಸನ್ನಿಹಿತರಾಗಲು ಕರೆಯುವುದು,   
 ದೇವತೆಗಳ ಸನ್ನಿಧ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಪ್ರಾರ್ಥನೆ.   
 ಆ + वह (प्रापणे) + णिच् “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) |   
 2. ಹದಿನಾರು ವಿಧ ಉಪಚಾರಗಳಲ್ಲೊಂದು.

**ಆವಾಹನೀ ಆವಾಹನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವತೆಗಳ ಪ್ರಾರ್ಥನೆ   
 ಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಹಸ್ತಮುದ್ರೆ, ಎರಡು ಕೈಗಳನ್ನೂ   
 ಜೋಡಿಸಿ ಅನಾಮಿಕೆಯ (ಕಿರುಬೆರಳಿನ ಪಕ್ಕದ   
 ಬೆರಳಿನ) ಬುಡದಲ್ಲಿ ಅಂಗುಷ್ಠ (ಹೆಬ್ಬೆರಳು) ಗಳನ್ನು   
 ಇಟ್ಟು ಮಾಡುವ ತಂತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಒಂದು ಮುದ್ರೆ.   
 “ಹಸ್ತಾಭ್ಯಾಮಂಜಲಿಬದ್ಧ್ವಾನ್ಯಾಮಿಕಾಮೂಲಪರ್ವಣಿ: | ಅತ್ಯಗುಣಿ   
 ನಿಕ್ಷಿಪೇಶ್ವತ್ರ ಮುದ್ರಾ ಸಾಽವಾಹನೀ ಸ್ಮೃತಾ” |



ಆವಿಕ ಅವಿಕ (ನಂ) 1. ಕಂಬಳ, ಉಣ್ಣೆಯಿಂದ ಮಾಡಿದ ಬಟ್ಟೆ. ಅವಿನಾ ತಲ್ಲೋಮ್ನಾ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೭೯). (ವಿಂ) 2. ಮೇಷಸಂಬಂಧವಾದ, ಕುರಿಯಸಂಬಂಧವಾದ. ಅವಿ, ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:". ಅವಿಕಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

ಆವಿಕಸೌತ್ರಿಕ ಅವಿಕಸೌತ್ರಿಕ (ವಿಂ) ಉಣ್ಣೆಯ ದಾರದಿಂದ ತಯಾರಾದ. ಆವಿಕಸೂತ್ರೇಣ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೭೯)।

ಆವಿಗ್ನ ಅವಿಗ್ನ (ವಿಂ) ಕಷ್ಟಕ್ಕೊಳಗಾದ, ತೊಂದರೆ ಪಟ್ಟ. ಆ+ಆ ವಿಜಿ (ಭಯಚಲನಯೋ:) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)।

ಆವಿಡ್ ಅವಿಡ್ (ವಿಂ) 1. ಕುಟಲವಾದ, ಸೊಟ್ಟಾದ, ಡೊಂಕಾಗಿರುವ. ಆವಿಧ್ಯತೇ ಸ್ಮ-ಆ+ವ್ಯಥ (ತಾಡನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಹೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪಾದಪಾವಿಡ್ಪರಿವ: ಶಿಲಾನಿಷ್ಪಿಷ್ಟ-ಮುಧ್ಗರ:" ರಘುಂ ೧೨-೭೩। 3. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನೂಕಲ್ಪಟ್ಟ, ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಕೊರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ರಂಧ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ.

ಆವಿಧ ಅವಿಧ (ಪ್ರಂ) 1. ಉಳಿ, ರಂಪಿಗೆ. 2. ಬೈರಿಗೆ, ಮರವನ್ನು ಕೊರೆಯುವ ಚೂಪಾದ ಸಲಾಕೆ. ಆವಿಧ್ಯತೇಜೇನ-ಆ+ವ್ಯಥ (ತಾಡನೆ) "ಕ:" (ವಾಂ ೩-೩-೪೮)।

ಆವಿರ್ಭವತ್ ಅವಿರ್ಭವತ್ (ವಿಂ) ಹುಟ್ಟುವ, ಮೈದೋರುವ, ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ. ಆವಿಸ್ + ಭ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬)।-ಭವಂತಿ-ಭವಂತಿ. "ಆವಿರ್ಭವಂತಿ ಪಥಮಂ ಪ್ರಿಯಾಯಾ: ಸೋಚ್ಚವಾಸಮಂತ:ಕರಣಂ ಕರೋತಿ" ಮಾಲತೀಂ ೩-೪।

ಆವಿರ್ಭಾವ ಅವಿರ್ಭಾವ (ಪ್ರಂ) 1. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ತೋರಿಕೆ, ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ. ಆವಿಸ್ + ಭ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಭಜ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ದೇವತೆಗಳು ಮನುಷ್ಯ ರೂಪದಿಂದ ಅವತರಿಸುವಿಕೆ. 3. ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ, ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿದ್ದು ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ.

ಆವಿರ್ಭೂತ ಅವಿರ್ಭೂತ (ವಿಂ) 1. ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡ, ಮೈದೋರಿದ. 2. ಪ್ರಕಾಶಹೊಂದಿದ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ. ಆವಿಸ್ + ಭ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಆವಿರ್ಭೂತಮಪಾಂ ಮಧ್ಯೇ ಪಾರಿಜಾತಮಿವಾಪರಮ್" ರಘುಂ ೧-೧೧।

ಆವಿಲ ಅವಿಲ (ವಿಂ) 1. ಕಲುಷವಾದ, ಬಗ್ಗಡವಾದ, ಕೊಳಕಾದ. ಆವಿಲತಿ-ಆ+ವಿಲ (ಸಂವರಣ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೪)। "ಪಚ್ಚುಚ್ಚಿದ: ಫಲಸ್ಯೇವ ನಿಕಷೇಣಾವಿಲಂ ಷಯ:" ಮಾಲಂ ೨-೮। 2. ಶುದ್ಧವಲ್ಲದ, ಮಲಿನವಾದ, ದೂಷಿತವಾದ. "ಸಜಂ ನ ಕಾಚಿದ್ವಿಜಹಿ ಜಲಾವಿಲಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೮-೩೭।

ಆವಿಷ್ಕರಣ ಅವಿಷ್ಕರಣ (ನಂ) 1. ತೋರಿಕೆ, ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಆವಿಸ್ + ಟ್ ಕೃಜ್ (ಕರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವ ಸಾಧನ, ಕಾಣುವಂತೆ ಮಾಡುವ ಉಪಾಯ. ಆವಿಸ್ + ಟ್ ಕೃಜ್ (ಕರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೪)। -ಕರಣಿ-ಕರಣೀ.

ಆವಿಷ್ಕತ್ ಅವಿಷ್ಕತ್ಯ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವವನು, ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ ಮಾಡುವವನು. ಆವಿಸ್ + ಟ್ ಕೃಜ್ (ಕರಣ) "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೪)। ಆವಿಷ್ಕತ್ಯ ಅವಿಷ್ಕತ್ಯ.

ಆವಿಷ್ಕಾರ ಅವಿಷ್ಕಾರ (ಪ್ರಂ) ತೋರಿಕೆ, ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಆವಿಸ್ + ಟ್ ಕೃಜ್ (ಕರಣ) "ಭಜ್" (೩-೩-೧೮)।

ಆವಿಷ್ಕೃತ ಅವಿಷ್ಕೃತ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆವಿಸ್ + ಟ್ ಕೃಜ್ (ಕರಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಅಥ ಚೇದವಧಿ: ಪ್ರತೀಕ್ಷಯತೇ ಕಥಮಾವಿಷ್ಕೃತಜಿಹ್ವಾವೃತ್ತಿನಾ" ಕಿರಾಂ ೨-೧೬। "ವಿತರ್ಮಾವಿಷ್ಕೃತಫೇನಸಸ್ತತಿ" ಕಿರಾಂ ೪-೪।

ಆವಿಷ್ಠ ಅವಿಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಭೂತದ ಆವೇಶವುಳ್ಳ, ಗ್ರಹದಿಂದ ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರವೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಆವಿಷ್ಠಶಾಸ್ತ್ರಾಸುರಸನ್ನಿವೇಶಮ್" ಯಾದಂ ೧೮-೧೦೯। 3. ತತ್ಪರನಾದ, ಆಸಕ್ತನಾದ. 4. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ, ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ವಿಷ್ಠ (ವ್ಯಾಪ್ತ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಆವಿಸ್ ಅವಿಸ್ (ಅವಂ) ಕಾಣಬರುವುದು, ಪ್ರಕಾಶಪಡುವುದು, ತೋರುವುದು, ಹುಟ್ಟುವುದು. "ಆವಿಸ್ಮದೇರಾವಿಲಯಂತಿ ನಾಗಾ:" ಯಾದಂ ೧೮-೭೮। "ಆಚಾರ್ಯಕಂ ವಿಜಯಿ ಮಾನ್ಮಥಮಾವಿರಾಸೀತ್" ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೬।



**ಖಾಸಿ ಅವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ರಜಸ್ವಲೆ, ಋತುಮತಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು. ಅವಿ ಸ್ವಾಯೆ "ಅನ್" (4-4-36)।

"ಕೀಪ್" (4-1-14)। 2. ಗರ್ಭಿಣಿ, ಗರ್ಭಧರಿಸಿದ ಹೆಂಗಸು. "ಗರ್ಭಸ್ಪಂದನಮಾವಿನಾಂ ಪ್ರಣೀಶಃ ಸ್ಯಾವಪಾಂಡುತಾ" ಸುಶ್ರುತಂ।

**ಖಾಸಿತ ಅವೀತ (ನಂ)** ಪ್ರಾಚೀನಾವೀತ, ಬಲತೋಳಿನ ಮೇಲೂ ಎಡತೋಳಿನ ಕೆಳಗೂ ಇರುವಂತೆ ಧರಿಸಲ್ಪಡುವ ಯಜ್ಞೋಪವೀತ.

**ಖಾಸಿತಿನ್ ಅವೀತನ್ (ವಿಂ)** ಯಜ್ಞೋಪವೀತವನ್ನು ಎಡತೋಳಿನ ಕೆಳಗೆ ಹಾಕಿಕೊಂಡಿರುವವನು, ಪ್ರಾಚೀನಾವೀತವುಳ್ಳವನು. "ಉದ್ಧತೇ ದಕ್ಷಿಣೇ ಪಾಣಾವುಪವೀತ್ಯುಚ್ಯತೇ ಕೃಷಿಃ। ಸಖ್ಯೇ ಪ್ರಾಚೀನ ಆವೀತಿ ನಿವೀತಿ ಕಣ್ಠಲಿಖಿತೇ।" ಮನುಂ 2-63।

**ಖಾವುಕ ಅವುಕ (ಪುಂ)** ತಂದೆ. ಅವತಿ-ಅವ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಉಕನ್" ಬಾಹುಂ। [ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಈ ಪ್ರಯೋಗ.]

**ಖಾವುತ ಅವುತ (ಪುಂ)** ಭಾವ, ಸಹೋದರಿಯ ಗಂಡ. [ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಪ್ರಯೋಗ.] "ಭಗಿನಿ-ಪತಿರಾವುತಃ" ಅಮಂ।

**ಖಾವುತ್ ಅವುತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಒಂದು ಕ್ರಮ, ಪರ್ಯಾಯ. 2. ಪುನಃ ಪುನಃ ಮಾಡುವುದು, ಮಾಡಿದ್ದನ್ನೇ ಮತ್ತೆ ಮಾಡುವುದು. 3. ಸುತ್ತುತ್ತಿರುವುದು. 4. ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಆಡಿಸುವುದು, ಚಾಲನೆ. 5. ಹಿಂದಿರುಗುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಬರುವುದು. 6. ಸಂಸ್ಕಾರ. 7. ಕಬ್ಬವಿಲ್ಲದೆ ಸುಮ್ಮನಿರುವಿಕೆ.

**ಖಾವುತ ಅವುತ (ವಿಂ)** 1. ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟು, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣದಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಆ + ವೃಜ್ (ವರಣೆ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "ಆವುತಾನ್ಯಪಿ ನಿರಂತರಮುಚ್ಚಯೋಷಿತಾಮುರಸಿಜದ್ವಿತಯೇನ" ಮಾಘಂ 10-46। 2. ಸುತ್ತುವರೆಯಲ್ಪಟ್ಟು, ಬಳಸಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಮಿಶ್ರ ಜಾತಿಯವನು, ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾದ್ವ-ಕನ್ಯಾಯಾಮಾವುತೋ ನಾಮ ಜಾಯತೇ" ಮನುಂ 10-14।

**ಖಾವುತಿ ಅವುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. "ಆವರಣ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಆ + ವೃಜ್ (ವರಣೆ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)। 2. ಬೇರಿ.

**ಖಾವುತ ಅವುತ (ವಿಂ)** 1. ತಿರುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಆ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "ಆವುತವುತ-ಪ್ರಾಣಪ್ರಾಣಿಭಿಃ ವಹನ್ಯಾ" ಮಾಲತೀಂ 1-32। 2. ಪುನಃ ಪುನಃ ಆಭ್ಯಾಸಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಮಾಡ

ಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಪುನಃ ಪುನಃ ಓದಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ಹಿಂದಿರುಗಿದ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಬಂದ.

**ಖಾವುತಿ ಅವುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮಾಡಿದ್ದನ್ನೇ ಮತ್ತೆ ಮಾಡುವುದು. 2. ಓದಿದ್ದನ್ನೇ ಮತ್ತೆ ಓದುವುದು. 3. ಹಿಂದಿರುಗುವಿಕೆ, ಮೊದಲಿನ ಸ್ಥಿತಿಗೆ ಬರುವಿಕೆ. 4. ಸುತ್ತುವಿಕೆ, ತಿರುಗುವಿಕೆ. 5. ತಿರುಗಿ ಬರುವಿಕೆ, ಮತ್ತೆ ಬರುವಿಕೆ. ಆ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)। "ಸಂಸ್ಕಾರಕ್ಷಾಣದೀಪಂ ಪಠು ರತಿ ಕೃತಾವುತಿ ಸತ್ವಾಕ್ಷಾಣದೀಪಂ" ಮಾಲತೀಂ 4-4। "ತಪೋವನಾವುತಿಪಥಂ ಗತಾಮ್ಯಾಂ" ರಘುಂ 2-16। "ರವೇಂದ್ರಾವುತಿಪಥೇನ ನಾರದಃ" ರಘುಂ 4-33।

**ಖಾವೇಗ ಅವೇಗ (ಪುಂ)** 1. ಅನಸರ, ಗಡಿಬಡಿ, ತರಾ ತುರಿ. ಆ + ಆ ವಿಜಿ (ಭಯಚಲನಯೋಃ) "ಘ್" (3-3-16)। "ಸಾವೇಗಮಗ್ರಾಹುಗುಲಿಸ್ಯ ತುಣಿ" ಕಿರಾಂ 10-36। 2. ಒಂದು ವ್ಯಭಿಚಾರಿಭಾವ. ಅನರ್ಥ ದಿಂದುಂಟಾಗುವ ಗಾಬರಿ.

**ಖಾವೇಗಿ ಅವೇಗೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಅನಂತನ ಗೊಂಡೆಸೊಪ್ಪು. ಖಾವೇಗೋಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (4-2-120)। "ಕೀಪ್" (4-1-41)। (ವಿಂ) 2. ಅವೇಗವುಳ್ಳವನು, ಗಾಬರಿಯುಳ್ಳವನು.

**ಖಾವೇದಕ ಅವೇದಕ (ವಿಂ)** 1. ತಿಳಿಯಿಸುವವನು, ವರದಿಮಾಡುವವನು. ಖಾವೇದಯತಿ-ಆ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) + ಣಿಕ್ "ಫಲ್" (3-1-133)। 2. ವಾದಿ, ಅರ್ಜಿದಾರ.

**ಖಾವೇದನ ಅವೇದನ (ನಂ)** 1. ತಿಳಿಯಿಸುವುದು, ವರದಿ ಮಾಡುವುದು. 2. ದೂರು, ಮೊರೆ, ಅರ್ಜಿ. 3. ಹೇಳುವುದು, ವಿಜ್ಞಾಪಿಸುವುದು. ಆ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

**ಖಾವೇದನೀಯ ಅವೇದನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಹೇಳಲು ಅರ್ಹವಾದ. 3. ವರದಿಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ತಿಳಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ದೂರು ಹೇಳಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಆ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)।

**ಖಾವೇದಯತ್ ಅವೇದಯತ್ (ವಿಂ)** 1. ತಿಳಿಸುವ, ವರದಿ ಮಾಡುವ. 2. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸುವ. ಆ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) + ಣಿಕ್ "ಘತ್" (3-2-124)।

**ಖಾವೇದಿತ ಅವೇದಿತ (ವಿಂ)** 1. ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ವರದಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. 2. (1) ವಿಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟು (ಮನುಷ್ಯ). (2) ವಿಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟು (ವಿಷಯ). 3. ಅರ್ಜಿ



ಮೂಲಕ ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಆ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಆವೇದಿನ್ ಆವೇದಿನ್ (ವಿಂ) 1. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸುವ 2. ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವ, ವರದಿಮಾಡುವ. 3. ದೂರು ಹೇಳುವ, ವಾದಿ. ಆ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) + ಣಿಕ್ "ಣಿನ್:" (೩-೧-೧೩೪)। 4. ಆಜ್ಞೆ ಮಾಡುವವನು, ಅಪ್ಪಣೆ ಕೊಡುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫)।  
ಆವೇದಿನಿ ಆವೇದಿನೀ.

ಆವೇದ್ಯ ಆವೇದ್ಯ (ವಿಂ) 1. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ತಿಳಿಸಲ್ಪಡುವ, ವರದಿಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಆ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) + ಣಿಕ್ "ಯತ್" (೩-೧-೯೭)। (ಅವ್ಯಂ) 3. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸಿ, ತಿಳಿಯಪಡಿಸಿ. ಆ + ವಿದ + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭)।

ಆವೇದ್ಯಮಾನ ಆವೇದ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಯಪಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ವರದಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, 2. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಆ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) + ಣಿಕ್ ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)।

ಆವೇದ್ಯ ಆವೇದ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕೊರೆಯಲ್ಪಡುವ, ತೂತು ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಆ + ವ್ಯಥ (ತಾಡನೆ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)। 2. ನೂಕಲ್ಪಡುವ. 3. ಎಸೆಯಲ್ಪಡುವ. 4. ಹೊಡೆಯಲ್ಪಡುವ.

ಆವೇಶ ಆವೇಶ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರವೇಶ. 2. ಅಹಂಕಾರ, ಗರ್ವ. ಆ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। 3. ಗೃಹಗಳ ಆವೇಶ, ಗೃಹಗಳು ಹಿಡಿಯುವುದು. 4. ಗೃಹಗಳ ಭಯ. 5. ಮನೋವಿಕಾರ, ತವಕ ಪಡುವಿಕೆ. 6. ಅಭಿನಿವೇಶ, ಆಸಕ್ತಿ. 7. ಕೋಪ, ಸಿಟ್ಟು. "ತತೋ ಯಾವದ್ವಿದಿತಾಧ್ವರಾಯ ತಸ್ಮೈ ಸ್ಮಯಾವೇಶ-ವಿವರ್ಜಿತಾಯ" ರಘುಂ ೫-೧೯। 8. ಗೃಹ, ಮನೆ. ಅಧಿಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)।

ಆವೇಶನ ಆವೇಶನ (ನಂ) 1. ಶಿಲ್ಪಕಾಲೆ, ಕೈಗಾರಿಕೆಯ ಮನೆ. 2. ಪ್ರವೇಶ. 3. ಕೋಪ, ಸಿಟ್ಟು. 4. ಭೂತಾದಿಗಳು ಹಿಡಿಯುವಿಕೆ. 5. ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರರ ಪರಿಧಿ. ಆ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। 6. ಗೃಹ, ಮನೆ.

ಆವೇಶಿಕ ಆವೇಶಿಕ (ಪುಂ) 1. ಅತಿಥಿ. ಆವೇಶಿ ಗೃಹೇ ಭವ: "ಠ್" (೪-೩-೬೦)। "ವೇಶಿ ವೇಶ್ಯಾಗೃಹೇ ಗೃಹೇ" ಮೇದಿಂ। (ವಿಂ) 2. ವಿಶೇಷವಾದ, ಅಸಾಧಾರಣವಾದ. 3. ಮನೆಯಲ್ಲಿರುವ (ಬಂಧುಜನರು). ಆವೇಶಿ ಗೃಹೇ ಭವ:।

ಆವೇಶಿತ ಆವೇಶಿತ (ವಿಂ) ಇಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಆ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಆವೇಷಣ ಆವೇಷಣ (ನಂ) 1. ಸುತ್ತುವರಿಯುವಿಕೆ, ಸುತ್ತುಗಟ್ಟುವಿಕೆ. ಆ + ವೇಷ (ವೇಷಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಬೇಲಿ, ಪ್ರಾಕಾರ, ಸುತ್ತು ಗೋಡೆ. ಆ + ವೇಷ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। 3. ಬೇಲಿ ಹಾಕುವ ಸಾಧನ (ಮುಳ್ಳು ಮುಂತಾದುದು).

ಆಶ ಆಶ (ಪುಂ) 1. ಭೋಜನ, ಊಟ. 'ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। (ವಿಂ) 2. ತಿನ್ನುವ, ಊಟ ಮಾಡುವ. ಕರ್ಮಪದವು ಹಿಂದೆ ಬಂದಾಗ "ಅಶ್" (೩-೨-೧) ಪ್ರತ್ಯಯ ಬಂದು ಈ ರೂಪವಾಗುವುದು. ಹುತಾಶ: ಅಮಿಷಾಶ: ಪಲಾಶ: ಆಶ್ರಯಾಶ: ಇತ್ಯಾದಿ.

ಆಶಾಸತ್ ಆಶಾಸತ್ (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಇಚ್ಛಿಸುವ. ಆ + ಶಸಿ (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಶತ್" (೩-೧-೧೨೪)। 2. ಹೇಳುವ. "ಆಶಾಸತಾ ಬಾಣಗತಿ ವೃಷಾಕ್ಷೇ ಕಾರ್ಯ ತ್ವಯಾ ನ: ಪ್ರತಿಪನ್ನಕಲ್ಪಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೧೪। 3. ಹೊಗಳುವ, ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡುವ. ಆ + ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) "ಶತ್" (೩-೧-೧೨೪)।

ಆಶಾಸನ ಆಶಾಸನ (ನಂ) 1. ಇಚ್ಛೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಬಯಕೆ. 2. ಹೇಳುವುದು. 3. ಹೊಗಳಿಕೆ, ಸ್ತೋತ್ರ ಮಾಡುವುದು. ಆ + ಶಸಿ (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) ವಾ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಆಶಾಸಾ ಆಶಾಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮನೋರಥ, ಅಭಿಲಾಷೆ. ಆ + ಶಸಿ (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಅ:" (೩-೩-೧೦೩)। "ಆಶಾಸಾಪರಿಕಲ್ಪಿತಾಸ್ವಪಿ ಭವತ್ಯಾನಂದಸಾಂದ್ರೋ ಲಯ:" ಮಾಲತೀಂ ೫-೭। 2. ಇಚ್ಛೆ, ಬಯಕೆ. "ನಿರ್ದಧಿ ವಿಜಯಾಶಾಂಸಾಂ ಚಾಪೇ ಸೀತಾಂ ಚ ಲಕ್ಷಮಣಿ" ರಘುಂ ೧೨-೪೪। 3. ಹೇಳುವುದು. 4. ಹೊಗಳಿಕೆ, ಸ್ತೋತ್ರ ಮಾಡುವುದು. ಆ + ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) "ಅ:" (೩-೩-೧೦೩)।

ಆಶಾಸಿತ ಆಶಾಸಿತ (ನಂ) 1. ಇಚ್ಛೆ, ಬಯಕೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಆ + ಶಸಿ (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಹೇಳಿಕೆ. 3. ಸ್ತುತಿ, ಹೊಗಳಿಕೆ. ಆ + ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:"। (ವಿಂ) 4. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಬಯಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಆ + ಶಸಿ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:"। 5. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು. 6. ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟು. ಆ + ಶಂಸು ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:"। "ಆಶಾಸಿತಾಪಚಿತಿಚಾರ ಪುರ: ಸುರಾಣಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೬-೪೬।



**ಪಾಶ್ವಾತು ಅಶಂಸಿತು** (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಬಯಸುವ. ಆಶಂಸತೇ—ಆ + ಶಸಿ (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) “ತನ್” (೨-೨-೧೩೫)। 2. ಹೊಗಳುವ. 3. ಹೇಳುವ. ಆ + ಶಂಸು “ತನ್”। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಛಿಪ್” (೪-೧-೫)।  
**ಪಾಶ್ವಾತಿನಿ ಅಶಂಸಿತೀ**

**ಪಾಶ್ವಾತಿನಿ ಅಶಂಸಿನಿ** (ವಿಂ) “ಪಾಶ್ವಾತು” ಪದದ ಉತ್ಪತ್ತಿ. ಆ + ಶಸಿ (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) ವಾ “ನಿನಿ” (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಛಿಪ್” (೪-೧-೫)। ಆಶಂಸಿನಿ ಅಶಂಸಿನೀ.

**ಪಾಶ್ವಾತು ಅಶಂಸು** (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಇಚ್ಛಿಸುವ, ಬಯಸುವ. ಆಶಂಸತೇ—ಆ + ಶಸಿ “ಃ” (೩-೨-೧೬೮)। “ಪಾಶ್ವಾತು ಹತನಾಮಿವ ರಾಕ್ಷಸಾನಾಮಾಶಂಸವಃ ಕೂರಗಿರೋ ರುಂತಃ” ಷಟ್. ೧೨-೭೨।

**ಪಾಶ್ವಾತು ಅಶಕ್ತು** (ವಿಂ) ದಕ್ಷ, ಸಮರ್ಥ, ಶಕ್ತ. ಆ ಸಮ್ಯಕ್ ಶಕ್ತಃ।

**ಪಾಶ್ವಾತು ಅಶಕ್ತು** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಕ್ತ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ.

**ಪಾಶ್ವಾತು ಅಶಂಕನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಸಂಶಯವಡೆಯಲು ಅರ್ಹವಾದ, ಸಂದೇಹಪಡಬಹುದಾದ. ಆ + ಶಕಿ (ಶಕ್ತಾಯಾಮ್) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬)। 2. ಭಯಪಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.

**ಪಾಶ್ವಾತು ಅಶಂಕಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಹೆದರುವ, ಭಯಪಡುವ. 2. ಶಂಕಿಸುವ, ಸಂದೇಹಪಡುವ. ಪಾಶ್ವಾತು—ಆ + ಶಕಿ (ಶಕ್ತಾಯಾಮ್) “ಶಾನಕ್” (೧-೧-೧೨೪)। “ಪಾಶ್ವಾತುಮಾನೋ ವೇದೇಹೀ ಖಾದಿತಾ ನಿಹಿತಾ ಭೂಮಿ” ಷಟ್. ೬-೬।

**ಪಾಶ್ವಾತು ಅಶಂಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ. ಆ + ಶಕಿ (ಶಕ್ತಾಯಾಮ್) “ಅಃ” (೩-೩-೧೦೩)। 2. ಸಂಶಯ, ಸಂದೇಹ. 3. ಅಸಿ. “ಭುಕ್ತಂ ಪಾನವಿವರ್ಜಿತಂ ಪರಗೃಹೇಷ್ವಾಶಕ್ತಯಾ ಕಾಕವತ್” ಷಟ್. ೩-೨।

**ಪಾಶ್ವಾತು ಅಶಂಕಿತ** (ನಂ) 1. ಸಂಶಯ, ಸಂದೇಹ. 2. ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ. 3. ಕೆಡಕಿನ ಚಿಂತೆ. ಆ + ಶಕಿ (ಶಕ್ತಾಯಾಮ್) “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 4. ಹೆದರಿದ, ಭಯಗೊಂಡ. ಕತಂ “ಕ್ತಃ” (೧-೪-೭೨)। 5. ಸಂದೇಹಪಟ್ಟು. ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಃ” (೧-೨-೧೦೨)।

**ಪಾಶ್ವಾತು ಅಶಂಕಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಹೆದರುವ, ಭಯಪಡುವ. ಆ + ಶಕಿ (ಶಕ್ತಾಯಾಮ್) “ನಿನಿ” (೧-೧-೧೩೪)। “ರಘೋರಭಿಮವಾಶಕ್ತಿ ಚುಕ್ತುಃ ದ್ವಿಪತಾಂ

ಮನಃ” ರಘುಂ ೪-೨೧। 2. ಸಂದೇಹಪಡುವ. “ಕುಜಾ ನೀತಯೇವ ಯಾಂತಿ ಶನಕೇರಾತೇಷಣಾಶಕ್ತಿನಃ” ರತ್ನಾಂ ೨-೩। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಛಿಪ್” (೪-೧-೫)। ಆಶಂಕಿನಿ ಅಶಂಕಿನೀ.

**ಪಾಶ್ವಾತು ಅಶಂಕು** (ವಿಂ) 1. ಸಂದೇಹಪಡಬಹುದಾದ, ಸಂಶಯಗೊಳ್ಳಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಆ + ಶಕಿ (ಶಕ್ತಾಯಾಮ್) “ಞತ್” (೩-೧-೧೨೪)। (ಅವ್ಯಂ) 2. ಸಂಶಯಗೊಂಡು. ಆ + ಶಕಿ “ಲ್ಯಪ್” (೭-೧-೩೭)। “ಪಾಶ್ವಾತು ದೇವಬಲೋಪಯಾನಂ ದೃಢಗಲಾಂ ದೇವಪುರೀಮಕುರ್ವನ್” ಯಾದಂ ೨೦-೪೪।

**ಪಾಶನ ಅಶನ** (ಪುಂ) 1. ವಜ್ರಾಯುಧ. (ವಿಂ) 2. ಉಟಿಮಾಡಿಸುವ.

**ಪಾಶಯ ಅಶಯ** (ಪುಂ) 1. ಅಭಿಪ್ರಾಯ. ಆ + ಶಿಙ್ (ಸ್ವಪ್ನೆ) “ಅಕ್” (೩-೩-೫೬)। “ಇದಮಿದಗನಿಧಿಗಾಶಯಃ” ಕಿರಾಂ ೨-೨೮। 2. ಆಧಾರ, ಆಸರೆ, ಕೂಡಿಸುವ ಸ್ಥಳ. “ವಿಷಮೋಷಿ ವಿಗಾಹ್ಯತೇ ನಯಃ ಕೃತತೀರ್ಥಃ ಪಯಸಾಮಿವಾ-ಶಯಃ” ಕಿರಾಂ ೨-೩। 3. ಚಿತ್ತ, ಮನಸ್ಸು, ಹೃದಯ. ಆ + ಶಿಙ್ ಅಧಿಂ “ಅಕ್” (೩-೩-೫೬)। “ಅಹಮಾತ್ಮಾ ಗುಡಾಕೇಶ ಸರ್ವಭೂತಾಶಯಸ್ಥಿತಃ” ಗೀತಾ ೧೦-೨೦। “ರಾಮ ರಾಮ ನಯನಾಭಿರಾಮತಾಮಾಶಯಸ್ಯ ಸದೃಶಿಂ ಸಮುದ್ರಹನ್” ಮಂ. ವೀಂ ೨-೩೭। 4. ಶಯನ, ಹಾಸಿಗೆ. ಅಧಿಂ “ಅಕ್”। 5. ಮಲಗುವುದು. ಭಾವೇ “ಅಕ್” (೩-೩-೫೬)। 6. ಮನೆ, ವಾಸ, ಗೃಹ, ಆಶ್ರಯ. 7. ಕೃಪಣ, ಲೋಭಿ, ಜಿವುಣ. 8. ಕಣಜ, ಉಗ್ರಾಣ, ಶೇಖರಿ ಸಿಡುವ ಸ್ಥಳ. 9. ಅದೃಷ್ಟ, ದೈವ, ಹಣೆಬರಹ. 10. ಅಸ್ತಿ, ಸ್ವತ್ತು, ಐಶ್ವರ್ಯ. 11. ಪನಸವೃಕ್ಷ, ಹಲಸಿನಮರ. 12. ಹಕ್ಕು, ಗುಣ, ಮೃಗಗಳನ್ನು ಹಿಡಿಯಲು ತಯಾರಿಸಿರುವ ಗುಂಡಿ. “ಆಸ್ತೇ ಪರಮಸಂತಪ್ತೋ ನುನಂ ಸಿಹ ಇವಾಶಯೇ” ಭಾಂ. ವನಂ ೩೫-೧೨। 13. ಮನೋಧರ್ಮ, ಸಂಸ್ಕಾರ, ಜನ್ಮಾಂತರ ವಾಸನೆ. “ಕಲೇಶಕರ್ಮವಿಪಾಕಾಶಯೇರಪರಾಮೃಷ್ಠಃ ಪುರುಷವಿಶೇಷ ಇಶ್ವರಃ” ಪಾಂ. ಯಂ. ಸುಂ ೧-೨೪। 14. ಹಳೆಯದಾದ, ಬಾಡಿದ, ಒಣಗಿದ, ಜೀರ್ಣವಾದ. “ಕೋಟೀ ಕೃಪಣೇ ಜೀರ್ಣೇ ಸ್ಥಾನೇಷಿಮಿಪ್ರಾಯ ಆಶಯಃ” ವೈಜಂ. “ಆಶಯಃ ಸ್ಯಾದಭಿಪ್ರಾಯೇ ಪನಸಾಧಾರಯೋರಪಿ” ಮೇದಿಂ. “ಆಶಯಃ ಸ್ಯಾದಭಿಪ್ರಾಯೇ ಮಾನಸಾಧಾರಯೋರಪಿ” ವಿಶ್ವಂ.

**ಪಾಶಯಾಶ ಅಶಯಾಶ** (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಪಾಶಯಮಾಶ್ರಯಮಶನಾತಿ—ಅಶ (ಭೋಜನೆ) “ಅಣ್” (೩-೨-೧)।



ಆಶೀರ ಅಶೀರ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 2. ರಾಕ್ಷಸ.

ಆಶ್ವಿಣಾತಿ—ಆ+ಶ್ವ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಅಶ್” (3-1-134)।

“ಆಶೀರಸ್ತು ಪುಮಾನ್ ವೈಶ್ವಾನರೇ ಚ ರಜನೀಚರೇ” ಮೇದಿಂ।

ಆಶಾ ಅಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಿಕ್ಕು. ಆ ಸಮಂತಾತ್

ಅಶ್ನುತೇ—ಆ + ಅಶ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) “ಅಶ್” (3-1-134)।

“ಅನುಜಗುರಥ ದಿವ್ಯಂ ದುಂದುಭಿಧ್ವಾನಮಾಶಾಃ” ಕಿರಾಂ

3-60। 2. ನಿರೀಕ್ಷೆ, ಪ್ರತ್ಯಾಶೆ. “ರಾಘವೋ ರಥಮಪ್ರಾಪ್ತಾಂ

ತಾಮಾಶಾಂ ಚ ಸುರದ್ವಿಷಾಮ್” ರಘುಂ 12-96। 3. ಆಸೆ,

ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಬೇಕಾದುದನ್ನು ಪಡೆಯುವ ಬಯಕೆ.

“ಮಹೋತ್ಸವಮಿವಾಶಾನಾಮಾಶಾಮ್ಯಧಿಕಸಂಪದಮ್” ವಾದಂ 16-8।

4. ಅಸಾಧ್ಯವಾದುದನ್ನು ಪಡೆಯುವ ಬಯಕೆ,

ದುರಾಶೆ. “ಆಶಾ ಬಲವತೀ ರಾಜನ್ ಪುತ್ರಾಣಾಂ ತೇಭವತ್ತದಾ”

ಭಾಂ ಶಲ್ಯಂ 7-16।

ಆಶಾಗಜ ಅಶಾಗಜ (ಪುಂ) ದಿಗ್ಗಜ, ದಿಕ್ಕುಗಳನ್ನು

ಕಾಯುವ ಆನೆ.

ಆಶಾತನ್ತು ಅಶಾತಂತು (ಪುಂ) ಆಸೆಯೆಂಬ ತಂತು,

ದುರ್ಬಲವಾದ ಆಸೆ. ಆಶೇವ ತನ್ತುಃ। “ಚಿರಾದಾಶಾ-

ತನ್ತುಸ್ತುಡತು ವಿಸಿನೀಸುತ್ರಭಿದುರಃ” ಮಾಲತೀಂ 8-3।

ಆಶಾಪಾಲ ಅಶಾಪಾಲ (ಪುಂ) ದಿಕ್ಪಾಲಕ. ಆಶಾಂ ದಿಶಂ

ಪಾಲಯತಿ—ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೇ) + ಣಿಕ್ “ಅನ್” (3-2-1)।

ಆಶಾಪಿಶಾಚಿಕಾ ಅಶಾಪಿಶಾಚಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಸೆಯೆಂಬ

ಭೂತ, ಮೋಸಮಾಡುವ ಆಸೆ. ಆಶೇವ ಪಿಶಾಚಿಕಾ।

ಆಶಾವನ್ಧ ಅಶಾವನ್ಧ (ಪುಂ) 1. ಜೇಡರ ಹುಳುವಿನ

ಬಲೆ, ಜೇಡರ ಹುಳುವಿನ ಗೂಡು. ಆಶಾಂ ದಿಶಂ

ಬಧ್ನಾತಿ—ಬನ್ಧ (ಬನ್ಧನೇ) “ಅಶ್” (3-1-134)।

2. ಆಸೆಯ ಕಟ್ಟು, ಆಸೆಯ ಬಂಧನ, ನಂಬಿಕೆ,

ಪ್ರತ್ಯಾಶೆ. “ಆಶಾವನ್ಧಃ ಕುಸುಮಸದೃಶಂ ಪ್ರಾಯಶೋಹ್ಯಜ್ಞಾನಾನಾಮ್”

ಮೇಘಂ 1-10। 3. ಆಶ್ವಾಸನ, ಸಮಾಧಾನ. “ಆಶಾ-

ವನ್ಧಂ ಕಮಪಿ ಕುಸ್ತೇ ಛಾಯಯಾರ್ಥಿ ಜನೋಽಯಮ್” ವೇಣೀಂ

6-26। “ಆಶಾವನ್ಧಃ ಸಮಾಶ್ವಾಸೇ ತಥಾ ಮರ್ಕಟಜಾಲಕೇ”

ವಿಶ್ವಂ। 4. ದಿಗ್ಬಂಧನ.

ಆಶಾಭಜ್ಜ ಅಶಾಭಂಗೆ (ಪುಂ) ನಿರಾಶೆ, ಕಾರ್ಯನಾಶ,

ಕಾರ್ಯ ನೆರವೇರದಿರುವಿಕೆ.

ಆಶಾವಹ ಅಶಾವಹ (ವಿಂ) ಆಸೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.

ಆಶಾಯಾ ಅವಹಃ।

ಆಶಾಸತ್ ಅಶಾಸತ್ (ವಿಂ) ಅಪ್ಪಣೆಮಾಡುವ, ಅಜ್ಞೆ

ಮಾಡುವ. ಆ + ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟೌ) “ಶತ್”

(3-2-124)।

ಆಶಾಸಾನ ಅಶಾಸಾನ (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಇಚ್ಛೆ

ಮಾಡುವ, ಕೋರುವ. ಆ + ಶಾಸು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) “ಶಾನ್”

(3-2-124)। “ಆಶಾಸಾನಾಃ ಕತಿಚನ ವಿಭೌ

ತ್ವತ್ಪರಿಷ್ವಜ್ಞಧನ್ಯೈರಜ್ಞೀಕಾರಂ ಕ್ಷಣಮಪಿ ದಯೇ ಹಾದತುಜ್ಞೇರಪಾಜ್ಞಃ”

ದಯಾಶಂ 82।

ಆಶಾಸ್ಯ ಅಶಾಸ್ಯ (ನಂ) 1. ಆಶೀರ್ವಾದ, ಮಂಗಳಾ

ಶಾಸನ. ಆ + ಶಾಸು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) “ಷ್ಯತ್” (3-1-124)।

“ಆಶಾಸ್ಯಮನ್ಯತ್ಪುನರಕ್ತಭೂತಂ ಶ್ರೇಯಾಂಸಿ ಸರ್ವಾಂಽಧಿಜಗ್ಮುಷಸ್ತೇ”

ರಘುಂ 4-34। 2. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಮನೋರಥ, ಬಯಕೆ,

ಕೋರಿಕೆ. “ಆಶಾಸ್ಯಮಿತಿವಿಗಮಪ್ರಭೃತಿ ಪ್ರಜಾನಾಮ್” ಮಾಲಂ

4-20। (ವಿಂ) 3. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲು

ಅರ್ಹವಾದ, ಕೋರಲ್ಪಡುವ. “ಅಗಸ್ತ್ಯಚರಿತಾಮಾಶಾ-

ಮನಾಶಾಸ್ಯಜಯೋ ಯಯೌ” ರಘುಂ 4-44। 4. ಹಿರಿಯರ

ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ಲಭ್ಯವಾಗುವ, ಆಶೀರ್ವಾದದಿಂದ

ಉಂಟಾಗುವ. (ಅವ್ಯಂ) 5. ಸ್ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿ, ಬೇಡಿ, ಕೋರಿ.

ಆ + ಶಾಸು “ಲ್ಯಪ್” (3-1-39)। “ಆಶಾಸ್ಯ

ಲಾಜಾಜ್ಜಲಿಹೋಮಭಾಜಾ” ವಾದಂ 13-66।

ಆಶಿತ ಅಶಿತ (ನಂ) 1. ತೃಪ್ತಿಕರವಾದ ಭೋಜನ,

ಸರಿಯಾದ ಊಟ. ಆ + ಅಶ (ಭೋಜನೇ) “ಕ್ತಃ”

(3-3-114)। (ವಿಂ) 2. ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟ, ಊಟ

ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಅಶ “ಕ್ತಃ” (3-2-102)।

3. ಸರಿಯಾಗಿ ಊಟಮಾಡಿದ, ಭೋಜನದಿಂದ ತೃಪ್ತಿ

ಹೊಂದಿದ. ಆಶಿತಮಸ್ತಸ್ಯ “ಅಶ್” (4-2-129)।

ಆಶಿತಂಗವೀನ ಅಶಿತಂಗವೀನ (ವಿಂ) ಗೋವುಗಳು

ಹುಲ್ಲು ಮೇಯ್ದು ತೃಪ್ತಿಹೊಂದಿದ ಪ್ರದೇಶ (ಅರಣ್ಯ

ಮೊದಲಾದುದು). ಆಶಿತಾ ಗಾವೋಽಸ್ಮಿನ್ “ಖಃ”

(4-4-9)। ಮುನ್ ನಿಪಾಂ।

ಆಶಿತಮ್ಭವ ಅಶಿತಂಭವ (ಪುಂ) 1. ಆಹಾರದಿಂದ

ತೃಪ್ತಿಹೊಂದುವಿಕೆ. ಆಶಿತ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್)

ಭಾವೇ “ಖಚ್” (3-2-45)। ಮುನ್ (6-3-69)।

2. ಆಹಾರ, ಅನ್ನ. ಆಶಿತೋ ಭವತ್ಯನೇನ—ಆಶಿತ +

ಭೂ ಕರಂ “ಖಚ್” (3-2-45)।

ಆಶಿತೃ ಅಶಿತೃ (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಊಟಮಾಡುವ,

ತೃಪ್ತಿಕರವಾಗಿ ಊಟಮಾಡುವ, ಹೊಟ್ಟೆಬಾಕ.

ಆ + ಅಶ (ಭೋಜನೇ) “ತೃಚ್” (3-1-133)।

ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಜೀಪ್” (4-1-5)। ಆಶಿತೃ ಅಶಿತೃಃ.

ಆಶಿನ್ ಅಶಿನ್ (ವಿಂ) ಊಟಮಾಡುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ

ತಿನ್ನುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಆ + ಅಶ (ಭೋಜನೇ) “ಣಿನ್”

(3-2-96)।



ಆಶಿರ ಅಶಿರ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 2. ಸೂರ್ಯ. 3. ರಾಕ್ಷಸ. 4. ಭೋಜನ, ಊಟ. ಆ + ಅಶ (ಭೋಜನೆ) ಅಶು (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) ವಾ "ಕಿರಚ್" (ಉಂ ೧-೪೨) 1. 5. ಕುದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಹಾಲು. "ಆಶಿರ: ಕ್ಷೀರವಿಕ್ರತೌ ಭೋಜನೇ ಪಾವಕೇ ರವೌ" ವೈಜಂ. "ಆಶಿರೋ ವಹ್ನಿರಕ್ಷಸೋ:" ಸಿಂ ಕೌಂ.

ಆಶಿಷ್ಠ ಅಶಿಷ್ಠ (ವಿಂ) ಅಶೀರ್ವಾದಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ ಶಾಸು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) 1.

ಆಶಿಸ್ ಅಶಿಸ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಇಷ್ಟವಾದುದನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸುವ ವಾಕ್ಯ, ಹಿತವನ್ನು ಕೋರುವ ಮಾತು. ಆ + ಶಾಸು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬) 1. "ಇಷ್ಟಾವಧಾರಕಂ ವಾಕ್ಯಮಾಶೀಸ್ತಾ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾ" 1. "ಆಶಾಸ್ಯ ಕಾಜಾಜ್ವಲಿಹೋಮಭಾಜಾ ಕ್ಷೇಮಾಶಿಷಾ ಕಿಂಚಿದದಶೋಪಹೃದಮ್" ವಾದಂ ೧೩-೮೬. 2. ಅಭಿಲಾಷೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಆಸೆ. "ಜಗಂಚ್ಛರಣ್ಯಸ್ಯ ನಿರಾಶಿಷ: ಸತ: ಕಿಮೇಭಿರಾಶೋಪಹೃತಾತ್ಮ-ಭೃತಿಭಿ:" ಕುಮಾಂ ೫-೭೬. 3. ಹಾವಿನ ಹಲ್ಲು, ಸರ್ಪದ ವಿಷದಂತೆ. "ಆಶೀರಗದಂಟ್ರಾಣಾಂ ಶುಭ-ವಾಕ್ಯಾಮಿಲಾಪಯೋ:" ವೈಜಂ.

ಆಶೋ ಅಶೋ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಾವಿನ ಹಲ್ಲು, ಸರ್ಪದ ವಿಷದಂತೆ. ಆಶೋಯೆತೇಜಯಾ—ಆ+ಶು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬) 1. ಪೃಂ. "ವಿಷಮಾಶೋಭಿರನಾರತಂ ವಮಂತ:" ಮಾಯಂ.

ಆಶೋರ್ವದ ಅಶೀರ್ವಾದ (ಪುಂ) ಇಷ್ಟವಾದುದನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸುವ ವಾಕ್ಯ, ಶುಭವನ್ನು ಕೋರುವ ಮಾತು, ಹಿತವನ್ನು ಬಯಸುವ ಮಾತು. ಆಶಿಷೋ ವಾದ: ಷವನಮ್. ಆಶೋರುಕ್ತಿ: ಆಶೋರ್ವಚನಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ. "ಅವಿತಥಫಲಮಾಶೋರ್ವದಮಾರೋಪಯಂತ:" ಕಿರಾಂ ೧೮-೪೬.

ಆಶೋವಿಷ ಅಶೀವಿಷ (ಪುಂ) ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಆಶಯಾಂ ವಿಷಮಸ್ಯ. "ತಯೋರೂಪಾಂತಸ್ಥಿತಸಿದ್ಧಸೈನಿಕಂ ಗಠಮದಾಶೋವಿಷ-ಭೀಮದರ್ಶನೇ:" ರಘುಂ ೩-೫೭.

ಆಶು ಅಶು (ಪುಂ) 1. ಪಾಟಲಧಾನ್ಯ, ಕೆಂಪು ಬತ್ತ. ಅಶು (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಉನ್" (ಉಂ ೧-೧) 1. "ಆಶುಕ್ರೀಹಿ: ಗಾಢಲ: ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಜಾಗೃತೆಯಾಗಿ, ವೇಗವಾಗಿ, ಶೀಘ್ರವಾಗಿ. "ತದಾಶು ಕರ್ತು ತ್ವಯಿ ವಿಹ್ರಮುಯತೇ ವಿಧೀಯತಾಂ ತತ್ರ ವಿಧೇಯಮುಕ್ತರಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೨೫. "ಸ್ಯಜಾಶು ಗರ್ವ ಮದಗೂಢ ಮಾ ಸ್ಮ ಗಾ:" ಕುಮಾಂ ೧೫-೩೮.

ಆಶುಕಾರಿನ್ ಅಶುಕಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಜಾಗೃತೆಯಾಗಿ ಕೆಲಸಮಾಡುವ, ಕುಶಲ, ಚಟುವಟಿಕೆಯುಳ್ಳವನು.

ಆಶು ಕರೋತಿ—ಓ ಕೃತ್ (ಕರಣೇ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮) 1. ಸ್ವಿಯಾಮ್ "ಓಪ್" (೪-೧-೫) 1. —ಕಾರಿಣಿ—ಕಾರಿಣೀ. "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬) 1. ಆಶುಕೃತ್ ಅಶುಕೃತ್.

ಆಶುಕೋಪಿನ್ ಅಶುಕೋಪಿನ್ (ವಿಂ) ಜಾಗೃತೆಯಾಗಿ ಕೋಪಬರುವ ಸ್ವಭಾವದವನು, ಮುಂಗೋಪಿ. ಆಶು ಕುಪ್ಯತಿ—ಕುಪ (ಕ್ರೋಧೇ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮) 1.

ಆಶುಗ ಅಶುಗ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 2. ಬಾಣ. ಆಶು ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಓ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) 1. "ಚಾಪೈರಾಕರ್ಣಮಾಕೃಷ್ಣೇವಿಮುಕ್ತಾ ದೂರಮಾಶುಗಾ:" ಕುಮಾಂ ೧೬-೧೩. 3. ಸೂರ್ಯ. (ವಿಂ) 4. ಜಾಗೃತೆಯಾಗಿ ನಡೆಯುವ, ವೇಗವಾಗಿ ಹೋಗುವ.

ಆಶುಗಾಮಿನ್ ಅಶುಗಾಮಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಜಾಗೃತೆಯಾಗಿ ನಡೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಆಶು ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮) 1. ಸ್ವಿಯಾಮ್ "ಓಪ್" (೪-೧-೫) 1. —ಗಾಮಿನಿ—ಗಾಮಿನೀ.

ಆಶುತೋಷ ಅಶುತೋಷ (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. (ವಿಂ) 2. ಜಾಗೃತೆಯಾಗಿ ಸಂತೋಷಪಡುವ. ಆಶು ಶೋಭಂ ತೋಪೋ ಯಸ್ಯ.

ಆಶುಕ್ರೋಹಿ ಅಶುಕ್ರೋಹಿ (ಪುಂ) ಪಾಟಲಧಾನ್ಯ, ಕೆಂಪು ಬತ್ತ.

ಆಶುಶುಕ್ಲಣಿ ಅಶುಶುಕ್ಲಣಿ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಆಶು ಶೋಭಂ ಶು ಕ್ಷಣೋತಿ—ಕ್ಷಣು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಇನ್" (ಉಂ ೪-೧೧೮) 1. ಶು ಇತಿ ಪೂಜಾರ್ಥಮವ್ಯಯಮ್. ಆಶೋಷ್ಠ-ಮಿಚ್ಛತಿ—ಆ + ಶುಷ (ಶೋಷಣೇ) + ಸನ್ "ಅನಿ:" (ಉಂ ೨-೧೦೩) ವಾ. 2. ವಾಯು, ಗಾಳಿ.

ಆಶೌಚ ಅಶೌಚ (ನಂ) ಅಶುಚಿ, ಅಶುದ್ಧ. ಅಶುಚೇಭವಿ: "ಅನ್" (೫-೧-೧೩೧) 1. ಅಭಯಪದವೃದ್ಧಿ: (೭-೩-೩೦) 1.

ಆಶ್ವಯ ಆಶ್ವಯ (ನಂ) 1. ಅದ್ಭುತರಸ. ಆ ಇತಿ ಚರ್ಯತೇ—ಆ + ಚರ (ಗತೌ) "ಯತ್" ಸುಟ್ (೬-೧-೧೪೦) 1. 2. ಅದ್ಭುತ, ವಿಸ್ಮಯ, ಅಚ್ಚರಿ. "ಆಶ್ವಯಮುತ್ಪಲದೃಶೋ ವದನಾಮಲೇಂದುಸಾನಿಧ್ಯತೋ ಮಮ ಮುಹುರ್ಜಡಿಮಾನಮೇತ್ಯ" ಮಾಲತೀಂ ೩-೫. (ವಿಂ) 3. ಆಶ್ವಯುಧಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಆಶ್ವಯೋ ಗವಾಂ ದೋಹೋಪೇನ.

ಆಶ್ವೋತನ ಅಶ್ವೋತನ (ನಂ) 1. ಜೆನ್ನಾಗಿ ಸುರಿಯು ಎಕೆ. ಆ+ಶ್ವುತಿರ್ (ಕ್ಷರಣೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) 1. (ವಿಂ) 2. ಜೆನ್ನಾಗಿ ಸುರಿಯುವ, ಜೆನ್ನಾಗಿ (ನೀರನ್ನು) ಜೆನ್ನುಕಿಸುವ. ಆ+ಶ್ವುತಿರ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) 1.



ಆಶ್ರಮ ಆಶ್ರಮ (ವಿಂ) 1. ಕಲ್ಲಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ವಸ್ತು. ಅಶ್ರಮನೋವಿಕಾರ:—ಅಶ್ರಮನ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೩೪)।

ಆಶ್ರಮಿಕ ಆಶ್ರಮಿಕ (ವಿಂ) ಭಾರವಾದ ಕಲ್ಲನ್ನು—(1) ಹೊರುವ. (2) ತೆಗೆದೊಯ್ಯುವ. (3) ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಬರುವ. ಭಾರಭೂತಮಶ್ರಮಾನಂ ವಹತಿ ಹರತ್ಯಾವಹತಿ ಚ—ಅಶ್ರಮನ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೪೦)।

ಆಶ್ರಮಾನ ಆಶ್ರಮಾನ (ವಿಂ) ಒಣಗಿದ, ಗಟ್ಟಿಯಾದ. ಆ+ಶ್ರಮ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಸರಿತ: ಕುರ್ವತಿ ಗಾಥಾ: ಪಥಶ್ಚಾಶ್ರಮಾನಕರ್ದಮಾನ್" ರಘುಂ ೪-೨೪।

ಆಶ್ರಮ ಆಶ್ರಮ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಆಶ್ರಮ್ಯಂತೇ ವಿಶ್ರಾಂತಿಂ ಪ್ರಾಪ್ಯಂತೇನೇನ। "ತೇಷಾಂ ತು ಯೋಗಭ್ರಷ್ಟಾಣಾಂ ಹೇತುರ್ವಿಷ್ಣುಃ ಸದಾಸು। ಸುಭಿಕ್ಷುಃ ಕವಿಃ ಪುನಃ ವಿಶ್ರಾಂತಿರಾಶ್ರಮಃ ಸ್ಮೃತಃ" ಇತಿ ನಿರ್ದಿಷ್ಟಿ:। (ಪುಂ) 2. ಪರ್ಣಶಾಲೆ, ತಪಸ್ಸಿಗಳ ವಾಸಗೃಹ. ಆಶ್ರಮ್ಯಂತ್ಯತ್ರ—ಆ+ಶ್ರಮ್ (ತಪಸಿ ಖೇದೇ ಚ) "ಭವ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ತೌ ದಂಪತೌ ವಸಿಷ್ಠಸ್ಯ ಗುರೋರ್ದಮತುರಾಶ್ರಮಮ್" ರಘುಂ ೧-೩೫। "ಆಶ್ರಮಾ: ಪ್ರವಿಶದಗ್ರಧೇನವ:" ಕುಮಾರಂ ೮-೩೮। 3. ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ನಾಲ್ಕು ಆಶ್ರಮಗಳು. [ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ, ಗೃಹಸ್ಥ, ವಾನಪ್ರಸ್ಥ ಮತ್ತು ಸಂನ್ಯಾಸವೆಂದು ಆಶ್ರಮಗಳು ನಾಲ್ಕು. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ನಾಲ್ಕು ಆಶ್ರಮಗಳೂ, ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಗೆ ಮೊದಲನೆಯ ಮೂರು ಆಶ್ರಮಗಳೂ, ವೈಶ್ಯನಿಗೆ ಮೊದಲನೆಯ ಎರಡು ಆಶ್ರಮಗಳೂ, ಶೂದ್ರನಿಗೆ ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮವೂ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವುದು.] "ಚತುರ್ವಿಧಂ ಆಶ್ರಮಾಶ್ರಮೇವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ:। ಗಾರ್ಹಸ್ಥ್ಯಂ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಂ ಚ ವಾನಪ್ರಸ್ಥಂ ತು ಭಿಕ್ಷುಕಮ್। ಧರ್ಮೇ ಚಾಪಿ ಕಥಿತಾ ಆಶ್ರಮಾಸ್ತತ್ರೇವ ಹಿ। ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಂ ಚ ಗಾರ್ಹಸ್ಥ್ಯಮಾಶ್ರಮದ್ವಿತಯಂ ವಿಶ:। ಗಾರ್ಹಸ್ಥ್ಯಮುಚಿತಂ ತ್ವೇಕಂ ಶೂದ್ರಸ್ಯ ಕ್ಷಣಮಾವಹೇತ್"। 4. ವಿದ್ಯಾಶಾಲೆ, ಪಾಠಶಾಲೆ.

ಆಶ್ರಮಗುರು ಆಶ್ರಮಗುರು (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಆಶ್ರಮಾಣಾಂ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾದಿನಾಂ ಗುರು: ನಿಯಂತಾ। "ಆತಿಥೇಯ-ಮನಿವಾರಿತಾತಿಥಿ: ಕರ್ತುಮಾಶ್ರಮಗುರು: ಸ ನಾಶ್ರಮತ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೩೮।

ಆಶ್ರಮಧರ್ಮ ಆಶ್ರಮಧರ್ಮ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾ ದ್ಯಾಶ್ರಮವಿಹಿತವಾದ ಧರ್ಮ, ಆಯಾ ಆಶ್ರಮಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯ. ಆಶ್ರಮವಿಹಿತೋ ಧರ್ಮ:। "ವಾನಪ್ರಸ್ಥಂ ಭೇಷ್ಯಚರ್ಯಂ ಗಾರ್ಹಸ್ಥ್ಯಂ ಚ ಮಹಾಶ್ರಮಮ್। ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾಶ್ರಮಂ ಪ್ರಾಹುಶ್ಚತುರ್ಥಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೇರಿತಮ್" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೬೦-೨। ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಗೆ ವೇದಾಧ್ಯಯನವೂ, ಗೃಹಸ್ಥನಿಗೆ ದಾನ

ಯಜ್ಞಯಾಗಾದಿಗಳೂ, ವಾನಪ್ರಸ್ಥನಿಗೆ ತಪಸ್ಸು, ಸಂನ್ಯಾಸಿಗೆ ಜ್ಞಾನಸಂಪಾದನೆ ಮತ್ತು ಮೋಕ್ಷೋಪಾಯಗಳೂ ಆಶ್ರಮ ಧರ್ಮಗಳು. "ಅಸಾಧುರ್ದರ್ಶಿ ಸ್ವಲ್ಪ ತನ್ನಭವಾನ್ ಕಾಶ್ಯಪ:; ಯ ಇಮಾಮಾಶ್ರಮಧರ್ಮೇ ನಿಯುಕ್ತೇ" ಶಾಕುಂ ೧।

ಆಶ್ರಮಪದ ಆಶ್ರಮಪದ (ನಂ) ತಪೋವನ, ತಪಸ್ಸಿಗಳ ವಾಸಸ್ಥಾನ. "ಶಾಂತಮಿದಮಾಶ್ರಮಪದಂ ಸ್ಫುರತಿ ಚ ಬಾಹು: ಕೃತ: ಫಲಮಿಹಾಸ್ಯ" ಶಾಕುಂ ೧-೧೪।

ಆಶ್ರಮವಾಸ ಆಶ್ರಮವಾಸ (ಪುಂ) ತಪಸ್ಸಿಗಳು ತಪೋವನದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವುದು.

ಆಶ್ರಮವಾಸಿಕ ಆಶ್ರಮವಾಸಿಕ (ನಂ) ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರ ಮೊದಲಾದವರ ಆಶ್ರಮವಾಸವನ್ನು ಹೇಳುವ ಮಹಾಭಾರತದ ಒಂದು ಪರ್ವ. ಆಶ್ರಮವಾಸ: ಪ್ರತಿಪಾಠತಯಾ ಸ್ತಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೫)।

ಆಶ್ರಮವಾಸಿನ್ ಆಶ್ರಮವಾಸಿನ್ (ಪುಂ) ಮುನಿ, ತಪಸ್ವಿ, ಸಂನ್ಯಾಸಿ. ಆಶ್ರಮೇ ವಸತಿ—ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ಗಿತಿ:" (೩-೧-೧೩೪)।

ಆಶ್ರಮಸದ್ ಆಶ್ರಮಸದ್ (ಪುಂ) ಮುನಿ, ತಪಸ್ವಿ, ಸಂನ್ಯಾಸಿ. ಆಶ್ರಮೇ ಸೀದತಿ—ಪದ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) "ಕಿವಿಪ್" (೩-೨-೬೧)।

ಆಶ್ರಮಿಕ ಆಶ್ರಮಿಕ (ವಿಂ) ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾದ್ಯಾಶ್ರಮವುಳ್ಳ. ಆಶ್ರಮೋಸ್ತಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೫)।

ಆಶ್ರಮಿನ್ ಆಶ್ರಮಿನ್ (ಪುಂ) ಆಶ್ರಮವುಳ್ಳವನು, ಆಶ್ರಮವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದವನು. ಆಶ್ರಮೋಸ್ತಸ್ಯ "ಇತಿ:" (೪-೨-೧೧೫)।

ಆಶ್ರಯ ಆಶ್ರಯ (ಪುಂ) 1. ಆಶ್ರಯಿಸುವಿಕೆ. ಆ+ಶ್ರಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬)। "ಗುಣವ-ದಾಶ್ರಯಲಬ್ಧಗುಣೋದಯೇ ಮಲಿನಿಮಾಃಲಿನಿ ಮಾಧವಯೋಷಿತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೬-೪। 2. ದುರ್ಬಲರರಕ್ಷಣಾಲಯ, ಅನಾಥರ ಆಲಯ. 3. ವಾಸಗೃಹ, ಮನೆ. 4. ಸಾಹಾಯ್ಯ ಕೃತ್ಯ ಇತರನನ್ನು ಸೇರುವುದು. "ಸಾಂಭೂದ್ರಾಮಾಶ್ರಯಾ ಭೂಯ:" ರಘುಂ ೧೨-೩೫। 5. ಆಶ್ರಯ, ಆಸರೆ, ಮರೆ. "ತದಹಮಾಶ್ರಯೋನ್ಮೂಲೇನೈವ ತ್ವಾಮಕಾಮಾಂ ಕರೋಮಿ" ಮುद्रಾಂ ೨।

6. ಆಧಾರ, ಅವಲಂಬನೆ. "ತಮಾಶ್ರಯಂ ದುಃಖಸಹಸ್ಯ ತೇಜಸ:" ರಘುಂ ೩-೫೮। 7. ಬಾಣಗಳ ಚೀಲ, ಬತ್ತಳಿಕೆ. "ತಮುಖ: ಸಪದಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣಾಽಗ್ರಜಾ ಬಾಣಮಾಶ್ರಯ-ಮುಖಾತ್ಸಮುದ್ಧರನ್" ರಘುಂ ೧೧-೨೬। 8. ರಾಜರ ಸಂಧಿ, ವಿಗ್ರಹ ಮೊದಲಾದ ಆರು ಗುಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಪ್ರಬಲನಾದ ಶತ್ರುವಿನಿಂದ ಸೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ದುರ್ಬಲ



ಸಾದವನು ಧಾರ್ಮಿಕನಾದ ಒಬ್ಬ ಒಲಶಾಲಿಯನ್ನು ಮರೆಹೊಕ್ಕು ವುದು ಆಶ್ರಯವು. "ತುಚ್ಛಮಾನೋ ರಿಪುಣಾ ನಿರಪಾಯಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಃ | ಶಕ್ತಿಹೀನಃ ಸಂಶ್ರಯತೇ ಬಲಿನಂ ಧಾರ್ಮಿಕಂ ನೃಪಮ್" | 9. "ಒತ್ತುಗಂಬ, ಆಧಾರಸ್ತಂಭ. "ವಕ್ಷ್ಯೇ ವಿಷಮಿಥುಮಿರ್ಜನಾಶ್ರಯೇಷು" ರಘುಂ ೧-೬೦ | 10. "ಸಾಹಾಯ್ಯ, ಸೇವೆ, ಒತ್ತಾಸೆ.

**ಪಾಠ್ಯ ಆಶ್ರಯಣ** (ನಂ) 1. ಆಶ್ರಯ ಹೊಂದುವಿಕೆ, ಸಾಹಾಯ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಒಬ್ಬನನ್ನು ಸೇರುವುದು. 2. ಅವಲಂಬನೆ, ಆಶ್ರಯ, ಆಧಾರ. ಆ+ಶ್ರಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) ಪಾಠ್ಯ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | (ವಿಂ) 3. ಆಶ್ರಯ ಪಡೆಯುವ, ಸಾಹಾಯ್ಯ ಹೊಂದುವ. ಆ + ಶ್ರಿ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) |

**ಪಾಠ್ಯಯೋಗ್ಯ** ಆಶ್ರಯಣೀಯ (ವಿಂ) ಆಶ್ರಯ ಹೊಂದಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಆಶ್ರಯಿಸಲ್ಪಡುವ. ಆ+ಶ್ರಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) |

**ಪಾಠ್ಯವತ್** ಆಶ್ರಯವತ್ (ವಿಂ) ಆಶ್ರಯವುಳ್ಳ, ಸಾಹಾಯ್ಯವುಳ್ಳ, ಆಸರೆಯುಳ್ಳ. ಆಶ್ರಯೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪) |

**ಪಾಠ್ಯಾಶ್ರಯ** ಆಶ್ರಯಾಶ್ರ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಪಾಠ್ಯಮಹನಾತಿ - ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಅಂ" (೩-೨-೧) | 2. ಕೃತ್ರಿಕಾನಕ್ಷತ್ರ. 3. ಚಿತ್ರಮೂಲದ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 4. ಆಸರೆಯನ್ನು ನಾಶಗೊಳಿಸುವ, ಸಹಾಯಕನನ್ನು ತಿಂದುಹಾಕುವ.

**ಪಾಠ್ಯಾಸಿದ್ಧಿ** ಆಶ್ರಯಾಸಿದ್ಧಿ (ಪುಂ) ನ್ಯಾಯಮತ ಸಿದ್ಧವಾದ ಐದು ವಿಧ ಹೇತ್ವಾಭಾಸಗಳಲ್ಲೊಂದು, ದುಷ್ಕವಾದ ಹೇತು, ಪಕ್ಷತಾವಚ್ಛೇದಕವಿಲ್ಲದ ಪಕ್ಷವುಳ್ಳ ಹೇತು. ಆಶ್ರಯಸ್ಯ ಪಕ್ಷಸ್ಯ ಅಸಿದ್ಧಿಃ | ತದ್ವಾನ್ ಪಾಠ್ಯಾಸಿದ್ಧಿಃ | "ಗಗನಾರವಿಂದಂ ಸುರಭಿ ಅರವಿಂದತ್ವಾತ್ ಕರೋಗಾರವಿಂದವತ್" | ಎಂಬಲ್ಲಿ ಸೌರಭ್ಯಕ್ಕೆ ಆಶ್ರಯ ಭೂತವಾದ ಗಗನಾರವಿಂದವು (ಪಕ್ಷವು) ಅಸಿದ್ಧಿ ಪಡೆದುದರಿಂದ ಹೇತುವು ದುಷ್ಕವಾಯಿತು. ಇದು ಆಶ್ರಯಾಸಿದ್ಧಿ ಭೂತವಾದ ಹೇತ್ವಾಭಾಸವು.

**ಪಾಠ್ಯಾಸಿದ್ಧಿ** ಆಶ್ರಯಾಸಿದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಸಿದ್ಧಿಯೆಂಬ ಹೇತುವಿನ ಒಂದು ದೋಷ. ಆಶ್ರಯಸ್ಯಾಸಿದ್ಧಿಃ | [ಎವರಕ್ಕೆ "ಅಸಿದ್ಧಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಪಾಠ್ಯಾಶ್ರಯಿನ್** ಆಶ್ರಯಿನ್ (ವಿಂ) ಆಶ್ರಯ ಹೊಂದಿರುವ, ಸಾಹಾಯ್ಯ ಪಡೆದಿರುವ, ಆಸರೆಯಿರುವ. ಆಶ್ರಯತಿ - ಆ + ಶ್ರಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಗಿಣಿ:" (೩-೧-೧೩೪) |

**ಆಶ್ರವ** ಆಶ್ರವ (ಪುಂ) 1. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. 2. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. 3. ಕ್ಷೇಪ, ಕಷ್ಟ. (ವಿಂ) 4. ವಿಧೇಯ, ಅಧೀನದಲ್ಲಿರುವವನು, ಮಾತಿನಂತೆ ನಡೆಯುವವನು. ಆಶ್ರಯತಿ - ಆ + ಶ್ರಿ (ಶ್ರವಣೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭) | "ಆಶ್ರಯೋಽಜ್ಞೀಕೃತೌ ಕಲೇಶೋ ನಾನ್ಯವದ್ವಚನಸ್ಥಿತೇ" ಮೇದಿಂ | "ದೃಷ್ಟದೋಷಮಪಿ ತತ್ರ ಸೋಽಪ್ಯಜತ್ ಸಜ್ಜವಸ್ತು ಮಿಥ್ಯಜಾಮನಾಶ್ರವಃ" | ರಘುಂ ೧೯-೪೯ | "ಶಾಧಿ ಶಾಸಕ ಜಗತ್ಪ್ರಯಸ್ಯ ಮಾಮಾಶ್ರವೋಽಸ್ಮಿ ಭವತಃ ಸಹಾನುಜಃ" | ಮಾಘಂ ೧೪-೧೧ |

**ಆಶ್ರಾವ** ಆಶ್ರಾವ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡಿಸುವುದು. 2. ಅಂಗೀಕಾರ ಮಾಡಿಸುವುದು. 3. ಕೇಳುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ಆ + ಶ್ರಿ (ಶ್ರವಣೇ) + ಗಿಣಿ "ಅಪ್" (೩-೧-೧೩೪) |

**ಆಶ್ರಿತ** ಆಶ್ರಿತ (ವಿಂ) 1. ಆಶ್ರಯ ಪಡೆದವನು. 2. ರಕ್ಷಣೆ ಹೊಂದಿದವನು, ಮರೆಹೊಕ್ಕಿದವನು. 3. ಆಧಾರವುಳ್ಳ, ಆಸರೆಯುಳ್ಳ. ಆ+ಶ್ರಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | 4. ಸೇವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಆಶ್ರಯ ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟವನು. ಕಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಆಶ್ರಿತಂ ರತ್ನಪೂರ್ಣಂ ಕುಂಭೇನ ಚ ಮಹೀಯಸಾ" | ಯಾದಂ ೧೬-೧೧ | 5. ನೆಲೆಸಿರುವ, ವಾಸವಾಗಿರುವ, ಕುಳಿತಿರುವ. "ಇಮಂ ಸ್ಫಟಿಕಶಿಲಾಸ್ತಂಭಮಾಶ್ರಿತೋ ಭವಾಮಿ" | ಮಾಲಂ ೪ | 6. ಸೇವಕ, ಆಳು. "ಪ್ರಾಯಶ್ಚಲಂ ಗೌರವಮಾಶ್ರಿತೇಷು" | ಕುಮಾಂ ೩-೧ |

**ಆಶ್ರಿತ** ಆಶ್ರಿತ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಆಶ್ರಯ ಹೊಂದಿ. 2. ರಕ್ಷಣೆ ಪಡೆದು. 3. ಒತ್ತಾಸೆ ಪಡೆದು, ಆಸರೆಪಡೆದು. ಆ + ಶ್ರಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯಪ್" (೩-೧-೩೭) |

**ಆಶ್ರುತ್** ಆಶ್ರುತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಂಗೀಕಾರ. 2. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. ಆ+ಶ್ರಿ (ಶ್ರವಣೇ) "ವಿವಪ್" (೩-೩-೯೪) | 3. ಅಂಗೀಕರಿಸುವ. 4. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡುವ. ಆಶ್ರಯತಿ - ಆ + ಶ್ರಿ ಕರಂ "ವಿವಪ್" |

**ಆಶ್ರುತ** ಆಶ್ರುತ (ವಿಂ) 1. ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಪ್ಪಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ+ಶ್ರಿ (ಶ್ರವಣೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಆಶ್ರುತಸ್ಯ ವಿಫಲತ್ವಮಸ್ತಿ ಚೇದಾಃ ಶ್ರುತಸ್ಯ ರಚಿತೋಽಯಮಂಜಲಿಃ" | ಚಂ ರಾಂ | 3. ಕೇಳಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಆಶ್ರುತಿ** ಆಶ್ರುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. 2. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. 3. ಕೇಳುವುದು, ಶ್ರವಣ. ಆ + ಶ್ರಿ (ಶ್ರವಣೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) |



**ಅಶಿಲಿಷ್ಠ ಅಶ್ಲಿಷ್ಠ (ವಿಂ)** 1. ಅಲಿಂಗಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು. ಆ + ಶಿಲಿಷ (ಅಲಿಜ್ಞೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಅಶಿಲಿಷ್ಠಭೂಮಿ ರಸಿತಾರಮುಚ್ಛೇಲೋಲಕ್ಷುಜಾ-ಕಾರವಹತ್ತರಂಜಮ್" ಮಾಘಂ 3-92. 2. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಬೆರೆತಿರುವ, ಕಲೆತಿರುವ. "ವಿದಿದ್ಯುತೇ ಬಾಡವಜಾತವೇದಸ: ಶಿಖಾಭಿರಾಶಿಲಿಷ್ಠ ಇವಾಮ್ಭಸಾಂ ನಿಧಿ:" ಮಾಘಂ 1-20. **ಅಶ್ಲೇಷ ಅಶ್ಲೇಷ (ಪುಂ)** 1. ಅಲಿಂಗನ, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಆ + ಶಿಲಿಷ (ಅಲಿಜ್ಞೇ) "ಚಕ್" (3-3-14). "ಅಶ್ಲೇಷಲೋಲಪವಸ್ತುನಕಾಂಕ್ಷಯಸಾಕ್ಷಿಣಿಮ್" ಮಾಘಂ 2-10. "ಘಾತಾ ವಿಶ್ವವಿಸ್ಫುಟಿಮಾತ್ರನಿರತೋ ದೇವೋಽಪಿ ಗೌರಿಮುಜಾ-ಶ್ಲೇಷಾನಂದವಿಘ್ನಂ ಮಾನನಯನೋ ದಕ್ಷಾಧ್ವರಘ್ವಂಸನ:" ಪ್ರಬಂಧಂ 2-24. 2. ಸ್ವಲ್ಪಸಂಬಂಧ, ಏಕದೇಶದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ. ಆ ಇಂಠ್ ಶ್ಲೇಷ: ಸಂಬಂಧ:.

**ಅಶ್ಲೇಷಾ ಅಶ್ಲೇಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಶ್ಲೇಷಾ ನಕ್ಷತ್ರ, ಸರ್ಪದೇವತಾಕವಾದ ನಕ್ಷತ್ರ. "ಅಶ್ಲೇಷಾ ನಕ್ಷತ್ರಂ ಸರ್ಪಾ ದೇವತಾ:" ತೆತ್ತಿಂ ಸಂ. 1. ಅಶ್ಲೇಷಾ ನಕ್ಷತ್ರವು ರಾಕ್ಷಸಗಣಕ್ಕೆ ಸೇರಿದುದು. ಮಾರ್ಜಾಲಯೋನಿ. ಅಥೋಮುಖ. ದಾರುಣಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳದು. ಅಶ್ಲೇಷಾ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯಾಣ ಕೂಡದು. ಪಾಯಸಾನ್ನವು ಇದಕ್ಕೆ ಶಾಂತಿ. ಈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಜ್ವರವು ಬಂದರೆ ಒಂದು ತಿಂಗಳಕಾಲ ಪೀಡಿಸುವುದು. ಈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಪ್ರಥಮ ಮತುಮತಿಯಾದರೆ ದುರ್ನಡತೆಯುಳ್ಳವಳಾಗುತ್ತಾಳೆ. ಈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಕನ್ಯೆಯು ಅತ್ತೆಯಿಲ್ಲದ ಮನೆಗೆ ಮದುವೆಯಾಗಬೇಕು. "ಮೂಲಜಾ ಶ್ವಶುರಂ ಹಂತಿ ಸರ್ಪಜಾ ತು ತದಜ್ಞನಾಮ್" 1. ಈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವರಿಗೆ ಬುಧಮಹಾದಶೆಯು ಪ್ರಾರಂಭವಾಗುವುದು. ಈ ದಶೆಯ ಪ್ರಮಾಣ 17 ವರ್ಷಗಳು.

**ಅಶ್ವ ಅಶ್ವ (ನಂ)** 1. ಕುದುರೆಗಳ ಗುಂಪು. ಅಶ್ವಾನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಅನ್" (4-2-37). 2. ಕುದುರೆಯ (ಸ್ವ)ಭಾವ. ಅಶ್ವಸ್ಯ ಭಾವ: "ಅನ್" (4-1-129). (ವಿಂ) 3. ಕುದುರೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. 4. ಕುದುರೆಯಿಂದ ಎಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ (ಗಾಡಿ ರಥ ಮೊದಲಾದುದು). ಅಶ್ವ "ಅನ್" (4-2-92).

**ಅಶ್ವತ್ಥ ಅಶ್ವತ್ಥ (ನಂ)** 1. ಅರಳಿಕಣ್ಣು. ಅಶ್ವತ್ಥಸ್ಯ ಫಲಮ್ "ಅನ್" (4-3-164). (ಸ್ತ್ರೀಂ)—ತ್ಥಿ—ತ್ಥೀ. ಅಶ್ವತ್ಥ (ಅಶ್ವಿನೀ) ನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ ಕೂಡಿದ ರಾತ್ರಿ. (ವಿಂ) 2. ಅರಳಿಮರದ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಅಶ್ವತ್ಥಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (4-3-120). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಫ್" (4-1-41).

**ಅಶ್ವತ್ಥಿಕ ಅಶ್ವತ್ಥಿಕ (ಪುಂ)** ಅಶ್ವತ್ಥಯುಜ ಮಾಸ. ಅಶ್ವತ್ಥ "ಠಕ್" (4-2-22). ಅಶ್ವತ್ಥೇನ ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಸ್ಮಿನ್.

**ಅಶ್ವಪತ ಅಶ್ವಪತ (ಪುಂ)** 1. ಅಶ್ವಪತಿಯ: ಮಗ. ಅಶ್ವಪತೇರಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (4-1-44). (ವಿಂ) 2. ಅಶ್ವಪತಿಸಂಬಂಧವಾದ. ಅಶ್ವಪತೇರಿದಮ್ "ಅನ್" (4-3-120).

**ಅಶ್ವಭಾರಿಕ ಅಶ್ವಭಾರಿಕ (ವಿಂ)** ಕುದುರೆಯು ಹೊರುವಷ್ಟು ಭಾರವನ್ನು ಒಯ್ಯುವ,—ಹೊರುವ,—ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಬರುವ. ಅಶ್ವಭಾರಂ ಅಶ್ವವಾಹ್ಯಂ ಭಾರಂ ಹರತಿ ವಹತಿ ಆವಹತಿ ವಾ "ಠಕ್" (4-1-40).

**ಅಶ್ವಮೇಧಿಕ ಅಶ್ವಮೇಧಿಕ (ನಂ)** 1. ಧರ್ಮರಾಜನ ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗದ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಮಹಾಭಾರತದ ಒಂದು ಪರ್ವ. ಅಶ್ವಮೇಧ: ಏವ "ಠಕ್" (4-4-34). (ವಿಂ) 2. ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ ವಸ್ತು.

**ಅಶ್ವಯುಜ ಅಶ್ವಯುಜ (ಪುಂ)** ಅಶ್ವಯುಜ ಮಾಸ. ಅಶ್ವಯುಜಿ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಸ್ಮಿನ್ "ಅನ್" (4-2-21).

**ಅಶ್ವಯುಜಕ ಅಶ್ವಯುಜಕ (ಪುಂ)** ಅಶ್ವಯುಜ ಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ದಿನ ಬಿತ್ತಿದ ಉದ್ದು. ಅಶ್ವಯುಜ್ಯಾಮುಸಿ ಮಾಘ: "ವುಕ್" (4-3-44). [ಅಶ್ವಯುಜ ಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ದಿನ ಬಿತ್ತಿದ ಉದ್ದು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆದು ಫಲಿಸುವುದು.]

**ಅಶ್ವಯುಜಿ ಅಶ್ವಯುಜೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಶ್ವಯುಜ ಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ಅಶ್ವಯುಜಾ ಅಶ್ವಿನಿನಕ್ಷತ್ರೇಣ ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ "ಅನ್" (4-2-3).

**ಅಶ್ವರಥ ಅಶ್ವರಥ (ವಿಂ)** ಕುದುರೆಯ ಗಾಡಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಅಶ್ವರಥಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (4-3-122).

**ಅಶ್ವಲಕ್ಷಣಿಕ ಅಶ್ವಲಕ್ಷಣಿಕ (ವಿಂ)** 1. ಕುದುರೆಯ ಲಕ್ಷಣವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ. 2. ಕುದುರೆಯ ಲಕ್ಷಣವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವ. ಅಶ್ವಲಕ್ಷಣಂ ವೇತ್ತಿ ತದ್ಗ್ರಂಥಮಧೀತೇ ವಾ "ಠಕ್" (ವಾಂ 4-2-60).

**ಅಶ್ವಲಾಯನ ಅಶ್ವಲಾಯನ (ಪುಂ)** ಅಶ್ವಲ ಮುಷಿಯ ಮಗ, ಮಗ್ನೇದದ ಶ್ರೌತ ಮತ್ತು ಗೃಹ್ಯ ಸೂತ್ರಗಳನ್ನು ಬರೆದ ಮುಷಿ. ಅಶ್ವಲ: ಕಶ್ಚನ ಮುನಿ: ತಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಫಕ್" (4-1-99).



ಆಶ್ವಾಸ ಆಶ್ವಾಸ (ಪುಂ) 1. ರಕ್ಷಣೆಯ ಭರವಸೆ. 2. ನಿಲ್ಲುವಿಕೆ, ನಿಲ್ಲುಗಡೆ, ನಿವೃತ್ತಿ. 3. ಸಮಾಧಾನ ಗೊಳ್ಳುವುದು. 4. ಗ್ರಂಥದ ಭಾಗ. 5. ಉಸಿರಾಡುವುದು. ಆ + ಇವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ಋ" (3-3-18, 19, 221)।

ಆಶ್ವಾಸಕ ಆಶ್ವಾಸಕ (ವಿಂ) 1. ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸುವ. 2. ಧೈರ್ಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಆ + ಇವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) + ಣಿಕ್ "ಋಲ್" (3-1-133)।

ಆಶ್ವಾಸನ ಆಶ್ವಾಸನ (ನಂ) 1. ಸಮಾಧಾನಗೊಳಿಸುವುದು. ಆ + ಇವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। (ವಿಂ) 2. ಸಮಾಧಾನಗೊಳಿಸುವ. ಆ + ಇವಸ + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯು:" (3-1-134)।

ಆಶ್ವಾಸಿನ್ ಆಶ್ವಾಸಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಸಮಾಧಾನವುಳ್ಳ, ಧೈರ್ಯವುಳ್ಳ. ಆಶ್ವಾಸೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇತಿ:" (4-2-114)। "ಕಾಮಂ ಪ್ರಿಯಾ ನ ಸುಲಭಾ ಮನಸ್ತು ತದ್ಭಾವದರ್ಶನಾಶ್ವಾಸಿ" ಶಾಕುಂ 2-1।

ಆಶ್ವಾಸ್ಯ ಆಶ್ವಾಸ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸಮಾಧಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. ಆ + ಇವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) + ಣಿಕ್ "ಯತ್" (3-1-90)। (ಅವ್ಯಂ) 2. ಸಮಾಧಾನಗೊಳಿಸಿ. ಆ + ಇವಸ + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯಪ್" (3-1-30)।

ಆಶ್ವಿಕ ಆಶ್ವಿಕ (ವಿಂ) 1. ಭಾರವಾಗಿರುವ ಕುದುರೆಯನ್ನು ಒಯ್ಯುವ, -ಹೊರುವ, -ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಬರುವ. ಭಾರಭೂತಮಶ್ವಂ ಹರತಿ ಬಹಲ್ಯಾವಹತಿ ಚ "ಠಕ್" (4-1-40)। 2. ಅಶ್ವದ ಲಾಭವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಶುಭಶಕುನ, ಕುದುರೆಯ ಲಾಭವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ (1) ಸಂಯೋಗ (ಸಂಬಂಧ), (2) ಉತ್ಪತ್ತಿ (ಶುಭಸೂಚನೆ)ಗಳು. ಅಶ್ವಸ್ಯ ನಿಮಿತ್ತಂ ಸಂಯೋಗಃ ಉತ್ಪತ್ತಿರ್ವಾ "ಠಕ್" (4-1-38)।

ಆಶ್ವಿನ ಆಶ್ವಿನ (ಪುಂ) 1. ಆಶ್ವಯುಜ ಮಾಸ. ಆಶ್ವಿನಿ ಪೂರ್ಣಿಮಾಸ್ಯಾಸ್ಮಿನ್ "ಅನ್" (4-2-21)। (ದ್ವಿಂ) 2. ಆಶ್ವಿನೀಕುಮಾರರು. (ವಿಂ) 3. ಆಶ್ವಿನೀದೇವತೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ.

ಆಶ್ವಿನಿ ಆಶ್ವಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಶ್ವಯುಜ ಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ಆಶ್ವಿನಿಯಾ ಯುಕ್ತಾ ಪೂರ್ಣಿಮಾ "ಅನ್" (4-2-3)। "ಙೀಪ್" (4-1-14)।

ಆಶ್ವಿನೇಯ ಆಶ್ವಿನೇಯ (ಪುಂದ್ವಿಂ) ಆಶ್ವಿನೀದೇವತೆಯ ಕುಮಾರರು, ದೇವವೈದ್ಯರು. ಆಶ್ವಿನಿಯಾ ಅಪತ್ಯೇ "ಢಕ್" (4-1-120)।

ಆಶ್ವಿನಿ ಆಶ್ವಿನಿ (ಪುಂ) ಕುದುರೆಯ ಮೇಲೆ ಒಂದು ದಿನ ಪ್ರಯಾಣಮಾಡುವಷ್ಟು ದೂರದ ಮಾರ್ಗ, ಕುದುರೆಯು ಒಂದು ದಿನ ನಡೆಯುವಷ್ಟು ದೂರ. ಅಶ್ವಸ್ಯ ಏಕಾಹಗಮಃ "ಋ" (4-2-19)।

ಆಷಾಢ ಆಷಾಢ (ಪುಂ) 1. ಆಷಾಢ ಮಾಸ. ಆಷಾಢಿ ಪೂರ್ಣಿಮಾಸ್ಯಾಸ್ಮಿನ್ ಮಾಸೇ "ಅನ್" (4-2-21)। 2. ಪಲಾಶ ದಂಡ, ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಗಳು ಹಿಡಿಯುವ ದಂಡ. ಆಷಾಢಿ ಪೂರ್ಣಿಮಾ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಅನ್" (4-1-110)। "ಅಥಾ-ಜಿನಾಷಾಢಧರಃ ಪ್ರಗಲ್ಭವಾಕ್" ಕುಮಾಂ 4-30। 3. ಮಲಯ ಸರ್ವತ. "ಆಷಾಢೋ ವ್ರತಿನಾಂ ದಣ್ಡೇ ಮಾಸೇ ಮಲಯಪರ್ವತೇ" ಮೇದಿಂ।

ಆಷಾಢಾ ಆಷಾಢಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂರ್ವಾಷಾಢಾ ಮತ್ತು ಉತ್ತರಾಷಾಢಾ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು.

ಆಷಾಢಾಭವ ಆಷಾಢಾಭವ-ಭೂ-ಭೂ (ಪುಂ) ಕುಜ, ಅಂಗಾರಕ, ಮಂಗಳಗ್ರಹ. ಆಷಾಢಾಭವಾ ಭವಃ-ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಅವ್" (3-1-134)। "ಕ್ರಿಪ್" ವಾ।

ಆಷಾಢೀ ಆಷಾಢೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಷಾಢ ಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ಆಷಾಢಿಯಾ ನಕ್ಷತ್ರೇಣ ಯುಕ್ತಾ ಪೂರ್ಣಿಮಾಸೀ "ಅನ್" (4-2-3)। "ಙೀಪ್" (4-1-14)।

ಆಷಾಢೀಯ ಆಷಾಢೀಯ (ವಿಂ) 1. ಆಷಾಢಾ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಆಷಾಢಾಭವಾ ಜಾತಃ "ಛಃ" (4-2-114)। 2. ಆಷಾಢಾ ನಕ್ಷತ್ರ ಸಂಬಂಧವಾದ.

ಆಷ್ಠ ಆಷ್ಠ (ನಂ) ಆಕಾಶ, ಗಗನ. ಅಶ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಛ್ಠನ್" (3-1-149)।

ಆಸ-ಉಪವೇಶನ (ಅದಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸೇಂ)

|      |       |        |         |
|------|-------|--------|---------|
| ಲಟ್- | ಆಸ್ತೇ | ಆಸಾತೇ  | ಆಸತೇ।   |
|      | ಆಸ್ತೇ | ಆಸಾಥೇ  | ಆಧ್ವೇ।  |
|      | ಆಸೇ   | ಆಸ್ವಹೇ | ಆಸ್ಮಹೇ। |

ಲಿಟ್- ಆಸಾಚ್ಚಕ್ರೇ-ಬಭೂವ-ಆಸ।

ಲುಟ್- ಆಸಿತಾ ಆಸಿತಾರೌ ಆಸಿತಾರಃ।

ಲೃಟ್- ಆಸಿಷ್ಯತೇ ಆಸಿಷ್ಯೇತೇ ಆಸಿಷ್ಯಂತೇ।

ಲೋಟ್- ಆಸ್ತಾಮ್ ಆಸಾತಾಮ್ ಆಸತಾಮ್।

ಆಸ್ವ ಆಸಾಥಾಮ್ ಆಧ್ವಮ್।

ಆಸಂ ಆಸಾವಹೈ ಆಸಾಮಹೈ।

ಲಙ್- ಆಸ್ತ ಆಸಾತಾಮ್ ಆಸತ।

ಆಸ್ಥಾಃ ಆಸಾಥಾಮ್ ಆಧ್ವಮ್।

ವಿಧಿಲಿಙ್- ಆಸೀತ ಆಸೀಯಾತಾಮ್ ಆಸೀರನ್।

ಆಶೀಲಿಙ್- ಆಸಿಷೀಷ್ಠ ಆಸಿಷೀಯಾಸ್ತಾಮ್ ಆಸಿಷೀರನ್।



ಲಙ್— ಆಸಿಷ್ಠ ಆಸಿಷಾತಾಮ್ ಆಸಿಷತ |  
 ಲಙ್— ಆಸಿಷ್ಯತ ಆಸಿಷ್ಯೇತಾಮ್ ಆಸಿಷ್ಯಂತ |  
 ಕುಳಿತುಕೊಂಡು, ಕೂಡು, ಕೂರು. “ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಾಣಿ  
 ಸಂಯಮ್ಯ ಯಃ ಆಸ್ತೇ ಮನಸಾ ಸ್ಮರನ್” ಗೀತಾ ೩-೬ |  
 “ತುಷ್ಣಿಭೂಯ ಭಯಾದಾಸಾಂಚಕ್ರೀ ಮೃಗಪಕ್ಷಿಣಃ” ಭट्टಿಂ  
 ೪-೯೫ | “ಆಸ್ವ ಸಾಕಂ ಮಯಾ ಸೌಧೇ” ಭट्टಿಂ ೮-೭೯ |  
 “ಆಸೀತ ಗುಣಾ ಸಾರ್ಥಂ ಶಿಲಾಫಲಕನೌಘಂ ಚ” ಮನುಂ  
 ೨-೨೦೪ | “ಯುಗಾಂತಕಾಲಪ್ರತಿಸಂಹತಾತ್ಮನೋ ಜಗಂತಿ ಯಸ್ಯಾಂ  
 ಸವಿಕಾಸಮಾಸತ” ಮಾಘಂ ೧-೨೩ |

ಭಾವೇ:—ಆಸ್ಯತೇ | ಆಸೇ | ಆಸಿತಾ | ಆಸಿಷ್ಯತೇ |  
 ಆಸ್ಯತಾಮ್ | ಆಸ್ಯತ | ಆಸ್ಯೇತ | ಆಸಿಷಿಷ್ಠ | ಆಸಿ |  
 ಆಸಿಷ್ಯತ | “ಆಸ್ಯತಾಮಿತಿ ಚೋಕ್ತಃ ಸನ್ ಆಸೀತಾಭಿಮುಖಂ  
 ಗುರೋಃ” ಮನುಂ ೨-೧೯೩ |

ಕೃತ್ಸು:—ಆಸಿತವ್ಯಮ್ | ಆಸನೀಯಮ್ | ಆಸ್ಯಮ್ |  
 ಆಸೀನಃ | ಆಸಿತಮ್ | ಆಸಿತವಾನ್ | ಆಸಿತುಮ್ | ಆಸನಮ್ |  
 “ಆಸೀನಾನಾಂ ಸುರಭಿತಶಿಲಂ ನಾಭಿಗಂಧೈರ್ಮೃಗಾಣಾಮ್” ಮೇಘಂ  
 ೧-೫೨ |

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ  
 ಉಂಟಾದ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಅಧಿ + ಆಸ = ಅಧ್ಯಾಸಿತಮ್ | ಆಶ್ರಯ  
 ಹೊಂದು, ಮೇಲೆ ಕುಳಿತುಕೊಂಡು, ಕೂರು. “ಧೇನ್ವಾ  
 ತದಧ್ಯಾಸಿತಕಾತರಾಕ್ಷಯಾ” ರಘುಂ ೨-೫೨ |

(2) ಅನ್ + ಆಸ = ಅನ್ವಾಸಿತಮ್ | ಅನಂತರ  
 ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವುದರಿಂದ ಸೇವಿಸು. “ಅನ್ವಾಸಿತ-  
 ಮರುಹತಯಾ ಸ್ವಾಹಯೇವ ಹವಿರ್ಭುಜಮ್” ರಘುಂ ೧-೫೬ |

(3) ಅಭಿ + ಆಸ = ಅಭ್ಯಾಸಃ | 1. ಎದುರಿಗೆ  
 ಕುಳಿತುಕೊಂಡು. 2. ಆವೃತ್ತಿ, ಪುನಃ ಪುನಃ ಮಾಡು,  
 ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಮಾಡು. “ಅಭ್ಯಾಸೇನ ಚ ಕೌಂತೇಯ ವೈರಾಗ್ಯೇಣ  
 ಚ ಗೃಹ್ಯತೇ” ಗೀತಾ ೬-೩೫ | 3. ಸಾಮೀಪ್ಯ. “ವ್ರಿಡಾ-  
 ದಿವಾಭ್ಯಾಸಗತೈವಿಲಿಖ್ಯೇ” ಮಾಘಂ ೩-೪೦ |

(4) ಉದ್ + ಆಸ = ಉದಾಸೀನಃ | ಉದಾಸೀನನಾಗು.  
 “ಉದಾಸಿತಾರಂ ನಿಗೃಹೀತಮಾನಸೈಗೃಹೀತಮಧ್ಯಾತ್ಮದೃಶಾ ಕಥಂಚನ”  
 ಮಾಘಂ ೧-೩೩ |

(5) ಉಪ + ಆಸ = ಉಪಾಸನಮ್ | ಉಪಾಸ್ಯ | ಉಪಾ-  
 ಸಿಸು, ಸೇವಿಸು. “ಉಪಾಸನಪಾಲಸಾಮಾನ್ಯಮೃತವಸ್ತುಮುಪಾಸತೇ”  
 ಕುಮಾರಂ ೨-೩೬ |

(6) ಪರಿ + ಉಪ + ಆಸ = ಪರ್ಯುಪಾಸತೇ | ಜಿನ್ನಾಗಿ  
 ಸೇವಿಸು. “ಸ್ಥಿರಪ್ರದೀಪತಾಮೇತ್ಯ ಭುಜ್ಜಾಃ ಪರ್ಯುಪಾಸತೇ”  
 ಕುಮಾರಂ ೨-೩೮ |

(7) ಸಮ್ + ಉಪ + ಆಸ = ಸಮುಪಾಸತೇ | “ಸಮುಪಾಸ್ಯತ  
 ಪುತ್ರಭೋಗ್ಯಯಾ ಸ್ತುಪಯೇವಾವಿಕೃತೇಂದ್ರಿಯಃ ಶ್ರಿಯಾ” ರಘುಂ ೮-೧೪ |

(8) ಸಮ್ + ಆಸ = ಸಮಾಸೀನಃ | ಕುಳಿತುಕೊಂಡು,  
 ಕೂರು. “ಪಶ್ಚಿಮಾಂ ತು ಸಮಾಸೀನೋ ಮಲಂ ಹಂತಿ ದಿವಾಕೃತಮ್” |

ಆಸ್ ಆಸ (ಅವ್ಯಂ) ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ ದ್ವ್ಯೇತಕ  
 ವಾಗಿಯವುದು. 1. ಕೊಡು. “ಆಃ, ಕ ಏಷ ಮಯಿ ಸ್ಥಿತೋ  
 ಚಂದ್ರಮಭಿಭವಿತುಮಿच्छತಿ ಬಲಾತ್” ಮುಡ್ರಾಂ ೧ | 2. ಆಶ್ರೀ-  
 ಡು. “ಆಃ, ದುರಾತ್ಮನ್ ವೃಥಾಮಜ್ಜಲಪಾಠಕ” ವೇಣೀಂ ೧ |  
 3. ಸಂತಾಪ. 4. ಪೇದ, ದುಃಖ. “ವಿದ್ಯಾ-  
 ಮಾತರಮಾಃ ಪ್ರದರ್ಶ್ಯ ನೃಪಶೂನ್ ಭಿಕ್ಷಾಮಹೇ ನಿಸ್ತ್ರವಾಃ” ಉದ್ಧಂ |  
 “ಆಃ ಸಂತಾಪಪ್ರಕೋಪಯೋಃ” ಹೇಮಂ |

ಆಸ ಆಸ (ಪುಂ) 1. ಧನಸ್ಸು, ಬಿಲ್ಲು. ಅಸ್ಯತೇಜೇನ —  
 ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) “ಘ್” (೩-೩-೧೯) | “ಸಸಾಸಿಃ  
 ಸಾಸುಸುಃ ಸಾಸಃ” ಕಿರಾಂ ೧೫-೫ | 2. ಆಸನ, ಸೀತ.  
 ಆಸ (ಉಪವೇಶನ) ಅಧಿಂ “ಘ್” (೩-೩-೧೨೧) |  
 3. ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ, ಕೂರುವಿಕೆ. ಆಸ ಭಾವೇ “ಘ್”  
 (೩-೩-೧೮) | 4. ಆಸನ, ಗುಹ್ಯಪ್ರದೇಶ, ಶರೀರದ  
 ಕೂರುವ ಭಾಗ. ಆಸ ಕರಂ “ಘ್” (೩-೩-೧೨೧) |  
 “ಕಪ್ಯಾಸಂ ಪುಂಡರೀಕಮೇವಮಕ್ಷಿಣಿ” ಚಾಂದೋಗ್ಯಂ |

ಆಸಕ್ತ ಆಸಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಜಿನ್ನಾಗಿ ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವ,  
 ಸುತ್ತಲೂ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ. ಆ + ಷಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೆ)  
 “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) | “ಆಸಕ್ತಮೇತದನಪೇಕ್ಷಿತಹೇತುಃ ಚೇತಃ”  
 ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೬ | 2. ಶ್ರದ್ಧೆಯುಳ್ಳ, ತದೇಕಧ್ಯಾನ  
 ವುಳ್ಳ, ತತ್ಪರನಾದ. 3. ಕರ್ತೃತ್ವಾಭಿಮಾನವುಳ್ಳ.  
 ಆಸಕ್ತಿ ಆಸಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶ್ರದ್ಧೆ, ತತ್ಪರತೆ, ಒಂದೇ  
 ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮನಸ್ಸನ್ನಿಟ್ಟಿರುವಿಕೆ. ಆ + ಷಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೆ)  
 “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) | 2. ಕರ್ತೃತ್ವಾಭಿಮಾನ.

ಆಸಜ್ಜ ಆಸಂಗೆ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರದ್ಧೆ, ತತ್ಪರತೆ, ಕಾರ್ಯ  
 ದಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿ, ಏಕಾಗ್ರತೆ. 2. ಸಂಬಂಧ, ಅಂಟಿ-  
 ಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ. ಆ + ಷಜ್ಜ  
 (ಸಜ್ಜೆ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮) | “ಪಾದಾಕೃಷ್ಣತತಿ-  
 ವಲಯಾಸಜ್ಜಸಜ್ಜಾತಪಾಶಃ” ಶಾಕುಂ ೧-೨೯ | 3. ಸಹ-  
 ವಾಸ, ಒಟ್ಟುಗೂಡುವಿಕೆ, ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದುವಿಕೆ.  
 4. ನಾನು ಮಾಡಿದನೆಂಬ ಅಭಿಮಾನ, ಕರ್ತೃತ್ವಾ-  
 ಭಿಮಾನ. 5. ದೊರೆತ ವಸ್ತುವಿನ ರಕ್ಷಣೆಯಲ್ಲಿ  
 ಅಭಿಲಾಷೆ. (ವಿಂ) 6. ವಿರಾಮವಿಲ್ಲದ, ಎಡೆಬಿಡದ,  
 ಸತತ ಸಂಬಂಧವುಳ್ಳ. (ಅವ್ಯಂ) 7. ಸತತವಾಗಿ,  
 ವಿರಾಮವಿಲ್ಲದೆ.



ಆಸಜ್ಞಿನ್ ಆಸಂಗಿನ್ (ವಿಂ) ಸತತವಾದ ಸಂಬಂಧ  
ವುಳ್ಳ, ನಿತ್ಯಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ. ಆಸಜ್ಞೋಃ  
ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಛನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್"  
(೪-೧-೪)। ಆಸಜ್ಞಿನಿ ಆಸಂಗಿನೀ.

ಆಸಜ್ಞಿನಿ ಆಸಂಗಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುಂಟಿರಗಾಳ, ಸುಳಿ  
ಗಾಳ, ಚಕ್ರವಾತ.

ಆಸಜ್ಞನ ಆಸಂಜನ (ನಂ) 1. ಅಗಲ, ಕೊಂಡಿ,  
ತಾಪಾಳು. 2. ಸಂಬಂಧ, ಸಂಪರ್ಕ. 3. ಶ್ರದ್ಧೆ,  
ಭಕ್ತಿ, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಏಕಾಗ್ರತೆ, ತತ್ಪರತೆ. 4. ಸೇರಿಸು  
ವಿಕೆ, ಅಂಟಿಸುವಿಕೆ, ಸಂಬಂಧಪಡಿಸುವಿಕೆ. ಆ + ಷಜ್ಞ  
(ಸಜ್ಞೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪, ೧೧೭)।

ಆಸಜ್ಞಿತ ಆಸಂಜಿತ (ವಿಂ) ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಬಂಧ  
ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಷಜ್ಞ (ಸಜ್ಞೇ) + ಣಿನ್ "ಕ್ತ:"  
(೩-೨-೧೦೨)।

ಆಸತಿ ಆಸತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಮೀಪ ಸಂಬಂಧ. ಆ +  
ಷದಲ್ (ವಿಶರಣಗತ್ಯವಸಾದನೇಷು) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।  
2. ಲಾಭ, ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಸಂಪಾದನೆ. 3. (ತಾರ್ಕಿಕ  
ಮತದಲ್ಲಿ) ಶಾಬ್ದಬೋಧವುಂಟಾಗಲು ಪದಗಳನ್ನು  
ವಿಳಂಬ (ಕಾಲವಿಚ್ಛೇದ) ವಿಲ್ಲದೆ ಉಚ್ಚರಿಸುವುದು,  
ವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಪದಗಳನ್ನು ವ್ಯವಧಾನ  
ವಿಲ್ಲದೆ ಹೇಳುವುದು. [ವ್ಯವಧಾನವು ಕಾಲವಿಳಂಬ  
ದಿಂದಲೂ, ಅಪ್ರಕೃತ ಪದಪ್ರಯೋಗದಿಂದಲೂ  
ಉಂಟಾಗುವುದು. ಇಂತಹ ವ್ಯವಧಾನವಿಲ್ಲದೆ ಪದ  
ಗಳನ್ನು ಸೇರಿದಂತೆ ಉಚ್ಚರಿಸುವುದರಿಂದ ಶಾಬ್ದಬೋಧ  
ವುಂಟಾಗುವುದು.] "ಕಾರಣಂ ಸನ್ನಿಧಾನಂ ತು ಪದಸ್ಯಾಸತ್ತಿ-  
ಹ್ಯುಚ್ಯತೇ" ಭಾಷಾ೧೦। "ವಾಕ್ಯಂ ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯತಾಕಾಡ್‌ಕ್ಷಾಸತ್ತಿಯುಕ್ತಃ  
ಪದೋಚ್ಚಯಃ" ಸಾಂ ದಂ ೨-೧। 4. ಸಂಬಂಧ, ಸೇರಿಕೆ.

ಆಸದನ ಆಸದನ (ನಂ) 1. ಲಾಭ, ಸಂಪಾದನೆ.  
2. ಸಮೀಪ ಸಂಬಂಧ. ಆ + ಷದಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ)  
"ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪)।

ಆಸನ ಆಸನ (ಪುಂ) 1. ಹೊನ್ನೆ ಮಠ. "ಆಸನೋ ಜೀವಕದ್ರುಮೇ"  
ವಿಶ್ವಂ। (ನಂ) 2. ಪೀಠ, ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವ ಮಣೆ,  
ಕುರ್ಚಿ ಮುಂತಾದುದು. ಆಸ್ಯತೇಽನ್-ಆಸ (ಉಪವೇಶನೇ)  
"ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ತದನುಮತಮಲಂಚಕಾರ  
ಪಶ್ಚಾತ್ಪ್ರಶಮ ಇವ ಶ್ರುತಮಾಸನಂ ನರೇಂದ್ರಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೪೮।  
"ಶುಭಾಸನೇ ಹೇಮಮಯೇ ಪುರಸ್ತಾತ್" ಕುಮಾಂ ೧೨-೩೨। 3. ಕುಳಿತು  
ಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಆಸ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪)।  
4. ಅನೆಯ ಹೆಗಲು. ಆಸ ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಡ್"

(೩-೩-೧೧೭)। 5. ರಾಜನು ಶತ್ರುವಿನೊಡನೆ ಯುದ್ಧ  
ಮಾಡಲು ಕಾಲವನ್ನು ನಿರೀಕ್ಷಿಸಿಕೊಂಡು ಕುಳಿತು  
ಕೊಳ್ಳುವುದು, ರಾಜನ ಆರು ಗುಣಗಳಲ್ಲೊಂದು.  
ಇದು (1) ವಿಗೃಹಾಸನಮ್। (2) ಸನ್ಧಾಯಾಸನಮ್।  
(3) ಸಂಭೂಯಾಸನಮ್। (4) ಪ್ರಸಜ್ಞಾಸನಮ್ ಮತ್ತು  
(5) ತಪೇಷಾಸನಮ್ ಎಂದು ಐದು ವಿಧ. (1) ಶತ್ರುವು  
ಮುತ್ತಿಗೆ ಹಾಕಿದ ನಂತರ ಅಶಕ್ತನಾದ ರಾಜನು ಕೋಟೆ  
ಯನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಆತ್ಮರಕ್ಷಣೆ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಕುಳಿತು  
ಕೊಳ್ಳುವುದು ವಿಗೃಹಾಸನವು. (2) ಸಮಾನ ಬಲ  
ವುಳ್ಳ ರಾಜರು ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಶಕ್ತಿಗುಂದಿ ಸಂಧಿಮಾಡಿ  
ಕೊಂಡು ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವುದು ಸಂಧಾಯಾಸನವು.  
(3) ಪ್ರಬಲನಾದ ಶತ್ರುವಿನೊಡನೆ ಹೋರಾಡಿ ಪರಾ  
ಜಿತನಾದ ರಾಜನು ಶತ್ರು ಅಥವಾ ಮಿತ್ರನೊಡನೆ ಸೇರಿ  
ಕೊಂಡು ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವುದು ಸಂಭೂಯಾಸನವು.  
(4) ಶತ್ರುವಿನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಹೊರಟು ಮಾರ್ಗ  
ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಮಿತ್ರನಿಗಾಗಿ ನಿರೀಕ್ಷಿಸಿ ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳು  
ವುದು ಪ್ರಸಜ್ಞಾಸನವು. (5) ಶತ್ರುವು ಪ್ರಬಲ  
ನಾಗಿದ್ದರೂ ಅವನು ದಿನೇ ದಿನೇ ಕ್ಷೀಣದೇಶಿ ಹೊಂದು  
ತ್ತಿರುವುದನ್ನು ನೋಡಿ ಉಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ಕುಳಿತಿರು  
ವುದು ಉಪೇಕ್ಷಾಸನವೆನಿಸುವುದು. 5. ದೇವರ  
ಪೂಜಾಕಾಲದಲ್ಲಿ ಪೂಜಾಂಗವಾಗಿ ಸಮರ್ಪಿಸುವ  
ಆಸನ. 6. ಎಸೆಯುವುದು. 7. ಕಾಮಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ  
ಉಕ್ತವಾದ 84 ಆಸನಗಳು. 8. ಯೋಗಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ  
ಹೇಳಿರುವ ಪದ್ಮಾಸನ, ವೀರಾಸನ, ಮಯೂರಾಸನ,  
ಕುಕ್ಕುಟಾಸನ ಮುಂತಾದ ಅಂಗವಿನ್ಯಾಸ.

ಆಸನಬಂಧ ಆಸನಬಂಧ (ಪುಂ) ಕೈಕಾಲು ಕಟ್ಟಿಕೊಂಡು  
ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಸ್ಥಿತಃ ಸ್ಥಿತಾಮುಚ್ಚಲಿತಃ  
ಪ್ರಯಾತಾಂ ನಿಘೇದುಷಿಮಾಸನಬಂಧಧೀರಃ। ಜಲಾಭಿಲಾಷಿ ಜಲಮಾದ-  
ದಾನಾಂ ಛಾಯೇವ ತಾಂ ಭೂಪತಿರನ್ವಗಂಚತ್" ರಘುಂ ೨-೬।

ಆಸನಾ ಆಸನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಇರುವಿಕೆ, ಸ್ಥಿತಿ.  
2. ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಆಸ (ಉಪವೇಶನೇ) "ಯುಕ್"  
(೩-೩-೧೦೭)।

ಆಸನಿ ಆಸನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಂಗಡಿ. ಆಸ್ಯತೇಽನ್-  
ಆಸ (ಉಪವೇಶನೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ಙೀಪ್"  
(೪-೧-೧೪)। 2. ಇರುವುದು, ಸ್ಥಿತಿ. 3. ಕುಳಿತು  
ಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. "ಆಸನಿ ವಿಪಣಿ ಸ್ಥಿತಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ।

ಆಸಂದ ಆಸಂದ (ಪುಂ) ನಾ ಸುದೇವ, ವಿಷ್ಣು.  
ಆಸೀದತ್ಯಸ್ಮಿನ್-ಆ + ಷದಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) "ದನ್"  
(೩ಂ ೪-೯೮)। ನಿಪಾಂ।



ಆಸಂದಿ ಅಸಂದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಸನ, ಪೀಠ. 2. ಸಣ್ಣ ಮಂಚ, ಶಯ್ಯ. 3. ಸಭೆಯ ವೇದಿಕೆ, ಅಧ್ಯಕ್ಷ ಸ್ಥಾನ, ಎತ್ತರವಾಗಿ ನಿರ್ಮಿಸಿರುವ ಜಗುಲಿ. ಆ + ಷಡ್ಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) "ದನ್" (3-4-98). ನಿಪಾಂ. "ಡೀಪ್" (4-1-4). "ಆಸಂದೋ ವಾಸುದೇವೇ ಸ್ಯಾತ್ ಸತ್ವಾಭೇದೇ ಚ ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ.

ಆಸನ್ನ ಅಸನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರುವ. ಆ + ಷಡ್ಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) "ಕ್ತಃ" (3-4-92). "ಉದ್ಭೂತಾಃ ಕಠಿನಕುಚಸ್ಥಲಾಭಿಘಾತಾದಾಸನ್ನಾ ಭುಷಮಪರಾಙ್ಗನಾಮಧಾಕ್ಷುಃ" ಮಾಘಂ 6-40. 2. ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದ. 3. ಪದಗಳ ಸಮೀಪ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿದ. 4. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಮುಮೂರ್ಷು, ಮರಣಾ ವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿರುವ.

ಆಸಂಬಾಧ ಅಸಂಬಾಧ (ವಿಂ) ಸುತ್ತಲೂ ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲಿಯೂ ಪ್ರತಿಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆಸಮಂತಾತ್ ಸಂಬಾಧಾ ಯತ್ರ.

ಆಸವ ಅಸವ (ಪುಂ) 1. ಮದ್ಯ, ಸುರೆ. ಆಸುಯತೇ— ಆ + ಷುಜ್ (ಅಭಿಷವೇ) ಕರ್ಮಂ "ಅಪ್" (3-3-49). "ನಾರಿಕೇಲಾಸವಂ ಯೋಧಾಃ ಶಾತ್ರವಂ ಚ ಪಪುರ್ಯಶಃ" ರಘುಂ 4-42. 2. ಬಟ್ಟೆ ಇಳಿಸುವಿಕೆ, ಮದ್ಯವನ್ನು ತಯಾರಿಸುವುದು. ಆ + ಷುಜ್ ಭಾವೇ "ಅಪ್" 3. ಬಟ್ಟೆ ಇಳಿಸುವ ಪಾತ್ರೆ. ಆಸುಯತೇಷ್ವ— ಆ + ಷುಜ್ ಅಧಿಂ "ಅಪ್" (3-3-49).

ಆಸಾದನ ಅಸಾದನ (ನಂ) 1. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ತರುವುದು. 2. ಕೆಳಗೆ ಇಡುವುದು. 3. ಹೊಂದುವುದು, ಪಡೆಯುವುದು. ಆ + ಷಡ್ಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114).

ಆಸಾದಿತ ಅಸಾದಿತ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಷಡ್ಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102). "ಉಪಾಸಸಾದೋಪಜನಂ ಜನಪ್ರಿಯಃ ಪ್ರಿಯಾಮಿ-ವಾಸಾದಿತಯೋವನಾಂ ಭುವಮ್" ಕಿರಾಂ 4-1. 2. ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ತರಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಸೇರಲ್ಪಟ್ಟ, ತಲುಪಲ್ಪಟ್ಟ.

ಆಸಾಘ್ರ ಅಸಾಘ್ರ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲ್ಪಡುವ, ಹೊಂದಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಆ + ಷಡ್ಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) + ಣಿಚ್ "ಯತ್" (3-1-99). "ನ ಹೀಷ್ಟಮಸ್ಯ ತ್ರಿದಿವೇಷಿ ಭೂಪತೇರಭೂದನಾಸಾಘ್ರಮಧಿಜ್ಯಧನ್ವನಃ" ರಘುಂ 3-6. 2. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ತರಲ್ಪಡುವ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಹೊಂದಿ,

ಪಡೆದು. ಆ + ಷಡ್ಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯಪ್" (3-1-39). "ಆಸಾಘ್ರ ವಾಚಂ ಸ ಭುಷಂ ದಿದೀಪೇ" ಕಿರಾಂ 3-44.

ಆಸಾರ ಅಸಾರ (ಪುಂ) 1. ವೇಗವಾದ ಮಳೆ. 2. ನೀರಿನ ಧಾರೆ, ಎಡೆಬಿಡದೆ ನೀರು ಸುರಿಯುವಿಕೆ. ಆ + ಸ್ (ಗತೌ) "ಘಜ್" (3-3-18). "ಆಸಾರಸಿಕ್ತಕ್ಷಿತಿಬಾಷ್ಪ-ಯೋಗಾನ್ಮಾಮಕ್ಷಿಣೋದ್ರವ ವಿಭಿನ್ನಕೋಶಃ" ರಘುಂ 13-29. "ಹೃತಾಹೃತಾಸಾರಕಣೇನ ವಾಯುನಾ" ಕಿರಾಂ 4-34. 3. ಹರಡಿ ಕೊಳ್ಳುವುದು, ಸುತ್ತಲೂ ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು. 4. ಸೈನ್ಯವು ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಹರಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 5. ಮಿತ್ರ ಸೈನ್ಯ. "ಸ್ಯಾದಾಸಾರಃ ಪ್ರಸರಣೇ ವೇಗವೃಷ್ಟೌ ಸುಹೃದೇ" ಮೇದಿಂ. 6. ದ್ವಾದಶರಾಜರ ಪೈಕಿ ಒಬ್ಬ.

ಆಸಿಕ ಅಸಿಕ (ವಿಂ) ಕತ್ತಿಯಿಂದ ಯುದ್ಧಮಾಡುವವನು, ಕತ್ತಿಯೇ ಆಯುಧವಾಗಿ ಉಳ್ಳವನು. ಅಸಿಃ ಪ್ರಹರಣಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (4-4-49).

ಆಸಿಕಾ ಅಸಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಆಸ (ಉಪವೇಶನೇ) "ಞ್ವುಚ್" (3-3-111). "ದುರೀಶ್ವರದ್ವಾರ-ಬಹಿವಿತದಿಕಾದುರಾಸಿಕಾಯೇ ರಚಿತೋಽಮೃಜಲಿಃ" ವೈಂ ಪಂ. 2. ಕ್ರಮದಿಂದ ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಸರದಿಯಿಂದ ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಆಸಿಕ್ತ ಅಸಿಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸಿಂಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೆಮುಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಸ್ವಲ್ಪ ಸಿಂಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಷಿಚ್ (ಕ್ಷರಣೇ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102).

ಆಸಿಧಾರ ಅಸಿಧಾರ (ನಂ) ಅಸಿಧಾರೆಯ (ಕತ್ತಿಯ ಅಲುಗಿನ) ವೇಲೆ ನಿಲ್ಲುವುದಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದ ವ್ರತ. ಅಸಿಧಾರೇವ "ಅಞ್" (4-3-109). ಭೋಗ ಸಾಮಗ್ರಿಯು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಸನ್ನಿಹಿತವಾಗಿದ್ದರೂ ಅದರಲ್ಲಿ ಆಸೆಯನ್ನು ತೋರದು ದೃಢ ನಿಶ್ಚಯದಿಂದ ಅದನ್ನು ಅನುಭವಿಸದಿರುವಿಕೆಯು ಅಸಿಧಾರಾವ್ರತಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದುದು. "ಯುವಾ ಯುವತ್ಯಾ ಸಾರ್ಥಂ ಯತ್ ಮುಘಭರ್ತೃವದಾಚರೇತ್. ಅಂತರ್ನಿವೃತ್ತಸಂಘಃ ಸ್ಯಾದಾಸಿಧಾರಮಿದಂ ಹಿ ತತ್" "ಇಯಂತಿ ವರ್ಷಾಣಿ ತಯಾ ಸಹೋಽಮಮ್ಯಸ್ಯತೀವ ವ್ರತಮಾಸಿಧಾರಮ್" ರಘುಂ 13-69.

ಆಸಿಧ್ವ ಅಸಿಧ್ವ (ವಿಂ) ಪ್ರತಿವಾದಿ, ವಾದಿಯಿಂದ ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟವನು, ನ್ಯಾಯಾಧೀಶನ ಅಪ್ಪಣೆಯಂತೆ ವಾದಿಯಿಂದ ಸೆರೆ ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟವನು. ಆ + ಷಿಘ (ಗತ್ಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (3-2-102). "ನಾಸಿಧ್ವಸ್ತಂ ವಿಲಕ್ಷಯೇತ್" ನಾರದಃ.



ಆಸೀನ ಅಸೀನ (ವಿಂ) ಕುಳಿತಿರುವ. ಆಸ (उपवेशने)  
“ಶಾನಕ್” (३-२-१२४)। ಇತ್ (७-२-८३)। “ಆಸೀನಾ  
ತಟಭುವಿ ಸಸ್ಮಿತೇನ ಭರ್ತಾ ರಮೋರೂರವತರಿತು ಸರಸ್ಯನಿಚ್ಛುಃ”  
ಮಾಘಂ ೮-೧೯।

ಆಸುತ್ ಅಸುತ್ (ವಿಂ) ಮದ್ಯವನ್ನು ಇಳಿಸುವ,  
ರಸವನ್ನು ಹಿಂಡುವವನು. ಆಸುನೋತಿ-ಆ + ಷು  
(ಅಭಿಷೇ) “ಕ್ವಿಪ್” (३-२-७६)।

ಆಸುತಿ ಅಸುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೋಮಲತೆಯನ್ನು ಹಿಂಡಿ  
ರಸ ತೆಗೆಯುವಿಕೆ. 2. ಭಟ್ಟಿ ಇಳಿಸುವಿಕೆ, ಮದ್ಯವನ್ನು  
ತಯಾರಿಸುವಿಕೆ. ಆ+ಷು (ಅಭಿಷೇ) “ಕ್ತಿನ್”  
(३-३-९४)। 3. ಪ್ರಸವ, ಹೆರಿಗೆ, ಹಡೆಯುವುದು.  
ಆ + ಷು (ಪ್ರಸವೇ) “ಕ್ತಿನ್” (३-३-९४)।

ಆಸುತೀವಲ ಅಸುತೀವಲ (ಪುಂ) 1. ಯಾಜ್ಞಕ, ಸೋಮ  
ಲತೆಯನ್ನು ಹಿಂಡಿ ರಸ ತೆಗೆಯುವವನು. 2. ಮದ್ಯ  
ವನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು, ಭಟ್ಟಿ ಇಳಿಸುವವನು.  
ಆಸುತಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಬಲಕ್” (५-२-११२)।

ಆಸುರ ಅಸುರ (ಪುಂ) 1. ಅಸುರಧರ್ಮದಿಂದ ಮಾಡುವ  
ವಿವಾಹ, ಎಂಟು ವಿಧ ವಿವಾಹಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಕನ್ಯೆಯ  
ಬಂಧುಗಳಿಗೂ ಕನ್ಯೆಗೂ ಧನವನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಇಷ್ಟ  
ಬಂದಂತೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ ವಿವಾಹವು ಅಸುರವು.  
“ಜ್ಞಾತಿಭ್ಯೋ ದ್ರವಿಣಂ ದತ್ವಾ ಕನ್ಯಾಯಂ ಚೈವ ಶಕ್ತಿತಃ। ಕನ್ಯಾಪ್ರದಾನಂ  
ಸ್ವಾಚ್ಛನ್ಯಾದಾಸುರೋ ಧರ್ಮಂ ಉಚ್ಯತೇ” ಮನುಂ ३-३१।  
“ಪೇಶಾಚ್ಚಾಸುರಃಕೇವ ನ ಕರ್ತವ್ಯೌ ಕದಾಚನ” ಮನುಂ ३-२५।  
2. ರಾಕ್ಷಸ. (ವಿಂ) 3. ಅಸುರ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
ಅಸುರಸ್ಯೇದಮ್ “ಅಙ್” (४-३-१२०)। “ಆಸುರೇ ಲೋಕ-  
ವಿತ್ರಾಸವಿಧಾಯಿನಿ ಮಹಾಹವೇ” ಕಿರಾಂ १५-२८।  
3. ಅಸುರರಂತೆ ಭಯಂಕರ ಕೃತ್ಯವುಳ್ಳ. “ದ್ವೌ ಭೂತಸಗೌ  
ಲೋಕೇಽಸ್ಮಿನ್ ದೇವ ಆಸುರ ಏವ ಚ। ದೇವೋ ವಿಶ್ವರಶಃ ಪ್ರೋಕ್ತ  
ಆಸುರಂ ಪಾರ್ಥ ಮೇ ಶೃಣು। ಪ್ರವೃತ್ತಿ ಚ ನಿವೃತ್ತಿ ಚ ಜನಾ ನ  
ವಿದುರಾಸುರಾಃ। ನ ಶೌಚಂ ನಾಪಿ ಚಾಚಾರೋ ನ ಸತ್ಯಂ ತेषು ವಿಶ್ಯತೇ।  
ಅಸತ್ಯಮಪ್ರತಿಷ್ಠಂ ತೇ ಜಗದಾಹುರನಿಶ್ವರಮ್। . . . .” “ಇಹಂತೇ  
ಕಾಮಭೋಗಾರ್ಥಮನ್ಯಾಯೇನಾರ್ಥಸಂಜ್ಞಯಾನ್। ಅಸೌ ಮಯಾ ಹತಃ ಶತ್ರುಃ  
ಹನಿಷ್ಯೇ ಚಾಪರಾನಪಿ। ಇಶ್ವರೋಽಹಮಹಂ ಭೋಗೀ ಸಿದ್ಧೋಽಹಂ ಬಲವಾನ್  
ಸುಖೀ। ಆದ್ಯೋಽಭಿಜನವಾನಸ್ಮಿ ಕೋಽಯೋಽಸ್ತಿ ಸದೃಶೋ  
ಮಯಾ। ಯಸ್ಯೇ ದಾಸ್ಯಾಮಿ ಮೋದಿಷ್ಯ ಇತ್ಯಜ್ಞಾನವಿಮೋಹಿತಾಃ”  
ಗೀತಾ १६-೬-೧೫। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರೀ-ರೀ. 1. ಅಸುರ  
ಸಂಪತ್ತು, ದುರ್ಗತಿಯನ್ನು ಹೊಂದಲು ಅರ್ಹವಾದ  
ಸ್ವಭಾವ; ಬೂಟಾಟಿಕೆ, ಜಂಬ, ತನ್ನ ಸ್ವರೂಪಕ್ಕೂ-

ಹೆಚ್ಚಾದ ಕಥಿಮಾನ, ಕಾರಿನ್ಯ, ಕೃತ್ಯಾಕೃತ್ಯ ವಿವೇಕ  
ವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ ಇವು ಅಸುರ ಸಂಪತ್ತುಗಳು. “ದಮ್ಭೋ  
ದರ್ಪೋಽಭಿಮಾನಶ್ಚ ಕ್ರೋಧಃ ಪಾಠ್ಯಮೇವ ಚ। ಅಜ್ಞಾನಂ ಚಾಭಿಜಾತಸ್ಯ  
ಪಾರ್ಥ ಸಂಪದಮಾಸುರೀಮ್” ಗೀತಾ १६-೪। 2. ಶಸ್ತ್ರ ಚಿಕಿತ್ಸೆ.  
3. ಕರಿ ಸಾಸುವೆ, ರಾಜಸಾಸುವೆ.

ಆಸುರಸ್ವ ಅಸುರಸ್ವ (ನಂ) ಯಜ್ಞಯಾಗಾದಿಗಳನ್ನು  
ಮಾಡದಿರುವವನ ಧನ. ಆಸುರಸ್ಯ ಸ್ವಮ್। “ಅಯಜ್ವನಾಂ  
ತು ಯದ್ದ್ರವ್ಯಮಾಸುರಸ್ವಂ ತದ್ಉಚ್ಯತೇ” ಮನುಂ ११-२೦।

ಆಸೇಕ ಅಸೇಕ (ಪುಂ) ನೀರನ್ನು ಚೆಮ್ಮುಕಿಸುವುದು,  
ನೀರು ಹುಯ್ಯುವುದು. ಆ+ಪಿಚ (ಕರಣೇ) “ಘಕ್”  
(३-३-१८)। “ಶೀತಾತಿ ಬಲವದುಪೇಯುಃ ನೇರೇರಾಸೇಕಾ-  
ಚ್ಛಿಶಿರಸಮೋರಕಮ್ಪಿತೇನ” ಮಾಘಂ ೮-೬೨।

ಆಸೇಚನ ಅಸೇಚನ (ವಿಂ) 1. ಎಷ್ಟು ನೋಡಿದರೂ  
ಮನಸ್ಸನ್ನು ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸದ ವಸ್ತು. ಸಿಚ್ಯತೇ ಮನೋಽ-  
ಪಿಚ (ಕರಣೇ) “ಲ್ಯುಟ್” (३-३-११७)। ನ ಸೇಚನಮ್।  
ಸ್ವಾರ್ಥೇ “ಅಙ್” (५-४-३८)। 2. ಚೆಮ್ಮುಕಿಸು  
ವುದು, ಸಿಂಪಿಸುವುದು. ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (३-३-११५)।  
3. ನೀರನ್ನು ಚೆಮ್ಮುಕಿಸುವ ವಾತ್ಸೈ. ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್”  
(३-३-११७)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (४-१-१५)।  
-ಸೇಚನಿ- ಸೇಚನೇ.

ಆಸೇಚನಕ ಅಸೇಚನಕ (ವಿಂ) ಎಷ್ಟು ನೋಡಿದರೂ  
ತೃಪ್ತಿಯುಂಟುಮಾಡದ ವಸ್ತು. ಸಿಚ್ಯತೇ ಮನೋಽ-  
“ಲ್ಯುಟ್” (३-३-११७)। ನ ಸೇಚನಮ್। ಸ್ವಾರ್ಥೇ “ಅಙ್”  
(५-४-३८)। ಸಂಜ್ಞಾಯಾಂ “ಕನ್” (५-३-७५)।  
“ಆತದೇಹಮಿವ ಸ್ವರ್ಗಮಾಸೇಚನಕದರ್ಶನಮ್” ಧಾತಂ १६-३।

ಆಸೇದಿವಸ್ ಅಸೇದಿವಸ್ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಿರುವ,  
ಪಡೆದಿರುವ. ಆ + ಷದಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) “ವಸುಃ”  
(३-२-१೦೮)। 2. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ, ಹತ್ತಿರ  
ದಲ್ಲಿರುವ. “ಆಸೇದುಷಾಂ ಗೋತ್ರಭಿದೋಽನುವೃತ್ಯಾ ಗೋಪಾಯಕಾನಾಂ  
ಭುವನತ್ರಯಸ್ಯ” ಕಿರಾಂ १೮-१೮। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್”  
(४-१-६)। ಆಸೇದುಷಿ ಅಸೇದುಷೀ. “ಆಸೇದುಷಿಂ  
ಸಾದಿತಶತ್ರುಪಕ್ಷಾಂ ಬಾಲಾಮಬಾಲೇಂದುಮುಖಿಂ ಬಭಾಷೇ” ರಘುಂ ೬-೫೩।

ಆಸೇದ್ಧ ಅಸೇದ್ಧ (ವಿಂ) ನ್ಯಾಯಾಸ್ಥಾನದ ಅಪ್ಪಣೆ  
ಯಂತೆ ಪ್ರತಿವಾದಿಯನ್ನು ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸುವವನು.  
ಆ+ಪಿಧ (ಗತ್ಯಾಮ್) “ತೃಕ್” (३-१-१३३)।

ಆಸೇಧ ಅಸೇಧ (ಪುಂ) ಪ್ರತಿವಾದಿಯನ್ನು ತಡೆದು  
ನಿಲ್ಲಿಸುವಿಕೆ; ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವಿಕೆ. ಆ + ಪಿಧ (ಗತ್ಯಾಮ್)  
ಭಾವೇ “ಘಕ್” (३-३-१८)।



ಆಸೇವನ ಆಸೇವನ (ನಂ) 1. ನಿರಂತರವಾದ ಸೇವೆ, ಶ್ರದ್ಧೆಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಸೇವೆ. ಆ + ಷೆವ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ಪುನಃಪುನಃ, ಪುನಃ ಪುನಃ, ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಸಂಭವಿಸುವಿಕೆ. "ನಿಸಸ್ತಪತಾವನಾಸೇವನೇ" (6-3-102)। ಆಸೇವನಂ ಪೌನಃಪುನ್ಯಮ್ ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಆಸೇವಾ ಆಸೇವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಆಸೇವನ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಆ + ಷೆವ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಅಙ್" (3-3-106)। "ಆಯುಕ್ತಕುಶಲಾಮ್ಯಾಮಾಸೇವಾಯಾಮ್" ತಾತ್ಪರ್ಯೇ ಸಿಂ ಕೌಂ (2-3-40)।

ಆಸೇವಿತ ಆಸೇವಿತ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸೇವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಪುನಃ ಪುನಃ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಸೇವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಷೆವ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

ಆಸೇವಿತಿನ ಆಸೇವಿತಿನ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸೇವಿಸುವ. 2. ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಸೇವಿಸುವ. ಆಸೇವಿತಮನೇನ "ಛಿನಿಃ" (4-2-66)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (4-1-4)। -ಸೇವಿತಿನಿ-ಸೇವಿತಿನೀ.

ಆಸ್ಕಂದ ಆಸ್ಕಂದ (ಪುಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವುದು. 2. ಮುಕ್ತಿಗೆ, ಆಕ್ರಮಣ. ಆ + ಸ್ಕಂದಿರ್ (ಗತಿ-ಶೋಷಣಯೋಃ) "ಘ್" (3-3-116)। 3. ತಿರಸ್ಕಾರ, ಅವಮಾನ. 4. ಒಣಗುವುದು. 5. ಕುದುರೆಯ ಒಂದು ವಿಧ ನಾಗಾಲೋಟ.

ಆಸ್ಕಂದನ ಆಸ್ಕಂದನ (ನಂ) 1. ಯುದ್ಧ, ಕದನ. ಆ + ಸ್ಕಂದಿರ್ (ಗತಿಶೋಷಣಯೋಃ) ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-116)। 2. ತಿರಸ್ಕಾರ. 3. ಒಣಗಿಸುವುದು. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 4. ಆಕ್ರಮಣ. "ವಿಚಕರ್ಷಂ ಚ ಸಂಹಿತೇಶುರ್ವೈಶ್ವರಣಾಸ್ಕಂದನನಾಮಿತಾಚಲೇಂದ್ರಃ" ಕಿರಾಂ 13-116. "ಆಸ್ಕಂದನಂ ತಿರಸ್ಕಾರೇ ರಣಂ ಸಂಶೋಷಣೇಷು ಚ" ಮೇಡಿಂ।

ಆಸ್ಕಂದಿತ ಆಸ್ಕಂದಿತ (ನಂ) 1. ಕುದುರೆಯ ಒಂದು ವಿಧ ನಾಗಾಲೋಟ. ಆ + ಸ್ಕಂದಿರ್ (ಗತಿಶೋಷಣಯೋಃ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (3-3-114)। (ವಿಂ) 2. ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಕ್ತಿಗೆ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಒಣಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಆಸ್ಕಂದಿನ್ ಆಸ್ಕಂದಿನ್ (ವಿಂ) ಆಕ್ರಮಣ ಮಾಡುವ, ಮುಕ್ತಿಗೆ ಹಾಕುವ, ಮೇಲೆ ಬೀಳುವ. ಆ + ಸ್ಕಂದಿರ್ (ಗತಿಶೋಷಣಯೋಃ) "ಣಿನಿಃ" (3-2-66)। "ನ ಹಿ ಸಿಂಹೋ ಗಜಾಸ್ಕಂದೀ ಭಯಾದ್ವಿರಿಗುಹಾಶಯಃ" ರಘುಂ 17-42।

ಆಸ್ತರ ಆಸ್ತರ (ಪುಂ) 1. ಆನೆಯ ಬೆನ್ನಿನ ಮೇಲೆ ಹೊದಿಸುವ ರತ್ನಗಂಬಳ, ಕವುದಿ, ದುಪ್ಪಟೆ. ಆ + ಸ್ತೃ (ಆಚ್ಛಾದನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಅಪ್" (3-3-49)। 2. ರತ್ನಗಂಬಳ. 3. ಚಾಪೆ, ಮಂದಲಿಗೆ. 4. ಹರಡುವಿಕೆ. ಭಾವೇ "ಅಪ್" (3-3-49)।

ಆಸ್ತರಣ ಆಸ್ತರಣ (ನಂ) 1. ಚಾಪೆ, ಮಂದಲಿಗೆ. 2. ರತ್ನಗಂಬಳ. 3. ಹಾಸಿಗೆ. ಆಸ್ತೀಯಂತೇ-ಆ + ಸ್ತೃ (ಆಚ್ಛಾದನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-113)। "ತಮಾಲಪತ್ರಾಸ್ತರಣಾಸ್ತು ರಂತುಂ ಪ್ರಸಾದ ಶಶ್ವನ್ಮಲಯಸ್ಥಲಿಷು" ರಘುಂ 6-64। 4. ಹರಡುವಿಕೆ, ಪಸರಿಸುವಿಕೆ, ಹರವುವುದು, ಹಾಸುವುದು. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। (ವಿಂ) 5. ಚಾಪೆ ಮುಂತಾದುವುಗಳ ಮೇಲೆ ಕೊಡಲ್ಪಡುವ. 6. ಚಾಪೆ ಮುಂತಾದುವುಗಳ ಮೇಲೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಆಸ್ತರಣೇ ದೀಯತೇ ಕಾರ್ಯಂ ವಾ "ಅಙ್" (4-1-99)। 7. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ದರ್ಭೆಯನ್ನು ಸಾಲಾಗಿ ಹರಡುವವನು. ಆ + ಸ್ತೃ ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134)।

ಆಸ್ತರಣಿಕ ಆಸ್ತರಣಿಕ (ವಿಂ) ಹಾಸುವುದಕ್ಕೆ ಉಪಯೋಗವಾದ (ಬಟ್ಟೆ, ಮೊದಲಾದುದು). ಆಸ್ತರಣಂ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠ್" (4-1-109)।

ಆಸ್ತಾರ ಆಸ್ತಾರ (ಪುಂ) ಹರಡುವುದು, ಹರವುವುದು, ಹಾಸುವುದು. ಆಸ್ತೀಯಂತೇ-ಆ + ಸ್ತೃ (ಆಚ್ಛಾದನೇ) ಭಾವೇ "ಘ್" (3-3-116)।

ಆಸ್ತಾವ ಆಸ್ತಾವ (ಪುಂ) 1. ಯಾಗ, ಯಜ್ಞ. 2. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಮಂತ್ರವನ್ನು ಪಠಿಸುವ ಪ್ರದೇಶ. ಆಸ್ತುವನ್ಯತ್ರ-ಆ + ಸ್ತೃ (ಸ್ತುತೌ) "ಘ್" (3-3-121)। 3. ಮಂತ್ರಗಳ ಪಠನ, ಸ್ತುತಿ, ಹೊಗಳಿಕೆ. ಭಾವೇ "ಘ್" (3-3-116)।

ಆಸ್ತಿಕ ಆಸ್ತಿಕ (ಪುಂ) 1. ಜರತ್ತಾರು ಮುನಿಯ ಮಗ ಆಸ್ತಿಕ ಮುನಿ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಜರತ್ತಾರು" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] (ವಿಂ) 2. ದೇವರು ಪರಲೋಕ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳು ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ನಂಬಿಕೆಯುಳ್ಳವನು. ಅಸ್ತಿ ಪರಲೋಕ ಇತಿ ಮತಿಯಸ್ಯ "ಠ್" (4-4-60)।

ಆಸ್ತಿಕವ್ಯ ಆಸ್ತಿಕವ್ಯ (ನಂ) ದೇವರಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವಾಸ, ಶಾಸ್ತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ನಂಬಿಕೆ, ಪರಲೋಕವುಂಟೆಂದು ಒಪ್ಪುವಿಕೆ. ಆಸ್ತಿಕವ್ಯ ಭಾವಃ "ಘ್" (4-1-124)। "ಆಸ್ತಿಕವ್ಯ-ಶುದ್ಧಮವತಃ ಪ್ರಿಯಧರ್ಮಂ ಧರ್ಮಂ ಧರ್ಮಾತ್ಮಜಸ್ಯ ವಿಹಿತಾಗಸಿ ಶತ್ರುವರ್ಗೋ" ಕಿರಾಂ 16-43।



आस्तीर्ण असु० (वि०) ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಹರವಲ್ಪಟ್ಟು.  
 आ + स्तृज् (आच्छादने) "क्तः" (३-२-१०२)।  
 "आस्तीर्णतत्परचित्तावसथः क्षणेन वेश्याजनः कृतनव-  
 प्रतिकर्मकाम्यः" माघ० ५-२७।

आस्तृत असु० (वि०) ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಹರವಲ್ಪಟ್ಟು.  
 आ + स्तृज् (आच्छादने) "क्तः" (३-२-१०२)।  
 "आस्तृतेऽभिनवपल्लवपुष्पैरप्यनारत रताभिरताभ्यः"  
 माघ० १०-८९।

आस्था असु० (स्त्री०) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ.  
 आ + ष्ठा (गतिनिवृत्तौ) "अङ्" (३-३-१०६)।  
 2. ಆದರ, ಗೌರವ, ಮರಾಧೆ. "देवात्सर्गादिवध्यत्वं  
 मर्त्येष्वಾस्थापराङ्मुखः" रघु० १०-४३। "अनास्था  
 बाह्यवस्तुषु" कुमा० ६-६३। 3. ಯತ್ನ, ಪ್ರಯತ್ನ.  
 "आस्थामालम्ब्य नीतेषु वशं क्षुद्रेष्वरातिषु" किरा०  
 १५-४। 4. ಅನುರಾಗ, ಪ್ರೀತಿ. 5. ಸಭೆ, ಆಸ್ಥಾನ.  
 6. ಆಲಂಬನ, ಆಧಾರ, ಆಶ್ರಯ. "आस्थानी  
 यत्नयोरास्था" अम०। "आस्थात्वालम्बनास्थान-  
 यत्नापेक्षासु योषिति" मेदि०। 7. ಸ್ಥಿತಿ, ಅವಸ್ಥೆ,  
 ಇರುವಿಕೆ.

आस्थान असु० (न०) 1. ಸಭೆ. आस्थीयतेऽत्र—  
 आ + ष्ठा (गतिनिवृत्तौ) अधि० "ल्युट्" (३-३-११७)  
 "अनेकराजन्यरथाश्वसंकुलं तदीयमास्थाननिकेतनाजिरम्"  
 किरा० १-१६। 2. ವಿಶ್ರಾಂತಿ ಸ್ಥಾನ, ವಿನೋದಸ್ಥಳ.  
 3. ಶ್ರದ್ಧೆ, ಆಸಕ್ತಿ. 4. ಆಸ್ಥೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ. आ + ष्ठा  
 भावे "ल्युट्" (३-३-११५)।

आस्थानी असु० (स्त्री०) ಸಭೆ. आतिष्ठन्त्यस्याम्—  
 आ + ष्ठा (गतिनिवृत्तौ) "ल्युट्" (३-३-११७)।  
 "डीप्" (४-१-१५)।

आस्थापन असु० (न०) 1. ಸಂಯೋಗಿ ಇಡುವಿಕೆ,  
 ಜೆನ್ನಾಗಿ ಇರಿಸುವಿಕೆ. आ + ष्ठा (गतिनिवृत्तौ) +  
 णिच् "ल्युट्" (३-३-११५)। 2. ಬಸ್ತಿಕ್ರಿಯೆ,  
 ಪಿಚಕಾಣಿ ಹೊಡೆಯುವುದು, ದೇಹದೊಳಗಿನ ಶುದ್ಧಿ  
 ಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಒಂದು ವಿಧ ಚಿಕಿತ್ಸೆ.

आस्थापित असु० (वि०) ಜೆನ್ನಾಗಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟು.  
 आ + ष्ठा (गतिनिवृत्तौ) + णिच् "क्तः" (३-२-१०२)।

आस्थित असु० (वि०) 1. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟು. आ +  
 ष्ठा (गतिनिवृत्तौ) "क्तः" (३-२-१०२)। "उपतस्थु-  
 रास्थितविषादधियः" किरा० ६-२९। 2. ಆಶ್ರಯಿಸ್

ಲ್ಪಟ್ಟು, ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟು. "इवगणिवागुरिकैः प्रथमा-  
 स्थितं व्यपगतानलदस्यु विवेश सः" रघु० १-५३।  
 3. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ, ಆವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "आस्थितः  
 स्थगितवारिदपङ्क्त्या सन्ध्यया गगनपश्चिमभागः"  
 किरा० १-९। 4. ಹತ್ತಿದ, ಎರಿದ. "स्निग्धगम्भीर  
 निर्घोषमेकं स्यन्दनमास्थितौ" रघु० १-३६। 5. ಹೊಂದಿದ,  
 ಪಡೆದ. "उपायमस्थितस्यापि नश्यन्त्यर्थाः प्रमाद्यतः"  
 माघ० २-८०। (न०) 6. ಸ್ಥಿತಿ, ಇರುವಿಕೆ. आ + ष्ठा  
 भावे "क्तः"।

आस्थिति असु० (स्त्री०) 1. ಸ್ಥಿತಿ, ಇರುವಿಕೆ. 2. ಆಸ್ಥೆ,  
 ಅಪೇಕ್ಷೆ. आ + ष्ठा (गतिनिवृत्तौ) "क्तिन्"  
 (३-३-९४)।

आस्पद असु० (न०) 1. ಸ್ಥಾನ, ಎಡೆ, ಜಾಗ.  
 आपद्यतेऽत्र— "आस्पदं प्रतिष्ठायाम्" (६-१-१४६)।  
 इति साधुः। "नतभ्रुवो मण्डयति स्म विग्रहे बलिक्रिया  
 चातिलकं तदास्पदम्" किरा० ८-५२। 2. ವಾಸಸ್ಥಳ,  
 ನಿವಾಸ. "आस्पदं त्वमसि सर्वसंपदाम्" किरा०  
 १३-३९। 3. ಆಶ್ರಯ, ಆವಲಂಬನ, ಆಧಾರ.  
 4. ವೃತ್ತಿ, ಉದ್ಯೋಗ, ವ್ಯಾಪಾರ, ಕೆಲಸ. 5. ಪ್ರತಿಷ್ಠೆ,  
 ಗೌರವ. "लब्धास्पदोऽस्मीति विवादभीरोस्तितिक्ष-  
 माणस्य परेण निन्दाम्" माल० १-१७। 6. ವಿಷಯ.  
 "उक्तानुक्तास्पदाद्यात्र सिद्धासिद्धास्पदे परे" चन्द्रा०।  
 7. ಲಗ್ನದಿಂದ 10ನೆಯ ಸ್ಥಾನ.

आस्फाल असु० (पु०) 1. ಅಲುಗಾಡಿಸುವಿಕೆ.  
 2. ಆನೆಯು ಕಿವಿಯನ್ನಾಡಿಸುವಿಕೆ. आ + स्फुल  
 (सञ्चलने) "घञ्" (३-३-१८)। आत्वम् (६-१-४७)।

आस्फालन असु० (न०) 1. ಹೊಡೆಯುವಿಕೆ,  
 ತಟ್ಟುವಿಕೆ. आ + स्फुल (सञ्चलने) + णिच् "ल्युट्"  
 (३-३-११५)। "ऐरावतास्फालनकर्कशेन हस्तेन  
 पस्पर्शं तदङ्गमिन्द्रः" कुमा० ३-२२। "अनवरत  
 धनुर्ज्यास्फालनक्रूरपूर्वम्" शाकु० २-४। 2. ಅಲ  
 ಗಾಡಿಸುವಿಕೆ, ಚಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. 3. ದರ್ಪ  
 ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ.

आस्फालित असु० (वि०) 1. ಹೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟು  
 2. ಚಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. आ + स्फुल (सञ्चलने  
 + णिच् "क्तः" (३-२-१०२)। "अजस्रमास्फालित  
 वल्लकोगुणक्षतोज्ज्वलाङ्गुष्ठनखांशुभिन्नया" माघ  
 १-९।



ಆಸ್ಕೋಟ ಅಸ್ಕೋಟಿ (ಪುಂ) 1. ಎಕ್ಕದ ಗಡ. 2. ವೀರ ಪುರುಷರು ತೋಳು ತಟ್ಟುವ ಶಬ್ದ. 3. ಹೊಡೆತ ಎತ್ತು ತಿಕ್ಕಾಟ ಇವುಗಳಿಂದ ಆಗುವ ಶಬ್ದ. ಆ + ಸ್ಕುಟ (ವಿಕಸನೆ) "ಘ" (3-3-18)।

ಆಸ್ಕೋಟನ ಅಸ್ಕೋಟಿನ (ನಂ) 1. ಭುಜಗಳನ್ನು ತಟ್ಟಿ ಶಬ್ದ ಮಾಡುವಿಕೆ. 2. ಅಲುಗಾಡಿಸುವಿಕೆ. 3. ಹೊಡೆ ಯುವುದು, ತಟ್ಟುವುದು. 4. (ಮೊರದಿಂದ) ಧಾನ್ಯ ವನ್ನು ಒಸೆಯುವುದು, ಕೇರುವುದು, ತೂರುವುದು. 5. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವುದು, ಮೈದೋರುವಿಕೆ, ಸ್ಪಷ್ಟ ಪಡಿಸುವಿಕೆ. 6. ಒಡೆಯುವಿಕೆ, ಸಿಡಿಯುವಿಕೆ.

ಆ + ಸ್ಕುಟಿರ್ (ವಿಶರಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಆಸ್ಕೋಟನಿ ಅಸ್ಕೋಟಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೈರಿಗೆ, ಮರಕ್ಕೆ ರಂಧ್ರ ಮಾಡುವ ಸಾಧನ, ತೂತು ಕೊರೆಯುವ ಹಿಡಿ ಸರಳು. ಆಸ್ಕೋಟಚತೇಜಯಾ - ಆ + ಸ್ಕುಟ (ಭೇದನೆ) + ಣಿವ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-110)। "ಙೀಪ್" (4-1-14)।

ಆಸ್ಕೋಟಿತ ಅಸ್ಕೋಟಿತ (ನಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 2. ತೋಳುಗಳನ್ನು ಅಪ್ಪಳಿಸುವುದು. ಆ + ಸ್ಕುಟ (ಭೇದನೆ) + ಣಿವ್ ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ"। (ವಿಂ) 3. ಕೊರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಭೇದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ರಂಧ್ರ ಕೊರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಸ್ಕುಟ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

ಆಸ್ಕೋಟ ಅಸ್ಕೋಟ (ಪುಂ) 1. ಎಕ್ಕದ ಗಡ. 2. ಕೆಂಗಾಂ ಚಾಳದ ಗಡ. 3. ಮುತ್ತುಗದ ಮರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತಾ -ತಾ. 1. ವಿಷ್ಣು ಕ್ರಾಂತಿ ಗಡ. 2. ಸೊಗದೆ ಗಡ. 3. ಕಾಡು ಮಲ್ಲಿಗೆ ಗಡ.

ಆಸ್ಮಾಕ ಅಸ್ಮಾಕ (ವಿಂ) ನಮ್ಮ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಅಸ್ಮಾಕಮಿದಮ್ - ಅಸ್ಮದ್ "ಅಞ್" (4-3-120)।

ಅಸ್ಮಾಕಾದೇಶಃ (4-3-2)। "ಆಸ್ಮಾಕದಂತಿಸಾನ್ನಿಧ್ಯಾ-ಹಾಮನಿಭೂತಭೂಹಃ" ಮಾಘಂ 2-63। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್"। ಆಸ್ಮಾಕೀ ಅಸ್ಮಾಕೀ. "ಆಸ್ಮಾಕೀ ಯುಕ್ತಿದೃಶಾಮಸೌ ತನೋತಿ ಚ್ಚಾಯೇವ ಶ್ರಿಯಮನಪಾಯಿನಿ ಕಿಮೇಭಿಃ" ಮಾಘಂ 6-40।

ಆಸ್ಮಾಕೀನ ಅಸ್ಮಾಕೀನ (ವಿಂ) ನಮ್ಮ ಸಂಬಂಧವಾದ, ನಮ್ಮದಾದ. ಅಸ್ಮಾಕಮಿದಮ್ - ಅಸ್ಮದ್ "ಘ" (4-3-1)। ಅಸ್ಮಾಕಾದೇಶಃ (4-3-2)।

ಆಸ್ಯ ಅಸ್ಯ (ನಂ) 1. ಮುಖ, ಬಾಯಿ. ಅಸ್ಯಂತೇ ವರ್ಣಾ ಅನೇನ ಅಸ್ಯಂತೇ ಪ್ರಾಸೋಽಸ್ಮಿನ್ ವಾ - ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಞ್" (3-3-113)। "ಯಸ್ಯಾಸ್ಯೇನ ಸದಾಶನಂತಿ ಹವ್ಯಾನಿ ತ್ರಿದಿವೈಕಸಃ" ಮನುಂ 1-95। 2. ಹಣೆ, ಮುಖದ

ಮಧ್ಯಭಾಗ. 3. ದವಡೆ, ತಾಲು ಮೊದಲಾದ ಪ್ರದೇಶ. ಆಸ್ಯೇ ಭವಮ್ "ಯತ್" (4-1-6)। ತಾಲ್ವಾದಿಸ್ಥಾನಮಿತಿ ಸಿಂ ಕೌಂ। "ಮುಖಂ ಮುಖಾಂತರಾಲಂ ಚ ದ್ವಯಮಾಸ್ಯಮುದಾಹೃತಮ್" ಶಾಶ್ವಂ।

ಆಸ್ಯಂಧಯ ಅಸ್ಯಂಧಯ (ವಿಂ) ಅಧರಾಮೃತವನ್ನು ಪಾನಮಾಡುವ, ಮುಖವನ್ನು ಚುಂಬಿಸುವ. ಆಸ್ಯಂ ಧಯತಿ - ಧೇ (ಪಾನೇ) "ಶಃ" (3-1-130)।

ಆಸ್ಯಲೋಮನ್ ಅಸ್ಯಲೋಮನ್ (ನಂ) ದಾಡಿ, ಗಡ್ಡ. ಆಸ್ಯಸ್ಯ ಲೋಮ।

ಆಸ್ಯಾ ಅಸ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ಥಿತಿ, ಇರುವಿಕೆ, ಕುಳಿತಿರುವಿಕೆ. ಆಸ (ಉಪವೇಶನ) "ಞ್" (3-3-113)। "ಸ್ಥಿತಾ-ವಾಸ್ಯಾ ಚ ವಿಶ್ರುತಾ" ವಿಶ್ವಂ।

ಆಸ್ಯಾಸವ ಅಸ್ಯಾಸವ (ಪುಂ) ಜೋಲು, ಲಾಲಾಜಲ, ಉಗುಳು. ಆಸ್ಯಸ್ಯಾಸವ ಇವ।

ಆಸ್ರ ಅಸ್ರ (ನಂ) ರಕ್ತ. ಅಸ್ರಮೇವ ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಅಞ್" (4-4-38)।

ಆಸ್ರಪ ಅಸ್ರಪ (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ. ಆಸ್ರಂ ಪಿಬತಿ - ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕಃ" (3-2-3)। 2. ರಾಕ್ಷಸ ದೇವತಾಕ ವಾದ ಮೂಲಾನಕ್ಷತ್ರ.

ಆಸ್ರವ ಅಸ್ರವ (ಪುಂ) ಕ್ಲೇಶ, ತೊಂದರೆ, ಕಷ್ಟ. ಆಸ್ರವತಿ ಮನೋಜೇನ - ಸ್ತು (ಗತೌ) "ಅಞ್" (3-3-40)।

ಆಸ್ರಾವ ಅಸ್ರಾವ (ಪುಂ) 1. ಗಾಯ, ಹುಣ್ಣು. ಆ + ಸ್ತು (ಗತೌ) ಅಪಾದಾನೇ "ಘ" (3-3-19)। "ಜಾತ ಷ ತವಾಸ್ರಾವಃ ತ್ವಂತು ಮೋಹಾನ್ ಬುದ್ಧಯಃ"। 2. ಸ್ರವಿಸುವಿಕೆ, ಸೋರುವಿಕೆ. 3. ಲಾಲಾಜಲ, ಜೋಲು. 4. ಕ್ಲೇಶ, ತೊಂದರೆ. (ವಿಂ) 5. ಸೋರುವ, ಸ್ರವಿಸುವ. ಆ + ಸ್ತು "ಞಃ" (3-1-141)।

ಆಸ್ವಾದ ಅಸ್ವಾದ (ಪುಂ) 1. ರಸವನ್ನು ಕುಡಿಯುವುದು, ರಸಾನುಭವ ಹೊಂದುವುದು. 2. ತಿನ್ನುವುದು, ಸವಿಯುವುದು. ಆಸ್ವಾದತೇ - ಆ + ಷ್ವದ (ಆಸ್ವಾದನೇ) "ಘ" (3-3-18)। "ಚೂತಾಙ್ಕುರಾಸ್ವಾದಕಪಾಯಕಂಠಃ" ಕುಮಾಂ 3-32। 3. ರುಚಿ, ಸವಿ. "ಜಾತಾಸ್ವಾದೋ ವಿವೃತಜಘನಾಂ ಕೋ ವಿಹಾತುಂ ಸಮರ್ಥಃ" ಮೇಘಂ 1-41। 4. ಶೃಂಗಾರಾದಿ ರಸಗಳು. 5. ಸಿಹಿ ಮೊದಲಾದ ಆರು ಭೋಜ್ಯರಸಗಳು. ಆ + ಷ್ವದ ಕರ್ಮಂ "ಘ" (3-3-19)।

ಆಸ್ವಾದಕ ಅಸ್ವಾದಕ (ವಿಂ) ರುಚಿನೋಡುವವನು, ರಸದ ಸವಿಯನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವವನು, ರಸಾನುಭವ



ಪಡೆಯುವವನು. ಆ + ಷದ (ಆಸ್ವಾದನೆ) "ಫ್ಲು" (3-1-133)।

ಆಸ್ವಾದನ ಆಸ್ವಾದನ (ನಂ) ರುಚಿನೋಡುವುದು, ರಸದ ಸವಿಯನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವುದು, ರಸಾನುಭವ ಪಡೆಯುವುದು. ಆ + ಷದ (ಆಸ್ವಾದನೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)।

ಆಸ್ವಾದಯತ್ ಆಸ್ವಾದಯತ್ (ವಿಂ) 1. ರುಚಿನೋಡುತ್ತಿರುವ, ಸವಿಯುತ್ತಿರುವ. 2. (ಲಾಕ್ಷಂ) ಪಾನ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಆ + ಷದ (ಆಸ್ವಾದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜೀಪ್" (4-1-5)। ಆಸ್ವಾದಯಂತಿ ಆಸ್ವಾದಯಂತೀ. "ಆಸ್ವಾದಯಂತಿ: ಸುದೃಶಸ್ತದಾನೀಮ್" ಯಾದಂ 13-69।

ಆಸ್ವಾದವತ್ ಆಸ್ವಾದವತ್ (ವಿಂ) ರಸವತ್ತಾದ, ರುಚಿ ಕರವಾದ, ಸವಿಯಾದ. ಪ್ರಶಸ್ತ ಆಸ್ವಾದೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (4-2-94)। "ಆಸ್ವಾದವದ್ವಿ: ಕಬಲೇಸ್ತೃಣಾನಾಂ ಕಣ್ವಯನೇದನಿವಾರಣೇಶ್ಚ" ರಘುಂ 2-5।

ಆಸ್ವಾದಿತ ಆಸ್ವಾದಿತ (ವಿಂ) 1. ರುಚಿನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸವಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಷದ (ಆಸ್ವಾದನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। "ಆಸ್ವಾದಿತಾದ್ರ್-ಕ್ರಮುಕಾ: ಸಮುದ್ರಾದಮ್ಯಾಗತಸ್ಯ ಪ್ರತಿಪತ್ತಿಮೀಯು:" ಮಾಘಂ 3-61।

ಆಸ್ವಾಘ ಆಸ್ವಾಘ್ಯ (ವಿಂ) 1. ತಿನ್ನಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ರುಚಿನೋಡಲು ಅರ್ಹವಾದ, ಕುಡಿಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಆ + ಷದ (ಆಸ್ವಾದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಯತ್" (3-1-96)। "ಆಸ್ವಾಘತೋಯಾ: ಪ್ರವಹಂತಿ ನದಿ: ಸಮುದ್ರಮಾಸಾಘ ಭವಂತ್ಯ-ಪೇಯಾ:" ಹಿತಂ। (ಅವ್ಯಂ) 3. ರುಚಿನೋಡಿ, ಸವಿದು. 4. ತಿಂದು, ಅನುಭವಿಸಿ. "ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರಸುತೇನ ಸುತ್ಯಜಾಶಿಚ ರಮಾಸ್ವಾಘ ನರೇಂದ್ರಸಂಪದ:" ಕಿರಾಂ 2-16।

ಆಹ ಆಹ (ಅವ್ಯಂ) ಹೇಳಿದನು. [ಇದು ತಿಜಸ್ತಪ್ರತಿ ರೂಪಕಾವ್ಯಯ. ಫ್ಲೂ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಧಾತುವಿಗೆ "ಲ್" ಲಕಾರದಲ್ಲಿ ವಿಧಿಸಲ್ಪಡುವ "ಆಹ" ಆದೇಶವು (3-4-64) ವರ್ತಮಾನಕಾಲದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುದು. ಇದು ಭೂತಾರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಅವ್ಯಯ.] "ಅಥಾಹ ವರ್ಣಿ ವಿದಿತೋ ಮಹೇಶ್ವರಸ್ತದರ್ಶಿನಿ ತ್ವಂ ಪುನರೇವ ವರ್ತಸಿ" ಕುಮಾಂ 4-64। "ಆಹ ದಾನವರಿಪುಂ ದಿವಸ್ತತಿ:" ಯಾದಂ 13-131।

ಆಹಕ ಆಹಕ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧವಾದ ಮೂಗಿನ ರೋಗ, ಮೂಗಿನ ಜ್ವರ. "ತನುನಾ ರಕ್ತಶೋಧೇನ ಯುಕ್ತೋ ನಾಸಾಪುಟಾಂತರೇ। ಗಾತ್ರಶೂಲಜ್ವರಕರ: ಶ್ಲೇಷ್ಮಣಾ ಹ್ಯಾಹಕೋ ಜ್ವರ:"।

ಆಹತ ಆಹತ (ಪುಂ) 1. ಡಕ್ಕ, ನಗಾರ, ಭೇರಿ. ಆಹವ್ಯತೇ—ಆ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

(ನಂ) 2. ವ್ಯವಹಾರವಿರುದ್ಧವಾದ ಮಿಥ್ಯಾವಚನ, ಅಸಂಬದ್ಧವಾದ ಹೊಂದಿಕೆಯಿಲ್ಲದ ಮಾತು. "ಏಷ ವನ್ಯಾಸುತೋ ಯಾತಿ"। 3. ಹಳೆಯ ಬಟ್ಟೆ. 4. ಹೊಸ ಬಟ್ಟೆ, ನೂತನ ವಸ್ತ್ರ. "ईषद्वौतं नवं शुभ्रं सदशं यन्न धारितम्। आहतं तद्विजानीयात् सर्वकर्मसु पावनम्"। 5. ಎಟು, ಹೊಡೆತ. ಆ + ಹನ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114)। "बाहुपीडनकचप्रहणाभ्यामाहतेन नख-दन्तनिपातै:" ಮಾಘಂ 10-92। (ವಿಂ) 6. ಹೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಹನ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

"आहतं कुचतटेन तरुण्या: साधु सोढममुनेति पपात" ಮಾಘಂ 10-94। 7. ತುಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರ್ದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "पादाहतं यदुत्थाय मूर्धनिमधिरोहति" ಮಾಘಂ 2-46। "अचेष्टताष्टापदभूमिरेणु: पादाहतो यत्सदृशं गरिष्ण:" ಮಾಘಂ 3-26। 8. ಗುಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 9. ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನೋಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "तेनाहता-स्त्रिदशसैन्यपदातयोऽपि" ಕುಮಾಂ 13-32। "आहतं गुणिते चापि ताडिते च मृषार्थके। स्यात् पुरातन-वस्त्रेऽपि नववस्त्रे च नाऽऽनके" ಮೇದಿಂ।

ಆಹತಲಕ್ಷಣ ಆಹತಲಕ್ಷಣ (ವಿಂ) ಸದ್ಗುಣಗಳಿಂದ ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾದವನು, ಪ್ರಖ್ಯಾತಗುಣವುಳ್ಳವನು. ಆಹತಂ ಗುಣಿತಂ ಲಕ್ಷಣಂ ಯಸ್ಯ।

ಆಹತಿ ಆಹತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊಡೆತ, ಶಬ್ದವಾಗುವಂತೆ ಎರಡು ಪದಾರ್ಥಗಳ ಸಂಬಂಧ. ಆ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)। "कृताहति: कृष्ण-निपातवेगादानदरूपा विततैस्तरङ्गै:" ಯಾದಂ 4-113। 2. ಎಟು. 3. ಮರ್ದನ, ತುಳಿತ. 4. ಹಿಮಕುವಿಕೆ. 5. ಗುಣಾಕಾರ, ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು. 6. ಅಗಮನ, ಬರುವಿಕೆ.

ಆಹನನ ಆಹನನ (ನಂ) 1. ಕೋಲು, ದೊಣ್ಣೆ, ದಂಡ. ಆ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)। 2. ಎಟು, ಹೊಡೆತ. 3. ಗುಣಾಕಾರ, ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು. 4. ಮರ್ದನ, ತುಳಿತ. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)।

ಆಹರ ಆಹರ (ವಿಂ) ತರುವ, ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಬರುವ. ಆ + ಹ್ವ (ಹರಣೇ) "ಅಚ್" (3-2-9)। "वनान्तरा-दुपावृत्तै: समित्कुशफलाहरै:" ರಘುಂ 1-49।



ಆಹರಕರಟಾ ಅಹರಕರಟಾ (ಸ್ತಂ) “ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಬಾ” ಎಂದು ಕರಟಕ್ಕೆ (ಕಾಗೆಗೆ) ಅಪ್ಪಣೆಮಾಡುವ ಕೆಲಸ. ಆಹರ ಕರಟ ಇತ್ಯುಚ್ಯತೇ ಯಸ್ಯಾ ನಿರ್ದೇಶಕ್ರಿಯಾಯಾಮ್ | ಮಯೂರಂ |

ಆಹರಚೆಟಾ ಅಹರಚೆಟಾ (ಸ್ತಂ) “ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಬಾ” ಎಂದು ಚೆಟೆ (ಸೇವಕ) ನಿಗೆ ಅಪ್ಪಣೆಮಾಡುವ ಕೆಲಸ. ಆಹರ ಚೆಟ ಇತ್ಯುಚ್ಯತೇ ಯಸ್ಯಾ ನಿರ್ದೇಶಕ್ರಿಯಾಯಾಮ್ | ಮಯೂರಂ |

ಆಹರಣ ಅಹರಣ (ನಂ) 1. ತರುವುದು, ಒಯ್ಯುವುದು. ಆ + ಹ್ವ (ಹರಣೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114) | “ರಾಜನ್, ಸಮಿದಾಹರಣಾಯ ಪ್ರಸ್ಥಿತಾ ವಯಮ್” ಶಾಕುಂ 1 | 2. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಕಸಿದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಅಪಹರಿಸುವುದು. “ವಾತೋಽಪಿ ನಾಸಂಸಯದಂಶುಕಾನಿ ಕೌಲಮ್ಬಯೇದಾಹರಣಾಯ ಹಸ್ತಮ್” ರಘುಂ 6-34 | 3. ಅನುಷ್ಠಾನ, ಆಚರಣೆ. “ಅಶ್ವಮೇವಸ್ಯ ಕೌರವ್ಯ ಚಕಾರಾಹರಣೇ ಮತಿಮ್” ಭಾಂ | 4. ವಿವಾಹಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕನ್ಯೆಗೆ ಕೊಡುವ ಬಳುವಳಿ, ಸ್ತೋಧನ, ಉಡುಗೊರೆ. “ಸತ್ವಾನುಷ್ಠಾಹರಣೀಕೃತಶ್ರೀಃ” ರಘುಂ 9-32 |

ಆಹವ ಅಹವ (ಪುಂ) 1. ಯುದ್ಧ, ಕದನ. ಆಹವತೇ ರಿಪುರತ್ರ — ಆ + ಹ್ವ (ಸ್ವರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) “ಅಪ್” (3-3-33) | “ನ ಚ ಶ್ರೇಯೋಽನುಪಶ್ಯಾಮಿ ಹತ್ವಾ ಸ್ವಜನಮಾಹವೇ” ಗೀತಾ 1-31 | 2. ಯಜ್ಞ, ಯಾಗ. ಆ + ಹ್ವ (ದಾನಾದನಯೋಃ) “ಅಪ್” (3-3-49) | “ತತ್ರ ನಾಭವದಸೌ ಮಹಾಹವೇ ಶಾತ್ರವಾದಿವ ಪರಾಙ್ಮುಖೋಽಶ್ವಿನಃ” ಮಾಘಂ 18-88 |

ಆಹವನೀಯ ಅಹವನೀಯ (ಪುಂ) ಮೂರು ವಿಧ ಅಗ್ನಿಗಳ ಲ್ಲೊಂದು, ಯಾಗಪರಿಸಮಾಪ್ತಿಪರ್ಯಂತ ಇಡಲ್ಪಡುವ ಅಗ್ನಿ. ಆಹವತೇ ಪ್ರಕ್ಷಿಪ್ಯತೇ ಹವಿರತ್ರ — ಆ + ಹ್ವ (ದಾನಾದನಯೋಃ) “ಅನೀಯರ್” (3-3-113) | ಈ ಅಗ್ನಿಯು ಆಹಾರ್ಯಸಮಾನ. “ಗುರಾಹವನೀಯಸ್ತು ಸಾಗ್ನಿವ್ರೇತಾ ಗರೀಯಸೌ” ಮನುಂ 2-231 |

ಆಹಾರ ಆಹಾರ (ಪುಂ) ಭೋಜನ, ಊಟ. ಆ + ಹ್ವ (ಹರಣೆ) “ಘ” (3-3-18) | ಆಹಾರವು (1) ಭೋಜ್ಯಮ್, (2) ಭಕ್ಷ್ಯಮ್, (3) ಚರ್ವ್ಯಮ್, (4) ಲೇಹ್ಯಮ್, (5) ಚೂರ್ವ್ಯಮ್ ಮತ್ತು (6) ವೇಯಮ್ ಎಂದು ಆರು ವಿಧ. (1) ಅನ್ನ ಮೊದಲಾದುದು ಭೋಜ್ಯ. (2) ರೊಟ್ಟಿ ಕಡುಬು ಮೊದಲಾದುದು ಭಕ್ಷ್ಯ. (3) ಅವಲಕ್ಕಿ ಪುರಿ ಹುರಿಗಾಳು ಮುಂತಾದುದು ಚರ್ವ್ಯ. (4) ಗೊಜ್ಜು

ಮುಂತಾದುದು ರೇಡ್ಯ. (5) ಮಾವಿನಹಣ್ಣು ಕಬ್ಬು ಮೊದಲಾದುದು ಚೂರ್ವ್ಯ. (6) ಹಾಲು ಪಾನಕ ಮುಂತಾದುದು ವೇಯ. ಈ ಎಲ್ಲ ಆಹಾರಗಳೂ (1) ಸಾತ್ತ್ವಿಕ, (2) ರಾಜಸ ಮತ್ತು (3) ತಾಮಸ ಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. (1) ಆಯುಸ್ಸು, ಜ್ಞಾನ ಬಲ ಆರೋಗ್ಯ ಸುಖ ಸಂತೋಷ ಇವನ್ನು ಅಧಿಕ ಪಡಿಸುವುದೂ ಆಸ್ವಾದ್ಯವೂ ಸ್ನೇಹ(ಜಿಡ್ಡು)ಯುಕ್ತವೂ ಸ್ಥಿರಪರಿಣಾಮವುಂಟುಮಾಡುವುದೂ ರಮಣೀಯವೂ ಆದ ಆಹಾರವು ಸಾತ್ತ್ವಿಕ. “ಆಯುಃ ಸತ್ವಬಲಾರೋಗ್ಯ-ಸುಖಪ್ರೀತಿವಿವರ್ಧನಾಃ | ರಸಾಃ ಸ್ನಿಗ್ಧಾಃ ಸ್ಥಿರಾ ಹೃದ್ಯಾ ಆಹಾರಾಃ ಸಾತ್ವಿಕಪ್ರಿಯಾಃ” ಗೀತಾ 17-21 | (2) ಕಾರ ಹುಳಿ ಉಪ್ಪು ಮತ್ತು ಬಹಳ ಬಿಸಿಯಾದ ಬಹಳ ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ತೋಷಣಕರವಾದ ತಾಪಜನಕವಾದ ದುಃಖ ಮತ್ತು ತೋಷಕವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಆಹಾರವು ರಾಜಸ. “ಕಠ್ಮಲ್ಲವಣಾತ್ಯುಷ್ಣತೀಕ್ಷ್ಣರೂಕ್ಷವಿವಿಧಾಹಿನಃ | ಆಹಾರಾ ರಾಜಸಸ್ಯೇಷಾಃ ದುಃಖಶೌಕಾಮಯಪ್ರದಾಃ” ಗೀತಾ 17-9 | (3) ಬಹಳ ಹಳೆಯದಾದುದೂ ಸ್ವಾಭಾವಿಕ ರಸವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡುದೂ ದುರ್ಗಂಧವೂ ಪರ್ಯುಷಿತವೂ ಎಂಜಲೂ ಯಾಗಾರ್ಹವಲ್ಲದ್ದೂ ಆದ ಆಹಾರವು ತಾಮಸ. “ಯಾತಯಾಮ್ ಗತರಸಂ ಪುನಿ ಪರ್ಯುಷಿತಂ ಚ ಯತ್ | ತಚ್ಚಿಷ್ಟಮಪಿ ಚಾಮೇಘ್ಯಂ ಭೋಜನಂ ತಾಮಸಪ್ರಿಯಮ್” ಗೀತಾ 17-10 | [ರಾಜಸಾಹಾರವು ಕಾಮಕ್ರೋಧಗಳನ್ನೂ, ತಾಮಸಾಹಾರವು ತಮೋಗುಣವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸಿ ಆಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರವೃತ್ತಿಯನ್ನೂ ಉಂಟುಮಾಡುವುದರಿಂದ ಸಾತ್ತ್ವಿಕಾಹಾರವನ್ನೇ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಸೇವಿಸಬೇಕು.]

ಆಹಾರ್ಯ ಆಹಾರ್ಯ (ಪುಂ) 1. (ನಾಟ್ಯಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ವೇಷಾದಿಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ಅಭಿನಯ. “ಭವೇದಭಿನಯೋಽವಸ್ಥಾನುಕಾರಃ ಸ ಚತುರ್ವಿಧಃ | ಆಂಗಿಕೋ ವಾಚಿಕಶರೀರ-ಮಾಹಾರ್ಯಃ ಸಾತ್ವಿಕಸ್ತಥಾ” ಸಾಂದಂ 6-2 | (ನಂ) 2. (ನಾಟ್ಯಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಬಾಧಕಾಲದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಇಚ್ಛಾಜನ್ಯ ಜ್ಞಾನ. (ವಿಂ) 3. ತರಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ತರಲ್ಪಡುವ. ಆ + ಹ್ವ (ಹರಣೆ) “ಘ” (3-3-18) |

ಆಹಾವ ಆಹಾವ (ಪುಂ) ಬಾವಿಗಳ ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿ ಪಶುಗಳು ನೀರು ಕುಡಿಯಲು ಕಟ್ಟಿರುವ ನೀರಿನ ತೊಟ್ಟಿ. ಆಹವತೇ ಪಶಾವೋಽತ್ರ — ಆ + ಹ್ವ (ಸ್ವರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) “ಅಪ್” ಇಡಿಸಿ (3-3-33) |



ಆಹಿತ ಅಹಿತ (ವಿಂ) 1. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಇಂಪಲ್ಪಟ್ಟು. ಆ + ಹ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।  
"ವ್ಯಾವರ್ತನೇರಹಿತೇರಮಾಹಿತಾಕ್ತಃ" ಕಿರಾಂ ೪-೩೦।  
2. ಸಂಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಉಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. "ಆಹಿತೇ  
ನು ಮಧುನಾ ಮಧುರತ್ವೇ ಚೇಷ್ಟಿತಸ್ಯ ಗಮಿತೇ ನು ವಿಕಾಸಮ್"  
ಕಿರಾಂ ೯-೬೯।

ಆಹಿತಾಗ್ನಿ ಅಹಿತಾಗ್ನಿ (ಪುಂ) ಅಧಾನಪೂರ್ವಕ  
ಸಂಸ್ಕೃತವಾದ ಅಗ್ನಿಯುಳ್ಳವನು. ಆಹಿತಃ ಅಗ್ನಿಃ  
ಯೇನ।

ಆಹಿತುಂಡಿಕ ಅಹಿತುಂಡಿಕ (ಪುಂ) ಹಾವಾಡಿದ. ಅಹಿತುಂಡೇನ  
ದೀವ್ಯತಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೨)। "ಅಮಾತ್ಯ, ಏಷ ಸ್ವಲ್ಪ  
ಆಹಿತುಂಡಿಕೋ ವಿಜ್ಞಾಪಯತಿ - ನ ಕೇವಲಮಹಂ ಸರ್ಪೋಪಜೀವಿ,  
ಪ್ರಾಕೃತಕವಿಃ ಸ್ವಲ್ಪಮ್" ಮುद्रಾಂ ೨।

ಆಹುತ ಅಹುತ (ವಿಂ) 1. ಹೋಮಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಆ + ಹ್  
(ದಾನಾದನಯೋಃ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಮನುಷ್ಯ  
ಯಜ್ಞ. 3. ಭೂತಯಜ್ಞ.

ಆಹುತಿ ಅಹುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೇವತೆಗಳನ್ನು ದೈತಿಸಿ  
ಅಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಹವಿಸ್ಸನ್ನು ಅರ್ಪಿಸುವುದು, ಹೋಮ.  
ಆ + ಹ್ (ದಾನಾದನಯೋಃ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।  
"ಅಗ್ನಿಂ ಪ್ರಾಸ್ತಾಹುತಿಃ ಸಮ್ಯಗಾದಿತ್ಯಮುಪತಿಷ್ಠತೇ" ಮನುಂ  
೩-೭೬। 2. ಹೋಮದ್ರವ್ಯ, ಹವಿಸ್ಸು. ಆ + ಹ್  
ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। "ಪುನಾನ್ ಪವನೋದ್ಕೃತ-  
ರ್ಭೂಮೇರಾಹುತಿಗಾನ್ವಿಭಿಃ" ರಘುಂ ೧-೪೩।

ಆಹುತ ಅಹುತ (ನಂ) 1. ಆಹುತನ, ಕರೆ. ಆ + ಹ್ಲೆಙ್  
(ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೯೪)।  
(ವಿಂ) 2. ಕರೆಯಲ್ಪಟ್ಟು, ಆಹುತನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು.  
ಆ + ಹ್ಲೆಙ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ವಿವಿಕ್ಷಮಾಣೇನಾ-  
ಹುತಃ ಪಾರ್ಶ್ವೇನಾಥ ಧಿಷ್ಣುರಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೧। 3. ಹೆಸರಿಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟು, ಹೆಸರಿನಿಂದ ಕರೆಯಲ್ಪಟ್ಟು.

ಆಹುತಪ್ರಪಲಾಯಿನ್ ಅಹುತಪ್ರಪಲಾಯಿನ್ (ಪುಂ) ವಾದ  
ಕೃಗಿ ನ್ಯಾಯಾಸ್ಥಾನದಿಂದ ಕರೆಯಲ್ಪಟ್ಟು ಹಾಜರಾಗ  
ದಿರುವ ಪ್ರತಿವಾದಿ. ಆಹುತಃ ಪ್ರಪಲಾಯತೇ। [ತನ್ನಲ್ಲಿ  
ತಪ್ಪಿತವಿರುವುದರಿಂದ ಪ್ರತಿವಾದಿಯು ವಾದಕೃಗಿ  
ನ್ಯಾಯಾಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಹೋಗಲು ಹಿಂಜರಿಯುವನು.]  
ಇಂತಹ ಪ್ರತಿವಾದಿಯು ಐದು ವಿಧ. "ಅನ್ಯವಾದೀ  
ಕ್ರಿಯಾತ್ವೇನೋಪಸ್ಥಾತಾ ನಿರುತ್ತರಃ। ಆಹುತಪ್ರಪಲಾಯಿ ಚ ಹೀನಃ  
ಪञ್ಚವಿಧಃ ಸ್ಮೃತಃ"।

ಆಹುತಸಂಪ್ಲವ ಅಹುತಸಂಪ್ಲವ (ಪುಂ) ಪ್ರಳಯಕಾಲ.  
ಆಹುತಸ್ಯ ನಾಮ್ನಾ ಕೃತವ್ಯವಹಾರಸ್ಯ ಜಗತಃ ಸಂಪ್ಲವೋ  
ನಾಶೋ ಯಸ್ಮಿನ್। "ಆಹುತಸಂಪ್ಲವಂ ಸ್ಥಾನಮಮೃತತ್ವಂ ಹಿ  
ಭಾಷ್ಯತೇ"।

ಆಹುತಿ ಅಹುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರೆ, ಆಹುತನ. ಆ + ಹ್ಲೆಙ್  
(ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।

ಆಹುಯ ಅಹುಯ (ಅವ್ಯಂ) ಕರೆದು, ಆಹುತನಮಾಡಿ.  
ಆ + ಹ್ಲೆಙ್ (ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭)।  
"ಆಹುಯ ರಾಮಂ ವಿನಯಾಭಿರಾಮಮಾವಿಃಪ್ರಮೋದಃ ಪ್ರಭುರೇವಮುಚೇ"  
ಚಂ ರಾಂ।

ಆಹುತ ಅಹುತ (ವಿಂ) ತರಲ್ಪಟ್ಟು, ಒಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟು. ಆ + ಹ್  
(ಹರಣೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಆಹುತಿ ಅಹುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತರುವಿಕೆ, ಒಯ್ಯುವುದು.  
ಆ + ಹ್ಲೆಙ್ (ಹರಣೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।

ಆಹೇಯ ಅಹೇಯ (ವಿಂ) ಸರ್ಪಸಂಬಂಧವಾದ (ವಿಷ,  
ಮೂಳೆ, ಸೋಲೆ ಮುಂತಾದುದು). ಅಹೇರಿದಮ್ "ಠಕ್"  
(೪-೩-೪೬)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೪)।  
ಆಹೇಯಿ ಅಹೇಯಾ.

ಆಹೋ ಅಹೋ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪ್ರಶ್ನೆ. ಆ + ಹನ್ (ಹಿಸಾ-  
ಗತ್ಯೋಃ) "ಙೋಃ" (ಬಾಹುಂ)। 2. ವಿಕಲ್ಪ, ಹಾಗಲ್ಲ  
ದಿದ್ದರೆ, ಅಥವಾ. "ಆಹೋ ನಿವತ್ಸ್ಯಸಿ ಸಮಂ ಹರಿಣಾಙ್ಗ-  
ನಾಭಿಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೨೩। 3. ವಿತರ್ಕ, ಸಂದೇಹ.  
"ಆಹೋ ವಿತರ್ಕಂ ಪ್ರಶ್ನೇ ಚ" ಮೇದಿಂ।

ಆಹೋಪುರುಷಿಕಾ ಅಹೋಪುರುಷಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಹಂಕಾರ  
ದಿಂದ ತನ್ನ ಶ್ರೇಷ್ಠತೆಯನ್ನು ಭಾವಿಸುವುದು, ತನಗೆ  
ಸಮಾನರಿಲ್ಲವೆಂದು ತಿಳಿಯುವುದು. ಅಹೋ (ಅಹಮೇವ)  
ಪುರುಷಃ ಅಹೋಪುರುಷಃ - ತಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಬುಙ್" (೪-೧-೧೩೩)।  
"ಆಹೋಪುರುಷಿಕಾಂ ಪಶ್ಯ ಮಮ ಸದ್ರವಲಕಾಂತಿಭಿಃ" ಭಟ್ಟಂ  
೪-೨೭।

ಆಹೋಸ್ವಿತ್ ಅಹೋಸ್ವಿತ್ (ಅವ್ಯಂ) ವಿಕಲ್ಪ. ಆಹೋ ಚ  
ಸ್ವಿಚ್ಚ। "ಆಹೋಸ್ವಿತ್ ಪ್ರಸವೋ ಮಮಾಪಚರಿತೇವಿಷ್ಠಮಿಹಿತೋ  
ವೀರಧಾಮ್" ಶಾಕುಂ ೪-೯।

ಆಹ್ಲ ಅಹ್ಲ (ನಂ) 1. ದಿನಗಳ ಸಮೂಹ. ಆಹ್ಲಾಂ  
ಸಮೂಹಃ - ಅಹನ್ "ಅಙ್" (೪-೨-೪೪)। (ವಿಂ) 2. ಒಂದು  
ಹಗಲಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ, ಒಂದು ದಿನದಲ್ಲಿ ನೆರವೇರಿಸಿದ.  
ಆಹ್ಲಾ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೭೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್"  
(೪-೧-೧೪)। ಆಹ್ಲಿ ಅಹ್ಲಿ.



ಆಹ್ಲಿಕ ಅಹ್ಲಿಕ (ಪುಂ) 1. ದಿನದಲ್ಲಿ ಸತ್ಕರಿಸಿ ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಉಪಾಧ್ಯಾಯ, ಗೌರವಪೂರ್ವಕ ಸಾಕ ಪ್ರವಚನಾದಿಗಳಿಗೆ ಏರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಉಪಾಧ್ಯಾಯ. ಅಹಃ ಅಧೀಷ್ಠ: ಆಹ್ಲಿಕೋಽಧ್ಯಾಪಕ: "ಠ್ಠ" (೪-೧-೮೦)। 2. ವ್ಯಾಧಿ, ಜ್ವರ. ಅಹಃ ಭೂತ: ಆಹ್ಲಿಕೋ ವ್ಯಾಧಿ:। 3. ಭೋಜನ, ಊಟ. (ನಂ) 4. ಪ್ರತಿದಿನದ ಕರ್ತವ್ಯ. 5. ನಿತ್ಯವೂ ಮಾಡುವ ಮತಸಂಬಂಧವಾದ ಕಾರ್ಯ, ನಿತ್ಯಕರ್ಮ. 6. ಪಾತಂಜಲ ಮಹಾಭಾಷ್ಯದ ಒಂದೊಂದು ಭಾಗ. "ಆಹ್ಲಿಕಂ ದಿನನಿವೃತ್ತಿಂ ಭೋಜನೇ ನಿಯಮಕರ್ಮಣಿ" ವಿಶ್ವಂ। (ವಿಂ) 7. ಹಗಲಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ, ಒಂದು ದಿನದಲ್ಲಿ ನೆರವೇರಿಸಿದ. ಅಹ್ಲಾ ನಿವೃತ್ತಮ್ - ಅಹನ್ "ಠ್ಠ" (೪-೧-೮೧)। 8. ಒಂದು ದಿನದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಅಹ್ಲಿ ಭವ: - ಅಹನ್ "ಠ್ಠ" (೪-೩-೧೧)। 9. ದಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಹಗಲಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. "ಸ್ಥಾನ-ಮಾಹ್ಲಿಕಮಪಾಸ್ಯ ದಂತಿನ:" ಕುಮಾಂ ೮-೩೩।

ಆಹ್ಲಾದ ಅಹ್ಲಾದ (ಪುಂ) ಅನಂದ, ಸಂತೋಷ. ಆ + ಹ್ಲಾದಿ (ಸುಖೇ ಚ) "ಘ್ಠ" (೩-೩-೧೮)। "ನಂದಸ್ಯಾತ್ಮಜ ಉತ್ಪನ್ನೇ ಜಾತಾಹ್ಲಾದೋ ಮಹಾಮನಾ:" ಭಾಗಂ।

ಆಹ್ಲಾದನ ಅಹ್ಲಾದನ (ನಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವಿಕೆ. ಆ + ಹ್ಲಾದಿ (ಸುಖೇ ಚ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। (ವಿಂ) 2. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವ, ಸಂತೋಷವುಂಟು ಮಾಡುವ. ಆ + ಹ್ಲಾದಿ + ಣಿಕ್ ಕರಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। 3. ಅನಂದಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ, ಸಂತೋಷಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದ. ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೬)।

ಆಹ್ಲಾದಿತ ಅಹ್ಲಾದಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅನಂದಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ಹ್ಲಾದಿ (ಸುಖೇ ಚ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಸಂತೋಷಗೊಂಡ, ಅನಂದವುಂಟಾದ. ಆಹ್ಲಾದೋಽಸ್ಯ ಸಂಜ್ಞಾತ: "ಇತಕ್" (೪-೨-೩೬)।

ಆಹ್ಲಾದಿನ್ ಅಹ್ಲಾದಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷವುಳ್ಳ. ಆಹ್ಲಾದೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। 2. ಸಂತೋಷ

ಪಡಿಸುವ, ಅನಂದಗೊಳಿಸುವ. ಆ + ಹ್ಲಾದಿ (ಸುಖೇ ಚ) + ಣಿಕ್ "ಣಿನಿ:" (೩-೨-೮೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೫)। -ಹ್ಲಾದಿನಿ -ಹ್ಲಾದಿನೀ.

ಆಹ್ಲ ಅಹ್ಲ (ವಿಂ) ಕರೆಯುವ, ಆಹ್ವಾನಮಾಡುವ. ಆಹ್ವಯತಿ - ಆ + ಹ್ವೇ (ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಙ:" (ವಾಂ ೩-೨-೩)।

ಆಹ್ವಯ ಅಹ್ವಯ (ಪುಂ) 1. ಹೆಸರು, ನಾಮಧೇಯ. ಆಹ್ವಯಯಿತಿ ಪ್ರಾಪ್ಯತೇ - ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಕ:" (ವಾಂ ೩-೩-೫೮)। 2. ಆಡು, ಕೋಳಿ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನು ಪಡೆವಾಗಿಟ್ಟು ಆಡುವ ಆಟ. ಈ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಇದು ಸಮ್ ಉಪಸರ್ಗಪೂರ್ವಕವಾಗಿಯೂ ಉಂಟು. "ಅಪ್ರಾಣಿಭಿರ್ಯತ್ಕಿರಯತೇ ತಲ್ಲೋಕೇ ದೃತಮುಚ್ಯತೇ। ಪ್ರಾಣಿಭಿ: ಕ್ರಿಯಮಾಣಂ ತು ಸ ವಿಜ್ಞೇಯ: ಸಮಾಹ್ವಯ:" ಮನುಂ ೧-೨೨೩।

ಆಹ್ವಯನ ಅಹ್ವಯನ (ನಂ) 1. ಹೆಸರು. (ವಿಂ) 2. ಕರೆಯುವ, ಆಹ್ವಾನಮಾಡುವ. ಆಹ್ವಯಂ ಕರೋತೀನೇನ - ಆಹ್ವಯ + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೬)।

ಆಹ್ವಯಿತವ್ಯ ಅಹ್ವಯಿತವ್ಯ (ವಿಂ) ಕರೆಯಲ್ಪಡುವ, ಕರೆಯಲು ಅರ್ಹನಾದ. ಆಹ್ವಯ + ಣಿಕ್ ಕರಂ "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬)।

ಆಹ್ವಾ ಅಹ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಹ್ವಾನ, ಕರೆ. ಆ + ಹ್ವೇ (ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಅಙ್" (೩-೩-೧೦೬)। 2. ಹೆಸರು, ನಾಮಧೇಯ. ಆ + ಹ್ವೇ ಕರಂ "ಅಙ್"।

ಆಹ್ವಾನ ಅಹ್ವಾನ (ನಂ) 1. ಕರೆಯುವುದು. ಆ + ಹ್ವೇ (ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಹೆಸರು. 3. ನ್ಯಾಯಾಸ್ಥಾನದ ಮುಂದೆ ಹಾಜರಾಗಲು ಬರುವ ಆಜ್ಞಾ ಪತ್ರ, ರಾಯಸ. ಆ + ಹ್ವೇ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೬)। 4. ಮೊಕದ್ದಮೆಯ ತೀರ್ಪಿಗಾಗಿ ನ್ಯಾಯಾಸ್ಥಾನದ ಕರೆ.

ಆಹ್ವಾನಪತ್ರ ಅಹ್ವಾನಪತ್ರ (ನಂ) -ಪತ್ರಿಕಾ -ಪತ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿವಾಹ ಮುಂತಾದ ಉತ್ಸವಗಳಲ್ಲಿ ಕರೆ ಕೊಡುವ ಪತ್ರಿಕೆ.

ಇತಿ "ಆ" ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್।



ಇ

ಇ ಇದು ವರ್ಣಮಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಮೂರನೆಯ ಸ್ವರ ವರ್ಣವು. ಉದಾತ್ತ ಅನುದಾತ್ತ ಮತ್ತು ಸ್ವರಿತ ಭೇದದಿಂದ ಮೂರು ವಿಧವಾಗಿ ಪುನಃ ಅನುನಾಸಿಕ ಮತ್ತು ಅನನುನಾಸಿಕ ಭೇದದಿಂದ ಆರು ವಿಧವಾಗುವುದು. ಇದು ತಾಲು (ದವಡೆ) ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವುದು.

ಇ (ಉಂ) 1. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಮಗ. ಅಸ್ಯ ವಿಣ್ಣೋರಪತ್ಯಮ್ — ಅ “ಇ” (೪-೧-೧೫)। “ಇಕಾರ ಉಚ್ಯತೇ ಕಾಮಃ” ಏಕಾಂ। 2. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. 3. ರತ್ನ. 4. ಕಾಂತಿ. 5. ಮುಂಭಾಗ. 6. ರಹಸ್ಯ. 7. ಈಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 8. ಹೆಣ್ಣು ಆನೆ. 9. ಅಂತಃ ಪುರ. 10. ಚಂದ್ರನ ಕಿರಣ. “ಇಕಾರಃ ಫಣಿರತ್ನಾಚಿವ-ಶತೋರ್ಜಗುಹಾರ್ಥಯೋಃ। ಹರೇ ಕರಣೌ ಕಕ್ಷಾಂತೇ ನಿಶಾಕರಕರೇ ಸ್ಮರೇ” ನಾನಾರ್ಥಂ। (ಅವ್ಯಂ) 11. ಕನಿಕರ, ದಯೆ. 12. ಆಶ್ಚರ್ಯ. 13. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. 14. ಕೋಪದ ಮಾತು. 15. ಖೇದ. 16. ನಿರಾಕರಣೆ, ತಳ್ಳಿ ಹಾಕುವುದು, ಬೇಡವೆನ್ನುವುದು. “ಇ ವಿಚಿತ್ರೇ ಸ್ಮರೇ ಪುಮಾನ್” ವೈಜಂ। “ಇ ಖೇದೇ ಚ ಋಷಿಕ್ತೌ ಚಾಪಾಕರಣಾನು-ಕಂಪಯೋಃ” ಮೇದಿಂ।

ಇ - ಗತೌ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) ಅಯತಿ। ಇಯಾ ಇಯತುಃ ಇಯಃ। ಏತಾ। ಏಷ್ಯತಿ। ಅಯತು। ಆಯತ್। ಅಯೇತ್। ಇಯಾತ್। ಏಷೀತ್। ಏಷ್ಯತ್। ಹೋಗು, ಹೊಂದು.

ಇಕ್ - ಸ್ಮರಣೆ (ಅದಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) ಇದು ಅಧಿ ಪೂರ್ವಕವಾಗಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವುದು.

ಋಡ್— ಅಧ್ಯೇತಿ ಅಧೀತಃ ಅಧಿಯಂತಿ।

ಲಿಡ್— ಅಧೀಯಾ ಅಧೀಯತುಃ ಅಧೀಯುಃ।

ಅಧೀಯಿಷ್ಯ } ಅಧೀಯಿಷ್ಯುಃ ಅಧೀಯಿಷ್ಯುಃ।

ಅಧೀಯಾ } ಅಧೀಯಿಷ್ಯ ಅಧೀಯಿಷ್ಯಮ್।

ಋಡ್— ಅಧ್ಯೇತಾ। ಲೃಡ್—ಅಧ್ಯೇಷ್ಯತಿ।

ಋಡ್— ಅಧ್ಯೇತು

ಋಡ್— ಅಧ್ಯೇತು ಅಧ್ಯೇತಾಮ್ ಅಧ್ಯೇಯನ್।

ಅಧ್ಯೇತುಃ ಅಧ್ಯೇತಮ್ ಅಧ್ಯೇತುಃ।

ಅಧ್ಯೇತುಃ ಅಧ್ಯೇತಮ್ ಅಧ್ಯೇತುಃ।

ಪ್ರಿಥಿಲಿಡ್—ಅಧೀಯಾತ್ ಅಧೀಯಾತಾಮ್।

ಪ್ರಾಶೀಲಿಡ್—ಅಧೀಯಾತ್ ಅಧೀಯಾಸ್ತಾಮ್।

ಋಡ್— ಅಧ್ಯೇತುಃ ಅಧ್ಯೇತಾಮ್।

ಋಡ್— ಅಧ್ಯೇಷ್ಯತಿ।

1. ಸ್ಮರಿಸು, ನೆನೆ. 2. ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡು.

ಕರ್ಮಣಿಃ—ಅಧೀಯತೇ, ಅಧೀಯೇತೇ, ಅಧೀಯಂತೇ। ಅಧೀಯೇ, ಅಧೀಯಾತೇ, ಅಧೀಯಿರೇ। ಅಧ್ಯಾಯಿತಾ, ಅಧ್ಯೇತಾ। ಅಧ್ಯಾಯಿಷ್ಯತೇ, ಅಧ್ಯೇಷ್ಯತೇ। ಅಧೀಯತಾಮ್। ಅಧ್ಯೇಯತುಃ। ಅಧೀಯೇತುಃ। ಅಧ್ಯಾಯಿಷೀಷ್ಠ, ಅಧ್ಯೇಷೀಷ್ಠ। ಅಧ್ಯೇಯಗಾಂ। ಅಧ್ಯಾಯಿಷ್ಯತ, ಅಧ್ಯೇಷ್ಯತುಃ।

ಪ್ರಿಥಿಲಿಃ—ಅಧಿಗಮಯತಿ, —ತೇ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಪ್ರಿಥಿಲಿಃ—ಅಧಿಗಮಯತಿ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಋಡ್—ಅಧ್ಯೇತವ್ಯಮ್। ಅಧ್ಯಯನೀಯಮ್। ಅಧ್ಯೇಯಮ್। ಅಧೀತಃ। ಅಧೀತವಾನ್। ಅಧೀಯನ್। ಅಧ್ಯೇಷ್ಯನ್। ಅಧ್ಯೇತುಮ್। ಅಧೀತಮ್। ಅಧ್ಯಯನಮ್। ಅಧೀತುಃ।

ಇಕಟ ಇಕಟಿ (ಉಂ) ಬಿಡಿರಿನ ಮೊಳಕೆ.

ಇಕ್ಕಟ ಇಕ್ಕಟಿ (ಉಂ) ಚಾಪೆಯನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ ಹುಲ್ಲು.

ಇಕ್ಷು ಇಕ್ಷು (ಉಂ) 1. ಕಬ್ಬು. ಇಷ್ಯತೇ — ಇಪು (ಇಕ್ಷುಯಾಮ್) “ಕಪುಃ” (೩ಂ ೩-೧೫೭)। “ಇಕ್ಷುಕ್ಷುಯಾನಿಷಾದಿನ್ಯಸ್ತಸ್ಯ ಗೋಪ್ತುಗುಣೋದಯಮ್” ರಘುಂ ೪-೨೦। 2. ಇಕ್ಷು, ಬಯಕೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ.

ಇಕ್ಷುಕಾಂಡ ಇಕ್ಷುಕಾಂಡ (ಉಂ) 1. ಕಬ್ಬಿನ ಜಲ್ಲೆ. ೨ಂ ತಂ। “ಕ್ಷಿಪ್ತಂ ಪುರೋ ನ ಜಗ್ಗುಹೇ ಮುಹುರೀಕ್ಷುಕಾಂಡಮ್” ಮಾಘಂ ೫-೫೦। 2. ಜೊಂಡುಹುಲ್ಲು. 3. ನಾಣಕ ಗಿಡ.

ಇಕ್ಷುಕೀಯ ಇಕ್ಷುಕೀಯ (ವಿಂ) ಕಬ್ಬಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ (ಪ್ರದೇಶ). ಇಕ್ಷುಕಃ ಸಂತುತ “ಃ” ಕುಕ್ (೪-೨-೧೧)।

ಇಕ್ಷುಕುಟಕ ಇಕ್ಷುಕುಟಕ (ಉಂ) ಕಬ್ಬನ್ನು ತುಂಡುಮಾಡಿ ಗಾಣಕ್ಕೆ ಕೊಟ್ಟು ಬೆಲ್ಲವನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ ರೈತ. ಕುಟಕತಿ — ಕುಟ (ಛೇದನೆ) “ಪ್ಲುನ್” (೩-೧-೧೪೫)। ಇಕ್ಷುಕಃ ಕುಟಕಃ।

ಇಕ್ಷುಗಂಧಾ ಇಕ್ಷುಗಂಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೆಗ್ಗೆಲುಗಿಡ. 2. ಕೊಳವಳಕೆ ಗಿಡ. 3. ಜೊಂಡು ಹುಲ್ಲು. 4. ಬಿಳಿ ನೆಲಗುಂಬಳ. “ಇಕ್ಷುಗಂಧಾ ಕೋಕಿಲಾಕ್ಷೇ ಕ್ರೋಷ್ಠಾಂ ಕಾಶೇ ಚ ಗೋಕ್ಷುರೇ” ಮೇದಿಂ।

ಇಕ್ಷುಜ ಇಕ್ಷುಜ (ವಿಂ) ಕಬ್ಬಿನಿಂದಂಟಾದ ಬೆಲ್ಲ, ಸಕ್ಕರೆ ಮುಂತಾದುದು. ಇಕ್ಷುಜಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) “ಜಃ” (೩-೨-೧೮)।



ಇಕ್ಷುದಣ್ಡ ಇಕ್ಷು ದಂಡ (ಪುಂ) -ಯಷ್ಟಿ -ಯಷ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಬ್ಬಿನ ಜಲ್ಲೆ.

ಇಕ್ಷುನೆತ್ರ ಇಕ್ಷು ನೇತ್ರ (ನಂ) ಕಬ್ಬಿನ ಜಲ್ಲೆಯ ಕಣ್ಣು.

ಇಕ್ಷುಪಾಕ ಇಕ್ಷು ಪಾಕ (ಪುಂ) 1. ಬೆಲ್ಲ. 2. ಸಕ್ಕರೆ.

ಇಕ್ಷುಮತೀ ಇಕ್ಷು ಮತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ನದಿ.

ಇಕ್ಷುಮೂಲ ಇಕ್ಷು ಮೂಲ (ಪುಂ) 1. ಬಿದಿರು. (ನಂ) 2. ಕಬ್ಬಿನ ಬುಡ, ಕಬ್ಬಿನ ಬೇರು.

ಇಕ್ಷುಮೇಹ ಇಕ್ಷು ಮೇಹ (ಪುಂ) ಮಧುಮೇಹ ರೋಗ, ಮೂತ್ರಾತಿಸಾರ.

ಇಕ್ಷುಯನ್ತ್ರ ಇಕ್ಷು ಯಂತ್ರ (ನಂ) ಕಬ್ಬನ್ನು ಹಿಂಡುವ ಯಂತ್ರ.

ಇಕ್ಷುಯೋನಿ ಇಕ್ಷು ಯೋನಿ (ಪುಂ) ಪಟಾಪಟೆ ಕಬ್ಬು.

ಇಕ್ಷುರ ಇಕ್ಷು ರ (ಪುಂ) 1. ಕೊಳವಳಕೆ ಗಿಡ. 2. ಕಬ್ಬು. 3. ಜಂಬುಹುಲ್ಲು.

ಇಕ್ಷುರಸ ಇಕ್ಷು ರಸ (ಪುಂ) 1. ಕಬ್ಬಿನ ಹಾಲು. 2. ಕಾಕಂಬಿ, ಜೋನು ಬೆಲ್ಲ.

ಇಕ್ಷುರಸಕಾಠ ಇಕ್ಷು ರಸಕಾಠ (ಪುಂ) ಕಬ್ಬಿನ ಹಾಲಿನ ಪಾಕ, ಕಾಕಂಬಿ.

ಇಕ್ಷುವಲ್ಲಿ ಇಕ್ಷು ವಲ್ಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರಿ ನೆಲಗುಂಬಳ.

ಇಕ್ಷುಸಮುದ್ರ ಇಕ್ಷು ಸಮುದ್ರ (ಪುಂ) ಸಪ್ತ ಸಮುದ್ರಗಳ ಲ್ಲೊಂದು; ಲವಣ, ಇಕ್ಷು, ಸುರಾ, ಸರ್ಪಿಕ್, ದಧಿ, ಕ್ಷೀರ ಮತ್ತು ಜಲ ಇವು ಸಪ್ತ ಸಮುದ್ರಗಳು.

ಇಕ್ಷುಕು ಇಕ್ಷು ಕು (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ ವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಮನುಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಮಗ. [ಮನು ಚಕ್ರವರ್ತಿಗೆ ಇಕ್ಷುಕು, ನಾಭಾಗ, ಧೃಷ್ಟ, ಶರ್ಯಾತಿ ಮೊದಲಾದ ಒಂಭತ್ತು ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳು. ಈ ಇಕ್ಷುಕು ಚಕ್ರವರ್ತಿಯೇ ಆಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ದೊರೆ.] (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 2. ಇಕ್ಷುಕು ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ದೊರೆಗಳು. "ಇಕ್ಷುಕುಣಾ ದುರಾಪೇಷ್ಯ ತ್ವದಧೀನಾ ಹಿ ಸಿದ್ಧಯಃ" ರಘುಂ ೧-೭೨.

ಇಡ್ - ಅಧ್ಯಯನ (ಅದಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) ಅಧಿ ಪೂರ್ವಕವಾಗಿ ಇದರ ಪ್ರಯೋಗ.

ಲಡ್ - ಅಧೀತೆ ಅಧೀಯತೆ ಅಧೀಯತೆ.

ಲಿಡ್ - ಅಧಿಜಗೇ ಅಧಿಜಗಾತೆ ಅಧಿಜಗಿರೇ.

ಲುಡ್ - ಅಧ್ಯೇತಾ. ಲಡ್ - ಅಧ್ಯೇಷ್ಯತೆ.

ಲೋಡ್ - ಅಧೀತಾಮ್ ಅಧೀಯತಾಮ್ ಅಧೀಯತಾಮ್.

ಲಡ್ - ಅಧ್ಯೇತ ಅಧ್ಯೇಯತಾಮ್ ಅಧ್ಯೇಯತ.

ವಿಧಿಲಿಡ್ - ಅಧೀಯತೆ ಅಧೀಯತಾಮ್ ಅಧೀಯತೆ.

ಆಶೀಲಿಡ್ - ಅಧ್ಯೇಷಿಷ್ಠ ಅಧ್ಯೇಷಿಷ್ಠಾಸ್ತಾಮ್ ಅಧ್ಯೇಷಿರನ್.

ಲುಡ್ - ಗಾಡಾदेशपक्षे - ಅಧ್ಯಗೀಷ್ಠ ಅಧ್ಯಗೀಷಾತಾಮ್ ಅಧ್ಯಗೀಷತ.

ಗಾಡಭಾವपक्षे - ಅಧ್ಯೇಷ್ಠ ಅಧ್ಯೇಷಾತಾಮ್ ಅಧ್ಯೇಷತ.

ಲಡ್ - ಗಾಡಪಕ್ಷೇ - ಅಧ್ಯಗೀಷ್ಯತ.

ಗಾಡಭಾವपक्षೇ - ಅಧ್ಯೇಷ್ಯತ, ಅಧ್ಯೇಷ್ಯತಾಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕರ್ಮणि :- ಅಧೀಯತೆ. ಅಧಿಜಗೇ. ಅಧ್ಯಾಯಿತಾ, ಅಧ್ಯೇತಾ. ಅಧ್ಯಾಯಿಷ್ಯತೆ, ಅಧ್ಯೇಷ್ಯತೆ. ಅಧೀಯತಾಮ್. ಅಧ್ಯೇಯತ. ಅಧೀಯತ. ಅಧ್ಯಾಯಿಷಿಷ್ಠ. ಅಧ್ಯಗಾಯಿ, ಅಧ್ಯಾಯಿ. ಅಧ್ಯಗಾಯಿಷ್ಯತ, ಅಧ್ಯಗಾಸ್ಯತ. ಅಧ್ಯಾಯಿಷ್ಯತ, ಅಧ್ಯೇಷ್ಯತ.

ಕೃತ್ಸು :- ಅಧ್ಯೇತವ್ಯಮ್. ಕೃಚ್ಛಾದಧ್ಯಯನೇ ಅಧೀಯಾನಃ. ಅಕೃಚ್ಛಾದಧ್ಯಯನೇ ಅಧೀಯನ್. ಅಧ್ಯೇಷ್ಯಮಾಣಃ. ಅಧೀತಮ್. ಅಧ್ಯಯನಮ್. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಇಕ್ಷು ಇಂಗ (ಪುಂ) 1. ಇಂಗಿತ, ಅಭಿಪ್ರಾಯ ಸೂಚನೆ, ಸಂಜ್ಞೆ, ಸನ್ನೆ. 2. ಚಲನೆ, ಅಲುಗಾಟ. ಇಗಿ (ಗತೌ) "ಇಗ್" (೩-೩-೧೮). 3. ಜ್ಞಾನ. (ವಿಂ) 4. ಚಲಿ ಸುವ, ಸಂಚರಿಸುವ, ಚಲನಸ್ವಭಾವದ. ಇಕ್ಷುತಿ - ಇಗಿ (ಗತೌ) "ಇಕ್" (೩-೧-೧೩೪). 5. ಅದ್ಭುತ ವಾದ, ಅಶ್ಚರ್ಯಕರವಾದ. "ಇಕ್ಷುಃ ಸ್ಯಾದ್ಭುತೇ ಜ್ಞಾನೇ ಜಕ್ಷುಮೇಕ್ಷಿತಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ.

ಇಕ್ಷುನ ಇಂಗನ (ನಂ) 1. ಇಂಗಿತ, ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಚೇಷ್ಟೆ. 2. ಚಲನ, ಅಲುಗಾಟ. 3. ಜ್ಞಾನ. ಇಗಿ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫).

ಇಕ್ಷುತ ಇಂಗಿತ (ನಂ) 1. ಅಭಿಪ್ರಾಯ ಸೂಚನೆ, ಸನ್ನೆ, ಸಂಜ್ಞೆ. 2. ಅಭಿಪ್ರಾಯ, ಮನೋಭಾವ. ಇಗಿ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪). "ತಸ್ಯ ಸಂವೃತ-ಮನ್ತ್ರಸ್ಯ ಗುಡಾಕಾರೇಕ್ಷಿತಸ್ಯ ಚ" ರಘುಂ ೧-೨೦. 3. ಚಲನೆ, ಸ್ಪಂದನೆ, ಅಲುಗಾಟ. (ವಿಂ) 4. ಚಲಿಸಿದ, ಅಲುಗಾಡಿದ. ಇಗಿ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨).

ಇಕ್ಷುತಜ ಇಂಗಿತಜ್ಞ (ವಿಂ) ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ತಿಳಿದ, ಇತರರ ಮನೋಭಾವವನ್ನು ಅರಿತ. ಇಕ್ಷುತಂ ಜಾನಾತಿ - ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩). "ನ ಹೀಕ್ಷುತಜೋಽ-ವಸರೇಽವಸೀದತಿ" ಕಿರಾಂ ೪-೨೦.

ಇಕ್ಷುದೀ ಇಂಗುದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಾರೆ ಗಿಡ, ಇಂಗದ ಗಿಡ. ಇಕ್ಷುಃ ರೋಗಃ, ತಂ ಛತಿ - ದೋ (ಅವಲಕ್ಷಣೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩). ಪೃಷಂ. "ಪ್ರಸ್ತಿಗ್ಧಾಃ ಕ್ವಚಿದಿಕ್ಷುದೀಫಲಮಿದಃ ಸುಖ್ಯಂತ ಏವೋಪಲಾಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೧೩.



**ಇಚ್ಛಾಕ ಇಚ್ಛುಕ** (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಇಚ್ಛೆಯುಳ್ಳ, ಬಯಕೆಯುಳ್ಳ. ಇಚ್ಛಾ ಅಸ್ತಿಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"।

**ಇಚ್ಛಾತ್ ಇಚ್ಛುತ್** (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಬಯಸುವ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಇಚ್ಛು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಠಿಣಾ ವಿಧಾತಾಯ ವಿಧಾತುಮಿಚ್ಛತೋ ರಹಸ್ಯನುಜ್ಞಾಮಧಿಗಮ್ಯ ಭೂತಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೩। "ನ ಮಹಾನಪಿ ಭೂತಿಮಿಚ್ಛತಾ ಕೂಸಂಪತ್ಪ್ರವಣಃ ಪರಿಕ್ಷಯಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೮।

**ಇಚ್ಛಾ ಇಚ್ಛಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ, ಬಯಕೆ. ಇಚ್ಛು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಃ" (೩-೩-೧೦೧)। "ತಥಾಪಿ ಕಸ್ಯಾಣಕರೀ ಗಿರಂ ತೇ ಮಾಂ ಶ್ರೋತುಮಿಚ್ಛಾ ಮುಖರೀಕರೋತಿ" ಕಿರಾಂ ೩-೯।

**ಇಚ್ಛಾನಿವೃತ್ತಿ ಇಚ್ಛಾನಿವೃತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಸೆಯನ್ನು ಹೊರೆಯುವುದು, ಬಯಕೆಯನ್ನು ತಡೆಯುವುದು, ಪ್ರಾಪಂಚಿಕ ಸೌಖ್ಯವನ್ನು ಬಿಡುವುದು. ಇಚ್ಛಾಯಾ ನಿವೃತ್ತಿಃ।

**ಇಚ್ಛಾವತ್ ಇಚ್ಛಾವತ್** (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, ಬಯಕೆಯುಳ್ಳ. ಇಚ್ಛಾಸ್ತಸ್ಯ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಠೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ವತೀ -ವತಿಃ. ಕಾಮುಕೆ, ಪುರುಷನ ಸಂಗಮಾಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು.

**ಇಚ್ಛಾವಸು ಇಚ್ಛಾವಸು** (ಪುಂ) 1. ಕುಬೇರ. (ವಿಂ) 2. ಅಪೇಕ್ಷಾನುಸಾರ ಧನಸಂಪತ್ತುಳ್ಳವನು.

**ಇಚ್ಛಾಲ ಇಚ್ಛಾಲ** (ಪುಂ) ನೀರು ಹಲಸಿನ ಮರ. [ಇದು ನೀರಿನ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯುವುದು.]

**ಇಚ್ಛಾ ಇಚ್ಛಾ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಇಚ್ಛಾಸ್ತಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭)। "ಯಜ್ಞ ಇಚ್ಛೋ ಮಹೇಜ್ಯಶ್ಚ" ವಿಂ ಸಂ। 2. ಬೃಹಸ್ಪತ್ಯಾಚಾರ್ಯರು, ದೇವತೆಗಳ ಗುರು. 3. ಪುಷ್ಯ ನಕ್ಷತ್ರ. 4. ಗುರು, ಉಪಾಧ್ಯಾಯ. (ವಿಂ) 5. ಪೂಜ್ಯನಾದ, ಪೂಜಾರ್ಹನಾದ.

**ಇಚ್ಛಾ ಇಚ್ಛಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯಜ್ಞ, ಯಾಗ. ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಕಪ್" (೩-೩-೯೮)। ಸಂಪ್ರಸಾರಣಮ್ (೬-೧-೧೫)। "ಸೋಹ್ಮಿಜ್ಯಾವಿಶುದ್ಧಾತ್ಮಾ ಪ್ರಜಾಲೋಪ-ನಿಮಿಲಿತಃ" ರಘುಂ ೧-೬೮। 2. ದಾನ. 3. ಪೂಜೆ. 4. ಸಂಗಮ, ಸೇರುವುದು. "ಇಚ್ಛಾ ದಾನೇಶ್ವರೇಶ್ವರೀಯಾಂ ಸಂಗಮೇ ಸ್ತ್ರೀ ಗುರೋ ತ್ರಿಷು" ಮೇದಿಂ। 5. ಪ್ರತಿಮೆ, ವಿಗ್ರಹ.

**ಇಚ್ಛಾಶೀಲ ಇಚ್ಛಾಶೀಲ** (ವಿಂ) ಯಾಗ ಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಇಚ್ಛಾ ಶೀಲಮಸ್ಯ। "ಇಚ್ಛಾಶೀಲೋ ಶಾಯಜ್ಞಕಃ" ಅಮಂ।

**ಇಚ್ಛಾಕ ಇಂಚಾಕ** (ಪುಂ) ಸೇಗಡಿ, ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಸಣ್ಣ ಮೀನು.

**ಇಚ್ಛರ ಇಚ್ಛಿರ** (ಪುಂ) ಗೂಳಿ, ಹೋರಿ. ಇಚ್ಛು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೧೨೮)। ಇಚ್ಛಾ ಇಚ್ಛಯಾ ಚರತಿ — ಚರ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಅಡ್ಡಿ ಆತಂಕವಿಲ್ಲದೆ ತಿರುಗಾಡುವ ಗೂಳಿ.

**ಇಡಾ ಇಡಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಸು, ಗೋವು, ಆಕಳು. 2. ಭೂಮಿ. 3. ವಾಕ್ಕು, ಮಾತು. 4. ಬುಧನ ಪತ್ನಿ. ಇಲ (ಉತ್ಕೇಪೇ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫)। "ಇಡಾ ತು ಬುಧಯೋಷಿತಿ। ಸೌರಭೇಯಾಂ ಚ ವಚನೇ ವಸುಮತ್ಯಾಮಪಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ। 5. ದೇಹದೊಳಗಿನ ಒಂದು ನಾಡಿ. [ದೇಹದಲ್ಲಿರುವ ಅಸಂಖ್ಯಾತವಾದ ನಾಡಿಗಳಲ್ಲಿ ಇಡಾ ಎಂಬುದು ಪ್ರಧಾನವಾದ 16 ನಾಡಿಗಳಲ್ಲೊಂದು.]

"ಇಡಾ ಚ ಪಿಙ್ಗಲಾ ಚೈವ ಸುಷುಮ್ನಾಚಾಪರಾ ಸ್ಮೃತಾ। ಗಾಂಧಾರಿ ಹಸ್ತಜಿಹ್ವಾ ಚ ಪೂಷಾ ವಸುವಶಾ ತಥಾ। ಅಲಮ್ಬುಷಾ ಕುಹೂಶ್ಚೈವ ಶಾಹ್ವಿನಿ ದಶಮಿ ಸ್ಮೃತಾ। ತಾಲ್ವಜಿಹ್ವೇಭಜಿಹ್ವಾ ಚ ವಿಜಯಾ ಕಾಮದಾ ಪರಾ। ಅಮೃತಾ ಬಹುಲಾ ನಾಮ ನಾಡಯೋ ವಾಯುಸಮೀರಿತಾಃ" ಇವು ಹದಿನಾರು ಪ್ರಧಾನನಾಡಿಗಳು. 6. ಸ್ವರ್ಗ. "ಗೋಭೂನಾಡೀಶ್ವಾಕ್ಷಿವಿಡಾ" ವೈಜಂ। 7. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

**ಇಡಾಚಿಕಾ ಇಡಾಚಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಣಜದ ಹುಳ.

**ಇನ್ — ಗತೌ** (ಅದಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) 1. ಹೋಗು. 2. ಸೇರು, ತಲುಪು. 3. ಪಡೆ, ಹೊಂದು.

|       |       |       |       |
|-------|-------|-------|-------|
| ಲಟ್—  | ಏತಿ   | ಇತಃ   | ಯಂತಿ। |
| ಲಿಟ್— | ಇಯಾಯ  | ಇಯತುಃ | ಇಯುಃ। |
|       | ಇಯಯಿಥ | ಇಯಥುಃ | ಇಯ।   |
|       | ಇಯೇಥ  |       |       |

|       |        |        |          |
|-------|--------|--------|----------|
| ಲೃಟ್— | ಏತಾ    | ಏತಾರೀ  | ಏತಾರಃ।   |
| ಲೃಟ್— | ಏಷ್ಯತಿ | ಏಷ್ಯತಃ | ಏಷ್ಯಂತಿ। |
| ಲೃಟ್— | ಏತು    | ಇತಾಮ್  | ಯಂತು।    |
| ಲೃಟ್— | ಇತಾತ್  |        |          |

|  |       |      |       |
|--|-------|------|-------|
|  | ಇಹಿ   | ಇತಮ್ | ಇತ।   |
|  | ಇತಾತ್ |      |       |
|  | ಅಯಾನಿ | ಅಯಾವ | ಅಯಾಮ। |

|      |      |       |       |
|------|------|-------|-------|
| ಲಙ್— | ಏತ್  | ಏತಾಮ್ | ಆಯನ್। |
|      | ಏಃ   | ಏತಮ್  | ಏತ।   |
|      | ಆಯಮ್ | ಏವ    | ಏಮ।   |

|           |        |           |         |
|-----------|--------|-----------|---------|
| ವಿಧಿಲಿಙ್— | ಇಯಾತ್  | ಇಯಾತಾಮ್   | ಇಯುಃ।   |
| ಅಶೀಲಿಙ್—  | ಇಯಾತ್  | ಇಯಾಸ್ತಾಮ್ | ಇಯಾಸುಃ। |
| ಲಙ್—      | ಅಗಾತ್  | ಅಗಾತಾಮ್   | ಅಗುಃ।   |
| ಲಙ್—      | ಏಷ್ಯತ್ | ಏಷ್ಯತಾಮ್  | ಏಷ್ಯನ್। |



ಕರ್ಮಣಿ:—ಇಯೇ. ಇಯೇ. ಆಯಿತಾ, ಏತಾ. ಆಯಿಷ್ಯತೇ, ಆಯಿಷ್ಯತೇ. ಇಯತಾಮ್. ಆಯತ, ಆಯತಾಮ್, ಆಯಂತ. ಇಯೇತ, ಇಯೇತಾಮ್. ಆಯಿಷಿಷ್ಠ, ಆಯಿಷಿಷ್ಠ. ಆಯಾಪಿ, ಆಯಾಪಿಷಾತಾಮ್. ಆಯಿಷ್ಯತ, ಆಯಿಷ್ಯತ.

ಗಿಚಿ:—ಅಬೋಧನಾರ್ಥೆ ಗಮ್ಯಾದೇಶ:। ಗಮಯತಿ, -ತೇ। ಗಮಯಾಚ್ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಗಮಯಿತಾ, -ಸಿ, -ಸೇ। ಗಮಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ। ಗಮಯತು, -ತಾಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ. ಬೋಧನಾರ್ಥೆ-ಪ್ರತ್ಯಾಯಯತಿ, -ತೇ। ಪ್ರತ್ಯಾಯಯಾಚ್ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ, -ಆಸ, -ಬಭೂವ। ಪ್ರತ್ಯಾಯಯಿತಾ, -ಸಿ, -ಸೇ। ಪ್ರತ್ಯಾಯಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ। ಪ್ರತ್ಯಾಯಯತು, -ತಾಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ:—ಅಬೋಧನಾರ್ಥೆ ಗಮ್ಯಾದೇಶ:-ಜಿಗಮಿಷತಿ। ಜಿಗಮಿಷಾಚ್ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಜಿಗಮಿಷಿತಾ। ಜಿಗಮಿಷಿಷ್ಯತಿ। ಜಿಗಮಿಷತು ಇತ್ಯಾದಿ. ಬೋಧನಾರ್ಥೆ ಪ್ರತಿಷಿಪತಿ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:—ಆಯತಾಮ್. ಆಯನೀಯಮ್. ಆಯಮ್. ಇತ:। ಇತವಾನ್. ಯನ್. ಯತೀ. ಆಯನ್. ಆಯತೀ ಆಯಂತೀ. ಆಯಮ್. ಇತಮ್. ಆಯನಮ್. ಇತ್ವಾ।

ಪ್ರಯತ್ನಾತ್ ಸನ್ನಂತಾನ್ವ ಕೃತ್ಸು:—ಗಮಯಿತವ್ಯಮ್ ಜಿಗಮಿಷಿತವ್ಯಮ್. ಗಮನೀಯಮ್ ಜಿಗಮಿಷಣೀಯಮ್. ಗಮ್ಯ: ಜಿಗಮಿಷ್ಯ:। ಗಮಿತ: ಜಿಗಮಿಷಿತ:। ಗಮಿತವಾನ್ ಜಿಗಮಿಷಿತವಾನ್. ಗಮಯನ್ ಜಿಗಮಿಷನ್. ಗಮಯಂತೀ ಜಿಗಮಿಷಂತೀ. ಗಮಯಮಾನ್: ಸಂಜಿಗಾಂಸಮಾನ್:। ಗಮಿಷ್ಯನ್ ಜಿಗಮಿಷಿಷ್ಯನ್. ಗಮಯಿಷ್ಯಮಾನ್: ಸಂಜಿಗಾಂಸಿಷ್ಯಮಾನ್:। ಗಮಯಿತುಮ್ ಜಿಗಮಿಷಿತುಮ್. ಗಮಿತಮ್ ಜಿಗಮಿಷಿತಮ್. ಗಮನಮ್ ಜಿಗಮಿಷಣಮ್. ಗಮಯಿತ್ವಾ ಜಿಗಮಿಷಿತ್ವಾ। ಆಗಮಯ್ಯ ಆಜಿಗಮಿಷ್ಯ. ಇತ್ಯಾದಿ. "ಅಪಿಧಾನಿ ಸ ಧರ್ಮಾತ್ಮಾ ಇಯಾನ್ಮೇ ದರ್ಶನಂ ರಹ:" ಭಾಂ. "ಶಶಿನಂ ಪುನರೇತಿ ಶರ್ವರೀ" ರಘುಂ ೮-೫೬. "ಇಯುರ್ಭರಣಜ-ಮುನೇನಿಕೇತಮ್" ಭಟ್ಟಂ ೩-೪೦।

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಅತಿ+ಇನ್ = ಅತೀತಿ। 1. ಅತಿಕ್ರಮಿಸು, ಮಾರು. "ಇಂದ್ರನೋದಧಿಗಮ್ಯಗ್ನಿಃಸ್ವಿಷಾ ನಾತೀತಿ ಪೂಷಣಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೨೩. "ಅತೀತ್ಯ ವಾಚಾಂ ಮನಸಾಂ ಚ ಗೋಚರಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೮-೪೧. 2. ನಾಶ, ಧ್ವಂಸ. ಅತೀಯ:। 3. (ಕಾಲ) ಕಳೆದುಹೋಗು.

(2) ಅಧಿ+ಇನ್ = ಜ್ಞಾನಹೊಂದು, ತಿಳಿವಳಿಕೆ ಹೊಂದು, ಪಡೆದು. "ಗ್ರನ್ಥಾನಧೀತ್ಯ ವ್ಯಾಕರ್ತೃಮಿತಿ ದುರ್ಮೇಧಸೋಽಪ್ಯಲಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೨೬।

(3) ಅನು+ಇನ್ = ಅನೇತಿ। ಅನುಸರಿಸು, ಹಿಂಬಾ-ರಿಸು. "ಅನೇತುಕಾಮೋಽವಮತಾಃಕುಶಗ್ರಹ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೧೬। ಒಂದು ವಂಶದಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬರನ್ನೊಬ್ಬರು ಅನುಸರಿಸಿ ಹುಟ್ಟು-ವುದರಿಂದ "ಅನ್ವಯ:" ಎಂದು ವಂಶಕ್ಕೆ ಹೆಸರಾಯಿತು. ಅನ್ವೀಯತೇ ಇತ್ಯನ್ವಯ:। "ತದನ್ವಯೇ ಶುದ್ಧಿಮತಿ ಪ್ರಸೂತ: ಶುದ್ಧಿ-ಮತ್ತರ:" ರಘುಂ ೧-೧೨. "ತಮನ್ವಿಯಾಯ ತ್ರಿಪುರಾಂತಕಾತ್ಮಜಮ್" ಕುಮಾರಂ ೧೪-೯।

(4) ಅಪ+ಇನ್ = ಅಪೇತಿ। 1. ಹೊರಡು, ಹಿಂತಿರುಗಿ ಹೋಗು. "ಅಪೇಹಿ ಅಪಿಂಡಿತೇ. ಕುತೋಽಪಿ ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪಸ್ಯ ಪ್ರಸಾದಸ್ಯ ವಾ ಕಾರಣಮ್" ರತ್ನಾಂ ೩. 2. ಕಳೆದು ಹೋಗು, ದೂರವಾಗು. "ಅಪೇತಸಮ್ಮೋಹಮಿವಾತ್ಮವೇದಿನಮ್" ಯಾದಂ ೧೪-೬೫. 3. ನಾಶವಾಗು, ಲಯಹೊಂದು.

(5) ಅಭಿ+ಇನ್ = ಅಭೀತಿ। 1. ಎದುರಾಗಿಹೋಗು. "ಅಭೀತಿ ಭಾನುರ್ದಯಾದ್ರಿಮಸಹಿತೇಜಾ:" ಯಾದಂ ೧೯-೪೧. 2. ಹೊಂದು, ಪಡೆ. "ಅಭೀತಿ ಭಸ್ಮಪರಿಪಾಂಡುರಿಸ್ಮರಾರೇ:" ಮಾಘಂ ೪-೨೮।

(6) ಅಭಿ+ಆ+ಇನ್ = ಎದುರಾಗಿ ಬಾ. "ಅಭ್ಯಾ-ಯತ: ಸಂತತಧೂಮಧೂಮಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೬-೬।

(7) ಅಭಿ+ಉ+ಇನ್ = ಅಭ್ಯುದಯ:। ಎಳೆಗೆಹೊಂದು. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದು.

(8) ಅಭಿ+ಉ+ಇನ್ = 1. ಎದುರಾಗಿ ಸವಿಾಪಕ್ಕೆ ಬಾ. 2. ಸಮ್ಮತಿಸು, ಒಪ್ಪಿಗೆಕೊಡು. ಅಭ್ಯುಪೇತ್ಯ। 3. ಹೊಂದು, ಪಡೆ. "ಅಭ್ಯುಪೇತಬಡಿಸಾಮಿಷಣೀತಿಮ್" ಯಾದಂ ೨೧-೨೧।

(9) ಅವ+ಇನ್ = ಅವೇತಿ। ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳು. "ಅವೇಹಿ ಮಾಂ ಕಿಂಕರಮಷ್ಟಮೂತೇ:" ರಘುಂ ೨-೩೫।

(10) ಆ+ಇನ್ = ಬಾ, ಆಗಮಿಸು. "ದ್ವಿರದಾನಿವ ದಿಗ್ವಿಭಾವಿತಾಂಶ್ಚತುರಸ್ತೋನಿವೋನಿವಾಯತ:" ಕಿರಾಂ ೨-೨೩।

(11) ಉ+ಇನ್ = ಹುಟ್ಟು, ಆವಿರ್ಭವಿಸು. "ಅವಿಮಿಶ್ರ ನಿಶಾಕೃತಂ ತಮ: ಪ್ರಭಯಾ ನಾಂಶುಮತಾಪ್ಯುದೀಯತೇ" ಕಿರಾಂ ೨-೩೬।

(12) ಉ+ಇನ್ = ಉಪೇತಿ। 1. ಸವಿಾಪಕ್ಕೆ ಹೋಗು. "ತದುಪೇತ್ಯ ಮಾಸ್ಮ ತಮುಪಾಲಮಥಾ:" ಮಾಘಂ ೯-೬೦। 2. ಆಗಮಿಸು, ಬಾ. "ಉಪೇತ್ಯ ಚ ಸ್ವನಗುರೂಪಕ್ಷಮಾಸ್ತಂ ದಿವಸ್ವಿಷಾ ಕಪಿಶಿತದೂರದಿಡ್ಢಮುಖ:" ಮಾಘಂ ೧೭-೨೮। 3. ಹೊಂದು, ಪಡೆ. "ಉಪೇತಿ ಸತ್ಯಂ ಪರಿಣಾಮರಮ್ಯತಾ" ಕಿರಾಂ ೪-೨೨. 4. ಸವಿಾಪಕ್ಕೆ ಬಾ.

(13) ಪರಿ+ಇನ್ = ಪರೀತಿ। 1. ವ್ಯಾಪಿಸು, ಕೂಡಿ ಕೊಂಡಿರು. "ಪರೀತಮಾರಾತ್ರಪ್ರತಿಹಾರಪಾಲೇ:" ಯಾದಂ ೧೩-೧೫।



2. ಸುತ್ತಲೂ ವ್ಯಾಪಿಸು. "ಜನಾಕೀರ್ಣಂ ಮನ್ಯೇ ಹುತವಹಪರೀತಂ ಗೃಹಮಿವ" ಶಾಕುಂ ೪-೧೦।

(14) ಪ್ರ + ಇನ್ = ಪರಲೋಕಹೋಂದು.

(15) ಅಭಿ + ಪ್ರ + ಇನ್ = ಅಭಿಪ್ರೇತಿ। ಅಪೇಕ್ಷಿಸು, ಇಷ್ಟಪಡು. "ಕರ್ಮಣಾ ಯಮಭಿಪ್ರೇತಿ ಸ" ಸಂಪ್ರದಾನಮ್" ಪಾಂ ಸುಂ ೧-೪-೩೨।

(16) ಪ್ರತಿ + ಇನ್ = ಪ್ರತೀತಿ। 1. ಹಿಂತಿರುಗು. "ಇತ್ಯಂ ಪ್ರಯುಜ್ಯಾಶಿಷಮಗ್ರಜನ್ಮಾ ರಾಜೇ ಪ್ರತೀಯಾಯ ಗುರೋಃ ಸಕಾಶಮ್" ರಘುಂ ೪-೩೪। 2. ಸಂತೋಷಹೋಂದು, ಪ್ರೀತನಾಗು. "ತಥೇತಿ ತಸ್ಯಾವಿತಥಂ ಪ್ರತೀತಃ" ರಘುಂ ೪-೨೬। "ಆಜ-ಗಾಮಾಶ್ರಮಂ ಜಿಷ್ಣೋಃ ಪ್ರತೀತಃ ಪಾಕಶಾಸನಃ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೧। 3. ತಿಳಿವಳಿಕೆಹೋಂದು, ಜ್ಞಾನಸಂಪಾದಿಸು. "ಪ್ರತೀತ್ಯ ಸತ್ರಾಜಿತ ಎತದಪ್ರಿಯಮ್" ಯಾದಂ ೧೪-೩। "ಪ್ರತ್ಯವೇಕ್ಷಣಪದಂ ಪ್ರತೀಹಿ ಮಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೭-೧೧೭। 4. ವಿಶ್ವಾಸವಿಡು, ನಂಬಿಕೆಯಿಡು. "ಬಲವದಪಿ ಶಿಕ್ಷಿತಾನಾಮಾತ್ಮನ್ಯಪ್ರತ್ಯಯಂ ವೇತಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೩। 5. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಹೋಂದು. ಪ್ರತೀತಃ।

(17) ಪ್ರತಿ + ತಡ್ + ಇನ್ = ಪ್ರತಿದೇತಿ। ಎದುರುಗೊಳ್ಳು. "ಸಪರ್ಯಯಾ ಪ್ರತಿದಿಯಾಯ ಪಾರ್ವತೀ" ಕುಮಾಂ ೪-೩೧।

(18) ವಿ + ಪರಿ + ಇನ್ = ವಿಪರ್ಯಯಃ। 1. ವ್ಯತ್ಯಾಸಹೋಂದು. 2. ಭ್ರಾಂತಿಹೋಂದು.

(19) ಸಮ್ + ಅನ್ + ಇನ್ = ಸಮನ್ವಯಃ। ಸಂಬಂಧಹೋಂದು, ಸರಿಯಾದ ಸಂಬಂಧಪಡೆ.

(20) ಸಮ್ + ಅವ + ಇನ್ = ಸಮವಾಯಃ। ಸಂಬಂಧ.

(21) ಸಮ್ + ಪ್ರತಿ + ಇನ್ = ಸಂಪ್ರತ್ಯಯಃ। ವಿಶ್ವಾಸ, ನಂಬಿಕೆ. ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಇತ್ಯ** ಇಂದ್ರ (ಪುಂ ಧಿವಂ) ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿ ಕುಂಡದಿಂದ ಕಾದಿರುವ ತಟ್ಟಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ತೆಗೆಯಲು ಇಕ್ಕಳದಂತೆ ಮಾಡಿರುವ ಸಾಧನ.

**ಇತ್** ಇತ್ (ವಿಂ) 1. ಹೋಗುವವನು. ಏತಿ ಗಚ್ಛತಿ - ಇನ್ (ಗತೌ) "ಕ್ರಿಪ್" (೩-೨-೧೭೮)। 2. (ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ) ಇತ್ ಎಂಬ ಒಂದು ಸಂಜ್ಞೆ. 3. ಇತ್ ಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ ವರ್ಣ.

**ಇತ** ಇತ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಇನ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಸ್ಮರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನೆನಪಲ್ಪಟ್ಟ. "ಇತಂ ಸ್ಮರತೇ ಗತೇ ತ್ರಿಷು" ಮೇದಿಂ। 3. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ತಲುಪಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೇರಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಹೋಗುವ, ನಡೆಯುವ. 6. ಹೊಂದಿರುವ, ಪಡೆದಿರುವ. ಇನ್ ಕರ್ಮ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)।

"ರಮಣೇನ ರಮಣ್ಯಚಿರಾಂಶುಲತಾರುಚಿರಜ್ಞಮನೀಯತ ರಾಗಮಿತಾ" ಮಾಘಂ ೬-೭೧। 7. ತಿಳಿದಿರುವ. (ನಂ) 8. ಗತಿ, ಗಮನ. 9. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ಇನ್ ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। 10. ಸ್ಮರಣೆ, ನೆನಪು. ಇಕ್ (ಸ್ಮರಣೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)।

**ಇತರ** ಇತರ (ವಿಂ) 1. ಬೇರೆಯವನಾದ, ಬೇರೆಯಾದ. 2. ನೀಚ, ಪಾಪುರ, ಅಧಮ, ಕೆಳದರ್ಜೆಯ. ಇನಾ ಕಾಮೇನ ತರತಿ - ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಇತರಾನಪಿ ತಾದೃಶಾನಿಹೇತಾನಾಂ ಚ ಗೋಪೋ ನ ಚ ಯಾದವ ಸ್ಸಮರ್ಚ್ಯಃ" ಯಾದಂ ೧೪-೪೯। "ಇತರ ಇವ ಪರಿಭೂಯ ಜ್ಞಾನಮ್, ಅವಿಗಣಯ್ಯ ತಪಃಪ್ರಭಾವಮ್, ತನ್ಮೂಲ್ಯ ಗಾಂಭೀರ್ಯಮ್ ಮನ್ಮಥೇನ ಜಡೀಕೃತಃ" ಕಾದಂ।

**ಇತರೇತರ** ಇತರೇತರ (ವಿಂ) ಅನ್ಯೋನ್ಯವಾಗಿ, ಪರಸ್ಪರ, ಒಬ್ಬರಿಗೊಬ್ಬರು, ಒಂದಕ್ಕೊಂದು. "ಇತರೇತರಾನಭಿ-ಭವೇನ ಮಗಾಸ್ತಮುಪಾಸತೇ ಗುರಮಿವಾಂತಸದಃ" ಕಿರಾಂ ೬-೩೪। "ಇತರೇತರಸಂನಿಕರ್ಮಜನ್ಮಾ" ಮಾಘಂ ೨೦-೨೬।

**ಇತರೇತರಯೋಗ** ಇತರೇತರಯೋಗ (ಪುಂ) 1. ಇತರೇತರಯೋಗ ದ್ವಂದ್ವ, ದ್ವಂದ್ವ ಸಮಾಸಗಳಲ್ಲೊಂದು ಭೇದ. ದ್ವಂದ್ವ ಸಮಾಸವು ಇತರೇತರಯೋಗ ಮತ್ತು ಸಮಾಹಾರಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಸಮಾಸಘಟಕ ಪದಗಳಿಗೆ ಎಲ್ಲಕ್ಕೂ ಕ್ರಿಯೆಯಲ್ಲಿ ಅನ್ವಯವಿರುವುದು ಇತರೇತರಯೋಗದ್ದಂದ್ವ. "ಧವಸ್ತದಿರೌ ಛಿನ್ದಿ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಧವ ಮತ್ತು ಛದಿರ ಪದಗಳೆರಡಕ್ಕೂ ಭೇದನ ಕ್ರಿಯೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯದಿಂದ ಅನ್ವಯವಿರುವುದರಿಂದ ಇತರೇತರಯೋಗದ್ದಂದ್ವ ಸಮಾಸವು ಬಂದಿರುವುದು. 2. ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧ. "ಮೋದಿತಾಲಿರೀತರೇತರಯೋಗಾದನ್ಯತಾಮಭಜತಾತಿಶಯಂ ನು" ಮಾಘಂ ೧೦-೨೪।

**ಇತರೇತರಾಶ್ರಯ** ಇತರೇತರಾಶ್ರಯ (ಪುಂ) ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಶ್ರಯ ದೋಷ. [ವಿನರಕ್ತ "ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಶ್ರಯ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಇತರೇತರಯುಸ್** ಇತರೇತರಯುಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಬೇರೆ ದಿವಸದಲ್ಲಿ, ಮತ್ತೊಂದು ದಿವಸದಲ್ಲಿ. ಇತರ "ಏಘುಸ್" (೪-೩-೨೨)। ನಿಪಾಂ।

**ಇತಸ್** ಇತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಇಲ್ಲಿಂದ, ಇವನಿಂದ, ಇದರಿಂದ. ಇದಮ್ "ತಸಿಲ್" (೪-೩-೭)। "ಇಶ್" (೪-೩-೩)। "ಇತೌ ಗಮಿಷ್ಯಾಮ್ಯಥೇತಿ ವಾದಿನಿ ಚಾಲಾ ವಾಲಾ ಸ್ತನ-ಮಿತ್ರವತ್ಕಲಾ" ಕುಮಾಂ ೪-೮೪। 2. ಇದರಲ್ಲಿ, ಇವನಲ್ಲಿ, ಇಲ್ಲಿ, ಈ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ. ಇದಮ್ "ತಸಿಃ" (ವಾಂ ೪-೪-೪೪)।



“ಇತೋ ಹಿರಣ್ಯಪ್ರಮುಖೈಃ ಪ್ರಭುಕ್ತಾ ಶೋಣಾಧರೇ ಶೋಣಿತರಾಜಧಾನಿ”  
ಯಾದಂ ೧೮-೨೬।

ಇತಿ ಇತಿ (ಅವ್ಯಂ) ಇದು ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ  
ದ್ಯೋತಕವಾಗಿರುವುದು: 1. ಹೇತು, ಕಾರಣ.

“ಸೌಖ್ಯವೋಽಪಿ ಮದನೋದಾನಂ ಪ್ರಭಾತೇಽನುಪ್ರೇಷಿತ:। ತತ್ರ ಕಿಲ  
ಮಾಲತೀ ಗಮಿಷ್ಯತಿ। ತತೋಽನ್ಯೋನ್ಯದರ್ಶನಂ ಭವಿಷ್ಯತಿ”

ಮಾಲತೀಂ ೧। “ಶ್ವಸ್ತವಯಾ ಸುಖಸಂವಿತಿ: ಸ್ಮರಣೀಯಾ-  
ಧುನಾತನೀ। ಇತಿ ಸ್ವಪ್ನೋಪಮಾನ್ ಮತ್ವಾ ಕಾಮಾನ್ಮಾ ಗಾಸ್ತದಕ್ಷ-  
ತಾಮ್” ಕಿರಾಂ ೧೧-೩೪। 2. ಸ್ವರೂಪ; ಇದು

(1) ಶಬ್ದಸ್ವರೂಪ, (2) ಪ್ರಾತಿಪದಿಕಾರ್ಥ ಮತ್ತು  
(3) ವಾಕ್ಯಾರ್ಥಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ಉದಾ:

(1) “ದೈತ್ಯಶತ್ರುರिति ನಾಮ ಗೃಹ್ಯತೇ” ಯಾದಂ ೧೭-೧೧೯।  
(2) “ಚಯಸ್ವಿವಾಮಿತ್ಯವವಾರಿತಂ ಪುರಾ” ಮಾಘಂ ೧-೩।

(3) “ಷಡ್ಗುಣಾಃ ಶಕ್ತಯಸ್ತಿಸ್ತಿಸ್ತ: ಸಿದ್ಧಯಶ್ಚೋದಯಾಸ್ತ್ರಯ:। ಖ್ಯಾ-  
ನಧೀತ್ಯ ವ್ಯಾಕರ್ತುಮಿತಿ ದುರ್ಮೇಧಸೋಽಪ್ಯಲಮ್” ಮಾಘಂ ೨-೨೬।

3. ಪ್ರಕರಣ. “ಉದಿತೇಽನುದಿತೇ ಚೈವ ಸಮಯಾಘೃಷಿತೇ ತಥಾ।  
ಸರ್ವಥಾ ವರ್ತತೇ ಯಜ್ಞ: ಇತಿ ಯಂ ವೈದಿಕೀ ಶ್ರುತಿ:” ಮನುಂ ೨-೧೫।

4. ಹೀಗೆ, ಈ ರೀತಿಯಾಗಿ, ಈ ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ.  
“ವ್ಯಾಹೃತ್ಯ ಮರುತಾಂ ಪತ್ಯಾವಿತಿ ವಾಚಮವಸ್ಥಿತೇ” ಕಿರಾಂ

೧೧-೩೭। 5. ಮುಂದಿನ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ, ಮುಂದೆ ಹೇಳುವ  
ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ. “ರತ್ನಾಕರಂ ವೀಕ್ಷ್ಯ ಮಿಥ: ಸ ಜಾಯಾಂ

ರಾಮಾಭಿಧಾನೋ ಹರೀರೀತ್ಯುವಾಚ” ರಘುಂ ೧೩-೧। “ತಪಃ  
ಸಮಾಧೌ ಮುನೀರೀತ್ಯುವಾಚ” ಕಿರಾಂ ೩-೨೭। 6. ಪ್ರದರ್ಶನ,

ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವುದು. ಹರೀಶಬ್ದಸ್ಯ ಪ್ರಕಾಶ: ಇತಿ ಹರೀ।  
7. ನಿದರ್ಶನ. 8. ಅನುಕರಣ. 9. ಸಾನ್ನಿಧ್ಯ,

ಸಾಮೀಪ್ಯ. 10. ಆದಿ. 11. ಸಮಾಪ್ತಿ, ಕೊನೆ.  
12. ಅವಧಾರಣ. 13. ಪರಾಮರ್ಶ. “ಇತಿ ಸ್ವರೂಪೇ

ಸಾನ್ನಿಧ್ಯೇ ವಿವಕ್ಷಾನಿಯಮೇಽಪಿ ಚ। ಹೇತೌ ಪ್ರಕಾರಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ-  
ಪ್ರಕಾಶೋವವಧಾರಣೇ। ಏವಮರ್ಥೋ ಸಮಾಪ್ತೌ ಸ್ಯಾತ್” ಹೇಮಂ।

ಇತಿಕಥ ಇತಿ ಕಥ (ವಿಂ) ನಂಬಲನರ್ಹವಾದ ಮಾತ  
ನಾಡುವ, ಅಸತ್ಯ ನುಡಿಯುವ. ಇತಿಕಥಾ ಯಸ್ಯ।

ಇತಿಕಥಾ ಇತಿ ಕಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ ಮಾತು,  
ತಿಳುವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದೆ ಅಡುವ ಮಾತು.

ಇತಿಕರ್ತವ್ಯ ಇತಿ ಕರ್ತವ್ಯ (ವಿಂ) ಈ ರೀತಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ,  
ಒಂದು ನಿರ್ದಿಷ್ಟ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ.

ಇತಿಕರ್ತವ್ಯತಾ ಇತಿ ಕರ್ತವ್ಯತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಈ ರೀತಿ ಮಾಡ  
ಬೇಕಾಗಿರುವಿಕೆ, ನಿರ್ದಿಷ್ಟ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಮಾಡಬೇಕಾಗಿ

ರುವಿಕೆ.

ಇತಿವೃತ್ತ ಇತಿವೃತ್ತ (ನಂ) 1. ಕಥೆ, ಚರಿತ್ರೆ. 2. ಘಟನೆ,  
ನಡೆದ ಕಾರ್ಯ.

ಇತಿಹ ಇತಿಹ (ಅವ್ಯಂ) ಸಂಪ್ರದಾಯ, ಉಪದೇಶ  
ಪರಂಪರೆ. ಇತಿ ಉಂ ಹ ಕಿಲ। ಯಾರೂ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ

ವಾಗಿ ಕಾಣದೆ ಅಥವಾ ಅನುಭವಿಸದೆ ಇರುವ ಅದ್ಭುತ  
ವಾದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಹಿರಿಯರಿಂದ ಬಂದ ಕೇವಲ

ಉಪದೇಶ ಪರಂಪರೆ.

ಇತಿಹಾಸ ಇತಿಹಾಸ (ಪುಂ) 1. ಪುರಾತನ ಕಥೆಯನ್ನು  
ಹೇಳುವ ಭಾರತ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಂಥ. ಇತಿ ಹ ಪಾರಮರ್ಯಾಪ-

ದೇಶೇನ ಆಸ್ತೇಽಸ್ಮಿನ್। 2. ಪೂರ್ವಕಥೆ, ಹಿಂದಿನ ಚರಿತ್ರೆ,  
ಪುರಾಣ. 3. ಪುರಾಣದ ಪ್ರಮಾಣ, ಐತಿಹ್ಯ,

ಚರಿತ್ರೆಯ ವಿಷಯದಿಂದ ಮಾಡುವ ರುಜುವಾತು.

ಇತಿಹಾಸವಾದ ಇತಿಹಾಸವಾದ (ಪುಂ) ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ನಡೆದ  
ಕಥೆ, ಚರಿತ್ರೆಯ ಕಥೆ, ಆಖ್ಯಾಯಿಕೆ. “ಶಾಕುಂತಲಾದಿ-

ನಿತಿಹಾಸವಾದಾನ್” ಮಾಲತೀಂ ೩-೩।

ಇತ್ಯಮ್ ಇತ್ಯಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಈ ರೀತಿಯಾಗಿ, ಈ ಪ್ರಕಾರ  
ವಾಗಿ, ಹೀಗೆ. ಇದಮ್ “ಯಮು:” (೪-೩-೨೪)। “ಇತ್ಯಂ

ವಿಹೃತ್ಯ ವನಿತಾಭಿರುದಸ್ಯಮಾನ್ ಪೀನಸ್ತನೋಽಜಘನಸ್ಥಲ-  
ಶಾಲಿನೀಭಿಃ” ಕಿರಾಂ ೮-೫೫।

ಇತ್ಯಚ್ಚಾರಮ್ ಇತ್ಯಚ್ಚಾರಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಈ ರೀತಿಯಾಗಿ.  
ಇತ್ಯಮ್ “ಗಮುಲ್” (೩-೪-೨೭)। ಇತ್ಯಚ್ಚಾರಂ ಭುಕ್ತೇ ಇತ್ಯಂ

ಭುಕ್ತೇ ಇತ್ಯರ್ಥ:। ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಇತ್ಯಮ್ಭಾವ ಇತ್ಯಮ್ಭಾವ (ಪುಂ) ಈ ರೀತಿಯನ್ನು ಹೊಂದು  
ವಿಕೆ, ಈ ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ ಇರುವಿಕೆ. ಇತ್ಯಂ ಭಾವ: ಪ್ರಾಪ್ತಿ:-

ಮು (ಪ್ರಾತೌ) “ಯತ್” (೩-೩-೧೮)।

ಇತ್ಯಮ್ಭೂತ ಇತ್ಯಮ್ಭೂತ (ವಿಂ) ಈ ಪ್ರಕಾರವನ್ನು ಹೊಂದಿದ,  
ಈ ರೀತಿಯಾಗಿರುವ. “ನನು ಮುತಿಭಿರಪ್ತಾಭಿರೀತ್ಯಮ್ಭೂತೋಽ-

ಸ್ಮಿ ಸೂಚಿತ:” ಕುಮಾಂ ೬-೨೬।

ಇತ್ಯ ಇತ್ಯ (ವಿಂ) ಹೊಂದಲ್ಪಡುವ. ಇನ್ (ಗತೌ) “ಯಪ್”  
(೩-೧-೧೦೯)।

ಇತ್ವನ್ ಇತ್ವನ್ (ವಿಂ) ಹೋಗುವ, ನಡೆಯುವ. ಇನ್ (ಗತೌ)  
“ಕನಿಪ್” (೩-೨-೭೫)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೭)।

ಇತ್ವರ ಇತ್ವರ (ಪುಂ) 1. ಪಂಡ, ನಪುಂಸಕ. (ವಿಂ) 2.  
ಪಥಿಕ, ದಾರಿ ನಡೆಯುವವನು, ಸಂಚರಿಸುವವನು.

3. ಕ್ರೂರವಾದ ಕಾರ್ಯವುಳ್ಳವನು. 4. ಅಧಮ,  
ನೀಚ. 5. ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. ಇನ್ (ಗತೌ) “ಕರಪ್”  
(೩-೨-೧೬೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೧೫)।  
ಇತ್ವರೀ ಇತ್ವರೀ.



ಇತ್ತರೀ ಇತ್ತರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಭಿಸಾರಿಕೆ. 2. ವೃಥಾ  
ಚಾರಣೆ, ಸ್ವೈರಣೆ.

ಇದಮ್ ಇದಮ್ (ಪ್ರಿಂ) 1. ಸಮಾಪದಲ್ಲಿರುವ, ಮುಂಭಾಗ  
ದಲ್ಲಿರುವ. 2. ಎದುರಿಗೆ ಕಾಣುತ್ತಿರುವ, ದೃಷ್ಟಿಗೆ  
ಗೋಚರವಾಗಿರುವ. 3. ಬುದ್ಧಿಗೆ ಗೋಚರವಾದ,  
ಸ್ಮರಣೆಯಿಂದ ಸನ್ನಿಹಿತವಾದ. ಈ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ  
ಈ ಶಬ್ದದ ಪ್ರಯೋಗವಿರುವುದು. "ಇದಮಸ್ತು ಸನ್ನಿಹಿತಂ  
ಸಮೀಪತರವರ್ತಿಸಂತದೋ ರೂಪಮ್. ಅದಸಸ್ತು ವಿಪ್ರಕೃಷ್ಣಂ ತದಿತಿ  
ಪರೋಕ್ಷೇ ವಿಜಾನೀಯಾತ್". ಇದರ ಲಿಂಗತ್ರಯದ ರೂಪ  
ಗಳು:

(ಪುಂ) ಅಯಮ್ ಇಮೌ ಇಮೇ. "ಅಯಮತಿಜರಾ: ಪ್ರಕಾಮಗುರ್ವಿ-  
ರಲಘುವಿಲಂಬಿಪಯೋಧರೋಪರುದಾ:" ಮಾಘಂ ೪-೨೯.

(ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಯಮ್ ಇಮೇ ಇಮಾಃ. "ಇಯಮಿಷ್ಟಗುಣಾಯ  
ರೋಚತಾಂ ರುಚಿರಾರ್ಯಾ ಭವತೇಽಪಿ ಭಾರತೀ" ಕಿರಾಂ ೨-೫.  
"ಇಯಂ ಪುರ: ಶೈಲವನೋಪಪನ್ನಾ ವಿಶ್ವಮ್ಭರಾ ಭಾತಿ ವಲೋಮಗೇವ"  
ಯಾದಂ ೧೮-೧೮. "ಕಂಚುಕಿನ್, ಇಯಂ ಸಾ ಮಮ ಭಗಿನೀ  
ರತ್ನಾವಲೀ" ರತ್ನಾಂ ೪.

(ನಂ) ಇದಮ್ ಇಮೇ ಇಮಾನಿ. "ಇದಂ ತು ತೇ ಭಕ್ತಿನಮ್ರಂ  
ಸತಾಮಾರಾಧನಂ ವಪು:" ಕುಮಾಂ ೬-೭೩. "ಇಮಾನ್ಯಮನೀತ್ಯಪ-  
ವರ್ಜಿತೇ ಶನೇ:" ಕಿರಾಂ ೮-೨೦.

ಇದಮೀಯ ಇದಮೀಯ (ಪ್ರಿಂ) ಇವನ ಸಂಬಂಧವಾದ,  
ಇವಳ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಇದರ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
ಇದಮ್ "ಃ" (೪-೨-೧೧೪). "ಗ್ರಹಣಶಕ್ತಿರಭಿದಿದಮೀಯೋ-  
ರಪಿ ನ ಸಂಪುಷ್ಪವಾಸ್ತುನಿ ವಸ್ತುನಿ" ನೈಷಂ ೪-೧೨.

ಇದಮ್ಪರ ಇದಂಪರ (ಪ್ರಿಂ) ಇದೇ ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಉಳ್ಳ,  
ಇದೇ ಧೈಯವಾಗಿ ಉಳ್ಳ. ಅನೇನ ಪೂರ್ಯತೇ-ಪ್ (ಪಾಲನ-  
ಪೂರ್ಣಯೋ:) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭). "ವಿಧುನೋತಿ ತ್ವದಾಲಮ್ಬಂ  
ಬ್ರಹ್ಮಸ್ತಮ್ಬಮಿದಮ್ಪರ:" ಯಾದಂ ೧೬-೩೦.

ಇದಾನೀಮ್ ಇದಾನೀಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಈಗ, ಈ ಕಾಲದಲ್ಲಿ.  
ಇದಮ್ "ದಾನೀಮ್" (೫-೩-೧೮). "ಅಹೋ ಪ್ರತಿಬುದ್ಧಮಿದಾನೀ  
ಮಕರಂದಪೂರ್ಣಚಂದ್ರೋದಯೇನ" ಮಾಲತೀಂ ೪.

ಇದಾನೀಂತನ ಇದಾನೀಂತನ (ಪ್ರಿಂ) ಈಗ ಉಂಟಾದ,  
ಈ ಸಮಯದಲ್ಲಿರುವ. ಇದಾನಿಂ ಭವ: "ಡ್ಯಲ್" ತುಡ್ ಚ  
(೪-೩-೨೩). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫). -ತನಿ  
-ತನೀ. "ವಾಸನಾ ಚೇದಿದಾನೀಂತನಿ ಪ್ರಾಕ್ತನಿ ಚ ರಸಾ-  
ಸ್ವಾದಹೇತು:" ಸಾಂ ೧೦.

ಇದಾನೀಂತನಯತ್ ಇದಾನೀಂತನಯತ್ (ಪ್ರಿಂ) ಈಗಿನ  
ಕಾಲದ್ದನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವ, ಈಗಿರುವಂತೆ ಮಾಡುವ.

ಇದಾನೀಂತನಂ ಕರೋತಿ - ಇದಾನೀಂತನ + ಣಿಕ್ "ಶತ್"  
(೩-೨-೧೨೪). "ಏಕಲ್ಪಾಂತವೃತ್ತಾಂತಮಿದಾನೀಂತನಯತ್ನಿವ"  
ಯಾದಂ ೧೬-೩೦.

ಇದ್ ಇದ್ (ನಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶ, ಕಾಂತಿ. 2. ಆಶ್ಚರ್ಯ.  
3. ಬಿಸಿಲು, ಸೂರ್ಯನ ಪ್ರಕಾಶ. ತ್ರಿ ಇನ್ಧಿ (ದೀಪ್ತೌ)  
ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪). "ಇದ್ಮಾತಪದೀಪ್ತಯೋ:"  
ಮೇದಿಂ. (ಪ್ರಿಂ) 4. ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ, ಹೊಳೆಯುವ.  
ತ್ರಿ ಇನ್ಧಿ ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). "ತನ್ವಂತಮಿದ್-  
ಮಭಿತೋ ಗುರುಮಂಶುಜಾಲಂ ಲಕ್ಷ್ಮೀಮುವಾಹ ಸಕಲಸ್ಯ ಶಶಾಂಕಮೂತೇ:"  
ಕಿರಾಂ ೨-೫೯. 5. ಉಗ್ರವಾದ, ಉರಿಯುತ್ತಿರುವ.  
"ಕ್ರೋಧೇದೈದೃಷ್ಟಿಪಾತೈರ್ಮುಹುರಪಶಮಿತಾ ಬಹ್ವಯೋಷಿ ತ್ರಯೋಽಪಿ"  
ರತ್ನಾಂ ೧-೪. 6. ಉರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 7. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ತ್ರಿ ಇನ್ಧಿ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).

ಇದ್ಮ ಇದ್ಮ (ಪ್ರಿಂ) 1. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. 2. ವಸಂತ  
ಮುತ್ತು. (ನಂ) 3. ಸೌದೆ, ಕಟ್ಟಿಗೆ. 4. ಸಾಲಾಶ  
ಮೊದಲಾದ ಸಮಿತ್ತು, ಯಾಗಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ಹೋಮ  
ಮಾಡುವ ಮುತ್ತುಗ ಮೊದಲಾದ ಸಮಿತ್ತು.  
5. ಗೊತ್ತಾದ ಅಳತೆ ಮತ್ತು ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ ಸಮಿತ್ತು  
ಗಳ ಕಟ್ಟು. ತ್ರಿ ಇನ್ಧಿ (ದೀಪ್ತೌ) "ಮಕ್" (೩ಂ ೧-೧೪೫).  
"ಇದ್ಮ: ಸಮಿಧ್ವಿದಿ. ಕಾಮೇ ವಸಂತೇ ಕಾಶ್ಠೇ ಸ್ಯಾತ್" ಹೇಮಂ.

ಇದ್ಮಜಿಹ್ವ ಇದ್ಮಜಿಹ್ವ (ಪ್ರಿಂ) ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಇದ್ಮಂ ಕಾಶ್ಠಂ  
ಜಿಹ್ವೇವಾಸ್ಯ.

ಇದ್ಮವಾಹ ಇದ್ಮವಾಹ (ಪ್ರಿಂ) ಅಗಸ್ತ್ಯ ಮಹರ್ಷಿಯ ಮಗ.  
ಇದ್ಮಂ ವಹತಿ - ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಅಘ್" (೩-೨-೧).  
[ತಂದೆಯ ಅಪರಾಧವನ್ನು ಈತನು ಇದ್ಮವನ್ನು ಹೊತ್ತು  
ತರುತ್ತಿದ್ದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರಾಯಿತು. ದೃಢದಸ್ಯ  
ನೆಂದು ಈತನ ಹೆಸರು.]

ಇನ ಇನ (ಪ್ರಿಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಇನ್ (ಗತೌ) "ನಕ್"  
(೩ಂ ೩-೨). "ಯಜತಾಂ ಪಾಂಡವ: ಸ್ವರ್ಗಮವತ್ವಿನ್ದ್ರ-  
ಸ್ತಪತ್ವಿನ್:" ಮಾಘಂ ೨-೬೫. 2. ಯಜಮಾನ, ಸ್ವಾಮಿ,  
ಪ್ರಭು. "ತಮಧಿಗಮ್ಯ ತಥೈವ ಪುನರ್ಬಹೌ ನ ನ ಮಹೀನ-  
ಮಹೀನಪರಾಕ್ರಮಮ್" ರಘುಂ ೯-೫. 3. ರಾಜ, ದೊರೆ.  
"ಇನ: ಸೂರ್ಯೇ ನೃಪೇ ಪತ್ಯೌ" ವಿಶ್ವಂ. (ಪ್ರಿಂ) 4. ಶಕ್ತ,  
ಸಮರ್ಥ, ಬಲಶಾಲಿ.

ಇನಸಮ ಇನಸಭ (ನಂ) ರಾಜಸಭೆ. ಇನಸ್ಯ ರಾಜ: ಸಭಾ.  
ನಪುಂಸಕತಾ (೨-೪-೨೩).

ಇಂದಿವರ ಇಂದಿವರ (ಪ್ರಿಂ) ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಇಂದಿರಯಾ  
ಇಂದತಿ - ಇದಿ (ಪರಮೇಶ್ವರೈ) "ಕ್ವಿಪ್". ಪೂರ್ವನಿಪಾತ:



ಇಂದಿರಾ ಇಂದಿರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಕ್ಷ್ಮೀ. ಇದಿ (ಪರಮೇಶ್ವರೈ)  
“ಕಿರಕ್” ಬಾಹುಂ. “ಠಾಪ್” 1. ಕಾಂತಿ, ಶೋಭೆ,  
ಹೊಳವು. “ನಿಶಿ ನಿ:ಸರದಿಂದಿರಂ ಕಥಂ ತುಲಯಾಮ: ಕಲಯಾಪಿ  
ಪಚ್ಚಜಮ್” ಭಾಂ ವಿಂ.

ಇಂದಿರಾಮಂದಿರ ಇಂದಿರಾಮಂದಿರ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು  
(ನಂ) 2. ಕಮಲ, ತಾವರೆ. 3. ಲಕ್ಷ್ಮೀಯ ವಾಸಸ್ಥಾನ.

ಇಂದಿ ಇಂದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲಕ್ಷ್ಮೀ ಇದಿ (ಪರಮೇಶ್ವರೈ) “ಇನ್”  
(ಉಂ ೪-೧೧೮) 1. “ಙೀಷ್” (ಗಂ ೪-೧-೪೫) 1.

ಇಂದಿವರ ಇಂದೀವರ (ನಂ) ನೀಲಕಮಲ, ಕನ್ನೈದಿಲೆ.  
ಇಂದಾ: ಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾ: ವರಮ್. “ಇಂದಿವರಶ್ಯಾಮತನುನೃಪೋಸ್ತೌ  
ತ್ವಂ ರೋಚನಾಗೋರಶರೀರಯಶ್ಚಿ:” ರಘುಂ ೬-೬೫.

ಇಂದಿವರಿಣಿ ಇಂದೀವರಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೀಲಕಮಲದ  
ರಾಶಿ, ನೀಲೋತ್ಪಲದ ಸಮೂಹ. ಇಂದಿವರಾಣಾಂ ಸಮೂಹ:  
“ಇನಿ:” (ವಾಂ ೪-೨-೫೧) 1. 2. ನೀಲಕಮಲಗಳಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ಪ್ರದೇಶ, ಕೊಳ, ಸರಸ್ಸು.

ಇಂದಿವರಿ ಇಂದೀವರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶತಮೂಲಿ, ಶತಾವಂ  
ಗಿಡ.

ಇಂದು ಇಂದು (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಉತ್ತಿ ಕ್ಲೇದಯತಿ ಭುವಂ  
ಚಂದ್ರಿಕಯಾ — ಇಂದಿ (ಕ್ಲೇದನೆ) “ಉ:” (ಉಂ ೧-೧೨) 1.  
ಆದೇ: ಇತ್ ಚ. “ಇಂದುರಿಂದುರಿವ ಶ್ರೀಮಾನಿತಾದೌ ತದನನ್ವಯ:”  
ಚಂದ್ರಾಂ. “ಪತತಿ ನವರಮಿಂದು: ಸೋಽಪರಾಮೇಷ ಗತ್ವಾ”  
ಮಾಘಂ ೧೧-೧೨. “ಸೋತ್ಪಲೋ ರಜತಕುಂಭ ಇವೇಂದು:”  
ಕಿರಾಂ ೧-೩೨. 2. ಚಂದ್ರದೇವತಾಕವಾದ ಮೃಗ  
ಶೇರ್ಷ ನಕ್ಷತ್ರ. 3. ಒಂದು ಸಂಖ್ಯೆ.

ಇಂದುಕಲಾ ಇಂದುಕಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಂದ್ರನ ಹದಿನಾರನೆಯ  
ಒಂದು ಭಾಗ. [ಚಂದ್ರನಿಗೆ ಹದಿನಾರು ಕಲೆಗಳಿರು  
ವುವು. ಅವುಗಳನ್ನು ಕೃಷ್ಣ ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿ ಮೊದಲಾದ  
ದೇವತೆಗಳು ದಿನಕ್ಕೆ ಒಂದರಂತೆ ಕ್ರಮೇಣ ಪಾನ  
ಮಾಡುವರು.] “ಪ್ರಥಮಾಂ ಪಿವತೇ ವಹ್ನಿರ್ವಿತ್ತಿಮಾಂ ಪಿವತೇ  
ರವಿ: 1. ವಿಶ್ವೇದೇವಾಸ್ತುತೀಯಾಂ ತು ಚತುರ್ಥಿಂ ಸಲಿಲಾಘಿಪ:”  
ಇತ್ಯಾದಿ. [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಇಂದುಕಲಾ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]  
“ತಸ್ಯಾ: ಸಖೇ ನಿಯತಮಿಂದುಕಲಾಮೃಣಾಲಜ್ಯೋತ್ಸಾದಿಕಾರಣ-  
ಮಭೂದನಶ್ಚ ವೇಧಾ:” ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೪.

ಇಂದುಕಲಿಕಾ ಇಂದುಕಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಂದ್ರನ ಕಲೆ.  
2. ತಾಳೆಗಿಡ.

ಇಂದುಕಾಂತ ಇಂದುಕಾಂತ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರಕಾಂತ ಶಿಲೆ.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) — ಕಾಂತಾ — ಕಾಂತಾ. 2. ತಾಳೆಗಿಡ. 3. ಚಂದ್ರನ  
ಪತ್ನಿ. 4. ರಾತ್ರಿ.

ಇಂದುಕುಲ ಇಂದುಕುಲ (ಪುಂ) 1. ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ. ಇಂದು:  
ಕ್ಷೀಯತೇ — ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯೇ) “ಅಕ್” (೩-೩-೫೬) 1.  
2. ಚಂದ್ರನ ಕ್ಷಯ, ಚಂದ್ರನ ಕಲೆಗಳು ಕಡಿಮೆ  
ಯಾಗುವಿಕೆ. [ಚಂದ್ರನು ದಕ್ಷಪುತ್ರಿಯರಾದ ಅಶ್ವಿನಿ  
ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ಮಂದಿಯನ್ನು ಮದುವೆ  
ಯಾಗಿದ್ದನು. ಆದರೆ ಅವನು ರೋಹಿಣಿಯಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ  
ಹೆಚ್ಚು ಅನುರಕ್ತನಾಗಿದ್ದುದನ್ನು ಕಂಡು ಉಳಿದವರು  
ತಮ್ಮ ತಂದೆಯಲ್ಲಿ ದೂರು ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳಲು ದಕ್ಷನು  
ಚಂದ್ರನಿಗೆ ಕ್ಷಯರೋಗ ಬರಲೆಂದು ಶಾಪವಿತ್ತನು.  
ಇದರಿಂದ ಚಂದ್ರನು ಕ್ಷಯಹೊಂದಲು ಎಲ್ಲ ಪತ್ನಿ  
ಯರೂ ಒಟ್ಟುಗೂಡಿ ದುಃಖಿತರಾಗಿ ತಂದೆಯ ಬಳಿಗೆ  
ಹೋಗಿ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ದಕ್ಷನು ತನ್ನ ಶಾಪಕ್ಕೆ  
ವೈಯರ್ಥ್ಯ ಬರಕೂಡದೆಂದು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ  
ವೃದ್ಧಿಯೂ ಇನ್ನೊಂದು ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಕ್ಷಯವೂ ಬರ  
ಲೆಂದು ಹೇಳಿದನು. ಇದರಿಂದ ಚಂದ್ರನಿಗೆ ವೃದ್ಧಿ  
ಕ್ಷಯಗಳುಂಟಾಗುವುವು.] “ತಚ್ಚತ್ವಾಚಾಪ್ರಿಯಂ ದಕ್ಷ:  
ಸೋಮಮಾಹು ಭಂಜಸ್ವ ಭೋ: 1. ಪ್ರೇಮಾ ಸಮೇನ ಸರ್ವಾಸ್ತ್ವಂ ದುಹಿತ-  
ಮಮ ಮಾನದ 1. ಜಗೃಹೇ ತದ್ವಚೋ ನೈವ ಸೋಮ: ಸಪ್ರೇಮ ರೋಹಿಣಿಮ್ 1.  
ತಥೈವ ರಮಯಾಮಾಸ ಶ್ರುತ್ವಾ ದಕ್ಷಶ್ಚುಕೋಪ ಹ 1. ಶಾಪಾಪ ತೇ ನ  
ಭವಿತಾ ಹ್ಯಪತ್ಯಂ ಮದ್ವಚೋರ್ಜಿತಗ: 1. ಯಕ್ಷಮಣಾ ಚ ಪರಿಗ್ರಸ್ತೌ  
ಭವ ತ್ವಂ ಕ್ಷೀಣರೇತಕ: 1. ಅಥ ಕ್ಷಯಮಿತೇ ತಸ್ಮಿನ್ ಸರ್ವಾಸ್ತಾ:  
ಸಹಿತಾ: ಸ್ತ್ರೀಯ: 1. ಪಿತರಂ ಶರಣಂ ಪ್ರಾಪ್ತಾ: ಕ್ಷೀಯತೇ ನ: ಪತಿ:  
ಪಿತ: 1. ನ ವಯಂ ತೇನ ವರ್ತಮೋ ವಿನಾ ಸುಖನಿರಾಕೃತಾ: 1.  
ಉವಾಚ ದಕ್ಷಸ್ತಾ: ಸರ್ವಾ: ಶಾಪೋ ಮೇ ನಾನ್ಯಥಾ ಭವೇತ್ 1. ಮಾಸಮಧ್ಯೇ  
ಪಕ್ಷಮೇಕಂ ವರ್ಧತಾಂ ಸ ಕ್ರಮೇಣ ವೈ 1. ಕ್ಷಯಂ ಕ್ರಮೇಣ ಪ್ರಾಪ್ನೋತು ಪಕ್ಷಮೇಕಂ  
ವ್ಯವಸ್ಥಯಾ 1. ಏವಂ ಶಾಪಂ ವರಂ ಚೈವ ದದಾವಸ್ಮೈ ವ್ಯವಸ್ಥಯಾ 1.  
ತಥೈವ ರಾಜತೇ ತ್ರ್ಯೋಮಿ ಕ್ಷಯವೃದ್ಧಿ ದಧದ್ವಿಧು:” ಅಗ್ನಿಪುಂ 1.

ಇಂದುಜ ಇಂದುಜ (ಪುಂ) ಬುಧಗ್ರಹ. ಇಂದೋಜತಿ: 1.  
[ಚಂದ್ರನು ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಪತ್ನಿಯಾದ ತಾರೆಯನ್ನು  
ಮೋಹಿಸಿ ಅವಳಲ್ಲಿ ಬುಧನೆಂಬ ಮಗನನ್ನು ಪಡೆದನು;  
ವಿವರಕ್ಕೆ “ಬುಧ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
— ಜಾ — ಜಾ. ನರ್ಮದಾನದಿ.

ಇಂದುಭ ಇಂದುಭ (ನಂ) 1. ಮೃಗಶೇರ್ಷ ನಕ್ಷತ್ರ.  
2. ಕರ್ಕಾಟಕರಾಶಿ.

ಇಂದುಭೃತ್ ಇಂದುಭೃತ್ (ಪುಂ) ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. ಇಂದು ವಿಭತಿ —  
ಓ ಭೃಜ್ (ಧಾರಣಾಪೂರ್ಣಯೋ: ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬) 1.

ಇಂದುಮಿ ಇಂದುಮಿ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರಕಾಂತಮಣಿ.  
2. ಮುತ್ತು, ಮುಕ್ತಾಫಲ.



ಇಂದುಮಂಡಲ ಇಂದುಮಂಡಲ (ನಂ) ಚಂದ್ರಬಿಂಬ.

ಇಂದುಮತೀ ಇಂದುಮತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಜಮಹಾರಾಜನ ಪತ್ನಿ. "ವಸುಧಾಮಪಿ ಹಸ್ತಗಾಮಿನೀಮಕರೋದಿಂದುಮತೀಮಿವಾ-  
ಪರಾಮ್" ರಘುಂ ೮-೧. 2. ಸಂಪೂರ್ಣ ಚಂದ್ರನಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ಪ್ರಶಸ್ತ: ಇಂದ್ರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪)।

ಇಂದುಮೌಲಿ ಇಂದುಮೌಲಿ (ಪುಂ) ತಿವ, ಈಶ್ವರ. ಇಂದು: ಮೌಲಿ ಯಸ್ಯ। "ಅಥ ವಿಬುಧಗಣಾಸ್ತಾನಿಂದುಮೌಲಿವಿಸೃಜ್ಯ" ಕುಮಾಂ ೭-೯೪।

ಇಂದ್ರರತ್ನ ಇಂದ್ರರತ್ನ (ನಂ) ಮುತ್ತು, ಮುಕ್ತಾಫಲ. [ಮುತ್ತು ಚಂದ್ರದೇವತಾಕವಾದುದು. ಚಂದ್ರ ಪ್ರೀತ್ಯರ್ಥವಾಗಿ ಇದನ್ನು ದಾನಮಾಡುವರು.]

ಇಂದ್ರಲೇಖಾ ಇಂದ್ರಲೇಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಂದ್ರನ ಕಲೆ, ಚಂದ್ರಬಿಂಬದ ಹದಿನಾರನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. 2. ಸೋಮಲತೆ. 3. ಅಳಲೆಗಿಡ. 4. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. "ಇಂದ್ರಲೇಖಾಸ್ಮತಾ ಸೋಮಲತಾಶಶಿಕಲಾಸು ಚ" ಮೇದಿಂ।

ಇಂದ್ರಲೋಕ ಇಂದ್ರಲೋಕ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರಲೋಕ.

ಇಂದ್ರಲೌಹ ಇಂದ್ರಲೌಹ (ನಂ) ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ. [ಇದು ಚಂದ್ರದೇವತಾಕವಾದುದು. ಚಂದ್ರದೋಷ ಪರಿಹಾರ ಕ್ಕಾಗಿ ಬೆಳ್ಳಿಯನ್ನು ದಾನಮಾಡುವರು.]

ಇಂದ್ರವ್ರತ ಇಂದ್ರವ್ರತ (ನಂ) ಚಾಂದ್ರಾಯಣ ವ್ರತ. ಇಂದ್ರಲೋಕಪ್ರಾಪ್ತಯಿ ವ್ರತಮ್। [ಚಂದ್ರನಿಗೆ ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಕ್ಷಯಪೂ, ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ವೃದ್ಧಿಯೂ ಉಂಟಾಗುವಂತೆ ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಆಹಾರವನ್ನು ಕ್ರಮೇಣ ಕಡಿಮೆ ಮಾಡುತ್ತಾ ಒಂದು ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತಾ ಬರುವುದರಿಂದ ಈ ವ್ರತಕ್ಕೆ ಚಾಂದ್ರಾಯಣವೆಂದು ಹೆಸರು.] "ಏಕೈಕಂ ಹಾಸಯೇತ್ ಪಿಷ್ಠಂ ಕೃಣ್ಣಂ, ಶುಕ್ಲೇ ಚ ವರ್ಧಯೇತ್। ಉಪಸ್ಥಾಪನಾಪವನಮೇತಚ್ಚಾಂದ್ರಾಯಣಂ ಚರೇತ್" ಮನುಂ ೧೧-೨೧೬।

ಇಂದ್ರಶೇಖರ ಇಂದ್ರಶೇಖರ (ಪುಂ) ತಿವ, ಈಶ್ವರ. ಇಂದು: ಶೇಖರೇ ಯಸ್ಯ।

ಇಂದ್ರ ಇಂದ್ರ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ, ದೇವತೆಗಳ ಪ್ರಭು, ಸ್ವರ್ಗಲೋಕದ ರಾಜ. ಇದಿ (ಪರಮೇಶ್ವರೈ) "ರನ್" (೩ಂ ೨-೨೮)। "ಅವಾತತಾರಾಭಿಗಿರಿ ಗಿರೀಶಗೌರೀಪದ-  
ನ್ಯಾಸವಿಶುದ್ಧಮಿಂದ್ರ:" ಕುಮಾಂ ೧೨-೨. ಒಂದೊಂದು ಮನ್ವಂತರಕ್ಕೂ ಒಬ್ಬ ಇಂದ್ರನಂತೆ ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮನ್ವಂತರಗಳಲ್ಲಿ ಈ ಕೆಳಗೆ ಕಂಡಂತೆ ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಇಂದ್ರರಿರುವರು:

ಮನ್ವಂತರ

ಇಂದ್ರ

(1) ಸ್ವಾಯಂಭುವ

ಯಜ್ಞ

(2) ಸ್ವಾರೋಚಿಷ

ರೋಚನ

(3) ಉತ್ತಮ

ಸತ್ಯಜಿತ್

(4) ತಾಮಸ

ತ್ರಿಶಿಖ

(5) ರೈವತ

ವಿಭು

(6) ಚಾಕ್ಷುಷ

ಮಂತ್ರದ್ರುಮ

(7) ಶ್ರಾದ್ಧದೇವ

ಪುರಂದರ

[ಈಗ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ

ವೈವಸ್ವತ ಮನ್ವಂತರ]

(8) ಸಾವರ್ಣಿ

ವೈರೋಚನ (ಬಲಿ)

(9) ದಕ್ಷಸಾವರ್ಣಿ

ಶ್ರುತ

(10) ಬ್ರಹ್ಮಸಾವರ್ಣಿ

ಶಂಭು

(11) ಧರ್ಮಸಾವರ್ಣಿ

ವೈದೃತ

(12) ರುದ್ರಸಾವರ್ಣಿ

ಮತಧಾಮ

(13) ವೇದಸಾವರ್ಣಿ

ದಿನಸ್ವತಿ

(14) ಇಂದ್ರಸಾವರ್ಣಿ

ಶುಚಿ

2. ಹನ್ನೆರಡು ಮಂದಿ ಆದಿತ್ಯರಲ್ಲೊಬ್ಬ. "ಧಾತಾರ್ಯಮಾ  
ಚ ಮಿತ್ರಶ್ಚ ವರ್ಣಾಂಶ್ಚುಭಗಸ್ತಥಾ। ಇಂದ್ರೋ ವಿವಸ್ವಾನ್ ಪುಷಾ  
ಚ ಪರ್ಜನ್ಯೋ ದಶಮ: ಸ್ಮೃತ:। ತತಸ್ತ್ವಷ್ಟಾ ತತೋ ವಿಷ್ಣುರಜ-  
ಘನ್ಯೋ ಜಘನ್ಯಜ:" ಎಂದು ಆದಿತ್ಯರು ಹನ್ನೆರಡು ಮಂದಿ.

3. ಅಷ್ಟದಿಕ್ಪಾಲಕರಲ್ಲೊಬ್ಬ, ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನ ಅಧಿಪತಿ.

4. ವಿಷ್ಣುಂಭ ಮೊದಲಾದ 26 ವಿಧ ಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. [ವಿನರಕ್ಕೆ "ಯೋಗ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

5. ಅಂತರಾತ್ಮ. "ಇಂದ್ರ: ಶಕ್ರಾದಿತ್ಯಭೇದೇ ಯೋಗಭೇದೇಂತಾ-  
ತ್ಮನಿ" ಮೇದಿಂ। 6. ವಿಷ್ಣು. 7. ಈಶ್ವರ, ಪ್ರಭು, ರಾಜ, ಯಜಮಾನ. ನರೇಂದ್ರ, ಭೂಧೇಂದ್ರ: ಇತ್ಯಾದಿ.

"ಇಂದ್ರೋ ವಿಷಾಕಾಶಾತ್ಮಾತ್ಮಸ್ವೀಶ್ವರೇ" ವಿಶ್ವಂ। 8. ರಾತ್ರಿ.

9. ಕುಟಿಜವೃಕ್ಷ, ಬೆಟ್ಟಮಲ್ಲಿಗೆ. 10. ಭಾರತವರ್ಷದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ದ್ವೀಪ.

11. ಜ್ಯೇಷ್ಠಾನಕ್ಷತ್ರ. 12. ಮೇಘ, ಮೋಡ.

13. ಎಂಟುಮಂದಿ ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರಪ್ರವರ್ತಕರಲ್ಲೊಬ್ಬ. (ನಂ) 14. ಐಶ್ವರ್ಯ.

ಇದಿ ಭಾವೇ "ರನ್" (೩ಂ ೨-೨೮)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ದಾ-ದ್ರಾ-  
ಹಾವುಮೆಕ್ಕೆ ಗಿಡ.

ಇಂದ್ರಕ ಇಂದ್ರಕ (ನಂ) ಸಭಾಮಂದಿರ. ಇಂದ್ರಸ್ಯ ರಾಜ: ಕಂ ಸುಖಂ ಯತ್ರ।

ಇಂದ್ರಕರ್ಮನ್ ಇಂದ್ರಕರ್ಮನ್ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಇಂದ್ರಾಯ ಇಂದ್ರಕ್ಷಣಾರ್ಥ ಕರ್ಮ ಯಸ್ಯ। "ಇಂದ್ರಕರ್ಮಿ ಮಹಾಕರ್ಮಿ ಕೃತಕರ್ಮಿ" ವಿಂ ಸಂ।



ಇಂದ್ರಕೀಲ ಇಂದ್ರಕೀಲ (೨೦) 1. ಇಂದ್ರಕೀಲಪರ್ವತ, ಅರ್ಜುನನು ಪಾಶುಪತಾಸ್ತ್ರ ಸಂಪಾದನೆಗಾಗಿ ತಪಸ್ಸು ಮಾಡಿದ ಪರ್ವತ. ಇಂದ್ರಸ್ಯ ಕೀಲ ಇವ. "ಜಿಮುತ-ರಪಿಹಿತಸಾನುರಿಂದ್ರಕೀಲ:" ಕಿರಾಂ ೭-೧೭. (ನಂ) 2. ಇಂದ್ರನ ಧ್ವಜ.

ಇಂದ್ರಕುಂಜರ ಇಂದ್ರಕುಂಜರ (೨೦) ಐರಾವತ. ಇಂದ್ರಸ್ಯ ಕುಂಜರ:। ಇಂದ್ರಗಜ:, ಇಂದ್ರನಾಗ: ಇತ್ಯಾದಿ.

ಇಂದ್ರಕೂಟ ಇಂದ್ರಕೂಟ (೨೦) ಇಂದ್ರಕೂಟಪರ್ವತ.

ಇಂದ್ರಕೋಶ ಇಂದ್ರಕೋಶ (೨೦) 1. ಮಂಚ. 2. ಪಲ್ಲಂಗು, ಮೆತ್ತೆಯ ಕುರ್ಚಿ.

ಇಂದ್ರಗಿರಿ ಇಂದ್ರಗಿರಿ (೨೦) ಮಹೇಂದ್ರಪರ್ವತ.

ಇಂದ್ರಗೋಪ ಇಂದ್ರಗೋಪ (೨೦) ಮಳೆಗಾಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಒಂದು ಜಾತಿ ಹುಳ, ಮಿಂಚುಹುಳ.

ಇಂದ್ರಚಾಪ ಇಂದ್ರಚಾಪ (೨೦) ಇಂದ್ರನ ಧನುಸ್ಸು, ಕಾಮನಬಿಲ್ಲು. "ಧೃತೇಂದ್ರಚಾಪಾ ನ ಪಯೋದಪ್ತಯ:" ಕಿರಾಂ ೪-೨೩.

ಇಂದ್ರಚಂದ್ರ ಇಂದ್ರಚಂದ್ರ (ನಂ) ಒಂದು ಸಾವಿರ ಎಳೆ ಗಳುಳ್ಳ ಹಾರ. ಇಂದ್ರ ಇವ ಸಹಸ್ರನೇತ್ರೇಣ ಸಹಸ್ರಗುಣೇನ ಚಾಚತೇ - ಚದಿ (ಆಹ್ಲಾದನೆ) "ಅಸುನ್" ಆದೇಶ: (೩೦ ೪-೨೧೮)।

ಇಂದ್ರಜಾಲ ಇಂದ್ರಜಾಲ (ನಂ) ಮಾಯಾವಿದ್ಯೆ, ಕಣ್ಣು ಕಟ್ಟುವ ವಿದ್ಯೆ, ಸ್ವಭಾವದಿಂದಿರುವ ವಸ್ತುವು ಮಂತ್ರ ದಿಂದ ಬೇರೆ ರೀತಿಯಾಗಿ ಕಾಣುವಂತೆ ಮಾಡುವ ವಿದ್ಯೆ, ಗಾರುಡಿ. ಇಂದ್ರೇಣ ಕೌಶಲಾಶೈಶ್ವರ್ಯೇಣ ಜಾಲಂ ದ್ರಷ್ಟುರ್ನಿಶ್ಚಾವರಣಮ್। "ಆರ್ಯಪುತ್ರ, ತಿಷ್ಠತು ತಾವದಿಂದ್ರಜಾಲಮ್। ಮಾತುಲಕುಲಾ-ದಮಾತ್ಯಪ್ರಧಾನೋ ವಸುಭೂತಿರಾಗತ:" ರತ್ನಾಂ ೪।

ಇಂದ್ರಜಾಲಿಕ ಇಂದ್ರಜಾಲಿಕ (೨೦) ಗಾರುಡಿಗಾರ, ಕಣ್ಣು ಕಟ್ಟುಮಾಡುವವನು. ಇಂದ್ರಜಾಲಮಸ್ತಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೪)। "ಆ:, ದಾಸ್ಯಾ: ಪುತ್ರ ಇಂದ್ರಜಾಲಿಕ, ಕಿಮೇತೆ-ದೇವೇರಪ್ಸಾರೋಭಿಶ್ಚ ದರ್ಶಿತೆ:। ಯದಿ ತೇಜೇನ ಪರಿತುಷ್ಟೇನ ಕಾರ್ಯ ತದರ್ಶಯ ಸಾಗರಿಕಾಮ್" ರತ್ನಾಂ ೪।

ಇಂದ್ರಜಿತ್ ಇಂದ್ರಜಿತ್ (೨೦) 1. ರಾವಣನ ಮಗ ಇಂದ್ರಜಿತ್ತು, ಮೇಘನಾದ. [ಇವನಿಗೆ ಮೇಘನಾದ ನೆಂದು ಹೆಸರು. ಇಂದ್ರನೊಡನೆ ರಾವಣನು ಯುದ್ಧ ಮಾಡುವಾಗ ಇವನು ಇಂದ್ರನನ್ನು ಜಯಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರಾಯಿತು.] 2. ಚಾಕ್ಷುಷ ಮನ್ವಂತರದಲ್ಲಿ ಕಶ್ಯಪನ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ಅಸುರ. "ಇಂದ್ರಜಿತ್ಸರ್ವಜಿತ್ವೇವ ವಜ್ರನಾಭಸ್ತಥೇವ ಚ" ಹರಿವಂ 1

ಇಂದ್ರದಮನ ಇಂದ್ರದಮನ (೨೦) ಬಾಣಾಸುರನ ಮಗ.

ಇಂದ್ರದಾರು ಇಂದ್ರದಾರು (೨೦) ದೇವದಾರು ವೃಕ್ಷ. [ಇದು ಇಂದ್ರಧ್ವಜಕ್ಕಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಮರ. ವಿವರಕ್ಕೆ "ಇಂದ್ರಜಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಇಂದ್ರದ್ಯುಮ್ನ ಇಂದ್ರದ್ಯುಮ್ನ (೨೦) 1. ಅಸುರರ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. 2. ಅವಂತಿದೇಶದ ಒಬ್ಬ ರಾಜ. 3. ವಿಷ್ಣು ಭಕ್ತನಾದ ಪಾಂಡ್ಯದೇಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. [ಒಂದು ದಿನ ಈ ರಾಜನು ಬಹಳ ನಿಯಮದಿಂದ ವಿಷ್ಣು ಪೂಜೆ ಯಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದ ಅಗಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿಯನ್ನು ಗೌರವಿಸಲಿಲ್ಲವಾದ ಕಾರಣ ಗಜಜನ್ಮವನ್ನು ಹೊಂದು ವಂತೆ ಆ ಮುಷಿಯಿಂದ ಶಾಪಹೊಂದಿದವನಾಗಿ ಒಂದು ಸರೋವರದಲ್ಲಿ ನೀರು ಕುಡಿಯುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಒಂದು ಮೊಸಳೆಯು ಬಂದು ಕಾಲು ಹಿಡಿದುಕೊಂಡಿತು. ಹಿಂದಿನ ಜನ್ಮದ ವಾಸನೆಯಿಂದ ವಿಷ್ಣುವನ್ನು ಸ್ತುತಿಸ ಲಾಗಿ ವಿಷ್ಣುವು ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷನಾಗಿ ಮೊಸಳೆಯನ್ನು ಸಂಹರಿಸಲು ಇವನು ಶಾಪವಿಮೋಚನೆ ಹೊಂದಿದನು.]

ಇಂದ್ರದ್ವು - ದ್ವುಮ - ದ್ವುಮ (೨೦) ಅರ್ಜುನ ವೃಕ್ಷ, ದೇವದಾರುಮರ, ಕೆಂಪು ಮತ್ತಿಮರ. [ಇದು ಇಂದ್ರಧ್ವಜಕ್ಕಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಮರ; ವಿವರಕ್ಕೆ "ಇಂದ್ರಜಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಇಂದ್ರಧನುಸ್ ಇಂದ್ರಧನುಸ್ (ನಂ) ಇಂದ್ರನ ಧನುಸ್ಸು, ಕಾಮನ ಬಿಲ್ಲು; ಮಳೆಗಾಲದಲ್ಲಿ ಮೇಘದಲ್ಲಿ ಹಾಕುವ ಸಪ್ತವರ್ಣದ ಬಿಲ್ಲು.

ಇಂದ್ರಜಿ ಇಂದ್ರಜಿ (೨೦) ಇಂದ್ರನ ಧ್ವಜ, ಇಂದ್ರನ ಬಾವುಟ. ಇಂದ್ರಸ್ಯ ಇಂದ್ರಜಿಂಥಾಥಿ ಧ್ವಜ:। [ಭಾದ್ರಪದ ಶುಕ್ಲ ದ್ವಾದಶಿಯ ದಿನ ರಾಜರು ತಮ್ಮ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಸುವೃಷ್ಟಿ ಮತ್ತು ಸಸ್ಯಸಮೃದ್ಧಿಗಾಗಿ ಪೂಜಿಸುವ ಧ್ವಜ; ಈ ಧ್ವಜದ ಉತ್ಪತ್ತಿಯ ಕಥೆ: ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ದೇವತೆಗಳು ಬ್ರಹ್ಮನಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ ತಾವು ಅಸುರರೊಡನೆ ಯುದ್ಧ ಮಾಡಬೇಕಾಗುವುದೆಂದು ಹೇಳಿದರು. ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಾತಿನಂತೆ ದೇವತೆಗಳು ಕ್ಷೀರಾಬ್ಧಿಗೆ ತೆರಳಿ ವಿಷ್ಣುವನ್ನು ಸ್ತುತಿಸಲಾಗಿ ಸುಪ್ರೀತನಾದ ವಿಷ್ಣುವು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದ ಒಂದು ಧ್ವಜವನ್ನು ಇಂದ್ರನು ಸಂತೋಷದಿಂದ ಸ್ವೀಕರಿಸಿ ಅದನ್ನು ಮುಂದಿಟ್ಟು ಕೊಂಡು ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಅಸುರರನ್ನು ಜಯಿಸಿದನು. ಆಗ ಇಂದ್ರನು "ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಈ ಧ್ವಜವನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿ ಪೂಜಿಸುವ ರಾಜನ ರಾಷ್ಟ್ರದಲ್ಲಿ ಸುವೃಷ್ಟಿಯೂ, ಸಸ್ಯ ಸಮೃದ್ಧಿಯೂ ಉಂಟಾಗುವುದೆಂದು ಹೇಳಿದನು.



ಅಂದಿನಿಂದ ರಾಜರು ಇದನ್ನು ಪೂಜಿಸುವರು. "ಎವಂ  
ಯಃ ಕುಸ್ತೇ ಯಾತ್ರಾಮಿನ್ದ್ರಕೇತೋರ್ಯುಧಿಷ್ಟಿರಃ | ಪರ್ಜನ್ಯಃ ಕಾಮವರ್ಷಿ  
ಸ್ಯಾತ್ ತಸ್ಯ ರಾಜ್ಯೇ ನ ಸಂಶಯಃ" ಭವಿಷ್ಯಂ | "ಪುರುಹೂತ-  
ಧ್ವಜಸ್ಯೇವ ತಸ್ಯೋನ್ನಯನಪಙ್ಕ್ತಯಃ | ನವಾಮ್ಯುತ್ಥಾನದರ್ಶಿನ್ಯೋ  
ನನಂದುಃ ಸಪ್ರಜಾಃ ಪ್ರಜಾಃ" ರಘುಂ ೪-೩ | ಈ ಧ್ವಜದ  
ನಿರ್ಮಾಣಕ್ಕಾಗಿ ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ಮರಗಳೆವುಃ  
"ಶ್ರೇಷ್ಠೋಽರ್ಜುನೋಽವಕರ್ಣಃ | ಪ್ರಿಯಕಥವೋದುಂಬರಾಶ್ಚ ಪಙ್ಕವೇತೇ |  
ಎತೇಷಾಮನ್ಯತಮಂ ಪ್ರಸಸ್ತಮಥಾಮರಂ ವೃಕ್ಷಮ್" | ಇದನ್ನು ತರುವ  
ಕ್ರಮಃ : "ಗೌರಾಸಿತಕ್ಷಿತಿಭವಂ ಸಂಪೂಜ್ಯ ಯಥಾವಿಧಿ ದ್ವಿಜಃ  
ಪೂರ್ವಮ್ | ವಿಜನೇ ಸಮೇತ್ಯ ರಾತ್ರೌ ಸ್ಪೃಷ್ಟಾ ಬ್ರೂಯಾದಿಮಂ ಮನ್ತ್ರಮ್ |  
ಯಾನಿಹ ವೃಕ್ಷೇ ಭೂತಾನಿ ತೇಮ್ಯಃ ಸ್ವಸ್ತಿ ನಮೋಽಸ್ತು ವಃ | ಉಪಹಾರಂ  
ಗೃಹೀತ್ವೇಮಂ ಕ್ರಿಯತಾಂ ವಾಸಪರ್ಯಯಃ | ಪಾರ್ಥಿವಸ್ತ್ವಾಂ ವರಯತೇ ಸ್ವಸ್ತಿ  
ತೇಽಸ್ತು ನಗೋತ್ತಮ | ಧ್ವಜಾರ್ಥಂ ದೇವರಾಜಸ್ಯ ಪೂಜಯಂ ಪ್ರತಿ-  
ಗೃಹ್ಯತಾಮ್" ಬೃಹತ್ಸಂ | ಈ ರೀತಿ ಮೊದಲು ಪೂಜಿಸಿ ವೃಕ್ಷ  
ವನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿ ಉತ್ತರ ಅಥವಾ ಪೂರ್ವಾಭಿ-  
ಮುಖವಾಗಿ ನಿಂತು ಕಡಿದು ತಂದ ಮರದಿಂದ ಧ್ವಜ  
ವನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಬೇಕು.]

ಇಂದ್ರನೇತ್ರ ಇಂದ್ರನೇತ್ರ (ನಂ) 1. ಇಂದ್ರನ ಕಣ್ಣು.  
2. ಒಂದು ಸಾವಿರ ಸಂಖ್ಯೆ.

ಇಂದ್ರನೀಲ ಇಂದ್ರನೀಲ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರನೀಲಮಣಿ, ನೀಲ  
ರತ್ನ. ಇಂದ್ರ ಇವ ನೀಲಃ | "ಕವಚಿತ್ರಭಾಲೇಪಿಭಿರಿನ್ದ್ರ-  
ನೀಲೈರ್ಮುಕ್ತಾಮಯಿ ಯಷ್ಟಿರಿವಾನುವಿಧಾ" ರಘುಂ ೧೩-೪೪ |

"ಇಂದ್ರನೀಲಾಚಲೋದಂಜ್ವಲಚಂದ್ರಿಕಾಧವಲಸ್ಮಿತಃ" ಚಂ ರಾಂ |

ಇಂದ್ರಪತ್ನಿ ಇಂದ್ರಪತ್ನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಂದ್ರನ ಪತ್ನಿ, ಶರಣೀ  
ದೇವಿ. ಇಂದ್ರಸ್ಯ ಪತ್ನಿ |

ಇಂದ್ರಪರ್ವತ ಇಂದ್ರಪರ್ವತ (ಪುಂ) 1. ಮಹೇಂದ್ರಪರ್ವತ.  
2. ಇಂದ್ರನೀಲ ಪರ್ವತ.

ಇಂದ್ರಪ್ರಸ್ಥ ಇಂದ್ರಪ್ರಸ್ಥ (ನಂ) ಇಂದ್ರಪ್ರಸ್ಥ ನಗರ, ಈಗಿನ  
ದೇಹಲಿ ನಗರ, ಪಾಂಡವರು ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನಿಂದ ಅರ್ಧ  
ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಪಡೆದು ಯಮುನಾ ತೀರದಲ್ಲಿ ನಿರ್ಮಿಸಿದ  
ಒಂದು ನಗರ. "ಪಿತೃವ್ಯವಾಚಾಥ ಪೃಥಾತನುಜೋ ಹರಿ  
ಪುರೋಧಾಯ ಸಮಂ ಬಲೈಃ | ಪರಸ್ಪರಸ್ತೇಹಿಮಿವೈಷ ಮಾತುಂ ಪ್ರಸ್ಥಂ  
ಯಯಿ ಖಾಂಡವಶಬ್ದಪೂರ್ವಮ್" ಚಂ ಭಾಂ | ಮುಂದೆ ಸಂಧಿ  
ಗಾಗಿ ಧರ್ಮರಾಜನು ದುರ್ಯೋಧನನಿಂದ ಕೇಳುವ  
ಪಂಚಗ್ರಾಮಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಇಂದ್ರಪ್ರಸ್ಥಂ ವೃಕಪ್ರಸ್ಥಂ ಜಯಂತಂ  
ವಾರಣಾವತಮ್ | ಪ್ರಯಂಚ ಚತುರೋ ಗ್ರಾಮಾನ್ ಕಚ್ಚಿದೇಕಂ ತು  
ಪಂಚಮಮ್" ವೇಣೀಂ ೧-೧೬ |

ಇಂದ್ರಭೇಷಜ ಇಂದ್ರಭೇಷಜ (ನಂ) ಶುಂಠಿ.

ಇಂದ್ರಮಖ ಇಂದ್ರಮಖ -ಯಜ -ಯಜ್ಞ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರನ  
ಸಂತೋಷಾರ್ಥವಾಗಿ ವರ್ಷಾರ್ಥವಿನಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ  
ಯಜ್ಞ.

ಇಂದ್ರಮಹ ಇಂದ್ರಮಹ (ಪುಂ) 1. ವರ್ಷಾರ್ಥವಿನಲ್ಲಿ ಇಂದ್ರನ  
ಸಂತೋಷಾರ್ಥವಾಗಿ ಮಾಡುವ ಉತ್ಸವ. ಇಂದ್ರ-  
ಸಂತೋಷಾರ್ಥೋ ಮಹಃ ಉತ್ಸವಃ | 2. ವರ್ಷಾರ್ಥ. ಇಂದ್ರಸ್ಯ  
ಮಹೋ ಯತ್ರ |

ಇಂದ್ರಮಹಕಾಮುಕ ಇಂದ್ರಮಹಕಾಮುಕ (ಪುಂ) ನಾಯಿ.  
ಇಂದ್ರಮಹ ವರ್ಷಕಾಲೇ ಕಾಮುಕಃ ಕಮಯಿತಾ |

ಇಂದ್ರಯವ ಇಂದ್ರಯವ (ಪುಂ) ಬೆಟ್ಟಮಲ್ಲಿಗೆಯ ಬೀಜ.  
ಇಂದ್ರಸ್ಯ ಕುಟಜವೃಕ್ಷಸ್ಯ ಯವಃ | ಯವಾಕಾರವಿಜತ್ವಾತ್ ಯವ ಇವ  
ವಿಜಮ್ |

ಇಂದ್ರಲ್ಪತ ಇಂದ್ರಲ್ಪತ (ನಂ) ತಲೆಯ ಕೂದಲನ್ನು  
ಉದುರಿಸುವ ಒಂದು ರೋಗ. ಇಂದ್ರಃ ಇಂದ್ರವರ್ಣೋ ನೀಲಃ  
ಕೇಶೋ ಲ್ಪತೋ ಯಸ್ಮಾತ್ | [ರೋಮಕೂಪದ ಪಿತ್ತವು ವಾತ  
ದೊಡನೆ ಬೆರೆತು ಕೂದಲನ್ನು ಉದುರಿಸುವುದು. ಬಳಿಕ  
ಕಫವು ರಕ್ತದೊಡನೆ ಸೇರಿ ರೋಮಕೂಪವನ್ನು  
ಮುಚ್ಚುವುದರಿಂದ ಮುಂದೆ ಕೂದಲು ಬೆಳೆಯುವುದಿಲ್ಲ.  
ಪುರುಷನು ಇದರಿಂದ ಬಟ್ಟೆತಲೆಯವನಾಗುತ್ತಾನೆ.]  
ಸುಶ್ರುತಂ ನಿವಾಂ ೩೩ |

ಇಂದ್ರವಂಶ ಇಂದ್ರವಂಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರದಲ್ಲಿ  
ಉಕ್ತವಾಗಿರುವ 12 ನೆಯ ಭಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ.  
"ಸ್ಯಾದಿನ್ದ್ರವಂಶಾ ತತಜರಸಂಯುತಃ" ವೃಂ ರಂ | ಈ ವೃತ್ತದ  
ಗಣವಿನ್ಯಾಸಃ :

|    |    |    |    |
|----|----|----|----|
| ತ  | ತ  | ಜ  | ರ  |
| ೦೦ | ೦೦ | ೦೦ | ೦೦ |

ಇಂದ್ರವಜ್ರಾ ಇಂದ್ರವಜ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರದಲ್ಲಿ  
ಉಕ್ತವಾಗಿರುವ 11 ನೆಯ ಭಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು  
ವೃತ್ತ. "ಸ್ಯಾದಿನ್ದ್ರವಜ್ರಾ ತತಜಾಸ್ತತೋ ಗೌ" ವೃಂ ರಂ |  
ಈ ವೃತ್ತದ ಗಣವಿನ್ಯಾಸಃ :

|    |    |    |    |
|----|----|----|----|
| ತ  | ತ  | ಜ  | ಗು |
| ೦೦ | ೦೦ | ೦೦ | ೦೦ |

ಇಂದ್ರವಲ್ಲಿ ಇಂದ್ರವಲ್ಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಾರಿಜಾತದ ಗಿಡ.  
2. ಹಾವುಮೆಕ್ಕೆ ಗಿಡ.

ಇಂದ್ರವಸ್ತಿ ಇಂದ್ರವಸ್ತಿ (ಪುಂ) ಕಣಕಾಲು, ಮೊಣಕಾಲು.  
ಇಂದ್ರವಾಣಿ ಇಂದ್ರವಾಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಾವುಮೆಕ್ಕೆ  
ಗಿಡ.

ಇಂದ್ರವೃಕ್ಷ ಇಂದ್ರವೃಕ್ಷ (ಪುಂ) ದೇವದಾರು ಮರ.



ಇಂದ್ರವತ ಇಂದ್ರವ್ರತ (ನಂ) ಪ್ರಜಾಪರಿವಾಲನ ರೂಪ  
ವಾದ ರಾಜನ ಕರ್ತವ್ಯ. "ವಾರ್ಷಿಕಾಂಶತುರೋ ಮಾಸಾನ್  
ಯಥೇಂದ್ರೋಽಭಿವರ್ಷತಿ | ತಥಾಭಿವರ್ಷತ್ ಸ್ವಂ ರಾಷ್ಟ್ರಂ ಕಾಮೇರಿಂದ್ರ-  
ವ್ರತಂ ಚರನ್" ಮನುಂ ೧-೩೦೪ |

ಇಂದ್ರಶತ್ರು ಇಂದ್ರಶತ್ರು (ಛಂ) ವೃತ್ತಾಸುರ. ಇಂದ್ರ: ಶತ್ರುಯಸ್ಯ |  
[ವೃತ್ತಾಸುರನ ತಂದೆಯಾದ ತೃಷ್ಣನು ಇಂದ್ರನಿಗೆ  
ಶತ್ರುವಾದ (ಇಂದ್ರನನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವ) ಮಗನನ್ನು  
ಪಡೆಯಬೇಕೆಂದು "ಸ್ವಾಹೇಂದ್ರಶತ್ರುವಂಶಸ್ವ" ಎಂದು  
ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದನು. ಇಂದ್ರಸ್ಯ ಶತ್ರು: ಎಂದು ವೃಷ್ಣವಾಗಿ  
ಅಥವಾ ಅಂತೋದಾತ್ತವಾಗಿ ತತ್ಪುರುಷ ಸಮಾಸ  
ದಿಂದ ಹೇಳಿದ್ದರೆ ಇಂದ್ರನನ್ನು ಸಂಹರಿಸುವ ಪುತ್ರನು  
ಜನಿಸುತ್ತಿದ್ದನು. ಇಂದ್ರ: ಶತ್ರು: ಯಸ್ಯ ಎಂದು ಪೂರ್ವಪದೋ-  
ದಾತ್ತವಾಗಿ ಬಹುವ್ರೀಹಿ ಸಮಾಸದಿಂದ ಸಮಸ್ತ  
ವಾಗಿ ಹೇಳಿದುದರಿಂದ ಇಂದ್ರನೇ ಶತ್ರುವಾಗಿ ಉಳ್ಳ  
(ಇಂದ್ರನಿಂದ ಸಂಹರಿಸಲ್ಪಡುವ) ಪುತ್ರನು ಜನಿಸಿ-  
ದನು. ಅದುದರಿಂದ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವಾಗ  
ಸ್ವರವ್ಯತ್ಯಾಸವಾದರೆ ಮಹಾ ಅನಿಷ್ಟವೆಂದು ತಿಳಿಯ-  
ಬೇಕು.] "ಮನ್ತ್ರೋ ಹೀನ: ಸ್ವರತೋ ವರ್ಣತೋ ವಾ ಮಿಥ್ಯಾಪ್ರಯುಕ್ತೋ  
ನ ತಮರ್ಥಮಾಹ | ಸ ವಾಗ್ವಾಂ ಯಜಮಾನಂ ಹಿನಸ್ತಿ ಯಥೇಂದ್ರಶತ್ರು:  
ಸ್ವರತೋಽಪರಾಧಾತ್" ಶಿಕ್ಷಾ |

ಇಂದ್ರಸಾರಥಿ ಇಂದ್ರಸಾರಥಿ (ಛಂ) ಇಂದ್ರನ ಸಾರಥಿ,  
ಮಾತಲಿ.

ಇಂದ್ರಸಾರ್ವಣಿ ಇಂದ್ರಸಾರ್ವಣಿ (ಛಂ) ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ  
ಮನುಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. ["ಇಂದ್ರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಇಂದ್ರಸುತ ಇಂದ್ರಸುತ - ಸುತು - ಸೂನು (ಛಂ) 1. ಇಂದ್ರನ  
ಮಗ - (1) ಜಯಂತ. (2) ಅರ್ಜುನ. (3) ವಾಲಿ.  
"ಜಗ್ರಾಹ ಪಾಠೇಯಮಿವೇಂದ್ರಸುತು:" ಕಿರಾಂ ೩-೩೭ | 2. ಅರ್ಜುನ  
ವೃಕ್ಷ, ದೇವದಾರು ಮರ.

ಇಂದ್ರಸುರಸ ಇಂದ್ರಸುರಸ (ಛಂ) ಲಕ್ಕಿಗಿಡ.

ಇಂದ್ರಸೇನ ಇಂದ್ರಸೇನ (ಛಂ) ಒಬ್ಬ ರಾಜ, ನಳಚಕ್ರ  
ವರ್ತಿಯ ಮಗ.

ಇಂದ್ರಸೇನಾ ಇಂದ್ರಸೇನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಇಂದ್ರನ ಸೈನ್ಯ.  
2. ಮಾದ್ಗಲ್ಯಮುಷಿಯ ಪತ್ನಿ, ನಾಳಾಯನಿ. ಈಕೆಯು  
ತಿವನನ್ನು ಕುರಿತು ತಪಸ್ಸುಮಾಡಿ ದ್ರೌಪದಿಯಾಗಿ  
ಜನಿಸಿದಳು.

ಇಂದ್ರಸೇನಾನಿ ಇಂದ್ರಸೇನಾನಿ (ಛಂ) ಇಂದ್ರನ ಸೇನಾ  
ಪತಿ, ಪಣ್ಣುಖ, ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಕುಮಾರಸ್ವಾಮಿ.  
ಇಂದ್ರಸೇನಾ ನಯತಿ - ಣಿನ್ (ಪ್ರಾಣಿ) "ಕ್ರಿಪ್" (೩-೨-೬೧) |

[ತಾರಕಾಸುರನಿಂದ ಪರಾಜಿತನಾದ ಇಂದ್ರನು ಬ್ರಹ್ಮ  
ನಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ ತಾರಕಾಸುರನ ವಧಕ್ಕಾಗಿ ಒಬ್ಬ  
ಸೇನಾಪತಿಯನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಬೇಕೆಂದು ಕೇಳಿಕೊಳ್ಳು-  
ವನು. ಚತುರ್ಮುಖನು ತಾನೇ ಆತನಿಗೆ ವರವನ್ನು  
ಕೊಟ್ಟು ಆತನ ನಾಶಕ್ಕೆ ಕಾರಣನಾಗುವುದು ಸರಿಯಲ್ಲ  
ವೆಂದೂ, ಈಗ ಸಮಾಧಿಯಲ್ಲಿರುವ ಪರಮೇಶ್ವರನು  
ಪಾರ್ವತಿಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಲು ಪ್ರಯತ್ನಪಟ್ಟಲ್ಲಿ  
ಅವರಿಬ್ಬರಿಂದ ಜನಿಸುವ ಕುಮಾರನು ನಿಮ್ಮ  
ಸೇನಾಪತಿತ್ವವನ್ನು ವಹಿಸಿ ತಾರಕಾಸುರನನ್ನು ಸಂಹರಿ-  
ಸುವನೆಂದೂ ಹೇಳಲು, ಹಿಮವತ್ಪರ್ವತದ ತಪ್ಪಲಲ್ಲಿ  
ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಪರಮೇಶ್ವರನ ಶುಕ್ರೋಷಗಾಗಿ  
ಹಿಮವಂತನಿಂದ ಅಜ್ಞ ಪ್ರಳಾದ ಪಾರ್ವತಿಯ ಸೌಂದರ್ಯ  
ದಿಂದ ಪರಮೇಶ್ವರನ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಆಕರ್ಷಿಸಲು  
ಮಹೇಂದ್ರನು ಮನ್ಮಥನನ್ನು ಕಳುಹಿಸುವನು. ಆಗ  
ಕುಪಿತನಾದ ಪರಮೇಶ್ವರನ ಫಾಲಾಗ್ನಿಯಿಂದ  
ಮನ್ಮಥನು ದಗ್ಧನಾಗಲು ಪಾರ್ವತಿಯು ತನ್ನ  
ಸೌಂದರ್ಯವು ವ್ಯರ್ಥವಾಯಿತೆಂದು ತಿಳಿದು  
ಪರಮೇಶ್ವರನ ಪ್ರಾಪ್ತಿಗಾಗಿ ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತಿರಲು  
ಪರಮೇಶ್ವರನು ಅದರಿಂದ ಮೆಚ್ಚಿ ಅವಳ ಮನಸ್ಸನ್ನು  
ಅನೇಕ ವಿಧವಾಗಿ ಪರೀಕ್ಷಿಸಿ ಮದುವೆಯಾದನು.  
ಅನಂತರ ಪಾರ್ವತಿಯ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಪಣ್ಣುಖನು ಜನಿಸಿ  
ಇಂದ್ರನ ಸೇನಾಪತಿತ್ವವನ್ನು ವಹಿಸಿ ತಾರಕಾಸುರ-  
ನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ಇಂದ್ರನಿಗೆ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಕೊಡಿಸು-  
ವನು.]

ಇಂದ್ರಾ ಇಂದ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮರುಗದ ಗಿಡ. 2. ಶಚೀ  
ದೇವಿ. 3. ಹಾವುಮೆಕ್ಕೇಗಿಡ. ಇದಿ (ಪರಮೇಶ್ವರ)  
"ರನ್" (೩ಂ ೨-೨೮) |

ಇಂದ್ರಾಗ್ನಿ ಇಂದ್ರಾಗ್ನಿ (ಛಂ ಛಿವಂ) 1. ಇಂದ್ರ ಮತ್ತು  
ಅಗ್ನಿದೇವತೆಗಳು. 2. ವಿಶಾಖಾ ನಕ್ಷತ್ರ.

ಇಂದ್ರಾಗ್ನಿಧೂಮ ಇಂದ್ರಾಗ್ನಿಧೂಮ (ಛಂ) ಹಿಮ, ಮಂಜು.  
ಇಂದ್ರಾಗ್ನಿ: ಧೂಮ ಇವ |

ಇಂದ್ರಾಣಿಕಾ ಇಂದ್ರಾಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲಕ್ಕಿಗಿಡ.

ಇಂದ್ರಾಣಿ ಇಂದ್ರಾಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಇಂದ್ರನ ಪತ್ನಿ,  
ಶಚೀದೇವಿ. ಇಂದ್ರಸ್ಯ ಪತ್ನಿ "ಜಿಷ್" ಆನುಕ್ ಚ (೪-೧-೪೯) |  
2. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 3. ಲಕ್ಕಿಗಿಡ. 4. ಯಾಲಕ್ಕಿ  
ಕಾಯಿ. ಇಂದ್ರ ಇವ ಆನಯತಿ ಜೀವಯತಿ - ಅನ (ಪ್ರಾಣಿ) +  
ಣಿನ್ "ಅನ್" (೩-೧-೧೩೪) |



**ಇಂದ್ರಾನುಜ ಇಂದ್ರಾನುಜ -ಅವರಜ -ಅವರಜ (ಛಂ)**  
ಇಂದ್ರನ ತಮ್ಮ, ಉಪೇಂದ್ರಾವತಾರ ಮಾಡಿದ ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣ. ಇಂದ್ರಸ್ಯಾನುಜಃ ಅವರಜೋ ವಾ | [ಅದಿತಿರೇವಯಃ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಇಂದ್ರನು ಜನಿಸಿದನಂತರ ಬಲಿಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ನಿಗ್ರಹಕ್ಕಾಗಿ ಶ್ರೀ ವಿಷ್ಣುವು ವಾಮನರೂಪದಿಂದ ಅವತರಿಸಿದನು.]

**ಇಂದ್ರಾಪುಥ ಇಂದ್ರಾಪುಥ (ಛಂ)** 1. ಕಾದಂಬರಿಯಲ್ಲಿ ವರ್ಣಿತವಾದ ಒಂದು ಕುತುಬ. (ನಂ) 2. ಇಂದ್ರನ ಧನುಸ್ಸು, ಕಾಮನಬಿಲ್ಲು. [ಮೇಘದಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯ ಕಿರಣ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಸಪ್ತವರ್ಣಾತ್ಮಕವಾಗಿ ಕಾಣುವ ಧನುಸ್ಸಿನ ರೂಪವಾದ ಪದಾರ್ಥಕ್ಕೆ ಕಾಮನಬಿಲ್ಲೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಯುಂಟು.] 3. ಇಂದ್ರನ ಅಸ್ತ್ರ, ವಜ್ರಾಪುಥ. "ಇಂದ್ರಾಪುಥೋತ್ತಿತತೋರಣಾತ್ಮಕಂ" ರಘುಂ ೭-೪.

**ಇಂದ್ರಾರಿ ಇಂದ್ರಾರಿ (ಛಂ)** ಅಸುರ, ರಾಕ್ಷಸ, ಇಂದ್ರನಿಗೆ ಶತ್ರು. ಇಂದ್ರಸ್ಯಾರಿಃ |

**ಇಂದ್ರಾವಸಾನ ಇಂದ್ರಾವಸಾನ (ಛಂ)** ಮರುಭೂಮಿ, ಉಷರಭೂಮಿ. ಇಂದ್ರಸ್ಯ ಮೇಘಸ್ಯಾವಸಾನಮತ್ರ |

**ಇಂದ್ರಾಶನ ಇಂದ್ರಾಶನ (ಛಂ)** ಬಂಗೀಗಿಡದ ನಾರು. ಇಂದ್ರಾಯ ಔಶ್ವರ್ಯಾಶಯತೇ ಭುಜ್ಯತೇ | [ಬಂಗಿಯ ಸೇವನೆಯಿಂದ ರಾಜ್ಯಸೌಖ್ಯವನ್ನು ತೃಣೀಕರಿಸುವ ಸೌಖ್ಯವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.]

**ಇಂದ್ರಿಯ ಇಂದ್ರಿಯ (ನಂ)** 1. ಕರಣ, ಸಾಧನ. (1) ಇಂದ್ರಸ್ಯಾತ್ಮನೋ ಲಿಂಗಂ ಅನುಮಾಪಕಂ | (2) ಇಂದ್ರೇಣ ದೃಷ್ಟಂ ಜ್ಞಾತಂ | (3) ಇಂದ್ರೇಣ ಸೃಷ್ಟಂ | (4) ಇಂದ್ರೇಣ ಜೃಷ್ಟಂ ಸೇವಿತಂ | (5) ಇಂದ್ರೇಣ ದುರ್ಜಯಂ | "ಏವ" (೪-೨-೯೩) | ನಿಪಾಂ | ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯಗಳು ಐದು, ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಗಳು ಐದು. ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ (ತಿಳಿವಳಿಕೆಗೆ) ಸಾಧನವಾದ (1) ಶ್ರೋತ್ರ, (2) ತ್ವಕ್ಶು, (3) ಚಕ್ಷುಸ್ಸು, (4) ಜಿಹ್ವೆ ಮತ್ತು (5) ನಾಸಿಕೆ ಇವು ಐದೂ ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯಗಳು. ಕ್ರಿಯಾಸಾಧನವಾದ (1) ವಾಕ್ಯು, (2) ಪಾಣಿ, (3) ಪಾದ, (4) ಪಾಯು ಮತ್ತು (5) ಉಪಸ್ಥ ಇವು ಐದೂ ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಗಳು. ಕೆಲವರು ಜ್ಞಾನಕ್ರಿಯೋಭಯಸಾಧನವಾದ ಮನಸ್ಸನ್ನೂ ಸೇರಿಸಿ ಒಟ್ಟು ಇಂದ್ರಿಯಗಳು ಹನ್ನೊಂದು ಎಂದು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತಿಗಳು ಆರು ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯಗಳೂ, ಐದು ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಗಳೂ ಸೇರಿ ಒಟ್ಟು ಹನ್ನೊಂದು ಇಂದ್ರಿಯಗಳೆಂದು ಅಭಿಪ್ರಾಯಪಡುತ್ತಾರೆ. ದ್ವೈತಿಗಳು ಇವುಗಳ ಜೊತೆಗೆ

ಸ್ವರೂಪವೆಂಬ ಮತ್ತೊಂದು ಇಂದ್ರಿಯವನ್ನೂ ಸೇರಿಸಿ ಇಂದ್ರಿಯಗಳು ಹನ್ನೆರಡು ಎಂದು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಅದ್ವೈತಿಗಳು "ಪञ್ಚಪ್ರಾಣಮನೋಬುದ್ಧಿಶೇಂದ್ರಿಯಸಮನ್ವಿತಂ | ಅಪञ್ಚಿಕೃತಮತೋತ್ಥಂ ಸೂಕ್ಷ್ಮಾತ್ ಭೋಗಸಾಧನಂ" ಎಂದು ಮನಸ್ಸು ಮತ್ತು ಬುದ್ಧಿಗಳನ್ನು ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಬೇರ್ಪಡಿಸಿ ಒಟ್ಟು ಹತ್ತು ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ಮಾತ್ರ ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. 2. ರೇತಸ್ಸು, ವೀರ್ಯ, ಧಾತು.

**ಇಂದ್ರಿಯಗೋಚರ ಇಂದ್ರಿಯಗೋಚರ (ಛಂ)** ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಗೆ ವೇದ್ಯವಾಗುವ ವಿಷಯ, ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಂದ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ ವಿಷಯ. ಇಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ ಗೋಚರಃ | [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಇಂದ್ರಿಯಾರ್ಥ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಇಂದ್ರಿಯಗ್ರಾಮ ಇಂದ್ರಿಯಗ್ರಾಮ (ಛಂ)** ಇಂದ್ರಿಯಗಳ ಸಮೂಹ. ಇಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ ಗ್ರಾಮಃ ಸಮೂಹಃ | "ಬಲವಾನಿಂದ್ರಿಯಗ್ರಾಮೋ ವಿಧ್ವಾಸಮಪಿ ಕರ್ಮತಿ" ಮನುಂ ೨-೨೧೫ | "ಮನಸೇವೇಂದ್ರಿಯಗ್ರಾಮಂ ವಿನಿಯಮ್ಯ ಸಮಂತತಃ" ಗೀತಾ ೬-೨೪ |

**ಇಂದ್ರಿಯಜ ಇಂದ್ರಿಯಜ (ವಿಂ)** ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಜ್ಞಾನ. [ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಗೆ ವಿಷಯ ಸನ್ನಿಕರ್ಷವೇ ವ್ಯಾಪಾರ. ಆ ವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ ಜ್ಞಾನವುಂಟಾಗುವುದು. ಅದುದರಿಂದ ಇಂದ್ರಿಯಗಳು ವ್ಯಾಪಾರಗಳ ಮೂಲಕ ಜ್ಞಾನಸಾಧನವಾಗುವುವು.]

**ಇಂದ್ರಿಯಜ್ಞಾನ ಇಂದ್ರಿಯಜ್ಞಾನ (ನಂ)** ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಜ್ಞಾನ, ವಿಷಯಸನ್ನಿಕರ್ಷದಿಂದಂಟಾಗುವ ಜ್ಞಾನ.

**ಇಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹ ಇಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹ (ಛಂ)** 1. ಇಂದ್ರಿಯಗಳ ಹತೋಟಿ, ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡುವುದು, ಇಂದ್ರಿಯಗಳು ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ಕೆಲಸಮಾಡದಿರುವಂತೆ ನಿರ್ಬಂಧದಲ್ಲಿಡುವುದು. ಇಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ ಯಥೇಚ್ಛಂ ಪ್ರವೃತ್ತಾಂತಾಂ ನಿಗ್ರಹೋ ನಿರೋಧಃ | ಈ ಇಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹವು ಸಕಲ ವರ್ಣದವರಿಗೂ ಸಮಾನವಾದ ಧರ್ಮ. "ಘೃತಿಃ ಕ್ಷಮಾ ದಮೋಸ್ತೇಯಂ ಶೌಚಮಿಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹಃ | ಧೀರ್ವಿಶ್ವಾ ಸತ್ಯಮಕ್ರೋಧೋ ದಶಕಂ ಧರ್ಮಲಕ್ಷಣಂ" ಮನುಂ ೬-೯೨ | 2. ಯೋಗಾಭ್ಯಾಸದ ಒಂದು ಅಂಗ. ಯೋಗಾಭ್ಯಾಸ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ತಡೆದು ಕೆಲವನ್ನು ಮಾತ್ರ ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಾಗಿ ಬಿಟ್ಟಲ್ಲಿ ಯೋಗವು ಸಿದ್ಧಿಸಲಾರದು. "ಇಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ ತು ಸರ್ವೇಷಾಂ ಯಥೇಕಂ ಕರತೀಂದ್ರಿಯಂ | ತೇನಾಸ್ಯ ಕರತಿ ಪ್ರಜ್ಞಾ ದತೇಃ ಪಾದಾದಿವೋದಕಂ" ಮನುಂ ೨-೯೯ | ಎಲ್ಲಾ ಇಂದ್ರಿಯಗಳ ನಿಗ್ರಹಕ್ಕೂ ಮನೋನಿಗ್ರಹವೇ ಕಾರಣವಾದುದರಿಂದ ಮನೋನಿಗ್ರಹವು ಮುಖ್ಯವಾದುದು. "ಇಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ ಹಿ ಚರತಾಂ ಯಮನೋಽನುವಿಧೀಯತೇ |



ತದಸ್ಯ ಹರತಿ ಪ್ರಜ್ಞಾಂ ವಾಯುನಿವಿಮಿವಾಮ್ಬಸಿ" ಗೀತಾ ೨-೬೭।  
ಮನೋನಿಗ್ರಹಕ್ಕೆ ಅಭ್ಯಾಸ ಮತ್ತು ವೈರಾಗ್ಯಗಳೆಂಬ  
ಎರಡು ಉಪಾಯಗಳುಂಟು. "ಅಸಂಶಯಂ ಮಾಹಾಹೋ  
ಮನೋ ದುರ್ನಿಗ್ರಹಂ" ಚಲಮ್। ಅಭ್ಯಾಸೇನ ಚ ಕೌಂತೇಯ ವೈರಾಗ್ಯೇನ  
ಚ ಗೃಹ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೬-೩೫।

ಇಂದ್ರಿಯವಧ ಇಂದ್ರಿಯವಧ (೨೦) ಇಂದ್ರಿಯಗಳು ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ಪ್ರವರ್ತಿಸದಂತೆ ಅವುಗಳ ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಕುಗ್ಗಿಸುವುದು, ಇಂದ್ರಿಯಗಳ ಹತೋಟಿ.

ಇಂದ್ರಿಯವತ್ ಇಂದ್ರಿಯವತ್ (ವಿಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಇಂದ್ರಿಯವುಳ್ಳ, ಇಂದ್ರಿಯ ನಿಗ್ರಹವುಳ್ಳ. ಪ್ರಶಸ್ತಾನಿ-  
ಂದ್ರಿಯಾಪ್ಯಸ್ಯ "ಮತುಃ" (೫-೨-೯೪)। (ಅವ್ಯಂ)  
2. ಇಂದ್ರಿಯದಂತೆ. ಇಂದ್ರಿಯೇನ ತುಲ್ಯಮ್।

ಇಂದ್ರಿಯವರ್ಗ ಇಂದ್ರಿಯವರ್ಗ (೨೦) ಇಂದ್ರಿಯಗಳ ಸಮೂಹ. ಇಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ ವರ್ಗಃ। "ಸ್ವಾದುನಿ ಪ್ರಣದಿತಾಲಿನಿ  
ಶೀತೇ ನಿವಂವಾರ ಮಧುನಿಂದ್ರಿಯವರ್ಗಃ" ಮಾಘಂ ೧೦-೩।

ಇಂದ್ರಿಯವೃತ್ತಿ ಇಂದ್ರಿಯವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಂದ್ರಿಯಗಳ ವ್ಯಾಪಾರ, ಆಯಾ ಇಂದ್ರಿಯಗಳು (ತಮಗೆ) ಸಂಬಂಧ ಪಟ್ಟ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಕೆಲಸ.

ಇಂದ್ರಿಯವ್ಯಾಪಾರ ಇಂದ್ರಿಯವ್ಯಾಪಾರ (೨೦) ಇಂದ್ರಿಯಗಳು (ತಮಗೆ) ಸಂಬಂಧಪಟ್ಟ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಕೆಲಸ. ಇಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ ವ್ಯಾಪಾರಃ।

#### 1. ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯಗಳು.

| ಇಂದ್ರಿಯ       | ವ್ಯಾಪಾರ  |
|---------------|----------|
| (1) ಶ್ರೋತ್ರ   | ಶ್ರವಣ    |
| (2) ಚಕ್ಷುಸ್ಸು | ದರ್ಶನ    |
| (3) ಜಿಹ್ವೆ    | ಆಸ್ವಾದನ  |
| (4) ಘ್ರಾಣ     | ಗಂಧಗ್ರಹಣ |
| (5) ತ್ವಕ್ಶು   | ಸ್ಪರ್ಶ.  |

#### 2. ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಗಳು.

| ಇಂದ್ರಿಯ    | ವ್ಯಾಪಾರ              |
|------------|----------------------|
| (1) ವಾಕ್ಯು | (ವಚನ) ಉಚ್ಚಾರಣ        |
| (2) ಪಾಣಿ   | (ಆಧಾನ) ಶಿಲ್ಪಾದಿಕಾರ್ಯ |
| (3) ಪಾದ    | ಸಂಚಾರ, ವಿಹರಣ         |
| (4) ಪಾಯು   | (ವಿಸರ್ಜನ) ಮಲತ್ಯಾಗ    |
| (5) ಉಪಸ್ಥ  | ಆನಂದ                 |

ಇಂದ್ರಿಯಸನ್ನಿವೃತ್ತಿ ಇಂದ್ರಿಯಸನ್ನಿವೃತ್ತಿ (೨೦) ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಗೆ ಆಯಾವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಬಂಧ, ವಿಷಯ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವುಂಟಾಗುವಂತೆ ಆಯಾ ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಗೆ

ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಇಂದ್ರಿಯ ಸಂಬಂಧರೂಪ ವಾದ ವ್ಯಾಪಾರ. ಇಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ ಸ್ವಸ್ವವಿಷಯಃ ಸಹ ಸನ್ನಿವೃತ್ತಿಃ ಸಂಬಂಧಃ।

ಇಂದ್ರಿಯಸ್ವಾಪ ಇಂದ್ರಿಯಸ್ವಾಪ (೨೦) ಇಂದ್ರಿಯಗಳು (ತಮಗೆ) ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಕೆಲಸಮಾಡದಿರುವಿಕೆ, ಎಚ್ಚರ ತಪ್ಪಿರುವಿಕೆ, ಸ್ಮೃತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಸುಷುಪ್ತವಸ್ಥೆ. ಇಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ ಸ್ವಸ್ವವಿಷಯೇಷು ಸ್ವಾಪಃ ಅಪ್ರವೃತ್ತಿಃ।

ಇಂದ್ರಿಯಾಧಿಷ್ಠಾತೃ ಇಂದ್ರಿಯಾಧಿಷ್ಠಾತೃ (೨೦) ಇಂದ್ರಿಯಗಳು ತಮ್ಮ ತಮ್ಮ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡಲು ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ ದೇವತೆ. ಇಂದ್ರಿಯಾಣಾ-  
ಮಧಿಷ್ಠಾತಾಃ।

#### 1. ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯಗಳು.

| ಇಂದ್ರಿಯ               | ಅಧಿದೇವತೆ        |
|-----------------------|-----------------|
| (1) ಶ್ರೋತ್ರ (ಕಿವಿ)    | ದಿಕ್ಕು          |
| (2) ಚಕ್ಷುಸ್ಸು (ಕಣ್ಣು) | ಅರ್ಕ            |
| (3) ಜಿಹ್ವೆ (ನಾಲಿಗೆ)   | ಪ್ರಚೇತಸ್ಸು      |
| (4) ಘ್ರಾಣ (ಮೂಗು)      | ಅಶ್ವಿನಿದೇವತೆಗಳು |
| (5) ತ್ವಕ್ಶು (ಚರ್ಮ)    | ವಾಯು            |

#### 2. ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಗಳು.

| ಇಂದ್ರಿಯ                | ಅಧಿದೇವತೆ |
|------------------------|----------|
| (1) ವಾಕ್ಯು (ಮಾತು)      | ಅಗ್ನಿ    |
| (2) ಪಾಣಿ (ಕೈ)          | ಇಂದ್ರ    |
| (3) ಪಾದ (ಕಾಲು)         | ಉವೇಂದ್ರ  |
| (4) ಪಾಯು (ಆಸನದ್ವಾರ)    | ಮಿತ್ರ    |
| (5) ಉಪಸ್ಥ (ಜನನೇಂದ್ರಿಯ) | ಬ್ರಹ್ಮ   |

ಇಂದ್ರಿಯಾಯತನ ಇಂದ್ರಿಯಾಯತನ (ನಂ) 1. ದೇಹ, ಶರೀರ, ಮೈ. ಇಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ ಶ್ರೋತ್ರಾದಿನಾಮಾಯತನಮ್।  
2. ಆತ್ಮ, ಜೀವ. 3. ಇಂದ್ರಿಯಗಳ ಸ್ಥಾನ, ದೇಹದಲ್ಲಿ ಆಯಾ ಇಂದ್ರಿಯಗಳು ಇರುವ ಸ್ಥಾನಃ

#### 1. ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯಗಳು.

| ಇಂದ್ರಿಯ       | ಸ್ಥಾನ   |
|---------------|---|
| (1) ಶ್ರೋತ್ರ   | ಕರ್ಣಕುಹರ (ಕಿವಿಯ ಪೊಟರೆ)<br>(ಸರ್ಪಗಳಿಗೆ ಮಾತ್ರ ಕಣ್ಣು) |
| (2) ಚಕ್ಷುಸ್ಸು | ಕಣ್ಣಿನ ಯವ (ಗುಡ್ಡೆಯೊಳಭಾಗ)                          |
| (3) ಜಿಹ್ವೆ    | ನಾಲಿಗೆಯ ತುದಿ                                      |
| (4) ಘ್ರಾಣ     | ಮೂಗಿನ ತುದಿ  |
| (5) ತ್ವಕ್ಶು   | ದೇಹದ ಎಲ್ಲಾ ಭಾಗಗಳು                                 |



ਸਦਾ

- ಇಭೇಷಣಾ ಇಭೇಷಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಜಹಿಂಸ್ರಲಿ.



ಇಮ್ಯ ಇಭ್ಯ (ವಿಂ) ಅನೆ ಮೊದಲಾದ ಸಂಪತ್ತಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಶ್ರೀಮಂತ, ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ. ಇಮಮಹಿತಿ — ಇಮ “ಯಃ” (೪-೧-೬೬)। “ಇಮ್ಯ ಆಡ್ಯೋ ಧನಿ” ಅಮಂ।

ಇಮ್ಯಾ ಇಭ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣಾನೆ, ಕರೇಣು. 2. ಸಲ್ಲಕೇ ವೃಕ್ಷ, ಅನೆಬೇಲದ ಮರ. ಇಮಮಹಿತಿ “ಯಃ” (೪-೧-೬೬)। “ಇಮ್ಯಾ ಕರೇಣುಸಲ್ಲಕಯೋಃ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮಾಡ್ಯೇ ತು ವಾಚ್ಯವತ್” ಮೇದಿಂ।

ಇಯತ್ ಇಯತ್ (ತ್ರಿಂ) ಇಷ್ಟು, ಇಷ್ಟು ಪರಿಮಾಣವುಳ್ಳ. ಇದಂ ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ — ಇದಮ್ “ವತುಃ” (೪-೨-೪೦)। ವಸ್ಯ ಚ “ಘಃ” ಇಯಾದೇಶಃ। ಇದಮ್ ಇಶ್। ಇದರ ಲಿಂಗತ್ರಯದ ರೂಪಗಳು:

(ಪುಂ) ಇಯಾನ್ ಇಯಂತೌ ಇಯಂತಃ। “ಸತ್ಯಂ ಜನೋಽಪ್ರಮಿಯತೌ ದಿವಸಾನನೇಪಿತ್” ಮಾಲತೀಂ ೬-೧೪।

(ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಯತೀ ಇಯತೌ ಇಯತಃ।

(ನಂ) ಇಯತ್ ಇಯತೀ ಇಯಂತಿ।

ಇಯತಾ ಇಯತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಳತೆ, ಪರಿಮಾಣ, ಇಷ್ಟುಮಾತ್ರ ಪರಿಮಾಣ. ಇಯತೌ ಭಾವಃ “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯)। “ಅಮೇಣ ತದಶಕ್ತಿಯಾ ವಾ ನ ಗುಣಾನಾಮಿಯತಯಾ” ರಘುಂ ೧೦-೩೨।

ಇರಮದ ಇರಂಮದ (ಪುಂ) 1. ವಜ್ರಾಯುಧದ ಕಾಂತಿ, ಮೇಘದ ತೇಜಸ್ಸು. ಇರಯಾ ಜಲೇನ ಮಾದ್ರತಿ — ಮದೀ (ಹರ್ಯಗ್ಲೆಪನಯೋಃ) “ಇಶ್” (೩-೨-೩೭)। ನಿಪಾಂ। 2. ಬಡಬಾಗ್ನಿ.

ಇರಾ ಇರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭೂಮಿ. 2. ವಾಕ್ಕು, ಮಾತು. 3. ಸುರೆ, ಮದ್ಯ. 4. ಅನ್ನ. 5. ಜಲ, ನೀರು. ಇಂ ಕಾಮಂ ರಾತಿ — ರಾ (ದಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೩)। ಇನ್ (ಗತೌ) “ರನ್” ವಾ (೩-೨-೨೯)। ನಿಪಾಂ। “ಇರಾ ಭೂವಾಕ್ಸುರಾಮ್ಬುಃ। ಅನ್ತೇ ಚ ಸ್ಯಾತ್” ವೇಜಂ। “ಶ್ರೀರಾಜೀವಾಕ್ಷವಕ್ಷಃಸ್ಥಲನಿಲಯರಮಾಹಸ್ತವಾಸ್ತವ್ಯ . . . .” ವಿಶ್ವಗುಂ।

ಇರಾಚರ ಇರಾಚರ (ನಂ) 1. ಅಣಕಲ್ಲು, ವರ್ಷೋಪಲ. (ವಿಂ) 2. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. 3. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ, ಜಲಚರ. ಇರಯಾ ಭೂಮೌ ಜಲೇ ವಾ ಚರತಿ — ಚರ (ಗತೌ) “ಛಃ” (೩-೨-೧೫)।

ಇರಾವತ್ ಇರಾವತ್ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ. 2. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 3. ಉಲೂಪಿಯಲ್ಲಿ ಅರ್ಜುನನಿಗೆ ಜನಿಸಿದ ಮಗ ಇರಾವಂತ.

ಇರಿಣ ಇರಿಣ (ನಂ) 1. ಉಷರಭೂಮಿ, ಕರಳುಮಣ್ಣಿನ ಭೂಮಿ. ಇ (ಗತೌ) “ಇನ್” (೩-೨-೪೨)। “ಯಥೇರಿಣಿ ಬೀಜಮುಪ್ತವಾ ವಪ್ತಾ ನ ಲಭತೇ ಫಲಮ್” ಮನ್ತುಂ ೩-೧೪೨। 2. ಶೂನ್ಯ, ಪಾಳು. (ವಿಂ) 3. ಆಶ್ರಯ ವಿಲ್ಲದ, ಅಲಂಬನವಿಲ್ಲದ.

ಇರೇಶ ಇರೇಶ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ. 2. ವರುಣ. 3. ಶ್ರೀವಿಷ್ಣು. 4. ವಾಗೀಶ, ಬೃಹಸ್ಪತಿ. ಇರಯಾ ಇಶಃ। ಇಲ ಇಲ (ವಿಂ) ನಿರ್ದ್ರಿಯ ಸ್ವಭಾವದ. ಇಲ (ಸ್ವಪ್ನೇ) “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೪)।

ಇಲಬಿಲಾ ಇಲಬಿಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಲಸ್ತ್ಯ ಬ್ರಹ್ಮನ ಸೋಸೆ, ವಿಶ್ವವಸ್ತಿನ ಪತ್ನಿ, ಕುಬೇರನ ತಾಯಿ.

ಇಲಾ ಇಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೋವು, ಹಸು. 2. ವಾಕ್ಕು, ಮಾತು. 3. ಭೂಮಿ. 4. ಬುಧನ ಪತ್ನಿ. ಇಲ (ಉತ್ಕೋಪೇ) “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೪)। “ಇಲಾ ಕಲತ್ರೇ ಸೌಮ್ಯಸ್ಯ ಧರಿಯಾ ಗವಿ ವಾಚಿ ಚ” ಮೇದಿಂ।

ಇಲಾವೃತ ಇಲಾವೃತ (ನಂ) ಜಂಬೂದ್ವೀಪದ ಒಂದು ಖಂಡ, ಜಂಬೂದ್ವೀಪದ ಒಂಭತ್ತು ಭಾಗಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. ಇಲಾವೃತಖಂಡದ ಮೇರೆ: ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಗಂಧಮಾದನಪರ್ವತ. ಪಶ್ಚಿಮದಲ್ಲಿ ಮಾಲ್ಯವತ್ ಪರ್ವತ. ದಕ್ಷಿಣದಲ್ಲಿ ನೀಲಪರ್ವತ. ಉತ್ತರದಲ್ಲಿ ನಿಷಧಪರ್ವತ. ಈ ಮಧ್ಯೆ ಇರುವ ಭೂಭಾಗವು ಇಲಾವೃತಖಂಡ. “ಇಲಾವೃತಾನ್ತಂ ನಿಪಧಾದಪಾಚೀಮ್” ಯಾದಂ ೧೮-೧೩।

ಇತ್ವಲ ಇಲ್ವಲ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ, ವಾತಾಪಿಯ ಸಹೋದರ, ಸಿಂಹಿಕೆಯೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸಿಯ ಮಗ. [ಸಿಂಹಿಕೆಗೆ ಇಲ್ವಲ, ವಾತಾಪಿ, ರಾಹು, ವ್ಯಂಶ, ಶಲ್ಯ ಮೊದಲಾಗಿ 13 ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳು. ಇಲ್ವಲನು ಒಬ್ಬ ತಪಸ್ವಿಯಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ ತನಗೆ ಇಂದ್ರಸದೃಶ ನಾದ ಪುತ್ರನು ಜನಿಸುವಂತೆ ಅನುಗ್ರಹಿಸಬೇಕೆಂದು ಕೇಳಲು ಆ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನು ಅದಕ್ಕೆ ಒಪ್ಪಲಿಲ್ಲ. ಇಲ್ವಲನು ಅಂದಿನಿಂದ ಕೋಪಗೊಂಡು ಬ್ರಾಹ್ಮಣರನ್ನು ಹಿಂಸಿಸುತ್ತ ತನ್ನ ಸಹೋದರನಾದ ವಾತಾಪಿಯನ್ನು ಮಾಯೆಯಿಂದ ಆಡನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿ ಅದನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿ ಬೇಯಿಸಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಭೋಜನ ಮಾಡಿಸುತ್ತಿದ್ದನು. ಮೇಷರೂಪಿಯಾದ ವಾತಾಪಿಯು ನಿಜ ರೂಪದಿಂದ ಉದರವನ್ನು ಭೇದಿಸಿಕೊಂಡು ಹೊರಕ್ಕೆ ಬರುತ್ತಿದ್ದನು. ಒಂದು ದಿನ ಅಗಸ್ತ್ಯ ಮುನಿಯನ್ನು ಇದೇ ರೀತಿ ಅತಿಥ್ಯಕ್ಕೆ ಕರೆದಾಗ ಅವರು ಈ ರಹಸ್ಯ



ವನ್ನು ತಿಳಿದು ಭೋಜನವಾದ ಕೂಡಲೆ "ವಾತಾಪೇ, ಜಿರ್ಣಿ ಭವ" ಎಂದು ಹೇಳಲಾಗಿ ಉದರದಲ್ಲೇ ಜೀರ್ಣವಾದನು. ಆಗ ಇಲ್ವಲನು ಅಗಸ್ತ್ಯಮುನಿಯನ್ನು ಹಿಂಸಿಸಲು ಅವರ ನೇತ್ರಾಗ್ನಿಯಿಂದ ದಗ್ಧನಾದನು.]

ಮಾಂ ವನಂ ೧೬-೧೭.

**ಇವ** ಇವ (ಅವ್ಯಂ) ಇದು 1. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ, ಸಾಮ್ಯ. 2. ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆ. 3. ಸ್ವಲ್ಪ ಮತ್ತು 4. ವಾಕ್ಯಾಲಂಕಾರ ಈ ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ ದ್ಯೋತಕವಾಗುವುದು. ಉದಾ: ಸಾದೃಶ್ಯಕ್ಕೆ—“ಜಿಗಿಷುರೇಕೋ ದಿನಕೃದಾದಿತ್ಯೇಷ್ವಿವ ಕಲ್ಪತೇ” ಮಾಘಂ ೨-೮೧. “ಉಪಾಸಸಾ-ದೋಪಜನಂ ಜನಪ್ರಿಯ: ಪ್ರಿಯಾಮಿವಾಸಾದಿತಯೋವನಾಂ ಭುವಮ್” ಕಿರಾಂ ೪-೧. ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಗೆ—“ಲೋನೇವ ಪ್ರತಿವಿಮ್ಬಿತೇವ ಲಿಖಿತೇ-ವೋತ್ಕೀರ್ಣರೂಪೇವ ಚ” ಮಾಲತೀಂ ೪-೧೦. ಸ್ವಲ್ಪಕ್ಕೆ—“ಆವಜಿತಾ ಕಿಂಚಿದಿವ ಸ್ತನಮ್ಯಾಂ ವಾಸೋ ವಸಾನಾ ತರುಣಾರ್ಕರಾಗಮ್” ಕುಮಾರಂ ೩-೪೪. ವಾಕ್ಯಾಲಂಕಾರಕ್ಕೆ—“ಶ್ರಮಮಾದಧಾವಸುಕರಂ ನ ತಪ: ಕಿಮಿವಾವಸಾದಕರಮಾತ್ಮವತಾಮ್” ಕಿರಾಂ ೬-೧೧.

**ಇಷ** — ಗತೌ (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ). ಇಷ್ಯತಿ. ಇಷೇಪ. ಏಷಿತಾ. ಏಷಿಷ್ಯತಿ. ಇಷ್ಯತು. ಏಷ್ಯತ್. ಇಷ್ಯೇತ್. ಇಷ್ಯಾತ್. ಏಷೀತ್. ಏಷಿಷ್ಯತ್.

ಕರ್ಮಣಿ:—ಇಷ್ಯತೇ. ಇಷೇ. ಏಷಿತಾ. ಏಷಿಷ್ಯತೇ. ಇಷ್ಯತಾಮ್. ಏಷ್ಯತ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ:—ಏಷಯತಿ, -ತೇ. ಏಷಯಾಚ್ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಏಷಯಿತಾ. ಏಷಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ. ಏಷಯತು, -ತಾಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ:—ಏಷಿಷಿಷತಿ. ಏಷಿಷಿಷಾಚ್ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಏಷಿಷಿಷಿತಾ. ಏಷಿಷಿಷಿಷ್ಯತಿ. ಏಷಿಷಿಷತು ಇತ್ಯಾದಿ.

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಅನು + ಇಷ = ಅನ್ವೇಷಣಮ್. ಹುಡುಕುವುದು. “ಅನ್ವಿಷ್ಯತ: ಪ್ರಮಥನಾಯ ಮಮಾಪಿ ದರ್ಪಾತ್” ಮಂ.ವಿಂ. ೨-೩೧.

(2) ಪರಿ + ಇಷ = ಪರ್ಯೇಷಣಾ. ಧರ್ಮಾದಿ ವಿಮರ್ಶೆ ಮಾಡುವುದು.

(3) ಪ್ರ + ಇಷ = ಪ್ರೇಷಣಮ್. 1. ಪ್ರೇರಿಸುವುದು, ಬಿಡುವುದು, ಪ್ರಯೋಗಿಸುವುದು. “ಪ್ರೇಷಿತಾಂ ಹರಿಹ್ರೇನ ಭೀಷಣಾಂ ಹಾದಿನೀಂ ಹತವಂತಿ ತ್ರಿಧಾಮನಿ” ಯಾದಂ ೧೭-೭೭. 2. ಕಳುಹಿಸುವುದು. “ಇಮಾನ್ಯಾಭರಣಾನಿ ಕುಮಾರೇಣ ಸ್ವಶರೀರಾದವತಾರ್ಯ ಪ್ರೇಷಿತಾನಿ ಧಾರಯಿತುಮರ್ಹಂತೀರ್ಯ:” ಮುದ್ರಾಂ ೨.

**ಇಷು**—ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್ (ತುಡಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ). ಇಚ್ಛತಿ. ಇಷೇಪ. ಏಷಿತಾ, ಏಷಾ. ಏಷಿಷ್ಯತಿ. ಇಚ್ಛತು. ಏಚ್ಛತ್. ಇಚ್ಛೇತ್. ಇಷ್ಯಾತ್. ಏಷೀತ್. ಏಷಿಷ್ಯತ್.

ಕರ್ಮಣಿ:—ಇಷ್ಯತೇ. ಇಷೇ. ಏಷಿತಾ. ಏಷಿಷ್ಯತೇ. ಇಷ್ಯತಾಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ:—ಏಷಯತಿ, -ತೇ. ಏಷಯಾಚ್ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಇತ್ಯಾದಿ. ಇಷ (ಗತೌ) ಧಾತುವಿನಂತೆ.

ಸನಿ:—ಇಷ (ಗತೌ) ಧಾತುವಿನಂತೆ ರೂಪ.

ಕೃತ್ಸು:—ಏಷಿತವ್ಯಮ್, ಏಷಿತವ್ಯಮ್. ಏಷಣೀಯಮ್. ಏಷ್ಯಮ್. ಇಷ್ಟ:। ಇಷ್ಟವಾನ್. ಇಚ್ಛನ್, ಇಚ್ಛತೀ, ಇಚ್ಛಂತೀ. ಏಷಿತುಮ್, ಏಷ್ತುಮ್. ಇಷ್ಟಮ್. ಏಷಣಮ್. ಏಷಿತ್ವಾ, ಇಷ್ಟ್ವಾ. ಸಮಿಷ್ಯ.

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಅನು + ಇಷು = ಅನ್ವೇಷ:। ಹುಡುಕುವುದು. “ವಯಂ ತತ್ವಾನ್ವೇಷಾನ್ಮಧುಕರ ಹತಾಸ್ತ್ವಂ ಖಲು ಕೃತೀ” ಶಾಕುಂ ೧-೨೦.

(2) ಅಭಿ + ಇಷು = ಅಭೀಷ್ಟಮ್. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಇಷ್ಟ, ಪ್ರಿಯ. “ಅಭೀಷ್ಟಮಾಸಾಘ ಚಿರಾಯ ಕಾಲೇ” ಮಾಘಂ ೬-೭೪.

(3) ಪರಿ + ಇಷು = ಪರ್ಯೇಷಣಮ್. ಹುಡುಕುವುದು.

(4) ಪ್ರತಿ + ಇಷು = ಪ್ರತೀಚ್ಛತಿ. ಪ್ರತಿಗ್ರಹ, ಸ್ವೀಕಾರ. “ಇಯಂ ಸೀತಾ ಮಮ ಸುತಾ ಸಹಧರ್ಮಚರೀ ತವ. ಪ್ರತೀಚ್ಛತೇನಾಂ ಭದ್ರಂ ತೇ ಪಾಣಿ ಗೃಹ್ಣಿಷ್ವ ಪಾಣಿನಾ” ರಾಮಾಂ.

**ಇಷ ಇಷ್** (ಪುಂ) ಅಶ್ಚಯುಜ ಮಾಸ. ಏಷಣಮಿಡ್ ಯಾತ್ರಾ — ಇಷ (ಗತೌ) “ನಿವಪ್” (೩-೨-೧೭೮). ಸಾಸ್ಮಿನ್ಮಸ್ತಿ “ಅಚ್” (೪-೨-೧೨೭). “ಶ್ರುತತದೀರಿತಕೋಮಲ-ಗೀತಕಧ್ವನಿಮಿವೇರ್ಜನಿಮಿವೇಕ್ಷಣಮಗ್ರತ:” ಮಾಘಂ ೬-೪೯.

**ಇಷಿರ ಇಷಿರ** (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಇಷು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) “ಕಿರಚ್” (೩ಂ ೧-೪೧).

**ಇಳಿಕಾ ಇಷೀಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆನೆಯ ಕಣ್ಣುಗಾಡೆ, ಆನೆಯ ಕಣ್ಣುಗೋಳಕ. ಇಷ (ಗತೌ) “ಇಕನ್” ಧಾತು: ಹ್ರಸ್ವಶ್ಚ (೩ಂ ೪-೨೧). 2. ಕಾಶತ್ಯಣ, ಜಂಟು ಹುಲ್ಲು. [ಈ ತ್ಯಣದಿಂದ ಅಸ್ತವನ್ನು ತಯಾರಿಸುವುದುಂಟು.] “ತಸ್ಮಿನ್ನಾಸ್ಥದಿಪೀಕಾಸ್ತ್ರಂ ರಾಮೋ ರಾಮಾವ-ಬೋಧಿತ:” ರಘುಂ ೧೩-೨೩. “ತತ್ರ ದಿವ್ಯಮದೀನಾತ್ಮಾ ಪರಮಾಸ್ತ್ರಮಚಿಂತಯತ್. ಜಗ್ರಾಹ ಚ ಸಚೇಳಿಕಾಂ ದ್ರೌಣಿ: ಸವ್ಯೇನ ಪಾಣಿನಾ. ಸ ತಾಮಾಪದಮಾಸಾಘ ದಿವ್ಯಮಸ್ತ್ರಮುದೇರಯತ್. ತತಸ್ತಸ್ಯಾಮಿಳಿಕಾयां ಪಾವಕ: ಸಮಜಾಯತ. ಪ್ರಧಕ್ಷ್ಯನ್ನಿವ ಲೋಕಾಸ್ತ್ರೀನ್ ಕಾಲಾಂತಕಯಮೋಪಮ:” ಭಾಂ.



ಇಳು ಇಷು (ಪುಂ) 1. ಬಾಣ. ಇಷ್ಯತೇ ಹಿಸಯತೇಜೇನ—ಇಳು (ಗತಿಹಿಸಾದರ್ಶನೇಷು) "ಉ:" ಆದೇರಿಂಚ (ಉಂ 1-13)। "ಸೃಜಂತಮಾಜಾವಿಪುಸಂಹತೀವ:" ಕಿರಾಂ 3-20। "ಇಳವೋ ಧನುಷ: ಸಶಬ್ದಮಾಶು" ಮಾಘಂ 20-21। "ಉತ್ಕರ್ಷ: ಸ ಚ ಧನ್ವಿನಾಂ ಯದಿಳವ: ಸಿದ್ಧಯಂತಿ ಲಕ್ಷ್ಯೇ ಚಲೇ" ಶಾಕುಂ 2-5। 2. ಐದು ಸಂಖ್ಯೆ.

ಇಳುಕಾರ ಇಷುಕಾರ (ಪುಂ) ಬಾಣವನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು.

ಇಳುಧರ ಇಷುಧರ (ಪುಂ) ಬಾಣವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವವನು, ಬಿಲ್ಲುಗಾರ, ಅಂಬುಗಾರ. ಧರತಿ—ಧೃ (ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (3-1-134)। ಇಳೋಧರ:।

ಇಳುಧಿ ಇಷುಧಿ (ಪುಂ) ಬತ್ತಳಕೆ, ಬಾಣಗಳ ಚೀಲ. ಇಳವೋ ಧೀಯಂತೇ "ಕಿ:" (3-3-93)। "ಸ ಧನುರ್ಮಹೇಳುಧಿ ವಿಭರ್ತಿ" ಕಿರಾಂ 12-29।

ಇಳುಮಾತ್ರ ಇಷುಮಾತ್ರ (ನಂ) 1. ಬಾಣದ ಅಳತೆ, ಬಾಣದ ಉದ್ದ. (ವಿಂ) 2. ಬಾಣದ ಅಳತೆಯುಳ್ಳ, ಬಾಣದಷ್ಟು ಉದ್ದವುಳ್ಳ. ಇಳು: ಪ್ರಮಾಣಮಸ್ಯ "ಮಾತ್ರಾಚ್" (4-2-39)।

ಇಳುವಿಕ್ಷೇಪ ಇಷುವಿಕ್ಷೇಪ (ಪುಂ) ಬಾಣವನ್ನು ಎಸೆಯುವಷ್ಟು ದೂರ, 150 ಮೊಳದಷ್ಟು ದೂರ.

ಇಷ್ಠ ಇಷ್ಠ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. "ಇಷ್ಠೋವಿಷಿಷ್ಠ: ಶಿಷ್ಠೇಷ್ಠ:" ವಿಂ ಸಂ। 2. ಹರಳುಗಿಡ. 3. ಯಾಗದಿಂದ ಸಂತೋಷಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಪರಮಾತ್ಮ. 4. ಪತಿ, ಗಂಡ. (ನಂ) 5. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ, ಬಯಕೆ. ಇಳು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114)। 6. ಯಾಗ, ಯಜ್ಞ. ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114)। "ಪುರೋಡಾಶಭುಜಾಮಿಷ್ಠಮಿಷ್ಠಂ ಕರ್ತುಮಲಂತರಾಮ್" ಮಾಘಂ 2-106। 7. ಧರ್ಮಕಾರ್ಯ, ಮನುಷ್ಯನ ಕರ್ತವ್ಯ. "ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರಂ ತಪ: ಸತ್ಯಂ ವೇದಾನಾಂ ಚಾನುಪಾಲನಮ್। ಆತಿಥ್ಯಂ ವೈಶ್ವದೇವಂ ಚ ಪ್ರಾಹುರಿಷ್ಠಮಿತಿ ಸ್ಮೃತಮ್"। 8. ಶ್ರೌತಕಾರ್ಯ. (ವಿಂ) 9. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಇಳು ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102)। 10. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 11. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 12. ಪ್ರಿಯವಾದ, ಪ್ರೀತಿಪಾತ್ರವಾದ. "ಇಷ್ಠಪ್ರವಾಸಜನಿತಾನ್ಯಬಲಾ-ಜನಸ್ಯ" ಶಾಕುಂ 4-2। "ಇಷ್ಠಂ ಕೃತ್ವಾರ್ಥಂ ಪತ್ರಿಣ: ಶಾರ್ಙ್ಗಪಾಣಿ:" ಮಾಘಂ 19-119।

ಇಷ್ಠಕಚಿತ ಇಷ್ಠಕಚಿತ (ವಿಂ) ಇಟ್ಟಿಗೆಗಳಿಂದ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. ಇಷ್ಠಕಾಭಿರಿಚಿತ:—ಹ್ರಸ್ವ: (6-3-64)। "ಧನೇಷ್ಠಕಚಿತಭಿತೀರಶ್ಲಕ್ಷಣತಿರಸ್ಕರಿಣಿಪಟಲಸ್ಯ" ಚಂರಾಂ।

ಇಷ್ಠಕಾ ಇಷ್ಠಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಟ್ಟಿಗೆ. ಇಳು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ತಕ್ನ್" (ಉಂ 3-142)। "ಇಷ್ಠಕೇಳಿಕಾಮಾಲಾನಾಂ ಚಿತತುಲಭಾರಿಪು" ಇತಿ ನಿರ್ದೇಶಾತ್ "ಪ್ರತ್ಯಯಸ್ಥಾ" ದಿತಿ ಇತ್ವಂ ನ।

ಇಷ್ಠಕಾಪಥ ಇಷ್ಠಕಾಪಥ (ನಂ) 1. ಲಾಮಂಚದ ಬೇರು. ಇಷ್ಠಂ ಕಾಪಥಮಸ್ಯ। 2. ಇಟ್ಟಿಗೆಯಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ದಾರಿ.

ಇಷ್ಠಗಂಧ ಇಷ್ಠಗಂಧ (ಪುಂ) 1. ಸುಗಂಧ, ಸುವಾಸನೆ. ಇಷ್ಠಕಾಸೌ ಗಂಧಶ್ಚ। (ವಿಂ) 2. ಸುವಾಸನೆಯುಳ್ಳ. ಇಷ್ಠೋ ಗಂಧೋಽಸ್ಯ। (ನಂ) 3. ಸುರಸುರಕೆ ಗಿಡ.

ಇಷ್ಠತಮ ಇಷ್ಠತಮ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಪ್ರೀತಿಪಾತ್ರವಾದ. ಅತಿಶಯೇನ ಇಷ್ಠ: "ತಮಪ್" (4-3-44)।

ಇಷ್ಠತರ ಇಷ್ಠತರ (ವಿಂ) ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರೀತಿಪಾತ್ರನಾದ ಒಬ್ಬನು. ದ್ವಯೋರತಿಶಯೇನ ಇಷ್ಠ: "ತರಪ್" (4-3-49)।

ಇಷ್ಠದೇವ ಇಷ್ಠದೇವ (ಪುಂ) 1. ಇಷ್ಠದೇವತೆ, ವಂಶಪರಂಪರೆಯಾಗಿ ಆರಾಧಿಸುವ ದೇವರು, ಕುಲಾಭಿವಾನ್ನಿ ದೇವತೆ. 2. ಉಪಾಸ್ಯದೇವತೆ, ಉಪಾಸನೆಮಾಡುವ ಮಂತ್ರದ ದೇವತೆ. (ವಿಂ) 3. ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಪೂಜಿಸಿದವನು.

ಇಷ್ಠಪ್ರಯೋಗ ಇಷ್ಠಪ್ರಯೋಗ (ಪುಂ) ವ್ಯಾಕರಣ ನಿಯಮದಂತೆ ಮಾಡುವ (ಶಬ್ದಗಳ) ಪ್ರಯೋಗ, ಶಾಸ್ತ್ರ ನಿಯಮದಂತೆ ಮಾಡುವ ಹಿರಿಯರ ಪ್ರಯೋಗ.

ಇಷ್ಠವ್ರತ ಇಷ್ಠವ್ರತ (ವಿಂ) ಇಷ್ಟವಾದ ವ್ರತವನ್ನು ಆಚರಿಸುವ. ಇಷ್ಠಂ ವ್ರತಂ ಯಸ್ಯ।

ಇಷ್ಠಸಾಧನ ಇಷ್ಠಸಾಧನ (ನಂ) 1. ಇಷ್ಟವಾದುದನ್ನು ಸಾಧಿಸುವುದು, ಬೇಕಾದುದನ್ನು ನೆರವೇರಿಸುವುದು. ಇಷ್ಠಸ್ಯ ಸಾಧನಮ್। 2. ಯಾಗ ನೋಡಲಾದುದು.

ಇಷ್ಠಾಪತ್ತಿ ಇಷ್ಠಾಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಷ್ಟವಾದ ಘಟನೆ, ಇಷ್ಟವಾದುದು ಸಂಭವಿಸುವಿಕೆ, ವಾದಿಯ ಆಪಾದನೆಯೇ ಪ್ರತಿವಾದಿಗೂ ಸಮ್ಮತವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಇಷ್ಠಸ್ಯ ಆಪತ್ತಿ:। "ಇಷ್ಠಾಪತ್ತಿ ಋವಾಣಸ್ಯ ತ್ರಿಲೋಕಯೇ ನಾಸ್ತಿ ದೂಷಣಮ್"।

ಇಷ್ಠಾಪೂರ್ತ ಇಷ್ಠಾಪೂರ್ತ (ನಂ) ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ. [ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರ, ತಪಸ್ಸು, ವೇದಾನುಪಾಲನ, ಆತಿಥ್ಯ, ವೈಶ್ವದೇವ ಮುಂತಾದುದು ಇಷ್ಟವೆನಿಸುವುದು. ಬಾವಿ, ಕೆರೆ, ದೇವಾಲಯ, ಅನ್ನಸತ್ಯ ಮುಂತಾದುವುಗಳ



ನಿರ್ಮಾಣವು ಪೂರ್ತವೆನಿಸುವುದು.] ಇಷ್ಟಂ ಚ ಪೂರ್ತಂ ಚ  
ಅನಯೋಃ ಸಮಾಹಾರಃ ದೀರ್ಘಃ ಪೃಷೋಂ । “ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರಂ ತಪಃ  
ಸತ್ಯಂ ವೇದಾನಾಂ ಚಾನುಪಾಲನಮ್ । ಆತಿಥ್ಯಂ ವೈಶ್ವದೇವಂ ಚ ಪ್ರಾಹು-  
ರಿಷ್ಟಮಿತಿ ಸ್ಮೃತಮ್ । ವಾಪೀಕೂಪತಟಾಕಾದಿ ದೇವತಾಯತನಾನಿ  
ಚ । ಅನ್ನಪ್ರದಾನಮಾರಾಮಃ ಪೂರ್ತಮಿತ್ಯಭಿಧೀಯತೆ” । “ಇಷ್ಟಾ-  
ಪೂರ್ತವಿಧೇಃ ಸಪತ್ನಶಮನಾತ್” ಮಂ ಬಿಂ ೩-೧ ।

ಇಷ್ಟಾರ್ಥ ಇಷ್ಟಾರ್ಥ (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿತವಾದ ವಿಷಯ,  
ಇಷ್ಟವಾದ ವಿಷಯ.

ಇಷ್ಟಾರ್ಥೋಚಿತ ಇಷ್ಟಾರ್ಥೋದ್ಯುಕ್ತ (ವಿಂ) ಇಷ್ಟ  
ವಾದುದನ್ನು ಪಡೆಯುವುದರಲ್ಲಿ ಉದ್ಯೋಗವುಳ್ಳವನು,  
ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದುದನ್ನು ಪಡೆಯಲು ಆಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು.  
ಇಷ್ಟಾರ್ಥ ಉಕ್ತಃ ।

ಇಷ್ಟಿ ಇಷ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯಾಗ. ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾಯಾಮ್)  
“ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) । “ಇಷ್ಟಿ ವೈಶ್ವಾನರೀಂ ನಿಯಂ  
ನಿವಂಪೇದದ್ವಪಯೇ” ಮನುಂ ೧೧-೨೭ । 2. ಇಚ್ಛೆ,  
ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಇಪ್ಪ (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) ।  
“ಇಷ್ಟಿರ್ಮೇಚ್ಛಯೋಃ” ಹೇಮಂ । 3. ಪಾಣಿನಿಮತಾನು  
ಸಾರವಾಗಿ ಮಹಾಭಾಷ್ಯಕಾರರ ಸಮ್ಮತಿವಚನ.  
“ದ್ವಿಪಯಂತಾನಾಮೇವೇಷ್ಟಿಃ” ಇತ್ಯಾದಿ.

ಇಷ್ಟಿಕಾ ಇಷ್ಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಚ್ಛೆಗೆ.

ಇಷ್ಟಿಕಾಪಾಠಿಕ ಇಷ್ಟಿಕಾಪಾಠಿಕ (ನಂ) ಲಾಮಂಚದ  
ಬೇರು.

ಇಷ್ಟಿನ್ ಇಷ್ಟಿನ್ (ಪುಂ) ಯಾಗಮಾಡಿದವನು. ಇಷ್ಟಮನೇನ  
“ಇನಿಃ” (೪-೨-೮೮) ।

ಇಷ್ಟಿಪಚ ಇಷ್ಟಿಪಚ (ವಿಂ) 1. ಕೃಪಣ, ಲೋಭಿ.  
2. ರಾಕ್ಷಸ. ಇಷ್ಟಯೇ ಇಚ್ಛಾಯೇ ಪಚತಿ — ಡು ಪಚಃ  
(ಪಾಕೇ) “ಅವ್” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಇಷ್ಟ್ವಾ ಇಷ್ಟ್ವಾ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಯಾಗಮಾಡಿ. ಯಜ  
(ದೇವಪೂಜಾಯಾಮ್) “ಕ್ತ್ವಾ” (೩-೪-೨೧) । 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ.  
ಇಪ್ಪ (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) “ಕ್ತ್ವಾ” (೩-೪-೨೧) ।

ಇಷ್ಟವಸನ ಇಷ್ಟವಸನ (ಪುಂ) ಧನುಸ್ಸು, ಬಿಲ್ಲು. ಇಪ್ಪವಃ  
ಅಸ್ಯಂತೇಜೇನ — ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೇ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭) ।  
“ರಾಮಮಿಷ್ಟವಸನದರ್ಶನೋತ್ಸುಕಂ ಮೈಥಿಲಾಯ ಕಥಯಾಂಬಭೂವ ಸಃ”  
ರಘುಂ ೧೧-೩೭ ।

ಇಷ್ಟಾಸ ಇಷ್ಟಾಸ (ಪುಂ) 1. ಧನುಸ್ಸು, ಬಿಲ್ಲು. ಇಪ್ಪವಃ  
ಅಸ್ಯಂತೇಜೇನ — ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೇ) “ಘಜ್” (೩-೩-೧೨೧) ।  
“ಅತ್ರ ಶೂರಾ ಮಹೇಷ್ಟಾಸಾ ಭೀಮಾರ್ಜುನಸಮಾ ಯುಧಿ” ಗೀತಾ  
೧-೪ । (ವಿಂ) 2. ಬಾಣವನ್ನು ಬಿಡುವವನು. ಅಸ್ತು  
ಪ್ರಯೋಗ ಮಾಡುವವನು, ಬಿಲ್ಲುಗಾರ. ಇಷ್ಟನ್  
ಅಸ್ಯತಿ — ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೇ) “ಅಙ್” (೩-೨-೧) ।

ಇಹ ಇಹ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಇಲ್ಲಿ, ಈ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ, ಈ ಜಾಗ  
ದಲ್ಲಿ. “ಯ ಇಮೇ ಕೃಷ್ಣಮಿಹಾರ್ಚಯಂತ್ಯನನ್ಯಾಃ” ಯಾದಂ  
೧೪-೯೩ । 2. ಈಗ, ಈ ಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಈ ಸಮಯದಲ್ಲಿ.  
3. ಈ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ. “ನೆಹ ನಾಮುತ್ರ ತದ್ಭವೇತ್” ಮನುಂ  
೩-೧೮೧ । 4. ಈ ಲೋಕದಲ್ಲಿ. “ಇಹ ನಾಕಸದೋ ನ  
ಮಾನುಷಾಸ್ತೇ” ಯಾದಂ ೧೪-೯೩ । “ಜಯತಾದಿಹ ದೇವಕೀಸುತೋಽಸೌ”  
ಯಾದಂ ೧೪-೯೧ । ಇದಮ್ “ಹಃ” (೪-೩-೧೧) । ಇಶ್  
(೪-೩-೩) ।

ಇಹತನ ಇಹತನ (ವಿಂ) ಈಗ ಇರುವ, ಈ ಕಾಲದಲ್ಲಿರುವ,  
ಈ ಕಾಲಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಇಹ “ಠ್ಯುಲ್” ಥುಡ್ ಚ  
(೪-೩-೨೩) ।

ಇಹತ್ಯ ಇಹತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಈ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. 2. ಈ  
ಕಾಲದಲ್ಲಿರುವ. 3. ಈ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿರುವ. 4. ಈ ಲೋಕ  
ದಲ್ಲಿರುವ. ಇಹ ಭವಃ “ತ್ಯಪ್” (೪-೨-೧೦೪) । ಸ್ವಾರ್ಥ  
“ಕನ್” ಇಹತ್ಯಕಃ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಇಹತ್ಯಿಕಾ ಇಹತ್ಯಿಕಾ.

ಇಹಲೋಕ ಇಹಲೋಕ (ಪುಂ) ಈ ಲೋಕ, ನಾವು ಈಗ  
ಇರುವ ಲೋಕ.

ಇಹಸ್ಥ ಇಹಸ್ಥ (ವಿಂ) ಇಲ್ಲಿರುವ, ಈ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿರುವ,  
ಈ ಲೋಕದಲ್ಲಿರುವ. ಇಹ ತಿಷ್ಠತಿ — ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ)  
“ಕಃ” (೩-೨-೪) ।

ಇತಿ “ಇ” ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್ ।



ई

ई ಈ ಇದು ವರ್ಣಮಾಲೆಯಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಸ್ವರ (ಅಚ್) ವರ್ಣವು. 'ಉದಾತ್ತ, ಅನುದಾತ್ತ, ಸ್ವರಿತ ಭೇದ ದಿಂದ' ಮೂರು ವಿಧವಾಗಿ, ಪುನಃ "ಅನುನಾಸಿಕ, ಅನನುನಾಸಿಕ ಭೇದದಿಂದ ಆರು ವಿಧವಾಗುವುದು. ಇದು ಅಭ್ಯಂತರ ವಿವೃತಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ತಾಲು (ದವಡೆ) ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವುದು.

ई ಈ (ಪುಂ) 1. ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ. 2. ಬಾಣ. 3. ಹಾವು, ಸರ್ಪ. 4. ಕಂದರ, ಗುಹೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 5. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. 6. ಪದ್ಮದ ದಳ. 7. ಜಿಹ್ವೆ, ನಾಲಿಗೆ. 8. ಇಂದ್ರನ ಧನುಸ್ಸು, ಕಾಮನಬಿಲ್ಲು. 9. ಸರಸ್ವತಿ. 10. ಪದ್ಮದ ಕೇಸರ, ತಾವರೆ ಹೂವಿನ ಕುಸುರು. (ಅವ್ಯಂ) 11. ದಯೆ, ಅನುಕಂಪ. 12. ವಿಷಾದ, ದುಃಖ. 13. ಕೋಪ. 14. ಸಂಬೋಧನೆ, ಕರೆ. "ई विपादेऽनुकम्पायां लक्ष्म्यां पुनरनव्ययम्" मेदि०। "ईकारोऽज्जदले लक्ष्म्यां वाण्यां कमलकेसरे। रसनायां शक्रचापे बाणे फणिनि कन्दरे" रत्न०।

ईक्ष - दर्शने (म्वा० आत्म० सक० से०)

लट् - ईक्षते। लिट् - ईक्षाञ्चक्रे, -बभूव, -आस। लुट् - ईक्षिता, ईक्षितासे, -हे। लृट् - ईक्षिष्यते। लोट् - ईक्षताम्। लङ् - ऐक्षत। लिङ् - ईक्षेत। आशीलिङ् - ईक्षिषीष्ट, ईक्षिषीयास्ताम्, ईक्षिषीरन्। लुङ् - ऐक्षिष्ट। लृङ् - ऐक्षिष्यत। लೋढु, ऊर्क्षु, अवलोक्षु। "क्षणलक्ष्यमाणवक्त्रश्रियः सभयकौतुकमीक्षते स्म" माघ० ५-१७। "विधुरबन्धुर-बन्धुरमैक्षत" माघ० ६-२९। "विवर्तितानञ्जननेत्र-मैक्षत" कुमा० ५-५१।

कर्मणि: - ईक्ष्यते। ईक्षाञ्चक्रे, -बभूवे, -आसे। ईक्षिता। ईक्षिष्यते। ईक्ष्यताम्। ऐक्ष्यत। ईक्ष्येत। ईक्षयिषीष्ट। ऐक्षि। ऐक्षिष्यत, ऐक्षयिष्यत। "न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते" कुमा० ५-१६। "निजमैक्षि मन्दमनिशं निशितैः" माघ० ९-६१।

णिचि: - ईक्षयति, -ते। ईक्षयाञ्चकार, -चक्रे, -बभूव, -आस। ईक्षयिता, -सि, -से, -हे। ईक्षयिष्यति, -ते। ईक्षयतु, -ताम्। ऐक्षयत्, -त ञ्छुदि.

सनि: - ईचिक्षिपते। ईचिक्षिषां चक्रे, -बभूव, -आस। ईचिक्षिपिता, -से, -हे। ईचिक्षिषिष्यते। ईचिक्षिषताम्। ऐचिक्षिपत। ईचिक्षिषेत ञ्छुदि.

कृत्सु: - तव्य: - ईक्षितव्यम्। अनीयर् - ईक्षणीयम्। ण्यत् - ईक्ष्यम्। कर्म० क्त: - ईक्षित:। क्तवतु: - ईक्षितवान्। शानच् - ईक्षमाण:। भावे क्त: - ईक्षितम्। भावे कर० च ल्युट् - ईक्षणम्। क्त्वा - ईक्षित्वा। ल्यप् - समीक्ष्य। "तमीक्षमाणा क्षणमीक्षणानाम्" कुमा० ११-२०।

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) अधि + ईक्ष = अधीक्षते। ವಿ ವೇ ಚಿ ಸು, ವಿಮರ್ಶಿಸು. "कुहकचकितो लोकः सत्येऽप्यपायमधीक्षते" हितो० ४-१०२।

(2) अनु + ईक्ष = अन्वीक्षते। ಚಿಂ ತಿ ಸು, ಧ್ಯಾನಿಸು. "अन्वीक्षमाणो रामस्तु विषण्णं भ्रान्तचेतनम्" रामा०।

(3) अप + ईक्ष = अपेक्षते। ಅಪೇಕ್ಷಿಸು, ಬಯಸು. "स तारकापातमपेक्षमाणः" कुमा० १३-१३।

(4) वि + अप + ईक्ष = व्यपेक्षते। ಅಪೇಕ್ಷಿಸು, ಬಯಸು. "अन्तरेव विहरन् दिवानिशं न व्यपेक्षत समुत्सुकाः प्रजाः" रघु० १९-६।

(5) अव + ईक्ष = अवेक्षते। 1. ನೋಡು, ಈಕ್ಷಿಸು, ಅವಲೋಕಿಸು. "अवेक्षितानायतवल्गमग्रे" माघ० ३-३०। "विधित्सतः कलहमवेक्ष्य विद्विषः" माघ० १७-५०। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡಿಸು, ಪರಶ್ಯಾಲೋಚಿಸು. "यदवोचदवेक्ष्य मानिनी परितः स्नेहमयेन चक्षुषा" किरा० २-२। "अवेक्ष्य धातोर्गमनार्थमर्थवित्" रघु० ३-२१। "वर्णाश्रमावेक्षणजागरूकः" रघु० १४-८५।

(6) अनु + अव + ईक्ष = अन्ववेक्षते। ಪರ್ಯಾಲೋಚಿಸು. "सूक्ष्मतां चान्ववेक्षेत योगेन परमात्मनः" मनु० ६-६५।

(7) परि + अव + ईक्ष = पर्यवेक्षते। ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡು. "निजितेन हरिणा हरिः स्वयं पर्यवैक्षि शरणं प्रियासखः" याद० १७-८७।

(8) प्रति + अव + ईक्ष = प्रत्यवेक्षते। 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ವಿಮರ್ಶಿಸಿ ನೋಡು, ಪರಿವೀಕ್ಷಿಸಿ ನೋಡು. "कामकीर्ति-पताकाभिस्स ताभिः प्रत्यवेक्षितः" याद० १६-१३८। 2. ಹಿಂತಿರುಗಿ ನೋಡು. "प्रत्यवेक्षणपदं प्रतीहि माम्" याद० ११-११७।

(9) सम् + अव + ईक्ष = समवेक्षते। ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡು. "यदि दृष्टं बलं सर्वं वयञ्च समवेक्षिताः" भा०।



- (10) उद् + ईक्ष = उदीक्षते । 1. ಮೇಲೆ ನೋಡು. "सहस्ररश्मिना साक्षात् सप्रणाममुदीक्षिताः" कुमा० ६-७ । "शैलः संपूर्णकामोऽपि मेनामुखमुदीक्षत" कुमा० ६-८५ । 2. ಪ್ರತಿಕ್ಷಿಸು, ನಿರೀಕ್ಷಿಸು, ಕಂಡುನೋಡು. "श्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्युतुमती सती" मनु० ९-९० ।
- (11) उद् + वि + ईक्ष = उदीक्षते । ನೋಡು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮೇಲೆ ನೋಡು. "उदीक्ष्य प्रियकरकुड्मलाप-विद्वैवंक्षोजद्वयमभिषिक्तमन्यनार्याः" माघ० ८-३७ । "उदीक्षणैस्तुलपुष्पवृष्टिम्" याद० १३-१२ ।
- (12) उप + ईक्ष = उपेक्षते । ಉಪೇಕ್ಷಿಸು, ಉದಾಹರಿಸು. "उपेक्षते यः श्लथलम्बिनीजटाः" कुमा० ५-४७ । "किमात्मनिर्वादकयामुपेक्षे" रघु० १४-३४ ।
- (13) सम् + उप + ईक्ष = समुपेक्षते । ಚೆನ್ನಾಗಿ ಉಪೇಕ್ಷಿಸು. "शत्रुपक्षं समाधातुं यो मोहात्समुपेक्षते" भा० सभा० ।
- (14) निर् + ईक्ष = निरीक्षते । ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡು. "निरीक्ष्य तं द्वारवतीनिवासिनः" याद० १४-६४ । "निरीक्ष्य रामा बबुधे नभश्चरैः" किरा० ७-४० ।
- (15) परि + ईक्ष = परीक्षते । ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿ, ತತ್ತ್ವವನ್ನು ಅರಿ, ವಸ್ತುವಿನ ತಿಳಿವಳಿಕೆಯನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳು. "मायां मयोद्भाव्य परीक्षितोऽसि" रघु० २-६२ ।
- (16) प्र + ईक्ष = प्रेक्षते । ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡು, ಸರಿಯಾಗಿ ನೋಡು. "प्रेक्ष्य देवपुतनामदूयत" याद० १७-७० । "प्रेक्ष्य त्रिम्बमुपविम्बमात्मनः" कुमा० ८-११ ।
- (17) उत् + प्र + ईक्ष = उत्प्रेक्षते । ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಇನ್ನೊಂದರ ಧರ್ಮಸಂಬಂಧದಿಂದ ಅದರಂತೆಯೇ ನೋಡುವುದು. "उत्प्रेक्षामो वयं तावन्मतिमन्तं विभीषणम्" रामा० ।
- (18) सम् + प्र + ईक्ष = संप्रेक्षते । ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡು. "संप्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वम्" गोता ६-१३ ।
- (19) प्रति + ईक्ष = प्रतीक्षते । 1. ಅನುಸರಿಸು, ಅದರಂತೆ ನಡೆ. 2. ಪ್ರಾಜ್ಞಿಸು, ಗೌರವಿಸು. "प्रतीक्ष्यं तत्प्रतीक्ष्यायै" माघ० २-१०८ । 3. ಅಪೇಕ್ಷಿಸು, ಅಶಿಸು, ಎದುರುನೋಡು. "दयिततमामपरश्चरं प्रतीक्ष्य" माघ० ७-१३ । "प्रतीक्षमाणानधिचन्द्रशालम्" याद० १८-१२५ ।
- (20) वि + ईक्ष = वीक्षते । ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡು, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ನೋಡು. "हरिवीक्षणाक्षणिकचक्षुषान्यया"

माघ० १३-४४ । "आकालिकीं वीक्ष्य मधुप्रवृत्तिम्" कुमा० ३-३४ ।

(21) वि + अप + ईक्ष = व्यपेक्षते । ಅಪೇಕ್ಷಿಸು, ಅಸೆಪಡು. "अन्तरेव विहरन् दिवानिशं न व्यपेक्षत समुत्सुकाः प्रजाः" रघु० १९-६ ।

(22) अभि + वि + ईक्ष = अभिवीक्षते । ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡು, ಸುತ್ತಲೂ ನೋಡು. "अभिवीक्ष्य विदर्भ-राजपुत्रीकुचकाश्मीरजचिह्नमच्युतोरः" माघ० २०-६ ।

(23) निर् + वि + अप + ईक्ष = निर्व्यपेक्षते । ಅಸೆ ಯನ್ನು ತೊರೆ, ನಿಃಸ್ಪೃಹನಾಗಿರು. "उपस्थितायामपि निर्व्यपेक्षः" रघु० १४-३९ ।

(24) परि + वि + ईक्ष = परिवीक्षते । ತಿಳಿದು ಕೊಳ್ಳು, ಅರ್ಥಮಾಡಿಕೊಳ್ಳು. "वीक्षितेन परिवीक्ष्य पार्वती मूर्धकम्पमयमुत्तरं ददौ" कुमा० ८-६ ।

(25) सम् + ईक्ष = समीक्षते । ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡು, ವಿಮರ್ಶಿಸಿ ನೋಡು. "समीक्षिता ब्रह्मसुतस्य पत्नी सर्वैरभू-त्सादरदर्शनीया" याद० १३-९६ । "न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते" कुमा० ५-१६ ।

(26) प्र + सम् + ईक्ष = प्रसमीक्षते । ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿ, ಸರಿಯಾಗಿ ಅರಿತುಕೊಳ್ಳು. "कुलं स्याति च वृत्तं च बुद्ध्यातु प्रसमीक्ष्य च" भा० । ಇತ್ಯಾದಿ.

ईक्षक ಈ ಕ್ಷಕ (वि०) ನೋಡುವವನು. ईक्ष (दर्शने) "ण्वल्" (३-१-१३३) ।

ईक्षण ಈ ಕ್ಷಣ (न०) 1. ನೇತ್ರ, ಕಣ್ಣು. ईक्ष (दर्शने) कर० "ल्युट्" (३-३-११७) । "ननन्दुरानन्दजला-विलेक्षणाः" याद० १४-६४ । 2. ದರ್ಶನ, ನೋಟ, ದೃಷ್ಟಿಯಿಡುವುದು. ईक्ष भावे "ल्युट्" (३-३-११५) । "तेषां मध्यगता साध्वी पत्युः पादापितेक्षणा" कुमा० ६-११ ।

ईक्षणिक ಈ ಕ್ಷಣಿಕ (वि०) ಸಾಮುದ್ರಿಕ ಲಕ್ಷಣಗಳ ನ್ನರಿತು ಶುಭಾಶುಭ ಫಲಗಳನ್ನು ಹೇಳುವವನು. ईक्षणमस्त्यस्य "ठन्" (५-२-११५) । स्त्रियाम् ईक्षणिका ಈ ಕ್ಷಣಿಕಾ.

ईक्षति ಈ ಕ್ಷತಿ (स्त्री०) ನೋಟ, ದರ್ಶನ. ईक्ष (दर्शने) "अतिः" बाहु० ।

ईक्षा ಈ ಕ್ಷಾ (स्त्री०) 1. ನೋಟ, ದರ್ಶನ. ईक्ष (दर्शने) "अः" (३-३-१०३) । 2. ವಿಮರ್ಶೆ, ಪರ್ಯಾ-ಲೋಚನೆ.



ईक्षित ईक्षु (न०) 1. नೋड, दर्शन. ईक्ष (दर्शने) भावे "क्तः" (३-३-११४)। (वि०) 2. नोडलुप्पु. ईक्ष कर्म० "क्तः" (३-२-१०२)।  
ईडा ईडा (स्त्री०) स्तुति, ಹೊಗಳಿಕೆ. ईड (स्तुतौ) "अः" (३-३-१०३)।

ईडि (लि) त ईडि (लि) त (वि०) स्तुति, ಹೊಗಳಿಕೆ. ईड (स्तुतौ) कर्म० "क्तः" (३-२-१०२)। डलयोरभेदः।

ईडय ईडय (वि०) ಹೊಗಳಿಕೆಯಾದ, स्तुतिಗೆ ಅರ್ಹ ನಾದ. ईड (स्तुतौ) "ण्यत्" (३-१-१२४)। "पुत्रं लभस्वात्मगुणानुरूपं भवन्तमीडयं भवतः पितेव" रघु० ५-३४।

ईति ईति (स्त्री०) 1. ಉಪದ್ರವ, ತೊಂದರೆ, ಅತಿವೃಷ್ಟಿ, ಅನಾವೃಷ್ಟಿ ಮೊದಲಾದ ತೊಂದರೆ. ईयतेऽनया — ईह (गतौ) "क्तिच्" (३-३-१७४)। "अतिवृष्टिरनावृष्टि-र्मूषकाः शलभाः स्रगाः। अत्यासन्नाश्च राजानः षडेता ईतयः स्मृताः" ಇವು ಆರು ವಿಧ ಈತಿಬಾಧೆಗಳು. "पुरुषायुषजीविन्यो निरातङ्का निरीतयः" रघु० १-६३। 2. ಪ್ರಯಾಣ, ಪ್ರವಾಸ. 3. ಮರಿ, ಶಿಶು. "ईतिडिम्बे प्रवासेऽतिवृष्ट्यदिषट्सु च स्त्रियाम्" मेदि०।

ईदृक्ता ईदृक्ता (स्त्री०) ಹೀಗಿರುವಿಕೆ, ಈ ವಿಧವಾಗಿ ರುವಿಕೆ, ಈ ತೆರನಾಗಿರುವಿಕೆ. ईदृशो भावः "तल्" (५-१-११९)। "विष्णोरिवास्यानवधारणीयमीदृक्तया रूपमियत्तया वा" रघु० १३-४।

ईदृश् ईदृश् (वि०) ಈ ವಿಧವಾದ, ಈ ತೆರನಾದ, ಇಂತಹ. अयमिव पश्यति — इदम् + दृशिर् (प्रेक्षणे) कर्मकर्त० "क्विन्" (३-२-६०)। ईश् आदेशः (६-३-९०)। "इदमीदृगनीदृगाशयः प्रसभं वक्तुमुपक्रमेत कः" किरा० २-२८।

ईदृश ईदृश (वि०) ಇಂತಹ, ಈ ವಿಧವಾದ, ಈ ತೆರ ನಾದ. अयमिव पश्यति — इदम् + दृशिर् (प्रेक्षणे) कर्मकर्त० "कञ्" (३-२-६०)। इदम् ईश् आदेशः (६-३-९०)। "ईदृशस्य भवतः कथमेतल्लाघवं मुहुस्तीव रतेषु" माघ० १०-७७। स्त्रियाम् "झीप्" (४-१-१५)। -शी-३१. "तेजसो महत ईदृशी गतिः" कुमा० ८-४३।

ईदृक्ष ईदृक्ष (वि०) ಇಂತಹ, ಈ ವಿಧವಾದ, ಈ ತೆರ ನಾದ. अयमिव पश्यति — इदम् + दृशिर् (प्रेक्षणे) कर्मकर्त० "कसः"। ईश् (६-३-९०)।

ईप्सा ईप्सा (स्त्री०) 1. ಹೊಂದಲು ಆಸೆ, ಪಡೆಯಲು ಆವೇಶ. आप्तुमिच्छा—आप् (व्याप्तौ) सन् "अः" (३-३-१०२)। ईत् (७-४-५५)। 2. ಇಚ್ಛೆ, ಆವೇಶ. ईप्सित ईप्सित (न०) 1. ಆಸೆ, ಹೊಂದಲು ಆವೇಶ. आप्ल (व्याप्तौ) + सन् भावे "क्तः" (३-३-११४)।

"ईप्सितं तदवज्ञानाद्विद्धि सागलमात्मनः" रघु० १-७९। "ईप्सितस्य न भवेदुपाश्रयः" किरा० १३-४०। (वि०) 2. ಪಡೆಯಲು ಆವೇಶ ಸಲ್ಪಟ್ಟ. कर्म० "क्तः" (३-२-१०२)। "क ईप्सितार्थस्थिरनिश्चयं मनः" कुमा० ५-५।

ईप्सु ईप्सु (वि०) ಹೊಂದಲು ಆವೇಶವುಳ್ಳ. आप्तुमिच्छुः—आप् (व्याप्तौ) + सन् "उः" (३-२-१६८)। ईत् (७-४-५५)। "सौरभ्यमीप्सुरिव ते मुखमास्तस्य" रघु० ५-६९।

ईयिवस् ईयिवस् (वि०) ಹೊಂದಿರುವ, ಪಡೆದಿರುವ. इण् (गतौ) "कसुः" (३-२-१०९)। निपा०।

ईर—क्षेपे (वा चुरा० उभ० सक० से०) ईरयति, -ते। ईरयाञ्चकार, -चक्रे। ईरयिता। ईरयिष्यति ಇತ್ಯಾದಿ. पक्षे (भ्वा०) ईरति। ईरावभूव, -चकार, -आस। ईरिता। ईरिष्यति ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಎಸೆ, ಬಿಸಾಡು. 2. ಚೋರಿಸು, ಮೈಲಿಸು.

कर्मणि:—ईर्यते। ईरयाञ्चक्रे, -बभूव, -आस। ईरयिता, ईरिता। ईरयिष्यते, ईरिष्यते ಇತ್ಯಾದಿ.

सनि:—ईरिरयिषति, -ते ಇತ್ಯಾದಿ.

कृत्सु:—ईरयितव्यम्। ईरणीयम्। ईर्यम्। ईरितः। ईरयन्। ईरन्। ईरः। ईर्यमाणः ಇತ್ಯಾದಿ. "अपराग-समीरणेरितः क्रमशीर्णकुलमूलसन्ततिः" किरा० २-५०।

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) उद्+ईर=उदीरयति। 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಸೆ, ಎರಚು. 2. ಉಚ್ಚರಿಸು, ನುಡಿ, ಹೇಳು. "उदीरितां तामिति याज्ञसेन्या" किरा० ३-५५।

(2) अभि+उद्+ईर=अभ्युदीरयति। 1. ಎದು ರಾಗಿ ಹೇಳು, ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ಮಾತಾಡು. 2. ಎರಚು, ಎಸೆ. "निधाय पाणावृषिणाम्युदीरिताः" माघ० १-१८।

(3) सम्+उद्+ईर=समुदीरयति। ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೇಳು, ಸರಿಯಾಗಿ ಉಚ್ಚರಿಸು.



(4) ಪ್ರ+ಇರ=ಪ್ರೇರಯತಿ. 1. ಜೋದಿಸು, ಪ್ರೇರಿಸು. 2. ಬಿಡು, ಕಳುಹಿಸು. "ಪ್ರೇರಿತ: ಶಶಧರೇಣ ಕರೌಘ:" ಕಿರಾಂ ೧-೨೮.

(5) ಸಮ್+ಇರ=ಸಮೀರಯತಿ. 1. ಜೆನ್ನಾಗಿ ಹೇಳು, ಸರಿಯಾಗಿ ಉಚ್ಚರಿಸು. 2. ಪ್ರೇರಿಸು.

ಇರ ಈರ(ವಿಂ) 1. ಎಸೆಯುವ, ಎರಚುವ. 2. ಹೋಗುವ, ನಡೆಯುವ. 3. ಜಲಿಸುವ, ಅಲುಗಾಡುವ. ಇರ (ಗತೌ ಕಮ್ಪನೆ ಕಪೇ ಚ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪).

ಇರಣ ಈರಣ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಇರ (ಗತೌ) "ಯುಚ್" (೩-೨-೧೪೮). (ನಂ) 2. ಗಮನ, ಸಂಚಾರ. 3. ಜಲನ, ಅಲುಗಾಡುವಿಕೆ. ಇರ ಮಾವೆ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫). (ವಿಂ) 4. ಪ್ರೇರಿಸುವ, ಜೋದಿಸುವ. ಇರ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪).

ಇರಿಣ ಈರಿಣ (ನಂ) ಉಪರಭೂಮಿ, ಉಪ್ಪುಮಣ್ಣಿನ ಭೂಮಿ.

ಇರಿತ ಈರಿತ(ವಿಂ) 1. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಇರ (ಗತೌ ಕಮ್ಪನೆ ಚ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). "ಯದಾಸುದೇವನಾದಿನಮನಾದಿನವಮೀರಿತಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೨೨. 2. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನೂಕಲ್ಪಟ್ಟ, ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಪರಾಗಸಮೀರಣೇರಿತ: ಕ್ರಮಶೀರ್ಣಕುಲಮೂಲಸಂತತಿ:" ಕಿರಾಂ ೨-೫೦.

ಇರಿನ್ ಈರಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಜಲಿಸುವ, ಅಲುಗಾಡುವ. 2. ಹೋಗುವ, ಸಂಚರಿಸುವ, ನಡೆಯುವ.

ಇರ್ಮ ಈರ್ಮ (ನಂ) ವ್ರಣ, ಹುಣ್ಣು. ಇರಯತಿ ಸುಖಮ್— ಇರ (ಗತೌ) "ಮನ್" ಬಾಹುಂ.

ಇರ್ವಾರಿ ಈರ್ವಾರು (ಪುಂ) ಸೌತೆಗಿಡ. ಇರ (ಗತೌ) "ಕ್ರಿಪ್" (ಛಾಂ ೩-೩-೯೪). ಇರಂ ವಾರಯತಿ. ವೃತ್ (ವರಣೆ) "ಞ್" ಬಾಹುಂ.

ಇರ್ಯನ್ ಈರ್ಯನ್ (ವಿಂ) ಅಸೂಯೆಪಡುತ್ತಿರುವ, ಅಸಹನೆ ತೋರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಇರ್ಯ (ಇರ್ಯಾಮ್) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬). ಇರ್ಯಂತಿ ಈರ್ಯಂತೀ. "ಇರ್ಯಂತ್ಯಾ ವದನಮಸಿಕ್ತಮಪ್ಯನಲ್ಪ-ಸ್ವೇದಾಂವುಸ್ತಪಿತಮಜಾಯತೇತರಸ್ಯಾ:" ಮಾಘಂ ೮-೩೬.

ಇರ್ಯಾ ಈರ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಸಹನೆ, ಇತರರ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಯನ್ನು ಸಹಿಸದಿರುವಿಕೆ, ಹೊಟ್ಟೆಕಿಚ್ಚು. ಇರ್ಯ (ಇರ್ಯಾಮ್) "ಅ:" (೩-೩-೧೦೩). "ನಿ:ಶಿಕ್ಷಮನ್ಯಾ: ಸಮಮಾಹಿತೇರ್ಯಾ:" ಮಾಘಂ ೩-೧೬. "ಕರಜದಶನಚಿಹ್ನಂ ನೇಶಮಜ್ಞೇಜ್ಯನಾರೀಜನಿತಮಿತಿ ಸರೋಪಾಮೀರ್ಯಾಶಿಕ್ಷಮಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೩೭.

ಇಲಿ ಈಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಈಳಿಗೆಮಣೆಯ ಕತ್ತಿ. 2. ಮೋಟುಕತ್ತಿ, ತುಂಡುಕತ್ತಿ. ಇಲೆ— ಇರ (ಗತೌ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭). ರಲ್ಯೋರಭೇದ:.

ಇಶ ಈಶ (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. ಇಷ್ಠೆ— ಇಶ (ಐಶ್ವರ್ಯೆ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫). "ಸಮ್ಮೋಗವೇಶಮ ಪ್ರವಿಶಂತಮನ್ತರ್ದೇಶಂ ಪಾರಾವತಮೇಕಮೀಶ:" ಕುಮಾಂ ೧-೧. 2. ಪರಮಾತ್ಮ. 3. ಪತಿ, ಗಂಡ, ಯಜಮಾನ. (ವಿಂ) 4. ಯಜಮಾನ, ದಣ, ಒಡೆಯ. "ಪ್ರಯತ್ನಸಂಸ್ತಮ್ಭಿತವಿಕ್ರಿಯಾಣಾಂ ಕಥಂಚಿ-ದಿಶಾ ಮನಸಾಂ ಬಭೂವು:" ಕುಮಾಂ ೩-೩೪. 5. ಸಮರ್ಥ, ಶಕ್ತ.

ಇಶಕೋಣ ಈಶಕೋಣ (ಪುಂ) ಪೂರ್ವ ಮತ್ತು ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕುಗಳ ಮಧ್ಯದ ವಿದಿಕ್ಕು, ಈಶ್ವರನು ಅಧಿಪತಿ ಯಾಗಿರುವ ಈಶಾನ್ಯ ದಿಕ್ಕು. ಇಶಸ್ವಾಮಿಕ: ಕೋಣ:.

ಇಶಾ ಈಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ ಹೆಂಗಸು. 2. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

ಇಶಾನ ಈಶಾನ (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. ಇಷ್ಠೆ— ಇಶ (ಐಶ್ವರ್ಯೆ) ತಾಚ್ಚಿಲೈ "ಚಾನಶ್" (೩-೩-೧೨೯). "ಇಶಾನ: ಸಕುಸುಮಪಲ್ಲವೇನೇಸ್ತೆ:" ಕಿರಾಂ ೧೭-೬೨. "ಪರೀತ್ಯೇಶಾನಂ ತ್ರಿ: ಸ್ತುತಿಭಿರೂಪಮೀತ: ಸುರಗಣೈ:" ಕಿರಾಂ ೧೮-೪೫. 2. ಈಶ್ವರನ ಎಂಟು ಮೂರ್ತಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. ["ಅಷ್ಟಮೂರ್ತಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 3. ಈಶ್ವರ ದೇವತಾಕವಾದ ಆರಿದ್ರಾನಕ್ಷತ್ರ. (ವಿಂ) 4. ಯಜಮಾನ, ಒಡೆಯ, ಸ್ವಾಮಿ. 5. ಐಶ್ವರ್ಯ ದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಇಶಿತಾ ಈಶಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಣೆವಾದಿ ಎಂಟು ಐಶ್ವರ್ಯ ಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಇಶಿನೋ ಭಾವ: "ತಲ್" (೫-೧-೧೧೯). "ತ್ವ:" ಇಶಿತ್ವಮ್ ಈಶಿತ್ವಮ್.

ಇಶಿತು ಈಶಿತ್ಯ (ವಿಂ) ಯಜಮಾನ, ಸ್ವಾಮಿ, ಒಡೆಯ, ಪ್ರಭು. ಇಷ್ಠೆ— ಇಶ (ಐಶ್ವರ್ಯೆ) "ತನ್" (೩-೨-೧೩೫). "ತದೀಶಿತಾರಂ ಚೇದಿನಾಂ ಭವಾಂತಮವಮಂತ ಮಾ" ಮಾಘಂ ೨-೯೫. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೫). ಇಶಿಶ್ರಿ ಈಶಿಶ್ರೀ.

ಇಶಿನ್ ಈಶಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಭು, ಸ್ವಾಮಿ, ಒಡೆಯ, ಯಜಮಾನ. 2. ಪತಿ, ಗಂಡ, ಯಜಮಾನ. ಇಶ (ಐಶ್ವರ್ಯೆ) "ಣಿನಿ:" (೩-೩-೧೭೦). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೫). ಇಶಿನಿ ಈಶಿನೀ.

ಇಶ್ವರ ಈಶ್ವರ (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. ಇಷ್ಠೆ— ಇಶ (ಐಶ್ವರ್ಯೆ) "ವರಚ್" (೩-೨-೧೭೫). "ಇಶ್ವರೋರ್ಜಿಪಿ



ದಿವಸಾತ್ಯಯೋಚಿತಂ ಮನ್ವಪೂರ್ವಮನುತಸ್ಥಿವಾನ್ವಿಧಿಮ್” ಕುಮಾಂ ೮-೫೦। 2. ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಮೇಶ್ವರ. “ಐಶ್ವರ: ಸರ್ವಭೂತಾನಾಂ ಹೃದೇಶ್ಚರ್ಜುನ ತಿಷ್ಠತಿ” ಗೀತಾ ೧೮-೬೧। “ಸಂಭವೋ ಭಾವನೋ ಭರ್ತಾ ಪ್ರಭವ: ಪ್ರಭುರೀಶ್ವರ:” ವಿಂ ಸಂ। 3. ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ. 4. ರಾಜ, ದೊರೆ. “ಐಶ್ವರ್ಯಾದಿನಪೇತಮೀಶ್ವರಮಯಂ ಲೋಕೋಽರ್ಥತ: ಸೇವತೇ” ಮುಡ್ರಾಂ ೧-೧೪। 5. ಪ್ರಭವಾದಿ ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. 6. ಜೀವ. 7. ಪತಿ, ಗಂಡ, ಯಜಮಾನ. (ವಿಂ) 8. ಧನಿ, ಸಾಹುಕಾರ, ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ. 9. ಸ್ವಾಮಿ, ಯಜಮಾನ, ಪ್ರಭು, ಒಡೆಯ. “ಐಶ್ವರೋ ಮನ್ಮಥೇ ಶಮ್ಭೋ ನಾಡಯೇ ಸ್ವಾಮಿನಿ ವಾಚ್ಯವತ್” ಮೇದಿಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಾ-ರಾ. 1. ಗೌರಿ, ಪಾರ್ವತಿ. “ವಿನ್ಯಸ್ತಮಜ್ಜಲ-ಮಹೌಷಧಿರೀಶ್ವರಾಯಾ:” ಕಿರಾಂ ೫-೩೩। 2. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. -ರೀ-ರೀ. 1. ಗೌರಿ, ಪಾರ್ವತಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 2. ಈಶ್ವರೀ ಹೆಂಬು. 3. ಐಶ್ವರ್ಯವಂತನ ಹೆಂಗಸು. “ಐಶ್ವರೀಶ್ವರೋಮಾಯಾಮ್” ಮೇದಿಂ।

ಇಪತ್ ಈಷತ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಸ್ವಲ್ಪ, ಕೊಂಚ. ಇಪ (ಗತಿಹಿಸಾದರ್ಶನೇಪು) “ಅತ್”। “ಇಪತ್ತಿರ್ಯಗ್ವಲನವಿಷಮಂ ಕೃಣಿತಪ್ರಾಂತಮೇತತ್” ಮಾಲತೀಂ ೪-೨। 2. ಸಣ್ಣದಾದ, ಚಿಕ್ಕದಾದ.

ಇಪತ್ಕರ ಈಷತ್ಕರ (ವಿಂ) ಸ್ವಲ್ಪ ಪ್ರಯಾಸದಿಂದ ಮಾಡುವ, ಕಷ್ಟವಿಲ್ಲದೆ ಮಾಡುವ. ಇಪತ್ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬)। “ಇಪತ್ಕರ: ಪ್ರಪಂಚೋ ಹರಿಣಾ” ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಇಪತ್ಪಾಂಡು ಈಷತ್ಪಾಂಡು (ಪುಂ) 1. ಎಳೆ ಬಿಳುಪುಬಣ್ಣ, ಮಾಸಲು ಬಿಳುಪು. (ವಿಂ) 2. ಸ್ವಲ್ಪ ಬಿಳಿದಾದ. ಇಪತ್ ಪಾಂಡು:।

ಇಪದ್ಗುಣ ಈಷದ್ಗುಣ (ವಿಂ) ಸ್ವಲ್ಪ ಬಿಸಿಯಾದ, ಬಿಚ್ಚಿ ನಾದ.

ಇಪದ್ರಕ್ತ ಈಷದ್ರಕ್ತ (ಪುಂ) 1. ಎಳೆಗೆಂಪು. (ವಿಂ) 2. ಎಳೆಗೆಂಪಾದ.

ಇಷಾ ಈಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೇಗಲಿನ ದಂಡ, ನೇಗಲಿನ ಈಚು. 2. ಬಂಡಿಯ ಮೂಕೆಮರ, ರಥದ ಒಂದು ಅವಯವ. ಇಪ (ಗತೌ) “ಅ:” (೩-೩-೧೦೩)। “ಇಷಾಮನ್ಯೇ ಹ್ಯಾನನ್ಯೇ ಸೂತಮನ್ಯೇ ನ್ಯಪಾತಯನ್” ಭಾಂ ವನಂ ೧೪೨-೩೩।

ಇಷಾದಂತ ಈಷಾದಂತ (ಪುಂ) 1. ನೇಗಲಿನಂತೆ ಉದ್ದವಾದ ಕೊಂಬುಳ್ಳ, ಅನೆ. ಇಷೇವ ದೀರ್ಘಂ ದಂತೋಽಸ್ಯ।

“ಉತ್ಕಿಷ್ಕಯೋಚ್ಚೇ: ಪ್ರಸ್ಫುರಂತಂ ರದಾಮ್ಯಾಮಿಷಾದಂತ: ಕುಂಜರಂ ಶಾತ್ರವೀಯಮ್” ಮಾಘಂ ೧೮-೩೮। 2. ಉಬ್ಬಿದ ಹಲ್ಲುಳ್ಳ, ಮನುಷ್ಯ, ಮುಂದಕ್ಕೆ ಚಾಚಿದ ಹಲ್ಲುಳ್ಳವನು.

ಇಷಿಕಾ ಈಷಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನೆಯ ಕಣ್ಣು. 2. ಮೌಂಜಿ ಹುಲ್ಲಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಅಸ್ತ್ರ. “ಸೋಽಭಿಮನ್ಯು ಶರೇಳಿಕಾಮಿಷಿಕಾಸ್ತ್ರೇಣ ವೀರ್ಯವಾನ್। ಕಾಕಂ ತಮಭಿಸನ್ಧಾಯ ಸಸರ್ಜ ಪುರುಷರ್ಮಭ:” ರಾಮಾಂ।

ಇಷೀಕಾ ಈಷೀಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೂಲಿಕೆ, ಕುಂಚ, ಬಣ್ಣ ಗಾರನ (ಚಿತ್ರಬರೆಯುವ) ಸಾಧನ.

ಇಹ - ಚೆಷ್ಟಾಯಾಮ್ (ಭಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) ಲಟ್-ಇಹತೇ। ಲಿಟ್-ಇಹಾಂಚಕ್ರೆ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಲುಟ್-ಇಹಿತಾ। ಲೃಟ್-ಇಹಿಷ್ಯತೇ। ಲೋಟ್-ಇಹಿತಾಮ್। ಲಙ್-ಇಹತ। ವಿಧಿಲಿಟ್-ಇಹಿತ। ಆಶೀಲಿಟ್-ಇಹಿಪೀಷ್ಠ। ಲುಙ್-ಇಹಿಷ್ಠ। ಲೃಙ್-ಇಹಿಷ್ಯತ। 1. ಅಪೇಕ್ಷಿಸು. 2. ಪ್ರಯತ್ನಿಸು. “ದುರೋದರಂ ಚಾಜಿತಾಂ ಸಮೀಹತೇ ನಯೇನ ಜೇತುಂ ಜಗತೀಂ ಸುಯೋಧನ:” ಕಿರಾಂ ೧-೭।

ಕರ್ಮಣಿ:-ಇಹಯತೇ। ಇಹಾಂಚಕ್ರೆ। ಇಹಿತಾಮ್। ಇಹಿತ। ಇಹೀತ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ:-ಇಹಯತಿ, -ತೇ। ಇಹಯಾಂಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಇಹಯಿತಾ। ಇಹಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ। ಇಹಯತು, -ತಾಮ್। ಇಹಯತು, -ತ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ:-ಇಜಿಹಿಷತೇ। ಇಜಿಹಿಷಾಂಚಕ್ರೆ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:-ಇಹಿತವ್ಯಮ್। ಇಹನೀಯಮ್। ಇಹ್ಯಮ್। ಇಹಿತ:। ಇಹಿತವಾನ್। ಇಹಮಾನ:। ಇಹಿಷ್ಯಮಾಣ:। ಇಹಿತಮ್। ಇಹಾ। ಇಹನಮ್। ಇಹಿತವಾ। “ನ ಸಂಹತಾಸ್ತಸ್ಯ ನ ಭಿನ್ನವೃತ್ತಯ: ಪ್ರಿಯಾಣಿ ವಾಂಞ್ಞನ್ಯಗುಭಿ: ಸಮೀಹಿತುಮ್” ಕಿರಾಂ ೧-೧೧।

ಇಹನ ಈಹನ (ನಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವಿಕೆ, 2. ಪ್ರಯತ್ನಿಸುವಿಕೆ. ಇಹ (ಚೆಷ್ಟಾಯಾಮ್) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

ಇಹನೀಯ ಈಹನೀಯ (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡಬಹುದಾದ. ಇಹ (ಚೆಷ್ಟಾಯಾಮ್) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೧೬)।

ಇಹಮಾನ ಈಹಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಇಚ್ಛಿಸುವ. ಇಹ (ಚೆಷ್ಟಾಯಾಮ್) “ಶಾನಕ್” (೩-೨-೧೨೪)। 2. ಪ್ರಯತ್ನಪಡುವ.

ಇಹಾ ಈಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆ. 2. ಪ್ರಯತ್ನ. 3. ಚೀಪ್ಪೆ, ವ್ಯಾಪಾರ. ಇಹ (ಚೆಷ್ಟಾಯಾಮ್) “ಅ:” (೩-೩-೧೦೩)।



ईहामृग ಈಹಾವೃಗ (ಗುಂ) 1. ತೋಳ, ವೃಕ. ಇಹಾ-  
ಪ್ರಧಾನೋ ಮೃಗಃ। 2. ದಶರೂಪಕಗಳಲ್ಲೊಂದು; ಹತ್ತು  
ರೂಪಕಗಳು: (1) ನಾಟಕ, (2) ಪ್ರಕರಣ,  
(3) ಭಾಣ, (4) ಪ್ರಹಸನ, (5) ಡಿಮ, (6) ವ್ಯಾಯೋಗ,  
(7) ಸಮಾಚಾರ, (8) ವೀಧಿ, (9) ಅಂಕ ಮತ್ತು  
(10) ಈಹಾವೃಗ. "ईहामृगस्तु पुंसि स्यात् कोक-  
रूपकभेदयोः" मेदि०। "ईहामृगो मिश्रवृत्तश्चतुरङ्गः  
प्रकीर्तितः। मुखप्रतिमुखे सन्धी तत्र निर्वहणं  
तथा। नरदिव्यावनियमौ नायकप्रतिनायकौ" ಇತ್ಯಾದಿ  
ಸಾಂ ದಂ।

ईहावृक ಈಹಾವೃಕ (ಗುಂ) ವೃಕ, ತೋಳ. ಇಹಾಪ್ರಧಾನೋ  
ವೃಕಃ।

इहित ಈಹಿತ (ನಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ.  
2. ಪ್ರಯತ್ನ. 3. ಚೇಷ್ಟೆ, ವ್ಯಾಪಾರ. ಇಹ(चेष्टायाम्)  
ಭಾವೇ "क्तः" (३-३-११४)। अकृत्रिमप्रेमरसाहितैर्मनो  
हरन्ति रामाः कृतकैरपीहितैः" किरा० ८-४६।  
(वि०) 4. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "यद्विस्मर्तुमपीहितं शमवता  
शान्ति कुलस्येच्छता" वेणी० १-२४। 5. (ಇಡಲು)  
ಪ್ರಯತ್ನಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ह्रीमत्या शिरसीहितः सपुलकस्वे-  
दोद्गमोत्कम्पया" रत्ना० १-१।

इति "ई" कारादिपदार्थनिरूपणम्।

उ

उ ಉ ಇದು ವರ್ಣಮಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಐದನೆಯ ಸ್ವರ (ಅಚ್)  
ವರ್ಣವು. ಉದಾತ್ತ, ಅನುದಾತ್ತ ಮತ್ತು ಸ್ವರಿತ  
ಭೇದದಿಂದ ಮೂರು ವಿಧವಾಗಿ ಪುನಃ ಅನುನಾಸಿಕ  
ಅನನುನಾಸಿಕ ಭೇದದಿಂದ ಆರು ವಿಧವಾಗುವುದು.  
ಇದು ಆಭ್ಯಂತರ ವಿವೃತ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಓಷ್ಠ (ತುಟ)  
ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವುದು.

उ ಉ (ಗುಂ) 1. ಈಶ್ವರ. "अकारो विष्णुरद्विष्ट उकारस्तु  
महेश्वरः"। 2. ಕ್ಷತ್ರಿಯ. 3. ನೇತ್ರ, ಕಣ್ಣು.  
4. ಈಶ್ವರನ ಶಿರಸ್ಸು. 5. ವಿಷ್ಣು. "उकारः क्षत्रिये  
नेत्रे हरमौलौ हरे हरौ" नानार्थर०। (अव्य०) 6.  
ಸಂಜೋಧನೆ, ಕರಿ. "उ मेति मात्रा तपसो निषिद्धा  
पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम" कुमा० १-२६।  
7. ಕೋಪದ ಮಾತು. 8. ಪ್ರಶ್ನೆ. 9. ಅಂಗೀಕಾರ.  
10. ಪಾದಪೂರಣ. 11. ಅನುಕಂಪ, ದಯೆ.  
12. ನಿಯೋಗ, ಅಪ್ಪಣೆ, ಆಜ್ಞೆ. "उ सम्बोधन  
रोपोक्तयोरनुकम्पानियोगयोः। पदस्य पूरणे पादपूरणेऽपि  
च दृश्यते" मेदि०।

उकार ಉಕಾರ (ಗುಂ) 1. ಈಶ್ವರ, ಶಿವ. 2. "उ"  
ವರ್ಣ.

उक्त ಉಕ್ತ (ನಂ) 1. ಉಕ್ತಿ, ಮಾತು. ವಚ (परिभाषणे)  
ಭಾವೇ "क्तः" (३-३-११४)। "बालादपि ग्रहीतव्यं  
युक्तमुक्तं मनीषिभिः" हितो०। (वि०) 2. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ,  
ನುಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ವಚ "क्तः" (३-२-१०२)। "सम्प्रत्य-  
साम्प्रतं वक्तुमुक्ते मुसलपाणिना" माघ० २-७०।  
3. ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. "असावनुक्तोऽपि सहाय  
एव" कुमा० ३-२१। (स्त्री०) -क्ता-क्ता. ಒಂದು  
ಅಕ್ಷರದ ಪಾದವುಳ್ಳ ಛಂದಸ್ಸು. "उक्तानुक्ता तथा  
मध्या" वृ० २०।

उक्तवत् ಉಕ್ತವತ್ (ವಿಂ) ಹೇಳಿದವನು, ಮಾತನಾಡಿ  
ದವನು. ವಚ (परिभाषणे) "क्तवतुः" (३-४-६७)।  
"इत्युक्तवन्तं ब्रज साधयेति" किरा० ३-२४।

उक्ति ಉಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಾತು. ವಚ (परिभाषणे)  
"क्तिन्" (३-३-१४)। "इत्युक्तवानुक्तिविशेषरम्यं  
मनः समाधाय जयोपपत्तौ" किरा० ३-१०। 2. ಶಬ್ದ  
ಶಕ್ತಿ, ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಯೋಗ್ಯತೆ.

उक्ष-सेचने (म्वा० पर० सक० से०) उक्षति। उक्षाञ्चकार,  
-वभूव, -आस। उक्षिता। उक्षिष्यति। उक्षतु।  
औक्षत्। उक्षेत् ಇತ್ಯಾದಿ. ಸಿಂಹಿಸು, ಸೇಚನೆಮಾಡು,



ಒದ್ದೆ ಮಾಡು, ನೆನೆಸು. "ಉಕ್ಷಾಂಬಭೂರಭಿತೋ ವಪುರ್ಮು-  
ವರ್ಷಃ" ಮಾಧಂ ೪-೩೦।

ಕರ್ಮಣಿ:—ಉಕ್ಷಯತೇ। ಉಕ್ಷಾಂಚಕೇ, -ಬಭೂವ, -ಆಸೇ।  
ಉಕ್ಷಿತಾ। ಉಕ್ಷಿಪ್ಯತೇ। ಉಕ್ಷಯತಾಂ। ಉಕ್ಷಯತ। ಉಕ್ಷಯೇತ।  
ಉಕ್ಷಿಷೀಷ್ಠ। ಉಕ್ಷಿಷಿ। ಉಕ್ಷಿಷ್ಯತ।

ಣಿಚಿ:—ಉಕ್ಷಯತಿ, -ತೇ। ಉಕ್ಷಯಾಂಚಕಾರ, -ಚಕೇ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಉಕ್ಷಯಿತಾ। ಉಕ್ಷಯಿಷ್ಯತಿ। ಉಕ್ಷಯತು,  
-ತಾಂ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ:—ಉಚಿಕ್ಷಿಪತಿ। ಉಚಿಕ್ಷಿಪಾಂಚಕಾರ, -ಬಭೂವ,  
-ಆಸ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:—ಉಕ್ಷಿತವ್ಯಮ್। ಉಕ್ಷಣೀಯಮ್। ಉಕ್ಷಯಮ್। ಉಕ್ಷಿತಃ।  
ಉಕ್ಷಿತವಾನ್। ಉಕ್ಷನ್। ಉಕ್ಷಿತಮ್। ಉಕ್ಷಣಮ್। ಉಕ್ಷಿತುಮ್।  
ಉಕ್ಷಿತ್ವಾ। ಪ್ರೋಕ್ಷಯ।

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಅಭಿ + ಉಕ್ಷ = ಅಭ್ಯುಕ್ಷತಿ। ಹಸ್ತವನ್ನು ಕೆಳ  
ಮುಖವಾಗಿ ಮಾಡಿ ನೀರನ್ನು ಚೆಮ್ಮುಕಿಸುವಿಕೆ.

(2) ಅವ + ಉಕ್ಷ = ಅವೋಕ್ಷತಿ। ಹಸ್ತವನ್ನು ಓರೆ  
ಮಾಡಿ ನೀರನ್ನು ಚೆಲ್ಲುವುದು.

(3) ಪ್ರ + ಉಕ್ಷ = ಪ್ರೋಕ್ಷತಿ। ಹಸ್ತವನ್ನು ಮೇಲು  
ಮುಖ ಮಾಡಿ ನೀರನ್ನು ಚೆಲ್ಲುವುದು. "ಉತ್ತಾನೇನೈವ ಹಸ್ತೇನ  
ಪ್ರೋಕ್ಷಣಂ ಪರಿಕೀರ್ತಿಸಮ್। ನ್ಯಾಂಚತಾಂಮ್ಯುಕ್ಷಣಂ ಪ್ರೋಕ್ಷತಂ ತಿರಸ್ಕಾ-  
ವೋಕ್ಷಣಂ ಸ್ಮೃತಮ್"। [ಮಂತ್ರವನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸಿ ನೀರನ್ನು  
ಪ್ರೋಕ್ಷಿಸುವ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈ ಪ್ರಯೋಗಗಳು.]

ಉಕ್ಷಣ ಉಕ್ಷಣ (ನಂ) ನೀರನ್ನು ಪ್ರೋಕ್ಷಿಸುವಿಕೆ. ಉಕ್ಷ  
(ಸೇವನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ವಸಿಷ್ಠಮನ್ತ್ರೋಕ್ಷಣ-  
ಜಾತ್ಪ್ರಭಾವಾತ್ ಉದನ್ವದಾಕಾಶಮಹೀಧರೇಷು" ರಘುಂ ೪-೨೭।

ಉಕ್ಷತರ ಉಕ್ಷತರ (ಪುಂ) ಸಣ್ಣ ಹೋರಿ, ಗಾಡಿಗೆ  
ಕಟ್ಟುವ ವಯಸ್ಸಿನ ಹೋರಿ. ಅಲ್ಪ: ಉಕ್ಷಾ "ತರಪ್"।  
"ಅನುಕ್ಷಣಂ ನೋಕ್ಷತರಃ ಪ್ರತೀಚ್ಛತಿ" ಮಾಧಂ ೧೨-೧೦।

ಉಕ್ಷನ್ ಉಕ್ಷನ್ (ಪುಂ) 1. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. ಉಕ್ಷ  
(ಸೇವನೆ) "ಕನಿ:" (ಉಂ ೧-೧೪೭)। "ಪರೀತಮುಕ್ಷಾ-  
ವಜ್ರೇ ಜಯಶ್ರಿಯಾ ನದಂತಮುಚ್ಛೇ: ಕ್ಷತಸಿಂಧುರೋಧಸಮ್" ಕಿರಾಂ  
೪-೧೧। ಕೆಲವೆಡೆ ಸಮಾಸಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ ಅಜಂತವಾಗಿ  
ಮಹೋಕ್ಷ: ವೃದ್ಧೋಕ್ಷ: ಇತ್ಯಾದಿ ರೂಪವಾಗುವುದು. (ವಿಂ)  
2. ನೀರನ್ನು ಚೆಲ್ಲುವ, ನೀರನ್ನು ಸಿಂಪಿಸುವ.

ಉಕ್ಷಿತ ಉಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) ನೆನೆಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೋಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಒದ್ದೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಉಕ್ಷ (ಸೇವನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

"ಶಸ್ತ್ರೇಕ್ಷಿಪಚ್ಛಿರಚ್ಛೇದಪ್ರೋಚ್ಛಲಚ್ಛೋಗಿತೋಕ್ಷಿತೇ:" ಮಾಧಂ  
೨-೬೬।

ಉಕ್ಷಾ ಉಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಡಿಗೆಯ ತಪ್ಪಲೆ, ಅನ್ನ  
ಬೇಯಿಸುವ ಪಾತ್ರೆ. ಉಕ್ಷತಿ - ಉಕ್ಷ (ಗತೌ) "ಕ:"  
(೩-೧-೧೩೪)। 2. ಅಗಿ ಕುಂಡ.

ಉಕ್ಷ್ಯ ಉಕ್ಷ್ಯ (ವಿಂ) ಮಡಕೆಯಲ್ಲಿ ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಅನ್ನ  
ಮೊದಲಾದುದು. ಉಕ್ಷಾಂ ಸಂಸ್ಕೃತಮ್ "ಯತ್"  
(೪-೨-೧೭)। "ಶೂಲ್ಯಮುಕ್ಯಂ ಚ ಹೊಮವಾನ್" ಭट्टಿಂ ೪-೯।

ಉಗ್ರ ಉಗ್ರ (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ.  
ಉಚ (ಸಮವಾಯೇ) "ಋನ್" ಗಣಾಂತಾದೇಶ: (ಉಂ ೨-೨೮)।  
"ವಹ್ನಿವಿರೂಪಂ ವಪುರಗ್ರೇತಶ್ಚಯೇನ ವಹ್ನಿ: ಕಿಲ ನಿರ್ಜಗಾಮ,"  
ಕುಮಾಂ ೯-೧೭। 2. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 3. ಕ್ಷತ್ರಿಯ  
ನಿಂದ ಶೂದ್ರಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಬೆರಕೆಜಾತಿ  
ಯವನು. "ವೇಶ್ಯಾಶ್ಚೈವೋಸ್ತು ರಾಜನ್ಯಾತ್ ಮಾಹಿಷ್ಯೋಗ್ರಿ  
ಸುತೌ ಸ್ಮೃತೌ" ಶಾಹ್ವಲಿಂ। 4. ನುಗ್ಗೆಮರ. 5. ಕೇರಳ  
ದೇಶ. 6. ರೌದ್ರರಸ. 7. ಪಾರಶವ, ಶೂದ್ರ  
ಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ಜನಿಸಿದ ಸಂಕರಜಾತಿ  
ಯವನು, ಕೋಟಿ ಬೋಕ್ಕಸ ಮತ್ತು ಅಂತಃಪುರ  
ಗಳನ್ನು ಲಕ್ಷಿಸುವವನು. "ಉಗ್ರ: ಪಾರಶವೋ ದುರ್ಗಧನಾಂತ:-  
ಪುರಪಾಲನಾತ್" ವೇಜಂ। (ನಂ) 8. ಕೋಪ, ಸಿಟ್ಟು.  
(ವಿಂ) 9. ತಪ್ಪಿಗೆ ತಕ್ಕ ಶಿಕ್ಷೆ ವಿಧಿಸುವವನು, ಅಪ  
ರಾಧಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ ಶಿಕ್ಷಿಸುವವನು. 10. ಕ್ರೂರ, ದಯೆ  
ಯಿಲ್ಲದವನು. 11. ತೀವ್ರವಾದ, ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ,  
ಚುರುಕಾದ. 12. ದೀರ್ಘವಾದ, ಉದ್ದವಾದ.  
13. ಕೋಪಸ್ವಭಾವದ. 14. ಪರಾಕ್ರಮಿ, ಬಲಶಾಲಿ.  
15. ಭೀತಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ಭಯಂಕರವಾದ.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಗ್ರಾ -ಗ್ರಾ. 1. ಬಜೆ. 2. ಅಜವಾನ,  
ಓಮ, ವಾದಕ್ಕೆ. 3. ಪಾರ್ವತಿ. 4. ಕ್ರೂರ ಹೆಂಗಸು.

ಉಗ್ರಕರ್ಮನ್ ಉಗ್ರಕರ್ಮನ್ (ವಿಂ) ಕ್ರೂರವಾದ ಕೆಲಸ  
ವುಳ್ಳ, ಕರುಣೆಯಿಲ್ಲದ, ನಿರ್ದಯ. ಉಗ್ರ ಕರ್ಮಸ್ಯ।

ಉಗ್ರಕಾಂಡ ಉಗ್ರಕಾಂಡ (ಪುಂ) ಹಾಗಲಗಿಡ.

ಉಗ್ರಗಂಧ ಉಗ್ರಗಂಧ (ಪುಂ) 1. ಸಂಪಿಗೆಮರ. 2. ತೇಗದ  
ಮರ. 3. ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳಿ. (ನಂ) 4. ಹಿಂಗು. (ವಿಂ)  
5. ಉತ್ಕಟವಾದ ವಾಸನೆಯುಳ್ಳ. ಉಗ್ರೋ ಗಂಧೋ ಯಸ್ಯ।  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಗಂಧಾ -ಗಂಧಾ. 1. ಅಜವಾನ, ಓಮ.  
2. ಬಜೆ. "ಉಗ್ರಗಂಧಾಜಮೋದಾಯಾಂ ವಚಾಂ ಛಿವಿಕಕೌಷಧಿ"  
ಮೇದಿಂ। "ವಚಾಜಮೋದಯೋಽಉಗ್ರಗಂಧಾ ಸ್ತ್ರೀ ಲಗ್ನುನೇ ತು ನಾ"  
ನಾನಾಥರಂ।



ಅಗ್ರತಾ ಉಗ್ರತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉಗ್ರವಾದ ಕೆಲಸ.  
2. ತೀಕ್ಷ್ಣತೆ, ಚುರುಕು. 3. ಒಂದು ವ್ಯಭಿಚಾರಿ  
ಭಾವ; ಶೌರ್ಯ ಮತ್ತು ಅಪರಾಧ ಇವುಗಳಿಂದ  
ಉಂಟಾದ ಅಸಹಿಷ್ಣುತೆಯು ಉಗ್ರತೆಯೆನಿಸುವುದು.  
“ಶೌರ್ಯಪಿರಾಧಾದಿಭವಂ ಭವೇಚ್ಛಂಡತ್ವಮಗ್ರತಾ” ಸಾಂ ದಂ  
3-189.

ಅಗ್ರತಾರಾ ಉಗ್ರತಾರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವಿ, ಭಯಂಕರ  
ವಿಪತ್ತಿನಿಂದ ಪಾರು ಮಾಡುವ ಮಹಾದೇವಿ.  
“ತಾರಕತ್ವಾತ್ಸದಾ ತಾರಾ ಮಹಾಮೋಕ್ಷಪ್ರದಾಯಿನಿ। ಅಗ್ರಾಪ-  
ತ್ತಾರಿಣಿ ಯಸ್ಮಾದುಗ್ರತಾರಾ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ”।

ಅಗ್ರದಂಡ ಉಗ್ರದಂಡ (ವಿಂ) ಕಠಿನವಾದ ಶಿಕ್ಷೆ ಕೊಡು  
ವವನು. ಅಗ್ರೋ ದಂಡೋ ಯಸ್ಯ।

ಅಗ್ರಧನ್ವನ್ ಉಗ್ರಧನ್ವನ್ (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ.  
(ವಿಂ) 2. ಭಯಂಕರವಾದ ಧನುಸ್ಸುಳ್ಳ. ಅಗ್ರ  
ಧನ್ಯಸ್ಯ “ಅನಙ್” (4-8-132)।

ಅಗ್ರನಾಸಿಕ ಉಗ್ರನಾಸಿಕ (ವಿಂ) ಉದ್ದವಾದ ಮೂಗುಳ್ಳ  
ವನು. ಅಗ್ರಾ ದೀರ್ಘಾ ನಾಸಿಕಾ ಯಸ್ಯ।

ಅಗ್ರಸ್ಪಷ್ಟ ಉಗ್ರಸ್ಪಷ್ಟ (ವಿಂ) ಕ್ರೂರವಾದ ನೋಟವುಳ್ಳ,  
ಭಯಂಕರವಾಗಿ ನೋಡುವ. ಅಗ್ರಂ ಪಶ್ಯತಿ—ದೃಶಿರ್  
(ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) “ಖಶ್” (3-2-37)। ನಿಪಾಂ।

ಅಗ್ರಶೇಖರಾ ಉಗ್ರಶೇಖರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗಾನದಿ. ಅಗ್ರಸ್ಯ  
ಶೇಖರಃ ಆವಾಸತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯಾ: “ಅಚ್” (4-2-127)।

ಅಗ್ರಸೇನ ಉಗ್ರಸೇನ (ಪುಂ) 1. ಸೋಮವಂಶದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ  
ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಮಗ. 2. ಪಾಂಡವರ ಮೊಮ್ಮಗನಾದ  
ಪರೀಕ್ಷಿತ್ತಿನ ಮಗ, ಜನಮೇಜಯನ ಸಹೋದರ.  
3. ಕಂಸನ ತಂದೆ, ಅಹುಕನ ಮಗ, ದೇವಕನ ಸಹೋ  
ದರ. “ತಸ್ಯಾಹುಕಶ್ಚಾಹುಕೀ ಚ ಕನ್ಯಾ ಚೈವಾಹುಕಾತ್ಮಜಾಃ।  
ದೇವಕಶ್ಚೋಗ್ರಸೇನಶ್ಚ ಚತ್ವಾರೋ ದೇವಕಾತ್ಮಜಾಃ” ಭಾಗಂ 9-28।

ಅಚಿತ ಉಚಿತ (ವಿಂ) 1. ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಅರ್ಹವಾದ,  
ತಕ್ಕದ್ದಾದ. ಅಚ (ಸಮವಾಯೆ) “ಕ್ತಃ” (3-8-62)।  
“ಪರಿಭ್ರಮೆಲ್ಲೊಹಿತಚಂದನೋಚಿತಃ” ಕಿರಾಂ 1-34। 2. ಪಳ  
ಗಿದ, ಪರಿಚಿತವಾದ. “ಅಪತ್ಯೇರಿವ ನೇವಾರಭಾಗಧೇಯೋ-  
ಚಿತೈರ್ಮೃಗೈಃ” ರಘುಂ 1-50। “ಸಾರ್ಥಂ ಕಥಂಚಿದುಚಿತೈಃ  
ಪಿಚುಮದಂಪತೃಃ” ಮಾಘಂ 4-66। 3. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಪ್ರಶಸ್ತ  
ವಾದ, ಸ್ತುತ್ಯವಾದ. 4. ಅಂಗೀಕಾರಾರ್ಹವಾದ,  
ಗ್ರಾಹ್ಯವಾದ.

ಅಚ್ಚ ಉಚ್ಚ (ಪುಂ) (ಜಾತಕದಲ್ಲಿ) ಗ್ರಹಗಳ ಉಚ್ಚರಾಶಿ;  
ಸೂರ್ಯನಿಗೆ ಮೇಷರಾಶಿ, ಚಂದ್ರನಿಗೆ ವೃಷಭರಾಶಿ,

ಕುಜನಿಗೆ ಮಕರರಾಶಿ, ಬುಧನಿಗೆ ಕನ್ಯಾರಾಶಿ, ಗುರುವಿಗೆ  
ಕರ್ಕಾಟಕರಾಶಿ, ಶುಕ್ರನಿಗೆ ಮೀನರಾಶಿ, ಶನಿಗೆ ತುಲಾ  
ರಾಶಿಗಳು ಉಚ್ಚರಾಶಿಗಳು. (ವಿಂ) 2. ಉನ್ನತವಾದ,  
ಎತ್ತರವಾದ. ಅಕ್ಷಿಪ್ಯ ಬಾಹು ಚೀಯತೇ—ಅದ್ + ಚಿಜ್  
(ಚಯನೆ) “ಙಃ” (3-2-101)। “ಧೀರಸಿಂಧುರಿವ  
ಮಂದರಭಿನ್ನಃ ಕಾನನಾನ್ಯವಿರಲೋಚ್ಚತರೂಪಿ” ಕಿರಾಂ 9-28।  
“ಅಚ್ಚಾ ರಣತ್ಪಕ್ಷಿಗಣಾಸ್ತದೀಸ್ತಮ್” ಮಾಘಂ 4-18।

ಅಚ್ಚಕೇಸ್ ಉಚ್ಚಕೈಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಎತ್ತರವಾದ,  
ಉನ್ನತವಾದ. ಅಚ್ಚಃ ಟಃ ಪ್ರಾಕ್ “ಅಕಚ್” (4-3-63)।  
“ಅಥೋಚ್ಚಕೇರಾಸನತಃ ಪರಾರ್ಥಾತ್” ಕಿರಾಂ 2-47।  
2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಅತಿಶಯವಾದ. “ಯುವಾ ಕರಾಕ್ರಾಂತ-  
ಮಹಿಮದ್ಉಚ್ಚಕೇರಸಂಶಯಂ ಸಂಪ್ರತಿ ತೇಜಸಾ ರವಿಃ” ಮಾಘಂ  
1-90। 3. ಗಟ್ಟಿಯಾದ (ಶಬ್ದದ ವಿಶೇಷಣವಾದಲ್ಲಿ).

ಅಚ್ಚಟಾ ಉಚ್ಚಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳಿ. 2. ಗುಲಗಂಜಿ  
ಗಿಡ. 3. ನಾಗಮುಸ್ತೆ, ಕೊನ್ನಾರಿಯ ಒಂದು ಭೇದ.  
4. ಬೂಟಾಟಕೆ. “ಅಚ್ಚಟಾ ದಮ್ಭಚರ್ಯಾಂ ಪ್ರಭೇದೇ ಲಕ್ಷುನಸ್ಯ  
ಚ” ಹೇಮಂ।

ಅಚ್ಚಂಡ ಉಚ್ಚಂಡ (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಕೋಪ ಸ್ವಭಾವದ.  
2. ಬಹಳ ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ, ಬಹಳ ಚುರುಕಾದ.  
3. ಶೀಘ್ರವಾದ, ಸಾವಕಾಶವಿಲ್ಲದ, ವಿಳಂಬವಿಲ್ಲದ.  
ಅದ್ + ಚಡಿ (ಕೋಪ) “ಅಚ್” (3-1-134)। “ಅಚ್ಚಂಡಃ  
ಮವಿಲಮ್ಬಿತಮ್” ಅಮಂ।

ಅಚ್ಚದೇವ ಉಚ್ಚದೇವ (ಪುಂ) ಶ್ರೀ ವಾಸುದೇವ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ.  
ಅಚ್ಚನೀಚ ಉಚ್ಚನೀಚ (ವಿಂ) 1. ಹಳ್ಳತಿಟ್ಟಾದ, ಎತ್ತರ  
ಮತ್ತು ತಗ್ಗಾದ. 2. ಅನೇಕ ವಿಧವಾದ. ಅಚ್ಚೇಶ್ವ  
ನೀಚೇಶ್ವ।

ಅಚ್ಚಯ ಉಚ್ಚಯ (ಪುಂ) 1. ರಾಶಿ, ಕುಪ್ಪೆ, ಗುಡ್ಡೆ  
ಸಮೂಹ. ಅದ್ + ಚಿಜ್ (ಚಯನೆ) “ಅಚ್” (3-3-46)  
“ಚಿತ್ರೇ ನಿವೇಶ್ಯ ಪರಿಕಲ್ಪಿತಸತ್ವಯೋಗಾ ರೂಪೋಚ್ಚಯೇನ ಮನಸ  
ವಿಧಿನಾ ಕೃತಾ ನು” ಶಾಕುಂ 2-9। 2. ಸಂಗ್ರಹಿಸುವಿಕೆ  
ಶೇಖರಿಸುವುದು, ಕೂಡಿಸಿಡುವುದು. “ಇತಿ ಪುಷ್ಪೋಚ್ಚ-  
ನಿರೂಪಯತಿ” ಶಾಕುಂ 4। 3. (ಹೆಂಗಸರ) ಸೀರೆಯ  
ಸೊಂಟದ ಗಂಟು, ಸೀರೆಯನ್ನುಡುವಾಗ ಸೊಂಟದ  
ಹಾಕುವ ಗಂಟು, ನೀವೀಬಂಧ. “ಪ್ರಿಯೇಷರಾ ಯಚ್ಚರ್ವಿ  
ವಾಚಮುನ್ಮುಖೀ ನಿವದ್ಧದೃಷ್ಟಿಃ ಶಿಥಿಲಾಕುಲೋಚ್ಚಯಾ” ಕಿರಾ  
9-14।

ಅಚ್ಚರತ್ ಉಚ್ಚರತ್ (ವಿಂ) 1. ಉಚ್ಚರಿಸುವ, ಹೇಳಿ  
ತ್ತಿರುವ, ಮಾತನಾಡುತ್ತಿರುವ. ಅದ್ + ಚರ (ಗತೌ)



“शतृ” (३-२-१२४)। २. ಉಲ್ಲಂಘಿಸುವ, ಮಾರುವ, ಅತಿಕ್ರಮಿಸುವ. ३. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುತ್ತಿರುವ.

उच्चरित ಉಚ್ಚರಿತ (ವಿಂ) ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನುಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. “उद् + चर (गती) अन्तर्भूतण्यर्थः “क्तः” (३-२-१०२)। “सकृदुच्चरितः शब्दः सकृदेवायं गमयति”।

उच्चलत् ಉಚ್ಚಲತ್ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುತ್ತಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೊರಡುತ್ತಿರುವ. उद् + चल (सञ्चलने) “शतृ” (३-२-१२४)।

उच्चलित ಉಚ್ಚಲಿತ (ವಿಂ) ಹೊರಟಿರುವ, ಹೊರಡಲು ಪ್ರಯತ್ನಿಸಿರುವ. उद् + चल (सञ्चलने) “क्तः” (३-४-७२)। “स्थितः स्थितामुच्चलितः प्रयातां निषेकुषीमसनबन्धवीरः” रघु० २-६।

उच्चाटन ಉಚ್ಛಾಟನ (ನಂ) १. ಕೆತ್ತುಹಾಕುವುದು, ಬುಡ ಸಹಿತ ತೆಗೆದುಹಾಕುವುದು. उद् + चट (भेदने) + णिच् “ल्युट्” (३-३-११५)। २. ಬೇರ್ಪಡಿಸುವುದು, ವಿಶ್ಲೇಷವುಂಟುಮಾಡುವುದು, ಇರುವ ಜಾಗದಿಂದ ತೆಗೆದುಹಾಕುವುದು. ३. ಶೂನ್ಯ, ಮಾಟ, ಮಂತ್ರ ಪ್ರಯೋಗ, ಅಭಿಚಾರಿಕೆಕೃತ್ಯ ಇವುಗಳಿಂದ ಭೂತಗಳನ್ನು ಓಡಿಸುವುದು. ४. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿಸುವುದು.

उच्चार ಉಚ್ಛಾರ (ಛಂ) १. ಉಚ್ಚರಿಸುವಿಕೆ, ನುಡಿಯುವುದು. उद् + चर (गती) + णिच् “घञ्” (३-३-१८)। २. ಪುರೀಷ, ಅಮೇಧ್ಯ, ಮಲ. ಕರ್ಮಂ “घञ्” (३-३-१९)। “मूत्रोच्चारसमुत्सर्गं दिवा कुर्यादुदङ्मुखः” मनु० ४-५०। ३. ಗ್ರಹಗಳು ರಾಶಿಯಿಂದ ರಾಶಿಗೆ ಸಂಚರಿಸುವುದು.

उच्चारण ಉಚ್ಛಾರಣ (ನಂ) ವರ್ಣಗಳನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸುವಿಕೆ, ನುಡಿಯುವಿಕೆ. उद् + चर + णिच् “ल्युट्” (३-३-११५)। “उच्चारणज्ञोऽथ गिरां दधानमुच्चारणस्पक्षिगणास्तदीस्त्रम्” माघ० ४-१८। ವರ್ಣಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿಕ್ರಮ; ಮೊದಲು ಆತ್ಮನ ಸಂಕಲ್ಪಾನುಸಾರ ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಇಚ್ಛೆಯುಂಟಾಗುವುದು. ಮನಸ್ಸು ಅನಂತರ ಜಠರಾಗ್ನಿಯನ್ನು ಪ್ರೇರಿಸುವುದು. ಅದರಿಂದ ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ವಾಯುವು ತಾಲ್ವಾದಿಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಹೊಡೆದು ವರ್ಣಗಳ ಉಚ್ಛಾರಣ ಮಾಡಿಸುವುದು. “आत्मा बुद्ध्या समेत्यार्थान् मनो युङ्क्ते विवक्षया। मनः कायाग्निमाहन्ति स प्रेरयति मास्तम्। मास्तस्तूरसि चरन् मन्द्रं जनयति स्वरम्” पा० शि०।

उच्चारित ಉಚ್ಛಾರಿತ (ವಿಂ) १. ಮಲವಿಸರ್ಜನೆ ಮಾಡಿದ. उच्चार “इतच्” (५-२-३६)। २. ಉಚ್ಚರಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ನುಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. उद् + चर (गती) + णिच् “क्तः” (३-२-१०२)।

उच्चार्य ಉಚ್ಛಾರ್ಯ (ವಿಂ) १. ಉಚ್ಚರಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ, ನುಡಿಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಹೇಳಬಹುದಾದ. उद् + चर (गती) + णिच् “यत्” (३-१-९७)। (अव्य०) २. ಉಚ್ಚರಿಸಿ, ನುಡಿದು. उद् + चर + णिच् “ल्यप्” (७-१-३७)। “लक्ष्मीं समुत्सुकयितासि भृशं परेषामुच्चार्य वाचमिति तेन तिरोबभूवे” किरा० ११-८१।

उच्चार्यमाण ಉಚ್ಛಾರ್ಯಮಾಣ (ವಿಂ) ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. उद् + चर (गती) + णिच् कर्म “शानच्” (३-२-१२४)। “मुखसहितनासिकयो-च्चार्यमाणो वर्णोज्जुनासिकसंज्ञः स्यात्” सि० कौ०।

उच्चावच ಉಚ್ಛಾವಚ (ವಿಂ) १. ಅನೇಕವಿಧವಾದ, ನಾನಾಬಗೆಯಾದ. उदक् चावाक्च। “उच्चावचं नैकभेदम्” अम०। २. ಹಳ್ಳತಿಟ್ಟಾದ, ಸಮವಲ್ಲದ. “भिन्नेषु रत्नकिरणैः किरणेष्विवेन्दोरुच्चावचैरुपगतेषु सहस्रसंख्याम्” माघ० ४-४६।

उच्चिचीषा ಉಚ್ಛಿಚೀಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ಪುಷ್ಪವನ್ನು) ಕೀಳುವ ಆಸೆ, (ಹೂವನ್ನು) ಬಿಡಿಸುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ. उच्चेतुमिच्छा— उद् + चिच् (चयने) + सन् “अः” (३-३-१०३)। “उपरि निरवलम्बनं प्रियस्य न्यपतदथोच्चतरोच्चिचीषयान्या” माघ० ७-४८।

उच्चिचीषು ಉಚ್ಛಿಚೀಷು (ವಿಂ) (ಪುಷ್ಪವನ್ನು) ಬಿಡಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, (ಹೂವನ್ನು) ಕೀಳುವ ಆಸೆಯುಳ್ಳ. उद् + चिच् (चयने) + सन् “उः” (३-२-१६८)।

उच्चैःशिरस् ಉಚ್ಛೈಃಶಿರಸ್ (ವಿಂ) ಉದಾರವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ದೊಡ್ಡ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು, ಮಹಾತ್ಮ. उच्चैःशिरसं शिरो यस्य। “क्षुद्रೇऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने ममत्वमुच्चैःशिरसां सतीव” कुमा० १-१२।

उच्चैःश्रवस् ಉಚ್ಛೈಃಶ್ರವಸ್ (ಛಂ) १. ಇಂದ್ರನ ಕುದುರೆ. [ಇದು ಅಮೃತಮಥನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸಮುದ್ರದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದುದು]. “धन्वन्तरिस्तथा मयं श्रीदेवी कौस्तुभो मणिः। शशाङ्को विमलश्चापि समुत्तस्थुः समन्ततः। उच्चैःश्रवा हयो रम्यः पीयूषं तदनन्तरम्” हरिवं०। “न चित्रमुच्चैःश्रवसः पदक्रमम्” माघ० १-५२।



(वि०) 2. ಎತ್ತರವಾದ ಕಿವಿಯುಳ್ಳ, ಉದ್ದದ ಕಿವಿಯುಳ್ಳ. उच्चैर्घुष्टं शब्दं शृणोति - श्रु (श्रवणे) "असुन्" (उ० ४-१८९)।

उच्चैर्घुष्ट ಉಚ್ಛೈರ್ಘುಷ್ಟ (ನಂ) ಘೋಷಣೆ, ಡಂಗುರ ಹೊಡೆಯುವುದು, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗಿಹೇಳುವುದು. उच्चैः घुष्यते स्म। घुषिर् (अविशब्दने) "क्तः" (३-३-११४)।

उच्चैर्घोष ಉಚ್ಛೈರ್ಘೋಷ (ಪುಂ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಶಬ್ದ, ಎಲ್ಲರೂ ಕೇಳುವಂತೆ ಉಚ್ಚಸ್ವರದಿಂದ ಹೇಳುವುದು. उच्चैः+घुषिर् (अविशब्दने) "घञ्" (३-३-१८)। भावे "ल्युट्" (३-३-११५)। -घोषणम् -ಘೋಷಣಮ್.

उच्चैस् ಉಚ್ಛೈಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಎತ್ತರವಾದ, ಉನ್ನತವಾದ. उद्+चिञ् (चयने) "डैसिः" (उ० ५-१२)। "उच्चैर्महाराजतराजिविराजितासौ" माघ० ४-२८। 2. ಪ್ರಚುರವಾದ, ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. "प्रवाद-मुच्चैरयशस्करं श्रियः" माघ० १-४४। 3. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ, ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಕೇಳಿಸುವಂತೆ. "प्रयच्छतोच्चैः कुसुमानि मानिनी विपक्षगोत्रं दयितेन लम्बिता" किरा० ८-१४। 4. ಎತ್ತರ, ಔನ್ನತ್ಯ. 5. ಮಹತ್ತರವಾದ, ದೊಡ್ಡದಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. "जनोऽयमुच्चैःपदलङ्घनोत्सुकः" कुमा० ५-६४।

उच्छन्न ಉಚ್ಚನ್ನ (ವಿಂ) ನಾಶಹೊಂದಿದ, ಉಪ್ಪವಾದ. उद् + छद (अपवारणे) "क्तः" (३-४-७२)।

उच्छलत् ಉಚ್ಚಲತ್ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುತ್ತಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳುತ್ತಿರುವ. उद् + शल (गती) "शत्" (३-२-१२४)। "यस्याश्चलद्वारिधिवारिवीचिच्छदो-च्छलच्छल्लुकुलाकुलेन" माघ० ३-३७।

उच्छलन ಉಚ್ಚಲನ (ನಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವಿಕೆ. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳುವಿಕೆ. उद् + शल (गती) "ल्युट्" (३-३-११५)।

उच्छादन ಉಚ್ಛಾದನ (ನಂ) 1. ಹೊದಿಕೆ. 2. ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯವನ್ನು ಮೈಗೆ ಹಚ್ಚುವುದು. उद् + छद (अपवारणे) + णिच् "ल्युट्" (३-३-११५)।

उच्छास्त्र ಉಚ್ಛಾಸ್ತ್ರ (ವಿಂ) 1. ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಮೀರಿದ, ಶಾಸ್ತ್ರಮರ್ಯಾದೆಯನ್ನು ಉಲ್ಲಂಘಿಸಿದ. 2. ಶಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೆ ವಿರೋಧವಾದ, ಶಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೆ ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದ. उद्गतं शास्त्रं येन।

उच्छासन ಉಚ್ಛಾಸನ (ವಿಂ) ಆಜ್ಞೆಯನ್ನು ಮೀರಿದ, ಆಜ್ಞೆಗೆ ವಿರೋಧವಾದ, ಹತೋಟಿಗೆ ಒಳಪಡದ. उत्क्रान्तः शासनम्।

उच्छिख ಉಚ್ಛಿಖ (ವಿಂ) 1. ಉರಿಯುತ್ತಿರುವ, ಜ್ವಲಿಸುತ್ತಿರುವ (ಬೆಂಕಿ). उद्गता शिखा यस्य। "शमीतरं शुष्कमिवानिरुच्छिखः" किरा० १-३२। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹರಡಿದ ಕಾಂತಿಯುಳ್ಳ. "यतः परार्ध्यानि भूतान्यनूनैः प्रस्थैर्मूर्ध्वभिर्ನಿರುच्छिखानि" माघ० ४-११।

उच्छिञ्चन ಉಚ್ಛಿಂಘನ (ನಂ) ಕಾರಿ ಕಫವನ್ನು ಉಗಿಯುವುದು. उद् + शिघि (आघ्राणे) "ल्युट्" (३-३-११५)।

उच्छिति ಉಚ್ಛಿತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬುಡಸಹಿತ ಕಿತ್ತು ಹಾಕುವುದು, ಮೂಲೋತ್ಪಾಟನ ಮಾಡುವುದು. उद्+छिदिर् (द्विधीकरणे) "क्तिन्" (३-३-९४)।

उच्छिन्दत् ಉಚ್ಛಿಂದತ್ (ವಿಂ) ಕತ್ತರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಕಡಿಯುತ್ತಿರುವ. उद्+छिदिर् (द्विधीकरणे) "शत्" (३-२-१२४)।

उच्छिन्न ಉಚ್ಛಿನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಮೂಲೋತ್ಪಾಟನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬುಡಸಹಿತ ಕಿತ್ತುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. उद्+छिदिर् (द्विधीकरणे) "क्तः" (३-२-१०२)। "उच्छिन्न-मित्रो विगुणरूपेतः" भट्टि० १२-३९।

उच्छिरस् ಉಚ್ಛಿರಸ್ (ವಿಂ) 1. ಎತ್ತರವಾದ, ಉನ್ನತವಾದ. 2. ಉದ್ದವಾದ ತಲೆಯುಳ್ಳ. 3. ಮಹಾತ್ಮ, ಪ್ರಮುಖ, ಪ್ರಭಾವಶಾಲಿ, ಮಹಿಮಾನ್ವಿತ. उन्नतं शिरो यस्य। "शैलात्मजापि पितुरुच्छिरसोऽभिलाषम्" कुमा० ३-७५। "प्रभावेण द्वितीयेन तथैवोच्छिरसा त्वया" कुमा० ६-७०। 4. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿದ ತಲೆಯುಳ್ಳ.

उच्छिष्ट ಉಚ್ಛಿಷ್ಟ (ನಂ) 1. ಯಜ್ಞ ಶೇಷ. 2. ದೇವರಿಗೆ ನಿವೇದನ ಮಾಡಿದ ಅನ್ನ ಮೊದಲಾದುದು. (ವಿಂ) 3. ಉಟಮಾಡಿ ಉಳಿದ, ತಿಂದು ಅವಶಿಷ್ಟವಾದ. उद् + शिष (असर्वोपयोगे) "क्तः" (३-२-१०२)। "यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्। उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम्" गीता १७-१०। 4. ತೃಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಅನುಭವಿಸಿ ತಳ್ಳಿ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಅಶುಚಿಯಾದ, ಉಟಮಾಡಿ ಎಂಜಲಾದ. "रेवतीवदनोच्छिष्टपरिपूतपुटे दृशी" माघ० २-१६। 6. ಹಳೆಯದಾದ, ತಂಗಳಾದ.



उच्छिष्टगणेश ಉಚ್ಚಿಷ್ಟಗಣೇಶ (ಪುಂ) ತಂತ್ರೋಕ್ತ ನಾದ ಗಣಪತಿ. ಉಚ್ಚಿಷ್ಟ ಗಣಪತಿಯ ಪೂಜೆಯನ್ನು ಶುಚಿಯಾಗಿ ಮಾಡಿದರೆ ಸಿದ್ಧಿ ಸುವುದಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ಅಶುಚಿಯಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕು. "ಭುಕ್ತೋಚ್ಚಿಷ್ಟೋ ಜಪೇ-  
न्नित्यं गणेशस्य सदा प्रियः" । "उच्छिष्टश्चाशुचिर्भूत्वा  
जपपूजनमाचरेत् । अनुच्छिष्टो न सिद्ध्येत् तस्मादेवं  
समाचरेत्" ।

उच्छिष्टभोजन ಉಚ್ಚಿಷ್ಟಭೋಜನ (ನಂ) 1. ಇತರರು ತಿಂದು ಉಳಿದುದನ್ನು ತಿನ್ನುವುದು. (ವಿಂ) 2. ಯಜ್ಞ ಶೇಷವನ್ನು ತಿನ್ನುವವನು. उच्छिष्टं भोजनं यस्य ।  
"यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः" गीता ३-१३ । 3. ದೇವರಿಗೆ ನಿವೇದನಮಾಡಿ ಉಳಿದಿರುವವನು. "तैदं तानप्रदायैम्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः"  
गीता ३-१२ ।

उच्छिष्टभोजिन् ಉಚ್ಚಿಷ್ಟಭೋಜಿನ್ (ವಿಂ) ಉಂಡು ಉಳಿದುದನ್ನು ತಿನ್ನುವವನು, ಉಚ್ಚಿಷ್ಟವನ್ನು ತಿನ್ನುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. उच्छिष्टं भुङ्क्ते—भुज (परिपालना-  
म्यवहारयोः) "णिनिः" (३-२-७८) ।

उच्छीर्षक ಉಚ್ಚೀರ್ಷಕ (ನಂ) 1. ತಲೆದಿಂಬು. उत्  
उत्तोल्य स्थापितं शीर्षं यत्र "कप्" । 2. ತಲೆ. (ವಿಂ) 3. ತಲೆಯನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿದ ತಲೆಯುಳ್ಳ. उद्गतं शीर्षं यस्य ।

उच्छून ಉಚ್ಛೂನ (ವಿಂ) 1. ಎತ್ತರವಾದ, ಉನ್ನತ ವಾದ. 2. ಉಬ್ಬಿರುವ, ಉದಿಕ್ಕೊಂಡಿರುವ. उद्+ट्  
ओ शिव (गतिवृद्धयोः) "क्तः" (३-४-७२) । नत्वम् (८-२-४५) । "अनवरतरुदितोच्छूनताम्रदृष्टिमद्राक्षम्"  
दशकुं । 3. ಸ್ಥೂಲವಾದ, ದಪ್ಪನಾದ, ಕೊಬ್ಬಿರುವ. "स्वर्गशामटिकाविलुण्ठनवृथोच्छूनैः किमेभिर्भुजैः" हनुं  
नां ।

उच्छृङ्खल ಉಚ್ಛ್ರಂಖಲ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತಿಬಂಧಕವಿಲ್ಲದ, ಅಡ್ಡಿಯಿಲ್ಲದ, ತಡೆಯಿಲ್ಲದ. उत्क्रान्तः शृङ्खलातः  
(वा० १-४-७९) । "अन्यदुच्छृङ्खलं सत्त्वमन्यच्छास्त्र-  
नियन्त्रितम्" माघ० २-६२ । 2. ಶಿಕ್ಷಕನಿಲ್ಲದ, ಯಜ ಮಾನನಿಲ್ಲದ, ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ವರ್ತಿಸುವ, ತನ್ನಿಷ್ಟದಂತೆ ನಡೆಯುವ. 3. ಅಕ್ರಮವಾದ, ಅವ್ಯವಸ್ಥಿತವಾದ.

उच्छेत् ಉಚ್ಛೇತ್ (ವಿಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸುವ, ಧ್ವಂಸ ಮಾಡುವ. 2. ಬುಡಸಹಿತ ಕಿತ್ತುಹಾಕುವ. उद् +  
छिदिर् (द्विधीकरणे) "तृच्" (३-१-१३३) ।

उच्छेद ಉಚ್ಛೇದ (ಪುಂ) 1. ನಾಶ, ಧ್ವಂಸ. उद् +  
छिदिर् (द्विधीकरणे) "घञ्" (३-३-१८) । "उच्छेदं  
जन्मनः कर्तुमेधि शान्तस्तपोधन" किरा० ११-३१ ।  
"किमिति सर्वपशूच्छेदः क्रियते" हितो० । 2. ಬುಡ ಸಹಿತ ಕಿತ್ತುಹಾಕುವುದು. 3. ಕತ್ತರಿಸುವುದು. 4. ಕೊಯ್ಯುವುದು. उद् + छिदिर् भावे "ल्युट्"  
(३-३-११५) । -उच्छेदनम्-ಉಚ್ಛೇದನಮ್.

उच्छेद्य ಉಚ್ಛೇದ್ಯ (ವಿಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸಲು ಅರ್ಹ ವಾದ. 2. ಕತ್ತರಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. उद्+छिदिर्  
(द्विधीकरणे) "ण्यत्" (३-१-१२४) । 3. ನಾಶ ಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಡುವ. कर्म० "ण्यत्"  
(३-१-१२४) ।

उच्छेषण ಉಚ್ಛೇಷಣ (ನಂ) 1. ಉಳಿಕೆ, ಶೇಷ, ಬಾಕಿ. 2. ಉಳಿದಿರುವ ಶೇಷ, ಉಂಡು ಉಳಿದ ಎಂಜಲು. "सरस्वतीमुखग्रहणोच्छेषणीकृतो दशनच्छद एष  
चुम्बितुम्" दशकुं ।

उच्छोषण ಉಚ್ಛೋಷಣ (ನಂ) 1. ಒಣಗಿಸುವುದು, ಬಾಡಿಸುವುದು. उद् + शुष (शोषणे) + णिच्  
"ल्युट्" (३-३-११५) । (ವಿಂ) 2. ಒಣಗಿಸುವ, ಬಾಡಿಸುವ. 3. ಸಂತಾಪಗೊಳಿಸುವ, ಸುಡುವ. उद् + शुष + णिच् "ल्युः" (३-१-१३४) । "न हि  
प्रपश्यामि ममापनुद्याद्यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम्"  
गीता २-८ ।

उच्छ्रय ಉಚ್ಛ್ರಯ (ಪುಂ) ಔನ್ನತ್ಯ, ಎತ್ತರ. उद् +  
श्रिञ् (सेवायाम्) "अच्" (३-३-५६) ।

उच्छ्रयण ಉಚ್ಛ್ರಯಣ (ನಂ) 1. ಔನ್ನತ್ಯ, ಎತ್ತರ. 2. ಬೆಳವಣಿಗೆ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ. उद् + श्रिञ् (सेवायाम्)  
"ल्युट्" (३-३-११५) ।

उच्छ्राय ಉಚ್ಛ್ರಾಯ (ಪುಂ) 1. ಔನ್ನತ್ಯ, ಎತ್ತರ. उद् + श्रिञ् (सेवायाम्) "घञ्" (३-३-४९) ।  
"भवन्ति नोदामगिरां कवीनामुच्छ्रायसौन्दर्यगुणा मृषोद्याः"  
माघ० ४-१० । "मनोहरोच्छ्रायनितम्बशोभया" किरा० ८-२३ । 2. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಬೆಳವಣಿಗೆ. "नीतोच्छ्रायं  
मुहुरशिशिररश्मेरुस्रैः" किरा० ५-३१ ।

उच्छ्रायिन् ಉಚ್ಛ್ರಾಯಿನ್ (ವಿಂ) ಉನ್ನತವಾದ, ಎತ್ತರವಾದ. उच्छ्रायोऽस्यास्ति "इनिः" (५-२-११५) ।  
"छायाविधायिभिरनुज्ಜಿತभूतिशोभैरुच्छ्रायिभिर्बहलपाटल-  
घातुरागैः" माघ० ५-२१ ।



ಅಕ್ಷಿಪ್ತ ಉಚ್ಚೈತ (ವಿಂ) 1. ಉನ್ನತವಾದ, ಎತ್ತರವಾದ. ಉದ್+ಶಿವ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (3-4-92). "ಅಭಿಯಯಿ ಸ ಹಿಮಾಚಲಮುಚ್ಚಿತಂ ಸಮುದಿತಂ ನು ವಿನಿಶ್ಚಯಿತು ನಮ:" ಕಿರಾಂ 4-1. 2. ಬೆಳೆದಿರುವ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿದ. 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿದ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹರಡಿರುವ. "ವಿತತಶೀಕರರಶಿಮಿರಿಚ್ಚಿತ್ರೇರೂಪಲರೋಧವಿವರ್ತಿಭಿರಮ್ಬುಭಿ:" ಕಿರಾಂ 4-14. "ಅಕ್ಷಿಪ್ತಮುಚ್ಚಿತಸಿತಾಂಶುಕರಾವಲಮ್ಬೇ:" ಮಾಘಂ 4-24. 4. ಹುಟ್ಟಿದ, ಉತ್ಪತ್ತಿಹೊಂದಿದ. "ಜಾತೋನ್ನದಪ್ರವೃದ್ಧಾ: ಸ್ಪುರ್ಚ್ಚಿತಾ:" ಅಮಂ. "ಅಕ್ಷಿಪ್ತಂ ತ್ರಿಘು ಸಂಜಾತೇ ಸಮುನ್ನದಪ್ರವೃದ್ಧಯೋ:" ಮೇದಿಂ.

ಅಕ್ಷಿಪ್ತಿ ಉಚ್ಚೈತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಬೆಳೆವಣಿಗೆ. 2. ಉನ್ನತ, ಎತ್ತರ. ಉದ್+ಶಿವ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94).

ಅಕ್ಷಸತ್ ಉಚ್ಚೈಸತ್ (ವಿಂ) 1. ಉನ್ನತವಾಗಿರುವ, ಬದುಕಿರುವ. ಉದ್+ಶವಸ (ಪ್ರಾಣೇ) "ಶತ್" (3-2-124). "ನಿ:ಸೃತಸ್ತಿಮಿರಭಾರನಿರೋಧಾದುಚ್ಚಸತ್ರಿವ ರರಾಜ ದಿಗಂತ:" ಕಿರಾಂ 9-21. 2. ವಿಕಾಸಹೊಂದುತ್ತಿರುವ, ಅರಳುತ್ತಿರುವ. "ಅಕ್ಷಸತ್ಕಮಲಗಂಧಯೇ ದದೌ ಪಾರ್ವತೀವದನ-ಗಂಧವಾಹಿನೇ" ಕುಮಾಂ 6-19.

ಅಕ್ಷಸನ ಉಚ್ಚೈಸನ (ನಂ) 1. ನಿಟ್ಟುಸಿರು ಬಿಡುವಿಕೆ. 2. ಉನ್ನತವಿಹಿತ. 3. ಸಡಿಲವಾಗುವಿಕೆ. ಉದ್+ಶವಸ (ಪ್ರಾಣೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). "ನಿವಿಬಂಧೋಚ್ಚಸನ-ಮಧರಸ್ಯಂದನಂ ದೌರ್ವಿಪಾದ:" ಮಾಲತೀಂ 2-4.

ಅಕ್ಷಸಿತ ಉಚ್ಚೈಸಿತ (ನಂ) 1. ಮೇಲಿನ ಉನ್ನತ, ಪ್ರಾಣವಾಯು. ಉದ್+ಶವಸ (ಪ್ರಾಣೇ) "ಕ್ತ:" (3-3-114). 2. ಸ್ಫುರಣ, ಹಾರುವಿಕೆ. ಉದ್+ಶವಸ "ಕ್ತ:". "ವಾಮೇತರ: ಸಂಶಯಮಸ್ಯ ಬಾಹು: ಕೇಯೂರಬಂಧೋಚ್ಚಸಿತೇ-ನುನೋದ" ರಘುಂ 6-64. 3. ಸಡಿಲವಾಗುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 4. ಉನ್ನತವಾದ. "ವಿರಜಸ್ಕೇನೈವಸ್ವಿದ್ವಿಶಿ ಅಕ್ಷಸಿತಾ ಇವ" ರಘುಂ 10-33. 5. ಅಕ್ಷಾಸನದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಸಮಾಧಾನ ಹೊಂದಿದ. "ತ್ವಾಮುಕ್ತಗಂ-ಠೋಚ್ಚಸಿತಹೃದಯಾ ವೀಕ್ಷ್ಯ ಸಂಭಾಷ್ಯ ಚೈವಮ್" ಮೇಘಂ 2-37. 6. ಉಬ್ಬಿರುವ, ವಿಕಾಸಹೊಂದಿದ. 7. ಚಲಿಸುವ, ಹಾರಾಡುವ. "ಇದಮುಚ್ಚವಸಿತಾಲಕಂ ಮುಕ್ತಮ್" ರಘುಂ 6-44. 8. ಸಡಿಲವಾದ. "ತದ್ದುಕ್ತಲಮಥ ಚಾಮವತ್ಸವ್ಯ-ಶ್ವರಮುಚ್ಚವಸಿತನಿವಿಬಂಧನಮ್" ಕುಮಾಂ 6-4.

ಅಕ್ಷಾಸ ಉಚ್ಚೈಸ (ಪುಂ) 1. ಉನ್ನತ, ಪ್ರಾಣವಾಯು. ಉದ್+ಶವಸ (ಪ್ರಾಣೇ) "ಘ್" (3-3-114). "ಅಕ್ಷಾ-

ಕ್ಷಾಸಂ ಸಮಧಿಕತರೋಚ್ಚಾಸಿನಾ ದೂರವರ್ತಿ" ಮೇಘಂ 2-39. 2. ಅಕ್ಷಾಸನ, ಸಮಾಧಾನ. 3. ಗುಣದ ಒಂದು ಭಾಗ.

ಅಕ್ಷಾಸಿನ್ ಉಚ್ಚೈಸಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಉನ್ನತವಾದ, ಉನ್ನತವನ್ನು ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವ. ಅಕ್ಷಾಸಿತಿ-ಉದ್+ಶವಸ (ಪ್ರಾಣೇ) "ಗಿಣಿ:" (3-2-94). "ಅಕ್ಷಾಕ್ಷಾಸಂ ಸಮಧಿಕತರೋಚ್ಚಾಸಿನಾ ದೂರವರ್ತಿ" ಮೇಘಂ 2-39. 2. ಚಲಿಸುವ, ಹಾರಾಡುವ. 3. ಮೇಲುಅಕ್ಷಾಸವುಳ್ಳ, ಮೇಲು ಮುಖವಾದ ಪ್ರಾಣವಾಯುವುಳ್ಳ. 4. ಎದ್ದು ಹೋಗುವ, ಅಳಿಸಿಹೋಗುವ. ಉದ್+ಶವಸ "ಗಿಣಿ:" (3-1-134). "ತದೀಪದಾರ್ಪಣಗಂಧಲೇಖಮುಚ್ಚಾಸಿ-ಕಾಲಾಂಜನರಾಗಮಕ್ಷಾಸಿ:" ಕುಮಾಂ 6-42. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜೀಪ್" (4-1-4). ಅಕ್ಷಾಸಿನಿ ಉಚ್ಚೈಸಿನೀ.

ಅಕ್ಷಾಸಿನಿ ಉಚ್ಚೈಸಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಕ್ರಮಾದಿತ್ಯನ ರಾಜಧಾನಿ, ಅವಂತಿದೇಶದ ಮುಖ್ಯ ಪಟ್ಟಣ; ಇದು ಸಿಂಧುನದಿಯ ತೀರದಲ್ಲಿದೆ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಅವಂತಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಅಕ್ಷಾಸನ ಉಚ್ಚೈಸನ (ನಂ) ಕೊಲ್ಲುವಿಕೆ, ಪ್ರಾಣ ತೆಗೆಯುವಿಕೆ. ಉದ್+ಜಸು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) +ಗಿಣಿ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

ಅಕ್ಷಾಸಿತ ಉಚ್ಚೈಸಿತ (ವಿಂ) ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಾಣ ತೆಗೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್+ಜಸು (ಪ್ರಾಣೇ) + ಗಿಣಿ "ಕ್ತ:" (3-2-102).

ಅಕ್ಷಾಸನ ಉಚ್ಚೈಸನ (ನಂ) ಬದುಕುವುದು, ಸಾಕ ಹೊಂದುತ್ತಿರುವವನು ಪುನಃ ಸುಧಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಉದ್+ಜಿವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

ಅಕ್ಷಾಸಿತ ಉಚ್ಚೈಸಿತ (ವಿಂ) ಬದುಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, (ಸಾಕ ಹೊಂದಿ) ಪುನಃ ಸುಧಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್+ಜಿವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) + ಗಿಣಿ "ಕ್ತ:" (3-2-102).

ಅಕ್ಷಾಸಿನ್ ಉಚ್ಚೈಸಿನ್ (ವಿಂ) ಕಳೆಗುಂದಿ ಪುನಃ ಚೇತರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ, ಪುನಃ ಬಲಗೊಳ್ಳುವ. ಉದ್+ಜಿವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಗಿಣಿ:" (3-1-134). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜೀಪ್" (4-1-4). -ಜಿವಿನಿ -ಜೀವಿನೀ.

ಅಕ್ಷಾಸ ಉಚ್ಚೈಸ (ಪುಂ) 1. ಅರಳುವಿಕೆ, ವಿಕಾಸ ಹೊಂದುವಿಕೆ, ದೊಡ್ಡದಾಗುವಿಕೆ. 2. ಅಕಳೆ. ಉದ್+ಜಿವಿ (ಗಾತ್ರವಿನಾಮೆ) "ಘ್" (3-3-114). (ವಿಂ) 3. ಅಕಳಿಸುವ. 4. ಅರಳಿರುವ, ವಿಕಾಸ ಹೊಂದಿದ. ಉದ್+ಜಿವಿ (ಗಾತ್ರವಿನಾಮೆ) "ಅಘ್"







**ತಙ್ಗವತಿ** ಉಂಟವ್ಯಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗದ್ದೆಯನ್ನು ಕುಯ್ಯ ನಂತರ ಕೆಳಗೆ ಉದಿರುವ ಕಾಳುಗಳನ್ನು ಅರಿಸಿ ಕೊಂಡು ಅವರಿಂದ ಜೀವಿಸುವಿಕೆ.

**ತಙ್ಗಶಿಲ** ಉಂಟಶಿಲ (ನಂ) ಗದ್ದೆಯಿಂದ ಯಜ ಮಾನನು. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡ ನಂತರ ಕೆಳಗೆ ಬಿದ್ದಿರುವ ಕಾಳುಗಳನ್ನು ಅರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

**ತಙ ಉಟಿ** (ನಂ) 1. ಎಲೆ. 2. ತೃಣ, ಹುಲ್ಲು.

**ತಙಜ ಉಟಿಜ** (ಪುನಂ) 1. ಪರ್ಣಶಾಲೆ, ತಪಸ್ವಿಗಳು ವಾಸಮಾಡಲು ಎಲೆ ಸೊಪ್ಪು ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಮನೆ, ಋಷಿಗಳ ವಾಸಸ್ಥಾನ. ತಙಮ್ಯೋ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ತಙ:" (೩-೨-೯೮)। "ನವೋತ್ಪಾಂಶುರಸಂಭೂತಾನಲಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೧೭। "ತಙಜ-ಶಾರವಿಹಂ ನಿವಾರಬಲಿ ವಲೋಕಯತಃ" ಶಾಕುಂ ೪-೨೦। 2. ಗುಡಿಸಲು, ಕುಟೀರ.

**ತಙ ಉಡು** (ಸ್ತ್ರೀನಂ) 1. ನಕ್ಷತ್ರ. ತ ಕ್ಷಂ ಡಯತೇ - ಡಿಙ್ (ವಿಹಾಯಸಾ ಗತೌ) "ತಙ:" (೩-೨-೧೮೦)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ತಙಃ ತಙ್ ತಙವಃ ಧೇನು ಶಬ್ದದಂತೆ. "ಉತ್ತಮಿತೋಡುಭಿರತಿವ-ತರಾಂ ಶಿರೋಭಿಃ" ಮಾಘಂ ೪-೨೪। (ನಂ) 2. ಜಲ, ನೀರು.

**ತಙ್ಚಕ ಉಡುಚಕ್ರ** (ನಂ) ನಕ್ಷತ್ರಮಂಡಲ. ತಙ್ಚನಾಂ ಚಕ್ರಮ್। "ವಪ್ರೇಣ ಪಯಂತಚರೋಡುಚಕ್ರಃ ಸುಮೇಖಪ್ರೋಜ್ವಹ-ಮನ್ವಕಾರಿ" ಮಾಘಂ ೩-೩೭।

**ತಙ್ಪ ಉಡುಪ** (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ತಙ್ಃ ತಙ್ನ್ ವಾ ಪಾತಿ-ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೪)। (ನಂ) 2. ತೆಪ್ಪ, ಹರಿಗೋಲು. ತಙ್ನೋ ಜಲಾತ್ ಪಾತಿ-ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೪)। "ತಿತೀರ್ಷುರ್ದಸ್ತರಂ ಮೋಹಾಡುಪೇನಾಸ್ಮಿ ಸಾಗರಮ್" ರಘುಂ ೧-೨।

**ತಙ್ಪತಿ ಉಡುಪತಿ** (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. 2. ವರುಣ, ಜಲಾಧಿಪತಿ. ತಙ್ನಾಂ ನಕ್ಷತ್ರಾಣಾಂ ಜಲಾನಾಂ ವಾ ಪತಿಃ। "ಉಪಜೀವತಿ ಸ್ಮ ಸತತಂ ದಧತಃ ಪರಿಮುಖತಾಂ ವಣಿಗಿವೋಡು-ಪತೇಃ" ಮಾಘಂ ೯-೩೨।

**ತಙ್ಪಯ ಉಡುಪಥ** (ಪುಂ) ಅಂತರಿಕ್ಷ, ಆಕಾಶ, ಗಗನ. ತಙ್ನಾಂ ನಕ್ಷತ್ರಾಣಾಂ ಪಥಾಃ "ಅಃ" (೪-೪-೭೪)।

**ತಙ್ಪರಾಜ ಉಡುರಾಜ್** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ತಙ್ಪು ರಾಜತೇ-ರಾಜ್ (ಶೀಪೌ) "ಕ್ರಿಪ್" (೩-೧-೬೧)।

**ತಙ್ಪರಾಜ ಉಡುರಾಜ** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ತಙ್ನಾಂ ರಾಜಾ- "ಽಪ್" (೪-೪-೯೧)।

**ತಙ್ಲೋಮನ್ ಉಡುಲೋಮನ್** (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಋಷಿಯ ಹೆಸರು. ತಙ್ಲರಿವ ಲೋಮಾಸ್ಯ।

**ತಙ್ಘಯನ ಉಡ್ಘಯನ** (ನಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವುದು, ಹಕ್ಕಿಗಳು ಆಕಾಶಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಹಾರಾಡುವುದು.

ತಙ್+ಡಿಙ್ (ವಿಹಾಯಸಾ ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।

**ತಙ್ಘಾಮರ ಉಡ್ಘಾಮರ** (ವಿಂ) 1. ಭಯಂಕರವಾದ, ಭೀತಿ ಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ತಙ್ಘಾಟೋ ಡಾಮರಃ। "ನಿರ್ದಿಷ್ಟ-ಜ್ಯೋತಿಃಜ್ಞಮಣಿಙ್ಘಾಮರವ್ಯಸ್ತಂ" ಮಾಲತೀಂ ೪-೨೩। 2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ.

**ತಙ್ಘೀನ ಉಡ್ಘೀನ** (ನಂ) ಹಕ್ಕಿಗಳು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವಿಕೆ, ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಹಕ್ಕಿಗಳ ಹಾರಾಟ. ತಙ್+ಡಿಙ್ (ವಿಹಾಯಸಾ ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)।

**ತಙ್ಘೀಯಮಾನ ಉಡ್ಘೀಯಮಾನ** (ವಿಂ) ಹಾರಾಡುತ್ತಿರುವ, ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವ. ತಙ್+ಡಿಙ್ (ವಿಹಾಯಸಾ ಗತೌ) ಕರ್ತಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ತಙ್ಘೀಯಮಾನಾಃ ಪ್ರತಿಯಾನ್ತಮಿ ತ್ವಾಂ ಮಂಜುಸ್ವರಾಃ ಮಾನಸಹಸದಾರಾಃ" ಪಾದಂ ೧೮-೨೪।

**ತಙ್ಘೀಶ ಉಡ್ಘೀಶ** (ಪುಂ) 1. (ಯೋಗಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವ ಯೋಗಿಗಳಿಗೆ ಅಧಿಪತಿಯಾದ) ಮಹೇಶ್ವರ. 2. ಯೋಗಿಗಳು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವ ಉಪಾಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ತಂತ್ರಗ್ರಂಥ.

**ತಙ್ ಉತ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪ್ರಶ್ನೆ. 2. ಸಂಶಯ, ಸಂದೇಹ. 3. ವಿತರ್ಕ, ವಿಚಾರ, ವಿಮರ್ಶೆ. 4. ಅಧಿಕೃ, ಅತಿಶಯ. 5. ಉದ್ವಿಗ್ನಭಾಗ, ಮೇಲುಭಾಗ. ಈ ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ ದ್ವೈತಕವಾಗಿರುವುದು.

**ತಙ ಉತ** (ವಿಂ) 1. ದಾರದಿಂದ ನೇಯಲ್ಪಟ್ಟ. ವೇಖ್ (ತನ್ತುಸಂತಾನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। (ಅವ್ಯಂ) 2. ವಿಕಲ್ಪ, ಸಂಶಯ. 3. ಪ್ರಶ್ನೆ. 4. ಸಮುಚ್ಚಯ. 5. ವಿತರ್ಕ, ವಿಚಾರ, ವಿಮರ್ಶೆ. 6. ಅತಿಶಯ, ಅಧಿಕೃ. "ತಙ ಪ್ರಶ್ನೇ ವಿತರ್ಕೇ ಸ್ಯಾದುತಾಽಪ್ಯರ್ಥವಿಕಲ್ಪಯೋಃ" ವಿಶ್ವಂ। "ತಙ ಬಾಹವಿಕಲ್ಪಯೋಃ" ಶಾಶ್ವಂ। "ಕಿಮಯ-ಮಾತಪದೋಃ ಸ್ಯಾದುತ ಯಥಾ ಮೇ ಮನಸಿ ವರ್ತತೇ" ಶಾಕುಂ ೩। "ವೀರೋ ರಸಃ ಕಿಮಯಮೇತುತ ದರ್ಪ ಣಃ" ತಂ ರಾಂ ೬-೧೯।

**ತಙ್ಘಯ ಉತಘ್ಯ** (ಪುಂ) ಅಂಗಿರಸ್ಸಿನ ಮಗ, ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಅಣ್ಣ. "ತ್ರಯೋಹ್ಯಜ್ಞಿರಸಃ ಪುತ್ರಾಃ ಏತೇ ಸರ್ವತ್ರ ವಿಶ್ರುತಾಃ। ಬೃಹಸ್ಪತಿರುತಘ್ಯಶ್ಚ ಸಂವರ್ತಶ್ಚ ದೃಢವ್ರತಃ"।

**ತಙ್ಘಯಾನುಜ ಉತಘ್ಯಾನುಜ** (ಪುಂ) ಗುರು, ಬೃಹಸ್ಪತಿ, ಉತಘ್ಯಮಹರ್ಷಿಯ ತಮ್ಮ. "ತಙ್ಘಾಮುತಙ್ಘಯಾನುಜ-ಜಗಾದಾಘ್ರೇ ಗದಾಗ್ರಜಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೬೯।



ಉತಾಹೋ ಉತಾಹೋ (ಅವ್ಯಂ) 1. ವಿಕಲ್ಪ, ಸಂಶಯ.

2. ವಿತರ್ಕ, ವಿಚಾರ, ವಿಮರ್ಶೆ. 3. ಪ್ರಶ್ನೆ. ಉತ

ಚಾಹೋ ಚ ಅನಯೋ: ಸಮಾಹಾರ:। "ಆಹೋ ಉತಾಹೋ ಕಿಮುತ  
ವಿಕಲ್ಪೇ" ಅಮಂ। "ಉತಾಹೋ ಪರಿಪ್ರಶ್ನವಿಚಾರಯೋ:" ಮೇದಿಂ।

"ವಂದೇ ವಾಚ್ಛಿತಲಾಭಾಯ ಕರ್ಮ ಕಿಂ ತನ್ನ ಕಥ್ಯತೇ। ಕಿಂ  
ದಮ್ಪತಿಮಿತಿ ಬ್ರೂಯಾಮುತಾಹೋ ದಮ್ಪತೀ ಇತಿ" ನೀಲಕಂ ೧-೧।

ಉತ್ಕ ಉತ್ಕ (ವಿಂ) ತವಕವುಳ್ಳ, ಆತುರವುಳ್ಳ, ಉತ್ಸುಕ  
ನಾದ. ಉದ್ಗತಂ ಮನೋಽಸ್ಯ - ಉದ್ಗತಮನಸ್ಕವೃತ್ತೇಶ್ಚಂದ್ರಾ-  
ತ್ವಾರ್ಯ "ಕನ್" (೪-೨-೮೦)। "ಉತ್ಕಂ ಧರಂ ದ್ರಷ್ಟುಮವೇಕ್ಷ್ಯ  
ಶೌರಿಮುತ್ಕಂಧರಂ ದಾರುಕ ಇತ್ಯುವಾಚ" ಮಾಘಂ ೪-೧೮।

ಉತ್ಕಟ ಉತ್ಕಟ (ಪುಂ) 1. ಲವಂಗಪತ್ರ, ದಾಲ್ಚಿನ್ನಿ.

2. ಶುಂಠಿ. 3. ಮೆಣಸು. 4. ಹಿಪ್ಪಲಿ. ಉತ್

"ಕಟಕ್" (೪-೨-೨೯)। 5. ಮದವೇರಿದ ಆನೆ.

6. ಅಮಲು, ಮದ, ಮತ್ಸು. (ವಿಂ) 7. ತೀವ್ರ

ವಾದ, ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ, ಉಗ್ರವಾದ. 8. ಪ್ರಬಲ

ವಾದ, ಅತಿಶಯವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. "ಅತ್ಯುತ್ಕಟಃ ಪುಣ್ಯ-

ಪಾಪೇರಿಹವ ಫಲಮಶ್ನುತೇ" ಹಿತೋಂ। 9. ಕಷ್ಟವಾದ,

ವಿಷಮವಾದ, ಬಿಕ್ಕಟ್ಟಿನ. 10. ಗರ್ವಿಷ್ಠ, ಸೊಕ್ಕಿ

ನಿಂದ ಕೂಡಿದ, ದುರಭಿಮಾನಿ. 11. ಮದವೇರಿದ,

ಅಮಲೇರಿದ. "ಉತ್ಕಟಸ್ತೀವ್ರಮತ್ತಯೋ:" ಮೇದಿಂ।

ಉತ್ಕಂಠ ಉತ್ಕಂಠ (ಪುಂ) 1. ಸುರತಸಂಬಂಧವಾದ

ಬಂದು ಬಂಧ. "ಉದ್ಗತ: ಕಂಠಂ ಪಾದೋ ಯತ್ರ। "ನಾರೀಪಾದೌ

ಚ ಹಸ್ತೇನ ಧಾರಯೇದ್ಗಲಕೇ ಪುನ:। ಸ್ತನಾರ್ಪಿತಕರ: ಕಾಮೀ

ಬಂಧಶ್ಚೋತ್ಕಂಠಸಂಜಿತ:"। (ವಿಂ) 2. ಮೇಲಕ್ಕೆತ್ತಿದ

ಕತ್ತುಳ್ಳ, ಕತ್ತುನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿರುವ. ಉದ್ಗತ:

ಕಂಠೋ ಯಸ್ಯ। "ರಥಸ್ವನೋತ್ಕಂಠಮೃಗೇ ವಾಲ್ಮೀಕೀಯೇ ತಪೋವನೇ"

ರಘುಂ ೧೪-೧೧। 3. ತವಕವುಳ್ಳ, ಆತುರವುಳ್ಳ, ಆಸೆ

ಯುಳ್ಳ. "ಉತ್ಕಂಠಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ" ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭)।

ಉತ್ಕಂಠಾ ಉತ್ಕಂಠಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಇಷ್ಟವಾದ ವಸ್ತು

ವನ್ನು ಹೊಂದಲು ಆಸೆ, ಪ್ರಿಯವಸ್ತುವನ್ನು ಪಡೆಯಲು

ತವಕ, ಔತ್ಸುಕ್ಯ. ಉತ್ + ಕಂಠ (ಶೋಕ) "ಅ:"

(೩-೩-೧೦೩)। "ಸರ್ವೇಂದ್ರಿಯಸುಖಾಸ್ವಾದೋ ಯತ್ರಾಸ್ತೀತ್ಯಭಿ-

ಮನ್ಯತೇ। ತತ್ಪ್ರಾಪ್ತೀಂಕ್ಷಾಂ ಸಸಂಕಲ್ಪಾಮುತ್ಕಂಠಾಂ ಕವಯೋ ವಿಧು:"।

2. ಅಸಮಾಧಾನ, ವ್ಯಾಕುಲತೆ, ಕನವರಿಕೆ. "ಯಾಸ್ಯತ್ಯಥ

ಶಕ್ತುಂತಲೇತಿ ಹೃದಯಂ ಸಂಸ್ಪೃಷ್ಟಮುತ್ಕಂಠಯಾ" ಶಾಕುಂ ೪-೪।

ಉತ್ಕಂಠಿತ ಉತ್ಕಂಠಿತ (ವಿಂ) 1. ತವಕಪಡುವ, ಇಷ್ಟ

ವಾದ ವಸ್ತುವನ್ನು ಹೊಂದಲು ಆಸೆಪಡುವ, ಆತುರ

ಪಡುವ. ಉತ್ಕಂಠಾಸ್ಯ ಸಂಜಾತಾ "ಇತ್" (೪-೨-೩೬)।

2. ಚಿಂತೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ವ್ಯಗ್ರನಾದ, ವ್ಯಾಕುಲ  
ನಾದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಉತ್ಕಂಠಿತಾ ಉತ್ಕಂಠಿತಾ. "ಉತ್ಕಂಠಿತಾ  
ಚ ಕುಲಟಾ ಜಗಾಮಾಸ್ತಂ ಚ ಭಾನುಮಾನ್" ಚಂದ್ರಾಂ।

ಉತ್ಕಂಠಿತಾ ಉತ್ಕಂಠಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎಂಟು ವಿಧ ನಾಯಿಕೆ  
ಯರಲ್ಲೊಬ್ಬಳು, ಪ್ರಿಯನು ಬರುವುದಾಗಿ ಹೇಳಿ  
ಅವನು ಬಾರದಿರುವುದರಿಂದ ದುಃಖಾಕ್ರಾಂತಳಾದ  
ನಾಯಿಕೆ. "ಆಗಂತುಂ ಕೃತಚಿತ್ತೋಽಪಿ ದೇವಾಭಾಷಾತಿ ಯತ್ಪ್ರಿಯ:।

ತದನಾಗಮದ್ಘೋಷಾರ್ತಾ ವಿರಹೋತ್ಕಂಠಿತಾ ತು ಸಾ" ಸಾಂ ೬೦।

ಉತ್ಕತಾ ಉತ್ಕತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತವಕ, ಆಸೆ, ಪಡೆಯುವ  
ಆತುರ. ಉತ್ಕಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)।

ಉತ್ಕಂಠರ ಉತ್ಕಂಠರ (ವಿಂ) ಎತ್ತಿದ ಕತ್ತುಳ್ಳ, ಕತ್ತುನ್ನು  
ಮೇಲೆತ್ತಿ ನೋಡುವ. ಉದ್ಗತಾ ಕಂಠರಾ ಯಸ್ಯ। "ಉತ್ಕಂ  
ಧರಂ ದ್ರಷ್ಟುಮವೇಕ್ಷ್ಯ ಶೌರಿಮುತ್ಕಂಠರಂ ದಾರುಕ ಇತ್ಯುವಾಚ" ಮಾಘಂ  
೪-೧೮।

ಉತ್ಕಂಠ ಉತ್ಕಂಠ (ಪುಂ) 1. ನಡುಕ, ತತ್ತರ, ಕಂಪನ.

ಉತ್ಕಂಠ: ಕಂಠ:। (ವಿಂ) 2. ನಡುಗುವ, ಕಂಪಿಸುವ.

ಉತ್ಕಂಠತೇ-ಉತ್ + ಕಂಠ (ಚಲನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।

ಉತ್ಕಂಠನ ಉತ್ಕಂಠನ (ನಂ) ನಡುಕ, ತತ್ತರ, ಕಂಪನ.

ಉತ್ + ಕಂಠ (ಚಲನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।

ಉತ್ಕಂಠಿನ್ ಉತ್ಕಂಠಿನ್ (ವಿಂ) ನಡುಗುವ, ಕಂಪಿಸುವ,

ತತ್ತರಿಸುವ. ಉತ್ಕಂಠತೇ-ಉತ್ + ಕಂಠ (ಚಲನೆ) "ಣಿಣಿ:"

(೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕಿಂ" (೪-೧-೪)।

-ಕಂಠಿನಿ -ಕಂಪಿನಿ.

ಉತ್ಕಂಠ ಉತ್ಕಂಠ (ವಿಂ) ನಡುಕದ ಸ್ವಭಾವದ, ಕಂಪಿ  
ಸುವ, ತತ್ತರಿಸುವ. ಉತ್ + ಕಂಠ (ಚಲನೆ) "ಃ"  
(೩-೨-೧೬೭)।

ಉತ್ಕರ ಉತ್ಕರ (ಪುಂ) 1. ಧಾನ್ಯ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ

ರಾಶಿ, ಗುಪ್ತೆ. ಉತ್ + ಕ (ವಿಕ್ಷೇಪ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭)।

2. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. "ಸ್ಫುರನ್ನಾಂಶುತ್ಕರಮಂಜರಿಭೃತ:"

ಕಿರಾಂ ೮-೪। "ಬಹಿ: ಪುಷ್ಪೋತ್ಕರೈ: ಕೀರ್ಣತೀರಾಂ ದ್ವಾ-

ಕ್ಷತಾನ್ವಿತೈ:" ಕುಮಾಂ ೧೦-೪೪। 3. ಕಸದ ರಾಶಿ.

ಉತ್ಕರ್ತನ ಉತ್ಕರ್ತನ (ನಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸುವಿಕೆ. 2. ಕಿತ್ತು

ಹಾಕುವಿಕೆ. ಉತ್ + ಕೃತ (ಛೇದನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।

ಉತ್ಕರ್ಷ ಉತ್ಕರ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ, ಮೇಲ್ಮೆ. ಉತ್ + ಕೃಷ

(ವಿಲೇಖನೆ) "ಘಃ" (೩-೩-೧೮)। "ಉತ್ಕರ್ಷ: ಸ ಚ

ಧನ್ವಿನಾಂ ಯದಿಷವ: ಸಿದ್ಧಚಿಂತಿ ಲಕ್ಷ್ಯೇ ಚಲೇ" ಶಾಕುಂ ೨-೪।

2. ಅತಿಶಯ, ಹೆಚ್ಚಿಗೆ. "ಪಂಚಾನಾಮಪಿ ಭೂತಾನಾಮುತ್ಕರ್ಷ

ಪುಷ್ಪಗುಣಾ:" ರಘುಂ ೪-೧೧। 3. ಜಂಬ, ಬಡಾಯಿ,



ಜಲ್ಲಿ. 4. ಘನತೆ, ದೊಡ್ಡ ಸ್ತಿ. "ನಿನಿಪ್ತು: ಕುಲಮುತ್ಕರ್ಷಮ್"  
ಮನುಂ ೪-೨೪೪. 5. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆಯುವಿಕೆ. (ವಿಂ)  
6. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಮೇಲ್ಮೈಪಡೆದ. 7. ಅತಿಶಯ  
ವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. 8. ಜಂಬದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಬಡಾಯಿ  
ಕೊಟ್ಟಿಕೊಳ್ಳುವ. ಉತ್+ಕೃಷ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪).  
ಭಾವೆ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). ಉತ್ಕರ್ಷಣಮ್ ಉತ್ಕರ್ಷ  
ಣಮ್. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆಯುವಿಕೆ.

ಉತ್ಕರ್ಷಕ ಉತ್ಕರ್ಷಕ (ವಿಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠತೆಯನ್ನುಂಟು  
ಮಾಡುವ, ಮೇಲ್ಮೈಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. 2. ಹೆಚ್ಚು  
ಸುವ, ಅಧಿಕಪಡಿಸುವ. 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆಯುವ.  
ಉತ್+ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) + ಣಿಕ್ "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩).  
ಉತ್ಕರ್ಷಿತ ಉತ್ಕರ್ಷಿತ (ವಿಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠತೆಯನ್ನು ಪಡೆದ,  
ಮೇಲ್ಮೈಹೊಂದಿದ. ಉತ್ಕರ್ಷಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತಚ್"  
(೫-೨-೩೬)।

ಉತ್ಕರ್ಷಿನ್ ಉತ್ಕರ್ಷಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲ್ಮೈಯುಳ್ಳ,  
ಶ್ರೇಷ್ಠತೆಯುಳ್ಳ. ಉತ್ಕರ್ಷಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫).  
2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆಯುವ. ಉತ್+ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ)  
"ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)।

ಉತ್ಕಲ ಉತ್ಕಲ (ಪುಂ) 1. ಉತ್ಕಲದೇಶ, ಈಗಿನ ಒರಿಸ್ಸಾ  
ಪ್ರಾಂತ್. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ಉತ್ಕಲದೇಶದ ನಿವಾಸಿ  
ಗಳು. 3. ಉತ್ಕಲದೇಶದ ದೊರೆಗಳು. "ಉತ್ಕಲಾ-  
ದಶಿತಪಥ: ಕಲಿಜ್ಞಾಮಿಮುಖೋ ಯಯಿ" ರಘುಂ ೪-೩೮।  
4. ಹಕ್ಕಿಯ ಬೇಟೆಗಾರ. 5. ಭಾರವನ್ನು (ಮೂಟೆ  
ಯನ್ನು) ಹೊರುವ ಕೂಲಿಯಾಳು.

ಉತ್ಕಲಿಕಾ ಉತ್ಕಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಔತ್ಸುಕ್ಯ, ಆಸೆ,  
ಬಯಕೆ, ಹಂಬಲ. ಉತ್+ಕಲ (ಶಬ್ದಸಂಸ್ಥಾನಯೋ:  
"ಕುನ್" (೩ಂ ೫-೩೫)। 2. ಚಿಂತೆ, ವ್ಯಾಕುಲತೆ,  
ಕಾಮಸಂಬಂಧವಾದ ಸ್ಮರಣೆ. 3. ತರಂಗ, ಅಲೆ.  
"ಕುಮಿತಮುತ್ಕಲಿಕಾತರಲಂ ಮನ:" ಮಾಲತೀಂ ೩-೧೦।  
4. ಶೃಂಗಾರಚೇಷ್ಟೆ, ಸ್ತ್ರೀಯರ ಹಾವಭಾವಗಳು.  
"ಕುಮಿತಮುತ್ಕಲಿಕಾತರಲಂ ಹೇಲಾಸಲಿಲವೀಚಿಫು" ಮೇದಿಂ।  
(ವಿಂ) 5. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೊರಟಿರುವ ಮೊಗ್ಗುಳ್ಳ, ಹೊರಕ್ಕೆ  
ಬಂದಿರುವ ಮೊಗ್ಗುಳ್ಳ. ಉದ್ಗತಾ: ಕಲಿಕಾ ಯಸ್ಯ।  
"ಉದಾಮುತ್ಕಲಿಕಾಂ ವಿಪಾಂಡುರಕಂ ಪ್ರಾರಂಭಜುಮ್ಭಾಂ ಕುಣಾತ್"  
ರತ್ನಾಂ ೨-೪।

ಉತ್ಕಲಿಕಾಪ್ರಾಯ ಉತ್ಕಲಿಕಾಪ್ರಾಯ (ನಂ) ಗದ್ಯಕಾವ್ಯದ  
ಒಂದು ಭೇದ, ಕರ್ಕಶ ವರ್ಣಗಳಿಂದಲೂ, ಸಮಸ್ತ  
ಪದಗಳಿಂದಲೂ ಕೂಡಿದ ಗದ್ಯಕಾವ್ಯದ ಒಂದು ಭೇದ.

ಉತ್ಕರ್ಷಣ ಉತ್ಕರ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಎಳೆಯುವುದು. ಉತ್+ಕೃಷ  
(ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಸಘ: ಸೀರೋತ್ಕರ್ಷಣ-  
ಸುರಭಿ ಕ್ಷೇತ್ರಮಾರುಹ ಮಾಲಮ್" ಮೇಘಂ ೧-೧೬। (ವಿಂ) 2.  
ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆಯುವ. ಉತ್+ಕೃಷ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)।

ಉತ್ಕಾರ ಉತ್ಕಾರ (ಪುಂ) ಧಾನ್ಯವನ್ನು ತೂರಿ ರಾಶಿಹಾಕು  
ವುದು, ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಗುಪ್ತೆಹಾಕುವಿಕೆ. ಉತ್+ಕ  
(ವಿಲೇಖನೆ) "ಕಮ್" (೩-೩-೩೦)।

ಉತ್ಕಿರ ಉತ್ಕಿರ (ವಿಂ) ಎರಚುವ, ಎಸೆಯುವ. ಉತ್+ಕ  
(ವಿಲೇಖನೆ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫)। "ಆಪ್ಲುತಾಸ್ತೀರ-  
ಮಂದಾರಕುಸುಮೋತ್ಕಿರವೀಚಿಫು" ಕುಮಾಂ ೬-೫। "ಪುಷ್ಪರೆಣು-  
ತ್ಕಿರೇವತಿ:" ರಘುಂ ೧-೩೮।

ಉತ್ಕೀರ್ಣ ಉತ್ಕೀರ್ಣ (ವಿಂ) 1. ಕೊರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ರಂಧ್ರ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಉತ್+ಕ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।  
"ಮಣಿ ವಜ್ರಸಮುತ್ಕೀರ್ಣ ಸೂತ್ರಸ್ಯೇವಾಸ್ತಿ ಮೇ ಗತಿ:" ರಘುಂ ೧-೪।  
2. ಚಿತ್ರ ಕೊರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ನಕಾಶೆ ಕೆತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ. "ಲೀನೇವ  
ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿತೇವ ಲಿಖಿತೇವೋತ್ಕೀರ್ಣರೂಪೇವ ಚ" ಮಾಲತೀಂ  
೫-೧೦। 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಬ್ಬಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೊರಡಿ  
ಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ರಜೋಮಿಸ್ತುರಗೋತ್ಕೀರ್ಣರಸ್ಪೃಷ್ಠಾಲಕವೇಷ್ಠನಿ"  
ರಘುಂ ೧-೪೨। 4. ಕೆತ್ತುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. "ಉತ್ಕೀರ್ಣಚಾಮೀಕರ-  
ಪಜ್ಜಾಣಾಂ ದಿಮದಂತಿದಾನದ್ರವದ್ವಿಪಿತಾನಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೧೩-೩೯।

ಉತ್ಕೀರ್ತನ ಉತ್ಕೀರ್ತನ (ನಂ) 1. ಉಚ್ಚಸ್ವರದಿಂದ  
ಹೇಳುವುದು, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಹೇಳುವುದು. ಉಚ್ಚ:  
ಕೀರ್ತನಮ್। 2. ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡುವುದು, ಕೊಂಡಾಡು  
ವುದು. ಉತ್+ಕೃತ (ಸಂಶಬ್ದನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಉತ್ಕೀರ್ತಿತ ಉತ್ಕೀರ್ತಿತ (ವಿಂ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಹೇಳ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, (ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ) ನಾರಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಸ್ತುತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಕೊಂಡಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಉತ್+ಕೃತ  
(ಸಂಶಬ್ದನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಉತ್ಕುಣ ಉತ್ಕುಣ (ಪುಂ) ಹೇನು, ಕೂರೆ.

ಉತ್ಕೂಟ ಉತ್ಕೂಟ (ಪುಂ) ಭತ್ತಿ, ಕೊಡೆ. ಉತ್ತಮ ಕೂಟಮಸ್ಯ।

ಉತ್ಕೂಲ ಉತ್ಕೂಲ (ವಿಂ) 1. ದಡವನ್ನು ಮಾರಿರುವ,  
ತೀರವನ್ನು ಮಾರಿ ಬಂದಿರುವ. ಉತ್ಕಾಂತ: ಕೂಲಾತ್।  
2. ದಡವನ್ನು ಮುಟ್ಟಿರುವ, ತೀರದವರೆಗೂ ಬಂದಿ  
ರುವ. ಉದ್ರತ: ಕೂಲಮ್।

ಉತ್ಕೂಲಿತ ಉತ್ಕೂಲಿತ (ವಿಂ) ದಡಮುಟ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ತೀರದವರೆಗೂ ಒಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಉತ್+ಕೂಲ (ಆವರಣೆ)+  
ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ವನಾವಲೀಕುತ್ಕಲಿಕಾ-  
ಸಹಸ್ರಪ್ರತಿಕ್ಷಣೋತ್ಕೂಲಿತಶೇವಲಾಭಾ:" ಮಾಘಂ ೩-೭೦।



ಉಕ್ತಿ ಉತ್ಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರೋಕ್ತವಾದ  
ಉತ್ಕೃತರನೆಯ ಭಂದಸ್ಸು.

ಉಕ್ತಯ ಉತ್ಕೃತ್ಯ (ಅವ್ಯಂ) ಕತ್ತರಿಸಿ, ತುಂಡುಮಾಡಿ.  
ಉತ್ + ಕೃತಿ. (ಛೇದನೆ) "ಲ್ಯಪ್" (೨-೧-೩೭). "ಉಕ್ತಯೋ-  
ಕ್ತಯ ಕೃತಿ ಪ್ರಥಮಮಥ ಪೃತ್ಯೇಭಿರ್ಮಾಸಿ ಮಾಸಾನಿ"  
ಮಾಲತೀಂ ೪-೧೬.

ಉಕ್ತೃಷ್ಠ ಉತ್ಕೃಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮ  
ವಾದ, ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ. 2. ಅತಿಶಯವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ.  
3. ದೊಡ್ಡದಾದ, ಘನತೆಯನ್ನು ಪಡೆದ, ಮೇಲ್ಮೆ  
ಪಡೆದ. 4. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೇಲಕ್ಕೆ  
ಎತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಕೃಷಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ (ಭೂಮಿ), ಸಾಗು  
ವಳಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ (ಜಮೀನು). ಉತ್ + ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ)  
ಕರ್ತಂ ಕರ್ಮಂ ವಾ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨, ೩-೨-೧೦೨).

ಉಕ್ತೃಚ ಉತ್ಕೃಚ (ಪುಂ) ಲಂಚ, ವ್ಯವಹಾರವನ್ನು  
ಸ್ಯಾಯವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ತನ್ನಿಷ್ಟದಂತೆ ನಿರ್ಣಯಿಸಲು  
ಅಧಿಕಾರಿಗೆ ಕೊಡುವ ಧನ, ತನಗಿರುವ ಆತಂಕವನ್ನು  
ನಿವಾರಿಸಲು ಅಧಿಕಾರಿಗೆ ಕೊಡುವ ಹಣ.

ಉಕ್ತೃಚಕ ಉತ್ಕೃಚಕ (ವಿಂ) ಲಂಚ ಪಡೆಯುವ  
(ಅಧಿಕಾರಿ). ಉತ್ + ಕೃಚ (ಸಂಪರ್ಚನೆ) "ಫ್ಲುಲ್"  
(೩-೧-೧೩೩).

ಉಕ್ತೃಮ ಉತ್ಕೃಮ (ಪುಂ) 1. ವಿರುದ್ಧವಾದ ಕ್ರಮ,  
ಪ್ರತಿಕೂಲವಾಗಿ ಹೋಗುವುದು, ದಾರಿತಪ್ಪಿ ಹೋಗು  
ವುದು. ಉತ್ + ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮).  
2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು, ಉದ್ಭವಗಮನ.

ಉಕ್ತೃಮಣ ಉತ್ಕೃಮಣ (ನಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗು  
ವುದು. 2. ನಿರ್ಗಮನ, ಹೊರಡುವುದು, ಪ್ರಯಾಣ.  
3. ಪ್ರಾಣ ಹಾರಿಹೋಗುವುದು. ಉತ್ + ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ)  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪).

ಉಕ್ತೃಂತ ಉತ್ಕೃಂತ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿಹೋದ.  
ಉತ್ + ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨).

ಉಕ್ತೃಂತಿ ಉತ್ಕೃಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿಹೋಗು  
ವುದು. ಉತ್ + ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪).

ಉಕ್ತೃಮತ್ ಉತ್ಕೃಮತ್ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರು  
ತ್ತಿರುವ, ಉದ್ಭವಮುಖವಾಗಿ ಹೋಗುತ್ತಿರುವ. ಉತ್ +  
ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಉಕ್ತೃಮಂತಂ  
ಸ್ಥಿತಂ ವಾಪಿ ಭುಜ್ಜಾನಂ ವಾ ಗುಣಾವಿತಮ್" ಗೀತಾ ೧೪-೧೦.

ಉಕ್ತೃಷ್ಠ ಉತ್ಕೃಷ್ಠ (ನಂ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗು  
ವುದು. 2. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಮಾತಾಡುವುದು. 3. ಗಟ್ಟಿ

ಯಾಗಿ ಅಳುವುದು. ಉತ್ + ಕೃಷ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೆ ಚ)  
"ಕ್ತಃ" (೩-೪-೧೧೪). (ವಿಂ) 4. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ  
ಕೂಗಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಉತ್ +  
ಕೃಷ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨).

ಉತ್ಕೃಷ ಉತ್ಕೃಷ (ಪುಂ) 1. ಕುರವಹಕ್ಕೆ, ನೀರಿನ  
ಮೇಲೆ ತೇಲಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದ ಒಂದು ಜಲಚರ  
ಪ್ರಾಣಿ. ಉತ್ಕೃಷತಿ - ಉತ್ + ಕೃಷ (ಆಹ್ವಾನೇ) "ಅಕ್"  
(೩-೧-೧೩೪). 2. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗುವುದು. ಉತ್ +  
ಕೃಷ ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮). (ವಿಂ) 3. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ  
ಕೂಗುವ.

ಉತ್ಕೃಷ ಉತ್ಕೃಷ (ಪುಂ) 1. ಉದ್ಭವಮುಖವಾದ  
ವಾಯುವಿನಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ತೊಂದರೆ, ವಾಕರಿಕೆ,  
ಉಬ್ಬಳಿಕೆ. 2. ಶರೀರದೊಳಗಿನ ಧಾತುವಿನ ವ್ಯತ್ಯಾಸ,  
ರಸದ ಅವ್ಯವಸ್ಥೆ. ಉತ್ + ಕಿಲಶ್ಚ (ವಿವಾಧನೆ) "ಘ್"  
(೩-೩-೧೮).

ಉತ್ಕೃಷಣ ಉತ್ಕೃಷಣ (ವಿಂ) ಶರೀರದೊಳಗಿನ ರಸ  
ವನ್ನು ಅವ್ಯವಸ್ಥೆಗೊಳಿಸುವ, ತ್ರಿದೋಷ (ವಾತ,  
ಪಿತ್ತ, ಕಫ) ಗಳನ್ನು ತಾರುಮಾರು ಮಾಡುವ. ಉತ್ +  
ಕಿಲಶ್ಚ (ವಿವಾಧನೆ) "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪).

ಉತ್ಕೃಷ್ಠ ಉತ್ಕೃಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಸೆಯ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉತ್ + ಕ್ಷಿಪು (ನಿರಸನೆ)  
"ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ಕ್ಷಣಂ ಕ್ಷಣೋತ್ಕೃಷ್ಠಗಜೇಂದ್ರಕೃತ್ತಿನಾ"  
ಮಾಘಂ ೧-೪. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ. "ಉತ್ಕೃಷ್ಠಗಾತ್ರಃ  
ಸ್ಮ ವಿಡಮ್ಬಯಗ್ರಹಃ ಸಮುತ್ಪತ್ತಿಷ್ಯಂತಮಗೇಂದ್ರಮುಚ್ಚಕೈಃ" ಮಾಘಂ  
೧೨-೪. 3. ಕಿತ್ತುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರ್ಮೂಲಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ತಳ್ಳಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರಾಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಉತ್ಕೃಷ್ಠಿಕಾ ಉತ್ಕೃಷ್ಠಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೇಲಿನ ಕಿವಿಗೆ  
ಹಾಕಿಕೊಳ್ಳುವ ಚಂದ್ರಮುರು. "ಉತ್ಕೃಷ್ಠಿಕಾ ತು  
ಕರ್ಣಿಕಾಃ" ವೈಜಂ.

ಉತ್ಕೃಷ ಉತ್ಕೃಷ (ಪುಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಸೆಯುವುದು.  
2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವುದು. ಉತ್ + ಕ್ಷಿಪು (ನಿರಸನೆ)  
"ಘ್" (೩-೩-೧೮). "ವಿನ್ದೂತೋಪಾನ್ ಪಿಪಾಸುಃ ಪರಿ-  
ಸರತಿ ಶಿಖಿ ಭ್ರಾಂತಿಮಹಾರಿಯನ್ರಮ್" ಮಾಲಂ ೨-೧೨.  
3. ತಳ್ಳಿಹಾಕುವುದು, ನಿರಾಕರಿಸುವುದು.

ಉತ್ಕೃಷಕ ಉತ್ಕೃಷಕ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಸೆಯುವ.  
ಉತ್ + ಕ್ಷಿಪು (ನಿರಸನೆ) "ಫ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩).  
2. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ, ಬಟ್ಟಿ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಕದ್ದು  
ಎತ್ತಿಕೊಂಡು ಹೋಗುವವನು.



उत्क्षेपण ಉತ್ಕ್ರೇಷಣ (ನಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಸೆಯುವುದು. उत्+क्षिपु (निरसने) "ल्युट्" (३-३-११५)। उत्क्षेपणम्, अवक्षेपणम्, आकुञ्चनम्, प्रसारणम् ಮತ್ತು गमनम् ಎಂದು ಐದು ಕರ್ಮಗಳು. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವುದು. "सस्तांसावतिमात्रलोहिततलो बाहू घटो-त्क्षेपणात्" शाकुं १-२६। 3. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಬಡಿಯುವ ಕೋಲು, ಕಣದಲ್ಲಿ ತೆನೆಗಳಿಂದ ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಬೇರ್ಪಡಿಸುವ ಕೋಲು. 4. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ತೂರುವ ಮೊರೆ, ಕೊಂಗ. उत्क्षिप्यतेऽनेन—करं "ल्युट्" (३-३-११७)। 5. ಬೀಸಣಿಗೆ. उत्क्षिप्यते कर्म "ल्युट्"। "उत्क्षेपणन्तु व्यजने धान्यमर्दनवस्तुनि" मेदि०।

उत्खचित ಉತ್ಪಚಿತ (ವಿಂ) 1. ಎತ್ತಿಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. उत्+खच (बन्धने) "क्तः" (३-२-१०२)। "कुमुतोत्खचितान् वलीभृतश्चलयन् भृङ्गश्चस्तवालकान्" रघु० ८-५३।

उत्खन्यमान ಉತ್ಪನ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ಅಗೆಯಲ್ಪಡುವ. उत्+खनु (अवदारणे) कर्म "शानच्" (३-२-१२४)।

उत्खात ಉತ್ಪಾತ (ನಂ) 1. ಹಳ್ಳ ತೋಡುವುದು, ಗುಣಿ ಮಾಡುವುದು, ಅಗೆಯುವುದು. 2. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು, ಹಾಳುಮಾಡುವುದು. उत्+खनु (अवदारणे) भावे "क्तः" (३-३-११४)। (वि०) 3. ಕೀಳಲ್ಪಟ್ಟ. उत्+खनु (अवदारणे) "क्तः" (३-२-१०२)। "फलैः संवर्धयामासुर्मुखातप्रतिरोपिताः" रघु० ४-३७। "विधातु-मुखातविषाणमण्डलः" माघ० १-५७। 4. ಬೇರು ಸಹಿತ ಕೆತ್ತುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಬುಡಸಹಿತ ತೆಗೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "उत्खातविपुलस्तम्भा नागास्त्रुटितशृङ्खलाः" याद० १६-२०। 5. ಎಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ತೆಗೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "लीलोत्खातमृणालकाण्डकवलच्छेदेषु संपादिताः" मालती० १-३४।

उत्खातकेलि ಉತ್ಪಾತಕೇಳಿ (ಪುಂ) ವಪ್ರಕ್ರೇಡೆ, ಆನೆ ಗೂಳಿ ಮೊದಲಾದುವು ಕೊಂಬಿನಿಂದ ಮಣ್ಣನ್ನು ಆಗೆಯುವ ಆಟ. उत्खातमेव केलिः।

उत्खाय ಉತ್ಪಾಯ (ಅವ್ಯಂ) ಕೆತ್ತುಹಾಕಿ, ನಿರ್ಮೂಲ ಮಾಡಿ, ತೆಗೆದುಹಾಕಿ. उत्+खनु (अवदारणे) "ल्यप्" (७-१-३७)। "वङ्गानुत्खाय तरसा नेता नीसाधनोद्यतान्" रघु० ४-३६।

उत्त ಉತ್ತ (ವಿಂ) ಒದ್ದೆಯಾದ, ತೇವವಾದ. उन्दी (क्लेदने) "क्तः" (३-४-७२)।

उत्तंस ಉತ್ತಂಸ (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಣಾಭರಣ, ಕುಂಡಲ, ಒಲೆ. उद्+तसि (अलङ्कारे) "घञ्" (३-३-१२१)। "नोत्तंसं क्षिपति क्षितौ श्रवणतः सा मे स्फुटोऽप्यागसि" सा० द०। 2. ಶಿರೋಭೂಷಣ, ತಲೆಯಲ್ಲಿ ಧರಿಸುವ ಒಡವೆ.

उत्तप्त ಉತ್ತಪ್ತ (ನಂ) 1. ಒಣಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಾಂಸ. उत्+तप (सन्तापे) "क्तः" (३-२-१०२)। 2. ಹೆಚ್ಚು ತಾಪ, ಹೆಚ್ಚು ಬಿಸಿ. (वि०) 3. ಬಿಸಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಸ್ನಾನಮಾಡಿದ, ತಾಪಪರಿಹಾರ ಮಾಡಿಕೊಂಡ. उद्गतं तप्तं तापो यस्य।

उत्तम ಉತ್ತಮ (ಪುಂ) 1. ಉತ್ತಮಪಾದರಾಯನ ಮಗ, ಸುರುಚಿಯ ಪುತ್ರ. (वि०) 2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ಕೃಷ್ಟವಾದ. उत्+तमप् (५-३-५५)। "विघ्नैः पुनःपुनरपि प्रतिहन्यमानाः प्रारब्धमुत्तमगुणास्त्वमिवो-द्वहन्ति" मुद्रा० २-१७। 3. ಶ್ರೇಷ್ಠಗುಣವುಳ್ಳ, ಒಳ್ಳೆಯ ಗುಣವುಳ್ಳ, ಒಳ್ಳೆಯ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ. "प्रायःप्रययमादत्ते स्वगुणेषूत्तमादरः" कुमा० ६-२०। 4. ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. "द्वैप्यानसावुत्तमलाभभाजः" माघ० ३-७६।

उत्तमगुण ಉತ್ತಮಗುಣ (ವಿಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠಗುಣವುಳ್ಳ. उत्तमा गुणा यस्य। "प्रारब्धमुत्तमगुणास्त्वमिवोद्वहन्ति" मुद्रा० २-१७।

उत्तमपुरुष ಉತ್ತಮಪುರುಷ (ಪುಂ) ಪರಮಾತ್ಮ. "उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः" गीता १५-१७।

उत्तमफलिनी ಉತ್ತಮಫಲಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಾಲುತೊಟ್ಟಿನ ಗಿಡ, ಕೇರಳಾಲೆ ಸೊಪ್ಪಿನಗಿಡ.

उत्तमसाहस ಉತ್ತಮಸಾಹಸ (ಪುಂ) 1. ಮೊದಲನೆಯ ದರ್ಜೆಯ ಜುಲ್ಮಾನೆ, ದಂಡಾಧಿಕಾರಿಯಿಂದ ವಿಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ 1000 ರೂಪಾಯಿ ದಂಡ. साहसमधिकृततयाऽ-स्त्यस्य "अच्" (५-२-१२७)। "पणानां द्वे शते सार्धे प्रथमः साहसः स्मृतः। मध्यमः पञ्च विज्ञेयः सहस्रं त्वेव चोत्तमः" मनु० ८-१३८। (न०) 2. ಪ್ರಾಣಿ ಹಿಂಸೆ ಮೊದಲಾದ ಕ್ರೂರವಾದ ಕೆಲಸ, ಜನೋಪಕಾರಕವಾದ ಕೆರೆ ಕಟ್ಟಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಒಡೆದು ಹಾಕುವುದು ಮುಂತಾದ ತೊಂದರೆಯ ಕೆಲಸ.

उत्तमा ಉತ್ತಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತಮ ಹೆಂಗಸು, ಶ್ರೇಷ್ಠ ಗುಣವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. उद् "तमप्" (५-३-५५)।



ಉತ್ತಮಾಂಜ್ಞ ಉತ್ತಮಾಂಗ (ನಂ) ಶಿರಸ್ಸು, ತಲೆ. ಉತ್ತಮಂ  
ಚ ತತ್ ಅಂಜ್ಞಂ ಚ। “ಸ ತದ್ಗುಲಾದವಿದೂರಮಾಲಿಬಂಧಿ  
ಪತದ್ವಜ್ಞ ಇವೋತ್ತಮಾಂಜ್ಞೇ” ಕುಮಾಂ ೭-೪೧।

ಉತ್ತಮ ಉತ್ತಂಭ (ಪುಂ) ಅವಲಂಬನ, ಒತ್ತುಗಂಬ,  
ಆಧಾರಸ್ತಂಭ. ಉದ್ + ಸ್ತನ್ಮು (ರೋಧನೆ) “ಛನ್”  
(೩-೩-೧೨೧)।

ಉತ್ತಮನ ಉತ್ತಂಭನ (ನಂ) 1. ಅವಲಂಬನ, ಆಧಾರ,  
ಆಶ್ರಯ. ಉದ್ + ಸ್ತನ್ಮು (ರೋಧನೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್”  
(೩-೩-೧೧೫)। 2. ಆಧಾರಸ್ತಂಭ, ಒತ್ತುಗಂಬ.  
ಉದ್ + ಸ್ತನ್ಮು ಕರಂ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭)। “ಲಂಘಾಯಾಮಂ  
ದಂತಯೋರ್ಯುಗ್ಮಮೇವ ಸ್ವಂ ನಾಗಸ್ಯ ಪ್ರಾಪದ್ವುತಮ್ಭನತ್ವಮ್” ಮಾಘಂ  
೧೮-೪೬।

ಉತ್ತರ ಉತ್ತರ (ಪುಂ) 1. ಉತ್ತರಕುಮಾರ, ವಿರಾಟ  
ರಾಯನ ಮಗ. 2. ವಿಷ್ಣು. ಉತ್ತೀರ್ಯಂತೆ ಸಂಸಾರೋಽಸ್ಮಾತ್ —  
ಉದ್ + ತ್ (ಪಲವನತರಣಯೋಃ) “ಅಪ್” (೩-೩-೫೭)। “ಉತ್ತರೋ  
ಗೋಪತಿಗೋಪ್ತಾ” ವಿಂ ಸಂ। 3. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ.  
4. ಉತ್ತರದೇಶ. 5. ಉತ್ತರಕಾಲ, ಮುಂದಿನಕಾಲ.  
6. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. (ಸ್ತ್ರೀನಂ) 7. ಹನ್ನೆರಡನೆಯ,  
ಇಪ್ಪತ್ತೊಂದನೆಯ ಮತ್ತು ಇಪ್ಪತ್ತಾರನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ  
ಗಳು, ಉತ್ತರಫಲ್ಗುನಿ, ಉತ್ತರಾಷಾಡಾ ಮತ್ತು  
ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರಾ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು. 8. ಉತ್ತರ, ಬದಲು  
ಮಾತು, ಪ್ರತಿವಚನ. “ವೀಕ್ಷಿತೇನ ಪರಿವೀಕ್ಷ್ಯ ಪಾವಂತಿ  
ಮುಖಂ ಕಮಮಯುತರಂ ದದೌ” ಕುಮಾಂ ೮-೬। 9. ಸಮಸ್ತ  
ಪದದಲ್ಲಿ ಕೊನೆಯಪದ. 10. ನಿರ್ಣಯ, ಸಿದ್ಧಾಂತ.  
11. ಠರಾವು, ನಿರ್ಣಯ, ತೀರ್ಮಾನ. 12.  
ಮುಕ್ತಾಯ, ಸಮಾಪ್ತಿ. 13. ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ, ಮೇಲ್ಮೈ.  
14. ಮೀಮಾಂಸಕರ ಅಧಿಕರಣದ ಪಂಚಾವಯವ  
ಗಳಲ್ಲೊಂದು. “ವಿಷಯೋ ವಿಶಯಶ್ಚೈವ ಪೂರ್ವಪಕ್ಷಸ್ತುತರಮ್।  
ನಿರ್ಣಯಶ್ಚೇತಿ ಸಿದ್ಧಾಂತಾಃ ಶಾಸ್ತ್ರೇಽಧಿಕರಣಂ ಸ್ಮೃತಮ್”।  
15. ಮೇಲುಭಾಗ. (ವಿಂ) 16. ಮೇಲುಭಾಗದ,  
ಉರ್ಧ್ವಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ. 17. ಎಡಭಾಗದ, ವಾಮ  
ಭಾಗದ. 18. ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. 19. ಮುಂದಿನ,  
ಅನಂತರದ. “ವಿಧೀಯತಾಂ ತತ್ರ ವಿಧೇಯಮುತರಮ್” ಕಿರಾಂ  
೧-೨೫। 20. ಮುಂದಿನಕಾಲದ. 21. ಪ್ರಧಾನವಾದ,  
ಮುಖ್ಯವಾದ. “ಧರ್ಮೋತ್ತರಂ ಮಧ್ಯಮಮಾಶ್ರಯಂತೆ” ರಘುಂ  
೧೩-೭। 22. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ.  
23. ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿನ. (ಅವ್ಯಂ) 24. ಅನಂತರ, ಅಮೇಲೆ.  
25. ಮುಂದಕ್ಕೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ರಾ —ಠಾ. 26. ವಿರಾಟ  
ರಾಯನ ಮಗಳು ಉತ್ತರ, ಅಭಿಮನ್ಯುವಿನ ಪತ್ನಿ,

ಅರ್ಜುನನ ಸೊಸೆ. 27. ಉತ್ತರದಿಕ್ಕು. “ಅಸ್ಯುತರಸ್ಯಾಂ  
ದಿಶಿ ದೇವತಾತ್ಮಾ ಹಿಮಾಲಯೋ ನಾಮ ನಗಾಧಿರಾಜಃ” ಕುಮಾಂ  
೧-೧। 28. ಧನುಸ್ಸಿನ ಸೌಂದರ್ಯ, ಬಿಲ್ಲಿನ ಸೊಬಗು.  
“ಉತ್ತರಂ ಪ್ರತಿವಾಕ್ಯೇ ಸ್ಯಾದ್ಧೃವೋದೀಚ್ಯೋತ್ತಮೇಽಪ್ಯವತ್। ಉತ್ತರಸ್ತು  
ವಿರಾಟಸ್ಯ ತನಯೇ ದಿಶಿ ಚೋತ್ತರಾ” ವಿಶ್ವಂ। “ಉತ್ತರಂ  
ಪ್ರತಿವಾಕ್ಯೇ ಸ್ಯಾದುದೀಚ್ಯೇ ಪ್ರವರೋಽರ್ವಯೋಃ। ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗತ್ವೇ ಧನು-  
ಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾಂ ಪುರುಷೇ ಪಾವಕೇ ಚ ನಾ” ವೇಜಂ।

ಉತ್ತರಕಾಂಡ ಉತ್ತರಕಾಂಡ (ಪುಂ) ಶ್ರೀಮದ್ರಾಮಾ  
ಯಣದ ಉತ್ತರಕಾಂಡ.

ಉತ್ತರಕೋಸಲ ಉತ್ತರಕೋಸಲ (ಪುಂ) 1. ಕೋಸಲ  
ದೇಶ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಕೋಸಲಾ —ಕೋಸಲಾ. 2. ಅಯೋಧ್ಯಾ  
ನಗರ.

ಉತ್ತರಜ್ಞ ಉತ್ತರಂಗ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳುವ ಅರೆ  
ಗಲುಳ್ಳ. ಉದ್ಗತಾಃ ತರಜ್ಞಾಃ ಯಸ್ಯ। “ಅವೃಷ್ಟಿಸಂರಮ್-  
ಮಿವಾಮ್ಬುವಾಹಮಪಾಮಿವಾಧಾಸ್ಮನುತರಜ್ಞಮ್” ಕುಮಾಂ ೩-೪೮।

ಉತ್ತರತಸ್ ಉತ್ತರತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ,  
ಉತ್ತರ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ. 2. ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿನಿಂದ, ಉತ್ತರ  
ಪ್ರದೇಶದಿಂದ. 3. ಮೇಲುಗಡೆ, ಉರ್ಧ್ವಭಾಗ.  
4. ಅನಂತರ. ಉತ್ತರ “ಅತಸುಚ್” (೫-೩-೨೮)।

ಉತ್ತರತ್ರ ಉತ್ತರತ್ರ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ.  
2. ಅನಂತರದಲ್ಲಿ. ಉತ್ತರ “ತ್ವಲ್” (೫-೩-೧೦)।

ಉತ್ತರತಸ್ತು ಉತ್ತರತಸ್ತು (ವಿಂ) ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ.  
ಉತ್ತರತಸ್ “ತ್ಯಪ್” (೪-೨-೧೦೪)।

ಉತ್ತರತ್ರಯ ಉತ್ತರತ್ರಯ (ವಿಂ) ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ.  
ಉತ್ತರತ್ರ “ತ್ಯಪ್” (೪-೨-೧೦೪)।

ಉತ್ತರದ ಉತ್ತರದ (ವಿಂ) 1. ಉತ್ತರ ಕೊಡುವ.  
2. ಬದಲುಮಾತಾಡುವ, ಎದುರುಮಾತಾಡುವ. ಉತ್ತರಂ  
ದದಾತಿ — ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೪)।

ಉತ್ತರದಾಯಕ ಉತ್ತರದಾಯಕ (ವಿಂ) 1. ಉತ್ತರ  
ಕೊಡುವ. 2. ಎದುರುಮಾತಾಡುವ, ಅಧಿಕಪ್ರಸಂಗಿ,  
ಅವಿಧೇಯ. ಉತ್ತರಂ ದದಾತಿ — ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) “ಫುಲ್”  
(೩-೧-೧೩೩)।

ಉತ್ತರದಿಕ್ಪಾಲಕ ಉತ್ತರದಿಕ್ಪಾಲಕ (ಪುಂ) ಕುಬೇರ,  
ಉತ್ತರದಿಕ್ಕನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವವನು.

ಉತ್ತರದಿಕ್ಪಾಶ ಉತ್ತರದಿಕ್ಪಾಶ (ಪುಂ) ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಿನ  
ಪಾಶಚಕ್ರ, ಬೃಹಸ್ಪತಿವಾರದಲ್ಲಿ ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ  
ಯುದ್ಧಾದಿಗಳನ್ನು ನಿಷೇಧಿಸುವ ಪಾಶ. ದಿಕ್ಪಾಶಗಳ  
ವಿವರ:



| ನಾರ      | ದಿಕ್ಕು        |
|----------|---------------|
| ಭಾನುವಾರ  | ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕು |
| ಸೋಮವಾರ   | ಆಗ್ನೇಯ ,,     |
| ಮಂಗಳವಾರ  | ಪೂರ್ವ ,,      |
| ಬುಧವಾರ   | ಈಶಾನ್ಯ ,,     |
| ಗುರುವಾರ  | ಉತ್ತರ ,,      |
| ಶುಕ್ರವಾರ | ವಾಯವ್ಯ ,,     |
| ಶನಿವಾರ   | ಪಶ್ಚಿಮ ,,     |

“रवौ तु दक्षिणे पाशः सोमे आग्नेयकोणके । भौमे तु पूर्वदिग्भागे बृधे ईशानकोणके । जीवे चोत्तरदिग्भागे शुक्रे वायव्यकोणके । शनौ तु पश्चिमे भागे पाशचक्र-प्रकीर्तितम् ” रत्नसां ।

उत्तरदिक्शूल ಉತ್ತರದಿಕ್ ಶೂಲ (೨೦) ಉತ್ತರದಿಕ್ ನಲ್ಲಿ ಪ್ರಯಾಣವನ್ನು ನಿಷೇಧಿಸುವ. 1. ಬುಧವಾರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಉತ್ತರಫಲ್ಗುನೀ ನಕ್ಷತ್ರ. “ज्येष्ठा-पूर्वाभाद्रपदा रोहिण्युत्तरफल्गुनी । पूर्वादिषु क्रमाच्छूला यात्रादौ मरणप्रदाः” ।

उत्तरदिगीश ಉತ್ತರದಿಗೀಶ (೨೦) ಕುಬೇರ.

उत्तरदिग्द्वार ಉತ್ತರದಿಗ್ದ್ವಾರ (ನಂ) ಉತ್ತರದಿಕ್ ನಲ್ಲಿ ಪ್ರಯಾಣಕ್ಕೆ ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು; ಧನಿಷ್ಠೆ, ಶತಭಿಷೆ, ಪೂರ್ವಾಭಾದ್ರೆ, ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರೆ, ರೇವತಿ, ಅಶ್ವಿನಿ ಮತ್ತು ಭರಣಿ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು. उत्तरदिशि द्वारं मुखमस्य । ಪೂರ್ವ ಮೊದಲಾದ ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಯಾಣಕ್ಕೆ ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು:

| ದಿಕ್ಕು | ನಕ್ಷತ್ರ   |
|--------|---|
| ಪೂರ್ವ  | ಕೃತ್ತಿಕೆ, ರೋಹಿಣಿ, ಮೃಗಶಿರ, ಆರಿದ್ರೆ, ಪುನರ್ವಸು, ಪುಷ್ಯ ಮತ್ತು ಆಶ್ಲೇಷ.        |
| ದಕ್ಷಿಣ | ಮಖೆ, ಪುಬ್ಬೆ, ಉತ್ತರಫಲ್ಗುನಿ, ಹಸ್ತ, ಚಿತ್ತಿ, ಸ್ವಾತಿ ಮತ್ತು ವಿಶಾಖೆ.           |
| ಪಶ್ಚಿಮ | ಅನೂರಾಧೆ, ಜ್ಯೇಷ್ಠೆ, ಮೂಲ, ಪೂರ್ವಾಷಾಢ, ಉತ್ತರಾಷಾಢ, ಅಭಿಜಿತ್ ಮತ್ತು ಶ್ರವಣ.      |
| ಉತ್ತರ  | ಧನಿಷ್ಠೆ, ಶತಭಿಷೆ, ಪೂರ್ವಾಭಾದ್ರೆ, ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರೆ, ರೇವತಿ, ಅಶ್ವಿನಿ ಮತ್ತು ಭರಣಿ. |

“प्राच्यादिषु चतुर्दिक्षु सप्तसप्तानलक्षितः” ।

उत्तरदिग्बलिन् ಉತ್ತರದಿಗ್ಬಲಿನ್ (೨೦) 1. ಶುಕ್ರ. 2. ಚಂದ್ರ. ಇವರು ಉತ್ತರದಿಕ್ ನಲ್ಲಿ ಬಲಿಷ್ಠರು.

“प्राच्यां सौम्यसुराचार्यौ याम्यां भास्करभूमिजौ । प्रत्यक् सौरिख्दीच्यां तु सितेन्द्र दिग्बलान्वितौ” ।

उत्तरपक्ष ಉತ್ತರಪಕ್ಷ (೨೦) 1. ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷ, ತಿಂಗಳಿನ ಎರಡನೆಯ (ಅರ್ಧ) ಭಾಗ. 2. ವಾದದ ಕೊನೆಯ ಭಾಗ, ಸಿದ್ಧಾಂತ, ನಿರ್ಣಯ. 3. ಮೀಮಾಂಸಕರ ಅಧಿಕರಣದ ಪಂಚಾನಯವಗಳಲ್ಲೊಂದು. [“उत्तर” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

उत्तरपट ಉತ್ತರಪಟ (೨೦) 1. ಉತ್ತರೀಯ, ಹೊದೆ ಯುವ ವಸ್ತ್ರ. 2. ಹಾಸಿಗೆಯ ಮೇಲೆ ಹಾಸುವ ಬಟ್ಟೆ, ಮಗ್ಗಲು ಹಾಸಿಗೆ, ದುಪ್ಪಟ.

उत्तरपथ ಉತ್ತರಪಥ (೨೦) 1. ಉತ್ತರದಿಕ್ ನ ದಾರಿ, ಉತ್ತರದಿಕ್ ಗೆ ಹೋಗುವ ಮಾರ್ಗ. 2. ದೇವತೆಗಳು ಸಂಚರಿಸುವ ದಾರಿ. 3. ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನಿಗಳು ಬ್ರಹ್ಮ ಲೋಕಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ ಅರ್ಚಾರಾದಿ ಮಾರ್ಗ, ಉತ್ತರಾಯಣ. उत्तरश्चासौ पन्थाश्च “अः” (५-४-७४)। “अग्निज्योतिरहः शुक्लः घण्टासा उत्तरायणम् । तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः” गीता ८-२४।

उत्तरपथिक ಉತ್ತರಪಥಿಕ (ವಿಂ) ಉತ್ತರ ದೇಶದ ಯಾತ್ರಿಕ, ಉತ್ತರ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವವನು. पन्थानं गच्छति “एकन्” (५-१-७५)। उत्तरश्चासौ पथिकश्च ।

उत्तरपद ಉತ್ತರಪದ (ನಂ) 1. ಸಮಸ್ತಪದದಲ್ಲಿ ಕೊನೆಯ ಪದ. राजपुरुषः ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪುರುಷ ಪದವು ಉತ್ತರಪದ. 2. ಮುಂದಿನ ಪದ. उत्तरं च तत् पदं च ।

उत्तरपश्चिमा ಉತ್ತರಪಶ್ಚಿಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತರ ಮತ್ತು ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕುಗಳ ಮಧ್ಯದ ದಿಕ್ಕು, ವಾಯವ್ಯ ದಿಕ್ಕು. उत्तरस्याः पश्चिमायाश्च दिशोऽन्तरालम् ।

उत्तरपाद ಉತ್ತರಪಾದ (೨೦) ವ್ಯವಹಾರ (ವಿವಾದ) ದ ಎರಡನೆಯ ಹಂತ. “पूर्वपक्षः स्मृतः पादो द्वितीय-श्चोत्तरः स्मृतः । क्रियापादः तृतीयः स्याच्चतुर्थो निर्णयः स्मृतः” ಈ ರೀತಿಯಾಗಿ ವ್ಯವಹಾರವು ನಾಲ್ಕು ಭಾಗ ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದೆ.

उत्तरपूर्वा ಉತ್ತರಪೂರ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತರ ಮತ್ತು ಪೂರ್ವ ದಿಕ್ಕುಗಳ ಮಧ್ಯದ ದಿಕ್ಕು, ಈಶಾನ್ಯ ದಿಕ್ಕು. उत्तरस्याः पूर्वस्याश्च दिशोऽन्तरालम् ।

उत्तरफल्गुनी ಉತ್ತರಫಲ್ಗುನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತರ ಫಲ್ಗುನೀ ನಕ್ಷತ್ರ, ಅಶ್ವಿನ್ಯಾದಿ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರ ಗಳಲ್ಲಿ ಹನ್ನೆರಡನೆಯದು. फलति—फल (निष्पत्तौ) “उनन्” गुक् च (उ० ३-५६) । उत्तराच सा



ಫಲ್ಗುನಿ ಚ | ಇದು ಅರ್ಯಮ ದೇವತಾಕವಾದುದು. ಮನುಷ್ಯ ಗಣಕ್ಕೂ ಗೋ (ಎತ್ತು) ಯೋನಿಗೂ ಸೇರಿದುದು. ಈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು ದಾನಶೀಲನೂ ಸ್ವಜನರಲ್ಲಿ ದಯಾಳುವೂ ಒಳ್ಳೆಯ ಸ್ವಭಾವದವನೂ ಕೀರ್ತಿಶಾಲಿಯೂ ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿಯೂ ಧೀರನೂ ಮೃದು ಸ್ವಭಾವದವನೂ ಆಗುತ್ತಾನೆ. "ದಾತಾ ದಯಾಃ: ಸ್ವಜನೇ ಸುಶೀಲೋ ವಿಶಾಲಕೀರ್ತಿಃ ಸುಮತಿಃ ಪ್ರಧಾನಃ | ಧೀರೋ ನರೋ-  
ತ್ಯಂತಮೃದುವಭಾವಃ ತದ್ಉತ್ತರಾಫಲ್ಗುನಿಕಾಪ್ರಸೂತಿಃ" | ಈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವರಿಗೆ ರವಿ ಮಹಾದಶೆಯು ಪ್ರಾರಂಭವಾಗುವುದು. ಈ ದಶೆಯ ಪ್ರಮಾಣ 6 ವರ್ಷಗಳು.

ಉತ್ತರಮೀಮಾಂಸಾ ಉತ್ತರಮಿಮಾಂಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇದವ್ಯಾಸ ಮಹರ್ಷಿಪ್ರಣೀತವಾದ ನಾಲ್ಕು ಅಧ್ಯಾಯಗಳುಳ್ಳ ಶಾರೀರಕಸೂತ್ರ, ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವರೂಪದ ವಿಚಾರಮಾಡುವ ವೇದಾನ್ತ ಗ್ರಂಥ. ಉತ್ತರಸ್ಯ ವೇದಶೇಷಭಾಗಸ್ಯ ಉಪನಿಷತ್ಪ್ರಸಂಗ ಮೀಮಾಂಸಾ ವಿಚಾರಃ |

ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ (ನಂ) ಭವಭೂತಿ ಕವಿವಿರಚಿತವಾದ ಒಂದು ನಾಟಕ. ಉತ್ತರಂ ರಾಮಸ್ಯ ಚರಿತಂ ಯತ್ರ |

ಉತ್ತರವಾದಿನ್ ಉತ್ತರವಾದಿನ್ (ವಿಂ) ಪ್ರತಿವಾದಿ, ವ್ಯವಹಾರದಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಪಕ್ಷದವನು. ಉತ್ತರಮುಕ್ತರಪಕ್ಷಂ ಸಿದ್ಧಾಂತಂ ವದತಿ-ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) |

ಉತ್ತರಸಾಕ್ಷಿನ್ ಉತ್ತರಸಾಕ್ಷಿನ್ (ವಿಂ) ತನ್ನ ಪಕ್ಷದ ಇತರ ಸಾಕ್ಷಿಗಳ ವರದಿಯಿಂದ ಯಥಾರ್ಥವನ್ನು ನುಡಿದು ವ್ಯವಹಾರವನ್ನು ಸಾಧಿಸುವ ಸಾಕ್ಷಿ. "ಸಾಕ್ಷಿಣಾಮಪಿ ಯಃ ಸಾಕ್ಷ್ಯಂ ಸ್ವಪಕ್ಷಂ ಪರಿಭಾಷತಾಂ | ಶ್ರವಣಾಚ್ಛ್ರಾವಣಾದ್ವಾಪಿ ಸ ಸಾಕ್ಷ್ಯುತ್ತರಸಂಜ್ಞಕಃ" | ನಾರದಃ |

ಉತ್ತರಾ ಉತ್ತರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉತ್ತರದಿಕ್ಕು. 2. ವಿರಾಟ ರಾಯನ ಮಗಳು, ಅಭಿಮನ್ಯುವಿನ ಹೆಂಡತಿ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ. 4. ಉತ್ತರ ದೇಶದಲ್ಲಿ. 5. ಉತ್ತರ ಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಮುಂದಿನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ. ಉತ್ತರ "ಆಚ್" (೪-೩-೩೬) |

ಉತ್ತರಾತ್ ಉತ್ತರಾತ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಉತ್ತರದಿಕ್ಕು, ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿನಿಂದ, ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ. 2. ಉತ್ತರ ದೇಶ, ಉತ್ತರ ದೇಶದಿಂದ, ಉತ್ತರ ದೇಶದಲ್ಲಿ. 3. ಉತ್ತರ ಕಾಲ, ಉತ್ತರ ಕಾಲದಿಂದ, ಉತ್ತರ ಕಾಲದಲ್ಲಿ; ಮುಂದಿನ ಕಾಲ, ಮುಂದಿನ ಕಾಲದಿಂದ, ಮುಂದಿನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ. ಉತ್ತರ (ದಿಗ್ದೇಶಕಾಲವಿಷಯ) "ಆತಿಃ" (೪-೩-೩೪) |

ಉತ್ತರಾಧರ ಉತ್ತರಾಧರ (ಛಂ) ಮೇಲಿನ ತುಟಿ. "ನಿವಾರ್ಯತಾಮಾಲಿ ಕಿಮಪ್ಯಯಂ ವಟುಃ ಪುನರ್ವಿವಕ್ಷುಃ ಸ್ಫುರಿತೋ-  
ತ್ತರಾಧರಃ" | ಕುಮಾರಂ ೪-೮೩ |

ಉತ್ತರಾಧಿಕಾರಿನ್ ಉತ್ತರಾಧಿಕಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಹಕ್ಕುದಾರ, ವಾರಸುದಾರ, ಯಜಮಾನನ ಕಾಲಾನಂತರ ಆಸ್ತಿ ಪಾಸ್ತಿಗಳಿಗೆ ಅಧಿಕಾರಿಯಾಗುವವನು. ಉತ್ತರಂ ಅನಂತರ-  
ಮಧಿಕರೋತಿ ಸ್ವತ್ವಮಾನ್ವೋತಿ - ಅಧಿ + ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪) | -ಅಧಿಕಾರಿಣಿ - ಅಧಿಕಾರಿಣೀ.

ಉತ್ತರಾಪರಾ ಉತ್ತರಾಪರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತರ ಮತ್ತು ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕುಗಳ ಮಧ್ಯದ ದಿಕ್ಕು, ವಾಯವ್ಯ ದಿಕ್ಕು. ಉತ್ತರಸ್ಯಾಃ ಅಪರಸ್ಯಾಃ ದಿಶೋಂತರಾಲಮ್ |

ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರಪದ್ ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರಪದ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಶ್ವಿನ್ಯಾದಿ ಇಪ್ಪತ್ತಾರನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ. ಭಾದ್ರಾ, ಹಿತಃ ಭಾದ್ರಃ, ಭಾದ್ರಃ ಪತ್ ಪಾದೋ ಯಸ್ಯಾಃ | ಉತ್ತರಾ ಚ ಸಾ ಭಾದ್ರಪಚ್ಚ | ಪದಶಬ್ದೇನ ಸಮಾಸೇ "ಠಾಪ್" (೪-೧-೪) | -ಭಾದ್ರಪದಾ - ಭಾದ್ರಪದಾ. ಇದು ಬ್ರಹ್ಮದೇವತಾಕವಾದುದು. ಮನುಷ್ಯ ಗಣಕ್ಕೂ ಗೋಯೋನಿಗೂ ಸೇರಿದುದು. ಈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು ಧನಿಕನೂ ಸತ್ಕುಲಪ್ರಸೂತನೂ ಕಾರ್ಯ ಚತುರನೂ ರಾಜರಿಂದ ಗೌರವಿಸಲ್ಪಡತಕ್ಕವನೂ ಬಲಶಾಲಿಯೂ ಸತ್ಯಮಾರ್ಚರಣೆಯುಳ್ಳವನೂ ಬಂಧು ಪ್ರಿಯನೂ ಆಗುತ್ತಾನೆ. "ಧನೀ ಕುಲೀನಃ ಕುಶಲಃ ಕ್ರಿಯಾದೋ ಭೂಪಾಲಮಾನ್ಯೋ ವಲವಾನ್ ಮಹೋಜಾಃ | ಸತ್ಕರ್ಮಕರ್ತಾ ನಿಜಬಂಧುಭಕ್ತೋ ಯಃ ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರಪದಾಪ್ರಸೂತಃ" | ಈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವರಿಗೆ ಶನಿ ಮಹಾದಶೆಯು ಪ್ರಾರಂಭವಾಗುವುದು. ಈ ದಶೆಯ ಪ್ರಮಾಣ 19 ವರ್ಷಗಳು.

ಉತ್ತರಾಯಣ ಉತ್ತರಾಯಣ (ನಂ) 1. ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನ ಸಂಚಾರ. ಉತ್ತರಾ ಉತ್ತರಾಯಣನ ಸೂರ್ಯ ಸಂಚಾರಃ | 2. ಸೂರ್ಯನು ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ ಕಾಲ, ಮಕರಸಂಕ್ರಾಂತಿಯಿಂದ ಕರ್ಕಾಟಕ ಸಂಕ್ರಾಂತಿವರೆಗಿನ (ಅರು ತಿಂಗಳು) ಕಾಲ. "ಕರ್ಕಟಾದಿಸ್ಥಿತೇ ಭಾನೌ ದಕ್ಷಿಣಾಯಾನಮುಚ್ಯತೇ | ಉತ್ತರಾಯಣ-  
ಮಪ್ಯುಕ್ತಂ ಮಕರಸ್ಥೇ ದಿವಾಕರೇ" |

ಉತ್ತರಾಶಾ ಉತ್ತರಾಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉತ್ತರದಿಕ್ಕು. 2. ಮುಂದಿನ ಆಶೆ.

ಉತ್ತರಾಶಾಖೀಶ ಉತ್ತರಾಶಾಖೀಶ (ಛಂ) 1. ಬುಧಗ್ರಹ. 2. ಕುಬೇರ.



उत्तराषाढा ಉತ್ತರಾಷಾಢಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತರಾಷಾಢಾ ನಕ್ಷತ್ರ, ಅಶ್ವಿನಿ ಮೊದಲಾಗಿ ಇಪ್ಪತ್ತೊಂದನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ. ಇದು ವಿಶ್ವೇದೇವದೇವತಾಕವಾದುದು. ಮನುಷ್ಯಗಣಕ್ಕೂ ಮುಂಗಸಿ ಯೋನಿಗೂ ಸೇರಿದುದು. ಈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು ದಾನಶೀಲ, ದಯಾಳು, ಜಯಶಾಲಿ, ವಿನಯಶಾಲಿ, ಸತ್ಕರ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತನು. ಪತ್ನೀಪುತ್ರಾದಿಗಳಿಂದ ಸುಖವುಳ್ಳವನು ಮತ್ತು ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿ. “दाता दयावान् विजयी विनीतः सत्कर्मचेता विभवं समेतः। कान्तासुतावाप्तसुखो नितान्तं वैश्वे सुखेयः पुरुषो मनीषी”। ಈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವರಿಗೆ ರವಿಮಹಾದಶಿಯು ಪ್ರಾರಂಭವಾಗುವುದು. ಈ ದಶೆಯ ಪ್ರಮಾಣ 6 ವರ್ಷಗಳು.

उत्तरासङ्ग ಉತ್ತರಾಸಂಗ (ಪುಂ) ಉತ್ತರೀಯ, ಹೊದೆಯುವ ಬಟ್ಟೆ. उत्तरे ऊर्ध्वभागे आसज्यते — आ+अञ्ज (सङ्गे) “षञ्” (३-३-१९)। “कृष्णोत्तरासङ्गरुचं विदधच्चौतपलवीम्” माघ० २-१९।

उत्तराह ಉತ್ತರಾಹ (ಪುಂ) ಮುಂದಿನ ದಿನ, ಮಾರನೆಯ ದಿನ. उत्तरमहः “टच्” (५-४-९१)।

उत्तराहि ಉತ್ತರಾಹಿ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕು, ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಿನಿಂದ, ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ. 2. ಉತ್ತರ ದೇಶ, ಉತ್ತರ ದೇಶದಿಂದ, ಉತ್ತರ ದೇಶದಲ್ಲಿ. 3. ಉತ್ತರಕಾಲ, ಉತ್ತರಕಾಲದಿಂದ, ಉತ್ತರಕಾಲದಲ್ಲಿ. उत्तर “आहि” (५-३-३८)। ಈ ರೀತಿ उत्तर ಶಬ್ದದ ಮೇಲೆ ಅತಮುಚ್, ಆಚ್, ಆತಿ: ಮತ್ತು ಆಹಿ ಈ ನಾಲ್ಕು ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು ಬರಲಾಗಿ उत्तरतः, उत्तरा, उत्तरात् ಮತ್ತು उत्तरಾहि ಎಂದು ದಿಗ್ದೇಶಕಾಲ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಥಮಾ, ಪಂಚಮಾ ಮತ್ತು ಸಪ್ತಮ್ಯರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕು ರೂಪಗಳಾಗುವುವು.

उत्तरीय ಉತ್ತರೀಯ (ನಂ) ಹೊದೆಯುವ ವಸ್ತ್ರ. उत्तरस्मिन् देहभागे भवम् “छः” (४-२-१३८)। “हृतोत्तरीयां प्रसभं सभायामागतह्नियः” किरा० ११-४९। “धौतोत्तरीयप्रतिमच्छवीनि” माघ० ४-५।

उत्तरेण ಉತ್ತರೇಣ (ಅವ್ಯಂ) ಉತ್ತರದ ಕಡೆ, ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ. उत्तर “एनप्” (५-३-३५)। “तत्रागारं धनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयम्” मेघ० २-१२।

उत्तरेद्युस् ಉತ್ತರೇದ್ಯುಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಮಾರನೆಯ ದಿನ, ಮರುದಿನ, ಮುಂದಿನ ದಿನ. उत्तर “एद्युस्” (५-३-२२)।

उत्तरोत्तर ಉತ್ತರೋತ್ತರ (ನಂ) 1. ಉತ್ತರದ ಮೇಲೆ ಉತ್ತರ, ಉತ್ತರಕ್ಕೆ ಬದಲು ಮಾಡು. (वि०) 2. ಮುಂದು ಮುಂದಿನ. (अव्य०) 3. ಮೇಲೆ ಮೇಲೆ, ಮುಂದೆ ಮುಂದೆ, ಕ್ರಮವಾಗಿ, ಒಂದಾದ ಮೇಲೆ ಒಂದಾಗಿ. “उत्तरोत्तरमुत्कर्षः सार इत्यभिधीयते” चन्द्रा०। “परनित्यान्तरङ्गापवादानामुत्तरोत्तरं वलीयः” परि०।

उत्तस्थिवस् ಉತ್ತಸ್ಥಿವಸ್ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದಿರುವ. उद् + ष्ठा (गतिनिवृत्ती) “कसुः” (३-२-१०७)।

उत्तान ಉತ್ತಾನ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲು ಮುಖವಾದ. “उत्तानपाणिद्वयसन्निवेशात्” कुमा० ३-४५। 2. ಎತ್ತರವಾದ, ಉಬ್ಬಿರುವ. उद्गतस्तानो विस्तारोऽस्मात्। “पत्रावलीप्रसाधनोत्तानवक्षःस्थलं” मालती० ७। 3. ಅಳವಿಲ್ಲದ, ಸ್ವಲ್ಪ ನೀರುಳ್ಳ. 4. ಮೇಲು ಮುಖವಾಗಿ ಮಲಗಿರುವ, ಅಂಗಲಾಚಿ ಮಲಗಿರುವ. “उत्तानमगभीरे स्यादूर्ध्वस्थिशयितेऽपि च” मेदि०।

उत्तानपाद ಉತ್ತಾನಪಾದ (ಪುಂ) 1. ಸ್ವಾಯಂಭುವ (ಮೊದಲನೆಯ) ಮನುವಿನ ಮಗ, ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಧ್ರುವಕುಮಾರನ ತಂದೆ. 2. ಪರಮಾತ್ಮ. उत्तानः ऊर्ध्वस्थितः पादोऽस्य।

उत्तानपादज ಉತ್ತಾನಪಾದಜ (ಪುಂ) ಧ್ರುವಕುಮಾರ. उत्तानपादाज्जातः — जनी (प्रादुर्भावे) “डः” (३-२-९८)।

उत्तानशय ಉತ್ತಾನಶಯ (ಪುಂ) ಶಿಶು, ಅಂಗಲಾಚಿ ಮಲಗುವ ಎಳೆಯ ಮಗು. उत्तानः शयते — शीङ् (स्वप्ने) “अच्” (वा० ३-२-१५)। “णिनिः” (३-२-७८)। -शायिन्-शयिन्.

उत्तार ಉತ್ತಾರ (ಪುಂ) 1. ದಾಟುವುದು, ಅಡ್ಡಹಾಯುವುದು. 2. ವಾಂತಿ ಮಾಡುವುದು. उद् + तृ (प्लवन-तरणयोः) “षञ्” (३-३-१८)। (वि०) 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುವ. 4. ದಡವನ್ನು ಮುಟ್ಟಿಸುವ, ತೀರಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುವ. उद् + तृ + णिच् “अच्” (३-१-१३४)। “यत्रासौ संसारसागरोत्तारतरणिकर्णधारो भगवान् हरिः स्वयं प्रतिवसति” प्रबोध० ५।

उत्तारक ಉತ್ತಾರಕ (ವಿಂ) 1. ದಡವನ್ನು ಮುಟ್ಟಿಸುವ, ತೀರಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುವ. 2. ರಕ್ಷಕ, ವಿಪತ್ತಿನಿಂದ ಪಾರು ಮಾಡುವವನು. उद् + तृ (प्लवनतरणयोः) + णिच् “ण्वल्” (३-१-१३३)।



ಉತ್ತಾರಣ ಉತ್ತಾರಣ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಉದ್ + ತ್ (ಫಲವನ-  
ತರಣಯೋ:) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯು:" (3-1-134). "ಸರಸ್ತಂ  
ತಾರಿತವಾನಿತ್ಯುತ್ತಾರಣ ಇರಿತ:" ನಿಷ್ಕೃತಿ: 1. "ಉತ್ತಾರಣೋ  
ದುಕ್ರತಿಹಾ ಪುಷ್ಪೋ ದು:ಸ್ವಪ್ನನಾಶನ:" ವಿಂ ಸಂ 1. (ನಂ) 2.  
ದಡವನ್ನು ಮುಟ್ಟಿಸುವುದು, ತೀರಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುವುದು.  
ಉದ್ + ತ್ + ಣಿಕ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114).  
(ವಿಂ) 3. ದಡವನ್ನು ಮುಟ್ಟಿಸುವ, ತೀರಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುವ.  
ಕರ್ತಂ "ಅಕ್" (3-1-134).

ಉತ್ತಾರಯಿತ್ ಉತ್ತಾರಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ದಾಟಿಸುವ,  
ದಡವನ್ನು ಮುಟ್ಟಿಸುವ. 2. ಕಾಪಾಡುವ, ರಕ್ಷಿಸುವ,  
ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರುಮಾಡುವ. ಉದ್ + ತ್ (ಫಲವನ-  
ತರಣಯೋ:) + ಣಿಕ್ "ತುಕ್" (3-1-133).

ಉತ್ತಾರಿತ ಉತ್ತಾರಿತ (ವಿಂ) 1. ದಾಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ದಡಕ್ಕೆ  
ಒಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರು  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್ + ತ್ (ಫಲವನತರಣಯೋ:) + ಣಿಕ್  
"ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಉತ್ತಾರಿತಾಂ ಶತ್ರುಭಯಾದುದೀನತಿ"  
ಯಾದಂ 13-28.

ಉತ್ತಾರ್ಯ ಉತ್ತಾರ್ಯ (ವಿಂ) 1. ದಾಟಲು ಅರ್ಹವಾದ,  
ದಾಟಲ್ಪಡುವ. 2. ವಾಂತಿಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಉದ್ + ತ್  
(ಫಲವನತರಣಯೋ:) "ಯತ್" (3-1-99). 3. ದಾಟಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. ಉದ್ + ತ್ + ಣಿಕ್ "ಯತ್" (3-1-99). (ಅವ್ಯಂ)  
4. ದಾಟಿಸಿ. 5. ವಾಂತಿಮಾಡಿಸಿ. ಉದ್ + ತ್ + ಣಿಕ್  
"ಲ್ಯಪ್" (3-1-39).

ಉತ್ತಾಲ ಉತ್ತಾಲ (ವಿಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಶಬ್ದಮಾಡುವ,  
ಭೀರಿಂದೂ ಧ್ವನಿಮಾಡುವ (ಗಾಳಿ). "ಉತ್ತಾಲ:  
ಕಿಕಿಣಿಣಾಮನವರತರಣತಾರಹೇತು: ಪತಾಕಾಮ್" ಮಾಲತೀಂ  
4-8. 2. ದೊಡ್ಡದಾದ, ಉನ್ನತವಾದ, ಎತ್ತರ  
ವಾದ. "ಉತ್ತಾಲತಾಲಿವನಸಂಪ್ರವೃತ್ತಸಮೀರಸೀಮಂತಿತಕ್ತ-  
ಕೀಕಾ:" ಮಾಘಂ 3-60. 3. ಭಯಂಕರವಾದ, ಪ್ರಚಂಡ  
ವಾದ. "ಉತ್ತಾಲಾ: ಕಟಪೂತನಾಪ್ರಭುತಯ: ಸಾರಾವಿಣಿ ಕುರ್ವಂತೆ"  
ಮಾಲತೀಂ 4-11. 4. ಸ್ಫುಟವಾದ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ  
ತೋರುವ. "ತುರ್ಯಾರಾವೇರಾಹಿತೋತ್ತಾಲತಾಲೇಗಯಿಂತಿಭಿ: ಕಾಹಲಂ  
ಕಾಹಲಾಭಿ:" ಮಾಘಂ 16-44.

ಉತ್ತಿತಿರ್ಷ ಉತ್ತಿತಿರ್ಷ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಾಟಲು ಇಚ್ಛೆ,  
ದಡಮುಟ್ಟಲು ಆಸೆ. ಉತ್ತರಿಸುಮಿಚ್ಛಾ—ಉದ್ + ತ್ (ಫಲವನ-  
ತರಣಯೋ:) + ಸನ್ "ಅ:" (3-3-102). 2. ತೀರ್ಗಡೆ  
ಹೊಂದಲು ಆಸೆ, ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸದಲ್ಲಿ ಮುಂದಿನ ಹಂತ  
ವನ್ನು ಎರಲು ಆಸೆ.

ಉತ್ತಿತಿರ್ಷ ಉತ್ತಿತಿರ್ಷ (ವಿಂ) 1. ದಡವನ್ನು ಮುಟ್ಟಲು  
ಆಸೆಯುಳ್ಳ, ದಾಟಲು ಇಚ್ಛೆಯುಳ್ಳ. 2. ಪರೀಕ್ಷೆ  
ಯಲ್ಲಿ ತೀರ್ಗಡೆಹೊಂದಲು ಆಸೆಯುಳ್ಳ, ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ  
ದಲ್ಲಿ ಮುಂದಿನ ಹಂತವನ್ನು ಮುಟ್ಟಲು ಇಚ್ಛೆಯುಳ್ಳ.  
ಉತ್ತರಿಸುಮಿಚ್ಛಾ:—ಉದ್ + ತ್ (ಫಲವನತರಣಯೋ:) + ಸನ್  
"ಅ:" (3-2-166).

ಉತ್ತಿಷತ್ ಉತ್ತಿಷತ್ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳುತ್ತಿರುವ.  
ಉದ್ + ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಶತ್" (3-2-124).  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೋಪ್" (4-1-6). ಉತ್ತಿಷಂತಿ ಉತ್ತಿಷಂತೀ.  
ಉತ್ತಿಷಮಾನ ಉತ್ತಿಷಮಾನ (ವಿಂ) ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದು  
ತ್ತಿರುವ. ಉದ್ + ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) ಅನುರ್ವಕ್ರಮಣಿ  
"ಶಾನಕ್" (3-2-124). "ಉತ್ತಿಷಮಾನಸ್ತು ಪರೋ  
ನೋಪೇಕ್ಷ್ಯ: ಪಥ್ಯಮಿಚ್ಛತಾ" ಮಾಘಂ 2-10.

ಉತ್ತಿಷಾಸಾ ಉತ್ತಿಷಾಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳಲು  
ಆಸೆ. ಉತ್ತಾತುಮಿಚ್ಛಾ—ಉದ್ + ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಸನ್  
"ಅ:" (3-3-102).

ಉತ್ತಿಷಾಸು ಉತ್ತಿಷಾಸು (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳಲು  
ಆಸೆಳ್ಳಿಸುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ.  
ಉತ್ತಾತುಮಿಚ್ಛಾ:—ಉದ್ + ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಸನ್ "ಅ:"  
(3-2-166).

ಉತ್ತಿರ್ಣ ಉತ್ತಿರ್ಣ (ವಿಂ) 1. (ನದಿಯನ್ನು) ದಾಟಿದ,  
ದಡವನ್ನು ಮುಟ್ಟಿದ. 2. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರಾದ.  
3. ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸದಲ್ಲಿ ಮೇಲಿನ ಹಂತವನ್ನು ಮುಟ್ಟಿದ,  
ಪರೀಕ್ಷೆಯಲ್ಲಿ ತೀರ್ಗಡೆ ಹೊಂದಿದ. ಉದ್ + ತ್ (ಫಲವನ-  
ತರಣಯೋ:) ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (3-4-92). 4. ದಾಟಿ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಕಳೆಯ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಳಗಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಡಿಮೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್ + ತ್  
ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಉತ್ತಿರ್ಣಭಾರಲಘುನಾಪ್ಯ-  
ಲಘೂಲಪೋಷಸೋಹಿತಾನಿ:ಸಹತರೇಣ ತರೋರಥಸ್ತಾತ್" ಮಾಘಂ  
4-62.

ಉತ್ತುಜ್ಞ ಉತ್ತುಜ್ಞ (ವಿಂ) ಉನ್ನತವಾದ, ಎತ್ತರವಾದ.  
ಉತ್ಕೃಷ್ಟಸ್ತುಜ್ಞ: 1. "ಅವ್ಯಾಸಾಮಾಸುತ್ಕೃಷ್ಟಜ್ಞೇಮಪಿಠಾನಿ ಯಾನ್ಯಮಿ"  
ಮಾಘಂ 2-4. "ಉತ್ತುಜ್ಞಸ್ತನಭರಭಜ್ಞಭೀರಮಧ್ಯಾಮ್" ಮಾಘಂ  
4-36.

ಉತ್ತುಜ್ಞತಾ ಉತ್ತುಜ್ಞತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎತ್ತರ, ಉನ್ನತ.  
ಉತ್ತುಜ್ಞಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (4-1-119). "ಯಚ್ಛಾಲ-  
ಮುತ್ಕೃಷ್ಟತಯಾ ವಿಜೇತುಂ ದೂರಾದುದಸ್ಥಿಯತ ಸಾಗರಸ್ಯ" ಮಾಘಂ  
3-40.



ಉತ್ಪ ಉತ್ಪನ್ನ (ಪುಂ) ಪುಂ, ಹುರಿದ ಧಾನ್ಯ. ಉತ್ತ-  
ಸ್ತುಪೋಷ್ಮಾತ್ |

ಉತ್ತೇಜಕ ಉತ್ಪೇಜಕ (ವಿಂ) 1. ಉದ್ರೇಕಗೊಳಿಸುವ.  
2. ಹುರಿದುಂಬಿಸುವ, ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವ. 3. ಸಾಣೆ  
ಕೊಡುವ, ಹರಿತಮಾಡುವ. 4. ಮೆರುಗುಕೊಡುವ,  
ಬಿಳಗುವ. ಉದ್+ತಿಜ (ನಿಶಾನೆ) "ಫ್ಲುಟ್" (3-3-133) |

ಉತ್ತೇಜನ ಉತ್ಪೇಜನ (ನಂ) 1. ಉದ್ರೇಕಗೊಳಿಸುವುದು.  
2. ತೀಕ್ಷ್ಣಮಾಡುವುದು, ಸಾಣೆಕೊಡುವುದು.  
3. ಹುರಿದುಂಬಿಸುವುದು, ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವುದು.  
ಉದ್+ತಿಜ (ನಿಶಾನೆ) + ಣಿಕ್ "ಫ್ಲುಟ್" (3-3-133) |  
"ಚಂದ್ರಗುಪ್ತ: ಸಮುತ್ಸೇಜನಸಮರ್ಥ: ಶಲೋಕೇಷುಪಶೋಕಯಿತವ್ಯ:"  
ಮುद्रಾಂ ೪ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಾ-ನಾ. ಒಪ್ಪಕೊಡುವುದು,  
ಮೆರುಗು ಹಾಕುವುದು. ಉದ್+ತಿಜ+ಣಿಕ್ "ಫ್ಲುಟ್"  
(3-3-103) | "ತಮಜ್ಞದೇ ಮಂದರಕೂಟಕೋಟಿವ್ಯಾಘಟನೋ-  
ತ್ಸೇಜನಯಾ ಮಣಿನಾಮ್" ಮಾಘಂ 3-6 |

ಉತ್ತೇಜಿತ ಉತ್ಪೇಜಿತ (ವಿಂ) 1. ಹುರಿದುಂಬಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ತೀಕ್ಷ್ಣಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಹರಿತಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಉದ್ರೇಕಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
4. ಮೆರುಗುಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್+ತಿಜ (ನಿಶಾನೆ) "ಕ್ತ:"  
(3-2-102) | 5. ಅಧಿಕಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
"ಉತ್ತೇಜಿತಜಯೋತ್ಸಾಹಮಾಯುಧೇನಧೋಮೇ:" ಯಾದಂ 1-90 |

ಉತ್ತೋರಣ ಉತ್ಪೋರಣ (ಪುಂ) 1. ಎತ್ತರವಾದ ತೋರಣ.  
ಉತ್ತರಂ ತೋರಣಮ್ | (ವಿಂ) 2. ಎತ್ತರವಾದ ಹೊರ  
ಬಾಗಿಲುಳ್ಳ. 3. ಎತ್ತರವಾದ ತೋರಣವುಳ್ಳ, ಉನ್ನತ  
ವಾದ ತೋರಣಗಳಿಂದ ಅಲಂಕೃತವಾದ. ಉತ್ತರಂ ತೋರಣಂ  
ಯತ್ರ | "ತಾವತ್ಪತಾಕಾಕುಲಮಿಂದುಮೌಲಿಹುತೋರಣಂ ರಾಜಪಥಂ  
ಪ್ರಪೇದೇ" ಕುಮಾರಂ 9-63 |

ಉತ್ತೋಲನ ಉತ್ಪೋಲನ (ನಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವುದು,  
ತಕ್ಕದಿಯಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ತೂಗುವುದು. ಉದ್+ತುಲ  
(ಉನ್ನಾನೆ) ಭಾವೇ "ಫ್ಲುಟ್" (3-3-133) |

ಉತ್ತೋಲಿತ ಉತ್ಪೋಲಿತ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ತೂಗಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್+ತುಲ (ಉನ್ನಾನೆ)  
"ಕ್ತ:" (3-2-102) |

ಉತ್ಥ ಉತ್ಥ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದಿರುವ. ಉದ್+ಠಾ  
(ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ್ತ:" (3-1-136) | 2. ಉಂಟಾದ,  
ಉತ್ಪನ್ನವಾದ. "ಭವತ್ಸಮ್ಭಾವನೋತ್ಥಾಯ ಪರಿತೋಷಾಯ  
ಮುಚ್ಛಂತೇ" ಕುಮಾರಂ 6-49 | "ವನಂ ಬವಾಧೇ ವಿಷಪಾವಕೋತ್ಥಾ  
ವಿಪನ್ನಗಾನಾಮವಿಪನ್ನಗಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ 4-15 |

ಉತ್ಥಾನ ಉತ್ಥಾನ (ಪುಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳುವುದು,  
ಎದ್ದು ನಿಲ್ಲುವುದು. ಉದ್+ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಫ್ಲುಟ್"  
(3-3-133) | 2. ಉದಯ, ಹುಟ್ಟಿ ಮೇಲಕ್ಕೆ  
ಬರುವುದು, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುವುದು. "ನಿರ್ದರ್ಶಯಾಮಾಸ  
ವಿಶೇಷದೃಶ್ಯಮಿಂದು ನವೋತ್ಥಾನಮಿವೇಂದುಮತ್ಯೇ" ರಘುಂ 6-31 |  
3. ಪ್ರಯತ್ನ, ಉದ್ಯಮ. "ಭೇದಶಙ್ಕದಕೃಶೋದರಂ ಲಘು  
ಭವತ್ಯುತ್ಥಾನಯೋಗ್ಯಂ ವಪು:" ಶಾಕುಂ 2-4 | 4. ಪುನ  
ರುಜ್ಜೀವನ, ಪುನಃ ಜೀವಂತಗೊಳ್ಳುವಿಕೆ. 5. ಮಲ  
ವಿಸರ್ಜನೆ, ವಿರೇಚನೆ. 6. ಪುಸ್ತಕ. 7. ಯುದ್ಧ,  
ಕದನ. 8. ಅಂಗ. 9. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ.  
10. ಪೌರುಷ, ಶೌರ್ಯ. 11. ತಂತ್ರ, ಸ್ವರಾಷ್ಟ್ರ  
ಚಿಂತೆ. 12. ಎಚ್ಚರಗೊಳ್ಳುವುದು. ಉದ್+ಠಾ ಕರಂ  
"ಫ್ಲುಟ್" (3-3-133) | "ಉತ್ಥಾನಮುಕ್ತಮೇ ತನ್ತ್ರೇ ಪೌರುಷೇ  
ಪುಸ್ತಕೇ ರಣೇ | ಪ್ರಾಜ್ಞಾಣೋದಮಹರ್ಷೇ ಮಲವೇಗೇಪಿ ನ ದ್ವಯೋ:"  
ಮೇದಿಂ |

ಉತ್ಥಾನೇಕಾದಶೀ ಉತ್ಥಾನೈಕಾದಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ತಿಕ  
ಶುಕ್ಲ ಪಕ್ಷದ ಏಕಾದಶಿ. [ವಿಷ್ಣುವು ಆಷಾಢ ಶುಕ್ಲ  
ಏಕಾದಶಿಯ ದಿನ ಮಲಗಿ ಕಾರ್ತಿಕ ಶುಕ್ಲ ಏಕಾದಶಿಯ  
ದಿನ ಎಳುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.] "ಶೇತೇ ವಿಷ್ಣು:  
ಸದಾಪಾಠೇ ಭಾದ್ರೇ ಚ ಪರಿವರ್ತತೇ | ಕಾರ್ತಿಕೇ ಪರಿಬುಧ್ಯತ  
ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷೇ ಹರೇದಿನೇ" |

ಉತ್ಥಾಪನ ಉತ್ಥಾಪನ (ನಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಬ್ಬಿಸುವುದು.  
2. ನಿದ್ರೆಯಿಂದ ಎಬ್ಬಿಸುವುದು, ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸುವುದು.  
3. ವಾಂತಿಮಾಡಿಸುವಿಕೆ. 4. ಕದಲಿಸುವುದು, ಅಲು  
ಗಾಡಿಸುವುದು. 5. ಎಬ್ಬಿಸುವುದು, ಉದ್ರೇಕಗೊಳಿಸು  
ವುದು. 6. ಪ್ರೇರಿಸುವುದು. ಉದ್+ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) +  
ಣಿಕ್ "ಫ್ಲುಟ್" (3-3-133) |

ಉತ್ಥಾಪಯತ್ ಉತ್ಥಾಪಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಬ್ಬಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. 2. ಉದ್ರೇಕಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಕದಲಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ಅಲುಗಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ನಿದ್ರೆಯಿಂದ  
ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ಉದ್+ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) +  
ಣಿಕ್ "ಶತ್" (3-2-124) |

ಉತ್ಥಾಪಯಿತ್ ಉತ್ಥಾಪಯಿತ್ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ  
ಎಬ್ಬಿಸುವ. 2. ಉದ್ರೇಕಗೊಳಿಸುವ. 3. ಕದಲಿ  
ಸುವ, ಅಲುಗಾಡಿಸುವ. 4. ಪ್ರೇರಿಸುವ, ಹುರಿದುಂಬಿ  
ಸುವ. ಉದ್+ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಣಿಕ್ "ತೃಕ್"  
(3-1-133) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (4-1-4) |  
ಉತ್ಥಾಪಯಿತ್ರಿ ಉತ್ಥಾಪಯಿತ್ರಿ.



ಉತ್ಥಾಪಿತ ಉತ್ಥಾಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಬ್ಬಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ವಾಂತಿ ಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ಕದಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಅಲುಗಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 5. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಉದ್ದೇಶಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.   
 ಉತ್ + ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

ಉತ್ಥಾಪ್ಯ ಉತ್ಥಾಪ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಡುವ, ಎತ್ತಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ಅಲುಗಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ, ಕದಲಿಸಲ್ಪಡುವ.   
 ಉತ್ + ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಣಿಕ್ "ಯತ್" (3-1-19)। (ಅವ್ಯಂ) 3. ಎಬ್ಬಿಸಿ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿನಿಲ್ಲಿಸಿ.   
 ಉತ್ + ಷಾ + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯಪ್" (9-1-39)।

ಉತ್ಥಿತ ಉತ್ಥಿತ (ವಿಂ) 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿದ, ಬೆಳವಣಿಗೆ ಹೊಂದಿದ.   
 ಉತ್ + ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ್ತಃ" (3-4-62)। "ಅನ್ಯೇಭ್ಯೋ ವನದೇವತಾಕರತಲೇರಾಪರ್ವಭಾಗೋತ್ಥಿತಃ" ಶಾಕುಂ 4-4। 2. (ಆಸನದಿಂದ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದಿರುವ. "ವಚೋ ನಿಶಮ್ಯೋತ್ಥಿತಮುತ್ಥಿತಃ ಸನ್" ರಘುಂ 2-61। "ನ ಯಾವದೇತಾವುದಪಶ್ಯದ್ಉತ್ಥಿತೌ" ಮಾಘಂ 1-14। 3. ಭೂಮಿಯಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದ, ಭೂಮಿಯಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೊರಟ. "ಪಾಶುರಿದಿಶಾಃ ಮುಕ್ತಮತುತ್ಥಿತಯದ್ಉತ್ಥಿತೋದ್ರೇಃ" ಮಾಘಂ 4-11। 4. ಹುಟ್ಟಿದ, ಉತ್ಪನ್ನವಾದ. "ವಚೋ ನಿಶಮ್ಯೋತ್ಥಿತಮುತ್ಥಿತಃ ಸನ್" ರಘುಂ 2-61। 5. ಸ್ವಯಂಶಾಲಿ, ಉದ್ಯೋಗಶೀಲ, ವ್ಯವಸಾಯ ಸ್ವಭಾವದವನು. "ಪ್ರಣಮಂತ್ಯನಪಾಯಮುತ್ಥಿತಂ ಪ್ರತಿಪಚ್ಚಂದ್ರಮಿವ ಪ್ರಜಾ ನೃಪಮ್" ಕಿರಾಂ 2-11।

ಉತ್ಥಿತಃ ಉತ್ಥಿತಃ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಬೆಳವಣಿಗೆ, ಎಳೆಗೆ. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆವುದು.   
 ಉತ್ + ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)।

ಉತ್ಪಚ್ಛಿಣ್ಣ ಉತ್ಪಚ್ಛಿಣ್ಣ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ಬೇಯಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ. 2. ಮೇಲುಭಾಗದಲ್ಲಿ ಹಣ್ಣಾಗುವ ಸ್ವಭಾವದ, ತುದಿಯಲ್ಲಿ ಕಾಳು ಮೊದಲಾದವು ಬಲಿಯುವ ಸ್ವಭಾವದ (ಬತ್ತ, ರಾಗಿ, ಜೋಳ ಮುಂತಾದುದು).   
 ಉತ್ + ಷ್ಠ ಪಚ್ (ಪಾಕ) "ಙ್ಞುಕ್" (3-2-136)।

ಉತ್ಪತ್ತಿ ಉತ್ಪತ್ತಿ (ಛಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. (ವಿಂ) 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವ.   
 ಉತ್ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಅಕ್" (3-1-134)। "ಸ್ಯುಃ ಖಗೋತ್ಪತ್ತವಾರ್ಷ್ಕಕಂಠಾನಿವ್ಯೋಮಚಾರಿಣಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಉತ್ಪತ್ತಿಃ ಉತ್ಪತ್ತಿಃ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುತ್ತಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುತ್ತಿರುವ.   
 ಉತ್ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಶತ್" (3-2-124)।

(3-2-124)। "ಉತ್ಪತ್ತಂತಮವನಮ್ಯ ಮಾಧವಮ್" ಯಾದಂ 19-3। "ಕುರ್ವಂತಿ ಚಾಮುತ್ಪತ್ತಂತಃ ಸ್ಮರಾರ್ತಸ್ವಲೋಕಸ್ತ್ರೀಗಾತ್ರನಿರ್ವಾಣಮತ್ರ" ಮಾಘಂ 4-23।   
 ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (4-1-6)। ಉತ್ಪತ್ತಂತಿ ಉತ್ಪತ್ತಂತೀಃ।

ಉತ್ಪತ್ತನ ಉತ್ಪತ್ತನ (ಞಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವಿಕೆ, 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುವಿಕೆ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತುವಿಕೆ. 3. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟುವಿಕೆ.   
 ಉತ್ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। "ಸ್ಯಾದುತ್ಪತ್ತನಮುತ್ಪತ್ತೌ ತಥೋರ್ಧ್ವಗಮನೇಽಪಿ ಚ" ಛೇದಿಂ।

ಉತ್ಪತ್ತಿತ ಉತ್ಪತ್ತಿತ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿದ. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋದ.   
 ಉತ್ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (3-4-62)। "ತಸ್ಮಿನ್ಉತ್ಪತ್ತಿತೇ ಪುರಃ ಸುರಮುನಾವಿಂದೋಶ್ರಿಯಂ ವಿಚ್ರತಿ" ಮಾಘಂ 1-64।

ಉತ್ಪತ್ತಿಃ ಉತ್ಪತ್ತಿಃ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವ ಸ್ವಭಾವದ. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ ಸ್ವಭಾವದ.   
 ಉತ್ಪತ್ತಿಃ - ಉತ್ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ತನ್" (3-2-134)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (4-1-6)। -ಪತ್ತಿ - ಪತ್ತಿಃ।

ಉತ್ಪತ್ತಿಣ್ಣ ಉತ್ಪತ್ತಿಣ್ಣ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ನೆಗೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದ.   
 ಉತ್ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಙ್ಞುಕ್" (3-2-136)। "ಸಸಂಜ್ಞುರಶ್ವಕ್ಷುಣ್ಣಾನಾಮೇಲಾನಾಮುತ್ಪತ್ತಿಣ್ಣವಃ" ರಘುಂ 4-49।

ಉತ್ಪತ್ತಿಃ ಉತ್ಪತ್ತಿಃ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹುಟ್ಟುವಿಕೆ, ಜನ್ಮ, ಜನನ.   
 ಉತ್ + ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)। "ಉತ್ಪತ್ತಿರೇವ ವಿಪ್ರಸ್ಯ ಮೃತಿರ್ಧರ್ಮಸ್ಯ ಶಾಶ್ವತೌ" ಮನುಂ 1-96। 2. ತಯಾರಿಕೆ, ವಸ್ತುಸಂಮಾಣ, ಸೃಷ್ಟಿ. 3. ಲಾಭ, ಹುಟ್ಟುವಳಿ. 4. ಬೆಳೆ, ಫಸಲು, ಫಲ. 5. ಮೂಲ, ಕಾರಣ.   
 ಉತ್ಪತ್ತಿಃ - ಉತ್ + ಪದ ಅಪಾಂ "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)।

ಉತ್ಪತ್ತಿಕರ್ಮ ಉತ್ಪತ್ತಿಕರ್ಮ (ಛಂ) 1. ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿ ಕರ್ಮ. 2. ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿಕರ್ಮ. ["ಜಗತ್ಸೃಷ್ಟಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಉತ್ಪತ್ತಿಮತ್ ಉತ್ಪತ್ತಿಮತ್ (ವಿಂ) ಜನ್ಮವುಳ್ಳ, ಹುಟ್ಟುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಸೃಷ್ಟಿಗೆ ಒಳಪಟ್ಟಿರುವ.   
 ಉತ್ಪತ್ತಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (4-2-94)। "ವಿಪದ್ಉತ್ಪತ್ತಿಮತಾಮುಪಸ್ಥಿತಾ" ರಘುಂ 6-63।

ಉತ್ಪತ್ತಿಃ ಉತ್ಪತ್ತಿಃ (ಅವ್ಯಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ನೆಗೆದು.   
 ಉತ್ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯಪ್" (9-1-39)।



**ಉತ್ಪಥ ಉತ್ಪಥ** (ಪುಂ) ತಪ್ಪು ದಾರಿ, ನ್ಯಾಯವಲ್ಲದ ಮಾರ್ಗ. ಉತ್ಕಾಂತ: ಪನ್ಥಾನಮ್. "ಗುರೋರ್ಪಯವಲಿಪ್ತಸ್ಯ ಕಾರ್ಯಕಾರ್ಯಮಜಾನತ:। ಉತ್ಪಥಂ ಪ್ರತಿಪತ್ತಸ್ಯ ಕಾರ್ಯಂ ಭವತಿ ಶಾಸನಮ್" ಭಾಂ. "ಕ್ಷಿಪ್ತಾವರೋಧಾಜ್ಞನಮುತ್ಪಥೇನ ಗಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೨-೨೪।

**ಉತ್ಪನ್ನ ಉತ್ಪನ್ನ** (ವಿಂ) 1. ಹುಟ್ಟಿದ, ಉತ್ಪತ್ತಿ ಹೊಂದಿದ. ಉತ್ + ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಸ ಹಿ ಧರ್ಮಾರ್ಥಮುತ್ಪನ್ನೋ ಬ್ರಹ್ಮಭೂಯಾ ಕಲ್ಪತೇ" ಮನುಂ ೧-೯೮। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದಿರುವ.

**ಉತ್ಪನ್ನವಿನಾಶಿನ್ ಉತ್ಪನ್ನವಿನಾಶಿನ್** (ವಿಂ) ಹುಟ್ಟಿದ ಕೂಡಲೆ ನಾಶಹೊಂದುವ. ಉತ್ಪನ್ನ: ಸನ್ ವಿನಶಯತಿ।

**ಉತ್ಪಲ ಉತ್ಪಲ** (ನಂ) 1. ನೀಲಕಮಲ, ಕನ್ನಡಿಯೆ ಹೂವು. ಉತ್ಪಲತಿ - ಉತ್ + ಪಲ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಆದದೇ ಮೃದುವಿಲೋಪಲಾಶೇಽಪಲೇ-ಇಪಕವೀಚಿಫು ಕಮ್ಪ:" ಕಿರಾಂ ೯-೫೬। 2. ಜಂಗಲು ಕೋಷ್ಠದ ಮರ. (ವಿಂ) 3. ಮಾಂಸಖಂಡವಿಲ್ಲದ, ಪುಷ್ಟಿಯಿಲ್ಲದ, ಕೃಶವಾಗಿರುವ. ಉತ್ಕಾಂತ: ಪಲಂ ಮಾಸಮ್। "ಉತ್ಪಲಂ ಕುಠ್ಠಮುಹೇ। ಇಂದಿವರೇ ಮಾಸಶೂನ್ಯೇ" ಹೇಮಂ।

**ಉತ್ಪಲಪತ್ರ ಉತ್ಪಲಪತ್ರ** (ನಂ) 1. ನೈದಿಯೆ ದಳ. 2. ನಖಕ್ಷುತ, ಸ್ತ್ರೀಯರ ಸ್ತನಗಳ ಮೇಲಿನ ಉಗುರಿನ ಗಾಯ. "ಉತ್ಪಲಪತ್ರಮುತ್ಪಲದಲೇ ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ನಖಕ್ಷತೇ" ಹೇಮಂ।

**ಉತ್ಪಲಶಾರಿವಾ ಉತ್ಪಲಶಾರಿವಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೋಗದೆ ಗಿಡ. ಉತ್ಪಲಾ ಚ ಸಾ ಶಾರಿವಾ ಚ।

**ಉತ್ಪಲಿನಿ ಉತ್ಪಲಿನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉತ್ಪಲ ಲತೆ, ಕನ್ನಡಿಯೆ ಗಿಡ. ಉತ್ಪಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫)। 2. ಕನ್ನಡಿಯೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇಶ. ಉತ್ಪಲಾನ್ಯತ್ರ ಸಂತಿ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೩೫)। "ಪುಷ್ಪಾಯ ಮನ್ಯೇ ಮೃತಮುತ್ಪಲಿನ್ಯಾ" ನೈಷಂ ೭-೩೫।

**ಉತ್ಪಾಟಕ ಉತ್ಪಾಟಕ** (ವಿಂ) ಬುಡಸಹಿತ ಕಿತ್ತು ಹಾಕುವ, ನಿರ್ಮೂಲಮಾಡುವ. ಉತ್ + ಪಟ (ಭಾಷಾರ್ಥ) + ಗಿಣಿ "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ಉತ್ಪಾಟನ ಉತ್ಪಾಟನ** (ನಂ) ಕಿತ್ತುಹಾಕುವಿಕೆ, ಬುಡ ಸಹಿತ ತೆಗೆದುಹಾಕುವಿಕೆ. ಉತ್ + ಪಟ (ಭಾಷಾರ್ಥ) + ಗಿಣಿ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ಉತ್ಪಾಟಿತ ಉತ್ಪಾಟಿತ** (ವಿಂ) ಕಿತ್ತುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಬುಡಸಹಿತ ತೆಗೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಉತ್ + ಪಟ (ಭಾಷಾರ್ಥ) + ಗಿಣಿ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಉತ್ಪಾತ ಉತ್ಪಾತ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ನೆಗೆಯುವುದು. ಉತ್ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "एकोत्पातेन ते लङ्कामेष्यन्ति हरियूधपा:" ರಾಮಾಂ। 2. ಶುಭಾಶುಭಸೂಚಕವಾದ ಚಿಹ್ನೆ. "ಉತ್ಪಾತ ಇವ ಭೂತಾನಾಮುಡ್ಭೂವ ಭಯಾನಕ:" ಯಾದಂ ೧೬-೨೭। 3. ದುರ್ಘಟನೆ, ಸಾರ್ವಜನಿಕ ವಿಕತ್ತು, ಅನಾಹುತ (ಭೂಕಂಪ ಮೊದಲಾದುದು)।

**ಉತ್ಪಾತಕ ಉತ್ಪಾತಕ** (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ನೆಗೆಯುವ. ಉತ್ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಉತ್ಪಾತವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ಅನಾಹುತಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ. ಉತ್ + ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಗಿಣಿ "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ಉತ್ಪಾತಿನ್ ಉತ್ಪಾತಿನ್** (ವಿಂ) ಹಾರುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ನೆಗೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಉತ್ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮)। "ಸಸಮ್ಭ್ರಮೋತ್ಪಾತಿಪತತ್ಕುಲಾಕುಲಂ ಸರ: ಪ್ರಪಯೋಕ್ತಯಾನ್ತುಕಮ್ಪ್ರತಾಮ್" ನೈಷಂ ೧-೧೨೬।

**ಉತ್ಪಾದ ಉತ್ಪಾದ** (ಪುಂ) 1. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಸೃಷ್ಟಿ, ಜನನ. ಉತ್ + ಪದ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ದು:ಖೇ ಚ ಶೋಣಿತೋತ್ಪಾದೇ ಶಾಖಾಙ್ಗಚ್ಛೇದನೇ ತಥಾ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೨೨೫। (ವಿಂ) 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿದ ಕಾಲುಳ್ಳ. ಉತ್ಪಾತ: ಪಾದೋ यस್ಯ।

**ಉತ್ಪಾದಕ ಉತ್ಪಾದಕ** (ಪುಂ) 1. ತಂದೆ, ಜನಕ, ಅಪ್ಪ. ಉತ್ + ಪದ (ಗತೌ) + ಗಿಣಿ "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಉತ್ಪಾದಕಬ್ರಹ್ಮದಾದ್ರೋಗೇರಿಯಾನ್ ಬ್ರಹ್ಮದ: ಪಿತಾ" ಮನುಂ ೨-೧೪೬। 2. ಶರಭವೃಗ, ಎಂಟುಕಾಲುಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಜಾತಿ ವೃಗ. ಉತ್ ಋಷಿ:ಸ್ಥಿತಾ: ಪಾದಾ ಯಸ್ಯ। (ವಿಂ) 3. ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡುವ, ತಯಾರಿಸುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ಪಾದಿಕಾ ಉತ್ಪಾದಿಕಾ. 1. ತಾಯಿ, ಜನನಿ. 2. ತಯಾರಿಸುವ ಹೆಂಗಸು. 3. ಗೆದ್ದ ಉಜ್ಜುಳ.

**ಉತ್ಪಾದನ ಉತ್ಪಾದನ** (ನಂ) ಸೃಷ್ಟಿಸುವಿಕೆ, ತಯಾರಿಸುವಿಕೆ, ನಿರ್ಮಾಣ. ಉತ್ + ಪದ (ಗತೌ) + ಗಿಣಿ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ಉತ್ಪಾದಶಯ ಉತ್ಪಾದಶಯ** -ಶಯನ -ಶಯನ. (ಪುಂ) ತಿರು, ಮಗು, ಕೂಸು. ಉತ್ಪಾದ: ಸನ್ ಶೇತೇ - ಶಿಙ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಅಚ್" (ವಾಂ ೩-೨-೧೧೫)। [ತಿರುಗಳು ಕಾಲುಗಳನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿಕೊಂಡು ಮಲಗುವುವು]।

**ಉತ್ಪಾದಿತ ಉತ್ಪಾದಿತ** (ವಿಂ) 1. ಉಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉತ್ + ಪದ (ಗತೌ) + ಗಿಣಿ "ಕ್ತ:"



(3-2-102) 1. ಸಂಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಪ್ಯನಾ-  
ರಭಮಾಣಸ್ಯ ವಿಭೋಕ್ತಾದಿತಾ: ಪರೇ:" ಮಾಘಂ 2-91.

ಉತ್ಪಾದಿನ್ ಉತ್ಪಾದಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಉತ್ಪತ್ತಿಯುಳ್ಳ, ಸೃಷ್ಟಿ  
ಗೊಳಪಟ್ಟ. "ಉತ್ಪಾದೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ" ಇನಿ: (4-2-114) 1.  
"ಸರ್ವಮುತ್ಪಾದಿ ಭದ್ರಗುರ್ಮ" ಹಿತೋಂ 1. 2. ನಿರ್ಮಿಸುವ,  
ತಯಾರಿಸುವ. ಉತ್ಪಾದಯತಿ - ಉತ್ + ಪದ (ಗತೌ) +  
ಣಿಕ್ "ಣಿನಿ:" (3-1-134) 1.

ಉತ್ಪಾದ್ಯ ಉತ್ಪಾದ್ಯ (ನಂ) 1. ರೂಪಕದ ಇತಿವೃತ್ತಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು ಭೇದ. [ನಾಟಕಾದಿ ರೂಪಕಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿ  
ಪಾದ್ಯವಾದ ಕಥಾಂಶವು ಪ್ರಖ್ಯಾತ, ಉತ್ಪಾದ್ಯ, ಮಿಶ್ರ  
ಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ಪುರಾಣಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧ  
ವಾದ ವಿಷಯವು ಪ್ರಖ್ಯಾತ. ಕವಿಗಳು ತಾವಾಗಿ ಕಲ್ಪಿ-  
ಸಿದ ಕಥೆಯು ಉತ್ಪಾದ್ಯ, ಪ್ರಖ್ಯಾತ ಮತ್ತು ಕಲ್ಪಿತ  
ಕಥೆ ಎರಡೂ ಸೇರಿರುವುದು ಮಿಶ್ರ.] 2. ಕರ್ಮ  
ಸಂಜ್ಞೆಯ ಒಂದು ಭೇದ. ಕರ್ಮವು ಉತ್ಪಾದ್ಯ,  
ವಿಕಾರ್ಯ ಮತ್ತು ಪ್ರಾಪ್ಯಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ.  
(1) ಕ್ರಿಯೆಯು ನಡೆಯುವುದಕ್ಕೆ ಮೊದಲಿದ್ದ ಅವಸ್ಥೆ  
ಗಿಂತಲೂ ಬೇರೆ ಅವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹೊಂದುವುದು  
ಉತ್ಪಾದ್ಯ. "ಘಟಂ ಕರೋತಿ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪೂರ್ವಾವಸ್ಥೆ  
ಯಾದ ಮೃತ್ತಿಗಿಂತಲೂ ಘಟಾವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ಬೇರೆ  
ರೂಪವು ಬರುವುದರಿಂದ ಘಟವು ಉತ್ಪಾದ್ಯ.  
(2) ಪ್ರಕೃತಿಯ ವಿಕಾರ ತೋರಿಬರುವುದು ವಿಕಾರ್ಯ.  
"ಸುಖಂ ಕೃಷ್ಣಂ ಕರೋತಿ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಸುವರ್ಣದ  
ಪ್ರಕೃತಿಗೆ ಕುಂಡಲಾವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ವಿಕಾರವು ತೋರಿ-  
ಬರುವುದರಿಂದ ವಿಕಾರ್ಯ. (3) ಕ್ರಿಯಾಕೃತವಾದ  
ಯಾವ ವಿಕಾರವೂ ತೋರಿಬರದಿರುವುದು ಪ್ರಾಪ್ಯ.  
(ವಿಂ) 3. ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಡುವ, ಸೃಷ್ಟಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ.  
ಉತ್ + ಪದ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಯತ್" (3-2-99) 1.  
"ಶಿಷ್ಯಾಙ್ಗನಿರ್ಮಾಣವಿಧೌ ವಿಚಾರ್ತುಲಾವಿಷ್ಯ ಉತ್ಪಾದ್ಯ ಇವಾಸ  
ಯತ:" ಕುಮಾಂ 1-34. (ಅವ್ಯಂ) 4. ಸೃಷ್ಟಿಸಿ,  
ನಿರ್ಮಿಸಿ, ತಯಾರಿಸಿ. ಉತ್ + ಪದ + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯಪ್"  
(3-1-39) 1.

ಉತ್ಪಾದ್ಯಮಾನ ಉತ್ಪಾದ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಡು-  
ತ್ತಿರುವ, ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಉತ್ + ಪದ (ಗತೌ) +  
ಣಿಕ್ "ಶಾನಕ್" (3-2-124) 1.

ಉತ್ಪತ್ತಿ ಉತ್ಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಲು ಆಸೆ,  
ಮೇಲಕ್ಕೆ ನೆಗೆಯುವ ಆಸೆ. ಉತ್ಪತ್ತಿಮಿಚ್ಛಾ - ಉತ್ +  
ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಸನ್ "ಅ:" (3-3-102) 1.

ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ತ ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ತ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಲು ಆಸೆ  
ಯುಂಟಾಗಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ನೆಗೆಯುವ ಆಸೆ ಹುಟ್ಟಿ-  
ರುವ. ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ತ ಸಂಜ್ಞಾತ: "ಇತ್" (4-2-36) 1.

ಉತ್ಪತ್ತಿ ಉತ್ಪತ್ತಿ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಲು ಆಸೆ  
ಸುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ನೆಗೆಯಲು ಆಸೆಪಡುವ. ಉತ್ + ಪಲ್  
(ಗತೌ) + ಸನ್ "ಅ:" (3-2-166) 1. "ಉತ್ಪತ್ತಿವೋಃ  
ನ್ತರ್ದಭರ್ತುರ್ದೇವೈ:" ಮಾಘಂ 3-99.

ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಣ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಊಹೆ, ತರ್ಕ, ಕಲ್ಪನೆ.  
2. ಧರ್ಮಸಾಮ್ಯದಿಂದ ಒಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು ಮತ್ತೊಂದು  
ರಂತೆ ಊಹಿಸುವುದು, ಸಂಭಾವನೆ. 3. ಮೇಲುನೋಟ,  
ಮೇಲುಗಡೆ ನೋಡುವುದು. ಉತ್ + ಪ್ರ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ)  
"ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) 1.

ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಭಾವನೆ, ಉಪ-  
ಮಾನದ ಧರ್ಮಸಂಬಂಧದಿಂದ ಉಪಮೇಯವಸ್ತು  
ವನ್ನು ಉಪಮಾನವಸ್ತುವನ್ನಾಗಿ ಊಹಿಸುವುದು.  
ಉತ್ + ಪ್ರ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ಅ:" (3-3-103) 1. ಇದು  
ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾ ಲಂಕಾರವೆನಿಸುವುದು. "ಸಂಭಾವನಾ ಸ್ಯಾತ್-  
ಪ್ರೇಕ್ಷಾ ವಸ್ತುಹೇತುಫಲಾತ್ಮನಾ" ಚಂದಾಂ 1. "ಸಖಿಜನಂ ಪ್ರೇಮಗು-  
ಕೃತಾದರಂ ನಿರೀಕ್ಷಮಾಣಾ ಇವ ನಮ್ರಮುತಯ:" ಕಿರಾಂ 6-11.  
ಮನ್ಯೆ, ಶಕ್ತೇ, ಧ್ರುವಮ್, ಪ್ರಾಯಃ, ನೂನಮ್, ಇವ ಇತ್ಯಾದಿ ಶಬ್ದಗಳು  
ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾ ವ್ಯಂಜಕಗಳು.

ಉತ್ಪಲವ ಉತ್ಪಲವ (ಪುಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವಿಕೆ, ಮೇಲಕ್ಕೆ  
ನೆಗೆಯುವಿಕೆ. ಉತ್ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಅಪ್" (3-3-49) 1.  
"ತದಾತ್ಮಮಾತ್ಮಾನಮವೇತ್ಯ ಸಂಭ್ರಮಾತ್ಪುನ:ಪುನ: ಪ್ರಾಯಸದ್ಫಲವಾ-  
ಸ:" ನೆಪಂ (1-124) 1.

ಉತ್ಪಲವನ ಉತ್ಪಲವನ (ನಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವಿಕೆ,  
ಮೇಲಕ್ಕೆ ನೆಗೆಯುವಿಕೆ. ಉತ್ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್"  
(3-3-114) 1.

ಉತ್ಪಲವಾ ಉತ್ಪಲವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಡಗು. 2. ದೋಣಿ.  
3. ತೆಪ್ಪ, ಹರಿಗೋಲು. ಉತ್ಪಲವೇ - ಉತ್ + ಪಲ್ (ಗತೌ)  
"ಅಕ್" (3-1-134) 1.

ಉತ್ಪುಲ ಉತ್ಪುಲ (ವಿಂ) 1. ಅರಳಿದ, ವಿಕಾಸಹೊಂದಿದ.  
ಉತ್ + ಪುಲ್ (ವಿಕಸನೆ) "ಅಕ್" (3-1-134) 1.  
"ಉತ್ಪುಲಸ್ಥಲನಲಿನಿವನಾದಮುಷ್ಮಾಡ್ಭೂತ: ಸರಸಿಜಸಂಭವ:  
ಪರಾಗ:" ಕಿರಾಂ 4-39. 2. ಅಗಲವಾದ, ವಿಸ್ತಾರವಾದ.

ಉತ್ಸ ಉತ್ಸ (ಪುಂ) 1. ಊಟ, ಬುಗ್ಗೆ, ನೀರು ಜಿಣುಗುವ  
ಜಾಗ. ಉತ್ಸಿ ಜಲೇನ - ಉದಿ (ಕಲೆದನೆ) "ಸ:" ನಲೋಪಚ  
(3-3-66) 1. 2. ನೀರಿನ ಪ್ರವಾಹ.



ಉತ್ಸರ್ಜ ಉತ್ಸರ್ಗ (ಪುಂ) 1. ತೊಡೆ. ಉತ್ + ಷಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೆ)

"ಘಜ್" (3-3-121)। "ಸಂಪೂರ್ಣಲಲನಾಲಪನೋಪಸಾನ-  
ಮುತ್ಸರ್ಜಸಜ್ಜಿಹರಿಣಸ್ಯ ಮೃಗಾಡ್ಕಮೃತೇ:" ಮಾಘಂ 4-22।

2. ಮಧ್ಯಭಾಗ. "ದರೋಹೋತ್ಸರ್ಜನಿಷಕ್ತಭಾಸ:" ಕುಮಾಂ

1-10। 3. ತಿರುರ, ತುದಿ. "ಉತ್ಸರ್ಜೆ ಸಮವಿಷಮೇ ಸಮಂ

ಮಹಾದ್ರೇ: ಕ್ರಾಂತಾನಾಂ ವಿಯದಭಿಪಾತಲಾಘವೇನ" ಕಿರಾಂ 6-21।

4. ಮೇಲುಮೈ, ಮೇಲುಭಾಗ. "ದೃಢದೋ ವಾಸಿತೋತ್ಸರ್ಜಾ

ನಿಷಣ್ಣಮೃಗನಾಭಿಮಿ:" ರಘುಂ 4-64। 5. ಸಂನ್ಯಾಸಿ.

ಉತ್ಸರ್ಜ: ಸಜ್ಜಮ। 6. ಉತ್ಸರ್ಜಸಂಸರ್ಗ, ಮೇಲಿನ

ಸಂಬಂಧ.

ಉತ್ಸರ್ಜಿತ ಉತ್ಸರ್ಗಿತ (ವಿಂ) ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,

ಸಂಬಂಧವುಳ್ಳದ್ದಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಉತ್ಸರ್ಜಿ ಕೃತ:-

ಉತ್ಸರ್ಜಿನ್ + ಣಿಕ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

"ಉತ್ಸರ್ಜಿತಾಂಭ:ಕಣಕೋ ನಭಸ್ವಾನುದಂತ: ಸ್ವೇದಲವಾನ್

ಮಮಾರ್ಜ" ಮಾಘಂ 3-69।

ಉತ್ಸರ್ಜಿನ್ ಉತ್ಸರ್ಗಿನ್ (ವಿಂ) ಮೇಲಿನ ಸಂಬಂಧವುಳ್ಳ.

ಉತ್ಸರ್ಜ: ಉತ್ಸರ್ಗಸರ್ಗ: ಅಸ್ತಸ್ಯ "ಛಿ:" (4-2-114)।

ಉತ್ಸರ್ಜನ ಉತ್ಸರ್ಜನ (ನಂ) ಮೇಲುಭಾಗದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸು

ವಿಕೆ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ಇಡುವಿಕೆ. ಉತ್ + ಷಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೆ)

"ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। "ಸಮ್ಮಾನನೋತ್ಸರ್ಜನಾಚಾರ್ಯ-

ಕರಣಜ್ಞಾನಭೃತಿವಿಗಣನವ್ಯಯೇಷು ನಿಯ:" ಪಾಂ ಸುಂ 1-3-36।

ಉತ್ಸರ್ಗ ಉತ್ಸರ್ಗ (ಪುಂ) 1. ಸಾಮಾನ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ, (ಅಪವಾದ

ವಿಲ್ಲದ) ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಪ್ರವರ್ತಿಸುವ ವಿಧಿಶಾಸ್ತ್ರ.

ಉತ್ + ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) ಕರ್ಮಂ "ಘಜ್" (3-3-121)।

"ಅಪವಾದೇರಿವೋತ್ಸರ್ಗಾ: ಕೃತವ್ಯಾವರ್ತಯ: ಪರೇ:" ಕುಮಾಂ 2-20।

2. ವ್ಯಯ, ಖರ್ಚು. "ವೃಷಲ, ಕಿಮಯಮಸ್ಥಾನೇ ಮಹಾನರ್ಥೋ-

ತ್ಸರ್ಗ: ಕ್ರಿಯತೇ" ಮುದ್ರಾಂ 3। 3. ತ್ಯಾಗ, ದಾನ. "ವಿಭಜ್ಯ

ಮೇಹನಯದಾತಿಸಾಹಿತೋ ನ ಸಿಂಧುರತ್ಸರ್ಗಜಲವ್ಯಯಮ್:" ನೈಷಂ

1-16। 4. ಪರಿತ್ಯಾಗ, ತ್ಯಜಿಸುವುದು, ಬಿಡುವುದು.

"ಶ್ರೀಲಕ್ಷಣೋತ್ಸರ್ಗವಿವಿಧವೇಷಾ:" ಕುಮಾಂ 6-44। 5.

ಸಮಾಪ್ತಿ, ಕೊನೆಗಾಣಿಸುವಿಕೆ, ಪೂರ್ತಿಗೊಳಿಸುವಿಕೆ.

[ಸಂಪೂರ್ಣ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ

ವ್ರತವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಸ್ನಾತಕನಾಗಬೇಕು. ಇದಕ್ಕೆ

ವ್ರತೋತ್ಸರ್ಗವೆಂದು ಹೆಸರು.] 6. ಪ್ರತಿ ಪುಷ್ಯ

ಮಾಸದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ವೇದಾಧ್ಯಯನದ ಉತ್ಸರ್ಜನೆ,

ವೇದಾಧ್ಯಯನವನ್ನು ತತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು.

[ಶ್ರಾವಣ ಮಾಸದಲ್ಲಿ ವೇದಾಧ್ಯಯನವನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ

ಪುಷ್ಯಮಾಸದಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲಿಸಬೇಕು. ಶ್ರಾವಣದಲ್ಲಿ ಅನಂತರ

ಮೂರು ದಿನಗಳು ಅನಧ್ಯಯನ ಕಳೆದು ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷ

ದಲ್ಲಿ ವೇದಾಧ್ಯಯನವನ್ನೂ, ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಶಾಸ್ತ್ರ

ಧ್ಯಯನವನ್ನೂ ಮಾಡಬೇಕು.] "ಅತಃ ಕ್ಷವಂ ತು

ಛಂದಾಸಿ ಶುಕ್ಲೇಷು ನಿಯತ: ಪಠೇತ್। ವೇದಾಜ್ಞಾನಿ ಚ ಸರ್ವಾಣಿ

ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷೇಷು ಸಂಪಠೇತ್" ಮನುಂ 4-96। 7. ಮೂಲಮೂತ್ರಾದಿ

ಗಳ ವಿಸರ್ಜನೆ.

ಉತ್ಸರ್ಜನ ಉತ್ಸರ್ಜನ (ನಂ) ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ ಮೊದ

ಲಾದ "ಉತ್ಸರ್ಗ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಉತ್ + ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ)

ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಉತ್ಸರ್ಪಣ ಉತ್ಸರ್ಪಣ (ನಂ) 1. ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಬರುವುದು,

ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬರುವುದು. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಬರುವುದು,

ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವುದು. ಉತ್ + ಸೃಲ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ

"ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಉತ್ಸರ್ಪಿಣಿ ಉತ್ಸರ್ಪಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೈನರ ಕಲ್ಪಕಾಲದ

ಒಂದು ಭಾಗ. [ಜೈನರ ಕಾಲವು ಉತ್ಸರ್ಪಿಣಿ ಮತ್ತು

ಅವಸರ್ಪಿಣಿಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಇವೆರಡೂ ಸೇರಿ

ಒಂದು ಕಲ್ಪವೆನಿಸುವುದು. ಅವಸರ್ಪಿಣಿಯಲ್ಲಿ ಕ್ರಮ

ವಾಗಿ ಮನುಷ್ಯರ ಅನುಭವ (ಉಪಭೋಗ) ಆಯು:

ಪ್ರಮಾಣ, ಶರೀರೋತ್ಪೇಧ ಇವು ಕಡಿಮೆಯಾಗು

ವಂತೆ ಉತ್ಸರ್ಪಿಣಿಯಲ್ಲಿ ಕ್ರಮವಾಗಿ ವೃದ್ಧಿಹೊಂದು

ವುವು. ಅವಸರ್ಪಿಣಿಯ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಜಗತ್ತಿನ ಪ್ರಳಯ:

ವಾದನಂತರ ದಶ ಕೋಟಿ ಕೋಟಿ ಸಾಗರೋಪಮ

ಪ್ರಮಾಣವುಳ್ಳ ಉತ್ಸರ್ಪಿಣಿಯ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ 49

ದಿನಗಳು ರಾತ್ರಿ ಹಗಲು ಕ್ಷೀರಮೇಘಗಳೂ ಬಳಿಕ 49

ದಿನಗಳು ಅಮೃತಮೇಘಗಳೂ ವರ್ಷಿಸುವುದರಿಂದ

ಅವಸರ್ಪಿಣಿಯಲ್ಲಿ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗಿದ್ದ ರೂಕ್ಷ

ಗುಣವು ಹೋಗಿ ಓಷಧಿಗಳೂ ಲತಾವೃಕ್ಷಗಳೂ ರಸ

ಪುಷ್ಪಗಳಾಗುವುವು. ಉತ್ಸರ್ಪಿಣಿಯಲ್ಲಿ ದುಃಖದುಃಖಮಾ,

ದುಃಖಮಾ, ದುಃಖಸುಖಮಾ, ಸುಖದುಃಖಮಾ, ಸುಖಮಾ ಮತ್ತು

ಸುಖಸುಖಮಾ ಎಂದು ಆರು ಭಾಗಗಳಿವೆ:

(1) ದುಃಖದುಃಖಮಾ ಕಾಲದ ಪ್ರಮಾಣ 21,000

ವರ್ಷಗಳು. ಇದರ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಮನುಷ್ಯನ

ಆಯು:ಪ್ರಮಾಣ 16 ವರ್ಷಗಳು, ಎತ್ತರ 1 ಮೊಳ.

ಇದರ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಮನುಷ್ಯನ ಆಯು:ಪ್ರಮಾಣ 20

ವರ್ಷಗಳು, ಎತ್ತರ 3½ ಮೊಳ.

(2) ದುಃಖಮಾ ಕಾಲದ ಪ್ರಮಾಣ 21,000 ವರ್ಷ

ಗಳು. ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಆಯು:ಪ್ರಮಾಣ 20 ವರ್ಷ

ಗಳು, ಎತ್ತರ 3½ ಮೊಳ. ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ 14 ಮಂದಿ

ಕುಲಧರರ ಅವತಾರವಾಗುವುದು.



(3) ಕೃಷಮಸುಖಮಾ ಕಾಲದ ಪ್ರಮಾಣ 1 ಕೋಟಿ ಕೋಟಿಸಾಗರೋಪಮ. ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ 120 ವರ್ಷಗಳು ಆಯುಸ್ಸು, 7 ಮೊಳ ಎತ್ತರ. ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ 525 ಧನುಃಪ್ರಮಾಣದ ಎತ್ತರ.

(4) ಜಘನ್ಯಭೋಗಭೂಮಿಯ ಲಕ್ಷಣವುಳ್ಳ ಕೃಷಮಸುಖಮಾ ಕಾಲದ ಪ್ರಮಾಣ 2 ಕೋಟಿಕೋಟಿಸಾಗರೋಪಮ.

(5) ಮಧ್ಯಮಭೋಗಭೂಮಿಯ ಲಕ್ಷಣವುಳ್ಳ ಕೃಷಮಾ ಕಾಲದ ಪ್ರಮಾಣ 3 ಕೋಟಿಕೋಟಿಸಾಗರೋಪಮ.

(6) ಉತ್ತಮಭೋಗಭೂಮಿಯ ಲಕ್ಷಣವುಳ್ಳ ಕೃಷಮಸುಖಮಾ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ರಾತ್ರಿ ಹಗಲು ವಿಭಾಗವಿಲ್ಲ. ಬಿಸಿಲು ಮತ್ತು ಶೀತದ ಬಾಧೆಯಿಲ್ಲ. ಈ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವರು ಮಧುರಭಾಷಿಗಳು, ಕಲಾವಿದರು, ಸಮಾನ ಭೋಗವುಳ್ಳವರು. ಈರ್ಷ್ಯಾ, ಮಾತ್ಸರ್ಯ, ಅನಾಚಾರ, ಕಾರ್ಪಣ್ಯ, ಕೋಪ, ಭಯ, ವಿಷಾದ, ಕಾಮಜ್ವರ, ಚಿಂತೆ, ದೈನ್ಯ, ನಿಂದೆ, ಅನಿಷ್ಟಯೋಗ, ಇಷ್ಟವಿಯೋಗ, ಜರೆ ಇವುಗಳಿಂದ ದೂರವಾಗಿರುವರು.]

ಉತ್ಸಾರಿತ ಉತ್ಸಾರಿತ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಬ್ಬಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ತರಲ್ಪಟ್ಟು. ಉತ್ + ಸ್ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102). "ಉತ್ಸಾರಿತೋಮಿಚಯಲಕ್ಷಿತತೀರದೇಶ-ಮೌತುಕನುಭವಮಿವ ವಾರಿ ಪುರಃ ಪ್ರತಸ್ಥಿ" ಕಿರಾಂ 6-44.

ಉತ್ಸಾರಿನ್ ಉತ್ಸಾರಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹರಡುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಉತ್ + ಸ್ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಗಿಣಿ:" (3-2-68). "ತತಃ ಶರಚ್ಚಂದ್ರಕರಾಭಿರಾಮೇಋತ್ಸಾರಿಭಿಃ ಪ್ರಾಂಶುಮಿವಾಂಶುಜಾಲೆ:" ಕಿರಾಂ 3-1. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ನೆಗೆಯುವ. "ಪಯೋರೋತ್ಸಾರಿಷು ಶೀಯಮಾಣಃ ಸಂಲಕ್ಷ್ಯತೇ ನ ಚ್ಚಿದುರೋಽಪಿ ಹಾರಃ" ರಘುಂ 16-62. 3. ಅತಿಶಯವಾದ, ಬಹಳ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಮೇಲ್ಪಟ್ಟದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಛೀಪ್" (4-1-4). -ಸಾರಿಣಿ-ಸರ್ಪಿಣಿ. "ಉತ್ಸಾರಿಣಿ ಖಲು ಮಹತಾಂ ಪ್ರಾರ್ಥನಾ" ಶಾಕುಂ 9. "ಉತ್ಸಾರಿಣಿ ನ ಕಿಲ ತಸ್ಯ ತರಕ್ಷಿಣಿ ಯಾ" ನೈಷಂ 11-99.

ಉತ್ಸವ ಉತ್ಸವ (ಪುಂ) 1. ಸಂತೋಷವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಸಮಾರಂಭ, ಹಬ್ಬ. 2. ಸಂತೋಷ, ಆನಂದ, ಹರ್ಷ. ಉತ್ + ಪು (ಪ್ರಸವೇಶ್ವರಯೋಃ) "ಅಪ್" (3-3-46). "ಶ್ಲಾಘ್ಯಾನ್ವಯೇತಿ ನಯನೋತ್ಸವಕಾರಿಣಿತಿ ನಿರ್ವ್ಯುಹಸೌಹರಸೇತಿ ಗುಣೋಜ್ಜವಲೇತಿ" ಮಾಲತೀಂ 6-19. "ವಿಧುವಿಧುಂತುರಸ್ಯೇವ ಪೂರ್ಣಸ್ತಸ್ಯೋತ್ಸವಾಯ ಸಃ" ಮಾಧಂ 2-61. "ಪರಾಭವೋಽಪ್ಯುತ್ಸವ ಏವ ಮಾನಿನಾಮ್" ಕಿರಾಂ 1-41. 3. ಹೆಚ್ಚು

ವಿಕೆ. 4. ಕೋಪ, ಸಿಟ್ಟು. 5. ಆಸೆಯು ಹೆಚ್ಚುವಿಕೆ. "ಉತ್ಸೇಕಾಮರ್ಪಯೋರಿಚ್ಛಾಪ್ರಸವೇ ಮಹ ಉತ್ಸವಃ" ಅಮಂ. "ಉತ್ಸವೋ ಮಹ ಉತ್ಸೇಕೇ ಇಚ್ಛಾಪ್ರಸವಕೋಪಯೋಃ" ಮೇದಿಂ.

ಉತ್ಸವಸಂಕ್ರೇತ ಉತ್ಸವಸಂಕ್ರೇತ (ಪುಂವಂವಂ) ಹಿಮಾಲಯದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವ ಕಾಡುಮನುಷ್ಯರು. ಉತ್ಸವಃ ಆನಂದ-ಜನಕಃ ಸಂಕ್ರೇತಃ ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸಯೋಃ ರತ್ಯರ್ಥಮನುರಾಗಾದಾಹ್ವಾನಂ ಧೇಷಾಮ್. [ಈ ಜನರಲ್ಲಿ ಪತಿಪತ್ನೀಭಾವದ ನಿಯಮವಿಲ್ಲದೆ ಎಲ್ಲಾ ಪುರುಷರೂ ಎಲ್ಲಾ ಸ್ತ್ರೀಯರೊಡನೆಯೂ ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ವಿಹರಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಪರ್ವತವಾಸಿಗಳಾದ ಇವರಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು.] "ಪೌರವಂ ಯುಧಿ ನಿಜಿತಯ ದಸ್ಯುನ್ ಪರ್ವತವಾಸಿನಃ. ಗಣಾನುತ್ಸವಸಂಕ್ರೇತಾನಜಯತ್ಸಪ್ತ ಪಾಣಿಭವಃ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ 26-16. "ಶರೇಋತ್ಸವಸಂಕ್ರೇತಾನ್ ಸ ಕೃತ್ವಾ ವಿರತೋತ್ಸವಾನ್" ರಘುಂ 4-66.

ಉತ್ಸಾದನ ಉತ್ಸಾದನ (ನಂ) 1. ಮೈಯನ್ನು ಉಜ್ಜಿ ಶುದ್ಧಿಮಾಡುವ ಪುಡಿ. ಉತ್ಸಾದನೇನ - ಉತ್ + ಪದಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) + ಗಿಣಿ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-116). "ಉತ್ಸಾದನಂ ಚ ಗಾತ್ರಾಣಾಂ ಸ್ನಾನೋಚ್ಚಿಷ್ಟಭೋಜನೇ. ನ ಕುರ್ಯಾದ್ಗುರುಪುತ್ರಸ್ಯ ಪಾದಯೋಶ್ಚಾವನೇಜನಮ್" ಮನುಂ 2-209. 2. ಮೈಯನ್ನು ಉಜ್ಜಿ ಶುದ್ಧಿಮಾಡುವಿಕೆ. 3. ನಾಶ ಪಡಿಸುವಿಕೆ. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-116). "ಉತ್ಸಾದನಾರ್ಥಂ ಲೋಕಾನಾಂ ಧುನ್ವುರ್ನಾಮಿ ಮಹಾಸುರಃ" ಭಾಂ.

ಉತ್ಸಾದನೀಯ ಉತ್ಸಾದನೀಯ (ನಂ) 1. ಮೈಯನ್ನು ಉಜ್ಜಿ ಶುದ್ಧಿಮಾಡುವ ಪುಡಿ. (ವಿಂ) 2. ನಾಶಪಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ಉತ್ + ಪದಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) + ಗಿಣಿ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96).

ಉತ್ಸಾದಿತ ಉತ್ಸಾದಿತ (ವಿಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ವಾಸನೆಯ ಪುಡಿಯಿಂದ ಉಜ್ಜಲ್ಪಟ್ಟು. ಉತ್ + ಪದಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) + ಗಿಣಿ "ಕ್ತಃ" (3-2-102).

ಉತ್ಸಾರಕ ಉತ್ಸಾರಕ (ಪುಂ) 1. ದ್ವಾರಪಾಲಕ. ಉತ್ಸಾರಯತಿ ಜನಾನ್ - ಉತ್ + ಸ್ (ಗತೌ) + ಗಿಣಿ "ಫ್ವಲ್" (3-1-133). 2. ಪೋಲಿಸಿನವನು, ಜನರ ಗುಂಪನ್ನು ಚದರಿಸುವವನು.

ಉತ್ಸಾರಣ ಉತ್ಸಾರಣ (ನಂ) 1. ಜನರ ಗುಂಪನ್ನು ಚದರಿಸುವಿಕೆ. 2. ದಾರಿಯನ್ನು ಬಿಡಿಸಿ ಓಡಿಸುವಿಕೆ. ಉತ್ + ಸ್ (ಗತೌ) + ಗಿಣಿ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-116).

ಉತ್ಸಾರಿತ ಉತ್ಸಾರಿತ (ವಿಂ) 1. ಚದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಉತ್ + ಸ್ (ಗತೌ) + ಗಿಣಿ "ಕ್ತಃ" (3-2-102).



ಉತ್ಸಾಹ ಉತ್ಸಾಹ (ಪುಂ) 1. ಇಚ್ಛೆ, ಪ್ರವೃತ್ತಿ, ಕ್ರಿಯಾ ಶಕ್ತಿ, ಉದ್ಯಮ, ಪ್ರಯತ್ನ. ಉತ್ + ಷಹ (ಮರ್ಷಣೆ) "ಘ್" (3-3-121). "ಮಂದೋತ್ಸಾಹ: ಕೃತೋಽಸ್ಮಿ ಮೃಗಯಾಪವಾದಿನಾ ಮಾಡವ್ಯೇನ" ಶಾಕುಂ 2. ರಾಜನ ಮೂರು ವಿಧ ಶಕ್ತಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಮೂರು ವಿಧ ಶಕ್ತಿಗಳು: (1) ಪ್ರಭುಶಕ್ತಿ, (2) ಮಂತ್ರಶಕ್ತಿ ಮತ್ತು (3) ಉತ್ಸಾಹಶಕ್ತಿ. "ಶಕ್ತಯಸ್ತಿಸ್ತ: ಪ್ರಭಾವೋತ್ಸಾಹ-ಮನ್ವಜಾ:" ಅಮಂ. "ಪ್ರಜ್ಞೋತ್ಸಾಹಾವತ: ಸ್ವಾಮಿ ಯತೇತಾಧಾತು-ಮಾತಮನಿ" ಮಾಘಂ 2-96. 3. ಸ್ಥಿರಬುದ್ಧಿಯಿಂದ ನಡೆಸುವ ಸುದೀರ್ಘಪ್ರಯತ್ನ. 4. ಅಧ್ಯವಸಾಯ, ನಿಶ್ಚಯ. 5. ವೀರರಸದ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ. "ಉತ್ತಮ-ಪ್ರಕೃತಿವೀರ ಉತ್ಸಾಹಸ್ಥಾಯಿಭಾವಕ:" ಸಾಂ ದಂ 3-232. 6. ಸೂತ್ರ, ದಾರ. "ಉತ್ಸಾಹಸ್ತೂದ್ರಮೇ ಸೂತ್ರೇ" ಮೇದಿಂ.

ಉತ್ಸಾಹಕ ಉತ್ಸಾಹಕ (ವಿಂ) ಉತ್ಸಾಹವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ, ಕ್ರಿಯಾಶಕ್ತಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರವರ್ತಿಸುವಂತೆ ಹುರಿದುಂಬಿಸುವ. ಉತ್ಸಾಹಯತಿ—ಉತ್ + ಷಹ (ಮರ್ಷಣೆ) "ಘ್" (3-1-133).

ಉತ್ಸಾಹನ ಉತ್ಸಾಹನ (ನಂ) ಉತ್ಸಾಹವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವಿಕೆ, ಹುರಿದುಂಬಿಸುವಿಕೆ, ಉತ್ತೇಜನಕೊಡುವಿಕೆ. ಉತ್ + ಷಹ (ಮರ್ಷಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

ಉತ್ಸಾಹವರ್ಧನ ಉತ್ಸಾಹವರ್ಧನ (ಪುಂ) 1. ಉತ್ಸಾಹವನ್ನು ಅಧಿಕಗೊಳಿಸುವ ವೀರರಸ. ಉತ್ಸಾಹಂ ವರ್ಧಯತಿ—ವೃಧು (ವೃದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (3-1-134). (ನಂ) 2. ಉತ್ಸಾಹದ ವೃದ್ಧಿ, ಉತ್ಸಾಹವು ಹೆಚ್ಚುವಿಕೆ. ಉತ್ಸಾಹಸ್ಯ ವರ್ಧನಮ್—ವೃಧು (ವೃದ್ಧಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). (ವಿಂ) 3. ಉತ್ಸಾಹವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವ.

ಉತ್ಸಾಹಶಕ್ತಿ ಉತ್ಸಾಹಶಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾಜನ ಮೂರು ವಿಧ ಶಕ್ತಿಗಳಲ್ಲೊಂದು, ರಾಜನ ಪರಾಕ್ರಮವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವ ಶಕ್ತಿ. "ಶಕ್ತಯಸ್ತಿಸ್ತ: ಪ್ರಭಾವೋತ್ಸಾಹಮನ್ವಜಾ:" ಅಮಂ.

ಉತ್ಸಾಹಿನ್ ಉತ್ಸಾಹಿನ್ (ವಿಂ) ಉತ್ಸಾಹವುಳ್ಳ, ಕಾರ್ಯಾಸಕ್ತನಾದ, ಪ್ರಯತ್ನಶಾಲಿಯಾದ. ಉತ್ಸಾಹ "ಇನಿ:" (4-2-114).

ಉತ್ಸಿಕ್ತ ಉತ್ಸಿಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಗರ್ವಗೊಂಡ, ಕೊಬ್ಬಿದ. 2. ಹೆಚ್ಚಿದ, ಅಧಿಕಗೊಂಡ, ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿದ. 3. ಕಲಕಲ್ಪಟ್ಟ, ನೆಮ್ಮದಿಗೆ ಭಂಗ ತರಲ್ಪಟ್ಟ. ಉತ್ + ಷಿಚ (ಕ್ಷರಣೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಜಾನಿಯಾದಸ್ಥಿರಾಂ ವಾಚಮುತ್ಸಿಕ್ತಮನಸಾಂ ತಥಾ" ಮನುಂ 6-91.

ಉತ್ಸುಕ ಉತ್ಸುಕ (ವಿಂ) 1. ಇಷ್ಟವಾದುದನ್ನು ಪಡೆಯಲು ಪ್ರಯತ್ನವುಳ್ಳ. 2. ಇಷ್ಟವಾದುದನ್ನು ಪಡೆಯಲು ತವಕಪಡುವ. ಉತ್ಸುವತಿ—ಉತ್ + ಪ್ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಙ್" (ವಾಂ 3-2-160). "ಕನ್" (4-4-4). ಹ್ರಸ್ವ: (3-4-13). "ತಮುತ್ಸುಕಾಽವಕುರವೇಕ್ಷಣೋತ್ಸುಕಂ ಗವಾಂ ಗಣಾ: ಪ್ರಸ್ತುತಪೀವರೋಧಸ:" "ವಿಹಾರಭೂಮೇರಭಿಘೋಷಮುತ್ಸುಕಾ:" ಕಿರಾಂ 4-10, 31. "ಶ್ರುತ್ವಾ ರಾಮ: ಪ್ರಿಯೋದಂತಂ ಮೇನೆ ತತ್ಸಂಜ್ಞಮೋತ್ಸುಕ:" ರಘುಂ 12-66.

ಉತ್ಸುಕತಾ ಉತ್ಸುಕತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಟಿತ್ಸುಕೈ, ಇಷ್ಟವಾದುದನ್ನು ಪಡೆಯಲು ಆಸೆ, ಇಷ್ಟವಾದುದನ್ನು ಶೀಘ್ರವಾಗಿ ಪಡೆಯಲು ಪ್ರಯತ್ನ. ಉತ್ಸುಕಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (4-1-119). "ನಯತಿ ಸಂತತಮುತ್ಸುಕತಾಮಯಮ್" ಕಿರಾಂ 4-19.

ಉತ್ಸುತ್ರ ಉತ್ಸುತ್ರ (ವಿಂ) 1. ದಾರವನ್ನು ಬಿಟ್ಟಿರುವ, ದಾರದಿಂದ ಬೇರೆಯಾಗಿರುವ. (ಹಾರದ ಮಡೆ ಮೊದಲಾದುದು.) ಉತ್ಕ್ರಾಂತ: ಸೂತ್ರಮ್. "ಹಾರಾಣಾಂ ಮಣಿಭಿರ್ಘಾ-ಶ್ರಿತೌ ಸಮಂತಾದುತ್ಸುತ್ರೈರ್ಗುಣವದ್ವುಪಚ್ಚಕಾಮ್ಯಯೇವ" ಮಾಘಂ 6-43. 2. ನಿಯಮವನ್ನು ಮಾರಿದ, ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಅತಿ ಕ್ರಮಿಸಿದ, ಸೂತ್ರಾರ್ಥಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಾದ. "ಅನುತ್ಸುತ್ರ-ಪದನ್ಯಾಸಾ ಸದ್ವೃತ್ತಿ: ಸನ್ನಿವೃದ್ಧನಾ" ಮಾಘಂ 2-112.

ಉತ್ಸೃಜ್ಯ ಉತ್ಸೃಜ್ಯ (ಅವ್ಯಂ) ತ್ಯಜಿಸಿ, ಬಿಟ್ಟು. ಉತ್ + ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) "ಲ್ಯಪ್" (3-1-39). "ಉತ್ಸೃಜ್ಯ ಕುಸುಮಶಯನಂ ನಲಿನೀದಲಕಲ್ಪಿತಸ್ತನಾವರಣಮ್" ಶಾಕುಂ 3-19.

ಉತ್ಸೃಷ್ಟ ಉತ್ಸೃಷ್ಟ (ವಿಂ) 1. ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಉತ್ + ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಭಯೋತ್ಸೃಷ್ಟ-ವಿಭೂಷಾಣಾಂ ತೇನ ಕೇರಲಯೋಪಿತಾಮ್" ರಘುಂ 4-44. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. "ಉತ್ಸೃಷ್ಟಧ್ವಜಕು-ಕಚ್ಚಟಾ ಧರಿಸ್ರೀಮಾನೀತಾ ವಿದಿತನಯೈ: ಶ್ರಮಂ ವಿನೇತುಮ್" ಕಿರಾಂ 6-30. 3. ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ, ದಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಬಾಣ). 5. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, (ಹಗ್ಗ) ಬಿಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ. "ತುರಙ್ಗಮುತ್ಸೃಷ್ಟಮನಗಲಂ ಪುನ:" ರಘುಂ 3-39.

ಉತ್ಸೃಷ್ಟಿ ಉತ್ಸೃಷ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪರಿತ್ಯಾಗ, ಬಿಡುವಿಕೆ. ಉತ್ + ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94).

ಉತ್ಸೇಕ ಉತ್ಸೇಕ (ಪುಂ) 1. ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ. ಉತ್ + ಷಿಚ (ಕ್ಷರಣೆ) "ಘ್" (3-3-16). "ಉಪದಾ ವಿವಿಶು: ಶಶ್ವತೋತ್ಸೇಕಾ: ಕೋಸಲೇಶ್ವರಮ್" ರಘುಂ 4-90. 2. ಉದ್ದೇಶ, ಹೆಚ್ಚುವಿಕೆ, ಅಧಿಕವಾಗುವಿಕೆ.



“सौहित्यात्पृथक् कथन्ति रुधिरौत्सेकाश्चमत्कारिणः”

म० वी० ५-३३। ३. मेलक्ये एत्ति सुठियुवुदु.

उत्सेकिन् एत्तेकिन् (वि०) १. कळ्याद, अधिक्  
नाद. “उत्सेकिना बलमदेन विगाहमानम्” मुद्रा०  
१-२७। २. गव्ववुಳ್ಳ, अहंकारदिंद कळिद.  
उत्सेकोऽस्यास्ति “इनिः” (५-२-११५)। स्त्रियां  
“डीप्” (४-१-५)। उत्सेकिनी एत्तेकिनी. “भूयिष्ठं  
भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी” शाकु० ४-१७।

उत्सेचन एत्तेचन (न०) मेलक्ये एत्ति सुठियु  
वुदु. उत्+षिच (क्षरणे) “ल्युट्” (३-३-११५)।

उत्सेध एत्तेध (पुं०) १. एत्तर, णिन्नत्त. उत्+  
षिध (गत्याम्) “घञ्” (३-३-१८)। “बबन्ध  
बालारुणबभ्रु बल्कलं पयोधरोत्सेधविशीर्णसंहति” कुमा०  
५-८। (न०) २. दैह, ठो०. “उत्सेधश्चोच्छ्रये  
काये” विश्व०। “उत्सेधस्तूच्छ्रये न स्त्री क्लीबं  
संहतनेऽपि च” मेदि०।

उत्स्वन एत्स्वन (पुं०) १. गळ्ळ्याद शब्द. उत्  
उच्चैः स्वनः। (वि०) २. गळ्ळ्याद शब्दवुಳ್ಳ.  
उच्चैः स्वनो यस्य।

उत्स्वप्न एत्स्वप्न (वि०) कनवठिसुव, निद्रियल्ला  
स्यप्सुवागि मातनाडुव. उत्क्रान्तः अतिक्रान्तः  
स्वप्नं स्वप्नमयादाम्।

उद् एतद् (अव्य०) ऊ कळगिन अर्धगळगे द्युत्तेक  
वागिरुवुदुः १. प्रकाशपडिसुवुदु, ಹೊರ  
ಗೆಡಹುವುದು. उद्घोषति। उच्चरति। २. प्रत्येक  
वागिरुवुदु, ಬೇರ್ಪಡುವುದು. उद्गच्छति।  
३. एतद्‌ರ್ಥಕರ್ಮ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳುವುದು. उत्तिष्ठति।  
४. ಆಶ್ಚರ್ಯ. ५. ಪ್ರಾಧಾನ್ಯ. ६. ಮೇಲಕ್ಕೆ  
ಹಾರುವುದು. “ತस्ಮಿನ್‌ಉತ್ಪತ್ತಿ ಪುರಃ ಸುರಮುನಾವಿನ್ದೋ ಶ್ರಿಯಂ  
ವಿಭ್ರತಿ” ಮಾಘ० १-७५। ७. ಅಭಾವ. ८. ಮೋಕ್ಷ,  
ಮುಕ್ತಿ, ಬಿಡುಗಡೆ. ९. ಪ್ರಾಧಾನ್ಯ. १०. ಮೇಲು  
ಮುಖ. “उद्‌ಗ्रीवर्धनरवशङ्कया मयूरैः” किरा० ७-२२।  
११. एतद्‌ರ್ಥಮುಖವಾಗಿ ಹೋಗುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ  
ಹೊರಡುವುದು. “उद्‌ಗ್ರತೇन्दुमविभ्रतमिसां पश्यति स्म  
रजनीमवितृप्तः” किरा० ९-२४। १२. ಲಾಭ, ಸಂಪಾ  
ದನೆ. उत्पत्तिः। उत्पन्नम्। १३. ಬಂಧನ. १४. ಶಕ್ತಿ.  
“उत् प्रकाशे विभागे च प्राबल्यास्वास्थ्यशक्तिषु। प्राधान्ये  
बन्धनेऽभावे मोक्षे लाभोर्ध्वकर्मणोः” मेदि०।

उदक एतक् (न०) ನೀರು, ಜಲ. उन्दी (क्लेदने)  
“क्वन्” (उ० २-३९)। “अनीत्वा पङ्कतां धूलिमुदकं  
नावतिष्ठते” माघ० २-३४।

उदकान्त एतकाಂತ (पुं०) ನೀರಿನ ದಡ, ನೀರಿನ  
ಅಂಚು. “भगवन्, ओदकान्तात् स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य  
इति श्रूयते” शाकु० ४।

उदकुम्भ एतकुಂಭ (पुं०) ನೀರಿನ ಕೊಡ, ನೀರಿನ  
ಬಿಂದಿಗೆ. उदकस्य कुम्भः—उदकस्य उदादेशः (६-३-५७)।

उदकेचर एतकेಚರ (ಪುಂ) ಜಲಚರಪ್ರಾಣಿ, ನೀರಿ  
ನಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ ಜಂತು, ಮೀನು, ಹಕ್ಕಿ ಮೊದಲಾ  
ದುವು. उदके चरति—चर (गतौ) “टः” (३-२-१६)।  
सप्तम्या वा अलुक् (६-३-१४)। सप्तम्या लुकि उदकचरः।  
“णिनिः” (३-२-७८)। -चारिन्-आरिन्. स्त्रियां  
“डीप्” (४-१-५)। -चारिणी-आरिणी.

उदक्त एतक् (वि०) ಬಾವಿಯಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತ  
ಲ್ಪಟ್ಟ (ನೀರು ಮುಂತಾದುದು). उद्+अञ्चु (गतौ)  
“क्तः” (३-२-१०२)। “उदक्तमुदकं कूपात्” सि० कौ०।

उदक्प्रवण एतಕ್‌ಪ್ರವಣ (वि०) ದಕ್ಕಿಣ ದಿಕ್ಕಿ  
ನಿಂದ ಉತ್ತರಕ್ಕೆ ತಗ್ಗಾದ, ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಿನ ಕಡೆಗೆ  
ಇಳಿಜಾರಾಗಿರುವ.

उदक्य एतक्य (वि०) १. ನೀರನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ,  
ನೀರಿನಿಂದ ಬೆಳೆಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. उदकमर्हति  
“यत्” (५-१-६६)। २. ಅಶುಚಿ, ಮೈಲಿಗೆ. (ಸ್ನಾನ  
ದಿಂದ ಮೈಲಿಗೆಯು ನಿವೃತ್ತಿಯಾಗುವುದರಿಂದ ಅದು  
ನೀರಿನ ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳದ್ದು.) (ಸ್ತ್ರೀಂ) -क्या-क्या.  
ರಜಸ್ವಲೆ, ಮತುಮತಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು. ऋतुमत्य-  
प्युदक्यापि” अम०।

उदगयन एतगयन (न०) १. ಉತ್ತರಾಯಣ. उदक्  
उदीच्यामयनं यत्र। ಸೂರ್ಯನು ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ  
ಸಂಚರಿಸುವ (ಮಕರಮಾಸ ಮೊದಲುಗೊಂಡು  
ಮಿಥುನ ಮಾಸದವರೆಗೆ) ಆರು ತಿಂಗಳ ಕಾಲ.  
२. ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಸಂಚಾರ. उदक् उदीच्यामयनम्।

उददश एतದಶ (न०) ಉತ್ತರದಲ್ಲಿ ತುದಿಯುಳ್ಳ  
ಬಟ್ಟೆ. उदक् उदीच्यां दशा अञ्चलं यस्य।

उदग्र एतಗ್ರ (वि०) १. ಉನ್ನತವಾದ, ಎತ್ತರವಾದ.  
उद्‌गतमग्रं यस्य। “उदग्रतालध्वजमेतदग्रे सीमान्तरं  
सीरभृतो गुरोर्नः” याद० १८-१२३। “आक्रम्य संस्थित-  
मुदग्रविशालशृङ्गम्” माघ० ४-१९। २. ಹೆಚ್ಚಾದ,



अधिकवाद. "नयन् मधुलिहः स्वैत्यमुदग्रदशनांशुभिः" माघं २-२१। ३. दौड्डाद, लुदारवाद, गंभीरवाद. "हरिन्मणिश्याममुदग्रविग्रहम्" किरां १४-४१। ४. प्रसिद्धवाद, फनते पडेद. "वीर्योदग्रे राजशब्दे मृगेषु" रघुं १-६४। ५. कौड्यीरुव, लुद्वैकगौड. "मदोदग्राः ककुबन्तः सरितां कूलमुद्रुजाः" रघुं ४-२२। ६. शक्तिवन्त, बलशाली, पठाकृमि. "तत उदग्र इव द्विरदे मुनौ रणमुपेयुषि भीमभुजायुधे" किरां १८-१। ७. तीक्ष्णवाद, तीव्रवाद, संहिसलशक्यवाद. "अखिलतासन्नमुदग्र-तापं रवि दधानेऽप्यरविन्दधाने" माघं ४-१२।

उदग्रदत् लुदगृदत् (वि०) लुद्ववाद दन्तवृक्ष, एतुरवाद (लुब्ध) हल्लुगल्लु. उदग्रा दन्ता यस्य। दत् आदेशः (५-४-१४५)। स्त्रियां "डोप्" (४-१-५)। -वती -दती.

उदङ्क लुदङ्क (पु०) १. चर्मद चेल, एल्ले तुप्प मुन्तादुवन्नु इडुव तौगलिन चेल. उदच्यतेऽत्र -उद्+अञ्चु (गतौ) अधि० "घञ्" (३-३-१२३)। २. इक्यु. उदच्यतेऽनेन-कर० "घञ्"। "हृदयोदङ्क-संस्थानं कृतान्तानायसन्निभम्" भट्टि० ७-८३। ३. एब्बु मूषि. [ऊतनु गौतममहर्षिय प्रियशिशु. विद्याभ्यासानन्तरं गुरुपत्न्यै अर्पेक्षेयन्तं सौदासमहाराजं पत्न्यै कुण्डलगणं पठेदु तन्दु एप्पिसिदनु.]

उदङ्मुख लुदङ्मुख (वि०) लुत्तराभिमुखवाद, लुत्तर दिक्कि एदुराद. उदक् मुखं यस्य।

उदक् (च्) लुदक् (ङ्) (वि०) १. मेलक्य हौगुव, लुद्धर्ममुखवागी एलुव. २. मेलु भागद, लुद्धर्मप्रदेशद. ३. लुत्तर दिक्किन. ४. लुत्तर कालद, मुन्दिन कालद. उद्+अञ्चु (गतौ) "क्विन्" (३-२-५९)। (अव्य०) ५. लुत्तर दिक्कु, लुत्तर दिक्किन्द, लुत्तर दिक्किनलि. ६. लुत्तर देश, लुत्तर देशदिन्द, लुत्तर देशदलि. ७. लुत्तर काल, लुत्तर कालदिन्द, लुत्तर कालदलि. उद्+अञ्चु "क्विन्" (३-२-५९)। "अस्तातिः" (५-३-२७)। अस्तातेलुक् (५-३-३०)। उदीची दिक्, उदीच्या दिशः, उदीच्यां दिशि। "तेनोदीचीं दिशमनुसरेस्तिर्यंगायामशोभी" मेघं १-५७। उदङ् देशः, उदीचो देशात्, उदीचि देशे।

उदञ्चत् लुदञ्चत् (वि०) मेलक्य एलुत्तिरुव, मेलक्य हौरडुत्तिरुव. उद्+अञ्चु (गतौ) "शत्" (३-२-१२४)। "पिकादने शृण्वति भृङ्ग-हृकृतैर्दशामुदञ्चत्करणे वियोगिनाम्" नैष० १-८८।

उदञ्चन लुदञ्चन (न०) १. मेलक्य एतुवुदु, मेलक्य एल्युवुदु. उद्+अञ्चु (गतौ) भावे "ल्युट्" (३-३-११५)। "ज्ञानामृतोदञ्चनलालसानां लीलाघटीयन्त्रमिवाश्रितानाम्" हयग्री०। २. मुञ्चु, मुञ्चुव तल्लि. उद्+अञ्चु+णिच् कर० "ल्युट्" (३-३-११७)। (वि०) ३. बावियिन्द नीरन्नु मेलक्य एत्ति तरुव (तौल्लि, कौड मुन्तादुदु). कर्त० "ल्युः" (३-१-१३४)। ४. लुद्वरल्लि. कर० "ल्युट्" (३-१-१३४)।

उदञ्चित लुदञ्चित (वि०) १. मेलक्य एतुल्लि, मेलक्य एल्युल्लि, उद्+अञ्चु (गतौ)+णिच् "क्तः" (३-२-१०२)। "उदञ्चिता बाहुलतेतरस्या मोलिसजा हस्तगृहीतयाऽसीत" याद० १३-४९। २. पूजिसल्लि, गौरविसल्लि.

उदधान लुदधान (पु०) १. मेल, मेल. २. कौड, बिन्दिगी, गडिगी. उदकं धीयतेऽत्र -डु धाञ् (धारणपोषणयोः) "ल्युट्" (३-३-११७)। उदकस्य उदादेशः (६-३-५७)।

उदधि लुदधि (पु०) १. समुद्र, कडलु. उदकानि धीयन्तेऽत्र -डु धाञ् (धारणपोषणयोः) "किः" (३-३-९३)। उदादेशः (६-३-५७)। "उदधेरिव मन्थेन पीडितस्य समुत्थितः" याद० १६-५। २. फल्लि, बिन्दिगी, कौड, गडिगी. उदकं धीयतेऽस्मिन् उदधि-घटः सि० कौ० (६-३-५८)। ३. मेल, मेल. ४. जलशय, नीरिन मडु. ५. नाल्लु संय्ये.

उदधिकन्या लुदधिकन्या -सुता -सुता (स्त्री०) समुद्रराजं मगलु, लक्खि उदधेः कन्या सुता वा।

उदधिमल लुदधिमल (पु०) समुद्रद नौरी. उदधेमल इव।

उदधिमेखला लुदधिमेखला (स्त्री०) भूमि, भूमिण्डल. उदधिमेखलेव यस्याः।

उदन्त लुदन्त (पु०) १. वृत्तान्त, समोच्चार. उदगतोऽन्तो यस्य। "श्रुत्वा रामः प्रियोदन्तं मेने



ತತ್ಸಂಕ್ರಮೋತ್ಸುಕ: " ರಘುಂ ೧೨-೬೬। 2. ಸಾಧು, ಗುಣ  
ಶಾಲಿ, ಧಾರ್ಮಿಕ, ಪುಣ್ಯಾತ್ಮ, ಶೀಲವಂತ. "ಉದಂತ:  
ಸಾಧುವಾರ್ತಯೋ: " ಮೇದಿಂ।

ಉದಯಾ ಉದಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಯಾರಿಕೆ, ನೀರಡಿಕೆ,  
ನೀರು ಕುಡಿಯುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಉದಕಸ್ಯೇಚ್ಛಾ—ಉದಕ-  
ಮಾತಮ ಇಚ್ಛತಿ—"ಕಯ್" (೩-೧-೮)। ಉದಯ "ಅ:"  
(೩-೩-೧೦೨)। ಉದನಾದೇಶ: ನಿಪಾಂ (೭-೪-೩೪)। "ಮುನೇ,  
ನಿರ್ವರ್ತತಾಮುದಯಾಪ್ರತೀಕಾರ:" ವೇಣೀಂ ೬।

ಉದಯತ್ ಉದಯತ್ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಉದಕಾನಿ  
ಸಂತಯತ್—ಉದಕ "ಮತುಪ್" ಉದನ್ಭಾವಶ್ಚ ನಿಪಾಂ (೮-೨-೧೩)।  
"ನ ಸುಖಂ ಪ್ರಾರ್ಥಯೇ ನಾರ್ಥಮುದಯದ್ವಿಚಿಚ್ಛಲಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೧-೬೬।  
"ಉದಯತಾ ಸಾತವತೀ ಸಮಂತಾತ್ ಅಯನ್ವಪ್ರಾಯಿತತುಙ್ಗವೇಲಾ"  
ಯಾದಂ ೧೮-೧೨೧।

ಉದಪಾತ್ರ ಉದಪಾತ್ರ (ನಂ) ನೀರಿನ ಪಾತ್ರೆ. ಉದಕಸ್ಯ  
ಪಾತ್ರಮ್। ಉದಾದೇಶ: (೬-೩-೪೭)। "ಠಡೆ ಗಜೇನ ಸರಿತ:  
ಸರಪಾವತಾರೆ ರಿಕ್ತೋದಪಾತ್ರಕರಮಾಸ್ತ ಚಿರಂ ಜನೌಘ:"  
ಮಾಘಂ ೪-೩೩।

ಉದಪಾನ ಉದಪಾನ (ಪುಂ) ಕೂಪ, ಬಾವಿ. ಉದಕಂ  
ಪಿಬಂತ್ಯತ್ರ—ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)।  
ಉದಾದೇಶ: (೬-೩-೪೭)। "ಯಾವಾನರ್ಥ ಉದಪಾನೇ ಸರ್ವತ:  
ಸಂಪ್ಲುತೋದಕೇ। ತಾವಾನ್ ಸರ್ವೇಷು ವೇದೇಷು ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ವಿಜಾನತ:"  
ಗೀತಾ ೨-೪೬।

ಉದಭಾರ ಉದಭಾರ (ಪುಂ) ನೀರಿನ ಪ್ರವಾಹ, ನೀರಿನ  
ಠಾಣಿ. ಉದಕಸ್ಯ ಭಾರ:। ವಾ ಉದಾದೇಶ: (೬-೩-೬೦)।  
ಪಕ್ಷೇ ಉದಕಭಾರ:।

ಉದಮಾನ ಉದಮಾನ (ಪುಂ) ಒಂದು ಅಳತೆ, ಅಡಕದ  
ಐವತ್ತನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ, ಕೊಳಗದ ಐವತ್ತನೆಯ  
ಒಂದು ಭಾಗದ ಅಳತೆ. "ಕುಲ್ಯಾ ಸ್ಯಾದಷ್ಟಭಿರ್ದ್ರೋಣಿ-  
ಪಾದೇನ ಚಾಡಕ:। ಅಸ್ಯಾರ್ಥಶತಿಕೋ ಭಾಗ ಉದಮಾನ ಉದಾಹೃತ:"।

ಉದಮೇಘ ಉದಮೇಘ (ಪುಂ) ನೀರಿನಿಂದ ತುಂಬಿದ ಮೋಡ.  
ಉದಕೇನ ಪೂರ್ಣೋ ಮೇಘ:। ಉದಾದೇಶ: (೬-೩-೪೭)।

ಉದಯ ಉದಯ (ಪುಂ) 1. ಉದಯ ಪರ್ವತ, ಪ್ರಾತಃ  
ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನು ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ (ಪೂರ್ವ  
ದಿಕ್ಕಿನ) ಪರ್ವತ. ಉದ + ಇನ್ (ಗತೌ) "ಅಚ್"  
(೩-೩-೪೬)। "ಉದಯಮುದಿತದೀಪ್ತಿಯಾತಿ ಯ: ಸಜ್ಜತೌ ಮೇ  
ಪತತಿ ನ ವರಮಿಂದು: ಸೋಽಪರಾಮೇಷ ಗತ್ವಾ" ಮಾಘಂ ೧೧-೧೨।  
2. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಏಳಿಗೆ, ಉನ್ನತಿ. "ದ್ವಿಷತಾಮುದಯ: ಸುಮೇಘಸಾ  
ಗುರುಸ್ವಂತತರ: ಸುಮರ್ಷಣ:" ಕಿರಾಂ ೨-೮। "ಆತ್ಮೋದಯ:

ಪರಜ್ಞಾನಿ:" ಮಾಘಂ ೨-೩೦। 3. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಕಾಣಿಸಿ  
ಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ, ಹುಟ್ಟುವಿಕೆ. "ಅಪೇಕ್ಷತೇ ಪ್ರತಯಮುತ್ತಮಂ ತ್ವಾಂ  
ಬೀಜಾಡ್ಕುರ: ಪ್ರಾಗುದಯಾದಿವಾಮ್ಭ:" ಕುಮಾಂ ೩-೧೮। 4. ಲಾಭ,  
ಹುಟ್ಟುವಳಿ, ಆದಾಯ. "ವಿಶೇಷತೋಽಸಹಾಯೇನ ಕಿನ್ತು ರಾಜ್ಯಂ  
ಮಹೋದಯಮ್" ಮನುಂ ೭-೪೪। 5. ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರ ಮೊದ  
ಲಾದ ಗ್ರಹಗಳ ಹುಟ್ಟುವಿಕೆ. "ನಿಯತಸ್ತಿಮಿತಾಂ ವೇಲಾಂ  
ಚಂದ್ರೋದಯ ಇವೋದವೇ:" ರಘುಂ ೧೨-೩೬। 6. ಸೃಷ್ಟಿ,  
ನಿರ್ಮಾಣ. "ಯೌ ತು ಸ್ವಪ್ನಾವಬೋಧೌ ತೌ ಭೂತಾನಾಂ ಪ್ರಲಯೋದಯೌ"  
ಕುಮಾಂ ೨-೮। 7. ಶ್ರೇಯಸ್ಸು. "ವಿಹೀಯಮಾನಾನುದಯಾಯ  
ತೇನ" ಕಿರಾಂ ೩-೩೨। 8. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಏಳಿಗೆ,  
ಸಂಪತ್ತು. "ತೇಜೋದಯಸ್ಯ ಯುಗಪದ್ವಯಸನೋದಯಾಭ್ಯಾಂ ಲೋಕೋ  
ನಿಯಮ್ಯತ ಇವಾತ್ಮದಶಾಂತರೇಷು" ಶಾಕುಂ ೪-೧। 9. ರಾಜನ  
ವೃದ್ಧಿ ಕ್ಷಯ ಸ್ಥಾನಗಳು. "ಪಙ್ಗುಣಾ: ಶಕ್ತಯಸ್ತಿಸ್ತ: ಸಿದ್ಧಯಶ್ಚೋದಯಾಸ್ತ್ರಯ:" ಮಾಘಂ ೨-೨೬। 10. ಮೇಲಕ್ಕೆ  
ಏಳುವುದು. 11. ಕಾರ್ಯಫಲ, ಪರಿಣಾಮ. "ಅಪೇ-  
ಕ್ಷಿತಂ ಭರ್ತೃಸ್ಥಿತೋದಯಂ ಸಖೀಜನೋದೀಕ್ಷಣಕೌಮುದೀಮುಖಮ್"  
ರಘುಂ ೩-೧। 12. ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ, ಕಾರ್ಯವು ನೆರ  
ವೇರುವಿಕೆ, ಈಡೇರುವಿಕೆ. "ಆಗಮೇ: ಸದೃಶಾರಮ್ಭ:  
ಪ್ರಾರಮ್ಭಸದೃಶೋದಯ:" ರಘುಂ ೧-೧೪। 13. ಲಗ್ನ, ರಾಶಿಗಳ  
ಪ್ರಾರಂಭಸ್ಥಾನ.

ಉದಯಗಾಮಿನಿ ಉದಯಗಾಮಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೂರ್ಯೋ  
ದಯದ ಸಮಯವನ್ನು ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವ ತಿಥಿ, ಸೂರ್ಯೋ  
ದಯ ಕಾಲದ ಸಂಬಂಧವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ತಿಥಿ.  
ಉದಯ ಸೂರ್ಯೋದಯಂ ಗच्छति—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಗಿಣಿ:"  
(೩-೧-೧೩೪)। "ಛೀಪ್" (೪-೧-೪)। "ಉದಯನ್ವೇವ  
ಸವಿತಾ ಯಾಂ ತಿಥಿಂ ಪ್ರತಿಪದ್ಯತೇ। ಸಾ ತಿಥಿ: ಸಕಲಾ ಜಯಾ  
ದಾನಾಧ್ಯಯನಕರ್ಮಸು"।

ಉದಯಗಿರಿ ಉದಯಗಿರಿ (ಪುಂ) ಉದಯ ಪರ್ವತ,  
ಸೂರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹಗಳು ಉದಯಿಸುವ  
ಪರ್ವತ. "ತತ ಉದಯಗಿರೇರಿವೇಕ ಏಪ ಸ್ಫುರಿತಗುಣಶ್ರುತಿಮುಂದರ:  
ಕಲಾವಾನ್" ಮಾಲತೀಂ ೨-೧೦।

ಉದಯತ್ ಉದಯತ್ (ವಿಂ) ಹುಟ್ಟುತ್ತಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ  
ಏಳುತ್ತಿರುವ. ಉದ + ಇ (ಗತೌ) "ಇತ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
"ಉದಯತಿ ವಿತತೋರ್ಧ್ವರಶ್ಮಿರಜ್ಜಾವಹಿಮಕರೇ ಹಿಮಧಾಮ್ನಿ ಯಾತಿ  
ಚಾಸ್ತಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೨೦।

ಉದಯನ ಉದಯನ (ಪುಂ) 1. ವತ್ಸರಾಜ, ಚಂದ್ರವಂಶದ  
ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. 2. ಅಗಸ್ತ್ಯಮುನಿ. 3. ಉದಯನಾ  
ಚಾರ್ಯರು, ಕಿರಣಾವಳಿ ಕುಸುಮಾಂಜಲಿ ಮೊದ



उदस्त लुदस्त (वि०) 1. कैचके तल्लुत्त. उद् +  
असु (क्षेपणे) "क्तः" (३-२-१०२)। "उदस्ताधोरणः"  
दशकु०। 2. मैलके एसैयल्लुत्त, मैलके



ಹಾಸ್ಯಪ್ರಬಂಧ. "ದಯಿತಾಯ ಸಾಸವಮುದಸ್ತಮಪದವಸಾದಿನಿ:  
ಕರಾತ್" ಮಾಘಂ ೧೫-೮೧. 3. ತಳ್ಳುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು.

ಉದಾಹರಣೆ ಉದಾಹರಣೆ (ನಂ) ನೀರು ತುಂಬಿದ ಪ್ರದೇಶ.

ಉದಾಹರಣೆ ಸ್ಥಾನಮ್. ಉದಾಹರಣೆ: (೬-೩-೫೭)।

ಉದಾಹರಣೆ ಉದಾಹರಣೆ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರು ತುಂಬಿದವ  
ಪಾತ್ರ, ಹಂಡೆ, ಕಡಾಯ. ಉದಾಹರಣೆ ಸ್ಥಾನಮ್. ಉದಾಹರಣೆ:  
(೬-೩-೫೭)।

ಉದಾಹರಣೆ ಉದಾಹರಣೆ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಸೆಯ  
ಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎರಚಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ,  
ಮುಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಉದಾಹರಣೆ+ಅಸು(ಕ್ಷೇಪಣೆ)ಕರ್ಮಂ  
"ಶಾನ್ತ" (೩-೨-೧೨೪)। "ಇತ್ಯಂ ವಿಹೃತ್ಯ ವನಿತಾಭಿರುದಸ್ಯ-  
ಮಾನಂ ಪೀನಸ್ತನೋರೂಪನಸ್ಥಲಶಾಲಿನಿಭಿಃ" ಕಿರಾಂ ೮-೫೫।

ಉದಾಹರಣೆ ಉದಾಹರಣೆ (ನಂ) ಬಿಂದಿಗೆ, ಕೊಡೆ. ಉದಾಹರಣೆ  
ಹೀಯತೇಜೇನ - ಹೀ (ಹರಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)।

ಉದಾಹರಣೆ ಉದಾಹರಣೆ (ವಿಂ) ನೀರನ್ನು ಹೊತ್ತುತರುವ.  
ಉದಾಹರಣೆ ಹರತಿ - ಹೀ (ಹರಣೆ) "ಅಙ್" (೩-೨-೧)।  
"ಪ್ರವಿವಿಕ್ತಾ ನದೀ ರಾತ್ರಾವುದಹಾರೋಹ್ಮಾಗತಃ"।

ಉದಾಹರಣೆ ಉದಾಹರಣೆ (ಫಂ) 1. (ಅಕ್ಷರಗಳು ಹುಟ್ಟುವ ಸ್ಥಾನ  
ಗಳಲ್ಲಿ) ಮೇಲುಭಾಗಗಳಲ್ಲಿ ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ಸ್ವರ  
ವರ್ಣ. ಉದಾಹರಣೆ ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಡುವ-ಉದಾಹರಣೆ+ದಾನ್ (ದಾನೆ) "ಕ್ತಃ"  
(೩-೨-೧೦೨)। "ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಡುವ" ಸಿಂ ಕೌಂ. "ನಿಹಂತ್ಯ-  
ರೀನೇಕಪದೇ ಯ ಉದಾಹರಣೆ ಸ್ವರಾನಿವ" ಮಾಘಂ ೨-೯೫। 2. ನಾಲ್ಕು  
ವಿಧ ನಾಯಕರಲ್ಲೊಬ್ಬ. ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ನಾಯಕರು:  
(1) ಧೀರೋದಾಹರಣೆ, (2) ಧೀರೋದಾಹರಣೆ, (3) ಧೀರಲಲಿತಃ ಮತ್ತು  
(4) ಧೀರಶಾನ್ತಃ। "ಧೀರೋದಾಹರಣೆ ಧೀರೋದಾಹರಣೆಸ್ತಥಾ ಧೀರ-  
ಲಲಿತಶ್ಚ। ಧೀರಪ್ರಶಾನ್ತ ಇತ್ಯಯಮುಕ್ತಃ ಪ್ರಥಮಶ್ಚತುರ್ಭೇದಃ।  
ಅವಿಕಲ್ಪನಃ ಕ್ಷಮಾವಾನತಿಗಮ್ಭೀರೋ ಮಹಾಸತ್ವಃ। ಸ್ಥೇಯಾ-  
ನ್ರಿಗಡಮಾನೋ ಧೀರೋದಾಹರಣೆ ದೃಢವ್ರತಃ ಕಥಿತಃ" ಸಾಂ ೧೦-೩-೩೧,  
೩೨। 3. ನಗಾರಿ, ಭೇರಿ, ದುಂದುಭಿ. 4. ಒಂದು  
ಅರ್ಧಲಂಕಾರ; ಲೋಕೋತ್ತರವಾದ ಐಶ್ವರ್ಯಾದಿ  
ಸಮೃದ್ಧಿಯ ವರ್ಣನೆ ಅಥವಾ ಪ್ರಸ್ತುತೋಪಸ್ಮಾರಕ  
ಶ್ಲೋಕನೀಯಚರಿತ್ರದ ವರ್ಣನೆಯು ಉದಾಹರಣೆ  
ಲಂಕಾರ. "ಲೋಕಾತಿಶಯಸಂಪತ್ತಿವರ್ಣನೋದಾಹರಣೆಮುಚ್ಯತೇ। ಯದ್ವಾಪಿ  
ಪ್ರಸ್ತುತಸ್ಯಾಜ್ಞಂ ಮಹತಾಂ ಚರಿತಂ ಭವೇತ್" ಸಾಂ ೧೦-೧೪।  
(ವಿಂ) 5. ಘನತೆ ಹೊಂದಿದ, ಹಿರಿಮೆ ಪಡೆದ, ಶ್ರೇಷ್ಠ  
ವಾದ. 6. ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ. "ತಸ್ಯಾಭವದ್ವತ್ಕ ಇತ್ಯುದಾಹರಣೆ:  
ಕ್ಷಮೀ ಮೃದುರ್ಮಪರಸ್ತನುಜಃ" ಮಾಘಂ ೨೦-೮೨। 7. ಉದಾಹರಣೆ,  
ತೃಗುಣೀಲ, ದಾನಿ.

ಉದಾಹರಣೆ ಉದಾಹರಣೆ (ಫಂ) ಪಂಚಪ್ರಾಣವಾಯುಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು, ಕಂಠಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಉರ್ಧ್ವಮುಖವಾಗಿ  
ಆಡುವ ಒಂದು ಪ್ರಾಣವಾಯು. ಪಂಚಪ್ರಾಣ  
ವಾಯುಗಳು: (1) ಪ್ರಾಣ, (2) ಆಪಾನ್, (3) ಸಮಾನ್, (4) ಉದಾಹರಣೆ ಮತ್ತು (5) ವ್ಯಾನ್. ಉದಾಹರಣೆ  
ಉದಾಹರಣೆನಾನಿತ್ಯನೇನ - "ಘಜ್" (೩-೩-೧೨೧)।

ಉದಾಹರಣೆ ಉದಾಹರಣೆ (ವಿಂ) 1. ದಾನಿ, ತೃಗುಣೀಲ. ಉದಾಹರಣೆ-  
ರಾಸಮಂತಾದೃಷ್ಟಿತಿ - ಹೀ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।  
"ಉದಾಹರಣೆ: ಸರ್ವ ಉದಾಹರಣೆ ಜ್ಞಾನೀತ್ವಾತ್ಮೇವ ಮೇ ಮತಮ್" ಗೀತಾ ೭-೧೮।  
2. ಘನತೆ ಹೊಂದಿದ, ಹಿರಿಮೆಯುಳ್ಳ, ಔದಾರ್ಯವುಳ್ಳ.  
"ಇತ್ಯರ್ಥಪಾತ್ರಾನುಮಿತವ್ಯಯಸ್ಯ ರಘೋದಾರಾಮಪಿ ಗಾಂ ನಿಶಮ್ಯ"  
ರಘುಂ ೫-೧೨। 3. ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ, ಖ್ಯಾತಿಪಡೆದ.  
ಉದಾಹರಣೆ - ಹೀ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ಉದಾಹರಣೆರೋದಯಂ  
ದಯಾವತಃ ಪ್ರಶಾನ್ತವಾಙ್ ದಿಶತೋಽಭಿರಕ್ಷಯಾ" ಕಿರಾಂ ೧-೧೮।  
4. ಬಹಳವಾದ, ಸಮೃದ್ಧಿಯಾದ. "ದದತ್ಯಾ ಶಾಲಿನಾಮ-  
ವನತಿಮುದಾರೆ ಸತಿ ಫಲೇ" ಮುದ್ರಾಂ ೩-೮। 5. ಮೃದು  
ಸ್ವಭಾವದ, ದಯಾಳು, ಸಹೃದಯ. "ವಿನೋದಯಿಷ್ಯಂತಿ  
ನವಾಭಿಷಜ್ಞಾಮುದಾರವಾಚೋ ಮುನಿಕನ್ಯಕಾಸ್ತ್ವಾಮ್" ರಘುಂ  
೧೪-೭೭। 6. ರಮಣೀಯವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ.  
"ದೃಷ್ಟೇರಿವ ಕ್ಷಿತಿಭೃತಾಂ ದ್ವಿರದೇಃಉದಾರತಾರಾವಲಿವಿರಚನೇ-  
ರ್ವ್ಯರೂಪಿಣಿವಾಸಾಃ" ಮಾಘಂ ೫-೨೧। 7. ದೊಡ್ಡವಾದ,  
ವಿಸ್ತಾರವಾದ, ಅಗಲವಾದ. "ಶತ್ರುಘ್ನಪ್ರತಿವಿಹಿತೋಪಕಾರ್ಯ-  
ಮಾರ್ಯಃ ಸಾಕೇತೋಪವನಮುದಾರಮಧ್ಯವಾಸ" ರಘುಂ ೧೩-೭೯।  
8. ಋಜುವಾದ, ಸರಳವಾದ, ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ. 9. ಅರ್ಥ  
ವತ್ತಾದ. "ಉದಾರಚೇತಾ ಗಿರಮಿತ್ಯುದಾರಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೧೦।

ಉದಾಹರಣೆ ಉದಾಹರಣೆ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ಕೀರ್ತಿಶಾಲಿ  
ಯಾದ, ಹೆಚ್ಚು ಯಶಸ್ಸು ಪಡೆದ, ಖ್ಯಾತಿವಂತನಾದ.  
ಉದಾಹರಣೆ ಕೀರ್ತಿಯಸ್ಯ। "ಉದಾಹರಣೆರೋದಯಂ ದಯಾವತಃ ಪ್ರಶಾನ್ತವಾಙ್  
ದಿಶತೋಽಭಿರಕ್ಷಯಾ" ಕಿರಾಂ ೧-೧೮।

ಉದಾಹರಣೆ ಉದಾಹರಣೆ (ವಿಂ) ಉದಾಹರಣೆವಾದ  
ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಧಾರಾಳ ಹೃದಯವುಳ್ಳ, ದೊಡ್ಡ ಮನ  
ಸ್ಸುಳ್ಳ. ಉದಾಹರಣೆ ಚೇತೋ ಯಸ್ಯ। "ಉದಾಹರಣೆತಾ ಗಿರಮಿತ್ಯುದಾರಾಂ  
ದ್ವಿಪಾಯನೇನ ದಿಧೇ ನರೇಂದ್ರಃ" ಕಿರಾಂ ೩-೧೦।

ಉದಾಹರಣೆ ಉದಾಹರಣೆ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಔದಾರ್ಯ, ದಾನ  
ಶೀಲತೆ, ಕೊಡುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಉದಾಹರಣೆ ಭಾವ: "ತಲ್"  
(೫-೧-೧೧೯)। 2. ಗಾಂಭೀರ್ಯ. 3. ಸೌಂದರ್ಯ.  
"ಯತ್ರೈದಿತ್ವಮುದಾರತಾ ಚ ವಚಸಾಂ ಯಚ್ಚಾರ್ಥತೋ ಗೌರವಮ್"  
ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೦। 4. ಕಠಿಣವರ್ಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ



ಶಬ್ದದಲ್ಲಿರುವ ವಿಕಟತ್ವಲಕ್ಷಣರೂಪವಾದ ಒಂದು ಶಬ್ದಗುಣ, ಕೇಳುವವರಿಗೆ ವರ್ಣಗಳು ನರ್ತನ ಮಾಡುತ್ತಿರುವಂತೆ ಭಾವನೆಯುಂಟುಮಾಡುವ ಒಂದು ಶಬ್ದಗುಣ. "ವಿಕಟತ್ವಮುದಾರತಾ" ಕಾಂ ಸಂ ೩-೧-೨೨.

**ಉದಾರಧಿ ಉದಾರಧೀ (ಪುಂ) 1.** ವಿಷ್ಣು. ಉದಾರ ಸಾರ್ವಜನಿಕ ಲಕ್ಷಣಾ ಧೀರಸ್ಯ. "ಸರ್ವೋಪಜೀವ್ಯಸಾರ್ವಜನಿಕಾದ್ಯುಚ್ಯತೇ ಸ ಉದಾರಧಿಃ". "ನಿಮಿಷೋನಿಮಿಷಃ ಸಖಿ ವಾಚಸ್ಪತಿ-ಉದಾರಧಿಃ" ವಿಂ ಸಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಉತ್ತಮವಾದ ಬುದ್ಧಿ, ಧಾರಾಳವಾದ ಬುದ್ಧಿ. (ವಿಂ) 3. ಉತ್ತಮ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ, ಉದಾರ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. ಉದಾರಾ ಬುದ್ಧಿ-ಯಸ್ಯ.

**ಉದಾಸ ಉದಾಸ (ಪುಂ) 1.** ಉದಾಸೀನತೆ, ಉಪೇಕ್ಷೆ. ಉದ್+ಆಸ (ಉಪೇಕ್ಷಣೆ) "ಏತ್" (೩-೩-೧೮). 2. ವಿರಕ್ತ, ಪ್ರಾಪಂಚಿಕಸೌಖ್ಯವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದ ಸಂನ್ಯಾಸಿ. 3. ನಿಃಸ್ಪೃಹ, ಆಸೆಯಿಲ್ಲದವನು. ಉದಾಸೀ-ಉದ್+ಆಸ ಕರ್ತಂ "ಅತ್" (೩-೧-೧೩೪). 4. ಉದಾಸೀನ, ಯಾವ ಪಕ್ಷಕ್ಕೂ ಸೇರದವನು.

**ಉದಾಸಿತ ಉದಾಸಿತ (ವಿಂ) ಉದಾಸೀನನಾಗಿರುವ, ಉಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದಿರುವ, ತಟಸ್ಥನಾಗಿರುವ. ಉದ್+ಆಸ (ಉಪೇಕ್ಷಣೆ) "ಃ" (೩-೪-೭೨).** "ಉದಾಸಿತೇನೈವ ಮಯೇದಮುಚ್ಯತೇ ಭಿಷಾ ನ ತೇಮ್ಯಃ ಸ್ಮರತಾನವಾನ್ ವಾ" ನೆಪಂ ೧-೧೩೫.

**ಉದಾಸಿತಃ ಉದಾಸಿತಃ (ವಿಂ) ಉದಾಸೀನ, ಉಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದಿರುವವನು, ತಟಸ್ಥ. ಉದ್+ಆಸ (ಉಪೇಕ್ಷಣೆ) "ತ್" (೩-೧-೧೩೩).** "ಉದಾಸಿತಾರಂ ನಿಗೃಹೀತಮಾನಸೇ-ಗೃಹೀತಮಧ್ಯಾತ್ಮದೃಶಾ ಕಥ್ಯತೇ" ಮಾಘಂ ೧-೩೩.

**ಉದಾಸೀನ ಉದಾಸೀನ (ಪುಂ) 1.** ಶತ್ರು ಅಥವಾ ಮಿತ್ರ ರಾಷ್ಟ್ರಕ್ಕೆ ಆಚಿನ ರಾಷ್ಟ್ರದ ರಾಜ. ಉದಾಸೀ-ಉದ್+ಆಸ (ಉಪೇಕ್ಷಣೆ) "ಶಾನ್" (೩-೨-೧೨೪). ಇತ್ವಂ (೭-೨-೮೩). "ಉದಾಸೀನಃ ಪರತರಃ" ಅಮಂ. (ವಿಂ) 2. ತಟಸ್ಥ, ಉಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಯಾವ ಚಿಂತೆಯೂ ಇಲ್ಲದ, ಯಾವ ಪ್ರಯತ್ನವೂ ಇಲ್ಲದ. "ಯಾನಮಾಹುಃ ಉದಾಸೀನಂ ತ್ವಾಮುತ್ಥಾಪಯತಿ ದ್ವಯಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೫೭. "ಕುಮಾರ, ಇಹ ಖಲು ಅರ್ಯಶಾಸ್ತ್ರವ್ಯವಹಾರಿಣಾಮರಿಮಿತ್ರೋದಾಸೀನವ್ಯವಸ್ಥಾ" ಮುಕ್ತಾಂ ೫.

**ಉದಾಸಿಹಿತ ಉದಾಸಿಹಿತ (ಪುಂ) 1.** ಪ್ರತೀಹಾರ, ದ್ವಾರ ಪಾಲಕ. 2. ಅಧ್ಯಕ್ಷ, ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕ. 3. ಗೂಢಚಾರ. 4. ದೂತ. "ಉದಾಸಿಹಿತಃ ಪ್ರತೀಹಾರೇಷ್ಯಕ್ಷೋ ಪ್ರಣಿಧೌ ಚರೇ" ವಿಶ್ವಂ. "ಉದಾಸಿಹಿತಃ ಪ್ರತೀಹಾರೇ ಚರಭೇದೇ ಚ ಕೀರ್ತಿತಃ"

ಶಾಶ್ವಂ. ರಾಜನ ಐದು ವಿಧ ಗೂಢಚಾರರಲ್ಲೊಬ್ಬ. ಐದು ವಿಧ ಗೂಢಚಾರರು: (1) ಕಾಪಟಿಕ, (2) ಉದಾಸಿಹಿತ, (3) ಗೃಹಪತಿ, (4) ವೈದೇಹಿಕ ಮತ್ತು (5) ತಾಪಸ.

(1) **ಕಾಪಟಿಕ:** ಕಪಟ ವ್ಯವಹಾರದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು ಕಾಪಟಿಕ. ಪರರ ಮರ್ಯಾದೆಯನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ ಮತ್ತು ಕಪಟ ವ್ಯವಹಾರದಿಂದ ವರ್ತಿಸುವ ಇವನನ್ನು ಗೌರವಿಸಿ ಇವನಿಗೆ ಸಾಕಾದಷ್ಟು ದ್ರವ್ಯ ಸಹಾಯಮಾಡಿ ಯಾವನಾದರೊಬ್ಬನ ದುರ್ನಡತೆಯನ್ನು ಕಂಡಕೂಡಲೆ ತನಗೆ ತಿಳಿಸಬೇಕೆಂದು ರಾಜನು ನಿಯಮಿಸುವನು.

(2) **ಉದಾಸಿಹಿತ:** ಸಂನ್ಯಾಸಿ ವೇಷಧಾರಿಯಾದ ಚಾರನು ಉದಾಸಿಹಿತನು. ಬಾಹ್ಯಾಂತಃಶುದ್ಧಿಯಿರುವ, ಇತರರ ಗುಣದೋಷಗಳನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅರಿತಿರುವ ಜೀವನಾವೇಕ್ಷೆಯಾದ ಇವನನ್ನು ಸಂನ್ಯಾಸಿಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿ ದೊಡ್ಡ ಮಠವೊಂದರಲ್ಲಿ ಕುಳ್ಳಿರಿಸಿ ಜೀವಿಕೆಗಾಗಿ ಸಾಕಾದಷ್ಟು ಭೂಮಿಯನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ರಾಜನು ಇವನ ಮೂಲಕ ಇತರರ ದೋಷಗಳನ್ನು ತಿಳಿಯಬೇಕು.

(3) **ಗೃಹಪತಿ:** ಗೃಹಸ್ಥ ವೇಷಧಾರಿಯಾದ ಚಾರನು ಗೃಹಪತಿ. ಜೀವನಕ್ಕೆ ಬೇರೆ ಉಪಾಯವಿಲ್ಲದೆ ವ್ಯವಸಾಯದಿಂದ ಜೀವಿಸುವ ಬಾಹ್ಯಾಂತಃಶುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿಯಾದ ಇವನನ್ನು ಗೃಹ, ಧನ, ಭೂಮಿ ಇವುಗಳಿಂದ ಗೌರವಿಸಿ ರಾಜನು ಇವನ ಮೂಲಕ ದೇಶದ ರಹಸ್ಯವಿಷಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಬೇಕು.

(4) **ವೈದೇಹಿಕ:** ವಾಣಿಜ್ಯ ವೃತ್ತಿಯಿಂದ ವರ್ತಕನ ವೇಷಧಾರಿಯಾದ ಚಾರನು ವೈದೇಹಿಕ. ಜೀವನಕ್ಕೆ ಗತಿಯಿಲ್ಲದ ಇವನನ್ನು ಪುಷ್ಕಳ ಧನದಿಂದ ವಶಪಡಿಸಿಕೊಂಡು ವ್ಯಾಪಾರದಲ್ಲಿ ನಿಯಮಿಸಿ ಇವನ ಮೂಲಕ ದೇಶದ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿಯಬೇಕು.

(5) **ತಾಪಸ:** ಚೀರ ಜಟಾಧಾರಿಯಾಗಿ ಕಪಟ ಶಿಷ್ಯರೊಡಗೂಡಿ ಒಂದು ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವ ಚಾರನು ತಾಪಸನು. ಜೀವಿಕೆಗೆ ಗತ್ಯಂತರವಿಲ್ಲದ ಇವನನ್ನು ರಾಜನು ದ್ರವ್ಯದಿಂದ ವಶಪಡಿಸಿಕೊಂಡು ಕಪಟ ಸಂನ್ಯಾಸಿಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿ ಒಂದು ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿರಿಸಬೇಕು. ಈ ಕಪಟ ತಾಪಸನು ಕಪಟ ಶಿಷ್ಯರೊಡಗೂಡಿ ರಾಜನು ಕಲ್ಪಿಸಿರುವ ಆಸ್ತಿಯಿಂದ ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಸುಖಜೀವನ ನಡೆಸುತ್ತ ಎರಡು ಮೂರು



ತಿಂಗಳಿಗೊಂದು ಸಲ ಉಟಮಾಡುವವನಂತೆ ನಟಿಸುತ್ತ ಇರಬೇಕು. ಇವನ ಕಪಟ ಶಿಷ್ಯರು ಇವನು ತ್ರಿಕಾಲ ಜ್ಞಾನಿಯೆಂದೂ, ಇವನಿಂದ ಎಲ್ಲರೂ ಪ್ರಯೋಜನ ಹೊಂದಬಹುದೆಂದೂ ಸಾರುತ್ತಿರುವುದರಿಂದ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದ ಸಕಲರ ಪ್ರೀತಿ ವಿಶ್ವಾಸಗಳನ್ನು ಗಳಿಸಿ ಅವರ ರಹಸ್ಯವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ರಾಜನಿಗೆ ತಿಳಿಸುವನು. "ಕೃತ್ವಂ ಚಾಷ್ಟವಿಧಂ ಕರ್ಮ ಪञ्चವರ್ಗं च तत्त्वतः। अनुरागापरागौ च प्रचारं मण्डलस्य च" ಮನುಂ ೭-೧೫೪।

**ಉದಾಹರಣ ಉದಾಹರಣ (ನಂ) 1.** ಕಥನ. ವಿವರಣೆ ಪೂರ್ವಕ ಹೇಳುವುದು. 2. ಸಂಭಾಷಣೆ. ಉದಾಹರಣ—ಉದ್ + ಆ + ಹ್ರ (ಹರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಅಥಾಕ್ಷರಿಸಮಗ್ರಂಥಮುದಾಹರಣವಸ್ತುಃ" ಕುಮಾಂ ೬-೬೫। 3. ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಪಡಿಸುವ ವಾಕ್ಯ. "ಜಯದಾಹರಣಂ ಬಾಹ್ಯೋಗಪಿಯಾಮಾಸ ಕಿಕರಾನ್" ರಘುಂ ೪-೭೮। 4. ದೃಷ್ಟಾಂತ. "ಪ್ರವೃತ್ತಿಸಿತಾನ್ವತಮಸ್ತತ್ರೋದಾಹರಣಂ ರವಿಃ" ಮಾಘಂ ೨-೩೩। 5. (ತಾರ್ಕಿಕ ಮತದಲ್ಲಿ) ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ ದಿ ಪಂಚಾವಯವಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಪಂಚಾವಯವಗಳು: (1) ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ, (2) ಹೇತು, (3) ಉದಾಹರಣ, (4) ಉಪನಯ ಮತ್ತು (5) ನಿಗಮನ. "ಯೋ ಯೋ ಭೂಮವಾನ್ ಸ ಸ ವಹ್ನಿಮಾನ್ ಯಥಾ ಮಹಾನಸಮ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಮಹಾನಸವು ಉದಾಹರಣವು.

**ಉದಾಹರಣ ಉದಾಹರಣ (ಪುಂ) 1.** ಉಪೋದ್ಭೂತ, ಮಾತಿನ ಪ್ರಾರಂಭ, ಪೀಠಿಕೆ, ಮುಂದೆ ಹೇಳುವ ಮಾತಿನ ವಿವರಣೆ. 2. ದೃಷ್ಟಾಂತ. ಉದ್ + ಆ + ಹ್ರ (ಹರಣ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)।

**ಉದಾಹರಣ ಉದಾಹರಣ (ವಿಂ) 1.** ಉದಾಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ದೃಷ್ಟಾಂತ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್ + ಆ + ಹ್ರ (ಹರಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಯೋಽಕ್ಷೀಕೃತಗುಣಃ ಶ್ಲಾಘ್ಯಃ ಸವಿಸ್ಮಯಮುದಾಹರತಃ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೭೨।

**ಉದಾಹರಣ ಉದಾಹರಣ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಉದಾಹರಣ"** ಪದದ ಅರ್ಥ. ಉದ್ + ಆ + ಹ್ರ (ಹರಣ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।

**ಉದಿತ ಉದಿತ (ನಂ) 1.** ಕಥನ, ಹೇಳುವುದು. ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ವದ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಉದಿತಂ ಪ್ರಿಯಾಂ ಪ್ರತಿ ಸಹಾರ್ದಮಿತಿ ಶ್ರದಧೀಯತ ಪ್ರಿಯತಮೇನ ವಚಃ" ಮಾಘಂ ೯-೬೯। "ಭವಾದೃಶೇಷು ಪ್ರಮದಾಜನೋಚಿತಂ ಭವತ್ಯಧಿಕೇಷು ಇವಾನುಶಾಸನಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೨೮। 3. ಉದಯವನ್ನು ಹೊಂದಿದ, ಉದಯಿಸಿರುವ. ಉದ್ + ಇನ್

(ಗತೌ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ಉದಿತೇ ತತಃ ಸಪದಿ ಲಬ್ಧಪದೇಃ ಕ್ಷಣದಾಕರೇಽನುಪದಿಭಿಃ ಪ್ರಯಯೇ" ಮಾಘಂ ೯-೭೦। "ಮಂದಮಂದಮುದಿತಃ ಪ್ರಯಯೌ" ಕಿರಾಂ ೯-೨೬। 4. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೊರಟಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹರಡಿರುವ. "ವ್ಯಕ್ತೋದಿತಸ್ಥಿತಮಯುಕ್ತ-ವಿಭಾಸಿತೋಽಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೫೯। 5. ಉನ್ನತವಾದ, ಎತ್ತರವಾದ. "ಉದಿತೋಪಲಸ್ಥಲನಸಂವಲಿತಾಃ" ಕಿರಾಂ ೬-೪। 6. ಉಂಟಾದ, ಉತ್ಪನ್ನವಾದ, ಹುಟ್ಟಿದ. "ಉದಿತೋಽಸಾದಮತಿವೇಪಯುಮತ್ಸುಧೋಽಭಿಭರ್ತು ವಿಧುರಂ ತ್ರಪಯಾ" ಮಾಘಂ ೯-೭೭। "ಉದಿತಃ ಪ್ರಣವಾಚ್ಚುರಾತ್ಮನಾ ತ್ವದ್ವಿ-ವಿಧಸ್ಕನ್ಧವಿಭಕ್ತಶಾಖಾಃ" ಯಾದಂ ೧೫-೧೨।

**ಉದಿತವರ ಉದಿತವರ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಮೇಲುಮುಖವಾಗಿ ಹೋಗುವ. ಉತ್ + ಇನ್ (ಗತೌ) "ಕ್ರಪ್" (೩-೨-೧೬೩)। "ಶಶಿಮಯಂ ದಹನಾಸ್ತ್ರಮುದಿತವರಂ ಮನಸಿಜಸ್ಯ ವಿಮೃಶ್ಯ ವಿಯೋಗಿನಿ" ನೈಪಂ ೪-೩೮। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ತೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಉದಿತವರ -ಉದಿತವರ.**

**ಉದೀಕ್ಷಣ ಉದೀಕ್ಷಣ (ನಂ) 1.** ಮೇಲಕ್ಕೆ ನೋಡುವುದು. 2. ಕಲ್ಪನೆ, ಊಹೆ. ಉದ್ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 3. ಉಸ್ತುವಾರಿ ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ, ಎಚ್ಚರಿಕೆಯಿಂದ ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ.

**ಉದೀಕ್ಷಣ ಉದೀಕ್ಷಣ (ವಿಂ) 1.** ಮೇಲಕ್ಕೆ ನೋಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಊಹಿಸುತ್ತಿರುವ, ಕಲ್ಪನೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಉಸ್ತುವಾರಿ ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಎಚ್ಚರಿಕೆಯಿಂದ ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ಉದ್ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಕ್ಷತ್ರಧರ್ಮೇ ಸ್ಥಿತೋ ಭೂತ್ವಾ ಯಥಾಶಾಸ್ತ್ರಂ ಯಥಾವಿಧಿಃ ಉದೀಕ್ಷ-ಮಾಣಃ ಪುತನಾಂ ಜಯಾಮಿ ಯುಧಿ ವಾಸವ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೯೮-೯।

**ಉದೀಕ್ಷಣ ಉದೀಕ್ಷಣ (ವಿಂ) 1.** ಊಹಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 2. ಮೇಲೆ ನೋಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಉದ್ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ಘ್" (೩-೧-೧೨೪)। (ಅವ್ಯಂ) 3. ನೋಡಿ, ಮೇಲೆ ನೋಡಿ. ಉದ್ + ಇಕ್ಷ "ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭)।

**ಉದೀಚಿ ಉದೀಚಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕು. ಉದ್ + ಆ + ಚ್ಚು (ಗತೌ) "ಛತ್" (೬-೪-೧೩೯)। "ತೀಪ್" (೪-೧-೬)। "ಆಸಾಘ್ರ ವಾಚಂ ಸ ಭೃಶಂ ದಿದೀಪೇ ಕಾಷ್ಠಾಮುದೀಚಿಮಿವ ತಿಗ್ಮರಶಿಮಃ" ಕಿರಾಂ ೩-೫೫।**



ಉದೀಚಿನ ಉದೀಚೀನ (ವಿಂ) 1. ಉತ್ತರ ದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. 2. ಉತ್ತರ ದೇಶದ. 3. ಉತ್ತರ ಕಾಲದ. ಉದೀಚಾ ಭವ: "ಃ" (೪-೪-೮)।

ಉದೀಚ್ಯ ಉದೀಚ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಉತ್ತರ ದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. 2. ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ. 3. ಉತ್ತರ ಕಾಲದ. ಉದೀಚ್ಯಾ ಭವ: "ಯ್" (೪-೨-೧೦೧)। "ಶರೇಕ್ಷೇರಿವೋ-ದೀಚ್ಯಾನುದರಿಷ್ಯನ್ ರಸಾನಿವ" ರಘುಂ ೪-೬೬।

ಉದೀತ ಉದೀತ (ವಿಂ) ಉತ್ಪನ್ನವಾದ, ಹುಟ್ಟಿದ, ಉಂಟಾದ. ಉದ್ + ಇತ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ನೃಪ: ಸ ಪಶ್ಯನ್ನಪಿ ತಾಮುದೀತಸ್ತಮ್ಮೋ ನ ಧತುಂ ಸಹಸಾ ಶಶಾಕ" ನೆಪಂ ೬-೪೨।

ಉದೀಪ ಉದೀಪ (ಪುಂ) ನೀರು ಹರಿದುಬರುವ ಸ್ಥಳ, ಪ್ರವಾಹದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪ್ರದೇಶ. ಉದ್ಗತಾ ಆಪೋ ಯತ್ರ ಸಮಾಸಾಂತ: "ಅ:" (೪-೪-೭೪)। "ಇತ್" (೬-೩-೯೭)।

ಉದೀಯಮಾನ ಉದೀಯಮಾನ (ವಿಂ) ಉದಯಿಸುತ್ತಿರುವ. ಉದೀಯತೇ-ಉದ್ + ಇತ್ (ಗತೌ) ಕರ್ತಂ "ಶಾನ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ರಿಪುತಿಮಿರಮುದಸ್ಯೋದೀಯಮಾನಂ ದಿನಾದೌ ದಿನಕೃತಮಿವ ಲಕ್ಷ್ಮೀಸ್ತ್ವಾಂ ಸಮಮ್ಯೇತು ಭೂಯ:" ಕಿರಾಂ ೧-೪೬।

ಉದೀರಣ ಉದೀರಣ (ನಂ) ಉಚ್ಚಾರಣ. ಉದ್ + ಇರ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ಉದ್ಘಾತ: ಪ್ರಣವೋ ಯಾಸಾಂ ನ್ಯಾಯೇಸ್ತ್ರಿಭಿರ್ದೀರಣಮ್" ಕುಮಾಂ ೨-೧೨। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಯುಕ್" (೩-೩-೧೦೭)। -ಣಾ -ಣಾ.

ಉದೀರಯತ್ ಉದೀರಯತ್ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಟಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ ತೋರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಉದ್ + ಇರ + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ತಿಸೃಭಿಃತ್ವಮವಸ್ಥಾಭಿ-ರ್ಮಹಿಮಾನಮುದೀರಯನ್" ಕುಮಾಂ ೨-೬।

ಉದೀರಿತ ಉದೀರಿತ (ನಂ) 1. ಮಾತು. ಉದ್ + ಇರ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್ + ಇರ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಉದೀರಿತಾಂ ತಾಮಿತಿ ಯಾಜ್ಞಸೇನ್ಯಾ" ಕಿರಾಂ ೩-೪೪। 3. ಉದ್ವೇಗಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕಥಂ ನ ಮನ್ಯುರ್ಜ್ವಲಯತ್ಯುದೀರಿತ: ಶಮಿತಂ ಶುಷ್ಕಮಿವಾಗ್ನಿಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೩೨। 4. ಉಂಟು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಮೃದುಚಲದಪರಾಂತೋದೀರಿತಾನ್ದಿನಾದಮ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೭। 5. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಮಿಲಾಪಮುದೀ-ರಿತೇಂದ್ರಿಯ:" ಕುಮಾಂ ೪-೪೧। 6. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಬ್ಬಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಯಾವದ್ಯಗಾಹಂತ ನ ದಂತಿನಾಂ ಧಟಾಸ್ತುರಜ್ಞಮೇಸ್ತಾವದುದೀರಿತಂ ಕುರೇ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೪೮।

ಉದೀರ್ಣ ಉದೀರ್ಣ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಉದ್ + ಋ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಉದೀರ್ಣ: ಸರ್ವತಶ್ಚಕುರನೀಶ: ಶಾಶ್ವತಸ್ಥಿರ:" ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 2. ಬೆಳೆದಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದಿರುವ. 3. ಹುಟ್ಟಿದ, ಉಂಟಾದ, ಉತ್ಪನ್ನವಾದ. "ಆಕಮ್ರಾಘ್ರ: ಕೇತುಭಿ: ಸನ್ನಿಪಾತಂ ತಾರೋ-ದೀರ್ಣಗ್ರೇವನಾದಂ ವ್ರಜಂತ:" ಮಾಘಂ ೧೮-೩೭। 4. ಉದ್ವೇಗಗೊಂಡ, ಬಲಗೊಂಡ. "ಉದೀರ್ಣರಾಗಪ್ರತಿರೋಧಕಂ ಜನೇ-ರಭೀಕ್ಷಮಕ್ಷುಣ್ಣತಯಾತಿದುರ್ಗಮಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೩೨। 5. ಹೆಚ್ಚಿದ, ಅಧಿಕವಾದ. 6. ಹರಿದಾದ, ದೊಡ್ಡದಾದ. 7. ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅನುದೀರ್ಣವರ್ಣನಿಮೃತಾರ್ಥಮಾಹ್ವಯತ್" ಮಾಘಂ ೧೩-೪೨। 8. ಕೊಬ್ಬಿದ, ಗರ್ವಗೊಂಡ. "ಭವಲ್ಲಬ್ಧವರೋದೀರ್ಣಸ್ತಾರಕಾಪ್ಯೋ ಮಾಸುರ:" ಕುಮಾಂ ೨-೩೨।

ಉದ್ಮಬರ ಉದ್ಮಬರ (ಪುಂ) 1. ಅತ್ತಿಮರ. ತಂ ಶಮ್ಮಂ ವೃಣೋತಿ-ವೃಜ್ (ವರಣೆ) "ಖಕ್" (೩-೨-೪೬)। "ಮುಮ್" (೬-೩-೬೭)। ಉತ್ಕೃಷ್ಟಮುಬರಮ್। 2. ದೇಹಳಿ, ಹೊಸ್ತಲು. 3. ಪಂಡ, ನಪುಂಸಕ. 4. ಕುಷ್ಠರೋಗ. (ನಂ) 5. ತಾಮ್ರ. 6. ಅತ್ತಿಹಣ್ಣು. "ಉದ್ಮಬರಸ್ತು ದೇಹಲ್ಯಾಂ ವೃಕ್ಷಜಾತೌ ಚ ಷಂಡಕೇ। ಉದ್ಮಬರಂ ಸ್ಮತಂ ತಾಮ್ರೇ ಕುಷ್ಠಭೇದ-ಪ್ಯುದ್ಮಬರ:" ವಿಶ್ವಂ।

ಉದ್ವಲ ಉದ್ವಲ (ಪುಂ) 1. ಒರಟು. ಉರ್ವ್ ಚ ತತ್ ಖಂ ಚ। ಉರ್ವ್ ಖಂ ಲಾತಿ-ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೪)। ಪೃಪಂ। 2. ಗುಗ್ಗುಳ, ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ. "ಉದ್ವಲಂ ಗುಗ್ಗುಲೌ ಸ್ಯಾದುಲಖಲೇಽಪಿ ನ ದ್ವಯೋ" ಮೇದಿಂ।

ಉದ್ವಲ ಉದ್ವಲ (ವಿಂ) 1. ಧರಿಸಿರುವ, ಹೊಂದಿರುವ, ವಹಿಸಿರುವ. ಉದ್ + ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಉದ್ವಲೋಕ್ತವಿತಯೇನ ಸಾಮ್ಪ್ರತಂ ಗುರ್ಧರೀಶ್ರೀ ಕ್ರಿಯತೇತರಾಂ ತ್ವಯಾ" ಮಾಘಂ ೧-೩೬। 2. ಸ್ಥೂಲವಾದ, ದಪ್ಪವಾದ. 3. ಮದುವೆಯಾದ, ವಿವಾಹಿತನಾದ. 4. ಉನ್ನತವಾದ, ಎತ್ತರವಾದ. "ಉದ್ವಲವಕ್ಷ:ಸ್ಥಗಿತಕದಿಡ್ಘಮುಖ:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೩೧। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಉದ್ವಲ ಉದ್ವಲಾ. ವಿವಾಹಿತ ಹೆಂಗಸು. "ಉದ್ವಲ: ಪೀವರೋದಯೋ:" ಹೇಮಂ।

ಉದೇಜಯ ಉದೇಜಯ (ವಿಂ) ಉದ್ವೇಗವುಂಟುಮಾಡುವ, ನಡುಕವುಂಟುಮಾಡುವ. ಉದ್ + ಆಜ (ಕಂಪನೆ) "ಲಕ್" (೩-೨-೨೮)। "ಉದೇಜಯಾನ್ ಭೂತಗಣಾನ್ ನ್ಯಪೇಧೀತ್" ಮೃದಿಂ ೧-೧೪।

ಉದ್ಗತ ಉದ್ಗತ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಬೆಳೆದಿರುವ. ಉದ್ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಕೇಲಿಸೇಲಮಣಿಮೇಖಲಾಪದಾದುಢ್ರತಾಮಿಹ



तमालवाटिकाम्" याद० १७-२२। 2. ಉದಯಿಸಿ  
ರುವ. "उद्गतेन्दुमविभिन्नतमिस್ರाम्" किरा० ९-२४।  
3. ಉತ್ಪನ್ನವಾದ, ಹುಟ್ಟಿದ, ಉಂಟಾದ. 4. ವಾಂತಿ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. उद् + गम् (गती) "क्त्" (३-२-१०२)।

उद्गति ಉದ್ಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀ) 1. ಉದಯ. 2. ಉತ್ಪತ್ತಿ,  
ಹುಟ್ಟುವಿಕೆ. 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳುವುದು. 4. ವಾಂತಿ  
ಮಾಡುವಿಕೆ. उद् + गम् (गती) "क्त्" (३-२-१०२)।

उद्गत्वर ಉದ್ಗತ್ವರ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ  
ಸ್ವಭಾವದ, ಉದ್ವಿಗ್ನವಾದ. उद् + गम् (गती)  
"क्त्" अनुनासिकलोपश्च (३-२-१६४)। निपा०।  
स्त्रियां "ङीप्" (४-१-१५)। -गत्वरी -गत्वरि.  
"उद्गत्वरिभिश्चरितं वितेने निजं वपुर्वीयसखः शिखाभिः"  
नैष० १४-६३।

उद्गम ಉದ್ಗಮ (ಪುಂ) 1. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟುವಿಕೆ.  
उद् + गम् (गती) "क्त्" (३-२-१०२)। "कुतो  
वा महोदधि वर्जयित्वा पारिजातस्योद्गमः" मालती० २।  
2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದಿರುವಿಕೆ, ಚಾಚಿಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ.  
"बाहुबन्धनापवारितपयोधरोद्गमम्" मालती० ७।  
3. ಅಂಕುರ, ಮೊಳಕೆ. "परिसरविषयेषु लीढमुक्ता  
हरिततृणोद्गमशङ्कया मृगीभिः" किरा० ५-३८।  
4. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದು ನಿಲ್ಲುವಿಕೆ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೊರಟು  
ಬರುವಿಕೆ. "रोमोद्गमः प्रादुरभूदुमायाः" कुमा० ७-७७।

उद्गमन ಉದ್ಗಮನ (ನಂ) "उद्गम" ಪದದ ಅರ್ಥ.  
उद् + गम् (गती) भावे "ल्युट्" (३-२-११५)।

उद्गमनीय ಉದ್ಗಮನೀಯ (ನಂ) 1. ಒಗೆದು ಶುದ್ಧ  
ಮಾಡಿದ ಒಂದು ಜೊತೆ ಪಂಜೆ. उद्गम्यते—उद् + गम्  
(गती) "अनीयर्" (३-१-९६)। "सा मङ्गलस्नान-  
विशुद्धगात्री गृहीतपत्युद्गमनीयवस्त्रा" कुमा० ७-११।  
(वि०) 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೊರಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.

उद्गमित ಉದ್ಗಮಿತ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಬ್ಬಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. उद् + गम् (गती) + णिच्  
"क्त्" (३-२-१०२)। "नैनं त्यज क्षीरधिमन्थनाद्यै-  
रस्यानुजायोद्गमितामरैः श्रीः" नैष० ६-८०।

उद्गाढ ಉದ್ಗಾಢ (ನಂ) 1. ಹೆಚ್ಚಿಗೆ, ಅತಿಶಯ.  
(वि०) 2. ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅತಿಶಯವಾದ. उद् + गाह्  
(विलोडने) "क्त्" (३-४-७२)। "प्रेमार्द्राः प्रणय-  
स्पृशः परिचयादुद्गाढरागोदयाः" मालती० ५-७।  
(अव्य०) 3. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ, ಅತಿಶಯವಾಗಿ.

उद्गात् ಉದ್ಗಾತ್ಯ (ಪುಂ) ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಸಾಮವೇದ  
ಗಾನಮಾಡುವವನು. उद्गायति साम—गं (शब्दे)  
"तृच्" (उ० २-९४)। "अध्वर्यूद्गातृहोतारो यजुः-  
सामांविदः क्रमात्" अम०।

उद्गार ಉದ್ಗಾರ (ಪುಂ) 1. ಕಕ್ಕುವಿಕೆ, ವಾಂತಿಮಾಡು  
ವಿಕೆ, ಬಾಯಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡಿಸುವಿಕೆ. उद् + ग्  
(निगरणे) "घञ्" (३-३-२९)। "खर्जूरीस्कन्ध-  
नद्धानां मदोद्गारसुगन्धिष्" रघु० ४-५७। "सनिर्झरो-  
द्गार इवाद्रिराजः" रघु० ६-६०। 2. ಎತ್ತಿ ಹೇಳು  
ವುದು, ಉದಾಹರಿಸುವುದು. "पुरावृत्तोद्गारैरपि च  
कथिता कार्यपदवी" मालती० २-१३। 3. ಉಗುಳು.  
4. ತೇಗು. 5. ಕಂಠಧ್ವನಿ, ಶಬ್ದ. 6. ಪ್ರತಿಧ್ವನಿ,  
ಎದುರುಶಬ್ದ. "गम्भीरगद्गदोद्गारघोरघोषणगोदावरी-  
मुखरितविशालमेखलाभुवः" मालती० ९।

उद्गारशोधन ಉದ್ಗಾರಶೋಧನ (ಪುಂ) ಕರಿ ಜೀರಿಗೆ.

उद्गारिन् ಉದ್ಗಾರಿನ್ (ವಿಂ) ವಾಂತಿಮಾಡುವ,  
ಬಾಯಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡಿಸುವ, ಕಕ್ಕುವ. उद् + ग्  
(निगरणे) "णिनिः" (३-१-१३४)। "धारास्वनो-  
द्गारिदरीमुखोऽसौ शृङ्गाग्रलग्नान्बुदवप्रपङ्कः" रघु०  
१३-४७।

उद्गिरण ಉದ್ಗಿರಣ (ನಂ) 1. ಕಕ್ಕುವುದು, ವಾಂತಿ  
ಮಾಡುವುದು, ಬಾಯಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡಿಸುವುದು.  
उद् + ग् (निगरणे) "ल्युट्" (३-२-११५)। 2. ಉಗುಳು  
ವುದು. 3. ತೇಗುವುದು.

उद्गिरत् ಉದ್ಗಿರತ್ (ವಿಂ) 1. ವಾಂತಿಮಾಡುತ್ತಿರುವ,  
ಕಕ್ಕುತ್ತಿರುವ. उद् + ग् (निगरणे) "शत्" (३-२-१२४)। "अभ्युन्नताङ्गुष्ठनखप्रभाभिनिक्षेपणा-  
द्रಾಗमिवोद्गिरन्तो" कुमा० १-३३। 2. ಉಗುಳು  
ತ್ತಿರುವ. 3. ತೇಗುತ್ತಿರುವ. स्त्रियां "ङीप्" (४-१-६)।  
-गिरन्ती -गिरन्ती. "इत्थं मधूत्थं रसमुद्गिरन्ती  
तदोष्ठबन्धकधनुर्विसृष्टा" नैष० ८-५०।

उद्गीति ಉದ್ಗೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಸ್ವರದಿಂದ  
ಗಾನಮಾಡುವುದು. उद् + गं (शब्दे) "क्त्" (३-२-९४)। 2. ಮಾತ್ರಾ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ.  
ಉದ್ಗೀತಿಯ ಲಕ್ಷಣ? ಪಠ್ಯಾರ್ಯವೃತ್ತದ ಉತ್ತ  
ರಾರ್ಥದ ಲಕ್ಷಣವು ಪೂರ್ವಾರ್ಥದಲ್ಲಿಯೂ ಪೂರ್ವ  
ಾರ್ಥದ ಲಕ್ಷಣವು ಉತ್ತರಾರ್ಥದಲ್ಲಿಯೂ ಇದ್ದರೆ



उद्धृत लुप्त (वि०) १. ಹೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಹ  
ರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. उद्+घट्ट (चलने) “क्तः” (३-२-१०२) ।  
२. (ಕದವು) ತೆಗೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ३. (ಮುಚ್ಚಳ) ತೆಗೆಯ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ४. (ಬಾಯಿ) ತೆರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ५. ಪ್ರತ್ಯೇಕ  
ಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “अनुकृतिमनुवे  
लं घटितोद्धृतस्य व्रजति नियमभाजां मुग्धमुक्तापुटस्य”  
माघ० ११-४२ ।



ಉದ್ಘನ ಉದ್ಘನ (ಛಂ) ಮರಗಲಸ ಮಾಡುವಾಗ ಕೆಳಗೆ ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವ ಅಡಿತುಂಡು. ಉದ್ಘನೇವ—ಉದ್ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) ಅಧಿಂ “ಅಫ್” (೩-೩-೮೦)।

ಉದ್ಘರ್ಷಣ ಉದ್ಘರ್ಷಣ (ಛಂ) 1. ನವೆ ಹೋಗುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಕೆರೆಯುವುದು. 2. ಮೈ ಕೊಳೆ ಹೋಗುವುದಕ್ಕಾಗಿ ತಿಕ್ಕುವುದು. ಉದ್ + ಘೃ (ಸಂಘರ್ಷ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। “ಉದ್ಘರ್ಷಣಂ ತು ವಿಜ್ಞೇಯಂ ಕಣ್ಡಕೀಟಮಲಾಪಹಮ್” ಸುಶ್ರುತಂ।

ಉದ್ಘಾಟಕ ಉದ್ಘಾಟಕ (ಛಂ) 1. ಬಾವಿಯ ಹಗ್ಗ. 2. ಏತದ ಕೊಳಗ, ಏತದ ಮೂಲಕ ಬಾವಿಯ ನೀರನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವ ತೊಟ್ಟಿ. (ಛಂ) 3. ಬೀಗದ ಕೈ. “ಉದ್ಘಾಟಕೋ ಭವತಿ ಯನ್ತ್ರದೃಢೇ ಕಪಾಟೇ” ಮೃಚ್ಛಕಂ ೩-೧೬। (ವಿಂ) 4. ಬಾವಿಯಿಂದ ನೀರನ್ನು ಸೇರುವವನು, ಏತದ ಮೂಲಕ ಬಾವಿಯ ನೀರನ್ನು ಎತ್ತುವವನು. 5. ತೆಗೆಯುವವನು, ತೆರೆಯುವವನು. ಉದ್ + ಘಟ (ಸಂಘಾತೇ) + ಣಿಕ್ “ಫ್ಲುಲ್” (೩-೩-೧೩೩)। 6. ಪ್ರಕಟಿಸುವ, ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವ, ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸುವ.

ಉದ್ಘಾಟನ ಉದ್ಘಾಟನ (ಛಂ) 1. ತೆರೆಯುವುದು, ಮುಚ್ಚಿರುವ ಬಾಗಿಲನ್ನು ತೆಗೆಯುವುದು. ಉದ್ + ಘಟ (ಸಂಘಾತೇ) + ಣಿಕ್ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವುದು, ಹೊರಪಡಿಸುವುದು, ಪ್ರಕಟಿಸುವುದು. “ಛತಸಮಾಧಪಕಾರಸ್ಥಾನೋದ್ಘಾಟನಮೇವೇದಂ ಮನ್ಯೇ” ವೇಣೀಂ ೧। 3. ಏತದ ಕೊಳಗ, ಏತದ ಮೂಲಕ ನೀರನ್ನು ಎತ್ತುವ ತೊಟ್ಟಿ. 4. ಏತದ ರಾಟೆ.

ಉದ್ಘಾಟಿತ ಉದ್ಘಾಟಿತ (ವಿಂ) 1. ತೆಗೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ತೆರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ (ಬಾಗಿಲು). ಉದ್ + ಘಟ (ಸಂಘಾತೇ) + ಣಿಕ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೦೨)। 2. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊರಗೆಡಹಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ.

ಉದ್ಘಾತ ಉದ್ಘಾತ (ಛಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. ಉದ್ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) “ಘಃ” (೩-೩-೧೮)। “ಉದ್ಘಾತಃ ಪ್ರಣವೋ ಯಾಸಾಂ ನ್ಯಾಯೇತ್ರಿಭಿರುದೀರಣಮ್” ಕುಮಾಂ ೨-೧೨। “ಆಕುಮಾರಕಯೋದ್ಘಾತಂ ಶಾಲಿಗೋಪ್ಯೋ ಜಗುರ್ಯಶಃ” ರಘುಂ ೪-೨೦। 2. ಕುಲುಕಾಟ, ಅದುರುವಿಕೆ, ಅಲುಗಾಡುವುದು. “ಯಯಾವನುಉದ್ಘಾತಸುಖೇನ ಮಾರ್ಗೇ ಸ್ವೇನೈವ ಪೂರ್ಣೇನ ಮನೋರಥೇನ” ರಘುಂ ೨-೪೨। 3. ಸುತ್ತಿಗೆ, ಕೊಡತಿ, ಚಮ್ಮಟಿಗೆ. 4. ಕಾಲು ಜಾರುವುದು, ಎಡವುವುದು. 5. ಪ್ರಾಣವಾಯುವಿನಿಂದ ನೂಕಲ್ಪಟ್ಟ ಅಪಾನವಾಯುವು ಶಿರಸ್ಸಿನವರೆಗೂ ಹೋಗಿ ಹಿಂತಿರುಗುವಿಕೆ, ಪ್ರಾಣಾಯಾಮಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ರೇಚಕ, ಕುಂಭಕ,

ಪೂರಕಗಳು. (ವಿಂ) 6. ಎತ್ತರವಾದ, ಉನ್ನತವಾದ. “ಉದ್ಘಾತಸ್ತು ಪುಮಾನ್ ಪಾದಸ್ತಲನೇ ಸಮುಪಕ್ರಮೇ। ಪವನಾಮ್ಯಾಸಯೋಗಾಯ ಕುಂಭಕಾದಿತ್ರಯೇಷಃ ಪಿ ಚ। ಉತ್ಕುಂಢೇ ಮುಧ್ರೇಷಃ ಪಿ ಸ್ಯಾತ್” ಮೇದಿಂ।

ಉದ್ಘಾಟಿತ ಉದ್ಘಾಟಿತ (ಛಂ) 1. ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ತಿಳಿಸಿದ ಮಾತು, ಆಶಯವನ್ನು ಹೊರಪಡಿಸಿದ ಮಾತು. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಕಟಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಾರಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್ + ಘರ್ಷಿ (ವಿಶದ್ಧನೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೦೨)। ಶಬ್ದದಿಂದ ಸ್ವಾಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವುದು ವಿಶಬ್ದನ. ಅವಿಶಬ್ದನಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈ ಧಾತುವಿಗೆ “ಙ್” ಆಗಮವು ಬರುವುದಿಲ್ಲ. ಘರ್ಷಿ ಅವಿಶದ್ಧನೇ (೩-೩-೨೩)। -ಘೃಷ್ಮ - ಘೃಷ್ಮಮ್. 1. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಶಬ್ದ, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ ಮಾತು. 2. ಹೊಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಹಗ್ಗ).

ಉದ್ಘಾಟ ಉದ್ಘಾಟ (ಛಂ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಶಬ್ದಮಾಡುವುದು, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗಿ ಹೇಳುವುದು. ಉದ್ + ಘರ್ಷಿ (ಅವಿಶದ್ಧನೇ) “ಘಃ” (೩-೩-೧೮)। 2. ಸಾರುವುದು, ಡಂಗುರಹಾಕುವುದು, ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸುವುದು.

ಉದ್ಘಾಟಕ ಉದ್ಘಾಟಕ (ವಿಂ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಶಬ್ದಮಾಡುವ, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗಿ ಹೇಳುವ. ಉದ್ + ಘರ್ಷಿ (ಅವಿಶದ್ಧನೇ) “ಫ್ಲುಲ್” (೩-೩-೧೩೩)। 2. ಡಂಗುರ ಹೊಡೆಯುವ, ಸಾರುವ, ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸುವ.

ಉದ್ಘಾಟಣ ಉದ್ಘಾಟಣ (ಛಂ) 1. ಸಾರುವಿಕೆ. ಡಂಗುರ ಹೊಡೆಯುವಿಕೆ, ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸುವಿಕೆ. ಉದ್ + ಘರ್ಷಿ (ಅವಿಶದ್ಧನೇ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗಿ ಹೇಳುವಿಕೆ, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಶಬ್ದಮಾಡುವಿಕೆ. ಉದ್ + ಘರ್ಷಿ + ಣಿಕ್ “ಫ್ಲುಲ್” (೩-೩-೧೦೩)। -ಘೃಷ್ಮಣಾ - ಘೃಷ್ಮಣಾ.

ಉದ್ಘಾತ ಉದ್ಘಾತ (ಛಂ) 1. ತಿಗಣೆ. 2. ಹೇನು. 3. ಮಶಕ, ಸೊಳ್ಳೆ. ಉದ್ಘಾತಿ - ಉದ್ + ದಂಶ (ದಶನೇ) “ಅಃ” (೩-೩-೧೩೪)।

ಉದ್ಘಾತ ಉದ್ಘಾತ (ಛಂ) 1. ಎತ್ತರವಾದ ಕೋಲು. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಚಂಡ, ಭಯಂಕರ, ದಿಗಿಲುಹುಟ್ಟಿಸುವ. 3. ಶಿಕ್ಷೆಗೂ ಒಳಪಡದ. ಉತ್ಕಾಂತೋ ದೃಢಃ ದಮನಮ್। 4. ಉದ್ದವಾದ ಕೋಲುಳ್ಳ, ಉದ್ದವಾದ ತೊಟ್ಟುಳ್ಳ, ಉದ್ದವಾದ ದಂಟುಳ್ಳ. ಉದ್ಘಾತೋ ದೃಢೋ ಯಸ್ಯ।



ಉದ್ಧಮಿತ ಉದ್ಧಮಿತ (ವಿಂ) ಅಡಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್ + ದಮ (ಉಪಶಮೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಉದ್ಧಾನ ಉದ್ಧಾನ (ನಂ) 1. ಬಂಧನ, ಕಟ್ಟು. ಉದ್ + ದೌ (ಅವಲಂಛನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಉದ್ಯಮ, ಪ್ರಯತ್ನ. 3. ಒಲೆ. 4. ಬಡಬಾಗಿ. 5. ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಸೊಂಟ; ನಡು.

ಉದ್ಧಾಂತ ಉದ್ಧಾಂತ (ವಿಂ) "ಉದ್ಧಮಿತ" ಸದದ ಅರ್ಥ.

ಉದ್ಧಾಮ ಉದ್ಧಾಮ (ಪುಂ) 1. ವರುಣ. 2. ದಂಡಕದ ಒಂದು ಭೇದ. "ಯದಿ ನಯುಗಲಂ ತತಃ ಸಪ್ತರೇಫಾಸ್ತದಾ ಚಂಡವೃಷ್ಟಿಪ್ರಯಾತೋ ಭವೇದ್ಧಂಡಕಃ। ಪ್ರತಿಚರಣವಿವೃದ್ಧರೇಫಾಃ ಸ್ಪುರಣಿವ್ಯಾಲಜಿಮೂತಲೀಲಾಕರೋದಾಮಶಹ್ವಾದಯಃ" ವೃಂ ೧೦। (ವಿಂ) 3. ಬಂಧನವಿಲ್ಲದ. 4. ಅಡ್ಡಿಯಿಲ್ಲದ, ಸ್ವತಂತ್ರವಾದ. ಉದ್ಧತಂ ದಾಮ್ನಃ, ಸಮಾಸಾಂತೋಽಃ। "ಉದ್ಧಾಮಪ್ರಮದಾಕಪೋಲನಿಪತಿಸ್ಸಿಂಧುರಾಗಾಣೈಃ ಸೈಂದೂರಿಕ್ರಿಯತೇ ಜನೇನ ಚರಣನ್ಯಾಸೈಃ ಪುರಃ ಕುಡ್ಡಿಮಮ್" ರತ್ನಾಂ ೧-೧೧। 5. ಧೈರ್ಯವುಳ್ಳ, ಪ್ರಗಲ್ಬನಾದ, ದಿಟ್ಟತನವುಳ್ಳ. "ಭವಂತಿ ನೋದಾಮಗಿರಾಂ ಕವೀನಾಮುಚ್ಚಾಯಸೌಂದರ್ಯಗುಣಾ ಮೃಷಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೧೦। 6. ಪ್ರಬಲವಾದ, ಶಕ್ತಿಯುತವಾದ, ಬಹಳ ವೇಗವಾದ. "ಉದ್ಧಾಮದೇಹಪರಿಧಾಹಮಹಾಜ್ವರಾಣಿ" ಮಾಲತೀಂ ೬-೧೩। 7. ಮದಿಸಿದ, ಅಮಲೇರಿದ. ದಾಮ್ನ ಉದ್ಧತಃ। "ನದತ್ಯಾಕಾಶಗಜ್ಜಾಃ ಸ್ತೋತಸ್ಯುದ್ಧಾಮದಿಗ್ಗಜೇ" ರಘುಂ ೧-೨೮। 8. ಭಯಂಕರವಾದ, ಭೀತಿಯನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ. "ವಿಷಮಡಾಮರೋದಾಮಶರೀರಸನ್ನಿವೇಶಃ" ಮಾಲತೀಂ ೩। 9. ಅತಿಶಯವಾದ, ಸಮೃದ್ಧಿಯಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. "ಉದ್ಧಾಮೋಲ್ಕಲಿಕಾಂ ವಿಪಾಂಡುರಋಚಂ ಪ್ರಾರಂಭಜೃಂಭಾಂ ಕ್ಷಣಾತ್" ರತ್ನಾಂ ೨-೪। 10. ಗಂಭೀರವಾದ. "ಉದ್ಧಾಮೋ ಬಂಧ-ರಹಿತೇ ಸ್ವತನ್ತ್ರೇ ಚ ಪ್ರವೇತಸಿ" ಮೇದಿಂ।

ಉದ್ಧಾಲ ಉದ್ಧಾಲ (ಪುಂ) ಚಳ್ಳೆಮರ. ಉದ್ಧಾಲಯತಿ - ಉದ್ + ದಲ (ವಿಶರಣೆ) + ಣಿಕ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಶೇಲುಃ ಶ್ಲೇಷ್ಮಾತಕಃ ಶೀತ ಉದ್ಧಾಲೋ ಬಹುವಾರಕಃ" ಅಮಂ।

ಉದ್ಧಾಲಕ ಉದ್ಧಾಲಕ (ಪುಂ) 1. ಚಳ್ಳೆಮರ. ಉದ್ಧಾಲಯತಿ - ಉದ್ + ದಲ (ವಿಶರಣೆ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಉದ್ಧಾಲಕ ಮಹರ್ಷಿ, ಶ್ವೇತಕೇತುವಿಗೆ ಬ್ರಹ್ಮವಿದ್ಯೋಪದೇಶ ಮಾಡಿದ ಮುನಿ. [ಈ ಮುನಿಯು ಆಯೋದಧೌಮ್ಯನೆಂಬ ಮುನಿಯಲ್ಲಿ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಒಂದು ದಿನ ಗುರುವಿನ ಅಪ್ಪಣೆಯಂತೆ ಗದ್ದೆಗೆ ನೀರು ಕಟ್ಟಲು ಹೋಗಿ ಎಷ್ಟು ಶ್ರಮಪಟ್ಟರೂ ಕಟ್ಟಿ ಕಟ್ಟಿ ನೀರನ್ನು ತಡೆಯಲಾಗದಿರಲು ತಾನೇ ಅಡ್ಡ

ಲಾಗಿ ಮಲಗಿ ನೀರನ್ನು ತಡೆದನು. ಬಹಳ ಹೊತ್ತಾದರೂ ಶಿಷ್ಯನು ಬಾರದಿರಲು ಇತರ ಶಿಷ್ಯರೊಡನೆ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದ ಗುರುವು ಈ ಶಿಷ್ಯನನ್ನು ಕೂಗಿ ಕರೆಯಲು ಕಟ್ಟಿಯನ್ನು ಭೇದಿಸಿಕೊಂಡು ಎದ್ದು ಓಡಿಬಂದು ಗುರುವಿಗೆ ನಮಸ್ಕರಿಸಿದಾಗ ಈ ಕೆಲಸ ಮಾಡಿರುವುದರಿಂದ ನಿನಗೆ "ಉದ್ಧಾಲಕ" ನೆಂದು ಹೆಸರಾಗಲಿ ಎಂದು ಗುರುವು ಹೇಳಿದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರಾಯಿತು.] 3. ಪತಿತ ಸಾವಿತ್ರೀಕೃತ್ಯದೋಷ ನಿವಾರಣೆಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಒಂದು ವ್ರತ. 8 ರಿಂದ 16 ವಯಸ್ಸಿನೊಳಗೆ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೂ, 11 ರಿಂದ 22 ರೊಳಗೆ ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಗೂ, 12 ರಿಂದ 24 ರೊಳಗೆ ವೈಶ್ಯನಿಗೂ ಉಪನಯನವಾಗಿದ್ದರೆ ಪತಿತಸಾವಿತ್ರೀಕನಾಗುವನು. ಈ ವ್ರತ ಸ್ವರೂಪಃ ಯವಧಾನ್ಯದ ಅನ್ನದಿಂದ ಎರಡು ತಿಂಗಳೂ, ಜೇನುತುಪ್ಪದಿಂದ ಒಂದು ತಿಂಗಳೂ, ತುಪ್ಪದಿಂದ ಎಂಟು ದಿನಗಳೂ, ತಾನಾಗಿ ಒದಗಿದ ಆಹಾರದಿಂದ ಆರು ದಿನಗಳೂ, ನೀರಿನಿಂದ ಮೂರು ದಿನಗಳೂ ಜೀವಿಸುತ್ತ ಬಳಿಕ ಒಂದು ದಿನದ ಉಪವಾಸದಿಂದ ಈ ವ್ರತವನ್ನು ಆಚರಿಸಬೇಕು.

ಉದ್ಧಿತ ಉದ್ಧಿತ (ವಿಂ) ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್ + ದೌ (ಅವಲಂಛನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಉದ್ಧಿಧೀರ್ಷಿ ಉದ್ಧಿಧೀರ್ಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಉದ್ಧಾರಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಉದ್ + ಧೃಙ್ (ಧಾರಣೆ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨)। "ತಥಾ ವ್ಯಥಾಮಾನತದ್ಧಿಧೀರ್ಷಯಾ ದಯಾಲುರಾಗಾಲಲಘು ಹೇಮಹಂಸರಾಟ್" ನೈಷಂ ೧-೧೨೨। 2. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರುಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ.

ಉದ್ಧಿಧೀರ್ಷಿ ಉದ್ಧಿಧೀರ್ಷಿ (ವಿಂ) 1. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರುಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಉದ್ + ಧೃಙ್ (ಧಾರಣೆ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮)।

ಉದ್ಧಿಷ್ಟ ಉದ್ಧಿಷ್ಟ (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಯಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ವಿವರಣಾರ್ಥಕ ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಶದವಾಗಿ ಕಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಉಲ್ಲೇಖಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರ್ದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಮೂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಉದ್ಧಿಪಕ ಉದ್ಧಿಪಕ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುವ. 2. ಉದ್ದೇಶಗೊಳಿಸುವ, ಪ್ರೇರಿಸುವ, ರೇಗಿಸುವ, ಹುರಿದುಂಬಿಸುವ. ಉದ್ + ದಿಪಿ (ದೀಪ್ತೌ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।



ಉದ್ವಿಪನ ಉದ್ವಿಪನ (ನಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುವುದು. 2. ಪ್ರೇರಿಸುವುದು, ಹುರಿದುಂಬಿಸುವುದು. ಉದ್+ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). (ವಿಂ) 3. ಉತ್ತೇಜನ ಕೊಡುವ, ರೋಷೋತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ (ಸಾಮಗ್ರಿ). ಉದ್ವಿಪಯತಿ - ಉದ್ + ದೀಪಿ "ಲ್ಯುಟ್" (3-1-134). ವಿಭಾವವು ಆಲಂಬನ ಮತ್ತು ಉದ್ವಿಪನಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ನಾಯಿಕಾನಾಯಕರು, ನಾಯಕ ಪ್ರತಿನಾಯಕ ಇತ್ಯಾದಿಗಳು ಆಲಂಬನ ವಿಭಾವ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಆಲಂಬನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಇವರಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗಿರುವ ರತ್ನಾದಿಸ್ಥಾಯಿಭಾವಗಳನ್ನು ಉದ್ವೇಕ ಗೊಳಿಸಿ ರೋಷೋತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ ವಸ್ತು, ಸನ್ನಿವೇಶ ಇತ್ಯಾದಿಗಳು ಉದ್ವಿಪನ ವಿಭಾವಗಳು. "ಉದ್ವಿಪನ-ವಿಭಾವಾಸ್ತೇ ರಸಉದ್ವಿಪಯಂತಿ ಯೇ" ಸಾಂ ದಂ 3-131.

ರಸ ಉದ್ವಿಪನ ವಿಭಾವ

- (1) ಶೃಂಗಾರ ರಸಕ್ಕೆ ಚಂದ್ರ, ಚಂದನ, ಪುಷ್ಪ, ಭ್ರಮರದ ಶಿಂಜಾರವ ಇತ್ಯಾದಿ.
- (2) ವೀರ ,, ನಾಯಕ ಪ್ರತಿನಾಯಕರ ವ್ಯಾಪಾರ ಇತ್ಯಾದಿ.
- (3) ಕರುಣ ,, ಪೀಡೆ, ದಾಹ, ಅಪಹಾರ ಇತ್ಯಾದಿ ವ್ಯಾಪಾರಗಳು.
- (4) ಅದ್ಭುತ ,, ಲೋಕೋತ್ತರವಾದ ವಸ್ತುವಿನ ಗುಣಾತಿಶಯ, ಮಹಿಮೆ ಇತ್ಯಾದಿ.
- (5) ಹಾಸ್ಯ ,, ವಿಕಾರವಾದ ವೇಷ, ನಗಿಸುವ ಮಾತು, ವ್ಯಾಪಾರ ಇತ್ಯಾದಿ.
- (6) ಭಯಾನಕ ,, ಭಯೋತ್ಪಾದಕ ವ್ಯಾಪಾರ.
- (7) ಬೀಭತ್ಸ ,, ಜುಗುಪ್ಸೆಯುಂಟುಮಾಡುವ ಮಾಂಸಭಕ್ಷಣ, ರಕ್ತಪಾನ ಇತ್ಯಾದಿ.
- (8) ರೌದ್ರ ,, ಕೋಪವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವ ಶತ್ರು ವಿನ ವ್ಯಾಪಾರ.
- (9) ಶಾಂತ ,, ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ, ತಪೋವನ, ಮಹಾತ್ಮರ ಸಹವಾಸ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಉದ್ವಿಪಿತ ಉದ್ವಿಪಿತ (ವಿಂ) ಅಧಿಕಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉದ್ವೇಕಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹುರಿದುಂಬಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್+ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೌ)+ ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102).

ಉದ್ವಿಪಿತ ಉದ್ವಿಪಿತ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ, ಹೊಳೆಯುವ. ಉದ್+ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕ್ತಃ" (3-4-62). "ಉದ್ವಿಪಿತೋಪದಹನೋಽಥ ಸುರೇಂದ್ರಶತ್ರುರಹಾಯ ಸಾರಥಿಮವೋಚತ ಚಂಡಬಾಹುಃ" ಕುಮಾಂ 13-61.

ಉದ್ವಿಪ್ರ ಉದ್ವಿಪ್ರ (ಫಂ) 1. ಗುಗ್ಗುಳು, ಧೂಪ. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ, ಹೊಳೆಯುವ. ಉದ್ + ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೌ) "ರಃ" (3-2-166).

ಉದ್ವಿಪ್ರ ಉದ್ವಿಪ್ರ (ವಿಂ) ಕೊಬ್ಬಿದ, ಅಹಂಕಾರದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಉದ್+ದ್ವ (ಹೃಷ್ಯಮೋಹನಯೋಃ) "ಕ್ತಃ" (3-4-62).

ಉದ್ವೇಶ ಉದ್ವೇಶ (ಫಂ) 1. ಪ್ರದೇಶ, ಜಾಗ, ಸ್ಥಳ. ಉದ್+ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಛತ್" (3-3-119). "ಅಯೇ, ಪ್ರವಾತಸುಭಗೋಽಯಮುದ್ವೇಶಃ" ಶಾಕುಂ 3. 2. ವಿಷಯಾ ನೈವಣ, ವಿಚಾರ, ವಿಮರ್ಶೆ. 3. ಉಪದೇಶ. 4. ಉಪದೇಶದ ಸ್ಥಳ. ಉದ್+ದಿಶ ಅಧಿಂ "ಛತ್" (3-3-121). 5. ವಿವರಣೆ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತಿಳಿಸುವಿಕೆ. 6. ಅನುಸಂಧಾನ. 7. ಅಭಿಲಾಷೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಬಯಕೆ. 8. ಸಂಕ್ಷೇಪ, ಸಂಗ್ರಹ. "ಏಷ ತ್ವದೇಶತಃ ಪ್ರೋಕ್ತೋ ವಿಭೂತೇ-ವಿಸ್ತರೋ ಮಯಾ" ಗೀತಾ 10-40. 9. ವಿಷಯ, ಗುರಿ.

ಉದ್ವೇಶಕ ಉದ್ವೇಶಕ (ಫಂ) ವಿವರಣಾಪೂರ್ವಕ ಉಪದೇಶಿಸುವವನು. ಉದ್ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಞ್" (3-1-133).

ಉದ್ವೇಶ್ಯ ಉದ್ವೇಶ್ಯ (ನಂ) 1. ಅನುವಾದ್ಯ, ವಿಧಿಸುವ ಸ್ಥಳ. ಉದ್ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಞ್" (3-1-124). "ಅನುವಾದ್ಯಮನುಕ್ತವೇವ ನ ವಿಧೇಯಮುದೀರಯೇತ್"। ಪವಂತೋ ವಹ್ನಿಮಾನ್ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪರ್ವತವು ಉದ್ವೇಶ್ಯ. ವಹ್ನಿಮತ್ತಸ ವಿಧೇಯ. (ವಿಂ) 2. ವಿವರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಉದಾಹರಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಉದ್ದೇಶಿಸಲ್ಪಡುವ.

ಉದ್ವಿಪ್ರ ಉದ್ವಿಪ್ರ (ಫಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. ಉದ್+ಛ್ರ (ದೀಪ್ತೌ) "ಛತ್" (3-3-119). 2. ಮಹಾಭಾಷ್ಯದ ಒಂದು ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ. 3. ಕಾವ್ಯಪ್ರಕಾಶದ ಒಂದು ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ. (ವಿಂ) 4. ಪ್ರಕಾಶವುಂಟು ಮಾಡುವ, ಬೆಳಗಿಸುವ. ಉದ್+ಛ್ರ (ದೀಪ್ತೌ) "ಞ್" (3-1-134).

ಉದ್ವಿಪ್ರ ಉದ್ವಿಪ್ರ (ಫಂ) 1. ಓಟ, ಪಲಾಯನ. ಉದ್+ಛ್ರ (ಗತೌ) "ಛತ್" (3-3-119). (ವಿಂ) 2. ವೇಗವಾದ ನಡೆಯುಳ್ಳ, ಓಟವುಳ್ಳ. ಉದ್ವಿಪ್ರ ಉದ್ವಿಪ್ರ ಯಸ್ಯ।



**ಉತ್ತರ ಉದ್ಧೃತ (ಪುಂ)** 1. ರಾಜನ ಜಟ್ಟಿ, ರಾಜನ ಆಸ್ಥಾನದ ಪೈಲಾನ, ಕುಸ್ತಿಗಾರ. (ವಿಂ) 2. ಕೊಬ್ಬಿದ, ಗರ್ವಿತನಾದ. **ಉದ್ + ಹನ** (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಕ್ತ:" (3-4-92)। "ಉಪಜಾಪಸಹಾನ್ ವೀಲಜ್ಜಯನ್ ಸ ವಿಘಾತಾ ನೃಪತೀನ್ ಮದೋದತ:" ಕಿರಾಂ 2-40। 3. ಅವಿನೀತ, ಅವಿಧೇಯ. 4. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿದ. "ನಿಮಜ್ಜತೀನಾಂ ಶ್ವಸಿತೋದತಸ್ತನ: ಶ್ರಮೋ ನು ತಾಸಾಂ ಮದನೋ ನು ಪಪ್ರಥೆ" ಕಿರಾಂ 6-43। "ಯದಸ್ಯ ಯಾತ್ರಾಸು ಬಲೋದತಂ ರಜ:" ನೆಪಂ 1-2। 5. ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ, ಉತ್ಕಟವಾದ. "ಯೋಷಿದ್ಧತಮನೋಭವರಾಗಾ ಮಾನವತ್ಯಪಿ ಯಯಿ ದಯಿತಾಂಜಮ್" ಕಿರಾಂ 9-68। 6. ಕಠಿನವಾದ, ಪರುಷವಾದ, ನಿಷ್ಕರವಾದ. "ವಚನೇರಸತಾಂ ಮಹೀಯಸೋ ನ ಸ್ವಲ್ಪವ್ಯೇತಿ ಗುಣ್ವಮದತ:" ಮಾಘಂ 16-29। 7. ಗಂಭೀರವಾದ, ಭವ್ಯವಾದ.

**ಉತ್ತರ ಉದ್ಧೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳುವುದು. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ಹೊಡೆಯುವುದು. **ಉದ್ + ಹನ** (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)। 3. ಅಹಂಕಾರ, ಗರ್ವ, ಸೊಕ್ಕು. "ನ ಲಕ್ಷ್ಮಯಾಮಾಸ ಮಹಾಜನಾನಾಂ ಶಿರಾಂಸಿ ನೆವೋದತಿಮಾಜಗಾಮ" ಮಾಘಂ 3-28। 4. ಅಲುಗಾಡುವುದು, ದುಡುಗಾಡುವುದು. 5. ಅವಿಧೇಯತೆ, ಉದ್ಧಟತನ. "ನಯತಿ ದ್ವತಮುದತಿಶ್ಚಿತ: ಪ್ರಸಭಂ ಭಜ್ಜಮಭಙ್ಗುರೋದಯ:" ಮಾಘಂ 16-92।

**ಉತ್ತರ ಉದ್ಧರಣ (ನಂ)** 1. (ತೊಂದರೆಯಿಂದ) ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡುವಿಕೆ, ವಿಮೋಚನೆ ಮಾಡುವುದು. **ಉದ್ + ಹೃ** (ಹರಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-115)। "ಸಪ್ತವ್ಯತೀಯಸ್ತ್ರಿಗುಣಾನಿ ತಸ್ಯ ದಿನಾನಿ ದೀನೋದರಣೋಚಿತಸ್ಯ" ಋಷಂ 2-24। 2. ಎಳೆಯುವುದು, ಕಿತ್ತುಹಾಕುವುದು. 3. ಬುಡಸಹಿತ ನಾಶಪಡಿಸುವುದು, ನಿರ್ಮೂಲಗೊಳಿಸುವುದು. 4. ವಾಂತಿಮಾಡುವಿಕೆ. 5. ಸಾಲ ತೀರಿಸುವಿಕೆ. 6. ಮುಕ್ತಿ, ಬಂಧವಿಮೋಚನೆ (ಮೋಕ್ಷ). 7. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಬ್ಬಿಸುವುದು. 8. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ತರುವುದು. "ಯತ್ನವಾನಪಿ ತು ಶ್ರೀಮಾಲ್ಲಾಙ್ಗೂದರಣೇ ತತ:" ಭಾಂ. ವನಂ 149-22।

**ಉತ್ತರಣೀಯ ಉದ್ಧರಣೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ತರಲ್ಪಡುವ. 2. ಬುಡಸಹಿತ ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಎಳೆಯಲ್ಪಡುವ. 4. ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. **ಉದ್ + ಹೃ** (ಹರಣೆ) ಕರ್ಮಂ "ಅನೀಯ್" (3-1-96)।

**ಉತ್ತರ ಉದ್ಧರ್ಪ (ವಿಂ)** 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವ. 2. ನಾಶಪಡಿಸುವ, ನಿರ್ಮೂಲಮಾಡುವ. **ಉದ್ + ಹೃ** (ಹರಣೆ) "ತ್" (3-1-133)। "ಅನಮ್ರಾಣಾಂ ಸಮುದ್ಧತು: ತಸ್ಮಾ-ತ್ಸಿನ್ಧುರಯಾದಿವ" ಋಷಂ 4-34। 3. ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (4-1-4)। **ಉತ್ತರ ಉದ್ಧರ್ಪಣ**.

**ಉತ್ತರ ಉದ್ಧರ್ಪ (ಪುಂ)** 1. ಹೆಚ್ಚು ಹರ್ಷ, ಅಧಿಕ ಸಂತೋಷ. 2. ಹಬ್ಬ, ಉತ್ಸವ, ಸಮಾರಂಭ. (ವಿಂ) 3. ಹರ್ಷವುಳ್ಳ, ಆನಂದವುಳ್ಳ. **ಉದ್ಗತೋ ಹೃಷಿ ಯಸ್ಯ**।

**ಉತ್ತರ ಉದ್ಧರ್ಪಣ (ನಂ)** 1. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಪಡಿಸುವುದು, ಉತ್ತೇಜನ ಕೊಡುವುದು. **ಉದ್ + ಹೃ** (ಹೃಷಿ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-115)। 2. ರೋಮಾಂಚ, ಮೈಗೂದಲು ಎಚ್ಚರಗೊಳ್ಳುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 3. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವ, ಉತ್ತೇಜನ ಕೊಡುವ. "ಹಿತಮುದ್ಧರ್ಪಣಂ ಚೈವ ಉವಾಚ ಪ್ರಥಿತಂ ವಚ:" ರಾಮಾಂ।

**ಉತ್ತರ ಉದ್ಧರ್ಪಿನ್ (ವಿಂ)** ಹೆಚ್ಚು ಸಂತೋಷವುಂಟು ಮಾಡುವ, ಅಧಿಕ ಆನಂದಪಡಿಸುವ. **ಉದ್ + ಹೃ** (ಹೃಷಿ) + ಣಿಕ್ "ಣಿನ್" (3-1-134)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (4-1-4)। **ಉತ್ತರ ಉದ್ಧರ್ಪಿಣೀ**.

**ಉತ್ತರ ಉದ್ಧವ (ಪುಂ)** 1. ಉತ್ಸವ, ಹಬ್ಬ, ಆನಂದ ಸಮಾರಂಭ. **ಉದ್ಧನೋತಿ ದು:ಖಮ್ - ಧೂ** (ಕಂಪನೆ) "ಅಕ್" (3-1-134)। 2. ಯಾಗಾಗ್ನಿ, ಯಜ್ಞ ಸಂಬಂಧವಾದ ಅಗ್ನಿ. 3. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಸ್ನೇಹಿತನಾದ ಒಬ್ಬ ಯಾದವ. "ಭಾರತೀಮಾಹಿತಭರಾಮಥಾನುಧತಮುದ್ಧವ:" ಮಾಘಂ 2-69। "ಉದ್ಧವೋ ಯಾದವಭಿಧಿ ಮಹೇ ಚ ಕ್ರುತುಪಾವಕೇ" ಮೇದಿಂ।

**ಉತ್ತರ ಉದ್ಧವದೂತ (ನಂ)** -ಸಂದೇಶ -ಸಂದೇಶ (ಪುಂ) ಗೋಪಾಂಗನೆಯರು ಉದ್ಧವನನ್ನು ದೂತ ನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿ ಹೇಳಿದ ಒಂದು ಕಾವ್ಯ. **ಉದ್ಧವ: ದೂತೋ ಯತ್ರ**। **ಉದ್ಧವ: ಸಂದಿಷ್ಯತೇಷ್ವ**।

**ಉತ್ತರ ಉದ್ಧಸ್ತ (ವಿಂ)** ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿದ ಕೈಯುಳ್ಳ, ತೋಳುಗಳನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿರುವ. **ಉದ್ಗತೋ ಹಸ್ತೋ ಯಸ್ಯ**।

**ಉತ್ತರ ಉದ್ಧಾನ (ನಂ)** 1. ಒಲೆ. **ಉದ್ಧೀಯತೇಷ್ವಿಮನ್ ಅನಿ:** -ಝಾಙ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-115)। (ವಿಂ) 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದಿರುವ. "ಉದ್ಧಾನಮುದ್ಗತೇ ವಾಚ್ಯಲಿಙ್ಗಂ ಚುಲ್ಯಾಂ ನಪುಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ।

**ಉತ್ತರ ಉದ್ಧಾರ (ಪುಂ)** 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ತೆಗೆಯುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ಹಿಡಿಯುವುದು.



ವುಡು. ಉದ್ + ಹ್ (ಹರಣೆ) ಭಾವೆ "ಘ" (೩-೩-೧೮)।  
 2. ಋಣ, ಸಾಲ. ಕರ್ಮಂ "ಘ" (೩-೩-೧೯)। "ಉದ್ಧಾರ-  
 ಸ್ವೋದ್ಧಾರವುಣ" ಮೇದಿಂ। "ಗೋತ್ರೋದ್ಧಾರಪ್ರವೃತ್ತೋಽಪಿ ಗೋತ್ರೋದ್ಧೇದಂ  
 ಪುರಾಕರೋಃ" ಚಂದ್ರಾಂ। 3. ಋಣವಿಮೋಚನೆ, ಸಾಲ  
 ದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ. ಭಾವೆ "ಘ"। 4. ತೊಂದರೆ  
 ಯಿಂದ ಪಾರುಮಾಡುವುದು. 5. ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಪುತ್ರನಿಗೆ  
 ಕೊಡುವ ಅಧಿಕಭಾಗ, ಅಸ್ತಿಯ ವಿಭಾಗ ಕಾಲದಲ್ಲಿ  
 ಒಟ್ಟು ಅಸ್ತಿಯಲ್ಲಿ ತೆಗೆದಿಟ್ಟು ಹಿರಿಯ ಮಗನಿಗೆ  
 ಕೊಡುವ ಅಧಿಕಾಂಶ. ಕರ್ಮಂ "ಘ"। "ಜ್ಯೇಷ್ಠಸ್ಯ  
 ವಿಶ ಉದ್ಧಾರಃ ಸರ್ವದ್ರವ್ಯಾನ್ವ ಯದ್ವರಮ್। ತತೋರ್ಷ ಮಧ್ಯಮಸ್ಯ  
 ಸ್ಯಾತುರೀಯಂ ತು ಯವೀಯಸಃ" ಮನುಂ ೯-೧೧೨। 6. ಯುದ್ಧ  
 ದಲ್ಲಿ ಯೋಧರು ಕೊಳ್ಳೆಹೊಡೆದುದರಲ್ಲಿ ರಾಜನಿಗೆ  
 ಸೇರಬೇಕಾದ ಉತ್ಕೃಷ್ಟ ಭಾಗ. "ರಾಜಶ್ಚ ದ್ವಾರೋದ್ಧಾರ-  
 ಮಿತ್ಯೇವಾ ವಂದಿಕೀ ಶ್ರುತಿಃ। ರಾಜಾ ಚ ಸರ್ವಯೋಧೇಭ್ಯಾ  
 ದಾತವ್ಯಮಪೃಥಗ್ಜಿತಮ್" ಮನುಂ ೭-೯೭। 7. ಮುಕ್ತಿ,  
 ಮೋಕ್ಷ. 8. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಉತ್ಕರ್ಷ, ಅಭ್ಯುದಯ,  
 ಏಳಿಗೆ.

ಉದ್ಧಾರಕ ಉದ್ಧಾರಕ (ವಿಂ) 1. ತೊಂದರೆಯಿಂದ ಪಾರು  
 ಮಾಡುವವನು, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆಮಾಡುವವನು.  
 2. ಬುಡಸಹಿತ ಕಿತ್ತುಹಾಕುವವನು. ಉದ್ + ಹ್ (ಹರಣೆ)  
 "ಘ" (೩-೩-೧೩೩)।

ಉದ್ಧಾರಣ ಉದ್ಧಾರಣ (ನಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಬ್ಬಿಸುವುದು.  
 ಉದ್ + ಹ್ (ಹರಣೆ) + ಣಿ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಉದ್ಧರ ಉದ್ಧರ (ವಿಂ) 1. ಭಾರವಿಲ್ಲದ, ಹೊರೆಯಿಲ್ಲದ.  
 ಉದ್ಗತಾ ಧರ್ಮಾತ್ "ಋ" (೪-೪-೭೪)। 2. ಸ್ವಧವಾದ,  
 ಮಜಭೂತಾದ. "ಪ್ರಸಕ್ತಕುಚಬಂಧುರೋದ್ಧರೋಃ ಪ್ರಸಮ-  
 ವಿಭಿನ್ನತನುತರೀಯಬಂಧಾ" ಮಾಘಂ ೭-೩೪। 3. ಗಟ್ಟಿ  
 ಯಾದ, ಉಚ್ಚವಾದ (ಶಬ್ದ). "ಪಶ್ಚಾದ್ಧಮಜಂ ಪಿತರ-  
 ಮುದ್ದುರಧ್ವನಿಮಹಾಜನಾನುಯಾತಮಾನೀಯ" ದಶಕುಂ। 4. ತುಂಬಿ  
 ರುವ, ಪೂರ್ಣವಾದ. "ಜಮೇ ಜಯೋದ್ಧರವಿಶಾಲವಿಷಾಣ-  
 ಮುಕ್ಷಣಾ" ಮಾಘಂ ೪-೬೪। 5. ಸಮರ್ಥ, ಶಕ್ತ.  
 6. ಉತ್ಸರ್ಜನಾದ, ಉತ್ಸರ್ಜವುಳ್ಳ. "ಪ್ರಿಯಮಪಾಸು-  
 ಮುಪಾಸಿತುಮುದ್ಧರಾಃ" ನೈಷಂ ೪-೪೬।

ಉದ್ಧತ ಉದ್ಧತ (ವಿಂ) 1. ಅಲುಗಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಲ್ಲಾಡಿ  
 ಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್ + ಘ (ಕರ್ಮ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।  
 "ಪುನಾನ್ ಪವನೋದ್ಧತೈರ್ಮೇರಾಹುತಿಗಂಧಿಭಿಃ" ರಘುಂ ೧-೪೩।  
 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಬ್ಬಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಉತ್ಕುಲಸ್ಥಲನಲಿನಿವನಾ-  
 ದಮುಷ್ಮಾದುದ್ಧತಃ ಸರಸಿಜಸಂಭವಃ ಪರಾಗಃ" ಕಿರಾಂ ೪-೩೯।

ಉದ್ಧನ ಉದ್ಧನ (ನಂ) 1. ಅಲುಗಾಡಿಸುವಿಕೆ,  
 ಅಲ್ಲಾಡಿಸುವಿಕೆ. ಉದ್ + ಘ (ಕರ್ಮ) "ಲ್ಯುಟ್"  
 (೩-೩-೧೧೫)।

ಉದ್ಧಯಮಾನ ಉದ್ಧಯಮಾನ (ವಿಂ) ಅಲುಗಾಡಿಸ  
 ಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಅಲ್ಲಾಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಉದ್ + ಘ  
 (ಕರ್ಮ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನ" (೩-೨-೧೨೪)।

ಉದ್ಧಲನ ಉದ್ಧಲನ (ನಂ) 1. ಪುಡಿಯನ್ನು ಜೆಲ್ಲು  
 ವುದು, ಸುಗಂಧಚೂರ್ಣ ಮುಂತಾದವನ್ನು ಮೈಗೆ  
 ಒತ್ತುವುದು. ಉದ್ + ಖಲಿ + ಣಿ "ಲ್ಯುಟ್"  
 (೩-೩-೧೧೫)। "ಮಸ್ಮೋದ್ಧಲನ ಭದ್ರಮಸ್ತು ಭವತೇ ಉದ್ಧಾ-  
 ಮಾಲೇ ಶುಭಂ ಹಾ ಸೋಪಾನಪರಮ್ಪರೇ ಗಿರಿಸುತಾಕಾಂತಾಲಯಾಲಂಕೃತೇ"  
 ಕುವಂ। 2. ಮಸಾಲೆಪುಡಿ, ಪದಾರ್ಥಗಳನ್ನು ಕುಟ್ಟಿ  
 ಅಡಿಗೆಗೆ ಹಾಕುವ ಸಂಬಾರದ ಪುಡಿ.

ಉದ್ಧಷಣ ಉದ್ಧಷಣ (ನಂ) ರೋಮಾಂಚ,  
 ಮೈಗೂದಲು ಎಚ್ಚರಗೊಳ್ಳುವುದು.

ಉದ್ಧತ ಉದ್ಧತ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುಲ್ಪಟ್ಟ.  
 ಉದ್ + ಹ್ (ಹರಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ನಿಕ್ಷೇಪಣಾಯ  
 ಪದಮುದ್ಧತಮುದ್ಧಹಂತಿ" ಕುಮಾಂ ೪-೮೫। 2. ಬೇರ್ಪಡೆ  
 ಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಅನುಭವಿಸಿ ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಮೇಲಕ್ಕೆ  
 ಎಳೆದು ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ (ಬಾವಿಯ ನೀರು). 5. ಕಿತ್ತು  
 ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. "ನ ಜಾತು ವೇನಾಯಕಮೇಕಮುದ್ಧತಂ ವಿಷಾಣಮದ್ಯಾಪಿ  
 ಪುನಃ ಪ್ರರೋಹತಿ" ಮಾಘಂ ೧-೬೦। 6. ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ,  
 ನೂಕಲ್ಪಟ್ಟ. "ನೋದ್ಧತಂ ತಿಮಿರಮದ್ರಿವನೇಮ್ಯಃ" ಕಿರಾಂ  
 ೯-೨೫। 7. ಚದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಜಾತಾ-  
 ಭಿಷಜ್ಞೋ ನೃಪತಿರ್ನಿಷಜ್ಞಾದುದ್ಧತುಮೇಚ್ಛತ್ಪ್ರಸಮೋದ್ಧತಾರಿಃ" ರಘುಂ  
 ೨-೩೦।

ಉದ್ಧತಿ ಉದ್ಧತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವುದು.  
 ಉದ್ + ಘ (ಧಾರಣೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।  
 "ಉದ್ಧತಿಃ ಸ್ವಲದಿಲಾಪರರಮ್ಭಾತ್" ನೈಷಂ ೨೧-೪೮।  
 2. ಹೊರಕ್ಕೆ ಎಳೆದುಬಿಡುವುದು. 3. ತೊಂದರೆಯಿಂದ  
 ಪಾರುಮಾಡುವುದು. ಉದ್ + ಹ್ (ಹರಣೆ) "ಕ್ತಿನ್"  
 (೩-೩-೯೪)। 4. ಮುಕ್ತಿ, ಮೋಕ್ಷ. "ವ್ರಪಂತೇ ತೀರ್ಥಾನಿ  
 ತ್ವರಿತಮಿಹ ಯಸ್ಯೋದ್ಧತಿವಿಧೌ" ಗಜ್ಜಾಲಂ।

ಉದ್ಧನ್ಧ ಉದ್ಧನ್ಧ (ಪುಂ) 1. ಕಟ್ಟಿಹಾಕುವುದು, ಗಂಟು  
 ಹಾಕುವುದು. ಉದ್ + ಬನ್ಧ (ಬಂಧನೆ) "ಘ" (೩-೩-೧೮)।  
 2. ತೂಗುಹಾಕುವುದು, ನೇಣುಹಾಕುವುದು. "ವಿಷ-  
 ಮುದ್ಧನ್ಧನಂ ಚೈವ ಶಸ್ತ್ರಮಗ್ನಿಪ್ರವೇಶನಮ್। ಕರಿಣ್ಯೇ ನ ಹಿ  
 ತಾನೃದ್ಧಾನ್ ಪುನರ್ದೃಷ್ಟುಮಿಹೋತ್ಸಹೇ" ಭಾಂ ವನಂ ೭-೬।



(ವಿಂ) 3. ಬಂಧನದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆಹೊಂದಿದ, ಕಟ್ಟು ಬಿಚ್ಚಿರುವ. ಉದಗತೋ ಬನ್ಧಾತ್ | "ಉದ್ಧವಕೇಶಶ್ಚುತಪತ್ರ-  
ಲೇಖ:" ರಘುಂ ೧೬-೬೭ | ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |  
-ಬನ್ಧನಮ್ -ಬಂಧನಮ್.

ಉದ್ಧವಕ ಉದ್ಧವಕ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು,  
ರಜಕವೃತ್ತಿಯವನು, ಬಟ್ಟೆ ಒಗೆಯುವವನು.  
"ಆಯೋಗವೇನ ವಿಪ್ರಾಯಾಂ ಜಾತಾಸ್ತಾಂಪ್ರಜೀವಿನಃ | ತಸ್ಯೈವ  
ನೃಪಕನ್ಯಾಯಾಂ ಜಾತಃ ಸುನಿಕ ಉಚ್ಯತೇ | ಸುನಿಕಸ್ಯ ನೃಪಾಯಾಂ  
ತು ಜಾತಾ ಉದ್ಧವಕಾಃ ಸ್ಮೃತಾಃ | ನಿರ್ಣಯೇಯುರ್ವಸ್ತ್ರಾಣಿ  
ಅಸ್ಪೃಶ್ಯಾಶ್ಚ ಭವಂತ್ಯತಃ" ಉನಾಃ |

ಉದ್ಧಾಪ ಉದ್ಧಾಪ (ವಿಂ) ಕಣ್ಣೊರೆನಿಂದ ತುಂಬಿದ.  
ಉದಗತೋ ಬಾಣೋ ಯತ್ರ | "ಹೃದಯಾನಿ ಸಮಾವಿವೇಶ ಸ ಕ್ಷಣ-  
ಮುಧಾಪದೃಶಾಂ ತಪೋಭೃತಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೫೯ |

ಉದ್ಧಾಹ ಉದ್ಧಾಹ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿದ ತೋಳು  
ಗಳುಳ್ಳ. ಉದಗತೋ ಬಾಹು ಯಸ್ಯ | "ಪ್ರಾಂಶುಲಮ್ಯೇ ಫಲೇ  
ಲೋಭಾದುದ್ಧಾಹುರಿವ ವಾಮನಃ" ರಘುಂ ೧-೩ |

ಉದ್ಧ ಉದ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಅರಳಿದ, ವಿಕಾಸ  
ಹೊಂದಿದ. ಉದ್ + ಬುಧ (ಅವಗಮನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) |  
"ಉದ್ಧಮುಖಕನಕಾಂಜನಿಮ್ ... ವಹಂತಿಮಾಸಙ್ಗತಿಯಗಪರ್ವತ-  
ದೃಷ್ಟಿವಕ್ರಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೧-೪೩ | 2. ಕೆರಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಎಚ್ಚರಗೊಂಡ. [ಪೂರ್ವಾನುಭೂತವಾದ ಒಂದು  
ವಸ್ತುವಿನ ದರ್ಶನದಿಂದ ಅದಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ  
ಮತ್ತೊಂದು ವಸ್ತುವಿನ ನೆನಪುಂಟಾಗುವುದು. ಹಿಂದೆ  
ನೋಡಿದ್ದ ಆನೆಯ ದರ್ಶನದಿಂದ ಅದರ ಮೇಲಿದ್ದ  
ಮಾವಟೆಗನ ನೆನಪು ಬರುವುದು ಹಿಂದಿನ ಸಂಸ್ಕಾರ  
ದಿಂದ. ಈ ಸಂಸ್ಕಾರವು ಈಗಿನ ಗಜದರ್ಶನದಿಂದ  
ಉದ್ಭವವು.] 3. ತಿಳಿವಳಿಕೆ ಹೊಂದಿದ. ಉದ್ + ಬುಧ  
ಕರ್ತಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) |

ಉದ್ಧೋ ಉದ್ಧೋ (ಪುಂ) 1. ಸ್ಮರಣೆ, ನೆನಪು.  
2. ಎಚ್ಚರಿಕೆ. 3. ಅಧಿಕವಾಗುವಿಕೆ, ಹೆಚ್ಚುವಿಕೆ.  
ಉದ್ + ಬುಧ (ಅವಗಮನೇ) "ಬ್" (೩-೩-೧೮) |  
"ಉತ್ಸಾಹಾದಿಸಮುದ್ಧೋಃ ಸಾಧಾರಣ್ಯಾಭಿಮಾನತಃ" ಸಾಂಧಂ  
೩-೧೧ | ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | ಉದ್ಧವನಮ್  
ಉದ್ಧವನಮ್.

ಉದ್ಧೋಕ ಉದ್ಧೋಕ (ವಿಂ) 1. ಜ್ಞಾಪಿಸುವ. ನೆನಪಿಗೆ  
ತರುವ. 2. ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸುವ. 3. ತಿಳಿವಳಿಕೆ  
ಕೊಡುವ. 4. ಹೆಚ್ಚಿಸುವ, ಅಧಿಕಗೊಳಿಸುವ. ಉದ್ +  
ಬುಧ (ಅವಗಮನೇ) + ಣಿಕ್ "ಫ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |

"ಉದ್ಧೋಕಾ ಲೋಕೇ ವಿಭಾವಾಃ ಕಾವ್ಯನಾಟಕಯೋಃ  
ಸಾಂಧಂ ೩-೨೮ |

ಉದ್ಧೋಯತ್ ಉದ್ಧೋಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಜ್ಞಾಪಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ನೆನಪಿಗೆ ತರುತ್ತಿರುವ. 2. ತಿಳಿಸುತ್ತಿರುವ.  
ಉದ್ + ಬುಧ (ಅವಗಮನೇ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಬೋಧಯಂತಿ -ಬೋಧಯಂತಿ.

ಉದ್ಧೋದಿತ ಉದ್ಧೋದಿತ (ವಿಂ) 1. ಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ನೆನಪಿಗೆ ತರಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಧಿಕಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
3. ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಉದ್ + ಬುಧ (ಅವಗಮನೇ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

ಉದ್ಧುಟ ಉದ್ಧುಟ (ಪುಂ) 1. (ಅಕ್ಕಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು  
ಕೇರುವ) ಶೂರ್ವ, ಮೊರೆ. ಉದ್ + ಭಟ (ಭೃತೌ) ಕರಂ  
"ಬಃ" (೩-೩-೧೧೮) | 2. ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ.  
3. ಸೂರ್ಯ. "ಉದ್ಧುಟಃ ಕಚ್ಛಪೇ ಸೂರ್ಯ" ಮೇದಿಂ |  
(ವಿಂ) 4. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ. "ಪದೇ ಪದೇ  
ಸಂತಿ ಭಟಾ ರಣೋದ್ಧುಟಾಃ" ನೈಷಂ ೧-೧೩೨ | 5. ಉದಾರ  
ವಾದ, ಗಂಭೀರವಾದ.

ಉದ್ಧವ ಉದ್ಧವ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಉದಗತೋ ಭವೋ ಭವವನ್ಧೋ  
ಯಸ್ಮಾತ್ | "ಸಮುದ್ರತೋ ಭವೋ ಯಸ್ಮಾದುದ್ಧವಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ" |  
"ಉದ್ಧವಃ ಕ್ಷೋಭಣೋ ದೇವಃ" ವಿಂ ಸಂ | 2. ಉತ್ಪತ್ತಿ,  
ಜನ್ಮ, ಹುಟ್ಟು. ಉದ್ + ಭೂ ಭಾವೇ "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭) |  
"ದಿಲೀಪಸುನುರ್ಮಣಿರಾಕರೋದ್ಧವಃ" ರಘು ೩-೧೮ | "ಸ್ಥೈರ್ಯ  
ಚತುರ್ಥೆ ತ್ವಜ್ಞಾನಾಂ ಪಶ್ಚಿಮೇ ಶೋಣಿತೋದ್ಧವಃ" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೮೦ |  
3. ಮೂಲ, ಉತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣ. 4. ಉತ್ಪತ್ತಿಯ  
ಸ್ಥಾನ, ಮೂಲಸ್ಥಾನ. ಉದ್ಧವತ್ಯಸ್ಮಾತ್ - ಉದ್ + ಭೂ  
"ಅಪ್" (೩-೩-೧೩೪) | "ಮೃತ್ಯುಃ ಸರ್ವಹರಶ್ಚಾಹಮುದ್ಧವಶ್ಚ  
ಭವಿಷ್ಯತಾಮ್" ಗೀತಾ ೧೦-೩೪ | (ವಿಂ) 5. ಸಂಸಾರ  
ದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆಹೊಂದಿದ, ಸಂಸಾರವನ್ನು ದಾಟಿದ.  
ಉದಗತೋ ಭವಾತ್ | ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) -ಭವನಮ್  
-ಭವನಮ್.

ಉದ್ಧವತ್ ಉದ್ಧವತ್ (ವಿಂ) ಉದ್ಧವಿಸುವ, ಹುಟ್ಟುವ,  
ಉಂಟಾಗುವ. ಉದ್ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಭವಂತಿ -ಭವಂತಿ.

ಉದ್ಧಾವನ ಉದ್ಧಾವನ (ನಂ) 1. ಉಹೆ, ಕಲ್ಪನೆ.  
2. ಸೃಷ್ಟಿಸುವಿಕೆ, ನಿರ್ಮಿಸುವಿಕೆ, ಉಂಟುಮಾಡುವುದು.  
ಉದ್ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |  
3. ಚಿಂತಿಸುವುದು, ಆಲೋಚಿಸುವುದು. ಉದ್ + ಭೂ +  
ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | 4. ಕಥನ, ಹೇಳುವುದು,



ಎತ್ತಿ ಹೇಳುವುದು. "यदि स्वभावान्मम नोज्ज्वलं  
कुलं ततस्तदुद्भावनमोचिती कुतः" ನೆಪಂ ೧-೧೦।  
"युच्" (೩-೩-೧೦೭)। -ಭಾವನಾ-ಭಾವನಾ.

उद्भावनीय ಉದ್ಭಾವನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಕಲ್ಪಿಸಲ್ಪಡುವ,  
ಉಂಟುಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಸೃಷ್ಟಿ  
ಸಲು ಅರ್ಹವಾದ, ನಿರ್ಮಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. उद्+भू  
(सत्तायाम्) + णिच् "अनीयर्" (೩-೧-೯೬)।

उद्भावयत् ಉದ್ಭಾವಯತ್ (ವಿಂ) ಹುಟ್ಟಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಉಂಟುಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಕಲ್ಪಿಸುತ್ತಿರುವ. उद्+भू  
(सत्तायाम्) + णिच् "शत्" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ  
"डीप्" (೪-೧-೬)। -ಭಾವಯಂತಿ-ಭಾವಯಂತೀ.

उद्भास ಉದ್ಭಾಸ (ಪುಂ) ಪ್ರಕಾಶ, ಕಾಂತಿ, ಬೆಳಕು.  
उद्+भास् (दीप्तौ) "घञ्" (೩-೩-೧೮)।

उद्भासक ಉದ್ಭಾಸಕ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುವ,  
ಬೆಳಕನ್ನಂಟುಮಾಡುವ. उद्+भास् (दीप्तौ)  
"ष्बुल्" (೩-೧-೧೩೩)।

उद्भासयत् ಉದ್ಭಾಸಯತ್ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವ.  
उद्+भास् (दीप्तौ) + णिच् "शत्" (೩-೨-೧೨೪)।

उद्भासवत् ಉದ್ಭಾಸವತ್ (ವಿಂ) ಕಾಂತಿಯುಕ್ತವಾದ,  
ಪ್ರಕಾಶದಿಂದ ಕೂಡಿದ. उद्भास "मत्तुप्" (೪-೨-೯೪)।

उद्भासित ಉದ್ಭಾಸಿತ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಬೆಳಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. उद्+भास् (दीप्तौ) + णिच् "क्तः"  
(೩-೨-೧೦೨)। "यथायथं ताः सहिता नभश्चरः  
। प्रभाभिरुद्भासितशैलवीरुधः" ಕಿರಾಂ ೮-೨।

उद्भासिन् ಉದ್ಭಾಸಿನ್ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆ  
ಯುವ. उद्भासते - उद्+भास् (दीप्तौ) "णिनिः"  
(೩-೧-೧೩೪)। "विभीषणोद्भासि पिनद्वभोगि वा  
गजाजिनालम्बि दुकूलधारि वा" ಕುಮಾಂ ೪-೭೮।

उद्भिज्ಜ ಉದ್ಭಿಜ್ಜ (ಪುಂ) 1. ಭೂಮಿಯನ್ನು ಭೇದಿಸಿ  
ಕೊಂಡು ಹುಟ್ಟುವ ಗಿಡ, ಮರ, ಬಳ್ಳಿ ಮುಂತಾದುವು.  
उद्भिदो जातम्-जनी (प्रादुर्भावे) "ङः" (೩-೨-೯೮)।  
"उद्भिज्जाः स्थावराः सर्वे बीजकाण्डप्ररोहिणः"  
ಮನುಂ ೧-೪೬। (ವಿಂ) 2. ಅಂಕುರಿಸುವ, ಮೊಳಕೆ  
ಹೊರಡುವ.

उद्भिद् ಉದ್ಭಿದ್ (ಪುಂ) ಗಿಡ, ಮರ, ಬಳ್ಳಿ ಮುಂತಾ  
ದುದು. उद्+भिदिर् (विदारणे) "क्विप्" (೩-೨-೭೬)।  
"उद्भिदस्तर्गुलमाद्याः" ಅಮಂ 1. "उद्भिद्विरचितावासः  
कपोतादिव तत्र सः" ನೆಪಂ ೧೭-೨೧೫।

उद्भिद ಉದ್ಭಿದ (ಪುಂ) 1. ಗಿಡ, ಮರ, ಬಳ್ಳಿ ಮೊದಲಾ  
ದುದು. उद्+भिदिर् (विदारणे) "क्तः" (೩-೧-೧೩೫)।  
(ವಿಂ) 2. ಅಂಕುರಿಸುವ, ಮೊಳಕೆ ಹೊರಡುವ.

उद्भिन्न ಉದ್ಭಿನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಹುಟ್ಟಿದ, ಉತ್ಪನ್ನವಾದ.  
उद्+भिदिर् (विदारणे) "क्तः" (೩-೪-೭೨)।  
"उद्भिन्नापरमृदुतरकिसलय इव लक्ष्यतेऽशोकः" ರತ್ನಾಂ  
೧-೨೧। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೊರಟಿರುವ, ಅಂಕುರಿಸಿದ,  
ಮೊಳಕೆ ಹೊರಟಿರುವ. "उद्भिन्नरोमाञ्चततिर्बभासे  
कान्तप्ररोहा कमलस्थलीव" ಯಾದಂ ೧೩-೧೧। 3. ಒಡೆ  
ಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಭೇದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತುಂಡುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೀಳ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. "यौवनोद्भिन्नशैशवा"। 4. ಹೊರಗಡಹಲ್ಪಟ್ಟ  
ಹೃದಯವುಳ್ಳ, ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಆಶಯವುಳ್ಳ.  
"उद्भिन्नास्मि सहवासिन्या मालत्या" ಮಾಲತೀಂ ೭।

उद्भूत ಉದ್ಭೂತ (ವಿಂ) 1. ಹುಟ್ಟಿದ, ಉತ್ಪತ್ತಿ  
ಹೊಂದಿದ, ಉಂಟಾದ. उद्+भू (सत्तायाम्) "क्तः"  
(೩-೪-೭೨)। 2. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಇಂದ್ರಿಯ  
ಗೋಚರವಾಗುವ. (ರೂಪ, ರಸ, ಗಂಧ, ಸ್ಪರ್ಶ  
ಮತ್ತು ಶಬ್ದ). 3. ಬೆಳೆದಿರುವ, ವೃದ್ಧಿಯಾದ,  
ಹೆಚ್ಚಿದ.

उद्भूतरूप ಉದ್ಭೂತರೂಪ (ನಂ) 1. ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣುವ  
ರೂಪ. (ವಿಂ) 2. ಕಾಣುವಂತಿರುವ ರೂಪವುಳ್ಳ,  
ಆಕಾರವುಳ್ಳ. उद्भूतं प्रत्यक्षयोग्यं रूपं यस्य।

उद्भूति ಉದ್ಭೂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟುವಿಕೆ,  
ಜನ್ಮಪಡೆಯುವಿಕೆ. उद्+भू (सत्तायाम्) "क्तिन्"  
(೩-೩-೯೪)। 2. ಉನ್ನತಿ, ಎಳೆಗೆ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ.  
"उमा बध्मवान् दाता याचितार इमे वयम्। वरः  
शम्भुरलं ह्येष त्वत्कुलोद्भूतये विधिः" ಕುಮಾಂ ೬-೮೨।

उद्भूत ಉದ್ಭೂತ (ಪುಂ) 1. ಭೇದಿಸಿಕೊಂಡು ಹೊರಡು  
ವುದು, ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗುವುದು, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳು  
ವುದು, ಪ್ರಕಾಶವಾಗುವುದು. उद्+भिदिर् (विदारणे)  
"घञ्" (೩-೩-೧೮)। "उमास्तनोद्भूदमनुप्रवृद्धौ  
मनोरथो यः प्रथमं बभूव" ಕುಮಾಂ ೭-೨೪। 2. ಒಡೆಯು  
ವುದು, ಸೀಳುವುದು, ತುಂಡುಮಾಡುವುದು. 3. ನೀರಿನ  
ಬುಗ್ಗೆ, ಉಟೆ. 4. ಬೇರೆಯಾಗುವಿಕೆ, ಬಿಟ್ಟು  
ಹೋಗುವಿಕೆ. 5. (ಮೈಮೇಲೆ) ಮುಳ್ಳೇರುವುದು,  
ರೋಮಾಂಚ, ನವಿರೇಳುವುದು.

उद्भ्रम ಉದ್ಭ್ರಮ (ಪುಂ) 1. ಉದ್ವೇಗ, ಕಳವಳ.  
2. ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ. उद्+भ्रम् (चलने) करं "घञ्"



(3-3-121) 3. ಭ್ರಾಂತಿ, ತಪ್ಪಾಗಿ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. "ಪ್ರಸೂನಮಾಲಾ ನಲಸ್ಯೋದ್ಭ್ರಮವೀಕ್ಷಿತಸ್ಯ" ನೆಪಂ 6-49. 4. ಸುತ್ತಲೂ ತಿರುಗುವಿಕೆ, ಗರಗರನೆ ತಿರುಗುವಿಕೆ. ಉದ್ + ಭ್ರಮು ಭಾವೇ "ಘಜ್" (3-3-120) 1. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-121) 1. -ಭ್ರಮಣಮ್ -ಭ್ರಮಣಮ್.

ಉದ್ಭ್ರಾಂತ ಉದ್ಭ್ರಾಂತ (ವಿಂ) 1. ಗಾಬರಿಗೊಂಡ, ಕಳವಳಗೊಂಡ. 2. ಹೆದರಿದ, ಭಯಗೊಂಡ. ಉದ್ + ಭ್ರಮು (ಚಲನೆ) "ಕ್ತಃ" (3-4-92) 1. "ಅಥ ರಾಮಶಿರಃಕ್ಷೇದದರ್ಶನೋದ್ಭ್ರಾಂತಚೇತನಾಮ್" ರಘುಂ 12-94. 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿದ, ಮೇಲೆ ಸುತ್ತುತ್ತಿರುವ. "ಮಾರೀಚೋದ್ಭ್ರಾಂತಹಾರಿತಾ ಮಲಯಾದ್ರೇಫತ್ಯಕಾಃ" ರಘುಂ 4-46.

ಉದ್ಭ್ರಾಂತ ಉದ್ಭ್ರಾಂತಮಾನ (ವಿಂ) ಪ್ರಯತ್ನಪಡುತ್ತಿರುವ, ಯತ್ನ ನಡೆಸುತ್ತಿರುವ. ಉದ್ + ಯಮ (ಉಪರಮೆ) "ಶಾನಃ" (3-2-124) 1. "ಉದ್ಭ್ರಾಂತಮಾನಾ ಗಮನಾಯ ಪಶ್ಚಾತ್ಪುರೋ ನಿವೇಶೋ ಪಥಿ ಚ ವ್ರಜಂತಿ" ರಘುಂ 16-29.

ಉದ್ಭ್ರಾಂತ ಉದ್ಭ್ರಾಂತ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದು ನಿಲ್ಲುವ. ಉದ್ + ಇಣ್ (ಗತೌ) "ಶತ್" (3-2-124) 1. "ಅಯೋಚ್ಚಕೇರಾಸನತಃ ಪರಾರ್ಥಾದ್ಭ್ರಾಂತಃ ಸ ಧೃತಾರುಣವಲ್ಕಲಾಃ" ಕಿರಾಂ 2-49. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೊರಡುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುತ್ತಿರುವ. "ಉದ್ಭ್ರಾಂತಶಾನುಶಕಲೇಷು ಕುರಾಭಿಧಾತಾತ್" ಮಾಘಂ 4-9. 3. ಉದಯಿಸುತ್ತಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದು ಬರುತ್ತಿರುವ. "ನೇಕ್ಷತೋದ್ಭ್ರಾಂತಮಾದಿತ್ಯಂ ನಾಸ್ತಂ ಯನ್ತಂ ಕದಾಚನ" ಮನುಂ 4-39.

ಉದ್ಭ್ರಾಂತ ಉದ್ಭ್ರಾಂತ (ನಂ) 1. ಉದ್ಭ್ರಮ, ಪ್ರಯತ್ನ. ಉದ್ + ಯಮ (ಉಪರಮೆ) "ಕ್ತಃ" (3-3-124) 1. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಯತ್ನಗೊಂಡ, ಯತ್ನಿಸಿರುವ. ಉದ್ + ಯಮ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-4-92) 1. "ತದಾಶು ಕರ್ತುಂ ತ್ವಯಿ ಜಿಹ್ಮಮುಚ್ಯತೇ ವಿಧೀಯತಾಂ ತತ್ರ ವಿಧೇಯಮುತರಮ್" ಕಿರಾಂ 1-25. "ಪಕ್ಷಚ್ಛೇದೋದ್ಭ್ರಾಂತಶಕ್ರಂ ಶಿಲಾವರ್ಷಿವ ಪರ್ವತಃ" ರಘುಂ 4-40. 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ, ಎತ್ತಿಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್ + ಯಮ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-2-102) 1. "ನ ತೇನ ಸಜ್ಯಂ ಕ್ವಚಿದ್ಭ್ರಾಂತಧನುಃ" ಕಿರಾಂ 1-21. "ಪ್ರಜಾರ್ಥಸಾಧನೇ ತೌ ಹಿ ಪರ್ಯಾಯೋದ್ಭ್ರಾಂತಕಾರ್ಮಕೌ" ರಘುಂ 4-16.

ಉದ್ಭ್ರಾಂತ ಉದ್ಭ್ರಾಂತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಯತ್ನ. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವಿಕೆ. ಉದ್ + ಯಮ (ಉಪರಮೆ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-124) 1.

ಉದ್ಭ್ರಾಂತ ಉದ್ಭ್ರಾಂತ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಯತ್ನ. ಉದ್ + ಯಮ (ಉಪರಮೆ) "ಘಜ್" (3-3-120) 1. "ನಿಶಮ್ಯ ಚೈನಾಂ ತಪಸೇ ಕೃತೋದಮಾಂ ಸುತಾಂ ಗಿರೀಶಪ್ರತಿಸಕ್ತಮಾನಸಾಮ್" ಕುಮಾಂ 5-3.

2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿಹಿಡಿಯುವುದು. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-121) 1. ಉದ್ಭ್ರಮಣಮ್ ಉದ್ಭ್ರಮಣಮ್.

ಉದ್ಭ್ರಾಂತ ಉದ್ಭ್ರಾಂತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಯತ್ನಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್ + ಯಮ (ಉಪರಮೆ) + ಣಿಞ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102) 1. "ಭರ್ತೃಪುಷ್ಪಸಿಂಹಿ ನಿಕ್ಷಿಪತೀನಾಮಾತ್ಮನೋ ಮಧುಮದೋದ್ಭ್ರಾಂತಮಿತಾನಾಮ್" ಕಿರಾಂ 1-66. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ಹಿಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಉದ್ಭ್ರಾಂತ ಉದ್ಭ್ರಾಂತಮಿನ್ (ವಿಂ) ಪ್ರಯತ್ನವುಳ್ಳ, ಉದ್ಭ್ರಾಂತಗತೀಲ. ಉದ್ಭ್ರಾಂತ "ಇತಿಃ" (4-2-121) 1.

ಉದ್ಭ್ರಾಂತ ಉದ್ಭ್ರಾಂತ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದಿರುವ. ಉದ್ + ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ್ತಃ" (3-4-92) 1. "ಉದ್ಭ್ರಾಂತಮುದ್ಭ್ರಾಂತಮನೋಹಜಾಲಮಧ್ಯಾತ್" ಮಾಘಂ 4-25.

ಉದ್ಭ್ರಾಂತ ಉದ್ಭ್ರಾಂತ (ಪುಂ) 1. ಉಪವನ, ಕೈತೋಟ, ಕೈತೋಟವನ. ಉದ್ + ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-121) 1. "ವ್ಯಾವೃತ್ತಗತಿರಿದಾನೇ ಕುಸುಮಸ್ತೇಯಸಾಧವಸಾತ್" ಕುಮಾಂ 2-35. "ಬಾಹ್ಯೋದಾನಸ್ಥಿತಹರಶಿರಃಶ್ಚಂದ್ರಿಕಾಧೌತಹರ್ಮ್ಯಾ" ಮೇಘಂ 1-9. 2. ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡುವುದು. 3. ಪ್ರಯೋಜನ. "ಉದ್ಭ್ರಾಂತಂ ವನಭೇದೇ ಸ್ಯಾನಿಃಸೃತೌ ಚ ಪ್ರಯೋಜನೇ" ವಿಶ್ವಂ.

ಉದ್ಭ್ರಾಂತ ಉದ್ಭ್ರಾಂತಪಾಲ -ಪಾಲಕ -ಪಾಲಕ (ಪುಂ) ತೋಟದ ಕಾವಲುಗಾರ, ಮಾಲಿ, ತೋಟದ ರಕ್ಷಕ. ಉದ್ಭ್ರಾಂತ ಪಾಲಯತಿ - ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಅಣ್" (3-2-1) 1. "ಉದ್ಭ್ರಾಂತಪಾಲಸಾಮಾನ್ಯಮೃತವಸ್ತುಮುಪಾಸತೇ" ಕುಮಾಂ 2-36.

ಉದ್ಭ್ರಾಂತ ಉದ್ಭ್ರಾಂತಪನ (ನಂ) ವ್ರತ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸುವುದು, ಪೂರ್ಣಗೊಳಿಸುವಿಕೆ. ಉದ್ + ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) + ಣಿಞ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-121) 1.

ಉದ್ಭ್ರಾಂತ ಉದ್ಭ್ರಾಂತಪಿತ (ವಿಂ) ಪೂರ್ಣಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್ + ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) + ಣಿಞ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102) 1.

ಉದ್ಭ್ರಾಂತ ಉದ್ಭ್ರಾಂತಮ (ಪುಂ) ತಿಕ್ಕು, ಕಾವಡಿಯ ನೆಲವು, ಛಾರಹೊರುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಹಗ್ಗದಿಂದ ಮಾಡಿದ ನೆಲವು. ಉದ್ + ಯಮ (ಉಪರಮೆ) ಕರಂ "ಘಜ್" (3-3-120) 1.

ಉದ್ಭ್ರಾಂತ ಉದ್ಭ್ರಾಂತಮ (ಪುಂ) ಪ್ರಯತ್ನ, ಉದ್ಭ್ರಮ. ಉದ್ + ಯಮ (ಪ್ರಯತ್ನ) "ಘಜ್" (3-3-120) 1.

ಉದ್ಭ್ರಾಂತ ಉದ್ಭ್ರಾಂತ (ವಿಂ) ಉತ್ಸಾಹಪೂರ್ವಕ ಪ್ರಯತ್ನವುಳ್ಳ, ಉದ್ಭ್ರಾಂತಗತೀಲ, ಸಾಹಸ. ಉದ್ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) "ಕ್ತಃ" (3-4-92) 1.



उद्योग ಉದ್ಯೋಗ (ಪುಂ) ಉದ್ಯಮ, ಪ್ರಯತ್ನ.   
 उद्+युजिर् (योगे) "घञ्" (३-३-१९)। "उद्योगादनि-   
 वृत्तस्य सुसहायस्य धीमतः। आयेवानुगता तस्य नित्यं   
 श्रीः सहचारिणी"। "तद्वैवमिति संचिन्त्य त्यजेन्नोद्योग-   
 मात्मनः" पञ्चतं०।

उद्योगपर्वन् ಉದ್ಯೋಗಪರ್ವನ್ (ನಂ) ಮಹಾ   
 ಭಾರತದ ಉದ್ಯೋಗಪರ್ವ. [ವಿರಾಟಪರ್ವದ ಕೊನೆ   
 ಯಲ್ಲಿ ಅಭಿಮನ್ಯುವಿನೊಡನೆ ಉತ್ತರೆಯ ವಿವಾಹ   
 ನಡೆದ ನಂತರ ಸಂಧಿಗಾಗಿ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನಲ್ಲಿಗೆ ದೂತ   
 ನನ್ನು ಕಳುಹಿಸುವುದು. ಸಂಧಿಯು ಸಫಲವಾಗದೆ   
 ಅರ್ಜುನ ಮತ್ತು ದುರ್ಯೋಧನರು ಯುದ್ಧಸಿದ್ಧತೆ   
 ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ   
 ಸಹಾಯವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು. ಅವರ ಅಪೇಕ್ಷೆ   
 ಯಂತೆ ತಾನು ಪಾಂಡವರ ಕಡೆಗೂ, ತನ್ನ ಅಕ್ಕಪಕ್ಕಿಗೇ   
 ಸೈನ್ಯವು ಕೌರವರ ಕಡೆಗೂ ಇರುವುದಾಗಿ ಹೇಳುವುದು.   
 ಉಭಯ ಪಕ್ಷದವರೂ ತಮ್ಮ ತಮ್ಮ ಮಿತ್ರರಾದರ   
 ಸಹಾಯವನ್ನು ಪಡೆದು ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಹೊರಡುವುದು   
 ಇತ್ಯಾದಿ ವಿಷಯಗಳು ಈ ಪರ್ವದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿವೆ.]

उद्योगिन् ಉದ್ಯೋಗಿನ್ (ವಿಂ) ಉದ್ಯೋಗಶೀಲ,   
 ಪ್ರಯತ್ನವುಳ್ಳವನು. "उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपति   
 लक्ष्मीर्देवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति। दैवं निहत्य   
 कुरु पौरुषमात्मशक्त्या यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र   
 दोषः" हितो० १-३२।

उद्योजक ಉದ್ಯೋಜಕ (ವಿಂ) ಪ್ರಯತ್ನಪಡಿಸುವ,   
 ಕೆಲಸಮಾಡಿಸುವ. उद् + युजिर् (योगे) + णिच्   
 "ष्वाल्" (३-१-१३३)।

उद् ಉದ್ರ (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿ ಜಲಜಂತು, ಕಡಲ   
 ಹಂದಿ. उनक्ति—उन्दी (क्लेदने) "रक्" (उ० २-१३)।   
 "तद्भेदाः शिशुमारोद्रशंकवो मकरादयः" अम०।

उद्ग्रथ ಉದ್ರಥ (ಪುಂ) 1. ಗಾಡಿಯ ಕಡಾಣೆ, ಗಾಡಿಯ   
 ಚಕ್ರದ ತಡೆಗಾಗಿ ಹಾಕುವ ಕೇಲು. उद्गतो रथो   
 यस्मात्। 2. ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ. "उद्ग्रथो रथकीले   
 स्यात्ताम्रचूडांश्चपक्षिणि" मेदि०।

उद्ग्रिक्त ಉದ್ರಿಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ.   
 2. ಸ್ಫುಟವಾದ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ. उद्+रिचिर् (विरेचने)   
 "क्तः" (३-४-७२)।

उद्गत ಉದ್ರುತ (ವಿಂ) ಪಲಾಯನ ಮಾಡಿದ, ಓಡಿ   
 ಹೋದ. उद् + दृ (गतौ) "क्तः" (३-४-७२)।

"उद्यातमुद्रुतमनोकहजालमध्यादन्यः शशं गुणमनल्प-   
 मवन्नवाप" माघ० ५-२५।

उद्रेक ಉದ್ರೇಕ (ಪುಂ) 1. ಅತಿಶಯ, ಅಧಿಕ. उद् +   
 रिचिर् (विरेचने) "घञ्" (३-३-१८)। "ज्ञानोद्रेका-   
 द्विघटिततमोग्रन्थयः सत्त्वनिष्ठाः" वेणी० १-२३।   
 2. ವೃದ್ಧಿ, ಬೆಳವಣಿಗೆ.

उद्धपन ಉದ್ವಪನ (ನಂ) 1. ದಾಸ, ಧರ್ಮ, ಕೊಡುಗೆ.   
 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ಸುರಿಯುವುದು. 3. ಬುಡಸಹಿತ   
 ಕೆತ್ತುಹಾಕುವುದು. उद् + दृ वप् (बीजसन्ताने)   
 "ल्युट्" (३-३-११५)।

उद्धमत् ಉದ್ವಮತ್ (ವಿಂ) 1. ವಮನಮಾಡುತ್ತಿರುವ,   
 ವಾಂತಿಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಹರಡುತ್ತಿರುವ, ಪಸರಿಸು   
 ತ್ತಿರುವ. उद्+दृ वम् (उद्गिरणे) "शत्" (३-२-१२४)।   
 "उद्धमन्नभिरराज समन्तादङ्गराग इव लोहितरागः"   
 किरा० ९-२७।

उद्धमन ಉದ್ವಮನ (ನಂ) ವಮನ, ವಾಂತಿ ಮಾಡು   
 ವಿಕೆ. उद्+दृ वम् (उद्गिरणे) "ल्युट्" (३-३-११५)।

उद्धमित ಉದ್ವಮಿತ (ವಿಂ) ವಾಂತಿಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.   
 उद्+दृ वम् (उद्गिरणे)+णिच् "क्तः" (३-२-१०२)।

उद्धत ಉದ್ವರ್ತ (ಪುಂ) 1. ಶೇಷ, ಉಳಿಕೆ. 2. ಅಧಿಕ,   
 ಹೆಚ್ಚಿಗೆ. उद्+वृत् (वर्तने) "घञ्" (३-३-१८)।   
 (वि०) 3. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಉಳಿದಿರುವ. 4. ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವ,   
 ಅಧಿಕವಾಗಿರುವ.

उद्धतन ಉದ್ವರ್ತನ (ನಂ) 1. ಮೈಯನ್ನು ಶುದ್ಧಿ   
 ಮಾಡುವ ವಾಸನೆಯ ಪುಡಿ, ಮೈಗೆ ಪೂಸುವ ಸುಗಂಧ   
 ದ್ರವ್ಯ. उद्धत्यतेनेन—उद्+वृत् (वर्तने)+णिच्   
 "ल्युट्" (३-३-११७)। 2. ಮೈಯನ್ನು ವಾಸನೆಯ   
 ಪುಡಿಯಿಂದ ಶುದ್ಧಿಮಾಡುವಿಕೆ. 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರು   
 ವಿಕೆ. 4. ಹೊರಳಾಡುವಿಕೆ. "चटुलशफरोद्धतन-   
 प्रोक्षितानि" मेघ० १-४०। 5. ಉಜ್ಜುವಿಕೆ, ತಿಕ್ಕು   
 ವಿಕೆ. 6. ಬಳಿಯುವುದು, ಲೇಪನಮಾಡುವುದು. उद् +   
 वृत् (वर्तने) भावे "ल्युट्" (३-३-११५)।

उद्धृतयत् ಉದ್ವರ್ತಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಉಜ್ಜುತ್ತಿರುವ,   
 ತಿಕ್ಕುತ್ತಿರುವ. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಬ್ಬಿಸುತ್ತಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ   
 ಹೊರಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಮೈಯನ್ನು ವಾಸನೆಯ ಪುಡಿಯಿಂದ   
 ಸುಗಂಧವಾಗಿ ಮಾಡುವ. उद्+वृत् (वर्तने)+णिच्   
 "शत्" (३-२-१२४)। "सफेनहासो जटिलप्रवालै-   
 रुद्धृतयन्मिभुजैर्भुजङ्गान्" याद० १८-९७।



उद्वाहित लुद्धाहित (वि०) 1. मे०लुक्क० ए०लुक्क०  
उद् + वह् (प्राणणे) + णिच् “क्तः” (३-२-१०२) ।  
2. म०दु०वे०य०रा०द०व०नु०, म०दु०वे०वा०दि०के०ण०ड०व०नु० ।  
उद्वाहोऽस्य सञ्जातः “इतच्” (५-२-३६) ।



उद्वाहिन उद्वाहिन (वि०) 1. मधुवेयागु  
ववन्नु. 2. बावियेन्द नेरु सैदुववन्नु.

उद्वाहिनी उद्वाहिनी (स्त्री०) बावियेन्द नेरु  
सैदुव, कर्ग. उद्वाहः उद्धरणं साध्यतयाऽस्त्यस्य

"इतिः" (५-२-११५)। "डीप्" (४-१-५)।

"उद्वाहनं द्विसीत्ये स्यात् रज्जावुद्वाहिनी मता" मेदि०।

उद्दिग्न उद्दिग्न (वि०) 1. उद्दिग्नवृक्ष, कलव  
वृक्ष. 2. चिंताक्रान्तनाद, वायुचलनाद.

3. कंदरिद, भयगोण्ड, अंजिद. उद्+ओ विजी  
(भयचलनयोः) "क्तः" (३-४-७२)। "निमग्नोद्दिग्न-

संहाणैः पत्रे दीनेश्च मेदिनी" भट्टि० ४-४२।

उद्दीक्षण उद्दीक्षण (न०) 1. उद्दीक्षणदृष्टि, मेले  
नोले. उद् + वि + ईक्ष (दर्शने) भावे "ल्युट्"

(३-३-११५)। 2. नेत्र, कण्ठ. उद्+वि+ईक्ष  
कर० "ल्युट्" (३-३-११७)। "अथेप्सितं भर्तृरूप-

स्थितोदयं सखीजनोद्दीक्षणकौमुदीमुखम्" रघु० ३-१।

3. प्रतीक्ष्यसुविक्, कादुनोलेखुविक्, एदुरु  
नोलेखुविक्. "विवरिष्यसि तच्चिरस्य नः समयोद्दीक्षण-

रक्षितां क्रुधम्" माघ० १६-३७।

उद्दीक्षित उद्दीक्षित (वि०) मेलेगडे नोलेखुविक्.

उद् + वि + ईक्ष (दर्शने) "क्तः" (३-२-१०२)।

"ज्योतिष्पथादवततार सविस्मयाभिरुद्दीक्षितं प्रकृतिभि-  
र्भरतानुगाभिः" रघु० १३-६८।

उद्दृत्त उद्दृत्त (वि०) 1. मेलेक्ये एदिरुव,  
मेलेक्ये एदिरुव. उद् + वृत् (वर्तने) "क्तः"

(३-४-७२)। 2. दारि बिल्लु, हौगिरुव, तप्पु  
दारियुल्लि नडैयुव, कल्लु नडैयुव. वृत्त-

मुत्क्रान्तः। "विश्लेषं युगमगमद्रथाङ्गनाम्नोरुद्दृत्तः क  
इव सुखावहः परेषाम्" माघ० ८-१८। "अपामुद्दृत्तानां

निजमुपदिशन्त्याः स्थितिपदम्" मुद्रा० ३-८। 3. कौबिद,  
अहंकारदिन्द कौबिद. 4. असङ्ग, अशिक्षित,

अविवेकियुल्लिद. 5. कलकल्लु, बडमेले  
माडल्लु. "तस्मात्समुद्रादिव मथ्यमानादुद्दृत्त-

नक्रात्सहसोन्ममज्ज" रघु० १६-७९।

उद्देग उद्देग (पु०) 1. भय, कंदरिक्. "शान्तोद्देग-

स्तिमितनयनं दृष्टभक्तिर्भवान्या" मेघ० १-३६।

2. कलव, गारु. "यस्मान्नोद्दिजते लोको

लोकाश्चोद्दिजते च यः। हर्षामर्षभयोद्देगैर्मुक्तो यः स च

मे प्रियः" गीता १२-१५। 3. चिंते, चिन्त्य  
जनर विरहदिन्दुंताद दुःख. उद्+ओ विजी

(भयचलनयोः) "घञ्" (३-३-१८)। "मनोभिः  
सोद्वेगैः प्रणयविहतिध्वस्तस्त्वयः" किरा० १०-६३।

4. कल्लु, कल्लु. "यो जिह्वाप्रं बाधते उद्देगं जनयति  
शिरो गृहीते नासिकाश्च सावयति स कटुकः"

सुश्रुत०। 5. कंषन, नडुक्. (न०) 6. अडक्  
कायि. उद्दिजन्तेजेन - कर० "घञ्" (३-३-१२१)।

"उद्देगरागादिमृजावदाताः" नैष० ७-४६। (वि०)

7. वेगवाड, जागृत्योगि नडैयुव. उत्कृष्टो  
वेगो यस्य। 8. निश्चलवाड, स्थिरवाड. उद्गतो वेगो

यस्मात्।

उद्देजक उद्देजक (वि०) 1. भयवृंभुमाडुव  
कंदरिडुव. 2. मनस्सन्नु कलकुव, कल्लु

युंभुमाडुव, गारु युंभुमाडुव.  
3. कल्लुवृंभुमाडुव. उद् + ओ विजी (भय-

चलनयोः) "ण्वल्" (३-१-१३३)।

उद्देजन उद्देजन (न०) 1. उद्देग, भय.

2. कलव. उद्+ओ विजी (भयचलनयोः) "ल्युट्"  
(३-३-११५)। 3. यातने, कल्लु, कल्लु. "पर-

दाराभिमर्शेषु प्रवृत्तान् नृन् महीपतिः। उद्देजनकरै-  
र्दण्डैश्चिह्नयित्वा प्रवासयेत्" मनु० ८-३५२। 4. विरह

दुःख. (वि०) 5. भयवृंभुमाडुव. 6. कल्लु  
वृंभुमाडुव. कर्त० "ल्युः" (३-१-१३४)।

उद्देजयित् उद्देजयित् (वि०) 1. भयवृंभु  
माडुव, कंदरिडुव. उद्+ओ विजी (भयचलनयोः)

+णिच् "तृच्" (३-१-१३३)। "अत्यर्थमुद्देजयिता  
परेषां नाम्नापि तस्यैव स नन्दकोऽभूत्" माघ० ३-१९।

2. तौन्दरिडुव, कल्लुवृंभुमाडुव.

उद्देजित उद्देजित (वि०) 1. भयपडिसल्लु.

2. कलवकल्लुसल्लु. 3. कल्लुपडिसल्लु,  
तौन्दरिडुवसल्लु. उद्+ओ विजी (भय-

चलनयोः)+णिच् "क्तः" (३-२-१०२)। "उद्देजिता  
वृष्टिभिराश्रयन्ते शृङ्गाणि यस्यातपवन्ति सिद्धाः"

कुमा० १-५।

उद्देप उद्देप (पु०) 1. कंषन, नडुक्. उद्+ट्

वेप् (कम्पने) "घञ्" (३-३-१८)। (वि०) 2. कंषि  
सुव, नडुगुव. कर्त० "अच्" (३-१-१३४)।



ಉದ್ದೇಶ ಉದ್ದೇಶ (ವಿಂ) 1. ದಡವನ್ನು ಮೀರಿರುವ, ದಡವನ್ನು ದಾಟಿ ಬಂದಿರುವ. ಉತ್ಕಾಂತೋ ವೇಲಾಮ್ |

"ಭಯಮಪ್ರಲಯೋದ್ದೇಶಾದಾಚ್ಯುತೋದ್ದೇಶಃ" ರಘುಂ ೧೦-೨೪ |

2. ಎಲ್ಲೆ ಮೀರಿದ, ಮೀರಿಮೀರಿದ. "ಉದ್ದೇಶವೇಗಾಸ್ತನತೋ ಗಂಭೀರಮೌರ್ವಪ್ರತಿಚ್ಛಂದವಿದೀಪದೃಷ್ಟಿನ್" ಯಾದಂ ೨೦-೧೫ |

3. ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ.

ಉದ್ದೇಶಲತ್ ಉದ್ದೇಶಲತ್ (ವಿಂ) ಮೇಲೆ ಹಾರಾಡುತ್ತಿರುವ, ಮೇಲೆ ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ. ಉದ್+ವೇಲ (ಸಂಚಲನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಉದ್ದೇಶಲದ್ಧನಋಷಿಪುಂಡನಿಕರಾ-ಕೀರ್ಣಸ್ಯ ಸಂಖ್ಯೋದ್ದೇಶಃ" ಮಾಲತೀಂ ೭-೯ |

ಉದ್ದೇಶಲಿತ ಉದ್ದೇಶಲಿತ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಚಲಿಸಿರುವ, ಸ್ಥಾನಬಿಟ್ಟು ಹೋಗಿರುವ. ಉದ್ ಉದ್ ವೇಲಿತಃ ಚಲಿತಃ | "ದೂರೋದ್ದೇಶಲಿತವಾಡವಸ್ಯ ಜಲಧೀರಲ್ಲೋಲಭಿನ್ನಾಮ್ಭಸಃ" ಮಂ ವೀಂ ೫-೨ |

ಉದ್ದೇಶನ ಉದ್ದೇಶನ (ನಂ) 1. ಸುತ್ತುಗೊಂಡ, ಬೇಲಿ, ಪ್ರಾಕಾರ. ಉದ್+ವೇಶ (ವೇಶನೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | 2. ಸುತ್ತುಗಟ್ಟುವಿಕೆ, ಸುತ್ತುವರಿಯುವಿಕೆ. ಉದ್+ವೇಶ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | (ವಿಂ) 3. ಸಡಿಲವಾದ ಗಂಟುಳ್ಳ, ಕಟ್ಟು ಸಡಿಲವಾಗಿರುವ. "ಆಲೋಕಮಾರ್ಗಂ ಸಹಸಾ ವ್ರಜಂತ್ಯಾ ಕಯಾಚಿದುದ್ದೇಶನ-ವಾಂತಮಾಲ್ಯಃ" ರಘುಂ ೭-೬ |

ಉದ್ದೇಶಿತ ಉದ್ದೇಶಿತ (ವಿಂ) ಸುತ್ತುವರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುತ್ತುಗಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್+ವೇಶ (ವೇಶನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

ಉದ್ದೇಶ ಉದ್ದೇಶ (ವಿಂ) ಮದುವೆಯಾಗುವವನು, ಪತಿ, ಗಂಡ. ಉದ್+ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩) |

ಉದ್ದೇಶ ಉದ್ದೇಶ (ಪುಂ) ಮೂಷಿಕ, ಇಲಿ. ಉದ್ದೇಶ-ಉದ್ದೇಶ (ಕಲೆದನೆ) "ಉಃ" ಬಾಹುಂ | ಉದ್ದೇಶಃ, ಉದ್ದೇಶಃ, ಉದ್ದೇಶಃ ಈ ರೂಪಗಳೂ ಉಂಟು.

ಉದ್ದೇಶ ಉದ್ದೇಶ (ವಿಂ) 1. ಒದ್ದೆಯಾದ, ನೆನೆದಿರುವ, ತೇವವಾದ. 2. ದಯಾಳು, ಕರುಣೆಯುಳ್ಳ. (ಲಾಕ್ಷಂ) | ಉದ್ದೇಶ (ಕಲೆದನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಉದ್ದೇಶ ಕಿಲತ್ತೇ ದಯಾಪರೇ" ಹೇಮಂ |

ಉದ್ದೇಶ ಉದ್ದೇಶ (ವಿಂ) 1. ಎತ್ತರವಾದ. ಉದ್+ಋಷಿ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | "ದಧತಮುನ್ನತ-ಸಾನುಸಮುದ್ರತಾಂ ಧೃತಸಿತವ್ಯಜನಾಮಿವ ಜಾಹ್ನವೀಮ್" ಕಿರಾಂ ೫-೧೫ | 2. ಮಹತ್ತಾದ, ಹಿರಿದಾದ, ದೊಡ್ಡದಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. "ಪರಿಮಲವಿಷಯಸ್ತದ್ಭೂತಾನಾಮನುಗಮನೇ ಸ್ವಲ್ಪ

ಸಂಪದೋದ್ದೇಶಃ" ಮಾಘಂ ೭-೨೭ | 3. ಮುಂದಕ್ಕೆ ಉಬ್ಬಿರುವ. "ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತಂ ನಿಬಿಡೋನ್ನತಸ್ತನಮುರಃ ಪಾರ್ಶ್ವೇ ಪ್ರಮುಖೇ ಇವ" ಮಾಲಂ ೨-೩ |

ಉದ್ದೇಶತಾ ಉದ್ದೇಶತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎತ್ತರ, ಉದ್ದೇಶತಾ. ಉದ್ದೇಶತಾ ಭಾವಃ "ತತ್" (೫-೧-೧೧೯) | "ತವಃ" | ಉದ್ದೇಶತಾತ್ವಮ್ ಉದ್ದೇಶತಾತ್ವಮ್.

ಉದ್ದೇಶತಾನತ ಉದ್ದೇಶತಾನತ (ನಂ) ಹೆಚ್ಚಿಟ್ಟಾದ ಪ್ರದೇಶ, ಎತ್ತರ ಮತ್ತು ತಗ್ಗಾದ ಪ್ರದೇಶ. ಉದ್ದೇಶತಾಂ ಚ ತದಾನಂತಂ ಚ |

ಉದ್ದೇಶತಾ ಉದ್ದೇಶತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಅಭ್ಯುದಯ, ಏಳಿಗೆ, ಉತ್ಕರ್ಷ. ಉದ್+ಋಷಿ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪) | "ಅಸತಾಮನಿಶಂ ತಥಾಪ್ಯಹೋ ಗುರುದ್ರೋಗಕರೀ ತದ್ಭೂತಃ" ಮಾಘಂ ೧೬-೨೨ | 2. ಎತ್ತರ, ಉದ್ದೇಶತಾ. 3. ಮೇಲ್ಮೈ, ಗೌರವ, ಪ್ರತಿಷ್ಠೆ. "ಸ್ತೋಕೋದ್ದೇಶತಾಃ ಸ್ತೋಕೋದ್ದೇಶತಾಃ ಸ್ತೋಕೋದ್ದೇಶತಾಃ" ಹಿತಂ | 4. ಗರುಡನ ಪತ್ನಿ. "ಉದ್ದೇಶತಾಸ್ತಾಃ ಭಾರ್ಯಾಃ ಸಮೃದ್ಧಾವುದಯೇಽಪಿ ಚ" ವಿಶ್ವಂ |

ಉದ್ದೇಶ ಉದ್ದೇಶ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್+ಋಷಿ (ಬಂಧನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ವ್ಯುಹ ಸ್ಥಿತಃ ಕಿಂಚಿದಿವೋತ್ತರಾರ್ಧಮುನ್ನದ್ಭೂತೋಽಶ್ವಿತಸವ್ಯಜಾನುಃ" ರಘುಂ ೧೮-೫೧ | 2. ಹೆಚ್ಚಿದ, ಉಬ್ಬಿದ, ಅಧಿಕವಾದ, ದೊಡ್ಡದಾದ.

ಉದ್ದೇಶ ಉದ್ದೇಶ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವ. ಉದ್+ಋಷಿ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ವಿಂಧ್ಯಾಯಮಾನಂ ದಿವಸಸ್ಯ ಭರ್ತುಮಾರ್ಗಂ ಪುನಾ ರೋದ್ಧಮಿವೋನ್ನಮದ್ಭಿಃ" ಮಾಘಂ ೪-೨ | 2. ತಲೆಯನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುತ್ತಿರುವ.

ಉದ್ದೇಶ ಉದ್ದೇಶ (ನಂ) 1. ಉದ್ದೇಶ, ಎತ್ತರ. ಉದ್+ಋಷಿ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಿಸುವುದು.

ಉದ್ದೇಶ ಉದ್ದೇಶ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೇಲಮುಖವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್+ಋಷಿ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ ಚ) + ಋಷಿ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಸಾರಸೈಃ ಕಲನಿಹ್ಲದೈಃ ಕ್ವಚಿದುದ್ದೇಶಮಿತಾನನೌ" ರಘುಂ ೧-೪೧ | 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಉದ್ದೇಶಮಿತೈಃ ಭೂತಮಾನನ-ಮಸ್ಯಾಃ ಪದಾನಿ ರಚಯಂತ್ಯಾಃ" ಶಾಕುಂ ೩-೧೨ | "ಅಯುಗಪದ್ಭೂತ-ಮಿತಭೃ ವೀಕ್ಷಿತಂ ಚ" ಕಿರಾಂ ೧೦-೬೧ |

ಉದ್ದೇಶ ಉದ್ದೇಶ (ವಿಂ) ಎತ್ತರವಾದ, ಉದ್ದೇಶವಾದ. ಉದ್+ಋಷಿ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ರಃ" (೩-೨-೧೬೭) |



“ಉತ್ತರಗಾಂಪಟಮಂಜುಷಿತಂ ತದಾನಿಲನಾಗಕುಲಸಂಕುಲ-  
ಮಾಬಾಸೇ” ಮಾಘಂ ೪-೬೮.

ಉತ್ತರ ಉನ್ನಯ (ಪುಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ತರುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ  
ಎತ್ತುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆಯುವುದು. ಉದ್+ಗೀತ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೩-೪೬). 2. ತರ್ಕ, ಊಹೆ.  
ಉತ್ತರಯತ್ ಉನ್ನಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುತ್ತಿರುವ.  
2. ಊಹಿಸುತ್ತಿರುವ. ಉದ್+ಗೀತ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಶತ್”  
(೩-೨-೧೨೪).

ಉತ್ತರನ ಉನ್ನಯನ (ನಂ) 1. ತರ್ಕ, ಊಹೆ.  
2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎರಿಸುವುದು.  
3. ಬಾವಿಯಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆ ನೀರನ್ನು ಎಳೆಯುವುದು.  
ಉದ್+ಗೀತ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪). (ವಿಂ)  
4. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿದ ಕಣ್ಣುಳ್ಳ, ಮೇಲೆ ನೋಡುವ.  
ಉತ್ತಮಿತಂ ನಯನಂ ಯಸ್ಯ.

ಉತ್ತರ ಉನ್ನತ (ವಿಂ) ಎತ್ತರವಾದ ಮೂಗುಳ್ಳ, ಉಬ್ಬಿದ  
ಮೂಗುಳ್ಳ. ಉತ್ತರಾ ನಾಸಾ ಯಸ್ಯ. “ಉತ್ತರಂ ದಧತಿ ವಕ್ತ್ರಂ  
ಶುದ್ಧದಲ್ಲೊಲಕುಂಡಲಮ್” ಭೃಗುಂ ೪-೧೮.

ಉತ್ತರ ಉನ್ನತ (ಪುಂ) ಉಚ್ಚಸ್ವರ, ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಶಬ್ದ.  
ಉದ್+ಞದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) “ಘತ್” (೩-೩-೧೮).

ಉತ್ತರ ಉನ್ನಯ (ಪುಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವುದು,  
ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎರಿಸುವುದು. 2. ತರ್ಕಿಸುವುದು, ಊಹಿಸು  
ವುದು. ಉದ್+ಗೀತ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಘತ್” (೩-೩-೨೬).

ಉತ್ತರ ಉನ್ನತ (ಪುಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ಕಟ್ಟುವುದು.  
ಉದ್+ಞಹ (ಬಂಧನೇ) “ಘತ್” (೩-೩-೧೮). (ನಂ) 2.  
ಗಂಜಿ, ಅಂಬಲಿ. “ಚುಕ್ರಂ ಧಾತುಧನಮುತ್ಸಾಹಮ್” ಅಭಿಂ ವಿಂ.

ಉತ್ತರ ಉನ್ನಿಧ (ವಿಂ) 1. ಅರಳಿದ, ವಿಕಾಸಹೊಂದಿದ.  
ಉತ್ತರಾ ನಿಧ್ರಾ ಯಸ್ಯ. “ಉತ್ತರಪುಷ್ಪಾಕ್ಷಿಸಹಸ್ರಭಾಜಾ” ಮಾಘಂ  
೪-೧೩. “ಉತ್ತರಪ್ರಿಯಕಮನೋರಮಂ ರಮಣ್ಯಾ” ಮಾಘಂ ೮-೨೮.  
2. ನಿದ್ರೆಯಿಲ್ಲದ, ಎಚ್ಚರವಾಗಿರುವ, ನಿದ್ರೆಯನ್ನು  
ಬಿಟ್ಟಿರುವ. ಉತ್ತರಾ ನಿಧ್ರಾ ಯಸ್ಮಾತ್. “ತಾಮುತ್ಸಿದ್ರಾಮವನಿ-  
ಶಯನಾಂ ಸೌಧವಾತಾಯನಸ್ಥಾ” ಮೇಘಂ ೨-೨೪. 3. ನಿದ್ರೆ  
ಯಿಂದ ಎಚ್ಚರಗೊಂಡ. ಉತ್ತರಾ ನಿಧ್ರಾ ಯಸ್ಯ.

ಉತ್ತರೀಷಾ ಉನ್ನೀಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುಲು  
ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಉತ್ತರೇತಿ-ಉದ್+ಗೀತ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ)+ಸನ್  
“ಅಃ” (೩-೩-೧೦೨).

ಉತ್ತರೀಷು ಉನ್ನೀಷು (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುಲು  
ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. ಉತ್ತರೇತಿ-ಉದ್+ಗೀತ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ)+  
ಸನ್ “ಃ” (೩-೨-೧೬೮).

ಉತ್ತರ ಉನ್ನೀತ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್+ಗೀತ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಕ್ತಃ”  
(೩-೨-೧೦೨). 2. ಊಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತರ್ಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಉತ್ತರ ಉನ್ನೀತ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವ. 2. ಊಹಿ  
ಸುವ. ಉದ್+ಗೀತ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ತತ್” (೩-೧-೧೩೩).  
ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ತೀಪ್” (೪-೧-೪). ಉತ್ತರೀ ಉನ್ನೀತ್ರಿ.

ಉತ್ತರ ಉನ್ನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವುದು.  
2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಊಹಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. 4. ಊಹಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಉದ್+ಗೀತ್  
(ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಯತ್” (೩-೧-೧೦).

ಉತ್ತರಜಕ ಉನ್ನಜಕ (ವಿಂ) 1. ಕಂಠದವರೆಗೂ ನೀರಿ  
ನಲ್ಲಿ ನಿಂತು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುವವನು, ತಪಸ್ಸು. ಉದ್+ಙ  
ಮಸ್ತಜೋ (ಶುದ್ಧಿ) “ಞ್” (೩-೧-೧೩೩). “ಕಂಠದಧನೇ  
ಜಲೇ ಸ್ಥಿತವಾ ತಪಃ ಕುರ್ವನ್ ಪ್ರವರ್ತತೇ. ಉತ್ತರಜಕಃ ಸ ವಿಜ್ಞೇಯ-  
ಸ್ತಾಪಸೋ ಲೋಕಪೂಜಿತಃ” 2. ನೀರಿನೊಳಗಿನಿಂದ ಎದ್ದು  
(ನೀರಿನಲ್ಲಿ) ತೇಲಾಡುವ.

ಉತ್ತರಜತ್ ಉನ್ನಜತ್ (ವಿಂ) ನೀರಿನಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆದ್ದು  
ತೇಲಾಡುತ್ತಿರುವ, ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿ ಮೇಲಕ್ಕೆ  
ಎಳುತ್ತಿರುವ. ಉದ್+ಙ ಮಸ್ತಜೋ (ಶುದ್ಧಿ) “ಶತ್”  
(೩-೨-೧೨೪). “ಉತ್ತರಜನ್ಮಕರ ಇವಾಮರಾಪಗಾಯಾ ವೇಗೇನ  
ಪ್ರತಿಮುಖಮೇತಯ ಬಾಣನಯಾ” ಕಿರಾಂ ೧೭-೬೩.

ಉತ್ತರಜನ ಉನ್ನಜನ (ನಂ) ನೀರಿನೊಳಗಿನಿಂದ ಎದ್ದು  
(ನೀರಿನಲ್ಲಿ) ತೇಲಾಡುವಿಕೆ. ಉದ್+ಙ ಮಸ್ತಜೋ (ಶುದ್ಧಿ)  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪). “ಸಲಿಲೋತ್ತಮಜನಮುಜ್ಜತಿ  
ಸ್ಫುಟಮ್” ನೆಪಂ ೨-೨೭.

ಉತ್ತರ ಉನ್ನತ (ಪುಂ) 1. ಉಮ್ಮತ್ತಿಗಿಡ. 2. ಮುಚ್ಚು  
ಕುಂದವೃಕ್ಷ. ಉತ್ತರಂ ಕರೋತಿ-ಉತ್ತರ+ಗೀತ್ “ಅಚ್”  
(೩-೧-೧೩೪). (ವಿಂ) 3. ಹುಚ್ಚು ಹಿಡಿದವನು,  
ಬುದ್ಧಿ ಪಲ್ಲಟವಾದವನು. 4. ಅಮಲೇರಿದವನು, ಮದ್ಯ  
ಪಾನಮಾಡಿದವನು. ಉದ್+ಮದೀ (ಹೃಷ್ಯಲೇಪನಯೋಃ) “ಕ್ತಃ”  
(೩-೪-೭೨). “ಉತ್ತರಂ ಪತಿಸಂ ಕಲೀವಮಬೀಜಂ ಪಾಪರೋಗಿಣಮ್”  
ಮನುಂ ೧-೭೯. 5. ಬಹಳ ಕೋಪವುಳ್ಳ, ಕ್ರೂರ, ಉಗ್ರ,  
ಪ್ರಚಂಡ. 6. ಭೂತಗ್ರಸ್ತ, ಪಿಶಾಚಿ ಹಿಡಿದವನು.  
7. ಬಹಳ ಕೊಬ್ಬಿರುವ. “ಮದೋತ್ತಮಸ್ಯ ಭೂಪಸ್ಯ ಕುಂಜರಸ್ಯ  
ಚ ಗಂಧತಃ” ಪञ्ಚತಂ.

ಉತ್ತರಗಾಂ ಉನ್ನತಗಂ (ಅವ್ಯಂ) ಗಂಗಾನದಿಯು  
ಭೋರ್ಗರೆದು ಮೊರೆಯುತ್ತ ಹರಿಯುವ ದೇಶ, ಹೆಚ್ಚು  
ಪ್ರವಾಹದಿಂದ ಹರಿಯುತ್ತಿರುವ ಪ್ರದೇಶ. ಉತ್ತರಾ  
ಗಾಂ ಯಸ್ಮಿನ್ ದೇಶೇ. ಅವ್ಯಯಿಂ (೨-೧-೧೨).



उन्मथन ಉನ್ಮಥನ (ನಂ) 1. ಹಿಂಸಿಸುವಿಕೆ, ಪೀಡಿಸುವಿಕೆ. 2. ಕೋಪಿಸುವಿಕೆ, ನಾಶಪಡಿಸುವಿಕೆ. उद् + मथे (विलोडने) "ल्युट्" (३-३-११५)। "अन्योन्य-सूतोन्मथनादभूतां तावेव सूतौ रथिनौ च कौचित्" रघु० ७-५२। 3. ತಿಕ್ಕುವಿಕೆ, ಉಜ್ಜುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 4. ಪೀಡಿಸುವ, ಹಿಂಸಿಸುವ, ನೋವುಂಟುಮಾಡುವ. "विपक्षचित्तोन्मथना नखव्रणास्तिरोहिता विभ्रम-मण्डनेन ये" किरा० ८-३४।

उन्मथित ಉನ್ಮಥಿತ (ವಿಂ) 1. ತಿಕ್ಕಿ ಕೆಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಜ್ಜಿ ಎಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. उद् + मथे (विलोडने) "क्तः" (३-२-१०२)। "कण्डूयमानेन कटं कदाचिद्वन्यद्विपेनो-न्मथिता त्वगस्य" रघु० २-३७। 2. ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನೋಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

उन्मद ಉನ್ಮದ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಮದವುಳ್ಳ, ಹೆಚ್ಚು ಅಮಲೇರಿದ. 2. ಹೆಚ್ಚು ಸಂತೋಷವುಳ್ಳ. उद्गतो मदो हर्षो यस्य। "उदीरयामासुरिवोन्मदानामालोकशब्दं वयसां विरावैः" रघु० २-९। 3. ಮದವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ. उन्मदयति—उद् + मदी (हर्षग्लेपनयोः) + णिच् "अच्" (३-१-१३४)। "मधुकराङ्गनया मुहुरन्मद-ध्वनिभृता निभृताक्षरमुज्जगे" माघ० ६-२०।

उन्मदन ಉನ್ಮದನ (ವಿಂ) ಕಾಮೋದ್ರೇಕವುಳ್ಳ, ಹೆಚ್ಚು ಮನ್ಮಥಬಾಧೆಯುಳ್ಳ. उद्गतो मदनोऽस्य। "तदा प्रभृत्युन्मदना पितुर्गृहे ललाटिकाचन्दनधूसरालका" कुमा० ५-५५।

उन्मदयत् ಉನ್ಮದಯತ್ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ಸಂತೋಷ ಗೊಳಿಸುವ, ಅಧಿಕ ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವ. उन्मदं करोति—उन्मद + णिच् "शतृ" (३-२-१२४)। "ब्रजाजिरेष्वम्बुदनादशङ्किनीः शिखण्डिनामुन्मदयत्सु योषितः" किरा० ४-१६।

उन्मदिष्णु ಉನ್ಮದಿಷ್ಣು (ವಿಂ) 1. ಅಧಿಕ ಮದವುಳ್ಳ. "सालीकदृष्टे मदनोन्मदिष्णुः" नैष० ८-१८। 2. ಹೆಚ್ಚು ಸಂತೋಷಪಡುವ. उन्मदनशीलः—उद् + मदी (हर्षे) "इष्णुच्" (३-२-१२६)।

उन्मनस् ಉನ್ಮನಸ್ (ವಿಂ) 1. ಉತ್ಕಂಠೆಯುಳ್ಳ, ಪ್ರಿಯವಾದ ವಸ್ತುವನ್ನು ಹೊಂದುವುದರಲ್ಲಿ ತವಕ ಪಡುವ. उद् उद्गतं मनो यस्य। 2. ಉತ್ಸುಕನಾದ, ಪ್ರಿಯವಸ್ತುವಿಗಾಗಿ ಆಸೆಪಡುವ, ತ್ವರೆಪಡುವ. "उन्मनाः प्रथमजन्मचेष्टितान्यस्मरन्नपि बभूव राघवः"

रघु० ११-२२। 3. ಕಳವಳಗೊಂಡ. 4. ಹೆದರಿದ. "महावनादुन्मनसः खगा इव प्रवृत्तपत्रध्वनयः शिली-मुखाः" किरा० १४-४५। वा "कप्" (५-४-१५४)। -मनस्कः—मनस्य१।

उन्मनायमान ಉನ್ಮನಾಯಮಾನ (ವಿಂ) ಉತ್ಸುಕನಂತೆ ಆಚರಿಸುವ, ಉತ್ಸಾಹಿಯಂತೆ ನಡೆಯುವ. उन्मना इवा-चरति—उन्मनस् + क्यङ् "शानच्" (३-३-१२४)।

उन्मन्थ ಉನ್ಮಂಥ (ಪುಂ) ಹಿಂಸಿಸುವಿಕೆ, ಪೀಡಿಸುವಿಕೆ, ನೋಯಿಸುವಿಕೆ. उद् + मन्थ (विलोडने) भावे "घञ्" (३-३-१८)।

उन्मन्थन ಉನ್ಮಂಥನ (ನಂ) 1. ಮೇಲಿನಿಂದ ಕೋಲು ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಕಲಕುವುದು. उद् + मन्थ (विलोडने) भावे "ल्युट्" (३-३-११५)। 2. ಕಲಕುವ ಕೋಲು, ದಂಡ, ಮುಂತು. उन्मथ्यतेऽनेन—कर० "ल्युट्" (३-३-११७)।

उन्मर्दन ಉನ್ಮರ್ದನ (ನಂ) 1. ಹಿಸುಕುವುದು, ಮರ್ದಿಸುವುದು. 2. ತಿಕ್ಕುವುದು, ಉಜ್ಜುವುದು. उद् + मृद (क्षोदे) "ल्युट्" (३-३-११५)। 3. ವಾತವನ್ನು ಶುದ್ಧಿಗೊಳಿಸುವ ಕಾರ್ಯ. 4. ಮೈಗೆ ಉಜ್ಜುವ ವಸ್ತು. उद् + मृद कर० "ल्युट्" (३-३-११७)।

उन्माथ ಉನ್ಮಾಥ (ಪುಂ) 1. ವಧೆ, ಕೋಪುವುದು. उद् + मथि (हिसायाम्) "घञ्" (३-३-१८)। 2. ಮೈಗೆ ಗಳನ್ನು ಹಿಡಿಯುವ ಬೋನು. उन्मथ्यतेऽनेन—उद् + मथि कर० "घञ्" (३-३-१२१)। 3. ಕಲಕಿ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಬ್ಬಿಸುವುದು. मथे (विलोडने) भावे "घञ्" (३-३-१८)।

उन्माद ಉನ್ಮಾದ (ಪುಂ) 1. ಹುಚ್ಚು, ಚಿತ್ತಪಲ್ಲಟ. उद् + मदी (हर्षे) "घञ्" (३-३-१८)। 2. ನಾಟಕ ಲಕ್ಷಣೋಕ್ತವಾದ ಒಂದು ವೈಭಿಚಾರಿಧವ. "चित्त-संमोह उन्माद कामशोकभयादिभिः" सा० द० ३-१६०।

उन्मादक ಉನ್ಮಾದಕ (ವಿಂ) ಚಿತ್ತಪಲ್ಲಟವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ, ಹುಚ್ಚುಹಿಡಿಸುವ. उद् + मदी (हर्षे) + णिच् "ण्वल्" (३-१-१३३)।

उन्मादन ಉನ್ಮಾದನ (ನಂ) 1. ಹುಚ್ಚುಹಿಡಿಸುವುದು, ಬುದ್ಧಿಭ್ರಮೆಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದು. उद् + मदी (हर्षे) + णिच् "ल्युट्" (३-३-११५)। (ವಿಂ) 2. ಹುಚ್ಚುಹಿಡಿಸುವ, ಬುದ್ಧಿಭ್ರಮೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. उद् + मदी (हर्षे) + णिच् "ल्युः" (३-१-१३४)।



उन्मादवत् ಉನ್ಮಾದವತ್ (ವಿಂ) ಹುಚ್ಚುಹಡಿದಿರುವ, ಬುದ್ಧಿಭ್ರಮೆ ಹೊಂದಿರುವ. उन्मादोऽस्यास्ति "मनुप्" (५-२-९४)। स्त्रियां "डीप्" (४-१-६)। -वतो -न३९।  
उन्मादिन् ಉನ್ಮಾದಿನ್ (ವಿಂ) ಮತ್ತನಾದ, ಚಿತ್ತ ಪಲ್ಲಟವುಳ್ಳ, ಹುಚ್ಚುಹಡಿದ. उन्मादोऽस्यास्ति "इनिः" (५-२-११५)। स्त्रियां "डीप्" (४-१-५)। उन्मादिनी ಉನ್ಮಾದಿನೀ.

उन्मान ಉನ್ಮಾನ (ನಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ತೂಗುವುದು, ತೂಕದ ಕಲ್ಲು ಬಟ್ಟುಗಳಿಟ್ಟು ತೂಗುವುದು. उद् + मा (माने) , भावे "ल्युट्" (३-३-११५)।  
2. ಮೇಲಿನಿಂದ ಅಳತೆಮಾಡುವಿಕೆ. 3. ತ್ರಾಸು, ತಕ್ಕಡಿ. उद् + मा कर० "ल्युट्" (३-३-११७)।

उन्मार्ग ಉನ್ಮಾರ್ಗ (ಪುಂ) 1. ತಪ್ಪುದಾರಿ, ಕೆಟ್ಟನಡತೆ. उद्गतश्चासौ मार्गश्च। (वि०) 2. ದಾರಿಬಿಟ್ಟು ನಡೆಯುವ, ತಪ್ಪುದಾರಿಯಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ, ಕೆಟ್ಟ ನಡತೆಯುಳ್ಳ. उत्क्रान्तो मार्गात्।

उन्मिष ಉನ್ಮಿಷ (ವಿಂ) 1. ವಿಕಾಸಹೊಂದಿದ, ಅರಳಿದ. उद् + मिष (स्पर्धायाम्) "कः" (३-१-१३५)।  
2. ಕಣ್ಣು ತೆರೆದಿರುವ. 3. ಪ್ರಕಾಶವಾದ.

उन्मिषत् ಉನ್ಮಿಷತ್ (ವಿಂ) 1. ವಿಕಾಸಹೊಂದುತ್ತಿರುವ, ಅರಳುತ್ತಿರುವ. 2. ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ. 3. ಕಣ್ಣು ತೆರೆಯುತ್ತಿರುವ. उद् + मिष (स्पर्धायाम्) "शतृ" (३-२-१२४)।

उन्मिषित ಉನ್ಮಿಷಿತ (ನಂ) 1. ನೋಟ, ವೀಕ್ಷಣ, ಅವಲೋಕನ. उद् + मिष (स्पर्धायाम्) भावे "क्तः" (३-३-११४)। "व्यलोकयन्मुनिषितैस्तटिन्मयैर्महातपः-साक्ष्य इव स्थिताः क्षपाः" कुमा० ५-२५। 2. (ಕಣ್ಣು) ತೆರೆದಿರುವಿಕೆ, ಬಿಟ್ಟಿರುವಿಕೆ. "तद्वल्गुना युगपदुन्मिषितेन तावत्सद्यः परस्परतुलामधिरोहतां द्वे" रघु० ५-६८। (वि०) 3. ಅರಳಿದ, ವಿಕಾಸಹೊಂದಿದ. उद् + मिष कर्त० "क्तः" (३-४-७२)।

उन्मीलत् ಉನ್ಮೀಲತ್ (ವಿಂ) 1. ಅರಳುತ್ತಿರುವ, ವಿಕಾಸ ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ. उद् + मील (निमेषणे) "शतृ" (३-२-१२४)। "उन्मीलन्मुकुलकरालकुन्दकोशप्रच्योतद्-घनमकरन्दगन्धबन्धो" मालती० १-४१। 2. (ಕಣ್ಣು) ತೆರೆಯುತ್ತಿರುವ.

उन्मीलन ಉನ್ಮೀಲನ (ನಂ) 1. ವಿಕಾಸ, ಅರಳುವಿಕೆ. 2. (ಕಣ್ಣು) ತೆರೆಯುವಿಕೆ. उद् + मील (निमेषणे)

"ल्युट्" (३-३-११५)। "ज्ञानाञ्जनशलाकाभि-नेत्रोन्मीलनकारकः" भा०।

उन्मीलित ಉನ್ಮೀಲಿತ (ನಂ) 1. ವಿಕಾಸ, ಅರಳುವಿಕೆ. 2. (ಕಣ್ಣು) ತೆರೆದಿರುವಿಕೆ, — ಬಿಟ್ಟಿರುವಿಕೆ. उद् + मील भावे "क्तः" (३-३-११४)। (वि०) 3. ವಿಕಾಸಹೊಂದಿದ, ಅರಳಿದ. उद् + मील (निमेषणे) "क्तः" (३-४-७२)। "निरीक्ष्यमाणा इव विस्मयाकुलैः पयोभिरुन्मीलित-पद्मलोचनैः" किरा० ४-३। "ते चोन्मीलितमालती-सुरभयः प्रौढाः कदम्बानिलाः" सा० द०। 4. ತೆರೆದಿರುವ, ಬಿಟ್ಟಿರುವ. 5. ತೆರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ. उद् + मील कर्म० "क्तः" (३-२-१०२)। "अज्ञान-तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः"। 6. ಬಣ್ಣ ಹಾಕಿ ಪ್ರಕಾಶ ಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "उन्मीलितं तूलिकयेव चित्रं सूर्यांशुभिर्भिन्नमिवारविन्दम्" कुमा० १-३२।

उन्मुक्त ಉನ್ಮುಕ್ತ (ವಿಂ) ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಂಧನದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. उद् + मुक्त (मोक्षणे) "क्तः" (३-२-१०२)।

उन्मुख ಉನ್ಮುಖ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲುಮುಖವಾದ, ಮುಖವನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಮಾಡಿರುವ, ಮೇಲೆ ನೋಡುವ. उद् ऊर्ध्वं मुखमस्य। "मनोऽभिरामाः शृण्वन्तौ रथनेमि-स्वनोन्मुखैः" रघु० १-३९। "ते सद्यनि गिरेर्वेगा-दुन्मुखद्राःस्थवीक्षिताः" कुमा० ६-४८। 2. ಉದ್ದುಕ್ತ ನಾದ, ಪ್ರಯತ್ನಶೀಲ, ತತ್ಪರ. 3. ಉತ್ಸುಕನಾದ, ತವಕಪಡುವ. "तस्मिन् संयमिनामाद्ये जाते परिणयो-न्मुखे" कुमा० ६-३४। 4. ಸಿದ್ಧನಾಗಿರುವ, ಅಣಿ ಯಾಗಿರುವ. "पतिः प्रतीतः प्रसवोन्मुखीं प्रियां ददर्श काले दिवमभ्रितामिव" रघु० ३-१२।

उन्मुद्र ಉನ್ಮುದ್ರ (ವಿಂ) 1. ಅರಳಿದ, ವಿಕಾಸಹೊಂದಿದ. 2. ತೆರೆದಿರುವ, ಬಿಟ್ಟಿರುವ (ಕಣ್ಣು). उद्गता मुद्रा यस्य।

उन्मूलन ಉನ್ಮೂಲನ (ನಂ) ಬೇರುಸಹಿತ ಕಿತ್ತುಹಾಕುವುದು. उन्मूल (नामधा०) + णिच् "ल्युट्" (३-३-११५)। "न पादपोन्मूलनशक्ति रंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मास्तस्य" रघु० २-३४।

उन्मूलित ಉನ್ಮೂಲಿತ (ವಿಂ) ಬೇರುಸಹಿತ ಕಿತ್ತು ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. उन्मूल (नामधा०) + णिच् "क्तः" (३-२-१०२)। "उन्मूलितालानबिलाभनाभिः" नैष० ७-८५।



उपकर्तुं लुपकत् (वि०) लुपकारमाडुव,  
साहाय्यमाडुव. उपकरोति — उप + ड् कृञ्



उपकृत ಉಪಕೃತ (ನಂ) 1. ಉಪಕಾರ, ಸಾಹಾಯ್ಯ.  
 उप + कृ (करणे) "क्तः" (३-३-११४)।  
 2. ಉಪಕಾರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಾಹಾಯ್ಯಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
 उप + कृ "क्तः" (३-२-१०२)।



उपकृति लुपकृति (स्त्री०) लुपकार, साहाय्य.  
उप+ङु कृत् (करणे) "क्तिन्" (३-३-९४)। "पतगेन  
मया जगत्पतेरुपकृत्यै तव किं प्रभूयते" नैष० २-१३।

उपकृतिन् लुपकृतिन् (वि०) लुपकारमादिदवन्तु.  
साहाय्य, सहाय्य. उपकृतमनेन "इतिः"  
(५-२-८८)।

उपकृष्ट लुपकृष्ट (वि०) १. सिद्धवाद. २. तया  
राद. उप+कृष्ट (सामर्थ्ये) "क्तः" (३-४-७२)।  
ऋकारस्य लः (८-२-१८)। ३. हत्तिरु इडलुप्ट, स  
मिपकृष्ट उरलुप्ट. कर्म० "क्तः" (३-२-१०२)।

उपक्रम लुपक्रम (पु०) १. प्रारंभिसुविक्, मोदलुमाडुविक्. उप+क्रम (पादविक्षेपे) "घञ्"  
(३-३-१८)। "रामोपक्रममाचख्यौ रक्षःपरिभवं  
नवम्" रघु० १२-४२। २. प्रारंभ, मोदलु.  
३. साम मोदलुमाडु लुपमाय. "उपक्रमैरस्त्रलितै-  
श्चतुर्भिश्चतुर्दिगीशश्चतुरो बभूव" रघु० १८-१५।  
४. प्रथमप्रवेश, मोदलु समिपकृष्ट ह्येगु  
वुदु. "कुसुमधर्माणो हि योषितः सुकुमारोपक्रमाः"  
मालती० ७। ५. चिकित्से, वृद्धोपकार. उप+  
क्रम कर० "घञ्" (३-३-१२१)।

उपक्रमण लुपक्रमण (न०) १. प्रारंभिसुविक्, मोदलुमाडुविक्. उप+क्रम (पादविक्षेपे) भावे  
"ल्युट्" (३-३-११५)। २. रोगीय आयुस्सन्नु  
तिथि माडुव वृद्ध चिकित्से, वृद्धोपकार.  
कर० "ल्युट्" (३-३-११७)। ३. समिपकृष्ट  
बुरुवुदु, हत्तिरु बुरुवुदु. स्त्रियां "ङीप्"  
(४-१-५)। स्वार्थे "कन्"। उपक्रमणिका लुप  
क्रमणिका. ग्रन्थद प्रस्तावने, लुपक्रमणिका.

उपक्रमणीय लुपक्रमणीय (वि०) १. प्रारंभिस  
लुपुदुव. उप+क्रम (पादविक्षेपे) "अनीयर्"  
(३-१-२६)। २. चिकित्से, रोगीय दीर्घा  
युष्मन्नु तिथिसुव लुपुदु. उपक्रमणे साधु।  
३. रोगीय चिकित्से, संबन्धिसिद ग्रन्थ.  
चिकित्से, प्रारंभिसुव मोदलु वृद्धनु रोगीय  
आयुःप्रमाणवन्नु परीक्षिसर्षे. सरीयाद  
आयुःप्रमाणविद्वरे नरात्र व्याधिय स्वरूप,  
मृत्तु, अग्नि, वयस्सु, दीर्घबल, प्रकृति,  
दीर्घ मोदलुमाडुवन्नु चिकित्से, परीक्षिस चिकित्से  
यन्नु नडेसर्षे. सुश्रुत०।

उपक्रान्त लुपक्रान्त (वि०) प्रारंभिसलुप्ट, लुप  
क्रामिसलुप्ट. उप+क्रम (पादविक्षेपे) "क्तः"  
(३-२-१०२)।

उपक्रिया लुपक्रिया (स्त्री०) लुपकार, साहाय्य,  
नैरवु. उप+ङु कृत् (करणे) भावे "शः" (३-३-१००)।  
"अचिरादुपकर्तराचरेदथ वात्मोपयिकीमुपक्रियाम्" नैष०  
२-१४।

उपक्रोश लुपक्रोश (पु०) निन्द, दूषण. उप+  
क्रुश (आह्वाने रोदने च) "घञ्" (३-३-१८)। "राज्येन  
किं तद्विपरीतवृत्तेः प्राणैरुपक्रोशमलीमसैर्वा" रघु० २-५३।

उपक्रोष्ट लुपक्रोष्ट (पु०) १. गदभ, कर्त्त.  
उप+क्रुश (आह्वाने रोदने च) "तृच्" (३-१-१३३)।  
(वि०) २. निन्द, दूषिसुववन्नु.

उपकवण लुपकवण (पु०) निष्ठाताद. उप+कण  
(शब्दे) वा "अप्" (३-३-५६)। पक्षे "घञ्"  
(३-३-१८)। उपकवाणः लुपकवाणः।

उपक्षय लुपक्षय (पु०) १. नाश, कडिमयागु  
विक्, हावि. उप+क्षि (क्षये) "अच्" (३-३-५६)।  
(वि०) २. नाशहोदिद, क्षीणवाद. उपगतः  
क्षयम्। (अव्य०) ३. मनैय पक्ष, मनैय  
समिप. क्षयस्य गृहस्य समीपम्। सामीप्ये अव्ययी०।

उपक्षिपत् लुपक्षिपत् (वि०) १. इडुव, हाकुव,  
प्रयोगिसुव, एसैयुव. उप+क्षिपु (निरसने)  
"शत्" (३-२-१२४)। "वपुषि वधाय तत्र तव  
शस्त्रमुपक्षिपतः पततु शिरस्यकाण्डयमदण्ड इवैष भुजः"  
मालती० ५-३१। २. निन्दिसुव, अक्षैसिसुव.  
३. प्रारंभिसुव, लुपक्रमिसुव.

उपक्षिप्त लुपक्षिप्त (वि०) १. प्रारंभिसलुप्ट, लुप  
क्रमिसलुप्ट. "उपक्षिप्तमनेन किमपि" मुद्रा० १।  
उप+क्षिपु (निरसने) "क्तः" (३-२-१०२)।  
२. रचिसलुप्ट, माडलुप्ट, तयारिसलुप्ट.  
"उपक्षिप्तो मया तपनीयाशोकस्य वेदिकाबन्धः। याव-  
दनुष्ठितनियोगमात्मानं देव्यै निवेदयामि" माल० ५।  
३. एसैयलुप्ट, बिसाडलुप्ट. ४. हत्तिरदलि  
इडलुप्ट.

उपक्षीण लुपक्षीण (वि०) क्षयहोदिद, कडिम  
याद. उप+क्षि (क्षये) "क्तः" (३-४-७२)।  
दीर्घः (६-४-४०)। निष्ठातस्य नत्वम् (८-२-४६)।



**उपक्षेप ಉಪಕ್ಷೇಪ (ಛಂ)** 1. ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ ಇಡುವಿಕೆ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ. **उप + क्षिपु (निरसने)** ಭಾವೆ "ಛ" (3-3-12)। 2. ಎಸೆಯುವಿಕೆ, ಬಿಸಾಡುವಿಕೆ. 3. ಸೂಚನೆ, ತಿಳಿಸುವಿಕೆ, ಉಲ್ಲೇಖ. "दारुणः खलूपक्षेपः पापस्य" वेणी० ५। 4. ಬೆದರಿಕೆ, ಭಯ ಸೂಚನೆ. "कर्णनासाच्छेदोपक्षेपभीषिताम्याम्" दशकु०। 5. (ರೂಪಕಗಳಲ್ಲಿ) ಮುಖಸಂಧಿಯ ಒಂದು ಅಂಗ. "उपक्षेपः परिकरः परिव्यासो विलोभनम्" ಇತ್ಯಾದಿ. ಸಾಂ ದಂ ६-८१। ಪ್ರಧಾನಫಲಕ್ಕೆ ಮುಖ್ಯ ಕಾರಣ ವಾದುದು ಬೀಜ. ಕಾವ್ಯಾರ್ಥ ಸೂಚಕವಾದ ಆ ಬೀಜ ವನ್ನು ಸಂಕ್ಷೇಪವಾಗಿ ಹೇಳುವುದು ಉಪಕ್ಷೇಪ. ಈ ಬೀಜವು ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಸ್ವಲ್ಪ ಮಾತ್ರ ಸೂಚಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟು ಕ್ರಮೇಣ ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿ ಪ್ರಧಾನಫಲ ಪ್ರಾಪ್ತಿಗೆ ಹೇತುವಾಗುವುದು. "अल्पमात्रं समुद्दिष्टं बहुधा यद्विसर्पति। फलस्य प्रथमो हेतुर्बीजं तदभिधीयते" ಸಾಂ ದಂ ६-६५। "काव्यार्थस्य समुत्पत्तिरूपक्षेप इति स्मृतः" ಸಾಂ ದಂ ६-८३। "बीजन्यास उपक्षेपः" प्र० ६०। ರತ್ನಾವಳಿಯಲ್ಲಿ ಯೌಗಂಧರಾಯಣನ ವ್ಯಾಪಾರವು ವತ್ಸರಾಜನಿಗೆ ರತ್ನಾವಳಿಯ ಪ್ರಾಪ್ತಿಗೂ, ವೇಣೀಸಂಹಾರದಲ್ಲಿ ಭೀಮಸೇನನ ಕೋಪದಿಂದ ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿದ ಧರ್ಮರಾಜನ ಉತ್ಸಾಹವು ದ್ರೌಪದಿಯ ವೇಣೀಸಂಯಮನಕ್ಕೂ ಬೀಜರೂಪವಾಗಿರುವುವು. ಇದೇ 'ಉಪಕ್ಷೇಪ'ವೆಂಬ ಮುಖ ಸಂಧಿಯ ಅಂಗ. 6. ರಾಜನು ಶತ್ರುಜಯ ಮೊದಲಾದ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಪ್ರಯೋಗಿಸುವ ಸಾಮಾನ್ಯವಾಯು. **उपक्षिप्यते आरम्यते**ಜೇನ — **उप + क्षिपु कर० "घञ्"** (3-3-121)। "कार्योपक्षेपमादौ तनुमपि रचयंस्तस्य विस्तारमिच्छन् बीजानां गर्भितानां फलमतिगहनं गूढ-मुद्भेदयंश्च" मुद्रा० ४-३।

**उपक्षेपण ಉಪಕ್ಷೇಪಣ (ನಂ)** 1. ಎಸೆಯುವುದು, ಬಿಸಾಡುವುದು. 2. ಸಮರ್ಪಿಸುವುದು, ಒಪ್ಪಿಸುವುದು. 3. ಸಮಾಪದಲ್ಲಿಡುವುದು. **उप + क्षिपु (निरसने) "ल्युट्"** (3-3-11५)।

**उपग ಉಪಗ (ವಿಂ)** 1. ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ ಹೋಗುವ, ಅನುಸರಿಸಿ ಹೋಗುವ. **उपगच्छति—उप+गम्लृ (गती)** "ङः" (वा० ३-२-४८)। 2. ಹೊಂದಿರುವ, ಕೂಡಿ ಕೊಂಡಿರುವ. "ओषध्यः फलपाकान्ता बहुपुष्पफलोपगाः" मनु० १-४६।

**उपगण ಉಪಗಣ (ವಿಂ)** ಗುಂಪನ್ನು ಸೇರಿರುವ, ಗುಂಪಿ ನೊಡನೆ ಕಲೆತಿರುವ. **उपगतो गणो येन।**

**उपगत ಉಪಗತ (ನಂ)** 1. ಹಣಸಂದ ರಶೀದಿ, ಹಣವು ಸಂದ ಬಗ್ಗೆ ಸ್ವಹಸ್ತಾಂಕನ (ರುಜು) ಮಾಡಿ ಕೊಡುವ ರಶೀದಿ. "धनी वोपगतं दद्यात्स्वहस्तपरिचिह्नितम्" याज्ञ० २-९३। (ವಿಂ) 2. ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ, ಹತ್ತಿರ ಸೇರಿರುವ. **उप+गम्लृ (गती) "क्तः"** (३-४-७२)। 3. ಸ್ವೀಕರಿಸಿದ, ಅಂಗೀಕರಿಸಿದ. "उपगतोऽपि च मण्डलनाभितामनुदितान्यसितातप-वारणः" रघु० ९-१५। 4. ತಿಳಿದಿರುವ. 5. ಬಂದಿ ರುವ, ಕೈಸೇರಿರುವ, ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ. "सर्वो हि नोपगत-मप्यपचीयमानं वर्धिष्णुमाश्रयमनागतमभ्युपैति" माघ० ५-१४। "उपगतमवधीरयन्त्यभव्याः" किरा० १०-५१। 6. ಆಗಮಿಸಿರುವ, ಬಂದಿರುವ. "सहसोपगतः सविस्मयं तपसां सूतिरसूतिरापदाम्" किरा० २-५६। "उपगते वसुदेवसुतेऽन्तिकम्" याद० ३-४६। 7. ಪಡೆ ದಿರುವ, ಹೊಂದಿರುವ. "उच्चावचैरुपगतेषु सहस्र-संख्याम्" माघ० ४-४६।

**उपगति ಉಪಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಪಡೆಯುವಿಕೆ. **उप + गम्लृ (गती) "क्तिन्"** (३-३-९४)। 2. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. 3. ಸ್ವೀಕಾರ, ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. 4. ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಬರುವುದು, ಹತ್ತಿರ ಸೇರುವುದು.

**उपगन्तु ಉಪಗಂತ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ. 2. ತಿಳಿಯುವ. 3. ಹೊಂದುವ, ಪಡೆಯುವ. 4. ಸ್ವೀಕರಿಸುವ, ಅಂಗೀಕರಿಸುವ, ಒಪ್ಪುವ. **उप+गम्लृ (गती) "तृच्"** (३-१-१३३)। ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ङीप्" (४-१-५)। -ಗನ್ತ್ರಿ -ಗಂತ್ರ್ಯೇ.

**उपगम ಉಪಗಮ (ಛಂ)** 1. ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಹೋಗುವಿಕೆ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಹೋಗುವಿಕೆ. **उप + गम्लृ (गती)** ಭಾವೆ "अप्" (३-३-५८)। "तं प्राप्य सर्वावयवानवद्यं व्यावर्ततान्योपगमात्कुಮारी" रघु० ६-६९। 2. ಅಂಗೀ ಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. 3. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. 4. ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಹೊಂದುವಿಕೆ, ಪಡೆಯುವಿಕೆ. "विश्वासोपगमादभिन्न-गतयः शब्दं सहन्ते मृगाः" शाकु० १-१३। 5. ಸಹ ವಾಸ, ಸಾಹಚರ್ಯ, ಸಂಸರ್ಗ. "न पुनरधमाना-मुपगमः" हितो०। ಭಾವೆ "ल्युट्" (३-३-११५)। -ಗಮನಮ್ -ಗಮನಮಃ.



1. ಉಪಗ್ರಹ, ಕಾಣಿಕೆ.  
 ಉಪಗ್ರಹ್ಯತೆ—ಉಪ+ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) “ಽಯತ್” (3-2-124)।  
 (ವಿಂ) 2. ಕಾಣಿಕೆಯಾಗಿ ಕೊಡಲ್ಪಡುವ ವಸ್ತು.  
 3. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಡುವವನು, ಬಹುಮಾನಿಸಲ್ಪಡುವವನು, ಬಹುಮಾನ ಹೊಂದಲು ಅರ್ಹನಾದವನು.  
 ಉಪ+ಗ್ರಹ+ಣಿच् “ಯತ್” (3-1-99)।



ಉಪಾತ ಉಪಾತ (ಫುಂ) 1. ವಿನಾಶ, ಅಳವು, ಹಾಳು.

ಉಪ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತಿಯು:) "ಘ್" (3-3-14)।

2. ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಅಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಸಂಪಾದನೆ, ಕಾರ್ಯವುಂಟುಮಾಡುವುದರಲ್ಲಿ ಶಕ್ತಿ ಕುಂದುವುದು. "ತಥಾತ್ವಂ ಚೇದಿन्द्रಿಯಾಣಾಮುಪಾತೇ ಕಥಂ ಸ್ಮೃತಿಃ" ಭಾಷ್ಯಂ 1 3. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. ಉಪಹನ್ಯತೇನ - ಉಪ + ಹನ ಕರಂ "ಘ್" (3-3-121)। 4. ಏಟು, ಪೆಟ್ಟು, ಹೊಡೆತ. 5. ಅಪಕಾರ. "ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಚ ಪ್ರೇಕ್ಷಣಾಲಂಭಮುಪಾತಂ ಪರಸ್ಯ ಚ" ಮನು 2-109।

ಉಪಾತಕ ಉಪಾತಕ (ವಿಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸುವವನು, ಹಾಳುಮಾಡುವವನು. ಉಪ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತಿಯು:) "ಘ್" (3-1-133)। 2. ಪೀಡಿಸುವವನು, ಹಿಂಸಿಸುವವನು. "ಕಥಂ ಸಕ್ತುನ್ ಗ್ರಹೀಷ್ಯಾಮಿ ಭೂತ್ವಾ ಧರ್ಮೋಪಾತಕಃ" ಭಾಂ ಆಶ್ವಂ 92-41। 3. ಹೊಡೆಯುವ. 4. ಶಕ್ತಿ ಕುಂದಿಸುವ.

ಉಪಾತಿನ ಉಪಾತಿನ (ವಿಂ) "ಉಪಾತಕ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಉಪ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತಿಯು:) "ಘ್" (3-1-134)। "ಶಸ್ತ್ರಂ ಪಾತಯೇತ್ ಮರ್ಮಸಿರಾಸ್ನಾಯುಸ್ಸಂಧಿನಾಮನುಪಾತಿನ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ 14-26। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (4-1-5)। -ಉಪಾತಿನಿ -ಘಾತಿನಿ.

ಉಪಾತನ ಉಪಾತನ (ವಿಂ) ಹತ್ತಿರದ ಆಸರೆ, ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಆಶ್ರಯ. ಉಪಹನ್ಯತೇ ಸಾಮೀಪ್ಯೇನ ಗಮ್ಯತೇ - ಉಪ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತಿಯು:) "ಅಪ್" ಉಪಾಲೋಪಶ್ಚ (3-3-49)। ನಿಪಾಂ 1. "ಅಪಸ್ಯತಾಂ ದಾಶರಥಿ ಜನನ್ಯೌ ಛೇದಾದಿವೋಪಾತನರೋವ್ರತಯೌ" ರಘುಂ 14-1।

ಉಪಾತಸ್ ಉಪಾತಸ್ (ನಂ) ಕನ್ನಡಕ, ಸುಲೋಚನ. ಉಪಗತಂ ಚಕ್ಷುಃ।

ಉಪಾತ ಉಪಾತ (ಫುಂ) 1. ವೃದ್ಧಿ, ಬೆಳವಣಿಗೆ. ಉಪ + ಚಿಙ್ (ಚಯನ) "ಅಚ್" (3-3-46)। "ಸ್ವಶಕ್ತಿಯುಪಾತೇ ಕೇಚಿತ್ಪರಸ್ಯ ವ್ಯಸನೇಽಪರೇ। ಯಾನಮಾಹುರದಾಸೀನಂ ತ್ವಾಮುತ್ಥಾಪಯತಿ ದ್ವಯಮ್" ಮಾಘಂ 2-49। 2. ರಾಶಿ, ಗುಪ್ತೆ. 3. ಎಳೆಗೆ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಅಭ್ಯುದಯ, ಉತ್ಕರ್ಷ. 4. ಲಗ್ನದಿಂದ ಮೂರು, ಅರು, ಹತ್ತು ಮತ್ತು ಹನ್ನೊಂದನೆಯ ಸ್ಥಾನ. "ಷಟ್ಪದಿಶಲಾಭಾಶ್ಚ ಲಗ್ನಾದುಪಾತಾಃ ಸ್ಮೃತಾಃ"। 5. ಸಂಗ್ರಹ, ಶೇಖರಣೆ, ಕೂಡಿಸುವಿಕೆ. "ಅನಾಪ್ತಪುಷ್ಪೋಪಾತಯೈರಾಪಾಫಲಸ್ಯ ನಿರ್ಧೃತರಜಾಃ ಸವಿತ್ರಿ" ಕಿರಾಂ 3-5।

ಉಪಾತ ಉಪಾತ (ವಿಂ) 1. ಉಪಾತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೇವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉಪ + ಚರ (ಗತೌ)

"ಕ್ತಃ" (3-2-102)। 3. ಲಕ್ಷಣಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸಿಂಹೋ ಮಾಣವಕಃ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಸಿಂಹಪದಕ್ಕೆ ಮಾಣವಕಪದದಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಅನ್ವಯವಿಲ್ಲದೆ ಮಾಣವಕನಲ್ಲಿ ಸಿಂಹದ ಗುಣವಿರುವುದರಿಂದ ಗೌಣಲಕ್ಷಣೆಯಿಂದ (ಮಾಣವಕನಲ್ಲಿ) ಸಿಂಹತ್ವವು ಉಪಚರಿತ (ಲಕ್ಷಣಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ).

ಉಪಾತ ಉಪಾತ (ವಿಂ) ಸೇವಿಸಲ್ಪಡುವ, ಸೇವಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. ಉಪ (ಸ್ಮೃತ) + ಚರ (ಗತೌ) ಕರಂ "ಯತ್" (3-1-100)। ಉಪಾತದೇನ ಸಹ ಸಮಾಸಃ। ಸೋಪಸರ್ಗಾತ್ "ಘ್ಯತ್" ಏವ। ಅನುಪಸರ್ಗೇ ಇತ್ಯುಕ್ತತ್ವಾತ್। "ಉಪಾತಃ ಸ್ತ್ರಿಯಾ ಸಾಧ್ಯಾ ಸತತಂ ದೇವವತ್ಪತಿಃ" ಮನುಂ 4-144।

ಉಪಾತ ಉಪಾತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೇವೆ, ಶುಶ್ರೂಷೆ. ಉಪ + ಚರ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಯತ್" (3-1-100)। 2. ಚಿಕಿತ್ಸೆ, ರೋಗನಿವಾರಣೆಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಔಷಧೋಪಚಾರ.

ಉಪಾತಿನ ಉಪಾತಿನ (ವಿಂ) 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿಯುಂಟುಮಾಡುವ, ಹೆಚ್ಚಿಸುವ. 2. ಉತ್ಕರ್ಷವುಂಟುಮಾಡುವ. ಉಪ + ಚಿಙ್ (ಚಯನ) "ಘ್" (3-1-134)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (4-1-5)। -ಉಪಾತಿನಿ -ಘಾತಿನಿ.

ಉಪಾತ ಉಪಾತ (ಫುಂ) ಯಜ್ಞವೇದಿಕೆ, ಯಾಗಾಗ್ನಿಯನ್ನು ಪ್ರತಿಷ್ಠಿಸಲು ಇಟ್ಟಿಗೆಯಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಜಗುಲಿ. ಉಪ + ಚಿಙ್ (ಚಯನ) "ಘ್ಯತ್" ಆಯಾदेशश्च (3-1-131)। "ಅಗ್ನಿ" (ವೇದಿಕೆ) ಎಂಬ ಅರ್ಥವು ತೋರುವಲ್ಲಿ ನಿಪಾತ. "ಅಗ್ನಿಶಬ್ದಃ ಷ್ಟಕಾರಚಿತಸ್ಥಣ್ಡಿಲವಿಶೇಷೇ ವರ್ತತೇ"। "ಷ್ಟಕಾಭಿರಗ್ನಿಂ ಚಿನೋತಿ" ಇತಿ ಶ್ರುತಃ। ಷ್ಟಕಾಕೃತಚಯನೇನ ಅಗ್ನಿಯಾಸ್ಯ ಸ್ಥಣ್ಡಿಲ ನಿಷ್ಪಾದಯೇದಿತ್ಯರ್ಥಃ" ಇತಿ ಬಾಲಮನೋರಮಾಯಾಮ್।

ಉಪಾತ ಉಪಾತ (ಫುಂ) 1. ಸೇವೆ, ಶುಶ್ರೂಷೆ. ಉಪ + ಚರ (ಗತೌ) "ಘ್" (3-3-14)। "ಸ ಮೇ ಚಿರಾಯಾಸ್ವಲಿತೋಪಚಾರಾಂ ತಾಂ ಭಕ್ತಿಮೇವಾಗಣಯತ್ಪುರಸ್ತಾತ್" ರಘುಂ 4-20। 2. ಚಿಕಿತ್ಸೆ, ಔಷಧೋಪಚಾರ. 3. ಮರಾಢೆ, ಗೌರವ, ಆದರ. "ಉಪಾತವಿಧಿರ್ಮನಸ್ವಿನೀನಾಂ ನ ತು ಪೂರ್ವಾಮ್ಯಧಿಕೋಽಪಿ ಭಾವಶೂನ್ಯಃ" ಮಾಲಂ 3-3। 4. ಪೂಜೆ, ಸತ್ಕಾರ. "ಪ್ರಾಪ್ತಾಃ ಕೃಚ್ಛಾದೃಷ್ಯಶೃಂಗೋಪಚಾರೈಃ ಪುಣ್ಯಶ್ರೀಕಾಃ ಕೋಸಲೇಂದ್ರೇಣ ಪುತ್ರಾಃ" ಮಂ ವೀಂ 1-24। 5. ಸೇವೆಯ ಸಲಕರಣೆ, ಉಪಾತಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ ಪದಾರ್ಥ. "ತಸ್ಯೋಪಕಾರ್ಯಾರಚಿತೋಪಚಾರಾ ವನ್ಯೇತರಾ ಜಾನಪದೋಪದಾಭಿಃ" ರಘುಂ 4-41। 6. ಪೂಜೆಯ ಸಲಕರಣೆ, ಪೂಜಾ



ದ್ರವ್ಯ, ಪೂಜೆಗೆ ಬೇಕಾದ ಪದಾರ್ಥ, ಪೂಜೋಪಕರಣ. ಉಪಚಾರಗಳು ಕಲ್ಪ, ಕಾಲ, ದೇವತಾಭೇದದಿಂದ ಪञ्च (5), ದಶ (10), ಷೋಡಶ (16), ಅಷ್ಟಾದಶ (18), ಚತುರ್ವಿಂಶತಿ: (24) ಮತ್ತು ಚತುರ್ಘಟಿ: (64) ಎಂದು ನಾನಾವಿಧ. [ವಿವರಕ್ಕೆ ಆಯಾ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ಕಲ್ಪತೋಪಚಾರಾಂ ಚತುರಸ್ರವೇದೀ ತಾವೇತ್ಯ ಪದ್ವಾತ್ ಕನಕಾಸನಸ್ಥೌ" ಕುಮಾಂ ೭-೮೮. 7. ಲಕ್ಷ್ಮಣಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ (ಮುಖ್ಯಾರ್ಥವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು) ಬೇರೊಂದು ಅರ್ಥವನ್ನು ತಿಳಿಸುವಿಕೆ. "ಕೂಲಂ ಪಿಪತಿಷತಿ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಅಚೇತನವಾದ ಕೂಲದಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣಿಯಿಂದ ಅಚೇತನತ್ವವು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. 8. ಅಸತ್ಯವಚನ, ಇತರರನ್ನು ಸಂತೋಷಪಡಿಸಲು ಅಡುವ ಸುಳ್ಳುಮಾತು, ಇತರರ ಮನರಂಜನೆಗಾಗಿ ಅಸತ್ಯ ನುಡಿಯುವುದು, ಕೇವಲ ಗೌರವದ ಮಾತು. "ಉಪಚಾರಪದಂ ನ ಚೇದಿದಂ ತ್ವಮನಜ್ಞಃ ಕಥಮಕ್ಷತಾ ರತಿಃ" ಕುಮಾಂ ೪-೯. 9. ಉತ್ಕೋಚ, ಲಂಚ. 10. ಪ್ರಾರ್ಥನೆ, ಯಾಚನೆ, ಬೇಡಿಕೆ. "ಸೋಪಚಾರಮುಪಶಾಂತವಿಚಾರಂ ಸಾನುತರ್ಪಮನುತರ್ಪಪದೇನ" ಮಾಘಂ ೧೦-೨. 11. ವ್ಯವಹಾರ, ನಡತೆ, ನಡವಳಿಕೆ. 12. ಕರ್ಮಾಚರಣೆ, ಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನ. "ಇತ್ಯಂ ವಿಧಿಜ್ಞೇನ ಪುರೋಹಿತೇನ ಪ್ರಯುಕ್ತಪಾಣಿಗ್ರಹಣೋಪಚಾರೌ" ಕುಮಾಂ ೭-೮೬. "ಉಪಚಾರಸ್ತು ಲಕ್ಷಾಣಾಂ ವ್ಯವಹಾರೋಪಚರಯೋಃ" ಹೇಮಂ.

ಉಪಚಾರ್ಯ ಉಪಚಾರ್ಯ (ನಂ) 1. ಸೇವೆ, ಶುಶ್ರೂಷೆ. 2. ಚಿಕಿತ್ಸೆ. ಉಪ+ಚರ (ಗತೌ) "ಘ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪). (ವಿಂ) 3. ಸೇವಿಸಲ್ಪಡುವ, ಉಪಚರಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಚಿಕಿತ್ಸೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದ, ಉಪಚಾರ ಹೊಂದಲು ತಕ್ಕವನಾದ. ಉಪ+ಚರ ಕರ್ಮಂ "ಘ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪).

ಉಪಚಿಕಿರ್ಮ ಉಪಚಿಕೀರ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಪಕಾರ ಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಉಪಕರ್ತುಮಿಚ್ಛಾ - ಉಪ ತು ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨).

ಉಪಚಿಕಿರ್ಮ ಉಪಚಿಕೀರ್ಷಾ (ವಿಂ) ಉಪಕಾರ ಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, ಸಾಹಾಯ್ಯಮಾಡಲು ಇಷ್ಟವುಳ್ಳ. ಉಪ+ತು ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮).

ಉಪಚಿ(ಕೀ)ಚೀಷಾ ಉಪಚಿ(ಕೀ)ಚೀಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಉಪ+ಚಿ (ಚಯನೆ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨). ಕೃತ್ವವಿಕಲ್ಪ: (೭-೩-೪೮).

ಉಪಚಿ(ಕೀ)ಚೀಷು ಉಪಚಿ(ಕೀ)ಚೀಷು (ವಿಂ) ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಅಧಿಕಪಡಿಸಲು ಇಷ್ಟಪಡುವ. ಉಪ + ಚಿ (ಚಯನೆ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮).

ಉಪಚಿ (ಸ್ವಾಂ ಉಪಂ ಅನಿಂ) 1. ವೃದ್ಧಿಹೊಂದು. 2. ಬಲಗೊಳ್ಳು. 3. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸು.

ಉಪಚಿತ ಉಪಚಿತ (ವಿಂ) 1. ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿದ, ಅಧಿಕವಾದ. ಉಪ + ಚಿ (ಚಯನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨). "ನಯಗುಣೋಪಚಿತಾಮಿವ ಭೂತೇಃ ಸದ್ವಿಪಕಾರಕಲಾಂ ಶ್ರಿಯಮರ್ಥಿನಃ" ರಘುಂ ೯-೨೭. 2. ತುಂಬಿರುವ, ಪುಷ್ಟವಾದ, ನೆರೆದಿರುವ. "ಸ್ಥಿರತುರಜ್ಞಮಭೂಮಿ ನಿಪಾನವನ್ಮಗವಯೋಗವಯೋಪಚಿತವನಮ್" ರಘುಂ ೯-೪೩. 3. ಬಲಗೊಂಡ, ಶಕ್ತಿಹೊಂದಿದ. "ಉಪಚಿತೇಷು ಪರೇಷ್ವಸಮರ್ಥತಾಂ ವ್ರಜತಿ ಕಾಲವಶಾದ್ವಲವಾನಪಿ" ಮಾಘಂ ೬-೬೩. "ವಿವೇಕಪ್ರಭ್ವಂಸಾದ್ವಿಪಚಿತಮಹಾಮೋಹಗಹನಃ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೩೩. 4. ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೆಳೆಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಧಿಕಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉಪ+ಚಿ (ಚಯನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ಮುಢೇ ಮುರಾರೇರಮರಃ ಸುಮೇರೋರಾನೀಯ ಯಸ್ಯೋಪಚಿತಸ್ಯ ಶೃಂಗೈಃ" ಮಾಘಂ ೪-೧೦. 5. ಲೇಪನೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಭವೇದ್ವಿಪಚಿತಂ ದಿಗ್ಧೇ ಸಮೃದ್ಧೇ ಚಾನ್ಯಲಿಂಗಕಮ್" ಮೇದಿಂ. 6. ಶೇಖರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ರಾಶಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ.

ಉಪಚಿತ ಉಪಚಿತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಬೆಳೆವಣಿಗೆ. 2. ಎಳೆಗೆ, ಅಭ್ಯುದಯ, ಉತ್ಕರ್ಷ. 3. ವೃದ್ಧಿ, ಹೆಚ್ಚುವಿಕೆ, ಅಧಿಕವಾಗುವಿಕೆ. ಉಪ+ಚಿ (ಚಯನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪).

ಉಪಚಿತ್ರಾ ಉಪಚಿತ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಸ್ತ ನಕ್ಷತ್ರ. 2. ಸ್ವಾತೀ ನಕ್ಷತ್ರ. 3. ಇಲಿಯಾಲದ ಮರ.

ಉಪಚಿನ್ವತ್ ಉಪಚಿನ್ವತ್ (ವಿಂ) ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅಧಿಕಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತಿರುವ. ಉಪ+ಚಿ (ಚಯನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಉಪಚಿನ್ವನ್ ಪ್ರಭಾಂ ತನ್ವೀಂ ಪ್ರತ್ಯಾಹ ಪರಮೇಶ್ವರಃ" ಕುಮಾಂ ೬-೨೪.

ಉಪಚೀಯಮಾನ ಉಪಚೀಯಮಾನ (ವಿಂ) ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುತ್ತಿರುವ, ಅಧಿಕವಾಗುತ್ತಿರುವ. ಉಪ+ಚಿ (ಚಯನೆ) ಕರ್ಮಕರ್ಮಂ "ಶಾನ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಅಥಕದಾಚಿದ್ವಿಪಚೀಯಮಾನಮನೋಭವವೇಭವಃ" ಚಂ ರಾಂ.

ಉಪಚಂದನ ಉಪಚಂದನ (ನಂ) 1. ಸನಿಮಾತಿನಿಂದ ಬೇಡುವುದು, ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತಿನಿಂದ ಮನವೊಲಿಸುವುದು. ಮೃದುವಚನದಿಂದ ಪುಸಲಾಯಿಸುವುದು. ಉಪ+ಚದಿ (ಸಂವರಣಂ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪). "ಉಪಚಂದನೇವ ಸ್ವಂ ತೇ ದಾಪಯಿತುಂ ಪ್ರಯತಿಷ್ಯೇ" ದಶಕುಂ. 2. ವಿವಾಹ ಮತ್ತು ಇತರ ಸಂತೋಷ ಕೂಟಗಳಿಗೆ ಕೊಡುವ ಆಹ್ವಾನ. "ಉಪಮನ್ವಣಮುಪಚಂದನಮ್" ಸಿಂ ಕೌಂ.



ಉಪಚಂದಿತ ಉಪಚಂದಿತ (ವಿಂ) 1. ಮನವೊಲಿಸಿ  
ಲ್ಪಟ್ಟು, ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತಿನಿಂದ ವುಸಲಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.  
ಉ + ಛದಿ (ಸಂವರಣ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।  
2. ಅಹ್ವಾನಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಕರೆಯಲ್ಪಟ್ಟು.

ಉಪಜನ ಉಪಜನ (ಪುಂ) 1. ಸ್ತ್ರೀ ಪುರುಷರ ಸಮಾಗಮ  
ದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ದೇಹ. ಉ+ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ)  
"ಅಚ್" (3-1-134)। 2. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟು.  
3. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಹೆಚ್ಚುವಿಕೆ. ಉ+ಜನಿ ಭಾವೇ "ಏಚ್" (3-3-14)।

ಉಪಜಾತಿ ಉಪಜಾತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಂದ್ರವಜ್ರಾ ಉಪೇಂದ್ರ  
ವಜ್ರಾ ವೃತ್ತಗಳ ಪಾದಗಳು ಮತ್ತು ಇತರ ಬೇರೆ ಬೇರೆ  
ವೃತ್ತಗಳ ಪಾದಗಳು ಸೇರುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ವೃತ್ತ.  
ಇಂದ್ರವಜ್ರಾ ಮತ್ತು ಉಪೇಂದ್ರವಜ್ರಾ ಇವುಗಳ  
(ಪಾದ) ಯೋಗದಿಂದ ಹದಿನಾಲ್ಕು ಭೇದಗಳಾಗುವುವು.

[ಇ ಇಂದ್ರವಜ್ರಾ. ಉ ಉಪೇಂದ್ರವಜ್ರಾ]

- |            |            |
|------------|------------|
| (1) ಇಉಉಉ।  | (2) ಉಉಉಉ।  |
| (3) ಉಉಉಉ।  | (4) ಉಉಉಉ।  |
| (5) ಉಉಉಉ।  | (6) ಉಉಉಉ।  |
| (7) ಉಉಉಉ।  | (8) ಉಉಉಉ।  |
| (9) ಉಉಉಉ।  | (10) ಉಉಉಉ। |
| (11) ಉಉಉಉ। | (12) ಉಉಉಉ। |
| (13) ಉಉಉಉ। | (14) ಉಉಉಉ। |

ಇದೇ ರೀತಿ ಇತರ ವೃತ್ತಗಳ (ಪಾದ) ಯೋಗದಿಂದಲೂ  
ಉಪಜಾತಿಯೆನಿಸುವುದು.

10 100 110 100

"ಅಥ ಪ್ರಜಾನಾಮಧಿಪಃ ಪ್ರಭಾತೇ

00100 110100

ಜಾಯಾಪ್ರತಿಗ್ರಾಹಿತಗಂಧಮಾಲಯಾಂ।

101 00110100

ವನಾಯ ಪಿತೃಪ್ರತಿಬದ್ಧವತ್ಸಾಂ

1010 0110100

ಯಶೋಧನೋ ಧೇನುಮೃಷೇಮುಮೋಚ" ರಘುಂ 2-1।

ಇದರಲ್ಲಿ 1, 3 ಮತ್ತು 4 ನೆಯ ಪಾದಗಳು ಉಪೇಂದ್ರ  
ವಜ್ರಾ. 2 ನೆಯ ಪಾದ ಇಂದ್ರವಜ್ರಾ.

"ಅನಂತರೋದೀರಿತಲಕ್ಷಮಭಾಜೌ ಪಾದೌ ಯದೀಯಾವುಪಜಾತ-  
ಯಸ್ತಾಃ। ಇತ್ಯಂ ಕಿಲಾನ್ಯಾಸ್ವಪಿ ಮಿಶ್ರಿತಾಸು ವದಂತಿ ಜಾತಿ-  
ಪ್ವಿದಮೇವ ನಾಮ" ವೃಂ 20।

ಉಪಜಪ್ಯ ಉಪಜಪ್ಯ (ವಿಂ) ಭೇದೋಪಾಯದಿಂದ  
ಭೇದಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದವನು. ಉ+ಜಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ)

ವಾಚಿ) "ಘೃತ್" (3-1-124)। "ಉಪಜಪ್ಯಾನುಪಜಪೇತ್  
ಬುದ್ಧೇತೇವ ಚ ತತ್ಕೃತಮ್" ಮನುಂ 3-193।

ಉಪಜಾಪ ಉಪಜಾಪ (ಪುಂ) 1. ಭೇದೋಪಾಯ, ಒಳ  
ಜಗಳವುಂಟುಮಾಡುವಿಕೆ, ಅಂತಃಕಲಹ ತಂದೊಡ್ಡು  
ವುದು. ಉಪಾಂಶು ಜಪನಮ್-ಉ+ಜಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ)  
"ಏಚ್" (3-3-14)। "ಉಪಜಾಪಸಹಾನ್ ವೀಲಕ್ಷಯನ್ ಸ  
ವಿಧಾತಾ ನೃಪತೀನ್ ಮದೋದ್ರತಃ" ಕಿರಾಂ 2-46। "ಉಪಜಾಪಃ  
ಕೃತಸ್ತೇನ ತಾನಾಕೋಪವತಸ್ತವಯಿ" ಮಾಧಂ 2-99। 2. ರಹಸ್ಯ  
ವಾಗಿ ಕಿವಿಯಲ್ಲಿ ಹೇಳುವುದು, ಕಿವಿಯಲ್ಲಿ ಪಿಸು  
ಮಾಡುವುದು.

ಉಪಜಾಪಕ ಉಪಜಾಪಕ (ವಿಂ) ಭೇದೋಪಾಯ  
ಪ್ರಯೋಗಿಸುವವನು, ಶತ್ರುಗಳಲ್ಲಿ ಪರಸ್ಪರ ಜಗಳ  
ಹುಟ್ಟಿಸಿ ಒಡಕುಂಟುಮಾಡುವವನು. ಉ+ಜಪ  
(ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಏಚ್" (3-1-133)। "ರಾಜಃ  
ಕೋಶಾಪಹರ್ತೃಶ್ಚ ಪ್ರತಿಕೂಲೇಷು ಚ ಸ್ಥಿತಾನ್। ಘಾತಯೇದ್ವಿವಿಧದೇಶೈ-  
ರರೀಣಾಂ ಚೋಪಜಾಪಕಾನ್" ಮನುಂ 9-265।

ಉಪಜಿಹ್ವಾ ಉಪಜಿಹ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಿರುನಾಲಿಗೆ.  
2. ನಾಲಿಗೆಯ ಬುಡದಲ್ಲಿ ಮಾಂಸದ ಗಂಟು ಉದ್ಭವ  
ವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ರೋಗ. "ಜಿಹ್ವಾಗ್ರರೂಪಃ  
ಶ್ವಯಥುಹಿ ಜಿಹ್ವಾಮುಕ್ತಮ್ಯ ಜಾತಃ ಕಫರಕ್ತಯೋನಿಃ। ಪ್ರಸೇಕಕಣ್ಡು-  
ಪರಿಧಾಹ್ಯುಕ್ತಾ ಪ್ರಕಥ್ಯತೇಽಸಾವುಪಜಿಹ್ವೀಕೇತಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ನಿಧಾನಂ  
16-39।

ಉಪಜಿಹ್ವಿಕಾ ಉಪಜಿಹ್ವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೆದ್ದು ಉ ಹುಳ.  
ಉಪಜಿಹ್ವಾ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"। "ವಸ್ತ್ರೋ ವಸ್ತ್ರಾಪದೀಪಿಕೋಪ-  
ಜಿಹ್ವಿಕಾ ಚೋಪದೇಹಿಕಾ" ವೈಜಂ।

ಉಪಜೀವಕ ಉಪಜೀವಕ (ವಿಂ) 1. ಸೇವಕ, ಅಳು.  
2. ಆಶ್ರಿತ, ಒಬ್ಬನ ಆಸರೆಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು.  
3. ಉಪವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು, ಮುಖ್ಯ  
ಜೀವನೋಪಾಯವಿಲ್ಲದೆ ಬೇರೆ ಕೈಕಸಬಿನಿಂದ ಜೀವಿಸು  
ವವನು. ಉ+ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣ) "ಏಚ್" (3-1-133)।  
"ಞಿಞಿಃ" (3-1-134)। -ಜೀವಿನ್-ಜೀವಿನ್. "ಭೀಮ-  
ಕಾಂತೇರ್ನೃಪಗುಣೈಃ ಸ ಬಭೂವೋಪಜೀವಿನಾಮ್" ರಘುಂ 1-16। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ  
"ಜೀಪ್" (4-1-5)। -ಜೀವಿನಿ -ಜೀವಿನೀ.

ಉಪಜೀವತ್ ಉಪಜೀವತ್ (ವಿಂ) 1. ಒಬ್ಬನನ್ನು  
ಆಶ್ರಯಿಸಿ ಜೀವಿಸುವ. 2. ಕೈಕಸಬಿನಿಂದ ಜೀವಿಸುವ.  
ಉ+ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣ) "ಶತ್" (3-2-124)।

ಉಪಜೀವನ ಉಪಜೀವನ (ನಂ) 1. ಜೀವಿಕೆಗಾಗಿ  
ಆಶ್ರಯಿಸುವುದು, ಜೀವನಕ್ಕಾಗಿ ಒಬ್ಬನ ಆಸರೆ



ಕಡೆಯುವುದು. ಅಪ+ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। "ಸ್ತ್ರೀಶೂದ್ರವಿದ್ವಜಶ್ರವಣೋ ನಿಂದಿತಾರ್ಯೋಪ-  
ಜೀವನಮ್" ಯಾಜ್ಞಂ 3-236। 2. ಜೀವಿಕೆ, ಜೀವನೋ-  
ವಾಯು. ಅಪ+ಜೀವ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-116)  
"ಕ್ಷತ್ರಿಯಸ್ಯೇತದೇವಾಹುರ್ದಮ್ ಕಷ್ಟೋಪಜೀವನಮ್" ಭೌಂ।

ಅಪಜೀವಿಕಾ ಉಪಜೀವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೀವನಕ್ಕಾಗಿ  
ಮಾಡುವ ಕೈಕಸಬು. ಅಪಜೀವಿತೇಜಯಾ - ಅಪ+ಜೀವ  
(ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಅಃ" (3-3-103)। "ಕನ್" (4-3-94)।

ಅಪಜೀವ್ಯ ಉಪಜೀವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಜೀವಿಕೆಯನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸು-  
ವವನು, ಹೊಟ್ಟೆಪಾಡಿಗಾಗಿ ಕೊಡುವವನು. 2. ಆಶ್ರಯ  
ಕೊಡುವವನು, ಒತ್ತಾಸೆ ನೀಡುವವನು. ಅಪ+ಜೀವ  
(ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಞತ್" (3-1-124)।

ಅಪಜ್ಞಾ ಉಪಜ್ಞಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆದ್ಯಜ್ಞಾನ, ಉಪದೇಶ  
ವಿಲ್ಲದೆ ತಾನಾಗಿ ತಿಳಿದುಕೊಂಡುದು, ಮೊದಲನೆಯ  
ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ಅಪ+ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) ಭಾವೇ "ಅಙ್" (3-3-106)। "ತೀರ್ಯಂಮಪ್ಯಶ್ಚ ಮೃಣಾನಭಿಜ್ಞರಸಜ್ಞತೋಪಜ್ಞ-  
ಸಮಜ್ಞಮಜ್ಞಮ್" ನೈಪಂ 3-64। 2. ಉಪದೇಶವಿಲ್ಲದೆ  
ತಾನಾಗಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ ಆದ್ಯಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ವಿಷಯ  
ವಾದುದು. ಅಪ+ಜ್ಞಾ ಕರ್ಮಂ "ಅಙ್" (3-3-106)।  
"ಅಥ ಪ್ರಾಚೇತಸೋಪಜ್ಞಂ ರಾಮಾಯಣಮಿತಸ್ತತಃ" ರಘುಂ 14-63।  
ಇದು ತತ್ಪುರುಷದಲ್ಲಿ ಉತ್ತರಪದವಾಗಿರುವಾಗ  
ನಪುಂಸಕವಾಗುವುದು. ಪಾಣಿನೀಃಪಜ್ಞಾ ಪಾಣಿನ್ಯುಪಜ್ಞಂ  
ವ್ಯಾಕರಣಮ್।

ಅಪಜ್ಞಾತ ಉಪಜ್ಞಾತ (ವಿಂ) ಉಪದೇಶವಿಲ್ಲದೆ ತಿಳಿಯ-  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ತನ್ನ ಶಕ್ತಿಯಿಂದಲೇ ಮೊದಲು ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಅಪ+ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

ಅಪಥೌಕನ ಉಪಥೌಕನ (ನಂ) 1. ರಾಜ, ಗುರು ಮೊದ-  
ಲಾದವರಿಗೆ ಸಂತೋಷಕಾಲದಲ್ಲಿ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು  
ಕೊಡುವಿಕೆ. ಅಪ+ಥೌಕ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ರಾಜ, ಗುರು ಮೊದಲಾದವರಿಗೆ  
ಸಮರ್ಪಿಸಲ್ಪಡುವ ವಸ್ತು (ಕಾಣಿಕೆ). ಅಪ+ಥೌಕ  
ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-113)।

ಅಪತಪನ ಉಪತಪನ (ನಂ) 1. ಸಂತಾಪವುಂಟು  
ಮಾಡುವಿಕೆ, ನೋವುಂಟುಮಾಡುವಿಕೆ, ತೊಂದರೆ  
ಕೊಡುವಿಕೆ. ಅಪ+ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।  
(ವಿಂ) 2. ಸಂತಾಪವುಂಟುಮಾಡುವ, ನೋವುಂಟು  
ಮಾಡುವ, ತೊಂದರೆ ಕೊಡುವ. ಅಪ+ತಪ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್"

(3-3-116)। "ವಪುರಿಂದ್ರಿಯೋಪತಪನೇಷು ಸತತಮಸುಖೇಷು  
ಪಾಂಡವಃ" ಕಿರಾಂ 12-3।

ಅಪತಪ್ತ ಉಪತಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ತೊಂದರೆಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ನೋವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ+ತಪ  
(ಸಂತಾಪೇ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "ಸ್ಮರೋಪ-  
ತಪ್ತೋಽಪಿ ಭೃಶಂ ನ ಸ ಪ್ರಭುವಿದರ್ಭರಾಜಂ ತನಯಾಮಯಾಚತ" ನೈಪಂ  
1-40। 2. ಕಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಸಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅಪತಪ್ತ ಉಪತಪ್ತ (ವಿಂ) ಕಾಯಿಸುವ, ಬಿಸಿ  
ಮಾಡುವ. ಅಪ+ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) "ತೃಕ್" (3-1-133)।

ಅಪತಾಪ ಉಪತಾಪ (ಪುಂ) 1. ಬಿಸಿ, ಕಾವು. ಅಪ+ತಪ  
(ಸಂತಾಪೇ) "ಘ್" (3-3-118)। 2. ನೋವು, ಬೇನೆ,  
ತೊಂದರೆ. ಅಪ+ತಪ ಕರಂ "ಘ್" (3-3-121)।  
"ಸರ್ವಥಾ ನ ಕಚ್ಚನ ನ ಸ್ಪೃಶಂತ್ಯುಪತಾಪಾಃ" ಕಾದಂ।  
"ಸ ಖಲು ದುರ್ಮನಾಯಮಾನಃ ಪರವಾನಿವ ಶರೀರೋಪತಾಪೇನ"  
ಮಾಲತೀಂ 3। 3. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. ಅಪತಾಪಯತಿ-  
ಅಪ+ತಪ+ಞಿಕ್ "ಅಕ್" (3-1-134)। "ಅಪತಾಪೋ  
ಗದೇ ತಾಪೇ" ಹೇಮಂ।

ಅಪತಾಪಕ ಉಪತಾಪಕ (ವಿಂ) 1. ಸಂತಾಪವುಂಟು  
ಮಾಡುವ. 2. ಬಿಸಿಮಾಡುವ, ಕಾಯಿಸುವ. ಅಪ+  
ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) + ಞಿಕ್ "ಫ್ವಲ್" (3-1-133)।

ಅಪತಾಪನ ಉಪತಾಪನ (ನಂ) 1. ಕಾಯಿಸುವಿಕೆ, ಬಿಸಿ  
ಮಾಡುವಿಕೆ. 2. ತೊಂದರೆಪಡಿಸುವಿಕೆ, ನೋವುಂಟು  
ಮಾಡುವಿಕೆ. ಅಪ+ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) + ಞಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್"  
(3-3-114)। (ವಿಂ) 3. ತೊಂದರೆಪಡಿಸುವ,  
ನೋವುಂಟುಮಾಡುವ, ಪೀಡಿಸುವ. 4. ಕಾಯಿ-  
ಸುವ, ಬಿಸಿಮಾಡುವ. ಅಪ+ತಪ+ಞಿಕ್ "ಲ್ಯುಃ"  
(3-1-134)।

ಅಪತಾಪಿನ್ ಉಪತಾಪಿನ್ (ವಿಂ) 1. ರೋಗಿ, ವ್ಯಾಧಿ-  
ಗ್ರಸ್ತ. 2. ಸಂತಾಪವುಳ್ಳವನು. ಅಪತಾಪೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ-  
"ಇನಿಃ" (4-2-114)। "ಗುರ್ವಣಿ ಪಿತೃಮಾತ್ರಣಿ ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯಾ-  
ರ್ಥ್ಯುಪತಾಪಿನಃ" ಮನುಂ 11-1। 3. ಸಂತಾಪವುಂಟು  
ಮಾಡುವ. 4. ಕಾಯಿಸುವ, ಬಿಸಿಮಾಡುವ. ಅಪ+  
ತಪ+ಞಿಕ್ "ಞಿನಿಃ" (3-1-134)।

ಅಪತಿಷ್ಯ ಉಪತಿಷ್ಯ (ನಂ) ಪುನರ್ವಸುನಕ್ಷತ್ರ. ಅಪಗತಂ  
ತಿಷ್ಯಮ್।

ಅಪತ್ಯಕಾ ಉಪತ್ಯಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆಟ್ಟದ ಸಮೀಪದ ಭೂಮಿ,  
ಪರ್ವತದ ಹತ್ತಿರದ ಪ್ರದೇಶ. ಅಪ ಅಸತ್ತಾ (ಭೂಮಿಃ)  
"ತ್ಯಕನ್" (4-2-34)। "ತಮತನುನರಾಜಿಷ್ಯಾಮಿತೋ-



ಪತ್ಯಕಾಂತಂ ನಗಮುಪರಿ ಹಿಮಾನಿಗೌರಮಾಸಾಢ ಜಿಣ್ಣು:” ಕಿರಾಂ ೪-೩೮।

ಅಪದಂಶ ಉಪದಂಶ (ಫಂ) 1. ಉಪ್ಪಿನಕಾಯಿ, ಚಟ್ಟಿ ಮುಂತಾದ ವ್ಯಂಜನ, ಮಸಾಲೆ, ಸಂಬಾರ. ಅಪದಯತೇ— ಅಪ + ದಂಶ (ದಶನೇ) ಕರ್ಮಂ “ಘ” (೩-೩-೧೯)। “ತಥಾನುಷ್ಠಿತೇ ಚ ತಯಾ ದ್ವಿತ್ರಾನುಪದಂಶಾನುಪಪಾಢ” ದಶಕುಂ। 2. ಸ್ತ್ರೀಸಂಬಂಧವಾದ ಒಂದು ರೋಗ, ಗರವಿರೋಗ, ರತಿರೋಗ, ಸ್ತ್ರೀಸಂಭೋಗದಿಂದಂಟಾಗುವ ಒಂದು ರೋಗ. 3. ನುಗ್ಗಿಮರ. 4. ಮಂಗರವಳ್ಳಿ. 5. ಕಚ್ಚು ವುದು, ಕಡಿಯುವುದು. ಅಪ + ದಂಶ ಭಾವೇ “ಘ” (೩-೩-೧೮)।

ಅಪದರ್ಶಕ ಉಪದರ್ಶಕ (ಫಂ) 1. ದ್ವಾರಪಾಲಕ, ಬಾಗಿಲ ಕಾವಲುಗಾರ. (ವಿಂ) 2. ದಾರಿ ತೋರಿಸುವವನು, ಮಾರ್ಗದರ್ಶಿ. ಅಪ+ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) + ಣಿಕ್ “ಫ್ಲು” (೩-೧-೧೩೩)। 3. ಸಾಕ್ಷಿ, ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ ನಿಂತು ನೋಡುವವನು. ಅಪ+ದೃಶಿರ್ “ಫ್ಲು” (೩-೧-೧೩೩)।

ಅಪದರ್ಶಿತ ಉಪದರ್ಶಿತ (ವಿಂ) ಪ್ರದರ್ಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೋರಿ ಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ+ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)। “ನಯವಿಧ್ವಿನ್ನೇ ರಾಜಿ ಸದಸಚ್ಚೋಪದರ್ಶಿತಮ್” ರಘುಂ ೪-೧೦।

ಅಪದಶ ಉಪದಶ (ವಿಂ) ಹತ್ತಕ್ಕೆ ಹತ್ತಿರದ, ಹತ್ತರ ಸಮೀಪದ (ಒಂಭತ್ತು ಮತ್ತು ಹನ್ನೊಂದು).

ಅಪದಾ ಉಪದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಣಿಕೆ, ನಜರು. ಅಪದೀಯತೇ— ಅಪ+ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) “ಅಡ್” (೩-೩-೧೦೬)। “ಅಪದಾ ವಿವಿಶು: ಶಶವತೋತ್ಸೇಕಾ: ಕೋಸಲೇಶ್ವರಮ್” ರಘುಂ ೪-೭೦। 2. ಉತ್ಪೋಚ, ಲಂಚ.

ಅಪದಿದಿಕ್ಷಾ ಉಪದಿದಿಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಪದೇಶಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಬೋಧನೆಮಾಡಲು ಅಸೆ. ಅಪದೇಷ್ಟಮಿಚ್ಛಾ— ಅಪ+ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೇ) + ಸನ್ “ಅ:” (೩-೩-೧೦೨)।

ಅಪದಿದಿಕ್ಷು ಉಪದಿದಿಕ್ಷು (ವಿಂ) ಉಪದೇಶಿಸಲು ಅಪೇ ಕ್ಷಿಸುವ, ಬೋಧಿಸಲು ಅಸೆವಡುವ. ಅಪದೇಷ್ಟಮಿಚ್ಛು:— ಅಪ+ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೇ) + ಸನ್ “ಅ:” (೩-೨-೧೬೮)।

ಅಪದಿದ್ವಕ್ಷಾ ಉಪದಿದ್ವಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ ನೋಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ನೋಡಲು ಅಸೆ. ಅಪದ್ರಷ್ಟಮಿಚ್ಛಾ ಅಪ + ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) + ಸನ್ “ಅ:” (೩-೩-೧೦೨)।

ಅಪದಿದ್ವಕ್ಷು ಉಪದಿದ್ವಕ್ಷು (ವಿಂ) ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ ನೋಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ನೋಡಲು ಅಸೆಯುಳ್ಳ. ಅಪ+ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) + ಸನ್ “ಅ:” (೩-೨-೧೬೮)।

ಅಪದಿಶ್ ಉಪದಿಶ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಪದಿಕ್ತು, ವಿದಿಕ್ತು, ಎರಡು ದಿಕ್ತುಗಳ ಮಧ್ಯದ ಮೂಲದಿಕ್ತು; ಆಗ್ನೇಯ, ನೈಋತ್ಯ, ವಾಯವ್ಯ ಮತ್ತು ಈಶಾನ್ಯಗಳೆಂದು ಉಪ ದಿಕ್ತುಗಳು ನಾಲ್ಕು. ವಾ “ಆಪ್”। -ದಿಶಾ -ದಿಶಾ. “ಆಪಂ ಚೈವ ಹಲಂತಾನಾಂ ಯಥಾ ವಾಚಾ ನಿಶಾ ದಿಶಾ”।

ಅಪದಿಶ್ಯ ಉಪದಿಶ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಉಪದಿಕ್ತನಲ್ಲಿರುವ, ವಿದಿಕ್ತನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಅಪದಿಶಿ ಭವ: “ಯತ್” (೪-೩-೫೪)। (ಅವ್ಯಂ) 2. ಉಪದೇಶ ಮಾಡಿ, ಬೋಧನೆಮಾಡಿ. ಅಪ+ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೇ) “ಲ್ಯಪ್” (೭-೧-೩೭)।

ಅಪದಿಷ್ಟ ಉಪದಿಷ್ಟ (ನಂ) 1. ಉಪದೇಶ, ಶಿಕ್ಷಣ, ಬೋಧನೆ. ಅಪ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೇ) “ಕ್ತ:” (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಮನುಷ್ಯ). 3. ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ವಿಷಯ). ಅಪ+ದಿಶ ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)। “ಅವಹಿತಹೃದಯೋ ವಿಧಾಯ ಸೋಽಹ್ಮಿವಿವ- ದೃಪಿಪ್ರವರೇ ಗುರುಪದಿಷ್ಟಾಮ್” ಕಿರಾಂ ೨-೫೮।

ಅಪದೀಕಾ ಉಪದೀಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೆದ್ದಲು ಹುಳ. ಅಪೇತ್ಯ ದೀಯತೇ ಕಂಡುಯತೇ—ಅಪ+ದೋ (ಅವಖಂಡನೇ) “ಕ:” (ವಾಂ ೩-೩-೫೮)। “ಙೀಪ್”। ಸ್ವಾರ್ಥೇ “ಕ:” “ವಮ್ರೋ ವಮ್ರಧುಪದೀಕೋಪಜಿಹ್ವಿಕಾ ಚೋಪದೇಹಿಕಾ” ವೈಜಂ।

ಅಪದೇವ ಉಪದೇವ (ಫಂ) 1. ದೇವಕರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. (1) ದೇವವಂಶ, (2) ಸುದೇವ ಮತ್ತು (3) ದೇವ ವರ್ಧನ ಇವರು ಇವನ ಸಹೋದರರು. “ಚತ್ವಾರೋ ದೇವಕಾತ್ಮಜಾ: ದೇವಾನುಪದೇವಶ್ಚ ಸುದೇವೋ ದೇವವರ್ಧನ:” ಭಾಗಂ ೯-೨೪-೨೨। 2. ಅಕ್ರೂರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. 3. (1) ಯಕ್ಷ. (2) ಗಂಧರ್ವ. (3) ಅಸ್ಸುರಸ್ಸು. (ಅವ್ಯಂ) 4. ದೇವತೆ ಗಳ ಸಮಾಪ. ಸಾಮೀಪ್ಯೇ ಅವ್ಯಯಿಂ।

ಅಪದೇವಾ ಉಪದೇವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಸುದೇವನ ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಪತ್ನಿಯರಲ್ಲೊಬ್ಬಳು. (1) ರೋಹಿಣೀ. (2) ಇಂದಿರಾ. (3) ವೈಶಾಖೀ. (4) ಭದ್ರಾ. (5) ಸುನಾಮಿಾ. (6) ಸಹದೇವಾ. (7) ಶಾಂತಿದೇವಾ. (8) ಶ್ರೀದೇವಾ. (9) ದೇವರಕ್ಷಿತಾ. (10) ವೃತದೇವೀ. (11) ದೇವಕೇ. (12) ಉಪದೇವಾ. (13) ಸುತನು ಮತ್ತು (14) ವಡವಾ. ಇವರು ವಸುದೇವನ 14 ಮಂದಿ ಪತ್ನಿಯರು.

ಅಪದೇಶ ಉಪದೇಶ (ಫಂ) 1. ಬೋಧನೆ, ಶಿಕ್ಷಣ, ಕಲಿಸು ವುದು, ಪಾಠ ಹೇಳುವುದು. ಅಪ+ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೇ) “ಘ” (೩-೩-೧೮)। “ಅಪದೇಶಂ ವಿಧು: ಶುಭಂ ಸಂತಸ್ತ-



ಮುಪದೇಶಿನಃ । ಇಯಮಾಥೇ ನ ವಿಹತ್ಸು ಯಃ ಕಾಶ್ಚನಮಿವಾಗ್ನಿಃ ।  
ಮಾಲಂ ೨-೯ । ೨. ಹಿತವನ್ನು ಹೇಳುವುದು, ಸಲಹೆ  
ಕೊಡುವುದು. ೩. ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರ ಗ್ರಹಣ ಮೊದಲಾದ  
ಪುಣ್ಯ ಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಮಂತ್ರಗಳನ್ನು  
ಹೇಳಿಕೊಡುವುದು. “ಚಂದ್ರಸೂರ್ಯಗ್ರಹೇ ತೀರ್ಥೇ ಸಿದ್ಧಕ್ಷೇತ್ರೇ  
ಶಿವಾಲಯೇ । ಮನ್ತ್ರಮಾತ್ರಪ್ರಕಥನಮುಪದೇಶಃ ಸ ಉಚ್ಯತೇ” ।  
೪. ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರ ಪ್ರವರ್ತಕಾಚಾರ್ಯರು ಪ್ರಥಮ  
ವಾಗಿ ಉಚ್ಚರಿಸಿದ ಪದಗಳು. “ಘಾತುಸೂತ್ರಗಣೋಪಾ-  
ವಾಕ್ಯಲಿಂಗಾನುಶಾಸನಮ್ । ಆಗಮಪ್ರತ್ಯಯಾದೇಶಾಃ ಉಪದೇಶಾಃ  
ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾಃ” ।

ಅಪದೇಶಕ ಉಪದೇಶಕ (ಪುಂ) ೧. ಉಪಾಧ್ಯಾಯ, ವಿದ್ಯೆ  
ಕಲಿಸುವವನು, ಪಾಠ ಹೇಳುವವನು. ಉ + ದಿಶ  
(ಅತಿಸರ್ಜನೆ) “ಫ್ಲು” (೩-೧-೧೩೩) । ೨. ಮಂತ್ರೋಪ-  
ದೇಶ ಮಾಡುವ ಗುರು. (ವಿಂ) ೩. ಸಲಹೆಗಾರ.  
ಅಪದೇಶನ ಉಪದೇಶನ (ನಂ) ೧. ಬೋಧನೆ, ಕಲಿಸುವಿಕೆ,  
ಶಿಕ್ಷಣ. ೨. ಸಲಹೆ, ಹಿತ ಹೇಳುವುದು. ಉ + ದಿಶ  
(ಅತಿಸರ್ಜನೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । ೩. ಮಂತ್ರೋಪ-  
ದೇಶ ಮಾಡುವುದು.

ಅಪದೇಶಿತ ಉಪದೇಶಿತ (ವಿಂ) “ಅಪದೇಶಕ” ಪದದ  
ಅರ್ಥ. ಉ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) “ತೃ” (೩-೧-೧೩೩) ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೫) । ಅಪದೇಶಿತ್ರಿ ಉಪದೇಶಿತ್ರಿಃ.  
ಅಪದೇಶಿನ್ ಉಪದೇಶಿನ್ (ವಿಂ) “ಅಪದೇಶಕ” ಪದದ  
ಅರ್ಥ. ಉ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) “ಣಿಞಃ”  
(೩-೧-೧೩೪) । “ಅಪದೇಶಂ ವಿಧುಃ ಶುಭಂ ಸಂತಸ್ತಮುಪದೇಶಿನಃ”  
ಮಾಲಂ ೨-೯ । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೫) । -ದೇಶಿನೀ  
-ದೇಶಿನೀಃ.

ಅಪದೇಶ್ಯ ಉಪದೇಶ್ಯ (ವಿಂ) ೧. ಬೋಧಿಸಲ್ಪಡುವವನು,  
ಕಲಿಸಲ್ಪಡುವವನು, ಪಾಠ ಹೇಳಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವನು.  
ಅಪದೇಶ್ಯತೇ-ಉ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ). ಕರ್ಮಂ “ಞ್ಯತ್”  
(೩-೧-೧೨೪) । ೨. ಉಪದೇಶಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದವನು.  
೩. ಉಪದೇಶಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ ವಿಷಯ.

ಅಪದೇಶ್ಯ ಉಪದೇಶ್ಯ (ವಿಂ) ೧. ವಿದ್ಯೆ ಕಲಿಸುವ ಗುರು.  
೨. ಮಂತ್ರೋಪದೇಶ ಮಾಡುವ ಗುರು. ೩. ಅಧ್ಯಾತ್ಮ  
ವಿದ್ಯೆ ಕಲಿಸುವ ಅಚಾರ್ಯ. “ಚತುರೋ ವಯಮೃತ್ವಿಜಃ  
ಸ ಭಗವಾನ್ ಕರ್ಮೋಪದೇಶಾ ಹರಿಃ” ವೇಣೀಂ ೧-೨೫ । ೪. ಸಲಹೆ  
ಗಾರ, ಹಿತವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವವನು. ಉ + ದಿಶ  
(ಅತಿಸರ್ಜನೆ) “ತೃ” (೩-೧-೧೩೩) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಙೀಪ್”  
(೪-೧-೫) । -ದೇಶಿ -ದೇಶಿಣೀಃ.

ಅಪದೇಹ ಉಪದೇಹ (ಪುಂ) ದೇಹವು ಮೊಡಗುವುದಕ್ಕೆ,  
ಗಂಡಮಾಲೆ ಬಾವು ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಮೈ  
ಉದುವಿಕೆ. ಅಪದೇಹತೇಜಃ-ಉ + ದಿಹ (ಅಪವಯೇ)  
ಕರಂ “ಘ” (೩-೩-೧೨೧) । “ಕಣ್ಣಗುಣಂ ಸುಪ್ತತ್ವ-  
ಮುಪದೇಹೋಽಪದೇಹನಂ ಸ್ತಂಭಃ ಶೇತೃಂ ಚ ಯತ್ರ ತಂ ಶಲೇಷ್ಮಿಕಮಿತಿ  
ವಿಧಾತ್” ಸುಶ್ರುತಂ ।

ಅಪದೇಹಿಕಾ ಉಪದೇಹಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೆದ್ದಲು ಹುಳ.  
“ವಸ್ತ್ರೋ ವಸ್ತ್ರಚುಪದೇಹಿಕಾ ಚೋಪಜಿಹ್ವಿಕಾ” ವೈಜಂ ।

ಅಪದೇಹ ಉಪದೇಹ (ಪುಂ) ೧. ಹಾಲುಕರೆಯುವ ಪಾತ್ರೆ.  
ಅಪದೇಹತೇಜಃ-ಉ + ದಿಹ (ಪ್ರಪೂರ್ಣ) “ಘ” (೩-೩-೧೨೧) ।  
೨. ಹಸುವಿನ ಮೊಲೆಯ ತುದಿ. ಅಪದೇಹತೇಜಃ-ಉ +  
ದಿಹ ಕರಂ “ಘ” (೩-೩-೧೨೧) ।

ಅಪದ್ರವ ಉಪದ್ರವ (ಪುಂ) ೧. ತೊಂದರೆ. ಪೀಡೆ. ಉ + ದ್ರ  
(ಗತೌ) ಭಾವೇ “ಘ” (೩-೩-೧೮) । “ಪುಂಸಾಮಸಮರ್ಥಾನಾ-  
ಮುಪದ್ರವಾಯಾತ್ಮನೋ ಭವೇತ್ಕೋಪಃ” ಪञ್ಚತಂ । ೨. ಪ್ರಪಂಚದ  
ಮಹಾಪ್ರಳಯ. ೩. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ, ಖಾಯಿಲೆ.  
೪. ರೋಗಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ತ್ರಿದೋಷ (ವಾತ, ಪಿತ್ತ,  
ಕಫ)ಗಳ ಏರುಪೇರು. ೫. ಉಪವ್ಯಾಧಿ, ಒಂದು  
ವ್ಯಾಧಿಯಿರುವಾಗ ಮಧ್ಯೆ ಸಂಭವಿಸುವ ಇತರ ವ್ಯಾಧಿ  
ಗಳು. “ಯೋ ವ್ಯಾಧಿಸ್ತಸ್ಯ ಯೋ ಹೇತುಃ ದೋಷಸ್ತಸ್ಯ ಪ್ರಕೋಪತಃ ।  
ಯೋವ್ಯೋ ವಿಕಾರೋ ಭವತಿ ಸ ಅಪದ್ರವ ಉಚ್ಯತೇ” ।

ಅಪದ್ರವಿನ್ ಉಪದ್ರವಿನ್ (ವಿಂ) ತೊಂದರೆ ಕೊಡುವವನು,  
ಹಿಂಸಿಸುವವನು, ಪೀಡಿಸುವವನು.

ಅಪದ್ರವ್ಯ ಉಪದ್ರವ್ಯ (ಪುಂ) ೧. (ಯಜ್ಞದಲ್ಲಿ) ಒಬ್ಬ  
ಮುತ್ಸಿಕು. ಇವನು ಯಜ್ಞದಲ್ಲಿ ಇತರ ಮುತ್ಸಿಕುಗಳಲ್ಲಿ  
ರುವ ನ್ಯೂನಾತಿರೇಕಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕ.  
(ವಿಂ) ೨. ಸಾಕ್ಷಿ, ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ ನಿಂತು ನೋಡು-  
ವವನು. ಉ + ದ್ರಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) “ತೃ” (೩-೧-೧೩೩) ।  
“ಅಪದ್ರವ್ಯಾನ್ಮುಮಂತಾ ಚ ಭರ್ತಾ ಭೋಕ್ತಾ ಮಹೇಶ್ವರಃ” ಗೀತಾ  
೧೩-೨೨ । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೫) । -ದ್ರವ್ಯಿಃ.

ಅಪದ್ರುತ ಉಪದ್ರುತ (ವಿಂ) ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಂದರೆ  
ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉ + ದ್ರ (ಗತೌ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) ।  
“ಸಮೀರಸಂಜ್ಞಾದಿವ ನೀರಮಂಜಾ ಮಯಾ ತದಸ್ಯಸ್ತವಮುಪ-  
ದ್ರುತೋಽಸಿ” ನೈಷಂ ೩-೫೫ ।

ಅಪಧಮ್ ಉಪಧಮ್ (ಪುಂ) ಮುಖ್ಯವಲ್ಲದ ಧರ್ಮ,  
ಅಪ್ರಧಾನ ಧರ್ಮ. ಅಪಮಿತೋ ಧರ್ಮಃ । “ವೇದಮೇವಾಮೃತ-  
ನಿತ್ಯಂ ಯಥಾಕಾಲಮತಂದ್ರಿತಃ । ತಂ ಹ್ಯಸ್ಯಾಹುಃ ಪರಂ ಧರ್ಮ-  
ಮುಪಧಮೋಽಸಿ” ಮನುಂ ೪-೧೪೭ ।



उपधूपित एवमपि (वि०) कायिसल्लुप्प, एवमपि  
 लुप्प. उप+धूप (सन्तापे) "क्तः" (३-२-१०२)।



ಉಪಧೃತಿ ಉಪಧೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಿರಣ. ಉ + ಧೃ (ಧಾರಣೆ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94). "ಜ್ಯೋತಿರರ್ಚಿರಪಧೃತ-  
ಭಿಷವಃ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ. 2. ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ.

ಉಪಧಮಾನ ಉಪಧಮಾನ (ನಂ) ಓಷ್, ತುಟ. ಉ: ಉಕಾರ:  
ಪಶ್ಚ ಧ್ಮಾಯತೇಜೇನ - ಉ + ಧ್ಮಾ (ಶಬ್ದಾಗ್ನಿಸಂಯೋಗಯೋಃ)  
ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-110).

ಉಪಧಮಾನೀಯ ಉಪಧಮಾನೀಯ (ಪುಂ) ಪಠಕಾರಗಳ ಹಿಂದೆ  
ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ಅರ್ಧವಿಸರ್ಗ (ಽ). "ಽಕ ಽಪ ಇತಿ  
ಕಪಾಭ್ಯಾಂ ಪ್ರಾಗರ್ಧವಿಸರ್ಗಸದೃಶೌ ಜಿಹ್ವಾಮೂಲೀಯೋಪಧಮಾನೀಯೌ"  
ಸಿಂ ಕೌಂ. ಉಪಧಮಾನೀಯವು ಓಷ್ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ  
ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಡುವುದು. "ಉಪಧಮಾನೀಯಾನಾಮೋಷೌ"  
ಸಿಂ ಕೌಂ.

ಉಪನಕ್ಷತ್ರ ಉಪನಕ್ಷತ್ರ (ನಂ) ಅಶ್ವಿನಿ ಮೊದಲಾದ 27  
ನಕ್ಷತ್ರಗಳನ್ನು ಅನುಸರಿಸುವ ಉಪನಕ್ಷತ್ರಗಳು.  
ಒಂದೊಂದು ನಕ್ಷತ್ರಕ್ಕೂ 27 ಉಪನಕ್ಷತ್ರಗಳಂತೆ  
27 ನಕ್ಷತ್ರಗಳಿಗೂ 729 ಉಪನಕ್ಷತ್ರಗಳಿರುವುವು.  
"ತಾನಿ ವಾ ಏತಾನಿ ಸಪ್ತವಿಂಶತಿಃ, ನಕ್ಷತ್ರಾಣಿ ಸಪ್ತವಿಂಶತಿಃ,  
ಸಪ್ತವಿಂಶತಿರ್ಹೊಪನಕ್ಷತ್ರಾಣಿ ಏಕೈಕಂ ನಕ್ಷತ್ರಮನುಪತಿಷ್ಠಂತೆ ತಾನಿ  
ಚ ಸಪ್ತಶತಾನಿ ವಿಂಶತಿಶ್ಚಾಧಿ" ಶತಂ ಬ್ರಾಂ.

ಉಪನಖ ಉಪನಖ (ನಂ) ಉಗುರುಸುತ್ತ, ಒಂದು ವಿಧ  
ಬೆರಳುಕುರು. ಉಪಗತಂ ನಖಂ ನಖಮಾಸಮ್. "ನಖಮಾಸ-  
ಮಧಿಷ್ಠಾಯ ಪಿತ್ತಂ ವಾತಶ್ಚ ವೇದನಾಮ್. ಕರೋತಿ ದಾಹಪಾಕೌ  
ಚ ತಂ ವ್ಯಾಧಿ ಚಿಪ್ಪಮಾದಿಶೇತ್. ತದೇವಾಕ್ಷತರೋಗಾಪ್ಯಂ  
ತಥೋಪನಖಮಿತ್ಯಪಿ" ಸುಶ್ರುತಂ.

ಉಪನಗರ ಉಪನಗರ (ನಂ) ಶಾಖಾನಗರ, ನಗರದ  
ಬಡಾವಣೆ. ಉಪಮಿತಂ ನಗರೇಣ.

ಉಪನತ ಉಪನತ (ವಿಂ) 1. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬಂದ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ  
ಬಂದು ಸೇರಿದ. ಉ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ಕ್ತಃ"  
(3-4-62). "ಇದಮುಪನತಮೇವಂ ರೂಪಮಿಲಿಷ್ಟಕಾಂತಿ ಪ್ರಥಮ-  
ಪರಿಗೃಹಿತಂ ಸ್ಯಾನಿವೇತಿ ವ್ಯವಸ್ಯನ್" ಶಾಕುಂ 4-191.  
2. ನಮ್ರ, ವಿಧೇಯ, ತಲೆಬಾಗಿ ನಮಸ್ಕರಿಸಿದ.  
"ತಸ್ಮಿನ್ ದಣ್ಡೋಪನತಚರಿತಂ ಭೇಜಿರೇ ಲೋಕಪಾಲಾಃ" ರಘುಂ  
19-21. 3. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಉ +  
ಣಮ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-2-102). "ಅಥ ಪ್ರಭಾವೋಪನತಃ  
ಕುಮಾರಂ ಕಲ್ಪದ್ರುಮೋತ್ಥೇರವಕೀರ್ಯ ಪುಷ್ಪಃ" ರಘುಂ 4-42.

ಉಪನತಿ ಉಪನತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಹೋಗುವಿಕೆ,  
ಹತ್ತಿರ ಸೇರುವಿಕೆ. ಉ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ಕ್ತಿನ್"  
(3-3-94). 2. ತಲೆಬಾಗಿ ನಮಸ್ಕರಿಸುವಿಕೆ.

ಉಪನದ ಉಪನದ -ನದಿ -ನದಿ (ಅವ್ಯಂ) ನದಿಯ  
ಸಮೀಪ, ಹೊಳೆಯ ಹತ್ತಿರ. ನದಾಃ ಸಮೀಪಮ್ ವಾ  
"ಟಕ್" (4-4-110).

ಉಪನದೀ ಉಪನದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ಸಮುದ್ರಕ್ಕೆ ಸೇರುವ)  
ದೊಡ್ಡ ನದಿಯ ಉಪನದಿ, ಸಣ್ಣ ನದಿ. ಉಪಗತಾ ನದಿ.

ಉಪನಮ್ರ ಉಪನಮ್ರ (ವಿಂ) ಉಪಸ್ಥಿತವಾದ, ಸಮೀಪಕ್ಕೆ  
ಬಂದಿರುವ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ. ಉ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ)  
"ರಕ್" (3-2-160). "ಉಪನಮ್ರಮಯಾಚಿತಂ ಹಿತಂ  
ಪರಿಹೃತಂ ನ ತವಾಪಿ ಸಾಮ್ಪ್ರತಮ್" ನೈಷಂ 2-12.

ಉಪನಯ ಉಪನಯ (ಪುಂ) 1. ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ತರುವುದು,  
ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುವುದು. ಉ + ಣಿತ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ)  
"ಅಕ್" (3-3-46). 2. ಉಪನಯನ, ಮುಂಜಿ,  
ವೇದಾಭ್ಯಾಸಕ್ಕಾಗಿ ಬಾಲಕನನ್ನು ಗುರುವಿನಲ್ಲಿಗೆ  
ಕಳುಹಿಸಿಕೊಡುವ ಒಂದು ಸಂಸ್ಕಾರ. ಉ + ಣಿತ್  
ಕರಂ "ಅಕ್" [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಉಪನಯನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].  
"ಗೃಹ್ಯೋಕ್ತಕರ್ಮಣಾ ಯೇನ ಸಮೀಪಂ ನಿಯತೇ ಗುರೋಃ. ಬಾಲೋ  
ವೇದಾಯ ತದ್ವಿಧೋಗಾದ್ಬಾಲಸ್ಯೋಪನಯಂ ವಿದುಃ". 3. (ತಾರ್ಕಿಕ  
ಮತದಲ್ಲಿ) ನ್ಯಾಯದ ಐದು ಅವಯವಗಳಲ್ಲೊಂದು.  
ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ, ಹೇತು, ಉದಾಹರಣೆ, ಉಪನಯ ಮತ್ತು  
ನಿಗಮನಗಳೆಂದು ನ್ಯಾಯದ ಅವಯವಗಳು ಐದು.  
"ಯೋ ಯೋ ಭೂಮವಾನ್ ಸ ವಹ್ನಿಮಾನ್ ಯಥಾ ಮಹಾನಸಮ್. ತಥಾ  
ಚಾಯಮ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಧೂಮವಿರುವ ಕಡೆಯೆಲ್ಲಾ ವಹ್ನಿ  
ಯಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿಯೂ ಹೊಗೆಯಿರುವ  
ಕಾರಣ ವಹ್ನಿಯಿರುವುದೆಂಬ ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಹೇತುಮತ್ತ  
ಪ್ರದರ್ಶನವು ಉಪನಯ.

ಉಪನಯತ್ ಉಪನಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ತರು  
ತ್ತಿರುವ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುತ್ತಿರುವ. ಉ + ಣಿತ್  
(ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಶತ್" (3-2-124). 2. ಉಂಟುಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ, ಹುಟ್ಟಿಸುತ್ತಿರುವ. "ನ ವ್ಯಹನ್ಯತ ಕದಾಪಿ  
ಮುಧಂ ಯಃ ಸ್ವಃಸದಾಮುಪನಯನ್ಮಭಿಲಾಃ" ನೈಷಂ 4-123.

ಉಪನಯನ ಉಪನಯನ (ನಂ) 1. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯು  
ವುದು, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ತರುವುದು. ಉ + ಣಿತ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ)  
"ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ವೇದಾಭ್ಯಾಸಕ್ಕಾಗಿ ಬಾಲಕ  
ನನ್ನು ಗುರುವಿನಲ್ಲಿಗೆ ಕಳುಹಿಸಿಕೊಡಲು ಮಾಡುವ  
ಒಂದು ಸಂಸ್ಕಾರ, (ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾದಿ ವರ್ಣತ್ರಯಕ್ಕೆ  
ಹೇಳಿರುವ) ಹದಿನಾರು ಸಂಸ್ಕಾರಗಳಲ್ಲೊಂದು.  
ಉ + ಣಿತ್ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-110). [ಹದಿನಾರು  
ಸಂಸ್ಕಾರಗಳಿಗೆ "ಸಂಸ್ಕಾರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]



ಈ ಸಂಸ್ಕಾರವು ನಿತ್ಯ, ಕಾಮ್ಯ ಮತ್ತು ನೈಮಿತ್ತಿಕ ಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ಕ್ಷತ್ರಿಯ, ವೈಶ್ಯರಿಗೆ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಜನ್ಮಕಾಲ ಅಥವಾ ಗರ್ಭ ಕಾಲದಿಂದ. 8, 11 ಮತ್ತು 12ನೆಯ ವಯಸ್ಸು ಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಉಪನಯನವು ನಿತ್ಯವೆನಿಸುವುದು. ಬ್ರಹ್ಮವರ್ಚಸ್ವಿಗಾಗಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನೂ, ಬಲಾಧಿಕೃತಕ್ಕಾಗಿ ಕ್ಷತ್ರಿಯನೂ, ಇಷ್ಟಸಿದ್ಧಿಗಾಗಿ ವೈಶ್ಯನೂ ಕ್ರಮವಾಗಿ 5, 6 ಮತ್ತು 8ನೆಯ ವಯಸ್ಸುಗಳಲ್ಲಿ ಉಪನಯನ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು ಕಾಮ್ಯವು.

“ಬ್ರಹ್ಮವರ್ಚಸಕಾಮಸ್ಯ ಕುರ್ಯಾದ್ವಿಪ್ರಸ್ಯ ಪञ्चಮೇ। ರಾತ್ರೋ ಬಲಾಥಿನಃ ಷಠೇ ವೈಶ್ಯಸ್ಯೇಹಾಥಿನೋಽಷ್ಟಮೇ” ಮನುಂ ೨-೩೭। ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ ರೂಪವಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು ನೈಮಿತ್ತಿಕವು. ನಿತ್ಯವು ಮುಖ್ಯ ಮತ್ತು ಗೌಣ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. “ಗರ್ಭಾಷ್ಟಮೇಂದೇ ಕುರ್ವೀತಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯೋಪನಾಯನಮ್। ಗರ್ಭಾದಿಕಾದಶೋ ರಾತ್ರೋ ಗರ್ಭಾತ್ ದ್ವಾದಶೋ ವಿಶಃ” ಮನುಂ ೨-೩೬। ಈ ರೀತಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ಕ್ಷತ್ರಿಯ, ವೈಶ್ಯರಿಗೆ ಕ್ರಮವಾಗಿ 8, 11 ಮತ್ತು 12ನೆಯ ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡುವುದು ಮುಖ್ಯ. ಗೌಣವೂ ಮಧ್ಯಮ, ಅಥಮಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. 12, 16 ಮತ್ತು 20ನೆಯ ವಯಸ್ಸುಗಳನ್ನು ಮೀರಿ ಮಾಡುವ ಉಪನಯನವು ಮಧ್ಯಮಗೌಣವು. “ದ್ವಾದಶ ಷೋಡಶ ವಿಶತಿಶ್ಚೇದತೀತಾ ಅವರೂಢಕಾಲಾ ಭವಂತಿ” 16, 22 ಮತ್ತು 24ನೆಯ ವಯಸ್ಸುಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡುವುದು ಅಥಮ. “ಆಷೋಡಶಾದ್ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ಸಾವಿತ್ರಿ ನಾತಿವರ್ತತೇ। ಆದ್ವಾವಿಶಾತ್ಕುಕ್ಷತ್ರಬಂಧೋರಾಚತುರ್ವಿಶತೇವಿಶಃ” ಮನುಂ ೨-೩೮। ಈ ವಯಸ್ಸುಗಳನ್ನು ಮೀರಿ ಮಾಡುವ ಉಪನಯನವು ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ ಪೂರ್ವಕ ನಡೆಯಬೇಕು. “ಅತಃ ತ್ರಯೋಪ್ಯೇತೇ ಯಥಾಕಾಲಮಸಂಸ್ಕೃತಾಃ। ಸಾವಿತ್ರಿಪತಿತಾ ಬ್ರಾತೃಃ ಭವಂತ್ಯಾರ್ಯವಿಗೃಹಿತಾಃ” ಮನುಂ ೨-೩೯।

ಉಪನಯನಕ್ಕೆ ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ ಕಾಲ—ಯತು ಮಾಸಾದಿಗಳು: ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ವಸಂತಯತು, ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಗೆ ಗ್ರೀಷ್ಮರ್ತು ಮತ್ತು ವೈಶ್ಯನಿಗೆ ಶರದೃತುವೂ ಮಾಘಾದಿ ಐದು ಮಾಸಗಳೂ ಪ್ರಶಸ್ತಗಳು. “ಬ್ರಹ್ಮಕ್ಷತ್ರವಿಶಾಮಥೋಪನಯನಂ ವಕ್ಷ್ಯೇ ವಸಂತೇ ಕ್ರಮಾದ್-ಗ್ರೀಷ್ಮತೌ ಶರದೀಹ ವರ್ಣನಿಯತೇ ತತ್ರಾಪಿ ಸಾಧಾರಣಾಃ। ಮಾಸಾ ಮಾಘಮುಖಾಸ್ತು ಪञ್ಚ ಜನನಾದ್ವಾ ಗರ್ಭತೋಽದೋಷತಮೇ ನಿಯತೇ ವಿಪ್ರ-ಶಿಶೋಃ ಕ್ರಮಾನ್ವಪವಿಶೋರೇಕಾದಶೋ ದ್ವಾದಶೋ” ಕಾಲಾಂ ೨೫। ವಾರ ನಕ್ಷತ್ರ ಲಗ್ನಗಳು: ಬುಧ, ಬೃಹಸ್ಪತಿ ಮತ್ತು ಶುಕ್ರವಾರಗಳು ಪ್ರಶಸ್ತ. ಭಾನು ಮತ್ತು ಸೋಮ

ವಾರಗಳು ಮಧ್ಯಮ. ಅಶ್ವಿನಿ, ರೋಹಿಣಿ, ಮೃಗ ಶಿರ್ಷ, ಪುನರ್ವಸು, ಪುಷ್ಯ, ಉತ್ತರಾಷ್ಣಿನಿ, ಹಸ್ತ, ಚಿತ್ತ, ಸ್ವಾತಿ, ಅನೂರಾಧೆ, ಕ್ರವಣ, ಧನಿಷ್ಠ, ಶತಭಿಷೆ, ಉತ್ತರಾಷಾಢ, ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರೆ ಮತ್ತು ರೇವತೀ ನಕ್ಷತ್ರಗಳೂ ಅಷ್ಟಮಶುದ್ಧಿಯಿರುವ ಮತ್ತು ಚಂದ್ರನಿಲ್ಲದ ಲಗ್ನವೂ ಪ್ರಶಸ್ತ. ಕಾಲಾಂ ೨೭।

ಉಪನಯನೀಯ ಉಪನಯನೀಯ (ವಿಂ) ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸಕ್ಕಾಗಿ ಗುರುವಿನಲ್ಲಿಗೆ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡುವ ಶಿಷ್ಯ. ಉಪ+ಘೀ (ಪ್ರಾಪಣೆ) ಕರ್ಮಂ “ಅನೀಯ” (೩-೧-೧೬)।

ಉಪನಹನ ಉಪನಹನ (ನಂ) 1. ಬಂಧನ, ಕಟ್ಟುವಿಕೆ. ಉಪ+ಘಹ (ಬಂಧನೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಗಂಟು ಕಟ್ಟುವ ಬಟ್ಟೆ (ಮೊದಲಾದುದು). ಉಪನಹತೇಜೇನ — ಉಪ+ಘಹ ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)।

ಉಪನಾಯ ಉಪನಾಯ (ಛಂ) ಉಪನಯನ ಸಂಸ್ಕಾರ, ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸಕ್ಕಾಗಿ ಗುರುವಿನಲ್ಲಿಗೆ ಕಳುಹಿಸಿಕೊಡಲು ಬಾಲಕನಿಗೆ ಮಾಡುವ ಒಂದು ಸಂಸ್ಕಾರ. ಉಪನಾಯಯತಿ — ಉಪ+ಘೀ (ಪ್ರಾಪಣೆ) + ಘೀ “ಅಚ್” (೩-೩-೫೬)।

ಉಪನಾಯಕ ಉಪನಾಯಕ (ಛಂ) 1. (ನಾಟಕ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಧಾನ ನಾಯಕನಿಗೆ ಸಹಾಯಕ ನಾಗಿರುವವನು, ಪ್ರಧಾನ ನಾಯಕನ ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಅನುಕೂಲನಾಗಿರುವ ಸ್ನೇಹಿತ. ಉಪಗತೋ ನಾಯಕಮ್। ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣನೂ, ಮಾಲತೀಮಾಧವದಲ್ಲಿ ಮಕರಂದನೂ ಉಪನಾಯಕರು. 2. ಉಪನಯನ ಸಂಸ್ಕಾರ ಮಾಡುವ ಗುರು. ಉಪ+ಘೀ (ಪ್ರಾಪಣೆ) + ಘೀ “ಘಲ್” (೩-೧-೧೩೩)। 3. ಉಪಪತಿ, ಮಿಂಡ. (ವಿಂ) 4. ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುವ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ತರುವ.

ಉಪನಾಯನ ಉಪನಾಯನ (ನಂ) ಉಪನಯನ ಸಂಸ್ಕಾರ, ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸಕ್ಕಾಗಿ ಗುರುವಿನ ಬಳಿಗೆ (ಬಾಲಕನನ್ನು) ಕಳುಹಿಸಿಕೊಡಲು ಮಾಡುವ ಒಂದು ಸಂಸ್ಕಾರ. ಉಪ+ಘೀ (ಪ್ರಾಪಣೆ) + ಘೀ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। “ಗರ್ಭಾಷ್ಟಮೇಂದೇ ಕುರ್ವೀತಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯೋಪನಾಯನಮ್” ಮನುಂ ೨-೩೬।

ಉಪನಾಹ ಉಪನಾಹ (ಛಂ) 1. ವೀಣೆಯ ತಂತಿಯನ್ನು ಎಳೆದು ಕಟ್ಟುವ ಬಾಯಿ ಮತ್ತು ಬಿರಡೆ. ಉಪನಹತೇ-ಽಸ್ಮಿನ್ — ಉಪ+ಘಹ (ಬಂಧನೆ) “ಘಲ್” (೩-೩-೧೨೧)। 2. ಹುಣ್ಣು ಗಾಯ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಮುಲಾಮು ಹಿಟ್ಟು (ಪೋಟ್ಟೀಸ್) ಮೊದಲಾದುದು.



उपनाहन लुपनाहन (न०) ಹುಣ್ಣು ಗಾಯ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಗೆ ಮುಲಾಮು ಹಿಟ್ಟು (ಪೋಟ್ಟೇಸ್) ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಕಟ್ಟುವಿಕೆ. ಉ+ಞಹ (ಬಂಧನೆ)+ ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ವೇಶವಾರೇ: ಸಕೃಶರೇ: ಸುಸ್ತಿಘೇಶೋಪನಾಹನಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾ ೨-೨೫।

उपनिक्षेप लुपनिक्षेप (पु०) 1. ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಮತ್ತೊಬ್ಬರ ವಶದಲ್ಲಿ (ವಿವರದೊಡನೆ) ಅಮಾನತ್ತಿನಲ್ಲಿಡುವ ವಸ್ತು ಅಥವಾ ಧನ. ಉನಿಕ್ಷಿಪ್ಯತೇ-ಉ+ನಿ+ಕ್ಷಿಪು (ನಿರಸನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೧೯)। ಉನಿಕ್ಷಿಪೋ ನಾಮ ರೂಪಸಂಹಿತಾಪ್ರದರ್ಶನೇನ ರಕ್ಷಣಾರ್ಥಂ ನಿಹಿತಂ ದ್ರವ್ಯಮ್। 2. ವಸ್ತು ಅಥವಾ ಧನವನ್ನು ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಮತ್ತೊಬ್ಬರ ವಶದಲ್ಲಿ (ವಿವರದೊಡನೆ) ಅಮಾನತ್ತಿನಲ್ಲಿಡುವುದು. ಉ+ನಿ+ಕ್ಷಿಪು ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೧೮)। 3. ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ ಇಡುವಿಕೆ. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। -ನಿಕ್ಷಿಪಣಮ್-ನಿಕ್ಷೇಪಣಮ್.

उपनिधातृ लुपनिधातृ (वि०) 1. ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ದ್ರವ್ಯವನ್ನು ಮತ್ತೊಬ್ಬನಲ್ಲಿಡುವ. 2. ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿಡುವ, ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರಿಸುವ. ಉ+ನಿ+ಡು ಧಾತ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) "ತುಕ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ನಿಧಾತೃ-ನಿಧಾತ್ರಿಃ. "ಉಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। -ನಿಧಾಯಕ-ನಿಧಾಯಕಃ.

उपनिधान लुपनिधान (न०) 1. ವಸ್ತು ಅಥವಾ ದ್ರವ್ಯವನ್ನು ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಮತ್ತೊಬ್ಬರಲ್ಲಿ (ವಿವರದೊಡನೆ) ಅಮಾನತ್ತಿನಲ್ಲಿಡುವುದು. ಉ+ನಿ+ಡು ಧಾತ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿಡುವುದು, ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರಿಸುವುದು. 3. ಠೇವಣಿ (Deposit).

उपनिधि लुपनिधि (पु०) 1. ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಮತ್ತೊಬ್ಬರ ವಶದಲ್ಲಿ ಅಮಾನತ್ತಿನಲ್ಲಿಡುವ ದ್ರವ್ಯ. ಉ+ನಿ+ಡು ಧಾತ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕ್ರಿಃ" (೩-೩-೧೧೨)। 2. ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಮತ್ತೊಬ್ಬರಲ್ಲಿ ದ್ರವ್ಯವನ್ನು ಇಡುವುದು.

उपनिनीषा लुपनिनीषा (स्त्री०) ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ತರಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಉನೆತುಮಿಚ್ಛಾ-ಉ+ಞೀಕ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ)+ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨)।

उपनिनीषु लुपनिनीषु (वि०) ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ತರಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಉನೆತುಮಿಚ್ಛುಃ-ಉ+ಞೀಕ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ)+ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮)।

उपनिपात लुपनिपात (पु०) 1. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬರುವಿಕೆ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದು ಸೇರುವಿಕೆ. 2. ಹಠಾತ್ತಾಗಿ ಬರುವುದು, ಅಕಸ್ಮಿಕವಾಗಿ ಬಂದು ಸೇರುವುದು, ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾಗಿ ಒದಗುವುದು. ಉ+ನಿ+ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಘ್" (೩-೩-೧೧೮)। "ವ್ರಜತೋಽಸ್ಯ ಬೃಹತ್ಪತತ್ರಜನ್ಮಾ ಕೃತತಾತ್ಯಯೋಃ-ನಿಪಾತವೇಗಾಶ್ಚಕ್ತಃ" ಕಿರಾಂ ೧೩-೨೧।

उपनिपातिन् लुपनिपातिन् (वि०) 1. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬರುವ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದು ಸೇರುವ. 2. ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ ಬಂದು ಸೇರುವ, ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾಗಿ ಬಂದೊದಗುವ. ಉ+ನಿ+ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಞಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)। "ಋಧೋಪನಿಪಾತಿನೋಽನ್ಯಥಾ ಇತಿ ಯದ್ಋಚ್ಯತೇ ತದವ್ಯಭಿಚಾರಿ ವಚಃ" ಶಾಕುಂ ೬।

उपनिबद्ध लुपनिबद्ध (वि०) 1. ರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಗ್ರಂಥ). 2. ಜೋಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ವಿಷಯ). 3. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ (ಪುಸ್ತಕಮಾಲೆ). ಉ+ನಿ+ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಯದಿದಮಸ್ಮಾಭಿರಾರ್ಪಣಂ ಚಕ್ಷುಷಾ ಸಮುದ್ದೀಶ್ಯ ಪಾವನಂ ವಚನಾಮೃತಂ ಕರುಣಾಶ್ಚುತರಸಂ ಚ ಕಿಂಚಿದುಪನಿಬದ್ಧಮ್" ತಂ ರಾಂ ೭।

उपनिबन्ध लुपनिबन्ध (पु०) 1. ಶಪಥ, ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. ಉ+ನಿ+ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೧೯)। 2. ನಿಯಮ, ಕಟ್ಟಳೆ.

उपनिबन्धन लुपनिबन्धन (न०) 1. ಗ್ರಂಥರಚನೆ. 2. (ವಿಷಯಗಳ) ಜೋಡಣೆ. 3. (ಪುಸ್ತಕಮಾಲೆಯ) ರಚನೆ. ಉ+ನಿ+ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 4. ಸಂಪಾದನೆಯ ಸಾಧನ, ಕಾರ್ಯದ ಸಲಕರಣೆ. ಉ+ನಿ+ಬಂಧ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 5. ನಿಯಮ, ಕಟ್ಟಳೆ.

उपनिमन्त्रण लुपनिमन्त्रण (न०) ಅಹ್ವಾನ, ಕರೆ. ಉ+ನಿ+ಮತ್ರಿ (ಗುಪ್ತಭಾಷಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

उपनिविष्ट लुपनिविष्ट (वि०) ಒಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿದ, ಒಳಗೆ ವಾಸಿಸುವ. ಉ+ನಿ+ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)।

उपनिवेश लुपनिवेश (पु०) 1. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿಡುವಿಕೆ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರಿಸುವಿಕೆ. ಉ+ನಿ+ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೧೮)। 2. ಉಪನಗರ, ಶಾಖಾನಗರ, ನಗರದ ಬಡಾವಣೆ. ಉನಿವಿಶಂತೇ-ಉ+ನಿ+ವಿಶ ಅಧಿಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। 3. ನೆರೆಮನೆ, ಪಕ್ಕದಮನೆ. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। -ನಿವೇಶನಮ್-ನಿವೇಶನಮ್.



ಉಪನಿಷತ್ತೀರ್ಥ ಉಪನಿಷತ್ತೀರ್ಥ (ವಿಂ) 1. ಸಮಾಪ  
ದಲ್ಲಿರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ  
ಇಡಲ್ಪಡುವ. ಉ + ನಿ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) ಅಹಿದೌ  
“ಅನೀಯ” (3-1-96) ।

ಉಪನಿಷತ್ತೀರ್ಥ ಉಪನಿಷತ್ತೀರ್ಥ (ವಿಂ) 1. (ಗೃಹರೂಪ  
ದಿಂದ) ಇಡಲ್ಪಟ್ಟು, (ಮನೆಯ ರೂಪದಿಂದ)  
ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಉ + ನಿ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) + ಣಿಕ್ “ಕ್ತಃ”  
(3-2-102) । “ಸ್ವರ್ಗಾಭಿಷ್ಠಾನ್ದವಮನಂ ಕೃತ್ವೇವೋಪನಿಷತ್ತೀರ್ಥಮ್”  
ಕುಮಾಂ 6-39 । 2. ವಾಸಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಸಮಾಪ  
ದಲ್ಲಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟು, — ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

ಉಪನಿಷತ್ ಉಪನಿಷತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮವಿದ್ಯೆ, ರಹಸ್ಯ  
ವಿದ್ಯೆ, ಬ್ರಹ್ಮಪ್ರಾಪಕ ವಿದ್ಯೆ. ಉಪನಿಷಾದಯತಿ ನಾಶಯತಿ  
ಗರ್ಭಜನ್ಮಜರಾತ್ಮಕಂ ಸಂಸಾರಮ್, ಉಪಗಮಯತಿ ಪ್ರಾಪಯತಿ ಬ್ರಹ್ಮ,  
ಉಪನಿಷತ್ ವಾ ಪರಂ ಶ್ರೇಯೋಽಸ್ಯಾಮ್ — ಉ + ನಿ + ಷಡ್  
(ವಿಶರಣಗತವಸಾದನೇಷು) + ಣಿಕ್ “ಕ್ತಿಪ್” (3-2-61) ।  
ಅವಿದ್ಯಾನಿವೃತ್ತಿಪೂರ್ವಕ, ಅನಾದಿಕಾಲದ ಕರ್ಮ  
ಪರಂಪರೆಯಿಂದ ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ ಜನ್ಮಜರಾಮರಣರೂಪ  
ವಾದ ಸಂಸಾರವನ್ನು ನಾಶಗೊಳಿಸುವುದರಿಂದಲೂ,  
ಪರಬ್ರಹ್ಮವನ್ನು ದೊರಕಿಸಿಕೊಡುವುದರಿಂದಲೂ, ಬ್ರಹ್ಮ  
ವೆಂಬ ಪರಮಶ್ರೇಯಸ್ಸು ಇದರಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದಲೂ  
ಇದಕ್ಕೆ “ಉಪನಿಷತ್” ಎಂದು ಹೆಸರು. ಇಂತಹ  
ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನಪ್ರತಿಪಾದಕವಾದುದರಿಂದ ಗ್ರಂಥಕ್ಕೂ  
“ಉಪನಿಷತ್” ಎಂದು ಹೆಸರು. 2. ಉಪನಿಷತ್ತಿನಿಂದ  
ಉಂಟಾದ ಬ್ರಹ್ಮಾತ್ಮಕತ್ವಜ್ಞಾನ. “ಉಪನಿಷತ್ಜನ್ಯಂ ಬ್ರಹ್ಮಾ-  
ತ್ಮಕತ್ವಜ್ಞಾನಮ್” ಛಾಂದೋಗ್ಯಂ । 3. ಬ್ರಹ್ಮದ ಸಮಾಪ  
ದಲ್ಲಿಯೇ ಇರುವುದು. ಬ್ರಹ್ಮಾನ್ಯುಪನಿಷತ್ಪ್ರಾಪ್ತಾ । “ಉಪನಿಷ-  
ತ್ಪ್ರಾಪ್ತಾ ಉಪನಿಷತ್” ಶ್ರುತಪ್ರಂ । 4. ರಹಸ್ಯೋಪದೇಶ.  
ಗುರುವಿನ ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ತಿಳಿಯಬೇಕಾದ  
ರಹಸ್ಯವಿದ್ಯೆಯೇ ಉಪನಿಷತ್ತು. ಮಾನವನು ಅನಾದಿ  
ಯಾದ ಕರ್ಮಪರಂಪರೆಯಿಂದ ಜನ್ಮಜರಾಮರಣ  
ಗಳಿಗೆ ತುತ್ತಾಗಿ ಈ ಜಗತ್ತಿನ ಬಾಳಿನಿಂದ ಜುಗುಪ್ಸೆ  
ಹೊಂದಿ ಇದರಿಂದ ಪಾರಾಗಲು ಉಪಾಯವನ್ನರಿಯದೆ  
ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನಸಂಪನ್ನನಾದ ಗುರುವನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿ  
ರಹಸ್ಯೋಪದೇಶದಿಂದ ಅಜ್ಞಾನವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡು  
ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನವನ್ನು ಪಡೆದು ಸಂಸಾರಪಾಶದಿಂದ  
ಮುಕ್ತನಾಗುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಉಪನಿಷತ್ತೆಂದು  
ಹೆಸರು. “ಉಪನಿಷತ್ ತಮಾತ್ಮಾನಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಪಾಸ್ತದ್ವಯಂ ಯತಃ ।  
ನಿಹಂತ್ಯವಿಷ್ಣುಂ ತಜ್ಞಂ ಚ ತಸ್ಮಾದುಪನಿಷತ್ಪ್ರಾಪ್ತವೇತ್” । ಈ

ಉಪನಿಷತ್ತು ವೇದಭಾಗವಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಗಳ  
ಕೊನೆಯ ಭಾಗವಾದುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ “ವೇದಾನ್ತ”  
ವೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಉಪನಿಷತ್ತು, ಬ್ರಾಹ್ಮಣಗಳಲ್ಲಿ  
ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ಯಾಗಾದಿಗಳು ಕಾಮ್ಯಕರ್ಮಗಳಾದುದರಿಂದ  
ಅವುಗಳ ಫಲವಾದ ಸ್ವರ್ಗಾದಿಗಳು ಅಸ್ಥಿರ  
ವೆಂದೂ, ಇವು ಸಂಸಾರಪಾಶದಿಂದ ಎಂದೆಂದಿಗೂ  
ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡುವುದಿಲ್ಲವೆಂದೂ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಿ ಬ್ರಹ್ಮ  
ಜ್ಞಾನವೊಂದರಿಂದಲೇ ಮುಕ್ತಿಯೆಂದು ಉಪದೇಶಿಸು  
ವುದು. ಈ ರೀತಿ ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನಪ್ರತಿಪಾದಕವಾದ  
ಉಪನಿಷತ್ತು 1180 ಎಂದು ಕೆಲವರೂ, 200 ಕ್ಕೂ  
ಹೆಚ್ಚೆಂದು ಕೆಲವರೂ, 108 ಎಂದು ಮತ್ತೆ ಕೆಲವರೂ  
ಪರಿಗಣಿಸಿರುವರು. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯವಾದ  
ಹದಿನಾಲ್ಕು ಉಪನಿಷತ್ತುಗಳಲ್ಲಿ (1) ಈಶ, (2) ಕೇನ,  
(3) ಕಠ, (4) ಪ್ರಶ್ನ, (5) ಮುಂಡಕ, (6) ಮಾಂಡೂಕ್ಯ,  
(7) ತೈತ್ತಿರೀಯ, (8) ಐತರೀಯ, (9) ಛಾಂದೋಗ್ಯ  
ಮತ್ತು (10) ಬೃಹದಾರಣ್ಯಕಗಳೆಂಬ ಹತ್ತು ಉಪ  
ನಿಷತ್ತುಗಳು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿವೆ. 5. ಯೋಗ,  
ಉಪಾಸನೆ. “ಯದೇವ ವಿಷಯಾ ಕರೋತಿ ಶ್ರದ್ಧಯೋಪನಿಷದಾ  
ತದೇವ ವೀರ್ಯವತ್ತರಮ್” ಛಾಂದೋಗ್ಯಂ । 6. ನಿರ್ಜನ  
ಪ್ರದೇಶ. 7. ಧರ್ಮ. “ಭವೇದ್ಉಪನಿಷದ್ಧರ್ಮೇ ವೇದಾಂತೇ  
ವಿಜನೇ ಸ್ವಿಯಾಮ್” ಮೇದಿಂ । 8. ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಹೋಗು  
ವುದು. 9. ದ್ವಿಜರು ಗೋದಾನವೆಂಬ ಕೇಶಖಂಡ  
ನಕ್ಕೆ ಮೊದಲು ಮಾಡಬೇಕಾದ ಒಂದು ವ್ರತ.  
“ಪ್ರಥಮಂ ಸ್ಯಾನ್ಮಹಾನಾನ್ಮನೀ ದ್ವಿತೀಯಂ ಚ ಮಹಾವ್ರತಮ್ ।  
ತೃತೀಯಂ ಸ್ಯಾದುಪನಿಷದ್ಗೋದಾನಂ ಚ ತತಃ ಪರಮ್” ಆಶ್ವಂ  
ಗುಂ ಕಾಂ ।

ಉಪನಿಷಾದಿನ್ ಉಪನಿಷಾದಿನ್ (ವಿಂ) ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ  
ಕೂಡುವ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವ. ಉ + ನಿ +  
ಷಡ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) “ಣಿನಿಃ” (3-1-134) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
“ತೀಪ್” (4-1-4) । —ನಿಷಾದಿನ್ —ನಿಷಾದಿನೀ.

ಉಪನಿಷತ್ಸಾ ಉಪನಿಷತ್ಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ  
ಕೂಡಲು ಆಸೆ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳಲು  
ಆಸೆ. ಉ + ನಿ + ಷಡ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) + ಸನ್ “ಅಃ”  
(3-3-102) ।

ಉಪನಿಷತ್ಸು ಉಪನಿಷತ್ಸು (ವಿಂ) ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ  
ಕೂಡಲು ಆಸೆಪಡುವ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳಲು  
ಆಸೆಪಟ್ಟಿರುವ. ಉಪನಿಷತ್ಸುಮಿಚ್ಛುಃ — ಉ + ನಿ + ಷಡ್  
(ವಿಶರಣಾದೌ) + ಸನ್ “ಃ” (3-2-166) ।



ಅಪನಿಷಾದತ್ ಉಪನಿಷಾದತ್ (ವಿಂ) ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವ. ಅಪ + ನಿ + ಷಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ನಿಷಾದಂತಿ -ನಿಷಾದಂತೀ.

ಅಪನಿಷಾದಿವಸ್ ಉಪನಿಷಾದಿವಸ್ (ವಿಂ) ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತಿರುವ. ಅಪ + ನಿ + ಷಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) "ಕ್ಸು:" (೩-೨-೧೦೮) | ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ನಿಷಾದಂತಿ -ನಿಷಾದಂತೀ.

ಅಪನಿಷಕರ ಉಪನಿಷಕರ (ನಂ) ಪಟ್ಟಣದ ರಸ್ತೆ, ನಗರದ ಮುಖ್ಯ ರಸ್ತೆ. ಅಪನಿಷಕೀಯತೇತ್ರ ಸೇವ್ಯಮ್ - ಅಪ + ನಿ + ಕ್ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭) |

ಅಪ + ನಿ + ಕ್ಸು - ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) ಅಪನಿಷಕಾಮತಿ - ನಿಷಕಾಮ್ಯತಿ | ಹೊರಗಡೆಗೆ ಹೊರಡು.

ಅಪನಿಷಕ್ರಮಣ ಉಪನಿಷಕ್ರಮಣ (ನಂ) 1. ಪಟ್ಟಣದ ರಸ್ತೆ, ನಗರದ ಮುಖ್ಯ ರಸ್ತೆ. ಅಪ + ನಿ + ಕ್ಸು (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | 2. ಹೊರಗಡೆಗೆ ಹೊರಡುವುದು. 3. ಮಗು (ತಿಸು) ವನ್ನು ನಾಲ್ಕನೆಯ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯದಾಗಿ ಮನೆಯಿಂದ ಹೊರಗಡೆಗೆ ಕರೆತರುವುದು. ಅಪ + ನಿ + ಕ್ಸು ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | "ಚತುರ್ಥೆ ಮಾಸಿ ಕರ್ತವ್ಯಂ ಶಿಶೋನಿಷಕ್ರಮಣಂ ಗೃಹಾತ್" ಮನುಂ ೨-೩೪ |

ಅಪನಿಷಕ್ರಾಂತ ಉಪನಿಷಕ್ರಾಂತ (ವಿಂ) ಹೊರಗಡೆಗೆ ಹೊರಟಿರುವ. ಅಪ + ನಿ + ಕ್ಸು (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) |

ಅಪನಿಷಕ್ರಾಮತ್ ಉಪನಿಷಕ್ರಾಮತ್ (ವಿಂ) ಹೊರಗಡೆಗೆ ಹೊರಡುತ್ತಿರುವ. ಅಪ + ನಿ + ಕ್ಸು (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ವಾ "ಶ್ಯನ್" (೩-೧-೭೦) | -ನಿಷಕ್ರಾಮ್ಯತ್ -ನಿಷಕ್ರಾಮ್ಯತ್. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ನಿಷಕ್ರಾಮಂತಿ -ನಿಷಕ್ರಾಮಂತೀ. -ನಿಷಕ್ರಾಮ್ಯಂತಿ -ನಿಷಕ್ರಾಮ್ಯಂತೀ.

ಅಪನಿಹಿತ ಉಪನಿಹಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಮಾಪದಲ್ಲಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. (ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ) ಮತ್ತೊಬ್ಬ ನಲ್ಲಿಡಲ್ಪಟ್ಟ (ದ್ರವ್ಯ). ಅಪ + ನಿ + ಡ್ ಭಾಜ್ (ಧಾರಣ-ಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ವಿಧ್ವಾಂಸ್ತು ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಪೂರ್ವೋಪನಿಹಿತಂ ನಿಧಿಮ್" ಮನುಂ ೮-೩೭ |

ಅಪನಿಹಿತ ಉಪನಿಹಿತ (ಪ್ರಂ) 1. ವೇದಾಭ್ಯಾಸಕ್ಕಾಗಿ ಗುರುವಿನ ಬಳಿಗೆ ಕಳುಹಿಸಲು ಉಪನಯನಸಂಸ್ಕಾರ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಬಾಲಕ. ಅಪ + ನಿ + ಡ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಕ್ತ:"

(೩-೨-೧೦೨) | "ಅಥೋಪನಿತಂ ವಿಧಿವದ್ವಿಪಶ್ಚಿತೋ ವಿನಿನ್ಯು-  
ರೇನ ಗುರವೋ ಗುರುಪ್ರಿಯಮ್" ರಘುಂ ೩-೨೯ | 2. ವೇದಾ  
ಭ್ಯಾಸಕ್ಕಾಗಿ ಗುರುವಿನ ಬಳಿಗೆ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಬಾಲಕ.  
(ವಿಂ) 3. ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ತರಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟ.  
"ತಸ್ಯಾ: ಕರಂ ಶಿಲಗುಲ್ಪನೀತಂ ಜಗ್ರಾಹ ತಾಮ್ರಾಕ್ಷುಲಿ-  
ಮಷ್ಟಮೃತಿ:" ಕುಮಾಂ ೭-೭೬ | 4. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಅರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅಪನಿಹಿತ ಉಪನಿಹಿತಯಮಾನ (ವಿಂ) ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ತರಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಅಪ + ನಿ + ಡ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೨೪) |

ಅಪನಿಹಿತ ಉಪನಿಹಿತಯಮಾನ (ವಿಂ) ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ನೂಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ + ನಿ + ಡ್ (ಪ್ರೇರಣೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ದ್ರುತಮರ್ದುಪನುಗ್ರಹಮದ್ವಿ: ಸಹೇಲಮ್" ಮಾಧಂ ೪-೬೮ |

ಅಪನಿಹಿತಯ ಉಪನಿಹಿತಯ (ಪ್ರಂ) 1. ಉಪನಯನ ಸಂಸ್ಕಾರ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ ಬಾಲಕ, ಉಪನಯನ ನಡೆಸಲು ಅರ್ಹನಾದ ಬಾಲಕ. 2. ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ತರಲ್ಪಡುವ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. ಅಪ + ನಿ + ಡ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) | "ಎಷ ಸ ಚಿರದೃಷ್ಟ: ಕಥಂ ಪುನರಪನೇತವ್ಯ:" ಮಾಲಂ ೨-೪ | 3. ಉಪನಯನಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದವನು, ವೇದಾಭ್ಯಾಸಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯನಾದವನು.

ಅಪನೇತ್ ಉಪನೇತ್ (ಪ್ರಂ) 1. ಆಚಾರ್ಯ, ಗುರು, ಉಪನಯನ ಸಂಸ್ಕಾರ ನಡೆಸುವವನು. ಅಪ + ನಿ + ಡ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) | "ಜನಿತಾ ಚೋಪನೇತಾ ಚ ಯಶ್ಚ ವಿಧಾಂ ಪ್ರಯಚ್ಛತಿ | ಅನ್ನದಾತಾ ಭಯತ್ರಾತಾ ಪಚ್ಛೇತೇ ಪಿತರ: ಸ್ಮೃತಾ:" | (ವಿಂ) 2. ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ತರುವ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ತಂದುಕೊಡುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | -ನೇತ್ರಿ -ನೇತ್ರಿ. "ನಿಯಮವಿಧಿಜಲಾನಾಂ ಬಹಿಷಾಂ ಚೋಪನೇತ್ರಿ" ಕುಮಾಂ ೧-೬೦ |

ಅಪನೇತ್ರಿ ಉಪನೇತ್ರಿ (ನಂ) ಉಪನೇಚನ, ಸುನೇಚನ, ಕನ್ನಡಕ. ಅಪಗತಂ ನೇತ್ರಮ್ |

ಅಪನೇತ್ರಿ ಉಪನೇತ್ರಿ (ವಿಂ) 1. ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ + ನಿ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. "ಇತ್ಯುಭಯ-  
ಲೋಕಾವಿರಹಂ ವಚನಮುಪನೇತ್ರಿಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೨ | 3. ಹತ್ತಿರ  
ದಲ್ಲಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ರಕ್ಷಣೆ  
ಗಾಗಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಸೂಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಲಹೆ  
ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ.



**ಉಪನ್ಯಾಸ ಉಪನ್ಯಾಸ (ಪುಂ)** 1. ವಚನದ ಉಪಕ್ರಮ, ಮಾತಿನ ಪ್ರಾರಂಭ. ಉ+ನಿ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಘ" (3-3-18). "ನಿರ್ಯಾತಿ: ಶನಕೇರಲಿಕವಚನೋಪನ್ಯಾಸಮಾಲಿ-  
ಜನ:" ಅಮರಂ 27. 2. ಸೂಚನೆ, ಸಲಹೆ. "ಮಮಾಪಿ  
ಯುಷ್ಮದ್ವಚನಾತ್ತೇನ ತೇನೋಪನ್ಯಾಸೇನ ಭೂವಿಸುಮಂದಿರಾಸನ್ನರಾಜ-  
ಮಾರ್ಗೇಣ ಮಾಧವ: ಸಂಚಾರ್ಯತೇ" ಮಾಲತೀಂ 1. 3. ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ,  
ಅರ್ಥವಿವರಣೆ, ಭಾಷಣ. 4. ವಿಚಾರ, ವಿಮರ್ಶೆ.  
"ವಿಶ್ವಜನ್ಯಮಿಮಂ ಪುಣ್ಯಮುಪನ್ಯಾಸಂ ನಿಬೋಧತ" ಮನುಂ 9-31.  
5. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ. ಉಪ  
ಸಮೀಪೇ ನ್ಯಾಸ: 1. 6. ನಂಬಿಕೆಯಿಂದ ಒಬ್ಬನಲ್ಲಿ ರಕ್ಷಣೆ  
ಗಾಗಿ ದ್ರವ್ಯವನ್ನು ಇಡುವುದು, ಉಪನಿಧಿ. 7. ಪ್ರತಿ  
ಮುಖಸಂಧಿಯ ಒಂದು ಅಂಗ. "ಉಪನ್ಯಾಸಸ್ತು  
ಕಾರ್ಯಾಣಾಂ ಗ್ರಂಥನಮ್" ಸಾಂ ದಂ 6-110.

**ಉಪಪತ್ತಿ ಉಪಪತ್ತಿ (ಪುಂ)** ಜಾರವುರುಷ, ಮಿಂಡ, ವ್ಯಭಿ  
ಚಾರಿ. ಉಪಮಿತ: ಪತ್ಯಾ (2-2-18). ಅವಾಂ ಸಮಾಸ: 1.  
"ದ್ರುತತರಮುಪಯಾತಿ ಸಂಸಮಾನಾಂಶುಕೋಸಾವುಪಪತ್ತಿರಿವ ನಿಕೇ:  
ಪಶ್ಚಿಮಾಂತೇನ ಚಂದ್ರ:" ಮಾಧಂ 11-64.

**ಉಪಪತ್ತಿ ಉಪಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಯುಕ್ತಿ, ವಿವೇಚನಾ  
ಪೂರ್ವಕವಾದ ಮಾತು. ಉಪಪದ್ಯತೇ—ಉ+ಪದ (ಗತೌ)  
"ಕ್ತಿನ್" (3-3-94). "ಉಪಪತ್ತಿರ್ದಾಹತಾ ಬಲಾ-  
ದನುಮಾನೇನ ನಚಾಗಮ: ಕ್ಷತ:" ಕಿರಾಂ 2-28.  
2. ಸಾಮಂಜಸ್ಯ, ಹೊಂದಿಕೆ, ಯುಕ್ತತೆ. 3. ಕಾರಣ,  
ಹೇತು. "ಪ್ರಿಯೇಷು ಯ: ಪಾಥಂ ವಿನೋಪಪತ್ತೇವಿಚಿಂತ್ಯಮಾನೇ:  
ಕ್ಲಮೇತಿ ಚೇತ:" ಕಿರಾಂ 3-42. 4. ಉಪಾಯ,  
ಯುಕ್ತಿ. "ಅಥೋಪಪತ್ತಿ ಛಲನಾಪರೋಽಪರಾಮವಾಪ್ಯ ಶೈಲೂಷ  
ಇವೇಷ ಭೂಮಿಕಾಮ್" ಮಾಧಂ 1-69. 5. ಪ್ರಾಪ್ತಿ,  
ಪಡೆಯುವಿಕೆ, ಲಾಭ. "ಅಸಂಶಯಂ ಪ್ರಾಕ್ತನಯೋಪಪತ್ತೇ:  
ಸ್ತನನ್ವಯಪ್ರೀತಿಮವಾಪ್ಸ್ಯಸಿ ತ್ವಮ್" ರಘುಂ 14-38.  
6. ತಾತ್ಪರ್ಯನಿರ್ಣಯಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ಒಂದು  
ಲಿಂಗ. 7. ಸಿದ್ಧಿ, ಈಡೇರುವಿಕೆ, ಕೈಗೂಡು  
ವಿಕೆ. "ಸ್ವಾರ್ಥೋಪಪತ್ತಿ ಪ್ರತಿ ದುರ್ಬಲಾಶಸ್ತಮಿತ್ಯವೋಚ-  
ದ್ವರತನ್ತುಶಿಷ್ಯ:" ರಘುಂ 4-12. 8. ಸಾಹಾಯ್ಯ,  
ಅವಲಂಬನೆ. "ಅಪೇಕ್ಷಿತಾನ್ಯಾನ್ಯಬಲೋಪಪತ್ತಿभि:" ಕಿರಾಂ  
14-44.

**ಉಪಪತ್ತಿಮತ್ ಉಪಪತ್ತಿಮತ್ (ವಿಂ)** ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ  
ಕೂಡಿದ. ಉಪಪತ್ತಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (4-2-94).  
"ಉಪಮತ್ತಿಮದ್ವಿಜಿತಾಶ್ರಯಂ ನೃಪಮುಚೇ ವಚನಂ ವೃಕೋದರ:"  
ಕಿರಾಂ 2-1.

**ಉಪಪದ ಉಪಪದ (ನಂ)** 1. ಪದದ ಹಿಂದೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವ  
ಪದ, ಪದದ ಹಿಂದೆ ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ಪದ.  
ಉಪೋಚ್ಚಾರಿತಂ ಪದಮ್. "ಧನುರೂಪದಮಸ್ಮೈ ವೇದಮಭ್ಯಾದಿದೇಶ"  
ಕಿರಾಂ 18-44. 2. ಹೆಸರಿನ ಜೊತೆಗೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವ  
ಪದ, ಬಿರುದು, ಗೌರವದ ಪದ. "ಕಥಂ ನಿರೂಪದಮೇವ  
ಚಾಣಕ್ಯಮಿತಿ? ನ ಆಯಂಚಾಣಕ್ಯಮಿತಿ" ಮುದ್ರಾಂ 3.  
3. "ಕರ್ಮಣ್ಯ" ಇತ್ಯಾದಿ ಸೂತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಸಪ್ತಮ್ಯಂತ  
ಪದದಿಂದ ವಾಚ್ಯವಾಗುವ ಅರ್ಥವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ  
(ಉಪಪದಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ) ಪದ. ಕುಮ್ಮಂ ಕರೋತಿ ಎಂಬಲ್ಲಿ  
"ಕರ್ಮಣ್ಯ" ಸೂತ್ರದ ಸಪ್ತಮ್ಯಂತ ಪದವಾಚ್ಯವಾದ  
ಕರ್ಮವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ ಕುಮ್ಮ ಪದವು ಉಪಪದ  
ಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳದ್ದು. ಇದರ ಯೋಗದಿಂದ ಧಾತುವಿನ  
ಮೇಲೆ "ಅನ್" ಪ್ರತ್ಯಯ ಬರುವುದು.

**ಉಪಪದವಿಭಕ್ತಿ ಉಪಪದವಿಭಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಉಪಪದ  
ಯೋಗದಿಂದ ಬರುವ ವಿಭಕ್ತಿ, ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಪದದ  
ಯೋಗದಿಂದ ಬರುವ ವಿಭಕ್ತಿ. ಹರಯೇ ನಮ: ಎಂಬಲ್ಲಿ ನಮ:  
ಪದದ ಯೋಗದಿಂದ ಹರಿ ಪದಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ ಚತುರ್ಥೀ  
ವಿಭಕ್ತಿಯು ಉಪಪದವಿಭಕ್ತಿ. "ಉಪಪದವಿಭಕ್ತೀ: ಕಾರಕ-  
ವಿಭಕ್ತಿರ್ಬಲೀಯಸೀ" ಪರಿಂ 2-3-16.

**ಉಪಪದಸಮಾಸ ಉಪಪದಸಮಾಸ (ಪುಂ)** "ಉಪಪದ"  
ಪದದಲ್ಲಿ 3ನೆಯ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ ಉಪಪದಗಳಿಗೆ  
ಕೃದಂತದೊಡನೆ ಹೇಳುವ ಸಮಾಸ. [ಕೃದಂತ ಪದ  
ಗಳಿಗೆ "ಸುಪ್" ಪ್ರತ್ಯಯ ಸೇರಿಸುವ ಮೊದಲೇ ಈ  
ಸಮಾಸ ಬರುವುದು]. ಕುಮ್ಮಕಾರ: ಎಂಬಲ್ಲಿ ಕುಮ್ಮ ಪದಕ್ಕೆ  
"ಅನ್" ಪ್ರತ್ಯಯಾಂತ ಕಾರ ಪದದೊಡನೆ ಮೊದಲು  
ಸಮಾಸ ಬಂದು ಅನಂತರ "ಸುಪ್" ಪ್ರತ್ಯಯ ಬಂದಿರು  
ವುದು. "ಗತಿಕಾರಕೋಪಪದಾನಾಂ ಕೃದ್ವಿ: ಸಹ ಸಮಾಸವಚನಂ  
ಪ್ರಾಕ್ ಸುಬುತ್ಪತ್ತೇ:" ಪರಿಂ 2-2-19.

**ಉಪಪನ್ನ ಉಪಪನ್ನ (ವಿಂ)** 1. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಉ + ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (3-2-102).  
"ಅತೀಂದ್ರಿಯೇಷ್ವಪುಪನ್ನದರ್ಶನೋ ಬಭೂವ ಭಾವೇಷು ದಿಲೀಪನಂದನ:"  
ರಘುಂ 3-41. 2. ಕೂಡಿಕೊಂಡಿರುವ, ಒಡಗೂಡಿರುವ,  
ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಸೇರಿರುವ. "ಬಭೌ ಚ ಸಾ ತೇನ ಸತಾಂ ಮತೇನ  
ಶ್ರದ್ಧೇವ ಸಾಕ್ಷಾದ್ವಿಧಿನೋಪಪನ್ನಾ" ರಘುಂ 2-16. 3. ಸ್ವಭಾವ  
ಸಿದ್ಧವಾದ, ಸಹಜವಾದ. "ಸರ್ವಂ ಸಹೇ ತವ್ಯುಪಪನ್ನಮೇತ-  
ದ್ವಮೇ ಮಮಾಸ್ತ್ರೇ ಕುಲಿಶಂ ಭವಾಂಶಚ | ವಜ್ರಂ ತಪೋವೀರ್ಯಮಹತ್ಸು ಕುಂಠಂ  
ತ್ವಂ ಸರ್ವತೋಗಾಮಿ ಚ ಸಾಧಕಂ ಚ" ಕುಮಾಂ 3-12. 4. ಯೋಗ್ಯವಾದ,  
ಯುಕ್ತವಾದ, ಅರ್ಹವಾದ.



“ಉಪಪನ್ನಮಿದಮಸ್ಮಿನ್ ರಾಜನಿ” ಶಾಕುಂ ೨। 5. ಕೂಡಿರುವ, ತುಂಬಿರುವ, ಪೂರ್ಣವಾಗಿರುವ. “ಉಪಪನ್ನೋ ಗುಣಃ ಸರ್ವಃ ಪುತ್ರೋ ಯಸ್ಯ ತು ದತ್ತಿಮಃ। ಸಹ ತೇವ ತದ್ವಿಧಂ ಸಂಪ್ರಾಪ್ತೋಽಪ್ಯನ್ಯಗೋತ್ರತಃ” ಮನುಂ ೯-೧೪೧।

ಉಪಪಾತ ಉಪಪಾತ (ಪ್ರಂ) 1. ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ ಬರುವುದು, ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾಗಿ ಬರುವುದು. 2. ನಾಶ, ಪ್ರಳಯ. 3. ತೊಂದರೆ, ಉಪದ್ರವ, ವಿಸತ್ತು. ಉ + ಪಲ್ (ಗತೌ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮)।

ಉಪಪಾತಕ ಉಪಪಾತಕ (ನಂ) ಮಹಾಪಾತಕಕ್ಕೆ ಸಮವಾದ ಪಾಪ, ಮಹಾಪಾತಕಕ್ಕಿಂತಲೂ ಕಡಿಮೆ ಶಿಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ ಪಾಪ. ಪಾತಯತಿ ನರಕೇ-ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ “ಘ್” (೩-೧-೧೩೩)। “ಮಹಾಪಾತಕತುಲ್ಯಾನಿ ಪಾಪಾನ್ಯುಕ್ತಾನಿ ಯಾನಿ ವೆ। ತಾನಿ ಪಾತಕಸಂಜ್ಞಾನಿ ತನ್ಯುನುಪಪಾತಕಮ್”। ಉಪಪಾತಕಗಳು 49: 1. ಗೋವಧೆ. 2. ಅಯಾಜ್ಯಯಾಜನ. [ಅನರ್ಹನಿಂದ ಯಾಗ ಮಾಡಿಸುವುದು.] 3. ಪರಸ್ತ್ರೀಗಮನ. 4. ಆತ್ಮವಿಕ್ರಯ. 5. ಗುರುತ್ಯಾಗ. 6. ಮಾತೃತ್ಯಾಗ. 7. ಪಿತೃತ್ಯಾಗ. [ಇವರಿಗೆ ಶುಶ್ರೂಷೆ ಮಾಡದಿರುವುದು ತ್ಯಾಗ.] 8. ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯತ್ಯಾಗ. [ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯದಿಂದಿಲ್ಲದಿರುವುದು ಮತ್ತು ವೇದವನ್ನೂ ಮರೆತುರುವುದು.] 9. ಅಗ್ನಿತ್ಯಾಗ. [ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯ ಮಾಡದಿರುವುದು.] 10. ಸುತತ್ಯಾಗ. [ಮಕ್ಕಳ ಯೋಗಕ್ಷೇಮಾದಿಗಳನ್ನು ನೋಡಿಕೊಳ್ಳದಿರುವುದು.] 11. ಅಣ್ಣನಿಗಿಂತ ಮುಂಚೆ ಮದುವೆಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 12. ತಮ್ಮನ ಮದುವೆಯ ನಂತರ ಅಣ್ಣನು ಮದುವೆಯಾಗುವುದು. 13. ಅಂತಹವರಿಬ್ಬರಿಗೂ ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ಕೊಡುವುದು. 14. ಅಂತಹವರಿಗೆ ಮದುವೆಮಾಡಿಸುವುದು. 15. ಬಾಹ್ಯಸುರತದಿಂದ ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ಕಡಿಸುವುದು. 16. ಅನ್ಯಾಯಬಡ್ಡಿಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವುದು. 17. ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯದ ಲೋಪ. 18. ಕೆರೆ ಕಟ್ಟಿ ಇವುಗಳ ವಿಕ್ರಯ. 19. ಆರಾಮ(ತೋಟ)ದ ವಿಕ್ರಯ. 20. ಪತ್ನಿಯ ವಿಕ್ರಯ. 21. ಅಪತ್ಯ (ಪುತ್ರ) ವಿಕ್ರಯ. 22. ಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ಉಪನಯನಾದಿ ಸಂಸ್ಕಾರವಿಲ್ಲದಿರುವುದು. 23. ಬಂಧುಗಳ ತ್ಯಾಗ. 24. ಸಂಬಳ ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿಸುವುದು. 25. ಸಂಬಳ ಕೊಟ್ಟು ಪಾಠ ಹೇಳಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 26. ನಿಷಿದ್ಧವಾದ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ವಿಕ್ರಯಿಸುವುದು. [ತಲ, ಅರಗು, ಹಾಲು, ಮೊಸರು ಮೊದಲಾದವುಗಳ ವಿಕ್ರಯವು ಬ್ರಾಹ್ಮಣರಿಗೆ

ನಿಷಿದ್ಧವು.] 27. ಗಣಿಗಳಲ್ಲಿ ಅಧಿಕಾರ. 28. ದೊಡ್ಡ ಯಂತ್ರಗಳನ್ನು ನಡೆಸುವುದು. 29. ಧಾನ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. 30. ಹೆಂಗಸರನ್ನು ಅಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲಿಸಿ ಅದರಿಂದ ಜೀವಿಸುವುದು. 31. ಮಾಟ ಶೂನ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡಿಸುವುದು. 32. ಮಂತ್ರಗಳಿಂದ ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 33. ಸೌದೆಗಾಗಿ ಹಸಿಮರವನ್ನು ಕಡಿಯುವುದು. 34. ರೋಗರುಜಿನಾದಿಗಳಿಲ್ಲದೆ ಇರುವಾಗ ದೇವರು ಅತಿಥಿಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ತನಗಾಗಿ ಪಾಕಾದಿಗಳನ್ನು ಮಾಡುವುದು. 35. ಧಾರಾಗ್ನಿಯನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಿದದಿರುವುದು. 36. ಕಳ್ಳತನ. 37. ಸಾಲ ತೀರಿಸದಿರುವುದು. [ಸಾಲವು ಲೌಕಿಕ ಮತ್ತು ಅಲೌಕಿಕಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ವಿಸರಕ್ಕೆ “ಞ್” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 38. ನಿಷಿದ್ಧವಾದ ಆಹಾರ ಸೇವನೆ. 39. ಯಾವಾಗಲೂ ಸಂಗೀತ ನೃತ್ಯ ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಕಾಲ ಕಳೆಯುವುದು. 40. ಶ್ರುತಿಸ್ಮೃತಿವಿರುದ್ಧವಾದ ಶಾಸ್ತ್ರಾಧ್ಯಯನ. 41. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಕಡಿಯುವುದು. 42. ಪಶುಗಳನ್ನು ಕಡಿಯುವುದು. 43. ಚಿನ್ನಬೆಳ್ಳಿಗಳ ಜೌರ್ಯ. 44. ಸ್ತ್ರೀವಧೆ. 45. ಶೂದ್ರವಧೆ. 46. ವೈಶ್ಯವಧೆ. 47. ಕ್ಷತ್ರಿಯವಧೆ. 48. ಹೆಂಡಕುಡುಕನ ಪತ್ನಿಯ ಸೇವನೆ. ಮತ್ತು 49. ನಾಸ್ತಿಕತೆ. [ದೇವರು, ಪರಲೋಕಗಳೆಲ್ಲವೆಂಬ ಬುದ್ಧಿ.] ಇವೆಲ್ಲವೂ ಮಹಾಪಾತಕಕ್ಕೆ ಸಮವಾದುವು. ಮನುಂ ೧೧-೪೯-೬೬।

ಉಪಪಾತಕಿನ್ ಉಪಪಾತಕಿನ್ (ವಿಂ) ಮಹಾಪಾತಕಕ್ಕೆ ಸಮವಾದ ಪಾಪವುಳ್ಳವನು. ಉಪಪಾತಕಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ — “ಞಿಃ” (೪-೨-೧೧೪)।

ಉಪಪಾತಿನ್ ಉಪಪಾತಿನ್ (ವಿಂ) ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ ಬಂದು, ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾಗಿ ಒದಗಿದ, ಹಠಾತ್ತಾಗಿ ಆಗಮಿಸಿದ. ಉ + ಪಲ್ (ಗತೌ) “ಣಿಃ” (೩-೧-೧೩೪)।

ಉಪಪಾದಕ ಉಪಪಾದಕ (ವಿಂ) 1. ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಸಮರ್ಥಿಸುವ, ಉಪಪತ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. 2. ಉಂಟುಮಾಡುವ, ಸೃಷ್ಟಿಸುವ, ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡುವ. ಉ + ಪದ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ “ಘ್” (೩-೧-೧೩೩)।

ಉಪಪಾದನ ಉಪಪಾದನ (ನಂ) 1. ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಸಮರ್ಥನೆ ಮಾಡುವುದು, ಕಾರಣ ತೋರಿಸಿ ಸಾಧನೆ ಮಾಡುವುದು. 2. ವಿಷಯವನ್ನು ವಿವರಿಸಿ ನಿರ್ಣಯಿಸುವುದು. ಉ + ಪದ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ “ಘ್” (೩-೩-೧೧೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಘ್” (೩-೩-೧೦೭)। -ಪಾದನಾ -ಪಾದನಾ.



उपपादित ಉಪಪಾದಿತ (वि०) 1. ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಸಮರ್ಥಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ವಿವರಿಸಿ ನಿರ್ಣಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. उप + पद (गती) + णिच् "क्तः" (३-२-१०२)। 3. ಕಲ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "दिष्ट्या त्वमसि मे धात्रा भीतेनेवोपपादितः" रघु० १५-१८।

उपपादुक ಉಪಪಾದುಕ (पु०) ದೇವತೆಗಳು, ದೃಷ್ಟ ಕಾರಣಗಳಲ್ಲದೆ ಅದೃಷ್ಟಕಾರಣಗಳಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವರು. उपपद्यन्ते — उप + पद (गती) + णिच् "उकञ्" (३-२-१५५)। ಜನಕರಾದ ತಾಯಿತಂದೆಗಳಲ್ಲದೆ ಕೇವಲ ಅದೃಷ್ಟಕಾರಣದಿಂದಲೇ ಹುಟ್ಟುವವರಾದುದ ರಿಂದ ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು. "दिव्योपपादुका देवाः" अम०।

उपपाद्य ಉಪಪಾದ್ಯ (वि०) 1. ಉಪಪಾದಿಸಲ್ಪಡುವ, ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಸಮರ್ಥಿಸಲ್ಪಡುವ. उप+पद(गती)+ णिच् "यत्" (३-१-९७)। 2. ವಿವರಿಸಿ ನಿರ್ಣಯಿಸ ಲ್ಪಡುವ. 3. ನಿರ್ವಹಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ, ಮಾಡಲ್ಪಡ ಬೇಕಾದ. "कार्यं येन त्यजति विधिना स त्वयैवोपाद्यः" मेघ० १-२९। (अव्य०) 4. ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಸಮರ್ಥಿಸಿ, ಕಾರಣ ತೋರಿಸಿ ಸಾಧನೆಮಾಡಿ. 5. ನಿರ್ಣಯ ಮಾಡಿ. उप + पद + णिच् "ल्यप्" (७-१-३७)।

उपपुर ಉಪಪುರ (न०) ಶಾಖಾನಗರ, ನಗರದ ಬಡಾ ವಣಿ. उप समीपस्थं पुरम्।

उपपुराण ಉಪಪುರಾಣ(न०) (ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಪ್ರಣೀತ ವಾದ) ಹದಿನೆಂಟು ಪುರಾಣಗಳಿಗೆ ಸದೃಶವಾದ (ಇತರ ಮುಖಗಳಿಂದ ರಚಿತವಾದ) ಹದಿನೆಂಟು ಉಪಪುರಾಣ ಗಳು. (1) ಸನತ್ಕುಮಾರ ಪುರಾಣ. (2) ನಾರಸಿಂಹ ಪುರಾಣ. (3) ವಾಯು ಪುರಾಣ. (4) ಶಿವಧರ್ಮ ಪುರಾಣ. (5) ಆಶ್ವರ್ಯ ಪುರಾಣ. (6) ನಾರದೀಯ ಪುರಾಣ. (7) ನಂದಿಕೇಶ್ವರ ಪುರಾಣ. (8) ಔಶನಸ ಪುರಾಣ. (9) ಕಾಸಿಲ ಪುರಾಣ. (10) ವಾರುಣ ಪುರಾಣ. (11) ಕಾಲಿಕಾ ಪುರಾಣ. (12) ಪಾದ್ಮ ಪುರಾಣ. (13) ದೈವ ಪುರಾಣ. (14) ಸೌರ ಪುರಾಣ. (15) ಮಾಹೇಶ್ವರ ಪುರಾಣ. (16) ಶಾಂಬ ಪುರಾಣ. (17) ಪಾರಾಶರ ಪುರಾಣ. (18) ಮಾರೀಚ ಪುರಾಣ. ಇವು ಅಷ್ಟಾದಶ ಉಪಪುರಾಣಗಳು.\*

\* ಈ ಪುರಾಣಗಳು ಮತ್ತು ಉಪಪುರಾಣಗಳ ಮತ್ತು ಅವುಗಳಲ್ಲಿನ ಗ್ರಂಥಸಂಖ್ಯೆಯ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಒಂದೊಂದು ಗ್ರಂಥದಲ್ಲಿಯೂ ಒಂದೊಂದು ರೀತಿ ಇರುವುದರಿಂದ ಹೀಗೆಂದು ನಿರ್ಣಯಿಸಿ ಹೇಳಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗುವುದಿಲ್ಲ.

उपपुष्पिका ಉಪಪುಷ್ಪಿಕಾ (स्त्री०) ಆಕಳಿಕೆ, ಆವಳಿಕೆ. उपगता पुष्पमिव विकासभावम्। संज्ञायां "कन्"। "हाफिकाचोपपुष्पिका" हारा०।

उपप्रदान ಉಪಪ್ರದಾನ (न०) 1. ಉತ್ಕೋಚ, ಲಂಚ, ತನ್ನ ಕಾರ್ಯ ಸಾಧಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಕೊಡುವ ಹಣ ಮೊದಲಾದುದು. "उपप्रदानं मर्जारोहितकृत् प्रार्थ्यते जनैः" पञ्चत० १-९५। 2. ಕಪ್ಪ, ಕಾಣಿಕೆ. 3. ತೆರಿಗೆ, ವಸ್ತುಗಳ ಮಾರಾಟ ಮೊದಲಾದವುಗಳ ಮೇಲೆ ವಿಧಿಸುವ ಸುಂಕ. 4. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಕೊಡುವಿಕೆ.

उपप्रलोभन ಉಪಪ್ರಲೋಭನ (न०) 1. ಆಸೆ ಹುಟ್ಟಿ ಸುವುದು, ಮರುಳು ಮಾಡುವುದು. उप+प्र+लुभ (विमोहने) "ल्युट्" (३-३-११५)। 2. ಮರುಳು ಮಾಡಿ ಸ್ವಾರ್ಥಿನಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಕೊಡುವ ಧನ, ಪುಸಲಾವಣೆಗಾಗಿ ಕೊಡುವ ಲಂಚ. उपप्रलोभ्यते- ज्ञेन — उप+प्र+लुभ कर० "ल्युट्" (३-३-११७)।

उपप्लव ಉಪಪ್ಲವ (पु०) 1. ರಾಹು. उप+प्लुङ् (गती) "अच्" (३-१-१३४)। "केतूपप्लवभौममन्दगतयः षष्ठे तृतीये शुभाः"। 2. ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರ ಗ್ರಹಣ. "चन्द्रमिवोपप्लवान्मुक्तम्" विक्र० १-११। 3. ತೊಂದರೆ, ಪೀಡೆ, ಹಿಂಸೆ. "उपप्लवाय लोकानां धूमकेतुरिवोत्थितः" कुमा० २-३२। 4. ಅನಿಷ್ಟವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಬಿರುಗಾಳಿ, ಕಾಳ್ಕಿಚ್ಚು, ಧೂಮಕೇತು ಮೊದಲಾ ದುದು. "कच्चिन्न वाय्वादिरुपप्लवो वः श्रमच्छिदा- माश्रमपादपानाम्" रघु० ५-६। 5. ಅಡ್ಡಿ, ವಿಘ್ನ, ಆತಂಕ. "तौ (अर्थकामौ) हि तत्त्वावबोधस्य दुरुच्छेदावुपप्लवौ" किरा० ११-२०। 6. ಕಪ್ಪ, ವಿಪತ್ತು, ತೊಂದರೆ. "जीवन् पुनः शश्वदुपप्लवेभ्यः प्रजाः प्रजानाथ पितेव पासि" रघु० २-४८।

ದೇವೀಭಾಗವತದಲ್ಲಿ (ಸ್ಕಂಧ 1 ಅಧ್ಯಾಯ 3) ಮಧ್ಯಮ್ — (i) ಮತ್ಸ್ಯ (1) ಮತ್ತು (ii) ಮಾರ್ಕಂಡೇಯ (2), ಮಧ್ಯಮ್ — (i) ಭವಿಷ್ಯ (3) ಮತ್ತು (ii) ಭಾಗವತ (4), ತ್ರಯಮ್ — (i) ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡ (5), (ii) ಬ್ರಹ್ಮವೈವರ್ತ (6) ಮತ್ತು (iii) ಬ್ರಾಹ್ಮ (7), ವಚಸ್ಪತಯಮ್ — (i) ವಿಷ್ಣು ಪುರಾಣ (8), (ii) ವಾಮನ (9), (i.i) ವಾಯು (10) ಮತ್ತು (iv) ವಾರಾಹಪುರಾಣಗಳು (11), ಆಗ್ನೇಯ (12), ನಾರದೀಯ (13), ಪಾದ್ಮ (14), ಲೈಂಗ (15), ಕೂರ್ಮ (16), ಸ್ಕಾಂದ (17), ಗಾರುಡ (18) ಗಳೆಂದು ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. ಶ್ರೀಮದ್ಭಾಗವತದಲ್ಲಿ (ಸ್ಕಂಧ 12 ಅಧ್ಯಾಯ 13) ಉಕ್ತವಾಗಿರುವ ಈ 18 ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲಿ ವಾಯು ಪುರಾಣಕ್ಕೆ ಬದಲಾಗಿ ಶೈವಪುರಾಣವು ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. ಹೀಗೆಯೇ ಗ್ರಂಥ (ಶ್ಲೋಕ) ಸಂಖ್ಯೆಯೂ ವಿಭಿನ್ನವಾಗಿದೆ.



“ಅಪ್ಪಲವ: ಸೇಹಿಕೇಯೇ ವಿಪ್ಲವೋತ್ಪಾತಯೋರಪಿ” ಮೇದಿಂ. 7. ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ. “ನೃಪಾ ಇವೋಪ್ಪಲವಿನ್: ಪರೇಭ್ಯೋ ಧರ್ಮೋತ್ತರಂ ಮಧ್ಯಮಮಾಶ್ರಯಂತೇ” ರಘುಂ ೧೩-೭. 8. ಕೇತು. “ಅಪ್ಪಲವ: ಕಚ: ಕೇತುರಾಶ್ಲೇಷಾಭವ ಆಹ್ನಿಕ:” ಹಾರಾಂ. 1.

ಅಪ್ಪಲವಿನ್ ಉಪಪ್ಪಲವಿನ್ (ವಿಂ) ಭಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಹೆದರಿರುವ. ಅಪ್ಪಲವೋತ್ಪಾತಿ-“ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೫). “ನೃಪಾ ಇವೋಪ್ಪಲವಿನ್: ಪರೇಭ್ಯೋ ಧರ್ಮೋತ್ತರಂ ಮಧ್ಯಮಮಾಶ್ರಯಂತೇ” ರಘುಂ ೧೩-೭.

ಅಪ್ಪಲಾವ್ಯ ಉಪಪ್ಪಲಾವ್ಯ (ನಂ) 1. ಪಾಂಡವರು ಅಜ್ಞಾತ ವಾಸಾನಂತರ ವಾಸಮಾಡಿದ ಒಂದು ನಗರ. “ರಾಜಸ್ತು ವಚನಂ ಶ್ರುತ್ವಾ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರಸ್ಯ ಸಂಜಯ: 1. ಅಪ್ಪಲಾವ್ಯಂ ಯಯೌ ದ್ರಷ್ಟುಂ ಪಾಂಡವಾನಮಿತೌಜಸ:” ಭಾಂ. ಅಧ್ಯಾಯಂ ೨೩-೧. (ವಿಂ) 2. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ತೊಂದರೆಪಡಿಸಬೇಕಾದ, ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಪೀಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ಅಪ+ಪ್ಪಲ(ಗತೌ) “ಪ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೫).

ಅಪ್ಪಲತ ಉಪಪ್ಪಲತ (ವಿಂ) ತೊಂದರೆಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ+ಪ್ಪಲ(ಗತೌ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨). “ಅಪ್ಪಲತಂ ಪಾತುಮದೋ ಮದೋಢತೇ ಸ್ವಮೇವ ವಿಶ್ವಮ್ಭರ ವಿಶ್ವಮಿಶಿಷೇ” ಮಾಘಂ ೧-೩೮.

ಅಪಬಂಧ ಉಪಬಂಧ (ಪುಂ) 1. ಕೂಡಿಸುವುದು, ಹೆಚ್ಚಿಗೆ ಸೇರಿಸುವುದು. ಅಪ+ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) “ಭಜ್” (೩-೩-೧೮). 2. ಪಕ್ಕದ ಗಂಟು, ಒಂದು ಗಂಟು ಭದ್ರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲಲು ಅದರ ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿ ಹಾಕುವ ಮತ್ತೊಂದು ಸಣ್ಣ ಗಂಟು. ಅಪ ಸಮೀಪೇ ಬಂಧ: 1.

ಅಪಬಂಹ ಉಪಬಂಹ (ಪುಂ) 1. ತಲೆದಿಂಬು. ಅಪಬಂಹಂತೆ - ಬೃಹ (ಬೃಹದಿ) “ಭಜ್” (೩-೩-೧೯). 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಅದುಮುವುದು, ಪೀಡಿಸುವುದು, ಜುಲುಮು ಮಾಡುವುದು, ಹಿಂಡುವುದು. ಅಪ+ಬಂಹ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಭಜ್” (೩-೩-೧೮). ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫). -ಬಂಹಣಮ್. “ಅಚ್ಚೀರ್ಷಮುಪಬಂಹಣಮ್” ವೇಜಂ. 1.

ಅಪಬಂಹಣ ಉಪಬಂಹಣ (ನಂ) ಹೆಚ್ಚುವುದು, ಅಧಿಕವಾಗುವುದು. ಅಪ+ಬಂಹಿ (ಬೃಹದಿ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫).

ಅಪಬಂಹಿತ ಉಪಬಂಹಿತ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅಧಿಕವಾದ. ಅಪ+ಬಂಹಿ (ಬೃಹದಿ) “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨).

ಅಪಭುಕ್ತ ಉಪಭುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಅನುಭವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ+ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ: “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨). “ಸಾಫಲ್ಯಂ ಯಯುರಮರಾಜ್ಞನೋಪಭುಕ್ತಾ:” ಕಿರಾಂ ೭-೨೮. 2. ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟ. “ಅರ್ಥೋಪಭುಕ್ತೇನ ವಿಶೇಷೇನ ಜಾಯಾಂ ಸಂಭಾವಯಾಮಾಸ ರಥಾಜ್ಞನಾಮಾ” ಕುಮಾಂ ೩-೩೭.

ಅಪಭುಕ್ತಿ ಉಪಭುಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನುಭವಿಸುವಿಕೆ, ಉಪಯೋಗಿಸುವಿಕೆ. 2. ತಿನ್ನುವಿಕೆ, ಊಟ ಮಾಡುವುದು. ಅಪ+ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ: “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪).

ಅಪಭುಜ್ಜಾನ ಉಪಭುಜ್ಜಾನ (ವಿಂ) ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿರುವ. ಅಪ+ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ: “ಜಾನಕ್” (೩-೨-೧೨೪). “ತಪಸಾಮುಪಭುಜ್ಜಾನಾ ಫಲಾನ್ಯಪಿ ತಪಸ್ವಿನ್:” ಕುಮಾಂ ೬-೧೦.

ಅಪಭೂಷಣ ಉಪಭೂಷಣ (ನಂ) ಒಡವೆಗೆ ಸಮಾನವಾದ ಘಂಟೆ, ಚಾಮರ, ಭತ್ತಿ ಮುಂತಾದುದು. ಅಪಮಿತಂ ಭೂಷಣೇನ. “ಘಂಟಾಚಾಮರಕುಂಭಾದಿಪಾತ್ರೋಪಕರಣಾದಿಕಮ್. 1. ತದ್ಭೂಷಣಾಂತರೇ ದದಾಘಸ್ತಮಾತ್ತದುಪಭೂಷಣಮ್”.

ಅಪಭೃತ್ ಉಪಭೃತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆರಳೇಮರದ ಒಂದು ಯಜ್ಞಪಾತ್ರೆ, ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಹೋಮದ ತುಪ್ಪವನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವ ಪಾತ್ರೆ, ಅಜ್ಞಪಾತ್ರೆ. ಅಪಭಿಭತಿ - ಅಪ+ಭೃ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ: “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬).

ಅಪಭೋಗ ಉಪಭೋಗ (ಪುಂ) 1. ವಿಷಯಾನುಭವ, ಸುಖಪಡುವಿಕೆ. ಅಪ+ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ: “ಭಜ್” (೩-೩-೧೮). “ನ ಜಾತು ಕಾಮ: ಕಾಮಾನಾಮುಪಭೋಗೇನ ಶಾಮ್ಯತಿ” ಮನುಂ ೨-೯೪. 2. ಉಪಯೋಗಿಸುವಿಕೆ. “ನಿಷ್ಠಯುತಶ್ಚರಣೋಪಭೋಗಮುಲಮೋ ಲಾಕ್ಷಾರಸ: ಕೇನಚಿತ್” ಶಾಕುಂ ೪-೪. 3. ಸ್ತ್ರೀಸಂಗಮ, ಸಂಭೋಗ. “ಅಪಸ್ಥಿತಶ್ಚಾರುವಪುಸ್ತದೀಯಂ ಕೃತ್ವೋಪಭೋಗೋತ್ಸುಕಯೇವ ಲಕ್ಷ್ಮಯಾ” ರಘುಂ ೧೪-೨೪.

ಅಪಭೋಗಿನ್ ಉಪಭೋಗಿನ್ (ವಿಂ) ವಿಷಯಾನುಭವವುಳ್ಳ, ಸುಖವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವ. ಅಪಭೋಗೋತ್ಪಾತಿ - “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೫).

ಅಪಭೋಗ್ಯ ಉಪಭೋಗ್ಯ (ವಿಂ) ಅನುಭವಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಅಪ+ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ: “ಪ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪). “ಅಸ್ಮತ್ ಸಾ ನಾಗವಧೂಪಭೋಗ್ಯಂ ಮೇನಾಕ-ಮಮ್ಭೋನಿಧಿವದ್ವಸಸ್ಯಮ್” ಕುಮಾಂ ೧-೨೦.

ಅಪಭೋಜಿನ್ ಉಪಭೋಜಿನ್ (ವಿಂ) ತಿನ್ನುವ, ಊಟ ಮಾಡುವ. ಅಪ+ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ: “ಜಿನಿ:” (೩-೨-೭೮). “ಅಚ್ಚಿತ್ತವಲಿಭಿಕ್ಷುಃ ಭಿಕ್ಷುಕಾಂಸ್ಯೋಪ-ಭೋಜಿಷು” ಸುಶ್ರುತಂ. 1.

ಅಪಭೋಜ್ಯ ಉಪಭೋಜ್ಯ (ನಂ) ತಿನ್ನಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಊಟಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಅಪ+ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ: “ಪ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪).



उपमन्त्रण लुपमन्त्रण (न०) 1. अह्वान, करे. उप + मन्त्रि (गुप्तभाषणे) "ल्युट्" (३-३-११५)। 2. सविन्यासनिन्द बह्विधुदु, म्युदुवचनदिन्द मन्त्रेणोसुवुदु. "भासनोपसंभाषाज्ञानविमत्युप-मन्त्रणेषु वदः" पा० सू० १-३-४७। 3. समीपदल्लि रहस्यवಾಗಿ मनातनाडुवुदु.

उपमन्यु लुपमन्यु (पु०) धौम्यमहर्षिय ँबु तिस्य. [ऊ मसियु तन्नन्नु परोक्षसलु धौम्यर्षियु कौट्य कष्यगल्लेला ससि कौण्डु अवर मेच्छीगेगे वात्रनागि विद्याभ्यास मनादिदनु.]

उपमर्द लुपमर्द (पु०) 1. लुज्जुवुदु, तिक्यु वुदु. उप + मर्द (क्षोदे) "घक्" (३-३-१८)। 2. हिण्डुवुदु, हिसुकुवुदु. "अन्यासु ताव-दुपमर्दसहासु भृङ्ग लोलं विनोदय मनः सुमनोलतासु" सा० द०। 3. धान्यगल्ल हौट्यु बिडिसुवुदु. भावे "ल्युट्" (३-३-११५)। -मर्दनम् -मर्दनम्.

उपमा लुपमा (स्त्री०) 1. सादृश्य, हौलिक्. उपमीयते—उप + मा (माने) भावे "अङ्" (३-३-१०६)। "उपमां ययावरुणदीधितिभिः परिमृष्टमूर्धनि तमालतरौ" किरा० ६-२३। 2. (लुपमानौपमैयगल्ल) साधारण धर्म. उपमीयतेनया—उप + मा कर० "अङ्" (३-३-१०६)। 3. अर्थालंकारद ँन्दु भेद; प्रसिद्धौपमानौपमैयगल्लि चमत्कारजनकवाद सादृश्यविदुवकडे लुपमा लंकारवागुवुदु. "उपमा यत्र सादृश्यलक्ष्मी-रुल्लसति द्वयोः। हंसीव कृष्ण ते कीर्तिः स्वर्गं गामवगाहते" चन्द्रा०। 4. लुपमान, हौलिक् वसु. "यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता" गीता ६-१९। "अपि लङ्घितमध्वानं बुबुधे न बुधोपमः" रघु० १-४७।

उपमात् लुपमात् (स्त्री०) 1. धात्री, दादि, साकु तायी. उपमिता मात्रा। [तायिगे समानवागि साकुवुदरिन्द ऊ हसರು]. 2. तायिगे समान राद—(1) तायिय सहोदरियरु. (2) तंदिय सहोदरियरु. (3) चिक्यप्प दौड्ड प्पुंदिर हेंडति यरु. (4) सौदर मवान हेंडति. (5) हेंडतिय तायि मत्तु (6) हिरियण्ण हेंडति. "मातृवसा

मातुलानी पितृव्यस्त्री पितृवसा। इवश्रूः पूर्वजपत्नी च मातृतुल्याः प्रकीर्तिताः"। (वि०) 3. हौलिक् वसु, सादृश्यकौण्डुवसु. उपमाति—उप + मा (माने) "तृच्" (३-१-१३३)। "अस्याधिकस्योप-मयोपमाता" नैष० ७-१६। स्त्रियां "डीप्" (४-१-५)। -मात्री -मात्री.

उपमान लुपमान (न०) 1. सादृश्य, हौलिक्, साम्य. उप + मा (माने) भावे "ल्युट्" (३-३-११५)। (वि०) 2. हौलिक् वसु, (लुपमैयक्) यावुदर हौलिक् कौण्डुवुदुदौ अदु. उपमीयतेनेन—उप + मा कर० "ल्युट्" (३-३-११७)। चन्द्र इव मुखम् एಂಬल्लि मुखक् चन्द्रन सादृश्य वसु कौण्डुवुदरिन्द चन्द्रनु लुपमान. "उपमानस्यापि सखे प्रत्युपमानं वपुस्तस्याः" विक्र० २-३। 3. सादृश्य ज्ञान, हौलिक् यिरुवुदेंब तिल्लक्, लुपमितिगे साधनवाद ज्ञान, प्रत्यक्षादि प्रमाणगल्लौण्डु; गवय पदवाच्यवाद प्राण यारुदेंदु तिल्ल दवनु "गोसदृशो गवयः" एंब वाक्यवसु केलि दाग गवयदल्लि गौसादृश्यज्ञानवुंटागि अदर (गवय पदद) अर्धवसु तिल्लकुक्कु वुदरिन्द ऊ सादृश्यज्ञानवु लुपमान. इदु लुपमितिगे साधन (करण)वागुवुदु. संज्ञा-संज्ञिसंबन्धप्रतीतिरुपमितिः। उपमितिकरणमुपमानम्।

उपमित लुपमिति (वि०) 1. हौलिक् लुप्प, हौलिक् कौण्डुलुप्प (लुपमैय). उप + मा (माने) "क्तः" (३-२-१०२)। पुरुषो व्याघ्र इव एंबल्लि पुरुषनिगे व्याघ्र द हौलिक् कौण्डुरु वुदरिन्द पुरुषनु लुपमिति (लुपमैय). "उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे" पा० सू० २-१-५६। 2. लुपमानप्रमाणदिन्द तिल्ल लुप्प. "गोसदृशो गवयः" एंब वाक्यदिन्द गवय दल्लि गौसादृश्यज्ञानवुंटागि गवयो गोपदवाच्यः एन्दु गवयपदार्थवु लुपमानप्रमाण दिन्द तिल्ललुडुवुदरिन्द गवयवु लुपमिति.

उपमिति लुपमिति (स्त्री०) 1. सादृश्य, साम्य, हौलिक्. उप + मा (माने) भावे "क्तिन्" (३-३-९४)। "कुतः परं भव्यमहो महीयसी तदाननस्योप-



मितौ दरिद्रता" नैष० १-२४। 2. साधारण धर्मः।  
उप + मा कर० "क्तिन्"। 3. लुपमालोकारः।  
4. सादृश्यं ज्ञानं न द फल; सादृश्यं ज्ञानं  
दिन्दुं तागुव गवयादि पदार्थज्ञानं. गवय  
द्वि गौसादृश्यं ज्ञानं तागु गवय पद  
वाच्यं यावद्विन्दुं त्रियं तावदे लुपमिति.

उपमेय लुपमेय (न०) प्रकृत, वरुण, प्रसिद्ध  
वाद ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನೊಡನೆ ಹೋಲಿಸಲ್ಪಡುವ  
ವಸ್ತು. चन्द्र इव मुखम् ಎಂಬಲ್ಲಿ ಮುಖಕ್ಕೆ ಚಂದ್ರನ  
ಹೋಲಿಕೆ ಕೊಡುವುದರಿಂದ ಮುಖವು ಉಪಮೇಯ.  
उपमीयतेऽसौ—उप+मा (माने) "यत्" (३-१-९७)।  
"भूयिष्ठमासीदुपमेयकान्तिर्मयूरपृष्ठाश्रयिणा गुहेन" रघु०  
६-४।

उपमेयोपमा लुಪಮೇಯೋಪಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರ್ಥ  
ಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ; ಒಂದು ವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ವರ್ಣಿತ  
ವಾದ ಪ್ರಸಿದ್ಧೋಪಮಾನ ಮತ್ತು ಉಪಮೇಯ  
ಗಳನ್ನು ವಾಕ್ಯಾಂತರದಲ್ಲಿ ಪರ್ಯಾಯವಾಗಿ ಉಪ  
ಮಾನವನ್ನು ಉಪಮೇಯವನ್ನಾಗಿಯೂ, ಉಪಮೇಯ  
ವನ್ನು ಉಪಮಾನವನ್ನಾಗಿಯೂ ವರ್ಣಿಸುವುದು ಉಪ  
ಮೇಯೋಪಮಾಲಂಕಾರವಾಗುವುದು. "पर्यायेण  
द्वयोस्तच्चेदुपमेयोपमा मता। धर्मोऽथ इव पूर्णश्रीरर्थो  
धर्म इव त्वयि" चन्द्रा०। ಇಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ವಾಕ್ಯ  
ದಲ್ಲಿ ಧರ್ಮವು ಉಪಮೇಯವಾಗಿಯೂ, ಅರ್ಥವು  
ಉಪಮಾನವಾಗಿಯೂ ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಎರಡನೆಯ  
ವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ಅರ್ಥವು ಉಪಮೇಯವಾಗಿಯೂ,  
ಧರ್ಮವು ಉಪಮಾನವಾಗಿಯೂ ವರ್ಣಿತವಾಗಿರು  
ವುದರಿಂದ ಉಪಮೇಯೋಪಮಾಲಂಕಾರ.

उपयत् लुपयत् (वि०) ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬಂದು ಸೇರುವ,  
ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬರುವ. उप + इण् (गती) "शत्"  
(३-२-१२४)। स्त्रियां "डीप्" (४-१-६)। -यती  
-यति. "ललिताः सखीरिव बृहज्जघनाः सुरनिम्नगा-  
मुपयतीः सरितः" किरा० ६-१६।

उपयन्तु लुपयन्तु (पु०) (ವಿವಾಹ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ)  
ಪತಿ, ಮದುವಣಿಗ, ವರ. उप + यम (उपरमे) "तृच्"  
(३-१-१३३)। "अथोपयन्तारमलं समाधिना न  
रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्" कुमा० ५-४५।

उपयम लुपयम (पु०) 1. ವಿವಾಹ, ಮದುವೆ.  
उप+यम (उपरमे) "अप्" (३-३-६३)। "कन्यात्व-

जातोपयमा सलज्जा नवयौवना" सा० द०। [विवाहಕ್ಕೆ  
"उद्वाह" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ಅಂಕೆ, ಹತ್ತಿರ, ನಿರ್ಬಂಧ.  
(अव्य०) 3. ಯಮನ ಸಮೀಪ. "उपयमं  
नयतीति मन्ये" चं० रा०।

उपयमन लुपयमन (न०) 1. ವಿವಾಹ, ಮದುವೆ.  
उप + यम (उपरमे) "ल्युट्" (३-३-११५)।  
2. ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ತರುವುದು, ನಿರ್ಬಂಧದಲ್ಲಿರುವುದು.

उपयाचक लुपयाचक (वि०) ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದು  
ಬೇಡುವ, ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬಂದು ಯಾಚಿಸುವ. उप+ट्  
याच् (याच्यायाम्) "ण्वल्" (३-१-१३३)।

उपयाचन लुपयाचन (न०) ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದು  
ಯಾಚಿಸುವುದು, ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬಂದು ಬೇಡುವುದು.  
उप+ट् याच् (याच्यायाम्) "ल्युट्" (३-३-११५)।

उपयाचित लुपयाಚಿತ (न०) 1. ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದು  
ಬೇಡುವುದು. उप+ट् याच् (याच्यायाम्) "क्तः"  
(३-३-११४)। 2. ದೇವರ ಸನ್ನಿಧಿಗೆ ಬಂದು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿ  
ಕೊಳ್ಳುವುದು, ಹರಕೆ. (वि०) 3. ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದು  
ಯಾಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.  
कर्म० "क्तः" (३-२-१०२)। "त्वया पुरस्तादुपयाचितो  
यः सोऽयं वटः श्याम इति प्रतीतः" रघु० १३-५३।  
4. ಇಷ್ಟಸಿದ್ಧಿಗಾಗಿ ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಕೊಡುವ ಬಲಿ,  
ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಅರ್ಪಿಸುವುದಾಗಿ ಹೇಳಿಕೊಂಡ ಪಶು  
ಮೊದಲಾದುದು. "उपयाचितदानेन यतो देवा  
अभीष्टदाः" पञ्चत०। "अद्य मया भगवत्याः करालायाः  
प्रागुपयाचितं स्त्रीरत्नमुपहतव्यम्" मालती० ५।

उपयाचितक लुपयाಚಿತಕ (न०) "उपयाचित"  
ಪದದ ಅರ್ಥ. "कृतविविधदेवतोपयाचितकानि सिद्धा-  
यतनानि" काद०। "यद्दीयते तु देवेभ्यो मनोराज्यस्य  
सिद्धये। उपयाचितकं दिव्यदोहदं तद्विदुर्बुधाः" हारा०।

उपयात लुಪಯಾತ (वि०) ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದ. उप+या  
(प्रापणे) "क्तः" (३-४-७२)।

उपयान लुಪಯಾನ (न०) ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬರುವುದು,  
ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬರುವುದು. उप + या (प्रापणे) "ल्युट्"  
(३-३-११५)। "हरोपयाने त्वरिता बभूव स्त्रीणां  
प्रियालोकफलो हि वेपः" कुमा० ७-२२।

उपयाम लುಪಯಾಮ (पु०) 1. ವಿವಾಹ, ಮದುವೆ.  
उप+यम (उपरमे) "धक्" (३-३-१८)। 2. ಯಜ್ಞದ  
ಒಂದು ಮರದ ಪಾತ್ರೆ.



उपयायिन् ಉಪಯಾಯಿನ್ (ವಿಂ) ಸಮಾಪಿಸುವ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬರುವ. ಉ+ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಞಿನ್" (3-1-134)।

उपयुक्त ಉಪಯುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. "ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅನುಭವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ." ಉ+ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। 2. ಉಪಯೋಗಕ್ಕೆ ಬರುವ, ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಬರಬಹುದಾದ. 3. ನ್ಯಾಯವಾದ, ಯೋಗ್ಯವಾದ.

उपयुज्यमान ಉಪಯುಜ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಉ+ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನ್" (3-2-124)।

उपयोग ಉಪಯೋಗ (ಪುಂ) 1. ಉಪಕಾರ, ಕಾರ್ಯ ಸಿದ್ಧಿಗೆ ಅನುಕೂಲವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಉ+ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) "ಘ್" (3-3-108)। "व्रजन्ति विद्याधरसुन्दरीणामनङ्गलेखक्रियोपयोगम्" ಕುಮಾಂ 1-9। 2. ಆಚರಣೆ, ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿಗೆ ಅನುಕೂಲವಾದ ಕೆಲಸ. 3. ಭೋಜನ. "अपिधात्रविहारणामुपयोगं सुखावहम्"। 4. ನಿಯಮ ಪೂರ್ವಕವಾದ ವಿದ್ಯಾ ಸ್ವೀಕಾರ. "आख्यातोपयोगे" ಪಾಂ ಸೂಂ 1-4-29।

उपयोगिन् ಉಪಯೋಗಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಕಾರ್ಯಸಾಧನೆಗೆ ಅನುಕೂಲವಾದ. ಉ+ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) "ಧಿನ್" (3-2-142)। 2. ಪ್ರಯೋಜನಕರವಾದ, ಉಪಯುಕ್ತವಾದ, ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಬರುವ. 3. ನ್ಯಾಯವಾದ, ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಉಪಯೋಗೋಪಯುಕ್ತ "ಇನ್" (4-2-114)। 4. ಸುಖಸಾಧನವಾದ ವಸ್ತು. "अस्ति कन्यारत्नं मे गृह्यतामुपयोगि चेत्"।

उपरक्त ಉಪರಕ್ತ (ಪುಂ) ರಾಹುವಿನಿಂದ ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ— 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಚಂದ್ರ. ಉ+ರಕ್ತ (ರಾಗ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। 3. ರಾಹು. 4. ಬಣ್ಣದಿಂದ ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಣ್ಣದಲ್ಲಿ ಅದ್ದಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ವ್ಯಸನದಿಂದ ಪೀಡಿತನಾದ, ದುಃಖಾಕ್ರಾಂತನಾದ. "उपरक्तस्तु स्वर्भानौ व्यसनातुरे। राहुग्रस्तार्कशशिनोः" ಹೇಮಂ। 6. ಕೆಂಪಗೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "द्विपद्वेषोपरक्ताङ्ग-सङ्गिनीः स्वेदविप्रुषः" ಮಾಘಂ 2-10। 7. ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿದ. "स्वोपरक्तबुद्धिविषयीकरणम्"।

उपरक्ष ಉಪರಕ್ಷ (ಪುಂ) ಅಂಗರಕ್ಷಕ, ಸಮಾಪದಲ್ಲಿದ್ದು ಕಾಪಾಡುವವನು, ಮೈಗಾವಲು. (Body-Guard). ಉಪರಕ್ಷತಿ—ಉ+ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಅಚ್" (3-1-134)।

उपरक्षण ಉಪರಕ್ಷಣ (ನಂ) ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಸೈನ್ಯವನ್ನು ನೇಮಿಸುವಿಕೆ, ಪಹರೆ, ಕಾವಲು. ಉ+ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

उपरत ಉಪರತ (ವಿಂ) 1. ಕೆಲಸದಿಂದ ವಿಶ್ರಾಂತಿ ಹೊಂದಿದ, ವಿರಾಮಹೊಂದಿದ. ಉ+ರಮ್ (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (3-4-92)। "भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः" ಗೀತಾ 2-35। 2. ಮೃತಿಹೊಂದಿದ. 3. ನಿಂತುಹೋದ, ಬಿಡುವುಹೊಂದಿದ. "रजस्युपरते साध्वी स्नानेन स्त्री रजस्वला" ಮನುಂ 4-66। 4. ಪ್ರಸಂಚದಲ್ಲಿ ಬೇಸರಹೊಂದಿದ, ಇಹಲೋಕದಲ್ಲಿ ಅಸಹ್ಯ ಬುದ್ಧಿಹುಟ್ಟಿದ, ವಿರಕ್ತನಾದ (ಸಂನ್ಯಾಸಿ).

उपरति ಉಪರತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೆಲಸದಿಂದ ವಿಶ್ರಾಂತಿ ಹೊಂದುವುದು, ವಿರಾಮ ಹೊಂದುವುದು. ಉ+ರಮ್ (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)। 2. ವಿಷಯಗಳಿಂದ ಮನಸ್ಸನ್ನು ತಡೆಯುವುದು. 3. ಮೃತಿ ಹೊಂದುವುದು. 4. ಆಸೆಯನ್ನು ತೊರೆಯುವುದು, ವೈರಾಗ್ಯಹೊಂದುವುದು.

उपरत्न ಉಪರತ್ನ (ನಂ) ಕೆಳದರ್ಜೆಯ ರತ್ನ, ರತ್ನಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದ ರಂಗೂನ್ ವಜ್ರ ಮೊದಲಾದುದು. "उपरत्नानि काचश्च कर्पूरोऽश्मा तथैव च। मुक्ता शुक्तिस्तथा शङ्ख इत्यादीनि बहून्यपि। गुणा यथैव रत्नानामुपरत्नेषु ते तथा। किन्तु किञ्चित्ततो हीना विशेषोऽयमुदाहृतः"।

उपरथ्या ಉಪರಥ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಿಕ್ಕರಸ್ತೆ, ಕಡಿದಾದ ದಾರಿ.

उपरम ಉಪರಮ (ಪುಂ) "ಉಪರತಿ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಉ+ರಮ್ (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) "ಘ್" (3-3-108)।

उपरमण ಉಪರಮಣ (ನಂ) 1. ವಿಶ್ರಾಂತಿ, ವಿರಾಮ. 2. ನಿಂತುಹೋಗುವುದು, ಬಿಡುವು. 3. ವೈರಾಗ್ಯ ಹೊಂದುವುದು, ಪ್ರಾಸಂಚಿಕ ಸುಖದಿಂದ ನಿವೃತ್ತಿ ಹೊಂದುವುದು. ಉ+ರಮ್ (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

उपरस ಉಪರಸ (ಪುಂ) ಪಾದರಸದಂತಿರುವ ಗಂಧಕ ಮೊದಲಾದುದು. ಉಪಮಿತ ರಸೇನ।

उपराग ಉಪರಾಗ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ-ಚಂದ್ರರ ಗ್ರಹಣ, ರಾಹುವು ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರರನ್ನು ಆಕ್ರಮಿಸುವುದು. ಉ+ರಜ (ರಾಗ) "ಘ್" (3-3-108)। "चन्द्रोपरागं प्रति तु केनापि विप्रलब्धासि" ಮುದ್ರಾಂ 1।



“ಉಪರಾಗಂತೇ ಶಶಿನಃ ಸಮುಪಗತಾ ರೋಹಿಣಿ ಯೋಗಮ್”  
ಶಾಕುಂ ೭-೨೨। 2. ಅರುಣ್ಯ, ಕೆಂಪು. “ಕೋಪೋಪರಾಗ-  
ಜನಿತಾಂ ತು ಮುಖೇಂದುಬಿಂಬೇ ಹರ್ತು ಕಸೋ ಯದಿ ಪರಂ ಕರುಣಾ  
ಮಯಿ ಸ್ಥಾತ್” ರತ್ನಾಂ ೩-೧೪। 3. ರಾಹು. 4. ಅವಿನಯ,  
ಅವಿಧೇಯತೆ. 5. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ, ಬೈಗಳು. 6. ವ್ಯಸನ, ದುಃಖ. 7. ಉಪದ್ರವ, ತೊಂದರೆ,  
ದುರ್ಘಟನೆ, ವಿಪತ್ತು. “ವಿಭರ್ಷಿ ಚಾಕಾರಮನಿವೃತ್ತಾಂ  
ಮೃಣಾಲಿನಿ ಹೈಮಮಿವೋಪರಾಗಮ್” ರಘುಂ ೧೬-೭। “ಉ-  
ಪರಾಗಸ್ತು ಪುನಿ ಸ್ಥಾತ್ ರಾಹುಗ್ರಾಸೇರ್ಜಕಚಂದ್ರಯೋಃ। ದುರ್ಯೇ ಗ್ರಹಕಲ್ಲೋ  
ವ್ಯಸನೇಽಪಿ ನಿಗದ್ಯತೇ” ಮೇದಿಂ। 8. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ  
ಗುಣವು ಅದರ ಹತ್ತಿರವಿರುವ ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಸೇರು  
ವುದು; ರತ್ನದ ಕೆಂಪುಬಣವು ಅದರ ಹತ್ತಿರವಿರುವ  
ಸ್ಪಟಿಕದಲ್ಲಿ ಸಂಕ್ರಾಂತವಾಗುವುದು ಉಪರಾಗವು.

ಉಪರಾಮ ಉಪರಾಮ (ಪುಂ) 1. ವಿಶ್ರಾಂತಿ, ವಿರಾಮ.  
ಉ + ರಮ (ಕೃಡಾಯಾಮ್) “ಛ” (೩-೩-೧೮)।  
2. ಬಿಡುವು, ನಿಲುಗಡೆ, ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು.

ಉಪರಾವ ಉಪರಾವ (ಪುಂ) ಹತ್ತಿರದ ಕಬ್ಬ, ಸಮಾಪ  
ದಲ್ಲಾದ ಸದ್ದು. ಉ ಸಮೀಪೇ ರಾವಃ।

ಉಪರಿ ಉಪರಿ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಮೇಲುಗಡೆ, ಮೇಲುಭಾಗ.  
2. ಮೇಲುಗಡೆಯಿಂದ, ಮೇಲುಭಾಗದಿಂದ.  
3. ಮೇಲುಗಡೆಯಲ್ಲಿ, ಮೇಲುಭಾಗದಲ್ಲಿ. ಊರ್ವ್ “ರಿಲ್”  
ಉಪಾದೇಶಶ್ಚ (೪-೩-೩೧)। ಊರ್ವ್ ಶಬ್ದದ ಪ್ರಥಮಾ,  
ಪಂಚಮಾ ಮತ್ತು ಸಪ್ತಮಾ ವಿಭಕ್ತಿಗಳ ಎಲ್ಲಾ  
ಅರ್ಥವನ್ನೂ “ಉಪರಿ” ಪದವು ಕೊಡುವುದು. ಊರ್ವ್  
ನಗರಮ್। ಊರ್ವಾ ವಸತಿಃ। ಊರ್ವಾತ್ ಪುರಾತ್ ಊರ್ವಾಃ ವಾ  
ವಸತೇರಾಗತಃ। ಊರ್ವ್ ನಗರೇ ಊರ್ವಾಃ ವಾ ವಸತೌ ವಸತಿ  
ಈ ಎಲ್ಲಾ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲೂ “ಉಪರಿ” ಪದವು ಪ್ರಯೋಗ  
ಗೊಳ್ಳುವುದು. “ತ್ವಯ್ಯಾಸತ್ತೇ ನಯನಮುಪರಿಸ್ಪಂದಿ ಶಕ್ತೇ  
ಮೃಗಾಕ್ಷಯಾ ಮೀನಕ್ಸೋಭಾನ್ವಲಕುಲಯಶ್ರೀತುಲಾಮೇಷ್ಯತೀತಿ” ಮೇಘಂ  
೨-೩೨। “ಅವಾಙ್ಮುಖಸ್ಯೋಪರಿ ಪುಷ್ಪವೃಷ್ಟಿಃ ಪಪಾತ ವಿಜ್ರಾಧರ-  
ಹಸ್ತಮುಕ್ತಾ” ರಘುಂ ೨-೬೦। “ಉಪಯುಪರಿ ಪಶ್ಯಂತಃ ಸರ್ವೇ ಏವ  
ದರಿದ್ರತಿ” ಹಿತೋಂ ೨-೨। “ರಾಮಾಣಾಮುಪರಿ ವಿವಸ್ವತಃ  
ಸ್ಥಿತಾಂ ನಾಸೇದೇ ಚರಿತಗುಣತ್ವಮಾತಪತ್ರೈಃ” ಕಿರಾಂ ೭-೨।  
4. ಇದಲ್ಲದೆ, ಇನ್ನೂ ಅಧಿಕವಾಗಿ, ಇನ್ನೂ ಮುಂದೆ.  
“ಶತಾನ್ಯುಪರಿಚೈವಾಷ್ಟೌ ತಥಾ ಭೂಯಶ್ಚ ಸಪ್ತತಿಃ” ಭಾಂ।  
5. ಅನಂತರ, ಬಳಿಕ, ತರುವಾಯ. “ಸರ್ಪಿಃ ಪೀತ್ವೋಪರಿ  
ಪಯಃ ಪಿಬೇತ್” ಮುಶ್ರುತಂ। “ಮೂರ್ತಾದುಪರಿ ಉಪಾಧ್ಯಾಯಶ್ಚೇ-  
ದಾಗಚ್ಛೇತ್” ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಉಪರಿಚರ ಉಪರಿಚರ (ಪುಂ) 1. ಜೇದಿದೇಶದ ವಸು  
ವೆಂಬ ಒಬ್ಬ ರಾಜ. [ಇವನು ಇಂದ್ರನೊಡನೆ ಸ್ನೇಹ  
ಬೆಳೆಸಿಕೊಂಡು ಅವನಿಂದ ವಿಮಾನವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿ  
ಸದಾ ಅದರಲ್ಲೇ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿದ್ದುದರಿಂದ ಇವನಿಗೆ  
ಉಪರಿಚರನೆಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು. ಒಂದು ದಿನ ಇವನು  
ಇಂದ್ರಧ್ವಜವನ್ನು ಪೂಜಿಸುತ್ತಿದ್ದುದನ್ನು ಕಂಡು  
ಇಂದ್ರನು ಬಹಳ ಸಂತೋಷಗೊಂಡು ಇದೇ ರೀತಿ  
ನನ್ನ ಪೂಜೆಯನ್ನು ನಡೆಯಿಸುವ ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬ ರಾಜನ  
ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿ ಐಶ್ವರ್ಯ, ವಿಜಯ ಮುಂತಾದುದು  
ಸದಾ ನೆಲೆಸಲೆಂದು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದನು. ಈ ರಾಜನೇ  
ಇಂದ್ರಧ್ವಜದ ಪೂಜೆಯನ್ನು ಆರಂಭಿಸಿದನು.  
ಉಪರಿಚರವಸುವು ಒಮ್ಮೆ ಮುತುಕಾಲದಲ್ಲಿದ್ದ ತನ್ನ  
ಪತ್ನಿಯನ್ನು ಸ್ಮರಿಸಿಕೊಂಡಾಗ ಆತನ ವೀರ್ಯವು  
ಸ್ವಲಿತವಾಗುವುದು. ಅದನ್ನು ನುಂಗಿದ ಒಂದು  
ಮಾನಿನ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಮತ್ಸ್ಯರಾಜನೆಂಬ ಒಬ್ಬ  
ಮಗನೂ, ಮತ್ಸ್ಯಗಂಧೆಯೆಂಬ ಒಬ್ಬ ಮಗಳೂ  
ಹುಟ್ಟಿದರು. ಈ ಮತ್ಸ್ಯಗಂಧೆಯೇ ಕನ್ಯಾವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ  
ಪರಾಶರರಿಂದ ವೇದವ್ಯಾಸರನ್ನು ಪಡೆದ ಮತ್ತು  
ಶಂತನು ಮಹಾರಾಜನನ್ನು ಮದುವೆಯಾದ ಸತ್ಯವತಿ.]

“ಸ ತಾಂ ಪೂಜಾಂ ಮಹೇಂದ್ರಸ್ತು ದೃಷ್ಟ್ವಾ ದೇವಃ ಕೃತಾಂ ಶುಭಾಮ್।  
ವಸುನಾ ರಾಜಮುಖ್ಯೇನ ಪ್ರೀತಿಮಾನಬ್ರವೀತ್ಪ್ರಭುಃ। ಯೇ ಪೂಜಯಿಷ್ಯಂತಿ  
ನರಾ ರಾಜಾನಶ್ಚ ಮಹಂ ಮಮ। ಕಾರಯಿಷ್ಯಂತಿ ಚ ಮುದಾ ಯಥಾ  
ಚೇದಿಪತಿರ್ನೃಪಃ। ತेषಾಂ ಶ್ರೀವಿಜಯಶ್ಚೈವ ಸರಾಷ್ಟ್ರಾಣಾಂ ಭವಿ-  
ಷ್ಯತಿ। ತेषಾಂ ಸ್ಥಿತೌ ಜನಪದೌ ಮುದಿತಶ್ಚ ಭವಿಷ್ಯತಿ।  
ಏವಂ ಮಹಾತ್ಮನಾ ತೇನ ಮಹೇಂದ್ರೇಣ ನರಾಧಿಪಃ। ವಸುಃ ಪ್ರೀತ್ಯಾ  
ಮಥವತಾ ಮಹಾರಾಜೋಽಭಿಸತ್ಕೃತಃ” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೪।  
(ವಿಂ) 2. ಮೇಲುಗಡೆ ಸಂಚರಿಸುವ. ಉಪರಿ ಚರತಿ—  
ಚರ (ಗತೌ) “ಠಃ” (೩-೨-೧೬)।

ಉಪರಿತನ ಉಪರಿತನ (ವಿಂ) ಮೇಲುಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ,  
ಮೇಲುಗಡೆಯಲ್ಲಿರುವ. ಉಪರಿ ಭವಃ “ಠ್ಯಲ್” ತುಡ್ ಚ  
(೪-೩-೨೩)।

ಉಪರಿಷ್ಠಾತ್ ಉಪರಿಷ್ಠಾತ್ (ಅವ್ಯಂ) “ಉಪರಿ” ಪದದ  
ಅರ್ಥ. ಊರ್ವ್ “ರಿಷ್ಠಾತಿಲ್” ಉಪಾದೇಶಶ್ಚ (೪-೩-೩೧)।  
“ಸ್ಫುಟತರಮುಪರಿಷ್ಠಾದಲ್ಪಮೂರ್ತೈರ್ಧ್ರುವಸ್ಯ ಸ್ಫುರತಿ ಸುರಮುನೀನಾಂ  
ಮಂಡಲಂ ವ್ಯಸ್ತಮೇತತ್” ಮಾಘಂ ೧೧-೩।

ಉಪರೀತಕ ಉಪರೀತಕ (ಪುಂ) ಸಂಭೋಗಕಾಲದ ಒಂದು  
ವಿಧ ಬಂಧ. “ಊರಾವೇಕಪದಂ ಕೃತ್ವಾ ದ್ವಿತೀಯಂ ಸ್ಕಂಧಸಂಸ್ಥಿತಮ್।  
ನಾರೀಂ ಕಾಮಯತೇ ಕಾಮೀ ಬಂಧಃ ಸ್ಯಾದುಪರೀತಕಃ” ರತಿಮಂಂ।



**ಉಪರೂಪ** (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರತಿಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉ + ರುಧಿ (ಆವರಣ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಅಯಮತಿಜರಣ: ಪ್ರಕಾಮಗುರ್ವಿರಲಘು-ವಿಲಿಖಿಪಯೋಧರೂಪಃ" ಮಾಘಂ 4-29. 2. ಅಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುತ್ತಿಗೆಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. "ತತ: ಸಮಂತಾದುಪರೂಪಂ ಕುಸುಮಪುರಮಲೋಕ...." ಮುದ್ರಾಂ 2. 3. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಉಪರೂಪಕ** (ನಂ) ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ, ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯದ ಹತ್ತು ವಿಧ ರೂಪಕಗಳಲ್ಲಿ ನಾಟಕಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದ ಕೆಳದರ್ಜೆಯ ರೂಪಕ. ಉಪಗತಂ ರೂಪಕಂ ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯಮ್ ಸಾದೃಶ್ಯೇನ | ಉಪರೂಪಕ ಗಳು: (1) ನಾಟಕ, (2) ತ್ರೋಟಕ, (3) ಗೋಷ್ಠೀ, (4) ಸಟ್ಟಕ, (5) ನಾಟ್ಯರಾಸಕ, (6) ಪ್ರಸ್ಥಾನ, (7) ಉಲ್ಲಾಸ, (8) ಕಾವ್ಯ, (9) ಪ್ರೇಮಣ, (10) ರಾಸಕ, (11) ಸಂಲಾಪಕ, (12) ಶ್ರೀಗದಿತ, (13) ಶಿಲ್ಪಕ, (14) ವಿಲಾಸಿಕಾ, (15) ದುರ್ಮಲ್ಲಿಕಾ, (16) ಪ್ರಕರಣೀ, (17) ಹಲ್ಲೀಶ ಮತ್ತು (18) ಭಾಣಿಕಾ ಎಂದು ಹದಿನೆಂಟು ವಿಧ. ಸಾಂ 20 6-4-6. [ಲಕ್ಷಣಗಳಿಗೆ ಆಯಾ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].

**ಉಪರೂಪ** (ಛಂ) 1. ತಡೆ, ಅಡ್ಡಿ, ಪ್ರತಿಬಂಧಕ, ವಿಘ್ನ. ಉ + ರುಧಿ (ಆವರಣ) "ಘ" (3-3-102). "ತಪೋವನನಿವಾಸಿನಾಮುಪರೂಪೋ ಮಾಭೂತ್ | ಏತಾವತ್ಯೇವ ರಥಂ ಸ್ಥಾಪಯ ಯಾವದವತರಾಮಿ" ಶಾಕುಂ 1. 2. ತೊಂದರೆ, ಉಪದ್ರವ, ಪೀಡೆ, ತ್ರಾಸ. 3. ಮುಚ್ಚುವಿಕೆ, ಮರೆಮಾಡುವಿಕೆ. "ಶರತ್ಪ್ರಮೃಷ್ಟಾಮ್ಬುಧರೋಪರೂಪ: ಶಶಿವಿ ಪರ್ಯಾಪ್ತಿಕಲೋ ನಲಿನ್ಯಾ:" ರಘುಂ 6-44. 4. ಅಕ್ರಮಿಸುವಿಕೆ, ಮುತ್ತಿಗೆಹಾಕುವಿಕೆ.

**ಉಪರೂಪಕ** (ನಂ) 1. ಒಳಗಡೆಯ ಕೋಣೆ, ಒಳಭಾಗದ ಕೊಠಡಿ. (ವಿಂ) 2. ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವ, ತಡೆಯುವ, ವಿಘ್ನವುಂಟುಮಾಡುವ. ಉ + ರುಧಿ (ಆವರಣ) "ಘ" (3-3-102). 3. ಮುಚ್ಚುವ, ಮರೆಮಾಡುವ. 4. ತೊಂದರೆಪಡಿಸುವ, ಪೀಡಿಸುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಠಾಪ್" (4-1-4). -ರೂಪಿಕಾ -ರೂಪಿಕಾ.

**ಉಪರೂಪನ** (ನಂ) 1. "ಉಪರೂಪ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಉ + ರುಧಿ (ಆವರಣ) "ಘ" (3-3-102). (ವಿಂ) 2. "ಉಪರೂಪಕ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಕರ್ಮಂ "ಘ:" (3-3-102).

**ಉಪರೂಪಿಣಿ** (ವಿಂ) "ಉಪರೂಪಕ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಉ + ರುಧಿ (ಆವರಣ) "ಘ:" (3-3-102). "ಸುಖಾನಿ ಸೋಮುಕ್ತ ಸುಖೋಪರೂಪಿಣಿ ವೃತ್ತಂ ಹಿ ರಾಜಾಮುಪರೂಪ-ವೃತ್ತಮ್" ರಘುಂ 10-10.

**ಉಪಲ** (ಛಂ) 1. ಕಲ್ಲು, ಶಿಲೆ, ಬಂಡೆ. ಉ + ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ:" (3-3-102). "ವಿತತ-ಶೀಕರರಾಶಿಭಿಃ ಸ್ಪೃಶ್ಯತೇಽಪಲರೂಪವಿವರ್ತಿಭಿರಮ್ಬುಭಿ:" ಕಿರಾಂ 4-14. "ಉಪಲಶಕಲಮೇತದ್ವೇದಕಂ ಗೋಮಾನಾಮ್" ಮುದ್ರಾಂ 3-14. 2. ಬೆಲೆಬಾಳುವ ಶಿಲೆ, ರತ್ನ, ಮಣಿ. "ದಂತೋಜ್ಜವಲಾಸು ವಿಮಲೋಪಲಮೇಖಲಾಂತಾ: ಸದ್ರಲಚಿತ್ರ-ಕಟಕಾಸು ಬೃಹನ್ನಿತಮ್ಬಾ:" ಮಾಘಂ 4-40. 3. ಮರಳು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ-ಲಾ. 4. ಬೆಣಚುಕಲ್ಲು. 5. ಸಕ್ಕರೆ. "ಉಪಲೋ ಗ್ರಾವರತನಯೋ: | ಉಪಲಾ ತು ಶರ್ಕರಾಯಾಮ್" ಹೇಮಂ |

**ಉಪಲಕ್ಷಕ** (ವಿಂ) 1. ಸೂಚಿಸುವ, ತಿಳಿಸುವ, ತೋರಿಸುವ. ಉ + ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನಾಕ್ಷನಯೋ:) "ಘ" (3-3-102). 2. ತಿಳಿಯುವ, ಲಕ್ಷ್ಯವಿಟ್ಟು ನೋಡುವ. "ಮೇಧಾವಿ ವಾಕ್ಪದ: ಪ್ರಾಜ್ಞ: ಪರಿಚಿತ್ತೋಪ-ಲಕ್ಷಕ: | ಧೀರೋ ಯೋಕ್ತವಾದೀ ಚ ಏಷ ದ್ವಿತೀಯೋ ವಿಧೀಯತೇ" |

**ಉಪಲಕ್ಷಣ** (ನಂ) 1. ನೋಡುವಿಕೆ, ನೋಡಿ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ, ಅರಿಯುವಿಕೆ. ಉ + ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನಾಕ್ಷನಯೋ:) "ಘ" (3-3-102). "ವೇಲೋಪಲಕ್ಷಣಾರ್ಥ-ಮಾದಿಷ್ಟೋಽಸ್ಮಿ ತತ್ರಭವತಾ ಪ್ರವಾಸಾದುಪಾವೃತ್ತೇನ ಕಾಶ್ಯಪೇನ" ಶಾಕುಂ 4. 2. ಸೂಚಿಸುವಿಕೆ, ತೋರಿಸುವಿಕೆ, ತಿಳಿಸುವಿಕೆ. 3. (ಅಜಹತ್ ಸ್ವಾರ್ಥಲಕ್ಷಣೆಯಿಂದ) ತನ್ನ ಮತ್ತು ಬೇರೆ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವಿಕೆ. "ಕಾಕೇಮ್ಯೋ ದಧಿ ರಕ್ಷಯತಾಮ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಕಾಕ ಪದವು ಅಜಹತ್ ಸ್ವಾರ್ಥಲಕ್ಷಣೆಯಿಂದ ಕಾಗೆಗಳನ್ನೂ, ಇತರ ನಾಯಿ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನೂ ಬೋಧಿಸುವುದು. "ಸ್ವಾರ್ಥ ಪ್ರತಿಪಾದಕತ್ವೇ ಸತಿ ಸ್ವಾರ್ಥಸದೃಶೋಪರಾರ್ಥಪ್ರತಿಪಾದಕತ್ವ-ಮುಪಲಕ್ಷಣತ್ವಮ್" | 4. ಒಂದು ವಿಶೇಷ (ವಸ್ತು) ವನ್ನು ಕಂಡುಹಿಡಿಯಲು ಬೇಕಾದ ಗುರುತು, ತತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಆ ವಿಶೇಷದಲ್ಲಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಹಿಂದೆ ಒಂದು ಕಾಲದಲ್ಲಿದ್ದ ಅದರ ಸ್ಮರಣೆಯಿಂದ ವಿಶೇಷ (ವಸ್ತು) ವನ್ನು ಕಂಡು ಹಿಡಿಯಬಹುದಾದ ಗುರುತು. "ಕಾಕವತ್ ದೇವದತ್ತ-ಗೃಹಮ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಮೊದಲು ಕಾಗೆಯಿಂದ ಗುರ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ದೇವದತ್ತನ ಮನೆಯು (ವಿಶೇಷವು) ಕಾಗೆಯು ಹಾರಿ ಹೋದ ನಂತರವೂ ಅದರ ಸ್ಮರಣೆಯಿಂದ ಅದೇ ಮನೆಯೆಂದು ಗುರ್ತಿಸಲ್ಪಡುವುದರಿಂದ ಕಾಗೆಯು ಉಪಲಕ್ಷಣ.



ಉಪಲಾಧಿಪ್ರಿಯ ಉಪಲಾಧಿಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) ಚಮರೇಮೃಗ.

ವಾಲಧಿ:ಪ್ರಿಯೋಽಸ್ಯ | ಪೃಷೋಂ |

ಉಪಲಾಧಿ ಉಪಲಾಧಿ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಉಪ + ಡು ಲಭ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) |

"ತಸ್ಮಿನ್ ಗತೇ ಧಾಂ ಸುಕೃತೋಪಲಾಧಾಂ ತತ್ಸಂಭವಂ ಶಕ್ಷಣಮರ್ಣವಾಂತಾ" ರಘುಂ 1-2-22 | 2. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರವೃತ್ತಾವುಪಲಾಧಾಂ ತಸ್ಯಾ: ಸಂಪಾದಿಸಂಭವಾತ್" ರಘುಂ 1-2-60 |

ಉಪಲಾಧಿವತ್ ಉಪಲಾಧಿವತ್ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಿರುವ, ಪಡೆದಿರುವ. ಉಪ + ಡು ಲಭ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತವತ್:" (3-2-102) | 2. ತಿಳಿದಿರುವ, ಅರಿತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-6) | -ವತಿ-ವತೀ.

ಉಪಲಾಧಾರ್ಥ ಉಪಲಾಧಾರ್ಥ (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ ಅರ್ಥವುಳ್ಳ. ಉಪಲಾಧಾರ್ಥೋ ಯೇನ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ -ಲಾಧಾರ್ಥ -ಲಾಧಾರ್ಥ. 2. ನಡೆದ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಕಥೆ. "ಆಖ್ಯಾಯಿಕೋಪಲಾಧಾರ್ಥಾ" ಅಮಂ |

ಉಪಲಾಧಿ ಉಪಲಾಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಪಡೆಯುವಿಕೆ. 2. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ಉಪ + ಡು ಲಭ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94) |

ಉಪಲಾಧಿ ಉಪಲಾಧಿ (ಪುಂ) 1. ಆತ್ಮ, ಜೀವ. (ವಿಂ) 2. ಹೊಂದುವ, ಪಡೆಯುವ. ಉಪ + ಡು ಲಭ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ತೃಕ್" (3-1-133) | 3. ತಿಳಿಯುವ, ಅರಿಯುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-4) | -ಲಾಧಿ-ಲಾಧೀ.

ಉಪಲಾಭ ಉಪಲಾಭ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಪಡೆಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಉಪ + ಡು ಲಭ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಪ್ಯತ್" (3-1-124) | 2. ತಿಳಿಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ, ಅರಿಯಬಹುದಾದ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಹೊಂದಿ, ಪಡೆದು. 4. ಅರಿತು, ತಿಳಿದು. ಉಪ + ಡು ಲಭ "ಲ್ಯಪ್" (3-1-37) |

ಉಪಲಾಭ ಉಪಲಾಭ (ಪುಂ) 1. ಲಾಭ, ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಪಡೆಯುವಿಕೆ. ಉಪ + ಡು ಲಭ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಘಜ್" (3-3-18) | ನುಮ್ (3-1-67) | 2. ಹಿಂದಿನ ಜ್ಞಾನ, ಅರಿವು, ಅನುಭವ. "ಮಮ ಹಿ ಸಂಪ್ರತಿ ಪ್ರಾಕ್ತನೋಪಲಾಭಸಂಭಾವಿತಾ-ತ್ಮನ: ಸಂಸ್ಕಾರಸ್ಯ" ಮಾಲತೀಂ 4 | 3. ತಿಳಿದು ಕೊಳ್ಳುವುದು, ಅರಿತುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) | -ಲಾಭನಮ್ -ಲಾಭನಮ್. ಉತ್ಪತ್ತಿ. "ಚಂದ್ರಂ ವಿನ್ಯಾ ತದ್ಉಪಲಾಭನಹೇತುಭೂತಂ ಕ್ಷೀರೋದಮಾಶ್ರಯತಿ ಕಿಂ ತೃಪಿತಶ್ಚಕೋರ:" ಚಂ ರಾಂ |

ಉಪಲಾಲನ ಉಪಲಾಲನ (ನಂ) ಪ್ರೀತಿಸುವುದು, ಮುದ್ದಾಡುವುದು. ಉಪ + ಲಲ (ಔಪಾಸಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) |

ಉಪಲಾಲಿತ ಉಪಲಾಲಿತ (ವಿಂ) ಪ್ರೀತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುದ್ದಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಉಪ + ಲಲ (ಔಪಾಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (3-2-102) |

ಉಪಲಿಂಗ ಉಪಲಿಂಗ (ನಂ) ಭವಿಷ್ಯದ ಅನಿಷ್ಟದ ಸೂಚನೆ, ಅಪಶಕುನ, ಭೂಕಂಪ ಮೊದಲಾದ ಉಪದ್ರವ. "ಉಪಲಿಂಗಂ ತ್ವರಿಷ್ಠಂ ಸ್ಯಾದಜನ್ಯಂ ಡಿಂಬವಿಪ್ಲವೌ" ವೈಜಂ |

ಉಪಲೇಪ ಉಪಲೇಪ (ಪುಂ) 1. ಬಳಿಯುವುದು, ಪೂಸುವುದು. ಉಪ + ಲಿಪ (ಉಪದೇಹೇ) "ಘಜ್" (3-3-18) | 2. ಸಗಣೆ ಮೊದಲಾದವುಗಳಿಂದ ಸಾರಿಸುವುದು.

ಉಪಲೇಪನ ಉಪಲೇಪನ (ನಂ) 1. ಬಳಿಯುವುದು, ಪೂಸುವುದು. ಉಪ + ಲಿಪ (ಉಪದೇಹೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) | 2. ಸಗಣೆಯಿಂದ ಸಾರಿಸುವುದು. "ತತ್ರೈವ ದೇವಾಯತನೇ ಸಂಮಾರ್ಜನೋಪಲೇಪನಮಂಡನಾದಿಕಂ ಕರ್ಮ ಸಮಾಜ್ಞಾಪಯತಿ" ಪञ्ಚತಂ |

ಉಪಲೇಪಿನ್ ಉಪಲೇಪಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಬಳಿಯುವ, ಪೂಸುವ. ಉಪ + ಲಿಪ (ಉಪದೇಹೇ) "ಗಿಣಿ:" (3-2-98) | 2. ಸಗಣೆ ಮೊದಲಾದವುಗಳಿಂದ ಸಾರಿಸುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-4) | -ಲೇಪಿನಿ-ಲೇಪಿನೀ.

ಉಪವಕ್ತೃ ಉಪವಕ್ತೃ (ವಿಂ) 1. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಣೆಯಲ್ಲಿರುವ (ನ್ಯೂನಾತಿರೇಕಗಳನ್ನು ನೋಡಿ ಕೊಳ್ಳುವ) ಮುಖ್ಯಕ್ಕು, ಬ್ರಹ್ಮ. ಉಪವಕ್ತಿ ಉಪದಿಶತಿ ಉಪದಿಶತಿ ವಾ - ಉಪ + ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೇ) "ತೃಕ್" (3-1-133) | 2. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ನ್ಯೂನಾತಿರೇಕದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಸಲಹೆಕೊಡುವವನು, ಸದಸ್ಯ. "ಉಪವಕ್ತಾಽಧ್ಯಯುಪವಕ್ತೃಭೃತೀನಾಂ ಸರ್ವೇಷಾಂ ಕರ್ಮಣಾಮನುಜ್ಞಾತೃ-ಮಿತ್ಯಂ ಪ್ರಣಯೇತ್ಯಾದಿರೂಪಸ್ಯ ವಾಕ್ಯಸ್ಯ ವಕ್ತಾ ಸನ್ ಬ್ರಹ್ಮಾಸಿ ಸರ್ವೇಷಾಂ ಕರ್ಮಣಾಮವೇಕಲ್ಯಾಯಮುಪದ್ರಷ್ಟಾ ಸದಸ್ಯೋ ವಾಸಿ" ಭಾಂ |

ಉಪವನ ಉಪವನ (ನಂ) 1. ಉದ್ಯಾನ, ಕೈತೋಟ. ಉಪಮಿತಂ ವನೇನ | "ಪಾಂಡುಚ್ಛಾಯೋಪವನವೃತಯ: ಕೇತಕೈ: ಸುಚಿ-ಮಿಶ್ರೈ:" ಮೇಘಂ 1-23 | (ಅವ್ಯಂ) 2. ಅರಣ್ಯದ ಸಮೀಪ.

ಉಪವರ್ಣನ ಉಪವರ್ಣನ (ನಂ) 1. ವಿವರವಾಗಿ ಹೇಳುವುದು, ಕೂಲಂಕಷವಾಗಿ ಸ್ವರೂಪ ಮತ್ತು ಗುಣಗಳನ್ನು ಹೇಳುವುದು. ಉಪ + ವರ್ಣ (ವರ್ಣಕ್ರಿಯಾವಿಸ್ತಾರ-ಗುಣವಚನೇಷು) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) | 2. ಬಣ್ಣ ಬಳಿಯುವುದು, ಬಣ್ಣ ಹಾಕುವುದು.



उपवर्तन ಉಪವರ್ತನ (ನಂ) 1. ದೇಶ, ಜನಪದ.  
 2. ಒಂದು ಜಿಲ್ಲೆ, ಗ್ರಾಮಗಳ ಸಮುದಾಯ.  
 3. ಒಂದು ಮಂಡಲ, ರಾಷ್ಟ್ರ, ನೂರಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚಾದ ಗ್ರಾಮಗಳ ಸಮೂಹ. "उपवर्तनमप्यस्मिन् मण्डलं तैः शताधिकैः" ವೈಜಂ. 4. ತಾಲ್ಲೂಕು, ತಹಶೀಲು. उपेत्य वर्तन्तेऽत्र - वृत् (वर्तने) "ल्युट्" (३-३-११७). "तस्योपवर्तनेऽप्येको न श्रुतो गोत्रभित् कचित्" काशीखं. 5. ಕುದುರೆಯು ಹೊರಳಾಡುವ ಜಾಗ. "कर्तनं धूलिलुठितं वर्तनं तूपवर्तनम्" ವೈಜಂ.  
 उपवसथ ಉಪವಸಥ (ಪುಂ) ಗ್ರಾಮ, ಹಳ್ಳಿ. उपेत्य वसत्यत्र - वस (निवासे) "अथः" (उ० ३-१-१६).  
 उपवस्त ಉಪವಸ್ತ (ನಂ) ಉಪವಾಸ, ಊಟಮಾಡ ದಿರುವಿಕೆ. उप+वसु(स्तम्भे)भावे "क्तः" (३-३-११४).  
 उपवस्ति ಉಪವಸ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಶ್ರಯ, ಆಲಂಬನ, ಆಧಾರ. उप+वसु (स्तम्भे) "क्तिन्" (३-३-१४).  
 उपवाक ಉಪವಾಕ (ಪುಂ) ಪರಸ್ಪರ ಸಂಭಾಷಣೆ. उपेत्य वक्ति - वच (परिभाषणे) "वक्" (३-३-१८).  
 उपवसत् ಉಪವಸತ್ (ವಿಂ) 1. ಊಟಮಾಡದಿರುವ. उप+वस (निवासे) "शत्" (३-२-१२४). 2. ಹತ್ತಿರ ದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುತ್ತಿರುವ. स्त्रियां "ङीप्" (४-१-६). -वसन्ती -वसन्ती.  
 उपवास ಉಪವಾಸ (ಪುಂ) 1. ಊಟಮಾಡದಿರುವುದು. उप+वस (निवासे) "वक्" (३-३-१८). "समाचराचारमुपात्तशस्त्रो जपोपवासाभिषवैर्मुनीनाम्" किरा० ३-२८. ಉಪವಾಸವು ನಿತ್ಯ, ನೈಮಿತ್ತಿಕ ಮತ್ತು ಕಾಮ್ಯಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ಏಕಾದಶಿ, ಶಿವರಾತ್ರಿ ಮುಂತಾದ ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಉಪವಾಸವು, "दशम्यां नियताहारो मांसमैथुनवर्जितः। एकादश्यां न भुञ्जीत पक्षयोरुभयोरपि" ಎಂದು ಭೋಜನವು ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದರಿಂದ ನಿತ್ಯವಾದುದು. ಪಾಪ ಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತರೂಪವಾಗಿ "अहं प्रातस्थहं सायं अहमद्यादयाचितम्। अहं परश्च नाश्नीयात् प्राजापत्यं चरन् द्विजः" मनु० ११-२११. ಎಂಬ ಶ್ಲೋಕದಂತೆ ಮಾಡುವ ಉಪವಾಸವು ನೈಮಿತ್ತಿಕ. "अमावास्या द्वादशी च संक्रान्तिश्च विशेषतः। एताः प्रशस्तास्तिथयः भानुवारस्तथैव च। अत्र स्नानं जपो होमो देवतानां च पूजनम्। उपवास-स्तथा दानमेकैकं पावनं स्मृतम्" ಎಂಬಂತೆ ಈ ದಿನ

ಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಉಪವಾಸವು ಕಾಮ್ಯ. ಪಾಪಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು, ಪ್ರಾಣದಯೆ, ಸಹನೆ, ದ್ವೇಷಾಸೂಯೆಗಳ ಪರಿತ್ಯಾಗ, ಅಕಾರ್ಪಣ್ಯ, ನಿಃಸ್ಪೃಹತೆ ಇತ್ಯಾದಿ ಗುಣಗಳೊಡನೆ ಶಾಸ್ತ್ರನಿಷಿದ್ಧವಾದ ಸಂಗೀತ ನೃತ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಸುಖದಲ್ಲಿ ಆಸೆ ತೊರೆದಿರುವುದೂ ಉಪವಾಸ. "उपावृत्तस्य पापेभ्यो यश्च वासो गुणैः सह। उपवासः स विज्ञेयः सर्वभोगविवर्जितः" भविष्य०।  
 2. ಸಮಾಸದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವಿಕೆ. उप समीपे वासः।  
 उपवासक ಉಪವಾಸಕ (ವಿಂ) ಉಪವಾಸಮಾಡುವ, ಅಹಾರವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳದಿರುವ, ಊಟಮಾಡದಿರುವ. उप+वस (निवासे) "ण्वल्" (३-१-१३३).  
 उपवासिन् ಉಪವಾಸಿನ್ (ವಿಂ) ಉಪವಾಸಮಾಡುವ, ಅಹಾರವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳದಿರುವ, ಊಟಮಾಡದಿರುವ. उप+वस (निवासे) "णिनिः" (३-२-७८). "विमानैर्हंससंयुक्तैर्यान्ति मासोपवासिनः" भा०।  
 उपवाहन ಉಪವಾಹನ (ನಂ) ಸಮಾಸಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುವುದು, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ತರುವುದು. उप+वह (प्रापणे)+णिच् "ल्युट्" (३-३-११५).  
 उपवाह्य ಉಪವಾಹ್ಯ (ಪುಂ) ರಾಜನು ಸವಾರಿಮಾಡುವ ಅನೆ, ಕುದುರೆ ಮೊದಲಾದುವು. उप उत्कर्षो वाह्यः। "राजवाह्यस्तूपवाह्यः" कल्पद्रु०। "चन्द्रगुप्तोपवाह्यां चन्द्रलेखाभिधानां नागवशामारुह्य" मुद्रा० २।  
 उपविद् ಉಪವಿದ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಭ್ಯಾಸ, ಪಾಪಿ, ಸಂಪಾದನೆ. उप + विद् (लाभे) "क्विप्" (वा० ३-३-१४). 2. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ಅರಿವು. (ವಿಂ) 3. ಹೊಂದುವ, ಪಡೆಯುವ. 4. ತಿಳಿಯುವ, ಅರಿಯುವ.  
 उपविष ಉಪವಿಷ (ಪುಂ) 1. ಎಕ್ಕದ ಹಾಲು. 2. ಕಳ್ಳ ಹಾಲು. 3. ದತ್ತೂರಿ ಹಾಲು. 4. ಗಣಗಿಲೆ. 5. ತಪಸಿಗಿಡ. "अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरं तथैव कलिहारिका। धुतूरः करवीरश्च पञ्च चोपविषाः स्मृताः"। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -विषा -विषा. ಅತಿಬಜೆ.  
 उपविष्ट ಉಪವಿಷ್ಟ (ವಿಂ) ಕುಳಿತುಕೊಂಡಿರುವ. उप+विश (प्रवेशने) "क्तः" (३-४-७२). "हेतुं तदभ्यागमने परीप्सुः सुखोपविष्टं मुनिमावभाषे" किरा० ३-४।  
 उपवीणक ಉಪವೀಣಕ (ವಿಂ) ವೀಣೆಯನ್ನು ನುಡಿಸುವವನು. ವೀಣಯಾ उपगायति - उप + वीणा + णिच् "ण्वल्" (३-१-१३३)।



ಅಪವಿಣಿತ ಉಪವೀಣಿತ (ವಿಂ) ವೀಣೆಯಿಂದ ಗಾನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ವೀಣೆಯಿಂದ ಹಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ+ವೀಣಾ+ ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಅಥ ಸ್ಮರಾಜಾಮವಧೀಯಂ ಧೇಯಾದ್ಧೇ ಸ ತದ್ವಾಗುಪವಿಣಿತೋಽಪಿ" ನೆಪಂ ೮-೪೪।

ಅಪವೀತ ಉಪವೀತ (ನಂ) ಯಜ್ಞೋಪವೀತ, ಎಡಗಡೆ ಭುಜದ ಮೇಲೂ ಬಲಗಡೆಯ ಪೋಳಿನ ಕೆಳಗೂ ಇರುವಂತೆ (ಪ್ರಥಮ ವರ್ಣತ್ರಯದವರು) ಧರಿಸುವ ಯಜ್ಞ ಸೂತ್ರ. ಅಪವೀತೇ ಸ್ಮ-ಅಪ+ಅಜ(ಗತಿಕೋಪಣಯೋಃ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। ವೀ ಆದೇಶ: (೨-೪-೪೬)। "ಕೃತೋಪವೀತಂ ಹಿಮಶುಭ್ರಮುಚ್ಚಕೇಧನಂ ಧನಾಂತೇ ತಡಿತ್ತಾಂ ಗಣೇರಿವ" ಮಾಘಂ ೧-೨।

ಅಪವೀತಿನ್ ಉಪವೀತೀನ್ (ವಿಂ) ಯಜ್ಞ ಸೂತ್ರ ಧರಿಸುವ. ಅಪವೀತಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ-ಅಪವೀತ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)। "ಅಪವೀತಿನಮುರ್ವಪುಣ್ಣವಂತಂ ತ್ರಿಜಗತ್ಪುಷ್ಪಫಲಂ ತ್ರಿದಂಡ-ಹಸ್ತಮ್"।

ಅಪವೇದ ಉಪವೇದ (ಪುಂ) ವೇದಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದ—  
1. ಆಯುರ್ವೇದ. 2. ಧನುರ್ವೇದ. 3. ಗಾಂಧರ್ವ ವೇದ. 4. ಶಸ್ತ್ರಶಾಸ್ತ್ರ. ಮುಗ್ಧೇದಕ್ಕೆ ಆಯುರ್ವೇದವೂ, ಯಜುರ್ವೇದಕ್ಕೆ ಧನುರ್ವೇದವೂ, ಸಾಮವೇದಕ್ಕೆ ಗಾಂಧರ್ವವೇದವೂ, ಅಥರ್ವವೇದಕ್ಕೆ ಶಸ್ತ್ರಶಾಸ್ತ್ರವೂ ಉಪವೇದಗಳು. ಕೆಲವರು ಆಯುರ್ವೇದವು ಅಥರ್ವ ವೇದದ ಉಪವೇದವೆಂದು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. "ವಿಧಾತಾರ್ಥ-ಸರ್ವಸ್ವಮಾಯುರ್ವೇದಂ ಪ್ರಕಾಶಯನ್" ಭಾವಪ್ರಂ।

ಅಪವೇಶ ಉಪವೇಶ (ಪುಂ) 1. ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಅಪ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೇ) ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। -ವೇಶನಮ್-ವೇಶನಮ್. "ಪ್ರಾಯೋಪವೇಶನಮತಿರ್ನೃಪತಿರ್ಬಭೂವ" ರಘುಂ ೮-೯೪।

ಅಪವೇಶಿನ್ ಉಪವೇಶಿನ್ (ವಿಂ) ಕುಳಿತಿರುವ. ಅಪವೇಶತಿ —ಅಪ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೇ) "ಣಿತಿ:" (೩-೧-೧೩೪)।  
ಅಪವೇಣವ ಉಪವೇಣವ (ನಂ) ತ್ರಿಸಂಧ್ಯಾಕಾಲ, ಹಗಲಿನ ಮೂರು(ಸಂಧ್ಯಾ) ಕಾಲಗಳು. "ಪುಣ್ಯಾಹಮಹ್ನಿ ಪುಣ್ಯಾಂಶ-ಸ್ತ್ರಿಸಂಧ್ಯಂತುಪವೇಣವಮ್" ವೇಜಂ।

ಅಪವ್ಯಾಘ್ರ ಉಪವ್ಯಾಘ್ರ (ಪುಂ) 1. ಹುಲಿಯಂತಿರುವ ಒಂದು ಮೃಗ, ಚಿರತೆ. ಅಪಮಿತೋ ವ್ಯಾಘ್ರೇಣ। (ಅವ್ಯಂ) 2. ಹುಲಿಯ ಹತ್ತಿರ, ಹುಲಿಯ ಸಮೀಪ. ವ್ಯಾಘ್ರಸ್ಯ ಸಮೀಪಮ್। ಸಾಮೀಪ್ಯೇ ಅವ್ಯಯಿಂ।

ಅಪಶಮ ಉಪಶಮ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹ. ಅಪ+ಶಮ (ಅಪಶಮೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಕಡಿಮೆ

ಯಾಗುವಿಕೆ, ಇಳಿಮುಖವಾಗುವಿಕೆ. "ಮನ್ಯುಃಸಹ ಏವ ಯಾತೃಪಶಮಂ ನೋ ಸಾತ್ವವಾದೇಃ ಸ್ಫುಟಮ್" ಅಮಠಂ ೬। 3. ಸಹನೆ, ತಾಳ್ಮೆ, ಶಾಂತತೆ. 4. ಆಸೆಯು ಕಡಿಮೆಯಾಗುವಿಕೆ. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। -ಶಮನಮ್-ಶಮನಮ್.

ಅಪಶಯ ಉಪಶಯ (ಪುಂ) 1. (ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ) ಮೃಗಗಳು ಬರುವ ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಬೇಡನು ಮರೆಯಾಗಿ ಕುಳಿತು ಕೊಳ್ಳುವ ಹಳ್ಳ. ಅಪಶೇತೇಽಸ್ಮಿನ್-ಅಪ+ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಅಕ್" (೩-೩-೪೬)। "ಹಂತಿ ನೋಪಶಯಸ್ಥೋಽಪಿ ಶಯಾಲ್ಯ-ಮೃಗಯುರ್ಮಗಾನ್" ಮಾಘಂ ೨-೮೦। 2. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಮಲಗುವಿಕೆ. 3. ಹಸ್ತ, ಕೈ. (ಅವ್ಯಂ) 4. ಕೈಯ ಹತ್ತಿರ, ಹಸ್ತದ ಸಮೀಪ. ಸಾಮೀಪ್ಯೇ ಅವ್ಯಯಿಂ। 5. ಔಷಧ ಸೇವನೆಯಿಂದ ವ್ಯಾಧಿಯು ಗುಣಮುಖವಾಗಲು ಕಂಡುಬರುವ ಲಕ್ಷಣ.

ಅಪಶರದ ಉಪಶರದ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಶರತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ. ಶರದಿ ಅಪಶರದಮ್। ವಿಭಂ ಅವ್ಯಯಿಂ। 2. ಶರತ್ಕಾಲದ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ. ಶರದ: ಸಮೀಪೇ। ಸಾಮೀಪ್ಯೇ ಅವ್ಯಯಿಂ।

ಅಪಶಲ್ಯ ಉಪಶಲ್ಯ (ನಂ) ಗ್ರಾಮದ ಸಮೀಪ ಪ್ರದೇಶ, ಗ್ರಾಮದ ಕೊನೆಯ ಪ್ರದೇಶ. ಶಲ್ಯಮುಪಗತಮ್। "ಗ್ರಾಮಾಂತಮುಪಶಲ್ಯಂ ಸ್ಯಾತ್ ಸೀಮಸೀಮೇ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮುಘೇ" ಅಮಂ। "ಅಪಶಲ್ಯನಿವಿಷ್ಟೇಽಸ್ತೇಶ್ಚತುರ್ವಾರಮುಖೀ ಬಭೌ" ರಘುಂ ೧೪-೬೦।

ಅಪಶಾಂತಿ ಉಪಶಾಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಾಂತತೆ, ಸಹನೆ, ತಾಳ್ಮೆ. ಅಪ+ಶಮ (ಅಪಶಮೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।  
ಅಪಶಾಯ ಉಪಶಾಯ (ಪುಂ) ಸರದಿಯಿಂದ ನಿದ್ರೆ ಮಾಡುವುದು, ಪಹರೆಯವನು ಸರದಿಯಂತೆ (ಮತ್ತೊಬ್ಬನಿಂದ) ಬಿಡುಗಡೆಹೊಂದಿ ನಿದ್ರೆ ಮಾಡುವಿಕೆ. ಅಪ+ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)।

ಅಪಶಾಯಿನ್ ಉಪಶಾಯಿನ್ (ವಿಂ) ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ ಮಲಗುವ. ಅಪ+ಶೀಡ್(ಸ್ವಪ್ನೇ)"ಣಿತಿ:" (೩-೧-೧೩೪)।  
ಅಪಶಿಷ್ಯ ಉಪಶಿಷ್ಯ (ಪುಂ) ಪ್ರಶಿಷ್ಯ, ಶಿಷ್ಯನ ಶಿಷ್ಯ. ಶಿಷ್ಯಮುಪಗತ:। "ಸ್ವತ: ಪ್ರಮಾಣಂ ಪರತ: ಪ್ರಮಾಣಂ ಶುಕಾಙ್ಗನಾ ಯತ್ರ ಸಮುದ್ರಿರಂತಿ। ಶಿಷ್ಯೋಪಶಿಷ್ಯೈರಪಗೀಯಮಾನಮವೇಹಿತನ್ಮಂಡನಮಿಶ್ರಧಾಮ" ತದ್ಭಂ।

ಅಪಶುನ ಉಪಶುನ (ನಂ) 1. ನಾಯಿಯ ಹತ್ತಿರದ ಸ್ಥಳ. "ಸ್ಯಾಚ್ಚುನ: ಸವಿಧಂ ಯತ್ತತ್ಥಲಂ ಹ್ಯುಪಶುನಂ ಪುನ:" ಕಲ್ಪದ್ರುಂ। (ಅವ್ಯಂ) 2. ನಾಯಿಯಲ್ಲಿ. ಶುನಿ ಅಪಶುನಮ್। ಸಪ್ತಮ್ಯರ್ಥೇ ಅವ್ಯಯಿಂ। 3. ನಾಯಿಯ ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ. ಶುನ: ಸಮೀಪೇ। ಸಾಮೀಪ್ಯೇ ಅವ್ಯಯಿಂ।



उपशुष्यत् ಉಪಶುಷ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಒಣಗುತ್ತಿರುವ, ಶುಷ್ಯವಾಗುತ್ತಿರುವ. ಉ+ಶುಷ (ಶೋಷಣೆ) "ಶತ್" (3-1-124). "ನವೀಕರಿಸ್ಯತ್ಯುಪಶುಷ್ಯದಾತ್ರ: ಸ ತ್ವದಿನಾ ಮೇ ಹೃದಯಂ ನಿಕಾರ:" ಕಿರಾಂ 3-44.

उपशोभा ಉಪಶೋಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಲಂಕರಣ, ಶೃಂಗಾರ. ಉಪಗತಾ ಶೋಭಾಮ್. "ವಿಹಿತೋಪಶೋಭಮುಪಯಾತಿ ಮಾಧವೇ ನಗರಂ ವ್ಯರೋಚತ ಪತಾಕಯೇವ ತತ್" ಮಾಧಂ 13-36. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). -ಶೋಭನಮ್-ಶೋಭನಮ್.

उपशोषण ಉಪಶೋಷಣ (ನಂ) 1. ಒಣಗಿಸುವಿಕೆ. ಉ+ಶುಷ (ಶೋಷಣೆ)+ ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). (ವಿಂ) 2. ಒಣಗಿಸುವ, ತೇವವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. ಉ+ಶುಷ+ಣಿच् "ಲ್ಯು:" (3-1-134). 3. ಒಣಗಿಸುವ ಸಾಧನ. ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

उपशोषयत् ಉಪಶೋಷಯತ್ (ವಿಂ) ಒಣಗಿಸುತ್ತಿರುವ, ತೇವವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಉ+ಶುಷ (ಶೋಷಣೆ)+ ಣಿच् "ಶತ್" (3-2-124).

उपश्रुत् ಉಪಶ್ರುತ್ (ಪುಂ) ಯಜ್ಞ. ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೆ) "ಕ್ರಿಪ್" (ವಾಂ 3-3-94). ಉಪಗತಾ ಶ್ರುತ್ ಯಸ್ಮಿನ್.

उपश्रुत ಉಪಶ್ರುತ (ನಂ) 1. ವಾಗ್ದಾನ, ಭರವಸೆಯ ಮಾತು. (ವಿಂ) 2. ವಾಗ್ದಾನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಭರವಸೆ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಪ್ಪಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮ್ಮತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉ+ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ವರ್ಣಿತಗೀಣೌ ಚ ತಥಾ ಸಂಗೀಣೌಪಶ್ರುತೌ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾತೇ" ವೇಜಂ.

उपश्रुति ಉಪಶ್ರುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ ಕೇಳುವಿಕೆ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ ಕಿವಿಗೊಟ್ಟು ಆಲಿಸುವಿಕೆ. ಉ+ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೆ) "ಕ್ರಿಪ್" (3-3-94). 2. ರಾತ್ರಿವೇಳೆಯಲ್ಲಿ ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಂದು ಕೇಳುವ ಶುಭಾಶುಭ ಸೂಚಕವಾದ ದೇವ (ಅಲೌಕಿಕ) ವಾಣಿ. "ನಕ್ತಂ ನಿರ್ಗತ್ಯ ಯತ್ಕಿಂಚಿಚ್ಛುಭಾ-ಶುಭಕರಂ ವಚ:। ಶ್ರುಯತೇ ತದ್ವಿಧುರ್ವಿರಾ: ದೇವಪ್ರಶ್ನನುಪಶ್ರುತಿಮ್" ಹಾರಾಂ. "ಪರಿಜನೋಽಪಿ ಸತತನುಪಶ್ರುತೈ ನಿರ್ಜಗಾಮ" ಕಾದಂ. 3. ವಾಗ್ದಾನ, ಭರವಸೆಯ ಮಾತು. (ಅವ್ಯಂ) 4. ಕಿವಿಯ ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ, ಕಿವಿಯ ಹತ್ತಿರ. ಸಾಮೀಪ್ಯೇ ಅವ್ಯಯಿಂ.

उपश्लिष್ಠ ಉಪಶ್ಲಿಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಆಲಿಂಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಸಮಾಪ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ. ಉ+ಶ್ಲಿಷ (ಆಲಿಂಗಣೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102).

उपश्लेष ಉಪಶ್ಲೇಷ (ಪುಂ) ಸಮಾಪ ಸಂಬಂಧ, ಸಾನ್ನಿಧ್ಯ, ಅಕ್ಕಪಕ್ಕದಲ್ಲಿರುವುದು. ಉ+ಶ್ಲಿಷ (ಆಲಿಂಗಣೆ) "ಘ್" (3-3-124). ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). -ಶ್ಲೇಷಣಮ್-ಶ್ಲೇಷಣಮ್. ಆಲಿಂಗನ, ತೆಕ್ಕೆ, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ.

उपश्लोकन ಉಪಶ್ಲೋಕನ (ನಂ) ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡುವುದು, ಕೊಂಡಾಡುವುದು, ಹೊಗಳುವುದು. ಶ್ಲೋಕ-ರೂಪಸ್ತೋತಿ - ಉ+ಶ್ಲೋಕ+ಣಿच् ಉಪಶ್ಲೋಕಿ (ನಾಮಧಾಂ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

उपश्लोकयत् ಉಪಶ್ಲೋಕಯತ್ (ವಿಂ) ಹೊಗಳಿಸುವ, ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡುವ, ಕೊಂಡಾಡುವ. ಉಪಶ್ಲೋಕಿ (ನಾಮಧಾಂ) "ಶತ್" (3-2-124).

उपश्लोकयितव्य ಉಪಶ್ಲೋಕಯಿತವ್ಯ (ವಿಂ) ಹೊಗಳಲ್ಪಡುವ, ಕೊಂಡಾಡಲ್ಪಡುವ. ಉಪಶ್ಲೋಕಿ (ನಾಮಧಾಂ) "ತವ್ಯ:" (3-1-96). "ಚಂದ್ರಗುಪ್ತ: ತ್ವಯಾ ಸಮುತ್ಸೇಜನ-ಸಮರ್ಥ: ಶ್ಲೋಕೈರಪಶ್ಲೋಕಯಿತವ್ಯ:" ಮುದ್ರಾಂ 2.

उपश्लोकित ಉಪಶ್ಲೋಕಿತ (ವಿಂ) ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊಂಡಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

उपष्टम्भ ಉಪಷ್ಟಂಭ (ಪುಂ) 1. ಅಲಂಬನ, ಆಶ್ರಯ, ಆಸರೆ. ಉ+ಸ್ತಂಭ (ರೋಧನೆ) "ಘ್" (3-3-124). 2. ಆಧಾರ, ಊರುಗೋಲು. 3. ಸಹಾಯ, ಒತ್ತಾಸೆ. 4. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹ.

उपष्टम्भक ಉಪಷ್ಟಂಭಕ (ಪುಂ) 1. "ಉಪಷ್ಟಮ್" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್". 2. ಆಧಿಕ್ಯ, ಅತಿಶಯ, ಹೆಚ್ಚಿಗೆ. (ನಂ) 3. ಆಧಾರ, ಆಸರೆ. (ವಿಂ) 4. ಆಸರೆಯಾಗಿರುವ, ಒತ್ತಾಸೆಯಾಗಿರುವ, ಆಶ್ರಯ ಕೊಡುವ. ಉ+ಸ್ತಂಭ (ರೋಧನೆ) "ಘ್" (3-3-124).

उपसंयम ಉಪಸಂಯಮ (ಪುಂ) 1. ಜಗತ್ತಿನ ಮಹಾ ಪ್ರಳಯ, ಪ್ರಪಂಚದ ಕೊನೆ. 2. ನಿಯಂತ್ರಣ, ನಿಯಮನ, ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡುವಿಕೆ, ಹತೋಟಿಯಲ್ಲಿಡುವಿಕೆ. 3. ಬಂಧನ, ಚಿನ್ನಾಗಿ ಕಟ್ಟುವುದು. 4. ಉಪಸಂಹಾರ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು.

उपसंव्यान ಉಪಸಂವ್ಯಾನ (ನಂ) ಉಡುವ ಬಟ್ಟೆ, ಕೆಳಗಿನ ವಸ್ತ್ರ. ಉಪಸಂವೀಯತೇ - ಉ+ಸಂ+ವ್ಯೇ (ತನ್ತುಸಂತಾನೆ)ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). "ಅಂತರೀಯೋಪ-ಸಂವ್ಯಾನಪರಿಧಾನಾನ್ಯಥೋಽಶ್ರುಕೇ" ಅಮಂ.

उपसंहार ಉಪಸಂಹಾರ (ಪುಂ) 1. ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸುವುದು, ಕೊನೆಮುಟ್ಟಿಸುವುದು. ಉಪಸಂಹೀಯತೇ - ಉ+



सम्+हृ (हरणे) "घञ्" (३-३-१८)। "उपक्रमोप-  
संहारी हेतुस्तात्पर्यनिर्णये"। [एकविंशत्युक्तपाद  
प्रारंभः" ಮತ್ತು ಸಮಾಪ್ತಿ ಇವೆರಡೂ ಇದ್ದರೆ  
ಗ್ರಂಥದ ಆ ವಿಷಯದ ತಾತ್ಪರ್ಯನಿರ್ಣಯವಾಗು  
ವುದು.] 2. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಸಂಕೋಚ  
ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 3. (ಬಿಟ್ಟು ಬಾಣವನ್ನು)  
ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. 4. ಸಂಗ್ರಹಿಸುವುದು,  
ಸಂಕ್ಷೇಪಗೊಳಿಸುವುದು. 5. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು,  
ಸಮುದಾಯ. "ಸಮಾಸ उपसंहारस्समाहारस्समुच्चयः"  
ವೆಂಜಂ. 6. ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶ, ಪ್ರಳಯ.

उपसंहारिन् ಉಪಸಂಹಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಉಪಸಂಹಾರ  
ಗೊಳಿಸುವ, ಕೊನೆಗಾಣಿಸುವ. उपसंहरति — उप +  
सम् + हृ (हरणे) "णिनिः" (३-१-१३४)।

उपसंहित ಉಪಸಂಹಿತ (ವಿಂ) ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ,  
ಸಂಬಂಧಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ. उप+सम्+ङु धाञ् (धारण-  
पोषणयोः) "क्तः" (३-४-७२)।

उपसंहृत ಉಪಸಂಹೃತ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಎಳೆದು  
ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಪಸಂಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. उप+सम्+हृ  
(हरणे) "क्तः" (३-२-१०२)। 2. ಸಮಾಪ್ತಿ  
ಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊನೆಗಾಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

उपसङ्क्रमण ಉಪಸಂಕ್ರಮಣ (ನಂ) ಸೇರಿಸುವಿಕೆ,  
ಸಂಬಂಧಕಲ್ಪಿಸುವಿಕೆ. उप+सम्+क्रम (पादविक्षेपे)  
"ल्युट्" (३-३-११५)।

उपसङ्ख्यान ಉಪಸಂಖ್ಯಾನ (ನಂ) 1. ಅಧಿಕವಾಗಿ  
ಸೇರಿಸುವುದು, ಹಿಂದೆ ಹೇಳಿದುದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ  
ಕೂಡಿಸುವುದು. ಪಾಣಿನಿ ಸೂತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವುದ  
ಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚಿಗೆ ಅಂಶಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಬೇಕೆಂಬ  
ವಾರ್ತಿಕಾಚಾರ್ಯ (ಕಾತ್ಯಾಯನ)ರ ವಾಕ್ಯ.  
"आत्मन्विश्वजनभोगोत्तरपदात् खः" (५-१-९) ಎಂಬ  
ಸೂತ್ರದಲ್ಲಿ ವಿಹಿತವಾದ "ख" ಪ್ರತ್ಯಯವು "पञ्चजन"  
ಪದಕ್ಕೂ ಬರಬೇಕೆಂದು "पञ्चजनादुपसङ्ख्यानम्"  
(ವಾಂ ५-१-९) ಎಂಬ ವಾರ್ತಿಕದಿಂದ ಹೇಳಿರುವರು.  
ಹೀಗೆಯೇ "गम्यादीनामुपसङ्ख्यानम्" "आद्यादिभ्य  
उपसङ्ख्यानम्" ಇತ್ಯಾದಿ.

उपसङ्ग्रह ಉಪಸಂಗ್ರಹ (ಪುಂ) 1. ಕಾಲುಹಿಡಿದು  
ಕೊಂಡು ನೂಡುವ ನಮಸ್ಕಾರ. उपसङ्ग्रहते पादावत्र  
— उप+सम्+ग्रह(उपादाने) "अप्" (३-३-५८)। अधि०

"ल्युट्" (३-३-११७)। —सङ्ग्रहणम् —संग्रहणम्.  
"अभिनवधनुर्विद्यादर्पक्षमाय च कर्मणे स्फुरति रभसा-  
त्पाणिः पादोपसङ्ग्रहाय च" म० वी० २-३०।  
"व्यत्यस्तपाणिना कार्यमुपसङ्ग्रहणं गुरोः। सव्येन  
सव्यः स्प्रष्टव्यो दक्षिणेन च दक्षिणः" मनु० २-७२।  
2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಒಲಿಸಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ, ತನ್ನ ಕಡೆ ಸೇರಿಸಿ  
ಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ.

उपसङ्ग्राह्य ಉಪಸಂಗ್ರಾಹ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕಾಲುಹಿಡಿದು  
ನಮಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಗೌರವದಿಂದ ನಮಸ್ಕರಿಸಲು  
ಯೋಗ್ಯನಾದ. उपसङ्ग्रहते — उप + सम् + ग्रह  
(उपादाने) "ण्यत्" (३-१-१२४)। "आतुर्भार्योप-  
सङ्ग्राह्या सवर्णहिन्यह्न्यपि। विप्रोष्य तूपसङ्ग्राह्या  
ज्ञातिसम्बन्धयोषितः" मनु० २-१३२। 2. ತನ್ನ ಕಡೆಗೆ  
ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಒಲಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು  
ಅರ್ಹನಾದ.

उपसत्ति ಉಪಸತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಗ, ಸಮೀಪ  
ಸಂಬಂಧ. उप + षट् (विशरणादौ) "क्तिन्"  
(३-३-९४)। 2. ದಾಸ, ಕೊಡುಗೆ. 3. ಸೇವೆ,  
ಶುಶ್ರೂಷೆ. "उपसत्तिः सङ्गमात्रे प्रतिपादनसेवयोः"  
हेम०।

उपसद् ಉಪಸದ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ಯಾಗ. 2. ದಕ್ಷಿ  
ಣಗ್ನಿ, ಗಾರ್ಹಪತ್ಯ ಮತ್ತು ಅಹವನೀಯಗಳ  
ಗಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದ ಅಗ್ನಿ. "गार्हपत्यो दक्षिणाग्नि-  
स्तथैवाहवनीयकः। एतेऽनयस्त्रयो मुख्याः शेषाश्चोप-  
सदस्त्रयः" अग्निपु०। (ವಿಂ) 3. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ,  
ಹತ್ತಿರವಿರುವ. उप + षट् (विशरणादौ) "क्विप्"  
(३-२-७६)।

उपसदन ಉಪಸದನ (ನಂ) 1. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಹೋಗು  
ವುದು, ಹತ್ತಿರ ಸೇರುವುದು. उप+षट् (विशरणादौ)  
"ल्युट्" (३-३-११५)। "तत्रोपसदनं चक्रे द्रोणस्येष्वस्त्र-  
कर्मणि" भा०। 2. ಅಚಾರ್ಯನ ಸನ್ನಿಧಿಯಲ್ಲಿ  
ಶಿಷ್ಯನಾಗಿ ಹೋಗಿ ಸೇರುವಿಕೆ. 3. ಸೇವೆ, ಶುಶ್ರೂಷೆ.  
4. ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಹೊಂದುವಿಕೆ. (अव्य०) 5. ಗೃಹದ  
ಸಮೀಪ, ಮನೆಯ ಹತ್ತಿರ. "यज्ञोपसदनं ब्रह्मन्  
प्राप्तोऽसि मुनिभिः सह" रामा०।

उपसन्धान ಉಪಸಂಧಾನ (ನಂ) ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸುವಿಕೆ,  
ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸುವಿಕೆ. उप+सम्+ङु धाञ् (धारण-  
पोषणयोः) "ल्युट्" (३-३-११५)।



ಉಪಸರ್ಗ ಉಪಸರ್ಗ (ವಿಂ) 1. ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ.

2. ಹತ್ತಿರವಿರುವ. ಉ+ಪಲ್ (ವಿಶರಣಾದಿ) "ಕ್ತ:" (3-4-72). 3. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೇವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಉಪಸಮಾಧಾನ ಉಪಸಮಾಧಾನ (ನಂ) 1. ರಾಶಿಹಾಕುವುದು, ಗುಪ್ತೆಹಾಕುವುದು. ಉ+ಸಮ್+ಆ+ಙ್ ಧಾತ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). "ಉಪಸಮಾಧಾನಂ ರಾಶೀಕರಣಮ್" ಸಿಂ ಕೌಂ. 2. ಜ್ವಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು, ಉರಿಯಿಸುವುದು.

ಉಪಸಂಪತ್ತಿ ಉಪಸಂಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊಸದಾಗಿ ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು, ಮೊದಲಾಗಿ ಕೈಹಾಕುವುದು. ಪ್ರಥಮವೈಯಾಕರಣಃ. ಸಂಪ್ರತಿ ವ್ಯಾಕರಣಮಧ್ಯೇತ್ ಪ್ರವೃತ್ತ ಇತ್ಯರ್ಥಃ. "ಪ್ರಥಮೋಚಿರೋಪಸಂಪತ್ತೌ" ಪಾಂ ಸೂಂ 6-2-46.

ಉಪಸಂಪನ್ನ ಉಪಸಂಪನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಕೂಡಿರುವ. 2. ಪರಿಕರಗಳಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸಾಕಾದಷ್ಟು ಪ್ರಮಾಣವುಳ್ಳ. 4. ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ, ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಮರಣಹೊಂದಿದ. ಉ+ಸಮ್+ಪದ (ಗತೌ) ಕರ್ತಂ ಕರ್ಮಂ ವಾ "ಕ್ತ:" (3-4-72, 3-2-102). "ಉಪಸಂಪನ್ನಂ ಪರ್ಯಾಪ್ತೇ ಸಂಸ್ಕೃತಪ್ರಾಪ್ತಯೋರ್ಮತೇ" ಹೇಮಂ.

ಉಪಸಂಭಾಷಾ ಉಪಸಂಭಾಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪರಸ್ಪರ ಮಾತನಾಡುವುದು, ಕೂಡುವುದು, ಸಂಭಾಷಣೆ. ಉ+ಸಮ್+ಭಾಷ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಅ:" (3-3-103). "ಮಾಧುರ್ಯವಿಸ್ತಂಭವಿಶೇಷಭಾಷಾ ಕೃತೋಪಸಂಭಾಷಾಮಿವೇಕ್ಷಿತೇನ" ಕಿರಾಂ 3-3. 2. ಮನವೊಲಿಸುವುದು, ಸಮಾಧಾನ ಪಡಿಸುವಿಕೆ. ಉಪಸಂಭಾಷಾ ಉಪಸಾನ್ವನಮ್. "ಭಾಸನೋಪಸಂಭಾಷಾಜ್ಞಾನಯತ್ನವಿಮತ್ಯುಪಮನ್ವರಣೇಷು ವದಃ" ಪಾಂ ಸೂಂ 1-3-49.

ಉಪಸರ ಉಪಸರ (ಪುಂ) 1. ಹಸುಗಳಿಗೆ ಹೋರಿಬಿಡುವುದು, ಹಸುವು ಮೊದಲನೆಯ ಬಾರಿ ಗರ್ಭ ಧರಿಸುವುದು. ಉ+ಸ (ಗತೌ) "ಅಪ್" (3-3-71). ಪ್ರಜನಂ ಪ್ರಥಮಗರ್ಭಗ್ರಹಣಮ್. ಗವಾಮುಪಸರಃ. ಸಿಂ ಕೌಂ. 2. ಎಡೆ ಬಿಡದೆ ಹೊರಡುವುದು, ನಿರಂತರವಾಗಿ ಹೊರಕ್ಕೆ ಬರುತ್ತಿರುವುದು. "ವಿನಾಮುಪಸರಂ ದೃಷ್ಟಾ ತೇಜ್ಯೋನ್ಯೋಪಹವಾಗುಹಾಮ್" ಭट्टಿಂ 7-60.

ಉಪಸರಣ ಉಪಸರಣ (ನಂ) 1. ಹಸುಗಳಿಗೆ ಮೊದಲನೆಯ ಸಲ ಹೋರಿಬಿಡುವುದು, ಹಸುವು ಮೊದಲನೆಯ ಬಾರಿ ಗರ್ಭಧರಿಸುವುದು. ಉ+ಸ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು, ಹತ್ತಿರ ಸೇರುವುದು.

ಉಪಸರ್ಗ ಉಪಸರ್ಗ (ಪುಂ) 1. ರೋಗದ ಬದಲಾವಣೆ.

ಉ+ಸಜ (ವಿಸರ್ಗ) "ಘಜ್" (3-3-18). 2. ಉಪದ್ರವ, ಪೀಡೆ, ತೊಂದರೆ. "ಸಮ್ಯಕ್ಪಾಲನಲಾಲಿತಾಃ ಪ್ರಶಮಿತಾಃ ಶೋಷಾಪರ್ಗಾಃ ಪ್ರಜಾಃ" ರತ್ನಾಂ 1-10. 3. ಉತ್ಪಾತ, ಶುಭಾಶುಭ ಫಲಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಚಿಹ್ನೆ.

"ಅಜನ್ಯಂ ಕ್ಲಿಬಮುತ್ಪಾತ ಉಪಸರ್ಗಃ ಸಮಂ ತ್ರಯಮ್" ಅಮಂ. 4. (ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಕ್ರಿಯಾಪದಗಳ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿ ಆಯಾ ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ ದ್ಯೋತಕವಾಗುವ ಪ್ರ, ಪರಾ ಮೊದಲಾದುವು. ಪ್ರಾದಿಗಳು 22 :

(1) ಪ್ರ, (2) ಪರಾ, (3) ಅಪ, (4) ಸಮ್, (5) ಅನು, (6) ಅವ, (7) ನಿಸ್, (8) ನಿರ್, (9) ದುಸ್, (10) ದುರ್, (11) ವಿ, (12) ಆಙ್, (13) ನಿ, (14) ಅಧಿ, (15) ಅಪಿ, (16) ಅತಿ, (17) ಸ್ತು, (18) ತತ್, (19) ಅಭಿ, (20) ಪ್ರತಿ, (21) ಪರಿ ಮತ್ತು (22) ಉಪ. [ಇವುಗಳ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಆಯಾ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಉಪಸರ್ಗಗಳು ಮೂರು ವಿಧ. ಕೆಲವು ಉಪಸರ್ಗಗಳು ಧಾತುವಿನ ಅರ್ಥವನ್ನು ಬಾಧಿಸಿ ಬೇರೊಂದು ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುವು. ದಾನ ವೆಂಬ ಅರ್ಥವುಳ್ಳ ದಾನ್ ಧಾತುವಿಗೆ ಆಙ್ ಸೇರಿದರೆ ಸ್ವೀಕಾರವೆಂಬ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುದು. ಆದತ್ತೆ. ಕೆಲವು, ಧಾತುವಿನ ಅರ್ಥವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಅದೇ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುವು. ಷಟ್ ಧಾತುವಿಗೆ ಪ್ರ ಸೇರಿದಾಗ ಅದೇ ಧಾತುವಿನ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುದು. ಪ್ರಸುತೆ. ಮತ್ತೆ ಕೆಲವುಕಡೆ ಧಾತುವಿನ ಅರ್ಥವನ್ನು ವಿಶೇಷ ರೂಪದಿಂದ ತಿಳಿಸುವುವು. ಣಮ ಧಾತುವಿಗೆ ಪ್ರ ಸೇರಿದಾಗ ಪ್ರಕರ್ಷವೆಂಬ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುವು. ಪ್ರಣಮತಿ. "ಧಾತವರ್ಥಂ ಬಾಧತೇ ಕಶ್ಚಿತ್ ಕಶ್ಚಿತ್ತಮನುವರ್ತತೇ. ತಮೇವ ವಿಶಿನಿಷ್ಠಚನ್ಯಃ ಉಪಸರ್ಗಗತಿಃಸ್ವಿಧಾ". ಉದಾ: (1) "ಪ್ರಬಭೂವ ನಾಲಮವಲೋಕಯಿತುಮ್" ಕಿರಾಂ 6-6. (2) ಪರಾಜಯತೇ. (3) "ಅಪಯಾತಿ ಸರೋಪಯಾ ನಿರಸ್ತೇ" ಮಾಘಂ 9-23. (4) "ಸಂಪತ್ಸ್ಯತೇ ವಃ ಕಾಮೋಽಯಂ ಕಾಲಃ ಕಶ್ಚಿತ್ಪ್ರತೀಕ್ಷಯತಾಮ್" ಕುಮಾಂ 2-44. (5) "ಅನುಜಗುರಥ ದಿವ್ಯಂ ದುಂದುಭಿಧ್ವಾನಮಾಶಾಃ" ಕಿರಾಂ 3-60. (6) "ಅವಜಾನಾಸಿ ಮಾಂ ಯಸ್ಮಾದತಸ್ತೇ ನ ಭವಿಷ್ಯತಿ" ರಘುಂ 1-77. (7) "ನಿಷ್ಕಾಸಯನ್ತಯೇಕೇ ಸಾಗರಸರಿದಮ್ಬುಪುರಪರಿಪತಿತಮ್". (8) "ನಿರಚಾಯಿ ಯದಾ ಮೇದೋನೌಪಧೀನಾಂ ಹನುಮತಾ" ಭट्टಿಂ 14-107. (9) "ದುಷ್ಪಾನಃ ಪುನರೇತೇನ ಕಪಿನಾ ಭೃಗುಸಂಭೃತಃ" ಭट्टಿಂ 9-108. (10) "ದುರ್ದಾಂತಮುಕ್ತುತಯ ನಿರಸ್ತಸಾದಿನಮ್" ಮಾಘಂ 12-22. (11) "ವ್ಯಚಲನ್ವಿಶಕ್ಲಿಷ್ಣುಕಟೀರಕಸ್ಥಿಲಿ..." ಮಾಘಂ 13-34. (12) "ಆರಭಂತೇಽಲ್ಪಮೇವಾಜ್ಞಾಃ ಕಾಮಂ ವ್ಯಗ್ರಾ ಭವಂತಿ ಚ"



ಮಾಘಂ ೨-೭೯। (13) "ನಿಜಧೀನೇ ತಸ್ಯ ಹರೇಽಜಾಲೇ:"  
ಕಿರಾಂ ೧೭-೨೬। (14) "ಅಧ್ಯಾಸಾಮಾಸುಹುತುಃಸಹೇಮ-  
ಪಿಠಾನಿ ಯಾನ್ಯಮಿ" ಮಾಘಂ ೨-೫। (15) ಅಪಿಠೇಹಿ।  
(16) "ನರಪತಿರತಿವಾಹಯಾಂಬಭೂವ ಕ್ವಚಿದಸಮೇತಪರಿಚ್ಛದ-  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೭೦। (17) ಸುಷುಪತುಃ।  
(18) "ಉದಮಜ್ಜಿ ಕೆಂಟಭಜಿತಃ ಶಯನಾತ್" ಮಾಘಂ ೧-೩೦।  
(19) "ಅಭಿಯಾತಿ ನಃ ಸತೃಷ ಣ್ಣ ಚಕ್ಷುಃ" ಮಾಘಂ  
೧೩-೪೬। (20) "ಪ್ರತ्यूಚೇ ಮಾರುತೀ ರಾಮಮಸ್ತಿ  
ವಾಲೀತಿ ವಾನರಃ" ಭಟ್ಟಿಂ ೬-೯೯। (21) "ಪರ್ಯಾಪ್ತಾಸ್ತಿ  
ದಿವಿಷ್ಟಾಸೌ ಸಂದರ್ಶ್ಯ ಭಯದಂ ವಪುಃ" ಭಟ್ಟಿಂ ೪-೩೩।  
(22) "ಉಪಾದದೇ ತಸ್ಯ ಸಹಸ್ರರಶ್ಮಿಃ ತ್ವಷ್ಟಾ ನವಂ ನಿರ್ಮಿತ-  
ಮಾತಪತ್ರಮ್" ಕುಮಾರಂ ೭-೪೧।

ಉಪಸರ್ಜನ ಉಪಸರ್ಜನ (ನಂ) 1. ಅಪ್ರಧಾನ, ಗೌಣ,  
ಮುಖ್ಯವಲ್ಲದ. ಉಪ+ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩)।  
"ಅಪ್ರಾಪ್ರಚಂ ದ್ವಯಹೀನೇ ದ್ವೇ ಅಪ್ರಧಾನೋಪಸರ್ಜನೇ" ಅಮಂ।  
"ಉಪಸರ್ಜನಂ ಪ್ರಧಾನಸ್ಯ ಧರ್ಮತೋ ನೋಪಪದ್ಯತೇ" ಮನುಂ ೧-೧೨೧।  
2. ಉತ್ಪಾತ, ಶುಭಾಶುಭಸೂಚಕ ಚಿಹ್ನೆ. "ನಿಘತಿ  
ಭೂಮಿವಲನೆ ಜ್ಯೋತಿಷಾಂ ಚೋಪಸರ್ಜನೇ" ಮನುಂ ೪-೧೦೫।  
3. (ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಗುಣೇಭೂತವಾದ ಪದ,  
ವಿಶೇಷಣ ಪದ. "ರಾಜಪುರುಷಃ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ರಾಜನ್ ಪದವು  
ವಿಶೇಷಣವಾದುದರಿಂದ ಉಪಸರ್ಜನವಾಯಿತು.  
4. ಸಮಾಸವಿಧಾಯಕಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿರುವ ಪ್ರಥಮಾ  
ವಿಭಕ್ತ್ಯಂತ ಪದದಿಂದ ಬೋಧಿಸಲ್ಪಡುವ ಅರ್ಥ.  
"ಪ್ರಥಮಾನಿರ್ದಿಷ್ಟಂ ಸಮಾಸ ಉಪಸರ್ಜನಮ್" ಪಾಂ ಸೂಂ ೧-೨-೪೩।  
"ದ್ವಿತೀಯಾ ಶ್ರಿತೇ" ತ್ಯಾದಿ ಸೂತ್ರದಲ್ಲಿ ಪ್ರಥಮಾ  
ವಿಭಕ್ತ್ಯಂತವಾದದ್ವಿತೀಯಾ ಪದದ ಅರ್ಥವಾದದ್ವಿತೀಯಾ  
ವಿಭಕ್ತ್ಯಂತ ಪದವು ಉಪಸರ್ಜನವಾಗುವುದು. ಕೃಣಾ  
ಶ್ರಿತಃ ಕೃಣಾಶ್ರಿತಃ। 5. ವಿಗ್ರಹವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ತೋರಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ ನಿಯತ (ಬದಲಾವಣೆಯಿಲ್ಲದ) ವಿಭಕ್ತಿಯುಳ್ಳ  
ಶಬ್ದ. "ಏಕವಿಭಕ್ತಿಚಾಪೂರ್ವನಿಪಾತೇ" ಪಾಂ ಸೂಂ ೧-೨-೪೪।  
ಮಾಲಾಮತಿಕ್ರಾಂತಃ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಅತಿಕ್ರಾಂತ ಪದದಲ್ಲಿ ವಿಭಕ್ತಿ  
ಬದಲಾವಣೆಯಾದರೂ ಮಾಲಾ ಪದದ ವಿಭಕ್ತಿ ಬದಲಾ  
ವಣೆಯಿಲ್ಲ. ಮಾಲಾಮತಿಕ್ರಾಂತಃ, ಮಾಲಾಮತಿಕ್ರಾಂತಮ್,  
ಮಾಲಾಮತಿಕ್ರಾಂತೇನ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಉಪಸರ್ಪಣ ಉಪಸರ್ಪಣ (ನಂ) 1. ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು,  
ಸಮೀಪಿಸಿ ಹೋಗುವುದು. 2. ಒಲಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು  
ಅನುಸರಿಸುವುದು. ಉಪ + ಸೃಲ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೫)।

ಉಪಸರ್ಪಿನ್ ಉಪಸರ್ಪಿನ್ (ವಿಂ) ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ,  
ಸಮೀಪಿಸುವ. ಉಪ + ಸೃಲ್ (ಗತೌ) "ಗಿಣಿಃ"  
(೩-೧-೧೩೪)।

ಉಪಸರ್ಯಾ ಉಪಸರ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರ್ಭಗ್ರಹಣಕ್ಕೆ  
ಯೋಗ್ಯವಾದ ಹಸು, ಹೋರಿಯನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ  
ಹಸು. ಉಪ + ಸೃ (ಗತೌ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೦೪)।

ಉಪಸಾರ್ಯ ಉಪಸಾರ್ಯ (ವಿಂ) ಹೊಂದಲ್ಪಡುವ,  
ಹೊಂದಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಉಪ+ಸೃ (ಗತೌ) "ಣ್ಯತ್"  
(೩-೧-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ-ಸಾರ್ಯಾ-ಸಾರ್ಯಾಃ. ಉಪಸಾರ್ಯಾ  
ಕಾಶೀ।

ಉಪಸಿಕ್ತ ಉಪಸಿಕ್ತ (ವಿಂ) ನೀರು ಚೆಮುಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಸಿಂಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉಪ + ಷಿಚ (ಕ್ಷರಣೆ) "ಕ್ತಃ"  
(೩-೨-೧೦೨)।

ಉಪಸಿಂಚತ್ ಉಪಸಿಂಚತ್ (ವಿಂ) ಚೆಮುಕಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಸಿಂಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಉಪ + ಷಿಚ (ಕ್ಷರಣೆ) "ಶತ್"  
(೩-೨-೧೨೪)।

ಉಪಸಿಂಚಮಾನ ಉಪಸಿಂಚಮಾನ (ವಿಂ) ಚೆಮುಕಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ಸಿಂಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಉಪ + ಷಿಚ (ಕ್ಷರಣೆ)  
"ಶಾನ್" (೩-೨-೧೨೪)।

ಉಪಸೀರ ಉಪಸೀರ (ಅವ್ಯಂ) 1. ನೇಗಿಲಿನ ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ.  
ಸೀರಸ್ಯ ಸಮೀಪೇ। ಸಾಮೀಪ್ಯೇ ಅವ್ಯಯಿಂ। 2. ನೇಗಿಲಿನಲ್ಲಿ.  
ಸೀರೇ ಉಪಸೀರಮ್। ಸಪ್ತಮ್ಯಥೇ ಅವ್ಯಯಿಂ।

ಉಪಸುಂದ ಉಪಸುಂದ (ಪುಂ) ಸುಂದನ ತಮ್ಮ, ನಿಕುಂಭ  
ನೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನ ಮಗ. [ಸುಂದ ಮತ್ತು ಉಪಸುಂದ  
ರಿಬ್ಬರೂ ತಮಗೆ ಪರಸ್ಪರ ತಮ್ಮಿಬ್ಬರಿಂದಲೇ ಮರಣ  
ಸಂಭವಿಸಬೇಕೆಂಬ ವರವನ್ನು ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ಪಡೆದು  
ಲೋಕವನ್ನು ಹಿಂಸಿಸತೊಡಗಿದಾಗ ಬ್ರಹ್ಮನು ವಿಶ್ವ  
ಕರ್ಮನ ಮೂಲಕ ತಿಲೋತ್ತಮೆಯನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಮಾಡಿಸಿ  
ಇವರಿಗೆ ಕಳುಹಿಸಿದನು. ಇವರಿಬ್ಬರೂ ಅವಳಲ್ಲಿ  
ಮೋಹಗೊಂಡು ಪರಸ್ಪರ ಕಾದಾಡಿ ಹತರಾದರು.  
ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೨೯-೨೩೨।] "ಸುಂದೋಪಸುಂದೋ ಸಹಜಾವಭೀಕೌ  
ಸುರೇಶ್ವಿವ ಕ್ವಾಪಿ ಸುರಾಜ್ಞನಾಯಾಮ್। ಅನ್ಯೋನ್ಯಮಾಹುತೃ ಪುರಾ  
ಯಸ್ಯ ಮನೋಭವೇಶೋರಿವ ಲಕ್ಷ್ಯಮಾಸ್ತಾಮ್" ಚಂ ಭಾಂ।

ಉಪಸೂರ್ಯಕ ಉಪಸೂರ್ಯಕ (ನಂ) ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರರ  
ಪರಿಧಿ, ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರ ಸುತ್ತಲೂ ಕಟ್ಟುವ  
ಮಂಡಲ. ಉಪಗತ ಸೂರ್ಯಮ್-"ಕನ್" (೫-೩-೯೭)।

ಉಪಸೃಷ್ಟ ಉಪಸೃಷ್ಟ (ಪುಂ) 1. ರಾಹು ಕೇತುಗಳಿಂದ  
ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ ಸೂರ್ಯ ಮತ್ತು ಚಂದ್ರ. ಉಪ+ಸೃಜ



(ವಿಸರ್ಗ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ನೇತೋಚಂತಮಾದಿತ್ಯಂ  
ನಾಸ್ತಂ ಯನ್ತಂ ಕದಾಚನ | ನೋಪಸೃಷ್ಟಂ ನ ವಾರಿಃ ಸ್ಥಂ ನ ಮಧ್ಯಂ ನ ಭಸೋ  
ಗತಮ್" ಮನುಂ ೪-೩೭। 2. ಮೈಥುನ, ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ  
ಸಂಬಂಧ. "ಅಪಸೃಷ್ಟಂ ತ್ರಿಭದ್ರಂ ಚ ಕ್ರೋಡಾರ್ತನಂ ಮಹಾಸುಖಮ್"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। (ವಿಂ) 3. ಕಾಮುಕ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ.  
"ಅಪಸೃಷ್ಟಾ ಇವ ಕ್ಷುಧ್ರಾಧಿಷ್ಠಿತಭವನಾ" ಕಾದಂ। 4. ವ್ಯಾಪ್ತ  
ವಾದ, ಕೂಡಿರುವ, ಸಹಿತವಾದ. "ರೋಗೋಪಸೃಷ್ಟ-  
ತನುದುರ್ವಸತಿ ಮುಮುಕ್ಷು:" ರಘುಂ ೮-೯೪। 5. ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ತೊಂದರೆಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಪ್ರ, ಪರಾ ಮೊದಲಾದ  
ಉಪಸರ್ಗಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ (ಕ್ರಿಯಾಪದ).

ಅಪಸೇಕ ಉಪಸೇಕ (ಪುಂ) ನೀರು ಚೆಮ್ಮುಕಿಸುವುದು,  
ಸಿಂಪಡಿಸುವುದು. ಅಪ + ಪಿಚ (ಕರಣ) ಭಾವ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)।

ಅಪಸೇವಕ ಉಪಸೇವಕ (ವಿಂ) ನೀರು ಚೆಮ್ಮುಕಿಸುವ,  
ಸಿಂಪಡಿಸುವ. ಅಪ + ಪಿಚ (ಕರಣ) "ತೃ" (೩-೧-೧೩೩)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಸೇವಕ - ಸೇವಕೀ.

ಅಪಸೇಚಕ ಉಪಸೇಚಕ (ವಿಂ) ನೀರು ಚೆಮ್ಮುಕಿಸುವ,  
ಸಿಂಪಡಿಸುವ. ಅಪ + ಪಿಚ (ಕರಣ) "ಫ್ಲು" (೩-೧-೧೩೩)।

ಅಪಸೇಚನ ಉಪಸೇಚನ (ನಂ) 1. ನೀರು ಚೆಮ್ಮುಕಿಸುವಿಕೆ,  
ಸಿಂಪಡಿಸುವಿಕೆ. ಅಪ + ಪಿಚ (ಕರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। (ವಿಂ) 2. ಚೆಮ್ಮುಕಿಸುವ, ಸಿಂಪಡಿ  
ಸುವ. ಕರ್ಮ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। 3. ಸೇಚನ  
ಸಾಧನ, ನೀರು ಸುರಿಯುವ ಬಿಂದಿಗೆ ಮೊದಲಾದುದು.  
ಅಪ + ಪಿಚ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅಪಸೇದಿವಸ್ ಉಪಸೇದಿವಸ್ (ವಿಂ) ಬಂದಿರುವ, ಆಗಮಿ  
ಸಿರುವ. ಅಪ + ಪದಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) "ವಸು:" (೩-೨-೧೦೮)। "ಅಥಾವದಾತಂ ತದಹೋ ವಿಡಮ್ಬನಾ ತಥಾ  
ಕಥಾ ಪ್ರೇಷ್ಯತಯೋಪಸೇದುಃ" ನೈಷಂ ೯-೧೦। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಸೇದಿವಿ - ಸೇದಿವೀ.

ಅಪಸೇವಕ ಉಪಸೇವಕ (ವಿಂ) 1. ಸೇವೆಯಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತ  
ನಾದ, ಶುಕ್ರೋಷೆಯಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದ. 2. ಸುಖಾಭಿ  
ಲಾಷೆಯಲ್ಲಿ, ಸುಖಾನುಭವದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದ. ಅಪ +  
ಸೇವ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಫ್ಲು" (೩-೧-೧೩೩)। "ಅದತ್ತಾದಾನ-  
ನಿರತ: ಪರದಾರೋಪಸೇವಕ:" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೧೩೬। 3. ಹತ್ತಿರ  
ದಲ್ಲಿ ಸೇವಿಸುವ.

ಅಪಸೇವನ ಉಪಸೇವನ (ನಂ) 1. ವ್ಯಭಿಚಾರ, ಪರಸ್ತ್ರೀ  
ಸಂಗಮ. ಅಪ + ಸೇವ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।  
"ನಹೀದೃಶಮನಾಯುಷ್ಯಂ ಲೋಕೇ ಕಿಂಚನ ವಿಧತೇ | ಯಾದೃಶಂ

ಪುಷ್ಪಸ್ಯೇಹ ಪರದಾರೋಪಸೇವನಮ್" ಮನುಂ ೪-೧೩೪। 2. ಹತ್ತಿರ  
ದಲ್ಲಿ ಸೇವಿಸುವಿಕೆ. "ನಿರತಾಹಂ ಸದಾ ಸತ್ಯೇ ಭರ್ತೃಣಾಮುಪಸೇವನೇ"  
ಭಾಂ ವನಂ। 3. ಆಯಾ ಕೆಲಸಗಳಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಆಸಕ್ತಿ,  
ಚಟ. "ಅಜೀರ್ಣಾಧ್ಯಯನಾಸಾವಿರ್ದಾನ್ತೋಪಸೇವನಾತ್" ಸುಶ್ರುತಂ।

ಅಪಸೇವಾ ಉಪಸೇವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಅಪಸೇವನ" ಪದದ ಅರ್ಥ.  
ಅಪ + ಸೇವ (ಸೇವಾಯಾಮ್) ಭಾವ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೩)।  
"ಗೋಭಿರಶ್ವೇಶ್ಚ ಯಾನೇಶ್ಚ ಕೃಷ್ಯಾ ರಾಜೋಪಸೇವಯಾ" ಮನುಂ  
೩-೬೪। "ಅದತ್ತಾನಾಮುಪಾದಾನಂ ಹಿಸಾ ಚೈವಾವಿಧಾನತ:" |  
ಪರದಾರೋಪಸೇವಾ ಚ ಶಾರೀರಂ ತ್ರಿವಿಧಂ ಸ್ಮೃತಮ್" ಮನುಂ ೧೨-೭।

ಅಪಸೇವಿನ್ ಉಪಸೇವಿನ್ (ವಿಂ) ಸೇವಿಸುವ, ಶುಕ್ರೋಷೆ  
ಮಾಡುವ. ಅಪ + ಸೇವ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)।  
"ಅಭಿವಾದನಶೀಲಸ್ಯ ನಿಯಂ ವೃದ್ಧೋಪಸೇವಿನ:" | ಚತ್ವಾರಿ ಸಂಪ್ರವರ್ಧಂತೇ  
ಆಯುರ್ವಿಧಾ ಯಶೋ ಬಲಮ್" ಮನುಂ ೨-೧೨೧। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೫)। -ಸೇವಿನಿ - ಸೇವಿನೀ.

ಅಪಸ್ಕರ ಉಪಸ್ಕರ (ಪುಂ) 1. ಗೃಹೋಪಕರಣ, ಮನೆಗೆ  
ಬೇಕಾದ ಅಗತ್ಯ ಪದಾರ್ಥಗಳು. ಅಪ + ಡು ಕೃ (ಕರಣ) "ಅ" (೩-೧-೧೩೪)। ಸುಟ್ (೬-೧-೧೩೯)। "ಪಂಚ  
ಸೂನಾ ಗೃಹಸ್ಥಸ್ಯ ಚುಲ್ಲೀಪೇಷಯುಪಸ್ಕರ:" | ಕಣ್ಡಿನಿ ಚೋಪಕುಂಭಶ್ಚ  
ಬध्यತೇ ಯಾಸ್ತು ವಾಹಯನ್" ಮನುಂ ೩-೬೮। 2. ವ್ಯಂಜನ,  
ಸಂಬಾರ್ ಪುಡಿ, ಚಟ್ನಿ, ಉಪ್ಪಿನಕಾಯಿ ಮುಂತಾ  
ದುದು. 3. ಭೂಷಣ, ಒಡವೆ, ಅಲಂಕಾರ.

ಅಪಸ್ಕರಣ ಉಪಸ್ಕರಣ (ನಂ) 1. ಅಲಂಕರಿಸುವುದು,  
ಶೃಂಗರಿಸುವುದು. ಅಪ + ಡು ಕೃ (ಕರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ವಿಕಾರ, ಬದಲಾವಣೆ. 3. ಪದಗಳ  
ಅಧ್ಯಾಹಾರ, ಬಿಟ್ಟುಹೋಗಿರುವ ಪದಗಳನ್ನು (ಅರ್ಥ  
ಪೂರ್ತಿಗಾಗಿ) ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 4. ಸಮೂಹ,  
ಸಮುದಾಯ, ಗುಂಪು. 5. ಹಿಂಸಿಸುವಿಕೆ, ನೋಯಿ  
ಸುವಿಕೆ. ಹಿಸಾನೇ ಸುಟ್ (೬-೧-೧೪೧) 6. ಹಿಂಸಿಸುವ  
ಸಾಧನ. 7. ಅಲಂಕರಿಸುವ ಒಡವೆ. ಅಪ + ಡು ಕೃ  
ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಅಪಸ್ಕಾರ ಉಪಸ್ಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಭೂಷಣ, ಒಡವೆ.  
ಅಪ + ಡು ಕೃ (ಕರಣ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು, ಸಮುದಾಯ. 3. ಅಧ್ಯಾಹಾರ,  
ಅವಶ್ಯವಾದ ಪದಗಳನ್ನು (ಅರ್ಥಪೂರ್ತಿಗಾಗಿ) ಸೇರಿಸಿ  
ಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಸಾಕಾಡ್ವಿಷಮನುಪಸ್ಕಾರಂ ವಿಷ್ವಗತಿ ನಿರಾ-  
ಕುಲಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೧-೩೮। 4. ವಿಕಾರ, ಬದಲಾವಣೆ.  
5. ಹೆಚ್ಚು ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಗುಣವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿ  
ಸುವುದು.



उपस्कृत लुपस्युत (वि०) 1. अलंकरीसल्लुप्प, शृंगरीसल्लुप्प. उप + कृ (करणे) "क्तः" (३-२-१०२)। उपस्कृता कन्या। 2. गुंसगि सैरिसल्लुप्प, बट्टुगुणिसल्लुप्प. उपस्कृता राजानः। 3. बदलवणै ह्योदिस, विकारह्योदिस. उपस्कृतं भुङ्क्ते। 4. अध्याहारमाडल्लुप्प, ह्योसदागि सैरि सल्लुप्प. उपस्कृतं ब्रूते। 5. बೇರೆ गुण ह्योदिसल्लुप्प.

उपस्तरण लुपस्युत (न०) 1. ಹರಡುವುದು, ಹಾಸು ವುದು. 2. ಹೊದಿಸುವುದು, ಮುಚ್ಚುವುದು. 3. ನೆಲ ವನ್ನು ಸಮನಾಗಿ ಮಾಡುವುದು, ಹಳ್ಳತಿಟ್ಟನ್ನು ಸರಿ ಪಡಿಸುವುದು. उप + स्तृ (आच्छादने) "ल्युट्" (३-३-११५)। "पुनर्नवीकृत्य लेपनोपस्तरणैः" आश्व० गृ०। 4. ಹಾಸುವ ವಸ್ತು, ಆಧಾರಭೂತವಾದ ಹರಡುವ ಪದಾರ್ಥ. "अमृतोपस्तरणमसि"। ಇದು ಭೋಜನದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಜಲಪಾನ ಮಂತ್ರ.

उपस्तुत लुपस्युत (वि०) ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ ಸ್ತೋತ್ರ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಕೊಂಡಾಡ ಲ್ಪಟ್ಟ. उप + ष्टु (स्तुतौ) "क्तः" (३-२-१०२)।

उपस्तुति लुपस्युति (स्त्री०) ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಸ್ತೋತ್ರ, ಸಮೀಪದ ಹೊಗಳಿಕೆ. उप समीपे स्तुतिः।

उपस्थ लुपस्यु (पुं०) 1. ಪುರುಷನ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ, ಲಿಂಗ. उप समीपे तिष्ठति—ष्ठा (गतिनिवृत्तौ) "कः" (३-२-४)। "स्नानं मौनोपवासेज्या स्वाध्यायोपस्थ-निग्रहः" याज्ञ० ३-३१३। 2. ಯೋನಿ, ಸ್ತ್ರೀಯರ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ. "उपस्थमुदरं जिह्वा हस्तौ पादौ च पञ्चमम्। चक्षुर्नासा च कणौ च धनं देहस्तथैव च" मनु० ८-१२५। 3. ಉತ್ಸಂಗ, ತೊಡೆ, 4. ಅವಾನದ್ವಾರ, ಮಲದ್ವಾರ, ಗುದ. "उपस्थः शोफसि क्रोडे तथा मदनमन्दिरे" मेदि०। "उपस्थो योनिलिङ्गयोः। उत्सङ्गगुदयोश्चापि" हेम०। (वि०) 5. ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರುವ, ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ.

उपस्थात् लुपस्युत् (पुं०) 1. ಮುತ್ತಿಕ್ಕು. (वि०) 2. ಸೇವಕ, ಆಳು. उप + ष्ठा (गतिनिवृत्तौ) "तृच्" (३-२-१३५)। 3. ವಿನೀತ, ವಿಧೇಯ. 4. ಸಕಾಲ ದಲ್ಲಿ ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ. उप + ष्ठा "तृच्" (३-१-१३३)। "अन्यवादी क्रियाद्वेषी नोपस्थाता निरुतरः। आहूतप्रपलायी च हीनः पञ्चविधः स्मृतः"। 5. ಉಪಾಸನೆಮಾಡುವ, ಪೂಜಿಸುವ.

उपस्थान लुपस्युत (न०) 1. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬಂದಿರು ವಿಕೆ. उप + ष्ठा (गतिनिवृत्तौ) "ल्युट्" (३-३-११५)। "किमिदं शिष्योपदेशकाले युगपदाचार्ययोरत्रोपस्थानम्?" माल० १। 2. ಧ್ಯಾನ, ಸ್ಮರಣೆ, ಅನುಸಂಧಾನ. "तत्त्वस्मृतेरुपस्थानात्सत्त्वयोगात्परिक्षयात्" याज्ञ० ३-१६०। 3. ಪೂಜೆ, ಉಪಾಸನೆ. "सूर्योपस्थानं कुर्वः"। 4. ಹತ್ತಿರದ ಜಾಗ, ಸಮೀಪಸ್ಥಳ. 5. ಸೇರು ವಿಕೆ, ಕಲೆಯುವಿಕೆ. "उपस्थानं तु सङ्गतिः" वैज०। 6. ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಹೊಂದುವಿಕೆ. 7. ತಲುಪುವಿಕೆ, ಸೇರುವಿಕೆ.

उपस्थानीय लुपಸ್ಯುನೀಯ (ವಿ०) 1. ಸೇವಿಸಲ್ಪಡುವ, ಸೇವಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. उप + ष्ठा (गतिनिवृत्तौ) "अनीयर्" (३-१-९६)। 2. ಸೇವಿಸುವವನು, ಉಪಾ ಸಕ, ಪೂಜಿಸುವವನು. ಕರ್ತಂ "अनीयर्" (३-४-६८)। ನಿಪಾಂ।

उपस्थापक लुपस्यುಪಕ (वि०) 1. ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ತರುವ, ಸಮೀಪದಲ್ಲಿಡುವ. उप + ष्ठा (गतिनिवृत्तौ) + णिच् "ष्कुल्" (३-१-१३३)। 2. ಹಿಂದೆ ಅನುಭವಿಸಿದ ಅಥವಾ ನೋಡಿದ ವಿಷಯವನ್ನು ನೆನಪಿಗೆ ತರುವ.

उपस्थापन लुपस्यುಪನ (न०) 1. ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ತಂದಿಡು ವುದು, ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ತಲುಪಿಸುವುದು. उप + ष्ठा (गतिनिवृत्तौ) "ल्युट्" (३-३-११५)। 2. ಹಿಂದಿನ ದನ್ನು ನೆನಪಿಗೆ ತರುವುದು.

उपस्थापनीय लुಪಸ್ಯುಪನೀಯ (वि०) 1. ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ತಂದಿಡಲ್ಪಡುವ, 2. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ತಂದಿಡಲು ಅರ್ಹ ವಾದ. 3. ಸ್ಮರಣೆಗೆ ತರಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ನೆನಪಿಗೆ ತರಲ್ಪಡುವ. उप + ष्ठा (गतिनिवृत्तौ) + णिच् "अनीयर्" (३-१-९६)।

उपस्थित लुपಸ್ಯುತಿತ (न०) 1. ಉಪಸ್ಥಾನ, ಸೇವನೆ, ಪೂಜೆ. उप + ष्ठा (गतिनिवृत्तौ) भावे "क्तः" (३-३-११४)। (वि०) 2. ಸನ್ನಿಹಿತವಾದ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ, ಕೊಂಚ ಕಾಲದಲ್ಲೇ ಒದಗಬಹುದಾದ. ಕರ್ತಂ "क्तः" (३-४-७२)। "अथेप्सितं भर्तृरुपस्थितो-दयं सखीजनोद्रीक्षणकौमुदीमुखम्" रघु० ३-१। 3. ತಲು ಪಿರುವ, ಸೇರಿರುವ. "अयमपरः कार्यान्तरसचिवोऽस्मा नुपस्थितः" माल० १। 4. ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ, ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ. "हय्यङ्गवीनमादाय घोषवृद्धा-नुपास्थितान्" रघु० १-४५। 5. ಒದಗಿರುವ, ಲಭ್ಯ ವಾದ, ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ. "अयाचितोपस्थितमम्बु केवलम्"



कुमा० ५-२२। 6. ಜ್ಞಾಪಿಸಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ನೆನಪಿ  
ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಬುದ್ಧಿಗೆ ಗೋಚರವಾದ. "उपस्थित-  
परित्यागे मानाभावः"। 7. ಸೇವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -स्थिता -ಸ್ಥಿತಾ. 8. ಹನ್ನೊಂದನೆಯ  
ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: "त्वाङ्गौ  
गुरुण्यमुपस्थिता स्यात्" वृ० २०। ಇದರ  
ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

त ज ज गु गु  
००।००।००।००

उपस्थिति ಉಪಸ್ಥಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ಮೃತಿ, ನೆನಪು.  
उप + ष्टा (गतिनिवृत्ती) "क्तिन्" (३-३-९४)।  
2. ಸಮಾಪಿಸುವುದು, ಹತ್ತಿರ ಸೇರುವುದು. 3. ತಲುಪು  
ವುದು, ಸೇರುವುದು. 4. ಸೇವೆ, ಶುಶ್ರೂಷೆ. 5. ಸನ್ನಿಹಿತ  
ವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲೇ ಒದಗುವಿಕೆ.

उपस्थेय ಉಪಸ್ಥೇಯ (ವಿಂ) 1. ಸೇವಿಸಲ್ಪಡುವ,  
ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಸೇವಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. उप +  
ष्ठा (गतिनिवृत्ती) "यत्" (३-१-९७)।

उपस्पर्श ಉಪಸ್ಪರ್ಶ (ಪುಂ) 1. ಆಚಮನ, ಮಂತ್ರ  
ಪೂರ್ವಕ ನೀರನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥನಮಾಡಿ (ಕುಡಿದು) ಮುಖ,  
ಮೂಗು, ಕಣ್ಣು, ಕಿವಿ, ಹೊಕ್ಕಳು, ಎದೆ, ತಲೆ,  
ಭುಜಗಳು ಇವುಗಳನ್ನು ಮುಟ್ಟುವುದು. "त्रिः  
प्राश्यापोद्विरुन्मृज्य मुखमेतानुपस्पृशेत्। आस्यनासाक्षि-  
कर्णश्च नाभिवक्षःशिरोसकान्"। 2. ಸ್ಪರ್ಶ, ಮುಟ್ಟು  
ವಿಕೆ. 3. ಸ್ಪೃಶ. उप + स्पृश (संस्पर्शने) "घञ्"  
(३-३-१८)। "उपस्पर्शः स्पर्शमात्रे स्नानाचमनयोरपि"  
मेदि०।

उपस्पर्शन ಉಪಸ್ಪರ್ಶನ (ನಂ) "उपस्पर्श" ಪದದ  
ಅರ್ಥ. उप + स्पृश (संस्पर्शने) "ल्युट्" (३-३-११५)।

उपहत ಉಪಹತ (ವಿಂ) 1. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. उप + हन  
(हिंसागत्योः) "क्तः" (३-२-१०२)। 2. ತಡೆದು  
ನಿಲ್ಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಡೆದು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ.  
"जलदजालघनैरसिताश्मनामुपहतप्रचयेह मरीचिभिः"  
किरा० ५-४८। 3. ದೂಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೆಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
"किमेभिराशोपहतात्मवृत्तिभिः" कुमा० ५-७६।  
"मात्सर्यरागोपहतात्मनां हि" किरा० ३-५३।  
4. ಹೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನೋಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
5. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "दैवेनोपहतस्य बुद्धिरथवा पूर्व  
विपर्यस्यति" मुद्रा० ६-८।

उपहति ಉಪಹತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊಡೆತ, ಏಟು. उप +  
हन (हिंसागत्योः) "क्तिन्" (३-३-९४)। 2. ಅಡ್ಡಿ,  
ವಿಘ್ನ, ತಡೆ. 3. ಕೊಲ್ಲುವಿಕೆ, ನಾಶಪಡಿಸುವಿಕೆ.  
4. ಕೆಡಿಸುವಿಕೆ.

उपहरण ಉಪಹರಣ (ನಂ) 1. ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ತರುವುದು,  
ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುವುದು. उप + ह्व (हरणे) "ल्युट्"  
(३-३-११५)। 2. ಕಾಣಿಕೆಯನ್ನು ಒಪ್ಪಿಸುವುದು,  
ಮರ್ಯಾದೆ ಸಲ್ಲಿಸುವುದು. 3. ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಪೂಜೆ  
ಸಲ್ಲಿಸುವುದು. 4. ಊಟಕ್ಕೆ ಬಡಿಸುವುದು.

उपहर्तु ಉಪಹರ್ತೃ (ವಿಂ) 1. ಊಟಕ್ಕೆ ಬಡಿಸುವವನು.  
उप + ह्व (हरणे) "तृच्" (३-१-१३३)। "अनुमन्ता  
विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी। संस्कर्ता चोपहर्ता च  
खादकश्चेति घातकाः" मनु० ५-५१। 2. ಕಾಣಿಕೆ  
ಯನ್ನು ಒಪ್ಪಿಸುವವನು, ಮರ್ಯಾದೆ ಸಲ್ಲಿಸುವವನು.  
3. ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ತರುವವನು, ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುವವನು.  
4. ಪೂಜೆ ಸಲ್ಲಿಸುವವನು.

उपहव ಉಪಹವ (ಪುಂ) ಆಹ್ವಾನ, ಕರೆಯುವಿಕೆ. उप +  
ह्व (स्पर्धायां शब्दे च) "अप्" (३-३-७२)।  
"वीनामुपसरं दृष्ट्वा तेऽन्योन्योपहवा गुहाम्" भट्टि०  
७-६०।

उपहसत् ಉಪಹಸತ್ (ವಿಂ) ಹಾಸ್ಯಮಾಡುತ್ತಿರುವ,  
ನೋಡಿ ನಗುತ್ತಿರುವ. उप + हसे (हसने) "शत्"  
(३-२-१२४)। "हंसोऽप्यसौ हंसगतेः सुदत्याः पुरः  
पुरश्चारु चलन् बभासे। वैलक्ष्यहेतोर्गतिमेतदीयामग्रेऽ-  
नुकृत्योपहसन्निवोच्चैः" नैष० ३-१०।

उपहसित ಉಪಹಸಿತ (ನಂ) 1. ಉಪಹಾಸ್ಯ, ಕಾರಣ  
ವಿಲ್ಲದ ನಗುವಿನಿಂದ ಮಾಡುವ ಗೇಲಿ. उप + हसे (हसने)  
ಭಾವೆ "क्तः" (३-३-११४)। (ವಿಂ) 2. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದೆ  
ನಕ್ಕು ಗೇಲಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. उप + हसे कर्म० "क्तः"  
(३-२-१०२)।

उपहस्त ಉಪಹಸ್ತ (ಪುಂ) ಕೈಯಿಂದ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳು  
ವುದು.

उपहस्तिका ಉಪಹಸ್ತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಾಂಬೂಲದ ಚೀಲ,  
ಎಲೆ, ಅಡಿಕೆ, ಸುಣ್ಣ ಮುಂತಾದುವನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವ  
ಬಟ್ಟೆಯ ಚೀಲ, —ಬಿದಿರಿನಿಂದ ಮಾಡಿದ ಸಂಬಳಿಗೆ, —  
ಹಿತ್ತಾಳೆಯ ಅಥವಾ ಬೆಳ್ಳಿಯ ಕೈವೆಟ್ಟಿಗೆ. उपगता  
हस्तम्। संज्ञायां "कन्"। "उपहस्तिकायाः ताम्बूलं  
कर्पूरसहितमुद्धृत्य मह्यं दत्वा" दशकु०।



ಉಪಹಾರ ಉಪಹಾರ (ಪುಂ) 1. ಕಾಣಿಕೆಯ ಅರ್ಪಣೆ. ಉಪ+ಹೃ (ಹರಣೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೯)। "ರತ್ನಪುಷ್ಪೋ-ಹಾರೇಣ ಛಾಯಾಮಾನವ ಪಾದಯೋಃ" ರಘುಂ ೪-೮೪। 2. ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಕೊಡುವ ಬಲಿ, ದೇವತೆಗಳ ನೈವೇದ್ಯ. "ತತಃ ಸಪರ್ಯಾ ಸಪಶುಪಹಾರಾಮ್" ರಘುಂ ೧೬-೩೯। 3. (ಹೂವು ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ) ಪೂಜೆ. "ಭವತಿ ವಿರಲಭಕ್ತಿಮ್ಲಾನಪುಷ್ಪೋಪಹಾರಃ" ರಘುಂ ೫-೭೪। "ವಿದಧತಿ ನ ಗೃಹೇಷುತ್ಪುಲಪುಷ್ಪೋಪಹಾರಮ್" ಮಾಧಂ ೧೧-೩೬। (ವಿಂ) 4. ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ ಹಾರವುಳ್ಳ. ಉಪಗತಃ ಹಾರೋ यस್ಯ। "ಉರೋಭುವಾ ಕುಂಭಯುಗೇನ ಜೃಮ್ಭಿತಂ ನವೋಪಹಾರೇಣ ವಯಸ್ಕೃತೇನ" ನೈಷಂ ೧-೪೮।

ಉಪಹಾಸ ಉಪಹಾಸ (ಪುಂ) ಗೇಲಿ, ನಂದೆಯನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ನಗು. ಉಪ + ಹಸೇ (ಹಸನೇ) ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ಫಲಮಸ್ಯೋಪಹಾಸಸ್ಯ ಸದ್ವಃ ಪ್ರಾಪ್ಸ್ಯಸಿ ಪಸ್ಯ ಮಾಮ್" ರಘುಂ ೧೨-೩೭।

ಉಪಹಾಸ್ಯ ಉಪಹಾಸ್ಯ (ವಿಂ) ಗೇಲಿಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ನಕ್ಕು ಅಣಕಿಸಲ್ಪಡುವ. ಉಪ + ಹಸೇ (ಹಸನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಘ್" (೩-೧-೧೨೪)।

ಉಪಹಿತ ಉಪಹಿತ (ವಿಂ) 1. ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉಪ + ತು ಧಾಕ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ನಿಹ್ಲಾದಿನ್ಯುಪಹಿತಮಧ್ಯಮಸ್ವರೋತ್ಥಾ" ಮಾಲಂ ೧-೨೧। 3. ಕೂಡಿರುವ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. "ವಿನಯೋಪಹಿತಸ್ತ್ವಯಾ ಕುತಃ ಸದೃಶೋನ್ಯೋ ಗುಣವಾನವಿಸ್ಮಯಃ" ಮಾಧಂ ೧೬-೭। 4. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪುಷ್ಪಂ ಪ್ರವಾಲೋಪಹಿತಂ ಯದಿ ಸ್ಯಾನ್ಮುಕ್ತಾಫಲಂ ವಾ ಯದಿ ವಿದ್ರುಮಸ್ಥಮ್" ಕುಮಾರಂ ೧-೪೪।

ಉಪಹೃತ ಉಪಹೃತ (ವಿಂ) ಕರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಉಪ + ಹ್ವೇ (ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೩)।

ಉಪಹೃತಿ ಉಪಹೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಹ್ವಾನ, ಕರೆಯುವುದು. ಉಪ + ಹ್ವೇ (ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। "ತತ್ರ ನಿಯತವಿಹಿತೋಪಹೃತಿಷು ಪ್ರೋಷಿತೇಷು ಪತಿಷು ದ್ವಯೋಪಿತಾಮ್" ಮಾಧಂ ೧೪-೩೦।

ಉಪಹೃತ ಉಪಹೃತ (ವಿಂ) 1. ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ತರಲ್ಪಟ್ಟ, ಕರೆತರಲ್ಪಟ್ಟ. ಉಪ+ಹೃ (ಹರಣೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಪ್ರಿಯಾಂ ವಿಕಲ್ಪೋಪಹೃತಾಂ ಸ ಯಾವದ್ವಿಗೀಶಸಂದೇಶಮಜಲ್ಪದಲ್ಪಮ್" ನೈಷಂ ೬-೧೭। 2. ಕಾಣಿಕೆಯಾಗಿ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಅರ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ತೇನಾಭಿಲಿಖ್ಯೋಪಹೃತಸ್ವಹಾರಾ" ನೈಷಂ ೬-೩೭। 4. ಬಲಿ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಉಪಹ್ವರ ಉಪಹ್ವರ (ಪುಂ) 1. ರಹಸ್ಯ ಪ್ರದೇಶ, ಗುಪ್ತವಾದ ಸ್ಥಳ. ಉಪ+ಹ್ವ (ಕೌಟಿಲೇ) "ಘಃ" (೩-೩-೧೧೮)। "ಉಪಹ್ವರೇ ಪುನರಿತ್ಯಾಶಿಕ್ಷಯಂ ಧನಮಿತ್ರಮ್" ದಶಕುಂ। 2. ಸಮಾಪ, ಹತ್ತಿರ. "ರಹೋಂತಿಕಮುಪಹ್ವರೇ" ಅಮಂ।

ಉಪಹ್ವಾನ ಉಪಹ್ವಾನ (ನಂ) 1. ಆಹ್ವಾನ, ಕರೆಯುವುದು. ಉಪ + ಹ್ವೇ (ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಮಂತ್ರಪೂರ್ವಕ ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಕರೆಯುವುದು.

ಉಪಾಂಶು ಉಪಾಂಶು (ಪುಂ) 1. ಮೆಲ್ಲಗೆ ಮಾಡುವ ಜಪ, ಉಪಾಸ್ಯ ದೇವತೆಯನ್ನು ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಧ್ಯಾನಮಾಡುತ್ತ ನಾಲಿಗೆ ತುಟಗಳನ್ನು ಮಾತ್ರ ಅಡಿಸುತ್ತಾ ತನಗೆ ಮಾತ್ರ ಕೇಳಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವ ಮಂತ್ರಜಪ. "ಜಿಹ್ವೋಷಿ ಚಾಲಯೇತ್ಕಿಂಚಿತ್ ದೇವತಾಗತಮಾನಸಃ। ನಿಜಶ್ರವಣಯೋಗ್ಯಃ ಸ್ಯಾದುಪಾಂಶುಃ ಸ ಜಪಃ ಸ್ಮೃತಃ"। "ವಿಧಿಯಜ್ಞಾಜ್ಞಪಯಜ್ಞೋ ವಿಶಿಷ್ಟೋ ದಶಭಿರ್ಗುಣೈಃ। ಉಪಾಂಶುಃ ಸ್ಯಾಂಚ್ಚತಗುಣಃ ಸಾಹಸ್ರೋ ಮಾನಸಃ ಸ್ಮೃತಃ" ಮನುಂ ೨-೮೫। 2. ಮೌನ, ಮಾತನಾಡದಿರುವಿಕೆ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ರಹಸ್ಯದಲ್ಲಿ, ಅಂತರಂಗವಾಗಿ, ಗುಟ್ಟಾಗಿ. "ಮುಹುರತ್ರಸದ್ವಿರಪಿ ಯತ್ರ ಗೌರವಾತ್ ಶಾಖಾಂಶುನಾಂಶವ ಉಪಾಂಶು ಜಘ್ನಿರೇ" ಮಾಧಂ ೧೩-೫೪।

ಉಪಾಕರಣ ಉಪಾಕರಣ (ನಂ) 1. ಸಂಸ್ಕಾರಪೂರ್ವಕ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವುದು, ಸಂಸ್ಕಾರಪೂರ್ವಕ ಮಾಡುವ ವೇದಸ್ವೀಕಾರ. ಉಪ+ಆ+ತು ಕೃಕ್ (ಕರಣಂ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಅಥಾತೋಽಧ್ಯಾಯೋಪಾಕರಣಮ್" ಆಶ್ವಂ ಗಂ। 2. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಮಂತ್ರದಿಂದ ಪಶುವನ್ನು ಪ್ರೋಕ್ಷಿಸುವುದು.

ಉಪಾಕರ್ಮನ್ ಉಪಾಕರ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. 2. ಶ್ರಾವಣಮಾಸದಲ್ಲಿ ಹೋಮ ಪೂರ್ವಕ ಮಾಡುವ ವೇದಸ್ವೀಕಾರ. ಉಪ+ಆ+ತು ಕೃಕ್ (ಕರಣಂ) ಕರಂ "ಮನಿನ್" (ಉಂ ೪-೧೮೪)। "ಅಧ್ಯಾಯಾನಾಮುಪಾಕರ್ಮ ಶ್ರಾವಣ್ಯಾಂ ಶ್ರವಣೇನ ವಾ। ಹಸ್ತೇನೌಷಧಿ-ಭಾವೇ ವಾ ಪಚ್ಚಮ್ಯಾಂ ಶ್ರಾವಣಸ್ಯ ತು" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೧೪೨।

ಉಪಾಕೃತ ಉಪಾಕೃತ (ಪುಂ) 1. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಮಂತ್ರಗಳಿಂದ ಅಭಿಮಂತ್ರಿಸಿ ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ ಪಶು. ಉಪ+ಆ+ತು ಕೃಕ್ (ಕರಣಂ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। (ನಂ) 2. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. 3. ಯಾಗದ ಪಶುವಿನ ಸಂಸ್ಕಾರ. 4. (ವೇದಾಧ್ಯಯನದ) ಪ್ರಾರಂಭ. (ವಿಂ) 5. ತೊಂದರೆಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಉಪಾಕೃತ ಉಪದ್ರುತೇ। ಮನ್ತ್ರೇಣ ಪ್ರೋಕ್ಷಿತಪಶೌ" ಹೇಮಂ। 6. ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.



उपाकृतिन् ಉಪಾಕೃತಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭಿಸುವವನು, ಉಪಕ್ರಮಿಸುವವನು. 2. (ವೇದಾಧ್ಯಯನ) ಪ್ರಾರಂಭಿಸುವವನು. ಉಪಾಕೃತ "ಇತಿ:" (೪-೨-೮೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪)। -ಕೃತಿನಿ -ಕೃತಿನೀ.

उपाक्ष ಉಪಾಕ್ಷ (ಅವ್ಯಂ) ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ, ಕಣ್ಣಿನ ಎದುರಿಗೆ, ಕಣ್ಣಿನ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ. ಅಕ್ಷಣ: ಸಮೀಪಮ್। ಸಾಮೀಪ್ಯೆ ಅವ್ಯಯಿಂ। "ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷೋಪಾಕ್ಷಮವ್ಯಕ್ಷಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

उपाख्या ಉಪಾಖ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗುವಿಕೆ. ಉಪಾಖ್ಯಾಯತೆ ಉಪಲಬ್ಧತೆ— ಉಪ + ಆ + ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕರ್ತನೇ) "ಅಡ್" (೩-೩-೧೦೬)। "ದ್ವಿತೀಯೇಚಾನುಪಾಖ್ಯಾ" ಣಾಂ ಸುಂ ೬-೩-೮೦। 2. ಮಾತುಗಳಿಂದ ವಿವರಿಸುವಿಕೆ.

उपाख्यान ಉಪಾಖ್ಯಾನ (ನಂ) 1. ಹಿಂದೆ ನಡೆದ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುವಿಕೆ, ಪೂರ್ವಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳುವುದು. ಉಪ + ಆ + ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕರ್ತನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ಇದಂ ಶತಸಹಸ್ರಂ ತು ಶ್ಲೋಕಾನಾಂ ಪುಣ್ಯಕರ್ಮಣಾಮ್। ಉಪಾಖ್ಯಾನೈ: ಸಹ ಜ್ಞೇಯಂ ಶ್ರಾವ್ಯಂ ಭಾರತಮುತ್ತಮಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧-೭೭। 2. ಇತರರಿಂದ ಕೇಳಿದ ಕಥೆಯನ್ನು ಮತ್ತೆ ಹೇಳುವುದು.

उपागत ಉಪಾಗತ (ವಿಂ) 1. ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ, ತಲುಪಿರುವ, ಆಗಮಿಸಿರುವ. ಉಪ + ಆ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ದಾತುಂ ಪ್ರದಾನೋಚಿತ ಭೂರಿದಾಮ್ನಿ-ಮುಪಾಗತ: ಸಿದ್ಧಿಮಿವಾಸ್ಮಿ ವಿಧಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೨೩। 2. ಸಂಭವಿಸಿದ, ಒದಗಿದ, ಉಂಟಾದ. 3. ಒಪ್ಪಿದ, ಸಂಮತಿಸಿದ. 4. ಹೊಂದಿರುವ, ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ. "ಸಂರಂಭ-ವೇಗೋಜ್ಜಿತವೇದನೇಷು ಗಾತ್ರೇಷು ವಾಧಿರ್ಯಮುಪಾಗತೇಷು" ಕಿರಾಂ ೧೭-೪೯।

उपागम ಉಪಾಗಮ (ಪುಂ) 1. ತಲುಪುವುದು, ಬಂದು ಸೇರುವುದು. ಉಪ + ಆ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೮)। 2. ಒದಗುವುದು, ಸಂಭವಿಸುವುದು. "ಉಪಾಗಮೇ ದುಃಖಚರಿತಾ ಇವಾಪದಾಂ ಗತಿಂ ನ ನಿಶ್ಚೇತುಮಲಂ ಶಿಲೀಮುಖಾ:" ಕಿರಾಂ ೪-೩೪। 3. ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಂಮತಿ.

उपाग्र ಉಪಾಗ್ರ (ವಿಂ) 1. ಅಪ್ರಧಾನ, ಮುಖ್ಯವಲ್ಲದ. ಉಪಮಿತೋಷ್ಣಂ। 2. ಕೊನೆಯದಕ್ಕೆ ಹಿಂದಿನದಾದ.

उपाग्रहण ಉಪಾಗ್ರಹಣ (ನಂ) ಸಂಸ್ಕಾರಪೂರ್ವಕ ವೇದವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವಿಕೆ. ಉಪ + ಆ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।

उपाङ्ग ಉಪಾಂಗ (ಪುಂ) 1. ತಲಕ, ಹಣೆಯ ಬೊಟ್ಟು. (ನಂ) 2. ಪ್ರತ್ಯಂಗ, ದೇಹದಲ್ಲಿರುವ ಸಣ್ಣ ಸಣ್ಣ

ಅನಯವಗಳು. ಅಂಜ್ ದೇಹ:। ಅಂಜೋಪಯೋಗಿ ಉಪಾಂಜಮ್। ಉಪಾಂಗಗಳು: ತಲೆ, ಹೊಟ್ಟೆ, ಬೆನ್ನು, ನಾಭಿ (ಹೊಕ್ಕಳು), ಹಣೆ, ಮೂಗು, ಗಡ್ಡ, ಹೊಕ್ಕಳಿನ ಕೆಳಭಾಗ (ಬಸ್ತಿ), ಕಂಠ (ಕತ್ತು), ಕಿವಿಗಳು, ಕಣ್ಣುಗಳು, ಹುಬ್ಬುಗಳು, ಶಂಖಗಳು (ಕಿವಿ ಮತ್ತು ಹುಬ್ಬುಗಳ ಮಧ್ಯೆ), ಹೆಗಲುಗಳು, ಕೆನ್ನೆಗಳು, ಕಕ್ಷುಗಳು, ಸ್ತನಗಳು, ವೃಷಣಗಳು, ಪಕ್ಕೆಗಳು, ತೊಡೆಗಳು, ಪಿರೈಗಳು, ಮಂಡಿಗಳು, ತೋಳುಗಳು ಮತ್ತು ಬೆರಳುಗಳು ಮೊದಲಾದುವು. ಸುಶ್ರುತಂ। 3. ವೇದಾಂಗಗಳಿಗೆ ಸಮಾನವಾದ— ಪುರಾಣಗಳು. ನ್ಯಾಯಶಾಸ್ತ್ರ, ಮೀಮಾಂಸಾ ಮತ್ತು ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರಗಳು. 4. ಪ್ರಧಾನ ಕಾರ್ಯದ ಅಂಗಕಾರ್ಯಗಳಿಗೆ ಉಪಯುಕ್ತ ಕಾರ್ಯ. ಉಪಮಿತಮಂಜ್ಞೇನ।

उपाजे ಉಪಾಜೇ (ಅವ್ಯಂ) ಬಲವಿಲ್ಲದವನಿಗೆ ಬಲಗೂಡಿಸುವಿಕೆ. ಇದಕ್ಕೆ ಕೃತ್ ಧಾತುವು ಪರವಾದಾಗ ವಿಕಲ್ಪವಾಗಿ ಗತಿಸಂಜ್ಞೆ ಬರುವುದು. ಗತಿಸಂಜ್ಞೆ ಬಂದಾಗ ಸಮಾಸ ಬಂದು ಉಪಾಜೇಕೃತ್ಯ ಎಂದೂ, ಗತಿಸಂಜ್ಞೆಯಿಲ್ಲದಾಗ ಉಪಾಜೇ ಕೃತ್ವಾ ಎಂದೂ ಆಗುವುದು. ಬಲವಿಲ್ಲದವನಿಗೆ ಬಲಗೂಡಿಸಿ ಎಂದರ್ಥ. ಸಿಂ ಕೌಂ (೧-೪-೭೩)।

उपाञ्जन ಉಪಾಂಜನ (ನಂ) 1. ಲೇವನ, ಸುಣ್ಣ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಬಳಿಯುವುದು. ಉಪ + ಅಂಜ್ (ವ್ಯಕ್ತ್ಯಾದೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ಮಾರ್ಜನೋ-ಪಾಂಜನೇವೇಷಮ್ ಪುನ: ಪಾಕೇನ ಮೃಣ್ಮಯಮ್" ಮನುಂ ೪-೧೨೨। 2. ಸಗಣೆಯಿಂದ ನೆಲವನ್ನು ಸಾರಿಸುವುದು. "ಸಮಾರ್ಜನೋ-ಪಾಂಜನೇನ ಸೇಕೇನೋಲೇಖನೇನ ಚ। ಗವಾಂ ಚ ಪರಿವಾಸೇನ ಭೂಮಿ: ಶುದ್ಧಚತಿ ಪಶ್ಚಿಮಿ:" ಮನುಂ ೪-೧೨೪।

उपात्त ಉಪಾತ್ತ (ಪುಂ) 1. ಮದವಿಲ್ಲದ ಆನೆ. (ವಿಂ) 2. ಸ್ವೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಉಪ + ಆ + ತ್ವ (ದಾನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 3. ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಪಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಉಪಾತ್ತವರ್ಣಂ ಚರಿತೇ ಪಿನಾಕಿನ: ಸರ್ವಾಪಕಂಠಸ್ಥಲಿತ: ಪದೇರಿಯಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೪೬। 4. ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ. "ಉಪಾತ್ತವಿಧೋ ಗುರುದಕ್ಷಿಣಾರ್ಥಿ ಕೌತ್ಸ: ಪ್ರಪೇದೇ ವರತಂತುಶಿಷ್ಯ:" ರಘುಂ ೪-೧। 5. ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ನ ಚಕ್ಷುಃ: ಕಾಂತಿವಿಶೇಷ-ಬುದ್ಧಯಾ ಕಾಲಾಂಜನಂ ಮಂಜಲಮಿತ್ಯುಪಾತ್ತಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೨೦। 6. ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸಮಾಚರಾಚಾರ-ಮುಪಾತ್ತಶಸ್ತ್ರೋ ಜಪೋಪವಾಸಾಭಿವರ್ಮುನೀನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೨೮।



उपात्यय ಉಪಾತ್ಯಯ (೪ಂ) 1. ಶಾಸ್ತ್ರ ಮತ್ತು ಲೋಕ ಮರ್ಯಾದೆಯನ್ನು ಮೀರಿ ನಡೆಯುವುದು. ಉಪಾತ್ಯಯ:-ಉ+ಅತಿ+ಙ್ (ಗತೌ) "ಅತ್" (೩-೩-೪೬)। 2. ಕ್ರಮ ಬಿಟ್ಟು ನಡೆಯುವುದು. "ಪರಾವನುಪಾತ್ಯಯ ಙ್" ಪಾಂ ಸೂಂ ೩-೩-೩೮। "ಕ್ರಮಪ್ರಾಪ್ತಸ್ಯಾನತಿಪಾತೋನುಪಾತ್ಯಯ:" ಸಿಂ ಕೌಂ। 3. ಅತಿಕ್ರಮಿಸುವುದು, ಉಲ್ಲಂಘಿಸುವುದು, ಮೀರುವುದು. "ಅತೀಕ್ರಮ ಉಪಾತ್ಯಯ:" ವೈಜಂ। 4. ನಾಶ, ಪ್ರಳಯ.

उपादान ಉಪಾದಾನ (ನಂ) 1. ಗ್ರಹಣ, ಸ್ವೀಕಾರ, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಉ+ಆ+ಙ್ ದಾನ್ (ದಾನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ವಿಸ್ತಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ: ಶೂದ್ರಾತ್ ದ್ರವ್ಯೋಪಾದಾನಮಾಚರೇತ್" ಮನುಂ ೮-೪೧೭। 2. ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರ, ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ಆಯಾ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಬಿಡದಂತೆ ತಡೆಯುವುದು. 3. ಮೂಲಕಾರಣ, ಕಾರ್ಯೋತ್ಪತ್ತಿಗಾಗಿ ಅವಶ್ಯವಾಗಿರಬೇಕಾದ ಕಾರಣ, ಯಾವಾಗಲೂ ಕಾರ್ಯದೊಡನೆ ಸಂಬಂಧಹೊಂದಿರುವ ಕಾರಣ; ಘಟೋತ್ಪತ್ತಿಗಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಮಣ್ಣು ಯಾವಾಗಲೂ ಕಾರ್ಯರೂಪವಾದ ಘಟದೊಡನೆಯೇ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವುದರಿಂದ ಮತ್ತು (ಮಣ್ಣು) ಘಟಕ್ಕೆ ಉಪಾದಾನಕಾರಣ. ಉಪಾದೀಯತೆ - ಉ+ಆ+ಙ್ ದಾನ್ ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩)। ಹೀಗೆಯೇ ಪಟಕ್ಕೆ ತಂತುವೂ, ಕುಂಡಲಕ್ಕೆ ಚಿನ್ನವೂ ಉಪಾದಾನಕಾರಣಗಳು. ನೈಯಾಯಿಕರು ಇದನ್ನು ಸಮವಾಯಿ ಕಾರಣವೆನ್ನುತ್ತಾರೆ. ದ್ವೈತಿಗಳ ಮತದಲ್ಲಿ ಮೂಲ ಕಾರಣವು ಉಪಾದಾನಕಾರಣ. ಯಾವುದು ಪರಿಣಾಮ ಹೊಂದಿ ಕಾರ್ಯವಾಗುವುದೋ ಅದು ಆ ಕಾರ್ಯ ವಸ್ತುವಿಗೆ ಪರಿಣಾಮಕಾರಣ. ಅಂದರೆ ಉಪಾದಾನ ಕಾರಣ. ಮೃತ್ತಿಕೆಯೂ, ತಂತುವೂ ಪರಿಣಾಮಹೊಂದಿ ಘಟ ಮತ್ತು ಪಟರೂಪವಾಗುವುದರಿಂದ ಪರಿಣಾಮ ಕಾರಣ. ಅದ್ವೈತಿಗಳ ಮತದಲ್ಲಿ ಉಪಾದಾನವು (1) ಪರಿಣಾಮ ಮತ್ತು (2) ವಿವರ್ತಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. (1) ಕಾರಣಸ್ವರೂಪವು ಬದಲಾವಣೆಹೊಂದಿ ಕಾರ್ಯವಾಗಿ ಪರಿಣಮಿಸುವುದು ಪರಿಣಾಮ ಮೃಪಾದಾನ. ಘಟಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ಮೃತ್ತು ಸ್ವರೂಪ ಬದಲಾವಣೆಹೊಂದಿ ಘಟವಾಗಿ ಪರಿಣಮಿಸುವುದರಿಂದ ಪರಿಣಾಮ ಮೃಪಾದಾನ. (2) ಕಾರಣ ಸ್ವರೂಪವು ಬದಲಾವಣೆಹೊಂದದೆ ಕಾರ್ಯರೂಪವಾಗಿ ತೋರುವುದು ವಿವರ್ತೋಪಾದಾನ. ಬ್ರಹ್ಮ ಸ್ವರೂಪವು ಬದಲಾವಣೆಹೊಂದದೆ ಪ್ರಪಂಚರೂಪ

ವಾದ ಕಾರ್ಯವಾಗಿ ತೋರುವುದರಿಂದ ವಿವರ್ತೋಪಾದಾನ. ಪ್ರಪಂಚಕ್ಕೆ ಬ್ರಹ್ಮವು ಉಪಾದಾನಕಾರಣ. ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತಿಗಳ ಮತದಲ್ಲಿ ಕಾರ್ಯರೂಪವಾಗಿ ಪರಿಣಾಮಯೋಗ್ಯವಾದ ವಸ್ತುವು ಉಪಾದಾನ ಕಾರಣ. ಅಥವಾ ಕಾರ್ಯದ ಮುಂದುಮುಂದಿನ ಅವಸ್ಥೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಸ್ವರೂಪಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದ ಆಯಾ ಕಾರ್ಯಗಳಿಗನುಗುಣವಾದ ಮೊದಲಿನ (ಪೂರ್ವಭಾವಿ) ಅವಸ್ಥಾವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ದ್ರವ್ಯವು ಉಪಾದಾನಕಾರಣ. ಕಾರ್ಯವಾದ ಘಟಕ್ಕೆ ಕಪಾಲತ್ವ ಮತ್ತು ಘಟತ್ವ ಮೊದಲಾದ ಅವಸ್ಥಾವಿಶಿಷ್ಟ ಸ್ವರೂಪಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದ ಮೊದಲಿನ ಪಿಂಡತ್ವಾವಸ್ಥಾವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಮೃತ್ತು ಉಪಾದಾನಕಾರಣ. ಹೀಗೆಯೇ ಸೂಕ್ಷ್ಮಚಿದಚಿದ್ವಿಶಿಷ್ಟರೂಪದಿಂದ ಈಶ್ವರನು ಜಗತ್ತಿಗೆ ಉಪಾದಾನಕಾರಣನು. 4. ಸಾಂಖ್ಯರು ಹೇಳುವ ಒಂಭತ್ತು ವಿಧ ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ ತುಷ್ಟಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. ["ಗ್ರಹಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 5. ಉಪಾದಾನ, ಉಂಭವೃತ್ತಿ, ಭಿಕ್ಷೆಯೆತ್ತುವುದು.

उपादानलक्षणा ಉಪಾದಾನಲಕ್ಷಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾಕ್ಯಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯಾರ್ಥದ ಅನ್ವಯಸಿದ್ಧಿಗಾಗಿ ತನ್ನ (ಮುಖ್ಯ) ಅರ್ಥವನ್ನು ಬಿಡದೆ ಮುಖ್ಯಾರ್ಥಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದ ಮತ್ತೊಂದು ಅರ್ಥದ ಪ್ರತೀತಿಯುಂಟಾಗುವಿಕೆ. ಮುಖ್ಯಾರ್ಥವನ್ನು ಬಿಡದೆ ಲಕ್ಷಣೆಯಿಂದ ಬೇರೊಂದು ಅರ್ಥವು ತೋರುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ "ಉಪಾದಾನಲಕ್ಷಣಾ" ಎಂದು ಹೆಸರು. "ಉಪಾದೀಯತೆ ಸ್ವಾರ್ಥೋಜೇತೃಪಾದಾನಮ್ - ಉ + ಆ + ಙ್ ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। ಉಪಾದಾನಾತ್ ಲಕ್ಷಣಾ। "ಕ್ರುಂತಾ: ಪ್ರವಿಶಂತಿ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಅಜೇತನವಾದ ಕುಂತಗಳಿಗೆ ಪ್ರವೇಶಕರ್ತೃತ್ವವು ಅಸಂಭವವಾದುದರಿಂದ ಲಕ್ಷಣೆಯಿಂದ ವಾಚ್ಯಾರ್ಥಕ್ಕಿಂತಲೂ ಅತಿಕ್ರಮವಾದ ಕುಂತಧಾರಿಗಳಾದ ಪುರುಷರೂಪವಾದ ಒಂದು ಅರ್ಥಕ್ಕೆ ಪ್ರತೀತಿಯಿರುವುದರಿಂದಲೂ, ಕುಂತರೂಪವಾದ ಮುಖ್ಯಾರ್ಥಕ್ಕೂ ಉಪಾದಾನವಿರುವುದರಿಂದಲೂ "ಉಪಾದಾನಲಕ್ಷಣಾ"। ಇದಕ್ಕೆ "ಅಜಹತ್ಸ್ವಾರ್ಥಿ" ಎಂದೂ ಹೆಸರು. "ಮುಖ್ಯಾರ್ಥಸ್ಯೇತರಾಕ್ಷಣೋ ವಾಕ್ಯಾರ್ಥೋಽವಯವಸಿದ್ಧಯೇ। ಸ್ವಾಧಾತ್ಮನೋಽಪ್ಯುಪಾದಾನಾದೇವೋಪಾದಾನಲಕ್ಷಣಾ" ಸಾಂ ದಂ ೨-೬।

उपादेय ಉಪಾದೇಯ (ವಿಂ) 1. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಸ್ವೀಕರಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಉಪಾದಾತ್ಯಯೋಗ್ಯಮ್-ಉ+ಆ+ಙ್ ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೭)। "वयस्य मकरन्द संप्रत्युपादेयो माधवस्य जीवलोकः"



मालतीं १०। २. अंगिकरिसलु योऽङ्गुवाद, बप्ति  
कौङ्कबहुवाद. ३. श्रेष्ठवाद, लुङ्कष्यवाद.

**उपाधि लुपाधि (पुं) १.** धर्मद विषयवागि  
मादुव चिंत. उपाधीयते — उप + आ + ड धात्र्  
(धारणपोषणयोः) भावे “किः” (३-३-९२)।  
२. विशिष्ट, गुण, धर्म. “नीलो घटः” ಎಂಬಲ್ಲಿ  
ನೀಲತ್ವರೂಪವಾದ ಧರ್ಮವು ಉಪಾಧಿ. ३. ಬಿರುದು.  
४. ಪ್ರಕಾರ, ವಿಧ. “अधीतिबोधाचरणप्रचारणदंशा-  
श्चतस्रः प्रणयन्नुपाधिभिः” ನೆಪಂ १-४। (वि०) ५.  
ಕುಟುಂಬವೋಪಪದ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದವನು. ಉಪಗತಃ  
ಆಧಿಮ್। ६. ಸಾಧ್ಯವಿರುವೆಡೆಯಲ್ಲಿಲ್ಲಾ ಇದ್ದು  
ಸಾಧನ (ಹೇತು)ವಿರುವ ಕಡೆ ಇಲ್ಲದಿರುವ ವಸ್ತು.  
“धूमवान् बह्वेः” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಸಾಧ್ಯ (ಹೊಗೆ) ಇರುವ  
ಕಡೆಯಲ್ಲಿ ಇದ್ದು ಸಾಧನ (ಹೇತುವಾದ ವಹ್ನಿ)ವಿರುವ  
ಅಯೋಗೋಳಕ (ಕಾದ ಕಬ್ಬಿಣ)ದಲ್ಲಿ ಇಲ್ಲದಿರುವ  
ಆದ್ರ್ವೀಂಧನಸಂಯೋಗವು (ಹಸಿ ಕಟ್ಟಿಗೆಯ  
ಸಂಬಂಧ) ಉಪಾಧಿ. “साध्यव्यापकत्वे सति साधना-  
व्यापकः उपाधिः”। ७. ತನ್ನ ಸಂಬಂಧವುಳ್ಳ  
ಒಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು ತನ್ನ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ ಅದೇ  
ವಸ್ತುವಿಗಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯೆಂದು ತಿಳಿಸುವ (ಬೇರ್ಪಡಿಸುವ)  
ಒಂದು ವಸ್ತು. ಘಟದಲ್ಲಿರುವ ಆಕಾಶವು  
ಹೊರಗಿನ ಆಕಾಶಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯೆಂಬ ಬುದ್ಧಿ  
ಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದರಿಂದ ಘಟವು ಉಪಾಧಿ.  
८. ಕಪಟ, ಮೋಸ, ವಂಚನೆ. “उपाधिर्धर्मचिन्तायां  
कुटुम्बव्यापृते छले” मेदि०। ९. ಹೇತು, ಕಾರಣ.  
“व्यतिषजति पदार्थानान्तरः कोऽपि हेतुर्न खलु बहिरुपाधीन्  
प्रीतयः संश्रयन्ते” उ०रा० ६-१२।

**उपाधेय लुपाधेय (वि०) ಸಮಾಪದಲ್ಲಿಡಲು**  
ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರಿಸಲ್ಪಡುವ. उप + आ + ड  
धात्र् (धारणपोषणयोः) “यत्” (३-१-९७)।

**उपाध्याय लुपाध्याय (पुं) ಗುರು, ಜೀವನಕ್ಕಾಗಿ**  
ವೇದ ವೇದಾಂಗಗಳನ್ನು ಕಲಿಸುವವನು. उपेत्याधीयते-  
स्मात्—उप + अधि + डङ् (अध्ययने) “घञ्” (३-३-२१)।  
स्त्रियां वा “ङीष्” (वा० ३-३-२१)। उपाध्याया  
लुपाध्याया. उपाध्यायी लुपाध्यायी. “एक-  
देशन्तु वेदस्य वेदाङ्गान्यपि वा पुनः। योऽध्यापयति  
वृत्त्यर्थमुपाध्यायः स उच्यते” मनु० २-१४१। उपा-  
ध्यायस्य स्त्री उपाध्यायानी लुपाध्यायानि. पक्षे

उपाध्यायी लुपाध्यायी. पुंयोगे तु वा आनुक  
“ङीष्” च (वा० ४-१-४९)।

**उपानह लुಪಾನಹ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚರ್ಮದ ಚಪ್ಪಲಿ,**  
ತೊಗಲಿನ ಪಾದರಕ್ಷೆ. पादमुपनहति — उप + णह  
(बन्धने) “क्विप्” (वा० ३-३-१०८)। “इवा यदि  
क्रियते राजा स किं नाश्नात्युपानहम्” हितो० ३-५८।

**उपान्त लुಪಾಂತ (पुं) १.** ಕೊನೆಯ ಭಾಗದ ಸಮಾಪ  
ಪ್ರದೇಶ. उपमितोऽन्तेन। “स एष कैलास उपान्त-  
सर्पिणः करोत्यकालास्तमयं विवस्वतः” किरा० ५-३५।  
२. ಸಮಾಪಪ್ರದೇಶ, ಬಹಳ ಹತ್ತಿರ. “मेरोरुपान्ते-  
ष्विव वर्तमानमन्योन्यसंसक्तमहस्त्रियामा” रघु० ७-२४।  
(वि०) ३. ಹತ್ತಿರದ, ಸಮಾಪದ. (अव्य०) ४.  
ಕೊನೆಯದರ ಸಮಾಪ. अन्तस्य समीपम्। सामीप्ये  
अव्ययी०।

**उपान्तिक लुपಾಂತिक (न०) १.** ಬಹಳ ಸಮಾಪ,  
ಬಹಳ ಹತ್ತಿರ. “सरजसमपहाय केतकीनां प्रसव-  
मुपान्तिकनीपरेणुकीर्णम्” किरा० १०-२६। (वि०) २.  
ಬಹಳ ಸಮಾಪದಲ್ಲಿರುವ, ಬಹಳ ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರುವ.

**उपान्ति लुಪಾಂತि (वि०) १.** ಕೊನೆಯದಕ್ಕೆ  
ಸಮಾಪದ, ಉಪಾಂತ್ಯ. उपगतमन्तिमम्। (अव्य०) २.  
ಕೊನೆಯದರ ಸಮಾಪ.

**उपान्त्य लुपಾಂತ्य (वि०) ಕೊನೆಯದರ ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ**  
ರುವ. उपान्ते भवम् “यत्” (४-३-५४)। “उत्तम-  
ग्रहणमुपान्त्यस्यापि संग्रहार्थम्” सि० कौ० (५-४-९०)।

**उपाय लुಪಾಯ (पुं) १.** ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬರುವುದು.  
उप + अय (गती) भावे “घञ्” (३-३-१८)।  
२. ಉಪಾಯ, ಯುಕ್ತಿ. “उपायेन हि यच्छक्यं न  
तच्छक्यं पराक्रमः” हितो०। ३. ಕಾರ್ಯದ ಯೋಜನೆ,  
ಕಾರ್ಯಸಾಧನೆಯ ವ್ಯಾಪಾರ. “गुणवत्युपायनिलये  
स्थितिहेतो साधिके त्रिवर्गस्य” मुद्रा० १-५। ४. (क)  
ರಾಜನು ಸಂಪತ್ತನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸಲು ಮತ್ತು ಶತ್ರು  
ವನ್ನು ಜಯಿಸಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಸಾಧನ; ಇದು  
(१) ಸಾಮ, (२) ದಾನ, (३) ಭೇದ ಮತ್ತು  
(४) ದಂಡಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ಬಗೆ. (१) ಸಂಧಾನ  
(ಒಳ್ಳೆಯತನದಿಂದ ಒಪ್ಪಂದದ ಮಾತುಕತೆ) ಮತ್ತು  
ನಾನು ನಿನ್ನವನೆಂದು ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತಿನಿಂದ ಸ್ವಾಧೀನ  
ಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು “साम” ಉಪಾಯ.  
(२) ತನ್ನಲ್ಲಿರುವ ಧನ ಕೊಡುವುದು, ಅಪೂರ್ವವಸ್ತು



ಗಳನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸುವುದು ಇವು “ದಾನ” ಉಪಾಯ. (3) ತನ್ನ ಮೇಲೆ ಇಬ್ಬರು ಶತ್ರುಗಳು ಕಲಿತು ಬಂದಾಗ ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಅವರ ಸ್ನೇಹ ಕೆಡಿಸಿ ಒಬ್ಬೊಬ್ಬರನ್ನು ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಮಾಡುವುದು “ಭೇದ” ಉಪಾಯ. (4) ಸಂಹರಿಸುವುದು, ಪೀಡಿಸುವುದು, ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿ ಕೊಳ್ಳೆ ಹೊಡೆಯುವುದು ಇತ್ಯಾದಿ “ದಂಡ” ಉಪಾಯ. “ಸಾಮ ದಾನಂ ಚ ಭೇದಶ್ಚ ದಂಡಶ್ಚೇವ ಚತುಷ್ಟಯಮ್। ಉಪಾಯಾಃ ಕಥಿತಾ ರಾಜಾಂ ಸ್ವಾರ್ಥ-ಸಂಪತ್ತಯೇ ಧ್ರುವಮ್”। ಕೆಲವರು ಮಾಯೆ, ಉಪೇಕ್ಷೆ ಮತ್ತು ಇಂದ್ರಜಾಲಗಳನ್ನೂ ಸೇರಿಸಿ ಉಪಾಯಗಳು ಎಳು ಎಂದು ಹೇಳುವರು. “ಸಾಮ ದಾನಂ ಚ ಭೇದಶ್ಚ ದಂಡಶ್ಚೇತಿ ಚತುಷ್ಟಯಮ್। ಮಾಯೋಪೇಕ್ಷೇಂದ್ರಜಾಲಂ ಚ ಸಪ್ತೋಪಾಯಾಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾಃ”। “ಉಪಾಯಮಾಸ್ಥಿತಸ್ಯಾಪಿ ನಶ್ಯಂತ್ಯರ್ಥಾಃ ಪ್ರಮಾಣತಃ। ಹಂತಿ ನೋಪಶಯಸ್ಥೋಽಪಿ ಶಯಾಲುರ್ಮೃಗಯುರ್ಮಗಾನ್” ಮಾಘಂ ೨-೮೦। (೫) ರಸಿಕರು ಕಾಂತಾಜನರಲ್ಲಿ ಉಪಯೋಗಿಸಬೇಕಾದ ಉಪಾಯಗಳು: ಸಾಮ ಮತ್ತು ದಾನ ಇವೆರಡು ಮಾತ್ರ. ಭೇದೋಪಾಯ ದಿಂದ ರಸಾಭಾಸವೂ, ದಂಡೋಪಾಯದಿಂದ ರಸ ಭಂಗವೂ ಆಗುವುದು. “ಉಪಾಯೋ ದ್ವೌ ಪ್ರಯೋಕ್ತವ್ಯೌ ಕಾಂತಾಸು ಸುವಿಚಕ್ಷಣೈಃ। ಸಾಮದಾನೇ ಇತಿ ಪ್ರಾಹುಃ ಶೃಂಗಾರರಸಕೋವಿದಾಃ। ಭೇದೇ ಪ್ರಯುಜ್ಯಮಾನೇ ಹಿ ರಸಾಭಾಸಸ್ತು ಜಾಯತೇ। ನಿಗ್ರಹೇ ರಸಭಂಗಃ ಸ್ಯಾತ್ತಸ್ಮಾತ್ತೌ ಪರಿವರ್ಜಯೇತ್”। 5. ಉತ್ತಮಾರ್ಗನು (ಸಾಲಕೊಟ್ಟವನು) ತನ್ನ ಹಣವನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಪಡೆಯಲು ಮಾಡುವ ಪ್ರಯತ್ನ. “ಯೇಽಪ್ಯಾಯೇರಯಂ ಸ್ವಂ ಪ್ರಾಪ್ನುಯಾದುತ್ತಮಾರ್ಗಿಕಃ। ತೇಸ್ತೇಽಪ್ಯಾಯೇಃ ಸಂಗೃಹ್ಯ ದಾಪಯೇದಧರ್ಮಾಣಿ-ಕಮ್” ಮನುಂ ೮-೪೮। ಈ ಉಪಾಯವು (1) ಧರ್ಮ, (2) ವ್ಯವಹಾರ, (3) ಭಲ, (4) ಆಚರಿತ ಮತ್ತು (5) ಬಲಾತ್ಕಾರಗಳೆಂದು ಐದು ವಿಧ. “ಧರ್ಮೇಣ ವ್ಯವಹಾರೇಣ ಚಲೇನಾಚರಿತೇನ ಚ। ಪ್ರಯುಕ್ತಂ ಸಾಧಯೇದರ್ಥಂ ಪಶ್ಚಮೇನ ಬಲೇನ ಚ” ಮನುಂ ೮-೪೯। (1) ಸ್ನೇಹಿತರು, ಬಂಧುಗಳು ಮುಂತಾದವರಿಂದ ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತು ಹೇಳಿಸಿ ಕೊಟ್ಟ ಹಣವನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಪಡೆಯುವುದು ಧರ್ಮೋಪಾಯ. “ಸುಹೃತ್-ಸಂಬಂಧಿಸಂದಿಷ್ಟೈಃ ಸಾಮ್ನಾ ಚಾನುಗಮೇನ ಚ। ಪ್ರಾಯೇಣ ವಾ ಋಣಿ ದಾಪ್ಯೋ ಧರ್ಮಂ ಏಷ ಸನಾತನಃ”। (2) ಸಾಲಗಾರನು ಸಾಲ ತೀರಿಸಲು ಅಸಮರ್ಥನಾದಾಗ ಅವನಿಗೆ ವಾಡೆಜ್ಜು, ವ್ಯವಸಾಯ ಮುಂತಾದುದಕ್ಕೆ ಹಣವನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಅವನು ಗಳಿಸಿದ ಲಾಭದಿಂದ ಕೊಟ್ಟ ಹಣವನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಪಡೆಯುವುದು ವ್ಯವಹಾರೋಪಾಯ. (3) ಕಪಟದಿಂದ ಸಾಲಗಾರ (ಮಣಿ) ನನ್ನು ಯಾಚಿಸಿ

ಹಣ ಪಡೆದು ಮತ್ತೊಬ್ಬನಿಂದ ತಂದಂತೆ ಮಾಡಿ ಅದನ್ನು ಸಾಲಕೊಟ್ಟವ (ಸಾಹುಕಾರ) ನಿಗೆ ಕೊಡಿಸುವುದು ಭಲೋಪಾಯವು. “ಛದನಾ ಯಾಚಿತಂ ಚಾರ್ಥಮಾನೀಯ ಋಣಿಕಾದ್ವಲಿ। ಅನ್ಯಾಹೃತಾದಿವಾಹೃತ್ಯ ದಾಪ್ಯತೇ ಯತ್ರ ಸೋಪಧಿಃ”। (4) ಸಾಲಕೊಂಡವನು ಸಾಲ ತೀರಿಸದಿದ್ದಲ್ಲಿ ಅವನ ಹೆಂಡತಿ, ದನ ಕರುಗಳನ್ನು ಹೊಡೆದು ಹಿಂಸಿಸಿ ಮನೆಯ ಬಾಗಿಲಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ವಸೂಲು ಮಾಡಿ ಕೊಡಿಸುವುದು ಆಚರಿತೋಪಾಯ. (5) ಸಾಲ ತೀರಿಸದ ಸಾಲಗಾರನನ್ನು ಮನೆಗೆ ಕರೆತಂದು ಹೊಡೆದು ಬಡಿದು ಸಾಹುಕಾರನಿಗೆ ಹಣ ಕೊಡಿಸುವುದು ಬಲಾತ್ಕಾರೋಪಾಯ. “ದಾರಪುತ್ರಪಶುನ್ ಹತ್ವಾ ಕೃತ್ವಾ ದ್ವಾರೋಪ-ವೇಶನಮ್। ಯತ್ರಾರ್ಥಿ ದಾಪ್ಯತೇಽರ್ಥಂ ಸ್ವಂ ತದಾಚರಿತಮುಚ್ಯತೇ। ಬದ್ಧವಾ ಸ್ವಗೃಹಮಾನೀಯ ತಾಡನಾಽಶ್ವರೂಪಕರ್ಮೈಃ। ಋಣಿಕೋ ದಾಪ್ಯತೇ ಯತ್ರ ಬಲಾತ್ಕಾರಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ” ಬೃಹಸ್ಪತಿಃ। 6. ಪ್ರಯತ್ನ. “ಅಸಂಯತಾತ್ಮನಾ ಯೋಗೋ ದುಷ್ಪ್ರಾಪ್ತಃ ಇತಿ ಮೇ ಮತಿಃ। ವಶ್ಯಾತ್ಮನಾ ತು ಯತತಾ ಶಕ್ಯೋಽವಾಪ್ತುಮುಪಾಯತಃ” ಗೀತಾ ೬-೩೬। 7. ಉಪಕ್ರಮ, ಪ್ರಾರಂಭ. 8. ಸಾಧನ, ಸಲಕರಣೆ.

ಉಪಾಯನ ಉಪಾಯನ (ನಂ) 1. ರಾಜದರ್ಶನಕ್ಕಾಗಿ ತರುವ ಕಾಣಿಕೆ. ಉಪಾಯತೇ — ಉಪ + ಅಯ (ಗತೌ) ಕರ್ಮಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೩)। “ನಯತೃಯುಗಮ್ಚದಗಾಧಿರಾರ್ಧತಾಂ ಭೃಶಂ ನೃಪೋಪಾಯನದಂತಿನಾಂ ಮದಃ” ಕಿರಾಂ ೧-೧೬। 2. ಕಾಣಿಕೆಗಾಗಿ ತರುವ ವಸ್ತು. “ಪರಸ್ಪರೇಣ ವಿಜ್ಞಾತ-ಸ್ತೇಽಪ್ಯಾಯನಪಾಣಿಪು” ರಘುಂ ೪-೭೯। 3. ಸಮಾಪವನ್ನು ಹೊಂದುವುದು, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು. ಉಪ + ಅಯ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪)।

ಉಪಾಯಿನ್ ಉಪಾಯಿನ (ವಿಂ) 1. ಸಾಧನವುಳ್ಳ, ಸಲ ಕರಣೆಯುಳ್ಳ. ಉಪಾಯೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪)। 2. ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಬರುವ. ಉಪಾಯತೇ — ಉಪ + ಅಯ (ಗತೌ) “ಇನಿಃ” (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೪)। ಉಪಾಯಿನಿ ಉಪಾಯಿನೀ.

ಉಪಾರತ ಉಪಾರತ (ವಿಂ) ಹಿಂತಿರುಗಿದ. ಉಪ + ಆ + ರಮು (ಕೌಡಾಯಾಮ್) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨)। “ಉಪಾರತಾಃ ಪರಿಚಿಮ-ರಾತ್ರಿಗೋಚರಾದಪಾರಯಂತ್ಯಃ ಪತಿಸ್ತು ಜವೇನ ಗಾಮ್” ಕಿರಾಂ ೪-೧೦।

ಉಪಾಹುತ ಉಪಾಹುತ (ವಿಂ) 1. ಬೆಳೆದಿರುವ, ಹೆಚ್ಚಿರುವ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿದ. ಉಪ + ಆ + ಹು (ಬೀಜ-ಜನ್ಮಾದೌ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨)। 2. ಉಂಟಾದ, ಹುಟ್ಟಿದ, ಉತ್ಪನ್ನವಾದ. “ಕುತೋಽಯಮಿತ್ಯುಪಾಹುತಕುತೂಹಲಾ ಚಾಹಂ ಮುಕುಲಿತಲೋಚನಾ ತೇನ ಕುಸುಮಗಂಧೇನ ಮಧುಕರೀವಾಕುಪ್ಯ-ಮಾಣಾ” ಕಾದಂ।



ಉಪಾರ್ಜನ ಉಪಾರ್ಜನ (ನಂ) ಸಂಪಾದನೆ. ಉಪ+ಅರ್ಜ (ಪ್ರತಿಯಲೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಶಸ್ತ್ರಾಣಾಂ ಸ ರಥಾಣಾಂ ಚ ಕೃತ್ವಾ ಸಮ್ಯಗುಪಾರ್ಜನಮ್" ರಾಮಾಂ।

ಉಪಾಲಂಘ ಉಪಾಲಂಘ (ವಿಂ) ನಿಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಬೈಯ ಲ್ಪಟ್ಟು. ಉಪ+ಆ+ಙ ಲಭಃ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಉಪಾಲಂಘ ಉಪಾಲಂಘ (ಪುಂ) ನಿಂದೆ, ಬೈಗಳು. ಉಪ+ಆ+ಙ ಲಭಃ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ತವೋಪಾಲಂಘೇ ಪತಿತಾಸ್ಮಿ" ಮಾಲಂ ೧। ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। -ಆಲಂಘನಮ್ -ಆಲಂಘನಮ್.

ಉಪಾರ್ತನ ಉಪಾರ್ತನ (ನಂ) 1. ಹಿಂತಿರುಗಿ ಬರುವಿಕೆ, ಮತ್ತೆ ಬರುವಿಕೆ. ಉಪ+ಆ+ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹೊರಳಾಡುವಿಕೆ.

ಉಪಾರ್ತನ ಉಪಾರ್ತನ (ವಿಂ) 1. ದಣಿವಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ನೆಲದ ಮೇಲೆ ಹೊರಳಾಡಿದ ಕುದುರೆ. ಉಪ+ಆ+ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ತ್ರಿಷೂಪಾರ್ತನಲೂಕಿತೌ" ಅಮಂ। (ವಿಂ) 2. ಹಿಂತಿರುಗಿ ಬಂದ, ಮತ್ತೆ ಬಂದ. 3. ಪೂರ್ವ (ಹಿಂದಿನ) ಸ್ಥಿತಿಗೆ ಬಂದಿರುವ. "ಉಪಾರ್ತನಸ್ಯ ಪಾಪೇಭ್ಯೋ ಯಶ್ಚ ವಾಸೋ ಗುಣಃ ಸಹ" ಭವಿಷ್ಯಂ।

ಉಪಾಶ್ರಯ ಉಪಾಶ್ರಯ (ಪುಂ) 1. ಆಶ್ರಯ, ಆಸರೆ, ಅವಲಂಬನೆ. ಉಪ+ಆ+ಶ್ರಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಅಃ" (೩-೩-೫೬)। "ಇಪ್ಸಿತಸ್ಯ ನ ಭವೇದುಪಾಶ್ರಯಃ ಕಸ್ಯ ನಿಜಿತರಜಸ್ತಮೋಗುಣಃ" ಕಿರಾಂ ೧೩-೪೦। (ವಿಂ) 2. ಆಶ್ರಯಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಆಶ್ರಯಿಸಲ್ಪಡುವ. "ತ್ವಂ ಹಿ ನಸ್ತಾತ ಸರ್ವೇಷಾಂ ದುಃಖಿತಾನಾಮುಪಾಶ್ರಯಃ" ಭಾಂ ವನಂ।

ಉಪಾಶ್ರಿತ ಉಪಾಶ್ರಿತ (ವಿಂ) 1. ಆಶ್ರಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನು, ಆಸರೆಕೊಟ್ಟವನು. ಉಪ+ಆ+ಶ್ರಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಆಶ್ರಯ ಪಡೆದವನು, ಆಸರೆ ಹೊಂದಿದವನು. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)।

ಉಪಾಸಕ ಉಪಾಸಕ (ವಿಂ) 1. ಸೇವಕ, ಆಳು. ಉಪ+ಆಸ (ಉಪವೇಶನೇ) "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಪೂಜಿಸುವವನು, ಆರಾಧಿಸುವವನು. 3. ಬೌದ್ಧ ಭಿಕ್ಷು. "ಉಪಾಸಕಾನಾಂ ಸಾಮ್ಪ್ರತಮೇತಸ್ಮಿನ್ ಮಲಯಕೇತುಕಡಕೇ ಅನುಕೂಲೇನ ಅನನುಕೂಲೇನ ವಾ ಅಗೃಹೀತಮುದ್ರೇಣ ನ ಗಮ್ಯತೇ" ಮುದ್ರಾಂ ೫।

ಉಪಾಸಜ್ಞ ಉಪಾಸಜ್ಞ (ಪುಂ) 1. ಬತ್ತಳಿಕೆ, ಬಾಣಗಳ ಚೀಲ. ಉಪಾಸಜ್ಯಂತೇಶ್ವರ ಶರಾಃ - ಷಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ಕಸ್ಯೇಮೇ ಕ್ಷುರನಾರಾಚಾಃ ಸಹಸ್ರಂ ಲೋಮವಾಪಿನಃ। ಪ್ರಕ್ಷಿಪ್ತಾಸ್ತೀಕ್ಷ್ಣತುಂಡಾಗ್ರಾ ಉಪಾಸಜ್ಞೇ ಹಿರಣ್ಮಯೇ"

ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೪೧-೧೧। 2. ಬಹಳ ಹತ್ತಿರ, ಅತ್ಯಂತ ಸಮೀಪ. ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)।

ಉಪಾಸನ ಉಪಾಸನ (ನಂ) 1. ಬಾಣಪ್ರಯೋಗದ ಅಭ್ಯಾಸ, ಬಾಣಬಿಡುವುದನ್ನು ಕಲಿಯುವುದು. ಉಪ+ಆಸು (ಕ್ಷೇಪಣೇ) ಆಸ (ಉಪವೇಶನೇ) ವಾ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಶರಾಮ್ಯಾಸ ಉಪಾಸನಮ್" ಅಮಂ। 2. ಶುಶ್ರೂಷೆ, ಸೇವೆ. "ಆಚಾರ್ಯೋಪಾಸನಂ ಶೌಚಂ ಸ್ವಯಂ-ಮಾತಮವಿನಿಗ್ರಹಃ" ಗೀತಾ ೧೩-೭। 3. ಪೂಜೆ, ಆರಾಧನೆ. 4. ಧ್ಯಾನ, ಚಿಂತನೆ. 5. ಆಸನ, ಪೀಠ. "ಉಪಾಸನಂ ಶರಾಮ್ಯಾಸೇಷ್ಯುಪಾಸ್ತಾವಾಸನೇಷಿ ಚ" ಮೇದಿಂ। 6. ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ಪೀಡಿಸುವುದು. "ಉಪಾಸನಂ ಶರಾಮ್ಯಾಸೇ ಶುಶ್ರೂಷಾಣಾಂ ಚ ಹಿಸಾನೇ" ವಿಶ್ವಂ। ಭಾವೇ "ಫಲ್" (೩-೩-೧೦೭)। -ಆಸನಾ -ಆಸನಾ. "ಸ್ವರ್ಣೇವಿತಿರ್ಣಃ ಕರವಾಮ ವಾಮನೇಶ್ವರೇ ಭವತ್ಯಾ ಕಿಮುಪಾಸನಾಸು" ನೈಪಂ ೮-೯೮।

ಉಪಾಸಾದಿತ ಉಪಾಸಾದಿತ (ನಂ) 1. ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಲಾಭ, ಸಂಪಾದನೆ. ಉಪ+ಆ+ಪದ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೫)। (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಉಪಾಸಿತ ಉಪಾಸಿತ (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಆರಾಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉಪ+ಆಸ (ಉಪವೇಶನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಸೇವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಶುಶ್ರೂಷೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಮಸಃ ಕಲಮೇಋಪಾಸಿತಮ್" ನೈಪಂ ೨-೬೭। 3. ಧ್ಯಾನಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಉಪಾಸಿತು ಉಪಾಸಿತು (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸುವವನು, ಆರಾಧಿಸುವವನು. ಉಪ+ಆಸ (ಉಪವೇಶನೇ) "ತಃ" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಸೇವಕ, ಶುಶ್ರೂಷೆಮಾಡುವವನು. "ಉಪಾಸಿತಾ ಚ ವೃದ್ಧಾಣಾಂ ಜಿತತಂದ್ರಿರಲೋಪಃ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೫೬-೨೦। 3. ಧ್ಯಾನಿಸುವವನು.

ಉಪಾಸ್ತಿ ಉಪಾಸ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೂಜೆ, ಆರಾಧನೆ, ಉಪಾಸನೆ. ಉಪ+ಆಸ (ಉಪವೇಶನೇ) "ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। 2. ಸೇವೆ, ಶುಶ್ರೂಷೆ. 3. ಧ್ಯಾನ, ಚಿಂತನೆ.

ಉಪಾಸ್ಯ ಉಪಾಸ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸೇವಿಸಲ್ಪಡುವ, ಶುಶ್ರೂಷಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. 2. ಧ್ಯಾನಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ. ಉಪ+ಆಸ (ಉಪವೇಶನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಫಲ್" (೩-೧-೧೨೪)। "ಪುತ್ರವಚ್ಚೇವ ತೇ ರಕ್ಷಾ ಉಪಾಸ್ಯಾ ಗುಣವಚ್ಚ ತೇ" ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೩-೨೫। (ಅವ್ಯಂ) 4. ಪೂಜಿಸಿ, ಆರಾಧಿಸಿ. 5. ಧ್ಯಾನಿಸಿ, ಚಿಂತಿಸಿ. 6. ಸೇವಿಸಿ, ಶುಶ್ರೂಷೆಮಾಡಿ. ಉಪ+ಆಸ (ಉಪವೇಶನೇ) "ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭)। "ಉಪಾಸ್ಯ ಪರಿಚಮಾಂ ಸಂಧ್ಯಾಮ್"।



उपास्यमान ಉಪಾಸ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಸೇವಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಧ್ಯಾನಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. उप + आस (उपवेशने) + कर्म० यक् "शानच्" (३-२-१२४)। "उपास्यमानो विबुधैर्दिवि देवपतिर्यथा" रामा०। "सनन्दनाद्यैर्महांसिद्धैः शान्तैः संशान्तविग्रहम्। उपास्यमानं सख्या च भर्त्रा गुह्यकरक्षसाम्" भाग० ४-६-३४।

उपाहार ಉಪಾಹಾರ (ಪುಂ) ಉಟವಾದನಂತರ ಮಧ್ಯಾಹ್ನದ ಮೇಲೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ ಲಘುವಾದ ಆಹಾರ, ತಿಂಡಿ, ಹಣ್ಣು ಮುಂತಾದ ಆಹಾರ. उप + आ + हृ (हरणे) "घञ्" (३-३-१८)।

उपाहित ಉಪಾಹಿತ (ಪುಂ) 1. (ಅನಿಷ್ಟ ಸೂಚಕವಾದ) ಅಗ್ನಿಯಿಂದಂಟಾಗುವ ತೊಂದರೆ, ಬೆಂಕಿಯ ಉತ್ಪಾತ. उप आसन्नं आहितं फलं यस्मात्। 2. ಎರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹತ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "उपाहितोऽनलोत्पाते पुमानारोपिते त्रिषु" मेदि०। 3. ಸಮಾಪದಲ್ಲಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. उप समीपे आहितः।

उपेक्षक ಉಪೇಕ್ಷಕ (ವಿಂ) 1. ಉಪೇಕ್ಷೆ ಮಾಡುವ, ಉದಾಸೀನನಾಗಿರುವ (ಯೋಗಿ). उप + ईक्ष (दर्शने) "ण्वल्" (३-१-१३३)। 2. ಅನಾದರದಿಂದ ಕಾಣುವ.

उपेक्षण ಉಪೇಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಉಪೇಕ್ಷೆ, ಉದಾಸೀನತೆ, ಅಲಕ್ಷ್ಯ, ಅನಾದರ. उप + ईक्ष (दर्शने) "ल्युट्" (३-३-११५)। 2. ರಾಜನ ಏಳು ವಿಧ ಉಪಾಯಗಳಲ್ಲೊಂದು. "साम्ना दानेन भेदेन दण्डेनोपेक्षणेन च" भा० वन०। 3. ತ್ಯಾಗ, ಬಿಡುವುದು. 4. ಅನಾದರ, ಅವಮರ್ಯಾದೆ, ತಿರಸ್ಕಾರ.

उपेक्षणीय ಉಪೇಕ್ಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಉಪೇಕ್ಷಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ; ಬಿಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. "गुरोरपीदं धनमाहितानेर्नश्यत्पुरस्तादनुपेक्षणीयम्" रघु० २-४४। 2. ಉಪೇಕ್ಷಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ಉಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. उप + ईक्ष (दर्शने) अर्हादौ "अनीयर्" (३-१-९६)। 4. ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆಗೂ ಅರ್ಹವಲ್ಲದ, ತ್ಯಜಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.

उपेक्षमाण ಉಪೇಕ್ಷ್ಮಾಣ (ವಿಂ) 1. ಅಲಕ್ಷ್ಯ ಮಾಡುವ, ಉದಾಸೀನತೆಯಿಂದ ಕಾಣುವ. उप + ईक्ष (दर्शने) कर्त० "शानच्" (३-२-१२४)। 2. ಅನಾದರದಿಂದ ಕಾಣುವ. 3. ತಿರಸ್ಕಾರದಿಂದ ಕಾಣುವ.

उपेक्षा ಉಪೇಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉದಾಸೀನತೆ, ಅಲಕ್ಷ್ಯ. "उपेक्षा सर्वकार्येषु कर्मणां करणेषु च। अनिष्टानां

समुत्थेन विवर्गो नश्यते यथा" भा० शान्ति० ५८-४४। 2. ಅನಾದರ, ಪ್ರೀತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. उप + ईक्ष (दर्शने) "अः" (३-३-१०३)। "किं वा तवात्यन्त-वियोगमोघे कुर्यामुपेक्षां हतजीवितेऽस्मिन्" रघु० १४-६५। 3. ಬಿಡುವುದು, ತ್ಯಜಿಸುವುದು. 4. ತಿರಸ್ಕಾರ, ಅಗೌರವ, ಅವಮರ್ಯಾದೆ. "यथा यथेह त्वदुपेक्षयानया निमेषमप्येष जनो विलम्बते" नैष० ९-२०।

उपेक्षित ಉಪೇಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) 1. ಉಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಲಕ್ಷ್ಯದಿಂದ ಕಾಣಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. उप + ईक्ष (दर्शने) "क्तः" (३-२-१०२)। "उपेक्षितेक्षोः करमाच्छमीरतात्" नैष० ९-४३।

उपेक्षितव्य ಉಪೇಕ್ಷಿತವ್ಯ (ವಿಂ) "उपेक्षणीय" ಪದದ ಅರ್ಥ. उप + ईक्ष (दर्शने) अर्हादौ "तव्यः" (३-१-९६)।

उपेक्ष्य ಉಪೇಕ್ಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಉಪೇಕ್ಷಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ಉಪೇಕ್ಷಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ಉಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. उप + ईक्ष (दर्शने) अर्हादौ "ण्यत्" (३-१-१२४)। (अव्य०) 4. ಉಪೇಕ್ಷಿಸಿ, ಉದಾಸೀನತೆಯಿಂದ ಕಂಡು. 5. ತಿರಸ್ಕರಿಸಿ, ಅನಾದರದಿಂದ ಕಂಡು.

उपेक्ष्यमाण ಉಪೇಕ್ಷ್ಯಮಾಣ (ವಿಂ) 1. ಉದಾಸೀನತೆಯಿಂದ ಕಾಣಲ್ಪಡುವ. 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಅನಾದರದಿಂದ ಕಾಣಲ್ಪಡುವ. उप + ईक्ष (दर्शने) कर्म० "शानच्" (३-२-१२४)। "उपेक्ष्यमाणो विज्ञातो हृदयेनापराजितः" भा० शान्ति० १०३-१४।

उपेत ಉಪೇತ (ವಿಂ) 1. ಕೂಡಿರುವ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಸಹಿತವಾದ. उप + इण् (गती) "क्तः" (३-४-७२)। "विपदोऽभिभवन्त्यविक्रमं रहयत्यापदुपेतमायतिः" किरा० २-१४। "पुत्रमेवंगुणोपेतं चक्रवर्तिनमाप्नुहि" शाकु० १-१२। 2. ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ, ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ. 3. ಆಗಮಿಸಿರುವ, ಬಂದಿರುವ. "उपेत-पार्श्वश्चरणेन मौनिना" नैष० १-१२४। 4. ಉಪನಯನ ಸಂಸ್ಕಾರ ಹೊಂದಿದವನು. "न स्त्री जुहुयान्ना-नुपेतः" स्मृतिः।

उपेतृ ಉಪೇತೃ (ವಿಂ) ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ. उप + इण् (गती) "तृच्" (३-१-१३३)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "डीप्" (४-१-५)। उपेत्री ಉಪೇತ್ರೀ. "उपेतारमुपेयं च सर्वोपायांश्च कृत्स्नशः" मनु० ७-२१५।



ಉಪೇಂದ್ರ ಉಪೇಂದ್ರ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಇಂದ್ರಮುಗತೋ-  
ನ್ಯುಜ್ವಲೇನ। [ಬಲಿಚಕ್ರವರ್ತಿಯನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸಲು  
ಕಶ್ಯಪಮುನಿಯಿಂದ ಅದಿತಿದೇವಿಯಲ್ಲಿ ಇಂದ್ರನಿಗೆ  
ತಮ್ಮನಾಗಿ ವಾಮನರೂಪದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಕಾರಣ  
ವಿಷ್ಣುವಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು.] “ಇಂದ್ರಸ್ಯಾಪ್ಯನುಜ್ವಲೇ ಜಾತಶ್ಚೋಪೇಂದ್ರ  
ಉಚ್ಯತೇ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ। “ಉಪೇಂದ್ರೋ ವಾಮನಃ ಪ್ರಾಶುಃ”  
ವಿಂ ಸಂ।

ಉಪೇಂದ್ರವಜ್ರಾ ಉಪೇಂದ್ರವಜ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹನ್ನೊಂದನೆಯ  
ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಗಣಗಳು:  
ಜ ತ ಜ ಗು ಗು। ಗಣವಿನ್ಯಾಸಃ |೦|೦೦||೦|೦೦  
“ಉಪೇಂದ್ರವಜ್ರಾ ಜತಜಾಸ್ತತೋ ಗೌ” ವೃಂ ರಂ।

ಉಪೇಯ ಉಪೇಯ (ವಿಂ) 1. ಉಪಾಯದಿಂದ ಸಾಧಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. ಉ + ಇನ್ (ಗತೌ) “ಯತ್” (೩-೧-೧೭)।  
2. ಉಪಾಯದಿಂದ ಸಾಧಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ.  
3. ಉಪಾಯದಿಂದ ಸಾಧಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ (ಫಲ).  
“ಭವತ್ಯುಪಾಯಂ ಪ್ರತಿ ಹಿ ಪ್ರವೃತ್ತಾವುಪೇಯಮಾಧುರ್ಯಮಧೈರ್ಯಸಜಿ”  
ನೈಷಂ ೬-೧೩। 4. ಹೊಂದಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.  
5. ಹೊಂದಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 6. ಹೊಂದಲ್ಪಡುವ.  
“ಉಪೇತಾರಮುಪೇಯಂ ಚ ಸರ್ವೋಪಾಯಾಂಶ್ಚ ಕೃತ್ಸ್ನಶಃ” ಮನುಂ  
೭-೨೧೫। 7. ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಹೋಗಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.  
8. ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಹೋಗಲು ಶಕ್ಯವಾದ.

ಉಪೇಯವಸ್ ಉಪೇಯವಸ್ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಿರುವ,  
ಪಡೆದಿರುವ. ಉ+ಇನ್ (ಗತೌ) “ಕ್ಸುಃ” (೩-೨-೧೦೯)।  
“ಸಮತ್ಸರೇಣಾಸುರ ಇತ್ಯುಪೇಯುಷಾ ಚಿರಾಯ ನಾಮನಃ ಪ್ರಥಮಾ-  
ಭಿಧೇಯತಾಮ್” ಮಾಘಂ ೧-೪೩। 2. ಹೊಂದಿರುವ, ತಲುಪಿ  
ರುವ, ಸೇರಿರುವ. “ತತಃ ತದಗ್ರ ಇವ ದ್ವಿರದೇ ಮುನೌ  
ರಣಮುಪೇಯುಷಿ ಭೀಮಭುಜಾಯುಧೇ” ಕಿರಾಂ ೧೮-೧। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ  
“ಙೀಪ್” (೪-೧-೬)। -ಙೀಯುಷೀ -ಈಯುಷೀ. “ಉಪೇಯುಷಿ  
ಕಲ್ಪಲತಾಭಿಶ್ಚಕ್ಷುಷಾ ಕಥಂನಿವಿತಸ್ತ್ರಸ್ಯತಿ ಷಟ್ಪದಾವಲಿಃ”  
ಕಿರಾಂ ೮-೭।

ಉಪೋಷ ಉಪೋಷ (ವಿಂ) 1. ಸಮಾಪಕ್ಕೆ ಆಗಮಿಸಿರುವ,  
ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ. ಉ + ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೇ) “ಕ್ತಃ”  
(೩-೪-೭೨)। “ಯುಗಪದ್ವಯೋ ವಿಶನ್ವರಾಹಂ ತದ್ವಿಪೋಷೇಶ್ವ  
ನಭಶ್ಚರೇಃ ಪೃಷತ್ಕಃ” ಕಿರಾಂ ೧೩-೨೩। 2. ಮದುವೆಯಾಗಿ  
ರುವ, ವಿವಾಹಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವ. 3. ವಹಿಸಿರುವ,  
ಎತ್ತಿಕೊಂಡಿರುವ. “ಉಪೋಷ ಉಪೋಷಿ” ಹೇಮಂ।

ಉಪೋಷಿತ ಉಪೋಷಿತ (ವಿಂ) ಕೊನೆಯದಕ್ಕೆ ಹಿಂದಿನ  
ದಾದ, ಕೊನೆಯದಕ್ಕೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿರುವ. ಉಪಗತ-

ಮುಕ್ತಮ್। “ಯೋಪಧಾನ್ವುಪೋಷಿತಮಾನ್ವು” ಪಾಂ ಸಂ।  
೫-೧-೧೩೨।

ಉಪೋಷಕ ಉಪೋಷಕ (ಪುಂ) 1. ನೀರಿನ ಸಮಾಪ ಪ್ರದೇಶ.  
ಉಪಗತ ಉಪೋಷಕಃ। ಪ್ರಾಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 2. ನೀರಿನ  
ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರುವ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ನೀರಿನ ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ.  
ಉಪೋಷಕಸ್ಯ ಸಮೀಪಮ್। ಸಾಮೋಷ್ಯೇ ಅವ್ಯಯಿಂ।

ಉಪೋಷಿಕಾ ಉಪೋಷಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಪಸಿಗಿಡ. ಉಪಾಧಿಕ-  
ಮುದಕಂ ಯತ್ರ, ಉಪೋಷಿಕಾದೇಶಃ, ಸಂಜ್ಞಾಯಾಂ ಕನ್। ಅತಃ ಇತ್ವಮ್।

ಉಪೋಷಾತ ಉಪೋಷಾತ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭ,  
ಉಪಕ್ರಮ. 2. ಸೀರಿಕೆ, ಪ್ರಸ್ತಾವನೆ, ಮುಂದೆ  
ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಲ್ಪಡುವ ವಿಷಯದ ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತ ಸೂಚನೆ.  
ಉಪ ಸಮೀಪೇ ಪ್ರಕೃತಸ್ಯ ಉಪೋಷಾತಃ ಉಪೋಷಾತಂ ಜ್ಞಾನಮ್।  
3. ಪ್ರಕೃತಕಾರ್ಯ ಸಿದ್ಧಿಸಲು ಕಾರಣವಾದ ಪ್ರಯೋಜನ.  
“ತದನೇನ ತೀರ್ಥೇನ ತತ್ಪ್ರತಿಚ್ಛಂದಕಮುಪೋಷಾತಾಯ ಮಾಧವಾಂತಿಕ-  
ಮುಪೇಯಾದಿತ್ಯಭಿಪ್ರಾಯಃ” ಮಾಲತೀಂ ೧। 4. ಉದಾಹರಣೆ.  
“ಉಪೋಷಾತ ಉದಾಹಾರಃ” ಅಮಂ। 5. ವಿಷಯ  
ನಿರೂಪಣೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿರಬೇಕಾದ ಆರು ವಿಧ  
ಸಂಗತಿಗಳಲ್ಲೊಂದು.

ಉಪೋಷಲಕ ಉಪೋಷಲಕ (ವಿಂ) 1. ಸಮರ್ಥಿಸುವ,  
ಸ್ಥಿರಪಡಿಸುವ. 2. ಉತ್ತೇಜನ ಕೊಡುವ, ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವ.  
ಉಪ + ಉ + ಲ (ಪ್ರಾಣನೇ) “ಉಲ್”  
(೩-೧-೧೩೩)।

ಉಪೋಷಲನ ಉಪೋಷಲನ (ನಂ) 1. ಉತ್ತೇಜನ,  
ಪ್ರೋತ್ಸಾಹ. 2. ಸಮರ್ಥನೆ, ಸ್ಥಿರಪಡಿಸುವಿಕೆ.  
ಉಪ + ಉ + ಲ (ಪ್ರಾಣನೇ) “ಉಲ್” (೩-೩-೧೧೫)।

ಉಪೋಷಣ ಉಪೋಷಣ (ನಂ) ಉಪವಾಸ, ಉಪವಾಸ  
ದಿರುವಿಕೆ. ಉಪ + ಉ (ದಾಹೇ) ಭಾವೇ “ಉಲ್” (೩-೩-೧೧೫)।  
“ಪ್ರಾಪ್ತೇ ಶ್ರೀರಾಮನವಮೋದಿನೇ ಮರ್ತ್ಯೋ ವಿಮೂಢಭಿಃ। ಉಪೋಷಣಂ  
ನ ಕುರುತೇ ಕುಂಭಿಪಾಕೇ ಮಹೀಯತೇ”।

ಉಪೋಷಿತ ಉಪೋಷಿತ (ನಂ) 1. ಉಪವಾಸ, ಉಪವಾಸ  
ಮಾಡದಿರುವಿಕೆ. ಉಪ + ವಸ (ನಿವಾಸೇ) ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ”  
(೩-೩-೧೧೪)। “ನಾಸ್ತಿ ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಪೃಥಗ್ಯಜ್ಞೋ ನ ವ್ರತಂ  
ನಾಪ್ಯುಪೋಷಿತಮ್। ಪತಿ ಶುಶ್ರೂಷತೇ ಯೇನ ತೇನ ಸ್ವರ್ಗೋ ಮಹೀಯತೇ”  
ಮನುಂ ೫-೧೫೫। 2. ಉಪವಾಸಮಾಡಿದ, ಉಪವಾಸ  
ಮಾಡದಿರುವ. ಉಪ + ವಸ ಕರ್ತಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨)।  
“ಉಪೋಷಿತೋ ದ್ವಿತೀಯೇಽಹ್ನಿ ಪೂಜಯೇತ್ ಪುನರೇವ ತಾಮ್”। “ಪಪೌ  
ನಿಮೇಷಾಲಸಪಕ್ಷಮಪಙ್ಕ್ತಿರೂಪಿತಾಭ್ಯಾಮಿವ ಲೋಚನಾಭ್ಯಾಮ್”  
ರಘುಂ ೨-೧೯।



ಉಪೋಷ ಉಪೋಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಉಪವಾಸಮಾಡಲ್ಪಡುವ (ಕಾಲ). ಉಪ+ವಸ (ನಿವಾಸ) ಕರ್ಮಂ "ಕೃಪ್" ಬಾಹುಂ । (ಅವ್ಯಂ) 2. ಉಪವಾಸಮಾಡಿ. ಉಪ+ವಸ "ಲ್ಯಪ್" (ಉ-೧-೩೭) ।

ಉಪ್ತ ಉಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಬಿತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ (ಬೀಜ). 2. ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ (ಭೂಮಿ). ಡು ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । 3. ಕ್ಷೌರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಉಪ್ತಕೃಷ್ಣ ಉಪ್ತಕೃಷ್ಣ (ವಿಂ) ಬೀಜ ಬಿತ್ತಿದನಂತರ ಉಳಲ್ಪಟ್ಟ (ಭೂಮಿ). ಉಪ್ತಂ ಚ ತತ್ ಕೃಷ್ಣಂ ಚ ।

ಉಪ್ತಿ ಉಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬೀಜ ಬಿತ್ತುವಿಕೆ. ಡು ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) । "ಬೀಜಾನಾಮುಪ್ತಿ-ವಿಂಚ ಸ್ಯಾತ್ಕೇತದೋಷಗುಣಸ್ಯ ಚ" ಮನುಂ ೧-೩೩೦ । 2. ಕ್ಷೌರ ಮಾಡುವಿಕೆ.

ಉಪ್ತಮ ಉಪ್ತಮ (ವಿಂ) ಬಿತ್ತನೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ, ಬಿತ್ತನೆಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ. ವಪನೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್ - ಡು ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನ) "ವಿಪ್" (೩-೩-೮೮) । "ಮಪ್" (೪-೪-೨೦) ।

ಉಪ್ಯ ಉಪ್ಯ (ವಿಂ) ಬಿತ್ತನೆಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ಬೀಜ. ಡು ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನ) ಕರ್ಮಂ "ಕೃಪ್" ಬಾಹುಂ ।

ಉಪ ಉಪ (ವಿಂ ದ್ವಿವಂ) 1. ಎರಡು. 2. ಇಬ್ಬರು. ಉಪ (ಪೂರ್ಣ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫) । ಮೂರು ಲಿಂಗಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಇದರ ರೂಪಗಳು: (ಪುಂ) ಉಪಿ ಉಪಿ ಉಪಾಮ್ಯಾ ಉಪಾಮ್ಯಾ ಉಪಾಮ್ಯಾ ಉಪಯೋಃ ಉಪಯೋಃ । "ಉಪಿ ಯದಿ ವ್ಯೋಮಿನಿ ಪೃಥಕ್ಪ್ರವಾಹಾವಾಕಾಶಗಜ್ಜಾಪಯಸಃ ಪತೇತಾಂ" ಮಾಘಂ ೩-೮ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮತ್ತು (ನಂ) ಉಪೇ ಉಪೇ ಮುಂದಕ್ಕೆ ಪುಲ್ಲಿಂಗದಂತೆ ರೂಪಗಳು. "ಉಪೇ ಏವ ಧಮೇ ಬೋಧುಮುಪಯೋವಿಜಮಾಹಿತಮ್ । ಸಾ ವಾ ಶಮ್ಭೋ-ಸ್ತದೀಯಾ ವಾ ಮೃತಿರ್ಜಲಮಯಿ ಮಮ" ಕುಮಾರಂ ೨-೬೦ ।

ಉಪಯ ಉಪಯ (ವಿಂ) ಎರಡು ಅವಯವಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಉಪ "ಅಯಚ್" (೫-೨-೪೪) । ಇದಕ್ಕೆ ದ್ವಿವಚನರೂಪವಿಲ್ಲ. ಏಕ ಮತ್ತು ಬಹುವಚನ ರೂಪಗಳು ಮಾತ್ರ. (ಪುಂ) ಉಪಯಃ ಉಪಯೇ । ಉಪಯಮ್ ಉಪಯಾನ್ । ಉಪಯೇನ ಉಪಯೇಃ । ಉಪಯಸ್ಮಿ ಉಪಯೇಮ್ಯಃ । ಉಪಯಸ್ಮಾತ್ ಉಪಯೇಮ್ಯಃ । ಉಪಯಸ್ಯ ಉಪಯೇಷಾಂ । ಉಪಯಸ್ಮಿನ್ ಉಪಯೇಷು । (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಪಯಿ ಉಪಯಿಃ । (ನಂ) ಉಪಯಮ್ ಉಪಯಾನ್ । "ಅಲಕ್ಷ್ಮಣೀಯತಾಹೇತುರಭಯಂ ತನ್ಮನಸ್ವಿನಿ" ಮಾಘಂ ೨-೪೮ । "ತಸ್ಯ ಮಿತ್ರಾಣ್ಯಮಿತ್ರಾಸ್ತೇ ಯೇ ಚ ಯೇ ಚೋಭಯೇ ನೃಪಾಃ" ಮಾಘಂ ೨-೧೦೧ । "ಕಿಂ ಕಥ್ಯತೇ ಶ್ರೀರೂಪಸ್ಯ ತಸ್ಯ" ಕುಮಾರಂ ೭-೭೮ ।

ಉಪಯತಸ್ ಉಪಯತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಎರಡು ಕಡೆಗಳಿಂದಲೂ. ಉಪಯ "ತಸಿಲ್" (೫-೩-೭) । "ಉಪಯತೇವ ಪರಸ್ಪರಸಂಜ್ಞಾದೀರಿತಾನ್ಯುಪಯತಃ ಕುಚಕುಮ್ಭಃ" ಮಾಘಂ ೧೦-೩೨ । 2. ಎರಡು ಕಡೆಗಳಲ್ಲಿಯೂ. "ತಜ್ಜಃ ಪುನಾನ್ಯುಪಯತಃ ಪುರುಷಾನೇಕವಿಶತಿಮ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೫೮ । 3. ಎರಡು ಕಡೆಗಳಿಗೂ. "ಶಕ್ತಿಂ ಚೋಪಯತಸ್ತೀಕ್ಷ್ಣಾಮಾಯಸಂ ದೃಢಮೇವ ವಾ" ಮನುಂ ೮-೩೧೫ ।

ಉಪಯತೋಮುಖ ಉಪಯತೋಮುಖ (ವಿಂ) 1. ಎರಡು ಕಡೆಯೂ ಮುಖವುಳ್ಳ. 2. ಎರಡು ಕಡೆಯೂ ನೋಡುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಮುಖಿ-ಮುಖೀ. ಆಕಳು, ಹಸು. "ಸರ್ವತ್ಸಾರೋಮತುಲ್ಯಾನಿ ಯುಗಾನ್ಯುಪಯತೋಮುಖೀಮ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೨೦೬ ।

ಉಪಯತ್ರ ಉಪಯತ್ರ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಎರಡು ಕಡೆಗಳಲ್ಲಿಯೂ. 2. ಎರಡು ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿಯೂ. ಉಪಯ "ತ್ರಲ್" (೫-೩-೧೦) । "ದ್ವೌ ದೇವೇ ಪಿತೃಕಾರ್ಯೇ ತ್ರಿನೇಕೈಕಮುಪಯತ್ರ ವಾ" ಮನುಂ ೩-೧೨೫ ।

ಉಪಯಥಾ ಉಪಯಥಾ (ಅವ್ಯಂ) ಎರಡು ರೀತಿಯಲ್ಲಿಯೂ, ಎರಡು ವಿಧದಲ್ಲಿಯೂ. ಉಪ "ಅಯಚ್" "ಯಾಲ್" (೫-೩-೨೩) ।

ಉಪಯದ್ಯುಸ್ ಉಪಯದ್ಯುಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಎರಡು ದಿನಗಳಲ್ಲಿಯೂ. ಉಪಯ "ದ್ಯುಸ್" (ವಾಂ ೫-೩-೨೨) ।

ಉಪಯವೇತನ ಉಪಯವೇತನ (ಪುಂ) ಎರಡು ಕಡೆಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಸಂಬಳ ಪಡೆಯುವ ದೂತ. ಉಪಯೋಃ ವೇತನಂ ಯಸ್ಯ । [ಒಬ್ಬ ರಾಜನಲ್ಲಿ ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಸಂಬಳ ಪಡೆದು ಅವನ ಶತ್ರುರಾಜನಲ್ಲಿ ಸೇವಕನಂತೆ ನಟಿಸಿ ಅವನಿಂದಲೂ ಸಂಬಳ ಪಡೆಯುತ್ತಾ ಆ ರಾಜನಿಗೂ, ಅವನ ಮಂತ್ರಿಗಳಿಗೂ ಭೇದವನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸುವವನು ಉಪಯ ವೇತನ ದೂತ.]

ಉಪಯೇದ್ಯುಸ್ ಉಪಯೇದ್ಯುಸ್ (ಅವ್ಯಂ) "ಉಪಯದ್ಯುಸ್" ಪದದ ಅರ್ಧ. ಉಪಯ "ಯೇದ್ಯುಸ್" (೫-೩-೨೨) ।

ಉಮ್ ಉಮ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ರೋಷ, ಕೋಪ. 2. ಪ್ರಶ್ನೆ. 3. ಅಂಗೀಕಾರ, ಸಂಮತಿ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. "ಉಮ್ ರೋಷೋಽಪಿ ಕೃತಾವಪಿ । ಪ್ರಶ್ನೇಽಪಿ ಸ್ಯಾತ್" ಮೇದಿಂ ।

ಉಮಾ ಉಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಾರ್ವತಿ, ಗೌರಿ, ಶಿವನ ಪತ್ನಿ. ಓಃ ಶಿವಸ್ಯ ಮಾ ಲಕ್ಷ್ಮೀರಿವ, ತಂ ಶಿವಂ ಮಾತಿ ಇತಿ ವಾ । ಉ, ಮಾ ಇತಿ ಮಾತ್ರಾ ತಪಸೇ ನಿಷಿದ್ಧತ್ವಾದ್ವಾ । [ತಾಯಿಯು ಪಾರ್ವತಿಯನ್ನು ತಂದೆ ಎಂದು ಸಂಬೋಧಿಸಿ ಮಾ ಎಂದು ತಪಸ್ಸಿನಿಂದ ತಡೆದ ಕಾರಣ ಪಾರ್ವತಿಗೆ



“ಉಢಾ” ಎಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು.] “ಉಢೇತಿ ಢಾತ್ರಾ ತಪಸೋ ನಿಷಿಡ್ಧಾ ಪಶ್ಚಾಢುಢಾಖ್ಯಾಂ ಸುಢುಖೀ ಜಗಾಢ” ಕುಢಾಂ ೧-೨೬। “ಉಢಾಪಿ ಢೀಲಾಲಕಢಧ್ಯಶೋಢಿ ವಿಸ್ರಂಸಯಂತೀ ಢವಕಾಣಿ-ಕಾರಢ್” ಕುಢಾಂ ೩-೬೨। 2. ಅಗಸೆಗಿಡ. 3. ಅರಿತೆನ. 4. ಕೇರ್ತಿ, ಯಶಸ್ಸು. 5. ಪುಕಾಶ, ಬೆಳಕು. “ಉಢಾತಸೀಹೈಢವತೀಹರಿದ್ರಾಕೀರ್ತಿಕಾಂತಿಪು” ಢೇದಿಂ।

ಉಢಾಕಟ ಉಢಾಕಟಿ (ಪುಂ) 1. ಅರಿತೆನದ ಪುಡಿ. 2. ಅಗಸೆ ಹೂವಿನ ಪುಡಿ. ಉಢಾಢಾ ಹರಿದ್ರಾಢಾ ಅತಸ್ಯಾ ವಾ ರಜ: “ಕಟಕ್” (ವಾಂ ೪-೨-೨೯)।

ಉಢಾತನಯ ಉಢಾತನಯ-ಸುತ-ಸುತ(ಪುಂ) 1. ಸ್ತುಂದ, ಕುಢಾರಸ್ವಾಮಿ, ಪಣ್ಣುಬ. [“ಕಾರ್ತಿಕೇಯ” ಪದದಲ್ಲಿ ಸೂಡೆ.] 2. ಗಣಪತಿ, ವಿನಾಯಕ.

ಉಢಾಪತಿ ಉಢಾಪತಿ (ಪುಂ) ಪರಢೇಶ್ವರ, ಶಿವ, ಢಹಾ ದೇವ. ಉಢಾಢಾ: ಪತಿ:। “ಅಢಿನವೌಪಸರಾಗಢೃತಾ ವಢೌ ಜಲಧರೇಣ ಸಢಾಢಢುಢಾಪತಿ:” ಕಿರಾಂ ೧೮-೪।

ಉಢಾವನ ಉಢಾವನ (ಢಂ) ಶೋಣಿತಪುರ. ಃ ಶೋಣಿತ ಪುರವು ಉಷಾಢುರಕ್ಕೆ ಅರುಢೈಲಿ ದೂರದಲ್ಲಿ ಕೇದಾರ ಗಂಗೆಯ ತೀರದಲ್ಲಿರುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ದೇವೀಕೋಟಿ, ಕೋಟಿವರ್ಷ, ಬಾಣಪುರಗಲೆಂಬ ಹೆಸರೂ ಉಂಟು. “ದೇವೀಕೋಟ ಉಢಾವನಢ್। ಕೋಟಿವರ್ಷ ಬಾಣಪುರಂ ಸ್ಯಾಚ್ಛ್ರೋಣಿತಪುರಂ ಚ ತತ್” ಅಢಿಂ ಚಿಂ।

ಉಢಾಸಹಚರ ಉಢಾಸಹಚರ } (ಪುಂ) ಪರಢೇಶ್ವರ, ಉಢಾಸಹಾಯ ಉಢಾಸಹಾಯ } ಢಹಾದೇವ. ಉಢಾಢಾ: ಸಹಚರ: ಸಹಾಯೋ ವಾ।

ಉಢ್ಬರ ಉಂಬರ } (ಪುಂ) ವಾಸಕಾಲಿನ ಕೆಳಗಿನ ಢರದ ಉಢ್ಬರ ಉಂಬರ } ಪಟ್ಟ. “ಗೃಹಾವಗ್ರಹಣೀ ದೇಹಲ್ಯುಢ್ಬರೋದುಢ್ಬರೋಢ್ಬರಾ:” ಅಢಿಂ ಚಿಂ।

ಉಢ್ಯ ಉಢ್ಯ (ಢಂ) ಅಗಸೆಗಿಡ ಬೆಳೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಭೂಢಿ. ಉಢಾಢಾಂ ಢವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಢ್-ಉಢಾ “ಯತ್” (೪-೨-೪)। “ಢಜ್ಞಘಂ ಢಜ್ಞೀಢಢೌಢೀಢಢುಢ್ಯಂ ಯವ್ಯಂ ಯವಕಯವತ್” ಅಢಿಂ ಚಿಂ।

ಉರ:ಸೂತ್ರೀಕಾ ಉರ:ಸೂತ್ರೀಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಢುಕ್ತಾಹಾರ, ಢುಕ್ತಗಲಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಸರ. ಉರಸ: ಸೂತ್ರಢಿವ। “ಅಥೂರ:ಸೂತ್ರೀಕಾ ಢೌತ್ತಿಕೆ: ಕೃತಾ” ಅಢಂ।

ಉರ:ಸ್ಥಲ ಉರ:ಸ್ಥಲ (ಢಂ) ಎದೆ, ಗುಂಡಿಗೆ. ಉರಸ: ಸ್ಥಲಢ್। “ಶಿಲಾಘನೇಢಕಿಸದಾಢುರ:ಸ್ಥಲೇಬ್ಧಹಿವೇಶೇಶ್ವ ವಧುಪಯೋಧರೇ:” ಕಿರಾಂ ೮-೩೨।

ಉರಗ ಉರಗ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಉರಸಾ ಗಚ್ಛತಿ-ಗಢ್ಢ (ಗತೌ) “ಙ:” (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)। “ತವಾಢಿ-ಧಾಢಾದ್ವ್ಯಥತೇ ಢತಾಢಢ: ಸುದು:ಸಹಾಢಢಢ್ಯಪದಾದಿವೂರಗ:” ಕಿರಾಂ ೧-೨೪। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬೩)। -ಗೀ-ಗೀ. ಹೆಣ್ಣು ಹಾವು. 2. ಸೀಸಲೋಹ. 3. ಅಶ್ಲೇಷಾಢಕ್ಷತ್ರ. [ಇದು ಸರ್ಪದೇವತಾಕ ಢಕ್ಷತ್ರ].

ಉರಗಢೂಷಣ ಉರಗಢೂಷಣ (ಪುಂ) ಪರಢೇಶ್ವರ, ಶಿವ. ಉರಗೋ ಢೂಷಣಢಸ್ಯ।

ಉರಗರಾಜ ಉರಗರಾಜ (ಪುಂ) ಸರ್ಪರಾಜ, ವಾಸುಕಿ, ಅದಿಶೇಷ. ಉರಗಾಣಾಂ ಸರ್ಪಾಣಾಂ ರಾಜಾ “ರಕ್” (೪-೪-೯೧)। “ಪ್ರಹರ್ತುರೇವೂರಗರಾಜರಜ್ಜವೋ ಜವೇಢ ಕಢ್ಠಂ ಸಢಯಾ: ಪ್ರಪೇದಿರೇ” ಢಾಘಂ ೧-೪೬।

ಉರಗಾಶಢ ಉರಗಾಶಢ (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. 2. ಢವಿಲು, ಢಯೂರ. ಉರಗಾಢಶಢಾತಿ-ಅಶ (ಢೂಜಢೇ) “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪)। “ಚ್ಚ್ವಗ್ರದಪ್ಪಚ್ಛಡುಲಾಹಿಪತಾಕಯಾಢ್ಯೇ ಸ್ವಾಢಾಸಢಾಗಢುರಗಾಶಢಕೇತುಯಪ್ಪಚ್ಛಾ” ಢಾಘಂ ೪-೧೩।

ಉರಣ ಉರಣ (ಪುಂ) ಗಂಡುಕುರಿ, ಟೆಗರು. ಃಚ್ಛತಿ-ಃ (ಗತೌ) “ಯುಢ್” “ಉತ್” ಚ (ಉಂ ೪-೧೭)। “ವೃಕೀವೂರಣಢಾಸಾಧ ಢೃತ್ಯುರಾಢಾಯ ಗಚ್ಛತಿ” ಢಾಂ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬೩)। -ಗೀ-ಗೀ. ಹೆಣ್ಣು ಕುರಿ.

ಉರಣಾಕ್ಷ ಉರಣಾಕ್ಷ (ಪುಂ) ತಗಸಿಗೆ ಗಿಡ. “ದದ್ರುಢ-ಶ್ವಕ್ರಢದಕ:। ಪದ್ಮಾಟ ಉರಣಾಕ್ಷಶ್ವ” ಅಢಂ।

ಉರಢ್ರ ಉರಢ್ರ (ಪುಂ) 1. ಗಂಡುಕುರಿ, ಟೆಗರು. ಉರಢ್ರಢತಿ-ಢ್ರಢು (ಚಲಢೇ) “ಙ:” (ವಾಂ ೩-೨-೧೦೧)। ಪುಂಂ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬೩)। -ಢ್ರೀ-ಢ್ರೀ. ಹೆಣ್ಣು ಕುರಿ. 2. ತಗಸಿಗೆ ಗಿಡ.

ಉರರೀ ಉರರೀ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. 2. ವಿಸ್ತಾರ. ಃಯೀ (ತಢ್ಢುಸಢ್ಢಾಢೇ) “ರರೀಕ್” ಬಾಹುಂ। ಇದಕ್ಕೆ ಕೃಜ್ ಧಾತುವು ಪರವಾದಾಗ ಗತಿಸಂಜ್ಞೆ ಬಂದು ಸಢಾಸ ಬರುವುದು. ಉರರೀ + ಕೃಜ್ ಢಾವೇ “ಘಜ್” (೩-೩-೧೮)। -ಕಾರ: -ಕಾರ: ಢಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪)। -ಕರಣಢ್ -ಕರಣಢ್. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. ಉರರೀ + ಕೃಜ್ “ಲ್ಯಪ್” (೭-೧-೩೭)। ಉರರೀಕೃತ್ಯ ಉರರೀಕೃತ್ಯ. ಅಂಗೀಕರಿಸಿ, ಸಂಢುತಿಸಿ. “ಕಾಲ್ಪಢಿಕಂ ಢೇದಢುರರೀಕೃತ್ಯಂ ಕರ್ಮಕರ್ತರಿ ವಾ ಪ್ರಯೂಗ:” ಸಾಂ ದಂ।

ಉರರೀಕೃತ ಉರರೀಕೃತ (ವಿಂ) 1. ಒಪ್ಪು ಒಪ್ಪು, ಸಂಢುತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉರರೀ + ಕೃಜ್ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)।



उर्वट एवम् ६३ (पु०) संवत् १०८०. उरुयथातथाऽस्ति—  
अट (गतौ) “अच्” (३-१-१३४)। “ऋतुवृत्ति-  
मसिमानः स्यात्कालग्रन्थिरुर्वटः” त्रिकाण्ड०।



**ಉರ್ವರಾ ಉರ್ವರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸಕಲ ಪೈರುಪಟ್ಟಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಭೂಮಿ, ಫಲವತ್ತಾದ ಜಮೀನು. ಉ ಪ್ರಭುತ ಸಸ್ಯಾದಿಕಂ ಕೃಚ್ಛತಿ—ಕೃ (ಗತೌ) “ಅಕ್” (೩-೧-೧೩೪)। ಉರ್ವಿ (ಹಿಸ್ತಾಯಾಮ್) “ಘಃ” (೩-೩-೧೨೫) ಉರ್ವ ರಾತಿ—ರಾ (ದಾನೇ) “ಕಿವ್” (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮)। ವಾ। “ತೀಕ್ಷ್ಣ-ವಿಶಿಖಮುಖಪೀತಮಸೃಪತತಾಂ ಗಣಿಃ ಪಿಬತು ಸಾರ್ಥಮುರ್ವರಾ” ಮಾಘಂ ೧೫-೬೬। 2. ಜಮೀನು, ಭೂಮಿ. “ಉರ್ವರಾ ತು ಭೂಮಾತ್ರೇ ಸರ್ವಸಸ್ಯಾಡಯಭುವ್ಯಪಿ” ಹೇಮಂ।

**ಉರ್ವಶಿ ಉರ್ವಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದೇವಲೋಕದ ಒಬ್ಬ ವೇಶ್ಯೆ, ಪ್ರಖ್ಯಾತಳಾದ ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸು. ಉನ್ ಮಹತೋಽಪಿ ಅನುತೇ ವಶೀಕರೋತಿ—ಅಶ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) “ಕಃ” (೩-೨-೪)। ಗೌರಾಂ “ಜಿಷ್” (೪-೧-೪೧)। [ಬದರಿಕಾಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ನರನಾರಾಯಣರು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಕೆಲವು ದೇವನಿಶಿತಿಯರು ತಪೋಭಂಗಕ್ಕಾಗಿ ಬರಲು ನಾರಾಯಣನು ತನ್ನ ತೊಡೆಯನ್ನು ಕೆರೆದು ಲೋಕೋತ್ತರ ಸೌಂದರ್ಯವುಳ್ಳ ಒಬ್ಬ ಯುವತಿಯನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದನು. ತೊಡೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದುದರಿಂದ ಇವಳಿಗೆ “ಉರ್ವಶಿ” ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು.] ದೇಂ ಭಾಂ। ಅಹಂ ನಾರಾಯಣೋ ಹೇ ಕಾರಣತ್ವೇನಾನುತೇ—ಅಶ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) “ಕಃ” (೩-೨-೪)। “ಜಿಷ್” (೪-೧-೪೧)। ಪೃಷಂ। [ಮಿತ್ರಾವರುಣರ ಶಾಪದಿಂದ ಈಕೆಯು ಭೂಮಿಗೆ ಬಂದು ಚಂದ್ರವಂಶದ ಷಣ್ಮಾದ ಪುರುಷರವಸ್ ಎಂಬ ಒಬ್ಬ ರಾಜನನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ಆಯು, ಧೀಮಂತ, ಅಮಾವಸು, ದೃಢಾಯು, ವನಾಯು ಮತ್ತು ಶತಾಯುಗಳೆಂಬ ಆರು ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪಡೆಯುವಳು. ಈಕೆಯು ಪುರುಷರವಸ್ಸನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗುವಾಗ, ಸಮಾಗಮ ಕಾಲದ ಹೊರತು ಮತ್ತಾವಾಗಲೂ ತನಗೆ ನಗ್ನನಾಗಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳಕೂಡದೆಂದೂ ತಾನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದಾಗ ಮಾತ್ರ ಸಮಾಗಮವಾಗಬೇಕೆಂದೂ ತನ್ನ ಹಾಸಿಗೆಯ ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿ ಯಾವಾಗಲೂ ಎರಡು ಟಗರುಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟಿರಬೇಕೆಂದೂ ಮುಂತಾಗಿ ಕೆಲವು ನಿಬಂಧನೆಗಳನ್ನು ಹಾಕಿ ಅದಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ನಡೆದಾಗ ತಾನು ಅವನನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಹೋಗುವುದಾಗಿ ಹೇಳಿ ಆ ನಿಬಂಧನೆಗಳಿಗೆ ಅವನನ್ನು ಒಪ್ಪಿಸಿದಳು. ಒಂದು ದಿನ ವಿಶ್ವಾವಸುವೆಂಬ ಗಂಧರ್ವನೊಬ್ಬನು ಉರ್ವಶಿಯನ್ನು ದೇವಲೋಕಕ್ಕೆ ಕರೆದೊಯ್ಯಲು ಉಪಾಯ ಯೋಚಿಸಿ ಉರ್ವಶಿಯ ಹಾಸಿಗೆಯ ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿ ಕಟ್ಟಿದ್ದ ಟಗರುಗಳನ್ನು ಕಡೊಯ್ಯಲಾಗಿ ಪುರುಷರವಸ್ಸು ನಗ್ನನಾಗಿಯೇ ಹಾಸಿಗೆಯಿಂದೆದ್ದು ಅಟ್ಟಿಕೊಂಡು ಓಡಿಹೋದನು. ಆಗ

ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ ಭಂಗವಾಯಿತೆಂದು ಉರ್ವಶಿಯು ಅವನನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ದೇವಲೋಕಕ್ಕೆ ತೆರಳಿದಳು.] ಭಾಗಂ ೯-೧೪, ೧೫। ಉರ್ವಶಿಯು ಒಂದು ದಿನ ಇಂದ್ರನ ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ಅರ್ಜುನನನ್ನು ಮೋಹಿಸಿ ಅವನಿಂದ ತಿರಸ್ಕೃತಳಾಗಿ ಅವನನ್ನು ಷಂಡ (ನಪುಂಸಕ) ನಾಗುವಂತೆ ಶಪಿಸಿದಳು. “ತವ ಪಿತ್ರಾಮ್ಯನುಜ್ಞಾತಾಂ ಸ್ವಯಂ ಗೃಹಮಾಗತಾಮ್। ಯಸ್ಮಾನ್ಮಾಂ ನಾಭಿನಂದೇಥಾಃ ಕಾಮಬಾಣವಶಂಗತಾಮ್। ತಸ್ಮಾತ್ತ್ವಂ ನರತನಃ ಪಾಥಂ ಸ್ತ್ರೀಮಧ್ಯೇ ಮಾನವಜಿತಃ। ಅಪುಮಾನಿತಿ ವಿಸ್ತಾತಃ ಷಂಡವದ್ವಿಚರಿಷ್ಯಸಿ” ಭಾಂ ವನಂ ಅಂ ೪೬। “ಉರ್ವಶಿ ಗುಣವಶೀಕೃತವಿಶ್ವಾ” ನೈಷಂ ೫-೫೨।

**ಉರ್ವಿ ಉರ್ವಾರು (ಪುಂ)** ಸೌತೆಗಿಡ. ಉ ಯಥಾತಥಾ ಕೃಚ್ಛತಿ—ಕೃ (ಗತೌ) “ಉನ್” ಬಾಹುಂ।

**ಉರ್ವಿ ಉರ್ವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಭೂಮಿ, ನೆಲ, ಪೃಥಿವಿ. ಉರ್ವೀತಿ—ಉರ್ವ (ಆಚ್ಛಾದನೇ) “ಉಃ” ಹ್ರಸ್ವಃ ನುಲೋಪಚ (ಉಂ ೧-೩೧)। “ಜಿಷ್” (೪-೧-೪೪)। “ಪಶ್ಯೋದಗ್ರಪ್ಲುತತ್ವಾದ್ವಿಧಿತಿ ಬಹುತರಂ ಸ್ತೋಕಮುರ್ವೀ ಪ್ರಯಾತಿ” ಶಾಕುಂ ೧-೭।

**ಉರ್ವಿತಲ ಉರ್ವೀತಲ (ನಂ)** ಭೂಮಿಯ ಮೇಲುಭಾಗ, ನೆಲದ ಮೇಲು ಮೈ. ಉರ್ವೀತಲಮ್। “ನೀತೋ ವಿಕ್ರಮ-ಬಾಹುರಾತ್ಮಸಮತಾಂ ಪ್ರಾಪ್ತೇಯಮುರ್ವಿತಲೇ ಸಾರಂ ಸಾಗರಿಕಾ ತಥಾ ಚ ಭುವನಪ್ರಾಪ್ತೇಕಹೇತುಃ ಪ್ರಿಯಾ” ರತ್ನಾಂ ೪-೨೦।

**ಉರ್ವಿಧರ ಉರ್ವೀಧರ (ಪುಂ)** ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಧರತಿ—ಧೃ (ಧಾರಣೆ) “ಅಕ್” (೩-೧-೧೩೪)। ಉರ್ವಿಃ ಧರಃ। “ಅಲಕಾಧಿಪಭೃತ್ಯರ್ಧಶಿತಂ ಶಿವಮುರ್ವಿಧರವರ್ಮ ಸಂಪ್ರಯಾನ್” ಕಿರಾಂ ೩-೫೯।

**ಉರ್ವಿಧವ ಉರ್ವೀಧವ -ನಾಥ -ನಾಥ -ಪತಿ -ಪತಿ (ಪುಂ)** ರಾಜ, ದೊರೆ. ಉರ್ವಿಃ ಧವಃ ನಾಥಃ ಪತಿರ್ವಾ।

**ಉರ್ವಿಭುಜ್ ಉರ್ವೀಭುಜ್ (ಪುಂ)** ರಾಜ, ದೊರೆ. ಉರ್ವಿ ಭುಜ್ಕೇ—ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) “ಕಿವ್” (೩-೨-೬೧)।

**ಉರ್ವಿಭೃತ್ ಉರ್ವೀಭೃತ್ (ಪುಂ)** 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. 2. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಉರ್ವಿ ವಿಭೃತಿ—ಉ ಭೃ (ಧಾರಣ-ಪೋಷಣಯೋಃ) “ಕಿವ್” (೩-೨-೭೬)।

**ಉರ್ವಿಹ ಉರ್ವೀರುಹ (ಪುಂ)** 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ, ಗಿಡ, ಬಳ್ಳಿ. ಉರ್ವಿ ರೋಹತಿ—ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡುಭವಿ ಚ) “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೫)। “ಬಲಾಕ್ರಾಂತಃ ಕ್ರೋಡದ್ವಿರದ-ಮಥಿತೋರ್ವಿಹರವಃ” ಮಾಘಂ ೫-೬೯। (ವಿಂ) 2. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. “ವಿಹಂಗರಾಜಾಙ್ಗರಹಿರವಾಯತೇಹಿರಣ್ಮಯೋ-ರ್ವಿಹವಲಿತಂತುಭಿಃ” ಮಾಘಂ ೧-೭।



ಉಲಪ ಉಲಪ (ಪುಂ) 1. ಲತೆ, ಹಬ್ಬಿರುವ ಬಳ್ಳಿ. ವಲತಿ—  
ವಲ (ಸಂವರಣ) “ಕಪನ್” ಸಂಪ್ರಸಾರಣಂ ಚ (ಉಂ 3-184)।  
2. ಮೃದುವಾದ ಒಂದು ಜಾತಿಹುಲ್ಲು. “ಅವಿರಲವಿತತೇವ  
ಶಕ್ರಗೋಪೇರಣಿತನೀಲತೃಣೋಲಪಾ ಧರೀತ್ರಿ” ಕಿರಾಂ 10-31।

ಉಲೂಕ ಉಲೂಕ (ಪುಂ) 1. ಗೂಬೆ. ವಲ (ಸಂವರಣ)  
“ಒಕ:” ಸಂಪ್ರಸಾರಣಂ ಚ ನಿಪಾಂ (ಉಂ 4-41)। “ಕುಮುದವನ-  
ಮಪಶ್ರಿ ಶ್ರೀಮದಮ್ಭೋಜಷಣಂ ತ್ಯಜತಿ ಮುದಮುಲೂಕ: ಪ್ರೀತಿಮಾ-  
ಶ್ಚಕ್ರವಾಕ:” ಮಾಧಂ 11-64। 2. ಇಂದ್ರ. 3. ದುರ್ಯೋಧನನ ಒಬ್ಬ ದೂತ, ಮಹಾಭಾರತಯುದ್ಧದ ಒಬ್ಬ  
ಯೋಧ. “ಸ್ಯಾದುಲೂಕ: ಕಾಕಶಾಖಾಪಿಂಧ್ರೇ ಭಾರತಯೋಧಿನಿ”  
ಹೇಮಂ। (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 4. ಒಂದು ದೇಶ ಮತ್ತು  
ಆ ದೇಶದ ಜನರು. “ಉಲೂಕವಾಸಿನಂ ರಾಜನ್ ಬೃಹಂತಮುಪ-  
ಜಗ್ಮಿವಾನ್” ಭಾಂ ಸಭಾಂ 28-5। “ಉಲೂಕಾನುತ್ತರಾಶ್ಚೈವ  
ತಾಂಶ್ಚ ರಾಜ: ಸಮಾನಯತ್” ಭಾಂ ಸಭಾಂ 28-11।

ಉಲೂಖಲ ಉಲೂಖಲ (ನಂ) ಒರಳು, ಕುಟ್ಟಲು ಧಾನ್ಯ  
ವನ್ನು ಹಾಕುವ ಕಲ್ಲಿನ ಅಥವಾ ಮರದ ಪಾತ್ರೆ.  
ಒಳ್ಳೆ ಖಂ ಉಲಖಂ। ಪೃಷಂ। ಉಲಖಂ ಲಾತಿ ಲಾ (ಆದಾನೆ)  
“ಕ:” (3-2-3)। “ವನಸ್ಪತಿಮ್ಯ ಇತ್ಯೇವಂ ಮುಸಲೂಲಖಲೇ  
ಹರೇತ್” ಮನುಂ 3-66।

ಉಲೂಖಲಕ ಉಲೂಖಲಕ (ನಂ) 1. ಒರಳು. 2. ಕಲ್ಪತ್ತು.  
3. ಗುಗ್ಗುಳದ ಮರ. “ಕ್ರುಮ್ಭೂಲೂಖಲಕೇ ಕಲೀವೇ ಕೌಶಿಕೋ  
ಗುಗ್ಗುಲ: ಪುರ:” ಅಮಂ।

ಉಲೂಪಿನ್ ಉಲೂಪಿನ್ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರದ ಒಂದು ಜಾತಿ  
ಮೀನು, ತಿಮಿಂಗಿಲ ಜಾತಿಯ ಪ್ರಾಣಿ. ಉವಿಸ್ಮಯಕಾರಕಂ  
ರೂಪಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (4-2-114)। ರಲಯೋರಭೇದ:।

ಉಲೂಪಿ ಉಲೂಪಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಬ್ಬ ನಾಗಕನ್ಯೆ, ಕೌರವ್ಯ  
ನೆಂಬ ಸರ್ಪರಾಜನ ಮಗಳು. [ಒಂದು ದಿನ  
ಉಲೂಪಿಯು ಗಂಗಾನದಿಯಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ  
ತೀರ್ಥಯಾತ್ರಿಗಾಗಿ ಹೋಗಿದ್ದ ಅರ್ಜುನನನ್ನು ಕಂಡು  
ಮೋಹಗೊಂಡು ಅವನನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ಇರಾವಂತ  
ನೆಂಬ ಮಗನನ್ನು ಪಡೆದಳು.] ಭಾಂ ಆದಿಂ 234।  
[ಬಭ್ರುವಾಹನನ ಬಾಣಕ್ಕೆ ತುತ್ತಾಗಿದ್ದ ಅರ್ಜುನನನ್ನು  
ಇವಳು ಸಂಜೀವನಮಾಡಿದೆಯಿಂದ ಬದುಕಿಸಿದಳು.]  
ಭಾಂ ಆಶ್ವಂ 61।

ಉಲೂಕಾ ಉಲೂಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ  
ಒಂದು ತೇಜಸ್ವಿನ ರಾಶಿ, ಬಾಲಚುಕ್ಕೆ. ಉಷ (ದಾಹೆ)  
“ಕಕ್” ಷಸ್ಯ ಲಶ್ಚ (ಉಂ 3-42)। “ಪರಮಾಸ್ತ್ರಪರಿಗ್ರಹೋ-  
ತೇಜ: ಸ್ಫುರದುಲೂಕಾಕೃತಿ ವಿಕಿಪಿನ್ವನೇಷು” ಕಿರಾಂ 13-26।

2. ದೀವಟಗಿ, ಇಲಾಲು, ಪಂಜು. 3. ಬೆಂಕಿ, ಉರಿ.  
“ಬಾಧೇತೋಲ್ಕಾಕ್ಷಪಿತಚಮರೀಬಾಲಭಾರೋ ದವಾಗ್ನಿ:” ಮೇಘಂ  
1-43।

ಉಲೂಕಾಪಾತ ಉಲೂಕಾಪಾತ (ಪುಂ) ಆಕಾಶದಿಂದ ಬೆಂಕಿ  
ಬೀಳುವುದು. ಉಲೂಕಾಪಾತ:। ಷಂ ತಂ।

ಉಲೂಕಾಮುಖ ಉಲೂಕಾಮುಖ (ಪುಂ) ಕೊಳ್ಳದೆವ್ವ, ಬಾಯಿಂದ  
ಬೆಂಕಿಯನ್ನು ಉಗುಳುವ ಪಿಶಾಚಿ. ಉಲೂಕಾ ಮುಖೇ ಯಸ್ಯ।  
“ವಿದ್ಯುತ್ಪುಂಜನಿಕಾಶಕೇಶನಯನಭ್ರೂಮಶ್ರುಜಾಲೇನಂಭೋ ಲಕ್ಷ್ಯಾಲಕ್ಷ್ಯ-  
ವಿಶುಷ್ಕದೀರ್ಘವಪುಷಾಮುಲೂಕಾಮುಖಾನಾಂ ಮುಖೈ:” ಮಾಲತೀಂ 4-13।

ಉಲಬ ಉಲಬ (ನಂ) ಗರ್ಭಕೋಶ, ಗರ್ಭಾಶಯ, ಗರ್ಭದ  
ಮೇಲಿನ ಹೊದಿಕೆಯ ಚೀಲ. ಉಚ (ಸಮವಾಯಿ) “ಬನ್”  
(ಉಂ 4-94)। “ಯಥೋಲ್ಬೇನಾವೃತೋ ಗರ್ಭಸ್ತಥಾ ತೇನೇದಮಾವೃತಮ್”  
ಗೀತಾ 3-36।

ಉಲಬಣ ಉಲಬಣ (ವಿಂ) 1. ಉತ್ಕಟವಾದ, ಅಧಿಕವಾದ,  
ಹೆಚ್ಚಾದ, ಮಿತಿಮೀರಿದ. ಉತ್ ಬಣತಿ—ಬಣ (ಶಬ್ದ)  
“ಅಚ್” (3-1-134)। ಪೃಷಂ। “ಕೇನಚಿನ್ಮಧುರಮುಲಬಣ-  
ರಾಗಂ ಬಾಷ್ಪತಪ್ತಮಧಿಕಂ ವಿರಹೇಷು” ಮಾಧಂ 10-44।  
2. ದೊಡ್ಡ ದಾದ, ಹಿರಿದಾದ. “ರಿಪುಲಬಣಭೀಮಭೋಗ-  
ಭಾಜಾಂ ಭುಜಗಾನಾಂ ಜನನೀಂ ಜಜಾಪ ವಿಧಾಮ್” ಮಾಧಂ 20-41।  
3. ತೊಂದರೆಯಿಲ್ಲದ, ಅಡ್ಡಿ ಆತಂಕಗಳಿಲ್ಲದ, ಪ್ರಕಾಶ  
ವಾದ. “ತ್ಯಾಜಿತೈ: ಫಲಮುತ್ಖಾತೈರಭಗನೈಶ್ಚ ಬಹುಧಾ ನೃಪೈ:।  
ತಸ್ಯಾಸೀದುಲಬಣೋ ಮಾರ್ಗ: ಪಾದಪೈರಿವ ದಂತಿನ:” ರಘುಂ 4-33।

ಉಲಮುಕ ಉಲಮುಕ (ಪುಂ) 1. ಯದುವಂಶದ ಒಬ್ಬ  
ದೊರೆ. (ನಂ) 2. ಬೆಂಕಿಯ ಕೆಂಡ, ಅಂಗಾರ. ಉಷ  
(ದಾಹೆ) “ಮುಕ:” ಷಸ್ಯ ಲಶ್ಚ (ಉಂ 3-64)। “ಉಲಮುಕೇನ  
ದ್ರೂಮಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ಸಂಕುಚತ್ಪತ್ರಸಂಪದಮ್। ತೇಜ: ಪ್ರಕಿರತಾ ದಿಕ್ಷು  
ಸಪ್ರತಾಪಮದೀಪ್ಯತ” ಮಾಧಂ 19-6। 3. ಅರ್ಧಬೆಂದಿರುವ  
ಕಟ್ಟಿಗೆ, ಕೊಳ್ಳೆ.

ಉಲ್ಲಂಘನ ಉಲ್ಲಂಘನ (ನಂ) 1. ಮೀರುವುದು, ಅತಿ  
ಕ್ರಮಿಸುವುದು. ಉದ್ + ಲಘಿ (ಗತೌ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್”  
(3-3-114)। “ವೆಲೋಲ್ಲಂಘನಮೇತೇಷಾಂ ಶೋಕೋದನ್ವತಿ  
ತನ್ವತಿ” ಚಂ ರಾಂ। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವುದು,  
ಮೇಲಕ್ಕೆ ನೆಗೆಯುವುದು. 3. ಡಾಟುವುದು.

ಉಲ್ಲಂಘನೀಯ ಉಲ್ಲಂಘನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಅತಿಕ್ರಮಿಸಲು  
ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ಅತಿಕ್ರಮಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ.  
3. ಅತಿಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಡಾಟಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.  
5. ಡಾಟಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 6. ಡಾಟಲ್ಪಡುವ. ಉದ್ +  
ಲಘಿ (ಗತೌ) ಅರ್ಹಾದಿ “ಅನೀಯರ್” (3-1-96)।



ಉಲ್ಲಂಘಯತ್ ಉಲ್ಲಂಘಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಅತಿಕ್ರಮಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ಮೀರಿಹೋಗುವ. ಉದ್+ಲಘಿ (ಗತೌ)+ಣಿच्  
"ಶತ್" (3-2-124)। "ಉಲ್ಲಂಘಯನ್ ಮಮ ಸಮುಜ್ಜ್ವಲತಃ  
ಪ್ರತಾಪಂ ಕೋಪಸ್ಯ ನಂದಕುಲಕಾನನಧೂಮಕೇತೋಃ" ಮುद्रಾಂ 1-10।  
2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುತ್ತಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ನೆಗೆಯು  
ತ್ತಿರುವ. 3. ದಾಟುತ್ತಿರುವ. 4. ಅತಿಕ್ರಮಿಸುವಂತೆ  
ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 5. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿಸುತ್ತಿರುವ.  
6. ದಾಟಿಸುತ್ತಿರುವ.

ಉಲ್ಲಂಘಿತ ಉಲ್ಲಂಘಿತ (ವಿಂ) 1. ಅತಿಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಮೀರಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್+ಲಘಿ(ಗತೌ)"ಕ್ತಃ" (3-2-102)।  
"ಅಮ್ಮೋಹಿಃ ಉಲ್ಲಂಘಿತತುಂಗರೋಧಸಃ ಪ್ರತಿಪನ್ನಾಃ ಕುಸ್ತೇ ಸ್ಮ  
ನಿಮ್ನಗಾಃ" ಮಾಘಂ 12-57। 2. ಹಾರಲ್ಪಟ್ಟ, ನೆಗೆಯ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ದಾಟಲ್ಪಟ್ಟ.

ಉಲ್ಲಂಘಿತವ್ಯ ಉಲ್ಲಂಘಿತವ್ಯ (ವಿಂ) "ಉಲ್ಲಂಘನೀಯ"  
ಪದದ ಅರ್ಥ. ಉದ್+ಲಘಿ(ಗತೌ)"ತವ್ಯಃ" (3-1-96)।

ಉಲ್ಲಂಘಿತಶಾಸನ ಉಲ್ಲಂಘಿತಶಾಸನ (ವಿಂ) ಅಷ್ಟೇ  
ಯನ್ನು ಮೀರಿದ, ಅಪ್ಪಣೆಯನ್ನು ಮುರಿದ. ಉಲ್ಲಂಘಿತ  
ಶಾಸನಂ ಯೇನ।

ಉಲ್ಲಲ ಉಲ್ಲಲ (ವಿಂ) 1. ಚಲಿಸುವ, ಹೊರಟಿರುವ,  
ಚಲನೆಯುಳ್ಳ. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಾಡುತ್ತಿರುವ,  
ನೆಗೆಯುತ್ತಿರುವ. ಉದ್+ಲಲ (ವಿಲಾಸೇ) "ಅच्"  
(3-1-134)। "ಶತ್" (3-2-124)। -ಲಲತ್  
-ಲಲತ್. "ನಿಧೃತವೀತಮಪಿ ಬಾಲಕಮುಲ್ಲಲಂತಂ ಯಂತಾ ಕ್ರಮೇಣ  
ಪರಿಸಾನ್ವನತರ್ಜನಾಃ" ಮಾಘಂ 4-47। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಛೀಪ್"  
(4-1-6)। -ಲಲಂತಿ -ಲಲಂತೀ.

ಉಲ್ಲಲಿತ ಉಲ್ಲಲಿತ (ವಿಂ) 1. ಹೊರಟಿರುವ, ಚಲಿ  
ಸುವ. ಉದ್+ಲಲ(ವಿಲಾಸೇ)ಕೃತಂ "ಕ್ತಃ" (3-4-62)।  
2. ಅಲುಗಾಡುವ. (ನಂ) 3. ಅಲುಗಾಡುವಿಕೆ,  
ತೂಗಾಡುವಿಕೆ. ಉದ್+ಲಲ ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-3-114)।

ಉಲ್ಲಸತ್ ಉಲ್ಲಸತ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡುತ್ತಿರುವ,  
ಹರ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಉದ್+ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣಕ್ರೀಡನಯೋಃ) "ಶತ್"  
(3-2-124)। "ಇಷಡ್ವಕ್ರಿತಕಂಧರಃ ಸಪುಲಕಃ ಪ್ರಮೋಲ್ಲಸ-  
ನ್ಮಾನಸಾಮ್" ಅಮರಂ 19। 2. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತೋರು  
ತ್ತಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೊರಟುಬರುತ್ತಿರುವ. "ಶೇಷೇಣ  
ತೇಜಸ ಇವೋಲ್ಲಸತಾ ರರಾಜ" ಮಾಘಂ 4-44।  
3. ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ.  
"ಪ್ರೋಲ್ಲಸತ್ಕುಂಡಲಪ್ರೊತಪದ್ಮರಾಗದಲತ್ವಿಷಾ" ಮಾಘಂ 2-19।  
4. ಪ್ರತಿಫಲಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಛೀಪ್" (4-1-6)।

-ಲಸಂತಿ -ಲಸಂತೀ. "ನಿನಾಯ ತೇಷಾಂ ದ್ರುತಮುಲ್ಲಸಂತಿ  
ವಿನಿದ್ರತಾಂ ಲೋಚನಪಟ್ಟಜಾನಿ" ಕಿರಾಂ 16-33। "ಪ್ರಣಯಿನಿ  
ವಿದಧಾನೇ ಯೋಪಿತಾಮುಲ್ಲಸಂತ್ಯಃ" ಮಾಘಂ 11-44।

ಉಲ್ಲಸನ ಉಲ್ಲಸನ (ನಂ) 1. ಉಲ್ಲಾಸ, ಹರ್ಷ. ಉದ್+  
ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣಕ್ರೀಡನಯೋಃ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2.  
ರೋಮಾಂಚ, ಮೈಮುಳ್ಳೆಳುವುದು, ನಿಲುಗೂಡಲು.

ಉಲ್ಲಸಮಾನ ಉಲ್ಲಸಮಾನ (ವಿಂ) ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ,  
ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ. ಉದ್+ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣಕ್ರೀಡನಯೋಃ)  
"ಶಾನच्" (3-2-124)। "ಋತಮುಲ್ಲಸಮಾನವೇನತೇಯ-  
ದ್ವುತಿಭಿನ್ನಾಃ ಫಣಭಾರಿಣೋ ಮಣಿನಾಮ್" ಮಾಘಂ 20-46।

ಉಲ್ಲಸಯತ್ ಉಲ್ಲಸಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷ  
ಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹರ್ಷಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಕಾಂತಿ  
ಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸ್ಪಷ್ಟ  
ವಾಗಿ ತೋರ್ಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಉದ್+ಲಸ(ಶ್ಲೇಷಣಾದೌ)+  
ಣಿच् "ಶತ್" (3-2-124)। 3. ಚಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ, ಅಲುಗಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಛೀಪ್"  
(4-1-6)। -ಲಸಯಂತಿ -ಲಸಯಂತೀ. "ಜಿಹ್ವಾಶತಾನ್ಯುಲ್ಲ-  
ಸಯಂತ್ಯಜಸಂ ಲಸತ್ತಡಿಲ್ಲಲವಿಷಾನಲಾನಿ" ಕಿರಾಂ 16-37।

ಉಲ್ಲಸಿತ ಉಲ್ಲಸಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಗೊಂಡ,  
ಹರ್ಷಹೊಂದಿದ. ಉದ್+ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣಕ್ರೀಡನಯೋಃ) "ಕ್ತಃ"  
(3-4-62)। 2. ಹೊಳೆಯುವ, ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ.  
"ಯಾಚ್ಯಮಾನಮುಖಮುಲ್ಲಸಿತಶ್ಚಿ" ನೆಪಂ 4-93। 3. ಹೊರಕ್ಕೆ  
ಹೊರಟಿರುವ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತೋರುವ. "ನಾಸಾವಿರೋಕ-  
ಪವನೋಲ್ಲಸಿತಂ ತನೀಯಃ" ಮಾಘಂ 4-44।

ಉಲ್ಲಾಘ ಉಲ್ಲಾಘ (ವಿಂ) 1. ರೋಗದಿಂದ ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ  
ವನು, ರೋಗ ವಾಸಿಯಾದವನು. ಉಲ್ಲಾಘತೇ ಸ್ಮ-ಉದ್+  
ಲಾಘ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) "ಕ್ತಃ" (4-2-44)। ನಿಪಾಂ।  
"ಉಲ್ಲಾಘೋ ನಿರ್ಗತೋ ಗದಾತ್" ಅಮಂ। 2. ನಿಪುಣ,  
ಬುದ್ಧಿವಂತ. 3. ಸಂತೋಷಗೊಂಡವನು. 4. ಶುಚಿ  
ಯಾದ, ಶುದ್ಧವಾದ. "ಉಲ್ಲಾಘೋ ನಿಪುಣೋ ಹೃಷ್ಠೇ  
ಶುಚಿನಿರೋಗಯೋಸ್ತ್ರಿಪು" ಹೇಮಂ।

ಉಲ್ಲಾಘಯತ್ ಉಲ್ಲಾಘಯತ್ (ವಿಂ) 1. ವ್ಯಾಧಿಯಿಂದ  
ಬಿಡಿಸುವವನು, ರೋಗ ವಾಸಿಮಾಡುವವನು. ಉದ್+  
ಲಾಘ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) + ಣಿच् "ಶತ್" (3-2-124)।  
2. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವವನು. 3. ನಿರ್ಮಲವಾಗಿ  
ಮಾಡುವವನು, ಶುದ್ಧಮಾಡುವವನು.

ಉಲ್ಲಾಘಿತ ಉಲ್ಲಾಘಿತ (ವಿಂ) ವ್ಯಾಧಿಯಿಂದ ಬಿಡಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ರೋಗವಾಸಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದ್+ಲಾಘ(ಸಾಮರ್ಥ್ಯ)



उल्लिखत् लुल्लिखत् (वि०) 1. लुज्जुत्तिरुव, तिक्कु  
त्तिरुव. 2. सान्नेहिडियुत्तिरुव. 3. चित्त  
कौरेयुत्तिरुव. उद् + लिख (अक्षरविन्यासे)  
“शतृ” (३-२-१२४)। 4. चित्त बरेयुत्तिरुव.  
5. कौरेयुत्तिरुव, गिरुत्तिरुव, गायमनाडु  
त्तिरुव. “रोचिष्णुकाञ्चनचयांसुपिशंगिताशा वंशध्वजै-



जलदसंहतिमुल्लिखन्त्यः" माघ० ५-२०। 6. ಉಹಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ತರ್ಕಿಸುತ್ತಿರುವ. 7. ಮೇಲೆ ಬರೆಯು  
ತ್ತಿರುವ. 8. ಸೂಚಿಸುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರಸ್ತಾಪಿಸುತ್ತಿರುವ.

उल्लिख्यमान ಉಲ್ಲಿಖ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಉಜ್ಜಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ, ತಿಕ್ಕಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. उद् + लिख (अक्षर-  
विन्यासे) कर्म० "शानच्" (३-२-१२४)। 2. ಸಾಣೆ  
ಕೊಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಚಿತ್ರ(ದಲಿ) ಬರೆಯಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ. 4. ಕೆತ್ತಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಚಿತ್ರ ಕೊರೆಯ  
ಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 5. ಉಹಿಸಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ,  
ತರ್ಕಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 6. ಗೆರೆ ಎಳೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.  
7. ಸೂಚಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರಸ್ತಾಪಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

उल्लिखित्वा ಉಲ್ಲಿಲಂಘಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅತಿಕ್ರಮಿ  
ಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಮಾರಲು ಆಸೆ. उल्लिखितुमिच्छा—  
उद् + लघि (गती) + सन् "अः" (३-३-१०२)।  
2. ದಾಟಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. 3. ಹಾರಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ.

उल्लिखित्वा ಉಲ್ಲಿಲಂಘಿತಾ (ವಿಂ) 1. ಅತಿಕ್ರಮಿಸಲು  
ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಮಾರಲು ಆಸೆಪಡುವ. 2. ದಾಟಲು  
ಅಪೇಕ್ಷೆಪಡುವ. 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಲು ಆಸೆಪಡುವ.  
उल्लिखितुमिच्छुः — उद् + लघि (गती) + सन् "उः"  
(३-२-१६८)।

उल्लीढ ಉಲ್ಲಿಢ (ವಿಂ) ಸಾಣೆಹಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಹರಿತ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಳವುಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. उद् + लिह  
(आस्वादाने) "क्तः" (३-२-१०२)। "मणिः शाणोल्लीढः  
समरविजयी हेतिदलितः मदक्षीणो नागः शरदि सरितः  
श्यानपुलिनाः" कुव०।

उल्लु ಉಲ್ಲು (ಪುಂ) ಸೂರಣಗಿಡ್ಡೆ. उद् + लू (छेदने)  
"ङुः" (वा० ३-२-१८०)। "कन्दं त्वस्त्री चित्रदण्ड  
उल्लुः कण्डूरसूरणौ" वैज०।

उल्लू ಉಲ್ಲೂ (ವಿಂ) ಕತ್ತರಿಸುವ. उद् + लू (छेदने)  
"क्विप्" (३-२-७६)।

उल्लुञ्चन ಉಲ್ಲಂಚನ (ನಂ) 1. ಕೂದಲನ್ನು ಎಳೆದು  
(ಬುಡಸಹಿತ) ಕೇಳುವುದು. उद् + लुञ्च (अपनयने)  
भावे "ल्युट्" (३-३-११५)। 2. ಎಳೆಯುವುದು.  
"पादकेशांशुककरोल्लुञ्चनेषु पणान् दश" याज्ञ० २-२१७।

उल्लुञ्चित ಉಲ್ಲಂಚಿತ (ವಿಂ) 1. ಕೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಬುಡ  
ಸಹಿತ ಕಿತ್ತುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಿತ್ತೊಗೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. उद् +  
लुञ्च (अपनयने) "क्तः" (३-२-१०२)। "उल्लुञ्चित-  
चिकुरमुक्तवसनदुर्दशनः" प्रबोध० ३। 2. ಎಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ.

उल्लुण्ठन ಉಲ್ಲಂಠನ (ನಂ) ವಕ್ರೋಕ್ತಿ, ಮನನೋಯಿ  
ಸುವ ಮಾತು, ಪ್ರಿಯವಾಗಿತೋರುವ ಅಪ್ರಿಯ ವಚನ.  
उद् + लुठि (स्तेप्ते) "ल्युट्" (३-३-११५)। भावे "अः"  
(३-३-१०३)। (स्त्री०) उल्लुण्ठा ಉಲ್ಲಂಠಾ. "धीराधीरा  
तु सोल्लुण्ठभाषितैः खेदयत्यमुम्" सा० द० ३-६३।

उल्लूक ಉಲ್ಲೂಕ (ಪುಂ) ದರ್ಭೆಹುಲ್ಲು. "उल्लूकस्तूलपो  
दभः ऊर्ध्वमूलः खरच्छदः" वैज०।

उल्लेख ಉಲ್ಲೇಖ (ಪುಂ) 1. ಸೂಚನೆ, ಪ್ರಸ್ತಾವ.  
उद् + लिख (अक्षरविन्यासे) "घञ्" (३-३-१८)।  
2. ವರ್ಣನೆ, ಉಹಿಸಿ ವರ್ಣಿಸುವಿಕೆ, ಅರ್ಥಾ  
ಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ; "बहुभिर्बहुधोल्लेखा-  
देकस्योल्लेख इष्यते" चन्द्रा०। ಇದು ಎರಡು ವಿಧ:  
(1) ಒಂದು ವಸ್ತುವು ಅನೇಕರಿಂದ ಅನೇಕ ವಿಧವಾಗಿ  
ಉಹಿಸಿ ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಡುವುದು (ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವುದು)  
ಒಂದು ವಿಧ ಉಲ್ಲೇಖಾಲಂಕಾರ. ಉದಾ: "स्त्रीभिः  
कामोर्षथभिः स्वर्द्धः कालः शत्रुभिरैक्षि सः" चन्द्रा०।  
(2) ಒಂದು ವಸ್ತುವು ಒಬ್ಬನಿಂದ ಅನೇಕ ವಿಧವಾಗಿ  
(ತಿಳಿದು) ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಡುವುದು ಮತ್ತೊಂದು ವಿಧ.  
ಉದಾ: "गुर्वचस्यर्जुनोयं कीर्तौ भीष्मः शरासने"  
चन्द्रा०। 3. ಉಜ್ಜುವಿಕೆ, ತಿಕ್ಕುವಿಕೆ. "असकृन्निशित-  
शस्त्रोल्लेखविषमितिखरेण" काद०। 4. ಆಗೆಯು  
ವುದು, ತೋಡುವುದು. 5. ಚಿತ್ರಬರೆಯುವುದು.

उल्लेखक ಉಲ್ಲೇಖಕ (ವಿಂ) 1. ಉಜ್ಜುವ, ತಿಕ್ಕುವ.  
2. ಸೂಚಿಸುವ, ಪ್ರಸ್ತಾಪಿಸುವ. 3. ಸಾಣೆಹಡಿ  
ಯುವ. 4. ವರ್ಣಿಸುವ. 5. ಚಿತ್ರ ಬರೆಯುವ.  
6. ಆಗೆಯುವ, ತೋಡುವ. उद् + लिख (अक्षर-  
विन्यासे) "ष्णुल्" (३-१-१३३)।

उल्लेखन ಉಲ್ಲೇಖನ (ನಂ) 1. ಉಜ್ಜುವಿಕೆ, ತಿಕ್ಕುವಿಕೆ.  
उद् + लिख (अक्षरविन्यासे)। 2. ಆಗೆಯುವುದು,  
ತೋಡುವುದು. "संमार्जनोपाञ्जनेन सेकेनोल्लेखनेन च"  
मनु० ५-१२४। 3. ಸೂಚನೆ, ಪ್ರಸ್ತಾವ. 4. ವಾಂತಿ  
ಮಾಡುವುದು. 5. ವರ್ಣನೆ. 6. ಚಿತ್ರ ಬರೆಯು  
ವುದು. 7. ಗುರುತುಮಾಡುವುದು, ಗೆರೆ ಹಾಕುವುದು.

उल्लेखिन् ಉಲ್ಲೇಖಿನ್ (ವಿಂ) "उल्लेखक" ಪದದ  
ಅರ್ಥ. उद् + लिख (अक्षरविन्यासे) "णिनिः"  
(३-१-१३४)।

उल्लेखनीय ಉಲ್ಲೇಖನೀಯ (ವಿಂ) 1. ವರ್ಣಿಸಲು  
ಅರ್ಹವಾದ, —ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ವರ್ಣಿಸಲು



ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಡುವ. ಉ+ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರ-  
ವಿನ್ಯಾಸ) ಅರ್ಹದೊ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬)। 4. ಅಗೆಯ  
ಲ್ಪಡುವ. 5. ಅಗೆಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 6. ಅಗೆಯಲು  
ಯೋಗ್ಯವಾದ. 7. ಗುರುತುಮಾಡಲ್ಪಡುವ.  
8. ಗುರುತುಮಾಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 9. ಗುರುತು  
ಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 10. ಚಿತ್ರ ಕೊರೆಯ  
ಲ್ಪಡುವ. 11. ಚಿತ್ರ ಕೊರೆಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ.  
12. ಚಿತ್ರ ಕೆತ್ತಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.

ಉಲೋಚ ಉಲ್ಲೋಚ (ಪುಂ) ವಿತಾನ, ಗವಸಣಿಗೆ,  
ಬಟ್ಟೆಯ ಚಪ್ಪರ. ಉಪರಿ ಲೋಚ್ಯತೆ - ಲೋಚ (ದರ್ಶನೆ)  
"ಛ" (೩-೩-೧೯)। "ಅಸ್ತ್ರೀ ವಿತಾನಮುಲ್ಲೋಚಃ"  
ಅಮಂ।

ಉಲ್ಲೋಲ ಉಲ್ಲೋಲ (ಪುಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಅಲೆ. ಉಲ್ಲೋ-  
ಯತಿ - ಉ+ಲೋ (ಉನ್ನಾಡೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।  
ಲಡಯೋರಭೇದಃ। (ವಿಂ) 2. ಬಹಳ ಚಂಚಲವಾದ,  
ಅತಿಯಾಗಿ ಅಲುಗಾಡುವ. "ದೂರೋಲ್ಲಲಿತವಾಡವಸ್ಯ  
ಜಲಧೇಲ್ಲಲೋಲಭಿನ್ನಾಂಭಸೋ ರುಧಿರಾಪತೀತೇನ ವೇಗಮಠ್ಠಾ  
ಪಾತಾಲಮಾಧ್ಮಾಯತೆ" ಮಂ ವೀಂ ೪-೨।

ಉಶನಸ್ ಉಶನಸ್ (ಪುಂ) 1. ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರು,  
ಅಸುರರ ಗುರು. ವಶ (ಕಾಂತಿ) "ಕನಸಿಃ" (ಉಂ  
೪-೨೩೮)। ಸಂಪ್ರಂ। [ಭೃಗುಮಹರ್ಷಿಯು ಶುಕ್ರಾ-  
ಚಾರ್ಯರ ತಂದೆ. ಪುಲೋಮೆಯು ತಾಯಿ.  
ಉರ್ಜಸ್ವತಿಯೆಂಬುವಳು ಪತ್ನಿ. ದೇವಯಾನಿಯು  
ಮಗಳು. ಜಗತ್ತಿನ ಸಂಪತ್ತಿಗಾಗಿ ದೇವಾಸುರರಲ್ಲಿ  
ಪರಸ್ಪರ ಕಾದಾಟ ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗಲಾಗಿ ದೇವತೆಗಳು  
ಅಸುರರನ್ನು ಜಯಿಸಲು ಬೃಹಸ್ಪತ್ಯಾಚಾರ್ಯರನ್ನೂ,  
ಅಸುರರು ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರನ್ನೂ ತಮ್ಮತಮ್ಮ  
ಆಚಾರ್ಯರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡರು. ವಿವರಕ್ಕೆ  
"ಶುಕ್ರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ಸುರಾಣಾಮಸುರಾಣಾಂ ಚ  
ಸಮಜಾಯತ ವೈ ಮಿಥಃ। ಏಶ್ವಯಂ ಪ್ರತಿ ಸಂಧರ್ಷಸ್ತೈಲೋಕೈ  
ಸಚರಾಚರೇ। ಜಿಗಿಷಯಾ ತತೋ ದೇವಾಃ ವತ್ಸಿರೇಽಙ್ಗಿರಸಂ  
ಮುನಿಮ್। ಪೌರೋಹಿತೇನ ಯಜ್ಯತವೇ ಕಾವ್ಯಂ ತುಶನಸಂ ಪರೇ।  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣೌ ತಾವುಭೌ ನಿಯಮನ್ಯೋನ್ಯಸ್ಪರ್ಧಿನೌ ನೃಪ" ಭಾಂ  
ಆದಿಂ ೭೦। 2. ಒಬ್ಬ ಸ್ಮೃತಿಕಾರರು.

ಉಶಿಜ್ಞಃ ಉಶಿಜ್ಞಃ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 2. ಘೃತ,  
ತುಪ್ಪ. ವಶಿಠಿ ಉಪಯೋಗವಾಗಿ - ವಶ (ಕಾಂತಿ) "ಇಜಿಃ"  
ಸಂಪ್ರಂ (ಉಂ ೨-೭೧)। "ಉಶಿಗಗ್ನೌ ಧೃತೇಽಪಿ ಚ"  
ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಉಶೀನರ ಉಶೀನರ (ಪುಂ) 1. ಯಾದವವಂಶದ ಒಬ್ಬ  
ದೊರೆ. "ಉಶೀನರಶ್ಚ ವಿಕ್ರಾಂತೋ ವೃಣಯಸ್ತೇ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾಃ"  
ಭಾಂ। 2. ಚಂದ್ರವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. [ಈತನು  
ಭೋಜದೇಶದ ದೊರೆ. ಯಯಾತಿಯ ಮಗಳಾದ  
ಮಾಧವಿಯು ಈತನ ಪತ್ನಿ. ತಿಬಿ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯು  
ಈತನ ಮಗ.] ಭಾಂ ವನಂ ೧೩೨। (ಪುಂ ಬಂ ವಂ)  
3. ಉಶೀನರವೆಂಬ ಒಂದು ದೇಶ. 4. ಉಶೀನರ  
ದೇಶವಾಸಿಗಳು.

ಉಶೀರ ಉಶೀರ (ಪುಂ) ಉಶೀನರವಂಶದ ದೊರೆ. ಉಶೀರ-  
ವಶ (ಕಾಂತಿ) "ಉಶೀನ್" (ಉಂ ೪-೩೧)। "ಸ್ತನನ್ಯಸ್ತೋ-  
ಶೀರಂ ಶಿಥಿಲಿತಮೃಣಾಲೈಕವಲಯಮ್" ಶಾಕುಂ ೩-೬।

ಉಶೀರಬೀಜ ಉಶೀರಬೀಜ (ಪುಂ) ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ  
ಒಂದು ಪರ್ವತ. ಉಶೀರಸ್ಯ ವೀರಣಮೂಲಸ್ಯ ಬೀಜಂ  
ಯೋನಿರತ್ರ। "ಉಶೀರಬೀಜಂ ಮೇನಾಕಂ ಗಿರಿಂ ಶ್ವೇತಂ ಚ ಭಾರತ।  
ಸಮತೀತೋಽಸಿ ಕೌಂತೇಯ ನೀಲಶೀಲಂ ಚ ಪಾರ್ಥಿವ" ಭಾಂ ವನಂ  
೧೪೧-೧।

ಉಷ - ದಾಹ (ಮಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) ಉಷತಿ। ಉಷಾ-  
ಕಾರ, -ವಭೂವ, -ಆಸ। ಪಕ್ಷೆ ಉಷ ಉಷತುಃ ಉಷುಃ।  
ಉಷಿತಾ। ಉಷತುಃ। ಉಷತ್। ಉಷಿತ್। ಉಷಿಷ್ಯತ್।  
ಕರ್ಮಣಿ - ಉಷ್ಯತೇ। ಉಷೇ। ಉಷ್ಯತಾಮ್। ಉಷ್ಯತೇ। ಉಷಿಃ।  
ಉಷಿಷ್ಯತ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಉಷ ಉಷ (ಪುಂ) 1. ಕಾಮುಕ, ಕಾಮಾತುರ, ಕಾಮಾಸಕ್ತ.  
ಉಷ (ದಾಹ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಗುಗ್ಗುಳ.  
3. ರಾತ್ರಿಯ ಶೇಷ, ಉಷಃಕಾಲ, ಬೆಳಗಿನಜಾವ,  
ಅರುಣೋದಯಕಾಲ. 4. ವ್ರಾತಕಾಲ. 5. ಚೌಳು  
ಮಣ್ಣು. "ಉಷಃ ಕಾಮಿನಿ ಗುಗ್ಗುಲಿ। ರಾತ್ರೀಶೇಷೇ ಉಷಾಂ ತು  
ಕೇಚಿದಾಹುಸ್ತದವ್ಯಯಮ್। ಉಷಃ ಕಾರ್ಮುತಿಕಾಂ ಪ್ರಭಾತೇಽಪಿ  
ಪುಮಾನಯಮ್" ಮೇದಿಂ। 6. ದಿವಸ, ಹಗಲು. (ವಿಂ) 7.  
ದಹಿಸುವ, ಸುಡುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಉಷಾ - ಉಷಾ. 8. ಉಷಾ  
ದೇವಿ, ಬಾಣಾಸುರನ ಮಗಳು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಉಷಾ"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 9. ರಾತ್ರಿ. "ಉಷಾ ಬಾಣಸುತಾರಾಽಪ್ಯೋಃ"  
ಮೇದಿಂ।

ಉಷಣ ಉಷಣ (ನಂ) 1. ಮೆಣಸು. 2. ಹಿಪ್ಪಲಿ. ಉಷ  
(ದಾಹ) "ಉಷುನ್" (ಉಂ ೨-೭೮)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಉಷಾ - ಉಷಾ.  
3. ಶುಂಠಿ. 4. ಚವ್ಯ. 5. ಹಿಪ್ಪಲಿ.

ಉಷಪ ಉಷಪ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಉಷ (ದಾಹ) "ಉಷುನ್"  
(ಉಂ ೩-೧೪೨)। 2. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. "ಉಷಪೋ ವಹ್ನಿಃ-  
ಸೂರ್ಯೋಃ" ಸಿಂ ಕೌಂ। 3. ಚಿತ್ರಮೂಲದ ಗಿಡ.



उष्ट्रक्रोशन् एष्य क्रोशेन् (वि०) ఒంటియంతే  
 కంగికొట్టున, ఒంటియంతే శబ్దమొడువ. उष्ट्र  
 इव क्रोशति — కుశ (आह्वाने रोदने च) “णिनिः”  
 (३-२-७८) । स्त्रियां “ङीप्” (४-१-५) । —क्रोशिनी  
 క్రోశిని.



ಉಪಗ್ರೀವಕ ಉಷ್ಣಗ್ರೀವಕ (ಪುಂ) ಸಿತ್ತವಿಕಾರದಿಂದ ಉಂಟಾದ ನಾಡೀವ್ರಣ, ಭಗಂದರ. ಉಪಗ್ರೀವಾ ಆಕಾರ- ತ್ವೇನಾಸ್ತಯಸ್ಯಾ: "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"। "ಭಗಂದರ:। ಶಮ್ಬುಕಾವರ್ತ ಏಷ ಸ್ಯಾತ್ರಿದೋಪೋತ್ಯೋಷ ಪಿತ್ತಜ:। ಸ್ಯಾದುಪಗ್ರೀವಕ:" ವೈಜಂ।

ಉಪ್ಪಾಸಿಕಾ ಉಷ್ಣಾಸಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂಟಿಯಂತೆ ಕುಳಿತು ಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಉಪ್ಪೇವಾಸಿಕಾ ಆಸನಮ್।

ಉಪ್ಪಿಕಾ ಉಷ್ಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಒಂಟಿ. 2. ಒಂಟಿ ಯಂತಿರುವ ಒಂದು ಮಣ್ಣಿನ ಹೆಂಡದ ಪಾತ್ರೆ. "ಉಪ್ಪಿಕಾ ಮೃತ್ತಿಕಾ ಭಾಂಡಭೇದೇ ಕರಭಯೋಪಿತಿ" ವಿಶ್ವಂ। "ಭೂಂಜ್ಞಸಂಖೋಭವಿದಾರಿತೋಪ್ಪಿಕಾಗಲನ್ಮಧುಪ್ಲಾವಿತದೂರವರ್ಮನಿ" ಮಾಘಂ ೧೨-೨೬।

ಉಣ ಉಷ್ಣ (ಪುಂ) 1. ಗ್ರೀಷ್ಮಮತು, ಬೇಸಿಗೆಯ ಕಾಲ. ಆಂಪತಿ-ಉಷ (ದಾಹ) "ನಕ್" (೩ಂ ೩-೨)। 2. ಅಗ್ನಿ. 3. ಸೂರ್ಯ. "ಉಣಂ ವರ್ಷತಿ ಶೀತೇ ವಾ ಮಾರುತೇ ವಾತಿ ವಾ ಭೃಶಮ್" ಮನುಂ ೧೧-೧೧೩। 4. ಬಿಸಿ, ಕಾವು. "ಮಾನಿನಿಜನವಿಲೋಚನಪಾತಾನುಣವಾಷ್ಪಕಲ್ಪುಪಾನ್ ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಣನ್" ಕಿರಾಂ ೯-೨೬। 5. ಬಿಸಿಲು. 6. ನುಗ್ಗೆ ಮರ. "ಉಣೋ ಮುರಜ್ಞಿ ರಕ್ತೇಽಸ್ಮಿನ್" ವೈಜಂ। (ವಿಂ) 7. ಜಾಣ, ಬುದ್ಧಿ ವಂತ. "ಉಣೋ ಗ್ರೀಷ್ಠೇ ಪುಮಾನ್ ದಕ್ಷಾಶೀತಯೋರ್ನಿಲಿಜ್ಜಕ:" ಮೇದಿಂ। "ಉಣಂ ದಕ್ಷೇಽಪಿ ನಾತಪೇ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 8. ಬಿಸಿಯಾದ. "ಉಣಸ್ತ್ವಾತಪೋಷ್ಮಣೋ:। ವಹ್ನೌ ತು ಪುಸಿ ಚತುರತಿಗಮಯೋಸ್ತ್ವೇಷ ವಾಚ್ಯವತ್" ನಾನಾರ್ಥರಂ।

ಉಣಕ ಉಷ್ಣಕ (ಪುಂ) 1. ಗ್ರೀಷ್ಮಮತು, ಬೇಸಿಗೆಯ ಕಾಲ. 2. ಜ್ವರ. ಉಣಂ ಕಾರ್ಯಮಸ್ಯ "ಕನ್" (೪-೨-೮೧)। (ವಿಂ) 3. ಚುರುಕಾಗಿರುವ, ಚತುರನಾದ, ಸಮರ್ಥ ನಾದ, ಜಾಣ, ಬುದ್ಧಿ ವಂತ. ಉಣಂ ಕರೋತಿ - ಉಣ "ಕನ್" (೪-೨-೭೨)। "ಚತುರ: ಪೇಶಲೋ ದಕ್ಷ: ಸೂತ್ಯಾನ: ಪಠುಣ್ಣಕ:" ವೈಜಂ। 4. ಜ್ವರಪೀಡಿತನಾದ. "ಉಣಕೋ ಧರ್ಮ ಉದ್ಯುಕ್ತಾತುರಯೋ:" ಹೇಮಂ।

ಉಣಕರ ಉಷ್ಣಕರ - ಕಿರಣ - ಕಿರಣ, -ರಶ್ಮಿ - ರಶ್ಮಿ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಉಣಾ: ಕರಾ: ಕಿರಣಾ: ರಶ್ಮಯೋ ವಾಽಸ್ಯ। "ಕುಬೇರಗುಪ್ತಾ ದಿಶಮುಣ್ಣರಶ್ಮೌ ಗಂತುಂ ಪ್ರವೃತ್ತೇ ಸಮಯಂ ವಿನಿಶ್ಚಯ" ಕುಮಾಂ ೩-೨೫। (ವಿಂ) 2. ಬಿಸಿಯಾದ ಕಿರಣವುಳ್ಳ. 3. ಬಿಸಿಯುಂಟುಮಾಡುವ. ಉಣಸ್ಯ ಕರ: - ಡ ಕೃಜ್ (ಕರಣ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।

ಉಣಕಾಲ ಉಷ್ಣಕಾಲ (ಪುಂ) ಗ್ರೀಷ್ಮಮತು, ಬೇಸಿಗೆಯ ಕಾಲ. ಉಣಾಕಾಸೌ ಕಾಲಶ್ಚ। "ತಕ್ರಂ ನೈವ ಏತೇ ದद्याತ್ ನೋಣಕಾಲೇ ನ ದುರ್ಬಲೇ" ಸುಶ್ರುಂ।

ಉಣಗ ಉಷ್ಣಗ (ಪುಂ) ಗ್ರೀಷ್ಮಮತು, ಬೇಸಿಗೆಯ ಕಾಲ. ಉಣಂ ಗಚ್ಛತಿ-ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಡ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)। ಉಣಗು ಉಷ್ಣಗು (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಉಣಾ: ಗಾವ: ಕಿರಣಾ ಅಸ್ಯ।

ಉಣವಾರಣ ಉಷ್ಣವಾರಣ (ನಂ) ಕೊಡೆ, ಭಕ್ತಿ. ಉಣಂ ವಾರಯತಿ-ವೃಜ್ (ವರಣ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। "ಯದರ್ಥಮಭೋಜಮಿವೋಣವಾರಣಂ ಕೃತಂ ತಪ:ಸಾಧನಮೇತಯಾ ವಪು:" ಕುಮಾಂ ೪-೪೨।

ಉಣವೀರ್ಯ ಉಷ್ಣವೀರ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಶಿಶುಮಾರವೆಂಬ ಒಂದು ಜಲಚರಪ್ರಾಣಿ. (ವಿಂ) 2. ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ವೀರ್ಯವುಳ್ಳ. ಉಣಂ ವೀರ್ಯಯಸ್ಯ। "ಶಿಶುಮಾರಸ್ತ್ವಮ್ಬುಕೂರ್ಮ ಉಣವೀರ್ಯೋ ಮಾವಸ:" ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ಉಣಾಂಶು ಉಷ್ಣಾಂಶು (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಉಣಾ: ಅಂಶವೋಽಸ್ಯ। "ಆನಿನ್ಯೇ ಮದಜನಿತಾಂ ಶ್ರಿಯಂ ವಧುನಾಮುಣಾಂಶುದ್ಯುತಿಜನಿತ: ಕಪೋಲರಾಗ:" ಕಿರಾಂ ೭-೩।

ಉಣಾಗಮ ಉಷ್ಣಾಗಮ (ಪುಂ) ಗ್ರೀಷ್ಮಮತು, ಬೇಸಿಗೆಯ ಕಾಲ. ಉಣಸ್ಯಾಗಮೋಽತ್ರ।

ಉಣಾಲು ಉಷ್ಣಾಲು (ವಿಂ) ಉಷ್ಣವನ್ನು ಸಹಿಸದಿರುವ. ಉಣಂ ನ ಸಹತೇ "ಆಲು:" (ವಾಂ ೪-೨-೧೨೧)। "ಉಣಾಲು: ಶಿಶಿರೇ ನಿಷಿದತಿ ತರೋರ್ಮಲಾಲವಾಲೇ ಶಿಖಿ" ವಿಕ್ರಂ ೨-೨೨।

ಉಣಿಕಾ ಉಷ್ಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಜಿ, ಅಂಬಲಿ. ಅಲ್ಪಮತ್ರಂ ಯಸ್ಯಾಂ ಸಾ "ಕನ್" (೪-೨-೭೧)। ಅಲ್ಪಾನ್ತಶಬ್ದಸ್ಯೋಷಾ- ದೇಶ: ನಿಪಾಂ।

ಉಣಿಹ ಉಷ್ಣಿಹ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಏಳು ಅಕ್ಷರಗಳ ಪಾದಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಛಂದಸ್ಸು. "ಗಾಯತ್ರಿಯುಣಿಗನುಷ್ಠುಚ್ಚ ವೃಹತೀ ಪಡ್ತಿರೇವ ಚ" ವೃಂ ೨೦।

ಉಣಿಗಜ್ಞ ಉಷ್ಣಿಗಂ (ನಂ) ಭೃಗುತುಂಗ ಪರ್ವತ ದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ತೀರ್ಥ. ಉಣಿಭೂತಾ ಗಜ್ಞಾ ನದಿಭೇದೋ ಯತ್ರ। "ಅಪಾಂ ಹೃದಂ ಚ ಪುण्याಖ್ಯಂ ಭೃಗುತುಜ್ಞಂ ಚ ಪರ್ವತಮ್। ಉಣಿಗಜ್ಞೇ ಚ ಕೌಂತೇಯ ಸಾಮಾತ್ಯ: ಸಮುಪಸ್ಪೃಶ" ಭಾಂ ವನಂ ೧೩೫।

ಉಣಿಷ ಉಷ್ಣಿಷ (ನಂ) 1. ರುಮಾಲು. 2. ಕಿರೀಟ. ಉಣಮಿಷತೇ ಹಿನಸ್ತಿ-ಝ (ಗತಿಹಿಸಾದರ್ಶನೇಷು) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫)। ಶಕಂ ಪರಂ। "ತ್ರಾಸಾರ್ತಾ ಋತ್ವಿಜೋ- ಽಧಶ್ಚಪಲಗಣಹತೋಷ್ಣಿಷಪಟಾ: ಪತಂತಿ" ರತ್ನಾಂ ೧-೩। 3. ಒಂದು ವಿಧ ತಲೆಯ ಅಲಂಕಾರ. "ಉಣಿಷಂ ತು ಶಿರೋವೇಷ್ಟೇ ಕಿರೀಟೇ ಲಕ್ಷಣಾಂತರೇ" ಹೇಮಂ। 4. ಶಿರಸ್ಸು, ತಲೆ. "ಉಣಿಷಂ ಶಿರ್ಮಮಕ್ಷತ್ರಂ ಪುಸಿ ಮूर्ಧಾ ಚ ಮಸ್ತಕ:" ವೈಜಂ।



ಉಣಿಷಪಢ್ ಉಷ್ಣೇಷಪಟ್ಟ (ಪುಂ) ರುಮಾಲಿನ ಬಟ್ಟೆ, ರುಮಾಲುಸುತ್ತುವ ವಸ್ತ್ರ. ಉಣಿಷಾರ್ಥ ಪಢ್: "ಚಪಲ-ಗಣಹತೋಣಿಷಪಢ್: ಪತಂತಿ" ರತ್ನಾಂ ೧-೩.

ಉಣಿಷಿನ್ ಉಷ್ಣೇಷಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಈಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. (ವಿಂ) 2. ರುಮಾಲು ಧರಿಸಿರುವ. "ಉಣಿಷಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ" ಇನಿ: (೪-೨-೧೧೪)।

ಉಣೋದಕ ಉಷ್ಣೋದಕ (ನಂ) ಬಿಸಿನೀರು, ಕಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ನೀರು. ಉಣಮುದಕಮ್. ನೀರು ಎಂಟನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ, ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ ಅಥವಾ ಅರ್ಧಭಾಗ ಇಳಿಯುವಂತೆ ಇಂಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟರೆ ಅಥವಾ ಕುದಿಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟರೆ ಉಷ್ಣೋದಕವೆನಿಸುವುದು. "ಅಷ್ಟಮೇನಾಂಶೋಷಣ ಚತುರ್ಥೇನಾರ್ಧಕೇನ ವಾ। ಅಥವಾ ಕ್ವಥನೇನೈವ ಸಿದ್ಧಮುಣೋದಕಂ ವದೇತ್" ಭಾವಪ್ರಂ. ಉಷ್ಣೋದಕದ ಗುಣಗಳು: "ಶ್ಲೇಷ್ಮಾಮವಾತಮೇದೋಘ್ನಂ ಬಸ್ತಿಶೋಧನದೀಪನಮ್। ಕಾಸಶ್ವಾಸಜ್ವರಾನ್ ಹಂತಿ ಪೀತಮುಣೋದಕಂ ನಿಶಿ। ಕ್ವಾಥ್ಯಮಾನಂ ತು ನಿರ್ವೆಗಂ ನಿಷ್ಕೇನಂ ನಿರ್ಮಲಂ ತಥಾ। ಅರ್ಧಾವಿಶಿಷ್ಟಂ ಯತ್ತಯಂ ತದ್ಉಣೋದಕಮುಚ್ಯತೇ" ಭಾವಪ್ರಂ. "ತತ್ಪಾದಹೀನಂ ಪಿತ್ತಘ್ನಮರ್ಧಹೀನಂ ತು ವಾತನುತ್। ತ್ರಿಪಾದಹೀನಂ ಶ್ಲೇಷ್ಮಘ್ನಂ ಸಂಗ್ರಾಹ್ಯಾಗ್ನಿಕರಂ ಲಘು" ಇತ್ಯಾದಿ. ರಾತ್ರಿ ಕುದಿಯಲ್ಪಟ್ಟ ಉಷ್ಣೋದಕವು ಕಫ, ಆಮ ಮತ್ತು ವಾತಗಳನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು. ವಸ್ತ್ರಿಯನ್ನು ಶುದ್ಧಮಾಡಿ ಅಗ್ನಿವೃದ್ಧಿಯನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವುದು. ಮತ್ತು ಕಾಸ ಶ್ವಾಸ ಮತ್ತು ಜ್ವರವನ್ನು ವಾಸಿಮಾಡುವುದು.

ಉಣೋಪಗಮ ಉಷ್ಣೋಪಗಮ (ಪುಂ) ಗ್ರೀಷ್ಮಮತ್ತು, ಬೇಸಿಗೆಯ ಕಾಲ. ಉಣಸ್ಯ ಉಪಗಮೋಽತ್ರ।

ಉಷ್ಮ ಉಷ್ಮ (ಪುಂ) 1. ಗ್ರೀಷ್ಮಮತ್ತು, ಬೇಸಿಗೆಯ ಕಾಲ. ಉಷ (ದಾಹೆ) "ಮಕ್" ಬಾಹುಂ। 2. ಕೋಪ, ಸಿಟ್ಟು. 3. ಔತುಕ್ಕು, ಕುತೂಹಲ.

ಉಷ್ಮಕ ಉಷ್ಮಕ (ಪುಂ) ಗ್ರೀಷ್ಮಮತ್ತು, ಬೇಸಿಗೆಯ ಕಾಲ. ಉಷ್ಮ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"।

ಉಷ್ಮನ್ ಉಷ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಬಿಸಿ, ಶಾಖ. ಉಷ (ದಾಹೆ) "ಮನಿನ್" (೩ಂ ೪-೧೪೪)। "ನಿವೇದಿತಂ ನಿಶ್ವಸಿತೇನ ಸೋಷ್ಮಣಾ ಮನಸ್ತು ಮೇ ಸಂಶಯಮೇವ ಗಾಹತೇ" ಕುಮಾಂ ೪-೪೬। 2. ಹಬ್ಬಿ, ಆವಿ. "ತಪಾತ್ಯಯೇ ವಾರಿಭಿರುಕ್ಷಿತಾ ನವೈರ್ಭುವಾ

ಸಹೋಷ್ಮಾಣಮಮುಚ್ಚದ್ಧವ್ಯಗಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೨೩। 3. ಗ್ರೀಷ್ಮಮತ್ತು, ಬೇಸಿಗೆಯ ಕಾಲ. "ಉಷ್ಮಾ ಪಿತ್ತಾದೃತೇ ನಾಸ್ತಿ ಜ್ವರೋ ನಾಸ್ತಿಯುಷ್ಮಣಾ ವಿನಾ। ತಸ್ಮಾತ್ಪಿತ್ತವಿರುದ್ಧಾನಿ ತ್ಯಜೇತ್ ಪಿತ್ತಾಧಿಕೇಽಧಿಕಮ್" ವಾಗ್ಭಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ। 4. ಶ, ಷ, ಸ, ಹ ವರ್ಣಗಳು. "ಶಷಸಹಾ" ಉಷ್ಮಾಣ: "ಸಿಂ ಕೌಂ। ಉಷ್ಮಾಗಮ ಉಷ್ಮಾಗಮ (ಪುಂ) ಗ್ರೀಷ್ಮಮತ್ತು, ಬೇಸಿಗೆಯ ಕಾಲ. ಉಷ್ಮಾ ಆಗಮೋಽತ್ರ।

ಉಷ್ಮ ಉಷ್ಮ (ಪುಂ) 1. ರಕ್ತಿ, ಕಿರಣ. ವಸ (ನಿವಾಸೆ) "ರಕ್" (೩ಂ ೨-೧೩)। "ಉಷ್ಮಾಣಾಂ ವ್ಯಭಿಚರತೀವ ಸಪ್ತಸಪ್ತೇ: ಪರ್ಯಸ್ಯನ್ನಿವ ನಿಚಯ: ಸಹಸ್ರಸಂಖ್ಯಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೪-೩೪। 2. ಪ್ರವಾಹ, ನೀರು ಹರಿಯುವಿಕೆ. "ಉಷ್ಮ: ಸ್ರವ: ಪ್ರಸ್ರವಣಮ್" ಅಭಿಂ ಚಿಂ। 3. ಎತ್ತು, ವೃಷಭ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸ್ರಾ -ಸ್ರಾ. 1. ಆಕಳು, ಹಸು. 2. ಇಲಿಯಾಲದ ಮರ. "ಉಷ್ಮಾ ಗವ್ಯುಪಚಿತ್ರಾಯಾಮುಷ್ಮಸ್ತು ಕಿರಣೇ ಸ್ಮೃತ: ವಿಶ್ವಂ। "ಉಷ್ಮೋ ವೃಷೇ ಚ ಕಿರಣೇಽಪ್ಯುಷ್ಮಾಜುನ್ಯುಪಚಿತ್ರಯೋ: ಮೇದಿಂ।

ಉಷ್ಮಿಕ ಉಷ್ಮಿಕ (ಪುಂ) 1. ಚಿಕ್ಕ ಎತ್ತು. 2. ಮುದಿ ಎತ್ತು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ -ಕಾ. ಸ್ವಲ್ಪ ಹಾಲುಕೊಡುವ ಆಕಳು. ಉಷ್ಮಿಯ ಉಷ್ಮಿಯ (ಪುಂ) ಮುದಿ ಎತ್ತು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಯಾ -ಯಾ. ಆಕಳು, ಹಸು. "ಉಷ್ಮಿಯಾಣಾಂ ಕ್ಷೀರಮುತ್ಸಾರಯಂತೀಮ್"।

ಉಹ ಉಹ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಸಂಬೋಧನೆ. 2. ಕರೆ, ಆಹ್ವಾನ. 3. ಅವಧಾರಣೆ, ನಿಶ್ಚಯ.

ಉಹ ಉಹ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭಯ ಮತ್ತು ದುಃಖಸೂಚಕವಾದ ಒಂದು ಶಬ್ದ. ಉಹಿರ್ (ಅದೇನೆ) "ಕೂ:" ಬಾಹುಂ। "ನಖಾನಿ ವಿಧುಶಿಕ್ಷಯಾ ಕರತಲೇನ ತದ್ವಚಾವೃಣೋತ್ ತತ: ಕಿಸಲಯಭ್ರಮಾತ್ ಕರಮಥಾಕ್ಷಿಪದ್ಧರತ: ತತೋ ಬಲಯಶಿಜ್ಜಿತೇ ಭ್ರಮರಗುಜ್ಜಿತಾ ಶಿಕ್ಷಯಾ ಉಹಿರೀತಿ ಕುಹೂರವಧ್ವನಿಭಿರ್ಯಾಪತನ್ಮುಚ್ಚಿತಾ"।

ಉಹ್ಮಾನ್ ಉಹ್ಮಾನ್ (ವಿಂ) ವಹಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹೊರಲ್ಪಡುವ. ಉಹ್ಮ (ಪ್ರಾಪ್ತೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನ್ತಂ" (೩-೨-೧೨೪)। "ಯಥೋಹ್ಮಾನ್: ಸ್ವಲ್ಪ ಭೋಗಭೋಜಿನಾ ಪ್ರಸಹ್ಯ ವೈರೋಚನಿಜಸ್ಯ ಪತ್ತನಮ್" ನೈಷಂ ೧-೩೨।

ಉಹ್ಮ ಉಹ್ಮ (ಪುಂ) ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. ಉಹಿರ್ (ಅದೇನೆ) "ರಕ್" ಬಾಹುಂ।



श्रीः  
शब्दार्थकौस्तुभः  
(प्रायौगिक संस्कृत—कर्णाटिक शब्दकोशः)

ಸಂಸ್ಕೃತ — ಕನ್ನಡ ಶಬ್ದಕೋಶ

ಸಂಪುಟ ೨

ಪದಗಳು : ಀ - ಳ್ಲೌ

ಸಾಹಿತ್ಯ ವಿದ್ವಾನ್  
ಚಕ್ರವರ್ತಿ ಶ್ರೀನಿವಾಸ ಗೋಪಾಲಾಚಾರ್ಯ

ಬಾಪ್ಪೊ ಪ್ರಕಾಶನ  
ಬೆಂಗಳೂರು ಪ್ರೆಸ್, ಬೆಂಗಳೂರು



॥ श्रीः ॥

श्रीमते हयग्रीवाय नमः ।

## शब्दार्थकौस्तुभः । (संस्कृत-कर्णाटक शब्दकोशः)

संस्कृत-कन्नಡ ಶಬ್ದ ಕೌಶ  
ದ್ವಿತೀಯ ಭಾಗ

लक्ष्मीं तनोतु व्यवधूय चित्ते वितर्कडोलां विविधार्थराशेः ।  
लक्ष्मीहयास्यः स्फुरिताक्षमालो लक्ष्मीलसद्वत्सतलः सदा नः ॥

नत्वा लक्ष्मीहयग्रीवो शब्दव्युत्पत्तिसिद्धये ।  
विलिखामि विशुद्धानर्थमिमं शब्दार्थकौस्तुभम् ॥

ऊ

ऊ ऊ ಇದು ವರ್ಣಮಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಒಪ್ಪದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಆರನೆಯ ಸ್ವರವರ್ಣ. ಉದಾತ್ತ, ಅನುದಾತ್ತ ಮತ್ತು ಸ್ವರಿತ ಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಭೇದಗಳುಳ್ಳ ಇದು ಪುನಃ ಅನುನಾಸಿಕ ಮತ್ತು ಅನನುನಾಸಿಕಗಳೆಂಬ ಭೇದದಿಂದ ಒಟ್ಟು ಆರು ವಿಧವಾಗುವುದು.

ऊ ऊ (पु०) 1. पुरुष. 2. ಚಂದ್ರ. 3. ರಾಜಕುಮಾರ. 4. ಕಂಠ, ಕುತ್ತಿಗೆ. 5. ದೇವತೆ. 6. ಅಂಗಳ. 7. ಪಾದ್ಯಶ್ಯ, ಉಪಮಾನ. 8. ಪೂರ್ಣಕುಂಭ. 9. ವರ್ತಕ, ವ್ಯಾಪಾರಿ. 10. ರಕ್ಷಣೆ, ಕಾಪಾಡುವಿಕೆ. ಅವತಿ — ಅವ (ರಕ್ಷಣೆ) “क्विप्” (३-२-७६) । “ऊ” (६-४-२०) । “ऊकारः पुरुषे चन्द्रे राजपुत्रे गले सुरे । प्राङ्गणोपमयोः पूर्णकुम्भे वणिजि रक्षणे” नानार्थर० । 11. ಲಕ್ಷಣ. 12. ಬ್ರಹ್ಮ. “ऊकारश्चापि लक्षणे । रक्षणे चापि ऊकारः ऊकारो ब्रह्मणि स्मृतः” एका० । 13. ಸೂಜಿ. 14. ಹೊಲಿಗೆ. 15. ದಯೆ, ಕರುಣೆ. 16. ಕರೆ, ಆಹ್ವಾನ. (वि०) 17. ರಕ್ಷಕ, ಕಾಪಾಡುವವನು. (अव्य०) 18. ವಾಕ್ಯಾರಂಭ. “ऊ रक्षणे रक्षके च

सूच्यां स्यूतावनव्ययम्” हेम० । “ऊ वाक्यारम्भे-  
ज्जुकम्पारक्षाहूतिष्वनव्ययम्” विश्व० ।

ऊक ऊक (पु०) षक्, हक्. “ऊकः शकुन्तिः शकुनिः  
शकुन्तः शकुनः खगः” वैज० ।

ऊख ऊख (पु०) पृष्, पिर्, अंडु. “ऊखौ पुंसि  
कटिप्रोथौ पूलकौ च स्फिचौ स्त्रियौ” वैज० ।

ऊढ ऊढ (वि०) 1. ಮದುವೆಯಾದವನು, ವಿವಾಹ ಮಾಡಿ  
ಕೊಂಡವನು. वह (प्रापणे) कर्त० “क्तः” (३-४-७२) ।  
स्त्रियाम् ऊढा ऊढा. ಮದುವೆಯಾದ ಹೆಂಗಸು,  
ಒಬ್ಬ (ಪತಿ) ನಿಂದ ವಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟವಳು. ಕರ್ಮ० “क्तः”  
(३-२-१०२) । “इयं च तेज्या पुरतो विडम्बना यदूढया  
वारणराजिहार्यया” कुमा० ५-७० । “भार्योढं तमवज्ञाय  
तस्थे सौमित्रयेऽसकौ” भट्टि० ४-१५ । 2. ವಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿ-  
ರುವ, ಹೊರಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ, ಒಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟಿ.

ऊढि ऊढि (स्त्री०) 1. ವಿವಾಹ, ಮದುವೆ. वह (प्रापणे)  
“क्ति” (३-३-९४) । 2. ವಹಿಸುವುದು, ಹೊರು-  
ವುದು, ಒಯ್ಯುವುದು.



ಅತ ಉತ (ನಂ) 1. ಕೊಳಕು ನೀರು, ಸ್ವಚ್ಛವಲ್ಲದ ನೀರು.

"ಕಾಚಿಮ ಸ್ಯಾದತಿವ್ವಚ್ಛಮ್ ಕಲ್ಪಮಾವಿಲಮ್" ವೈಜಂ 1.

(ವಿಂ) 2. ನೇಯಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಹೊಲಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಯಿ (ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102).

4. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಾಪಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ (ರಕ್ಷಣೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). ಅಠ (6-4-20).

ಅತಿ ಉತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಕ್ಷಣೆ, ಕಾಪಾಡುವಿಕೆ. ಅವ (ರಕ್ಷಣೇ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-99). ಅಠ (6-4-20).

2. ನೇಯುವುದು. 3. ಹೊಲಿಯುವುದು. ಅಯಿ (ತನ್ತು-ಸಂತಾನೇ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-99). "ಸ್ಯಾದತಿ:

ಸ್ಯುತಿರಕ್ಷಯೋ:" ಹೇಮಂ.

ಅಥಸ್ ಉಧಸ್ (ನಂ) ಹಸುವಿನ ಕೆಚ್ಚಲು. ತಂದಿ (ಕಲೆದನೆ) "ಅಸುನ್" (3-4-100). ಪೃಷಂ.

ಬಹುವ್ರೀಹಿ ಸಮಾಸಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ "ಅನಙ್" (4-4-13).

ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಘ್" (4-1-24). ಕುಣ್ಡೋಧಿ ಕುಂಡೋಧೀ.

"ಭುವಂ ಕೋಣೇನ ಕುಣ್ಡೋಧಿ ಮೇಧೇನಾವಭೃಥಾದಪಿ" ರಘುಂ 1-24. ಅಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ತು "ಕುಣ್ಡೋಧಿ ಧನುಕಮ್" ಸಿಂ ಕೌಂ.

ಅಥಸ್ಯ ಉಧಸ್ಯ (ನಂ) 1. ಹಾಲು, ಕ್ಷೀರ. (ವಿಂ)

2. ಆಕಳಿನ ಕೆಚ್ಚಲಿನಲ್ಲಿರುವ, ಕೆಚ್ಚಲಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ.

ಅಥಸಿ ಭವಮ್ "ಯತ್" (4-1-6). "ಅಥಸ್ಯಮಿಚ್ಛಾಮಿ

ತವೋಪಭೋಕ್ತುಂ ಷಠಾಂಶಮುರ್ವ್ಯಾ ಇವ ರಕ್ಷಿತಾಯಾ:" ರಘುಂ 2-66.

ಅನ ಉನ (ವಿಂ) 1. ಹೀನವಾದ, ಕಡಿಮೆಯಾದ. ಅನ

(ಪರಿಹಾಣೇ) "ಘಙ್" (3-3-19). "ಕಿಂಚಿದ್ನಮನುನರ್ಥ:

ಶರದಾಮಯುತಂ ಯಯಿ" ರಘುಂ 10-1. 2. ಅಸಂಪೂರ್ಣವಾದ,

ಕೊರತೆಯುಳ್ಳ. "ಅನಂ ವಾಪ್ಯಧಿಕಂ ವಾಪಿ ಲಿಖೇದೋ ರಾಜ-

ಶಾಸನಮ್" ಯಾಜ್ಞಂ 2-295. 'एकोनविंशतिः। एकोनविंशत्।

एकोनचत्वारिंशत्।

ಅಮ್ ಉಮ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪ್ರಶ್ನೆ, ಕೇಳಿಕೆ. ಅಯ್ಯತೇ—ಅಯಿ

(ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) "ಮುಕ್" ಬಾಹುಂ. 2. ಕೋಪದ ಮಾತು.

"ಅಮ್ ಉಪೋಕ್ತೌ ಪೃಚ್ಛಾಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ.

ಅಮ ಉಮ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಿಸುವ, ಕಾಪಾಡುವ. ಅವ (ರಕ್ಷಣೇ)

"ಮನ್" ಅಠ ಚ.

ಅರರೀ ಉರರೀ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ,

ಸಮ್ಮತಿ. ಅಯಿ (ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) "ರರೀಕ್" ಬಾಹುಂ.

2. ವಿಸ್ತಾರ.

ಅರರೀಕಾರ ಉರರೀಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಅಂಗೀಕಾರ,

ಒಪ್ಪಿಗೆ. ಅರರೀ+ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣೇ) "ಘಙ್" (3-3-100).

2. ವಿಸ್ತಾರಪಡಿಸುವಿಕೆ.

ಅರರೀಕೃತ ಉರರೀಕೃತ (ವಿಂ) 1. ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,

ಒಪ್ಪಲ್ಪಟ್ಟ. ಅರರೀ+ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣೇ) "ಕ್ತ:"

(3-2-102). 2. ವಿಸ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅರವ್ಯ ಉರವ್ಯ (ಪುಂ) 1. ವೈಶ್ಯ, ಮೂರನೆಯ ವರ್ಣ

ದವನು. ಅರೋ ಭವ: "ಯತ್" (4-1-6). [ವೈಶ್ಯನು

ಪರಮಾತ್ಮನ ತೊಡೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು.] "ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋಽಸ್ಯ

ಮುಖಮಾಸೀತ್. ಬಾಹು ರಾಜನ್ಯ: ಕೃತ:। ಅಠ ತದಸ್ಯ ಯದೇಶ್ಯ:"

ಶ್ರುತಿ:। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಟಾಪ್" ಅರವ್ಯಾ ಉರವ್ಯಾ. (ವಿಂ)

2. ತೊಡೆಯಲ್ಲಿರುವ. ತೊಡೆಯಲ್ಲುಂಟಾದ.

ಅರೀ ಉರೀ (ಅವ್ಯಂ) ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. ಅಯಿ

(ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) "ರೀಕ್" ಬಾಹುಂ. ಅರೀ+ಙ್ ಕೃತ್

(ಕರಣೇ) "ಲ್ಯಪ್" (3-1-39). ಅರೀಕೃತ ಉರೀಕೃತ್.

"ತದ್ದರೀಕೃತ ಕೃತಿಭಿ: ವಾಚಸ್ಪತ್ಯಂ ಪ್ರತಾಯತೇ" ಮಾಘಂ

2-30.

ಅರೀಕೃತ ಉರೀಕೃತ (ವಿಂ) ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಪ್ಪ

ಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮ್ಮತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅರೀ+ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣೇ) "ಕ್ತ:"

(3-2-102). "ಅರೀಕೃತಮುರರೀಕೃತಮ್ ಙ್ಗೀಕೃತಮಾಶ್ರುತಂ

ಪ್ರತಿಜ್ಞಾತಮ್" ಅಮಂ.

ಅಠ ಉರು (ಪುಂ) ತೊಡೆ. ಅಠುಙ್ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) "ಕ್ತು:"

ನುಲೋಪಶ್ಚ (3-1-30). "ಶೀತಾಂಶುರ್ಮುಖಮುತ್ಪಲೇ ತವ

ದೃಶೋ ಪದಾನುಕಾರೋ ಕರೋ ರಮಭಾಗರ್ಮಯುಗಂ ತವೋಽಯುಗಲಂ ಬಾಹು

ಮೃಣಾಲೋಪಮೌ" ರತ್ನಾಂ 3-11. ಉಪಮಾನವಾಚಕ

ಪೂರ್ವಪದವಿರುವಾಗ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗದ ಸಮಾಸಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ

"ಅಙ್" (4-1-69) ಬಂದು ಕರಭೋಃ ಕರಭೋರೋ,

ರಮಭೋಃ ರಂಭೋರೋ ಎಂದಾಗುವುದು.

ಅಠಗ್ರಾಹ ಉರುಗ್ರಾಹ (ಪುಂ) ಸಂಧಿವಾತ, ಮಂಡಿಯು

ಚಲಿಸದಂತೆ ಮಾಡುವ ಒಂದು ವಾತರೋಗ. ಅಠ

ಗೃಹ್ಣಾತಿ—ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಅಙ್" (3-2-1).

"ಅಠಗ್ರಾಹಗೃಹ್ಣೀತಾಶ್ಚ ಕೇಚಿತ್ತತ್ರಾಭವತ್ ಭುವಿ" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ

146.

ಅಠಜ ಉರುಜ (ಪುಂ) 1. ವೈಶ್ಯ, ಮೂರನೆಯ ವರ್ಣ

ದವನು. ಅರೋಜಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಮವಿ) "ಜ:"

(3-2-101). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಘ್" (4-1-63).

ಅಠಜಿ ಉರುಜೀ. 2. ಭೃಗುವಂಶದ ಒಬ್ಬ ಯುಷ್ಠಿ.

[ಕೃತವೀರ್ಯರಾಜನು ಭೃಗುವಂಶದ ಯುಷ್ಠಿಗಳ ಸಾಹಾಯ್ಯ

ದಿಂದ ಯಜ್ಞಯಾಗಾದಿಗಳನ್ನು ನಡೆಸುತ್ತಾ ಅವರಿಗೆ ಪುಷ್ಕಳ

ವಾಗಿ ಧನಧಾನ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ಕೊಡುತ್ತಿದ್ದನು. ಅವನ

ಮುಂದಿನ ರಾಜರು ಧನದ ಆಸೆಯಿಂದ ಆ ಯುಷ್ಠಿ



ಗಳನ್ನು ಒಡಿಸತೊಡಗಿದಾಗ ಕೆಲವರು ಧನವನ್ನು ಭೂಮಿ ಯಲ್ಲಿ ಹೂತಿಟ್ಟರು. ಕೆಲವರು ಬ್ರಾಹ್ಮಣರಿಗೆ ದಾನ ಮಾಡಿದರು. ಕೆಲವರು ಇವರಿಗೂ ಹೇರಳವಾಗಿ ಕೊಟ್ಟರು. ಇದರಿಂದ ಕುಪಿತರಾದ ರಾಜರೆಲ್ಲರೂ ಋಷಿಗಳನ್ನು ಕೊಲ್ಲುತ್ತಾ ಬರಲು ಒಬ್ಬ ಋಷಿಪತ್ನಿಯು ಹೆದರಿ ತನ್ನ ತೊಡೆಯಲ್ಲಿ ಗರ್ಭವನ್ನು ನೂರು ವರ್ಷಗಳಕಾಲ ಧರಿಸಿದ್ದಳು. ಈ ರಾಜರ ಹಿಂಸೆಯನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಆಕೆಯ ಗರ್ಭವು ತೊಡೆಯಿಂದ ಹೊರಬಿದ್ದು ಕ್ರೂರ ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ನೋಡಿದಾಗ ಆ ರಾಜರೆಲ್ಲರೂ ಕುರುಡರಾಗಲಾಗಿ ಅವರು ಆ ಶಿಶುವನ್ನು ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಿ ಅದರ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ಪುನಃ ದೃಷ್ಟಿಯನ್ನು ಪಡೆದರು. ಇದರಿಂದ ಈ ಋಷಿಯು ಊರುಜನೆಂದೂ ಔರ್ವನೆಂದೂ ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾದನು]. ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೯೪. ಇದೇ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಅರಜನ್ಮನ್, ಅರಸಮ್ಭವಃ ಇತ್ಯಾದಿ. (ವಿಂ) 3. ತೊಡೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ತೊಡೆಯಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ.

**ಅರವಿಂದ ಊರುದಘ್ನ, - ದ್ವಯಸ - ದ್ವಯಸ, - ಮಾತ್ರ - ಮಾತ್ರ** (ವಿಂ) ತೊಡೆಯನ್ನು ಮುಟ್ಟುವಷ್ಟು ಎತ್ತರ ವಾದ, ತೊಡೆಯ ಪ್ರಮಾಣವುಳ್ಳ, ತೊಡೆಯ ಅಳತೆಯುಳ್ಳ, ತೊಡೆಯಷ್ಟು ಅಳವಾದ. ಕೂ ಪ್ರಮಾಣಮಸ್ಯ ಕ್ರಮೇಣ "ದಘ್ನ" "ದ್ವಯಸ" "ಮಾತ್ರ" (೪-೨-೩೭)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ದಘ್ನಿ - ದಘ್ನೀ, -ದ್ವಯಸಿ - ದ್ವಯಸೀ, -ಮಾತ್ರಿ - ಮಾತ್ರಿ.

**ಅರವಿಂದ ಊರುಪರ್ವನ್** (ಪುಂ) ಮಂಡಿ, ತೊಡೆ ಮತ್ತು ಮೊಣಕಾಲುಗಳ ಸಂಧಿ. ಕರೋ: ಪರ್ವ.

**ಅರಸ್ತಮಃ ಊರುಸ್ತಂಭ** (ಪುಂ) ಸಂಧಿವಾತ, ಮಂಡಿಯು ಚಲಿಸದಂತೆ ಮಾಡುವ ಒಂದು ವಾತರೋಗ. ಕೂ ಸ್ತಮ್ನಾತಿ-ಸ್ತಮ್ನು "ಅಘ್" (೩-೨-೧)।

**ಅರ್ಕ್ (ಜ್) ಉರ್ಕ್ (ಜ್) (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಬಲ, ಶಕ್ತಿ. ಅರ್ಜ (ಬಲಪ್ರಾಣನಯೋ:) ಭಾವೇ "ವಿವ್" (೩-೨-೧೭೭)। (ನಂ) 2. ಅನ್ನ. 3. ಸಸ್ಯರಸ, ಅಂತಸ್ಸಾರ. ಅರ್ಜ ಕರಂ "ವಿವ್"।

**ಅರ್ಜ ಉರ್ಜ** (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕಮಾಸ. ಅರ್ಜಯತಿ उत्साहयति जिगीषು-ಅರ್ಜ (ಬಲಪ್ರಾಣನಯೋ:) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। [ಕಾರ್ತಿಕಮಾಸವು ಜ್ಯೇಷ್ಠಯಾತ್ರಗೆ ಶಕ್ತಿಯನ್ನೂ, ಉತ್ಸಾಹವನ್ನೂ ಕೊಡುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.] "ಕೃತಮದಂ ನಿಗದಂತ ಇವಾಕುಲೀಕೃತಜಗತ್ರಯ-ಮೂಜಮತಃ" ಮಾಘಂ ೬-೫೦। 2. ಉತ್ಸಾಹ. 3. ಬಲ, ಶಕ್ತಿ. 4. ಜೀವನ, ಬದುಕು. ಅರ್ಜ ಭಾವೇ

"ಅಚ್"। (ನಂ) 5. ಜಲ, ನೀರು. ಕರಂ "ಘಕ್" (೩-೩-೧೨೧)। (ವಿಂ) 6. ಶಕ್ತಿವಂತ, ಬಲಶಾಲಿ. ಅರ್ಜ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭)। "ಮಾಸೋತ್ಸಾಹಬಲೇಷುರ್ಜಃ" ನಾನಾರ್ಥರಂ। "ಅರ್ಜಃ ಕಾರ್ತಿಕೇ ಬಲೇ" ಹೇಮಂ। "ಅರ್ಜಸ್ತು ಕಾರ್ತಿಕೋತ್ಸಾಹಬಲೇಷು ಪ್ರಾಣನೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ। 7. ಉತ್ಸಾಹ ಶಾಲಿ.

**ಅರ್ಜಸ್ ಉರ್ಜಸ್** (ನಂ) 1. ಉತ್ಸಾಹ. 2. ಆಹಾರ, ಅನ್ನ. 3. ಬಲ, ಶಕ್ತಿ. ಅರ್ಜ (ಬಲಪ್ರಾಣನಯೋ:) "ಅಸುನ್" (೩ಂ ೪-೧೮೮)। 4. ರಸ, ಧಾತು, ಸಾರ.

**ಅರ್ಜಸ್ವತ್ ಉರ್ಜಸ್ವತ್** (ವಿಂ) 1. ಶಕ್ತಿವಂತ, ಬಲ ಶಾಲಿ. 2. ರಸವುಳ್ಳ. ಅತಿಶಯಿತಮ್ ಅರ್ಜೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। ಅರ್ಜಸ್ವತೀ ಉರ್ಜಸ್ವತೀ.

**ಅರ್ಜಸ್ವಲ ಉರ್ಜಸ್ವಲ** (ವಿಂ) 1. ಬಲಶಾಲಿ, ಶಕ್ತಿವಂತ. ಅತಿಶಯಿತಮ್ ಅರ್ಜೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ವಲಚ್" (೪-೨-೧೧೪)। "ತದ್ರಕ್ಷ ಕಲ್ಯಾಣಪರಂಪರಾಣಾಂ ಭೋಕ್ತಾರಮೂರ್ಜಸ್ವಲಮಾತ್ಮದೇಹಮ್" ರಘುಂ ೨-೫೦। "ಸ್ವಕೃತವಿಲಸಿತಾನಾಂ ಸ್ಥಾನಮೂರ್ಜಸ್ವಲಾನಾಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೨-೯। 2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ. "ಅಶ್ವಮೇಧ ಇತಿ ನಾಮ ವಿಶ್ವವಿಜಯಿನಾಂ ಕ್ಷತ್ರಿಯಾಣಾಮೂರ್ಜಸ್ವಲಃ ಸರ್ವಕ್ಷತ್ರಪರಿಭಾವಿ ಮಹಾನುತ್ಕರ್ಷನಿಕಃ" ತಂ ರಾಂ ೪।

**ಅರ್ಜಸ್ವಿನ್ ಉರ್ಜಸ್ವಿನ್** (ವಿಂ) ಶಕ್ತಿವಂತ, ಬಲಶಾಲಿ, ಪರಾಕ್ರಮಿ. ಅತಿಶಯಿತಮ್ ಅರ್ಜೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ವಿನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। ಅರ್ಜಸ್ವಿನೀ ಉರ್ಜಸ್ವಿನೀ.

**ಅರ್ಜಾ ಉರ್ಜಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಲ, ಶಕ್ತಿ. 2. ಉತ್ಸಾಹ. 3. ಅಧಿಕ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಬೆಳವಣಿಗೆ. 4. ಆಹಾರ, ಅನ್ನ. ಅರ್ಜ (ಬಲಪ್ರಾಣನಯೋ:) "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩)।

**ಅಜಿತ ಉರ್ಜಿತ** (ನಂ) 1. ಬಲ, ಶಕ್ತಿ. 2. ಉತ್ಸಾಹ. 3. ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. ಅರ್ಜ (ಬಲಪ್ರಾಣನಯೋ:) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 4. ಬಲಶಾಲಿ, ಶಕ್ತಿವಂತ. ಅರ್ಜ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ಪಿತ್ರಯಮಂಶಮುಪವೀತಲಕ್ಷಣಂ ಮಾತೃಕಂ ಚ ಧನುರ್ಜಿತಂ ದಧತ್" ರಘುಂ ೧೧-೬೪। 5. ಸಾರವತ್ತಾದ, ಅರ್ಥಗರ್ಭಿತವಾದ. "ಉಪಪತ್ತಿ-ಮದ್ವಜಿತಾಶ್ರಯಂ ನೃಪಮುಚೇ ವಚನಂ ವೃಕೋದರಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೧। "ನಿಶಮಯ್ಯ ತದ್ವಜಿತಂ ಶಿನೇವಂಚನಂ ನಪ್ತುರನಾಪ್ತುರೇನಸಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೬-೩೮। 6. ಅತಿಶಯವಾದ, ದೊಡ್ಡದಾದ. 7. ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅಧಿಕವಾದ. "ವಿನಿಹತ್ಯ ಭವಂತಮೂರ್ಜಿತಶ್ರೀ-ಯುಧಿ ಸಹಃ ಶಿಶುಪಾಲತಾಂ ಯಥಾರ್ಯಮ್" ಮಾಘಂ ೧೬-೮೫।



8. ಉತ್ತಮವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. 9. ಸುಂದರವಾದ, ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ. "ಕುಸುಮವಾಪಮತೇಜಯವಂಶುಮಿಹಿಮಕರೋ ಮಕರೋಜಿತಕೇತನಮ್" ರಘುಂ ೯-೩೯. 10. ಗಂಭೀರವಾದ, ಘನವಾದ, ಭವ್ಯವಾದ. "ಅಲಕ್ಷ್ಯತತ್ವಾಜ್ಜನೇರನೈಃ ಕ್ಷುಭಿತೋದನ್ವದ್ಭಜಿತಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೧-೪೦.

**ಅರ್ಣ ಉರ್ಣ** (ನಂ) 1. ಉಣ್ಣೆ. 2. ಉಣ್ಣೆಬಟ್ಟೆ. ಅರ್ಣಸ್ತಿಯಸ್ಯ ಕಾರಣತ್ವೇನ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರ್ಣಾ-ಉರ್ಣ. ಉಣ್ಣೆ. "ಮತ್ಸ್ಯಾನ್ಯೋರ್ಗಾವಲಯಿನಿ ಪುರಃ ಪಾವಕಸ್ಯೋಚ್ಚಿಷಸ್ಯ" ರಘುಂ ೧೬-೮೭.

**ಅರ್ಣನಾಭ ಉರ್ಣನಾಭ** (ಪುಂ) ಜೇಡರ ಹುಳ. ಅರ್ಣವ ತನ್ತುನಾಭಾವಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೪-೭೪).

**ಅರ್ಣಾ ಉರ್ಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉಣ್ಣೆ, ತುಪ್ಪಟ. 2. ಹುಬ್ಬುಗಳ ನಡುವೆ ಇರುವ ಕೂದಲಿನ ಸುಳಿ. "ಲಲಾಟಪದ್ಮೇ ನವನಲಿನನಾಲಭಜ್ಞತನ್ವೀಯಮೂರ್ಣಾ ಪರಿಸ್ಫುರತಿ" ಕಾದಂ. ಇದು ಚಕ್ರವರ್ತಿಲಕ್ಷಣ. ["ನರಲಕ್ಷಣ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 3. ಸ್ವಾಯಂಭುವ ಮನ್ವಂತರದ ಮರೀಚಿ ಮುನಿಯ ಪತ್ನಿ.

**ಅರ್ಣಾಃ ಉರ್ಣಾಃ** (ಪುಂ) 1. ಕುರಿಯ ತುಪ್ಪಟ ದಿಂದ ನೇಯ್ದ ಕಂಬಳಿ. 2. ಕುರಿ, ಟಗರು. 3. ಜೇಡರ ಹುಳ. "ಅರ್ಣಾಃ ಪರಿವಿಕಾಂಬಲೇ. ಅರ್ಣಾಃ ಚ ಮೇಘೇ ಚ" ಹೇಮಂ.

**ಅರ್ಣಾಸುತ್ರ ಉರ್ಣಾಸುತ್ರ** (ನಂ) ಉಣ್ಣೆ ದಾರ, ಕಂಬಳಿ ದಾರ. ಅರ್ಣಾಃ ಸುತ್ರಮ್.

**ಅರ್ಣ ಉರ್ಣ** (ವಿಂ) 1. ಅಟವಾಡುವ. 2. ಅಳಿಯುವ. ಅರ್ಣ (ಮಾನೇ ಕ್ರೀಡಾಃ ಚ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪).

**ಅರ್ಣರ ಉರ್ಣರ** (ಪುಂ) 1. ಶೂರ, ಬಲಶಾಲಿ, ಶಕ್ತಿವಂತ. 2. ರಾಕ್ಷಸ. ಅರ್ಕ್ + ರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಅಚ್" (೩ಂ ೪-೪೦). "ಅರ್ಣರಃ ಶೂರರಕ್ಷಾಸೋಃ" ಸಿಂ ಕೌಂ. (ನಂ) 3. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಅಳಿಯುವ ಒಂದು ಪಾತ್ರೆ. 4. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಕೂಡಿಸುವ ಸ್ಥಳ, ಕಣಜ.

**ಅರ್ವ ಉರ್ವ** (ನಂ) 1. ಎತ್ತರ, ಔನ್ನತ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಮೇಲುಮುಖವಾದ. "ಪ್ರಬೋಧಯತ್ಯರ್ವಮುಖೇರ್ಮಯುಕ್ತಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೧೬. 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೇಲು ಮುಖವಾಗಿ ನೀಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಮೇಲುಗಡೆಯಿರುವ, ಮೇಲುಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ. 5. ಎತ್ತರವಾದ, ಉನ್ನತ ವಾದ. (ಅವ್ಯಂ) 6. ಮೇಲುಗಡೆ, ಮೇಲುಭಾಗದಲ್ಲಿ. 7. ಅನಂತರ, ಬಳಿಕ, ತರುವಾಯ. "ಸಾಹ್ನಂ ತಪಃ ಸೂರ್ಯನಿವಿಷ್ಟದೃಷ್ಟಿರ್ಹರ್ವಂ ಪ್ರಸೂತೇಶ್ಚರಿತುಂ ಯತಿಷ್ಯೇ" ರಘುಂ ೧೪-೬೬.

**ಅರ್ವಕ ಉರ್ವಕ** (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಮದ್ದಳೆ, ಮೃದಂಗದ ಒಂದು ಭೇದ. ಅರ್ವಃ ಕಾಯತಿ-ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕಃ" (೩-೨-೪).

**ಅರ್ವಕಚ-ಕೇಶ ಉರ್ವಕಚ-ಕೇಶ** (ವಿಂ) ನೆಟ್ಟ ಕೂದಲುಳ್ಳ, ಮೇಲುಮುಖವಾದ ಕೂದಲುಳ್ಳ. ಅರ್ವಾಃ ಕಚಾಃ ಕೇಶಾ ವಾ ಯಸ್ಯ.

**ಅರ್ವಕಠ ಉರ್ವಕಠ** (ವಿಂ) 1. ಎತ್ತರವಾದ ಕುತ್ತಿಗೆಯುಳ್ಳ, ಉದ್ದವಾದ ಕಂಠವುಳ್ಳ. ಅರ್ವಃ ಕಠೋ ಯಸ್ಯ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಕೀಷ್" (ವಾಂ ೪-೧-೪೪). -ಕಠಿ-ಕಂಠೀ. 2. ಮಹಾಶತಾವರೀ.

**ಅರ್ವಕರ ಉರ್ವಕರ** (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ ಕೈಯುಳ್ಳ. 2. ಮೇಲುಮುಖವಾದ ಕಿರಣವುಳ್ಳ. ಅರ್ವಾಃ ಕರಾ ಹಸ್ತಾಃ ಕಿರಣಾ ವಾ ಯಸ್ಯ.

**ಅರ್ವಕರ್ಣ ಉರ್ವಕರ್ಣ** (ವಿಂ) ನೆಟ್ಟ ಕಿವಿಯುಳ್ಳ, ಅಲುಗಾಡದೆ ಧ್ವನಿಯನ್ನು ಕೇಳುವ ಕಿವಿಯುಳ್ಳ. ಅರ್ವಾಃ ಕರ್ಣಾಃ ಯಸ್ಯ. "ಮುಕ್ತೇಷು ರಶ್ಮಿಷು ನಿರಾಯತಪೂರ್ವಕಾಯಾ ನಿಷ್ಕಮ್ಪಚಾಮರಶಿಖಾ ನಿಭೃತೋರ್ವಕರ್ಣಾಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೮.

**ಅರ್ವಕರ್ಮನ್ ಉರ್ವಕರ್ಮನ್** (ನಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳುವುದು, ಮೇಲುಗಡೆಗೆ ಚಲಿಸುವುದು. ಅರ್ವಂ ಅರ್ವದೇಶ-ಪ್ರಾಪ್ತಯ ಕರ್ಮ ಕ್ರಿಯಾ. "ಉದೋನ್ಮೂರ್ವಕರ್ಮಣಿ" ಪಾಂ ಸುಂ ೧-೩-೨೪. (ವಿಂ) 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳುವ. ಅರ್ವಂ ಕರ್ಮ ಯಸ್ಯ.

**ಅರ್ವಕಾಯ ಉರ್ವಕಾಯ** (ಪುಂ) ಶರೀರದ ಮೇಲು ಭಾಗ, ಮೇಲುಮೈ. ಅರ್ವಂ ಕಾಯಃ.

**ಅರ್ವಕೇತು ಉರ್ವಕೇತು** (ಪುಂ) 1. ಜನಕ ಮಹಾ ರಾಜನ ವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. (ವಿಂ) 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಧ್ವಜ (ಬಾವುಟ)ವುಳ್ಳ (ದೊರೆ). ಅರ್ವಃ ಉಚ್ಛಿತಃ ಕೇತುಃ ಧ್ವಜೋ ಯಸ್ಯ. 3. ಬಾವುಟವು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಪಟ್ಟಣ), ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಬಾವುಟ ವುಳ್ಳ (ನಗರ). ಅರ್ವಃ ಕೇತುಃ ಯತ್ರ.

**ಅರ್ವಗ ಉರ್ವಗ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ, ಮಹಾ ವಿಷ್ಣು. ಅರ್ವಮುಪರಿ ಗಚ್ಛತಿ-ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮). ಮಹಾನ್ ಸ್ವಭಾವತುಕ್ತೋ ಭವತೀತ್ಯರ್ಥಃ. "ಯೋಷ್ಠಿ ಸ್ವಭಾವತಸ್ತುಕ್ತ ಅರ್ವಗಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ" ನಿಶ್ಕಿತಿಃ. "ಅರ್ವಗಃ ಸತ್ಯವಾಚಾರಃ ಪ್ರಾಣದಃ ಪ್ರಾಣವಃ ಪಣಃ" ವಿಂ ಸಂ. 2. ದೇಹದಲ್ಲಿ ಮೇಲುಮುಖವಾದ ವಾತದಿಂದಂಟಾಗುವ ಒಂದು ರೋಗ. "ಅರ್ವಗೋ ರಕ್ತಪಿತ್ತೇ ಚ ಶೀತಮಘಃ ಪ್ರಶಸ್ಯತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ. (ವಿಂ) 3. ಮೇಲುಮುಖವಾಗಿ



ಹೋಗುವ. "ತಪಾತ್ಯಯೇ ವಾರಿಮಿರಿಸಿತಾ ನವೇಮ್ವಾ ಸಹೋಷ್ಮಾಣಮಮುಚ್ಚದ್ವರ್ವಗಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೨೩. 4. ಸದಾಚಾರ ಸಂಪನ್ನ, ಧಾರ್ಮಿಕ. "ಧರ್ಮೇಣ ಗಮನಮೂರ್ವ ಗಮನಮಪಸ್ತಾ- ದ್ವವತ್ಯಧರ್ಮೇಣ" ಸಾಂ ಕಾಂ ೪೪. 5. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಚಲಿಸುವ. ಗಮ್ "ಗಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪). -ಗಾಮಿನ್ -ಗಾಮಿನ್. ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೪). -ಗಾಮಿನಿ -ಗಾಮಿನೀ.

**ಕರ್ವಗತಿ ಉದ್ವರ್ಗತ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳುವುದು. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವುದು. ಕರ್ವ ಗತಿ: 3. ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳಿಂದ ಉದ್ವರ್ಗಲೋಕಕ್ಕೆ (ಸ್ವರ್ಗಕ್ಕೆ) ಹೋಗುವುದು. "ಕರ್ವ ಗಚ್ಛಂತಿ ಸತ್ವಸ್ಯಾ: ಮಧ್ಯೆ ತಿಷ್ಠಂತಿ ರಾಜಸಾ: | ಜಘನ್ಯಗುಣವೃತ್ತಿಸ್ಯಾ: ಅಥಾ ಗಚ್ಛಂತಿ ತಾಮಸಾ:" ಗೀತಾ ೧೪-೧೮. (ವಿಂ) 4. ಮೇಲು ಮುಖವಾದ ಗಮನವುಳ್ಳ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ. ಕರ್ವ ಗತಿಯಸ್ಯ |

**ಕರ್ವಗಪುರ ಉದ್ವರ್ಗಪುರ** (ನಂ) ತ್ರಿಪುರಾಸುರನ ಪಟ್ಟಣ. "ಸಮುದ್ರತಪತಾಕಂ ತದಸಿಮಿಶ್ವ ವೀರಾಜಿತಮ್ | ರರಾಜ ತ್ರಿಪುರಂ ರಾಜನ್ ಮಹಾವಿದ್ಯದಿವಾಮ್ಬರೇ" ಹರಿವಂ |

**ಕರ್ವಗಮ ಉದ್ವರ್ಗಮ** (ಪುಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುವಿಕೆ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವಿಕೆ. ಕರ್ವ + ಗಮ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಅಪ್" (೩-೩-೪೮) | ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | -ಗಮನಮ್ -ಗಮನಮ್.

**ಕರ್ವಚರಣ-ಪಾದ ಉದ್ವರ್ಗಚರಣ-ಪಾದ** (ಪುಂ) ಶರಭ ಮೃಗ. ಕರ್ವಾ: ಚರಣಾ: ಪಾದಾ ವಾಸ್ಯ | [ಶರಭಮೃಗದ ಎಂಟು ಕಾಲುಗಳ ಪೈಕಿ ನಾಲ್ಕು ಕಾಲುಗಳು ಮೇಲು ಮುಖವಾಗಿವೆ.]

**ಕರ್ವಜಾನು ಉದ್ವರ್ಗಜಾನು** (ವಿಂ) ಉದ್ದವಾದ ಮೊಣ ಕಾಲುಳ್ಳವನು, ನೆಟ್ಟಗೆ ನಿಂತ ಮೊಣಕಾಲುಳ್ಳವನು. ಕರ್ವ ಜಾನುನಿ ಯಸ್ಯ | ವಾ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೪೪) | -ಜಾನುಕ: -ಜಾನುಕ: | ಜಾನುನಿ ವಾ "ಜು:" (೪-೪-೧೩೦) | **ಕರ್ವಜು: ಉದ್ವರ್ಗಜು:** "ಪರಿಸಿಥಿಲಿತಕರ್ಣಗ್ರೀವ- ಮಾಮಿಲಿತಾಕ್ಷ: ಕ್ಷಣಮಯಮನುಭೂಯ ಸ್ವಪ್ನಮೂರ್ವಜುರೇವ" ಮಾಘಂ ೧೧-೧೧ |

**ಕರ್ವಜ್ವಲನ ಉದ್ವರ್ಗಜ್ವಲನ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಲು ಮುಖವಾದ ಜ್ವಾಲೆಯುಳ್ಳ ಅಗ್ನಿ. ಕರ್ವ ಜ್ವಲನಂ ಯಸ್ಯ | (ನಂ) 2. ಮೇಲುಮುಖವಾದ ಜ್ವಾಲೆ, -ಉರಿ. ಕರ್ವ ಜ್ವಲನಮ್ | "ಪ್ರಸಿದ್ಧಮೂರ್ವಜ್ವಲನಂ ಹವಿರ್ಭುಜ:" ಮಾಘಂ ೧-೨ |

**ಕರ್ವತಸ್ ಉದ್ವರ್ಗತಸ್** (ಅವ್ಯಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ, ಮೇಲಿಂದ. ಮೇಲುಗಡೆ. ಕರ್ವ "ತಸಿ:" (ವಾಂ ೪-೪-೪೪) |

**ಕರ್ವದಿಶ್ ಉದ್ವರ್ಗದಿಶ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೇಲಿನ ದಿಕ್ಕು, ತಲೆಗೆ ಮೇಲುಭಾಗದ ದಿಕ್ಕು. ಕರ್ವಾ ದಿಕ್ |

**ಕರ್ವದೃಶ್ ಉದ್ವರ್ಗದೃಶ್** (ವಿಂ) ಮೇಲುದೃಷ್ಟಿಯುಳ್ಳ, ಮೇಲುಗಡೆ ನೋಡುವ. ಕರ್ವಾ ದೃಶ್ಯಸ್ಯ |

**ಕರ್ವದೃಷ್ಟಿ ಉದ್ವರ್ಗದೃಷ್ಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೇಲುನೋಟ. 2. ಯೋಗಾಭ್ಯಾಸ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಹುಬ್ಬುಗಳ ನಡುವೆ ಇರುವ ದೃಷ್ಟಿ. ಕರ್ವಾ ದೃಷ್ಟಿ: | (ವಿಂ) 3. ಮೇಲು ನೋಟವುಳ್ಳ. ಕರ್ವಾ ದೃಷ್ಟಿಯಸ್ಯ |

**ಕರ್ವಧನ್ವನ್ ಉದ್ವರ್ಗಧನ್ವನ್** (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ, ದೇವತೆಗಳ ಒಡೆಯ. ಕರ್ವ ಧನ್ಯುಸ್ಯ | "ಪುಲೋಮಶತ್ರುಹರಿವಾನುಧನ್ವನ್ ಶಕೀಪತಿ:" ವೇಜಂ |

**ಕರ್ವನಾಪಿತ ಉದ್ವರ್ಗನಾಪಿತ** (ಪುಂ) ಸೂತಕಾದಿ ಸಮಯ ದಲ್ಲಿ ಹೊಕ್ಕಳಿಗೆ ಮೇಲುಭಾಗದ ಮೈಯ ಕ್ಷೌರ ಮಾಡು ವವನು. "ಕ್ರೂಮಕಾರೋ ಭಾಂಡವೃತ್ತಿರೇಷ ಸ್ಯಾದ್ಧನ್ವನಾಪಿತ: | ನಾಭೇರೂರ್ವಂ ವಪನ್ ಪುಸಾಂ ಸೂತಕಪ್ರೇತಕಾದಿಷು" ವೇಜಂ |

**ಕರ್ವಪುಂಡ್ರ ಉದ್ವರ್ಗಪುಂಡ್ರ** (ಪುಂ) ಹಣೆಯಲ್ಲಿ ಬರೆಯುವ ಮೇಲುಮುಖವಾದ ತಿಲಕ, ಕಬ್ಬಿನಂತೆ ನೆಟ್ಟಗಿರುವ ತಿಲಕ. ಕರ್ವ: ಕರ್ವಮುಖ: ಪುಂಡ್ರ: ಇಕ್ಷುರಿವ | **ಉದ್ವರ್ಗಪುಂಡ್ರ ಲಕ್ಷಣ:** - "ದ್ವ್ಯಙ್ಗುಲಂ ತ್ರ್ಯಙ್ಗುಲಂ ವಾಪಿ ಸಾನ್ತರಾಲಂ ಪ್ರಕಲ್ಪಯೇತ್ | ಪಾರ್ಶ್ವಾವಙ್ಗುಲಿಮಾತ್ರೌ ತು ಕರ್ವಪುಂಡ್ರಸ್ಯ ಲಕ್ಷಣಮ್" ಸಂಜ್ಞಾರಿತ್ರಂ | ಪುಂಡ್ರವು ಮತದ ಒಂದು ಚಿಹ್ನೆ. ಉದ್ವರ್ಗಪುಂಡ್ರವು ವೈಷ್ಣವಮತದ ಚಿಹ್ನೆ.

**ಕರ್ವಪೂರ್ಮ ಉದ್ವರ್ಗಪೂರ್ಮ** (ಅವ್ಯಂ) ಮೇಲುಮುಖ ವಾಗಿ ತುಂಬಿ. ಬಿಂದಿಗೆ ಮೊದಲಾದ ಪಾತ್ರೆಗಳು ಮೇಲು ಮುಖವಾಗಿದ್ದು ಮಳೆಯ ನೀರಿನಿಂದ ತುಂಬುವುವು. ಕರ್ವಪೂರ್ಮ ಪೂಯಂತೆ "ಗಮುಲ್" |

**ಕರ್ವಪೃಷ್ಠಿ ಉದ್ವರ್ಗಪೃಷ್ಠಿ** (ಪುಂ) ಯಜ್ಞದ ಪಶು.

**ಕರ್ವಬಾಹು ಉದ್ವರ್ಗಬಾಹು** (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ ತೋಳುಗಳುಳ್ಳ. ಕರ್ವ: ತುಲಿತೋ ಬಾಹುಯಸ್ಯ | "ಕರ್ವಬಾಹುವಿರೋಮ್ಯೇಷ: ನ ಚ ಕಶಿಚ್ಚಣೋತಿ ಮೇ | ಧರ್ಮಾ- ದರ್ಶನಂ ಕಾಮಶ್ಚ ಸ ಕಿಮರ್ಥಂ ನ ಸೇವ್ಯತೇ" ಭಾಂ ಸ್ವರ್ಗಾಂ ೪-೭೪ |

**ಕರ್ವಬುಧ್ನ ಉದ್ವರ್ಗಬುಧ್ನ** (ಪುಂ) ಬುಡ ಮೇಲು ಮಾಡ ಲ್ಪಟ್ಟ, ತಲೆಕೆಳಗೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೊಗಚೆ ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಕರ್ವಭಾಗ ಉದ್ವರ್ಗಭಾಗ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಲುಭಾಗ. 2. ಮುಂದಿನ ಭಾಗ. ಕರ್ವ: ಉಪರಿತ್ಥಿ ಭಾಗ: |



**ಅರ್ಥಮ್ ಉದ್ಭವಮ್** (ಖ್ಯಂ) "ಅರ್ಥ" ಪದದ ಅರ್ಥ.  
**ಅರ್ಥಮನ್ಯಿನ್ ಉದ್ಭವಮಂಥಿನ್** (ಫಂ) ನೈಷ್ಠಿಕ ಬ್ರಹ್ಮ  
 ಚಾರಿ, ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸದೆ ಶಾಶ್ವತವಾಗಿ  
 ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾಶ್ರಮದಲ್ಲಿರುವವನು. ಅರ್ಥ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾ-  
 ದುತ್ಸರಾಶ್ರಮಂ ಗಾಂಧರ್ವಾದಿ ಮನ್ಯಾತಿ-ಮನ್ಯ (ವಿಲೋಡನೆ)  
 "ಗಿರಿ:" (೩-೨-೭೮)।

**ಅರ್ಥಮಾನ ಉದ್ಭವಮಾನ** (ನಂ) 1. ಚಿನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿ ಮೊದ  
 ಲಾದುವನ್ನು ತೂಗಲು ತಕ್ಕಡಿಯಲ್ಲಿರುವ ತೊಲ, ಪಾಪು,  
 ಸೇರು ಮುಂತಾದ ಬೊಟ್ಟು, ತೂಕ ಮಾಡುವ ಕಲ್ಲು ಮೊದ  
 ಲಾದುದು. ಅರ್ಥಮಾರೋಪ್ಯ ಮೀಯತೇ ಯೇ-ಮಾಙ್ (ಮಾನೆ)  
 ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। 2. ಎತ್ತರವನ್ನು  
 ಅಳೆಯುವ ಕೋಲು ಮುಂತಾದುದು. 3. ಎತ್ತರವನ್ನು  
 ಕಂಡುಹಿಡಿಯುವ ಅಳತೆ. 4. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ಅಳೆಯುವಿಕೆ.

**ಅರ್ಥಮುಖ ಉದ್ಭವಮುಖ** (ವಿಂ) ಮೇಲುಮುಖವಾದ,  
 ಮೇಲಕ್ಕೆ ಪರಿಸುತ್ತುರುವ. ಅರ್ಥ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ। "ಪಶ್ಚಾನಿ  
 ಯಸ್ಯಾಗ್ರಸರೋಹಾಣಿ ಪ್ರಬೋಧಯತ್ಯುರ್ಧ್ವಮುಖಮುಖೈಃ" ಕುಮಾಂ  
 ೧-೧೬।

**ಅರ್ಥಮೂಲ ಉದ್ಭವಮೂಲ** (ಫಂ) ಸಂಸಾರವೃಕ್ಷ.  
 ಅರ್ಥ: ತತ್ಕೃಷ್ಣ: ಪುರುಷೋ ಮೂಲಮಸ್ಯ। ಸಂಸಾರವೆಂಬ ಅಶ್ವತ್ಥ  
 ವೃಕ್ಷಕ್ಕೆ ಪರಬ್ರಹ್ಮನು ಮೂಲಕಾರಣನು. ಸಕಲ ಲೋಕ  
 ಗಳಿಗೂ ಮೇಲಿರುವ ಬ್ರಹ್ಮನನ್ನು ಕಾರಣವಾಗಿ ಉಳ್ಳ  
 ದುದರಿಂದ ಈ ಅಶ್ವತ್ಥವು ಉದ್ಭವಮೂಲವಾಯಿತು.  
 ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿರುವ ಸಕಲ ಮನುಷ್ಯ, ಪಶುವಕ್ಷಿ,  
 ಸ್ಥಾವರಾದಿಗಳು ಈ ಸಂಸಾರಕ್ಕೆ ಅಂತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ  
 ಅಧಃಶಾಖವಾಯಿತು. ಅಸಂಗಹೇತುಭೂತವಾದ ಸಮ್ಯಕ್  
 ಜ್ಞಾನೋದಯವಾಗುವವರೆಗೂ ಪ್ರವಾಹರೂಪವಾಗಿ  
 ಅಜ್ಞೇದ್ಯವಾದುದರಿಂದ ಅವ್ಯಯವಾಯಿತು. ಕಾಮ್ಯ  
 ಕರ್ಮಗಳಿಂದ ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುತ್ತಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಸಂಸಾರ  
 ವೃಕ್ಷಕ್ಕೆ ವೇದಗಳೇ ಎಲೆಗಳಾಗಿವೆ. ವೇದವು ಈ ಸಂಸಾರ  
 ವೃಕ್ಷದ ಭೇದೋಪಾಯವನ್ನು ಹೇಳುವುದರಿಂದ ಈ ಅಶ್ವತ್ಥ  
 ವೃಕ್ಷದ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿದವನೇ ವೇದವನ್ನು ತಿಳಿದವ  
 ನಾಗುವನು. "ಅರ್ಥಮೂಲಮಧಃಶಾಖಮಶ್ವತ್ಥಂ ಪ್ರಾಹುರವ್ಯಯಮ್।  
 ಛಂದಾಸಿ ಯಸ್ಯ ಪರ್ಣಾನಿ ಯಸ್ತಂ ವೇದ ಸ ವೇದವಿತ್" ಗೀತಾ  
 ೧೫-೧।

**ಅರ್ಥಮೌಹತಿಕ ಉದ್ಭವಮೌಹತಿಕ** (ವಿಂ) ಒಂದು  
 ಮುಹೂರ್ತದ ನಂತರ ಸಂಭವಿಸುವ, ಅತ್ಯಲ್ಪಕಾಲದ ನಂತರ  
 ಉಂಟಾಗುವ. ಅರ್ಥ ಮೌಹತಿಕವ: "ಠಕ್" (೪-೩-೧೧)।  
 "ಲಿಙ್ ಚೋರ್ಧಮೌಹತಿಕೇ" ಪಾಂ ಸೂಂ ೩-೩-೧।

**ಅರ್ಥರೆತಸ್ ಉದ್ಭವರೇತಸ್** (ಫಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರ,  
 ಮಹಾದೇವ. ಅರ್ಥಮುರ್ಧಮುಖಂ ರೇತೋಸ್ಯ। 2. ಸನಕಾದಿ  
 ಮುನಿಗಳು. "ಅರ್ಥರೆತಾ: ಪ್ರಜಾ ಹಿತ್ವಾ ಗಚ್ಛತ್ಯಕ್ಷರ-  
 ಸಾತ್ಮತಾಮ್। ಏತಾನ್ಯೇವ ನಿಮಿತ್ತಾನಿ ಮುನೀನಾಮುರ್ಧರೆತಸಾಮ್"  
 ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೬೦-೬। 3. ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯರು.  
 [ರೇತಸ್ಸು ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಜನನೇಂದ್ರಿಯದ  
 ಮೂಲಕ ಕೆಳಮುಖವಾಗಿ ಹೊರಡುವುದು. ಇದನ್ನು  
 ತಡೆದು ಮೇಲುಮುಖವಾಗಿಸುವ ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು  
 ಉದ್ಭವರೇತಸ್ಸು.]

**ಅರ್ಥರೋಮನ್ ಉದ್ಭವರೋಮನ್** (ಫಂ) 1. ಕುಶದ್ವೀಪ  
 ದೊಳಗಿನ ಒಂದು ಪರ್ವತ. ಇದರ ಗಡಿಯಲ್ಲಿರುವ  
 ಪರ್ವತಗಳು:—"ಚಕ್ರವರ್ತು: ಚತು:ಶೃಂಗ: ಕಪಿಲಶಿಖರಕೂಟೋ  
 ದೇವಾನಿಕ ಅರ್ಥರೋಮಾ ದ್ರವಿಣ:" ಭಾಗಂ ೪-೨೦-೧೬।  
 (ವಿಂ) 2. ಮೇಲುಮುಖವಾದ ಕೂದಲುಳ್ಳ. ಅರ್ಥಾನಿ  
 ರೋಮಾಣಿ ಯಸ್ಯ। "ಸ ಪಾಶಹಸ್ತಾಸ್ತ್ರೀನ್ ದೃಷ್ಟ್ವಾ  
 ಪುರುಷಾನ್ ಭೃಗದಾಣಾನ್। ವಕ್ರತುಂಡಾನುರ್ಧರೋಮ್ನ: ಆತ್ಮಾನಂ  
 ನೇತುಮಾಗತಾನ್" ಭಾಗಂ ೬-೧-೨೮।

**ಅರ್ಥಲಿಙ್ಗ ಉದ್ಭವಲಿಙ್ಗ** (ಫಂ) ಮಹಾದೇವ,  
 ಪರಮೇಶ್ವರ. ಅರ್ಥಮುತ್ಕೃಷ್ಟಂ ಲಿಙ್ಗಮಸ್ಯ। "ಅರ್ಥರೆತಾ  
 ಅರ್ಥಲಿಙ್ಗ ಅರ್ಥಶಾಯಿ ನಮ:ಸ್ಥಲ:। ತ್ರಿಜಟಶ್ಚೀರವಾಸಾಶ್ಚ  
 ರುद्र: ಸೇನಾಪತಿವಿಭು:" ಭಾಂ ಅನುಂ ೪೮-೪೬।

**ಅರ್ಥಲೋಕ ಉದ್ಭವಲೋಕ** (ಫಂ) ಮೇಲಿನ ಲೋಕ,  
 ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ. ಅರ್ಥ ಲೋಕ:।

**ಅರ್ಥವಾತ ಉದ್ಭವವಾತ** (ಫಂ) 1. ಮೇಲುಮುಖವಾದ  
 ವಾತ, ದೇಹದಲ್ಲಿ ಸ್ವಭಾವವಾದ ಗತಿಯನ್ನು ತಡೆದು  
 ಮೇಲುಮುಖವಾಗಿ ಹೊರಡುವ ವಾಯು; ಮಲ  
 ಮೂತ್ರಾದಿಗಳನ್ನು ತಡೆಯುವುದರಿಂದ ವಾಯುವು ಅದರ  
 ಮಾರ್ಗವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಮೇಲುಮುಖವಾಗಿ ಹೊರಡು  
 ವುದು. "ಅಧಶ್ಚೋರ್ಧ್ವಂ ಚ ಭಾವಾನಾಂ ಪ್ರವೃತ್ತಾನಾಂ ಸ್ವಭಾವತ:।  
 ನ ವೇಗಾನ್ ಧಾರಯೇದ್ವಿಮಾನ್ ವಾತಾದೀನಾಂ ಜಿಜಿವಿಷು:" ಸುಶ್ರುತಂ।  
 2. ಸಪ್ತವಾಯುಗಳಲ್ಲಿ ಪರೀವಾಹವೆಂಬ ಒಂದು ವಾಯು.

**ಅರ್ಥಶಾಯಿನ್ ಉದ್ಭವಶಾಯಿನ್** (ಫಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರ,  
 ಮಹಾದೇವ. "ಅರ್ಥರೆತಾ ಅರ್ಥಲಿಙ್ಗ ಅರ್ಥಶಾಯಿ ನಮ:-  
 ಸ್ಥಲ:। ತ್ರಿಜಟಶ್ಚೀರವಾಸಾಶ್ಚ ರುद्र: ಸೇನಾಪತಿವಿಭು:"  
 ಭಾಂ ಅನುಂ ೪೮-೪೬। (ವಿಂ) 2. ಮೇಲುಮುಖವಾಗಿ  
 ಮಲಗುವ, ಅಂಗಲಾಚಿಕೊಂಡು ಮಲಗುವ (ಶಿಶು).  
 ಅರ್ಥ: ಶೇತೇ-ಶೀಙ್ (ಸ್ವಪ್ನೆ) "ಗಿರಿ:" (೩-೨-೭೮)।

**ಅರ್ಥೋತ್ತಮ್ ಉದ್ಭವೋತ್ತಮ್** (ಫಂ) 1. ರೇತಸ್ಸಿನ  
 ಪ್ರವಾಹವನ್ನು ಕೆಳಮುಖವಾಗಿ ಬಿಡದೆ ಮೇಲುಮುಖ



ವಾಗಿ ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸುವ ಯೋಗಿ. ಅರ್ಥಮ್ ಅರ್ಥಗತಂ  
ಸ್ರೋತಃ ರೇತಃಪ್ರವಾಹೋ ಯಸ್ಯ | 2. ಮೇಲುಮುಖವಾಗಿ  
ಆಹಾರರಸವು ಸಂಚರಿಸುವ ಗಿಡ ಮರ ಬಳ್ಳಿಗಳು.

**ಅರ್ಥಾಯನ ಉದ್ವಾರ್ತಯನ (ಪುಂ)** 1. ವೈಶ್ಯ ಜಾತಿಯ  
ಒಂದು ಹಕ್ಕಿ [ಪಕ್ಷದ್ವೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಪಕ್ಷಿಗಳಲ್ಲಿ ಕೆಲವು  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಜಾತಿಯವು. ಕೆಲವು ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಜಾತಿಯವು.  
ಕೆಲವು ವೈಶ್ಯ ಜಾತಿಯವು. ಮತ್ತೆ ಕೆಲವು ಶೂದ್ರ  
ಜಾತಿಯವು. ಈ ಪಕ್ಷಿಗಳಿಗೆ ಹಂಸ, ಪತಂಗ, ಉದ್ವಾರ್ತ  
ಯನ ಮತ್ತು ಸತ್ಯಾಂಗಗಳೆಂದು ಸಂಜ್ಞೆ. ಇವು ಅರುಣಾ,  
ಅನೃಮ್ನಾ, ಅಂಗಿರಸೀ, ಸಾವಿತ್ರೀ, ಸುಪ್ರಭಾತಾ,  
ಯತಂಭರಾ ಮತ್ತು ಸತ್ಯಂಭರಾ ಎಂಬ ಪಕ್ಷದ್ವೀಪದ  
ಏಳು ನದಿಗಳ ಜಲಸೇವನೆಯಿಂದ ರಜಸ್ವಮೋಗುಣಗಳನ್ನು  
ಕಳೆದುಕೊಂಡು ಸಾವಿರ ವರ್ಷಗಳ ಆಯುಸ್ಸನ್ನೂ, ದೇವತೆ  
ಗಳಂತೆ ಅತಿ ಸುಂದರವಾದ ಪ್ರಜೆಗಳನ್ನೂ ಪಡೆದು ಸೂರ್ಯ  
ನನ್ನು ಪೂಜಿಸುವವು.] "ಅರುಣಾನೃಮ್ನಾಽಽಂಗಿರಸೀ ಸಾವಿತ್ರಿ  
ಸುಪ್ರಭಾತಾ ಸ್ಮತಂಭರಾ ಸತ್ಯಂಭರಾ ಇತಿ ಮಹಾನದಿಃ |  
ಯಾಸಾಂ ಜಲೋಪಸ್ಪರ್ಶನವಿಧೂತರಜಸ್ತಮಸೋ ಹಂಸಪತಂಜ್ಞೋರ್ವಾಯನ-  
ಸತ್ಯಾಙ್ಗಸಂಜ್ಞಾಶ್ಚತವಾರೋ ವರ್ಣಾಃ ಸಹಸ್ರಾಯುಷೋ ವಿಬುಧೋಪಮ-  
ಸಂದರ್ಶನಪ್ರಜನನಾಃ ಸ್ವರ್ಗಾದ್ವಾರಂ ತ್ರಯಾ ವಿಧಯಾ ತ್ರಯೀಮಯಂ  
ಸೂರ್ಯಮಾತ್ಮಾನಂ ಯಜಂತೇ" ಭಾಗಂ ೪-೨೦-೪ | (ನಂ)  
2. ಮೇಲುಗಡೆಗೆ ಹೋಗುವುದು, ಮೇಲುಮುಖವಾದ  
ಗಮನ. ಅರ್ಥಮಯನಮ್ | (ವಿಂ) 3. ಮೇಲುಮುಖವಾಗಿ  
ಹೋಗುವ, ಅರ್ಥಮಯನಂ ಯಸ್ಯ |

**ಅರ್ಥಾವಿತ ಉದ್ವಾರ್ತವರ್ತ (ಪುಂ)** ಕುದುರೆಯ ಬೆನ್ನು.  
**ಅರ್ಥಾಸಿತ ಉದ್ವಾರ್ತಸಿತ (ಪುಂ)** 1. ಹಾಗಲದ ಗಿಡ.  
(ನಂ) 2. ಮೇಲುಗಡೆ ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವುದು. (ವಿಂ)  
3. ಮೇಲುಗಡೆ ಕುಳಿತಿರುವ. ಅರ್ಥಮಾಸಿತಃ |

**ಅರ್ಥ ಉದ್ವಾರ್ತ (ಪುಂ)** 1. ತರಂಗ, ಅಲೆ,  
ತೆರೆ. ಋಚ್ಛತಿ-ಋ (ಗತೌ) "ಮಿಃ" ಅಕಾರಶ್ಚ  
(೩೦ ೪-೪೪) | "ತಮಾಧುತಧ್ವಜಪಟಂ ವ್ಯೋಮಗಂಧೋಮಿವಾಯುಭಿಃ |  
ದೇವಸೂತಭುಜಾಲಂಬೀ ಜೈತ್ರಮಧ್ಯಾಸ್ತ ರಾಘವಃ" ರಾಮಾಂ | "ಅರ್ಥೋ  
ಮಹತ್ಯಭಿಮುಖಾಪತಿಸ್ತಂ ನಿರೀಕ್ಷ್ಯ" ಮಾಘಂ ೪-೩೨ |  
2. ವೇಗ, ತ್ವರೆ. 3. ಬಟ್ಟೆಯ ಮಡಿಕೆಯ ಗೆರೆ.  
4. ಪೀಡೆ. 5. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. 6. ಉತ್ಕಂಠೆ, ಪ್ರಿಯ  
ವಸ್ತುವನ್ನು ಹೊಂದುವ ಆಸೆ. "ಅರ್ಥಃ ಪಿಡಾಜವೋತ್ಕಂಠಾ-  
ಲೇಖಾಪ್ರಕಾಶವಿಚಿಛುಃ | ವಸ್ತ್ರಸಂಕ್ಷೋಚಲೇಖಾಯಾಮ್" ಹೇಮಂ |  
7. ಮನುಷ್ಯನ ಶರೀರ, ಮನಸ್ಸು, ಮತ್ತು ಪ್ರಾಣಿಗಳ  
ಆರುವಿಧ ಧರ್ಮಗಳು. ಮುಪ್ಪು ಮತ್ತು ಮೃತ್ಯು  
ಇವು ಶರೀರ ಧರ್ಮಗಳು. ಶೋಕಮೋಹಗಳು ಮನೋ

ಧರ್ಮಗಳು. ಹಸಿವು ಮತ್ತು ಬಾಯಾರಿಕೆಗಳು ಪ್ರಾಣ  
ಧರ್ಮಗಳು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 8. ಸಾಲಸಾಲಾಗಿ ನಿಲ್ಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ  
ಕುದುರೆಗಳ ಬಹಳ ವೇಗವಾದ ನಡೆಗೆ. "ಪಙ್ಕ್ತಿ-  
ಕೃತಾನಾಮಶ್ವಾನಾಂ ನಮನೋತ್ತಮನಾಂಕೃತಿಃ | ಅತಿವೇಗಸಮಾಯುಕ್ತಾ  
ಗತಿರ್ಮಿರುದಾಹತಾ" ವೇಜಂ | "ಅಶ್ವಾಃ ಪೃಥುವಿಸುಮತೀ-  
ಮತಿರೋಚಮಾನಾಸ್ತೂರ್ಣಂ ಪಯೋಗ ಇವೋಮಿಭಿರಾಪತಂತಃ" ಮಾಘಂ  
೪-೪ |

**ಅರ್ಥಿಕಾ ಉದ್ವಾರ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ತರಂಗ, ಅಲೆ. ಅರ್ಥ  
ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" | 2. ಉತ್ಕಂಠೆ, ಪ್ರಿಯವಸ್ತುವನ್ನು  
ಹೊಂದುವ ಆಸೆ. 3. ಶಿಂಜಾರವ, ದುಂಬಿಯ ರೋಂಕಾರ.  
4. ಬಟ್ಟೆಯ ಮಡಿಕೆ. 5. ಉಂಗುರ. ಅರ್ಥಿಕಾ  
ಕಾಯತಿ-ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕಃ" (೩-೨-೪) | "ಅರ್ಥಿಕಾ  
ಪುನಃ | ತತ್ಕಂಠಾಃ ಭೃಗುನಾಥೇ ವಸ್ತ್ರಭಜ್ಞೇಽಙ್ಗುಲೀಯಕೇ |  
ವೀಚ್ಯಾಂ ಚ" ಹೇಮಂ | "ಯಾಸ್ಯಾಮೀತ್ಯುದಿತೇ ತನ್ವಯಾ ವಲಯೋ-  
ಽಭವತ್ಪ್ರಮಿಕಾ" ಚಂದ್ರಾಂ |

**ಅರ್ಥಿನ್ ಉದ್ವಾರ್ತನ್ (ಪುಂ)** 1. ಸಮುದ್ರ. (ವಿಂ)  
2. ಅಲೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಅರ್ಥಿಸ್ತಸ್ಯ "ಇತಿಃ"  
(೪-೨-೧೧೬) |

**ಅರ್ಥಮತ್ ಉದ್ವಾರ್ತಮತ್ (ವಿಂ)** 1. ಸಮುದ್ರ.  
2. ಅಲೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಅರ್ಥಮಃ ಸನ್ಯಸ್ಯ "ಮತುಃ"  
(೪-೨-೯೪) | "ತದ್ವರ್ತಿಸ್ತಾನಾಂ ಮಹಸಾ ಮಣಿನಾಮುಖ್ಯಂ  
ಪ್ರಸಂಪನ್ನಮಿವೋಮಿಮಂತಮ್" ಯಾದಂ ೧೮-೧೦೮ | 3. ವಕ್ರ  
ವಾದ, ಡೊಂಕಾದ. 4. ಮಡಿಕೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ (ಬಟ್ಟೆ).  
5. ಗುಂಗುರು ಗುಂಗುರಾಗಿರುವ (ಕೂದಲು). ಅರ್ಥಮಿವ  
ವಕ್ರತಾಸ್ತಸ್ಯ "ಮತುಃ" (೪-೨-೯೪) |

**ಅರ್ಥಮಾಲಾ ಉದ್ವಾರ್ತಮಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಲೆಗಳ ಸಾಲು,  
ತರಂಗಗಳ ಪಜ್ಜೆ. ಅರ್ಥಮಾಲಾ |

**ಅರ್ಥಮಾಲಿನ್ ಉದ್ವಾರ್ತಮಾಲಿನ್ (ಪುಂ)** ಸಮುದ್ರ,  
ಕಡಲು. ಅರ್ಥಮಾಲಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇತಿಃ" (೪-೨-೧೧೬) |  
"ಪ್ರತ್ಯುಜ್ಜಗಾಮ ಕ್ರಯಕೇಶಿಕೇಂದ್ರಶ್ಚಂದ್ರಂ ಪ್ರವೃದ್ಧೋಮಿರಿವೋಮಿಮಾಲಿನ್"  
ರಘುಂ ೪-೬೧ |

**ಅರ್ಥಿಲಾ ಉದ್ವಾರ್ತಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಜನಕ ಮಹಾರಾಜನ  
ಮಗಳು, ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ಪತ್ನಿ. "ಪಾರ್ಥಿವೀಮುದವಹದ್ರಭೂಹೋ  
ಲಕ್ಷ್ಮಣಸ್ತದನುಜಾಮಥೋಮಿಲಾಃ" ರಘುಂ ೧೧-೪೪ | 2. ಗಂಡ  
ನನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಹೋಗು. "ಪುನರುದಾ ಪುನಃ ಸ್ಯಾದ್ಧರ್ಮಿಲಾ  
ತ್ಯಕ್ತಭರ್ತುಕಾ" ವೇಜಂ |

**ಅರ್ಥ ಉದ್ವಾರ್ತ (ಪುಂ)** 1. ಔರ್ವನಂಬ ಮಹರ್ಷಿ. 2. ಬಹು  
ಬಾಗ್ಗಿ. ["ಅರ್ಥ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 3. ಶೋಭೆ.



ಮೋಡ. 4. ದನಗಳ ಕೊಟ್ಟಿಗೆ. 5. ಸಮುದ್ರ. 6. ನೀರಿನ ಪಾತ್ರೆ. (ವಿಂ) 7. ದೊಡ್ಡದಾದ, ಮಹತ್ತಾದ. 8. ವಿಸ್ತಾರವಾದ, ಅಗಲವಾದ.

**ಊರ್ವಜಃ ಉರ್ವಂಗ** (ನಂ) ಶಿಲೀಂಧ್ರ, ನಾಯಿ ಕೂಡೆ, ಅಣಬೆ, ಕುರಿವಾಙ್ಮಸ್ಯ.

**ಊರ್ವಶೀ ಉರ್ವಶೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉರ್ವಶಿಯೆಂಬ ದೇವ ಲೋಕದ ವೇಶ್ಯೆ, ಪ್ರಸಿದ್ಧಳಾದ ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸು. ಊ ನಾರಾಯಣೋಹಂ ಕಾರಣತ್ವೇನಾಶ್ನುತೇ ವ್ಯಾಪ್ನೋತಿ-ಅಶ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪೧). [ಎವರಕ್ಕೆ "ಊರ್ವಶೀ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಊ ಉಷ** (ಪುಂ) 1. ಚೌಳುಮಣ್ಣು, ಕರಳುಮಣ್ಣು. ಊ (ಠಜಾಯಾಮ್) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫). "ಕೌಶೇಯಾ-ವಿಕಯೋರೂಪಃ ಕೃತಪಾನಾಮರಿಷ್ಟಕಃ" ಮನುಂ ೪-೧೨೦. 2. ಕಿವಿಯ ರಂಧ್ರ. 3. ಮಲಯ ಪರ್ವತ. 4. ಪ್ರಾತಃ ಕಾಲ. 5. ರಂಧ್ರ, ಬಿಲ. "ಊಃ ಕ್ಷಾರಮೃತ್ತಿಕಾयां ಪ್ರಭಾತೇಽಪಿ ಪುಮಾನಯಮ್. ತತ್ಸನ್ಧಾಯಾಶ್ಚ ರಂಧ್ರೇ ಚ ಚಂದನಾದ್ರೌ ಶ್ರವೌಬಿಲೇ" ಮೇದಿಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಊ-ಷಾ. 6. ಉಷರ ಭೂಮಿ, ಚೌಳುಭೂಮಿ.

**ಊಷಕ ಉಷಕ** (ನಂ) ಪ್ರಾತಃಕಾಲ. ಊಷತಿ ಅನ್ವಕಾರಮ್ ಊ (ದಾಹೇ) "ಞ್ವಲ್".

**ಊಷಣ ಉಷಣ** (ಪುಂ) 1. ಚಿತ್ರಮೂಲದ ಗಿಡ, ಚಿತ್ರಕ ವೃಕ್ಷ. (ನಂ) 2. ಮೆಣಸು. 3. ಹಿಪ್ಪಲಿಯ ಬೇರು. 4. ಶುಂಠಿ. ಊ (ದಾಹೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೩). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಊ-ಷಾ. 5. ಹಿಪ್ಪಲಿ. 6. ಚವ್ಯ. 7. ಜೇರಿಗೆ. (ವಿಂ) 8. ಕಾರವಾದ, ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ. "ಊಷಣಂ ಮರಿಚೇ ಕ್ಲಿಬಂ ಕಣಾಯಾಮೂಷಣಾ ಸ್ಮೃತಾ" ಮೇದಿಂ. "ಸ್ತ್ರೀ ಶುಣ್ಠಿರೂಷಣಂ ವಿಶ್ವಭೂಷಣಂ ಸಿಂಹಲಂ ಕಟಮ್" ವೇಜಂ.

**ಊಷರ ಉಷರ** (ನಂ) 1. ಕರಳುಮಣ್ಣು, ಚೌಳುಮಣ್ಣು. (ವಿಂ) 2. ಚೌಳುಮಣ್ಣಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಕರಳು ಮಣ್ಣಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಊಃ ಕ್ಷಾರಮೃತ್ತಿಕಾಂ ರಾತಿ-ರಾ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೬). ಊಃ ಕ್ಷಾರಮೃತ್ತಿಕಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ರಃ" (೪-೨-೧೦೭) ವಾ. "ಊಷವಾನುಷರೋ ದ್ವಾವಪ್ಯನ್ಯ-ಲಿಜ್ಜೌ" ಅಮಂ. ಊಷರೋ ದೇಶಃ ಊಷರಾ ಭೂಮಿಃ ಊಷರಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್. "ವರ್ಷಕಸ್ಯ ಕಿಮಪಃ ಕೃತೋತ್ತರೇರಮ್ಬುದಸ್ಯ ಪರಿಹಾರ್ಯ-ಮೂಷರಮ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೪೬.

**ಊಷರಜ ಉಷರಜ** (ನಂ) ಚೌಳುಉಪ್ಪು, ಚೌಳು ಮಣ್ಣಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಉಪ್ಪು. ಊಷರಾಜ್ಜಾಯತೇ-ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಮವಿ) "ಙಃ" (೩-೨-೧೭).

**ಊಷವತ್ ಉಷವತ್** (ವಿಂ) "ಊಷರ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಊಷಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪). ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬). -ವತೀ-ವತೀ.

**ಊಷಾ ಉಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಷಾದೇವಿ, ಬಾಣಾಸುರನ ಮಗಳು. [ಎವರಕ್ಕೆ "ಊಷಾ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ಊಷಾಪ್ಯುಷಾ ನನಂದಾ ಚ ನನಾಂದಾಪಿ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ" ಶಬ್ದಭೇದಂ. **ಊಷ ಉಷ್ಣ** (ಪುಂ) 1. ಶಾಖ, ಬಿಸಿ, ಕಾವು. 2. ಬೇಸಿಗೆ ಕಾಲ. ಊ (ದಾಹೇ) "ಮಃ" ಬಾಹುಂ. (ವಿಂ) 3. ಶಾಖವಾದ, ಬಿಸಿಯಾದ. ಊಷಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭).

**ಊಷ್ಮಕ ಉಷ್ಮಕ** (ಪುಂ) ಗ್ರೀಷ್ಮಯುತು, ಬೇಸಿಗೆಕಾಲ. ಊಷ್ಮನ್ "ಕನ್" (೪-೪-೨೯). "ಗ್ರೀಷ್ಮ ಊಷ್ಮಕಃ. ನಿದಾಘ ಉಷ್ಣೋಪಗಮಃ" ಅಮಂ.

**ಊಷ್ಮಣ ಉಷ್ಮಣ** (ವಿಂ) ಶಾಖವಾದ, ಬಿಸಿಯಾದ. ಊಷ್ಮಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ-ಊಷ್ಮನ್ "ನಃ" (೪-೨-೧೦೦).

**ಊಷ್ಮನ್ ಉಷ್ಮನ್** (ಪುಂ) 1. ಬೇಸಿಗೆಕಾಲ, ಗ್ರೀಷ್ಮಯುತು. 2. ಶಾಖ, ಬಿಸಿ, ಕಾವು. ಊ (ಠಜಾಯಾಮ್) "ಮನಿನ್" (೩-೨-೭೫). "ರವಿಕಾಂತಮಯೇನ ಸೇತುನಾ ಸಕಲಾಹಂ ಜ್ವಲನಾಹಿತೋಷ್ಮಣಾ" ನೈಷಂ ೨-೯೩. 3. ಬಾಷ್ಪ, ಆವಿ, ಹಬೆ. "ತಪಾತ್ಯಂ ವಾರಿಭಿರಕ್ಷಿತಾ ನವೆರ್ಭುವಾ ಸಹೋಷ್ಮಾಣ-ಮಮುಚ್ಛದ್ಧರ್ವಗಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೨೩. 4. ಶಾಖ ಸಹ ವರ್ಣಗಳು, ಹಬೆಯೊಡನೆ ಕೂಡಿದ ಗಾಳಿಯಿಂದ ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ವರ್ಣ. "ಶಾಖಸಹಾ ಊಷ್ಮಾಣಃ" ಸಿಂ ಕೌಂ. "ಸ್ಪರ್ಶಾಸ್ತಿಸ್ಯಾಭವಜ್ಜೀವಃ ಸ್ವರೋ ದೇಹಃ ಉದಾಹೃತಃ. ಊಷ್ಮಾಣ-ಮಿಂದ್ರಿಯಾಪ್ಯಾಹುಃ ಅಂತಸ್ಥಾ ಬಲಮಾತ್ಮನಃ. ಸ್ವರಾಃ ಸಪ್ತ ವಿಹಾರೆಣ ಭವಂತಿ ಸ್ಮ ಪ್ರಜಾಪತೇಃ" ಭಾಗಂ ೩-೧೨-೪೬, ೪೭.

**ಊಷ್ಮಾಗಮ ಉಷ್ಮಾಗಮ** (ಪುಂ) ಗ್ರೀಷ್ಮಯುತು, ಬೇಸಿಗೆ ಕಾಲ. ಊಷ್ಮಣ ಆಗಮೋತ್ರ.

**ಊಹ-ವಿತರ್ಕ** (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) ಊಹತೇ ಊಹತೇ ಊಹಂತೇ. ಊಹಾಶ್ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಊಹಿತಾ. ಊಹಿಷ್ಯತೇ. ಊಹತಾಮ್. ಔಹತ. ಊಹತ. ಊಹಿಷೀಷ್ಠ. ಔಹಿಷ್ಠ. ಔಹಿಷ್ಯತ. ಉಹಿಸು, ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಅರ್ಥವನ್ನು ನಿರ್ಣಯಿಸು.

ಕರ್ಮಣಿಃ-ಊಹತೇ. ಊಹತಾಮ್. ಔಹತ. ಊಹತ. ಔಹಿ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿವಿಃ-ಊಹಯತಿ, -ತೇ. ಊಹಯಾಶ್ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಊಹಯಿತಾ. ಊಹಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ. ಊಹಯತು, -ತಾಮ್. ಊಹಾತ್. ಊಹಯಿಷೀಷ್ಠ ಇತ್ಯಾದಿ.



ಕೃತು:—ಋಹಿತವ್ಯಮ್ | ಋಹನೀಯಮ್ | ಋಹಮ್ | ಋಹಿತಃ |  
ಋಹಿತವಾನ್ | ಋಹಮಾನ್ | ಋಹಿಷ್ಯಮಾನ್ | ಋಹಿತುಮ್ |  
ಋಹಿತಮ್ | ಋಹನಮ್, ಋಹಾ | ಋಹಿತವಾ | ಸಮುಹ |  
ಋಹಮೂಹಮ್ | ಋಹಿತವೋಹಿತವಾ |

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದಂಟಾ  
ಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:—

- (1) ಅಪ + ಋಹ = ಅಪೋಹತಿ | ತಳ್ಳಿಹಾಕು, ತ್ಯಜಿಸು.  
ಅಪೋಹಃ | “ಸರ್ವಾನ್ ರಸಾನಪೋಹೇತ ಕೃತಾನ್ ಚ ತಿಲೈಃ ಸಹ”  
ಮನುಂ ೧೦-೮೬ | “ಅಪೋಹ್ಯ ರಾಮಂ ಕಸ್ಮಾದಿ ದಾರಶಯೈ  
ತ್ವಯಾ ಕೃತಮ್” ರಾಮಾಂ | “ಅಪೋಹದ್ವಾಣವರ್ಷ ತದ್ಗಲ್ಲೇ  
ರಾಮೋ ನಿರಾಕುಲಃ” ಭट्टಿಂ ೧೭-೮೩ |
- (2) ಪ್ರ + ಋಹ = ಪ್ರೋಹತಿ | ಕಡೆಗೆ ಒಯ್ಯು, ಸ್ಥಳಾಂತರಕ್ಕೆ ಸಾಗಿಸು.  
ಪ್ರೋಹಃ |
- (3) ಪ್ರತಿ + ಋಹ = ಪ್ರತ्यूಹತಿ | ಪ್ರತ्यूಹಃ | ಪ್ರತ्यूಹ | 1. ಮೇಲು  
ಗಡೆ ಇಡು, ಮೇಲೆ ಇರಿಸು. 2. ಅಡ್ಡಿಮಾಡು,  
ತಡೆಹಾಕು.
- (4) ವಿ + ಋಹ = ವ्यूಹತಿ | ವ्यूಹಃ | ವ्यूಹ | 1. ಒಟ್ಟು  
ಗೂಡಿಸು, ಸೇರಿಸು, ಗುಂಪುಕಟ್ಟು. 2. ಸೇನೆಗಳನ್ನು  
ಒಂದು ವ್ಯವಸ್ಥಿತ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲಿಸು. 3. ವಿಭಜಿಸು,  
ಪ್ರತ್ಯೇಕಿಸು. “ಋಷಿಂ ಸೀಮಂತಂ ವ्यूಹತಿ” | “ಸಹತಾನ್  
ಯೋಧೇದಲ್ಪಾನ್ ಕಾಮಂ ವಿಸ್ತಾರಯೇದ್ಭೂನ್ | ಸೂಚ್ಯಾ ವಜ್ರೇಣ ಚೈವತಾನ್  
ವ्यूಹ್ಯ ವ्यूಹೇನ ಯೋಧೇತ್” ಮನುಂ ೭-೧೯೧ | “ವ्यूಹಃ  
ಸ್ಯಾದ್ವಲವಿನ್ಯಾಸೇ ಬೃಂದೇಽಪಿ” ನಾನಾರ್ಯರಂ |
- (5) ಸಮ್ + ಋಹ = ಸಮೂಹತಿ | ಸಮೂಹಃ | ಸಮುಹ | ಒಟ್ಟು  
ಗೂಡಿಸು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸು, ಗುಂಪುಕಟ್ಟು.
- (6) ಪರಿ + ಸಮ್ + ಋಹ = ಪರಿಸಮೂಹತಿ | ಪರಿಸಮುಹ |  
ತಾರಿಸು, ಒರಿಸು, ಸುತ್ತಲೂ ಶುದ್ಧಿಮಾಡು. “ವೇದಿ  
ಪರಿಸಮುಹ” |

**ಋಹ ಉಹ** (ಪುಂ) 1. ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಅರ್ಥವನ್ನು ನಿರ್ಣಯಿಸುವಿಕೆ, ವಿಮರ್ಶಿಸಿ ಹೇಳುವಿಕೆ, ಉಹ, ಕಲ್ಪನೆ, ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆ. ಋಹ (ವಿತರ್ಕ) ಭಾವೇ “ಋ” (೩-೩-೧೮) |  
2. ಇದು ಈ ರೀತಿಯದೇ ಅಥವಾ ಬೇರೆ ರೀತಿಯದೇ ಎಂಬ ಸಂದೇಹ, ಎಂಟುವಿಧ ಬುದ್ಧಿಯ ಗುಣಗಳಲ್ಲೊಂದು.

**ಬುದ್ಧಿಯ ಎಂಟು ಗುಣಗಳು:**— (1) ಶುಭ್ರಾ ಜನ್ಮಾಂತರ ವಾಸನೆಯಿಂದ ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕೇಳಬೇಕೆಂಬ ಅಪೇಕ್ಷೆ. (2) ಶ್ರವಣಮ್ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಕೇಳುವಿಕೆ. (3) ಗ್ರಹಣಮ್ ಕೇಳಿದುದನ್ನು ಸರಿಯಾಗಿ ಗ್ರಹಿಸಿ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. (4) ಧಾರಣಮ್ ತಿಳಿದುಕೊಂಡುದನ್ನು ಮನದಟ್ಟು ಮಾಡಿ

ಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. (5) ಋಹಃ ಇದು ಹೀಗೆಯೇ ಅಥವಾ ಬೇರೆ ರೀತಿಯದೇ ಎಂಬ ಸಂದೇಹ. (6) ಅಪೋಹಃ ವಿಮರ್ಶಿಸಿ ಕೆಟ್ಟುದನ್ನು ಬಿಡುವುದು. (7) ಅರ್ಥವಿಜ್ಞಾನಮ್ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಒಳ್ಳೆಯದು ಕೆಟ್ಟದ್ದು ಎಂಬ ನಾನಾವಿಧ ಜ್ಞಾನ, ಮತ್ತು (8) ತತ್ವಜ್ಞಾನಮ್ ಪರಮಾರ್ಥ ಜ್ಞಾನ. ಕಾಮಂ ನಿಯಂ ೪-೨೨ | ಭಾವೇ “ಋ” (೩-೩-೧೮) | 3. ಅರ್ಥಪೂರ್ತಿಗಾಗಿ ಬೇಕಾದ ಅಧಿಕವಾದ ಪದವನ್ನು ಸೇರಿಸುವಿಕೆ, ಅಧ್ಯಾಹಾರ. “ಅಧ್ಯಾಹಾರಸ್ತಕಂ ಋಹಃ” ಅಮಂ | 4. ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸುವಿಕೆ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸುವಿಕೆ. 5. (ಮೀಮಾಂಸಕರ ಮತದಲ್ಲಿ) “ಪ್ರಕೃತಿವದ್ವಿಕೃತಿಃ ಕರ್ತವ್ಯಾ” ಎಂಬ ಒಂದು ನ್ಯಾಯ, ಪ್ರಕೃತಿಯಾಗದಂತೆ ವಿಕೃತಿಯಾಗುವನ್ನೂ ನಡೆಸಬೇಕೆಂಬ ಒಂದು ನ್ಯಾಯ. ಹೋಮಮಂತ್ರದಲ್ಲಿ ಅನನ್ವಿತವಾದ ವಿಭಕ್ತಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿ ಅನ್ವಯ ಯೋಗ್ಯವಾದ ವಿಭಕ್ತಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಬದಲಾಯಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು ಉಹವೆನಿಸುವುದು. “ಅಗ್ನये त्वा जुष्टं निर्वपामि” ಎಂಬಂತೆ “ಸೂರ್ಯ ಚಹಂ ನಿರ್ವಪೇತ್ ಬಹುವರ್ಚಸಕಾಮಃ” ಎಂಬಲ್ಲಿ “ಸೂರ್ಯ ತ್ವಾ ಜುಷ್ಟಂ ನಿರ್ವಪಾಮಿ” ಎಂದು ಅನ್ವಯ ಯೋಗ್ಯವಾದ ವಿಭಕ್ತಿಯ ಬದಲಾವಣೆಯು ಉಹವು.

**ಋಹನ ಉಹನ** (ನಂ) ಉಹಿಸುವಿಕೆ, ಅನುಮಾನಪಡುವಿಕೆ, ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಿಸುವಿಕೆ, ಕಲ್ಪನೆ. ಋಹ (ವಿತರ್ಕ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) |

**ಋಹನೀಯ ಉಹನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ತರ್ಕಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ, ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ, ವಿಮರ್ಶಿಸಲ್ಪಡುವ. ಕಲ್ಪಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಅಧ್ಯಾಹಾರಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಅರ್ಥಪೂರ್ತಿಗಾಗಿ ಹೊಸದಾಗಿ ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವ (ಪದ). ಋಹ (ವಿತರ್ಕ) ಅರ್ಹಾದೌ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) |

**ಋಹಮಾನ್ ಉಹಮಾನ** (ವಿಂ) ಉಹಿಸುತ್ತಿರುವ, ತರ್ಕಿಸುತ್ತಿರುವ, ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಕಲ್ಪಿಸುತ್ತಿರುವ. ಋಹ (ವಿತರ್ಕ) “ಶಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪) |

**ಋಹಾ ಉಹಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉಹ, ಕಲ್ಪನೆ. 2. ಅನುಮಾನ. 3. ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆ. 4. ವಿಮರ್ಶೆ. ಋಹ (ವಿತರ್ಕ) “ಋಃ” (೩-೩-೧೦೩) |

**ಋಹಿತ ಉಹಿತ** (ನಂ) 1. ಉಹ, ಕಲ್ಪನೆ, ತರ್ಕ. ಋಹ (ವಿತರ್ಕ) ಭಾವೇ “ಋಃ” (೩-೩-೧೧೪) | 2. ಉಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ನಿರ್ಣಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಲ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಮರ್ಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಋಹ ಕರ್ಮಂ “ಋಃ” (೩-೨-೧೦೨) |

**ಋಹಿತವತ್ ಉಹಿತವತ್** (ವಿಂ) ಉಹಿಸಿರುವ, ತರ್ಕಿಸಿರುವ, ಕಲ್ಪಿಸಿರುವ. ಋಹ (ವಿತರ್ಕ) “ಋವತ್” (೩-೨-೧೦೨) |



ಋಹಿತವ್ಯ ಉಹಿತವ್ಯ (ವಿಂ) "ಋಹಿಣೀ" ಪದದ ಅರ್ಥ.  
ಋಹ (ವಿತರ್ಕ) "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೬)।

ಋಹಿಣೀ ಉಹಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂರ್ವಕ, ಬರಲು, ಕಸಬರಿಕೆ.  
ಋಹ (ವಿತರ್ಕ) "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। "ಙೀಪ್"  
(೪-೧-೪)।

ಋಹ ಉಹ್ಯ (ವಿಂ) 1. ತರ್ಕಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ,  
ವಿಮರ್ಶಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ಅಧ್ಯಾಹಾರಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ, ಅರ್ಥಪೂರ್ತಿ  
ಗಾಗಿ ಹೊಸದಾಗಿ ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವ. ಋಹ (ವಿತರ್ಕ)  
"ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)।

ಇತಿ "ಋ" ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್।

## ಋ

ಋ ಯ ಇದು ವರ್ಣಮಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಏಳನೆಯ ವರ್ಣ (ಅಕ್ಷರ).  
ಇದು ಅಭ್ಯಂತರ ವಿವೃತ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಮೂರ್ಧ  
ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಒಂದು ಸ್ವರ ವರ್ಣ. ಉದಾತ್ತ,  
ಅನುದಾತ್ತ ಮತ್ತು ಸ್ವರಿತಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಭೇದಗಳುಳ್ಳ  
ಈ ಹ್ರಸ್ವ "ಋ" ಕಾರವು ಪುನಃ ಅನುನಾಸಿಕ ಮತ್ತು  
ಅನನುನಾಸಿಕಗಳೆಂಬ ಭೇದದಿಂದ ಒಟ್ಟು ಆರು ವಿಧ  
ವಾಗುವುದು. ವಿವೃತಮೂಷ್ಮಣಾಂ ಸ್ವರಾಣಾಂ ಚ। ಋದ್ವರಾಣಾಂ  
ಮೂರ್ಧಾ। ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಋ ಯ (ಪುಂ) 1. ಗಜ, ಆನೆ. 2. ಶೈಲ, ಬೆಟ್ಟ.  
3. ಬುದ್ಧಿಯ ಭೇದ. 4. ಸ್ವಭಾವ. 5. ಭಾವಮೈದುನ,  
ಪತಿಯ ಸಹೋದರ, ಗಂಡನ ಒಡಹುಟ್ಟಿದವನು.  
6. ಸ್ವರ್ಗಲೋಕ. 7. ದೇವತೆಗಳ ಶತ್ರು. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
8. ನದಿ, ಹೊಳೆ. 9. ಅದಿತಿ, ದೇವತೆಗಳ ತಾಯಿ.  
10. ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. "ಋಕಾರ: ಕುಂಜರೇ ಶೇಲೇ ಧೀಮೇದೇ  
ದೇವಮಾತರಿ। ಭಾವೇ ದೇವರಿಪೌ ನದಾಂ ಸುರಾಣಾಂ ದೇವರೇ ದಿವಿ"  
ನಾನಾರ್ಥರಂ। (ಅವ್ಯಂ) 11. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ.  
12. ವಾಕ್ಯ. "ಋ ಕುತ್ಸಾಣಾಂ ಚ ವಾಕ್ಯೇ ಚ ದೇವಮಾತಯ-  
ನವ್ಯಯಮ್" ಹೇಮಂ। 13. ಪರಿಹಾಸ್ಯ, ನೋಡಿ ನಗುವಿಕೆ,  
ಅಣಕಿಸುವಿಕೆ. 14. ಸಂಬೋಧನೆ.

ಋ-ಗತೌ ಪ್ರಾಪಣೇ ಚ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ)

೧. ಋಚ್ಛತಿ ಋಚ್ಛತಃ ಋಚ್ಛಂತಿ। ೨. ಆರ ಆರತುಃ  
ಆರುಃ। ೩. ಅರ್ತಾ ಅರ್ತಾರೌ ಅರ್ತಾರಿಃ। ೪. ಅರಿಷ್ಯತಿ।  
೫. ಋಚ್ಛತುಃ। ೬. ಆಚ್ಛತ್। ೭. ಋಚ್ಛೇತ್। ೮. ಅರ್ಯಾತ್।  
೯. ಆರ್ಷೀತ್। ೧೦. ಆರಿಷ್ಯತ್। 1. ಹೋಗು, ಹೊಂದು,

ತಲುಪು. "ಆಚ್ಛನ್ ವಾಮಂ ಮೃಗಾಃ ಕೃಷ್ಣಾಃ ಶಸ್ತ್ರಾಣಾಂ  
ವ್ಯಸ್ಮರನ್ ಭಟಾಃ" ಭट्टಿಂ ೧೭-೧೦। 2. ಪಡೆ, ಹೊಂದು,  
ಸಂಪಾದಿಸು. "ಶಸ್ತ್ರೀಶ್ಯಾಮೇರಂಶುಭಿರಾಶು ದ್ರುತಮಮ್ಭಕ್ಷಾಢ್ಯಾ-  
ಮಚ್ಛಾಮಚ್ಛತಿ ನೇಲಿಸಲಿಲಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೪-೪೪।

ಕರ್ಮಣಿ :—ಅರ್ಯಂತೆ। ಆರೆ। ಆರಿತಾ, ಅರ್ತಾ। ಆರಿಷ್ಯತೆ,  
ಅರಿಷ್ಯತೆ। ಅರ್ಯಂತಾಂ। ಆರ್ಯತ। ಅರ್ಯಂತೆ। ಆರಿಷೀಷ್ಠ,  
ಋಷೀಷ್ಠ। ಆರಿ। ಆರಿಷ್ಯತೆ।

ಣಿಚಿ :—ಅರ್ಪಯತಿ, -ತೆ। ಅರ್ಪಯಾಂಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ-ಬಭೂವ,  
-ಆಸ। ಅರ್ಪಯಿತಾ। ಅರ್ಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೆ। ಅರ್ಪಯತುಃ, -ತಾಂ।  
ಅರ್ಪಯಿಷ್ಯತುಃ, ಅರ್ಪಯಿಷ್ಯತುಃ।

ಸನಿ :—ಅರಿಷ್ಯತಿ। ಅರಿಷ್ಯಾಂಚಕಾರ, -ಬಭೂವ,  
-ಆಸ। ಅರಿಷ್ಯಿತಾ। ಅರಿಷ್ಯತುಃ।

ಕೃತು :—ಅರ್ತವ್ಯಮ್। ಅರಣಿಯಮ್। ಅರ್ಯಃ ಸ್ವಾಮೀ  
ವೈಶ್ಯೋ ವಾ। (ಯಜಮಾನ ಅಥವಾ ಪೃಶ್ಠ). ಆರ್ಯಃ ಪ್ರಾಪ್ತವ್ಯೋ  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣಃ। ಋಣಮ್ (ಸೂಲ), ಋತಮ್ (ಸತ್ಯ). ಋತವಾನ್।  
ಋಚ್ಛನ್। ಋಚ್ಛಂತಿ। ಸಮಚ್ಛಮಾನಃ "ಸಮೋ ಗಮ್ಯಚ್ಛಿ-  
ಮ್ಯಾಮ್"। ಅರ್ತುಮ್। ಋತಮ್। ಅರಣಮ್। ಋತ್ವಾ।  
ಸಮೃತ್ಯ। ಆರಮ್ ಆರಮ್। ಋತ್ವಾಋತ್ವಾ। "ಋ"  
ಧಾತುವಿಗೆ "ಸಮ್" ಉಪಸರ್ಗವು ಸೇರಿದರೆ  
ಆತ್ಮನೇಪದಿಯಾಗುವುದು. ಸಮಚ್ಛತೆ। ಸಮಾರೆ। ಸಮರ್ತಾ  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಋ-ಗತೌ (ಜುಹೋಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) ಇತಿ। ಆರ।  
ಅರ್ತಾ। ಇರ್ಯತುಃ। ಇರ್ಯಾತ್। ಅರ್ಯಾತ್। ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಹೋಗು,  
ಚಲಿಸು. 2. ತಲುಪು. ಕರ್ಮಣಿ ಣಿಚಿ ಕೃತು ಚ ಮ್ವಾದಿ  
"ಋ" ಧಾತುವಿನಂತೆ ರೂಪಗಳಾಗುವುದು.



ಶ್ರವಣ ಯಕ್ (ನಂ) ಧನ. ಹಣ. ಶ್ರವ (ಸ್ತುತೌ)  
“ಯಕ್” ಬಾಹುಂ। “ದ್ರವ್ಯ ವಿದ್ವಾಂಸ್ವಾಪತೇಯಂ ರಿಕ್ಯಮುಕ್ಯಂ  
ಧನಂ ವಸು” ಅಮಂ।

ಶ್ರವಣಗ್ರಾಹ ಯಕ್ ಗ್ರಾಹ (ವಿಂ) ದಾಯಾದ. ದಾಯ  
ವನ್ನು ಹೊಂದತಕ್ಕವನು, ಭಾಗ ಪಡೆಯಲು ಹಕ್ಕುದಾರ.  
ಶ್ರವಣಂ ಗೃಹ್ಣಾತಿ—ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) “ಅನ್” (೩-೨-೧)।  
“ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩)। -ಗ್ರಾಹಕಃ—ಗ್ರಾಹಕಃ. ಶ್ರವಣಸ್ಯ  
ಗ್ರಾಹಕಃ।

ಶ್ರವಣಗ್ರಾಹಿನ್ ಯಕ್ ಗ್ರಾಹಿನ್ (ವಿಂ) ದಾಯಾದ.  
ದಾಯವನ್ನು ಹೊಂದತಕ್ಕವನು, ಭಾಗ ಪಡೆಯಲು ಹಕ್ಕು  
ದಾರ. ಶ್ರವಣಂ ಗೃಹ್ಣಾತಿ—ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) “ಗಿಹಿನ್”  
(೩-೨-೭೮)। ಸ್ತ್ರೀಯಾ “ಡಿಪ್” (೪-೧-೫)। -ಗ್ರಾಹಿಣಿ  
-ಗ್ರಾಹಿಣೀ.

ಶ್ರವಣನ್ ಯಕ್ (ವಿಂ) ಹಣವಂತ, ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ,  
ಧನಿಕ. ಶ್ರವಣಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇಹಿನ್” (೫-೨-೧೧೫)।  
ಸ್ತ್ರೀಯಾ “ಡಿಪ್” (೪-೧-೫)। ಶ್ರವಣಿನಿ ಯಕ್ ಸೀ.

ಶ್ರವಣ ಯಕ್ (ಪುಂ) 1. ಬೆಳ್ಳುಕ, ಕರಡಿ. ಶ್ರವಣೋತಿ—  
ಶ್ರವಣ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। ಶ್ರವಣಯತೆ  
ಗಹನಮನೇನ—ಶ್ರವಣಿ (ಗತೌ) “ಸಃ” (೩-೩-೬೬) ವಾ।  
“ವೃಕೋ ಮೃಗೇಭ್ಯಾ ವ್ಯಾಧೋಽಶ್ವಂ ಫಲಮೂಲಂ ತು ಮಕರಃ। ಸ್ತ್ರೀಮೃಗಃ  
ಸ್ತೋಕಕೋ ವಾರಿ ಯಾನಾನ್ಯುಷ್ಠಃ ಪಶೂನಜಃ” ಮನುಂ ೧೨-೬೭।  
2. ಒಂದು ಪರ್ವತ. ಸಪ್ತಕುಲಪರ್ವತಗಳಲ್ಲೊಂದು.  
“ಮಹೇಂದ್ರೋ ಮಲಯಃ ಸಹ್ಯಃ ಶುಕ್ತಿಮಾನ್ ಶ್ರವಣಪರ್ವತಃ। ವಿನ್ಧ್ಯಶ್ಚ  
ಪಾರಿಯಾತ್ರಶ್ಚ ಸಪ್ತೇ ಕುಲಪರ್ವತಾಃ”। 3. ಶೋಣಿತ  
ವೃಕ್ಷ, ಹೆಮ್ಮರ. “ಶೋಣಿತಾಕಶುಕನಾಸಕ್ತದೀರ್ಘವೃಂತಕುಟಗ್ರತಾಃ”  
ಅಮಂ। 4. ಅಜಮೀಡರಾಜನ ಮಗ. “ಧೂಮಿನ್ಯಾ ಸ  
ತಯಾ ದೇವ್ಯಾ ತಜಮಿಹಃ ಸಮೀಯಿವಾನ್। ಶ್ರವಣಂ ಸಂಜನಯಾಮಾಸ  
ಧೂಮ್ರವರ್ಣಂ ಸುದರ್ಶನಮ್। ಶ್ರವಣಾತ್ ಸಂವರಣೋ ಜಜ್ಞೇ ಕುರುಃ ಸಂವರಣಾ-  
ತ್ತಯಾ” ಹರಿವಂ। 5. ಚಂದ್ರವಂಶದ ದೇವತಾಧಿರಾಜನ  
ಮಗ. (ನಂ) 6. ತಾರೆ, ಚುಕ್ಕಿ, ನಕ್ಷತ್ರ. “ಪೂರ್ವಾ ಸಂಖ್ಯಾಂ  
ಜಪಂತಿಷ್ಟೇತ್ ಸಾವಿತ್ರಿಮಾರ್ಕದರ್ಶನಾತ್। ಪಶ್ಚಿಮಂ ತು ಸಮಾಸೀನಃ  
ಸಂಖ್ಯಗೃಹ್ಯವಿಭಾವನಾತ್” ಮನುಂ ೨-೧೦೧। 7. ರಾಶಿ.  
[ನಕ್ಷತ್ರಗಳು ಸಂಚರಿಸುವುದರಿಂದ ರಾಶಿಗೂ ಯಕ್ಷವೆಂದು  
ಹೆಸರು.] ಮೇಷವೃಷಭಮೊದಲಾಗಿ ರಾಶಿಗಳು ಹನ್ನೆರಡು.  
[ಎವರಕ್ಕೆ “ರಾಶಿ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] “ಪ್ರಯಯಾತಿವೇಶು  
ವಸನ್ ಶ್ರವಣಕುಲೇಷು ಸಃ। ದಕ್ಷಿಣಾಂ ದಿಶಮುಕ್ತೇಷು ವಾರ್ಷಿಕೇಷ್ವಿವ  
ಭಾಸ್ಕರಃ” ರಘುಂ ೧೨-೨೫। 8. ನಕ್ಷತ್ರ, ಅಶ್ವಿನಿ ಭರಣಿ  
ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು (27 ಅಭಿಜಿತ್ ಸೇರಿ 28)

ನಕ್ಷತ್ರಗಳು. [ಎವರಕ್ಕೆ “ನಕ್ಷತ್ರ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಶ್ರಾ-ಶ್ರಾ. 1. ಹೆಣ್ಣು ಕರಡಿ. 2. ಉತ್ತರ  
ದಿಕ್ಕು. ನಿಹಂ।

ಶ್ರವಣಗ್ರಾಹ ಯಕ್ ಗ್ರಾಹ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಾಲುಗುಂಬಳ.  
2. ಅನಂತನಗೊಂಡೆಸೊಪ್ಪು. ಶ್ರವಣಾನ್ ಶ್ರವಣಸದೃಶಾನ್  
ಹಿಸಾನ್ ಗಂಧಯತೇ ಅದಯತಿ—ಗಂಧ (ಅದೇನೆ) “ಕಃ”  
(ವಾಂ ೩-೨-೫)। “ಕನ್” (೫-೩-೭೫)। -ಗಂಧಿಕಾ  
-ಗಂಧಿಕಾ.

ಶ್ರವಣಚಕ್ರ ಯಕ್ ಚಕ್ರ (ನಂ) ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಗುಂಪು. ಚಕ್ರ  
ಕಾರವಾದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಸಮೂಹ. ಶ್ರವಣಾಂ ಚಕ್ರಮ್।

ಶ್ರವಣ ಯಕ್ ರ (ಪುಂ) 1. ಯಕ್ಷಿಕ್ಕು. ಶ್ರವಣಿ (ಗತೌ)  
“ಕಸರನ್” (೩-೩-೭೫)। 2. ಕಂಟಕ, ಮುಳ್ಳು.  
3. ಜಲಾಶಯ, ನೀರು ನಿಲ್ಲುವ ಸ್ಥಳ. “ಜಲಸ್ಥಾನೇತ್ವಶ್ಚ  
ಶ್ರವಣಿ” ವೇಜಂ। (ನಂ) 4. ನೀರಿನ ಧಾರೆ, ಮಳೆಯ  
ಹನಿ. “ಶ್ರವಣಂ ವಾರಿಧಾರಾಯಾಮೃಗಶ್ಚಶ್ಚಿವಿಜಿ ಸ್ಮೃತಃ”  
ಮೇದಿಂ।

ಶ್ರವಣಾನ್ ಯಕ್ ರಾಜ್, -ರಾಜ -ರಾಜ. (ಪುಂ) 1.  
ಚಂದ್ರ, ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಒಡೆಯ. ಶ್ರವಣಾಂ ರಾಜ್। ಶ್ರವಣಾಂ  
ರಾಜಾ ವಾ “ರಾಜ್” (೫-೪-೯೧)। 2. ಜಾಂಬವಂತ.

ಶ್ರವಣವತ್ ಯಕ್ ವತ್ (ಪುಂ) ನರ್ಮದಾ ನದಿಯ ತೀರದಲ್ಲಿ  
ಇರುವ ಒಂದು ಬೆಟ್ಟ. ಶ್ರವಣಃ ಬಾಹುಲ್ಯೇನ ಸನ್ಯತ್ರ “ಮತುಪ್”  
(೫-೨-೯೪)। ಈ ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಕರಡಿಗಳು ಹೇರಳವಾಗಿ  
ಇರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. “ನಿಃಶೇಷವಿಕ್ಷಾಲಿತಧಾತುನಾಪಿ  
ವಪ್ರಕ್ರಿಯಾಮೃಗವತಸ್ತಪೇಷು” ರಘುಂ ೫-೪೪।

ಶ್ರವಣಸಂಹಿತಾ ಯಕ್ ಸಂಹಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯುಗ್ಮೇದ ಸಂಹಿತೆ.  
[ವೇದವು ಮಂತ್ರ ಮತ್ತು ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಎಂದು ಎರಡು  
ಭಾಗ. ಮಂತ್ರಾತ್ಮಕ ಭಾಗವು ಸಂಹಿತೆ. ಉಳಿದ ಭಾಗವು  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣ.]

ಶ್ರವಣಸಾಮ ಯಕ್ ಸಾಮ (ನಂ ದ್ವಿವಂ) ಯುಗ್ಮೇದ ಮತ್ತು  
ಸಾಮವೇದ. ಶ್ರವಣಂ ಸಾಮಂ ವ “ಅಚ್” (೫-೪-೭೭)।  
ನಿಪಾಂ।

ಶ್ರವಣವಿಧಾನ ಯಕ್ ವಿಧಾನ (ನಂ) ಯುಗ್ಮೇದ ಮಂತ್ರಗಳಿಂದ  
ಕರ್ಮಾಚರಣೆಯನ್ನು ವಿಧಿಸುವ ಗ್ರಂಥ. ಶ್ರವಣಾ ಶ್ರವಣೇನ  
ಕರ್ಮಣೋ ವಿಧಾನಂ ಯತ್।

ಶ್ರವಣ ಯಕ್ (ಪುಂ) ನಾಲ್ಕು ವೇದಗಳಲ್ಲೊಂದು;  
ಯುಗ್ಮೇದವು ದೇವತೆಗಳ ಸ್ತೋತ್ರರೂಪವಾದುದು. ಇದು  
ಸಂಹಿತೆ (ಮಂತ್ರ) ಮತ್ತು ಬ್ರಾಹ್ಮಣಗಳೆಂದು ಎರಡು  
ಭಾಗಗಳನ್ನೊಳಗೊಂಡಿರುವುದು. ಮಂತ್ರಾತ್ಮಕ ಭಾಗವು



ಸಂಹಿತೆ. ಉಳಿದ ಭಾಗವು ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಮುಗ್ಧೇದವು ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನವಾದುದು. “ಅಗ್ನಿವಾಯುರವಿಮ್ಯಸ್ತು ತ್ರಯಂ ಬ್ರಹ್ಮ ಸನಾತನಮ್ | ದುದೋಹ ಯಜ್ಞಸಿದ್ಧಿಫಲಮುಪಯುಕ್ತಮ್ | ಸಾಮ-ಲಕ್ಷಣಮ್” ಮನುಂ ೧-೨೩ | “ಅಗ್ನೇಶ್ವರೇದೋ ವಾಯುರೇವೇದ ಆದಿತ್ಯಾತ್ಸಾಮವೇದಃ” ಶ್ರುತಿಃ | ಮುಗ್ಧೇದವು ಹತ್ತು ಮಂಡಲಗಳಾಗಿ ಅಥವಾ ಎಂಟು ಅಪ್ಪಕಗಳಾಗಿ ಭಾಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. ಈ ಹತ್ತು ಮಂಡಲಗಳಲ್ಲಿರುವ ಅನುವಾಕ ಮತ್ತು ಸೂಕ್ತಗಳ ಸಂಖ್ಯೆ:—

| ಮಂಡಲ | ಯಾವ ಮುಷಿದ್ಯತ್ಸ      | ಅನುವಾಕಗಳು | ಸೂಕ್ತಗಳು |
|------|---------------------|-----------|----------|
| 1.   | ಶತರ್ಚನ ಮುಷಿ         | 24        | 191      |
| 2.   | ಶೌನಕ-ಗೃತ್ಸಮದ ಮುಷಿ   | 4         | 43       |
| 3.   | ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮುಷಿ    | 5         | 62       |
| 4.   | ವಾಮದೇವ ಮುಷಿ         | 5         | 58       |
| 5.   | ಆತ್ರೇಯಾದಿ ಮುಷಿ      | 6         | 87       |
| 6.   | ಭರದ್ವಾಜ ಮುಷಿ        | 6         | 75       |
| 7.   | ವಸಿಷ್ಠ ಮುಷಿ         | 6         | 104      |
| 8.   | ಮೇಧಾತಿಥ್ಯಾದಿ ಮುಷಿ   | 10        | 103      |
| 9.   | ವೈಶ್ವಾಮಿತ್ರಾದಿ ಮುಷಿ | 7         | 114      |
| 10.  | ಅಪ್ಪತ್ರಿತಾದಿ ಮುಷಿ   | 12        | 191      |
|      |                     |           | 1028     |

ಈ ರೀತಿ ಮುಗ್ಧೇದದಲ್ಲಿ ಒಟ್ಟು 1028 ಸೂಕ್ತಗಳು ಇರುವುವು. ಅಪ್ಪಕಗಳ ವಿಭಾಗಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಒಂದೊಂದು ಅಪ್ಪಕ್ಕೂ 8 ಅಧ್ಯಾಯಗಳಂತೆ 64 ಅಧ್ಯಾಯಗಳಿರುವುವು. ಈ ವೇದಭಾಗವು ಯಜ್ಞದಲ್ಲಿ ದೇವತೆಗಳ ಆಹ್ವಾನಕ್ಕಾಗಿ ಉಪಯುಕ್ತವಾಗಿದೆ. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಮುಗ್ಧೇದ ಮಂತ್ರಗಳನ್ನು ಪಠಿಸುವವರಿಗೆ “ಹೋತೃ” ಎಂದು ಹೆಸರು. ಆಯುರ್ವೇದವು ಈ ವೇದದ ಉಪವೇದ.

**ಶ್ವ ಮುಚ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುಗ್ಧೇದ ಮಂತ್ರ. ಶ್ವಚ್ಯಂತೆ ಸ್ತುಯಂತೆ ದೇವಾ ಅನಯಾ—ಶ್ವಚ (ಸ್ತುತೌ) “ಕ್ವಿಪ್” | 2. ಭಂದೋಬದ್ಧವಾದ ಮಂತ್ರ, ವೃತ್ತನಿಯಮಕ್ಕೊಳಪಟ್ಟು ಪಾದವ್ಯವಸ್ಥೆಯಿರುವ ಮಂತ್ರ. ತುಮ್ಯಮಗ್ರೇ ಪರ್ಯವಹ-ನ್ಸೂರ್ಯಾ ಬಹತುನಾ ಸಹ | ಪುನಃ ಪತಿಮ್ಯೋ ಜಾಯಾಂ ದಾ ಅಗ್ನೇ ಪ್ರಜಯಾ ಸಹ | 3. ಸ್ತೋತ್ರ. 4. ಪೂಜೆ.

**ಶ್ವಚಿಕ ಮುಚೀಕ** (ಪುಂ) ಭೃಗುವಂಶದ ಜಮದಗ್ನಿಯ ತಂದೆ, ಪರಶುರಾಮನ ತಾತ; ಮುಚೀಕನು ತನ್ನ ಪತ್ನಿಯಾದ ಸತ್ಯವತಿಯ ಪತಿಭಕ್ತಿಗೆ ಮೆಚ್ಚಿ ಅವಳಿಗೆ ಪುತ್ರನು ಜನಿಸು

ವಂತೆ ಅನುಗ್ರಹಿಸಲಾಗಿ ಅವಳಲ್ಲಿ ಜಮದಗ್ನಿಯು ಜನಿಸುವನು.

**ಶ್ವಚೀಷ ಮುಚೀಷ** (ನಂ) ಹಿಟ್ಟು ಬೇಯಿಸುವ ಪಾತ್ರೆ. ಶ್ವಚ (ಸ್ತುತೌ) “ಇಷನ್” ಬಾಹುಂ | “ಶ್ವಚೀಷಂ ಪಿಷ್ಠ ಪಚನಮ್” ವೇಜಂ |

**ಶ್ವಚ್ಚರಾ ಮುಚ್ಚರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇಶ್ಯೆ, ಸೂಳೆ. ಶ್ವಚ್ಚತಿ ಪರಪುಷ್ಯಂ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ—ಶ್ವಚ್ಚ (ಗತೌ) “ಅರಃ” (ಛಂ ೩-೧೩೧) | “ಶ್ವಚ್ಚರಾ ವೇಶ್ಯಾ” ಸಿಂ ಕೌಂ |

**ಶ್ವಚಿಕ ಮುಚೀಕ** (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. 2. ಧೂಮ, ಹೊಗೆ. ಶ್ವಚ (ಗತೌ) “ಇಕನ್” (ಛಂ ೪-೨೨) |

**ಶ್ವಚೀಷ ಮುಚೀಷ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ನರಕ. “ಲೋಹ-ಶತ್ಕುಮೃಜಿಷಂ ಚ ಪನ್ಥಾನಂ ಶಾಲ್ಮಲೀ ನದೀಮ್” ಮನುಂ ೪-೯೦ | 2. ಸೋಮಲತೆಯ ರಸ. (ನಂ) 3. ಹಿಟ್ಟು ಬೇಯಿಸುವ ಪಾತ್ರೆ. ಅರ್ಜ (ಅರ್ಜನೆ) “ಇಷನ್” (ಛಂ ೩-೨೮) | “ಶ್ವಚೀಷಂ ಪಿಷ್ಠಪಚನಮ್” ಅಮಂ |

**ಶ್ವಜು ಮುಜು** (ವಿಂ) 1. ಸರಳವಾದ, ವಕ್ರವಲ್ಲದ, ಕುಟಲವಲ್ಲದ, ನೆಟ್ಟಗಿರುವ. ಅರ್ಜಯತಿ ಗುಣಾನ್—ಅರ್ಜ (ಅರ್ಜನೆ) “ಕ್ರುಃ” ಛಾತೌ: “ಶ್ವಜ” ಆದೇಶಶ್ಚ (ಛಂ ೧-೨೭) | “ಶ್ವಜವಸ್ತೇ ತು ಸರ್ವೇ ಸ್ಯುರವಣಾಃ ಸೌಮ್ಯದರ್ಶನಾಃ” ಮನುಂ ೨-೪೭ | 2. ಪ್ರಾಮಾಣಿಕವಾದ, ಕಪಟವಿಲ್ಲದ, ಸರಳ ಸ್ವಭಾವದ, ನೀತಿವಂತ. “ಶ್ವಜಂಶ್ಚ ವಿಶ್ವಾಸಕೃತಃ ಸ್ವಭಾವಾನ್ ಗೋಪಾಜ್ಞಾನಾನ್ ಮುಮುಕ್ಷುಃ ವिलोक्य” ಮಹಿಂ ೨-೧೫ | “ತುಮಾಂ ಸ ಪಶ್ಯನ್ ಶ್ವಜುನೈವ ಚಕ್ಷುಷಾ” ಕುಮಾಂ ೫-೩೨ | 3. ಉತ್ಪತ್ತಿಯಿಲ್ಲದ, ಹುಟ್ಟಿಲ್ಲದ. “ಆಶ್ರಮಾದಿ-ಭವೇ ಭವ್ಯೇಪ್ಯುತ್ಪತ್ತಿರಹಿತೇಷ್ಯಜುಃ” ವೇಜಂ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ವಾ “ಜಿಷ್” (೪-೧-೪೪) | —ಜಿಷಿ —ಜುಃ —ಜಿಷೀ —ಜುಃ | “ಶ್ವಜಿವಿ-ದೇವಾನೇರವತತ್ಯ ಕನ್ಧರಾಶ್ಚಲಾವಚೂಡಾಃ ಕಲಘರ್ಷರಾರವಃ” ಮಾಘಂ ೧೨-೧೮ |

**ಶ್ವಜುಕಾಯ ಮುಜುಕಾಯ** (ವಿಂ) ನೇರವಾದ ಮೈಯುಳ್ಳ, ವಕ್ರವಲ್ಲದ ದೇಹವುಳ್ಳ, ಬಗ್ಗಿಲ್ಲದ ಮೈಯುಳ್ಳ. ಶ್ವಜುಃ ಕಾಯೋ ಯಸ್ಯ | “ತಸ್ಮಿನ್ ಸ್ವಸ್ತಿ ಸಮಾಸೀನಃ ಶ್ವಜುಕಾಯಃ ಸಮಮ್ಯಸೇತ್” ಭಾಗಂ ೩-೨೮-೧ |

**ಶ್ವಜುಗ ಮುಜುಗ** (ಪುಂ) 1. ಬಾಣ. ಶ್ವಜು ಯಥಾ ತಥಾ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ಙಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) | (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ, ಸರಳ ಸ್ವಭಾವದ, ನೀತಿವಂತ.

**ಶ್ವಜುಗಾಮಿನ್ ಮುಜುಗಾಮಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಾಮಾಣಿಕವಾಗಿ ನಡೆಯುವ, ಸರಳತೆಯಿಂದ ವರ್ತಿಸುವ. 2. ನೆಟ್ಟಗೆ ಹೋಗುವ. ಶ್ವಜು ಯಥಾ ತಥಾ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ)



“ಗಿರಿ:” (೩-೨-೭೮) । ಸ್ತ್ರೀಯಾ “ಜಿಪ್” (೪-೧-೪) ।  
-ಗಾಮಿನೀ - ಗಾಮಿನೀ.

ಶೃಂಗತಾ ಯಜುತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸರಳತೆ, ಪ್ರಾಮಾಣಿಕತೆ.  
ಶೃಂಗೋರ್ವಿ: “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯) । 2. ನೇರವಾಗಿ  
ಇರುವಿಕೆ, ದೊಂಕಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. “ಶೃಂಗತಾ ವಕ್ತಾಂ ಪ್ರಾಪ  
ವಕ್ತಾ ಚ ತರ್ಜಾವಮ್” ಚಂ ರಾಂ । “ಶೃಂಗತಾಫಲಶುದ್ಧಿ-  
ಯೋಗಭಾಷಾಮ್” ಮಾಘಂ ೨೦-೯ । ಭಾವೇ “ತವ:”  
(೪-೧-೧೧೯) । ಶೃಂಗತ್ವಮ್ ಯಜುತ್ವಮ್.

ಶೃಂಗೀಕರಣ ಯಜುಕರಣ (ನಂ) 1. ನೆಟ್ಟಗೆ ಮಾಡು  
ವುದು, ದೊಂಕಾಗಿರುವುದನ್ನು ನೇರವಾಗಿ ಮಾಡುವಿಕೆ.  
(ವಿಂ) 2. ದೊಂಕಾಗಿರುವುದನ್ನು ನೆಟ್ಟಗೆ ಮಾಡುವ  
ಒಂದು ಸಾಧನ. ಅನುಜು: ಶೃಂಗ: ಕ್ರಿಯತೇಜೇನ-ಶೃಂಗ  
ಅಮೃತತಂ “ಚಿ:” (೪-೪-೪೦) । ದೀರ್ಘ: (೭-೪-೨೬) ।

ಶೃಂಗ ಯಜು (ಪುಂ) 1. ನಾಯಕ, ಯಜಮಾನ. ಶೃಂಗ  
(ಗತಿಸ್ಥಾನಾರ್ಜನೇಷು) “ರನ್” (೩ಂ ೨-೨೮) । (ವಿಂ)  
2. ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ, ಸರಳತೆಯಿಂದ ವರ್ತಿಸುವವನು, ಕಪಟ  
ವಿಲ್ಲದವನು.

ಶೃಂಗೀ ಯಜ್ವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸರಳ ಸ್ವಭಾವದ ಹೆಂಗಸು,  
ಕಪಟವಿಲ್ಲದ ಹೆಂಗಸು. 2. ನೇರವಾದ ಗತಿ, ಹಕ್ಕಿವಲ್ಲದ  
ಗಮನ.

ಶೃಂಗ ಯಜ (ನಂ) ಸಾಲ, ಕಡೆ. ಅಯತೇ-ಶೃ (ಗತೌ)  
“ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) । ನತ್ವಮ್ (೮-೨-೬೦) ।  
ನಿಪಾಂ । ಯಜವು ಲೌಕಿಕ ಮತ್ತು ಅಲೌಕಿಕವೆಂದು  
ಎರಡು ವಿಧ. ಮನುಷ್ಯನು ತನ್ನ ಕುಟುಂಬದ ಅವಶ್ಯ  
ಕತೆಯ ಪೂರೈಕೆಗಾಗಿ ಅಥವಾ ವಾಣಿಜ್ಯಾದಿ ನಿಮಿತ್ತವಾಗಿ  
ಧನಿಕನಿಂದ ಹಣವನ್ನು ಪಡೆಯುವುದೂ, ಧನಿಕನು ತಾನು  
ಕೂಡಿಟ್ಟಿರುವ ಹಣವು ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಲು ಬಡ್ಡಿಯ ಮೇಲೆ  
ಹಣವನ್ನು ಸಾಲವಾಗಿ ಕೊಡುವುದೂ ಲೌಕಿಕ ಯಜ  
ವೆನಿಸುವುದು. ಇಂತಹ ಯಜವನ್ನು ಹಿಂತಿರುಗಿಸುವುದ  
ರಿಂದಾಗಲೀ ಅದಕ್ಕೆ ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದಿದ್ದಲ್ಲಿ ಸಾಲಕೊಟ್ಟವನಲ್ಲಿ  
ಕೆಲಸಮಾಡಿಯಾಗಲೀ ತೀರಿಸಬೇಕು. “ಕರ್ಮಣಾಪಿ ಸಮಂ  
ಕುರ್ಯಾದಿನಿಕಾಯಾಧರ್ಮಣಿ: । ಸಮೋಜ್ಯಕೃಷ್ಣಜಾತಿ: ಸ್ತು ದಘಾ-  
ಚ್ಛೇಯಾಸ್ತು ತಚ್ಛನೈ:” ಮನುಂ ೮-೧೭೭ । ಇಂತಹ ಯಜವನ್ನು  
ಪಡೆದಿದ್ದಲ್ಲಿ ಅವನ ಮಗ ಮತ್ತು ಮೊಮ್ಮಗ ಇವರು  
ಮಾತ್ರ ತೀರಿಸಬೇಕು. “ಶೃಂಗಂ ಲೇಖ್ಯಕೃತಂ ದೇಯಂ ಪುರವೇಸ್ತ್ರಿಮಿರೇವ  
ತು” ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೯೨ । ಇದಲ್ಲದೆ ಮನುಷ್ಯನು ದೇವತೆಗಳು,  
ಮುಷಿಗಳು ಮತ್ತು ಪಿತ್ಯಗಳಿಗೂ ಯಜೆಯಾಗಿರುತ್ತಾನೆ.  
ಈ ಯಜಗಳನ್ನು ತೀರಿಸಿದ ಹೊರತು ಮೋಕ್ಷವಿಲ್ಲ.  
“ದೇವಾನಾಂ ಚ ಪಿತೃಣಾಂ ಚ ಶೃಂಗೀಣಾಂ ಚ ತಥಾ ನರ: ।

ಶೃಂಗವಾನ್ ಜಾಯತೇ ಯಸ್ಮಾತ್ಸನ್ಮೋಕ್ಷೇ ಪ್ರಯತೇಶ್ವರ:” ವಿಂ ಷಂ ।  
ದೇವಯಜವನ್ನು ಯಜ್ಞದಿಂದಾಗಲಿ ಅದಕ್ಕೆ ಅಶಕ್ತನಾಗಿದ್ದಲ್ಲಿ  
ಪೂಜೆ ಉಪವಾಸಾದಿಗಳಿಂದಾಗಲಿ ತೀರಿಸಬೇಕು. “ದೇವಾನಾ-  
ಮನುಷ್ಯೋ ಜನ್ತುರೈಶ್ಚೈವೇವ ಮಾನವ: । ಅಲ್ಪವಿತ್ತೇವ ಪೂಜಾಭಿ-  
ರೂಪವಾಸವ್ರತೇಸ್ತಥಾ” ವಿಂ ಷಂ । ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ (ನಿಯಮ  
ವೇದಾಧ್ಯಯನ), ಶಾಸ್ತ್ರಾಭ್ಯಾಸ, ತಪಸ್ಸುಗಳಿಂದ ಮುಷಿ  
ಯಜವನ್ನೂ, ಶ್ರಾದ್ಧಾಚರಣೆ ಮತ್ತು ಸಂತಾನದಿಂದ ಪಿತ್ಯ  
ಯಜವನ್ನೂ ತೀರಿಸಬೇಕು. “ಶ್ರಾದ್ಧೇನ ಪ್ರಜಯಾ ಚೈವ ಪಿತೃಣಾ-  
ಮನುಷ್ಯೋ ಭವೇತ್ । ಶೃಂಗೀಣಾಂ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯೇಣ ಶ್ರುತೇನ ತಪಸಾ ತಥಾ”  
ವಿಂ ಷಂ । “ಜಾಯಮಾನೋ ವೈ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ತ್ರಿಮಿಶ್ರಣೈ: ಶೃಂಗೀ  
ಭವತಿ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯೇಣ ಶೃಂಗೀಮ್ಯೋ ಯಜ್ಞೇನ ದೇವಮ್ಯ: ಪ್ರಜಯಾ  
ಪಿತೃಮ್ಯ:” ಶ್ರುತಿ: ।

ಶೃಂಗಗ್ರಾಹಿನ್ ಯಜುಗ್ರಾಹಿನ್ (ವಿಂ) ಸಾಲ ಮಾಡು  
ವವನು, ಸಾಲ ಕೊಳ್ಳುವವನು. ಶೃಂಗಂ ಗ್ರಾಹತಿ-ಗ್ರಹ  
(ಉಪಾದಾನೇ) “ಗಿರಿ:” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಶೃಂಗದಾತ್ ಯಜುದಾತ್ಯ (ವಿಂ) ಸಾಲ ಕೊಡುವವನು.  
ಶೃಂಗಸ್ಯ ದಾತಾ । ಸ್ತ್ರೀಯಾ - ದಾತಾ - ದಾತೃ:.

ಶೃಂಗದಾಸ ಯಜುದಾಸ (ಪುಂ) ತಾನು ಮಾಡಿದ ಸಾಲ  
ತೀರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗದೆ ಸಾಲ ತೀರ್ಪಿಗಾಗಿ ಸೇವೆ  
ಮಾಡುವ ಸೇವಕ. ಶೃಂಗಾತ್ ಮೋಚನೇನ ಕೃತೌ ದಾಸ: ।  
ಶೃಂಗಮೋಚನಾಯ ದಾಸತ್ವಮಸ್ಯುಪಗತ: ।

ಶೃಂಗಮಕ್ತುಣ ಯಜಮಕ್ತುಣ (ಪುಂ) ಜಾಮೀನುದಾರ,  
ಮತ್ತೊಬ್ಬನ ಸಾಲಕ್ಕೆ ಹೊಣೆಯಾಗಿರುವವನು. ಪರಕೃತಂ  
ಶೃಂಗಂ ಮಮೇವೇತಿ ಕೃಣತಿ-ಕೃಣ (ಶಬ್ದೋಪಕರಣಯೋ: ) “ಕ:”  
(೩-೧-೧೩೪) ।

ಶೃಂಗಮುಕ್ತ ಯಜಮುಕ್ತ (ವಿಂ) ಸಾಲ ತೀರಿಸಿದವನು,  
ಸಾಲದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಹೊಂದಿದವನು. ಶೃಂಗಾಮುಕ್ತ: ।

ಶೃಂಗಮುಕ್ತಿ ಯಜಮುಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಾಲದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ  
ಹೊಂದುವಿಕೆ, ಸಾಲ ತೀರಿಸುವಿಕೆ. ಶೃಂಗಾಮುಕ್ತಿ: ।

ಶೃಂಗಮೋಚನ ಯಜಮೋಚನ (ನಂ) 1. ಸಾಲದಿಂದ  
ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡುವಿಕೆ. ಶೃಂಗಾಮೋಚನಮ್ । (ವಿಂ)  
2. ಸಾಲದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡುವ. ಶೃಂಗಾಮೋಚಯತಿ-  
ಮುಕ್ತ (ಮೋಕ್ಷಣೇ) + ಗಿಚ್ “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಶೃಂಗಲೇಖ್ಯ ಯಜಲೇಖ್ಯ (ನಂ) ಸಾಲದ ಪತ್ರ, ಸಾಲ  
ತೆಗೆದುಕೊಂಡ ಬಗ್ಗೆ ಬರೆದುಕೊಡುವ ದಸ್ತವೇಜು.  
ಶೃಂಗಸೂಚಕಂ ಲೇಖ್ಯಮ್ ।

ಶೃಂಗಾಶಾನ ಯಜಾಶಾನ (ನಂ) ಸಾಲ ಕೊಟ್ಟು ಬಡ್ಡಿ ಸಮೇತ  
ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಶೃಂಗಸ್ಯ ಆಶಾನಮ್ ಗ್ರಹಣಮ್ । ಯಜಾ



ದಾನವು ಹದಿನೆಂಟು ವಿಧ ವಿವಾದಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯದು. ಸಾಲವನ್ನು (1) ಎಂತಹವನಿಗೆ ಕೊಡಬೇಕು. (2) ಎಂತಹವನಿಗೆ ಕೊಡಬಾರದು, (3) ಎಂತಹವನಿಂದ ಪಡೆಯಬೇಕು. (4) ಎಂತಹ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಕೊಡಬೇಕು. (5) ಯಾವ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಕೊಡಬೇಕು, (6) ಕೊಡುವುದು ಮತ್ತು (7) ಕೊಟ್ಟ ಸಾಲವನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಪಡೆಯುವುದು. ಈ ರೀತಿ **ಋಣಾದಾನವು** ಏಳುವಿಧ. “ಋಣಂ ದೇಯಮದೇಯಂ ಯೇನ ಯತ್ರ ಯಥಾ ಭವೇತ್ | ದಾನಗ್ರಹಣಭರ್ಮಾಶ್ಚ ಋಣಾದಾನಮಿತಿ ಸ್ಮೃತಮ್” | ಹೆಂಗಸರು, ಮಕ್ಕಳು, ಸೇವಕರಿಗೆ ಕೊಟ್ಟ ಸಾಲವು ಬರುವುದಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ಅವರಿಗೆ ಸಾಲ ಕೊಡಕೂಡದು. “ನ ಸ್ತ್ರೀಮ್ಯೋ ದಾಸವಾಲೇಮ್ಯಃ ಪ್ರದಕ್ಷಾತ್ ಕಿಂಚಿದ್ಧೃತಮ್ | ದಾತಾ ನ ಲಭತೇ ತತ್ ತು ತೇಮ್ಯೋ ದತ್ತಂ ತು ಯದಸ್ಯ” |

**ಋಣಾಂತಕ ಋಣಾಂತಕ** (೨೦) ಕುಜ, ಅಂಗಾರಗ್ರಹ. ಋಣಮಂತಯತಿ ನಾಶಯತಿ—ಅಂತಿ (ನಾಮಧಾತು:) “ಋಲ್” (೩-೧-೧೩೩) | [ಮಂಗಳ ಗ್ರಹದ ಪೂಜೆಯಿಂದ ಸಾಲ ತೀರುವುದೆಂದು ಶಾಸ್ತ್ರವಚನವಿರುವುದು.]

**ಋಣಾಪಕರಣ ಋಣಾಪಕರಣ** (ನಂ) ಸಾಲದ ತೀರ್ಪು, ಸಾಲ ತೀರಿಸುವಿಕೆ.

**ಋಣಾಪನೋದನ ಋಣಾಪನೋದನ** (ನಂ) ಸಾಲ ತೀರಿಸುವಿಕೆ, ಕೊಂಡ ಸಾಲವನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕೊಡುವುದು. ಋಣಸ್ಯಾಪನೋದನಮ್ |

**ಋಣಿಕ ಋಣಿಕ** (ವಿಂ) ಸಾಲಕೊಂಡವನು, ಕಡ ಪಡೆದವನು. ಋಣಮಸ್ತಯಸ್ಯ “ಠನ್” (೪-೨-೧೧೪) |

**ಋಣಿನ್ ಋಣಿನ್** (ವಿಂ) ಸಾಲ ತೆಗೆದುಕೊಂಡವನು, ಸಾಲ ಪಡೆದವನು. ಋಣಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪) | “ಜಾಯಮಾನೋ ವೈ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಃ ತ್ರಿಭಿಃಕೃಣೈಕೃಣಿ ಭವತಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ್ಯೇಣ ಋಷಿಮ್ಯೋ ಯಜ್ಞೇನ ದೇವಮ್ಯಃ ಪ್ರಜಯಾ ಪಿತೃಮ್ಯಃ” ಶ್ರುತಿಃ | ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೪) | **ಋಣಿನಿ ಋಣಿನಿ**.

**ಋಣೋದ್ಗ್ರಾಹಣ ಋಣೋದ್ಗ್ರಾಹಣ** (ನಂ) ಸಾಲ ಕೊಟ್ಟವನು ಸಾಲ ಕೊಂಡವನಿಂದ ಹಣವನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಪಡೆಯುವುದು. ಋಣಸ್ಯೋದ್ಗ್ರಾಹಣಮ್ | ಸಾಲಗಾರನು ತಾನು ಪಡೆದ ಸಾಲವನ್ನು ವಾಯಿದೆ ಮೀರಿದರೂ ಹಿಂತಿರುಗಿಸದಿದ್ದರೆ ಅದನ್ನು ಈ ಐದು ಉಪಾಯಗಳಿಂದ ಪಡೆಯಬಹುದು. “ಯೇರ್ಝಾಪಾಯೇರಥಂ ಸ್ವಂ ಪ್ರಾಪ್ನುಯಾದುತ್ತಮಗ್ನಿಕಃ | ತೈಸ್ತೈರ್ಝಾಪಾಯೈಃ ಸಂಗೃಹ್ಯ ಸಾಧಯೇದಧರ್ಮಗ್ನಿಕಮ್ | ಧರ್ಮೇಣ ವ್ಯವಹಾರೇಣ ಛಲೇನಾಚರೀತೇನ ಚ | ಪ್ರಯುಕ್ತಂ ಸಾಧಯೇದಥಂ ಪಶ್ಚಮೇನ ವಲೇನ ಚ” ಮನು ೮-೪೮, ೪೯ |

(1) ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತಿನಿಂದಲೂ ಸ್ನೇಹಿತರು ಮತ್ತು ಬಂಧುಗಳ ಮೂಲಕ ಹೇಳಿಸುವುದರಿಂದಲೂ ಸಾಲವನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಪಡೆಯುವುದು ಧರ್ಮದ ಉಪಾಯ.

(2) ಮನೆಯು ಹಣ ಕೊಡುವವರೆಗೂ ಪಂಚಾಯತಿ ದಾರರ ಮುಂದೆ ಹಿಡಿದು ನಿಲ್ಲಿಸಿ ಹಣವನ್ನು ಪಡೆಯುವುದು ವ್ಯವಹಾರದ ಮಾರ್ಗ.

(3) ಉಪಾಯದಿಂದ ಸಾಲಗಾರನ (ಮನೆಯ) ಚರ ಆಸ್ತಿಗಳನ್ನು ತರಿಸಿಕೊಂಡು ಹಣವನ್ನು ಪಡೆಯುವುದು ಫಲದ ಉಪಾಯ.

(4) ಸಾಲಗಾರನ ಮಕ್ಕಳು, ಹೆಂಡತಿ, ದನಕರುಗಳನ್ನು ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸಿ ಮನೆಯ ಬಾಗಿಲಲ್ಲಿ ಕುಳಿತುಕೊಂಡು ಹಣವನ್ನು ವಸೂಲು ಮಾಡುವುದು ಅಚರಿತದ ಉಪಾಯ.

(5) ಸಾಲಗಾರನನ್ನು ಮನೆಗೆ ಎಳೆದುಕೊಂಡು ಬಂದು ಕಟ್ಟಿಹಾಕಿ ಹೊಡೆದು ಬಡಿದು ಹಣವನ್ನು ವಸೂಲು ಮಾಡುವುದು ಬಲಾತ್ಕಾರದ ಉಪಾಯ.

**ಋತ ಋತ** (೨೦) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಯಾಗ, ಯಜ್ಞ. (ನಂ) 3. ಸತ್ಯ, ನಿಜ. ಋ (ಗತೌ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) | “ಆಯುಷ್ಯಂ ಪ್ರಾಡ್ಘಮುಕ್ತೋ ಭುಕ್ತೇ ಯಶಸ್ಯಂ ದಕ್ಷಿಣಾಮುಕ್ತಃ | ಶ್ರಿಯಂ ಪ್ರತ್ಯಡ್ಘಮುಕ್ತೋ ಭುಕ್ತೇ ಋತಂ ಭುಕ್ತೇ ಹ್ಯದಡ್ಘಮುಕ್ತಃ” ಮನು ೨-೪೨ | 4. (ಜೀವನಕ್ಕಾಗಿ) ಗದ್ದೆಗಳಲ್ಲಿ ನೆಲದಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದಿರುವ ಕಾಳುಗಳನ್ನಾಗಲಿ ಧಾನ್ಯದ ತೆನೆಗಳನ್ನಾಗಲಿ ಆರಿಸುವುದು. “ಋತಾಮೃತಾಮ್ಯಾಂ ಜೀವೇತ್ ಮೃತೇನ ಪ್ರಮೃತೇನ ವಾ | ಸತ್ಯಾನೃತಾಮ್ಯಾಮಪಿ ವಾ ನ ಶ್ವವೃತ್ಯಾ ಕದಾಚನ” ಮನು ೪-೪ | “ಋತಮುಚ್ಛಶಿಲಂ ಜೇಯಮಮೃತಂ ಸ್ಯಾದಯಾಚಿತಮ್” ಮನು ೪-೫ | 5. ಜಲ, ನೀರು. 6. ಕರ್ಮದ ಫಲ, ಪಾಪಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯಗಳ ಫಲ. “ಋತಂ ಪಿಬಂತೌ ಸುಕೃತಸ್ಯ ಲೋಕೇ” ಶ್ರುತಿಃ | 7. ವಿಷ್ಣು. “ಭಗವಾನ್ ವಾಸುದೇವಶ್ಚ ಕೀರ್ತಯಂತೇಽತ್ರ ಸನಾತನಃ | ಸ ಹಿ ಸತ್ಯಮೃತಂ ಚೈವ ಪವಿತ್ರಂ ಪುಣ್ಯಮೇವ ಚ” ಭಾಂ | 8. ಪರಬ್ರಹ್ಮ. “ಋತಮೇಕಾಕ್ಷರಂ ಬ್ರಹ್ಮ” ಶ್ರುತಿಃ | (ಪುನಂ) 9. ಒಳ್ಳೆಯ ಸ್ವಭಾವ. (ವಿಂ) 10. ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ, ಹೊಳೆಯುವ. 11. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 12. ಸತ್ಯವಾದ, ನಿಜವಾದ. “ಸರ್ವಮೇತದೃತಂ ಮನ್ಯೇ ಯನ್ಮಾಂ ವದಸಿ ಕೇಶವ” ಗೀತಾ ೧೦-೧೪ | “ಋತಂ ಶಿಲೋಚ್ಛೇ ಪಾನೀಯೇ ಪೂಜಿತೇ ದೀಪ್ತ-ಸತ್ಯಯೋಃ” ಹೇಮಂ | 13. ಹೊಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. (ಅವ್ಯಂ) 14. ನಿಜವಾಗಿ, ಸತ್ಯವಾಗಿ. “ಪ್ರಾಪಿತೇ ತು ಭವೇದೃತಮ್ | ಶಿಲೋಚ್ಛಸತ್ಯಸಾಲಿಸುಶೀಲೇಷು ತು ನ ದ್ವಯೋಃ” ನಾನಾರ್ಥರಂ | **ಋತಧಾಮನ್ ಋತಧಾಮನ್** (೨೦) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಋತಂ ಧಾಮಾಸ್ಯ | “ನರಕಜಿದೃತಧಾಮಾ ಕೇಶವೋ



ಜನ್ಮಕೀಲ: ಕ್ತುಪುಣ್ಯನೃಸಿಂಹನೃಪಜಹ್ನುಶ್ಚ ದೇವಾ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |  
2. ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮನುಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ ಮನು. 3. ಹನ್ನೆರ  
ಡನೆಯ (ರುದ್ರಸಾವರ್ಣ) ಮನ್ವಂತರದ ಇಂದ್ರ. [ಎವರಕ್ಕೆ  
ಇಂದ್ರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 4. ಯದುವಂಶದ ಒಬ್ಬ  
ದೊರೆ. "ಕಡ್ಡುಶ್ಚ ಕರ್ಣಿಕಾಯಾಂ ವೈ ಶ್ರುತಧಾಮಜಯಾವಪಿ"  
ಭಾಗಂ ೧-೨೪-೪೪ | (ವಿಂ) 5. ಸತ್ಯಕ್ಕೆ ವಾಸಸ್ಥಾನ  
ವಾಗಿರುವ.

ಶ್ರುತಧ್ವಜ ಯತಧ್ವಜ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಬ್ರಹ್ಮಯುಷಿ.  
"ಹಿರಣ್ಯನಾಭ: ಕೌಸಲ್ಯ: ಶ್ರುತದೇವ ಶ್ರುತಧ್ವಜ: | ಏತೇ ಪರೇ ಚ  
ಸಿದ್ಧೇಶಾಶ್ವರಂತಿ ಜ್ಞಾನಹೇತವ:" ಭಾಗಂ ೬-೧೫-೧೫ |  
2. ಶಿವ, ಮಹಾದೇವ.

ಶ್ರುತಪೇಯ ಯತಪೇಯ (ಪುಂ) ಒಂದು ದಿವಸದಲ್ಲಿ ನಡೆಸ  
ಬಹುದಾದ ಒಂದು ಯಾಗ. ಶ್ರುತಂ ಸ್ವರ್ಗಾದಿಫಲಂ ಪೇಯಂ  
ಭೋಗ್ಯಂ ಯಸ್ಮಾತ್ |

ಶ್ರುತಮ್ ಯತಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಸತ್ಯವಾಗಿ, ನಿಜವಾಗಿ.

ಶ್ರುತಮ್ಭರ ಯತಂಭರ (ಪುಂ) 1. ಸತ್ಯವನ್ನು ಕಾಪಾಡುವ  
ಪರಮಾತ್ಮ. ಶ್ರುತಂ ಬಿಭರ್ತಿ—ಓ ಭೂ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ)  
"ಖಚ್" (೩-೨-೪೬) | "ತತೋ ಗತೋ ಬ್ರಹ್ಮಗಿರೋಪಹೃತ  
ಶ್ರುತಮ್ಭರಧ್ಯಾನನಿವಾರಿತಾಃ:" ಭಾಗಂ ೬-೧೩-೧೭ |  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಭರಾ-ಭರಾ. 2. ಪಕ್ಷದ್ವೀಪದ ಒಂದು ನದಿ.  
[ಎವರಕ್ಕೆ "ಕರ್ವೀನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 3. ಪಾತು  
ಜಲ ಯೋಗದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ ಸಮಾಧಿಕಾಲದ ಪ್ರಜ್ಞೆ.  
ಶ್ರುತಂ ಸತ್ಯಮಾತ್ಮಾನಂ ಬಿಭರ್ತಿ ಪ್ರಕಾಶಯತಿ | "ಶ್ರುತಮ್ಭರಾ  
ತತ್ರ ಪ್ರಜ್ಞಾ" ಪಾಂ ಯಂ ಸೂಂ ೧-೪೮ |

ಶ್ರುತಿ ಯತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಲ್ಯಾಣ, ಮಂಗಳ. ಶ್ರು (ಗತೌ)  
"ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | 2. ಮಾರ್ಗ, ರಸ್ತೆ, ದಾರಿ.  
3. ಜುಗುಪ್ಸೆ, ಅಸಹ್ಯ. 4. ಗಮನ, ಚಲನ. 5. ನಿಂದೆ,  
ದೂಷಣೆ. 6. ಸ್ಪರ್ಧೆ, ಹೋರಾಟ. "ಶ್ರುತಿ: ಕಲ್ಯಾಣ-  
ವರ್ಮನೋಃ | ಜುಗುಪ್ಸಾಸ್ಪರ್ಧಯೋಃ ಸ್ತ್ರೀ ಸ್ಯಾತ್" ಮೇದಿಂ |  
"ಶ್ರುತಿರ್ಜುಗುಪ್ಸಾಕಲ್ಯಾಣಗತಿಸ್ಪರ್ಧಾಸು" ಹೇಮಂ | 7. ಸ್ಮೃತಿ,  
ನೆನಪು. 8. ರಕ್ಷಣೆ, ಕಾಪಾಡುವಿಕೆ. "ಸ್ಯಾದೃತಿ: ಸ್ಮೃತಿ-  
ರಕ್ಷಾಯೋಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಶ್ರುತಿಚ್ಛರ ಯತಿಂಕರ (ವಿಂ) 1. ಶುಭಕರವಾದ,  
ಮಂಗಳವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಶ್ರುತಿ ಕರೋತಿ—ಓ ಕೃತ್  
(ಕರಣಂ) "ಖಚ್" (೩-೨-೪೩) | ಮುಗಾಗಮ: (೬-೩-೬೭) |  
2. ಓದಿಸುವ, ತೊಂದರೆ ಕೊಡುವ.

ಶ್ರುತೀಯಾ ಯತೀಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜುಗುಪ್ಸೆ, ಅಸಹ್ಯ.  
2. ತಿರಸ್ಕಾರ, ತ್ಯಜಿಸುವಿಕೆ, ಕಡೆಗಣಿಸುವಿಕೆ. ಶ್ರುತಿ  
(ಸೌತ್ರವಾತು:) "ಇಯಿ" (೩-೧-೨೯) |

ಶ್ರುತು ಯತು (ಪುಂ) 1. ವರ್ಷದ ಆರನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ,  
ಎರಡು ತಿಂಗಳ ಕಾಲ. ಶ್ರುಚ್ಚತಿ—ಶ್ರು (ಗತೌ) "ತು:"  
(೩ಂ ೧-೭೧) | ಒಂದು ವರ್ಷಕ್ಕೆ ಆರು ಯತುಗಳು.  
ಮಾಘ ಮೊದಲಾಗಿ ಆಷಾಢ ಮಾಸದವರೆಗೂ ಸೂರ್ಯನು  
ಉತ್ತರದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಮೂರು ಯತುಗಳು  
ಉತ್ತರಾಯಣ. ಶ್ರಾವಣ ಮೊದಲಾಗಿ ಪುಷ್ಯಮಾಸದ  
ವರೆಗೂ (ಸೂರ್ಯನು) ದಕ್ಷಿಣದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವುದರಿಂದ  
ಈ ಮೂರು ಯತುಗಳು ದಕ್ಷಿಣಾಯನ. "ದ್ವಿ ದ್ವಿ  
ಮಾಘಾದಿಮಾಸೌ ಸ್ಯಾದೃತುಸ್ತೈರಯನಂ ತ್ರಿಭಿಃ" ಅಮಂ |

- (1) ಮಧುಶ್ಚ ಮಾಧವಶ್ಚ ವಾಸಂತಿಕಾವೃತ್ |
- (2) ಶುಕ್ರಶ್ಚ ಶುಚಿಶ್ಚ ಗ್ರೇಷ್ಮಾವೃತ್ |
- (3) ನಭಶ್ಚ ನಭಸ್ಯಶ್ಚ ವಾರ್ಷಿಕಾವೃತ್ |
- (4) ಇಷಶ್ಚೋರ್ಜಶ್ಚ ಶಾರದಾವೃತ್ |
- (5) ಸಹಶ್ಚ ಸಹಸ್ಯಶ್ಚ ಹೈಮಂತಿಕಾವೃತ್ |
- (6) ತಪಶ್ಚ ತಪಸ್ಯಶ್ಚ ಶಿಶಿರಾವೃತ್ |

- (1) ಚೈತ್ರ-ವೈಶಾಖ—ವಸಂತಯುತು.
- (2) ಜ್ಯೇಷ್ಠ-ಆಷಾಢ—ಗ್ರೀಷ್ಮಯುತು.
- (3) ಶ್ರಾವಣ-ಭಾದ್ರಪದ—ವರ್ಷಯುತು.
- (4) ಆಶ್ವಯುಜ-ಕಾರ್ತಿಕ—ಶರದಯುತು.
- (5) ಮಾರ್ಗಶಿರ-ಪುಷ್ಯ—ಹೇಮಂತಯುತು.
- (6) ಮಾಘ-ಫಾಲ್ಗುಣ—ಶಿಶಿರಯುತು.

ವರ್ಷಾದಿಯಿಂದ ಹೇಳಿರುವ ಕ್ರಮವಿದು. ಮಾಘಾದಿ  
ಮಾಸದಿಂದ. ಯತುಗಳನ್ನು ಹೇಳಿದ್ದರೂ ಬ್ರಹ್ಮನು  
ಜಗತ್ತನ್ನು ಚೈತ್ರಮಾಸದಲ್ಲಿ ಸೃಷ್ಟಿಸಿದುದರಿಂದ ಚೈತ್ರ  
ಮಾಸದಿಂದ ವರ್ಷಾರಂಭವಾಯಿತು. ಆದುದರಿಂದಲೇ  
"ಶ್ರುತುನಾಂ ಕುಸುಮಾಕರ:" ಗೀತಾ ೧೦-೩೫ ಎಂದು ಯತು  
ಗಳಲ್ಲಿ ವಸಂತಯುತುವೇ (ಮೊದಲನೆಯದಾಗಿ) ಪ್ರಧಾನವಾಗಿ  
ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದು. "ಚೈತ್ರೇ ಮಾಸಿ ಜಗದ್ಬ್ರಹ್ಮಾ ಸಸರ್ಜ  
ಪ್ರಥಮೇಹನಿ | ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷೇ ಸಮಗ್ರಂ ತು ತದಾ ಸೂರ್ಯೋದಯೇ ಸತಿ |  
ಪ್ರವರ್ತಯಾಮಾಸ ತದಾ ಕಾಲಸ್ಯ ಗಣನಾಮಪಿ | ಬ್ರಹ್ಮಾನ್ ರಾಶೀನ್  
ಶ್ರುತುನ್ ಮಾಸಾನ್ ವತ್ಸರಾನ್ ವತ್ಸರಾಧಿಪಾನ್" | ಸುಶ್ರುತ  
ಸಂಹಿತೆಯಲ್ಲಿ ಮಾಘಮಾಸ ಮೊದಲು ಯತುವು ಪರಿ  
ಗಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದು. "ಶ್ರುತುಗುಣೇನ ನಿಖೇವಿತುಮಾದಧೇ ಭುವಿ  
ಪದಂ ವಿಪದಂತಕೃತಂ ಸತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೬-೧ | 2. ಮಾಸ,  
ತಿಂಗಳು. "ಶ್ರುತುರ್ವರ್ಷಾದಿಷಡ್ಸು ಚ | ಆರ್ತವೇ ಮಾಸಿ ಚ  
ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ | 3. ಪ್ತೀಯರ ರಜಸ್ಸು, ಹೆಂಗಸರ  
ಮುಟ್ಟು. 4. ಹೆಂಗಸರು ಗರ್ಭ ಧರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ  
ಕಾಲ, ಹೆಂಗಸರು ಮುಟ್ಟಾದ ಬಳಿಕ ಹದಿನಾರು ದಿನಗಳ  
ಕಾಲ. "ಶ್ರುತು: ಸ್ವಾಭಾವಿಕ: ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ರಾತ್ರಯ: ಷೋಡಶ



ಸ್ಮೃತಾಃ | ಚತುರ್ಭಿರತರೈಃ ಸಾರ್ಥಮಹೊಮಿಃ ಸದ್ವಿಗರ್ಹಿತೈಃ " ಮನುಂ ೩-೪೬ | " ಶ್ವತುಕಾಲಾಭಿಗಾಮಿ ಸ್ಯಾತ್ಸವದಾರನಿರತಃ ಸದಾ " ಮನುಂ ೩-೪೫ | 5. ಎಷ್ಟು. ಸರ್ವೋಲ್ಲಾಸಕರೈರ್ಗುಣೈಃ ಶ್ವಚ್ಛತಿ | " ಶ್ವಚ್ಛತಿತಿ ಶ್ವತುಃ ಪ್ರೋಕ್ತಃ ಸರ್ವೋಲ್ಲಾಸಕರೈರ್ಗುಣೈಃ " ನಿಶ್ಚಿತ್ತಿಃ | " ಶ್ವತುಃ ಸುಖಶನಃ ಕಾಲಃ ಪರಮೇಷ್ಠಿ ಪರಿಗ್ರಹಃ " ವಿಂ ಸಂ | 6. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. " ಶ್ವತುಃ ಸಂವತ್ಸರೋ ಮಾಸಃ ಪಕ್ಷಃ ಸಂಖ್ಯಾ ಸಮಾಪನಃ " ಭಾಂ |

**ಶ್ವತುಕಾಲ ಋತುಕಾಲ** (ಪ್ರಂ) " ಶ್ವತು " ಪದದ 4ನೆಯ ಅರ್ಥ. [ಎವರಕ್ಕೆ " ಶ್ವತು " ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಶ್ವತುಗಣ ಋತುಗಣ** (ಪ್ರಂ) ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕಲಿತ ಎಲ್ಲಾ ಋತು ಗಳು. ಶ್ವತುಗಣಃ | " ಶ್ವತುಗಣೇನ ನಿಖೇವಿತುಮಾದಧೇ ಭುವಿ ಪದಂ ವಿಪದಂತಕೃತಂ ಕತಾಮ್ " ಮಾಘಂ ೬-೧ |

**ಶ್ವತುಗಾಮಿನ್ ಋತುಗಾಮಿನ್** (ಪ್ರಂ) ಋತುಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ (ಹೆಂಗಸಿನೊಡನೆ) ಸಂಭೋಗ ಮಾಡುವವನು. ಶ್ವತುಗಾಮಿನ್-ಗಾಮ್ (ಗತು) " ಗಿತಿಃ " (೩-೨-೭೮) |

**ಶ್ವತುನಾಥ ಋತುನಾಥ -ಪತಿ-ಪತಿ** (ಪ್ರಂ) ಋತುಗಳ ರಾಜ, ವಸಂತಋತು. ಶ್ವತುನಾಥಃ ನಾಥಃ ಪತಿರ್ವಾ | " ಶ್ವತುನಾಥ ಕೃಷ್ಣಮಾಕರಃ " ಎಂದು ಭಗವದ್ಗೀತೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ.

**ಶ್ವತುಪರ್ಣ ಋತುಪರ್ಣ** (ಪ್ರಂ) ಇಕ್ಷ್ವಾಕುವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಆಯುತಾಯುವಿನ ಮಗ. [ನಳ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯು ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡು ಅನೇಕ ಕಷ್ಟಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸಿದ ನಂತರ ಋತುಪರ್ಣನ ನಗರಕ್ಕೆ ಬಂದು ಅವನ ಅಶ್ವಾಲಯದಲ್ಲಿ ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಸೇರಿ ಅವನಿಗೆ ಅಶ್ವಹೃದಯವನ್ನು ಹೇಳಿಕೊಟ್ಟು ಅವನಿಂದ ತಾನು ಅಕ್ಷವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವನು. ಇದರಿಂದ ಸಂತುಷ್ಟನಾದ ಋತುಪರ್ಣನು, ದಮಯಂತಿಯ ದ್ವಿತೀಯಸ್ವಯಂವರ ವೃತ್ತಾಂತವನ್ನು ತಿಳಿದು ನಳನನ್ನೇ ರಥದ ಸಾರಥಿಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಹೊರಟು ಅವ(ನಳ)ನನ್ನು ಕುಡಿನಪುರಕ್ಕೆ ಕರೆತರುವನು. ಅಲ್ಲಿ ದಮಯಂತಿಯು ನಳನನ್ನು ಗುರುತಿಸಿ ಅವನೊಡನೆ ಸೇರಲು ಅನುಕೂಲವಾಗುವುದು.]

**ಶ್ವತುಪರ್ಯಯ ಋತುಪರ್ಯಯ** (ಪ್ರಂ) ಋತುಗಳು ಕ್ರಮವಾಗಿ ಬರುವಿಕೆ, ಋತುಗಳು ಒಂದಾದ ಮೇಲೊಂದು ಬರುವಿಕೆ. ಶ್ವತುನಾಥ ಪರ್ಯಯಃ | "ಯಥರ್ತುಲಿಕ್ಷಾನ್ಯತವಃ ಸ್ವಯಮೇವರ್ತು-ಪರ್ಯತೇ | ಸ್ವಾನಿ ಸ್ವಾನ್ಯಮಿಪದಂತೇ ತಥಾ ಕರ್ಮಾಣಿ ದೇಹಿನಃ " ಮನುಂ ೧-೩೦ |

**ಶ್ವತುಪ್ರಾಪ್ತ ಋತುಪ್ರಾಪ್ತ** (ಪ್ರಂ) ಫಲಿಸಿದ ವೃಕ್ಷ, ಆಯಾ ಋತುಗಳಿಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ಫಲಪುಷ್ಪಾದಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮರ. ಶ್ವತುಯೋಗ್ಯಃ ಪುಷ್ಪಾದಿಃ ಪ್ರಾಪ್ತೋಜೇನ |

**ಶ್ವತುಮತೀ ಋತುಮತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಷ್ಪವತಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು, ಮೈನರೆದ ಹೆಂಗಸು, ರಜಸ್ವಲೆ. ಶ್ವತುರಸ್ತಯಸ್ಯಾಃ "ಮತುಃ" (೫-೨-೯೪) | ಕನ್ಯೆಯು ಋತುಮತಿಯಾದರೂ ತಂದೆಯು ಅನುರೂಪನಾದ ವರನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು ಮದುವೆ ಮಾಡದಿದ್ದಲ್ಲಿ ಮೂರು ವರ್ಷಗಳವರೆಗೂ ನಿರೀಕ್ಷಿಸಿ ಅನಂತರ ತಾನೇ ಯೋಗ್ಯ ವರನನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಬಹುದು. ಇದರಿಂದ ದೋಷವಿಲ್ಲ. " ತ್ರಿಣಿ ವರ್ಷಾಣ್ಯು-ದೀಕ್ಷಿತ ಕುಮಾರ್ಯತುಮತೀ ಸತೀ | ಊರ್ವ್ವಂ ತು ಕಾಲಾದೇತಸ್ಮಾದ್ವಿಹಿತ ಸದೃಶಂ ಪತಿಮ್ " ಮನುಂ ೯-೯೦ |

**ಶ್ವತುಮುಖ ಋತುಮುಖ** (ನಂ) ಋತುವಿನ ಪ್ರಾರಂಭದ ದಿನ, ಚಾಂದ್ರಮಾಸದ ಶುಕ್ಲ ಪ್ರಥಮಾ ತಿಥಿ. ಶ್ವತುಮುಖಂ ಪ್ರಾರಂಭಃ |

**ಶ್ವತುರಾಜ ಋತುರಾಜ** (ಪ್ರಂ) ಋತುಗಳೆಲ್ಲಾ ಪ್ರಧಾನವಾದ ಋತು, ವಸಂತಋತು. ಶ್ವತುನಾಥ ರಾಜಾ " ಶ್ವ " (೫-೪-೯೧) |

**ಶ್ವತುಲಿಕ್ಷ ಋತುಲಿಂಗ** (ನಂ) 1. ವಸಂತಾದಿ ಋತುಗಳ ಗುರುತು, ಆಯಾ ಋತುಗಳು ಹುಟ್ಟುವ ಸೂಚನೆ. ಶ್ವತುಃ ಲಿಕ್ಷಮ್ | "ಯಥರ್ತುಲಿಕ್ಷಾನ್ಯತವಃ ಸ್ವಯಮೇವರ್ತುಪರ್ಯತೇ | ಸ್ವಾನಿ ಸ್ವಾನ್ಯಮಿಪದಂತೇ ತಥಾ ಕರ್ಮಾಣಿ ದೇಹಿನಃ " ಮನುಂ ೧-೩೦ | 2. ಹೆಂಗಸರು ಋತುಮತಿಯಾಗುವ ಸೂಚನೆ, ಹೆಣ್ಣು ಮಕ್ಕಳು ಪುಷ್ಪವತಿಯಾಗುವ ಲಕ್ಷಣಗಳು.

**ಶ್ವತುಸಂಹಾರ ಋತುಸಂಹಾರ** (ಪ್ರಂ) ಕಾಳಿದಾಸ ಕವಿಯು ಆರು ಋತುಗಳನ್ನು ವರ್ಣಿಸಿರುವ ಒಂದು ಕಾವ್ಯ. ಶ್ವತುನಾಥ ಸಂಹಾರೋ ವರ್ಣ್ಯತ್ವೇನಾಸ್ತಯಸ್ಯ |

**ಶ್ವತುಸಂಧಿ ಋತುಸಂಧಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎರಡು ಋತುಗಳು (ಮಾಸಗಳು) ಸೇರುವ ಕಾಲ, ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ. ಶ್ವತುಃ ಮಾಸಯೋಃ ಸಂಧಿಃ |

**ಶ್ವತುಸೇವ್ಯ ಋತುಸೇವ್ಯ** (ವಿಂ) ಆಯಾ ಋತುಗಳಲ್ಲಿ ಸೇವಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಹಿತವಾದ ಆಹಾರ. ಶ್ವತುಸೇವ್ಯ ಸೇವ್ಯಮ್ | ಆಯಾ ಋತುಗಳಲ್ಲಿ ಅರೋಗ್ಯಕರವಾದ ಮತ್ತು ಹಿತವಾದ ಆಹಾರವನ್ನು ಸೇವಿಸಬೇಕು. "ಯಸ್ಮಿನ್ ಯಸ್ಮಿನ್ ಶ್ವತುಃ ಯೇ ಯೇ ದೋಷಾಃ ಕುಪ್ಯಂತಿ ದೇಹಿನಾಂ | ತेषು ತೇಷು ಪ್ರದಾತವ್ಯಾಃ ರಸಾಸ್ತವೇತೇ ವಿಜಾನತಾ " ಸುಶ್ರುತಂ ೩-೬೪-೫ | ವರ್ಷ ಋತುವಿನಲ್ಲಿ ಶೀತವಾತಾವರಣದಲ್ಲಿ ದೇಹವೆಲ್ಲ ತಣ್ಣಗಾಗುವುದರಿಂದ ಅಗ್ನಿಶಕ್ತಿಯು ಕಡಿಮೆಯಾಗಿ ವಾಯು ಪ್ರಕೋಪವಾಗುವುದು. ಆ ದೋಷ ನಿವಾರಣೆಗಾಗಿ ಕಷಾಯ (ಒಗರು), ತಿಕ್ತ (ಕಹಿ), ಕಟು (ಕಾರ) ರಸಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮತ್ತು ದ್ರವವಲ್ಲದ ಆಹಾರವನ್ನು ಸೇವಿಸಬೇಕು.



ವರ್ಷಾರ್ಥವಿನಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಯಾಮ ಮಾಡಕೂಡದು. ನೆಲದ ಮೇಲೆ ಮಲಗಕೂಡದು ಇತ್ಯಾದಿ. ಉಳಿದ ಋತುಗಳಿಗೆ ಸುಶ್ರುತಸಂಹಿತೆಯಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ಕೃಷ್ಣ ಋಷಿ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಕೃಷ್ಣ (ವೃದ್ಧಿ) ಕರ್ತಂ "ಕ್ತಃ" (3-4-92). "ಪಾರ್ವಣಿ ಜಲಧಿರೈವತ್ ವೃದ್ಧಿಮಾನ್ ಕೃಷ್ಣ ಉಚ್ಯತೇ" ನಿರೂಪಿತಃ. "ಕೃಷ್ಣಃ ಸ್ಪಷ್ಟಾಕ್ಷರೋ ಮನ್ತ್ರಃ ಚಂದ್ರಾಂಶುರ್ಮಾಸ್ಕರಣ್ಯತಃ" ವಿಂ ಸಂ. (ನಂ) 2. ಒಕ್ಕಿದ ಧಾನ್ಯ, ಬಡಿದು ತನೆಯಿಂದ ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಧಾನ್ಯ. 3. ಸಿದ್ಧವಾದ ಅನ್ನ. ಕೃಷ್ಣ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-2-102). 4. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಬೆಳವಣಿಗೆ. ಕೃಷ್ಣ (ವೃದ್ಧಿ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-3-114). (ವಿಂ) 5. ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿದ, ಅಧಿಕವಾದ, ಬೆಳವಣಿಗೆ ಹೊಂದಿದ. ಕೃಷ್ಣ ಕರ್ತಂ "ಕ್ತಃ" (3-4-92). "ಕೃಷ್ಣಸರ್ವಕೃತುರ್ವಕ್ಷವಾಟಿಕಾಕೀರಕೃತ-ಸಹಕಾರಶೋಕರಃ" ನೈಷಂ 16-10. 6. ಸಂಪನ್ನವಾದ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ, ತುಂಬಿರುವ. "ಇಯಮೃದ್ಧನಾ ವೃಥಾವನಿ ಸ್ವವನಿ ಸಂಪ್ರವದತ್ಪಿಕಾಪಿ ಕಾ" ನೈಷಂ 2-45. "ಅವಾಪ್ಯ ಭೂಮಾವಸಪತ್ತಮೃದ್ಧಂ ರಾಜ್ಯಂ ಸುರಾಣಾಮಪಿ ಚಾಧಿಪತ್ಯಮ್" ಗೀತಾ 2-61. 7. ಧನಿಕ, ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ.

**ಕೃಷ್ಣಿ ಯದ್ಧಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಮೃದ್ಧಿ, ಹೇರಳ, ಅತಿಶಯ. ಕೃಷ್ಣ (ವೃದ್ಧಿ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94). "ಪರಿಚ್ಛಿನ್ನ-ಪ್ರಭಾವದ್ಧಿನಂ ಮಯಾ ನ ಚ ವಿಷ್ಣುನಾ" ಕುಮಾಂ 2-56. 2. ಬೆಳವಣಿಗೆ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ. 3. ಸಿದ್ಧಿ, ಕೈಗೊಡುವಿಕೆ. 4. ಒಂದು ಮೂಲಿಕೆ. 5. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. 6. ಪಾರ್ವತಿ. 7. ಸಂಪತ್ತು, ಐಶ್ವರ್ಯ. ಕೃಷ್ಣ "ಕ್ತಿಚ್" (3-3-104). 8. ಅದೃಷ್ಟ. 9. ಕುಬೇರನ ಪತ್ನಿ.

**ಕೃಷ್ಣಿಕಾಮ ಯದ್ಧಿ ಕಾಮ** (ವಿಂ) 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿಯನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಕೃಷ್ಣಿ ಕಾಮಯತೇ-ಕಮು (ಕಾಂತೌ) "ಣಿಙ್" (3-1-30) "ಅಚ್" (3-1-134). 2. ಐಶ್ವರ್ಯವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ.

**ಕೃಷ್ಣಿಮತ್ ಯದ್ಧಿ ಮತ್** (ವಿಂ) 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಏಳಿಗೆ ಹೊಂದಿದ. ಕೃಷ್ಣಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ-"ಮತುಪ್" (4-2-94). 2. ಸಮೃದ್ಧಿಯುಳ್ಳ, ಪರಿಪೂರ್ಣವಾದ, ತುಂಬಿರುವ. "ತಮೃದ್ಧಿಮದ್ಧುಜನಾಧಿರ್ದೈವೈರ್ದೇಗಜಾನಾಂ ಗಿರಿ-ಚಕ್ರವರ್ತಿನಿ" ಕುಮಾಂ 9-52. 3. ಸಂಪತ್ತಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಐಶ್ವರ್ಯಸಂಪನ್ನನಾದ. "ಕೃಷ್ಣಿಮಂತಮಧಿಕಾರ್ಥಿರತ್ತರಃ ಪೂರ್ವಮುತ್ಸವಮಪೊಹದ್ರುತ್ಸವಃ" ರಘುಂ 19-5.

**ಕೃಷ್ಣ-ವೃದ್ಧಿ** (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ) ಕೃಷ್ಯತಿ ಕೃಷ್ಯತಃ ಕೃಷ್ಯಂತಿ. ಆನರ್ಥ ಆನೃಧತುಃ ಆನೃಧುಃ. ಅಧಿತಾ. ಅಧಿಷ್ಯತಿ. ಕೃಷ್ಯತು. ಆರ್ಥ್ಯತ್. ಕೃಷ್ಯೇತ್. ಕೃಷ್ಯಾತ್.

ಆರ್ಥತ್. ಆರ್ಥಿಷ್ಯತ್. 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದು. 2. ಸಿದ್ಧಿ ಪಡೆ.

ಭಾವೇ: ಕೃಷ್ಯತೇ. ಆನೃಧೇ. ಅಧಿತಾ. ಕೃಷ್ಯತಾಮ್. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ: ಇತ್ಸಂತಿ. ಇತ್ಸಾಂಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಇತ್ಸಿತಾ. ಇತ್ಸಿಷ್ಯತಿ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು: ಅಧಿತವ್ಯಮ್. ಅರ್ಥನೀಯಮ್. ಕೃಷ್ಯಮ್. ಕೃಷ್ಣಃ, ಕೃಷ್ಣವಾನ್. ಕೃಷ್ಯನ್. ಕೃಷ್ಣಮ್. ಅರ್ಥನಮ್. ಅಧಿತವಾನ್. ಸಮೃದ್ಧಿ.

ಸ್ವಾದಿ "ಕೃಷ್ಣ" ಧಾತುರೂಪಗಳು. ಕೃಷ್ಣೋತಿ. ಕೃಷ್ಣೋತು. ಕೃಷ್ಣುಹಿ. ಆರ್ಥ್ಯತ್. ಕೃಷ್ಣುಯಾತ್. ಉಳಿದೆಲ್ಲ ರೂಪಗಳೂ ದಿವಾದಿ "ಕೃಷ್ಣ" ಧಾತುವಿನ ರೂಪಗಳಂತೆ ಆಗುವವು. 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದು, ಬೆಳವಣಿಗೆ ಹೊಂದು. "ನಾಬ್ರಹ್ಮ ಧರ್ಮಮೃಣೋತಿ ನಾಕ್ಷತ್ರಂ ಬ್ರಹ್ಮ ವರ್ಧತೇ" ಮನುಂ 9-322. 2. ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸು, ಸಂತೋಷಪಡಿಸು. "ಸೌಹೃದಂ ಪ್ರಾಘವತೇವ ಭೂತಜನನಿಮೃಣೋಮಿ ಕ್ಷಜ್ಞಾಹಿತವ್ಯಸ್ತಸ್ಕಾಂಧಕಬಂಧರಂಧರಧಿರ-ಪ್ರಾಘಾರನಿಷ್ಯಂದಿನಾ" ಮಾಲತೀಂ 5-29.

ಸಮ್ + ಕೃಷ್ಣ = ಸಮೃದ್ಧಿಃ. ಹೆಚ್ಚು ಬೆಳವಣಿಗೆ ಹೊಂದು, ಅತಿಶಯವಾದ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದು. "ಶತ್ರುಪಕ್ಷಂ ಸಮೃದ್ಧಂತಂ ಯೋ ಮೋಹಾತ್ ಸಮುಪೇಕ್ಷತೇ" ಭಾಂ. "ಲೋಕಾನನ್ಯಾನ್ಸೃಜೇಯುರೈ ಲೋಕಪಾಲಾಂಶ್ಚ ಕೋಪಿತಾಃ. ದೇವಾನ್ ಕುರ್ಯುರದೇವಾಂಶ್ಚ ಕಃ ಕ್ಷಿಪ್ವಂತಾನ್ ಸಮೃದ್ಧುಯಾತ್" ಮನುಂ 9-315.

**ಕೃಷ್ಣಕ್ ಯದ್ಧಕ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಸತ್ಯವಾಗಿ, ನಿಜವಾಗಿ. 2. ಔಷ್ಣವಾಗಿ, ಬೇಗ. 3. ಬೇರೆಯಾಗಿ, ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿ. 4. ಸಾಮಾನ್ಯ. 5. ಲಾಘವ. "ಕೃಷ್ಣಗತೋ ಅನಿಮಿಷಂ ರಕ್ಷಮಾಣಾಃ" ಕೃಷ್ಣಗತಃ ಸತ್ಯೇನ ಗಚ್ಛತಃ.

**ಕೃಷ್ಣ ಯಥು** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. ಅರಿ ಸ್ವಗ್ಂ ಅದಿತ್ಯಾಂ ವಾ ಭವತಿ-ಕೃ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಙುಃ" (ವಾಂ 3-2-160). "ಆದಿತ್ಯಾ ಕೃಷ್ಣವೋಽಸ್ವಪ್ನಾ ಅಮರ್ತ್ಯಾ ಅಮೃತಾಂಧಸಃ" ಅಮಂ. 2. ದೇವತೆಗಳಿಂದಲೂ ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ ದೇವತೆ. "ಕೃಷ್ಣವೋ ನಾಮ ತತ್ರಾನ್ಯೇ ದೇವಾನಾಮಪಿ ದೇವತಾಃ. ತेषಾಂ ಲೋಕಾಃ ಪರತರೇ ಯಾನ್ ಯಜಂತೀಹ ದೇವತಾಃ" ಭಾಂ ವನಂ. 3. ಚಾಕ್ಷುಷ ಮನ್ವಂತರದ ಒಂದು ದೇವಗಣ. "ಚಾಕ್ಷುಷಸ್ಯಾಂತರೇ ತಾತ ಮನೋದೇವಾನಿಮಾನ್ ಶೃಣು. ಆಪ್ಯಾಃ ಪ್ರಭೂತಾ ಕೃಷ್ಣವಃ ಪೃಥುಕಾಶ್ಚ ದಿವೌಕಸಃ. ಲೇಖಾ ನಾಮ ಮಹಾರಾಜ ಪञ್ಚ ದೇವಗಣಾಃ ಸ್ಮೃತಾಃ" ಹರಿವಂ 9-32.

**ಕೃಷ್ಣ ಯಥುಕ್** (ಪುಂ) 1. ಸ್ವರ್ಗ. 2. ವಜ್ರಾಯುಧ. ಕೃಷ್ಣವೋ ದೇವಾಃ ಕ್ಷಿಯಂತ್ಯತ್ರ-ಕ್ಷಿ (ನಿವಾಸಗತೌಃ) "ಙುಃ" (ವಾಂ 3-2-101). "ಕೃಷ್ಣಾಃ ಸ್ವರ್ಗವಜ್ರಯೋಃ" ವಿಶ್ವಂ.



ಶ್ರೀಭೂಷನ್ ಯುಕ್ತಂ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ಶ್ರೀಭೂ ದೇವಾಃ  
ಕ್ಷಿಯಂತ್ಯತ್ರ-ಕ್ಷಿ (ನಿವಾಸಗತೃಃ) "ಓ:" (ವಾಂ ೩-೨-೧೦೧)।  
"ಶ್ರೀಭೂ: ಸ್ವರ್ಗವಜ್ರಯೋ:" ವಿಶ್ವಂ। ಸೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ  
"ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)। ಪಥಿವತ್।

ಶ್ರೀಭೂ (ಪ್ರ) ಯುಕ್ತಂ (ಷ್ಠ) (ಪುಂ) ಮೈಮೇಲೆ ಬಿಳಿ ಚುಕ್ಕೆ  
ಗಲಿಕ್ಕು, ಜಿಂಕೆ. ಶ್ರೀಚ್ಛತಿ-ಶ್ರೀ (ಗತೃ) "ಶ್ಯನ್" ಬಾಹುಂ।  
ಶ್ರೀ (ಗತೃ) "ಯಕ್" (ಓಂ ೪-೧೧೧)। ನಿಪಾಂ।

ಶ್ರೀಭೂ (ಪ್ರ) ಮೂಕ ಯುಕ್ತಂ (ಷ್ಠ) ಮೂಕ (ಪುಂ) ಯುಕ್ತಂ  
ಮೂಕಪರ್ವತ, ವಾಲಿಯ ಭಯದಿಂದ ಸುಗ್ರೀವನು ಬಂದು  
ಅವಿತುಕೊಂಡಿದ್ದ ಒಂದು ಪರ್ವತ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಶ್ರೀಭೂಮುಕ"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಶ್ರೀಭೂ ಯುಕ್ತಂ (ಪುಂ) 1. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. ಶ್ರೀಪತಿ-  
ಶ್ರೀ (ಗತೃ) "ಅಭಕ್" (ಓಂ ೩-೧೨೩)। "ಶ್ರೀಭೂಕ-  
ಸಹಸ್ರಾ ಗಾ ದಧಾತ್ ಕ್ಷತ್ರವಧೇ ಪುಮಾನ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೨೬೬।  
2. ಹೆಂಗೆ ಹಾಲೆಯೆಂಬ ಒಂದು ಮೂಲಿಕೆ. "ಶೃಂಗಿ  
ತು ಶ್ರೀಭೂ ವೃಷ:" ಅಮಂ। 3. ಅದಿಜಿನದೇವ.  
4. ವರಾಹ ಪುಚ್ಛ, ಹಂದಿಯ ಬಾಲ. 5. ಮೊಸಳೆಯ  
ಬಾಲ. 6. ಕಿವಿಯ ರಂಧ್ರ, ಕರ್ಣಕುಹರ, ಕಿವಿಯೊಳಗಿನ  
ಪೊಳ್ಳು. 7. ವೀಣೆ ಕಂಠ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಲ್ಲಿ ಹೊರಡುವ  
ಸಪ್ತ(ವಿಳು)ಸ್ವರಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಶ್ರೀಪತಿ ಹೃದಯಂ ಪ್ರವಿಶತಿ-  
ಶ್ರೀ (ಗತೃ) "ಅಭಕ್" (ಓಂ ೩-೧೨೩)।

ಸಪ್ತಸ್ವರಗಳು: (1) ನಿಷಾದ, (2) ಯುಷಭ,  
(3) ಗಾಂಧಾರ, (4) ಪಡ್ಮ, (5) ಮಧ್ಯಮ,  
(6) ಧೈವತ ಮತ್ತು (7) ಪಂಚಮ. "ನಿಷಾದರ್ಷಭ-  
ಗಾಂಧಾರಪಡ್ಮಮಧ್ಯಮಧೈವತಾಃ। ಪಂಚಮಶ್ಚೇತಯಮಿ ಸಪ್ತ  
ತನ್ಮೀಕಣ್ಠೋತ್ಥಿತಾಃ ಸ್ವರಾಃ" ಅಮಂ। ವೃಷಭದ ಸ್ವರದಂತೆ  
ಕಂಠದಲ್ಲಿ ಹೊರಡುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಷಡ್ಜಂ  
ಮಯೂರೋ ವದತಿ ಗಾವಸ್ತ್ವೃಷಭಭಾಷಿಣ:" ಅಮಂ। "ನಾಭಿಮೂಲಾತ್  
ಯದಾ ವರ್ಣಂ ಉತ್ಥಿತ: ಕುಸ್ತೇ ಧ್ವನಿಮ್। ವೃಷಭಸ್ಯೇವ ನಿರ್ಯಾತಿ  
ಹೇಲಯಾ ಶ್ರೀಭೂ: ಸ್ಮೃತ:" ಸಂ ದಾಂ। ಈ ಯುಷಭಸ್ವರವು  
ಯುಗ್ಮೇದದಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನವಾದುದು. "ಶ್ರೀವೇದಾತ್ ಷಡ್ಜ-  
ಶ್ರೀಭೂ ಯಜುಷೋ ಮಧ್ಯಮಧೈವತೌ। ಸಾಮವೇದಾತ್ ಸಮುದ್ಭೂತೌ  
ತಥಾ ಗಾಂಧಾರಪಂಚಮೌ"। ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿ ಈ ಯುಷಭ  
ಸ್ವರವು ನಿಷಿದ್ಧ. "ಶ್ರುತಿಸಮಧಿಕಮುಚ್ಛೇ: ಪಂಚಮಂ ಪಿಡಯಂತ:  
ಸತತಮೃಷಭಹೀನಂ ಭಿಕ್ಷುಕೀಕೃತ್ಯ ಷಡ್ಜಮ್। ಪ್ರಣಿಜಗದು-  
ರಕಾಕುಶ್ರಾವಕಸ್ತಿಗ್ಧಕಣ್ಠಾಃ ಪರಿಣತಿಮಿತಿ ರಾತ್ರೇರಗಿಧಾ  
ಮಾಧವಾಯ" ಮಾಘಂ ೧೧-೧। 7. (ಸಮಾಸಾಂತದಲ್ಲಿ)  
ಶ್ರೀಷ್ಠ, ಉತ್ತಮ. ಪುರುಷರ್ಷಭ: ಪುರುಷಶ್ರೀಷ್ಠನು. ನರರ್ಷಭ:  
ಭರತರ್ಷಭ: ಇತ್ಯಾದಿ. "ಸ್ಯಹತ್ತರಪದೇ ವ್ಯಾಘ್ರಪುಂಜವರ್ಷಭ-

ಕುಂಜರಾಃ। ಸಿಂಹಶಾರ್ದೂಲನಾಗಾಘಾಃ ಪುಂಸಿ ಶ್ರೇಷ್ಠಾರ್ಥಗೋಚರಾಃ"  
ಅಮಂ। "ಸ ಕುರ್ವು ಮಹೋತ್ಸಾಹ: ಕೃಪಾಂ ಮಯಿ ನರರ್ಷಭ"  
ರಾಮಾಂ। ಕೆಲವೆಡೆ ವ್ಯಸ್ತವಾಗಿದ್ದರೂ ಶ್ರೀಷ್ಠಾರ್ಥವಾಚಕ  
ವಾಗುವುದು. "ಸ್ವಲಕ್ಷಣಾ ಪ್ರಾದುರಭೂತ್ ಕಿಲಾಸ್ಯತ: ಸ ಮೇ  
ಶ್ರೀಭೂಗಾಮೃಷಭ: ಪ್ರಸೀದತು" ಭಾಗಂ ೨-೪-೨೨। "ಶ್ರೀಭೂ:  
ಸ್ಯಾದಾದಿಜಿನೇ ವೃಷಭೇ ಭೇಷಜೇ ಸ್ವರೇ। ಕರ್ಣರಂಧ್ರೇ ಕೋಲಪುಚ್ಛೇ  
ಶ್ರೇಷ್ಠೇ ಚಾಪ್ಯುತ್ತರಸ್ಥಿತ:" ಹೇಮಂ। "ಶ್ರೀಭೂಸ್ತ್ವೌಷಧಾಂತರೇ।  
ಸ್ವರಭಿಧ್ವಂಸಯೋ: ಕರ್ಣರಂಧ್ರಕುಂಭೀರಪುಚ್ಛಯೋ:। ಉತ್ತರಸ್ಥಿ:  
ಸ್ಮೃತ: ಶ್ರೇಷ್ಠೇ" ಮೇದಿಂ। 8. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಒಂದು  
ಅವತಾರ. [ಅಗ್ನೀಧ್ರನ ಪುತ್ರನಾದ ನಾಭಿರಾಜನ ಯಾಗ  
ದಿಂದ ಪ್ರಸನ್ನನಾದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಅವನ ಪುತ್ರನಾಗಿ  
ಹುಟ್ಟಿದನು.] "ನಾಭಿರಪತ್ಯಕಾಮೋಽಪ್ರಜಯಾ ಮೇರುದೇವ್ಯಾ  
ಭಗವಂತಂ ಯಜ್ಞಪುರುಷಮವಹಿತಾತ್ಮಾಯಜತ। ತಸ್ಯ ಹವಾವ ಶ್ರದ್ಧಯಾ  
ಯಜತ: ಪ್ರವರ್ಯೈಶು ಪ್ರಚರತ್ಸು ಭಗವಾನ್ ಭಾಗವತವಾತ್ಸಲ್ಯತಯಾ  
ಸುಪ್ರತೀಕ ಆತ್ಮಾನಂ ಮನೋನಯನಾನಂದನಾವಯವಾಭಿರಾಮ-  
ಮಾವಿಶ್ವಕಾರ" ಭಾಗಂ ೪-೩-೧, ೨। "ತಸ್ಯ ಹ ವಾ ಇತ್ಯಂ  
ವರ್ಷಮಣಾ ವರೀಯಸಾ ಬೃಹಚ್ಛಲೋಕೇನ ಚೌಜಸಾ ಬಲೇನ ಶ್ರಿಯಾ  
ಯಶಸಾ ವೀರ್ಯಶೌರ್ಯಮ್ನಿ ಚ ಪಿತಾ ಶ್ರೀಭೂ ಇತೀದಂ ನಾಮ  
ಚಕಾರ" ಭಾಗಂ ೪-೪-೨। 9. ಒಂದು ಪರ್ವತ.  
10. ಮದಿಸಿದ ಅನೆ. "ಶ್ರೀಭೂಽದ್ರೌ ಕರ್ಣರಂಧ್ರೇ ವೃಷೇ  
ಮತ್ತಗಜೇಶ್ವರೇ। ವರಾಹಸ್ಯಾಪಿ ಪುಚ್ಛೇ" ನಾನಾರ್ಥರಂ।

ಶ್ರೀಭೂಕೃತ ಯುಕ್ತಂ (ಪುಂ) ಹೇಮಕೂಟ ಪರ್ವತ.  
[ಈ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಯುಷಭನೆಂಬ ತಾಪಸನಿದ್ದುದರಿಂದ  
ಈ ಹೆಸರುಂಟಾಯಿತು. ವಿವರಕ್ಕೆ ಭಾಂ ವನಂ ೧೧ಂ  
ಅಧ್ಯಾಯ ನೋಡಿ.]

ಶ್ರೀಭೂಗತಿವಿಲಸಿತ ಯುಕ್ತಂ (ನಂ)  
ಹದಿನಾರನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ; ಭಗಣ ರಗಣ  
ಮೂರು ನಗಣಗಳು ಮತ್ತು ಒಂದು ಗುರುವಿರುವ  
ವೃತ್ತ. "ಭೌ ತ್ರಿವಿಧಾಃ ಸ್ವರಾಃ ಸಮೃಷಭಗತಿವಿಲಸಿತಮ್"  
ವೃಂ ೨ಂ।

ಶ್ರೀಭೂಧ್ವಜ ಯುಕ್ತಂ (ಪುಂ). 1. ಪರಮೇಶ್ವರ,  
ಮಹಾದೇವ. ಶ್ರೀಭೂ ಧ್ವಜೋಽಸ್ಯ। 2. ಒಬ್ಬ ಜೈನ ಭಿಕ್ಷು.  
"ಶ್ರೀಭೂಧ್ವಜ ಏಷೋಽಪಿ ಶಂಕರೇ ಚಾರ್ಹದಂತರೇ" ಮೇದಿಂ।

ಶ್ರೀಭೂ ಯುಕ್ತಂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪುರುಷನ ಆಕಾರವುಳ್ಳ  
ಹೆಂಗಸು, ಗಡ್ಡ ಮೀಸೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹೆಂಗಸು. 2. ನಸು  
ಗುನ್ನಿ ಗಿಡ. 3. ವಿತಂತು. 4. ಸಿರಾಲೆ ಗಿಡ. ಶ್ರೀಭೂ  
ಗೌರಾಂ ಜಾತಿಂ ವಾ "ಜಿಷ್"। "ಶ್ರೀಭೂ ತು ಶುಕ್-  
ಶಿಖ್ಯಾಂ ಪುರುಷಾಕಾರಯೋಷಿತಿ। ವಿಧವಾಯಾಂ ಶಿರಾಲಾಯಾಮ್"  
ಹೇಮಂ।



**ಶ್ರವಿ ಯುಷಿ (ಪುಂ)** 1. ಯುಷಿ, ಜ್ಞಾನದಿಂದ ಸಂಸಾರದ ಕೊನೆಯನ್ನು ಮುಟ್ಟಿದವನು. ಕೃಷತಿ ಜ್ಞಾನೇ ಸಂಸಾರಪಾರಮ್-ಕೃಷಿ (ಗತೌ) "ಇನಿ:" (ತಂ ೪-೧೧೯) | ತಪಸ್ಸಿನಿಂದ ಸಕಲಪಾಪಗಳನ್ನೂ ಕಳೆದುಕೊಂಡವನೂ ಸತ್ಯ ಸಂಧನೂ ವೇದ ಮತ್ತು ವೇದಾಂಗಗಳ ತತ್ತ್ವವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದವನೂ ಯುಷಿಯೆನಿಸುವನು. "ತಪೋನಿರ್ಭೂತ-ಪಾಪಮಾನೋ ಯಾತಾತ್ಯಾಭಿಧಾಯಿನಃ | ವೇದವೇದಾಜ್ಞತತ್ತ್ವಜ್ಞಾಃ ಕೃಷಯಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾಃ" | "ಅಶೇಷತೀರ್ಥೋಪಹೃತಾಃ ಕಮಂಡಲೋಃ ನಿಧಾಯ ಪಾಣಾವೃಷಿಣಾಮ್ಯುದೀರಿತಾಃ" ಮಾವಂ ೧-೧೮ | ಈ ಯುಷಿಗಳು (1) ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿ, (2) ದೇವರ್ಷಿ, (3) ಮಹರ್ಷಿ, (4) ಪರಮರ್ಷಿ, (5) ಕಾಂಡರ್ಷಿ, (6) ಶ್ರುತರ್ಷಿ ಮತ್ತು (7) ರಾಜರ್ಷಿಗಳೆಂದು ಏಳು ವಿಧ. "ಸಪ್ತ ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿಃ ದೇವರ್ಷಿಃ ಮಹರ್ಷಿಃ ಪರಮರ್ಷಿಃ ಕಾಂಡರ್ಷಿಃ ಶ್ರುತರ್ಷಿಃ ರಾಜರ್ಷಿಃ ಕ್ರಮಾವರಾಃ" ರತ್ನಂ | "ವ್ಯಾಸಾಽಪ್ಯಾಸ್ತು ಮಹರ್ಷಯಃ | ಪರಮರ್ಷಯಸ್ತು ಭೇಲಾಽಽಃ ದೇವರ್ಷಯಃ ಕಣಾದಯಃ | ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಯೋ ವಸಿಷ್ಠಾಽಽಃ ಸುಶ್ರುತಾಽಽಃ ಶ್ರುತರ್ಷಯಃ | ಕೃತುಪರ್ಣಾದಯೋ ರಾಜರ್ಷಯಃ ಕಾಂಡರ್ಷಯಸ್ತವಮಿ | ಜಮಿನ್ಯಾಽಽಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | [ಸ್ವಾಯಂಭುವಾದಿಮನ್ವಂತರಭೇದದಿಂದ ಸಪ್ತರ್ಷಿಗಳ ವಿವರಕ್ಕೆ "ಸಪ್ತರ್ಷಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ವೇದ. 3. ಕಿರಣ.

**ಶ್ರವಿಕುಲ್ಯಾ ಯುಷಿಕುಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಒಂದು ನದಿ, ಒಂದು ಹೊಳೆ. ಕೃಷಿಣಾಂ ಕುಲ್ಯೇವ | "ಶ್ರವಿಕುಲ್ಯಾ ಸಮಾಸಾಽಽಃ ನರಃ ಸ್ನಾತ್ವಾ ವಿಕಲ್ಮಷಃ | ದೇವಾನ್ ಪಿತೃಶ್ಚಾರ್ಚಯಿತ್ವಾ ಶ್ರವಿಲೋಕಂ ಪ್ರಪದ್ಯತೇ" ಭಾಂ ವನಂ ೮೨-೪೯ | 2. ಯುಷಿಕುಲಕ್ಕೆ ಹಿತವಾದ. ಶ್ರವಿಕುಲೇ ಸಾಧುಃ "ಯತ್" (೪-೧-೪) | "ಅಥ ತಸ್ಯೋಗತೀಂ ದೇವೀಮೃಷಿಕುಲ್ಯಾಂ ಸರಸ್ವತೀಮ್ | ನಾಸ್ವಾಽಽಃ ಮನ್ಯುಃ ಪೃಥ್ವೀನಾಂ ತೇಷಾಮಾತ್ಮಾಪ್ಯತೃಪ್ಯತ" ಭಾಗಂ ೩-೧೬-೧೩ |

**ಶ್ರವಿಜಾಙ್ಗಲಿಕಾ ಯುಷಿಜಾಂಗಲಿಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಯಕ್ಷ ಗಂಧೆಯೆಂಬ ಗಿಡ, ಅನಂತನ ಗೊಂಡೆಸೊಪ್ಪು.

**ಶ್ರವಿಪ್ರೋಕ್ತ ಯುಷಿಪ್ರೋಕ್ತ (ವಿಂ)** 1. ಯುಷಿಗಳಿಂದ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪ್ರೋಕ್ತಾ-ಪ್ರೋಕ್ತಾ. 2. ಶತಾವರೀ ಗಿಡ. 3. ನಸುಗುನ್ನಿ ಗಿಡ. 4. ಅತಿಬಲೆ, ಮಹಾ ಶತಾವರೀ

**ಶ್ರವಿಯಜ್ಞ ಯುಷಿಯಜ್ಞ (ಪುಂ)** ಗೃಹಸ್ಥನು ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಶ್ರವ್ಯದೇಶ್ಯಕೋ ಯಜಃ ಶ್ರವಿವೇದಃ ತದಧ್ಯಯನರೂಪೋ ಯಜ್ಞೋ ವಾ | (1) ದೇವಯಜ್ಞ, (2) ಯುಷಿಯಜ್ಞ, (3) ಭೂತಯಜ್ಞ,

(4) ಪಿತೃಯಜ್ಞ ಮತ್ತು (5) ಮನುಷ್ಯಯಜ್ಞಗಳೆಂದು ಗೃಹಸ್ಥನು ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞಗಳು. "ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯೇನಾರ್ಚಯೇತರ್ಷಿನ್ ಹೋಮೇದೇವಾನ್ ಯಥಾವಿಧಿ | ಪಿತೃನ್ ಶ್ರಾದ್ಧೇಶ್ಚ ನೃನಶ್ರೇಷ್ಠತಾನಿ ಬಲಿಕರ್ಮಣಾ" ಮನುಂ ೩-೮೧ |

**ಶ್ರವ್ಯಕೇತು ಯುಷ್ಯಕೇತು (ಪುಂ)** ಅನಿರುದ್ಧ.

**ಶ್ರವ್ಯಗಂಧಾ ಯುಷ್ಯಗಂಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಅನಂತನ ಗೊಂಡೆ ಸೊಪ್ಪು. ಶ್ರವ್ಯಸ್ಯ ಮೃಗಭೇದಸ್ಯ ಗಂಧ ಇವ ಗಂಧೋ ಯಸ್ಯಾಃ | 2. ಕರಿ ನೆಲಗುಂಬಳ. -ಗಂಧಿಕಾ-ಗಂಧಿಕಾ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ" | "ಠಾಪ್" |

**ಶ್ರವ್ಯಪ್ರೋಕ್ತಾ ಯುಷ್ಯಪ್ರೋಕ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಶತಾವರೀ ಗಿಡ. 2. ಅತಿಬಲೆ, ಮಹಾಶತಾವರಿ. 3. ನಸುಗುನ್ನಿ ಗಿಡ.

**ಶ್ರವ್ಯಮೂಕ ಯುಷ್ಯಮೂಕ (ಪುಂ)** ಯುಷ್ಯಮೂಕ ಪರ್ವತ, ಸುಗ್ರೀವನು ವಾಲಿಗೆ ಹೆದರಿ ಬಂದು ಸೇರಿಕೊಂಡಿದ್ದ ಒಂದು ಪರ್ವತ, ಪಂಪಾಸರಸ್ಸಿನ ಹತ್ತಿರದ ಒಂದು ಪರ್ವತ. ಶ್ರವ್ಯೋ ಮೃಗೋ ಮೂಕೋ ಯತ್ರ | [ವಾಲಿಯು ಒಮ್ಮೆ ದುಂದುಭಿ ಯೊಡನೆ ಕಾದಾಡಿ ಅವನನ್ನು ಕೊಂದು ಅವನ ಶರೀರವನ್ನು ಬಿಸಾಡಿದನು. ಅದು ಮತಂಗಮಹರ್ಷಿಯ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದು ಆಶ್ರಮವು ರಕ್ತಮಾಂಸಗಳಿಂದ ದೂಷಿತವಾಗಲು ಆ ಯುಷಿಯು ಇದು ವಾಲಿಯ ಕೃತ್ಯವೆಂದು ತಿಳಿದು ವಾಲಿಯು ಇಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದರೆ ಅವನ ತಲೆಯು ಒಡೆಯ ಲೆಂದು ಶಾಪವಿತ್ತುದರಿಂದ ವಾಲಿಯಿಂದ ಮನಸ್ತಾಪ ಗೊಂಡ ಸುಗ್ರೀವನು ಹನುಮಂತನೊಡನೆ ಅವನ ಪ್ರವೇಶ ವಿಲ್ಲದ ಈ ಪರ್ವತಕ್ಕೆ ಬಂದು ಸೇರಿದನು. ಸೀತೆಯನ್ನು ಹುಡುಕಿಕೊಂಡು ಬಂದ ಶ್ರೀರಾಮನಿಗೆ ಸುಗ್ರೀವನೊಡನೆ ಸಖ್ಯವೇರ್ಪಟ್ಟಿದ್ದು ಈ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ.]

**ಶ್ರವ್ಯಶೃಂಗ ಯುಷ್ಯಶೃಂಗ (ಪುಂ)** 1. ಯುಷ್ಯಶೃಂಗ ಮಹರ್ಷಿ, ವಿಭಾಂಡಕ ಮಹರ್ಷಿಯ ಪುತ್ರ, ರೋಮಪಾದಮಹಾ ರಾಜನ ಮಗಳಾದ ಶಾಂತಾದೇವಿಯ ಪತಿ. ಶ್ರವ್ಯಸ್ಯ ಮೃಗಸ್ಯ ಶೃಂಗಮಿವ ಶೃಂಗಮಸ್ಯ | [ವಿಭಾಂಡಕ ಮಹರ್ಷಿಯು ಒಂದು ಮಡುವಿನಲ್ಲಿ ಇಳಿದು ಅಲ್ಲಿ ತಪಸ್ಸಿನಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಊರ್ವಶಿ ಯನ್ನು ನೋಡಿ ಚಿತ್ತಚಾಂಚಲ್ಯದಿಂದ ವೀರ್ಯವು ಸ್ಫುಲಿತವಾಗಲು ಅದನ್ನು ಕುಡಿದ ಒಂದು ಹೆಣ್ಣು ಜಿಂಕೆಯಿಂದ ಯುಷ್ಯಶೃಂಗನು ಜನಿಸಿದನು. ಭಾಂ ವನಂ ೧೧೧ |

ಒಮ್ಮೆ ಅಂಗದೇಶದಲ್ಲಿ ಅನಾವೃಷ್ಟಿಯುಂಟಾಗಲು ರೋಮಪಾದರಾಜನು ಈ ಮಹರ್ಷಿಯನ್ನು ಕರೆಯಿಸಿ ಸುವೃಷ್ಟಿಯನ್ನು ಪಡೆದು ತನ್ನ ಮಗಳಾದ ಶಾಂತಾದೇವಿಯನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಮದುವೆ ಮಾಡಿದನು. ಭಾಂ ವನಂ ೧೧೪ |



ದಶರಥಮಹಾರಾಜನು ಪುತ್ರಕಾಮೇಷ್ಟಿಯನ್ನು ಮಾಡಿದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಈ ಮಹರ್ಷಿಯನ್ನು ಕರೆಯಿಸಿದ್ದನು. ರಾಮಾಂ ಬಾಲಂ । 2. ಸಾವರ್ಣಕಮನ್ವಂತರದಲ್ಲಿದ್ದ ಸಪ್ತರ್ಷಿಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ ಯುಷಿ. "ರಾಮೋ ವ್ಯಾಸೋ ಗಾಲವಶ್ಚ ದೀಪ್ತಿಮಾನ್ ಕೃಪ ಏವ ಚ । ಋಷ್ಯಶೃಂಗಸ್ತಥಾ ದ್ರೋಣಿಸ್ತತ್ರ ಸಪ್ತರ್ಷಯೋಽಭವನ್" ಮಾರ್ಕಂ ೮೦-೪ ।

ಋಷಿರಜಸ್ ಋಕ್ಷರಜಸ್ (೪೦) ವಾನರವಂಶದ ಒಬ್ಬ ಮೂಲಪುರುಷ. ಬ್ರಹ್ಮನು ಮೇರುಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಆತನ ಕಣ್ಣೀರಿನಿಂದ ವಾನರರೂಪದ ಪುರುಷನೊಬ್ಬನು ಹುಟ್ಟಿದನು. ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಾತಿನಂತೆ ಅವನು ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಒಂದು ಕೊಳದಲ್ಲಿ ಇಣಕಿ ನೋಡಲಾಗಿ ಅದರೊಳಗೆ ತನ್ನ ಪ್ರತಿಬಿಂಬವನ್ನು ಕಂಡು ಅದರೊಡನೆ ಕಾದಾಡಲು ಕೊಳದೊಳಕ್ಕೆ ಧುಮು

ಕಿದನು. ಕೊಳದೊಳಗೆ ಯಾರೂ ಇರಲಿಲ್ಲವಾಗಿ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಬರುವಷ್ಟರಲ್ಲಿ ಹೆಂಗಸಾದನು. ಆಗ ಆಸ್ತಂಗತನಾಗುತ್ತಿದ್ದ ಸೂರ್ಯನೂ ಬ್ರಹ್ಮನನ್ನು ಕಾಣಲು ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದ ಇಂದ್ರನೂ ಈಕೆಯನ್ನು ನೋಡಿ ಮೋಹಗೊಳ್ಳಲಾಗಿ ಸೂರ್ಯನ ತೇಜಸ್ಸು ಕುತ್ತಿಗೆಯ ಮೇಲೆಯೂ ಇಂದ್ರನ ತೇಜಸ್ಸು ಬಾಲದ ಮೇಲೆಯೂ ಬಿದ್ದಿತು. ಅದರಿಂದ ವಾಲಿಸುಗ್ರೀವರು ಜನಿಸಿದರು. ಮಾರನೆಯ ದಿನ ಬೆಳಗಾಗುವಷ್ಟರಲ್ಲಿ ಋಕ್ಷರಜಸ್ಸು ಪುನಃ ಗಂಡಸಾಗಲು ಈ ವಿಷಯವನ್ನು ಬ್ರಹ್ಮನಿಗೆ ತಿಳಿಸಿದನು. ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಗೆ ಹೋಗಿ ರಾಜ್ಯವಾಳುವಂತೆ ಬ್ರಹ್ಮನ ಆಜ್ಞೆಯಾಯಿತು. ಅದರಂತೆ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯಲ್ಲಿ ಕೆಲವುಕಾಲ ರಾಜ್ಯವಾಳಿ ವಾಲಿಗೆ ಪಟ್ಟಕಟ್ಟಿಸುಗ್ರೀವನಿಗೆ ಯುವರಾಜ ಪದವಿಯನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ತಾನು ತಪಸ್ಸಿಗೆ ಹೋದನು,

इति "ऋ" कारादिपदार्थनिरूपणम्

ऋ

ऋ ಋ ಇದು ವರ್ಣಮಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಮೂರ್ಧಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಎಂಟನೆಯ ಸ್ವರವರ್ಣ. "ಋತುರಣಾಂ ಮೃಗಾ" ಸಿಂ ಕೌಂ । ಉದಾತ್ತ, ಅನುದಾತ್ತ ಮತ್ತು ಸ್ವರಿತಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಭೇದಗಳುಳ್ಳ ಈ ದೀರ್ಘ "ಋ" ಕಾರವು ಪುನಃ ಅನುನಾಸಿಕ ಮತ್ತು ಅನನುನಾಸಿಕಗಳೆಂಬ ಭೇದದಿಂದ ಒಟ್ಟು ಆರು ವಿಧವಾಗುವುದು.

ಋ ಋ (೪೦) 1. ಭೈರವ. 2. ದನುಜ, ದಾನವ. (ನಂ) 3. ಸ್ಮೃತಿ, ನೆನಪು. 4. ವಕ್ಷಸ್ಸು, ಎದೆ.

(ಸ್ತ್ರೀಂ) 5. ದೇವತೆಗಳ ತಾಯಿ, ಅದಿತಿ. 6. ದಾನವರ ತಾಯಿ, ದನು. 7. ಗತಿ, ಗಮನ. (ಅವ್ಯಂ) 8. ವಾಕ್ಯ ರಂಭ. 9. ರಕ್ಷಣೆ. "ಋ ವಾಕ್ಯಾರಂಭೇ ರಕ್ಷಾयां वक्षः स्मृत्योरन्वययम् । देवाम्बायां दनौ चापि भैरवे दनुजे गतौ" ಮೇದಿಂ ।

ಋ-ಗತೌ (ಕ್ರಯಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) ಋಣಾತಿ. ಋಣಾತು. ಋಣೀಯಾತ್ । ಆರೀತ್ । ಹೋಗು, ಚಲಿಸು, ನಡೆ.

इति "ऋ" कारादिपदार्थनिरूपणम्



ल

लृ दಂತಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಈ ಹ್ರಸ್ವಸ್ವರವರ್ಣವು ಉದಾತ್ತ, ಅನುದಾತ್ತ ಮತ್ತು ಸ್ವರಿತಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಭೇದಗಳುಳ್ಳದಾಗಿ ಪುನಃ ಅನುನಾಸಿಕ ಮತ್ತು ಅನನುನಾಸಿಕ ಭೇದಗಳಿಂದ ಒಟ್ಟು ಆರು ವಿಧವಾಗುವುದು. ಇದು ಒಂಭತ್ತನೆಯ ಸ್ವರವರ್ಣ.

लृ (अव्यं) 1. ಅದಿತಿರ್ದೇವಿ, ದೇವತೆಗಳ ತಾಯಿ. 2. ಭೂಮಿ. 3. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. "लृकारो देवताम्बायां भुवि कुध्रे च कीर्तितः" मेदि०। 4. ನಿಂದೆ. 5. ವಿಸ್ಮಯ, ಆಶ್ಚರ್ಯ. "लृ कुत्सायां विस्मये च" हेम०।

लृ ಇದೊಂದು ದಂತ್ಯ ದೀರ್ಘಸ್ವರವರ್ಣ. "लृ" ಕಾರ ದಂತೆಯೇ ಇದೂ ಆರು ವಿಧವಾಗುವುದು. ಇದು ಹತ್ತನೆಯ ಸ್ವರವರ್ಣ. ಪಾಣಿನಿಯ ವ್ಯಾಕರಣರೀತ್ಯಾ ಈ ವರ್ಣವಿಲ್ಲ. ಆದರೆ ಕೋಶಗಳಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಕಂಡುಬರುವುದು.

लृ (पुं) 1. ಓತಿಕೇತ. 2. ಮೇರುಪರ್ವತ. 3. ಚಂದ್ರ. 4. ದೇವತೆ. 5. ಲೀಲೆಯಿಂದ ನಡೆಯುವಿಕೆ. 6. ಕಣ್ಣಿನ ಎಲುಬು. 7. ನಾಗಮಾತೆ. 8. ತಾಯಿ. "लृकारः कृकलासेन्द्रे मेरी हिमकरे सुरे। लीलागतौ लोचनास्थिनागमातरि मातरि" नानार्थर०। ಮತ್ತು ಮಂತ್ರ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಮಾತೃಕಾನ್ಯಾಸದಲ್ಲಿ ಇದರ ಪ್ರಯೋಗವುಂಟು.

इति "लृ" कारादिपदार्थनिरूपणम्

ए

ए ಎ ಇದು ವರ್ಣಮಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಕಂಠ ಮತ್ತು ತಾಲು ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಹನ್ನೊಂದನೆಯ ಸ್ವರವರ್ಣ. ಉದಾತ್ತ, ಅನುದಾತ್ತ ಮತ್ತು ಸ್ವರಿತಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಭೇದಗಳುಳ್ಳ ಈ ದೀರ್ಘಸ್ವರವು ಅನುನಾಸಿಕ ಮತ್ತು ಅನನುನಾಸಿಕ ಭೇದದಿಂದ ಎರಡು ವಿಧವಾಗಿ ಒಟ್ಟು ಆರು ವಿಧವಾಗುವುದು.

ए ए (पुं) 1. ತೇಜಸ್ಸು. 2. ಜಲ, ನೀರು. 3. ರಾತ್ರಿ. 4. ಮಹಡಿಯ ಒಳಭಾಗ. 5. ಎಷ್ಟು. 6. ಆಕಾಶ. 7. ಹನ್ನೊಂದು ಸಂಖ್ಯೆ. 8. ಪ್ರಾತಃಕಾಲ. 9. ರತ್ನ ಜಗುಲಿ. "एकारस्तेजसि जले रात्रौ हर्म्योदरे हरौ। व्योम्येकादशसंख्यायां दिनादौ मणिकुट्टिमे" नानार्थर०। (अव्यं) 10. ಸ್ಮೃತಿ, ನೆನಪು. 11. ಅಸೂಯೆ, ಹೊಟ್ಟೆಕಿಚ್ಚು. 12. ದಯೆ, ಕನಿಕರ. 13. ಸಂಭೋಧನೆ. 14. ಆಹ್ವಾನ. "ए स्मृतावप्यसूयानुकम्पामन्त्रणहृतिषु" मेदि०।

एक एक (पुं) 1. ಎಷ್ಟು. एति महिम्नि अतुल्यकक्षयतया सजातीयसंख्येयाभावात् अद्वैतं गच्छति—इण् (गती)

"कन्" (उ० ३-४३)। "द्वितीयस्य सजातीयराहित्यादेक उच्यते" इति निरुक्तिः। "एको नैकः सवः कः किम्" वि० स०। (वि०) 2. ಒಂದು, ಒಬ್ಬ. "एको रागिषु राजते प्रियतमादेहार्धहारी हरो नीरागेषु जनो विमुक्तललनासङ्गो न यस्मात्परः" भर्तृ० ३-१७। 3. ಒಂಟಿಯಾದ, ಅಸಹಾಯನಾದ. "एकः संप्रति नाशितप्रियतमस्तामेव रामः कथम्" उ० रा० २-२८। 4. ಕೇವಲ, ಒಂದು ಮಾತ್ರ, ಒಬ್ಬ ಮಾತ್ರ. "स च त्वदेकेषु निपातसाध्यो ब्रह्माङ्गभूर्ब्रह्मणि योजितात्मा" कुमा० ३-१५। 5. ಮುಖ್ಯ, ಪ್ರಧಾನ, ಶ್ರೇಷ್ಠ. "एकैश्वर्ये स्थितोऽपि प्रणतबहुफले यः स्वयं कृत्तिवासाः" माल० १-१। 6. ಒಂದೇ ಆದ, ಸಮಾನವಾದ, ಭಿನ್ನವಲ್ಲದ. "कथमेकान्वयो मम" शाकु० ७। 7. ಎರಡರಲ್ಲಿ ಅಥವಾ ಒಂದು ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು, ಒಂದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದ ಇನ್ನೊಂದು, ಇತರ, ಬೇರೆ. "एकः सख्यास्तव सह मया वामपादाभिलाषी काङ्क्षत्यन्यो वदनमदिरां दोहदच्छन्नास्याः" मेघ० २-१५। 8. ಅನಿರ್ದಿಷ್ಟ.



ಯಾವುದೋ ಒಂದು. "ಸ್ತ್ರೀಸಂಸ್ಥಾನಂ ಚಾಪರಸ್ತೀರ್ಮಾರಾ-  
ದ್ವಿಕ್ಷಿಪ್ಯನಾಂ ಜ್ಯೋತಿರೇಕಂ ಜಗಾಮ" ಶಾಕುಂ ೪-೩೦।  
9. ಒಂದೇ ರೀತಿಯಾದ, ಒಂದೇವರ್ಣಿ ಹೊಂದಿದ, ಸಮಾನ  
ವಾದ. "ಮನಸ್ಯೇಕಂ ವಚಸ್ಯೇಕಂ ಕರ್ಮಣ್ಯೇಕಂ ಮಹಾತ್ಮನಾಮ್"  
ಹಿತೋ ೧-೧೦೧। (ಬಂವಂ) 10. ಕೆಲವರು, (ತಮ  
ಗಿಂತಲೂ) ಇತರರು, ಬೇರೆಯವರು. "ಏಕೇ ಸಮುಹಬಲೇಣು-  
ಸಂಹತಿಂ ಶಿರೋಭಿರಾಜಾಮಪರೇ ಮಹಿಭೃತಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೪೫।

**ಏಕಕ ಏಕಕ** (ವಿಂ) ಅಸಹಾಯ, ಒಂಟಿಯಾಗಿರುವ. ಏಕ  
"ಕನ್" (೪-೩-೪೨)। "ವಿಧಿರೇಕಕಚಕ್ರವಾರಿಣಿಂ ಕಿಮು  
ನಿರ್ಮಿಸತಿ ಮಾನ್ಮಯಂ ರಥಮ್" ನೈಷಂ ೨-೩೬। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ  
"ಢಾಪ್" (೪-೧-೪)। **ಏಕಿಕಾ ಏಕಿಕಾ**. "ನಿಖಿಲಾನ್ನಿಶಿ  
ಪೂರ್ಣಿಮಾ ತೀರ್ಥಿನುಪತಸ್ಯೇತಿತಿಥಿರೇಕಿಕಾ ತಿಥಿಃ" ನೈಷಂ  
೨-೭೬।

**ಏಕಕಂಠ ಏಕಕಂಠ** (ವಿಂ) ಒಂದೇ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಒಂದೇ ಕಂಠ  
ದಿಂದ ಹೇಳಲ್ಪಡುವ, ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ ಅನೇಕರ (ಬೇರೆಬೇರೆ  
ಯಲ್ಲದ) ಒಂದೇ ಅಭಿಪ್ರಾಯದ (ಮಾತು).

**ಏಕಕರ ಏಕಕರ** (ವಿಂ) 1. ಒಂದು ಕಾರ್ಯವನ್ನು  
ಮಾಡುವ. ಏಕಂ ಕರೋತಿ—ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) "ಢಃ"  
(೩-೨-೨೧)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಢೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಕರೀ  
-ಕರೀ. 2. ಒಂದು ಕೈಯುಳ್ಳವನು. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಢಾಪ್"  
(೪-೧-೪)। -ಕರಾ -ಕರಾ.

**ಏಕಕರ್ತೃ ಏಕಕರ್ತೃ** (ವಿಂ) ಒಂದೇ ಕರ್ತೃವಿನಲ್ಲಿರುವ  
ಅನೇಕ ಕ್ರಿಯೆಗಳು. ವಾ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೫೪)। -ಕರ್ತೃಕ  
-ಕರ್ತೃಕ.

**ಏಕಕಲ್ಪ ಏಕಕಲ್ಪ** (ಪುಂ) 1. ಮುಖ್ಯಕಲ್ಪ, ಪ್ರಥಮ  
ಕಲ್ಪ. 2. ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಒಂದು ವಿಧಾನ, ಶಾಸ್ತ್ರ  
ವಿಹಿತವಾದ ಒಂದು ಕ್ರಮ. ಏಕಃ ಕಲ್ಪಃ। (ವಿಂ) 3.  
ಮುಖ್ಯ ಕಲ್ಪವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಸಲ್ಪಡುವ (ಕಾರ್ಯ).  
4. ಒಂದೇ ಕ್ರಮವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಸಲ್ಪಡುವ, ಒಂದೇ  
ಕಲ್ಪದ ಅನುಸಾರವಾಗಿ ನಡೆಸಲ್ಪಡುವ (ಯಾಗಾದಿಗಳು).  
ಏಕಃ ಕಲ್ಪೋ ಯಸ್ಯ।

**ಏಕಕಾರ್ಯ ಏಕಕಾರ್ಯ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ಕಾರ್ಯ.  
2. ಒಂದೇ ಕಾರ್ಯ, ಸಮಾನವಾದ ಕೆಲಸ. ಏಕಂ ಸಮಾನಂ  
ಕಾರ್ಯಮ್। 3. ಅನೇಕ ಕಾರಣಗಳಿಂದ ನಿರ್ವಹಿಸಲ್ಪಡುವ  
ಒಂದು ಕಾರ್ಯ, ಅನೇಕ ಕಾರಣಗಳಿಂದ ಸಾಧಿಸಲ್ಪಡುವ  
ಒಂದು ಕಾರ್ಯ. (ವಿಂ) 4. ಒಂದೇ ವಿಧ ಉದ್ಯೋಗ  
ವುಳ್ಳ, ಸಮಾನವಾದ ವೃತ್ತಿಯುಳ್ಳ. ಏಕಂ ಸಮಾನಂ ಕಾರ್ಯ  
ಯಸ್ಯ।

**ಏಕಕಾರ್ಯತ್ವ ಏಕಕಾರ್ಯತ್ವ** (ನಂ) ಏಕಕಾರ್ಯತ್ವವು  
ಕೂಲತ್ವ, (ಎರಡು ಕಾರಣಗಳು) ಒಂದು ಕೆಲಸಕ್ಕೆ  
ಅನುಕೂಲವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಏಕಂ ಕಾರ್ಯಂ ಯಯಃ ಕಾರಣಯಃ,  
ತಯೋರ್ಭಿವಃ "ತ್ವಃ" (೪-೧-೧೧೯)। ಇದು ಆರು ವಿಧ  
ಸಂಗತಿಗಳಲ್ಲಿಯೊಂದು. (1) ಪ್ರಸಜ್ಞಃ, (2) ಉಪೋದ್ಘಾತಃ,  
(3) ಹೇತುತ್ವಮ್, (4) ಅವಸರಃ, (5) ನಿರ್ವಾಹಕತ್ವಮ್ ಮತ್ತು  
(6) ಏಕಕಾರ್ಯತ್ವಮ್ ಎಂದು ಸಂಗತಿಗಳು ಆರು ವಿಧ.

**ಏಕಕಾಲ ಏಕಕಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಕಾಲ, ಒಂದು  
ವೇಳೆ, ಒಂದು ಸಮಯ. ಏಕಃ ಕಾಲಃ। 2. ಒಂದೇ  
ಸಮಯ, ಸಮಾನವಾದ ಕಾಲ. ಏಕಃ ಸಮಾನಃ ಕಾಲಃ।  
(ಅವ್ಯಂ) -ಕಾಲಮ್ -ಕಾಲಮ್. 3. ಒಂದೇ ವೇಳೆ,  
ಒಂದೇ ಸಲ. "ಏಕಕಾಲಂ ಚರೇದ್ದಕ್ಷಂ ನ ಪ್ರಸಜ್ಜೇತ ವಿಸ್ತರೇ"  
ಮನುಂ ೬-೫೫। 4. ಒಂದೇ ಸಮಯದಲ್ಲಿ, ಸಮಾನ  
ಕಾಲದಲ್ಲಿ.

**ಏಕಕಾಲಿಕ ಏಕಕಾಲಿಕ** (ವಿಂ) ಒಂದು ವೇಳೆಯಲ್ಲಿ  
ಉಂಟಾದ, ಒಂದು ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಏಕಕಾಲೋ ಜನಕ-  
ತಯಾಸ್ತಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೫)। "ತೇಮ್ಯೋ ಲಬ್ಧೇನ  
ಭೇಷಣಂ ವರ್ತಯನ್ನೇಕಕಾಲಿಕಮ್" ಮನುಂ ೧೧-೧೨೩।

**ಏಕಕುಂಡಲ ಏಕಕುಂಡಲ** (ಪುಂ) 1. ಬಲರಾಮ.  
2. ಕುಬೇರ. ಏಕಂ ಕುಂಡಲಂ ಯಸ್ಯ। "ಏಕಕುಂಡಲ ಆಖ್ಯಾತೋ  
ಬಲಮದ್ರೇ ಧನಾಧಿಪಃ" ಮೇದಿಂ। 3. ಆದಿಶೇಷ. "ಅಥಾನಂತೇ  
ಕುಬೇರೇ ಚೈಕಕುಂಡಲಃ" ವೇಜಂ।

**ಏಕಗುರು ಏಕಗುರು** (ಪುಂ) ಒಬ್ಬನೇ ಗುರುವಿನ ಶಿಷ್ಯ,  
ಒಬ್ಬನೇ (ಸಮಾನ) ಆಚಾರ್ಯನಲ್ಲಿ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವ  
ಸಹಪಾಠಿ. ಏಕಃ ಅಭಿಷ್ಠೋ ಗುರುಸ್ಯ।

**ಏಕಗ್ರಾಮ ಏಕಗ್ರಾಮ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದೇ ಗ್ರಾಮ, ಸಮಾನ  
ವಾದ ಗ್ರಾಮ. ಏಕಃ ಸಮಾನೋ ಗ್ರಾಮಃ। (ವಿಂ) 2. ಒಂದೇ  
ಹಳ್ಳಿಯುಳ್ಳ, (ವಾಸಕ್ಕೆ) ಸಮಾನಗ್ರಾಮವುಳ್ಳ, (ಒಂದೇ  
ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ). ಏಕಃ ಸಮಾನೋ ಗ್ರಾಮೋ  
ಯಸ್ಯ।

**ಏಕಗ್ರಾಮೀಣ ಏಕಗ್ರಾಮೀಣ** (ವಿಂ) ಒಂದೇ ಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿ  
(ನಿರಂತರವಾಗಿ) ವಾಸಮಾಡುವ, ಒಂದೇ ಊರಿನಲ್ಲಿರುವ.  
ಏಕಗ್ರಾಮೇ ಭವಃ "ಖಜ್" (೪-೨-೯೪)। "ನೈಕಗ್ರಾಮೀಣ-  
ಮತಿಥಿಂ ವಿಪ್ರಂ ಸಾಙ್ಗತಿಕಂ ತಥಾ। ಉಪಸ್ಥಿತಂ ಗೃಹೇ ವಿಧ್ಯಾತ್  
ಭಾರ್ಯಾ ಯತ್ರಾಗ್ನಯೋಽಪಿ ವಾ" ಮನುಂ ೩-೧೦೩।

**ಏಕಗ್ರಾಮೀಯ ಏಕಗ್ರಾಮೀಯ** (ವಿಂ) ಒಂದೇ ಹಳ್ಳಿಗೆ  
ಸೇರಿದ, ಸಮಾನವಾದ ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ.  
ಏಕಗ್ರಾಮೇ ಭವಃ "ಃ" (೪-೨-೧೩೮)।



**ಏಕಗ್ರಾಮ್ಯ ಏಕಗ್ರಾಮ್ಯ** (ವಿಂ) ಒಂದೇ ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವ, (ನಿರಂತರವಾಗಿ) ಒಂದೇ ಊರಿನಲ್ಲಿರುವ. ಏಕಗ್ರಾಮೇ ಭವ: "ಯ:" (೪-೨-೯೪) ।

**ಏಕಚಕ್ರ ಏಕಚಕ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯನ ರಥ. ಏಕಂ ಚಕ್ರಂ ಯಸ್ಯ । ಸಪ್ತ ಯುಜಂತಿ ರಥಮೇಕಚಕ್ರಮೇಕೋಷ್ವರೋ ವಹತಿ ಸಪ್ತನಾಮಾ । ತ್ರಿನಾಭಿಚಕ್ರಮಜರಮನವಂ ಯತ್ರೇವಾ ವಿಶ್ವಾ ಭುವನಾಧಿಸತ್ಯು: "ಶ್ಲೋಕಂ । ಸೂರ್ಯರಥಕ್ಕೆ ಮೂರು ಚಕ್ರಗಳಿದ್ದರೂ ಅವೆಲ್ಲಾ ಒಂದು ರೂಪದಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ಏಕಚಕ್ರವಾಯಿತು. ಒಂದೇ ಕುದುರೆ. ಅದಕ್ಕೆ "ಸಪ್ತ" ಎಂದು ಹೆಸರು. ಅಥವಾ ಸಪ್ತಸಂಖ್ಯಾಕವಾದ ರಶ್ಮಿಗಳು. ಅಥವಾ ಮಾಸದ್ವಯಾತ್ಮಕವಾದ ಆರು ಋತುಗಳು ಮತ್ತು ಒಂದು ಅಧಿಕಮಾಸ ಈ ರೀತಿ ಏಳು ಋತುಗಳು ಸೂರ್ಯನ ಈ ಸಂಚಾರ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸುವುವು. ಅಥವಾ ಸಪ್ತರ್ಷಿಗಳಿಂದ ಸ್ತುತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಸೂರ್ಯನು ಸಂಚರಿಸುತ್ತಾನೆ. ಅಥವಾ ಭೂತಭವಿಷ್ಯದ್ವರ್ತಮಾನ ರೂಪವಾದ ಮೂರು ನಾಭಿಗಳುಳ್ಳ ಸಂವತ್ಸರರೂಪವಾದ ಚಕ್ರ. ನಾನಾ ಕಾಲಾವಯವೋಪೇತವಾದ ಈ ಚಕ್ರವನ್ನು ಸೂರ್ಯನು ತಿರುಗಿಸುತ್ತಿರುವನು. ಇತ್ಯಾದಿ, ಇತ್ಯಾದಿ. ಶ್ಲೋಕಂ ಭಾಂ । (ವಿಂ) 2. ಒಂದು ಚಕ್ರವುಳ್ಳ. "ಅಶ್ವಾನಂ ನೇಕಚಕ್ರ: ಪ್ರಭವತಿ ಭುವನಭ್ರಾಂತಿರ್ದೀರ್ಘಂ ವಿಲಿಂಗ್ಯ ಪ್ರಾತ: ಪ್ರಾಪ್ತುಂ ರಥೋ ಮೇ ಪುನರिति ಮನಸಿ ನ್ಯಸ್ತಚಿಂತಾತಿಭಾರ:" ರತ್ನಾಂ ೩-೪ । 3. ಒಬ್ಬ ರಾಜನುಳ್ಳ, ಒಬ್ಬ ರಾಜನಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಇತ್ಯಂ ವ್ರಜನ್ ಭಾರತಮೇವ ವರ್ಷ ಕಾಲೇನ ಯಾವತ್ ಗತವಾನ್ ಪ್ರಭಾಸಮ್ । ತಾವಚ್ಛಾಸಾಸ ಕ್ಷಿತಿಮೇಕಚಕ್ರಾಮೇಕಾತಪತ್ರಾಮಜಿತೇನ ಪಾರ್ಥ:" ಭಾಗಂ ೩-೧-೨೦ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಚಕ್ರಾ-ಚಕ್ರಾ. 4. ಏಕಚಕ್ರನಗರ, ಪಾಂಡವರು ಅರಗಿನ ಮನೆಯಿಂದ ಪ್ರಾಣ ರಕ್ಷಿಸಿಕೊಂಡು ಹೋಗಿ ಕೆಲವುಕಾಲ ವಾಸಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಒಂದು ಪಟ್ಟಣ. [ಪಾಂಡವರು ಇಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಈ ಊರಿನ ಜನರಿಗೆ ಅನೇಕ ವಿಧ ಚಿತ್ರಹಿಂಸೆ ಕೊಡುತ್ತಿದ್ದ ಬಕಾ ಸುರನನ್ನು ಭೀಮನು ಸಂಹರಿಸಿ ಆ ಜನರ ಪ್ರಾಣಗಳನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಿದನು.] "ತತ್ರ ತೇ ನಿಯತಾ ಕಾಲಂ ಕಚ್ಚಿದ್ಧುರ್ನರರ್ಷಭಾ: । ಮಾತ್ರಾ ಸಹೇಕಚಕ್ರಾಃ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ನಿವೇಶನೇ । ತತ್ರಾಸಸಾದ ಕ್ಷುಧಿತಂ ಪುರುಷಾದಂ ವೃಕೋದರ: । ಭೀಮಸೇನೋ ಮಹಾಬಾಹು: ಬಕಂ ನಾಮ ಮಹಾಬಲಮ್ । ತಂ ಚಾಪಿ ಪುರುಷವ್ಯಾಘ್ರೋ ಬಾಹುವೀರ್ಯೇಣ ಪಾಂಡವ: । ನಿಹತ್ಯ ತರಸಾ ವೀರೋ ನಾಗರಾನ್ ಪರ್ಯಸಾನ್ತವಯತ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೧ ।

**ಏಕಚಕ್ಷುಸ್ ಏಕಚಕ್ಷುಸ್** (ಪುಂ) 1. ಕಾಗೆ, ವಾಯಸ. (ವಿಂ) 2 ಒಂದು ಕಣ್ಣುಳ್ಳ (ಪ್ರಾಣಿ). 3. ಒಂದು

ಕಣ್ಣುಳ್ಳ (ಸೂದಿ). ಏಕಂ ಚಕ್ಷುರ್ಯಸ್ಯ । 4. ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಜ್ಞಾನವುಳ್ಳ, ಸ್ಮರಚಿತ್ತನಾದ.

**ಏಕಚತ್ವಾರಿಂಶ ಏಕಚತ್ವಾರಿಂಶ** (ವಿಂ) ನಲವತ್ತೊಂದನೆಯ. ಏಕಚತ್ವಾರಿಂಶತ: ಪೂರ್ಣ: "ಛತ್" (೪-೨-೪೮) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೧೪) । -ಚತ್ವಾರಿಂಶಿ-ಚತ್ವಾರಿಂಶೀ.

**ಏಕಚತ್ವಾರಿಂಶತ್ ಏಕಚತ್ವಾರಿಂಶತ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಲವತ್ತೊಂದು. ಏಕೇನಾಧಿಕಾ ಚತ್ವಾರಿಂಶತ್ । (ವಿಂ) 2. ನಲವತ್ತೊಂದು ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ.

**ಏಕಚರ ಏಕಚರ** (ಪುಂ) 1. ಗಂಡಕಮ್ಮಗ, ಖಡ್ಗಮ್ಮಗ. ಏಕ: ಚರತಿ-ಚರ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । 2. ಒಂಟಿಯಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವ ಹಾವು ಮೊದಲಾದುದು. "ನ ಭಕ್ಷಯೇದೇಕಚರಾನಜ್ಞಾತಾಂಶ್ಚ ಮೃಗದ್ವಿಜಾನ್" ಮನುಂ ೪-೧೭ । (ವಿಂ) 3. ಒಂಟಿಯಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವ, ಅಸಹಾಯನಾಗಿ ತಿರುಗಾಡುವ. "ಮಾಗಾಶ್ಚಿರಾಯೇಕಚರ: ಪ್ರಮಾದಂ ವಸತ್ರ-ಸಂಭಾಷಿವೇಷಿ ದೇಶೇ" ಕಿರಾಂ ೩-೪೩ । 4. ಒಂಟಿಯಾದ, ಗುಂಪಿನಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ. "ಅಯಮೇಕಚರೋಽಭಿವರ್ತತೇ ಮಾಂ ಸಮರಾಯೇವ ಸಮಾಜುಹೂಷಮಾಣ:" ಕಿರಾಂ ೧೩-೩ ।

**ಏಕಚರ್ಯಾ ಏಕಚರ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂಟಿಯಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವಿಕೆ, ಅಸಹಾಯನಾಗಿ ತಿರುಗಾಡುವಿಕೆ. ಏಕಸ್ಯ ಚರ್ಯಾ ।

**ಏಕಚಾರಿನ್ ಏಕಚಾರಿನ್** (ವಿಂ) ಅಸಹಾಯನಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವ, ಒಂಟಿಯಾಗಿ ತಿರುಗುವ. ಏಕ: ಚರತಿ-ಚರ (ಗತೌ) "ಣಿತಿ:" (೩-೨-೭೮) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೪) । -ಚಾರಿಣಿ-ಚಾರಿಣೀ.

**ಏಕಚಿತ್ತ ಏಕಚಿತ್ತ** (ನಂ) 1. ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿರುವ ಮನಸ್ಸು. 2. ಒಂದೇ ಅಭಿಪ್ರಾಯ, ಸಮಾನಾಭಿಪ್ರಾಯ. (ವಿಂ) 3. ಒಂದೇ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಒಮ್ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಸಮಾನವಾದ ಅಭಿಪ್ರಾಯವುಳ್ಳ. ಏಕಂ ಸಮಾನಂ ಚಿತ್ತಂ ಯಸ್ಯ । ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಒಂದೇ ವಿಷಯವನ್ನು ಕುರಿತು ಆಲೋಚನೆಯುಳ್ಳ. ಏಕಸ್ಮಿನ್ ಚಿತ್ತಂ ಯಸ್ಯ ।

**ಏಕಚಿತ್ತತಾ ಏಕಚಿತ್ತತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮನಸ್ಸು ಇಟ್ಟಿರುವಿಕೆ. 2. ಏಕಾಭಿಪ್ರಾಯದಿಂದಿರುವಿಕೆ. ಏಕಚಿತ್ತಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) ।

**ಏಕಚ್ಚತ್ರ ಏಕಚ್ಚತ್ರ** (ವಿಂ) ಒಂದೇ ಭತ್ತಿಯುಳ್ಳ (ದೇಶ), (ಚಕ್ರವರ್ತಿಯಾದವನಿಗೆ ಹಿಡಿಯಬೇಕಾದ) ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯ ಸೂಚಕವಾದ ಒಂದೇ ಭತ್ತಿಯು ಹಿಡಿಯಲ್ಪಡುವ (ದೇಶ), ಒಬ್ಬನೇ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯಿಂದ ಆಳಲ್ಪಡುವ (ದೇಶ). ಏಕಂ (ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯಸೂಚಕಮಸಾಧಾರಣಂ) ಛತ್ರಂ ಯಸ್ಮಿನ್ ।



ಏಕದಂಷ್ಟ್ರ ಏಕದಂಷ್ಟ್ರ (೨೦) ವಿನಾಯಕ, ಗಣಪತಿ. ಏಕಾ  
 ದಂಷ್ಟ್ರಾ ಯಸ್ಯ | [ಒಂದು ದಿನ ಪಾರ್ವತೀಪರಮೇಶ್ವರರು  
 ಅಂತಃಪುರದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಅವರ ದರ್ಶನಕ್ಕಾಗಿ ಬಂದ ಪರಶು  
 ರಾಮನನ್ನು ಬಾಗಿಲಲ್ಲಿದ್ದ ಗಣಪತಿಯು ತಡೆಯಲು ಪರಶು  
 ರಾಮನು ಕೋಪಗೊಂಡು ತನ್ನ ಕೊಡಲಿಯನ್ನು ಎಸೆದಾಗ  
 ಗಣಪತಿಯ ಒಂದು ಕೊಂಬು ಮುರಿದುದರಿಂದ ಗಣಪತಿಗೆ  
 ಈ ಹೆಸರಾಯಿತು.] “ನಿಪತ್ಯ ಪರ್ಶುವೇಗೇನ ಛಿತ್ತ್ವಾ ದಂತಂ  
 ಸಮೂಲಕಮ್ | ಜಗಾಮ ರಾಮಹಸ್ತಂ ತು ಮಹಾದೇವವರೇಣ ಚ”  
 ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ | [ತನ್ನನ್ನು ಹಾಸ್ಯಮಾಡಿದ ಚಂದ್ರನ ಮೇಲಿನ



ಕೋಪದಿಂದ ತನ್ನ ಒಂದು ಕೊಂಬನ್ನು ಕಿತ್ತು ಚಂದ್ರನನ್ನು ಹೊಡೆದುದರಿಂದ ಗಣಪತಿಯು ಏಕದಂಷ್ಟನಾದನೆಂಬ ಒಂದು ಕಥೆಯೂ ಉಂಟು.]

**एकदण्डिन एकदंदिन (पुं)** ಶಿಖಾಯಜ್ಞೋಪವೀತ ಗಳನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿ ಒಂದು ದಂಡವನ್ನು ಮಾತ್ರ ಧರಿಸಿರುವ ಸಂನ್ಯಾಸಿ. एकः केवलः शिखायजोपवीतशून्यः दण्डोऽ स्यास्ति "इतिः" (५-२-११५)। "यदा हृदाद्यवसितं परं ब्रह्म सनातनम्। तदैकदण्डं संगृह्य सोपवीतां शिखां त्यजेत्"। ಸಂನ್ಯಾಸಿಯು (1) ಕುಟಿಚಕ, (2) ಬಹದಕ, (3) ಹಸ: ಮತ್ತು (4) ಪರಮಹಸ: ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ಕುಟಿಚಕನು ಕಾಷಾಯ ಮತ್ತು ತ್ರಿದಂಡವನ್ನು ಧರಿಸಿ ತನ್ನ ಪುತ್ರನಿಂದ ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಒಂದು ಕುಟೀರದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಾ ತನ್ನ ಅಥವಾ ಬಂಧುಗಳ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಊಟ ಮಾಡುತ್ತಾ ಆತ್ಮಧ್ಯಾನಪರನಾಗಿರಬೇಕು.

ಬಹೂದಕನು ಇದೇ ವೇಷದಿಂದ ಏಳು ಮನೆಗಳಲ್ಲಿ ಭಿಕ್ಷೆ ಬೇಡಿ ಜೀವಿಸುತ್ತಿರಬೇಕು.

ಹಂಸನು ಇದೇ ವೇಷದಿಂದ ಏಕದಂಡಧಾರಿ ಯಾಗಿರುವನು.

ಪರಮಹಂಸನೂ ಶಿಖಾಯಜ್ಞೋಪವೀತ ಹೀನನಾಗಿ ಏಕದಂಡಧಾರಿಯಾಗಿರುವನು.

**एकदन्त एकदन्त (पुं)** ವಿನಾಯಕ, ಗಣಪತಿ. एको दन्तो यस्य। ["एकदंष्ट्र" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "अनेकदं तं भक्तानामेकदन्तमुपास्महे"।

**एकदा एकदा (अव्य०)** 1. ಒಂದು ಸಲ, ಒಂದು ಕಾಲ ದಲ್ಲಿ, ಒಂದು ಸಮಯದಲ್ಲಿ. एकस्मिन् काले—एक "दा" (५-३-१५)। "सचैकदा पिपासाकुलितः पानीयं पातुं यमुनाकच्छमगच्छत्" हितो०२। 2. ಒಂದೇ ಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಅದೇ ಸಮಯದಲ್ಲಿ, ಸಮಕಾಲದಲ್ಲಿ. "एकदा न विगृह्णीयाद्बहून् राजा विरोधिनः" हितो०४-९३। 3. ಕೂಡಲೆ, ತತ್ಕ್ಷಣದಲ್ಲಿ.

**एकदिश् एकदिश (वि०)** ಒಂದೇ ದಿಕ್ಕುಳ್ಳ, ಸಮಾನ ವಾದ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ. एका दिक् अधिकरणात्मिका यस्य। "तेनैकदिक्" पा० सू० ४-३-११२।

**एकदुःख एकदुःख (वि०)** ಒಂದೇ ವಿಧ ದುಃಖವುಳ್ಳ, ಸಮಾನವಾದ ದುಃಖವುಳ್ಳ. एकं समानं दुःखं यस्य।

**एकदृश् एकदृश् (पुं)** 1. ವಾಯಸ, ಕಾಗೆ. एका दृक् यस्य। अभि० चि० ४-२८८। 2. ಈಶ್ವರ, ಪರಮಾತ್ಮ. एकं सर्वमभिन्नं पश्यति—दृशिर् (प्रेक्षणे)

"किन्" (३-२-६१)। अभि० चि० २-११०। (वि०) 3. ಒಂದು ಕಣ್ಣುಳ್ಳವನು, ಕುರುಡ. अभि० चि० ३-११७।

**एकदृष्टि एकदृष्टि (पुं)** 1. ವಾಯಸ, ಕಾಗೆ. एका दृष्टिर्यस्य। (स्त्री०) 2. ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿಟ್ಟಿರುವ ಗಮನ, ಒಂದೇ ಕಡೆ ಜ್ಞಾನ. एकस्मिन् दृष्टिः। (वि०) 3. ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಜ್ಞಾನವುಳ್ಳ. एकस्मिन् दृष्टिर्यस्य।

**एकदे(दै)वत एकदै(दै)वत (वि०)** ಒಂದೇ ದೇವತೆ ಯುಳ್ಳ ಅಗ್ನಿ, ಹೊತ್ರ ಮುಂತಾದುದು, ಏಕದೇವತಾಕವಾದ (ಹೋಮ). एका देवता एकं देवतं वा अस्य।

**एकदेवत्य एकदैवत्य (वि०)** ಒಂದು ದೇವತೆಗಾಗಿರುವುದು. एकदेवतायै इदम् "यत्" (५-४-२४)।

**एकदेश एकदेश (पुं)** 1. ಅವಯವ, ಅಂಗ, ಒಂದು ಭಾಗ. एको देशः। "एकदेशमुपाध्यायः ऋत्वि- ग्यजकृदुच्यते" याज्ञ० १-३५। 2. ಒಂದು ಸ್ಥಳ, ಒಂದು ಜಾಗ. 3. ಪೂರ್ವಪಕ್ಷ, ಕೆಲವಂಶಗಳನ್ನು ಮಾತ್ರ ತಿಳಿದು ಶಂಕಿಸುವ ಪಕ್ಷ. 4. ಒಂದು ಪಕ್ಷ, ಒಂದು ಪಾರ್ಶ್ವ. "तान्येकदेशान्निभृतं पयोधेः सोऽम्भांसि मेघान् पिबतो ददर्श" माघ० ३-७४। (वि०) 5. ಒಂದೇ ಜಾಗವುಳ್ಳ, ಸಮಾನವಾದ ಜಾಗವುಳ್ಳ. एकः समानो देशो यस्य।

**एकदेशविकार एकदेशविकार (पुं)** 1. ಒಂದು ಭಾಗದ ಬದಲಾವಣೆ, ಒಂದು ಕಡೆ ವಿಕಾರ ಹೊಂದುವಿಕೆ. एकदेशस्य विकारः। (वि०) 2. ಒಂದು ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಬದಲಾವಣೆಯುಳ್ಳ. एकदेशे विकारो यस्य।

**एकदेशविकृत एकदेशविकृत (वि०)** ಒಂದು ಭಾಗ ದಲ್ಲಿ ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದಿರುವ. एकदेशे विकृतम्। "एकदेशविकृतमनन्यवत्" परि० ३७।

**एकदेशविभावित एकदेशविभावित (वि०)** ಒಂದು ಭಾಗ ಮಾತ್ರ ಒಪ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ವ್ಯವಹಾರ), ಪ್ರತಿ ವಾದಿಯು ಏನೂ ಕೊಡಬೇಕಾಗಿಲ್ಲವೆನ್ನುವಾಗ ವಾದಿಯು ಕೆಲವು ಪ್ರಮಾಣ (ರುಜುವಾತು) ಗಳಿಂದ ಕೆಲವು ಭಾಗ ಗಳನ್ನು ಮಾತ್ರ ಪ್ರತಿವಾದಿಯಿಂದ ಒಪ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. (ಕೊಡುವ ಅಥವಾ ಕೊಳ್ಳುವ ವ್ಯವಹಾರ). एकदेशे विभावितः प्रमाणादिना विभावितः अङ्गीकारितः। "निह्रुते लिखितं नैकमेकदेशे विभावितः। दाप्यः सर्वं नृपेणाय न ग्राह्यस्त्वनिवारितः" याज्ञ० २-२०।



एकदेशिन् एकदेशिन् (वि०) 1. एकदेशवृत्त, ಒಂದು ಪ್ರದೇಶವುಳ್ಳ. 2. ಒಂದು ಭಾಗದಿಂದ ಕೂಡಿರುವ, ಒಂದು ಅವಯವದಿಂದ ಕೂಡಿದ. - एकदेशोऽस्यास्ति "इति:" (५-२-११५)। "पूर्वपराधरोत्तरमेकदेशि-नैकाधिकरणे" पा० सू० २-२-१। 3. ಪೂರ್ವಪಕ್ಷ.

एकदेह एकदेह (पु०) 1. ಒಂದು ಶರೀರ. एको देहः। 2. ಬುಧಗ್ರಹ. एकः श्रेष्ठो देहो यस्य। "बुधो हेमा राजपुत्रः एकदेहः प्रहर्षणः" त्रिकाण्ड०। 3. ವಂಶ, ಕುಲ, ಗೋತ್ರ. एकस्माद्देहो यत्र। (द्विव०) 4. ಪತಿ ಪತ್ನಿಯರು, ಗಂಡಹೆಂಡಿರು. ವಿವಾಹಾನಂತರ ಪತಿಪತ್ನಿಯರು ಏಕದೇಹ ವಾಗುವುದರಿಂದ ಪತ್ನಿಯು ಅರ್ಧಾಂಗಿಯಾಗುವಳು. "अस्थिभिरस्थीनि मांसैर्मांसानि त्वचा त्वच" मिति श्रुतिः। (वि०) 5. ಸಮಾನವಾದ ಶರೀರವುಳ್ಳ, ಒಂದೇ ಶರೀರ ವುಳ್ಳ, ಒಬ್ಬನ ವಂಶದಲ್ಲೇ ಹುಟ್ಟಿದ. एकस्माद्देहो यस्य।

एकधर्मन् एकधर्मन् (वि०) ಸಮಾನ ಧರ್ಮವುಳ್ಳ. एकः समानो धर्मो यस्य। "अनिच्" (५-४-१२४)। स्त्रियां "डाप्" (४-१-१३)। -धर्मा -धर्मन्.

एकधा एकधा (अव्य०) ಒಂದು ರೀತಿಯಲ್ಲಿ, ಒಂದು ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ. एक "धा" (५-३-४४)। "अधुनीत खगः स नैकधा तनुमुत्फुल्लतनूहीकृताम्" नैष० २-२।

एकधारा एकधारा (स्त्री०) ನೀರು ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ ಸುರಿಯುವಿಕೆ, -ಎಡೆಬಿಡದೆ ಬೀಳುತ್ತಿರುವಿಕೆ, -ಒಂದೇ ರೀತಿ ಪ್ರವಹಿಸುವಿಕೆ.

एकधुर एकधुर (वि०) ಒಂದು ಬಂಡಿ ಭಾರ ಹೊರುವ, ಒಂದು ಗಾಡಿ ಹೊರೆಯಷ್ಟು ಹೊರುವ (ಎತ್ತು ಮೊದಲಾದುದು). एकधुरा वहति "खः" लुक् च (४-४-७९)। लगभावे -धुरीणः -धुरीणः.

एकधुरा एकधुरा (स्त्री०) ಒಂದು ಭಾರ, ಒಂದು ಹೊರೆ. एका धूः "अः" (५-४-७४)।

एकधुरावह एकधुरावह (वि०) 1. ಒಂದು ಬಂಡಿ ಹೊರೆ ಹೊರುವ (ಎತ್ತು ಮೊದಲಾದುದು). एकधुराया वहः। 2. ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಭಾರ (ಹೊರೆ) ಹೊತ್ತಿರುವವನು.

एकनक्षत्र एकनक्षत्र (न०) 1. ಒಂದೇ ಚುಕ್ಕಿಯುಳ್ಳ ನಕ್ಷತ್ರ. एकं नक्षत्रं यत्र। ಆರಿದ್ರ, ಚಿತ್ತ ಮತ್ತು ಸ್ವಾತಿ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು ಏಕನಕ್ಷತ್ರಗಳು. (वि०) 2. ಒಂದೇ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. एकं समानं नक्षत्रं यस्य। ತಾಯಿ, ತಂದೆ, ಸಹೋದರ ಮತ್ತು ಸಹೋದರಿಯರು ಇವರ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಶಿಶುವಿಗೆ ಶಾಂತಿ ನಡೆಯಬೇಕು.

एकनक्षत्रविवाह एकनक्षत्रविवाह (पु०) ಒಂದೇ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ವಿವಾಹ. एकनक्षत्रे जातयोः विवाहः। ಒಂದೇ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಸ್ತ್ರೀ ಪುರುಷರ ವಿವಾಹವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ನಕ್ಷತ್ರಗಳು ಪ್ರಶಸ್ತ. ಕೆಲವು ಮಧ್ಯಮ. ಕೆಲವು ನಿಷಿದ್ಧ. "रोहिण्यार्द्रा-मखेन्द्राग्नितिष्यश्रवणपौष्णभम्। अहिर्बुज्यस्तथाष्टौ च नक्षत्रैक्ये शुभावहः"। ರೋಹಿಣಿ, ಆರಿದ್ರ, ಮಖ, ವಿಶಾಖ, ಪುಷ್ಯ, ಶ್ರವಣ, ರೇವತಿ ಮತ್ತು ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರೇ ಈ ಎಂಟು ಪ್ರಶಸ್ತ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು. "अश्विनी च यमस्वाती-सापंफाल्गुनमेव च। मैत्रवारुणमूलाख्यं नक्षत्रैक्येऽपि मध्यमा"। ಅಶ್ವಿನಿ, ಭರಣಿ, ಸ್ವಾತಿ, ಆಶ್ಲೇಷ, ಪೂರ್ವ ಫಲ್ಗುನಿ, ಅನೂರಾಧ, ಶತಭಿಷ ಮತ್ತು ಮೂಲ ಈ ಎಂಟು ನಕ್ಷತ್ರಗಳು ಮಧ್ಯಮ. "अजैकपाच्छ्रविष्ठा च पुनर्वस्वथ कृत्तिका। मृगशीर्षं च चित्ता च सवितोत्तरफल्गुनी। ज्येष्ठा च विश्वतोयं च नक्षत्रैक्ये विनश्यति"। ಪೂರ್ವ ಭಾದ್ರೇ, ಧನಿಷ್ಠೆ, ಪುನರ್ವಸು, ಕೃತ್ತಿಕೆ, ಮೃಗಶಿರ್ಷ, ಚಿತ್ತೆ, ಹಸ್ತ, ಉತ್ತರಫಲ್ಗುನಿ, ಜ್ಯೇಷ್ಠೆ, ಪೂರ್ವಾಷಾಢ ಮತ್ತು ಉತ್ತರಾಷಾಢ ಇವು ಹನ್ನೊಂದು ನಿಷಿದ್ಧ ನಕ್ಷತ್ರ ಗಳು. ಅದರಲ್ಲಿಯೂ ಏಕನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಏಕ (ಸಮಾನ) ಪಾದವಾಗಿದ್ದಲ್ಲಿ ಸರ್ವಧಾ ಕೂಡದು. ಭಿನ್ನಪಾದ ವಾಗಿದ್ದಲ್ಲಿ ಶುಭವು. "एकैकैकपादे तु विवाहः प्राणहानिदः। दम्पत्योरेकनक्षत्रे भिन्नपादः शुभावहः" मुह० द०।

एकनट एकनट (पु०) 1. ಪ್ರಧಾನ ನಟ, ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯಪಾತ್ರ ವಹಿಸುವವನು, ಸೂತ್ರಧಾರ. एको मुख्यो नटः। 2. ಕಥಕ, ಕಥೆ ಹೇಳುವವನು. "कथकैकनटौ समौ" त्रिकाण्ड०।

एकनयन एकनयन, -नेत्र -नेत्र (पु०) 1. ವಾಯಸ, ಕಾಗೆ. एकं नयनं नेत्रं वास्य। (वि०) 2. ಒಂದು ಕಣ್ಣುಳ್ಳವನು, ಕುರುಡ.

एकनवत एकनवत (वि०) ತೊಂಭತ್ತೊಂದನೆಯ, एक-नवते: पूरणः "डट्" (५-२-४८)। स्त्रियां "डीप्" (४-१-१५)। -नवती -नवतीः.

एकनवति एकनवति (स्त्री०) 1. ತೊಂಭತ್ತೊಂದು. एकाधिका नवतिः। (वि०) 2. ತೊಂಭತ್ತೊಂದು ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ.

एकनवतितम एकनवतितम (वि०) ತೊಂಭತ್ತೊಂದ ನೆಯ. एकनवते: पूरणः "तमट्" (५-२-५६)।



**एकनिश्चय षष्ठ्यर्थः (पुं०)** 1. ಒಂದೇ ನಿಶ್ಚಯ, ಒಂದೇ ನಿರ್ಧಾರ, ಅಚಲವಾದ ನಿರ್ಣಯ, ಬದಲಾಗದ ನಿರ್ಧಾರ. एकः निश्चयः। 2. ಏಕಾಭಿಪ್ರಾಯ, ಒಮ್ಮತ. (ವಿಂ) 3. ಒಂದೇ ನಿರ್ಧಾರವುಳ್ಳ, ದೃಢ ನಿರ್ಣಯವುಳ್ಳ, ಒಂದೇ (ಬದಲಾಗದ) ನಿಶ್ಚಯವುಳ್ಳ, ದೃಢಚಿತ್ತನಾದ. एकः स्थिरो निश्चयो यस्य। 4. ಒಮ್ಮತವುಳ್ಳ, ಏಕಾಭಿಪ್ರಾಯವುಳ್ಳ.

**एकपक्ष षष्ठ्यर्थः (पुं०)** 1. ಒಂದು ಪಕ್ಷ, ಒಂದು ಕಕ್ಷ, ಒಂದು ಪಂಗಡ. एकः पक्षः। "शब्दो नित्यः शब्दत्वात्" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಶಬ್ದವು ನಿತ್ಯವೆಂದು ವಾದಿಯ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. "शब्दोऽनित्यः कार्यत्वात् घटवत्" ಎಂದು ಪ್ರತಿ ವಾದಿಯ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. ಒಂದೊಂದೂ ಒಂದೊಂದು ಪಕ್ಷ. "किमात्मनिर्वादिकयामुपेक्षे जायामदोषामुत संत्यजामि। इत्येकपक्षाश्रयविकलवत्वादासीत् स दोलाचलचित्तवृत्तिः" रघु० १४-३४। (वि०) 2. ಒಂದು ಪಕ್ಷದ, ಒಂದು ಕಡೆಯ, ಒಂದು ಪಂಗಡದ.

**एकपञ्चाश षष्ठ्यर्थः (वि०)** ಐವತ್ತೊಂದನೆಯ. एकपञ्चाशतः पूरणः "डट्" (५-२-४८)। स्त्रियां "डीप्" (४-१-१५)। -पञ्चाशी -षष्ठ्याश्च.

**एकपञ्चाशत् षष्ठ्यर्थः (स्त्री०)** 1. ಐವತ್ತೊಂದು. एकाधिका पञ्चाशत्। (वि०) 2. ಐವತ್ತೊಂದು ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ.

**एकपञ्चाशत्तम षष्ठ्यर्थः (वि०)** ಐವತ್ತೊಂದನೆಯ. एकपञ्चाशतः पूरणः "तमट्" (५-२-५६)। स्त्रियां "डीप्" (४-१-१५)। -पञ्चाशत्तमी -षष्ठ्याश्च.

**एकपतिक षष्ठ्यर्थः (वि०)** ಒಬ್ಬ ಯಜಮಾನನುಳ್ಳವನು. एकः पतिः स्वामी यस्य। यज्ञसंबन्धाभावात् नादेशो न।

**एकपत्नी षष्ठ्यर्थः (स्त्री०)** 1. ಒಬ್ಬನೇ ಗಂಡನುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು, ಸಮಾನಪತಿಯುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು, ಸಪತ್ನಿ, ಸವತಿ. एकः समानः पतिर्यस्याः "नः" (४-१-३५)। "सर्वासा-मेकपत्नीनामेका चेत्युत्रिणी भवेत्। सर्वास्तास्तेन पुत्रेण प्राह पुत्रवतीर्मनुः" मनु० ९-१८३। 2. ಪತಿವ್ರತ, ಪತಿಗೆ ಅನುಕೂಲವಾದ ಪತ್ನಿ, ಪತಿಯ ಸೇವೆಯಲ್ಲಿ ನಿರತಳಾದ ಪತ್ನಿ. एकः पतिर्यस्याः। "तां चावश्यं दिवसगणनातत्परामेकपत्नीमव्यापन्नामविहतगतिर्द्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम्" मेघ० १-१०। 3. ಏಕಮಾತ್ರಪತ್ನಿ, ಸವತಿಯಿಲ್ಲದ (ಒಬ್ಬನ) ಹೆಂಡತಿ. एका पत्नी। "यो धर्मं एकपत्नीनां काङ्क्षन्ती तमनुत्तमम्" मनु० ५-१५८।

**एकपत्नीव्रत षष्ठ्यर्थः (न०)** ಪತಿವ್ರತ, ಪತಿ ವ್ರತೆಯ ನಿಯಮ. एकः पतिर्यस्याः सा एकपत्नी, तस्याः व्रतम्। "कामेकपत्नीव्रतदुःखशीलां लोलं मनश्चारुतया प्रविष्टाम्" कुमा० ३-७।

**एकपद षष्ठ्यर्थः (पुं०)** 1. ಸುರತ ಕಾಲದ ಒಂದು ವಿಧ ಒಂಧ. "पादमेकं हृदि स्थाप्य द्वितीयं स्कन्धसंश्रितम्। स्तनी धृत्वा रमेत्कामी बन्धस्त्वेकपदः स्मृतः"। 2. ಒಂದು ಕಾಲುಳ್ಳ ಮನುಷ್ಯ. (न०) 3. ತತ್ಕಾಲ, ಒಂದು ಪದವನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸುವಷ್ಟು ಕಾಲ. एकं पदं पदोच्चारणयोग्यकालो यत्र। 4. ಒಂದು ಸ್ಥಾನ, ಒಂದು ಜಾಗ. 5. ಒಂದು ಹೆಜ್ಜೆಯಿಡುವಿಕೆ. 6. ಸುಖಂತ ಮತ್ತು ತಿಜ್ಜನರೂಪವಾದ ಪದ. एकं पदं स्थानं सुप्रीडन्तरूपं वा। "तदीशितारं चेदीनां भवांस्तमवमंस्त मा। निहन्त्यरीनेकपदे य उदात्तः स्वरानिव" माघ० २-९५। (वि०) 7. ಸುಖಂತ ಅಥವಾ ತಿಜ್ಜನರೂಪವಾದ ಒಂದು ಪದವುಳ್ಳ. 8. ಒಂದೇ ಪದದಿಂದ ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. "किंस्विदेकपदं धर्म्यं किंस्विदेकपदं यशः। किंस्विदेकपदं स्वर्ग्यं किंस्विदेकपदं सुखम्"। "दाध्यमेकपदं धर्म्यं दानमेकपदं यशः। सत्यमेकपदं स्वर्ग्यं शीलमेकपदं सुखम्" भा० वन० ३१४-७१, ७२। (अव्य०) -पदे -षष्ठे. 9. ಆ ಕೂಡಲೆ, ತತ್ಕ್ಷಣದಲ್ಲಿ. "अयमेकपदे तथा वियोगः प्रिययाचोपनतः सुदुःसहो मे" विक्र० ४-१०।

**एकपदा षष्ठ्यर्थः (स्त्री०)** 1. ಒಂದು ಪಾದವುಳ್ಳ ಶ್ಲೋಕ. -पदी -षष्ठे. 2. ಒಂದು ವೃತ್ತದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ (ಪದ) ದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಋಕ್ಕು. "गायत्र्य-स्यैकपदी द्विपदी त्रिपदी" श्रुतिः। 3. ಒಂದು ಕಾಲುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. एकः पादो यस्याः, पादस्य लोपः "डीप्" पद्मावश्च निपा० (५-४-१३९)। 4. ಸಣ್ಣಮಾರ್ಗ, ಕಾಲುದಾರಿ, ಕಿರುದಾರಿ. "एकपदी तु वर्त्मनि" इति. "अवाप्यते वा किमियद्भवत्या चित्तैकपद्याम्" इति. यः" नैष० ३-६३।

**एकपदि षष्ठ्यर्थः (अव्य०)** ಒಂದು ಕಾಲ. ಒಂದೆಯು ವಿಕೆ. एकः पादः साधनं यस्मिन् प्रहरणे समासान्तः "इच्" (५-४-१२८)।

**एकपरि षष्ठ्यर्थः (अव्य०)** ಪಗಡೆಯಾಟದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಗರ ವ್ಯತ್ಯಾಸ(ಹೆಜ್ಜುಕಡಮೆ)ವಾಗಿ ಬೀಳುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಪರಾಜಯ (ಸೋಲು). एकेन विपरीतं वृत्तम्। अव्ययी० (२-१-१०)। ಯಾವುದೊಂದು ಗರ ಬಿದ್ದರೆ



ಜಯವೋ ಅದಕ್ಕೆ ಬದಲಾಗಿ ಬೇರೆ ಗರ ಬೀಳುವುದರಿಂದಂಟಾಗುವ ಸೋಲು. ಜೂಜಾಟದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಇದರ ಪ್ರಯೋಗ.

**ಏಕಪರ್ಣಿ ಏಕಪರ್ಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಹಿಮವಂತನಿಗೆ ಮೇನಕೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮೂವರು ಕನ್ಯೆಯರಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬಳು. ಏಕಪರ್ಣಿ ತಪಃಸಾಧನತಯಾ ಆಹಾರೋ ಯಸ್ಯಾಃ | “ತಿಸ್ರಃ ಕನ್ಯಾಸ್ತು ಮೇನಾಯಾಂ ಜನಯಾಮಾಸ ಶೈಲರಾಡ್ | ಅಪರ್ಣಾಮೇಕಪರ್ಣಾಂ ಚ ತೃತೀಯಾಮೇಕಪಾಟಲಾಮ್” | “ಆಹಾರಮೇಕಪರ್ಣೇನ ಏಕಪರ್ಣಾ ಸಮಾಚರತ್” ಹರಿವಂ ೧೮ | 2. ಒಂದೆಲಗನ ಗಿಡ.

**ಏಕಪಾಟಲಾ ಏಕಪಾಟಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹಿಮವಂತನಿಗೆ ಮೇನಕೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮೂವರು ಕನ್ಯೆಯರಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬಳು. ಏಕ ಪಾಟಲಂ ಪುಷ್ಪಂ ತಪಃಸಾಧನತಯಾ ಆಹಾರೋ ಯಸ್ಯಾಃ | ತಪಸ್ವಿನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಇವಳು ಒಂದು ಹಸುರು ಪಾದರಿ ಹೂವನ್ನು ಆಹಾರವಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುತ್ತಿದ್ದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ಏಕಪಾತ ಏಕಪಾತ (ಪುಂ)** 1. ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ ಸಂಭವಿಸುವಿಕೆ, ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾಗಿ ಒದಗುವಿಕೆ.

**ಏಕಪಾತಿನಃ ಏಕಪಾತಿನಃ (ವಿಂ)** ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ ಒದಗುವ, ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾಗಿ ಸಂಭವಿಸುವ. ಏಕಃ ಸನ್ ಪತತಿ-ಪಲ್ (ಗತೌ) “ಗಿಣಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) |

**ಏಕಪಾದಃ ಏಕಪಾದಃ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. ಏಕಃ ಪಾದಃ | ಏತದ್ವಿಭೂತಲಕ್ಷಣಃ ತುರ್ಯಾಶೋಽಸ್ಯ | “ಏಕಾಂಶೇನಾವತೀರ್ಣತ್ವಾದೇಕಪಾದೀತಿ ಕಥ್ಯತೇ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | ಪಾದಸ್ಯಾನ್ತರ್ಯಲೋಪಃ ಸಮಾಸಾಂತಃ (೪-೪-೧೪೦) | “ಚತುರಾತ್ಮಾ ಚತುರ್ಭಾವಶ್ಚತುರ್ವೇದವಿದೇಕಪಾತ್” ವಿಂ ಸಂ | “ವಿಷ್ಣುಮ್ಯಾಹಮಿದಂ ಕೃತ್ಸನ್ಮೇಕಾಂಶೇನ ಸ್ಥಿತೋ ಜಗತ್” ಗೀತಾ ೧೦-೪೨ | 2. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. 3. ಒಬ್ಬ ದಾನವ. (ವಿಂ) 4. ಒಂದು ಕಾಲುಳ್ಳ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೪-೧೩೯) | ಪದ್ಮಾವಶ್ವ | -ಪದ್ಮಿ -ಪದ್ಮೀ.

**ಏಕಪಾದ ಏಕಪಾದ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ಕಾಲು. ಏಕಃ ಪಾದಃ | 2. ಪರಮಾತ್ಮ. ಏಕಃ ಪಾದೋಽಸ್ಯ | “ಪಾದೋಽಸ್ಯ ವಿಶ್ವಾ ಭೂತಾನಿ” ಶ್ರುತಿಃ | 3. ಒಬ್ಬ ಅಸುರ. (ವಿಂ) 4. ಒಂದು ಪಾದವುಳ್ಳ, ಒಂದು ಕಾಲುಳ್ಳ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೪೪) | 5. ಒಂದು ಕಾಲನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿ ನಿಂತಿರುವ, ಒಂದು ಕಾಲಿನ ಮೇಲೆ ನಿಂತಿರುವ. ಏಕಪಾದೋಽವಲಂಬನತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ “ಅವ್” (೪-೨-೧೨೭) | “ಪರ್ವತಾರೋಹಣಂ ಕೃತ್ವಾ ಏಕಪಾದೋ ವಿಭಾವಸುಮ್ | ನಿರೀಕ್ಷೇತ ನಿರಾಹಾರಃ ಕರ್ಣವಾಹುಃ ಕೃತಾಂಜಲಿಃ” ಭಾಂ |

**ಏಕಪಾದಿಕಾ ಏಕಪಾದಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹಕ್ಕಿಗಳು ಒಂದು ಕಾಲಿನ ಮೇಲೆ ನಿಂತುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಏಕಃ ಪಾದೋಽವಲಂಬನತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯಾಃ “ಠನ್” (೪-೨-೧೨೪) | “ಅಥಾವಲಂಬ್ಯ ಕ್ಷಣಮೇಕಪಾದಿಕಾಂ ತದಾ ನಿರದ್ರಾವುಪಪಲ್ವಲಂ ಖಗಃ” ನೈಷಂ ೧-೧೨೧ |

**ಏಕಪಾರ್ಥಿವ ಏಕಪಾರ್ಥಿವ (ಪುಂ)** 1. ಕೇವಲ ರಾಜ, ದೊರೆಯು ಮಾತ್ರ. ಏಕಃ ಕೇವಲಃ ಪಾರ್ಥಿವೋ ರಾಜಾ | “ನ ಕೇವಲಂ ತದ್ಗುರೋಽಪಾರ್ಥಿವಃ ಕ್ಷಿತಾವಭೂದೇಕಧನುರ್ಧರೋಽಪಿ ಸಃ” ರಘುಂ ೩-೩೧ | 2. ಒಬ್ಬನೇ ರಾಜ, ಚಕ್ರವರ್ತಿ. (ವಿಂ) 3. ಒಬ್ಬ ರಾಜನುಳ್ಳ ದೇಶ.

**ಏಕಪಿಙ್ಗ ಏಕಪಿಂಗ (ಪುಂ)** ಕುಬೇರ, ಧನಾಧಿಪತಿ. ಏಕಃ ಪಿಙ್ಗಂ ಪಿಙ್ಗಲಂ ನೇತ್ರಮಸ್ಯ | [ಒಂದು ಸಲ ಕುಬೇರನು ಪಾರ್ವತಿಯನ್ನು ಕ್ರೂರದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ನೋಡಿದಾಗ ಅವನ ಎಡಗಣ್ಣು ಒಡೆಯಿತು. ಆಗ ಪರಮೇಶ್ವರನ ಮಾತಿನಿಂದ ಪ್ರಸನ್ನಳಾದ ದೇವಿಯ ವರದಿಂದ ಕುಬೇರನಿಗೆ ಹಳದಿ ಬಣ್ಣದ ಕಣ್ಣು ಬಂದಿತು. ಇದರಿಂದ ಏಕಪಿಂಗನೆಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು.] ಕಾಶೀಖಂ ೧೩ |

**ಏಕಪಿಂಡ ಏಕಪಿಂಡ (ವಿಂ)** ಜ್ಞಾತಿ, ದಾಯಾದ, ಸಹೋದರ. ಏಕಃ ಸಮಾನಃ ಪಿಂಡೋ ದೇಹೋ ಯಸ್ಯ | [ಒಂದು ವಂಶದವರಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವರ ದೇಹವು ಒಬ್ಬ ಮೂಲಪುರುಷನಿಂದ ಆರಂಭವಾದುದರಿಂದ ಏಕಪಿಂಡ(ದೇಹ)ವಾಯಿತು.]

**ಏಕಪುರುಷ ಏಕಪುರುಷ (ಪುಂ)** 1. ಶ್ರೇಷ್ಠಪುರುಷ, ಪುರುಷೋತ್ತಮ, ವಿಷ್ಣು. ಏಕಃ ಶ್ರೇಷ್ಠಃ ಪುರುಷಃ | “ಯಸ್ಮಾತ್ಕರ್ಮತೀತೋಽಹಮಕ್ಷರಾದಪಿ ಚೋತ್ತಮಃ | ಅತೋಽಸ್ಮಿ ಲೋಕೇ ವೇದೇ ಚ ಪ್ರಥಿತಃ ಪುರುಷೋತ್ತಮಃ” ಗೀತಾ ೧೪-೧೮ ಎಂದು ಶ್ರೇಷ್ಠತ್ವವು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದು. ಪರಮಾತ್ಮನು ಎಲ್ಲರ ದೇಹದಲ್ಲಿಯೂ ಅಂತರ್ಯಾಮಿಯಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಪುರುಷತ್ವವು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದು. 2. ಮುಖ್ಯಪುರುಷ, ಪ್ರಧಾನ ನಾದವನು. 3. ಒಬ್ಬ ಮನುಷ್ಯ.

**ಏಕಪುತ್ರ ಏಕಪುತ್ರ (ಪುಂ)** 1. ಏಕಮಾತ್ರ ಪುತ್ರ, ಒಬ್ಬನೇ ಮಗ. ಏಕಃ ಪುತ್ರಃ | (ವಿಂ) 2. ಒಬ್ಬ ಮಾತ್ರ ಮಗನುಳ್ಳ, ಏಕಮಾತ್ರ ಪುತ್ರನುಳ್ಳ. ಏಕಃ ಕೇವಲಃ ಪುತ್ರೋ ಯಸ್ಯ | ಒಬ್ಬನೇ ಮಗನಿರುವವನು ಅವನನ್ನು ಇತರರಿಗೆ ದತ್ತು ಕೊಡಕೂಡದು. “ನತ್ವೇವೈಕಂ ಪುತ್ರಂ ದತ್ತಾತ್ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಣೀಯಾದ್ವಾ” ವಸಿಷ್ಠಃ |

**ಏಕಪುಷ್ಕರ(ಲ) ಏಕಪುಷ್ಕರ(ಲ) (ಪುಂ)** ಒಂದು ಪಾದ್ಯ, ಕಹಳೆ.

**ಏಕಪ್ರಕಾರ ಏಕಪ್ರಕಾರ (ವಿಂ)** 1. ಒಂದೇ ರೀತಿಯ, ಒಂದೇ ವಿಧದ. 2. ಅದೇ ರೀತಿಯ, ಅದೇ ವಿಧದ.



**ಏಕಪ್ರಕೃತಿ ಏಕಪ್ರಭು** (ವಿಂ) ಸದೃಶವಾದ, ಸಮಾನವಾದ.

**ಏಕಪ್ರಭು ಏಕಪ್ರಭು** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಒಬ್ಬ ರಾಜ.

ಏಕ: ಪ್ರಭು: | (ವಿಂ) 2. ಒಬ್ಬನೇ ರಾಜನುಳ್ಳ, ಒಬ್ಬನೇ ಅಧಿಪತಿಯುಳ್ಳ. ಏಕ: ಪ್ರಭು: ಯತ್ರ |

**ಏಕಪ್ರಭುತ್ವ ಏಕಪ್ರಭುತ್ವ** (ನಂ) 1. ಒಬ್ಬನ ಆಳ್ವಿಕೆ, ಒಬ್ಬನ ಅಧಿಪತ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಒಬ್ಬ ರಾಜನ ಆಳ್ವಿಕೆಯುಳ್ಳ, ಏಕಾಧಿಪತ್ಯವುಳ್ಳ. ಏಕಸ್ಯೇವ ಪ್ರಭುತ್ವಂ ಯತ್ರ |

**ಏಕಪ್ರಸ್ಥ ಏಕಪ್ರಸ್ಥ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದೇ ತಪ್ಪಲುಳ್ಳ ಪರ್ವತ. ಏಕ: ಪ್ರಸ್ಥ: ಸಾನುರ್ದಯಃ | 2. ಒಂದು ಸೇರು (ಧಾನ್ಯದ) ಅಳತೆ. ಏಕ: ಪ್ರಸ್ಥ: | 3. ಒಂದು ಸೇರು ಅಳತೆಯ ಧಾನ್ಯ.

**ಏಕಬುದ್ಧಿ ಏಕಬುದ್ಧಿ** (ವಿಂ) ಒಂದೇ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಒಂದೇ ಅಭಿಪ್ರಾಯವುಳ್ಳ. ಏಕಾ ಸಮಾನಾ ಬುದ್ಧಿರ್ದಯಃ |

**ಏಕಭಕ್ತ ಏಕಭಕ್ತ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ದಿನದಲ್ಲಿ ಒಂದು ವೇಳೆ ಮಾತ್ರ ಊಟಮಾಡುವವನು. ಏಕಮ್ ಏಕವಾರಂ ಭಕ್ತಂ ಭೋಜನಂ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಒಬ್ಬನಿಗೇ ವಿಧೇಯ ನಾಗಿರುವ, ಒಬ್ಬನಿಗೇ ಭಕ್ತನಾಗಿರುವ, ಸೇವಕ, ಅಶನ ವಸತಿ ಮೊದಲಾಗಿ ಎಲ್ಲಕ್ಕೂ ಒಬ್ಬನನ್ನೇ ಆಶ್ರಯಿಸಿ ಅವನ ಸೇವಕನಾಗಿರುವವನು. 3. ಒಬ್ಬನನ್ನೇ ಆಶ್ರಯಿಸಿರುವ, ಬೇರಾರಲ್ಲಿಯೂ ಆಸಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವ. "ಪ್ರೇಷಾಸು ಚೈಕ-ಭಕ್ತಾಸು ರಹ:ಪ್ರವ್ರಜಿತಾಸು ಚ" ಮನುಂ ೮-೩೬೩ |

**ಏಕಭಕ್ತಿ ಏಕಭಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಿರಂತರವಾದ ಭಕ್ತಿ, ನಿರಂತರವಾದ ಭಕ್ತಿ. 2. ಅನನ್ಯವಾದ ಭಕ್ತಿ, ಒಬ್ಬ ನಲ್ಲಿಯೇ ಇಟ್ಟಿರುವ ಭಕ್ತಿ. ಏಕಸ್ಮಿನ್ ಭಕ್ತಿ: | (ವಿಂ) 3. ಒಬ್ಬನಲ್ಲಿಯೇ ಭಕ್ತಿಯುಳ್ಳ. ಏಕಸ್ಮಿನ್ ಭಕ್ತಿಯಸ್ಯ | "ತೇಷಾಂ ಜ್ಞಾನಿ ನಿಯತುಕ್ತ: ಏಕಭಕ್ತಿವಿಶಿಷ್ಟತೇ" ಗೀತಾ ೭-೧೭ |

**ಏಕಭಾರ್ಯಾ ಏಕಭಾರ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಬ್ಬನ ಪತ್ನಿ, ಸಾಧ್ವಿ, ಪತಿವ್ರತೆ. ಏಕಸ್ಯೇವ ಭಾರ್ಯಾ | "ತಾಮೇಕಭಾರ್ಯಾಂ ಪರಿವಾದಭೀರೋ: ಸಾಧ್ವೀಮಪಿ ತ್ಯಕ್ತವತೋ ನೃಪಸ್ಯ" ರಘುಂ ೧೪-೮೬ |

**ಏಕಭಾವ ಏಕಭಾವ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದಾಗಿರುವಿಕೆ, ಅಭೇದ. ಏಕಸ್ಯ ಭಾವ: | "ಸ್ವತೇಜಸಾ ಸತ್ವಗುಣಪ್ರವಾಹಮಾತ್ಮಿಕಭಾವೇನ ಮಜಧವಮದ್ಧಾ" ಭಾಗಂ ೪-೩೧-೧೮ | 2. (ಬೇರೆ ಯಾರಲ್ಲಿಯೂ ಇಲ್ಲದೆ) ಒಬ್ಬನಲ್ಲಿಯೇ ಇಟ್ಟಿರುವ ಪ್ರೀತಿ. ಏಕ: ಅನನ್ಯೋ ಭಾವ: ರಾಗ: | 3. ಒಂದೇ ಸ್ವಭಾವ, ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದದ ಸ್ವಭಾವ. 4. ಒಂದೇ ಅಭಿಪ್ರಾಯ, ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದದ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. "ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಶತ್ರು: ಕುಮಿತ್ರಸ್ಯ ಪುಷ್ಯಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ವಿಶೇಷತ: | ಯೋ ಭವೇದೇಕಭಾವೇನ ನ ಸ ಜೀವತಿ ಮಾನವ:" ಪञ್ಚತಂ. | 5. (ಎಲ್ಲರ) ಒಂದೇ

ಅಭಿಪ್ರಾಯ, ಐಕಮತ್ಯ, (ಅನೇಕರ) ಬೇರೆಬೇರೆಯಲ್ಲದ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. (ವಿಂ) 6. ಒಂದೇ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ. 7. ಒಂದೇ ಅಭಿಪ್ರಾಯವುಳ್ಳ, ಸಮಾನಾಭಿಪ್ರಾಯವುಳ್ಳ. ಏಕ: ಸಮಾನೋ ಭಾವೋ ಯಸ್ಯ |

**ಏಕಭೂತ ಏಕಭೂತ** (ವಿಂ) ಒಂದಾಗಿರುವ, (ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ) ಅನೇಕವಾಗಿದ್ದು (ಈಗ) ಒಂದಾಗಿರುವ. ಅನೇಕ: ಏಕೋ ಭೂತ: |

**ಏಕಭೂಮಿಕ ಏಕಭೂಮಿಕ** (ವಿಂ) ಒಂದೇ ಉಪ್ಪರಿಗೆ ಯುಳ್ಳ. ಏಕಾ ಭೂಮಿರ್ದಯಃ | "ಕಪ್" |

**ಏಕಮತಿ ಏಕಮತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದೇ ಬುದ್ಧಿ. ಏಕಾ ಮತಿ: | 2. ಸಮಾನವಾದ ಬುದ್ಧಿ, ಒಂದೇ ವಿಧವಾದ ಬುದ್ಧಿ. ಏಕಾ ಸಮಾನಾ ಬುದ್ಧಿ: | (ವಿಂ) 3. ಸಮಾನ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ, ಒಂದೇ ವಿಧ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. ಏಕಾ ಸಮಾನಾ ಬುದ್ಧಿರ್ದಯಃ | 4. ಸಮಾನಾಭಿಪ್ರಾಯವುಳ್ಳ.

**ಏಕಮನಸ್ ಏಕಮನಸ್** (ವಿಂ) 1. ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ನೆಟ್ಟಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ಏಕಸ್ಮಿನ್ ಮನೋ ಯಸ್ಯ | 2. ಒಂದೇ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಒಂದೇ ಅಭಿಪ್ರಾಯವುಳ್ಳ. 3. ಸಮಾನವಾದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. ಏಕಂ ಸಮಾನಂ ಮನೋ ಯಸ್ಯ | 4. ಒಂದೇ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. "ತೇ ನಿಯಾಂತು ಮಯಾ ಸಹೇಕಮನಸೋ ಯೇಷಾಮಭೀಷ್ಠಂ ಯಶ:" ಸುಧಾಂ ೨-೧೩ |

**ಏಕಮಾತ್ರ ಏಕಮಾತ್ರ** (ವಿಂ) ಒಂದು ಮಾತ್ರಕಾಲವುಳ್ಳ, ಒಂದು ಹೃಸ್ವವರ್ಣವನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸುವ ಕಾಲವುಳ್ಳ. ಏಕಾ ಮಾತ್ರಾ ಉಚಾರಣಕಾಲಃ | ಕಾಲೋ ಯಸ್ಯ | "ಏಕಮಾತ್ರೋ ಭವೇತ್ ಹ್ರಸ್ವ: ದ್ವಿಮಾತ್ರೋ ದೀರ್ಘಃ ಉಚ್ಯತೇ | ತ್ರಿಮಾತ್ರಸ್ತು ಪ್ಲುತೋ ಜ್ಞೇಯ: ವ್ಯಂಜನಂತ್ವರ್ಧಮಾತ್ರಕಮ್" |

**ಏಕಮಾತ್ರಾ ಏಕಮಾತ್ರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಹೃಸ್ವವರ್ಣ ವನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸುವಷ್ಟು ಕಾಲ. ಏಕಾ ಮಾತ್ರಾ ಹ್ರಸ್ವ-ವರ್ಣೋಚ್ಚಾರಣಕಾಲ: |

**ಏಕಮುಖ ಏಕಮುಖ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ಮುಖ, ಒಂದು ಬಾಯಿ. ಏಕಂ ಮುಖಮ್ | 2. ಒಂದು ಬಾಗಿಲುಳ್ಳ ಮಂಟಪ. (ವಿಂ) 3. ಒಂದು ಮುಖವುಳ್ಳ. ಏಕಂ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ | 4. ಒಂದು ಕಡೆ ತಿರುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮುಖವುಳ್ಳ. 5. ಒಬ್ಬ ಅಧ್ಯಕ್ಷನಾಗಿರುವ (ದ್ಯೂತ), ಒಬ್ಬ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕನುಳ್ಳ (ಜೂಜು). ಏಕಂ ಮುಖಂ ಪ್ರಧಾನಂ ಯತ್ರ | "ಛೂತಮೇಕಮುಖಂ ಕಾರ್ಯಂ ತಸ್ಕರಜ್ಞಾನಕಾರಣಾತ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೨೦೩ | [ಪ್ರಾಯಶಃ ಕಳ್ಳತನದಿಂದ ಹಣವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿದವರೇ ಜೂಜಾಡುವವ ರಾದುದರಿಂದ ಅವರನ್ನು ಕಂಡುಹಿಡಿಯಲು ಯಾವನಾದ ರೊಬ್ಬನು ಅಧ್ಯಕ್ಷನಾಗಿದ್ದು ಅವನೆದುರಿಗೆ ಜೂಜು ನಡೆಯಬೇಕು.]



**ಏಕಮೂಲಾ ಏಕಮೂಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮೂರಲೆ ಹೊನ್ನೆ ಗಿಡ. 2. ಅತಃಸೀಗಿಡ, ಅಗಸೆ ಗಿಡ.

**ಏಕಯಾಟಿಕಾ ಏಕಯಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಒಂದೇಯ ಹಾರ, ಏಕಾವಳಿಯೆಂಬ ಸರ. ಏಕಾ ಯಾಟಿರಿವಾವಳಿ ಯಸ್ಯಾ:।  
“ಏಕಾವಲಯೇಕಯಾಟಿಕಾ” ಅಮಂ।

**ಏಕಯೋನಿ ಏಕಯೋನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸಮಾನವಾದ ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನ, ಒಂದೇ ಗರ್ಭಾಶಯ. ಏಕಾ ಸಮಾನಾ ಯೋನಿಋತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನಮ್। (ವಿಂ) 2. ಸಮಾನವಾದ ಉತ್ಪತ್ತಿ ಸ್ಥಾನವುಳ್ಳ, ಒಂದೇ ಗರ್ಭಾಶಯವುಳ್ಳ, ಒಬ್ಬಳೇ ತಾಯಿ ಯುಳ್ಳ. ಏಕಾ ಸಮಾನಾ ಯೋನಿಋತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನಂ ಯಸ್ಯ। 3. ಸಮಾನಜಾತಿಯವನಾದ, ಒಂದೇ ಜಾತಿಗೆ ಸೇರಿದ. ಏಕಾ ಸಮಾನಾ ಯೋನಿ: ಕಾರಣಂ ಯಸ್ಯ। “ಏತದ್ವಿಧಾನಂ ವಿಜ್ಞೇಯಂ ವಿಭಾಗಸ್ಯೈಕಯೋನಿಭು” ಮನುಂ ೯-೧೪೮।

**ಏಕರಸ ಏಕರಸ (ಪುಂ)** 1. ಕೇವಲ ಸಂತೋಷ, ಕೇವಲ ಅನಂದ. ಏಕ: ಕೇವಲೋ ರಸ:। 2. ಒಂದೇ ವಿಧವಾದ ಪ್ರೀತಿ, ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದದ ಪ್ರೀತಿ. (ವಿಂ) 3. ಒಂದೇ ಅಭಿಪ್ರಾಯವುಳ್ಳ, ಸಮಾನಾಭಿಪ್ರಾಯವುಳ್ಳ. 4. ಒಂದೇ ವಿಧವಾದ ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ, ಸಮಾನಾನುರಾಗ ವುಳ್ಳ. 5. ಒಂದೇ ಕಡೆ ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ, ಅನನ್ಯವಿಷಯ ವಾದ ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ. 6. ಒಂದೇ ವಿಧವಾದ ಸ್ವಭಾವ ವುಳ್ಳ, ಸಮಾನ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ. ಏಕ: ಸಮಾನೋ ರಸ: ಅಭಿಪ್ರಾಯ: ರಾಗೋ ವಾ ಯಸ್ಯ। ಏಕ: ಅನನ್ಯವಿಷಯೋ ರಸೋ ರಾಗ: ಯಸ್ಯ। ಏಕ: ಅಭಿನ್ನ: ರಸ: ಸ್ವಭಾವೋ ಯಸ್ಯ ವಾ।

**ಏಕರಾಜ್ ಏಕರಾಜ್ (ಪುಂ)** 1. ಸಾರ್ವಭೌಮ, ಚಕ್ರವರ್ತಿ. ಏಕೋ ರಾಜತೇ—ರಾಜ್ (ದೀಪ್ತೋ) “ಕಿವಪ್” (೩-೨-೭೬)। “ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪು ರಾಜನ್ ಅಜೇಯಮಜರಾಮರ್ಮ್। ಆತ್ಮಾನಮಪ್ರತಿ- ಬೃಂದಮೇಕರಾಜಂ ವ್ಯಧಿತ್ಸತ” ಭಾಗಂ ೭-೩-೧। 2. ಪರಮಾತ್ಮ. ಏಕ ಏವ ರಾಜತೇ—ರಾಜ್ “ಕಿವಪ್” (೩-೨-೭೬)। “ಯದಾದಿತ್ಯಗತಂ ತೇಜೋ ಜಗದ್ಭಾಸಯತೇಽಖಿಲಮ್। ಯಚ್ಚಂದ್ರಮಸಿ ಯಚ್ಚಾಗ್ನೋ ತತ್ತೇಜೋ ವಿಧಿ ಮಾಮಕಮ್” ಗೀತಾ ೧೫-೧೨। “ತಮೇವ ಭಾಂತಮನುಭಾತಿ ಸರ್ವಂ ತಸ್ಯ ಭಾಸಾ ಸರ್ವಮಿದಂ ವಿಭಾತಿ” ಶ್ರುತಿ:। (ವಿಂ) 3. ಸ್ವಯಂಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ತಾನಾಗಿಯೇ ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ. “ಸ ವಾ ಏಷ ತದಾ ದ್ರಷ್ಟಾ ನಾಪಶ್ಯದ್- ದೃಶ್ಯಮೇಕರಾಡ್” ಭಾಗಂ ೩-೪-೨೪।

**ಏಕರಾಜ ಏಕರಾಜ (ಪುಂ)** 1. ಒಬ್ಬ ರಾಜ, ಒಬ್ಬನೇ ಆದ ದೊರೆ, ಚಕ್ರವರ್ತಿ. 2. ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ದೊರೆ, ಉತ್ತಮ ನಾದ ರಾಜ. ಏಕೋ ರಾಜಾ “ಠಕ್” (೪-೪-೯೧)।

**ಏಕರಾತ್ರ ಏಕರಾತ್ರ (ನಂ)** ಒಂದು ರಾತ್ರಿ, ಒಂದು ರಾತ್ರಿಯ ಕಾಲ. ಏಕಾ ರಾತ್ರಿ: “ಅಕ್” (೪-೪-೮೭)। “ಸಂಖ್ಯಾಪೂರ್ವಂ ರಾತ್ರಂ ಕಲಿಬಮ್” (ಲಿಂಗಾಂ ೧೩೧) ಇತಿ ನಪುಂಸಕತ್ವಮ್। “ಏಕರಾತ್ರಂ ತು ನಿವಸನ್ನತಿಥಿವಿಹಿಣ: ಸ್ಮೃತ:” ಮನುಂ ೩-೧೦೨।

**ಏಕರಾತ್ರಿಕ ಏಕರಾತ್ರಿಕ (ವಿಂ)** ಒಂದು ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಮುಗಿಯಬಹುದಾದ, ಒಂದು ದಿನಕ್ಕೆ ಮಾತ್ರ ಬೇಕಾಗುವ. “ನಾಡ್ಯಾಚ್ಛದ್ರಸ್ಯ ಪಕ್ವಾನ್ವಂ ವಿಧಾನಭ್ರಾಡಿನೋ ದ್ವಿಜ:। ಆದದೀತಾಮಮೇವಾಸ್ಮಾದವೃತ್ತಾವೇಕರಾತ್ರಿಕಮ್” ಮನುಂ ೪-೨೨೩।

**ಏಕರಾತ್ರಿಣ ಏಕರಾತ್ರಿಣ (ವಿಂ)** 1. ಒಂದು ರಾತ್ರಿ ಯಲ್ಲಿ ನಡೆದ. 2. ಒಂದು ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಸತ್ಕರಿಸಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಒಂದು ರಾತ್ರಿ ಕೂಲಿ ಕೊಟ್ಟು ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಒಂದು ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ. ಏಕಾ ರಾತ್ರಿಮಧೀಷ್ಟೋ ಭೂತೋ ಭೂತೋ ಭಾವೀ ವಾ “ಃ” (೪-೧-೮೭)।

**ಏಕರಾಶಿ ಏಕರಾಶಿ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ರಾಶಿ, ಒಂದು ಗುಪ್ಪೆ. ಏಕೋ ರಾಶಿ:। 2. ಒಂದೇ ರಾಶಿ, ಮೇಷ ವೃಷಭ ಮೊದಲಾದ ಸಮಾನ ರಾಶಿ. ಏಕ: ಸಮಾನೋ ರಾಶಿ:। “ಏಕರಾಶಿಗತೌ ಸ್ಯಾತಾಮೇಕಕ್ಷೇವಿಷಯೇ ಯದಾ”।

**ಏಕರಾಶಿಭೂತ ಏಕರಾಶಿಭೂತ (ವಿಂ)** ಒಂದೇ ರಾಶಿ ಯಾಗಿರುವ, ಒಂದೇ ಗುಪ್ಪೆಯಾಗಿರುವ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿರುವ.

**ಏಕರಿಕ್ವಿಥನ್ ಏಕರಿಕ್ವಿಥನ್ (ವಿಂ)** ಪಿತ್ರಾರ್ಜಿತವಾದ ಆಸ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಸಮಭಾಗವುಳ್ಳ, ಒಂದು ಆಸ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಸಮವಾದ ಹಕ್ಕುಳ್ಳ, ತಂದೆಯ ಧನದಲ್ಲಿ ಭಾಗಹೊಂದಲು ಅರ್ಹನಾದ. ಏಕಸ್ಯ ಪಿತು: ರಿಕ್ವಿಥಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೫)। “ಯಥೇಕರಿಕ್ವಿಥನೌ ಸ್ಯಾತಾಮೌರಸಕ್ಷೇತ್ರಜೌ ಸುತೌ। ಯಸ್ಯ ಯತ್ಪತೃಕಂ ರಿಕ್ವಿಥಂ ಸ ತದ್ ಗೃಹ್ಣೀತ ನೇತರ:” ಮನುಂ ೯-೧೬೨।

**ಏಕರೂಪ ಏಕರೂಪ (ನಂ)** 1. ಒಂದು ಆಕಾರ. ಏಕಂ ರೂಪಮ್। (ವಿಂ) 2. ಒಂದೇ ರೂಪವುಳ್ಳ, ಸಮಾನ ರೂಪವುಳ್ಳ, ಒಂದೇ ವಿಧವಾದ. ಏಕಂ ಸಮಾನಂ ರೂಪಂ ಯಸ್ಯ।

**ಏಕರೂಪತಸ್ ಏಕರೂಪತಸ್ (ಅವ್ಯಂ)** 1. ಒಂದೇ ರೂಪ ದಿಂದ, ಸಮಾನ ರೂಪದಿಂದ. 2. ಒಂದೇ ರೂಪದಲ್ಲಿ, ಸಮಾನ ಆಕೃತಿಯಲ್ಲಿ. ಏಕರೂಪ “ತಸಿ:” (ವಾಂ ೪-೪-೪೪)। 3. ಒಂದೇ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ, ಬದಲಾವಣೆಯಿಲ್ಲದೆ.

**ಏಕರೂಪತಾ ಏಕರೂಪತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಒಂದೇ ರೂಪದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ, ಏಕರೀತಿಯಲ್ಲಿರುವಿಕೆ, ಸಮಾನ ಆಕಾರದಿಂದಿರುವಿಕೆ. ಏಕರೂಪಸ್ಯ ಭಾವ: “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯)। “ಸಂಪತ್ತೌ ಚ ವಿಪತ್ತೌ ಚ ಮಹತಾಮೇಕರೂಪತಾ”।



**ಏಕರೂಪ್ಯ ಏಕರೂಪ್ಯ** (ನಂ) 1. ಕೇವಲ ಬೆಳ್ಳಿ, ಬರಿ ಬೆಳ್ಳಿ. ಏಕಂ ಕೇವಲಂ ರೂಪ್ಯಮ್ | (ವಿಂ) 2. ಒಬ್ಬನಿಂದ ಬಂದ, ಒಂದೇ ಸಂತತಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಒಬ್ಬ ತಾಯಿ ಅಥವಾ ತಂದೆಯಿಂದ ಅನುಗತವಾಗಿ ಬೆಳೆದುಬಂದ. ಏಕತಃ ಏಕಸ್ಮಾತ್ ಏಕಸ್ಯಾ ವಾ ಆಗತಃ—ಏಕ “ರೂಪ್ಯಃ” (೪-೩-೮೧) |

**ಏಕಲ ಏಕಲ** (ವಿಂ) ಅಸಹಾಯ, ಏಕಾಕಿ, ಒಬ್ಬಂಟಿ. ಏಕಃ ಸನ್ ಲಾತಿ—ಲಾ (ಆದಾನೆ) “ಕಃ” (೩-೨-೩) | “ತಸ್ಮಿನ್ ಬಾವ ಕಿಲ ಸ ಏಕಲಃ” ಭಾಗಂ ೪-೭-೧೨ |

**ಏಕಲವ್ಯ ಏಕಲವ್ಯ** (ಪುಂ) ಹಿರಣ್ಯಧನುಸ್ಸೆಂಬ ಒಬ್ಬ ಬೇಡನ ಮಗ. [ಏಕಲವ್ಯನು ಧನುರ್ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿಯಲು ಬಹಳ ಉತ್ಸಾಹದಿಂದ ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರನ್ನು ಬೇಡಲಾಗಿ ಅವರು ಇವನಿಗೆ ಕಲಿಸಲು ಇಷ್ಟವಿಲ್ಲದೆ ತಿರಸ್ಕರಿಸಿದರು. ಆಗ ಮಣ್ಣಿನಿಂದ ಅವರ ಪ್ರತಿಮೆಯನ್ನು ತಯಾರಿಸಿ ಅದನ್ನೇ ಆಚಾರ್ಯರೆಂದು ಭಾವಿಸಿ ಅಸ್ತುಪ್ರಯೋಗ ಮತ್ತು ಉಪಸಂಹಾರ ಮಾಡುತ್ತಾ ಲೋಕೋತ್ತರ ನೈಪುಣ್ಯ ಪಡೆದನು. ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಬೇಟೆಗಾಗಿ ಹೋಗಿದ್ದ ಪಾಂಡವರ ಮೂಲಕ ಈ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿದ ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರು ಒಂದು ಕೇಳಲಾಗಿ ಏಕಲವ್ಯನು ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ತಿಳಿಸಿದನು. ಆಗ ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರು ಗುರುದಕ್ಷಿಣೆಗಾಗಿ ಇವನ ಬಲಗೈ ಹೆಬ್ಬರಳನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡರು.] “ತतो निषादराजस्य हिरण्यधनुषः सुतः। एकलव्यो महाराज द्रोणमभ्याजगाम ह॥ न स तं प्रतिजग्राह नैषादिरिति चिन्तयन्। शिष्यं धनुषि धर्मज्ञस्तेषामेवान्ववेक्षया॥ स तु द्रोणस्य शिरसा पादौ गृह्य परन्तपः। अरण्यमनुसंप्राप्य कृत्वा द्रोणं महीमयीम्” ಇತ್ಯಾದಿ. ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೪೨ |

**ಏಕಲಿಂಗ ಏಕಲಿಂಗ** (ಪುಂ) 1. ಕುಬೇರ. ಏಕಂ ಲಿಂಗಮಿन्द्रಿಯ ಚಕ್ಷುರಸ್ಯ | 2. ನಿಯತ ಲಿಂಗವುಳ್ಳ ಶಬ್ದ. ಏಕಂ ನಿಯತಂ ಲಿಂಗಂ ಪುಸ್ತವಾದಿ ಯಸ್ಯ | (ನಂ) 3. ಸಿದ್ಧಿಗೆ ಸಾಧನವಾದ ಒಂದು ಕ್ಷೇತ್ರ, ಐದು ಕ್ರೋಶಗಳವರೆಗೂ ಬೇರೊಂದು ಶಿವಲಿಂಗವಿಲ್ಲದಿರುವ ಒಂದು ಪ್ರದೇಶ. “पञ्चक्रोशान्तरे यत्र न लिङ्गान्तरमीक्ष्यते। तदेकलिङ्गमाख्यातं तत्र सिद्धिरनुत्तमा” ಆಗಮಃ | (ವಿಂ) 4. ಒಂದು ಶಿವಲಿಂಗವುಳ್ಳ. 5. ಒಂದು ಗುರುತುಳ್ಳ, ಒಂದು ಚಿಹ್ನೆಯುಳ್ಳ.

**ಏಕವಚನ ಏಕವಚನ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ಸಂಖ್ಯೆ ಅಥವಾ ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಏಕತ್ವವನ್ನು ಹೇಳುವ ಸ್ವಾದಿ ಮತ್ತು ತಿಜಾದಿ ಪ್ರತ್ಯಯ. ಏಕಮೇಕತ್ವಮುಚ್ಯತೇನ—ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣ) ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭) |

**ಏಕತ್ವವನ್ನು ಹೇಳುವ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು:**

ಸು ಅಮ್ ಟಾ ಡೆ ಡಸಿ ಡಸ್ ಡಿ ಮತ್ತು ತಿಪ್ ಸಿಪ್ ಮಿಪ್, ತ (ತೇ) ಥಾಸ್ (ಸೇ) ಟ್ | “त्वमावेकवचने” ಪಾಂ ಸೂಂ ೭-೨-೯೭ | “द्वयैकयोद्विवचनैकवचने” ಪಾಂ ಸೂಂ ೧-೪-೨೨ | 2. ಒಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು ಹೇಳುವ ಶಬ್ದ. ಏಕಂ ವಸ್ತು ಉಚ್ಯತೇನೇನ |

**ಏಕವತ್ ಏಕವತ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಒಂದರಂತೆ. ಏಕಸ್ಯೇವ “वतिः” (೪-೧-೧೧೬) | “नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्चास्यातरस्याम्” ಪಾಂ ಸೂಂ ೧-೨-೬೯ | ಶುಕ್ಲಃ ಪಟಃ ಶುಕ್ಲಾ ಶಾಡೀ ಶುಕ್ಲಂ ವಸ್ತ್ರಮ್ ತದಿದಂ ಶುಕ್ಲಮ್ ತಾನಿಮಾನಿ ಶುಕ್ಲಾನಿ ಎಂದು ಏಕಲ್ಪವಾಗಿ ಏಕವದ್ಯಾವ ಬಂದಿರುವುದು. 2. (ಕ್ರಿಯೆಯು ತೋರುವಲ್ಲಿ) ಒಂದರೊಡನೆ ಸಮಾನವಾಗಿ, ಒಂದಕ್ಕೆ ಸದೃಶವಾಗಿ, ಏಕೇನ ತುಲ್ಯಮ್ “वतिः” (೪-೧-೧೧೪) |

**ಏಕವತ್ಸಾವ ಏಕವತ್ಸಾವ** (ಪುಂ) ಒಂದಾಗಿರುವಿಕೆ, ಒಂದರಂತಿರುವಿಕೆ. ಏಕೇನ ತುಲ್ಯೋ ಭಾವಃ ಭವನಮ್ |

**ಏಕವರ್ಣ ಏಕವರ್ಣ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ವರ್ಣ, ಒಂದು ಬಣ್ಣ. ಏಕೋ ವರ್ಣಃ | 2. ಒಂದು ವರ್ಣ, ಒಂದು ಅಕ್ಷರ. (ವಿಂ) 3. ಒಂದು ಬಣ್ಣದ. 4. ಒಂದೇ ಬಣ್ಣದ, ಅದೇ ಬಣ್ಣದ, ಸಮಾನ ವರ್ಣದ. ಏಕಃ ಏಕ ಏವ ವಾ ವರ್ಣೋ यस್ಯ | 5. ಒಂದು ಜಾತಿಯ. 6. ಒಂದೇ ಜಾತಿಯ, ಸಮಾನ ಜಾತಿಯ. 7. ಒಂದು ವರ್ಣದ, ಒಂದು ಅಕ್ಷರವುಳ್ಳ.

**ಏಕವರ್ಣಿ ಏಕವರ್ಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಾವುದೊಂದರ ಸಹಾಯವೂ ಇಲ್ಲದೆ ಕೇವಲ ಕೈಯಿಂದ ಬಾರಿಸಲ್ಪಡುವ ವಾದ್ಯ, ತಾಳ. ಏಕ ಏವ ವರ್ಣಯತಿ—ವರ್ಣ (ವರ್ಣಕ್ರಿಯಾವಿಸ್ತಾರಗುಣವಚನೇಷು) “अच्” (೩-೧-೧೩೪) | ಗೌರಾಂ “डीष्” (೪-೧-೪೧) |

**ಏಕವತ್ಸಮ್ ಏಕವತ್ಸಮ್** (ನಂ) ಏಕಮುಖವಾದ ಮಾರ್ಗ, ಒಂದೇ ಕಡೆಗೆ (ದಿಕ್ಕಿಗೆ) ಹೋಗುವ ಮಾರ್ಗ, ಹೋಗುವುದಕ್ಕೆ ಮಾತ್ರ ಏರ್ಪಟ್ಟ ದಾರಿ.

**ಏಕವರ್ಷಿಕಾ ಏಕವರ್ಷಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನ ಕುರು. ಏಕೋ ವರ್ಷೋ वयःकालो यस्याः “कप्” (೪-೪-೧೪೪) | ಟಾಪ್ | ಅತ ಇತ್ವಮ್ (೭-೩-೪೪) |

**ಏಕವಾಕ್ಯ ಏಕವಾಕ್ಯ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ಮಾತು. ಏಕಂ ವಾಕ್ಯಮ್ | 2. ಸಮಾನವಾದ ವಾಕ್ಯ, ಒಂದೇ ರೀತಿಯ ವಾಕ್ಯ. 3. ಒಂದೇ ಅಭಿಪ್ರಾಯ, (ಎಲ್ಲರ) ಒಂದೇ ರೀತಿಯಾದ ಮಾತು, ಒಮ್ಮತದ ವಾಕ್ಯ, ಸರ್ವಾನುಮತದ



ವಾಕ್ಯಃ. ಏಕಮ್ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಮ್ ಅವಿಸಂವಾದಿ ವಾಕ್ಯಮ್. "ಇತಿ ಸಮಗುಣಯೋಗಪ್ರೀತಿಯಸ್ತತ್ರ ಪೌರಾಃ ಶ್ರವಣಕಡ್ಡು ನೃಪಾಣಾಮೇಕವಾಕ್ಯಂ ವಿವಕ್ಷುಃ" ರಘುಂ ೬-೮೫.

**ಏಕವಾಕ್ಯತಾ ಏಕವಾಕ್ಯತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ವಾಕ್ಯ ವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಏಕವಾಕ್ಯಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯). 2. ಒಮ್ಮತವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಏಕಾಭಿಪ್ರಾಯವಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಒಂದು ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವಿಕೆ. ಇದು (1) ಪದೇಕವಾಕ್ಯತಾ ಮತ್ತು (2) ವಾಕ್ಯೇಕವಾಕ್ಯತಾ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. (1) ಒಂದು ವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಪದವನ್ನು ಸಾಕಾಂಕ್ಷವಾದ ಮತ್ತೊಂದು ವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ಅನ್ವಯಿಸಿ ಅರ್ಥ ಹೇಳುವುದು ಪದೇಕವಾಕ್ಯತಾ. "ಇಕೋ ಗುಣವೃದ್ಧಿ" ಸೂತ್ರದಲ್ಲಿನ ಇಕಃ ಪದವನ್ನು "ಸಾರ್ವಜಾತುಕಾರ್ಥಜಾತುಕಯೋಃ" ಸೂತ್ರದೊಡನೆ ಸೇರಿಸಿ ಅರ್ಥ ಹೇಳುವುದು ಪದೇಕ ವಾಕ್ಯತಾ. (2) ಪರಸ್ಪರ ನಿರಪೇಕ್ಷವಾದ ಎರಡು (ಅವಾಂತರ) ವಾಕ್ಯಗಳು ತಮ್ಮ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಪ್ರತ್ಯೇಕ ವಾಗಿ ಬೋಧಿಸಿದ ಮೇಲೆ ಅಂಗಾಂಗಿಭಾವ ಹೊಂದಿ ಎರಡೂ ಸೇರಿ ಒಂದು ವಿಶಿಷ್ಟಾರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುದು ವಾಕ್ಯೇಕವಾಕ್ಯತಾ. "ಸಮಿಧೋ ಯಜತಿ" "ದರ್ಶಪಿಣಿ- ಮಾಸಾಮ್ಯಾ ಯಜತ" ಈ ಎರಡು ವಾಕ್ಯಗಳು ಪ್ರಯಾಜ ಮತ್ತು ದರ್ಶಪರ್ಣಿಮಾಸೇಷ್ಯಗಳನ್ನು ಬೋಧಿಸಿ ಅನಂತರ ಪ್ರಯಾಜಾದಿ ಅಂಗಕಲಾಪಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದರ್ಶಪರ್ಣಿಮಾಸರೂಪವಾದ ಒಂದು ವಿಶಿಷ್ಟಾರ್ಥವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ ವಾಕ್ಯೇಕವಾಕ್ಯತಾ.

**ಏಕವಾಚಕ ಏಕವಾಚಕ** (ವಿಂ) ಒಂದೇ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ, ಒಂದೇ ವಸ್ತುವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ. ವಚ (ಪರಿ- ಭಾಷಣ) "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩). ಏಕಸ್ಯ ವಾಚಕಃ.

**ಏಕವಾದ ಏಕವಾದ** (ಪುಂ) 1. (ಒಂದು ಕೈಯಿಂದ ಬಾರಿಸ ಲ್ಪಡುವ) ಡಿಂಡಿಮವಾದ್ಯ, ರಘಾಯಿಯೆಂಬ ಒಂದು ವಾದ್ಯ. ಏಕೇನ ಹಸ್ತೇನ ವಾಙ್ಮತೇ - ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಕ್ ಕರ್ಮಂ "ವಜ್" (೩-೩-೧೯). 2. ದೇವರು ಒಬ್ಬನೇ ಎಂದು ವಾದಿಸುವವರ ಮಾತು. 3. ಬ್ರಹ್ಮವೊಂದೇ (ಬೇರೊಂದಿಲ್ಲ) ಎಂದು ಹೇಳುವ ಅದ್ವೈತ ವಾದ. ಏಕಸ್ಯ ಬ್ರಹ್ಮಾಭಿವ್ಯಕ್ತವಸ್ಯ ವಾದಃ ಕಥನಮ್.

**ಏಕವಾರಮ್ ಏಕವಾರಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಒಂದು ಸಲ, ಒಂದಾವೃತ್ತಿ.

**ಏಕವಿಂಶ ಏಕವಿಂಶ** (ವಿಂ) ಇಪ್ಪತ್ತೊಂದನೆಯ. ಏಕ- ವಿಂಶತೇ ಪೂರ್ಣಃ "ಙಟ್" (೪-೨-೪೮). ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ". -ವಿಂಶಕಃ -ವಿಂಶಕಃ. "ದಶ ಪೂರ್ವಾನ್ ಪರಾನ್ ಬಂಶ್ಯಾನ್ ಆತ್ಮಾನ್

ಚೈಕವಿಂಶಕಮ್. ಬ್ರಾಹ್ಮೀಪುತ್ರಃ ಸುಕೃತಕೃತ್ಮೋಚಯತ್ಯೇನಸಃ ಪಿತೃನ್" ಮನುಂ ೩-೩೭.

**ಏಕವಿಂಶತಿ ಏಕವಿಂಶತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಇಪ್ಪತ್ತೊಂದು. ಏಕಾಧಿಕಾ ವಿಂಶತಿಃ. 2. ಇಪ್ಪತ್ತೊಂದರ ಒಂದು ಗುಂಪು.

**ಏಕವಿಂಶತೀತಮ ಏಕವಿಂಶತೀತಮ** (ವಿಂ) ಇಪ್ಪತ್ತೊಂದ ನೆಯ. ಏಕವಿಂಶತೇ ಪೂರ್ಣಃ "ಙಟ್" (೪-೨-೪೮). ಙಟ್ಃ ವಾ "ತಮಟ್" (೪-೨-೪೬). ಪಕ್ಷೇ -ವಿಂಶಃ -ವಿಂಶಕಃ.

**ಏಕವಿಂಶತಿಧಾ ಏಕವಿಂಶತಿಧಾ** (ಅವ್ಯಂ) ಇಪ್ಪತ್ತೊಂದು ಭಾಗವಾಗಿ, ಇಪ್ಪತ್ತೊಂದು ರೀತಿಯಾಗಿ, ಇಪ್ಪತ್ತೊಂದು ವಿಧವಾಗಿ. ಏಕವಿಂಶತಿ "ಧಾ" (೪-೩-೪೨).

**ಏಕವಿಧ ಏಕವಿಧ** (ವಿಂ) 1. ಒಂದೇ ಪ್ರಕಾರವಾದ, ಒಂದೇ ರೀತಿಯಾದ. ಏಕಾ ವಿಧಾ ಪ್ರಕಾರೋ ಯಸ್ಯ. 2. ಒಂದು ರೀತಿಯ, ಒಂದು ಪ್ರಕಾರದ.

**ಏಕವಿಭಕ್ತಿ ಏಕವಿಭಕ್ತಿ** (ವಿಂ) ಒಂದೇ ವಿಭಕ್ತಿಯುಳ್ಳ (ಶಬ್ದ), ವಿಗ್ರಹ ವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದದೆ ನಿಯತ ವಾದ ವಿಭಕ್ತಿಯುಳ್ಳ (ಪದ). ನಿಷಕೌಶಾಮ್ಬಿಃ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಕೌಶಾಮ್ಬಾಃ ನಿಷಕ್ರಾಂತಃ, -ನಿಷಕ್ರಾಂತಮ್, -ನಿಷಕ್ರಾಂತೇನ, -ನಿಷಕ್ರಾಂತಾಯ, -ನಿಷಕ್ರಾಂತಾತ್, -ನಿಷಕ್ರಾಂತಸ್ಯ ಮತ್ತು -ನಿಷಕ್ರಾಂತೇ ಎಂದು ಎಲ್ಲಾ ವಾಕ್ಯಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದದೆ ಕೌಶಾಮ್ಬಾಃ ಎಂದೇ ನಿಲ್ಲುವುದರಿಂದ ನಿಯತ ವಿಭಕ್ತಿಯಾಯಿತು.

**ಏಕವಿಲೋಚನ ಏಕವಿಲೋಚನ** (ಪುಂ) 1. ಕುಬೇರ. ಏಕಂ ವಿಲೋಚನಂ ನೇತ್ರಂ ಯಸ್ಯ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಏಕವಿಲೋಚನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ಕಾಗೆ, ವಾಯುಸ. ಕಾಗೆಗೆ ಎರಡು ಕಣ್ಣು ಗಳಿದ್ದರೂ ಒಂದೇ ನೇತ್ರೇಂದ್ರಿಯವು ಎರಡು ಗುಡ್ಡೆ ಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಚಲಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. (ನಂ) 3. ಒಂದು ಕಣ್ಣು. ಏಕಂ ವಿಲೋಚನಮ್. (ವಿಂ) 4. ಒಂದು ಕಣ್ಣುಳ್ಳ. ಏಕಂ ವಿಲೋಚನಂ ಯಸ್ಯ.

**ಏಕವಿಷಯಿನ್ ಏಕವಿಷಯಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಒಂದೇ ವಿಷಯ ವುಳ್ಳ, ಸಮಾನವಾದ ಉದ್ದೇಶವುಳ್ಳ. ಏಕಃ ಸಮಾನೋ ವಿಷಯೋ- ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪). 2. ಒಂದೇ ದೇಶ ದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ.

**ಏಕವೀರ ಏಕವೀರ** (ಪುಂ) ಸಮರ್ಥನಾದ ಯೋಧ. ಲೋಕೋತ್ತರ ಪರಾಕ್ರಮಿ, ಅಸಹಾಯತೂರ. ಏಕಃ ಶ್ರೇಷ್ಠಃ ಅಸಹಾಯೋ ವಾ ವೀರಃ.

**ಏಕವೀರ್ಯ ಏಕವೀರ್ಯ** (ನಂ) 1. ಸಮಾನವಾದ ಪರಾ ಕ್ರಮ, ಒಂದೇ ರೀತಿಯ ಪರಾಕ್ರಮ. ಏಕಂ ಸಮಾನಂ ವೀರ್ಯಮ್. (ವಿಂ) 2. ಸಮಾನ ಬಲವುಳ್ಳ, ಒಂದೇ ವಿಧ ಪರಾಕ್ರಮ ವುಳ್ಳ. ಏಕಂ ಸಮಾನಂ ವೀರ್ಯಂ ಯಸ್ಯ.



**ಏಕವೃಂದ ಏಕವೃಂದ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ವಿಧ ಗಂಟಲು ರೋಗ, 65 ವಿಧ ಮುಖರೋಗಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ವೃತ್ತೋತ್ತತೋ ಯಃ ಶ್ವಯಥುಃ ಸದಾಹಃ ಕಂಡ್ವಾನ್ವಿತೋಽಪಾತ್ರಯಮೃದ್ವುಗುಣಶ್ಚ | ನಾಮನೇಕ-ವೃಂದಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತೋಽಸೌ" ಪುಶ್ರುತಂ ನಿರ್ದಾನಂ ೪೪ | 2. ಒಂದು ರಾಶಿ, ಒಂದು ಗುಂಪು.

**ಏಕವೃಷ ಏಕವೃಷ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಎತ್ತು. ಏಕೋ ವೃಷಃ | ಒಂದು ಎತ್ತನ್ನು ಸಾಕುವುದು ಯಜಮಾನನಿಗೆ ಹಾನಿಕರ. "ಏಕೋ ವೃಷಸ್ತ್ರಯೋ ಗಾವಃ ಸಪ್ತಾಶ್ವಾಃ ನವ ದಂತಿನಃ | ಸಿಂಹಪ್ರಸೂತಿಕಾ ಗಾವಃ ಕಥಿತಾಃ ಸ್ವಾಮಿಧಾತಕಾಃ" | 2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಎತ್ತು. (ವಿಂ) 3. ಒಂದು ಎತ್ತುಳ್ಳವನು. ಏಕೋ ವೃಷೋ ಯಸ್ಯ |

**ಏಕವ್ಯವಸಾಯಿನ್ ಏಕವ್ಯವಸಾಯಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಒಂದು ಕಾರ್ಯವನ್ನಿಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವ. 2. ಒಂದೇ ಉದ್ಯೋಗವುಳ್ಳ, ಸಮಾನವಾದ ಕೆಲಸವುಳ್ಳ. ಏಕಃ ಸಮಾನೋ ವ್ಯವಸಾಯೋ-ಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) |

**ಏಕವ್ರತ ಏಕವ್ರತ** (ವಿಂ) 1. ಒಬ್ಬನಿಗೇ ವಿಧೇಯನಾಗಿರುವ, ಒಬ್ಬನನ್ನೇ ಆಶ್ರಯಿಸಿರುವ. ಏಕಸ್ಮಿನ್ ವ್ರತಂ ಯಸ್ಯ | 2. ಒಂದು ಮೇಳೆ ಮಾತ್ರ ಭೋಜನ ಮಾಡುತ್ತ (ಉಪವಾಸ) ವ್ರತವನ್ನಾಚರಿಸುತ್ತಿರುವ.

**ಏಕಶತ ಏಕಶತ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ನೂರ ಒಂದು. ಏಕಾ-ಧಿಕಂ ಶತಮ್ | 2. ಒಂದು ನೂರು. ಏಕಂ ಶತಮ್ | (ವಿಂ) 3. ಒಂದು ನೂರುಳ್ಳ, ಒಂದು ನೂರು ಎಣಿಕೆಯುಳ್ಳ. "ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಸ್ಯ ಚೈವಾಸನ್ ಪುತ್ರಾ ಏಕಶತಂ ನೃಪ" |

**ಏಕಶತತನ ಏಕಶತತನ** (ವಿಂ) ಒಂದು ನೂರ ಒಂದು ನೆಯ. ಏಕಶತಸ್ಯ ಪೂರ್ಣಃ "ಙಟ್" (೪-೨-೪೮) | ತಮಙಾ-ಗಮಃ (೪-೨-೪೭) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೪) | -ತಮೀ -ತಮೀ.

**ಏಕಶತಧಾ ಏಕಶತಧಾ** (ಅವ್ಯಂ) ನೂರೊಂದು ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ, ನೂರೊಂದು ವಿಧವಾಗಿ. ಏಕಶತ "ಧಾ" (೪-೩-೪೨) |

**ಏಕಶಫ ಏಕಶಫ** (ಪುಂ) ಒಂದೇ ಗೊರಸುಳ್ಳ (ಕುದುರೆ, ಕತ್ತೆ ಮೊದಲಾದ) ಪ್ರಾಣಿ. ಏಕಂ ಶಫಂ ಯಸ್ಯ | ಕುದುರೆ, ಕತ್ತೆ, ಹೇಸರಗತ್ತೆ, ಶರಭಮೃಗ, ಚಮರೀಮೃಗ ಇವು ಒಂದುಗೊರಸುಳ್ಳ ಪ್ರಾಣಿಗಳು. "ಖರೋಽಶ್ವೋಽಶ್ವತರೋ ಗೌರಃ ಶರಭಶ್ಚಮರೀ ತಥಾ | ಏತೇ ತ್ರೈಕಶಫಾಃ ಕ್ಷತ್ತಃ ಶೃಣು ಪಂಚನಖಾನ್ ಪಶುನ್" ಭಾಂ ವನಂ ೧೦-೨೨ | "ಅಜಾವಿಕಂ ತ್ರೈಕಶಫಂ ನ ಜಾತು ವಿಷಮಂ ಭಜೇತ್" ಮನುಂ ೯-೧೧೯ |

**ಏಕಶರೀರ ಏಕಶರೀರ** (ವಿಂ) ಒಂದೇ ದೇಹದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ, ಒಂದೇ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಒಂದೇ ಗೋತ್ರದವನಾದ. ಏಕಂ ಸಮಾನಂ ಶರೀರಂ ಯಸ್ಯ |

**ಏಕಶಸ್ ಏಕಶಸ್** (ಅವ್ಯಂ) ಒಂದೊಂದಾಗಿ, ಒಬ್ಬೊಬ್ಬನಾಗಿ. ಏಕಮೇಕಮ್ "ಶಸ್" (೪-೪-೪೩) |

**ಏಕಶಾಖ ಏಕಶಾಖ** (ವಿಂ) ಒಂದೇ (ಮೇದ) ಶಾಖೆಗೆ ಸೇರಿದ, ಸಮಾನ (ಮೇದ) ಶಾಖೆಗೆ ಸೇರಿದ. ಏಕಾ ಸಮಾನಾ ಶಾಖಾ ಯಸ್ಯ |

**ಏಕಶಾಲಿಕ ಏಕಶಾಲಿಕ** (ವಿಂ) ಒಂದು ಶಾಲೆ ಯಂತಿರುವ, ಒಂದು ಮನೆಯಂತಿರುವ. ಏಕಶಾಲೇವ ವಾ "ಶಲ್" (೪-೩-೧೦೯) | ಪಕ್ಷೇ "ಶಕ್" | ಏಕಶಾಲಿಕಃ ಏಕಶಾಲಿಕಃ.

**ಏಕಶುಲ್ಕ ಏಕಶುಲ್ಕ** (ನಂ) ಒಂದೇ ಕ್ರಯದ ಮೌಲ್ಯ, ಮೌಲ್ಯವನ್ನು ಕೊಂಡುಕೊಳ್ಳಲು ಗೊತ್ತಾದ ಒಂದೇ ಮೊತ್ತದ ಹಣ. ಏಕಂ ಸಮಾನಂ ಶುಲ್ಕಮ್ | "ಅನ್ಯಾಂ ಚೇದ್ದರ್ಶಯಿತ್ವಾನ್ಯಾ ವೋಡುಃ ಕನ್ಯಾ ಪ್ರದೀಯತೇ | ತುಮೇ ತ ಏಕ-ಶುಲ್ಕೇನ ವಹೇದಿತ್ಯಬ್ರವೀನ್ಮನುಃ" ಮನುಂ ೮-೨೦೪ |

**ಏಕಶೂರ ಏಕಶೂರ** (ಪುಂ) "ಏಕವೀರ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಏಕಃ ಶ್ರೇಷ್ಠಃ ಅಸಹಾಯೋ ವಾ ಶೂರಃ |

**ಏಕಶೃಂಗ ಏಕಶೃಂಗ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಮತ್ಸ್ಯ, ವತಾರ ವೆತ್ತಿದ ಪರಮಾತ್ಮ. ಏಕಂ ಶೃಂಗಂ ಯಸ್ಯ | [ಸ್ವಾಯಂಭುವ ಮನ್ವಂತರದಲ್ಲಿ ಆಕಾಲಪ್ರಳಯವುಂಟಾಗಲು ಮತ್ಸ್ಯ ರೂಪವೆತ್ತಿದ ವಿಷ್ಣುವಿನ ಕೊಂಬಿನಲ್ಲಿ ಮನುವಿನ ಹೆಡಗು ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟಿತ್ತು.] "ಸ್ವಾಯಂಭುವಸ್ತದಾ ಮತ್ಸ್ಯಂ ಹರಿಃ ಸಸ್ಮಾರ ವೈ ತದಾ | ತದಾ ಜಲಾನಾಮುಪರಿ ಸಶೃಂಗ ಇವ ಪರ್ವತಃ | ತದ್ವಿಪ್ರಶ್ವೇಕಶೃಂಗೇಣ ವಿಷ್ಣುರ್ಮತ್ಸ್ಯಸ್ವರೂಪಧೃಕ್ | ಆಗತಸ್ತತ್ರ ನ ಚಿರಾತ್ತ್ವಾಸ್ತೇ ಸ ಮುನಿರ್ಹರಿಃ" ಕಾಲಿಕಾಪುಂ ೩೨ | 2. ಒಂದು ಕೊಂಬುಳ್ಳ ಪಶು. 3. ಒಂದು ಶಿಖರವುಳ್ಳ ಪರ್ವತ. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 4. ಪಿತ್ತಗಳ ಒಂದು ಗಣ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಶೃಂಗಾ -ಶೃಂಗಾ. ಶುಕಮಹರ್ಷಿಯ ಹೆಂಡತಿ.

**ಏಕಶೇಷ ಏಕಶೇಷ** (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ ಐದು ವೃತ್ತಿಗಳಲ್ಲೊಂದು, ಒಂದು ಪದ ಮಾತ್ರ ಉಳಿಯುವ ಒಂದು ವೃತ್ತಿ. ಏಕಃ ಶಿಷ್ಯತೇ (ಅನ್ಯೋ ಲುಪ್ಯತೇ) ಯತ್ರ | ಒಂದೇ ವಿಭಕ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಸಮಾನ ರೂಪವುಳ್ಳ ಎರಡು ಅಥವಾ ಇನ್ನೂ ಹೆಚ್ಚು ಪದಗಳ ದ್ವಂದ್ವವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಪದ ಮಾತ್ರ ಉಳಿದು ಮಿಕ್ಕಿಲ್ಲ ಪದಗಳಿಗೂ ಲೋಪ ಬರುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ಏಕಶೇಷವೆಂದು ಹೆಸರು. 2. ಎರಡರಲ್ಲಿ ಯಾವುದಾದರೂ ಒಂದು ಮಾತ್ರ ಉಳಿಯುವಿಕೆ. ಏಕಶೇಷೋ ಶೇಷಶ್ಚ ಏಕಸ್ಯ ಶೇಷೋ ವಾ | "ಮಮಾಶ್ಚ ತತ್ಪ್ರಾಪ್ತಿ-ರಸುವ್ಯಯೋ ವಾ ಹಸ್ತೇ ತವಾಸ್ತೇ ದ್ವಯಮೇಕಶೇಷಃ" ನೈಷಂ ೩-೮೨ |



ಏಕಶ್ರುತಧರ ಏಕಶ್ರುತಧರ (ವಿಂ) ಒಂದು ಸಲ ಶ್ರವಣ ಮಾಡಿದುದನ್ನು ನೆನಪಿನಲ್ಲಿಡುವವನು, ಒಂದು ಸಲ ಕೇಳಿದುದನ್ನು ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವವನು.

ಏಕಶ್ರುತಿ ಏಕಶ್ರುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉದಾತ್ತಾನುದಾತ್ತಾದಿ ಸ್ವರಗಳು ಒಂದೇ ಸ್ವರದಂತೆ ಕೇಳಿಸುವಿಕೆ. ಇದು ಮೂರು ಸ್ವರಗಳಿಗೂ ಅಪವಾದಭೂತವಾದುದು. ದೂರದಿಂದ ಸಂಬೋಧಿಸುವ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ವಾಕ್ಯವು ಏಕಶ್ರುತಿಯಾಗುವುದು. "ಏಕಶ್ರುತಿ ದ್ವರಾತ್ ಸಮ್ಬುದ್ಧಿ" ಪಾಂ ಸೂಂ 1-2-33. (ವಿಂ) 2. ಉದಾತ್ತಾನುದಾತ್ತಸ್ವರಿತಗಳ ಭೇದವಿಲ್ಲದೆ ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ಶಬ್ದ. ಏಕಾ ಶ್ರುತಿಯಸ್ಯ.

ಏಕಷಟ್ ಏಕಷಷ್ಠ (ವಿಂ) ಅರವತ್ತೊಂದನೆಯ. ಏಕಷಟ್: ಪೂರ್ಣ: "ಛಟ್" (4-2-48). ತಸ್ಯ ವಾ ತಮಙಾಗಮ: (4-2-46). -ಷಟ್ತಮ: -ಷಷ್ಠಿತಮಃ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡಿಪ್" (4-1-14). -ತಮಿ -ತಮೀ.

ಏಕಷಟ್ ಏಕಷಷ್ಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರವತ್ತೊಂದು. ಏಕಾಞಿಕಾ ಷಟ್:.

ಏಕಸಪ್ತತ ಏಕಸಪ್ತತ (ವಿಂ) ಎಪ್ಪತ್ತೊಂದನೆಯ. ಏಕಸಪ್ತತ: ಪೂರ್ಣ: "ಛಟ್" (4-2-48). ತಸ್ಯ ವಾ ತಮಙಾಗಮ: (4-2-46). -ಸಪ್ತತತಮ: -ಸಪ್ತತತಮಃ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡಿಪ್" (4-1-14). -ತಮಿ -ತಮೀ.

ಏಕಸಪ್ತತಿ ಏಕಸಪ್ತತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎಪ್ಪತ್ತೊಂದು. ಏಕಾಞಿಕಾ ಸಪ್ತತಿ:.

ಏಕಸರ್ಗ ಏಕಸರ್ಗ (ವಿಂ) ಏಕಾಗ್ರತೆಯುಳ್ಳ, ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ನೆಟ್ಟುಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ಏಕಸ್ಮಿನ್ನೇವ ಸರ್ಗೋ ನಿಶ್ಚಯೋ ಯಸ್ಯ.

ಏಕಸಹಸ್ರ ಏಕಸಹಸ್ರ (ನಂ) 1. ಒಂದು ಸಾವಿರದ ಒಂದು. ಏಕಾಞಿಕಂ ಸಹಸ್ರಮ್. 2. ಒಂದು ಸಾವಿರ. ಏಕಂ ಸಹಸ್ರಮ್.

ಏಕಸಹಸ್ರತಮ ಏಕಸಹಸ್ರತಮ (ವಿಂ) ಒಂದು ಸಾವಿರದ ಒಂದನೆಯ. ಏಕಸಹಸ್ರಸ್ಯ ಪೂರ್ಣ: "ತಮಟ್" (4-2-49).

ಏಕಸಾಕ್ಷಿಕ ಏಕಸಾಕ್ಷಿಕ (ವಿಂ) ಒಬ್ಬ ಸಾಕ್ಷಿಯುಳ್ಳ, ಒಬ್ಬನಿಂದ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಏಕ: ಸಾಕ್ಷಿ ಯತ್ರ. "ಕಪ್" (4-4-144).

ಏಕಸೂತ್ರ ಏಕಸೂತ್ರ (ನಂ) ಡಮರು, ಬುಡಬುಡಿಕೆ. ಏಕಂ ಸೂತ್ರಂ ವಾದನಸಾಧನಂ ಯಸ್ಯ.

ಏಕಸ್ಥ ಏಕಸ್ಥ (ವಿಂ) ಒಂದು ಕಡೆಯಿರುವ, ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿರುವ. ಏಕಸ್ಮಿನ್ ತಿಷ್ಠತಿ-ಷ್ಠಾ (ಗತಿ-ನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ:" (3-2-4). "ಸಾ ನಿರ್ಮಿತಾ ವಿಶ್ವಸೃಜಾ

ಪ್ರಯತ್ನಾತ್ ಏಕಸ್ಥಸೌಂದರ್ಯದಿಕ್ಷಯೇವ" ಕುಮಾಂ 1-49.

"ಏಕಸ್ಥಹೃದಯಾ ನೂನಂ ರಾಮಮೇವಾನುಪश्यति" ರಾಮಾಂ.

ಏಕಸ್ಥಾನ ಏಕಸ್ಥಾನ (ನಂ) 1. ಒಂದು ಜಾಗ. 2. ಸಮಾನವಾದ ಜಾಗ, ಅದೇ ಜಾಗ. ಏಕಂ ಸಮಾನಂ ಸ್ಥಾನಮ್. (ವಿಂ) 3. ಒಂದೇ ಸ್ಥಾನವುಳ್ಳ, ಸಮಾನ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ. ಏಕಂ ಸಮಾನಂ ಸ್ಥಾನಂ ಯಸ್ಯ.

ಏಕಹಸ್ತ ಏಕಹಸ್ತ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಮೊಳ. ಏಕೋ ಹಸ್ತ: "ಪ್ರಕೋಷ್ಠೇ ವಿस्तೃತಕರೇ ಹಸ್ತ:" ಅಮಂ. (ವಿಂ) 2. ಒಂದು ಮೊಳದ ಅಳತೆಯುಳ್ಳ. 3. ಒಂದು ಹಸ್ತ (ಕೈ)ವುಳ್ಳ. ಏಕೋ ಹಸ್ತೋ ಯಸ್ಯ.

ಏಕಹಾಯನ ಏಕಹಾಯನ (ನಂ) 1. ಒಂದು ವರ್ಷ, ಒಂದು ಸಂವತ್ಸರ. ಏಕಂ ಹಾಯನಮ್. (ವಿಂ) 2. ಒಂದು ವರ್ಷದ, ಒಂದು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸುಳ್ಳ. ಏಕಂ ಹಾಯನಂ ವಯೋಮಾನಂ ಯಸ್ಯ. "ತಸ್ತೈಕಹಾಯನಕುರಙ್ಗವಿಲೋದೃಷ್ಟಿರಾಶಿಲಿಖಿತವ್ಯಮೃತಸಂಬಲಿತೈರಿವಾಙ್ಗೈ:" ಮಾಲತೀಂ 4-6. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಹಾಯನಿ -ಹಾಯನೀ. 3. ಒಂದು ವರ್ಷದ ಕರು. ಏಕಂ ಹಾಯನಂ ಯಸ್ಯಾ: "ಡಿಪ್" (4-1-29).

ಏಕಾಕಿನ್ ಏಕಾಕಿನ್ (ವಿಂ) ಅಸಹಾಯ, ಒಬ್ಬಂಟಿಗ, ಜೊತೆಗಾರನಿಲ್ಲದ, ಸಜಾತೀಯರಹಿತವಾದ. ಏಕ "ಆಕಿನಚ್" (4-3-42). "ಏಕಾಕಿನೋಽಪಿ ಪರಿತ: ಪೌರಘೇಯವೃತಾ ಇವ" ಮಾಘಂ 2-4.

ಏಕಾಕ್ಷ ಏಕಾಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ವಾಯಸ, ಕಾಗೆ. (ವಿಂ) 2. ಒಂದು ಕಣ್ಣುಳ್ಳವನು. ಏಕಮ್ ಅಕ್ಷಿ ಯಸ್ಯ "ಷಕ್" (4-4-113). 3. ಒಂದು ದೂರಿಯುಳ್ಳ, ಒಂದು ಅಚ್ಚುಳ್ಳ (ಗಾಡಿ). ಏಕೋಽಕ್ಷೋ ರಥಾವಯವೋ ಯಸ್ಯ.

ಏಕಾಕ್ಷರ ಏಕಾಕ್ಷರ (ನಂ) 1. ಒಂದು ಅಕ್ಷರ, ಒಂದು ವರ್ಣ. ಏಕಮಕ್ಷರಮ್. 2. ಒಂದು ಸ್ವರವರ್ಣ, ಓಂಕಾರ, ಪರಬ್ರಹ್ಮ. ಓಂಕಾರದ ಜಪವು ಪರಬ್ರಹ್ಮಪ್ರಾಪ್ತಿಗೆ ಕಾರಣವಾದುದರಿಂದ ಓಂಕಾರವು ಪರಬ್ರಹ್ಮ. "ಏಕಾಕ್ಷರಂ ಪರಂ ಬ್ರಹ್ಮ ಪ್ರಾಣಾಯಾಮಾ: ಪರಂ ತಪ:" ಮನುಂ 2-63. "ಔಷ್ಣಾರಪೂರ್ವಿಕಾಸ್ತಿಸ್ತೋ ಮಹಾವ್ಯಾಹೃತಯೋಽಖ್ಯಯಾ: ತ್ರಿಪದಾ-ಚೈವ ಸಾವಿತ್ರಿ ವಿಜ್ಞೇಯಂ ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಮುಖಮ್" ಮನುಂ 2-61. 3. ಒಂದು ಅಕ್ಷರದ ಪದ. (ವಿಂ) 4. ಒಂದು ಅಕ್ಷರದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಏಕಾಕ್ಷರಕೋಶ ಏಕಾಕ್ಷರಕೋಶ (ಪುಂ) ಒಂದು ಅಕ್ಷರದ ಪದಗಳ ಕೋಶ (ನಿಘಂಟು).

ಏಕಾಗಾರ ಏಕಾಗಾರ (ನಂ) 1. ಕೇವಲ ಮನೆ, ಯಾರೂ ಇಲ್ಲದ ಮನೆ. 2. ಒಂದೇ ಮನೆ, ಅಕ್ಕಪಕ್ಕಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವ



ಮನೆಯೂ ಇಲ್ಲದ ಏಕಮಾತ್ರ ಗೃಹ. ಏಕಮಸಹಾಯಮಗಾರಮ್ |

3. ಮುಖ್ಯವಾದ ಮನೆ. "ಏಕೇ ಮುಖ್ಯಾನ್ಯಕೇವಲಾಃ" ಅಮಂ |

**एकाग्नि** ಏಕಾಗ್ನಿ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಅಗ್ನಿ, ಮೂರು ಅಗ್ನಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಏಕೋಗ್ನಿಃ | (ವಿಂ) 2. ಮೂರು ಅಗ್ನಿಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ (ಅಗ್ನಿ ಹೋತ್ರಿ). ಏಕೋಗ್ನಿರ್ಧಾರ್ಯತ್ವೇನ ಯಸ್ಯ |

**एकाग्निकाण्ड** ಏಕಾಗ್ನಿಕಾಂಡ (ಪುಂ) ಪೋಡಶಕರ್ಮ ಸಂಬಂಧವಾದ ವೇದಮಂತ್ರಗಳ ಒಂದುಭಾಗ, ಮಂತ್ರಪ್ರಶ್ನ.

**एकाग्र** ಏಕಾಗ್ರ (ವಿಂ) 1. ಒಂದು ಅಗ್ರವುಳ್ಳ, ಒಂದು ತುದಿಯುಳ್ಳ. ಏಕಮಗ್ರಂ ಅಗ್ರಭಾಗೋ ಯಸ್ಯ | 2. ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತವಾದ. ಏಕಮಗ್ರಂ ವಿಷಯಪ್ರವಣತಾ ಯಸ್ಯ | "ತದ್ಗೀತಶ್ರವಣೇಕಾಗ್ರಾ ಸಂಸದಶ್ರುಮುಖೀ ಬಭೌ" ರಘುಂ ೧೪-೬೬ | 3. ಸ್ಥಿರಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಬೇರೆ ಯಾವ ವಿಷಯದಲ್ಲಿಯೂ ಆಸಕ್ತವಲ್ಲದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. "ಮನುಮೇಕಾಗ್ರಮಾಸೀನಮಭಿಗಮ್ಯ ಮಹರ್ಷಯಃ" ಮನುಂ ೧-೧ |

**एकाग्रचित्त** ಏಕಾಗ್ರಚಿತ್ತ (ವಿಂ) ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ನೆಟ್ಟಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಸ್ಥಿರಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ಏಕಾಗ್ರಂ ಚಿತ್ತಂ ಯಸ್ಯ |

**एकाग्रतस्** ಏಕಾಗ್ರತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಚಿತ್ತಸ್ಥೈರ್ಯದಿಂದ, ನೆಟ್ಟಮನಸ್ಸಿನಿಂದ. ಏಕಾಗ್ರ "ತಸಿಃ" (ವಾಂ ೪-೪-೪೪) |

**एकाग्रता** ಏಕಾಗ್ರತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮನಸ್ಸನ್ನಿಟ್ಟಿರುವಿಕೆ. ಏಕಾಗ್ರಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) | "ತ್ವಃ" (೪-೧-೧೧೯) | -ತ್ವಮ್ -ತ್ವಮ್.

**एकाग्रदृष्टि** ಏಕಾಗ್ರದೃಷ್ಟಿ (ವಿಂ) ನೆಟ್ಟಮನಸ್ಸಿನಿಂದ ಒಂದೇ ವಿಷಯವನ್ನು ನೋಡುವ. ಏಕಾಗ್ರಾ ದೃಷ್ಟಿರ್ಯಸ್ಯ |

**एकाग्रधी** ಏಕಾಗ್ರಧೀ-ಮನಸ್-ಮನಸ್ (ವಿಂ) ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ನೆಟ್ಟಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ಏಕಾಗ್ರಾ ಧಿಃ ಏಕಾಗ್ರಂ ಮನೋ ವಾ ಯಸ್ಯ | "ಸ ಭೂದೃಷ್ಟಾವಪಿ ಲೋಕಪಾಲಾಸ್ತಮೇ ತದೇಕಾಗ್ರಧಿಯಃ ಪ್ರಸೇದೇ" ನೆಪಂ ೩-೮೯ |

**एकाङ्ग** ಏಕಾಂಗ (ಪುಂ) 1. ಬುಧಗ್ರಹ. ಏಕಂ (ಸುಂದರ-ತ್ವೇನ) ಪ್ರಧಾನಮ್ ಅಂಗಂ ಯಸ್ಯ | "ಬುಧೋ ಹೇಮಾ ರಾಜಪುತ್ರ ಏಕದೇಹಃ ಪ್ರಹರ್ಷಣಃ | ಸ್ಯಾತ್ಪಶ್ಚಾಚಿಶ್ರವಿಷ್ಣಾಜಶ್ಯಾಮಾಂಗೈ-ಕಾಂಗೈರೋಧನಾಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | (ನಂ) 2. ಒಂದು ಅವಯವ, ಒಂದು ಭಾಗ. 3. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಅಂಗ, ಶಿರಸ್ಸು, ತಲೆ. ಏಕಂ ಶ್ರೇಷ್ಠಮಂಗಮ್ | 4. ಚಂದನವೃಕ್ಷ, ಗಂಧದ ಮರ. (ದ್ವಿವಂ) 5. ದಂಪತಿಗಳು, ಏಕದೇಹಭಾವವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಪತ್ರಿಪತ್ನಿಯರು.

**एकाण्ड** ಏಕಾಂಡ (ಪುಂ) ಒಂದು ವೃಷಣವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕುದುರೆ. ಏಕಮಂಡಂ ವೃಷಣಮಸ್ಯ |

**एकातपत्र** ಏಕಾತಪತ್ರ (ವಿಂ) 1. ಒಂದೇ ಭತ್ತಿಯುಳ್ಳ, ಸಾರ್ವಭೌಮತ್ವಸೂಚಕವಾದ ಒಂದು ಭತ್ತಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. ಏಕಮ್ ಅದ್ವಿತೀಯಮ್ ಸಾರ್ವಭೌಮತ್ವಸೂಚಕಮ್ ಆತಪತ್ರಂ ಯಸ್ಯ | "ಏಕಾತಪತ್ರಂ ಜಗತಃ ಪ್ರಭುತ್ವಂ ನವಂ ವಯಃ ಕಾಂತಮಿದಂ ವಪುಶ್ಚ" ರಘುಂ ೨-೪೮ | 2. ಕೇವಲ ಭತ್ತಿ ಮಯವಾದ, ಭತ್ತಿಪ್ರಚುರವಾದ. ಏಕಾನಿ ಕೇವಲಾನಿ ಆತಪತ್ರಾಣಿ ಯಸ್ಯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ಆತಪತ್ರಾ -ಅತಪತ್ರಾ. "ಏಕಾತಪತ್ರಾ ಪೃಥಿವೀಭೃತಾಂ ಗಣೇರಭೂಹುಚ್ಚತ್ರತಯಾ ಪತಾಕಿನೀ" ಮಾಘಂ ೧೨-೩೩ |

**एकात्मन्** ಏಕಾತ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಆತ್ಮ, ಒಂದು ಜೀವ. (ವಿಂ) 2. ಒಂದೇ ಸ್ವರೂಪವುಳ್ಳ, ಸಮಾನ ಸ್ವರೂಪವುಳ್ಳ. 3. ಸಮಾನಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ, ಒಂದೇ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ. ಏಕ ಆತ್ಮಾ ಸ್ವರೂಪಂ ಸ್ವಭಾವೋ ವಾ ಯಸ್ಯ | 4. ಏಕಾಕಿ, ಅಸಹಾಯ, ಒಬ್ಬಂಟಿ.

**एकादश** ಏಕಾದಶ (ವಿಂ) ಹನ್ನೊಂದನೆಯ. ಏಕಾದಶಾನಾಂ ಪೂರಣಃ "ಛತ್" (೪-೨-೪೮) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೧೪) | -ವಶಿ -ದಶೀ.

**एकादशगुरु** ಏಕಾದಶಗುರು (ಪುಂ) 1. ಹನ್ನೊಂದು ಮಂದಿ ಗುರುಗಳು : (1) ಆಚಾರ್ಯ, (2) ತಂದೆ, (3) ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರ, (4) ರಾಜ, (5) ಸೋದರಮಾವ, (6) ಶ್ವಶುರ (ಹೆಂಡತಿಯ ಅಥವಾ ಗಂಡನ ತಂದೆ), (7) ರಕ್ಷಣೆ ಕೊಡುವವನು, (8) ಮಾತಾಮಹ (ತಾಯಿಯ ತಂದೆ), (9) ಪಿತಾಮಹ (ತಂದೆಯ ತಂದೆ), (10) ವರ್ಣ ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಮತ್ತು (11) ಪಿತೃವ್ಯ (ತಂದೆಯ ಸಹೋದರ) ಈ ಹನ್ನೊಂದು ಜನರೂ ಗುರುಗಳು. ಗುರುವಿನಂತೆ ಪೂಜ್ಯರು. "ಆಚಾರ್ಯಶ್ಚ ಪಿತಾ ಜ್ಯೇಷ್ಠಭ್ರಾತಾ ಮಹೀಪತಿಃ | ಮಾತುಲಃ ಶ್ವಶುರಸ್ತ್ರಾತಾ ಮಾತಾಮಹಿಪಿತಾಮಹೌ | ವರ್ಣಜ್ಯೇಷ್ಠಃ ಪಿತೃವ್ಯಶ್ಚ ಪುಂಸ್ಯೇತೇ ಗುರವೋ ಮತಾಃ" ದೇವಲಃ | 2. ಜನ್ಮರಾಶಿಯಿಂದ ಹನ್ನೊಂದನೆಯ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿರುವ ಗುರು.

**एकादशन्** ಏಕಾದಶನ್ (ತ್ರಿಂ) 1. ಹನ್ನೊಂದು ಸಂಖ್ಯೆ. 2. ಹನ್ನೊಂದು ಸಂಖ್ಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಹನ್ನೊಂದು ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ. ಏಕಾಧಿಕಾ ದಶ ಏಕಾಧಿಕಾ ದಶ ಯತ್ರ ವಾ |

**एकादशरुद्र** ಏಕಾದಶರುದ್ರ (ಪುಂ) ಹನ್ನೊಂದು ಮಂದಿ ರುದ್ರರು. ಇವರ ಹೆಸರು ಒಂದೊಂದು ಕಲ್ಪದಲ್ಲಿಯೂ ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿವೆ.



ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೭

ಭಾಗಂ ೬-೬

- |                |              |
|----------------|--------------|
| 1. ಸೃಗವ್ಯಾಘ:   | 1. ಅಜೈಕಪಾದ:  |
| 2. ಸರ್ಪ:       | 2. ಅಹಿಬುಧ್ಯ: |
| 3. ನಿರ್ವೃತ್ತಿ: | 3. ಪಿನಾಕಿ    |
| 4. ಅಜೈಕಪಾದ:    | 4. ಕೃತ:      |
| 5. ಅಹಿಬುಧ್ಯ:   | 5. ಪಿತೃರೂಪ:  |
| 6. ಪಿನಾಕಿ      | 6. ಶ್ಯಮ್ಬಕ:  |
| 7. ದಹನ:        | 7. ಮಹೇಶ್ವರ:  |
| 8. ಇಶ್ವರ:      | 8. ವೃಷಾಕಪಿ:  |
| 9. ಕಪಾಲಿ       | 9. ಶಮ್ಭು:    |
| 10. ಸ್ಥಾಣು:    | 10. ಹವನ:     |
| 11. ಭಗ:        | 11. ಇಶ್ವರ:   |

ಏಕಾದಶಿ ಏಕಾದಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶುಕ್ಲ ಮತ್ತು ಕೃಷ್ಣ (ಉಭಯ) ಪಕ್ಷಗಳ ಹನ್ನೊಂದನೆಯ ತಿಥಿ, ಹರಿದಿನ. ಏಕಾದಶಾನಾಂ ಪೂರ್ಣ: "ಛತ್" (೪-೨-೪೮)। "ಕೃಷ್ಣ" (೪-೨-೨೪)। ಏಕಾದಶಿಯ ದಿನ ಭೋಜನವು ನಿಷಿದ್ಧ. ಉಪವಾಸವ್ರತವನ್ನಾಚರಿಸಬೇಕು. "ಏಕಾದಶಿ ಸದೋಷ್ಯಾ ಪಕ್ಷಯೋಃ ಶುಕ್ಲಕೃಷ್ಣಯೋಃ" ಸನತ್ಕುಂ ಸಂ. ಏಕಾದಶಿಯ ದಿನ ಮಾಡಿದ ಭೋಜನವು ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯೆಯನ್ನು ಭುಜಿಸಿದಂತೆ. "ಪಾಪಾನಿ ಕಾನಿಚಿತ್ ಯಾನಿ ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯಾಸಮಾನಿ ಚ। ಅನ್ಮಾಶ್ರಿತೈಃ ತಿಷ್ಠಂತಿ ಸಂಪ್ರಾಪ್ತೇ ಹರಿವಾಸರೇ। ತಾನಿ ಪಾಪಾನ್ಯುಪಾಶ್ನಾತಿ ಭುಂಜಾನೋ ಹರಿವಾಸರೇ" ನಾರದೀಯಸಂ. ವಿಷ್ಣು ಸಾಯುಜ್ಯ, ಸಂತಾನ ಮತ್ತು ಸಂಪತ್ತುಗಳನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು ಏಕಾದಶೀವ್ರತವನ್ನಾಚರಿಸಬೇಕು. "ಯದಿಚ್ಛೇದ್ವಿಷ್ಣುಸಾಯುಜ್ಯಂ ಸುತಾನ್ ಸಂಪದಮಾತ್ಮನಃ। ಏಕಾದಶ್ಯಾಂ ನ ಭುಂಜೀತ ಪಕ್ಷಯೋರಭಯೋರಪಿ" ವಿಷ್ಣುರಂ.

ಏಕಾದಿ ಏಕಾದಿ (ವಿಂ) ಒಂದು ಮೊದಲುಗೊಂಡು (ಪರದವರೆಗಿನ) ಸಂಖ್ಯೆ. ಅಂಕಗಳು ಒಂಬತ್ತೇ ಅದರೂ ಅವುಗಳ ಜೋಡಣೆಯ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ಸಂಖ್ಯೆಗಳಾಗುವುವು. 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 ಮತ್ತು 0 ಈ ಅಂಕಗಳಲ್ಲೇ ಒಂದರೊಡನೆ ಉಳಿದ ಅಂಕಗಳ ಜೋಡಣೆಯಿಂದ 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18 ಮತ್ತು 19 ಎಂದೂ ಎರಡರೊಡನೆ ಉಳಿದ ಅಂಕಗಳ ಜೋಡಣೆಯಿಂದ 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28 ಮತ್ತು 29 ಎಂದೂ ಹೀಗೆಯೇ 30, 40, 50 ಅಂಕಗಳು ಮೊದಲುಗೊಂಡು ಪರದವರೆಗೂ 30, 40, 50, 60, 70, 80, 90, 100, 1000, 10,000, 1,00,000, 10,00,000, 1,00,00,000, ಈ ರೀತಿ ಪರದವರೆಗೂ ಸಂಖ್ಯೆಯು ಏರುತ್ತ ಹೋಗು

ವುದು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಪರ" "ಪರಾಕ" ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 0 ಮೊದಲುಗೊಂಡು 1, 2, 3, 4 ಇತ್ಯಾದಿ ಸಂಖ್ಯೆಗಳ ವಾಚಕಶಬ್ದಗಳು ಅಥವಾ ಸಂಕೇತಶಬ್ದಗಳು:

- 0 ಸೊನ್ನೆ-ಶೂನ್ಯ, ಖ, ಗಗನ, ಆಕಾಶ.
1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಇಂದ್ರ, ಸೂರ್ಯ, ಚಂದ್ರ, ಇತ್ಯಾದಿ.
2. ನೇತ್ರ, ಪಕ್ಷ, ನದಿಯತೀರ, ಆಯನ, ಇತ್ಯಾದಿ.
3. ಕಾಲ, ಅಗ್ನಿ, ಭುವನ, ಸತ್ತ್ವಾದಿ ಗುಣಗಳು, ರಾಜರ ಶಕ್ತಿಗಳು, ಇತ್ಯಾದಿ.
4. ವೇದಗಳು, ವರ್ಣಗಳು, ಆಶ್ರಮಗಳು, ಸಾಗರಗಳು, ಉಪಾಯಗಳು ಇತ್ಯಾದಿ.
5. (ಪಂಚ)ಮಹಾಭೂತಗಳು, (ಪಂಚ) ಪಾಂಡವರು, (ಪಂಚ) ಇಂದ್ರಿಯಗಳು, (ಪಂಚ) ಪ್ರಾಣಗಳು, (ಪಂಚ) ಮಹಾಯಜ್ಞಗಳು, (ಪಂಚ) ಲೋಹಗಳು ಇತ್ಯಾದಿ.
6. ವೇದಾಂಗಗಳು, ಭೋಜ್ಯರಸಗಳು, ರಾಜನ ಗುಣಗಳು, ಮತುಗಳು ಇತ್ಯಾದಿ.
7. ಲೋಕಗಳು, ಪಾತಾಳಗಳು, ಋಷಿಗಳು, ಸ್ವರಗಳು, ಪರ್ವತಗಳು, ದ್ವೀಪಗಳು, ರಾಜ್ಯಾಂಗಗಳು ಇತ್ಯಾದಿ.
8. ವಸುಗಳು, ಯೋಗಾಂಗಗಳು, ಈಶ್ವರನ ಮೂರ್ತಿಗಳು, ದಿಗ್ಗಜಗಳು, ಸಿದ್ಧಿಗಳು.
9. ದೇಹದ ದ್ವಾರಗಳು, ಭೂಖಂಡಗಳು, ನಿಧಿಗಳು, ರಸಗಳು, ಗ್ರಹಗಳು, ಧಾನ್ಯಗಳು, (ನವ)ರತ್ನಗಳು.
10. (ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ) ಅವತಾರಗಳು, ರಾವಣನ ತಲೆಗಳು, (ದಶ) ದಿಕ್ಕುಗಳು, (ದಶ) ರೂಪಕಗಳು.
11. ರುದ್ರರು.
12. ಆದಿತ್ಯರು, ರಾಶಿಗಳು, ರಾಜರು.
13. ತಾಂಬೂಲಗುಣಗಳು.
14. ವಿದ್ಯೆಗಳು, ಭುವನಗಳು, ಮನುಗಳು, ಇಂದ್ರರು.
15. (ಉಭಯ ಪಕ್ಷಗಳ) ತಿಥಿಗಳು.
16. ಚಂದ್ರನ ಕಲೆಗಳು.
17. ಲಿಂಗದೇಹಾವಯವಗಳು.
18. ಅಷ್ಟಾದಶವಿದ್ಯೆಗಳು, -ಪುರಾಣಗಳು, -ಸ್ಮೃತಿಗಳು, -ಧಾನ್ಯಗಳು, -ವಿವಾದಸ್ಥಾನಗಳು.
19. ಮೂಲಾನಕ್ಷತ್ರ.
20. ರಾವಣನ ಭುಜಗಳು, ಹಸ್ತ ಮತ್ತು ಪಾದಗಳ ಬೆರಳುಗಳು.
21. ಪರಶುರಾಮನ ಜಯ.
22. ಶ್ರವಣನಕ್ಷತ್ರ.



23. धनष्ठा नक्षत्र.
24. प्रकृतिಗಳು.
25. ಸಾಂಖ್ಯ ತತ್ವಗಳು.
26. ಜೀವೇಶ್ವರಸಹಿತವಾದ ತತ್ವಗಳು.
27. ಅಶ್ವಿನೀ ಮೊದಲಾದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು.
28. ಅಭಿಜಿತ್ ಸಹಿತ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು.
32. ದಂತ(ಹಲ್ಲು)ಗಳು, ಮಹಾಪುರುಷಲಕ್ಷಣಗಳು, ಭಗವದಪರಾಧಗಳು.
33. ನಾಟ್ಯಾಲಂಕಾರಗಳು.
35. ತಾಳಗಳು.
40. ತಾನಗಳು.
49. ನಲವತ್ತೊಂಬತ್ತು ಮರುತ್ತುಗಳು.
50. (ತಂತ್ರ ಮತದಲ್ಲಿ) ಮಾತೃಕಾಲಿಪಿಗಳು.
56. ದೇಶಗಳು.
64. ಕಲೆ(ವಿದ್ಯೆ)ಗಳು, ನಾಟಕೀಯಾಂಗಗಳು.
100. ಪುರುಷಾಯುಸ್ಸು, ತಾವರೆಯ ದಳಗಳು. "ಶತಾಯುರ್ವೈ ಪುರುಷಃ" ।
1000. ಆದಿಶೇಷನ ತಲೆಗಳು, ವಿರಾಟ್ಪುರುಷನ ತಲೆಗಳು, —ಕಣ್ಣುಗಳು, —ಕಾಲುಗಳು, ಕಾರ್ತವೀರ್ಯನ ಬಾಹುಗಳು.

**एकादेश** ಏಕಾದೇಶ (ಪುಂ) (ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ) ಸಂಧಿ ವಿಧಿಸು ವಾಗ ಎರಡು ವರ್ಣಗಳ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಬರುವ (ವಿಧಿಸ ಲ್ಪಡುವ) ಒಂದು ವರ್ಣ; ಒಂದು (ಪೂರ್ವ) ಪದದ ಅಂತ್ಯವರ್ಣ, ಮತ್ತೊಂದು (ಉತ್ತರ) ಪದದ ಆದಿ (ಮೊದಲನೆಯ) ವರ್ಣ ಇವುಗಳಿಗೆ ಸಂಧಿ ಹೇಳುವಾಗ ಇವೆರಡರ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ (ಆಯಾ ವರ್ಣಗಳ ಸ್ಥಾನ ಪ್ರಯತ್ನಗಳಿಗನುಗುಣವಾದ) ಮತ್ತೊಂದು ವರ್ಣವು ಆದೇಶವಾಗಿ ಬರುವುದು. ದೈತ್ಯ + ಅರಿ: ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪೂರ್ವ ಪದದ ಕೊನೆಯ ವರ್ಣ "अ" ಕಾರ ಮತ್ತು ಉತ್ತರ ಪದದ ಮೊದಲನೆಯ ವರ್ಣ "अ" ಕಾರ ಇವೆರಡರ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಒಂದು ದೀರ್ಘ "आ" ಕಾರವು ಏಕಾದೇಶವಾಗಿ ಒಂದು ದೈತ್ಯಾರಿ: ಎಂದಾಗುವುದು. उप + इन्द्र: ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪೂರ್ವಪದದ ಕೊನೆಯ "अ" ಕಾರ ಉತ್ತರ ಪದದ ಆದಿಯ "इ" ಕಾರ ಇವೆರಡರ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ "ए" ಕಾರವು ಏಕಾದೇಶವಾಗಿ ಒಂದು ಉಪೇಂದ್ರ: ಎಂದಾಗುವುದು.

**एकाद्विंशति** ಏಕಾದ್ವಿಂಶತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹತ್ತೊಂಬತ್ತು, ಒಂದು ಕಡಿಮೆ ಇಪ್ಪತ್ತು. एकेन न विंशति:—एक + न + विंशति: एकस्य "आदुक्" आगम: (६-३-७६)। "द"ಕಾರಕ್ಕೆ ಅನುನಾಸಿಕಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ एकाविंशति: ಏಕಾವಿಂಶತಿ:

**एकाधिपति** ಏಕಾಧಿಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಚಕ್ರವರ್ತಿ, ಸಾರ್ವ ಭೌಮ, ದೇಶಕ್ಕೆ ಒಬ್ಬನೇ ದೊರೆಯಾಗಿರುವವನು. एकः केवलः अद्वितीयः अधिपतिः। 2. ಎರಡು ರಾಶಿಗಳಿಗೂ ಅಧಿಪತಿಯಾಗಿರುವ ಒಂದು ಗ್ರಹ.

**एकानंशा** ಏಕಾನಂಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ. एको न अंशो यस्याः। "विद्धि चैनामथोत्पन्नामंशाद्देवीं प्रजापतेः। एकानंशां योगकलां रक्षार्थं केशवस्य तु" हरिवं० ५९-१४-४७।

**एकान्त** ಏಕಾಂತ (ಪುಂ) 1. ನಿರ್ಜನಪ್ರದೇಶ, ರಹಸ್ಯ ಪ್ರದೇಶ, ಯಾರೂ ಇಲ್ಲದ ಪ್ರದೇಶ. एक एव अन्तो यत्र। "व्योमेकान्तविहारिणोऽपि विहगाः संप्राप्नुवन्त्यापदं बध्यन्ते निपुणैरगाधसलिलान्मत्स्याः समुद्रादपि" हितो० २-५२। (न०) 2. ಅತಿಶಯ, ಹೆಚ್ಚಿಗೆ, ಅಧಿಕ. एकस्मिन्नेवान्तो यस्य। 3. ನಿಯಮ, ಕಟ್ಟಲೆ. "तेजः क्षमा वा नैकान्तं कालज्ञस्य महीपतेः" माघ० २-८३। (वि०) 4. ಅತಿಶಯವಾದ. "स्वायत्तमेकान्तहितं विधात्रा विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः" भर्तृ० १-७। 5. ನಿಯತ ವಾದ, ಶಾಶ್ವತವಾದ, ನಿತ್ಯವಾದ. "नागेन्द्रहस्तास्त्वचि कर्कशत्वादेकान्तशैत्यात्कदलीविशेषाः" कुमा० १-३६।

**एकान्ततस्** ಏಕಾಂತತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ರಹಸ್ಯದಲ್ಲಿ. एकान्त "तसिः" (वा० ५-४-४४)। (क्रि०वि०) 2. ಏಕಾಂತವಾಗಿ, ರಹಸ್ಯವಾಗಿ. 3. ನಿಯತವಾಗಿ, ಕ್ಲೃಪ್ತವಾಗಿ, ಶಾಶ್ವತವಾಗಿ. "कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा" मेघ० २-४६। 4. ಅತ್ಯಂತವಾಗಿ, ಅತಿಶಯವಾಗಿ. "यद्यस्मासु पराङ्मुखोऽसि वयमप्येका-न्ततो निःस्पृहाः" भर्तृ० ३-५१।

**एकान्तदुःषमा** ಏಕಾಂತದುಃಷಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೈನಮತ ಕಲ್ಪಿತವಾದ ಬಹಳ ಕಷ್ಟವಾದ ಒಂದು ಕಾಲ. दुष्टा समा वर्षो दुःषमा। एकान्तं दुःषमा। [ವಿವರಕ್ಕೆ "ದುಃಷಮಾ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**एकान्तर** ಏಕಾಂತರ (ಪುಂ) 1. ದಿನಬಿಟ್ಟು ದಿನ ಬರುವ ಜ್ವರ, ಮೂರನೆಯ (ವಾಯಿದೆ) ಜ್ವರ. (न०) 2. ದಿನ ಬಿಟ್ಟು ದಿನ ಊಟ ಮಾಡುವ ಒಂದು ವ್ರತ, ಮಧ್ಯೆ ಮಧ್ಯೆ ಒಂದು ದಿನ ಬಿಟ್ಟು ಊಟ ಮಾಡುವ ಒಂದು ವ್ರತ. (वि०) 3. ಒಂದು ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ, ಮಧ್ಯೆ ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನಿಂದ ವ್ಯವಹಿತವಾಗಿರುವ. एकमन्तरं व्यवधानं यस्य। "आम एकान्तरमामन्त्रितमनन्तिके" पा० सू० ८-१-५५।



**ಏಕಾಂತಸುಷಮಾ ಏಕಾಂತಸುಷಮಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೈನಮತ ಸಿದ್ಧವಾದ ಬಹಳ ಸುಖವಾದ ಒಂದು ಕಾಲ. ಏಕಾಂತ ಸುಷಮಾ | [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಸುಷಮಾ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಏಕಾಂತಿನ್ ಏಕಾಂತಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಏಕಾಂತವಾಸವುಳ್ಳ, ಯಾರ ಸಂಪರ್ಕವೂ ಇಲ್ಲದ ನಿರ್ಜನ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ವಾಸಿ ಸುವ. ಏಕಾಂತಮಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) | 2. ಭಗವದ್ಭಕ್ತ, ಪರಮಾತ್ಮನೊಬ್ಬನಲ್ಲೇ ಭಕ್ತಿಯಿಟ್ಟಿರುವ. ಏಕಾಂತ: ಉಪಾಸ್ಯತೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) |

**ಏಕಾನ್ತ ಏಕಾನ್ತ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ಊಟ, ಒಂದು ವೇಳೆ ಮಾಡುವ ಊಟ. 2. ಅದೇ ಊಟ, ಸಮಾನವಾದ ಊಟ. ಏಕಂ ಸಮಾನಮ್ ಅನ್ತಮ್ | 3. ಒಂದು ಮನೆಯ ಊಟ, ಒಂದೇ ಮನೆಯ ಅನ್ನ. ಏಕಸ್ಯಾನ್ತಮ್ | "ಭೇಕ್ಷಣ ವರ್ತಯೇನ್ನಿತ್ಯಂ ನೈಕಾನ್ತಾದೀ ಭವೇದ್ವ್ರತೀ" ಮನುಂ ೨-೧೮೮ | (ವಿಂ) 4. ದಿನವೂ ಒಂದು ವೇಳೆ ಮಾತ್ರ ಊಟ ಮಾಡುವ, ಏಕಕಾಲಮಾತ್ರ ಭೋಜನಮಾಡುವ. ಏಕಕಾಲಮೇವಾನ್ತಂ ಭೋಜನಂ ಯಸ್ಯ | 5. ಅದೇ ಆಹಾರ ಊಟ ಮಾಡುವ, ಸಮಾನವಾದ ಆಹಾರವನ್ನು ಊಟಮಾಡುವ. 6. ಒಂದು ಮನೆಯ ಅನ್ನವನ್ನೇ ಊಟಮಾಡುವ. ಏಕಂ ಸಮಾನಮ್ ಅನ್ತಂ ಏಕಸ್ಯೇವಾನ್ತಂ ವಾ ಯಸ್ಯ |

**ಏಕಾನ್ತವಿಂಶತಿ ಏಕಾನ್ತವಿಂಶತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹತ್ತೊಂಬತ್ತು, ಒಂದು ಕಡಿಮೆ ಇಪ್ಪತ್ತು. ಏಕೇನ ನ ವಿಂಶತಿ:-ಏಕ + ನ ವಿಂಶತಿ:, ಏಕಸ್ಯ "ಆದ್ರುಕ್" ಆಗಮ: (೬-೩-೭೬) | ಅನುನಾಸಿಕಪಕ್ಷೇ ರೂಪಮಿದಮ್ | ಅನುನಾಸಿಕಾಭಾವಪಕ್ಷೇ ಏಕಾದ್ನ-ವಿಂಶತಿ: ಏಕಾದ್ನವಿಂಶತಿ: |

**ಏಕಾನ್ತಾದಿನ್ ಏಕಾನ್ತಾದಿನ್** (ವಿಂ) ಒಂದು ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಊಟಮಾಡುವ, ಒಂದು ಮನೆಯ ಅನ್ನವನ್ನು ತಿನ್ನುವ. ಏಕಾನ್ತಮತಿ-ಅದ (ಭಕ್ಷಣ) "ಞಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) | "ಭೇಕ್ಷಣ ವರ್ತಯೇನ್ನಿತ್ಯಂ ನೈಕಾನ್ತಾದೀ ಭವೇದ್ವ್ರತೀ" ಮನುಂ ೨-೧೮೮ |

**ಏಕಾನ್ವಯ ಏಕಾನ್ವಯ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದೇ ವಂಶ, ಸಮಾನ ವಾದ ವಂಶ. (ವಿಂ) 2. ಒಂದೇ ವಂಶದ, ಒಂದೇ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಏಕೋನ್ವಯೋ ಯಸ್ಯ |

**ಏಕಾಪಚಯ ಏಕಾಪಚಯ** (ಪುಂ) ಆಹಾರವನ್ನು ಒಂದೊಂದು ಗ್ರಾಸವಾಗಿ ಕಡಿಮೆ ಮಾಡುವಿಕೆ, ಪೂರ್ಣಮೆಯ ದಿನ ಊಟಮಾಡಿ ಕೃಷ್ಣಪ್ರತಿಪತ್ ಮೊದಲುಗೊಂಡು ಪ್ರತಿ ದಿನವೂ ಒಂದೊಂದು ಗ್ರಾಸ ಕಡಿಮೆ ಮಾಡಿಕೊಂಡು (ಕೃಷ್ಣ ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ) ಊಟಮಾಡುವಿಕೆ. ಇದು ಚಾಂದ್ರಾಯಣ ವ್ರತಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದುದು. "ಗೌರ್ಮಾಸ್ಯಾಂ ಪಚ್ಚದಶ ಗ್ರಾಸಾನ್ ಭುಕ್ತ್ವಾ ಏಕಾಪಚಯೇನಾಪರಪಕ್ಷಮಶ್ನೀಯಾತ್" ಗೌತಮಧಂ ೨೭-೧೩ |

**ಏಕಾಬ್ದಾ ಏಕಾಬ್ದಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನ ಕರು, ಒಂದು ವರ್ಷ ತುಂಬಿದ ಕರು. ಏಕೋಬ್ದೋಸ್ಯಾ: |

**ಏಕಾನ್ತನಾಥ ಏಕಾನ್ತನಾಥ** (ಪುಂ) ಕಾಂಚೀಪುರದಲ್ಲಿ ನೆಲೆಸಿರುವ ಏಕಾಮ್ರೇಶ್ವರ.

**ಏಕಾನ್ತವನ ಏಕಾನ್ತವನ** (ನಂ) ಏಕಾಮ್ರೇಶ್ವರನು ನೆಲೆ ಸಿರುವ ಒಂದು ವನ.

**ಏಕಾಯನ ಏಕಾಯನ** (ನಂ) 1. ಒಬ್ಬನು ಮಾತ್ರ ಹೋಗಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗುವ ದಾರಿ, ಕಿರುದಾರಿ, ಕಾಲು ದಾರಿ. (ವಿಂ) 2. ಒಬ್ಬನು ಮಾತ್ರ ನಡೆಯಲು ಸಾಧ್ಯ ವಾದ. "ಆಸ್ತ ಏಕಾಯನೇ ಮಾರ್ಗಂ ಕದಲೀಖಂಡಮಂಡಿತೇ | ಭ್ರಾತುರ್ಮಿಸ್ಯ ರಕ್ಷಾರ್ಥಂ ತಂ ಮಾರ್ಗಮವರೂಢ್ಯ ವೈ" ಭಾಂ ವನಂ ೧೪೮-೭೨ | 3. ಏಕಾಗ್ರತೆಯುಳ್ಳ, ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ನೆಟ್ಟಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ಏಕಮಯನಂ ಜ್ಞಾನಂ ಯಸ್ಯ |

**ಏಕಾಯನಗತ ಏಕಾಯನಗತ** (ವಿಂ) ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ನೆಟ್ಟಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ಏಕಸ್ಥಿಮನಯನೇ ಗತಂ ಜ್ಞಾನಂ ಯಸ್ಯ |

**ಏಕಾರ್ಥ ಏಕಾರ್ಥ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಅರ್ಥ. 2. ಒಂದೇ ಅರ್ಥ. ಸಮಾನವಾದ ಅರ್ಥ, ಅದೇ ಅರ್ಥ. 3. ಒಂದು ಕಾರ್ಯ. 4. ಒಂದೇ ಕಾರ್ಯ, ಸಮಾನವಾದ ಕಾರ್ಯ. 5. ಒಂದು ಪ್ರಯೋಜನ. 6. ಒಂದೇ ಪ್ರಯೋಜನ, ಸಮಾನವಾದ ಪ್ರಯೋಜನ. 7. ಒಂದು ವಸ್ತು, ಒಂದು ಪದಾರ್ಥ. ಏಕೋರ್ಥ: ಅಭಿಧೇಯಂ ತದೇಶ: ಪ್ರಯೋಜನಂ ಪದಾರ್ಥೋ ವಾ | "ವರ್ಣಾ: ಪದಂ ಪ್ರಯೋಗಾಹಿನಿನ್ವಿತೇಕಾರ್ಥಬೋಧಕಾ:" ಸಾಂ ದಂ ೨-೨ | (ವಿಂ) 8. ಒಂದು ಅರ್ಥವುಳ್ಳ (ಶಬ್ದ). 9. ಸಮಾನವಾದ ಅರ್ಥವುಳ್ಳ. 10. ಒಂದು ಪ್ರಯೋಜನ ವುಳ್ಳ. 11. ಸಮಾನವಾದ ಪ್ರಯೋಜನವುಳ್ಳ. 12. ಒಂದೇ ಕಾರ್ಯವುಳ್ಳ, ಸಮಾನವಾದ ಕಾರ್ಯವುಳ್ಳ.

**ಏಕಾರ್ಥತಾ ಏಕಾರ್ಥತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದೇ ಪ್ರಯೋಜನ ಹೊಂದಿರುವಿಕೆ. 2. ಒಂದೇ ಕಾರ್ಯವಿರುವಿಕೆ. ಏಕಾರ್ಥಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) | "ತ್ವ:" | ಏಕಾರ್ಥತ್ವಮ್ ಏಕಾರ್ಥತ್ವಮ್ |

**ಏಕಾರ್ಥಿಭಾವ ಏಕಾರ್ಥಿಭಾವ** (ಪುಂ) ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾದ ಅರ್ಥವುಳ್ಳ ಶಬ್ದಗಳಿಗೆ ಸಮಾಸ ಬಂದಾಗ ಸಮುದಾಯಶಕ್ತಿ ಯಿಂದ ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಒಂದು ಅರ್ಥವುಂಟಾಗುವಿಕೆ, ಪ್ರಕ್ರಿಯಾದಶೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾದ ಅರ್ಥವುಳ್ಳ ಶಬ್ದಗಳು ಸಮಾಸದಲ್ಲಿ ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಒಂದು ಅರ್ಥವನ್ನು ಹೊಂದು ವಿಕೆ. ರಾಜ: ಪುರುಷ: ಎಂಬಲ್ಲಿ ರಾಜನ್ ಮತ್ತು ಪುರುಷ ಶಬ್ದಗಳಿಗೆ ಪ್ರಕ್ರಿಯಾದಶೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾದ ಅರ್ಥವಿದ್ದರೂ ಸಮಾಸ ಬಂದಾಗ ಏಕಾರ್ಥಿಭಾವವುಂಟಾಗುವುದರಿಂದ ರಾಜ



ಪುರುಷನೆಂಬ ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಒಂದು ಅರ್ಥವು ಉಂಟಾಗುವುದು.

**ಏಕಾರ್ಥಿಭಾವಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಏಕಾರ್ಥೀಭಾವಸಾಮರ್ಥ್ಯ (ನಂ)**

ಪದಗಳಿಗೆ ಸಮಾಸ ಬರಲು ಅವಶ್ಯವಾಗಿರುವ ಒಂದು ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಪ್ರಕ್ರಿಯಾದಶೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾದ ಅರ್ಥವುಳ್ಳ ಪದಗಳಿಗೆ ಸಮುದಾಯಶಕ್ತಿಯಿಂದ ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಒಂದು ಅರ್ಥವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಒಂದು ಶಕ್ತಿ. ಇದೇ ಏಕಾರ್ಥೀಭಾವಲಕ್ಷಣಸಾಮರ್ಥ್ಯ. ರಾಜ: ಪುರುಷ: ಎಂಬಲ್ಲಿ ರಾಜನ್ ಪದಕ್ಕೂ ಪುರುಷ ಪದಕ್ಕೂ ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾದ ಅರ್ಥವಿದ್ದರೂ ಸಮಾಸ ಬಂದಾಗ ಏಕಾರ್ಥೀಭಾವಲಕ್ಷಣಸಾಮರ್ಥ್ಯದಿಂದ ವಿಶಿಷ್ಟಾರ್ಥವೊಂದುಂಟಾಗಿ "ರಾಜಪುರುಷ" ಎಂಬ ಅರ್ಥವು ತೋರುವುದು.

**ಏಕಾರ್ಥಿಭೂತ ಏಕಾರ್ಥೀಭೂತ (ವಿಂ)** ಪ್ರಕ್ರಿಯಾದಶೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿದ್ದು ಸಮಾಸದಲ್ಲಿ ಸಮುದಾಯ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಒಂದೇ ಅರ್ಥವಾಗಿರುವ. ಏಕಾರ್ಥಿ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) ಕರ್ಮ "ಕ್ತ:" (3-4-92). ಅಸ್ಮಿತಂ "ಚ್ವಿ:" (ವಾಂ 4-4-40).

**ಏಕಾವಲಿ, -ಲಿ ಏಕಾವಳಿ, -ಳಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಒಂದು ಶ್ರೇಣಿ, ಒಂದು ಪಟ್ಟಿ, ಒಂದು ಸಾಲು. ಏಕಾ ಆವಲಿ:। 2. ಒಂದೆಳೆಯ ಹೂವಿನ ಅಥವಾ ಮುತ್ತಿನ ಸರ. 3. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ; ಹಿಂದು ಹಿಂದಿನ ಪದಗಳಿಗೆ ಮುಂದು ಮುಂದಿನ ಪದಗಳು ವಿಶೇಷಣವಾಗಿರುವಿಕೆ ಅಥವಾ ಮುಂದು ಮುಂದಿನ ಪದಗಳಿಗೆ ಹಿಂದು ಹಿಂದಿನ ಪದಗಳು ವಿಶೇಷಣವಾಗಿರುವಿಕೆ ಈ ರೀತಿ ಸಾಲುಸಾಲಾಗಿ ಅರ್ಥವರ್ಣನೆಯು "ಏಕಾವಳಿ" ಅಲಂಕಾರವಾಗುವುದು. "ಗೃಹಿತಮುಕ್ತರೀತ್ಯಾರ್ಯಶ್ರೇಣಿರೇಕಾವಲಿಮತಾ" ಚಂದ್ರಾಂ। ತದಾಂ "ನೆತ್ರೇ ಕರ್ಣಾಂತಿವಿಶ್ರಾಂತೇ ಕರ್ಣೌ ದೋ: ಸ್ತಂಭದೋಲಿನೌ। ದೋ: ಸ್ತಂಭೌ ಜಾನುಪರ್ಯಂತಪ್ರಲಂಬನಮನೋಹರೌ। ಜಾನುನಿ ರತ್ನಮುಕ್ತರಾಕಾರೇ ತಸ್ಯ ಮಹಿಭುಜ:" ಇಲ್ಲಿ ಕರ್ಣಗಳು ನೇತ್ರಗಳಿಗೆ ವಿಶೇಷಣ. ಕರ್ಣಗಳಿಗೆ ದೋ: ಸ್ತಂಭಗಳು ವಿಶೇಷಣ. ದೋ: ಸ್ತಂಭಗಳಿಗೆ ಜಾನುಗಳು ವಿಶೇಷಣ. ಜಾನುಗಳಿಗೆ ರತ್ನಮುಕ್ತರಗಳು ವಿಶೇಷಣ. ಈ ರೀತಿ ಪೂರ್ವ ಪೂರ್ವ ಪದಗಳಿಗೆ ಉತ್ತರೋತ್ತರ ಪದಗಳು ವಿಶೇಷಣವಾಗಿರುವಂತೆ ಶ್ರೇಣಿಯಾಗಿ ಅರ್ಥ ವರ್ಣಿತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ "ಏಕಾವಳಿ" ಅಲಂಕಾರವಾಗಿರುವುದು. "ನ ತಜ್ಜಲಂ ಯನ್ ಸುಚಾರುಪಕ್ಷಜಂ ನ ಪಕ್ಷಜಂ ತದ್ಬದಲಿನ-ಪದ್ಪದಮ್। ನ ಪದ್ಪದೋಜ್ಞಿ ನ ಜುಗುಙ್ಗಜ ಯ: ಕಲಂ ನ ಗುಙ್ಗಿತಂ ತನ್ ಜಹಾರ ಯಮನ:" ಭट्टಿಂ 2-19।

**ಏಕಾಶಿನ್ ಏಕಾಶೀನ್ (ವಿಂ)** ಒಂಟಿಯಾಗಿ ಊಟಮಾಡುವ, ಒಬ್ಬನೇ ಕುಳಿತು ಊಟಮಾಡುವ. ಏಕ ಆವಾಶನಾತಿ—ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಣಿಣಿ:" (3-1-134)।

**ಏಕಾಶೀತ ಏಕಾಶೀತ (ವಿಂ)** ಎಂಬತ್ತೊಂದನೆಯ. ಏಕಾ-ಶೀತ: ಪೂರ್ಣ: "ಡಟ್" (4-2-44)।

**ಏಕಾಶೀತಿ ಏಕಾಶೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಎಂಬತ್ತೊಂದು. ಏಕಾಶೀತಿ ಅಶೀತಿ:।

**ಏಕಾಶೀತಿಸಮ ಏಕಾಶೀತಿಸಮ (ವಿಂ)** ಎಂಬತ್ತೊಂದನೆಯ. ಏಕಾಶೀತಿ: ಪೂರ್ಣ: ಡಟಿ ವಾ "ತಮಟ್" (4-2-46)। ತಮಙಭಾವೇ ಏಕಾಶೀತ: ಏಕಾಶೀತಃ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-14)। -ತಮಿ -ತಮೀ.

**ಏಕಾಶೀತಿಪದ ಏಕಾಶೀತಿಪದ (ನಂ)** ಗೃಹನಿರ್ಮಾಣಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮೊದಲು ವಾಸ್ತುಪೂಜೆಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಎಂಬತ್ತೊಂದು ಸ್ಥಾನಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಮಂಡಲ. "ಪ್ರಾಸಾದೇ ಚ ಚತು:ಷ್ಠಿರೇಕಾಶೀತಿಪದಂ ಗೃಹೇ" ದೇವೀಪುಂ।

**ಏಕಾಶ್ರಯ ಏಕಾಶ್ರಯ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ಆಧಾರ, ಒಂದು ಅವಲಂಬನ, ಒಂದು ಊರುಗಂಬ. 2. ಒಂದು ಒತ್ತಾಸೆ, ಒಂದು ಸಹಾಯತೆ, ಅವಲಂಬನ. ಏಕ: ಆಶ್ರಯ: ಆಧಾರ: ಅವಲಂಬನಂ ವಾ। (ವಿಂ) 3. ಒಂದು ಆಧಾರವುಳ್ಳ. 4. ಒಬ್ಬನ ಒತ್ತಾಸೆಯುಳ್ಳ, ಒಬ್ಬನ ಸಹಾಯವುಳ್ಳ. ಏಕ: ಆಧಾರ ಅವಲಂಬನಂ ವಾ ಯಸ್ಯ।

**ಏಕಾಷ್ಟಕಾ ಏಕಾಷ್ಟಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮಾಘ ಬಹುಳ ಅಷ್ಟಮಿ. 2. ಮಾಘ ಬಹುಳ ಅಷ್ಟಮಿಯ ದಿನ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಶ್ರಾದ್ಧ. ಏಕಾ ಅಷ್ಟಕಾ।

**ಏಕಾಷ್ಟಿಲ ಏಕಾಷ್ಟಿಲ (ಪುಂ)** ಬಕಪುಷ್ಪದ ಗಿಡ, ಕೊಕ್ಕರೆ ಹೂವಿನ ಗಿಡ. ಏಕಾಷ್ಟಿಲೋ ಮಜ್ಜಾ ಯಸ್ಯ।

**ಏಕಾಷ್ಟಿಲಾ ಏಕಾಷ್ಟಿಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಗುರು ಶುಂಠಿ. ಏಕ: ಅಷ್ಟಿಲೋ ಮಜ್ಜಾ ಯಸ್ಯಾ:।

**ಏಕಾಹ ಏಕಾಹ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ದಿವಸ. ಏಕಮಹ:। 2. ಒಂದು ದಿವಸದಲ್ಲಿ ಮಾಡಬಹುದಾದ ಯಾಗ.

**ಏಕಾಹಗಮ ಏಕಾಹಗಮ (ಪುಂ)** ಒಂದು ದಿನದಲ್ಲಿ ಹೋಗಿ ಸೇರಬಹುದಾದ ದೇಶ. ಏಕಾಹೇನ ಗಮ್ಯತೇ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) ಕರ್ಮಂ "ಅಪ್" ನಿಪಾಂ (4-2-19)।

**ಏಕಾಹಾರ ಏಕಾಹಾರ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ದಿನದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಒಂದು ಊಟ. ಏಕಸ್ಮಿನ್ ದಿನೇ ಏಕ ಆಹಾರೋ ಭೋಜನಮ್। (ವಿಂ) 2. ಒಂದು ದಿನದಲ್ಲಿ ಒಂದು ವೇಳೆ ಊಟಮಾಡುವ. ಏಕ ಆಹಾರೋ ಯಸ್ಯ।



**ಆಕೀಕರಣ ಏಕೀಕರಣ** (ನಂ) ಒಂದಾಗಿ ಮಾಡುವಿಕೆ, ಚೆದರಿರುವುದನ್ನು ಒಟ್ಟಾಗಿ ಕೂಡಿಸುವಿಕೆ, ರಾಶಿ ಹಾಕುವಿಕೆ, ಗುಪ್ತಮಾಡುವಿಕೆ.

**ಆಕೀಯ ಏಕೀಯ** (ವಿಂ) ಒಂದು ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿರುವ, ಒಂದು ಪಕ್ಷಕ್ಕೆ ಸೇರಿದ. ಏಕ "ಛ:" (೪-೨-೧೧೪)।

**ಆಕೀಕ್ಷಣ ಏಕೀಕ್ಷಣ** (ಪುಂ) 1. ವಾಯಸ, ಕಾಗೆ. ಆಕೀಕ್ಷಣಂ ಯಸ್ಯ। 2. ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರು. [ಬಲಿಚಕ್ರವರ್ತಿಯು ವಾಮನಮೂರ್ತಿಗೆ ಮೂರು ಅಡಿ ಭೂಮಿಯನ್ನು ಧಾರೆ ಯೆರೆಯಲು ಯತ್ನಿಸಿದಾಗ ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರು ಸೂಕ್ಷ್ಮ ರೂಪದಿಂದ ಗಿಂಡಿಯ ಕಂಡಿಯಲ್ಲಿ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ತಡೆಯಲು ಅದನ್ನು ಸರಿಪಡಿಸುವ ವ್ಯಾಜದಿಂದ ವಾಮನಮೂರ್ತಿಯು ದರ್ಭೆಯ ತುದಿಯಿಂದ ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರ ಕಣ್ಣನ್ನು ಚುಚ್ಚಿ ದುದರಿಂದ ಇವರು ಏಕೀಕ್ಷಣರಾದರು.] (ವಿಂ) 3. ಒಂದು ಕಣ್ಣುಳ್ಳವನು.

**ಆಕೀಕ ಏಕೀಕ** (ವಿಂ) ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾದ ಒಂದೊಂದು. ಏಕ ವೀಪಸಾಯಾಂ ದ್ವಿಭಾವಿ: (೮-೧-೯)। "ಯೌವನಂ ಧನಸಂಪತ್ತಿ: ಪ್ರಭುತ್ವಮವಿವೇಕಿತಾ। ಆಕೀಕಮಪ್ಯನರ್ಥಾಯ ಕಿಮು ಯತ್ರ ಚತುಷ್ಟಯಮ್" ಸುಭಾಂ। "ಆಕೀಕಮತ್ರ ದಿವಸೇ ದಿವಸೇ ಮದೀಯಂ ನಾಮಾಕ್ಷರಂ ಗಣಯ ಗಂಚ್ಛತಿ ಯಾವದಂತಮ್" ಶಾಕುಂ ೬-೧೨।

**ಆಕೀಕಶಸ್ ಏಕೀಕಶಸ್** (ಅವ್ಯಂ) ಒಂದೊಂದಾಗಿ. ಆಕೀ-  
ಮೇಕಮಾವೇದಯತಿ "ಶಸ್" (೪-೪-೪೩)। "ಆಕೀಕಶಶ್ಚ  
ಪ್ರತಿನಾಮಗ್ರಾಹಮಾವೇದಮಾನಾ ಬಲಾಹಕೇನ" ಕಾದಂ।

**ಆಕೀಕೃತಿ ಏಕೀಕೃತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದೇ ಪದದಿಂದ ಹೇಳು  
ವುದು, ಒಂದೇ ಪದದಲ್ಲಿ ಎರಡು ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಕೊಡತಕ್ಕ  
ಅಭಿಧಾಶಕ್ತಿ. ಆಕೀಕೃತಿ: ಅಭಿಧಾಶಕ್ತಿ:। "ಪುಷ್ಪವಂತೌ"  
ಎಂಬ ಒಂದೇ ಪದವು ಸೂರ್ಯ ಮತ್ತು ಚಂದ್ರರನ್ನು  
ಎರಡು ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಕೊಡುವ ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳದ್ದಾಗಿರು  
ವುದು. "ಆಕೀಕೃತಿಯಾ ಪುಷ್ಪವಂತೌ ದಿವಾಕರನಿಶಾಕರೌ"  
ಅಮಂ।

**ಆಕೀಕೃತೃ ಏಕೀಕೃತೃ** (ಪುಂ) ಒಂದೊಂದು ಹೆಚ್ಚಿಸು  
ವುದು, ಒಂದೊಂದು ಗ್ರಾಸವಾಗಿ (ಆಹಾರವನ್ನು) ಹೆಚ್ಚಿಸು  
ವಿಕೆ, ಅಮಾವಾಸ್ಯೆಯ ದಿನ ಉಪವಾಸವಿದ್ದು ಪ್ರತಿಪತ್  
ಮೊದಲುಗೊಂಡು ಒಂದೊಂದು ಕಬಳವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸಿ  
(ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ) ಊಟಮಾಡುವಿಕೆ. ಇದು ಚಾಂದ್ರಾಯಣ  
ವ್ರತವನ್ನು ಆಚರಿಸುವ ಕ್ರಮ. "ಅಮಾವಾಸ್ಯಾಯಾಮುಪೋಷ್ಯ  
ಆಕೀಕೃತೃಯೇನ ಪೂರ್ವಪಕ್ಷಮ್" ಗೌತಮಧಂ ೨೭-೧೪।

**ಆಕೀಕೃತೃ ಏಕೀಕೃತೃ** (ವಿಂ) ಒಂದೊಂದು ಹೆಚ್ಚುವ,  
ಒಂದೊಂದು ಅಧಿಕವಾಗುವ. ಆಕೀಕೃತೃಯಂ ಯತ್ರ।

**ಆಕೀಕೃತೃ ಏಕೀಕೃತೃ** (ವಿಂ) ದಾಯಾದ, ಏಳನೆಯ ತಲೆ  
ಯಿಂದ ಮುಂದೆ ಹದಿನಾಲ್ಕನೆಯ ತಲೆಯವರೆಗಿನ ಜ್ಞಾತಿ.  
ಏಕಂ ಸಮಾನಮುದಕಂ ಯಸ್ಯ।

**ಆಕೀಕೃತೃ ಏಕೀಕೃತೃ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದೇ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ  
ಸಹೋದರ, ಒಬ್ಬ ತಾಯಿಯ ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ  
ಅಣ್ಣತಮ್ಮಂದಿರು. ಏಕಂ ಸಮಾನಮುದರಂ ಗರ್ಭಸ್ಥಾನಂ ಯಸ್ಯ।  
(ನಂ) 2. ಸಮಾನವಾದ ಉದರ. ಏಕಂ ಸಮಾನಮುದರಮ್।

**ಆಕೀಕೃತೃ ಏಕೀಕೃತೃ** (ವಿಂ) ಒಂದು ಕಡಿಮೆಯಾದ. ಆಕೀಕೃತೃ  
ಋತು:।

**ಆಕೀಕೃತೃ ಏಕೀಕೃತೃ** (ವಿಂ) ಮೂವ  
ತ್ತೊಂಬತ್ತನೆಯ, ಒಂದು ಕಮ್ಮಿ ನಲವತ್ತನೆಯ. ಆಕೀಕೃತೃ-  
ಚತ್ವಾರಿಂಶತಿ: ಪೂರ್ಣ: "ಛ:" (೪-೨-೮೦)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್"  
(೪-೧-೧೪)। -ಚತ್ವಾರಿಂಶತಿ-ಚತ್ವಾರಿಂಶತಿ: ಹೀಗೆಯೇ  
ಆಕೀಕೃತೃ: ಏಕೀಕೃತೃಂಶತಿ: ಆಕೀಕೃತೃಪಚ್ಚಾಶತಿ: ಏಕೀಕೃತೃ  
ಪಂಚಾಶತಿ: ಆಕೀಕೃತೃವಿಂಶತಿ: ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಆಕೀಕೃತೃ ಏಕೀಕೃತೃ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂವತ್ತೊಂಬತ್ತು, ಒಂದು ಕಮ್ಮಿ ನಲವತ್ತು. ಆಕೀಕೃತೃ  
ಚತ್ವಾರಿಂಶತಿ: ಹೀಗೆಯೇ ಆಕೀಕೃತೃಪಚ್ಚಾಶತಿ: ಏಕೀಕೃತೃ  
ಪಂಚಾಶತಿ: ಏಕೀಕೃತೃವಿಂಶತಿ: ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಆಕೀಕೃತೃ ಏಕೀಕೃತೃ** (ಪುಂ) 1. ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ ಹರಿಯುವ  
ಪ್ರವಾಹ, ಒಂದೇ ಸಮನೆ ಹರಿಯುವ ಹೊನಲು. ಆಕೀಕೃತೃ:  
ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನ: ಆಕೀಕೃತೃ: ಪ್ರವಾಹ:। "ಆಕೀಕೃತೃನ ಸ್ವರ್ಣಪುಷ್ಪದ್ವಿಷಂತ:"  
ಮಾಘಂ ೧೮-೪೪। 2. ಒಂದು ರಾಶಿ, ಒಂದು ಗುಂಪು.  
"ಆಕೀಕೃತೃಭೂತಂ ತದಶರ್ಮ ಕೃಷ್ಣಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೩೪।

**ಆಕೀಕೃತೃ ಏಕೀಕೃತೃ** (ವಿಂ) 1. ಕದಲುವ, ಅಲುಗಾಡುವ. ಆಕೀಕೃತೃ  
(ಕಂಪನೇ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ನಡುಗುವ.  
3. ಕದಲಿಸುವ, ಅಲುಗಾಡಿಸುವ. 4. ನಡುಗಿಸುವ.  
ಆಕೀಕೃತೃ + ಫಿಚ್ "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। 5. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ,  
ಹೊಳೆಯುವ. ಆಕೀಕೃತೃ (ದೀಪ್ತೌ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।  
6. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವ. ಆಕೀಕೃತೃ + ಫಿಚ್ "ಫುಲ್"।

**ಆಕೀಕೃತೃ ಏಕೀಕೃತೃ** (ವಿಂ) 1. ಕದಲುತ್ತಿರುವ, ಅಲುಗಾಡು  
ತ್ತಿರುವ. 2. ನಡುಗುತ್ತಿರುವ. ಆಕೀಕೃತೃ (ಕಂಪನೇ) "ಶತ್"  
(೩-೧-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬)। ಆಕೀಕೃತೃ  
ಏಕೀಕೃತೃ.

**ಆಕೀಕೃತೃ ಏಕೀಕೃತೃ** (ನಂ) 1. ಕದಲುವಿಕೆ, ಅಲುಗಾಡುವಿಕೆ.  
2. ನಡುಗುವಿಕೆ. 3. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವಿಕೆ, ಹೊಳೆಯುವಿಕೆ.  
ಆಕೀಕೃತೃ (ಕಂಪನೇ ದೀಪ್ತೌ ಚ) "ಫುಲ್" (೩-೩-೧೧೪)।



4. ಕದಲಿಸುವಿಕೆ, ಅಲುಗಾಡಿಸುವಿಕೆ. 5. ನಡುಗಿಸುವಿಕೆ. 6. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವಿಕೆ. ಆಜ್+ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।
- ಆಜನೀಯ ಏಜನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಅಲುಗಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ, ಕದಲಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. 2. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. ಆಜ್ (ಕಂಪನೆ ದೀಪ್ತೌ ಚ) + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)।
- ಆಜಮಾನ ಏಜಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ. ಆಜ್ (ದೀಪ್ತೌ) "ಶಾನಕ್" (3-1-124)। 2. ನಡುಗುತ್ತಿರುವ. ಆಜ್ (ಕಂಪನೆ) "ಶಾನಕ್"।
- ಆಜಯತ್ ಏಜಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಅಲುಗಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಕದಲಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ನಡುಗಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ಆಜ್ (ಕಂಪನೆ ದೀಪ್ತೌ ಚ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (3-1-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (4-1-6)। ಆಜಯಂತಿ ಏಜಯಂತಿ. "ಶಾನಕ್" (3-1-124)। ಆಜಯಮಾನಃ ಏಜಯಮಾನಃ.
- ಆಜಯಿತವ್ಯ ಏಜಯಿತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಕದಲಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. 2. ನಡುಗಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. 3. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. 4. ಕದಲಿಸಲ್ಪಡಬಹುದಾದ. 5. ನಡುಗಿಸಲ್ಪಡಲು ಶಕ್ತವಾದ. 6. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡಬಹುದಾದ. ಆಜ್ (ಕಂಪನೆ) + ಣಿಕ್ ಅರ್ಹಾದೌ "ತವ್ಯಃ" (3-1-96)।
- ಆಜಯಿತ್ ಏಜಯಿತ್** (ವಿಂ) 1. ನಡುಗಿಸುವ. 2. ಕದಲಿಸುವ. 3. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುವ. ಆಜ್ (ಕಂಪನೆ ದೀಪ್ತೌ ಚ) + ಣಿಕ್ "ತುಕ್" (3-1-124)।
- ಆಜಿತ ಏಜಿತ** (ನಂ) 1. ಅಲುಗಾಡುವಿಕೆ. 2. ನಡುಗುವಿಕೆ. ಆಜ್ (ಕಂಪನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-3-114)। (ವಿಂ) 3. ನಡುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಅಲುಗಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕದಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆಜ್ (ಕಂಪನೆ ದೀಪ್ತೌ ಚ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।
- ಆಜಿತವತ್ ಏಜಿತವತ್** (ವಿಂ) 1. ನಡುಗಿದವನು, ಕಂಪನವುಳ್ಳವನು. 2. ಪ್ರಕಾಶಿಸಿದವನು, ಹೊಳೆದವನು. ಆಜ್ (ಕಂಪನೆ ದೀಪ್ತೌ ಚ) "ಕ್ತವತುಃ" (3-2-102)। 3. ನಡುಗಿಸಿದವನು. 4. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಿದವನು. ಆಜ್ + ಣಿಕ್ "ಕ್ತವತುಃ" (3-2-102)।
- ಆಜಿತವ್ಯ ಏಜಿತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಅಲುಗಾಡಬೇಕಾದ, ಕದಲಬೇಕಾದ. 2. ಪ್ರಕಾಶಪಡಬೇಕಾದ. ಆಜ್ (ಕಂಪನೆ ದೀಪ್ತೌ ಚ) "ತವ್ಯಃ" (3-1-96)।
- ಆಜಿತ್ ಏಜಿತ್** (ವಿಂ) 1. ಅಲುಗಾಡುವ. 2. ನಡುಗುವ. 3. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ. ಆಜ್ (ಕಂಪನೆ ದೀಪ್ತೌ ಚ) "ತುಕ್" (3-1-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (4-1-6)। ಆಜಿತ್ರಿ ಏಜಿತ್ರಿ.

- ಆಜ್-ಕಂಪನೆ** (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ) ಆಜತಿ। ಆಜಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಆಜೀತ್। 1. ಅಲುಗು, ಕದಲು. 2. ನಡುಗು, ಕಂಪಿಸು.
- ಆಜಿ** : ಆಜಯತಿ, -ತೇ। ಆಜಯಾಚ್ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ, -ಚಕ್ರೇ। 1. ಅಲುಗಿಸು. 2. ನಡುಗಿಸು, ಕಂಪಿಸುವಂತೆ ಮಾಡು.
- ಆಜಿ** : ಆಜಿಜಿಷತಿ। ಆಜಿಜಿಷಾಚ್ಚಕಾರ। ಇತ್ಯಾದಿ.
- ಆಜ್-ದೀಪ್ತೌ** (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸಂ) ಆಜಾಚ್ಚಕ್ರೇ। ಆಜಿತಾ। ಆಜಿಷ್ಯತೇ। ಇತ್ಯಾದಿ.
- ಆಜ ಏಜ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಷ, ಟಗರು. ಆ + ಇಲತಿ + ಇಲ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಘಃ" (3-3-114)। ಟಲಯೋರಭೇದಃ। (ವಿಂ) 2. ಕಿವುಡ, ಕಿವಿ ಕೇಳಿಸದವನು, ಶ್ರವಣೇಂದ್ರಿಯಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದವನು. ಆ + ಇಡ್ತೇ-ಇಡ್ (ಸ್ತುತೌ) "ಅಕ್" (3-1-134)।
- ಆಜಕ ಏಜಕ** (ಪುಂ) ಮೇಷ, ಟಗರು. ಇಲತಿ - ಇಲ್ (ಸ್ವಪ್ನೋಪನಯೋಃ) "ಘಲ್" (3-1-133)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಠಾಪ್" (4-1-4)। ಆಜಕಾ ಏಜಕಾ. ಕುರಿ.
- ಆಜಗಜ ಏಜಗಜ** (ಪುಂ) ತಗಸಿಗಿಡ.
- ಆಜಮೂಕ ಏಜಮೂಕ** (ವಿಂ) 1. ಕಿವುಡ ಮತ್ತು ಮೂಗ, ಕಿವಿಯಿಂದ ಕೇಳಲೂ ಮಾತನಾಡಲೂ ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದವನು. ಆಜಕಾಸೌ ಮೂಕಃ ಚ। 2. ಕೆಟ್ಟವನು, ದುಷ್ಟ, ದುರುಳ. ಮೇದಿಂ।
- ಆಜೂಕ ಏಜೂಕ** (ಪುಂ) 1. ಎಲುಬುಗಳನ್ನೆಲ್ಲಾ, ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಗೋಡೆ. 2. ಎಲುಬುಗಳಂತೆ ಕಠಿಣವಾದ ವಸ್ತುಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಕಟ್ಟಡ. ಇಡ್ (ಸ್ತುತೌ) "ಅಕಃ" (3-4-41)। "ಕುಡಯಂ ಭಿತ್ತಿಃ ಸ್ತದೇಕಮಂತನಿಹಿತಕೀಕಸಮ್" ಅಭಿಂ ಚಿಂ। ವೇಜಂ।
- ಆಣ ಏಣ** (ಪುಂ) ಕೃಷ್ಣಮೃಗ, ಹುಲ್ಲೆ, ಜಿಂಕೆ, ಚಿಗರಿ. ಆತಿ-ಇನ್ (ಗತೌ) "ಞಃ" ಬಾಹುಂ। "ಆಣಃ ಸ್ಮರೇಣಾಕ್ಷಮಯಃ ಸಪತ್ರಾಕೃತೌ ಭವದ್ಭ್ರೂಯುಗಧನ್ವನಾ ಯಃ" ನೈಷಂ 22-24। "ಅಷ್ಟಾವೇಣಸ್ಯ ಮಾಸೇನ ರೋರೇಣ ನವೈವ ತು" ಮನುಂ 3-269। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (4-1-63)। ಆಣಿ ಏಣೀ.
- ಆಣತಲಕ ಏಣತಲಕ** (ಪುಂ) ತಿಲಕದಂತಿರುವ ಜಿಂಕೆಯುಳ್ಳ ಚಂದ್ರ. ಆಣಸ್ತಲಕಮಿವ ಯಸ್ಯ। "ಮಾ ಗ್ಲೌರಿಂದುರೇಣತಲಕೋ ಹರೀರೋಹಿಣೀಶೌ" ಹಾರಾಂ।
- ಆಣಜಙ್ಘ ಏಣಜಂಘ** (ಪುಂ) ಜಿಂಕೆ. ಮೊಣಕಾಲುಳ್ಳವನು, ಓಡುವ ದೂತ, ಓಡಾಳು, ಓಡಕಾರ. ಸುದ್ದಿ ಒಯ್ಯುವವನು. ಆಣಸ್ಯ ಜಙ್ಘೇ ಇವ ಜಙ್ಘೇ ಯಸ್ಯ।



ಉಣಢುತ್ ಏಣಭೃತ್ (ಪುಂ) ಮೃಗಾಂಕ, ಚಂದ್ರ. ಉಣ  
ಬಿಢರ್ತಿ—ಙು ಢುತ್ (ವಾರಣಪೂಷಣಯಃ) “ಕಿವ್” (3-2-61).  
ಉಣಾಕು ಏಣಾಕು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿಂಕೆಯಂತೆ ಕಣ್ಣುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು.  
ಉಣಸ್ಯೇವಾಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯಾ: “ಷಕ್” (4-4-113). “ಡಿಫ್”  
(4-1-41).

ಉಣಾಙ್ಕ ಏಣಾಂಕ (ಪುಂ) ಜಿಂಕೆಯ ಗುರುತುಳ್ಳ ಚಂದ್ರ.  
ಉಣಾಙ್ಕೋ ಯಸ್ಯ.

ಉಣಾಙ್ಕಮಣಿ ಏಣಾಂಕಮಣಿ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರಕಾಂತಮಣಿ.  
ಷಂ ತಂ.

ಉಣಾಜಿನ ಏಣಾಜಿನ (ನಂ) ಕೃಷ್ಣಾಜಿನ, ಜಿಂಕೆಯ ಚರ್ಮ.  
ಉಣಸ್ಯ ಅಜಿನಮ್. “ಪಿಶಾಙ್ಗಮೌಙ್ಜಿಯುಜಮರ್ಜುನಚ್ಚವಿ ವಸಾನ-  
ಮೇಣಾಜಿನಮಙ್ಜನದೃತಿ” ಢಾಘಂ 1-6.

ಉಣಿ ಏಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ಜಿಂಕೆ. ಉಣಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ “ಡಿಫ್”  
(4-1-63).

ಉಣಿದೃಶ್ ಏಣೀದೃಶ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿಂಕೆಯಂತೆ ಕಣ್ಣುಳ್ಳ  
ಹೆಂಗಸು. ಉಣ್ಯಾ: ದೃಗಿವ ದೃಶ್ಯಸ್ಯಾ: | ಹೀಗೆಯೇ ಉಣಿನಯನಾ,  
ಉಣಿನೇತ್ರಾ, ಉಣಿಲೋಚನಾ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಉಣಿಪಚನ ಏಣೀಪಚನ (ಪುಂ ಖಂ ಖಂ) 1. ಜಿಂಕೆಯನ್ನು  
ಬೇಯಿಸುವ ಒಂದುದೇಶದ ಜನರು. ಉಣಿ ಪಚ್ಯತೇ  
ಉಢಿ: — ಙು ಪಚ್ (ಪಾಕೇ) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-113).  
(ನಂ) 2. ಜಿಂಕೆಯನ್ನು ಬೇಯಿಸುವ ದೇಶ. ಉಣಿ  
ಪಚ್ಯತೇಽತ್ರ—ಙು ಪಚ್ ಅಧಿಂ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-113).

ಉಣಿಪಚನೀಯ ಏಣೀಪಚನೀಯ (ವಿಂ) ಜಿಂಕೆಯನ್ನು  
ಬೇಯಿಸುವವರ ದೇಶ. ಉಣಿಪಚನಾನಾಂ ದೇಶ: “ಛ:”  
(1-1-34).

ಉಣಿಪದ ಏಣೀಪದ (ವಿಂ) ಜಿಂಕೆಯ ಕಾಲಿನಂತೆ ಕಾಲುಳ್ಳ.  
ಉಣ್ಯಾ ಇವ ಪಾದೌ ಯಸ್ಯ | ನಿಪಾಂ (4-4-120).

ಉತ ಏತ (ಪುಂ) 1. ಚಿತ್ರವರ್ಣ, ನಾನಾ ಬಣ್ಣ. ಉತಿ ವರ್ಣಾನ್—  
ಇಙ್ (ಗತೌ) “ತನ್” (3-2-66). (ವಿಂ) 2.  
ಚಿತ್ರವರ್ಣವುಳ್ಳ, ನಾನಾಬಣ್ಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
ವಾ “ಡಿಫ್” ತಸ್ಯ ನಶ್ಚ (4-1-39). ಉನಿ ಏಣೀ.  
ಪಕ್ಷೇ ಉತಾ ಏತಾ. 3. ಬಂದಿರುವ, ಆಗಮಿಸಿರುವ. “ಉತ:  
ಕರ್ಬುರ ಆಗತೇ” ಮೇದಿಂ | ಆ + ಇಙ್ (ಗತೌ) “ಕ್ತ:”  
(3-4-32).

ಉತಢ್ ಏತಢ್ (ವಿಂ) (ಬಹಳ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ) ಇವನು,  
ಇವಳು, ಇದು. ಇಙ್ (ಗತೌ) “ಅದಿ:” ತುಡಾಗಮಶ್ಚ  
(3-1-130). ಇದೊಂದು ಸರ್ವನಾಮಪದ. “ಇದ-  
ಮಸ್ತು ಸನ್ನಿಕೃಷ್ಠಂ ಸಮೀಪತರವರ್ತಿವೈತದೌ ರೂಪಮ್ | ಅದಸಸ್ತು

ವಿಪ್ರಕೃಷ್ಠಂ ತದಿತಿ ಪರೋಕ್ಷೇ ವಿಜಾನೀಯಾತ್” | (ಪುಂ) ಉಃ  
ಉತೌ ಉತೇ | “ಉ ಢಾಶರಥಿಢುಯಮೇತ್ಯ ಚ ಧ್ವಂಸಿತೌದ್ಧತ-  
ದಶಾನನಾಮಪಿ | ರಾಕ್ಷಸೀಮಕೃತ ರಕ್ಷಿತಪ್ರಜಸ್ತೇಜಸಾಧಿಕ-  
ವಿಢಿಷಣಾಂ ಪುರೀಮ್” ಢಾಘಂ 14-61. “ಉತೇ ವಯಮಮಿ ದಾರಾ:  
ಕನ್ಯೆಯಂ ಕುಲಜೀವಿತಮ್” ಕುಢಾಂ 6-63. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಃ  
ಉತೇ ಉತಾ: | “ಹಲಾ, ಉಃ ದ್ವಯೃಯಯೋರ್ನನು ಹಸ್ತೇ ನಿಕ್ಷೇಪ:”  
ಶಾಕುಂ 4. “ಉತಾ: ಸುತನು ಢುಖಂ ತೇ ಸಖ್ಯ: ಪಶ್ಯಂತಿ  
ಹೇಮಕೂಟಗತಾ:” ವಿಕ್ರಂ 1-12. (ನಂ) ಉತತ್ ಉತೇ ಉತಾನಿ |  
“ಉತದ್ಛಸ್ತಿಸಿತಪೀತಮೈಂದವಂ ವೌಡುಮಕ್ಷಮಮಿವ ಪ್ರಢಾರಸಮ್”  
ಕುಢಾಂ 6-30.

ಉತದಂತ ಏತದಂತ (ವಿಂ) ಇಲ್ಲಿಯವರೆಗಿನ, ಇದೇ ಕೊನೆ  
ಯಾಗಿ ಉಳ್ಳ. ಉತತ್ ಅಂತೌ ಯಸ್ಯ | “ಉತದಂತಾಸ್ತು ಗತಯೌ  
ಬ್ರಹ್ಮಾಢಾ: ಸಢುದಾಹತಾ:” ಢನುಂ 1-40.

ಉತದರ್ಥಮ್ ಏತದರ್ಥಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಇದಕ್ಕಾಗಿ, ಇದಕ್ಕೋ  
ಸ್ವರ, ಇವನಿಗಾಗಿ, ಇವಳಿಗಾಗಿ. ಉತಸ್ಮೇ ಉತಸ್ಯೇ ವಾ |

ಉತದವಧಿ ಏತದವಧಿ (ಅವ್ಯಂ) ಇಲ್ಲಿಯವರೆಗೆ, ಇಲ್ಲಿಯ  
ತನಕ.

ಉತದವಸ್ಥ ಏತದವಸ್ಥ (ವಿಂ) ಀ ಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರುವ, ಀ  
ನೆಯಲ್ಲಿರುವ, ಀ ರೀತಿಯಲ್ಲಿರುವ. ಉಃಇವಸ್ಥಾ ಪರಿ-  
ಸ್ಥಿತಿಯಸ್ಯ | “ಸಾ ತ್ವಮಿಹೈತದವಸ್ಥಂ ಕಥಂ ಸಹೇಢಾಶ್ಚಿರ-  
ವಿಯೋಗಮ್” ವಿಕ್ರಂ 4-31.

ಉತದಾದಿ ಏತದಾದಿ (ವಿಂ) ಇದೇ ಢೊದಲಾದ, ಇದರಿಂದ  
ಪ್ರಾರಂಭವಾದ. ಉತತ್ ಆದಿಯಸ್ಯ |

ಉತದೀಯ ಏತದೀಯ (ವಿಂ) ಇವನು—, ಇವಳು—, ಇದರ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. ಉತಸ್ಯ ಉತಸ್ಯಾ ವಾ ಇದಮ್ “ಛ:”  
(4-2-114). “ವೈಲಕ್ಷ್ಯಹೇತೌರ್ಗತಿಮೇತದೀಯಾಮಗ್ರೇಙ್ಗುಕೃತ್ಯೌ-  
ಪಹಸನ್ನಿವೌಚ್ಛೇ:” ನೇಷಂ 3-10.

ಉತದೋನಿ ಏತದೋನಿ (ವಿಂ) ಇದೇ ಢೂಲವಾಗಿ ಉಳ್ಳ,  
ಇದೇ ಕಾರಣವಾಗಿರುವ. ಉಃ ಯೋನಿಯಸ್ಯ | “ಉತದೋನಿನಿ  
ಢೂತಾನಿ ಸರ್ವಾಣೀತ್ಯುಪಧಾರಯ” ಗೀತಾ 3-6.

ಉತರ್ಹಿ ಏತರ್ಹಿ (ಅವ್ಯಂ) ಀಗ, ಀ ಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಀ ಸಮಯ  
ದಲ್ಲಿ. ಅಸ್ಮಿನ್ ಕಾಲೇ—ಇದಮ್ “ಹಿಲ್” (4-3-16).  
ಉತಾದೇಶ: (4-3-4). “ಢವಂತಮೇತರ್ಹಿ ಢನಸ್ವಿಗರ್ಹಿತೇ  
ವಿವರ್ತಢಾನಂ ನರದೇವ ವರ್ತಢಿನಿ” ಕಿರಾಂ 1-32.

ಉತಶ ಏತಶ (ಪುಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಇಙ್ (ಗತೌ) “ತಶನ್”  
(3-3-149).

ಉತಶಸ್ ಏತಶಸ್ (ಪುಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಇಙ್ (ಗತೌ) “ತಶಸುನ್”  
(3-3-149).



एषयितव्य ँधयितव्य (वि०) अभिव्यक्तिपदिसल्लड  
 बीकड, हंछिसल्लडबीकड. एष (वृद्धौ) + णिच्  
 "तव्यः" (३-१-९६) । •



एवंरूप एवमंरूप (वि०) ಈ ರೂಪವುಳ್ಳ, ಈ ಅಕ್ಕಿ  
ಯುಳ್ಳ. एवं रूपं यस्य । “न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैर्न च  
क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः । एवंरूपः शक्य अहं नृलोके  
द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर” गीता ११-४८ ।



**ಎವಂವಿಧ ಏವಂವಿಧ** (ವಿಂ) ಈ ವಿಧವಾದ, ಈ ತೆರನಾದ, ಹೀಗಿರುವ. ಎವಂ ವಿಧಾ ಪ್ರಕಾರೋ यस್ಯ । “ಭಕ್ತ್ಯಾತ್ವನನ್ಯಯಾ ಶಕ್ಯ ಅಹಮೇವಂವಿಧೋಽಜುನ । ಜ್ಞಾತುಂ ದ್ರಷ್ಟುಂ ಚ ತತ್ತ್ವೇನ ಪ್ರವೇಷ್ತುಂ ಚ ಪರಂತಪ ” ಗೀತಾ ೧೧-೪೪ ।

**ಎವಮ್ ಏವಮ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಈ ರೀತಿಯಾಗಿ, ಈ ಪ್ರಕಾರ ವಾಗಿ. “ಎವಂ ಮಯಾ ನಿಯಮಿತಶ್ಚಯವನಾದಿವಾಕ್ಯೈಃ ಕೋಪಾನಲಶ್ಚ ಪರಶುಶ್ಚ ಪುನರ್ಯಥೈತೌ ” ಮಂ ವೀಂ ೩-೧೫ । 2. ಅಹುದು, ಹಾಗೆಯೇ, ಅದೇ ಸರಿ. “ಎವಂ ಯದಾತ್ಥ ಭಗವನ್ನಾಮೃಷ್ಠಂ ನಃ ಪರೈಃ ಪದಮ್ ” ಕುಮಾಂ ೨-೩೧ । 3. ನಿಶ್ಚಯ. “ಎವಮೇತತ್, ಕಃ ಸಂದೇಹಃ ” । 4. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಮ್ಮತಿ. “ಎವಂ ಕುರ್ಮಃ ” । 5. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ. “ಅಗ್ನಿರೇವಂ ವಿಪ್ರಃ ” । 6. ವಾಕ್ಯಪೂರಣ. 7. ನಿಜವಾಗಿಯೂ, ವಾಸ್ತವ ವಾಗಿಯೂ.

**ಎಷ ಏಷ** (ಪುಂ) 1. ಸರಿಯುವಿಕೆ, ಚಲಿಸುವಿಕೆ, 2. ಗಮನ, ಹೋಗುವಿಕೆ. 3. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಇಚ್ಛೆ. ಇಷ (ಗತೌ) ಇಷು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) ವಾ “ಘಜ್” (೩-೩-೧೮) ।

**ಎಷಕ ಏಷಕ** (ವಿಂ) 1. ಸರಿಯುವ, ಚಲಿಸುವ. 2. ಹೋಗು ವವನು. ಇಷ (ಗತೌ) “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) । 3. ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಇಚ್ಛಿಸುವ. ಇಷು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) “ಫ್ವಲ್” ।

**ಎಷಣ ಏಷಣ** (ಪುಂ) 1. ಲೋಹದ ಬಾಣ. ಎಷಣೇ ಶಸ್ತ್ರ- ಹೃದಯಮ್ । “ಎಷಣಶ್ಚಾಯಸೇ ಶರೇ” ವೈಜಂ । (ನಂ) 2. ಅಪೇಕ್ಷಿ ಸುವಿಕೆ, ಬಯಸುವಿಕೆ. ಇಷು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । 3. ಹೋಗುವಿಕೆ, ನಡೆಯುವಿಕೆ. ಇಷ (ಗತೌ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । (ಸ್ತ್ರೀಂ)-ಣಾ-ಣಾ. 4. ಅನ್ವೇಷಣೆ, ಹುಡುಕುವಿಕೆ. ಭಾವೇ “ಯುಚ್” (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೭) । 5. ಕೊತ್ತುಂಬರಿ. “ಕುಮಾರೀ ಮುಸಲೀ ವಂಶ್ಯಾ ಗಡ್ಡುಕಿ ಕಡುಕೌಷಣಾ” ವೈಜಂ । -ಣಿ-ಣೀ. 6. ಅಕ್ಕಸಾಲಿಗನ ತಕ್ಕಡಿ.

**ಎಷಣಿಕಾ ಏಷಣಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಕ್ಕಸಾಲಿಗನ ತಕ್ಕಡಿ.

**ಎಷಣೀಯ ಏಷಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡಬಹು ದಾದ, ಅಸೆಪಡಬಹುದಾದ. ಇಷು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) ಕರ್ಮಂ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । “ಜಾಯಾಪತೀ ಲೌಕಿಕಮೇಷಣೀಯ-

ಮಾರ್ಗಾಕ್ಷಿತಾರೋಪಣಮನ್ವಭೂತಾಮ್ ” ಕುಮಾಂ ೭-೮೮ । 2. ಹೋಗ ಬೇಕಾದ, ಸೇರಬೇಕಾದ, ತಲುಪಬೇಕಾದ. ಇಷ (ಗತೌ) “ಅನೀಯರ್” । “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬) । **ಎಷಿತವ್ಯಮ್ ಏಷಿತವ್ಯಮ್**.

**ಎಷಿತು ಏಷಿತು** (ವಿಂ) “ಎಷಕ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ಇಷ (ಗತೌ) ಇಷು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) ವಾ “ತುಚ್” (೩-೧-೧೩೩) ।

**ಎಷಿನ್ ಏಷಿನ್** (ವಿಂ) 1. “ಎಷಕ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ಇಷು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್ ಗತೌ ವಾ) “ಣಿನ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ಶೈಶವೇ- ಸ್ಮ್ಯಸ್ತವಿದ್ಯಾನಾಂ ಯೌವನೇ ವಿಷಯೈಷಿಣಾಮ್ ” ರಘುಂ ೧-೬ । 2. ತಲುಪುವ, ಹೊಂದುವ, ಸೇರುವ. ಇಷ (ಗತೌ) “ಣಿನ್” (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಎಷಿಷಿಷಾ ಏಷಿಷಿಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೋಗಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. 2. ಹೊಂದಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ತಲುಪಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಇಷ (ಗತೌ) + ಸನ್ “ಅಃ” (೩-೩-೧೦೨) ।

**ಎಷಿಷಿಷು ಏಷಿಷಿಷು** (ವಿಂ) 1. ಹೋಗಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. 2. ಹೊಂದಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, ತಲುಪಲು ಇಚ್ಛೆಯುಳ್ಳ. ಇಷ (ಗತೌ) + ಸನ್ “ಃ” (೩-೨-೧೬೮) ।

**ಎಷ್ಠವ್ಯ ಏಷ್ಠವ್ಯ** (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸ ಬೇಕಾದ. ಇಷು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) ಕರ್ಮಂ “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬) । “ಎಷ್ಠವ್ಯಾ ಬಹವಃ ಪುತ್ರಾಃ ಯದ್ವೇಕೋಽಪಿ ಗಯಾಂ ವ್ರಜೇತ್ ” ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ ।

**ಎಷ್ಠಿ ಏಷ್ಠಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಚ್ಛೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಆ + ಇಷು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) ।

**ಉಪ್ಯ ಏಷ್ಯ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ವಿಧ ಶಸ್ತ್ರಚಿಕಿತ್ಸೆ. (ವಿಂ) 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. ಇಷು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) “ಉಪ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪) । 3. ತಲುಪಲ್ಪಡುವ, ಸೇರಲ್ಪಡುವ. 4. ವೈದ್ಯಪರೀಕ್ಷೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 5. ಮುಂದೆ ಬರಬಹುದಾದ, ಮುಂದೆ ಒದಗಬಹುದಾದ, ಭವಿಷ್ಯತ್ಕಾಲದ.

**ಉಪ್ಯತ್ ಏಷ್ಯತ್** (ವಿಂ) ಮುಂದಿನ ಕಾಲದ, ಭವಿಷ್ಯತ್ತಿನ, ಮುಂದೆ ಒದಗಬಹುದಾದ. ಇಷ (ಗತೌ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । “ಹರತ್ಯಘಂ ಸಂಪ್ರತಿ ಹೇತುರೇಷ್ಯತಃ ” ಮಾಘಂ ೧-೨೬ । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಓಪ್” (೪-೧-೬) । **ಉಪ್ಯಂತೀ ಏಷ್ಯಂತೀ**.

ಇತಿ “ಉ” ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್ ।



ಐ

ಐ ಐ ಇದು ಕಂಠ ಮತ್ತು ತಾಲುಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ವಿವೃತ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಒಂದು ಸ್ವರವರ್ಣ. ಉದಾತ್ತ, ಅನುದಾತ್ತ ಮತ್ತು ಸ್ವರಿತಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಭೇದಗಳುಳ್ಳ ಈ ವರ್ಣವು ಅನುನಾಸಿಕ ಮತ್ತು ಅನನುನಾಸಿಕಗಳೆಂಬ ಭೇದದಿಂದ ಒಟ್ಟು ಆರು ವಿಧವಾಗುವುದು.

ಐ ಐ (೪೦) 1. ದಿಕ್ಕು. 2. ಹಸ್ತ, ಕೈ. 3. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. 4. ಪರ್ವತದ ಶಿಖರ, ಬೆಟ್ಟದ ತುದಿ. 5. ಚರ್ಮ, ತೊಗಲು. "ಐಕಾರೋ ದಿಕ್ಮುಖೇ ಹಸ್ತೇ ಹರೇಽದ್ವಿಶಿಖರೇ ತ್ವಚಿ" ನಾನಾರ್ಥರಂ. (ಅವ್ಯಂ) 6. ಅಹ್ವಾನ, ಕರೆ. 7. ಸ್ಮೃತಿ, ನೆನಪು. 8. ಸಂಬೋಧನೆ. "ಐ ಶಬ್ದೋ ದೃಶ್ಯತೇ ಹೃತೌ ಸ್ಮೃತ್ಯಾಮನ್ವಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ.

ಐಕಕಂಠ್ಯ ಐಕಕಂಠ್ಯ (ನಂ) ಸಮಾನಾಭಿಪ್ರಾಯ, ವಿರೋಧ ವಿಲ್ಲದ (ಒಂದೇ ವಿಧ) ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

ಐಕಧ್ಯಮ್ ಐಕಧ್ಯಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಒಂದು ವಿಧವಾಗಿ, ಒಂದು ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ. ಏಕ + ಧಾ "ಧ್ಯಮುಃ" (೪-೩-೪೪) 1.

ಐಕಪತ್ಯ ಐಕಪತ್ಯ (ನಂ) 1. ಸಾರ್ವಭೌಮತ್ವ, ದೇಶಕ್ಕೆಲ್ಲಾ ಒಬ್ಬನೇ ರಾಜನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಏಕಪತೇರ್ಭಾವ: "ಏಕ" (೪-೧-೧೨೪) 1. "ಅಪ್ರತಿವೃದ್ಧತಾಂ ಯುಧೇ ಐಕಪತ್ಯಂ ಚ ದೇಹಿನಾಮ್" ಭಾಗಂ ೭-೩-೩೭. (ವಿಂ) 2. ಒಬ್ಬ ಯಜಮಾನನಲ್ಲಿರುವ. ಏಕಪತೌ ಭವಮ್ - ಏಕಪತಿ "ಏಕ:" (೪-೧-೮೫) 1.

ಐಕಪದಿಕ ಐಕಪದಿಕ (ವಿಂ) 1. ಒಂದು ಪದಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಒಂದು ಪದದಲ್ಲಿರುವ. ಏಕಸ್ಮಿನ್ ಪದೇ ಭವ: 2. ಒಂದು ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿರುವ. ಏಕಸ್ಮಿನ್ ಪದೇ ಸ್ಥಾನೇ ಭವ: 3. ಒಂದು ಪದಕ್ಕೆ ಅಥವಾ ಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಸಮರ್ಥವಾ(ನಾ)ದ. ಏಕಪದ "ಏಕ" (೪-೧-೧೦೧) 1.

ಐಕಪದ್ಯ ಐಕಪದ್ಯ (ನಂ) ಒಂದೇ ಪದವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಅನೇಕ ಪದಗಳು ಸಮಾಸಹೊಂದಿರುವಿಕೆ. ಐಕಪದಸ್ಯ ಭಾವ: "ಏಕ" (೪-೧-೧೨೪) 1.

ಐಕಮತ್ಯ ಐಕಮತ್ಯ (ನಂ) ಸಮಾನವಾದ ಒಬ್ಬಗೆ, ಏಕ ವಿಧವಾದ ಸಮೃತ್ತಿ, ಭಿನ್ನಾಭಿಪ್ರಾಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಏಕ ಸಮಾನಂ ಮತಮಭಿಪ್ರಾಯ: ತಸ್ಯ ಭಾವ: "ಏಕ" (೪-೧-೧೨೪) 1. "ಐಕಮತ್ಯಂ ಹಿ ನೋ ರಾಜನ್ ಸರ್ವೇಷಾಮೇವ ಲಕ್ಷಯೇ" ಭಾಂ ವನಂ ೭-೧೨.

ಐಕರಾಜ್ಯ ಐಕರಾಜ್ಯ (ನಂ) ಸಾರ್ವಭೌಮತ್ವ, ಏಕಚಕ್ರಾಧಿಪತ್ಯ, ರಾಷ್ಟ್ರಕ್ಕೆಲ್ಲಾ ಒಬ್ಬನೇ ರಾಜನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಏಕೋ ರಾಡ್, ಏಕರಾಜೋ ಭಾವ: "ಏಕ" (೪-೧-೧೨೪) 1.

ಐಕರೂಪ್ಯ ಐಕರೂಪ್ಯ (ನಂ) ಒಂದೇ ವಿಧವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಒಂದೇ ಪ್ರಕಾರವಾಗಿರುವಿಕೆ.

ಐಕಶತಿಕ ಐಕಶತಿಕ (ವಿಂ) ಒಂದು ಶತಮಾನವಿರುವ, ಒಂದು ನೂರನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. ಏಕಶತಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ - "ಏಕ" (೪-೨-೧೧೮) 1.

ಐಕಶಪ ಐಕಶಪ (ವಿಂ) ಒಂದು ಗೊರಸುಳ್ಳ (ಕುದುರೆ ಮೊದಲಾದ) ಪ್ರಾಣಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ (ಕ್ಷೀರ ಮೊದಲಾದುದು). ಏಕಶಪಸ್ಯೇದಮ್ "ಏಕ" (೪-೩-೧೨೦) 1. "ಅನಿರ್ದೇಶಾಯಾ ಗೋಕ್ಷೀರಮೌಷ್ಠಮೇಕಶಪಂ ತಥಾ" ಮನುಂ ೪-೮.

ಐಕಶ್ರುತ್ಯ ಐಕಶ್ರುತ್ಯ (ನಂ) 1. ಒಂದೇ ಸ್ವರ, ಉದಾತ್ತಾನು ದಾತ್ತಸ್ವರಿತಗಳ ಸಮೀಪಸಂಬಂಧ, ಎಲ್ಲಾ ಸ್ವರಗಳೂ ಒಂದೇ ಶ್ರುತಿಯಂತೆ ಕೂಡಿಹೊಂದಿರುವಿಕೆ. "ಉದಾತ್ತಾನುದಾತ್ತಸ್ವರಿತಾನಾಂ ಪರ: ಸನ್ನಿಕರ್ಷ: ಐಕಶ್ರುತ್ಯಮ್" ಆಶ್ವಂ ಶ್ರೋಂ ಸೂಂ ೧-೨-೯. 2. ವೈವಿಧ್ಯವಿಲ್ಲದ ಒಂದೇ ರಾಗ, ಒಂದೇ ಧ್ವನಿ. ಏಕಾ ಶ್ರುತಿಯಿತ್ರ, ತಸ್ಯ ಭಾವ: "ಏಕ" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪) 1.

ಐಕಸಹಸ್ರಿಕ ಐಕಸಹಸ್ರಿಕ (ವಿಂ) ಒಂದು ಸಾವಿರವುಳ್ಳ. ಏಕಸಹಸ್ರಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಏಕ" (೪-೨-೧೧೮) 1.

ಐಕಾಗಾರಿಕ ಐಕಾಗಾರಿಕ (ವಿಂ) ಚೋರ, ಕಳ್ಳ. ಏಕಮಸಹಾಯ-ಮಗಾರಂ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಐಕ" (೪-೧-೧೧೩) 1. ನಿಪಾಂ. 1. ಕಳ್ಳನು ತನ್ನ ಕಳ್ಳತನವು ಮತ್ತಾರಿಗೂ ತಿಳಿಯದಿರಲು (ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಮನೆಗಳಿಲ್ಲದ) ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾದ ಮತ್ತು ಅಸಹಾಯವಾದ ಮನೆಯನ್ನು ಮಾತ್ರ ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಐಕಾಗಾರಿಕವದ್ಭೂಮಿ ದ್ವಾರಾಜ್ಯಗಮುರ್ದಾನಮ್" ಮಾಘಂ ೧೯-೧೧೧.

ಐಕಾಗ್ರ ಐಕಾಗ್ರ (ನಂ) ಏಕಾಗ್ರತೆ, ಚಿತ್ತವನ್ನು ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿಟ್ಟಿರುವಿಕೆ. ಐಕಾಗ್ರಸ್ಯ ಭಾವ: "ಏಕ" (೪-೧-೧೨೪) 1.

ಐಕಾತ್ಮ್ಯ ಐಕಾತ್ಮ್ಯ (ನಂ) 1. ಏಕ, ಒಂದಾಗಿರುವಿಕೆ. ಏಕ ಏವಾತ್ಮಾ ಯಸ್ಯ, ತಸ್ಯ ಭಾವ: "ಏಕ" (೪-೧-೧೨೪) 1. 2. ಜೀವಾತ್ಮನು ಪರಮಾತ್ಮನೊಡನೆ ಒಂದಾಗಿರುವಿಕೆ, ಜೀವಬ್ರಹ್ಮರು ಒಂದೇ ಆಗಿರುವಿಕೆ. "ತಥೈಕಾತ್ಮ್ಯಾನುಭಾವಾನಾಂ ವಿಕಲ್ಪರಹಿತ: ಸ್ವಯಮ್" ಭಾಗಂ ೬-೮-೩೨. 3. ಅಭೇದ. "ಐಕಾತ್ಮ್ಯಂ ವಾಸುದೇವಸ್ಯ ಪ್ರೋಕ್ತವಾನರ್ಜುನಸ್ಯ ಚ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨-೨೩೧.

ಐಕಾಧಿಕರಣ್ಯ ಐಕಾಧಿಕರಣ್ಯ (ನಂ) 1. ಒಂದೇ ಅಧಿಕರಣ ದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ, ಸಮಾನವಾದ (ಒಂದೇ) ಆಧಾರದಲ್ಲಿರುವುದು.



2. ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ. ಏಕ ಸಮಾನ-  
ಮಾಧಿಕರಣಂ ಯಸ್ಯ | ಏಕಾಧಿಕರಣಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಏಕ್" (೪-೧-೧೨೪) | "ಸಾಧ್ಯೇನ ಹೇತೋರೇಕಾಧಿಕರಣಂ ವ್ಯಾಪ್ತಿ-  
ಶ್ಯತೇ" ಭಾಷಾಪಂ |

**ಐಕಾಂತಿಕ ಐಕಾಂತಿಕ (ವಿಂ)** 1. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಆಗಬೇಕಾದ.  
ಅವಶ್ಯಂ ಭಾವಿ "ಠಕ್" (೪-೧-೮೦) | 2. ನಿಶ್ಚಿತವಾದ,  
ನಿರ್ದಿಷ್ಟವಾದ, ಭರವಸೆಯಾದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | -ಕೀ-ಕೀ. "ಬಹುಷು ಅಭಿಯೋಗಕಾರಣೇಷು ಸತ್ಸು  
ಸಚಿವವ್ಯಸನಮಭಿಯುಜ್ಜಾನಸ್ಯ ಶತ್ರುಮಭಿಯೋಕ್ತುಃ ನೈಕಾಂತಿಕೀ  
ಸಿದ್ಧಿರ್ಭವತಿ" ಮುद्रಾಂ ೪ |

**ಐಕಾಂತಿಕ ಐಕಾಂತಿಕ (ನಂ)** 1. ಪರಿಪೂರ್ಣವಾಗಿರುವಿಕೆ.  
2. ಏಕಾಂತವಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ನಿಶ್ಚಯವಾಗಿರುವಿಕೆ.  
ಐಕಾಂತಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಏಕ್" (೪-೧-೧೨೪) |

**ಐಕಾರ್ಥ್ಯ ಐಕಾರ್ಥ್ಯ (ನಂ)** 1. ಒಂದು ಪ್ರಯೋಜನವಾಗಿರು-  
ವಿಕೆ, ಒಂದು ಕಾರ್ಯವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಐಕಾರ್ಥ್ಯಸ್ಯ ಭಾವಃ  
"ಏಕ್" (೪-೧-೧೨೪) | "ಬೀಜವಂತೋ ಮುಕ್ತಾಽರ್ಥಾ ವಿಪ್ರಕೀರ್ಣಾ  
ಯಥಾಯಮ್ | ಐಕಾರ್ಥ್ಯಮುಪನೀಯಂತೇ ಯತ್ರ ನಿರ್ವಹಣಂ ಹಿ ತತ್"   
ದಶಕಂ | 2. ಒಂದೇ ಅರ್ಥವಾಗಿರುವಿಕೆ.

**ಐಕಾಹಿಕ ಐಕಾಹಿಕ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ದಿವಸ ಸತ್ಕರಿಸಿ  
ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಉಪಾಧ್ಯಾಯ. ಐಕಾಹಮಧೀಷ್ಠಃ ಸತ್ಕೃತ್ಯ  
ವ್ಯಾಪಾರಿತಃ "ಠಕ್" (೪-೧-೮೦) | 2. ಒಂದು ದಿವಸ  
ಸಾಕಲ್ಪಟ್ಟ ಸೇವಕ. ಐಕಾಹಂ ಭೂತಃ "ಠಕ್" (೪-೧-೮೦) |  
3. ಒಂದು ದಿವಸ ಬಂದ ಜ್ವರ. ಐಕಾಹಂ ಭೂತಃ "ಠಕ್" (೪-೧-೮೦) | 4. ಒಂದು ದಿವಸ ನಡೆಯಲಿರುವ ಉತ್ಸವ  
(ಮೊದಲಾದುದು). ಐಕಾಹಂ ಭಾವಿ "ಠಕ್" (೪-೧-೮೦) |

**ಐಕಾಹಿಕೀ ಐಕಾಹಿಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಒಂದು ದಿನದಲ್ಲಿ ಸಾಧ್ಯ  
ವಾದ ಯಾಗದ ದಕ್ಷಿಣೆ. ಐಕಾಹಸಾಧ್ಯಯಾಗಃ ಐಕಾಹಃ ತಸ್ಯ  
ದಕ್ಷಿಣಾ "ಠಕ್" (೪-೧-೯೫) | "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫) |

**ಐಕೈ ಐಕೈ (ನಂ)** 1. ಏಕತ್ವ, ಒಂದಾಗಿರುವಿಕೆ. ಐಕೈಸ್ಯ  
ಭಾವಃ "ಏಕ್" (೪-೧-೧೨೪) | 2. ಅಭೇದ, ಬೇರೆ ಬೇರೆ  
ಯಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. "ಅನ್ಯಾವತಾರಪರಿಕಲ್ಪನಕೇಲಿಲೋಭಾದೈವಂ  
ನಿನಾಯ ನಿಜಮಂಶಮಿವಾನಿಷ್ಠಮ್" ಯಾದಂ ೨೩-೬೦ |  
3. ಐಕಮತ್ವ, ಸೌಹಾರ್ದ, ಸ್ನೇಹ. "ತೇಷಾಂ ದ್ವಯೋರೈಕೈ  
ವಿಮಿಡೇ ನ ಕದಾಚನ | ಯಥಾ ವಾಯು ವಿಭಾವಸ್ವೋರ್ಯಥಾ ಚಂದ್ರ-  
ಸಮುದ್ರಯೋಃ" ರಘುಂ ೧೦-೮೨ |

**ಐಕೈಸ್ಯ ಐಕೈಸ್ಯ (ನಂ)** (ವೀರಶೈವಮತದಲ್ಲಿ) ಜೀವ  
ಶಿವರ ಐಕೈಯನ್ನು ಸಾಧಿಸುವ ಕಡೆಯ ಸ್ಥಳ, ಸಾಧನೆಯ  
ಷಟ್ ಸೋಪಾನಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಆರನೆಯದಾದ ಸೋಪಾನ.

ಐಕೈಸ್ಯ ಶಿವಜೀವಯೋಃ ಸಾಯುಜ್ಯಸ್ಯ ಸ್ಥಳಮ್ | ಈ ಮತ  
ದಲ್ಲಿ ಶಿವನೇ ಸರ್ವೋತ್ತಮನು. ಶಿವೈಕ್ಯವೇ ಪರಮೋಚ್ಚ  
ಧೈಯವು. ಲಿಂಗವು ಪರಶಿವನ ಪ್ರತೀಕ. ಈ ಸಂಪ್ರದಾಯ  
ದಲ್ಲಿ ಜೀವನಿಗೆ "ಲಿಂಗ" ವೆಂದೂ ಶಿವನಿಗೆ "ಲಿಂಗ"  
ವೆಂದೂ ಹೆಸರು. ಶಿವ-ಜೀವಸಾಯುಜ್ಯಕ್ಕೆ ಲಿಂಗಾಂಗ  
ಯೋಗವೆನ್ನುವರು.

ವೀರಶೈವ ಸಂಪ್ರದಾಯದಲ್ಲಿ ಮೋಕ್ಷಸಾಧನೆಗಾಗಿ ಆರು  
ಹಂತಗಳನ್ನು ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ. ಇವಕ್ಕೆ ಷಟ್ ಸ್ಥಲಗಳೆಂದು  
ಹೆಸರು. (1) ಭಕ್ತಸ್ಥಳಮ್, (2) ಮಹೇಶಸ್ಥಳಮ್, (3) ಪ್ರಸಾದಿ-  
ಸ್ಥಳಮ್, (4) ಪ್ರಾಣಲಿಂಗಸ್ಥಳಮ್, (5) ಶರಣಸ್ಥಳಮ್  
ಮತ್ತು (6) ಐಕೈಸ್ಯಸ್ಥಳಮ್ ಇವು ಷಟ್ ಸ್ಥಲಗಳು. ಸಾಧಕನು  
ಕ್ರಮವಾಗಿ ಸ್ಥಲಗಳನ್ನು ಸಾಧಿಸಿಕೊಂಡು ಕೊನೆಯದಾದ  
ಈ ಸೋಪಾನದಲ್ಲಿ ಶಿವೈಕ್ಯವನ್ನು ಸಾಧಿಸುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ  
"ಐಕೈಸ್ಯಸ್ಥಳಮ್" ಎಂದು ಹೆಸರು. ಇದೇ ಲಿಂಗಾಂಗ  
ಸಾಮರಸ್ಯವು.

**ಐಕ್ಷವ ಐಕ್ಷವ (ವಿಂ)** ಇಕ್ಷುವಿನ (ಕಬ್ಬಿನ) ವಿಕಾರವಾದ  
ಬೆಲ್ಲ ಮೊದಲಾದುದು, ಕಬ್ಬಿನಿಂದ ತಯಾರಾದ ಕಾಕಂಬಿ  
ಬೆಲ್ಲ ಸಕ್ಕರೆ ಕಲ್ಲುಸಕ್ಕರೆ ಬೂರಾಸಕ್ಕರೆ ಮುಂತಾದುವು.  
ಇಕ್ಷೋವಿಕಾರಃ "ಅನ್" (೪-೩-೧೩೬) |

**ಐಕ್ಷುಕ ಐಕ್ಷುಕ (ವಿಂ)** ಕಬ್ಬಿಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಕಬ್ಬಿಗೆ ತಕ್ಕ  
ದಾದ (ಭೂಮಿ). ಇಕ್ಷೋ ಸಾಧುಃ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೦೩) |

**ಐಕ್ಷುಭಾರಿಕ ಐಕ್ಷುಭಾರಿಕ (ವಿಂ)** 1. ಕಬ್ಬಿನ ಹೊರೆಯನ್ನು  
ಒಯ್ಯುವವನು. 2. -ಹೊರುವವನು. 3. -ಹೊತ್ತು  
ತರುವವನು. ಇಕ್ಷುಭಾರಂ ಹರತಿ ವಹತಿ ಆವಹತಿ ವಾ "ಠಕ್" (೪-೧-೫೦) |

**ಐಕ್ಷವಾಕ ಐಕ್ಷವಾಕ (ಪುಂ)** 1. ಇಕ್ಷುವುಕುವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ  
ದೊರೆ. ಇಕ್ಷವಾಕೋಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೬೬) |  
ಬಹುಷು "ಲುಕ್" (೨-೪-೬೨) | "ಇಕ್ಷವಾಕುಣಾಂ ದುರಾಪೇಕ್ಷಂ  
ತ್ವದಧೀನಾ ಹಿ ಸಿದ್ಧಯಃ" ರಘುಂ ೧-೭೨ | 2. ಇಕ್ಷುವುಕು  
ದೇಶದ ದೊರೆ. ಇಕ್ಷವಾಕುಣಾಂ ರಾಜಾ "ಅನ್" (೪-೧-೧೬೬) |  
(ವಿಂ) 3. ಇಕ್ಷುವುಕುರಾಜನಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.

**ಐಕ್ಷುಬ ಐಕ್ಷುಬ (ನಂ)** ಇಂಗುದೀಫಲ, ಹಿಪ್ಪೆಕಾಯಿ.  
ಐಕ್ಷುಬಾಃ ಫಲಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೬೪) |

**ಐಕ್ಷುಕ ಐಕ್ಷುಕ (ವಿಂ)** ಇಕ್ಷುಯಿಂದ ಉಂಟಾದ, ಇತರರ  
ನಿರ್ಬಂಧಕ್ಕೆ ಒಳಪಡದೆ ತನ್ನ ಇಷ್ಟಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಾದ.  
ಇಕ್ಷುಯಾ ನಿರ್ವೃತ್ತಃ "ಠಕ್" (೪-೧-೭೯) |

**ಐಡ(ಲ)ವಿಡ(ಲ) ಐಡ(ಲ)ವಿಡ(ಲ) (ಪುಂ)** ಇಡವಿಡೆಯ  
ಮಗ, ಕುಬೇರ. ಇಡ(ಲ)ವಿಡ(ಲ)ಾ ಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೧೩) | ಡಲಯೋರಭೇದಃ |



**ಏಣ ಐಣ (ವಿಂ)** ಜಿಂಕೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಜಿಂಕೆಯ ಚರ್ಮ ಮಾಂಸ ಮೊದಲಾದುದು. ಏಣಸ್ಯ ಅವಯವೋ ವಿಕಾರೋ ವಾ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೪೪)। "ಏಣರೌವವಾರಾಹಶಾಶಿಮಸಿ-ಯಥಾಕ್ರಮಮ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೨೪೯।

**ಏಣೇಯ ಐಣೇಯ (ವಿಂ)** ಹೆಣ್ಣು ಜಿಂಕೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ (ಚರ್ಮ, ಮಾಂಸ ಮುಂತಾದುದು). ಏಣ್ಯಾ ಅವಯವೋ ವಿಕಾರೋ ವಾ "ಠಞ್" (೪-೩-೧೪೯)।

**ಏತರೇಯ ಐತರೇಯ (ಪುಂ)** ಇತರನೆಂಬ ಒಬ್ಬ ಯುಷಿಯ ಮಗ. ಇತರಸ್ಯಪರೇಪತ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೩)।

**ಏತರೇಯಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಐತರೇಯಬ್ರಾಹ್ಮಣ (ನಂ)** ಯುಗ್ವೇದಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಎರಡು ಬ್ರಾಹ್ಮಣಗಳಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯವಾದ ಒಂದು ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಐತರೇಯಯುಷಿಯಿಂದ ಪ್ರೋಕ್ತವಾದ ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಹೋತೃವಿನ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ವಿವರಿಸುವ ಒಂದು ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಈ ಬ್ರಾಹ್ಮಣದಲ್ಲಿ 40 ಅಧ್ಯಾಯಗಳಿವೆ. ಇವು ಎಂಟು ಪಂಚಿಕೆಗಳಾಗಿ ಭಾಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. ಈ ಬ್ರಾಹ್ಮಣದ ಮುಖ್ಯವಾದ ಭಾಗವು ಸೋಮಯಾಗವಿಷಯಕವಾದುದು. ಮೊದಲನೆಯ 16 ಅಧ್ಯಾಯಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ದಿನದಲ್ಲಿ ಮಾಡಬಹುದಾದ ಅಗ್ನಿಷೋಮವೆಂಬ ಸೋಮಯಾಗವೂ, ಮುಂದಿನ 2 ಅಧ್ಯಾಯಗಳಲ್ಲಿ 360 ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡಬಹುದಾದ ಗವಾಮಯನವೂ, ಅನಂತರದ 6 ಅಧ್ಯಾಯಗಳಲ್ಲಿ 12 ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡಬಹುದಾದ ಯಾಗವೂ, ಅಮೇಲೆ 8 ಅಧ್ಯಾಯಗಳಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರಾದಿಗಳೂ, ಉಳಿದ 8 ಅಧ್ಯಾಯಗಳಲ್ಲಿ ರಾಜನ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕಮಹೋತ್ಸವ ಮತ್ತು ರಾಜಪುರೋಹಿತನ ಅಧಿಕಾರಗಳೂ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ.

**ಏತರೇಯಾರಣ್ಯಕ ಐತರೇಯಾರಣ್ಯಕ (ನಂ)** ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಯುಗ್ವೇದದ ಒಂದು (ಅರಣ್ಯಕ) ಭಾಗ.

**ಏತರೇಯೋಪನಿಷತ್ ಐತರೇಯೋಪನಿಷತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಐತರೇಯಮಹರ್ಷಿಪ್ರೋಕ್ತವಾದ ಒಂದು ಉಪನಿಷತ್ತು. -ಭಾಷ್ಯಮ್ -ಭಾಷ್ಯಮ್. ಐತರೇಯೋಪನಿಷತ್ತಿಗೆ ಭಾಷ್ಯ ರೂಪವಾದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ.

**ಏತರೇಯಿನ್ ಐತರೇಯಿನ್ (ಪುಂ)** ಐತರೇಯಬ್ರಾಹ್ಮಣವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು.

**ಐತಿಹಾಸಿಕ ಐತಿಹಾಸಿಕ (ವಿಂ)** ಇತಿಹಾಸದಿಂದ ಬಂದ, ಚಾರಿತ್ರವಾದ, ಪೂರ್ವಕಾಲದಲ್ಲಿ ನಡೆದ ಕಥೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಮಹಾಪುರುಷರ ಜೀವನ ಚರಿತ್ರೆಯಿಂದ ಬಂದಿರುವ. ಇತಿಹಾಸ: ಪುರಾವತ್ತಮ್, ತತ ಆಗತ: "ಠಕ್" (೪-೩-೭೪)।

**ಐತಿಹ್ಯ ಐತಿಹ್ಯ (ನಂ)** ಪೂರ್ವದಿಂದ ಪರಂಪರೆಯಾಗಿ ಬಂದಿರುವ ಉಪದೇಶ. ಇತಿ ಹ ಪಾರಂಪರ್ಯೋಪದೇಶ: ಸ್ವಾತ್ "ಐತ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪)। "ಈ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಮಹಾಮಹಿಮರಾದ ತಪಸ್ವಿಯೊಬ್ಬರು ಅದೃಶ್ಯರಾಗಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿರುವರು" ಇತ್ಯಾದಿ ಪೂರ್ವದಿಂದಲೂ ಕಿವಿಯಿಂದ ಕಿವಿಗೆ ಬಂದ ಮಾತು ಐತಿಹ್ಯವೆನಿಸುವುದು.

**ಐದಂಪರ್ಯ ಐದಂಪರ್ಯ (ನಂ)** ಉದ್ದೇಶ, ತಾತ್ಪರ್ಯ, ಮುಖ್ಯವಿಷಯವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಇದಂಪರಸ್ಯ ಭಾವ: "ಐತ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ಇದಂ ತ್ವದಂಪರ್ಯಂ ಯದ್ವತ ನೃಪತೇನಮಸಚಿವ: ಸುತಾದಾನಾಮಿತ್ರಂ ಭವತು ಸ ಭವಾನಂದನ ಇತಿ" ಮಾಲತೀಂ ೨-೭।

**ಐದ್ಯುಗೀನ ಐದಂಯುಗೀನ (ವಿಂ)** ಈ ಯುಗಕ್ಕೆ ಒಳ್ಳೆಯ ದಾಗಿರುವ, ಈ ಯುಗಕ್ಕೆ ತಕ್ಕದಾಗಿರುವ. ಇದ್ಯುಗೋ ಸಾಧು "ಐತ್" (೪-೪-೯೯)।

**ಐಂದವ ಐಂದವ (ಪುಂ)** 1. ಚಂದ್ರಮಾಸ. ಇಂದೋರಯಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಐಂದವಾಸ್ತಿಥಯಸ್ತದ್ವತ್ ಸಂಕ್ರಾಂತ್ಯಾ ಸೌರ ಉಚ್ಯತೇ" ಸುಂ ಸಿಂ. 2. ಚಂದ್ರದೇವತಾಕವಾದ ಮೃಗ ಶೀರ್ಷನಕ್ಷತ್ರ. ಇಂದ್ರದೇವತಾ ಅಸ್ಯ. (ನಂ) 3. ಚಂದ್ರಾಯಣ ವೃತ್ತ. "ಸಂಕ್ರಾಂತಿಪಾತ್ರಕೃತ್ಯಾಸು ಮಾಸಂ ಶೋಧನಮೇಂದವಮ್" ಮನುಂ ೧೧-೧೨೪. 4. ಇಂದ್ರದೇವತಾಕವಾದ ಹವಿಸ್ಸು. (ವಿಂ) 5. ಚಂದ್ರಸಂಬಂಧವಾದ. "ದಲಯತಿ ಪರಿಣುಷ್ಯತ್-ಪ್ರೌಢತಾಲಿವಿಪಾಂಡುಸ್ತಿಮಿರನಿಕರಮುಖೈನಂದವ: ಪ್ರಾಕ್ಪ್ರಕಾಶ:" ಮಾಲತೀಂ ೮-೧। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೧೪)। -ವೀ-ವೀ.

**ಐಂದ್ರ ಐಂದ್ರ (ಪುಂ)** 1. ಇಂದ್ರನ ಮಗ — (1) ಅರ್ಜುನ. (2) ವಾಲಿ. (3) ಜಯಂತ. ಇಂದ್ರಸ್ಯಾಯಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)। (ನಂ) 2. ಇಂದ್ರದೇವತಾಕವಾದ ಹವಿಸ್ಸು. 3. ಇಂದ್ರದೇವತಾಕವಾದ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾನಕ್ಷತ್ರ. ಇಂದ್ರೋ ದೇವತಾಸ್ಯ "ಅಞ್" (೪-೨-೨೪)। (ವಿಂ) 4. ಇಂದ್ರಸಂಬಂಧವಾದ. ಇಂದ್ರಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಮಹೀತಲಸ್ಪರ್ಶನ-ಮಾತ್ರಸಿಂಹಮೃಡ್ವಂ ಹಿ ರಾಜ್ಯಂ ಪದಮೇಂದ್ರಮಾಹು:" ರघುಂ ೨-೪೦। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೧೪)। **ಐಂದ್ರೀ ಐಂದ್ರೀ (ವಿಂ)** 1. ಇಂದ್ರ ಸಂಬಂಧವಾದ ದಿಕ್ಕು, ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕು. "ಅಯಮೇಂದ್ರೀಮುಖಂ ಪಶ್ಯ ರಕ್ತಶ್ಚುಂಬತಿ ಚಂದ್ರಮಾ:" ಚಂದ್ರಾಂ. 2. ಶಚೀದೇವಿ. 3. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 4. ಯಾಲಕ್ಕಿ.

**ಐಂದ್ರಜಾಲಿಕ ಐಂದ್ರಜಾಲಿಕ (ವಿಂ)** ಮಾಯಾವಿ, ಇಂದ್ರ ಜಾಲವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಬಲ್ಲವನು, ಯಕ್ಷಿಣಿಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಇಂದ್ರಜಾಲೇನ ಜೀವತಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೨)। "ಕಾಂಚನಮಾಲೇ, ಉಜ್ಜಯಿನೀತ: ಆಗತ ಇತ್ಯಸ್ತಿ ಮೇ ತಸ್ಮಿನ್ನೇಂದ್ರಜಾಲಿಕೇ ಪಕ್ಷಪಾತ:" ರತ್ನಾಂ ೪।



ಐಂದ್ರನಿಲ ಐಂದ್ರನೀಲ (ವಿಂ) ಇಂದ್ರನೀಲಸಂಬಂಧವಾದ. ಇಂದ್ರನೀಲಮಣಿಯಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ.

ಐಂದ್ರಲೂಪಿಕ ಐಂದ್ರಲೂಪಿಕ (ನಂ) 1. ಬಟ್ಟತಲೆ. (ವಿಂ) 2. ಖಲ್ವಾಟ, ಬಟ್ಟತಲೆಯವನು. ಇಂದ್ರಲೂಪೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠ್" (೪-೧-೨೯)। ತದಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅವ್" (೪-೨-೧೨೭)।

ಐಂದ್ರಾಗ್ನಿ ಐಂದ್ರಾಗ್ನಿ (ವಿಂ) ಇಂದ್ರ ಮತ್ತು ಅಗ್ನಿದೇವತಾಕವಾದ ಹವಿಸ್ಸು ಮೊದಲಾದುದು. ಇಂದ್ರಾಗ್ನಿ ದೇವತೇಸ್ಯ "ಅನ್" (೪-೨-೨೪)।

ಐಂದ್ರಾಪೌಷ್ಣ ಐಂದ್ರಾಪೌಷ್ಣ (ವಿಂ) ಇಂದ್ರ ಮತ್ತು ಪೌಷ್ಣ ದೇವತಾಕವಾದ ಹವಿಸ್ಸು ಮೊದಲಾದುದು. ಇಂದ್ರಶ್ಚ ಪೌಷಾ ಚ ದೇವತೇಸ್ಯ "ಅನ್" (೪-೨-೨೪)। "ಆನಙ್" (೬-೩-೨೬)।

ಐಂದ್ರಾಮಾರುತ ಐಂದ್ರಾಮಾರುತ (ವಿಂ) ಇಂದ್ರ ಮತ್ತು ಮರುತ್ ದೇವತಾಕವಾದ ಹವಿಸ್ಸು ಮೊದಲಾದುದು. ಇಂದ್ರಶ್ಚ ಮರುತಶ್ಚ ದೇವತಾ ಅಸ್ಯ "ಅನ್" (೪-೨-೨೪)। "ಆನಙ್" (೬-೩-೨೬)।

ಐಂದ್ರಿ ಐಂದ್ರಿ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರನ ಮಗ - (1) ಜಯಂತ, (2) ಅರ್ಜುನ, (3) ವಾಲಿ. 2. ವಾಯುಸ, ಕಾಗೆ. ಇಂದ್ರಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಙ್" (೪-೧-೯೫)। "ಐಂದ್ರಿ: ಕಿಲ ನಕ್ಷೇಸ್ತಸ್ಯಾ ವಿದದಾರ ಸ್ತನೌ ದ್ವಿಜ:" ರಘುಂ ೧೨-೨೨।

ಐಂದ್ರಿಯಕ ಐಂದ್ರಿಯಕ (ವಿಂ) ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾದ, ಇಂದ್ರಿಯ ಗಳಿಂದ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ. ಇಂದ್ರಿಯೇಣ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ವು" (೪-೨-೮೦)। "ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಂ ಸ್ಯಾದೇಂದ್ರಿಯಕಮಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಮತೀಂದ್ರಿಯಮ್" ಅಮಂ।

ಐರ ಐರ (ವಿಂ) 1. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. 2. ಜಲದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಇರಾಂ ಭೂಮಿ ಜಲೇ ವಾ ಭವ: "ಅನ್" (೪-೩-೫೩)।

ಐರಾವಣ ಐರಾವಣ (ಪುಂ) 1. ಐರಾವತ, ಇಂದ್ರನ ಆನೆ. ಇರಾ ಸುರಾ ವನಮುಧಕಂ ಯತ್ರ ಇರಾವಣಮ್। ತತ್ರ ಭವ: "ಅನ್" (೪-೩-೫೩)। ಇರಾ ವಣತೇ ಶಬ್ದಾಯತೇ ಇತಿ ಇರಾವಣ: ಸಮುದ್ರ:। ತತ್ರ ಭವ: "ಅನ್" (೪-೩-೫೩) ಇತಿ ವಾ। 2. ಒಂದು ಸರ್ಪ.

ಐರಾವತ ಐರಾವತ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರನ ಆನೆ. ಇರಾ ಜಲಂ ಭುಮ್ನಾಸ್ತೀತ "ಮತು" (೪-೨-೯೪)। ಇರಾವಾನ್ ಸಮುದ್ರ:। ತತ್ರ ಭವ: "ಅನ್" (೪-೩-೫೩)। "ಪ್ರಾವೃಷೇಷ್ಯಂ ಪಯೋವಾಹಂ ವಿಶ್ವದೇರಾವತಾವಿವ" ರಘುಂ ೧-೩೬। 2. ಒಂದು ದಿಗ್ಗಜ, ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವ ಒಂದು ಆನೆ. 3. ಒಂದು ಸರ್ಪ. 4. ಇರಾವತನ ಮಗ. 5. ಗಜನಿಂಬಿ ಗಿಡ.

6. ಹೇರಿಗೆ ಗಿಡ. (ನಂ) 7. ನೆಟ್ಟಗೂಲುದ್ದಕ್ಕೂ ಇರುವ ಇಂದ್ರನ ಧನುಸ್ಸು. ಇರಾವತಿ ಮೇಘ ಭವ: "ಅನ್" (೪-೩-೫೩)। ಮೇದಿಂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವತಿ -ವತಿಃ. 1. ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು. 2. ಐರಾವತ ದಿಗ್ಗಜದ ಪತ್ನಿ. 3. ಪಂಜಾಬಿನಲ್ಲಿರುವ "ರಾವಿ" ಯೆಂಬ ಒಂದು ನದಿ.

ಐರೇಯ ಐರೇಯ (ನಂ) ಮದ್ಯ, ಸುರೆ, ಹೆಂಡ.

ಐಲ ಐಲ (ಪುಂ) ಇಳಿಯ ಮಗ, ಪುರೂರವಸ್ಸು. ಇಲಾಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೧೩)।

ಐಲಬಿಲ ಐಲಬಿಲ (ಪುಂ) ಕುಬೇರ, ಇಲಬಿಲೆಯ ಮಗ. ಇಲಬಿಲಾಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೧೩)। "ಅವ-ಲಮ್ಬಿತೇಲಬಿಲಪಾಣಿಪಲ್ಲವ: ಶ್ರಯತಿ ಸ್ಮ ಮೇಘಮಿವ ಮೇಘವಾಹನ:" ಮಾಘಂ ೧೩-೧೮।

ಐಲೇಯ ಐಲೇಯ (ಪುಂ) ಕುಜಗ್ರಹ, ಇಳಿಯ ಮಗ, ಭೂಮಿಯ ಮಗ. ಇಲಾಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಠ್" (೪-೧-೧೨೦)।

ಐಶ ಐಶ (ವಿಂ) 1. ಶಿವಸಂಬಂಧವಾದ. ಇಶಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಅಥ ನಯನಸಮುತ್ಥಂ ಜ್ಯೋತಿರತ್ತೇರಿವ ದೌ: ಸುರಸರಿದಿವ ತೇಜೋ ವಹ್ನಿನಿಷ್ಠಾತಮೇಶಮ್" ರಘುಂ ೨-೭೫। 2. ರಾಜನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)।

ಐಶಿ ಐಶಿಃ.

ಐಶಾನ ಐಶಾನ (ವಿಂ) 1. ಶಿವನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಇಶಾನ-ಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। 2. ಈಶಾನದಿಕ್ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಉತ್ತರಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। ಐಶಾನಿ ಐಶಾನಿಃ.

ಐಶಿ ಐಶಿ (ಪುಂ) 1. ಈಶ್ವರನ ಮಗ, ಷಣ್ಮುಖ. ಇಶಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಙ್" (೪-೧-೯೫)। "ಮಹೇಶಕಂಠೋರಗದಂತಪತ್ನಿ ತದಕ್ಷುಗ: ಶೇಷವಮೋಗ್ಯಮೇಶಿ:" ಕುಮಾರಂ ೧೧-೪೫। 2. ಗಣಪತಿ, ವಿನಾಯಕ.

ಐಶ್ವರ ಐಶ್ವರ (ವಿಂ) 1. ಈಶ್ವರಸಂಬಂಧವಾದ. ಇಶ್ವರಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ವಿದ್ವಿ ಚಾತ್ತಬಲಮೋಜಸಾ ಹರೇಶ್ವರಂ ಧನುರಭಾಜಿ ಯತ್ವಯಾ" ರಘುಂ ೧೧-೭೬। 2. ಈಶ್ವರನಿಂದ ಬಂದ, ಈಶ್ವರನಿಂದ ಉಂಟಾದ. 3. ಯಜಮಾನನಿಂದ ಬಂದ, ಯಜಮಾನನಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಇಶ್ವರ-ದಾಗತ: "ಅನ್" (೪-೩-೭೪)। 4. ಯಜಮಾನನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ರಿ -ರಿಃ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

ಐಶ್ವರ್ಯ ಐಶ್ವರ್ಯ (ನಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ, ಪಾರಮ್ಯ. 2. ಪ್ರಭುತ್ವ, ಪರಮಾಧಿಕಾರ. ಇಶ್ವರಸ್ಯ ಭಾವ: "ಐಶ್ವ" (೪-೧-೧೨೪)। "ಏಕೈಶ್ವರ್ಯೇ ಸ್ಥಿತೋಽಪಿ ಪ್ರಣತಬಹುಫಲೇ ಯ:



ಸ್ವಯಂ ಕೃತಿವಾಸಾ: "ಮಾಲಂ ೧-೧. 2. ಸಂಪತ್ತು, ಭಾಗ್ಯ, ಧನ, ಹಣ. "ಮೂರ್ಚಂತ್ಯಮಿ ವಿಕಾರಾ: ಪ್ರಾಯೇಶ್ವಯಮತ್ಯೇಷು" ಶಾಕುಂ ೪-೧೮. 3. ಅಣಮಾದಿ ಎಂಟು ವಿಧ ಸಿದ್ಧಿಗಳು, ಅಮಾನುಷ ಶಕ್ತಿ.

ಔಷ್ವಯವತ್ ಐಶ್ವರ್ಯವತ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂಪತ್ತು, ಹಣ ವಂತ, ಧನಿಕ. ಔಷ್ವಯಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪). 2. ಪರಮಾಧಿಕಾರವುಳ್ಳ. 3. ಅಣಮಾದಿ ಅಷ್ಟಸಿದ್ಧಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). -ವತಿ-ವತೀ.

ಔಷಮಸ್ ಐಷಮಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಈ ವರ್ಷ, ವರ್ತಮಾನ ವರ್ಷ, ಈಗ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ ವರ್ಷ. ಇದಮ್ "ಸಮಸಣ್" (೪-೩-೨೨).

ಔಷಮಸ್ತನ ಐಷಮಸ್ತನ (ವಿಂ) ಈ ವರ್ಷದಲ್ಲಿರುವ, ಈ ವರ್ಷದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಔಷಮಸ್ ಭವ: ವಾ "ಡ್ಯು:" (೪-೨-೧೦೪). ಪಕ್ಷೇ "ಲ್ಯಪ್" (೪-೨-೧೦೪). ಔಷಮಸ್ತ: ಐಷಮಸ್ತು.

ಔಷಿಕ ಐಷೀಕ (ನಂ) 1. ಜೊಂಡಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಒಂದು ಅಸ್ತ್ರ. 2. ಮಹಾಭಾರತದ ಸೌಪ್ತಿಕಪರ್ವದ ಒಂದು ಅವಾಂತರಪರ್ವ.

ಔಷುಕಾರಿ ಐಷುಕಾರಿ (ಪುಂ) ಇಷುಕಾರನ ಮಗ, ಬಾಣಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನ ಮಗ. ಇಷುಕಾರಸ್ಯ ಅಪत्यಮ್ "ಇಷ್" (೪-೧-೧೪).

ಔಷುಕಾರಿಭಕ್ತ ಐಷುಕಾರಿಭಕ್ತ (ಪುಂ) ಐಷುಕಾರಿಗಳು ವಾಸಮಾಡುವ ದೇಶ. ಔಷುಕಾರಿಣಾಂ ವಿಷಯೋ ದೇಶ: "ಭಕ್ತಲ್" (೪-೨-೪೪).

ಔಷ್ಠಿಕ ಐಷ್ಠಿಕ (ವಿಂ) 1. ಇಷ್ಟಿಸಂಬಂಧವಾದ, ಯಾಗಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ (ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ). ಇಷ್ಟೇವ್ಯಾಖ್ಯಾನೋ ಗ್ರಂಥ: "ಠಕ್" (೪-೩-೬೮). 2. ಯಾಗಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಇಷ್ಟೌ ಸಾಧು: "ಠಕ್" (೪-೪-೧೦೨). 3. ಯಾಗಕ್ಕೆ ಸಮರ್ಥನಾದ. ಇಷ್ಟೇ ಪ್ರಭವತಿ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೧).

ಔಹಲೋಕಿಕ ಐಹಲೋಕಿಕ (ವಿಂ) 1. ಇಹಲೋಕದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ಈ ಲೋಕಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಇಹಲೋಕೇ ಭವ: "ಠಕ್" (ವಾಂ ೪-೩-೬೦). ತುಭಯಪದವೃದ್ಧಿ: (೭-೩-೨೦).

ಔಹಿಕ ಐಹಿಕ (ವಿಂ) ಇಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ಈ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿರುವ, ಈ ಲೋಕದಲ್ಲಿರುವ. ಇಹ ಭವ: "ಠಕ್" (ವಾಂ ೪-೩-೬೦). "ಕವಚಿದ್ವಿಮವದೇಹಿಕಾರ್ಯೇಷು ಗೃಹೇಷು ರಸ್ಯನ್ ಯಥಾ ವಾನರ: ಸುತದಾರವತ್ಸಲೋ ವ್ಯವಾಯುಷಣ:" ಭಾಗಂ ೪-೧೪-೩೨.

ಇತಿ "ಔ" ಕಾರಾವಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್.

## ಔ

ಔ ಓ ವರ್ಣಮಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಇದು ಕಂಠ ಮತ್ತು ಓಷ್ಠ ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಅಭ್ಯಂತರ ವಿವೃತ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಒಂದು ದೀರ್ಘಸ್ವರವರ್ಣ. ಉದಾತ್ತಾನುದಾತ್ತಸ್ವರಿತಗಳೆಂಬ ಭೇದಗಳಿಂದ ಮೂರು ವಿಧವಾದ ಇದು ಅನುನಾಸಿಕ ಮತ್ತು ಅನನುನಾಸಿಕಗಳೆಂಬ ಭೇದಗಳಿಂದ ಒಟ್ಟು ಆರು ವಿಧವಾಗುವುದು. ಇದರಂತೆಯೇ ಪುಂಸ್ವರವೂ ಆರು ವಿಧ.

ಔ ಓ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ. "ಔಕಾರಸ್ತು ಭವೇದ್ಬ್ರಹ್ಮ" ಏಕಾಂ. 2. ಸಂಬೋಧನೆ. 3. ಆಹ್ವಾನ, ಕರೆ. 4. ಸ್ಮರಣೆ, ಸ್ಮೃತಿ, ನೆನಪು. 5. ದಯೆ ತೋರಿಸುವಿಕೆ. "ಔ ಸಮ್ಬೋಧನ ಆಹ್ವಾನೇ ಸ್ಮರಣೇ ಚಾನುಕಂಪನೇ" ಮೇದಿಂ.

ಔಕ ಓಕ (ಪುಂ) 1. ಮನೆ, ಗೃಹ. 2. ಆಶ್ರಯಸ್ಥಾನ, ರಕ್ಷಣೆಯ ಜಾಗ. 3. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. 4. ಶೂದ್ರ, ವೃಷಲ.

ಔಚ (ಸಮವಾಯೇ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೪). ನಿಪಾಂ (೭-೩-೬೪). "ಔಕ: ಶಕುಂತಲವೃಷಲೌ" ಸಿಂ ಕೌಂ.

ಔಕಸ್ ಓಕಸ್ (ನಂ) 1. ಗೃಹ, ಮನೆ. 2. ಆಶ್ರಯಸ್ಥಾನ, ರಕ್ಷಣೆಯ ಜಾಗ. ಔಚ (ಸಮವಾಯೇ) "ಅಸುನ್" (ತಂ ೪-೧೮೮).

ಔಕಣ (ಣಿ) ಓಕಣ (ಣಿ) (ಪುಂ) 1. ತಿಗಣೆ. 2. ಹೇನು, ಕೂರೆ.

ಔಕುಲ ಓಕುಲ (ಪುಂ) ಅರ್ಧ ಹುರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ ಗೋಧಿ. "ಔಕುಲಸ್ತು ಗುರ್ವೃಷ್ಯೋ ಮಧುರೋ ಬಲಕಾರಕ: ರಕ್ತಪಿತ್ತಾಪಹ: ಸ್ನಿಗ್ಧೋ ಹೃದ್ರೋ ಮದವಿವರ್ಧನ:" ರಾಜನಿಂ.

ಔಕೋದನಿ ಓಕೋದನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೇನು, ಕೂರೆ. 2. ತಿಗಣೆ. ಔಕ: ಆಶ್ರಯಸ್ಥಾನಮದನಂ ಭಕ್ಷ್ಯಂ ಯಸ್ಯಾ:.



**ಅಂಕ ಓಂ** (ಪುಂ) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು, ರಾಶಿ. ಆ +  
ಉಹತೇಜೇನ—ವಹ (ಪ್ರಾಪಣ) “ವಹ” (೩-೩-೧೨೧)।  
“ಅಂಕವಿಧ್ವಂಸವಿಧಿ ಪಟಿಯಸಿನಂತೇನ ಮೂರ್ನಾ ಹರಿಸ್ರಹೀದಪಃ”  
ಮಾಘಂ ೧-೧೮। 2. ಜಲಪ್ರವಾಹ, ನೀರಿನ ವೇಗ.  
“ಪುನರೋನ ಹಿ ಯುಜ್ಯತೇ ನದಿ” ಕುಮಾರಂ ೪-೪೪। 3. ಪರಂ  
ಪರ. 4. ದೃಢತೆ. 5. ಉಪದೇಶ, ಬೋಧನೆ. “ಅಂಕ  
ವೇಗೇ ಜಲಸ್ಯ ಚ। ವೃಂದೇ ಪರಂಪರಾಂ ಚ ದ್ವಿತೀಯೋಪದೇಶಯೋಃ”  
ಮೇದಿಂ।

**ಅಂಕಾರ ಓಂಕಾರ** (ಪುಂ) 1. “ಓಮ್” ಎಂಬ ಅಕ್ಷರ,  
ಪ್ರಣವ. [ಪ್ರಣವವು ವೇದಾಧ್ಯಯನದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ  
ಮತ್ತು ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ, ಮಂತ್ರಗಳ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಮತ್ತು  
ಗ್ರಂಥಗಳ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಡುವುದು.] “ಅಂಕಾರಂ  
ಪೂರ್ವಮುಚ್ಚಾರ್ಯ ಪಶ್ಚಾದೇವಮಧೀಯತೇ” ಸ್ಮೃತಿಃ। 2. ಪರಬ್ರಹ್ಮ.  
[ಪ್ರಣವದ ಜಪದಿಂದ ತದ್ವಾಚ್ಯವಾದ ಪರಬ್ರಹ್ಮಭಾವನೆಯುಂಟಾಗಿ ಬ್ರಹ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವಾಗುವುದರಿಂದ “ಓಂ”  
ಕಾರವು ಪರಬ್ರಹ್ಮ.] ಮತ್ತು ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ  
ಇದರ ಪ್ರಯೋಗ. 3. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. 4. ಅಂಗೀ  
ಕಾರ, ಸಮ್ಮತಿ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. “ಅಮಿತೈಶ್ಚ ತತೋಽಪಿ ಶಾಸ್ತ್ರೇಣ ಇತಿ  
ವ್ಯಾಹೃತ್ಯ ವಾಚಂ ನಮಃ” ಮಾಘಂ ೧-೭೫। 5. ಅನುಮತಿ,  
ಅಪ್ಪಣೆ. 6. ಅಪಾಕೃತಿ, ನಿರಾಕರಣೆ. ಮೇದಿಂ।

**ಅಂಕ ಓಂ** (ಪುಂ) 1. ಅಯುಗ್ಮ, ವಿಷಮ, ಬೆಸ; 1, 3,  
5, 7, 9 ಇತ್ಯಾದಿ. 2. ಮೇಷಾದಿ ಹನ್ನೆರಡು ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ  
1, 3, 5, 7, 9, 11 ಈ ಬೆಸರಾಶಿಗಳು.

**ಅಂಕಸ್ ಓಂ** (ನಂ) 1. ದೀಪ್ತಿ, ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. ಉಜ್ಜ  
(ಅರ್ಜವೇ) “ಅಸುನ್” ಬಲೋಪಶ್ಚ (ಉಂ ೪-೧೨೨)। 2. ಶರೀರ  
ಬಲ, ಶಕ್ತಿ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. “ಅಂಕಸಾಪಿ ಖಲು ನೂನಮನುನಂ  
ನಾಸಹಾಯಮುಪಯಾತಿ ಜಯಶ್ರೀಃ” ಕಿರಾಂ ೧-೩೩। 3. ಚೈತನ್ಯ,  
ಪ್ರಾಣಬಲ, ಧಾತುವಿನ ತೇಜಸ್ಸು. 4. ಆಶ್ರಯ, ಆಧಾರ,  
ಒತ್ತಾಸೆ. “ಅಂಕೋ ದೀಪ್ತಾವವಷ್ಟಮೇ ಪ್ರಕಾಶಬಲಯೋರಪಿ”  
ಮೇದಿಂ। 5. (ಅಲಂಕಾರ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಸಮಾಸಬಾಹುಳ್ಯ,  
ದೊಡ್ಡ ಸಮಾಸಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ; ಇದೊಂದು ಕಾವ್ಯ  
ಗುಣ. “ಅಂಕಃ ಸಮಾಸಭೂತ್ವಮೇತದ್ಗದ್ಯಸ್ಯ ಜೀವಿತಮ್”  
ಕಾವ್ಯಾಂ ೧-೮೦। 6. (ಜ್ಯೋತಿಃಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) 1, 3,  
5, 7, 9, 11 ಈ ಬೆಸರಾಶಿಗಳು. 7. ವೀರ್ಯವತ್ತಾದ  
ಪದಗಳ ಜೋಡಣೆ, ಜೋರಾದ ವಾಕ್ಸರಣೆ,  
ಸಂಯುಕ್ತಾಕ್ಷರಗಳಿಂದಲೂ ನಿರಂತರವಾದ ರೇಫಸಹಿತ  
ವರ್ಣಗಳಿಂದಲೂ ವರ್ಣಗಳ 1, 2 ನೆಯ, 3, 4 ನೆಯ,  
1, 3 ನೆಯ ಅಕ್ಷರಗಳ ನಿರಂತರವಾದ ಜೋಡಣೆಯಿಂದಲೂ  
ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. 8. ಜಲ, ನೀರು.

**ಅಂಕಸೀನ ಓಂಸೀನ** (ವಿಂ) ಬಲಿಷ್ಠವಾದ, ಬಲಶಾಲಿ  
ಯಾದ, ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಅಂಕಸ್ “ಉಃ” (೪-೪-  
೧೩೦)। “ಯತ್” (೪-೪-೧೩೦)। ಅಂಕಸ್ಯಮ್ ಓಂಸ್ಯಮ್.  
ಅಂಕಸ್ವತ್ ಓಂಸ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಬಲಶಾಲಿ, ಶಕ್ತಿಯಂತ, ಪರಾ  
ಕ್ರಮಿ. ಅಂಕೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಃ” (೫-೨-೧೪)।

**ಅಂಕಸ್ವಿನ್ ಓಂಸ್ವಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಬಲಶಾಲಿ, ಶಕ್ತಿಯಂತ,  
ಪರಾಕ್ರಮಿ. ಅಂಕೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ವಿನಿಃ” (೫-೨-೧೨೧)।  
“ಅಂಕೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ ಸುರಸಾಂಪರಾಂಪರೋಽಂಕಸ್ವಿನಾಂ ಶಸ್ತ್ರಮೃತಾಮೃತಂ”  
ಯಾದಂ ೨೩-೪೬। 2. ಸಮಾಸಭೂತವಾದ, ದೀರ್ಘ  
ಸಮಾಸಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. “ಅಂಕಸ್ವಿನ್ಯೋಽಂಕಸ್ವಿನಾಂ  
ಪ್ರಸಾದಿನೋಽಂಕಸ್ವಿನಾಂ ಗೋತ್ರಸಂವಿದಃ” ಮಾಘಂ ೧೨-೩೫। 3. ಪ್ರಕಾಶ  
ವುಳ್ಳ, ಹೊಳೆಯುವ.

**ಅಂಕಿಣ ಓಂಕಿಣ** (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಬಲಶಾಲಿಯಾದ, ಬಹಳ  
ಶಕ್ತಿಯಂತನಾದ. ಅತಿಶಯೇನ ಅಂಕಿಣಿ “ಓಂಕಿಣಿ”  
(೫-೩-೫೫)।

**ಅಂಕ ಓಂ** (ಪುಂ) 1. ದಾಸವಾಳದ ಗಿಡ. 2. ಉತ್ಕಲ  
ದೇಶ, ಈಗಿನ ಒರಿಸ್ಸಾ ದೇಶ. (ಪುಂವಂಶಂ) 3. ಉತ್ಕಲ  
ದೇಶನಿವಾಸಿಗಳು. “ಪೌಂಡ್ರಕಾಶ್ವಿಂಶದ್ರವಿಡಾಃ ಕಾಮ್ಬೋಜಾ  
ಯವನಾಃ ಶಕಾಃ” ಮನುಂ ೧೦-೪೪। (ನಂ) 4. ಜಪಾ  
ಕುಸುಮ, ದಾಸವಾಳದ ಹೂವು. “ಅಂಕಃ ಪುಂಭೂಮಿ ನಿವೃತಿಃ।  
ಅಂಕಸ್ತು ತರಭೇದೇ ಸ್ಯಾತ್” ಮೇದಿಂ।

**ಅಂಕದೇಶ ಓಂದೇಶ** (ಪುಂ) ಒರಿಸ್ಸಾ ದೇಶ.

**ಅಂಕಪುಷ್ಪ ಓಂಪುಷ್ಪ** (ನಂ) ಜಪಾಕುಸುಮ, ದಾಸವಾಳದ  
ಹೂವು.

**ಅಂಕ-ಅಪನಯನ** (ಮಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) ಅಂಕತಿ।  
ಅಂಕಾಚ್ಚಕಾರ। ಅಂಕಿತಾ। ಅಂಕಿತ್। 1. ಸಾಗಿಸು,  
ಬೇರೆ ಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯು. 2. ತೆಗೆದು ಹಾಕು, ತೆಗೆದು ಬಿಡು.  
3. ಹೋಗಲಾಡಿಸು, ತೀರಿಸು. 4. ಸರಿಸು, ದೂರ  
ಮಾಡು.

**ಅಂಕ ಓಂ** (ಸ್ತ್ರೀಂ ದ್ವಿವಂ) 1. ಭೂಮಿ ಮತ್ತು ಸ್ವರ್ಗ.  
ಅಂಕ (ಅಪನಯನ) “ಇನ್” (ಉಂ ೪-೧೧೭)। (ವಿಂ) 2.  
ಸಾಗಿಸುವ, ಒಯ್ಯುವ. 3. ತೆಗೆದುಹಾಕುವ. 4. ನಿವಾರಿ  
ಸುವ, ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ.

**ಅಂಕ ಓಂ** (ನಂ) 1. ಹಾಸುದಾರ, ಬಟ್ಟೆ ನೇಯಲು  
ಹಾಕುವ ಉದ್ದದ ದಾರ. (ವಿಂ) 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪೋಣಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೇಯಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ದಾರದಿಂದ  
ಹೊಲಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ವೇ (ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) “ಕ್ತಃ”  
(೩-೨-೧೦೨)।



ಆತಪ್ರೋತ ಓತಪ್ರೋತ (ವಿಂ) 1. ಹಾಸುಹೊಕ್ಕು ಹಾಕಿ ನೇಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಉದ್ದವಾಗಿ ಮತ್ತು ಅಡ್ಡಲಾಗಿ ದಾರ ಎಳೆದು ನೇಯಲ್ಪಟ್ಟ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಹಾಸುಹೊಕ್ಕಾಗಿ, ಉದ್ದಕ್ಕೆ ಮತ್ತು ಅಡ್ಡಲಾಗಿ ಸರ್ವತ್ರ ವ್ಯಾಪಿಸಿ.

ಆತು ಓತು (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಿಡಾಲ, ಮಾರ್ಜಾರ, ಬೆಕ್ಕು. ಅವತಿ ಗೃಹಮಾಖ್ಯಮ್ಯ:—ಅವ (ರಕ್ಷಣೆ) “ತುನ್” (ತಂ ೧-೬೯)। “ಠ್” (೬-೪-೨೦)। 2. ನೇಯ್ಗೆಯ ಹಾಸುದಾರ. ಆ + ವೇ (ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) “ತುನ್”।

ಆದನ ಓದನ (ಪುಂ) 1. ಅನ್ನ. ತನ್ತಿ—ತಂದಿ (ಕಲೆದನೆ) “ಯುಕ್” (ತಂ ೨-೭೭)। ದಧ್ಯೋದನಮ್, ಗುಡೋದನಮ್। “ಗುಡೋದನಂ ಪಾಯಸಂ ಚ ಹವಿಷ್ಯಂ ಕ್ಷೀರಪಾಷ್ಠಿಕಮ್। ದಧ್ಯೋದನಂ ಹವಿಶ್ಚೂರ್ಣಂ ಮಾಸಂ ಚಿತ್ರಾನ್ನಮೇವ ಚ” ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೩೦೪। 2. ಮೇಘ, ಮೋಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆದನಿ ಓದನೀ. 3. ಕಳ್ಳಂಗಡಲೆ.

ಆದನಪಾಕಿ ಓದನಪಾಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀಲಿಹೂವಿನ ಗೋರಂಟಿ ಗಿಡ. ಆದನಸ್ಯ ಪಾಕ ಇವ ಪಾಕೋ ಯಸ್ಯಾ: “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬೪)।

ಆದನಪಾಣಿನೀಯ ಓದನಪಾಣಿನೀಯ (ಪುಂ) ಅನ್ನ (ಊಟ)ಕ್ಕಾಗಿಯೇ ಪಾಣಿನಿಯ ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು, ಊಟದ ಆಸೆಯಿಂದ ವ್ಯಾಕರಣವನ್ನು ಅಭ್ಯಾಸ ಮಾಡುವವನು. ಆದನಾರ್ಥ ಪಾಣಿನೀಯ:।

ಆದನೀಯ ಓದನೀಯ (ವಿಂ) ಅನ್ನಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಅನ್ನಕ್ಕೆ ಹಿತವಾದ. ಆದನ ವಾ “ಛ:” (೪-೧-೪)। ಪಕ್ಷೆ “ಯತ್”। ಆದನ್ಯ: ಓದನ್ಯ:।

ಆದ್ಯ ಓದ್ಯ (ಪುಂ) ನೆನೆಸುವುದು, ಒದ್ದೆಮಾಡುವುದು. ತಂದಿ (ಕಲೆದನೆ) “ಮನಿನ್” (ತಂ ೪-೧೪೪)। ನಲೋಪೋ ಗುಣಶ್ಚ ನಿಪಾಂ (೬-೪-೨೯)।

ಆಮ್ ಓಮ್ (ನಂ) 1. ಪರಬ್ರಹ್ಮ, ಪರಮಾತ್ಮ. ಆ ಕಾರ ತ ಕಾರ ಮ ಕಾರಗಳು ಸಾಕ್ಷಾತ್ ಪರಬ್ರಹ್ಮವಾಚಕ. “ತತ್ತೇ ಪದಂ ಸಂಗ್ರಹೇಣ ಬ್ರವೀಮಿ ಆಮಿತೀತತ್” ಕಠಂ। “ಆಮಿತೀ-ಕಾಕ್ಷರಂ ಬ್ರಹ್ಮ ವ್ಯಾಹರನ್ ಮಾಮನುಸ್ಮರನ್। ಯ: ಪ್ರಯಾತಿ ತ್ಯಜನ್ ದೇಹಂ ಸ ಯಾತಿ ಪರಮಾಂ ಗತಿಮ್” ಗೀತಾ ೮-೧೩। ಮದ್ವಾಚಕಂ ವ್ಯಾಹರನ್ ವಾಚ್ಯಂ ಮಾಮನುಸ್ಮರನ್ ಇತಿ ಶ್ರೀರಾಮಾನುಜಭಾಷ್ಯಮ್। ಬ್ರಹ್ಮಣ: ಅಭಿಧಾನಭೂತಂ ಆಂಕಾರಂ ವ್ಯಾಹರನ್ ತದರ್ಥಭೂತಂ ಮಾ ಇಶ್ವರಮ್ ಅನುಸ್ಮರನ್ ಇತಿ ಶ್ರೀಶಂಕರಭಾಷ್ಯಮ್। (ಅವ್ಯಂ) 2. ಪ್ರಣವ. ಅವತಿ—ಅವ (ರಕ್ಷಣೆ) “ಮನ್” (ತಂ ೧-೧೩೯)। ಟಿಲೋಪಶ್ಚ। “ಠ್” (೬-೪-೨೦)। ಈ ಪ್ರಣವಾಕ್ಷರವು (ಅಕಾರೋಕಾರಮಕಾರವರ್ಣತ್ರಯಾತ್ಮಕ:) ಆ ಕಾರ ತ ಕಾರ ಮತ್ತು ಮ ಕಾರ ಈ ಮೂರು ವರ್ಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರು

ವುದು. “ಅಕಾರೋ ವಿಷ್ಣುರ್ದಿಷ್ಟ: ತಕಾರಸ್ತು ಮಹೇಶ್ವರ:। ಮಕಾರೇಣೋಚ್ಯತೇ ಬ್ರಹ್ಮಾ ಪ್ರಣವೇನ ತ್ರಯೋ ಮತಾ:” ಈ ರೀತಿ ಬ್ರಹ್ಮವಿಷ್ಣುಮಹೇಶ್ವರರು ಪ್ರಣವಾಕ್ಷರವಾಚ್ಯರೆಂದು ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. “ಅಕಾರಂ ಚಾಪ್ಯುಕಾರಂ ಚ ಮಕಾರಂ ಚ ಪ್ರಜಾಪತಿ:। ವೇದತ್ರಯಾನ್ನಿರದ್ವಹತ್ ಭೂಭುವ:ಸ್ವರೀತಿ ತ್ರಿವಿಧಾ” ಮನುಂ ೨-೭೬। ಎಂಬ ವಚನದಿಂದ ಪ್ರಣವವು ಮೂರು ವೇದಗಳಿಂದಲೂ ಉದ್ಭೂತವಾಗಿದೆಯೆಂದು ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ. ಈ ಪ್ರಣವಾಕ್ಷರವು ವೇದಾಧ್ಯಯನದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲೂ ಕೊನೆಯಲ್ಲೂ ಹೇಳಲ್ಪಡುವುದು. ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತಿಗಳು “ಅಕಾರಾರ್ಥೋ ವಿಷ್ಣುರ್ಜಗದುದಯರಕ್ಷಾಪ್ರಲಯಕೃತ್ಮಕಾರಾರ್ಥೋ ಜೀವಸ್ತದ್ವುಪಕರಣಂ ವೇಣವಮಿದಮ್। ತಕಾರೋಽನ್ಯಾಹಂ ನಿಯಮಯತಿ ಸಂಬಂಧ-ಮನಯೋ: ತ್ರಯೀಸಾರಸ್ತ್ವಾತ್ಮಾ ಪ್ರಣವ ಇಮಮರ್ಥಂ ಸಮದಿಶತ್”। “ಅಕಾರೋ ವಿಷ್ಣುರ್ದಿಷ್ಟೋ ಮಕಾರೋ ಜೀವವಾಚಕ:। ತಯೋಸ್ತು ನಿಯತಸಂಬಂಧ ತಕಾರೇಣ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತ:” ಎಂಬ ವಚನಗಳಿಂದ ವೇದತ್ರಯಸಾರಭೂತವಾದ ಪ್ರಣವವು ಶೇಷನಾದ ಜೀವನಿಗೂ ಶೇಷಿಯಾದ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೂ ಇರುವ ನಿತ್ಯ ಸಂಬಂಧವನ್ನು ಹೇಳುವುದು ಎಂದು ಅಭಿಪ್ರಾಯ ಪಡುತ್ತಾರೆ. 3. ಮತ್ತು ಈ ಆಮ್ ಕಾರವು ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ ಸೂಚಕವಾಗುವುದು. (1) ಸ್ವೀಕಾರ, ಅಂಗೀಕಾರ, ಹಾಗೆಯೇ ಆಗಲಿ. “ಆಮಿತೀತತ್ವತೋಽಪಿ ಶಾಸ್ತ್ರೀಣ ಇತಿ ವ್ಯಾಹರಣ ವಾಚಂ ನಮ:” ಮಾಘಂ ೧-೭೫। (2) ಅನುಮತಿ. (3) ಪ್ರಾರಂಭ. “ಏಷ ತಾವದೋಕಾರ: ಸಕಲರಾಕ್ಷಸಸಂಹಾರ-ನಿಗಮಾಧ್ಯಯನಸ್ಯ” ಮಂ ಬೀಂ ೧। (4) ಶುಭ, ಮಂಗಳ. 5. ಅಪಾಕೃತಿ, ತಳ್ಳಿಹಾಕುವಿಕೆ, ತೆಗೆದುಹಾಕುವಿಕೆ. “ಆಮುಪ-ಕ್ರಮೇ। ಪ್ರಣವೇ ಚಾಮ್ಯುಪಗಮೇ ಚಾಪಾಕೃತೌ ಚ ಮಜ್ಜಲೇ” ಮೇದಿಂ। “ಆಂಕಾರ: ಸ್ಯಾದನುಮತೌ ಪರಮಾತ್ಮನುಪಕ್ರಮೇ” ನಾನಾರ್ಥರಂ।

ಆಮನ್ ಓಮನ್ (ಪುಂ) 1. ರಕ್ಷಣೆ, ಕಾಪಾಡುವುದು, ಸಾಹಾಯ್ಯಮಾಡುವುದು. 2. ದಯೆ, ಕರುಣೆ. ಅವ (ರಕ್ಷಣೆ) “ಮನಿನ್” (ತಂ ೪-೧೮೪)। 3. ಮಿತ್ರ, ಸ್ನೇಹಿತ, ಗೆಳೆಯ.

ಆಮನ್ವತ್ ಓಮನ್ವತ್ (ವಿಂ) 1. ರಕ್ಷಣೆಯುಳ್ಳ, ಸಾಹಾಯ್ಯವುಳ್ಳ. ಆಮಾ ವಿಧತೇಸ್ಯ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪)।

ಆಲ ಓಲ (ಪುಂ) 1. ಸೂರಣಗಡ್ಡೆ. ಆಲತಿ— ಆ + ತಂದಿ (ಕಲೆದನೆ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೫)। ಪೃಷೋಂ। (ವಿಂ) 2. ತೇವವಾದ, ಒದ್ದೆಯಾದ. “ಆತ್ಮಸೂರಣಯೋರಾಲ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಆಲಡಿ—ತಕ್ಷೇಪೆ (ವಾ ಚುರಾಂ ತಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) ಆಲಂಡ-ಯತಿ, -ತೆ। ಆಲಂಡತ್, -ತೆ। ಪಕ್ಷೆ ಆಲಂಡತಿ ಇತ್ಯಾದಿ. ಎಸೆ, ಬಿಸಾಡು.



ಅಲಂಕಾರ ಒಲಂಕಿತ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಸಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಲಂಕಿತ (ಉತ್ಕೃಷ್ಟ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಪ್ರಭುಸ್ತಂ ದೈತಸಿದ್ಧಿಣಾಂ ಪ್ರಸೂತಕಿಲ-ಕಿಂಚಿತಮ್। ಅಲಂಕಿತಮಿವಾಪಸ್ಯದ್ವಂ ಸಮರತಾಂಡವಮ್" ಯಾದಂ ೧೬-೬೪।

ಅಲಂಕಿತ ಒಲಂಕಿತ (ಪುಂ) 1. ಸೂರಣಗಡ್ಡೆ. (ವಿಂ) 2. ತೇವ ವಾದ, ಒದ್ದೆಯಾದ. "ಅಲಂಕಿತು ಶೂರಣ ಪುಸಿ ಸ್ಯಾದಾದ್ರೇ ವಾಚ್ಯಲಿಂಗಕ:" ಮೇದಿಂ।

ಅಲಂಕಿತ ಒಲಂಕಿತ (ಪುಂ) 1. ದಹಿಸುವಿಕೆ, ಸುಡುವುದು. ಅಲಂಕಿತ (ದಾಹ) ಭಾವ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಉರಿತ, ಉರಿಯುವುದು. 3. (ಗಾಯ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ) ಉರಿತ. 4. ಸೀದುವುದು.

ಅಲಂಕಿತ ಒಲಂಕಿತ (ಪುಂ) 1. ಕಟುರಸ, ಕಾರ. ಅಲಂಕಿತ (ದಾಹ) ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। (ನಂ) 2. "ಅಲಂಕಿತ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅಲಂಕಿತ ಭಾವ "ಲ್ಯು:" (೩-೩-೧೧೫)। (ವಿಂ) 3. ಸುಡುವ, ದಹಿಸುವ. ಅಲಂಕಿತ ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। 4. ಉರಿಯುವ. 5. ಸುಡಿಸುವ, ದಹಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವ. ಅಲಂಕಿತ + ಣಿಕ್ ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:"। 6. ಸೀದುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀ" (೪-೧-೪)। -ಣಾ -ಣಾ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಣೀ -ಣೀ. 7. ಕೀರಿಸುವುದು.

ಅಲಂಕಿತ ಒಲಂಕಿತ (ವಿಂ) 1. ಸುಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. 2. ಸುಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಸುಡಬೇಕಾದ. ಅಲಂಕಿತ (ದಾಹ) "ಅನೀಯ" (೩-೧-೯೬)। "ತವ್ಯ:"। ಅಲಂಕಿತವ್ಯಮ್ ಒಲಂಕಿತವ್ಯಮ್.

ಅಲಂಕಿತ ಒಲಂಕಿತ (ವಿಂ) 1. ಸುಡುತ್ತಿರುವ, ದಹಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಉರಿಯುತ್ತಿರುವ. ಅಲಂಕಿತ (ದಾಹ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀ" (೪-೧-೬)। ಅಲಂಕಿತ ಒಲಂಕಿತ.

ಅಲಂಕಿತ (ಧೀ) ಒಲಂಕಿತ (ಧೀ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಫಲಬಿಟ್ಟ ಮೇಲೆ ಒಣಗುವ ಗಿಡ ಬಳ್ಳಿ ಮೊದಲಾದುವು. ಅಲಂಕಿತ: ಧೀಯತೇ-ಛೀ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋ:) "ಕ್ತಿ:" (೩-೩-೯೩)। ವಾ "ಛೀ" (ಗಂ ೪-೧-೪೫)। "ಅಲಂಕಿತಧೀನಾಮಧಿಪಸ್ಯ ವೃದ್ಧಿ ತಿಥೌ ಚ ಜಾಮಿತ್ರಗುಣಾನ್ವಿತಾಯಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೧। ಒಲಂಕಿತಯು ಸ್ಥಾವರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಸ್ಥಾವರವು (1) ವನಸ್ಪತಿ, (2) ವೃಕ್ಷ, (3) ಲತೆ ಮತ್ತು (4) ಒಲಂಕಿತ ಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ: (1) ಪುಷ್ಪಿಸದೆ ಫಲಿಸುವುದು ವನಸ್ಪತಿ. ಅಲ, ಅರಳಿ, ಅತ್ತಿ ಮುಂತಾದುವು. (2) ಪುಷ್ಪಿಸಿ ಫಲಿಸುವುದು ವೃಕ್ಷ. ಮಾವು, ಬೇಲ, ತೆಂಗು, ಬೇವು, ಹುಣಿಸೆ ಮುಂತಾದುವು. (3) ಹಬ್ಬುವ ಕುಡಿ

ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದುದು ಲತೆ. ದ್ರಾಕ್ಷೆ, ಮಲ್ಲಿಗೆ, ಜಾಜಿ ಮುಂತಾದುವು. (4) ಫಲಿಸಿ ಫಲ ಕೊಟ್ಟೊಡನೆ ಒಣಗುವುದು ಒಲಂಕಿತಗಳು. ಕುಂಬಳ, ಪಡವಲ, ಸೌತೆ, ಬತ್ತದ ಪೈರು ಮುಂತಾದುವು. "ಅಲಂಕಿತ: ಫಲಪಾಕಾಂತಾ: ಬಹುಪುಷ್ಪ-ಫಲೋಪಗಾ:। ಅಪುಷ್ಪಾ: ಫಲವಂತೋ ಯೇ ತೇ ವನಸ್ಪತಯ: ಸ್ಮೃತಾ:। ಪುಷ್ಪಿಣ: ಫಲಿನಶ್ಚೈವ ವೃಕ್ಷಾಸ್ತುಭಯತ: ಸ್ಮೃತಾ:। ಗುಚ್ಛಗುಲ್ಮಮ್ ತು ವಿವಿಧಂ ತಥೈವ ತೃಣಜಾತಯ:। ಬೀಜಕಾಂಡರೂಪಾಣ್ಯೇವ ಪ್ರತಾನಾ ವಲ್ಲಭ ಏವ ಚ" ಮನುಂ ೧-೪೬-೪೮।

ಅಲಂಕಿತ ಒಲಂಕಿತ ಭಗ, -ನಾಥ-ನಾಥ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಅಲಂಕಿತಗಳ ಗರ್ಭ: ಉತ್ಪತ್ತಿರಸ್ಮಾತ್ ಅಲಂಕಿತಗಳ ನಾಥೋ ವಾ। ಬಾಳೆ, ಬತ್ತದ ಪೈರು ಮೊದಲಾದ ಒಲಂಕಿತಗಳು ಚಂದ್ರಕಿರಣ ಸಂಪರ್ಕದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವವಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. 2. ಸೂರ್ಯ. ಮಳೆಯ ಮೂಲಕ ಸೂರ್ಯನ ಕಿರಣ ಪ್ರವೇಶದಿಂದ ಒಲಂಕಿತಗಳು ಉತ್ಪತ್ತಿ ಹೊಂದುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ಅಲಂಕಿತ ಒಲಂಕಿತ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಅಲಂಕಿತಯೋ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಛೀ:" (೩-೨-೯೮)। (ವಿಂ) 2. ಒಲಂಕಿತಗಳಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ. "ಜ್ವಲಯತೌಷಧಿಜೇನ ಕೃಶಾನುನಾ" ಕಿರಾಂ ೫-೧೪।

ಅಲಂಕಿತ ಒಲಂಕಿತ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಅಲಂಕಿತಗಳ ಪತಿ: ಚಂದ್ರಕಿರಣಸ್ಪರ್ಶದಿಂದ ಒಲಂಕಿತಗಳು ಪುಷ್ಪಿ ಹೊಂದುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. 2. ಕರ್ಪೂರ. 3. ಸೋಮ ಲತೆ. 4. ವೈದ್ಯ. "ಅಮೃತದ್ರವೈವಿದಧದಜ್ಜದಶಾಮಪಮಾಗಂ-ಮೋಷಧಿಪತಿ: ಸ್ಮ ಕರೇ:" ಮಾಘಂ ೯-೩೬।

ಅಲಂಕಿತ ಒಲಂಕಿತ (ಪುಂ) ಒಲಂಕಿತವರ್ತ. ಅಲಂಕಿತ-ಯುಕ್ತಂ ಪ್ರಸ್ಥಮತ್ರ। "ಇತ್ಯೋಷಧಿಪ್ರಸ್ಥವಿಲಾಸಿನೀನಾಂ ಸೃಷ್ಟವನ್ ಕಥಾ: ಶ್ರೋತ್ರಸುಖಾಸ್ತ್ರಿಣೇತ್ರ:" ಕುಮಾಂ ೭-೬೯।

ಅಲಂಕಿತ ಒಲಂಕಿತ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಅಲಂಕಿತನಾಮಿಶ:। ["ಅಲಂಕಿತನಾಥ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಅಲಂಕಿತ ಒಲಂಕಿತ (ವಿಂ) 1. ಸುಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಅಲಂಕಿತ (ದಾಹ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। 2. ಉರಿಯುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀ" (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

ಅಲಂಕಿತ ಒಲಂಕಿತ (ವಿಂ) 1. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಸುಡಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. 2. ಸುಡಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 3. ಸುಡಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಅಲಂಕಿತ (ದಾಹ) + ಣಿಕ್ "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬)।

ಅಲಂಕಿತ ಒಲಂಕಿತ (ನಂ) 1. ಸುಡಿಸುವುದು. 2. ಉರಿಯುವುದು. ಅಲಂಕಿತ (ದಾಹ) + ಣಿಕ್ ಭಾವ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೫)।



(ವಿಂ) 3. ಸುಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ಉರಿಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಉಪ +  
ಣಿಕ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

ಔಷಿವಿವಿಧಾ ಓಷಿಷಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುಡಲು ಇಚ್ಛೆ, ದಹಿಸಲು  
ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಉಪ (ದಾಹೇ) + ಸನ್ "ಅ:" (3-3-102)।

ಔಷಿವಿವಿಧಾ ಓಷಿಷಿಷಾ (ವಿಂ) ಸುಡಲು ಇಚ್ಛೆಯುಳ್ಳ,  
ದಹಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. ಉಪ (ದಾಹೇ) + ಸನ್ "ಃ:"  
(3-2-164)।

ಔಷ್ಠ ಓಷ್ಠ (ಪುಂ) ತುಟ. ಉಚ್ಯತೇ ಉಷ್ಣಾಹಾರೇಣ - ಉಪ  
(ದಾಹೇ) "ಏನ್" (ಉಂ 2-4)। "ತತೋಽನುಕುರ್ಯಾದ್ವಿಶದಸ್ಯ  
ತಸ್ಯ ತಾಘ್ರಿಷ್ಠಪರ್ಯಸ್ತರುಚಃ ಸ್ಮಿತಸ್ಯ" ಕುಮಾಂ 1-44।  
ಅಘ್ರೋಷ್ಠಃ: ಉತ್ತರೋಷ್ಠಃ: ಇತ್ಯಾದಿ. -ಠಿ -ಃ. ತೊಂಡೆಗಿಡ.  
ತೊಂಡೆಹಣ್ಣನ್ನು ತುಟಗಳಿಗೆ ಉಪಮಾನವಾಗಿ ವರ್ಣಿಸು  
ವುದು ವಾಡಿಕೆ.

ಔಷ್ಠಕ ಓಷ್ಠಕ (ಪುಂ) 1. ತುಟ. ಔಷ್ಠ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"।  
(ವಿಂ) 2. ತುಟಿಯ ರಕ್ಷಣೆ ಶೃಂಗಾರ ಮೊದಲಾದುವು  
ಗಳಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತನಾದ. ಔಷ್ಠ "ಕನ್" (4-2-66)।

ಔಷ್ಠ್ಯ ಓಷ್ಠ್ಯ (ಪುಂ) 1. ತುಟಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ವರ್ಣ.  
ತುಟಿಯ ಸಾಹಾಯ್ಯದಿಂದ ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ಅಕ್ಷರ.  
ಔಷ್ಠೇ ಭವ: "ಯತ್" (4-1-6)। ತ, ಪ, ಫ, ಬ, ಮ, ಮ  
ಮತ್ತು ಉಪಧ್ಯಾನೀಯ (ಽಪ) ಗಳು ಓಷ್ಠ್ಯಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟುವವು. "ಉಪಧ್ಯಾನೀಯಾನಾಮೌಷ್ಠಿ"।

ಔಷ್ಣ ಓಷ್ಣ (ವಿಂ) ಸ್ವಲ್ಪ ಬಿಸಿಯಾಗಿರುವ, ಬೆಚ್ಚಗಿರುವ.  
ಆ ಇಷದ್ಘ್ನಮ್।

ಔಹಾರ ಓಹಾರ (ಪುಂ) ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ. "ಕೂರ್ಮ: ಕಚ್ಚಪ  
ಔಹಾರ: ಪञ्चಗೃಹಚತುರ್ಗತಿ:" ವೈಜಂ।

इति "ओ" कारादिपदार्थनिरूपणम्।

## औ

औ ಔ ಇದು ವರ್ಣಮಾಲೆಯಲ್ಲಿ ವಿವೃತ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ  
ಕಂಠ ಮತ್ತು ಓಷ್ಠ್ಯಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಒಂದು  
ಸ್ವರವರ್ಣ. ಉದಾತ್ತ, ಅನುದಾತ್ತ ಮತ್ತು ಸ್ವರಿತಗಳೆಂದು  
ಮೂರು ಭೇದಗಳುಳ್ಳ ಇದು ಪುನಃ ಅನುನಾಸಿಕ ಮತ್ತು  
ಅನನುನಾಸಿಕ ಭೇದಗಳಿಂದ ಒಟ್ಟು ಆರು ವಿಧವಾಗುವುದು.

औ ಔ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ಅನಂತ, ಅದಿಶೇಷ. 3. ಧ್ವನಿ.  
ಶಬ್ದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ಭೂಮಿ. "ಔಔಶಬ್ದೌ ತು ಹೊಹೌವ  
ಸಂಬುಧ್ಯಾಹ್ವಾನಯೋರ್ಮತೌ। ವಿಧಾತರಿ ಕ್ರಮಾದ್ವಿಣ್ಣಾವೌಔ  
ಶಬ್ದಾವನವ್ಯಯೌ" ಹೇಮಂ। (ಅವ್ಯಂ) 5. ಆಹ್ವಾನ, ಕರೆ.  
6. ಸಂಬೋಧನೆ. "ಔಶಬ್ದಃ ಕಥಿತೌ ಹೃತೌ ತಥಾ ಸಂಬೋ-  
ಧನೇಽಪಿ ಚ। ಸ್ತ್ರೀ ತು ವಿಶ್ವಮ್ಭರಾಯಾಂ ಸ್ಯಾತ್ಪುಮಾಸ್ತು ನಿಶ್ವನೇ  
ಸ್ಮೃತಃ" ಮೇದಿಂ।

ಔಕಿತ್ಯಕ ಔಕಿತ್ಯಕ (ವಿಂ) ಉಕ್ತವೆಂಬ ಸಾಮದ ಭಾಗವನ್ನು  
ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವ ಅಥವಾ ತಿಳಿದಿರುವ. ಉಪಮಾಣೀತೆ  
ವೇದ ವಾ "ಠಕ್" (4-2-60)।

ಔಕಿತ್ಯಕ ಔಕಿತ್ಯಕ (ನಂ) ಔಕಿತ್ಯಕರ ಸಂಪ್ರದಾಯ, ಔಕಿತ್ಯಕರ  
ಧರ್ಮ ಮತ್ತು ಆಮ್ನಾಯ. ಔಕಿತ್ಯಕಾನಾಂ ಧರ್ಮಃ: ಆಮ್ನಾಯೋ  
ವಾ "ಔಯಃ" (4-3-129)।

ಔಕ್ಷ ಔಕ್ಷ (ವಿಂ) ವೃಷಭಸಂಬಂಧವಾದ, ಎತ್ತುಗಳಿಂದ  
ಉಂಟಾದ. ಉಕ್ಷಾಮಿದಮ್ "ಅನ್" (4-3-120)।  
ಅನಪತ್ಯೇ ನಿಪಾಂ (6-4-173)।

ಔಕ್ಷಕ ಔಕ್ಷಕ (ನಂ) ವೃಷಭಗಳ ಸಮೂಹ, ಎತ್ತುಗಳ  
ಗುಂಪು. ಉಕ್ಷಾಂ ಸಮೂಹಃ: "ಕುಷ್" (4-2-39)।  
"ರೋಮನ್ಯಮನ್ಯರಚಲದ್ಗುರುಸಾಸ್ತನಮಾಸಾಂಚಕ್ರೇ ನಿಮಿಲದಲಸೇಕ್ಷಣ-  
ಮೌಕ್ಷಕೇಣ" ಮಾಘಂ 4-62।

ಔಕ್ಷಣ ಔಕ್ಷಣ (ಪುಂ) ಎತ್ತಿನ ಸಂತತಿ, ವೃಷಭದ  
ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಕರು. ಉಕ್ಷಣೋಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್"  
(4-1-92)।

ಔಪ್ರಸೇನಿ ಔಪ್ರಸೇನಿ (ಪುಂ) ಉಗ್ರಸೇನನ ಮಗ, ಕಂಸ.  
ಔಪ್ರಸೇನಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಇನ್" (4-1-94)।



ಔಪದ ಔಗ್ರ (ನಂ) ಕೂರತನ, ಕ್ರೌರ್ಯ, ದಯೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಅಸ್ಯ ಭಾವ: "ಔಗ್ರ" (೪-೧-೧೨೪)। ಇದು 32 ವಿಧ ವ್ಯಭಿಚಾರಿಭಾವಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ನಿವೇದಾವೇಗ-ದೇವ್ಯಶ್ರಮದಜಡತಾ ಔಪದಮೌಹಿ ವಿವಿಧ:....."

ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೪೧।

ಔಚಿತ್ಯ ಔಚಿತ್ಯ (ನಂ) ಪ್ರಕೃತಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಪ್ರಕೃತಕ್ಕೆ ಅನುರೂಪವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಪ್ರಕೃತಕ್ಕೆ ಉಪಯೋಗಕರವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಉಚಿತಸ್ಯ ಭಾವ: "ಔಚಿ" (೪-೧-೧೨೪)।

ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಔಚಿ" (೪-೧-೪೧)। ಯಲೋಪ: (೬-೪-೧೫೦)।

ಔಚಿತಿ ಔಚಿತಿ. "ಸಾಮರ್ಥ್ಯಮೌಚಿತಿ ದೇಶ: ಕಾಲೋ ವ್ಯಕ್ತಿ: ಸ್ವರಾದಯ: " ವಾಕ್ಯಪಂ।

ಔಜಸಿಕ ಔಜಸಿಕ (ವಿಂ) ಶೂರ, ಪರಾಕ್ರಮ, ಶಕ್ತಿವಂತ. ಔಜಸಾ ವಂತೆ "ಔಜ" (೪-೪-೨೭)।

ಔಜಸ್ಯ ಔಜಸ್ಯ (ನಂ) 1. ಒಜಸ್ಸು, ತೇಜಸ್ಸು. ಔಜಸ್ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಔಜ" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪)। 2. ಶಕ್ತಿ, ಬಲ. "ದೌರ್ಗತ್ಯಾದೇರನೌಜಸ್ಯ ದೇವ್ಯ ಮಲಿನತಾದಿಕೃತ್" ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೪೫।

ಔಜ್ವಲ್ಯ ಔಜ್ವಲ್ಯ (ನಂ) ಪ್ರಕಾಶ, ಕಾಂತಿ, ಹೊಳಪು. ಔಜ್ವಲ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ಔಜ್" (೪-೧-೧೨೪)।

ಔಜವ ಔಜವ (ವಿಂ) ನಕ್ಷತ್ರಸಂಬಂಧವಾದ. ಔಜನಾಮಿದಮ್ "ಔಜ" (೪-೩-೧೨೦)।

ಔಜುಪ ಔಜುಪ (ವಿಂ) 1. ಚಂದ್ರನಿಂದ ಉಂಟಾದ. 2. ದೋಣಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಔಜುಪೇನ ಚಂದ್ರೇಣ ಪ್ಲವೇನ ವಾ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಔಜ" (೪-೨-೭೫)।

ಔಜುಪಿಕ ಔಜುಪಿಕ (ವಿಂ) 1. ದೋಣಿಯಿಂದ (ನದಿಯನ್ನು) ದಾಟುವ. ಔಜುಪೇನ ತರತಿ "ಔಜ" (೪-೪-೫)। 2. ದೋಣಿಯ ಮೂಲಕ ಒಯ್ಯುವ, ದೋಣಿಯಿಂದ ಸಾಗಿಸುವ. ಔಜುಪೇನ ಹರತಿ "ಔಜ" (೪-೪-೧೫)।

ಔಕ್ಟಾಂಶ ಔಕ್ಟಾಂಶ (ನಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ. 2. ಉತ್ಸುಕತೆ, ಉತ್ಸಾಹದಿಂದ ಎದುರುನೋಡುವಿಕೆ, ತವಕಪಡುವಿಕೆ. ಔಕ್ಟಾಂಶಸ್ಯ ಭಾವ: "ಔಕ್ಟ" (೪-೧-೧೨೪)।

ಔಕ್ಟಾಂಶ್ಯ ಔಕ್ಟಾಂಶ್ಯ (ನಂ) ಉತ್ಸುಕತೆ, ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ, ಮೇಲ್ಮೆ. ಔಕ್ಟಾಂಶ್ಯ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಔಕ್ಟ" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪)।

ಔಕ್ಟಾಂಶ್ಯ ಔಕ್ಟಾಂಶ್ಯ (ನಂ) ಉತ್ಸುಕವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ, ಮೇಲ್ಮೆ. ಔಕ್ಟಾಂಶ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ಔಕ್ಟ" (೪-೧-೧೨೪)।

ಔತ್ತರ ಔತ್ತರ (ವಿಂ) 1. ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವ. 2. ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ, ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಔತ್ತರ "ಔತ್ತ" (೪-೩-೧೨೦)।

ಔತ್ತರಪಥಿಕ ಔತ್ತರಪಥಿಕ (ವಿಂ) 1. ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿನ ಮಾರ್ಗದಿಂದ ತರಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿನ ಮಾರ್ಗದಿಂದ ಹೋಗುವ. ಔತ್ತರಪಥೇನಾಹುತಂ ಗಚ್ಛತಿ ವಾ "ಔತ್ತ" (೪-೧-೭೭)।

ಔತ್ತರಾಧ್ಯ ಔತ್ತರಾಧ್ಯ (ನಂ) ಮೇಲು ಕೀಳುಭಾವ, ಮೇಲೆ ಮತ್ತು ಕೀಳೆಡೆ ಇರುವಿಕೆ. ಔತ್ತರಾಧ್ಯಯೋರ್ಭಾವ: "ಔತ್ತ" (೪-೧-೧೨೪)। "ಸಂಧೇ ಚಾನೌತ್ತರಾಧ್ಯೇ" (೩-೩-೪೨)।

ಔತ್ತರಾಹ ಔತ್ತರಾಹ (ವಿಂ) 1. ಮುಂದಿನ ದಿವಸಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಮುಂದಿನ ದಿವಸದ. ಔತ್ತರಾಹ "ಔತ್ತ" (೪-೩-೧೨೦)। 2. ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿನಿಂದ ಬಂದ, ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ. ಔತ್ತರ "ಔತ್ತ" (ವಾಂ ೮-೩-೧೦೧)।

ಔತ್ತರೇಯ ಔತ್ತರೇಯ (ಪುಂ) ಉತ್ತರೇಯ ಮಗ ಪರಿಕ್ಷಿತ್ತು. ಔತ್ತರೇಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಔತ್ತ" (೪-೧-೧೨೦)।

ಔತ್ತಾನಪಾದಿ ಔತ್ತಾನಪಾದಿ (ಪುಂ) ಉತ್ತಾನಪಾದರಾಯನ ಮಗ, ಧೃವಕುಮಾರ. ಔತ್ತಾನಪಾದಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಔತ್ತ" (೪-೧-೧೫)। [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಔತ್ತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಔತ್ಪತ್ತಿಕ ಔತ್ಪತ್ತಿಕ (ವಿಂ) ಹುಟ್ಟಿನಿಂದ ಬಂದ, ಹುಟ್ಟಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ, ಸಹಜವಾದ, ಸ್ವಾಭಾವಿಕ. ಔತ್ಪತ್ತಿಯಾ ನಿವೃತ್ತ: "ಔತ್ಪ" (೪-೨-೮೦)।

ಔತ್ಪಾತ ಔತ್ಪಾತ (ವಿಂ) ಉತ್ಪಾತವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಗ್ರಂಥದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಗ್ರಂಥ. ಔತ್ಪಾತಸ್ಯ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ: ಔತ್ಪಾತೋ ಖ್ಯಾತಿ: "ಔತ್ಪ" (೪-೩-೬೬)।

ಔತ್ಪಾತಿಕ ಔತ್ಪಾತಿಕ (ವಿಂ) ಉತ್ಪಾತದಿಂದ ಉಂಟಾದ, ಧೂಮಕೇತು ಕಾಳ್ಕಚ್ಚು ಮುಂತಾದುವುಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದ (ಶುಭಾಶುಭಫಲಗಳು). ಔತ್ಪಾತೇ ಭವಮ್ "ಔತ್ಪ" (೪-೩-೬೭)। "ಔತ್ಪಾತಿಕಂ ಮೇಘ ಇವಾದಿಮವಶಂ ಮಹೀಪತೇ: ಶಾಸನಮುಜ್ಜಗಾರ" ರಘುಂ ೧೪-೫೩।

ಔತ್ಪಾವ ಔತ್ಪಾವ (ವಿಂ) ಹುಟ್ಟು ಅಥವಾ ಉತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ ಅಥವಾ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವ. ಔತ್ಪಾವಂ ವೇತ್ಯಪಿತಿ ವಾ "ಔತ್ಪ" (೪-೨-೫೯)।

ಔತ್ಸ ಔತ್ಸ (ವಿಂ) ನೀರಿನ ಚಿಲುಮೆಯಲ್ಲಿರುವ, ನೀರಿನ ಬುಗ್ಗೆಯಲ್ಲಿರುವ, ಊಟಿಯಲ್ಲಿರುವ. ಔತ್ಸೇ ಭವ: "ಔತ್ಸ" (೪-೧-೮೬)।

ಔತ್ಸರ್ಗಿಕ ಔತ್ಸರ್ಗಿಕ (ವಿಂ) ತೊಡೆಯಿಂದ ಸಾಗಿಸುವ, ಮಡಲಿನಿಂದ ಒಯ್ಯುವ. ಔತ್ಸರ್ಗೇನ ಹರತಿ "ಔತ್ಸ" (೪-೪-೧೫)।

ಔತ್ಸರ್ಗಿಕ ಔತ್ಸರ್ಗಿಕ (ವಿಂ) ಸಾಮಾನ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಸಾಮಾನ್ಯ ನಿಯಮಕ್ಕೆ ಒಳಪಟ್ಟ, ಸಾಮಾನ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರ



ದಿಂದ ಸಿದ್ಧವಾದ. उत्सर्गं सामान्यविधिर्महति "ಠ್" (೪-೧-೬೩). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡಿಪ್" (೪-೧-೧೪). ಔತ್ಸರ್ಗಿಕೀ ಟಿಪ್ಪಣಿ.

**ಔತುಕಯ ಟಿಪ್ಪಣಿ (ನಂ)** 1. ಉತ್ಸಾಹ, ಪ್ರಿಯವಾದುದನ್ನು ಬೇಗ ಹೊಂದುವುದರಲ್ಲಿ ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಕುತೂಹಲ. ಔತುಕಸ್ಯ ಭಾವ: "ಘ್" (೪-೧-೧೨೪). "ಔತುಕಯೇನ ಕೃತವರಾ ಸಹಭುವಾ ವ್ಯಾವರ್ತಮಾನಾ ಹ್ರಿಯಾ ತೈಸ್ತೇರ್ಬಂಧುವಧೂಜನಸ್ಯ ವಚನೇ-ನೀತಾಭಿಮುಖ್ಯಂ ಪುನ:" ರತ್ನಾಂ ೧-೨. ಇದೊಂದು ವ್ಯಭಿಚಾರಿ ಭಾವ. "ಔತುಕಯೋನ್ಮಾದಶಾಕ್ಷಾ: ಸ್ಮೃತಿಮತಿಸಹಿತಾ ವ್ಯಾಧಿ-ಸನ್ತ್ರಾಸಲಜ್ಜಾ:" ಸಾಂ ೬೦ ೩-೧೪೧. "ಇಷ್ಟಾನವಾಪ್ತೇ-ರೌತುಕಯಂ ಕಾಲಕ್ಷೇಪಾಸಹಿಷ್ಣುತಾ" ಸಾಂ ೬೦ ೩-೧೪೯. 2. ಇಚ್ಛೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಆಸೆ. "ಔತುಕಯನಿವೃತ್ಯಯಂ ಯಥಾ ಕ್ರಿಯಾಸು ಪ್ರವರ್ತಂತೇ ಲೋಕಃ. ಪುರುಷಸ್ಯ ವಿಮೋಕ್ಷಾರ್ಥಂ ಪ್ರವರ್ತಂತೇ ಸದ್ವದವ್ಯಕ್ತಮ್" ಸಾಂ ಕಾಂ ೪೮.

**ಔದಚ್ಚನ ಟಿಪ್ಪಣಿ (ವಿಂ)** ಪೀಪಾಯಿನಲ್ಲಿರುವ, ನೀರು ಸೇದಲು ಅಥವಾ ನೀರನ್ನು ಒಯ್ಯಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಮರದ ಅಥವಾ ಲೋಹದ ಪಾತ್ರೆಗಳಲ್ಲಿರುವ. ಉದಚ್ಯತೇ ಉತ್ಕಿಪ್ಯ ಧ್ರಿಯತೇಽಸ್ಮಿನ್ ಉದಚ್ಚನೋ ಜಲಪಾತ್ರಮ್, ತಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಘ್" (೪-೩-೧೨೦).

**ಔದನಿಕ ಟಿಪ್ಪಣಿ (ಪುಂ)** 1. ಅನ್ನದ ರಾಶಿ. ಔದನಾನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಠ್" (೪-೨-೪೭). (ವಿಂ) 2. ಅನ್ನವನ್ನು ಮಾಡುವವನು, ಅನ್ನ ಬೇಯಿಸುವವನು, ಅಡಿಗೆಯವನು. ಔದನಂ ಶಿಲ್ಪಮಸ್ಯ "ಠ್" (೪-೪-೪೪). 3. ಅನ್ನ ವನ್ನು ತಿನ್ನುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಔದನಭೋಜನಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ "ಠ್" (೪-೪-೬೧). 4. ಅನ್ನವನ್ನು ಮಾರುವವನು. ಔದನಂ ಪಣ್ಯಮಸ್ಯ "ಠ್" (೪-೪-೪೧). 5. ಅನ್ನವನ್ನು ತಿನ್ನು ಉ ಹಿತವಾದ (ವ್ಯಂಜನ). ಔದನಭೋಜನೇ ಸಾಧು "ಠ್" (೪-೪-೧೦೩). 6. ಅನ್ನವನ್ನು ತಿನ್ನುವುದು ಹಿತವಾಗಿರುವ (ಮನುಷ್ಯ). ಔದನಭೋಜನಂ ಹಿತಮಸ್ಮೈ "ಠ್" (೪-೪-೬೪).

**ಔದನ್ವತ ಟಿಪ್ಪಣಿ (ವಿಂ)** ಸಮುದ್ರಸಂಬಂಧವಾದ. ಉದನ್ವತ ಇದಮ್ "ಅಘ್" (೪-೩-೧೨೦). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡಿಪ್" (೪-೧-೧೪). ಔದನ್ವತೀ ಟಿಪ್ಪಣಿ. "ಅನ್ತಸ್ತನ್ವ-ದಿವಾರವಿನ್ದಗಹನಾನ್ಯೋದನ್ವತೀನಾಮಪಾಮ್" ದಶಾಂ.

**ಔದಪಾನ ಟಿಪ್ಪಣಿ (ವಿಂ)** 1. ನೀರಿನ ಬಾವಿ ಅಥವಾ ನೀರಿನ ಉಟೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಬಂದ (ತೆರಿಗೆ). ಉದಪಾನಾದಾಗತ: "ಅಘ್" (೪-೩-೭೬). 2. ಬಾವಿಯಲ್ಲಿರುವ, ಜಲಾಶಯದಲ್ಲಿರುವ. ಉದಪಾನ "ಅಘ್" (೪-೧-೮೬). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡಿಪ್" (೪-೧-೧೪). -ಪಾನಿ-ಪಾಣಿ.

**ಔದಯಿಕ ಟಿಪ್ಪಣಿ (ವಿಂ)** 1. ಉದಯಕಾಲದಲ್ಲಿರುವ. 2. ರಾಶಿಗಳ ಉದಯ (ಲಗ್ನ) ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಉದಯೇ ಲಗನಕಾಲೇ ಭವ: "ಠ್" (೪-೩-೧೧). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡಿಪ್" (೪-೧-೧೪). ಔದಯಿಕೀ ಟಿಪ್ಪಣಿ.

**ಔದರ ಟಿಪ್ಪಣಿ (ವಿಂ)** ಉದರಸಂಬಂಧವಾದ, ಹೊಟ್ಟೆ ಯಲ್ಲಿರುವ, ಉದರಸ್ಯಾಯಮ್ "ಅಘ್" (೪-೩-೧೨೦). "ಸಿಲಂ ಕಿಮನಲಂ ಭವೇದನಲಮೌದರಂ ಬಾಧಿತುಂ ಪಯ: ಪ್ರಸೃತಿಪೂರಕಂ ಕಿಮು ನ ಧಾರಕಂ ಸಾರಸಮ್" ವೈರಾಗ್ಯಪಂ.

**ಔದರಿಕ ಟಿಪ್ಪಣಿ (ವಿಂ)** ಹೊಟ್ಟೆಬಾಕ, ತಿಂಡಿಪೋತ, ಹೊಟ್ಟೆ ತುಂಬುವುದರಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಉದ್ಯುಕ್ತನಾದವನು. ಉದರೇ ಪ್ರಸಿತ: "ಠ್" (೪-೨-೬೭). "ಸರ್ವತ್ರೌದರಿಕಸ್ಯಾ-ಮ್ಯಾವಹಾರ್ಯಮೇವ ವಿಷಯ:" ವಿಕ್ರಂ ೩.

**ಔದರ್ಯ ಟಿಪ್ಪಣಿ (ವಿಂ)** 1. ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿರುವ. ಉದರೇ ಭವ: "ಯತ್" (೪-೧-೬). ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಘ್" (೪-೪-೩೮). 2. ಗರ್ಭವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿರುವ, ಗರ್ಭದಲ್ಲಿರುವ. "ಸ ತ್ವಯಾರಾಧಿತ: ಶುಕ್ಲೋ ವಿದನ್ವನ್ಮಾಮಕಂ ಯಶ:। ಛೇತಾ ತೇ ಹೃದಯಗ್ರನ್ಥಿಮೌದರ್ಯೋ ನೈವಭಾವನ:" ಭಾಗಂ ೩-೨೪-೪.

**ಔದಶ್ವಿತ ಟಿಪ್ಪಣಿ (ವಿಂ)** ಅರ್ಧಭಾಗ ನೀರು ಬೆರೆಸಿದ ಮೊಸರಿನಲ್ಲಿ ಸಂಸ್ಕೃತವಾದ, ಮಜ್ಜೆಗೆಯಲ್ಲಿ ತಯಾರಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದಶ್ವಿತ ಸಂಸ್ಕೃತ: "ಅಘ್" (೪-೨-೧೬). ವಾ "ಠ್" (೪-೨-೧೯). ಉದಶ್ವಿತ "ಕ:" (೭-೩-೪೧). ಔದಶ್ವಿತ: ಟಿಪ್ಪಣಿ.

**ಔದಾತ್ಯ ಟಿಪ್ಪಣಿ (ನಂ)** 1. ಸರ್ವೋತ್ಕೃಷ್ಟನಾಗಿರುವಿಕೆ, ಎಲ್ಲರಿಗಿಂತಲೂ ಮಿಗಿಲಾಗಿರುವಿಕೆ. ಉದಾತ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ಘ್" (೪-೧-೧೨೪). "ಔದಾತ್ಯಂ ಹಿ ಸರ್ವೋತ್ಕರ್ಷಣ ವರ್ತನಮ್" ದಶಾಂ. 2. ಉದಾತ್ಯಸ್ವರದಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ.

**ಔದಾರ್ಯ ಟಿಪ್ಪಣಿ (ನಂ)** 1. ಉದಾರತೆ, ದೊಡ್ಡ ಮನಸ್ಸು, ಧಾರಾಳವಾದ ಮನಸ್ಸು. ಉದಾರಸ್ಯ ಭಾವ: "ಘ್" (೪-೧-೧೨೪). 2. ವಿನಯ, ಉತ್ತಮವಾದ ಶೀಲ, ಗಂಭೀರವಾದ ರೀತಿ. ಇದೊಂದು ನಾಯಕೀಯ ಸ್ವಾಭಾವಿಕ ಗುಣ. "ಔದಾರ್ಯಂ ವಿನಯ: ಸದಾ" ಸಾಂ ೬೦ ೩-೯೭. 3. ನಾಯಕನ ಸಾತ್ವಿಕಗುಣಗಳೆಲ್ಲವೂ. "ಶೋಭಾ ವಿಲಾಸೋ ಮಾಧುರ್ಯಂ ಗಾಂಭೀರ್ಯಂ ಸ್ಥೈರ್ಯತೇಜಸೀ. ಲಲಿತೋದಾರ್ಯಮಿತ್ಯಷ್ಟೋ ಸತ್ವಜಾ: ಪೌರುಷಾ ಗುಣಾ:" ಸಾಂ ೬೦ ೩-೪೦. 4. ವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಅರ್ಥಸಂಪತ್ತು, ಮಾತಿನಲ್ಲಿರುವ ಅರ್ಥಪುಷ್ಟಿ. "ಸ ಸೌಖ್ಯವೌದಾರ್ಯ-ವಿಶೇಷಶಾಲಿನೀಂ ವಿನಿಶ್ಚಿತಾರ್ಥಾಮಿತಿ ವಾಚಮಾದದೇ" ಕಿರಾಂ ೧-೩.



**ಔದಾಸೀನ್ಯ ಔದಾಸೀನ್ಯ** (ನಂ) 1. ಉದಾಸೀನತೆ, ಉಪೇಕ್ಷೆ, ತಾಟಸ್ಥ್ಯ. ಉದಾಸೀನಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಽ" (೪-೧-೧೨೪)।  
 "ಪರ್ಯಾಪ್ತೋಽಸಿ ಪ್ರಜಾ: ಪಾತುಮೌದಾಸೀನೀನ ವರ್ತಿಸುಮ್" ರಘುಂ ೧೦-೨೫। 2. ಅಗೌರವ, ಅವಮರ್ಯಾದೆ, ತಾತ್ಕಾರ. 3. ನಿರುತ್ಸಾಹ, ಜಡತೆ, ನಿರಾಸಕ್ತಿ.

**ಔದಾಸ್ಯ ಔದಾಸ್ಯ** (ನಂ) "ಔದಾಸೀನ್ಯ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಉದಾಸ್ತೇ - ಉದ್ + ಆಸ್ತ (ಉಪವೇಶನೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ಉದಾಸ್ತ:। ತಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಽ" (೪-೧-೧೨೪)। "ಔದಾಸ್ಯ-ಸಂವಿದವಲಮ್ಬಿತಶೂನ್ಯಮುದ್ರಾಮಸ್ಮಿನ್ ದುಶೋನಿಪತಿತಾಮವಗಮ್ಯ ಭೇಮ್ಯಾ:" ನೈಷಂ ೧೧-೧೦೧।

**ಔದೀಚ್ಯ ಔದೀಚ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಉತ್ತರದೇಶದಿಂದ ಬಂದ. 2. ಉತ್ತರದೇಶದ ಸಂಬಂಧವಾದ. 3. ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ.

**ಔದುಂಬರ ಔದುಂಬರ** (ಪುಂ) 1. ಯಮ. "ಔದುಂಬರ: ಶ್ರಾದ್ಧದೇವೇ ರೋಗಭೇದೇ ನಪುಂಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ। 2. ಒಂದು ದೇಶ. ಪಾಂಡವರ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಇದರ ರಾಜಧಾನಿ ಕಚ್ಚೇಶ್ವರ. ಈಗ ಇದು ಕಚ್ಚ (Cutch) ದೇಶವೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ. (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 3. ಉದುಂಬರ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವರು. (ನಂ) 4. ಒಂದು ವಿಧ ಕುಷ್ಮರೋಗ. 5. ಅತ್ತಿಮರದ ತುಂಡು. 6. ಅತ್ತಿಮರದ ರೆಂಬೆ, ಎಲೆ, ಹೆಣ್ಣು, ಅತ್ತಿಮರದ ಸಾಮಾನು ಮುಂತಾದುದು. ಉದುಂಬರಸ್ಯ ವಿಕಾರೋಽವಯವೋ ವಾ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೩೫)। "ಔದುಂಬರಾಣಿ ಪುಷ್ಪಾಣಿ ಶ್ವೇತವರ್ಣಿ ಚ ವಾಯಸಮ್। ಮತ್ಸ್ಯಪಾದಂ ಜಲೇ ಪಶ್ಯೇನ್ನ ನಾರಿ-ಹೃದಯಸ್ಥಿತಮ್"।

**ಔದ್ವಾಹ್ಯ ಔದ್ವಾಹ್ಯ** (ನಂ) ಅವಿನಯ, ಉದ್ವಿಗತನ, ಸೊಕ್ಕು, ಕೊಬ್ಬು. ಉದ್ವಾಹಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಽ" (೪-೧-೧೨೪)।  
 "ಅಸುಯಾನ್ಯಗುಣಾದಿನಾಮೌದ್ವಾಹ್ಯಾದಸಹಿಷ್ಣುತಾ" ಸಾಂ ೪೦ ೩-೧೬೬।

**ಔದ್ವಾಹಿಕ ಔದ್ವಾಹಿಕ** (ನಂ) ವಿವಾಹಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕನ್ಯೆಗೆ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ ಉಡುಗೊರೆ. ಉದ್ವಾಹೇ ಉದ್ವಾಹಕಾಲೇ ದೀಯತೇ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೬)। "ಮೈತ್ರಯೋಽದ್ವಾಹಿಕಂ ಚೈವ ಮಾಘ-ಪರ್ವಿಕಮೇವ ಚ" ಮನುಂ ೧-೨೦೬।

**ಔಧಸ ಔಧಸ** (ವಿಂ) ಕೆಚ್ಚಲಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಉಧಸ ಇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ಔಧಸ್ಯ ಔಧಸ್ಯ** (ನಂ) ಕೆಚ್ಚಲಿನಲ್ಲಿರುವ ಹಾಲು. ಉಧಸಿ ಭವಮ್ "ಯತ್" (೪-೩-೫೫)। "ಔಧಸ್ಯಮಿಚ್ಛಾಮಿ ತವೋಪಭೋಕ್ತುಂ ಷಣ್ಣಾಂಶಮುಖ್ಯಾ ಇವ ರಕ್ಷಿತಾಯಾ:" ರಘುಂ ೨-೬೬।

**ಔನ್ನತ್ಯ ಔನ್ನತ್ಯ** (ನಂ) 1. ಎತ್ತರ. 2. ಭೂಮಟ್ಟದಿಂದ ಅಥವಾ ಸಮುದ್ರಮಟ್ಟದಿಂದ ಇರುವ ಎತ್ತರ. ಉನ್ನತಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಽ" (೪-೧-೧೨೪)।

**ಔನ್ಮುಖ್ಯ ಔನ್ಮುಖ್ಯ** (ನಂ) 1. ಎದುರು ನೋಡುವಿಕೆ, ನಿರೀಕ್ಷಿಸುವಿಕೆ, ಆಸೆಯಿಂದಿರುವಿಕೆ. 2. ತತ್ಪರನಾಗಿರುವಿಕೆ, ಆಸಕ್ತಿಯಿಂದಿರುವಿಕೆ. 3. ಮುಖವನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ, ಮೇಲುಮುಖವಾಗಿರುವಿಕೆ. 4. ಅನುಕೂಲವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಉನ್ಮುಖಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಽ" (೪-೧-೧೨೪)।

**ಔಪಕರ್ಣಿಕ ಔಪಕರ್ಣಿಕ** (ವಿಂ) ಪ್ರಾಯ: ಕಿವಿಯಮೇಲೆ ಅಥವಾ ಕಿವಿಯ ಹತ್ತಿರವಿರುವ. ಕರ್ಣಸ್ಯ ಸಮೀಪಮುಪಕರ್ಣಮ್। ಸಾಮೀಪ್ಯೇಽಪ್ಯಯಿಂ। ಉಪಕರ್ಣಂ ಪ್ರಾಯಭವ: "ಠಕ್" (೪-೩-೪೦)।  
 "ಯ: ಸ್ವಾಮಿ ಮಮ ಕಾಂತಾವಾನೌಪಕರ್ಣಿಕಲೋಚನ:" ಭಟ್ಟಿಂ ೪-೨೪।

**ಔಪಗವ ಔಪಗವ** (ಪುಂ) 1. ಗೋಪಾಲಕನ ಪುತ್ರ, ಗೊಲ್ಲನ ಮಗ. ಉಪಗತೋ ಗೌರಸ್ಯ ಉಪಗುರ್ಗೌಪ:। ತಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಅಞ್" (೪-೧-೧೨)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಗವಿ-ಗವೀ.

**ಔಪಗವಿ ಔಪಗವಿ** (ಪುಂ) 1. ಉದ್ಧವ, ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಶಿಷ್ಯ. 2. ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಮಗ. ಉಪಗತೋ ಗಾಂ ಗಿರಮಿತ್ಯುಪಗವೋ ಗೋಷ್ಪತಿ:। ತಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಇಞ್" (೪-೧-೧೫)। "ಕ್ಷಣಮಿವ ಪುಲಿನ್ಯೇ ಯಮಸ್ವಸುಸ್ತಾಂ ಸಮುಷಿತ ಔಪಗವಿನಿಶಾ ತತೋಜಗಾತ್" ಭಾಗಂ ೩-೪-೨೭।

**ಔಪಗ್ರಸ್ತಿಕ ಔಪಗ್ರಸ್ತಿಕ** (ಪುಂ) ಗೃಹಣಕ್ಕೆ ಸಿದ್ಧ ಸೂರ್ಯ ಅಥವಾ ಚಂದ್ರ, ರಾಹು ಕೇತುಗಳಿಂದ ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟಿದ್ದ ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರು. ಉಪಗ್ರಸ್ತಂ ಗ್ರಾಹಕಾಲಂ ಭೂತ: "ಠಕ್" (೪-೧-೮೦)।

**ಔಪಚಾರಿಕ ಔಪಚಾರಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಉಪಚಾರ, ಸೇವೆ, ಶುಶ್ರೂಷೆ. ಉಪಚಾರ ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಠಕ್" (೪-೪-೩೪)। (ವಿಂ) 2. ಲಾಕ್ಷಣಿಕ, ಮುಖ್ಯವಲ್ಲದ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯಾರ್ಥದ ಸಾದೃಶ್ಯದಿಂದ ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವ (ಪದ). ಉಪಚಾರ: ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಚಾರಿಕಾ-ಚಾರಿಕೀ.

**ಔಪಚ್ಛಂದಸಿಕ ಔಪಚ್ಛಂದಸಿಕ** (ನಂ) ವೈತಾಳೀಯ ಪ್ರಕರಣದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರಾವೃತ್ತದ ಒಂದು ಭೇದ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: ವಿಷಮ (1, 3 ನೆಯ) ಪಾದಗಳಲ್ಲಿ 6 ಮಾತ್ರೆಗಳು, ಸಮ (2, 4 ನೆಯ) ಪಾದಗಳಲ್ಲಿ 8 ಮಾತ್ರೆಗಳು ಎಲ್ಲಾ ಪಾದಗಳ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ೨ ಗಣ ಯ ಗಣಗಳೂ ಇರಬೇಕು. ಸಮಪಾದಗಳಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರೆಗಳು ಕೇವಲ ಲಘು ರೂಪವಾಗಿಲ್ಲದೆ ಮಧ್ಯ ಮಧ್ಯ ಗುರುವರ್ಣಗಳಿಂದ



ವ್ಯವಹಿತವಾಗಿರಬೇಕು. ಎಲ್ಲಾ ಪಾದಗಳಲ್ಲೂ ಸಮಸ್ಥಾನದ (2, 4, 6 ನೆಯ) ಮಾತ್ರಗಳು ಪರಾಶ್ರಿತವಾಗಿ (3, 5, 7 ನೆಯ ಮಾತ್ರಗಳೊಡನೆ ಸೇರಿ) ಇರಬೇಕು. “ಷಡ್ವಿಷಮೇಷ್ಟೌ ಸಮೇ ಕಲಾಸ್ತಾಶ್ಚ ಸಮೇ ಸ್ಯುರ್ನೋ ನಿರಂತರಾಃ | ನ ಸಮಾಽತ್ರ ಪರಾಶ್ರಿತಾ ಕಲಾ ವೇತಾಲೀಯೇಂತೇ ರಲೌ ಗುರುಃ | ಪರ್ಯಂತೇಯೌ ತಥೈವ ಶೇಷಮೌಪಚ್ಛಂದಸಿಕಂ ಸುಧೀಭಿರುಕ್ತಮ್” ವೃಂ ೨೦ |

**ಔಪಜಾನುಕ ಔಪಜಾನುಕ** (ವಿಂ) ಪ್ರಾಯಃ ಮಂಡಿಯಲ್ಲಿ ಅಥವಾ ಮಂಡಿಯ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ. ಜಾನುನೋ: ಸಮೀಪ-ಮುಪಜಾನು | ಸಾಮೀಪ್ಯೇವ್ಯಯಿಂ | ಉಪಜಾನು ಪ್ರಾಯಃ: “ಠಕ್” (೪-೩-೪೦) | “ಸಙ್ಗ್ರಾಮೇ ಸರ್ವಕರ್ಮಿಣೌ ಪಾಣಿ ಯಸ್ಯೋಪ-ಜಾನುಕೌ” ಭಟಿಂ ೪-೨೫ |

**ಔಪದೇಶಿಕ ಔಪದೇಶಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಉಪದೇಶದಿಂದ ಜೀವಿಸುವ, ಉಪಾಧ್ಯಾಯವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವ. ಉಪದೇಶೇನ ಜೀವತಿ — “ಠಕ್” (೪-೪-೧೨) | 2. ಉಪದೇಶಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಅದ್ವೈತಜ್ಞರಣಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಪಟ್ಟ.

**ಔಪಧಿಕ ಔಪಧಿಕ** (ಪುಂ) ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ, ಕಪಟಿ, ವೇಷಧಾರಿ, ಠಕ್. ಉಪಧಿನಾ ಜೀವತಿ “ಠಕ್” (೪-೪-೧೨) |

**ಔಪಧೇಯ ಔಪಧೇಯ** (ನಂ) ಬಂಡಿಯ ಗಾಲಿ, ಚಕ್ರ. ಉಪಧೀಯತೇ ಇತ್ಯುಪಧಿಃ ರಥಾಙ್ಗಮ್, ತದೇವ ಔಪಧೇಯಮ್—ಉಪಧಿ “ಠಕ್” (೪-೧-೧೩) |

**ಔಪನಾಯನಿಕ ಔಪನಾಯನಿಕ** (ವಿಂ) ಉಪನಯನಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಉಪನಯನಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ, ಉಪನಯನವೇ ಪ್ರಯೋಜನವಾಗಿ ಉಳ್ಳ. ಉಪನಯನಂ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ “ಠಕ್” (೪-೧-೧೦೯) | “ಏಷ ಪ್ರೋಕ್ತೋ ದ್ವಿಜಾತೀನಾಮೌಪನಾಯನಿಕೋ ವಿಧಿಃ” ಮನುಂ ೨-೬೮ |

**ಔಪನಿಷತ್ಕ ಔಪನಿಷತ್ಕ** (ವಿಂ) ಉಪನಿಷತ್ತಿನ ಪ್ರವಚನದಿಂದ ಜೀವಿಸುವ. ಉಪನಿಷದಾ ಜೀವತಿ “ಠಕ್” (೪-೪-೧೨) |

**ಔಪನಿಷದ ಔಪನಿಷದ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. 2. ಉಪನಿಷತ್ತಿನ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ. ಉಪನಿಷದಿ ಭವಃ ಉಪನಿಷದೋ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನೋ ವಾ “ಅನ್” (೪-೩-೭೩) | (ವಿಂ) 3. ಉಪನಿಷತ್ತಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ, ವೇದಾನ್ತಸಂಬಂಧವಾದ. ಉಪನಿಷತ್ ಬ್ರಹ್ಮವಿದ್ಯಾ ತಸ್ಯಾ ಇದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಓಪ್” ಔಪನಿಷದೋ ಔಪನಿಷದೀ. “ಏತಾಶ್ಚಾನ್ಯಾಶ್ಚ ಸೇವೇತ ದೀಕ್ಷಾ ವಿಪ್ರೋ ವನೇ ವಸನ್ | ವಿವಿಧಾಶ್ಚೌಪನಿಷದೀ-ರಾತ್ಮಸಂಸಿದ್ಧಯೇ ಶ್ರುತೀಃ” ಮನುಂ ೬-೨೯ | 4. ಉಪನಿಷತ್ತಿನ ಅನುಯಾಯಿ, ವೇದಾನ್ತ. ಉಪನಿಷದಮಪ್ರೀತೇ ವೇತ್ತಿ ವಾ “ಅನ್” (೪-೨-೫೯) |

**ಔಪನಿವಿಕ ಔಪನಿವಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಾಯಃ ನೀವಿಯ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ, ನಡುಕಟ್ಟಿನ ಹತ್ತಿರವಿರುವ. ಉಪನಿವಿ ನೇವೀಸಮೀಪೇ ಪ್ರಾಯಃ: “ಠಕ್” (೪-೩-೪೦) | “ಬದ್ಧೋ ದುರ್ಬಲ-ರಕ್ಷಾರ್ಥಮಸಿಯೇನೌಪನಿವಿಕಃ” ಭಟಿಂ ೪-೨೬ | 2. ನೀವಿಯ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ, ಹೆಂಗಸರ (ಸೊಂಟದ) ಸೀರೆಯಗಂಟಿನ ಹತ್ತಿರವಿರುವ. “ಔಪನಿವಿಕಮಋಧ ಕಿಲ ಸ್ತ್ರೀ ವಲ್ಲಭಸ್ಯ ಕರಮಾತ್ಮಕರಾಭ್ಯಾಮ್” ಮಾಘಂ ೧೦-೬೦ |

**ಔಪಪತ್ತಿಕ ಔಪಪತ್ತಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಕಲ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉಪಪತ್ತ್ಯಾ ನಿವೃತ್ತಮ್ “ಠಕ್” (೪-೧-೭೯) | 2. ಯುಕ್ತವಾದ, ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಸಿದ್ಧವಾದ. “ಔಪಪತ್ತಿಕಮಾಹಾರಂ ಪ್ರಯಚ್ಛಸ್ವೇತಿ ಭಾರತ” ಭಾಂ ಅನುಂ ೮೭-೨೭ |

**ಔಪಪತ್ಯ ಔಪಪತ್ಯ** (ನಂ) ಉಪಪತ್ತಿಯೊಡನೆ ಸಂಭೋಗ. “ಜುಗುಪ್ಸಿತಂ ಹಿ ಸರ್ವತ್ರ ಔಪಪತ್ಯಂ ಕುಲಸ್ತ್ರಿಯಾಃ” ಭಾಗಂ ೧೦-೨೯-೨೬ |

**ಔಪಸ್ಯ ಔಪಸ್ಯ** (ನಂ) ಸಾದೃಶ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ. ಉಪಮಾ ಸ್ವಾರ್ಥೇ “ಉಪ್” (ವಾಂ ೭-೩-೩೧) | “ಪ್ರಾಣಾ ಯಥಾತ್ಮನೋ-ಽಭಿಷ್ಠಾ ಭೂತಾನಾಮಪಿ ತೇ ತಥಾ | ಆತ್ಮೋಪಸ್ಯೇನ ಭೂತೇಷು ದಯಾಂ ಕುರ್ವಂತಿ ಸಾಧವಃ” ಹಿತಂ ೧-೧೨ | “ಆತ್ಮೋಪಸ್ಯೇನ ಸರ್ವತ್ರ ಸಮಂ ಪಶ್ಯತಿ ಯೋರ್ಜುನ | ಸುಖಂ ವಾ ಯದಿ ವಾ ದುಃಖಂ ಸ ಯೋಗೀ ಪರಮೋ ಮತಃ” ಗೀತಾ ೬-೩೨ |

**ಔಪಯಿಕ ಔಪಯಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಉಪಾಯ, ಯುಕ್ತಿ. ಉಪಾಯ ಸ್ವಾರ್ಥೇ “ಠಕ್” (೪-೪-೩೪) | “ಶಿವಮೌಪಯಿಕಂ ಗರೀಯಸೀಂ ಕಲನಿಷ್ಪತ್ತಿಮದ್ವಿಷಿತಾಯತಿಮ್” ಕಿರಾಂ ೨-೩೫ | (ವಿಂ) 2. ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಯುಕ್ತವಾದ. 3. ಉಪಾಯದಿಂದ ಬಂದ, ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಲಭ್ಯವಾದ. “ವೃತ್ತಮೌಪಯಿಕಂ ಮನ್ಯೇ ಭೀಷ್ಮೇಣ ಸಹ ಭಾರತ” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೨೩-೧೨ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಓಪ್” (೪-೧-೧೫) | ಔಪಯಿಕೋ ಔಪಯಿಕೇ. “ಅಚಿರಾದುಪಕರ್ತುರಾಚರೇದಥ ವಾತ್ಮೋಪಯಿಕೋಮುಪಕ್ರಿಯಾಮ್” ನೈಷಂ ೨-೧೪ |

**ಔಪಯೋಗಿಕ ಔಪಯೋಗಿಕ** (ವಿಂ) ಉಪಯೋಗಕ್ಕೆ ಬರುವ, ಉಪಯೋಗಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಉಪಯೋಗವೇ ಪ್ರಯೋಜನವಾಗಿ ಉಳ್ಳ. ಉಪಯೋಗಃ ಪ್ರಯೋಜನಂ ಕಾರಣಮಸ್ಯ “ಠಕ್” (೪-೧-೧೦೯) | “ಅಥಾತಃ ಸ್ನೇಹೋಪಯೋಗಿಕಂ ಚಿಕಿತ್ಸಿತಂ ವ್ಯಾಖ್ಯಾಸ್ಯಾಮಃ” ಸುಶ್ರುತಂ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಓಪ್” (೪-೧-೧೫) | —ಯೋಗಿಕೋ —ಯೋಗಿಕೇ.

**ಔಪರಿಷ್ಠ ಔಪರಿಷ್ಠ** (ವಿಂ) ಮೇಲುಗಡೆ ಇರುವ, ಮೇಲುಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ. ಉಪರಿಷ್ಠಾಙ್ಗವಃ “ಅನ್” (೪-೩-೫೩) |



**ಔಪರೋಧಿಕ ಔಪರೋಧಿಕ** (ವಿಂ) ತಡೆಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಪ್ರತಿಬಂಧಕಸಂಬಂಧವಾದ, ತಡೆಯೇ ಪ್ರಯೋಜನವಾಗಿ ಉಳ್ಳ. ಉಪರೋಧ: ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯)।

**ಔಪಲ ಔಪಲ** (ವಿಂ) 1. ಶಿಲಾಮಯವಾದ, ಶಿಲೆಯಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉಪಲಸ್ಯ ವಿಕಾರ: "ಅಣ್" (೪-೩-೧೩೪)। "ಯಥಾ ಲವಣೋಪಲೇನ ನಿಮಜ್ಜತುಡಕೇ ತರನ್। ತಥಾ ನಿಮಜ್ಜತೋಽಪಸ್ತಾದಜೌ ದಾತೃಪ್ರಸೀಚ್ಛಕೌ" ಮನುಂ ೪-೧೯೪। 2. ಶಿಲಾಸಂಬಂಧವಾದ. ಶಿಲಾಯಾ ಇದಮ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೨೦)। 3. ಕಲ್ಲುಗಳಿಂದ ಬಂದ ತೆರಿಗೆ, ಕಲ್ಲುಗಳ ಮಾರಾಟದಿಂದ ಬಂದ ಸುಂಕ. ಉಪಲಾದಾಗತ: "ಅಣ್" (೪-೩-೭೬)।

**ಔಪವಸ್ತ ಔಪವಸ್ತ** (ನಂ) ಉಪವಾಸ, ಉಪವಾಸದಿರು ಎಕೆ. ಉಪ+ವಸ್ತು (ಸ್ತಮ್) ಮಾತ್ರ "ಕ್:" (೩-೩-೧೧೪)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಣ್" (೪-೪-೩೮)। ಅನೇಕಾರ್ಥತ್ವಾದಭೋಜನೇ ವೃತ್ತಿ:। "ಔಪವಸ್ತಮೇವ ಕಾಲಾಂತರೇ ಭೋಜನಮ್" ಆಪಂ ೪-೨-೧-೪। "ಔಪವಸ್ತಂ ತುಪವಾಸ:" ಅಮಂ।

**ಔಪವಸ್ತ್ರ ಔಪವಸ್ತ್ರ** (ನಂ) ಉಪವಾಸ. ಉಪವಸ್ತಿ-ಉಪ+ವಸ್ತು (ಸ್ತಮ್) "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಉಪವಸ್ತುರಿದಂ ಕರ್ಮ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ಔಪವಾಸ ಔಪವಾಸ** (ವಿಂ) ಉಪವಾಸಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಉಪವಾಸ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕೊಡಲ್ಪಡುವ. ಉಪವಾಸ ಉಪವಾಸಕಾಲೇ ದೀಯತೇ - ಉಪವಾಸ "ಅಣ್" (೪-೧-೧೭)।

**ಔಪವಾಸಿಕ ಔಪವಾಸಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಉಪವಾಸಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ, ಉಪವಾಸಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಉಪವಾಸೇ ಸಾಧು: "ಠಕ್" (೪-೪-೧೦೩)। 2. ಉಪವಾಸಕ್ಕೆ ಶಕ್ತನಾದ, ಉಪವಾಸ ಮಾಡುವುದರಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಥನಾದ. ಉಪವಾಸಾಃ ಪ್ರಭವತಿ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೧)।

**ಔಪವಾಸ್ಯ ಔಪವಾಸ್ಯ** (ನಂ) ಉಪವಾಸ. ಉಪವಾಸ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಘ್ರ" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪)।

**ಔಪವಾಹ್ಯ ಔಪವಾಹ್ಯ** (ಪುಂ) ರಾಜನ ವಾಹನ (ಅನೆ, ಕುದುರೆ, ರಥ ಮೊದಲಾದವು). ಉಪವಾಹ್ಯ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಣ್" (೪-೪-೩೮)। "ಔಪವಾಹ್ಯಮಸೌ ಮತ್ಕಮಾರೂಢತಿ ಸಾಮ್ಪ್ರತಮ್" ಧಾತಂ ೧೬-೪೨।

**ಔಪವೇಶಿಕ ಔಪವೇಶಿಕ** (ವಿಂ) ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವುದರಿಂದ ಜೀವನ ನಡೆಸುವವನು, ಒಬ್ಬನಿಂದ ನಿಯುಕ್ತನಾಗಿ ಅವನಿಗಾಗಿ ಕುಳಿತು ತನ್ನ ಸೇವೆಯನ್ನು ಸಲ್ಲಿಸುವುದರಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಉಪವೇಶನೇ ಜೀವತಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೨)।

**ಔಪಶ್ಲೇಷಿಕ ಔಪಶ್ಲೇಷಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಏಕದೇಶದಲ್ಲಿ ಸಂಬಂಧಹೊಂದಿರುವ, ಒಂದು ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ. ಉಪಶ್ಲೇಷಣ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೨-೮೦)। ಕಡೆ ಆಸ್ತೇ। 2. ಸಮೀಪ ಸಂಬಂಧಹೊಂದಿರುವ. ಗಜ್ಞಾಃ ಧೋಷ:। ಇದೊಂದು ಆಧಾರದ ಭೇದ. ["ಆಧಾರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" ಔಪಶ್ಲೇಷಿಕೀ ಔಪಶ್ಲೇಷಿಕೀ.

**ಔಪಸರ್ಗಿಕ ಔಪಸರ್ಗಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಸನ್ನಿಪಾತವ್ಯಾಧಿ. "ಕಫೋಽನುಲೋಮವಾತೇನ ಯದಿ ಪಿತ್ತಾನುಗೋ ಭವೇತ್। ಸ್ವೇದಶೀತಾದಿಭಿರ್ಜುಷ್ಣಸ್ತದಾ ಭವತಿ ಮಾನವ:। ಪ್ರತೀಲೋಮ: ಪುನಸ್ತೇನ ಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯಮಾಪ್ನೋತಿ ತತ್ಕ್ಷಣಾತ್। ಔಪಸರ್ಗಿಕ ಉಪಸರ್ಗಿಕ: ಸನ್ನಿಪಾತ ಉಪಸರ್ಗಿಕ:" (ವಿಂ) 2. ಉಪಸರ್ಗಸಂಬಂಧವಾದ, ಪೂರ್ವೋತ್ಪನ್ನವ್ಯಾಧಿಯನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಬರುವ ವ್ಯಾಧಿ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಉಪದ್ರವಸಂಬಂಧವಾದ. ಪದೇ ಪದೇ ಪರಸ್ಪರ ಅಂಗಸ್ಪರ್ಶ, ಒಬ್ಬನ ಉಸಿರನ್ನು ಇನ್ನೊಬ್ಬನು ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕುಳಿತು ಉಪವಾಸ ಮಾಡುವುದು, ಒಂದೇ ಹಾಸಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಮಲಗುವುದು, ಒಂದೇ ಆಸನದಲ್ಲಿ ಕೂಡುವುದು, ಒಬ್ಬ ಧರಿಸಿದ ಒಟ್ಟಿಯನ್ನು ಉಡುವುದು, ಇವೇ ಮುಂತಾದುವುಗಳಿಂದ ಕುಷ್ಠ, ಜ್ವರ, ಶೋಭೆ (ಉತ) ಮುಂತಾದ ಔಪಸರ್ಗಿಕವ್ಯಾಧಿ (ಅಂಟುಜಾಡ್ಯ) ಗಳು ಬರುವುವು. ಪ್ರಸಜ್ಞಾದ್ಗಾತ್ರಸಂಸ್ಪರ್ಶಾತ್ ನಿ:ಶ್ವಾಸಾತ್ ಸಹಭೋಜನಾತ್। ಸಹಶಯ್ಯಾಸನಾಚ್ಚಾಪಿ ವಸ್ತ್ರ-ಮಾಲ್ಯಾನುಲೇಪನಾತ್। ಕುಠಂ ಜ್ವರಶ್ಚ ಶೋಷಶ್ಚ ನೇತ್ರಾಭಿಷ್ಯಂದ ಉಪಶ್ಚ। ಔಪಸರ್ಗಿಕ ರೋಗಶ್ಚ ಸಂಕ್ರಾಮಂತಿ ನರಾನ್ವರಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ನಿವಾಂ ೪-೩೩, ೩೪। 3. ಪ್ರ ಪರಾ ಮುಂತಾದ ಉಪಸರ್ಗಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.

**ಔಪಸ್ಥಾನ ಔಪಸ್ಥಾನ** (ವಿಂ) ಉಪಾಸಕ, ಉಪಾಸನೆಯ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಉಪಸ್ಥಾನಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ "ಞ:" (೪-೪-೬೨)।

**ಔಪಸ್ಥಾನಿಕ ಔಪಸ್ಥಾನಿಕ** (ವಿಂ) ಸೇವೆಯಿಂದ ಅಥವಾ ಪೂಜೆಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಉಪಸ್ಥಾನೇನ ಜೀವತಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೨)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಸ್ಥಾನಿಕೀ -ಸ್ಥಾನಿಕೀ.

**ಔಪಸ್ಥಿಕ ಔಪಸ್ಥಿಕ** (ವಿಂ) ವ್ಯಭಿಚಾರದಿಂದ ಜೀವಿಸುವ, ಲೈಂಗಿಕವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ ಜೀವನ ಮಾಡುವ. ಉಪಸ್ಥೇನ ಉಪಸ್ಥವ್ಯಾಪಾರೇಣ ಜೀವತಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೨)।

**ಔಪಸ್ಥ್ಯ ಔಪಸ್ಥ್ಯ** (ನಂ) ರತಿಸುಖ, ಸ್ತ್ರೀಸಂಭೋಗದ ಸೌಖ್ಯ. ಉಪಸ್ಥ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ಘ್ರ" (೪-೧-೧೨೪)। "ಔಪಸ್ಥ್ಯಜೈಹ್ವಯ-ಕಾರ್ಪಣ್ಯಾತ್ ಗೃಹಪಾಲಯತೇ ಜನ:" ಭಾಗಂ ೭-೧೫-೧೮।



ಔಪಹಸ್ತಿಕ ಔಪಹಸ್ತಿಕ (ವಿಂ) ಪ್ರತಿಗ್ರಹದಿಂದ ಜೀವಿ ಸುವ. ಉಪಹಸ್ತೇನ ಜೀವತಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೨)।

ಔಪಹಾರಿಕ ಔಪಹಾರಿಕ (ವಿಂ) ಉಪಹಾರಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ವಸ್ತು. ಉಪಹಾರೇ ಸಾಧು "ಠಕ್" (೪-೪-೧೦೨)।

ಔಪಾಕರಣ ಔಪಾಕರಣ (ವಿಂ) 1. ಉಪಾಕರಣಸಂಬಂಧವಾದ, ಸಂಸ್ಕಾರಪೂರ್ವಕ ವೇದಾಧ್ಯಯನದ ಪ್ರಾರಂಭಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಉಪಾಕರಣಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। (ನಂ) 2. ಉಪಾಕರಣ. ಉಪಾಕರಣಮೇವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮)। "ವೈರಮಣಿ ಗುಣವಷ್ಟಾಕಯ ಔಪಾಕರಣ ಇತಿ ತ್ರಿಹಾ:" ಆಪಂ ಷಂ ೧-೩-೧೦-೨।

ಔಪಾಧಿಕ ಔಪಾಧಿಕ (ವಿಂ) 1. ವಿಶೇಷಗುಣನಿಮಿತ್ತವಾದ, ವಿಶೇಷಗುಣದಿಂದಂಟಾದ. ಉಪಾಧಿನಾ ನಿವೃತ್ತ: "ಠಕ್" (೪-೨-೮೦)।

ಔಪಾಧಿಕಿ ಔಪಾಧಿಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನುಗತವಾದ ಉಪಾಧಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಸಂಕೇತವುಳ್ಳ ಸಂಜ್ಞೆ. ವಾರ್ತಾಹಾರಕತ್ವರೂಪವಾದ ಅನುಗತೋಪಾಧಿಯಿಂದ ದೂತನಲ್ಲಿ ವಾರ್ತಾಹಾರಕ ಸಂಜ್ಞೆಯು ಔಪಾಧಿಕ.

ಔಪಾಧ್ಯಾಯಕ ಔಪಾಧ್ಯಾಯಕ (ವಿಂ) ಉಪಾಧ್ಯಾಯನಿಂದ ಬಂದ. ಉಪಾಧ್ಯಾಯಾದಾಗತ: "ವುಕ್" (೪-೩-೭೭)।

ಔಪಾನಹ ಔಪಾನಹ (ವಿಂ) ಪಾದರಕ್ಷೆಗೆ ಬೇಕಾದ ಸಲಕರಣೆ. ಉಪಾನಹೇ ಅಯಮ್ "ಞ:" (೪-೧-೧೪)। ಔಪಾನಹೋ ಮುಜ್ಜ:। ಔಪಾನಹಂ ಚಮೆ।

ಔಪಾಸನ ಔಪಾಸನ (ಪುಂ) 1. ಗೃಹಸ್ಥನು ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಮತ್ತು ಸಾಯಂಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಹೋಮಕ್ಕಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಅಗ್ನಿ. ಉಪಾಸ್ಯತೇ ಪ್ರತಿದಿನಮಿತ್ಯುಪಾಸನೋಽಗ್ನಿ: ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮)। (ನಂ) 2. ಗೃಹ್ಯಾಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಮತ್ತು ಸಾಯಂಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಹೋಮ, ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯ. 3. ಹವಿಸ್ಸು, ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಅರ್ಪಿಸುವ ಹೋಮದ್ರವ್ಯ. (ವಿಂ) 4. ಔಪಾಸನಾಗ್ನಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. 5. ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. "ವೇತಾನೋಪಾಸನಾ: ಕಾರ್ಯಾ: ಕ್ರಿಯಾಶ್ಚ ಶ್ರುತಿಚೋದನಾತ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೧೭।

ಔಮ ಔಮ ಔಮಕ ಔಮಕ (ವಿಂ) 1. ಅಗಸೆಸೊಪ್ಪಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಅಗಸೆಗಿಡದ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಉಮಾಯಾ ವಿಕಾರೋಽವಯವೋ ವಾ-ಉಮಾ ವಾ "ವುಕ್" (೪-೩-೧೫೮)। ಪಕ್ಷೇ "ಅನ್" (೪-೩-೧೩೪)। ಔಮಮ್ ಔಮಮ್.

ಔಮಿಕ ಔಮಿಕ (ವಿಂ) ಅಗಸೆಯ ಪ್ರಾಪ್ತಿಯನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಸಂಯೋಗ ಅಥವಾ ಉತ್ಪಾತ. ಉಮಾಯಾ ನಿಮಿತ್ತಂ ಸಂಯೋಗ: ಉತ್ಪಾತೋ ವಾ "ಠಕ್" (೪-೧-೩೮)।

ಔಮಿನ ಔಮಿನ (ನಂ) ಅಗಸೆಗಿಡವನ್ನು ಬೆಳೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಭೂಮಿ. ಉಮಾನಾಂ ಭವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ ವಾ "ವುಕ್" (೪-೨-೧)। ಪಕ್ಷೇ "ಯತ್" (೪-೨-೪)। ಉಮ್ಯಮ್ ಉಮ್ಯಮ್.

ಔರಗ ಔರಗ (ನಂ) 1. ಸರ್ಪದೇವತಾಕವಾದ ಆಶ್ಲೇಷಾ ನಕ್ಷತ್ರ. ಉರಗೋ ದೇವತಾಃಸ್ಯ "ಅನ್" (೪-೨-೨೪)। (ವಿಂ) 2. ಸರ್ಪಸಂಬಂಧವಾದ. ಉರಗಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

ಔರಭ್ರ ಔರಭ್ರ (ನಂ) 1. ಕುರಿಯ ತುಪ್ಪಟದಿಂದ ತಯಾರಾದ ಕಂಬಳಿ. 2. ಕುರಿಯ ಮಾಂಸ. (ವಿಂ) 3. ಕುರಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಉರಭ್ರಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಔರಭ್ರೇಣಾಯ ಚತುರ: ಶಾಕುನೇನಾಯ ಪञ್ಚ ವೈ" ಮನುಂ ೩-೨೬೮।

ಔರಭ್ರಕ ಔರಭ್ರಕ (ವಿಂ) ಕುರಿಗಳ ಗುಂಪು, ಕುರಿಗಳ ಮಂದೆ. ಉರಭ್ರಾಣಾಂ ಸಮೂಹ: "ವುಕ್" (೪-೨-೩೯)।

ಔರಭ್ರಿಕ ಔರಭ್ರಿಕ (ವಿಂ) ಕುರಿಯನ್ನು ಮಾರಿ ಜೀವಿಸುವವನು, ಕುರಿಯನ್ನು ಸಾಕಿ ಮಾರುವುದರಿಂದ ಜೀವನ ಮಾಡುವವನು. ಉರಭ್ರ: ಪಣ್ಯಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೫೧)। "ಔರಭ್ರಿಕೋ ಮಾಹಿಷಿಕ: ಪರಪೂರ್ವಪಿತಿಸ್ತಥಾ" ಮನುಂ ೩-೧೬೬।

ಔರಸ ಔರಸ (ಪುಂ) 1. ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಗ, ಮದುವೆಯಾದ ಸರ್ವಣಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಗ. ಉರಸಾ ನಿರ್ಮಿತ: "ಅನ್" (೪-೪-೯೪)। "ಸ್ವಕ್ಷೇತ್ರೇ ಸಂಸ್ಕೃತಾಯಾಂ ತು ಸ್ವಯಮುತ್ಪಾದಯೇದ್ವಿ ಯಮ್। ತಮೂರಸಂ ವಿಜಾನೀಯಾತ್ಪುತ್ರಂ ಪ್ರಥಮ-ಕಲ್ಪಿತಮ್" ಮನುಂ ೯-೧೬೬। ಪುತ್ರರು (1) ಔರಸ:, (2) ಕ್ಷೇತ್ರಜ:, (3) ದತ್ತ:, (4) ಕೃತ್ರಿಮ:, (5) ಗೂಢೋತ್ಪನ್ನ:, (6) ಅಪವಿಧ:, (7) ಕಾನೀನ:, (8) ಸಹೋದ:, (9) ಕ್ರೀತ:, (10) ಪೌನರ್ಭವ:, (11) ಸ್ವಯಂದತ್ತ: ಮತ್ತು (12) ಶೋದ್ರ: ಎಂದು ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ. ಮೊದಲನೆಯ ಆರು ಮಂದಿ ಆಸ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಭಾಗ (ಪಾಲು) ಹೊಂದಲು ಅರ್ಹರಾದ ಬಾಂಧವರು. ಉಳಿದ ಆರು ಮಂದಿ ಪುತ್ರರು ಭಾಗ ಹೊಂದಲು ಅನರ್ಹರಾದ ಬಾಂಧವರು. "ಔರಸ: ಕ್ಷೇತ್ರಜಶ್ಚೇವ ದತ್ತ: ಕೃತ್ರಿಮ ಉವ ಚ। ಗೂಢೋತ್ಪನ್ನೋಽಪವಿಧಶ್ಚ ದಾಯಾದಾ ಬಾಂಧವಾಶ್ಚ ಷಡ್। ಕಾನೀನಶ್ಚ ಸಹೋದಶ್ಚ ಕ್ರೀತ: ಪೌನರ್ಭವಸ್ತಥಾ। ಸ್ವಯಂದತ್ತಶ್ಚ ಶೋದ್ರಶ್ಚ ಷಡ್ದಾಯಾದಬಾಂಧವಾ:" ಮನುಂ ೯-೧೫೯, ೬೦। "ಇತ್ಯಂ ನಾಗಸ್ತ್ರಿಭುವನಗುರೋರಸಂ ಮೇಥಿಲೇಯಂ ಲಬ್ಧ್ವಾ ಬಂಧುಂ ತಮಪಿ ಚ ಕುಶ: ಪञ್ಚಮಂ ತಕ್ಷಕಸ್ಯ" ರಘುಂ ೧೬-೮೮। ಅಸರ್ವಣ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನಲ್ಲಿಯೂ ಈ ಪ್ರಯೋಗವುಂಟು. "ಅಜಾನನ್ಮಜ್ಜುನಶ್ಚಾಪಿ ನಿಹತಂ ಪುತ್ರಮೂರಸಮ್"



ಭಾಂ.ಶಿಷ್ಯಂ ೧೦-೮೫. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛಿಪ್" (೪-೧-೧೫).  
ಔರಸಿ ಔರಸೀ. (ವಿಂ) 2. ತನ್ನ ಎದೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ,  
ಎದೆಯಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನವಾದ.

ಔರಸಿಕ ಔರಸಿಕ (ವಿಂ) ವಕ್ಷಸ್ಥಿನಂತಿರುವ, ಎದೆಯ  
ಹಾಗಿರುವ. ತರ ಇವ "ಠಕ್" (೫-೩-೧೦೮).

ಔರಸ್ಯ ಔರಸ್ಯ (ವಿಂ) ವಕ್ಷಸ್ಥಿಗೆ ಹಿತವಾದ, ಎದೆಗೆ ಹಿತ  
ವಾದ. ತರಸೇ ಹಿತಮ್ "ಯತ್" (೫-೧-೬). ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಅನ್".

ಔರ್ಣ ಔರ್ಣ (ವಿಂ) ಕುರಿಯ ತುಪ್ಪಟದಿಂದ ತಯಾರಾದ  
ಕಂಬಳಿ ಮೊದಲಾದುದು. ಊರ್ಣಾ ವಿಕಾರ: "ಅನ್"  
(೪-೩-೧೩೪). ವಾ "ವು" (೪-೩-೧೫೮). ಔರ್ಣಕಮ್  
ಔರ್ಣಕಮ್.

ಔರ್ಣಿಕ ಔರ್ಣಿಕ (ವಿಂ) ಉಣ್ಣೆಯ ಪ್ರಾಪ್ತಿಯನ್ನು ಸೂಚಿ  
ಸುವ ಸಂಯೋಗ ಅಥವಾ ಉತ್ಪಾದ. ಊರ್ಣಾ ನಿಮಿತ್ತ  
ಸಂಯೋಗ: ಉತ್ಪಾದೋ ವಾ "ಠಕ್" (೫-೧-೩೮).

ಔರ್ವಕಾಲಿಕ ಔರ್ವಕಾಲಿಕ (ವಿಂ) ಮುಂದಿನ ಕಾಲದ,  
ಮುಂದಿನ ಕಾಲದ ಸಂಬಂಧವಾದ.

ಔರ್ವದೇಹ ಔರ್ವದೇಹ (ವಿಂ) ಉರ್ವದೇಹಸಂಬಂಧ  
ವಾದ. ಔರ್ವದೇಹಸ್ಯದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦).

ಔರ್ವದೇಹಿಕ ಔರ್ವದೇಹಿಕ (ವಿಂ) ಉರ್ವದೇಹವನ್ನು  
ಹೊಂದಿಸಲು ನಡೆಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಕ್ರಿಯೆ, ಅಪರ  
ಕ್ರಿಯೆ. ಔರ್ವದೇಹ: ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೫-೧-೧೦೯).

ಔರ್ವ ಔರ್ವ (ಪುಂ) 1. ಭೃಗುವಂಶದ ಒಬ್ಬ ಯುಷ್ಠಿ. ಕುರೌ  
ಜಾತ: "ಅನ್" (೪-೩-೨೫). ಚೈವನಮಹರ್ಷಿಯ  
ಪತ್ನಿಯ ತೊಡೆಯಿಂದ (ಹೊರಬಂದು) ಹುಟ್ಟಿದುದರಿಂದ  
ಈ ಹೆಸರಾಯಿತು. "ಅನೇನೈವ ಹಿ ವಿಸ್ತಾರಾತೋ ನಾಮ್ನಾ ಲೋಕೇ  
ಸತ್ತಮ: | ಸ ಔರ್ವ ಇತಿ ವಿಪ್ರರ್ಷಿಹಂ ಭಿತ್ತ್ವಾ ವ್ಯಜಾಯತ |"  
ಭಾಂ. ಆದಿಂ ೧೯೫-೮. [ಎವರಕ್ಕೆ "ಋಜ" ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.] 2. ಬಡಬಾಗಿ. [ಔರ್ವನು ತನ್ನ ವಂಶದವ  
ರನ್ನು ಹಿಂಸಿಸಿದ ರಾಜರನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸಲು ಕುಪಿತನಾಗಿ  
ಹೊರಟಾಗ ಪಿತೃದೇವತೆಗಳ ಸೂಚನೆಯಂತೆ ತನ್ನ ಕೋಪ  
ವನ್ನು ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಬಿಡಲಾಗಿ ಅದು ಕುದುರೆಯ ರೂಪ  
ದಿಂದ ಸಮುದ್ರವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಬಡಬಾಗಿವೆಂದು  
ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಪಡೆಯಿತು.] ಭಾಂ. ಆದಿಂ ೧೯೬. (ವಿಂ) 3.  
ಭೂಮಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. 4. ತೊಡೆಯಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನ  
ವಾದ.

ಔರ್ವರ ಔರ್ವರ (ವಿಂ) ಭೂಮಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ತವ-  
ರಾಯಾ ಅಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦). "ಕಿಮಪೇತಿ  
ರಜೋಭಿರೈವೇರವಕೀರ್ಣಸ್ಯ ಮಣೇರ್ಮಹಾರ್ಥತಾ" ಮಾಘಂ ೧೬-೨೭.

ಔರ್ವಶಯ ಔರ್ವಶಯ (ಪುಂ) 1. ಉರ್ವಶಯ ಮಗ.  
2. ಅಗಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿ. ಔರ್ವಶಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ - "ಠಕ್"  
(೪-೧-೧೨೦). [ಉರ್ವಶಯನ್ನು ಕಂಡು ಮೋಹಿಸಿದ  
ಮಿತ್ರಾವರುಣರ ವೀರ್ಯದಿಂದ ಅಗಸ್ತ್ಯರು ಹುಟ್ಟಿದುದ  
ರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.]

ಔಲ್ಕ ಔಲ್ಕ (ನಂ) ಉಲ್ಕಗಳ ಸಮೂಹ, ಗೂಬೆಗಳ  
ಗುಂಪು. ಔಲ್ಕಾಣಾಂ ಸಮೂಹ: "ಅನ್" (೪-೨-೪೫).

ಔಲ್ಕಯ ಔಲ್ಕಯ (ಪುಂ) 1. ಉಲ್ಕನ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ  
ವನು, ಕಣ್ಣಾದ ಮಹರ್ಷಿ. ಔಲ್ಕಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಮ್ ಪುಮಾನ್ "ಯನ್"  
(೪-೧-೧೦೫). 2. ವೈಶೇಷಿಕದರ್ಶನದ ಅನುಯಾಯಿ.

ಔಲ್ಕಯದರ್ಶನ ಔಲ್ಕಯದರ್ಶನ (ನಂ) ವೈಶೇಷಿಕ ದರ್ಶನ.

ಔಲ್ಕಲ ಔಲ್ಕಲ (ವಿಂ) ಒರಳಿನಿಂದ ಬಂದ, ಒರಳಿ  
ನಲ್ಲಿ ಅರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ ಅಥವಾ ಪುಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಔಶನಸ ಔಶನಸ (ಪುಂ) 1. ಉಶನಸ್ಸಿನ ಮಗ, ಶುಕ್ರಾ  
ಚಾರ್ಯರ ಮಗ. 2. ಉಶನಸ್ಸಿನ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ  
ದವನು. (ನಂ) 3. ಉಶನಸ್ಸಿನಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಒಂದು  
ಉಪಪುರಾಣ. 4. ಉಶನಸ್ಸಿನಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಒಂದು  
ಸ್ತೂತಿ. (ವಿಂ) 5. ಉಶನಸ್ಸಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.

ಔಶೀನರ ಔಶೀನರ (ಪುಂ) ಉಶೀನರನಿಗೆ ಯಯಾತಿಯ  
ಮಗಳಾದ ಮಾಧವಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಮಗ, ಶಿಬಿ  
ಚಕ್ರವರ್ತಿ. ಔಶೀನರಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೮೬).  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರೀ -ರೀ. ಪುರೂರವಸ್ಥಿನ ಪತ್ನಿ. ವಿಕಾಂ ೨.

ಔಶೀರ ಔಶೀರ (ನಂ) 1. ಶಯನ, ಹಾಸಿಗೆ. 2. ಆಸನ.  
3. ಚಾಮರದಂಡ, ಚಾಮರದ ಹಿಡಿ. 4. ಚಾಮರ.  
5. ದಂಡ, ಕೋಲು. (ವಿಂ) 6. ಲಾಮಂಚದ ಬೇರಿ  
ನಿಂದ ತಯಾರಾದ, ಲಾಮಂಚದ ಬೇರಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
ಔಶೀರ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦). "ಔಶೀರಂ ಶಯನಾಸನ-  
ಚಾಮರದಂಡೇಷುಶೀರಜೇ ಪ್ರೋಕ್ತಮ್" ಮೇದಿಂ. "ಔಶೀರಜೇ  
ಚಾಮರೇ ಚ ದಂಡೇ ಚ" ಹೇಮಂ.

ಔಷಧ ಔಷಧ (ನಂ) 1. ಔಷಧ, ಮೂಲಿಕೆಗಳು ಶುಂಠಿ  
ಮುಂತಾದ ಮೊದಲಾದ ವಸ್ತುಗಳಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ  
ಮದ್ದು. ಔಷಧಿ "ಅನ್" (೫-೪-೩೭). 2. ಔಷಧ  
ದ್ರವ್ಯ. ಔಷಧಕ್ಕಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಮೂಲಿಕೆಗಳು.  
ಔಷಧಿ ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಅನ್" (೫-೪-೩೭). "ದ್ವೇಷ್ಯೋಽಪಿ  
ಸಂತತ: ಶಿಷ್ಠ: ತಸ್ಯಾಂತಸ್ಯ ಯಥೌಷಧಮ್" ರಘುಂ ೧-೨೮.

ಔಷಧಿ(ಧಿ) ಔಷಧಿ(ಧಿ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಔಷಧಿ" ಪದದ  
ಅರ್ಥ. "ನಯಶಾಲಿನಿ ಶ್ರಿಯ ಇವಾಧಿಪತೌ ವಿರಮಂತಿ ನ  
ಜ್ವಲಿತುಮೌಷಧಯ: " ಕಿರಾಂ ೫-೨೪.



ಔಷಧೀಯ ಔಷಧೀಯ (ವಿಂ) ಔಷಧಿಸಂಬಂಧವಾದ ಮೂಲಕೆ ಮೊದಲಾದುದು. ಔಷಧ "ಛ:" (೪-೨-೧೧೪)।

ಔಷರ ಔಷರ (ನಂ) ಚೌಳು ಭೂಮಿಯ ಮಣ್ಣಿನಿಂದ ತೆಗೆದ ಉಪ್ಪು. ಋಷೇ ಭವಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೫೩)।

ಔಷಸ ಔಷಸ (ವಿಂ) 1. ಉಷಃಕಾಲದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ಉಷಃಕಾಲದಲ್ಲಿರುವ. ಉಷಸಿ ಭವ: "ಅನ್" (೪-೩-೧೬)। 2. ಉಷಃಕಾಲಸಂಬಂಧವಾದ. ಉಷಸ ಇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಔಷಸಾತಪಭಯಾದಪಲಿನ ವಾನರಚ್ಛವಿ-ವಿರಾಮಪಟೀಯ:" ಕಿರಾಂ ೯-೧೧। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಸೀ-೫೬.

ಔಷಸಿಕ ಔಷಸಿಕ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿ ಸುವ, ಬೆಳಿಗ್ಗೆ ಓಡಾಡುವ. ಉಷಸಾ ಚರತಿ-ಉಪಸ್ "ಠಕ್" (೪-೪-೮)। 2. ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಬೆಳಿಗ್ಗೆ ಉಂಟಾದ. ಉಷಸಿ ಭವ: "ಠಕ್" (೪-೩-೧೧)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। ಔಷಸಿಕೀ ಔಷಸಿಕೀ.

ಔಷ್ಠ ಔಷ್ಠ (ವಿಂ) ಉಷ್ಣಸಂಬಂಧವಾದ, ಒಂಟಿಯಿಂದ ಉಂಟಾದ, ಒಂಟಿಯಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನವಾದ (ಹಾಲು, ಚರ್ಮ ಮುಂತಾದುದು) ಉಷ್ಠಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಅನಿರ್ದಶಾಯಾ ಗೋಕ್ಷೀರಮೌಷ್ಠಮೇಕಶಫಂ ತಥಾ" ಮನುಂ ೫-೮।

ಔಷ್ಠಕ ಔಷ್ಠಕ (ನಂ) 1. ಒಂಟಿಗಳ ಸಮೂಹ, ಒಂಟಿಗಳ ಗುಂಪು. ಉಷ್ಠಾಣಾಂ ಸಮೂಹ: "ವುನ್" (೪-೨-೩೯)। (ವಿಂ) 2. ಒಂಟಿಯಿಂದ ಉಂಟಾದ, ಒಂಟಿಯಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನವಾದ. ಉಷ್ಠಸ್ಯ ವಿಕಾರೋಽವಯವೋ ವಾ "ವುನ್" (೪-೩-೧೫೭)।

ಔಷ್ಠರಥ ಔಷ್ಠರಥ (ವಿಂ) ಉಷ್ಣರಥಸಂಬಂಧವಾದ, ಒಂಟಿಯಿಂದ ಎಳೆಯಲ್ಪಡುವ ರಥದ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಉಷ್ಠರಥಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೨)।

ಔಷ್ಠಾಯಣ ಔಷ್ಠಾಯಣ (ಪುಂ) ಉಷ್ಣಶಿಶು, ಒಂಟಿಯ ಮರಿ. ಉಷ್ಠಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಇನ್" "ಫಕ್" (೪-೧-೧೦೧)।

ಔಷ್ಠಾಯಣಕ ಔಷ್ಠಾಯಣಕ (ವಿಂ) 1. ಒಂಟಿಮರಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. 2. ಒಂಟಿಮರಿಗೆ ಸಮೀಪದ ದೇಶ. 3. ಒಂಟಿಮರಿಯು ವಾಸಮಾಡುವ ದೇಶ. 4. ಒಂಟಿ ಮರಿಯಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಉಷ್ಠಾಯಣ ಚತುರರ್ಥಾ "ವುನ್" (೪-೨-೮೦)।

ಔಷ್ಠಿಕ ಔಷ್ಠಿಕ (ವಿಂ) ಒಂಟಿಯಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ಒಂಟಿ ಯಲ್ಲಿರುವ, ಒಂಟಿಯಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನವಾದ. ಉಷ್ಠೇಣ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೨-೮೦)। "ವಿಪಾಕೋ ಕಠು ಸಕ್ಷಾರಂ ಗುಢ ಭೇದೋಷ್ಠಿಕಂ ವಧಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೫-೭೦।

ಔಷ್ಠಘ ಔಷ್ಠಘ (ವಿಂ) ಒಷ್ಣಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ವರ್ಣ, ತುಟಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ವರ್ಣ, ತ, ತ, ಫ, ಫ, ಬ, ಬ, ಮ, ಈ ಅಕ್ಷರಗಳು. ಔಷ್ಠಘ ಭವ: "ಯತ್" (೪-೩-೫೫)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೫-೪-೩೮)। "ತಾಲವ್ಯಾ ಔಷ್ಠಜಾವುಪ್" ಪಾಂ ಶಿಂ।

ಔಷ್ಣ್ಯ ಔಷ್ಣ್ಯ (ನಂ) ಉಷ್ಣತೆ, ಶಾಖ, ಬಿಸಿ, ಸಂತಾಪ. ಉಷ್ಣಸ್ಯ ಭಾವ: "ಘನ್" (೫-೧-೧೨೪)।

ಔಷ್ಣ್ಯ ಔಷ್ಣ್ಯ (ನಂ) ಉಷ್ಣತೆ, ಶಾಖ, ಬಿಸಿ, ಸಂತಾಪ. ಉಷ್ಣಣೋ ಭಾವ: "ಘನ್" (೫-೧-೧೨೪)। "ಪೂರ್ವಾಜ-ವಿಯೋಗೌಷ್ಣ್ಯಂ ಕೃತ್ಸ್ನಸ್ಯ ಜಗತೋ ಹೃತಮ್" ರಘುಂ ೧೭-೩೩।

ಇತಿ "ಔ" ಕಾರಾವಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್।



## ಕ

ಕ ಕ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಂತರಸ್ವರಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಕಂಠದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಅಕ್ಷರ. "ಕಾದಯೋ ಮಾವಸಾನಾಃ ಸ್ಪರ್ಶಾಃ" | "ಸ್ಪೃಷ್ಟಂ ಪ್ರಯತನಂ ಸ್ಪರ್ಶಾ-ನಾಮ್" ಸಿಂ ಕೌಂ | ವಿವಾರ, ಶ್ವಾಸ, ಅಘೋಷ ಮತ್ತು ಅಲ್ಪಪ್ರಾಣ ಇವು ಇದರ ಬಾಹ್ಯಪ್ರಯತ್ನಗಳು.

ಕ ಕ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ. 2. ವಿಷ್ಣು. 3. ಮಹೇಶ್ವರ. 4. ಮನ್ಮಥ. 5. ಅಗ್ನಿ. 6. ವಾಯು. 7. ಯಮ. 8. ಸೂರ್ಯ. 9. ಆತ್ಮ. 10. ದಕ್ಷಬ್ರಹ್ಮ. 11. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. 12. ಚಿತ್ತ, ಮನಸ್ಸು. 13. ಬುದ್ಧಿ. 14. ಹೊಡೆತದ ಶಬ್ದ, ಏಟಿನ ಸದ್ದು. 15. ಕಡಲು, ಸಮುದ್ರ. 16. ಬಿಳಿಬಣ್ಣ. 17. ವಸು. 18. ದ್ಯುತಿ, ಪ್ರಕಾಶ. (ನಂ) 19. ಶಿರಸ್ಸು, ತಲೆ. 20. ನೀರು, ಜಲ. 21. ಸುಖ. ಈ ಕೊನೆಯ ಮೂರು ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಅವ್ಯಯವೂ ಉಂಟು. ಕ (ಶಬ್ದ) "ಕಃ" (೩-೨-೧೦೧) | "ಕೌ ಬ್ರಹ್ಮಾತ್ಮಾನಿಲಾಕಾಘ್ನಿಚಿತ್ತಧೀಯಮಕೇಕಿಷು | ವಿಣ್ಣಾ-ಬಾಹುತಶಬ್ದೇಷ್ವಾ ಸಿತವರ್ಣಂ ವಸೌ ದೃತೌ | ಕಂ ಶಿರೋ-ಮ್ಬುಸುಖೇ ಕಲಿಂ ತತ್ರೈವ ಚ ಕಮವ್ಯಯಮ್" ನಾನಾರ್ಥರಂ | "ಮಾಸ್ತೇ ವೇಶಸಿ ಬ್ರಹ್ಮೇ ಪುಂಸಿ ಕಃ ಕಂ ಶಿರೋಮ್ಬುನೋಃ" ಋಮಂ | 22. ಒಂದು ತದ್ವಿತ್ಪ್ರತ್ಯಯ. ಪುತ್ರಕಃ, ವೃಕ್ಷಕಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕಂಸ ಕಂಸ (ಪುಂ) 1. ಪಾನಪಾತ್ರೆ, ಕುಡಿಯುವ ಪಾತ್ರೆ, ಲೋಟ, ಬಟ್ಟಲು ಮುಂತಾದುವು. ಕಮ್ಯತೇ—ಕಮ್ (ಕಾಂತೌ) "ಸಃ" (೩-೩-೬೨) | "ಕಂಸೋಸ್ತ್ರೀ ಪಾನಭಾಜನಮ್" ಋಮಂ | 2. ಕಾಂಸ್ಯಲೋಹ, ಕಂಚು. 3. "ಅಥಕ" ಎಂಬ ಒಂದು ಅಳತೆ, ಒಂದು ಕೊಳಗ. (ಪುಂ) 4. ಉಗ್ರಸೇನರಾಜನ ಮಗ ಕಂಸ, ದೇವಕಿಯ ದೊಡ್ಡಪ್ಪನ ಮಗ. [ಇವನು ಕಾಲನೇಮಿಯ ಅಂಶದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಜರಾಸಂಧನ ಪುತ್ರಿಯರಾದ ಅಸ್ತಿ ಮತ್ತು ಪ್ರಾಸ್ತಿ ಎಂಬಿಬ್ಬರನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿದ್ದನು. ಉಗ್ರಸೇನನ ಪತ್ನಿಯು ರಜಸ್ವಲೆಯಾಗಿದ್ದಾಗ ಒಂದು ದಿನ ಸಖಿಯರೊಡನೆ ಬೆಟ್ಟದ ತಪ್ಪಲಿಗೆ ವಿಹಾರಾರ್ಥವಾಗಿ ಹೋಗಿರಲು ದ್ರುಮಿಲನೆಂಬ ದಾನವರಾಜನೊಬ್ಬನು ಉಗ್ರಸೇನನ ವೇಷದಿಂದ ಒಂದು ಇವಳನ್ನು ಮೋಹಿಸಿದನು. ಬಳಿಕ ಇವನ ನಿಜಸ್ಥಿತಿ ಯನ್ನರಿತು "ನಿನ್ನ ಈ ದುಷ್ಕೃತ್ಯದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಮಗನು ಯದುವಂಶದವರಿಂದಲೇ ಹತನಾಗಲಿ" ಎಂದು ಕೋಪದಿಂದ ಶಪಿಸಿದಳು. ಅವಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಕಂಸನು ಪ್ರಾಪ್ತ ವಯಸ್ಸಿನಾದಾಗ ಉಗ್ರಸೇನನನ್ನು ಬಂಧನದಲ್ಲಿಟ್ಟು ತಾನೇ

ರಾಜ್ಯಭಾರ ಮಾಡಲಾರಂಭಿಸಿದನು. ತನ್ನ ಚಿಕ್ಕಪ್ಪನಾದ ದೇವಕನ ಮಗಳು ದೇವಕಿಯನ್ನು ವಸುದೇವನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು ವೈಭವದಿಂದ ಮದುವೆಮಾಡಿಕೊಟ್ಟಾಗ "ಇವರ ಎಂಟನೆಯ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಮಗುವಿನಿಂದಲೇ ನೀನು ಹತನಾಗುವೆ" ಎಂಬ ಆಕಾಶವಾಣಿಯನ್ನು ಕೇಳಿ ಹೆದರಿ ಅವರಿಬ್ಬರನ್ನೂ ಸೆರೆಯಲ್ಲಿಟ್ಟು ಅವಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಏಳು ಮಕ್ಕಳನ್ನೂ ಸಂಹರಿಸುತ್ತಾ ಬಂದನು. ಎಂಟನೆಯ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಮಾತಿನಂತೆ ವಸುದೇವನು ಶಿಶುವನ್ನು ನಂದಗೋಪನ ಪತ್ನಿ ಯಶೋದೆಯ ಬಳಿಯಿಟ್ಟು ಅವಳು ಪ್ರಸವಿಸಿದ್ದ ಸ್ತ್ರೀಶಿಶುವನ್ನು ದೇವಕಿಯ ಬಳಿ ತಂದಿಟ್ಟನು. [ಇವಳೇ ದುರ್ಗಾದೇವಿ.] ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ನಂದಗೋಕುಲದಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯುತ್ತಾ ಕಂಸನ ಪ್ರೇರಣೆಯಂತೆ ತನ್ನನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲು ಬಂದ ಪೂತನೆ, ಶಕಟಾಸುರ, ಧೇನುಕಾಸುರ ಮೊದಲಾದವರನ್ನು ಸಂಹರಿಸುತ್ತಾ ಬರಲು ಕಂಸನು ಕೊನೆಗೆ ಕಪಟಪ್ರೇಮದಿಂದ ಕೃಷ್ಣನನ್ನು ತನ್ನಲ್ಲಿಗೆ ಕರೆಸಿಕೊಂಡು ಅವನಿಂದ ಹತನಾದನು.]

ಕಂಸಕ ಕಂಸಕ (ಪುಂ) 1. ಕಾಂಸ್ಯ, ಕಂಚು. ಕಂಸಮೇವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೪-೪-೨೯) | 2. ಕಂಚಿನ ಪಾತ್ರೆ, ಲೋಟ ಬಟ್ಟಲು ಮುಂತಾದುದು.

ಕಂಸಕಾರ ಕಂಸಕಾರ (ಪುಂ) ಕಂಚುಗಾರ, ಕಂಚಿನ ಪಾತ್ರೆ ಯನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. ಕಂಸಂ ತನ್ಮಯಪಾತ್ರಂ ಕರೋತಿ—ಕೃ ಕೃಕ್ (ಕರಣ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) | ಇವನೊಬ್ಬ ಮಿಶ್ರ ಜಾತಿಯವನು.

ಕಂಸಕೃಷ್ಣ ಕಂಸಕೃಷ್ಣ (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಕಂಸಂ ಕೃಷ್ಣವಾನ್—ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನ) "ಕಿವ್" (೩-೨-೭೬) | "ಮಹಾಮಹಾನಿಲ-ಶಿಲಾರುಚಃ ಪುರೋ ನಿಷೇದಿವಾನ್ ಕಂಸಕೃಷಃ ಸ ವಿಷ್ಟರೇ" ಮಾಠಂ ೧-೧೬ |

ಕಂಸಜಿತ್ ಕಂಸಜಿತ್ (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಕಂಸಂ ಜಿತವಾನ್—ಜಿ (ಜಯ) "ಕಿವ್" (೩-೨-೬೧)

ಕಂಸನಿಷ್ಠದನ ಕಂಸನಿಷ್ಠಾದನ (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಕಂಸಂ ನಿಷ್ಠದಯತಿ — ನಿ+ಷ್ಠದ (ಕರಣ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) |

ಕಂಸರಿಪು ಕಂಸರಿಪು (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಕಂಸಸ್ಯ ರಿಪುಃ | ಇದೇ ರೀತಿ ಕಂಸಾರಾತಿಃ, ಕಂಸಾರಿಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕಂಸವತಿ ಕಂಸವತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಗ್ರಸೇನನ ಮಗಳು, ಕಂಸನ ತಂಗಿ, ವಸುದೇವನ ತಮ್ಮ ದೇವಶ್ರವಸ್ವಿನ ಪತ್ನಿ.



ಕೆಸಾ ಕೆಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಸನ ತಂಗಿ, ವಸುದೇವನ ತಮ್ಮ  
ನಾದ ದೇವಭಾಗನ ಪತ್ನಿ, ಉಗ್ರಸೇನನ ಮಗಳು. "ಕೆಸಾ  
ಕೆಸವತಿ ಕಕ್ಷಾ ಶೂರಭೂ ರಾಷ್ಟ್ರಪಾಲಿಕಾ। ತ್ರಾಸೇನದ್ವಹಿತರೋ  
ವಸುದೇವಾನುಜಸ್ತ್ರಿಯಃ" ಭಾಗಂ ೯-೨೪।

ಕೆಸಿಕ ಕೆಸಿಕ (ವಿಂ) ಕೆಚಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಕೆಚಿನಿಂದ  
ಕ್ರಿಯಕ್ಕೆ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಕೆಸೇನ ಕೀತಮ್ "ಕಿಠನ್"  
(೪-೧-೨೪)।

ಕೆಸೀಯ ಕೆಸೀಯ (ವಿಂ) ಕೆಚಿಗೆ ಹಿತವಾದ, ಕೆಚಿಗೆ  
ಅನುಕೂಲವಾದ. ಕೆಸಾಯ ಹಿತಮ್ "ಕಿಃ" (೪-೧-೪)।

ಕೆಸೋದ್ವಾ ಕೆಸೋದ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೌರಾಷ್ಟ್ರದೇಶದ  
ಒಂದು ಸುವಾಸನೆಯ ಮೃತ್ತಿಕೆ.

ಕೆಕಂದ ಕೆಕಂದ (ಪುಂ) ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ಕೆಕ (ಲೋಕ)  
"ಅಂದ್"।

ಕೆಕುತ್ಸ ಕೆಕುತ್ಸ (ಪುಂ) 1. ಇಕ್ಷ್ವಾಕು ವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ,  
ಇಕ್ಷ್ವಾಕುರಾಜನ ಮಗನಾದ ಶಶಾದನ ಮಗ, ಪುರಂಜಯ.  
ಕೆಕುತಿ ತಿಷ್ಠತಿ-ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕಃ" (೩-೨-೪)।  
ದೇವಾಸುರಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ವೃಷಭರೂಪಿಯಾದ ಇಂದ್ರನ  
ಹೆಗಲಿನ ಮೇಲೆ ನಿಂತು ಯುದ್ಧಮಾಡಿದುದರಿಂದ ಈತನಿಗೆ  
ಈ ಹೆಸರು. (ವಿಂ) 2. ವೃಷಭದ ಹಿಣಲಿನಲ್ಲಿರುವ.

ಕೆಕುತ್ ಕೆಕುತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎತ್ತಿನ ಹೆಗಲಿನ ಮೇಲಿರುವ  
ಹಿಣಲು. ಕೆ ಕುಲಂ ಕೌತಿ-ಕು (ಶಬ್ದ) "ಕಿವ್"  
(೩-೨-೬೧)। 2. ಪರ್ವತದ ಶಿಖರ, ಬೆಟ್ಟದ ತುದಿ.  
3. ರಾಜನ ಛತ್ರ, ಚಾಮರ, ಧ್ವಜ ಮೊದಲಾದ ಚಿಹ್ನೆ.  
(ವಿಂ) 4. ಪ್ರಧಾನ, ಮುಖ್ಯ.

ಕೆಕುತ್ ಕೆಕುತ್ (ಪುಂ) 1. "ಕೆಕುತ್" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಕಸ್ಯ  
ಸುಖಸ್ಯ ಕುಂ ಭೂಮಿ ದದಾತಿ-ಙ್ ದಾನ್ (ದಾನ) "ಕಃ"  
(೩-೨-೪)। "ಪ್ರಧಾನೇ ರಾಜಚಿಹ್ನೇ ಚ ವೃಷಾಙ್ಗೇ ಕೆಕುದೋ-  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಅಮಂ। 2. ಅನೆಯ ಮೇಢ, ಶಿಶು,  
ಜನನೇಂದ್ರಿಯ. "ಅತ್ಯುಹಃ ಕೆಕುತ್ ಮೇಢೇ" ವೈಜಂ।

ಕೆಕುತ್ ಕೆಕುತ್ (ಪುಂ) 1. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. ಕೆಕುತ್ಸಸ್ಯ  
"ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪)। "ಮದೋದ್ರಾಃ ಕೆಕುತ್ಸಂತಃ ಸರಿತಾ  
ಕುಲಮುದ್ರಾಃ" ರಘುಂ ೪-೨೨। 2. ಹಿಮವತ್ಪರ್ವತದ  
ಒಂದು ಶಿಖರ, ನಂದಿಕೇಶ್ವರನ ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನ.

ಕೆಕುತ್ ಕೆಕುತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಚಿಪ್ರದೇಶ, ಪಿರೈ. ಕೆಕುತ್  
ಮಾಸಪಿಣ್ಡೋಸ್ತ್ರಿಯಾಃ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪)। "ಕೀಪ್"  
(೪-೧-೬)।

ಕೆಕುತ್ ಕೆಕುತ್ (ಪುಂ) 1. ದಪ್ಪ ಹಿಣಲುಳ್ಳ ವೃಷಭ,  
ಎತ್ತು. ಕೆಕುತ್ಸಾಸ್ತಿ "ಮಿತಿಃ"। 2. ರೈವತನೆಂಬ

ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಬಲರಾಮನ ಪತ್ನಿ ರೇವತಿಯ ತಂದೆ.  
[ಈತನು ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. ಈತನಿಗೆ ರೈವತ  
ನೆಂದೂ ಹೆಸರು. ಈ ದೊರೆಯು ತನ್ನ ಮಗಳಾದ ರೇವತಿಗೆ  
ಅನುರೂಪನಾದ ವರನನ್ನು ಭೂಲೋಕದಲ್ಲಿಯೂ  
ಕಾಣದೆ ಬ್ರಹ್ಮನನ್ನು ಕೇಳಬರಲು ಮಗಳನ್ನು ಕರೆದು  
ಕೊಂಡು ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕಕ್ಕೆ ತೆರಳಿದನು. ಅಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮ  
ಗಳೆಲ್ಲರೂ ಶಾಸ್ತ್ರವಾದವಿವಾದದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿರಲು  
ಅದಲ್ಲವೂ ಮುಗಿಯುವವರೆಗೂ ಕಾದಿದ್ದು ಅನಂತರ ತನ್ನ  
ಮಗಳಿಗೆ ಯೋಗ್ಯನಾದ ವರನಾರೆಂದು ಕೇಳಿದನು. ಆಗ  
ಬ್ರಹ್ಮನು "ನೀನು ಈ ಲೋಕಕ್ಕೆ ಬಂದನಂತರ ಭೂಲೋಕ  
ದಲ್ಲಿ ಎಷ್ಟೋ ಯುಗಗಳು ಕಳೆದುಹೋಗಿರುವುದರಿಂದ  
ನೀನು ಇಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದಾಗ ಅಲ್ಲಿದ್ದವರಾರೂ ಈಗ ಇಲ್ಲ. ನೀನು  
ಈ ಲೋಕದಲ್ಲಿದ್ದುದರಿಂದ ನಿನಗದು ಗೊತ್ತಾಗಲಿಲ್ಲ. ಈಗ  
ಭೂಲೋಕದಲ್ಲಿ ವಸುದೇವನ ಮಗನಾದ ಬಲರಾಮನು  
ನಿನ್ನ ಮಗಳಿಗೆ ಅನುರೂಪನಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಅವನಿಗೆ  
ಕೊಟ್ಟು ವಿವಾಹವನ್ನು ನಡೆಸು" ಎಂದು ಹೇಳಿದನು.  
ರೈವತನು ಭೂಲೋಕಕ್ಕೆ ಬರುವುದರೊಳಗಾಗಿ ಇವನು  
ಹಿಂದೆ ನೋಡಿದವರಾರೂ ಇರಲಿಲ್ಲ. ಆಗ ರೇವತಿಯನ್ನು  
ಬಲರಾಮನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು ವಿವಾಹ ಮಾಡಿದನು.] ಭಾಗಂ  
೯-೩। 3. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ.

ಕೆಕುತ್ ಕೆಕುತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಿಕ್ಕು, ದಿಶೆ. ಕೆ ವಾಯು ಸ್ಕುನ್ಮಾತಿ  
ವಿಸ್ತಾರಯತಿ-ಸ್ಕುನ್ಮು "ಕಿವ್" (೩-೨-೧೭೮)। ಪೃಷಂ।  
"ಮಧ್ಯೇಸಮುದ್ರಂ ಕೆಕುತ್ಃ ಪಿಶಾಙ್ಗೀರ್ಯಾ ಕುರ್ವತಿ ಕಾಚನವಪ್ರಭಾಸಾ"  
ಭಾಗಂ ೩-೩೩। 2. ಕಾಂತಿ, ಶೋಭೆ. 3. ಮೇಣ, ಜಡೆ.  
4. ಸಂಪಿಗೆ ಹೂವಿನ ಮಾಲೆ. "ಕೆಕುತ್ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಪ್ರವೇಣಿ-  
ದಿಕ್ಶೋಭಾಸು ಚಂಪಕಸ್ರಜಿ" ಮೇದಿಂ। 5. ದಕ್ಷಬ್ರಹ್ಮನ  
ಒಬ್ಬ ಮಗಳು, ಧರ್ಮದೇವತೆಯ ಪತ್ನಿ. 6. ಶಾಸ್ತ್ರ.

ಕೆಕುತ್ ಕೆಕುತ್ (ನಂ) ಪಿರೈಯ ಮೇಲಿನ ಗುಣಗಳು.  
ಕುಂ ಭೂಮಿ ದಾರಯತಿ-ಙ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ "ಅನ್"  
(೩-೨-೧)। ಕುಂದರಮ್, ಕುತ್ಸಿತಂ ಕುಂದರಮ್। ಪೃಷಂ।  
"ಕನೀನಿಕೇ ಚಾಕ್ಷಿಕುಟೇ ಶಾಂಕುಲೀಕರ್ಣಪತ್ರಕೌ। ಕರ್ಣೌ ಶಾಂಕು  
ಶ್ರುವೌ ದಂತವೇಷ್ಠಾವೋಷ್ಠೌ ಕೆಕುಂದರೇ" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೯೬।

ಕೆಕುತ್ ಕೆಕುತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಿಕ್ಕು, ದಿಶೆ. ಕೆ ವಾಯು ಸ್ಕುನ್ಮಾತಿ  
ವಿಸ್ತಾರಯತಿ-ಸ್ಕುನ್ಮು "ಕಿವ್" (೩-೨-೧೭೮)। ಪೃಷಂ।  
"ಮಧ್ಯೇಸಮುದ್ರಂ ಕೆಕುತ್ಃ ಪಿಶಾಙ್ಗೀರ್ಯಾ ಕುರ್ವತಿ ಕಾಚನವಪ್ರಭಾಸಾ"  
ಭಾಗಂ ೩-೩೩। 2. ಕಾಂತಿ, ಶೋಭೆ. 3. ಮೇಣ, ಜಡೆ.  
4. ಸಂಪಿಗೆ ಹೂವಿನ ಮಾಲೆ. "ಕೆಕುತ್ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಪ್ರವೇಣಿ-  
ದಿಕ್ಶೋಭಾಸು ಚಂಪಕಸ್ರಜಿ" ಮೇದಿಂ। 5. ದಕ್ಷಬ್ರಹ್ಮನ  
ಒಬ್ಬ ಮಗಳು, ಧರ್ಮದೇವತೆಯ ಪತ್ನಿ. 6. ಶಾಸ್ತ್ರ.

ಕೆಕುತ್ ಕೆಕುತ್ (ಪುಂ) 1. ಅರ್ಜುನವೃಕ್ಷ, ಕೆಂಪುಮುತ್ತಿಮರ.  
ಕೆಕುತ್ ದಿಶಃ ಸಂತ್ಯಸ್ಯ "ಅಕ್" (೪-೨-೧೭೮)।



2. ವೀಣೆಯ ಗಂಭೀರನಾದಕ್ಕಾಗಿ ಕಟ್ಟುವ ಚರ್ಮದ ಚೀಲ  
ದಿಂದ ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ ಸೋರೆಯರುಡೆ. 3. (ಸಂಗೀತದಲ್ಲಿ)  
ಒಂದು ರಾಗ. 4. ಒಂದು ರೋಗ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) - ಭಾ - ಭಾ.  
ದಿಕ್ಕು, ದಿಶೆ. (ವಿಂ) 5. ಮಹತ್ವಾದ, ದೊಡ್ಡದಾದ.

ಕವಿಕೋಲ ಕಕ್ಕೋಲ (ಪುಂ) ಗಂಧದ್ರವ್ಯವನ್ನು ತೆಗೆಯುವ  
ತಕ್ಕೋಲವು.

ಕವಿಕೋಲಕ ಕಕ್ಕೋಲಕ (ನಂ) ತಕ್ಕೋಲವು ಕ್ಷದಿಂದ ತೆಗೆದ  
ಒಂದು ಗಂಧದ್ರವ್ಯ.

ಕಕ್ಷ ಕಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಉಡುವ ಪಂಚೆಯ ಸೆರಗು, ಉಡುವ  
ಪಂಚೆಯ ತುದಿಯ ಭಾಗ. ಕಷ್ಯತೇ-ಕಷ (ಹಿಸಾಯಾಮ್)  
"ಸ:" (ತಂ 3-62). 2. ದೇಹದ ಗುಹ್ಯಸ್ಥಾನವನ್ನು  
ಮುಚ್ಚುವ ವಸ್ತ್ರ, ಕೌಪೀನ. 3. ಕಚ್ಚೆ. "ಕಕ್ಷ: ಕಚ್ಛೋ  
ಗುಹ್ಯಬಂಧ:" ವೆಂಜಂ. 4. ಗುಲ್ಮ, ಪೊದರು, ಕುರುಚಲು  
ಗಿಡ. "ಪ್ರಕ್ಷಿಪ್ಯೋದ್ವಿಷಂ ಕಕ್ಷೇ ಶೇರತೇ ತೇಽಭಿಮಾಹುತಮ್"  
ಮಾಘಂ 2-42. 5. ಒಣವರಗಳ ಕಾಡು, ಜೀರ್ಣವಾದ  
ಅರಣ್ಯ. 6. ಒಣಹುಲ್ಲು. "ಯಥೋದರತಿ ನಿರ್ದಾತಾ ಕಕ್ಷಂ  
ಖಾನ್ಯಂ ಚ ರಕ್ಷತಿ" ಮನುಂ 9-110. 7. ಪಕ್ಕ, ಪಾರ್ಶ್ವ  
ಭಾಗ. "ಕಕ್ಷಾಂತರಗತೋ ವಾಯುರ್ಮಿತ ಇವ ಗರ್ಜತಿ" ರಾಮಾಂ. 1.  
8. ಬಳ್ಳಿ, ಲತೆ. 9. ಬಾಹುಮೂಲ, ತೋಳಿನ ಕೆಳಭಾಗ.  
ಕಂಕಳು. 10. ಪಾಪ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) - ಕ್ಷಾ - ಕ್ಷಾ. 11. ಅನೇ  
ಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ. 12. ಭಿತ್ತಿ, ಗೋಡೆ. 13. ಡಾಬು,  
ಒಡ್ಡಾಣ. "ಯುಧೇ ಪರೇ: ಸಹ ದೃಢಬದ್ಧಕಕ್ಷಯಾ ಕಲವವಣನ್ಮವುಪ-  
ಕುಲೋಪಗೀತಯಾ" ಮಾಘಂ 19-24. 14. ಕೊಠಡಿ, ಕೋಣೆ.  
"ಅಯೋಪಕಾರ್ಯಮಿಮರೇಂದ್ರಕಾರ್ಯಾತ್ಕಕ್ಷಾಸು ರಕ್ಷಾಧಿಕೃತೇರದೃಷ್ಟ:"  
ನೈಷಂ 6-11. 15. ಸ್ಪರ್ಧೆ, ಹೋರಾಟ, ಮೇಲಾಟ.  
16. ಸಾಮ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ. 17. ರಥದ ಒಂದು ಅವಯವ.  
18. ಕಂಕಳಿನ ಒಂದು ರೋಗ. "ಬಾಹುಪಾರ್ಶ್ವಾಸಕಕ್ಷಾಸು  
ಕೃಷ್ಣಸ್ಫೊಟಾಂ ಸವೇದನಾಮ್. ಪಿತ್ತಪ್ರಕೋಪಸಂಭೂತಾಂ ಕಕ್ಷಾಮಿತಿ  
ವಿನಿರ್ದಿಶೇತ್" ಸುಶ್ರುತಂ ನಿರ್ದಾನಂ 13-16. 19. ಉಡುವ  
ಪಂಚೆಯ ಸೆರಗು, ಕಚ್ಚೆ. "ಕಕ್ಷೋ ಬೀರಧಿ ದೊರ್ಮೇಲೆ ಕಚ್ಚೆ  
ಶುಷ್ಕವನೇ ತೃಣೇ. ಪಾಪೇ, ಕಕ್ಷಾತಿವಿಭರಜ್ಜೌ ಕಾಚ್ಚ್ಯಾಂ ಗೋಹ-  
ಪ್ರಕೋಠಕೇ. ಭಿತ್ತೌ ಸಾಮ್ಯೇ ರಥಭಾಗೇಽಂತರೀಯಪಶ್ಚಿಮಾಚ್ಚಲೇ"  
ಹೇಮಂ.

ಕಕ್ಷಕ ಕಕ್ಷಕ (ಪುಂ) ವಾಸುಕಿಯ ಮಂಡದ ಒಂದು ಸರ್ಪ.  
"ಹಿರಣ್ಯಬಾಹು: ಶರಣ: ಕಕ್ಷಕ: ಕಾಲದಂತಕ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ.  
೫೭-೬.

ಕಕ್ಷಧರ ಕಕ್ಷಧರ (ನಂ) ಎದೆ ಮತ್ತು ಕಂಕಳುಗಳ ಮಧ್ಯ  
(ಭಾಗ) ದಲ್ಲಿರುವ ಮರ್ಮಸ್ಥಾನ. "ವಿಶೇಷತಸ್ತು ಪಾನಿ

ಸಕ್ವಿಗುಲ್ಮಜಾನುವಿಟಪಾನಿ ತಾನಿ ಬಾಹ್ಯೋಮಂಘಿಬಂಧಕರ್ಪರಕಕ್ಷ-  
ಧರಾಣಿ" ಸುಶ್ರುತಂ.

ಕಕ್ಷಪ ಕಕ್ಷಪ (ಪುಂ) ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ. ಕಕ್ಷೇ ಕಚ್ಚೆ  
ಪಿಬತಿ - ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕ:" (3-2-4).

ಕಕ್ಷರಹಾ ಕಕ್ಷರುಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕೊನ್ನಾರಿ  
ಗೆಡ್ಡೆ. ಕಕ್ಷೇ ಜಲಪ್ರಾಪ್ತೇ ರೋಹಿತಿ - ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ)  
"ಕ:" (3-1-135).

ಕಕ್ಷಲೋಮನ್ ಕಕ್ಷಲೋಮನ್ (ನಂ) ಕಂಕಳಿನ ಕೂದಲು.

ಕಕ್ಷಸೇನ ಕಕ್ಷಸೇನ (ಪುಂ) 1. ಧರ್ಮರಾಜನ ಸಭೆಯಲ್ಲಿದ್ದ  
ಒಬ್ಬ ಕ್ಷತ್ರಿಯ, ಅವಿಕ್ಷತನ ಮಗನಾದ ಪರಿಕ್ಷಿತ್ತಿನ ಮಗ.  
"ಕಕ್ಷಸೇನ: ಕ್ಷಿತಿಪತಿ: ಕ್ಷೇಮಕರ್ಷಾಪರಾಜಿತ:" ಭಾಂ ಸಭಾಂ  
4-28. 2. ಯಮನ ಸಭೆಯಲ್ಲಿದ್ದ ಒಬ್ಬ ಕ್ಷತ್ರಿಯ.  
"ಅಲರ್ಕ: ಕಕ್ಷಸೇನಶ್ಚ ಗಯೋ ಗೌರಾಶ್ವ ಏವ ಚ" ಭಾಂ  
ಸಭಾಂ 6-18. 3. ಒಬ್ಬ ರಾಜರ್ಷಿ.

ಕಕ್ಷಾಪಟ ಕಕ್ಷಾಪಟ (ಪುಂ) ಕೌಪೀನ, ಅಂತರಾಚ್ಛಾದನ.  
ಕಕ್ಷಾಕಾರ: ಪಟ:

ಕಕ್ಷಾ (ಕಷ್ಯಾ) ವೇಕ್ಷಕ ಕಕ್ಷಾ (ಕಷ್ಯಾ) ವೇಕ್ಷಕ 1.  
ರಾಜನ ಅಂತಃಪುರದ ಕಾವಲುಗಾರ. 2. ಉದ್ಯಾನಪಾಲಕ,  
ಕೈತೋಟದ ಕಾವಲುಗಾರ. 3. ದ್ವಾರಪಾಲಕ. 4. ವಿಟ,  
ಕಾಮುಕ, ವಿಷಯಾಸಕ್ತ. 5. ನಟ, ನರ್ತಕ, ಅಭಿನಯ  
ಕಾರ. 6. ಕವಿ. 7. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. ಕಕ್ಷಂ ವನಂ ಸ್ತ್ರೀಬಾಹುಮೂಲಂ  
ವಾ ಕಕ್ಷಾಂ ಸಾಮ್ಯಂ ರಾಜಾಂತ:ಪುರಂ ವಾ ಅವೇಕ್ಷತೇ - ಅವ + ಇಕ್ಷ  
(ದರ್ಶನೇ) "ಫಲ್" (3-1-133). "ಕಕ್ಷಾವೇಕ್ಷಕ ಇತ್ಯೇವ  
ಶುದ್ಧಾಂತೋದ್ವಾನಪಾಲಯೋ: ರಜ್ಜಾಜೀವೇ ಕವೌ ಲಕ್ಷಣೇ ದ್ವಾ:ಸ್ಯೇ"  
ಮೇದಿಂ. "ಕಕ್ಷಾವೇಕ್ಷಕ: ಶುದ್ಧಾಂತಪಾಲಕೋದ್ವಾನಪಾಲಯೋ:  
ದ್ವಾ:ಸ್ಯೇ ಪಿಡ್ಗೇ ಕವೌ ರಜ್ಜಾಜೀವೇ" ಹೇಮಂ.

ಕಕ್ಷಿನ್ ಕಕ್ಷಿನ್ (ವಿಂ) ಪಾಪಾತ್ಮ, ಪಾಪದಿಂದ ಕೂಡಿ  
ದವನು. ಕಕ್ಷ: ಪಾಪಮಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿ:" (4-2-131).

ಕಕ್ಷಿವತ್ ಕಕ್ಷಿವತ್ (ಪುಂ) ಸ್ಫೋಟಾಯನಮಹರ್ಷಿ.

ಕಕ್ಷ್ಯ ಕಕ್ಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಲತೆಯಲ್ಲಿರುವ. 2. ಬಾಹು  
ಮೂಲದ (ಕಂಕಳಿನ)ಲ್ಲಿರುವ. 3. ಜೀರ್ಣವನದಲ್ಲಿರುವ.  
4. ಹುಲ್ಲಿನಲ್ಲಿರುವ. ಕಕ್ಷೇ ಭವ: "ಯತ್" (4-3-43, 44).  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) - ಕ್ಷ್ಯಾ - ಕ್ಷ್ಯಾ. 5. ಉತ್ತರೀಯ, ಹೊದೆಯುವ  
ವಸ್ತ್ರ. 6. ಕೊಠಡಿ, ಕೋಣೆ. 7. ಡಾಬು, ಒಡ್ಡಾಣ.  
8. ಅನೇಯ ನಡುವಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ. "ಕಕ್ಷ್ಯಾ ಬೃಹತಿಕಾರ್ಯಾ  
ಸ್ಯಾತ್ ಕಾಚ್ಚ್ಯಾಂ ಮಧ್ಯೇಬಂಧನೇ. ಹರ್ಮ್ಯಾದಿನಾಂ ಪ್ರಕೋಠೇಽಪಿ"  
ಮೇದಿಂ. 9. ಉದ್ಯೋಗ. 10. ನಡುಕಟ್ಟು. ಕಕ್ಷ ಸ್ವಾರ್ಥೆ  
"ಯತ್". 11. ಅವಸ್ಥೆ, ಹಂತ, ಘಟ್ಟ.



ಕಷ್ಯಾವತ್ ಕಷ್ಟಾವತ್ (ಪುಂ) ಗಜ, ಅನೆ. ಕಷ್ಯಾಸ್ತಸ್ಯ  
“ಮತುಪ್” (೪-೨-೧೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)।  
-ವತೀ -ನತೀ.

ಕಷ್ಯಾವೇಕ್ಷಕ ಕಷ್ಟಾವೇಕ್ಷಕ (ಪುಂ) “ಕಷ್ಯಾವೇಕ್ಷಕ”  
ಪದದ ಅರ್ಥ.

ಕಡ್ಡು ಕಂಕ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹದ್ದು. ಕಡ್ಡುತೆ —  
ಕಕಿ (ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। 2. ವೇಷಧಾರಿ  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. 3. ಪಾಂಡವರ ಅಜ್ಞಾತವಾಸದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ಧರ್ಮರಾಜನ ಹೆಸರು. [ಪಾಂಡವರ ವನವಾಸಾನಂತರ  
ಅಜ್ಞಾತವಾಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ಧರ್ಮರಾಜನು ಬ್ರಾಹ್ಮಣವೇಷ  
ಧರಿಸಿದ್ದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.] “ವಿರಾಟಂ ಸಮನುಪ್ರಾಪ್ಯ ರಾಜಾನ್  
ಮಾತ್ಸ್ಯನಂದನಮ್। ಸಭಾಸ್ತಾರೋ ಭವಿಷ್ಯಾಮಿ ವಿರಾಟಸ್ಯೇತಿ  
ಮೇ ಮತಿಃ। ಕಡ್ಡೋ ನಾಮ ಬ್ರುವಾಣೋಽಹಂ ಮತಾಕ್ಷಃ ಸಾಧುದೇವಿತಾ”  
ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೨-೨೩। 4. ಯಮ. “ಕಡ್ಡುಶ್ಚಕ್ಷುಷಿಜೇ  
ಷ್ಯಾತೋ ಲೋಹಪೃಷ್ಠಕೃತಾಂತಯೋಃ” ಮೇದಿಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಡ್ಡು  
ಕಂಕಾ. 5. ಉಗ್ರಸೇನನ ಒಬ್ಬ ಮಗಳು, ಕಂಸನ  
ತಂಗಿ. “ತೇಷಾಂ ಸ್ವಸಾರಃ ಪञ್ಚಾಸನ್ ಕಂಸಾ ಕಂಸವತೀ ತಥಾ।  
ಸುತನ್ ರಾಷ್ಟ್ರಪಾಲೀ ಚ ಕಡ್ಡಾ ಚೈವ ವರಾಜ್ಞನಾ” ಹರಿವಂ।

ಕಡ್ಡುಕ ಕಂಕಟ (ಪುಂ) 1. ಕವಚ, ಅಂಗಿ. ಕಕಿ (ಗತೌ)  
“ಅಡನ್” (೩ಂ ೪-೮೧)। “ಶಲ್ಯಾನಿ ವ್ಯಪನೀಯ ಕಡ್ಡು-  
ವದನೇರ್ಮೋಚಿತೇ ಕಡ್ಡುಕೇ ಬದ್ಧೇಷು ವ್ರಣಪटಕೇಷು ಶನಕೈಃ ಕರ್ಣೈಃ  
ಕೃತಾಪಾಶ್ರಯಃ” ವೇಣಿಂ ೪-೧, ಮಾಘಂ ೧೭-೨೦। 2. ಅಂಕುಶ,  
ಅನೆಯನ್ನು ಶಿಕ್ಷಿಸುವ ಕಬ್ಬಿಣದ ಮುಳ್ಳುಕೋಲು. ಸ್ವಾರ್ಥ  
“ಕನ್”। ಕಡ್ಡುಕ: ಕಂಕಟಕಃ.

ಕಡ್ಡುಕಿಕ ಕಂಕಟಿಕ (ವಿಂ) ಯುದ್ಧಕವಚಸಂಬಂಧವಾದ.  
ಕಡ್ಡುಕ “ಕಚ್” (೪-೨-೮೦)।

ಕಡ್ಡುಕಿನ್ ಕಂಕಟಿನ್ (ವಿಂ) ಯುದ್ಧಕವಚವನ್ನು ತೊಟ್ಟಿ-  
ರುವ. ಕಡ್ಡುಕ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೮೦)।

ಕಡ್ಡುಕಿಲ ಕಂಕಟಿಲ (ವಿಂ) ಯುದ್ಧಕವಚವನ್ನು ತೊಟ್ಟಿ-  
ರುವ. ಕಡ್ಡುಕ “ಇಲಃ” (೪-೨-೮೦)।

ಕಡ್ಡುಕಿಕ ಕಂಕಟೀಕ (ಪುಂ) ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಕೃಶಾನುರೇತಾ  
ಜೊಟಿಗ: ಕಡ್ಡುಕಿಕ ಉಮಾಪತಿಃ” ವೈಜಂ।

ಕಡ್ಡುಣ ಕಂಕಣ (ಪುಂ) 1. ಜಲಕಣ, ನೀರಿನ ಬಿಂದು.  
ಕಮಿತ್ಯವ್ಯಯಂ ಜಲಾರ್ಥಕಮ್. ತಸ್ಯ ಕಣಃ। “ನಿತम्ಬೋ ಪತ್ರಾಲೀ  
ನಯನಯುಗಲೇ ಕಡ್ಡುಣಭರಮ್” ಉಡ್ಘಂ। (ನಂ) 2. ಹಸ್ತಾ-  
ಭರಣ, ಮಣಿಕಟ್ಟಿನ ಒಂದು ಅಭರಣ, ಬಳೆ. ಕಂ ಶುಭಂ  
ಕಣತಿ—ಕಣ (ಶಬ್ದೇ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ಶ್ರೋತ್ರಂ  
ಶ್ರುತೇನೈವ ನ ಕುಂಡಲೇನ ದಾನೇನ ಪಾಣಿನಿ ತು ಕಡ್ಡುಣೇನ” ಭರ್ತಂ.

೧-೬೨। 3. ವಿವಾಹಸಮಯದಲ್ಲಿ ವಧೂವರರ ಕೈಗೆ  
ಕಟ್ಟುವ ಮಂಗಳಸೂತ್ರ. “ಅಯಮಾಗೃಹೀತಕಮನೀಯಕಡ್ಡುಣ-  
ಸ್ತವ ಮೃತಿಮಾನಿವ ಮಹೋತ್ಸವಃ ಕರಃ” ಉಂ ರಾಂ ೧-೧೮।  
4. ಅಭರಣ, ಒಡವೆ. 5. ಶೇಖರ, ತಲೆಯಲ್ಲಿ ಧರಿಸುವ  
ಹೂವಿನ ಮಾಲೆ ಮೊದಲಾದುದು. “ಕಡ್ಡುಣಂ ಕರಭೂಷಾಯಾ  
ಹಸ್ತಸೂತ್ರೇ ಚ ಶೇಖರೇ” ಹೇಮಂ।

ಕಡ್ಡುಗಿನ್ ಕಂಕಣಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಹಸ್ತಾಭರಣವನ್ನು ಧರಿಸಿ-  
ರುವ, ಬಳೆಯನ್ನು ತೊಟ್ಟಿರುವ. 2. ನೀರಿನ ಹನಿಗಳಿಂದ  
ಕೂಡಿದ. ಕಡ್ಡುಣ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೫)।

ಕಡ್ಡುಣಿಕಾ ಕಂಕಣೀಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಿರುಗಂಜೆ, ಪುನಃ ಪುನಃ  
ಕಾಣಯತಿ — ಕಣ (ನಿಮಿಲನೇ) + ಣಿಚ್ + ಯಡ್ ತಸ್ಯ ಲುಕ್  
“ಇಕನ್” (೩ಂ ೪-೧೮)। ಧಾತೋಃ ಕಡ್ಡುಣಾದೇಶಃ।  
2. ಕಂಕಣ, ಹಸ್ತಸೂತ್ರ. “ವಣಿಕಾಯಾ ಕಡ್ಡುಣಿಕಾ ಸೇವ  
ಪ್ರತಿಸರಾಪಿ ಚ”।

ಕಡ್ಡುತ ಕಂಕಡ (ಪುಂ) 1. ಹೀರಿಗಿಡ. ಕಕಿ (ಗತೌ) “ಅತಚ್”  
ಬಾಹುಂ। (ನಂ) 2. ಬಾಚಣಿಗೆ. “ಹಾಸಕರಮಥತೇ ನಿತರಾ  
ಶಿರಸೀವ ಕಡ್ಡುತಮಪೇತಮೂರ್ವಜೇ” ಮಾಘಂ ೧೫-೩೩। ಗೌರಾಂ  
“ಡೀಪ್” (೪-೧-೪೧)। ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” (೪-೪-೫)।  
ಕಡ್ಡುತಿಕಾ ಕಂಕಡಿಕಾ.

ಕಡ್ಡುತೀ ಕಂಕಡೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಚಣಿಗೆ.

ಕಡ್ಡುತೀಯ ಕಂಕಡೀಯ (ವಿಂ) ಕೇಶಸಂಸ್ಕಾರ ಮಾಡುವ,  
ತಲೆಗೆ ಅಲಂಕಾರ ಮಾಡುವ. ಕಡ್ಡುತಂ ತತ್ಸಂಸ್ಕಾರಃ ಪ್ರಯೋಜನ-  
ಮಸ್ಯ “ಛಃ” (೪-೧-೧೧೧)।

ಕಡ್ಡುಪತ್ರ ಕಂಕಪತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಹದ್ದಿನ ರೆಕ್ಕೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ  
ಬಾಣ, ಶರ. ಕಡ್ಡುಸ್ಯ ಪತ್ರಂ ಯಸ್ಯ। [ಬಾಣಕ್ಕೆ ಹದ್ದಿನ ರೆಕ್ಕೆ  
ಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.] “ಹ್ಯಾಂಶ್ಚ ರಜತ-  
ಪ್ರಖ್ಯಾನ್ ಕಡ್ಡುಪತ್ರೈಃ ಶಿಲಾಶತೈಃ” ಭಾಂ। (ನಂ) 2.  
ರಣಹದ್ದಿನ ರೆಕ್ಕೆ, -ಗರಿ. ಕಡ್ಡುಸ್ಯ ಪತ್ರಮ್। (ವಿಂ) 3.  
ಹದ್ದಿನ ಗರಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. “ವಾಮೇತರಸ್ತಸ್ಯ ಕರಃ ಪ್ರಹರ್ತುಃ  
ನಖಪ್ರಭಾಕೃಷಿತಕಡ್ಡುಪತ್ರೇ” ರಘುಂ ೨-೩೧।

ಕಡ್ಡುಪತ್ರಿನ್ ಕಂಕಪತ್ರಿನ್ (ಪುಂ) ಹದ್ದಿನ ಗರಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ  
ಬಾಣ. ಕಡ್ಡುಪತ್ರಮಸ್ತಸ್ಯ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೫)।  
“ಪುನರೇವಾಹನತ್ ಪಾಥೈ ಹೃದಯೇ ಕಡ್ಡುಪತ್ರಿಭಿಃ” ಭಾಂ ವಿರಾಂ।

ಕಡ್ಡುಮುಖ ಕಂಕಮುಖ (ಪುಂ) ಶಸ್ತ್ರಚಿಕಿತ್ಸೆಯ ಒಂದು  
ಚಿಮುಟ, ಶ್ರವಣ. ಕಡ್ಡುಮುಖಮಿವ ಮುಖಮಸ್ಯ। ಶಸ್ತ್ರ-  
ಚಿಕಿತ್ಸೆಯ ಯಂತ್ರಗಳು ಆರು ವಿಧ. ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ಪಷ್ಟಿಕ  
ಯಂತ್ರವು ಹದಿನೆಂಟು ಅಂಗುಲಗಳಷ್ಟು ಉದ್ದವಿದ್ದು ಸಿಂಹ,  
ಹುಲಿ, ತೋಳ, ಕಿರುಬ, ಕರಡಿ, ಬೆಕ್ಕು, ನರಿ, ಜಿಂಕೆ, ಕಾಗೆ,



ಹದ್ದು ಮುಂತಾದ ಅನೇಕ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಮುಖದಂತೆ ಮುಖವನ್ನು (ತುದಿಯನ್ನು) ಹೊಂದಿರುವುದು. ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೭-೧೦. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ವನ್ತ್ರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಕಕ್ಕವದನ ಕಕ್ಕಾನನ ಕಕ್ಕಾಸ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಪದಗಳಿಗೂ ಇದೇ ಅರ್ಥ. "ಶಲ್ಯಾನಿ ವ್ಯಪನೀಯ ಕಕ್ಕವದನೇನ್ಮೋಚಿತೇ ಕಕ್ಕೇ" ವೇಣೀಂ ೪-೧.

**ಕಕ್ಕಾಲ ಕಂಕಾಲ** (ಪುಂ) ಚರ್ಮ ಮಾಂಸಗಳಿಲ್ಲದ ಎಲುಬಿನ ಗೂಡು, -ಅಸ್ಥಿಪಂಜರ. ಕಂ ಸುಖಂ ಕಾಲಯತಿ - ಕಲ (ಕ್ಷೇಪ) + ಗಿಣಿ "ಅವ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಖರ್ಜೂರದ್ಧಮದಧನಜ್ಜಮಸಿತ-ತ್ವಙ್ನದ್ಧವಿವಕ್ತತಸ್ತಾಯುಗ್ರನ್ವಿಧನಾಸ್ಥಿಪಂಜರಜರತಕ್ಕಾಲ-ಮಾಲೋಕ್ಯತೇ" ಮಾಲತೀಂ ೪-೧೪.

**ಕಕ್ಕಾಲಮಾಲಿನ್ ಕಂಕಾಲಮಾಲಿನ್** (ಪುಂ) ಈಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. ಕಕ್ಕಾಲಾನಾಂ ಮಾಲಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೬).

**ಕಕ್ಕು ಕಂಕು** (ಪುಂ) ಉಗ್ರಸೇನನ ಒಬ್ಬ ಮಗ, ಕಂಸನ ಸಹೋದರ. "ಕಂಸ: ಸುನಾಮಾ ನ್ಯಗ್ರೋಧ: ಕಕ್ಕು: ಶಕ್ಕು: ಸುಹುಸ್ತಥಾ | ರಾಷ್ಟ್ರಪಾಲಶ್ಚ ಸೃಷ್ಟಿಶ್ಚ ತುಷ್ಟಿಮಾನುಪ್ರಸೇನಜಾ:" ಭಾಗಂ ೧-೨೪-೨೪.

**ಕಕ್ಕು ಕಂಗು** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನವಣೆಯೆಂಬ ಒಂದು ಧಾನ್ಯ. ಕಂ ಸುಖಮ್ ಅಗ್ಗತಿ - ಅಗಿ (ಗತೌ) "ಕ್ರು:" (೩-೧-೩೭). "ಸ್ತ್ರಿಯೌ ಕಕ್ಕುಪ್ರಿಯಕ್ಕು ದ್ವೇ" ಅಮಂ.

**ಕಚ ಕಚ** (ಪುಂ) 1. ಕೇಶ, ಕೂದಲು. ಕಚ್ಯತೇ ಬಧ್ಯತೇ - ಕಚ (ಬಂಧನ) "ಘ:" (೩-೩-೧೧೮). "ದೊರ್ಮಲಮಾಲೋಕ್ಯ ಕಚಂ ರುಹಿಸ್ತೋಸ್ತತ: ಕುಚೌ ತಾವನುಲೇಪಯಂತ್ಯಾ:" ನೈಷಂ ೬-೨೦. 2. ಒಣಗಿದ ಹುಣ್ಣು. 3. ಬಂಧ, ಕಟ್ಟು. 4. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 5. ಪ್ರಕಾಶ, ಕಾಂತಿ, ಹೊಳಪು. 6. ಬೃಹಸ್ಪತ್ಯಾ ಚಾರ್ಯರ ಮಗ. [ದೇವತೆಗಳು ರಾಕ್ಷಸರೊಡನೆ ಯುದ್ಧ ಮಾಡಿ ಪರಾಜಯ ಹೊಂದುತ್ತಿರಲು ಗುರುಪುತ್ರನಾದ ಕಚನನ್ನು ಮೃತಸಂಜೀವಿನೀವಿದ್ಯೆ ಕಲಿಯುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರಲ್ಲಿಗೆ ಕಳುಹಿಸಿಕೊಟ್ಟರು. ಗುರುಕುಲದಲ್ಲಿ ಕಚನಿಗೂ ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರ ಮಗಳಾದ ದೇವಯಾನಿಗೂ ಪರಸ್ಪರ ಪ್ರೀತಿಯು ಬೆಳೆಯಿತು. ಕಚನಿಗೆ ಈ ವಿದ್ಯೆ ಕಲಿಸುವುದು ರಾಕ್ಷಸರಿಗೆ ಸಹನೆಯಿಲ್ಲದೆ ಅವನನ್ನು ಕೊಂದು ಪಾಕಿದರೂ ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರು ಮಂತ್ರಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಬದುಕಿಸಿದುದನ್ನು ಕಂಡು ರಾಕ್ಷಸರು ಪುನಃ ಅವನನ್ನು ಸುಟ್ಟು ಅವನ ಬೂದಿಯನ್ನು ಮದ್ಯದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸಿ ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರಿಗೆ ಕುಡಿಸಿದರು. ದೇವಯಾನಿಯ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಂತೆ ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರು ತಮ್ಮ ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿದ್ದ ಕಚನನ್ನು

ಬದುಕಿಸಿ ಅಲ್ಲಿರುವಾಗಲೇ ಅವನಿಗೆ ಮೃತಸಂಜೀವಿನೀ ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸಿದರು. ಆಗ ಕಚನು ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರ ಹೊಟ್ಟೆಯನ್ನು ಭೇದಿಸಿಕೊಂಡು ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಂದು ತನ್ನ ವಿದ್ಯಾಬಲದಿಂದ ಅವರನ್ನು ಬದುಕಿಸಿದನು. ದೇವಯಾನಿಯು ತನ್ನನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಬೇಕೆಂದು ಕಚನನ್ನು ನಿರ್ಬಂಧಿಸಿದಾಗ ಗುರುಪುತ್ರಿಯಾದಕಾರಣ ಅದಕ್ಕೆ ಇವನು ಒಪ್ಪದಿರಲು "ಈ ವಿದ್ಯೆಯು ನಿನಗೆ ಫಲಿಸದಿರಲಿ" ಎಂದು ಶಾಪಕೊಟ್ಟಳು. ಆಗ ಕಚನೂ ಇವಳು ವೇದ ಶಾಸ್ತ್ರಸಂಪನ್ನನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಮಗಳಾಗಿದ್ದರೂ ಧರ್ಮವಿರುದ್ಧವಾದ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಬಲಾತ್ಕಾರಮಾಡಿದುದರಿಂದ "ಯಾವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನೂ ನಿನ್ನನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗದಿರಲಿ" ಎಂದು ಪ್ರತಿಶಾಪವಿತ್ತನು. ಈ ಕಾರಣದಿಂದ ದೇವಯಾನಿಯು ಯಯಾತಿಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾದಳು.] ಭಾಂ ಆದಿಂ ೭೦.

**ಕಚಗ್ರಹ ಕಚಗ್ರಹ** (ಪುಂ) ಕೂದಲನ್ನು ಎಳೆದು ಹಿಡಿದು ಕೊಳ್ಳುವುದು. ಕಚಸ್ಯ ಗ್ರಹ: ಗ್ರಹಣಮ್. "ಶಾಪಯನ್ವಿತ-ಪಾಲಸ್ತಬಲಾತ್ಕಾರಕಚಗ್ರಹ:" ರಘುಂ ೧೦-೪೭.

**ಕಚ್ಚಲ ಕಚಂಗಲ** (ಪುಂ) 1. ಕಡಲು, ಸಮುದ್ರ. ಕಚ (ಶಬ್ದ) "ಅಚ್ಚಲವ್" ಬಾಹುಂ. 2. ತೆರಿಗೆಯಿಲ್ಲದ ಮಾರು ಕಟ್ಟಿ, ಸುಂಕವಿಲ್ಲದ ವ್ಯಾಪಾರದ ಕಟ್ಟಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ -ಲಾ. 3. ಅನೇಕ ಕ್ರಿಮಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪ್ರದೇಶ, ನಾನಾ ಜಂತುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಭೂಮಿ. "ಕಚ್ಚಲಾ ತು ನೀಲಿಂಗಿ ಭೂನಿಜಂತುಸಂಯುತಾ" ವೇಜಂ.

**ಕಚಪಕ್ಷ ಕಚಪಕ್ಷ**, -ಪಾಶ -ಪಾಶ, -ಹಸ್ತ -ಹಸ್ತ (ಪುಂ) ಕೇಶಪಾಶ, ಕೂದಲಿನ ಸಮೂಹ. ಕಚಾನಾಂ ಪಕ್ಷ: ಪಾಶ: ಹಸ್ತೋ ವಾ.

**ಕಚಾ ಕಚಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣಾನೆ. ಕಚ (ಶಬ್ದ) "ಘ:" (೩-೩-೧೧೮). "ಕಚಾ ಕರೇವಾಮ್" ಹೇಮಂ.

**ಕಚಾಕಚಿ ಕಚಾಕಚಿ** (ಅವ್ಯಂ) ಪರಸ್ಪರ ಕೂದಲನ್ನು ಹಿಡಿದುಕೊಂಡು ಮಾಡುವ ಯುದ್ಧ. ಕಚೇಷು ಕಚೇಷು ಗೃಹೀತ್ವಾ ಪ್ರವೃತ್ತಂ ಯುದ್ಧಮ್ "ಇವ್" (೪-೪-೧೨೭). ಪೂರ್ವಪದಾಂತದೀರ್ಘಶ್ಚ (೬-೩-೧೩೭).

**ಕಚಾಕು ಕಚಾಕು** (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಕಚ ಇವ ಅಕತಿ ವಕ್ರಂ ಗಚ್ಛತಿ - ಅಕ (ಕುಡಲಿಲಾಂ ಗತೌ) "ಁ" ಬಾಹುಂ. (ವಿಂ) 2. ಹಿಡಿಯಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ, ತಡೆಯಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. 3. ದುಃಸ್ವಭಾವದವನು, ಕೆಟ್ಟ ಶೀಲವುಳ್ಳವನು. "ಕಚಾಕುಸ್ತು ದುರಾಧರ್ಮೋ ದುಃಶೀಲೋ ನಾ ವೀಲೇಶಯೇ" ಮೇದಿಂ.



ಕಚಾಪ ಕಚಾಪ (ನಂ) 1. ಕೂದಲಿನ ತುದಿ. 2. ಕೂದಲಿನ ತುದಿಯುಳ್ಳಿರುವ ತ್ರಸರೇಣುವಿನ ಎಂಟನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ.

ಕಚಾಚಿತ ಕಚಾಚಿತ (ವಿಂ) ಕೆದರಿದ ಕೂದಲುಳ್ಳ, ಕೆದರಿದ ಕೂದಲಿನಿಂದ ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ. ಕಚೇರಾಚಿತ: "ವನಾಂತ-ಶಯ್ಯಾಕಠಿನೀಕೃತಾಕೃತೀ ಕಚಾಚಿತೌ ವಿಷ್ವಗಿವಾಗಜೌ ಗಜೌ" ಕಿರಾಂ ೧-೩೬.

ಕಚಾಡುರ ಕಚಾಟುರ (ಪುಂ) ನೀರುಕೋಳಿ. ಕಚ ಇವಾಟತಿ—ಅಟ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ "ಡೀಘ್" (೪-೧-೬೩)। ಕಚಾಡುರ ಕಚಾಟುರೀ.

ಕಚೇಲ ಕಚೇಲ (ನಂ) ಬರೆದ ಕಾಗದ (ಹಸ್ತಪ್ರತಿ)ಗಳನ್ನು ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಿ ಕಟ್ಟುವ ದಾರ ಅಥವಾ ಅವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಿಡುವ ಚೀಲ. ಕಚ್ಯತೇ ಬध्यತೇನೇನ — ಕಚ (ಬಂಧನೇ) "ಎಲಚ್" ಬಾಹುಂ। "ಲೇಖೋ ವಾಚಿಕಹಾರಕ:। ವರ್ಣದೂತ: ಸ್ವಸ್ತಿಮುಖ: ಕಚೇಲಂ ತನ್ನಿಬಂಧನಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಕಚ್ಚಟ ಕಚ್ಚಟ (ವಿಂ) ಕೆಟ್ಟಿರುವ ವಸ್ತು. ಕುತಿಸಿತಂ ಚಟತಿ—ಚಟೆ (ವರ್ಷಾವಿರಣಯೋ:) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಕೋ: ಕತ್ (೬-೩-೧೦೨)।

ಕಚ್ಚರ ಕಚ್ಚರ (ವಿಂ) 1. ಕೊಳೆಯಾಗಿರುವ, ಮಲಿನವಾಗಿರುವ, ಕಶ್ಮಲದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕುತಿಸಿತಂ ಚರತಿ — ಚರ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಕೋ: ಕತ್ (೬-೩-೧೦೨)। "ಕಚ್ಚರಂ ಮಲದೂಷಿತಮ್" ಅಮಂ। 2. ಅಸಭ್ಯ, ದುರ್ಜನ. (ನಂ) 3. ತಕ್ಕ, ನೀರು ಬೆರೆಸಿದ ಮೊಸರು, ಮಜ್ಜೆಗೆ. "ಕಚ್ಚರಂ ಕುತಿಸಿತೇ ತಕ್ರೇ" ಹೇಮಂ।

ಕಚ್ಚಿತ್ ಕಚ್ಚಿತ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪ್ರಶ್ನೆ. "ಕಚ್ಚಿನ್ ವಾಖ್ಯಾದಿ-ರೂಪಲವೋ ವ: ಶ್ರಮಚ್ಚಿದಾಮಾಶ್ರಮಪಾದಪಾನಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೨೨। 2. ತನಗೆ ಇಷ್ಟವಾದುದನ್ನು ತಿಳಿಯುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಪ್ರಶ್ನೆ. "ಕಚ್ಚಿತ್ಸೌಮ್ಯ ಪ್ರಿಯಸಹಚರೀ ವಿಶ್ವದಾಲಿಜ್ಞತಿ ತ್ವಾಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೫। 3. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. 4. ಮಂಗಳ. ಕತ್ ಚಿತ್ ಅನಯೋ: ಸಮಾಹಾರ:।

ಕಚ್ಚಿದಧ್ಯಾಯ ಕಚ್ಚಿದಧ್ಯಾಯ (ಪುಂ) ಮಹಾಭಾರತದ ಸಭಾಪರ್ವದ 5 ನೆಯ ಅಧ್ಯಾಯ. [ಈ ಅಧ್ಯಾಯದಲ್ಲಿ ನಾರದಮಹರ್ಷಿಯು ಧರ್ಮರಾಜನ ಕುಶಲಪ್ರಶ್ನೆಯನ್ನು ಮಾಡುವ ವ್ಯಾಜದಿಂದ ರಾಜನೀತಿಯನ್ನು ಹೇಳುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಈ ಹೆಸರು.] "ಕಚ್ಚಿದರ್ಥಾಶ್ಚ ಕಲ್ಪಂತೇ ಧರ್ಮೇ ಚ ರಮತೇ ಮನ:। ಸುಖಾನಿ ಚಾನುಭೂಯಂತೇ ಮನಶ್ಚ ನ ವಿಹನ್ಯತೇ॥ ಕಚ್ಚಿದರ್ಥಂ ಚ ಧರ್ಮಂ ಚ ಕಾಮಂ ಚ ಭರತರ್ಷಭ। ವಿಭಜ್ಯ ಕಾಲೇ ಕಾಲಜ್ಞ: ಸದಾ ವರದ ಸೇವಸೇ॥ ಕಚ್ಚಿದ್ರಾಜಗುಣೈ: ಷಡ್ಭಿ: ಸಪ್ತೋಪಾಯಾಸ್ತಥಾಜನಘ। ಬಲಾಬಲಂ ತಥಾ ಸಮ್ಯಕ್ ಚತುರ್ದಶ

ಪರೀಕ್ಷಸೇ॥ ಕಚ್ಚಿದಾತ್ಮಸಮಾ ವೃದ್ಧಾ: ಶುದ್ಧಾ: ಸಮ್ಬೋಧನಕ್ಷಮಾ:। ಕುಲೀನಾಶ್ಚಾನುರಕ್ತಾಶ್ಚ ಕೃತಾಸ್ತೇ ವೀರಮನ್ವಿಣ:॥" ಈ ರೀತಿ ಈ ಅಧ್ಯಾಯದ 132 ಶ್ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ "ಕಚ್ಚಿತ್" ಪದ ಪ್ರಯೋಗಪೂರ್ವಕ ಕುಶಲಪ್ರಶ್ನೆಯ ವ್ಯಾಜದಿಂದ ನೀತಿಯು ವಿವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದು.

ಕಚ್ಚ ಕಚ್ಚ (ಪುಂ) 1. ನೀರು ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವ ನದಿ ಕೆರೆ ಕೊಳಗಳ ಸಮೀಪಪ್ರದೇಶ, ಜೊಗುಭೂಮಿ. ಕಂ ಜಲಂ ಚ್ಯತಿ ಪರಿಚ್ಛಿನತಿ — ಚೋ (ಛೇದನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। "ಆಸೇದಿರೇ ಲಾವಣಸೇಂಧವೀನಾಂ ಚಮೂಚರೈ: ಕಚ್ಚಭುವಾಂ ಪ್ರದೇಶಾ:" ಮಾಘಂ ೩-೮೦। 2. ತಟ, ತೀರ, ದಡ. "ದಾಶರಥೀ ಭಾಗೀರಥೀಕಚ್ಚಮಗಚ್ಚತಾಮ್" ಚಂ ರಾಂ। 3. ನಂದಿಮರ. 4. ಆಮೆಯು ಬಿಪ್ಪು. 5. ಕಚ್ಚೆ, ನಡುಕಟ್ಟಿಗೆ ಸಿಕ್ಕಿಸುವ ಉಡುವ ಪಂಚೆಯು ತುದಿ. 6. ಹಡಗಿನ ಒಂದು ಭಾಗ. 7. ಮುಖಸಂಪುಟ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ಕಚ್ಚಾ — ಚ್ಯಾಂ. 8. ವಾರಾಹಿ ಗಿಡ, ಹಂದಿಗಡ್ಡೆ. 9. ಜೀರುಂಡೆ. "ಕಚ್ಚ: ಸ್ಯಾದನುಪೇ ತುನ್ನಕದ್ರುಮೇ। ನೌಕಾಙ್ಗೇ ಪುಸಿ ವಾರಾಹ್ಯಾಂ ಚೀರಿಕಾಯಾಂ ಚ ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ।

ಕಚ್ಚಪ ಕಚ್ಚಪ (ಪುಂ) 1. ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ. ಕಚ್ಚೇನ ಕರ್ಪಣ ಪಾತಿ ಇತರಾಙ್ಗಾನಿ — ಪಾ (ರಕ್ಷಣೇ) "ಕ:" (೩-೨-೪)। ಕಚ್ಚಮಾತ್ಮನೋ ಮುಖಸಂಪುಟಂ ಪಾತಿ ಪಾ। ಆಮೆಯು ತನ್ನ ಮುಖವನ್ನು ಬಿಚ್ಚಿನೊಳಕ್ಕೆ ಸೇರಿಸಿ ರಕ್ಷಿಸಿ ಕೊಳ್ಳುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. 2. ಕುಬೇರನ ನವನಿಧಿಗಳ ಲೋಕ. 3. ಜಟ್ಟಿಯ ಬಾಹುಯುದ್ಧದ ಒಂದು ಭೇದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ಪಿ — ಪೀಂ. 4. ಹೆಣ್ಣು ಆಮೆ. 5. ಒಂದು ಕೆಟ್ಟರೋಗ. 6. ಸರಸ್ವತಿಯ ವೀಣೆ. "ಕಚ್ಚಪಿ ವಲ್ಲಕೀ-ಭೇದೇ ದುಲೌ ಧ್ರುಗದಾಂತರೇ। ಪುಸಿ ನಿಧ್ಯಂತರೇ ಕೂರ್ಮ ಮಲ್ಲ-ಬನ್ಧಾಂತರೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ।

ಕಚ್ಚಭೂ ಕಚ್ಚಭೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರು ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವ ಕೆರೆ ಕೊಳಗಳ ಸಮೀಪ ಪ್ರದೇಶ, ಜೊಗುಭೂಮಿ. "ಆಸೇದಿರೇ ಲಾವಣ-ಸೇಂಧವೀನಾಂ ಚಮೂಚರೈ: ಕಚ್ಚಭುವಾಂ ಪ್ರದೇಶಾ:" ಮಾಘಂ ೩-೮೦।

ಕಚ್ಚರುಹ ಕಚ್ಚರುಹ (ವಿಂ) 1. ದಡದಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯುವ, ತೀರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ. ಕಚ್ಚೇ ತಟೇ ರೋಹತಿ — ರುಹ (ಬೀಜ-ಜನ್ಮಾದೌ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ರುಹಾ — ರುಹಾಂ. 2. ಗರಿಕೆ ಹುಲ್ಲು. "ವಿಷ್ಠರಂ ತಟಕುಶಾಲಿ-ಭಿರದ್ವಿ: ಪಾಥಮರ್ಥಮಥ ಕಚ್ಚರುಹಾಭಿ:" ನೈಷಂ ೫-೭।

ಕಚ್ಚುರ ಕಚ್ಚುರ (ವಿಂ) 1. ಕಚ್ಚಿರೋಗವುಳ್ಳವನು. ಕಚ್ಚು-ರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ರ:" ಹ್ರಸ್ವಶ್ಚ (ವಾಂ ೫-೨-೧೦೭)। 2. ಕಾಮುಕ, ಸ್ತ್ರೀಲಂಪಟ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ರಾ — ರಾಂ. 3. ನಸುಗುನ್ನಿಗಿಡ.



4. ಕಚ್ಚೋರ. 5. ತೀಟಕಸಂಧಿ. 6. ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ.  
“ಕಚ್ಚುರಾ ಶೂಕಶಿಖ್ಯಾ ಚ ಶಟೋದಸ್ಪರ್ಶಯೋರಪಿ | ಕಚ್ಚುರಃ  
ಪುಂಶ್ಚಲೇ ಕಚ್ಚುಯುಕ್ತೇ ಚ” ಮೇದಿಂ |

ಕಚ್ಚುರಾಕ್ಷಸ ಕಚ್ಚುರಾಕ್ಷಸ (ನಂ) ಒಂದು ತೈಲ; ಇದರ  
ಅಭ್ಯಂಗಸ್ನಾನದಿಂದ ಕಚ್ಚು, ನವೆ, ಇತರ ಚರ್ಮವ್ಯಾಧಿಗಳು  
ಮತ್ತು ಕೆವುಡು ಈ ರೋಗಗಳು ವಾಸಿಯಾಗುವುವು.  
“ದಂತೀ ನಿಮ್ಬದಲಂಚೈಭಿಃ ಪೃಥಕ್ಕರ್ಪಮಿತೈಃ ಪೃಥಕ್ | ಕಲ್ಕೀಕೃತೈಃ  
ಪಚೇತ್ತಲಂ ಕಟುಪ್ರಸ್ಥಹಯೋನ್ಮಿತೈಃ | ಅರ್ಕಸಿಹುಣ್ಡದುಗ್ಧೇನ ಪೃಥಕ್ಪಲ-  
ಮಿತೇನ ಚ | ಗೋಮೂತ್ರಸ್ಯಾಡಕೇನಾಪಿ ಶನೈರ್ಮೃದ್ವಗ್ನಿನಾ ಪಚೇತ್ |  
ಅಮೃತ್ಜೇನ ಹರೇದೇತತ್ ಕಚ್ಚುದುಃಸಾವ್ಯತಾಮಪಿ | ಪಾಮಾನಂ ಚ ತಥಾ  
ಕಣ್ಡಂ ತ್ವಗ್ಯಾಧಿಬಧಿರಾನಪಿ” ಭಾವಪ್ರಂ |

ಕಚ್ಚು ಕಚ್ಚು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಚ್ಚು, ಕಪತಿ — ಕಪ (ಹಿಸಾಯಾಮ್)  
“ಃ” ಛ ಚ (ಽಽಂ ೧-೮೪) |

ಕಚ್ಚುರಕ ಕಚ್ಚುರಕ (ಪುಂ) ಕಚ್ಚೋರ.

ಕಜ್ಜಲ ಕಜ್ಜಲ (ನಂ) ಅಂಜನ, ಕಣ್ಣುಕಪ್ಪು, ಕಾಡಿಗೆ.  
ಕುತಿಸಿತಂ ಜಲಮ್ — ಕೋ: ಕತ್ (೬-೩-೧೦೨) | ಕಜ್ಜಲ-  
ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಅಚ್” (೪-೨-೧೨೭) | “ಲಾಕ್ಷಾಲಕ್ಷಮ  
ಲಲಾಟಪದ್ಮಮಿಹಿತ: ಕೇಯೂರಮುಕ್ತಾ ಗಲೇ ವಕ್ತ್ರೇ ಕಜ್ಜಲಕಾಲಿಮಾ  
ನಯನಯೋಸ್ತಾಮ್ಬೂಲರಾಗೋಽಪರ:” ಅಮರಂ ೬೦ |

ಕಜ್ಜಲಕೇತು ಕಜ್ಜಲಕೇತು — ಧ್ವಜ — ಧ್ವಜ (ಪುಂ) ದೀಪ.  
ಕಜ್ಜಲಂ ಕೇತುರಿವ ಧ್ವಜ ಇವ ವಾಸ್ಯ | “ದೀಪಸ್ತು ಸ್ನೇಹಾಶ:  
ಕಜ್ಜಲಧ್ವಜ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಕಚ್ಚುಕ ಕಚ್ಚುಕ (ಪುಂ) 1. ಕವಚ, ಅಂಗಿ. ಕಚ್ಚುಕೇ  
ಬದ್ಧಯತೇ — ಕಚಿ (ದೀಪ್ತಿಬಂಧನಯೋ: ) “ಉಕ:” ಬಾಹುಂ |  
“ಮಹಿಭೃತಾಂ ಮಹಿಮಭೃತಾಂ ನ ಸಮಮುರ್ದೋಽಂತರಾ ವಪುಷಿ ಬಹಿಶ್ಚ  
ಕಚ್ಚುಕಾ:” ಮಾಘಂ ೧೭-೨೨ | 2. ಲೋಹಮಯವಾದ  
ಯುದ್ಧಕವಚ. “ಪುರಾಣಿ ದುರ್ಗಾಣಿ ನಿಶಾತಮಾಯುಧಂ ಬಲಾನಿ  
ಶೂರಾಣಿ ಧನಾಶ್ಚ ಕಚ್ಚುಕಾ:” ಮಾಘಂ ೧-೪೫ | 3. ಹಾವಿನ  
ಸೋಲೆ, ಸರ್ಪದ ಮೈಮೇಲಿನ ಪೊರೆ. ಕಚ್ಚುಕೇ — ಕಚಿ  
“ಉಕ:” | 4. ಪುತ್ರೋತ್ಪಾದಿಸಂತೋಷಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ಯಜಮಾನನ ಮೈಯಿಂದ ಭೃತ್ಯರು ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ  
ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ ವಸ್ತು. 5. ಹೆಂಗಸರ ರವಿಕೆ. “ಕಚ್ಚುಕ-  
ಶ್ಚೋಲವರ್ಮಣೋ: | ವರ್ಧಾಪಕಗೃಹೀತಾಙ್ಗವಸನೇ ವಾರವಾಣಕೇ |  
ನಿರ್ಮೋಕೇ” ಹೇಮಂ |

ಕಚ್ಚುಕಿತ ಕಚ್ಚುಕಿತ (ವಿಂ) 1. ಕವಚತೊಟ್ಟಿರುವ.  
ಕಚ್ಚುಕೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತ: “ಐತತ್” (೪-೨-೩೬) |  
2. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರೆಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಕೋಸಲಸುತಾಕುಮಾರ-  
ಭಾವಕಚ್ಚುಕಿತಕಾರಣಾಕಾರ” ರಘುಂ ಗಂ |

ಕಚ್ಚುಕಿನ್ ಕಚ್ಚುಕಿನ್ (ಪುಂ) 1. ರಾಜನ ಅಂತಃಪುರದ  
ಅಧಿಕಾರಿ, ಅಂತಃಪುರದ ರಕ್ಷಕ. ಕಚ್ಚುಕೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ  
“ಐನಿ:” (೪-೨-೧೧೪) | ಕಚ್ಚುಕಿಯು ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಾಗಿದ್ದು  
ಅಂತಃಪುರದಲ್ಲಿ ಧಾರಾಳವಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವವನೂ ಸಕಲ  
ಸದ್ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದವನೂ ಸಕಲ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲೂ  
ಸಮರ್ಥನೂ ಆಗಿರಬೇಕು. “ಅಂತಃಪುರಚರೋ ವೃದ್ಧೋ ವಿಪ್ರೋ  
ಗುಣಗಣಾನ्वಿತ: | ಸರ್ವಕಾರ್ಯಾರ್ಥಕುಶಲ: ಕಚ್ಚುಕೋಽಸ್ಯಾಭಿಭೀಯತೇ” |  
“ಅಂತಃ ಕಚ್ಚುಕಿಕಚ್ಚುಕಸ್ಯ ವಿಶತಿ ತ್ರಾಸಾದಯಂ ಬಾಮನ:”  
ರತ್ನಂ ೨-೩ | 2. ದ್ವಾರಪಾಲಕ. 3. ಸರ್ಪ, ಹಾವು.  
4. ಜಾರ, ವಿಟ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿ. “ಕಚ್ಚುಕೀ ಭುಜಗೋ ವಿಧಗೋ  
ಮಲ್ಲೇ ಜಾಙ್ಗಲಿಕದ್ವಯೇ” ವಿಶ್ವಂ | 5. ಬಾರ್ಲಿ ಅಕ್ಕಿ.  
6. ಅಗುರುವೃಕ್ಷ. 7. ಚಣಕ, ಕಡಲೆ. ರಾಜನಿಂ |  
8. ಜಟ್ಟಿ, (ವಿಂ) 9. ಕಚ್ಚುಕವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವವನು,  
ಅಂಗಿಯನ್ನು ತೊಟ್ಟಿರುವವನು.

ಕಚ್ಚುಕೋಯ ಕಚ್ಚುಕೋಯ (ಪುಂ) ಕಚ್ಚುಕಿ, ರಾಜನ  
ಅಂತಃಪುರದ ರಕ್ಷಕ.

ಕಚ್ಚುಲಿಕಾ ಕಚ್ಚುಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರವಿಕೆ, ಚೋಳ.  
ಕಚ್ಚುಲಿಕಾ ಬದ್ಧಯತೇ — ಕಚಿ (ದೀಪ್ತಿಬಂಧನಯೋ: ) “ಉಲಚ್”  
ಬಾಹುಂ | “ತ್ವಂ ಮುಗಧಾಕ್ಷಿ ವಿನೈವ ಕಚ್ಚುಲಿಕಯಾ ಧತ್ಸೇ ಮನೋ-  
ಹಾರಿಣಿಂ | ಲಕ್ಷ್ಮೀಮಿತ್ಯಭಿಧಾಯಿನಿ ಪ್ರಿಯತಮೇ ತದ್ವಿಟಿಕಾ-  
ಸಂಸ್ಪೃಶಿ” ಅಮರಂ ೨೭ |

ಕಜ್ಜ ಕಜ್ಜ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಕಮ್ ಜಲೇ  
ಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) “ಃ” (೩-೨-೧೦೧) |  
“ಅಪ್ ಎವ ಸಸರ್ಜಾದೌ ತಾಸು ವೀರ್ಯಮವಾಸೃಜತ್ | ತದಂಡಮಭವದ್ವೈಮಂ  
ಸಹಸ್ರಾಂಶುಸಮಪ್ರಭಮ್ | ತಸ್ಮಿನ್ ಜನೇ ಸ್ವಯಂ ಬ್ರಹ್ಮಾ ಸರ್ವಲೋಕ-  
ಪಿತಾಮಹ:” ಮನುಂ ೧-೯ | 2. ಕೇಶ, ಕೂದಲು. ಕಮ್  
ಶಿರಸಿ ಜಾಯತೇ | (ನಂ) 3. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ, ತಾವರೆ.  
4. ಅಮೃತ. “ಕಜ್ಜ: ಕೇಶೋ ವಿರಿಂಚೇ ಚ ಕಜ್ಜಂ  
ಪೀಯೂಷಪದ್ಮಯೋ:” ಮೇದಿಂ |

ಕಜ್ಜಜ ಕಜ್ಜಜ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಕಜ್ಜಾತ್  
ವಿಷ್ಣೋರ್ನಾಭಿಕಮಲಾತ್ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) “ಃ”  
(೩-೨-೯೮) |

ಕಜ್ಜನ ಕಜ್ಜನ (ಪುಂ) ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ಕಂ ಸುಲಂ  
ಜನಯತಿ — ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) + ಣಿಚ್ “ಅಣ್” (೩-೨-೧) |

ಕಜ್ಜನಾಭ ಕಜ್ಜನಾಭ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಕಜ್ಜಂ  
ನಾಭಿ ಯಸ್ಯ | “ತಸ್ಮಾ ಎವಂ ಜಗತ್ಸೃಷ್ಟೇ ಪ್ರಧಾನಪುರುಷೇಶ್ವರ: |  
ವ್ಯಜ್ಯೇದಂ ಸ್ವೇನ ರೂಪೇಣ ಕಜ್ಜನಾಭಸ್ತಿರೋದಧೇ” ಭಾಗಂ  
೩-೯-೪೪ |



ಕಂಜರ ಕಂಜರ -ಜಾರ-ಜಾರ (ಪುಂ) 1. ಜರ, ಹೊಟ್ಟೆ. 2. ಸೂರ, 3. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. 4. ಗಜ, ಅನೆ. 5. ಎಕ್ಕದಗಿಡ. 6. ಮುನಿ, ತಪಸ್ವಿ. ಕಂ ಜಲಂ ಜುಗಾತಿ - ಜ (ವಯೋಹಾನಿ) "ಅಚ್" (3-1-134). "ಅಣ್" ವಾ. "ಕಂಜರೋ ಜಠರೇ ಸೂರ್ಯೇ ವಿರಿಂಚೋ ವಾರಣೇ ಮುನೋ" ಮೇದಿಂ. 7. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಕಂಜ "ಆರನ್" "ಕಂಜಾರೋ ಮಯೂರ:" (3-1-134).

ಕಡಿ-ಗತೌ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) ಕಡತಿ. ಚಕಣ್. ಅಕಣ್ತಿತ್. ಹೋಗು, ನಡೆ.

ಕಡೀ-ಗತೌ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) ಕಡತಿ. ಚಕಾಡ. ಅಕಡೀತ್, ಅಕಾಡೀತ್. ಹೋಗು, ನಡೆ.

ಕಡ ಕಟ್ಟಿ (ಪುಂ) 1. ಹುಲ್ಲು ಬಿದಿರು ಮುಂತಾದುವುಗಳಿಂದ ತಯಾರಾಗಿರುವ ಚಾಪೆ. ಕಡೆ (ವರ್ಷಾವಿರಣಯೋ:) "ಅಚ್" (3-1-134). "ವರ್ಷಾಸು ವಿಲಗ್ನಕಡವತ್ ತಿಷ್ಠನ್ನೇವಾವಸೀದತಿ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ 19-3. 2. ಅನೆಯ ಗಂಡಸ್ಕಳ, -ಕಪೋಲ. "ಕಣ್ವಯಮಾನೇನ ಕಡಂ ಕದಾಚಿದ್ವನ್ಯದ್ವಿಪೇನೋನ್ಮಥಿತಾ ತ್ವಗಸ್ಯ" ರಘುಂ 2-37. 3. ಗಂಡಸ್ಕಳ, ಕಪೋಲ, ಕೆನ್ನೆ. 4. ಶರ, ಬಾಣ. 5. ಧನುಸ್ಸು, ಬಿಲ್ಲು. 6. ಸಮಯ, ಆಚಾರ. (ಪುಂ) 7. ಕಟ್ಟಿಪ್ರದೇಶ, ಸೊಂಟ. 8. ಸಸ್ಯ, ಪೈರು, ಒಪ್ಪವಿಶೇಷ. 9. ಶವ, ಮೃತಶರೀರ. 10. ಶವರಥ. ಶವವನ್ನು ಸಾಗಿಸುವ ಗಾಡಿ. (ವಿಂ) 11. ಅತಿಶಯವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಿ -ಟೀ. 12. ಹಿಪ್ಪಲಿ. "ಕಡ: ಶ್ರೋಣೌ ದ್ವಯೋ: ಪುಸಿ ಕಿಲಿಂಜೇತಿಶಯೇ ಶರೇ. ಸಮಯೇ ಗಜಗಂಧೇ ಚ ಪಿಪ್ಪಲ್ಯಾಂ ತು ಕಡೀ ಮತಾ" ಮೇದಿಂ.

ಕಡಕ ಕಟ್ಟಿಕ (ಪುಂ) 1. ವಲಯ, ಬಳೆ, ಹಸ್ತಾಭರಣ. ಕಡೆ (ವರ್ಷಾವಿರಣಯೋ:) "ಕ್ವನ್" (3-2-33). "ಕಡಕಾನಿ ಭಜಂತಿ ಚಾರ್ಭಿನ್ವಮುಕ್ತಾಫಲಭೂಷಣೈರ್ಮುಜೈ:" ಮಾಧಂ 16-77. 2. ಪರ್ವತದ ನಿತಂಬಪ್ರದೇಶ, ಬೆಟ್ಟದ ತಪ್ಪಲು ಪ್ರದೇಶ. ಬೆಟ್ಟದ ಮಧ್ಯಭಾಗ. "ದಂತೋಜ್ಜ್ವಲಾಸು ವಿಮಲೋಪಲ-ಮೇಖಲಾಂತಾ: ಸದ್ರನ್ತಚಿತ್ರಕಡಕಾಸು ಬೃಹನ್ನಿತಮ್ಬಾ:" ಮಾಧಂ 4-40. 3. ಸೇನೆಯ ಶಿಬಿರ. "ಆಕುಲ್ಯಕಾರಿ ಕಡಕ-ಸ್ತುರಗೇಣ ತೂರ್ಮಶ್ವೇತಿ ವಿಧುತಮನುಬ್ರವತಾಶ್ವಮನ್ಯಮ್" ಮಾಧಂ 4-49, 61. 4. ರಾಜಧಾನಿ. 5. ಅನೆಯ ಕೊಂಬಿನ ಅಭರಣ. 6. ಸೈನ್ಯ. 7. ಸಮುದ್ರದ ಉಪ್ಪು. 8. ಒರಿಸ್ಸಾ ಪ್ರಾಂತದ ರಾಜಧಾನಿ, -ಮುಖ್ಯಪಟ್ಟಣ. "ಕಡಕೋಸ್ತೀ ನಿತಮ್ಬೋದ್ರೇ: ದಂತಿನಾಂ ದಂತಭೂಷಣೇ. ಸಾಮುದ್ರಲವಣೇ ರಾಜಧಾನಿ-ವಲಯಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ. "ಕಡಕಸ್ತ್ವದ್ರಿನಿತಮ್ಬೇ ಬಾಹುಭೂಷಣೇ. ಸೇನಾಂ ರಾಜಧಾನಾಂ ಚ" ಹೇಮಂ. 9. ಸೇನಾಸಮೂಹ.

"ಸ ಚ ದಿಗ್ವಿಜಯವ್ಯಾಪಾರಕ್ರಮೇಣಾಗತ್ಯ ಚಂದ್ರಭಾಗಾನದೀತೀರೇ ಸಮಾವೇಶಿತಕಡಕೋ ವರ್ತತೇ" ಹಿತಂ. 10. ಪರ್ವತದ ಪುಸ್ತ ಭೂಮಿ, ಬೆಟ್ಟದ ಸಮಭೂಮಿ. "ನವನಗವನಲೇಖಾಶ್ಯಾಮ-ಮಧ್ಯಾಭಿರಾಭಿ: ಸ್ಫಟಿಕಕಡಕಭೂಮಿನಾಟಯತ್ಯೇಷ ಶೈಲ:" ಮಾಧಂ 4-64. "ಕಡಕಂ ವಲಯೇ ಸಾನೋ ರಾಜಧಾನಿನಿತಮ್ಬಯೋ:" ವಿಶ್ವಂ. 11. ಚಾಪೆ. 12. ಕಟ್ಟಿಬಂಡ, ನಡುಕಟ್ಟು, ಡಾಬು. 13. ಚಕ್ಕ, ಗಾಲಿ. 14. ಮಧ್ಯಭಾಗ. "ಸ್ವಪ್ರಾಣೇ-ಶ್ವರನಮಂಹರ್ಮ್ಯಕಡಕಾತಿಥ್ಯಗ್ರಹಾಯೋತ್ಸುಕಂ ಪಾಥೋದಂ ನಿಜಕೇಲಿ-ಸೌಧಶಿಖರಾದಾರುಹ್ಯ ಯತ್ಕಾಮಿನಿ" ನೈಷಂ 2-104.

ಕಡಕಡ ಕಟ್ಟಿಕಟ್ಟಿ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾದೇವ, ಮಹೇಶ್ವರ. "ನಮೋ ನಾಭಾಯ ನಾಮ್ಯಾಯ ನಮ: ಕಡಕಡಾಯ ಚ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ 290-90. 2. ಸಮುದ್ರದ ಉಪ್ಪು, ವೇಜಂ.

ಕಡಕರ ಕಟ್ಟಿಕರ -ಕರ್ಮನ್ -ಕರ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಶೂದ್ರ ಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಜಾರಪೈಶ್ಯನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು. "ವೇಶ್ಯಾದೇಹಕಂ ವಿಪ್ರಾ ಕ್ಷತ್ರಕನ್ಯಾ ತು ಮಾಗಧಮ್. ಶೂದ್ರಾ ತು ಕರಣಂ ಸೇವ ಜಾರಾತ್ಕಡಕರಂ ತತ:" ವೇಜಂ. 2. ಚಾಪೆ ಯನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. "ಉಗ್ರ: ಪಾರಶವೋ ದುರ್ಗಧನಾಂತ: ಪುರಪಾಲನಾತ್. ಅನ್ವರ್ಥ: ಸ್ಯಾತ್ ಕಡಕರೋ ದ್ವಾದಶೇತೇನುಲೋಮಜಾ:" ವೇಜಂ.

ಕಡಕಿನ್ ಕಟ್ಟಿಕಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. (ವಿಂ) 2. ಬಳೆಯನ್ನು ತೊಟ್ಟಿರುವ. ಕಡಕೋಸ್ತಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114).

ಕಡಕೀ ಕಟ್ಟಿಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎಣ್ಣೆಯ ಕಾರ್ಖಾನೆ. "ತೈಲಶಾಲಾ ಯನ್ತ್ರಗೃಹಂ ಪೊಟಕೀ ಕಡಕೀ ಚ ಸಾ" ವೇಜಂ.

ಕಡಕೀಯ ಕಟ್ಟಿಕೀಯ (ವಿಂ) ಬಳೆಯನ್ನು ತಯಾರಿಸಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಚಿನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿ ಮೊದಲಾದುದು. ಕಡಕಾಯ ಹಿತಮ್-ವಾ "ಛ:" (4-1-4). ಪಕ್ಷೆ "ಯತ್" (4-1-2). ಕಡಕಯಮ್ ಕಟ್ಟಿಕಯಮ್.

ಕಡಕೃತ್ ಕಟ್ಟಿಕೃತ್ (ವಿಂ) ಚಾಪೆಯನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. ಕಡಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (3-2-61).

ಕಡಕೋಲ ಕಟ್ಟಿಕೋಲ (ಪುಂ) ಪಡೆಗ, ಪೀಕದಾನಿ, ತಾಂಬೂಲ ರಸಾದಿಗಳನ್ನು ಉಗುಳುವ ಪಾತ್ರೆ. ಕಡತಿ ವರ್ಷತಿ ಸ್ರವತಿ-ಕಡೆ (ವರ್ಷಾವಿರಣಯೋ:) "ಅಚ್" (3-1-134). ಕಡಸ್ಯ ನಿಷ್ಠಿವನಜಲಸ್ಯ ಕೋಲೋ ಧನಿಭಾವೋ ಯತ್ರ. "ಕಡಕೋಲ: ಪತದ್ಗ್ರಹ: ಪೂಗಪಿಠಂ ಚ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಕಡಲಾವಕ ಕಟ್ಟಿಖಾದಕ (ಪುಂ) 1. ಜಂಬುಕ, ನರಿ. 2. ವಾಯುಸ, ಕಾಗೆ. 3. ಗಾಜಿನ ಪಾತ್ರೆ. (ವಿಂ) 4. ಸರ್ವಭಕ್ಷಕ, ಸಿಕ್ಕಿದುದೆಲ್ಲವನ್ನೂ ತಿನ್ನುವವನು. ಕಡಮಪಿ



ಖಾದತಿ — ಖಾದ್ (ಮಕ್ಷಣ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।  
 "ಅಥ ಕಟಖಾದಕಃ। ಖಾದಕೇ ಕಾಚಕಲಶೇ ಬಲಿಪುಷ್ಪೇ ಚ  
 ಜಮ್ಬುಕೇ" ಮೇದಿಂ।

ಕಟಘೋಷ ಕಟಘೋಷ (ಪುಂ) ಪೂರ್ವದೇಶದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು  
 ಗ್ರಾಮ, ಒಂದು ಗೊಲ್ಲರ ಹಳ್ಳಿ. ಕಟಪ್ರಧಾನೋ ಘೋಷಃ।  
 ಕಟನಗರಮ್ ಕಟಪಲ್ಲೀ ಕಟಪಲ್ವಲಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕಟಘೋಷೀಯ ಕಟಘೋಷೀಯ (ವಿಂ) ಕಟಘೋಷ  
 ಗ್ರಾಮಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಕಟಘೋಷಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿರುವ.  
 ಕಟಘೋಷ "ಛಃ" (೪-೨-೧೩೯)। ಹೀಗೆಯೇ ಕಟನಗರೀಯಮ್  
 ಕಟಪಲ್ಲೀಯಮ್ ಕಟಪಲ್ವಲೀಯಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕಟಚ್ಚುಟ ಕಟಿಂಕಟಿ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಕಟಂ ಕಟತಿ  
 ಜ್ವಾಲಯಾ ಆವೃಣೋತಿ — ಕಟೇ (ವರ್ಷಾವಿರಣಯೋಃ) "ಖಚ್"  
 ಬಾಹುಂ। ಮುಮಾಗಮಃ (೬-೩-೬೭)। 2. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ.  
 3. ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 4. ಚಿತ್ರ  
 ಮೂಲದಗಿಡ. 5. ಗಣಪತಿ.

ಕಟಚ್ಚುಟೇರಿ ಕಟಿಂಕಟೀರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹರಿದ್ರೆ, ಅರಶಿನ.  
 ಕಟಚ್ಚುಟಂ ವಹ್ನಿಜಂ ಸುವರ್ಣಂ ತತ್ಕಾಂತಿಮೀರಯತಿ — ಇರ (ಗತೌ)  
 "ಅಘ್" (೩-೨-೧)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। "ಕಟಚ್ಚುಟೇರಿ  
 ಹರಿದ್ರಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 2. ಮರದರಿಶಿನ. "ನೀಲೋತ್ಪಲೋ-  
 ಶೀರಕಟಚ್ಚುಟೇರಿ" ಸುಶ್ರುತಂ।

ಕಟಪೂತನ ಕಟಪೂತನ (ಪುಂಸ್ತ್ರೀ) ಪಿಶಾಚಿಗಳಲ್ಲೊಂದು ಭೇದ;  
 ತನ್ನ ಕರ್ತವ್ಯವನ್ನು ಪಾಲಿಸದ ಕ್ಷತ್ರಿಯನು ಮೃತನಾದ  
 ಮೇಲೆ ಹೊಂದುವ ಒಂದು ಜನ್ಮ. "ವಾನ್ತಾಶ್ಯುತ್ಕಾಮುಖಃ  
 ಪ್ರೇತೋ ವಿಪ್ರೋ ಧರ್ಮತ್ವಿಕಾಂಚ್ಯುತಃ। ಅಮೇಧ್ಯಕುಣಪಾಶೀ ಚ  
 ಕ್ಷತ್ರಿಯಃ ಕಟಪೂತನಃ" ಮನುಂ ೧೨-೭೧। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ - ಪೂತನಾ  
 - ಪೂತನಾ. "ಸಂಸತ್ತಾಕುಲಕೇಲಯಃ ಕಿಲಕಿಲಾಕೋಲಾಹಲೈಃ  
 ಸಂಮದಾದುತ್ತಾಲಾಃ ಕಟಪೂತನಾಪ್ರಭೃತಯಃ ಸಾಂರಾವಿಣಿಂ ಕುರ್ವಂತೆ"  
 ಮಾಲತೀಂ ೫-೧೧।

ಕಟಪ್ಪ ಕಟಪ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹುಳ. 2. ಶಿವ,  
 ಈಶ್ವರ. 3. ರಾಕ್ಷಸ. ಕಟೇ ಇಮಶಾನೇ ಪ್ರವತೇ — ಪ್ರುಙ್ (ಗತೌ)  
 "ಕಿವಪ್"। 4. ವಿದ್ಯಾಧರ. (ವಿಂ) 5. ಪಗಡೆಯಾಟ  
 ಮಾಡುವವನು. "ಕಟಪ್ಪಃ ಪುಂಸಿ ರಾಕ್ಷಸೇ। ವಿಶ್ವಾಧರೇ ಮಹಾದೇವೇ  
 ತಥಾ ಸ್ಯಾದಕ್ಷದೇವಕೇ" ಮೇದಿಂ।

ಕಟ (ಡಿ) ಪ್ರೋಥ ಕಟಿ (ಟಿ) ಪ್ರೋಥ (ಪುಂ) ಪಿಶ್ಚಿಗಳಮೇಲೆ  
 ಎತ್ತರವಾಗಿರುವ ಮಾಂಸಪಿಂಡ. ಕಟಸ್ಯ ಕಟಯಾ ವಾ ಪ್ರೋಥೋ  
 ಮಾಂಸಪಿಂಡಃ।

ಕಟಭಜ್ಜ ಕಟಿಭಂಗೆ (ಪುಂ) 1. ಕೈಯಿಂದ ಧಾನ್ಯದ ತೆನೆ  
 ಗಳನ್ನು ಕೊಯ್ಯುವುದು. ಕಟಾನಾಮೋಷಧೀನಾಂ ಭಜ್ಜಃ ಕ್ಷೇದನಮ್।

2. ರಾಜನ ವಿಶಾಖ. ಕಟಾನಾಂ ಸೇನ್ಯಾನಾಂ ಭಜ್ಜೋ ನಾಶೋ  
 ಯಸ್ಮಾತ್।

ಕಟಮಿ ಕಟಿಭೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತೀಲತೆ, ಕಂಗೊಂಗಿ  
 ಗಿಡ. ಕಟ ಇವ ಭಾತಿ — ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) "ಛಃ"  
 (೩-೨-೧೦೧)। 2. ಸಿಡಿಲೊಲ್ಲದಗಿಡ, ಹರಿದ್ರಾಂಜನ ವೃಕ್ಷ.  
 "ಕಟಮಿ ವೃಕ್ಷಭೇದೇಽಪಿ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತೀಯಾಮಪಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ।

ಕಟಮ್ ಕಟಿಭೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನೆಯ ಕುಂಭಸ್ಥಳ ಅಥವಾ  
 ಗಂಡಸ್ಥಳ. ಕಟಸ್ಯ ಭೂಃ।

ಕಟಮ್ಬ ಕಟಿಂಞ (ಪುಂ) 1. ವಾದಿತ್ರವೆಂಬ ಒಂದು ವಾದ್ಯ.  
 ಕಟೇ (ವರ್ಷಾವಿರಣಯೋಃ) "ಅಮ್ಬಚ್" (೩-೪-೮೨)।  
 2. ಶರ, ಬಾಣ.

ಕಟಮ್ಬರ ಕಟಿಂಞರ (ಪುಂ) 1. ಸಿಡಿಲೊಲ್ಲದ ಗಿಡ, ಹರಿ-  
 ದ್ರಾಂಜನ ವೃಕ್ಷ. 2. ಹೆಮ್ಮರ, ತಿಗಡುಮರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
 -ಭರಾ - ಭರಾ. 3. ಸಾರಣಗಿಡ, ಮುಳ್ಳು ಅಗಸೆಗಿಡ.  
 4. ಹೀರೆಗಿಡ. 5. ಕಟುಕ ರೋಹಿಣಿ. 6. ಹೆಣ್ಣಾನೆ.  
 7. ಕುರಟೆಗಿಡ. 8. ಹೆಣ್ಣಾಮೆ. 9. ಹೆಣ್ಣು ಗುಬ್ಬಿಚ್ಚಿ.

ಕಟವ್ರಣ ಕಟಿವ್ರಣ (ಪುಂ) ಭೀಮಸೇನ. ಕಟಃ ಕಟಕೃಷ್ಣಃ ವ್ರಣೋ  
 ಯಸ್ಯ।

ಕಟಾಕ್ಷ ಕಟಾಕ್ಷ (ಪುಂ) ಕಡೆಗಣ್ಣಿನ ನೋಟ. ಕಟಂ ಗಂಢಸ್ಥಲಮ್  
 ಅಕ್ಷತಿ — ಅಕ್ಷ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।  
 "ನಿಃಶಕ್ಲಮನ್ಯಾಃ ಸಮಮಾಹಿತೇರ್ಷ್ಯಾಃ ತತ್ರಾಂತರೇ ಜಙ್ಗರಮ್  
 ಕಟಾಕ್ಷಃ" ಮಾಘಂ ೩-೧೬।

ಕಟಾಕ್ಷಣ ಕಟಾಕ್ಷಣ (ನಂ) ಕಡೆಗಣ್ಣಿನ ನೋಟದಿಂದ  
 ಮಾಡುವ ಸಂಜ್ಞೆ. "ಕಟಾಕ್ಷಣಾಜ್ಜನ್ಯಜನೇನಿಜಪ್ರಜಾಃ ಕವಚಿ-  
 ತ್ಪರೀಹಾಸಮಚೀಕರತಮಾಮ್" ನೈಷಂ ೧೬-೪೮।

ಕಟಾಯನ ಕಟಾಯನ (ನಂ) ಲಾಮಂಚದ ಬೇರು. ಕಟಸ್ಯಾ-  
 ಯನಮುತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನಮ್।

ಕಟಾರ ಕಟಾರ (ಪುಂ) ಕಾಮುಕ, ಸ್ತ್ರೀಲಂಘಟ. ಕಟೇ (ವರ್ಷಾ-  
 ವಿರಣಯೋಃ) "ಆರನ್" ಬಾಹುಂ।

ಕಟಾಹ ಕಟಾಹ (ಪುಂ) 1. ಹುರಿಯುವ ಬಾಣಲಿ. ಕಟಮಾಹಂತಿ  
 — ಆ + ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) "ಛಃ" (೩-೨-೧೦೧)।  
 2. ತಲೆಯೆಲುಬಿನ ಚಿಪ್ಪು. "ಯದಂತಿನಃ ಕಟಕಟಾಹ-  
 ತಟಾನ್ಮಿಮಙ್ಕ್ಷೋಮಙ್ಕ್ಷೂದಪಾತಿ ಪರಿತಃ ಪಟಲೇರಲೀನಾಮ್"  
 ಮಾಘಂ ೫-೩೭। 3. ಅಮೆಯ ಬೆನ್ನು, ಅಮೆಯ ಚಿಪ್ಪು.  
 4. ಒಂದು ದ್ವೀಪ. 5. ಎಣ್ಣೆ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಕಾಯಿ  
 ಸುವ ಕೊಪ್ಪರಿಗೆ. 6. ಅಗತಾನೆ ಕೊಂಬು ಹುಟ್ಟುತ್ತಿರುವ  
 ಎಮ್ಮೆಯ ಹೆಂಗರು. "ಕಟಾಹಃ ಕೂರ್ಮಕರ್ಪರೇ। ದ್ವೀಪಸ್ಯ ಚ  
 ಪ್ರಭೇದೇ ಸ್ಯಾತ್ತಲಾದೇಃ ಪಾಕಭಾಜನೇ। ಜಾಯಮಾನವಿಷಾಣಾಗ್ರಮಹಿಷಿ-



ಶಾವಕೇಷಿ ಚ " ಮೇದಿಂ । " ಕಡಾಹಃ ಸ್ಯಾತ್ ಕೂಂಪುಠೇ ಕರ್ಪೇ  
ಮಹಿಷಿಶಿಶೌ" ಹೇಮಂ । 7. ಅಡಿಗೆಯ ಪಾತ್ರೆ. 8. ಸೂಪ,  
ತೊಪ್ಪೆ. "ಸೂಪೇ ಚ ಪಾಕಪಾತ್ರೇ ಚ ಕಡಾಹೋ ಮಹಿಷಿಶಿಶೌ"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಕಡಿ ಕಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಿರೆಯ ಮೇಲುಭಾಗ, ಕುಂಡಿಯ  
ಎತ್ತರವಾದ ಭಾಗ, ಸೊಂಟ. ಕಡತೇ—ಕಡೆ (ವರ್ಷಾವರಣಯೋಃ)  
" ಇನ್ " (ಽಂ ೪-೧೧೭) । ವಾ "ಡೀಫ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫) ।  
—ಕಡಿ—ಕಟಿ. 2. ಹಿಪ್ಪಲಿ. " ಪಿಪ್ಪಲಾಂ ತು ಕಡಿ ಮತಾ "  
ಮೇದಿಂ ।

ಕಡಿತಲ ಕಟಿತಲ (ನಂ) ಸೊಂಟ, ನಡು.

ಕಡಿತ್ರ ಕಟಿತ್ರ (ನಂ) 1. ಡಾಬು, ವಡ್ಡಾಣ, ನಡುಕಟ್ಟು.  
ಕಡಿತ್ರಾಯತೇ—ತೈಡ್ (ಪಾಲನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೪) । 2. ನಡು  
ವಿನ ಸುತ್ತಲೂ ಕಟ್ಟುವ ಬಟ್ಟೆ. 3. ನಡುವಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ  
ಗಿಜ್ಜೆಯ ಸರ, ಗಿಜ್ಜೆಯ ಉಡುದಾರ. "ಮೃಗಾಲಗೌರಂ  
ಶಿತಿವಾಸಸಂ ಸ್ಫುರತೀರೀಡಕೇಯೂರಕಡಿತ್ರಕಚ್ಚುಗಮ್" ಭಾಗಂ  
೬-೧೬-೩೦ ।

ಕಡಿವೇಶ ಕಟಿದೇಶ (ಪುಂ) ಸೊಂಟ, ನಡು.

ಕಡಿನ್ ಕಟಿನ್ (ಪುಂ) ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ ಗಂಡಪ್ರದೇಶವುಳ್ಳ  
ಅನೆ. ಪ್ರಾಸ್ತಃ ಕಡೋಸ್ತಸ್ಯ " ಇನಿಃ " (೪-೨-೧೧೪) ।

ಕಡಿಬಂಧ ಕಟಿಬಂಧ (ಪುಂ) ಡಾಬು, ವಡ್ಡಾಣ. ಕಡಿ-  
ಬಂಧತೇಜೇನ — ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) " ಧತ್ " (೩-೩-೧೨೧) ।

ಕಡಿಮಾಲಿಕಾ ಕಟಿಮಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಡಾಬು, ವಡ್ಡಾಣ.  
ಕಡಿ ಮಾಲೇವ ।

ಕಡಿಲ್ಲ ಕಟಿಲ್ಲ (ಪುಂ) ಹಾಗಲದ ಗಿಡ. ಕಡೆ (ವರ್ಷಾವರಣಯೋಃ)  
" ಇಲ್ಲಃ " ಬಾಹುಂ । ಸ್ವಾರ್ಥೆ " ಕನ್ " (೪-೩-೭೪) ।  
ಕಡಿಲ್ಲಕಃ ಕಟಿಲ್ಲಕಃ.

ಕಡಿಶೂಲ ಕಟಿಶೂಲ (ಪುಂ) ಕಫ ಮತ್ತು ವಾತಗಳಿಂದ  
ಉಂಟಾದ ಸೊಂಟದ ನೋವು. ಕಡಿಸ್ಥಂ ಶೂಲಮ್ । "ಕೃಷ್ಣಸ್ಯ  
ಭಾಗಮೇಕಂ ತು ಪಥ್ಯಾಭಾಗದ್ವಯಂ ತಥಾ । ಉಷ್ಣೋದಕೇನ ಸಂಪೀತ್ವಾ  
ಕಡಿಶೂಲವಿನಾಶನಮ್" ।

ಕಡಿಶೃङ್ಖಲಾ ಕಟಿಶೃಂಗಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಿಜ್ಜೆಯ ನಡು  
ಕಟ್ಟು, —ನಡುಪಟ್ಟಿ, ಡಾಬು, ವಡ್ಡಾಣ. " ಚಿತ್ತಿಕಾ ಕಡಿ-  
ಶೃङ್ಖಲಾ " ಹಾರಾಂ ।

ಕಡಿಸೂತ್ರ ಕಟಿಸೂತ್ರ (ನಂ) ಉಡುದಾರ, ನೂಲಿನ ಅಥವಾ  
ಚಿನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿಯ ನಡುದಾರ. ಕಡಿ ಧಾರ್ಯ ಸೂತ್ರಮ್ ।

ಕಡಿತಲ ಕಟಿತಲ (ಪುಂ) 1. ಬಗ್ಗಿರುವ ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ.  
ಕಡತಾಂ ತಲಮಾಸ್ಪದಂ ಯಸ್ಯ । " ನ್ಯುಜ್ಜಖಡ್ಗಃ ಕಡಿತಲಃ "  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । (ನಂ) 2. ಸೊಂಟ, ನಡು. ಕಡತಾಸ್ತಲಮ್ ।

ಕಡಿರ ಕಟೀರ (ಪುಂ) 1. ಗುಹೆ, ಗವಿ. ಕಡೆ (ವರ್ಷಾವರಣಯೋಃ)  
" ಇನ್ " (ಽಂ ೪-೩೦) । 2. ಕಟಿಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿರುವ  
ಗುಣ. 3. ನಿತಂಬ, ಕಟಿಪಶ್ಚಾದ್ಭಾಗ, ಸೊಂಟದ ಹಿಂಭಾಗ.  
ಸ್ವಾರ್ಥೆ " ಕನ್ " (೪-೩-೭೪) । —ರಕಃ —ರಕಃ. " ವ್ಯಚಲನ್  
ವಿಶಚ್ಛಡಕಡಿರಕಸ್ಥಲೀಶಿಖರಸ್ವಲನ್ಮುಖರಮೇಖಲಾಕುಲಾಃ "  
ಮಾಘಂ ೧೩-೩೭ । "ನಿತಂಬಃ ಸ್ಯಾತ್ ಕಡಿರಕಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಕಡು ಕಟು (ಪುಂ) 1. ಕಾರವೆಂಬ ಒಂದು ರಸ, ಅದು ವಿಧ  
ಭೋಜ್ಯರಸಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಕಡತಿ ಭಾವುಗತಿ ರಸನಾ  
ಮುಖಂ ಚ — ಕಡೆ (ವರ್ಷಾವರಣಯೋಃ) " ಽಃ " (ಽಂ ೧-೮) ।  
(1) ಮಧುರ (ಸಿಹಿ), (2) ಲವಣ (ಉಪ್ಪು), (3) ಕಷಾಯ  
(ಒಗರು), (4) ಕಟು (ಕಾರ), (5) ಅಮ್ಲ (ಹುಳಿ)  
ಮತ್ತು (6) ತಿಕ್ತ (ಕಹಿ) ಇವು ಆರು ಭೋಜ್ಯರಸಗಳು.  
ಕಟು (ಕಾರ) ರಸದ ಗುಣಗಳು, ಅದರ ಸೇವನೆ  
ಯಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಕಾರ್ಯಗಳು : ಕಟುರಸವು  
ಬಾಯನ್ನು ಶುದ್ಧಿಮಾಡುವುದು. ಅಗ್ನಿಶಕ್ತಿಯನ್ನುಂಟು  
ಮಾಡುವುದು. ಆಹಾರವನ್ನು ಶುದ್ಧಿಮಾಡುವುದು. ಮೂಗಿ  
ನಲ್ಲಿ ನೀರು ಸುರಿಸುವುದು. ಕಣ್ಣುಗಳನ್ನು ಕೆರಳಿಸುವುದು.  
ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಗೆ ಪಾಟವವುಂಟುಮಾಡುವುದು. ಉಟದಲ್ಲಿ  
ರುಚಿ ಹುಟ್ಟಿಸುವುದು. ನವೆಯನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು.  
ಪ್ರಣಗಳನ್ನು ಅರಿಸುವುದು. ಕ್ರಿಮಿಗಳನ್ನು ನಾಶಗೊಳಿಸು  
ವುದು. ರಕ್ತವನ್ನು ಭೇದಿಸುವುದು. ಕಫವನ್ನು ಅಡಗಿಸು  
ವುದು. ಇಷ್ಟು ಗುಣಗಳಿದ್ದರೂ ಕಾರವನ್ನು ಅತಿಯಾಗಿ  
ಉಪಯೋಗಿಸುವುದರಿಂದ ಮುಖವು ಬಾಡುವುದು.  
ಕಂಠವು ಒಣಗುವುದು. ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಉರಿಯುಂಟಾಗುವುದು.  
ಬಲವು ಕುಂದುವುದು. ಬಾಯಾರುವುದು. ವಾತ ಮತ್ತು  
ಅಗ್ನಿಯು ಅಧಿಕವಾಗುವುದರಿಂದ ಭ್ರಮ, ಮದ, ನಡುಕ  
ಗಳು ಉಂಟಾಗಿ ಭುಜ ಪಕ್ಕಗಳು ಬೆನ್ನು ಇವುಗಳಲ್ಲಿ  
ವಾತವಿಕಾರವುಂಟಾಗುವುದು. ಚರಕಂ ಸೂತ್ರಂ ೨೬-೪೪ ।  
2. ಚೀಣದ ಕರ್ಪೂರ. 3. ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳಿ. (ನಂ) 4. ಅಕಾರ್ಯ,  
ಮಾಡಬಾರದ ಕಾರ್ಯ. 5. ದೂಷಣೆ, ನಿಂದೆ. ಕಡತಿ  
ಸದಾಚಾರಮಾವುಗತಿ । 6. ತ್ರಿಕಟು; ಶುಂಠಿ ಹಿಪ್ಪಲಿ ಮತ್ತು  
ಮೆಣಸು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 7. ಕಟುಕ ರೋಹಿಣಿ. 8. ಮೆಣಸು.  
9. ಕರಿಸಾಸುವೆ. 10. ಪ್ರೇಂಕಣಗಿಡ. (ವಿಂ) 11.  
ಕಾರವಾದ. " ಕಡ್ವಮ್ಲಲವಣಾತ್ಯುಣ್ಣತೀಕ್ಷ್ಣರೂಕ್ಷವಿಧಾಹಿನಃ ।  
ಆಹಾರಾ ರಾಜಸಸ್ಯೇಷಾಃ ದುಃಖಶೋಕಾಮಯಪ್ರದಾಃ " ಗೀತಾ ೧೭-೯ ।  
12. ಕೂರವಾದ. " ವಿಯೋಗಭಾಜಾಂ ಹೃದಿ ಕಂಡಕಃ ಕಡ್ವ-  
ನಿಧೀಯಸೇ ಕರ್ಣಿಶಿರಃ ಸ್ಮರೇಣ ಯತ್ " ನೈಫಂ ೧-೭೯ ।  
13. ಸುವಾಸನೆಯುಳ್ಳ, ಸುಗಂಧವುಳ್ಳ. " ಸಪ್ತಚ್ಛದಕ್ಷೀರ-  
ಕಡ್ವಪ್ರವಾಹಮಸಹ್ಯಮಾಧ್ರಾಯ ಮದಂ ತದೀಯಮ್ " ರಘುಂ ೪-೪೮ ।



14. ಕಠಿನವಾದ, ಪರುಷವಾದ. "ಇತಿ ಸಮಗುಣಯೋಗಪ್ರೀತಯ-  
ಸ್ತತ್ರ ಪೌರಾಃ ಶ್ರವಣಕಡು ನೃಪಾಣಾಮೇಕವಾಕ್ಯಂ ವಿವತ್ರುಃ" ರಘುಂ  
೬-೮೫. 15. ಮಾತ್ಸರ್ಯವುಳ್ಳ, ಅಸೂಯೆಯುಳ್ಳ.  
16. ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ, ಹರಿತವಾದ. "ಕಡುಃ ಸುಗಂಧೇ ತೀಕ್ಷ್ಣೇ  
ಸ್ಯಾದಕಾರ್ಯೇ ಮತ್ತರೇ ರಸೇ | ಕಡುಃ ಪ್ರಿಯಂಜ್ವಲಕಡುಕಾರಾಜಿಕಾಸ್ವಯ  
ವೃಷಣೇ | ಕಡು ಪ್ರೋಕ್ತಮ್" ವಿಶ್ವಂ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ವಾ "ಡೀಫ್"  
(೪-೧-೪೪) | -ಢೀ-ಝೀ.

ಕಡುಕ ಕಟುಕ (ಪುಂ) 1. ಕಾರ, ಕಟುರಸ. ಕಡುಕೇವ ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಕನ್" (೪-೩-೭೫) | "ಯೋ ಜಿಹ್ವಾಗ್ರಂ ಬಾಧತೇ ತದ್ವೇಗಂ  
ಜನಯತಿ ಶಿರೋ ಗೃಹ್ಣೀತೇ ನಾಸಿಕಾಂ ಚ ಸ್ರಾವಯತಿ ಸ ಕಡುಕೋ  
ರಸಃ" ಸುಶ್ರುತಂ | 2. ಪಡವಲಗಿಡ. 3. ಎಕ್ಕದಗಿಡ.  
4. ಕುಟಜವೃಕ್ಷ, ಬೆಟ್ಟಮಲ್ಲಿಗೆ. (ನಂ) 5. ಕಠಿಣಸುವೆ.  
6. ತ್ರಿಕಟುಕಃ; ಶುಂಠಿ ಮೇಣಸು ಮತ್ತು ಹಿಪ್ಪಲಿ.  
7. ಅಪ್ರಿಯವಾದ ಮಾತು. "ದ್ವಯೋಧನಶ್ಚ ಕರ್ಣಶ್ಚ ಕಡುಕಾ-  
ನ್ಯಮ್ಯಭಾಷತಾಮ್ | ಇತಿ ಸರ್ವಮಿದಂ ರಾಜನ್ ಆಕುಲಂ ಪ್ರತಿಭಾತಿ  
ಮೇ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೧೦೩-೧೮ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಡುಕಾ ಕಟುಕಾ.  
ಕಟುಕರೋಹಿಣಿ. ಕಡು ಸಂಜಾಯಾಂ "ಕನ್" (೪-೩-೭೫) |

ಕಡುಕತ್ರಯ ಕಟುಕತ್ರಯ (ನಂ) ಕಾರ (ರಸ)ದ ಶುಂಠಿ  
ಹಿಪ್ಪಲಿ ಮತ್ತು ಮೇಣಸು ಈ ಮೂರು (ವಸ್ತುಗಳು).

ಕಡುಕಂದ ಕಟುಕಂದ (ಪುಂ) 1. ನುಗ್ಗೆಮರ. ಕಡುಃ ಕಂದೋ  
ಮೂಲಮಸ್ಯ | 2. ಹಸಿಶುಂಠಿ.

ಕಡುಕಾಲಾಬು (ಬ್) ಕಟುಕಾಲಾಬು (ಬ್) (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
ಕಟಿ ಸೋರಗಿಡ. ಕಡುಕಾ ಅಲಾಬುಃ (ಬ್) |

ಕಡುಕೂಟಕ ಕಟುಕೂಟಕ (ಪುಂ) ಸೋಳ್ಳೆ. ಕಡುಃ ತೀಕ್ಷ್ಣಃ  
ಕೂಟಕಃ |

ಕಡುಕವಾಣ ಕಟುಕವಾಣ (ಪುಂ) ಟಿಪ್ಪಿಭವಕ್ಷೆ. ಕಡುಃ ಕಂಕಶಃ  
ಕವಾಣಃ ಶಬ್ದೋ यस್ಯ |

ಕಡುಗ್ರಂಥಿ ಕಟುಗ್ರಂಥಿ (ನಂ) 1. ಹಿಪ್ಪಲಿಯ ಬೇರು.  
2. ಶುಂಠಿ. ಕಡುಸ್ತೀವ್ರೋ ಗ್ರಂಥಿಯಸ್ಯ |

ಕಡುಚಾತುರ್ಜತಿಕ ಕಟುಚಾತುರ್ಜತಿಕ (ನಂ) ಯಾಲಕ್ಕಿ  
ಲವಂಗಪಟ್ಟೆ, ಲವಂಗಪತ್ರ ಮತ್ತು ಮೇಣಸು ಈ ನಾಲ್ಕರ  
ಸಮುದಯ.

ಕಡುತಿಕ್ತಕ ಕಟುತಿಕ್ತಕ (ಪುಂ) ಭೂನಿಂಬವೃಕ್ಷ, ನೆಲ  
ಬೇವಿನ ಮರ. ಕಡುಶ್ಚಾಸೌ ತಿಕ್ತಶ್ಚ | ಅರ್ಥಾರ್ಥ "ಕನ್"  
(೪-೩-೮೫) |

ಕಡುತಿಕ್ತಾ ಕಟುತಿಕ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಟಿ ಸೋರಗಿಡ.

ಕಡುತುಂಬಿ ಕಟುತುಂಬಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಟಿ ಸೋರಗಿಡ. ಕಡು-  
ಶ್ಚಾಸೌ ತುಂಬಿ ಚ |

ಕಡುತ್ರಯ ಕಟುತ್ರಯ (ನಂ) ಕಾರವಾದ ಶುಂಠಿ ಹಿಪ್ಪಲಿ  
ಮತ್ತು ಮೇಣಸು. ಕಡುನಾಂ ತ್ರಯಮ್ |

ಕಡುತ್ರಿಕ ಕಟುತ್ರಿಕ (ನಂ) ಶುಂಠಿ ಹಿಪ್ಪಲಿ ಮತ್ತು ಮೇಣಸು.  
ಕಡುನಾಂ ತ್ರಿಕಮ್ |

ಕಡುತ್ವ ಕಟುತ್ವ (ನಂ) 1. ಕಾರ. 2. ಚುರುಕಾಗಿರುವಿಕೆ.  
ಕಡುತ್ವಾರ್ಥಃ "ತ್ವಃ" (೪-೧-೧೧೯) | "ತಲ್" -ತಾ-ತಾ.

ಕಡುಪಾಕ ಕಟುಪಾಕ (ಪುಂ) ಕಾರವಾಗುವಂತೆ ಇಳಿಸುವ  
ಪಾಕ.

ಕಡುಭಜ್ಜ ಕಟುಭಂಜ (ಪುಂ) ಶುಂಠಿ. ಕಡುಃ ಭಜ್ಜಃ ಏಕೈಕದೇಶೋ  
ಯಸ್ಯ |

ಕಡುಭದ್ರ ಕಟುಭದ್ರ (ಪುಂ) ಶುಂಠಿ. ಕಡುರಪಿ ಭದ್ರಃ ಹಿತಕಾರಿ |  
ಕಡುಮಂಜರಿಕಾ ಕಟುಮಂಜರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತರಣ  
ಗಿಡ. ಕಡುಃ ಮಂಜರಿ ಅಸ್ತಿಸ್ಯಾಃ |

ಕಡುಮೋದ ಕಟುಮೋದ (ಪುಂ) ದವನ. ಕಡುಃ ಮುರಭಿಃ  
ಮೋದೋಽಸ್ಯ |

ಕಡುರ ಕಟುರ (ನಂ) ಶಕ್ರ, ಮಜ್ಜೆಗೆ, ನೀರುಬೆರೆಸಿದ ಮೊಸರು.  
ಕಡುತಿ ಗುಣಾಂತರಂ ವರ್ಧತಿ - ಕಡು (ವರ್ಧಾವಿರಣಯೋಃ) "ಉರಚ್"  
(೩ಂ ೧-೪೧) |

ಕಡುರವ ಕಟುರವ (ಪುಂ) 1. ಕಠಿನವಾದ ಶಬ್ದ, ಕರ್ಕಶ ಧ್ವನಿ.  
ಕಡುಃ ಪರೂಃ ರವಃ ಶಬ್ದಃ | 2. ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. ಕಡುಃ  
ಪರೂಃ ರವೋ ಯಸ್ಯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೬೩) |  
-ರವೀ-ರವೀ. (ವಿಂ) 3. ಕಠಿನವಾದ ಶಬ್ದವುಳ್ಳ, ಕರ್ಕಶ  
ಧ್ವನಿಯುಳ್ಳ.

ಕಡುರೋಹಿಣಿ ಕಟುರೋಹಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಟುಕ ರೋಹಿಣಿ.  
ಕಡುಶ್ಚಾಸೌ ರೋಹಿಣಿ ಚ | "ಕಡುಃ ಕಡುಮರಾಞ್ಶೋಕಾ ರೋಹಿಣಿ  
ಕಡುರೋಹಿಣಿ" ಅಮಂ |

ಕಡುಕವರ್ಗ ಕಟುಕವರ್ಗ (ಪುಂ) ಕಟು (ಕಾರ) ರಸವುಳ್ಳ ವಸ್ತುಗಳ  
ಸಮುದಾಯ, ಕಟುವಸ್ತುಗಳ ಪಂಗಡ. ಕಟುಕವರ್ಗಕ್ಕೆ  
ಸೇರಿದ ವಸ್ತುಗಳು: ಹಿಪ್ಪಲಿಗಿಡ, ಹಿಪ್ಪಲಿಬೇರು,  
ಜವ್ವ, ಚಿತ್ರಮೂಲ, ಹಸಿಶುಂಠಿ, ಮೇಣಸು, ಗಜಹಿಪ್ಪಲಿ,  
ಹರೇಣು (ರೇಣುಕ), ಯಾಲಕ್ಕಿ, ಅಜವಾನ (ಹಿಮ),  
ಕೊಡಸಿಗೆ ಹಣ್ಣು, ಅಗುರು ಶುಂಠಿ, ಜೀರಿಗೆ, ಸಾಸುವೆ,  
ಇಂಗು, ಭಾರಂಗಿ, ಅತಿಬಜೆ, ಬಜೆ, ವಾಯುವಿಳಂಗ,  
ಕಟುಕ ರೋಹಿಣಿ, ಈಶ್ವರಿಹಂಬು, ಬಿಳಿಯಹೂವಿನ ಲಕ್ಕಳಿ,  
ಮರುಗ, ಬಿಳಿಯ ಗಗ್ಗರ, ಮಾರವಳಿ ಹುಲ್ಲು, ಸುರಸುರಕೆ,  
ನಾರಂಬೇಳೆ, ಕಿರಿಯ ಶಿವನಿ, ಲಕ್ಕಿ, ಉಂಡುರು (ಮೂಪಕ),  
ಕರ್ಣಕಾ (ತಾವರೆಯ ಬೀಜಕೋಶ), ನುಗ್ಗೆ, ಕೆಂಪುಹೂವಿನ  
ನುಗ್ಗೆ, ಮೂಲಂಗಿ, ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳಿ, ಕಲ್ಲುಹೂವು, ಚಂಗಲು



ಕೋಷ್ಠ, ದೇವದಾರು, ಬಾಹುಜಿಗೆ, ಕರಿಕಚೋರ, ಗುಗ್ಗುಳ, ಕೊನ್ನಾರಿ, ನೀರುಹಿಪ್ಪಲಿ ಇತ್ಯಾದಿ ಕಟುವರ್ಗಕ್ಕೆ ಸೇರಿದುವು. ಕಡ್ಡುಸ್ತೆಹ ಕಟುಸ್ವೇದ (ಪುಂ) ಬಿಳಿಸಾಸುವೆ. ಕಡ್ಡು: ಸ್ನೇಹೋಸ್ಯ | ಕಡ್ಡುಕಡ ಕಟೋತ್ಕಟ (ನಂ) ಹಸಿರುಂಟಿ. ಕಡ್ಡು ವಸ್ತು ಉತ್ಕಟಮ್ |

ಕಡಲ ಕಟೋಲ (ಪುಂ) 1. ಚಂಡಾಲ, ನಿಮ್ಮಜಾತಿಯವನು. ಕಡೆ (ವರ್ಷಾವಿರಣಯೋ:) "ಕೋಲಕ್" (ತಂ ೧-೬೬) | 2. ಕಟು (ಕಾರ) ರಸ. (ವಿಂ) 3. ಕಾರವಾಗಿರುವ.

ಕಡಲವೀಣಾ ಕಟೋಲವೀಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಂಡಾಲನು ಬಾರಿಸುವ ವೀಣೆ.

ಕಡ್ಡಾರ ಕಟ್ಟಾರ (ಪುಂ) ಕತ್ತಿ, ಖಡ್ಗ.

ಕಡ್ಡುಕಡ ಕಟ್ಟುಲ (ಪುಂ) ಶಿವನಿಯ ಮರ ಅಥವಾ ತೇಗದ ಮರ. ಕಡ್ಡುನಿ ಫಲಾನಿ ಅಸ್ಯ |

ಕಡ್ಡುಜ್ಜ ಕಟ್ಟುಂಗ (ಪುಂ) ಹೆಮ್ಮರ, ತಿಗಡು ಮರ. ಕಡ್ಡು ಅಜ್ಞಮಸ್ಯ |

ಕಡ್ಡುರ ಕಟ್ಟುರ (ನಂ) 1. ವ್ಯಂಜನ. ಕಡೆ (ವರ್ಷಾವಿರಣಯೋ:) "ಕಡ್ಡು" (ತಂ ೩-೧) | "ಕಡ್ಡುರಂ ವ್ಯಂಜನಮ್" ಸಿಂ ಕೌಂ | 2. ಮಜ್ಜೆಗೆ, ನೀರುಬೆರಸಿದ ಮೊಸರು. 3. ಮೊಸರಿನ ರಸ, ಮೊಸರಿನ ಸಾರ.

ಕಡ-ಕುಚ್ಚುಜೀವನ (ಭಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ) ಕಷ್ಟದಿಂದ ಜೀವಿಸು. ಕಠಿತಿ | ಅಕಠಿತ್, ಅಕಾಠಿತ್ | ಕಠಿನಮ್ | ಕಠೋರ: |

ಕಡ ಕಡ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಯುಷಿ, ವೈಶಂಪಾಯನರ ಶಿಷ್ಯ. ಕೃಷ್ಣದ್ವೈಪಾಯನರು (ವೇದವ್ಯಾಸರು) ಸಮಷ್ಟಿರೂಪ ದಿಂದಿದ್ದ ವೇದವನ್ನು ಯುಗ್ಯಜುಃಸಾಮಾಧರ್ವ್ಯಗಳೆಂಬ ನಾಲ್ಕು ಭಾಗಗಳಾಗಿ ಮಾಡಿದನಂತರ ಯಜುರ್ವೇದ ವನ್ನು ವೈಶಂಪಾಯನಯುಷಿಗೆ ಉಪದೇಶಿಸಿದರು. ಮುಂದೆ ವೈಶಂಪಾಯನರು ಅವರ ಶಿಷ್ಯರಿಗೆ ಉಪದೇಶಿಸಿದರು. (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 2. ವೈಶಂಪಾಯನಯುಷಿಯ ಒಂಬತ್ತು ಮಂದಿ ಶಿಷ್ಯರಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬರಾದ ಕಠಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಪ್ರೋಕ್ತ ವಾದ ಯಜುರ್ವೇದದ ಭಾಗವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡು ವವರು. ಕಠನ ಪ್ರೋಕ್ತಮಧೀಯತೆ - ಕಠ "ಗಿಣಿ:" (೪-೩-೧೦೪) | "ಅಣ್" (೪-೨-೫೯) | ತಯೋಲುಕ್ (೪-೨-೬೪) | (೪-೩-೧೦೭) | ವೈಶಂಪಾಯನಯುಷಿಯ ಒಂಬತ್ತು ಮಂದಿ ಶಿಷ್ಯರು: (1) ಆಲಮ್ಬಿ:, (2) ಕಲಿಙ್ಗ:, (3) ಕಮಲ:, (4) ಕೃಚಾಭ:, (5) ಆರಣಿ:, (6) ತಾಂಡ್ಯ:, (7) ಶ್ಯಾಮಾಯನ:, (8) ಕಠ:, (9) ಕಲಾಪಿ |

ಕಠಮದ ಕಠಮರ್ದ (ಪುಂ) ಶಿವ, ಕುಶ್ಠರ. ಕಠ ಕಠಜೀವನ ಮೃದ್ನಾತಿ - ಮೃದ (ಕ್ಷೋದ) "ಅಣ್" (೩-೨-೧) |

ಕಠರ ಕಠರ (ವಿಂ) ಕಠಿನವಾದ, ಗಟ್ಟಿಯಾದ. ಕಠ "ಅರ:" ಬಾಹುಂ |

ಕಠಿಕಾ ಕಠಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲೇಖಿನಿ, ಬರೆಯುವಕಡ್ಡಿ.

ಕಠಿಂಜರ ಕಠಿಂಜರ (ಪುಂ) ಶುಲಸಿ. ಕಠಿನಂ ಜರಯತಿ - ಜ (ವಯೋಹಾನಿ) + ಗಿಣಿ "ಖಿ" ಮುಂ ಚ | ಬಾಹುಂ | ಪೃಷಂ |

ಕಠಿನ ಕಠಿನ (ವಿಂ) 1. ಕರ್ಕಶವಾದ, ಗಟ್ಟಿಯಾದ. ಕಠ (ಕುಚ್ಚುಜೀವನ) "ಇನಿ" (ತಂ ೨-೫೦) | "ಉದ್ಭೂತಾ: ಕಠಿನಕುಚಸ್ಥಲಾಭಿಧಾತಾತ್" ಮಾಘಂ ೮-೪೦ | 2. ಕ್ರೂರ ನಾದ, ದಯೆಯಿಲ್ಲದ. "ಪರಿತ್ಯಕ್ತಂ ಸರ್ವಂ ಹಸಿತಪಟಿತಂ ಪಂಜರಶುಕ್: ತವಾವಸ್ಥಾ ಚಯಂ ವಿಸೃಜ ಕಠಿನೇ ಮಾನಮಧುನಾ" ಅಮರಂ ೭ | 3. ಮನಸ್ಸಿಗೆ ನೋವುಂಟುಮಾಡುವ. 4. ನಿಶ್ಚಲನಾದ, ಸ್ಥಬ್ಧನಾದ, 5. ತೀವ್ರವಾದ, ತೀಕ್ಷ್ಣ ವಾದ, ಸಹಿಸಲಶಕ್ತವಾದ. "ನಿತಾಂತಕಠಿನಾಂ ರಜಂ ಮಮ ನ ವೇದ ಸಾ ಮಾನಸೀಂ ಪ್ರಭಾವವಿದಿತಾನುರಾಗಮವಮನ್ಯತೇವಾಪಿ ಮಾಮ್" ವಿಕ್ರಂ ೨-೧೧ | (ನಂ) 6. ಸ್ಥೂಲ, ಅಡಿಗೆ ಮಾಡುವ ಪಾತ್ರೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಾ -ನಾ. 7. ಶುದ್ಧಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಸಕ್ಕರೆ, ಬತ್ತಾಸು. -ನೀ -ನೀ. 8. ಲೇಖಿನಿ, ಬರೆಯುವಕಡ್ಡಿ, ಸೀಸದಕಡ್ಡಿ ಮೊದಲಾದುದು. "ಕಠಿನಮಪಿ ನಿಷ್ಕುರೇ ಸ್ಯಾತ್ಸತ್ತ್ವೇಽಪಿ ತ್ರಿಪು ನಪುಂಸಕಂ ಸ್ಥಾಲ್ಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ | "ಗುಣಿಗಣಗಣನಾರಮ್ಭೇ ನ ಪತತಿ ಕಠಿನಿ ಸಸಂಭ್ರಮಾ ಯಸ್ಯ" ಹಿತೋಂ |

ಕಠಿನಕ ಕಠಿನಕ (ಪುಂ) ಧಾನ್ಯ ಸಕ್ಕರೆ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ತೋಡಿ ಮತ್ತೊಂದಕ್ಕೆ ಹಾಕಲು ಅನುಕೂಲವಾದ ಮೋಟು ಹಿಡಿಯ ತೋಡುಕ್ಕೆ, ಸೌಟಿನ ಆಕಾರದ ಅದ್ಭುಪಾತ್ರೆ.

ಕಠಿನಚಿತ್ತ ಕಠಿನಚಿತ್ತ, -ಹೃದಯ -ಹೃದಯ (ನಂ)

1. ಕಲ್ಲುಮನಸ್ಸು, ಗಟ್ಟಿಮನಸ್ಸು, ದಯೆಯಿಲ್ಲದ ಮನಸ್ಸು. (ವಿಂ) 2. ಕಲ್ಲುಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಗಟ್ಟಿಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ದಯೆ ಯಿಲ್ಲದ. ಕಠಿನಂ ಚಿತ್ತಂ ಹೃದಯಂ ವಾ ಯಸ್ಯ |

ಕಠಿನತಾ ಕಠಿನತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕರ್ಕಶವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಗಟ್ಟಿ ಯಾಗಿರುವಿಕೆ. 2. ಕ್ರೂರನಾಗಿರುವಿಕೆ, ನಿರ್ದಯನಾಗಿರು ವಿಕೆ. 3. ನಿಶ್ಚಲವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಧೃಢವಾಗಿರುವಿಕೆ. 4. ತೀಕ್ಷ್ಣ ವಾಗಿರುವಿಕೆ, ತೀವ್ರವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಕಠಿನಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೫-೧-೧೧೯) | "ತ್ವ:" (೫-೧-೧೧೯) | ಕಠಿನತ್ವಮ್ ಕಠಿನತ್ವಮ್. "ವಕ್ರತಾಂ ನ ಯತು: ಕುಚಕುಮ್ಭೌ ಸುಭ್ರವ: ಕಠಿನತಾತಿಶಯೇನ" ಮಾಘಂ ೧೦-೪೭ |

ಕಠಿನಪುಷ್ಪ ಕಠಿನಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ. ಕಠಿನಂ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ |



ಕಠಿನಿಕಾ ಕಠಿನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲೇಖನಿ, ಬರೆಯುವಕಡ್ಡಿ.

ಸೇಸದಕಡ್ಡಿ ಮೊದಲಾದುದು. ಕಠಿನಿ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"।

ಕಠಿನಿ ಕಠಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಕಠಿನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಕಠಿನೀಕೃತ ಕಠಿನೀಕೃತ (ವಿಂ) ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅಕಠಿನಂ ಕಠಿನಂ ಸಂಪದಮಾನಂ ಕೃತಮ್ - ಕಠಿನ "ಚ್ವಿ:"

(೪-೪-೪೦)। ಅಸ್ಯ "ಇತ್" (೭-೪-೩೨)।

ಕಠಿನೀಭೂತ ಕಠಿನೀಭೂತ (ವಿಂ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಆಗಿ

ರುವ. ಅಕಠಿನಂ ಕಠಿನಂ ಸಂಪದಮಾನಂ ಭೂತಮ್ - ಕಠಿನ

"ಚ್ವಿ:" (೪-೪-೪೦)। ಅಸ್ಯ "ಇತ್" (೭-೪-೩೨)।

2. ಕ್ರೂರನಾಗಿ ಆಗಿರುವ, ದಯೆಯಿಲ್ಲದವನಾಗಿರುವ.

ಕಠಿಲ್ಲಕ ಕಠಿಲ್ಲಕ (ಪುಂ) 1. ಹಾಗಲಗಿಡ. 2. ಕರ್ನಾಟ

ಗಿಡ. 3. ಕೊಮ್ಮೆಗಿಡ. ಕಠ (ಶೋಕ) "ಇಲ್ಲ:" ಬಾಹುಂ।

ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೪-೩-೭೪)। "ಕಠಿಲ್ಲಕಸ್ತು ಪರ್ಣಾಶಿ

ವರ್ಷಾಭೂಕಾರವೆಲ್ಲಯೋ:" ಮೇದಿಂ।

ಕಠೇರ ಕಠೇರ (ವಿಂ) ದರಿದ್ರ, ಕಷ್ಟಜೀವಿ, ಜೀವನಕ್ಕಿಲ್ಲದೆ

ತೊಂದರೆಪಡುತ್ತಿರುವವನು. ಕಠ (ಕೃಚ್ಛ್ರಜೀವನ) "ಏರಕ್"

(೩೦ ೧-೪೮)।

ಕಠೇರ ಕಠೇರು (ಪುಂ) ಚಾಮರದ ಗಾಳಿ. ಕಠ (ಕೃಚ್ಛ್ರಜೀವನ)

"ಏರಡ್" ಉಚ ಬಾಹುಂ।

ಕಠೋರ ಕಠೋರ (ವಿಂ) 1. ಕಠಿನವಾದ, ಗಟ್ಟಿಯಾದ. ಕಠ

(ಕೃಚ್ಛ್ರಜೀವನ) "ಆರನ್" (೩೦ ೧-೬೪)। "ಕಠೋರಾಸ್ಥಿ-

ಗ್ರನ್ಥಿವ್ಯತಿಕರಣಾತ್ಕಾರಮುಖರ: ಖರಸ್ನಾಯುಚ್ಛೇದಕವಿಹಿತ-

ವೇಗವ್ಯುಪರಮ:" ಮಾಲತೀಂ ೪-೩೪। 2. ಕ್ರೂರವಾದ,

ದಯೆಯಿಲ್ಲದ, ಕಲ್ಲುವದೆಯ. "ಅಯಿ ಕಠೋರ ಯಶ: ಕಿಲ

ತೇ ಪ್ರಿಯಂ ಕಿಮಯಶೋ ನನು ಘೋರಮತ: ಪರಮ್" ೩೦ ರಾಂ

೩-೨೭। 3. ಪೂರ್ಣವಾದ, ತುಂಬಿದ, ಸಮಗ್ರವಾದ.

"ಆತಕ್ಷಸ್ಫುರಿತಕಠೋರಗರ್ಭಗುರ್ವಿ ಕ್ರವ್ಯಾಢ್ವಯೋ ಬಲಿಮಿವ

ದಾರುಣ: ಕ್ಷಿಪಾಮಿ" ೩೦ ರಾಂ ೧-೪೯। 4. ಚೂರು

ಕಾದ, ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ. "ಅಖಿಲಕಲಾಕಲಾಪಾಲೋಚನಕಠೋರ-

ಮತಿಮಿ:" ಕಾದಂ। 5, ಪರಿಪಕ್ವವಾದ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬಲಿತಿ

ರುವ, ಪೂರ್ಣಿಯಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವ. "ಸ ತಪ್ತಕಾರ್ತಸ್ವರ-

ಭಾಸ್ವರಾಮ್ಬರ: ಕಠೋರತಾರಾಧಿಪಲಾಂಛನಚ್ಛವಿ:" ಮಾಘಂ

೧-೨೦, ೧೭-೧೧।

ಕಠೋರಚಿತ್ತ ಕಠೋರಚಿತ್ತ - ಹೃದಯ - ಹೃದಯ (ವಿಂ)

1. ಕ್ರೂರವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. 2. ದಯೆಯಿಲ್ಲದ, ಕಲ್ಲು

ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಗಟ್ಟಿಮನಸ್ಸಿನ. ಕಠೋರಂ ಕಠಿನಂ ಚಿತ್ತಂ ಹೃದಯ

ವಾ ಯಸ್ಯ। "ವತ್ಸಂ ಕಠೋರಹೃದಯೇ ನಯನಾಭಿರಾಮಂ ರಾಮಂ ವಿನಾ

ನ ಖಲು ತಿಷ್ಠತಿ ಜೀವಿತಂ ಮೇ" ಚಂರಾಂ।

ಕಠೋರತಾ ಕಠೋರತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಠಿನವಾಗಿರುವಿಕೆ,

ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ. 2. ಕ್ರೂರನಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ದಯೆ

ಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 4. ದೃಢವಾಗಿರುವಿಕೆ. 5. ಉಗ್ರವಾಗಿರು

ವಿಕೆ, ಭಯಂಕರವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಕಠೋರಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್"

(೪-೧-೧೧೯)। "ತ್ವ:" (೪-೧-೧೧೯)। ಕಠೋರತ್ವಮ್

ಕಠೋರತ್ವಮ್.

ಕಠೋರಿತ ಕಠೋರಿತ (ವಿಂ) 1. ಕ್ರೂರವಾಗಿ ಆಗಿರುವ.

2. ಭಯಂಕರವಾಗಿ ಆಗಿರುವ. ಕಠೋರೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತ:

"ಇತಚ್" (೪-೨-೩೬)। "ಕ್ರೂರಮಜನಿ ಕುಟಿಲಶ್ಚು ಗುರು-

ಶ್ಚುಕುಟಿಕಠೋರಿತಲಲಾಟಮಾನನಮ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೮।

ಕಡ-ಮದೆ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ) 1. ಮದಹೊಂದು.

2. ವ್ಯಾಕುಲನಾಗು. ಕಡತಿ। ಅಕಡೀತ್, ಅಕಾಡೀತ್।

ಕಡ ಕಡ (ಪುಂ) 1. ಮದ. ಕಡ (ಮದೆ) ಧನರ್ಥ "ಕ:"

(ವಾಂ ೩-೩-೪೮)। (ವಿಂ) 2. ಮೂಗ, ಮೂಕ,

ಮಾತಾಡದವನು. ಕಡ (ಮದೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।

3. ಮೂರ್ಖ, ಮೂಢ, ಮಂಕ, ವಿವೇಕವಿಲ್ಲದವನು.

ಕಡಕ ಕಡಕ (ನಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಉಪ್ಪು. ಕಡ (ಮದೆ)

"ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಕನ್" (೪-೩-೭೪)।

ಕಡಕ್ಕುರ ಕಡಂಕರ - ಳ್ಲರ - ಗರ (ನಂ) ಧಾನ್ಯವಿಲ್ಲದ

ಹೊಟ್ಟು, ಜಳ್ಳು, ಮತ್ತು ಉದ್ದು, ಹೆಸರು ಇವುಗಳ ಕಡ್ಡಿ.

ಕಡತಿ ಮಾದತಿ - ಕಡ (ಮದೆ) ಧನರ್ಥ "ಕ:" (ವಾಂ ೩-೩-೪೮)।

ಕಡಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕುಜ್ (ಕರಣ) "ಖಚ್" ನಿಪಾಂ

(೪-೧-೬೯)। , ಮುಗಾಗಮ: (೬-೩-೬೭)। ಗಿರತಿ - ಗು

(ನಿಗರಣ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಕಡಸ್ಯ ಗರ:।

ಕಡಕ್ಕುರಿಯ ಕಡಂಕರೀಯ - ಳ್ಲರೀಯ - ಗರೀಯ (ಪುಂ)

ಧಾನ್ಯದ ಹೊಟ್ಟು ಕಡ್ಡಿಗಳನ್ನು ತಿನ್ನುವ ವೃಷಭ ಮೊದಲಾ

ದುವು. ಕಡಕ್ಕುರ (ಳ್ಲರ) ಮಹತಿ "ಛ:" (೪-೧-೬೯)।

ಕಡಸ್ಯ ಗರೋ ವಾ ತಮಹತಿ "ಛ:"। "ಕಡಕ್ಕುರೀಯರೋಧೋ

ಹಿ ಕಲಮೋತ್ಸೇಧಕಾರಣಮ್" ಯಾದಂ ೨೨-೯। "ನಿವಾರಪಾಕಾದಿ

ಕಡಕ್ಕುರೀಯ:" ರಘುಂ ೪-೯।

ಕಡಮ್ಬ ಕಡಂಬ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ರಭಾಗ, ಕೊನೆಯ ಭಾಗ.

ಕಡಿ "ಅಮ್ಬಚ್" (೩೦ ೪-೮೨)। 2. ತರಕಾರಿಯ

ಕಾವು.

ಕಡಾರ ಕಡಾರ (ಪುಂ) 1. ವಾಸ, ಸೇವಕ. 2. ಪಿಂಗಳ ವರ್ಣ,

ಕಂದುಹಳದಿ ಬಣ್ಣ, ಗೋರೋಚನದ ಬಣ್ಣ. ಗಡ (ಸೇವನೆ)

"ಆರನ್" ಕಡಾದೇಶಶ್ಚ (೩೦ ೩-೧೩೪)। (ವಿಂ) 3.

ಪಿಂಗಳ ವರ್ಣದ, ಕೆಂಪುಬೆರೆತ ಹಳದಿ ಬಣ್ಣದ, ಕಂದುಹಳದಿ

ಬಣ್ಣದ. "ಲೀನಾಮೋದತಡಿತಕಡಾರಕುಹರೇವಿನ್ಯಾದ್ರಿಕುಡೇರಿವ"



ತಂ ರಾಂ ೪-೧೪। “ಸಂವಿವ್ಯುರ್ಮವರವಿಕಾಶಿ ಚಮುಸಮುತ್ಯಂ  
ಪೃಥ್ವೀರಜಃ ಕರಭಕಂಠಕಡಾರಮಾಶಾಃ” ಮಾಘಂ ೪-೩। “ಕಡಾರಃ  
ಪಿಙ್ಗಲೇ ದಾಸೇ” ಮೇದಿಂ। 4. ಗರ್ವಹೊಂದಿದ, ಕೊಬ್ಬಿದ.  
ಕಡ (ಮದೆ) “ಆರನ್” ಬಾಹುಂ।

ಕಡಿ-ಮದೆ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) ಕಂಡತೆ। ಅಕಣಿಡಟ್।  
ಮದಹೊಂದು, ಗರ್ವಹೊಂದು.

ಕಡಿ-ಹರ್ಷೆ ತುಷಾಪಕರಣೇ ಚ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)  
ಕಂಡತೆ। ಅಕಣಿಡಟ್। 1. ಹರ್ಷಿಸು, ಸಂತೋಷಪಡಿಸು.  
2. ಧಾನ್ಯದ ಹೊಟ್ಟನ್ನು ಬೇರ್ಪಡಿಸು.

ಕಡಿ-ಭೇದನೆ (ಚುರಾಂ ತಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) ಕಂಡಯತಿ-ತೆ।  
ಅಚಕಂಡತ್-ತೆ। ಕತ್ತರಿಸಿ ಪ್ರತ್ಯೇಕಿಸು, ಒಡೆದು ಬೇರ್ಪಡಿಸು.

ಕಡು-ಕಾರ್ಕಶ್ಯೆ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) ಕೃಶನಾಗು, ತೆಳ್ಳ  
ನಾಗು. ಕಡುತಿ। ಚಕಡು। ಅಕಡುತಿತ್।

ಕಣ-ಶಬ್ದೆ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) 1. ಶಬ್ದಮಾಡು,  
ಧ್ವನಿಯುಂಟುಮಾಡು. 2. ಕೂಗಿಕೊಳ್ಳು, ಆರ್ತನಾದ  
ಮಾಡು.

ಕಣ-ಗತೌ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) ಹೋಗು, ಹೊಂದು,  
ತಲುಪು. ಕಣತಿ। ಚಕಾಣ। ಅಕಣಿತ್, ಅಕಾಣಿತ್।

ಕಣ-ನಿಮಿಲನೆ (ಚುರಾಂ ತಭಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) ಕಣ್ಣುಮುಚ್ಚು.  
ಕಾಣಯತಿ, -ತೆ। ಕಾಣಯಾಂ ಬಹುವ, -ಆಸ, -ಚಕಾರ, ಚಕ್ರೆ।  
ಅಚೀಕಣತ್, -ತೆ। ಕಾಣಃ। ಪಕ್ಷೇ ಕಣತಿ। ಚಕಾಣ।  
ಅಕಣಿತ್, ಅಕಾಣಿತ್।

ಕಣ ಕಣ (ಪುಂ) 1. ಧಾನ್ಯದ ಒಂದು ಅಂಶ, ಕಾಳಿನ ಕಿರು  
ನುಚ್ಚು. ಕಣ (ನಿಮಿಲನೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)।  
“ಕಣಾನ್ವಾ ಭಕ್ಷಯೇದದ್ವಂ ಪಿಷ್ಯಾಕಂ ವಾ ಸಕೃನ್ನಿಶಿ। ಸುರಾಪಾನಾ-  
ಪನುತ್ಯರ್ಥಂ ವಾಲವಾಸಾ ಜಟಿ ಧವಜಿ” ಮನುಂ ೧೧-೯೨।  
2. ಬಹಳ ಸೂಕ್ಷ್ಮಂಶ, ಪರಮಾಣು. “ರಜಃಕಣಃ  
ಸುರೋದ್ಭವಃ ಸ್ಪೃಶದ್ವಿಗ್ನಾತ್ರಮಂತಿಕಾತ್” ರಘುಂ ೧-೮೫।  
3. ಅಂಶ, ಚೂರು, ಸೂಕ್ಷ್ಮಂಶ. “ಸ ಚಂದನಾಮ್ಭಃಕಣ-  
ಕೋಮಲೇಸ್ತಥಾ ವಪುರ್ಜಲಾದ್ರಾಪವನೇನ ನಿವಂವಿ” ಮಾಘಂ ೧-೬೫।  
4. ನಿಷಾದನಿಂದ ದ್ರಾವಿಡಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. “ನಿಷಾದಾ-  
ವ್ರಾಹ್ಮಣಿ ಭೇಕಂ.....ಘೋಲಿ ಧರ್ಮಂ ದ್ರಮಿಡೀ ಕಣಮ್”  
ವೈಜಂ। 5. ಅಕ್ಕಿ ಒಡೆದ ನುಚ್ಚು. “ಚಕ್ಷುಷ್ಯಾಃ ಸಕ್ತವಃ  
ಕಣಾಃ” ವೈಜಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಣಾ -ಕಾಂ. 6. ಜೀರಿಗೆ.  
7. ಹಿಪ್ಪಲಿ. “ಕಣಾಜೀರಕಪಿಪ್ಪಲಯೋಃ” ಹೇಮಂ। 8. ಕಾಡು  
ನೋಣ, ಮೊಸಳೆಯಾಕಾರದ ನೋಣ. “ಕಣಾ ಜೀರಕ-  
ಕುಮ್ಮಿರಮಕ್ಷಿಕಾಪಿಪ್ಪಲೀಷು ಚ” ಮೇದಿಂ।

ಕಣಜೀರ ಕಣಜೀರ (ಪುಂ) ಬಿಳಿ ಜೀರಿಗೆ.

ಕಣಜೀರಕ ಕಣಜೀರಕ (ಪುಂ) ಸಣ್ಣ ಜೀರಿಗೆ. ಅಲ್ಪಾರ್ಥೆ  
“ಕನ್”।

ಕಣಪ ಕಣಪ (ಪುಂ) ಬಂದೂಕ, ನಾಳಿಕಾಸು. ಕಣಾನ್ ಲೋಹ-  
ಕಣಾನ್ ಪಿಬತಿ-ಪಾ (ಪಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೪)। “ಚಾಪ-  
ಚಕ್ರಕಣಪಕರ್ಪಣಪ್ರಾಸಪದ್ವಿಗಮುಸಲತೋಮರಾದಿಪ್ರಹರಣಜಾಲಮ್”  
ದಶಕುಂ।

ಕಣಭಕ್ಷ ಕಣಭಕ್ಷ -ಭಕ್ಷಕ -ಭಕ್ಷಕ (ಪುಂ) 1. ಕಣಾದ  
ಮಹರ್ಷಿ. [“ಕಣಾದ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ಗುಬ್ಬಚ್ಚಿ.

ಕಣಲಾಭ ಕಣಲಾಭ (ಪುಂ) 1. ಬೀಸುವ ಕಲ್ಲು, ಹಿಟ್ಟು  
ಮಾಡುವ ಕಲ್ಲು. ಕಣಾನಾಂ ಲಾಭೋ ಯಸ್ಮಾತ್। 2. ಆವರ್ತ,  
ನೀರಿನ ಸುಳಿ. ಬೀಸುವ ಕಲ್ಲಿನಂತೆ ಸುಳಿಯು ಸುತ್ತುವುದ  
ರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. “ಅಥಾಮ್ಭಸಾಂ ಭ್ರಮಃ। ತಾನೂರೋ ವಾಯು-  
ಗುಲ್ಮಶ್ಚ ಕಣಲಾಭಃ ಕಲಂಕುರಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಕಣಶಸ್ ಕಣಶಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಕೊಂಚಕೊಂಚವಾಗಿ, (ಧಾನ್ಯದ)  
ಒಂದೊಂದು ಕಾಳಾಗಿ, (ನೀರಿನ) ಒಂದೊಂದು ಹನಿಯಾಗಿ,  
ಚೂರು ಚೂರಾಗಿ. ಕಣ ಕೀಪ್ಸಾಯಾಂ “ಶಸ್” (೪-೪-೪೨)।  
“ಕಣಶಃ ಕಣಶಶ್ಚೇವ ವಿಧ್ಯಾಮರ್ಥಂ ಚ ಸಾಧಯೇತ್”।

ಕಣಾದ ಕಣಾದ (ಪುಂ) ವೈಶೇಷಿಕ ದರ್ಶನಕಾರರಾದ ಕಣಾದ  
ಮಹರ್ಷಿ, ಕಶ್ಯಪಗೋತ್ರದ ಉಲ್ಲಾಸ ಮಹರ್ಷಿಯ ಮಗ.  
ಇವರ ದರ್ಶನಕ್ಕೆ “ಜಿಲ್ಲಾಕದರ್ಶನ” ಪೆಂದು ಹೆಸರು.  
ಕಾಪೋತವೃತ್ತಿಯನ್ನು ಆಚರಿಸುತ್ತ ಇವರು ರಸ್ತೆಯಲ್ಲಿ  
ಬಿದ್ದಿದ್ದ ಅಕ್ಕಿಯ ಕಾಳುಗಳನ್ನು ಅರಿಸಿ ಜೀವಿಸುತ್ತಿದ್ದುದ  
ರಿಂದ ಇವರಿಗೆ ಈ ಹೆಸರಾಯಿತು. ಕಣಾನ್ ರಠ್ಯಾನಿಪತಿತಾಂ-  
ಸ್ತಂಧುಲಕಣಾನಾದಾಯ ಅತ್ತಿ-ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ) “ಅನ್”  
(೩-೨-೧)। ಇವರು ಹತ್ತು ಅಧ್ಯಾಯಗಳುಳ್ಳ ಸೂತ್ರ  
ರೂಪವಾದ ವೈಶೇಷಿಕದರ್ಶನವೆಂಬ ತರ್ಕಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು  
ರಚಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. [ವಿವರಕ್ಕೆ “ವೈಶೇಷಿಕ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಕಣಿಕ ಕಣಿಕ (ಪುಂ) 1. ಗೋಧಿಹಿಟ್ಟು. 2. ಮೈದಾಹಿಟ್ಟು.  
ಕಣೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಠನ್” (೪-೨-೧೧೫)। 3. ಪರಮಾಣು.  
4. ಧಾನ್ಯದ ಕಾಳು. 5. ಶತ್ರು, ವೈರಿ. 6. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ  
ಒಬ್ಬ ಮಗ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ -ಕಾಂ. 7. ಬಹಳ ಸೂಕ್ಷ್ಮ  
ವಸ್ತು, ವಸ್ತುವಿನ ಅತಿ ಸೂಕ್ಷ್ಮಭಾಗ. 8. ಅಗ್ನಿಮಂಥ  
ವೃಕ್ಷ, ನೆಲ್ಲಿಮರದ ಒಂದು ಭೇದ. 9. ನೀರಿನ ಬಿಂದು.  
10. ಪರಮಾಣು. “ಕಣಿಕಾ ಕಥ್ಯತೇಽನ್ತಸ್ತುಕ್ಮವಸ್ತವಗ್ನಿ-  
ಮನ್ಯಯೋಃ” ಮೇದಿಂ।

ಕಣಿತ ಕಣಿತ (ನಂ) 1. ನೋವಿನಿಂದ ಕೂಗಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ.  
ಕಣ (ಶಬ್ದ) ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2.



ನೋವಿನಿಂದ ಕೂಗಿಕೊಳ್ಳುವ. ಕಣ (ಶಬ್ದ) ಕತಂ  
"ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) ।

ಕಣಿಶ ಕಣಿಶ (ನಂ) ಧಾನ್ಯದ ತೆನೆ. ಕಣಿ ವಿಧತೇಷ್ಯ  
"ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) । ತಂ ಶ್ಯತಿ - ಶಿ (ತನುಕರಣಂ)

"ಕ:" (೩-೨-೪) । "ಕಣಿಶಂ ಸಸ್ಯಮಂಜರಿ" ಅಮಂ ।

ಕಣಿಕ ಕಣಿಕ (ವಿಂ) 1. ಸಣ್ಣದಾದ, ಚಿಕ್ಕದಾದ, ಅಲ್ಪ  
ವಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ-ಕಾ. 2. ಒಂದು ಕಾಳು.

ಕಣಿಚಿ ಕಣಿಚಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶಬ್ದ, ಇಂಪಾದ ಧ್ವನಿ.  
2. ಪುಷ್ಟಿಸಿರುವ ಲತೆ, ಹೂಬಿಟ್ಟಿರುವ ಬಳ್ಳಿ. 3. ಶಕಟ,  
ಗಾಡಿ, ಬಾಡಿ. ಕಣ (ಶಬ್ದ) "ಇಚಿ:" (೩ಂ ೪-೭೦) ।  
"ಕಣಿಚಿ ಪುಷ್ಪಿತಲತಾಗುಂಜಯೋ: ಶಕಟೇ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್"  
ಮೇದಿಂ ।

ಕಣಿಯಸ್ ಕಣಿಯಸ್ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಚಿಕ್ಕದಾದ, ಬಹಳ  
ಸ್ವಲ್ಪವಾದ, ಚಿಕ್ಕವನಾದ, ಕಿರಿಯನಾದ. ಕಣ "ಇಯಸ್"  
(೪-೩-೫೭) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡಿಪ್" (೪-೧-೬) । -ಯಸೀ  
-ಯಸೀ.

ಕಣಿ ಕಣಿ (ಅವ್ಯಂ) ಇಚ್ಛಾಪೂರ್ತಿ, ಅಭಿಲಾಷೆಯ ನಿವೃತ್ತಿ.  
ಇದು ಸಪ್ತಮಿಾವಿಭಕ್ತಿಪ್ರತಿರೂಪಕಾವ್ಯಯು. "ಕಣಿಮನಸಿ  
ಶ್ರದ್ಧಾಪ್ರತೀಯಾತೇ" ಪಾಂ ಸ್ತಂ ೧-೪-೬೬ । ಕಣಿಹತ್ಯ ಪಯಃ  
ಪಿಬತಿ ।

ಕಣಿ ಕಣಿ (ಪುಂ) 1. ಬೆಟ್ಟಕಣಿಗಿಲೆ. ಕಣ "ಎರಕ್"  
ಬಾಹುಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಾ-ರಾ. 2. ಹೆಣ್ಣಾನೆ. 3. ವೇಶ್ಯ,  
ಸೂಳೆ.

ಕಣಿ ಕಣಿ (ಪುಂ) 1. ಬೆಟ್ಟಕಣಿಗಿಲೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2.  
ಹೆಣ್ಣಾನೆ. 3. ವೇಶ್ಯ, ಸೂಳೆ. "ಕಣಿ: ಕಣಿಕಾರೇ ಚ  
ಕರಿಣಿವೇಶ್ಯಯೋ: ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ ।

ಕಣ ಕಣಿ (ಪುಂ) ಕಣಿಕ, ಮುಳ್ಳು. ಕಣತಿ - ಕಡಿ  
(ಗತೌ) "ಅನ್" (೩-೧-೧೩೪) ।

ಕಣಕ ಕಣಿಕ (ಪುಂ) 1. ಮುಳ್ಳು. ಕಣತಿ - ಕಡಿ  
(ಗತೌ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । "ವಿಯೋಗಭಾಜಾಂ ಹೃದಿ  
ಕಣಕೈ: ಕರುಣಿಧೀಯಸೇ ಕಣಿಶರ: ಸ್ಮರಣ ಯತ್" ನೆಪಂ  
೧-೭೯ । 2. ಸೂಜಿಯ ತುದಿ. ನೆಪಂ ೧-೫೩ । 3. ನೀಚ  
ನಾದ ವೈರಿ, ಪೀಡಿಸುವ ಶತ್ರು. "ಉತ್ಸಾತಲೋಕತ್ರಯ-  
ಕಣಕೇಷಿ" ರಘುಂ ೧೪-೭೩ । 4. ಮೀನು ಮೊದಲಾದವು  
ಗಳ ಎಲುಬು. "ಅನ್ವೋ ಮತ್ಸ್ಯಾನಿವಾಶನಾತಿ ಸ ನರ: ಕಣಕೈ:  
ಸಹ" ಮನುಂ ೮-೯೫ । 5. ಪುಲಕ, ರೋಮಾಂಚ, ಮೈ,  
ಮೇಲೆ ಮುಳ್ಳುಳ್ಳುವುದು. "ಪುಲೋಮಜಾಲೋಚನತೀಕ್ಷ್ಣಕಣಕೈ-  
ಸ್ತನುಂ ಧನಾಮಾತನುತಾಂ ಸ ಕಣಕೈ:" ನೆಪಂ ೧-೫೩ ।

6. ಕೇಂದ್ರಸ್ಥಾನ, 1, 4, 7 ಮತ್ತು 10 ನೆಯ ಸ್ಥಾನ  
(ರಾಶಿ) ಗಳು. 7. ನಖ, ಉಗುರು. "ಮಹಾಲಲತಪಲ್ಲವ-  
ಕಣಕೈ: ಕೃತಂ ಸಮುಚ್ಚಲಚ್ಚಂದನಸಾರಸೋರಭಮ್" ನೆಪಂ ೧-೯೪ ।

8. ಬಿದಿರು. 9. ವಾದದ ಒಂದು ದೋಷ. "ಕಣಕೋ  
ನ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಕ್ಷುಬ್ರಶತ್ರು ಮತ್ಸ್ಯಾದಿಕೀಕಸೇ । ನೈಯಾಯಿಕಾದಿ-  
ದೋಷೋಕ್ತೌ ಸ್ಯಾದ್ರೋಮಾಶ್ವದ್ರುಮಾಙ್ಗಯೋ:" ಮೇದಿಂ । "ಕಣಕ:  
ಕ್ಷುಬ್ರವೇರಿಣಿ । ವೇಣೌ ದ್ರುಮಾಙ್ಗೇ ರೋಮಾಂಚೇ" ಹೇಮಂ । 10. ಕಾಗೆ,  
ವಾಯಸ. "ಆತ್ಮಘೋಷೋ ಮಹಾನೇಮಿ: ಕಣಕೋ ಮೌಕಿಲಿ:  
ಕುಣ: । ಬಲಿಪುಷ್ಪ ಉಲೂಕಾರಿ:" ವೇಜಂ ।

ಕಣಕದ್ರುಮ ಕಂಟಿಕದ್ರುಮ (ಪುಂ) 1. ಮುಳ್ಳಿನಗಿಡ, ಮುಳ್ಳು  
ನಿಂದ ಕೂಡಿದ ವೃಕ್ಷ. ಕಣಕಪ್ರಧಾನೋ ದ್ರುಮ: । "ಭವಂತಿ  
ನಿರಾಂ ಸ್ಪೀತಾ: ಸುಕ್ಷೇತ್ರೇ ಕಣಕದ್ರುಮಾ:" ಮೃಚ್ಛಂ ೧-೭ ।  
2. ಶಾಲ್ಮಲಿವೃಕ್ಷ, ಭೂರುಗದಮರ. 3. ಹೆಗ್ಗುಳ್ಳದ  
ಗಿಡ. 4. ಗುಲಾಬಿಯಗಿಡ ಮುಂತಾದುವು.

ಕಣಕಫಲ ಕಂಟಿಕಫಲ (ಪುಂ) ಮುಳ್ಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ  
ಹಣು ಕಾಯಿಗಳ ಗಿಡ. 1. ಪನಸವೃಕ್ಷ, ಹಲಸಿನಮರ.  
2. ನೆಗ್ಗಿಲುಗಿಡ. 3. ದತ್ತೂರಿಗಿಡ. 4. ಉಮ್ಮತ್ತಿ  
ಗಿಡ. ಕಣಕಾಕಿತಂ ಫಲಮಸ್ಯ । (ನಂ) 5. ಹಲಸಿನ  
ಹಣ್ಣು. 6. ನೆಗ್ಗಿಲು ಬೀಜ. 7. ದತ್ತೂರಿಕಾಯಿ.  
8. ಉಮ್ಮತ್ತಿಕಾಯಿ ಮುಂತಾದುವು.

ಕಣಕವತ್ ಕಂಟಿಕವತ್ (ವಿಂ) ಮುಳ್ಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ.  
ಕಣಕಾನ್ಯಸ್ಯ ಸಂತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪) । ಮಸ್ಯ ಬ:  
(೮-೨-೧೦) ।

ಕಣಕವೃಂತಾಕಿ ಕಂಟಿಕವೃಂತಾಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಳ್ಳು  
ಬದನೆಗಿಡ.

ಕಣಕಾಡ್ಯ ಕಂಟಿಕಾಡ್ಯ (ವಿಂ) ಮುಳ್ಳುಗಳಿಂದ ತುಂಬಿದ.  
ಕಣಕೇರಾಡ್ಯ: ।

ಕಣಕಾರ ಕಂಟಿಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಹಲುಮಾಣೆಗಿಡ, ಹುಳಿ  
ಬೀಲದಗಿಡ. 2. ಭೂರುಗದ ಮರ. ಕಣಕಮುಚ್ಛತಿ-ಶ್ಚ  
(ಗತೌ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) ।

ಕಣಕಾರಿಕಾ ಕಂಟಿಕಾರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಗ್ಗುಳ್ಳದಗಿಡ.

ಕಣಕಾಶನ ಕಂಟಿಕಾಶನ (ಪುಂ) ಉಷ್ಟ್ರ, ಒಂಟೆ, ಮುಳ್ಳು  
ಗಿಡಗಳನ್ನು ತಿಂದು ಜೀವಿಸುವ ಪ್ರಾಣಿ. ಕಣಕಮಹನಾತಿ-  
ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) । "ಸ್ಯಾದುಷ್ಟ:  
ಕಣಕಾಶನ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಕಣಕಾಣ್ಣಿಲ ಕಂಟಿಕಾಣ್ಣಿಲ (ಪುಂ) ಜೊಪಾದ ಎಲುಬು  
ಗಳಳ್ಳು ಮೀನು. "ಕುಲಿಶಂ ಕಣಕಾಣ್ಣಿಲ ಇತ್ಯಪಿ"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।



ಕಣ್ಡಕಿತ ಕಂಟಕಿತ (ವಿಂ) 1. ಮುಳ್ಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. 2. ರೋಮಾಂಚವೆದ್ದಿರುವ, ಮೈ ಮುಳ್ಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕಣ್ಡಕೋಸ್ತಸ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತಚ್" (೪-೨-೩೬)। "ಇದ-ಮುಚುರನುಚಾನಾ: ಪ್ರೀತಿಕಣ್ಡಕಿತತ್ವಚ:" ಕುಮಾಂ ೬-೧೫। "ಆಸೀದ್ವರ: ಕಣ್ಡಕಿತಪ್ರಕೋಷ: ಸ್ವಿನ್ನಾಙ್ಗುಲಿ: ಸಂವೃತೇ ಕುಮಾರಿ" ರಘುಂ ೭-೨೨।

ಕಣ್ಡಕಿನ್ ಕಂಟಕಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. ಕಣ್ಡಕಾನ್ಯಸ್ಯ ಸಂತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಕಿನಿ-ಕಿನೀ. 2. ನೆಗ್ಗಿಲುಗಿಡ. 3. ಬಿದಿರು. 4. ಎಲಚಿಗಿಡ, ಬೋರೆಗಿಡ. 5. ಕಗ್ಗಲಿ ಮರ. 6. ಗೊಬ್ಬಳಿಮರ ಮುಂತಾದುವು. (ವಿಂ) 7. ಮುಳ್ಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಕಣ್ಡಕಿಫಲ ಕಂಟಕಿಫಲ (ಪುಂ) 1. ಪನಸವೃಕ್ಷ, ಹಲಸಿನ ಮರ. 2. ಮುಳ್ಳುಬದನೆಗಿಡ. 3. ದತ್ತೂರಿಗಿಡ. 4. ನೆಗ್ಗಿಲುಗಿಡ. 5. ಹರಳುಗಿಡ ಮುಂತಾದ ಮುಳ್ಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ಫಲಬಿಡುವ ಮರಗಳು. ಕಣ್ಡಕಿ ಫಲಮಸ್ಯ। (ನಂ) 6. ಹಲಸಿನಹಣ್ಣು. 7. ಮುಳ್ಳುಬದನೆಕಾಯಿ. 8. ದತ್ತೂರಿಕಾಯಿ ಮುಂತಾದುವು.

ಕಣ್ಡಕಿಲ ಕಂಟಕಿಲ (ಪುಂ) ಬಿದಿರುಗಿಡ. ಕಣ್ಡಕ "ಇಲಚ್" (೪-೨-೧೦೦)।

ಕಣ್ಡದಲಾ ಕಂಟಕಿಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಾಳೆಗಿಡ. ಕಣ್ಡ ಕಣ್ಡಕಾವೃತ ದಲಮಸ್ಯಾ:।

ಕಣ್ಡಪತ್ರ ಕಂಟಕಿಪತ್ರ (ಪುಂ) ಹುಳಬೇಲ.

ಕಣ್ಡಫಲ ಕಂಟಕಿಫಲ (ಪುಂ) 1. ಪನಸವೃಕ್ಷ, ಹಲಸಿನಮರ. 2. ನೆಗ್ಗಿಲುಗಿಡ. 3. ದತ್ತೂರಿಗಿಡ. 4. ಹರಳುಗಿಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಫಲಾ-ಫಲಾ. ದೇವತಾಳೆಗಿಡ. ಕಣ್ಡಕಾಚಿತ ಫಲಮಸ್ಯ।

ಕಣ್ಡಲ ಕಂಟಕಿಲ (ಪುಂ) ಭಾರಂಗಿಗಿಡ. ಕಣ್ಡೋಸ್ತಸ್ಯ "ಲಚ್" (೪-೨-೯೭)।

ಕಣ್ಡಾಲು ಕಂಟಕಾಲು (ಪುಂ) 1. ಮುಳ್ಳುಬದನೆ. 2. ಬಿದಿರು. 3. ನೆಗ್ಗಿಲುಗಿಡ. 4. ಹೆಗ್ಗುಳ್ಳಿದಗಿಡ. 5. ಭಾರಂಗಿಗಿಡ. 6. ಉತ್ತರಣೆಗಿಡ. ಕಣ್ಡಾಯ ಅಲತಿ - ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ) "ಁ" (೩ಂ ೧-೧)।

ಕಣ್ಡಿನ್ ಕಂಟಕಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಕಗ್ಗಲಿಮರ. 2. ಉತ್ತರಣೆ ಗಿಡ. 3. ನೆಗ್ಗಿಲುಗಿಡ. (ವಿಂ) 4. ಮುಳ್ಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಕಣ್ಡ ಕಂಠ (ಪುಂ) 1. ಕುತ್ತಿಗೆ, ಕತ್ತು. ಕಣ (ನಿಮಿಲನೆ) "ಠ:" (೩ಂ ೧-೧೦೩)। "ಮೇಘಾಲೋಕೇ ಭವತಿ ಸುಖಿನೋಽಪ್ಯ-

ನ್ಯಥಾವೃತ್ತಿ ಚೇತ: ಕಣ್ಡಾಶ್ಲೇಷಪ್ರಣಯಿನಿ ಜನೇ ಕಿಂ ಪುನರ್ದರ-ಸಂಸ್ಥೇ" ಮೇಘಂ ೧-೩। 2. ಕಂಠಧ್ವನಿ, ಕತ್ತಿನ ಬಳಭಾಗ (ಗಂಟಲು) ದಿಂದ ಹೊರಡುವ ಶಬ್ದ. "ಯಾಸ್ಯತ್ಯಥ ಶಕ್ರುಂತಲೇತಿ ಹೃದಯಂ ಸಂಸ್ಪೃಷ್ಟಮುಕ್ತಕಂಠಯಾ ಕಂಠ: ಸ್ತಂಭಿತವಾಙ್-ವೃತ್ತಿಕಲ್ಪಶಿವಂತಾಜಙ್ ದರ್ಶನಮ್" ಶಾಕುಂ ೪-೫। 3. ಧ್ವನಿ, ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು. "ಸಾ ಮುಕ್ತಕಂಠಂ ವ್ಯಸನಾತಿಭಾರಾತ್ ಚಕ್ರಂದ ವಿಗ್ನಾ ಕುರರೀವ ಭೂಯ:" ರಘುಂ ೧೪-೬೮। 4. ಬಿಂದಿಗೆಯ ಅಥವಾ ತಪ್ಪಲಿಯ ಕತ್ತು. 5. ಗರ್ಭಾಶಯದ ಬಹಳ ಕಿರಿದಾದ ಭಾಗ. 6. ಸಮೀಪ, ಸಂನಿಧಾನ. 7. ಮದನ ವೃಕ್ಷ, ಮಂಗಾರಿಗಿಡ. 8. ಕಂಠಾಲಂಕಾರ, ಕತ್ತಿನ ಅಭರಣ. "ಕಂಠೋ ಧ್ವನೌ ಸಂನಿಧಾನೇ ಗ್ರೀವಾಯಾ ಮದನದ್ರುಮೇ" ಮೇದಿಂ। 9. ವಾಚಕಶಬ್ದ, ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಶಬ್ದ, "ಕಂಠೋ ವಾಚಕಶಬ್ದೇ ಸ್ಯಾತ್ ಸಂನಿಧಾನೇ ಗಲೇ ಧ್ವನೌ" ನಾನಾರ್ಥರಂ। 10. ದತ್ತೂರಿಗಿಡ. "ಕಂಠೋ ಗಲೇ ಸಂನಿಧಾನೇ ಧ್ವನೌ ಧತ್ತೂರಪಾದಪೇ" ವಿಶ್ವಂ।

ಕಣ್ಡಕುಣಿಕಾ ಕಂಠಕೂಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೀಣೆ. ಕಂಠ ಇವ ತದ್ಧ್ವನಿರಿವ ಕುಣಯತಿ - ಕುಣ (ಸಂಕೋಚ) + ಗಿನ್ "ಙ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ವೀಣಾ ಪುನರ್ಧೌಷವತೀ ವಿಪಂಜೀ ಕಣ್ಡಕುಣಿಕಾ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ಕಣ್ಡಕುಪ ಕಂಠಕೂಪ (ಪುಂ) ಗಂಟಲಿನ ವಿವರ, ಕಂಠಕುಹರ.

ಕಣ್ಡಗ ಕಂಠಗ (ವಿಂ) ಕಂಠದವರೆಗೂ ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವ, ಗಂಟಲಿನವರೆಗೂ ಹೋಗಿರುವ. ಕಂಠ ಗಲಂ ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಙ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)। "ಹೃದಗಾಭಿ: ಪುಯತೇ ವಿಪ್ರ: ಕಣ್ಡಗಾಭಿಸ್ತು ಭೂಮಿಪ:" ಮನುಂ ೨-೬೨।

ಕಣ್ಡಗತ ಕಂಠಗತ (ವಿಂ) ಕಂಠದವರೆಗೂ ಬಂದಿರುವ, ಕುತ್ತಿಗೆಯಲ್ಲಿರುವ. ಕಂಠಂ ಗತ:। "ಮಮ ಕಣ್ಡಗತಾ: ಪ್ರಾಣಾ: ಪಾಶೇ ಕಂಠಸ್ಥಿತೇ ತವ" ರತ್ನಾಂ ೩-೧೬।

ಕಣ್ಡಗ್ರಹ ಕಂಠಗ್ರಹ (ಪುಂ) ಅಲಿಂಗನ, ಕುತ್ತಿಗೆಯನ್ನು ಹಿಡಿದುಕೊಂಡು ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಕಂಠಸ್ಯ ಗ್ರಹ:। "ಅಮ್ಭೋಜಗರ್ಮಸುಕುಮಾರತನುಸ್ತದಾಸೌ ಕಂಠಗ್ರಹೇ ಪ್ರಥಮರಾಗಧನೇ ವೀಲೀಯ" ರತ್ನಾಂ ೪-೨। ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। -ಗ್ರಹಣಮ್ -ಗ್ರಹಣಮ್.

ಕಣ್ಡತಲಾಸಿಕಾ ಕಂಠತಲಾಸಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುದುರೆಯ ಕತ್ತಿನ ಹಗ್ಗ ಅಥವಾ ಚರ್ಮದ ಬಾರು.

ಕಣ್ಡತಸ್ ಕಂಠತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಕತ್ತಿನಿಂದ, ಕುತ್ತಿಗೆಯಿಂದ. 2. ಗಂಟಲಿನಿಂದ. ಕಂಠ "ತಸಿ:" (ವಾಂ ೫-೪-೪೪)।

ಕಣ್ಡದಘನ ಕಂಠದಘ್ನ (ವಿಂ) ಕತ್ತಿನಷ್ಟು ಎತ್ತರವುಳ್ಳ, ಕತ್ತಿನವರೆಗೂ ಹೋಗಿ ನಿಲ್ಲುವ, ಕುತ್ತಿಗೆಯ ಪ್ರಮಾಣವುಳ್ಳ.



ಕಣ್ವ: ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ "ದಧ್ನಚ್" (೪-೨-೩೭)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
"ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೪)। -ದಧ್ನಿ -ದಧ್ನೀ.

ಕಣ್ವದ್ವಯಸ ಕಂಠದ್ವಯಸ (ವಿಂ) "ಕಣ್ವದಧ್ನ" ಪದದ  
ಅರ್ಥ. ಕಣ್ವ "ದ್ವಯಸಚ್" (೪-೨-೩೭)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೧೪)। -ದ್ವಯಸಿ -ದ್ವಯಸೀ.

ಕಣ್ವನಾಲ ಕಂಠನಾಳ (ಪುಂ) 1. ತಾವರೆಯ ದಂಟಿನಂತಿ  
ರುವ ಕತ್ತು, ತಾವರೆಯ ದಂಟಿನಂತೆ ಒಳಗೆ ಟೊಳ್ಳಾಗಿರುವ  
ಗಂಟಲಿನ ಕೊಳವೆ. ಕಣ್ವ ನಾಲ ಇವ. 2. ಕಂಠವೆಂಬ  
ಕೊಳವೆ. ಕಣ್ವ ಎವ ನಾಲ:। "ಜ್ಯೋತಿಷ್ಕಣಾಹತಶ್ಮಶ್ರು  
ಕಣ್ವನಾಲಾದಪಾತಯತ್" ರಘುಂ ೧೪-೪೨। 3. ಕತ್ತಿನ ಕೊಳವೆ,  
ಕತ್ತಿನ ಕಾಂಡ. ಕಣ್ವಸ್ಯ ನಾಲ:। "ಉತ್ತರಾಲಕರವಾಲನಿಕೃತ್ತ-  
ಕಣ್ವನಾಲೋಚ್ಚಲದ್ವಹುಲಫೆನಿಲಬುದ್ಬುದ್ದಿ:" ಪ್ರಬೋಧಂ ೩-೧೪।

ಕಣ್ವಪಾಶ ಕಂಠಪಾಶ (ಪುಂ) 1. ಕತ್ತಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ.  
2. ಆನೆಯ ಕತ್ತಿನ ಹಗ್ಗ. ಕಣ್ವ ಪಾಶ:।

ಕಣ್ವಬಂಧ ಕಂಠಬಂಧ (ಪುಂ) 1. ಆನೆಯ ಕತ್ತಿನ ಹಗ್ಗ.  
2. ಕತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಕಟ್ಟುವಿಕೆ, ಕತ್ತಿಗೆ ಹಗ್ಗಹಾಕಿ ಕಟ್ಟುವಿಕೆ.  
ಕಣ್ವಸ್ಯ ಕಣ್ವ ವಾ ಬಂಧ:।

ಕಣ್ವಭಜ್ಜ ಕಂಠಭಂಗ (ಪುಂ) ಬಿಕ್ಕುತ್ತ ಮಾತಾಡುವಿಕೆ,  
ತಡೆದು ಮಾತಾಡುವಿಕೆ.

ಕಣ್ವಭೂಷಣ ಕಂಠಭೂಷಣ (ನಂ) -ಭೂಷಾ -ಭೂಷಾ  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಂಠಾಭರಣ, ಕುತ್ತಿಗೆಗೆ ತೊಡಿಸುವ ಒಡವೆ,  
ಅಡ್ಡಿಗೆ. ಕಣ್ವಸ್ಯ ಭೂಷಣಂ ಭೂಷಾ ವಾ।

ಕಣ್ವಮೂಲ ಕಂಠಮೂಲ (ನಂ) ಕಂಠದ ತಳಭಾಗ, ಗಂಟಲಿನ  
ಅಳವಾದ ಕೆಳಪ್ರದೇಶ. ಕಣ್ವಸ್ಯ ಮೂಲಂ।

ಕಣ್ವಲಗ್ನ ಕಂಠಲಗ್ನ (ವಿಂ) 1. ಕತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿ  
ರುವ. 2. ಅಪ್ಪಿಕೊಂಡಿರುವ, ಅಲಿಂಗಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ.  
ಕಣ್ವ ಲಗ್ನ:।

ಕಣ್ವಲತಾ ಕಂಠಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಂಗಿಯ ಕೊರಳ ಪಟ್ಟಿ,  
ಕತ್ತಿನ ಪಟ್ಟಿ. 2. ಮುಕ್ತಾಹಾರ, ಮುತ್ತಿನ ಸರ, ಅಡ್ಡಿಗೆ  
ಮುಂತಾದುವು.

ಕಣ್ವವರ್ತಿನ್ ಕಂಠವರ್ತಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಗಂಟಲಲ್ಲಿರುವ.  
2. ಕುತ್ತಿಗೆಯಲ್ಲಿರುವ. ಕಣ್ವ ವರ್ತತೆ -ವೃತ್ (ವರ್ತನೆ)  
"ಗಿರಿನಿ:" (೩-೨-೭೮)। "ಪ್ರಾಣೇದೇಶರಥಪ್ರೀತೀರನೃಣಾಂ ಕಣ್ವ-  
ವರ್ತಿಭಿ:" ರಘುಂ ೧೨-೪೪। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪)।  
-ವರ್ತಿನಿ -ವರ್ತಿನೀ.

ಕಣ್ವಶಾಲೂಕ ಕಂಠಶಾಲೂಕ (ನಂ) ಗಂಟೆಯೊಳಗಿನ ಪ್ರಾಣ,  
ಕಂಠದೊಳಗೆ ಬರುವ ಒಂದು ಹುಣ್ಣು, ಒಂದು ವಿಧ  
ಮುಖರೋಗ. "ಕೋಲಾಸ್ಥಿಮಾತ್ರ: ಕಫಸಂಸವೋ ಯೋ ಧನ್ಯಿರ್ಗಲೇ

ಕಣ್ವಕಶೂಕಮೂತ:। ಕರ: ಸ್ಥಿರ: ಶಸ್ತ್ರನಿಪಾತಸಾಧ್ಯಸ್ತಂ ಕಣ್ವ-  
ಶಾಲೂಕಮಿತಿ ಬ್ರುವಂತಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ನಿದಾನಂ ೧೬-೪೧।

ಕಣ್ವಶುಣಿ ಕಂಠಶುಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದವಡೆಯೊಳಗಿನ ಪ್ರಾಣ,  
ಒಂದು ವಿಧ ಮುಖರೋಗ. "ಶ್ಲೇಷ್ಮಾಸುಗ್ಮ್ಯಾ ತಾಲುಮೂಲಾತ್  
ಪ್ರವೃದ್ಧೋ ದೀರ್ಘ: ಶೋಫೋ ಧ್ಮಾತಬಸ್ತಿಪ್ರಕಾಶ:। ತೃಣಾಕಾಸ-  
ಸ್ವಾಸಕೃತ್ ಸಂಪ್ರದಿಷ್ಟೋ ವ್ಯಾಧಿವೇದ್ಯ: ಕಣ್ವಶುಣಿತಿ ನಾಮ್ನಾ"  
ಸುಶ್ರುತಂ ನಿದಾನಂ ೧೬-೪೧।

ಕಣ್ವಶೋಷ ಕಂಠಶೋಷ (ಪುಂ) 1. ಗಂಟಲು ಒಣಗುವಿಕೆ,  
ಗಂಟಲು ಅರಿಹೋಗುವಿಕೆ. (ಲಾಕ್ಷಂ) 2. ಪ್ರಯೋಜನ  
ವಿಲ್ಲದ ಉಪದೇಶ. ಕಣ್ವಸ್ಯ ಶೋಷ:। ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೪)। -ಶೋಷಣಂ -ಶೋಷಣಮ್.

ಕಣ್ವಸೂತ್ರ ಕಂಠಸೂತ್ರ (ನಂ) ಸುರತಕಾಲದ ಅಲಿಂಗನದ  
ಒಂದು ಭೇದ; ರತಿಕ್ರೀಡೆಯ ವೇಗದಿಂದ ಬಹಳವಾಗಿ  
ಬಳಲಿದ ಸ್ತ್ರೀಯರು ಪತಿಯ ಎದೆಯಮೇಲೆ ತಮ್ಮ  
ಪೀವರಸನಗಳನ್ನಿಟ್ಟು ಗಾಢಾಲಿಂಗನ ಮಾಡಿಕೊಂಡು  
ಮಲಗುವರು. "ಯತ್ಕುರ್ವಂತೇ ವಕ್ಷಸಿ ವಲ್ಲಭಸ್ಯ ಸ್ತನಾಭಿಧಾತಂ  
ನಿಬಿಡೋಪಗೃಹಮ್। ಪರಿಶ್ರಮಾರ್ಥಂ ಶನಕೈವಿದಗ್ಧಾ: ತತ್ಕಣ್ವಸೂತ್ರಂ  
ಪ್ರವದಂತಿ ಸಂತ:" ವಾತ್ಸಯಾಂ ಸುಂ। "ತಸ್ಯ ನಿರ್ದಯರತಿ-  
ಶ್ರಮಾಲಸಾ: ಕಣ್ವಸೂತ್ರಮಪದಿಷ್ಯ ಯೋಷಿತ:" ರಘುಂ ೧೯-೩೨।

ಕಣ್ವಸ್ಥ ಕಂಠಸ್ಥ (ವಿಂ) 1. ಗಂಟಲಲ್ಲಿರುವ. 2. ಕುತ್ತಿಗೆ  
ಯಲ್ಲಿರುವ. ಕಣ್ವ ತಿಷ್ಠತಿ - ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ:"  
(೩-೨-೪)। 3. ಬಾಯಲ್ಲಿರುವ ಮತ್ತು ಉಚ್ಚರಿಸಲು ಸಿದ್ಧ  
ವಾಗಿರುವ. 4. ಉರುಹಾಕಿರುವ, ಬಾಯಿಪಾಠಮಾಡಿರುವ.

ಕಣ್ವಾಗ್ನಿ ಕಂಠಾಗ್ನಿ (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಕಣ್ವ ಅಗ್ನಿ:  
ಪಾಕಾಗ್ನಿ: ಯಸ್ಯ। ಕತ್ತನ್ನು ಬಗ್ಗಿಸಿದ ಮಾತ್ರದಿಂದ ಹಕ್ಕಿ  
ಗಳು ತಿಂದ ಆಹಾರವು ಜೀರ್ಣವಾಗುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ಕಣ್ವಾಭರಣ ಕಂಠಾಭರಣ (ನಂ) 1. ಕತ್ತಿಗೆ ತೊಡಿಸುವ  
ಅಭರಣ, ಹಾರ, ಸರ, ಅಡ್ಡಿಗೆ. ಕಣ್ವಾಭರಣಂ।  
2. "ಸರಸ್ವತೀಕಂಠಾಭರಣ" ವೆಂಬ ಒಂದು ಗ್ರಂಥದ  
ಸಣ್ಣ ಹೆಸರು.

ಕಣ್ವಾಲ ಕಂಠಾಲ (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯುದ್ಧ, ಕದನ. 2. ಶೂರಣ  
ಗೆಡ್ಡೆ. 3. ಗುದ್ದಲಿ. 4. ಗೋಣಚೀಲ. 5. ದೋಣಿ.  
6. ಕಡೆಯುವ ಪಾತ್ರೆ. (ಪುಂ) 7. ಉಪ್ಪು, ಒಂಟೆ  
"ಕಣ್ವಾಲಾ ತು ದ್ವಯೋದ್ರೋಣಿಪ್ರಭೇದೇ ನಾ ಕ್ರಮಲಕೇ" ಮೇದಿಂ।  
ಕಠಿ (ಶೋಕಿ) "ಆಲಚ್" ಬಾಹುಂ।

ಕಣ್ವಿಕಾ ಕಂಠಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಂಠಾಭರಣ, ಕತ್ತಿಗೆ ತೊಡಿ  
ಸುವ ಒಡವೆ, ಹಾರ. ಕಣ್ವಿ ಭೂಷತಯಾಸ್ತಸ್ಯ "ಕನ್"  
(೪-೨-೧೧೪)।



ಕಣ್ಣಿ ಕಂಠೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕುದುರೆ ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ. 2. ಕತ್ತು. 3. ಕತ್ತಿನ ಪಟ್ಟಿ.

ಕಣ್ಣಿರವ ಕಂಠೀರವ (ಪುಂ) ಕಂಠದಿಂದ ಗರ್ಜಿಸುವ 1. ಸಿಂಹ. 2. ಮದಿಸಿದ ಆನೆ. ಕಣ್ಣಿರವೋ ಯಸ್ಯ. 3. ಕಪೋತ, ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ.

ಕಣ್ಣಿಕಾಲ ಕಂಠೀಕಾಲ (ಪುಂ) ಶಿವ, ಮಹಾದೇವ, ನೀಲಕಂಠ. ಕಣ್ಣಿ ಕಾಲೋಸ್ಯ ಅಲುಕ್ (೬-೩-೧೨)।

ಕಣ್ಣಿ ಕಂಠ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕಂಠದಲ್ಲಿರುವ, ಗಂಟಲಲ್ಲಿರುವ. ಕಣ್ಣಿ ಭವ: "ಯತ್" (೪-೩-೫೫)। 2. ಕಂಠದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಅಂ, ಕು: (ಕರ್ವರ್ಗ) ಹ: ಮತ್ತು ವಿಸರ್ಜನೀಯ: (ವಿಸರ್ವರ್ಗ) ವರ್ಣಗಳು. "ಅಕುಹವಿಸರ್ಜನೀಯಾನಾಂ ಕಣ್ಣಿ:"। 3. ಕಂಠಸ್ವರಕ್ಕೆ ಹಿತವಾದ (ಶಾಕಾದಿಗಳು). "ಸರ್ವದೋಷಹರಾ ಲಕ್ಷ್ಮೀ ಕಣ್ಣಿ ಮೂಲಕಪೋತಿಕಾ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬-೨೪೦। "ಯವಕೋಲಕುಲುತ್ಯಾನಾಂ ಯುಷ: ಕಣ್ಣಿಘೋನಿಲಾಪಹ:" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬-೩೭೫।

ಕಣ್ಣಿನ ಕಂಡನ (ನಂ) 1. ಒನಕೆಯಿಂದ ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಕುಟ್ಟಿ ಹೊಟ್ಟನ್ನು ಬೇರ್ಪಡಿಸುವಿಕೆ. ಕಡಿ (ಭೇದನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ನ ಹಿ ತ್ರಿಹ್ಯಾದಿಲವನಕಂಡನ ಪೇಷಣಾದೌ ಚ ಸವಿಜ್ಞಾನಾನಾಮ್" ಛಾಂದೋಗ್ಯಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಿ -ನೀ. 2. ಕುಟ್ಟುವ ಸಾಧನ, ಒನಕೆ. ಕಣ್ಣಿಘತೇಜೇನ - ಕಡಿ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। 3. ಒರಳು. ಕಣ್ಣಿಘತೇತ್ರ - ಕಡಿ ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ಪಂಚ ಸೂನಾ ಗೃಹಸ್ಥಸ್ಯ ಚುಲ್ಲೀ ಪೇಷಣ್ಯುಪಸ್ಕರ:। ಕಣ್ಣಿನಿ ಚೋದಕುಂಭಶ್ಚ ಬಧ್ಯತೇ ಯಾಸು ಬಾಹ್ಯನ್" ಮನುಂ ೩-೬೮।

ಕಣ್ಣಿರ ಕಂಡರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಹಾನಾಡಿ, ಮಹಾಸ್ನಾಯು.

ದೇಹದಲ್ಲಿ ಈ ಮಹಾನಾಡಿಗಳು ಹದಿನಾರಿರುವುವು:

|                 |     |   |
|-----------------|-----|---|
| ಎರಡು ಹಸ್ತಗಳಲ್ಲಿ | ... | 4 |
| ಎರಡು ಪಾದಗಳಲ್ಲಿ  | ... | 4 |
| ಕುತ್ತಿಗೆಯಲ್ಲಿ   | ... | 4 |
| ಬೆನ್ನಿನಲ್ಲಿ     | ... | 4 |

16

ಇವು ಅವಯವಗಳನ್ನು ನೀಡುವ ಮತ್ತು ಮಡಿಸಿ ಕೊಳ್ಳುವ ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವುವು. "ಮಹತ್ಯ: ಸ್ನಾಯವ: ಪ್ರೋಕ್ತಾ: ಕಣ್ಣಿರಾಸ್ತಾಸ್ತು ಷೋಡಶಃ। ಪ್ರಸಾರಣಾಕುಚನಯೋರ್ದೃಷ್ಟಂ ತಾಸಾಂ ಪ್ರಯೋಜನಮ್। ಚತುರೋ ಹಸ್ತಯೋಸ್ತಾಸಾಂ ತಾವತ್ಯ: ಪಾದಯೋ: ಸ್ಮೃತಾ:। ಶ್ರೀವಾಯಾಮಪಿ ತಾವತ್ಯ: ತಾವತ್ಯ: ಪೃಷ್ಠ-ಸಂಗತಾ:" ಭಾವಪ್ರಂ। ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಹಸ್ತ ಮತ್ತು ಪಾದಗಳ

ನಾಡಿಗಳು ನಖ (ಉಗುರು) ಗಳಾಗಿಯೂ ಕುತ್ತಿಗೆಯ ನಾಡಿಗಳು ಮೇಧ್ಯ (ಜನನೇಂದ್ರಿಯ) ವಾಗಿಯೂ ಪೃಷ್ಠ (ಬೆನ್ನು)ನಾಡಿಗಳು ನಿತಂಬ, ಮೇಲಿನ ತೊಡೆಗಳು, ವಕ್ಷಸ್ಸು (ಎದೆ) ಮತ್ತು ಸ್ತನಪಿಂಡಗಳಾಗಿಯೂ ಬೆಳೆದುಬಂದಿವೆ.

ಕಣ್ಣಿ ಕಂಡು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನವೆ, ತುರಿ. ಕಣ್ಣಿ (ಗಾತ್ರ-ವಿಘರ್ಷಣೆ) "ಡು:" ಬಾಹುಂ। 2. ಮೈ ಕೆರೆಯುವಿಕೆ.

ಕಣ್ಣಿ-ಗಾತ್ರವಿಘರ್ಷಣೆ (ಕಣ್ಣಿಂ ಉಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಕಣ್ಣಿಯತಿ, -ತೇ। ಕಣ್ಣಿಯಾ ಬಭೂವ, -ಚಕಾರ, -ಆಸ, -ಚಕ್ರೇ। ಮೈ ಕೆರೆ, ನವೆ ಹೋಗಲಾಡಿಸು. ಕಣ್ಣಿಯನಮ್, ಕಣ್ಣಿಯತಿ:, ಕಣ್ಣಿ:, ಕಣ್ಣಿಯಾ, ಕಣ್ಣಿಯನ್, ಕಣ್ಣಿಯತಿ:, ಕಣ್ಣಿಯಮಾನ: ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕಣ್ಣಿ ಕಂಡೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೈ ಕೆರೆಯುವುದು. 2. ತುರಿ ಗಜ್ಜಿ. ಕಣ್ಣಿ (ಗಾತ್ರವಿಘರ್ಷಣೆ) "ಕ್ವಿಪ್" (ವಾಂ ೩-೩-೧೪)। "ಕಪೋಲಕಣ್ಣಿ: ಕರಿಭಿರ್ವಿನೇತುಂ ವಿಘಟಿತಾನಾಂ ಸರಲದ್ರುಮಾಣಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೧।

ಕಣ್ಣಿಕರೀ ಕಂಡೂಕರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಸುಗುನ್ನಿಗಿಡ. ಕಣ್ಣಿ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃಬ್ (ಕರಣೆ) "ಟ:" (೩-೨-೨೦)।

ಕಣ್ಣಿಘನ ಕಂಡೂಘ್ನ (ಪುಂ) 1. ಕಡೆಗಿಡ. 2. ಬಿಳಿಸಾಸುವೆ. ಕಣ್ಣಿ ಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಟಕ್" (೩-೨-೫೩)।

ಕಣ್ಣಿಯತಿ ಕಂಡೂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೈ ಕೆರೆಯುವಿಕೆ. ಕಣ್ಣಿ (ಗಾತ್ರವಿಘರ್ಷಣೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪)। "ಸುಭಗ ತ್ವತ್ಕಥಾ-ರಮ್ಭೆ ಕರ್ಣೆ ಕಣ್ಣಿಯತಾಲಾಲಸಾ" ಸಾಂ ೬೦।

ಕಣ್ಣಿಯತ್ ಕಂಡೂಯತ್ (ವಿಂ) ಮೈ ಕೆರೆಯುತ್ತಿರುವ. ಕಣ್ಣಿ (ಗಾತ್ರವಿಘರ್ಷಣೆ) + ಯಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಕಣ್ಣಿಯತ: ಕಡಭುವಂ ಕರಿಣೋ ಮದೇನ ಸ್ಕಂಧಂ ಸುಗಾಂಧಿಮನುಲೀನ-ವತಾ ನಗಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೫-೪೬।

ಕಣ್ಣಿಯನ ಕಂಡೂಯನ (ನಂ) 1. ಮೈ ಕೆರೆಯುವುದು, ನವೆ ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು. ಕಣ್ಣಿ (ಗಾತ್ರವಿಘರ್ಷಣೆ) + ಯಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಆಸ್ವಾದವದ್ವಿ: ಕಬಲೇಸ್ತೃಣಾನಾಂ ಕಣ್ಣಿಯನೇದನಿವಾರಣೇಶ್ಚ" ರಘುಂ ೨-೫। 2. ಮೈ ಕೆರೆದು ಕೊಳ್ಳುವ ಸಾಧನ. ಕಣ್ಣಿಯ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)।

ಕಣ್ಣಿಯಮಾನ ಕಂಡೂಯಮಾನ (ವಿಂ) ಮೈ ಕೆರೆದು ಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ನವೆ ಹೋಗಲಾಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ಕಣ್ಣಿಯ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಕಣ್ಣಿಯಮಾನೇನ ಕಡಂ ಕದಾಚಿದ್ವನ್ಯದ್ವಿಪೇನೋನ್ಮಥಿತಾ ತ್ವಗಸ್ಯ" ರಘುಂ ೨-೩೭।

ಕಣ್ಣಿಯಾ ಕಂಡೂಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನವೆ, ತುರಿ. ಕಣ್ಣಿ (ಗಾತ್ರವಿಘರ್ಷಣೆ) + ಯಕ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨)। "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪)।



ಕಣ್ವಯಿತ ಕಂಡೂಯಿತ(ವಿಂ)ಕರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ನವ ಹೋಗಿ  
ಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕಣ್ವ+ಯಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।  
"ಸ್ವಲನಕ್ಷಣ ಏವ ಶಿಶ್ರಿಯೇ ದ್ರುತಕಣ್ವಯಿತಮಾಲಿರಾಲಯಮ್"  
ವೇಷಂ ೨-೩।

ಕಣ್ವರಾ ಕಂಡೂರಾ(ಸ್ತ್ರೀಂ)ನಸುಗುನ್ನಿಗಿಡ. ಕಣ್ವ ರಾತಿ-  
ರಾ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। "ಆತ್ಮಗುಪ್ತಾಜಹಾವ್ಯುಷಾ  
ಕಣ್ವರಾ ಪ್ರಾವೃಷಾಯಣಿ" ಅಮಂ।

ಕಣ್ವಲ ಕಂಡೂಲ (ಪುಂ) 1. ಸೂರಣಗಡ್ಡೆ. ಕಣ್ವರಸ್ತಯಸ್ಯ  
"ಲಕ್" (೪-೨-೯೭)। (ವಿಂ)2. ನವೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ.  
"ಕಣ್ವಲವಿಪಗಣ್ವಪಿಂಡಕಷಣಾಕಮ್ಪೇನ ಸಂಪಾತಿಭಿ:" ತಂ ರಾಂ  
೨-೯। 3. ನವೆಯುಂಟುಮಾಡುವ.

ಕಣ್ವಲ ಕಂಡೂಲ (ಪುಂ) 1. ಬಿದಿರಿನ ಮುಕರಿ, ಕುಕ್ಕು,  
ಗೂಡೆ, ಬುಟ್ಟಿ. ಕಡಿ (ಮೆದನೆ) "ಆಲಕ್" (ತಂ ೧-೬೬)।  
2. ಉಗ್ರಾಣ, ಸಾವಾಣುಗಳನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಿಡುವ ಜಾಗ.  
3. ಉಪ್ಪು, ಒಂಟೆ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಕಿಲ್" (೪-೧-೬೩)।  
-ಲಿ-ಲಿ.

ಕಣ್ವಲವೀಣಾ ಕಂಡೂಲವೀಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಂಡಾಲನ  
ವೀಣೆ.

ಕಣ್ವಲಿ ಕಂಡೂಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಂಡಾಲನ ವೀಣೆ.

ಕಣ್ವ ಕಣ್ವ (ಪುಂ) 1. ಕಶ್ಮಪಗೋತ್ರದ ಒಬ್ಬ ಮಹರ್ಷಿ.  
ಶಕುಂತಲೆಯ ಸಾಕುತಂದೆ. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ-ಮೇನಕೆ ಇವರಲ್ಲಿ  
ಜನಿಸಿದ ಶಿಶುವು ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಪಕ್ಷಿಗಳಿಂದ ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿದ್ದಾಗ ದಯಾಳುವಾದ ಕಣ್ವಮಹರ್ಷಿಯು ಅದನ್ನು  
ತಮ್ಮ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ತಂದು ಪುತ್ರನಿರ್ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಸಾಕು  
ತ್ತಿದ್ದರು. ಶಕುಂತಲೆಯು ಪ್ರಾಪ್ತವಯಸ್ಕಳಾದಾಗ ಅವಳಿಗೆ  
ಅನುರೂಪನಾದ ಪತಿಯು ದೊರಕಬೇಕೆಂದು ಕಣ್ವ  
ಮಹರ್ಷಿಯು ಸೋಮತೀರ್ಥ ತೀರದಲ್ಲಿ ತಪಸ್ಸಿಗೆ ಹೋಗಿ  
ರಲು ದುಷ್ಯಂತನು ಬೇಟೆಯವ್ಯಾಜದಿಂದ ಕಣ್ವಮಹರ್ಷಿಯ  
ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಶಕುಂತಲೆಯನ್ನು ಗಾಂಧರ್ವರೀತಿ  
ಯಿಂದ ಮದುವೆಯಾಗಿ ನಗರಕ್ಕೆ ತೆರಳಿದನು. ತಪಸ್ಸಿ  
ನಿಂದ ಹಿಂತಿರುಗಿದ ಕಣ್ವರು ಶಕುಂತಲೆಗೆ ಅನುರೂಪ ವರನು  
ದೊರೆತದ್ದಕ್ಕಾಗಿ ಸಂತೋಷಿಸಿ ಶಿಷ್ಯರೊಡನೆ ಅವಳನ್ನು  
ಆಶೀರ್ವದಿಸಿ ಪತ್ನಿಹಕ್ಕು ಕಳುಹಿಸಿಕೊಡುವರು. ಇವ  
ರೊಬ್ಬರು ಗೋತ್ರಪ್ರವರ್ತಕರು. (ನಂ) 2. ಪಾಪ,  
ದೋಷ. ಕಣ (ನಿಮಿತ್ತ) "ಕವನ್" (ತಂ ೧-೧೪೯)।  
"ಕಣ್ವಂ ಪಾಪೇ ಮುನೀ ಪುನಿ" ಮೇದಿಂ।

ಕಣ್ವಸುತಾ ಕಣ್ವಸುತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)ಕಣ್ವಮಹರ್ಷಿಯ ಮಗಳು.  
ಶಕುಂತಲೆ. ["ಕಣ್ವ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಕತ ಕತ (ಪುಂ) 1. ಕತಕವೃಕ್ಷ, ಚಿಲ್ಲದಗಿಡ. ಕಂ ಜಲಂ ಶುಭಂ  
ತನೋತಿ-ತನು (ವಿಸ್ತಾರೇ) "ಕ:" (೩-೨-೧೦೧)।  
2. ಒಬ್ಬ ಯುಷಿ. ["ಕಾತ್ಯ", "ಕಾತ್ಯಾಯನ" ಪದಗಳಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.] (ನಂ) 3. ಚಿಲ್ಲದ ಬೀಜ.

ಕತಕ ಕತಕ (ಪುಂ) 1. ಚಿಲ್ಲದಗಿಡ. ಕಸ್ಯ ಜಲಸ್ಯ ತಕೋ  
ಹಾಸೋ ಯಸ್ಮಾತ್। (ನಂ) 2. ಚಿಲ್ಲದ ಬೀಜ. ಚಿಲ್ಲದ  
ಬೀಜದ ಸಂಪರ್ಕದಿಂದ ನೀರು ನಿರ್ಮಲವಾಗುವುದು.  
"ಫಲಂ ಕತಕವೃಕ್ಷಸ್ಯ ಯದಪ್ಯಮ್ಬುಪ್ರಸಾದನನ್। ನ ನಾಮಗ್ರಹಣಾ-  
ದೇವ ತಸ್ಯ ವಾರಿ ಪ್ರಸೀದತಿ" ಮನುಂ ೬-೬೭।

ಕತಕಲ ಕತಕಲ (ಪುಂ) 1. ಚಿಲ್ಲದಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಚಿಲ್ಲದ  
ಬೀಜ.

ಕತಮ ಕತಮ (ವಿಂ) 1. ಒಹುಮಂದಿಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವನು?,  
ಅನೇಕ ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವುದು? ಕಿಮ್ "ಕತಮಕ್"  
(೪-೩-೯೩)। "ಕತಮೋ ಭವತಾಂ ದೇವದತ್ತ:"। "ಅಪಿ  
ಜಾಯತೇ ಕತಮೇನ ದಿಗ್ವಿಭಾಗೇನ ಗತಃ ಸ ಜಾಲ್ಮ:"  
ವಿಕ್ರಂ ೧। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ -ಮಾ -ಮಾ. (ನಂ) ಕತಮತ್  
ಕತಮತ್. 2. ಅನೇಕ ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವುದುತಾನೆ.  
"ನ ಪುಷ್ಪಿತಾಞ್ ಸ್ಥಗಿತಾರ್ಕರಸಮಾವನಂತತಾನೇ ಕತಮಾ  
ಲತಾಽಲಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೩೯। "ಅಹಂ ಭ್ರಮಾದಾಲಪಮಙ್ಗ  
ಮೃತ್ಯುತಾಂ ವಿನಾ ಮಮೋರಃ ಕತಮತ್ತವಾಸನಮ್" ನೇಷಂ ೯-೧೧೪।

ಕತರ ಕತರ (ವಿಂ) ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಯಾವನು?, ಎರಡು ವಸ್ತು  
ಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವುದು? ಕಿಮ್ "ಕತರಕ್" (೪-೩-೯೨)।  
"ಅನಯೋಃ ಕತರೋ ದೇವದತ್ತ:"। (ನಂ) ಕತರತ್ ಕತರತ್.  
"ನ ಚೈತದ್ವಿಭಃ ಕತರಸೋ ಗರಿಯೋ ಯದ್ವಾ ಜಯಮ ಯದಿ ವಾ  
ನೋ ಜಯಯು:" ಗೀತಾ ೨-೬।

ಕತಿ ಕತಿ (ವಿಂ ಬಂ ಬಂ) ಎಷ್ಟು?, ಎಷ್ಟು ಪರಿಮಾಣ  
ವುಳ್ಳದ್ದು?, ಎಷ್ಟು ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳದ್ದು. ಕಿ ಪರಿಮಾಣ-  
ಮೇತೇಷಾಮ್ - ಕಿಮ್ "ಕತಿ:" (೪-೨-೪೧)। "ನಿಜಪದಪರಿ-  
ಚಾರಕಾಡ್ವಿಕ್ಷಿಣಿಮಿ: ಕತಿಷು ಭವೇಷು ಸಮಚಿತಾಡ್ವಿಪ್ರಪಃ:"  
ಯಾದಂ ೨೪-೪೪। "ಕತಿ"ಗೆ ಚಿತ್, ಚನ ಅಥವಾ ಅಪಿ  
ಸೇರಿದರೆ ಅದರ ಸ್ವಂತ ಅರ್ಥವು ಸಂಕೋಚಹೊಂದಿ  
ಕೆಲವರು, ಕೆಲವು. ಒಹಳ ಎಂಬ ಅನಿರ್ದಿಷ್ಟ ಸಂಖ್ಯೆಯ  
ಅರ್ಥ ಕೊಡುವುದು. "ದರ್ಮಾಡ್ವಿಕುರೇಣ ಚರಣಃ ಕತ ಇತ್ಯಕಾಣ್ಡೆ  
ತನ್ವೀ ಸ್ಥಿತಾ ಕತಿಚಿದೇವ ಪದಾನಿ ಗತ್ವಾ" ಶಾಕುಂ ೨-೧೨।  
"ಕತಿಭಿಶ್ಚನ ಕಾಮಚಾರಶಕ್ತೇರಪಸಂಜಾತಮದೇಹದ್ರವ್ಯಶೃಙ್ಗೈ:"  
ಯಾದಂ ೧೪-೧೧೦।

ಕತಿಕೃತ್ವಸ್ ಕತಿಕೃತ್ವಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಎಷ್ಟು ಸಲ?, ಎಷ್ಟು  
ವೃತ್ತಿ? ಕತಿ "ಕೃತ್ವಸುಕ್" (೪-೪-೧೭)।



ಕತೀಶ ಕೃಷ್ಣ (ವಿಂ) ಎಷ್ಟುನೆಯದು? ಕತಿ "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮)। ಯುಗಾಗಮ: (೪-೨-೪೧)। "ತಸ್ಯ ಕತೀಶ ಇತಿ ತತ್ಪ್ರಥಮಂ ಮನಸಾ ಲಮಾಖ್ಯದಪರಾಧಮಾಚ್ಯುತ:" ಮಾಧಂ ೧೪-೪೨।

ಕತೀಶಾ ಕೃಷ್ಣಾ (ಅವ್ಯಂ) ಎಷ್ಟು ವಿಧ? ಎಷ್ಟು ಪ್ರಕಾರ? ಕತಿ "ಧಾ" (೪-೨-೪೨)।

ಕತಿಪಯ ಕೃಷ್ಣಯ (ವಿಂ ಬಂ ಬಂ) 1. ಕೆಲವು. "ಸಂಪತ್ಸ್ಯಂತೇ ಕತಿಪಯದಿನಸ್ಥಾಯಿಹಂಸಾ ದಶಾರ್ಣಿ:" ಮೇಧಂ ೧-೨೩। 2. ಪರಿಮಿತವಾದ. "ವರ್ಣ: ಕತಿಪಯೇವ ಪ್ರಥಿತಸ್ಯ ಸ್ವರೇರಿವ" ಮಾಧಂ ೨-೭೨। 3. ಕೆಲವು, ಸ್ವಲ್ಪ. 4. ಬಹಳ. ಕತಿಪಯೇ ಕತಿಪಯಾ:। "ಪರಿಷ್ಕುರ್ವಂತ್ಯರ್ಥಾನ್ ಸಹೃದಯಧುರೀಣಾ: ಕತಿಪಯೇ" ರಸಗಂಠಂ।

ಕತಿವಿಧ ಕೃಷ್ಣವಿಧ (ವಿಂ) ಎಷ್ಟು ವಿಧ?, ಎಷ್ಟು ಬಗೆ? ಕತಿ ವಿಧಾ ಪ್ರಕಾರೋ ಯಸ್ಯ।

ಕತ್ತಣ ಕೃಷ್ಣ (ನಂ) 1. ಕಾಚಿಹುಲ್ಲು. 2. ಕಾಚಿಹುಲ್ಲು. 3. ಹಂಚಿಹುಲ್ಲು. 4. ಬರಗುಹುಲ್ಲು. ಕುತಿಸಿತಂ ತೃಣಮ್ - ಕೋ: ಕದಾದೇಶ: (೬-೩-೧೦೩)। ಹಸು ಮೊದಲಾದುವು ಇವನ್ನು ತಿನ್ನಲಾಗುವುದಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ಕತ್ತಿ ಕೃಷ್ಣ (ವಿಂ ಬಂ ಬಂ) ಕೆಟ್ಟ ಮೂವರು, ಕೆಟ್ಟ ಮೂರು ವಸ್ತುಗಳು. ಕುತ್ಸಿತಾಸ್ತ್ರಯ: - ಕೋ: ಕತ್ (ವಾಂ ೬-೩-೧೦೧)।

ಕತ್ಯ-ಶ್ಲಾಘಾಯಾಮ್ (ಮಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) ಶ್ಲಾಘಿಸು, ಪ್ರಶಂಸೆಮಾಡು, ಹೊಗಳು, ಜಂಬಹೊಡೆ. ಕತ್ಯತೇ। ಚಕತ್ಯೇ। ಕತ್ಯಿತಾ। ಕತ್ಯಿಷ್ಯತೇ। ಕತ್ಯಿತಾಮ್। ಅಕತ್ಯತ। ಅಕತ್ಯಿಷ್ಠತ। ಅಕತ್ಯಿಷ್ಯತ। ಕತ್ಯನಮ್। ಕತ್ಯಾ। ಕತ್ಯಿತಮ್। "ಗರ್ಜಿತೇನ ವೃಥಾ ಕಿಂ ತೇ ಕತ್ಯಿತೇನ ಚ ಮಾನುಷ। ಕೃತ್ವಂತತ್ ಕರ್ಮಣಾ ಸತ್ವಂ ಕತ್ಯೇಥಾ ಮಾ ಚಿರಂ ಕೃತಾ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೬೪-೩೭।

ಕತ್ಯಕ ಕೃಷ್ಣಕ (ವಿಂ) ಶ್ಲಾಘಿಸುವವನು, ಹೊಗಳುವವನು, ಜಂಬ ಹೊಡೆಯುವವನು. ಕತ್ಯ (ಶ್ಲಾಘಾಯಾಮ್) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಕತ್ಯನ ಕೃಷ್ಣನ (ನಂ) ಶ್ಲಾಘಿಸುವುದು, ಹೊಗಳುವುದು, ಜಂಬ ಹೊಡೆಯುವುದು. ಕತ್ಯ (ಶ್ಲಾಘಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।

ಕತ್ಯನೀಯ ಕೃಷ್ಣನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಅವಶ್ಯಕವಾಗಿ ಶ್ಲಾಘಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಶ್ಲಾಘಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಹೊಗಳಲು ಅರ್ಹವಾದ. 3. ಹೊಗಳಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಕತ್ಯ (ಶ್ಲಾಘಾಯಾಮ್) ಅರ್ಹಾದಿ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬)।

ಕತ್ಯಮಾನ ಕೃಷ್ಣಮಾನ (ವಿಂ) ಶ್ಲಾಘಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೊಗಳುತ್ತಿರುವ. ಕತ್ಯ (ಶ್ಲಾಘಾಯಾಮ್) "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)।

ಕತ್ಯಿತ ಕೃಷ್ಣಿತ (ನಂ) 1. ಶ್ಲಾಘಿಸೆ, ಹೊಗಳೆ. ಕತ್ಯ (ಶ್ಲಾಘಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಶ್ಲಾಘಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಕತ್ಯ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಕತ್ಯಿತವ್ಯ ಕೃಷ್ಣಿತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಹೊಗಳಲ್ಪಡುವ. 2. ಹೊಗಳಲು ಅರ್ಹವಾದ. 3. ಹೊಗಳಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಕತ್ಯ (ಶ್ಲಾಘಾಯಾಮ್) "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೬)।

ಕತ್ರ-ಶೈತೀಯೇ (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) ಕತ್ಯಯತಿ, -ತೇ। ಕತ್ರತಿ। ಅಚಕತ್ರತ್, -ತ। ಸಂಜಿಲವಾಗು.

ಕತ್ಯ-ವಾಕ್ಯಪ್ರಬಂಧೇ (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) ಕತ್ಯಯತಿ, -ತೇ। ಕತ್ಯಯಾಂಬಭೂವ, -ಆಸ, -ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ। ಕತ್ಯಿತಾ। ಕತ್ಯಯೇತ್, -ತ। ಅಚೀಕತ್ಯತ್, -ತ। ಅಚಕತ್ಯತ್, -ತ। ಕರ್ಮಣಿ: -ಕತ್ಯಯತೇ। ಚಕತ್ಯೇ।

ಸನಿ: -ಚಿಕತ್ಯಯಿಷತಿ, -ತೇ। ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಹೇಳು, ತಿಳಿಸು, ನಿರೂಪಿಸು, ವರ್ಣಿಸು. "ಕಾರ್ತವೀರ್ಯ-ಜಲಕ್ರೋಡಾಂ ಕತ್ಯಯಂತಿ ಸ್ಮ ತಾಪಸಾ:" ಯಾದಂ ೨೨-೨೨೦। "ರಾಮಮಿಶ್ವಸನದರ್ಶನೋತ್ಸುಕಂ ಮೆಥಿಲಾಯ ಕತ್ಯಯಾಂಬಭೂವ ಸ:" ರಘುಂ ೧೧-೩೭। "ಕತ್ಯಯತೇ ಚಿದಚಿದಂತರಾತ್ಮನ: ಶಾಸ್ತ್ರಶುದ್ಧ-ಹೃದಯಮನೀಷಿಭಿ:" ಯಾದಂ ೧೭-೧೦೮। 2. ಸೂಚಿಸು, ತಿಳಿಸು. "ಗಾತ್ರೇಸ್ತೇ ಕತ್ಯಯಂತ್ಯಸಾರಭಿದುರಾನ್ ಪ್ರಾಯೇಣ ಸಂಸಾರಿಣ:" ಮಾಲತೀಂ ೮-೧೦। 3. ತೋರಿಸಿಹೇಳು, ನಿರ್ದೇಶಿಸು. "ಭಕ್ಷಯಂತೀಂ ನ ಕತ್ಯಯೇತಿಪಬಂತಂ ಚೈವ ವರಸಕಮ್" ಮನುಂ ೧೧-೧೧೪।

ಕತ್ಯಕ ಕೃಷ್ಣಕ (ವಿಂ) 1. ಹೇಳುವವನು, ನಿರೂಪಿಸುವವನು, ವರ್ಣಿಸುವವನು. ಕತ್ಯ (ವಾಕ್ಯಪ್ರಬಂಧೇ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಅನುವಾದಮಾಡುವವನು. 3. ಪುರಾಣ ಹೇಳುವವನು, ಕಥೆ ಹೇಳಿ ಜೀವಿಸುವವನು. 4. ತತ್ತ್ವನಿರ್ಣಯಕ್ಕಾಗಿ ವಾದಮಾಡುವವನು. "ಕತ್ಯಾ-ದರ್ಪಕ್ಷುಮ್ಯತ್ಯಕಕುಲಕೋಲಾಹಲಭವಂ ಹರತ್ವಂತಧ್ವಂತಿಂ ಹೃದಯದನ-ಹೇಷಾಹಲಹಲ:" ಹೃದಯಗ್ರಂಥಂ।

ಕತ್ಯಚ್ಛಾರಮ್ ಕೃಷ್ಣಂಕಾರಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಹೇಗೆ?, ಹೇಗೆ ತಾನೆ? ಕತ್ಯ ಕೃತ್ವಾ। ಕತ್ಯಮ್ + ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣೇ) "ಫಮುಲ್" (೩-೪-೨೭)। "ಕತ್ಯಚ್ಛಾರಮನಾಲಮ್ಬಾ ಕೀರ್ತಿರ್ಮಿಮಿರೋಹತಿ" ಮಾಧಂ ೨-೪೨। "ಧಾರ್ಯ: ಕತ್ಯಚ್ಛಾರಮಹಂ ಭವತ್ಯಾ ವಿಯದ್ವಿಹಾರಿ ವಸುಧಂಕಗತ್ಯಾ" ನೆಪಂ ೩-೧೪।

ಕತ್ಯಚ್ಛೇದನ ಕೃಷ್ಣಂಚ್ಛೇದನ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಹೇಗಾದರೂ. 2. ಬಹಳ ಕಷ್ಟದಿಂದ. ಕತ್ಯ + ಚಿತ್। ಇದು ಅಸಾಕಲ್ಯಾರ್ಥ (ಅಸಂಪೂರ್ಣಾರ್ಥ) ವನ್ನು ಕೊಡುವುದು. "ಅಸಾಕಲ್ಯೇ ತು ಚಿಚ್ಛೇದನ" ಎಂದು ಅಮರಕೋಶದಲ್ಲಿ ಚಿತ್।



ಪ್ರತ್ಯೇಕ ಪದಗಳಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿದ್ದರೂ ಈ ಪದಗಳಿಗೆ ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿ ಪ್ರಯೋಗವಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಕತಿಚಿತ್ ಕತಿಚನ ಕಯಚಿತ್ ಕಯಚನ ಕಚನ ಕಚಿತ್ ಇತ್ಯಾದಿ ಇತರ ಪದಗಳೊಡನೆ ಸೇರಿಸಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವುವು. "ಯಾ ಕಯಚನ ಸಖೀವಚನೇನ ಪ್ರಾಗಭಿಪ್ರಿಯತಮಂ ಪ್ರಜಗಲ್ಮೆ" ಮಾಘಂ ೧೦-೧೮. "ಅಥ ಪ್ರಯತ್ನೋತ್ತಮಿತಾನಮತ್ಕರ್ಣಧೃತೇ ಕಯಚಿತ್ಕಣಿನಾಂ ಗರ್ಜರಥಃ" ಮಾಘಂ ೧-೧೩.

**ಕಥನ ಕಥನ** (ನಂ) 1. ಹೇಳುವಿಕೆ, ನಿರೂಪಿಸುವಿಕೆ, ವರ್ಣಿಸುವಿಕೆ. ಕಥ (ವಾಕ್ಯಪ್ರಬಂಧ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). 2. ಸೂಚಿಸುವಿಕೆ. 3. ತೋರಿಸುವಿಕೆ, ನಿರ್ದೇಶಿಸುವಿಕೆ.

**ಕಥನೀಯ ಕಥನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. 2. ಹೇಳಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಹೇಳಲು ಅರ್ಹವಾದ. 3. ಹೇಳಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಕಥ (ವಾಕ್ಯಪ್ರಬಂಧ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬).

**ಕಥಮ್ ಕಥಮ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಹೇಗೆ? ಯಾವ ರೀತಿಯಿಂದ? ಯಾವ ಪ್ರಕಾರದಿಂದ? ಕಿಮ್ ಪ್ರಕಾರೇ "ಯಮುಃ" (೪-೩-೨೫). "ಅವಾಪ್ಯತೇ ವಾ ಕಥಮನ್ಯಥಾ ದ್ವಯಂ ತಥಾವಿಧಂ ಪ್ರೇಮ ಪತಿಶ್ಚ ತಾದೃಶಃ" ಕುಮಾರಂ ೪-೨. 2. ಪ್ರಶ್ನೆ. "ಕಥಮಿದಾನಿಮಾತ್ಮಾನಂ ನಿವೇದಯಾಮಿ? ಕಥಂ ವಾತ್ಸಾಪಹಾರಂ ಕರೋಮಿ?" ಶಾಕುಂ ೧. 3. ಸಂಭ್ರಮ, ಗಡಿಬಿಡಿ, ಆಕಸ್ಮಿಕದಿಂದಂಟಾದ ಕಳವಳ. "ಕಥಮುಪಹಾರೀಕೃತಾಸ್ಮಿ ರಾಜಸ್ತಾತೇನ? ರಾಜಾರಾಧನಂ ಪುನರ್ಗೃಹಂ ನ ಪುನರ್ಮಾಲತೀ" ಮಾಲತೀಂ ೨. 4. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. 5. ಆಶ್ಚರ್ಯ, ವಿಸ್ಮಯ. 6. ಸಂಭಾವನೆ, ಊಹೆ. 7. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. "ಕಥಂ ಹರ್ಷಂ ಚ ಗರ್ಹಯಾಂ ಪ್ರಕಾರಾರ್ಥಂ ಚ ಸಂಭ್ರಮೇ. ಪ್ರಶ್ನೇ ಸಂಭಾವನಾಯಾಂ ಚ" ಮೇದಿಂ.

**ಕಥಮಪಿ ಕಥಮಪಿ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಬಹಳ ಕಷ್ಟದಿಂದ, ಬಹಳ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ. ಕಥಂ ಚ ಅಪಿ ಚ. "ಮುಕ್ತಮಂಸವಿವರ್ತಿ ಪಕ್ಷ್ಮ-ಲಾಕ್ಷ್ಯಾಃ ಕಥಮಪ್ಯುನ್ನಮಿತಂ ನ ಚುಂಬಿತಂ ತು" ಶಾಕುಂ ೩-೨೨. 2. ಹೇಗಾದರೂ, ಎಷ್ಟೇ ಕಷ್ಟದಿಂದಾದರೂ, ಎಷ್ಟೇ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದಾದರೂ. "ತಸ್ಯ ಸ್ಥಿತ್ವಾ ಕಥಮಪಿ ಪುರಃ ಕೌತುಕಾಧಾನಹೇತೋಃ" ಮೇಘಂ ೨-೩. 3. ಯಾವ ರೀತಿಯಿಂದಾದರೂ, ಯಾವ ಪ್ರಕಾರದಿಂದಾದರೂ. "ಶುಕ್ಲಾಪಾಂಜಲಿಃ ಸಜಲನಯನೈಃ ಸ್ವಾಗತೀಕೃತ್ಯ ಕೇಕಾಃ ಪ್ರತ್ಯುಚ್ಯತಃ ಕಥಮಪಿ ಭವಾನ್ ಗಂತುಮಾಶು ವ್ಯವಸ್ಯೇತ್" ಮೇಘಂ ೧-೨೨. 4. ಬಹಳ ಎರಳವಾಗಿ, ಅಪೂರ್ವವಾಗಿ. "ಕಥಮಪಿ ಭುವನೇಽಸ್ಮಿನ್ತಾದೃಶಾಃ ಸಂಭವಂತಿ" ಮಾಲತೀಂ ೨-೬. ಎರಡು ಪದಗಳೆಂದು ಕೆಲವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

**ಕಥಮಿವ ಕಥಮಿವ** (ಅವ್ಯಂ) "ಕಥಾಕ್ಷಾರಮ್" ಪದದ ಅರ್ಥ. **ಕಥಮಿವ ಕಥಂಭಾವ** (ಪುಂ) ಹೇಗೆ? ಯಾವ ರೀತಿ? ಯಾವ ಪ್ರಕಾರ? ಯಾವ ಬಗೆ? ಕಥಮಿತ್ಯಸ್ಯ ಭಾವಃ ಸ್ಥಿತಿಃ.

**ಕಥಮಿವಾಕಾಡ್ಕ್ಷಾ ಕಥಂಭಾವಾಕಾಂಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಾವ ರೀತಿ ಮಾಡಬೇಕೆಂದು ತಿಳಿಯುವ ಇಚ್ಛೆ. "ಯಜೇತ" ಇತ್ಯಾದಿ ವಿಧಿವಾಚಕಶಬ್ದಪ್ರಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಮೂರು ವಿಧ ಆಕಾಂಕ್ಷೆಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಯಜೇತ" ಎಂದ ಕೂಡಲೆ ಕಿಮ್, ಕೇನ ಮತ್ತು ಕಥಮ್ ಎಂಬ ಮೂರು ಆಕಾಂಕ್ಷೆಗಳು ಉಂಟಾಗುವುವು. ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಅಂಗಭೂತವಾದ ಕ್ರಿಯೆಗಳ ಆಕಾಂಕ್ಷೆಯು ಕಥಮಿವಾಕಾಡ್ಕ್ಷಾ.

**ಕಥಮಿವ ಕಥಂಭೂತ** (ವಿಂ) 1. ಎಂತಹ, ಯಾವ ರೀತಿಯ, 2. ಯಾವ ರೀತಿಯಾಗಿರುವ, ಯಾವ ಪ್ರಕಾರವಾಗಿರುವ. ಕಥಂ ಕಿ ಪ್ರಕಾರಂ ಭೂತಃ ಪ್ರಾಪ್ತಃ.

**ಕಥಯತ್ ಕಥಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಹೇಳುತ್ತಿರುವ, ನಿರೂಪಿಸುತ್ತಿರುವ, ವರ್ಣಿಸುತ್ತಿರುವ. ಕಥ (ವಾಕ್ಯಪ್ರಬಂಧ) + ಣಿಚ್ "ಘತ್" (೩-೨-೧೨೪). 2. ಸೂಚಿಸುತ್ತಿರುವ, ತಿಳಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಅಸ್ತಿತ್ವಂ ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿಃ ಸ್ಫುಟಮಥ ಕಥಯನ್ ಪಕ್ಷತೇಃ ಕಮ್ಭೇದಃ" ನೈಷಂ ೬-೧೩೨. 3. ತೋರಿಸಿ ಹೇಳುತ್ತಿರುವ, ನಿರ್ದೇಶಿಸಿ ತಿಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬). -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

**ಕಥಂಜಾತೀಯ ಕಥಂಜಾತೀಯ** (ವಿಂ) ಯಾವ ವಿಧದ? ಯಾವ ಬಗೆಯ? ಕಥಂಪ್ರಕಾರಃ "ಜೀತೀಯರ್" (೪-೩-೯೬). ಸ್ವಾರ್ಥಂ "ಕನ್". -ಜಾತೀಯಕಃ -ಜಾತೀಯಕಃ.

**ಕಥಂತರಾಮ್ ಕಥಂತರಾಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಹೇಗೆ? ಯಾವ ರೀತಿ? ಕಥಮ್ "ತರಪ್" (೪-೩-೫೭). "ಆಮುಃ" (೪-೪-೧೧). "ತಮಪ್" (೪-೩-೫೫). "ಆಮುಃ" (೪-೪-೧೧). -ತಮಾಮ್ -ತಮಾಮ್.

**ಕಥಾ ಕಥಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೇಳುವುದು, ನಿರೂಪಿಸುವುದು. ಕಥ (ವಾಕ್ಯಪ್ರಬಂಧ) "ಅಡ್" (೩-೩-೧೦೫). "ಕಥಾಪಿ ಕ್ವಚ್ಚ ಪಾಪಾನಾಮಲಮಶ್ರೇಯಸೇ ಯತಃ" ಮಾಘಂ ೨-೪೦. 2. ಪರಸ್ಪರ ಮಾತಾಡುವುದು, ಸಂಭಾಷಣೆ. "ಕಥಾಪ್ರಸಂಗೈಃ ಮಿಥಃ ಸಖೀಮುಖಾತ್ಕೃಣೋಽಪಿ ತನ್ವಯಾ ನಲನಾಮನಿ ಶ್ರುತೇ" ನೈಷಂ ೧-೩೫. 3. ಕಥೆ, ಕಲ್ಪಿತ ಕಥೆ, ಕಟ್ಟು ಕಥೆ. "ಕಥಾಚ್ಛಲೇನ ಬಾಲಾನಾಂ ನೈತಿತ್ವಾದಿಹ ಕಥ್ಯತೇ" ಹಿತೋಂ. 4. ತತ್ತ್ವ ನಿರ್ಣಯ ಅಥವಾ ವಾದಿವಿಜಯಕ್ಕಾಗಿ ಅನೇಕ ವಾದಿ ಪ್ರತಿವಾದಿಗಳು ಪೂರ್ವಪಕ್ಷಸಿದ್ಧಾಂತರೂಪವಾಗಿ ಯುಕ್ತಿಗಳಿಂದ ಆಡುವ ಮಾತು. ಇದು ವಾದ, ಜಲ್ಲ ಮತ್ತು



ವಿತಂಡಾ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ತತ್ತ್ವನಿರ್ಣಯವೇ ಪ್ರಧಾನವಾದ ಮಾತು “ವಾದ”. ಪರಸ್ಪರ ಜಯಾ ಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ಆಡುವ ಮಾತು “ಜಲ್ಪ”. ಸ್ವಮತ ಸ್ಥಾಪನೆಯಿಲ್ಲದೆ ಕೇವಲ ಪರಮತದೊಷಣೆ ಮಾಡುವುದು “ವಿತಂಡಾ” ಎನಿಸುವುದು.

**ಕಥಾನಕ ಕಥಾನಕ** (ನಂ) ಉಪಕಥೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೊಡ್ಡ ಕಥೆ. ಕಥಯತ್ಯತ್ರ “ಆನಕ:” ಬಾಹ್ಯಂ ।

**ಕಯಾಂತರ ಕಥಾಂತರ** (ನಂ) 1. ಕಥೆಯ ಮಧ್ಯ, ಮಾತಿನ ಮಧ್ಯ. ಕಥಾಽಯಾ ಅಂತರಮ್ । (ಅವ್ಯಂ) 2. ಬೇರೆ ಕಥೆ, ಬದಲಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಕಥೆ. ಅನ್ಯಾ ಕಥಾ ।

**ಕಥಾಪ್ರಸಂಗ ಕಥಾಪ್ರಸಂಗ** (ಪುಂ) 1. ಮಾತನಾಡುವ ಪ್ರಸಂಗ, ಮಾತಿನ ಸಂದರ್ಭ. ಕಥಾಽಯಾ: ಪ್ರಸಂಗ: । “ಕಥಾಪ್ರಸಂಗೇಷು ಮಿಥ: ಸಖೀಜನಾತ್ಮನೋಽಪಿ ತನ್ವಯಾ ನಲನಾಮನಿ ಶ್ರುತೇ” ನೆಪಂ ೧-೩೫ । 2. ವಿಷಯದ್ಯ, ಹಾವಾಡಿಗ. “ಕಥಾಪ್ರಸಂಗೇನ ಜನೇಹ ದಾಹತಾದನುಸ್ಮೃತಾ ಖಂಡಲಸುನು ವಿಕ್ರಮ:” ಕಿರಾಂ ೧-೨೪ ।

**ಕಥಾಮುಖ ಕಥಾಮುಖ** (ನಂ) ಕಥೆಯ ಪ್ರಾರಂಭ, ಪೀಠಿಕಾ ಪ್ರಕರಣ, ಪ್ರಸ್ತಾವನೆ. ಕಥಾಽಯಾ ಆಮುಖಮ್ ।

**ಕಥಾರಂಭ ಕಥಾರಂಭ** (ಪುಂ) ಕಥೆಯ ಉಪಕ್ರಮ, ಕಥೆಯನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸುವಿಕೆ. ಕಥಾಽಯಾ ಆರಂಭ: ।

**ಕಥಾಲಾಪ ಕಥಾಲಾಪ** (ಪುಂ) 1. ಭಾಷಣ, ಮಾತನಾಡುವಿಕೆ, 2. ಸಂಭಾಷಣೆ. ಕಥಾಽಯಾ ಆಲಾಪ: ।

**ಕಥಾವತಾರ ಕಥಾವತಾರ** (ಪುಂ) 1. ಪೀಠಿಕೆ, ಉಪೋದ್ಘಾತ, ಪ್ರಸ್ತಾವನೆ. ಕಥಾಽಯಾ ಅವತಾರ: ಯತ್ರ । 2. ಒಂದು ರೂಪ ದಿಂದ ಕಥೆಯು ಹುಟ್ಟುವಿಕೆ, ಕಥೆಯ ಸೃಷ್ಟಿ. ಕಥಾಽಯಾ ಅವತಾರ: ।

**ಕಥಾವಲಿ ಕಥಾವಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಥೆಗಳ ಸಂಗ್ರಹ, ಕಥೆಗಳ ಮಾಲೆ, ಅನೇಕ ಕಥೆಗಳ ಗುಂಪು. ಕಥಾನಾಮಾವಲಿ: । -ಸಂಪ್ರಹ: -ಸಂಗ್ರಹ: ।

**ಕಥಿತ ಕಥಿತ** (ನಂ) 1. ಕಥನ, ಹೇಳುವಿಕೆ. ಕಥ (ವಾಕ್ಯ-ಪ್ರಬಂಧ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ “ಕ್ತ:” (೩-೩-೧೧೪) । “ಪೂರ್ವವೃತ್ತ-ಕಥಿತ: ಪುರಾವಿದ: ಸಾನುಜ: ಪಿತೃಸಖಸ್ಯ ರಾಘವ: । ಉಹ್ಯಮಾನ ಇವ ವಾಹನೋಚಿತ: ಪಾದಚಾರಮಪಿ ನ ವ್ಯಭಾವಯತ್” ರಘುಂ ೧೧-೧೦ । (ವಿಂ) 2. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ (ಮನುಷ್ಯ). ಕಥ + ಣಿಚ್ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) । “ಅಥ ಕಿಲ ಕಥಿತೇ ಸಖಾಭಿರತ್ರ ಕ್ಷಣಮಪರೇವ ಸಸಂಭ್ರಮಾ ಭವಂತಿ” ಮಾಘಂ ೭-೩೬ । 3. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ (ವಿಷಯ). “ಕಥಿತಮಪಿ ನರೇಂದ್ರ: ಶಂಸಯಾಮಾಸ ಹಂಸಮ್” ನೆಪಂ ೩-೧೩೫ ।

**ಕಥಿತಪದ ಕಥಿತಪದ** (ನಂ) ಪುನಃ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ ಪದವುಳ್ಳ ವಾಕ್ಯ, ಪುನರುಕ್ತವಾದ ಪದವುಳ್ಳ ವಾಕ್ಯ. ಕಥಿತಂ ಪದಂ ಯತ್ರ । -ಪದತಾ -ಪದತಾ, -ಪದತ್ವಮ್ -ಪದತ್ವಮ್. ಪುನರುಕ್ತಿ ರೂಪವಾದ ವಾಕ್ಯದೋಷ. ಇದೊಂದು ಕಾವ್ಯದೋಷ. ವಿಕಾರ್ಥಬೋಧಕಶಬ್ದವನ್ನು ಒಂದೇ ವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ಪುನಃ ಹೇಳುವುದು (ಒಂದೇ ಅರ್ಥವನ್ನು ಅದೇ ಪದದಿಂದ ಮತ್ತೆ ಹೇಳುವುದು) ಪುನರುಕ್ತಿರೂಪವಾದ ದೋಷವಾಗುವುದು. ಇಂತಹ ಕಡೆ “ಕಥಿತಪದತಾ” ರೂಪವಾದ ಕಾವ್ಯದೋಷ ವುಂಟಾಗುವುದು. “ಅಧಿಕನ್ಯೂನಕಥಿತಪದತಾಹತವೃತ್ತತಾ:” ಸಾಂ ದಂ ೭-೫ । “ರತೀಲಿಲಾಶ್ರಮಂ ಭಿಂತೇ ಸಲೀಲಮನಿಲೋ ಬಹನ್” ಎಂಬಲ್ಲಿ “ಲೀಲಾ” ಪದವು ಪುನರುಕ್ತವಾಗಿರುವುದ ರಿಂದ ಇದು ವಾಕ್ಯದೋಷ.

**ಕಥಿತವತ್ ಕಥಿತವತ್** (ವಿಂ) ಹೇಳಿದವನು, ಮಾತಾಡಿದವನು, ನಿರೂಪಿಸಿದವನು. ಕಥ (ವಾಕ್ಯಪ್ರಬಂಧ) + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತವತು:” (೩-೨-೧೦೨) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಕ್ತೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ವತೀ -ವತೀ.

**ಕಥೋದ್ಘಾತ ಕಥೋದ್ಘಾತ** (ಪುಂ) 1. ಕಥೆಯ ಪ್ರಾರಂಭ. ಕಥಾಽಯಾ ಉದ್ಘಾತ: । “ಆಕುಮಾರಕಥೋದ್ಘಾತಂ ಶಾಲಿಗೋಪ್ಯೋ ಜಗುರ್ಯಶ:” ರಘುಂ ೪-೨೦ । 2. (ನಾಟಕದಲ್ಲಿ) ಆಮುಖದ ಒಂದು ಅಂಗ, ಪ್ರಸ್ತಾವನೆಯ ಮೂರು ವಿಧ ಅಂಗಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. ಆಮುಖಕ್ಕೆ ಕಥೋದ್ಘಾತ:, ಪ್ರವರ್ತಕಮ್ ಮತ್ತು ಪ್ರಯೋಗಾತಿಶಯ: ಎಂದು ಮೂರು ಅಂಗಗಳು. ತನ್ನ ಕಥಾ ಸಂದರ್ಭಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದಂತೆ ಅದಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದ ಸೂತ್ರ ಧಾರಣ ವಾಕ್ಯವನ್ನು ಅಥವಾ ಅದರ ಅರ್ಥವನ್ನು ಮುಂದಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಪಾತ್ರವು ಪ್ರವೇಶಿಸುವ ಕಡೆ “ಕಥೋ-ದ್ಘಾತ:” ಎಂಬ ಆಮುಖಾಂಗ. “ಸ್ವೇತಿವೃತ್ತಸಮಂ ವಾಕ್ಯಮರ್ಥಂ ವಾ ಯತ್ರ ಸೂತ್ರಣ: । ಗುಹೀತ್ವಾ ಪ್ರವಿಶೇತ್ಪಾತ್ರಂ ಕಥೋದ್ಘಾತ: ಸ ಉಚ್ಯತೇ” ದಶರೂಂ । ಸೂತ್ರಧಾರ:- “ಕ್ರೂರಗ್ರಹ: ಸಕೇತುಃ ಚಂದ್ರಮಸಂ-ಪೂರ್ಣಮಂಡಲಮಿದಾನಿಮ್ । ಅಭಿಭವಿತುಮಿच्छತಿ ಬಲಾತ್.....” (ಇತ್ಯರ್ಥವಿತೇ) (ನೆಪಂ) “ಆ: ಕ ಣ ಮಯಿ ಸ್ಥಿತೇ ಚಂದ್ರಮಭಿಭವಿತುಮಿच्छತಿ ಬಲಾತ್?” ಸೂತ್ರಧಾರ:- “.....ರಕ್ಷತೇನಂ ತು ಬುಧಯೋಗ:” ಮುद्रಾಂ ೧ ।

**ಕಥ್ಯ ಕಥ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಹೇಳಬಹುದಾದ. 2. ಹೇಳಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ಹೇಳಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. ಕಥ (ವಾಕ್ಯಪ್ರಬಂಧ) + ಣಿಚ್ “ಯತ್” (೩-೧-೯೭) ।

**ಕಥ್ಯಮಾನ ಕಥ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) ಹೇಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ನಿರೂಪಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಕಥ (ವಾಕ್ಯಪ್ರಬಂಧ) + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ “ಶಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪) ।



ಕದ ಕದ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೇಘ. ಕಂ ವಾರಿ ದದಾತಿ—  
ಹು ದಾಖ್ (ದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೪)। (ವಿಂ) 2. ನೀರನ್ನು  
ಕೊಡುವ. 3. ಸುಖವನ್ನು ಕೊಡುವ. ಕಂ ಜಲಂ ಸುಖಂ ವಾ  
ದದಾತಿ।

ಕದಗ್ನಿ ಕದಗ್ನಿ (ಪುಂ) ಮಂದವಾದ ಅಗ್ನಿ, ಶಕ್ತಿಕುಂದಿದ  
ಅಗ್ನಿ. ಕುತಿಸಿತಶ್ವಾಸಾವಗ್ನಿಶ್ವ। ಕೋ: "ಕತ್" ಆದೇಶ:  
(೬-೩-೧೦೧)।

ಕದಧವನ್ ಕದಧವನ್ (ಪುಂ) ಕೆಟ್ಟದಾರಿ, ಸರಿಯಲ್ಲದ ಮಾರ್ಗ.  
ಕುತಿಸಿತೋಷ್ವಾ — ಕೋ: "ಕತ್" (೬-೩-೧೦೧)।

ಕದನ ಕದನ (ನಂ) 1. ವಧೆ, ಸಂಹಾರ. ಕೊಲ್ಲುವಿಕೆ. ಕದ  
(ವೈಕಲ್ಯ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ವ್ಯಾಪಾ-  
ದನಶ್ಚ ಹಿಸಾ ಚ ಕದನಂ ಸಂಕುಲೋ ವಘ:" ವೆಂಜಂ। "ನಿಗ್ರಂಥನಂ  
ಪ್ರಮಥನಂ ಕದನಂ ನಿಬ್ರಹ್ಮಣಮ್" ಅಭಿಂ ಚಿಂ। 2. ಪಾಪ.  
3. ಖೇಡಿಸುವಿಕೆ, ಹಿಂಸಿಸುವಿಕೆ. ಕದ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್"।  
"ಕದನಂ ಮರ್ದಪಾಪಯೋ:" ಮೇದಿಂ। 4. ಯುದ್ಧ. ಅಧಿಂ  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ಇತಿ ತೇ ಭರ್ತೃನಿರ್ದೇಶಮಾದಾಯ  
ಶಿರಸಾಽಽದೃತಾ:। ತಥಾ ಪ್ರಜಾನಾಂ ಕದನಂ ವಿದಧು: ಕದನಪ್ರಿಯಾ:"  
ಭಾಗಂ ೭-೨-೧೩।

ಕದನ ಕದನ (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಅನ್ಯ. ಕೆಟ್ಟ ಆಹಾರ.  
ಕುತಿಸಿತಮಗ್ನಮ್—ಕೋ: "ಕತ್" (೬-೩-೧೦೧)। (ವಿಂ) 2.  
ಕೆಟ್ಟ ಆಹಾರ ತಿನ್ನುವ. ಕದನಮಸ್ತಸ್ಯ "ಅಚ್"  
(೫-೩-೧೨೭)। ಹೀಗೆಯೇ ಕದನವ: ಕದನಶ್ಚ, ಕದನ:  
ಕದನಶ್ಚ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕದಪತ್ಯ ಕದಪತ್ಯ (ನಂ) ಕೆಟ್ಟ ಮಗ, ದುಷ್ಟನಾದ ಮಗ,  
ದುರಾಚಾರದ ಮಗ. ಕುತಿಸಿತಮಪತ್ಯಮ್ — ಕೋ: "ಕತ್"  
(೬-೩-೧೦೧)।

ಕದಂಬ ಕದಂಬ (ಪುಂ) 1. ನೀಪವೃಕ್ಷ, ಉತ್ತಮ ಜಾತಿಯ  
ಈಶಲಮರ. 2. ಸಾಸುವೆ. ಕದ (ವೈಕಲ್ಯ) "ಅಮ್ಬಕ್"  
(೩ಂ ೪-೮೨)। "ತ್ವತ್ಸಂಪರ್ಕಾತ್ಪುಲಕಿತಮಿವ ಪ್ರೊಡ್ವುಷೈ:  
ಕದಂಬೈ:" ಮೇಘಂ ೧-೨೭। (ನಂ) 3. ಸಮೂಹ. ಗುಂಪು.  
"ಅಸ್ಯಾ: ಖಲು ಗ್ರನ್ಥಿನಿಬದ್ಧಕೇಶಮಲ್ಲೀಕದಂಬಪ್ರತಿಬಿಂಬ-  
ವೇಷಾತ್" ನೆಂಪಂ ೭-೮೮। "ಕದಂಬಂ ನಿಕುರ್ಮೇ ಸ್ಯಾಸ್ತೀಪ-  
ಸರ್ಪಪಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ: ಸಂಜ್ಞಾಪಾಂ ಸ್ವಾರ್ಥೇ ವಾ "ಕ:"।  
ಕದಂಬಕ: ಕದಂಬಕ: 1. ನೀಪವೃಕ್ಷ. 2. ಸಮೂಹ.  
"ಪೃಥುಕದಂಬಕದಂಬಕರಾಜಿತಮ್" ಕಿರಾಂ ೫-೯। 3. ಸಾಸುವೆ.

ಕದರ ಕದರ (ಪುಂ) 1. ಬಿಳಿಗನ್ನಲಿಮರ. 2. ಗರಗಸ.  
3. ಕದರೂರೋಗ. ದೃಣಾತಿ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।  
ಕಸ್ಯ ದರ: 4. ವಸ್ತ್ರದ ಛಾವಣಿ, ಬಣ್ಣಬಣ್ಣದ ಬಟ್ಟೆ

ಗಳಿಂದ ಕಟ್ಟಿದ ವಿತಾನ. "ಚಂದ್ರೋದಯ ಉಲೋಚ: ಕದರಶ್ಚಂದ್ರಾ-  
ತಪೋ ವಿತಾನೋಸ್ತೀ" ವೆಂಜಂ।

ಕದರ್ಥ ಕದರ್ಥ (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಅರ್ಥ, ದುಷ್ಟವಾದ ಅರ್ಥ.  
2. ಕೆಟ್ಟ ವಸ್ತು, ಕೆಟ್ಟ ಪದಾರ್ಥ. 3. ಕೆಟ್ಟ ಪ್ರಯೋಜನ,  
ಕೆಟ್ಟ ಫಲ. ಕುತಿಸಿತೋರ್ಥ: — ಕೋ: "ಕತ್" (೬-೩-೧೦೧)।

ಕದರ್ಥನ ಕದರ್ಥನ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೆಡಿಸುವಿಕೆ, ಪ್ರಯೋಜನ  
ವಿಲ್ಲದಂತೆ ಮಾಡುವಿಕೆ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ — ನಾ — ನಾ. 2. ಖೇಡೆ  
ಹಿಂಸೆ, ತೊಂದರೆ. "ದೇವೇಷಿ ತುಮ್ಯಂ ಕಿಯತೀ: ಕದರ್ಥನಾ:  
ಸುರೇಷು ರಾಗಪ್ರಸವಾವಕೇಶಿನೀ" ನೆಂಪಂ ೯-೧೩೧।

ಕದರ್ಥನೀಯ ಕದರ್ಥನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಖೇಡಿಸಲು ಅರ್ಹ  
ವಾದ. 2. ಖೇಡಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ಖೇಡಿಸಲ್ಪಡುವ.  
"ದಿಗೀಶ್ವರಾರ್ಥಂ ನ ಕಥಂಚನ ತ್ವಯಾ ಕದರ್ಥನೀಯಾಸ್ಮಿ ಕೃತೋಽಯ-  
ಮಜ್ಜಲಿ:" ನೆಂಪಂ ೯-೬೯। 4. ಕೆಡಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ.  
5. ಕೆಡಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 6. ಕೆಡಿಸಲ್ಪಡುವ.

ಕದರ್ಥಿತ ಕದರ್ಥಿತ (ವಿಂ) 1. ಕೆಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಯೋಜನ  
ವಿಲ್ಲದಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕುತಿಸಿತೋರ್ಥ: ಕದರ್ಥ:। ಕದರ್ಥ:  
ಕೃತ: — ತತ್ಕರೋತಿ ತದಾಚ್ಛೇ (ಗಂ ೨೦೪)। ಕದರ್ಥ + ಣಿಚ್  
"ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಮೃಷ್ಠಚಂದನವಿಶೇಷಕಭಕ್ತಿಭ್ರಷ್ಟ-  
ಭೂಷಣಕದರ್ಥಿತಮಾಲ್ಯ:" ಮಾಘಂ ೧೦-೮೪। 2. ಖೇಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿಮಿಲನಸ್ಪಷ್ಟವಿಲೋಕನಾಭ್ಯಾಂ ಕದರ್ಥಿತಸ್ತಾ,  
ಕಲಯನ್ ಕಡಾಕ್ಷೆ:" ನೆಂಪಂ ೬-೨೨।

ಕದರ್ಥೀಕೃತ ಕದರ್ಥೀಕೃತ (ವಿಂ) ವೃಥಾಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕುತಿಸಿತೋರ್ಥ: ಕದರ್ಥ:  
— ಅಕದರ್ಥ: ಕದರ್ಥ: ಕೃತ: "ಚಿವ:" (ವಾಂ ೫-೪-೫೦)।  
ದೀರ್ಘ: (೭-೪-೩೨)। "ಕೇಶಿ: ಕದರ್ಥೀಕೃತವೀರ್ಯಸಾರ: ಕಚ್ಚಿತಸ  
ಎವಾಸಿ ಧನಜ್ಜಯಸ್ತವಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೪೭।

ಕದರ್ಥ್ಯಮಾನ ಕದರ್ಥ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಕೆಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ,  
ವೃಥಾಪಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಖೇಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ,  
ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಕದರ್ಥ: ಕ್ರಿಯಮಾಣ: — ಕದರ್ಥ + ಣಿಚ್  
ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಶರೇರಜಸ್ತಂ ಕುಸುಮಾ-  
ಯುಧಸ್ಯ ಕದರ್ಥ್ಯಮಾನಸ್ತರುಣಿ ತ್ಯದರ್ಥೇ" ನೆಂಪಂ ೮-೭೫।

ಕದರ್ಥ ಕದರ್ಥ (ವಿಂ) 1. ಕೃಪಣ, ಜಿಪ್ಪಣ, ಲೋಭ.  
ಕುತಿಸಿತ: ಅರ್ಥ: ಸ್ವಾಮಿ — ಕೋ: "ಕತ್" (೬-೩-೧೦೧)।  
"ಸ್ತೇನಗಾಯನಯೋಶ್ಚಾನ್ತಂ ತಕ್ಷಣೋ ವಾರ್ಧುಷಿಕಸ್ಯ ಚ। ದೀಕ್ಷಿತಸ್ಯ  
ಕದರ್ಥಸ್ಯ ಬದ್ಧಸ್ಯ ನಿಗಡಸ್ಯ ಚ" ಮನುಂ ೪-೨೧೦।  
2. ನೀಚ, ಕೀಳುತನದ, ತುಚ್ಛ, ನಿಶ್ಕೃಷ್ಣ.

ಕದಲ ಕದಲ (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಾಳೆಯಗಿಡ. ಕದ (ವೈಕಲ್ಯ)  
"ಕಲ:" (೩ಂ ೧-೧೦೬)। "ಋದ್ಧಯ ಮೃಗದೃಶೋ ಕದಲಸ್ಯ



ಕಾಣ್ಡೆ "ಅಮಠಂ ೧೩೬. (ನಂ) 2. ಬಾಳೆಯ ಹಣ್ಣು. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್". ಕವಲಕ: ಕದಳಕ: ಗೌರಾಂ "ಜಿಫ" (೪-೧-೪೧). ಕವಲಿ ಕದಳಿ.

ಕವಲಾ ಕದಳಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಾಲ್ಮಲೀವೃಕ್ಷ, ಭೂರುಗದಮರ.

ಕದಲಿಕಾ ಕದಳಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪತಾಕೆ. ಧ್ವಜ. 2. ಬಾಳೆಯಗಿಡ. ಕದಲ್ಯೇವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್". "ತಂ ಸ ದ್ವಿಪೇಂದ್ರತುಲಿತಾತುಲತುಙ್ಗಶೃಙ್ಗಮಮ್ಯುಲ್ಲಸತ್ಕದಲಿಕಾವನರಾಜಿ-ಮುಚ್ಚೆ:" ಮಾಘಂ ೪-೨. 3. ಧ್ವಜ, ಪತಾಕೆ. "ಕದಲಿ ಹರಿಣಾಂತರೇ. ರಮಾಭಾಂ ವೈಜಯಂತೀಂ ಚ" ಹೇಮಂ.

ಕದಲಿ ಕದಳಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ, ಶ್ರೇಷ್ಠ ವಾದ ಚರ್ಮವುಳ್ಳ ಚಿಗರಿ. ಅಸನಕ್ಕೆ ಉಪಯೋಗಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಕಪ್ಪುಚುಕ್ಕೆಯ ಚರ್ಮವುಳ್ಳ ಜಿಂಕೆ. 2. ಬಾಳೆಯ ಗಿಡ. ಕೇನ ವಾಯುನಾ ದಲ್ಯತೇ—ದಲ (ವಿಶರಣೆ) "ಏ:" (೩-೩-೧೨೪). "ಇತ್ಯಸ್ಯ ತೇನ ಕದಲಿರ್ಮಧುಶ್ರೀ: ಪ್ರಭಾವಿನಿ ಕೇತನವೈಜಯಂತೀ:" ಮಾಘಂ ೬-೬೯. 3. ಧ್ವಜ, ಪತಾಕೆ. "ಕದಲಿ ಹರಿಣಾಂತರೇ. ರಮಾಭಾಂ ವೈಜಯಂತೀಂ ಚ" ಹೇಮಂ.

ಕದಾ ಕದಾ (ಅವ್ಯಂ) ಯಾವಾಗ?, ಯಾವ ಕಾಲದಲ್ಲಿ? ಯಾವ ಸಮಯದಲ್ಲಿ? ಕಿಮ್ "ದಾ" (೪-೩-೧೪). ಕಿಮ: "ಕ:" (೭-೨-೧೦೩). "ಕದಾ ಕಹಿ ವಾ ಭುಕ್ತೇ ಭೋಕ್ಯಸೇ ಭೋಕ್ತಾ ವಾ" ಸಿಂ ಕೊಂ. "ಜಾತಿವ್ಯವಸ್ಥಾಪನಾಂ ಚ ಸಾಮ್ಯಮೇಷಾಂ ಮಯಾ ಸಹ. ಮತ್ಪ್ರಭುತ್ವಫಲಂ ಬ್ರಹ್ಮಿ ಕದಾ ಕಿ ತದ್ಭವಿಷ್ಯತಿ" ಹಿತೋಂ ೧-೪೭. ಈ ಪದದೊಡನೆ ಚನ, ಚಿತ್, ಅಪಿ ಇವುಗಳು ಸೇರಿ ಅನಿಶ್ಚಿತಾರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುವು. ಕದಾಚನ ಕದಾಚನ. ಯಾವಾಗಲೂ, ಯಾವ ಸಮಯದಲ್ಲೂ. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ವಿಪ್ರಸ್ತೀರ್ಯೇನ ನಿಯತಕಾಲಮುಪ-ಸ್ಥೇತು. ಕಾಯತ್ರೇದಶಿಕಾಮ್ಯಾಂ ವಾ ನ ಪಿತ್ರೇಣ ಕದಾಚನ" ಮನುಂ ೨-೪೮. ಕದಾಚಿತ್ ಕದಾಚಿತ್. ಯಾವುದೋ ಒಂದು ಸಮಯದಲ್ಲಿ, ಯಾವುದೋ ಒಂದು ಕಾಲದಲ್ಲಿ. "ಕಾಂಡ್ಯಮಾನೇನ ಕಠಂ ಕದಾಚಿದ್ವಿದ್ಯದ್ವಿಪೇನೋನ್ಮಥಿತಾ ತ್ವಗಸ್ಯ" ರಘುಂ ೨-೩೭.

ಕದುಣ ಕದುಣ (ನಂ) 1. ಸ್ವಲ್ಪ ಬಿಸಿ, ಸ್ವಲ್ಪ ಬೆಚ್ಚಗಿರುವಿಕೆ, ಉಗುರುಬೆಚ್ಚಗಿರುವಿಕೆ. ಇಷಡುಣಮ್ ಕೋ: "ಕತ್" (೬-೩-೧೦೭). (ವಿಂ) 2. ಸ್ವಲ್ಪ ಬಿಸಿಯಾಗಿರುವ, ಉಗುರುಬೆಚ್ಚಗಿರುವ. "ತ್ವಯಾ ವಿಧೇಯಾ ನ ಗಿರೋ ಮದರ್ಥಿ: ಕ್ರುಧಾ ಕದುಣೋ ಹೃದಿ ನೈಷಧಸ್ಯ" ನೈಪಂ ೩-೯೪. 3. ಬಿರುಸಾದ, ಚುರುಕಾದ, ಮನೋಮಯಿಸುವ (ಮಾತು). "ನಿರಸ್ಯ ದ್ವತ: ಸ ತಥಾ ವಿಸರ್ಜಿತ: ಪ್ರಿಯೋಕ್ತಿರಪ್ಯಾಹ ಕದುಣಮಕ್ಷರಮ್" ನೈಪಂ ೯-೩೮.

ಕದ್ರು ಕದ್ರು (ಪುಂ) 1. ಹೊಂಬಣ್ಣ, ಹಳದಿಬಣ್ಣ. ಕದಿ (ಆಹ್ಲಾನೇ ರೋದನೇ ಚ) "ಕ್ರು" (೩ಂ ೧-೩೭). 2. ಚಿತ್ರ ವರ್ಣ. (ವಿಂ) 3. ಹೊಂಬಣ್ಣದ. 4. ಚಿತ್ರವರ್ಣದ.

ಕದ್ರುಣ ಕದ್ರುಣ (ವಿಂ) ಹೊಂಬಣ್ಣವುಳ್ಳ, ಹಳದಿಬಣ್ಣವುಳ್ಳ. ಕದ್ರುಣಸ್ಯ "ನ:" (೪-೨-೧೦೦).

ಕದ್ರು ಕದ್ರು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಕ್ಷಬ್ರಹ್ಮನ ಮಗಳು, ಕಶ್ಯಪನ ಪತ್ನಿ, ನಾಗಮಾತೆ, ಸರ್ಪಗಳ ತಾಯಿ. ಕದ್ರು "ಕಡ್" (೪-೧-೭೨). "ಕದ್ರುಶ್ಚ ಮನುಜವ್ಯಾಘ್ರ ದಕ್ಷಕನ್ಯೇವ ಭಾರತ" ಮಾಂ ಆದಿಂ ೬೬-೧೩. "ಶೇಷೋನ್ಮತೋ ವಾಸುಕಿಶ್ಚ ತಕ್ಷಕಶ್ಚ ಭುಜಙ್ಗಮ:। ಕರ್ಮಶ್ಚ ಕುಲಿಕಶ್ಚೇವ ಕಾದ್ರವೇಯಾ: ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ:" ಮಾಂ ಆದಿಂ ೬೬-೪೧. [ಗರುಡನ ತಾಯಿ ವಿನತೆಯೂ ಕದ್ರುವೂ ಸವತಿಯರಾದುದರಿಂದ ತಮ್ಮ ತಮ್ಮ ಸೌಂದರ್ಯದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಇಬ್ಬರಿಗೂ ಹೋರಾಟವಿದ್ದಿತು. ಇವರಿಬ್ಬರ ಸೌಂದರ್ಯದಿಂದ ಸಂತುಷ್ಟನಾದ ಕಶ್ಯಪನು ಇಬ್ಬರಿಗೂ ವರವನ್ನು ಕೊಡುವುದಾಗಿ ಹೇಳಿದಾಗ ಕದ್ರುವು ಬಲಶಾಲಿಗಳಾದ ಸಾವಿರ ಸರ್ಪಗಳು ಮಕ್ಕಳಾಗಬೇಕೆಂದೂ ವಿನತೆಯು ಅವಳ ಮಕ್ಕಳಿಗಿಂತಲೂ ಬಲಿಷ್ಠರಾದ ಇಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳಾಗಬೇಕೆಂದೂ ವರಗಳನ್ನು ಕೇಳಿಕೊಳ್ಳುವರು. ಮಾಂ ಆದಿಂ ೧೬. ಕದ್ರುವಿಗೆ ಶೇಷ ಅನಂತ ವಾಸುಕಿ ತಕ್ಷಕ ಮುಂತಾದ ಸಾವಿರ ಮಕ್ಕಳಾಗುವರು. ವಿನತೆಗೆ ಅರುಣ ಮತ್ತು ಗರುಡ ಇವರಿಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳು ಹುಟ್ಟುವರು. ಕದ್ರು ಮತ್ತು ವಿನತೆಯರಿಗೆ ಒಂದು ದಿನ ಉಚ್ಚೈಶ್ರವಸ್ವಿನ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಪಂದ್ಯವುಂಟಾಗಿ ವಿನತೆಯು ಸೋತು ಕದ್ರು ವಿಗೆ ದಾಸಿಯಾಗುವಳು. ವಿನತೆಯ ಮಗನಾದ ಗರುಡನು ಕದ್ರುವಿನ ಮಾತಿನಂತೆ ದೇವಲೋಕದಿಂದ ಅಮೃತವನ್ನು ತಂದು ಸರ್ಪಗಳಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು ವಿನತೆಯನ್ನು ದಾಸ್ಯದಿಂದ ಬಿಡಿಸುವನು.] ಮಾಂ ಆದಿಂ ೩೪.

ಕದ್ರುಪುತ್ರ ಕದ್ರುಪುತ್ರ, -ಸುತ -ಸುತ (ಪುಂ) ಸರ್ಪಗಳು, ಕದ್ರುವಿನ ಮಕ್ಕಳು.

ಕದ್ರುದ ಕದ್ರುದ (ವಿಂ) ನಿಂದ್ಯವಾದ ಮಾತುಗಳನ್ನಾಡುವವನು, ಕೆಟ್ಟ ಮಾತುಗಳನ್ನಾಡುವವನು. ಕ್ರುತಿಸಿತಂ ವದತಿ — ಕೋ: "ಕತ್" (೬-೩-೧೦೨). "ಗರ್ಹವಾದಿ ತು ಕದ್ರುದ:" ಅಮಂ. "ಯೇನ ಜಾತಂ ಪ್ರಿಯಾಪಾಯೇ ಕದ್ರುದಂ ಹಂಸಕೋಕಿಲಮ್" ಭट्टಿಂ ೬-೭೫.

ಕನಕ ಕನಕ (ಪುಂ) 1. ಮುತ್ತುಗದ ಗಿಡ. ಕನತಿ—ಕನಿ (ದೀಪ್ತಿಕಾಂತಿಗತಿಃ) "ಕುನ್" (೩ಂ ೪-೩೪). 2. ವಕುಳ ವೃಕ್ಷ, ಪವಳದ ಗಿಡ. 3. ದತ್ತೂರಿ ಗಿಡ. 4. ಸಂಪಿಗೆ ಮರ. 5. ಒಂದು ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ. 6. ಕೆಂಗಾಂಚಾಳ ಗಿಡ. (ನಂ) 7. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. "ವರಣ: ಕನಕಸ್ಯ



ಮಾನಿನಿ ದಿವಮಕ್ಷಾದಮರಾದ್ರಿರಾಗತಾಮ್" ನೆಪಂ ೨-೮೬.  
"ಕನಕಂ ಹೇಮಿನಿ ಪುನಿ ಸ್ಯಾತ್ ಕಿಶುಕೇ ನಾಗಕೇಸರೇ | ವತ್ತೂ  
ಕಾಶ್ವನಾರೆ ಚ ಕಾಲೋ ಚಮ್ಪಕೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ |

ಕನಕಕಾರ ಕನಕಕಾರ (ಪುಂ) ಚಿನ್ನದ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು,  
ಅಕ್ಕಸಾಲಿಗ. ಕನಕಂ ಕರೋತಿ - ಕು ಕೃ (ಕರಣ) "ಅಙ್"  
(೩-೨-೧) |

ಕನಕಕ್ಷಾರ ಕನಕಕ್ಷಾರ (ಪುಂ) ಟಂಕಣ, ಬಿಳಿಗಾರ.  
ಕನಕಸ್ಯ ದ್ರಾವಣಾಯ ಕ್ಷಾರಃ |

ಕನಕದಂಡ ಕನಕದಂಡ (ನಂ) ರಾಜನ ಭಕ್ತಿ. ಕನಕಸ್ಯ  
ದಂಡೋಽಸ್ಯ |

ಕನಕಧ್ವಜ ಕನಕಧ್ವಜ (ಪುಂ) ದೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.  
"ದೀರ್ಘಬಾಹುರ್ಮಹಾಬಾಹುರ್ವ್ಯೂಢಿರಾಃ ಕನಕಧ್ವಜಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ  
೧೩೧-೧೪ |

ಕನಕಪತ್ರ ಕನಕಪತ್ರ (ನಂ) ಪತ್ರಾಕರದ ಒಂದು ಚಿನ್ನದ  
ಕರ್ಣಾಭರಣ, ಚಿನ್ನದ ಲೋಲಾಕು. ಕನಕನಿರ್ಮಿತಂ  
ಪತ್ರಮ್ |

ಕನಕಮಯ ಕನಕಮಯ (ವಿಂ) ಸುವರ್ಣಮಯವಾದ,  
ಚಿನ್ನದಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ. ಕನಕಸ್ಯ ವಿಕಾರಃ "ಮಯ್"  
(೪-೩-೧೪೩) | "ವಾತ್ಯಾಭಿವಿವೃತಿ ವಿವೃತಿನಃ ಸಮಂತಾ-  
ದಾಧತ್ತೇ ಕನಕಮಯಾತಪತ್ರಲಕ್ಷ್ಮೀಮ್" ಕಿರಾಂ ೫-೩೯ |

ಕನಕಸೂತ್ರ ಕನಕಸೂತ್ರ (ನಂ) 1. ಚಿನ್ನದ ತಂತಿ. ಕನಕ-  
ನಿರ್ಮಿತಂ ಸೂತ್ರಮ್ | 2. ಚಿನ್ನದ ಉಡುದಾರ, ಚಿನ್ನದ ಸರ.  
"ಕಾಕ್ಯಾ ಕನಕಸೂತ್ರೇಣ ಕೃಷ್ಣಸರ್ಪೋ ನಿಪಾತಿಸ್ತಃ" ಹಿತೋಂ  
೨-೧೨೦ |

ಕನಕಾಚಲ ಕನಕಾಚಲ (ಪುಂ) 1. ಸುಮೇರುಪರ್ವತ,  
ಹೇಮಾದ್ರಿ, ಚಿನ್ನದಬೆಟ್ಟ. ಕನಕಮಯೋಽಚಲಃ | 2. ದಾನ  
ವಾಗಿ ಕೊಡಲ್ಪಡುವ ಪರ್ವತಾಕರದ ದ್ರವ್ಯ, ದಾನವಾಗಿ  
ಕೊಡಲ್ಪಡುವ ಹತ್ತು ಪರ್ವತಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. ದ್ರವ್ಯಗಳನ್ನು  
ಪರ್ವತದಂತೆ ಮಾಡಿ ಕಾಲವಿಶೇಷಗಳಲ್ಲಿ ಅವುಗಳನ್ನು  
ದಾನವಾಗಿ ಕೊಡುವ ಪದ್ಧತಿಯುಂಟು. ಈ ಪರ್ವತ  
ಗಳು ಹತ್ತು ವಿಧಃ (1) ಧಾನ್ಯಶಿಲಃ, (2) ಲವಣಾಚಲಃ,  
(3) ಗುಡಾಚಲಃ, (4) ಹೇಮಪರ್ವತಃ, (5) ತಿಲಶಿಲಃ,  
(6) ಕಾರ್ಪಾಸಪರ್ವತಃ, (7) ಧೃತಶಿಲಃ, (8) ರತ್ನಶಿಲಃ,  
(9) ರಾಜತಶಿಲಃ ಮತ್ತು (10) ಶರ್ಕರಾಚಲಃ | ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ |

ಈ ದಾನಗಳನ್ನು ಮಾಡುವ ಕಾಲಃ ಅಯನ (ದಕ್ಷಿಣಾ  
ಯನ ಮತ್ತು ಉತ್ತರಾಯಣ ಪುಣ್ಯಕಾಲಗಳು), ವಿಷು  
ಪುಣ್ಯಕಾಲ (ಚಿತ್ರವಿಷು ಮತ್ತು ತುಲಾವಿಷು), ವೃಶ್ಚಿ  
ಪಾತ, ಸಾಯಂಕಾಲ, ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷದ ತೃತೀಯ. ಗ್ರಹಣಕಾಲ,

ವಿವಾಹ, ಯಜ್ಞ, ದ್ವಾದಶಿ, ಹುಣ್ಣಿಮೆ, ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ,  
ಮತ್ತು ಪುಣ್ಯನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಈ ದಾನಗಳನ್ನು ಮಾಡ  
ಬೇಕು. [ವಿವರಕ್ಕೆ ಮತ್ಸ್ಯಪುರಾಣದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಕನಕಾಧ್ಯಕ್ಷ ಕನಕಾಧ್ಯಕ್ಷ (ಪುಂ) ಸುವರ್ಣದ ರಕ್ಷಣಾಧಿ  
ಕಾರಿ, ಖಜಾನೆಯ ಅಧಿಕಾರಿ.

ಕನಕಾಯು ಕನಕಾಯು (ಪುಂ) ದೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.  
"उग्रायुधो भीमशरः कनकायुर्दंडायुधः" ಭಾಂ ಆದಿಂ  
೬೮-೯೯ |

ಕನಕಾಲುಕಾ ಕನಕಾಲುಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಿನ್ನದ ಪಾತ್ರೆ,  
ಚಿನ್ನದ ಗಿಂಡಿ, ಸುವರ್ಣದ ಕಲಶ. ಕನಕಸ್ಯಾಲುಃ ಸಂಜಾಯಾಂ  
"ಕನ್" (೫-೩-೭೫) |

ಕನಕಾಹ್ವ ಕನಕಾಹ್ವ (ಪುಂ) ದತ್ತೂರಿ ಗಿಡ. ಕನಕಮ್  
ಆಹ್ವಾ ಯಸ್ಯ |

ಕನಕಾಹ್ವಯ ಕನಕಾಹ್ವಯ (ಪುಂ) ದತ್ತೂರಿ ಗಿಡ. ಕನಕಮ್  
ಆಹ್ವಯೋ ಯಸ್ಯ |

ಕನತ್ ಕನತ್ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ.  
ಕನೀ (ದೀಪ್ತಿಕಾಂತಿಗತಿಃ) "ಕನ್" (೩-೨-೧೨೪) |  
"यूथैर्द्विरदशैलानां कनकदलिकावनैः" ಯಾದಂ ೨೨-೨೨೮ |

ಕನಿಷ್ಠ ಕನಿಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಕಿರಿಯವನು, ಕೊನೆಯ ತಮ್ಮ.  
2. ಕೊನೆಯದು, ಕಿರಿಯದು, ಎಲ್ಲಕ್ಕಿಂತಲೂ ಚಿಕ್ಕದಾದ.  
3. ಅಲ್ಪವಾದ, ಬಹಳ ಕೊಂಚವಾದ. ಅಯಮತಿಶಯೇನ  
ಯುವಾ ಅಲ್ಪೋ ವಾ "ಹಿಷ್ಠನ್" (೫-೩-೫೫) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
ಕನಿಷ್ಠಾ ಕನಿಷ್ಠಾ. 1. ಕಿರಿಯವಳು, ತಂಗಿ. 2. ಕಿರಿಯ  
ಹೆಂಡತಿ. "पुत्रः कनिष्ठो ज्येष्ठायां कनिष्ठायां च  
पूर्वजः | कथं तत्र विभागः स्यादिति चेत् संशयो भवेत्"  
ಮನುಂ ೯-೧೨೨ |

ಕನಿಷ್ಠಾ ಕನಿಷ್ಠಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಿರುಬೆರಳು. 2. ತಂಗಿ.  
3. ಕಿರಿಯ ಹೆಂಡತಿ. 4. ಕನಿಷ್ಠನಾಯಿಕೆ. ನಾಯಕನು  
ನಾಯಿಕೆಯರಲ್ಲಿ ತೋರಿಸುವ ಪ್ರಣಯದ ತಾರತಮ್ಯದಿಂದ  
ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ಕನಿಷ್ಠಾ ಎಂಬ ಭೇದದಿಂದ ನಾಯಿಕೆಯು ಎರಡು  
ವಿಧ. "प्रत्येकं ता अपि द्विधा | कनिष्ठज्येष्ठरूपत्वा-  
न्नायकप्रणयं प्रति" ಸಾಂ ೬೦ ೩-೬೪ | "दृष्ट्वैकासन-  
संस्थिते प्रियतमे पश्चादुपेत्यादरादेकस्या नयने पिधाय  
विहितक्रीडानुबन्धच्छलः | ईषद्विक्रितकन्धरः सपुलकः  
प्रेमोल्लसन्मानसामन्तर्हसिलसत्कपोलफलकां धूर्तोऽपरां  
चुम्बति" ಸಾಂ ೬೦ | ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕನ್" | ಕನಿಷ್ಠಿಕಾ  
ಕನಿಷ್ಠಿಕಾ. "पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे कनिष्ठिका-  
धिष्ठितकालिदासा" |



ಕನೀ ಕನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಗು. 2. ಕನೈ, ಹೆಣ್ಣು ಮಗು.  
ಕನತಿ—ಕನಿ (ದೀಪ್ತಿಕಾಂತಿಗತಿಫು) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)।  
“ಕನ್ಯಾ ಕನಿ ಕುಮಾರಿ ಚ” ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ಕನಿನಿಕಾ ಕನೀನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಣ್ಣಿನ ಕಪ್ಪು ಗುಡ್ಡು.  
ಕನತಿ ಪ್ರಕಾಶಯತಿ — ಕನಿ (ದೀಪ್ತೀ) “ಇನಃ” ಬಾಹುಂ।  
ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್”। “ಟಾಪ್” (೪-೧-೪)। 2. ಕರುಬೆರಳು.  
“ಅನಾಮಿಕಾ ತು ಸಾವಿತ್ರಿ ಕನಿಷ್ಠಾ ತು ಕನಿನಿಕಾ” ವೈಜಂ।  
“ಕನಿನಿಕಾ ತಾರಕೋಷ್ಣಃ ಸ್ಯಾತ್ಕನಿಷ್ಠಾಙ್ಗುಲಾವಪಿ” ಮೇದಿಂ।

ಕನಿಯಸ್ ಕನೀಯಾಸ್ (ವಿಂ) 1. (ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ) ಕಿರಿಯವನು,  
ತಮ್ಮ. 2. ಚಿಕ್ಕ. ಕಿರಿಯ. 3. ಅಲ್ಪವಾದ, ಕೊಂಚ  
ವಾದ. ಅಯಮನಯೋರತಿಶಯೇನ ಯುವಾ ಅಲ್ಪೋ ವಾ “ಇಯಸುನ್”  
(೪-೩-೪೭)। “ವೃದ್ಧೀರಸಾಂ ರಾಜ್ಯಧುರಾಂ ಪ್ರವೌತುಂ ಕಥಂ ಕನಿಯಾ-  
ನಹಮುತ್ಸಹೇಯ” ಭದ್ರಿಂ ೩-೪೪। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)।  
ಕನಿಯಸಿ ಕನೀಯಾಃ.

ಕಂತ ಕಂಡ (ವಿಂ) ಸುಖವುಳ್ಳ. ಕಮ್ ಸುಖಮಸ್ತಯಸ್ಯ — ಕಮ್  
“ತಃ” (೪-೨-೧೩೮)।

ಕಂತಿ ಕಂಡಿ (ವಿಂ) ಸುಖವುಳ್ಳ. ಕಮ್ ಸುಖಮಸ್ತಯಸ್ಯ — ಕಮ್  
“ತಿಃ” (೪-೨-೧೩೮)।

ಕಂತು ಕಂಡು (ಪುಂ) 1. ಕಂಡರ್ಪ, ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ಕಮ್  
(ಕಾಂತಿ) “ತುಃ” (೩ಂ ೧-೭೨)। 2. ಚಿತ್ರ, ಮನಸ್ಸು.  
“ಕಂತುಃ ಕಂದರ್ಪಚಿತ್ತಯೋಃ” ಸಿಂ ಕೌಂ। 3. ಉಗ್ರಾಣ,  
ಕಣ್ಣು. “ಕಂತು ಕುಸುಲಕಂದರ್ಪಿ” ವೈಜಂ। (ವಿಂ) 4. ಸುಖ  
ವುಳ್ಳ. ಕಮ್ ಸುಖಮಸ್ತಯಸ್ಯ — ಕಮ್ “ತುಃ” (೪-೨-೧೩೮)।

ಕಂತುಜನಕ ಕಂಡುಜನಕ (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ, ವಾಸುದೇವ.  
ಕಂತೋಃ ಕಾಮಸ್ಯ ಜನಕಃ।

ಕನ್ಯಾ ಕಂಡಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಛಿಂದಿಬಟ್ಟೆ, ಹರಕುಬಟ್ಟೆ, ತೇವೆ  
ಹಾಕಿದ ಬಟ್ಟೆ. ಕಮ್ (ಕಾಂತಿ) “ಯನ್” ಬಾಹುಂ। “ಮಿಕ್ಷಾ  
ಪ್ರಾಣಸ್ಯ ರಕ್ಷಾರ್ಥ ಕನ್ಯಾ ಶೀತನಿವಾರಿಣಿ। ಅಚಲಾ ಕೇಶವೇ  
ಭಕ್ತಿಃ ವಿಭವಃ ಕಿಂ ಪ್ರಯೋಜನಮ್”। 2. ಮಣ್ಣಿನ ಗೋಡೆ.  
“ಕನ್ಯಾ ಮೃಗ್ಮಯಭಿತ್ತೌ ಚ ತಥಾ ಪ್ರಾವರಣಾಂತರೇ” ಮೇದಿಂ।

ಕಂದ ಕಂಡ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಕಂ ಜಲಂ ದದಾತಿ—ಡು  
ದಾಜ್ (ದಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೪)। (ಪುಂ) 2. ಸೂರಣ  
ಗಡ್ಡೆ, 3. ಗೋಸು. 4. ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳಿ, 5. ಗಡ್ಡೆ, ಗಿಡ  
ಗಳ ಬುಡದ ದಪ್ಪ ಬೇರು. ಕಂದತಿ ಕಂದಯತಿ ಕಂದತೇ  
ವಾ—ಕದಿ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೇ ಚ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)।  
“ಕಮ್” (೩-೩-೧೯) ವಾ। “ಕಂದೋಽಸ್ತೃ ಸೂರಣೇ ಸಸ್ಯಮೂಲೇ  
ಜಲಧರೇ ಪುಮಾನ್” ಮೇದಿಂ। “ದಂತಾಃ ಶೋಭಾಮಾಪುರಂಭೋನಿಧಿಃ  
ಕಂದೋಽದ್ವೇದಾ ವೈದ್ರಮಾ ವಾರಿಣಿವ” ಮಾಧಂ ೧೮-೩೬।

ಕಂದಗುಡ್ಡು ಕಂದಗುಡ್ಡುಚೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ.  
ಕಂದೋಽದ್ವೇದಾ ಗುಡ್ಡುಚೀ।

ಕಂದಮೂಲ ಕಂದಮೂಲ (ನಂ) 1. ಮೂಲಂಗಿ. 2. ಗೋಸು.  
ಕಂದರೂಪಂ ಮೂಲಮಸ್ಯ।

ಕಂದರ ಕಂದರ (ಪುಂ) 1. ಗುಹೆ, ಗವಿ, ಬೆಟ್ಟದ ಬಿಲ.  
ಕೇನ ಜಲೇನ ದೀಯಂತೇ—ಡ್ (ವಿದಾರಣೆ) “ಅಪ್” (೩-೩-೪೭)।  
“ನಿಹ್ನಾದಿಸ್ತೇ ಮುರಜ ಇವ ಚೇತಕಂದರೇಷು ಧ್ವನಿಃ ಸ್ಯಾತ್”  
ಮೇಘಂ ೧-೪೬। “ದರೀ ತು ಕಂದರೋ ವಾ ಸ್ತ್ರೀ”  
ಅಮಂ। (ನಂ) ಮೇದಿಂ। (ಪುಂ) 2. ಅಂಕುಶ. ಕಂ ಗಜಶಿರೋ  
ದೀಯಂತೇನ “ಅಪ್” (೩-೩-೪೭)। “ಕಂದರಸ್ತ್ವಡ್ಕುಶೇ  
ಪುಸಿ ಗುಹಾಃ ಚ ನಪುಂಸಕಮ್” ಮೇದಿಂ। 3. ಹಸಿರುಂಟಿ.  
4. ಮೊಳಕೆ.

ಕಂದರಾಲ ಕಂದರಾಲ (ಪುಂ) 1. ಬಸುರಿ ಮರ. ಕಂದರಾಂ  
ಲಾತಿ—ಲಾ (ಆದಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೩)। 2. ಬೆಟ್ಟಗೋಸು  
ಮರ.

ಕಂದರ್ಪ ಕಂದರ್ಪ (ಪುಂ) ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ಕಮ್ ಇತಿ  
ಮಾನ್ತಮವ್ಯಯಮ್। “ಕಮ್ ಶಿರಃಸುಖವಾರಿಫು” ವಿಶ್ವಂ। ಕಮ್  
ಸುಖಂ, ತೇನ ದೃಪ್ಯತಿ—ದೃಪ (ಹರ್ಷಮೋಹನಯೋಃ) “ಅಚ್”  
(೩-೧-೧೩೪)। “ತತ್ರ ನಿಶ್ಚಿತಯ ಕಂದರ್ಪಮಗಮತ್ಪಾಕಶಾಸನಃ”  
ಕುಮಾಂ ೨-೬೩। “ಕಂದರ್ಪಪ್ರವಣಮನಾಃ ಸಖೀತಿಸಿಕ್ಷಾಲಕ್ಷಣೇನ  
ಪ್ರತಿಯುವಮಂಜ್ಜಲಿ ಚಕಾರ” ಮಾಧಂ ೮-೩೪।

ಕಂದರ್ಪಕೂಪ ಕಂದರ್ಪಕೂಪ (ಪುಂ) ಹೆಂಗಸರ ಗುಹ್ಯಸ್ಥಳ,  
ಪ್ರೀತಿಯರ ಚಿಹ್ನೆ. ಯೋನಿ. ಕಂದರ್ಪಸ್ಯ ಕೂಪ ಇವ।

ಕಂದರ್ಪಕೇತು ಕಂದರ್ಪಕೇತು (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ರಾಜಕುಮಾರ.  
ಕಂದರ್ಪಮಥನ ಕಂದರ್ಪಮಥನ (ಪುಂ) ಮಹಾದೇವ,  
ಈಶ್ವರ, ಶಿವ. ಕಂದರ್ಪ ಮಥಾತಿ—ಮನ್ಯ (ವಿಲೋಡನೇ)  
“ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪)।

ಕಂದಲ ಕಂದಲ (ವಿಂ) 1. ಕಪಾಲ, ತಲೆಯಚಿಪ್ಪಿನ  
ಎಲುಬು. 2. ಉಪರಾಗ, ಉತ್ಪಾತ ಮೊದಲಾದ ಕಾಲಕ್ಷಣ.  
3. ಹೊಸ ಚಿಗುರು, ಆಗತಾನೆ ಹೊರಟಿರುವ ಮೊಳಕೆ.  
4. ಕಲರವ, ಇಂಪಾದ ಧ್ವನಿ. ಕದಿ (ಆಹ್ವಾನೇ) “ಕಲಃ”  
(೩ಂ ೧-೧೦೬)। “ಕಂದಲಂ ತ್ರಿಫು ಕಪಾಲೇಷ್ಯುಪರಾಗೇ  
ನವಾಡ್ಕುರೇ। ಕಲಧ್ವನಿ” ಮೇದಿಂ। (ಪುಂ) 5. ಅಪವಾದ,  
ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. 6. ಕಲಾಪ, ಸಮೂಹ. 7. ಜಗಳ.  
ವಾಗ್ವಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)—ಲಿ-೪೯. 8. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಚರ್ಮ  
ವುಳ್ಳ ಜಿಂಕೆ. ಕಂದೇ ಸಸ್ಯಮೂಲೇ ಲೀಯತೇ — ಲಿಡ್ (ಶ್ಲೇಷಣೆ)  
“ಡಃ” (ವಾ ೩-೨-೧೦೨)। 9. ಬಾಳೆಯಗಿಡ. ಕೇನ ವಾಯುನಾ  
ದಲಯತೇ—ದಲ (ವಿಶರಣೆ) “ಛಃ” (೩-೩-೧೨೪)। “ಆರಕ್ತ-



ರಾಜಿಭಿರಿಯಂ ಕುಸುಮೇನವಕಂದಲಿಗರ್ಭಃ" ವಿಕ್ರಂ ೪-೧೫।  
10. ಪೂದರು. 11. ಪತಾಕೆ, ಧ್ವಜ. 12. ಅಣಬೆ, ನಾಯಿಕೊಡೆ. 13. ತಾವರೆಯಬೀಜ. (ನಂ) 14. ಬಾಳೆಯಹೂವು. "ದ್ವಿದಲಕಂದಲಕಂಪನಲಾಲಿತಃ" ಮಾಘಂ ೬-೩೦।

ಕಂದಲಿತ ಕಂದಳಿತ (ವಿಂ) 1. ಚಿಗುರಿದ, ಮೊಳಕೆ ಹೊರಟಿರುವ. 2. ಪೃದ್ಧಿಹೊಂದಿದ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವ, ಬೆಳೆದಿರುವ. ಕಂದಲಃ ಸಂಜಾತೋಸ್ಯ "ಇತಚ್" (೪-೨-೩೬)।

ಕಂದು ಕಂದು (ಪುಸ್ತಕಂ) 1. ಕಾವಲಿ, ದೋಸೆಯ ಕಲ್ಲು, ಹೋಳಿಗೆಯ ಕಾವಲಿ. ಕಂದಿತಿ - ಕಂದಿರ್ (ಗತಿ-ಶೋಷಣಯೋಃ) "ಃ" ಸಲೋಪಚ (ಃ ೧-೧೪)। "ಕಂದುರ್ವಾ ಸ್ವೇದನಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಅಮಂ। 2. ಹುರಿಯುವ ಓಡು, ಬಾಣಲಿ.

ಕಂದುಕ ಕಂದುಕ (ಪುಂ) 1. ರಬ್ಬರು ಬಟ್ಟೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಚೀಡು. ಕಮ್ ಸುಖಂ ದದಾತಿ - ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಡುಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೧೮೦)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೪-೪-೪)। "ಮಂದಾಕಿನೀಸೇಕತವೇದಿಕಾಭಿಃ ಸಾ ಕಂದುಕಃ ಕೃತ್ರಿಮಪುತ್ರಿಕೇಶ್ಚ" ಕುಮಾಂ ೧-೨೯। 2. ಕಾವಲಿ, ದೋಸೆಯಕಲ್ಲು.

ಕಂದೊಟ ಕಂದೋಟಿ (ಪುಂ) 1. ಕನ್ನದಿಲೆ. 2. ಬಿಳಿನ್ನದಿಲೆ. ಕದಿ (ಆಹ್ವಾನೇ) "ಆಟಃ" ಬಾಹುಂ।

ಕಂಠ ಕಂಠ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 2. ಕೊನ್ನಾರಿ ಗೆಡ್ಡೆ, ಭದ್ರಮುಸೈ. ಕಂ ಜಲಂ ದಧಾತಿ - ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣ-ಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)।

ಕಂಠರ ಕಂಠರ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಕಂ ಜಲಂ ಧಾರಯತಿ - ಧು ಧಾರಣೇ + ಣಿಚ್ "ಖಚ್" (೩-೨-೪೬)। ಮುಗಾಗಮಃ (೬-೩-೬೭)। ಹ್ರಸ್ವಃ (೬-೪-೯೪)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರ -ರಾ. ಕುತ್ರಿಗೆ, ಕತ್ತು. ಕಂ ಶಿರೋ ಧಾರಯತಿ - ಧು + ಣಿಚ್ "ಖಚ್" (೩-೨-೪೬)। ಹ್ರಸ್ವಃ (೬-೪-೯೪)। "ಅಯೋಚಕೇರ್ಜರಕಪೋತಕಂಠರಾತನೂಹಪ್ರಕರವಿಪಾಣ್ಡುರಶ್ರುತಿ" ಮಾಘಂ ೧೭-೪೨। "ಕಪಾಟವಕ್ಷಾಃ ಪರಿಣದ್ವಕಂಠರಃ" ರಘುಂ ೩-೩೪। "ಕಂಠರೋ ವಾರಿವಾಹೇ ಸ್ಯಾದ್ವಿವಾಹಾಂ ಕಂಠರಾ ಮತಾ" ವಿಶ್ವಂ।

ಕಂಠಿ ಕಂಠಿ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಕುತ್ರಿಗೆ, ಕತ್ತು. ಕಂ ಜಲಂ ಶಿರೋ ವಾ ಧೀಯತೇಽಽ ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕಿಃ" (೩-೩-೯೩)।

ಕಂಠ ಕಂಠ (ನಂ) 1. ಪಾತಕ, ಪಾಪ. 2. ಮೂರ್ಛೆ. (ಪುಂ) 3. ಒಬ್ಬ, ಋಷಿ.

ಕನ್ಯಕಾ ಕನ್ಯಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕನ್ಯೆ, ಕುಮಾರಿ, ಹತ್ತುವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನ ಹುಡುಗಿ, ಮದುವೆಯಾಗದಿರುವ ಬಾಲೆ. ಅಜ್ಞಾತಾ ಕನ್ಯಾ - "ಕಃ" (೪-೩-೭೩)। "ಅಷ್ಟವರ್ಷಾ ಭವೇದ್ಗೌರೀ ನವವರ್ಷಾ ಚ ರೋಹಿಣಿ। ದಶಮೇ ಕನ್ಯಕಾ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಅತಃ ಋಷಿ ರಜಸ್ವಲಾ"। "ಕನ್ಯಕಾತನಯಕೌತುಕಕ್ರಿಯಾಂ ಸ್ವಪ್ರಭಾವಸದೃಶಾಂ ವಿತೇನತುಃ" ರಘುಂ ೧೧-೪೩।

ಕನ್ಯಕಾಜಾತ ಕನ್ಯಕಾಜಾತ (ಪುಂ) ಕಾನೀನ, ಮದುವೆಯಾಗದ ಕನ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಕನ್ಯಕಾಃ ಜಾತಃ। ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ, ಕರ್ಣ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕನ್ಯಾ ಕನ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕನ್ಯೆ, ಮದುವೆಯಾಗದಿರುವ ಬಾಲೆ. 2. ಕುಮಾರಿ, ಮದುವೆಯಾಗದಿರುವ ಮಗಳು. ಕನತಿ - ಕನಿ (ದೀಪ್ತೌ) "ಯಕ್" (ಃ ೪-೧೧೧)। ನಿಪಾಂ। "ಅಕೃತೋಪಯಮಾ ಕನ್ಯಾ"। "ಆಂಕ್ಷಾಽಽ ಚಾರ್ಚಯಿತ್ವಾ ಚ ಶ್ರುತಿಸ್ಥಿಲವತೇ ಸ್ವಯಮ್। ಆಹೂಯ ದಾನಂ ಕನ್ಯಾಯಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ಧನಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿಸತಃ" ಮನುಂ ೩-೨೭। "ಸರ್ವಾನ್ ಕಾಮಯತೇ ಯಸ್ಮಾತ್ ಕನೇರ್ಧಾತೋಽಽ ಭಾಮಿನಿ। ತಸ್ಮಾತ್ ಕನ್ಯೇಹ ಸುಶ್ರೋಣಿ ಸ್ವತನ್ತ್ರಾ ವರವರ್ಣಿನಿ" ಭಾಂ ವನಂ ೩೦೮-೧೩। 3. ಕನ್ಯಾ ರಾಶಿ. 4. ಹೆಂಗಸು. "ಅವಾಕಿರನ್ ಬಾಲಲತಾಃ ಪ್ರಸುನ-ರಾಚಾರಲಾಜೇರಿವ ಪೌರಕನ್ಯಾಃ" ರಘುಂ ೨-೧೦। "ಅಹಲ್ಯಾ ದ್ರೋಪದಿ ತಾರಾ ತಾರಾ ಮಂಡೋದರಿ ತಥಾ। ಪಂಚಕನ್ಯಾಃ ಸ್ಮರೇನ್ನಿತ್ಯಂ ಮಹಾಪಾತಕನಾಶನಮ್"।

ಕನ್ಯಾಕುಬ್ಜ ಕನ್ಯಾಕುಬ್ಜ (ನಂ) ಕನ್ಯಾಕುಬ್ಜ. ಚಂದ್ರವಂಶದ ರಾಜನಾದ ಕುಶನಾಭನ ನೂರು ಮಂದಿ ಕನ್ಯೆಯರು ಉದ್ಯಾನವನಕ್ಕೆ ವಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ವಾಯು ದೇವನು ಇವರನ್ನು ಮೋಹಿಸಿ ಇವರು ಸಮೃದ್ಧಿಸದಿರಲು ವಾಯುವು ಕುಪಿತನಾಗಿ ದೇಹದೊಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಇವರನ್ನು ಕುಬ್ಜೆಯರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದನು. ಅನಂತರ ಬ್ರಹ್ಮದತ್ತ ನೆಂಬ ಮುನಿಯು ಇವರನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ತನ್ನ ತಪೋಮಹಿಮೆಯಿಂದ ಇವರ ಕುಬ್ಜತ್ವವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸಿದನು. ಇದರಿಂದ ಈ ಕನ್ಯೆಯರು ಕುಬ್ಜರಾದ ಪ್ರದೇಶಕ್ಕೆ "ಕನ್ಯಾಕುಬ್ಜ"ವೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು.

ಕನ್ಯಾಗ್ರಹಣ ಕನ್ಯಾಗ್ರಹಣ (ನಂ) ಕನ್ಯಾಸ್ವೀಕಾರ, ವಿವಾಹದಲ್ಲಿ ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವುದು. ಕನ್ಯಾಯಾ ಗ್ರಹಣಮ್।

ಕನ್ಯಾತೀರ್ಥ ಕನ್ಯಾತೀರ್ಥ (ನಂ) 1. ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಪುಣ್ಯತೀರ್ಥ. 2. ಸಮುದ್ರ ಮತ್ತು ಕಾವೇರೀ ಸಂಗಮಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ತೀರ್ಥ. ಅಪ್ಸರೋ-ರೂಪಕನ್ಯಾವೃತ್ತತ್ವೇನ ತಸ್ಯ ಕನ್ಯಾತೀರ್ಥತ್ವಮ್।

ಕನ್ಯಾದಾತೃ ಕನ್ಯಾದಾತೃ (ಪುಂ) (ವಿವಾಹದಲ್ಲಿ) ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ದಾನಮಾಡುವವನು, ತಂದೆ.



**ಕನ್ಯಾದಾನ ಕನ್ಯಾದಾನ** (ನಂ) (ವಿವಾಹದಲ್ಲಿ) ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ ದಾರೆಯೆರಡು ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ದಾನಮಾಡುವುದು. ಕನ್ಯಾಯಾ ದಾನಮ್ | “ಅದ್ವಿರೇವ ದ್ವಿಜಾಪ್ರಧಾಣಾಂ ಕನ್ಯಾದಾನಂ ವಿಶಿಷ್ಯತೇ | ಇತರೇಷಾಂ ತು ವರ್ಣಾನಾಮಿತರೇತರಕಾಮ್ಯಯಾ” ಮನುಂ ೩-೩೫ |

**ಕನ್ಯಾದೂಷಕ ಕನ್ಯಾದೂಷಕ** (ವಿಂ) 1. ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ಕಡಿಸುವವನು, ವಿವಾಹವಾಗದ ಕನ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಅತ್ಯಾಚಾರ ನಡೆಸುವವನು. ಕನ್ಯಾಯಾ ದೂಷಕಃ | 2. ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ನಿಂದಿಸುವವನು. ಕನ್ಯಾ ದೂಷಯತಿ—ದೂಷ (ವೈಕಲ್ಯ) + ಣಿಚ್ “ಫಲ್” (೩-೧-೧೩೩) | “.....ವರ್ಜ್ಯಾಃ ಸ್ಯುಃ ಹವ್ಯಕವ್ಯಯೋಃ | ಇವಕ್ರೋಡಿ ಇಯೇನಜೀವಿ ಚ ಕನ್ಯಾದೂಷಕ ಏವ ಚ | ಹಿಸ್ತೋ ವೃಷಲವೃತಿಶ್ಚ ಗಣಾನಾಂ ಚೈವ ಯಾಜಕಃ” ಮನುಂ ೩-೧೩೪ |

**ಕನ್ಯಾದೂಷಣ ಕನ್ಯಾದೂಷಣ** (ನಂ) 1. ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ಕಡಿಸುವಿಕೆ, ಕನ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಅತ್ಯಾಚಾರ ನಡೆಸುವಿಕೆ. ಕನ್ಯಾಯಾ ದೂಷಣಮ್ | 2. ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ನಿಂದಿಸುವಿಕೆ.

**ಕನ್ಯಾದೂಷಯಿತ್ ಕನ್ಯಾದೂಷಯಿತ್ಯ** (ವಿಂ) “ಕನ್ಯಾದೂಷಕ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ಕನ್ಯಾಯಾ ದೂಷಯಿತಾ—ದೂಷ (ವೈಕಲ್ಯ) + ಣಿಚ್ “ತುಚ್” (೩-೧-೧೩೩) | ದೂಷ + ಣಿಚ್ “ಣಿಣಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) | -ದೂಷಿನ್ -ದೂಷಿನ್. “ಭೃತಕಾಘ್ಯಾಪಕಃ ಕಲಿಬಃ ಕನ್ಯಾದೂಷ್ಯಾಭಿಶಸ್ತಕಃ | ಮಿತ್ರಧ್ರುಕ್ ಪಿಶುನಃ ಸೋಮ-ವಿಕ್ರಯಿ ಪರಿವಿಹರಕಃ” ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೨೨೩ |

**ಕನ್ಯಾಧನ ಕನ್ಯಾಧನ** (ನಂ) ಸ್ತ್ರೀಧನ, ವಿವಾಹಕ್ಕೆ ಮುಂಚೆ ಕನ್ಯೆಗೆ ಕೊಟ್ಟಿದ್ದ ಧನ. ಕನ್ಯಯಾ ಲಘ್ವಂ ಧನಮ್ |

**ಕನ್ಯಾನಿರೀಕ್ಷಣ ಕನ್ಯಾನಿರೀಕ್ಷಣ** (ನಂ) ವಿವಾಹಕಾಲದಲ್ಲಿ ನಿಶ್ಚಿತಾರ್ಥ ಮಧುಪರ್ವಗಳ ನಂತರ ಶುಭಲಗ್ನದಲ್ಲಿ ವರನು ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ನೋಡುವಿಕೆ.

**ಕನ್ಯಾಪತಿ ಕನ್ಯಾಪತಿ** (ಪುಂ) ಅಳಿಯ, ಮಗಳ ಗಂಡ. ಕನ್ಯಾಯಾಃ ಪತಿಃ |

**ಕನ್ಯಾಪುತ್ರ ಕನ್ಯಾಪುತ್ರ** (ಪುಂ) ವಿವಾಹವಾಗದ ಕನ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಗ. ಕನ್ಯಾಯಾಃ ಪುತ್ರಃ | ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ, ಕರ್ಣ ಮೊದಲಾದವರು.

**ಕನ್ಯಾಭರ್ತೃ ಕನ್ಯಾಭರ್ತೃ** (ಪುಂ) 1. ಅಳಿಯ, ಮಗಳ ಗಂಡ. ಕನ್ಯಾಯಾ ಭರ್ತಾ | 2. ಪಣ್ಮುಖ, ಕಾರ್ತಿಕೇಯ. ಕನ್ಯಾಭಿಃ ಪ್ರಾರ್ಥನೀಯೋ ಭರ್ತಾ | “ಆಗ್ನೇಯಶ್ಚೈವ ಸ್ಕಂದಶ್ಚ..... | ಕನ್ಯಾಭರ್ತಾ ವಿಭಕ್ತಶ್ಚ ಸ್ವಾಹೇಯೋ ರೇವತಿಸುತಃ” ಭಾಂ ವನಂ ೨೩೩ |

**ಕನ್ಯಾರತ್ನ ಕನ್ಯಾರತ್ನ** (ನಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠಳಾದ ಕನ್ಯೆ, ಉತ್ತಮ ತರಗತಿಗೆ ಸೇರಿದ ಕನ್ಯೆ. ಕನ್ಯಾಸು ರತ್ನಮ್ |

**ಕನ್ಯಾರಾಶಿ ಕನ್ಯಾರಾಶಿ** (ಪುಂ) ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ ಹನ್ನೆರಡು ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಆರನೆಯದು, ಉತ್ತರಾಷ್ಣಿನಿಯ 2, 3, 4 ನೆಯ ಪಾದಗಳು, ಹಸ್ತನಕ್ಷತ್ರ ಮತ್ತು ಚಿತ್ತಾನಕ್ಷತ್ರದ 1, 2 ನೆಯ ಪಾದಗಳು ಇವು ಸೇರಿದ ಒಂದು ರಾಶಿ. उत्तरा त्रयः पादाः हस्तचित्ताश्च कन्या |

**ಕನ್ಯಾರ್ಥಿನ್ ಕನ್ಯಾರ್ಥಿನ್** (ವಿಂ) ಮದುವೆಗಾಗಿ ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. ಕನ್ಯಾಮರ್ಥಯತೇ—ಅರ್ಥ (उपयाच्चायाम्) + ಣಿಚ್ “ಣಿಣಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) |

**ಕನ್ಯಾವತ್ ಕನ್ಯಾವತ್** (ವಿಂ) ಹೆಣ್ಣು ಮಕ್ಕಳುಳ್ಳವನು. ಕನ್ಯಾ ಅಸ್ಯ ಸಂತಿ “ಮತುಃ” (೪-೨-೯೪) | ಮಸ್ಯ “ವಃ” (೮-೨-೯) |

**ಕನ್ಯಾವರಣ ಕನ್ಯಾವರಣ** (ನಂ) ವರನ ಕಡೆಯ ಹಿರಿಯರು ಗೋತ್ರಪ್ರವರಗಳ ಉಚ್ಚಾರಣಪೂರ್ವಕ ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ಚುನಾಯಿಸುವಿಕೆ. ಕನ್ಯಾಯಾ ವರಣಮ್ |

**ಕನ್ಯಾವೇದಿನ್ ಕನ್ಯಾವೇದಿನ್** (ಪುಂ) ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ಪಡೆಯುವವನು. ಕನ್ಯಾ ವಿಂದತೇ—ವಿದ್ಲ (ಲಾಭ) “ಣಿಣಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) | “ಕನ್ಯಾ ಕನ್ಯಾವೇದಿನಶ್ಚ ಪಶುನ್ ವೈ ಸತ್ಸುತಾ-ನಪಿ” ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೨೬೨ |

**ಕನ್ಯಾಶುಲ್ಕ ಕನ್ಯಾಶುಲ್ಕ** (ನಂ) ಮದುವೆಗಾಗಿ ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ಕೊಳ್ಳಲು ಕನ್ಯೆಯ ತಂದೆಗೆ ಕೊಡುವ ಧನ, ವಿವಾಹ ಧನ. [ಕೆಲವು ಕಡೆ ಈ ಪದ್ಧತಿ ಇರುವುದು. ಇನ್ನೂ ಕೆಲವು ಕಡೆ ಕನ್ಯೆಯ ತಂದೆಯು ಕನ್ಯೆಗೆ ಕೊಡುವ ಧನವು ಕನ್ಯಾಶುಲ್ಕ (ಧನ) ವೆನಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು.]

**ಕನ್ಯಾಸ್ವಯಂವರ ಕನ್ಯಾಸ್ವಯಂವರ** (ಪುಂ) ಕನ್ಯೆಯು ತನ್ನಿಚ್ಛೆಯಂತೆ ಪತಿಯನ್ನು ಪರಿಸುವಿಕೆ. ಕನ್ಯೆಯು ತನಗೆ ಇಷ್ಟನಾದ ಪತಿಯನ್ನು ಆರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ.

**ಕನ್ಯಾಹರಣ ಕನ್ಯಾಹರಣ** (ನಂ) ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ ಒಯ್ಯುವಿಕೆ. ಕನ್ಯಾಯಾ ಹರಣಮ್ |

**ಕಪ ಕಪ** (ಪುಂ) 1. ವರುಣ. 2. ಸೂರ್ಯ. (ವಿಂ) 3. ನೀರು ಕುಡಿಯುವವನು. ಕಂ ಜಲಂ ಪಾತಿ ಪಿಬತಿ ವಾ ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ, ಪಾನೆ ವಾ) “ಕಃ” (೩-೨-೪) | 4. ಅಸುರರ ಒಂದು ಗುಂಪು. [ಕಪರಂಬ ಈ ಅಸುರರು ಒಮ್ಮೆ ಸ್ವರ್ಗವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಆಕ್ರಮಿಸಿಕೊಂಡಾಗ ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಾತಿ ನಂತೆ ಇಂದ್ರಾದಿ ದೇವತೆಗಳೆಲ್ಲರೂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣರನ್ನು ಶರಣ ಹೊಂದಿ ಕಪರನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸಬೇಕೆಂದು ಕೇಳಿಕೊಳ್ಳಲು (ಅದಕ್ಕಾಗಿ) ದ್ವಿಜರೆಲ್ಲರೂ ಸೇರಿ ಕಪನಾಶನವಾದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಕೈಗೊಳ್ಳುವರು. ಇದನ್ನು ಕೇಳಿದ ಕಪರು ಬ್ರಾಹ್ಮಣರು ಈ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಕೈಬಿಡಬೇಕೆಂದು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿ



ಧನಿಯೆಂಬ ದೂತನೊಬ್ಬನನ್ನು ಕಳುಹಿಸುವರು. ಧನಿಯು ಎಷ್ಟೇ ಬೇಡಿದರೂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣರು ತಮ್ಮ ಕೆಲಸವನ್ನೇ ನಡೆಸುತ್ತಿರಲು ಕಪರಲ್ಲರೂ ಅಸ್ತಪಾಣಿಗಳಾಗಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣರ ಮೇಲೆ ಧಾಳಿಮಾಡುವರು. ಆಗ ಬ್ರಾಹ್ಮಣರು ಕಪರನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸಲು ಉಗ್ರವಾಗಿ ಉರಿಯುತ್ತಿರುವ ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಲು ಕಪರಲ್ಲರೂ ಆ ಅಗ್ನಿಗೆ ಆಹುತಿಯಾಗುವರು.]  
 भा० अनु० १५७।

**ಕಪಟ ಕಪಟಿ** (ಪುನಂ) 1. ವಂಚನೆ, ಮೋಸ, ಠಕ್ಕು, ಕೆ ಮುಢಿ ಪಟ ಇವಾಚ್ಛಾದಕ:। “विधाय मूर्ति कपटेन वामनीं स्वयं बलिध्वंसिविडम्बिनीमयम्” ನೆಪಂ १-१२४। 2. ವ್ಯಾಜ, ನೆಪ. “किमस्य लोम्नां कपटेन कोटिभिर्विधिनं लेखाभिरजीगणद्गुणान्” ನೆಪಂ १-२१। (ಪುಂ) 3. ಕಶ್ಯಪನ ಪತ್ನಿಯಾದ ದನುವಿನ ಮಗ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ.

**ಕಪಟತಾಪಸ ಕಪಟಿತಾಪಸ** (ಪುಂ) ವೇಷದಾರಿ ಸಂನ್ಯಾಸಿ, ತಾಪಸನಂತೆ ವೇಷಹಾಕಿ ನಟಿಸುವವನು. ಕಪಟೇನ ತಾಪಸ:।

**ಕಪಟಲೇಖ್ಯ ಕಪಟಲೇಖ್ಯ** (ನಂ) ಕೃತ್ರಿಮವಾದ ಕಾಗದ, ಮೋಸದ ದಸ್ತೆವೇಜು, ಅಸಲಿನಂತೆಯೇ ಕಾಣುವ ಹಾಗೆ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಸುಳ್ಳುಪತ್ರ.

**ಕಪಟವೇಷ ಕಪಟವೇಷ** (ಪುಂ) ಮೋಸಕ್ಕಾಗಿ ಧರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ವೇಷ, ವಂಚಿಸಲು ತಾಳಿದ ವೇಷ.

**ಕಪಟವೇಷಧಾರಿನ್ ಕಪಟವೇಷಧಾರಿನ್** (ವಿಂ) ಮೋಸದ ವೇಷವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ, ವಂಚಿಸಲು ಬೇರೆ ವೇಷವನ್ನು ತಾಳಿದ.

**ಕಪರ್ದ ಕಪರ್ದ** (ಪುಂ) 1. ಕವಡೆ. ಇದು ಹಿಂದೂಸಾಗರದಲ್ಲಿ ದೊರಕುವ ಒಂದು ಪ್ರಾಣಿಯ ಚಿಪ್ಪು. ಪೂರ್ವಕಾಲದಲ್ಲಿ ಇದು ನಾಣ್ಯವಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿತ್ತು. 2. ಪರಮೇಶ್ವರನ ಜಟಿಗಳ ಸಮೂಹ. ಪರ್ವ (ಪೂರಣ) “क्वप्” (ವಾಂ ३-३-१०८)। ಕೇನ ಸುಖೇನ ಪರಂ ಪೂತಿ ದದಾತಿ ತು ದಾನ್ (ದಾನೇ) “कः” (३-२-४)। “कपर्दमुद्र-महीनमूर्धरत्नांशुभिर्भासुरमुल्लसद्भिः” ಕುಮಾಂ १२-९। “कपर्दः खण्डपरशोर्जटाजूटे वराटके” ವಿಶ್ವಂ।

**ಕಪರ್ದಕ ಕಪರ್ದಕ** (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಈಶ್ವರನ ಜಟಾಸಮೂಹ. ಕಪರ್ದ ಸ್ವಾರ್ಥ “कः”। 2. ಸಣ್ಣ ಕವಡೆ. ಅಲ್ಪ: ಕಪರ್ದ: “कन्” (५-३-८५)। “यद्यहमिमं सक्तुशरावं विक्रीय दश कपर्दकान् प्राप्नोमि” ಹಿತಂ ४। ಕಪರ್ದಕೋ ವರಾಟೇ ಸ್ಯಾಜ್ಜಟಾಜುಟೇ ಚ ಧೂರ್ಜಟೇ:” ಮೇದಿಂ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “टाप्”। ಕಪರ್ದಿಕಾ ಕಪರ್ದಿಕಾ. ಸುವರ್ಣದ ಛಾಯೆಯುಳ್ಳ ಕಪರ್ದವು ಸಿಂಹಿಯೆಂದೂ ಧೂಮವರ್ಣದ ಕಪರ್ದವು

ವ್ಯಾಖ್ಯೆಯೆಂದೂ ಬೆನ್ನಿನ ಮೇಲೆ ಹಳದಿಯಾಗಿರುವುದು ಮೃಗಿಯೆಂದೂ ಬಿಳುಪಾಗಿರುವುದು ಹಂಸಿಯೆಂದೂ ಹೆಚ್ಚು ಉದ್ದವಾಗಿರದ ಕಪರ್ದವು ವಿದಂತವೆಂದೂ ಕಪರ್ದವು ಐದು ವಿಧ.

**ಕರ್ಪದಿನ್ ಕಪರ್ದಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಕಪರ್ದಿ-ಸ್ಥಾಸ್ತಿ “इनिः” (५-२-११५)। “कपर्दिकण्ठान्त-कपालदाम्नोऽङ्गुलिं प्रवेश्याननकोटरेषु” ಕುಮಾಂ ११-४६।

**ಕಪಾಟ ಕಪಾಟಿ** (ಪುನಂ) ಬಾಗಿಲು, ಬಾಗಿಲಿನ ಕದ. ಕಂ ವಾತಂ ಪಾಟಯತಿ — ಪಟ (ಭೋಷಣೆ) + ಣಿಕ್ “अण्” (३-२-१)। “कपाटविस्तीर्णमनोरमोरःस्थलस्थितश्रीरमणस्य तस्य” ಮಾಘಂ ३-१३।

**ಕಪಾಟಘನ ಕಪಾಟಿಘ್ನ** (ಪುಂ) ಚೋರ, ಕಳ್ಳ, ಬಾಗಿಲನ್ನು ಒಡೆಯುವವನು. ಕಪಾಟಂ ಹಂತಿ — ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತ್ಯಾ:) “टक्” (३-२-५४)।

**ಕಪಾಟವಕ್ಷಸ್ ಕಪಾಟವಕ್ಷಸ್** (ವಿಂ) ಬಾಗಿಲಿನಂತೆ ಎಶಾಲ ವಕ್ಷಸ್ಥಳವುಳ್ಳವನು, — ಅಗವಾದ ಎದೆಯುಳ್ಳವನು. ಕಪಾಟ ಇವ (ವಿಶಾಲ) ವಕ್ಷ: यस्य। “युवा युगव्यायतबाहुरंसलः कपाटवक्षाः परिणद्धकन्धरः” ರಘುಂ ३-३४।

**ಕಪಾಟಸಂಧಿ ಕಪಾಟಸಂಧಿ** (ಪುಂ) ಬಾಗಿಲಿನ ಕದಗಳು ಕೂಡುವ ಸ್ಥಳ, ಕದಗಳ ಸೇರಿಕೆಯ ಜಾಗ. ಕಪಾಟಂ ಸಂಧೀಯತೇ — ಸಮ್ + ಧಾನ್ ಅಧಿಂ “किः” (३-३-९२)।

**ಕಪಾಟಿಕಾ ಕಪಾಟಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಿಕ್ಕ ಕದ, ಸಣ್ಣ ಬಾಗಿಲು ಗಳ ಕದ. ಅಲ್ಪ: ಕಪಾಟ: “कन्” (५-३-८५)।

**ಕಪಾಲ ಕಪಾಲ** (ಪುನಂ) 1. ತಲೆಯ ಎಲುಬಿನ ಚಿಪ್ಪು. ಕಪಿ (ಚಲನೆ) “कालन्” (उ० १-११५)। “कपाल-नेत्रान्तरलब्धमार्गज्योतिःप्ररोहैरहितैः शिरस्तः” ಕುಮಾಂ ३-४९। 2. ಕಲಶದ ಅವಯವ, ಘಟದ ಅರ್ಧಭಾಗ. “घटादीनां कपालादौ द्रव्येषु गुणकर्मणोः। तेषु जातेश्च संबन्धः समवायः प्रकीर्तितः” ಭಾಷಾಪಂ। 3. ಭಿಕ್ಷುಕರ ಭಿಕ್ಷುಪಾತ್ರೆ. “नग्नो मुण्डः कपालेन भिक्षार्थी क्षुत्पिपासितः” ಮನುಂ ८-९३। 4. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. “कपालोऽस्त्री शिरोऽस्थि स्यात् घटादेः शकले व्रजे” ಮೇದಿಂ। 5. ಮೊಟ್ಟೆಗಳ ಅವಯವ, ತಟ್ಟೆಗಳ ಒಂದು ಭಾಗ. “कुक्कुटाण्डकपालानि कनक मधुकं समम्” ಸುಶ್ರುತಂ। 6. ಪುರೋಡಾಶವನ್ನು ಸಂಸ್ಕರಿಸುವ ಯಾಗದ ಒಂದು ಪಾತ್ರೆ. “कपालानि वोपदधाति पुरोडाशं चाधिश्चयति” ತೆಂ ಸಂ। 7. ಹುರಿಯುವ ಓಡು. “कपालभ्रष्टान् सक्तून् कारयित्वा” ಸುಶ್ರುತಂ।



**ಕಪಾಲನಾಲಿಕಾ ಕಪಾಲನಾಳಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚರಕದಲ್ಲಿ ನೂಲನ್ನು ತಿರುಚುವ ಮತ್ತು ಸುತ್ತುವ ಕದಿರು, ನೂಲುವ ಯಂತ್ರದಲ್ಲಿ ದಾರ ಸುತ್ತುವ ಕದಿರುಕಂಬಿ. "ಕಪಾಲನಾಲಿಕಾ ತರ್ಕು:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಕಪಾಲಭೃತ್ ಕಪಾಲಭೃತ್** (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮಕಪಾಲವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ ಶಿವ. ತಲೆಬುರುಡೆಯನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ ಪರಮೇಶ್ವರ. ಕಪಾಲಂ ಬ್ರಹ್ಮಣಃ ಶಿರೋಸ್ಥಿಯಮಂ ಪಾತ್ರಂ ವಿಭವತಿ - ತು ಭೃತ್ (ಧಾರಣೆ) "ವಿವ್" (೩-೨-೭೬). (ವಿಂ) 2. ಕಪಾಲವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ ಭಿಕ್ಷುಕ.

**ಕಪಾಲಮಾಲಿನ್ ಕಪಾಲಮಾಲಿನ್** (ಪುಂ) ತಲೆಬುರುಡೆಗಳ ಮಾಲೆಯನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ ಪರಮೇಶ್ವರ. ಕಪಾಲಾನಾಂ ಮಾಲಾಸ್ತಯಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೬). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಮಾಲಿನಿ -ಮಾಲಿನೀ. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

**ಕಪಾಲಮೋಚನ ಕಪಾಲಮೋಚನ** (ನಂ) ಔಶನಸವೆಂಬ ಒಂದು ಪುಣ್ಯತೀರ್ಥ, ಸಕಲ ಪಾಪಗಳನ್ನೂ ಪರಿಹರಿಸುವ ಒಂದು ತೀರ್ಥ. ಇದು ಸರಸ್ವತೀನದಿಯ ತೀರದಲ್ಲಿರುವುದು. [ಶ್ರೀರಾಮನು ಸಂಪರಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸನ ತಲೆಯು ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ದೊಡ್ಡ ಮಹೋದರನೆಂಬ ಒಬ್ಬ ಮುನಿಯ ತೊಡೆಗೆ ಬಂದು ಅಂಟಿಕೊಂಡು ಅದು ಬಹಳವಾಗಿ ಪೀಡಿಸುತ್ತಿರಲು ಆ ಮುನಿಯು ಇತರ ಮುನಿಗಳ ಮಾತಿ ನಂತೆ ಔಶನಸತೀರ್ಥದಲ್ಲಿ ಬಂದು ಸ್ನಾನಮಾಡಿದ ಕೂಡಲೆ ಆ ಕಪಾಲವು ಕಳಚಿಕೊಂಡಿತು. ಮಹೋದರನು ಬಹಳ ಸಂತೋಷದಿಂದ ಈ ವಿಷಯವನ್ನು ಮುನಿಗಳೆಲ್ಲರಿಗೂ ತಿಳಿಸಲಾಗಿ ಆ ತೀರ್ಥಕ್ಕೆ "ಕಪಾಲಮೋಚನ"ವೆಂದು ಹೆಸರಿಟ್ಟರು.] ಭಾಂ ಶಲ್ಯಂ ೪೦.

**ಕಪಾಲಶಿರಸ್ ಕಪಾಲಶಿರಸ್** (ಪುಂ) ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. ಮಹಾದೇವ. ಕಪಾಲಂ ಶಿರಸಿ ಯಸ್ಯ.

**ಕಪಾಲಿನ್ ಕಪಾಲಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಕಪಾಲವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ ಈಶ್ವರ, ಶಿವ. ಕಪಾಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫). "ಕಪಾಲಿಕೋಪಾನಲಭಸ್ಮನಃ ಕೃತೇ ತದೇವ ಭಸ್ಮ ಸ್ವಕುಲೇ ಸ್ತುತಂ ತಥಾ" ನೆಪಂ ೯-೭೧. (ವಿಂ) 2. ಕಪಾಲವುಳ್ಳ, ಕಪಾಲವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ. "ಕಪಾಲಿ ವಾ ಸ್ಯಾದಯವೇಂದ್ರಶೇಖರಂ ನ ವಿಶ್ವಮೂರ್ತೇರವಧಾರ್ಯಂತೇ ವಪುಃ" ಕುಮಾಂ ೪-೭೮. 3. ಭಿಕ್ಷುಕ, ತಿರುಕ.

**ಕಪಾಲಿನಿ ಕಪಾಲಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ. ಕಪಾಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫). "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪).

**ಕಪಿ ಕಪಿ** (ಪುಂ) 1. ವಾನರ, ಕೋತಿ. ಕಮ್ಪತೇ - ಕಪಿ (ಚಲನೆ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೪೪). "ಕಪಯೋಽವಿಭಯುಸ್ತಸ್ಮಿ-

ನಿಭಂಜಂಶ್ಚ ಮಹಾದ್ರುಮಾನ್. ಪ್ರೋದ್ವಾನ್ ಗಿರೀಸ್ತುರ್ಣ-ಮಗೃಹ್ಣಂಶ್ಚ ಮಹಾಶಿಲಾಃ" ಭದ್ರಿಂ ೧೭-೪೮. 2. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಕಮ್ ಸುಖಮ್ - ತದನುಭವಸುಖನಿರ್ವೃತಿ ಪಾತಿ - ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೪೪). "ಕಪಿಲಃ ಕಪಿರವ್ಯಯಃ" ವಿಂ ಸಂ. ಕಪಿರವ್ಯಯಃ ಇತಿ ಸವಿಶೇಷಣಮೇಕಂ ನಾಮ. 3. ಸಿಲ್ವಕವೆಂಬ ಗಂಧದ್ರವ್ಯ. ಕಪಿರ್ನಾ ಸಿಹ್ಲಕೇ ಶಾಖಾಮೃಗೇ ಚ ಮಧುಸೂದನೇ" ಮೇದಿಂ. 4. ಸೂರ್ಯ. 5. ಅನೆ, ಗಜ. "ಕಪಯೋಽವಿಭವಾನರಾಃ" ವೈಜಂ. 6. ವರಾಹ. ಕಾದುದಕಾತ್ ಭೂಮಿ ಪಾತಿ - ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಇನ್".

**ಕಪಿಕಚ್ಚುರಾ ಕಪಿಕಚ್ಚುರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಸುಗುನ್ನಿಗಿಡ.

**ಕಪಿಕಚ್ಚು ಕಪಿಕಚ್ಚು** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಸುಗುನ್ನಿಗಿಡ. ಕಪಿನ್ಯಾಂ ಕಚ್ಚುಃ ಯಸ್ಯಾಃ. ಕಪಿಗಳಿಗೂ ನವೆಯನ್ನು ಒಯ್ಯುವವರಿಗೂ.

**ಕಪಿಕೇತನ ಕಪಿಕೇತನ** (ಪುಂ) ಕಪಿಯೇ ಧ್ವಜವಾಗಿ ಉಳ್ಳ ಅರ್ಜುನ. ಕಪಿಃ ಕೇತನಂ ಧ್ವಜೋ ಯಸ್ಯ. "ಸಾನ್ತವಪೂರ್ವಮಿದಂ ವಾಕ್ಯಮಬ್ರವೀತ್ ಕಪಿಕೇತನಃ" ಭಾಂ.

**ಕಪಿಕೇತು ಕಪಿಕೇತು** (ಪುಂ) ಕಪಿಯೇ ಧ್ವಜವಾಗಿ ಉಳ್ಳ ಅರ್ಜುನ. ಕಪಿಃ ಕೇತುಃ ಧ್ವಜೋ ಯಸ್ಯ. "ಅಧಿರಹಿತಾಮಿತಿ ಮಹಿಮತೋದಿತಃ ಕಪಿಕೇತುರ್ನಾಪಿತಕರೋ ರಥಂ ಹರಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೩-೧೮.

**ಕಪಿಚ್ಛಾ ಕಪಿಚ್ಛಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಮಟೆಮರ. ಕಪಿನ್ಯಾಂ ಚ್ಛೇವ.

**ಕಪಿಚ್ಛು ಕಪಿಚ್ಛು** (ಪು) ಅಮಟೆಮರ. ಕಪಿನ್ಯಾಂ ಚ್ಛು ಇವ ಪ್ರಿಯಃ. ಕಪಿಗಳಿಗೆ ಮಾವಿನಮರದಂತೆ ಅಮಟೆಮರವೂ ಪ್ರಿಯವಾದುದು.

**ಕಪಿಜ್ಜಲ ಕಪಿಜ್ಜಲ** (ಪುಂ) 1. ಜಾತಕಪಕ್ಷಿ. 2. ತಿತ್ತಿರಿ ಪಕ್ಷಿ. "ಚಿತ್ರಪಕ್ಷಸ್ತು ತಿತ್ತಿರಿಃ ಸ್ಯಾತ್ಕಪಿಜ್ಜಲಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಕಪಿತ್ಥ ಕಪಿತ್ಥ** (ಪುಂ) 1. ಬೇಲದ ಮರ. ಕಪಯಸ್ತಿಷ್ಠಂತ್ಯತ್ರ. ಪೃಷಂ. (ನಂ) 2. ಬೇಲದಹಣ್ಣು. ಕಪಿತ್ಥಸ್ಯ ಫಲಮ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೩೪). ತಸ್ಯ ಲುಕ್ (೪-೩-೧೬೩).

**ಕಪಿತ್ಥಕ ಕಪಿತ್ಥಕ** (ಪುಂ) 1. ಬೇಲದಮರ. (ನಂ) 2. ಬೇಲದಹಣ್ಣು.

**ಕಪಿತ್ಥಾಸ್ಯ ಕಪಿತ್ಥಾಸ್ಯ** (ಪುಂ) ಬೇಲದಹಣ್ಣಿನಂತೆ ಮುಖವುಳ್ಳ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕಪಿ, ಗೋಲಾಂಗೂಲ. ಕಪಿತ್ಥಾಸ್ಯವದಾಸ್ಯಮಸ್ಯ. "ಗೋಲಾಙ್ಗುಲೇ ಕಪಿತ್ಥಾಸ್ಯದಧಿಶೋಣನಗಾಟನಾಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಕಪಿತ್ಥಿನ್ ಕಪಿತ್ಥಿನ್** (ವಿಂ) ಬೇಲದಮರಕ್ಕೆ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಪ್ರದೇಶ ಮೊದಲಾದುದು. ಕಪಿತ್ಥೋಽಸ್ತೃತ್ಯತ್ರ ದೇಶಃ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೮೦).



**ಕಪಿಲಿಣಿ ಕಪಿಲಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಪಿಲವೃಕ್ಷಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇಶ. ಕಪಿಲೋಸ್ತಯತ್ರ ದೇಶ "ಇನಿ" (೪-೨-೧೩೪) । "ಛಿಪ್" (೪-೧-೪) ।

**ಕಪಿಧ್ವಜ ಕಪಿಧ್ವಜ (ಪುಂ)** ಕಪಿಯೇ ಧ್ವಜವಾಗಿ ಉಳ್ಳ ಅರ್ಜುನ. ಕಪಿ: ಧ್ವಜೋಸ್ತಯ । "ಕಪಿಧ್ವಜಸ್ತಸ್ಯ ವಿಭೋ-  
ರಪಶ್ಯತ್ತದ್ವಿತಂ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ದಿವ್ಯಮ್" ಯಾದಂ ೨೩-೩೩ ।

**ಕಪಿಪ್ರಭು ಕಪಿಪ್ರಭು (ಪುಂ)** 1. ಶ್ರೀರಾಮ. 2. ಕಪಿಗಳಿಗೆ ಒಡೆಯನಾದ ಸುಗ್ರೀವ. ಕಪಿಣಾಂ ಪ್ರಭು: ಸ್ವಾಮಿ ।

**ಕಪಿಪ್ರಿಯ ಕಪಿಪ್ರಿಯ (ಪುಂ)** 1. ಅಮೃತಮರ. ಕಪಿಣಾಂ ಪ್ರಿಯ: । 2. ಬೇಲದಮರ, ಕಪಿಲವೃಕ್ಷ.

**ಕಪಿರಥ ಕಪಿರಥ (ಪುಂ)** 1. ಶ್ರೀರಾಮ. ಕಪಿ: ರಥ ಇವ ವಾಹನಮಸ್ಯ । 2. ಕಪಿಯೇ ರಥದಲ್ಲಿ ಉಳ್ಳ ಅರ್ಜುನ. ಕಪಿ: ಹನುಮಾನ್ ರಥೋಸ್ತಯ ।

**ಕಪಿಲ ಕಪಿಲ (ತ್ರಿಂ)** 1. ಗೋರೋಚನದಂತೆ ಕೆಂಪುಬೆರತ ಹಳದಿಬಣ್ಣ, ಕಂದುಹಳದಿಬಣ್ಣ ಕಮ್ (ಕಾಂತಿ) "ಇಲಕ್" (೩ಂ ೧-೪೪) । (ಪುಂ) 2. ನಾಯು. 3. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 4. ವಾಸುದೇವ, ನಾರಾಯಣ. ಮಿಂಚಿನ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ನೀಲಮೇಘದಂತೆ ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ವಿದ್ಯುನ್ಮಂಡಲಮಧ್ಯಸ್ಥನೀಲಮೇಘವದ್ಭಜ್ಜ್ವಲ: । ಕಪಿಲ: ಸ ಸಮಾಖ್ಯಾತ: ಸಪ್ತವರ್ಣೋ ಮಹಾಮನು: " ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: । "ಸನಾತನಾತನತಮ: ಕಪಿಲ: ಕಪಿರವ್ಯಯ: " ವಿಂ ಸಂ । 5. ಸಾಂಖ್ಯಶಾಸ್ತ್ರಪ್ರವರ್ತಕರಾದ ಒಬ್ಬ ಮುನಿ, ಪರ ಮಾತೃನ ಇಷ್ಟತ್ವನಾಲ್ಕು ಅವತಾರಗಳಲ್ಲಿ ಐದನೆಯ ಒಂದು ಅವತಾರ. "ಪಶ್ಚಿಮ: ಕಪಿಲೋ ನಾಮ ಸಿದ್ಧೇಶ: ಕಾಲ-ವಿಪ್ಲವತಮ್ । ಪ್ರೋವಾಚಾಸುರಯೇ ಸಾಂಖ್ಯಂ ತತ್ತ್ವಗ್ರಾಮವಿನ್ಯಯಮ್" ಭಾಗಂ ೧-೩-೧೦ । ಕರ್ಮಮಯುಷಿಯ ಪತ್ನಿಯೂ ಸ್ವಾಯಂಭುವಮನುವಿನ ಮಗಳೂ ಆದ ದೇವಹೂತಿಯು ಈ ಮಹರ್ಷಿಯ ತಾಯಿ. (1) ಅರುಣಿ, (2) ಶ್ರದ್ಧಾ, (3) ಹವಿಸ್ಕ, (4) ಗತಿ:, (5) ಕ್ರಿಯಾ, (6) ಕ್ಷಾಂತಿ:, (7) ಶಾಂತಾ, (8) ಅನಸೂಯಾ ಮತ್ತು (9) ಕಲಾ ಈ ಒಂಬತ್ತು ಮಂದಿ ಈತನ ಸಹೋದರಿಯರು. ಭಾಗಂ ೩-೨೪ । "ರಜೋಗುಣಪರಿಣಾಮರೂಪವಾದ ಈ ಜಗತ್ತಿ ನಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಪ್ರಾಣಿಯೂ ದುಃಖಸಾಗರದಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿ ಕ್ಲೇಶಪಡುತ್ತಿರುವುದನ್ನು ಕಂಡು ಕೃಪಾಸಾಗರ ನಾದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಕಪಿಲರೂಪದಿಂದ ಅವತರಿಸಿ ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ, ಆಧಿದೈವಿಕ ಮತ್ತು ಆಧಿಭೌತಿಕಗಳೆಂಬ ದುಃಖತ್ರಯದಿಂದ ಈ ಜೀವರಾಶಿಯು ಪಾರಾಗಲು ದುಃಖ, ದುಃಖಕಾರಣ, ದುಃಖನಾಶ, ಅದರ ಉಪಾಯಜ್ಞಾನ

ಗಳೆಂಬ ನಾಲ್ಕು ಭಾಗಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಸಾಂಖ್ಯಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ರಚಿಸಿದನು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಸಾಂಖ್ಯ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಈ ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿಯ ಕೋಪಾಗ್ನಿಯಿಂದ, ಯಜ್ಞಾಶ್ವ ವನ್ನು ಹುಡುಕಲು ಭೂಮಿಯನ್ನು ಪಾತಾಳದವರೆಗೂ ಭೇದಿಸಿದ ಸಗರ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಅರವತ್ತುಸಾವಿರ ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳು ದಗ್ಧರಾದರು. ಸಗರಪುತ್ರರು ಯಜ್ಞಾಶ್ವವನ್ನು ಹುಡುಕಲು ಭೂಮಿಯೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಭೇದಿಸುತ್ತಿರುವಾಗ ಅಲ್ಲಿ ಕಪಿಲರೂಪದಿಂದ ಅವತರಿಸಿದ್ದ ಮಹಾವಿಷ್ಣುವನ್ನೂ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಮೇಯುತ್ತಿದ್ದ ಯಜ್ಞಾಶ್ವವನ್ನೂ ಕಂಡು ಈ ಮಹರ್ಷಿಯೇ ಯಜ್ಞಾಶ್ವವನ್ನು ಕದ್ದನೆಂದು ತಿಳಿದು ಎಲ್ಲರೂ ಬಹಳವಾಗಿ ನಂದಿಸುತ್ತಿರಲು ಮಹರ್ಷಿಯ ಕೋಪಾಗ್ನಿಯಿಂದ ಅರವತ್ತುಸಹಸ್ರ ಮಂದಿ ಸಗರಪುತ್ರರೂ ಭಸ್ಮಭೂತರಾದರು. "ತತ: ಪ್ರಾಗುತ್तरಾಂ ಗತ್ವಾ ಸಾಗರಾ: ಪಶ್ಚಿಮಾಂ ದಿಶಮ್ । ರೋಷಾತ್ಯತಃ ಸರ್ವೇ ಪೃಥಿವೀ ಸಗರಾತ್ಮಜಾ: । ದದೃಶು: ಕಪಿಲಂ ತತ್ರ ವಾಸುಧೇವಂ ಸನಾತನಮ್ । ಹ್ಯಂ ಚ ತಸ್ಯ ದೇವಸ್ಯ ಚರಂತಮವಿದ್ವರತ: । ತೇ ತಂ ಯಜ್ಞಹನಂ ಜಾತ್ವಾ ಕ್ರೋಧಪರ್ಯಾ-  
ಕ್ತುಲೇಕ್ಷಣಾ: । ಅಮೃತಾವಂತ ಸಂಕ್ರುದ್ಧಾಸ್ತಿಠ ತಿಷ್ಠೇತಿ ಚಾಬ್ರುವನ್ । ಅಸ್ಮಾಕಂ ತ್ವಂ ಹಿ ತುರಗಂ ಯಜ್ಞಯಂ ಹೃತವಾನಸಿ । ಪುರ್ಮಥಸ್ತ್ವಂ ಹಿ ಸಂಪ್ರಾಪ್ತಾನ್ ವಿಧಿ ನ: ಸಗರಾತ್ಮಜಾನ್ । ಶ್ರುತ್ವಾ ತದ್ವಚನಂ ತेषಾಂ ಕಪಿಲೋ ರಘುನಂದನ । ರೋಷೇಣ ಮಹತಾವಿಷ್ಟೋ ಹುಚ್ಚಾರಮಕರೋ-  
ನ್ಮುನಿ: । ತತಸ್ತೇನಾಪ್ರಮೇಯೇಣ ಕಪಿಲೇನ ಮಹಾತ್ಮನಾ । ಮಸ್ಮ-  
ರಾಶೀಕೃತಾ: ಸರ್ವೇ ಕಾಕುತ್ಸ್ಥ ಸಗರಾತ್ಮಜಾ: " ರಾಮಾಂ । "ಕಪಿಲಾ ರೇಣುಕಾಃ ಚ ಶಿಶುಪಾಣಿವಿಶೇಷಯೋ: । ಪುಂಡರೀಕ-  
ಕರಿಣ್ಯಾಂ ಸ್ತ್ರೀ ವರ್ಣಭೇದೇ ತ್ರಿಲಿಂಗಕಮ್ । ನಾನಲೇ ವಾಸುಧೇವೇ ಚ ಮುನಿಭೇದೇ ಚ ಕುಕ್ಕುರೇ " ಮೇದಿಂ ।

**ಕಪಿಲದ್ವಿತಿ ಕಪಿಲದ್ವಿತಿ (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯ. ಕಪಿಲಾ ಪಿಂಜಲಾ ದ್ವಿತೀಯಸ್ಯ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಹೊಂಬಣ್ಣ. (ವಿಂ) 3. ಹೊಂಬಣ್ಣದ.

**ಕಪಿಲಧಾರಾ ಕಪಿಲಧಾರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗಂಗಾನದಿ.

**ಕಪಿಲಸ್ಮೃತಿ ಕಪಿಲಸ್ಮೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿ ಪ್ರಣೀತವಾದ ಸ್ಮೃತಿ, ಸಾಂಖ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ. ವೇದಾರ್ಥಗಳ ಅನುಭವಪೂರ್ವಕ ಮಹರ್ಷಿಪ್ರಣೀತವಾದುದರಿಂದ ಸಾಂಖ್ಯಶಾಸ್ತ್ರವು ಸ್ಮೃತಿಯೆನಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

**ಕಪಿಲಾ ಕಪಿಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಪುಂಡರೀಕದಿಗ್ಗಜದ ಪತ್ನಿ. 2. ಹೊಂಬಣ್ಣದ ಅಗುರುಗಿಡ. 3. ರೇಣುಕವೆಂಬ ಪನಸಾರಿ ವಸ್ತು. 4. ಗೋವು, ಹಸು. "ಕಪಿಲಾ ರೇಣುಕಾಃ ಚ ಶಿಶುಪಾಣಿವಿಶೇಷಯೋ: । ಪುಂಡರೀಕಕರಿಣ್ಯಾಂ ಸ್ತ್ರೀ ವರ್ಣಭೇದೇ ತ್ರಿಲಿಂಗಕಮ್ " ಮೇದಿಂ ।



**ಕಪಿಲಾಚಾರ್ಯ ಕಪಿಲಾಚಾರ್ಯ** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ಸಾಂಖ್ಯ ತತ್ತ್ವವನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸಿದ ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿ. ಕಪಿಲ-ಶಾಸಾಚಾರ್ಯಶ್ಚ। “ತತ್ವಪ್ರವಚನಾದೇವ ಕಪಿಲಾಚಾರ್ಯಃ ಉಚ್ಯತೇ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ। “ಮಹರ್ಷಿಃ ಕಪಿಲಾಚಾರ್ಯಃ ಕೃತಜ್ಞೋ ಮೇದಿನೀಪತಿಃ” ವಿಂ ಸಂ।

**ಕಪಿಲಾಶ್ವ ಕಪಿಲಾಶ್ವ** (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ಕಪಿಲವರ್ಣೋಷ್ವೋಸ್ಯ।

“ಪ್ರಾಚೀನರ್ಬಹಿಃ ಸದಿರಃ ಕಪಿಲಾಶ್ವೋ ವರಕನುಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಕಪಿಲಾವಟ ಕಪಿಲಾವಟ** (ಪುಂ) ಗಂಗಾನದಿಯ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಪುಣ್ಯತೀರ್ಥ. ಕಪಿಲಯಾ ಕೃತೋವಟಃ।

**ಕಪಿಲಿಕಾ ಕಪಿಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜರಿ. ಕಪಿಲಾ ಸಂಜಾಯಾ “ಕನ್” (೪-೩-೭೪)। ಜರಿಯು (1) ಪರಾ, (2) ಕೃಷ್ಣಾ, (3) ಚಿತ್ರಾ, (4) ಕಪಿಲಿಕಾ, (5) ಪೊತಿಕಾ, (6) ರಕ್ತಾ, (7) ಶ್ವೇತಾ ಮತ್ತು (8) ಅಗ್ನಿಪ್ರಭಾ ಎಂದು ಎಂಟು ವಿಧ. ಸುಶ್ರುತಂ।

**ಕಪಿಲೇಶ ಕಪಿಲೇಶ** (ನಂ) ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಸಲ್ಪಟ್ಟ ಒಂದು ಈಶ್ವರಲಿಂಗ. ಕಪಿಲೇನ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಿತ-ಮಿಶಲಿಜ್ಞಮ್। “ಕಪಿಲೇಶಂ ಮಹಾಲಿಜ್ಞಂ ಕಪಿಲೇನ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಮ್। ಮುಚ್ಯಂತೇ ಕಪಯೋಷ್ಯಸ್ಯ ದರ್ಶನಾತ್ ಕಿಮು ಮಾನವಾಃ” ಕಾಶೀಖಂ।

**ಕಪಿವಲ್ಲಿ ಕಪಿವಲ್ಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಜಹಿಪ್ಪಲಿ. ಕಪಿರಿವಲ್ಲಿ।

**ಕಪಿಶ ಕಪಿಶ** (ಪುಂ) 1. ಗೋರೋಚನದಂತೆ ಕೆಂಪುಬೆರತ ಹೊಂಬಣ್ಣ. ಕಂದುಹಳದಿಬಣ್ಣ. 2. ಕಪ್ಪುಬೆರತ ಹಳದಿ ಬಣ್ಣ. ಕಪಿಮಕಂಠಃ, ತದ್ವರ್ಣತ್ವಾತ್ ಕಪಿಶಃ। 3. ಲೋಚನ. ಒಂದು ವಾಸನೆಯ ದ್ರವ್ಯ. (ನಂ) 4. ಮದ್ಯ. ಹೆಂಡ. “ಕಶ್ಯಂ ಮಧ್ಯಂ ಚ ಮೇರಯಂ ಕಪಿಶಂ ಕಾಪಿಶಾಯನಮ್” ಹಲಾಂ। “ಗ್ರಾಮ್ಯಾನಪಶ್ಯತ್ಕಪಿಶಂ ಪಿಪಾಸತಃ ಸ್ವಗೋತ್ರಸಂಕೀರ್ತನಭಾವಿ-ತಾತ್ಮನಃ” ಮಾಘಂ ೧೨-೩೮। (ವಿಂ) 5. ಕೆಂಪುಬಣ್ಣದ, ಕೆಂಪುಬೆರತ ಹಳದಿಬಣ್ಣದ, “ಛಾಯಾಶ್ಚರಂತಿ ಬಹುವಾ ಭಯ-ಮಾದಧಾನಾಃ ಸಂಧ್ಯಾಪಯೋದಕಪಿಶಾಃ ಪಿಪಿಶಿತಾಶನಾನಾಮ್” ಶಾಕುಂ ೩-೨೪। 6. ಕಪ್ಪುಬೆರತ ಹಳದಿಬಣ್ಣದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಶಾ -ಶಾ. 1. ಮದ್ಯ. ಹೆಂಡ. 2. ಮಾಧವೀಲತೆ. “ಕಪಿಶೋ ಸಿಂಹಃ ಕಪಿಶಾ ಮಾಧವೋ ಸುರಾ” ಹೇಮಂ। 3. ಉಪಲದೇಶದ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ನದಿ. “ಸ ತೀರ್ತ್ವಾ ಕಪಿಗಾಂ ಸೇನೈರ್ಬದ್ಧದ್ವಿರದಸೇತುಮಿಃ। ಉತ್ಕಲಾದಶಿತಪಥಃ ಕಲಿಜ್ಞಾನಿಮುಖೋ ಯಯಿ” ರಘುಂ ೪-೩೮।

**ಕಪಿಶಿತ ಕಪಿಶಿತ** (ವಿಂ) ಹೊಂಬಣ್ಣದ್ದಾಗಿ ಆಗಿರುವ. ಕೆಂಪುಬೆರತ ಹಳದಿಬಣ್ಣದ್ದಾಗಿ ಆಗಿರುವ. ಕಪಿಶೋಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ “ಇತಚ್” (೪-೨-೩೬)।

**ಕಪಿಶೀರ್ಷ ಕಪಿಶೀರ್ಷ** (ನಂ) ಪ್ರಾಕಾರದ ಮೇಲುಭಾಗ, ಸುತ್ತಗೋಡೆಯ ತುದಿಯಭಾಗ.

**ಕಪಿಠಲ ಕಪಿಠಲ** (ಪುಂ) ಗೋತ್ರಪ್ರವರ್ತಕರಾದ ಒಬ್ಬ ಯುಷ್ಠಿ. “ಕಪಿಠಲೋ ಗೋತ್ರೇ” ಪಾಂ ಸುಂ ೮-೩-೯೧। ನಿಪಾಂ। ಗೋತ್ರಾದನ್ಯತ್ರ ನ ಪತ್ವಮ್। ಕಪಿಠಲಮ್। (ನಂ) ಕಪಿಗಳ ಜಾಗ. ಕಪಿಗಳು ವಾಸಿಸುವ ಸ್ಥಳ.

**ಕಪಿಜಯ ಕಪಿಜಯ** (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರ. 2. ಸುಗ್ರೀವ. ಕಪಿಭಿರಿಜಯತೇ ಪೂಜಯತೇ - ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾಯಾಮ್) “ಕಪಿ” ಸಂಪ್ರಂ।

**ಕಪಿತನ ಕಪಿತನ** (ಪುಂ) 1. ಅಮಟೆಮರ. 2. ಬಾಗೆಮರ. 3. ಬಸುರಿಮರ. 4. ಅರಳಿಮರ. ಕಪಿನಾಮ್ ಇ ಲಕ್ಷ್ಮಿ ತನೋತಿ - ತನು (ವಿಸ್ತಾರೇ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ಕಪಿತನೋ ಗರ್ದಭಾಣ್ಡಶಿರೀಷಾಮ್ರಾತಕೇಷು ಚ। ಅಶ್ವತ್ಥೇ ಚ” ಮೇದಿಂ।

**ಕಪಿನ್ದ್ರ ಕಪಿನ್ದ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಕಪಿಗಳ ರಾಜ, ಸುಗ್ರೀವ. ಕಪಿನಾಮಿನ್ದ್ರಃ। 2. ಕಪಿಶ್ರೇಷ್ಠ, ಹನೂಮಂತ, ಅಂಜನೇಯ. 3. ವಿಷ್ಣು. 4. ಶ್ರೀರಾಮ. “ಕಪಿರೂಪಂ ಪ್ರಪನ್ನಾನಾಂ ದೇವಾನಾಮಿಶ್ವರತ್ವತಃ। ಕಪಿನ್ದ್ರ ಇತಿ ವಿಖ್ಯಾತಃ ಸಪ್ತಾಂಗೋ ಮನುನಾಯಕಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ। “ಶರೀರಭೂತಕೃತ್ ಭೋಕ್ತಾ ಕಪಿನ್ದ್ರೋ ಭೂರಿದಕ್ಷಿಣಃ” ವಿಂ ಸಂ।

**ಕಪಿವತ್ ಕಪಿವತ್** (ಪುಂ) ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿಯ ಏಳು ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. “ಔರ್ವೋ ವಸಿಷ್ಠಪುತ್ರಶ್ಚ ಸ್ತಮ್ಬಃ ಕಶ್ಯಪ ಏವ ಚ। ಕಪಿವಾನಕಪಿವಾಂಶ್ಚ ದಂತೋಲಿಶ್ಯವನಸ್ತಥಾ। ವಸಿಷ್ಠಪುತ್ರಾಃ ಸಪ್ತಾಸನ್” ಹರಿವಂ।

**ಕಪಿಶ ಕಪಿಶ** (ಪುಂ) 1. ಸುಗ್ರೀವ. 2. ಕಪಿಶ್ರೇಷ್ಠ, ಹನೂಮಂತ. ಕಪಿನಾಮಿಶಃ। “ಕಪಿಶಮಕ್ಷಹಂತಾರಂ ವಂದೇ ಲಕ್ಷ್ಮಾಭಯಚ್ಛರಮ್”।

**ಕಪುಚ್ಛಲ ಕಪುಚ್ಛಲ** (ನಂ) 1. ಜಡೆ, ವೇಣೆ, ಬಾಲದಂತೆ ತೂಗಾಡುತ್ತಿರುವ ಹೆಣೆಯಲ್ಪಟ್ಟ ತಲೆಯ ಕೂದಲು. ಕಸ್ಯ ಶಿರಸಃ ಪುಚ್ಛಮಿವ ಲಾತಿ - ಲಾ (ಆದಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೪-೨)। 2. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಹೋಮಕ್ಕಾಗಿ ಅಜ್ಯವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ ಸ್ತುತಿನ ಅಗ್ರಭಾಗ, ಹೋಮದ ಸವಟಿನ ತುದಿಯ ಭಾಗ.

**ಕಪುಷ್ಟಿಕಾ ಕಪುಷ್ಟಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜುಟ್ಟು, ಜಡೆ, ಹೆಣೆಯ ಲ್ಪಟ್ಟ ಕೇಶವಾಶ. ಕಸ್ಯ ಶಿರಸಃ ಪುಷ್ಟಿಕಾ ಪೋಷಣಾಯ ಕಾಯತಿ - ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೪)।

**ಕಪುಯ ಕಪುಯ** (ವಿಂ) 1. ನೀಚ, ಕೆಟ್ಟ, ಕುತ್ತಿತ, ಅಯೋಗ್ಯ. ಕುತ್ಸಿತಂ ಪೂಯತೇ - ಪೂಯಿ (ವಿಶರಣೆ ದುರ್ಗಂಧೇ ಚ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। ಪೂಂ। 2. ಕೆಟ್ಟವಾಸನೆಯುಳ್ಳ.



**ಕಪೋತ ಕಪೋತಕ (ಪುಂ) 1.** ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ. ಕಸ್ಯ ವಾಯು: ಪೋತ ಇವ ಕೌ ವಾಯು: ಪೋತ ಇವ ಯಸ್ಯ ವಾ। “ಅಥೋನ್ವಕೇ-  
ಜರಠಕಪೋತಕಂಧರಾತನುಹಪ್ರಕರವಿಪಾಂಡುರಬ್ರಹ್ಮಿತಿ” ಮಾಘಂ  
೧೭-೪೨। 2. ಚಿತ್ರವರ್ಣದ ಕಂಠವುಳ್ಳ ಕಾಡುಪಾರಿವಾಳದ  
ಹಕ್ಕಿ. “ಕಪೋತ: ಸ್ಯಾನ್ವಿತ್ರಕಂಠಪಾರಾವತವಿಹಂಗುಯೋ:” ಮೇದಿಂ।  
ಕಪೋತವು ಗೃಹಕಪೋತ: ವನಕಪೋತ: ಮತ್ತು ಚಿತ್ರಕಪೋತ:  
ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ಕಪೋತವು ಹಗಲಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ  
ಸಂಚರಿಸುವ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಗುಂಪಿಗೆ ಸೇರಿದುದು. “ಶ್ಯಾಮಾ  
ಶ್ಯೇನಶಾಶ್ವನವಜ್ಜುಲಶಿಖಿಶ್ರೀಕರ್ಣವಕ್ರಾಹ್ವಯಾಶ್ಚಾಪಾಣ್ಡೀರಕ-  
ಖಂಜರೀಡಕಶುಕವಾಙ್ಮುಖಾ: ಕಪೋತಾಸ್ತ್ರಯ:। ಭಾರದ್ವಾಜ-  
ಕುಲಾಲಕುಕುಟಕರಾ ಹಾರೀತಗೃಧ್ರಾ ಕಪಿ: ಕೇಶ: ಕುಕುಟ  
ಪೂರ್ಣಕುಟಕಾಶ್ಚೋಕ್ತಾ ದಿವಾಸಶ್ಚರಾ:”।

**ಕಪೋತಕ ಕಪೋತಕ (ನಂ) ಸೌವೀರಾಂಜನ.** ಕಪೋತ ಇವ  
ಕಾಯತಿ — ಕೆ (ಶಬ್ದ) “ಕ:” (೩-೨-೪)।

**ಕಪೋತನಾಲಿಕಾ ಕಪೋತನಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹತ್ತಿಯಿಂದ  
ದಾರವನ್ನು ತೆಗೆಯುವ (ನೂಲುವ) ಚರಖ, ಕದಿರು.

**ಕಪೋತಪಾಲಿಕಾ ಕಪೋತಪಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪಾರಿವಾಳದ  
ಮನೆ, ಪಾರಿವಾಳದ ಗೂಡು, ಪಾರಿವಾಳಹಕ್ಕಿಗಳ  
ಗೂಡುಟ್ಟಿರುವ ಸ್ಥಳ. ಕಪೋತಾನ್ ಪಾಲಯತಿ—ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ)  
+ ಣಿಕ್ “ಅನ್” (೩-೨-೧)। “ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೫)।  
ಸಂಜ್ಞಾया “ಕನ್” (೪-೩-೨೫)। ಪಾಲಯತಿ — ಪಾಲ +  
ಣಿಕ್ “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩)। ಕಪೋತಾನಾಂ ಪಾಲಿಕಾ  
ಇತಿ ವಾ।

**ಕಪೋತಪಾಲಿ ಕಪೋತಪಾಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಪೋತದ ಗೃಹ,  
ಪಾರಿವಾಳ ಹಕ್ಕಿಯ ಗೂಡು. ಕಪೋತಾನ್ ಪಾಲಯತಿ—ಪಾಲ  
(ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಕ್ “ಅನ್” (೩-೨-೧)। “ಡೀಪ್”  
(೪-೧-೧೫)। “ಚಿತ್ರಸಯಾ ಕೃತ್ರಿಮಪತ್ರಿಪಡ್ಕೇ: ಕಪೋತ-  
ಪಾಲೀಷು ನಿಕೇತನಾನಾಮ್” ಮಾಘಂ ೩-೪೧।

**ಕಪೋತರೋಮನ್ ಕಪೋತರೋಮನ್ (ಪುಂ) 1.** ಒಬ್ಬ ರಾಜ,  
ಕಪೋತವೇಷವನ್ನು ತಾಳಿದ ಅಗ್ನಿಯ ವರದಿಂದ ಜನಿಸಿದ  
ಶಿವಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಒಬ್ಬ ಮಗ. “ವೈಶ್ವಾನರೋಽಹಂ ಜ್ವಲನೋ  
ಧೂಮಕೇತುರಥೈವ ಶ್ಯೇನೋ ವಜ್ರಹಸ್ತ: ಶಚೀಪತಿ:। ಸಾಧು ಜ್ಞಾತು  
ತ್ವಾಂ ಕೃಷಮ್ ಸೌರಭೇಯ ನೌ ಜಿಜ್ಞಾಸಯಾ ತ್ವತ್ಸಕಾಶಂ ಪ್ರಪನ್ನೌ।  
ಯಾಮೇತಾಂ ಪೇಶಿಂ ಮಮ ನಿಷ್ಕ್ರಯಾಯ ಪ್ರಾದಾಙ್ಮವಾನಸಿನೋತ್ಕೃತ್ಯ ರಾಜನ್।  
ಎತಾಸಾಂ ಪ್ರಜಾಢಾಂ ಪಾಲಯಿತಾ ಯಶಸ್ವೀ ಸುರರ್ಷಿಣಾಮಥ ಸಮತೌ  
ಭೃಶಮ್। ಎತಸ್ಮಾತ್ಪಾಶ್ವಾತ್ ಪುರುಷೌ ಜನಿಷ್ಯತಿ ಕಪೋತರೋಮೇತಿ  
ಚ ತಸ್ಯ ನಾಮ” ಭಾಂ ವನಂ ೨೦೦। 2. ಯದುಮಂಶದ  
ಕುಕುರರಾಜನ ಮೊಮ್ಮಗನಾದ ಒಬ್ಬ ರಾಜ.

**ಕಪೋತಲುಬ್ಧಕಾಯ ಕಪೋತಲುಬ್ಧಕೇಯಂ (ನಂ) ಗೃಹಸ್ಥನು**  
ಪ್ರಾಣವನ್ನಾದರೂ ಒಪ್ಪಿಸಿ ಅತಿಥಿಸತ್ಕಾರ ಮಾಡಬೇಕೆಂದು  
ತಿಳಿಸುವ ಮಹಾಭಾರತದ ಒಂದು ಕಥೆ. ಕಪೋತ ಲುಬ್ಧಕ  
ಚಾಢಿಕೃತ್ಯ ಕೃತೌ ಗ್ರಂಥ: “ಛ:” (೪-೨-೬)। [ಒಂದು  
ಮರದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಕಪೋತವೊಂದು ಅಹಾರಕ್ಕಾಗಿ  
ಹೊರಗೆ ಹೋಗಿದ್ದ ತನ್ನ ಮಡದಿಯು ವ್ಯಾಧಿನೊಬ್ಬನಿಂದ  
ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟು ಬಹಳ ಹೊತ್ತಾದರೂ ಬಾರದಿರಲು  
ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಅಳತೊಡಗಿತು. ವ್ಯಾಧನ ಪಂಜರದೊಳಗಿದ್ದ  
ಪತ್ನಿಯು ತನ್ನ ಪತಿಯು ಅಳುತ್ತಿರುವುದನ್ನು ಕೇಳಿ ಪತಿಗೆ  
ಧರ್ಮೋಪದೇಶಮಾಡಿ ಹೇಗಾದರೂ ಮಾಡಿ ವ್ಯಾಧನನ್ನು  
ಸತ್ಕರಿಸಬೇಕೆಂದು ಹೇಳಿತು. ಭಳಿಯಿಂದ ನಡುಗುತ್ತಿದ್ದ  
ವ್ಯಾಧನು ಮೊದಲು ಬೆಂಕಿಯ ಶಾವುವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲು  
ಕಪೋತವು ತರಗಲೆಗಳನ್ನು ಕೂಡಿಸಿ ಬೆಂಕಿಕಾಯಲು ಅಣಿ  
ಮಾಡಿಕೊಟ್ಟಿತು. ಅನಂತರ ಹಣ್ಣುಹಂಪಲುಗಳನ್ನು ತಂದು  
ಕೊಡಲು ಅಶಕ್ತವಾಗಿದ್ದ ಕಪೋತವು ವ್ಯಾಧನ ಆಹಾರಾರ್ಥ  
ವಾಗಿ ತಾನೇ ಬೆಂಕಿಯೊಳಗೆ ಬಿದ್ದಿತು. ಕಪೋತದ ಈ ಧರ್ಮ  
ಬುದ್ಧಿಯನ್ನು ನೋಡಿ ತನ್ನ ಘಾತುಕೃತ್ಯವನ್ನು ಬಹಳ  
ವಾಗಿ ನಂದಿಸಿ ತಾನೂ ಉಪಮಾಸಾದಿಗಳಿಂದ ಪಾರಲೌಕಿಕ  
ವನ್ನು ಆಚರಿಸಿ ಸದ್ಗತಿಯನ್ನು ಹೊಂದಬೇಕೆಂದು ನಿಶ್ಚಯಿಸಿ  
ಹಣ್ಣುಕಪೋತವನ್ನೂ ಪಂಜರದಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಿಟ್ಟು  
ಧರ್ಮಾಚರಣೆಗಾಗಿ ಹೊರಟುಹೋದನು. ಇತ್ತ ಕಪೋ  
ತಿಯೂ ಪತಿಯ ಅವಸ್ಥೆಯನ್ನು ನೋಡಿ ದುಃಖಿಸಿ ತಾನೂ  
ಬೆಂಕಿಯೊಳಗೆ ಬಿದ್ದು ಪ್ರಾಣಬಿಟ್ಟಿತು. ಆ ಕೂಡಲೇ  
ವಿಮಾನಾರೂಢವಾಗಿದ್ದ ತನ್ನ ಪತಿಯೊಡನೆ ಸ್ವರ್ಗವನ್ನು  
ಸೇರಿ ಸುಖವಾಗಿ ವಿಹರಿಸುತ್ತಿದ್ದಿತು. ಇದೇ “ಕಪೋತ  
ಲುಬ್ಧಕೇಯಂ”.] ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ಅಧ್ಯಾಯಾ: ೧೪೩-೧೪೮।

**ಕಪೋತವಕ್ಷಾ ಕಪೋತವಂಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಬ್ರಾಹ್ಮೀವೃಕ್ಷ,  
ಹೊನ್ನಗೊನೆಗಿಡ. ಕಪೋತೌ ವಚ್ಯತೇಜಯಾ—ವಚ್ಚು(ಪ್ರಲಮ್ಬನೆ)  
+ ಣಿಕ್ “ಘನ್” (೩-೩-೧೨೧)। ಇದು ಅಶ್ವರೀ  
ವ್ಯಾಧಿಯ (ಮೂತ್ರರೋಗದ) ಚಿಕಿತ್ಸೆಗಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸ  
ಲ್ಪಡುವುದು. “ಕಪೋತವಕ್ಷಾಮೂಲಂ ವಾ ಪಿಬೇದಮ್ಲೈ: ಸುರಾದಿಭಿ:।  
ತತ್ತಿಸಿಡಂ ವಾ ಪಿಬೇತ್ ಕ್ಷೀರಂ ವೇದನಾಭಿರಪದ್ಧತ:” ಸುಶ್ರುತಂ  
ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೭-೨೫।

**ಕಪೋತವರ್ಣಿ ಕಪೋತವರ್ಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸಣ್ಣಯಾಲಕ್ಕಿಗಿಡ.  
ಕಪೋತಸ್ಯ ವರ್ಣ ಇವ ವರ್ಣಾಽಸ್ಯಾ:। ಗೌರಾಂ “ಡೀಪ್”  
(೪-೧-೪೧)।

**ಕಪೋತವೃತ್ತಿ ಕಪೋತವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1.** ಕಪೋತದಂತೆ  
ನಡೆಸುವ ಜೀವನ, ಪಾರಿವಾಳ ಪಕ್ಷಿಯಂತೆ ಆಹಾರವನ್ನು



ವನ್ನು ಶೇಖರಿಸಿದ ನಡೆಸುವ ಜೀವನ. ಪಾರಿವಾಳ ಹಕ್ಕಿಗಳು ಕೂಡಿಸಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳದೆ ಆಗತಾನೆ ದೂರಕುವ ಆಹಾರದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವು. ಕಪೋತಸ್ಯೇವ ವೃತ್ತಿಃ | (ವಿಂ) 2. ಕಪೋತದಂತೆ ಜೀವಿಕೆಯುಳ್ಳವನು. ಕಪೋತಸ್ಯೇವ ವೃತ್ತಿರಸ್ಯ | ಕಪೋತಾಂಜನ ಕಪೋತಾಂಜನ (ನಂ) ಸೌವೀರಾಂಜನ. ಕಪೋತವರ್ಣಮಂಜನಮ್ |

ಕಪೋತಾರಿ ಕಪೋತಾರಿ (ಪುಂ) ಶೈಲನಪಕ್ಷಿ; ಗಿಡಗದ ಹಕ್ಕಿ. ಕಪೋತಸ್ಯಾರಿಃ |

ಕಪೋತಿನ್ ಕಪೋತಿನ್ (ವಿಂ) ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. ಕಪೋತೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) |

ಕಪೋತಿ ಕಪೋತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ. ಕಪೋತಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ | ಜಾತಿಂ "ಕಪಿ" (೪-೧-೬೩) |

ಕಪೋಲ ಕಪೋಲ (ಪುಂ) ಕೆನ್ನೆ. ಗಂಡಸ್ಥಳ. ಕಮ್ಪತೆ ಭೋಜನಸಮಯ - ಕಪಿ (ಚಲನೆ) "ಕೋಲಕ್" (೩-೧-೬೬) | "ಪ್ರಾಪ್ಯತೇ ಸ್ಮ ಗತಿಚಿತ್ರಕಚಿತ್ರೈಶ್ಚಿತ್ರಮಾರ್ಗನಖಲಕ್ಷಮ ಕಪೋಲೈಃ" ಮಾಘಂ ೧೦-೭೮ | "ಕಪೋಲಕಂಠಃ ಕರಿಭಿವಿನೇತು ವಿಘಟಿತಾನಾಂ ಸರಲದ್ರುಮಾಣಾಮ್" ಕುಮಾರಂ ೧-೯ |

ಕಪೋಲಕಾಷ ಕಪೋಲಕಾಷ (ಪುಂ) ಕೆನ್ನೆ ತಿಕ್ಕಲ್ಪಡುವ ಒಂದು ಜಾಗ ಅಥವಾ ಒಂದು ವಸ್ತು; ಮರ, ಬಂಡೆ ಮೊದಲಾದವು. ಕಪೋಲಃ ಕಪೋಲೇನ-ಕಪ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಕರಂ "ಕಪ್" (೩-೩-೧೨೧) | "ಎತಸ್ಮಿನ್ ಮದಯತಿ ಕೋಕಿಲಾನಕಾಲೇ ಲೀನಾಲಿಃ ಸುರಕರಿಣಾಂ ಕಪೋಲಕಾಃ" ಕಿರಾಂ ೪-೨೬ |

ಕಪೋಲತಾಡನ ಕಪೋಲತಾಡನ (ನಂ) ಕೆನ್ನೆಗೆ ಹೊಡೆಯುವಿಕೆ, ಅಪರಾಧ (ತಪ್ಪು) ಮಾಡಿದುದಕ್ಕಾಗಿ ಕೆನ್ನೆಗೆ ಏಟು ಕೊಡುವಿಕೆ. ಕಪೋಲೇ ತಾಡನಮ್ |

ಕಪೋಲಪತ್ರ ಕಪೋಲಪತ್ರ (ನಂ) ಕೆನ್ನೆಯಮೇಲೆ ಬರೆಯುವ ಎಲೆಯ ಆಕಾರದ ಚಿತ್ರ. ಕಪೋಲೇ ಪತ್ರಮಿವ | "ಕಪೋಲಪತ್ರಾನ್ಮಕರಾತ್ಸಕೇತುಭ್ರಂಭಾಂ ಜಿಗೀಪುರ್ಧನುಪಾ ಜಗಂತಿ" ನೈಋಂ ೭-೬೦ |

ಕಪೋಲಫಲಕ ಕಪೋಲಫಲಕ (ಪುಂ) ಹಲಗೆಯಂತೆ ವಿಸ್ತಾರವಾದ ಕೆನ್ನೆ. ಕಪೋಲಃ ಫಲಕ ಇವ | "ಔಷಧಿಕ್ರಿತಕಂಧರಃ ಸಪುಲಕಃ ಪ್ರಮೋಲ್ಲಸನ್ಮಾನಸಾಮಂತಹಸಿಸತಕಪೋಲಫಲಕಾಂ ಧೂತೋಪರಾಂ ಚುಂಬತಿ" ಅಮರಂ ೧೯ |

ಕಪೋಲಭಿತ್ತಿ ಕಪೋಲಭಿತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋಡೆಯಂತೆ ಆಗಲವಾದ ಕೆನ್ನೆ. ಕಪೋಲೋ ಭಿತ್ತಿರಿವ | "ಕೋಪಾತ್ತಾಮ್ರ-ಕಪೋಲಭಿತ್ತಿನಿ ಮುಖೇ ದೃಷ್ಟಾ ಗತಃ ಪಾದಯೋಃ" ಅಮರಂ ೮೩ |

ಕಪೋಲಿ ಕಪೋಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂಡಿಚಿಪ್ಪು, ಮಂಡಿಕೇಲಿನ ಹೊರಭಾಗದ ಎಲುಬು.

ಕಫ ಕಫ (ಪುಂ) ಶ್ಲೇಷ್ಮ. ಕಫ, ದೇಹದೊಳಗಿನ ಮಂದವೂ ಜಿಗುಟೂ ಆದ ಲೋಳೆ, ದೇಹದೊಳಗಿನ ಪಾತ ಪಿತ್ತ ಮತ್ತು ಕಫಗಳೆಂಬ ಮೂರು ದೋಷಗಳಲ್ಲೊಂದು ["ತ್ರಿದೋಷ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. ಶರೀರದೊಳಗಿನ ಸಪ್ತ ಧಾತುಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ರಸಧಾತುವಿನ ಮಲ. ಕೇನ ಜಲೇನ ಫಲತಿ - ಫಲ (ನಿಷ್ಪತ್ತಿ) "ಫಃ" (೩-೨-೧೦೧) | "ಕಫಃ ಪಿತ್ತಂ ಮಲಃ ಕ್ಷೇಪಃ ಸ್ವೇದಃ ಸ್ಯಾನ್ಮುಖರೋಮ ಚ | ನೇತ್ರವಿಡ್ ತ್ವಕ್ಷು ಚ ಸ್ತೇಹೋ ಧಾತುನಾಂ ಕ್ರಮಶೋ ಮಲಾಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬-೪೨೯ | ಆಕಾಶವು ಮೇಘಾವೃತವಾಗಿಯೂ ಭೂಮಿಯು ಶೀತವಾಗಿಯೂ ಇರುವ ವರ್ಷಾರ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಎಳೆಯದಾಗಿಯೂ ಅಲ್ಪವೀರ್ಯವುಳ್ಳದ್ದಾಗಿಯೂ ಇರುವ ಗೋಧಿ, ಬತ್ತ, ಕಡಲೆ ಮೊದಲಾದ ಧಾನ್ಯಗಳನ್ನೂ ಕಲುಷಿತವಾಗಿರುವ ನೀರನ್ನೂ ಉಪಯೋಗಿಸುವುದರಿಂದ ಇವು ಶೀತಪ್ರಕೃತಿಯವರಿಗೆ ಪಿತ್ತವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವವು. ಈ ಪಿತ್ತವು ಭೂಮಿಯೆಲ್ಲವೂ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬಣಗಿರುವ ಶರದೃತುವಿನಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯಕಿರಣಸಂಪರ್ಕದಿಂದ ದ್ರವೀಭೂತವಾಗಿ ಪಿತ್ತಸಂಬಂಧವ್ಯಾಧಿಗಳನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದು. "ವರ್ಷಾಸ್ವೋಷಧಯಸ್ತರಣ್ಯೋಽಲ್ಪವೀರ್ಯಾ ಆಪಸ್ವಾಪ್ರಶಾಂತಾಃ ಕ್ಷಿತಿಮಲಪ್ರಾಪಾಃ, ತಾ ಉಪಯುಜ್ಯಮಾನಾ ನಭಸಿ ಮೇಘಾವತೇ ಜಲ-ಪ್ರಕಿಲಿಪ್ತಾಃ ಭೂಮಿ ಕಿಲಿಪ್ತದೇಹಾನಾಂ ಪ್ರಾಣಿನಾಂ ಶೀತವಾತವಿಘಟ-ಮ್ಭಿತಾಗ್ನಿನಾಂ ವಿದಹಂತೇ, ವಿದಾಹಾತ್ ಪಿತ್ತಸಂಚಯಮಾಪಾದ-ಯಂತಿ; ಸ ಚ ಸಂಚಯಃ ಶರದಿ ಪ್ರವಿರಲಮೇಧೇ ವಿಯತ್ಯುಪ-ಶುಷ್ಯತಿ ಪಕ್ಷು ಅರ್ಕಕಿರಣಪ್ರವಿಲಾಸಿತಃ ಪೈತ್ತಿಕಾನ್ ವ್ಯಾಧಿನ್ ಜನಯತಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೬-೧೧ | ಸೂರ್ಯಕಿರಣಗಳು ಮಂದವಾಗಿರುವ ಹೇಮಂತಾರ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬರಿತು ವೀರ್ಯವತ್ತಾಗಿರುವ ಈ ಧಾನ್ಯಗಳನ್ನೂ ಗುರುವಾಗಿಯೂ ಪ್ರಶಾಂತವಾಗಿಯೂ ಇರುವ ನೀರನ್ನೂ ಉಪಯೋಗಿಸುವುದರಿಂದ ಹಿಮಸಹಿತವಾದ ಗಾಳಿಯಿಂದ ಶಕ್ತಿಹೀನರಾಗಿ ಶರೀರವುಳ್ಳವರಿಗೆ ಕಫವು ಸೇರುವುದು. ಈ ಕಫವು ವಸಂತಾರ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ತೀವ್ರವಾಗಿರುವ ಸೂರ್ಯಕಿರಣದಿಂದ ಕರಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಸ್ವಲ್ಪ ಅಲಸವಾದ ದೇಹವುಳ್ಳವರಿಗೆ ಶ್ಲೇಷ್ಮಸಂಬಂಧವಾದ ವ್ಯಾಧಿಗಳನ್ನು ಉಂಟು ಮಾಡುವುದು. "ತಾ ಏವೋಷಧಯಃ ಕಾಲಪರಿಣಾಮಾತ್ ಪರಿಣತ-ವೀರ್ಯಾ ಬಲವತ್ಯೋ ಹೇಮಂತೇ ಭವಂತ್ಯಾಪಶ್ಚ ಪ್ರಶಾಂತಾ ಸ್ನಿಗ್ಧಾ ಅತ್ಯರ್ಥ ಗುರ್ವ್ಯಶ್ಚ, ತಾ ಉಪಯುಜ್ಯಮಾನಾಃ ಮಂದಕಿರಣತ್ವಾದ್ಭಾನೋಃ ಸತುಷಾರಪವನೋಪಸ್ತಮ್ಭಿತದೇಹಾನಾಂ ದೇಹಿನಾಂ ಶ್ಲೇಷ್ಮಸಂಚಯಮಾಪಾದ-ಯಂತಿ, ಸ ಚ ಸಂಚಯಃ ವಸಂತೇರ್ಕರಶಿಮಪ್ರವಿಲಾಸಿತ ಔಷತ್ಸಂವ-ದೇಹಾನಾಂ ದೇಹಿನಾಂ ಶ್ಲೇಷ್ಮಿಕಾನ್ ವ್ಯಾಧಿನ್ ಜನಯತಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೬-೧೧ | ಗ್ರೀಷ್ಮಾರ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಬಣಗಿಹೋಗಿರುವ



ಆ ಕಡಲೆ ಗೋಧಿ ಮೊದಲಾದ ಧಾನ್ಯಗಳನ್ನೂ ಬಹಳ ಲಘುವಾಗಿರುವ ನೀರನ್ನೂ ಉಪಯೋಗಿಸಿದಲ್ಲಿ ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ಸೂರ್ಯಕಿರಣದಿಂದ ಶುಷ್ಕವಾದ ಶರೀರವುಳ್ಳವರಿಗೆ ದೇಹದಲ್ಲಿ ವಾತವು ಸೇರಲುಪಕ್ರಮಿಸುವುದು. ಆ ವಾತವು, ಭೂಮಿಯೆಲ್ಲವೂ ತೇವವಾಗಿರುವ ವರ್ಷಾರ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಶೀತವಾಯುಸಹಿತವಾದ ಮಳೆಯಿಂದ ಕೆರಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಶೀತಪ್ರಕೃತಿಯವರಿಗೆ ವಾತರೋಗಗಳನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದು. ಈ ಪಿತ್ತಸಂಬಂಧವಾದ ವ್ಯಾಧಿಗಳು ಹೇಮಂತಾರ್ತುವಿನಲ್ಲಿಯೂ ಶ್ಲೇಷ್ಮಸಂಬಂಧವ್ಯಾಧಿಗಳು ಗ್ರೀಷ್ಮಾರ್ತುವಿನಲ್ಲಿಯೂ ವಾತಸಂಬಂಧವ್ಯಾಧಿಗಳು ಶರದೃತುವಿನಲ್ಲಿಯೂ ಕಡಮೆಯಾಗುವುವು. "ತಾ ಎವೋ-  
ಛಧಯೋ ನಿದಾಘೇ ನಿ:ಸಾರಾ: ಅತಿಮಾತ್ರಂ ಲಙ್ಘ್ಯೋ ಭವಂತ್ಯಾಪಶ್ಚ |  
ತಾ ಉಪಯುಜ್ಯಮಾನಾ: ಸೂರ್ಯಪ್ರತಾಪೋಪಶೋಷಿತದೇಹಾನಾಂ ದೇಹಿನಾಂ ವಾಯೋ: ಸಂಚಯಮಾಪಾದಯಂತಿ; ಸ ಚ ಸಂಚಯ: ಪ್ರಾವೃಷಿ ಚಾತ್ಯರ್ಥಂ  
ಜಲೋಪಕಿಲಗ್ನಾಃ ಭೂಮಿ ಕಿಲಗ್ನದೇಹಾನಾಂ ದೇಹಿನಾಂ ಶೀತವಾತವರ್ಷ-  
ರಿತ: ವಾತಿಕಾನ್ ವ್ಯಾಧಿಂಜನಯತಿ | ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೬-೧೧ |  
"ತತ್ರ ಪೈತ್ತಿಕಾಢಾಂ ವ್ಯಾಧಿಢಾಮುಪಶಮೋ ಹೇಮಂತೇ, ಶ್ಲೇಷ್ಮಿ-  
ಕಾಣಾಂ ನಿದಾಘೇ, ವಾತಿಕಾಢಾಂ ಶರದಿ ಸ್ವಭಾವತ ಁವ"  
ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೬-೧೩ |

**ಕರ್ಕರ ಕಫಕರ (ವಿಂ)** ಕಫವಿಕಾರವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ಶ್ಲೇಷ್ಮವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಕರೋತಿ—ತು ಕೃತ್ (ಕರಣೆ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) | ಕರ್ಕಸ್ಯ ಕರ: | ಕಫವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ ವಸ್ತುಗಳು:

|              |                     |
|--------------|---------------------|
| ಕಾಕೋಲಿ       | ... ಬೋಕ್ಕಣಿಗಿಡ      |
| ಕೋರಕಾಕೋಲಿ    | ... ಹಾಲು ಬೋಕ್ಕಣಿಗಿಡ |
| ಜೀವಕ:        | ... ಹಕ್ಕಿಸಿಕ್ಕಿಗಿಡ  |
| ಶೃಷಭ:        | ... ಹೆರಿಗೆ ಹಾಲೆ     |
| ಮುದಗಪರ್ಣಿ    | ... ಕಾಡುಹೆಸರು       |
| ಮಾಘಪರ್ಣಿ     | ... ಕಾಡು ಉದ್ದು      |
| ಮೇದಾ         | ...                 |
| ಮಹಾಮೇದಾ      | ...                 |
| ಕ್ಷಿಪ್ರಗ್ರಹ  | ... ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ       |
| ಕರ್ಕಂಟ:      | ... ಸೊತೆ            |
| ಶೃಂಗಿ        | ... ಅತಿಬಜೆ          |
| ತುಗಾಕೋಲಿ     | ... ಬಿದಿರು ಉಪ್ಪು    |
| ಪದ್ಮಕಮ್      | ... ಪದ್ಮಕಾಷ್ಠ       |
| ಪ್ರಪೋಂಡರೀಕಮ್ | ... ಬಿಳಿನೈದಿಲೆಗಡ್ಡೆ |
| ಶೃದ್ಧಿ:      | ... ಸುದ್ದಿ          |
| (ವೃದ್ಧಿ:)    |                     |

|        |              |
|--------|--------------|
| ಮೃದಿಕಾ | ... ದ್ರಾಕ್ಷೆ |
| ಜೀವಂತಿ | ... ಸಿಹಿಹಾಲೆ |
| ಮಧುಕಮ್ | ... ಅತಿಮಧುರ. |

ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೩೮-೩೫ |

**ಕರ್ಕಕೃಚಿಕಾ ಕಫಕೂರ್ಚಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಲಾಲಾಜಲ, ಜೋಲ್ಲು. ಕರ್ಕ ಕುರ್ಚತಿ ವಿಕರೋತಿ | "ಸೃಣಿಕಾ ಸ್ಯಂದಿನಿ ಲಾಲಾಽಽಽಽಸ್ಯಾಸವ: ಕರ್ಕಕೃಚಿಕಾ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ |

**ಕರ್ಕಣ ಕಫಘ್ನ (ವಿಂ)** ಕಫವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ, ಶ್ಲೇಷ್ಮವನ್ನು ಕರಗಿಸುವ. ಕರ್ಕ ಹಂತಿ — ಹನ ಹಿಸಾಗತಯೋ: "ಟಕ್" (೩-೨-೫೩) | ಕಫವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ ವಸ್ತುಗಳು:

|              |                                   |
|--------------|-----------------------------------|
| ಆರಗವಃ        | ... ಕಕ್ಕಿಗಿಡ                      |
| ಮದನ:         | ... ಮಂಗಾರಗಿಡ                      |
| ಗೋಪಧೋಟಾ      | ... ಎಲಜೆ, ಬೋರೆ                    |
| ಕುಟಕಿ        | ... ಹುಳಿಬೇಲ                       |
| ಕುಟಜ:        | ... ಬೆಟ್ಟಮಲ್ಲಿಗೆ                  |
| ಪಾಠಾ         | ... ಅಗಲಕುಂಠಿ                      |
| ಪಾಟಲಾ        | ... ಹಸುರುಪಾದರಿ                    |
| ಮೂರ್ವಾ       | ... ಕುರಟಗಿ                        |
| ಇಂದ್ರಯವ:     | ... ಕೊಡಸಿಗೆ ಬೀಜ                   |
| ಸಪ್ತಪಣ್ಣ:    | ... ಏಳೆಲೆಬಾಳೆ                     |
| ನಿಂಬ:        | ... ಬೇವು                          |
| ಕುರಣ್ಣಕ:     | ... ಹಳದಿ ಗೋರಂಟಿ                   |
| ದಾಸೀಕುರಣ್ಣಕ: | ... ನೀಲಿಗೋರಂಟಿ                    |
| ಗುಡ್ಡುಕಿ     | ... ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ                     |
| ಚಿತ್ರಕ:      | ... ಚಿತ್ರಮೂಲ                      |
| ಶಾಕ್ಷಣ್ಣಾ    | ... ಕಾಜೆ, ಗಣಕೆ                    |
| ಕರಂಜದ್ವಯ     | ... (1) ಮುಳ್ಳುಮುತ್ತಗ<br>(2) ಹೊಂಗೆ |
| ಪಟೋಲ:        | ... ಪಡವಲ                          |
| ಕಿರಾತತೀತ:    | ... ನೆಲಬೇವು                       |
| ಸುಷವಿ        | ... ಹಾಗಲ                          |

ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೨೮-೬ | "ಆರಗವಃಾದಿರೀತೀಷ ಗಣ: ಶ್ಲೇಷ್ಮವಿಷಾಪಹ:" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೩೮-೭ |

**ಕರ್ಕಜ್ವರ ಕಫಜ್ವರ (ಪುಂ)** ಕಫವು ಅಧಿಕವಾಗುವುದರಿಂದ ಬರುವ ಜ್ವರ. ಕರ್ಕನಿಮಿತ್ತೋ ಜ್ವರ: |

**ಕರ್ಕಣಿ ಕಫಣಿ (ಪುಂ)** ಮೊಳಕೆ, ತೋಳಿನ ಮಧ್ಯಭಾಗ. ಕೇನ ಜಲೇನ ಕರ್ಕಣಿ ಸ್ಫುರತಿ — ಪಣ (ಗತೀ) "ಹನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭) | "ಕರ್ಕಣಿಸ್ತು ಭುಜಾಮಧ್ಯಂ ಕರ್ಕಣಿ: ಕುರ್ಪಶ್ಚ ಸ:" ಅಭಿಂ ಚಿಂ |



**ಕರ್ಕದ ಕಫದ** (ವಿಂ) ಕಫವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ. ಕಫಂ ದದಾತಿ — ಡು ದಾಙ್ (ದಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೪)।

**ಕರ್ಕನಾಶಕ ಕಫನಾಶಕ**, —ನಾಶನ —ನಾಶನ (ವಿಂ) ಕಫವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ, ಶ್ಲೇಷ್ಮವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. ಕಫಂ ನಾಶಯತಿ—ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) + ಣಿಚ್ “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩)। “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪) ವಾ। —ನಾಶನ —ನಾಶನ (ನಂ) ಕಫವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವಿಕೆ. ಣಶ+ಣಿಚ್ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

**ಕರ್ಕಲ ಕಫಲ** (ವಿಂ) 1. ಕಫವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ. ಕಫಂ ಲಾತಿ—ಲಾ (ಆದಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೪)। “ವೇಣೋ: ಕರೀರಾ: ಕರ್ಕಲಾ ಮಧುರಾ ರಸಪಾಕತಃ” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬-೨೯೨। 2. ಕಫರೋಗವುಳ್ಳ, ಶ್ಲೇಷ್ಮವ್ಯಾಧಿಯುಳ್ಳ, ಕಫೋಸ್ತಿಯಸ್ಯ “ಲಚ್” (೪-೨-೯೭)।

**ಕರ್ಕವರ್ಧಕ ಕಫವರ್ಧಕ**, —ವರ್ಧನ —ವರ್ಧನ (ವಿಂ) ಕಫವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವ, ಶ್ಲೇಷ್ಮವನ್ನು ಅಭಿವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವ. ಕಫಂ ವರ್ಧಯತಿ—ವೃಧ್ (ವೃದ್ಧಿ) ಣಿಚ್ “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩)। “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪) ವಾ। —ವರ್ಧನ —ವರ್ಧನ. (ನಂ) ಕಫವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವಿಕೆ. ವೃಧ್ — ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

**ಕರ್ಕವಿರೋಧಿನ್ ಕಫವಿರೋಧಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಕಫವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ (1) ಮಣಿಸುವ. (2) ಲವಂಗ. (3) ಜೇನು ತುಪ್ಪ. (4) ಶುಂಠಿ. (ವಿಂ) 2. ಕಫವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ. ಕಫಂ ವಿರುಣಾಹಿ — ವಿ + ರುಞಿ (ಆವರಣೇ) “ಣಿಞಿಃ” (೩-೨-೭೮)।

**ಕರ್ಕಾಂತಕ ಕಫಾಂತಕ** (ವಿಂ) ಕಫವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. ಕಫಮಂತಯತಿ ಅಂತಂ ಕರೋತಿ — ಅಂತ + ಣಿಚ್ “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩)।

**ಕರ್ಕಾರಿ ಕಫಾರಿ** (ಪುಂ) ಕಫದ ಶತ್ರು: (1) ಶುಂಠಿ. (2) ಜೇನುತುಪ್ಪ. (3) ಲವಂಗ. (4) ಮಣಿಸುವ. ಕಪಸ್ಯಾರಿ:।

**ಕರ್ಕಿನ್ ಕಫಿನ್** (ವಿಂ) ಕಫರೋಗವುಳ್ಳವನು, ಶ್ಲೇಷ್ಮವ್ಯಾಧಿಯುಳ್ಳವನು. ಕಫೋಸ್ತಿಯಸ್ಯ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೫)। “ಶ್ಲೇಷ್ಮಣಃ ಶ್ಲೇಷ್ಮಲಃ ಕಫಿ” ಅಮಂ।

**ಕರ್ಕಿಲ ಕಫಿಲ** (ಪುಂ) ಕಫದಿಂದ ಅಸ್ವಪ್ನವಾದ ಧ್ವನಿ. “ಕರ್ಕಿಲೋ ಧರ್ವರ: ಕರ್ಕಾತ್” ವೇಜಂ।

**ಕರ್ಕಲ ಕಫಲ** (ಪುಂ) ಚಳ್ಳೆಮರ. ಕಫಂ ಲಾತಿ — ಲಾ (ಆದಾನೇ) “ಕ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೩)। ನಿಪಾಂ।

**ಕರ್ಕೋಣಿ ಕಫೋಣಿ** (ಪುಂ) ಮೊಳಕೆ, ತೋಳಿನ ಮಧ್ಯಭಾಗ. ಕೇನ ಜಲೇನ ಫಣತಿ — ಫಣ (ಗತೌ), ಕೇನ ಸುಖೇನ

ಸ್ಫುರತಿ—ಸ್ಫುರ (ಸಚ್ಚಲನೆ) ವಾ “ಇನ್” (೩-೪-೧೧೭)। ಪೃಷಂ।

**ಕಬಂಧ ಕಬಂಧ** (ಪುಂ) 1. ಉದರ, ಹೊಟ್ಟೆ. ಕಂ ಜಲಂ ಬಧ್ನಾತಿ — ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) “ಅಙ್” (೩-೨-೧)। ಕುಡಿದ ನೀರನ್ನು ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. 2. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. [ಈತನು ಪೂರ್ವಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವಾಸವುಳ್ಳವನು ಒಬ್ಬ ಗಂಧರ್ವ. ಸ್ಥೂಲಶರೀರವು ಒಬ್ಬ ಮಹರ್ಷಿಯನ್ನು ಅಪಮಾನಗೊಳಿಸಿದುದರಿಂದ ಇವನಿಗೆ ರಾಕ್ಷಸಜನ್ಮವು ಬಂದಿತು. ಇವನು ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ದೀರ್ಘಾಯುಷ್ಯವನ್ನು ಪಡೆದು ಒಮ್ಮೆ ಇಂದ್ರನನ್ನು ಎದುರಿಸಲಾಗಿ ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧಪ್ರಹಾರದಿಂದ ಇವನ ತಲೆ ಮತ್ತು ಕಾಲುಗಳು ಹೊಟ್ಟೆಯೊಳಗೆ ಹುದುಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡುವು. ಇಂದ್ರನ ವರದಿಂದ ಇವನ ತೋಳುಗಳು ಯೋಜನದಷ್ಟು ಉದ್ದವಾಗಿದ್ದುವು. ದಂಡಕಾರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯನ್ನು ಹುಡುಕುತ್ತಾ ಬರುತ್ತಿದ್ದ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರನ್ನು ಇವನು ತನ್ನ ತೋಳುಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಸಿಕ್ಕಿಸಿಕೊಂಡಾಗ ಅವರು ಇವನ ತೋಳುಗಳನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿದರು. ಕಬಂಧನು ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರ ವಿಚಾರವನ್ನು ತಿಳಿದು ತನ್ನ ಪೂರ್ವಜನ್ಮದ ವೃತ್ತಾಂತವನ್ನು ತಿಳಿಸಿ ಶ್ರೀರಾಮನಿಂದಲೇ ತನ್ನ ದೇಹಸಂಸ್ಕಾರವಾಗಬೇಕೆಂದು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿ ಅಸುವನ್ನು ನೀಗಿದನು. ಬಳಿಕ ಕಬಂಧನು ನಿಜರೂಪವನ್ನು ತಾಳಿ ರಾವಣನಿಂದ ಅಪಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಸೀತೆಯನ್ನು ಸುಗ್ರೀವಸಖ್ಯಾದಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಬಹುದೆಂದು ಹೇಳಿ ವಿಮಾನವನ್ನೇರಿ ತೆರಳಿದನು.] ರಾಮಾಂ ಅರಣ್ಯಂ।

“ವಧನಿರ್ವೃತಶಾಪಸ್ಯ ಕಬಂಧಸ್ಯೋಪದೇಶತಃ। ಮುಮುಕ್ಷುಃ ಸಖ್ಯಂ ರಾಮಸ್ಯ ಸಮಾನವ್ಯಸನೇ ಹರೌ” ರಘುಂ ೧೨-೫೭। 3. ರಾಹು. “ಕಬಂಧಸ್ತುರೇ ರಕ್ಷೋವಿಶೇಷೇಽಪಿ ವಿಧುಂತುರೇ” ವಿಶ್ವಂ। (ಪುನಂ) 4. ಕುತ್ತಿಗೆ ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ದೇಹ, ತಲೆಯಿಂದ ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ ಶರೀರ, ಮುಂಡ. ಕಂ ಶಿರೋ ಬಧ್ಯತೇಽಸ್ಮಾತ್ — ಬಂಧ “ಘಙ್” (೩-೩-೧೯)। “ಸೈನ್ಯಃ ಕಂಠಚ್ಛೇದಲೀನೇ ಕಬಂಧಾದ್ಭೂಯೋ ವಿಮ್ಯೇ ವಲ್ಗತಃ ಸಾಸಿಪಾಣೇ” ಮಾಧಂ ೧೮-೫೩। (ನಂ) 5. ಜಲ, ನೀರು. ಕಃ ಪ್ರಾಣವಾಯುಃ ಬಧ್ಯತೇಽನೇನ।

**ಕಬಂಧಿನ್ ಕಬಂಧಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಯುಷ್ಠಿ. “ಅಥ ಕಬಂಧಿ ಕಾತ್ಯಾಯನ ಉಪೇತ್ಯ ಪಪ್ರಚ್ಛ” ಪ್ರಶ್ನೋಪಂ। (ವಿಂ) 2. ಜಲವುಳ್ಳ, ನೀರಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕಬಂಧ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೫)।

**ಕಬರ ಕಬರ** (ಪುಂ) 1. ಪಾಠಕ, ಅಧ್ಯಾಪಕ, ಉಪನ್ಯಾಸಕ. ಕು (ಶಬ್ದೇ) “ಅರನ್” (೩-೪-೧೫೪)। ವಬಯೋರಭೇದಃ।



2. ಕರ್ಣಾಟಕ, ಚಿತ್ರಾಂಶ. “ದೃಷ್ಟೇವ ನಿಜಿತ-  
ಕಲಾಪಭರಾಮಧಸ್ತಾದ್ಯಾಕೀರ್ಣಮಾಲ್ಯಕಬರಾಂ ಕಬರೀಂ ತರಃಪಾಃ”  
ಮಾಘಂ ೪-೧೯। (ನಂ) 3. ಉಚ್ಚ. 4. ಯಜ್ಞ. ಕಂ ಜಲಂ  
ವೃಣೋತಿ — ವೃಜ್ (ವರಣಂ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ಕಬರಂ  
ಲವಣಾಮ್ಲಯೋಃ” ಮೇದಿಂ।

ಕಬರೀ ಕಬರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯಾಂಸರ ಡಾರುಯ, ಯೆರಳು,  
ಯಜ್ಞ. ಕಂ ಶಿರಃ ವೃಣೋತಿ ಆಚ್ಛಾದಯತಿ — ವೃಜ್ (ವರಣಂ)  
“ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪೨)।  
“ವ್ಯಾಕೀರ್ಣಮಾಲ್ಯಕಬರಾಂ ಕಬರೀಂ ತರಃಪಾಃ” ಮಾಘಂ ೪-೧೯।  
2. ಅಗ್ನಿಪೀಠ. “ಕಬರೀ ಕೇಶವಿನ್ಯಾಸಶಾಕಯೋಃ” ಹೇಮಂ।  
3. ಸಾರಂಜೀವಿಪೀಠ. 4. ಹಿಂಜಿರ ಮರ. “ಕಬರೀ ಪುನಃ।  
ಪೃಥ್ವೀತುಙ್ಗಯೋಃ ಕೇಶವೇಶೇ ಕಬರಂ ಲವಣಾಮ್ಲಯೋಃ। ಕಬರ್ಯು-  
ಮಾಯಾಮ್” ಮೇದಿಂ।

ಕಬರೀಭಾರ ಕಬರೀಭಾರ (ಪುಂ) ಕೇಶವಾಂಶ, ಕೇಶವೇಶ  
ಸಮೂಹ. ಕಬರ್ಯಾ ಭಾರಃ। “ಅಮರೀಕಬರೀಭಾರಭರಮರೀ-  
ಮುಖರೀಕೃತಮ್। ದೂರೀಕರೋತು ದುರಿತಂ ಗೌರೀಚರಣಪದ್ಮಜಮ್” ಕುವಂ।  
ಕಬಲ ಕಬಲ (ಪುಂ) 1. ಗಾತ್ರ, ಡಾಂಟು. ಕೇನ ಜಲೇನ ವಲತಿ  
ಚಲತಿ — ವಲ (ಸಚ್ಚಲನೆ) “ಜಲ್” (೩-೧-೧೩೪)।  
ವಬಯೋರಭೇದಃ। “ತ್ರಿಕಟುಕಮಜಮೋದಾ ಸೇನ್ಧವಂ ಜೀರಕೇ ದ್ವೇ  
ಸಮಧರಣಧೃತಾನಾಮಷ್ಟಮೋ ಹಿಡ್ಗುಭಾಗಃ। ಪ್ರಥಮಕಬಲಭುಕ್ತಂ  
ಸರ್ಪಿಷಾ ಚೂರ್ಣಮೇತಜ್ಜನಯತಿ ಜಠರಾಗ್ನಿಂ ವಾತಪಿತ್ತಂ ನಿಹಂತಿ”।  
“ಗಂಭೀರವೇದಿನಿ ಪುರಃ ಕಬಲಂ ಕರೀಂದ್ರೇ ಮಂದೋರ್ಜಿಪಿ ನಾಮ ನ  
ಮಹಾನವಗೃಹ್ಯ ಸಾಧ್ಯಃ” ಮಾಘಂ ೪-೪೯। 2. ಒಂದು  
ಜಾತಿ ಮೀನು.

ಕಬಲನ ಕಬಲನ (ನಂ) ತಿನ್ನುವುದು, ಸುಂಗುವುದು.

ಕಬಲಿತ ಕಬಲಿತ (ವಿಂ) ತಿನ್ನುಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುಂಗಲ್ಪಟ್ಟ. ಕಬಲಃ  
ಕೃತಃ — ಕಬಲ + ಣಿಕ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)।

ಕಬಲೀಕೃತ ಕಬಲೀಕೃತ (ವಿಂ) ಕಬಲವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಡಾಂಟಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಕಬಲಃ ಕಬಲಃ ಕೃತಃ “ಚಿವಃ”  
(೪-೪-೪೦)। ದೀರ್ಘಃ (೭-೪-೩೨)।

ಕಬಲಿತ್ಯ ಕಬಲಿತ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಬೇಲದಮರ. ಕಪಯಸ್ತಿಷ್ಠಂತ್ಯತ್ರ  
— ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) “ಕಃ”। ಪೃಷೋಂ। ಕಬಲಿತ್ಯಾ  
ಬೇಲದಹಣ್ಣು ಪ್ರಿಯವಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. (ನಂ)  
2. ಬೇಲದಹಣ್ಣು.

ಕಮ್ ಕಮ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಸುಖ. ಕಮ್ಯತೇ — ಕಮು (ಕಾಂತೌ)  
ಗಿಡಭಾವೇ “ವಿಕ್” (೩-೩-೭೪)। ಕಂತಃ ಕಂತಿಃ ಕಂತುಃ।  
2. ಹಲ, ನೀರು. 3. ಅರಸು, ತಲೆ. 4. ಪಾದಪೂರಣ.  
“ಕಂ ಪಾದಪೂರಣಂ ತೋ ಮಸ್ತಕೇ ಚ ಸುಖೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ।

ಕಮು-ಕಾಂತೌ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) 1. ಇಚ್ಛಿಸು,  
ಅಪೇಕ್ಷಿಸು. 2. ಪ್ರೀತಿಸು. ಕಾಮಯತೇ। ಕಾಮಯಾಚ್ಛಕ್ರೆ,  
—ಬಭೂವ, —ಆಸ। ಗಿಡಭಾವಪಕ್ಷೇ ಚಕಮೇ ಚಕಮಾತೇ ಚಕಮಿರೇ।  
ಕಾಮಯಿತಾ, ಕಾಮಿತಾ। ಕಾಮಯಿಷ್ಯತೇ, ಕಾಮಿಷ್ಯತೇ। ಕಾಮಯತಾಮ್।  
ಅಚೀಕಮತ, ಅಚಕಮತ। ಅಕಾಮಯಿಷ್ಯತ, ಅಕಾಮಿಷ್ಯತ।  
“ಮಾಧವಾನುಚರಃ ಕಲಹಂಸೋ ನಾಮ ವಿಹಾರದಾಸೀಂ ಮಂದಾರಿಕಾಂ  
ಕಾಮಯತೇ” ಮಾಲತೀಂ ೧। “ಅಕಮ್ಪನಸ್ತತೋ ಯೋದುಂ ಚಕಮೇ  
ರಾವಣಾಜ್ಞಯಾ” ಮೃದ್ವಿಂ ೧೪-೮೨।

ಕಮ್ಯಣಿಃ—ಕಾಮ್ಯತೇ, ಕಮ್ಯತೇ। ಕಾಮಯಾಚ್ಛಕ್ರೆ, —ಬಭೂವ,  
—ಆಸೇ। ಚಕಮೇ। ಕಾಮಯಿತಾ, ಕಾಮಿತಾ, ಕಾಮಿತಾ।  
ಕಾಮಯಿಷ್ಯತೇ, ಕಾಮಿಷ್ಯತೇ, ಕಾಮಿಷ್ಯತೇ। ಕಾಮ್ಯತಾಮ್,  
ಕಮ್ಯತಾಮ್। ಅಕಾಮ್ಯತ, ಅಕಮ್ಯತ। ಕಾಮ್ಯತ, ಕಮ್ಯತ।  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕಮಿಚಿಃ—ಕಾಮಯತಿ, —ತೇ। ಕಾಮಯಾಚ್ಛಕಾರ, —ಚಕ್ರೆ,  
—ಬಭೂವ, —ಆಸ। ಕಾಮಯಿತಾ। ಕಾಮಯತು, —ತಾಮ್। ಅಕಾ-  
ಮಯತ್, —ತ। ಕಾಮಯೇತ್, —ತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕಮಿಣಿಃ—ಚಿಕಾಮಯಿಷತೇ। ಚಿಕಾಮಯಿಷಾಚ್ಛಕ್ರೆ, —ಬಭೂವ,  
—ಆಸ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗಿಡಭಾವಪಕ್ಷೇ-ಚಿಕಮಿಷತೇ। ಚಿಕಮಿಷಾಚ್ಛಕ್ರೆ, —ಬಭೂವ,  
—ಆಸ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕಮ್ಯತುಃ—ಕಾಮಯಿತವ್ಯಃ, ಕಾಮಿತವ್ಯಃ। ಕಾಮನೀಯಃ,  
ಕಮನೀಯಃ। ಕಾಮ್ಯಃ, ಕಮ್ಯಃ। ಕಾಮಿತಃ, ಕಾಂತಃ। ಕಾಮಿತವಾನ್,  
ಕಾಂತವಾನ್। ಕಾಮಯಮಾನ್। ಕಾಮಯಿತುಮ್, ಕಾಮಿತುಮ್। ಕಾಮಿತಮ್,  
ಕಾಂತಮ್। ಕಾಮನಾ, ಕಾಮನಮ್। ಕಾಮಯಿತ್ವಾ, ಕಾಮಿತ್ವಾ,  
ಕಾಂತವಾನ್। ಅಭಿಕಾಮ್ಯ, ಅಭಿಕಮ್ಯ।

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಅನು+ಕಮು=ಅನುಕಾಮಯತೇ। 1. ಅನುರೂಪವಾದ  
ಪ್ರೀತಿ. ಅನುಕಾಮನಾ। 2. ಅನುಗುಣವಾದ ಅಪೇಕ್ಷೆ.

(2) ಅಭಿ+ಕಮು=ಅಭಿಕಾಮಯತೇ। ಅಭಿಮುಖ್ಯದಿಂದ  
ಪ್ರೀತಿಸು. “ದಾಸೀಂ ಕನ್ಯಾಸಹಸ್ರೇಣ ಶಮಿಷ್ಠಾಮಭಿಕಾಮಯೇ”  
ಶಾಂ ಆದಿಂ ೭೪-೨೨।

(3) ನಿ+ಕಮು = ನಿಕಾಮಯತೇ। 1. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ  
ಪ್ರೀತಿಸು. “ಯಾ ತಸ್ಯ ತೇ ಪಾದಸರೋರಹಾರ್ಣಂ ನಿಕಾಮಯೇತ್  
ಸಾಕ್ಷಿಲಕಾಮಲಮ್ಪಟಾ” ಭಾಗಂ ೪-೧೮-೨೧। 2. ಅತಿಶಯ  
ವಾಗಿ. “ನಿಕಾಮತಪ್ತಾ ವಿವಿಧೇನ ವಹ್ನಿನಾ ನಭಃಚರಣೇಂದ್ರನ-  
ಸಂಭೃತೇನ ಸಾ” ಕುಮಾರಂ ೪-೨೩।

ಕಮಕ ಕಮಕ (ಪುಂ) 1. ಗೋಡು, ಪ್ರವರ್ತಕರಾದ ಒಬ್ಬ  
ಮುಖ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಕಾಮುಕ.



**ಕಮಠ ಕಮಠ** (ಪುಂ) 1. ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ. ಕೆ ಜಲೇ ಮಠತಿ —ಮಠ (ಮದನಿವಾಸಯೋಃ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಕುಗಿನ ಶ್ವೇತವರಾಹಕಲ್ಪದ ಚಾಕ್ಷುಷಮನ್ವಂತರದಲ್ಲಿ ನಡೆದ ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಒಂದು ಅವತಾರ. [ಒಮ್ಮೆ ದೇವತೆಗಳಿಗೂ ದಾನವರಿಗೂ ಪ್ರಬಲ ವಿರೋಧವುಂಟಾಗಲು ದೇವತೆಗಳು ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನಲ್ಲಿ ಮೊರೆಯಿಟ್ಟರು. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವು “ರಾಕ್ಷಸರೊಡನೆ ಸ್ನೇಹ ಬೆಳಸಿಕೊಂಡು ಅಮೃತಕ್ಕಾಗಿ ಅವರೊಡನೆ ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರವನ್ನು ಕಡೆದರೆ ಅದರಿಂದ ನಿಮಗೆ ಕ್ಷೇಮವಾಗುವುದು” ಎಂದು ಹೇಳಲಾಗಿ ದೇವತೆಗಳು ರಾಕ್ಷಸರೊಡನೆ ಸ್ನೇಹಗಳಿಸಿಕೊಂಡು ಅವರನ್ನು ನಂಬಿಸಿ ಮಂದರಪರ್ವತವನ್ನು ಕಡೆಗೋಲನ್ನಾಗಿಯೂ ವಾಸುಕಿಯನ್ನು ಕಡೆಯುವ ಹಗ್ಗವನ್ನಾಗಿಯೂ ಏರ್ಪಡಿಸಿಕೊಂಡು ಸಮುದ್ರವನ್ನು ಕಡೆಯುತ್ತಿರುವಾಗ ಭಾರವಾಗಿದ್ದ ಮಂದರಪರ್ವತವು ಸಮುದ್ರದ ಅಡಿಯಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ಕೊಂಡಿತು. ಆಗ ದೇವದಾನವರ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಂತೆ ಮಹಾವಿಷ್ಣುವು ಕೂರ್ಮರೂಪವನ್ನು ತಾಳಿ ಮಂದರಪರ್ವತವನ್ನು ತನ್ನ ಬೆನ್ನಿನ ಮೇಲೆ ಹೊತ್ತು ಅಮೃತಮಥನಕ್ಕೆ ಸಹಾಯಕನಾದನು.] ಭಾಗಂ ೬-೬, ೭। “ಸುರಾಸುರಾಣಾಮುದ್ಧಿ ಮಥತಾಂ ಮಂದರಾಚಲಮ್। ದಧ್ರೇ ಕಮಠರೂಪೇಣ ಪೃಠೇ ಏಕಾದಶೇ ವಿಭುಃ” ಭಾಗಂ ೧-೩-೧೬। (ನಂ) 3. ಋಷಿಗಳ ನೀರಿನ ಪಾತ್ರೆ. “ಕಮಠಃ ಕಚ್ಛಪೇ ಪುಸಿ ಭಾಂಡಭೇದೇ ನಪುಸಕಮ್” ಮೇದಿಂ। 4. ಭಿಕ್ಷುಪಾತ್ರೆ. (ವಿಂ) 5. ವಾಮನ, ಕುಳ್ಳ. “ಭಿಕ್ಷಾಪಾತ್ರೇ ತು ಕಮಠಂ ಕಮಠಿ ಖರ್ವಕಚ್ಛಪೌ” ವೈಜಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಮಠಿ ಕಮಠೀ. ಹೆಣ್ಣು ಆಮೆ.

**ಕಮಂಡಲ ಕಮಂಡಲ** (ಪುಂ) 1. ಸಂನ್ಯಾಸಿಗಳ ಮತ್ತು ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಗಳ ಮರದ ಅಥವಾ ಮೃಣ್ಮಯ ನೀರಿನ ಪಾತ್ರೆ. ಕಸ್ಯ ಪ್ರಜಾಪತೇರ್ಜಲಸ್ಯ ವಾ ಮಂಡಂ ಸಾರಂ ಲಾತಿ—ಲಾ (ಆದಾನೇ) “ಡುಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೧೮೦)। “ಅಶೇಷತೀರ್ಥೋ-ಪಹೃತಾಃ ಕಮಂಡಲಾಃ ನಿಧಾಯ ಪಾಣಾವೃಷಿಣಾಭ್ಯುದೀರಿತಾಃ” ಮಾಘಂ ೧-೧೮। (ಪುಂ) 2. ಬಸುರಿ ಮರ. 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೃಗ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ “ಒಡ್” (೪-೧-೭೨)। **ಕಮಂಡಲಃ ಕಮಂಡಲಃ**. “ಕಮಂಡಲಃ ಸ್ಯಾತ್ಕರಕೇ ನ ಸ್ತ್ರೀ ನಾ ಲಕ್ಷಪಾದಪೇ” ಮೇದಿಂ।

**ಕಮನ ಕಮನ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. 2. ಅಶೋಕ ವೃಕ್ಷ. ಕಮು (ಕಾಂತೌ) “ಯುಚ್” (೩-೨-೧೪೯)। 3. ಬ್ರಹ್ಮ. (ವಿಂ) 4. ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ, ರಮಣೀಯವಾದ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ ಕಮನಾ ಕಮನಾ. 5. ಕಾಮುಕ. ಕಮು ಕರ್ಮಂ “ಲ್ಯುಡ್”। ಸ್ತ್ರೀಯಾ “ಡೀಪ್”।

(೪-೧-೧೪)। **ಕಮನಿ ಕಮನೀ**. ಕಾಮುಕ. “ಅಭೀಷ್ಟ-ಮಾಸಾಃ ಚಿರಾಯ ಕಾಲೇ ಸಮುದೃತಾಶಂ ಕಮನಿ ಚಕಾಶೇ” ಮಾಘಂ ೬-೭೪। “ಕಮನಃ ಕಾಮುಕೇ ಕಾಮೇರ್ಭಿರೂಪೇಷೋಕಪಾದಪೇ” ಮೇದಿಂ। “ಕಮನಃ ಕವಿಃ ಸಾತ್ವಿಕವೇದಗರ್ಭಿ ಸ್ಥವಿರಃ ಶತಾನಂದಪಿತಾಮಹೌ” ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

**ಕಮನಚ್ಛದ ಕಮನಚ್ಛದ** (ಪುಂ) ಸುಂದರವಾದ ರೆಕ್ಕೆಗಳುಳ್ಳ ಕಂಕಪಕ್ಷಿ, ರಣಹದ್ದು. ಕಮನಃ ಕಾಂತಃ ಛದೋಽಸ್ಯ। “ಕಚ್ಛಸ್ತು ಕಮನಚ್ಛದಃ” ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

**ಕಮನೀಯ ಕಮನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಸುಂದರವಾದ, ರಮಣೀಯವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ. ಕಮು (ಕಾಂತೌ) ಣಿಡಭಾವೇ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೧೬)। “ಮಧ್ಯಂ ತನುಕೃತ್ಯ ಯದೀದಮೀಯಂ ವೇಧಾ ನ ದಧ್ಯಾತ್ಕಮನೀಯಮಂಶಮ್” ನೈಷಂ ೭-೮೨। 2. ಸ್ವಪ್ನಹಣೀಯವಾದ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. “ಆರೋಪಿತಂ ಯದಗ್ನಿರಿಸೇನ ಪದ್ವಾಡನನ್ಯನಾರೀಕಮನೀಯಮಂಶಮ್” ಕುಮಾಂ ೧-೩೭।

**ಕಮನೀಯತಮ ಕಮನೀಯತಮ ಕಮನೀಯತರ ಕಮನೀಯತರ** (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ರಮಣೀಯವಾದ, ಅತಿ ಮನೋಹರವಾದ. ಅತಿಶಯೇನ ಕಮನೀಯಃ “ತಮಪ್” (೪-೩-೪೪)। “ತರಪ್” (೪-೩-೪೭) ವಾ। “ವಪುರ್ಮಬಿಹಾರಹಿಮಂ ಶಚಿನಾ ರುಧಿರಂ ಕಮನೀಯತರಾ ಗಮಿತಾ” ಮಾಘಂ ೬-೭೧।

**ಕಮನೀಯತಾ ಕಮನೀಯತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೌಂದರ್ಯ, ಸೊಬಗು, ರಮಣೀಯವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಕಮನೀಯಸ್ಯ ಭಾವಃ “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯)। “ಭುವನತ್ರಯಸುಭ್ರುವಾಮಸೌ ದಮಯಂತೀ ಕಮನೀಯತಾಮದಮ್” ನೈಷಂ ೨-೧೮।

**ಕಮರ ಕಮರ** (ವಿಂ) ಕಾಮುಕ. ಕಮು (ಕಾಂತೌ) “ಅರಃ” (೩ಂ ೩-೧೩೨)।

**ಕಮಲ ಕಮಲ** (ನಂ) 1. ಪದ್ಮ, ತಾವರೆಹೂವು. ಕಂ ಜಲಮಲತಿ —ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ) “ಕಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೪)। “ಭೃತನವಾತಪಮುತ್ಸುಕತಾಮತೌ ನ ಕಮಲಂ ಕಮಲಮ್ಭಯದಮ್ಭಸಿ” ಮಾಘಂ ೬-೪೮। 2. ರಕ್ತಕಮಲ, ಕೆಂಪಾವರೆ. 3. ನೀರು, ಜಲ. ಕಮು (ಕಾಂತೌ) “ಕಲಃ” (೩ಂ ೧-೧೦೬)। “ಕುರರೀಗಣಃ ಕೃತರವಸ್ತರವಃ ಕುಸುಮಾನತಾಃ ಸಕಮಲಂ ಕಮಲಮ್” ಕಿರಾಂ ೪-೨೪। 4. ಚಿನ್ನ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಚಿತ್ರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಸಣ್ಣ ಕತ್ತಿಯ ಒರೆ. “ಕಮಲಂ ಕುರಿಕಾದೀನಾಂ ಹೇಮಾಕ್ಷಿಚಿತ್ರತಾಜಿನೇ। ರಕ್ತಾಂಜೇಽಂಜೇಽಪ್ಸು ಚ” ವೈಜಂ। 5. ತಾಮ್ರ. 6. ಮೂತ್ರಕೋಶ. 7. ಔಷಧ. (ಪುಂ) 8. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. “ಕಮಲಂ ಸಲಿಲೇ ತಾಮ್ರೇ ಜಲಜೇ ಕಲೋಮ್ನಿ ಭೇಷಜೇ। ಮೃಗಭೇದೇ ತು ಕಮಲಃ” ಮೇದಿಂ। ಸ್ತ್ರೀಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬೩)। **ಕಮಲಿ ಕಮಲೀ**.



ಕಮಲಜ ಕಮಲಜ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ವಿಷ್ಣು: ನಾಭಿಕಮಲಾತ್ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತವಿ) "ಓ:" (೩-೨-೧೮)। 2. ರೋಹಿಣೀನಕ್ಷತ್ರ. (ವಿಂ) 3. ಕಮಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಕಮಲದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ಕಮಲದಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನವಾದ.

ಕಮಲನಯನ ಕಮಲನಯನ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಕಮಲದಂತೆ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ ನಾರಾಯಣ. ಕಮಲೇ ಇವ ನಯನೇಷ್ಯ। (ವಿಂ) 2. ಕಮಲದಂತೆ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ -ನಯನಾ -ನಯನಾ.

ಕಮಲನಾಭ ಕಮಲನಾಭ (ಪುಂ) ನಾಭಿಯಲ್ಲಿ ಕಮಲವುಳ್ಳ ವಿಷ್ಣು. ಕಮಲ ನಾಭಿ ಯಸ್ಯ।

ಕಮಲಬಂಧು ಕಮಲಬಂಧು (ಪುಂ) ಕಮಲದಬಂಧು. ಸೂರ್ಯ. ಕಮಲಸ್ಯ ಬಂಧು:। -ಬಾಂಧವ:-ಬಾಂಧವ:.

ಕಮಲಭವ ಕಮಲಭವ (ಪುಂ) ಕಮಲದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಬ್ರಹ್ಮ. ಕಮಲಾಭವತಿ-ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭)। "ವಿವಪ್" (೩-೨-೧೭೯)। -ಭೂ:-ಭೂ:.

ಕಮಲಯೋನಿ ಕಮಲಯೋನಿ (ಪುಂ) ಕಮಲವೇ ಉತ್ಪತ್ತಿ ಸ್ಥಾನವಾಗಿ ಉಳ್ಳ ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಕಮಲ ಯೋನಿಃ ಸ್ಥಾನಮಸ್ಯ।

ಕಮಲಲೋಚನ ಕಮಲಲೋಚನ (ಪುಂ) 1. ತಾವರೆಹೂವಿನಂತೆ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ ವಿಷ್ಣು. (ವಿಂ) 2. ತಾವರೆಹೂವಿನಂತೆ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ. ಕಮಲೇ ಇವ ಲೋಚನೇ ಯಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರೀಯಾ -ಲೋಚನಾ -ಲೋಚನಾ.

ಕಮಲವದನ ಕಮಲವದನ (ವಿಂ) ಕಮಲದಂತೆ ಮುಖವುಳ್ಳ. ಕಮಲಮಿವ ವದನಂ ಯಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರೀಯಾ -ವದನಾ -ವದನಾ.

ಕಮಲವನ ಕಮಲವನ (ನಂ) ತಾವರೆಹೂವಿನ ಕಾಡು, ತಾವರೆಹೂವುಗಳ ಗುಂಪು. "ಮಧುನ ಇವ ದಯಾ: ಸಾಮರಸ್ಯಂ ದಧಾನ: ಕಮಲವನಮನಯಾ ಕಾಂತಿಮಧ್ಯಾಪಯದ್ಧಿ:" ಯಾದಂ ೧೯-೮೧।

ಕಮಲಸಂಭವ ಕಮಲಸಂಭವ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಕಮಲಾತ್ಸಂಭವತಿ -ಸಮ್ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭)।

ಕಮಲಾ ಕಮಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. ಕಮಲಮಸ್ಯಾ ಅಸ್ತಿ "ಅವ್" (೫-೨-೧೨೭)। "ಕಮಲೋಲ್ಲಸಿತೇನ ದರ್ಶನೀಯಂ ದಿನಮಾಚಂತವಿವರ್ಜಿತಂ ದಿದೃಕ್ಷೆ" ಯಾದಂ ೧೫-೪। 2. ಶ್ರೇಷ್ಠ ಹೆಂಗಸು. "ಕಮಲಾ ಶ್ರೀವರಸ್ತ್ರೀಯೋ:" ಮೇದಿಂ।

ಕಮಲಾಕರ ಕಮಲಾಕರ (ಪುಂ) 1. ತಾವರೆಹೂವುಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನ, ಸರೋವರ. 2. ತಾವರೆಹೂವುಗಳ

ಸಮೂಹ. ಕಮಲಾನಾಮಾಕರ: ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನಂ ಸಮೂಹೋ ವಾ। "ಪ್ರವಿವಾಟಯಿತಾ ಸಮುತ್ಪತ್ತಿನ್ ಹರಿರಿದಶ್ವ: ಕಮಲಾಕರಾನಿವ" ಕಿರಾಂ ೨-೪೬।

ಕಮಲಾಕ್ಷ ಕಮಲಾಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. (ವಿಂ) 2. ಕಮಲದಂತೆ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳವನು. ಕಮಲೇ ಇವ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯ। "ಏವ್" (೫-೪-೧೧೩)। ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧)। -ಕ್ಷಿ -ಕ್ಷಿ:

ಕಮಲಾಗ್ರಜಾ ಕಮಲಾಗ್ರಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲಕ್ಷ್ಮಿಯ ಅಕ್ಕ, ಜ್ಯೇಷ್ಠಾದೇವಿ, ದಾಂಡಿದ್ರದೇವತೆ. ಕಮಲಾಯಾ ಅಗ್ರಜಾ।

ಕಮಲಾಕಾಂತ ಕಮಲಾಕಾಂತ, -ಪತಿ -ಪತಿ (ಪುಂ) ಶ್ರೀಮಹಾವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಕಮಲಾಯಾ: ಕಾಂತ: ಪತಿರ್ವಾ।

ಕಮಲಾಲಯಾ ಕಮಲಾಲಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಮಲವೇ ವಾಸ ಸ್ಥಾನವಾಗಿ ಉಳ್ಳ ಲಕ್ಷ್ಮಿ. ಕಮಲಮಾಲಯೋ ಯಸ್ಯಾ:।

ಕಮಲಾಸನ ಕಮಲಾಸನ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಕಮಲಾಸನಮಸ್ಯ। "ಕಾಂತಾನಿ ಪೂರ್ವ ಕಮಲಾಸನೇನ ಕಷ್ಯಾಂತರಾ-ಞ್ಯದ್ರಿಪತೇವಿವೇಶ" ಕುಮಾಂ ೭-೭೦। (ನಂ) 2. ಕಮಲ ರೂಪವಾದ ಆಸನ. 3. ಯೋಗಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಪದ್ಮಾಸನ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಆಸನಾ -ಆಸನಾ.

ಕಮಲಾಸನಸ್ಯ ಕಮಲಾಸನಸ್ಯ (ಪುಂ) ಕಮಲರೂಪವಾದ ಆಸನದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತಿರುವ ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಕಮಲಾಸನೇ ತಿಷ್ಠತಿ - ಷಾ (ಗತಿ ನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ:" (೩-೨-೪)।

ಕಮಲಿನಿ ಕಮಲಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಮಲಲತೆ, ತಾವರೆಯ ಬಳ್ಳಿ. ಕಮಲಾನ್ಯಸ್ಯಾ: ಸಂತಿ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। "ವಿರಹತಪ್ತತದ್ಭಗ್ನಿವೇಶಿತಾ ಕಮಲಿನಿ ನಿಮಿಷದ್ಲಮುಷ್ಠಿಭಿ:" ನೈಷಂ ೪-೩೨। 2. ಕಮಲಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಸರೋವರ. -ಕೊಳ. 3. ಕಮಲಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪ್ರದೇಶ. ಕಮಲಾನ್ಯತ್ರ ದೇಶೇ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೩೫)।

ಕಮಾ ಕಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಂತಿ, ಹೊಳಪು. 2. ಸೌಂದರ್ಯ, ಸೊಬಗು. ಕಮು (ಕಾಂತಿ) "ಅಡ್" (೩-೩-೧೦೪)।

ಕಮಿತ ಕಮಿತ (ವಿಂ) 1. ಕಾಮುಕ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ. ಕಮು (ಕಾಂತಿ) ಣಿಡಭಾವೇ "ತೃವ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಅನ್ವಯ-ವೃತ್ತಿಪಯ: ಪಿತೃನಾಥಾಸ್ತಂ ಮುದಾಥ ಹರಿತಾಂ ಕಮಿತಾರ:" ನೈಷಂ ೫-೫೫। 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಬಯಸುವ. "ಇತ್ಯಮಿ ವಸುಮತೀಕಮಿತಾರ: ಸಾದರಾಸ್ತವದತಿಥಿಭವಿತುಂ ನ" ನೈಷಂ ೫-೩೪। ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)।



**ಕಮ್ಮ ಕಂಪ (ಪುಂ)** 1. ನಡುಕ, ಕಂಪನ, ತಡ್ತುರ, ಅದಿರುವಿಕೆ. ಕಪಿ (ಚಲನೆ) "ಘ" (3-3-18). "ಭ್ರಮುರ್ವಾಲ್ಯಾ ಇವಾನ್ಯಾ: ಪ್ರತಿಪದಮಪರಾ ಭೂಮಿವತ್ಕಮ್ಮಮಾಪು:" ಮಾಘಂ 14-96. ನೈಷಂ 9-91. 2. ಚಲನೆ, ಅಲುಗಾಡುವಿಕೆ. "ಅಸ್ತಿತ್ವಂ ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ: ಸ್ಫುಟಮಪ ಕಥಯನ್ ಪಕ್ಷತೇ: ಕಮ್ಮಮೇದೇ:" ನೈಷಂ 3-132. "ಕಮ್ಮೇನ ಮೃಜ್ಜ: ಶತಪತ್ರಯೋನಿ ವಾಚಾ ಹರಿಂ ವೃತ್ರಹಂ ಸ್ಮಿತೇನ" ಕುಮಾರಂ 9-46. 3. ಅಲುಗಾಡುವು, ವ್ಯಥೆಪಡಿಸುವುದು. "ತತ್ರ ಸ್ವೇದಶಿರ:ಕಮ್ಮತರ್ಜನಾತಾಡನಾದಯ:" ಸಾಂದಂ 3-149. "ಅನುಭಾವೋತ್ತರ ವೈವರ್ಣ್ಯಗದಗದಸ್ವರಭಾಷಣಮ್ | ಪ್ರಲಯಸ್ವೇದ-ರೋಮಾಶ್ಚಕಮ್ಮದಿಕ್ಪ್ರೇಕ್ಷಣಾದಯ:" ಸಾಂದಂ 3-236.

**ಕಮ್ಮನ ಕಂಪನ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದುವಿಧ ಅಸ್ತು. "ಪ್ರಾಸಸ್ತಯಾ ಗದಾಭಿಶ್ಚ ಪರಿವೇ: ಕಮ್ಮನೇಸ್ತಯಾ" ಭಾಂ. 2. ತಿತ್ತಿರೆಯುಡು, ಛೇಗಾಲು. 3. ಒಬ್ಬ ರಾಜ. ಕಪಿ (ಚಲನೆ) ಕರ್ತಂ "ಯು" (3-2-148). "ಕಾಂಬೋಜರಾಜ: ಕಮಠ: ಕಮ್ಮನಶ್ಚ ಮಹಾಬಲ: | ಸತತಂ ಕಮ್ಮಯಾಮಾಸ ಯವನಾನೇಕ ಏವ ಯ:" ಭಾಂಸಭಾಂ 4-28. 4. ಸನ್ನಿವಾತಜ್ವರ, ಛೇಜ್ವರ. (ನಂ) 5. ನಡುಕ, ಅದಿರುವಿಕೆ. ಕಪಿ (ಚಲನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯು" (3-3-114). "ಅಧರಕಮ್ಮನಮುಖಯ ಮೇನಕೇ ಕಿಮಪಿ ಜಲ್ಪತಿ ಕಲ್ಪಲತೇ ಶೃಣು" ನೈಷಂ 4-113. 6. ನಡುಗಿಸುವಿಕೆ. ಅಲುಗಾಡಿಸುವಿಕೆ. "ಪ್ರವಸತ: ಸುತರಾಮುದಕಮ್ಮಯತ್ ವಿದಲಕಂದಲಕಮ್ಮನಲಾಲಿತ:" ಮಾಘಂ 6-30. (ವಿಂ) 7. ನಡುಗಿಸುವ, ಅಲುಗಾಡಿಸುವ. ಕಪಿ "ಯು" (3-2-148). 8. ನಡುಕವುಳ್ಳ, ಅಲುಗಾಡುವ.

**ಕಮ್ಮನೀಯ ಕಂಪನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ನಡುಗಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ನಡುಗಿಸಲ್ಪಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. 3. ನಡುಗಿಸಲ್ಪಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಕಪಿ (ಚಲನೆ) ಕರ್ಮಾದಿ "ಅನೀಯ" (3-1-96).

**ಕಮ್ಮಮಾನ ಕಂಪಮಾನ (ವಿಂ)** ನಡುಗುತ್ತಿರುವ, ಅಲುಗಾಡುತ್ತಿರುವ. ಕಪಿ (ಚಲನೆ) "ಶಾನ" (3-2-124). "ಮಹತೀ ಮೇದಿನೀ ದೀನಂ ಕಮ್ಮಮಾನಾನ್ವಕಮ್ಮತ" ಯಾದಂ 16-109.

**ಕಮ್ಮಯತ್ ಕಂಪಯತ್ (ವಿಂ)** 1. ನಡುಗಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಅಲುಗಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಕಪಿ (ಚಲನೆ) + ಣಿ "ಶತ್" (3-2-124). ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀ" (4-1-6). -ಯಂತಿ -ಯಂಶೀ. "ಶಾನ" (3-2-124). **ಕಮ್ಮಯಮಾನ: ಕಂಪಯಮಾನ: (ವಿಂ)** ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಟಾ" -ಮಾನಾ -ಮಾನಾ.

**ಕಮ್ಮಾಯತ್ ಕಂಪಯಿತ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ನಡುಗಿಸುವ, ಅದಿರುಸುವ. ಕಪಿ (ಚಲನೆ) + ಣಿ "ತು" (3-1-133). 2. ಅಲುಗಾಡಿಸುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀ" (4-1-6). -ಯಿತ್ತಿ.

**ಕಮ್ಮಲಕ್ಷಮನ್ ಕಂಪಲಕ್ಷ್ಮನ್ (ಪುಂ)** ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಕಮ್ಮ: ಲಕ್ಷಮ ಯಸ್ಯ. "ವಾತಸ್ತು ನಮ:ಪ್ರಾಣೋ ಜಗದ್ವಲ: | ಭೌಗಿಕಾಂತ: ಕಮ್ಮಲಕ್ಷಮಾ ಪಶ್ಚಧಾರಾವನಿಶ್ಚ ಸ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಕಮ್ಮಾ ಕಂಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಚಲನೆ, ನಡುಕ. ಕಪಿ (ಚಲನೆ) ಭಾವೇ "ಅ:" (3-3-103).

**ಕಮ್ಮಿತ ಕಂಪಿತ (ನಂ)** 1. ಕಂಪನ, ನಡುಕ. ಕಪಿ (ಚಲನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114). 2. ಅಲುಗಾಡಿಸುವಿಕೆ. ಅಲ್ಲಾಡಿಸುವಿಕೆ. ಕಪಿ + ಣಿ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (ವಿಂ) 3. ಅಲುಗಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಲ್ಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕಪಿ + ಣಿ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಆದಿಕೋಲತುಲಿತಾಂ ಪ್ರಕಮ್ಮನೇ: ಕಮ್ಮಿತಾಂ ಮುಹುರನೀದ್ವಿಗಾತಮನಿ" ಮಾಘಂ 14-43. 4. ನಡುಕವುಳ್ಳ, ಅಲುಗಾಡುವ. "ಪೃಕ್ತಸ್ತುಷಾರೇಗಿರಿ-ನಿರ್ಜರಾಣಾಮನೋಹಾಕಮ್ಮಿತಪುಷ್ಪಗಂಧಿ" ರಘುಂ 2-13.

**ಕಮ್ಮಿನ್ ಕಂಪಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಕಂಪವುಳ್ಳ, ನಡುಕವುಳ್ಳ. 2. ಚಲಿಸುವ, ಅಲುಗಾಡುವ. "ಗೀತೀ ಶೀಘ್ರೀ ಶಿರ:ಕಮ್ಮಿ ತಥಾ ಲಿಖಿತಪಾಠಕ: | ಅನರ್ಥಜೋಷ್ಠಕಂಠಶ್ಚ ಷಡೇತೇ ಪಾಠಕಾ-ಧರ್ಮಾ:" ಪಾಂಶಿಂ. 3. ನಡುಗಿಸುವ. 4. ಅಲುಗಾಡಿಸುವ. ಕಪಿ + ಣಿ "ಣಿ:".

**ಕಮ್ಮಿಲ್ಲ ಕಂಪಿಲ್ಲ (ಪುಂ)** ಕಪಿಲೆಹಿಟ್ಟು ಎಂಬ ಒಂದು ಔಷಧ.

**ಕಮ್ಮ ಕಂಪ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಅಲುಗಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಅಲುಗಾಡಿಸಲ್ಪಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ಅಲುಗಾಡಿಸಲ್ಪಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಕಪಿ (ಚಲನೆ) + ಣಿ "ಯತ್" (3-1-96).

**ಕಮ್ಮಮಾನ ಕಂಪ್ಯಮಾನ (ವಿಂ)** 1. ನಡುಗಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಅಲುಗಾಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಕಪಿ (ಚಲನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನ" (3-2-124).

**ಕಮ್ಮ ಕಂಪ್ಯ (ವಿಂ)** ಚಲಿಸುವುದು, ನಡುಕದ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ. ಕಪಿ (ಚಲನೆ) "ರ:" (3-2-169). "ಸುತಾ: ಕಮಾಹುಯ ಚಿರಾಯ ಚುಕ್ರತೇವಿಧಾಯ ಕಮ್ಮಾಣಿ ಮುಖಾನಿ ಕಂ ಪ್ರತಿ" ನೈಷಂ 1-142.

**ಕಮ್ಮರ ಕಂಪರ (ಪುಂ)** 1. ಚಿತ್ರವರ್ಣ. (ವಿಂ) 2. ಚಿತ್ರ ವರ್ಣವುಳ್ಳ. ಕಮ್ಮ (ಗತೌ) "ಅರ:" ಬಾಹುಂ.



**ಕಮ್ಬಲ ಕಂಬಲ** (ಪುಂ) 1. ಶಾಲು, ಉಣ್ಣೆಯಿಂದ ತಯಾರಿ ಸಲ್ಪಟ್ಟ ಬಟ್ಟೆ, ಕಂಬಳಿ. ಕಮು (ಕಾಂತಿ) "ಕಲ:" ಬುಕ್ ಚ (ತಂ ೧-೧೦೬)। "ನ ತಥಾ ಸುಖಯತ್ಯಗ್ನಿರ್ನ ಪ್ರಾವಾರಾ ನ ಕಮ್ಬಲಾ:। ಶೀತವಾರ್ತಾದಿತಂ ಲೋಕಂ ಯಥಾ ತವ ಮರಿಚಯ:" ಭಾಂ ವನಂ ೩-೩೨। 2. ಉತ್ತರೀಯ, ಹೊದೆಯುವ ವಸ್ತ್ರ. 3. ಹಸುವಿನ ಗಂಗೆದೊಗಲು. 4. ಕ್ರಿಮಿ, ಹುಳಿ. 5. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಸರ್ಪ. (ನಂ) 6. ಜಲ, ನೀರು. (ಪುಂ) 7. ಜಿಂಕೆ, ಚಿಗರಿ. 8. ಪ್ರಯಾಗದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ತೀರ್ಥ. "ಕಮ್ಬಲೋಹಿ: ಕ್ರಿಮಿ: ಸಾಸ್ನಾ ಪ್ರಾವಾರ: ಕಮ್ಬಲಂ ಜಲೇ" ನಾನಾರ್ಥರಂ।

**ಕಮ್ಬಲಿಕಾ ಕಂಬಳಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಣ್ಣ ಕಂಬಳಿ. ಕ್ಷುಧ್ರ: ಕಮ್ಬಲ: ಕಮ್ಬಲಿ—ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"। 2. ಹೆಣ್ಣು ಜಿಂಕೆ.

**ಕಮ್ಬಲಿನ್ ಕಂಬಲಿನ್** (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಪಥ, ಎತ್ತು. ಕಮ್ಬಲ: ಗಲಕಮ್ಬಲ: ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇತಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। (ವಿಂ) 2. ಕಂಬಳಿಯನ್ನು ಧರಿಸಿರುವವನು.

**ಕಮ್ಬಲಿವಾಹ್ಯಕ ಕಂಬಳಿವಾಹ್ಯಕ** (ನಂ) ಎತ್ತುಗಳಿಂದ ಎಳೆಯಲ್ಪಡುವ ಗಾಡಿ, ಕಮ್ಬಲಿಭಿ: ವೃಷಭೇಹೃತೇ—ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೪-೪-೫)।

**ಕಮ್ಬಲೀಯಾ ಕಂಬಳೀಯಾ** (ವಿಂ) ಕಂಬಳಿಗೆ ಅನುಕೂಲ ವಾದ (ಉಣ್ಣೆ). ಕಮ್ಬಲಾಯ ಹಿತಮ್ "ಃ:" (೪-೧-೫)।

**ಕಮ್ಬಲ್ಯ ಕಂಬಲ್ಯ** (ನಂ) ಒಂದು ಶಾಲುಪನ್ನು ತಯಾರಿಸಲು ಬೇಕಾಗುವ ನೂರು ಪಲಗಳ ಉಣ್ಣೆ. ಕಮ್ಬಲಂ ಸಂಜಾಯಾಂ "ಯತ್" (೪-೧-೩)।

**ಕಮ್ಬಿ ಕಂಬಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೊಟ್ಟು, ಮಿಳ್ಳೆ. ಕಮ್ಬ (ಗತೌ) "ಇನ್" (ತಂ ೪-೧೧೭)। 2. ಬಿದಿರಿನ ಮೊಳಕೆ ಅಥವಾ ಗಿಣ್ಣು. "ಕಮ್ಬಿರಂಶೋ ಚ ವಂಶಸ್ಯ ಕ್ವಜಾಕಾಯಾಮಪಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ।

**ಕಮ್ಬು ಕಂಬು** (ಪುಂ) 1. ಶಂಖ. ಕಮು (ಕಾಂತಿ) "ಕ್ರು:" ಬುಕ್ ಚ (ತಂ ೧-೩೭)। "ನೃತೇ ಚಕ್ಷು:ಶ್ಚಾನ್ಯಹಸ್ತಪ್ರಯೋಗಂ ಕಾಯೇ ಕೂಜನ್ ಕಮ್ಬುರ್ದ್ವೇರ್ಜಹಾಸ" ಮಾಘಂ ೧೮-೫೪। 2. ಕಡಗ, ಬಳೆ. 3. ಶಂಖದಬಳೆ. 4. ಕತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಶಂಖದಂತೆ ಇರುವ ಮೂರು ರೇಖೆಗಳು. (ಇವು ಅದೃಷ್ಟ ಸೂಚಕ). 5. ಕಪ್ಪೆ ಚಿಪ್ಪು. 6. ಗಜ, ಆನೆ. "ಮದಬೃಂದ: ಕೃಷಿ ಕಮ್ಬು: ಶುಭಾಲ: ಷಷ್ಠಿಹಾಯನ:" ವೈಜಂ। 7. ಧಾನ್ಯದ ನುಚ್ಚು, ಧಾನ್ಯದ ಒಂದು ಭಾಗ. 8. ಒಂದು ಸಂಖ್ಯೆ, 1,000,000,000,000ರ ಹೆಸರು. "ಕಮ್ಬಸ್ತ್ರೀ ವಲಯೇ ಶಂಖೇ ಶಮ್ಬುಕೇ ಕಣಸಂಖ್ಯಯೋ:" ವೈಜಂ। 9. ಬೊಳ್ಳಾಗಿರುವ ಮೂಳೆ, ಒಳಗೆ ಕೊಳವೆ

ಯಂತಿರುವ ಎಲುಬು. 10. ಕತ್ತು, ಕುತ್ತಿಗೆ. 11. ಕಬೋರ. "ಕಮ್ಬುರ್ವಲಯಶಂಖಯೋ:। ಗಜೇ ಶಮ್ಬುಕೇ ಕರ್ಚುರೇ ಗ್ರೀವಾಯಾಂ ನಲಕೇಽಪಿ ಚ" ಹೇಮಂ।

**ಕಮ್ಬುಕ ಕಂಬುಕ** (ಪುಂ) ಶಂಖ. ಕಮ್ಬು ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೪-೩-೭೫)।

**ಕಮ್ಬುಕಣ್ಣ ಕಂಬುಕಣ್ಣ** (ವಿಂ) ಶಂಖದಂತೆ (ಮೂರು ಗೆರೆ ಗಳುಳ್ಳ) ಕತ್ತುಳ್ಳವನು. ಕಮ್ಬುರಿವ ಕಣ್ಣೋ ಯಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೫೫)। -ಕಣ್ಣಿ -ಕಂಠೀ.

**ಕಮ್ಬುಕನ್ಧರ ಕಂಬುಕನ್ಧರ** (ವಿಂ) ಶಂಖದಂತೆ ಕತ್ತುಳ್ಳ ವನು. ಕಮ್ಬುರಿವ ಕನ್ಧರಾ ಯಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ -ಕನ್ಧರಾ -ಕಂಠರಾ.

**ಕಮ್ಬುಗ್ರೀವಾ ಕಂಬುಗ್ರೀವಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶಂಖದಂತೆ ಮೂರು ರೇಖೆಗಳುಳ್ಳ ಕತ್ತು. ಕಮ್ಬುರಿವ ಗ್ರೀವಾ। (ವಿಂ) 2. ಶಂಖ ದಂತೆ ಮೂರು ರೇಖೆಗಳುಳ್ಳ ಕತ್ತುಳ್ಳವನು. ಕಮ್ಬುರಿವ ಗ್ರೀವಾ ಯಸ್ಯ।

**ಕಮ್ಬು ಕಂಬೂ** (ಪುಂ) 1. ಬೋರ, ಕಳ್ಳ. ಕಮು (ಕಾಂತಿ) "ಕ್ರು:" ಬುಕ್ ಚ (ತಂ ೧-೯೩)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಕಂಕಣ, ವಲಯ, ಬಳೆ ಮೊದಲಾದ "ಕಮ್ಬು" ಪದದ ಅರ್ಥ.

**ಕಮ್ಬೋಜ ಕಂಬೋಜ** (ಪುಂ) 1. ಕಂಬೋಜದೇಶ. (ಪುಂ) 2. ಕಂಬೋಜ ದೇಶದ ದೊರೆ, ಕಂಬೋಜ ದೇಶದ ರಾಜ. ಕಮ್ಬೋಜಾನಾಂ ರಾಜಾ—ಕಮ್ಬೋಜಾ "ಅನ್" (೪-೧-೧೬೬)। ಅಜೋ ಲುಕ್ (೪-೧-೧೭೩)। "ಕಮ್ಬೋಜಾ: ಸಮರೇ ಸೌಹೃದ್ ತಸ್ಯ ವೀರ್ಯಮನೀಶ್ವರಾ:" ರಘುಂ ೪-೬೯। 3. ಗಜ, ಆನೆ. 4. ಶಂಖ. "ಕಮ್ಬೋಜೋ ಹಸ್ತಿಭೇದೇಽಪಿ ಶಂಖದೇಶ-ವಿಶೇಷಯೋ:" ಮೇದಿಂ।

**ಕಮ್ಬ ಕಮ್ಬ** (ವಿಂ) ಕಾಮುಕ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ, ಮೈಥುನೇಚ್ಛೆಯುಳ್ಳವನು. ಕಮು (ಕಾಂತಿ) "ರ:" (೩-೨-೧೬೭)।

**ಕಯಾಘ ಕಯಾಘ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವಿನ ಪತ್ನಿ, ಜಂಭಾಸುರನ ಮಗಳು, ಪ್ರಹ್ಲಾದನ ತಾಯಿ. [ಹಿರಣ್ಯ ಕಶಿಪುವು ಒಮ್ಮೆ ತಪಸ್ಸಿಗೆ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಇಂದ್ರನು ಗರ್ಭಿಣಿ ಯಾಗಿದ್ದ ಕಯಾಘವನ್ನು ಸೆರೆ ಹಿಡಿದು ನಾರದರ ಸಲಹೆಯಂತೆ ಅವಳನ್ನು ಹಿಂಸಿಸದೆ ಅವರ ಬಳಿ ಬಿಡುವನು. ನಾರದರು ಗಂಗಾತೀರದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಅಶ್ರಮವನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿ ಅಲ್ಲಿ ಕಯಾಘವಿಗೆ ಮಂತ್ರೋಪದೇಶ ಮಾಡಲು ಅವಳು ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಧ್ಯಾನದಲ್ಲೇ ಇರುತ್ತಿದ್ದಳು. ಅಷ್ಟರಲ್ಲಿ ತಪಸ್ಸಿನಿಂದ ಹಿಂತಿರುಗಿದ ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವಿಗೆ ನಾರದರು ಅವಳನ್ನು ಒಪ್ಪಿಸಿದರು. ಈ ಮಂತ್ರೋಪದೇಶಬಲದಿಂದ ಕಯಾಘಪುತ್ರನಾದ ಪ್ರಹ್ಲಾದನು ಪರಮವಿಷ್ಣುಭಕ್ತನಾದನು.] ಭಾಗಂ ೬-೧೮।



ಕರ ಕರ (ಪುಂ) 1. ಹಸ್ತ, ಕೈ. ಕೀರ್ಯತೇಜೇನ—ಕ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) ಕರಂ  
 “ಅಪ್” (೩-೩-೪೭)। “ಶ್ರಿಯಾಸ್ಯ ಯೋಗ್ಯಾಹಮಿತಿ ಸ್ವಮೀಕ್ಷಿತು  
 ಕರೆತಮಾಲೋಕ್ಯ ಮುಖ್ಯಯಾ ಧೃತಃ” ನೈಷಂ ೧-೩೧। 2. ಬಲಿ,  
 ಪುಂಡ್ರಾಪ್ರಭೃ. “ಕರಪ್ರಚೇಯಾಮುತ್ಸುಜ್ಞಃ ಪ್ರಭುಶವಿನ್ ಪ್ರಥೀಯಸೀಮ್ |  
 ಪ್ರಜ್ಞಾಬಲವೃಹನ್ಮೂಲಃ ಫಲತ್ಯುತ್ಸಾಹಪಾದಪಃ” ಮಾಘಂ ೨-೮೯। 3.  
 ಕರಣ. ಕ ಕರ್ಮಂ “ಅಪ್” (೩-೩-೪೭)। “ಜಗತೀರಿಹ  
 ಸ್ಫುರಿತಚಾರುಚಾಮೀಕರಾಃ ಸವಿತುಃ ಕ್ವಚಿತ್ ಕಪಿಶಯಂತಿ ಚಾಮೀ  
 ಕರಾಃ” ಮಾಘಂ ೪-೨೪। 4. ರಾಜಾಧಾಪಯ, ರಾಜನಿಗೆ ಕೊಡ  
 ಬೇಕಾದ ತೆರಿಗೆ. ಕಂದಾಯ. ಕಂ ಸುಖಂ ರಾತಿ ದದಾತಿ—ರಾ  
 (ದಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೪)। “ತವ ತನ್ವಿ ಕುಚಾವೇತೌ ನಿಯತಂ  
 ಚಕ್ರವರ್ತಿನೌ | ಆಸಮುದ್ರಕ್ಷಿತಿಶೋಷಪಿ ಭವಾನ್ ಯತ್ರ ಕರಪ್ರದಃ”  
 ಉದ್ಧಂ | 5. ಅನೆಯಸೊಂಡಿಲು. “ಸೇಕಃ ಶೀಕರಿಣಾ ಕರೇಣ  
 ವಿಹಿತಃ ಕಾಮಂ ವಿರಾಮೇ ಪುನಃ ಯತ್ಸೇಹಾದನರಾಲನಾಲನಲಿನಿ-  
 ಪತ್ರಾತಪತ್ರಂ ಧೃತಮ್” ಉಂ ರಾಂ ೩-೧೬। 6. ವರ್ಷೋಪಲ.  
 ಅಲಿಕಲ್ಲು. 7. ನಿಕ್ಷೇಪ, ಇಡುವಿಕೆ. 8. ಹಸ್ತನಕ್ಷತ್ರ.  
 “ರೇವತ್ಯುತ್ತರರೋಹಿಣೀಕರಪಿತೃಸ್ವಾತೀಂದ್ರಮಿತ್ರಾಸುರೇ ಪಾಪಾನನ್ವಿತ-  
 ಪಾಪವೇಧರಹಿತೇ ಪಾಣಿಗ್ರಹಃ ಶೋಮನಃ” ಕಾಲಾಂ ೪೪। 9.  
 ಎರಡು ಸಂಖ್ಯೆಯ ಸಂಕೇತ. 10. ಸೆರೆಮನೆ, ಕಾರಾಗಾರ.  
 ಕಿರತಿ ಕ್ಷಿಪತಿ ದಂಡಚಾನತ್ರ—ಕ “ಅಪ್” (೩-೩-೪೭)।  
 (ವಿಂ) 11. ಸುಖವನ್ನು ಕೊಡುವ. ಸುಖವನ್ನುಂಟು  
 ಮಾಡುವ. ಕಂ ಸುಖಂ ರಾತಿ — ರಾ (ದಾನೇ) “ಕಃ”  
 (೩-೨-೪)।

ಕರಕ ಕರಕ (ಪುಂ) 1. ಹಸ್ತ, ಕೈ. ಕರ ಸ್ವಾರ್ಥೆ “ಕನ್”।  
 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಪಕ್ಷಿ. 3. ದಾಡಿಮ ವೃಕ್ಷ, ದಾಳಿಂಬೆ  
 ಗಿಡ. (ಪುಂ) 4. ಕಮಂಡಲು, ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳ ಮತ್ತು  
 ಸಂನ್ಯಾಸಿಗಳ ಜಲಪಾತ್ರೆ. 5. ಒಳಗಿನ ತಿರುಳು ತೆಗೆದು  
 ಪಾತ್ರೆಯ ಅಕಾರದಂತೆ ಮಾಡಿದ ತೆಂಗಿನಕಾಯಿನ ಜಿಪ್ಪು.  
 ಕಿರತಿ ಜಲಮತ್ರ—ಕ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) ಸಂಜ್ಞಾयां “ಕುನ್” (ಉಂ  
 ೪-೩೫)। “ಉಪಾನಹೌ ಚ ವಾಸಶ್ಚ ಧೃತಮನ್ಯೇನ ಧಾರಯೇತ್ |  
 ಉಪವೀತಮಲಂಕಾರಂ ಸ್ನಜಂ ಕರಕಮೇವ ಚ” ಮನುಂ ೪-೬೬। 6. ತಲೆ  
 ಬುರುಡೆ. 7. ವರ್ಷೋಪಲ, ಅಲಿಕಲ್ಲು. (ನಂ) 8. ನಾಯಿ  
 ಕೊಡೆ. “ಕರಕಸ್ತು ಪುಮಾನ್ ಪಕ್ಷಿವಿಶೇಷೇ ದಾಡಿಮೇಷಪಿ ಚ |  
 ದ್ವಯೋರ್ವರ್ಷೋಪಲೇ ನ ಸ್ತ್ರೀ ಕರಕೇ ಚ ಕಮಂಡಲೌ” ಮೇದಿಂ |

ಕರಕಚ ಕರಕಚ (ಪುಂ) ಜ್ಯೋತಿಷೋಕ್ತವಾದ ತಿಥಿವಾರಗಳ  
 ಒಂದು ಯೋಗ; ಶನಿವಾರ ಪಕ್ಷಿ, ಶುಕ್ರವಾರ ಸಪ್ತಮಿ,  
 ಗುರುವಾರ ಅಷ್ಟಮಿ, ಬುಧವಾರ ನವಮಿ, ಕುಜವಾರ  
 ದಶಮಿ, ಸೋಮವಾರ ಏಕಾದಶಿ, ಭಾನುವಾರ ದ್ವಾದಶೀ  
 ತಿಥಿಗಳು ಸೇರಿದರೆ “ಕರಕಚ” ಯೋಗವು.

ಕರಕಚ್ಚಪಿಕಾ ಕರಕಚ್ಚಪಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೂರ್ಮಮುದ್ರೆ,  
 ಪುಂಡ್ರಾಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕೂರ್ಮದಂತೆ ಅಂಗುಳಿನ್ನಾಸದಿಂದ  
 ಮಾಡುವ ಒಂದು ಮುದ್ರೆ. ಕರೆ ಸ್ಥಿತಾ ಕಚ್ಚಪಿಕಾ  
 ಕಚ್ಚಪಾಕಾರೋಽಙ್ಗುಲಿವಿನ್ಯಾಸಃ | “ಕರಕಚ್ಚಪಿಕಾಂ ಕುರ್ಯಾತ್  
 ಕೂರ್ಮಮನ್ತ್ರೇಣ ಸಾಧಕಃ | ತತ್ರ ಸಂಸ್ಕೃತಪುಸ್ತಕೇಣ ಪೂಜಯೇದಾತ್ಮನೋ  
 ವಪುಃ” ಕಾಲಿಕಾಪುಂ |

ಕರಕಣ್ಡಕ ಕರಕಂಟಕ (ಪುಂ) ಸಖ, ಉಗುರು. ಕರಸ್ಯ  
 ಕಣ್ಡಕ ಇವ | “ನಖಃ ಪುನರ್ಭವಃ ಕಾಮಾಂಶುಕಃ ಸ್ಯಾತ್ಕರಕಣ್ಡಕಃ”  
 ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಕರಕಮಲ ಕರಕಮಲ (ನಂ) ಕಮಲದಂತೆ ಕೋಮಲವಾದ  
 ಕೈ. ಕರೌ ಕಮಲೇ ಇವ | “ಕರಕಮಲನಿರ್ದೇಶಿತಾತ್ಮಮುದ್ರಃ  
 ಪರಿಕಲಿತೋತ್ತಮತರ್ಬಹಿಬಹುಚೂಡಃ” | “ಕರಕಮಲವಿತಿರ್ಣ-  
 ರಮ್ಬುನಿವಾರಶಾಖೈಃ” ಉಂ ರಾಂ ೩-೨೫ |

ಕರಕಾ ಕರಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವರ್ಷೋಪಲ, ಅಲಿಕಲ್ಲು. “ಕರಕಾ  
 ಸ್ಯಾತ್ ಧನಕುಕೋ ಬೀಜೋದಕಮಿರಾಚರಮ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಕರಕಾಮ್ಭಸ್ ಕರಕಾಂಭಸ್ (ಪುಂ) ತೆಂಗಿನ ಮರ. ಕರಕಾಯಾ  
 ಇವ ಶೀತಲಮಮ್ಭೋಸ್ಯ |

ಕರಕಾಸಾರ ಕರಕಾಸಾರ (ಪುಂ) ಅಲಿಕಲ್ಲಿನ ಮಳೆ. ಕರಕಾಯಾ  
 ಆಸಾರಃ |

ಕರಕಿಸಲಯ ಕರಕಿಸಲಯ (ಪುಂ) ಜಿಗುಂಸಂತೆ ಕೋಮಲ  
 ವಾದ ಕೈ. ಕರೌ ಕಿಸಲಯಾವಿವ | “ಕರಕಿಸಲಯತಾಲೇರ್ಮುಂಘಯಾ  
 ನರ್ತ್ಯಮಾನಂ ಸುತಮಿವ ಮನಸಾ ತ್ವಾಂ ವತ್ಸಲೇನ ಸ್ಮರಾಮಿ”  
 ಉಂ ರಾಂ ೩-೧೯ |

ಕರಕುಡ್ಮಲ ಕರಕುಡ್ಮಲ (ಪುಂ) ಮೊಗ್ಗಿನಂತಿರುವ ಕೈ,  
 ಮೊಗ್ಗಿನ ಅಕಾರದಂತೆ ಜೋಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಕೈ. ಕರಃ ಕುಡ್ಮಲ-  
 ಮಿವ | “ಕರಕುಡ್ಮಲೇನ ನಿಜಮೂರ್ಮುರತರನಗಾಶಮಕರ್ಕಶಮ್”  
 ಮಾಘಂ ೧೫-೧೦ |

ಕರಗತ ಕರಗತ (ವಿಂ) ಕೈಸೇರಿದ, ಕೈಗೆ ದೊರೆತಿರುವ. ಕರಂ  
 ಗತಃ | “ಅಸಮಯೇ ಮತಿಸ್ತನ್ಮಿಪತಿ ಧ್ರುವಂ ಕರಗತೇವ ಗತಾ ಯದಿದ್ಯಂ  
 ಕುಹಃ” ನೈಷಂ ೪-೪೭ |

ಕರಗ್ರಹ ಕರಗ್ರಹ (ಪುಂ) 1. ಪಾಣಿಗ್ರಹಣ, ವಿವಾಹ,  
 ಮದುವೆ. ಕರೌ ಗೃಹ್ಯತೇಽತ್ರ—ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) ಅಥಿಂ  
 “ಅಪ್” (೩-೩-೪೮) | 2. ಕೈಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. 3. ಪ್ರಜೆ  
 ಗಳಿಂದ ಕಂದಾಯ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಕರಸ್ಯ ಗ್ರಹಃ | ಭಾವೇ  
 “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) | -ಗ್ರಹಣಮ್ -ಗ್ರಹಣಮ್ |

ಕರಗ್ರಾಹ ಕರಗ್ರಾಹ (ಪುಂ) 1. ಪತಿ, ಗಂಡ. (ವಿಂ) 2.  
 ಕೈಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳುವವನು. 3. ಕಂದಾಯ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳು



ಮಮನು. ಕರಂ ಗೃಹ್ಣಾತಿ-ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಅಞ್" (೩-೨-೧)।

ಕರಗ್ರಾಹಕ ಕರಗ್ರಾಹಕ (ವಿಂ) "ಕರಗ್ರಾಹ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಕರ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಞ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಗಿಣಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। -ಗ್ರಾಹಿನ್ -ಗ್ರಾಹಿನ್. "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩)। -ಗ್ರಾಹಿತ್ -ಗ್ರಾಹಿತ್.

ಕರಗ್ರಾಹಕ ಕರಗ್ರಾಹಕ (ಪುಂ) 1. ಕಡೆಗೋಲು, ಮೊಸ ರನ್ನು ಕಡೆಯುವ ಕೋಲು, ಮುಂತು. ಕರಾಭ್ಯಾಂ ವೃಷ್ಯತೇ- ವೃಷು (ಸಂಘರ್ಷ) ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩)। (ನಂ) 2. ಕೈಯನ್ನು ಉಜ್ಜುವಿಕೆ. ಕರಯೋ: ವೃಷ್ಯತೇ.

ಕರಜ್ಜ ಕರಂಜ (ಪುಂ) 1. ತೆಂಗಿನಕಾಯಿನ ಚಿಪ್ಪು. 2. ಕಮಂಡಲು, ಸಂನ್ಯಾಸಿಯ ಜಲಪಾತ್ರೆ. 3. ಮರದ ಅಥವಾ ಲೋಹದ ಪಾತ್ರೆ. ಕೀರ್ಯತೇ ಜಲಮತ್ರ-ಕೃ (ವಿಶ್ಲೇಷ) "ಅಞ್" (೩-೩-೫೭)। ಕರಮಜ್ಜಯತಿ-ಅಜ್ಜ (ಪದ) "ಅಞ್" (೩-೨-೧)। 4. ತಾಂಬೂಲ ಮುಂತಾದುವುಗಳ ಮುಟ್ಟಿ ಅಥವಾ ಪುಟ್ಟಿ. 5. ತಲೆಯುರುಡೆ, ತಲೆಯೋಡು, ಕಪಾಲ, ತಲೆಯ ಚಿಪ್ಪು. "ಆತ್ಮಸ್ನಾನ್ವಾನ್ವನೇತ್ರ: ಪ್ರಕಟಿತ- ದಶನ: ಪ್ರೇತರಜ್ಜ: ಕರಜ್ಜಾದಿಕ್ಷುಸ್ಥಾದಿಕ್ಷುಸ್ಥಮಸ್ಯ ಸ್ಥಪುಟಗತಮಪಿ ಕ್ರವ್ಯಮವ್ಯಗ್ರಮತಿ" ಮಾಲತೀಂ ೫-೧೬।

ಕರಜ ಕರಜ (ಪುಂ) 1. ಉಗುರು, ನಖ. ಕರೆ ಜಾಯತೇ-ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೧೭)। "ಕರಜದಶನವಿಹ್ನಂ ನೇಶಮಜ್ಜೇಜ್ಯನಾರೀಜನಿತಮಿತಿ ಸರೋಪಾಮೀರ್ಯಾಶಕ್ತುಮಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೩೭। 2. ಹೊಂಗಮರ. ಕಂ ಶಿರ: ಜಲಂ ವಾ ರಜ್ಜಯತಿ-ರಜ್ಜ (ರಾಗೆ) + ಗಿಣಿ "ಅಞ್" (೩-೨-೧)। (ನಂ) 3. ವ್ಯಾಘ್ರನಖವೃಕ್ಷ. ಹುಲಿಯುಗುರುಗಿಡ. ಕರಜೋ ನಖಂ ತದಿವ। "ಕರಜಂ ಸ್ಯಾದ್ವ್ಯಾಘ್ರನಖೇ ಕರಜ್ಜನಖಯೋ: ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ। (ವಿಂ) 4. ಕೈಯಲ್ಲಿ ಮುಟ್ಟಿದ.

ಕರಜ್ಜ ಕರಂಜ (ಪುಂ) ಹೊಂಗಮರ. ಕಂ ಶಿರ: ಜಲಂ ವಾ ರಜ್ಜಯತಿ-ರಜ್ಜ (ರಾಗೆ) + ಗಿಣಿ "ಅಞ್" (೩-೨-೧)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೫-೩-೭೫)। ಕರಜ್ಜಕ: ಕರಂಜಕ.

ಕರಟ ಕರಟಿ (ಪುಂ) 1. ಅನೆಯ ಕಪ್ಪೋಲ, -ಗಂಡಸ್ಥಳ, -ಕೆನ್ನೆ. ಕಿರತಿ ಮದಮ್-ಕೃ (ವಿಶ್ಲೇಷ) "ಅಠನ್" (೩-೪-೮೧)। "ಕಲ್ಯಾಣಂ ವೋ ವಿವಿಧಾಂ ಕರಟಮದಧುನಿಲೋ- ಕಲ್ಲಲಮಾಲಾಖಲಲ್ಲಲಂಬಕೋಲಾಹಲಮುಖರಿದಿವಕವಾಲಾ- ನ್ತರಾಲಮ್" ಚಂ ಆಂ 1। 2. ವಾಯುಸ, ಕಾಗೆ. "ಕ" ಇತಿ ರಟತಿ-ರಟ (ಶಬ್ದ) "ಅಞ್" (೩-೧-೧೩೪)। 3. ಕುಸುಬೆಗಿಡ. 4. ನಾಗರಿ. 5. ನವಶ್ರಾದ್ಧ. (ವಿಂ) 6. ಬಹಳ ಕಷ್ಟದಿಂದ ಜೀವಿಸುವ ಮನುಷ್ಯ. 7. ಯಾವುದ

ರಲ್ಲೂ ನಂಬಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು, ನಾಸ್ತಿಕ, ಮೇವದೂಷಕ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಟಾ -ಟಾ. 8. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಹಾಲು ಕರೆಯಿಸಿ ಕೊಳ್ಳುವ ಹಸು. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"। ಕರಟಕ: ಕರಟಕ:

1. ಕಾಗೆ, ವಾಯುಸ. 2. ಕರ್ಣೀಸುತ. ಚರ್ಯಾಶಾಸ್ತ್ರ ಪ್ರವರ್ತಕ. "ಕರ್ಣಿಸುತ: ಕರಟಕ: ಸ್ತೇಯಶಾಸ್ತ್ರಪ್ರವರ್ತಕ:। ತಸ್ಯಾಖ್ಯಾತೌ ಸಖಾಯೌ ದ್ವೌ ವಿಪುಲಾಚಲಸಂಜಕೌ" ಕಾದಂಬರಿ- ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಮ್। "ಕರಟ: ಕರಿಗಣ್ಡೆ ಸ್ಯಾತ್ಕುಸುಮ್ಭೇ ನಿನ್ದ- ಜಿವಿನಿ। ಕಾಕೇ ವಾಘೇ ದುರ್ದುರ್ದೇ ನವಶ್ರಾದ್ಧೇ" ಹೇಮಂ। 3. ಹಿತ್ತಲಪದೇಶದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಒಂದು ನರಿಯ ಹೆಸರು.

ಕರಟಿನ್ ಕರಟಿನ್ (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. ಕರಟೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ- ಕರಟ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫)। "ದಿಗಂತೇ ಶ್ರಯಂತೇ ಮದ- ಮಲಿನಗಣ್ಡಾ: ಕರಟಿನ:" ರಸಗಂ।

ಕರಣ ಕರಣ (ಪುಂ) 1. ಕಾಯಸ್ಥ, ಲೇಖಕ, ಗುಮಾಸ್ತೆ. 2. ಶೂದ್ರಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ವೈಶ್ಯನಿಗೆ ಜನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಮಿಶ್ರ ಜಾತಿಯವನು. ಇವನ ವೃತ್ತಿ:- "ಧನಧಾನ್ಯಾಧ್ಯಕ್ಷತಾ ಚ ರಾಜಸೇವಾ ತಥೈವ ಚ। ದ್ವಿಜಾತೇ: ಪರಿಚರ್ಯಾ ಚ ದುರ್ಗಂತಿ: ಪುರ- ರಕ್ಷಣಮ್। ಏವಾ ಪಾರಶವಸ್ಯೋಕ್ತಾ ಉಗ್ರಸ್ಯ ಕರಣಸ್ಯ ಚ" ಪರಾಂ। (ನಂ) 3. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। ಜೀವರು ತನ್ನನ್ನು ಸೇರಲು ಪರಮಸಾಧನನಾದುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಕರಣನು. "ಸ್ವಪ್ರಾಪ್ತೌ ಸಾಧಕತಮಂ ಜೀವಾನಾಂ ಕರಣಂ ವಿದು:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ:। "ಕರಣಂ ಕಾರಣಂ ಕರ್ತಾ ವಿಕರ್ತಾ ಗೃಹ್ಣೋ ಗುಹ್:" ವಿಂ ಸಂ। 4. ಸಾಧನ, ಸಲಕರಣೆ. 5. ಕ್ರಿಯಾನಿಷ್ಪತ್ತಿಪರ್ಯಂತ ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿಗೆ ಪರಮೋಪಕಾರಕವಾಗುವ ಕಾರಣ. ಡು ಕೃಜ್ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ದಾತ್ರೇಣ ಧಾನ್ಯಂ ಲುನಾತಿ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಕೊಯ್ಯಲು ಹಸ್ತಗಳು ಕಾರಣವಾದರೂ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಣವಾದ ದಾತ್ರವೇ (ಕುಡುಗೋಲೆ) ಕರಣ ವಾಗುವುದು. "ಸಾಧಕತಮಂ ಕರಣಮ್" ಪಾಂ ಸೂಂ ೧-೪-೪೨। "ಕರ್ತೃಕರಣಯೋಸ್ತೃತೀಯಾ" ಪಾಂ ಸೂಂ ೨-೩-೧೮। "ಕರಣಂ ಕರ್ಮ ಕರ್ತೇತಿ ತ್ರಿವಿಧ: ಕರ್ಮಸಂಗ್ರಹ:" ಗೀತಾ ೧೮-೧೮। "ಕ್ರಿಯಾಯಾ: ಪರಿನಿಷ್ಪತ್ತಿರಿದ್ಯವ್ಯಾಪಾರಾದನಂತರಮ್। ವಿವಿಧ್ಯತೇ ಯದಾ ಯತ್ರ ಕರಣಂ ತತ್ ತದಾ ಸ್ಮೃತಮ್"। 6. ವ್ಯಾಪಾರವುಳ್ಳ ಅಸಾಧಾರಣ ಕಾರಣ, ಹೇತು. ಉದಾ: ಘಟಕ್ಕೆ ದಂಡವು ಅಸಾಧಾರಣ ಕಾರಣ. ದಂಡದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಭ್ರಮಣರೂಪ ವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ ಘಟೋತ್ಪತ್ತಿಯಾಗುವುದರಿಂದ ದಂಡವು ಕರಣವಾಯಿತು. 7. ತಾಳಬದ್ಧ ರಚನೆ, ತಾಳಬದ್ಧವಾದ ವಾದ್ಯಗಳ ತಾಡನ. ತಾಳಗಳ ನಿಯಮಕ್ಕೆ ಒಳಪಟ್ಟು ವಾದ್ಯ ತಾಡನ. "ನೃತ್ಯವಾದಿತ್ರಗೀತಾನಾಂ ಪ್ರಯೋಗವಶಮೇದಿನಾಮ್।



ಸಂಸ್ಥಾನಂ ತಾಡನಂ ರೋಧಃ ಕರಣಾನಿ ಪ್ರವಕ್ಷತೇ” । “ಶಿಖರಾಸಕ್ತ-  
ಮೇಧಾನಾಂ ವ್ಯಜ್ಯಂತೇ ಯತ್ರ ವೇಷಮನಾಮ್ । ಅನುಗರ್ಜಿತಸಂದಿಗ್ಧಾಃ  
ಕರಣೈರ್ಮುರಜಸ್ವನಾಃ” ಕುಮಾರಂ ೬-೪೦ । 8. ದೇಹ, ಶರೀರ.  
“ಯस्ಮಿನ್ ದೃಷ್ಟೇ ಕರಣವಿಗಮಾದ್ಧ್ವಮುದ್ಭೂತಪಾಪಾಃ ಸಂಕಲ್ಪಂತೇ  
ಸ್ಥಿರಗಣಪದಪ್ರಾಪ್ತಯೇ ಶ್ರದ್ಧಾಧಾನಾಃ” ಮೇಘಂ ೫೫ । 9. ಇಂದ್ರಿಯ.  
ಇಂದ್ರಿಯಗಳು ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯಗಳು ಮತ್ತು ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಗಳು ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಇಂದ್ರಿಯ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] “ಅಧಿಷ್ಠಾನಂ ತಥಾ ಕರ್ತಾ ಕರಣಂ ಚ ಪೃಥಗ್ವಿಧಮ್”  
ಗೀತಾ ೧೮-೧೪ । “ಕರಣಕಲೇಬರಯೋಗಂ ವಿತರಸಿ ವೃಷಶೈಲನಾಥ  
ಕರಣೇ ತ್ವಮ್” ದಯಾಶಂ ೧೭ । “ನಾಸಾಶ್ವಾಸಾಧಿವಾಸೇಷ್ವರಮಧುನಿ  
ರಸಶಾ ಚರಿತೃಷು ಚಿತ್ತಂ ತನ್ನಸ್ತನ್ವಜ್ಞಿ ಕೇಶಿಚಿತ್ತ ಕರಣಹರಿಣೈ-  
ವಾಗುರಾಲಕ್ಷಿತಾಸಿ” ನೈಷಂ ೮-೧೦೬ । 10. ಲೇಖ್ಯ, ಆಧಾರ  
ಪತ್ರ, ದಸ್ತವೇಜು, ಪ್ರಮಾಣಪತ್ರ. “ಅರ್ಥವ್ಯಯಮಾನಂ ತು  
ಕರಣೇನ ವಿಭಾವಿತಮ್ । ದಾಪಯೇದ್ವನಿಕಸ್ಯಾರ್ಥ ದೃಢಲೇಶಂ ಚ  
ಶಕ್ತಿಕೃತಃ” ಮನುಂ ೮-೫೧ । 11. ಕ್ಷೇತ್ರ, ಭೂಮಿ, ಜಮೀನು. 12. ಚಿತ್ರ, ಮನಸ್ಸು, ಅಂತಃಕರಣ, ಬುದ್ಧಿ. “ಕರ್ತೃತಾ ತದ್ವಿಲಂಬತೋಭವದ್ವೃತ್ತಿಭಾಜಿ ಕರಣೇ  
ಯತ್ವಿಜಿ” ಮಾಘಂ ೧೪-೧೯ । 13. (ಜ್ಯೋತಿಷದಲ್ಲಿ) ತಿಥಿಯ ಅರ್ಧಭಾಗವನ್ನು ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವ ಕಾಲವಿಶೇಷ, ಬವ, ಬಾಲವ ಮೊದಲಾದ ಹನ್ನೊಂದು ಕರಣಗಳು.  
(1) ಬವಃ, (2) ಬಾಲವಃ, (3) ಕೌಲವಃ, (4) ತೈತಲಃ, (5) ಗರಃ, (6) ವಣಿಕ್, (7) ಭದ್ರಾ, (8) ಶಕುನಿಃ, (9) ಚತುಷ್ಪಾದಃ, (10) ನಾಗವಾನ್ ಮತ್ತು (11) ಕಿಸ್ತುಘ್ನಮ್  
ಇವು ಹನ್ನೊಂದು ಕರಣಗಳು. ಇವುಗಳಿಗೆ ಕ್ರಮವಾಗಿ  
(1) ಇಂದ್ರಃ, (2) ಕಮಲಜಃ, (3) ಮಿತ್ರಃ, (4) ಅರ್ಯಮಾ, (5) ಭೂಃ, (6) ಶ್ರೀಃ, (7) ಯಮಃ, (8) ಕಲಿಃ, (9) ವೃಷಃ, (10) ಮಾರುತಃ ಮತ್ತು (11) ಫಣಿ ಇವು ಅಧಿಷ್ಠಾತೃ ದೇವತೆಗಳು. ಈ ಕರಣಗಳು ಧ್ರುವ ಮತ್ತು ಚರ  
ಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಶಕುನಿಃ, ನಾಗವಾನ್, ಚತುಷ್ಪಾದಃ ಮತ್ತು ಕಿಸ್ತುಘ್ನಮ್ ಈ ನಾಲ್ಕು ಧ್ರುವ ಕರಣಗಳು. ಬವಃ, ಬಾಲವಃ, ಕೌಲವಃ, ತೈತಲಃ, ಗರಃ, ವಣಿಕ್ ಮತ್ತು ಭದ್ರಾ ಈ ಏಳು ಚರಕರಣಗಳು. ಶಕುನಿ ಮೊದಲಾದ ನಾಲ್ಕು ಧ್ರುವ ಕರಣಗಳು ಕೃಷ್ಣಚತುರ್ದಶಿಯ ಉತ್ತರಾರ್ಧದಿಂದ ಶುಕ್ಲಪ್ರತಿಪತ್ತಿನ ಪೂರ್ವಾರ್ಧದವರೆಗೂ ತಿಥಿಯೊಂದಕ್ಕೆ ಎರಡರಂತೆ ಬರುವುವು. “ಧ್ರುವಾಣಿ ಶಕುನಿರ್ನಾಗಿ ತೃತೀಯಂ ತು  
ಚತುಷ್ಪದಮ್ । ಕಿಸ್ತುಘ್ನಂ ತು ಚತುರ್ದಶ್ಯಾಃ ಕೃಷ್ಣಾಯಾಶ್ಚಾ-  
ಪರಾರ್ಧತಃ” ಸೂಂ ಸಿಂ ೨-೬೭ । ಬವ ಮೊದಲಾದ ಏಳು ಚರಕರಣಗಳು ಶುಕ್ಲಪ್ರತಿಪತ್ತಿನ ಉತ್ತರಾರ್ಧದಿಂದ ಪ್ರಾರಂಭವಾಗಿ ಕೃಷ್ಣಚತುರ್ದಶಿಯ ಪೂರ್ವಾರ್ಧದ

ವರೆಗೂ ಒಂದು ತಿಥಿಯಲ್ಲಿ ಎರಡು ಕರಣಗಳಂತೆ ಒಂದು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಎಂಟು ಸಲ ಬರುವುವು. “ಭವಾದಿನಿ ತತಃ  
ಸಪ್ತ ಚರಾಸ್ಥಕರಣಾನಿ ಚ । ಮಾಸೇಷ್ಠಕೃತ್ವಃ ಏಕೈಕಂ ಕರಣಾನಾಂ  
ಪ್ರವರ್ತಂತೇ” ಸೂಂ ಸಿಂ ೨-೬೮ । (ನಂ) 14. ಕೃತಿ, ಮಾಡುವಿಕೆ. ಕೃತಸ್ಯ ಕರಣಂ ನಾಸ್ತಿ । 15. ತಯಾರಿಸುವಿಕೆ, ನಿರ್ಮಾಣ. “ಹಲಸ್ಯ ಕರಣೇ ಚಾಪಿ ವ್ಯಾಧಿಷ್ಠಾಃ ಸರ್ವ-  
ಶಿಲ್ಪಿನಃ” ಭಾಂ ವನಂ ೨೫೬-೨೬ । 16. ಯೋಗದ ಒಂದು ಅಂಗ; ಪದ್ಧಾಸನ ಮೊದಲಾದುದು. “ಆಸನಂ ಕರಣಂ  
ತಸ್ಯ ಭೇದಾಃ ಪದ್ಮಾಸನಾದಯಃ” ವೈಜಂ । 17. ನೃತ್ಯದಲ್ಲಿ ಅಭಿನಯಕ್ಕಾಗಿ ಬಳಸುವ ಅಂಗಚೇಷ್ಟೆ, ಭಾವಾಭಿನಯ. “ಕರಣಾನ್ಯಜ್ಞಚೇಷ್ಟಾಃ ಸ್ಯುಃ ಹರಣಂ ಕರಣಂ ಸಮೇ” ವೈಜಂ ।  
18. ಹಸ್ತಲೇಪ, ಕೈಗೆ ಬಳಿಯುವುದು, ಕೈಗೆ ಮುಲಾಮು ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಹಚ್ಚುವುದು. 19. ಕರಣಿಯಿಂದ ಗಾರೆ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಬಳಿಯುವುದು. 20. ಸ್ಪೃಷ್ಟ ಮೊದಲಾದ ವರ್ಣೋಚ್ಚಾರಣೆಯ ಪ್ರಯತ್ನ. 21. ಧ್ಯಾನ, 22. ರತಿಕ್ರೀಡೆಯಲ್ಲಿ ಒಂದು ವಿಧವಾದ ಬಂಧ. 23. ಗಾನ, ಹಾಡುವಿಕೆ. 24. ವ್ಯಾಪಾರ, ಕಾರ್ಯ, ಕೆಲಸ. “ಕರಣಂ  
ಕಾರಣೇ ಕಾಯೇ ಸಾಧನೇ ಬವಕಾದಿಷು । ಸ್ಪೃಷ್ಟಾದ್ಯುಚ್ಚಾರಣಾ  
ಭೇದಧ್ಯಾನಪದ್ಮಾಸನಾದಿಷು । ರತಿಬಂಧೇ ನಾಟಕಭೇದೇ ಗೀತಕೇ ಕರ್ಮ-  
ಣಿನ್ದ್ರಿಯೇ” ವೈಜಂ । “ಸ್ವರಾಣಾಮೂಷ್ಮಣಾಂ ಚೈವ ವಿವೃತಂ ಕರಣಂ  
ಸ್ಮೃತಮ್” ಪಾಂ ಸಿಂ । 25. ಮುಖಸಂಧಿಯ ಒಂದು ಅಂಗ. “ಽದ್ವೇದಃ ಕರಣಂ ಭೇದಃ ಏತಾನ್ಯಜ್ಞಾನಿ ವೈ ಮುಖೇ” ಸಾಂ ದಂ ೬-೮೨ । “ಕರಣಂ ಪುನಃ । ಪ್ರಕೃತಾರ್ಥಸಮಾರಂಭಃ” ಸಾಂ ದಂ ೬-೮೬ । (ವಿಂ) 26. ಮಾಡುವ. 27. ತಯಾರಿಸುವ, ನಿರ್ಮಾಣಮಾಡುವ.

**ಕರಣಕುತೂಹಲ ಕರಣಕುತೂಹಲ (ನಂ)** ಭಾಸ್ಕರಾಚಾರ್ಯರಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಒಂದು ಜ್ಯೋತಿಷ ಗ್ರಂಥ.

**ಕರಣತ್ರಾಣ ಕರಣತ್ರಾಣ (ನಂ)** 1. ಎಲ್ಲಾ ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಂದಲೂ ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ ಅಥವಾ ಎಲ್ಲಾ ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನೂ ರಕ್ಷಿಸುವ ಶಿರಸ್ಸು, ತಲೆ. ಕರಣೈಃ ಕರಚರಣಾದಿಭಿಃ  
ತ್ರಾಯತೇ—ತೈತ್ (ಪಾಲನೆ) ಕರ್ಮಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೩) । ಕರಣಾನಿ ಜ್ಞಾನಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಾಣಿ ತ್ರಾಯಂತೇನೇನ—ತೈತ್ ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭) ವಾ ।

**ಕರಣವ್ಯಾಪಾರ ಕರಣವ್ಯಾಪಾರ (ಛಂ)** ಇಂದ್ರಿಯಗಳ ವ್ಯಾಪಾರ, ಇಂದ್ರಿಯಗಳು ಮಾಡುವ ಕೆಲಸ. ಕರಣಾನಾಂ ವ್ಯಾಪಾರಃ ।

**ಕರಣಾಧಿಪ ಕರಣಾಧಿಪ (ಛಂ)** 1. ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಗೆ ಒಡೆಯನಾದ ಜೀವ, ಜೀವಾತ್ಮ. 2. ಇಂದ್ರಿಯಗಳ ಅಧಿಷ್ಠಾತೃ ದೇವತೆ. “ಇಂದ್ರಿಯಾಧಿಷ್ಠಾತೃ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.



ಕರಣಿನ್ ಕರಣಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಜೀವ. ಕರಣಾನ್ಯಸ್ಯ ಸಂತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)।

2. ಸಾಧನಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ, ಸಲಕರಣೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಕರಣೀಯ ಕರಣೀಯ (ವಿಂ) ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ. ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣ) ಕರ್ಮಂ "ಅನೀಯ್" (೩-೧-೯೬)। "ಆತ್ಮನೇವ ಗುಣದೋಷ-ಕೋವಿದ: ಕಿಂ ನ ವೇತ್ಸಿ ಕರಣೀಯವಸ್ತುಃ" ಮಾಘಂ ೧೪-೫೪।

ಕರಣ್ಡ ಕರಂಡ (ಪುಂ) 1. ಜೇನುಗೂಡು. ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣ) ಕರ್ಮಂ "ಅಂಡನ್" (೩ಂ ೧-೧೨೬)। 2. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. 3. ಹಂಸದ ಒಂದು ಭೇದ. 4. ಒಟ್ಟು ಪಟ್ಟಿಗೆ. "ಮನ್ಮಾಶಸ್ಯ ಕರಣ್ಡಪಿಂಡಿತನೋ: ಮ್ಲಾನೇಂದ್ರಿಯಸ್ಯ ಕ್ಷುಧಾ" ಭರ್ತುಂ ೧-೮೨। 5. ಬಿದಿರು ಬೆತ್ತ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಒಟ್ಟು. ಹೂವು ವೀಳ್ಯದಲೆ ಮುಂತಾದುವನ್ನು ಇಡುವ ಒಟ್ಟು. ಸ್ವಾಯೆ "ಕನ್"। ಕರಣ್ಡಕ: ಕರಂಡಕ: "ಶುಕ್ಲವನ-ಲತಾನಿರ್ಮಿತಮಹಾಕುಸುಮಕರಣ್ಡಕೇನ" ಕಾದಂ। 6. ಭರಣಿ. ಡಬ್ಬ. "ದೀಪಭಾಜನಭ್ರಮರಕರಣ್ಡಕಪ್ರಭೃತ್ಯನೇಕೋಪಕರಣಯುಕ್ತ:" ದಶಕುಂ।

ಕರಣಿಡನ್ ಕರಂಡಿನ್ (ಪುಂ) ಮತ್ತೂ, ಮೀನು. ಕರಣ್ಡ-ಸ್ತದಾಕಾರೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। "ಕರಣಿಡೀ ತು ಜಲೇಶಯ:। ಆತ್ಮಾಶೀ ಶಮ್ಬರೋ ಮುಕ್ತ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಕರತಲ ಕರತಲ (ನಂ) ಹಸ್ತದ ಒಳಭಾಗ. ಅಂಗೈ. ಕರಸ್ಯ ತಲಮ್। "ವರ್ಮ ಕರತಲಯುಗೇನ ಮಹತ್ತನುರ್ವರ್ಣಪಿಪಿಬ-ದ್ರುಪಾರ:" ಮಾಘಂ ೧೫-೭೬।

ಕರತಲಾಮಲಕ ಕರತಲಾಮಲಕ (ನಂ) 1. ಅಂಗೈಯಲ್ಲಿರುವ ನೆಲ್ಲಿಕಾಯಿ. ಕರತಲೇ ಆಮಲಕಮ್। (ವಿಂ) 2. ಅಂಗೈಯಲ್ಲಿರುವ ನೆಲ್ಲಿಕಾಯಿಸಂತೆ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಕಾಣುವ.

ಕರತಾಲ ಕರತಾಳ (ಪುಂ) 1. ಚಪ್ಪಾಳೆ, ಎರಡು ಕೈಗಳನ್ನು ತಟ್ಟುವಿಕೆ. (ನಂ) 2. ಝಲ್ಲರಿಯೆಂಬ ಒಂದು ವಾದ್ಯ. ಕರಣ ತಾಲೋ ಯಸ್ಯ। "ಶಿವಾಗಾರೆ ಕ್ಷಲ್ಲಕಂ ಚ ಸೂರ್ಯಾಗಾರೆ ಚ ಶಙ್ಖಕಮ್। ದುರ್ಗಾಗಾರೆ ವಂಶವಾಹಂ ಮಥುರೀ ಚ ನ ವಾದಯೇತ್"।

ಕರತಾಲಿ ಕರತಾಳೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಝಲ್ಲರಿಯೆಂಬ ಒಂದು ವಾದ್ಯ. ಕರಣ ತಾಲೋ ಯಸ್ಯಾ:। ಗೌರಾಂ "ಕಿಶ್" (೪-೧-೪೧)। "ಕರಣಿ: ಕರತಾಲಿ ಸ್ಯಾತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಕರತೋಯಾ ಕರತೋಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಾವಾಗಲೂ ನೀರು ಹರಿಯುತ್ತಿರುವ ಒಂದು ನದಿ, ಒಂದು ಜೀವನದಿ. ಕರತೋಯಂ ಹರಪಾರ್ವತೀವಿವಾಹಚ್ಯುತಜಲಮಸ್ಯಸ್ಯಾ: "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭)। ಪಾರ್ವತೀಪರಮೇಶ್ವರರ ವಿವಾಹಸಮಯದಲ್ಲಿ ಧಾರೆ ಯೆರೆದ ನೀರು ಪರಮೇಶ್ವರನ ಕೈಯಿಂದ ಬಿದ್ದು ಈ ನದಿ ಯಾಗಿ ಹೊರಟಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ಈ ನದಿಯು

ಮಗ ಮತ್ತು ಕಾಮರೂಪದೇಶಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಹರಿಯುವುದು. "ಪ್ರಥಮಂ ಕರಂತೇ ದೇವಿ ತ್ರ್ಯಹಂ ಗಜ್ಞಾ ರಜಸ್ವಲಾ। ಸರ್ವಾ ರಕ್ತವಹಾ ನದಿ: ಕರತೋಯಾಽಮ್ಬುವಾಹಿನೀ"। ಎಂದು ಸ್ತೋತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಇತರ ನದಿಗಳಂತೆ ಆ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ರಜಸ್ವಲಾದೋಷವಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದಲೂ ಯಾವಾಗಲೂ ನೀರು ಹರಿಯುತ್ತಿರುವುದರಿಂದಲೂ ಈ ನದಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು. "ಕರತೋಯಾ ಸಮಾಸಾಽಽ ತ್ರಿರಾತ್ರೋ-ಪೋಷಿತೋ ನರ:। ಅಶ್ವಮೇಧಮವಾಪ್ನೋತಿ ಪ್ರಜಾಪತಿಕೃತೋ ವಿಧಿ:" ಭಾಂ ವನಂ ೮೩-೩।

ಕರದ ಕರದ (ವಿಂ) 1. ಕೈಯನ್ನು ಕೊಡುವವನು, ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಕೈನೀಡುವವನು. 2. ಕಂದಾಯ ಕೊಡುವವನು, ತೆರಿಗೆಯನ್ನು ಕೊಡುವವನು. ಕರಂ ಹಸ್ತಂ ರಾಜಸ್ವಂ ವಾ ದದಾತಿ - ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೪)। "ಯ ಇಮೇ ಪೃಥಿವೀಪಾಲಾ: ಕರದಾಸ್ತವ ಪಾಥಿವ" ಭಾಂ ವನಂ ೨೫೬-೧೭।

ಕರದ್ರೂಮ ಕರದ್ರೂಮ (ಪುಂ) ಕಾರಿಗಡ. ಕಿರತಿ ಸಮಂತಾತ್ ಶಾಖಾ:। ಕರಶ್ಚಾಮೋ ದ್ರೂಮಶ್ಚ।

ಕರಧೃತ ಕರಧೃತ (ವಿಂ) ಕೈಯಿಂದ ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟು, ಕರಣ ಧೃತ:। "ತಸ್ಯಾ: ಕಿಂಚಿತ್ಕರಧೃತಮಿವ ಪ್ರಾಪ್ತವಾನೀರಶಾಖಂ ನೀತ್ವಾ ನೀಲಂ ಸಲಿಲವಸನಂ ಮುಕ್ತರೋಧೋನಿತಮ್ಬಮ್" ಮೇಘಂ ೧-೪೧।

ಕರನಿಹಿತ ಕರನಿಹಿತ (ವಿಂ) ಕೈಯಲ್ಲಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಕರೆ ನಿಹಿತ:।

ಕರನ್ಧಮ ಕರಂಧಮ (ಪುಂ) ಇಕ್ಷ್ವಾಕುವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. ಖನೀನೇತ್ರನೆಂಬ ಒಬ್ಬ ರಾಜನ ಮಗ. "ವಿವಿಂಶತಿಸುತೋ ರಾಜಾ ಖನೀನೇತ್ರೋಽಸ್ಯ ಧಾಮಿಕ:। ಕರನ್ಧಮೋ ಮಹಾರಾಜ ತಸ್ಯಾಸೀದಾತ್ಮಜೋ ನೃಪ" ಭಾಗಂ ೯-೨-೨೫। ಇವನಿಗೆ "ಸುವರ್ಚಸ್ಸು" ಎಂಬ ಹೆಸರು. ಒಂದು ಸಲ ಇವನು ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಜಯಿಸಲು ತನ್ನ ಕೈಯನ್ನು ಕೊಡುವ ಸೈನ್ಯವನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದುದರಿಂದ ಇವನಿಗೆ "ಕರಂಧಮ" ನೆಂಬ ಹೆಸರು ಬಂದಿತು. ವೀರೆಯೆಂಬುವಳು ಇವನ ಪತ್ನಿ. ಅವಿಕ್ಷತ ನೆಂಬುವನು ಇವನ ಮಗ.

ಕರನ್ಯಾಸ ಕರನ್ಯಾಸ (ಪುಂ) ತಂತ್ರದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವಂತೆ ಆಯಾ ಮಂತ್ರಪೂರ್ವಕ ಅಂಗುಷ್ಠ ಮೊದಲಾದ ಬೆರಳುಗಳನ್ನು ಸ್ಪರ್ಶಿಸುವುದು. ಕರೆ ಕರಾವಯವೇ ನ್ಯಾಸ:।

ಕರಪತ್ರ ಕರಪತ್ರ (ನಂ) 1. ಮರವನ್ನು ಕೊಯ್ಯುವ ಗರಗಸ, ರಂಪ. ಕರಾತ್ ಪತತಿ - ಪತ್ರ್ (ಗತೌ) "ಫ್ಲನ್" (೩ಂ ೪-೧೫೮)। "ಸ್ಕುಟಂ ಸ ಪತ್ರ್: ಕರಪತ್ರಮೃತಿಮಿ: ವಿಯೋಗಿಹೃದಾರಣಿ ದಾರುಣಾಯತೇ" ನೈಷಂ ೧-೮೦। 2. ಜಲ ಕ್ರೀಡೆ. ಕರಾವೇವ ಪತ್ರಂ ವಾಹನಂ ಯತ್ರ। ಜಲಕ್ರೀಡೆಯಲ್ಲಿ ಕೈಗಳಿಂದಲೇ ನೀರನ್ನೆರಚುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.



ಕರಪತ್ರವತ್ ಕರಪತ್ರವತ್ (ಪುಂ) ತಾಳಗಿಡ. ಕರಪತ್ರಂ  
ತದಾಕಾರ: ಪತ್ರವಂತೇಷ್ವರಸ್ಯ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪)। ಮಸ್ಯ  
ವ: (೮-೨-೯)।

ಕರಪತ್ರವತ್ ಕರಪತ್ರವತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಲಕ್ರೀಡೆ. ಕರೌ ಪತ್ರ  
(ವಾಹನ) ಮಿವ ಅಸ್ಯಾ: "ಕಪ್"। ಅತ ಇತ್ವಮ್।

ಕರಪಲ್ಲವ ಕರಪಲ್ಲವ (ಪುಂ) 1. ಬೆರಳು. ಕರಸ್ಯ ಪಲ್ಲವ  
ಇವ। 2. ಬೆಗುರಿನಂತಿರುವ ಕೈ. ಕರ: ಪಲ್ಲವ ಇವ।  
"ಹರಿವೀಕ್ಷಣಾಕ್ಷಣಿಕವಕ್ಷುಪಾನ್ಯಯಾ ಕರಪಲ್ಲವೇನ ಗಲದಮ್ಬರಂ  
ದಧೇ" ಮಾಘಂ ೧೩-೪೪।

ಕರಪಾತ್ರ ಕರಪಾತ್ರ (ನಂ) 1. ಜಲಕ್ರೀಡೆ. ಕರ: ಪಾತ್ರಮಿವ  
ಯತ್ರ। "ಕರಪಾತ್ರಂ ಜಲಕ್ರೀಡಾ ವ್ಯಾತ್ಯುಕ್ತಿ: ಕರಪತ್ರವಾ  
ಹಾರಾಂ। 2. ಹಸ್ತರೂಪವಾದ ಪಾತ್ರೆ, ಹಸ್ತವೆಂಬ  
ಪಾತ್ರೆ. "ಕರಪಾತ್ರೇ ಸ್ಥಿತೇ ತೋಯೇ ಕೃತ್ವಾ ಮೃತಪುರೀಷಕೇ।  
ಆಸುರಂ ತದ್ಭವೇತ್ತೋಯಂ ಪೀತ್ವಾ ಚಾನ್ದ್ರಾಯಣಂ ಚರೇತ್"।

ಕರಪಾಲ ಕರಪಾಲ (ಪುಂ) 1. ಕೈಯನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವ ಖಡ್ಗ.  
ಕರಂ ಪಾಲಯತಿ-ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಕ್ "ಅಣ್" (೩-೨-೧)।  
2. ತೆರಿಗೆ ಇಲಾಖೆಯ ಮುಖ್ಯಾಧಿಕಾರಿ. "ಫುಲ್"  
(೩-೧-೧೩೩)। -ಪಾಲಕ: -ಪಾಲಕಃ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಫಾಲ್"  
(೪-೧-೪)। ಅತ ಇತ್ವಮ್ (೭-೩-೪೪)। -ಪಾಲಿಕಾ  
-ಪಾಲಿಕಾ. 1. ಈಳಿಗೆ ಮಣೆಯ ಕತ್ತಿ, ಒಂದೇ ಕಡೆ  
ಅಲುಗುಳ್ಳ ಸಣ್ಣ ಕತ್ತಿ. 2. ಚಿಕ್ಕ ಗದೆಯಂತಿರುವ ಮರದ  
ಕೋಲು ಅಥವಾ ಮರದ ಕತ್ತಿ.

ಕರಪಿಡನ ಕರಪಿಡನ (ನಂ) ವಿವಾಹ, ಮದುವೆ. ಕರಸ್ಯ  
ವಭೂಹಸ್ತಸ್ಯ ಪಿಡನಂ ಗ್ರಹಣಂ ಯತ್ರ। "ಸುತಪರಿಣಯಾತ್ಪಮಾಸಾಂತ:  
ಸುತಾಕರಪಿಡನಂ ನ ಚ ನಿಜಕುಲೇ ತದ್ವದಾ ಮಂಡನಾದಪಿ ಮುಂಡನಮ್"  
ಮುಂ ಚಿಂ।

ಕರಪುಟ ಕರಪುಟ (ಪುಂ) ಕೈಮುಗಿಯಲು ಜೋಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ  
ಹಸ್ತಗಳು. -ಅಂಜಲಿ: -ಅಂಜಲಿಃ. ಕೈಮುಗಿಯಲು  
ಜೋಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಎರಡು ಕೈಗಳ ಬೊಗಸೆ.

ಕರಪುಟಿ ಕರಪುಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೊಗಸೆ, ಜೋಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ  
ಹಸ್ತಗಳು.

ಕರಪುಷ್ಪ ಕರಪುಷ್ಪ (ನಂ) ಕೈಯ ಹಿಂಭಾಗ. ಕರಸ್ಯ  
ಪುಷ್ಪಮ್।

ಕರಪ್ರವೇಯ ಕರಪ್ರವೇಯ (ವಿಂ) 1. ಕೈಯಿಂದ ತೆಗೆದು  
ಕೊಳ್ಳಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಕರೇಣ ಪ್ರವೇಯಾ। "ಕರಪ್ರವೇಯಾ-  
ಮುತ್ತುಜ್ಞ: ಪ್ರಭುಶಕ್ತಿ ಪ್ರವೀಯಸೀಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೮೯। 2. ತೆರಿಗೆ  
ಯಿಂದ ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಡುವ, ಕಂದಾಯದಿಂದ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ.

ಕರಪ್ರದ ಕರಪ್ರದ (ವಿಂ) 1. ಕೈಯನ್ನು ಕೊಡುವ. 2. ತೆರಿಗೆ  
ಯನ್ನು ಕೊಡುವ. ಕರಂ ಪ್ರದದಾತಿ-ಪ್ರ+ಡು ದಾನ್ (ದಾನೆ)  
"ಕ:" (೩-೨-೪)।

ಕರಬದರ ಕರಬದರ (ನಂ) 1. ಕೈಯಲ್ಲಿರುವ ಎಲಚಿ  
(ಬೋರೆ) ಹಣ್ಣು. ಕರೇ ಬದರಮ್। "ಕರಬದರಮಾನಂ ಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯ  
ದೃಷ್ಟ್ಯಾ ಪ್ರತೀಚ್ಯಾ" ಚಂ ರಾಂ। (ವಿಂ) 2. ಕೈಯಲ್ಲಿರುವ  
ಬೋರೆ ಹಣ್ಣಿನಂತೆ (ಎಲ್ಲಾ ಭಾಗಗಳಲ್ಲೂ) ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ  
ಕಾಣುವ. ಕರೇ ಬದರಮಿವ।

ಕರಭ ಕರಭ (ಪುಂ) 1. ಮಣಿಕಟ್ಟಿನಿಂದ ಕಿರುಬೆರಳವರೆಗಿನ  
ಹಸ್ತದ ಹೊರಭಾಗ, ಮುಂಗೈ ಹೊದಲುಗೊಂಡು ಕಿರು  
ಬೆರಳವರೆಗಿನ ಕೈಯ ಹೊರಭಾಗ. ಕಿರತೀನೇನ - ಕ್  
(ವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಅಭಕ್" (೩-೨-೧೨೨)। "ಸಾ ಚೂರ್ಣಗೌರಂ  
ರಘುನಂದನಸ್ಯ ಧಾತ್ರೀಕರಾಮ್ಯಾ ಕರಭೋಪಮೋರು" ರಘುಂ ೬-೮೩।  
2. ಅನೆಯ ಮರಿ. 3. ಉಪ್ಪು, ಒಂಟೆ. 4. ಒಂಟೆಯ  
ಮರಿ. "ಸಂವಿವ್ಯುರಮ್ಬರವಿಕಾಶಿ ಚಮುಸಮುತ್ಯಂ ಪೃಥ್ವೀರಜ:  
ಕರಭಕಂಠಕಡಾರಮಾಶಾ:" ಮಾಘಂ ೪-೩। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಜಿಷ್"  
(೪-೧-೬೩)। ಕರಭಿ ಕರಭಿಃ. 5. ಖರ, ಗದ್ದೆ, ಕತ್ತಿ.  
"ಕರಭೋಪಿ ಸ್ವರೋಷ್ಠಯೋ:" ವೇಜಂ। "ಕರಭೋ  
ಮಣಿಬಂಧಾದಿಕನಿಷ್ಠಾಂತೋಷ್ಠತಸ್ತುತೇ" ಮೇದಿಂ। 6. ಹೆಸರ  
ಗತ್ತಿ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಜಿಷ್"। ಕರಭಿ ಕರಭಿಃ. "ಕ್ಷಿಪ್ತಾವರೋಧಾ-  
ಜ್ಞನಮುತ್ಯಥನ ಗಾಂ ವಲಿಡ್ಘ್ಯ ಲಘ್ವೀ ಕರಭಿ ಬಭಜ್ಜತು:"  
ಮಾಘಂ ೧೨-೨೪। (ನಂ) 7. ನಖಿಯೆಂಬ ಒಂದು  
ಗಂದಿಗರ ವಸ್ತು, ಒಂದು ಸುಗಂಧವಸ್ತು. 8. ಹಸ್ತಸಕ್ಷತ್ತಿ.  
ಸ್ವಾಥೆ "ಕನ್"। ಕರಭಕ: ಕರಭಕಃ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಫಾಲ್"  
(೪-೧-೪)। ಕರಭಿಕಾ ಕರಭಿಕಾ.

ಕರಭಕಾಂಡಿಕಾ ಕರಭಕಾಂಡಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂಟೆಗೆ ಪ್ರಿಯ  
ವಾದ ಉಪ್ಪುಕಾಂತಿಯೆಂಬ ಗಿಡ.

ಕರಭವಲ್ಲಭ ಕರಭವಲ್ಲಭ (ಪುಂ) 1. ಗೋನು ಮರ.  
2. ಬೇಲದ ಮರ. ಕರಭಸ್ಯ ಗಜಪತಿಸ್ಯ ವಲ್ಲಭಃ।

ಕರಭಿನ್ ಕರಭಿನ್ (ಪುಂ) ಗಜ, ಅನೆ. ಕರಭ: ಕರಾವಯವ:  
ತದಾಕಾರಾ ಶುಂಡಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)।

ಕರಭೀರ ಕರಭೀರ (ಪುಂ) ಸಿಂಹ. ಕರಭಿಗಮೀರಯತಿ ಪಲಾಯ-  
ನಾಯ ಪ್ರೇರಯತಿ - ಇರ (ಗತೌ ಕಂಪನೇ ಚ) + ಣಿಕ್ "ಅಣ್"  
(೩-೨-೧)।

ಕರಭೂಷಣ ಕರಭೂಷಣ (ನಂ) ಹಸ್ತಾಭರಣ, ಕಂಕಣ, ಬಳೆ.  
ಕರಸ್ಯ ಭೂಷಣಮ್।

ಕರಭೋರು ಕರಭೋರು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರಭದಂತೆ ಸುಂದರವಾದ  
ತೊಡೆಯುಳ್ಳ ಉತ್ತಮಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು. "ಕರಭಾವಿವ



ಋ ಯಸ್ಯಾ: "ಋ" (೪-೧-೬೯)। "ಉಪೇಕ್ಷಿತೇಕ್ಷೋ:  
ಕರಭಾಚ್ಚಮೀರತಾದುರಂ ವದೇ ತ್ವಾಂ ಕರಭೋ ಭೂರೀತಿ" ನೆಪಂ  
೯-೪೩। ಅಮಠಂ ೭೧।

ಕರಮಢ್ ಕರಮಢ್ (ಪುಂ) ಗುಪ್ತವ್ಯಕ್ತ, ಅಡಕೆಮಠ. ಕರಂ  
ಹಸ್ತಿಶುಭಂ ಅದೃತಿ - ಅದೃ (ಅನಾದರೆ) ಬಾಹುಂ "ಖಚ್"  
ಮುಗಾಮ:। "ಕರಮಢ್‌ಸ್ತನ್ತುಸಾರೋ ಗುಪ್ತಾಕ: ಕೂಟ ಇತ್ಯಪಿ"  
ತೃಕಾಂಡಂ।

ಕರಮರಿನ್ ಕರಮರಿನ್ (ಪುಂ) ಕೈದಿ, ಸೆರೆಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ  
ಅಪರಾಧಿ, ಬಂಧಿ, ಸೆರೆಯಾಳು. ಕರ: ಕಾರಾಗಾರ:, ತಸ್ಮಿನ್  
ಮರ: ಮರಣವತ್ ಯಾತನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)।  
"ಉಪಗ್ರಹಸ್ತು ಗ್ರಾಹ: ಸ್ಯಾತ್ ಬಂದಿ ಕರಮರೀತ್ಯಪಿ" ತೃಕಾಂಡಂ।  
ಕರಮಢ್ ಕರಮಢ್ (ಪುಂ) ಕಮರಿನ್ ಗಿಡ. ಕರಂ ಮೃದ್ನಾತಿ -  
ಮೃದ (ಕೋದೇ) "ಅನ್" (೩-೨-೧)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"  
(೪-೩-೭೪)। -ಮಢ್‌ಕ: -ಮಢ್‌ಕ: "ಗಿನಿ:"  
(೩-೨-೭೮)। -ಮಢ್‌ನ್ -ಮಢ್‌ನ್.

ಕರಮಾಲ ಕರಮಾಲ (ಪುಂ) ಧೂಮ, ಹೊಗೆ. ಕರ: ಹಸ್ತಿ-  
ಶುಭಾದಂಶ ಇವ ಮಾಲಾಸ್ತು।

ಕರಮಾಲಾ ಕರಮಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಪಮಾಡುವಾಗ ಎಣಕೆ  
ಗಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಕೈಬೆರಳ ಗಿಣ್ಣುಗಳ ಮಾಲೆ.  
(ಮಾಲೆಯಂತಿರುವ ಕೈಬೆರಳುಗಳ ಗಿಣ್ಣುಗಳು). ಕರ:  
ಕರಾಡ್‌ಗುಲಿಪರ್ವ ಮಾಲೇವ। "ಆರಮ್ಯಾನಾಮಿಕಾಮಧ್ಯ ದಕ್ಷಿಣಾವರ್ತ-  
ಯೋಗತ: (ಕನಿಷ್ಠಾದಿತ ಉಚ್ಚ)। ತರ್ಜನಿಮೂಲಪರ್ಯಂತಂ ಕರಮಾಲಾ  
ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ (ದಶಪರ್ವಸು ಸಂಜಪೇತ್)"। ಅನಾಮಿಕೆಯ ಮಧ್ಯದ  
ಗಿಣ್ಣಿನಿಂದ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ಪ್ರದಕ್ಷಿಣವಾಗಿ ತರ್ಜನಿಬೆರಳ  
ಕೆಳಗಿನ ಗಿಣ್ಣಿನವರೆಗೆ ಎಣಿಸುವುದರಿಂದ ಕರಮಾಲೆ  
ಯಾಯಿತು. ಜಪಮಾಡುವಾಗ ಬೆರಳುಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಲಾಕಾರ  
ವಾಗಿ ಎಣಿಸುವ ಪದ್ಧತಿ.

ಕರಮುಕ್ತ ಕರಮುಕ್ತ (ನಂ) ಕೈಯಲ್ಲಿ ಹಿಡಿದು ವೇಗವಾಗಿ  
ಎಸೆಯಲ್ಪಡುವ ಒಂದು ಆಯುಧ. ಕರೆ ಧೃತ್ವಾ ಮುಚ್ಯತೇ -  
ಮುಚ್ಲ್ (ಮೋಕ್ಷಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಕರಮ್ಬ ಕರಂಬ (ಪುಂ) 1. ಮಿಶ್ರಣ, ಬೆರೆಕೆ. ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣ)  
ಭಾವೇ "ಅಮ್ಬಚ್" (೩ಂ ೪-೮೨)। 2. ಮೊಸರಿನಲ್ಲಿ  
ಕಲಸಿದ ಅನ್ನ. "ಕರಮ್ಬ: ಸೇಕಮಿಶ್ರಾನ್" ವೈಜಂ। (ವಿಂ)  
3. ಮಿಶ್ರಿತವಾದ, ಬೆರೆಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರಮಂ "ಅಮ್ಬಚ್"।

ಕರಮ್ಬಿತ ಕರಂಬಿತ (ವಿಂ) ಮಿಶ್ರವಾದ, ಬೆರೆಕೆಯುಂಟಾಗಿ  
ರುವ. ಕರಮ್ಬೋಜ್ಯ ಸಂಜ್ಞಾತ: "ಇತಚ್" (೪-೨-೩೬)।  
"ಕ್ರಿಯಾ: ಪ್ರಿಯಾಯಾ ಲಲಿತೈ: ಕರಮ್ಬಿತಾ ವೀತಕಂಯಮಿತ್ಯಮಲೀಕ-  
ಮಾಲಪತ್" ನೆಪಂ ೯-೧೦೨।

ಕರಮ್ಬ ಕರಂಬ (ಪುಂ) 1. ಮೊಸರಿನಲ್ಲಿ ಕಲಸಿದ ಮರಿಹಿಟ್ಟು  
ಕೇನ ಜಲೇನ ರಮ್ಯತೇ - ರಮ (ರಾಮಸ್ಯ) "ವಮ್" (೩-೩-೧೯)  
"ಕರಮ್ಬಾ ದಧಿಸಕ್ತವ:" ಅಮಂ। 2. ಮರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ  
ಫಣ್ಣ. "ಕರಮ್ಬವಾಲುಕಾತಾಪಾನ್ ಕುಮ್ಬಿಪಾಕಾಂಶ್ಚ ದಾರುಣಾನ್"  
ಮನುಂ ೧೨-೭೬। 3. ಬೆರೆಕೆ ಮೊಸರೆ. "ಕರಮ್ಬಪೂತಿಸೌರಮ್ಯ  
ಶಾಂತೋಗ್ರಾಮ್ಲಾದಿಭಿ: ಪೃಥಕ್" ಭಾಗಂ ೩-೨೬-೪೪। ಸ್ವಾ  
"ಕನ್"। ಕರಮ್ಬಕ: ಕರಂಬಕ:

ಕರಮ್ಬಾ ಕರಂಬಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶತಾವರಿ ಗಿಡ. 2. ಪ್ರೇಂಕಣ  
ಗಿಡ. ರಾಜನಿಂ। 3. ಪುರುಷಂಶದ ಅಕ್ರೋಧನ ಪತ್ನಿ  
ಕರಮ್ಬಿ ಕರಂಬಿ (ಪುಂ) ಯದುಮಂಶದ ಒಬ್ಬ ಮೂರೆ  
"ಕರಮ್ಬಿ: ಶಕುನೇ: ಪುತ್ರ: ದೇವರಾತಸ್ತದಾತ್ಮಜ:" ಭಾಗಂ  
೯-೨೪-೪।

ಕರಹ ಕರಹ (ಪುಂ) 1. ಸಖ, ಉಗುರು. ಕರೆ ರೋಹಿತಿ-  
ಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೪)। "ಅನಾಗ್ರಾತ  
ಪುಷ್ಪಂ ಕಿಸಲಯಮಲೂನಂ ಕರಹೇರನಾವಿಧಂ ರತ್ನಂ ಮಧು ನವಮನಾ  
ಸ್ವಾದಿತರಸಮ್" ಶಾಕುಂ ೨-೧೦। (ವಿಂ) 2. ಕೈಯಲ್ಲಿ  
ಬೆಳೆದಿರುವ.

ಕರಹಿ ಕರಹಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಂಚಿನ ಕೈತಾಳ, ಕೈಯಿಂದ  
ಕುಟ್ಟುವ ತಾಳ, ರುಲ್ಲರಿ. ಕರೆ ಕರಹಿಯತ್ರ। 2. ಹಸ್ತ  
ಸಂಪತ್ತು. "ಕರಹಿ: ಕರತಾಲಿ ಸ್ಯಾತ್" ತೃಕಾಂಡಂ।

ಕರವಾಲ ಕರವಾಳ (ಪುಂ) ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. ಕರಂ ವಲತಿ - ವ  
(ಸಂವರಣ) "ಅನ್" (೩-೨-೧)। "ಹಸಿತುಂ ಪರೇಣ ಪರಿತ  
ಪರಿಸ್ಕುರತ್ಕರವಾಲಕೋಮಲಕಾಂವುಪೇಕ್ಷಿತ:" ಮಾಘಂ ೧೩-೬೦

ಕರವಿ ಕರವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಂಗುಪತ್ತು, ಹಿಂಗಿನ ಎಲೆ. ಕಸ  
ವಾಯೋ: ರವೋತ್ರ। ಗೌರಾಂ "ಡಿಷ್" (೪-೧-೪೧)। "ಜತುವ  
ಹಿಗುರಾಮಠಮ್। ಪತ್ರೇಜ್ಯ ಕರವಿ ಬಾಷ್ಪಿ" ವೈಜಂ।

ಕರವೀರ ಕರವೀರ (ಪುಂ) 1. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. ಕರಂ ವೀರಯತಿ  
- ವೀರ (ವಿಕ್ರಾಂತೌ) + ಗಿಚ್ "ಅನ್" (೩-೨-೧)  
2. ಗನ್ನೇರಳೆ ಗಿಡ. 3. ಒಬ್ಬ ದೈತ್ಯ. "ಕರವೀರ: ಕೃಪಾಂ  
ಸ್ಯಾಹೈತ್ಯಭೇದಾಶ್ವಮಾರಯೋ:" ಮೇದಿಂ। 4. ಒಂದು ಸರ್ಪ  
"ಕರವೀರ: ಪುಷ್ಪದಂತ್ರೋ ಬಿಲ್ವಾಕೋ ಬಿಲ್ವಪಾಂಡುರ:। ಮೂಷಕಾದ  
ಶಂಖಶಿರಾ: ಪೂರ್ಣಮದ್ರೋ ಹರಿದ್ರಕ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೪-೧೨  
5. ದೃಷ್ಟವಂತನದಿಯ ತೀರದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಪಟ್ಟಣ  
ಚಂದ್ರಶೇಖರ ರಾಜನ ರಾಜಧಾನಿ. 6. ಮೇರು ಪರ್ವತ  
ದಕ್ಷಿಣದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಪರ್ವತ. "ಉಮಪರೇಣ ಪವನಪಾರಿ  
ಯಾತ್ರೌ ದಕ್ಷಿಣೇನ ಕೇಲಾಸಕರವೀರೌ ಪ್ರಾಗಾಯತಾವೇವಮುತ್ತರತ  
ವಿಶ್ವಜ್ಞಮಕರಾವಷ್ಟಭಿರೇತೈ: ಪರಿಸ್ತುತೋಗ್ನಿರಿವೇ ಪರಿತಶ್ಚ  
ಕಾಸ್ತಿ ಕಾಶ್ವನಗಿರಿ:" ಭಾಗಂ ೪-೧೬-೨೭। ಸ್ವಾ



“ಕನ್”। -ವೀರಕ: -ವೀರಕ: “ಕರವೀರ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ಮತ್ತು 1. ಮತ್ತಿ ಮರ. ಕರವೀರ ಇವ ಕಾಯತಿ। 2. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. ಕರಂ ವೀರಯತಿ - ವೀರ “ಫುಲ್” (3-1-133)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವೀರಾ -ವೀರಾ. ಕೆಂಪು ಮಣಿಲೆ. -ವೀರಿಕಾ -ವೀರಿಕಾ. ತೋರಿ. “ಆಡಕಿ ತುರೇ ವಲ್ಲಾ ಸೌರಾಷ್ಟ್ರೀ ಕರವೀರಿಕಾ” ವೆಂಜಂ।

ಕರವೀರಪುರ ಕರವೀರಪುರ (ನಂ) ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿಯ ವಾಸ ಸ್ಥಾನವಾದ ಕೊಲ್ಲಾಪುರ.

ಕರವೀರ ಕರವೀರ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಡಿತಿ. 2. ಶ್ರೇಷ್ಠ ವಾದ ಹಸು. 3. ಪುತ್ರವತಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು. ಕರ: ಸುಖಪ್ರದ: ವೀರ: ಪುತ್ರೋ ಯಸ್ಯಾ:। “ಕರವೀರೈದಿತಿಶ್ರೇಷ್ಠಗವೀಪುತ್ರವತೀಷು ಚ” ಮೇದಿಂ।

ಕರವೀರ ಕರವೀರ (ಪುಂ) ಆಯುರ್ವೇದಜ್ಞಾನ ಸಂಪಾದನೆಗಾಗಿ ಧನ್ವಂತರಿಯನ್ನು ಪ್ರಶ್ನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಮುಷಿ. “ಕಾಶಿರಾಜಂ ದಿವೋದಾಸಂ ಧನ್ವಂತರಿಮೌಪಧೇನವವೇತರಣೋರಭ್ರ-ಪೌಂಜಲಾವತಕರವೀರೈಗೋಪುರರಕ್ಷಿತಸುಶ್ರುತಪ್ರಭುತಯ: ಋಚು:” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ 1-3।

ಕರಶಾಖಾ ಕರಶಾಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆರಳು. ಕರಸ್ಯ ಶಾಖೇವ।

ಕರಶೀಕರ ಕರಶೀಕರ (ಪುಂ) ಆನೆಯ ಸೊಂಡಿಲಿನಿಂದ ಹೊರಟ ನೀರಿನ ತುಂತುರು. ಕರಸ್ಯ ಶೀಕರ:। “ಉದಂತಮಗ್ನಿಂ ಶಮಯಾಮ್ಬಮುರ್ಗಜಾ ವಿವಿಕ್ಷಾ: ಕರಶೀಕರೇಣ” ರಘುಂ 6-48।

ಕರಶುದ್ಧಿ ಕರಶುದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) “ಫಟ್” ಮಂತ್ರ ಮತ್ತು ಪುಷ್ಪಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ಹಸ್ತಶುದ್ಧಿ. ಕರಸ್ಯ ಶುದ್ಧಿ: ಶೋಧನಮ್। “ಆದಾವೃಷ್ಟಾದಿಕನ್ಯಾಸ: ಕರಶುದ್ಧಿಃ ಸ್ತುತ: ಪರಮ್” ತನ್ವಸಾಂ।

ಕರಶೂಕ ಕರಶೂಕ (ಪುಂ) ನಖ, ಉಗುರು. ಕರಸ್ಯ ಶೂಕ: ಸೂಚಿವ। “ನಖ: ಪುನರ್ಭವ: ಕಾಮಾಂಕುಶ: ಕರಕಂಠಕ:। ಕರೆಡು: ಕರಶೂಕಶ್ಚ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಕರಸ್ಥ ಕರಸ್ಥ (ವಿಂ) 1. ಕೈಯಲ್ಲಿರುವ. 2. ಸ್ವಾಧೀನ ವಾಗಿರುವ. ಕರೆ ತಿಷ್ಠತಿ - ಷ್ಠಾ (ಗತಿ ನಿವೃತ್ತಿ) “ಕ:” (3-2-4)।

ಕರಸೂತ್ರ ಕರಸೂತ್ರ (ನಂ) ಕಂಕಣ, ವಿವಾಹ ಮುಂತಾದ ಶುಭಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಕೈಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಮಂಗಳ ಸೂತ್ರ. ಕರಸ್ಯ ಸೂತ್ರಮ್।

ಕರಹಾಡ ಕರಹಾಡ (ಪುಂ) 1. ತಾವರೆಯ ಗೆಡ್ಡೆ. ಕರಂ ಹಾಡಯತಿ - ಹಡ (ದೀಪ್ತ) + ಣಿಚ್ “ಅನ್” (3-2-1)। 2. ಪದ್ಮ ಮೊದಲಾದ ಪುಷ್ಪ. ಕರ: ಸೂರ್ಯಕಿರಣ: ಹಾಡಯತೆ ಹಡ ಕರ್ಮಂ “ಘಜ್” (3-3-19)। 3. ಮಂಗಾರ ಗಿಡ.

ಕರಹಾಡ ಕರಹಾಡ (ಪುಂ) 1. ಮಂಗಾರ ಗಿಡ. ಕರಂ ಹಾಡಯತಿ - ಹಡ (ದೀಪ್ತ) + ಣಿಚ್ “ಫುಲ್” (3-1-133)। 2. ಒಂದು ದೇಶ. “ನಗರೀಂ ಸಂಜಯಂತೀಂ ಚ ಪಾಷಣ್ಡಂ ಕರಹಾಡಕಮ್” ಭಾಂ ಸಭಾಂ 32-62।

ಕರಾಜ್ಞ ಕರಾಜ್ಞ (ನಂ) 1. ತೆರಿಗೆಯನ್ನು ತೆಗೆದು ಕೊಳ್ಳುವ ಜಾಗ. ಕರಸ್ಯ ರಾಜಸ್ವಾದಾನಸ್ಯಾಜ್ಞಮ್। 2. ಮಾರುಕಟ್ಟೆ. ಅನೇಕ ಜನರಿಂದ ನಿಬಿಡವಾದ (ತುಂಬಿದ) ಅಂಗಡಿಬೀದಿ. “ಬಹುಮಾನುಷಸಂಕೀರ್ಣಂ ನಿರ್ಧರಂ ಚ ಕರಾಜ್ಞಮ್” ಹಾರಾಂ।

ಕರಾಮದ ಕರಾಮದ (ಪುಂ) ಕಮರಿಕೆ ಗಿಡ. ಕರಮಾಮೃದನಾತಿ - ಆ + ಮೃದ (ಕ್ಷೋದ) “ಅನ್” (3-2-1)।

ಕರಾಮ್ಬುಕ ಕರಾಮ್ಬುಕ (ಪುಂ) ಕಮರಿಕೆ ಗಿಡ. ಕರಂ ಕೀರ್ಯ-ಮಾಣಮಮ್ಬು ಯಸ್ಮಾತ್। “ಕಪ್” (4-4-144)।

ಕರಾರೊಡ ಕರಾರೊಡ (ಪುಂ) ಅಂಗುಲೀಯಕ, ಉಂಗುರ. ಕರೆ ಆರೊಡತೆ - ಆ + ರೂ (ಪ್ರತಿಘಾತ) “ಅಚ್” (3-1-134)। “ಕರಾರೊಡೋಽಗುಲೀಟ: ಸ್ಯಾತ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಕರಾಲ ಕರಾಲ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪರಸಯುಕ್ತವಾದ ತೈಲ, ಮತ್ತು ಹಾಲಿನೊಡನೆ ಬೆರೆತ ಎಣ್ಣೆ. ಕರಾಲ ವಿಕೋಪಾಯ ಅಲತಿ ಪರ್ಯಾಪ್ನೋತಿ - ಅಲ (ಭೂಷಣಾದಿ) “ಅಚ್” (3-1-134)। 2. ಎಣ್ಣೆ ಅಥವಾ ಶುಷ್ಕದಲ್ಲಿ ಪಕ್ವವಾದ ಸಂಬಾರ. “ತಪ್ತಸ್ತೇಹೇ ಪಚೇತ್ ಪೂರ್ವಂ ವೇಶವಾರಕಸಂಜ್ಞಕಮ್। ಪಾಕಪ್ರಾಪಿತಸೌರಭ್ಯಂ ಕರಾಲಂ ಸೂದಕಮೇತಮ್”। 3. ಜನಕ ಮಹಾರಾಜನ ವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ; [ಮಹಾಜ್ಞಾನಿಯಾದ ಈತನು ವಸಿಷ್ಠ ಮಹರ್ಷಿಯೊಡನೆ ಕ್ಷುರಾಕ್ಷರ ವಿಚಾರವಾಗಿ ಸಂವಾದ ಮಾಡಿದನು]। 4. ಒಬ್ಬ ದೈತ್ಯ. “ಸಸ್ಮ: ಕಾಲವದನ: ಕರಾಲ: ಕೌಶಿಕ: ಶರ:” ಹರಿವಂ। 5. ಕಸ್ತೂರಿ ಮೃಗ. “ಃಣ-ಹರಿಣಕುರಜ್ಜಕರಾಲಕೃತಮಾಲಶರಭಶ್ವದಂಷ್ಟ್ರಾ ಪೃಷತಚಾರುಕ ಮೃಗಮಾತೃಕಾಪ್ರಭುತಯೋ ಜಙ್ಘಾಲಾ: ಮೃಗಾ: ಕಥಾಪಾ ಮಧುರಾ: ಲಘವ: ವಾತಪಿತ್ತಹರಾ: ತೀಕ್ಷ್ಣಾ: ಹೃದಾ: ಬಸ್ತಿವಿಶೋಧನಾಶ್ಚ” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ 46-44। 6. ಒಂದು ದಂತರೋಗ. “ಶನೈ: ಶನೈವಿಕುರತೇ ವಾಯುರ್ದಂತಸಮಾಶ್ರಿತ:। ಕರಾಲಾನ್ ವಿಕೃತಾನ್ ದಂತಾನ್ ಕರಾಲೋ ನ ಸ ಸಿಧ್ಯತಿ”। 7. ಕೃಷ್ಣತುಲಸಿ. (ವಿಂ) 8. ಉನ್ನತವಾದ, ಎತ್ತರವಾದ. 9. ಉನ್ನತ ವಾದ ಹಲ್ಲುಗಳುಳ್ಳವನು, ಉಬ್ಬಿದ ಹಲ್ಲುಗಳುಳ್ಳವನು. 10. ಭಯಂಕರವಾದ. “ವಪುರ್ಮಹೋರಗಸ್ಯೇವ ಕರಾಲಫಣಮಂಡ-ಲಮ್” ರಘುಂ 12-98। ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್”। ಕರಾಲಕ: ಕರಾಲಕ:



ಕರಾಲಕರ ಕರಾಳಕರ (ವಿಂ) 1. ಭಯಂಕರವಾದ ತೋಳು ಗಳುಳ್ಳವನು. 2. ಭಯಂಕರವಾದ (ಉದ್ದವಾದ) ಸೊಂಡಿ ಲುಳ್ಳ (ಅನೆ).

ಕರಾಲಭೇರವ ಕರಾಳಭೈರವ (ನಂ) ಒಂದು ತಂತ್ರದ ಹೆಸರು. "ಕರಾಲಭೇರವಂ चापि यामलं वाममाश्रितम्। एवंविधानि चान्यानि मोहनार्थानि यानि तु। मया सृष्टानि चान्यानि मोहायैषां भवार्णवे" ಕೂರ್ಮಪುಂ.

ಕರಾಲಂಬ ಕರಾಲಂಬ (ಪುಂ) 1. ಕೈ ನೀಡುವಿಕೆ, ಅಸರೆ, ಸಾಹಾಯ್ಯ, ಆಶ್ರಯ, ಒತ್ತಾಸೆ. ಕರಸ್ಯಾಲಂಬ:। "स्वलतो हि करालम्बः सुहृत्सचिवचेष्टितम्" हितो० ३-१३४। -आलम्बनम् -ಆಲಂಬನಮ್, -अलम्बः -ಅಲಂಬಃ, -अलम्बनम् -ಅಲಂಬನಮ್. 2. ಕೈ ನೀಡಿ ಒತ್ತಾಸೆ ಕೊಡುವಿಕೆ, ಆಶ್ರಯ ಕೊಡುವಿಕೆ, ಸಾಹಾಯ್ಯ ಮಾಡುವಿಕೆ. ಕರಸ್ಯ ಆಲಂಬನಮ್ ಅಲಂಬ: ಅಲಂಬನಂ ವಾ।

ಕರಾಲ ಕರಾಳಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದುರ್ಗಾ ದೇವಿ. "करालायत-नाच्चायमुच्चरन् करुणध्वनिः। विभाव्यते ननु स्थान-मनिष्ठानां तदीदृशाम्" मालती० ५-२१। 2. ಸೊಗಡೆ ಗಿಡ.

ಕರಾಲಾಸ್ಯ ಕರಾಳಾಸ್ಯ (ವಿಂ) ಭಯಂಕರವಾದ ಮುಖ ವುಳ್ಳ. ಕರಾಲಮಾಸ್ಯಂ ಯಸ್ಯ।

ಕರಾಲಿಕ ಕರಾಳಿಕ (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಕರಾಲ-ಮುಚ್ಚಂ ಶಿಖರಮಸ್ತಸ್ಯ "ठन्" (५-२-११५)। ಕರಾಣಾಂ ಕರತುಲ್ಯಶಾಖಾನಾಮಾಲಿರ್ಯತ್ರ "कप्" ವಾ। "नन्दावत-करालिकौ तरुवसू पर्णी पुलाक्यंह्रिपः" अभि० चि०। 2. ಖಡ್ಗಧಾರಿ, ಕತ್ತಿ ಹಿಡಿದವನು. 3. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. "खड्गिखड्गौ करालिकौ" वैज०। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -का -क. 4. ಪಾರ್ವತಿ. "एकपर्णा भद्रकाली महाकाली करालिका" वैज०।

ಕರಾಲಿತ ಕರಾಳಿತ (ವಿಂ) ಭಯಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೆದರಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟ. "एकस्यास्तपनकरैः करालिताया बिभ्राणः सपदि सितोष्णवारणत्वम्" माघ० ८-४।

ಕರಾಲಿ ಕರಾಳೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಯ ಏಳು ಜಿಹ್ವೆಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. ಕರಾಲ "डीप्" (४-१-१५)। "काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता या च सुधम्रवर्णा। स्फुलिङ्गिनी विश्वरूपी च देवी लेलायमाना इति सप्त जिह्वाः" मण्डक० १-२-४।

ಕರಾಸ್ಫೊಟ ಕರಾಸ್ಫೋಟ (ಪುಂ) 1. ಕೈ ಹೊಡೆತ, ಕೈ ಏಟು. 2. ತೋಳು ತಟ್ಟುವಿಕೆ, ಒಂದು ತೋಳನ್ನು ಮಡಿಸಿಕೊಂಡು

ಎವೆಯ ಮೇಲೆಟ್ಟು ಇನ್ನೊಂದು ಕೈಯಿಂದ ಹೊಡೆಯು ತ್ತುದು. ಕರಸ್ಯ ಆಸ್ಫೊಟ: ಶಬ್ದೋ ಯತ್ರ।

ಕರಿಕ ಕರಿಕ (ಪುಂ) ದುರ್ಗಂಧವುಳ್ಳ ಕಗ್ಗಲಿಮರ.

ಕರಿಕಾ ಕರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಖಕ್ಷುತ, ಉಗುರಿನ ಗಾಯ. करो विलेखनमस्त्यस्याम् "अच्" (५-२-१२७)। स्वार्थे "कः" (५-४-५)। "सततमसुमतामगम्यरूपाः परिणतदिवकरिकास्तटीर्बिभर्ति" माघ० ४-२९। "दिग्दष्टे वर्तुलाकारे करिका नखरेखिका" वैज०।

ಕರಿಗರ್ಜಿತ ಕರಿಗರ್ಜಿತ (ನಂ) ಅನೆಯ ಗರ್ಜನೆ, ಅನೆಯ ಕೂಗು. ಕರಿಣೋ ಗರ್ಜಿತಮ್।

ಕರಿಣಿ ಕರಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣಾನೆ. करोस्त्यस्याः "इनिः" (५-२-११५)। "डीप्" (४-१-५)। "रथ-वाजिपत्तिकरिणीसमाकुलं तदनीकयोः समगत द्वयं मिथः" माघ० १३-१७। 2. ಹದಿನೆಂಟನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. "सनजा अपि नभसाश्शरयतिभिर्यदि करिणी" वृ० २०। ಈ ವೃತ್ತದ ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

स न ज न भ स

IIU III IUU III UU IIU

।

ಕರಿದಾರಕ ಕರಿದಾರಕ (ಪುಂ) \ (ಅನೆಯನ್ನು ಸೀಳುವ) ಸಿಂಹ. करिणं दारयति-दृ (विदारणे) + णिच् "ण्वल्" (३-१-१३४)। स्त्रियाम् "टाप्"। -वारिका-दारीका.

ಕರಿನ್ ಕರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಗಜ. ಅನೆ. करोस्यास्ति "इनिः" (५-२-११५)। "आक्षिप्याभिदिवं नीताः पत्तयः करिभिः करैः" कुमा० १६-३६। स्त्रियाम् "डीप्" (४-१-५)। करिणी करीणः. 2. ಹೆಣ್ಣಾನೆ. 3. ಎಂಟು ಸಂಖ್ಯೆ. "मसौजोजो भरसंयुतः करिबाणकै-हंरिणप्लुतम्" वृ० २०।

ಕರಿಪ ಕರಿಪ (ಪುಂ) ಮಾವಟಿಗ, ಅನೆಯ ರಕ್ಷಕ. करिणं पाति - पा (रक्षणे) "कः" (३-२-४)।

ಕರಿಪತ್ರ ಕರಿಪತ್ರ (ನಂ) ತಾಳೇಸಪತ್ರ.

ಕರಿಪಿಪ್ಪಲಿ ಕರಿಪಿಪ್ಪಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಜಹಿಪ್ಪಲಿ.

ಕರಿಪೊತ ಕರಿಪೊತ -ಶಾವಕ -ಶಾವಕ (ಪುಂ) ಅನೆಯ ಮರಿ. करिणः पोतः शावको वा।

ಕರಿಬನ್ಧ ಕರಿಬಂಧ (ಪುಂ) 1. ಅನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಕಂಬ. करिणं बध्नात्यत्र - बन्ध (बन्धने) अधि० "घञ्" (३-३-१२१)। "प्रारब्धिः करिबन्धः स्यात्" हारा०। 2. ಅನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವಿಕೆ. भावे "घञ्" (३-३-१८)।



**ಕಾರಿಮುಖ ಕರಿಮುಖ** (ಪುಂ) 1. ಗಜಾನನ, ಗಣಪತಿ. ಕರಿಣಿ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ | (ನಂ) 2. ಅನೆಯ ಮುಖ. ಕರಿಣಿ ಮುಖಮ್ |

**ಕರೀರತ ಕರಿರತ** (ನಂ) 1. ಅನೆಯ ರತಿಕ್ರೇಡೆ. 2. ರತಿ ಬಂಧದ ಬಂದು ಭೇದ. "ಭೂತಸ್ತನಭುಜಾಸ್ಯಮಸ್ತಕಾಮುಖತಾಂ ಸ್ವಯಮಧೋಮುಖಿಂ ಸ್ವಯಮ್ | ಕ್ರಾಮತಿ ಸ್ವಕರಕೃಷ್ಣಮೇಹೇನ ವಲ್ಲಭೇ ಕರೀರತಂ ತದ್ವಚ್ಯತೇ" |

**ಕರಿಷ್ಯತ್ ಕರಿಷ್ಯತ್** (ವಿಂ) ಮುಂದೆ ಕೆಲಸಮಾಡುವ. ಡು ಕುಳ್ (ಕರಣ) ಕರ್ತಂ "ಲೃಟ್" "ಶತ್" (3-3-14) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-6) | ಕರಿಷ್ಯಂತಿ ಕರಿಷ್ಯಂತೀಃ |

**ಕರಿಷ್ಯಮಾಣ ಕರಿಷ್ಯಮಾಣ** (ವಿಂ) 1. ಮುಂದೆ (ಕೆಲಸ) ಮಾಡುವವನು. 2. ಮುಂದೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ (ಕೆಲಸ). ಡು ಕುಳ್ (ಕರಣ) ಭವಿಷ್ಯತಿ ಕರ್ತಂ ಕರ್ಮಂ ವಾ "ಶಾನ್" (3-3-14) |

**ಕರಿಸ್ಕಂಧ ಕರಿಸ್ಕಂಧ** (ಪುಂ) 1. ಅನಗಳ ಗುಂಪು, ಗಜ ಸಮೂಹ. ಕರಿಣಾಂ ಸ್ಕಂಧಃ ಸಮೂಹಃ | 2. ಅನೆಯ ಹೆಗಲು.

**ಕರೀರ ಕರೀರ** (ಪುಂ) 1. ಬಿದಿರಿನ ಮೊಳಕೆ. ಕಿರತಿ-ಕೃ (ವಿಕ್ಷೇಪ) "ಇನ್" (3ಂ 4-30) | "ವೇಣಿ: ಕರೀರಾ ಗುರವಃ ಕಫಮಾಸ್ತಕೋಪನಾಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ 46-305 | 2. ಮೊಳಕೆ. "ಹಿಮಾಂಶುಬಂಶಸ್ಯ ಕರೀರಮೇವ ಮಾಂ ನಿಶಮ್ಯ ಕಿಂ ನಾಸಿ ಫಲೇಗ್ರಹಿಣ್ಯಹಾ" ನೈಷಂ 9-12 | (ಪುಂ) 3. ಘಟ, ಹೂಜಿ, ಗಡಿಗೆ. 4. ಮರಳುಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯುವ ಒಂಟೆಗೆ ಪ್ರಿಯವಾದ ಒಂದು ಮುಳ್ಳು ಗಿಡ. (ವಿಂ) 5. ಅನೆಯನ್ನು ತಳ್ಳುವ, ಅನೆಯನ್ನು ಹೊಡೆದೊಡಿಸುವ. ಕರಿಣಿ ಗಜಾನೀರಯತಿ-ಇರ (ಗತೌ) "ಅನ್" (3-2-1) | "ಕೋರಕಾಕಾರಕರಕಃ ಕರೀರಃ ಕರ್ಕರೋರ್ಕರಕ್" ಮಾಘಂ 19-104 |

**ಕರೀರಿಕಾ ಕರೀರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಜದಂತಮೂಲ, ಅನೆಯ ಕೊಂಬಿನ ಬುಡ. "ನಾಸಾಪೂರ್ವ ಸ್ಥೂಲಹಸ್ತಂ ದಂತಮೂಲೇ ಕರೀರಿಕಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಕರೀರಿ ಕರೀರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಜದಂತಮೂಲ, ಅನೆಯ ಕೊಂಬಿನ ಬುಡ. 2. ಜೀರುಂಡೆಹುಳ. "ಕರೀರೋ ವಂಶಾಡ್ಕುರೇಸ್ತೀ ವೃಕ್ಷಭಿಢ್ಢಯೋಃ ಪುಮಾನ್ | ಕರೀರೀ ಚೀರಿಕಾಯಾಂ ಚ ದಂತಮೂಲೇ ಚ ದಂತಿನಾಮ್" ಮೇದಿಂ |

**ಕರೀಷ ಕರೀಷ** (ಪುಂ) 1. ಹಸುವಿನ ಒಣಗಿದ ಸಗಣೆ, ಬೆರಣಿ. ಕೃ (ವಿಕ್ಷೇಪ) "ಇನ್" (3ಂ 4-26) | "ಕರೀಷೋಸ್ತೀ ಶುಷ್ಕಗೋಮಯೇ" ಸಿಂ ಕೌಂ | "ತೃಣೇ ತೃಣೇಹಿ ಜ್ವಲನಃ ಸ್ವಲ್ಪ ಜ್ವಲನ್ ಕ್ರಮಾತ್ ಕರೀಷದ್ಭೂಮಿಕಾಂಡಮಂಡಲಮ್"

ನೈಷಂ 9-142 | 2. ಪಶುಗಳ ಮಲ, ಮೃಗಗಳ ಪುರೀಷ. "ದದರ್ಶ ಚ ವನೇ ತಸ್ಮಿನ್ ಮಹತಃ ಸಂಖ್ಯಾನ್ ಕೃತಾನ್ | ಮೃಗಾಣಾಂ ಮಹಿಷಾಣಾಂ ಚ ಕರೀಷಃ ಶೀತಕಾರಣಾತ್" ರಾಮಾಂ |

**ಕರೀಷಜ್ವಲ ಕರೀಷಂಕಷ** (ವಿಂ) ಗಾಳಿ. ಸಗಣೆಯನ್ನು ಒಣಗಿಸುವುದರಿಂದ ಗಾಳಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು. ಕರೀಷಂ ಕಷತಿ-ಕಷ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಖಚ್" (3-2-42) |

**ಕರೀಷಾಗ್ನಿ ಕರೀಷಾಗ್ನಿ** (ಪುಂ) ಒಣಗಿದ ಸಗಣೆಯ ಬೆಂಕಿ. ಕರೀಷೇ ಅಗ್ನಿಃ | "ಕ್ಷಾಣಸ್ತು ಕರೀಷಾಗ್ನಿಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಕರೀಷಿನ್ ಕರೀಷಿನ್** (ವಿಂ) ಬೆರಣಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇಶ. ಕರೀಷೋಽಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (4-2-134) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-4) | ಕರೀಷಿಣಿ ಕರೀಷಿಣೀಃ |

**ಕರುಣ ಕರುಣ** (ಪುಂ) 1. ಕಾವ್ಯದ ಒಂದು ರಸ, ಶೃಂಗಾರಾದಿ ರಸಗಳಲ್ಲೊಂದು, ಕರುಣರಸ. -ಕೃ (ವಿಕ್ಷೇಪ) "ಅನ್" (3ಂ 3-43) | ಕರುಣಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (4-2-123) | ಇಷ್ಟವಸ್ತುವಿನ ನಾಶವಾಗಿ ಅನಿಷ್ಟಪ್ರಾಪ್ತಿಯ ವರ್ಣನೆಯಿಂದ ಕರುಣರಸವು ಉತ್ಪನ್ನವಾಗುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ಶೋಕವು ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ. ಇದು ಕರ್ಪೂತದಂತೆ ಧೂಮ್ರ ವರ್ಣವುಳ್ಳದ್ದು. ಯಮದೇವತಾಕವಾದುದು ಈ ರಸ. ಶೋಕಕ್ಕೆ ವಿಷಯವಾದ ವಸ್ತುವು ಅಲಂಬನವಿಭಾವ. ಆ ವಸ್ತುವಿನ ದುರವಸ್ಥೆಯು ಉದ್ದೀಪನವಿಭಾವ. ರೋದನ ಅತ್ಯುಪಾತ ವಿಧಿಯಿಂದ ಮುಂತಾದುವು ಅನುಭಾವಗಳು. ಉಚ್ಚಾಸ ನಿಃಶ್ವಾಸಗಳು, ನಿರ್ವೇದ, ಗ್ಲಾನಿ, ವಿಷಾದ, ಚಿಂತೆ ಮುಂತಾದುವು ವ್ಯಭಿಚಾರಿ ಭಾವಗಳು. "ಇಷ್ಟನಾಶಾದಿನಿಷ್ಠಾಪ್ತೇಃ ಕರುಣಾಖ್ಯೋ ರಸೋ ಭವೇತ್ | ಧೀರಃ ಕಪೋತವರ್ಣೋಽಪಿ ಕಥಿತೋ ಯಮದೇವತಃ | ಶೋಕೋಽನ್ಯ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವಃ ಸ್ಯಾತ್ ಶೋಚ್ಯಮಾಲಂಬನಂ ಮತಮ್ | ತಸ್ಯ ದಾಹಾದಿಕಾವಸ್ಥಾ ಭವೇದ್ವಿಹೀನಂ ಪುನಃ | ಅನುಭಾವಾ ದೈವನಿಂದಾ ಭೂತಾ-ಋಂದಿತಾದಯಃ | ವೈವರ್ಣ್ಯೋಚ್ಛ್ವಾಸನಿಃಸ್ವಾಸಸ್ತಮ್ಭಪ್ರಲಯನಾನಿ ಚ | ನಿರ್ವೇದಮೋಹಾಪಸ್ಮಾರವ್ಯಾಧಿಗಲಾನಿ ಸ್ಮೃತಿಶ್ರಮಾಃ | ವಿಷಾದಜಡತಾ-ನ್ಮಾದಚಿಂತಾಘಾ ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಃ" ಸಾಂ ದಂ 3-222-24 | "ವಿಪಿನೇ ಕ್ವ ಜಟಾನಿಬಂಧನಂ ತವ ಚೇದಂ ಕ್ವ ಮನೋಹರಂ ವಪುಃ | ಅನಯೋರ್ಧಟನಾ ವಿಧೇಃ ಸ್ಫುಟಂ ನನು ಸ್ವಙ್ಗೇನ ಶಿರೀ-ಷಕೃಂತನಮ್" ರಾಘವವಿಂ | "ಪುಟಪಾಕಪ್ರತೀಕಾಶೋ ರಾಮಸ್ಯ ಕರುಣೋ ರಸಃ" 3ಂ ರಾಂ 3-1 | ಪುನಃ ಸಂಭೋಗ ಸೂಚನೆಯುಳ್ಳ ಮತ್ತು ರತಿಸ್ಥಾಯಿಭಾವವುಳ್ಳ ಕರುಣವಿಪ್ರಲಂಬ ಶೃಂಗಾರರಸಕ್ಕಿಂತಲೂ ಶೋಕಸ್ಥಾಯಿಭಾವವುಳ್ಳ ಈ ಕರುಣರಸವು ಭಿನ್ನವಾದುದು. "ಶೋಕಸ್ಥಾಯಿತಯಾ ಭಿನ್ನೋ ವಿಪ್ರಲಂಬಾದಯಂ ರಸಃ | ವಿಪ್ರಲಂಬೇ ರತಿಃ ಸ್ಥಾಯೀ ಪುನಃ ಸಂಭೋಗ-



ಹೇತುಕ: " ಸಾಂ ದಂ ೩-೨೨೬. 2. ಒಂದು ವೃಕ್ಷದ ಹೆಸರು. "ತದಾರ್ಪಿತೇಸ್ತಾಂ ಕರ್ಣಸ್ಯ ಕುಡ್ಮಲೇರ್ಜಹಾಸ ತಸ್ಯಾ: ಕುಟಿಲಾ ಕಚ್ಚಟಾ" ನೈಷಂ ೧೫-೩೧. (ವಿಂ) 3. ದುಃಖಿತ, ಬಿನ್ನ, ದೀನ. "ಕರ್ಣಮಪಿ ಸಮರ್ಥ ಮಾನಿನಾ ಮಾನಭೇದೇ ರುದಿತ-ಮುದಿತಮಸ್ತ್ರಂ ಯೋಷಿತಾಂ ವಿಗ್ರಹೇಷು" ಮಾಘಂ ೧೧-೩೫.

**ಕರ್ಣವಿಪ್ರಲಂಬ ಕರುಣವಿಪ್ರಲಂಬ** (ಪುಂ) ಶೃಂಗಾರ ರಸದ ಒಂದು ಭೇದ. ಶೃಂಗಾರರಸವು ವಿಪ್ರಲಂಬ ಶೃಂಗಾರ ಮತ್ತು ಸಂಭೋಗಶೃಂಗಾರಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ನಾಯಿಕಾನಾಯಕರಲ್ಲಿ ಪರಿಪುಷ್ಪವಾದ ರತಿ ಯುಂಟಾಗಿ ಪರಸ್ಪರಸಮಾಗಮವುಂಟಾಗದಿರುವಲ್ಲಿ ಅಂತಹ ರಸವು ವಿಪ್ರಲಂಬವೆನಿಸುವುದು. ಇದು ಪೂರ್ವರಾಗ, ಮಾನ, ಪ್ರವಾಸ ಮತ್ತು ಕರುಣಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. "ಯತ್ರ ತು ರತಿ: ಪ್ರಕೃಷ್ಠಾ ನಾಭೀಷ್ಟಮುಪೇತಿ ವಿಪ್ರಲಂಬೋಸ್ತೌ. ಸ ಚ ಪೂರ್ವ-ರಾಗಮಾನಪ್ರವಾಸಕರ್ಣಾತ್ಮಕಶ್ಚತುರ್ಥಾ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೮೭. ನಾಯಿಕಾನಾಯಕರಲ್ಲಿ ಪ್ರಕೃಷ್ಠವಾದ ಪ್ರೇಮವು ಬೆಳೆದು ಸಂಭೋಗವೇರ್ಪಡದೆ ಯಾರಾದರೊಬ್ಬರು ಲೋಕಾಂತರ ವನ್ನು ಹೊಂದಿ ಪರಸ್ಪರ ವಿಯೋಗವೇರ್ಪಟ್ಟರೂ ದೈವಾನು ಗ್ರಹದಿಂದ ಪುನಃ ಸಮಾಗಮವೇರ್ಪಡುವವರೆಗೂ ದುಃಖ ಸುತ್ತಿರುವಲ್ಲಿ "ಕರುಣವಿಪ್ರಲಂಬ ಶೃಂಗಾರ". "ಯನೋರೇಕತರಸ್ಮಿನ್ ಗತವತಿ ಲೋಕಾಂತರಂ ಪುನರ್ಲಭ್ಯೇ. ವಿಮನಾಯತೇ ಯದೇಕಸ್ತದಾ ಭವೇತ್ಕರ್ಣವಿಪ್ರಲಂಬಾಪ್ತಃ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೨೦೯.

**ಕರ್ಣಾ ಕರುಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಯೆ, ಕನಿಕರ, ಇತರರ ದುಃಖ ವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವ ಇಚ್ಛೆ. ಕೃ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಉನ್" (ಉಂ ೩-೫೩). "ಪ್ರಾಯಃ ಸರ್ವೋ ಭವತಿ ಕರ್ಣಾವೃತ್ತಿ-ರಾದ್ರಾಂತಿರಾತ್ಮಾ" ಮೇಘಂ ೨-೩೦. "ನ ಚ ಮೇಷವಗಚ್ಛತಿ ಯಥಾ ಲಘುತಾಂ ಕರ್ಣಾಂ ಯಥಾ ಚ ಕುಸ್ತೇ ಸ ಮಯಿ" ಮಾಘಂ ೯-೫೬.

**ಕರ್ಣಾತ್ಮನ್ ಕರುಣಾತ್ಮನ್** (ವಿಂ) ದಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಮೃದು ಹೃದಯವುಳ್ಳ, ಕನಿಕರವುಳ್ಳ. ಕರ್ಣಾ: ಆತ್ಮಾ ಯಸ್ಯ.

**ಕರ್ಣಾನಿಧಿ ಕರುಣಾನಿಧಿ** (ವಿಂ) ದಯೆಗೆ ಆಧಾರವಾದ, ಕನಿಕರದಿಂದ ತುಂಬಿದ. ಕರ್ಣಾ ನಿಧೀಯತೇ—ನಿ + ಕೃ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕಿ:" (೩-೩-೯೩).

**ಕರ್ಣಾಮಯ ಕರುಣಾಮಯ** (ವಿಂ) ದಯೆಯಿಂದ ತುಂಬಿದ, ಕನಿಕರದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕರ್ಣಾ "ಮಯ್" (೫-೪-೨೧). "ಕಾಕುತ್ಸ್ಥಂ ಕರ್ಣಾಮಯಂ ಗುಣಾನಿಧಿ ವಿಪ್ರಪ್ರಿಯಂ ಧಾರ್ಮಿಕಮ್" ಹನುಂ ನಾಂ.

**ಕರ್ಣಾವಿಮುಖ ಕರುಣಾವಿಮುಖ-ಗುಣ-ಕೂನ್ಯ** (ವಿಂ) ನಿರ್ಭಯ, ದಯಾಕೂನ್ಯ, ಕ್ಷಮೆ, ಕನಿಕರವಿಲ್ಲದ.

**ಕರ್ಣ ಕರುಷ** (ಪುಂ.ಬಂ.ವಂ) 1. ಕರುಷದೇಶ. ಇಂದ್ರನು ವೃತ್ರವಧೆಯನ್ನು ಮಾಡಿದಾಗ ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯೆಯು ಅವನ ದೇಹವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಮುಷಿಗಳೆಲ್ಲರೂ ಆ ಪಾತಕವನ್ನು ದೇಹದಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಿದರು. ಆ ಪಾತಕವು ಬಿದ್ದ ದೇಶಕ್ಕೆ "ಕರ್ಣ" ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ರಾಮಾಂ. ಈ ಪ್ರದೇಶವು ಈಗಿನ ಬಿಹಾರಸಂಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಸೇರಿದೆ. "ಏಷ ಮದ್ರಾನ್ ವಶೇ ಕೃತ್ವಾ ಕುರ್ವಚ ಸಹ ಸೋಮಕೇಃ. ವೇದಿಕಾಶಿಕರ್ಣಾಂಶ್ಚ ಕುರ್ಲಕ್ಷ್ಮೀಂ ವಹಿಷ್ಯತಿ" ಭಾಂ ಆದಿಂ. 2. ಕರುಷದೇಶದ ರಾಜರು. ಕರ್ಣಾಣಾಂ ರಾಜಾನ್: "ಅನ್" ಬಹು ಲುಕ್.

**ಕರ್ಣಕ ಕರುಷಕ** (ಪುಂ) ವೈವಸ್ವತಮನುವಿನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಇಕ್ಷ್ವಾಕುನೃಗಶರ್ಯಾತಿರಿದಿಷ್ಟಕರ್ಣಕಾನ್" ಭಾಗಂ ೯-೧-೧೨.

**ಕರ್ಣಜ ಕರುಷಜ** (ಪುಂ) ದಂತವಕ್ತ. "ತಾವಿಹಾಥ ಪುನರ್ಜಾತೌ ಶಿಶುಪಾಲಕರ್ಣಜೌ" ಭಾಗಂ ೭-೧೦-೩೮.

**ಕರ್ಣಾಧಿಪತಿ ಕರುಷಾಧಿಪತಿ** (ಪುಂ) ಕರುಷ ದೇಶದ ದೊರೆ, ದಂತವಕ್ತ. "ಶಿಶುಪಾಲಃ ಸಹಸುತಃ ಕರ್ಣಾಧಿ-ಪತಿಸ್ತಥಾ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೪-೩೫.

**ಕರೆಡ ಕರೇಟಿ** (ಪುಂ) ನಖ, ಉಗುರು. ಕರೆ ಅಡತಿ—ಅಡ (ಗತೌ) "ಅವ್" (೩-೧-೧೩೪).

**ಕರೆಡು ಕರೇಟು** (ಪುಂ) ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಕೊಕ್ಕರೆ. ಕೆ ಜಲೇ ರೆಡತಿ—ರೆಡ (ಪರಿಮಾಪಣೇ) "ಕು:" (ಉಂ ೧-೩೭).

**ಕರೇಣು ಕರೇಣು** (ಪುಂ) 1. ಗಜ, ಆನೆ. ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣೇ) "ಏಣು:" (ಉಂ ೨-೧). "ಆಕುಶ್ವಿತಪ್ರೋಹನಿರೂಪಿತಕ್ರಮಂ ಕರೇಣುರಾರೋಹಯತೇ ನಿಷಾದಿನಮ್" ಮಾಘಂ ೧೨-೫. 2. ಬೆಟ್ಟ ಗಣಿಗಿಲೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಹೆಣ್ಣು ಆನೆ. "ವಸ್ತಃ ಸಮಸ್ತ-ಜನಹಾಸಕರಃ ಕರೇಣೋಸ್ತಾವತ್ಕರಃ ಪ್ರಖರಮುಲ್ಲಲಯಾಂಚಕಾರ" ಮಾಘಂ ೫-೭. "ಕರೇಣುಗಂಜಯೋಷಾಂ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಪುಸಿ ಮತಜ್ಜಜೇ" ಮೇದಿಂ. "ಕರೇಣುಗಂಜಹಸ್ತಿನಯೋಃ ಕರ್ಣಿಕಾರೇಷು ಚ ಕವಚಿತ್" ವಿಶ್ವಂ.

**ಕರೇಣು ಕರೇಣುಭೂ -ಸುತ -ಸುತ** (ಪುಂ) ಗಜಶಾಸ್ತ್ರ ಪ್ರವರ್ತಕನಾದ ಪಾಲಕಾಪ್ಯಮುನಿ. "ಪಾಲಕಾಪ್ಯೇ ಕರೇಣುಭೂಃ" ಅಭಿಂ ವಿಂ.

**ಕರೇಣುಮತೀ ಕರೇಣುಮತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಕುಲನ ಪತ್ನಿ, ಜೊಡಿ ರಾಜನ ಮಗಳು. "ನಕುಲಸ್ತು ಚೈದಾಂ ಕರೇಣುಮತೀ ಭಾರ್ಯಾ-ಮುದಾವಹತ್. ತಸ್ಯಾಂ ಪುತ್ರಂ ನಿರಮಿತ್ರಂ ನಾಮಾಜನಯತ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೩.

**ಕರೋತಿ ಕರೋಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಲೆಯ ಎಲುಬು. ಕಂ ವಾಯು ರೋತೇ—ರೂ (ಪ್ರತಿಧಾತೇ) "ಇನ್" (ಉಂ ೪-೧೧೭).



ಕರ್ಕ ಶರ್ಕ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ತು ಕೃನ್ (ಕರಣೆ)  
 "ಕ:" (ಉಂ 3-40)। 2. ಬಿಳಿ ಕುದುರೆ. ಕರೋತಿ  
 ಆದಿಪ್ತಂ ಪಾಲಯತಿ। 3. ದರ್ಪಣ, ಕನ್ನಡಿ. 4. ಘಟ,  
 ಹೂಜಿ. 5. ಕರ್ಕಾಟಕರಾಶಿ. 6. ಏಡಿ, ನಳ್ಳಿ. 7. ಕಿರುನೆಲ್ಲಿ  
 ಗಿಡ. (ವಿಂ) 8. ಉತ್ತಮವಾದ, ಉತ್ಕೃಷ್ಟವಾದ.  
 9. ಬಿಳುಪಾದ. "ಕರ್ಕ: ಕರ್ಕನಿಲೇ ವಹ್ನೌ ಶುಕ್ಲಾಶ್ವೇ ದರ್ಪಣೇ  
 ಘಟೇ" ಮೇದಿಂ।

ಕರ್ಕಖಂಡ ಶರ್ಕಖಂಡ (ಪುಂವಂವಂ) 1. ಬಿಳಿ ಕುದುರೆ  
 ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇಶ. ಕರ್ಕ: ಶ್ವೇತಾಶ್ವಯುಕ್ತ: ಖಂಡ:  
 ಭೂಮಿಭಾಗೋ ಯತ್ರ। 2. ಆ ದೇಶದ ಜನರು. "ಮಾಗಧಾನ್  
 ಕರ್ಕಖಂಡಾಂಶ್ಚ ನಿವೇಶ್ಯ ವಿಷಯೇಷ್ಠಮನ:" ಭಾಂ ವನಂ 244-6।

ಕರ್ಕಚಿರ್ಮತಾ ಶರ್ಕಚಿರ್ಮತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಳಿ ಸಂತೆಕಾಯಿ.

ಕರ್ಕಟ ಶರ್ಕಟ (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಕಾಟಕ ರಾಶಿ. ಕ್ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ)  
 "ವಿಕ್" (3-2-94)। ಕಟತಿ—ಕಟೆ (ವರ್ಷಾವರಣಯೋ:  
 "ಅಕ್" (3-1-134)। ಕರ್ ಚಾಸೌ ಕಟಶ್ಚ। "ಮೇಘ  
 ಭದ್ರಮವಾನ್ಯುಯಾದಗವಿ ಸುಖಂ ಯುಗ್ಮೇ ಮೃತಿ ಕರ್ಕಟೇ ಲಾಭಮ್" ಕಾಲಾಂ।  
 "ಕರ್ಕಟೇ ಪ್ರಥಮಂ ದೇವಿ ತ್ರ್ಯಹಂ ಗಜ್ಞಾ ರಜಸ್ವಲಾ"। 2. ಭೂರುಗದ  
 ಮರ. 3. ಏಡಿ, ನಳ್ಳಿ. "ಬಹುಕಮ್ಬುಮಣಿರ್ವರಾಟಿಕಾ-  
 ಗಣನಾಟಕರಕರ್ಕಟೋಕ್ತರ:" ನೈಷಂ 2-66। 4. ತಾವರೆಯ  
 ಗಡ್ಡೆ. 5. ಸಿಹಿ ಸೋರೆಗಿಡ. 6. ತ್ರಾಸಿನ ದಂಡಿಗೆ (ತುಲಾ  
 ದಂಡದ) ಕೊನೆಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡು ಕಡೆಯ ತಟ್ಟೆಗಳ ದಾರ  
 ಗಳನ್ನೂ ಕಟ್ಟಲು ಇರುವ ಬಗ್ಗಿದ ಕೊಂಡಿ. 7. ಕಂಟಕ,  
 ಮುಳ್ಳು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ದಿ-ಟೀ. 8. ಹೆಣ್ಣುನಳ್ಳಿ. 9. ಸಂತೆ  
 ಗಿಡ. "ಯಥಾ ಚ ಕರ್ಕಟೋ ಗರ್ಭಮಾಧತ್ತೇ ಮೃತ್ಯುಮಾತ್ಮನ:" ಭಾಂ  
 ವಿರಾಂ।

ಕರ್ಕಟಕ ಶರ್ಕಟಕ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಯಂತ್ರ, ಪೃತ್ತ  
 ರೇಖೆಯನ್ನು ಎಳೆಯುವ ಒಂದು ಸಲಕರಣೆ. ಕರ್ಕಟ ಇವ  
 ಕಾಯತಿ। 2. ಇಕ್ಕಳ. 3. ತಂಡಸ. 4. ಚಿಮ್ಮುಟ. "ಫಣಿಮುಖ  
 ಕಾಕಲಿಸಂದಂಶಕಪುರುಷಶಿರ್ಮಕಯೋಗಚೂರ್ಣಯೋಗವರ್ತಿಕಾಮಾನಸೂತ್ರ ಕರ್ಕಟ  
 ಕರಜ್ಜುದೀಪಭಾಜನಭ್ರಮರಕರಣಕಪ್ರಭೃತ್ಯನೇಕೋಪಕರಣಯುಕ್ತ:"  
 ದಶಕುಂ। 5. ಕರ್ಕಾಟಕ ರಾಶಿ. 6. ಏಡಿ, ನಳ್ಳಿ. 7. ಕಿರು  
 ನೆಲ್ಲಿಗಿಡ. 8. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕಬ್ಬು.

ಕರ್ಕಟಿ ಶರ್ಕಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂತೆಗಿಡ. 2. ಭೂರುಗದ  
 ಮರ. ಕರ್ಕ ಕರ್ಕಟಕಮಟತಿ—ಅಟ (ಗತೌ) "ಇನ್" (ಉಂ  
 4-117)। ಶಕಂ।

ಕರ್ಕನ್ಧ ಶರ್ಕನ್ಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬದರೀ ವೃಕ್ಷ, ಎಲಚಿಮರ.  
 ಕರ್ಕ ಕರ್ಕಂ ದಧಾತಿ—ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಕ್ಃ"  
 (ಉಂ 1-93)। ನಿಪಾಂ।

ಕರ್ಕಫಲ ಶರ್ಕಫಲ (ನಂ) ಕಿರುನೆಲ್ಲಿಕಾಯಿ.

ಕರ್ಕರ ಶರ್ಕರ (ಪುಂ) 1. ದರ್ಪಣ, ಕನ್ನಡಿ. ಕರ್ಕ (ಹಸನೆ)  
 (ಸೌತ್ರ:) "ಘನ್" (3-3-16)। ಕರ್ಕ ರಾತಿ—ರಾ (ದಾನೇ)  
 "ಕ:" (3-2-3)। 2. ಪುಡಿಮಾಡುವ ಕಲ್ಲು, ಅರೆಯುವ  
 ಕಲ್ಲು, ಗುಂಡುಕಲ್ಲು. 3. ಕೊಡತಿ, ಸುತ್ತಿಗೆ. 4. ಎಲುಟು,  
 ಮೂಳೆ. "ಭಾರದ್ವಾಜಂ ಶ್ವದಯಿತಂ ಸಾರಸಂಧಾತಕರ್ಕರಾ:" ವೈಜಂ।  
 (ನಂ) 5. ಹಸಿ ಸುಣ್ಣಕಲ್ಲು. (ವಿಂ) 6. ದೃಢವಾದ,  
 ಗಟ್ಟಿಯಾದ, ಕಠಿನವಾದ. "ಕೋರಕಾಕಾರಕರಕ: ಕರೀರ:  
 ಕರ್ಕರೋಷ್ಣಕ್" ಮಾಘಂ 19-104।

ಕರ್ಕರಾಕ್ಷ ಶರ್ಕರಾಕ್ಷ (ಪುಂ) ಕಾಡಿಗೆ ಸೊಗಸಿನ ಹಕ್ಕಿ,  
 ಕೆಂಬೂತದ ಹಕ್ಕಿ.

ಕರ್ಕರಾಕ್ಷ ಶರ್ಕರಾಂಗ (ಪುಂ) ಕಾಡಿಗೆ ಸೊಗಸಿನ ಹಕ್ಕಿ,  
 ಕೆಂಬೂತದ ಹಕ್ಕಿ, ದಾಸರಿ ಹಕ್ಕಿ.

ಕರ್ಕರಾಡು ಶರ್ಕರಾಡು (ಪುಂ) ಕಟಾಕ್ಷ, ಕಡೆಗಣ್ಣಿನ ನೋಟ.  
 ಕರ್ಕ ಹಾಸಂ ರತಿ—ರಟ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) "ಉನ್" ಬಾಹುಂ।

ಕರ್ಕರಾನ್ಧುಕ ಶರ್ಕರಾನ್ಧುಕ (ಪುಂ) ಬಹಳ ಕತ್ತಲೆಯಿಂದ  
 ಕೂಡಿದ ಬಾವಿ. ಕರ್ಕರ: ಅತಿಶಯಿತಾನ್ಧಕಾರವತ್ವಾತ್ ಕಠೋರ:  
 ಅನ್ಧು: ಕ್ಷು:। ಸಂಜಾಯಾಂ "ಕನ್" (4-3-94)।

ಕರ್ಕರಾಲ ಶರ್ಕರಾಲ (ಪುಂ) ಗುಂಗುರು ಕೂದಲು. ಕರ್ಕರ:  
 ಸನ್ ಅಲತಿ—ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ) "ಅಕ್" (3-1-134)।  
 "ಅಲಕಸ್ತು ಕರ್ಕರಾಲ: ಕ್ಷಂಖರಶ್ಚೂರ್ಣಕುಂತಲ:" ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ಕರ್ಕರೀ ಶರ್ಕರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಿಂಡಿ, ಕೊಳವೆಯಿರುವ  
 ಹೂಜಿ. ಕರ್ಕ ಹಾಸಂ ರಾತಿ—ರಾ (ದಾನೇ) "ಕ:" (3-2-3)।  
 "ಕರ್ಕರೀ ಭಾಂಡಭೇದೇ ನಾ ದರ್ಪಣೇ ಕಠಿಣೇ ತ್ರಿಪು" ವಿಶ್ವಂ।

ಕರ್ಕರೀಕಾ ಶರ್ಕರೀಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಿಂಡಿ, ಕೊಳವೆಯಿರುವ  
 ಹೂಜಿ. ತು ಕೃನ್ (ಕರಣೆ) "ಇಕ್" ಧಾತೌದ್ವಿತ್ವಮ್  
 ಅಮ್ಯಾಸಸ್ಯ ಕ್ ಚ ನಿಪಾಂ (ಉಂ 4-20)।

ಕರ್ಕರೇಡ ಶರ್ಕರೇಟ (ಪುಂ) ಅರ್ಧಚಂದ್ರಪ್ರಯೋಗ, ಕತ್ತು  
 ಹಿಡಿದು ತಳ್ಳಲು ಅರ್ಧಚಂದ್ರಾಕಾರವಾಗಿ ಮಾಡುವ  
 ಹಸ್ತ. ಕರ್ಕ ಕರ್ಕೇತಿ ಶಬ್ದಂ ರೇಟತಿ ಯತ್ರ—ರೇಡ್ (ಪರಿಭಾಷಣೆ)  
 "ಘನ್" (3-3-121)।

ಕರ್ಕರೇಡು ಶರ್ಕರೇಟು (ಪುಂ) ದೊಡ್ಡ ಕೊಕ್ಕರೆ. ಕರ್ಕ ಇತಿ  
 ರೇಟತಿ—ರೇಡ್ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) "ಕ್ಃ" (ಉಂ 1-39)।

ಕರ್ಕಶ ಶರ್ಕಶ (ಪುಂ) 1. ಕಂಪಿಲ್ಲ ಅಥವಾ ರೋಷನೆಯೆಂಬ  
 ಒಪ್ಪಡಿ. 2. ಕಾಸಮರ್ಧವೃಕ್ಷ. 3. ಕಬ್ಬಿನ ಜಲ್ಲೆ. 4. ಖಡ್ಗ,  
 ಕತ್ತಿ. ಕರೆ ಕಶತಿ—ಕಶ (ಗತಿಶಾಸನಯೋ:) "ಅಕ್"  
 (3-1-134)। (ವಿಂ) 5. ಸಾಹಸಿಕ, ಸಾಹಸಗಾರ.



6. ಕ್ರೂರ, ಭಯಂಕರ. 7. ವೃಥವಾದ, ಗಟ್ಟಿಯಾದ. ಕಠಿನವಾದ, ಕಠೋರವಾದ. "ಛೇರಾವತಾಸ್ಕಾಲನಕರ್ಕಶೇನ ಹಸ್ತೇನ ಪಸ್ಪರ್ಶ ತದ್ಭಗ್ಮಿನ್ದ್ರ:" ಕುಮಾಂ ೩-೨೨. 8. ದಯೆಯಿಲ್ಲದ, ಕರುಣೆಯಿಲ್ಲದ. 9. ಒರಟಾದ, ಸುಣುಪಿಲ್ಲದ. 10. ಕೃಪಣ, ಜಿಪುಣ. 11. ಕಠಿನವಾದ, ದುರ್ಬೋಧವಾದ. ತಿಳಿಯಲಾಗದ. "ಯೇಷಾಂ ಕೋಮಲಕಾವ್ಯಕೌಶಲಕಲಾಲಿಲಾವತೀ ಭಾರತೀ ತೇಷಾಂ ಕರ್ಕಶತರ್ಕವಕ್ರಭಗಿತೋದ್ಗಾರೇಷು ಕಿಂ ಹೈಯತೇ" ಪ್ರಂರಾಂ ೧-೧೮. 12. ಬಹಳ ಕಷ್ಟವಾದ. 13. ಅತಿಯಾದ, ದೆಚ್ಚಾದ. "ತಸ್ಯ ಕರ್ಕಶವಿಹಾರಸಂಭವಂ ಸ್ವೇದಮಾನನವಿಲಗ್ನಜಾಲಕಮ್" ರಘುಂ ೧-೬೮. "ಕರ್ಕಶ: ಕಾಸಮರ್ದೇಕ್ಷುಕಾಂಪಿಲ್ಯೇಷ್ವಪ್ಯಸೌ ಪುಮಾನ್. ತ್ರಿಪು ಸಾಹಸಿಕೇ ಕ್ರೂರೇ ದೃಢಾಮಸೃಗನಿರ್ದೇ" ಮೇದಿಂ.

ಕರ್ಕಶಚ್ಛದ ಕರ್ಕಶ ಶಬ್ದದ (ಪುಂ) ಕಾರಗಿಡ. ಕರ್ಕಶ: ಛದ: ಪತ್ರಮಸ್ಯ.

ಕರ್ಕಶತಾ ಕರ್ಕಶತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಠಿನವಾಗಿರುವಿಕೆ, ದುರ್ಬೋಧವಾಗಿರುವಿಕೆ. 2. ಒರಟಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ವೃಥವಾಗಿರುವಿಕೆ. 4. ಭಯಂಕರವಾಗಿರುವಿಕೆ. 5. ದಯೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಕರ್ಕಶಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯). "ತ್ವ:". -ತ್ವಮ್ -ತ್ವಮ್. "ನಾಗೇಂದ್ರಹಸ್ತಾಸ್ತ್ವಚಿ ಕರ್ಕಶತ್ವಾದೇಕಾಂತಶೀತ್ಯಾತ್ಕದಲಿವಿಶೇಷಾ:" ಕುಮಾಂ ೧-೩೬.

ಕರ್ಕಾಟಕ ಕರ್ಕಾಟಕ (ಪುಂ) ಕರ್ಕಾಟಕ ರಾಜ.

ಕರ್ಕಾಟಕ ಕರ್ಕಾಟಕ (ಪುಂ) 1. ಬೂದು ಕುಂಬಳದ ಗಿಡ. ಕರ್ಕಾಟಕ ಹಾಸಂ ಸ್ವೇತತಾಮೃಚ್ಚತಿ-ಋ (ಗತೌ) "ಉನ್" ಬಾಹುಂ. "ಕೂಪಾಂಡಕಸ್ತು ಕರ್ಕಾಟಕ:" ಅಮಂ. (ನಂ) 2. ಬೂದು ಕುಂಬಳಕಾಯಿ.

ಕರ್ಕಿ ಕರ್ಕಿ (ಪುಂ) ಕರ್ಕಾಟಕರಾಜ. ಕರ್ಕಿ "ಐನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭). "ಕರ್ಕಿರ್ಮಿನಧನುರ್ಮಾ ಚ ಹರಿ: ಕಿರೀಟೇನ ಚ".

ಕರ್ಕತನ ಕರ್ಕತನ (ಪುಂ) ಮಣಿ, ರತ್ನ.

ಕರ್ಕಾಟಕ ಕರ್ಕಾಟಕ (ಪುಂ) 1. ಬಿಟ್ಟು ಸರ್ಪರಾಜ, ಎಂಟು ಸರ್ಪರಾಜರಲ್ಲೊಬ್ಬ. "ಅನಂತೋ ವಾಸುಕಿ: ಪಶೋ ಮಹಾಪದ್ಮೋಪಿ ತಕ್ಷಕ: ಕರ್ಕಾಟಕ: ಕುಲಿಕ: ಶಙ್ಖ: ಇತ್ಯಷ್ಟಿ ನಾಗನಾಯಕಾ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. "ಪ್ರಾಭುಯ ಕರ್ಕಾಟಕ ಆಚಕರ್ಪ ಸಕಮ್ಬಲಂ ನಾಗಬಲಂ ಯದ್ವಚ್ಚ:" ನೈಷಂ ೧೦-೮. [ನಿಷದಾಧಿಪತಿಯಾದ ನಳಚಕ್ರವರ್ತಿಯು ಪುಷ್ಕರನೊಡನೆ ಮೂವಡಿ ರಾಜ್ಯಭ್ರಷ್ಟನಾಗಿ ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಪತ್ನಿಯನ್ನೂ ಬಿಟ್ಟು ಮೋಗುತ್ತಿದ್ದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ನಾರದ ಮುನಿಯು ತಾಪದಿಂದ ದಾವಾಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದು ಸುಟ್ಟು ಮೋಗುತ್ತಿದ್ದ ಕರ್ಕಾಟಕನು ತನ್ನನ್ನು ದಾವಾಗ್ನಿಯಿಂದ

ತಪ್ಪಿಸಿದರೆ ಪರಮೋಪಕಾರಮಾಡುವುದಾಗಿ ತಿಳಿಸಿದನು. ಆಗ ನಳನು ಬಹಳ ಕನಿಕರದಿಂದ ಕರ್ಕಾಟಕನನ್ನು ಜ್ವಾಲೆಯಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ತರಲು ಆ ಕೂಡಲೇ ನಳನನ್ನು ಕರ್ಕಾಟಕನು ಕಚ್ಚಿದನು. ಆಗ ನಳನಿಗೆ ವಿಕಾರರೂಪ ಪುಂಟಾಗಲು "ಇದೇ ನಾನು ನಿನಗೆ ಮಾಡಿದ ಪರಮೋಪಕಾರ. ಇದರಿಂದ ನಿನನ್ನು ಯಾರೂ ಗುರುತಿಸಲಾರರು. ನೀನು ಬಾಹುಕನೆಂಬ ಹೆಸರಿನಿಂದ ಋತುಪರ್ಣರಾಜನ ಸಾರಥಿಯಾಗಿದ್ದು ಅನಂತರ ನನ್ನ ಪತ್ನಿಯನ್ನೂ ರಾಜ್ಯವನ್ನೂ ಪಡೆಯುವೆ. ನೀನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದಾಗ ನನ್ನನ್ನು ಸ್ಮರಿಸಿಕೊಂಡು ಈ ವಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಧರಿಸಿಕೊಂಡರೆ ನಿನಗೆ ನಿಜರೂಪ ಬರುವುದು" ಎಂದು ಪೇಳಿ ಎರಡು ವಸ್ತ್ರಗಳನ್ನೂ ಕೊಟ್ಟು ಅಲ್ಲೇ ಅಂತರ್ಧಾನಹೊಂದಿದನು.] ಭಾಂ ವನಂ ೬೩. 2. ಬಿಲ್ಲದ ಮರ. "ಕರ್ಕಾಟಕ: ಸ್ಯಾನ್ಮಾಲೂರಕಾದ್ರವೇಯಪ್ರಭೇದಯೋ:" ಮೇದಿಂ.

ಕರ್ಕೂರ ಕರ್ಕೂರ (ಪುಂ) 1. ಕಚೋರ. ಕರ್ಕ (ವ್ಯಥನೆ) "ಊರ:" (೩ಂ ೪-೯೦). ಪೃಷಂ. (ನಂ) 2. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 3. ಹರಿದಳ. 4. ಚಿತ್ರವರ್ಣ. "ಸ ಇಂದ್ರನೀಲ-ಸ್ಥಲನೀಲಮೂರ್ತೀ ರರಾಜ ಕರ್ಕೂರಪಿಶಂಗ್ಗವಾಸಾ:" ಮಾಧಂ ೩-೧೧. (ವಿಂ) 5. ಚಿತ್ರವರ್ಣವುಳ್ಳ.

ಕರ್ಕೂರಕ ಕರ್ಕೂರಕ (ಪುಂ) 1. ಅರಶಿನ. 2. ಕಚೋರ. ಕರ್ಕೂರ "ಕನ್" (೪-೩-೭೪).

ಕರ್ಣ-ಭೇದನೆ (ಚುರಾಂಠಮಂಸಕಂಸಂ) ಕರ್ಣಯತಿ, -ತೇ. ಅಚ-ಕರ್ಣತ್, -ತ. 1. ಭೇದಿಸು, ಒಡೆ, ಕತ್ತರಿಸು. ಕರ್ಣನಮ್. ಕರ್ಣ: 2. ರಂಧ್ರಮಾಡು, ತೂತು ಕೊರೆ, ವಜ್ರ ಮಾಡು. ಆಙ್ ಪೂರ್ವಕವಾದರೆ ಆಕರ್ಣಯತಿ, -ತೇ. ಶ್ರವಣಮಾಡು, ಕೇಳು. ಆಕರ್ಣನಮ್.

ಕರ್ಣ ಕರ್ಣ (ಪುಂ) 1. ಕಿವಿ, ಶ್ರೋತ್ರ. ಕೀರ್ಯತೇ ಶಬ್ದೋತ್ತ-ಕ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ನ:" (೩ಂ ೩-೧೦). "ಕರ್ಣಮ್ಯಶ್ಚ್ಯುತ-ಮಸಿತೋತ್ಪಲಂ ವಧೂನಾಂ ವೀಚಿಭಿಸ್ತದಮನು ಯನ್ನಿರಾಸುರಾಪ:" ಮಾಧಂ ೮-೪೪. 2. ಶ್ರವಣೇಂದ್ರಿಯ, ಶಬ್ದವನ್ನು ಗ್ರಹಿಸುವ ಒಂದು ಇಂದ್ರಿಯ, ಕರ್ಣಶಘ್ನಲಿಯೊಳಗಿನ ಕುಹರ, ಅಕಾಶರೂಪವಾದ ವಿವರ. "ತದ್ಗುಣೈ: ಕರ್ಣಮಾಗತ್ಯ ಚಾಪಲಾಯ ಪ್ರಚೋದಿತ:" ರಘುಂ ೧-೯. "ಮುಧಾ ತದಾಕರ್ಣನಸಜ್ಜಕರ್ಣಯಾ" ನೈಷಂ ೧-೩೪. 3. ಹಡಗಿನ ಲಂಗರು. ಚುಕ್ಕಾಣಿ ಚಕ್ರ. "ಹತಕರ್ಣವ ನೋಜಲೇ" ರಾಮಾಂ. 4. ಕರ್ಣ, ಕುಂತಿಯ ಮಗ, ರಾಧೇಯ, ಅಂಗರಾಜ. [ಯಮವಂಶದ ಶೂರ ರಾಜನ ಮಗಳೂ ವಸುದೇವನ ತಂಗಿಯೂ ಆದ ಕುಂತಿಯ ಮಗನು. ಕುಂತಿಯು ಮದುವೆಗೆ ಮುಂಚೆ ಕನ್ಯಾವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ದ್ವಾಗಲೇ ಇವನನ್ನು ಸೂರ್ಯನಿಂದ ಪಡೆದಳು. [ವಿವರಕ್ಕೆ



“ಕೃಂತಿ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ] ಇವನಿಗೆ ಹುಟ್ಟುವಾಗಲೇ ಕವಚವೂ ಕುಂಡಲಗಳೂ ಜನ್ಮಿಸಿದ್ದವಾಗಿದ್ದುವು. “एवमुक्ता च सा बाला तदा कौतूहलान्विता । कन्या सती देवमर्क-  
माजुहाव यशस्विनी । प्रकाशकर्ता भगवांस्तस्यां गर्भं दधौ तदा । अजीजनत्सुतं चास्यां सर्वशस्त्रभृतां वरम् । सकुण्डलं सकवचं देवगर्भं श्रियान्वितम्” भा० आदि० ६४-१३६, ७। ಅಪವಾದದ ಭಯದಿಂದ ಕುಂತಿಯು ಈ ಶಿಶುವನ್ನು ಅಶ್ವನದಿಯಲ್ಲಿ ಬಿಡಲಾಗಿ ದುರ್ಯೋಧನನ ಸಾರಥಿಯಾದ ಅಧಿರಥನೆಂಬುವನು ಅದನ್ನು ತಂದು ತನ್ನ ಹೆಂಡತಿಯಾದ ರಾಧೆಗೆ ಕೊಟ್ಟು ವಸುಷೇಣನೆಂದು ಹೆಸರಿಟ್ಟನು. ಇದರಿಂದ ಇವನಿಗೆ ಸೂತಪುತ್ರ ರಾಧೇಯ ಇತ್ಯಾದಿ ಹೆಸರುಗಳಾದುವು. ಇವನು ಮಹಾದಾನಶೀಲನಾದುದರಿಂದ ದಾನಶೂರನೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾಗಿದ್ದನು. ತನ್ನಲ್ಲಿದ್ದ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಯಾರು ಕೇಳಿದರೂ ಇಲ್ಲವನ್ನು ತಿರಲಿಲ್ಲ. ಇಂದ್ರನು ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಮೇಷದಿಂದ ಬಂದು ಇವನ ಕವಚ-ಕುಂಡಲಗಳನ್ನು ಯಾಚಿ ಸಲಾಗಿ ಅವನ್ನು ತನ್ನ ದೇಹದಿಂದ ಕತ್ತರಿಸಿ ಇಂದ್ರನಿಗೆ ದಾನ ಮಾಡಿ ಅವನಿಂದ ಶಕ್ತ್ಯಾಯುಧವನ್ನು ಪಡೆದನು. ಕರ್ಣನ ಮೇಲಿನ ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ದುರ್ಯೋಧನನು ಇವನನ್ನು ಅಂಗ ರಾಜ್ಯಾಧಿಪತಿಯನ್ನಾಗಿ ಅಭಿಷೇಕ ಮಾಡುವನು. ಕರ್ಣನು ತಾನು ಬ್ರಾಹ್ಮಣನೆಂದು ಹೇಳಿಕೊಂಡು ಪರಶುರಾಮನಲ್ಲಿ ಅಸ್ತ್ರವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿತು ನಿಷ್ಪಣನಾಗಿದ್ದರೂ ಸುಳ್ಳು ಹೇಳಿ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿದುದರಿಂದ “ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಇವನ ಅಸ್ತ್ರಗಳೆಲ್ಲವೂ ವಿಫಲವಾಗಲಿ” ಎಂದು ಪರಶು ರಾಮನು ಶಾಪಕೊಟ್ಟನು. ಇವನು ತಿಳಿಯದೆ ಒಂದುಸಲ ಒಬ್ಬ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಹಸುವನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲಾಗಿ ಅವನ ರಥವು ಯುದ್ಧಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹೂತುಹೋಗಲೆಂದು ಸಿಟ್ಟು ಗೊಂಡ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಂದ ಶಾಪಹೊಂದಿದನು. ಇವನಿಗೆ ಸುದಾಮ, ಸುಷೇಣ, ಸತ್ಯಸೇನ, ಚಿತ್ರಸೇನ, ಸುಶರ್ಮ ಮತ್ತು ವೃಷಸೇನರೆಂಬ ಮಕ್ಕಳಿದ್ದರು. ಕರ್ಣನು ಅಸ್ತ್ರವಿದ್ಯಾಪಾರಂಗತನಾಗಿ ಮಹಾವೀರನೆನಿಸಿಕೊಂಡಿದ್ದನು. ಇಂದ್ರನು ಕೊಟ್ಟ ಶಕ್ತ್ಯಾಯುಧದಿಂದ ಘಟೋತ್ಕಚನನ್ನು ಕೊಂದನು. ದುರ್ಯೋಧನನ ಘೋಷಯಾತ್ರೆಯಲ್ಲಿ ಚಿತ್ರಸೇನನೆಂಬ ಗಂಧರ್ವನಿಂದ ಪರಾಜಯ ಹೊಂದಿದನು. ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರ ನಂತರ ದುರ್ಯೋಧನನು ಇವನನ್ನು ಸೇನಾಪತಿಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವನು. ಪಾಂಡವರ ಅಜ್ಞಾತ ವಾಸವು ಪೂರೈಸುವುದರೊಳಗಾಗಿ ಅವರನ್ನು ಕಂಡುಹಿಡಿದು ಕೊಂದುಬಿಡಬೇಕೆಂದು ಕರ್ಣನು ದುರ್ಯೋಧನನಿಗೆ ಬೋಧನೆ ಮಾಡುವನು. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ದುರ್ಯೋಧನ ನಲ್ಲಿಗೆ ರಾಯಭಾರಿಯಾಗಿ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಕರ್ಣನನ್ನು

ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಕರೆದು ಅವನು ಕುಂತಿಯ ಮಗನೆಂದೂ ಪಾಂಡವರ ಪಕ್ಷವನ್ನು ಸೇರಬೇಕೆಂದೂ ಎಷ್ಟು ಹೇಳಿದರೂ ತಿರಸ್ಕರಿಸಿಬಿಡುವನು. ಭೀಷ್ಮನು ಕರ್ಣನನ್ನು ಅರ್ಧರಥ ನೆಂದು ಹೇಳಿದುದರಿಂದ ಅವನನ್ನು ನಿಂದಿಸಿ ಅವನು ಬದುಕಿರುವವರೆಗೂ ತಾನು ಯುದ್ಧ ಮಾಡುವುದಿಲ್ಲವೆಂದು ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡಿದ್ದು ಭೀಷ್ಮನು ಶರತ್ಕಲ್ಪದಲ್ಲಿ ಮಲಗಿದ್ದಾಗ (ಕರ್ಣನು) ಏಕಾಂತವಾಗಿ ಅವನಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ ಕ್ಷಮೆ ಬೇಡಲು ಪಾಂಡವರೊಡನೆ ಸೇರಬೇಕೆಂದು ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸಿ ದರೂ ಉಪಾಯದಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುವನು. ಕರ್ಣಾರ್ಜುನರು ಯುದ್ಧ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಶಾಪದಿಂದ ಕರ್ಣನ ರಥವು ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹೂತುಹೋಗಲು ರಥದ ಚಕ್ರವನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆತ್ತಲು ಕರ್ಣನು ಭೂಮಿಗೆ ಇಳಿದು ಯತ್ನಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಅದೇ ಸಮಯವೆಂದು ಹೇಳಿ ಅರ್ಜುನ ನಿಂದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಕರ್ಣನನ್ನು ಕೊಲ್ಲಿಸಿದನು]. भा० कर्ण० १७।

**ಕರ್ಣಕ ಕರ್ಣಕ (ಪುಂ)** 1. ಪಾತ್ರೆಯ ತುದಿಯಲ್ಲಿ ಮುಂದಕ್ಕೆ ಚಾಚಿಕೊಂಡಿರುವ ಅಂಚು. 2. ಮರದ ರೆಂಬೆ ಮತ್ತು ಎಲೆ. ಕರ್ಣಯತಿ ವಿಭಿಜ್ಜ ಜಾಯತೇ—ಕರ್ಣ (ಭೇದನೆ) “शुल्” (३-१-१३३)।

**ಕರ್ಣಕಾಣ್ಡ ಕರ್ಣಕಂಡೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಿವಿಯ ನವೆ, ಕಿವಿಯ ತುರಿ. ಕಿವಿಯೊಳಗಿನ ಶ್ಲೇಷ್ಮದಿಂದ ಕಿವಿಯಲ್ಲಿ ನವೆಯುಂಟಾಗುವುದು. “कफेन कण्डूः प्रचितेन कर्णयोः भृशं भवेत् स्रोतसि कर्णसंज्ञिते” सुश्रुत० उत्तर० २०-११।

**ಕರ್ಣಕಾಯ ಕರ್ಣಕಷಾಯ (ಪುಂ)** ಕಿವಿಯ ಮಲ, ಕಿವಿಯ ಕೀವು. “आपीयतां कर्णकषायशोषाननुक्रमिष्ये त इमान् सुपेशान्” भाग० २-६-४५।

**ಕರ್ಣಕಿಡ್ಡ ಕರ್ಣಕಿಟ್ಟಿ (ನಂ)** ಕಿವಿಯ ಮಲ, ಗುಗ್ಗೆ.

**ಕರ್ಣಕೂಪ ಕರ್ಣಕೂಪ (ಪುಂ)** ಬಾವಿಯಂತೆ ಆಳವಾಗಿರುವ ಕಿವಿಯ ರಂಧ್ರ, ಕಿವಿಯ ಒಳಭಾಗ. ಕರ್ಣಸ್ಯ ಕೂಪ ಇವ। “सुधारसोद्वेलनकेलिमक्षरलजासृजान्तर्मम कर्णकूपयोः” नैष० १-११३।

**ಕರ್ಣಗತರೋಗ ಕರ್ಣಗತರೋಗ (ಪುಂ)** ಕಿವಿಯೊಳಗಿನ ರೋಗ, ಕಿವಿಯನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿ ಬರುವ ವ್ಯಾಧಿ. ಈ ಕಿವಿಯ ವ್ಯಾಧಿಯು ಇಪ್ಪತ್ತೆಂಟು (28) ವಿಧ. (1) ಕರ್ಣ-ಶೂಲಮ್, (2) ಪ್ರಣಾದಃ, (3) ಬಾಧಿರ್ಯಮ್, (4) ಕ್ವೇಡಃ, (5) ಕರ್ಣ-ಸ್ರಾವಃ, (6) ಕರ್ಣಕಾಣ್ಡಃ, (7) ಕರ್ಣಗುಃ, (8) ಕೃಮಿಕರ್ಣಕಃ, (9) ಕರ್ಣಪ್ರತಿನಾಹಃ, (10) ಕ್ಷತವಿದ್ರವಿಃ, (11) ದೋಷವಿದ್ರವಿಃ, (12) ಕರ್ಣಪಾಕಃ, (13) ಪೂತಿಕರ್ಣಃ, (14-17) ಚತುರ್ವಿಧಮ್



(ನಾಲ್ಕು ವಿಧ) ಅರ್ಥ: (18-24) ಸಪ್ತವಿಧಂ ಕರ್ಣವಿದಮ್, (25-28) ಚತುರ್ವಿಧ: ಶೋಫ: ಇವು ಕರ್ಣವ್ಯಾಧಿಗಳು. ಸುಶ್ರುತಂ  
 उत्तर० २०-३-५। [ಎವರಕ್ಕೆ ಆಯಾ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]

**ಕರ್ಣಗುಣ(ಕ) ಕರ್ಣಗೂಢ(ಕ) (ಪುಂ०)** 1. ಕಿವಿಯ ಮಲ, ಕಿವಿಯ ಗುಗ್ಗು. (ಪುಂ०) 2. ಪಿತ್ತದ ತೇಜಸ್ಸಿನಿಂದ ಶ್ಲೇಷ್ಮವು ಒಣಗುವಿಕೆ. ಇದೊಂದು ಕರ್ಣರೋಗ. "विशोषिते श्लेष्मणि पित्ततेजसा नृणां भवेत् स्रोतसि कर्णगूथकः" ಸುಶ್ರುತಂ उत्तर० २०-११।

**ಕರ್ಣಗೋಚರ ಕರ್ಣಗೋಚರ (ವಿಂ०)** ಶ್ರಾವ್ಯವಾದ, ಕಿವಿಗೆ ಕೇಳಿಸುವ, ಕೇಳಬಹುದಾದ. ಕರ್ಣಸ್ಯ ಗೋಚರ:।

**ಕರ್ಣಗೋಲಕ ಕರ್ಣಗೋಲಕ (ನಂ०)** ಗೋಳಕಾಕಾರವಾದ ಕರ್ಣಕುಹರ, ಕಿವಿಯೊಳಗೆ ಶಬ್ದವು ಪ್ರವೇಶಿಸುವ ದಾರಿ.

**ಕರ್ಣಗ್ರಾಹ ಕರ್ಣಗ್ರಾಹ (ಪುಂ०)** ನಾವಿಕ, ಕರ್ಣಧಾರ, ಅಂಬಿಗ. ಕರ್ಣಮರಿತ್ರಂ ಗೃಹ್ಣತಿ—ಗ್ರಹ (उपादाने) "अण्" (३-२-१)।

**ಕರ್ಣಚ್ಛಿದ್ರ ಕರ್ಣಚ್ಛಿದ್ರ (ನಂ०)** ಕರ್ಣಕುಹರ, ಕಿವಿಯ ರಂಧ್ರ.

**ಕರ್ಣಜ ಕರ್ಣಜ (ಪುಂ०)** 1. ಕಿವಿಯ ಮಲ, ಗುಗ್ಗು. 2. ಕರ್ಣನ ಮಗ—(1) ಸುಷೇಣ, (2) ಸುದಾಮ, (3) ಸುಶರ್ಮ, (4) ಸತ್ಯಸೇನ, (5) ಚಿತ್ರಸೇನ ಮತ್ತು (6) ವ್ಯಸೇನ.

**ಕರ್ಣ(ಣ)ಜಪ ಕರ್ಣ(ಣ)ಜಪ (ವಿಂ०)** ಜಾಡಿಕೋರ, ಜಾಡಿ ಹೇಳುವವನು. ಕರ್ಣಂ ಜಪತಿ—ಜಪ (व्यक्तायां वाचि) "अच्" (३-२-१३)। सप्तम्या अलुक् (६-३-१४)। "कर्णजपैराहितराज्यलोभा स्त्रैणेन नीता विकृति लघिम्ना" भट्टि० ३-७।

**ಕರ್ಣಜಲೂಕಾ ಕರ್ಣಜಲೂಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ०)** ಜರಿ, ಲಕ್ಷ್ಮೀ ಜೇಳು. ಕರ್ಣಂ ಜಲೂಕೇವ। -जलूका -जलूका ಎಂದು -जलूकस् -जलूकस् ಎಂದು ಸಕಾರಾಂತ ಪ್ರಯೋಗವೂ ಉಂಟು.

**ಕರ್ಣಜಾಹ ಕರ್ಣಜಾಹ (ನಂ०)** ಕರ್ಣಮೂಲ, ಕಿವಿಯ ತಳಭಾಗ. ಕರ್ಣಸ್ಯ ಮೂಲಮ್ "जाहच्" (५-२-२४)। "दधाना वलिभं मध्यं कर्णजाहविलोचना" भट्टि० ४-१६।

**ಕರ್ಣಜಿತ್ ಕರ್ಣಜಿತ್ (ಪುಂ०)** ಅರ್ಜುನ. ಕರ್ಣಂ ಜಿತವಾನ್—जि (जये) "क्विप्" (३-२-६१)।

**ಕರ್ಣತಾಲ ಕರ್ಣತಾಲ (ಪುಂ०)** 1. ಕರ್ಣತಾಡನ, ಅನೆಯ ಕಿವಿಯ ಹೊಡೆತ. ಕರ್ಣಸ್ಯ ತಾಲ:। "विस्तारितः कुजर-कर्णतालैर्नैत्रक्रमेणोपररोध सूर्यम्" रघु० ७-३९। 2. ತಾಳದಂತೆ ವಿಸ್ತಾರವಾದ ಕರ್ಣ. "कर्णतालप्ररोहतां-कराजिहीर्षा..." चं०भा० १-१।

**ಕರ್ಣದರ್ಪಣ ಕರ್ಣದರ್ಪಣ (ಪುಂ०)** ಕಿವಿಯ ಓಲೆ. ಕರ್ಣಸ್ಯ ದರ್ಪಣ इव। "करारोटोऽङ्गुलीटः स्यात्ताडङ्कः कर्णदर्पणः" त्रिकाण्ड०।

**ಕರ್ಣಧಾರ ಕರ್ಣಧಾರ (ಪುಂ०)** 1. ನಾವಿಕ, ಅಂಬಿಗ, ಹಡಗು ನಡೆಸುವವನು. ಕರ್ಣಮರಿತ್ರಂ धरति—धृञ् (धारणे) "अण्" (३-२-१)। "यदि न स्यान्नरपतिः सम्यङ्नेता ततः प्रजा। अकर्णधारा जलधौ विप्लवेतेह नौरिव" हितो० ३-२। (वि०) 2. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರು ಮಾಡುವವನು, ದುಃಖವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವವನು. "अकर्णधारा पृथिवी शून्येव प्रतिभाति मे। गते दशरथे स्वर्गं रामे चारण्य-माश्रिते" रामा०।

**ಕರ್ಣಧಾರಕ ಕರ್ಣಧಾರಕ (ಪುಂ०)** "ಕರ್ಣಧಾರ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

**ಕರ್ಣನಾದ ಕರ್ಣನಾದ (ಪುಂ०)** ಕಿವಿಯನ್ನು ಬೆರಳಿನಿಂದ ಮುಚ್ಚಿದಾಗ ಉಂಟಾಗುವ "ಜೋಯ್" ಎಂಬ ಶಬ್ದ. ಕರ್ಣಂ ನಾದ:।

**ಕರ್ಣಪತ್ರಕ ಕರ್ಣಪತ್ರಕ (ಪುಂ०)** ಹೊರಕಿವಿಯ ಮೆದು ವಾದ ತಳಭಾಗ, ಕಿವಿಯ ಹಾಲೆ, ಕರ್ಣಪಾಲಿ. "कनीनिके चाक्षिकूटे शङ्कुली कर्णपत्रकी। कर्णी शङ्खौ भ्रुवौ दन्तवेष्टावोष्ठी ककुन्दरे" याज्ञ० ३-९६।

**ಕರ್ಣಪಥ ಕರ್ಣಪಥ (ಪುಂ०)** ಕಿವಿಯೊಳಗೆ ಶಬ್ದವು ಪ್ರವೇಶಿಸುವ ದಾರಿ, ಕಿವಿಯೊಳಗಿನ ರಂಧ್ರ.

**ಕರ್ಣಪರಂಪರಾ ಕರ್ಣಪರಂಪರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ०)** ಶ್ರವಣಪರಂಪರೆ, ಯಾವುದಾದರೊಂದು ವಿಷಯವು ಒಂದು ಕಿವಿಯಿಂದ ಮತ್ತೊಂದು ಕಿವಿಗೆ ಹೋಗುವಿಕೆ, ಒಬ್ಬನು ಕಿವಿಯಿಂದ ಕೇಳಿದ ಸಮಾಚಾರವನ್ನು ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ಕಿವಿಗೆ ಹಾಕುವುದು ಅವನಿಂದ ಮತ್ತೊಬ್ಬನ ಕಿವಿಗೆ ಹೋಗುವುದು ಈ ರೀತಿಯ ಪರಂಪರೆ. ಕರ್ಣಸ್ಯ ಪರಂಪರಾ। "तेनैव च क्रमेणैष गतः कर्णपरम्पराम्। प्रवादो बहुलीभावं सर्वत्रापि पुरे ययौ" कथास०।

**ಕರ್ಣಪರ್ವನ್ ಕರ್ಣಪರ್ವನ್ (ನಂ०)** ಮಹಾಭಾರತದ ಎಂಟ ನೆಯ ಪರ್ವ, ಕರ್ಣನ ಪರಾಕ್ರಮವನ್ನೂ ಸಾಹಸಕೃತ್ಯಗಳನ್ನೂ ವರ್ಣಿಸುವ ಮಹಾಭಾರತದ ಒಂದು ಭಾಗ.

**ಕರ್ಣಪಾಕ ಕರ್ಣಪಾಕ (ಪುಂ०)** ಕಿವಿಯ ಹೊರಭಾಗದ ಉರಿಯೂತ, ಕಿವಿಯ ಹೊರಭಾಗದಲ್ಲಿ ರಕ್ತ ಕಟ್ಟಿಕೊಳ್ಳುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ನೋವು, ಕಿವಿಯ ರೋಗದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. "भवेत् प्रपाकः खलु पित्तकोपतः विकीर्यविकलेदकरश्च कर्णयोः" ಸುಶ್ರುತಂ उत्तर० २०-१५।



**ಕರ್ಣಪಾಲಿ ಕರ್ಣಪಾಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊರಕಿವಿಯ ಮೆದು ವಾದ ತಳಭಾಗ. ಕಿವಿಯ ಹಾಲೆ. ಕರ್ಣಸ್ಯ ಪಾಲಿ: | -ಪಾಲಿ -ಪಾಲೀ. ಕಿವಿಯ ಒಂದು ಅಭರಣ. ಕರ್ಣ ಪಾಲಯತಿ— ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿच् "ಅನ್" (೩-೨-೧) | ಗೌರಾಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೪೧) |

**ಕರ್ಣಪಿಶಾಚಿ ಕರ್ಣಪಿಶಾಚೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ದೇವತೆ. ಉಪಾಸನೆಯಿಂದ ಪ್ರಸನ್ನವಾದ ಈ ದೇವತೆಯು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದ ಯಾವ ವಿಷಯವನ್ನಾದರೂ ಕಿವಿಯಲ್ಲಿ ರಹಸ್ಯ ವಾಗಿ ಹೇಳುವುದು.

**ಕರ್ಣಪುರ ಕರ್ಣಪುರ** (ನಂ) ಕರ್ಣನ ರಾಜಧಾನಿ, ಚಂಪಾ ನಗರ. ಈಗ ಈ ನಗರಕ್ಕೆ "ಭಾಗಲ್ಪುರ"ವೆಂದು ಹೆಸರಾ ಗಿದೆ. ["ಚಮ್ಪಾ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]

**ಕರ್ಣಪುರೀ ಕರ್ಣಪುರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರ್ಣನ ರಾಜಧಾನಿ, ಚಂಪಾನಗರ.

**ಕರ್ಣಪುಷ್ಪ ಕರ್ಣಪುಷ್ಪ** (ಪುಂ) ಕುರಟೆಗೆ ಗಿಡ.

**ಕರ್ಣಪುರ ಕರ್ಣಪುರ** (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಣಾಭರಣ, ಕಿವಿಯ ಒಡವೆ. 2. ಕಿವಿಗೆ ಅಲಂಕಾರವಾಗಿ ಧರಿಸಲ್ಪಡುವ ಪುಷ್ಪ. 3. ನೀಲೋತ್ಪಲ, ಕನ್ನಡದಿಲೆ. 4. ಶಿರೀಷಪುಷ್ಪ, ಬಾಗೆ ಹೂವು. 5. ಅಶೋಕಕುಸುಮ ಮುಂತಾದುವು. ಕರ್ಣ ಪುರಯತಿ—ಪುರೀ (ಆಪ್ಯಾಯನೆ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) | "ಯಸ್ಯಾಶ್ಚೋರಶ್ಚಿಕುರನಿಕರ: ಕರ್ಣಪುರೋ ಮಯರ: ಭಾಸೋ ಹಾಸ: ಕವಿಕುಲಗುರು: ಕಾಲಿದಾಮೋ ವಿಲಾಸ:" ಪ್ರಂ.ರಾಂ ೧-೨೨ | "ತ್ವಾಂ ಪಾತು ಮಂಜರೀತಪಲ್ಲವಕರ್ಣಪುರಲೋಭಭ್ರಮದ್ಭ್ರಮರವಿಭ್ರಮ- ಭೃತಕಟಾಕ್ಷ:" ಅಮರಂ ೧೧ |

**ಕರ್ಣಪುರಕ ಕರ್ಣಪುರಕ** (ಪುಂ) 1. ಕದಂಬವೃಕ್ಷ. ಈಜಲು ಮರ. ಕರ್ಣ ಪುರಯತಿ—ಪುರೀ (ಆಪ್ಯಾಯನೆ) "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | 2. ಕರ್ಣಾಭರಣ. 3. ಶಿರೀಷಪುಷ್ಪ, ಬಾಗೆ ಹೂವು. 4. ನೀಲೋತ್ಪಲ, ಕನ್ನಡದಿಲೆ. 5. ಅಶೋಕ ಕುಸುಮ. ಹೆಂಗಸರು ಈ ವೃಕ್ಷಗಳ ಪುಷ್ಪಗಳನ್ನು ಕರ್ಣಾ ಭರಣವನ್ನಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ಕರ್ಣಪುರಣ ಕರ್ಣಪುರಣ** (ನಂ) ತೈಲ ಮುಂತಾದುವನ್ನು ಕಿವಿಯಲ್ಲಿ ತುಂಬುವುದು, ಕಿವಿಯ ರಂಧ್ರವನ್ನು ತೈಲದಿಂದ ತುಂಬುವುದು. ಕರ್ಣಯೋ: ಪುರಣಮ್ | ಮನುಷ್ಯನ ಶರೀರವು ಸ್ನೇಹದಿಂದ ಕೂಡಿದುದು. ಪ್ರಾಣಿಗಳೂ ಸ್ನೇಹಪ್ರಚುರ ವಾದುವು. ಈ ಕಾರಣದಿಂದ ಸ್ನೇಹವನ್ನು ಪಾನ. ಅನುವಾಸನ (ಪಿಚಕಾರಿ ಪ್ರಯೋಗ), ಮುಷ್ಟಿಷ್ಠ, ಶಿರೋ ಬಿಷ್ಟಿ, ಉತ್ತರಬಿಷ್ಟಿ, ನಸ್ಯ, ಕರ್ಣಪುರಣ, ಅಭ್ಯಂಗ ಮತ್ತು ಭೋಜನ ಈ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಉಪಯೋಗಿಸಬೇಕು.

"ಸ್ನೇಹಸಾರೋಷ್ಯಂ ಪುರುಷ: | ಪ್ರಾಣಾಶ್ಚ ಸ್ನೇಹಭಯಿಷ್ಠಾ: ಸ್ನೇಹ- ಸಾಧ್ಯಾಶ್ಚ ಭವಂತಿ | ಸ್ನೇಹೋ ಹಿ ಪಾನಾನುವಾಸನಮಸ್ತಿಷ್ಕಗಿರೋ- ಬಸ್ತುತರಬಸ್ತಿನಸ್ಯಕರ್ಣಪುರಣಗಾತ್ರಾಮ್ಯಜ್ಞಭೋಜನೇಷುಪಯೋಜ್ಯ:" ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೩೧-೩ |

**ಕರ್ಣಪ್ರಣಾದ ಕರ್ಣಪ್ರಣಾದ** (ಪುಂ) ಕಿವಿಯ ರೋಗದ ಒಂದು ಭೇದ. ವಾಯುವು ನಾಡಿಯಲ್ಲಿ ತನ್ನ ದಾರಿ ಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ತಲೆಯಲ್ಲಿ ಅಡ್ಡದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸು ವುದರಿಂದಂಟಾಗುವ ನಾನಾವಿಧ ಶಬ್ದಗಳು. ಈ ರೀತಿ ತಲೆಯಲ್ಲಿ ವಾಯುವಿನ ತೀರ್ಯಕ್ ಸಂಚಾರದಿಂದ ಕಿವಿಯಲ್ಲಿ ನಾನಾ ವಿಧ ಶಬ್ದಗಳು ಕೇಳಿಸುತ್ತವೆ. "ಯದಾ ತು ನಾಡೀಷು ವಿಮಾರ್ಗಮಾಗತ: ಸ ಏವ ಶಬ್ದಾಭಿವಹಾಸು ತಿಷ್ಠತಿ | ಶೃಣೋತಿ ಶಬ್ದಾನ್ ವಿವಿಧಾನ್ ತದಾ ನರ: ಪ್ರಣಾದಮೇನಂ ಕಥಯಂತಿ ಚಾಮಯಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರಂ ೨೦-೨ |

**ಕರ್ಣಪ್ರತಿಹಾಹ ಕರ್ಣಪ್ರತಿಹಾಹ** (ಪುಂ) ಕಿವಿಯ ರೋಗದ ಒಂದು ಭೇದ. ಕರ್ಣಮಲವು ಕಫವಾಯುಗಳ ಸಂಯುಧ ದಿಂದ ಕರಗಿ ಹೋಗಿ ಅದು ಮೂಗು ಮತ್ತು ಬಾಯಿ ಮೂಲಕ ಹೊರಕ್ಕೆ ಬರುವುದು "ಕರ್ಣಪ್ರತಿಹಾಹ"ವೆಂಬ ಒಂದು ರೋಗ. ಇದು ತಲೆಗೆ ಬಹಳ ತೊಂದರೆ ಕೊಡುವುದು. "ಸ ಕರ್ಣವಿಡ್‌ಕೋ ದ್ರವತಾಂ ಯದಾ ಗತೋ ವಿಲಾ- ಯಿತೋ ಧ್ರಾಣಮುಖಂ ಪ್ರಪದ್ಯತೇ | ತದಾ ಸ ಕರ್ಣಪ್ರತಿಹಾಹಸಂಜಿತೋ ಭವೇದ್ವಿಕಾರ: ಶಿರಸೋಽಭಿತಾಪನ:" ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರಂ ೨೦-೧೨ |

**ಕರ್ಣಭೂಷಣ ಕರ್ಣಭೂಷಣ** (ನಂ) 1. ಕಿವಿಯ ಒಡವೆ, ಕರ್ಣಾಭರಣ. ಕರ್ಣ ಭೂಷಯತಿ—ಭೂಷ (ಅಲಂಕಾರ) "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ಕಿವಿಯನ್ನು ಅಲಂಕರಿಸುವಿಕೆ. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |

**ಕರ್ಣಭೂಷಾ ಕರ್ಣಭೂಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕರ್ಣಾಭರಣ. ಕಿವಿಯ ಒಡವೆ. ಕರ್ಣಸ್ಯ ಭೂಷಾ | 2. ಕಿವಿಯನ್ನು ಅಲಂಕರಿಸುವಿಕೆ.

**ಕರ್ಣಮಲ ಕರ್ಣಮಲ** (ನಂ) ಕಿವಿಯ ಮಲ, ಗುಗ್ಗೆ. ಕರ್ಣಸ್ಯ ಮಲಂ ಗುಥಮ್ | "ಕರ್ಣಗುಥಂ ಕರ್ಣಮಲಮ್" ಹಾರಾಂ |

**ಕರ್ಣಮುಕುರ ಕರ್ಣಮುಕುರ** (ಪುಂ) ತಾಟಂಕ, ಓಲೆ. ಕರ್ಣಸ್ಯ ಮುಕುರ ಇವ |

**ಕರ್ಣಮೂಲ ಕರ್ಣಮೂಲ** (ನಂ) ಕಿವಿಯ ತಳಭಾಗ. ಕಿವಿಯ ಹಾಲೆ.

**ಕರ್ಣಮೋಟಿ (टी) ಕರ್ಣಮೋಟಿ (ಟೀ)** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಾಮುಂಡಾಂಬಿಕೆ. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. ಕರ್ಣ ಮೋಟಯತಿ—ಮುಟ (ಸಂವೃಣ್ಣನೆ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭) | ವಾ "ಡೀಫ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫) |



**ಕರ್ಣಯೋನಿ ಕರ್ಣಯೋನಿ (ವಿಂ)** ಕಿವಿಯೇ ಮೂಲವಾಗಿ ಉಳ್ಳ, ಕಿವಿಯೇ ಆಶ್ರಯಸ್ಥಾನವಾಗಿ ಉಳ್ಳ ಶಬ್ದ, ಬಾಣ ಮೊದಲಾದುದು. ಕರ್ಣ: ಯೋನಿ: ಸ್ಥಾನಮಸ್ಯ | ಬಾಣವನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸುವಾಗ ಬಿಲ್ಲಿನ ಹೆದೆಯೊಡನೆ ಬಾಣವನ್ನು ಕಿವಿಯವರೆಗೂ ಎಳೆಯುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ಕರ್ಣರಂಧ್ರ ಕರ್ಣರಂಧ್ರ (ನಂ)** ಕಿವಿಯೊಳಗಿನ ವಿವರ, ಕಿವಿಯೊಳಗೆ ಶಬ್ದವು ಪ್ರವೇಶಿಸುವ ದಾರಿ, ಶ್ರೋತ್ರೇಂದ್ರಿಯದ ದ್ವಾರ.

**ಕರ್ಣರೋಗ ಕರ್ಣರೋಗ (ಪುಂ)** ಕಿವಿಯ ರೋಗ, ಕಿವಿಯಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ವ್ಯಾಧಿ. ["ಕರ್ಣಗತರೋಗ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕರ್ಣರೋಗವಿಜ್ಞಾನ ಕರ್ಣರೋಗವಿಜ್ಞಾನ (ನಂ)** 1. ಕಿವಿಯ ರೋಗಗಳ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಯುವಿಕೆ. 2. ಕಿವಿಯ ರೋಗಗಳ ನಿರೂಪಣೆ.

**ಕರ್ಣಲತಾ ಕರ್ಣಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹೊರಕಿವಿಯ ಮೆದುವಾದ ತಳಭಾಗ, ಕಿವಿಯ ಹಾಲೆ. ಕರ್ಣಯೋನಿ. "ತನ್ವಾಪಯೋ: ಕರ್ಣಲತೆ ಭ್ರೂವೋರ್ವೆ ವಂಶತ್ವಗಂಧೋ ವಿಪಿಡೇ ಕಿಮಸ್ಯಾ:" ನೆಪಂ ೭-೬೫. -ಮಯ -ಮಯ. ಕಿವಿಯ ಹಾಲೆ ರೂಪವಾದ. "ಮನ್ಯೇಷುನಾ ಕರ್ಣಲತಾಮಯೇನ ಪಾಶದ್ವಯೇನ ಚಿದ್ವಿಧುರೇತರೇಣ" ನೆಪಂ ೭-೬೪.

**ಕರ್ಣವತ್ ಕರ್ಣವತ್ (ವಿಂ)** 1. ಕಿವಿಯುಳ್ಳವನು, ಕಿವಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದವನು. ಕರ್ಣೋಪಾಸ್ತಿ "ಮತುಃ" (೪-೨-೯೪). 2. ಉದ್ದವಾದ ಕಿವಿಯುಳ್ಳ, ಜೋಲು ಕಿವಿಯುಳ್ಳ, ವಿವೃದ್ಧ ಕರ್ಣ ಯಸ್ಯ (ಗಂ ೪-೨-೧೧೭).

**ಕರ್ಣವರ್ಜಿತ-ಹೀನ ಕರ್ಣವರ್ಜಿತ-ಹೀನ (ಪುಂ)** 1. ಸರ್ವ, ಹಾವು. ಕರ್ಣೇನ ಶ್ರೋತ್ರೇಣ ಶ್ರೋತ್ರೇಂದ್ರಿಯೇಣ ವಾ ವರ್ಜಿತ: ಹೀನೋ ವಾ | ಸರ್ವಕ್ಕೆ ಕಿವಿಯಿಲ್ಲ. ಕಿವುಡನಿಗೆ ಶಬ್ದವನ್ನು ಕೇಳುವ ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲ. (ವಿಂ) 2. ಕಿವಿಯಿಲ್ಲದವನು, ಶ್ರೋತ್ರೇಂದ್ರಿಯವಿಲ್ಲದವನು, ಕಿವುಡ.

**ಕರ್ಣವಿಡ್ (ಫ) ಕರ್ಣವಿಡ್ (ಫ) (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕರ್ಣಮೂಲ, ಕಿವಿಯ ಗುಳ್ಳೆ. ಕರ್ಣಸ್ಯ ವಿಡ್. "ವಸಾಶುಕ್ರಮಸೃಕ್ಮಜ್ಜಾ ಮೂತ್ರವಿಡ್ಧಾಣಕರ್ಣವಿಡ್. ಶ್ಲೇಷ್ಮಾಶ್ಚ ದ್ವಿವಿಕಾ ಸ್ವೇದೋ ದ್ವಾದಶೀತೇ ನೃಣಾಂ ಮಲಾ:" ಮನುಂ ೪-೧೩೫. -ವಿಡ್‌ಕಮ್ -ವಿಟ್ಟಮ್. "ಶೋಧಯೇತ್ ಕರ್ಣವಿಡ್‌ಕಂ ತು ಭಿಷಕ್ ಸಮ್ಯಕ್ ಶಲಾಕಯಾ" ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರಂ ೨೧-೫೫.

**ಕರ್ಣವೇಧ ಕರ್ಣವೇಧ (ಪುಂ)** ಕಿವಿಯನ್ನು ಚುಚ್ಚುವಿಕೆ, ಶಾಸ್ತ್ರದಂತೆ ಕಿವಿ ಚುಚ್ಚುವುದು. ಕರ್ಣಯೋನಿ: "ಲ್ಯುಟ್" -ವೇಧನಮ್ -ವೇಧನಮ್. ಕಿವಿ ಚುಚ್ಚುವುದಕ್ಕೆ ಮುಹೂರ್ತ: ಚೈತ್ರ ಮತ್ತು ಪುಷ್ಯ ಮಾಸಗಳು, ಅವಮದಿನ (ಮೂರು

ತಿಥಿಗಳಿರುವ ದಿನ) ವಿಷ್ಣುವು ಮಲಗಿರುವ ಮಾಸಗಳು, ಜನ್ಮಮಾಸ, ರಿಕ್ತ (ಚತುರ್ಥಿ, ನವಮಿ ಮತ್ತು ಚತುರ್ದಶಿ) ತಿಥಿಗಳು, ಸಮವರ್ಷ, ಜನ್ಮನಕ್ಷತ್ರ ಇವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು 6, 7, 8ನೆಯ ಮಾಸಗಳಲ್ಲಿ, ಜನ್ಮದಿನದಿಂದ 12, 16ನೆಯ ದಿನಗಳಲ್ಲಿ, ವಿಷಮ (1, 3, 5 ಇತ್ಯಾದಿ) ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಸೋಮ, ಬುಧ, ಗುರು, ಶುಕ್ರವಾರಗಳಲ್ಲಿ ಪುನರ್ವಸು. ಶ್ರವಣ, ಧನಿಷ್ಠೆ, ಮೃಗಶಿರಾ ಮತ್ತು ಕ್ಷಿಪ್ರ ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಅಷ್ಟಮಶುದ್ಧಿಯಿರುವ ಲಗ್ನದಲ್ಲಿ ಕೇಂದ್ರ ತ್ರಿಕೋಣಗಳಲ್ಲಿ ಶುಭಗ್ರಹಗಳೂ 3, 6, 11ರಲ್ಲಿ ಪಾಪ ಗ್ರಹಗಳೂ ಲಗ್ನದಲ್ಲಿ ಗುರುವೂ ಇರುವಾಗ ಗುರು ಶುಕ್ರರ ಲಗ್ನದಲ್ಲಿ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಕಿವಿಯನ್ನು ಚುಚ್ಚಬೇಕು. "ಹಿತ್ವೇತಾಂ-ಇಚ್ಛೇತೃಪೌಷಾವಮಹರಿಶಯನಂ ಜನ್ಮಮಾಸಂ ಚ ರಿಕ್ತಾಂ ಯುಗ್ಮಾಬ್ದಂ ಜನ್ಮತಾರಾಮೃತಮುನಿವಸುಭಿ: ಸಮ್ಮಿತೇ ಮಾಸ್ಯಥೋ ವಾ | ಜನ್ಮಾಹಾ-ತ್ಸೂರ್ಯಭೃಪೈ: ಪರಿಮಿತದಿವಸೇ ಜ್ಞೇಯಶುಕ್ರೇಂದ್ರವಾರೆಽಥೋಜಾಬ್ದೇ ವಿಷ್ಣು-ಯುಗ್ಮಾದಿತಿ ಮೃದಲಘುಭಿ: ಕರ್ಣವೇಧ: ಪ್ರಶಸ್ತ: | ಸಂಶುದ್ಧೇ ಮೃತಿಭವನೇ ತ್ರಿಕೋಣಕೇಂದ್ರಾಪಾಯಸ್ಥೈ: ಶುಭಖಚರೈ: ಕವಿಜ್ಯಲಗ್ನೇ | ಪಾಪಾಖ್ಯೇರರಿ ಸಹಜಾಯಗೇಹಸುಸ್ಥೇಲಗ್ನಸ್ಥೇ ತ್ರಿದಶಗುರೌ ಶುಭಾವಹ: ಸ್ಯಾತ್" ಮಂ ವಿಂ |

**ಕರ್ಣವೇಧನಿ ಕರ್ಣವೇಧನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಿವಿಚುಚ್ಚುವ ಸೂಚಿ. ಕರ್ಣೋ ವಿಧ್ಯತೇಜನಯಾ-ವ್ಯಧ (ತಾಡನೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭). "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫). "ಸೌವರ್ಣಿ ರಾಜ-ಪುತ್ರಸ್ಯ ರಾಜತೀ ವಿಪ್ರವೇಶಯೋ: | ಶೂದ್ರಸ್ಯ ಚಾಯಸೀ ಸೂಚಿ ಮಧ್ಯಮಾಷ್ಟಾಡ್‌ಗುಲಾತಿಮಿಕಾ" |

**ಕರ್ಣವೇಷ ಕರ್ಣವೇಷ (ಪುಂ)** 1. ಕರ್ಣಕುಂಡಲ, ಹತ್ತು ಕಡಕು. ಕರ್ಣೋ ವೇಷಯೇತೇ ಅನೇನ "ಫ:" (೩-೩-೧೧೮). 2. ಕ್ರೋಧವಶನ ವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. "ಗಣ: ಕ್ರೋಧವಶೋ ನಾಮ ಯಸ್ತೇ ರಾಜನ್ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತ: | ತತ: ಸಂಜಜಿರೇ ವೀರಾ: ಕ್ಷಿತಾವಿಹ ನರಾಧಿಪಾ: | ಮರ್ದಕ: ಕರ್ಣವೇಷಶ್ಚ ಸಿದ್ಧಾರ್ಥ: ಕಿರೀಟಕಸ್ತಥಾ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೭. ಕರಂ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩). -ವೇಷಕ: -ವೇಷಕಃ. ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭). -ವೇಷನಮ್ -ವೇಷನಮ್. 1. ಕರ್ಣಕುಂಡಲ, ಹತ್ತು ಕಡಕು. 2. ಕಿವಿಯನ್ನು ಅಲಂಕರಿಸುವಿಕೆ. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

**ಕರ್ಣವ್ಯಥ ಕರ್ಣವ್ಯಥ (ಪುಂ)** ಕಿವಿಚುಚ್ಚುವಿಕೆ.

**ಕರ್ಣವ್ಯಥವಿಧಿ ಕರ್ಣವ್ಯಥವಿಧಿ (ಪುಂ)** ಕಿವಿಚುಚ್ಚುವ ಕ್ರಮ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಕರ್ಣವೇಧ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕರ್ಣಶಾಸ್ತ್ರ ಕರ್ಣಶಾಸ್ತ್ರಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಿವಿಯೊಳಗೆ ಶಬ್ದವು ಪ್ರವೇಶಿಸುವ ದಾರಿ, ಕರ್ಣಗೋಳಕ, ಕಿವಿಯೊಳಗಿನ



ರಂಧ್ರ. ಕರ್ಣಯೋಃ ಶಾಕ್ತುಲೀವ | "ಅವಲಂಬಿತಕರ್ಣಶಾಕ್ತುಲೀ-  
ಕಲಸೀಕಂ ರಚಯನ್ನವೋಚತ" ನೆಪಂ ೨-೮ |

**ಕರ್ಣಶೂಲ ಕರ್ಣಶೂಲ** (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಕಿವಿಯ  
ರೋಗ. ಕರ್ಣಸ್ಯ ಶೂಲಮ್ | ಕಿವಿಯೊಳಗೆ ವಾತವು ತನ್ನ  
ದಾರಿಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬೇರೆ ಕಡೆಗೆ ಸಂಚರಿಸಿದರೆ ಶ್ಲೇಷ್ಮ  
ಪಿತ್ತಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಸೇರಿಕೊಂಡು ಕಿವಿಯೊಳಗೆ ಬಹಳ ವೇದನೆ  
ಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದು. ಇದೇ "ಕರ್ಣಶೂಲ"  
ವೆನಿಸುವುದು. "ಸಮೀರಣಃ ಶ್ರೋತ್ರಗತೋಜ್ಯಥಾಚರಃ ಸಮಂತತಃ  
ಶೂಲಮತೀವ ಕರ್ಣಯೋಃ | ಕರೋತಿ ದೋಷೇಶ್ಚ ಯಥಾಸ್ವಮಾವೃತಃ ಸ  
ಕರ್ಣಶೂಲಃ ಕಥಿತೋ ದುರಾಚರಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ೨೦-೬ |

**ಕರ್ಣಶೋಭನ ಕರ್ಣಶೋಭನ** (ವಿಂ) ಕಿವಿಯನ್ನು ಅಲಂಕ  
ರಿಸುವ ಒಡವೆ, ಕರ್ಣಾಭರಣ, ಹತ್ತಿಕಡಕು ತಾಟಂಕ (ಒಲೆ)  
ಮೊದಲಾದುವು. ಕರ್ಣ ಶೋಭಯತಿ - ಶುಭ (ದೀಪ್ತ) +  
ಣಿच् "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) |

**ಕರ್ಣಶ್ರವ ಕರ್ಣಶ್ರವ** (ವಿಂ) ಕಿವಿಯಿಂದ ಕೇಳಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ ಶಬ್ದವುಳ್ಳ, (ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಆಶ್ರಯವಾದ) ವಾಯು  
ಮೊದಲಾದುವು. ಶ್ರವತೇ ಇತಿ ಶ್ರವಃ ಶಬ್ದಃ - ಕರ್ಣೇನ  
ಶ್ರವಃ ಶ್ರವಣಯೋಗ್ಯಃ ಶಬ್ದೋ ಯತ್ರ | "ಕರ್ಣಶ್ರವೇನಿಲೇ ರಾತ್ರೀ  
ದಿವಾ ಪಾಂಸುಸಮೂಹನೇ | ಏತೌ ವರ್ಷಾಸ್ವಿನಧ್ಯಾಯಾವಧ್ಯಾಯಜ್ಞಾಃ  
ಪ್ರಚಕ್ಷತೇ" ಮನು ೪-೧೦೨ | [ವರ್ಷಾರ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ರಾತ್ರಿ  
ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕಿವಿಗೆ ಕೇಳಿಸುವಷ್ಟು ಶಬ್ದವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ  
ಮತ್ತು ಹಗಲಲ್ಲಿ ಧೂಳನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆಬಿಡುವಷ್ಟು ವೇಗ  
ವಾದ ಗಾಳಿಯು ಬೀಸಿದರೆ ಅಂದು ಅನಧ್ಯಯನವೆಂದು  
ತಿಳಿಯಬೇಕು.]

**ಕರ್ಣಸಂಸ್ಥಾವ ಕರ್ಣಸಂಸ್ಥಾವ** (ಪುಂ) ಕಿವಿಯಿಂದ ಕೇವು  
ಸುರಿಯುವಿಕೆ. ತಲೆಗೆ ಏಟು ಬೀಳುವುದರಿಂದ ಅಥವಾ  
ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗುವುದರಿಂದ ಅಥವಾ ಕಿವಿಯೊಳಗೆ ಕಟ್ಟಿದ  
ಗೆಡ್ಡೆಯು ಮಾಗಿ ಒಡೆಯುವುದರಿಂದ ಕಿವಿಯಿಂದ ಕೇವು  
ಸುರಿಯುವುದು. ಇದು "ಕರ್ಣಸಂಸ್ಥಾವ" ವೆಂಬ  
ಒಂದು ಕಿವಿಯ ರೋಗ. "ಶಿರೋಽಭಿಘಾತಾದಥವಾ ನಿಮಜ್ಜತೋ  
ಜಲೇ ಪ್ರಪಾಕಾದಥವಾಪಿ ವಿವ್ರಧೇಃ | ಸ್ತವೇತ್ಯು ಪೂಯಂ ಶ್ರವಣೋಽನಿಲಾ  
ವೃತಃ ಸ ಕರ್ಣಸಂಸ್ಥಾವ ಇತಿ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ೨೦-೧೦ |

**ಕರ್ಣಸುಭಗ ಕರ್ಣಸುಭಗ** (ವಿಂ) ಕಿವಿಗೆ ಇಂಪಾದ, ಕೇಳಲು  
ಸಂತೋಷಕರವಾದ.

**ಕರ್ಣಸ್ರೋತೋಭವ ಕರ್ಣಸ್ರೋತೋಭವ** (ಪುಂ) ಮಹಾ  
ವಿಷ್ಣುವಿನ ಕರ್ಣಮಲದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಧುಕೈಟಭ  
ರೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸರು. [ಕಲ್ಪಾದಿಯಲ್ಲಿ ಮಹಾವಿಷ್ಣುವು

ವಟಪತ್ರಶಾಯಿಯಾಗಿ ಮಲಗಿದ್ದಾಗ ನಾಭಿಕಮಲದಿಂದ  
ಚತುರ್ಮುಖನು ಅವಿರ್ಭವಿಸುವನು. ಕೆಲವು ಕಾಲದ ಬಳಿಕ  
ಮಧು ಮತ್ತು ಕೈಟಭರೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸರಿಬ್ಬರು ಮಹಾವಿಷ್ಣು  
ವನ್ನು ಕಂಡು ವಿಸ್ಮಿತರಾಗಿ ಚತುರ್ಮುಖನನ್ನು ಹೀಡಿಸಿ  
ತೊಡಗಿದರು. ಬ್ರಹ್ಮನು ಭಯದಿಂದ ನಾಭಿಕಮಲದ  
ನಾಳವನ್ನು ಅಲುಗಾಡಿಸಲಾಗಿ ವಿಷ್ಣುವು ಯೋಗನಿದ್ರೆ  
ಯಿಂದ ಎಚ್ಚಿತ್ತು ರಾಕ್ಷಸರನ್ನು ಕಂಡು "ನಿಮಗೆ ಬೇಕಾದ  
ವರವನ್ನು ಕೇಳಬಹುದೆಂದು ಹೇಳಲು ರಾಕ್ಷಸರು ಸಕ್ಕ  
"ನಾವೇ ನಿನಗೆ ಬೇಕಾದ ವರಗಳನ್ನು ಕೊಡುವೆವು. ಕೇಳ  
ಬಹುದು" ಎಂದು ಹೇಳಿದರು. ಆಗ ಲೋಕಾಂಟಕರಾದ  
ಅವರ ನಿಗ್ರಹಕ್ಕಾಗಿ ವಿಷ್ಣುವು "ನೀವೇ ನನ್ನಿಂದ ಹತರಾಗ  
ಬೇಕು" ಎಂದು ವರವನ್ನು ಕೇಳಲು ಅದಕ್ಕೆ ಅವರು  
ಸಮ್ಮತಿಸಿದರು. ಬಳಿಕ ವಿಷ್ಣುವು ತನ್ನ ಚಕ್ರದಿಂದ ಅವರ  
ಶಿರಸ್ಸನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿದನು.] ಭಾಂ ವನಂ ೨೦೬ |

**ಕರ್ಣಸ್ರೋತಸ್ ಕರ್ಣಸ್ರೋತಸ್** (ನಂ) ಕರ್ಣಮಲ, ಕಿವಿಯ  
ಗುಗ್ಗೆ. ಕರ್ಣಸ್ಯ ಸ್ರೋತ ಇವ |

**ಕರ್ಣಹೀನ ಕರ್ಣಹೀನ** (ವಿಂ) ಕಿವಿಯಿಲ್ಲದ, ಶ್ರೋತ್ರೇಂ  
ದ್ರಿಯವಿಲ್ಲದ, ಶಬ್ದ ಕೇಳುವ ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ, ಕಿವುಡ. ಕರ್ಣೇನ  
ಹೀನಃ |

**ಕರ್ಣಕರ್ಣಿ ಕರ್ಣಕರ್ಣಿ** (ಅವ್ಯಂ) ಕರ್ಣಪರಂಪರೆಯಿಂದ  
(ಕಿವಿಯಿಂದ ಕಿವಿಗೆ) ಕೇಳಿ ಹರಡಿದ ಮಾತು. ಕರ್ಣ ಕರ್ಣ  
ಗೃಹೀತ್ವಾ ಪ್ರವೃತ್ತಂ ಕಥನಮ್ | ಕರ್ಮವ್ಯಂ "ಇच्" (೪-೪-೧೨೭) |  
"ಕರ್ಣಕರ್ಣಿ ಹಿ ಕಪಯಃ ಕಥಯಂತಿ ಚ ತತ್ಕಥಾಮ್" ರಾಮಾಂ |

**ಕರ್ಣಾಟ ಕರ್ಣಾಟ** (ಪುಂವಂವಂ) ಕರ್ಣಾಟಕ ದೇಶ, ಕನ್ನಡ  
ನಾಡು. ಕನ್ನಡಿಗರ ದೇಶ. ಕರ್ಣೇ ಅತತಿ-ಪ್ರಥಿತಯಶಸಾಂ  
ಏತದ್ದೇಶಸ್ಥಭೂಪಾಲಾನಾಂ ಗುಣಕೀರ್ತನೇನ ಸರ್ವೇಷಾಂ ಕರ್ಣೇ ಭ್ರಮತಿ -  
ಕರ್ಣ + ಅಟ (ಗತೌ) "ಅच्" (೩-೧-೧೩೪) | ಈ ದೇಶದ  
ರಾಜರ ಗುಣಕೀರ್ತನದಿಂದ ಈ ದೇಶದ ಹೆಸರು ಎಲ್ಲರ  
ಕಿವಿಯಲ್ಲೂ ಬೀಳುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ "ಕರ್ಣಾಟ" ವೆಂಬ  
ಹೆಸರಾಯಿತು. ಮೊಗಲರ ಆಡಳಿತದನಂತರ ಇಂಗ್ಲೀಷರ  
ರಾಜ್ಯಭಾರ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕರ್ಣಾಟಕದೇಶದ ಅನೇಕ ಭಾಗಗಳು  
ಮದ್ರಾಸು ಅಧಿಪತ್ಯದ ವಕ್ಷಿಣ ಕನ್ನಡ ಜಿಲ್ಲೆ, ಅನಂತಪುರ,  
ಸೇಲಂ, ಕೊಯಮತ್ತೂರು, ಬಳ್ಳಾರಿ ಜಿಲ್ಲೆಗಳಲ್ಲೂ  
ಮುಂಬಯಿ ರಾಜ್ಯದ ಧಾರವಾಡ, ಬಿಜಾಪುರ, ಬೆಳಗಾವಿ,  
ಉತ್ತರಕನ್ನಡ ಜಿಲ್ಲೆಗಳಲ್ಲೂ ಸೋಲಾಪುರ ಹೈದರಾಬಾದು  
ರಾಜ್ಯಗಳಲ್ಲೂ ಹಂಚಿಹೋಗಿದ್ದು ನಮ್ಮ ದೇಶದ ಧುರೀಣರ  
ಅನೇಕ ವರ್ಷಗಳ ಹೋರಾಟದ ಫಲವಾಗಿ ಈಗ ಏಕೀ  
ಕೃತವಾಗಿ ಈ ದೇಶವು "ಅಖಂಡ ಕರ್ಣಾಟಕ"



ಅಥವಾ “ವಿಶಾಲ ವೈಸೂರು” ಎಂಬ ಅಭಿಧಾನ ದಿಂದ ಪರಿಶೋಭಿಸುತ್ತಿದೆ. 2. ಕರ್ಣಾಟಕ ದೇಶದ ಜನರು. (ಪುಂ) 3. ಕರ್ಣಾಟಕದೇಶದ ದೊರೆ. “ರಾಮನಾಥ ಸಮಾರಮ್ಯ ಶ್ರೀರಙ್ಗಾಂತ ಕಿಲೇಶ್ವರಿ. ಕರ್ಣಾಟದೇಶ ಇತ್ಯುಕ್ತೋ ರಾಜ್ಯಸಾಮ್ರಾಜ್ಯದಾಯಕ.” “ಕರ್ಣಾಟಾ: ಕಾಸ್ಯಕುಡಾಶ್ಚ ಪದ್ಮ-ಜಾಲಾ: ಸತೀನರಾ:। ದಾಕ್ಷಿಣಾತ್ಯಾ: ಪುಲಿನ್ದಾಶ್ಚ ಶೇಬೇರಾ-ಸ್ತಕ್ಷುಣಾ: ಖಪಾ:” ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೭೮-೯೮। “ತೇಷಾ ಮ್ನಿಂ ದದಾತಿ ವಾಮಚರಣಂ ಕರ್ಣಾಟರಾಜಪ್ರಿಯಾ” ತ್ತದ್ಧಂ।

**ಕರ್ಣಾಟಕ ಕರ್ಣಾಟಕ** (ಪುಂ) “ಕರ್ಣಾಟ” ಪದದ ಅರ್ಥ. “ಕೋಡ್ಲವೇಡ್ಲಕುಡಕಾನ್ ದಕ್ಷಿಣಕರ್ಣಾಟಕಾನ್ ದೇಶಾನ್ ಯದ್ವಿಚ್ಛಯೋಪಗತ:.....” ಭಾಗಂ ೪-೬-೮।

**ಕರ್ಣಾಟಕದೇಶ ಕರ್ಣಾಟಕದೇಶ** (ಪುಂ) ಕನ್ನಡನಾಡು.

**ಕರ್ಣಾಟಕಭಾಷಾ ಕರ್ಣಾಟಕಭಾಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕನ್ನಡನುಡಿ.

**ಕರ್ಣಾಟಕನುಜ ಕರ್ಣಾಟನುಜ** (ಪುಂ) ಕರ್ಣಾಟನ ತಮ್ಮ, ಯುಧಿಷ್ಠಿರ, ಧರ್ಮರಾಯ. ಕರ್ಣಸ್ಯ ಅನುಜ:।

**ಕರ್ಣಾಟಕ ಕರ್ಣಾಟಕ** (ನಂ) ಕಿವಿಯ ಸಮೀಪ, ಕಿವಿಯ ಹತ್ತಿರದ ಜಾಗ. “ನ ನೀತಮನ್ಯೇನ ನತಿ ಕದಾಚಿತ್ಕರ್ಣಾಟಕ-ಪ್ರಾಪ್ತಗುಣಂ ಕ್ರಿಯಾಮು” ಮಾಘಂ ೩-೨೦।

**ಕರ್ಣಾಟಕ ಕರ್ಣಾಟಕ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕರ್ಣಾಟಕ, ಹೊರ ಕಿವಿಯ ಮೆದುವಾದ ತಳಭಾಗ, ಕಿವಿಯ ಹಾಲೆ. ಕರ್ಣಸ್ಯಾ-ನ್ದುರಿವ। 2. ಮೇಲಿನ ಕಿವಿಗೆ ಹಾಕುವ ಚಂದ್ರಮುರು ವೆಂಬ ಒಂದು ಅಭರಣ. “ತಕ್ಷಿಪ್ತಿಕಾ ತು ಕರ್ಣಾಟಕ:” ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

**ಕರ್ಣಾಟಕ ಕರ್ಣಾಟಕ** (ನಂ) ಕಿವಿಯ ಒಡವೆ, ತಾಟಕ, ಒಲೆ. ಹತ್ತಿಕಡಕು. ಕರ್ಣಸ್ಯಾಭರಣಮ್। “ಉತ್ಪದ್ವಾಂಶುಕ-ಯುಗಲಂ ಕರ್ಣಾಟಕಂ ಚ ದತ್ತಮ್” ರತ್ನಾಂ ೪।

**ಕರ್ಣಾಟಕ ಕರ್ಣಾಟಕ** (ನಂ) ಕಿವಿಗೆ ಅಮೃತದಂತಿರುವ ಮಾತು, ಕಿವಿಗೆ ಇಂಪಾದ ಮಾತು. ಕರ್ಣಸ್ಯಾಮೃತಮಿವ।

**ಕರ್ಣಾಟಕ ಕರ್ಣಾಟಕ** (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಣಾಟ ವೈರಿ, ಅರ್ಜುನ. ಕರ್ಣಸ್ಯಾರಿ:। 2. ನದೀಸರ್ಪವೃಕ್ಷ.

**ಕರ್ಣಾಟಕ ಕರ್ಣಾಟಕ** (ನಂ) ಕಿವಿಯನ್ನು ಅಲಂಕರಿಸುವಿಕೆ, ಕಿವಿಯನ್ನು ಒಡವೆಗಳಿಂದ ಶೃಂಗರಿಸುವಿಕೆ. ಕರ್ಣಸ್ಯಾಲಂಕರಣಮ್।

**ಕರ್ಣಾಟಕ ಕರ್ಣಾಟಕ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಿವಿಯನ್ನು ಒಡವೆಗಳಿಂದ ಅಲಂಕರಿಸುವಿಕೆ. ಕರ್ಣಸ್ಯಾಲಂಕೃತಿ:।

**ಕರ್ಣಾಟಕ ಕರ್ಣಾಟಕ** (ಪುಂ) ಅನೆಯ ಕಿವಿಯ ಹೊಡೆತ. ಕರ್ಣಸ್ಯಾಸ್ಕಾಲ:।

**ಕರ್ಣಿ ಕರ್ಣಿ** (ಪುಂ) 1. ತುದಿಯಲ್ಲಿ ಕಿವಿಯ ಅಕಾರವುಳ್ಳ ಬಾಣ. ಕರ್ಣ (ಭೇದನೆ) ಕರಂ “ಇನ್” (೩ಂ ೪-೧೧೭)। 2. ಭೇದನ, ಒಡೆಯುವುದು. ಭಾವೇ “ಇನ್”।

**ಕರ್ಣಿಕ ಕರ್ಣಿಕ** (ವಿಂ) ಉದ್ದವಾದ ಕಿವಿಯುಳ್ಳ, ಜೋಲು ಕಿವಿಯುಳ್ಳ. ವಿವೃದ್ಧೌ ಕರ್ಣಿ ಯಸ್ಯ — ಕರ್ಣ “ಠನ್” (ಗಂ ೪-೨-೧೧೭)।

**ಕರ್ಣಿಕಾ ಕರ್ಣಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಂಗಸರ ಕಿವಿಯ ಅಭರಣ, ಒಲೆ. ಕರ್ಣ “ಕನ್” (೪-೩-೬೪)। “ಟಾಪ್” (೪-೧-೪)। “ಕರ್ಣಿಕಾ ತಾಲಪತ್ರಂ ಸ್ಯಾತ್ಕುಣ्डಲಂ ಕರ್ಣವೇಷ್ಠನಮ್” ಅಮಂ। 2. ಒಣಹುಲ್ಲು. “ಪಲಾಲೋಸ್ತ್ರೀ ಕರ್ಣಿಕಾ ಸ್ತ್ರೀ ಪೂಲೋಸ್ತ್ರೀ ತೃಣಪಶ್ಚಿಕಾ” ವೈಜಂ। 3. ಅನೆಯ ಸೊಂಡಲಿನ ತುದಿಯ ಭಾಗ. 4. ತಾವರೆಯ ಬೀಜಕೋಶ. 5. ಕೈಮಧ್ಯದ ಬೆರಳು. “ಕರ್ಣಿಕಾ ಕರಿಹಸ್ತಾಘ್ರೇ ಕರಮಧ್ಯಾಙ್ಗುಲಾವಪಿ” ಮೇದಿಂ। 6. ಅಗ್ನಿಮಂಥವೃಕ್ಷ. 7. ಬಲಮುರಿಗಿಡ. 8. ಹೆಣ್ಣಿನ ಕಾವು, -ತೊಟ್ಟು. 9. (ಎಳೆದರೆ ಬಿಗಿಯು ವಂತಹ) ಹಗ್ಗದ ಸರಿಗಂಬುಳ್ಳ ಕುಣಿಕೆ. “ರಜ್ಜು: ಸಾ ಬಂಧನೀ ತನ್ಮಾ ತ್ವತ್ಯಾ ಪಾಶಸ್ತು ಕರ್ಣಿಕಾ” ವೈಜಂ।

**ಕರ್ಣಿಕಾಚಲ ಕರ್ಣಿಕಾಚಲ** (ಪುಂ) ಸುಮೇರುಪರ್ವತ. ಕರ್ಣಿಕಾಚಲ ಸ್ಥಿತೋಚಲ:। “ಏಷಾಂ ಮಧ್ಯೇ ಇಲಾವೃತಂ ನಾಮಾ-ಮ್ಯಂತರವರ್ಷಂ ಯಸ್ಯ ನಾಮ್ಯಾಮವಸ್ಥಿತ: ಸರ್ವತ: ಸೌವರ್ಣ: ಕುಲಗಿರರಾಜೋ ಮೇರುದ್ವೀಪಾಯಾಮಸಮುಬ್ರಾಹ: ಕರ್ಣಿಕಾಚಲ: ಕುವಲಯಕಮಲಸ್ಯ ಮೂರ್ಧನಿ ದ್ವಾತ್ರಿಶತ್ಸಹಸ್ರಯೋಜನವಿತ್ತತ: ಮೂಲೇ ಷೋಡಶಸಹಸ್ರಂ ತಾವತಾನ್ತರ್ಮಯಾಂ ಪ್ರವಿಷ್ಟ:” ಭಾಗಂ ೪-೧೬-೭।

**ಕರ್ಣಿಕಾರ ಕರ್ಣಿಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ಬೆಟ್ಟಗಣಿಲೆ ಗಿಡ. 2. ಕೆಳ ಗಿಡ. ಕರ್ಣಿ ಭೇದನಂ ಕರೋತಿ — ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ಅನ್” (೩-೨-೧)। ಕರ್ಣಿಕಾಮಿಯಾರ್ತಿ — ಇ (ಗತೌ “ಅನ್” ವಾ। “ಕರ್ಣಿಕಾರ: ಪುಮಾನಾರಗವಧದ್ರೌ ಚ ದ್ರುಮೋತ್ಪಲೇ” ಮೇದಿಂ। (ನಂ) 3. ಗಣಿಲೆ ಹೂವು. “ವರ್ಣಪ್ರಕರ್ಷೇ ಸತಿ ಕರ್ಣಿಕಾರಂ ದುನೋತಿ ನಿರ್ಗಂಧತಯಾ ಸ್ಮ ಚೇತ:” ಕುಮಾಂ ೩-೨೮।

**ಕರ್ಣಿಕಾ ಕರ್ಣಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀ) ಕರುಹಾಕಿದ ಎಳೆಯ ಹಸು, ಕಡೆಸು.

**ಕರ್ಣಿನ್ ಕರ್ಣಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಕುಟಿಲವಾದ ಬಾಣ, ಜೊಂಕಾ ಗಿರುವ ಬಾಣ. ಕರ್ಣೋತ್ಪಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೭)। 2. ಸಪ್ತಕುಲಪರ್ವತಗಳಲ್ಲೊಂದು. (ವಿಂ) 3. ಉದ್ದದ ಕಿವಿಯುಳ್ಳ, ಜೋಲು ಕಿವಿಯುಳ್ಳ. ವಿವೃದ್ಧೌ ಕರ್ಣಿ ಯಸ್ಯ “ಇನಿ:” (ಗಂ ೪-೨-೧೧೭)। “ಕರೋತಿ ಕರ್ಣಿನೋ ಯಸ್ತು ಯಸ್ತು ಖಡ್ಗಾದಿಕ್ರೂರ:। ಪ್ರಯಾತಸ್ತೌ ವಿಶಸನೇ ನರಕೇ ಮೃತದಾಹಣಿ” ವಿಷ್ಣುಪುಂ ೧-೬-೧೭।



ಕರ್ಣಿಲ ಕರ್ಣಿಲ (ವಿಂ) ಉದ್ದದ ಕಿವಿಯುಳ್ಳ, ಜೋಲು ಕಿವಿಯುಳ್ಳ, ಕರ್ಣ "ಇಲಚ್" (ಗಂ ೪-೨-೧೧೭)।

ಕರ್ಣಿ ಕರ್ಣಿಲ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. "ಕರ್ಣಿನ್" ಪದದ 1ನೆಯ ಅರ್ಥ. 2. ಮೂಲದೇವನ ತಾಯಿ.

ಕರ್ಣಿರಥ ಕರ್ಣಿರಥ (ಪುಂ) ಪಲ್ಲಕ್ಕಿ, ಹೆಗಲಮೇಲೆ ಹೊರ ಬಹುದಾದ ಒಂದು ವಾಹನ, ಮೇನಾ. ಕರ್ಣಿ ಸ್ಕನ್ಧವಾಹನ; ಕರ್ಣಿ ಚಾಸಿ ರಥಶ್ಚ. ದೀರ್ಘ: (೬-೩-೧೩೭)। "ಶ್ವಶ್ರುಜನಾ-ನುಷ್ಠಿತಚಾರವೇಷಾಂ ಕರ್ಣಿರಥಸ್ಥಾಂ ರಘುವೀರಪತ್ನೀಮ್" ರಘುಂ ೧೪-೧೩।

ಕರ್ಣಿಸುತ ಕರ್ಣಿಸುತ (ಪುಂ) ಪರ್ಯಾಯಪ್ರವರ್ತಕ ನಾದ ಮೂಲದೇವ. "ಕರ್ಣಿಸುತ: ಕರಟಕ: ಸ್ತೇಯಶಾಸ್ತ್ರ-ಪ್ರವರ್ತಕ:। ತಸ್ಯ ಖ್ಯಾತೌ ಸಖಾಯೌ ಡೌ ವಿಪುಲಾಚಲಸಂಜಕೌ"। "ಕರ್ಣಿಸುತಕಥೇವ ಸನ್ನಿಹಿತವಿಪುಲಾಚಲಾ" ಕಾದಂ। "ಕರ್ಣಿಸುತ-ಪ್ರಹಿತೇ ಚ ಪಥಿ ಮತಿಮಕರವಮ್" ದಶಕುಂ।

ಕರ್ಣಿಚುರು ಕರ್ಣಿಚುರುಚುರು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಿವಿಯಲ್ಲಿ ಮಾತಾಡುವಿಕೆ. ಪಾತ್ರ ಸಮಿತಾದಿ: (೨-೧-೪೮)। एवं ಕರ್ಣಿರಥಿರಥಿರಾ।

ಕರ್ಣಿಜಪ ಕರ್ಣಿಜಪ (ಪುಂ) 1. ಚಾಡಿಕೋರ. ಚಾಡಿಮಾತು ಹೇಳುವವನು. ಕರ್ಣಿ ಜಪತಿ - ಜಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಅಚ್" (೩-೨-೧೩)। ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಅಲುಕ್ (೬-೩-೯)। "ಕರ್ಣಿಜಪೇರಾಹಿತರಾಜ್ಯಲೋಭಾ" ಭಟಿಂ ೩-೭। 2. ಕಿವಿಯಲ್ಲಿ ಮಾತಾಡುವವನು.

ಕರ್ಣಿನ್ದು ಕರ್ಣಿನ್ದು (ಪುಂ) ಅರ್ಥಜಂದ್ರಕಾರದ ಒಂದು ಕರ್ಣಾಭರಣ, "ಚಂದ್ರಮುರು" ಎಂಬ ಒಂದು ಕಿವಿಯ ಒಡವೆ. ಕರ್ಣಿ ಇನ್ದುರಿವ।

ಕರ್ಣಿಪರ್ಣಿಕಾ ಕರ್ಣಿಪರ್ಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಿವಿಯಿಂದ ಕಿವಿಗೆ ಪ್ರವಾದ ಹೋಗುವಿಕೆ, ಒಬ್ಬನ ಕಿವಿಯಿಂದ ಕೇಳಿದ ವಿಷಯವು ಮತ್ತೊಬ್ಬನ ಕಿವಿಗೆ ಹೋಗುವಿಕೆ. ಕರ್ಣಿ-ದುಪಕರ್ಣಿಃಸ್ತಿಸ್ಯಾ: "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೪)। "ಪ್ರಾಗೇವ ಕರ್ಣಿಪರ್ಣಿಕಯಾ ಶ್ರುತಾಪವಾದಕ್ಷುಭಿತಹೃದಯ:" ಪञ्ಚತಂ।

ಕರ್ಣಿಣಿ ಕರ್ಣಿಣಿ (ಪುಂ) ಕಿವಿಯಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಉಣ್ಣೆಯುಳ್ಳ ಒಂದು ಮೃಗ. / ಕರ್ಣಿ ಊರ್ಣಿ ಯಸ್ಯ। "ಕರ್ಣಿಣಿಂಕ ಪದಶ್ವಾಸ್ಯೇರ್ನಿರ್ಜುಷ್ಠಂ ವೃಕನಾಭಿಮಿ:" ಭಾಗಂ ೪-೬-೨೧।

ಕರ್ಣಿ ಕರ್ಣಿ (ವಿಂ) ಕಿವಿಯಲ್ಲಿರುವ. ಕಿವಿಯಲ್ಲುಂಟಾದ. ಕರ್ಣಿ ಭವ: "ಯತ್" (೪-೩-೪೪)।

ಕರ್ತ ಕರ್ತ (ಪುಂ) 1. ಬಾವಿ. ಕರ್ತ (ಶೈಖಲೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಕತ್ತರಿಸುವಿಕೆ. ಕೃತಿ (ಛೇದನೇ) ಭಾವೇ

"ಘಜ್" (೩-೩-೧೮)। (ವಿಂ) 3. ಸಡಿಲಿಸುವವನು. 4. ಕತ್ತರಿಸುವವನು. ಕೃತಿ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।

ಕರ್ತನ ಕರ್ತನ (ನಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸುವಿಕೆ, ಭೇದಿಸುವಿಕೆ, ಒಡೆಯುವಿಕೆ. ಕೃತಿ (ಛೇದನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ಗುಲ್ಮಗುಚ್ಛಕ್ಷುಪಲತಾಪ್ರತಾನೌಷಧಿವೀರಧಾಮ್। ಪೂರ್ವಸ್ಮೃತಾದರ್ಭ-ದಂಡ: ಸ್ಥಾನೇಷುಕ್ತೇಷು ಕರ್ತನೇ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೨೨೯। 2. ಸಡಿಲಿಸುವಿಕೆ. ಕರ್ತ (ಶೈಖಲೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 3. ಕತ್ತರಿಸುವವನು. 4. ಸಡಿಲಿಸುವವನು. ಕೃತಿ ಕರ್ತ ವಾ ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। 5. ಕತ್ತರಿಸುವ ಸಾಧನ, ಕತ್ತರಿ. ಕೃತಿ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೪)। ಕರ್ತನಿ ಕರ್ತನಿ.

ಕರ್ತಯತ್ ಕರ್ತಯತ್ (ವಿಂ) ಕತ್ತರಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಕೃತಿ (ಛೇದನೇ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

ಕರ್ತರಿ ಕರ್ತರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕತ್ತರಿ. ಕೃತಿ (ಛೇದನೇ) ಭಾವೇ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮)। ಕರ್ತ ರಾತಿ - ರಾ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೪)। ಗೌರಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧)। 2. ಕತ್ತಿ. 3. ಚಾಕು, ಚೂರಿ. 4. (ಜ್ಯೋತಿಷದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ) ಕರ್ತರೀಯೋಗ: ವಿವಾಹಾದಿಗ್ನಕ್ಕೆ ದ್ವಾದಶ ಮತ್ತು ದ್ವಿತೀಯಾಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಪಾಪಗ್ರಹಗಳು ಬಿಡು ಮತ್ತು ವಕ್ರ ಗತಿಗಳಲ್ಲಿದ್ದರೆ ಕರ್ತರಿಯೆಂಬ ದೋಷವುಂಟಾಗುವುದು. ಈ ಕರ್ತರೀಯೋಗದಲ್ಲಿ ವಿವಾಹಾದಿಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡಿದರೆ ಮೃತ್ಯು ದಾರಿದ್ರ್ಯ ಶೋಕಗಳುಂಟಾಗುವುವು. "ಲಗನಾತ್ಪಾಪಾವೃಜ್ವನಜ್ಞವ್ಯಯಾರ್ಥಸ್ಥೌ ಯದಾ ತದಾ। ಕರ್ತರಿ ನಾಮ ಸಾ ಜ್ಞೇಯಾ ಮೃತ್ಯುದಾರಿದ್ರಚಶೋಕದಾ" ಮುಂ ಚಿಂ। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" ಕರ್ತರಿಕಾ ಕರ್ತರಿಕಾ.

ಕರ್ತವ್ಯ ಕರ್ತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕಾರ್ಯ, ಕೆಲಸ. ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣೇ) "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬)। "ಕರ್ತವ್ಯಂ ವೌ ನ ಪಶ್ಯಾಮಿ ಸ್ಯಾಚ್ಚೇತ್ಕಿ ನೌಪಪದ್ಯತೇ" ಕುಮಾಂ ೬-೬೧। 2. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. "ಆದಾನಸ್ಯ ಪ್ರದಾನಸ್ಯ ಕರ್ತವ್ಯಸ್ಯ ಚ ಕರ್ಮಣ:। ಕ್ಷಿಪ್ರಮಕ್ರಿಯಮಾಣಸ್ಯ ಕಾಲ: ಪಿಬತಿ ತದ್ರಸಮ್" ಹಿತಂ ೪-೯೫। 3. ಮಾಡಲ್ಪಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. "ಹೀನಸೇವಾ ನ ಕರ್ತವ್ಯಾ ಕರ್ತವ್ಯೋ ಮಹದಾಶ್ರಯ:" ಹಿತಂ ೩-೧೧। 4. ಮಾಡಲ್ಪಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 5. ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಡು ಕೃತ್ ಕರ್ಮಂ ಅಹಂ ಶಕ್ತೌ ವಾ "ತವ್ಯ:"।

ಕರ್ತವ್ಯತಾ ಕರ್ತವ್ಯತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡಬೇಕಾಗಿರುವಿಕೆ. ಕರ್ತವ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। "ಸಂವಿಶೇತ್ಯುರ್ಯಥೋಪೇಣ ಪ್ರತಿಬುಧ್ವೇತಯೇವ ಚ। ಶಾಸ್ತ್ರಾಣಿ



ಚಿಂತಯೇದ್ಬುದ್ಧಿ ಸರ್ವಕರ್ತವ್ಯತಾಸ್ತಥಾ" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೩೩೧ |

"ತ್ವ:" ಕರ್ತವ್ಯತ್ವಮ್ ಕರ್ತವ್ಯತ್ವಮ್.

ಕರ್ತೃ ಕರ್ತೃತ (ನಂ) 1. ಕರ್ತೃಸುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು.

ಕೃತಿ (ಛೇದನೆ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) |

(ವಿಂ) 2. ಕರ್ತೃಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಕೃತಿ + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |

ಕರ್ತೃವತ್ ಕರ್ತೃತವತ್ (ವಿಂ) ಕರ್ತೃಸುವಂತೆ ಮಾಡಿದ.

ಕೃತಿ (ಛೇದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತವತ್:" (೩-೨-೧೦೨) |

ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ವತಿ -ವತಿ.

ಕರ್ತೃಕಾಮ ಕರ್ತೃಕಾಮ, -ಮನಸ್ -ಮನಸ್ ಕರ್ತೃ

ರಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. ಕರ್ತೃರಿಸಲು ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ಕರ್ತೃ ಕಾಮೋ ಮನೋ ವಾ ಯಸ್ಯ |

ಕರ್ತೃ ಕರ್ತೃತ (ವಿಂ) ಕರ್ತೃಸುವ. ಕೃತಿ (ಛೇದನೆ) "ತೃಚ್"

(೩-೧-೧೩೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | ಕರ್ತೃ ಕರ್ತೃತ.

ಕರ್ತೃತ.

ಕರ್ತೃಕಾಮ ಕರ್ತೃಕಾಮ -ಮನಸ್ -ಮನಸ್ (ವಿಂ)

ಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. ಮಾಡಲು ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ಕರ್ತೃ ಕಾಮೋ ಮನೋ ವಾ ಯಸ್ಯ |

ಕರ್ತೃ ಕರ್ತೃತ (ಪುಂ) 1. ಜಗತ್ಪ್ರಾಪ್ತಿಕರ್ತನಾದ ವಿಷ್ಣು.

ಪರಮಾತ್ಮ. ತು ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩) |

2. ಕಾರ್ತವೀರ್ಯ ಮುಂತಾದವರನ್ನು ಕರ್ತೃರಿಸಿದ ವಿಷ್ಣು.

(ಪರಶುರಾಮಾವತಾರದಲ್ಲಿ). ಕೃತಿ (ಛೇದನೆ) "ತೃಚ್" | (ಉಂ

೨-೧೩) | "ಕ್ರುದಂತೋ ಕಾರ್ತವೀರ್ಯಸ್ಯ ಚ್ಛೇತಾ ಕರ್ತೃತಿ ಶಬ್ದಾಂತೇ"

ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ | "ಕರಣಂ ಕಾರಣಂ ಕರ್ತೃತಿ ವಿಕರ್ತೃತಿ ಗೃಹಂ ಗೃಹಂ"

"ಕ್ರೋಧಾ ಕ್ರೋಧಕೃತ್ ಕರ್ತೃತಿ" ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 3. ಕಾರ್ಯ

ಮಾಡುವವನು. ಈ ಕರ್ತೃವು ಸಾತ್ವಿಕ. ರಾಜಸ ಮತ್ತು

ತಾಮಸಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. (1) ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದೆ

ಅಭಿಮಾನಶೂನ್ಯನಾಗಿ ಧೈರ್ಯ ಮತ್ತು ಉತ್ಸಾಹಗಳಿಂದ

ಕೂಡಿ ಫಲಸಿದ್ಧಿ ಅಸಿದ್ಧಿಗಳಿಂದ (ಕಾರ್ಯಕೈಗೂಡುವಿಕೆ

ಅಥವಾ ಕೈಗೂಡದಿರುವಿಕೆಯಿಂದ) ಉಬ್ಬು ತಗ್ಗುಗಳಿಂದ

ಇರುವವನು "ಸಾತ್ವಿಕ". "ಮುಕ್ತಸಂಜ್ಞಾಂಜನವಾದಿ ಧೈರ್ಯ-

ತ್ಸಾಹಸಮನ್ವಿತಃ | ಸಿದ್ಧಿಃ ಸಿದ್ಧಿಃ ನಿರ್ವಿಕಾರಃ ಕರ್ತೃತಿ ಸಾತ್ವಿಕ

ಉಚ್ಯತೇ" ಗೀತಾಂ ೧೮-೨೬ | (2) ಕೇರ್ತಕಾಮನಾಗಿ

ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ದುರಾಶಾಪರನಾಗಿ ಇತರರನ್ನು ಪೀಡಿಸು

ವವನಾಗಿ ಕರ್ಮಾರ್ಹತೆಯಿಲ್ಲದೆ ಸಿದ್ಧಿ ಅಸಿದ್ಧಿಗಳಲ್ಲಿ ಹರ್ಷ

ಶೋಕಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದವನು "ರಾಜಸನು". "ರಾಗಿ

ಕರ್ಮಫಲಪ್ರೇಮುಲ್ಕಂಧೋ ಹಿಸಾರ್ತಮಕೋಷ್ಠಾಚಿಃ | ಹರ್ಷಶೋಕಾನ್ವಿತಃ ಕರ್ತೃತಿ

ರಾಜಸಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ" ಗೀತಾ ೧೮-೨೭ | (3) ಶಾಸ್ತ್ರೀಯ

ಕರ್ಮಾರ್ಹನೂ ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದೆ ಅಹಂಕಾರಿಯಾ

ಗಿಯೂ ಮಂಚಕನಾಗಿಯೂ ಪರಪೀಡಾಭಿರುಚಿಯುಳ್ಳವ

ನಾಗಿಯೂ ಕರ್ತೃವ್ಯದಲ್ಲಿ ಸೋಮಾರಿಯಾಗಿಯೂ ಸದಾ

ದುಃಖಪಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನಾಗಿಯೂ ಇತರರಿಗೆ ದೀರ್ಘ

ಕಾಲ ಅನರ್ಥವನ್ನು ಚಿಂತಿಸುವವನಾಗಿಯೂ ಇರುವವನು

"ತಾಮಸನು". "ಅಯುಕ್ತಃ ಪ್ರಾಕೃತಃ ಸ್ತಬ್ಧಃ ಶಠೋ

ನೈಷ್ಠತಿಕೋಽಸಃ | ವಿಪಾದೀ ದೀರ್ಘಸೂತ್ರೀ ಚ ಕರ್ತೃತಿ ತಾಮಸಃ

ಉಚ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೧೮-೨೮ | 4. ತಯಾರಿಸುವವನು.

5. ಸೃಷ್ಟಿಸುವವನು. 6. ರಚಿಸುವವನು, ನಿರ್ಮಿಸು

ವವನು. ತು ಕೃತ್ (ಕರಣ) ತಚ್ಛಿಲಾದಿಷು "ತೃನ್"

(೩-೨-೧೩೫) | 7. ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ

ಕರ್ತೃ ಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳವನು. ಇತರ ಕಾರಕಗಳಿಗೆ ಅಧೀನ

ನಲ್ಲದೆ ಅವುಗಳ ಮೂಲಕ ಕ್ರಿಯೆಯನ್ನು ನಡೆಸುವವನು

ಈ "ಕರ್ತೃ" ಪದವಾಚ್ಯನು. "ಸ್ವತನ್ತ್ರಃ ಕರ್ತೃತಿ" | ಕ್ರಿಯಾ

ಯಾಂ ಸ್ವಾತನ್ತ್ರ್ಯೇಣ ವಿವಕ್ಷಿತೋಽರ್ಥಃ ಕರ್ತೃತಿ ಸ್ಯಾತ್ | ನೈಯಾಯಿಕ

ರೀತ್ಯಾ "ಕ್ರಿಯಾನ್ಯುಕ್ತಕೃತಿಮಾನ್ ಕರ್ತೃತಿ" ಕಾರ್ಯೋತ್ಪಾದನೆಗೆ

ಅನುಕೂಲವಾದ ಕೃತಿಯುಳ್ಳವನು ಎಂದು ಈ "ಕರ್ತೃ"

ಪದವ ಅರ್ಥ. "ಚೇತ್ರಃ ತಥಾ ಪಚತಿ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಧಾತ್ವರ್ಥ

ವಾದ ತಂದುಲಪಚನಾನುಕೂಲಕೃತಿಗೆ ಅಶ್ರಯನಾದ

ಜೈತ್ರನು "ಕರ್ತೃತಿ" ಪದವಾಚ್ಯನು. "ಕರ್ತೃತಿ ಧೃತಚ್ಛಲಾನಾಂ

ಜತುಮಯಶರಣೋದೀಪನಃ ಸೋಽಭಿಮಾನೀ ಕೃಷ್ಣಾಕೇಶೋತ್ತರೀಯವ್ಯಪನ-

ಯಮಸ್ತು ಪಾಂಡವಾ ಯಸ್ಯ ದಾಸಾಃ" ವೇಣೀಂ ೫-೨೬ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ

"ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | ಕರ್ತೃ ಕರ್ತೃತ.

ಕರ್ತೃಗ ಕರ್ತೃಗ (ವಿಂ) ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವವನನ್ನು ಸೇರುವ,

ಯಜಮಾನನನ್ನು ಸೇರುವ. ಕರ್ತೃಗಂ ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ಲ

(ಗತೌ) "ಡ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೭) |

ಕರ್ತೃಗಾಮಿನ್ ಕರ್ತೃಗಾಮಿನ್ (ವಿಂ) "ಕರ್ತೃಗ" ಪದದ

ಅರ್ಥ. ಕರ್ತೃಗಂ ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಗಿಣಿಃ"

(೩-೨-೭೮) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | -ಗಾಮಿನಿ

-ಗಾಮಿನಿ.

ಕರ್ತೃಗುಪ್ತ ಕರ್ತೃಗುಪ್ತ (ನಂ) ಕರ್ತೃಪದವು ಗುಪ್ತವಾಗಿ

ರುವ (ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತೋರದಿರುವ) ವಾಕ್ಯ. "ವ್ಯಾಮೋಹಂ ತವ

ಮಿಹಿಂ ದುಃಖಮಿಹಿಂ ದುಃಖಮಿಹಿಂ ದುಃಖಮಿಹಿಂ ದುಃಖಮಿಹಿಂ

ಜಾನಂತಿ ವಿಚಕ್ಷಣಾಃ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ತಃ (ಶಿವಃ), ಇಃ (ಬ್ರಹ್ಮಾ) ಅಃ

(ವಿಷ್ಣುಃ) ಇವು ಮೂರೂ ಸೇರಿ ವ್ಯಾಃ ಎಂದಾಗಿರುವುದು.

ಇದು ಬಹುವಚನದಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಃ ಎಂದು ಶಿವ ಬ್ರಹ್ಮ ಮತ್ತು

ವಿಷ್ಣು ವಾಚಕವಾಗಿ ಇವರು ಮೂವರೂ ಮೋಹಾದಿ

ಗಳನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸಲಿ ಎಂದು ಅರ್ಥಕೊಡುವುದರಿಂದ

ಇಲ್ಲಿ "ವ್ಯಾಃ" ಎಂಬ ಕರ್ತೃಪದವು ಗುಪ್ತವಾಗಿರುವುದು.



**ಕರ್ತೃತಾ ಕರ್ತೃತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಜಮಾನತನ, ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವವನ ದೇವತೆ. ಕರ್ತು: ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)।  
"ಕರ್ತೃತಾ ತದ್ವಿಲಂಬಿತೋಭವದ್ವಿಭಜಿ ಕರಣೇ ಯತ್ವಿಜಿ" ಮಾಘಂ ೧೪-೧೯। "ತ್ವ:" ಕರ್ತೃತ್ವಮ್ ಕರ್ತೃತ್ವಮ್.

**ಕರ್ತೃಭಿಪ್ರಾಯ ಕರ್ತೃಭಿಪ್ರಾಯ** (ಪುಂ) 1. ಕರ್ತೃವಿನ ಆಶಯ. ಕರ್ತು: ಅಭಿಪ್ರಾಯ:। (ವಿಂ) 2. ಕಾರ್ಯಮಾಡುವವನನ್ನು ಸೇರುವ. ಕರ್ತೃರಮಭಿಪ್ರೇತಿ ಗಚ್ಛತಿ — ಅಭಿ + ಪ್ರ + ಇನ್ (ಗತೌ). "ಅನ್" (೩-೨-೧)। "ಸ್ವರಿತವಿತ: ಕರ್ತೃಭಿಪ್ರಾಯೇ ಕ್ರಿಯಾಫಲೇ" ಸಿಂ ಕೌಂ (೧-೩-೭೨)।

**ಕರ್ದ—ಕುತ್ಸಿತೇ** ಶಬ್ದೇ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) ಕರ್ದತಿ। ಚಕರ್ದೆ। ಅಕರ್ದೆತ್। ಕರ್ಕಶಶಬ್ದಮಾಡು, ಕಾಗೆಯಂತೆ ಒರಟಾಗಿ ಕೂಗು.

**ಕರ್ದ ಕರ್ದ** (ಪುಂ) ಕೆಸರು, ಒದ್ದೆಯ ಮಣ್ಣು, ತೇವದ ಮಣ್ಣು. ಕರ್ದ (ಕುತ್ಸಿತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।

**ಕರ್ದಟ ಕರ್ದಟ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಸರು, ತೇವದ ಮಣ್ಣು. 2. ತಾವರೆಯ ಗೆಡ್ಡೆ. 3. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯುವ ಹುಲ್ಲು ಜೊಂಡು ಮುಂತಾದುವು.

**ಕರ್ದನ ಕರ್ದನ** (ನಂ) ಹೊಟ್ಟೆಯೊಳಗಿನ ಶಬ್ದ. ಕರ್ದ (ಕುತ್ಸಿತೇ ಶಬ್ದೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ಕರ್ದಮ ಕರ್ದಮ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಸರು, ತೇವದ ಮಣ್ಣು, ಒದ್ದೆ ಮಣ್ಣು. ಕರ್ದ (ಕುತ್ಸಿತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಅಮ:" (೩ಂ ೪-೮೪)।  
"ಸರಿತ: ಕುರ್ವತೀ ಗಾಧಾ: ಪೃಶ್ಚಾಶ್ಯಾನಕರ್ದಮಾನ್" ರಘುಂ ೪-೨೪। 2. ಪಾಪ. ಕರ್ದ ಕರಂ "ಅಮ:"। 3. ಬ್ರಹ್ಮನು ಪ್ರಜಾಸೃಷ್ಟಿಗಾಗಿ ಸೃಷ್ಟಿಸಿದ ಪ್ರಜಾಪತಿಗಳೆಲ್ಲಾಬ್ಬ, ದೇವಹೂತಿಯ ಪತಿ. "ಪ್ರಜಾ: ಸೃಜೇತಿ ಭಗವಾನ್ ಕರ್ದಮೋ ಬ್ರಹ್ಮಣೋದಿತ:। ಸರಸ್ವತೀಯಾಂ ತಪಸ್ತೇಪೇ ಸಹಸ್ರಾಣಾಂ ಸಾಮಾ ದಶ" ಭಾಗಂ ೩-೨೧-೬। "ವೇದೇಷು ಕರ್ದಮ: ಶಬ್ದ: ಛಾಯಾಃ ವರ್ತತೇ ಸ್ಫುಟಮ್। ಬಭೂವ ಕರ್ದಮಾಡಾಲ: ಕರ್ದಮಸ್ತೇನ ಕೀರ್ತಿತ:" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ। 4. ಛಾಯೆ, ನೆರಳು. (ನಂ) 5. ಮಾಂಸ. ಇದನ್ನು ತಿನ್ನುವುದರಿಂದ ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಶಬ್ದವಾಗುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. (ವಿಂ) 6. ಕೆಸರಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕರ್ದಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭)।

**ಕರ್ದಮಕ ಕರ್ದಮಕ** (ಪುಂ) ಕೆಸರಿನ ಗಡ್ಡೆಯಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯುವ ಬತ್ತ. ಕರ್ದಮೇ ಕಾಯತಿ — ಕೇ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ:" (೩-೨-೪)।  
"ಲೋಹಿತಶಾಲಿಕಲಮಕರ್ದಮಕಪಾಂಡುಕಸುಗಂಧಕಶಕುನಾಹುತಪುಷ್ಪಾ-  
ಂಡಕಪುಂಡರೀಕಮಹಾಶಾಲಿಶೀತಭೀರುಕರೋಧ್ರಪುಷ್ಪಕದೀರ್ಘಶೂಕ.....  
.....ಪ್ರಭೃತಯ: ಶಾಲಯ:" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬-೪।

**ಕರ್ದಮಾಡಕ ಕರ್ದಮಾಡಕ** (ಪುಂ) ಕೆಸದ ಗುಂಡಿ, ತಿಪ್ಪೆ ಗುಂಡಿ. ಕರ್ದಮ ಇವ ಆಟೋ ಗತಿರವ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೫೪)।

**ಕರ್ದಮಿತ ಕರ್ದಮಿತ** (ವಿಂ) ಕೆಸರಾಗಿದ್ದು. ತೇವದ ಮಣ್ಣಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕರ್ದಮೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತಚ್" (೪-೨-೩೬)।

**ಕರ್ದಮಿನಿ ಕರ್ದಮಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಸರಿನ ಪ್ರದೇಶ, ತೇವದ ಮಣ್ಣಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇಶ. ಕರ್ದಮಾನಾಂ ದೇಶ: "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೩೫)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)।

**ಕರ್ದಟ ಕರ್ದಟ** (ಪುಂ) 1. ಜೂಲುಬಟ್ಟೆ, ಚಿಂದಿ ಬಟ್ಟೆ, ಹರುಕಲು ಬಟ್ಟೆ. ಕ್ (ವಿಧೇಪೇ) "ವಿಚ್" (೩-೨-೭೫)। ಕರ್ ಚಾಸೌ ಪಡಶ್ಚ। 2. ಮಲಿನವಸ್ತ್ರ. ಕೊಳೆಬಟ್ಟೆ. 3. ಕರವಸ್ತ್ರ, ಮುಖದ ಬೆವರು ಮುಂತಾದುವನ್ನು ಒರಸಿ ಕೊಳ್ಳುವ ಸಣ್ಣ ಚೌಕ. ಕರಸ್ಯ ಪಟ:। ಪೃಷಂ।

**ಕರ್ದಟಕ ಕರ್ದಟಕ** (ವಿಂ) ಹರುಕಲು ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ಉಟ್ಟಿರುವ ತಿರುಕ ಮೊದಲಾದವರು. ಕರ್ದಟೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೫)।

**ಕರ್ದಟಿನ್ ಕರ್ದಟಿನ್** (ವಿಂ) ಹರುಕಲು ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ಉಟ್ಟಿರುವ ತಿರುಕ ಮೊದಲಾದವರು. ಕರ್ದಟೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)।

**ಕರ್ದಣ ಕರ್ದಣ** (ಪುಂ) ಕಬ್ಬಿಣದ ಒಂದು ಆಯುಧ, ಉದ್ದದ ಹಿಡಿಯ ಈಟಿ, ಭರ್ಜಿ. ಕೃಪ್ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ಚಾಪಚಕ್ರಕಣಪಕರ್ದಣಪ್ರಾಸಪದ್ವಿಶಮುಸಲ-  
ತೋಮರಾದಿಪ್ರಹರಣಜಾಲಮುಪಯುಜ್ಜಾನ:" ದಶಕುಂ।

**ಕರ್ದರ ಕರ್ದರ** (ಪುಂ) 1. ಕಪಾಲ, ತಲೆಬುರುಡೆ, ತಲೆ ಯೆಲುಬಿನ ಚಿಪ್ಪೆ. ಕೃಪ್ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) "ಅರ:" ಬಾಹುಂ ಲತ್ವಾ-  
ಭಾವಶ್ಚ। 2. ಆಮಯ ಚಿಪ್ಪೆ. "ನ್ಯತ್ಕರ್ಪರಕ್ರಮ-  
ಕಂಪವಿಗಲದ್ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡಖಂಡಸ್ಥಿತಿ" ಮಾಲತೀಂ ೪-೨೨। 3. ಕಪಾಲ, ಘಟದ ಅರ್ಧಭಾಗ. 4. ಒಂದು ಆಯುಧ. "ಕರ್ದರ: ಸ್ಯಾತ್ಕಪಾಲೇ ಚ ಶಸ್ತ್ರಭೇದಕಡಾಹಯೋ:" ಮೇದಿಂ। 5. ಅತ್ತಿಮರ, ಉದುಂಬರ ವೃಕ್ಷ. 6. ತೈಲವನ್ನು ಕುದಿ ಯಿಸುವ ಪಾತ್ರೆ. 7. ಬಾಣಲೆ. 8. ಹುರಿಯುವ ಓಡು. 9. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. "ಕರ್ದರೋಽನೌ ಕಪಾಲೇಽಪಿ" ವೈಜಂ।

**ಕರ್ದರಾಂಶ ಕರ್ದರಾಂಶ** (ಪುಂ) ಕಪಾಲದ ಒಂದು ಭಾಗ, ಮಡಕೆಯ ಒಂದುಚೂರು, ಬಕ್ಕರೆ.

**ಕರ್ದರಾಲ ಕರ್ದರಾಲ** (ಪುಂ) ಬೆಟ್ಟಗೋಣೆಮರ. ಕರ್ದರ-  
ಮಲತಿ — ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ) "ಅನ್" (೩-೨-೧)।

**ಕರ್ದರೀ ಕರ್ದರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೈಲುತುತ್ತ.

**ಕರ್ದಾಸ ಕರ್ದಾಸ** (ವಿಂ) ಹತ್ತಿಯ ಗಿಡ. ತು ಕೃನ್ (ಕರಣೇ) "ಪಾಸ:" (೩ಂ ೪-೫೫)। ಕರ್ದಾಸಮ್। ಕರ್ದಾಸೀ।



ಕರ್ಪುರ ಕರ್ಪುರ (ಪುಂ) ಕರ್ಪುರ, ಒಂದು ಸುಗಂಧ ವಸ್ತು. ಕೃಷ್ಣ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) "ಋ:" (ಛಂ ೪-೯೦)। "ಸಖಿಮುಖಾಯೋತ್ಸಜತೀಮಪಾಙ್ಗಾತ್ಕರ್ಪುರಕಸ್ತೂರಿಕಯೋ: ಪ್ರವಾಹಮ್" ನೈಷಂ ೧೦-೧೦೨।

ಕರ್ಪುರಕ ಕರ್ಪುರಕ (ಪುಂ) ಕರ್ಪುರ. ಕರ್ಪುರ ಇವ ಕಾಯತಿ। ಕರ್ಪುರತೆಲ ಕರ್ಪುರತೆಲ (ನಂ) ಕರ್ಪುರದ ಎಣ್ಣೆ, ಹಿಮತೆಲ.

ಕರ್ಪುರದ್ವೀಪ ಕರ್ಪುರದ್ವೀಪ (ಪುಂ) ಜಂಬೂದ್ವೀಪಾಂತರ್ಗತ ವಾದ ಒಂದು ಚಿಕ್ಕ ದ್ವೀಪ. "ಕರ್ಪುರದ್ವೀಪಸ್ಯ ರಾಜಚಕ್ರವರ್ತಿನೋ ಹಿರಣ್ಯಗರ್ಭಸ್ಯ ರಾಜಹಂಸಸ್ಯಾನುಚರೋಽಹಮ್" ಹಿತಂ।

ಕರ್ಪುರಮಂಜರೀ ಕರ್ಪುರಮಂಜರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕರ್ಪುರ ಸೇನನ ಮಗಳು. 2. ಕರ್ಪುರಕೇಳಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಹಂಸ ಪಕ್ಷಿಯ ಮಗಳು. "ಅಹಂ ಪುರಾ ಶೂದ್ರಕಸ್ಯ ರಾಜ: ಕ್ರಿಡಾಸರಸಿ ಕರ್ಪುರಕೇಲಿನಾಮ್ನೋ ರಾಜಹಂಸಸ್ಯ ಪುತ್ರಾ ಕರ್ಪುರಮಂಜರೀ ಸಹಾನು-ರಾಗವಾನಭವಮ್" ಹಿತಂ ೩। 3. ರಾಜಶೇಖರಕೃತವಾದ ಒಂದು ರೂಪಕ.

ಕರ್ವ-ಗತೌ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ)। ಕರ್ವತಿ। ಚಕರ್ವ। ಅಕರ್ವತಿ। ಹೋಗು, ಚಲಿಸು, ನಡೆ.

ಕರ್ವ ಕರ್ವು (ಪುಂ) 1. ಚಿತ್ರವರ್ಣ. ಕರ್ವ (ಗತೌ) "ಋ:" ಬಾಹುಂ। (ವಿಂ) 2. ಚಿತ್ರವರ್ಣವುಳ್ಳ, ನಾನಾಬಣ್ಣ ಗಳುಳ್ಳ. "ಅನಂತಾ ರಮಯಸ್ತಸ್ಯ ದೀಪವದ: ಸ್ಥಿತೌ ಹೃದಿ। ಸಿತಾಸಿತಾ: ಕರ್ವುನೀಲಾ: ಕಪಿಲಾ: ಪೀತಲೋಹಿತಾ:" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೧೬೬।

ಕರ್ವುದಾರ ಕರ್ವುದಾರ (ಪುಂ) 1. ಕೋವಿದಾರ ವೃಕ್ಷ, ಕೆಂಗಾಂಬಾಳದ ಗಿಡ. 2. ನಾಗಸಂಖ್ಯೆ ಗಿಡ. ಕರ್ವು: ಸನ್ ದಾರಯತಿ ಮಲಮ್। "ಪ್ರಿಯಾಲಕರ್ವುದಾರಸೂರ್ಯವಲ್ಲಿತ್ರಪುಸೇವಾರ್ಕ-ಕರ್ಕಾಣ್ಕುಷ್ಮಾಂಡಪ್ರಮೃತೀನಾಂ ತೇಲಾನಿ ಮಧುರಾಣಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸ್ತಂ ೪೫-೧೨೦। 3. ಕರಿಯ ಹೂವಿನ ಗೋರಂಜಿ.

ಕರ್ವುದಾರಕ ಕರ್ವುದಾರಕ (ಪುಂ) ಶ್ಲೇಷಾತ್ಕವೃಕ್ಷ, ಚಿಕ್ಕ ಮರ. ಕರ್ವು: ಸನ್ ದಾರಯತಿ ಕಫಮ್ - ದ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಕರ್ಬುರ ಕರ್ಬುರ (ಪುಂ) 1. ಚಿತ್ರವರ್ಣ. ಕರ್ಬು (ಗತೌ) "ಋ:" (ಛಂ ೧-೪೧)। 2. ಪಾಪ. 3. ರಾಕ್ಷಸ. 4. ದತ್ತಾಂ ಗಿಡ. (ನಂ) 5. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 6. ಜಲ, ನೀರು. "ಕರ್ಬುರಂ ಕಾಶ್ವನೇ ಜಲೇ। ಕರ್ಬುರೋ ರಾಕ್ಷಸೇ ಪಾಪೇ ಶಬಲೇ" ಹೇಮಂ। (ವಿಂ) 7. ಚಿತ್ರವರ್ಣದ, ನಾನಾ ಬಣ್ಣದ. "ತದಿದಂ ಕಣಶೋ ವಿಕೀರ್ಯತೇ ಪವನೇರ್ಹಸ್ಮ ಕಪೋತ-ಕರ್ಬುರಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೨೭।

ಕರ್ಬುರಕ ಕರ್ಬುರಕ (ವಿಂ) ಚಿತ್ರವರ್ಣದ, ನಾನಾ ಬಣ್ಣದ. ಕರ್ಬುರಿತ ಕರ್ಬುರಿತ (ವಿಂ) ನಾನಾ ವರ್ಣವಾಗಿರುವ, ಚಿತ್ರವರ್ಣವಾಗಿರುವ. ಕರ್ಬುರೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತತ್" (೪-೨-೩೬)।

ಕರ್ಬುರೀ ಕರ್ಬುರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ. 2. ನಾರಂಜೇಳಿ ಗಿಡ.

ಕರ್ಮಕರ ಕರ್ಮಕರ (ಪುಂ) 1. ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ತೊಂಡಗಿಡ. 3. ಕುರಟಗೆ ಗಿಡ. "ಅಥ ಕರ್ಮಕರೋ ಭೃತ್ಯೇ ವೇತನಾಜೀವಿನಿ ತ್ರಿಷು। ಕೀನಾಶೋ ಪುಮಿ ಮೂರ್ವಿಯಾಂ ಬಿಂಬಕಾಯಾಮಪಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ। (ವಿಂ) 4. ಕೂಲಿ ಗಾಗಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು, ಕೂಲಿ ಕೆಲಸದವನು. ಕರ್ಮ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣೆ) "ಠ:" (೩-೨-೨೨)। 5. ಕೆಲಸ ಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು, ಸೇವಕ, ಆಳು. ತಾಂಕ್ಷೀಯೇ "ಠ:" (೩-೨-೨೦)। "ಯಸ್ತವೇಹ ಸವನೇ ನ ಭೂಪತಿ: ಕರ್ಮ ಕರ್ಮಕರವತ್ ಕರಿಸ್ಯತಿ" ಮಾಘಂ ೧೪-೧೬। ಸ್ತ್ರೀಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಕರೀ - ಕರೀ. ದಾಸಿ, ಸೇವಕ.

ಕರ್ಮಕರ್ತೃ ಕರ್ಮಕರ್ತೃ (ಪುಂ) ಸೌಕರ್ಯಾತಿಶಯ ತೋರಿ ಸಲು ಕರ್ತೃಭಾವ ಹೊಂದಿದ ಕರ್ಮ. ಕರ್ಮೇವ ಕರ್ತಾ। ಕ್ರಿಯಾಸೌಕರ್ಯಾತಿಶಯ ಹೇಳಲು ಧಾತೂಪಾತ್ತವ್ಯಾಪಾರಕ್ಕೆ ಆಶ್ರಯನಾದ ಕರ್ತೃವಿನ ವ್ಯಾಪಾರವನ್ನು ಹೇಳಿದೆಯೇ ಕರ್ಮನಿಷ್ಠ ವ್ಯಾಪಾರವೇ ಫಲಾನುಕೂಲವ್ಯಾಪಾರವಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಲ್ಲಿ ಕರ್ಮಕಾರಕವೂ ಕರ್ತೃಸಂಜ್ಞೆ ಹೊಂದು ವುದು. "ಕ್ರಿಯಮಾಣಂ ತು ಯತ್ಕರ್ಮ ಸ್ವಯಮೇವ ಪ್ರಸಿದ್ಧಯತಿ। ಸುಕರೇ: ಸ್ವಗುಣೇ: ಕರ್ತೃ: ಕರ್ಮಕರ್ತೇತಿ ತದ್ವಿದು:"। "ಅದನ: ಪಚ್ಯತೇ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಸೌಕರ್ಯಾತಿಶಯ ಸೂಚಿಸಲು ಕರ್ತೃ ವ್ಯಾಪಾರವಿವಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದೆ ಓದನವು ತಾನಾಗಿಯೇ ಬೇಯು ವುದು ಎಂದರ್ಥವು. "ಭಿಷ್ಯತೇ ಕಾಠಮ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪುರುಷನ (ಕೊಡಲಿಯ ಏಟು ಮುಂತಾದ) ವ್ಯಾಪಾರ ವಿವಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದೆ ಕಾಷ್ಠವು ತಾನಾಗಿಯೇ ತುಂಡಾಗುವುದು ಎಂದರ್ಥವು. ಇಲ್ಲಿ ಕರ್ಮಗಳಿಗೇ ಕರ್ತೃತ್ವವನ್ನು ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ ಕರ್ಮಕರ್ತರಿ ಪ್ರಯೋಗ.

ಕರ್ಮಕಾಂಡ ಕರ್ಮಕಾಂಡ (ನಂ) ಯಜ್ಞಯಾಗಾದಿಗಳನ್ನು ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಅನುಷ್ಠಿಸಬೇಕೆಂದು ಹೇಳುವ ವೇದದ ಒಂದು ಭಾಗ, ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ವೇದಭಾಗ. ಕರ್ಮಣಾಂ ಕರ್ತವ್ಯತಾ ಪ್ರತಿಪಾದಕಂ ಕಾಂಡಮ್। "ತತ: ಕರ್ಮಕಾಂಡಸಹಚರೀ ಮೀಮಾಂಸಾ ಮಯಾ ದೃಷ್ಟಾ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೬।

ಕರ್ಮಕಾರ ಕರ್ಮಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಮಾರ, ಕಬ್ಬಿಣದ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು, ಒಬ್ಬ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು. (ವಿಂ) 2.



ಕೂಲಿಯಿಲ್ಲದೆ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು, ಅದೇ ಕಸಬಿನವನು.  
ಕರ್ಮ ಕರೋತಿ ವೇತನೇನ ವಿನಾ - ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಅನ್"  
(3-2-1)। "ಕರ್ಮಕಾರಸ್ತು ತತ್ಕರ್ಮಃ" ಅಮಂ। "ಪ್ವಲ್"  
(3-1-133)। -ಕಾರಕ: -ಕಾರಕ:

**ಕರ್ಮಕಾರಕ ಕರ್ಮಕಾರಕ** (ನಂ) "ಕರ್ಮನ್" ಪದದ  
8 ನೆಯ ಅರ್ಥ.

**ಕರ್ಮಕಾರಿನ್ ಕರ್ಮಕಾರಿನ್** (ವಿಂ) ಕೆಲಸ ಮಾಡುವ  
ಸ್ವಭಾವದ. ಕರ್ಮ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಗಿರಿ:"  
(3-2-96)। "ತಾನ್ವಿದಿತ್ವಾ ಸುಚರಿತೈರ್ಗೃಹಸ್ಥತರ್ಮಕಾರಿಭಿ:"  
ಮನುಂ 9-261। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-4)।  
-ಕಾರಿಣಿ -ಕಾರಿಣಿ.

**ಕರ್ಮಕಾಲ ಕರ್ಮಕಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಲಸದ ಸಮಯ, ಕೆಲಸ  
ಮಾಡಲು ಕ್ರಮಪ್ರವಾದ ಕಾಲ. 2. ಯಾಗಾದಿ ಕರ್ಮ  
ಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ ಕಾಲ.

**ಕರ್ಮಕಾಲಕ ಕರ್ಮಕಾಲಕ** (ಪುಂ) ರಜಕ, ಅಗಸರವನು.  
ಕರ್ಮಣಾ ಕಾಲಕ ಇವ। "ಚಂದ್ರಿಲೋ ನಕ್ಷತ್ರಕೃತ್ ರಜಕ:  
ಕರ್ಮಕಾಲಕ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಕರ್ಮಕ್ಷಮ ಕರ್ಮಕ್ಷಮ** (ವಿಂ) ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಥ  
ನಾದವನು, ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಚತುರನಾದವನು, ಕೆಲಸ ಮಾಡ  
ಬಲ್ಲವನು. ಕರ್ಮಣಿ ಕ್ಷಮ:। "ಆತ್ಮಕರ್ಮಕ್ಷಮಂ ದೇಹಂ ಕ್ಷಾತ್ರೋ  
ಧರ್ಮ ಇವಾಶ್ರಿತ:" ರಘುಂ 1-131.

**ಕರ್ಮಕ್ಷೇತ್ರ ಕರ್ಮಕ್ಷೇತ್ರ** (ನಂ) 1. ಕಾರ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ, ಕೆಲಸ  
ಮಾಡಬೇಕಾದ ಜಾಗ. 2. ಯಾಗಾದಿ ಕರ್ಮಾಚರಣೆಗೆ  
ಯೋಗ್ಯವಾದ ಭೂಮಿ, ಭಾರತವರ್ಷ. ಕರ್ಮಣಾಂ ಕ್ರಿಯಾನ್ತು-  
ಷ್ಠಾನಾನಾಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್। "ಭಾರತಮೇವ ವರ್ಷಂ ಕರ್ಮಕ್ಷೇತ್ರಮನ್ಯಾನ್ಯಷ್ಟ  
ವರ್ಷಾಣಿ ಸ್ವರ್ಗಿಣಾಂ ಪುಣ್ಯಶೇಷಭೋಗಸ್ಥಾನಾನಿ ಭೂಮಾನಿ ಸ್ವರ್ಗ-  
ಪದಾನಿ" ಭಾಗಂ 5-13-111.

**ಕರ್ಮಗುಪ್ತ ಕರ್ಮಗುಪ್ತ** (ನಂ) ಕರ್ಮಪದವು ಗುಪ್ತವಾಗಿ  
ರುವ (ಸ್ವಪ್ನವಾಗಿ ತೋರದಿರುವ) ವಾಕ್ಯ. "ಎಹಿ ಹೇ ರಮಣಿ  
ಪಶ್ಯ ಕೌತುಕಂ ಭೂಲಿಖಿತರತನುಂ ದಿಗಂಬರಮ್। ಸಾಪಿ ತದ್ವದನ-  
ಪಕ್ಷಜಂ ಪಪೌ ಭ್ರಾತರಕ್ತಮಪಿ ಕಿಂ ನ ಬುಧ್ಯತೇ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಕೌ-  
ತುಕಂ ಬಾಲಕಂ ಪಶ್ಯ ಎಂದು ಅನ್ವಯ. ಕೌತುಕ ಪದದಲ್ಲಿ  
ಕರ್ಮಪದವು ಗುಪ್ತವಾಗಿರುವುದು.

**ಕರ್ಮಗ್ರಂಥಿ ಕರ್ಮಗ್ರಂಥಿ** (ಪುಂ) ಸಂಸಾರ ಬಂಧನಕ್ಕೆ ಕಾರಣ  
ವಾದ ಪುಣ್ಯಪಾಪ ರೂಪವಾದ ಕರ್ಮವನ್ನು ಋತುಮಾಡುವ  
ಪೂರ್ವವಾಸನೆ. ಕರ್ಮಣಾಂ ಗ್ರಂಥಿ: ಬಂಧನಮಸ್ಮಾತ್।

**ಕರ್ಮಚಂಡಾಲ ಕರ್ಮಚಂಡಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ಯದಿಂದ  
ಚಂಡಾಲನಂತಿರುವವನು, ಚಂಡಾಲ ಜನ್ಮ ಪಡೆಯದಿದ್ದರೂ

ಮಾಡುವ ಕ್ರೂರಕರ್ಮಗಳಿಂದ ಚಂಡಾಲನಂತಾಗಿರು  
ವವನು. ಕರ್ಮಣಾ ಚಂಡಾಲ ಇವ। "ಅಪೂರ್ವಕರ್ಮಚಂಡಾಲಮಯಿ  
ಮುಖೇ ವಿಮುಕ್ತ ಮಾಮ್" ತಂ ರಾಂ 1-46। "ಅಸುಯಕ:  
ಪಿಶುನಶ್ಚ ಕೃತಘ್ನೋ ದೀರ್ಘರೋಪಕ:" ಚತ್ವಾರ: ಕರ್ಮಚಂಡಾಲಾ:  
ಜನ್ಮತಶ್ಚಾಪಿ ಪಶ್ಚಮ:" ಎಂದು ಕರ್ಮಚಂಡಾಲರು ನಾಲ್ಕು  
ಬಗೆ. 2. ರಾಮ. "ಉತ್ಪಿಷ್ಠ ಗಮ್ಯತಾಂ ರಾಹೋ ತ್ಯಜ್ಯತಾಂ  
ಚಂದ್ರಸಂಕ್ಷಮ:" ಕರ್ಮಚಂಡಾಲ ಯೋಗ್ಯಂ ಮಮ ಪಾಪಕ್ಷಯಂ ಕುರು"।

**ಕರ್ಮಚಾರಿನ್ ಕರ್ಮಚಾರಿನ್** (ವಿಂ) ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿರತ  
ನಾಗಿರುವವನು, ಕೆಲಸ ಮಾಡುತ್ತಿರುವವನು. ಕರ್ಮಣಿ  
ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಗಿರಿ:" (3-2-96)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಡೀಪ್" (4-1-4)। -ಚಾರಿಣಿ -ಚಾರಿಣಿ.

**ಕರ್ಮಚೇಷ್ಠಾ ಕರ್ಮಚೇಷ್ಠಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನಕ್ಕಾಗಿ  
ಮಾಡುವ ವ್ಯಾಪಾರ, ಕರ್ಮಾಚರಣೆಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಕೆಲಸ.  
ಕರ್ಮಣಿ ಚೇಷ್ಠಾ। ಒಂದು ಕಾರ್ಯವಾಗಬೇಕಾದರೆ ನಾಲ್ಕು  
ಹಂತಗಳುಂಟು. (1) ಆತ್ಮನಿಗೆ ಕೆಲಸ ಮಾಡಬೇಕೆಂಬ ಇಚ್ಛೆ.  
(2) ಇಚ್ಛೆಯಿಂದ ಕೃತಿ. (3) ಕೃತಿಯಿಂದ ಚೇಷ್ಠೆ. (4) ಚೇಷ್ಠೆ  
ಯಿಂದ ಕೃಯೆ. "ಕರ್ಮಚೇಷ್ಠಾಸ್ವಹ: ಕೃಷ್ಣ: ಶುಕ್ಲ: ಸ್ವಪ್ನಾಯ  
ಶರೀರೀ" ಮನುಂ 1-66।

**ಕರ್ಮಚೋದನಾ ಕರ್ಮಚೋದನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕರ್ಮಾಚರಣೆ  
ಗಾಗಿ ಪ್ರೇರಿಸುವ ವಿಧಿವಾಕ್ಯ. ಕರ್ಮಣಿ ಕರ್ಮಾಚರಣಿ ಚೋದನಾ  
ವಿಧಿ: ಪ್ರವರ್ತಕ ವಚನಮ್। 2. ಕರ್ಮಪ್ರವೃತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣ  
ವಾದ ಜ್ಞಾನ ಜ್ಞೇಯ ಪರಿಜ್ಞಾತ್ಯಗಳೆಂಬ ಮೂರರಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಕೋಮಾದಿ ಕರ್ಮವಿಧಿ. ಕರ್ತವ್ಯ ಕರ್ಮ  
ವಿಷಯಜ್ಞಾನ, ಕರ್ತವ್ಯಕರ್ಮ (ಜ್ಞೇಯ), ಆ ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ  
ಆಶ್ರಯ (ಪರಿಜ್ಞಾತಾ) ಈ ಮೂರೂ ಕರ್ಮಪ್ರವೃತ್ತಿಗೆ  
ಕಾರಣ. "ಜ್ಞಾನಂ ಜ್ಞೇಯಂ ಪರಿಜ್ಞಾತಾ ತ್ರಿವಿಧಾ ಕರ್ಮಚೋದನಾ"  
ಗೀತಾ 18-18।

**ಕರ್ಮಜ ಕರ್ಮಜ** (ಪುಂ) 1. ಸ್ವರ್ಗ. 2. ನರಕ. ಪುಣ್ಯ  
ಪಾಪಗಳಿಂದ ಸ್ವರ್ಗ ಮತ್ತು ನರಕಪ್ರಾಪ್ತಿಯಾಗುವುದು.  
3. ವಟವೃಕ್ಷ, ಅಲಿದಮರ. 4. ಕಲಿಯುಗ. 5. ಕ್ರಿಯೆ  
ಯಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಸಂಯೋಗ ಮತ್ತು ವಿಭಾಗ.  
(ವಿಂ) 6. ಪುಣ್ಯಪಾಪ ಕರ್ಮಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದ (ಸುಖ  
ದುಃಖಾದಿಗಳಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ) ಜನ್ಮಾಂತರ ಪ್ರಾಪ್ತಿ. ಕರ್ಮಣಿ  
ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತವಿ) "ಜ:" (3-2-96)।  
ಮನೋವಾಕ್ಯಾಯಗಳೆಂಬ ತ್ರಿಕರಣಗಳಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ  
ಪುಣ್ಯಪಾಪಕರ್ಮಗಳಿಂದ ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಮಧ್ಯಮ  
ಮತ್ತು ಅಧಮರೂಪವಾದ ಮೂರು ಜನ್ಮಾಂತರ  
ಪ್ರಾಪ್ತಿಯಾಗುವುದು. "ಶುಭಾಶುಭಫಲಂ ಕರ್ಮ ಮನೋವಾದೇಹ-



ಸಂಭವಮ್ | ಕರ್ಮಜಾ ಗತಯೋ ನೃಣಾಮುಕ್ತಮಾಧಮಮಧ್ಯಮಾಃ | ಮನುಂ ೧೨-೩ | ದೇವತ್ವವು ಉತ್ತಮಗತಿ. ಮನುಷ್ಯತ್ವವು ಮಧ್ಯಮಗತಿ. ಸ್ಥಾವರತ್ವ ಮತ್ತು ತೀರ್ಯತ್ವಗಳು ಅಧಮ ಗತಿ. ಈ ಮೂರು ವಿಧ ಜನ್ಮಾಂತರ ಪ್ರಾಪ್ತಿಗೂ ಹತ್ತು ವಿಧ ಮಾನಸವಾಚಿಕ ಮತ್ತು ಶಾರೀರ ಕರ್ಮಗಳೇ ಕಾರಣ. **ಹತ್ತುವಿಧ ಸಾಪಕರ್ಮಗಳು:** (1) ಪರ ದ್ರವ್ಯವನ್ನು ಅನ್ಯಾಯದಿಂದ ಕಸಿದುಕೊಳ್ಳುವ ಯೋಚನೆ. (2) ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯಾದಿ ನಿಷಿದ್ಧ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಚಿಂತೆ. (3) ನಾಸ್ತಿಕತ್ವ ಬುದ್ಧಿ ಈ ಮೂರೂ ಮಾನಸಕರ್ಮಗಳು. "ಪರದ್ರವ್ಯ-ಛವಿಮಿಥ್ಯಾಂ ಮನಸಾನಿಷ್ಟಚಿಂತನಮ್ | ವಿತಥಾಮಿನಿವೇಶಶ್ಚ ತ್ರಿವಿಧಂ ಕರ್ಮ ಮಾನಸಮ್" ಮನುಂ ೧೨-೫ | (4) ಅಪ್ರಿಯ ವಾದ ಮಾಡುವುದು. (5) ಸುಳ್ಳು ಹೇಳುವುದು. (6) ಬಾಧಿ ಹೇಳುವುದು. (7) ಅಸಂಗತವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ಈ ನಾಲ್ಕೂ ವಾಚಿಕಕರ್ಮಗಳು. "ಪಾರುಷ್ಯ-ಮನುತಂ ಚೈವ ಪೈಶುನ್ಯಂ ಚಾಪಿ ಸರ್ವಶಃ | ಅಸಂಬದ್ಧಪ್ರಲಾಪಶ್ಚ ವಾಡ್ಮಯಂ ಸ್ಯಾನ್ವಚತುರ್ವಿಧಮ್" ಮನುಂ ೧೨-೬ | (8) ತನಗೆ ಕೊಡದಿರುವುದನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. (9) ವಿಹಿತವಲ್ಲದೆ ಹಿಂಸಿಸುವುದು. ಮತ್ತು (10) ಪರಸ್ತ್ರೀಗಮನ ಈ ಮೂರೂ ಶಾರೀರಕರ್ಮಗಳು. "ಅದತ್ತಾನಾಮುಪಾದಾನಂ ಹಿಸಾ ಚೈವಾವಿಧಾನತಃ | ಪರದಾರೋಪಸೇವಾ ಚ ಶಾರೀರಂ ತ್ರಿವಿಧಂ ಸ್ಮೃತಮ್" ಮನುಂ ೧೨-೭ | ಈ ಹತ್ತುವಿಧಪಾಪಕರ್ಮಗಳಿಂದ ಜನ್ಮಾಂತರಪ್ರಾಪ್ತಿಯೂ ಅವಶ್ಯನುಗುಣವಾದ ದುಃಖಾದಿಗಳೂ ಏರ್ಪಡುತ್ತವೆ. 7. ಜನ್ಮಾಂತರದ ದುಷ್ಟಕರ್ಮಗಳಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನವಾಗುವ ವ್ಯಾಧಿಗಳು. ಇವು ಕೇವಲ ಅನುಭವ ಅಥವಾ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತದಿಂದ ನಾಶವಾಗಬೇಕು. "ಕರ್ಮಜಾಃ ಕಥಿತಾಃ ಕೇचित್ ದೋಷಜಾಃ ಸಂತಿ ಚಾಪರೇ | ಕರ್ಮದೋಷೋದ್ಭವಾಶ್ಚಾನ್ಯೇ ವ್ಯಾಧಯಃ ತ್ರಿವಿಧಾಃ ಸ್ಮೃತಾಃ" ಭಾವಪ್ರಂ | ತತ್ರ ಕರ್ಮಜಾ ವ್ಯಾಧಯಃ ಯತ್ ಪ್ರಾಕ್ತನಂ ದುಷ್ಟಕರ್ಮಭವಂ ಕೇವಲ-ಭೋಗನಾಶಯಂ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತನಾಶಯಂ ವಾ | 8. ನಿಷಿದ್ಧ ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ (ದೋಷ). "ಯಥಾ ಜಾತಫಲೋ ವಹ್ನಿರ್ದಹತೀದ್ರಾಣಿಪಿ ದ್ರುಮಾನ್ | ತಥಾ ದಹತಿ ವೇದಜಃ ಕರ್ಮಜಂ ದೋಷಮಾತ್ಮನಃ" ಮನುಂ ೧೨-೧೦ | 9. ನಿತ್ಯ ನೈಮಿತ್ತಿಕಾದಿ ಕರ್ಮಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದ (ಯಜ್ಞಗಳು). "ಕರ್ಮಜಾನ್ ವಿಹಿ-ತಾನ್ ಸರ್ವಾನ್ ಏವಂ ಜ್ಞಾತ್ವಾ ವಿಮೋಕ್ಷಯೇ" ಗೀತಾ ೪-೩೨ |

**ಕರ್ಮಜಿತ್ ಕರ್ಮಜಿತ್** (ಪುಂ) 1. ಜರಾಸಂಧನ ವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. "ಸುನಕ್ಷತ್ರಃ ಸುನಕ್ಷತ್ರಾತ್ ಬೃಹತ್ಸೇನೋಽಪಿ ಕರ್ಮಜಿತ್" ಭಾಗಂ ೯-೨೨-೪೭ | (ವಿಂ) 2. ಕರ್ಮದ ಫಲವಾದ ಪಾಪಪುಣ್ಯಗಳನ್ನು ಜಯಿಸಿದವನು (ಜ್ಞಾನಿ). ಕರ್ಮಾಣಿ ಕರ್ಮಫಲಾನಿ ಜಿತವಾನ್ |

**ಕರ್ಮ ಕರ್ಮ** (ವಿಂ) ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದವನು, ಆರಂಭಿಸಿದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸುವುದರಲ್ಲಿ ಶೂರನಾದವನು. ಕರ್ಮಣಿ ಘಟತೇ—“ಅಠಕ್” (೪-೨-೩೪) |

**ಕರ್ಮಣ್ಯ ಕರ್ಮಣ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಕುಶಲ, ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಪ್ರವೀಣ. ಕರ್ಮಣಿ ಸಾಧು: “ಯತ್” (೪-೪-೯೮) | (ವಿಂ) 2. ಕಾರ್ಯದಿಂದ ಶೋಭಿಸುವ (ಶೌರ್ಯ). ಸಂಪಾದ: ಸಂಪತ್ತಿ: ಶೋಭಾ—ಸಾಸ್ತಿಯಾಸ್ತಿ, ಕರ್ಮಣಾ ಸಂಪಾದಿ “ಯತ್” (೪-೧-೧೦೦) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಯಾ—ಶೌ. ವೇತನ, ಕೂಲಿ, ಬಾಡಿಗೆ. “ಕರ್ಮಣ್ಯಾ ತು ವಿಧಾಭೃತ್ಯಾಭೃತಯೋ ಭರ್ಮ ವೇತನಮ್” ಅಮಂ |

**ಕರ್ಮಣ್ಯತಾ ಕರ್ಮಣ್ಯತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿಪುಣತನ, ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವುದರಲ್ಲಿ ಜಾಣತನ. ಕರ್ಮಣ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯) | “ತವ:” —ತವಮ್ —ತವಮ್.

**ಕರ್ಮಣ್ಯಭುಜ್ ಕರ್ಮಣ್ಯಭುಜ್** (ವಿಂ) ಕೂಲಿಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು, ಕೂಲಿ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು. ಕರ್ಮಣ್ಯಾ ವೇತನಂ ಭುಜ್ವತೇ —ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ:) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬) |

**ಕರ್ಮತ್ಯಾಗ ಕರ್ಮತ್ಯಾಗ** (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಮ ಸಂನ್ಯಾಸ, ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಆಜರಿಸದಿರುವಿಕೆ, ಪ್ರಾಪಂಚಿಕ ವ್ಯವಹಾರಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟಿರುವಿಕೆ. ಕರ್ಮಣಾಂ ತ್ಯಾಗಃ | 2. ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ ಕರ್ಮಾಚರಣೆ. ಈ ತ್ಯಾಗವು ತಾಮಸ, ರಾಜಸ ಮತ್ತು ಸಾತ್ವಿಕಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. (1) ಅವಶ್ಯ ಕರ್ತವ್ಯವಾದ ನಿತ್ಯ ನೈಮಿತ್ತಿಕ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಅಜ್ಞಾನದಿಂದ ಬಿಟ್ಟುಬಿಡುವುದು **ತಾಮಸತ್ಯಾಗವು**. “ನಿಯತಸ್ಯ ತು ಸಂನ್ಯಾಸಃ ಕರ್ಮಣೋ ನೋಪಪದ್ಯತೇ | ಮೋಹಾತ್ತಸ್ಯ ಪರಿತ್ಯಾಗಃ ತಾಮಸಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ” ಗೀತಾ ೧೮-೭ | (2) ಅವಶ್ಯ ಕರ್ತವ್ಯವೆಂದು ತಿಳಿದೂ ತನ್ನ ದೇಹಕ್ಕೆ ಶ್ರಮವುಂಟಾಗುವುದೆಂಬ ಭಯದಿಂದ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟುಬಿಡುವುದು **ರಾಜಸತ್ಯಾಗವು**. ಈ ತ್ಯಾಗದಿಂದ ಯಾವ ಫಲವೂ ಲಭಿಸಲಾರದು. “ದುಃಖಮಿತ್ಯೇವ ಯತ್ಕರ್ಮ ಕಾರ್ಯವೇಶ-ಭಯಾತ್ಯಜೇತ್ | ಸ ಕೃತ್ವಾ ರಾಜಸಂ ತ್ಯಾಗಂ ನೈವ ತ್ಯಾಗಫಲಂ ಲಭೇತ್” ಗೀತಾ ೧೮-೮ | (3) ಅವಶ್ಯಕರ್ತವ್ಯವೆಂದು ತಿಳಿದು ನಿತ್ಯನೈಮಿತ್ತಿಕಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಕರ್ತೃತ್ವಾಭಿಮಾನವನ್ನು ತೊರೆದು ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದೆ ಆಜರಿಸಿದರೆ ಅಂತಹ ತ್ಯಾಗವು **ಸಾತ್ವಿಕತ್ವವೆನಿಸುವುದು**. “ಕಾರ್ಯಮಿತ್ಯೇವ ಯತ್ಕರ್ಮ ನಿಯತಂ ಕ್ರಿಯತೇಜುನಃ | ಸಂಗಂ ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ ಫಲಂ ಚೈವ ಸ ತ್ಯಾಗಃ ಸಾತ್ವಿಕೋ ಮತಃ” ಗೀತಾ ೧೮-೯ |

**ಕರ್ಮದೃಷ್ಟ ಕರ್ಮದೃಷ್ಟ** (ವಿಂ) ಮಾಡುವ ಕೆಲಸದಿಂದ ಕೆಟ್ಟಿರುವ, ನಡತೆಯಿಂದ ಕೆಟ್ಟಿರುವ, ನೀತಿಬಾಹಿರ. ಕರ್ಮಣಾ ದೃಷ್ಟಃ |



**ಕರ್ಮದೇವ ಕರ್ಮದೇವ** (ಪುಂ) ಕರ್ಮದಿಂದ ದೇವತ್ವವನ್ನು ಹೊಂದಿದ ದೇವತೆ. ಕರ್ಮಣಾ ದೇವಃ. ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರಾದಿ ಶ್ರೌತ ಕರ್ಮಗಳಿಂದ ದೇವಲೋಕವನ್ನು ಹೊಂದಿದವರು ಕರ್ಮ ದೇವತೆಗಳು. “ಸ ಏಕಃ ಕರ್ಮದೇವನಾಂ ದೇವಾನಾಮಾನಂದಃ. | ಯೇ ಕರ್ಮಣಾ ದೇವಾನಪಿಯಂತಿ. | ಶ್ರೋತ್ರಿಯಸ್ಯ ಚಾಕಾಮಹತಸ್ಯ | ತೇ ಯೇ ಶತಂ ಕರ್ಮದೇವನಾಂ ದೇವಾನಾಮಾನಂದಾಃ. | ಸ ಏಕೋ ದೇವಾನಾಮಾನಂದಃ” ತೈಂಽ೦೦ |

**ಕರ್ಮದೋಷ ಕರ್ಮದೋಷ** (ಪುಂ) 1. ಹಿಂಸಾಕೃತ್ಯರೂಪವಾದ ಪಾಪ, ಶರೀರ ಕರ್ಮದಿಂದಂಟಾದ ದೋಷ. ಕರ್ಮಣಾ ದೋಷಃ. “ಸನ್ಯಸ್ಯ ಸರ್ವಕರ್ಮಾಣಿ ಕರ್ಮದೋಷಾನಪಾನುದನ್ | ನಿಯತೋ ವೇದಮನ್ಯಸ್ಯ ಪುತ್ರೈಶ್ವಯೇ ಸುಖಂ ವಸೇತ್” ಮನುಂ ೬-೯೫ | 2. ಕರ್ತವ್ಯ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ದೋಷ. ಕರ್ಮಣಿ ದೋಷಃ. 3. ವಿಹಿತ ಕಾರ್ಯದ ಅನಾಚರಣೆ ನಿಷಿದ್ಧ ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದ ದೋಷ. “ಅವೇಕ್ಷೇತ ಗತೀನೃಣಾಂ ಕರ್ಮದೋಷಸಮುದ್ಭವಾಃ | ನಿರಯೇ ಚೈವ ಪತನಂ ಯಾತನಾಶ್ಚ ಯಮಕ್ಷಯೇ” ಮನುಂ ೬-೬೧ | 4. ಸಕಲ ಕರ್ಮಗಳಿಗೂ ಕಾರಣವಾದ ಅಜ್ಞಾನ ರೂಪವಾದ ದೋಷ. ಕರ್ಮಹೇತುಃ ದೋಷಃ |

**ಕರ್ಮಧಾರಯ ಕರ್ಮಧಾರಯ** (ಪುಂ) ಸಮಾನಾರ್ಥವುಳ್ಳ ಎರಡು ಪದಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ತತ್ಪುರುಷ ಸಮಾಸದ ಒಂದು ಭೇದ, ಒಂದೇ ಅರ್ಥವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ ಎರಡು ಪದಗಳ ತತ್ಪುರುಷಸಮಾಸ. “ತತ್ಪುರುಷಃ ಸಮಾನಾಧಿಕರಣಃ ಕರ್ಮಧಾರಯಃ” (೧-೨-೪೨) | “ನೀಲೋತ್ಪಲಮ್” ಎಂಬಲ್ಲಿ ನೀಲ ಮತ್ತು ಉತ್ಪಲ ಪದಗಳೆರಡೂ ನೈದಿಲೆಯಿಂದನ್ನೇ ಬೋಧಿಸುವುದರಿಂದ ಸಮಾನಾರ್ಥಕವಾದ ಈ ಎರಡು ಪದಗಳಿಗೂ ಬರುವ ತತ್ಪುರುಷ ಸಮಾಸವು ಕರ್ಮಧಾರಯವು. ನೀಲವೂ ನೈದಿಲೆಯೂ ಒಂದೇ ಆಗಿದ್ದು ಎರಡು ಪದಗಳೂ ಇದನ್ನು ಬೋಧಿಸುವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ ಕರ್ಮಧಾರಯ.

**ಕರ್ಮನ್ ಕರ್ಮನ್** (ನಂ) 1. ಕಾರ್ಯ. ಕೆಲಸ, 2. ಉದ್ಯೋಗ, ಕಸಬು. ಕ್ರಿಯತೇ—ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) ಕರ್ಮಂ “ಮನಿನ್” (೩ಂ ೪-೧೪೪) | “ಅಪ್ಯಪ್ರಸಿದ್ಧಿಂ ಯಶಸೇ ಹಿ ಪುಂಸಾಮನನ್ಯಸಾಧಾರಣಮೇವ ಕರ್ಮ” ಕುಮಾಂ ೩-೧೯ | “ತೀಕ್ಷ್ಣಾ ನಾಸ್ತುತದಾ ಬುದ್ಧಿಃ ಕರ್ಮ ಶಾಂತಂ ಪ್ರತಾಪವತ್ | ನೋಪತಾಪಿ ಮನಃ ಸೋಘಮ್ ವಾಗೇಕಾ ವಾಗ್ಮಿನಃ ಸತಃ” ಮಾಘಂ ೨-೧೦೯ | 3. ಮಾಡುವಿಕೆ, ಆಚರಿಸುವಿಕೆ. ಡು ಕೃತ್ ಭಾವೇ “ಮನಿನ್” (೩ಂ ೪-೧೪೪) | 4. ಕರ್ತವ್ಯ, ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯ. 5. ಮನುಷ್ಯನು ಮಾಡುವ ಪುಣ್ಯಪಾಪಹೇತುವಾದ ಕಾರ್ಯ, ಸಂಸಾರಬಂಧನಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ಕರ್ಮ. “ಪರ್ಯಮುತ್ ಸ್ವಲ್ಪ ಕರೈರ್ವಿಜರಾಜಃ ಕರ್ಮ ಕಃ ಸ್ವಕೃತಮತ್ರ ನ ಭುಂಕ್ತೇ” ನೈಷಂ ೫-೬ | “ಯೇ ಮೇ ಮತಮಿದಂ

ನಿತ್ಯಮನುತಿಷ್ಠಂತಿ ಮಾನವಾಃ | ಶ್ರದ್ಧಾವಂತೋಽನುಯಂತೋ ಮುಚ್ಯಂತೇ ತೇಽಪಿ ಕರ್ಮಭಿಃ” ಗೀತಾ ೩-೩೧ | ಈ ಕರ್ಮವು ಮಾನಸ, ಪಾಪಕ ಮತ್ತು ಶಾರೀರಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಕರ್ಮಜ” ಪದದ 6ನೆಯ ಅರ್ಥ ನೋಡಿ.] ಇದು ಸಂಚಿತ, ಪ್ರಾರಬ್ಧ ಮತ್ತು ಆಗಾಮಿಗಳೆಂದು ಮತ್ತೆ ಮೂರು ವಿಧ. (1) ಅನೇಕ ಜನ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ ಪುಣ್ಯಪಾಪ ಕರ್ಮಗಳ ರಾಶಿಯು ಸಂಚಿತವು. (2) ಹಾಗೆ ಸಂಚಿತವಾಗಿರುವ ಕರ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಈಗ ಅನುಭವಿಸಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿರುವ ಕರ್ಮವು ಪ್ರಾರಬ್ಧ ಕರ್ಮ. (3) ಮುಂದೆ ಮಾಡಬಹುದಾದ ಕರ್ಮಗಳು ಆಗಾಮಿ. “ನಮಸ್ಯಾಮೋ ದೇವಾನನ್ತು ಹತವಿಧೇಸ್ತೇಽಪಿ ವಶಗಾ ವಿಧಿವನ್ದ್ಯಃ ಸೋಽಪಿ ಪ್ರತಿನಿಯತಕರ್ಮಕಫಲದಃ | ಫಲಂ ಕರ್ಮಯತಂ ಯದಿ ಕಿಮಪರೇಃ ಕಿಂಚ ವಿಧಿನಾ ನಮಸ್ತತ್ಕರ್ಮಮ್ಯೋ ವಿಧಿರಪಿ ನ ಯೇಮ್ಯಃ ಪ್ರಭವತಿ” ಭರ್ತುಂ ೧-೯೧ | 6. ಶಾಸ್ತ್ರ ವಿಹಿತವಾದ ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರಾದಿ ಕರ್ಮ. ಈ ಕರ್ಮವು ನಿತ್ಯ, ನೈಮಿತ್ತಿಕ ಮತ್ತು ಕಾಮ್ಯಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. (1) ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಆಚರಿಸದಿದ್ದರೆ ದೋಷವೆನಿಸಲ್ಪಡುವ “ಸಂಧ್ಯಾ ವಂದನ” ಮೊದಲಾದುದು ನಿತ್ಯಕರ್ಮ. (2) “ಜಾತೇಽಪಿ” ಮುಂತಾದ ಯಾಗಗಳು ನೈಮಿತ್ತಿಕ ಕರ್ಮ. (3) ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ “ಪುತ್ರ ಕಾಮೇಷ್ಟಿ” ಮುಂತಾದುದು ಕಾಮ್ಯಕರ್ಮ. ಈ ಕರ್ಮವು ಸಾತ್ವಿಕ, ರಾಜಸ ಮತ್ತು ತಾಮಸಗಳೆಂದು ಮತ್ತೆ ಮೂರು ವಿಧ. (1) ಅಭಿಮಾನ, ರಾಗ, ದ್ವೇಷಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದೆ ಮಾಡುವ ಕರ್ಮವು ಸಾತ್ವಿಕ. “ನಿಯತಂ ಸಂಗರಹಿತಮರಾಗದ್ವೇಷತಃ ಕೃತಮ್ | ಅಫಲಪ್ರೇಪ್ಸುನಾ ಕರ್ಮ ಯತ್ತತ್ಸಾತ್ವಿಕಮುಚ್ಯತೇ” ಗೀತಾ ೧೮-೨೩ | (2) ಬದಲೆ ಆಯಾಸಕರವಾದ, ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆ ಮತ್ತು ಅಭಿಮಾನದಿಂದ ಕೂಡಿ ಮಾಡುವ ಕರ್ಮವು “ರಾಜಸ” ವೆನಿಸುವುದು. “ಯತ್ ಕಾಮೇಪ್ಸುನಾ ಕರ್ಮ ಸಾಹಕ್ಷಾರೇಣ ವಾ ಪುನಃ | ಕ್ರಿಯತೇ ಬಹುಲಾಘಾಸಂ ತದ್ರಾಜಸಮುದಾಹೃತಮ್” ಗೀತಾ ೧೮-೨೪ | (3) ಮುಂದೆ ಸಂಭವಿಸಬಹುದಾದ ಕಷ್ಟಗಳು. ನಾಶ, ಹಿಂಸೆ, ತನ್ನ ಶಕ್ತಿ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಯಾವುದನ್ನೂ ಲೆಕ್ಕಿಸದೆ ತಾನೇ ಕರ್ತೃವೆಂಬ ಅಜ್ಞಾನದಿಂದ ಆರಂಭಿಸಲ್ಪಡುವ ಕರ್ಮವು “ತಾಮಸ” ವೆನಿಸುವುದು. “ಅನುಬಂಧಂ ಕ್ಷಯಂ ಹಿಸಾಮನವೇಕ್ಷ್ಯ ಚ ಪೌರುಷಮ್ | ಮೋಹಾದಾರಮ್ಯತೇ ಕರ್ಮ ಯತ್ತತ್ತಾಮಸಮುಚ್ಯತೇ” ಗೀತಾ ೧೮-೨೫ | 7. ವೈಶೇಷಿಕ ಮತದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಕ್ರಿಯಾರೂಪವಾದ ಪದಾರ್ಥ. ಇದು (1) ಉತ್ಕೇಷಣಮ್, (2) ಅವಕ್ಷೇಪಣಮ್, (3) ಆಕುಚ್ಛನಮ್, (4) ಪ್ರಸಾರಣಮ್ ಮತ್ತು (5) ಗಮನಮ್ ಎಂದು ಐದು ವಿಧ. “ಉತ್ಕೇಷಣಂ ತಥಾವಕ್ಷೇಪಣಮಾಕುಚ್ಛನಂ ತಥಾ | ಪ್ರಸಾರಣಂ ಚ ಗಮನಂ



ಕರ್ಮಣೀತಾನಿ ಪಶ್ಚ ಚ" ಖಾಪಂ 1. 8. ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಆರು ವಿಧ ಕಾರಕಗಳಲ್ಲೊಂದು, ಕರ್ತೃವಿನ (ಮಾಡುವವನ) ವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ ಹೊಂದುವ ಫಲಕ್ಕೆ ಆಶ್ರಯಭೂತವಾದ ಒಂದು ಕಾರಕ. ಇದು ನಿರ್ವರ್ತನಂ ವಿಕಾರ್ಯಮ್ ಪ್ರಾಪ್ಯಮ್ ಮತ್ತು ಅನೀಪ್ಸಿತಮ್ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. (1) "ಘಟಂ ಕರೋತಿ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಘಟವು ನಿರ್ವರ್ತಕರ್ಮ. (2) ವಿಕಾರ್ಯವು ಪ್ರಕೃತ್ಯುಚ್ಛೇದಕಮ್ ಮತ್ತು ಪ್ರಕೃತೇಗುಣಾಂತರಾಧಾಯಕಮ್ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. (1) "ಕಾಣಕಂ ಭಸ್ಮಂ ಕರೋತಿ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪ್ರಕೃತ್ಯುಚ್ಛೇದಕರ್ಮ. (2) "ಸುವರ್ಣಂ ಕೃಷ್ಣಂ ಕರೋತಿ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಗುಣಾಂತರಾಧಾಯಕರ್ಮ. (3) "ದೇವದತ್ತಃ ಶಾಲಾಂ ಗಚ್ಛತಿ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಶಾಲೆಯು ಪ್ರಾಪ್ಯಕರ್ಮವು. (4) ಅನೀಪ್ಸಿತವು ದ್ವೇಷಮ್ ಮತ್ತು ತದಾಸೀನಮ್ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. (1) "ವಿಷಂ ಭುಂಜತೇ". (2) "ಗ್ರಾಮಂ ಗಚ್ಛನ್ ತೃಣಂ ಸ್ಪೃಶತಿ".

9. ವರ್ಣಾಶ್ರಮಾನುಗುಣವಾಗಿ ಆಯಾ ವರ್ಣದವರ ಸ್ವಭಾವಜನ್ಯಗುಣಗಳಿಂದ ಭಿನ್ನವಾದ ಅವರವರ ಕರ್ಮಗಳು. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣಕ್ಷತ್ರಿಯವಿಶಾಂ ಶೂದ್ರಾಣಾಂ ಚ ಪರಂತಪಃ ಕರ್ಮಿಣಿ ಪ್ರವಿಭಕ್ತಾನಿ ಸ್ವಭಾವಪ್ರಬಂಧಗುಣಃ" ಗೀತಾ ೧೮-೪೧. (1) ಬಾಹ್ಯ ಮತ್ತು ಆಂತರಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹ, ತಪಸ್ಸು (ಕಾಯಕ್ಕೆ), ಶಾಸ್ತ್ರೀಯಕರ್ಮಯೋಗ್ಯವಾದ ಶೌಚ, ಇತರರಿಂದ ತೊಂದರೆಯೇರ್ಪಟ್ಟರೂ ಸಹಿಸುತ್ತ, ಆರ್ಜವ (ಕಪಟವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ), ಜ್ಞಾನ, ವಿಜ್ಞಾನ (ಪರಶ್ಚತ್ವ ವಿಷಯಕ ವಿಶೇಷಜ್ಞಾನ), ಮೇದೋಕ್ತವಾದ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಸತ್ಯಪಂಜಿ ನಿಶ್ಚಯ, ಇವೆಲ್ಲವೂ ಸ್ವಭಾವಜನ್ಯವಾದ ಬ್ರಹ್ಮಗುಣ ಕರ್ಮಗಳು. "ಶಮೋ ದಮಸ್ತಪಶೌಚಂ ಚಾಂತಿರಾರ್ಜವಮೇವ ಚ | ಜ್ಞಾನಂ ವಿಜ್ಞಾನಮಾಸ್ತಿಕಯಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಕರ್ಮ ಸ್ವಭಾವಜಮ್" ಗೀತಾ ೧೮-೪೨. (2) ಪರಾಕ್ರಮ (ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಹೆದರದೆ ಪ್ರವೇಶಿಸುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ), ಇತರರಿಂದ ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಡದಿರುವಿಕೆ, ಧೈರ್ಯ, ಸಕಲ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನೂ ಸಾಧಿಸುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಸರಿಯದಿರುವುದು, ದಾನ, ಸಕಲರನ್ನೂ ಅಡಗಿಸುವ ಶಕ್ತಿ ಇವೆಲ್ಲವೂ ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಗೆ ಸ್ವಭಾವಜನ್ಯವಾದ ಕರ್ಮಗಳು. "ಶೌರೈರ್ದೇವೈಶ್ಚಾಪಿ ಕೃತಿದೀಕ್ಷಯೈಶ್ಚಾಪಿ ಪಲಾಯನಮ್ | ದಾನಮೀಶ್ವರಭಾವಶ್ಚ ಕ್ಷಾತ್ರ ಕರ್ಮ ಸ್ವಭಾವಜಮ್" ಗೀತಾ ೧೮-೪೩. (3) ಬೇಸಾಯ, ಗೋಸಂರಕ್ಷಣೆ, ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯರೂಪವಾದ ವ್ಯಾಪಾರ ಇವೆಲ್ಲವೂ ವೈಶ್ಯನಿಗೆ ಸ್ವಭಾವಜನ್ಯವಾದ ಕರ್ಮಗಳು. "ಕೃಷಿಗೋರಥವಾಣಿಜ್ಯಂ ವೈಶ್ಯ ಕರ್ಮ ಸ್ವಭಾವಜಮ್" ಗೀತಾ ೧೮-೪೪. (4) ಈ ಮೂರು ವರ್ಣದವರ ಪರಿಚಯೆಯು ಶೂದ್ರನ ಸ್ವಭಾವಜನ್ಯ ಕರ್ಮವು. "ಪರಿ-

ಚರ್ಯಾತ್ಮಕಂ ಕರ್ಮ ಶೂದ್ರಸ್ಯಾಪಿ ಸ್ವಭಾವಜಮ್" ಗೀತಾ ೧೮-೪೪. "ಸ್ವೇ ಸ್ವೇ ಕರ್ಮಣ್ಯಭಿರತಃ ಸಂಸಿದ್ಧಿಂ ಲಭತೇ ನರಃ" ಗೀತಾ ೧೮-೪೫. 10. (ಜ್ಯೋತಿಷದಲ್ಲಿ) ಜನ್ಮಲಗ್ನದಿಂದ ಹತ್ತು ನೆಯ ಸ್ಥಾನ. "ದಶಮೋ ಮಾನ ಆಜ್ಞಾಪಿ ಕರಸ್ಥಾನಮಿತಿ ಸ್ಮೃತಃ | ವೃದ್ಧಿಃ ಕರ್ಮಾಭಿಧಾನಂ ಚ ವಜ್ರೀ ಸಂಕ್ಷಯಃ ಉಚ್ಯತೇ" ಮುಂ ದಿಂ. 11. ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ನಡೆಯಬೇಕಾದ ಮೂಡತ (ಹದಿನಾರು) ಕರ್ಮಗಳು. (1) ಗರ್ಭಾಧಾನ, (2) ಪುಂಸವನ, (3) ಸೀಮಂತ, (4) ಜಾತಕರ್ಮ, (5) ನಾಮಕರಣ, (6) ನಿಷ್ಕ್ರಮಣ, (7) ಅನ್ನಪ್ರಾಶನ, (8) ಚೌಲ, (9) ಉಪನಯನ, (10-13) ವ್ರತಚತುಷ್ಟಯ (ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯ, ಸೌಮ್ಯ, ಆಗ್ನೇಯ ಮತ್ತು ಪೃಶ್ನದೇವ), (14) ಸ್ನಾನ, (15) ಉದ್ವಾಹ ಮತ್ತು (16) ಅಂತ್ಯೇಷ್ಟಿ.

**ಕರ್ಮನಿರ್ಹರಣ ಕರ್ಮನಿರ್ಹರಣ (ನಂ)** ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವಿಕೆ, ಪಾಪಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತಾದಿಗಳಿಂದ ಕಡಮೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಕರ್ಮಣಾಂ ನಿರ್ಹರಣಮ್—ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). -ನಿರ್ಹರಿ: -ನಿರ್ಹರಃ. ಭಾವೇ "ಘತ್" (೩-೩-೧೮).

**ಕರ್ಮನಿಷ್ಠ ಕರ್ಮನಿಷ್ಠ (ವಿಂ)** 1. ಯಾಗಾದಿ ಕರ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತನಾದ, ಯಾಗಾದಿ ಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದ. ಕರ್ಮಣಿ ನಿಷ್ಠಾ ಯಸ್ಯ | "ಜ್ಞಾನನಿಷ್ಠಾ ದ್ವಿಜಾಃ ಕೇಚಿತ್ತಪೋನಿಷ್ಠಾಸ್ತಥಾಪರೇ | ತಪಃಸ್ವಾಧ್ಯಾಯನಿಷ್ಠಾಶ್ಚ ಕರ್ಮನಿಷ್ಠಾಸ್ತಥಾಪರೇ" ಮನು ೩-೧೩೪. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಿಷ್ಠಾ -ನಿಷ್ಠಾ. ಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿ, ಯಾಗಾದಿಕರ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ನಿರತನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಕರ್ಮಸು ನಿಷ್ಠಾ |

**ಕರ್ಮಂದ ಕರ್ಮಂದ (ಪುಂ)** ಭಿಕ್ಷುಸೂತ್ರಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಮುನಿ.

**ಕರ್ಮಂದಿನ್ ಕರ್ಮಂದಿನ್ (ಪುಂ)** ಭಿಕ್ಷು, ಸಂನ್ಯಾಸಿ. ಕರ್ಮಂದೇನ ಪ್ರೋಕ್ತಮಪೀತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೩-೧೧೨).

**ಕರ್ಮನಾಸ ಕರ್ಮನಾಸ (ಪುಂ)** 1. ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸದೆ ಬಿಡುವಿಕೆ. ಕರ್ಮಸಂನ್ಯಾಸ. 2. ಕರ್ಮಫಲತ್ಯಾಗ, ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದೆ ಈಶ್ವರಾರ್ಪಣಬುದ್ಧಿಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಕರ್ಮಗಳ ಫಲತ್ಯಾಗ.

**ಕರ್ಮಪಥ ಕರ್ಮಪಥ (ಪುಂ)** 1. ಪುಣ್ಯ ಮತ್ತು ಪಾಪಕರ್ಮಗಳ ಮಾರ್ಗ. ಕರ್ಮಣಾಂ ಮಾನಸಾದೀನಾಂ ಪಥಾಃ "ಅಃ" (೫-೪-೭೪). ಈ ಕರ್ಮಮಾರ್ಗಗಳು ಹತ್ತು ವಿಧ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಕರ್ಮಜ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ಕರ್ಮಲಬ್ಧವಾದ (1) ಅರ್ಚಾರಾದಿ ಮತ್ತು (2) ಧೂಮಾದಿ ಮಾರ್ಗಗಳು. (1) "ಅಗ್ನಿರ್ಯೋತಿರಹಃ ಶುಕ್ಲಃ ಪಿಷ್ಪಾಸಾ ಉತ್ತರಾಯಣಮ್ |



ತತ್ರ ಪ್ರಯಾತಾ ಗಚ್ಛಂತಿ ಬ್ರಹ್ಮ ಬ್ರಹ್ಮವಿದೋ ಜನಾಃ" ।  
 (2) ಧೂಮೋ ರಾತ್ರಿಸ್ತಥಾ ಕೃಷ್ಣಃ ಷಣ್ಮಾಸಾ ದಕ್ಷಿಣಾಯನಮ್ ।  
 ತತ್ರ ಚಾಂದ್ರಮಸಂ ಜ್ಯೋತಿಯೋಗಿ ಪ್ರಾಪ್ಯ ನಿವರ್ತತೆ " ಗೀತಾ ೮-೨೪, ೨೫ ।

**ಕರ್ಮಪ್ರವಚನೋಪ ಕರ್ಮಪ್ರವಚನೋಪ (೨೦) (ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ)** ನಿಪಾತಗಳಿಗೆ ಹೇಳಿರುವ ಒಂದು ಸಂಜ್ಞೆ. ಇವುಗಳ ಯೋಗವಿದ್ದಲ್ಲಿ ದ್ವಿತೀಯಾ ಪಂಚಮೀ ಮತ್ತು ಸಪ್ತಮೀ ವಿಭಕ್ತಿಗಳು ಬರುವುವು.

ಈ ಕೆಳಗಿನ ನಿಪಾತಗಳು, ಎದುರಿಗೆ ನಿರ್ದಿಷ್ಟವಾದ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ "ಕರ್ಮಪ್ರವಚನೋಪ" ಸಂಜ್ಞೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿ ಆಯಾ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುವು :

| ನಿಪಾತ     | ಅರ್ಥವಿಶೇಷ ಗಳಲ್ಲಿ                  | ಕಾರ್ಯ            | ಉದಾಹರಣೆ                                 |
|-----------|-----------------------------------|------------------|---|
| (1) ಅನು   | ಲಕ್ಷ್ಯಲಕ್ಷಣ (ಹೇತು ಹೇತು ಮತ್) ಭಾವ   | ದ್ವಿತೀಯಾ ವಿಭಕ್ತಿ | ಜಪಮನು ಪ್ರಾರ್ಥತು ।                       |
| "         | ತೃತೀಯಾರ್ಥ (ಸಹಾರ್ಥ)                | "                | ನದೀಮನ್ವವಸಿತಾ ಸೇನಾ ।                     |
| "         | ಅಪಕರ್ಷ                            | "                | ಅನು ಹರಿ ಸುರಾಃ ।                         |
| (2) ಉಪ    | ಉತ್ಕರ್ಷ                           | ಸಪ್ತಮೀ           | ಉಪ ಪರಾರ್ಥ ಹರೇ-ಗುಣಾಃ ।                   |
| "         | ಅಪಕರ್ಷ                            | ದ್ವಿತೀಯಾ         | ಉಪ ಹರಿ ಸುರಾಃ ।                          |
| (3) ಪ್ರತಿ | (1) ಜ್ಞಾಪ್ಯ                       | ದ್ವಿತೀಯಾ         | ವೃಕ್ಷಂ ಪ್ರತಿ ಪರಿ                        |
| (4) ಪರಿ   | ಜ್ಞಾಪಕ ಭಾವ                        |                  | ಅನು ವಾ ವಿಶ್ವೋ-ತತೇ ವಿಶ್ವತು ।             |
| (5) ಅನು   | ಸಂಬಂಧ.                            |                  | ಭಕ್ತೋ ವಿಷ್ಣುಂ ಪ್ರತಿ ಪರಿ ಅನು ವಾ ।        |
| "         | (2) ಪ್ರಕಾರ ವಿಶೇಷವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವಿಕೆ | "                | ಲಕ್ಷ್ಮೀಹರಿ ಪ್ರತಿ ಪರಿ ಅನು ವಾ ।           |
| "         | (3) ಭಾಗ (ಸ್ವಸ್ವಾಮಿ ಭಾವ)           | "                | ಲಕ್ಷ್ಮೀಹರಿ ಪ್ರತಿ ಪರಿ ಅನು ವಾ ।           |
| "         | (4) ವೀಕ್ಷಾ ಪತ್ವಾ ಭಾವ              |                  | ವೃಕ್ಷಂ ವೃಕ್ಷಂ ಪ್ರತಿ ಪರಿ ಅನು ವಾ ಸಿಂಹತಿ । |
| (6) ಅಭಿ   | ಭಾಗ ಹೊರತು ಮೇಲಿನ (ಮೂರು) ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ | ದ್ವಿತೀಯಾ         | ಹರಿಮಭಿವರ್ತತೆ ।                          |
| "         | "                                 | "                | ಭಕ್ತೋ ಹರಿಮಭಿ ।                          |
| "         | ಪತ್ವಾ ಭಾವ                         |                  | ದೇವಂ ದೇವಮಭಿ ಸಿಂಹತಿ ।                    |

| ನಿಪಾತ      | ಅರ್ಥವಿಶೇಷ ಗಳಲ್ಲಿ                | ಕಾರ್ಯ      | ಉದಾಹರಣೆ                        |
|------------|---------------------------------|------------|--------------------------------|
| (7) ಅಧಿ    | ಯಾವ ಅರ್ಥ ಅನು                    |            | ಕುತೋಽಪ್ಯಾ-ಗಚ್ಛತಿ ।             |
| (8) ಪರಿ    | ವಿಶೇಷವೂ ಇಲ್ಲದಿದ್ದಲ್ಲಿ.          | ದಾತ್ತಾ ಭಾವ | ಕುತಃ ಪರ್ಯಾ-ಗಚ್ಛತಿ ।            |
| (9) ಸು     | ಪೂಜಾರ್ಥ                         | ಪತ್ವಾ ಭಾವ  | ಸುಸಿಂಹಮ್ ।                     |
| (10) ಅತಿ   | (1) ಅತಿಕ್ರಮಣ ದ್ವಿತೀಯಾ           |            | ಅತಿ ದೇವಾನ್ ಕೃಷ್ಣಃ ।            |
| "          | (2) ಪೂಜಾರ್ಥ                     | "          | "                              |
| (11) ಅಪಿ   | (1) ಪದಾರ್ಥ ಪತ್ವಾ ಭಾವ            |            | ಸರ್ಪಿಷೋಽಪಿ ಸ್ಯಾತ್ ।            |
| "          | (2) ಸಂಭಾವನೆ (ಅತ್ಯುಕ್ತಿ)         | "          | ಅಪಿ ಸ್ತುತಾ-ದ್ವಿಷ್ಣುಮ್ ।        |
| "          | (3) ಅನ್ವಯ ಸರ್ಗ (ಕಾಮ ಚಾರಾನುಜ್ಞೆ) | "          | ಅಪಿ ಸ್ತುಹಿ ।                   |
| "          | (4) ನಿಂದೆ                       | "          | ಅಪಿ ಸ್ತುತಾ-ದ್ವಿಷ್ಣುಮ್ ।        |
| "          | (5) ಸಮುಚ್ಚಯ                     | "          | ಅಪಿ ಸಿಂಹ ಅಪಿ ಸ್ತುಹಿ ।          |
| (12) ಅಪ    | ವರ್ಜನ                           | ಪಂಚಮೀ      | ಅಪಿ ಹರೇಃ ಸಂಸಾರಃ ।              |
| (13) ಪರಿ   | "                               |            | ಪರಿ ಹರೇಃ ಸಂಸಾರಃ ।              |
| (14) ಆಙ್   | (1) ಮರ್ಯಾದೆ                     | "          | ಆ ಮುಕ್ತೇಃ ಸಂಸಾರಃ ।             |
| "          | (2) ಅಭಿವಿಧಿ                     | "          | ಆ ಬಾಲಾತ್ ಹರಿ-ಭಕ್ತಿಃ ।          |
| (15) ಪ್ರತಿ | (1) ಪ್ರಾತಿನಿಧ್ಯ                 | "          | ಪ್ರಶುನ್ಮನಃ ಕೃಷ್ಣಾತ್ ಪ್ರತಿ ।    |
| "          | (2) ಪ್ರತಿದಾನ                    | "          | ತೀಲೇಭ್ಯಃ ಪ್ರತಿ-ಯಚ್ಛತಿ ಮಾಷಾನ್ । |
| (16) ಅಧಿ   | ಸ್ವಸ್ವಾಮಿಭಾವ ಸಂಬಂಧ              | ಸಪ್ತಮೀ     | ಅಧಿ ಭುವಿ ರಾಮಃ ।                |

ಕೆಲವು ಕಡೆ ಈ ಕರ್ಮಪ್ರವಚನೋಪಸಂಜ್ಞೆ ಕಪದಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಪಸರ್ಗನಿಮಿತ್ತವಾದ ಪತ್ವವೂ ಗತಿಸಂಜ್ಞಾ ನಿಮಿತ್ತವಾದ ಅನುದಾತ್ತಸ್ವರವೂ ಬರುವುದಿಲ್ಲ.

**ಕರ್ಮಫಲ ಕರ್ಮಫಲ (೧೦)** ಶಾಸ್ತ್ರವಿಹಿತವಾದ ಪುಣ್ಯ ಮತ್ತು ನಿಷಿದ್ಧವಾದ ಪಾಪಕರ್ಮಗಳ ಪರಿಣಾಮವಾದ ಸುಖದುಃಖಗಳು, ಜನ್ಮಾಂತರದ ಕರ್ಮಗಳ ಫಲ. ಕರ್ಮಗಳ ವಿಹಿತಾನಾಂ ನಿಷಿದ್ಧಾನಾಂ ವಾ ಫಲಮ್ । ಶಾಸ್ತ್ರವಿಹಿತ ಕರ್ಮ



ಗಳನ್ನು ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ಮಾಡಿದರೆ ಅವಕ್ಕನುಗುಣವಾದ ಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿ. ಫಲಾಭಿಸಂಧಿಯಿಲ್ಲದೆ ಕೇವಲ ಆತ್ಮಶುದ್ಧಿಗಾಗಿ ಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನಮಾಡಿ ಸ್ಥಿರವಾದ ಆತ್ಮಾನುಭವರೂಪವಾದ ಸೌಖ್ಯವನ್ನು ಹೊಂದಬಹುದು. "ಯುಕ್ತಃ ಕರ್ಮಫಲಂ ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ ಶಾಂತಿಮಾಪ್ನೋತಿ ನೈಠಿಕೀಮ್ | ಅಯುಕ್ತಃ ಕಾಮಕಾರೇಣ ಫಲೇ ಸಕ್ತೋ ನಿಬಂಧಿತಃ" ಗೀತಾ ೫-೧೨ |

**ಕರ್ಮಬಂಧ ಕರ್ಮಬಂಧ (೪೦)** ಕರ್ಮದಿಂದಂಟಾಗುವ ಶರೀರ ಸಂಬಂಧ, ಸಂಸಾರ ಬಂಧನ. ಕರ್ಮಣಾ ಬಂಧಃ | "ಏಷಾ ತೇಽಭಿಹಿತಾ ಸಾಂಖ್ಯೇ ಬುದ್ಧಿಯೋಗೇ ತ್ವಿಮಾಂ ಶೃಣು | ಬುದ್ಧಯಾ ಯುಕ್ತೋ ಯಯಾ ಪಾರ್ಥ ಕರ್ಮಬಂಧಂ ಪ್ರಹಾಸ್ಯಸಿ" ಗೀತಾ ೨-೪೦ |

**ಕರ್ಮಬಂಧನ ಕರ್ಮಬಂಧನ (೧೦)** 1. ಕರ್ಮದಿಂದ ಉಂಟಾದ ಶರೀರಸಂಬಂಧ, ಸಂಸಾರಬಂಧನ. (ವಿಂ) ಕರ್ಮವೆಂಬ ಬಂಧನಸಾಧನದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪರಮ ಪುರುಷಪ್ರೀತ್ಯರ್ಥವಾದ ಕರ್ಮಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದ ಕರ್ಮವನ್ನು ಆಚರಿಸುವವನು ಸಂಸಾರಬಂಧನಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗುವನು. ಕರ್ಮೇ ಕರ್ಮಣಾ ವಾ ಬಂಧನಂ ಯಸ್ಯ | "ಯಜ್ಞಾರ್ಥಾತ್ಕರ್ಮಣೋಽನ್ಯತ್ರ ಲೋಕೋಽಯಂ ಕರ್ಮಬಂಧನಃ | ತದರ್ಥಂ ಕರ್ಮ ಕೌಂತೇಯ ಮುಕ್ತಸಂಜ್ಞಃ ಸಮಾಚರ" ಗೀತಾ ೩-೯ |

**ಕರ್ಮಭೂ ಕರ್ಮಭೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ವ್ಯವಸಾಯ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಭೂಮಿ. ಕರ್ಮಣಃ ಕೃಷಿಕರ್ಮಣೋ ಭೂಃ | 2. ಭಾರತ ವರ್ಷ.

**ಕರ್ಮಭೂಮಿ ಕರ್ಮಭೂಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕರ್ಮಗಳು ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ಭಾರತವರ್ಷ. ಕರ್ಮಣಃ ಯಜ್ಞಾದಿಕರ್ಮಣಃ ಭೂಮಿಃ | "ಉತ್ತರಂ ಯತಸಮುದ್ರಸ್ಯ ಹಿಮಾದ್ರೇಶ್ಚೈವ ದಕ್ಷಿಣಮ್ | ವರ್ಷ ತದ್ಭಾರತಂ ನಾಮ ಭಾರತೀ ಯತ್ರ ಸಂತತಿಃ | ನವಯೋಜನಸಾಹಸ್ರೋ ವಿस्तಾರೋಽಸ್ಯ ಮಹಾಮುನೇ | ಕರ್ಮಭೂಮಿರಿಯಂ ಸ್ವರ್ಗಮಪವರ್ಗಂ ಚ ಗಂಚ್ಛತಾಮ್" ವಿಷ್ಣುಪುಂ ೨-೩-೧, ೨ |

**ಕರ್ಮಭೋಗ ಕರ್ಮಭೋಗ (೪೦)** ಮಾಡಿದ ಕರ್ಮದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಸುಖದುಃಖಗಳ ಅನುಭವ.

**ಕರ್ಮಮೀಮಾಂಸಾ ಕರ್ಮಮೀಮಾಂಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕರ್ಮ ಕಾಂಡದ ಅರ್ಥವನ್ನು ನಿರ್ಣಯಿಸುವ ಮೀಮಾಂಸಾ ಶಾಸ್ತ್ರ. ಕರ್ಮಣಃ ಕರ್ಮಪ್ರತಿಪಾದಕವೇದಭಾಗಸ್ಯ ಮೀಮಾಂಸಾ ವಿಚಾರಃ | [ಎವರಕ್ಕ "ಮೀಮಾಂಸಾ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕರ್ಮವಾಸನಾ ಕರ್ಮವಾಸನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮುಂದು ಮುಂದಿನ ಜನ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಪುಣ್ಯಪಾಪಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡಿಸುವ ಹಿಂದಿನ ಜನ್ಮಗಳಲ್ಲಿನ ಅನುಭವದ ಒಂದು ಸಂಸ್ಕಾರ.

**ಕರ್ಮಯುಗ ಕರ್ಮಯುಗ (೧೦)** ಹಿಂಸೆಯೇ ಪ್ರಧಾನವಾದ ಕಲಿಯುಗ. ಕೃಣಾತಿ ಹಿಂಸಾತಿ ಪರಸ್ಪರಂ ಯಸ್ಮಿನ್—ಕೃತ್ವ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಮನಿನ್" (೩೦ ೪-೧೪೪) | ಕರ್ಮ ಚ ತತ್ಕೃಣಂ ಚ |

**ಕರ್ಮಯೋಗ ಕರ್ಮಯೋಗ (೪೦)** ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ ಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನ, ಉಪದೇಶದಿಂದ ಜೀವಾತ್ಮ ಪರಮಾತ್ಮ ವಿಷಯಕ ಯಥಾರ್ಥಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನಿಂದ ಶಕ್ತಿಗನುಗುಣವಾಗಿ ಫಲಾಭಿಸಂಧಿಯಿಲ್ಲದೆ ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ಜಪತಪೋರೂಪವಾದ ಕರ್ಮಗಳು, ಫಲಾಭಿಸಂಧಿಯಿಲ್ಲದ ಕರ್ಮ ಕೌಶಲ.

**ಕರ್ಮವತ್ ಕರ್ಮವತ್ (ವಿಂ)** 1. ಕಾರ್ಯವಂತ, ಯಾವುದಾದರೂ ಕಾರ್ಯವುಳ್ಳವನು. ಕರ್ಮಾಸ್ಥಿತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ವತೀ -ವತಿಃ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಕರ್ಮದಂತೆ. ಕರ್ಮಣಾ ತುಲ್ಯಮ್ "ವತಿಃ" (೪-೧-೧೧೪) |

**ಕರ್ಮವಿಪರ್ಯಯ ಕರ್ಮವಿಪರ್ಯಯ (೪೦)** ಕಾರ್ಯದ ವ್ಯತ್ಯಾಸ, ಕಾರ್ಯವು ತಪ್ಪಾಗಿ ಆಗುವಿಕೆ, ಕಾರ್ಯವು ವಿರೋಧವಾಗಿ ಆಗುವಿಕೆ. ಕರ್ಮಣೋ ವಿಪರ್ಯಯಃ |

**ಕರ್ಮವಿಪಾಕ ಕರ್ಮವಿಪಾಕ (೪೦)** 1. ಪುಣ್ಯಪಾಪ ಕಾರ್ಯಗಳ ಪರಿಣಾಮ, ಜನ್ಮಾಂತರದ ಪುಣ್ಯಪಾಪಕಾರ್ಯಗಳ ಶುಭಾಶುಭ ಫಲ. ಕರ್ಮಣಃ ಪುಣ್ಯಾಪುಣ್ಯರೂಪಸ್ಯ ವಿಪಾಕಃ ಫಲ-ವಿಶೇಷಃ | ಶಾತಾತಪಸ್ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ 84 ವಿಧ ಪಾಪಕರ್ಮ ಫಲಗಳು ಉಕ್ತವಾಗಿವೆ. 2. ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿರುವ ನಾನಾ ವಿಧ ದುಃಖಗಳಿಗೆ ಕಾರಣ ಮತ್ತು ಅದರ ನಿವೃತ್ತಿಪಾಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ.

**ಕರ್ಮವ್ಯತಿ(ತೀ)ಹಾರ ಕರ್ಮವ್ಯತಿ(ತೀ)ಹಾರ (೪೦)** ಪರಸ್ಪರ ಏಕಜಾತೀಯ ಕಾರ್ಯಗಳ ವಿನಿಮಯ, ಸಮಾನ ಕಾರ್ಯಗಳ ಅನ್ಯೋನ್ಯ ಬದಲಾವಣೆ. ಕರ್ಮಣಃ ವ್ಯತಿ(ತೀ)-ಹಾರಃ ಅನ್ಯೋನ್ಯಂ ಕ್ರಿಯಾವಿನಿಮಯಃ | ಕೇಶಾಕೇಶಿ | ದಂಡಾದಿಢಿ |

**ಕರ್ಮಶಾಲಾ ಕರ್ಮಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕೈಗಾರಿಕೆಯ ಪ್ರಯೋಗ ಶಾಲೆ, ಕಾರಖಾನೆ.

**ಕರ್ಮಶೀಲ ಕರ್ಮಶೀಲ (ವಿಂ)** ಕೆಲಸ ಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಕರ್ಮ ಶೀಲಂ ಯಸ್ಯ |

**ಕರ್ಮಶೂರ ಕರ್ಮಶೂರ (ವಿಂ)** ಹಿಡಿದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸುವವನು. ಕರ್ಮಣಿ ಶೂರಃ |

**ಕರ್ಮಶ್ರೇಷ್ಠ ಕರ್ಮಶ್ರೇಷ್ಠ (೪೦)** 1. ಪುಲಹನ ಮಗ; [ಪುಲಹನು ಜತುರ್ಮುಖನ ನಾಭಿಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿ. ಕರ್ಮಮಬ್ರಹ್ಮನ ಮಗಳಾದ ಗತಿಯು ಈ ಋಷಿಯ ಪತ್ನಿ. ಇವಳಲ್ಲಿ ಕರ್ಮಶ್ರೇಷ್ಠ, ವರೀಯಸ್ಸು ಮತ್ತು ಸಹಿಷ್ಣುಗಳೆಂಬ ಮೂವರು ಪುತ್ರರು ಜನಿಸಿದರು.]

(ವಿಂ) ಕರ್ಮಾಚರಣೆಯಿಂದ ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದವನು. ಕರ್ಮಣಾ ಶ್ರೇಷ್ಠಃ |



**ಕರ್ಮಸಂನ್ಯಾಸ ಕರ್ಮಸಂನ್ಯಾಸ (ಪುಂ)** 1. ಕರ್ಮತ್ಯಾಗ, ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸದೆ ಬಿಡುವಿಕೆ. ಕರ್ಮಣ: ಸಂನ್ಯಾಸ: त्यागः। “तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते” ಗೀತಾ ೪-೨। 2. ಕರ್ಮಫಲತ್ಯಾಗ; ಫಲವನ್ನು ಆಪೇಕ್ಷಿಸದೆ ಕರ್ಮವನ್ನಾಚರಿಸುವುದು ಫಲತ್ಯಾಗವೆನಿಸುವುದು. ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದೆ ಕರ್ಮವನ್ನಾಚರಿಸುವವನಿಗೆ ಸಿದ್ಧಿಯುಂಟಾಗುವುದು. ಆತ್ಮಾವಲೋಕನದಲ್ಲಿ ಪ್ರವೃತ್ತವಾದ ಮನಸ್ಸಿನಿಂದ ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರೇರಿಸಿ ಕರ್ಮ ಮಾಡುವುದೇ ಸ್ವಭಾವವಾದ ಇಂದ್ರಿಯ (ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯ) ಗಳಿಂದ ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದೆ ಕರ್ಮವನ್ನು ಆಚರಿಸುವವನು (ಕರ್ಮಯೋಗಿಯು) ಜ್ಞಾನಯೋಗಿಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಶ್ರೇಷ್ಠನು. “यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेर्जुन। कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते” ಗೀತಾ ೩-೨।

**ಕರ್ಮಸಂನ್ಯಾಸಿಕ ಕರ್ಮಸಂನ್ಯಾಸಿಕ (ಪುಂ)** 1. ಕರ್ಮಸಂನ್ಯಾಸವುಳ್ಳವನು, ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿರುವ ಸಂನ್ಯಾಸಿಯತಿ. ಕರ್ಮಣಾಂ ಸಂನ್ಯಾಸೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಠನ್” (೪-೨-೧೧೫)। 2. ಕರ್ಮಫಲವನ್ನು ತ್ಯಾಗಮಾಡಿದವನು. “इति:” (೪-೨-೧೧೫)। —ಸಂನ್ಯಾಸಿನ್ —ಸಂನ್ಯಾಸಿನ್. ಜ್ಞಾನಿಯಾದವನು ಮೋಕ್ಷಕ್ಕಾಗಿಯೂ ಜ್ಞಾನಾಪೇಕ್ಷೆಯು ಜ್ಞಾನಕ್ಕಾಗಿಯೂ ಕರ್ಮಫಲತ್ಯಾಗ ಮಾಡುವನು. ಈ ರೀತಿ ಕರ್ಮಫಲತ್ಯಾಗವು ಎರಡು ವಿಧ. “द्विविधः कर्मणस्त्यागः फलसाधनभेदतः। फलाय ज्ञानिनस्त्यागो जिज्ञासो-ज्ञानिसिद्धये”।

**ಕರ್ಮಸಂನ್ಯಾಸ ಕರ್ಮಸಂಗ (ಪುಂ)** ಕರ್ಮದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿ, ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ಕರ್ಮಾಚರಣೆಯಲ್ಲಿ ಅಭಿನಿವೇಶ. ಕರ್ಮಣಿ ಸಂನ್ಯಾಸ: ಆಸಕ್ತಿ:।

**ಕರ್ಮಸಂಗ್ರಹ ಕರ್ಮಸಂಗ್ರಹ (ಪುಂ)** ಮೂರು ವಿಧವಾದ ಕರ್ಮ. (1) ಕರ್ಮಸಾಧನವಾದ ದ್ರವ್ಯ, (2) ಯಾಗಾದಿ ಕರ್ಮ. (3) ಕರ್ಮವನ್ನು ಆಚರಿಸುವವನು ಎಂದು ಕರ್ಮವು ಮೂರು ವಿಧ. “करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसंग्रहः” ಗೀತಾ ೧೮-೧೮।

**ಕರ್ಮಸಚಿವ ಕರ್ಮಸಚಿವ (ಪುಂ)** ರಾಜನ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಸಹಾಯಕನಾಗಿರುವವನು. ಕರ್ಮಸು ಸಚಿವ:।

**ಕರ್ಮಸಾಕ್ಷಿನ್ ಕರ್ಮಸಾಕ್ಷಿನ್ (ಪುಂ)** ಈ ಲೋಕದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ (ಮಾನವನ) ಕರ್ಮಗಳನ್ನೆಲ್ಲಾ ನೋಡುವ ಸೂರ್ಯ, ಚಂದ್ರ ಮೊದಲಾದವರು. ಸಾಕ್ಷಾತ್ (ಪಶ್ಯತಿ) “इति:” (೪-೨-೯೧)। ಕರ್ಮಣ: ಸಾಕ್ಷಿ। “कर्मसाक्षी जगच्चक्षुरंशुमाली त्रयीतनुः” ಅಮಂ। “सूर्यः सोमो यमः

कालो महाभूतानि पञ्च च। एते शुभाशुभस्येह कर्मणो नव साक्षिणः”। (ವಿಂ) 2. (ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ) ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಎದುರಿಗೆ ನೋಡುವವನು. “यो यस्तत्कर्मसाक्षी चरति मयि रणे यश्च यश्च प्रतीपः क्रोधान्धस्तस्य तस्य स्वयमपि जगतामन्तकस्यान्तकोऽहम्” ವೇಣೀಂ ೩-೩೨।

**ಕರ್ಮಸಾಧನ ಕರ್ಮಸಾಧನ (ನಂ)** ಕರ್ಮಾಚರಣೆಗೆ ಬೇಕಾದ ದ್ರವ್ಯ. ಕರ್ಮಾಚರಣೆಗೆ ಇಂದ್ರಿಯಗಳು ಮತ್ತು ಶರೀರ ಇವು ಮುಖ್ಯ ಸಾಧನ. “शरीरवाङ्मनोभिर्यत् कर्म प्रारभते नरः” ಗೀತಾ ೧೮-೧೫।

**ಕರ್ಮಸಿದ್ಧಿ ಕರ್ಮಸಿದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ, ಕಾರ್ಯವು ಕೈಗೊಂಡುಬಿಡೆ, ಕಾರ್ಯದಫಲ ದೊರಕುವಿಕೆ. ಕರ್ಮಣ: सिद्धि:। “जितेन्द्रिये शूलिनि पुष्पचापः स्वकर्मसिद्धिं पुनराशशंसे” ಕುಮಾಂ ೩-೫೭।

**ಕರ್ಮಸ್ಥ ಕರ್ಮಸ್ಥ (ವಿಂ)** ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿರುವವನು, ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದವನು. ಕರ್ಮಣಿ तिष्ठति—छा (गति-निवृत्तौ) “कः” (೩-೨-೪)।

**ಕರ್ಮಸ್ಥಾನ ಕರ್ಮಸ್ಥಾನ (ನಂ)** 1. ಕಾರ್ಯಾಲಯ, ಸಾರ್ವಜನಿಕ ಕಾರ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ. 2. ಉದ್ಯೋಗಸ್ಥಾನ, ಕಾರಖಾನೆ. ಕರ್ಮಣ: स्थानम्। 3. (ಜ್ಯೋತಿಷೋಕ್ತವಾದ) ಲಗ್ನದಿಂದ ಹತ್ತನೆಯ ಸ್ಥಾನ. “दशमो मान आज्ञापि करस्थानमिति स्मृतः। वृद्धिः कर्माभिधानं च वज्री संक्षय उच्यते।” ಮುಂ ದೀಂ।

**ಕರ್ಮಾಙ್ಗ ಕರ್ಮಾಂಗ (ನಂ)** 1. ಕಾರ್ಯದ ಒಂದು ಭಾಗ. 2. ಯಾಗಾದಿ ಕರ್ಮದ ಒಂದು ಭಾಗ. ಕರ್ಮಣ: अङ्गम्।

**ಕರ್ಮಜೀವ ಕರ್ಮಜೀವ (ಪುಂ)** 1. ಕೆಲಸದಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಜೀವನೋಪಾಯ, ಕೈಗಾರಿಕೆ ಮುಂತಾದ ಕಸಬಿನಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಜೀವನಾಧಾರ,—ಹೊಟ್ಟೆಪಾಡು. ಕರ್ಮಣಾ आजीवो जीवनम्। (ವಿಂ) 2. ಕಸಬಿನಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು, ಉದ್ಯೋಗದಿಂದ ಜೀವನೋಪಾಯವುಳ್ಳವನು. ಕರ್ಮಣಾ आजीवो यस्य।

**ಕರ್ಮಾತ್ಮನ್ ಕರ್ಮಾತ್ಮನ್ (ಪುಂ)** 1. ಮಾಡಿದ ಪುಣ್ಯ ಪಾಪ ಕಾರ್ಯಗಳಿಂದ ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ ಶರೀರವುಳ್ಳ ಜೀವ. ಕರ್ಮಣಾ आत्मा शरीरं यस्य। “तस्मिन् स्वपिति सुस्थे तु कर्मात्मानः शरीरिणः। स्वकर्मभ्यो निवर्तन्ते मनश्च ग्लಾನिमृच्छति” ಮನುಂ ೧-೫೩। (ವಿಂ) 2. ಕೆಲಸ ಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದ. “कर्मात्मनां च देवानां सोऽसृजत् प्राणिनां प्रभुः। साध्यानां च गणं सूक्ष्मं यज्ञं चैव सनातनम्” ಮನುಂ ೧-೨೨। 3. ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದವನು.



**ಕರ್ಮಾಧಿಕಾರ ಕರ್ಮಾಧಿಕಾರ** (ಪುಂ) ಕೆಲಸ ಮಾಡುವ ಹಕ್ಕು. ಲೌಕಿಕ ಮತ್ತು ವೈದಿಕ ಕರ್ಮಫಲಾಪೇಕ್ಷೆ, ಕರ್ಮಾಚರಣೆಯ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಶರೀರ ದಾರ್ಢ್ಯ, ಅರ್ಥಸಂಪತ್ತಿ, ಜನಸಂಪತ್ತಿ, ಕರ್ಮೋಪಯೋಗಿ ಶಾಸ್ತ್ರಾರ್ಥಜ್ಞಾನ, ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಇವೆಲ್ಲವೂ ಇರುವುದಾದರೆ ಕರ್ಮಾಚರಣೆಯಲ್ಲಿ ಅಧಿಕಾರ.

**ಕರ್ಮಾಧಿಕಾರಿನ್ ಕರ್ಮಾಧಿಕಾರಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಕೆಲಸ ಮಾಡುವ ಹಕ್ಕುಳ್ಳವನು. 2. ಕರ್ಮಾಚರಣೆಯಲ್ಲಿ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವುಳ್ಳವನು. ಕರ್ಮಣಿ ಅಧಿಕಾರಿ.

**ಕರ್ಮಾಧ್ಯಕ್ಷ ಕರ್ಮಾಧ್ಯಕ್ಷ** (ಪುಂ) ಕೆಲಸವನ್ನು ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ ನೋಡುವವನು, ಕಾರ್ಯದ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕ. ಕರ್ಮಣಿ ಅಧ್ಯಕ್ಷ.

**ಕರ್ಮಾಂತಿ ಕರ್ಮಾಂತಿ** (ಪುಂ) 1. ಯಾಗಾದಿ ಕೆಲಸದ ಕೊನೆ, ಕರ್ಮದ ಸಮಾಪ್ತಿ. ಕರ್ಮಣೋತ್ತಿ. "ಕರ್ಮಾಂತಿ ದಕ್ಷಿಣಾ ದದಾತ್" 2. ಕಾರ್ಯದ ಪೂರೆಯಿಕೆ, ಕಾರ್ಯದ ನೆರವೇರಿಕೆ. "ಅಹನ್ಯಹನ್ಯವೇಕ್ಷೇತ ಕರ್ಮಾಂತಾನ್ ವಾಹನಾನ್ ಚ" ಮನುಂ ೮-೪೧೧. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಉಳಲ್ಪಟ್ಟ ಭೂಮಿ. 4. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿಡುವ ಸ್ಥಾನ, ಉಗ್ರಾಣ. "ತೇಷಾಮರ್ಯೇ ನಿಯುಜ್ಜಿತ ಶೂರಾನ್ ದಕ್ಷಾನ್ ಕುಲೋದಗತಾನ್. ಶುಚಿನಾಕರಕರ್ಮಾಂತಿ ಭೀಷ್ಮಂತನಿವೇಶನೇ" ಮನುಂ ೭-೬೨.

**ಕರ್ಮಾರ ಕರ್ಮಾರ** (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಮಾರ, ಕಬ್ಬಿಣದ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯವನು. ಕರ್ಮ ಸ್ಥಿತಿ—ಕೃ (ಗತೌ) "ಅನ್" (೩-೨-೧). "ಕರ್ಮಾರಸ್ಯ ನಿಷಾದಸ್ಯ ರಜ್ಜಾವತರಕಸ್ಯ ಚ | ಸುವರ್ಣಕರ್ತೃವೇಣಸ್ಯ ಶಸ್ತ್ರವಿಕ್ರಯಿಣಸ್ತಥಾ" ಮನುಂ ೪-೨೧೫. 2. ಕೈಗಲಸಗಾರ, ಶಿಲ್ಪಿ.

**ಕರ್ಮಾಹಿ ಕರ್ಮಾಹಿ** (ಪುಂ) 1. ಪುರುಷ, ಮನುಷ್ಯ. ಕರ್ಮ ಅಹತಿ—ಅಹಿ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಅನ್" (೩-೨-೧). (ವಿಂ) 2. ಕೆಲಸ ಮಾಡಲು ಸಮರ್ಥನಾದವನು, ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯನಾದವನು. 3. ಯಾಗಾದಿಕರ್ಮಗಳಿಗೆ ಯೋಗ್ಯನಾದವನು.

**ಕರ್ಮಾಶಯ ಕರ್ಮಾಶಯ** (ಪುಂ) ಜನ್ಮಾಂತರಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ ಪುಣ್ಯ ಮತ್ತು ಪಾಪ ಕರ್ಮಗಳಿಗೆ ಆಶ್ರಯವಾದ ಶರೀರ ಮನಸ್ಸು ಮುಂತಾದುವು.

**ಕರ್ಮಿಕ ಕರ್ಮಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಕೆಲಸಗಾರ, ಕಾರ್ಯನಿರತ, ಉದ್ಯೋಗವುಳ್ಳವನು. ಕರ್ಮಾಸ್ಥಿ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೬). 2. ಕೂಲಿಯವನು, ಕೆಲಸದವನು.

**ಕರ್ಮಿನ್ ಕರ್ಮಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಕೆಲಸಗಾರ, ಉದ್ಯೋಗಶೀಲ, ಕಾರ್ಯನಿರತ. ಕರ್ಮಾಸ್ಥಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೬). 2. ಯಾಗಾದಿಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸುವವನು. "ತಪಸ್ವಿನ್ಯ:

ಅಧಿಕೋ ಯೋಗಿ ಜ್ಞಾನಿನ್ಯೋಽಪಿ ಮತೋಽಧಿಕಃ | ಕರ್ಮಿನ್ಯ-ಶ್ಚಾಧಿಕೋ ಯೋಗಿ ತಸ್ಮಾದ್ವೋಗಿ ಭವಾರ್ಜುನ" ಗೀತಾ ೬-೪೬. 3. ಕೂಲಿಯವನು, ಕೆಲಸಗಾರ.

**ಕರ್ಮಿಷ್ಠ ಕರ್ಮಿಷ್ಠ** (ವಿಂ) ಉದ್ಯಮಶೀಲ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು. ಅತಿಶಯೇನ ಕರ್ಮಿ "ಇಷ್ಠನ್" (೪-೩-೫೫).

**ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯ ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯ** (ನಂ) ವಾಕ್ಯ, ಪಾಣಿ, ಪಾದ, ಪಾಯು, ಉಪಸ್ಥಗಳೆಂಬ ಐದು ಇಂದ್ರಿಯಗಳು. ಕರ್ಮಣಾ ವಚನಾದಿನಾ ನಿಮಿತ್ತಮಿಂದ್ರಿಯಮ್. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಇಂದ್ರಿಯ" "ಇಂದ್ರಿಯವ್ಯಾಪಾರ" "ಇಂದ್ರಿಯಾಧಿಷ್ಠಾತೃ" "ಇಂದ್ರಿಯಾಯತನ" "ಇಂದ್ರಿಯಾರ್ಥ" ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯ ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯ** (ವಿಂ) ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದವನು, ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿರುವವನು, ಕರ್ಮಣಿ ತತ್ವುತ.

**ಕರ್ಮ-ದರ್ಪೆ** (ಮಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ) ಕರ್ಮತಿ. ಚಕರ್ಮ. ಅಕರ್ಮಿತ್. ಗರ್ವಹೊಂದು, ಕೊಬ್ಬಿದವನಾಗು.

**ಕರ್ಮ ಕರ್ಮ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ಕಿರತಿ ವಿಷಯೇಷು ಚಿತ್ತಮ್—ಕೃ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಕ:" (೩ಂ ೧-೧೫೩). 2. ಮೂಷಕ, ಇಲಿ. "ಕರ್ಮ: ಕಾಮ: ಆಖುಶ್ಚ" ಸಿಂ ಕೌಂ.

**ಕರ್ಮಟ ಕರ್ಮಟ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಜಿಲ್ಲೆಯ ಮುಖ್ಯ ಪಟ್ಟಣ. 2. ಇನ್ನೂರು ಹಳ್ಳಿಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಸುಂದರವಾದ ಒಂದು ಪಟ್ಟಣ. "ಕರ್ಮಟೋತ್ತರೀ ದ್ರೋಣಮುಖಂ ಪट्टಣಂ ಪುಟಭೇದನಮ್" ವೈಜಂ. "ಕರ್ಮಟಂ ದ್ವಿಶತಗ್ರಾಮಮಧ್ಯೇ ಗ್ರಾಮ-ಮನೋಹರಮ್" ಹಾರಾಂ. 3. ಹೆಚ್ಚು ಕಂಟಕದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಗ್ರಾಮ. "ದ್ವೇ ಶತೇ ಕರ್ಮಟಸ್ಯ ಸ್ಯಾತ್ ನಗರಸ್ಯ ಚತು:ಶತಮ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೬೭. (ಪುಂ) 4. ಎಂಟುನೂರ ನಾಲ್ಕು ಗ್ರಾಮಗಳ ಮಧ್ಯದ ಒಂದು ಮುಖ್ಯಗ್ರಾಮ. "ಚತುರಘ-ಶತಗ್ರಾಮಾಂತ: ದ್ರೋಣಮುಖಕರ್ಮಟೌ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಕರ್ಮರ ಕರ್ಮರ** (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಾಘ್ರ, ಹುಲಿ. 2. ರಾಕ್ಷಸ. 3. ಪಾಪ. ಕೃ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಫರಕ್" (೩ಂ ೨-೧೨೨). "ಕರ್ಮರೋ ವ್ಯಾಘ್ರರಕ್ಷಸೋ:" ಸಿಂ ಕೌಂ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡಿಫ್" (೪-೧-೪೧). ಕರ್ಮರ ಕರ್ಮರೀ. 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 2. ರಾತ್ರಿ. 3. ರಾಕ್ಷಸಿ. 4. ಹಿಂಗುಪತ್ರ.

**ಕರ್ಮಣ ಕರ್ಮಣ** (ನಂ) 1. ಕೃತವಾಗುವಿಕೆ, ತೆಳ್ಳಗೆ ಆಗುವಿಕೆ. ಕೃತ (ತನೂಕರಣ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). (ವಿಂ) 2. ಕೃತವಾಗಿ ಮಾಡುವ, ತೆಳ್ಳಗೆ ಮಾಡುವ. ಕೃತ + ಣಿಕ್ ಕರ್ಮಣಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪). 3. ತೊಂದರೆ ಕೊಡುವ, ಹಿಂಸಿಸುವ, ಹಿಡಿಸುವ.



ಕರ್ಷಣೀಯ ಕರ್ಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ತೆಳ್ಳಗೆ ಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ, 2. ತೆಳ್ಳಗೆ ಮಾಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ, 3. ತೆಳ್ಳಗೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಕೃಷ (ತನುಕರಣ) "ಅನೀಯ್" (3-1-96)।

ಕರ್ಷಯತ್ ಕರ್ಷಯತ್ (ವಿಂ) ತೆಳ್ಳಗೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಕೃಷ (ತನುಕರಣ) + ಗಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-6)। -ಯಂತಿ-ಯಂತಿ.

ಕರ್ಷಿತ ಕರ್ಷಿತ (ವಿಂ) ತೆಳ್ಳಗೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೃಶವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕೃಷ (ತನುಕರಣ) + ಗಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

ಕರ್ಷ ಕರ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಚಿನ್ನ ಬೆಳ್ಳಗಳ ಒಂದು ತೂಕ, ಹದಿನಾರು ಅದ್ಯಮಾಷಕಗಳ ತೂಕ. 80 ರಿಕ್ತಗಳು, 1/4 ಪಲ, 1/400 ತುಲೆ, 176 ಗುಲಗಂಜಿಗಳ ತೂಕ. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಅಚ್" (3-1-134)। 2. ಹದಿನಾರು ಅದ್ಯಮಾಷಕಗಳ ತೂಕದ ಚಿನ್ನ. (ಪುಂ) 3. ವಿಭಿಂಶಕ ವೃಕ್ಷ, ತಾರೆಗಿಡ. 4. ಆಕರ್ಷಣ, ಎಳೆಯುವಿಕೆ. 5. ಬರೆಯುವಿಕೆ. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) ಭಾವೆ "ಘ್" (3-3-12)। 6. ಅಂಶಮಯ. 7. ನೇಗಿಲು. 8. ಗಾಲಿ (ಚಕ್ರ)ಯ ಪಾಡು. 9. ಉಳುವವನು, 10. ಎಳೆಯುವವನು.

ಕರ್ಷಕ ಕರ್ಷಕ (ಪುಂ) 1. ಕುಜ, ಅಂಗಾರಕ. "ಕರ್ಷಕೋ ರುಧಿರೋ ಭೂಮಿ:" ವೈಜಂ. (ವಿಂ) 2. ಎಳೆಯುವವನು. 3. ಲೇಖಕ, ಬರೆಯುವವನು. 4. ರೈತ, ಬೇಸಾಯಗಾರ. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಫ್ವಲ್" (3-1-133)। "ಕನ್ವಿಚ್ಚ ಬೀಜಂ ಭಕ್ತಂ ಚ ಕರ್ಷಕಸ್ಯಾವಸೀದತಿ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ 4-22. "ತ್ವಂ ಸಮೀರಣ ಇವ ಪ್ರತೋಕ್ಷಿತ: ಕರ್ಷಕೇಣ ವಲಜಾನ್ ಪುಷ್ಪತಾ" ಮಾಘಂ 14-3।

ಕರ್ಷಣ ಕರ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಎಳೆಯುವಿಕೆ. "ಭಜ್ಯಮಾನ-ಮತಿಮಾತ್ರಕರ್ಷಣಾತ್ ತೇನ ವಜ್ರಪರೂಷಸ್ವನಂ ಧನು:" ರಘುಂ 11-46. 2. ನೇಗಿಲಿನಿಂದ ಉಳುವಿಕೆ. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) ಭಾವೆ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। "ಮೃತಂ ತು ಯಾಚಿತಂ ಭಕ್ಷಂ ಪ್ರಮೃತಂ ಕರ್ಷಣಂ ಸ್ಮೃತಮ್" ಮನುಂ 4-4. 3. ಶೋಷಣ, ಒಣಗಿಸುವಿಕೆ. 4. ಒಡಿಸುವಿಕೆ, ಹಿಂಸಿಸುವಿಕೆ. "ಶರೀರ-ಕರ್ಷಣಾತ್ ಪ್ರಾಣಾ: ಕ್ಷೀಯಂತೇ ಪ್ರಾಣಿನಾಂ ಯಥಾ। ತಥಾ ರಾಜಾಮಪಿ ಪ್ರಾಣಾ: ಕ್ಷೀಯಂತೇ ರಾಷ್ಟ್ರಕರ್ಷಣಾತ್" ಮನುಂ 7-112. (ವಿಂ) 5. ಎಳೆಯುವ, ಆಕರ್ಷಿಸುವ, 6. ನೇಗಿಲಿನಿಂದ ಉಳುವ. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಲ್ಯು:" (3-1-134)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರ್ಷಣಿ ಕರ್ಷಣೀ. ಹಾಲೆಗಿಡ, ಗೋರಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-41)।

ಕರ್ಷಣೀಯ ಕರ್ಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಎಳೆಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. 2. ಎಳೆಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ಉಳಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 4. ಉಳಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಅನೀಯ್" (3-1-96)। 5. ಎಳೆಯಲ್ಪಡುವ. 6. ಉಳಲ್ಪಡುವ.

ಕರ್ಷತ್ ಕರ್ಷತ್ (ವಿಂ) 1. ಉಳುತ್ತಿರುವ. 2. ಎಳೆಯುತ್ತಿರುವ, ಆಕರ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಶತ್" (3-2-124)। "ಧನು: ಸ ಕರ್ಷನ್ ರಹಿತಮಾಯಾಸೇನಾಽಽಸಾರತಾಮ್" ಮಾಘಂ 19-14. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-6)। ಕರ್ಷಂತಿ ಕರ್ಷಂತೀ.

ಕರ್ಷಫಲ ಕರ್ಷಫಲ (ಪುಂ) 1. ತಾರೆಗಿಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ನೆಲ್ಲಿಗಿಡ. (ನಂ) 3. ತಾರೆಕಾಯಿ. 4. ನೆಲ್ಲಿಕಾಯಿ.

ಕರ್ಷಿತ ಕರ್ಷಿತ (ವಿಂ) 1. ಎಳೆಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) + ಗಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102)। 2. ಉಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೇಸಾಯ ಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಕರ್ಷಿನ್ ಕರ್ಷಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಎಳೆಯುವ, ಆಕರ್ಷಿಸುವ. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಗಿಣಿ:" (3-1-134)। "ಸ್ತಮ್ಬೇರಮಾ ಮುಖರಶ್ರುಙ್ಗಲಕರ್ಷಿಣಸ್ತೇ" ರಘುಂ 4-32. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-4)। ಕರ್ಷಿಣಿ ಕರ್ಷಿಣೀ. "ಛಾಣಕಾಂತ-ಮಧುಗಂಧಕರ್ಷಿಣಿ: ಪಾನಭೂಮಿರಚನಾ: ಪ್ರಿಯಾಸಲ:" ರಘುಂ 19-11. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಕುದುರೆಯ ಕಡಿವಾಣದಲ್ಲಿರುವ ಕಬ್ಬಿಣದ ತುಂಡು. 3. ಹಾಲೆ ಗಿಡ.

ಕರ್ಷ ಕರ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಒಣ ಬೆರಣಿಯಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಬೆಂಕಿ. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಕ್ತ:" (3-1-133)। 2. ಬೇವಿಕೆ, ಬೇವನೋಪಾಯ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಕವಲು ನದಿ, ಕಾಲುವೆ. "ಕರ್ಷವಾರ್ತಾ ಕರಿಷಾಗ್ನಿ: ಕರ್ಷ: ಕುಲ್ಯಾಭಿಧಾಯಿನಿ" ಅಮಂ. 4. ಕೃಷಿ, ಬೇಸಾಯ. "ಕರ್ಷಸ್ತು ತುಷಾಗ್ನಿ ಕೃಷಿಕುಲ್ಯಯೋ:" ಹೇಮಂ. 5. ಇಷ್ಟಿಪಾತ, ಯಾಗಕ್ಕಾಗಿ ನೇಗಿಲಿನಿಂದ ಉತ್ತು ತೋಡಲ್ಪಟ್ಟ ಹಳ್ಳ. ನಾಲ್ಕು ಅಂಗುಲಗಳ ಅಗಲ ನಾಲ್ಕು ಅಂಗುಲಗಳ ಆಳ ಹನ್ನೆರಡು ಅಂಗುಲಗಳ ಉದ್ದವುಳ್ಳ ಒಂದು ಹಳ್ಳಕ್ಕೆ ಇಷ್ಟಿಪಾತವೆಂದು ಹೆಸರು. "ಚತುರಙ್ಗುಲಪೃಥ್ವಿ-ಸ್ತಾವದಂತರಾಸ್ತಥಾಧ:ಸ್ವಾತಾ: ವಿತಸ್ತ್ಯಾಯತಾಸ್ತಿಸ್ತ: ಕರ್ಷ: ಕುರ್ಯಾತ್। ಕರ್ಷಸಮೀಪೇ ಅಗ್ನಿತ್ರಯಮುಪಸಮಾಧಾಯ ಪರಿಸ್ತೀರ್ಯ ತತ್ರೈಕಂಕಸ್ಮಿನ್ ಆಹುತಿತ್ರಯಂ ಜುಹ್ಯಾತ್" ವಿಷ್ಣುಸೂಂ. "ಕರ್ಷ: ಪುಮಾನ್ ಕರಿಷಾಗ್ನಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಕುಲ್ಯೇಷ್ವಿತ್ವಾತಯೋ:" ಮೇದಿಂ. 6. ಗರ್ತ, ಹಳ್ಳ. 7. ಧಾನ್ಯದ ಹೊಟ್ಟು. "ಕರ್ಷ: ಸ್ತ್ರೀ ತುಷಕೋಷ್ಠೇ ಕುಲ್ಯಾಢಾಂ ನಾ ಚ ನಾ ಕರಿಷಾಗ್ನಿ" ವೈಜಂ. 1.

ಕರ್ಹಿ ಕರ್ಹಿ (ಅವ್ಯಂ) ಯಾವಾಗ, ಯಾವಕಾಲದಲ್ಲಿ. ಕಿಮ್ "ಹಿಲ್" (4-3-21)।



ಕಹಿಚಿತ್ ಕರ್ಹಿಚಿತ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಒಂದು ಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಒಂದು ಸಮಯದಲ್ಲಿ. 2. ಯಾವಾಗಲೂ, ಯಾವ ಕಾಲದಲ್ಲೂ. "ಅಕಾಮಸ್ಯ ಕ್ರಿಯಾ ಕಾಚಿತ್ ದೃಶ್ಯತೇ ನೇಹ, ಕಹಿಚಿತ್" ಮನುಂ ೨-೪.

ಕಲ-ಶಬ್ದಸಂಖ್ಯಾನಯೋ: (ಭಾಂ ಆತ್ಮಂ ಶಬ್ದೇ ಅಕರ್ಮಕ: ಸಂಖ್ಯಾನೇ ಸಕರ್ಮಕ: ಸೇಂ) | ಕಲತೇ | ಚಕಲೇ | ಕಲಿತಾ | ಕಲಿಷ್ಯತಿ | ಅಕಲಿಷ್ಠ | 1. ಶಬ್ದ ಮಾಡು, ಸದ್ಭೂಮಾಡು. 2. ಎಣಿಸು, ಲೆಕ್ಕ ಮಾಡು.

ಕಲ-ಗತೌ ಸಂಖ್ಯಾನೇ ಚ (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಕಲಯತಿ, -ತೇ | ಕಲಯಾಂ ಬಭೂವ, -ಆಸ, -ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ | 1. ಹೊಂದು, ಪಡೆ. 2. ಎಣಿಸು, ಲೆಕ್ಕಮಾಡು. "ಪ್ರಹ್ಲಾದಶ್ಚಾಸ್ಮಿ ದೈತ್ಯಾಣಾಂ ಕಾಲ: ಕಲಯತಾಮಹಮ್" ಗೀತಾ ೧೦-೩೦ | 3. ಉಚ್ಚರಿಸು, ಹೇಳು, ಮಾತಾಡು. "ವಿಹಗಾ: ಕದಂಬಸುರಭಾವಿಹ ಗಾ: ಕಲಯಂತ್ಯನುಕ್ಷಣಮನೇಕಲಯಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೩೬ | 4. ಗ್ರಹಿಸು, ಹಿಡಿದುಕೊ, ಧರಿಸು. "ಕಲಯ ವಲಯಶ್ರೇಣಿಂ ಪಾಣಿಂ ಪದೇ ಕುರು ನುಪುರೀ" | "ಕಲಯತಿ ಹಿಮಾಂಶೋ ನಿಷ್ಕಲಕ್ಷ್ಮಸ್ಯ ಲಕ್ಷ್ಮೀಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೫ | 5. ಗ್ರಹಿಸು, ತಿಳಿದುಕೊ. "ಕ್ರಿಯತೇಜುವೃತ್ತಿರವಿತೇವ ತತ: ಕಲಯೇದ-ಮಾನಮನಸಂ ಸಖಿ ಮಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೫೮ | 6. ಹೋಗು, ನಡೆ, ಮುಂದೆಸಾಗು, ದಾರಿಹಿಡಿದು ನಡೆ. "ಸಾಕ್ಷಾದಪ್ಸರಸೋ ವಿಮಾನಕಲಿತವ್ಯೋಮಾನ ಏವಾಭವತ್" ನೈಷಂ ೨-೧೦೪ |

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಯೋಗದಿಂದಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಆ + ಕಲ = ಆಕಲಿತ: | 1. ಕಟ್ಟಿಹಾಕು, ಬಂಧಿಸು, ಬಿಗಿ. "ಸುವರ್ಣಸುತ್ರಾಕಲಿತಾಧರಾಮ್ಬರಾಂ ವಿಡಮ್ಬಯಂತಂ ಶಿತಿವಾಸಸಸ್ತನುಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೬ | 2. ತಿಳಿದುಕೊ, ಮನದಟ್ಟು ಮಾಡಿಕೊ, ಗ್ರಹಿಸು. "ಸಿಪ್ತಾ ಇವೇಂದೋ: ಸರ್ವೋಪಧಿವೇಲಂ ಮುಕ್ತಾವಲೀರಾಕಲಯಾಂಚಕಾರ" ಮಾಘಂ ೩-೭೩ |

(2) ಉ + ಕಲ = ಉತ್ಕಲಿತ: | ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ಹಿಡಿದುಕೊ. "ಸ ತಸ್ಯ ಹಸ್ತೋತ್ಕಲಿತಸ್ತದಾಸುರೋ ವಿಶ್ವೇಡತೋ ಯದ್ವದಹಿರ್ಗತಮತ:" ಭಾಗಂ ೭-೮-೨೬ |

(3) ಪ್ರತಿ + ಆ + ಕಲ = ಪ್ರತ್ಯಾಕಲನಮ್ | ಅರಿತುಕೊ, ತಿಳಿದುಕೊ. "ಪ್ರತ್ಯಾಕಲಿತಸ್ವದುರ್ನಯ:" ದಶಕುಂ |

(4) ವಿ + ಅವ + ಕಲ = ವ್ಯವಕಲನಮ್ | ಕೆಳೆದು ಹಾಕು, ತೆಗೆದು ಹಾಕು. "ಯದಿ ವ್ಯಕ್ತೇ ಯುಕ್ತವ್ಯವಕಲನ-ಮಾರ್ಗೇಸಿ ಕುಶಲಾ" ಲೀಲಾಂ |

(5) ಸಮ್ + ಕಲ = ಸಂಕಲನಮ್ | ಅಂಶಗಳನ್ನು ಕೂಡು, -ಸೇರಿಸು. "ಅಥ ಸಂಕಲನವ್ಯವಕಲನಯೋ: ಕರಣಸೂತ್ರಮ್" ಲೀಲಾಂ |

ಕಲ-ಕ್ಷೇಪೇ (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಕಾಲಯತಿ, -ತೇ | ಕಾಲಯಾಂ ಬಭೂವ, -ಆಸ, -ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ | 1. ಪ್ರೇರಿಸು, ಮುಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳು. 2. ಅಟ್ಟು, ಓಡಿಸು. "ಪಿಷ್ಟಿ ಗವಾಂ ಸಹಸ್ರಾಣಿ ತ್ರಿಗತಾ: ಕಾಲಯಂತಿ ತೇ" ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೩೩-೧೫ | 3. ಎಸೆ, ಬಿಸಾಡು.

ಕಲ ಕಲ (ಪುಂ) 1. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. 2. ಇಂಪಾದ ಮತ್ತು ಅಸ್ವಪ್ನವಾದ ಶಬ್ದ. ಕಲ (ಶಬ್ದೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಪ್ರಗೀಯತೇ ಸಿದ್ಧಗಣೇಶ್ಚ ಯೋಷಿತಾಮುದಾರಮಂತೇ ಕಲಭಾವಿಕಸ್ವರೇ:" ಮಾಘಂ ೪-೩೩ | 3. ಸಾಲವೃಕ್ಷ, ಮತ್ತಿ, ಮರ. 4. ಬದರೀವೃಕ್ಷ, ಬೋರೆಗಿಡ. 5. ಅಂಗುಷ್ಠದಿಂದ ಎಣೆಯ ತಂತಿಗಳನ್ನು ಮುಟ್ಟುವಿಕೆ. "ತನ್ಮಿಶ್ರವೃಕ್ಷಗುಣ-ಸಂಸ್ಪರ್ಶ: ಕಲ:" ವೈಜಂ | (ನಂ) 6. ಶುಕ್ರಧಾತು, ವೀರ್ಯ. "ಕಲಂ ಶುಕ್ರೇ ತ್ರಿವಿಜೀರ್ಣಂ ಚಾವ್ಯಕ್ತಮಧುರಧವನೌ" ಮೇದಿಂ | (ವಿಂ) 7. ಜೀರ್ಣವಾಗದಿರುವ. 8. ಮೂಗ, ಮಾತಾಡುವ ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದವನು. 9. ಕಲಾನ್ವಿತ, ಕುಶಲವಿದ್ಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದವನು. ಕಲಾಸ್ತಯಸ್ಯ "ಅಚ್" (೫-೨-೧೨೭) | 10. ಮನೋಹರವಾದ. 11. ಮಧುರವಾದ, ಇಂಪಾದ. "ಕಲಮನ್ಯಭೃತಾಸು ಭಾಷಿತಂ ಕಲಹಂಸೀಷು ಮದಾಲಸಂ ಗತಮ್" ರಘುಂ ೮-೫೯ | (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) ಗಂಭೀರವಾಗಿ. "ಕಲಂ ಚಲದ್ವಿ: ಸುರಸೇನ್ಯಸಿನ್ಧುರೇ:" ಕ್ಷುಮಾಂ ೧೪-೨೪ |

ಕಲಕ ಕಲಕ (ಪುಂ) 1. ಮತ್ತಷ್ಟು, ಮೀಸು. ಕಲ (ಗತೌ) "ಫ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | (ವಿಂ) 2. ಎಣಿಸುವ, ಲೆಕ್ಕ ಮಾಡುವ.

ಕಲಕಂಠ ಕಲಕಂಠ (ಪುಂ) 1. ಕೋಗಿಲೆ. 2. ಹಂಸಪಕ್ಷಿ. 3. ಕಪೋತ, ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ. ಕಲ: ಅವ್ಯಕ್ತಮಧುರ: ಕಂಠೋಪ್ಪ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫೫) | -ಕಂಠಿ -ಕಂಠೀ. (ವಿಂ) 4. ಅವ್ಯಕ್ತವೂ ಮಧುರವೂ ಆದ ಧ್ವನಿಯುಳ್ಳ.

ಕಲಕಲ ಕಲಕಲ (ಪುಂ) 1. ಕೋಲಾಹಲ ಧ್ವನಿ, ಗಡಿಬಡಿಯ ಶಬ್ದ, ಗುಂಜಿಸುಗಲಭೆ. ಕಲಪ್ರಕಾರ: - ಪ್ರಕಾರೇ ಧ್ವನಿಮ್ (೮-೧-೧೨) | "ರಣಸಂಮದೋದಯವಿಕಾಸಿಬಲಕಲಕಲಾ-ಕುಲೀಕೃತೇ" ಮಾಘಂ ೧೫-೭೭ | 2. ಮತ್ತಿಮರದ ರಸ. "ಕಲಕಲ ಉಕ್ತ: ಕೋಲಾಹಲೇ ತಥಾ ಸಾಲನಿರ್ಯಸಿ" ಮೇದಿಂ |

ಕಲಘೋಷ ಕಲಘೋಷ (ಪುಂ) ಕೋಗಿಲೆ. ಕಲೋ ಘೋಷೋಪ್ಪ.

ಕಲಙ್ಕ ಕಲಙ್ಕ (ಪುಂ) 1. ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು. 2. ಮಾಲಿನ್ಯ, ಕೊಳೆ. ಕಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಣಾಂ ಲಕ್ಷ್ಯಯತಿ ಹೀನತಾಂ ಗಮಯತಿ-ಲಕಿ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಅಣ್" (೩-೨-೧) | "ಬಹುರೂಪಕಸಾಲಮಂಜಿಷ್ಕಾ ಮುಖಚಂದ್ರೇಷು ಕಲಙ್ಕರಙ್ಕವ:" ನೈಷಂ ೨-೮೩ | "ಆಭಾತಿ



ವೇಲಾ ಲವಣಾಂಬುರಾಶಿ: ಧಾರಾನಿಬದ್ಧೇವ ಕಲಕ್ಷುರೇಖಾ" ರಘುಂ 13-14. 3. ಅಪವಾದ, ಅಪಯಶಸ್ಸು, ಅಕೀರ್ತಿ. "ತ್ವಾದೃಶಸ್ಯ ಸಕಲ: ಸ ಕಲಕ್ಷು: ಶೀತಭಾಸಿ ಶಶಕ: ಪರಮಕ್ಷು:" ನೈಫಂ 4-120. 4. ತಾಮ್ರ ಮೊದಲಾದ ಧಾತುಗಳ ಮಲ. "ಶಶಿಕೃಪಾಣಕವಚೇಷು ಕಲಕ್ಷು:" ಕಾದಂ. 5. ಪಾಪ, ಪಾತಕ.

**ಕಲಕ್ಷಿತ ಕಳಂಕಿತ (ವಿಂ)** 1. ಗುರುತು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ, ಬೆದ್ದೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. 2. ಅಪಕೀರ್ತಿಯುಳ್ಳ, ಅಪಯಶಸ್ಸನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿರುವ, ಅಪವಾದವುಳ್ಳ. ಕಲಕ್ಷುರೇಖಾ ಸಂಜಾತ: "ಇತಚ್" (4-2-36). "ಕುಡ್ಕುಮಪಕ್ಷುಕಲಕ್ಷಿತ-ದೇಹಾ ಗೌರವಯೋಧರಕಂಪಿತಹಾರಾ" ಭರ್ತುಂ 2-9. 3. ಕೊಳೆಯಾಗಿರುವ. 4. ಪಾಪವುಳ್ಳ.

**ಕಲಕ್ಷುರ ಕಲಂಕುರ (ಪುಂ)** ಜಲಾವರ್ತ, ನೀರಿನ ಸುಳಿ. ಕಂ ಜಲಂ ಲಕ್ಷಯತಿ - ಲಕಿ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಉರಚ್" ಬಾಹುಂ. "ಅಥಾಮ್ಭಸಾಂ ಭ್ರಮ: ತಾನೂರೋ ವಾಯುಗುಲ್ಮಶ್ಚ ಕಣಲಾಭ: ಕಲಕ್ಷುರ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಕಲಂಜ ಕಳಂಜ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷಬಳಿದ ಬಾಣದಿಂದ ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ ಮೃಗ. ಮತ್ತು 2. ಪಕ್ಷಿ. (ನಂ) 3. ಇಂತಹ ಮೃಗ ಪಕ್ಷಿಗಳ ಮಾಂಸ. "ನ ಕಲಂಜಂ ಭಕ್ಷಯತ್" ಶ್ರುತಿ: 4. ಹೊಗೆಸೊಪ್ಪು. "ಕಲಂಜಸಂವೇಷ್ಠನಭೂಮಪಾನಾತ್ಸಾಹಂತ-ಶುದ್ಧಿಮುಖರೋಗಹಾನಿ:"

**ಕಲಹ ಕಲಹಿ (ನಂ)** ಮನೆಗೆ ಹೊದಿಸುವ ಹುಲ್ಲು ಮೊದಲಾದುದು, ಮನೆಯ ಹುಲ್ಲಿನ ಮೇಲ್‌ಭಾಗವು. ಕಂ ಜಲಂ ಲಹತಿ - ಲಹ (ಬಾಲ್ಯೇ) "ಅಚ್" (3-1-138).

**ಕಲತುಲಿಕಾ ಕಲತೂಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಾಮುಕ ಹೆಂಗಸು, ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ. ಕಂ ಸುಖಂ ಲಾತಿ - ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕ:" (3-2-8). ಕಲ: ಕಾಮ: ತಂ ತುಲಯತಿ ನಿಷ್ಕರ್ವತಿ ಪೂರ್ಯತಿ ವಾ - ತುಲ (ನಿಷ್ಕರ್ವೆ) + ಣಿಚ್ "ಫುಲ್" (3-1-133). "ವಾಚ್ಛಿನಿ ತು ಸ್ಯಾಲ್ಲಜ್ಜಿಕಾ ಕಲತುಲಿಕಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಕಲತ್ರ ಕಳತ್ರ (ನಂ)** 1. ಪತ್ನಿ, ಹೆಂಡತಿ. ಗಡಚತೇ - ಗಡ (ಸೇವನೆ) "ಅತ್ರನ್" ಆದೇ: ಕಶ್ಚ (30 3-106). ಡಲಯೋ-ಭೇದ: "ಯ: ಪ್ರೀಣಯೇತ್ ಸುಚರಿತೈ: ಪಿತರಂ ಸ ಪುತ್ರೋ ಯದ್ಭರ್ತುರೇವ ಹಿತಮಿಚ್ಛತಿ ತತ್ಕಲತ್ರಮ್" ಭರ್ತುಂ 1-49. 2. ನಿಶಂಕಾ ಪ್ರದೇಶ, ಹೆಂಗಸರ ಪಿರೈ. "ಕಲತ್ರಭಾರೆಣ ವಿಲೋಲನಿವಿನಾ ಗಲದ್ಕುಲಸ್ತನಶಾಲಿನೋರಸಾ" ಕಿರಾಂ 6-17. 3. ಕಳತ್ರ ಸ್ಥಾನ, ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ಏಳನೆಯ ಸ್ಥಾನ. "ಕಲತ್ರಸೌಖ್ಯವೇವಾಹಂ ಭೋಗಸ್ಥಾನಂ ಮನೋಹರಮ್. ಅಲಂಕೃತಿಶ್ಚ ಸರ್ವೇಷಾಂ ಭಾವೋಽಯಂ ಸಪ್ತಮ: ಸ್ಮೃತ:" ಮುಂ ದಿಂ. 4. ದುರ್ಗ, ಕೋಟೆ.

**ಕಲತ್ರತಾ ಕಳತ್ರತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪತ್ನೀತ್ವ, ಹೆಂಡತಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ. ಕಲತ್ರಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (4-1-119).

**ಕಲತ್ರವತ್ ಕಳತ್ರವತ್ (ವಿಂ)** 1. ಸಪತ್ನೀಕ, ಪತ್ನೀಸಮೇತನಾದ. ಪತ್ನಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. ಕಲತ್ರಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (4-2-98). ಮಸ್ಯ ವ: (7-2-9). "ಕಲತ್ರವಂತ-ಮಾತಮಾನಮವರೋಧೇ ಮಹತ್ಯಪಿ" ರಘುಂ 1-32. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಪತ್ನಿಯಂತೆ, ಹೆಂಡತಿಯಂತೆ. ಕಲತ್ರೇಣ ತುಲ್ಯಮ್ "ವತಿ:" (4-1-114).

**ಕಲತ್ರಿನ್ ಕಳತ್ರಿನ್ (ವಿಂ)** ಕಳತ್ರವುಳ್ಳವನು, ಪತ್ನೀಸಮೇತನಾದವನು, ಪತ್ನಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು. ಕಲತ್ರ "ಇನಿ:" (4-2-114). "ವಸುಧೇಯಮವೇಕ್ಷಯತಾಂ ತ್ವಯಾ ವಸು-ಮತ್ಯಾ ಹಿ ನೃಪಾ: ಕಲತ್ರಿಣ:" ರಘುಂ 6-63.

**ಕಲಧೂತ ಕಲಧೂತ (ನಂ)** ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ.

**ಕಲಧೌತ ಕಲಧೌತ (ನಂ)** 1. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 2. ಬೆಳ್ಳಿ, ರಜತ. ಕಲ: ಮಲೋ ಧೌತೋಽಸ್ಯ. "ಯಸ್ಯಾಂ ಕಪೋಲೈ: ಕಲಧೌತ-ಧಾಮಸ್ತಮ್ಭೇಷು ಭೇಜೇ ಮಣಿರ್ದರ್ಪಣಶ್ರೀ:" ಮಾಧಂ 3-87. "ಅಧಿ-ರಾತ್ರಿ ಯತ್ರ ನಿಪತನ್ನಭೋಲಿಹಾಂ ಕಲಧೌತಧೌತಶಿಲವೇಶಮನಾಂ ಕುಶೌ" ಮಾಧಂ 13-41. 3. ಕಲಧ್ವನಿ, ಇಂಪಾದ ಕಂಠ. "ಕಲಧೌತಂ ರೂಪ್ಯಹೇಮನೋ: ಕಲಧೌತಂ ಕಲಧ್ವನಿ" ವಿಶ್ವಂ.

**ಕಲಧ್ವನಿ ಕಲಧ್ವನಿ (ಪುಂ)** 1. ಅಸ್ಪಷ್ಟ ಮತ್ತು ಮಧುರವಾದ ಶಬ್ದ, ಇಂಪಾದ ತಗ್ಗು ದನಿ. ಕಲೋ ಧ್ವನಿ: 2. ಕಪೋತ, ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ. ಕಲೋ ಧ್ವನಿರಸ್ಯ. 3. ಕೋಗಿಲೆ. 4. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. (ವಿಂ) 5. ಮಧುರವಾದ ಮತ್ತು ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾದ ಶಬ್ದವುಳ್ಳ. ಕಲೋ ಧ್ವನಿರಸ್ಯ. "ಕಲಧ್ವನಿ: ಪರಭೃತೇ ಪಾರಾವತಕಲಾಪಿನೋ:" ಹೇಮಂ.

**ಕಲನ ಕಲನ (ನಂ)** 1. ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು. 2. ಅಪರಾಧ, ತಪ್ಪು. 3. ಗ್ರಹಣ, ಸ್ವೀಕಾರ, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಕಲ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 4. ಗ್ರಾಸ, ಸುಂಗುವಿಕೆ. "ಕಲನಾತ್ಸರ್ವಭೂತಾನಾಂ ಸ ಕಾಲ: ಪರಿಕೀರ್ತित:" 5. ಜ್ಞಾನ, ಅರಿವು, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ಕಲ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-117). "ಲೋಕಾನಾಮಂತಕೃತ್ಕಾಲ: ಕಾಲೋಽನ್ಯ: ಕಲನಾತ್ಮಕ:" ಸುಂ ಸಿಂ. 6. ಸದ್ದು ಮಾಡುವಿಕೆ, ಶಬ್ದ ಮಾಡುವಿಕೆ. ಕಲ (ಗತೌ ಶಬ್ದೇ ಚ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

**ಕಲನಾ ಕಲನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿಯುವಿಕೆ, ಅರಿಯುವಿಕೆ. ಕಲ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಯುಚ್" (3-3-107). 2. ಗ್ರಹಣ, ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ, 3. ಸ್ವೀಕಾರ, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. 4. ಧರಿಸುವಿಕೆ, ತೊಡುವಿಕೆ. 5. ತೆಗೆದು



ಹಾಕುವಿಕೆ. “ಅವಾಪ ವಾಲ್ಯೋಚಿತನೀಲಕಂಠಪಿಚ್ಛಾವಚ್ಛಾ-  
ಕಲನಾಮಿವೋರ.” ಮಾಘಂ ೩-೫।

**ಕಲನಾದ ಕಲನಾದ** (ಪುಂ) 1. ಮಧುರ ಮತ್ತು ತಗ್ಗು ದನಿ.  
ಕಲೋ ನಾದಃ। “ಪಯೋಧಿಲಕ್ಷ್ಮೀಮುಷಿ ಕೇಲಿಪಲ್ವಲೇ ರಿರಸುಹಂಸಿ-  
ಕಲನಾದಸಾದರಮ್” ನೈಷಂ ೧-೧೧೭। 2. ಹಂಸ. ಕಲೋ  
ನಾದೋಽಸ್ಯ। (ವಿಂ) 3. ಅಸ್ತುಟಿ ಮತ್ತು ಮಧುರವಾದ  
ಧ್ವನಿಯುಳ್ಳ. ಕಲೋ ನಾದೋ ಯಸ್ಯ।

**ಕಲಮ ಕಲಮ** (ಪುಂ) 1. ಮೂವತ್ತು ವರ್ಷವಯಸ್ಸಿನ ಅನೇ.  
ಕಲ (ಶಬ್ದ) “ಅಮಚ್” (ಉಂ ೩-೧೨೨)। “ಕುಶೇಶಯೇತ್ರ  
ಜಲಾಶಯೋಷಿತಾ ಮುದಾ ರಮಂತೆ ಕಲಮಾ ವಿಕಸ್ವರೇ.” ಮಾಘಂ  
೪-೩೩। 2. ಅನೆಯ ಮರಿ. “ಇಹ ಮಹುರ್ಮದಿತೇ: ಕಲಮೇರವಃ  
ಪ್ರತಿದಿಶಂ ಕ್ರಿಯತೇ ಕಲಮೇರವಃ.” ಮಾಘಂ ೪-೬೦। “ನನು  
ಕಲಮೇನ ಯುಥಪತೇರನುಕೃತಮ್” ಮಾಲಂ ೫। 3. ದತ್ತಾಂಶಿ ಗಿಡ.  
ಕಂ ವಾತಂ ಲಮತೇ—ಛಲಮಫ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)।

**ಕಲಮ ಕಲಮ** (ಪುಂ) 1. ಬತ್ತ. ಕಲತೇ—ಕಲ (ಸಂಖ್ಯಾನೇ)  
“ಅಮಃ” (ಉಂ ೪-೮೪)। “ಆಪಾದಪತ್ರಪ್ರಣತಾಃ ಕಲಮಾ  
ಇವ ತೇ ರಘುಮ್” ರಘುಂ ೪-೩೭। “ಗೀತಾನಿ ಗೋಪ್ಯಾಃ ಕಲಮಂ  
ಮೃಗವ್ರಜೋ ನ ನೂನಮತೀತಿ ಹರಿವ್ಯಲೋಕಯತ್” ಮಾಘಂ ೧೨-೪೩।  
2. ಲೇಖನಿ. 3. ಜೋರ, ಕಳ್ಳ. “ಕಲಮಃ ಪುಸಿ  
ಲೇಖನ್ಯಾಂ ಶಾಲೌ ಪಾಟನ್ವರೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ। 4. ಅಂಕುರ.  
ಮೋಕ್ಷಕೆ. “ಕಲಮೋಽಡ್ಕುರಲೇಖನಯೋಃ” ವೈಜಂ।

**ಕಲಮ್ಬ ಕಲಂಬ** (ಪುಂ) 1. ಶರ, ಬಾಣ. ಕಲ (ಕ್ಷೇಪ)  
“ಅಮ್ಬಚ್” (ಉಂ ೪-೮೨)। ಶತ್ರುಗಳ ಮೇಲೆ ಎಸೆದು  
ಪ್ರಯೋಗಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. 2. ಕದಂಬ ವೃಕ್ಷ.  
ಕಡ (ಮದ) “ಅಮ್ಬಚ್” (ಉಂ ೪-೮೨)। ಡಲಯೋರಭೇದಃ।  
ಎರಹಿಗಳಿಗೆ ಮದವನ್ನು ಋತುಮಾಡುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.  
3. ಅಂಕುರ, ಮೋಕ್ಷಕೆ. “ತ್ವದ್ಭಯುಗಂ ಯಸ್ಯ ಖಲು ದ್ವಿಪತ್ನಿ  
ತವಾಧರೋ ರಜ್ಯತಿ ಯತ್ಕಲಮ್ಬಃ” ನೈಷಂ ೩-೧೨೦। (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
**ಕಲಮ್ಬೋ ಕಲಂಬೇ**. ಹಂಬು ಬಳಸೆ. “ಕಲಮ್ಬಿ ಶಾಕಭೇದ  
ಸ್ಯಾತ್ ಕದಮ್ಬಶರಯೋಃ ಪುಮಾನ್” ಮೇದಿಂ।

**ಕಲಮ್ಬುಟ ಕಲಂಬುಟಿ** (ನಂ) ನವನೇತ, ಹೊಸದಾದ ಬೆಣ್ಣೆ.  
ಕೇ ಜಲೇ ಲಮ್ಬತೇ—ಲಬಿ (ಅವಲಂಸನೆ) “ಉಟಃ” ಬಾಹುಂ।  
“ಹೈಯಜ್ಜವೀನಂ ಸರಜಂ ಮನ್ಯಜಂ ಚ ಕಲಮ್ಬುಟಮ್” ಹಾರಾಂ।

**ಕಲಯತ್ ಕಲಯುತ್** (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಯುವ, ಅರಿತು  
ಕೊಳ್ಳುವ. ಕಲ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)।  
“ಕಲಯನ್ನಪಿ ಸವ್ಯಥೋಜವತಸ್ಥೇಷಾಕುನೇನ ಸ್ವಲಿತಃ ಕಿಲೇತ-  
ರೋಽಪಿ” ಮಾಘಂ ೯-೮೩। 2. ನೋಡುತ್ತಿರುವ, ವೀಕ್ಷಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. “ನಿಮಿಲನಸ್ಪಷ್ಟವಿಲೋಕನಾಮ್ಯಾಂ ಕದರ್ಶಿತಸ್ತಾಃ

ಕಲಯನ್ ಕಟಾಕ್ಷಃ” ನೈಷಂ ೬-೨೨। 3. ಎಸೆಯುತ್ತಿರುವ.  
4. ಬಿಡುತ್ತಿರುವ. 5. ಎಣಿಸುತ್ತಿರುವ. “ಪ್ರಹ್ಲಾದಶ್ಚಾಸ್ಮಿ  
ದೈತ್ಯಾನಾಂ ಕಾಲಃ ಕಲಯತಾಮಹಮ್” ಗೀತಾ ೧೦-೩೦।  
6. ಧರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹಿಡಿಯುತ್ತಿರುವ. “ರಾಜಾಮಸ್ಯ ಶತೇನ  
ಕಿಂ ಕಲಯತೋ ಹೇತಿ ಶತಧ್ವನಿಂ ಕೃತಂ ಲಕ್ಷೀಲಕ್ಷಭಿದೋ ದೃಶೇವ ಜಯತಃ  
ಪದ್ಮಾನಿ ಪದ್ಮೇರಲಮ್” ನೈಷಂ ೧೨-೫೮। 7. ಸ್ವೀಕರಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಅಂಗೀಕರಿಸುತ್ತಿರುವ. “ಅಸ್ಯ ಕ್ಷೋಣಿಪತೇಃ ಪರಾರ್ಥಪರಯಾ  
ಲಕ್ಷೀಕೃತಾಃ ಸಂಖ್ಯಯಾ ಪ್ರಜ್ಞಾಚಕ್ಷುರವೇಕ್ಷಯಮಾಣತಿಮಿರಪ್ರಖ್ಯಾಃ  
ಕಿಲಾಕೀರ್ತಯಃ। ಗೀಯಂತೇ ಸ್ವರಮಷ್ಟಮಂ ಕಲಯತಾ ಜಾತೇನ ವನ್ಧ್ಯೋ-  
ದರಾನ್ಮೂಕಾನಾಂ ಪ್ರಕರೇಣ ಕೂರ್ಮರಮಣಿಧುಧೋದಧೇ ರೋಧಸಿ” ನೈಷಂ  
೧೨-೧೦೬। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)। ಕಲಯಂತಿ  
**ಕಲಯಂತಿ**. “ಕೋಪಿತಂ ವಿರಹೋದಿತಚಿತ್ತಾ ಕಾಂತಮೇವ  
ಕಲಯಂತ್ಯನುನಿನ್ಯೇ” ಮಾಘಂ ೧೦-೨೯।

**ಕಲರವ ಕಲರವ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಂಪೋಡ, ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ.  
2. ಕೋಗಿಲೆ. ಕಲೋ ರವೋಽಸ್ಯ। 3. ಅಸ್ತುಷ್ಟಮಧುರಧ್ವನಿ,  
ಇಂಪಾದ ತಗ್ಗು ದನಿ. ಕಲೋ ರವಃ। (ವಿಂ) 4. ಅಸ್ತುಷ್ಟ  
ವಾದ ಮಧುರ ಧ್ವನಿಯುಳ್ಳ. “ಕಲರವಮುಪಗೀತೇ ಷಟ್ಪದೋನ  
ಧತ್ತಃ ಕುಮುದಕಮಲಖಂಡೇ ತುಲ್ಯರೂಪಾಮವಸ್ಥಾಮ್” ಮಾಘಂ  
೧೧-೧೫। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬೩)।  
-ರವಿ -ರವಿ.

**ಕಲಲ ಕಲಲ** (ನಂ) 1. ಗರ್ಭದ ಮೊದಲನೆಯ ಅವಸ್ಥೆ,  
ಸ್ತ್ರೀಯರ ಗರ್ಭಕೋಶವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿದ ಮೊದಲನೆಯ  
ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ರೇತಸ್ಸಿನ ವಿಹಾರ. “ಕರ್ಮಣಾ  
ದೈವನೇತ್ರೇಣ ಜನ್ತುರ್ದೇಹೋಪಪತ್ತಯೇ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಪ್ರವಿಷ್ಟಃ ತದರಂ ಪುಸೋ  
ರೇತಃಕಣಾಶ್ರಯಃ। ಕಲಲಂ ತ್ವೇಕರಾತ್ರೇಣ ಪञ್ಚರಾತ್ರೇಣ ಬುದ್ಧದಮ್”  
ಭಾಗಂ ೩-೩೧-೧, ೨। 2. ಚರ್ಮದ ಬೇಲ. “ಚರ್ಮಕೋಶಂ  
ತು ಕಲಲಮ್” ವೈಜಂ। 3. ಎಲುಬು. ಮೂಳೆ. “ಅಥಾಸ್ಥಿ  
ಕೋಕಸಂ ವಿಡ್ಛಂ ಕಲಲಂ ಕೂರಮಾಡಿಕಮ್” ವೈಜಂ।

**ಕಲವಿಡ್ಛ ಕಲವಿಂಕ** (ಪುಂ) 1. ಗುಬ್ಬಿಟ್ಟಿ. ಕಲಂ ವಡ್ಛತೇ—ವಕಿ  
(ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। ಪೃಷೋಂ। “ಕಲವಿಡ್ಛಪ್ಲವಂ  
ಹಂಸಂ ಚಕ್ರಾಹ್ವಂ ಗ್ರಾಮಕುಕ್ಕುತಮ್” ಮನುಂ ೫-೧೨। 2. ಹಳದಿ  
ತಲೆಯ ಗುಬ್ಬಿಟ್ಟಿ. “ಮಾರ್ಜಾರಭಕ್ಷಿತೇ ದುಃಖಂ ಯಾದೃಶಂ ಗೃಹ-  
ಕುಕ್ಕುತೇ। ನ ತಾದೃಶಮಮತಾಶುನ್ಯೇ ಕಲವಿಡ್ಛೇಽಥ ಮೃಷಕೇ”  
ಪ್ರಬೋಧಂ ೫-೨೦। “ಕಲವಿಡ್ಛಸ್ತವಸೌ ಪಿತಮುಂಡಃ” ವೈಜಂ।

**ಕಲಶ ಕಲಶ** (ವಿಂ) 1. ಘಟ, ಕೊಡ, ಬಿಂದಿಗೆ, ಹರವೆ.  
ಕೇನ ಜಲೇನ ಲಸತಿ—ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)।  
ತಾಲವ್ಯಾಂತಃ ಪ್ರಾಮಾಣಿಕಪ್ರಯೋಗಃ। “ಕಲಶ ಇವ ಗರಿಯಾನ್  
ದಿಗ್ಭಿರಾಕೃಷ್ಯಮಾಣಃ” ಮಾಘಂ ೧೧-೪೪। 2. ಹದಿನಾರು



ಅದ್ಯಮಾಷಕಗಳ ತೂಕ, ಎಂಬತ್ತು (80) ರಿತ್ತಿಗಳು,  
1/4 ಪಲ, 1/400 ತುಲೆ, 176 ಗುಲಗಂಜಿತೂಕ.

ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಙೀಫ್" (೪-೧-೬೩)। -ಶಿ - ೩೬.

ಕಲಶಜನ್ಮನ್ ಕಲಶಜನ್ಮನ್, -ಮ್ - ಭೂ (ಪುಂ) ಕುಂಭ  
ದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ 1. ಅಗ್ನಿಮಹರ್ಷಿ. 2. ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿ.

ಕಲಶಯೋನಿ ಕಲಶಯೋನಿ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿಮಹರ್ಷಿ.  
2. ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿ. ಕಲಶಂ ಯೋನಿಸ್ಯ।

ಕಲಶಿ ಕಲಶಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕುಂಭ, ಕೊಡ, ಬಿಂದಿಗೆ, ಘಟ.  
2. ಕಡೆಯುವ ದೊಡ್ಡ ಮೊಸರಿನ ಪಾತ್ರೆ. 3. ನಂಬಾಲದ  
ಹುಲ್ಲು. ಕಲಂ ಇತಿ ಅಜೀರ್ಣಂ ನಾಶಯತಿ - ಶೋ (ತನೂಕರಣಂ)  
"ಇನ್" (೩೦ ೪-೧೧೭)। ಬಾಹಿಂ ಆಕಾರಲೋಪಃ।  
"ಶಶಿನಿಮಿವ ಸುರೋಃ ಸಾರಮುಢ್ನತುಮೇತೆ ಕಲಶಿಮುಢ್ನತುಮೇತೆ  
ವಲ್ಲವಾ ಲೋಢಯಂತಿ" ಮಾಘಂ ೧೧-೮। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ವಾ "ಙೀಫ್"  
(ಗಂ ೪-೧-೪೫)। -ಶಿ - ೩೬.

ಕಲಶೋಪದಿ ಕಲಶೋಪದಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಂದಿಗೆಯಂತೆ  
ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಕಲಶಿ ಇವ ಪಾದೌ ಯಸ್ಯಾಃ। ಪಾದಸ್ಯ  
ಪದಾದೇಶಃ (೬-೪-೧೩೦)। "ಙೀಫ್" (೫-೪-೧೩೯)।

ಕಲಶಿಸುತ ಕಲಶೀಸುತ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿಮಹರ್ಷಿ.  
2. ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿ. ಕಲಶಾಃ ಸುತ ಇವ। ["ಅಗಸ್ತ್ಯ"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]

ಕಲಶೋದಧಿ ಕಲಶೋದಧಿ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರ ಸಮುದ್ರ.

ಕಲಸ ಕಲಸ (ತ್ರಿಂ) ಘಟ, ಬಿಂದಿಗೆ, ಕೊಡ. ಕೇನ ಜಲೇನ  
ಲಸತಿ-ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣಶ್ರೇಡನಯೋಃ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।  
ದೇವಶಿಲ್ಪಿಯಾದ ವಿಶ್ವಕರ್ಮನು ಸಮುದ್ರಮಂಥನ  
ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಅಮೃತವನ್ನು ತುಂಬಿಡಲು ದೇವತೆಗಳ ಕಲೆ  
ಗಳಿಂದ ಕಲಶವನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿದನಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು  
ರಾಯಿತು ಎಂದೂ ಪ್ರಾಣದಲ್ಲಿದೆ. "ಸಾಗರೇ ಮಥ್ಯಮಾನೇ  
ತು ಪಿಷ್ಠಾಪಾರ್ಥ ಸುರಾಸುರೈಃ। ಪಿಷ್ಠಾಪಾರ್ಥಾರ್ಥಾಯ ನಿರ್ಮಿತೋ  
ವಿಶ್ವಕರ್ಮಣಾ। ಕಲಾಃ ಕಲಾಸ್ತು ದೇವಾನಾಮಪಿ ತಾಸ್ತಾಃ  
ಪೃಥಕ್ ಪೃಥಕ್। ಯತಃ ಕೃತಾಸ್ತು ಕಲಸಾಃ ತತಸ್ತೇ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾಃ"  
ಕಾಲಿಕಾಪುಂ. "ಕಲಸೇ ನಿಜಹೇತುಢ್ನಜಃ ಕಿಮು ಚಕ್ರಭ್ರಮ  
ಕಾರಿತಾಗುಣಃ" ನೈಷಂ ೨-೩೨।

ಕಲಸೀ ಕಲಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಘಟ, ಬಿಂದಿಗೆ, ಕೊಡ, ಹರಪ.  
ಕೇನ ಜಲೇನ ಲಸತಿ-ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣಂ) "ಇನ್" (೩೦  
೪-೧೧೭)। ಜಾತಿಂ "ಙೀಫ್" (೪-೧-೬೩)। "ಅವಲಂಬಿತ-  
ಕರ್ಣಶಂಕುಲಿಕಲಸೀಕಂ ರಚಯನ್ನವೋಚತ" ನೈಷಂ ೨-೮।

ಕಲಹ ಕಲಹ (ಪುಂ) 1. ಜಗಳ, ವಾಗ್ವಿವಾದ. ಕಲೋ  
ಮಧುರವನಿಃ ತಂ ಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) "ಹಃ" (ವಾಂ

೩-೨-೪೮)। "ಕಲಹಾನ್ತಃ ಧನಾನ್ತಃಕೃತಿಸ್ತಾಢ್ನಾಪ್ಯುಜ್ಜತಿ  
ವರ್ಣಸ್ವರಃ" ನೈಷಂ ೨-೮೫। 2. ಯುದ್ಧ, ಕದನ.  
"ವಿಲಂಬಿತುಂ ನ ಸ್ವಲ್ಪ ಸಹಾ ಮನಸ್ವಿನೋ ವಿಧಿತ್ಸತಃ ಕಲಹ-  
ಮವೇಕ್ಷ್ಯ ವಿಧಿಷಃ" ಮಾಘಂ ೧೭-೫೦। ಮೇದಿನೀಕೋಶದಲ್ಲಿ  
ನಪುಂಸಕಲಿಂಗವಾಗಿ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. 3. ಕತ್ತಿಯ ಒರೆ.  
4. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ, ರಸ್ತೆ. 5. ತಾಡನ, ಹೊಡೆತ. "ಕಲಹಂ  
ಯುಧಿ ವಾಢೇ ನಾ ಸ್ವಙ್ಗಕೋಶೇ ಚ ಭಂಡನೇ" ಮೇದಿಂ।

ಕಲಹಂಸ ಕಲಹಂಸ (ಪುಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಹಂಸ ಪಕ್ಷಿ.  
ಕಲೋ ಮಧುರವನೋ ಹಂಸಃ। "ಅವಿಶದ್ವನವೇಶಮ ವಿಷ್ಮಿತಃ ಸ್ಮೃತಿ-  
ಲಗ್ನಃ ಕಲಹಂಸಶಂಸಿತಃ" ನೈಷಂ ೨-೬೩। 2. ರಾಜಹಂಸ,  
ಕೆಂಪು ಕಾಲು ಮತ್ತು ಕೊಕ್ಕುಳ್ಳ ಹಂಸಪಕ್ಷಿ. "ವಘ್ನಕೂಲಂ  
ಕಲಹಂಸಲಕ್ಷಣಂ ಗಜಾಜಿನಂ ಶೋಣಿತವಿಂದುರ್ವಪಿ ಚ" ಕುಮಾಂ  
೫-೬೭। 3. ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ದೊರೆ, ಉತ್ತಮನಾದ ರಾಜ.  
4. ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಬ್ರಹ್ಮ. "ಕಲಹಂಸಸ್ತು ಕಾದಂಬೇ ರಾಜಹಂಸೇ  
ನೃಪೋತ್ತಮೇ" ಮೇದಿಂ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಙೀಫ್" (೪-೧-೬೩)।  
-ಹಂಸೀ - ಹಂಸೀ. "ಕಲಮನ್ಯಭೃತಾಸು ಭಾಷಿತಂ ಕಲಹಂಸೀಷು  
ಮದಾಲಸಂ ಗತಮ್" ರಘುಂ ೮-೫೯।

ಕಲಹಕಾರ ಕಲಹಕಾರ (ಪುಂ) 1. ನಾರದಮಹರ್ಷಿ.  
2. ಜಗಳವಾಡುವವನು. ಕಲಹಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕ್ರಾ (ಕರಣಂ)  
"ಅಙ್" (೩-೨-೧)। "ಹಂತುಂ ಕಲಹಕಾರೋಽಸೌ ಶಬ್ದಕಾರಃ  
ಪಪಾತ ಸಮ್" ಭट्टಿಂ ೫-೧೦೦।

ಕಲಹಪ್ರಿಯ ಕಲಹಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) 1. ನಾರದಮಹರ್ಷಿ.  
ಕಲಹಃ ಪ್ರಿಯೋಽಸ್ಯ। (ವಿಂ) 2. ಜಗಳವೇ ಪ್ರಿಯವಾಗಿ  
ಉಳ್ಳವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪ್ರಿಯಾ - ಪ್ರಿಯಾ. ಸಾರಸಪಕ್ಷಿ.

ಕಲಹಾನ್ತರಿತಾ ಕಲಹಾನ್ತರಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎಂಟುವಿಧ  
ಅವಸ್ಥೆಗಳುಳ್ಳ ನಾಯಿಕೆಯರಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. ಪ್ರಿಯಂ  
ವಾದ ಮಾತುಗಳನ್ನಾಡುತ್ತಿರುವ ಪತಿಯನ್ನು ಕೋಪ  
ದಿಂದ ನಿರಾಕರಿಸಿ ಬಳಿಕ ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪ ಪಡುವ ಒಬ್ಬ  
ನಾಯಿಕೆ. "ಚಾತುಕಾರಮಪಿ ಪ್ರಾಣನಾಥಂ ದೋಷದಪಾಸ್ಯ ಯಾ।  
ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪಮವಾನ್ಯೋತಿ ಕಲಹಾನ್ತರಿತಾ ತು ಸಾ" ಸಾಂ ದಂ  
೩-೮೨। "ನೋ ಚಾತುಶ್ರವಣಂ ಕೃತಂ ನ ಚ ದೃಶಾ ಹಾರೋಽಂತಿಕೇ  
ವಿಕ್ಷಿತಃ ಕಾನ್ತಸ್ಯ ಪ್ರಿಯಹೇತವೋ ನಿಜಸಖಿವಾಚೋಽಪಿ ದೂರಿ-  
ಕೃತಾಃ। ಪಾದಾಂತೇ ವಿನಿಪತ್ಯ ತತ್ಕ್ಷಣಮಸೌ ಗಚ್ಛನ್ ಮಯಾ ಮೂಢಯಾ  
ಪಾಣಿಮ್ಯಾಮವರುನ್ಧ್ಯ ಹಂತ ಸಹಸಾ ಕಂಠೇ ಕಥಂ ನಾರ್ಪಿತಃ"  
ಸಾಂ ದಂ।

ಕಲಾ ಕಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಂದ್ರನ (ಚಂದ್ರಬಿಂಬದ) ಹದಿನಾ  
ರನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. ಕಲಯತಿ - ಕಲ (ಸಂಖ್ಯಾನೇ) +  
ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಆನನೇನ ಶಶಿನಃ ಕಲಾಂ



ದಧದಶನಕ್ಷಯಿತಕಾಮವಿಗ್ರಹಃ" ಮಾಘಂ ೧೪-೧೮। "ವ್ಯವ-  
 ಥಾವಪಿ ವಾ ವಿಧೋಃ ಕಲಾಂ ಮೃಡಚ್ಛಾಡಾನಿಲಯಾಂ ನ ವೇದ ಕಃ" ನೈಷಂ  
 ೨-೧೯। ಚಂದ್ರನ ಹದಿನಾರು ಕಲೆಗಳು: (1) ಅಮೃತಾ, (2) ಮಾನದಾ, (3) ಪೂಷಾ, (4) ತುಷ್ಠಿಃ, (5) ಪುಷ್ಠಿಃ, (6) ರತಿಃ, (7) ಧೃತಿಃ, (8) ಶಶಿನಿ, (9) ಚಂದ್ರಿಕಾ, (10) ಕಾಂತಿಃ, (11) ಜ್ಯೋತ್ಸನಾ, (12) ಶ್ರೀಃ, (13) ಪ್ರೀತಿಃ, (14) ಅಜ್ಞದಾ, (15) ಪೂರ್ಣಾ, (16) ಪೂರ್ಣಾಮೃತಾ। 2. ಸೂರ್ಯಮಂಡಲದ ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. ಸೂರ್ಯನ ಹನ್ನೆರಡು ಕಲೆಗಳು: (1) ತಪಿನಿ, (2) ತಾಪಿನಿ, (3) ಭೂಮಾ, (4) ಮರೀಚಿಃ, (5) ಜ್ವಾಲಿನಿ, (6) ಋಚಿಃ, (7) ಸುಷುಮ್ನಾ, (8) ಭೋಗದಾ, (9) ವಿಶ್ವಾ, (10) ಬೋಧಿನಿ, (11) ಧಾರಿಣಿ, (12) ಕ್ಷಮಾ। 3. ಅಗ್ನಿಮಂಡಲದ ಹತ್ತನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. ಅಗ್ನಿಮಂಡಲದ ಹತ್ತು ಕಲೆಗಳು: (1) ಭೂಮಾಚಿಃ, (2) ಋಷ್ಮಾ, (3) ಜ್ವಾಲಿನಿ, (4) ಜ್ವಾಲಿನಿ, (5) ವಿಸ್ಕು-  
 ಲಿಜ್ಞಿನಿ, (6) ಸುಶ್ರೀಃ, (7) ಸುಹೃಷಾ, (8) ಕಪಿಲಾ, (9) ಹವ್ಯಮ್, (10) ಕವ್ಯಮ್। 4. ಬಡ್ಡಿ, ಮೂಲಧನದ ವೃದ್ಧ್ಯಂತ. "ಘನವೀಥಿ ವೀಥಿಮವತೀರ್ಣವತೋ ನಿಧಿರಮ್ಮಸಾ-  
 ಮುಪಚಯಾಯ ಕಲಾಃ" ಮಾಘಂ ೧-೩೨। 5. ಶಿಲ್ಪ, ಕುಶಲ ವಿದ್ಯೆ. ಅರವತ್ತನಾಲ್ಕು (64) ವಿಧ ಕುಶಲ ವಿದ್ಯೆಗಳು:

- |                                |  |
|--------------------------------|--|
| (1) ಗೀತಮ್                      | ಹಾಡುಗಾರಿಕೆ.  |
| (2) ವಾಕ್ಯಮ್                    | ವೀಣೆ, ವೇಣು, ಮೃದಂಗ ಮುಂತಾದುವು.   |
| (3) ನೃತ್ಯಮ್                    | ಭರತನಾಟ್ಯ, ಕುಣಿತ.   |
| (4) ಆಲೇಖ್ಯಮ್                   | ಚಿತ್ರರಚನೆ.   |
| (5) ವಿಶೇಷಕಕ್ಷೇಪಮ್              | ಹಣೆಯಲ್ಲಿ ಬರೆಯುವ ತಿಲಕ ವನ್ನು ಅನೇಕ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ತಿದ್ದಿ ಕೊರೆಯುವುದು.             |
| (6) ತಪ್ಪುಲಕ್ಷುಮ-<br>ಬಲಿವಿಕಾರಾಃ | ಬಣ್ಣ ಬಣ್ಣದ ಅಕ್ಕಿ ಮತ್ತು ಹೂವುಗಳಿಂದ ದೇವರ ಮುಂದೆ ಪದ್ಮಾದಿರೂಪ ಗಳನ್ನು ರಚಿಸುವುದು. |
| (7) ಪುಷ್ಪಾಸ್ತರಣಮ್              | ಹೂವುಗಳನ್ನು ಹರಡಿ ಅಲಂಕರಿಸುವುದು.  |
| (8) ದಶನವಸನಾಙ್ಗರಾಗಃ             | ಮೈ, ಹಲ್ಲು ಮತ್ತು ಬಟ್ಟೆ ಗಳಿಗೆ ಬಣ್ಣ ಹಾಕುವುದು.                               |
| (9) ಮಣಿಭೂಮಿಕಾರ್ಕಮ್             | ರತ್ನಾಲಂಕಾರ ಕಾರ್ಯ.  |
| (10) ಶಯನರಚನಮ್                  | ಹಾಸಿಗೆಯನ್ನು ಹಾಸಿ ಕೈಂಗಿರಿ ಸುವುದು.   |

- |  |   |
|--|---|
| (11) ಉದಕವಾಕ್ಯಮ್                          | ಜಲತರಂಗ ವಾದ್ಯ.   |
| (12) ಉದಕಾಘಾತಃ                            | ಕೊಳವೆಯಿಂದ ನೀರನ್ನು ಹೊಡೆಯುವುದು.   |
| (13) ಚಿತ್ರಾಶ್ವ ಯೋಗಃ                      | ಅನೇಕ ಕಷ್ಟಗಳನ್ನು ಕೊಡುವುದರ ಮೂಲಕ ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ನಿಃಸತ್ತವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವುದು.                      |
| (14) ಮಾಲ್ಯಗ್ರಥನವಿಕಲ್ಪಾಃ                  | ಬಗೆಬಗೆಯ ಹಾರಗಳನ್ನು ರಚಿಸುವಿಕೆ.  |
| (15) ಶೇಷರಕಾಪಿಡಯೋಜನಮ್                     | ತಲೆ ಗಂಟುಹಾಕಿ ಅಲಂಕರಿಸುವಿಕೆ.  |
| (16) ನೇಪಥ್ಯಪ್ರಯೋಗಃ                       | ವೇಷ ಹಾಕುವುದು.   |
| (17) ಕರ್ಣಪತ್ರಭಜ್ಞಾಃ                      | ರತ್ನ ಖಚಿತವಾದ ಪತ್ರಾಕಾರದ ಅಭರಣಗಳಿಂದ ಕಿವಿಯನ್ನು ಅಲಂಕರಿಸುವುದು.                                  |
| (18) ಗಂಧಯುಕ್ತಿಃ                          | ಪರಿಮಳ ದ್ರವ್ಯಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿದ್ದ ಪಡಿಸುವುದು.   |
| (19) ಭೂಷಣಯೋಜನಮ್                          | ಅವಯವಗಳಿಗೆ ತಕ್ಕಂತೆ ಒಡವೆಗಳನ್ನು ತೊಡಿಸುವುದು.  |
| (20) ಔದ್ರಜಾಲಾಃ ಕೌಚು-<br>ಮಾರಾಶ್ವ ಯೋಗಾಃ    | ಯಕ್ಷಿಣಿ ಮತ್ತು ಶರೀರ ಸಂಬಂಧವಾದ ನಷ್ಟಗಳನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸಿ ಸೌಭಾಗ್ಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಯೋಗಗಳು.             |
| (21) ಹಸ್ತಲಾಘವಮ್                          | ಕೈಚಳಕ, ಜಾಣತನ, ಚುರುಕು.   |
| (22) ವಿಚಿತ್ರಶಾಕಯುಷ-<br>ಭಕ್ಷ್ಯವಿಕಾರಕ್ರಿಯಾ | ಬಗೆ ಬಗೆಯ ಹಸುರುವಾಣಿಗಳಿಂದ ಉಟದ ಪದಾರ್ಥಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವುದು. (ಚಿತ್ರಾನ್ನ, ಹುಳಿ, ತಿಂಡಿ ಮುಂತಾದುವು). |
| (23) ಪಾನಕರಸರಾಗಾಸವ-<br>ಯೋಜನಮ್             | ಪಾನಕ ಮೊದಲಾದ ಪಾನೀಯಗಳನ್ನು ಸಿದ್ಧಗೊಳಿಸುವುದು.  |
| (24) ಸೂಚಿವಾನಕರ್ಮಾಣಿ                      | ಕಸೂತಿ ಕೆಲಸಗಳು, ಹೊಲಿಗೆ ಕೆಲಸಗಳು.  |
| (25) ಸೂತ್ರಕೀಡಾ                           | ನೂಲಿನ ಅಟ, ನೂಲನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿ ಪುನಃ ಅಖಂಡವಾಗಿ ತೋರಿಸುವುದು. ನೂಲನ್ನು                              |



- (26) ವೀಣಾಡಮರಕವಾಚಾನಿ ವೀಣೆ ಡಮರು (ಬುಡು ಬುಡಿಕೆ) ಮೊದಲಾದ ವಾದ್ಯಗಳು.
- (27) ಪ್ರಹೇಲಿಕಾ ಒಗಟು, ಗೂಢಾರ್ಥವಾಕ್ಯ ಪ್ರಯೋಗ.
- (28) ಪ್ರತಿಮಾಲಾ ಅಂತಾಕ್ಷರೀಪಠನ. (ಒಂದು ಶ್ಲೋಕದ ಕೊನೆಯ ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ಮತ್ತೊಂದು ಶ್ಲೋಕವನ್ನು ಹೇಳುವುದು).
- (29) ದುರ್ವಾಚಕಯೋಗಾ: ವಾದಕ್ಕಾಗಿಯೂ ವಿನೋದಕ್ಕಾಗಿಯೂ ಉಚ್ಚರಿಸಲಾಗದ ಅಕ್ಷರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಶಬ್ದಗಳ ಪ್ರಯೋಗ.
- (30) ಪುಸ್ತಕವಾಚನಮ್ ಪುಸ್ತಕಗಳನ್ನು ಓದುವುದು.
- (31) ನಾಟಕಾಖ್ಯಾಯಿಕಾ-ದರ್ಶನಮ್ ನಾಟಕ ಕಥೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳನ್ನು ಅಭಿನಯಿಸಿ ತೋರಿಸುವುದು.
- (32) ಕಾವ್ಯಸಮಸ್ಯಾಪೂರಣಮ್ ಪದ್ಯರೂಪದಿಂದ ಸಮಸ್ಯೆಗಳನ್ನು ಪೂರ್ತಿಗೊಳಿಸುವುದು.
- (33) ಪದ್ಯಕಾವೇತ್ರವಾನ ವಿಕಲ್ಪಾ: ಬೆತ್ತದಿಂದ ಬುಟ್ಟಿ, ತಟ್ಟಿ ಮುಂತಾದುವನ್ನು ಹೆಣೆಯುವುದು.
- (34) ತಕ್ಷಕರ್ಮಿಣಿ ಮರಗೆಲಸ.
- (35) ತಕ್ಷಣಮ್ ಗುಡಿಗಾರಿಕೆ, ಮರಗಳನ್ನು ಕೆತ್ತಿ ಮಂಚ, ಆಸನ, ಬೊಂಬೆ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ತಯಾರಿಸುವುದು.
- (36) ವಾಸ್ತುವಿद्या ಗೃಹನಿರ್ಮಾಣ ಮುಂತಾದ ಶಿಲ್ಪವಿದ್ಯೆ.
- (37) ರೂಪರತ್ನಪರೀಕ್ಷಾ ಬೆಳ್ಳಿ, ರತ್ನ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸುವುದು.
- (38) ಧಾತುವಾದ: ಕಲ್ಲು, ಮಣ್ಣು, ಲೋಹ, ರತ್ನ ಮೊದಲಾದ ಧಾತುಗಳ ಶೋಧನ ಮೇಳನ ಮುಂತಾದ ಜ್ಞಾನಕ್ಕಾಗಿ ಲೋಹ ವಿದ್ಯೆ.

- (39) ಮಣಿರಾಗಾಕಾರಜ್ಞಾನಮ್ ರತ್ನಗಳ ಬಣ್ಣ ಮತ್ತು ಆಕಾರಗಳನ್ನು ತಿಳಿಯುವುದು.
- (40) ವೃಕ್ಷಾಯುರ್ವೇದಯೋಗಾ: ಸಸಿ ಮರಗಳನ್ನು ಬೆಳೆಯಿಸಿ ತೋಟಗಳನ್ನು ನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡುವುದು.
- (41) ಮೇಷಕುಕ್ರುಡ-ಲಾಪಕಯುಧವಿಧಿ: ಟಿಗರು, ಕೋಳಿ, ತಿತ್ತಿರಿಪಕ್ಷಿ ಇವುಗಳ ಕಾಳಗವನ್ನು ಮಾಡಿಸುವುದು.
- (42) ಶುಕ್ಲಶಾರಿಕಾ-ಪ್ರಲಾಪನಮ್ ಗಿಳಿ ಮೊದಲಾದ ಪಕ್ಷಿಗಳಿಂದ ಮಾತನಾಡಿಸುವುದು.
- (43) उत्सादने संवाहने केशमर्दने च कौशलम् ಕಾಲಿನಿಂದ ತುಳಿಯುವುದು, ಮೈಯನ್ನು ಒತ್ತುವುದು, ತಲೆಗೆ ಎಣ್ಣೆ ಒತ್ತುವುದು ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ನೈಪುಣ್ಯ.
- (44) अक्षरमुष्टिका-कथनम् ಗುಟ್ಟಾದ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಕುರಿತು ಮಾತನಾಡುವುದಕ್ಕೂ ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಹೇಳುವುದಕ್ಕೂ ಬೆರಳುಗಳಿಂದ ಮುದ್ರೆಗಳ ಮೂಲಕ ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸಿ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು.
- (45) म्लेच्छितविकल्पा: ಗುಟ್ಟಾದ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸಲು ಸರಿಯಾದ ಶಬ್ದಗಳನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸಿದರೂ ಇತರರಿಗೆ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತಿಳಿಯದಿರಲು ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಬದಲಾಯಿಸಿ ಹೇಳುವುದು.
- (46) देशभाषाविज्ञानम् ಆಯಾ ದೇಶಭಾಷೆಗಳನ್ನು ತಿಳಿಯುವುದು.
- (47) पुष्पशकटिका ಹೂವಿನ ಬಂಡಿಯನ್ನು ತಯಾರಿಸುವುದು.
- (48) निमित्तज्ञानम् ಶಕುನಗಳನ್ನು ತಿಳಿಯುವುದು.
- (49) यन्त्रमातृका ಸರ್ಜೀವ ಮತ್ತು ನಿರ್ಜೀವ ಯಂತ್ರಗಳನ್ನು ಪ್ರಯಾಣ ಮತ್ತು ಜಲಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ಜೋಡಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ.
- (50) धारणमातृका ಓದಿದ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಗ್ರಹಿಸಿದ್ಯಥವಾಗಿ ಟ್ಪು ಕೊಳ್ಳಲು ಅವಶ್ಯವಾದ ಶಾಸ್ತ್ರ.



- (51) ಸಂಪಾಠ್ಯಮ್ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಓದುವುದು.  
 (52) ಮಾನಸೀ ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣುವ ಮತ್ತು ಕಾಣಿಸದಿರುವ ವಸ್ತುಗಳ ಭೇದವಿಷಯವಾದ ಚಿಂತೆ.  
 (53) ಕಾವ್ಯಕ್ರಿಯಾ ಕಾವ್ಯಗಳ ರಚನೆ.  
 (54) ಅಭಿಷಾನ್‌ಕೋಶ: ನಿಘಂಟು.  
 (55) ಛಂದೋಜ್ಞಾನಮ್ ವೃತ್ತಗಳ ಜ್ಞಾನ.  
 (56) ಕ್ರಿಯಾಕಲ್ಪ: ಕಾರ್ಯವಿಧಾನದ ತಿಳಿವಳಿಕೆ.  
 (57) ಛಲಿತಕಯೋಗಾ: ಜೂಜು ಮೊದಲಾದುವುಗಳಲ್ಲಿ ಇತರರನ್ನು ಮರುಳು ಮಾಡುವುದು.  
 (58) ವಸ್ತ್ರಗೋಪನಾನಿ ವಸ್ತ್ರಗಳ ರಕ್ಷಣೆ.  
 (59) ದೃತವಿಶೇಷಾ: ಬಗೆಬಗೆಯ ಜೂಜುಗಳು.  
 (60) ಆಕರ್ಷಕಶೀಡಾ ಪಗಡೆಯಾಟ.  
 (61) ಬಾಲಕೋಡನಕಾನಿ ಮಕ್ಕಳ ಆಟಗಳು.  
 (62) ವೈನಯಿಕೀನಾಮ್ ವಿನಯವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ.  
 (63) ವೈಜಯಿಕೀನಾಮ್ ವಿಜಯದ ವಿಧಾನವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ ಮತ್ತು  
 (64) ವ್ಯಾಯಾಮಿಕೀನಾಂ ಚ ವ್ಯಾಯಾಮ ಕ್ರಮವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ ವಿದ್ಯೆಯ ಜ್ಞಾನ.

“ಕಲಾ: ಚತುರ್ವಿಂಶತಿಭಿಃ ತಸ್ಯಾಂ ಕಥಾಂ ಸುಶ್ರವಿ ನಾಮ ನಾಸ್ಯಾಮ್” ನೈಷಂ ೭-೧೦೭। “ಕಲಾಸು ತಸ್ಯಾ: ಸಕಲಾಸು ಪಂಡಿತಾ:” ನೈಷಂ ೧೫-೨೬। 6. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಒಂದು ಸಣ್ಣ ಭಾಗ, ಅಂಶ. “ಸರ್ವೇ ತೇ ಜಪಯಜ್ಞಸ್ಯ ಕಲಾಂ ನಾಹಂತಿ ಷೋಡಶೀಮ್” ಮನುಂ ೨-೭೬। 7. ಕಾಲದ ಒಂದು ಭಾಗ, ಮೂವತ್ತು (30) ಕಾಷ್ಠಗಳ ಕಾಲ; ಒಂದು ಪ್ರಸ್ತಾವನೆಯನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸುವಷ್ಟು ಕಾಲವು ಒಂದು (ಅಕ್ಷಿ) ನಿಮೇಷ. ಹದಿನೈದು (15) ಸಲ ರವೈಯಾಡಿಸುವಷ್ಟು ಕಾಲವು ಒಂದು ಕಾಷ್ಠ. ಮೂವತ್ತು (30) ಕಾಷ್ಠಗಳ ಕಾಲವು ಒಂದು ಕಲೆ. “ಲಘುಕ್ಷರೋಚ್ಚಾರಣಮಾತ್ರೋಪಕ್ಷಿಪ್ತನಿಮೇಷ:; ಪञ्चದಶಾಕ್ಷಿನಿಮೇಷಾ: ಕಾಷ್ಠಾ, ತ್ರಿಶತ್ ಕಾಷ್ಠಾ: ಕಲಾ, ವಿಶತಿಕಲೋ ಮುಹೂರ್ತ:; ತ್ರಿಶನ್ಮುಹೂರ್ತಮಹೋರಾತ್ರಮ್” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೬-೫। 8. ಮನುಷ್ಯನ ಶರೀರದ ಒಂದು ಭಾಗ: ಮನುಷ್ಯನ ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಏಳು ಕಲೆಗಳಿರುವವು. (1) ಮಾಂಸಧರಾ, (2) ರಕ್ತಧರಾ, (3) ಮೇದೋಧರಾ, (4) ಶ್ಲೇಷ್ಮಧರಾ, (5) ಮಲಧರಾ, (6) ಪಿತ್ತಧರಾ, ಮತ್ತು (7) ರೇತೋಧರಾ ಇವು ಸಪ್ತ (ಏಳು) ಕಲೆಗಳು. ಇವು ಮಾಂಸ ರಕ್ತ ಮೊದಲಾದ ಸಪ್ತಧಾತುಗಳಿಗೂ ಸ್ಥಾನಗಳಾಗಿರುವವು. “ಕಲಾ:

ಸತ್ವಾಪಿ ಸಪ್ತ ಭವಂತಿ ಧಾತವಾಶಯಾಂತರಮರ್ಯಾದಾ:” ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೪-೫।

(1) “ಮಾಂಸಧರ” ಕಲೆಯಲ್ಲಿ ನರ, ಸ್ನಾಯು (ಮಾಂಸಖಂಡ) ಮುಂತಾದುವು ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವುವು. “ಯಥಾ ವಿಸಮೃಣಾಲಾನಿ ವಿವರ್ಧಂತೇ ಸಮಂತತ:। ಭೂಮೌ ಪಕ್ಷೋದ-ಕಸ್ಥಾನಿ ತಥಾ ಮಾಂಸೇ ಸಿರಾದಯ:” ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೪-೯।

(2) ಮಾಂಸದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ “ರಕ್ತಧರ” ಕಲೆಯಿರುವುದು. ರಕ್ತವನ್ನು ಗಾಯಗೊಳಿಸಿದರೆ ಅದರ ಒಳಗಿನಿಂದ ಹಾಲು ಹೊರಡುವಂತೆ ಮಾಂಸಕ್ಕೆ ಏಳು ತಗುಲಿದರೆ ಒಳಗಿನಿಂದ ರಕ್ತವು ಸ್ರವಿಸುವುದು. “ವೃಕ್ಷಾಽಪಿ ಬಿಭ್ರಹತಾತ್ ಕ್ಷೀರ್ಣಿ: ಕ್ಷೀರಮಾಸ್ರವೇತ್। ಮಾಂಸಾದೇವ ಕ್ಷತಾತ್ ಕ್ಷಿಪ್ರಂ ಶೋಣಿತಂ ಸಂಪ್ರಸಿಚ್ಯತೇ” ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೪-೧೧।

(3) ಸಕಲ ಪ್ರಾಣಿಗಳಿಗೂ ಉದರದಲ್ಲಿ ದೊಡ್ಡ ಎಲುಬುಗಳಲ್ಲಿ ಮಜ್ಜೆಯೂ ಸಣ್ಣ ಎಲುಬುಗಳಲ್ಲಿ ಮೇದಸ್ಸೂ (ಕೊಬ್ಬೂ) ಇರುವುದು. ಇದೇ “ಮೇದೋಧರ”.

“ಸ್ಥೂಲಾಸ್ಥಿಭಿಃ ವಿಶೇಷೇಣ ಮಜ್ಜಾ ತ್ವಮ್ಯಂತರಾಶ್ರಿತ:। ಅಥೇತರೇಷು ಸರ್ವೇಷು ಸರಕ್ತಂ ಮೇದಃ ಉಚ್ಯತೇ” ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೪-೧೩।

(4) “ಶ್ಲೇಷ್ಮಧರ”ಯು ಪ್ರಾಣಿಗಳ ದೇಹದ ಎಲ್ಲಾ ಸಂಧಿ (ಕೀಲು)ಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಇರುವುದು. ಚಕ್ರದೊಳಗಿರುವ ದೂರಿಗೆ ಎಣ್ಣೆಯನ್ನು ಹಾಕಿದರೆ ಚಕ್ರವು ಸುಖವಾಗಿ ತಿರುಗುವಂತೆ ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಎಲುಬುಗಳ ಸಂಧಿಗಳು ಶ್ಲೇಷ್ಮದಿಂದ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವುವು. “ಸ್ನೇಹಾಮ್ಯಕ್ತೇ ಯಥಾ ಹ್ಯಕ್ಷೇ ಚಕ್ರಂ ಸಾಧು ಪ್ರವರ್ತತೇ। ಸಂಧಯ: ಸಾಧು ವರ್ತಂತೇ ಸಂಶಿಲಪ್ತಾ: ಶ್ಲೇಷ್ಮಣಾ ತಥಾ” ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೪-೧೫।

(5) ಒಳಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಪಕ್ಷಾಶಯದಲ್ಲಿರುವ “ಮಲಧರ”ಯು ಮಲಮೂತ್ರಗಳನ್ನು ಪ್ರತ್ಯೇಕಿಸುವುದು. “ಪञ್ಚಮಿ ಪುರೀಷ (ಮಲ) ಧರಾ ನಾಮ, ಯಾಂತ:ಕೋಶೇ ಮಲಮಭಿ-ವಿಭಜತೇ ಪಕ್ವಾಶಯಸ್ಥಾ” ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೪-೧೬।

(6) ಜಠರಾಗ್ನಿಯೆಂಬ “ಪಿತ್ತಧರ”ಯು ಆಮಾಶಯದಿಂದ ಕೆಳಗೆ ಜಾರಿಕೊಂಡು ಪಕ್ಷಾಶಯಕ್ಕೆ ಹೊರಟಿರುವ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಅನ್ನ (ಅಶಿತ, ಖಾದಿತ, ಪೀತ, ಲೀಢ)ಗಳನ್ನು ಜೀರ್ಣವಾಗಿಸಲು ವಹಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು “ಷಷ್ಠಿ ಪಿತ್ತಧರಾ, ಯಾ ಚತುರ್ವಿಧಮನ್ನಪಾನಮಾಮಾಶಯಾತ್ಪ್ರಚ್ಯುತಂ ಪಕ್ವಾಶಯೋ-ಪಸ್ಥಿತಂ ಧಾರಯತಿ” ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೪-೧೭।

(7) “ರೇತೋಧರ”ಯು ಸಕಲ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ದೇಹದಲ್ಲಿಯೂ, ಹಾಲಿನಲ್ಲಿ ತುಪ್ಪವೂ ಕಬ್ಬಿನೊಳಗೆ ರಸವೂ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವಂತೆ ಸರ್ವಾವಯವಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವುದು. “ಸಪ್ತಮಿ ಶುಕ್ರಧರಾ, ಯಾ ಸರ್ವಪ್ರಾಣಿನಾಂ ಸರ್ವ-ಶಾರೀರವ್ಯಾಪಿನಿ”। “ಯಥಾ ಪಯಸಿ ಸರ್ಪಿಸ್ತು ಗೃಹಶ್ಚೇಕೌ ರಸೋ



ಯಥಾ। ಶರೀರೇಶು ತಥಾ ಶುಕ್ರಂ ನೃಣಾಂ ವಿಜ್ಞಾತ್ ಭಿಷಗ್ವರಃ”  
 ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೪-೨೦, ೨೧। 9. (ಜ್ಯೋತಿಷದಲ್ಲಿ)  
 ಅಂಶದ ಅರವತ್ತನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. ರಾಶಿಯ ಮೂವ  
 ತ್ತನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗವು ಅಂಶ. “ವಿಕಲಾನಾಂ ಕಲಾ ಷಟ್ಕಾ  
 ತತ್ವಷ್ಟಕಾ ಭಾಗ ಉಚ್ಯತೇ। ತತ್ತ್ರಿಶತಾ ಭವೇದ್ರಾಶಿಃ ಭಗನೋ  
 ದ್ವಾದಶೇವ ತೇ” ಸೂಂ ಸಿಂ ೧-೭। 10. ಕೂಡುವುದು.  
 ಒಟ್ಟು ಸೇರಿಸುವುದು, ಲೆಕ್ಕ ಹಾಕುವುದು. 11. ಬಹಳ  
 ಸೂಕ್ಷ್ಮಾಂಶ, ಪರಮಾಣು. 12. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ.  
 13. ಹೆಂಸರ ರಜಸ್ಸು. 14. ನೆಹೆ, ಹೆಡಗು, ನಾವೆ.  
 15. ಕೆಲಶಲ, ಜಾಣತನ. “ಕಲಾಂಶಮಾತ್ರೇ ಶಿಲ್ಪಾದೌ ಕಲನಾ  
 ಕಾಲಭೇದಯೋಃ। ಇಂದೋಶ್ಚ ಷೋಡಶೇ ಭಾಗೇ ಸ್ಯಾನ್ಮೂಲಧನವರ್ಧನೇ”  
 ನಾನಾರ್ಥರಂ। 16. ಪಂಚಮಹಾಭೂತಗಳು. 17. ಅಂ,  
 ಅವಯವ. 18. ಇಂದ್ರಿಯ. “ಕಾಲಶಿಲ್ಪೇ ವಿದ್ವತ್ಪದೌ  
 ಚಂದ್ರಾಂಶೇ ಕಲನೇ ಕಲಾ। ಮಹಾಭೂತೇಷ್ವಿಂದ್ರಿಯೇಷು ಜ್ಞಾನಾವಯವಯೋ-  
 ರಪಿ” ವೈಜಂ। 19, ಮನುಷ್ಯನ ಶರೀರ ರಚನೆಗೆ ಬೇಕಾದ  
 ಹದಿನಾರು (16) ಉಪಾಧಿಗಳು. (1) ಪ್ರಾಣ, (2) ಶ್ರದ್ಧಾ,  
 (3) ಆಕಾಶ, (4) ವಾಯು, (5) ತೇಜ, (6) ಜಲಮ್,  
 (7) ಪೃಥ್ವಿ, (8) ಇಂದ್ರಿಯಮ್, (9) ಮನಃ, (10) ಅಜ್ಞಮ್,  
 (11) ವೀರ್ಯಮ್, (12) ತಪಃ, (13) ಮನ್ತ್ರಃ, (14) ಕರ್ಮ,  
 (15) ಲೋಕಃ ಮತ್ತು (16) ನಾಮ ಇವು ಉಪಾಧಿಗಳು. “ತಸ್ಮಿ  
 ಸ ಹೋವಾಚ ಇಹೈವಾಂತಃಶರೀರೇ ಸೋಮ್ಯ। ಸ ಪುರುಷೋ ಯಸ್ಮಿನ್ನೇತಾಃ  
 ಷೋಡಶ ಕಲಾಃ ಪ್ರಭವಂತಿ ಇತಿ” ಪ್ರಶ್ನೋಪಂ।

**ಕಲಾಕುಲ ಕಲಾಕುಲ** (ನಂ) ಹಾಲಾಹಲವಿಷ. ಕಲಯಾ  
 ಮಾತ್ರಯಾಪಿ ಆಕುಲಯತಿ — ಆಕುಲಿ ನಾಮಧಾಂ “ಅಚ್”  
 (೩-೧-೧೩೪)।

**ಕಲಾಕುಶಲ ಕಲಾಕುಶಲ** (ವಿಂ) ಕುಶಲ ವಿದ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ನಿಪುಣ  
 ನಡವನು. ಕಲಾಯಾಂ ಕುಶಲಃ।

**ಕಲಾಕೇಲಿ ಕಲಾಕೇಲಿ** (ಪುಂ) ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ಕಲಯಾ  
 ಕೇಲಿರಸ್ಯ। “ರಾಗರಜ್ಜುಃ ಕಲಾಕೇಲಿಮಧುದೀಪರವೀಪುರಃ”  
 ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಕಲಾಕ್ಷಯ ಕಲಾಕ್ಷಯ** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರನ ಕಲೆಗಳು ಕಡಮೆ  
 ಯಾಗುವಿಕೆ. ಕಲಾನಾಂ ಷೋಡಶಕಲಾನಾಂ ಷಯೋ ನಾಶಃ।  
 “ಪರ್ಯಯೀತಸ್ಯ ಸುರೇಹಿಮಾಂಶೋಃ ಕಲಾಕ್ಷಯಃ ಶ್ಲಾಘ್ಯತರೋ ಹಿ  
 ವೃದ್ಧಃ” ರಘುಂ ೪-೧೬। ಕೃಷ್ಣಷ್ಣದ ಪಾಡ್ಯ ಮೊದಲು  
 ಗೊಂಡು ಹದಿನೈದು ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿ ಮೊದಲಾದ ಹದಿ  
 ನೈದು ದೇವತೆಗಳು ಪಾನಮಾಡುವುದರಿಂದ ಚಂದ್ರನ ಕಲೆ  
 ಗಳು ಕ್ರಮೇಣ ಕಡಮೆಯಾಗುತ್ತ ಬಂದು ಪುನಃ ಪಕ್ಷಾಂತ  
 ದಲ್ಲಿ ಯಾಗಗಳಲ್ಲಿ ಹುತವಾದ ಹವಿಸ್ಸುಗಳು ಆಮೃತ

ರೂಪದಿಂದ ಕ್ರಮೇಣ ಆ ಕಲೆಗಳಾಗಿ ಚಂದ್ರನನ್ನು ಸೇರು  
 ವುವು. ಹೀಗೆ ಅಮಾವಾಸ್ಯೆವರೆಗೂ ಕಲೆಗಳು ಕ್ಷಯ ಹೊಂದಿ  
 ಪುನಃ ಪೂರ್ಣಮಯ ವೇಳೆಗೆ ತುಂಬಿಕೊಂಡು ಚಂದ್ರಬಿಂಬವು  
 ಪೂರ್ಣವಾಗುವುದು. ಇದೇ ಪೂರ್ಣಮ್. “ಪ್ರಥಮಾಂ ಪಿಬತೇ  
 ವಹ್ನಿಃ ದ್ವಿತೀಯಾಂ ಪಿಬತೇ ರವಿಃ। ವಿಶ್ವೇದೇವಾಸ್ತೃತೀಯಾಂ ತು ಚತುರ್ಥಾಂ  
 ಸಲಿಲಾಧಿಪಃ। ಪಂಚಮೀಂ ತು ವರ್ಷಾಕಾರಃ ಷಷ್ಠೀಂ ಪಿಬತಿ ವಾಸವಃ।  
 ಸಪ್ತಮೀಂ ಶ್ರುಷಯೋ ದಿವ್ಯಾಃ ಅಷ್ಟಮೀಮಜಃ ಏಕಪಾತ್। ನವಮೀಂ  
 ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷೇಷ್ಯ ಯಮಃ ಪ್ರಾಶನಾತಿ ವೈ ಕಲಾಮ್। ದಶಮೀಂ ಪಿಬತೇ  
 ವಾಯುಃ ಪಿಬತೀಕಾದಶೀಮುಮಾ। ದ್ವಾದಶೀಂ ಪಿತರಃ ಸರ್ವೇ ಸಮಂ  
 ಪ್ರಾಶನಂತಿ ಭಾಗಶಃ। ತ್ರಯೋದಶೀಂ ಧನಾಧ್ಯಕ್ಷಃ ಕುಬೇರಃ ಪಿಬತೇ  
 ಕಲಾಮ್। ಚತುರ್ದಶೀಂ ಪಶುಪತಿಃ ಪಂಚದಶೀಂ ಪ್ರಜಾಪತಿಃ। ನಿಷ್ಪತಿತಃ  
 ಕಲಯಾ ಶೇಷಶ್ಚಂದ್ರಮಾ ನ ಪ್ರಕಾಶತೇ। ಕಲಾ ಷೋಡಶಿಕಾ ಯಾ  
 ಸಾತ್ವಪಃ ಪ್ರವಿಶತೇ ಸದಾ। ಅಮಾಯಾಂ ತು ಸದಾ ಸೋಮ ಆಘಾತಃ  
 ಪ್ರತಿಪದ್ಯತೇ। ತಮೋಷಧಿಗತಂ ಗಾವಃ ಪಿಬತೀಮ್ಬುಗತಂ ಚ ಯತ್। ತತ್  
 ಕ್ಷೀರಮಮೃತಂ ಭೂತ್ವಾ ಮನ್ತ್ರಪೂತಂ ದ್ವಿಜಾತಿಭಿಃ। ಹುತಮಗ್ನಿಷು ಯಜ್ಞೇಷು  
 ಪುನರಾಪ್ಯಾಯತೇ ಶಶಿಃ। ದಿನೇ ದಿನೇ ಕಲಾವೃದ್ಧಿಃ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಾಂ ತು  
 ಪೂರ್ಣತಾ”।

**ಕಲಾಡ್ಕುರ ಕಲಾಂಕುರ** (ಪುಂ) 1. ಸಾರಸ ಪಕ್ಷಿ. ಕಲ-  
 ಸ್ಯಾಡ್ಕುರೋ ಯತ್ರ। 2. ಚೋಯುಷಾಸ್ತೃಪ್ತವರ್ತಕನಾದ  
 ಮೂಲದೇವ. ಕಲಾನಾಮಡ್ಕುರೋ ಯತ್ರ। “ಕರ್ಣಿಸುತೋ  
 ಮೂಲದೇವೋ ಮೂಲಭದ್ರಃ ಕಲಾಡ್ಕುರಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಕಲಾಚಿ ಕಲಾಚಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೊಳಕೆ ಮತ್ತು ಮಣಕಟ್ಟುಗಳ  
 ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಮುಂಗೈ. ಕಲಾಮಚ್ಚತಿ — ಅಚ್ಚು (ಗತೀ)  
 “ಅಣ್” (೩-೨-೧)। ಗೌರಾಂ “ಡೀಫ್” (೪-೧-೪೧)।  
 ಸ್ವಾರ್ಯ “ಕನ್”। ಕಲಾಚಿಕಾ ಕಲಾಚಿಕಾ.

**ಕಲಾದ ಕಲಾದ** (ಪುಂ) ಅಕ್ಕಸಾಲೆ, ಚಿನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿ ಕೆಲಸಗಾರ.  
 ಕಲಾಮಂಶಮಾದತ್ತೇ—ಆ ಹು ದಾನ್ (ದಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೪)।  
 “ವಯಂ ಕಲಾದಾ ಇವ ದುರ್ವಿದಗ್ಧಂ ತ್ವದ್ಗೌರಮಸ್ಪರ್ಧಿ ದಹೇಮ ಹೇಮ”  
 ನೇಷಂ ೮-೧೧।

**ಕಲಾದಕ ಕಲಾದಕ** (ಪುಂ) ಸ್ವರ್ಣಕಾರ, ಅಕ್ಕಸಾಲೆ, ಚಿನ್ನ  
 ಬೆಳ್ಳಿ ಕೆಲಸಗಾರ. ಕಲಾಮಂಶಮತಿ—ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ) “ಫ್ವಲ್”  
 (೩-೧-೧೩೩)।

**ಕಲಾಧರ ಕಲಾಧರ** (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಧರತಿ — ಧ್ವಜ  
 (ಧಾರಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। ಕಲಾನಾಂ ಧರಃ।  
 2. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. (ವಿಂ) 3. ಅರವತ್ತನಾಲ್ಕು ಕಲೆ  
 ಗಳನ್ನು ಬಲ್ಲವನು.

**ಕಲಾನಿಧಿ ಕಲಾನಿಧಿ** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಕಲಾ ನಿವಿಧೀಂತೇ-  
 ಸ್ಮಿನ್ — ನಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) “ಕಿಃ”



(೩-೩-೯೨) | “ಅಹೋ ಮಹತ್ವಂ ಮಹತಾಮಪೂರ್ವಂ ವಿಪತ್ತಿಕಾಲೇಽಪಿ ಪರೋಪಕಾರಃ | ಯಥಾಽಽಸ್ಯಮಧ್ಯೆ ಪತಿಸ್ತೋಽಪಿ ರಾಹೋಃ ಕಲಾನಿಧಿಃ | ಪುಷ್ಯಚಯಂ ದದಾತಿ” ಉದ್ಭಂ |

ಕಲಾಂತರ ಕಲಾಂತರ (ಪುಂ) 1. ಬಡ್ತಿ, ಮೂಲಧನದ ವೃದ್ಧಿಂಶ. ಅನ್ಯಾ ಕಲಾ ಅಂಶಃ | 2. ಚಂದ್ರನ ಮತ್ತೊಂದು ಕಲೆ. “ಪುಷ್ಪ ಲಾವಣ್ಯಮಯಾನ್ ವಿಶೇಷಾನ್ ಜ್ಯೋತಿಸ್ನಾಂತರಾಣಿವ ಕಲಾಂತರಾಣಿ” ಕುಮಾಂ ೧-೨೫ | “ಮಾಸೇ ಶತಸ್ಯ ಯದಿ ಪಶ್ಚ ಕಲಾಂತರಂ ಸ್ಯಾತ್” ಲೀಲಾಂ |

ಕಲಾಪ ಕಲಾಪ (ಪುಂ) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು, ರಾಶಿ. ಕಲಾ ಮಾತ್ರಾಮಾಪ್ನೋತಿ — ಆಪ್ಲ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) “ಅಪ್” (೩-೧-೨) | “ಕ್ರಿಯಾಕಲಾಪೇರಿದಮೇವ ಯೋಗಿನಃ ಶ್ರದ್ಧಾನ್ವಿತಾಃ ಸಾಧು ಯಜಂತಿ ಸಿದ್ಧಯೇ” ಭಾಗಂ ೪-೨೪-೬೨ | 2. ನವಿಲಿನ ಪುಕ್ಕ. “ಪಕ್ಷಸ್ಯ-ತಾವದ್ವಚಂದ್ರಕೋಽಪಿ ಕಲಾಪಿನಾಂ ಯೇನ ಜಿತಃ ಕಲಾಪಃ” ನೆಪಂ ೭-೨೦ | 3. ಭೂಷಣ, ಒಡವೆ. “ಕಂಠಸ್ಯ ತಸ್ಯಾಃ ಸ್ತನ-ಬಂಧುರಸ್ಯ ಮುಕ್ತಾಕಲಾಪಸ್ಯ ಚ ನಿಸ್ತಲಸ್ಯ” ಕುಮಾಂ ೧-೪೨ | 4. ಡಾಬು, ಒಡ್ಡಾಣ. 5. ಚಂದ್ರ. 6. ಜಾಣ, ಬುದ್ಧಿ ಮಂತ. 7. ಕಾತಂತ್ರವೆಂಬ ಒಂದು ವ್ಯಾಕರಣ. 8. ಬತ್ತಳಕೆ, ಬಾಣಗಳನ್ನಡುವ ಚರ್ಮದ ಚೀಲ. “ಕಲಾಪಃ ಸಂಹತೌ ಬಹೇ ಕಾಶ್ಚಾಂ ಭೂಷಣತುಣಯೋಃ | ಚಂದ್ರೇ ವಿದಗ್ಧೇ ವ್ಯಾಕರಣಭೇದೇಽಪಿ ಕಥ್ಯತೇ ಬುಧಃ” ಮೇದಿಂ | 9. ಒಂದು ಗ್ರಾಮ, ಒಂದು ಹಳ್ಳಿ. “ದೇವಾಪಿಯೋಗಮಾಸ್ಥಾಯ ಕಲಾಪಗ್ರಾಮಮಾಸ್ಥಿತಃ | ಸೋಮ-ವಂಶೇ ಕಲೌ ನಷ್ಟೇ ಕೃತಾದೌ ಸ್ಥಾಪಯಿಷ್ಯತಿ” ಭಾಗಂ ೧-೧೨-೧೩ | 10. ಧನುಸ್ಸು, ಬಿಲ್ಲು, ಅಂಚು. 11. ಬಾಣ, ಶರ. 12. ಅನೆಯ ಕತ್ತಿನ ಹಗ್ಗ.

ಕಲಾಪಕ ಕಲಾಪಕ (ಪುಂ) 1. “ಕಲಾಪ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ಕಲಾಪ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” | 2. ಏಕಕರ್ತೃಕ್ರಿಯಾತ್ಮಕವಾಗಿ ಒಂದೇ (ಅನ್ವಯವುಳ್ಳ) ವಾಕ್ಯವಾಗಿರುವ ನಾಲ್ಕು ಶ್ಲೋಕ ಗಳು. “ದ್ರಾಮ್ಯಾಂ ಯುಗ್ಮಮಿತಿ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ತ್ರಿभिಃ ಶ್ಲೋಕೈವಿಶೇಷಕಮ್ | ಕಲಾಪಕಂ ಚತುರಿಃ ಸ್ಯಾತ್ ತದ್ಭವಂ ಕುಲಕಂ ಮತಮ್” | 3. ನವಿಲುಗಳು ಪುಕ್ಕವನ್ನು ಬಿಚ್ಚುವ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕೂಡ ಬೇಕಾದ ಸಾಲ. ಯಸ್ಮಿನ್ ಕಾಲೇ ಮಯೂರಾಃ ಕಲಾಪಿನೋ ಭವಂತಿ ಸ ಕಲಾಪಿ ತತ್ರ ದೇಯಂ ಕೃಣಮ್ “ಕುನ್” (೪-೩-೪೮) |

ಕಲಾಪದ್ವೀಪ ಕಲಾಪದ್ವೀಪ (ಪುಂ) “ಕಲಾಪ” ವೆಂಬ ಒಂದು ಗ್ರಾಮ. ಇದು ಹಿಮವತ್ಸರ್ವತೃಕುಂತಲೂ ಉತ್ತರ ದಲ್ಲಿರುವುದು. “ಸತ್ಯಭಾಮಾ ತಥೈವಾನ್ಯಾ ದೇವ್ಯಃ ಕೃಷ್ಣಸ್ಯ ಸಂಮತಾಃ | ವನಂ ಪ್ರವಿವಿಶ್ವ ರಾಜನ್ ತಪಸೇ ಕೃತನಿವಚಯಾಃ | ಫಲಮೂಲಾದಿಭೋಜಿನ್ಯೋ ಹರಿಧ್ಯಾನೈಕತತ್ಪರಾಃ | ಹಿಮವಂತಮ-ತಿಕ್ರಮ್ಯ ಕಲಾಪಗ್ರಾಮಮಾವಿಶನ್” ಭಾಂ ಮೌಸಲಂ ೭ |

ಕಲಾಪಿನ್ ಕಲಾಪಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಕಲಾಪೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೫) | “ನನುತುಶ್ಚ ವಾರಿಧರಧೀರವಾರಣಧ್ವನಿಹೃಷ್ಣಕೂಜಿತಕಲಾಃ ಕಲಾಪಿನಃ” ಮಾಘಂ ೧೩-೫ | 2. ಅಲದಮರ. 3. ಕೋಗಿಲೆ. ಕಲಸ್ಯಾಪಿ — ಆಪ್ಲ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) “ಫಿನಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) | 4. ನವಿಲುಗಳು ಪುಕ್ಕವನ್ನು ಬಿಚ್ಚುವ ಕಾಲ. (ವಿಂ) 5. ಬಾಣಗಳಿಂದ ತುಂಬಿದ ಬತ್ತಳಕೆಯನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೫) | ಕಲಾಪಿನಿ ಕಲಾಪಿನೀ.

ಕಲಾಪಿನಿ ಕಲಾಪಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಾತ್ರಿ. ಕಲಾಪಃ ಚಂದ್ರೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿಯಾಮ್ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೫) | “ಡೀಪ್” (೪-೧-೫) | 2. ನಾಗರಮುಸ್ತೆ. 3. ಹೆಣ್ಣು ನವಿಲು.

ಕಲಾಪೂರ್ಣ ಕಲಾಪೂರ್ಣ (ಪುಂ) 1. ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ಚಂದ್ರ. ಕಲಾಪಿಃ ಷೋಡಶಕಲಾಪಿಃ ಪೂರ್ಣಃ | (ವಿಂ) 2. ಕುಶಲ ವಿದ್ಯೆಯಿಂದ ತುಂಬಿದ, ಸಕಲ ಕಲೆಗಳಲ್ಲಿಯೂ ನಿಪುಣನಾದ. “ಸದಾ ಭವಾನ್ ಫಾಲ್ಗುನಸ್ಯ ಗುಣಾನಸ್ಮಾಸು ಕತ್ಯಸೇ | ನ ಚಾರ್ಜುನಃ ಕಲಾಪೂರ್ಣಃ ಮಮ ದುರ್ಯೋಧನಸ್ಯ ವಾ” ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೪೦-೨೯ |

ಕಲಾಭೃತ್ ಕಲಾಭೃತ್ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. 2. ಶಿಲ್ಪಿ, ಕಲೆಗಾರ, ಕಲಾವಿದ, ಕಲಾಭಿಜ್ಞ. ಕಲಾಂ ಬಿಮರ್ಶಿ — ತು ಭೃತ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ವಿವಪ್” (೩-೨-೬೧) | “ದಶಾಬ್ದಾಪ್ಯಂ ಪೌರಸತ್ಯಂ ಪಶ್ಚಾಬ್ದಾಪ್ಯಂ ಕಲಾಭೃತಾಮ್” ಮನುಂ ೨-೧೩೪ |

ಕಲಾಯ ಕಲಾಯ (ಪುಂ) ನೆಲಗಡಲೆ ಗಿಡ. ಕಲಾಮಯತೇ — ಅಯ (ಗತೌ) “ಅಪ್” (೩-೨-೧) | “ವಿಕಸತ್ಕಲಾಯ-ಕುಸುಮಾಸಿತದೃತೇರಲಘುಪಾಂಡು ಜಗತಾಮಧೀಶಿತುಃ” ಮಾಘಂ ೧೩-೨೧ |

ಕಲಾಲಾಪ ಕಲಾಲಾಪ (ಪುಂ) ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಕಲಮಾಲ-ಪತಿ — ಆ + ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಅಪ್” (೩-೨-೧) |

ಕಲಾವತ್ ಕಲಾವತ್ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಕಲಾಃ ಸಂತ್ಯಸ್ಮಿನ್ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪) | “ಕಲಾ ಚ ಸಾ ಕಾಂತಿಮತೀ ಕಲಾವತಃ ತ್ವಮಸ್ಯ ಲೋಕಸ್ಯ ಚ ನೇತ್ರಕೌಮುದೀ” ಕುಮಾಂ ೫-೭೧ | (ವಿಂ) 2. ಕಲಾವಿದ, ಗೀತ ನೃತ್ಯ ಮುಂತಾದ ಕಲೆಗಳನ್ನು ಬಲ್ಲವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) | -ವತೀ -ವತೀ.

ಕಲಾವತೀ ಕಲಾವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತುಂಬುರುವಿನ ವೀಣೆ. ಕಲಾಃ ಗೀತರಾಗಾದಯಃ ಸಂತ್ಯಸ್ಯಾಮ್ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪) | “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) | “ವಿಶ್ವಾವಸೋಸ್ತು ಬೃಹತೀ ತುಂಬುರೋಸ್ತು ಕಲಾವತೀ | ಮಹತೀ ನಾರದಸ್ಯ ಸ್ಯಾತ್ ಸರಸ್ವತೀಸ್ತು ಕಚ್ಚಪಿ” | 2. ದ್ರುಮಿಲರಾಜನ ಮಗಳು. 3. ರಾಧೆಯ ತಾಯಿ, ವೃಷಭಾನುವಿನ ಪತ್ನಿ. 4. ಗಂಗೆ.



**ಕಲಾವಿಕ ಕಲಾವಿಕ (ಪುಂ)** ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ. ಕಲೇನ ಸಮ್ಯಕ್  
ವಿಕಾಶತಿ-ಆ+ವಿ+ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೬) ।  
"ಕುಕ್ಕುಟಸ್ತು ವಿವೃತ್ತಾಕ್ಷಿ ರಾತ್ರಿವೇದಿ ಕಲಾವಿಕ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ "ಕೀಃ" (೪-೧-೬೩) । ಕಲಾವಿಕೀ  
ಕಲಾವಿಕೀ.

**ಕಲಾವಿದ್ ಕಲಾವಿದ್ (ವಿಂ)** ಕಲೆಗಳನ್ನು ಅರಿತವನು,  
ಶಿಲ್ಪವಿದ್ಯೆಗಳನ್ನು ಬಲ್ಲವನು. ಕಲಾ: ವೇತ್ತಿ-ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ)  
"ವಿವ್" (೩-೨-೬೧) ।

**ಕಲಾಹಕ ಕಲಾಹಕ (ಪುಂ)** ಕಡಳೆಯುಂಟು ಒಂದು ಪಾದ್ಯ.  
ಕಲಮಾಹಂತಿ - ಆ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ವಿವ್" ।  
ಸಂಜಾಯಾಂ "ಕನ್" ।

**ಕಲಿ ಕಲಿ (ಪುಂ)** 1. ಕಲಿಯುಗ, ಚತುರ್ಯುಗಗಳಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕು  
ನೆಯ ಯುಗ. ಕಲಯತಿ ಪಾಪೇನ ಜಡಯತಿ ಕಲ್ಪುಷಿತಂ ಕರೋತಿ -  
ಕಲ (ಗತೌ ಸಂಖ್ಯಾನೇ ಚ) "ಃ" (೩೦ ೪-೧೩೮) ।

**ಕಲಿಯುಗಮಾನ:** ಕೃತ ತ್ರೇತಾ ದ್ವಾಪರ ಮತ್ತು  
ಕಲಿಗಳೆಂಬ ನಾಲ್ಕುಯುಗಗಳ ಮಾನವು :

| ದೇವವರ್ಷಗಳು      | ಮಾನುಷವರ್ಷಗಳು |
|-----------------|--------------|
| 12,000          | 43,20,000    |
| 4,800 ಕೃತಯುಗ    | 17,28,000    |
| 3,600 ತ್ರೇತಾಯುಗ | 12,96,000    |
| 2,400 ದ್ವಾಪರಯುಗ | 8,64,000     |
| 1,200 ಕಲಿಯುಗ    | 4,32,000     |
| 12,000          | 43,20,000    |

ಈ ಯುಗಮಾನಗಳ ಆರನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗವು (ಯುಗ  
ಗಳ ಅದ್ಯಂತಗಳಲ್ಲಿ) ಸಂಧ್ಯಾ ಸಂಧ್ಯಾಂತಗಳು. ಈ ಆರನೆಯ  
ಒಂದು ಭಾಗವನ್ನು ಕಳೆದರೆ ಕೃತಯುಗ 4,000; ತ್ರೇತಾ  
ಯುಗ 3,000; ದ್ವಾಪರಯುಗ 2,000; ಕಲಿಯುಗ  
1,000 ದೇವ ವರ್ಷಗಳು ಈ ರೀತಿ ಚತುರ್ಯುಗಮಾನ  
ವಾಗುವುದು.

ಕೃತಯುಗದಲ್ಲಿ ಧರ್ಮವು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿರುವುದರಿಂದ  
ಧರ್ಮಪುರುಷನ ನಾಲ್ಕು ಪಾದಗಳೂ ಭೂಮಿಯ  
ಮೇಲಿರುವವು. ತ್ರೇತಾಯುಗದಲ್ಲಿ ಮೂರು ಭಾಗ ಧರ್ಮ  
ಒಂದು ಭಾಗ ಅಧರ್ಮವಿರುವುದರಿಂದ ಧರ್ಮಪುರುಷನ  
ಒಂದು ಪಾದವು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳುವುದು. ದ್ವಾಪರಯುಗ  
ದಲ್ಲಿ ಎರಡು ಭಾಗ ಅಧರ್ಮವಿರುವುದರಿಂದ ಎರಡು  
ಪಾದಗಳು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳುವವು. ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ ಮೂರು  
ಭಾಗ ಅಧರ್ಮ ಒಂದು ಭಾಗ ಧರ್ಮ. ಇದರಿಂದ

ಮೂರು ಪಾದಗಳು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುವವು. ಕಲಿಯುಗದ  
ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಅಧರ್ಮಭೂಯಿಷ್ಯವಾಗುವುದರಿಂದ ಕೊನೆಗೆ  
ಆ ಒಂದು ಪಾದವೂ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು. ಇದರಿಂದ  
ಯುಗಮಾನವು ಒಂದೊಂದು ಯುಗಕ್ಕೂ ನಾಲ್ಕನೆಯ  
ಒಂದು ಭಾಗದಷ್ಟು ಕಡಮೆಯಾಗುವುದು. "ತದ್ವಾದಶ-  
ಸಹಸ್ರಾಣಿ ಚತುರ್ಯುಗಮುದಾಹತಮ್ । ಸೂರ್ಯಾಬ್ದಿಸಂಖ್ಯಯಾ ದ್ವಿತ್ರಿಸಾಗರೇ-  
ರಯುತಾಹತೈ: । ಸಂಖ್ಯಾಸಂಖ್ಯಾಶಿಸಹಿತಂ ವಿಜ್ಞೇಯಂ ತಚ್ಚತುರ್ಯುಗಮ್ ।  
ಕೃತಾದಿನಾಂ ವ್ಯವಸ್ಥೇಯಂ ಧರ್ಮಪಾದವ್ಯವಸ್ಥಯಾ" ಸೂಂಸಿಂ ೧-೧೫,  
೧೬ । ಇಂತಹ ಅಧರ್ಮಭೂಯಿಷ್ಯವಾದ ಈ ಕಲಿಯುಗ  
ದಲ್ಲಿ ಧರ್ಮಪ್ರಾಸ, ಜನರ ದುಃಸ್ವಭಾವ, ಹಿಂಸಾಕೃತ್ಯ  
ಮುಂತಾದುವು ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದವು, ಮಹಾಭಾರತ ಮುಂತಾ  
ದುವುಗಳಲ್ಲಿ ಈ ರೀತಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ:-ಕಲಿಯುಗದ  
ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿಯೇ ದಿನ ದಿನಕ್ಕೂ ಧರ್ಮವು ಕಡಮೆಯಾಗಿ  
ಅಧರ್ಮವು ಬೆಳೆಯುತ್ತಾ ಬಂದಂತೆಲ್ಲಾ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ  
ಉರಿದ್ದ ಧರ್ಮಪುರುಷನ ಒಂದು ಕಾಲೂ ಮೇಲಕ್ಕೆ  
ಹೋಗುತ್ತಾ ಬಂದು ಯುಗಾಂತದಲ್ಲಿ ಅಧರ್ಮವೂ ಹಿಂಸಾ  
ಕೃತ್ಯಗಳೂ, ಅನ್ಯಾಯವೂ ಅಧಿಕವಾಗುತ್ತ ಬರುವವು. ಕಲಿ  
ಮಹಿಮೆಯಿಂದ ಜನರಲ್ಲಿ ಧರ್ಮ, ಸತ್ಯ, ಕ್ಷಮೆ, ದಯೆ,  
ಶೌಚ, ಆಚಾರವ್ಯವಹಾರಗಳು, ಆಯುಃಪ್ರಮಾಣ, ದೈಹಿಕ  
ಶಕ್ತಿ, ಸ್ತೃತಿಶಕ್ತಿ ಇವೆಲ್ಲಾ ನಶಿಸುತ್ತಾ ಬರುವವು. ಧನ  
ವೊಂದೇ ಪ್ರಧಾನವಾಗಿ ಅದರಿಂದಲೇ ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ವಂಶ,  
ಆಚಾರ, ಗುಣ, ಶೀಲ ಮುಂತಾದುವುಗಳ ಮೇಲ್ಮೆ  
ಯುಂಟಾಗುವುದು. ಧರ್ಮ ಮತ್ತು ನ್ಯಾಯಗಳ ವ್ಯವಸ್ಥೆಗೆ  
ಧನಬಲವೇ ಪ್ರಧಾನವಾಗುವುದು. ದಾಂಪತ್ಯಸಿದ್ಧಿಗೆ  
ಪರಸ್ಪರ ಪ್ರೀತಿಯೇ ಕಾರಣವೇ ಹೊರತು ವಂಶ, ವರ್ತನೆ  
ಮುಂತಾದುವುಗಳ ವಿಮರ್ಶೆಯಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಸುರತ  
(ಸಂಭೋಗ) ವೊಂದೇ ಸ್ತ್ರೀತ್ವ ಮತ್ತು ಪುರುಷತ್ವ ಪ್ರಕಾಶಕ  
ವಾಗುವುದು. ದೇಹದಲ್ಲಿ ದಾರವೊಂದು ಮಾತ್ರ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ  
ತ್ವಕ್ಕೆ ಗುರುತಾಗಿ ಉಳಿಯುವುದು. ಮತ್ತಾವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ  
ಧರ್ಮವೂ ಇರಲಾರದು. ಆಶ್ರಮಧರ್ಮಗಳಾವುವೂ  
ಇಲ್ಲದೆ ತ್ರಿದಂಡ ಮುಂತಾದುವು ಮಾತ್ರ ಆಶ್ರಮಲಕ್ಷಣ  
ವಾಗಿ ಉಳಿಯುವವು. ವ್ಯಾಪಾರದಲ್ಲಿ ದ್ರೋಹವೇ ಮುಖ್ಯ  
ವಾಗುವುದು. ದಾರಿದ್ರ್ಯದೋಷದಿಂದ ಬಡವನ ವಿಷಯ  
ದಲ್ಲಿ ನ್ಯಾಯವೂ ದುರ್ಬಲವಾಗುವುದು. ಜ್ಞಾನವು ಮಾಯ  
ವಾಗಿ ಬಾಯಿಗೆ ಬಂದಂತೆ ಮಾತನಾಡುವುದೇ ಪಾಂಡಿತ್ಯ  
ಪ್ರದರ್ಶನವಾಗುವುದು. ಮನುಷ್ಯನು ದಾರಿದ್ರ್ಯದೋಷ  
ದಿಂದ ದುರ್ಜನನೆನಿಸಿಕೊಳ್ಳುವನೇ ಹೊರತು ಅವನ  
ದುರ್ಗುಣದಿಂದಲ್ಲ. ಶಾಸ್ತ್ರವಿಧಿಗಳಾವುವೂ ಇಲ್ಲದೆ ಕೇವಲ  
ಸ್ವೀಕಾರದಿಂದ ವಿವಾಹಸಿದ್ಧಿಯಾಗುವುದು. ಮೈಯ ಕೊಳೆ



ಹೋಗಲು ಮಾತ್ರ ಸ್ನಾನವೇ ಹೊರತು ಪುಣ್ಯಾರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನವಿಲ್ಲ. ಕುಟುಂಬಭರಣವೊಂದೇ ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ದೊಡ್ಡ ಸಾಧನೆಯೇ ಹೊರತು ಮತ್ತಾವ ಪುರುಷಾರ್ಥಸಾಧನೆಯಿಲ್ಲ. ಕೀರ್ತಿಗಳಿಸಲು ದಾನ ಧರ್ಮಗಳೇ ಹೊರತು ಪಾರಲೋಕಿಕ ಸಾಧನಗಳಿಲ್ಲ. ಈ ರೀತಿ ಭೂಮಂಡಲವೆಲ್ಲಾ ದುಷ್ಟಜಿಗಳಿಂದ ತುಂಬಿ ವರ್ಣನಿಯಮವೆಲ್ಲಾ ನಶಿಸಿಹೋಗಿ ಬಲಶಾಲಿಯಾದವನೇ ರಾಜನಾಗುವನು. ಈ ರೀತಿ ರಾಜನಾದವನು ಲುಬ್ಧನೂ, ನಿರ್ದಯನೂ, ಚೌರ್ಯಧರ್ಮವುಳ್ಳವನೂ ಆಗಿದ್ದು ಜನರ ಧನಕನಕಾದಿಗಳನ್ನು ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ ಅಪಹರಿಸುವುದರಿಂದ ಪ್ರಜೆಗಳೆಲ್ಲರೂ ಈ ದುಷ್ಟರಾಜರ ಬಾಧೆಯನ್ನು ತಡೆಯಲಾರದೆ ಸರ್ವಸ್ವವನ್ನೂ ಬಿಟ್ಟು ಕೊಟ್ಟು ದೇಶಭ್ರಷ್ಟರಾಗಿ ಓಡಿಹೋಗಿ ಕಾಡುಪಾಲಾಗಿ ಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ಆಹಾರಕ್ಕೆ ಗತಿಯಿಲ್ಲದೆ ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಗೆಡ್ಡೆ ಗಣಿಸುಗಳನ್ನು ತಿಂದು ನಾನಾರೋಗಗ್ರಾಹಿತರಾಗಿ ಸಾಯುವರು. ಅನಾವೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ಕೆಲವು ವೇಳೆ ಈ ಆಹಾರಗಳೂ ದೊರಕದೆ ಹಸಿವುಬಾಯಾರಿಕೆಗಳಿಂದಲೂ ಬಿಸಿಲಿನ ಬಾಧೆಯಿಂದಲೂ ಪ್ರಾಣಬಿಡುವರು. ಕಲಿಯುಗಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ ಮನುಷ್ಯನ ಆಯುಃಪ್ರಮಾಣವು ಪರಮಾವಧಿ ಹದಿನಾರು, ಇಪ್ಪತ್ತು ಅಥವಾ ಮೂವತ್ತು ವರ್ಷಗಳು. ದಸ್ಯುಧರ್ಮವುಳ್ಳ ಈ ರಾಜರಿಗೆ ತಕ್ಕಂತೆಯೇ ಪ್ರಜೆಗಳೂ ಚೌರ್ಯ, ಅನ್ಯತ, ದ್ರೋಹ, ಹಿಂಸೆ ಮುಂತಾದುವುಗಳಲ್ಲಿ ನಿರತರಾಗಿ ಜೀವಿಸುವರು. ವರ್ಣಾಶ್ರಮಧರ್ಮಗಳೆಲ್ಲವೂ ನಾಶವಾಗಿ ಭೂಮಿಯೆಲ್ಲಾ ಮೈಜ್ಞಪ್ರಾಯವಾಗುವುದು. ಮೈಥುನ ಮಾತ್ರಸುಖವುಳ್ಳ ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮವೇ ಪ್ರಧಾನವಾದ ಆಶ್ರಮವಾಗುವುದು. ಧಾನ್ಯವೆಲ್ಲಾ ಅಣುಪ್ರಾಯವಾಗುವುದು. ಸಸ್ಯವೆಲ್ಲವೂ ಪ್ರಮಾಣದಲ್ಲಿಯೂ ಅತ್ಯಲ್ಪವಾಗಿ ಅಲ್ಪಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವುವು. ಮೇಘದಲ್ಲಿ ಮಿಂಚಿನ ಹೊರಳಾಟವೇ ಹೊರತು ಮಳೆಯೇ ಇಲ್ಲವಾಗುವುದು. ಈ ರೀತಿ ಧರ್ಮಕ್ಕೆ ಸಂಪೂರ್ಣ ಚ್ಯುತಿಯುಂಟಾಗಿ ಅಧರ್ಮವು ಅತ್ಯುಚ್ಚದಶೆಯನ್ನು ಮುಟ್ಟಿದಾಗ ಪರಮಾತ್ಮನು ಭರ್ಮರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ರಂಭೇವಂಬ ಒಂದು ಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿ ವಿಷ್ಣುಯಶನೆಯ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನೊಬ್ಬನ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಕಲ್ಕಿಯೆಂಬ ಅಭಿಧಾನದಿಂದ ಅವತರಿಸಿ ತೌರ್ಯವೀರ್ಯ ಸೈರ್ಯಗಳಿಂದ ಪರಿಶೋಭಿಸುತ್ತ ಆತಿ ವೇಗಶಾಲಿಯಾದ “ದೇವದತ್ತ” ವೆಂಬ ಅಶ್ವವನ್ನೇರಿ ದುಷ್ಟನಿಗ್ರಹ ಶಿಷ್ಟ ಪರಿಪಾಲನೆಗಾಗಿ ಖಡ್ಗವೊಂದನ್ನು ಧರಿಸಿ ರಾಜಪೇಷದಿಂದ ದಸ್ಯುಧರ್ಮಿಗಳಾದ ದುಷ್ಟರನ್ನೆಲ್ಲಾ ಕೋಟಗಟ್ಟಲೆ ಸೆಂಹರಿಸುತ್ತಾ ಬಂದಾಗ ಪ್ರಜೆಗಳ ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ನೆಮ್ಮದಿ ಮೂಡಲು ಆರಂಭವಾಗುವುದು. ಕಲ್ಕಿರೂಪಿಯಾದ ಆ ಪರಮಾತ್ಮನ

ದೇಹದ ಗಂಧದ ವಾಸನೆಯಿಂದ ಎಲ್ಲರ ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿಯೂ ಕಲಿದೋಷವು ನಿವೃತ್ತಿಯಾಗಿ ಜನರಿಗೆ ವೈರಾಗ್ಯವು ಹುಟ್ಟಿ (ಕಲ್ಕಿಯ ಅವತಾರವಾದಕೂಡಲೆ) ಕೃತಯುಗವಾಗಿ ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದುವುದು. ಪ್ರಜೆಗಳೆಲ್ಲರೂ ಸತ್ತ್ವಗುಣ ಪ್ರಚುರರಾಗುವರು. ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರಬೃಹಸ್ಪತಿಗಳು ಪುಷ್ಯ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಏಕರಾಶಿಯಲ್ಲಿ ಸೇರಿದಾಗ ಕೃತಯುಗಾರಂಭವಾಗುವುದು. “ತತಶ್ಚಾನುದಿನಂ ಧರ್ಮಃ ಸತ್ಯಂ ಶೌಚಂ ಕರ್ಮಾ ದಯಾ | ಕಾಲೇನ ಬಲಿನಾ ರಾಜನ್ ನಡ್ಕುಷ್ಯತ್ಯಾಯುರ್ಬಲಂ ಸ್ಮೃತಿಃ | ವित्तमेव कलौ नृणां जन्माचारगुणोदयः | धर्मन्याय-व्यवस्थायां कारणं बलमेव हि | दाम्पत्येऽभिरुचिर्हंतु-मयिव व्यावहारिके | .....  
.....

वासुदेवे भगवति सत्त्वमूर्ती हृदि स्थिते | यदावतीर्णो भगवान् कल्किर्धर्मपतिर्हरिः | कृतं भविष्यति तदा प्रजासूतिश्च सात्त्विकी | यदा चन्द्रश्च सूर्यश्च तथा तिष्य-बृहस्पती | एकराशौ समेष्यन्ति तदा भवति तत्कृतम्”  
भाग १२-२ | “कृते चतुष्पात्सकलो निर्व्याजोपाधि-वर्जितः | वृषः प्रतिष्ठितो धर्मः मनुष्ये भरतर्षभ | अधर्म-पादविद्वस्तु त्रिभिरंशैः प्रतिष्ठितः | त्रेतायां द्वापरेऽर्धेन व्यामिश्रो धर्म उच्यते | त्रिभिरंशैरಧರ್ಮಸ್ತು लोकಾನಾಕ್ರम्य तिष्ठति | तामसं युगमाश्रित्य तदा भरतसत्तम | चतुर्थ-शेन धर्मಸ್ತು मनुष्यानुपतिष्ठति | आयुर्वीर्यं मनो बुद्धिर्बलं तेजश्च पाण्डव | मनुष्याणामनुयुಗं ಹಸಂತೀತಿ ನಿಬೋಧ ಮೆ | ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्चैव युधिष्ठिर | व्याजैर्धर्मं चरिष्यन्ति धर्मवैतंसिका नराः | सत्यं संक्षेप्यते लोके नरैः पण्डितमानिभिः | सत्यहान्या ततस्तेषामायुरल्पं भविष्यति | .....  
.....

..... | ईदृशो भविता लोको युगान्ते पर्युपस्थिते | वस्त्राणां प्रवरा शानी धान्यानां कोरदूषकाः | .....  
.....

..... | पिता पुत्रस्य भोक्ता च पितुः पुत्रस्तथैव च | अतिक्रान्तानि भोज्यानि भविष्यन्ति युगक्षये | परमायुश्च भविता तदा वर्षाणि षोडश | ततः प्राणान् विमोक्ष्यन्ति युगान्ते समुपस्थिते | पञ्चमे वाऽथ षष्ठे वा वर्षे कन्या प्रसूयते | सप्तवर्षाष्टवर्षाश्च प्रजा-स्यन्ति नरास्तथा | .....  
.....

..... | अकालवर्षी भगवान् भविष्यति सहस्रदृक् | सस्यानि च न रोक्ष्यन्ति युगान्ते पर्युपस्थिते | पुत्राश्च मातापितरौ हनिष्यन्ति युगक्षये | सूदयिष्यन्ति



ಚ ಪತೀನ್ ಸ್ತ್ರೀಯಃ ಪುತ್ರಾನ್ ಪಾಶ್ರಿತಾಃ । ಪಾನೀಯಂ ಭೋಜನಂ ಚಾಪಿ  
ಯಾಚಮಾನಾಸ್ತದಾಧ್ವಗಾಃ । ನ ಲಪ್ಸಂತೇ ನಿವಾಸಾನ್ ವಾ ನಿರಸ್ತಾಃ  
ಪಥಿ ಶೇರತೇ । .....

..... । ತತಃ ಕಾಲಾಂತರೇನ್ಯಸ್ಮಿನ್ ಪುನರ್ಲೋಕ-  
ವಿವೃದ್ಧಯೇ । ಭವಿಷ್ಯಂತಿ ಪುನರ್ದೇವಮನುಕೂಲಂ ಯದೃಚ್ಛಯಾ । ಕಲ್ಕೀ  
ವಿಷ್ಣುಯಶಾ ನಾಮ ದ್ವಿಜಃ ಕಾಲಪ್ರಚೋದಿತಃ । ಸಂಭೂತಃ ಶಾಂಭಲಗ್ರಾಮೇ  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾವಸಥೇ ಶುಭೇ । ಮನಸಾ ತಸ್ಯ ಸರ್ವಾಣಿ ವಾಹನಾನ್ಯಾಯುಧಾನಿ  
ಚ । ಉಪಸ್ಥಾಸ್ಯಂತಿ ಯೋಧಾಶ್ಚ ಶಸ್ತ್ರಾಣಿ ಕವಚಾನಿ ಚ । ಸ  
ಧರ್ಮವಿಜಯಿ ರಾಜಾ ಚಕ್ರವರ್ತೀ ಭವಿಷ್ಯತಿ । ಉತ್ಸಾದಯಿಷ್ಯತಿ  
ತದಾ ಸರ್ವಮ್ಲೇಚ್ಛಗಣಾನ್ ದ್ವಿಜಃ ” ಭಾಂ ವನಂ ೧೯೩ ।

**ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಸೇವಿಸಲ್ಪಡ  
ಬೇಕಾದ ಧರ್ಮಗಳು :**

ಯುಗಪ್ರಮಾಣವು ಕಡಮೆಯಾದಂತೆಲ್ಲಾ ಧರ್ಮಗಳು  
ಒಂದೊಂದು ಯುಗಕ್ಕೂ ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗುವವು. ಕೃತ  
ಯುಗದಲ್ಲಿ ತಪಸ್ಸು, ತ್ರೇತಾಯುಗದಲ್ಲಿ ಆತ್ಮಜ್ಞಾನ,  
ದ್ವಾಪರಯುಗದಲ್ಲಿ ಯಜ್ಞ, ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ ದಾನ ಇವು  
ಮುಖ್ಯವಾದ ಧರ್ಮಗಳು. “ಅನ್ಯೇ ಕೃತಯುಗೇ ಧರ್ಮಾಸ್ತೇತಾಃ  
ದ್ವಾಪರೇ ಪರೇ । ಅನ್ಯೇ ಕಲಿಯುಗೇ ನೃಣಾಂ ಯುಗಹಾಸಾನುರೂಪತಃ । ತಪಃ  
ಪರಂ ಕೃತಯುಗೇ ತ್ರೇತಾಃ ಜ್ಞಾನಮುಚ್ಯತೇ । ದ್ವಾಪರೇ ಯಜ್ಞಮೇವಾಹುಃ ದಾನ-  
ಮೇಕಂ ಕಲೀ ಯುಗೇ ” ಮನುಂ ೧-೮೫, ೮೬ । ಕೃತಯುಗದಲ್ಲಿ  
ಪ್ರಾಣಿಗಳು ಅಸ್ಥಿಗತವಾಗಿರುವವು. ತ್ರೇತಾಯುಗದಲ್ಲಿ  
ಮಾಂಸವನ್ನಾಶ್ರಯಿಸಿರುವವು. ಮಾಂಸವಿರುವವರೆಗೂ  
ಬದುಕಿರುವನು. ದ್ವಾಪರಯುಗದಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಣಿಗಳು ರಕ್ತಗತ  
ವಾಗಿರುವವು. ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ ಅನ್ನಗತವಾಗಿರುವವು.  
ಕೇವಲ ಅನ್ನಾಹಾರದಿಂದಲೇ ಮನುಷ್ಯನು ಬದುಕಿರಬೇಕು  
ಗುವುದು. “ಕೃತೇ ಚಾಸ್ಥಿಗತಾಃ ಪ್ರಾಣಾಃ ತ್ರೇತಾಃ ಮಾಂಸ-  
ಮಾಸ್ಥಿಗತಾಃ । ದ್ವಾಪರೇ ರುಧಿರಂ ಯಾವತ್ ಕಲಾವನ್ನಾದಿಭಿಃ ಸ್ಥಿತಾಃ ”  
ಪರಾಂ ।

ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ ಅಧರ್ಮದಿಂದ ಧರ್ಮಕ್ಕೂ ಅನ್ಯತ  
ದಿಂದ ಸತ್ಯಕ್ಕೂ ಭೃತ್ಯರಿಂದ ರಾಜರಿಗೂ ಸ್ತ್ರೀಯರಿಂದ  
ಪುರುಷರಿಗೂ ಅಪಜಯವುಂಟಾಗುವುದು. “ಧರ್ಮೋ ಜಿತೋ  
ಹ್ಯಧರ್ಮೇಣ ಜಿತಃ ಸತ್ಯೋಽನ್ಯತೇನ ತು । ಜಿತಾ ಭೃತೈಸ್ತು ರಾಜಾಃ  
ಸ್ತ್ರೀಭಿಃ ಪುರುಷಾಃ ಜಿತಾಃ ” ಪರಾಂ ।

**ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಧರ್ಮಹ್ರಾಸ  
ಗಳು :** “ಸಿದಂತಿ ಚಾಗ್ನಿಹೋತ್ರಾಣಿ ಗುರುಪೂಜಾ ಪ್ರಣಯತಿ ।  
ಕುಮಾರ್ಯಶ್ಚ ಪ್ರಸೂಯಂತೇ ತಸ್ಮಿನ್ ಕಲಿಯುಗೇ ಸದಾ ” ಪರಾಂ ।

**ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ ವರ್ಜ್ಯ (ತ್ಯಜಿಸಬೇಕಾದ)  
ಧರ್ಮಗಳು :** ಸಮುದ್ರಯಾನ, ಕಮಂಡಲುಗ್ರಹಣ

(ಸಂನ್ಯಾಸ), ದ್ವಿಜರಿಗೆ ಅಸರ್ವಣಸ್ತ್ರೀಯೊಡನೆ ವಿವಾಹ,  
ದೇವರ (ಭಾವಮೈದುನ) ನಿಂದ ಸುತೋತ್ಪತ್ತಿ, ಮಧು  
ಪರ್ಕದಲ್ಲಿ ಪಶುಮಾಂಸ, ಶ್ರಾದ್ಧದಲ್ಲಿ ಮಾಂಸಭಕ್ಷಣ, ವಾಸ  
ಪ್ರಸ್ಥಾಶ್ರಮ, ಅಕ್ಷತಕಸ್ಯಯ ಪುನರ್ವಿವಾಹ, ಬಹಳ  
ಕಾಲದವರೆಗೂ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯೆ, ಮನುಷ್ಯಮೇಧ, ಅಶ್ವ  
ಮೇಧ, ಗೋಮೇಧ, ಮಹಾಪ್ರಸ್ಥಾನ ಇವೆಲ್ಲವೂ ಕಲಿಯುಗ  
ದಲ್ಲಿ ವರ್ಜ್ಯಗಳು. “ಸಮುದ್ರಯಾತ್ರಾಸ್ವೀಕಾರಃ ಕಮಂಡಲ  
ವಿಧಾರಣಮ್ । ದ್ವಿಜಾನಾಮಸರ್ವಣಾಸು ಕನ್ಯಾಸುಪಯಮಸ್ತಥಾ । ದೇವ-  
ರಾಶ್ಚ ಸುತೋತ್ಪತ್ತಿರ್ಮಧುಪಕ್ವಂ ಪಶೋರ್ವಧಃ । .....

..... । ಇಮಾನ್ ಧರ್ಮಾನ್ ಕಲಿಯುಗೇ  
ವರ್ಜ್ಯಾನಾಹುರ್ಮನೀಷಿಣಃ ” ನಿರ್ಣಯಸಿಂ । “ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರಂ ಗವಾಲಮ್ಭಂ  
ಸನ್ಯಾಸಂ ಪಲಪೇತುಕಮ್ । ದೇವರಾಶ್ಚ ಸುತೋತ್ಪತ್ತಿ ಕಲೋ ಪಶ್ಚ  
ವಿವರ್ಜಯೇತ್ ” ।

ಕೃತಯುಗದಲ್ಲಿ ಧ್ಯಾನದಿಂದಲೂ ತ್ರೇತಾಯುಗದಲ್ಲಿ  
ಯಜ್ಞದಿಂದಲೂ ದ್ವಾಪರಯುಗದಲ್ಲಿ ಅರ್ಚನೆಯಿಂದಲೂ  
ಹೊಂದಬಹುದಾದ ಫಲವನ್ನು ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ ಕೇಶವ  
ನಾಮಸಂಕೀರ್ತನದಿಂದ ಹೊಂದಬಹುದು. “ಧ್ಯಾಯನ್  
ಕೃತೇ ಯಜನ್ ಯಜ್ಞೇಸ್ತೇತಾಃ ದ್ವಾಪರೇಽರ್ಚಯನ್ । ಯದಾಪ್ನೋತಿ ತದಾಪ್ನೋತಿ  
ಕಲೋ ಸಂಕೀರ್ತಯ ಕೇಶವಮ್ ” ವಿಷ್ಣುಪುಂ । ಅಶ್ವೋಪಾಯದಿಂದ  
ಮುಕ್ತಿಯನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದಾದರೆ ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ ಗಂಗಾ  
ನದಿಯನ್ನಾಶ್ರಯಿಸಬೇಕು. “ಭಕ್ತಿಮುಕ್ತಿಫಲಪ್ರಪ್ತುರಲ್ಪೋ-  
ಪಾಯೇನ ಚೇತ್ತರಃ । ತೀರ್ಥಾನ್ಯೇವಾಶ್ರಯೇದ್ವಿದ್ವಾನ್ ಕಲೋ ಗಙ್ಗಾಂ ವಿಶೇ-  
ಷತಃ ” ಸ್ಕಾಂದಂ । 2. ಕಲಿಯುಗದ ಅಭಿಮಾನದೇವತೆ.

**ಈ ದೇವತೆಯ ಉತ್ಪತ್ತಿ ನೊಡಲಾದ ವಿನರಃ**  
ಚತುರ್ಮುಖನು ಪ್ರಳಯಕಾಲದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಪೃಷ್ಠ  
ದೇಶದಿಂದ ಮಲಿನವಾಗಿಯೂ ಘೋರರೂಪಿಯಾಗಿಯೂ  
ಇರುವ ಒಂದು ಪಾತಕವನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದನು. ಅದೇ  
ಅಧರ್ಮ. ಈ ಅಧರ್ಮದ ಹೆಂಡತಿ ಮಿಥ್ಯೆ. ಮಿಥ್ಯೆಯ  
ಮಗ ದಂಭ. ದಂಭನು ತನ್ನ ತಂಗಿಯಾದ ಮಾಯೆಯಲ್ಲಿ  
ಲೋಭನೆಂಬ ಪುತ್ರನನ್ನೂ ನಿಷ್ಕರಿಯೆಂಬ ಪುತ್ರಿಯನ್ನೂ  
ಪಡೆಯುವನು. ಇವರಿಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಕ್ರೋಧನು ಜನಿಸುವನು.  
ಕ್ರೋಧನು ತಂಗಿಯಾದ ಹಿಂಸೆಯಲ್ಲಿ ಕಲಿಯೆಂಬ ಮಗನನ್ನು  
ಪಡೆಯುವನು. ಈ ಕಲಿಯ ಅವತಾರಕ್ರಮವು ಈ ರೀತಿ  
ಯಿರುವುದರಿಂದ ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ ಮತ್ತು  
ಮುಂದೆ ನಡೆಯಬಹುದಾದ ಅಧರ್ಮ, ಅನ್ಯಾಯ, ಪಾಪ  
ಕೃತ್ಯ ಹಿಂಸಾಕೃತ್ಯಗಳೆಲ್ಲಾ ಈ ಕಲಿಯೇ ಕಾರಣನೆಂದು ಹೇಳ  
ಬೇಕಾಗಿಯೇ ಇಲ್ಲ. “ಪ್ರಲಯಾಂತೇ ಜಗತ್ಸಪ್ತಾ ಬ್ರಹ್ಮಾ ಲೋಕ-  
ಪಿತಾಮಹಃ । ಸಸರ್ಜ ಘೋರಂ ಮಲಿನಂ ಪೃಥದೇಶಾತ್ ಪಾತಕಮ್ ।



ಸ ಚಾಧರ್ಮ ಇತಿ ಖ್ಯಾತಸ್ತಸ್ಯ ವಂಶಾನುಕೀರ್ತನಾತ್ । ಶ್ರವಣಾ-  
ತ್ಸ್ಮರಣಾಲೋಕಃ ಸರ್ವಪಾಪೈಃ ಪ್ರಮುಚ್ಯತೇ । ಅಧರ್ಮಸ್ಯ ಪ್ರಿಯಾ ಭಾರ್ಯಾ  
ಮಿಥ್ಯಾ ಮಾರ್ಜರಲೋಚನಾ । ತಸ್ಯಾಃ ಪುತ್ರೋಽತೀತೇಜಸ್ವೀ ದಮ್ಭಃ ಪರಮ-  
ಕೋಪನಃ । ಸ ಮಾಯಾಂ ಭಗಿನ್ಯಾಂ ತು ಲೋಭಂ ಪುತ್ರಂ ಚ ಕನ್ಯಕಾಮ್ ।  
ನಿಕ್ರಾಂತಿಂ ಜನಯಾಮಾಸ ತಯೋಃ ಕ್ರೋಧಃ ಸುತೋಽಭವತ್ । ಸ ಹಿಸಾಂ  
ಭಗಿನ್ಯಾಂ ತು ಜನಯಾಮಾಸ ತಂ ಕಲಿಮ್ ” ಕಲ್ಕಿಪುಂ । ಕಲಿ  
ಪುರುಷನು ದಮಯಂತಿಯ ಸ್ವಯಂವರಕ್ಕೆಂದು ಹೋಗು  
ತ್ತಿದ್ದಾಗ ಇಂದ್ರನಿಂದ ನಳದಮಯಂತಿಯರ ಸ್ವಯಂವರ  
ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿದು ದೇವತೆಗಳು ಎಷ್ಟು ಹೇಳಿದರೂ  
ಕೇಳದೆ ನಳನು ದಮಯಂತಿಯೊಡನೆ ಸುಖವಾಗಿರದಂತೆ  
ಮಾಡುವನೆಂದು ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡಿ ನಳಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಶರೀರ  
ವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಸಮಯ ಕಾಯುತ್ತಿದ್ದನು. ಒಂದು  
ದಿನ ನಳನು ಕಾಲುಗಳನ್ನು ಸರಿಯಾಗಿ ತೊಳೆದುಕೊಳ್ಳದೆ  
ಸಂಧ್ಯಾವಂದನೆಗೆ ಕುಳಿತರಲು ಇವನು ಆ ಕೂಡಲೇ ಅವನ  
ಶರೀರವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಪುಷ್ಕರನಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ ನಳನೊಡನೆ  
ಜೂಜಾಡಿದರೆ ತಾನು ಗೆಲ್ಲಿಸುವನೆಂದು ಹೇಳಿ ನಳನನ್ನು  
ಜೂಜಿನಲ್ಲಿ ಸೋಲಿಸಿದನು. ಸೋತ ನಳನು ರಾಜ್ಯಭ್ರಷ್ಟ  
ನಾಗಿ ಪಶ್ಚಿಮೋಡನೆ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಅನೇಕ ಕಷ್ಟಗಳನ್ನೂ  
ಅನುಭವಿಸಬೇಕಾಯಿತು. ಭಾಂ ವನಂ ೪೮, ೪೯ ।

ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ನಿಯೋಜನಾನಂತರ ಧರ್ಮವೆಲ್ಲಾ ಕ್ಷಯಿಸಿ  
ಹೋಗುತ್ತಿರಲು ಭೂದೇವಿಯು ಬಹಳ ದುಃಖಾಕ್ರಾಂತೆ  
ಯಾಗಿದ್ದಳು. ಇದೇ ಸಮಯ ನೋಡಿ ಕಲಿಪುರುಷನು  
ಧರ್ಮಪುರುಷನನ್ನು ಕಾಲಿನಿಂದ ಒದೆಯುತ್ತಿರುವಲ್ಲಿ  
ಪರೀಕ್ಷಿದ್ರಾಜನು ಕಲಿಯನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸಲು ಆಯುಧವನ್ನು  
ಎತ್ತಲು ಕಲಿಯು ಹೆದರಿ ಪರೀಕ್ಷಿತ್ತಿನ ಕ್ಷಮೆ ಬೇಡಿ  
ಆ ದೇಶದಿಂದ ಓಡಿಹೋದನು. ಭಾಗಂ ೧-೧೭ ।

ಇವನ ಹಾವಳಿಯನ್ನು ತಡೆಯಲಾರದೆ ಭೂದೇವಿಯು  
ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣನಲ್ಲಿ ಮೊರೆಯಿಡಲು ನಾರಾಯಣನು  
ಕಲ್ಕಿರೂಪದಿಂದ ಅವತರಿಸಿ ಕಲಿಯನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸುವನು.  
ಭಾಂ ವನಂ ೧೪೧ । 3. ವಿಭೀತಕವೃಕ್ಷ, ತಾರೆಗಿಡ.  
ನಳನ ಶರೀರವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಸಮಯ ಕಾಯುತ್ತಿದ್ದ  
ಕಲಿಗೆ ಈ ಮರವು ಆಶ್ರಯವಾಗಿದ್ದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.  
“ವಿಭೀತಕಮಧಿಷ್ಠಾಯ ತಥಾಭೂತೇನ ತಿಷ್ಠತಾ । ತೇನ ಭೂಮಿ-  
ಭುವೋಽಮೀಕಃ ಸ ರಾಜರ್ಷಿರರ್ಥಾಪಿ ನ । ತಮಾಲಮ್ಬನಮಾಸಾಘ  
ವೈದರ್ಮಿನಿವಿಧೇಶಯೋಃ । ಕಲ್ಪಂ ಕಲಿರನ್ವಿಷ್ಯನ್ ಅವಾತ್ಸೀದ್ವತ್ಸರಾನ್  
ಬಹುನ್ ” ನೈಷಂ ೧೭-೨೧೬, ೨೧ । 4. ಕಲಹ, ಜಗಳ. “ವಸತಿ-  
ಮುಗತೇನ ಧಾಮ್ನಿ ತಸ್ಯಾಃ ಶಠ ಕಲಿರೇಷ ಮಹಾಸ್ತ್ವಯಾಘ ದತ್ತಃ ”  
ಮಾಘಂ ೭-೪೪ । 5. ಶೂರ, ಪರಾಕ್ರಮಿ. 6. ಯುದ್ಧ.  
7. ಶರ, ಬಾಣ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 8. ಮೊಗ್ಗು, ಅರಳದ ಹೂವು.

“ಕಲಿಃ ಸ್ತ್ರೀ ಕಲಿಕಾಂ ನಾ ಶರಾಜಿಕಲಹೇ ಯುಗೇ ” ಮೇದಿಂ ।  
“ಕಲಿವಿಭೀತಕೇ ಶೂರೇ ವಿವಾದೇಽನ್ಯಯುಗೇ ಯುಧಿ ” ಹೇಮಂ ।

**ಕಲಿಕಾ ಕಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೋರಕ, ಮೊಗ್ಗು, ಅರಳದ  
ಹೂವು. ಕಲಿರೇವ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್ ” । “ಮುಹುರಪಹಿಸಿತಾ-  
ಮಿವಾಲಿನಾದೇವಿತರಸಿ ನಃ ಕಲಿಕಾಂ ಕಿಮರ್ಥಮೇನಾಮ್ ” ಮಾಘಂ  
೭-೪೪ । “ಚೂತಾನಾಂ ಚಿರನಿಗಂತಾಪಿ ಕಲಿಕಾ ಬಧ್ನಾತಿ ನ  
ಸ್ವಂ ರಜಃ ” ಶಾಕುಂ ೬-೪ । 2. ಎಣ್ಣೆಯ ಮೂಲಭಾಗ.

**ಕಲಿಕಾರ ಕಲಿಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ನಾರದಮಹರ್ಷಿ. ಕಲಿ  
ಕಲಹಂ ಕರೋತಿ—ಡು ಕೃಮ್ (ಕರಣ) “ಅಙ್ ” (೩-೨-೧) ।  
2. ನದಿಯಲ್ಲಾಡುವ ಕುಕ್ಕುಟಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಹಕ್ಕಿ.  
ಕಲಿಕಾಮೃಚ್ಛತಿ—ಋ (ಗತೌ) “ಅಙ್ ” (೩-೨-೧) ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ “ಙೀಷ್ ” (೪-೧-೬೩) । -ಕಾರಿ -ಕಾರಿಃ.  
3. ತಪಸ್ಸಿಗಿಡ. (ವಿಂ) 4. ಕಲಹವನ್ನು ಒಯ್ಯುವುದು.  
5. ಮೊಗ್ಗನ್ನು ಪಡೆಯುವ. ಕಲಿ ಕರೋತಿ ಕಲಿಕಾಂ  
ಋಚ್ಛತಿ ವಾ । “ಞ್ವಲ್ ” (೩-೧-೧೩೩) । -ಕಾರಕಃ  
-ಕಾರಕಃ ।

**ಕಲಿಕಾಲ ಕಲಿಕಾಲ** (ಪುಂ) ಕಲಿಪುರುಷನ ಕಾಲ, ಕಲಿ  
ಯುಗದ ಕಾಲ.

**ಕಲಿಕುಚಿಕಾ ಕಲಿಕುಂಚಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಡನ ಕಿರಿಯ  
ಸಹೋದರಿ, ಗಂಡನ ತಂಗಿ. ನಾದಿನಿ.

**ಕಲಿಙ್ಗ ಕಲಿಂಗ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಕಲಿಂಗ ದೇಶ. 2. ಕಲಿಂಗ  
ದೇಶದ ಜನರು. “ಜಗನ್ನಾಥಾತ್ ಸಮಾರಮ್ಯ ಕೃಷ್ಣಾತೀರಾಂತಗಂ  
ಪ್ರಿಯೇ । ಕಲಿಙ್ಗದೇಶಃ ಸಂಪ್ರೋಕ್ತೋ ವಾಮಮಾರ್ಗಪರಾಯಣಃ ” ।  
“ಉತ್ಕಲಾದಶಿತಪಥಃ ಕಲಿಙ್ಗಾಭಿಮುಖೋ ಯಯಿ ” ರಘುಂ  
೪-೩೮ । (ಪುಂ) 3. ಕೆರೆ ನದಿಗಳ ನೀರಿನೊಳಗೆ ಅಟ  
ವಾಡುವ ಕುಕ್ಕುಟಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಹಕ್ಕಿ. ಕೇ ಮೃದ್ಧಿ ಲಿಙ್ಗ-  
ಮಸ್ಯ । ಈ ಹಕ್ಕಿಯ ತಲೆಯಮೇಲೆ ಮೊಗ್ಗಿನ ಆಕಾರದ  
ಹಳದಿಯ ಗುರುತೊಂದಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರಾಯಿತು.  
4. ತಪಸ್ಸಿಗಿಡ. (ಪುಂ) 5. ಕೊಡಲಿಗೆಯ ಹಣ್ಣು.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಲಿಙ್ಗಾ ಕಲಿಂಗಾ. 6. ಉತ್ತಮ ಹೆಂಗುಸು.  
“ಕಲಿಙ್ಗಃ ಪೂತಿಕರಜೇ ಧೂಮ್ಯಾಡೇ ಭೂಮಿ ನಿವೃತಿ । ನ ದ್ವಯೋಃ  
ಕೌಟಜಫಲೇ ಮಹಿಲಾಂ ತು ಯೋಷಿತಿ ” ಮೇದಿಂ ।

**ಕಲಿತ ಕಲಿತ** (ವಿಂ) 1. ತಲೆಯಲ್ಲಟ್ಟು. ಕಲ (ಗತೌ)  
“ಕ್ತಃ ” (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. “ಸ್ವರ-  
ಭೇದಮುಪೇತು ಯಾ ಕಥಂ ಕಲಿತಾನಲ್ಪಮುಖಾರವಾ ನ ವಾ ” ನೈಷಂ  
೨-೯೮ । 3. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. “ಲವಣ್ಣಮಾಲಾ-  
ಕಲಿತಾವತಂಸಾಸ್ತೇ ನಾರಿಕೇಲಾಂತರಪಃ ಪಿಬಂತಃ ” ಮಾಘಂ  
೩-೮೧ । 5. ಎಣ್ಣೆಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಕಲ (ಸಂಖ್ಯಾನೇ) “ಕ್ತಃ ”



(೩-೨-೧೦೨)। 6. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ.  
7. ಒಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 8. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಕಲಿದ್ರುಮ ಕಲಿದ್ರುಮ** (ಪುಂ) ವಿಭೀತಕವೃಕ್ಷ, ತಾರೆಗಿಡ.  
ಕಲೇರಾಶ್ರಯ: ದ್ರುಮ:। ನಳಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಶರೀರವನ್ನು  
ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಸಮಯ ಕಾಯುತ್ತ ಈ ಮರದಲ್ಲಿ  
ಕಲಿಯು ಕುಳಿತಿದ್ದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಕಲಿದ್ರುಮ: ಪರ  
ನಾಸೀದಾಸೀತ್ಕಲ್ಪದ್ರುಮೋಽಪಿ ಸ:" ನೆಪಂ ೧೭-೨೧೩.

**ಕಲಿಂದ ಕಳಿಂದ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಬೆಟ್ಟ. ಕಲಿ ಇತಿ—  
ದೊ (ಅವಲಕ್ಷಣದೇ) "ಖಚ್"। ಮುಗಾಮ:। "ಕಲಿಂದ-  
ಗಿರಿನಂದಿನೀತಟಸುರದ್ರುಮಾಲಂಬಿನಿ ಮದೀಯಮತಿಚುಂಬಿನಿ ಭವತು  
ಕಾಪಿ ಕಾದಂಬಿನಿ" ರಸಗಂ. 2. ತಾರೆಗಿಡ.

**ಕಲಿಂದಕನ್ಯಾ ಕಳಿಂದಕನ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಳಿಂದಗಿರಿಯ  
ಮಗಳು, ಯಮುನಾ ನದಿ. ಕಲಿಂದಸ್ಯ ಕನ್ಯಾ। "ಕಲಿಂದ-  
ಕನ್ಯಾ ಮಧುರಾಂ ಗತಾಪಿ ಗಜ್ಜೋರ್ಮಿಸಂಸಕ್ತಜಲೇವ ಭಾತಿ" ರಘುಂ  
೬-೪೮. ಇದೇ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಕಲಿಂದಜಾ ಕಳಿಂದಜಾ,  
-ತನಯಾ -ತನಯಾ, -ನಂದಿನಿ ನಂದಿನೀ, -ಸುತಾ -ಸುತಾ  
ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕಲಿಪ್ರಿಯ ಕಲಿಪ್ರಿಯ** (ಪುಂ) ಕಲಹವೇ ಪ್ರಿಯವಾಗುಳ್ಳ  
ನಾರದಮಹರ್ಷಿ. ಕಲಿ: ಕಲಹ: ಪ್ರಿಯಾಸ್ಯ.

**ಕಲಿಮಾರಕ ಕಲಿಮಾರಕ** (ಪುಂ) ತಪಸಿಗಿಡ. ಕಲಿ ಮಾರ-  
ಯತಿ—ಮೃಙ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೋ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ಕಲಿಯುಗ ಕಲಿಯುಗ** (ನಂ) ಕಲಿರೂಪವಾದ ಒಂದು  
ಯುಗ, ಕಲಿಪುರುಷನ ಕಾಲ. ಕಲೇಯುಗಮ್। [ಕಲಿಯುಗದ  
ಪ್ರಮಾಣ ಮುಂತಾದುವುಗಳಿಗೆ "ಅಬ್ದ" ಮತ್ತು "ಕಲಿ"  
ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. "ಅನ್ಯೇ ಕೃತಯುಗೇ ಧರ್ಮಸ್ತ್ರೀತಾಯಾಂ  
ದ್ವಾಪರೇಽಪರೇ। ಅನ್ಯೇ ಕಲಿಯುಗೇ ನೃಣಾಂ ಯುಗಹಾಸಾನುಸಾರತ:"  
ಮನುಂ ೧-೮೫.

**ಕಲಿಲ ಕಲಿಲ** (ನಂ) 1. ಕಲುಷ್ಠ. ಕಲ (ಗತೌ ಸಂಖ್ಯಾನೇ ಚ)  
"ಫಲ್" (೩ಂ ೧-೫೪)। "ಯದಾ ತೇ ಮೋಹಕಲಿಲಂ  
ಬುದ್ಧಿವ್ಯತೀತರೀಪ್ಯತಿ" ಗೀತಾ ೨-೫೨. 2. ದೊಡ್ಡ ರಾಶಿ.  
(ವಿಂ) 3. ಮಿಶ್ರವಾದ, ಬೆರೆತಿರುವ. "ಲೋಕಾಲೋಕೀ  
ಕಲೋಽಕಲ್ಪಕಲಿಲೋಽಲಿಕುಲಾಲಕ:" ಮಾಘಂ ೧೯-೯೮.

**ಕಲಿಹಾರಿ ಕಲಿಹಾರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರುಹಿಪ್ಪಲಿ. ಕಲಿ  
ಹರತಿ—ಹವ್ (ಹರಣೇ) "ಅಣ್" (೩-೨-೧)। "ಜಿಃ" (೪-೧-೪೧)।

**ಕಲಿಷ ಕಲಿಷ** (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಹಿಷ. ಎಮ್ಮೆ. ಲುಘ  
(ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫)। ಕಸ್ಯ ಜಲಸ್ಯ

ಲುಘ: ಧಾತಕ:। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಃ" (೪-೧-೬೩)। -ಖಿ -ಖೀ.  
2. ಶ್ವಪಾಕಿಯಲ್ಲಿ ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಗೆ ಜನಿಸಿದ ಮಗ. "ಜರಂತ:  
ಕಲುಃ: ಪೋತ್ರೀ ವೀರಸ್ಕಂಧೋ ರಜಸ್ವಲ:" "ಶ್ವಪಾಕೀ ಕಲುಃ  
ಸುತಾ ಕೀಲುಃ ಧರ್ಮರೀ ಮಿಷಮ್" ವೈಜಂ. (ನಂ) 3. ಪಾಪ.  
4. ಕೊಳೆ, ಮಲ. 5. ಕೆಸರು. 6. ಬಗ್ಗಡ, ಕೆಶ್ಶಲದ  
ನೀರು. ಕಲ (ಸಂಖ್ಯಾನೇ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಉಚ್" (೩ಂ ೪-೭೫)।  
"ಋತಂ ಕಲುಃಪಾವಿಲಮ್" ವೈಜಂ. 7. ಕೊಂಪ. (ವಿಂ) 8.  
ಪಾಪವುಳ್ಳ. 9. ಸ್ವಚ್ಛವಲ್ಲದ, ಬಗ್ಗಡವಾದ. "ಲೋ-  
ತ್ವಾದಪಹರತಾಂ ತದಜ್ಞರಾಗಂ ಸಂಜ್ಞೇ ಸ ಕಲುಃ ಆಶಯೋ  
ಜಲಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೮-೪೭. 10. ಕೊಳೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ.  
11. ಅಸಮಾಧಾನದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 12. ಅಸಮರ್ಥವಾದ.  
"ಭಾವಾವಬೋಧಕಲುಃ ದಯಿತೇವ ರಾತ್ರೋ ನಿद्रಾ ಚಿರೇಣ  
ನಯನಾಭಿಮುಖೀ ಬಭೂವ" ರಘುಂ ೫-೬೪. 13. ನಿಂದಿತ  
ವಾದ, ದುಷ್ಟವಾದ. "ತ್ವಾಂ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಸ್ಮಾತ್ಕಲುಃಪ್ರವೃತ್ತಾವಸ್ತೇವ  
ಮನ್ಯುರ್ಭರತಾಗ್ರಜೇ ಮೇ" ರಘುಂ ೧೪-೭೩.

**ಕಲುಷತಾ ಕಲುಷತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಾಪದಿಂದ ಕೂಡಿರು  
ವಿಕೆ. 2. ಕೆಸರಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ಸ್ವಚ್ಛವಾಗಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
ಕಲುಃಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೫-೧-೧೧೯)। "ತ್ವ:"  
ಕಲುಃತ್ವಮ್ ಕಲುಷತ್ವಮ್.

**ಕಲುಷಮತಿ ಕಲುಷಮತಿ** (ವಿಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ,  
ನೀಚಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. 2. ಅಸಮಾಧಾನಗೊಂಡ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ.  
ಕಲುಃ ಮತೀರಸ್ಯ.

**ಕಲುಷಾತ್ಮನ್ ಕಲುಷಾತ್ಮನ್** (ವಿಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಹೃದಯ  
ವುಳ್ಳ, ನೀಚ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ಕಲುಃ ಆತ್ಮಾ ಯಸ್ಯ।  
2. ಅಸಮಾಧಾನ ಹೊಂದಿದ, ಕಲಕಿದ ಹೃದಯವುಳ್ಳ.

**ಕಲುಷಿತ ಕಲುಷಿತ** (ವಿಂ) 1. ಅಸಮಾಧಾನಗೊಂಡಿರುವ.  
2. ಸ್ವಚ್ಛವಾಗಿಲ್ಲದ, ಬಗ್ಗಡವಾಗಿರುವ. 3. ನಿಂದಿತ,  
ದೂಷಿತ. ಕಲುಃಸ್ಯ ಸಂಜ್ಞಾತ: "ಐತಚ್" (೫-೨-೩೬)।

**ಕಲುಷೀಕೃತ ಕಲುಷೀಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ಕಲಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೆರಳಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಅಸಮಾಧಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಿಟ್ಟುಗೊಳಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಬಗ್ಗಡವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಕಲುಃ: ಕಲುಃ:  
ಕೃತ: "ಚಿವ:" (೫-೪-೫೦)। ದೀರ್ಘ: (೭-೪-೨೬)।  
"ವಿವರತಯನ್ ಮದಕಲುಷೀಕೃತೇ ದೃಶೋ ಕರಾಹತಕ್ಷಿತಿ-  
ಕೃತಭೇರವಾರವ:" ಮಾಘಂ ೧೭-೧೩.

**ಕಲೇಬರ ಕಲೇಬರ** (ನಂ) 1. ದೇಹ, ಶರೀರ, ಮೈ.  
ಕಲೇ ಶುಕ್ರಧಾತೌ ವರಂ ಶ್ರೇಷ್ಠಮ್। ಸಪ್ತಮ್ಯಾ "ಅಲುಕ್"  
(೬-೩-೯)। "ಯಂ ಯಂ ವಾಪಿ ಸ್ಮರನ್ ಭಾವಂ ತ್ಯಜತ್ಯಂತೇ  
ಕಲೇಬರಮ್" ಗೀತಾ। "ಶರೀರೇ ಜರ್ಜರಿಭೂತೇ ವ್ಯಾಧಿಗ್ರಸ್ತೇ



ಕಲಬರೇ। ಔಷಧಂ ಜಾಹ್ನವೀತಿಯಂ ವೈದೋ ನಾರಾಯಣೋ ಹರಿಃ” ।

2. ಗುಗ್ಗುಳ, ಲೋಬಾನ, ಧೂಪದ ವಾಸನೆಯ ಪುಡಿ.

ಕಲಕ ಕಲ್ಪ (ಛಂ) 1. ಕಪಟ, ಭಲ, ಠಕ್ಕು, ಬೂಟಾಟಿಕೆ.

2. ತಾರೆಗಿದ. 3. ಎಣ್ಣೆ ತುಪ್ಪ ಇವುಗಳ ಗಟ್ಟು. 4. ಕಿವಿಯ

ಮಲ, ಗುಗ್ಗು. 5. ಪಾಪ. ಕಲ (ಶಬ್ದಸಂಖ್ಯಾನಯೋ.)

“ಕಃ” (ತಂ ೩-೪೦) । 6. ವಿಷ್ಣು, ಮಲ, ಪುರೀಷ,

ಅಮೇಧ್ಯ. 7. ಚೂರ್ಣ, ಪುಡಿ. “ತಾಂ ಲೋಧಕಲಕೇನ

ಹೃತಾಙ್ಗತೆಲಾಮಾಖಾನಕಾಲೇಯಕೃತಾಙ್ಗರಾಗಾಮ್” ಕುಮಾಂ ೭-೯ ।

(ವಿಂ) 8. ಪಾಪಾತ್ಮ, ಪಾಪಿಷ್ಠ. “ಕಲಕೋಸ್ತೃಣಿ ಧೃತ-

ತೆಲಾದಿಶೇಷೇ ದಮ್ನೇ ವಿಭೀತಿಕೇ । ವಿಡ್‌ಕಿಡ್ಯೋಶ್ಚ ಪಾಪೇ ಚ

ತ್ರಿಷು ಪಾಪಾಶಯೇ ಪುನಃ” ಮೇದಿಂ ।

ಕಲಕನ ಕಲ್ಪನ (ನಂ) ವಂಚನೆ, ಮೋಸ. ಕಲಕ + ಣಿಚ್

ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।

ಕಲಕಫಲ ಕಲ್ಪಫಲ (ನಂ) ದಾಳಿಯೆ ಹಣ್ಣು. ಕಲಕಸ್ಯ

ವಿಭೀತಕಸ್ಯ ಫಲಮಿವ ಫಲಮಸ್ಯ ।

ಕಲಿಕನ್ ಕಲ್ಪಿನ್ (ಛಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಹತ್ತನೆಯ

ಅವತಾರ, ಕಲ್ಯಾಣತಾರ. ಕಲಕೋಸ್ತೃಣಿ ಹಾಯತಯಾ “ಇನಿಃ”

(೪-೨-೧೧೫) । [ಕಲಿಯುಗದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಅಧರ್ಮವು

ಹೆಚ್ಚಿದಂತೆಲ್ಲಾ ಕಲಿಮಹಾಪುರುಷನ ಅನುಯಾಯಿಗಳಾ

ದವರು ತಾಯಿತಂದೆಗಳನ್ನೂ ಒಡಿಸುವರು. ದ್ವಿಜರು ವೇದ

ಶೂನ್ಯರಾಗುವರು. ಜನರೆಲ್ಲರೂ ಕ್ರೂರವೃತ್ತಿಯುಳ್ಳವ

ರಾಗುವರು. ಪರಸ್ತ್ರೀಲೋಲುಪರಾಗಿ ಕೇವಲ ಕಾಮಾಸಕ್ತ

ರಾಗಿಯೂ, ಉದರಂಭರಣಪರಾಯಣರಾಗಿಯೂ, ಮಾಂಸ

ಭೋಜಿಗಳಾಗಿಯೂ, ಪ್ರಜಾವಿಧ್ವಂಸಕರಾಗಿಯೂ, ಇತರರ

ಸ್ವತ್ತನ್ನು ಅಪಹರಿಸುವವರಾಗಿಯೂ, ಸ್ತ್ರೀಯರೆಲ್ಲರೂ

ತಮ್ಮ ಪತಿಗಳನ್ನು ತಿರಸ್ಕರಿಸಿ ಪರಪುರುಷರೊಡನೆ ವಿಹರಿಸು

ವವರಾಗಿಯೂ ಆಗುವರು. ರಾಜರೆಲ್ಲರೂ ಪ್ರಜೆಗಳ ಕಷ್ಟ

ಸುಖಗಳನ್ನು ಲಕ್ಷಿಸದೆ ನಾನಾ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಒಡಿಸುವವರಲ್ಲದೆ

ಅವರ ರಕ್ತವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಹಿಂಡುವರು. ದುಷ್ಟರಾಜರ ಹಿಂಸೆ

ಯಿಂದ ಜನರೆಲ್ಲರೂ ದೇಶಭ್ರಷ್ಟರಾಗಿ ಓಡಿಹೋಗುವರು.

ಕಲಿಯುಗದ ಪ್ರಥಮಪಾದದಲ್ಲಿ ಪ್ರಜೆಗಳು ದೇವರನ್ನು

ನಿಂದಿಸುವರು. ದ್ವಿತೀಯಪಾದದಲ್ಲಿ ದೇವರ ಹೆಸರನ್ನೇ

ಮರೆತುಬಿಡುವರು. ತೃತೀಯಪಾದದಲ್ಲಿ ವರ್ಣಸಂಕರ

ವಾಗುವುದು. ನಾಲ್ಕನೆಯ ಪಾದದಲ್ಲಿ ಜಾತಿಭೇದವೆಲ್ಲಾ

ಅಳಿದುಹೋಗಿ ಒಂದೇ ಜಾತಿಯಾಗುವುದು. ವೇದವೆಲ್ಲಾ

ನಶಿಸಿಹೋಗಿ ಹವ್ಯಕವ್ಯಗಳೂ ಯಜ್ಞಯಾಗಗಳೂ

ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ನಿಂತು ಹೋದಮೇಲೆ ದೇವತೆಗಳೆಲ್ಲರೂ

ಹವಿಸ್ಸೇ ಇಲ್ಲದವರಾಗುವರು. ಈ ರೀತಿ ಲೋಕವೆಲ್ಲಾ

ಅಧರ್ಮಭೂಯಿಷ್ಯವಾಗಿ ಮ್ಲೇಚ್ಛಮಯವಾಗುವುದರಿಂದ

ದುಷ್ಟರಾಜರ ಹಾವಳಿಯನ್ನು ತಡೆಯಲಾರದೆ ಜನರೆಲ್ಲರೂ

ತಡೆಯಲಶಕ್ತವಾದ ನಾನಾ ವಿಧವಾದ ತೊಂದರೆಗಳನ್ನನು

ಭವಿಸುತ್ತಿರುವಾಗ ಚತುರ್ಮುಖ ಮತ್ತು ದೇವತೆಗಳೊಡನೆ

ಭೂದೇವಿಯು ಈ ಅಧರ್ಮ ರಾಜ್ಯಭಾರವನ್ನು ಕೊನೆ

ಗಾಣಿಸಬೇಕೆಂದು ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನಲ್ಲಿ ಮೊರೆಯಿಡಲು

ವಿಷ್ಣುವು ಶಂಭಳ ಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿ ವಿಷ್ಣುಯಶನೆಂಬ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ

ನೊಬ್ಬನ ಮನೆಯಲ್ಲಿ “ಕಲ್ಪಿ”ಯೆಂಬ ಅಭಿಧಾನದಿಂದ

ಅವತರಿಸಿ ಶೌರ್ಯ ಧೈರ್ಯ ಸ್ಥೈರ್ಯಾದಿಗಳಿಂದ ಪರಿ

ಶೋಭಿಸುತ್ತಾ ಖಡ್ಗಧಾರಿಯಾಗಿ ಅಶ್ವಾರೂಢನಾಗಿ

ಹೊರಟು ಕೋಟಿಗಟ್ಟಲೆ ದುಷ್ಟ ಮ್ಲೇಚ್ಛ ಸಮೂಹವನ್ನು

ಸಂಹರಿಸಿ ಧರ್ಮಸಂರಕ್ಷಣೆಮಾಡಿ ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಶಾಂತಿ ಸೌಖ್ಯ

ಗಳನ್ನುಂಟುಮಾಡಿ ಪ್ರಜೆಗಳನ್ನು ಸಂರಕ್ಷಿಸುವನು.]

ಕಲಿಕುರಾಣ ಕಲ್ಪಿಪುರಾಣ (ನಂ) ಒಂದು ಉಪಪುರಾಣ.

[ಈ ಪುರಾಣದಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಪಾದ್ಯವಿಷಯ : ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ

ಆಚಾರವ್ಯವಹಾರಗಳ ಅಳಿವು, ದೇವತೆಗಳು ಭೂದೇವಿ

ಯೊಡನೆ ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು, ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕ

ವರ್ಣನೆ, ಬ್ರಹ್ಮನಲ್ಲಿ ಕಲಿಯ ದೋಷಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು,

ಬ್ರಹ್ಮನೊಡನೆ ದೇವತೆಗಳು ಗೋಲೋಕಕ್ಕೆ ತೆರಳುವುದು,

ಮಹಾವಿಷ್ಣುವು ಇವರ ಮೊರೆಯನ್ನು ಕೇಳಿ ಶಂಭಳ ಗ್ರಾಮ

ದಲ್ಲಿ ಕಲ್ಪಿರೂಪದಿಂದ ಅವತರಿಸುವುದಾಗಿಯೂ, ದುಷ್ಟ

ನಿಗ್ರಹ ಶಿಷ್ಟಪರಿಪಾಲನೆ ಮಾಡುವುದಾಗಿಯೂ ಆಶ್ವಾಸನೆ

ಕೊಡುವುದು, ಕಲ್ಪಿಯ ಅವತಾರ, ಕಲ್ಪಿಯ ಉಪನಯನ,

ಗುರುವಿನಿಂದ ಧರ್ಮೋಪದೇಶ, ಸಿಂಹಳದಲ್ಲಿ ಪದ್ಮಾವತೀ

ರೂಪದಿಂದ ಜನಿಸಿದ ಲಕ್ಷ್ಮಿಯೊಡನೆ ಕಲ್ಪಿಯ ವಿವಾಹ,

ಶಂಕರನಿಂದ ಕಲ್ಪಿಗೆ ಖಡ್ಗ, ಬಾಣ, ಕುದುರೆಗಳ ಪ್ರಾಪ್ತಿ,

ಕಲಿಪುರುಷನ ದೌಷ್ಟ್ಯವನ್ನು ಕಂಡು ಕ್ರೋಧಾವಿಷ್ಟನಾದ

ಕಲ್ಪಿಯು ಅಶ್ವವನ್ನೇರಿ ಖಡ್ಗವನ್ನು ಹಿಡಿದು ದುಷ್ಟರಾದ

ಮ್ಲೇಚ್ಛಯವನರೆಲ್ಲರನ್ನೂ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಸಂಹರಿಸಿ ಜನರ

ಕಷ್ಟಗಳನ್ನು ಪರಿಹರಿಸಿ ಜನರಿಗೆ ಶಾಂತಿಸೌಖ್ಯಗಳನ್ನು

ಕಲ್ಪಿಸುವುದು, ಬಳಿಕ ಕೃತಯುಗಾರಂಭ, ಇತ್ಯಾದಿ.]

ಕಲ್ಪ ಕಲ್ಪ (ಛಂ) 1. ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಕಾಲ, ಬ್ರಹ್ಮನು

ಜಗತ್ತನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸುವ ಕಾಲ, ಬ್ರಹ್ಮನ ಹಗಲು.

2. ಬ್ರಹ್ಮನ ರಾತ್ರಿ, ಜಗತ್ತಿನ ವ್ಯಾಪಾರವಿಲ್ಲದ ಪ್ರಳಯ

ಕಾಲ. ಕಲ್ಪತೇ ಸ್ವಕ್ರಿಯಾಯೈ ಸಮರ್ಥಃ ಅಸಮರ್ಥೇಶ್ಚ ಭವತಿ—

ಕೃಷ್ಣ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) ಅಧಿಂ “ಋ” (೩-೩-೧೨೧) ।

“ಯದಾ ಸ ದೇವೋ ಜಾಗತಿ ತದೇದಂ ಚೇಷ್ಟತೇ ಜಗತ್ । ಯದಾ

ಸ್ವಪಿತಿ ಶಾಂತಾತ್ಮಾ ತದಾ ಸರ್ವಂ ನಿಮಿಲತಿ” ಮನುಂ ೧-೫೨ ।



“ಕಲ್ಪಸ್ಯಾಂತೇ ಮಾರುತೇನೋಪನುಗ್ರಾಹೇಲಕ್ಷಣಂ ಗಣತಶೈಲಾ ಇವೇಮಾ.”  
ಮಾಘಂ ೧೮-೬।

ಚತುರ್ಮುಖನ ಒಂದು ಹಗಲಿಗೂ ಅದೇ ಪ್ರಮಾಣವುಳ್ಳ ಒಂದು ರಾತ್ರಿಗೂ ಕಲ್ಪವೆಂದು ಹೆಸರು. ಜಾಂದ್ರಮಾನದಲ್ಲಿ ಮನುಷ್ಯರ ಒಂದು ತಿಂಗಳು ಪಿತೃ ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಒಂದು ದಿವಸ. ಸೌರಮಾನದಲ್ಲಿ ಮನುಷ್ಯರ ಒಂದು ವರ್ಷವು ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಒಂದು ದಿವಸ. ಈ ರೀತಿ 43,20,000 ಮಾನುಷ ವರ್ಷಗಳು ಅಥವಾ 12,000 ದೇವತೆಗಳ ವರ್ಷಗಳು ಕಳೆದರೆ ಒಂದು ಚತುರ್ಯುಗವಾಗುವುದು. [ಯುಗಮಾನಕ್ಕೆ “ಅಬ್ಧ” ಮತ್ತು “ಕಲಿ” ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಈ ರೀತಿ ಒಂದು ಸಾವಿರ ಚತುರ್ಯುಗಗಳು (1,20,00,000 ದೇವ ವರ್ಷಗಳು ಅಥವಾ 4,32,00,00,000 ಮಾನುಷ ವರ್ಷಗಳು) ಕಳೆದರೆ ಬ್ರಹ್ಮನಿಗೆ ಒಂದು ಹಗಲಾಗುವುದು. ಮತ್ತು ಇಷ್ಟೇ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಒಂದು ರಾತ್ರಿಯಾಗುವುದು. ಬ್ರಹ್ಮನ ಈ ಹಗಲಿನಲ್ಲಿ ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಕಾರ್ಯವೂ ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಳಯವೂ ನಡೆಯುವುವು. ಈ ಹಗಲು ಮತ್ತು ರಾತ್ರಿಗಳಿಗೆ “ಕಲ್ಪ”ವೆಂದು ಹೆಸರು. 8,64,00,00,000 ಸೌರ ವರ್ಷಗಳು ಕಳೆದರೆ ಬ್ರಹ್ಮನಿಗೆ ಒಂದು ಹಗಲೂ ಒಂದು ರಾತ್ರಿಯೂ ಆಗುವುದು. ಬ್ರಹ್ಮನ ಒಂದು ಹಗಲಿನಲ್ಲಿ ಸ್ವರ್ಗಲೋಕದಲ್ಲಿ ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಇಂದ್ರರೂ ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಮನುಗಳೂ ರಾಜ್ಯವಾಳುವರು. ರಾತ್ರಿಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಪ್ರಳಯವಾಗುವುದು. [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಪ್ರಲಯ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ] ಇಂತಹ 30 ದಿನಗಳಿಗೆ ಬ್ರಹ್ಮನ ಒಂದು ತಿಂಗಳು.

**ಬ್ರಹ್ಮನ ತಿಂಗಳ ಮೂವತ್ತು ದಿನಗಳು:** (1) ಶ್ವೇತ, (2) ನೀಲಲೋಹಿತ, (3) ವಾಸುದೇವ, (4) ರಥಂತರ, (5) ರೌರವ, (6) ಪ್ರಾಣ, (7) ಬೃಹತ್, (8) ಕಂದರ್ಪ, (9) ಸದ್ಯ, (10) ಈಶಾನ, (11) ವ್ಯಾನ, (12) ಸಾರಸ್ವತ, (13) ಉದಾನ, (14) ಗಾರುಡ, (15) ಕೌರ್ಮ, (16) ನಾರಸಿಂಹ, (17) ಸಮಾನ, (18) ಆಗ್ನೇಯ, (19) ಸೋಮ, (20) ಮಾನವ, (21) ತತ್ಪರುಷ, (22) ವೈಕುಂಠ, (23) ಲಕ್ಷ್ಮಿ, (24) ಸಾವಿತ್ರಿ, (25) ಘೋರ, (26) ವಾರಾಹ, (27) ವೈರಾಜ, (28) ಗೌರಿ (ಈಗಿನ ಶ್ವೇತವರಾಹಕಲ್ಪ), (29) ಮಾಹೇಶ್ವರ ಮತ್ತು (30) ಪಿತೃ ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಕೌರ್ಮಕಲ್ಪವು ಪೂರ್ಣಮೆ. ಪಿತೃಕಲ್ಪವು ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ. ಈ ಮೂವತ್ತು ಕಲ್ಪಗಳಿಗೆ ಬ್ರಹ್ಮನ ಒಂದು ತಿಂಗಳು. ಇಂತಹ ಹನ್ನೆರಡು ತಿಂಗಳಿಗೆ ಒಂದು ವರ್ಷ. ಇಂತಹ ಒಂದು

ನೂರು ವರ್ಷಗಳು ಬ್ರಹ್ಮನ ಆಯುಸ್ಸು. ಬ್ರಹ್ಮನ ಈ ಆಯುಃಪ್ರಮಾಣಕ್ಕೆ ಒಂದು “ಪರ” ವೆಂದು ಹೆಸರು. [ಬ್ರಹ್ಮನ ಆಯುಃಪ್ರಮಾಣಕ್ಕೆ “ಅಬ್ಧ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಬ್ರಹ್ಮನಿಗೆ ಈಗ ಮೊದಲನೆಯ ಪರಾರ್ಧವು (50 ವರ್ಷಗಳು) ಕಳೆದು ದ್ವಿತೀಯ ಪರಾರ್ಧವು ನಡೆಯುತ್ತಿದೆ. ಈಗ ಬ್ರಹ್ಮನ ಆಯುಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಐವತ್ತೊಂದನೆಯ ವರ್ಷದ ಮೊದಲನೆಯ ತಿಂಗಳ ಇಪ್ಪತ್ತೈದು ದಿನಗಳು ಕಳೆದು ಇಪ್ಪತ್ತಾರನೆಯ ಹಗಲಿನ ಮೊದಲನೆಯ ಯಾಮವು ನಡೆಯುತ್ತಿರುವುದು. ನಾವು ಈಗ ಶ್ವೇತವರಾಹಕಲ್ಪದಲ್ಲಿದ್ದೇವೆ. 3. ವೈದಿಕ ಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನದ ವಿಧಿ. ನಿಯಮ. ಕಟ್ಟಳೆ. ಕಲ್ಪತೆ ವಿಧಿಯತೆಸೌ—ಕೃಪ ಕರ್ಮಂ “ಘ್ನ” (೩-೩-೧೯)। “ಏಷ ವೈ ಪ್ರಥಮ: ಕಲ್ಪ: ಪ್ರದಾನೇ ಹವ್ಯಕವ್ಯಯೋ:। ಅನುಕಲ್ಪಸ್ತವ್ಯಂ ಜೇಯ: ಸದಾ ಸದ್ವಿರನುಷ್ಠಿತ:” ಮನುಂ ೩-೧೪೭। 4. ಶಾಸ್ತ್ರ. “ಕಲ್ಪವಿತ್ ಕಲ್ಪಯಾಮಾಸ ವನ್ಯಾಮೇವಾಸ್ಯ ಸಂವಿಧಾಮ್” ರಘುಂ ೧-೯೪। 5. ನ್ಯಾಯ. “ಕಲ್ಪ: ಶಾಸ್ತ್ರೇ ವಿಧೌ ನ್ಯಾಯೇ ಸಂವರ್ತೆ ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ದಿನೇ” ಮೇದಿಂ। 6. ವಿಕಲ್ಪ. ಎರಡು ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವುದಾದರೊಂದಕ್ಕೆ ಅವಕಾಶ, ಪಕ್ಷಾಂತರ. 7. ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷ. “ಕಲ್ಪೋ ವಿಕಲ್ಪೇ ಕಲ್ಪದ್ರೌ ಸಂವರ್ತೆ ಬ್ರಹ್ಮವಾಸರೇ। ಶಾಸ್ತ್ರೇ ನ್ಯಾಯೇ ವಿಧೌ” ಹೇಮಂ। 8. (ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ) ಸಮಾನಾರ್ಥಕವಾದ ಒಂದು ಪ್ರತ್ಯಯ. “ಕಲ್ಪ”। ವಿಹಿತಕಲ್ಪ:, ಬ್ರಾಹ್ಮಣಕಲ್ಪ:, ರಾತ್ರಿಕಲ್ಪ:, ಮಿತ್ರಕಲ್ಪ: ಇತ್ಯಾದಿ. 9. ಆರು ವೇದಾಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. (1) ಶಿಕ್ಷಾ, (2) ವ್ಯಾಕರಣಮ್, (3) ಛಂದ:, (4) ನಿರುಕ್ತಮ್, (5) ಜ್ಯೋತಿಷಮ್ ಮತ್ತು (6) ಕಲ್ಪ: ಇವು ಆರು ವೇದಾಂಗಗಳು. ವೇದಕ್ಕೆ ಛಂದಸ್ಸು ಪಾದಗಳು. ಕಲ್ಪವು ಹಸ್ತಗಳು. ಜ್ಯೋತಿಷವು ಕಣ್ಣುಗಳು. ನಿರುಕ್ತವು ಕಿವಿಗಳು. ಶಿಕ್ಷೆಯು ಮೂಗು. ವ್ಯಾಕರಣವು ಮುಖ. ಅದುದರಿಂದ ಇವು ಆರು ಅಂಗಗಳನ್ನೂ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದರೆ ವೇದಾಧ್ಯಯನವು ಪೂರ್ಣವಾಗುವುದು. “ಛಂದ: ಪಾದೌ ತು ವೇದಸ್ಯ ಹಸ್ತೌ ಕಲ್ಪೋಽಥ ಪಠತೇ। ಜ್ಯೋತಿಷಾಮಯನಂ ಚಕ್ಷು: ನಿರುಕ್ತಂ ಶ್ರೋತ್ರಮುಚ್ಯತೇ। ಶಿಕ್ಷಾ ಗ್ರಾಣಂ ತು ವೇದಸ್ಯ ಮುಖಂ ವ್ಯಾಕರಣಂ ಸ್ಮೃತಮ್। ತಸ್ಮಾತ್ಸಾಙ್ಗಮಧೀತ್ಯೈವ ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕೇ ಮಹೀಯತೇ”।

**ಕಲ್ಪಕ ಕಲ್ಪಕೆ (ಪುಂ)** 1. “ಕಲ್ಪ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ಕಲ್ಪ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್”। 2. ನಾಪಿತ. ಕೈರಿಕ. ಕಲ್ಪಯತಿ ಕೌರಾದಿನಾ ವೇಶಂ ರಚಯತಿ—ಕೃಪ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) + ಣಿच् “ಫಲ್” (೩-೧-೧೩೩)। (ವಿಂ) 3. ರಚಿಸುವವನು, ನಿರ್ಮಿಸುವವನು, ತಯಾರಿಸುವವನು. ಕಲ್ಪಯತಿ



ರಚಯತಿ—ಕೃಪ್ + ಣಿಕ್ “ಫ್ಲು” 4. ಕರ್ಷಾರ್, ಕರ್ಷಾರ್.

**ಕಲ್ಪಕಾರ ಕಲ್ಪಕಾರ (ಗುಂ)** 1. ಕಲ್ಪಸೂತ್ರಕಾರರು, ಮತ ಧರ್ಮಾಚರಣೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ ವಿಧಿಸೂತ್ರಕಾರರು ; ಆಶ್ವಲಾಯನ, ಆಪಸ್ತಂಬ ಮೊದಲಾದವರು. ಕಲ್ಪ ಕಲ್ಪಸೂತ್ರಂ ಕರೋತಿ—ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣೆ) “ಅಞ್” (3-2-1) 2. ನಾಪಿತ, ಕಲ್ಪಕಾರ. (ವಿಂ) 3. ವೇಷಗಳನ್ನು ಹಾಕುವವನು. ಕಲ್ಪಂ ವೇಶಂ ಕರೋತಿ—ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣೆ) “ಅಞ್” (3-2-1) 1. “ಫ್ಲು” (3-1-133) 1. —ಕಾರಕ: —ಕಾರಕ:

**ಕಲ್ಪಕಷಯ ಕಲ್ಪಕಷಯ (ಗುಂ)** ಕಲ್ಪಕಾಲದ ಕೊನೆ, ಜಗತ್ತಿನ ಪ್ರಳಯಕಾಲ. ಕಲ್ಪಸ್ಯ ಸೃಷ್ಟಿವಿಶೇಷಸ್ಯ ಕಷಯೋ ಯತ್ರ | “ಕಲ್ಪಕಷಯೇ ಪುನಸ್ತೇ ತು ಪ್ರವಿಶಂತಿ ಪರಂ ಪದಮ್” ವಿಷ್ಣುಪುಂ |

**ಕಲ್ಪತರು ಕಲ್ಪತರು (ಗುಂ)** 1. ಸಕಲ ಇಷ್ಟಾರ್ಥಪ್ರದವಾದ ಐದು ದೇವವೃಕ್ಷಗಳಲ್ಲೊಂದು. “ಆಸೀತ್ಕಲ್ಪತರುಕ್ಷಾಯಾ-ಮಾಶ್ರಿತಾ ಸುರಭಿಃ ಪಥಿ” ರಘುಂ 1-95 2. ಉದಾರ, ಕೊಡುಗೆಯುಳ್ಳವನು. ಇಷ್ಟಾರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುದರಿಂದ ದಾತೃವೂ ಕಲ್ಪತರು. (ಲಾಕ್ಷಂ) 1

**ಕಲ್ಪದ್ರು ಕಲ್ಪದ್ರು (ಗುಂ)** 1. ಸಕಲ ಇಷ್ಟಾರ್ಥಪ್ರದವಾದ ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷ, ಐದು ದೇವತರುಗಳಲ್ಲೊಂದು. 2. ಕೇಶವಕವಿ ರಚಿತವಾದ ಒಂದು ನಿಘಂಟು, ಒಂದು ಶಬ್ದಕೋಶ. ಇದೇ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ —ದ್ರುಮಃ —ದ್ರುಮಃ. “ಅನುಕೂಲಯತೀಂದ್ರೋಪಿ ಕಲ್ಪದ್ರುಮವಿಭೂಷಣಃ” ಕುಮಾರಂ 2-39 1. —ಪಾದಪಃ —ಪಾದಪಃ. “ಮೃಗಾ ನ ಚಕ್ರೇತ್ಕಲ್ಪಿತಕಲ್ಪಪಾದಪಃ” ನೈಷಂ 1-15 1. —ವೃಕ್ಷಃ —ವೃಕ್ಷಃ, —ಶಾಲಿ —ಶಾಲಿ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕಲ್ಪನ ಕಲ್ಪನ (ನಂ)** 1. ರಚನೆ. ನಿರ್ಮಾಣ. 2. ಮಾಡುವಿಕೆ. ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವಿಕೆ, ಏರ್ಪಡಿಸುವಿಕೆ. ಕೃಪ್ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) + ಣಿಕ್ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114) 1. 3. ಭೇದನ, ಕತ್ತರಿಸುವಿಕೆ. 4. ಊಹಿಸುವಿಕೆ, ಶಂಕಿಸುವಿಕೆ. 5. ಕಲ್ಪಿಸಿ ಹೇಳುವಿಕೆ, ಇಲ್ಲದುದನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ಹೇಳುವಿಕೆ. ಆರೋಪಣೆ. 6. ಕಲ್ಪಿತಕಥೆ, ಕಟ್ಟುಕಥೆ. 7. ಅನುಮಾನ ಅಥವಾ ಅರ್ಥಾಪತ್ತಿಪ್ರಮಾಣದಿಂದ ಊಹಿಸಿ ವಿಷಯವನ್ನು ತೀರ್ಮಾನಿಸುವಿಕೆ.

**ಕಲ್ಪನಾ ಕಲ್ಪನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ರಚನೆ, ನಿರ್ಮಾಣ. 2. ಮಾಡುವಿಕೆ. ಕೃಪ್ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) + ಣಿಕ್ ಭಾವೇ “ಯುಕ್” (3-3-103) 1. “ಪ್ರಸ್ಥಾನಕಾಲಕಸಮವೇಷಕಲ್ಪನಾಕೃತಕ್ಷಣ-ಕ್ಷೇಪಮುದೇಕ್ಷತಾಚ್ಯುತಮ್” ಮಾಘಂ 12-1 3. ಊಹಿಸುವಿಕೆ, ಶಂಕಿಸುವಿಕೆ. “ಮದನ್ಯದಾನಂ ಪ್ರತಿ ಕಲ್ಪನಾ ಯಾ ವೇದಸ್ತ್ವದೀಯೇ

ಹೃದಿ ತಾವದೇಶಾ” ನೈಷಂ 3-95 1. 4. ಅನೆಯನ್ನು ಅಲಂಕರಿಸುವಿಕೆ, ಅನೆಯ ಬೆನ್ನಿನಮೇಲೆ ಗವುಸನ್ನು ಹೊದಿಸಿ ಶೃಂಗರಿಸುವಿಕೆ. “ಸಕಲ್ಪನಂ ದ್ವಿರದಗಣಂ ವರುಣಿನ-ಸ್ತುರಾಕ್ಷಿಣೋ ಜಯನಯುಜಶ್ಚ ವಾಜಿನಃ” ಮಾಘಂ 17-23 1. 5. ಒಂದು ವಿಷಯದ ನಿಜಾಂಶವು ಹೀಗಿರಬಹುದೆಂದು ಮಾಡುವ ಊಹೆ ; ಇದನ್ನು ನೈಯಾಯಿಕರು ಅನುಮಾನವೆನ್ನುವರು. ಮೀಮಾಂಸಕರು ಅರ್ಥಾಪತ್ತಿಪ್ರಮಾಣವೆನ್ನುವರು. 6. ಸಿದ್ಧಿ, ಕೈಗೊಡುವಿಕೆ. “ಶ್ರದ್ಧಾಲುಸಂಕಲ್ಪಿತ-ಕಲ್ಪನಾಯಾಂ ಕಲ್ಪದ್ರುಮಸ್ಯಾಥ ರಥಾಕ್ಷಪಾಣಿಃ” ನೈಷಂ 10-69 1.

**ಕಲ್ಪನೀ ಕಲ್ಪನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕತ್ತರಿ.

**ಕಲ್ಪನೀಯ ಕಲ್ಪನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ರಚಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. 2. ರಚಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ರಚಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಕೃಪ್ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) + ಣಿಕ್ “ಅನೀಯರ್” (3-2-96) 1. 4. ನಿಜಾಂಶವು ಹೀಗಿರಬಹುದೆಂದು ಊಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಊಹಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 6. ಊಹಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. “ತವ್ಯಃ” ಕಲ್ಪಿತವ್ಯಃ ಕಲ್ಪಿತವ್ಯಃ. (ಣಿಜಭಾವೇ) 1.

**ಕಲ್ಪಮಾನ ಕಲ್ಪಮಾನ (ವಿಂ)** 1. ರಚನೆಯಾಗುತ್ತಿರುವ, ನಿರ್ಮಾಣವಾಗುತ್ತಿರುವ. 2. ಸಮರ್ಥವಾಗುತ್ತಿರುವ. ಕೃಪ್ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) “ಶಾನಕ್” (3-2-124) 1. 3. ಸಿದ್ಧವಾಗುತ್ತಿರುವ. “ಕಾಲಪಾಶನಿಗೃಹಿತಮರಾತಿ ಕಲ್ಪಮಾನ-ಮಮವಾಯಿವಿವೇದ” ಯಾದಂ 21-55 1.

**ಕಲ್ಪಯತ್ ಕಲ್ಪಯತ್ (ವಿಂ)** 1. ಸೃಷ್ಟಿಸುತ್ತಿರುವ, ನಿರ್ಮಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ರಚಿಸುತ್ತಿರುವ, ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಚಿಂತಿಸುತ್ತಿರುವ, ಊಹಿಸುತ್ತಿರುವ, ಶಂಕಿಸುತ್ತಿರುವ. ಕೃಪ್ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) + ಣಿಕ್ “ಶತ್” (3-2-124) 1. “ಕ್ಷಣಶಯಿತವಿಬುಧಾಃ ಕಲ್ಪಯಂತಃ ಪ್ರಯೋಗಾನುದಧಿಮಹತಿ ರಾಜ್ಯೇ ಕಾವ್ಯವದ್ದುರ್ವಿಗಾಹೇ” ಮಾಘಂ 11-6 1. 4. ಏರ್ಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸಿದ್ಧಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀಪ್” (4-1-6) 1. —ಯಂತಿ —ಯಂತಿ. “ಶಾನಕ್” (3-2-124) 1. **ಕಲ್ಪಯಮಾನಃ ಕಲ್ಪಯಮಾನಃ.**

**ಕಲ್ಪಯಿತವ್ಯ ಕಲ್ಪಯಿತವ್ಯ (ವಿಂ)** “ಕಲ್ಪನೀಯ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ಕೃಪ್ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) + ಣಿಕ್ “ತವ್ಯಃ” (3-2-96) 1.

**ಕಲ್ಪಲತಾ ಕಲ್ಪಲತಾ -ವಲ್ಲಿ -ವಲ್ಲಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)**

“ಕಲ್ಪತರು” ಪದದ ಅರ್ಥ. ಕಲ್ಪಸ್ಯ ಸಂಕಲ್ಪವಿಷಯಸ್ಯ ಸಾಧನಂ ಲತಾ | “ಕವ ಯಾಚತಾಂ ಕಲ್ಪಲತಾಸಿ ಮಾಂ ಪ್ರತಿ ಕವ ದೃಷ್ಟಿದಾನೇ ತವ ಬದ್ಧಮುಷ್ಠಿತಾ” ನೈಷಂ 9-109 1.

**ಕಲ್ಪವಿದ್ ಕಲ್ಪವಿದ್ (ವಿಂ)** ಯಜ್ಞಸಂಬಂಧವಾದ ವಿಧಿಗಳನ್ನು ಅರಿತಿರುವ, ಪ್ರತಪ್ರಯೋಗಗಳನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ,



ಶಾಸ್ತ್ರನಿಯಮಗಳನ್ನು ಅರಿತಿರುವ. ಕಲ್ಪಂ ವೇತ್ತಿ—ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೬೧)। “ಕಲ್ಪವಿತ್ ಕಲ್ಪಯಾ-  
ಮಾಸ ನಿಯಮಾಪೇಕ್ಷಯಾ ಮುನಿ:” ರಘುಂ ೧-೯೪।

**ಕಲ್ಪಸೂತ್ರ ಕಲ್ಪಸೂತ್ರ** (ನಂ) ವೈದಿಕ ಕರ್ಮಾಚರಣೆಯನ್ನು ಹೇಳುವ ಸೂತ್ರ. ಕಲ್ಪಸ್ಯ ವೈದಿಕಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನಸ್ಯ ಪ್ರತಿಪಾದಕಂ ಸೂತ್ರಮ್। ಆಶ್ವಲಾಯನ ಅಪಸ್ತಂಬ ಮುಂತಾದವರಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಧರ್ಮಸೂತ್ರ, ಗೃಹ್ಯಸೂತ್ರ, ಶ್ರೌತಸೂತ್ರ, ಗ್ರಂಥಗಳು.

**ಕಲ್ಪಾತ್ಯಯ ಕಲ್ಪಾತ್ಯಯ** (ಪುಂ) ಕಲ್ಪಕಾಲದ ಕೊನೆ, ಪ್ರಳಯಕಾಲ. ಕಲ್ಪಸ್ಯಾತ್ಯಯ:। “ರಥಾದಿಪೋರಥ ಶಾರ್ಙ್ಗಪಾಣಿ: ಕಲ್ಪಾತ್ಯಯೇಕಾರ್ಣವನಾದಕಲ್ಪೇ:” ಯಾದಂ ೨೦-೯।

**ಕಲ್ಪಾಂತ ಕಲ್ಪಾಂತ** (ಪು) ಕಲ್ಪದ ಕೊನೆ, ಪ್ರಳಯಕಾಲ, ಬ್ರಹ್ಮನ ಹಗಲಿನ ಕೊನೆ. ಕಲ್ಪಸ್ಯಾಂತ:। [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಪ್ರಲಯ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕಲ್ಪಿತ ಕಲ್ಪಿತ** (ವಿಂ) 1. ರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕೃಪ್ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) + ಣಿಕ್ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)। “ಭೇಮಿವಿನೋದಾಯ ಮುದಾ ಸಖೀಭಿಸ್ತದಾಕೃತೀನಾಂ ಭುವಿ ಕಲ್ಪಿತಾನಾಮ್” ನೈಷಂ ೬-೭೪। 2. ಏರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಮುದಿತಮುಮನಸ್ಕಾಸ್ತುಲ್ಯಮೇವ ಪ್ರದೋಪೇ ರುಚಮದಧುರಭಯ: ಕಲ್ಪಿತಾ ಭೂಷಿತಾಶ್ಚ” ಮಾಘಂ ೧೧-೨೭। 3. ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. “ಆಕ್ರೋಧಪರ್ವತಾಸ್ತೇನ ಕಲ್ಪಿತಾ: ಸ್ವೇಷು ವೇಶಮಸು” ಕುಮಾಂ ೨-೪೩। 4. ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಜ್ಜುಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಪ್ರಜಾಪತಿ: ಕಲ್ಪಿತಯಜ್ಞಭಾಗಂ ಶೈಲಾಧಿಪತ್ಯಂ ಸ್ವಯಮನ್ವತಿಷ್ಠತ್” ಕುಮಾಂ ೧-೧೭। “ಸ್ಪರ್ಶಭಾಜಿ ವಿಶದಂಕ್ಷವಿಚಾರೌ ಕಲ್ಪಿತೇ ಮೃಗದೃಶಾಂ ಸುರತಾಯ” ಮಾಘಂ ೧೦-೩೯। 5. ಊಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತರ್ಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಆಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅನುಷ್ಠಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 7. ಪರಿಗಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಭಾವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಸ್ವಕ್ಷೇತ್ರೇ ಸಂಸ್ಕೃತಾಯಾಂ ತು ಸ್ವಯಮುತ್ಪಾದಯೇದ್ವಿ ಯಮ್। ತಮೌರಸಂ ವಿಜಾನೀಯಾತ್ಯುತ್ರಂ ಪ್ರಥಮ-ಕಲ್ಪಿತಮ್” ಮನುಂ ೯-೧೬೬। 8. ಕೃತ್ರಿಮವಾದ, ಸೃಷ್ಟಿ ವಾದ. ವಾಸ್ತವವಲ್ಲದ,

**ಕಲ್ಪಿನ್ ಕಲ್ಪಿನ್** (ಪುಂ) 1. ನಾಖಿತ, ಕ್ಷೌರಿಕ, ನಾಯಿಂದ. ಕಲ್ಪಯತಿ — ಕೃಪ್ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) + ಣಿಕ್ “ಣಿನಿ:” (೩-೧-೧೩೪)। (ವಿಂ) 2. ನಿರ್ಮಿಸುವ. 3. ಮಾಡುವ. 4. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತಿಸುವ, ಎರಿಸುವ. 5. ವೇಷ ಹಾಕುವ.

**ಕಲ್ಪ್ಯ ಕಲ್ಪ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ರಚಿಸಲ್ಪಡುವ, ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಡುವ. ಕೃಪ್ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) + ಣಿಕ್ “ಯತ್” (೩-೧-೯೭)। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹತ್ತಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹೊಸದಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 4. ಏರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ.

5. ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ, ಸಜ್ಜುಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. “ಆನಂದಬಾಷ್ಪೇರಪಿ ಕಲ್ಪ್ಯಮಮ್ಮ: ಪೃಚ್ಛಾ ವಿಧೇಯಾ ಮಧುಮಿ-ವಂಚೋಮಿ:” ನೈಷಂ ೭-೨೧। “ಕಾಲೋಪಪನ್ನಾತಿಥಿಕಲ್ಪ್ಯಭಾಗಂ ವನ್ಯಂ ಶರೀರಸ್ಥಿತಿಸಾಧನಂ ವ:” ರಘುಂ ೫-೯। 6. ಅನುಷ್ಠಿಸಲ್ಪಡುವ, ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ. 7. ಊಹಿಸಲ್ಪಡುವ, ಶಂಕಿಸಲ್ಪಡುವ. 8. ಪರಿಗಣಿಸಲ್ಪಡುವ, ಭಾವಿಸಲ್ಪಡುವ.

**ಕಲ್ಪ್ಯಮಾನ ಕಲ್ಪ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ರಚಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಕೃಪ್ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) + ಕರ್ಮಂ “ಯಕ್” (೩-೧-೬೭)। “ಶಾನಕ್” (೩-೨-೧೨೪)। 2. ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಏರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 4. ಊಹಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 5. ಸಜ್ಜುಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. “ಕಲ್ಪ್ಯಮಾನಮಮುನಾಚಮನಾರ್ಥಂ ಗಾಙ್ಗಮಮ್ಬು ಚುಲಕೋದರಚುಮ್ಬಿ” ನೈಷಂ ೨೧-೧೦।

**ಕಲ್ಮಷ ಕಲ್ಮಷ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ನರಕ. ಕರ್ಮ ಶುಭಕರ್ಮ ಸ್ಯತಿ — ಷ (ಅಂತರ್ಮಣಿ) “ಕ:” (೩-೨-೩)। ಪೃಷಂ ಲತ್ವಪತ್ವೇ। (ನಂ) 2. ಪಾಪ. “ಕಲ್ಮಷಂ ಕಿಲ್ಬಿಷೇ ಕ್ಲಿಬಂ ಪುಂಸಿ ಸ್ಯಾನ್ನರಕಾಂತರೇ” ಮೇದಿಂ। “ಸ ಹಿ ಗಗನವಿಹಾರಿ ಕಲ್ಮಷಧ್ವಂಸಕಾರಿ ದಶಶತಕರಧಾರಿ ಜ್ಯೋತಿಷಾಂ ಮಧ್ಯಚಾರಿ” ಹಿತಂ ೨-೨೧। 3. ಕಶ್ಮಲ, ಕೊಳೆ. 4. ಗೂ, ಗಪ್ಪು, ಮಲ. 5. ಧೂಳು. 6. ಅಪವಾದ, ಅಪಕೀರ್ತಿ. 7. ಕಲ್ಮಷಮಾಸ, ಮಲಮಾಸ. (ವಿಂ) 8. ಕೊಳೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಮಲಿನವಾದ. 9. ಪಾಪಿಷ್ಠ. 10. ಅಪವಾದ ದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು.

**ಕಲ್ಮಾಷ ಕಲ್ಮಾಷ** (ಪುಂ) 1. ಚಿತ್ರವರ್ಣ. ಕಲ್ಯಯತಿ — ಕಲ್ (ಸಂಖ್ಯಾನೇ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೧೭೨)। ಮಾಘಯತಿ ಹಿಸಯತಿ ವರ್ಣಾನ್—ಮಷ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ “ಅಕ್” (೩-೧-೧೩೪)। ಕಲ್ ಚಾಸೌ ಮಾಷಶ್ಚ। 2. ಕೃಷ್ಣವರ್ಣ, ಕಪ್ಪುಬಣ್ಣ. 3. ಕಪ್ಪು ಬಿಳುಪು ಬೆರೆತ ಬಣ್ಣ. 4. ರಾಕ್ಷಸ. “ಕಲ್ಮಾಷೋ ರಾಕ್ಷಸೇ ಕೃಣ್ಣೇ ಶಬಲೇಽಪಿ” ಹೇಮಂ। 5. ಅಗ್ನಿಯ ಒಂದು ರೂಪ. “ಅಗ್ನಿನಾಂ ವಾಸುಧೇವೇನ ಸಂಸಕ್ತಾನಾಂ ಮಹಾಮೃಧೇ। ತೇ ಜಾತವೇದಸ: ಸರ್ವೇ ಕಲ್ಮಾಷ: ಕುಸುಮಸ್ತಥಾ। ದಹನ: ಶೋಷಣಶ್ಚೈವ ತಪನಶ್ಚ ಮಹಾಲಯ:” ಹರಿವಂ। (ವಿಂ) 6. ಚಿತ್ರವರ್ಣದ. 7. ಕಪ್ಪು ಬಿಳುಪು ಬೆರೆತ ಬಣ್ಣದಿಂದ ಕೂಡಿದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಘಿ —ಘೀ. ಜಮದಗ್ನಿಯ ಹಸು.

**ಕಲ್ಮಾಷಕಂಠ ಕಲ್ಮಾಷಕಂಠ** (ಪುಂ) ಶಿವ, ಈಶ್ವರ, ನೀಲ ಕಂಠ. ಕಲ್ಮಾಷ: ಕೃಣ್ಣ: ಕಂಠೋ ಯಸ್ಯ। —ಗ್ರೀವ: —ಗ್ರೀವಃ.

**ಕಲ್ಮಾಷಪಾದ ಕಲ್ಮಾಷಪಾದ** (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ; ಇವನಿಗೆ ಮಿತ್ರಸಹ, ಸೌದಾಸ ಎಂಬ ಹೆಸರೂ



ಇವೆ. [ಈ ರಾಜನು ಒಮ್ಮೆ ಬೇಟೆಗಾಗಿ ಕಾಡಿಗೆ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸನನ್ನು ಕೊಂದು ಅವನ ಸಹೋದರನಾದ ಮತ್ತೊಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸನನ್ನು ಅಲಕ್ಷ್ಯದಿಂದ ಕೊಲ್ಲದೆ ಬಿಟ್ಟು ಬಂದನು. ಆ ರಾಕ್ಷಸನು ಅದೇ ದ್ವೇಷದಿಂದ ಪ್ರತೀಕಾರ ಮಾಡಲೆಣಿಸಿ ಆ ರಾಜನ ಅರಮನೆಯಲ್ಲಿ ವೇಷ ಧಾರಿಯಾಗಿ ಅಡಿಗೆಯವನಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡು ಒಂದು ದಿನ ಅರಮನೆಗೆ ಭೋಜನಾರ್ಥಿಯಾಗಿ ಬಂದ ರಾಜನ ಕುಲಗುರುವಾದ ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿಗೆ ನರಮಾಂಸವನ್ನು ಪಾಕ ಮಾಡಿ ಬಡಿಸಲಾಗಿ ಇದರಿಂದ ಕುಪಿತರಾದ ವಸಿಷ್ಠರು ಸ್ವಲ್ಪವೂ ಯೋಚಿಸದೆ “ನೀನು ನರಮಾಂಸಭಕ್ಷಕನಾದ ರಾಕ್ಷಸನಾಗು” ಎಂದು ರಾಜನನ್ನು ಶಪಿಸಿದರು. ಅನಂತರ ಇದು ರಾಕ್ಷಸನ ಕೃತ್ಯವೆಂದು ತಿಳಿದು ಶಾಪಕ್ಕೆ ಹನ್ನೆರಡು ವರ್ಷಗಳು ಮಾತ್ರ ಅವಧಿಯನ್ನು ಕೊಟ್ಟರು. ರಾಜನೂ ವಸಿಷ್ಠರಿಗೆ ಪ್ರತಿಶಾಪವನ್ನು ಕೊಡಲು ಕೈಯಲ್ಲಿ ನೀರನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡಾಗ ಅವನ ಪತ್ನಿಯಾದ ಮದಯಂತಿಯು ತಡೆಯಲು ಆ ಶಾಪಜಲವನ್ನು ತನ್ನ ಕಾಲಿನ ಮೇಲೆಯೇ ಬಿಟ್ಟುಕೊಂಡನು. ಅದರಿಂದ ಅವನ ಕಾಲುಗಳು ಸುಟ್ಟು ಕಪ್ಪಾದುದರಿಂದ ಆ ರಾಜನಿಗೆ “ಕಲ್ಮಾಷಸಾದ” ನೆಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು. ಅಂದಿನಿಂದ ಅವನು ರಾಕ್ಷಸರೂಪದಿಂದ ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಾ ಒಂದು ಕಡೆ ಮುನಿದಂಪತಿಗಳು ಕಾಮಾರ್ತರಾಗಿ ವಿಹರಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಆ ಮುನಿಯನ್ನು ಹಿಡಿದು ಭಕ್ಷಿಸಿದನು. ಮುನಿಪತ್ನಿಯು ದುಃಖಿತಳಾಗಿ “ನೀನು ಪತ್ನಿಯೊಡನೆ ಸಂಗಮಿಸಿದೆಯಾದರೆ ಅದೇ ನಿನಗೆ ಮೃತ್ಯುವಾಗಲಿ” ಎಂದು ರಾಜನನ್ನು ಶಪಿಸಿದಳು. ಹನ್ನೆರಡು ವರ್ಷಗಳನಂತರ ವಸಿಷ್ಠರ ಶಾಪದಿಂದ ವಿಮೋಚನೆ ಹೊಂದಿ ಮುನಿಪತ್ನಿಯ ಶಾಪದಿಂದ ಸ್ತ್ರೀಸೌಖ್ಯವನ್ನು ತೊರೆದು ವಸಿಷ್ಠರ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ಅಶ್ವಕನೆಂಬ ಪುತ್ರನನ್ನು ಪಡೆದನು.] ಭಾಗಂ ೯-೯.

**ಕಲ್ಮಾಳಿ ಕಲ್ಮಾಷೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಚಿತ್ರವರ್ಣದ ಹಸು. 2. ಯಮುನಾನದಿ. ಕಲ್ಮಾಷ “ಕೀಳ್” (೪-೧-೪೦). “ಪ್ರತಿಕರ್ತು ನೃಪಶ್ರೇಷ್ಠೋ ಯತಮಾನೋಽಪಿ ಭಾರತ | ಅಭಿತಃ ಸೌಖ್ಯ ಕಲ್ಮಾಳಿ ಗಂಧಾಕೂಲೇ ಪರಿಭ್ರಮನ್” ಭಾಂ ಆದಿಂ.

**ಕಲ್ಯ ಕಲ್ಯ (ನಂ)** 1. ಪ್ರಾತಃಕಾಲ. ಕಲ್ಯತಿ ಚೆಟಾಮತ್ರ-ಕಲ (ಗತೌ ಸಂಖ್ಯಾನೇ ಚ) “ಯಕ್” (೩೦ ೪-೧೧೧). “ಅನುನಯಮಗೃಹೀತ್ವಾ ವ್ಯಾಜಸುಪ್ತಾ ಪರಾಚಿ ರುತಮಥ ಕೃಕವಾಕೋ-ಸ್ತಾರಮಾಕರ್ಣ್ಯ ಕಲ್ಯೇ” ಮಾವಂ ೧೧-೯. 2. ಜೇನುತುಪ್ಪ. (ವಿಂ) 3. ಕಿವುಡೆ ಮತ್ತು ಮೂಗ, ಶ್ರೋತ್ರೇಂದ್ರಿಯ ಮತ್ತು ವಾಗಿಂದ್ರಿಯಗಳಿಲ್ಲದವನು, ಕೇಳುವ (ಶ್ರವಣ) ಮತ್ತು ಮಾತಾಡುವ ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದವನು. 4. ಸಮರ್ಥ

ನಾದ, ದಕ್ಷನಾದ. “ಕಲ್ಯಾಣಿ ಕಲ್ಯಾನಿ ತವಾಙ್ಗಕಾನಿ ಕಚ್ಚಿತಮಾಂ ಚಿತ್ತಮನಾವಿಲಂ ತೇ” ನೈಷಂ ೮-೫೭. 5. ಸಿದ್ಧವಾಗಿರುವ. “ಕಥಯಸ್ವ ಕಥಾಮೇತಾಂ ಕಲ್ಯಾಃ ಸ್ಮ ಶ್ರವಣಂ ತವ” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೫-೩. 6. ರೋಗವಿಲ್ಲದವನು, ಆರೋಗ್ಯದಿಂದಿರುವವನು. 7. ಮಂಗಳವಚನವನ್ನಾಡುವ, ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತನ್ನಾಡುವ. 8. ಉಪಾಯದ ಮಾತನ್ನಾಡುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲ್ಯಾ -ಲ್ಯಾ. 9. ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. 10. ಶುಭವಚನ, ಮಂಗಳವಚನ. “ಕಲ್ಯಂ ಪ್ರಭಾತೇ ಮಧುನಿ ಸಜ್ಜೇ ದಕ್ಷೇ ನಿರಾಮಯೇ | ಕಲ್ಯಾ ಕಲ್ಯಾಣವಾಚಿ ಸ್ಯಾತ್” ಹೇಮಂ. “ಕಲ್ಯಂ ಪ್ರಭಾತೇ ಕಲಿಬಂ ಸ್ಯಾತ್ ಕಲ್ಯೋ ವಾಕ್ಶ್ರುತಿವರ್ಜಿತೇ | ಸಜ್ಜನಿರೋಗದಕ್ಷೇಷು ಕಲ್ಯಾಣವಚನೇಽಪಿ ಚ | ಉಪಾಯವಚನೇಽಪಿ ಸ್ಯಾತ್ ತ್ರಿಷು ಮಧ್ಯೇ ತು ಯೋಷಿತಿ” ಮೇದಿಂ. “ಸ್ಯಾತ್ ಕಲ್ಯಾ ತು ಶುಭಾತ್ಮಿಕಾ” ಅಮಂ.

**ಕಲ್ಯಜಗ್ಧಿ ಕಲ್ಯಜಗ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪ್ರಾತಃಕಾಲದ ಊಟ. **ಕಲ್ಯತಾ ಕಲ್ಯತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಆರೋಗ್ಯಪಡೆಯುವಿಕೆ, ರೋಗದಿಂದ ಬೇತರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಕಲ್ಯಸ್ಯ ಭಾವಃ “ತಲ್” (೫-೧-೧೧೯). “ತವಃ” -ತ್ವಮ್ -ತ್ವಮ್. **ಕಲ್ಯವರ್ತ ಕಲ್ಯವರ್ತ (ಗುಂ)** ಪ್ರಾತಃಕಾಲದ ಊಟ. ಕಲ್ಯೇ ಪ್ರಾತರ್ವರ್ತತೇ -ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಣಿಕ್ “ಅಕ್” (೩-೧-೧೩೪).

**ಕಲ್ಯಾಣ ಕಲ್ಯಾಣ (ನಂ)** 1. ಶುಭ, ಮಂಗಳ. ಕಲ್ಯೇ ಪ್ರಾತಃಕಾಲೇ ಅನ್ಯತೇ -ಅಣ (ಶಬ್ದೇ) “ಘಜ್” (೩-೩-೧೯). “ಕಲ್ಯಾಣಾನಾಂ ತ್ವಮಸಿ ಮಹಸಾಂ ಭಾಜನಂ ವಿಶ್ವಮೂರ್ತಂ ಧುರ್ಯಾ ಲಕ್ಷ್ಮೀಮಿಹ ಮಯಿ ಭೃಗುಂ ಧೇಹಿ ದೇವ ಪ್ರಸಾದ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೫. “ಸಂತುಷ್ಟೋ ಭಾರ್ಯಯಾ ಭರ್ತಾ ಭರ್ತಾ ಭಾರ್ಯಾ ತಥೈವ ಚ | ಯಸ್ಮಿನ್ನೇವ ಕುಲೇ ನಿಯಮಂ ಕಲ್ಯಾಣಂ ತತ್ರ ವೈ ಧ್ರುವಮ್” ಮನುಂ ೩-೬೦. 2. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 3. ಹಬ್ಬ, ಉತ್ಸವ. 4. ಸಂತೋಷ. 5. ಸ್ವರ್ಗ. 6. ಒಳ್ಳೆಯ ಅದೃಷ್ಟ. (ವಿಂ) 7. ಮಂಗಳಕರವಾದ, ಶುಭವಾದ. 8. ಒಳ್ಳೆಯ ಅದೃಷ್ಟಶಾಲಿಯಾದ. 9. ಸಂತೋಷವುಳ್ಳ. 10. ಗುಣಶಾಲಿಯಾದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಕೀಳ್” (೪-೧-೪೫). -ಣಿ -ಣೀ. “ಕಲ್ಯಾಣಿ ಬತ ಗಾಘೇಯಂ ಲೌಕಿಕೀ ಪ್ರತಿಭಾತಿ ಮೇ | ಏತಿ ಜೀವಂತಮಾನಂದೋ ನರಂ ವರ್ಷಶತಾದಪಿ” ರಾಮಾಂ. “ತ್ವಮೇವ ಕಲ್ಯಾಣಿ ತಯೋಸ್ತುತೀಯಾ” ರಘುಂ ೬-೨೯. “ಉಪೋವಿಷ್ಟಃ ಕಲ್ಯಾಣಿಃ ಕಥಾಶ್ಚಕ್ರೇ ಮನೋರಮಾಃ” ಭಾಂ ವನಂ ೧೨೫-೩. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಣಿ -ಣೀ. 11. ಮಾಷಪರ್ಣ, ಕಾಡುದ್ದಿನ ಗಿಡ, 12. ಗೋವು, ಹಸು.

**ಕಲ್ಯಾಣಕರ ಕಲ್ಯಾಣಕರ (ವಿಂ)** 1. ಶುಭಕರವಾದ, ಮಂಗಳವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. 2. ಶುಭಕಾರ್ಯವನ್ನು



ಮಾಡುವ. ಕರೋತಿ — ಓ ಕೃನ್ (ಕರಣೆ) “ಅಚ್” (3-1-134)। ಕಲ್ಯಾಣಸ್ಯ ಕರಃ। ಕಲ್ಯಾಣಂ ಕರೋತಿ — ಓ ಕೃನ್ “ಅಚ್” (3-2-1)। -ಕಾರಃ -ಕಾರಃ. “ಫ್ಲುಲ್” (3-1-133)। -ಕಾರಕಃ -ಕಾರಕಃ. “ನ ನಿಷೇಧೋಽಪ-  
ಬಾಧಸ್ತು ಸೇತುಃ ಕಲ್ಯಾಣಕಾರಕಃ” ಯಾಜ್ಞಂ 2-156। “ಕ್ವಿಪ್” (3-2-61)। -ಕೃತ್ -ಕೃತ್. ಒಳ್ಳೆಯ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವ. ಶುಭಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಡೆಸುವ. “ನ ಹಿ ಕಲ್ಯಾಣಕೃತ್ ಕಶ್ಚಿತ್ ದುರ್ಗತಿ ತಾತ ಗच्छತಿ” ಗೀತಾ 6-40।

ಕಲ್ಯಾಣಧರ್ಮನ್ ಕಲ್ಯಾಣಧರ್ಮನ್ (ವಿಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ಗುಣಶಾಲಿಯಾದ, ಧರ್ಮಶೀಲನಾದ. ಕಲ್ಯಾಣೋ ಧರ್ಮೋ-  
ಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಅನಿಚ್” (4-4-124)।

ಕಲ್ಯಾಣನಗರ ಕಲ್ಯಾಣನಗರ (ನಂ) ಬೆಂಗಳೂರು ನಗರ.  
ಕಲ್ಯಾಣಮಯ ಕಲ್ಯಾಣಮಯ (ವಿಂ) ಮಂಗಳಪ್ರಜ್ಞೆಯಿಂದ  
ಪಾದ, ಶುಭವಿಷಯಗಳಿಂದ ತುಂಬಿದ.

ಕಲ್ಯಾಣಮಿತ್ರ ಕಲ್ಯಾಣಮಿತ್ರ (ನಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ಸ್ನೇಹಿತ,  
ಗುಣಶಾಲಿಯಾದ ಗೆಳೆಯ.

ಕಲ್ಯಾಣಯೋಗ ಕಲ್ಯಾಣಯೋಗ (ಪುಂ) (ಜ್ಯೋತಿಷದಲ್ಲಿ)  
ಯಾತ್ರಾಲಗ್ನದಿಂದ ಶುಭಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಗ್ರಹಗಳು ಸೇರುವ  
ಒಂದು ಯೋಗ; ಯಾತ್ರಾಲಗ್ನದಿಂದ ಕೇಂದ್ರ (1, 4, 7  
ಮತ್ತು 10 ನೆಯ) ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಅಥವಾ ತ್ರಿಕೋಣದಲ್ಲಿ  
ಗುರುವು ಲಾಭ (11ನೆಯ) ಅಥವಾ ಕರ್ಮ (10ನೆಯ)  
ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ರವಿಯೂ ಇದ್ದರೆ ಕಲ್ಯಾಣಯೋಗ  
ವೆನಿಸುವುದು. ಈ ಯೋಗವು ರಾಜನಿಗೆ ಮಂಗಳಪ್ರದ  
ವಾದುದು. “ಗುರೋ ಕೇಂದ್ರೇ ತ್ರಿಕೋಣೇ ವಾ ರವಿರ್ಲಾಭೇ ಚ  
ಕರ್ಮಣಿ। ಕಲ್ಯಾಣಯೋಗೋ ಭೂಪಸ್ಯ ಯಾತುಃ ಕಲ್ಯಾಣಕೃತ್ಸು ವೇತ್”।

ಕಲ್ಯಾಣವತ್ ಕಲ್ಯಾಣವತ್ (ವಿಂ) 1. ಶುಭವುಳ್ಳ,  
ಮಂಗಳವುಳ್ಳ. ಕಲ್ಯಾಣಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್” (4-2-94)।  
2. ಭಾಗ್ಯಶಾಲಿ. 3. ಸಂತೋಷವುಳ್ಳವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ಡೀಪ್” (4-1-6)। -ವತೀ -ವತೀ.

ಕಲ್ಯಾಣವಚನ ಕಲ್ಯಾಣವಚನ (ನಂ) ಶುಭವಾಕ್ಯ, ಮಂಗಳ  
ಕರವಾದ ಮಾತು.

ಕಲ್ಯಾಣವಾಚನ ಕಲ್ಯಾಣವಾಚನ (ನಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣರಿಂದ  
ಮಂಗಳಕರವಾದ ಮಂತ್ರಗಳನ್ನು ಹೇಳಿಸುವುದು, ಶುಭ  
ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸುವ ಮೊದಲು ಬ್ರಾಹ್ಮಣರ  
ಮೂಲಕ ಮಾಡಿಸುವ ಸ್ತುತಿವಾಚನ.

ಕಲ್ಯಾಣಿಕಾ ಕಲ್ಯಾಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೆಣಶಿಲೆ. ಕಲ್ಯಾಣ  
ಸಂಜ್ಞೆಯಾಗಿ “ಕನ್”। ಅತ ಇತ್ಯಮ್।

ಕಲ್ಯಾಣಿನ್ ಕಲ್ಯಾಣಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷವುಳ್ಳ.  
2. ಶುಭವುಳ್ಳ, ಮಂಗಳವುಳ್ಳ. 3. ಭಾಗ್ಯವುಳ್ಳವನು,  
ಅದೃಷ್ಟಶಾಲಿ. ಕಲ್ಯಾಣಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿಃ” (4-2-114)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (4-1-4)। -ಗಿಣಿ -ಗಿಣಿ.

ಕಲ್ಯಾಣಿ ಕಲ್ಯಾಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) “ಕಲ್ಯಾಣ” ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.

ಕಲ್ಯಾಪಾಲ ಕಲ್ಯಾಪಾಲ (ವಿಂ) ಮದ್ಯವನ್ನು ತಯಾರಿಸು  
ವವನು, ಭಟ್ಟಿ ಇಳಿಸುವವನು. ಕಲ್ಯಾಪುರಾಂ ಪಾಲಯತಿ —  
ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) “ಅಚ್” (3-2-1)। “ಫ್ಲುಲ್”  
(3-1-133)। -ಪಾಲಕಃ -ಪಾಲಕಃ.

ಕಲ್ಲ ಕಲ್ಲ (ವಿಂ) ಬದಿರ, ಕೆಪ್ಪಡ. ಕಲ್ಲ (ಅವ್ಯಕ್ತೆ ಶಬ್ದೆ)  
“ಅಚ್” (3-1-134)। “ಕಲ್ಲೋ ಬಧಿರಃ ಸೋರಸಜ್ಜಕೌ”  
ತರಿಕಾಂಡಂ।

ಕಲ್ಲತಾ ಕಲ್ಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಪ್ಪಡು, ಶಬ್ದ ಕೇಳಿಸದಿರುವಿಕೆ.  
ಕಲ್ಲಸ್ಯ ಭಾವಃ “ತಲ್” (4-1-119)। “ತವಃ”।  
-ತವಃ -ತವಃ.

ಕಲ್ಲಮೂಕ ಕಲ್ಲಮೂಕ (ವಿಂ) ಕೆಪ್ಪಡ ಮತ್ತು ಮೂಗ,  
ಶಬ್ದ ಕೇಳಿಸದಿರುವವನು ಮತ್ತು ಮಾತಾಡುವ ಶಕ್ತಿ  
ಯಿಲ್ಲದವನು. ಕಲ್ಲಮೂಕಾಸಿ ಮೂಕಃ।

ಕಲ್ಲೋಲ ಕಲ್ಲೋಲ (ಪುಂ) 1. ಅಲೆ, ತರಂಗ, ತೆರೆ.  
ಕಲ್ಲಂತೋಜನ ನದಿಃ — ಕಲ್ಲ (ಅವ್ಯಕ್ತೆ ಶಬ್ದೆ) ವಾಹುಂ  
“ಕೋಲಚ್”। “ಆಯುಃ ಕಲ್ಲೋಲಲೋಲಂ ಕತಿಪಯದಿವಸಸ್ಯಾಯಿನಿ  
ಯೌವನಪ್ರಾಪ್ತಿಃ” ಮತುಂ 3-36। 2. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ.  
3. ಶತ್ರು, ವೈರಿ, ಹಗೆ. “ಕಲ್ಲೋಲಃ ಪುನಿ ಹರ್ಷೇ ಸ್ಯಾತ್  
ತಲ್ಲೋಲವೈರಿಣೋರಪಿ” ಮೇದಿಂ।

ಕಲ್ಲೋಲಿತ ಕಲ್ಲೋಲಿತ (ವಿಂ) ಅಲೆಯುಂಟಾಗಿರುವ,  
ತೆರೆಯಿದ್ದಿರುವ. ಕಲ್ಲೋಲೋಸ್ಯ ಸಂಜ್ಞಾತಃ “ಇತಚ್”  
(4-2-36)।

ಕಲ್ಲೋಲಿನಿ ಕಲ್ಲೋಲಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಲೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ  
ಪ್ರದೇಶ, ನದಿ, ಹೊಳೆ. ಕಲ್ಲೋಲಃ ಸಂತಯಸ್ಯಾಮ್ “ಇನಿಃ”  
(4-2-134)।

ಕವ ಕವ (ಪುಂ) ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ. ಕು (ಶಬ್ದೆ) ಭಾವೆ “ಅಪ್”  
(3-3-46)।

ಕವಕ ಕವಕ (ನಂ) 1. ಗ್ರಾಸ, ಕಬಳ, ತುತ್ತು. 2. ನಾಯಿ  
ಕೊಡೆ. “ಲಕ್ಷುನಂ ಗೃಜ್ಜನಂ ಚೈವ ಪಲಾಙ್ಕು ಕವಕಾನಿ ಚ।  
ಅಭಕ್ಷ್ಯಾಣಿ ದ್ವಿಜಾತೀನಾಮೇಧ್ಯಪ್ರಭವಾಣಿ ಚ” ಮನುಂ 4-4।

ಕವಚ ಕವಚ (ಪುಂ) 1. ಕವಚ, ಅಂಗಿ. ಕಂ ವಾತಂ  
ವಚತಿ — ವಚ್ಚು (ಪ್ರಲಮ್ಬನೆ) “ಕಃ” (ವಾಂ 3-2-4)।



“ನಿರ್ದಯಂ ಖಡ್ಗಭಿಘ್ನೇಮ್ಯ: ಕವಚೇಮ್ಯ: ಸಮುತ್ಥಿತ: | ಆಸನ್  
ವ್ಯೋಮ ದಿಶಸ್ತುಲೈ: ಪಲಿತೈರಿವ ಪಾಂಡುರಾ:” ಕುಮಾಂ ೧೬-೬ |  
2. ಪಟಹ, ತಮಟೆ. 3. ಬಸುರಿಮರ. “ಕವಚೋ  
ಗದಭಾಂಡೇ ಚ ಸನ್ನಾಹೇ ಪಡಹೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ |

**ಕವಚಹರ ಕವಚಹರ (ವಿಂ)** ಕವಚವನ್ನು ಧರಿಸುವ ಮತ್ತು  
ಬಯ್ಯುವ ವಯಸ್ಸುಳ್ಳ ಹುಡುಗ. ಕವಚಂ ಹರತಿ - ಹಬ್ಬ  
(ಹರಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೨-೧೦) | “ಕವಚಹರ: ಕುಮಾರ:”  
ಸಿಂ ಕೌಂ |

**ಕವಚಿತ ಕವಚಿತ (ವಿಂ)** 1. ಅಂಗಿಯಿಂದ ಆವೃತವಾದ.  
ಅಂಗಿ ತೊಟ್ಟಿರುವ. ಕವಚೋಽಸ್ಯ ಸಂಜ್ಞಾತ: “ಇತಚ್”  
(೪-೨-೩೬) | 2. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ. (ಲಾಕ್ಷಂ) |

**ಕವಚಿನ್ ಕವಚಿನ್ (ವಿಂ)** ಕವಚವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ.  
ಕವಚಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ಡೀಪ್” (೪-೧-೪) | ಕವಚಿನಿ ಕವಚಿನ್.

**ಕವಟಿ ಕವಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕವಾಟ. ಕದ. ಬಾಗಿಲು. ಕೌತಿ  
ಶಬ್ದಾಯತೆ - ಕು (ಶಬ್ದ) “ಅಟನ್” (೩ಂ ೪-೭೧) | ಗೌರಾಂ  
“ಡೀಪ್” (೪-೧-೪೧) |

**ಕವಯಿತ್ ಕವಯಿತ್ಯ (ಪುಂ)** 1. ಕವಿ, ಕಾವ್ಯ ರಚಿಸುವವನು,  
ವರ್ಣಿಸುವವನು. ಕವ (ವರ್ಣನೆ) + ಣಿಚ್ “ತುಚ್”  
(೩-೧-೧೩೩) | 2. ಕವಿಯಂತೆ ನಟಿಸುವವನು. ಕವಿ +  
ಕಿವಿಪ್ “ತುಚ್” (೩-೧-೧೩೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್”  
(೪-೧-೪) | ಕವಯಿತ್ರಿ ಕವಯಿತ್ರಿ.

**ಕವರ ಕವರ (ಪುಂ)** 1. ಉಪಾಧ್ಯಾಯ, ಪಾಠ ಹೇಳು  
ವವನು. ಕು (ಶಬ್ದ) “ಅರನ್” (೩ಂ ೪-೧೪೪) | (ನಂ)  
2. ಲವಣ, ಉಪ್ಪು. 3. ಹುಳಿ. (ವಿಂ) 4. ಚಿತ್ರ  
ಪರ್ಣದ. ನಾನಾಬಣ್ಣದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಕವರಾ ಕವರಾ.  
ವಬಯೋರಭೇದ: | “ವ್ಯಾಕೀರ್ಣಮಾಲ್ಯಕವರಾಂ ಕವರೀಂ ತರುಣ್ಯಾ:”  
ಮಾಘಂ ೪-೧೯ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರೀ -ರೀ. ಕೇಶಪಾಠ,  
ಹೆಂಸರ ಜಡೆ. ಕವರೀ ಕೇಶಾನಾಂ ಸನ್ನಿವೇಶಶ್ಚೇತ್ |  
ಕವರಾನ್ಯಾ | ಸಿಂ ಕೌಂ | “ವ್ಯಾಕೀರ್ಣಮಾಲ್ಯಕವರಾಂ ಕವರೀಂ  
ತರುಣ್ಯಾ:” ಮಾಘಂ ೪-೧೯ | -ಭಾರ: -ಭಾರ: ಉತ್ತಮ  
ವಾದ ಜಡೆ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆದು ಉದ್ದವಾಗಿರುವ ಹೆಂಸರ  
ಪೇಣ. “ಅಮರೀಕವರೀಭಾರಭರಮರೀಮುಖರೀಕೃತಮ್ | ದೂರೀಕರೋತು  
ದುರಿತಂ ಗೌರೀಚರಣಪಕ್ಷಜಮ್” ಕುವಂ |

**ಕವರ್ಗ ಕವರ್ಗ (ಪುಂ)** ಕ ಖ ಗ ಘ ಙ ವರ್ಣಗಳ ಗುಂಪು.  
ಈ ಐದು ವರ್ಣಗಳೂ ಒಂದೇ ಸ್ಥಾನ (ಕಂಠ) ದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟು  
ವುದರಿಂದ ಒಂದೇ ಗುಂಪಿಗೆ ಸೇರಿದುವು. ಅ-ಕವರ್ಗ-  
ಹವಿಸರ್ಗಾಣಾಂ ಕಂಠ: |

**ಕವಲ ಕವಲ (ಪುಂ)** 1. ಗ್ರಾಸ, ತುತ್ತು. ಬಾಯಿ ತುಂಬು  
ವಷ್ಟು ಆಹಾರ. ಕೇನ ಜಲೇನ ವಲತೆ - ವಲ (ಸುಳ್ಳಲನೆ)  
“ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) | “ಆಸ್ವಾದವದ್ವಿ: ಕವಲೈಸ್ತೃಣಾಣಾಂ  
ಕಂಠ್ಯನೇದೇಶನಿವಾರಣೇಶ್ಚ” ರಘುಂ ೨-೪ | 2. ಮತ್ಸ್ಯ.  
ಮೀನು. ಕೇ ಜಲೇ ವಲತೆ - ವಲ “ಅಚ್” | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
ಜಾತಿಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬೩) | 3. ನಾಲಿಗೆ ಮತ್ತು  
ಹಲ್ಲುಗಳ ಮಲನಿವಾರಣೆಯಾಗಿ ಬಾಯಿ ಶುದ್ಧವಾಗಲು  
ಮಾಡುವ ಗಂಡೂಷ, ಬಾಯಿ ಮುಕ್ಕಳಿಸುವ ದ್ರವವಸ್ತು.  
“ದೋಷಪ್ರಚ್ಯವನಾರ್ಥಾಯ ಕ್ವಾಡಾಹನಯಾಯ ಚ | ಜಿಹ್ವಾದಂತ-  
ಸಮುತ್ಥಸ್ಯ ಹರಣಾರ್ಥ ಮಲಸ್ಯ ಚ | ಶೋಧನೋ ರೋಪಣಶ್ಚೈವ  
ವ್ರಣಸ್ಯ ಮುಖಜಸ್ಯ ವೈ | ತುಷ್ಣೋ ವಾ ಯದಿ ವಾ ಶೀತ: ಕವಲಗ್ರಾಹ  
ಇಷ್ಯತೇ” ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೧-೧೨೭, ೨೮ |

**ಕವಲನ ಕವಲನ (ನಂ)** ನುಂಗುವಿಕೆ, ಕುಳಿಸುವಿಕೆ. ಕವಲ  
ತತ್ಕರೋತಿ “ಣಿಚ್” (ಗಂ ೭-೪-೯೭) ಮಾವೆ “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೪) |

**ಕವಲಿಕಾ ಕವಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪ್ರಣಚಿಕೆತ್ತೆಗಾಗಿ ಹಾಕುವ  
ಬಟ್ಟೆಯ ಕಟ್ಟು, ಪಕ್ಕೆಗಳ ಎಲುಬು ಮುರಿದರೆ ಕಟ್ಟುವ  
ಬಟ್ಟೆಯ ಕಟ್ಟು; ಎಡಭಾಗದ ಅಥವಾ ಬಲಭಾಗದ  
ಎಲುಬು (ಪಾರ್ಶ್ವಾಸ್ಥಿ) ಗಳು ಮುರಿದರೆ ಅವನನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸಿ  
ಆ ಜಾಗಕ್ಕೆ ತುಪ್ಪವನ್ನು ಬಳಿದು ಕೈಗೆ ತುಪ್ಪವನ್ನು ಸವರಿ  
ಕೊಂಡು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಉಜ್ಜಿಕೊಟ್ಟು ಅನಂತರ ಬಟ್ಟೆಯ  
ಪಟ್ಟಿಯನ್ನು ಕಟ್ಟಬೇಕು. ಇದಕ್ಕೆ “ಕವಲಿಕೆ” ಯೆಂದು  
ಹೆಸರು. ಅಥವಾ ಎಣ್ಣೆಯ ಕೊಪ್ಪರಿಗೆಯಲ್ಲಾಗಲಿ ತೊಟ್ಟಿ  
ಯಲ್ಲಾಗಲಿ ಮಲಗಿಸಬೇಕು. “ಪಶ್ಕಾಸ್ವಥ ಭಗ್ನಾಸು  
ಘೃತಾಮೃತಸ್ಯ ತಿಷ್ಠತ: | ದಕ್ಷಿಣಾಸ್ವಥವಾ ವಾಮಾಸ್ವನುಮೃಜ್ಯ  
ನಿಬಂಧನೀ: | ತತ: ಕವಲಿಕಾಂ ದತ್ವಾ ವೇಷ್ಠಯೇತ್ಸುಸಮಾಹಿತ: |  
ತೈಲಪೂರ್ಣಂ ಕಡಾಹೇ ವಾ ದ್ರೋण्याಂ ವಾ ಶಾಯಯೇತ್ತರಮ್” ಸುಶ್ರುತಂ  
ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೩-೨೯, ೩೦ |

**ಕವಲಿತ ಕವಲಿತ (ವಿಂ)** ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟ, ನುಂಗಲ್ಪಟ್ಟ. ಕವಲಂ  
ಕರೋತಿ - ಕವಲ + ತತ್ಕರೋತಿ ಣಿಚ್ + “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) |

**ಕವಾಟ ಕವಾಟಿ (ನಂ)** ಬಾಗಿಲಿನ ಕದ. ದ್ವಾರದ ಗರಿ.  
ಕು (ಶಬ್ದ) ಮಾವೆ “ಅಪ್” (೩-೩-೪೭) | ಕವಂ ಶಬ್ದಮದತಿ  
“ಅನ್” (೩-೨-೧) | “ತರ:ಶ್ರಿಯಾ ತತ್ರ ಚ ಗೋಪುರಸ್ಕುರತ್-  
ಕವಾಟದುರ್ಧರ್ಷತಿರ:ಪ್ರಸಾರಿತಾ” ನೈಷಂ ೧-೨೨ | ಮನೆಯ  
ಕವಾಟ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ತಯಾರಿಸಲು ಕ್ಷೀರವೃಕ್ಷ  
(ಹಾಲು ಬರುವ ಮರ), ಪಕ್ಷಿಗಳು ವಾಸಿಸುವ ಮರ, ಗಾಳಿ  
ಯಿಂದ ಮುರಿದು ಬಿದ್ದ, ಬೆಂಕಿ ತಗುಲಿ ಸುಟ್ಟುಹೋದ,  
ಅನೆಯಿಂದ ಮುರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಿಡಲಿನಿಂದ ಬಿದ್ದುಹೋದ,



ಮತ್ತು ದೇವಾಲಯಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ಬೆಳೆದ ಮರಗಳನ್ನೂ ಬೇವು, ವಿಭೀತಕ (ತಾರೆ), ಅಶ್ವತ್ಥ, ಅಲದ ಮರಗಳನ್ನೂ, ಮುಳ್ಳುಗಿಡಗಳು, ಶಾಲ್ಮಲಿ, ಪಲಾಶ (ಮುತ್ತಿಗೆ) ಗಳನ್ನೂ ಉಪಯೋಗಿಸಿಕೊಂಡರು.

**ಕವಾಟನ್ ಕವಾಟಿಪ್ಪ** (ವಿಂ) ಜೋರ, ತಸ್ಕರ, ಕಳ್ಳ. ಕವಾಟಂ ಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತಿಯೋ:) "ಟಕ್" (೩-೨-೪೪)। ಕವಾಟನ್ಶವೋರ:। ಸಿಂ ಕೌಂ।

**ಕವಾರ ಕವಾರ** (ನಂ) ಪದ್ಮ, ಕಮಲ. ಕಂ ಜಲಂ ವೃಣೋತಿ - ವೃನ್ (ವರಣ) "ಅನ್" (೩-೨-೧)। "ಪಕ್ಷಿ ಕವಾರಂ ಪಕ್ಷೇಜಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಕವಿ ಕವಿ** (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಕ್ರಾಂತದರ್ಶಿ, ಅತೀಂದ್ರಿಯ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ನೋಡುವ ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ ಪರಬ್ರಹ್ಮ; ಬ್ರಹ್ಮನು ಸರ್ವಗತನಾಗಿಯೂ ಸರ್ವಜ್ಞನಾಗಿಯೂ, ಕ್ರಾಂತದರ್ಶಿಯಾಗಿಯೂ ಇರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಕವಿ ಪುರಾಣಮನುಷಾಸಿತಾರಮಣೋರಣೀಯಾಸಮನುಸ್ಮರೇಃ। ಸರ್ವಸ್ಯ ಧಾತಾರಮಚಿಂತ್ಯರೂಪಮಾದಿತ್ಯವರ್ಣಂ ತಮಸ: ಪರಸ್ತಾತ್" ಗೀತಾ ೮-೯। 2. ಬ್ರಹ್ಮನ ಹೃದಯದಿಂದ ಜನಿಸಿದ ಭೃಗು ಮುಷಿಯ ಮಗ, ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರ ತಂದೆ. 3. ಕವಿಯ ಮಗನಾದ ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯ, ಅಸುರರ ಗುರು. ಕು (ಶಬ್ದ) "ಃ" (೩ಂ ೪-೧೩೮)। "ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಹೃದಯಂ ಭಿತ್ತವಾ ನಿ:ಸೃತೋ ಭಗವಾನ್ ಭೃಗು:। ಭೃಗೋ: ಪುತ್ರ: ಕವಿವಿದ್ವಾನ್ ಶುಕ್ರ: ಕವಿಸುತೋ ಗ್ರಹ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೭। [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಶುಕ್ರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 4. ಕಾವ್ಯವನ್ನು ರಚಿಸುವವನು, ಕವಿತೆ ಮಾಡುವವನು, ವರ್ಣಿಸುವವನು. ಕವ (ವರ್ಣನೆ) "ಃ" (೩ಂ ೪-೧೩೮)। "ತೇಜ: ಕ್ಷಮಾ ವಾ ನೈಕಾಂತಂ ಕಾಲಜಸ್ಯ ಮಹೀಪತೇ:। ನೈಕಮೋಜ: ಪ್ರಸಾದೋ ವಾ ರಸಭಾವವಿದ: ಕವೇ:" ಮಾಘಂ ೨-೮೩। "ಮಂದ: ಕವಿಯಶ:ಪ್ರಾರ್ಥಿ ಗಮಿಷ್ಯಾಮ್ಯಪಹಾಸ್ಯತಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೩। 5. ವಿದ್ವಾಂಸ, ಪಂಡಿತ. ಬುದ್ಧಿವಂತ. "ಅಧ್ಯಾಪಯಾಮಾಸ ಪಿತೃನ್ ಶಿಶು-ರಾಜ್ಞಿರಸ: ಕವಿ:" ಮನುಂ ೨-೧೫೧। 6. ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹರ್ಷಿ. "ಕವಿರ್ವಾಲ್ಮೀಕಿಶುಕ್ರಯೋ:। ಸುರೌ ಕಾವ್ಯಕರೇ ಪುಸಿ ಸ್ಯಾತ್ವಲೀನೇ ತು ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ। (ವಿಂ) 7. ಸ್ತೋತ್ರ ಮಾಡುವವನು. 8. ಸ್ತುತಿಸಲ್ಲವುವವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾ "ಕೀಃ" (ಗಂ ೪-೧-೪೫)। **ಕವಿ:** ಕವಿ, ಕವಿ ಕವಿ. ಲಗಾಮು, ಕಡಿವಾಣ. ಮೇದಿಂ। **ಕವಿಕ ಕವಿಕ** (ಪುಂ) ಲಗಾಮು, ಕಡಿವಾಣ. ಕವಿ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"।

**ಕವಿಕಾ ಕವಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲಗಾಮು, ಕಡಿವಾಣ. ಕವತೆ - ಕು (ಶಬ್ದ) "ಃ" (೩ಂ ೪-೧೩೮)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"।

"ಸೋತ್ಸೇಃ: ಸ್ಕನ್ದದೇಶ: ಕ್ಷರತರಕವಿಕಾಕರ್ಷಣಾತ್ಯರ್ಥಭುಗನ:" ಮುದ್ರಾಂ ೪-೭।

**ಕವಿಜ್ಯೇಷ್ಠ ಕವಿಜ್ಯೇಷ್ಠ** (ಪುಂ) ವಾಲ್ಮೀಕಿ. "ಪ್ರಾಚೇತಸಸ್ತು ವಾಲ್ಮೀಕಿ: ಕವಿಜ್ಯೇಷ್ಠ: ಕುಶೀವಶ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಕವಿತರ ಕವಿತರ** (ವಿಂ) ಇಬ್ಬರು ಕವಿಗಳಲ್ಲಿ ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ಒಬ್ಬ ಕವಿ. ಅನಯೋ: ಅತಿಶಯೇನ ಕವಿ: "ತರಪ್" (೪-೩-೪೭)। -ತಮ: -ತಮ: ಅನೇಕ ಕವಿಗಳಲ್ಲಿ ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ಒಬ್ಬ ಕವಿ. ಏತೇಷಾಮತಿಶಯೇನ ಕವಿ: "ತಮಪ್" (೪-೩-೪೫)।

**ಕವಿತಾ ಕವಿತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕವಿಯ ವ್ಯಾಪಾರ, ಗದ್ಯ ಅಥವಾ ಪದ್ಯರೂಪವಾದ ಕಾವ್ಯ ರಚಿಸುವಿಕೆ. ಕವೇರ್ಭವ: ಕರ್ಮ ವಾ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। "ವ್ರಿಡಾ ಚೇತ್ ಕಿಮು ಭೂಷಣ: ಸುಕವಿತಾ ಯಥಾಸ್ತಿ ರಾಜ್ಯೇನ ಕಿಮ್" ಭರ್ತುಂ ೧-೧೭। "ತ್ವ:" (೪-೧-೧೧೯)। -ತ್ವಮ್ -ತ್ವಮ್. "ಕವಿತ್ವಗಾನ-ಪ್ರಿಯವಾದಸತ್ಯಾನ್ಯಸ್ಯಾ ವಿಧಾತಾ ವ್ಯಧಿತಾಧಿಕಂಠಮ್" ನೈಷಂ ೭-೬೭।

**ಕವಿತಾರ್ಕಿಕಾಸಿಂಹ ಕವಿತಾರ್ಕಿಕಾಸಿಂಹ** (ಪುಂ) ಕವಿ ಮತ್ತು ತಾರ್ಕಿಕರಲ್ಲಿ ಶ್ರೇಷ್ಠರಾದ ಶ್ರೀನಿಗಮಾಂತದೇಶಿಕರು, ಶ್ರೀಮೇಂಕಟನಾಥರು. ಕವಿಷು ತಾರ್ಕಿಕೇಷು ಚ ಸಿಂಹ:।

**ಕವಿನಂದನ ಕವಿನಂದನ -ಪುತ್ರ -ಪುತ್ರ, -ಸುತ -ಸುತ** (ಪುಂ) ಭೃಗುಪುತ್ರನಾದ ಕವಿಯ ಮಗ, ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯ. ಕವೇ: ನಂದನ: ಪುತ್ರ: ಸುತೋ ವಾ। "ಭೃಗೋ: ಪುತ್ರ: ಕವಿವಿದ್ವಾನ್ ಶುಕ್ರ: ಕವಿಸುತೋ ಗ್ರಹ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೭।

**ಕವಿಯ ಕವಿಯ** (ನಂ) ಕಡಿವಾಣ, ಲಗಾಮು. ಕುಡ್ (ಶಬ್ದ) ಬಾಹುಂ "ಹಯ:"। "ಕವಿಯಂ ಕವಿಕೋಚ್ಯತೇ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಕವಿರಾಜ ಕವಿರಾಜ** (ಪುಂ) ಕವಿಶ್ರೇಷ್ಠ, ಉತ್ತಮನಾದ ಕವಿ. ಕವೀನಾಂ ರಾಜಾ "ಟಕ್" (೪-೪-೯೧)। "ಶ್ರೀಹರ್ಷ ಕವಿರಾಜರಾಜಿಮುಕ್ತಾಲಂಕಾರಹೀರ: ಸುತಮ್" ನೈಷಂ ೧-೧೪೫।

**ಕವೋಣ ಕವೋಣ** (ನಂ) 1. ಬೆಚ್ಚುಗಿರುವಿಕೆ, ಸ್ವಲ್ಪ ಬಿಸಿ. ಇಂಪಡುಣಮ್ ಕೋ: ವಾ ಕವಾದೇಶ: (೬-೩-೧೦೭)। ಪಕ್ಷಿ ಕಾದೇಶ: (೬-೩-೧೦೪)। **ಕೋಣಮ್ ಕೋಣಮ್**. ಅಭಯಾಭಾವೇ "ಕತ್" (೬-೩-೧೦೧)। **ಕವುಣಮ್ ಕವುಣಮ್**. (ವಿಂ) 2. ಸ್ವಲ್ಪ ಬಿಸಿಯಾಗಿರುವ, ಬೆಚ್ಚುಗಿರುವ. "ಪಯ: ಪೂರ್ವ: ಸ್ವನಿ:ಶ್ವಾಸೇ: ಕವೋಣಮುಪಭುಜ್ಯತೇ" ರಘುಂ ೧-೬೭।

**ಕವ್ಯ ಕವ್ಯ** (ನಂ) ಪಿತೃದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ಅನ್ನ, ಪಿತೃಗಳನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿಕೊಂಡು ಅನ್ನ. ಕೂಯತೇ ಪಿತೃಮ್ಯ:-



ಕು (ಶಬ್ದ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೭)। "ಶ್ರೋತ್ರಿಯಾಯೇವ  
ದೇಯಾನಿ ಹವ್ಯಕವ್ಯಾನಿ ದಾತೃಭಿಃ। ಅಹಂತಮಾಯ ವಿಪ್ರಾಯ ತಸ್ಮಿ  
ದತ್ತಂ ಮಹಾಫಲಮ್" ಮನುಂ ೩-೧೨೭। ಪಿತ್ಯುಗಳನ್ನು  
ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಕೊಡಲ್ಪಡುವ ಅನ್ನ (ಕವ್ಯ) ವನ್ನು ಜ್ಞಾನಿಗೆ  
ಕೊಡಬೇಕು. "ಜ್ಞಾನೋತ್ಕೃಷ್ಟಾಯ ದೇಯಾನಿ ಕವ್ಯಾನಿ ಚ ಹವಿರಿಷಿ  
ಚ। ನ ಹಿ ಹಸ್ತಾವಸೃಗ್ಧಿಧೌ ಋಷಿರೇಣೈವ ಶುಧ್ಯತಃ" ಮನುಂ  
೩-೧೩೨।

**ಕವ್ಯಭುಜ್ ಕವ್ಯಭುಜ್** (ಪುಂ) ಪಿತ್ಯುಗಳು ಅಥವಾ ಪಿತ್ಯ  
ದೇವತೆಗಳ ಗಣ. ಕವ್ಯ ಭುಜ್ವತೇ - ಭುಜ (ಪಾಲನಾ-  
ಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬)।

**ಕವ್ಯವಾಹ ಕವ್ಯವಾಹ** (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಹವಿಸ್ಸನ್ನು  
ತಲುಪಿಸುವ ಅಗ್ನಿದೇವತೆ. ಕವ್ಯಂ ವಹತಿ - ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ)  
"ಅಙ್" (೩-೨-೧)। "ಜ್ಯುತ್" (೩-೨-೬೫)। -ವಾಹನಃ  
-ವಾಹನಃ.

**ಕಶಾ ಕಶಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎತ್ತು ಕುದುರೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳನ್ನು  
ಹೊಡೆಯುವ ಚಾವಟಿ, ಬಾರುಗೋಲು. ಕಶತಿ - ಕಶ  
(ಗತಿಶಾಸನಯೋಃ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ತೇಜೋ-  
ನಿರೋಷಸಮತಾಽವಹಿತೇನ ಯತ್ರಾ ಸಮ್ಯಕ್ಕಶಾತ್ರಯವಿಚಾರವತಾ  
ನಿಯುಕ್ತಃ" ಮಾಘಂ ೪-೧೦। ಉತ್ತಮ, ಮಧ್ಯಮ ಮತ್ತು  
ಅಧಮರೂಪವಾದ ಅಶ್ವಗಳಲ್ಲಿ ಮೃದು, ಸಮ ಮತ್ತು  
ನಿಷ್ಕುರರೂಪವಾದ ಮೂರು ರೀತಿಯಾದ ತಾಡನವನ್ನು  
ಸಂದರ್ಭಾನುಸಾರ ಪ್ರಯೋಗಿಸಬೇಕು.

**ಕಶಾಹ್ ಕಶಾರ್ಹ** (ಪುಂ) ಚಾವಟಿಯಿಂದ ಹೊಡೆಯಿಸಿ  
ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಡುವ ದುಷ್ಟಕುದುರೆ, ಚಾವಟಿಯ ಏಟಿಗೆ  
ಅರ್ಹವಾದ ಕುದುರೆ. ಕಶಾಮಹತಿ - ಅಹೆ (ಪೂಜಾಯಾಮ್)  
"ಅಙ್" (೩-೨-೧)।

**ಕಶಿಕ ಕಶಿಕ** (ಪುಂ) ನಕುಲ, ಮುಂಗಸಿ. ಕಶತಿ ಹಿನಸ್ತಿ  
ಸರ್ಪಮ್ - ಬಾಹುಂ "ಇಕಃ"।

**ಕಶಿಪು ಕಶಿಪು** (ಪುಂ) 1. ಅನ್ನ. 2. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. ಕಶತಿ  
ದುಃಖಮ್ - ಕಶ (ಗತಿಶಾಸನಯೋಃ) "ಕ್ರುಃ" (೩-೧-೩೭)।  
ನಿಪಾಂ। 3. ಅನ್ನ ಮತ್ತು ವಸ್ತ್ರ. "ಕಶಿಪುರ್ಮಕ್ತಾಚ್ಚಾದನಯೋ-  
ರೇಕೋಕ್ತಯಾ ಪೃಥಕ್ ತಯೋಃ ಪುಸಿ" ಮೇದಿಂ। (ಪುನಂ)  
4. ಶಯ್ಯೆ, ಹಾಸಿಗೆ. "ಕಲ್ಪತಃ ಕಶಿಪುಭಿಃ ಕಾಂತಂ  
ಪರ್ಯಾಪ್ತವ್ಯಜನಾಸನಃ" ಭಾಗಂ ೩-೨೩-೧೬। "ಅಸ್ತ್ರೀ  
ಕಶಿಪುಶಯ್ಯಾಂ ವಸ್ತ್ರೇಽನ್ತೇ ತದ್ವಯೇಷಿ ಚ" ನಾನಾರ್ಥರಂ।

**ಕಶೇರುಕ ಕಶೇರುಕ** (ನಂ) ಬೆನ್ನಿನ ಎಲುಬು, ಬೆನ್ನುಮೂಳೆ.

**ಕಶೇರು (ಕು) ಕಶೇರು (ರೂ) (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಬೆನ್ನಿನ ಎಲುಬು,  
ಬೆನ್ನುಮೂಳೆ. ಕಂ ವಾಯುಂ ಶೃಣಾತಿ - ಶ್ಕ (ಹಿಸಾಯಾಮ್)

"ಕುಃ" ಎರಡಾದೇಶಶ್ಚ (೩-೧-೮೮)। ಬಾಹುಂ ವಾ "ಕುಃ"।  
ಕಶೇರುಕಃ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೪-೪-೫)। ಕಶೇರುಕಾ  
ಕಶೇರುಕಾ.

**ಕಶಚನ ಕಶ್ಚನ** (ಅವ್ಯಂ) ಯಾವನೋ ಒಬ್ಬ, ಒಬ್ಬ  
ಅನಿರ್ದಿಷ್ಟ ವ್ಯಕ್ತಿ. ಅಸಾಕಲ್ಯಾ (ಅಸಂಪೂರ್ಣಾ)ರ್ಥದಲ್ಲಿ  
ಇದು ಒಂದು ಪದವೆಂದು ಕೆಲವರ ಮತ. ಪಾಣಿನಿ ಮತ್ತು  
ಅಮರಕಾರರ ಮತದಲ್ಲಿ ಕಃ ಚನ ಎಂದು ಎರಡು ಪದಗಳು.  
"ದಮಘೋಪಸುತೇನ ಕಶಚನ ಪ್ರತಿಶಿಷ್ಟಃ ಪ್ರತಿಭಾನವಾನಥ"  
ಮಾಘಂ ೧೬-೧। ಹೀಗೆಯೇ ಕಃಚಿತ್ ಕಶಿಚಿತ್, ಕಶ್ಚಿತ್,  
ಕೇನಚಿತ್, ಕಸ್ಮೇಚಿತ್ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕಶಮಲ ಕಶ್ಮಲ** (ನಂ) 1. ಕೊಳೆ. 2. ಪಾಪ.  
3. ಸಂಮೋಹ, ಬುದ್ಧಿಭ್ರಂಶ. ಕಶ (ಗತಿಶಾಸನಯೋಃ)  
"ಕಲಃ" ಮುತ್ ಚ (೩-೧-೧೦೬)। "ಕುತಸ್ತ್ವಾ ಕಶಮಲಮಿದಂ  
ವಿಷಮೇ ಸಮುಪಸ್ಥಿತಮ್" ಗೀತಾ ೨-೨। (ವಿಂ) 4. ಮಲಿನ  
ವಾದ, ಕೊಳೆಯಾದ.

**ಕಶ್ಮೀರ ಕಶ್ಮೀರ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಕಾಶ್ಮೀರ ದೇಶ.  
ಕಶ (ಗತಿಶಾಸನಯೋಃ) "ಕೇರನ್" ಮುತ್ ಚ (೩-೪-೩೨)।  
2. ಕಾಶ್ಮೀರದೇಶನಿವಾಸಿಗಳು. 3. ಕಾಶ್ಮೀರದೇಶದ  
ದೊರೆಗಳು. ಕಶ್ಮೀರಾಣಾಂ ರಾಜಾ "ಅಬ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೬೬)।  
ಅಬಾ "ಲುಕ್" (೨-೪-೬೨)। "ಶಾರದಾಮಠಮಾರಮ್ಯ  
ಕುಡ್ಕುಮಾದ್ರಿತದಾಂತಕಃ। ತಾವತ್ ಕಶ್ಮೀರದೇಶಃ ಸ್ಯಾತ್  
ಪञ್ಚಾಶದ್ವಿಜನಾತ್ಮಕಃ"।

**ಕಶ್ಮೀರಜ ಕಶ್ಮೀರಜ** (ಪುಂ) 1. ಕೇಸರಿ. (ವಿಂ) 2.  
ಕಾಶ್ಮೀರ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಕಶ್ಮೀರೇ ಜಾಯತೇ।

**ಕಶ್ಮೀರಜನ್ಮಾ ಕಶ್ಮೀರಜನ್ಮಾ** (ಪುಂ) ಕುಂಕುಮ ಕೇಸರಿ.  
ಕಶ್ಮೀರೇ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ।

**ಕಶ್ಯ ಕಶ್ಯ** (ನಂ) 1. ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. ಕಶ್ಯತೇನ - ಕಶ  
(ಗತಿಶಾಸನಯೋಃ) ಬಾಹುಂ "ಯಃ"। 2. ಅಶ್ವದ ಮಧ್ಯ  
ಭಾಗ, ಕುದುರೆಯ ಬೆನ್ನು. ಕಶಾಮಹತಿ - "ಯಃ"  
(೪-೧-೬೬)। (ವಿಂ) 3. ಚಾವಟಿಯ ಏಟಿಗೆ ಅರ್ಹ  
ವಾದ, ಚಾವಟಿಯಿಂದ ಹೊಡೆಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. "ಕಶ್ಯಂ  
ತ್ರಿಪು ಕಶಾಹ್ ಸ್ಯಾತ್ ಕಲಿಬ್ ಮದ್ಯಾಶ್ವಮಧ್ಯಯೋಃ" ಮೇದಿಂ।

**ಕಶ್ಯಪ ಕಶ್ಯಪ** (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಾನಸಪುತ್ರನಾದ  
ಮರೀಚಿ ಮಹರ್ಷಿಯ ಮಗ. ಕಶ್ಯಂ ಪಿಬತಿ - ಪಾ (ಪಾನೇ)  
"ಕಃ" (೩-೨-೪)। "ಬ್ರಹ್ಮಣಸ್ತನಯೋ ಯೋಽಭೂತ್ ಮರೀಚಿರಿತಿ  
ವಿಶ್ರುತಃ। ಕಶ್ಯಪಸ್ತಸ್ಯ ಪುತ್ರೋಽಭೂತ್ ಕಶ್ಯಪಾನಾತ್ ಕಶ್ಯಪಃ"  
ಮಾರ್ಕಂ। [ಕಶ್ಯಪಮಹರ್ಷಿಯು ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಾನಸಪುತ್ರನಾದ  
ಮರೀಚಿಮಹರ್ಷಿಯ ಮಗ. ಕರ್ಷಮಪುತ್ರಿಯಾದ



ಕಲೆಯು ಈ ಋಷಿಯ ತಾಯಿ. ಈ ಮಹರ್ಷಿಯು ದಕ್ಷ ಪ್ರಜಾಪತಿಯ ಮಕ್ಕಳಾದ ಅದಿತಿ ದಿತಿ ಮೊದಲಾದ ಹದಿಮೂರು ಮಂದಿ ಕನ್ಯೆಯರನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ಅನೇಕ ಮಂದಿ ಪ್ರಜೆಗಳನ್ನು ಪಡೆದನು. ದೈತರು, ದೇವತೆಗಳು, ದಾನವರು, ಸಿದ್ಧರು, ಗಂಧರ್ವರು, ಅಪ್ಸರಸಿಯರು, ಯಕ್ಷರು, ಲತಾವೃಕ್ಷಗಳು ಮೊದಲಾದವು, ಮಾಂಸಾಹಾರಿಗಳಾದ ಮುಷ್ಕಮೃಗಗಳು, ಅಶ್ವ, ಅಶ್ವತರ, ಗರ್ಧಭ, ಶ್ವೇನ, ಗೃಧ್ರ, ಗೋವುಗಳು, ಅರುಣ, ಗರುಡ ಮತ್ತು ಸರ್ಪಗಳು ಕಶ್ಯಪನ ಸಂತಾನಗಳು.

ಕಶ್ಯಪನು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡಿ ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ವಿಷಹರವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿತನು. ವರುಣನ ಗೋವನ್ನು ಯಜ್ಞಕ್ಕಾಗಿ ತಂದು ಅದನ್ನು ಹಿಂತಿರುಗಿಸದೆ ಘೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವಂತೆ ಶಾಪ ಹೊಂದಿದನು. ಶೃಂಗಿಯ ಶಾಪದಿಂದ ಸರ್ಪಗಳಿಗೆ ಹೆದರಿದ ಪರೀಕ್ಷಿತನು ಸಮುದ್ರಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಅವನನ್ನು ಕಚ್ಚಲು ತಕ್ಷಕನು ಬ್ರಾಹ್ಮಣವೇಷದಿಂದ ಹೋಗುತ್ತಿರಲು ತನ್ನ ಮಂತ್ರಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಪರೀಕ್ಷಿತನನ್ನು ಬದುಕಿಸಲು ಕಶ್ಯಪನೂ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಹೊರಟನು. ಕಶ್ಯಪನ ಮಂತ್ರಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಅನೇಕ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಪರೀಕ್ಷಿಸಿದ ತಕ್ಷಕನು ಕಶ್ಯಪನನ್ನು ಉಪಾಯದಿಂದ ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಿಬಿಡುವನು.

ಗೋತ್ರಪ್ರವರ್ತಕರಾದ ಮಹರ್ಷಿಗಳಲ್ಲಿ ಕಶ್ಯಪ ಋಷಿಯೂ ಒಬ್ಬನು.] ಭಾಂ. ಆದಿಂ. ೨೦, ೩೧, ೪೨, ೬೬ ಅಧ್ಯಾಯಾಃ. 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೃಗ. 3. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. 4. ಕಮಠ, ಆಮೆ.

**ಕವಿ-ಹಿಸಾಯಾಮ್** (ಭಾಂ. ಪರಂ. ಸಕಂ. ಸಂ.) | ಕವತಿ | ಚಕಾಪ | ಅಕವಿತ್, ಅಕಾಪಿತ್ | ಹಿಂಸಿಸು, ಖಿಡಿಸು.

**ಕವಿ ಕಷ್ಠ** (ಪುಂ) 1. ಸಾಣೆಕಲ್ಲು. 2. ಚಿನ್ನದ ಬಣ್ಣವನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕಲ್ಲು, ಒರೆಗಲ್ಲು. ಕವತಿ — ಕವಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) | (ವಿಂ) 3. ಉಜ್ಜುವ. 4. ಒರೆಹಚ್ಚುವ. 5. ಅಳಿಸುವ. “ಛದಹೇಮ ಕವಿವಾಲಸತ್ ಕವಿಪಾಣಾನಿಭೇ ನಭಸ್ತಲೇ” ನೈಷಂ ೨-೬೯ |

**ಕವಿ ಕಷ್ಠಣ** (ನಂ) 1. ಒರೆಹಚ್ಚುವುದು. 2. ಉಜ್ಜುವುದು, ತಿಕ್ಕುವುದು. ಕವಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) | “ಕವಿಣಕಮ್ಪನಿರಸ್ತಮಹಾಹಿಮಿ: ಕವಿವಿಮತ್ತಮತಙ್ಗಜವಜಿತೆ:” ಕಿರಾಂ ೫-೪೭ |

**ಕವಿ ಕಷ್ಠತ್** (ವಿಂ) ಉಜ್ಜುತ್ತಿರುವ, ತಿಕ್ಕುತ್ತಿರುವ. ಕವಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) | “ಛದಹೇಮ ಕವಿವಾಲಸತ್” ನೈಷಂ ೨-೬೯ |

**ಕವಿ ಕಷ್ಠಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಾಮಟ, ಎತ್ತು ಕುದುರೆ ಮುಂತಾದವನ್ನು ಹೊಡೆಯುವ ಬಾರುಗೋಲು. ಕವಿತೇಜನಯಾ — ಕವಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಕರಂ “ಅಚ್” ಬಾಹುಂ |

**ಕವಿ ಕಷ್ಠಾಕು** (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ. 2. ಸೂರ್ಯ. ಕವಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಕಾಕು:” (೩ಂ ೩-೭೭) |

**ಕವಾಯ ಕಷಾಯ** (ಪುಂ) 1. ಕಷಾಯರಸ, ಒಗರು ರಸ, ಅರು ಭೋಜ್ಯರಸಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಕವತಿ ಕಷಮ್ — ಕವಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಆಯ:” ಬಾಹುಂ | “ತುರಸ್ತು ಕವಾಯೋಜ್ವಲಿ” ಅಮಂ | (1) ಮಧುರ:, (2) ಅಮಲ:, (3) ಲವಣ:, (4) ಕಡ್ಡು:, (5) ತಿಕ್ತ: ಮತ್ತು (6) ಕವಾಯ: ಇವು ಆರು ಭೋಜ್ಯರಸಗಳು. ಆಷ್ಠ (ಜಲದಿಂದಿರುವುದಾದ) ರಸವು ಉಳಿದ ಭೂತಗಳ ಸಂಸರ್ಗದಿಂದ ಈ ಆರು ರಸಗಳಾಗಿ ಪರಿಣಮಿಸುವುದು. (1) ಪೃಥ್ವಿ ಮತ್ತು ಜಲಗುಣಬಾಹುಳ್ಯದಿಂದ ಮಧುರರಸ, (2) ಪೃಥ್ವಿ ಮತ್ತು ಅಗ್ನಿಗುಣಬಾಹುಳ್ಯದಿಂದ ಅಮ್ಲರಸ, (3) ಜಲ ಮತ್ತು ಅಗ್ನಿಗುಣಬಾಹುಳ್ಯದಿಂದ ಲವಣರಸ, (4) ವಾಯು ಮತ್ತು ಅಗ್ನಿಗುಣಬಾಹುಳ್ಯದಿಂದ ಕಟುರಸ, (5) ವಾಯು ಮತ್ತು ಆಕಾಶಗುಣಬಾಹುಳ್ಯದಿಂದ ತಿಕ್ತರಸ ಮತ್ತು (6) ಪೃಥ್ವಿ ಮತ್ತು ವಾಯುಗುಣಬಾಹುಳ್ಯದಿಂದ ಕಷಾಯ ರಸ. ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೨-೩ | “ಯೋ ವಕ್ತ್ರಂ ಪರಿಶೋಷಯತಿ ಜಿಹ್ವಾಂ ಸ್ತಮ್ಭಯತಿ ಕಂಠಂ ಬದ್ಧನಾತಿ ಹೃದಯಂ ಕರ್ಷಯತಿ ಪಿಡಯತಿ ಚ ಸ ಕವಾಯ:” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೨-೯ | ಪಂಚಭೂತಗಳು ಪರಸ್ಪರ ಸಂಸರ್ಗ, — ಉಪಕಾರ, — ಅನುಪ್ರವೇಶ (ವಿಕಾಶೋಭಾವ)ಗಳಿಂದ ಎಲ್ಲಾ ಭೂತಗಳಲ್ಲೂ ಎಲ್ಲವೂ ಇದ್ದರೂ ಅವುಗಳ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯದಿಂದ ಆಯಾ ಭೂತಗಳೆನಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುವು. ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೨-೩ | 2. ನಿಯಾಸ, ಮರದ ರಸ. “ಛೃಷ್ಣೋ ವರಕವಾಯೇಣ ಅನುಲಿಪ್ತ: ಪ್ರಿಯङ್ಗುಣಾ | ಕೀರೇಣ ಷಷ್ಟಿಕಾನ್ ಭುಕ್ತ್ವಾ ಸರ್ವಪಾಪಿ: ಪ್ರಮುಚ್ಯತೇ” ಭಾಂ. ಅನುಂ | 3. ವಿರೇಪನ. “ಕರ್ಣಿಪಿತೋ ಲೋಘಕವಾಯರೂಕ್ಷೋ ಗೋರೋಚನಾಕ್ಷೇಪನಿತಾಂತಗೋರೇ” ಕುಮಾಂ ೭-೧೭ | 4. ಅಂಗರಾಗ, ಮೃಗ ಸುವಾಸನೆಯ ಪುಡಿಯನ್ನು ಹಾಕುವಿಕೆ. 5. ಪರಿಮಳ, ಸುವಾಸನೆ. 6. ಅನುರಾಗ, ಪ್ರೇಮ. 7. ಕ್ವಾಧ, ಕಷಾಯ, ಔಷಧ ವಸ್ತುವಿನೊಡನೆ ಕುದಿಯಿಸಿ ಇಂಗಿಸಿದ ರಸ. 8. ಚಿತ್ರ ವಿಕ್ಷೋಭ, ಮನಸ್ಸಿನ ಅಶಾಂತಿ. “ರಾಗೋ ಕವಾಯೇ ಕವಾಯೋಜ್ವಲಿ ನಿಯಸಿ ಸೋರಭೇ ರಸೇ” ವೈಜಂ | 9. ಕಂಪು. (ಪುಂ) 10. ರಾಗ ದ್ವೇಷ ಮೊದಲಾದ ದೋಷ. “ಆಹಾರಶುದ್ಧಿ ಸತ್ವಶುದ್ಧಿ: ಸತ್ವಶುದ್ಧಿ ಧ್ರುವಾ ಸ್ಮೃತಿ: | ಸ್ಮೃತಿಸ್ತು



ಸರ್ವಗ್ರಂಥಿನಾಂ ವಿಪ್ರಮೋಕ್ಷಸ್ತಸ್ಮೈ ಮೃದಿತಕರ್ಣಾಯ ತಮಸಃ ಪಾರಂ ದರ್ಶಯತಿ" ಛಾಂದೋಗ್ಯಂ 1. ಶೋಣಿತವಕ್ಷ್ಯ, ಹೆಮ್ಮರ. 12. ಕಲಿಯುಗ. 13. ಕೆಂಪು ಮತ್ತು ಹಳದಿ ಮಿಶ್ರವಾದ ಬಣ್ಣ. (ವಿಂ) 14. ಸುವಾಸನೆಯಾಗಿರುವ, ಪರಿಮಳ ದಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಪ್ರತೀಕೃತ ಸ್ಫುಟಿತಕಮಲಾಮೋದಮೇಶಿಕರ್ಣಾಯಃ" ಮೇಘಂ 1-31. 15. ಕೆಂಪಾಗಿರುವ. "ಚೂತಾಡ್ಕುರಾಸ್ವಾದ- ಕರ್ಣಾಯಕಠಃ ಪುಂಕೋಕಿಲೋ ಯನ್ಮಧುರಂ ಚುಕುಜ" ಕುಮಾರಂ 3-32. 16. ಪಟುವಾಗಿಲ್ಲದ, ಚುರುಕಾಗಿಲ್ಲದ. 17. ಕಷಾಯ ರಸದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 18. ಚಿತ್ತವಿಕ್ಷೋಭವುಳ್ಳ, ಅಶಾಂತಿ ಯುಳ್ಳ. 19. ಅನುರಾಗದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಕರ್ಣಾಯವರ್ಗ (ಪುಂ) ಕಷಾಯರಸವುಳ್ಳ ವಸ್ತುಗಳ ಗುಂಪು. ನ್ಯಾಯೋದಿ: ಅಮೃತಾದಿ: ಪ್ರಿಯವಾದಿ: ರೋಧಾದಿ: [ವಿವರಕ್ಕೆ ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ 36 ನೋಡಿ] ತ್ರಿಫಲಾ (ಅಳಲೆಕಾಯಿ, ತಾರಕಾಯಿ ಮತ್ತು ನೆಲೆಕಾಯಿ), ಶಲ್ಲಕೀ (ಅನೇಕಲ), ಜಂಬು (ನೇರಳೆ), ಆಮ್ರ: (ಮಾವು), ವಕುಲ: (ಪವಳ), ತಿಂದುಕ: (ತೂಬರೆ) ಮುಂತಾದುವು ಕಷಾಯ ವರ್ಗಕ್ಕೆ ಸೇರಿದುವು.

ಕರ್ಣಾಯಿತ (ವಿಂ) 1. ಬಣ್ಣಹಾಕಿರುವ. 2. ಕೆಂಪಾಗಿರುವ, ಕೆಂಪಗೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ. ಕರ್ಣಾಯೋಜ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತಚ್" (4-2-36). "ಪ್ರಿಯಮಿತಿ ವನಿತಾ ನಿತಾಂತಮಾಗ: ಸ್ಮರಣಸರೋಪಕರ್ಣಾಯಿತಾಯತಾಕ್ಷಿ" ಮಾಘಂ 9-11. 3. ಕ್ಷೋಭೆ ಹೊಂದಿದ, ಅಶಾಂತವಾದ. "ಧುಸ್ಮಣೇತ್ರ ಕರ್ಣಾಯಿತಾಶಯಾ" ನೈಷಂ 2-99.

ಕರ್ಣಾಯಿನ್ ಕರ್ಣಾಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಶಾಲವೃಕ್ಷ, ಮತ್ತಿಮರ. 2. ಖರ್ಜೂರದ ಮರ. ಕರ್ಣಾಯಿ ನಿರ್ಯಾಸೋಜ್ಯಸ್ಯ "ಇನಿ:" (4-2-114). (ವಿಂ) 3. ಕೆಂಪುಬಣ್ಣದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಕರ್ಣಿ ಕರ್ಣಿ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂಸಿಸುವ, ಹೀಡಿಸುವ. ಕರ್ಣಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಇನ್" (3-4-119).

ಕರ್ಣಿಕಾ ಕರ್ಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಪಕ್ಷಿ. ಕರ್ಣಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಇಕನ್" (3-4-116).

ಕರ್ಣಿ ಕರ್ಣಿ (ನಂ) 1. ಹೀಡೆ, ಹಿಂಸೆ. 2. ವ್ಯಥೆ, ದುಃಖ. ಕರ್ಣಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (3-3-194). "ಇಂದುರಾದಿ- ರಜನಿಷ್ಠ ಕಲಕ್ಷಿ ಕರ್ಣಿಮತ್ರ ಸ ಭವಾನಪಿ ಮಾ ಭೂತ್" ನೈಷಂ 4-119. (ವಿಂ) 3. ದುಃಖಕರವಾದ, ವ್ಯಥೆಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ. ಕರ್ಣಿ ಮೋಹ: 4. ಹಿಂಸೆಯನ್ನು ಕೊಡುವ, ಹೀಡಿಸುವ. "ಬಂಧನಾನಿ ಚ ಕರ್ಣಾನಿ ಪರಪ್ರೇಷ್ಯತವೇವ ಚ" ಮನುಂ 12-98. 5. ಕಷ್ಟಸಾಧ್ಯ ವಾದ. 6. ತಿಳಿಯಲು ಕಷ್ಟವಾದ. ಕರ್ಣಿ ಶಾಸ್ತ್ರಮ್.

ಕರ್ಣಿ ಕರ್ಣಿ (ವಿಂ) 1. ಹೀಡಾಕರವಾದ, ಹಿಂಸೆ ಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ. ಕರ್ಣಿ + ಕ್ತು ಕ್ತು (ಕರ್ಣಿ) "ಕ್ತ:" (3-2-20). 2. ವ್ಯಥೆಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ, ದುಃಖಕರವಾದ.

ಕರ್ಣಿ ಕರ್ಣಿ (ವಿಂ) "ಕರ್ಣಿ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಕರ್ಣಿ ಕರ್ಣಿ — ಕ್ತು ಕ್ತು (ಕರ್ಣಿ) "ಅನ್" (3-2-1).

ಕರ್ಣಿ ಕರ್ಣಿ (ವಿಂ) ಎರಡರಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಕಷ್ಟವಾದ. ಅತಿಶಯೇನ ಕರ್ಣಿ. "ತರಪ್" (4-3-49). "ತಮಪ್" (4-3-44). —ತಮ: —ತಮ:

ಕರ್ಣಿ ಕರ್ಣಿ (ಪುಂ) ಕಷ್ಟಸಾಧ್ಯವಾದ ಶತ್ರು, ಜಯಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ ಶತ್ರು. ಕರ್ಣಿ ರಿಪು: "ಪ್ರಾಜ್ಞ ಕುಲೀನ ಶೂರಂ ಚ ದಕ್ಷಂ ದಾತಾರಮೇವ ಚ | ಕೃತಜ್ಞಂ ಭೃತಿಮನ್ತಂ ಚ ಕರ್ಣಿಮಾಹುರಾರಿ ಬುಧಾ:" ಮನುಂ 9-210.

ಕರ್ಣಿ (ಮಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಕರ್ಣಿ. ಚರ್ಣಿ. ಅಕರ್ಣಿ, ಅಕರ್ಣಿ. ಹೋಗು, ಚಲಿಸು, ನಡೆ.

ಕರ್ಣಿ ಕರ್ಣಿ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:—

(1) ನಿರ್, ನಿಸ್ + ಕರ್ಣಿ = ನಿರ್ಣಾಸ: | ನಿರ್ಣಾಸಿತ: | ಹೋಗು, ಅಡ್ಡು.

(2) ವಿ + ಕರ್ಣಿ = ವಿಕರ್ಣಿ. ವಿಕರ್ಣಿ: 1. ಪ್ರಕಾಶಿಸು. 2. ಅರಳು. "ವಿಕರ್ಣಿ ಹಿ ಪತಂಜಸ್ಯೋದಯೇ ಪುಂಡರೀಕಂ ದ್ರವತಿ ಚ ಹಿಮರಶ್ಮಾವುದಗತೇ ಚಂದ್ರಕಾಂತ:" ಮಾಲತೀಂ 1-29.

(3) ಪ್ರ + ವಿ + ಕರ್ಣಿ = ಪ್ರವಿಕರ್ಣಿ. ಪ್ರವಿಕರ್ಣಿ: "ಪ್ರವಿಕರ್ಣಿ ಚಿರಾಯ ದೌತೀತಾಶೋಲೋಕೇ ದಶಶತಕರ್ಮೂರ್ತಿ- ವಕ್ಷಿಣೀವ ದ್ವಿತೀಯೇ" ಮಾಘಂ 11-63.

ಕರ್ಣಿ-ಶಾತನೇ (ಅದಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಕರ್ಣಿ ಕರ್ಣಿ. ಅಕರ್ಣಿ. ಉಜ್ಜು, ತಿಕ್ಕು.

ಕರ್ಣಿ ಕರ್ಣಿ (ಪುಂ) ಸಾಣೆಕಲ್ಲು. ಕರ್ಣಿ — ಕರ್ಣಿ (ಶಾತನೇ) "ಅಚ್" (3-1-134).

ಕರ್ಣಿ ಕರ್ಣಿ (ನಂ) 1. ಕಾಸರೋಗ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ನಾ —ನಾ. 2. ಜೇಡರ ಹುಳು. ಕರ್ಣಿ ಹಿನ್ಯಸ್ತಿ — ಕರ್ಣಿ (ಶಾತನೇ) "ಲ್ಯು:" (3-1-134). "ಪಿಚ್ಛಿಲಾ ಕರ್ಣಿನಾಂಶಾತ್ ರುಧಿರಂ ಶೀತಲಂ ಭವೇತ್" ಸುಶ್ರುತಂ.

ಕರ್ಣಿ ಕರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರ್ಣಿ, ಒಂದು ಮೃಗದ ಮದ, ಕರ್ಣಿಮೃಗದ ಹೊಕ್ಕುಳಿನಲ್ಲಿ ಸಿಕ್ಕುವ ಒಂದು ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ. "ಸಖಿಮುಖಾಯೋತ್ಸಜತೀಮಪಾಜ್ಞಾತ್ ಕರ್ಪೂರಕರ್ಣಿಕಯೋ: ಪ್ರವಾಹಮ್" ನೈಷಂ 10-102.



**ಕಸ್ತೂರಿಕಾಮೃಗ ಕಸ್ತೂರಿಕಾಮೃಗ** (ಪುಂ) ಕಸ್ತೂರಿ ಮೃಗ.  
“ಕಸ್ತೂರಿಕಾಮೃಗವಿಮರ್ದಸುಗಂಧಿವೇತಿ ರಾಗಿವ ಸಕ್ತಿಮಧಿಕಾಂ  
ವಿಷಯೇಷು ವಾಯು:” ಮಾಘಂ ೪-೬೧.

**ಕಸ್ತೂರಿ ಕಸ್ತೂರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಮೃಗದ ಮದ,  
ಕಸ್ತೂರಿಮೃಗದ ಹೊಕ್ಕುಳಿನಲ್ಲಿ ಸಿಕ್ಕುವ ಒಂದು ಸುಗಂಧ  
ದ್ರವ್ಯ. ಕಸತಿ ಗಂಧೋಜ್ಯಾ: ದೂತ: — ಕಸ (ಗತೌ) “ಕು:”  
(ತಂ ೪-೯೦). ಪೃಷೋಂ. ಕಸ್ತೂರಿಯು ಕಾಮ  
ರೂಪೋದ್ಭವಾ, ನೈವಾಳೇ ಮತ್ತು ಕಾಶ್ಮೀರಜಾ ಎಂದು  
ಮೂರು ವಿಧ. “ಕಸ್ತೂರಿ ತ್ರಿವಿಧಾ ಸ್ಮೃತಾ. ಕಾಮರೂಪೋದ್ಭವಾ  
ಶ್ರೇಷ್ಠಾ ನೈಪಾಲಿ ಮಧ್ಯಮಾ ಸ್ಮೃತಾ. ಕಾಮರೂಪೋದ್ಭವಾ ಕೃಷ್ಣಾ  
ನೈಪಾಲಿ ನೀಲವರ್ಣಯುಕ್. ಕಾಶ್ಮೀರದೇಶಸಂಭೂತಾ ಕಸ್ತೂರಿತ್ವಧರ್ಮಾ  
ಮತಾ” ಭಾವಪ್ರಂ.

**ಕಸ್ತೂರಿಮೃಗ ಕಸ್ತೂರಿಮೃಗ** (ಪುಂ) ಕಸ್ತೂರಿಯನ್ನು  
ಕೊಡುವ ಒಂದು ಮೃಗ.

**ಕಸ್ತೂರಿ ಕಸ್ತೂರಿ** (ನಂ) 1. ಕೆತ್ತಲ, ಕೊಳೆ. 2. ಪಾಪ.  
3. ಸಂಮೋಹ. ಕಸ (ಗತೌ) “ಕಲ:” ಮುಡ್ ಚ (ತಂ  
೧-೧೦೬).

**ಕಸ್ತೂರಿ ಕಸ್ತೂರಿ** (ವಿಂ) 1. ಹೋಗುವವನು, ನಡೆಯು  
ವವನು. 2. ಹೀಡಿಸುವವನು. ಕಸ (ಗತೌ) ಶಾತನೇ ಚ  
“ವರಕ್” (೩-೨-೧೭೫).

**ಕಹಯ ಕಹಯ** (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯನ ಕುದುರೆ. ಕಸ್ಯ ಸೂರ್ಯಸ್ಯ  
ಹಯ:.

**ಕಹೋಡ ಕಹೋಡ** (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಯುಷ್ಮಿ, ಉದ್ದಾಲಕ ಯುಷ್ಮಿಯ  
ಶಿಷ್ಯ. ಅಷ್ಟಾವಕ್ರನ ತಂದೆ. “ಉದಾಲಕಸ್ಯ ನಿಯತ: ಶಿಷ್ಯ  
एको नाम्ना कहोडेति बभूव राजन्” भा० वन० ೧೩೪-೮.  
[ವಿವರಕ್ಕೆ “ಅಷ್ಟಾವಕ್ರ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ತಸ್ಯ ವಾ  
“ಲ:” ಕಹೋಲ: ಎಂದೂ ಪ್ರಯೋಗವುಂಟು.

**ಕಹ್ಲಾರ ಕಹ್ಲಾರ** (ನಂ) ಎಳೆಗೊಂಪಿನ ಬಿಳಿನೈದಿಲೆ. ಕೆ ಜಲೇ  
ಹ್ಲಾಹತೇ — ಹ್ಲಾಹಿ (ಸುಖೇ ಚ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪).  
ಪೃಷೋಂ. “ಆಹ್ಲಾದಿಕಹ್ಲಾರಸಮೀರಣಾಹತೇ ಪುರ: ಪಪಾತಾಂಭಸಿ  
ಯಾಮುನೇ ರಜ:” ಮಾಘಂ ೧೨-೬೬.

**ಕಹ್ಲ ಕಹ್ಲ** (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಹುಪಕ್ಷಿ. ಕೆ ಜಲೇ ಹ್ಲಯತಿ — ಹ್ಲೇ  
(ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) “ಕ:” (ವಾಂ ೩-೨-೫).

**ಕಾಂಸ ಕಾಂಸ** (ವಿಂ) ಕಂಸದೇಶದ ಜನರು, ಕಂಸದೇಶ  
ದಲ್ಲಿರುವ, ಕಂಸದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಕಂಸೋ ದೇಶ:  
ಅಭಿಜನೋಜ್ಯ “ಅವ್” (೪-೩-೯೩).

**ಕಾಂಸೀಕೃತ ಕಾಂಸೀಕೃತ** (ವಿಂ) ಕಂಚಿನ ಪಾತ್ರೆಗಳಾಗಿ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಕಾಂಸ್ಯ ಕಾಂಸ್ಯ ಕೃತಮ್ — ಕಂಸಾಯ ಹಿತಮ್

“ಕು:” (೫-೧-೫). ಕಂಸೀಯಮ್. ತಸ್ಯ ವಿಕಾರ: “ಯಜ್”  
ಕಸ್ಯ “ಲುಕ್” (೪-೩-೧೬೮). ಕಾಂಸ್ಯಮ್. ಅಕಾಂಸ್ಯ  
ಕಾಂಸ್ಯ ಕೃತಮ್ “ಚ್ವಿ:” (೫-೪-೫೦). ಖಲೋಪ:  
(೬-೪-೧೫೨). ದೀರ್ಘ: (೭-೪-೨೬).

**ಕಾಂಸ್ಯ ಕಾಂಸ್ಯ** (ನಂ) 1. ಕಂಚು, ತಾಮ್ರತವರಗಳಿಂದ  
ತಯಾರಾದ ಒಂದು ಲೋಹ. ಕಂಸಾಯ ಪಾನಪಾತ್ರಾಯ ಹಿತಮ್  
“ಕು:” (೫-೧-೫). ಕಂಸೀಯಮ್. ತಸ್ಯ ವಿಕಾರ: “ಯಜ್”  
ಖಲೋಪಶ್ಚ (೪-೩-೧೬೮). “ತಾಮ್ರಾಯ:ಕಾಂಸ್ಯರೇತ್ಯಾನಾಂ ತ್ರಿಪುಣ:  
ಸೀಸಕಸ್ಯ ಚ. ಶೌಚಂ ಯಥಾರ್ಹ ಕರ್ತವ್ಯಂ ಕ್ಷಾರಾಮ್ಲೋದಕವಾರಿಭಿ:”  
ಮನುಂ ೫-೧೧೪. 2. ಕಂಚಿನ ಜಾಗಣೆ. (ಪುಂ) 3. ಕಂಚಿನ  
ಕುಡಿಯುವ ಪಾತ್ರೆ. “ಕಾಂಸ್ಯಮುಪಹಿತಸರೋಜಪತದ್ಭರಮರೋಘ-  
ಭಾರಗುರು ರಾಜಯೋಷಿತ:” ಮಾಘಂ ೧೫-೮೧. “ನ ಪಾದೌ  
ಧಾವಯೇತ್ ಕಾಂಸ್ಯೇ ಕದಾಚಿದಪಿ ಭಾಜನೇ” ಮನುಂ ೪-೬೫.

**ಕಾಂಸ್ಯಕಾರ ಕಾಂಸ್ಯಕಾರ** (ಪುಂ) ಕಂಚುಗಾರ, ಕಂಚಿನ ಪಾತ್ರೆ  
ತಯಾರಿಸುವವನು. ಕಾಂಸ್ಯಂ ತತ್ಪಾತ್ರಂ ಕರೋತಿ — ಡು ಕೃಮ್  
(ಕರಣೇ) “ಅಣ್” (೩-೨-೧).

**ಕಾಂಸ್ಯತಾಲ ಕಾಂಸ್ಯತಾಲ** (ಪುಂ) ಕಂಚಿನ ಕೈತಾಳ, ಝಲ್ಲರಿ.

**ಕಾಂಸ್ಯಭಾಜನ ಕಾಂಸ್ಯಭಾಜನ** (ನಂ) ಕಂಚಿನ ಪಾತ್ರೆ.

**ಕಾಂಸ್ಯಮಲ ಕಾಂಸ್ಯಮಲ** (ನಂ) ಕೆಲುಚು, ಕಂಚಿನ ಮೇಲಿನ  
ಕೊಳೆ.

**ಕಾಕ ಕಾಕ** (ಪುಂ) 1. ಪಾಯಸ, ಕಾಗೆ. ಕಾಯತಿ — ಕೆ  
(ಶಬ್ದೇ) “ಕನ್” (ತಂ ೩-೪೩). “ವಸಂತಕಾಲೇ ಸಂಪ್ರಾಪ್ತೇ  
ಕಾಕ: ಕಾಕ: ಪಿಕ: ಪಿಕ:” | “ಯದೇಶ ಸೌಧಾಗ್ರನಡೆ ಪಟಾಚಲೇ  
ಚಲೇಷಿ ಕಾಕಸ್ಯ ಪದಾರ್ಪಣಗ್ರಹ:” ನೈಷಂ ೧೨-೨೧.  
“ಕಾಕೋಽಪಿ ಜೀವತಿ ಚಿರಾಯ ಬಲಿ ಚ ಭುಂಕ್ತೇ” ಪञ्चतಂ. |  
ನಿಂದ್ಯಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ಮತ್ತು ಹೀನಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ಇದರ ಸಾಮ್ಯ  
ಕೊಡುವುದುಂಟು. “ನ ತ್ವಾಂ ಕಾಕಮಹಂ ಮನ್ಯೇ” ನಿನ್ನನ್ನು  
ಕಾಗೆಗಿಂತಲೂ ಕಡೆಯಾಗಿ ಭಾವಿಸುತ್ತೇನೆ. 2. ಕಾಕದ್ವೀಪ,  
ಕಾಗೆಗಳೇ ಪ್ರಧಾನವಾಗಿರುವ ಒಂದು ಭೂಭಾಗ. (ನಂ)  
3. ಕಾಕಸ್ನಾನ, ತಲೆಯನ್ನು ಮಾತ್ರ ತೊಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು.  
ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿ ಸ್ನಾನ ಮಾಡಲು ಹೆದರಿ ತಲೆಯನ್ನು  
ಮಾತ್ರ ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಅದ್ದಿ ಮಾಡುವ ಸ್ನಾನವನ್ನು  
“ಕಾಕಸ್ನಾನಮ್” ಎಂದು ಹೇಳುವರು. 4. ಕಾಗೆಗಳ  
ಸಮೂಹ. ಕಾಕಾನಾಂ ಸಮೂಹ: “ಅಣ್” (೪-೨-೩೭).  
5. ಒಂದು ವಿಧ ಸುರತಬಂಧ. [“ಕಾಕಪದ” ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ] 6. ಸ್ವಲ್ಪ ನೀರು. ಇಷ್ಟತ್ ಕಮ್ ಇಷ್ಟಜಲಮ್ —  
“ಕಾದೇಶ:” (೬-೩-೧೦೫).



ಕಾಕಕಡ್ಗು ಕಾಕಕಂಗು (ಪುಂ) ಕಾಗೆ ಪ್ರಿಯವಾದ ನವಣೆ.

ಕಾಕಪ್ರಿಯ: ಕಡ್ಗು: |

ಕಾಕಗವೇಷಣ ಕಾಕಗವೇಷಣ (ನಂ) ವ್ಯರ್ಥವಾದ ಮತ್ತು ಅಪ್ರಯೋಜಕವಾದ ಕೆಲಸ.

ಕಾಕಚಿತ್ತಾ ಕಾಕಚಿಂಚಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗುಲಗಂಜಿಯ ಬಳ್ಳಿ. ಕಾಕವರ್ಣಿ ಚಿತ್ತಾ |

ಕಾಕಚ್ಚದ ಕಾಕಚ್ಚದ (ಪುಂ) ಕಾಡಿಗೆ ಸೋಗಿನ ಹಕ್ಕಿ. ಕಾಕಸ್ಯ ಛದ ಇವ ಛದೋ ಯಸ್ಯ |

ಕಾಕಣ ಕಾಕಣ (ನಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಮಹಾಕುಷ್ಮರೋಗ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್". ಕಾಕಣಕಮ್ ಕಾಕಣಕನ್. ಮಹಾ ಕುಷ್ಮವು (1) ಅರುಣ, (2) ಉದುಂಬರ, (3) ಋಷ್ಯಜಿಹ್ವ, (4) ಕಪಾಲ, (5) ಕಾಕಣಕ, (6) ಪುಂಡರೀಕ ಮತ್ತು (7) ದದ್ರುಗಳೆಂದು ಏಳು ವಿಧ. ಸುಶ್ರುತಂ ನಿಧಾನಂ ೪-೪ |

ಕಾಕತಾಲೀಯ ಕಾಕತಾಳೀಯ (ನಂ) 1. ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾಗಿ ಸಂಭವಿಸಬಹುದಾದ ಕಾರ್ಯದ ಒಂದು ನ್ಯಾಯ, ಎದುರು ನೋಡದೆ ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ ನಡೆಯುವ (ಉಂಟಾಗುವ) ಕಾರ್ಯದ ಬಗ್ಗೆ ಒಂದು ನ್ಯಾಯ. ಇದು ಕಾಕತಾಳೀಯ ವಾದುದು. ಕಾಕಾಗಮನಮಿವ ತಾಲಪತನಮಿವ ಕಾಕತಾಲಮ್ | ದೇವದತ್ತನ ಆಗಮನ ಮತ್ತು ಆ ವೇಳೆಗೆ ಸರಿಯಾಗಿ ಯುವತಿಯ ಸಮಾಗಮ ಇವೆರಡೂ (ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾಗಿ ಒದಗಿದುದರಿಂದ) ಕಾಗೆಯು ಬರುವ ವೇಳೆಯಲ್ಲಿ ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾಗಿ ಒದಗಿದ ತಾಳಫಲಪತನದಂತಾದುವು. ದೇವದತ್ತ ಮತ್ತು ಯುವತಿಯ ಸಂಭೋಗವು, ಕಾಗೆಯು ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾಗಿ ಬಿದ್ದ ಹಣ್ಣನ್ನು ಭುಜಿಸಿದಂತಾಯಿತು. ಆದುದರಿಂದ ಇವರಿಬ್ಬರ ಸಮಾಗಮ ಮತ್ತು ಸಂಭೋಗ ಗಳು ಕಾಕತಾಳೀಯವಾದುವು. ಕಾಕತಾಲಮಿವ ಕಾಕ-ತಾಲೀಯಮ್ | ಸಮಾಸಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ಕಾಕ ತಾಲ ಪದಗಳು ಕಾಕಾಗಮನ ಮತ್ತು ತಾಳಫಲಪತನರೂಪವಾದ ಕ್ರಿಯಾ ವಾಚಕಗಳು. ಕಾಕಾಗಮನ ಮತ್ತು ತಾಳಪತನಗಳು ದೇವದತ್ತನ ಮತ್ತು ಯುವತಿಯ ಸಮಾಗಮಗಳಿಗೆ ಉಪಮಾನ. ಕಾಕಕೃತ ತಾಳ ಫಲೋಪಭೋಗವು ಯುವತಿ ಯೊಡನೆ ದೇವದತ್ತನ ಸಂಭೋಗಕ್ಕೆ ಉಪಮಾನ. ಇಲ್ಲಿ (1) ದೇವದತ್ತ - ಯುವತಿಯರ ಸಮಾಗಮವೂ, (2) ಯುವತಿಯೊಡನೆ ದೇವದತ್ತಕೃತಸಂಭೋಗವೂ ಅವಿಚರ್ಕಿತವಾಗಿ (ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾಗಿ) ಸಂಭವಿಸಿದುದರಿಂದ "ಕಾಕತಾಳೀಯ" ನ್ಯಾಯದಂತಾಯಿತು. ಮೊದಲ ನೆಯದು ಸಮಾಸಾರ್ಥ. ಎರಡನೆಯದು "ಛ" ಪ್ರತ್ಯಯಾರ್ಥ. [ಇನ್ನೂ ವಿವರಕ್ಕೆ "ಲುಪ್ತೋಪಮಾ" ಪದದಲ್ಲಿ

ನೋಡಿ.] "ಯತ್ತಯಾ ಮೇಲನಂ ತತ್ರ ಲಾಭೋ ಮೇ ಯಶ್ಚ ತದ್ರತೇ: | ತದೇತತ್ಕಾಕತಾಲೀಯಮವಿತರ್ಕಿತಸಂಭವಮ್" ಚಂದ್ರಾಂ | (ಅವ್ಯಂ) 2. ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ, ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾಗಿ. "ಕಾಕತಾಲೀಯವತ್ಪ್ರಾಪ್ತಂ ದೃಷ್ಟವಾಪಿ ನಿಧಿಮಗ್ರತ: | ನ ಸ್ವಯಂ ದೇವಮಾದತ್ತೇ ಪುರುಷಾರ್ಥ-ಮಪೇಕ್ಷತೇ" ಹಿತಂ |

ಕಾಕತಾಲುಕಿನ್ ಕಾಕತಾಲುಕಿನ್ (ವಿಂ) ಅಧಮ, ನೀಚ. ಕಾಕತಿನ್ದುಕ ಕಾಕತಿಂದುಕ (ಪುಂ) ಕಾಗೆ ತೂಬರೆ ಗಿಡ. ಕಾಕಪ್ರಿಯ: ತಿನ್ದುಕ: |

ಕಾಕತುಂಡ ಕಾಕತುಂಡ (ಪುಂ) ಕಾಲಾಗುರು, ಕೃಷ್ಣಾಗುರು. ಕಾಕಧ್ವಜ ಕಾಕಧ್ವಜ (ಪುಂ) ಬಡಬಾಗಿ. ಕಾಕಮಿಷಜ್ಜಲಂ ಬಾಷ್ಪಂ ಧ್ವಜ ಇವಾಸ್ಯ |

ಕಾಕನಾಸಿಕಾ ಕಾಕನಾಸಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಗೆ ತೊಂಡೆಗಿಡ. ಕಾಕಸ್ಯ ನಾಸಿಕೇವ ಫಲಮಸ್ಯಾ: |

ಕಾಕನಿद्रಾ ಕಾಕನಿದ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಲ್ಪ ನಿದ್ರೆ, ತೂಕಡಿಕೆ. ಕಾಕಪಕ್ಷ ಕಾಕಪಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಜುಲಿಕ್ಕೊದಲು. ಕಾಕಸ್ಯ ಪಕ್ಷ: ತದಾಕಾರೋಜ್ಜ್ವಲಸ್ಯ | 2. ಬಾಲಕರ ಕಿವಿಯ ಪಕ್ಕದ ಜುಟ್ಟು, ತಲೆಯ ಪಕ್ಕದ ಕೂದಲು. "ಕಾಕಪಕ್ಷಧರಮೇತ್ಯ ಯಾಚಿತಸ್ತೇಜಸಾಂ ಹಿ ನ ವಯ: ಸಮೀಕ್ಷಯತೇ" ರಘುಂ ೧೧-೧ |

ಕಾಕಪದ ಕಾಕಪದ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ವಿಧ ಸುರತಬಂಧ, ರತಿಕ್ರೀಡೆಯ ಬಂಧದ ಒಂದು ಭೇದ. "ಪಾದೌ ಛೌ ಸ್ಕಂಧ-ಮೂಲಸ್ಥೌ ಕ್ಷಿಪ್ತ್ವಾ ಲಿಙ್ಗಂ ಭಗೇ ಲಘು | ಕಾಮಯೇತಕಾಮುಕೀ ಕಾಮೀ ಬಂಧ: ಕಾಕಪದೋ ಮತ: " ರತಿಮಂ | (ನಂ) 2. ಕಾಗೆಯ ಕಾಲಿನ ಹೆಜ್ಜೆಗೆ ಸಮಾನವಾದ ಅಳತೆ, ಕಾಗೆಯ ಕಾಲಿನಷ್ಟು ವಿಸ್ತಾರ.

ಕಾಕಪೀಲುಕ ಕಾಕಪೀಲುಕ (ಪುಂ) ಕಾಗೆ ತೂಬರೆ ಗಿಡ.

ಕಾಕಪುಟ ಕಾಕಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) ಕೋಗಿಲೆ, ಕಾಗೆಯಿಂದ ಸಾಕಲ್ಪಟ್ಟ ಒಂದು ಹಕ್ಕಿ. ಕಾಕೇನ ಪುಟ: | ಕೋಗಿಲೆಯು ಕಾಗೆಯ ಗೂಡಿನಲ್ಲಿ ಮೊಟ್ಟೆಯಿಡುವುದು. ಕಾಗೆಯು ಅದು ತನ್ನ ಮೊಟ್ಟೆಯೆಂದು ತಿಳಿದು ಮೊಟ್ಟೆಯು ಒಡೆದು ರೆಕ್ಕೆ ಬರುವವರೆಗೂ ಅದನ್ನು ಸಾಕುವುದು. ಮೊಟ್ಟೆಯು ಒಡೆದ ಮೇಲೆ ಮರಿಗೆ ಹಾರುವ ಶಕ್ತಿ ಬಂದಕೂಡಲೆ ಹಾರಿ ಹೋಗಿ ಕೋಗಿಲೆಯ ಗುಂಪಿಗೆ ಸೇರಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಅದರಿಂದಲೇ "ವಸಂತಕಾಲೇ ಸಂಪ್ರಾಪ್ತೇ ಕಾಕ: ಕಾಕ: ಪಿಕ: ಪಿಕ:" ಎಂಬ ವಚನವಿರುವುದು,

ಕಾಕಪೇಯ ಕಾಕಪೇಯ (ವಿಂ) ಕಾಗೆಯು ಕುಡಿಯಬಹುದಾದಷ್ಟು ನೀರುಳ್ಳ, ಸ್ವಲ್ಪ ಅಥವಾ ತುಂಬಿದ ನೀರುಳ್ಳ. ಕಾಕೇನ ಪೀಯತೇ - ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಯತ್" (೩-೧-೯೭) |



“ಕಾಕಪೇಯಾ ನದೀ” ಸಿಂ ಕೌಂ | ಕಾಗೆಯು ಕುಡಿಯ ಬೇಕಾದರೆ ನೀರು ತುಂಬಿರಬೇಕು. ಇದರಿಂದ ಸ್ತುತಿಯೂ, ಕೇವಲ ಕಾಗೆಯು ಕುಡಿಯುವಷ್ಟು ನೀರು ಎಂದು ನಿಂದೆಯೂ ತೋರುವುದು.

**ಕಾಕಫಲ ಕಾಕಫಲ** (ಪುಂ) 1. ಬೇವಿನಮರ. ಕಾಕಪ್ರಿಯಂ ಫಲಮಸ್ಯ | ಬೇವಿನ ಹಣ್ಣು ಕಹಿಯಾಗಿದ್ದರೂ ಕಾಗೆಗೆ ಪ್ರಿಯವಾದುದು. (ನಂ) 2. ಬೇವಿನ ಹಣ್ಣು. ಕಾಕಪ್ರಿಯಂ ಫಲಮ್ |

**ಕಾಕಭೀರ ಕಾಕಭೀರು** (ಪುಂ) ಕಾಗೆಗೆ ಹೆದರುವ ಒಂದು ಹಕ್ಕಿ, ಗೂಬೆ.

**ಕಾಕಮಾಚೀ ಕಾಕಮಾಚೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಚಿಗಿಡ, ಗಣಕಿಗಿಡ. ಕಾಕಾನ್ ಮಚ್ವತೇ — ಮಚಿ (ಧಾರಣೋಚ್ಚಾಯಪೂಜನೇಶು) “ಅನ್” (೩-೨-೧) | ಪೃಷೋಂ | ಗೌರಾಂ “ಡೀಫ್” |

**ಕಾಕಮುಖ ಕಾಕಮುಖ** (ನಂ) 1. ಇಕ್ಕಳ. ಕಾಕಸ್ಯ ಮುಖಮಿವ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಕಾಗೆಯಂತೆ ಮುಖ ಪುಳ್ಳವನು.

**ಕಾಕಮುದ್ಗಾ ಕಾಕಮುದ್ಗಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡು ಹೆಸರುಗಿಡ. ಕಾಕೇನ ಀಷಜ್ಜಲೇನ ಮುದಂ ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ಙಃ” (೩-೨-೪೮) |

**ಕಾಕರುತ ಕಾಕರುತ** (ನಂ) ಕಾಗೆಯ ಶಬ್ದ, ಕಾಗೆಯ ಕೂಗು. ಕಾಕಸ್ಯ ರುತಮ್ | “ದಿವಾ ಕಾಕರುತಾಙ್ಗೀತಾ ರಾತ್ರೌ ತರತಿ ನರ್ಮದಾಮ್” |

**ಕಾಕಲ ಕಾಕಲ** (ನಂ) 1. ಕಂಠದ ಉಬ್ಬಿದ ಪ್ರದೇಶ. 2. ಕಂಠಮಣಿ. ಀಷತ್ ಕಲೋ ಯಸ್ಮಾತ್ | “ಸ್ಯಾತ್ ಕಾಕಲಂ ಕಂಠಮಣಿಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 3. ದ್ರೋಣಕಾಕ, ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಕಾಗೆ.

**ಕಾಕಲೀ ಕಾಕಲೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ಮತ್ತು ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾದ ಮಧುರ ಧ್ವನಿ. ಀಷತ್ಕಲಃ ಕಾಕಾಲಃ ಗೌರಾಂ “ಡೀಫ್” (೪-೧-೪೧) | “ಕಾಕಲೀ ತು ಕಲೇ ಸುಕ್ಷಮೇ” ಅಮಂ | “ಸಹಕಾರಕಿಸಲಯಮಕರಂದಾಸ್ವಾದನರಕ್ತಕಂಠಾನಾಂ ಮಧುಕರ-ಕಲಕಂಠಾನಾಂ ಕಾಕಲೀಕಲಕಲೇನ” ದಶಕುಂ |

**ಕಾಕಸ್ವರ ಕಾಕಸ್ವರ** (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಕಶಧ್ವನಿ. (ವಿಂ) 2. ಕರ್ಕಶಧ್ವನಿಯುಳ್ಳ.

**ಕಾಕಾ ಕಾಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಗೆ ತೊಂಡೆಗಿಡ. 2. ಕಾಕೋಲಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಔಷಧದ ಗಿಡ. 3. ಕಾಚಿಗಿಡ, ಗಣಕಿಗಿಡ. 4. ಕಲ್ಲತ್ತಿಗಿಡ, ಬ್ರಹ್ಮಮೇಡಿ. 5. ಗುಲಗಂಜಿಗಿಡ. “ಕಾಕಾ ಸ್ಯಾತ್ಕಾಕಜಙ್ಘಾಃ ಕಾಕೋಲೀಕಾಕನಾಸಯೋಃ | ರಕ್ತಿಕಾಃ ಮಲಪ್ವಾಂ ಚ ಕಾಕಮಾಚ್ಯಾಂ ಚ ಯೋಷಿತಿ” ಮೇದಿಂ |

**ಕಾಕಾಕ್ಷಿಗೋಲಕನ್ಯಾಯ ಕಾಕಾಕ್ಷಿಗೋಲಕನ್ಯಾಯ** (ಪುಂ) ಕಾಗೆಯ ಕಣ್ಣು ಗುಡ್ಡೆಯಂತಿರುವ ಒಂದು ನ್ಯಾಯ. ಕಾಕಸ್ಯ ಅಕ್ಷಿಗೋಲಕಮಿವ ನ್ಯಾಯಃ | ಕಾಗೆಗೆ ಇರುವುದು ಒಂದೇ ಕಣ್ಣು. ಈ ಒಂದೇ ನೇತ್ರೇಂದ್ರಿಯವು ಸಮಯ ಬಂದಂತೆಲ್ಲಾ ಎರಡು ಕಣ್ಣು ಗುಡ್ಡೆಗಳಲ್ಲೂ ಚಲಿಸುತ್ತ ಎರಡು ಕಣ್ಣುಗಳಿಗೂ ಉಪಕಾರಕವಾಗಿರುವಂತೆ ಒಂದು ವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯುಕ್ತವಾದ ಒಂದೇ ಪದವು ವಾಕ್ಯದ ಎರಡು ಭಾಗಗಳಿಗೂ ಅನ್ವಯಿಸಿ ಪ್ರಕೃತಾರ್ಥವನ್ನು ಪೂರೈಸುವುದು ಎಂಬಲ್ಲಿ ಇದರ ಅನ್ವಯ.

**ಕಾಕಾಙ್ಗೀ ಕಾಕಾಂಗೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಕಜಂಘಾವೃಕ್ಷ, ಕಾಗೆ ತೊಂಡೆಗಿಡ. ಕಾಕಸ್ಯಾಙ್ಗಂ ಜಙ್ಘೇವಾಕಾರೋಽಸ್ಯಾಃ |

**ಕಾಕಾದನೀ ಕಾಕಾದನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗುಲಗಂಜಿಗಿಡ. 2. ಬಿಳಿ ಗುಲಗಂಜಿಗಿಡ. ಕಾಕೇರಘತೇ-ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ) “ಲ್ಯುಡ್” ಬಾಹುಂ |

**ಕಾಕಾರ ಕಾಕಾರ** (ವಿಂ) ನೀರನ್ನು ಎರಚುವ, ನೀರನ್ನು ಚೆಲ್ಲುವ. ಕಂ ಆಕಿರತಿ-ಆ + ಕ್ “ಅನ್” (೩-೨-೧) |

**ಕಾಕಾರಾತಿ ಕಾಕಾರಾತಿ** (ಪುಂ) ಕಾಗೆಯ ಶತ್ರು, ಗೂಬೆ. ಕಾಕಸ್ಯಾರಾತಿಃ |

**ಕಾಕಾರಿ ಕಾಕಾರಿ** (ಪುಂ) ಕಾಗೆಯ ಶತ್ರು, ಗೂಬೆ. ಕಾಕಸ್ಯಾರಿಃ |

**ಕಾಕಿ ಕಾಕಿ** (ಪುಂ) ಕಾಗೆಯ ಮರಿ. ಕಾಕಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ “ಇಜ್” (೪-೧-೧೫) |

**ಕಾಕಿಣಿ ಕಾಕಿಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕವಡೆ, ಕವಡೆಯ ನಾಣ್ಯ. 2. ಇಪ್ಪತ್ತು ಕವಡೆಗಳ ಬೆಲೆ ಬಾಳುವ ನಾಣ್ಯ. 3. ಒಂದು ಪಣದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. 4. ಒಂದು ಮೂಳ, 18 ಅಂಗುಲಗಳ ಅಳತೆಯ ಕೋಲು. 5. ಗುಲಗಂಜಿ. ಕಾಕಮ್ ಅಣತಿ — ಅಣ (ಶಬ್ದೇ) “ಅನ್” (೩-೨-೧) | ಪೃಷೋಂ | “ಕಾಕಿಣಿ ಪಣತುರ್ಯಾಶಿ ಮಾನದಂಡೇ ಚ ದೃಶ್ಯತೇ | ಕೃಷ್ಣಲೇಕವರಾಡಯೋಃ ಸ್ಯಾದುನ್ಮಾನಸ್ಯಾಂಶಕೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ |

**ಕಾಕಿನಿ ಕಾಕಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಣದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. 2. ಮಾಷಕದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. (5 ಗುಲಗಂಜಿಗಳ ತೂಕ ಒಂದು ಮಾಷಕ). 3. ಕವಡೆ. 4. ಗುಲಗಂಜಿ. ಕಾಕಮ್ ಅನತಿ-ಅನ (ಪ್ರಾಣನೇ) “ಅನ್” (೩-೨-೧) | ಪೃಷೋಂ | “ಕಾಕಿನಿ ಪಣಪಾದೇಽಪಿ ಮಾಷಪಾದೇ ವರಾಡಕೇ” ಮೇದಿಂ | “ಯಃ ಕಾಕಿನಿಮಪ್ಯಪಥಪ್ರಪನ್ನಾಂ ಸಮುದ್ರೇನ್ನಿಷ್ಕಸಹಸ್ರತುಲ್ಯಮ್” ಹಿತೋಂ ೩-೧೨೩ |

**ಕಾಕಿಲ ಕಾಕಿಲ** (ಪುಂ) ಕಂಠದ ಉನ್ನತ ಪ್ರದೇಶ, ಕುತ್ತಿಗೆಯ ಮೇಲು ಭಾಗ.



ಕಾಕಿ ಕಾಕೀ (ಪುಂ) 1. ಕಂಠದ ದೋಷ, ಕಂಠದಲ್ಲಿ ಹೊರ  
ಡುವ ಒಂದು ಕೆಟ್ಟ ಸ್ವರ, ಬಹಳ ತಗ್ಗಿದ ಸ್ವರ. "ಕಾಕಿ-  
ತ್ಯಾಘಾ: ಕಂಠದೋಷಾಸ್ತತ್ರ ನೃಲಿಂಗಕ:। ಅಗಮ್ಭೀರಸ್ವರ:"  
ವೇಜಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಹೆಣ್ಣು ಕಾಗೆ. ಕಾಕ ಜಾತಿಂ  
"ಡೀಫ್" (೪-೧-೬೩)। "ಕಾಕಯಾ ಕನಕಸುತೇಣ ಕೃಷ್ಣಸರ್ಪೋ  
ನಿಪಾತುತ:" ಹಿತಂ ೨-೧೨೦। 3. ಕಡುಪನ ಪತ್ನಿಯಾದ  
ತಾಮ್ರಯ ಮಗಳು, ಗೂಬೆಗಳ ತಾಯಿ. "ಕಾಕೀಂ ಶ್ಯೇನೀಂ  
ತಥಾ ಭಾಸೀಂ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರೀಂ ತಥಾ ಶುಕೀಮ್। ತಾಮ್ರಾ ತು ಸುಪು  
ದೇವೀ ಪಂಚತಾ ಲೋಕವಿಶ್ರುತಾ:। ತಲೂಕಾನ್ ಸುಪು ಕಾಕೀ"  
ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೬-೪೬, ೪೭। 4. ಗಣಕಗಿಡ.

ಕಾಕು ಕಾಕು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೋಪ ದುಃಖ ಭಯ ಇವುಗಳಿಂದ  
ವಿಕಾರಹೊಂದಿದ ಧ್ವನಿ. ಕಕ (ಲೌತ್ಯೋಪತಾಪಯೋ:) "ಉನ್"  
ಬಾಹುಂ। "ಕಾಕು: ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ವಿಕಾರೋ ಯ: ಶೋಕಭೀತ್ಯಾದಿಭಿ-  
ಧ್ವನೇ:" ಅಮಂ। "ಭಿನ್ನಕಂಠಧ್ವನಿರ್ಧೀರ: ಕಾಕುರೀತ್ಯಭಿ-  
ಧೀಯತೇ" ಸಾಂ ೬೦। "ಜಾತಪ್ರೀತಿಯಾ ಮಧುರೇಣಾನುವನಾಂತಂ  
ಕಾಮೇ ಕಾಂತೇ ಸಾರಸಿಕಾಕಾಕುಲೇನ" ಮಾಘಂ ೬-೭೬।  
2. ವಿರುದ್ಧಾರ್ಥವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ನಜ್ ಮೊದ  
ಲಾದುದು. 3. ಶೋಕಧ್ವನಿ, ವಿಲಾಪ.

ಕಾಕುತ್ಸ್ಯ ಕಾಕುತ್ಸ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಕಕುತ್ಸ್ಯ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ  
ದವನು, ಕಕುತ್ಸ್ಯ ರಾಜನ ವಂಶದವನು. ಕಕುತ್ಸ್ಯಸ್ಯ ಅಪತ್ಯಮ್  
"ಅನ್" (೪-೧-೧೧೨)। "ಇಕ್ಷ್ವಾಕುವಂಶ: ಕಕುತ್ಸ್ಯ ನೃಪಾಣಾಂ  
ಕಕುತ್ಸ್ಯ ಇತ್ಯಾಹಿತಲಕ್ಷಣೋಽಭೂತ್।" ಕಾಕುತ್ಸ್ಯಶಬ್ದಂ ಯತ  
ಉತ್ತೇಚ್ಛಾ: ಶ್ಲಾಘ್ಯಂ ದಧತ್ಯುತ್ತರಕೋಸಲೇಂದ್ರಾ:" ರಘುಂ ೬-೭೧।  
2. ಅಜ, ದಶರಥ, ಶ್ರೀರಾಮ, ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಮುಂತಾದವರು.  
"ಕಾಕುತ್ಸ್ಯಮಾಲೋಕಯತಾಂ ನೃಪಾಣಾಂ ಮನೋ ಬಭೂವೇಂದ್ರಮತೀನಿರಾಶಮ್"  
ರಘುಂ ೬-೨। "ಅಸಜ್ಜನೇನ ಕಾಕುತ್ಸ್ಯ: ಪ್ರಯುಕ್ತಮಥ ದೂಷಣಮ್।  
ನ ಚಕ್ಷಮೇ ಶುಭಾಚಾರ: ಸ ದೂಷಣಮಿವಾತ್ಮನ:" ರಘುಂ ೧೨-೪೬।  
(ಪುಂ ದ್ವಿವಂ) 3. ಶ್ರೀರಾಮ ಮತ್ತು ಲಕ್ಷ್ಮಣ. "ತಂ  
ವಿನಿಷ್ಠಿಷ್ಯ ಕಾಕುತ್ಸ್ಯೌ ಪುರಾ ದೂಷಯತಿ ಸ್ಥಳೀಮ್। ಗಂಧೇನಾ-  
ಶುಚಿನಾ ಚೇತಿ ವಸುಧಾयां ನಿವಹಂತು:" ರಘುಂ ೧೨-೩೦।

ಕಾಕುಡ ಕಾಕುಡ (ನಂ) ತಾಲುಪ್ರದೇಶ, ದವಡೆ. ಕಾಕು  
ದದಾತಿ - ಡು ದಾಜ್ (ದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೪)।

ಕಾಕೋದುಂಬರ ಕಾಕೋದುಂಬರ (ಪುಂ) ಕಲ್ಲು ತಿಗಿಡ,  
ಬ್ರಹ್ಮಮಂಡಿ. ಕಾಕಪ್ರಿಯ: ತುದುಂಬರ:। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"  
-ತುದುಂಬರಿಕಾ -ತುದುಂಬರಿಕಾ.

ಕಾಕೋದರ ಕಾಕೋದರ (ಪುಂ) ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಕುತ್ಸಿತಂ  
ಕುಟಲಂ ಅಕತಿ - ಅಕ (ಕುಟಲಾಯಾಂ ಗತೌ) "ಅಚ್"  
(೩-೧-೧೩೪)। ಕೋ: ಕಾದೇಶ:। ಕಾಕಮುದರಂ ಯಸ್ಯ।

ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೪೧)। ಕಾಕೋದರಿ  
ಕಾಕೋದರಿ.

ಕಾಕೋಲ ಕಾಕೋಲ (ಪುಂ) 1. ದೊಡ್ಡಜಾತಿಯ ಕಾಗೆ,  
ಮಂಡಕಾಗೆ. ಕಕ (ಲೌತ್ಯೇ) + ಣಿಚ್ "ಆಲಚ್" ಬಾಹುಂ।  
2. ಕುಂಬಾರ. ಕಂ ಜಲಮಾಕೋಲತಿ - ಆ + ಕುಲ (ಸಂಸ್ಥಾನೇ)  
"ಅನ್" (೩-೨-೧)। (ನಂ) 3. ಒಂದು ನರಕ. (ಪುಂಂ)  
4. ಎಜ್. "ಕಾಕೋಲಂ ನರಕಾಂತರೇ। ನಾ ಕುಲಾಲೇ ದ್ರೋಣಾಕೇ  
ವಿಷಭೇದೇ ತು ನ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ।

ಕಾಕೋಲೂಕ ಕಾಕೋಲೂಕ (ನಂ) ಕಾಗೆ ಮತ್ತು ಗೂಬೆ.  
ಕಾಕಶ್ಚ ತಲೂಕಶ್ಚ ಅನಯೋ: ಸಮಾಹಾರ:। "ಯೇಷಾಂ ಚ ವಿರೋಧ:  
ಶಾಶ್ವತಿಕ:" (೨-೪-೧)।

ಕಾಕೋಲೂಕಿಕಾ ಕಾಕೋಲೂಕಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಗೆ  
ಗೂಬೆಗಳ ವೈರ. ಕಾಕೋಲೂಕ "ವುನ್" (೪-೩-೧೨೪)।

ಕಾಕೋಲೂಕೀಯ ಕಾಕೋಲೂಕೀಯ (ನಂ) ಕಾಗೆ ಮತ್ತು  
ಗೂಬೆ ಇವುಗಳನ್ನು ಕುರಿತ ಗ್ರಂಥ (ಕಥೆ). ಕಾಕೋಲೂಕ-  
ಮಧಿಕೃತ್ಯ ಕೃತೌ ಗ್ರಂಥ: "ಛ:" (೪-೨-೧೧೪)।

ಕಾಕ ಕಾಕು (ಪುಂ) ಕಟಾಕ್ಷ, ಕಡೆಗಣ್ಣಿನ ನೋಟ. ಕುತ್ಸಿತಮ್  
ಅಕ್ಷಿ ಯಸ್ಯ "ಫಚ್" (೪-೪-೧೧೩)। ಕೋ: ಕಾದೇಶ:  
(೬-೩-೧೦೪)। "ಆಜ್ಞಾಲಾಭೋನ್ಮುಖೋ ದೂರಾತ್ ಕಾಕ್ಷೇಣಾ-  
ನಾದರೇಕ್ಷಿತ:" ಭट्टಿಂ ೪-೨೪।

ಕಾಕಿ-ಕಾಡ್ಕಾಯಾಮ್ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) ಕಾಡ್ಕತಿ।  
ಚಕಾಡ್ಕ। ಅಕಾಡ್ಕಿತ್। ಅಪೇಕ್ಷಿಸು, ಬಯಸು.  
"ವೃಕ್ಷಾಂತರಂ ಕಾಡ್ಕತಿ ಷಡ್ಪದಾಲಿ" ರಘುಂ ೬-೬೯। "ಯೋ  
ನ ಹೃಷ್ಯತಿ ನ ದ್ವೇಷ್ತಿ ನ ಶೋಚತಿ ನ ಕಾಡ್ಕತಿ" ಗೀತಾ  
೧೨-೧೭।

ಕರ್ಮಣಿ: ಕಾಡ್ಕಯತೇ। ಚಕಾಡ್ಕೇ। ಕಾಡ್ಕಿತಾ।  
ಕಾಡ್ಕಯತಾಮ್। ಅಕಾಡ್ಕಿ। ಅಕಾಡ್ಕಿಷ್ಯತ।

ಣಿಚಿ: ಕಾಡ್ಕಯತಿ, -ತೇ। ಕಾಡ್ಕಯಾಚ್ಚಕಾರ, -  
ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಕಾಡ್ಕಯಿತಾ। ಕಾಡ್ಕಯತು, -  
ತಾಮ್। ಅಕಾಡ್ಕಯತ್, -ತ। ಅಚಕಾಡ್ಕಯತ್, -ತ।

ಸನಿ: ಚಿಕಾಡ್ಕತಿ। ಚಿಕಾಡ್ಕಿಷಾಂಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -  
ಆಸ। ಚಿಕಾಡ್ಕಿಷಿತಾ। ಚಿಕಾಡ್ಕಿಷಿತು। ಅಚಿ-  
ಕಾಡ್ಕಿಷತ್। ಅಚಿಕಾಡ್ಕಿಷಿತ್।

ಕುತ್ಸು: ಕಾಡ್ಕಿತವ್ಯ:। ಕಾಡ್ಕಿಣೀಯ:। ಕಾಡ್ಕಯ:।  
ಕಾಡ್ಕಿತ:। ಕಾಡ್ಕಿತವಾನ್। ಕಾಡ್ಕನ್, ಕಾಡ್ಕಂತಿ।  
ಕಾಡ್ಕಿತುಮ್। ಕಡ್ಕಿತಮ್। ಕಾಡ್ಕಿಣಮ್। ಕಾಡ್ಕಿತವಾ।  
ಅಕಾಡ್ಕಯ:। ಕಾಡ್ಕಿಂಕಾಡ್ಕಮ್। ಕಾಡ್ಕಿತವಾ ಕಾಡ್ಕಿತವಾ।



ಪ್ಯಂತಾತ್ ಕೃತುಃ ಕಾಡ್ಕಿವಿತವ್ಯಃ। ಕಾಡ್ಕಿಣೀಯಃ।  
ಕಾಡ್ಕಿಃ। ಕಾಡ್ಕಿತಃ। ಕಾಡ್ಕಿತವಾನ್। ಕಾಡ್ಕಿಯನ್,  
ಕಾಡ್ಕಿಯಂತಿ। ಕಾಡ್ಕಿಯಮಾಣಃ। ಕಾಡ್ಕಿಯಿತುಮ್।  
ಕಾಡ್ಕಿತಮ್। ಕಾಡ್ಕಿಣಮ್। ಕಾಡ್ಕಿಯಿತ್ವಾ। ಆಕಾಡ್ಕಿಃ।  
ಕಾಡ್ಕಿಕಾಡ್ಕಿಮ್। ಕಾಡ್ಕಿಯಿತ್ವಾ ಕಾಡ್ಕಿಯಿತ್ವಾ।

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

- (1) ಅಭಿ + ಕಾಡ್ಕಿ = ಅಭಿಕಾಡ್ಕಿತಿ। ಎದುರಾಗಿ ನಿಂತು  
ಅಪೇಕ್ಷಿಸು. "ಅತೀತಮಭಿಕಾಡ್ಕಾಮಿ ಮೃಗಯಾಂ ಸರಯುವನೇ"  
ರಾಮಾಂ।
- (2) ಆ + ಕಾಡ್ಕಿ = ಆಕಾಡ್ಕಿತಿ। ಆಚಕಾಡ್ಕಿ। ಚೆನ್ನಾಗಿ  
ಅಪೇಕ್ಷಿಸು. "ಶ್ರೀಃ ಸಾಭಿಲಾಪಾಪಿ ಗುರೋರುಜಾಂ ಧೀರೇವ ಕನ್ಯಾ  
ಪಿತುರಾಚಕಾಡ್ಕಿ" ರಘುಂ ೪-೩೮।
- (3) ಪ್ರತಿ + ಕಾಡ್ಕಿ = ಪ್ರತಿಕಾಡ್ಕಿತಿ। ಎದುರು ನೋಡು.  
"ತ್ವಾಮೇವ ಪ್ರತಿಕಾಡ್ಕಂತಿ ಪರ್ಜನ್ಯಮಿವ ಕರ್ಷಕಾಃ" ರಾಮಾಂ।

ಕಾಶಿ ಕಾಡ್ಕಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತೋಗಿಗಿಡ. ಕಕ್ಷೆ ಭವಾ  
"ಅಣ್" (೪-೩-೪೩)। "ಕಾಶಿ ಮೃತ್ಸನಾ ತುವರಿಕಾ"  
ಅಮಂ। 2. ಸೌರಾಷ್ಟ್ರದೊಡ್ಡ ಮಣ್ಣು. "ಕಾಶಿ  
ತುವರಿಕಾಯಾಂ ಚ ಸೌರಾಷ್ಟ್ರಮೃದ್ವಪಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ।

ಕಾಶಿವ ಕಾಡ್ಕಿ (ಪುಂ) 1. ನಾಗ್ಗಿ ಗಿಡ. ಇಪ್ಪತ್  
ಕ್ಷಿಬಯತಿ-ಕ್ಷಿಬ್ (ಮದೆ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।  
2. ಗೌತಮನಿಂದ ಔತನದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಮಗ. "ಶೂದ್ರಾಯಾಂ  
ಗೌತಮೋ ಯತ್ರ ಮಹಾತ್ಮಾ ಸಂಶಿತವ್ರತಃ। ಅಶಿನಯಾಮಿಜನಯತ್  
ಕಾಶಿವಾಚಾನ್ ಸುತಾನ್ ಮುನಿಃ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೨೧-೪।

ಕಾಶಿವತ್ ಕಾಡ್ಕಿ (ಪುಂ) 1. ದೀರ್ಘತಮಸ್ಸಂಜೆ  
ಯುಷಿಯಿಂದ ಶೂದ್ರಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಮಗ.  
[ಎವರಕ್ಕೆ "ದೀರ್ಘತಮಸ್" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ] ಭಾಂ ಆದಿಂ  
೧೧೩। 2. ಚಂಡಕೌಶಿಕನ ತಂದೆಯಾದ ಗೌತಮಯುಷಿ.  
"ಅಥ ಕಾಶಿವತಃ ಪುತ್ರಂ ಗೌತಮಸ್ಯ ಮಹಾತ್ಮನಃ। ಶುಶ್ರಾವ  
ತಪಸಿ ಶ್ರೇಷ್ಠಮುದಾರಂ ಚಂಡಕೌಶಿಕಮ್" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೧೭।

ಕಾಗ ಕಾಗ (ಪುಂ) ಕಾಗೆ, ವಾಯಸ್. ಕೆತಿ ಶಬ್ದ ಗಾಯತಿ -  
ಗೈ (ಶಬ್ದ) "ಕಃ" (೩-೨-೪)।

ಕಾಗದ ಕಾಗದ (ನಂ) ಕಾಗದ, ಲೇಖನದ ಆಧಾರ,  
ಬರವಣಿಗೆಯ ಪತ್ರ. ಕಾಗಃ ಕಾಗವರ್ಣೋ ಮಸ್ಯಾದಿ-  
ದೀಯತೇಽತ್ರ + ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೪೮)।  
"ಭೂರ್ಜೇ ವಾ ವಸನೇ ರಕ್ತೇ ಕ್ಷೌಮೇ ವಾ ತಾಲಪತ್ರಕೇ। ಕಾಗದೇ  
ವಾಷ್ಟಗಂಧೇನ ಪಂಚಗಂಧೇನ ವಾ ಪುನಃ। ತ್ರಿಗಂಧೇನೈಕಗಂಧೇನ  
ವಿಲಿಖ್ಯ ಧಾರಯೇನ್ನರಃ" ಇತಿ ಮನ್ತ್ರಕಲ್ಪದ್ರುಮಃ।

ಕಾಗಿನ ಕಾಗ್ನಿ (ಪುಂ) 1. ಸ್ವಲ್ಪವಾದ ಅಗ್ನಿ. ಇಪದಗ್ನಿಃ -  
ಕೋಃ ಕಾದೇಶಃ (೬-೩-೧೦೪)।

ಕಾಡ್ಕಿಣ ಕಾಂಕ್ಷಿಣ (ನಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವಿಕೆ. ಕಾಡ್ಕಿ  
(ಕಾಡ್ಕಿಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।

ಕಾಡ್ಕಿಣೀಯ ಕಾಂಕ್ಷಿಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲು  
ಶಕ್ತವಾದ. ಕಾಡ್ಕಿ (ಕಾಡ್ಕಿಯಾಮ್) ಕರ್ಮಂ ಅರ್ಹಾದೌ ಚ  
"ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)।

ಕಾಡ್ಕಿತ್ ಕಾಂಕ್ಷಿತ್ (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಕಾಡ್ಕಿ  
(ಕಾಡ್ಕಿಯಾಮ್) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಕಾಡ್ಕಿಂತಃ  
ಕರ್ಮಣಾಂ ಸಿದ್ಧಿಂ ಯಜಂತ ಇಹ ದೇವತಾಃ" ಗೀತಾ ೪-೧೨।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। ಕಾಡ್ಕಿಂತಿ ಕಾಂಕ್ಷಿಂತೀ.  
"ಯೋ ಧರ್ಮಃ ಏಕಪತ್ನೀನಾಂ ಕಾಡ್ಕಿಂತಿ ತಮನುತ್ತಮಮ್" ಮನುಂ  
೪-೧೪೮।

ಕಾಡ್ಕಿ ಕಾಂಕ್ಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ, ಬಯಕೆ.  
ಕಾಡ್ಕಿ (ಕಾಡ್ಕಿಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩)।  
"ಉದ್ಗಾರಶುಭಾವಪಿ ಭಕ್ತಕಾಡ್ಕಿ ನ ಜಾಯತೇ ಹೃದ್ಗುರುತಾ ಚ  
ಯಸ್ಯ" ಸುಶ್ರುತಂ।

ಕಾಡ್ಕಿತ ಕಾಂಕ್ಷಿತ (ನಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಬಯಕೆ,  
ಅಭಿಲಾಷೆ, ಮನೋರಥ. ಕಾಡ್ಕಿ(ಕಾಡ್ಕಿಯಾಮ್) ಭಾವೇ  
"ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। "ಸದ್ವಾ ಏವ ಸುಕೃತಾಂ ಹಿ ಪಚ್ಯತೇ  
ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷಫಲಧರ್ಮಿ ಕಾಡ್ಕಿತಮ್" ರಘುಂ ೧೧-೪೦। "ನ  
ತಾವತಾ ಲಭ್ಯಮಮಸ್ತ ಕಾಡ್ಕಿತಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೧೮।  
(ವಿಂ) 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕಾಡ್ಕಿ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ"  
(೩-೨-೧೦೨)।

ಕಾಡ್ಕಿತವತ್ ಕಾಂಕ್ಷಿತವತ್ (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದವನು,  
ಬಯಸಿದವನು. ಕಾಡ್ಕಿ (ಕಾಡ್ಕಿಯಾಮ್) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತವತುಃ"  
(೩-೨-೧೦೨)।

ಕಾಡ್ಕಿತವ್ಯ ಕಾಂಕ್ಷಿತವ್ಯ (ವಿಂ) ಅಪಶ್ಯವಾಗಿ ಅಪೇಕ್ಷೆ  
ಸಲ್ಪಡುವ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ. ಕಾಡ್ಕಿ (ಕಾಡ್ಕಿಯಾಮ್)  
"ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬)।

ಕಾಡ್ಕಿನ್ ಕಾಂಕ್ಷಿನ್ (ವಿಂ) ಅಭಿಲಾಷೆಯುಳ್ಳ, ಅಪೇಕ್ಷೆ  
ಸುವ. ಕಾಡ್ಕಿತೇ - ಕಾಡ್ಕಿ (ಕಾಡ್ಕಿಯಾಮ್) "ಣಿನಿಃ"  
(೩-೧-೧೩೪)। "ದೇವಾ ಅಪ್ಯಸ್ಯ ರೂಪಸ್ಯ ನಿಯಂ ದರ್ಶನ-  
ಕಾಡ್ಕಿಣಃ" ಗೀತಾ ೧೧-೪೨।

ಕಾಡ್ಕಿಚ ಕಾಂಕ್ಷಿಚ (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ,  
ಕಾಡ್ಕಿ (ಕಾಡ್ಕಿಯಾಮ್) "ಣ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)।



ಕಾಡ್ಕುಷಮಾಣ ಕಾಂಕ್ಷ್ಯಮಾಣ (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷೆ ಸಲ್ಪಡುವ. ಕಾಕ್ಷಿ (ಕಾಡ್ಕುಷಾಮ್) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)।

ಕಾಜ್ಜಿ ಕಾಂಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕವಡೆ. ಕುತ್ಸಿತಮಜ್ಜಮಸ್ಯಾಃ।  
ಕಾಚ ಕಾಚೆ (ಪುಂ) 1. ಗಾಜು. ಕಚ (ಬನ್ಧನೆ) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಕಾಚ: ಕಾಚನಸಂಸರ್ಗಾದಿತ್ತೇ ಮಾರಕತೀ ಛುತಿಮ್" ಹಿತೋಂ ೪೨। 2. ಶಿಕ್ಕ, ಕಾವಡಿಯ ನಿಲುವು. ಕಚ್ಯತೇಽತ್ರ - ಕಚ (ಬನ್ಧನೆ) "ಘತ್" (೩-೩-೧೨೧)। 3. ಒಂದು ವಿಧ ನೇತ್ರರೋಗ. "ಚಂದ್ರಾದಿತ್ಯೌ ಸನಕ್ಷತ್ರೌ ಅಂತರिक्षೇ ಚ ವಿಚ್ಛುತಃ। ನಿರ್ಮಲಾನಿ ಚ ತೇಜಾಸಿ ಭ್ರಾಜಿಷ್ಣುನಿ ಚ ಪಶ್ಯತಿ। ಸ ಏವ ಲಿಙ್ಗನಾಶಸ್ತು ನೀಲಿಕಾ ಕಾಚಸಂಜಿತಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರತಂ ೭। 4. ಗಾಜಿನ ಮಣಿ. 5. ಉಪ್ಪುಮಣ್ಣು, ಚೌಳುಮಣ್ಣು. "ಕಾಚೋಕ್ಷಿರೋಗೇ ಮಣೌ ಮೃದಿ" ಹೇಮಂ। ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕನ್"। -ಕ: -ಕೆ.

ಕಾಚನ ಕಾಚನ (ನಂ) 1. ಪುಸ್ತಕ ಹಸ್ತಲಿಖಿತ ಪತ್ರಗಳು ಮುಂತಾದುವನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ದಾರ, ಕಿರಿಯಗಲದ ಬಟ್ಟೆಯ ಪಟ್ಟಿ. ಕಚ (ಬನ್ಧನೆ) + ಣಿಕ್ ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭)। 2. ಪುಸ್ತಕಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟಿಸುವಿಕೆ. ಕಚ + ಣಿಕ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। (ಅವ್ಯಂ) 3. ಯಾವಳೋ ಒಬ್ಬ ಹೆಂಗಸು, ಒಬ್ಬ ಅನಿರ್ದಿಷ್ಟ ಮಹಿಳೆ. ಕಾ + ಚನ। "ಪುನಃ ಪುನಃ ಕಾಚನ ಕುರ್ವತೀ ಕಚ್ಛಡಾಧಿಯಾ ಭೂಪಜಭೂಪಸಂಯಮಮ್" ನೈಷಂ ೧೫-೩೦। ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕನ್"। -ನಕಮ್ -ನಕಮ್. "ಲೇಖೋ ನಿಬಂಧ್ಯತೇ ಯೇನ ತತ್ರ ಕಾಚನಕಾಭಿಧಾ" ಹಾರಾಂ।

ಕಾಚನಕಿನ್ ಕಾಚನಕಿನ್ (ಪುಂ) ಬರೆಯುವ ಕಾಗದ, ಲೇಖಪತ್ರ. ಕಾಚನಕಮಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫)।

ಕಾಚಭಾಜನ ಕಾಚಭಾಜನ (ನಂ) ಗಾಜಿನ ಪಾತ್ರೆ. ಕಾಚಮಯ ಭಾಜನಮ್।

ಕಾಚಮಣಿ ಕಾಚಮಣಿ (ಪುಂ) ಗಾಜಿನ ಮಣಿ. ಕಾಚಸ್ಯ ಮಣಿಃ। "ಆಕರೇ ಪದ್ಮರಾಗಾಣಾಂ ಜನ್ಮ ಕಾಚಮಣಿಃ ಕುತಃ" ಹಿತೋಂ ೪೫।

ಕಾಚಮಲ ಕಾಚಮಲ (ನಂ) ಸೌವರ್ಚಲ ಲವಣ, ಚೌಳು ಮಣ್ಣಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಉಪ್ಪು. ಕಾಚಸ್ಯ ಕ್ಷಾರ-ಮೃತ್ತಿಕಾಯಾ ಮಲ ಇವ।

ಕಾಚಲವಣ ಕಾಚಲವಣ (ನಂ) ಸೌವರ್ಚಲ ಲವಣ, ಕ್ಷಾರಮೃತ್ತಿಕೆಯ ಲವಣ.

ಕಾಚಸ್ಥಾಲಿ ಕಾಚಸ್ಥಾಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಾಜಿನ ಪಾತ್ರೆ. ಕಾಚಸ್ಯ ಸ್ಥಾಲಿ। 2. ಹಸುರುಪಾದರಿ ಗಿಡ. "ಪಾಟಲಿಃ ಪಾಟಲಾಮೋಘಾ ಕಾಚಸ್ಥಾಲಿ ಫಲೇಹಾ" ಅಮಂ।

ಕಾಚಾಕ್ಷ ಕಾಚಾಕ್ಷ (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಬಕಪಕ್ಷಿ. ಕಾಚ ಇವಾಕ್ಷಿ ಯಸ್ಯ "ಷಕ್" (೫-೪-೧೧೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧)। -ಕ್ಷಿ -ಕ್ಷೀ.

ಕಾಚಿ-ದೀಪ್ತೌ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) ಕಾಚತೇ। ಚಕಾಚ್ವೇ। ಅಕಾಚ್ವಿಷ್ಟ। ಇತ್ಯಾದಿ. ಪ್ರಕಾಶಿಸು. ಹೊಳೆ.

ಕಾಚಿಘ ಕಾಚಿಘ (ಪುಂ) 1. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 2. ಮೂಷಕ, ಇಲಿ. 3. ದ್ವಿದಳ ಧಾನ್ಯದ ಕಾಯಿ, ಬೀಜಕೋಶ, ಅವರೆ, ತೊಗರಿ, ಬಟಾಣಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಕಾಯಿ. "ಕಾಚಿಘ: ಕಾಚ್ವನೇಽಪಿ ಸ್ಯಾಚ್ಛೇಮಣ್ಡೇ ಮೂಷಕೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ।

ಕಾಚಿತ್ ಕಾಚಿತ್ (ಅವ್ಯಂ) ಯಾವಳೋ ಒಬ್ಬಳು, ಒಬ್ಬ ಅನಿರ್ದಿಷ್ಟ ಹೆಂಗಸು. ಕಾ + ಚಿತ್। "ಅಧಿವಿದಪಿ ಸಲೀಲಮಗ್ರಪುಷ್ಪಗ್ರಹಣಪದೇನ ಚಿರಂ ವೀಲಮ್ಯ ಕಾಚಿತ್" ಮಾಘಂ ೭-೩೫।

ಕಾಚಿತ ಕಾಚಿತ (ವಿಂ) ಶಿಕ್ಕದಲ್ಲಿ ಏರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಾವಡಿಯ ನಿಲುವಿನಲ್ಲಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕಚ (ಬನ್ಧನೆ) ಅಧಿಂ "ಘತ್" (೩-೩-೧೨೧)। ಕಾಚೇ, ಧೃತಮ್ + ಣಿಕ್ (ಚುರಾಂ ಗಂ. ೨೦೩) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಕಾಚಿಮ ಕಾಚಿಮ (ಪುಂ) ದೇವಾಲಯದ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಮರ.

ಕಾಚ್ಚುಕ ಕಾಚ್ಚುಕ (ಪುಂ) 1. ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ. 2. ಚಕ್ರವಾಕ ಪಕ್ಷಿ. ಕಚ (ಬನ್ಧನೆ) "ಁಕಃ" (೩-೪-೪೧)। ನಿಪಾಂ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। -ಕಿ -ಕೀ.

ಕಾಚ್ಚನ ಕಾಚ್ಚನ (ಪುಂ) 1. ಚಂಪಕವೃಕ್ಷ, ಸಂಪಿಗೆಮರ. 2. ದತ್ತೂರಿ ಗಿಡ. 3. ಉದುಂಬರವೃಕ್ಷ, ಅತ್ತಿಮರ. ಕಾಚಿ (ದೀಪ್ತೌ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)। 4. ಕೋವಿದಾರವೃಕ್ಷ, ಕೆಂಗಾಂಚಾಳದ ಗಿಡ. 5. ನಾಗಕೇಸರ ವೃಕ್ಷ. 6. ಪುನ್ನಾಗವೃಕ್ಷ, ಸುರಗಿ ಗಿಡ. (ನಂ) 7. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. "ತಸ್ಯೋಲ್ಲಸತ್ಕಾಚ್ಚನಕುಂಡಲಾಗ್ರಪ್ರತ್ಯುಪ್ತ-ಗಾರ್ಹಮತರತ್ನಮಾಸಾ" ಮಾಘಂ ೩-೫। 8. ದೀಪ್ತಿ, ಕಾಂತಿ. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 9. ಧನ, ಸಂಪತ್ತು. (ವಿಂ) 10. ಸುವರ್ಣದಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಿನ್ನದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸ ಕಾಚ್ವನೇ ಯತ್ರ ಮುನೇರನುಜಯಾ ನವಾಮ್ಬುದ-ಶ್ಯಾಮವಪುರ್ಯವಿಕ್ಷತ" ಮಾಘಂ ೧-೧೯। 11. ಕಮಲದ ಕೇಸರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನೀ -ನೀ. 12. ಹರಿದ್ರೆ, ಅರಿಶಿನ 13. ಗೋರೋಚನ. 14. ಅರಿದಳ. "ಕಾಚ್ವನಂ ಹೇಮಿನಿ



ಕಿಂಜಲ್ಕೆ ಕಾಂಚನೋ ನಾಗಕೇಸರೇ। ತುಡುಂಬರೇ ಕಾಂಚನಾರೇ  
ಪುಣ್ಣಾಗೇ ವಂಪಕೇರ್ಪಿ ಚ। ಕಾಂಚನೀ ತು ಹರಿದ್ರಾಯಾಮ್” ಹೇಮಂ।  
“ಕಾಂಚನಃ ಕಾಂಚನಾರೇ ಸ್ಯಾಂವಂಪಕೇ ನಾಗಕೇಸರೇ। ತುಡುಂಬರೇ  
ಚ ತತ್ತುರೇ ಹರಿದ್ರಾಯಾಂ ಚ ಕಾಂಚನೀ। ಕಲಿಬೇಜ್ಜಕೇಸರೇ ಹೇಮಿ”  
ಮೇದಿಂ। ಸ್ವಾರ್ಯೆ “ಕನ್”। ಕಾಂಚನಕಃ ಕಾಂಚನಕಃ.

ಕಾಂಚನಕದಲಿ ಕಾಂಚನಕದಳೇ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು  
ಜಾತಿಯ ಬಾಳೆಗಿಡ.

ಕಾಂಚನಕಂದರ ಕಾಂಚನಕಂದರ (ಪುಂ) ಚೆನ್ನದ ಗಣ.  
ಕಾಂಚನಸ್ಯ ಕಂದರಃ।

ಕಾಂಚನಕಾರಿಣಿ ಕಾಂಚನಕಾರಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
ಶತಮೂಲೀಃ ಗಿಡ. ಶತಾವರೀಃ ಗಿಡ. ಕಾಂಚನಂ ದೀಪ್ತಿ  
ಕರೋತಿ - ತು ಕೃನ್ (ಕರಣ) “ಣಿನಿಃ” (೩-೧-೧೩೪)।

ಕಾಂಚನಗಿರಿ ಕಾಂಚನಗಿರಿ (ಪುಂ) ಸುಮೇರು ಪರ್ವತ.  
ಕಾಂಚನಪ್ರಧಾನೋ ಗಿರಿಃ।

ಕಾಂಚನಪ್ರಭ ಕಾಂಚನಪ್ರಭ (ಪುಂ) 1. ಐಲರಾಜನ  
ವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. (ವಿಂ) 2. ಚೆನ್ನದಂತೆ ಪ್ರಕಾಶ  
ವುಳ್ಳ. ಕಾಂಚನಸ್ಯೇವ ಪ್ರಭಾ ಯಸ್ಯ।

ಕಾಂಚನಾಕ್ಷ ಕಾಂಚನಾಕ್ಷ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ದಾನವ.  
“ಕಾಂಚನಾಕ್ಷಃ ಕಪಿಸ್ಕಂಧೋ ವ್ಯಾಘ್ರಾಕ್ಷಃ ಕ್ಷಿತಿಕಲ್ಪನಃ”  
ಹರಿವಂ.।

ಕಾಂಚನಾರ ಕಾಂಚನಾರ (ಪುಂ) ಕೆಂಗಾಂಚಾಳದ ಗಿಡ.  
ಕೋವಿದಾರ ವೃಕ್ಷ.

ಕಾಂಚನೀ ಕಾಂಚನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅರಿಶಿನ. 2. ಅರಿದಳ.  
3. ಗೋರೋಚನ. ಕಾಂಚನೇಜಯಾ - ಕಾಚಿ (ದೀಪ್ತಾ)  
ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)। “ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೫)।

ಕಾಂಚಿಕ ಕಾಂಚಿಕ (ನಂ) ಅಂಬಲಿ, ಗಂಜಿ.

ಕಾಂಚಿಧಾಮನ್ ಕಾಂಚಿಧಾಮನ್ (ನಂ) ಜಘನ, ಹೆಂಗಸರ  
ಸೊಂಟದ ಮುಂಭಾಗ. ಕಾಂಚಿಧಾಃ ಧಾಮ। “ಕಾಂಚಿಧಾಮಿನಿ  
ಪಿಹಿತೇಕತರೋ” ಮಾಘಂ ೧೦-೮೩।

ಕಾಂಚಿ ಕಾಂಚಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಡಾಬು, ಒಡ್ಡಾಣ. ಕಾಚಿ  
(ದೀಪ್ತಿಬಂಧನಯೋಃ) “ಇನ್” (೩ಂ ೪-೧೧೭)। ವಾ  
“ಡೀಪ್” (ಗಂ ೪-೧-೪೫)। ಪಕ್ಷೆ ಕಾಂಚಿ ಕಾಂಚಿ.  
“ವಿಧಾಯಿಕಾ ಶಬ್ದಪರಂಪರಾಣಾಂ ಕಿಂ ಚಾರಚಿ ವ್ಯಾಕರಣೇನ  
ಕಾಂಚಿ” ನೆಪಂ ೧೦-೭೮। 2. ಕಾಂಚೀನಗರ, ಮೋಕ್ಷ  
ಪ್ರದವಾದ ಏಳು ಪಟ್ಟಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. “ಅಯೋಧ್ಯಾ ಮಥುರಾ  
ಮಾಯಾ ಕಾಶಿ ಕಾಂಚಿರವಂತಿಕಾ। ಪುರಿ ದ್ವಾರವತಿ ಚೈವ  
ಸಪ್ತೇತಾ ಮೋಕ್ಷದಾಯಿಕಾಃ”।

ಕಾಂಚಿನಗರ ಕಾಂಚೀನಗರ - ಪುರ - ಪುರ (ನಂ) ಕಾಂಚಿ  
ಯೆಂಬ ಒಂದು ಪಟ್ಟಣ. “ಪ್ರಸಹ್ಯ ಕಾಂಚಿಪುರಭೂಪುರಂದರಃ”  
ನೆಪಂ ೧೨-೩೩।

ಕಾಂಚಿಪದ ಕಾಂಚೀಪದ (ನಂ) ಡಾಬಿನ ಜಾಗ, ಒಡ್ಡಾಣ  
ಹಾಕುವ ಸ್ಥಾನ, ಸ್ತ್ರೀಯರ ಸೊಂಟದ ಮುಂಭಾಗ.  
ಕಾಂಚಿಃ ಪದಮ್।

ಕಾಂಚಿಕ ಕಾಂಚಿಕ (ನಂ) 1. ಅಂಬಲಿ, ಗಂಜಿ. ಅಂಜು  
(ವ್ಯಕ್ತಿಯಾದ) “ಫುಲ್” (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮)। ಕೆ  
ಅಂಜಿಕಾಸ್ಯ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಸೀಹಾಲೆ ಗಿಡ.

ಕಾಂ ಕಾಂ (ಪುಂ) 1. ಕೂಪ, ಬಾವಿ. ಕಂ ಜಲಮತಯತೇ  
ಪ್ರಾಪ್ಯತೇಶ್ಚ ಅತಃ (ಗತೌ) “ಘನ್” (೩-೩-೧೨೧)।  
2. ಇಕ್ಕಟ್ಟಾದ ದಾರಿ.

ಕಾಂವ ಕಾಂವ (ನಂ) ತೀಕ್ಷ್ಣತೆ. ಕಾಂವಾರ್ವಃ “ಅನ್”  
(೫-೧-೧೨೨)।

ಕಾಂವ ಕಾಂವ (ವಿಂ) 1. ಬಾವಿಯಲ್ಲಿರುವ. 2.  
ಇಕ್ಕಟ್ಟಾದ ದಾರಿಯಲ್ಲಿರುವ. ಕಾಂವ ಭವಃ “ಯತ್”।

ಕಾಂ ಕಾಂ (ಪುಂ) 1. ಬಂಡೆ, ದೊಡ್ಡ ಕಲ್ಲು. (ವಿಂ)  
2. ಕಂಸಂಬಂಧವಾದ. ಕಾಂಸೇದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦)।

ಕಾಂಕ ಕಾಂಕ (ನಂ) 1. ಕಂಠಾಭಾಷ್ಯಾಯಿಯ ಧರ್ಮ.  
2. ಕಂಠಾಭಾಷ್ಯಾಯಿಯ ವೇದಾಭಾಷ್ಯ. ಕಾಂಕಾಂ ಧರ್ಮಃ  
ಅಮ್ನಾಯೋ ವಾ “ಫುಲ್” (ವಾಂ ೪-೩-೧೨೬)। 3.  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣದ ಒಂದು ಭಾಗ.

ಕಾಂಕ ಕಾಂಕ (ನಂ) 1. ಕಂಠವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಗಟ್ಟಿ  
ಯಾಗಿರುವಿಕೆ. 2. ದೃಢವಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ಕಷ್ಟವಾಗಿರು  
ವಿಕೆ. ಕಾಂಕಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಫುಲ್” (೫-೧-೧೨೪)।

ಕಾಂಕಪಲ ಕಾಂಕಪಲ (ಪುಂ) ಬೇಲದ ಮರ. ಕಾಂಕಪಲಃ  
ಪಲೇಶ್ಚ.

ಕಾಣ ಕಾಣ (ಪುಂ) 1. ಕಾಗೆ, ವಾಯಸ. ಕಾಣ (ನಿಮಿಲನೇ)  
“ಘನ್” (೩-೩-೧೨೧)। ಕಾಣಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಅಚ್”  
(೫-೨-೧೨೭)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ “ಡೀಪ್”  
(೪-೧-೬೩)। -ಣಿ -ಣೀ. (ನಂ) 2. ಕುರುಡಾದ  
ಒಂದು ಕಣ್ಣು. (ವಿಂ) 3. ಒಂದು ನೇತ್ರವುಳ್ಳವನು,  
ಒಕ್ಕಣ್ಣುಳ್ಳವನು. ಅಕ್ಷಣಾ ಕಾಣಃ। “ಕಾಂಚಿ ವಾ ಯದಿ ವಾ  
ಕಾಣೋ ದಾತುಃ ಪ್ರೇಷ್ಯೋಽಪಿ ವಾ ಭವೇತ್। ಹೀನಾತಿರಿಕ್ತಗಾತ್ರೋ ವಾ  
ತಮಪ್ಯಪಮಯೇತ್ಪುನಃ” ಮನುಂ ೩-೨೪೨। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ಣಾ- ಕಾಂ.  
“ಕಾಣಃ ಕಾಂಕೇಕವಕ್ಷುಣೋಃ” ಮೇದಿಂ।



**ಕಾಣಭೂತಿ ಕಾಣಭೂತಿ** (ಪುಂ) ಕುಬೇರನ ಶಾಪದಿಂದ ಪಿಶಾಚತ್ವವನ್ನು ಹೊಂದಿದ ಒಬ್ಬ ಯಕ್ಷ. “ವಿನ್ಯಾಟವ್ಯಾ ಕುಬೇರಸ್ಯ ಶಾಪಾತ್ ಪ್ರಪ್ತಃ ಪಿಶಾಚತಾಮ್ | ಸುಪ್ರತೀಕಾಮಿಧೌ ಯಕ್ಷಃ ಕಾಣಭೂತ್ಯಾಪ್ಯಯಾ ಸ್ಥಿತಃ” ಬೃಹತ್ |

**ಕಾಣಾದ ಕಾಣಾದ** (ವಿಂ) 1. ಕಣಾದ ಮಹರ್ಷಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಕಣಾದ ಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಪ್ರೋಕ್ಷವಾದ. 2. ಕಣಾದ ಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಪ್ರೋಕ್ಷವಾದುದನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು. ಕಣಾದೇನ ಪ್ರೋಕ್ಷಮ್ ತದಧೀತೇ ವಾ |

**ಕಾಣೂಕ ಕಾಣೂಕ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಗೆ, ವಾಯಸ. 2. ನೀಜಗದ ಹಕ್ಕಿ. ಕಣ (ನಿಮಿಲನೆ) “ಝಕಣ್” (ಉಂ ೪-೩೯) |

**ಕಾಣೇಯ ಕಾಣೇಯ** (ಪುಂ) ಕುರುಡಿಯ ಮಗ, ಒಂದು ಕಣ್ಣುಳ್ಳವಳ ಮಗ. ಕಾಣಾಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ “ಠಕ್” (೪-೧-೧೨೦) | ವಾ “ಠಕ್” (೪-೧-೧೩೧) | **ಕಾಣೇರಃ ಕಾಣೇರಃ**.

**ಕಾಣೇಲಿ ಕಾಣೇಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮದುವೆಯಾಗದ ಕನ್ಯೆ, ವಿವಾಹವಿಲ್ಲದ ಹೆಂಗಸು. 2. ಜಾರಸ್ತ್ರೀ.

**ಕಾಂಡ ಕಾಂಡ** (ಪುಂ) 1. ಮಾನದಂಡ, ಅಳತೆಕೋಲು. ಕಮ (ಕಾಂತಿ) “ಠಃ” (ಉಂ ೧-೧೧೧) | ದೀರ್ಘಃ (೬-೪-೧೧೫) | 2. ಬಾಣ, ಅಂಚು, ಶರ. 3. ಮರದ ದೂಲ, ಮರದ ರೆಂಬೆಯಿಲ್ಲದ ಕೆಳಭಾಗ. 4. ಗ್ರಂಥದ ಒಂದು ಭಾಗ, ಅಧ್ಯಾಯ. ರಾಮಾಯಣದ ಬಾಲಕಾಂಡ, ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡ ಮುಂತಾದುದು. 5. ಮರದಶಾಖೆ, ರೆಂಬೆ. “ಠ್ವಿಜ್ಜಾಃ ಸ್ಥಾವರಾಃ ಸರ್ವೇ ಬೀಜಕಾಂಡಪ್ರರೋಹಿಣಃ” ಮನುಂ ೧-೪೬ | 6. ಅವಸರ, ಸಮಯ. “ಅಕಾಂಡೇ ಪ್ರಥಮಂ ಛೇದಕ ರಸದೋಷಿ” ಸಾಂ ೬೦ | 7. ಜಲ, ನೀರು. 8. ಸಮುದಾಯ, ಗುಂಪು, ರಾಶಿ. “ಋತೇ ರವಿಃ ಕಾಲಯಿತುಂ ಕ್ಷಮೇತ ಕಃ ಕಪಾತಮಸ್ಕಾಂಡಮಲಿಮಸಂ ನಮಃ” ಮಾಘಂ ೧-೩೮ | 9. ಬಿದಿರು ಕಬ್ಬು ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಗೆಣ್ಣು, ಪರ್ವ. 10. ಕುತ್ತಿತವರ್ಗ, ನೀಚಸಮೂಹ. 11. ಹುಲ್ಲು ಗಿಡ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಪೊದರು. 12. ನಾಡಿಗಳ ಸಮೂಹ. 13. ಗ್ರಂಥದ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಭಾಗ, ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಪ್ರಕರಣ, ವಿಷಯಗಳ ವಿಭಾಗ. ಆಚಾರಕಾಂಡಃ ವ್ಯವಹಾರ-ಕಾಂಡಃ ಇತ್ಯಾದಿ. 14. ರಹಸ್ಯಸ್ಥಾನ, ಗುಟ್ಟಾದ ಜಾಗ. “ಕಾಂಡಃ ಸ್ತಂಭೇ ತರುಸ್ಕಂಧೇ ಬಾಣೇಶ್ವರನೀರಯೋಃ | ಕೃತ್ಸಿತೇ ವೃಕ್ಷಭಿನ್ನಾಡೀವೃಂದೇ ರಹಸಿ ನ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” ಮೇದಿಂ | 15. ಸ್ತಂಭ, ಕಂಬ. 16. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. 17. ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ. 18. ಬಲ, ಶಕ್ತಿ. “ಬಾಣಾವಸರಗ್ರನ್ಥಿಸ್ತಂಭರಹೋವಾಜಿವಾರಿ-ವರ್ಗೇಷು | ಸ್ಕಂಧೇ ಚ ಭೂಹಾಣಾಂ ಗರ್ವೇ ನಾಲೇ ಬಲೇ ಚ ಕಾಂಡೋಽಸ್ಮಿ”

ನಾನಾರ್ಥಕಂ | 19. ಶ್ಲಾಘನೆ, ಪ್ರಶಂಸೆ. “ಕಾಂಡೋ ನಾಲೇಶ್ವರೇ ವರ್ಗೇ ದುಸ್ಕಂಧೇಶ್ವರೇ ಶರೇ | ರಹಃಶ್ಲಾಘಾಮ್ಬುಃ ಸ್ತಂಭೇ” ಹೇಮಂ |

**ಕಾಂಡಕಡುಕ ಕಾಂಡಕಟುಕ** (ಪುಂ) ಹಾಗಲಗಿಡ. ಕಾಂಡೇ ಸ್ತಂಭೇಽಪಿ ಕಡುಕಃ |

**ಕಾಂಡಕಾರ ಕಾಂಡಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ಅಡಕೆ ಮರ. ಕಾಂಡ ಕಿರತಿ - ಕ್ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) “ಅಣ್” (೩-೨-೧) | (ವಿಂ) 2. ಬಾಣವನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. ಕಾಂಡಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣೇ) “ಅಣ್” |

**ಕಾಂಡಪಟ ಕಾಂಡಪಟ** (ಪುಂ) ಡೇರೆಯ ಸುತ್ತಲೂ ಇರುವ ಪರದೆ, ವಸ್ತ್ರಗೃಹದ ತಳಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ ತೆರೆ. ಕಾಂಡ ಇವ ಪಟಃ | ಸ್ವಾರ್ಥೇ “ಕನ್” | -ಪಟಕಃ -ಪಟಕಃ. “ಉತ್ಕಿಪ್ತಕಾಂಡಪಟಕಾಂತರಲೀಯಮಾನಮಂದಾನಿಲಪ್ರಶಮಿತ-ಶ್ರಮಧಮಂತೋಯಃ” ಮಾಘಂ ೫-೨೨ |

**ಕಾಂಡಪುಟ ಕಾಂಡಪುಷ್ಪ** (ಪುಂ) 1. ಶಸ್ತ್ರಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸಿ ಜೀವಿಸುವವನು. 2. ಯೋಧ, ಸೈನಿಕ, ಭಟ. ಕಾಂಡಃ ಪುಟೇಷ್ಯ | 3. ಔರಸಪುತ್ರನಿಗಿಂತ ಬೇರೆಯವನಾದ ಒಬ್ಬ ಪುತ್ರ, ಕ್ರೀತಪುತ್ರ, ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ ಪುತ್ರ. 4. ಸ್ವೀಕೃತಪುತ್ರ, ದತ್ತುಮಗ. 5. ಜಲ, ನೀರು. 6. ತನ್ನ ಮನೆಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬೇರೆಯವರ ಮನೆಯನ್ನು ಸೇರಿರುವವನು. 7. ಶೂದ್ರಹೆಂಗಸಿನ ಮಗ. “ಕಾಂಡಪುಟಃ ಕ್ರೀತಪುತ್ರೇ ದತ್ತೇ ಶೂದ್ರಾಸುತಾಮ್ನಸೋಃ | ಶಸ್ತ್ರಾಜೀವೇ ಚ ಯಶ್ಚಾನ್ಯಕ್ರೂಂ ಯಾತಿ ಸ್ವಕಂ ವಿನಾ” ವೈಜಂ | (ನಂ) 8. ಧನುಸ್ಸು, ಬಿಲ್ಲು. ಕಾಂಡಂ ತರುಸ್ಕಂಧ ಇವ ಸ್ಥೂಲಂ ಪುಟಮಸ್ಯ | 9. ಕರ್ಣನ ಧನುಸ್ಸು. 10. ಕಾಮನ ಬಿಲ್ಲು.

**ಕಾಂಡರ್ಷಿ ಕಾಂಡರ್ಷಿ** (ಪುಂ) ವೇದಭಾಗದ ವಿಚಾರ ಮಾಡುವ ಋಷಿ, ಕರ್ಮಕಾಂಡದ ವಿಚಾರ ಮಾಡುವ ಜೈಮಿನಿ ಮೊದಲಾದ ಋಷಿಗಳು. ಕಾಂಡಸ್ಯ ವೇದಭಾಗಸ್ಯ ಋಷಿಃ ತದಧಿಕಾರೇಣ ವಿಚಾರಕಃ | “ಅಥಾತೋ ಧರ್ಮಜಿಜ್ಞಾಸಾ” ಎಂದು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ಕರ್ಮಕಾಂಡ ವಿಚಾರಮಾಡುವ ಋಷಿ ಜೈಮಿನಿ ಋಷಿ. “ಅಥಾತೋ ಬ್ರಹ್ಮಜಿಜ್ಞಾಸಾ” ಎಂದು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ಬ್ರಹ್ಮಕಾಂಡವಿಚಾರಮಾಡುವ ಋಷಿ ವೇದವ್ಯಾಸರು.

**ಕಾಂಡವತ್ ಕಾಂಡವತ್** (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷಮರ. (ವಿಂ) 2. ಬಾಣಗಳೇ ಆಯುಧವಾಗಿ ಉಳ್ಳವನು. ಕಾಂಡೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್” (೫-೨-೯೪) | ಮಸ್ಯ ವಃ (೮-೨-೧೧) |

**ಕಾಂಡವಿಣಾ ಕಾಂಡವೀಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಂಡಾಲನ ವೀಣೆ. ಕಾಂಡ ಇವ ಸ್ಥೂಲಾ ವೀಣಾ |



**ಕಾಂಡಸಂಧಿ ಕಾಂಡಸಂಧಿ** (ಪುಂ) 1. ಕಬ್ಬು ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಗಣ್ಯ. 2. ಗಿಡಮರಗಳ ರೆಂಬೆ ಹೊರಡುವ ಜಾಗ.

**ಕಾಂಡಸ್ಪೃಷ್ಟ ಕಾಂಡಸ್ಪೃಷ್ಟ** (ವಿಂ) ಶಸ್ತ್ರಾಸ್ತ್ರಗಳಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಸ್ಪೃಷ್ಟ ಗೃಹಿತ ಕಾಂಡ ಯೇನು. ಪರಿನಿಪಾತ: (ವಾಂ ೨-೨-೩೬)।

**ಕಾಂಡಹೀನ ಕಾಂಡಹೀನ** (ನಂ) ಕೊನ್ನಾಂ ಗೆಡ್ಡೆ. ಕಾಂಡೇನ ಹೀನಮ್।

**ಕಾಂಡೀರ ಕಾಂಡೀರ** (ಪುಂ) ಬಾಣಗಳೇ ಆಯುಧವಾಗಿ ಉಳ್ಳವನು. ಕಾಂಡೋ ಬಾಣೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇರನ್" (೪-೨-೧೧೧)। "ಸ್ಯಾತ್ ಕಾಂಡವಾಸ್ತು ಕಾಂಡೀರಃ" ಅಮಂ। "ಕಾಂಡೀರಃ ಸ್ವಾಡ್ಗಿಕಃ ಶಾಸ್ತ್ರೀ ರಕ್ಷನ್ ವಿಪ್ರಾಸ್ತನುಶ್ವವಾನ್" ಮಡಿಂ ೪-೧೦।

**ಕಾಂಡೇಕ್ಷು ಕಾಂಡೇಕ್ಷು** (ಪುಂ) ಕೊಳವಳೆ ಗಿಡ. ಕಾಂಡೇ ಇಕ್ಷುರಿವ।

**ಕಾಂವ ಕಾಂವ** (ಪುಂ) 1. ಕಣ್ವಮಹರ್ಷಿಯ ಗೋತ್ರದವರ ಶಿಷ್ಯ. ಕಾಂವಸ್ಯ ಕಣ್ವಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಸ್ಯ ಛಾತ್ರ: "ಅನ್" (೪-೨-೧೧೧)। 2. ಕಣ್ವಮಹರ್ಷಿಯ ಮಗ. "ಕಾಂವಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್" "ಅನ್" (೪-೧-೧೧೨)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। **ಕಾಂವಿ ಕಾಂವಿ**. (1) ಕಣ್ವಮಹರ್ಷಿಯ ಮಗಳು. (2) ಕಣ್ವಮಹರ್ಷಿಯ ಶಿಷ್ಯರು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದ ಶಾಖೆ. (ವಿಂ) 3. ಕಣ್ವಮಹರ್ಷಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕಾಂವಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ಕಾಂವಶಾಖಾ ಕಾಂವಶಾಖಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶುಕ್ಲ ಯಜುರ್ವೇದದ ಕಣ್ವಶಾಖೆ.

**ಕಾಂವ್ಯ ಕಾಂವ್ಯ** (ಪುಂ) ಕಣ್ವಮಹರ್ಷಿಯ ಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಕಾಂವಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಮ್ "ಯಜ್" (೪-೧-೧೦೫)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೬) ಯಲೋಪ: (೬-೪-೧೫೦)। **ಕಾಂವಿ ಕಾಂವಿ**.

**ಕಾಂವ್ಯಾಯನ ಕಾಂವ್ಯಾಯನ** (ಪುಂ) ಕಣ್ವಮಹರ್ಷಿಯ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಕಾಂವಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಮ್ "ಯಜ್" (೪-೧-೧೦೫)। ಕಾಂವಸ್ಯ ಯುವಾಪತ್ಯಮ್ "ಫಕ್" (೪-೧-೧೦೧)।

**ಕಾತ್ ಕಾತ್** (ಅವ್ಯಂ) (ಸಮಸ್ತಪದದಲ್ಲಿ) ತಿರಸ್ಕಾರ. ಕುತ್ಸಿತಮತತ್ಯನೇನ - ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೇ) "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೭೬)। "ಯನ್ಮಯೇಶ್ವರಯಮತ್ತೇನ ಗುರುಃ ಸದಸಿ ಕಾತ್ಕೃತಃ" ಭಾಗಂ ೬-೭-೯।

**ಕಾತನ್ತ್ರ ಕಾತನ್ತ್ರ** (ನಂ) ಕಾಲಾಪಕ ವ್ಯಾಕರಣ. ಇಷ್ಟನ್ತ್ರ-ಮಸ್ಯ ಕೋ: ಕಾದೇಶಃ। ಈ ವ್ಯಾಕರಣವು ಸರ್ವವರ್ಯಕೃತ

ವಾದುದು. ಇದು ಸ್ಕಂದನ ವರಪ್ರಸಾದದಿಂದ ರಚಿತವಾದುದು. ಇದಕ್ಕೆ "ಕೌಮಾರವ್ಯಾಕರಣ" ವೆಂದೂ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಯುಂಟು.

**ಕಾತರ ಕಾತರ** (ವಿಂ) 1. ಅಧೀರ, ದೈರ್ಯವಿಲ್ಲದವನು. 2. ಭಯದ ಸ್ವಭಾವದವನು, ಅಂಜುಬುರುಕ. ಇಷ್ಟತರತಿ ತ್ (ಪಲನತರಣಯೋ:) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಕೋ: ಕಾದೇಶಃ। 3. ಹೆದರದ. "ಮದ್ಗೋಹಿನ್ಯಾಃ ಪ್ರಿಯ ಇತಿ ಸಖೇ ಚೇತಸಾ ಕಾತರೇಣ" ಮೇಘಂ ೨-೧೪। 4. ಚಂಚಲವಾದ. "ಧೇನ್ವಾ ತದಧ್ಯಾಸಿತಕಾತರಾಕ್ಷಾ" ರಘುಂ ೨-೫೨। 5. ದೋಣಿ. ಕೇ ಜಲೇ ಆತರತಿ ಪಲವತೇ-ಆ+ತ್ "ಅಚ್"। 6. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ದೊಡ್ಡ ಮೀನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। -ರೀ-೦೬.

**ಕಾತರತಾ ಕಾತರತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೇಡಿತನ, ಅಂಜುಬುರುಕತನ, ಪುಕ್ಕಲು. 2. ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ. ಕಾತರಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। "ತ್ವಃ"। ಕಾತರತ್ವಮ್ ಕಾತರತ್ವಮ್. "ಇತಿ ಚೇತೋ ಮಾ ಸ್ಮ ಗಾಃ ಕಾತರತ್ವಮ್" ಮುಂ ಮಾಂ।

**ಕಾತರಾಕ್ಷ ಕಾತರಾಕ್ಷ** (ವಿಂ) ಭಯದಿಂದ ಚಂಚಲವಾದ ನೇತ್ರವುಳ್ಳ. ಕಾತರೇ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯ "ಪಚ್" (೪-೪-೧೧೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧)। -ಕ್ಷೀ-೦೬. "ಯಾಂ ಯಾಂ ಪ್ರಿಯಃ ಪ್ರೇಕ್ಷತ ಕಾತರಾಕ್ಷಿ ಸಾ ಸಾ ಹ್ನಿಯಾ ನಮ್ರಮುಖಿ ಬಭೂವ" ಮಾಘಂ ೩-೧೬।

**ಕಾತರ್ಯ ಕಾತರ್ಯ** (ನಂ) 1. ಅಂಜುಬುರುಕತನ, ಪುಕ್ಕಲು, ಹೇಡಿತನ. ಕಾತರಸ್ಯ ಭಾವಃ ಕರ್ಮ ವಾ "ಪ್ಯಜ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ಕಾತರ್ಯ ಕೇವಲಾ ನೀತಿಃ ಶೌರ್ಯೇ ಶ್ವಾಪದ-ಚೇಷ್ಟಿತಮ್" ರಘುಂ ೧೭-೪೭। 2. ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ.

**ಕಾತಲ ಕಾತಲ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ದೊಡ್ಡ ಮೀನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। -ಲೀ-೦೬. 2. ಒಬ್ಬ ಮುಷಿ. ತಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಮ್ "ಫಕ್" (೪-೧-೯೯)। -ಲಾಯನಃ -ಲಾಯನಃ: ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। -ಯನಿ-೦೬.

**ಕಾತೀಯ ಕಾತೀಯ** (ಪುಂ) 1. ಕಾತ್ಯಾಯನ ಮುಷಿಯ ಶಿಷ್ಯ. ಕಾತ್ಯಾಯನಸ್ಯ ಛಾತ್ರಃ "ಛಃ" (೪-೨-೧೧೪)। ಫಕೋ ವಾ ಲುಕ್ (೪-೧-೯೧)। ಪಕ್ಷೇ ಕಾತ್ಯಾಯನೀಯಃ ಕಾತ್ಯಾಯನೀಯಃ. (ವಿಂ) 2. ಕಾತ್ಯಾಯನಸಂಬಂಧವಾದ.

**ಕಾತ್ಯ ಕಾತ್ಯ** (ಪುಂ) ಕತ ಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಕತಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಮ್ ಪುಮಾನ್ "ಯಜ್" (೪-೧-೧೦೫)।

**ಕಾತ್ಯಾಯನ ಕಾತ್ಯಾಯನ** (ಪುಂ) ಕತ ಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ಮುಷಿ. ಕತಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಮ್ "ಯಜ್" (೪-೧-೧೦೫)। ಕಾತ್ಯಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ ಯುವಾ "ಫಕ್" (೪-೧-೧೦೧)।



ಕಾತ್ಯಾಯನರು ಮೂವರು: (1) ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರರ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವರು. "ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಸ್ಯ ಚ ಸುತಾ ದೇವರಾತಾದಯಃ ಸ್ಮೃತಾಃ | ವಿಖ್ಯಾತಾಸ್ತ್ರಿಣಿ ಲೋಕೇಷು ತೇಷಾಂ ಶಿಲಾನಿ ಮೇ ಶೃಣು | ದೇವಶ್ರವಾಃ ಕತಶ್ಚೈವ ಯತಃ ಕಾತ್ಯಾಯನಾಃ ಸ್ಮೃತಾಃ" ಹರಿವಂಶ | (2) ಕರ್ಮಪ್ರದೀಪಮೆಂಬ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಬರೆದವರು ಗೋಭಿಲಪುತ್ರರು. ಇವರು ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ ಪ್ರವರ್ತಕರಲ್ಲೊಬ್ಬರು. "ಮನ್ವತ್ರವಿಷ್ಣುಹಾರೀತಯಾಜ್ಞವಲ್ಕ್ಯೋ-ಶನೋಽಜ್ಞಿರಾಃ | ಯಮಾಪಸ್ತಮ್ಬಸಂವರ್ತಾಃ ಕಾತ್ಯಾಯನಬೃಹಸ್ಪತೀ | ಪರಾಶರವ್ಯಾಸಶಿಷ್ಯಲಿಖಿತಾ ದಕ್ಷಗೌತಮೌ | ಶಾತಾತಪೋ ವಸಿಷ್ಠಶ್ಚ ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರಪ್ರವರ್ತಕಾಃ" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೪, ೫ | (3) ಪುಷ್ಪ ದಂತನ ಅವತಾರವಾದ "ನರರುಚಿ" ಯೆಂಬುವರು ಮೂರನೆಯವರು. ಇವರ ತಂದೆ ಸೋಮದತ್ತ. ತಾಯಿ ವಸುದತ್ತೆ. ಕುಬೇರನ ಶಾಪದಿಂದ ಪಿಶಾಚತ್ವವನ್ನು ಹೊಂದಿದ ಸುಪ್ರತೀಕನೆಂಬ ಯಕ್ಷನಿಗೆ (ಕಾಣಭೂತಿಗೆ) ಬೃಹತ್ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳಿದ ಋಷಿ. ಈ ಕಾತ್ಯಾಯನರೇ ಪಾಣಿನಿಸೂತ್ರಗಳಿಗೆ ಪರಿಶಿಷ್ಟವಾದ ವಾರ್ತಿಕಗಳನ್ನು ಬರೆದವರು. ಅಲ್ಲದೆ ಯಜುರ್ವೇದ ಶ್ರುತಿಸೂತ್ರಗಳನ್ನೂ ಇವರು ಬರೆದಿರುತ್ತಾರೆ.

**ಕಾತ್ಯಾಯನಿ ಕಾತ್ಯಾಯನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಕತ ಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಹೆಂಗುಸು. ಕತಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ "ಯತ್" (೪-೧-೧೦೫) | "ಃ" (೪-೧-೧೮) | "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧) | 2. ಕಾತ್ಯಾಯನ ಋಷಿಯ ಪತ್ನಿ. 3. ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕ್ಯ ಋಷಿಯ ಒಬ್ಬ ಪತ್ನಿ. "ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕ್ಯಸ್ಯ ದ್ವೇ ಭಾರ್ಯೇ ಬಭೂವತುಃ ಮೈತ್ರೇಯಿ ಕಾತ್ಯಾಯನಿ ಚ ತಯೋರ್ಹೈ ಮೈತ್ರೇಯಿ ಬ್ರಹ್ಮವಾದಿನಿ ಬಭೂವ ಸ್ತ್ರೀಪ್ರಜೈವ ತರ್ಹಿ ಕಾತ್ಯಾಯನಿ" | 4. ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ. ಕಲ್ಯಾಣತರದಲ್ಲಿ ಕತ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ಕಾತ್ಯಾಯನೀತನ್ತ್ರ ಕಾತ್ಯಾಯನೀತಂತ್ರ (ನಂ)** ಕಾತ್ಯಾಯನಿ (ದುರ್ಗಾದೇವಿ) ಯ ಪೂಜಾಕ್ರಮವನ್ನು ಹೇಳುವ ಒಂದು ತಂತ್ರಗ್ರಂಥ.

**ಕಾತ್ಯಾಯನೀತನಯ ಕಾತ್ಯಾಯನೀತನಯ, -ಪುತ್ರ -ಪುತ್ರ, -ಸುತ -ಸುತ. (ಪುಂ)** ಕಾರ್ತಿಕೇಯ. ಪುಷ್ಪುಖ.

**ಕಾತ್ಯಕ ಕಾತ್ಯಕ (ಪುಂ)** ಕಾತ್ಯಕ ಋಷಿಯ ಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಕಾತ್ಯಕಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಯತ್" (೪-೧-೧೦೫) | ತತಃ "ಕಕ್" (೪-೧-೧೦೧) |

**ಕಾತ್ಯಕಯಾನಃ ಕಾತ್ಯಕಯನಃ.**

**ಕಾತ್ಯಚಿತ್ತಕ ಕಾತ್ಯಚಿತ್ತ (ವಿಂ)** ಬಹಳ ಕಷ್ಟದಿಂದ ಉಂಟಾದ, ಹೆಚ್ಚು ಶ್ರಮದಿಂದ ನೆರವೇರಿದ. ಕಾತ್ಯಚಿತ್ "ಕಕ್" (೪-೪-೩೪) |

**ಕಾತ್ಯಕ ಕಾತ್ಯಕ (ವಿಂ)** ಕಥೆಯನ್ನು ಬರೆಯುವುದರಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಥ, ಕಥೆಯನ್ನು ರಚಿಸುವುದರಲ್ಲಿ ನಿಪುಣ, ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳುವುದರಲ್ಲಿ ಶಕ್ತ. ಕಥಾಪಾಠಾಃ ಸಾಧುಃ "ಕಕ್" (೪-೪-೧೦೨) |

**ಕಾದಂಬ ಕಾದಂಬ (ಪುಂ)** 1. ಕಲಹಂಸ, ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹಂಸಪಕ್ಷಿ. ಕದಿ (ಆಹ್ವಾನ) + ಣಿಚ್ "ಅಂಬಚ್" (೩೦ ೪-೮೩) | "ಕವಚಿತ್ ಖಗಾನಾಂ ಪ್ರಿಯಮಾನಸಾನಾಂ ಕಾದಂಬಸಂಸರ್ಗವತೀವ ಪಙ್ಕ್ತಿಃ" ರಘುಂ ೧೩-೫೫ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪) | **ಕಾದಂಬಾ ಕಾದಂಬಾ.** 2. ಕಬ್ಬು. 3. ಬಾಣ. "ಕಾದಂಬಃ ಸ್ಯಾತ್ ಪುಮಾನ್ ಪಕ್ಷಿವಿಶೇಷೇ ಸಾಯಕೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ | "ತಾವತ್ ಪೂರ್ವನಯನಾಗಾಧಿರೂಢಃ ಕಾದಂಬಾನಾ-ಮೇಕಪಾತೇರಸೀವ್ಯತ್" ಮಾಘಂ ೧೮-೨೯ | 4. ಕದಂಬ ವೃಕ್ಷ, ಈಜಲು ಮರ. ಕದಂಬ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೫-೪-೩೮) | (ವಿಂ) 5. ಗುಂಪಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ಸಮೂಹದಲ್ಲಿರುವ. ಕದಂಬೇ ಭವಃ "ಅನ್" (೪-೩-೫೩) | 6. ಈಜಲು ಮರದ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕದಂಬಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | (ನಂ) 7. ಈಜಲು ಹೂವು. "ಗಂಧಶ್ಚ ಧಾರಾಹತಪಲ್ವಲಾನಾಂ ಕಾದಂಬಮರ್ಷೋದ್ಗತಕೇಸರಂ ಚ" ರಘುಂ ೧೩-೨೭ |

**ಕಾದಂಬಕ ಕಾದಂಬಕ (ಪುಂ)** ಬಾಣ. ಕಾದಂಬ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" | "ವಿಪಾಠಕಾದಂಬಕಪತ್ರವಾಹಾಃ ಪತ್ನೀ ಖಗೋ ವೀರತರೋಽಸ್ತ್ರಕಂಠಕಃ" ಹಾರಾಂ |

**ಕಾದಂಬರ ಕಾದಂಬರ (ಪುಂ)** 1. ಮೊಸರಿನ ಕೆನೆ. (ನಂ) 2. ಬೆಲ್ಲ ಮೊದಲಾದುದು. ಕಾದಂಬಂ ಲಾತಿ ಪ್ರಕೃತೀವೇನ-ಲಾ (ಆದಾನ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | ಲಸ್ಯ ರಃ | 3. ಬೆಲ್ಲದಿಂದ ತಯಾರಾದ ಮದ್ಯ. 4. ಈಜಲು ಮರದ ಮದ್ಯ. "ನಿಷೇದ್ಯ ಮಧು ಮಾಧವಾಃ ಸರಸಮತ್ರ ಕಾದಂಬರಂ ಹರಂತಿ ರತಯೇ ರಹಃ ಪ್ರಿಯತಮಾಙ್ಗಕಾದಂಬರಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೬೬ | "ಕಾದಂಬರಸ್ತು ದಧ್ಯಗ್ರೇ ಮಧುಭೇದೇ ನಪುಂಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ |

**ಕಾದಂಬರಿ ಕಾದಂಬರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. ಕು ಕೃಷ್ಣವರ್ಣಮಂಬರಮ್ ಕದಂಬರಮ್ ಕೋಃ ಕಾದೇಶಃ-ತದಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೫-೨-೧೨೭) | ಬಲಭದ್ರಃ ತಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | "ಕಾದಂಬರಿ-ಸಾಕ್ಷಿಕಮಸ್ಮಾಕಂ ಪ್ರಥಮಶೋಭಿಮತಮಿಷ್ಯತೇ" ಶಾಕುಂ ೬ | 2. ಸಂಸ್ಕೃತಿ. 3. ಕೋಗಿಲೆ. 4. ಸಾರಿಕಾಪಕ್ಷಿ. 5. ಬಾಣಕವಿ ರಚಿತವಾದ "ಕಾದಂಬರಿ" ಕಥೆ. "ಕಾದಂಬರಸ್ತು ದಧ್ಯಗ್ರೇ ಮಧುಭೇದೇ ನಪುಂಸಕಮ್ | ಸ್ತ್ರೀ ವಾಣೀಪರಭೃತಾಭಾರತೀಶಾರಿಕಾಸು ಚ" ಮೇದಿಂ |

**ಕಾದಂಬಿನಿ ಕಾದಂಬಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮೇಘಗಳ ಪಜ್ಜಾ, ಮೋಡಗಳ ಸಾಲು. ಕಾದಂಬಾಃ ಕಲಹಂಸಾಃ ಅನುಧಾವಕತ್ವೇನ



ಅಸ್ತೃತ್ಯಾ: "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। "ಕಾದಮ್ಬಿನಿ  
ಮೇಘಮಾಲಾ" ಅಮಂ। "ಮದೀಯಮರ್ತಿಚುಮ್ಬಿನಿ ಭವತು ಕಾಪಿ  
ಕಾದಮ್ಬಿನಿ" ರಸಗಂಂ।

**ಕಾದಾಚಿತ್ಕ ಕಾದಾಚಿತ್ಕ** (ವಿಂ) ಯಾವಾಗಲಾದರೂ  
ಒಂದು ಸಲ ಉಂಟಾಗುವ, ಆಕಸ್ಮಿಕವಾದ, ಅಗಾಧ  
ಸಂಭವಿಸುವ. ಕದಾಚಿತ್ ಭವ: "ಠ್" (೪-೩-೧೧)।

**ಕಾದಾಚಿತ್ಕತಾ ಕಾದಾಚಿತ್ಕತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಾವಾಗ  
ಲಾದರೂ ಒಂದು ಸಲ ಸಂಭವಿಸುವಿಕೆ. ಕಾದಾಚಿತ್ಕ  
"ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। "ತ್ವ:"। ಕಾದಾಚಿತ್ಕತ್ವಮ್  
ಕಾದಾಚಿತ್ಕತ್ವಮ್.

**ಕಾದ್ರವೇಯ ಕಾದ್ರವೇಯ** (ಪುಂ) ಕದ್ರುವಿನ ಮಗ, ಹೆಡೆ  
ಮತ್ತು ಬಾಲವುಳ್ಳ ನರಾಕಾರದ ಸರ್ಪ. ಕದ್ರಾ ಅಪತ್ಯ  
ಪುಮಾನ್ "ಢಕ್" (೪-೧-೧೨೦)। "ಕಾದ್ರವೇಯಾಶ್ಚ ಬಲಿನ:  
ಸಹಸ್ರಮಮಿತೋಜಸ:। ಸುಪರ್ಣವಶಗಾ ನಾಗಾ: ಜಜ್ಜಿರೆ ನೈಕ-  
ಮಸ್ತಕಾ:" ಹರಿವಂಂ। "ಅಮೃತಾಶ್ರಮುಖ: ಪುರೇವ ಪುಂಚ್ಛಂ  
ಬಡವಾಭರ್ತುರವಾರಿ ಕಾದ್ರವೇಯಾ:" ಮಾಘಂ ೨೦-೪೩।

**ಕಾನಕ ಕಾನಕ** (ವಿಂ) ಕನಕಸಂಬಂಧವಾದ, ಚಿನ್ನದ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕನಕಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ಕಾನನ ಕಾನನ** (ನಂ) 1. ಅಡವಿ, ಕಾಡು, ಅರಣ್ಯ.  
ಕಾನಯತಿ ದೀಪಯತಿ ಸ್ಮರಾದಿ - ಕನಿ (ದೀಪ್ತಿಕಾಂತಿಗತಿಷು)  
+ ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। "ಶೀತೋ ವಾಯು:  
ಪರಿಣಮಯಿತಾ ಕಾನನೋದುಂಬರಾಣಾಮ್" ಮೇಘಂ ೧-೪೨।  
2. ಗೃಹ, ಮನೆ. 3. ಬ್ರಹ್ಮನ ಮುಖ. ಕಸ್ಯ ಬ್ರಹ್ಮಣ:  
ಆನನಮ್। "ಕಾನನಂ ವಿಪಿನೇ ಗೇಹೇ ಪರಮೇಷ್ಠಿಮುಖೇಽಪಿ ಚ"  
ಮೇದಿಂಂ।

**ಕಾನನಾರಿ ಕಾನನಾರಿ** (ಪುಂ) 1. ಶಮೀವೃಕ್ಷ, ಬನ್ನಿಮರ.  
2. ಬಿದಿರು. 3. ದಾವಾಗ್ನಿ, ಕಾಡುಕಿಚ್ಚು.

**ಕಾನನೋಕ್ಸ್ ಕಾನನೋಕ್ಸ್** (ಪುಂ) 1. ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ  
ವಾಸಿಸುವ ಯಕ್ಷಿ, ತಪಸ್ವಿ. 2. ವಾನರ, ಕಪಿ. (ವಿಂ) 3.  
ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಕಾನನಮೋಕೋ ಯಸ್ಯ।

**ಕಾನಿಷ್ಠಿಕ ಕಾನಿಷ್ಠಿಕ** (ನಂ) ಕಿರು ಬೆರಳು. ಕನಿಷ್ಠಿಕೇವ  
ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮)।

**ಕಾನಿಷ್ಠಿಣೀ ಕಾನಿಷ್ಠಿಣೀಯ** (ಪುಂ) ಕಿರಿಯ ಹೆಂಡತಿಯ  
ಮಗ. ಕನಿಷ್ಠಾಢಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಢಕ್" (೪-೧-೧೨೦)।  
"ಕೃತೇ ಕಾನಿಷ್ಠಿಣೀಯಸ್ಯ ಜ್ಯೇಷ್ಠಿಣೀಯಂ ವಿವಾಸಿತಮ್" ಭೃಗುಂ  
೪-೮೪।

**ಕಾನಿನ ಕಾನಿನ** (ಪುಂ) (ಸ್ತ್ರೀಯರ) ವಿವಾಹಕ್ಕೆ ಮುಂಚೆ  
ಕನ್ಯಕಾವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಕನ್ಯಾಢಾ ಅನೂಢಾಢಾ

ಅಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" ಕನಿನಾಢೇಶಶ್ಚ (೪-೧-೧೧೬)।  
"ಕಾನಿನ: ಕನ್ಯಕಾಜಾತ:" ಅಮಂ। "ಕಾನಿನ: ಕನ್ಯಕಾಜಾತೋ  
ಮಾತಾಮಹಸುತೋ ಮತ:" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೨೯। (1) ಪ್ಯಾಸ್  
ಮಹರ್ಷಿ. (2) ಕರ್ಣ. ಕಾನಿನೋ ವ್ಯಾಸ: ಕರ್ಣಶ್ಚ ಸಿಂ  
ಕೌಂಂ।

**ಕಾಂತ ಕಾಂತ** (ಪುಂ) 1. ಪತಿ, ಗಂಡ. ಕಮ್ಯತೇ - ಕಮು  
(ಕಾಂತೋ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ನಾತ್ರ ಕಾಂತ-  
ಮುಪಗೀತಯಾ ತಯಾ ಸ್ವಾನಮಾ ನಮತಿ ಕಾಲಿಮಾಲಯಾ" ಮಾಘಂ  
೪-೫೭। "ಲಭೇತ ಕಾಂತಂ ಕಥಮಾತ್ಮತುಲ್ಯಮ್" ರಘುಂ ೭-೧೩।  
2. ಶಿಲೆ, ಕಲ್ಲು. (ಚಂದ್ರಕಾಂತ, ಸೂರ್ಯಕಾಂತ)  
3. ಚಂದ್ರ. 4. ವಸಂತಯುತು. 5. ವಿಷ್ಣು. "ಸೌಂದರ್ಯಾದಿ-  
ಗುಣೈ: ಕಾಂತ: ಮನೋಹರತಯಾ ಭೃಶಮ್" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ:।  
"ಕಾಮಹಾ ಕಾಮಕೃತ್ ಕಾಂತ:" ವಿಂ ಸಂಂ। (ನಂ)  
6. ಕುಂಕುಮ. (ವಿಂ) 7. ರಮ್ಯವಾದ, ಮನೋಹರ  
ವಾದ, ಸುಂದರವಾದ. "ದೇವಾನಾಮಿದಮಾಮನಂತಿ ಮುನಯ:  
ಕಾಂತಂ ಕೃತುಂ ಚಾಕ್ಷುಷಂ ರೂಪೇದಮುಮಾಕೃತವ್ಯತಿಕರೇ ಸ್ವಾಙ್ಗೇ ವಿಭಕ್ತಂ  
ದ್ವಿಧಾ" ಮಾಲಂ ೧-೪। "ಕಾಂತೇಂದುಕಾಂತೋಪಲಕುಟ್ಮಿಮೇಷು"  
ಮಾಘಂ ೩-೪೪। 8. ಇಷ್ಟವಾದ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ.  
"ಮೀಮಕಾಂತೈರ್ನೃಪಗುಣೈ: ಸ ಬಭೂವೋಪಜೀವಿನಾಮ್" ರಘುಂ  
೧-೧೬।

**ಕಾಂತಪಕ್ಷಿನ್ ಕಾಂತಪಕ್ಷಿನ್** (ಪುಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು.  
ಕಾಂತೋ ರಮ್ಯ: ಪಕ್ಷೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)।

**ಕಾಂತಪಾಷಾಣ ಕಾಂತಪಾಷಾಣ** (ಪುಂ) ಅಯಸ್ಕಾಂತಶಿಲೆ,  
ಸೂಜಿಗಲ್ಲು.

**ಕಾಂತಲೋಹ ಕಾಂತಲೋಹ** (ಪುಂ) ಅಯಸ್ಕಾಂತ,  
ಸೂಜಿಗಲ್ಲು.

**ಕಾಂತಾ ಕಾಂತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಂಗಸು. ಕಮ್ಯತೇ - ಕಮು  
(ಕಾಂತೋ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಕಾಂತಾನಾಂ  
ಕುವಲಯಮಪ್ಯಪಾಸ್ತಮಕ್ಷಣೋ: ಶೋಭಾಭಿರ್ನ ಮುಖರಚಾಙ್ಗಮೇಕಮೇವ"  
ಮಾಘಂ ೮-೨೩। 2. ಪತ್ನಿ, ಹೆಂಡತಿ. "ಕಾಂತಯಾ ಸಪದಿ  
ಕೋಽಪ್ಯುಪಗೃಹ: ಪ್ರೌಢಪಾಣಿರಪನೇತುಮಿಮೇಷ" ಮಾಘಂ ೧೦-೭೩।  
3. ಪ್ರಿಯಂಗುವೃಕ್ಷ, ಪ್ರೇಂಕಣಗಿಡ. "ಕಾಂತೋ ರಮ್ಯೇ ಪ್ರಿಯೇ  
ಗ್ರಾಣಿ ಕಾಂತಾ ಪ್ರಿಯಙ್ಗುಯೋಷಿತೋ:" ಹೇಮಂಂ।

**ಕಾಂತಾಙ್ಗಿ(ಚರಣ)ದೋಹ ಕಾಂತಾಙ್ಗಿ (ಚರಣ)  
ದೋಹದ** (ಪುಂ) ಅಶೋಕವೃಕ್ಷ.

**ಕಾಂತಾರ ಕಾಂತಾರ** (ಪುಂ) 1. ಅಡವಿ, ಅರಣ್ಯ, ಕಾಡು.  
ಕಸ್ಯ ಸುಖಸ್ಯ ಅಂತಂ ಕೃಚ್ಛತಿ ಗಚ್ಛತಿ - ಕೃ (ಗತೌ) "ಅನ್"  
(೩-೨-೧)। "ಕಾಂತಾರಕಂದಕ್ಷನನಂ ರಚಯೇತಿ ನೂನಮಾಬದ್ಧವಾನ್"



ಪ್ರತಿಸರಂ ಭಗವಾನ್ ವಸಿಷ್ಠಃ" ಚಂ ರಾಂ 1. ಮಹಾವನ, ದೊಡ್ಡ ಕಾಡು. "ಘರ್ಮೆ ನಿರ್ದಾಳಕಿರಣಸ್ಯ ಕರೆ: ಕಠೋರೇ: ಕಾಂತಾರಮಧ್ಯಪದವೀಷು ನಲಮ್ಪಚಾಸು" ಚಂ ರಾಂ 1. 3. ದುರ್ಗಮವಾದ ಮಾರ್ಗ, ಕಷ್ಟವಾದ ದಾರಿ. "ಕಾಂತಾರೆ ನಿರ್ಗತಾಸಿ ಪ್ರಿಯಸಖಿ ಪದವಿ ವಿಸ್ಮೃತಾ ಕಿ ನು ಮುಗ್ಧೆ" ನೆಪಂ 3-132. 4. ಬಿಲ್ಲ. (ಪುಂ) 5. ಕೋವಿದಾರ ವ್ಯಕ್ತಿ, ಕೆಂಗಾಂಬಾಳದಗಿಡ. 6. ಕೆಂಪುಜಾತಿಯ ಕಬ್ಬು. "ಕಾಂತಾರ-ಸ್ತಾಪಸೇಕ್ಷುಶ್ಚ ಕಾಷ್ಠಕು: ಸುಚಿಪತ್ರಕ:" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ 45-149. "ಕಾಂತಾರೋಸ್ತೀ ಮಹಾರಣ್ಯೇ ಬಿಲೇ ದುರ್ಗಮವರ್ತಮನಿ | ಪುಸಿ ಸ್ಯಾದಿಕ್ಷುಭೇ" ಮೇದಿಂ 1. ಸ್ವಾರ್ಥ: "ಕನ್" | ಕಾಂತಾರಕ: ಕಾಂತಾರಕ: ಕೆಂಪು ಕಬ್ಬು.

ಕಾಂತಾರಗ ಕಾಂತಾರಗ -ಗಾಮಿನ್ -ಗಾಮಿನ್. (ವಿಂ) ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ, ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ, ಹೋಗುವ. ಕಾಂತಾರೆ ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಙ:" (ವಾಂ 3-2-48). "ಗಿತಿ:" (3-1-134). ವಾ |

ಕಾಂತಾರಪಥ ಕಾಂತಾರಪಥ (ಪುಂ) ಅರಣ್ಯದ ಮಾರ್ಗ, ಕಾಡು ದಾರಿ.

ಕಾಂತಾರಪಥಿಕ ಕಾಂತಾರಪಥಿಕ (ವಿಂ) 1. ಅರಣ್ಯ ಮಾರ್ಗದಿಂದ ತರಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಅರಣ್ಯ ಮಾರ್ಗದಿಂದ ಹೋಗುವ. ಕಾಂತಾರಪಥೇನಾಹುತಂ ಗಚ್ಛತಿ ವಾ "ಠ್" (ವಾಂ 4-1-99).

ಕಾಂತಿ ಕಾಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಬಯಕೆ. ಕಮು (ಕಾಂತೌ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94). 2. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. 3. ಪ್ರಭೆ, ತೇಜಸ್ಸು. "ಸ್ಫುಟಮಿವೋಜ್ವಲಕಾಶ್ಚನ-ಕಾಂತಿಭಿರ್ಯುತಮಶೋಕಮಶೋಭತ ಚಮ್ಪಕೈ:" ಮಾಘಂ 6-5. 4. ಹೆಂಗಸರ ಸೌಂದರ್ಯ, ಅವಣ್ಣ. "ತಸ್ಯಾ: ಶಲಾಕಾಜ್ಜನನಿಮಿತೇವ ಕಾಂತಿಭ್ರವೋರಾಯತಲೇಖಯೋರ್ಯಾ" ಕುಮಾಂ 1-49. "ಸ್ವಕಾಂತಿಕೀರ್ತಿವ್ರಜಮೌಕ್ತಿಕಸ್ರಜ: ಶ್ರಯಂತಮಂತ-ವೆಂಟನಾಗುಣಶ್ರಿಯಮ್" ನೆಪಂ 1-42. 5. ಶೋಭೆ, ಹೊಳಪು. 6. ಚಂದ್ರನ ಪತ್ನಿ. "ಮದಿರಾ ರುಪಿಣಿ ಭೂತ್ವಾ ಕಾಂತಿಶ್ಚ ಶಶಿನ: ಪ್ರಿಯಾ" | 7. ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ. "ಸ್ತುತಿ: ಸಿದ್ಧಿರिति ಖ್ಯಾತಾ ಶ್ರಿಯಾ ಸಂಶ್ರಯಣಾಚ್ಚ ಯಾ | ಲಕ್ಷ್ಮೀರ್ವ ಲಲನಾ ವಾಪಿ ಕಾಮಾತ್ ಸಾ ಕಾಂತಿರೂಚ್ಯತೇ" ದೇವೀಪುಂ 45. 8. ಗಂಗಾನದಿ. 9. ಚಂದ್ರನ ಕಲೆ. "ಶಶಿನಿ ಚಂದ್ರಿಕಾ ಕಾಂತಿರ್ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ" |

ಕಾಂತಿಕರ ಕಾಂತಿಕರ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ. 2. ಸೌಂದರ್ಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.

ಕಾಂತಿದ ಕಾಂತಿದ (ನಂ) 1. ಒತ್ತಡಾತು. ಕಾಂತಿ ದದಾತಿ - ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕ:" (3-2-4). 2. ಧೃತ.

ತುಪ್ಪ. (ವಿಂ) 3. ಕಾಂತಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ಸೌಂದರ್ಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ದಾ -ದಾ. 4. ಬಾಹುಜೆಗೆ ಗಿಡ.

ಕಾಂತಿವಾಯಕ ಕಾಂತಿವಾಯಕ (ನಂ) 1. ಒಂದು ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯ. 2. ಮರದರಿಶಿನ. (ವಿಂ) 3. ಕಾಂತಿಯನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ, ಸೌಂದರ್ಯವನ್ನು ಕೊಡುವ. ಕಾಂತಿ ದದಾತಿ - ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಪ್ವಲ್" (3-1-133). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಠಾಪ್" (4-1-4). -ದಾಯಿಕಾ -ದಾಯಿಕಾ.

ಕಾಂತಿನಗರೀ ಕಾಂತಿನಗರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಂತೀಪುರ.

ಕಾಂತಿಭೃತ್ ಕಾಂತಿಭೃತ್ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಕಾಂತಿ ವಿಭತಿ - ಡು ಭೃತ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋ:) "ವಿವಪ್" (3-2-96).

ಕಾಂತಿಮತ್ ಕಾಂತಿಮತ್ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. (ವಿಂ) 2. ಕಾಂತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ. ಕಾಂತಿ-ರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (4-2-94). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-6). -ಮತೀ -ಮತೀ. "ಕಲಾ ಚ ಸಾ ಕಾಂತಿ-ಮತೀ ಕಲಾವತಸ್ತವಮಸ್ಯ ಲೋಕಸ್ಯ ಚ ನೇತ್ರಕೌಮುದೀ" ಕುಮಾಂ 4-91.

ಕಾಂತಿಮತ್ತಾ ಕಾಂತಿಮತ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಂತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ, ಸೌಂದರ್ಯ. ಕಾಂತಿಮತೋ ಭಾವ: "ತಲ್" (4-1-119). "ಉಪಮಾನಮಭೂದಿಲಾಸಿನಾಂ ಕರಣಂ ಯತ್ತವ ಕಾಂತಿಮತ್ತಯಾ" ಕುಮಾಂ 4-5.

ಕಾಂತಿಹರ ಕಾಂತಿಹರ (ವಿಂ) ಕಾಂತಿಯನ್ನು ಹೋಗಿ ತಾಡಿಸುವ, ಸೌಂದರ್ಯವನ್ನು ಕೆಡಿಸುವ. ಕಾಂತಿ ಹರತಿ - ಹ್ರತ್ (ಹರಣೇ) "ಅಚ್" (3-2-9).

ಕಾಂತಿಕ ಕಾಂತಿಕ (ವಿಂ) 1. ಕಂಠಾದೇಶದಿಂದ ಬಂದಿರುವ. 2. ಕಂಠಾದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. 3. ಕಂಠಾದೇಶ ದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಕನ್ಯಾಯಾ ಆಗತ: ಕನ್ಯಾಯಾ ಭವ: ಜಾತೋ ವಾ "ಠಕ್" (4-2-102).

ಕಾಂತರ್ಪ ಕಾಂತರ್ಪ (ವಿಂ) ಮನ್ಮಥನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕಾಂತರ್ಪಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (4-3-120).

ಕಾಂತವ ಕಾಂತವ (ನಂ) ಕಾವಲಿಯಲ್ಲಿ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ತಿಂಡಿ. ಕಾಂತೋ ಸಂಸ್ಕೃತಮ್ "ಅಞ್" (4-2-16).

ಕಾಂತವಿಕ ಕಾಂತವಿಕ (ಪುಂ) ಬಾಣಲಿಯಲ್ಲಿ ಕರಿದ ತಿಂಡಿ ಗಳನ್ನು ಮಾರುವವನು. ಕಾಂತವಂ ಪಣ್ಯಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (4-4-41).

ಕಾಂತಿಭೂತ ಕಾಂತಿಭೂತ (ವಿಂ) ಭಯದಿಂದ ಓಡಿಹೋಗು ತಿರುವವನು. ಕಾಂ ದಿಶಂ ಗಚ್ಛಾಮಿತಿ ಆಕುಲಿಭೂತ: -



ಭೂ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ಸ ಕಥಾಚಿತ್  
ಭಯಾತ್ತಸ್ಮಾಡ್ವಿಮುಕ್ತೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ತಥಾ। ಕಾನ್ದಿಗ್ಮಭೂತೋ ಜೀವಿತಾರ್ಥಿ  
ಪ್ರದ್ವಾಬೋತ್ತರಾಂ ದಿಶಮ್" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೧೬೯-೪।

**ಕಾನ್ದಿಶಿಕ ಕಾಂಡಿಶಿಕ** (ವಿಂ) ಭಯದಿಂದ ಓಡಿ  
ಹೋದವನು. ಕಾಂ ದಿಶಮ್ ಗಚ್ಛಾಮೀತ್ಯಾಹ "ಠಕ್" (ವಾಂ  
೪-೪-೧)। ಪೃಷೋಂ। "ಕಾನ್ದಿಶಿಕಜಿತಕಾಶಿನೋರಿಮಾಂ  
ವ್ಯಾಪೃತಿ ವಿಬುಧವೃಣಿವೀರಯೋಃ" ಯಾದಂ ೧೭-೭೮।

**ಕಾನ್ಯಕುಂಜ ಕಾನ್ಯಕುಂಜ** (ಪುಂ) ಕನ್ಯಾಕುಂಜದೇಶ.  
"ಕಾನ್ಯಕುಂಜೋ ಮಹಾನಾಸೀತ್ ಪಾರ್ಥಿವೋ ಭರತರ್ಷಭಃ। ಗಾಥೀತಿ  
ವಿಶ್ರುತೋ ಲೋಕೇ ಕುಶಿಕಸ್ಯಾತ್ಮಸಂಭವಃ" ಭಾಂ ವನಂ ೧೮೪।

**ಕಾಪಟಿಕ ಕಾಪಟಿಕ** (ಪುಂ) 1. ರಾಜನ ಐದು ವಿಧ  
ಗೂಢಚಾರರಲ್ಲೊಬ್ಬ. ಇವನು ಕಪಟವ್ಯವಹಾರದಿಂದ  
ಜೀವಿಸುತ್ತಾ ಇತರರ ಮರ್ಯಾದೆಯನ್ನು ತಿಳಿದು ರಾಜನಿಗೆ  
ವರದಿ ಮಾಡುವನು. ["ಉದಾಸ್ಥಿತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]  
2. ಶಿಷ್ಯ, ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ. "ಕಾಪಟಿಕೋಜ್ಯಮರ್ಮಜ್ಞೋ ಚಾತ್ರೇ ಪುಂಸಿ  
ಶಠೇ ತ್ರಿಪು" ಮೇದಿಂ। (ವಿಂ) 3. ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ,  
ಅಪ್ರಾಮಾಣಿಕ. ಕಪಟೇನ ಚರತಿ - "ಠಕ್" (೪-೪-೮)।

**ಕಾಪಟಕಾಪಟ** (ನಂ) ಕಪಟ, ವಂಚನೆ, ಮೋಸ,  
ಅಪ್ರಾಮಾಣಿಕತೆ. ಕಪಟಿನೋ ಭಾವಃ "ಞ್" (೪-೧-೧೨೪)।

**ಕಾಪಥ ಕಾಪಥ** (ನಂ) 1. ದುರ್ಮಾರ್ಗ, ಕೆಟ್ಟದಾರಿ, ಕಲ್ಲು  
ಮುಳ್ಳುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದಾರಿ. ಕುತ್ಸಿತಃ ಪನ್ಥಾಃ "ಅಃ"  
(೪-೪-೭೪)। ನಪುಂಸಕತ್ವಮ್ (ವಾಂ ೨-೪-೧೭)। "ವಾಠಃ  
ಪಥಃವಚ್ಚ ಮಾರ್ಗಃವಚ್ಚ" ಎಂಬ ತ್ರಿಕಾಂಡಶೇಷದ ಪಾಠದಂತೆ ಪಥ  
ಶಬ್ದದೊಡನೆ ಸಮಾಸ ಮಾಡಿ ಪುಲ್ಲಿಂಗ ಹೇಳಬೇಕೆಂದು  
ಅಮರ ಸುಧಾವ್ಯಾಖ್ಯಾನ. ಆದರೆ "ಕು" ಎಗೆ "ಕಾ"  
ಆದೇಶವು "ಕಾ ಪಥ್ಯಕ್ಷಯೋಃ" (೬-೩-೧೦೪) ಸೂತ್ರ  
ದಿಂದ "ಪಥಿನ್" ಶಬ್ದವು ಪರವಾದರೆ ಮಾತ್ರ ಬರುವುದೇ  
ಹೊರತು "ಪಥ" ಶಬ್ದವು ಪರವಾದರೆ ಬರಲು ಅವಕಾಶ  
ವಿಲ್ಲ. ನಿಘಂಟುಕಾರರೂ ಪುಲ್ಲಿಂಗದಲ್ಲೇ ಹೇಳುತ್ತಾರೆ.  
"ಕದಧ್ವಾ ಕಾಪಥಃ ಪುಮಾನ್" ಅಮಂ। "ಕಾಪಥಃ ಕುತ್ಸಿತಪಥೇ  
ಉಶೀರೇ ಕಲಿಬಮಿಷ್ಯತೇ" ಮೇದಿಂ। "ವಿಪಥಃ ಕಾಪಥೋ ವ್ಯಧ್ವೋ  
ದುರಧ್ವಃವಚ್ಚ ಕದಧ್ವನಿ" ವೈಜಂ। "ಸತ್ಪಥಸ್ತು ಸುಪನ್ಥಾಃ ಸ್ಯಾತ್  
ವ್ಯಧ್ವೋ ವಿಪಥಕಾಪಥೌ" ರಘುಃ। 2. ಉಶೀರ,  
ಲಾಮಂಚದ ಬೇರು.

**ಕಾಪಾ ಕಾಪಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿ ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸುವ  
ಹೊಗಳ್ಳುಟಿನ ಮಾತು, ಸ್ತುತಿಪಾಠಕನ ಮಾತು. ಕಂ

ಸುಖಮಾಪ್ಯತೇಜಯಾ - ಆಪ್ಲ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) ಕರಂ "ಞ್"  
(೩-೩-೧೨೧)।

**ಕಾಪಾಟಿಕ ಕಾಪಾಟಿಕ** (ನಂ) ಚಿಕ್ಕ ಕದ, ಚಿಕ್ಕ ಬಾಗಿಲು.  
ಕಪಾಟಿಕೇವ - ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೦೭)।

**ಕಾಪಾಲ ಕಾಪಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಸೌತೆಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಏಳು  
ಮಹಾ ಕುಷ್ಠರೋಗಗಳಲ್ಲೊಂದು ವಿಧ. ಕಪಾಲಮೇವ-ಸ್ವಾರ್ಥೆ  
"ಅಞ್" (೪-೪-೩೮)। "ಅರುಣೋದ್ಯುಮ್ಬರರ್ಷಿಜಿಹ್ವಕಪಾಲ-  
ಕಾಕಣಕಪುಂಡ್ರೀಕದ್ರೋಣಿಮಹಾಕುಷ್ಠಾನಿ" ಸುಶ್ರುತಂ  
ನಿರ್ದಾನಂ ೪-೪। (ವಿಂ) 2. ಕಪಾಲಸಂಬಂಧವಾದ,  
ಕಪಾಲದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಅಭರಣ ಮುಂತಾದುವು.  
ಕಪಾಲಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ತ್ರಿಶೂಲಮಸ್ತ್ರಂ  
ಧೋರಂ ಚ ಕಾಪಾಲಮಥ ಕಕ್ಷಣಮ್" ವಿಕ್ರಂ।

**ಕಾಪಾಲಿಕ ಕಾಪಾಲಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಶೈವಮತಾನುಯಾಯಿ  
ಯಾದ ಸಂನ್ಯಾಸಿ, ಭಿಕ್ಷೆಗಾಗಿ ಕಪಾಲವನ್ನು ಹಿಡಿದು ಸಂಚರಿ  
ಸುವ ಮತ್ತು ಅದರಲ್ಲಿ ಊಟಮಾಡುವ ಶೈವಭಿಕ್ಷು.  
ಕಪಾಲೇನ ನರಕಪಾಲೇನ ಚರತಿ ಅಮ್ಯವಹಾರಾದಿಕಂ ಕರೋತಿ  
- ಕಪಾಲ "ಠಕ್" (೪-೪-೮)। "ಕೇಚಿತ್ಪಶ್ಚಶಿಕ್ಷಿ-  
ಕೃತಾಶ್ಚ ಜಟಿಲಾಃ ಕಾಪಾಲಿಕಾಶ್ಚಾಪರೇ" ಭರ್ತುಂ ೧-೭೯।  
2. ಒಬ್ಬ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಫ್"  
(೪-೧-೬೩)। -ಕೀ -ಕೀ.

**ಕಾಪಾಲಿನ್ ಕಾಪಾಲಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರತಕ್ಕಾಗಿ ಬ್ರಹ್ಮ  
ಕಪಾಲವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ ಶಿವ. ಕಪಾಲಂ ಬ್ರಹ್ಮಕಪಾಲಂ ವ್ರತೇ  
ಧಾರ್ಯತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪)। "ಅಜೈಕಪಾಚ್ಚ  
ಕಾಪಾಲಿ ತ್ರಿಶಡ್ಕುರಜಿತಃ ಶಿವಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೭।  
2. ಒಬ್ಬ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು.

**ಕಾಪಿಕ ಕಾಪಿಕ** (ವಿಂ) ಕಪಿಯಂತಿರುವ, ಕಪಿಯಂತೆ  
ಆಕಾರ ಅಥವಾ ಬೇಷ್ಠೆಯುಳ್ಳ. ಕಪಿರಿವ "ಠಕ್"  
(೪-೩-೧೦೮)।

**ಕಾಪಿಜಲ ಕಾಪಿಜಲ** (ಪುಂ) ಕಪಿಜಲನ ಮಗ.  
ಕಪಿಜಲಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ ಕಪಿಜಲ "ಅಞ್" (೪-೧-೧೧೨)।

**ಕಾಪಿತ್ಯ ಕಾಪಿತ್ಯ** (ವಿಂ) ಕಪಿತ್ಯಸಂಬಂಧವಾದ, ಬೇಲದ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕಪಿತ್ಯಸ್ಯಾವಯವೋ ವಿಕಾರೋ ವಾ "ಅಞ್"  
(೪-೩-೧೪೦)।

**ಕಾಪಿಲ ಕಾಪಿಲ** (ಪುಂ) 1. ಕಪಿಲವರ್ಣ, ಕಂದು  
ಹೊಂಬಣ್ಣ. ಕಪಿಲ ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಅಞ್" (೪-೪-೩೮)।  
2. ಕಪಿಲಮತಾನುಯಾಯಿ, ಸಾಂಖ್ಯಮತಾನುಯಾಯಿ.  
3. ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿಪ್ರೋಕ್ತವಾದ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ತಿಳಿದವನು  
ಮತ್ತು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು. ಕಾಪಿಲಂ ಕಪಿಲೋಕ್ತಂ



ಶಾಸ್ತ್ರಂ ವೇತ್ಯಧೀತೇ ವಾ "ಅನ್" (೪-೨-೪೯)। (ನಂ)  
4. ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿಪ್ರೋಕ್ತವಾದ ಸಂಖ್ಯಾಶಾಸ್ತ್ರ. 5. ಕಪಿಲ  
ಮಹರ್ಷಿಯು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಒಂದು ತೀರ್ಥ.  
6. ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿರಚಿತವಾದ ಒಂದು ಉಪಪುರಾಣ.  
(ವಿ) 7. ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿಸಂಬಂಧವಾದ. ಕಪಿಲ "ಅನ್"  
(೪-೩-೧೨೦)। 8. ಕಂದುಹೊಂಬಣ್ಣದ.

ಕಾಪಿಲಿಕ ಕಾಪಿಲಿಕ (ಪುಂ) ಕಪಿಲ ವರ್ಣದ ಹೆಂಗಸಿನ  
ಮಗ. ಕಪಿಲಿಕಾಯಾ ಅಪत्यಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೧೨)।

ಕಾಪಿಲ್ಯ ಕಾಪಿಲ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿಯು  
ವಾಸಮಾಡುವ ದೇಶ. ಕಪಿಲ: ಅಸ್ಯಸ್ಮಿನ್ ದೇಶೇ।  
2. ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಕಪಿಲೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್।  
3. ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿಯು ವಾಸಮಾಡುವ ಜಾಗ. ಕಪಿಲಸ್ಯ  
ನಿವಾಸ:। 4. ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿಗೆ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ದೇಶ  
ಅಥವಾ ಗ್ರಾಮ. ಕಪಿಲಸ್ಯ ಅದೂರಭವ:। ಸರ್ವತ್ರ ಸತ್ತ್ವಾ  
ಶಾದಿತವಾತ್ ಚತುರರ್ಥ್ಯಮ್ "ಞ:" (೪-೨-೭೦)।

ಕಾಪಿಶ ಕಾಪಿಶ (ನಂ) ಸುರೆ, ಒಂದು ವಿಧ ಮದ್ಯ.  
ಕಪಿಶಾ ಮಾಧವೀಲತಾ ತತ್ಪುಷ್ಪಂ ಸಾಧನತ್ವೇನಾಸ್ಯಸ್ಯ "ಅನ್"  
(೪-೨-೧೦೩)।

ಕಾಪಿಶಾಯನ ಕಾಪಿಶಾಯನ (ನಂ) 1. ಮಧು,  
ಜೇನುತುಪ್ಪ. ಕಾಪಿಶ್ಯಾಂ ದೇಶವಿಶೇಷೇ ಜಾತಮ್ - ಕಾಪಿಶಿ  
"ಫಕ್" (೪-೨-೯೯)। 2. ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. "ಕಾಪಿಶಾಯನ-  
ಸುಗಂಧಿ ವಿಧೂರ್ಣಮ್ದೋಷಶಯಿತುಂ ಸಮಶೇತ" ಮಾಘಂ ೧೦-೪।  
(ಸ್ತ್ರೀ) -ಯನಿ -ಯನೀ. "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧)।  
3. ದ್ರಾಕ್ಷಿ. "ಕಾಪಿಶಾಯನಿ ದ್ರಾಕ್ಷಾ" ಸಿಂ ಕೌಂ।  
4. ಒಂದು ದೇವತೆ.

ಕಾಪಿಶಿ ಕಾಪಿಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ದೇಶ.

ಕಾಪಿಶೇಯ ಕಾಪಿಶೇಯ (ಪುಂ) ಪಿಶಾಚ, ಭೂತ, ದೇವ್ವ.  
ಕಪಿಶಾಯಾ ಅಪत्यಮ್ "ಫಕ್" (೪-೧-೧೨೦)।

ಕಾಪುರ್ಷ ಕಾಪುರ್ಷ (ಪುಂ) 1. ನೀಚಮನುಷ್ಯ, ತುಚ್ಛ.  
ನಿಕೃಷ್ಟನಾದವನು. 2. ಹೇಡಿ, ಅಂಜುಪುರುಷ. ಕುರಿಸತ:  
ಪುರ್ಷ: - ಕೋ: ವಾ ಕಾದೇಶ: (೬-೩-೧೦೬)। ಪಕ್ಷಿ  
ಕುಪುರ್ಷ: ಕಾಪುರ್ಷ: "ಶತ್ರೋವಿಖ್ಯಾತವೀರಸ್ಯ ವ್ಯಾಜ್ಞನೀಯಸ್ಯ  
ವಿಕ್ರಮೇ:। ಪಶ್ಯತೋ ಮುಹುರ್ದೋಷ್ಠಂ ಕೃತ: ಕಾಪುರ್ಷಸ್ತ್ವಯಾ"  
ರಾಮಾಂ। ಈಪದರ್ಥದಲ್ಲಿ ಕಾದೇಶ ನಿತ್ಯ. ಕಾಪುರ್ಷ:। (ವಿಂ)  
2. ಹೇಡಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಅಂಜುಕುಳಿಯ ಸಂಬಂಧ  
ವಾದ. ಕಾಪುರ್ಷಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಸ್ತ್ರೀಷು  
ಶೀರ್ಯಮನಾಪಾಸು ಪರದಾರಪ್ರವರ್ಣಕ। ಕೃತ್ವಾ ಕಾಪುರ್ಷಂ ಕರ್ಮ

ಶೂರೋಹ್ಮಮಿತಿ ಮನ್ಯಸೇ" ರಾಮಾಂ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೧೧೫)। -ಪುರ್ಷಿ -ಪುರುಷೀ.

ಕಾಪುರ್ಷ ಕಾಪುರ್ಷ (ನಂ) 1. ಅಂಜುಬುರುಕುತನ,  
ಹೇಡಿತನ. ಕಾಪುರ್ಷಸ್ಯ ಭಾವ: ಕರ್ಮ ವಾ "ಯನ್"  
(೪-೧-೧೨೪)। 2. ನೀಚತನ, ತುಚ್ಛತನ.

ಕಾಪೇಯ ಕಾಪೇಯ (ಪುಂ) 1. ಕಪಿಯ ಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಕಪೇಗೌತ್ರಾಪत्यಂ ಪುಮಾನ್ "ಫಕ್" (೪-೧-  
೧೨೨)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೧೫)। -ಯಿ  
-ಯಿ. "ಕಚ್ಚಿನ್ಮು ಖಲ್ಮ ಕಾಪೇಯಿ ಸೇವ ತೇ ಚಲಚಿತ್ತತಾ"  
ರಾಮಾಂ। (ನಂ) 2. ಕಪಿಯ ಭಾವ ಮತ್ತು ಕರ್ಮ,  
ಕಪಿತ್ವ, ಕಪಿಯ ಬೇಷ್ಪ. ಕಪೇರ್ಭವ: ಕರ್ಮ ವಾ "ಫಕ್"  
(೪-೧-೧೨೭)।

ಕಾಪೋತ ಕಾಪೋತ (ಪುಂ) 1. ಕಪೋತ ವರ್ಣ, ಪಾರಿವಾಳ  
ಹಕ್ಕಿಯ ಬಣ್ಣ, ನೆಬಣ್ಣ, ಬೂದುಬಣ್ಣ. (ನಂ)  
2. ಕಪೋತಗಳ ಸಮೂಹ, ಪಾರಿವಾಳ ಹಕ್ಕಿಗಳ ಗುಂಪು.  
ಕಪೋತಾನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಅನ್" (೪-೨-೩೭)। 3. ಸೌವೀ  
ರಾಂಜನ. 4. ಸದ್ಯಕ್ಷಾರ. (ವಿಂ) 5. ಕಪೋತ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕಪೋತಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।  
"ಕಾಪೋತೋ ಛಕೇ ಕಲೀಬೇ ಕಪೋತೋಽಜನಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೧೫)। -ಕೀ -ಕೀ. ಕಪೋತದ  
ವೃತ್ತಿ, ಉಂಟವೃತ್ತಿ; ಕಪೋತಗಳು ಹೊಲಗದ್ದೆಗಳಲ್ಲಿ  
ಬಿದ್ದಿರುವ ಕಾಳುಗಳನ್ನು ಆರಿಸಿ ತಿನ್ನುವುವು ಮತ್ತು ಸ್ವಲ್ಪ  
ಮಾತ್ರಕೂಡಿಸಿ ಋತುಕೊಳ್ಳುವುವು. ಇದರಂತೆ ಮನುಷ್ಯನೂ  
ನಡೆದರೆ ಅದು ಕಾಪೋತವೃತ್ತಿಯೆನಿಸುವುದು. "ದುರ್ಮನಾ  
ಭಗವಾನ್ ಕಾವ್ಯ: ಪೀರೋಹಿತಂ ವಿಗರ್ಹಯನ್। ಸ್ತುವನ್ ವೃತ್ತಿ ಚ  
ಕಾಪೋತೀ ದುಹಿತ್ರಾ ಚ ಯಯಿ ಪುರಾತ್" ಭಾಗಂ ೯-೧೮-೨೫।

ಕಾಪೋತಪಾಕ ಕಾಪೋತಪಾಕ (ಪುಂ) ಪಾರಿವಾಳ  
(ಹಕ್ಕಿಯ) ಮರಿಗಳ ಗುಂಪು. ಕಪೋತಾನಾಂ ಪಾಕಾ: ಹಿಮ್ಮಾ:  
ತೇಷಾಂ ವ್ರಾತ: "ಞ:" (೪-೩-೧೧೩)।

ಕಾಪೋತಾಜನ ಕಾಪೋತಾಂಜನ (ನಂ) ಸೌವೀರಾಂಜನ,  
ಕಪೋತ ವರ್ಣದ ಒಂದು ಅಂಜನ. ಕಪೋತಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್"  
(೪-೩-೧೨೦)। ಕಾಪೋತಂ ಚ ತತ್ ಅಜ್ಜನಂ ಚ।

ಕಾಪ್ಯ ಕಾಪ್ಯ (ಪುಂ) ಕಪಿಗೋತ್ರೋತ್ಪನ್ನನಾದ ಅಂಗಿರಸ.  
ಕಪೇಗೌತ್ರಾಪत्यಮ್ "ಯನ್" (೪-೧-೧೦೭)।

ಕಾಪ್ಯಕರ ಕಾಪ್ಯಕರ (ವಿಂ) ತಾನು ಮಾಡಿದ ಪಾಪಕ್ಕಿತ್ತು  
ವನ್ನು ಇತರನಿಗೆ ತಿಳಿಸುವವನು, ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪ ಪಡುವ  
ಸ್ವಭಾವದವನು. ಕೃತ್ಸಿತಮಾಪ್ಯಂ ಕಾಪ್ಯಂ ಪಾಪಂ ಕರೋತಿ ಕಥಯತಿ



(ಧಾತುನಾಮನೇಕಾರ್ಥತ್ವಾತ್)—ಓ ಕೃ (ಕರಣ) “ಠಃ”  
(3-2-20) ।

ಕಾಪ್ಯಕಾರ ಕಾಪ್ಯಕಾರ (ವಿಂ) ತನ್ನ ಪಾಪಕೃತ್ಯವನ್ನು  
ಇತರಿಗೆ ತಿಳಿಸುವವನು. ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪಪಡುವವನು.  
ಕಾಪ್ಯ ಕರೋತಿ — ಓ ಕೃ (ಕರಣ) “ಅಞ್” (3-2-1) ।

ಕಾಫಲ ಕಾಫಲ (ಪುಂ) ತೇಗದ ಮರ. ಕೃತ್ಸಿತಂ ಫಲಮಸ್ಯ ।

ಕಾಮ ಕಾಮ (ಪುಂ) 1. ಮನ್ಮಥ. ಕಾಮ್ಯತೇಜೇನ — ಕಮ್  
(ಕಾಂತೌ) “ಘಃ” (3-3-114) । “ಕಾಮಃ ಕೌಸುಮವಾಪ-  
ದುರ್ಜಯಮಮ್ ಜೇತುಂ ನೃಪಂ ತ್ವಾಂ ಧನುರ್ವಲ್ಲಿಮವ್ರಣವಂಶಜಾಮಧಿಗುಣಾ-  
ಮಾಸಾಘ ಮಾಘತಯಸೌ” ನೆಪಂ 3-126 । “ಶ್ರೀಮಾಞ್ಜಗಂತಿ  
ಮದಯತ್ರಯನಾಭಿರಾಮಃ ಕಾಮೋಽಯಮೇತಿ ಮದಘ್ನಣಿತನೇತ್ರಪದ್ಮಃ”  
ಪ್ರಬಂಧಂ 1-10 । ಕಾಮನ ಉತ್ಪತ್ತಿಯ ಕಥೆಯು  
ಅನೇಕ ವಿಧವಾಗಿರುವುದು. (1) ಕಾಮನು ಧರ್ಮಪುರುಷನ  
ಮೂವರು ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ. ಇವನ ಪತ್ನಿ ರತಿ. “ಸ್ತನಂ  
ತು ದಕ್ಷಿಣಂ ಭಿತ್ತಿವಾ ಬ್ರಹ್ಮಗೌ ನಿರವಗ್ರಹಃ । ನಿಸ್ಸೃತೌ ಭಗವಾನ್  
ಧರ್ಮಃ ಸರ್ವಲೋಕಸುಖಾವಹಃ । ತ್ರಯಸ್ತತ್ರ ವರಾಃ ಪುತ್ರಾಃ ಸರ್ವಭೂತ-  
ಮನೋಹರಾಃ । ಶಮಃ ಕಾಮಶ್ಚ ಹರ್ಷಶ್ಚ ತೇಜಸಾ ಲೋಕಧಾರಿಣಃ ।  
ಕಾಮಸ್ಯ ತು ರತಿರ್ಮಯಾ ಶಮಸ್ಯ ಪ್ರಾಪ್ತಿರಜ್ಞನಾ । ನಂದಾ ತು ಭಾರ್ಯಾ  
ಹರ್ಷಸ್ಯ ಯಾಸು ಲೋಕಾಃ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಾಃ” ಭಾಂ ಆದಿಂ  
66-31-33 । (2) ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಗ. ಸಂಧ್ಯೆಯೂ ಕಾಮನೂ  
ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ಜನಿಸಿದರು. ಬ್ರಹ್ಮನು ಮನ್ಮಥನಿಗೆ ಸಕಲ  
ಜಗತ್ತನ್ನೂ ಮೋಹಗೊಳಿಸುವ ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಕೊಟ್ಟನು.  
ಅದನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸಲು ಅವನು ಮೊದಲು ಬ್ರಹ್ಮನ  
ಮೇಲೆಯೇ ತನ್ನ ಪ್ರಭಾವವನ್ನು ತೋರಿಸಲಾಗಿ ಬ್ರಹ್ಮನು  
ಮಗನಾದ ಸಂಧ್ಯೆಯನ್ನೇ ಮೋಹಿಸಿದನು. ಶಿವನು ಬಂದು  
ಬ್ರಹ್ಮನಿಗೆ ವಿವೇಕ ಹೇಳಲಾಗಿ ಶಿವನ ಫಾಲನೇತ್ರಾಗ್ನಿಯಿಂದ  
ದಗ್ಧನಾಗುವಂತೆ ಬ್ರಹ್ಮನು ಕಾಮನಿಗೆ ಶಾಪ ಕೊಟ್ಟನು.  
ಇದರಿಂದ ನಾಚಿಕೆಗೊಂಡ ಸಂಧ್ಯೆಯು ವಿಷ್ಣುವನ್ನು ತಪಸ್ಸಿ-  
ನಿಂದ ಪ್ರಸನ್ನಗೊಳಿಸಿ ಪ್ರಾಣಮಾತ್ರಕ್ಕೂ ಹುಟ್ಟಿದಂದಿ-  
ನಿಂದಲೇ ಕಾಮವಿಕಾರವು ಉಂಟಾಗಕೂಡದೆಂದೂ ಕಾಲ  
ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಕಾಮವು ಬೆಳೆಯಬೇಕೆಂದೂ ವರವನ್ನು ಕೇಳಲಾಗಿ  
“ಬಾಲ್ಯ ಮತ್ತು ಕೌಮಾರ ಅವಸ್ಥೆಗಳನ್ನು ದಾಟಿ ಯೌವನ  
ಪ್ರಾದುರ್ಭಾವವಾದನಂತರ ಕಾಮೋತ್ಪತ್ತಿಯಾಗಲಿ”  
ಎಂದು ವಿಷ್ಣುವು ವರವಿತ್ತನು. ಅದುದರಿಂದ ಸಕಲ  
ಪ್ರಾಣಿಗಳಿಗೂ ಬಾಲ್ಯದಲ್ಲೂ ಶುಕ್ರಧಾತುವಿದ್ದರೂ ಮೊದಲು  
ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿದ್ದು ತಾರುಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಪುಷ್ಟಿಹೊಂದಿ  
ಪ್ರಕಾಶವಾಗುವುದು. “ಬಾಲಾನಾಂ ಶುಕ್ರಮಸ್ತೇವ ಕಿಂ ತು  
ಸೌಖ್ಯಮಾನ್ ದೃಶ್ಯತೇ । ಪುಷ್ಪಾಣಾಂ ಮುಕ್ತುಲೇ ಗಂಧೋ ಯಥಾ ಸನ್ನಪಿ

ನಾಪ್ಯತೇ । ತेषಾಂ ತದೇವ ತಾರುಣ್ಯೇ ಪುಷ್ಪತ್ವಾದ್ಯವ್ಯಕ್ತಿಮೇತಿ ಹಿ ।  
ಕುಸುಮಾನಾಂ ಪ್ರಕುಲ್ಲಾನಾಂ ಗಂಧಃ ಪ್ರಾದೇರ್ಭವೇತ್ಯಥಾ” ಭಾವಪ್ರಂ ।

ತಾರಕಾಸುರನ ಬಾಧೆಯನ್ನು ತಡೆಯಲಾರದೆ ದೇವತೆ  
ಗಳು ತಮ್ಮ ಸೈನ್ಯಕ್ಕೆ ಶಕ್ತನಾದ ಸೇನಾಧಿಪತಿಯೊಬ್ಬನನ್ನು  
ಪಡೆಯಲು ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಾತಿನಂತೆ ಸತಿಯು ವಿಯೋಗದಿಂದ  
ಧ್ಯಾನಾಸಕ್ತನಾಗಿದ್ದ ಪರಮೇಶ್ವರನ ಮೇಲೆ ತನ್ನ ಪ್ರಭಾವ  
ವನ್ನು ಬೀರಿ ಪಾರ್ವತಿಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗುವಂತೆ  
ಮಾಡಬೇಕೆಂದು ಮನ್ಮಥನನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದರು. ಇವನು  
ಸಮಾಧಿಯಲ್ಲಿದ್ದ ಶಿವನ ಮೇಲೆ ತನ್ನ ಶಕ್ತಿಯನ್ನು  
ತೋರಿಸಲು ಹೋಗಿ ಅವನ ಫಾಲಾಗ್ನಿಯಿಂದ ದಗ್ಧನಾದನು.  
ದೇವತೆಗಳ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಿಂದ ಶಿವನು ಮನ್ಮಥನನ್ನು  
ಬದುಕಿಸಿ ಅನಂಗನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದನು. ಶಿವಪುಂ ಸತೀಖಂ ।  
ಬಳಿಕ ಮನ್ಮಥನು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಪತ್ನಿಯಾದ ರುಕ್ಮಿಣಿಯಲ್ಲಿ  
ಪ್ರದ್ಯುಮ್ನನಾಗಿ ಜನಿಸಿ ಮಾಯಾವತಿಯಾಗಿ ಜನಿಸಿದ  
ರತಿಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾದನು. ಭಾಗಂ 10-44 ।  
[ವಿವರಕ್ಕೆ “ಪ್ರಶ್ನಾಮ್ನ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ಅಪೇಕ್ಷೆ.  
ಬಯಕೆ, ಇಚ್ಛೆ. “ಕಾಮೋ ಮೇ ಭುಜ್ಜಿತ ಭವಾನ್” ಸಿಂ ಕೌಂ ।  
“ಪ್ರಾಸಾದಜಾಲೇರ್ಜಲವೇಣಿರಮ್ಯಾಂ ರೇವಾಂ ಯದಿ ಪ್ರೇಕ್ಷಿತುಮಸ್ತಿ ಕಾಮಃ”  
ರಘುಂ 6-43 । 3. ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆ. “ಸ್ವಯಂ ವಿಧಾತಾ ತಪಸಃ  
ಫಲಾನಾಂ ಕೇನಾಪಿ ಕಾಮೇನ ತಪಶ್ಚಾರ” ಕುಮಾಂ 1-49 ।  
4. ಅಭೀಷ್ಟ, ಮನೋರಥ, ಕೋರಿಕೆ. “ಸಂಪತ್ಸ್ಯತೇ ವಃ  
ಕಾಮೋಽಯಂ ಕಾಲಃ ಕಶ್ಚಿತ್ ಪ್ರತಿಕ್ಷಯತಾಮ್” ಕುಮಾಂ 2-44 ।  
5. ಸ್ವೇಚ್ಛಾಚಾರ, ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ ನಡೆಯುವಿಕೆ. ಮನಸ್ಸಿಗೆ  
ತೋರಿದಂತೆ ವರ್ತಿಸುವಿಕೆ. “ದಿಗಿಶಿವೃಂದಾಂಶಿವಿಭೂತಿರೀಶಿತಾ  
ದಿಶಾ ಸ ಕಾಮಪ್ರಸರಾವರೋಧಿನಿಮ್” ನೆಪಂ 1-6 । 6. ಪ್ರೀತಿ,  
ಸ್ತೀಪುರುಷರ ಪರಸ್ಪರ ಅಲಿಂಗನಾದಿಗಳಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ  
ಅನುರಾಗ. ಈ ಅನುರಾಗವು ಒಂದೊಂದು ತಿಥಿಯಲ್ಲಿಯೂ  
ಸ್ತೀಪುರುಷರ ಒಂದೊಂದು ಅಂಗದಲ್ಲಿ ನಖಕ್ಷತ ದಂತಕ್ಷತ  
ಚುಂಬನಾದಿಗಳಿಂದ ಹುಟ್ಟುವುದು. (1) ಪಾದಾಂಗುಲಿ  
ಪ್ರತಿಪದಿ, (2) ದ್ವಿತೀಯಾಂಗುಲಿ ಚ ಗುಲ್ಫಕೇ । (3) ಕರುಡೇಶ  
ತೃತೀಯಾಂಗುಲಿ, (4) ಚತುರ್ಥಾಂಗುಲಿ ಭಗದೇಶತಃ । (5) ನಾಭಿಸ್ಥಾನೇ ಚ  
ಪಂಚಮ್ಯಾಂಗುಲಿ, (6) ಷಷ್ಠಾಂಗುಲಿ ತು ಕುಚಮಂಡಲೇ । (7) ಸಪ್ತಮ್ಯಾಂಗುಲಿ ಹೃದಯೇ  
ಚೈವ (8) ಅಷ್ಟಮ್ಯಾಂಗುಲಿ ಕಕ್ಷದೇಶತಃ । (9) ನವಮ್ಯಾಂಗುಲಿ ಕಂಠದೇಶೇ ಚ,  
(10) ದಶಮ್ಯಾಂಗುಲಿ ಚೋಷದೇಶತಃ । (11) ಏಕಾದಶ್ಯಾಂಗುಲಿ ಗಂಧದೇಶೇ,  
(12) ದ್ವಾದಶ್ಯಾಂಗುಲಿ ನಯನೇ ತಥಾ । (13) ಶ್ರವಣೇ ಚ ತ್ರयोदಶ್ಯಾಂಗುಲಿ,  
(14) ಚತುರ್ದಶ್ಯಾಂಗುಲಿ ಲಲಾಟಕೇ । (15) ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಾಂಗುಲಿ ಶಿಖ್ರಾಂಗುಲಿ  
ಚ ಜ್ಞಾತವ್ಯಶ್ಚ ಇತಿ ಕ್ರಮಾತ್ । ದಕ್ಷೇ ಪುಂಸಾಂ ಸ್ತ್ರೀಯಾ ವಾಮೇ  
ಶುಕ್ಲೇ ಕುಣ್ಣೇ ವಿಪರ್ಯಯಃ” ಸ್ಮರದೀಂ । 7. ವಿಷಯಾಭಿಲಾಷೆ,  
ವಿಷಯಾಸಕ್ತಿ. “ಕಾಮ ಷ ಕ್ರೋಧ ಷ ರಜೋಗುಣಸಮುದ್ಭವಃ”



ಗೀತಾ ೩-೩೭। 8. ವರ. ದೇವತಾನುಗ್ರಹದಿಂದ ದೊರೆತ ಇಷ್ಟಾರ್ಥ. ಕಾಮ್ಯತೆ — ಕಮು ಕರ್ಮಂ “ಘ” (೩-೩-೧೯)। 9. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. “ಕಾಮ: ಸ ಕಾಮ್ಯತೆ ಮೋಕ್ಷ-ಕಾಙ್ಕ್ಷಿಮಿ: ಪ್ರಾರ್ಥ್ಯತೆ ಯತ:” ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ:। “ಕಾಮಹಾ ಕಾಮಕೃತ್ ಕಾಂತ: ಕಾಮ: ಕಾಮಪ್ರದ: ಪ್ರಭು:” ವಿಂ ಸಂ। 10. ಬಲರಾಮ. 11. ಸುರತಾಭಿಲಾಷೆ, ಸಂಭೋಗದ ಅಪೇಕ್ಷೆ. 12. ಆಶಯ, ಅಭಿಪ್ರಾಯ. “ಏವ ವಿಢ್ವನ್ ಪಿತು: ಕಾಮಾನ್ ಪಾಂತಾವಲ್ಪಂಪಚಾನ್ ಮುನೀನ್” ಮೃದ್ವಿಂ ೬-೯೬। 13. ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಪುರುಷಾರ್ಥಗಳಲ್ಲೊಂದು, ಸುಖಾನುಭವ, ಇಂದ್ರಿಯಸುಖ. (1) ಧರ್ಮ: ಧರ್ಮ, (2) ಅರ್ಥ: ಅರ್ಥ, (3) ಕಾಮ: ಕಾಮ ಮತ್ತೂ (4) ಮೋಕ್ಷ: ಮೋಕ್ಷ— ಇವು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಪುರುಷಾರ್ಥಗಳು. 14. ಅನುರಾಗದ ಅಧಿಷ್ಠಾತ್ಯದೇವತೆ. 15. ಕಾಮನಾವಿಷಯ, ಇಚ್ಛೆಗೆ ವಿಷಯವಾದ ಸ್ವರ್ಗಚಂದನಾದಿಗಳು. “ನ ಜಾತು ಕಾಮ: ಕಾಮಾನಾಮುಪಭೋಗೇನ ಶಾಮ್ಯತಿ। ಹವಿಷಾ ಕೃಷ್ಣವತ್ಸಮೇವ ಭುಯ ಎವಾಭಿವರ್ಧತೆ” ಮನುಂ ೨-೯೪। “ತದ್ವತ್ ಕಾಮಾ ಯಂ ಪ್ರವಿಶಂತಿ ಸರ್ವೆ ಸ ಶಾಂತಿಮಾಪ್ನೋತಿ ನ ಕಾಮಕಾಮಿ” ಗೀತಾ ೨-೭೦। 16. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮಾವಿನಮರ. (ನಂ) 17. ಕಾಮ್ಯ, ಇಚ್ಛೆಗೆ ವಿಷಯವಾದ ಫಲ. 18. ರೇತಸ್ಸು, ವೀರ್ಯ. (ಅವ್ಯಂ) — ಮಮ — ಮಮಾ. 19. ಅನುಮತಿ. “ಕಾಮಮಾಮರಣಾತಿಷ್ಠೇದ್ಗೇಹೇ ಕನ್ಯತುಮತ್ಯಪಿ” ಮನುಂ ೯-೮೯। 20. ಇಷ್ಟಾನುಸಾರವಾಗಿ, ಅಡ್ಡಿ ಆತಂಕಗಳಿಲ್ಲದೆ. “ಭುಯಸ್ತತೋ ರಘುಪತಿವಿಲಸತ್ಪತಾಕಮಧ್ಯಾಸ್ತ ಕಾಮಗತಿ ಸಾವರಜೋ ವಿಮಾನಮ್” ರಘುಂ ೧೩-೭೬। 1. ಅತ್ಯಂತವಾಗಿ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ, ಬಹಳವಾಗಿ. “ಕಾಮಂ ಪ್ರಿಯಾ ನ ಸುಲಭಾ ಮನಸ್ತು ತದ್ಭಾವದರ್ಶನಾಯಾಸಿ” ಶಾಕುಂ ೨-೧। 22. ಅತ್ಯಂತವಾಗಿ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ, ಅತಿಶಯವಾಗಿ. “ಕಾಮಂ ಪ್ರತ್ಯಾದಿಷ್ಟಾಂ ಸ್ಮರಾಮಿ ನ ಪರಿಗ್ರಹಂ ಮುನೇಸ್ತನಯಾಮ್” ಶಾಕುಂ ೫-೩೧। 23. ಇಷ್ಟವಿಲ್ಲದೆ ಅಂಗೀಕಾರ, ಅಧಾರಂಗೀಕಾರ. “ಮನಾಗನಮ್ಯಾವೃತ್ಯಾ ವಾ ಕಾಮಂ ಕಾಮ್ಯತು ಯ: ಕಾಮಿ” ಮಾಘಂ ೨-೪೩। 24. ನಿಜವಾಗಿಯೂ, ಸತ್ಯವಾಗಿಯೂ. “ಸಂಕುಚೇಷ್ಠಸ್ಯ ಮೃಗೇಂದ್ರ ಕಾಮಂ ಹಾಸ್ಯಂ ವಚಸ್ತದ್ವದಹಂ ವಿವಕ್ಷು:” ರಘುಂ ೨-೪೨।

**ಕಾಮಕಲಾ ಕಾಮಕಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ರತಿ, ಮನ್ಮಥನ ಪತ್ನಿ. ಕಾಮಸ್ಯ ಕಲಾ।

**ಕಾಮಕಾಮ ಕಾಮಕಾಮ (ವಿಂ)** ಇಷ್ಟವಾದುದನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಬೇಕಾದುದನ್ನು ಬಯಸುವ. ಕಾಮಂ ಕಾಮ್ಯಂ ಕಾಮಯತೆ — ಕಮು (ಕಾಂತಿ) + ಣಿಙ್ “ಜನ್” (೩-೨-೧)। “ಎವಂ ತ್ರಯಿಧರ್ಮಮನುಪ್ರಪನ್ನಾ ಗತಾಗತಂ ಕಾಮಕಾಮಾ ಲಬಂತೆ”

ಗೀತಾ ೯-೨೧। “ಣಿನಿ:” (೩-೨-೭೮)। —ಕಾಮಿ —ಕಾಮಿಾ. ಸ್ವರ್ಗಚಂದನಾದಿ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. ವಿಷಯಾಸಕ್ತ. “ಆಪೂರ್ಯಮಾಣಮಚಲಪ್ರತಿಷ್ಠಂ ಸಮುದ್ರಮಾಪ: ಪ್ರವಿಶಂತಿ ಯದ್ವತ್। ತದ್ವತ್ ಕಾಮಾ ಯಂ ಪ್ರವಿಶಂತಿ ಸರ್ವೆ ಸ ಶಾಂತಿಮಾಪ್ನೋತಿ ನ ಕಾಮಕಾಮಿ” ಗೀತಾ ೨-೭೦। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೫)। —ಕಾಮಿನಿ —ಕಾಮಿನೀ.

**ಕಾಮಕಾರ ಕಾಮಕಾರ (ಪುಂ)** 1. ಫಲಾಭಿಸಂಧಿಯಿಂದ ಕೆಲಸಮಾಡುವುದು. ಕಾಮೇನ ಫಲಕಾಮನಯಾ ಕಾರ: ಕರಣಮ್ — ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣಂ) ಭಾವೇ “ಘ” (೩-೩-೧೮)। “ಅಯುಕ್ತ: ಕಾಮಕಾರೇಣ ಫಲೇ ಸಕ್ತೋ ನಿಬದ್ಧತೆ” ಗೀತಾ ೫-೧೨। 2. ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ಕೆಲಸಮಾಡುವುದು, ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ ಕೆಲಸಮಾಡುವಿಕೆ, ಬುದ್ಧಿ ಪೂರ್ವಕ ಮಾಡುವಿಕೆ. “ಕಾಮಕಾರಕೃತೇಷ್ಯಾಹುರೇಕೇ ಶ್ರುತಿನಿರ್ದರ್ಶನಾತ್” ಮನುಂ ೧೧-೪೫। (ವಿಂ) 3. ಕಾಮ್ಯಕರ್ಮವನ್ನು ಆಚರಿಸುವವನು. ಕಾಮಂ ಕಾಮ್ಯಂ ಕರೋತಿ — ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣಂ) “ಅನ್” (೩-೨-೧)। **ಕಾಮಕೂಟ ಕಾಮಕೂಟ (ಪುಂ)** 1. ವೇಶ್ಯಪತಿ, ವಿಟಪುರುಷ, ಜಾರ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿ. ಕಾಮ: ಕೂಟಂ ಶೃಂಗಂ ಪ್ರಧಾನಮಸ್ಯ। 2. ವೇಶ್ಯೆಯ ವಿಲಾಸ, ಸೂಕೆಯ ಹಾವಭಾವಾದಿಗಳು. “ಕಾಮಕೂಟಸ್ತು ವೇಶ್ಯಾಯಾ: ಪ್ರಿಯವಿಭ್ರಮಯೋ: ಪುಮಾನ್” ಮೇದಿಂ।

**ಕಾಮಕೃತ್ ಕಾಮಕೃತ್ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. ಕಾಮಂ ಮೋಕ್ಷಾದಿ-ಕಾಮ್ಯಂ ಕರೋತಿ — ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣಂ) “ಕಿವಿಪ್” (೩-೨-೭೬)। “ಸ್ವಪಾದಪದ್ಮೇ ರಾಗಾದಿಕರಣಾತ್ ಕಾಮಕೃತ್ ಸ್ಮೃತ:” ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ:। “ಕಾಮಹಾ ಕಾಮಕೃತ್ ಕಾಂತ: ಕಾಮ: ಕಾಮಪ್ರದ: ಪ್ರಭು:” ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 2. ಇಷ್ಟಾರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವವನು. 2. ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು. ಕಾಮೇನ ಕೃಷ್ಣಾನುಸಾರೇಣ ಕರೋತಿ — ಡು ಕೃನ್ “ಕಿವಿಪ್” (೩-೨-೭೬)।

**ಕಾಮಕೃತ ಕಾಮಕೃತ (ವಿಂ)** 1. ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಇಷ್ಟಾನುಸಾರ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕಾಮೇನ ಕೃತ:। 2. ಫಲೋದ್ದೇಶದಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಫಲಾಭಿಸಂಧಿಯಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕಾಮೇನ ಕಾಮನಯಾ ಕೃತ:।

**ಕಾಮಕೇಲಿ ಕಾಮಕೇಲಿ (ಪುಂ)** 1. ಕಾಮಕ್ರೀಡೆ, ಸಂಭೋಗ, ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ಸಂಗಮ. ಕಾಮನಿಮಿತ್ತಾ ಕೇಲಿ:। (ವಿಂ) 2. ಜಾರ, ವಿಟಪುರುಷ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿ. ಕಾಮೇ ಕೇಲಿರಸ್ಯ।

**ಕಾಮಕ್ರೋಡಾ ಕಾಮಕ್ರೋಡಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸುರತಕ್ರೀಡೆ, ಸಂಭೋಗ, ರತಿಕ್ರೀಡೆ. ಕಾಮನಿಮಿತ್ತಾ ಕ್ರೋಡಾ।

**ಕಾಮಗ ಕಾಮಗ (ಪುಂ)** 1. ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಅಥವಾ ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ಸ್ತ್ರೀಸಂಭೋಗ ಮಾಡುವ ಪುರುಷ. ಕಾಮೇನ ಅನುರಾಗೇಣ ಇಚ್ಛಯಾ ವಾ ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಙ:”



(ವಾಂ ೩-೨-೪೮) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ಗಾ -ಗಾ. (1) ಪ್ರೀತಿ ಯಿಂದ ಪುರುಷನೊಡನೆ ಸಂಗಮಿಸುವ ಹೆಂಗಸು. (2) ಸ್ವೈರೀ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ. "ಪಾಷಾಣಾನಾಶ್ರಿತಾ: ಸ್ತೇನಾ ಮನುಷ್ಯ: ಕಾಮಗಾದಿಕಾ:" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೬ । (ವಿಂ) 2. ಇಷ್ಟ ಬಂದಂತೆ ನಡೆಯುವ, ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ಹೋಗುವ. "ವಿಮಾನಂ ಪುಷ್ಪಕಂ ನಾಮ ಕಾಮಗಂ ಚ ದದೌ ಪ್ರಮು:" ಭಾಂ ವನಂ ೨೭೫-೧೭ ।

**ಕಾಮಗತಿ ಕಾಮಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಇಷ್ಟಾನುಸಾರ ನಡೆಯುವುದು, ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ಹೋಗುವಿಕೆ. ಕಾಮೇನ ಗತಿ: । (ವಿಂ) 2. ಇಷ್ಟಾನುಸಾರವಾಗಿ ನಡೆಯುವ, ತನ್ನ ಇಚ್ಛೆಯಂತೆ ಗಮನವುಳ್ಳ. ಕಾಮೇನ ಇಚ್ಛಾನುಸಾರೇಣ ಗತಿ: ಗಮನಂ ಯಸ್ಯ । "ಭಯಸ್ತತೋ ರಘುಪತಿವಿಲಸತ್ಪತಾಕಮಧ್ಯಾಸ್ತ ಕಾಮಗತಿ ಸಾವರುಜೋ ವಿಮಾನಮ್" ರಘುಂ ೧೩-೭೬ ।

**ಕಾಮಗವೀ ಕಾಮಗವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಾಮಧೇನು. ಕಾಮಪ್ರದಾ ಗೌ: "ಠಕ್" (೪-೪-೧೨) । "ಅನೇನ ಸರ್ವಾಥಿಕೃತಾರ್ಥತಾ- ಕೃತಾಹುತಾರ್ಥಿನೋ ಕಾಮಗವೀಸುರದ್ರಮೌ" ನೆಫಂ ೧೨-೭೯ ।

**ಕಾಮಗಾಮಿನ್ ಕಾಮಗಾಮಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ನಡೆಯುವ. ಕಾಮೇನ ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಗಿಣಿ:" (೬-೨-೭೮) । 2. ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ ಸ್ವೀಕರಿಸುವ ಮಾಡು ವವನು. ಇಲ್ಲಿ ಕಾಮ ಎಂದು ಮಾಂತ್ರವಾದ ಅವ್ಯಯ. ಕಾಮಗಾಮಿ ಕಾಮಂಗಾಮಿ ಎಂದಾಗುವುದು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಕಾಮಗಾಮಿನಿ ಕಾಮಂಗಾಮಿನೀ ಮತ್ತು ಕಾಮಗಾಮಿನಿ ಕಾಮಂಗಾಮಿನೀ. "ಕಾಮಗಾಮ್ಯನುಕಾಮಿನ:" ಅಮಂ ।

**ಕಾಮಗಿರಿ ಕಾಮಗಿರಿ (ಪುಂ)** ಕಾಮರೂಪ ದೇಶದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಪರ್ವತ. "ಇಂದ್ರಕಿಲ: ಕಾಮಗಿರೀರೀತಿ ಚಾನ್ಯೇ ಚ ಶತಸಹಸ್ರಶ: ಶಿಲಾ:" ಭಾಗಂ ೪-೧೯-೧೭ ।

**ಕಾಮಗುಣ ಕಾಮಗುಣ (ಪುಂ)** 1. ಪ್ರೀತಿ, ಅನುರಾಗ. ಕಾಮಸ್ಯ ಕಾಮಕೃತೋ ವಾ ಗುಣ: । 2. ಸ್ತುತ್ಯಂಧನಾದಿ ವಿಷಯ ಗಳು. 3. ಪರಿಪೂರ್ಣತೆ, ಉಂಟಿರುವಿಕೆ. "ಅಯ ಕಾಮಗುಣೋ ರಾಗೋ ವಿಪಯಾಭೋಗಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ ।

**ಕಾಮಚರ ಕಾಮಚರ (ವಿಂ)** 1. ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ಸಂಚರಿಸುವ. ಕಾಮೇನ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಠ:" (೩-೨-೧೬) । "ತಾಂ ನಾರದ: ಕಾಮಚರ: ಕದಾಚಿತ್ ಕನ್ಯಾಂ ಕಿಲ ಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯ ಪಿತು: ಸಮೀಪೇ" ಕುಮಾಂ ೧-೪೦ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಚೀಪ್" (೪-೧-೧೪) । -ಚರೀ -ಚರೀ.

**ಕಾಮಚಾರ ಕಾಮಚಾರ (ಪುಂ)** 1. ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ಸಂಚರಿಸುವುದು. ಕಾಮೇನ ಚಾರ: । 2. ಕಟ್ಟಳೆಗಳಿಗೆ ಒಳಪಡದೆ ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ನಡೆದ ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವಿಕೆ, ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ

ನಡೆಯುವುದು. "ಕಲ್ಯಾಣಬುದ್ಧೇರತವಾ ತವಾಯಂ ನ ಕಾಮಚಾರೋ ಮಯಿ ಶಕ್ನುನೀಯ:" ರಘುಂ ೧೪-೬೨ । 3. ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ ಗೋವುಗಳನ್ನು ಮೇಯಿಸುವುದು. "ಪಥಿ ಗ್ರಾಮವಿವಿತಾಂತೇ ಕ್ಷೇತ್ರೇ ದೋಷೋ ನ ವಿಚ್ಛತೇ । ಅಕಾಮತ: ಕಾಮಚಾರೆ ಚೋರವಹುಢ-ಮಹಂತಿ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೬೨ ।

**ಕಾಮಚಾರಿನ್ ಕಾಮಚಾರಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ಗರುಡ. 2. ಗುಬ್ಬಿಚ್ಛಿ. ಕಾಮೇನ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮) । (ವಿಂ) 3. ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವ, ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ ಹೋಗುವ. "ತಸ್ಯೋತ್ಸಜ್ಞೇ ಪ್ರಣಯಿನ ಇವ ಸ್ತಗಜ್ಞಾದುಕೂಲಾಂ ನ ತ್ವಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ನ ಪುನರಲಕಾಂ ಜಾಸ್ಯಸೇ ಕಾಮಚಾರಿನ್" ಮೇಘಂ ೧-೬೩ ।

**ಕಾಮಜ ಕಾಮಜ (ಪುಂ)** 1. ಕಾಮನ ಮಗ, ಅನಿರುದ್ಧ. ಕಾಮಾತ್ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಮವಿ) "ಠ:" (೩-೨-೧೮) । 2. ಕಾಮತ್ಯಪ್ತಿಗಾಗಿ ನಡೆಯುವ ಸಂಭೋಗದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಮಗ. ಜ್ಯೇಷ್ಠಪುತ್ರನು ಜನಿಸಿ ಪಿತೃಯುಣವನ್ನು ತೀರಿಸುವುದರಿಂದ ಅನಂತರ ಹುಟ್ಟುವ ಮಕ್ಕಳೆಲ್ಲರೂ ಕಾಮಜರು. "ಜ್ಯೇಷ್ಠೇನ ಜಾತಮಾತ್ರೇಣ ಪುತ್ರೋ ಭವತಿ ಮಾನವ: । ಪಿತೃಣಾಮನುಷ್ಕವೇವ ಸ ತಸ್ಮಾತ್ಸರ್ವಮಹಂತಿ । ಯಸ್ಮಿನ್ ಶ್ರುಣಂ ಸಂನಯತಿ ಯೇನ ಚಾನನ್ಯಮನ್ಯತೇ । ಸ ಏವ ಧರ್ಮಜ: ಪುತ್ರ: ಕಾಮಜಾ-ನಿತರಾನ್ ವಿಧು:" ಮನುಂ ೯-೧೦೬, ೧೦೭ । 3. ಸುಖಾ ವೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಹತ್ತು ವ್ಯಸನಗಳು.

- |                |                           |
|----------------|---------------------------|
| (1) ಮೃಗಯಾ      | ಬೇಟೆ.                     |
| (2) ಅಕ್ಷ:      | ಜೂಜಾಟ.                    |
| (3) ದಿವಾಸ್ವಾಪ: | ಹಗಲು ನಿದ್ರೆ.              |
| (4) ಪರಿವಾದ:    | ಇತರರ ದೂಷಣೆ.               |
| (5) ಸ್ತ್ರಿಯ:   | ಹೆಂಗಸರೊಡನೆ ವಿಹಾರ.         |
| (6) ಮದ:        | ಮದ್ಯಪಾನದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅಮಲು. |

(7-9) ತೀರ್ಯತ್ರಿಕಮ್ ನೃತ್ಯ ಗೀತ ವಾದ್ಯಗಳು.

(10) ವೃಥಾಟಾಟಾ ವ್ಯರ್ಥವಾದ ಸಂಚಾರ.

ಇವು ಹತ್ತು ಕಾಮಜವ್ಯಸನಗಳು.

"ಮೃಗಯಾಕ್ಷೋ ದಿವಾಸ್ವಾಪ: ಪರಿವಾದ: ಸ್ತ್ರಿಯೋ ಮದ: । ತೀರ್ಯತ್ರಿಕಂ ವೃಥಾಟಾಟಾ ಕಾಮಜೋ ದಶಕೋ ಗಣ:" ಮನುಂ ೭-೪೭ । "ಕಾಮಜೇಷು ಪ್ರಸಕ್ತೋ ಹಿ ವ್ಯಸನೇಷು ಮಹೀಪತಿ: । ವಿಯುಜ್ಯತೇರ್ಷ ಧರ್ಮಿನ್ಯಾಂ ಕಂಠಜೇಷ್ವಾತ್ಮನೇವ ತು" ಮನುಂ ೭-೪೬ ।

**ಕಾಮಜನಿ ಕಾಮಜನಿ (ಪುಂ)** ಕೋಗಿಲೆ. ಕಾಮಸ್ಯ ಜನಿರಸ್ಮಾತ್ ।

**ಕಾಮಜಿತ್ ಕಾಮಜಿತ್ (ಪುಂ)** 1. ಮಹಾದೇವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಕಾಮ ಜಯತಿ - ಜಿ (ಜಯೇ) "ವಿವಪ್"



(೩-೨-೬೧)। 2. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪಣ್ಣುಖ. ಕಾಮಂ  
ರೂಪೇಣ ಜಯತಿ। 3. ಜಿನದೇವ. ಕಾಮಂ ಕಾಮವ್ಯಾಪಾರಂ ಜಯತಿ।

**ಕಾಮಣ್ಡಲೇಯ ಕಾಮಂಡಲೇಯ** (ಪುಂ) ಕಮಂಡಲುವಿನ  
ಮಗ (ಮರಿ). ಕಮಂಡಲೋರಪತ್ಯಮ್ "ಡಬ್" (೪-೧-೧೩೫)।  
ಕಮಂಡಲುವೆಂಬುದು ಒಂದು ಚತುಷ್ಪಾದಂಶು.

**ಕಾಮತಸ್ ಕಾಮತಸ್** (ಅವ್ಯಂ) ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಾಗಿ, ಇಷ್ಟ  
ಬಂದಂತೆ. "ಕೃತ್ಯವಸ್ತುಷು ನಿಯುಕ್ತ್ವ ಕಾಮತಃ" ಮಾಧಂ  
೧೪-೧೫।

**ಕಾಮತಾಲ ಕಾಮತಾಲ** (ಪುಂ) ಕೋಗಿಲೆ. ಕಾಮಂ ತಾಲಯತಿ  
— ತಾಲ (ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।  
"ಮಧುಕಂಠೋ ಧೋಷಯಿತ್ಯುಃ ಕಾಮತಾಲಃ ಸುತರ್ದನಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಕಾಮತಿಥಿ ಕಾಮತಿಥಿ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಮನ ಪೂಜೆಗೆ  
ಯೋಗ್ಯವಾದ ತಿಥಿ. 2. ಕಾಮದೇವತಾಕವಾದ ತಿಥಿ,  
ತ್ರಯೋದಶೀತಿಥಿ. ಕಾಮಪೂಜಾರ್ಹಿ ತಿಥಿಃ ಕಾಮದೇವತಾಕಃ  
ತಿಥಿರ್ವಾ।

**ಕಾಮದ ಕಾಮದ** (ಪುಂ) 1. ಈಶ್ವರ, ಪರಮಾತ್ಮ. (ವಿಂ)  
2. ಇಷ್ಟಾರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡತಕ್ಕವನು. ಕಾಮಮಂಘಿಷ್ಠಂ ದದಾತಿ  
— ಡು ದಾಬ್ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)। (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
— ದಾ — ದಾ. ಕಾಮಧೇನು. "ಕಾಮದಾ ಕಾಮಧೇನೌ ಸ್ತ್ರೀ  
ಕಾಮದಾತರಿ ವಾಚ್ಯವತ್" ಮೇದಿಂ।

**ಕಾಮದುಘ ಕಾಮದುಘ** (ವಿಂ) 1. ಇಷ್ಟಾರ್ಥವನ್ನು  
ಕೊಡುವ, ಬೇಡಿದುದನ್ನು ನೀಡುವ. ಕಾಮಾನ್ ದೋಗ್ಧಿ —  
ದುಹ (ಪ್ರಪೂರಣಂ) "ಕಪ್" ಘಾಡೇಶಚ (೩-೨-೭೦)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ — ದುಘಾ — ದುಘಾ. "ಆರಾಧಯ ಸಪತ್ನೀಕಃ ಪ್ರೀತಾ  
ಕಾಮದುಘಾ ಹಿ ಸಾ" ರಘುಂ ೧-೮೧। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2.  
ಕಾಮಧೇನು.

**ಕಾಮದುಹ ಕಾಮದುಹ** (ವಿಂ) ಇಷ್ಟಾರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ,  
ಬೇಡಿದುದನ್ನು ನೀಡುವ. ಕಾಮಾನ್ ದೋಗ್ಧಿ — ದುಹ (ಪ್ರಪೂರಣಂ)  
"ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧)। "ಏಕಃ ಶಬ್ದಃ ಸುಷ್ಠು ಪ್ರಯುಕ್ತಃ  
ಸಮ್ಯಕ್ ಜ್ಞಾತಃ ಸ್ವರ್ಗೇ ಲೋಕೇ ಕಾಮಧುಕ್ ಭವತಿ" ಶ್ರುತಿಃ।  
"ಸಹ ಯಜ್ಞಃ ಪ್ರಜಾಃ ಸೃಷ್ಟ್ವಾ ಪುರೋವಾಚ ಪ್ರಜಾಪತಿಃ। ಅನೇನ  
ಪ್ರಸವಿಷ್ಯಧ್ವಮೇಷ ವೋಸ್ತ್ವಿಷ್ಟಕಾಮಧುಕ್" ಗೀತಾ ೩-೧೦।

**ಕಾಮದ್ವತೀ ಕಾಮದ್ವತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ಕೋಗಿಲೆ.

**ಕಾಮದೇವ ಕಾಮದೇವ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ.  
ಕಾಮ್ಯತೇ ಮೋಕ್ಷಕಾಂಕ್ಷಿಮಿಃ ಇತಿ ಕಾಮಃ — ತಥಾಭೂತಃ ಸನ್  
ದೀವ್ಯತಿ — ದಿವು (ಕ್ರೀಡಾದೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।

"ಕಾಮದೇವಃ ಕಾಮಪಾಲಃ ಕಾಮಿ ಕಾಂತಃ ಕೃತಾಗಮಃ" ವಿಂ ಸಂ।  
2. ಮನ್ಮಥ.

**ಮನ್ಮಥನ ಧೈಯರೂಪಃ**

"ಕಾಮದೇವಸ್ತು ಕರ್ತವ್ಯಃ ಶಕ್ತ್ವಪದವಿಭೂಷಣಃ। ಚಾಪಬಾಣ-  
ಕರಶ್ಚೈವ ಮದಾಕುಚಿತಲೋಚನಃ। ರತಿಃ ಪ್ರೀತಿಃ ಸ್ತಥಾ ಶಕ್ತಿ-  
ಭಾರ್ಯಾಶ್ಚೈತಾಸ್ತಥೋಜ್ಜ್ವಲಾಃ। ಚತುರಸ್ತಸ್ಯ ಕರ್ತವ್ಯಾಃ ಪತ್ನಯೋ  
ರೂಪಮನೋಹರಾಃ। ಚತ್ವಾರಶ್ಚ ಕರಾಸ್ತಸ್ಯ ಕಾರ್ಯಾ ಭಾರ್ಯಾ-  
ಸ್ತನೋಪಗಾಃ। ಕೇತುಶ್ಚ ಮಕರಃ ಕಾರ್ಯಃ ಪಂಚಬಾಣಮುಖೋ ಮಹಾನ್"।  
"ಕಾಮದೇವವಿಶಿಷ್ಠಃ ಖಲು ನೇಶಂ ಮಾರ್ಪಯಜ್ಜನಕಜಾಮಿತಿ ರಕ್ಷಃ"  
ನೈಷಂ ೨೧-೭೨।

**ಕಾಮಧರ ಕಾಮಧರ** (ಪುಂ) ಕಾಮರೂಪದೇಶದಲ್ಲಿರುವ  
ಒಂದು ಸರೋವರ.

**ಕಾಮಧೇನು ಕಾಮಧೇನು** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಕಲ ಇಷ್ಟಾರ್ಥ  
ಗಳನ್ನೂ ಕೊಡುವ ಸ್ವರ್ಗಲೋಕದ ಧೇನು, ಇಂದ್ರನ  
ಆಕಳು. ಕಾಮದಾ ಧೇನುಃ। "ರೋಹಣಃ ಕಿಮಪಿ ಯಃ ಕಥಿನಾನ್  
ಕಾಮಧೇನುರಪಿ ಯಾ ಪಶುರೇವ" ನೈಷಂ ೫-೧೨೫। 2. ದಕ್ಷನ  
ಪುತ್ರಿಯಾದ ಸುರಭಿಯ ಮಗಳು ರೋಹಿಣಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ  
ಒಂದು ಧೇನು. "ದಕ್ಷಸ್ಯ ತನಯಾ ಯಾಙ್ಮತ್ ಸುರಭಿರ್ನಾಮ  
ನಾಮತಃ। ಗವಾಂ ಮಾತಾ ಮಹಾಭಾಗಾ ಸರ್ವಲೋಕೋಪಕಾರಿಣಿ।  
ತಸ್ಯಾಂ ತು ತನಯಾ ಜಜ್ಞೇ ಕಶ್ಯಪಾತ್ ಪ್ರಜಾಪತೇಃ। ನಾಮ್ನಾ ಸಾ  
ರೋಹಿಣಿ ಶುಭ್ರಾ ಸರ್ವಕಾಮದುಘಾ ನೃಣಾಮ್। ತಸ್ಯಾ ಜಜ್ಞೇ ಶೂರಸೇನಾ-  
ದ್ವಸೋರತೀತಮೋಜ್ಜ್ವಲಾತ್। ಕಾಮಧೇನುರೀತಿ ಸ್ವಾತಾ ಸರ್ವಲಕ್ಷಣ-  
ಸಂಯುತಾ। ಸಾ ಸಿತಾಭ್ರಪ್ರತೀಕಾಶಾ ಚತುರ್ವೇದಚತುರ್ವಿಧಾ।  
ಸ್ತನೈಶ್ಚತುರ್ಭಿರ್ಮಾರ್ಥಿಕಾಮಪ್ರಸವಕಾರಿಣಿ" ಕಾಲಿಕಾಪುಂ।  
3. ಕಾಮಧೇನುವಿನ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ (ವಸಿಷ್ಠ  
ಮಹರ್ಷಿಯ ಹೋಮಧೇನುವಾದ) ನಂದಿನೀಧೇನು.  
ಇದಕ್ಕೆ "ಶಬಲಾ" ಎಂದೂ ಹೆಸರು.

[ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನು ಒಮ್ಮೆ ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿಯ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ  
ಬಂದಾಗ ತನ್ನ ಆತಿಥ್ಯಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ ಸಕಲ ಸಾಮಗ್ರಿ  
ಗಳನ್ನೂ ಈ ಧೇನುವು ಒಂದು ಕ್ಷಣಮಾತ್ರದಲ್ಲಿ ಸಿದ್ಧ  
ಗೊಳಿಸಿದುದನ್ನು ಕಂಡು ಸತ್ಕಾರದಿಂದ ಸಂತೋಷ  
ಗೊಂಡವನಾಗಿ ಈ ಧೇನುವನ್ನು ತನಗೆ ಕೊಡಬೇಕೆಂದೂ  
ಇದಕ್ಕೆ ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಲಕ್ಷಾಂತರ ಗೋವುಗಳನ್ನು ತಾನು  
ಕೊಡುವುದಾಗಿಯೂ ಹೇಳಲು ವಸಿಷ್ಠರು ಸಕಲ ಹವ್ಯ  
ಕವ್ಯಾದಿಕಾರ್ಯಗಳಿಗೂ ಆಧಾರವಾಗಿರುವ ಈ ನಂದಿನಿ  
ಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟುಕೊಡಲು ಸಂಮತಿಸಲಿಲ್ಲ. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನು  
ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ ನಂದಿನೀಧೇನುವನ್ನು ಎಳೆದುಕೊಂಡು  
ಹೋಗಲು ಯತ್ನಿಸಿದಾಗ ವಸಿಷ್ಠರನ್ನು ಬಿಟ್ಟುಹೋಗಲು



ಇಷ್ಟವಿಲ್ಲದೆ ನಂದಿನಿಯು ಮಹರ್ಷಿಯ ಆಜ್ಞೆಯಂತೆ ತನ್ನ ಶರೀರದಿಂದ ಮ್ಲೇಚ್ಛಶಕಯವನಾದಿಗಳನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನ ಸಕಲ ಸೈನ್ಯಗಳನ್ನೂ ನಾಶಗೊಳಿಸಿತು.] ರಾಮಾಂ ।

**ಕಾಮಧ್ವಸಿನ್ ಕಾಮಧ್ವಂಸಿನ್** (ಪುಂ) ಮಹಾದೇವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಕಾಮ ಧ್ವಂಸಯತಿ — ಧ್ವಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ) + ಣಿच् "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಕಾಮನ ಕಾಮನ** (ವಿಂ) 1. ಕಾಮುಕ. ಕಾಮಯತೆ — ಕಮು (ಕಾಂತಿ) + ಣಿಡ್ "ಯುಚ್" (೩-೨-೨೯) । (ನಂ) 2. ಅಭಿಲಾಷೆ, ಬಯಕೆ, ಇಚ್ಛೆ. ಕಮು ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

**ಕಾಮನಾ ಕಾಮನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಭಿಲಾಷೆ, ಬಯಕೆ, ಇಚ್ಛೆ. ಕಮು (ಕಾಂತಿ) + ಣಿಡ್ "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭) । "ಶಿಖಿ ವಿಧಾಯ ತ್ವದವಾಪ್ತಿಕಾಮನಾಂ ಸ್ವಯಂಹುತಸ್ವಾಂಶಹವಿಃ ಸ್ವಮೂರ್ತಿಷು" ನೈಷಂ ೧-೨೫ ।

**ಕಾಮನೀಯಕ ಕಾಮನೀಯಕ** (ನಂ) ರಮಣೀಯತೆ, ಮನೋಹರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಸೌಂದರ್ಯ. ಕಾಮನೀಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ವುಜ್" (೪-೧-೧೩೨) । "ನಿವೇದ್ಯಮಾನಂ ವನಪಾಲಪಾಣಿನಾ ವ್ಯಲೋಕಯತ್ ಕಾನನಕಾಮನೀಯಕಮ್" ನೈಷಂ ೧-೨೬ ।

**ಕಾಮಂದಕಿ ಕಾಮಂದಕಿ** (ಪುಂ) ಕಮಂದಕಯುಷಿಯ ಮಗ. ಕಮಂದಕಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಇಜ್" (೪-೧-೯೫) । ಕಾಮಂದಕೀಯ ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರವು ಈತನಿಂದ ರಚಿತವಾದುದು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಕೀ —ಕೀ. ಮಾಲತೀಮಾಧವದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಒಬ್ಬ ಪರಿವ್ರಾಜಿಕೆ.

**ಕಾಮಂದಕೀಯ ಕಾಮಂದಕೀಯ** (ನಂ) ಕಾಮಂದಕೀನೀತಿ ಶಾಸ್ತ್ರ, ಕಾಮಂದಕಿಯಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಒಂದು ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರ ಗ್ರಂಥ. ಕಾಮಂದಕೇ: ಇದಮ್ "ಛ:" (೪-೨-೧೧೪) ।

**ಕಾಮಪತ್ನೀ ಕಾಮಪತ್ನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನ್ಮಥನ ಪತ್ನಿ, ರತಿ. ಕಾಮಸ್ಯ ಪತ್ನಿ ।

**ಕಾಮಪಾಲ ಕಾಮಪಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಬಲರಾಮ. ಕಾಮಾನ್ ಪಾಲಯತಿ — ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿच् "ಅಣ್" (೩-೨-೧) । "ತೌ ಪರಸ್ಪರಗವೇಷಿತರನ್ಧ್ರೌ ಕಾಮಪಾಲಕಪಿಸೇನಿಕಪಾಲೌ" ಯಾದಂ ೨೧-೫೪ । 2. ಶ್ರೀವಾಸುದೇವ. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. "ದತ್ವಾ ತು ಪಾಲನಕರ: ಕಾಮಪಾಲ: ಪ್ರಕೀರ್ತित:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । "ಕಾಮದೇವ: ಕಾಮಪಾಲ: ಕಾಮಿ ಕಾಂತ: ಕೃತಾಗಮ:" ವಿಂ ಸಂ । 3. ಶಿವ, ಮಹಾದೇವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. (ವಿಂ) 4. ಇಷ್ಟಾರ್ಥಗಳನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಸಂತೋಷ ಪಡಿಸುವ.

**ಕಾಮಪೂರ ಕಾಮಪೂರ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಕಾಮಾನ್ ಪೂರಯತಿ — ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೆ) + ಣಿच् "ಅಣ್" (೩-೨-೧) । (ವಿಂ) 2. ಇಷ್ಟಾರ್ಥಗಳನ್ನು ಪೂರಯಿಸುವವನು.

**ಕಾಮಪ್ರದ ಕಾಮಪ್ರದ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಕಾಮಾನ್ ಪ್ರಕರ್ಷಣ ದದಾತಿ — ಡು ದಾಜ್ (ದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೬) । "ಕಾಮಪ್ರದ: ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಭಕ್ತಾನಾಂ ಕಾಮದಾಯಕ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । "ಕಾಮಹಾ ಕಾಮಕೃತ್ ಕಾಂತ: ಕಾಮ: ಕಾಮಪ್ರದ: ಪ್ರಭು:" ವಿಂ ಸಂ । 2. ಸುರತಬಂಧದ ಒಂದು ಭೇದ. "ದ್ವೌ ಪಾದೌ ಸ್ಕಂಧಸಂಲಗನೌ ಕ್ಷಿಪ್ತ್ವಾ ಲಿಙ್ಗಂ ಭಗೌ ತಥಾ । ಕಾಮಯೇತ್ ಕಾಮುಕ: ಪ್ರೀತ್ಯಾ ಬಂಧ: ಕಾಮಪ್ರದೌ ಹಿ ಸ:" ಸ್ಮರದೌಂ । (ವಿಂ) 3. ಇಷ್ಟಾರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ.

**ಕಾಮಪ್ರವೇದನ ಕಾಮಪ್ರವೇದನ** (ನಂ) ಅಪೇಕ್ಷೆಯನ್ನು ತಿಳಿಸುವಿಕೆ, ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುವಿಕೆ, ತನಗೆ ಬೇಕಾದುದನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು. ಕಾಮಸ್ಯ ಅಭಿಲಾಷಸ್ಯ ಪ್ರವೇದನಮ್ । "ಕಾಮಪ್ರವೇದನೇಕಚ್ಚಿತಿ" ಪಾಂ ಸೂಂ ೩-೩-೧೫೩ ।

**ಕಾಮಪ್ರಶ್ನ ಕಾಮಪ್ರಶ್ನ** (ಪುಂ) ಬೇಕಾದಹಾಗೆ ಪ್ರಶ್ನಿಸುವುದು, ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ ಕೇಳುವುದು. ಕಾಮಂ ಯಥೇಷ್ಠಂ ಪ್ರಶ್ನ: ।

**ಕಾಮಬಾಧಾ ಕಾಮಬಾಧಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನ್ಮಥನ ಪೀಡೆ.

**ಕಾಮಮ್ ಕಾಮಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಅನುಮತಿ, ಅನುಜ್ಞೆ. ಮುಂತಾದ ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ "ಕಾಮ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ಕಾಮಮಹ ಕಾಮಮಹ** (ಪುಂ) ಜೈತ್ರಮಾಸದಲ್ಲಿ ನಡೆಸುವ ವಸಂತೋತ್ಸವ, ಮದನೋತ್ಸವ. ಕಾಮಸ್ಯ ಮಹ: । "ಚೈತ್ರಾವಲ್ಯಾಂ ಮಧುತ್ಸವ: । ಸುಖಸಂತ: ಕಾಮಮಹ: ವಾಸಂತೀ ಕಾರ್ದಮೀ ಸ್ತ್ರಿಯೌ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಕಾಮಮುद्रಾ ಕಾಮಮುದ್ರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಂತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಒಂದು ಮುದ್ರೆ. "ಹಸ್ತೌ ತು ಸಂಪುಟೌ ಕೃತ್ವಾ ಪ್ರಸೃತಾಙ್ಗುಲಿಕೌ ತಥಾ । ತರ್ಜನ್ಯೌ ಮಧ್ಯಮಾಪೃಷ್ಠೇ ಅಙ್ಗುಲೌ ಮಧ್ಯಮಾಶ್ರಿತೌ । ಕಾಮಮುದ್ರೇಯಮುದಿತಾ ಸರ್ವದೇವಪ್ರಿಯಚ್ಛರೀ" ।

**ಕಾಮಯಮಾನ ಕಾಮಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಕಾಮಿಸುತ್ತಿರುವವನು, ಪ್ರೀತಿಸುತ್ತಿರುವವನು. ಕಾಮಯತೆ — ಕಮು (ಕಾಂತಿ) + ಣಿಡ್ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) । ಮುಗಾಗಮ: (೭-೨-೮೨) । 2. ಕಾಮುಕ.

**ಕಾಮಯಾನ ಕಾಮಯಾನ** (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು, ಬಯಸುವವನು. ಕಮು (ಕಾಂತಿ) + ಣಿಡ್ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಕಾಮುಕ. "ರಾಜಯಕ್ಷಮಪರಿಹಾನಿರಾಯಯೌ ಕಾಮಯಾನಸಮವಸ್ಥಯಾ ತುಲಾಮ್" ರಘುಂ ೧೯-೫೦ ।



**ಕಾಮಯಿತ್ ಕಾಮಯಿತ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಕಾಮುಕ. ಕಮು (ಕಾಂತಿ) + ಣಿಡ್ "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಇಚ್ಛಿಸುವ, ಬಯಸುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿಃ.

**ಕಾಮರೂಪ ಕಾಮರೂಪ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಕಾಮರೂಪ ದೇಶ. ಇದು "ಕಾಲೇಶ್ವರಂ ಶ್ವೇತಗಿರಿ ತ್ರಿಪುರಂ ನೀಲಪರ್ವತಮ್। (ಯಾವತ್) ಕಾಮರೂಪಾಭಿಧೋ ದೇಶಃ ಗಣೇಶಗಿರಿಮೂರ್ಧನಿ" ಎಂಬ ನಾಲ್ಕು ಪರ್ವತಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ (ಬಂಗಾಳದ ಪೂರ್ವ ಮತ್ತು ಅಸ್ಸಾಮಿನ ಪಶ್ಚಿಮದಲ್ಲಿ) ಗಣೇಶಗಿರಿಯ ಮೇಲಿರುವ ಪ್ರಾಗ್ಜ್ಯೋತಿಷವೆಂಬ ಒಂದು ದೇಶ. "ತಮಿಶಾಃ ಕಾಮರೂಪಾಣಾಮತ್ಯಾಖಂಡಲವಿಕ್ರಮಮ್" ರಘುಂ ೪-೮೩। 2. ಕಾಮರೂಪದೇಶದ ಜನರು. (ನಂ) 3. ಮನ್ಮಥನ ಆಕಾರ. (ವಿಂ) 4. ಸುಂದರವಾದ ರೂಪವುಳ್ಳ. 5. ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ ರೂಪವನ್ನು ತಾಳುವ. "ಜಾನಾಮಿ ತ್ವಾಂ ಪ್ರಕೃತಿಪುರುಷಂ ಕಾಮರೂಪಂ ಮಧೋನಃ" ಮೇಘಂ ೧-೬। ಕಾಮಂ ಕಾಮ್ಯಂ ಸುಂದರಂ ರೂಪಂ ಯಸ್ಯ।

**ಕಾಮರೂಪಿನ್ ಕಾಮರೂಪಿನ್** (ಪುಂ) 1. ವಿದ್ಯಾಧರ. (ವಿಂ) 2. ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ ರೂಪವನ್ನು ತಾಳುವ. ಕಾಮೇನ ಇಷ್ಟಾನುಸಾರೇಣ ರೂಪಮಸ್ತಯಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫)। "ಸರ್ವಮಾಶು ನಿಚೇತವ್ಯಂ ಹರಿಭಿಃ ಕಾಮರೂಪಿಭಿಃ" ರಾಮಾಂ। 3. ಸುಂದರವಾದ ರೂಪವುಳ್ಳ.

**ಕಾಮರೇಖಾ ಕಾಮರೇಖಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇಶ್ಯೆ, ಸೂಳೆ. ಕಾಮಾನಾಂ ಕಾಮವ್ಯಾಪಾರಾಣಾಂ ರೇಖಾ ಪಡ್ತಿಯಿತ್ರ।

**ಕಾಮಲ ಕಾಮಲ** (ಪುಂ) 1. ವಸಂತಕಾಲ. ಕಮು (ಕಾಂತಿ) + ಣಿಡ್ "ಕಲಃ" (೩ಂ ೧-೧೦೬)। 2. ಮರುದೇಶ, ನಿರ್ಜಲಪ್ರದೇಶ. (ವಿಂ) 3. ಕಾಮುಕ, ವಿಷಯಲಂಪಟ. (ಪುಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಃ -ಲಃ -ಲಾ -ಲಾ. 4. ಕಾಮಾಲೆ ರೋಗ, ಅರಿಶಿನ ಮುಂಡಿಗೆ ರೋಗ. ಕಾಮಾಲೆ ರೋಗವು ಪಾಂಡು ರೋಗದ ಒಂದು ಪ್ರಭೇದ. ಇದು (1) ವಾತಿಕ, (2) ಪೈತ್ತಿಕ ಮತ್ತು (3) ಶ್ಲೇಷ್ಮಿಕಗಳೆಂದು ಮೂರು ಬಗೆ. ಈ ಮೂರು ಲಕ್ಷಣಗಳೂ ಸೇರಿದರೆ ಸಾನ್ನಿವಾತಿಕ ವೆನಿಸುವುದು.

(1) "ವಾತಿಕಕಾಮಾಲೆ" ಯಲ್ಲಿ ಮುಖ, ಕಣ್ಣುಗಳು, ಉಗುರುಗಳು, ನರಗಳು, ಮಲಮೂತ್ರಗಳೆಲ್ಲವೂ ಕಪ್ಪು ಬಣ್ಣಕ್ಕೆ ತಿರುಗುವುವು. "ಕೃಣ್ಣೇಕ್ಷಣಂ ಕೃಣ್ಣಸಿರಾವನದ್ಧಂ ತದ್ವರ್ಣವಿಷ್ಮತ್ತನಖಾನನಂ ಚ। ವಾತೇನ ಪಾಂಡುಂ ಮನುಜಂ ವ್ಯವಸ್ಯೇತ್ಯುಕ್ತಂ ತಥಾನ್ಯೇಸ್ತದ್ವಪದ್ರವೇಶ್ಚ" ಸುಶ್ರುತಂ ೩೪-೭।

(2) "ಪೈತ್ತಿಕಕಾಮಾಲೆ" ಯಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲವೂ ಹಳದಿ ಬಣ್ಣಕ್ಕೆ ತಿರುಗುವುವು. "ಪೀತೇಕ್ಷಣಂ ಪೀತಸಿರಾವನದ್ಧಂ ತದ್ವರ್ಣ-

ವಿಷ್ಮತ್ತನಖಾನನಂ ಚ। ಪಿತ್ತೇನ ಪಾಂಡುಂ ಮನುಜಂ ವ್ಯವಸ್ಯೇತ್ಯುಕ್ತಂ ತಥಾನ್ಯೇಸ್ತದ್ವಪದ್ರವೇಶ್ಚ" ಸುಶ್ರುತಂ ೩೪-೮।

(3) "ಶ್ಲೇಷ್ಮಿಕಕಾಮಾಲೆ" ಯಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲವೂ ಶುಕ್ಲವರ್ಣಕ್ಕೆ ತಿರುಗುವುವು. ಮತ್ತು ಕಫದ ಬಾಧೆಯು ಹೆಚ್ಚಾಗುವುದು. "ಶುಕ್ಲೇಕ್ಷಣಂ ಶುಕ್ಲಸಿರಾವನದ್ಧಂ ತದ್ವರ್ಣವಿಷ್ಮತ್ತನಖಾನನಂ ಚ। ಕಫೇನ ಪಾಂಡುಂ ಮನುಜಂ ವ್ಯವಸ್ಯೇತ್ಯುಕ್ತಂ ತಥಾನ್ಯೇಸ್ತದ್ವಪದ್ರವೇಶ್ಚ" ಸುಶ್ರುತಂ ೩೪-೯।

**ಕಾಮಲತಾ ಕಾಮಲತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುರುಷನ ಚಿಹ್ನೆ, ಲಿಂಗ, ಶಿಶು. ಕಾಮಸ್ಯ ಲತೇವ।

**ಕಾಮಲಿನ್ ಕಾಮಲಿನ್** (ವಿಂ) ಕಾಮಾಲೆರೋಗವುಳ್ಳವನು. ಕಾಮಲಾಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫)।

**ಕಾಮವತ್ ಕಾಮವತ್** (ವಿಂ) 1. ಅಭಿಲಾಷೆಯುಳ್ಳವನು, ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು, ಬಯಕೆಯುಳ್ಳವನು. ಕಾಮೋಽಸ್ಯಸ್ಯ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪)। 2. ಸ್ತ್ರೀಸಂಭೋಗದಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳವನು, ಕಾಮುಕ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ವತಿ -ವತಿಃ.

**ಕಾಮವಲ್ಲಭ ಕಾಮವಲ್ಲಭ** (ಪುಂ) 1. ವಸಂತಕಾಲ. 2. ಮಾವಿನಮರ. ಕಾಮಸ್ಯ ವಲ್ಲಭಃ ಪ್ರಿಯಃ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಭಾ -ಭಾ. 3. ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಬೆಳದಿಂಗಳು.

**ಕಾಮವೃತ್ತ ಕಾಮವೃತ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಕಾಮವ್ಯಾಪಾರವುಳ್ಳ, ಹೆಂಗಸರಲ್ಲಿ ಅನುರಾಗವುಳ್ಳ. ಕಾಮಸ್ಯ ವೃತ್ತಂ ಯಸ್ಯ। "ವಿಶೀಲಃ ಕಾಮವೃತ್ತೋ ವಾ ಗುಣೈರ್ವಾ ಪರಿವರ್ಜಿತಃ। ಉಪಚಯಃ ಸ್ತ್ರಿಯಾ ಸಾಧ್ಯಾ ಸತತಂ ದೇವವತ್ಪತಿಃ" ಮನುಂ ೫-೧೫೪। 2. ಸ್ವೇಚ್ಛಾಚಾರವುಳ್ಳ, ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ ನಡೆಯುವ, ತೋರಿದಂತೆ ಕೆಲಸಮಾಡುವ. ಕಾಮಂ ಯಥೇಷ್ಟಂ ವೃತ್ತಂ ವ್ಯಾಪಾರೋ ಯಸ್ಯ। "ಯಸ್ತು ಸ್ಯಾತ್ ಕ್ಷತ್ರಿಯಃ ಪಾರ್ಥ ಕಾಮವೃತ್ತಃ ಪರಂತಪ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೫೯-೬೨।

**ಕಾಮವೃತ್ತಿ ಕಾಮವೃತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಮಚೇಷ್ಟೆ, ಮನ್ಮಥವ್ಯಾಪಾರ. ಕಾಮಸ್ಯ ವೃತ್ತಿಃ। 2. ಸ್ವೇಚ್ಛಾವ್ಯಾಪಾರ, ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ ಕೆಲಸಮಾಡುವುದು. ಕಾಮೇನ ಇಚ್ಛಾನುಸಾರೇಣ ವೃತ್ತಿಃ। (ವಿಂ) 3. ಸ್ವೇಚ್ಛಾವ್ಯಾಪಾರವುಳ್ಳ, ತನ್ನ ಇಷ್ಟದಂತೆ ವ್ಯವಹರಿಸುವ. ಕಾಮೇನ ಸ್ವೇಚ್ಛಯಾ ವೃತ್ತಿಯಸ್ಯ। "ಮಮಾತ್ರ ಭಾವೇಕರಸಂ ಮನಃಸ್ಥಿತಂ ನ ಕಾಮವೃತ್ತಿರ್ವಚನೀಯಮೀಕ್ಷತೇ" ಕುಮಾಂ ೫-೮೨।

**ಕಾಮಶರ ಕಾಮಶರ** (ಪುಂ) 1. ಮನ್ಮಥನ ಬಾಣ. 2. ಮಾವಿನಮರ. ಕಾಮಸ್ಯ ಶರ ಇವ।

**ಕಾಮಶಾಸನ ಕಾಮಶಾಸನ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರ, ಶಿವ. ಕಾಮಂ ಶಾಸ್ತಿ-ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟೌ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)।



**ಕಾಮಶಾಸ್ತ್ರ ಕಾಮಶಾಸ್ತ್ರ (ನಂ)** 1. ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ಅನುರಾಗ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಒಂದು ಶಾಸ್ತ್ರ. ಕಾಮಸ್ಯ ಕಾಮವ್ಯಾಪಾರಸ್ಯ ಪ್ರತಿಪಾದಕಂ ಶಾಸ್ತ್ರಮ್ | 2. ಕಾಮ್ಯ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ. ಕಾಮಸ್ಯ ಕಾಮ್ಯಸ್ಯ ಸ್ವರ್ಗದಿಃ ಪ್ರತಿಪಾದಕಂ ಶಾಸ್ತ್ರಮ್ | “ಅರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರಮಿದಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರಮಿದಂ ಮಹತ್ | ಕಾಮಶಾಸ್ತ್ರಮಿದಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ವ್ಯಾಸೇನಾ-ಮಿತಬುದ್ಧಿನಾ” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨-೩೮೩ |

**ಕಾಮಸಖ ಕಾಮಸಖ (ಪುಂ)** 1. ವಸಂತಕಾಲ. 2. ಮಾವಿನ ಮರ. 3. ಚೈತ್ರ ಮಾಸ. ಕಾಮಸ್ಯ ಸಖಾ “ಠಕ್” (೪-೧-೯೧) |

**ಕಾಮಸುತ ಕಾಮಸುತ (ಪುಂ)** ಮನ್ಮಥನ ಮಗ, ಅನಿರುದ್ಧ. ಕಾಮಸ್ಯ ಸುತಃ |

**ಕಾಮಸು ಕಾಮಸೂ (ಪುಂ)** 1. ಶ್ರೇಷ್ಠ, ವಾಸುದೇವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ರುಕ್ಮಿಣಿ. (ವಿಂ) 3. ಅಭೀಷ್ಟವಾದುದನ್ನು ಕೊಡುವ, ಇಷ್ಟಾರ್ಥವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ. ಕಾಮ ಸುತೇ — ಷಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭವಿಮೋಚನೆ) “ವಿವಪ್” (೩-೨-೬೧) |

**ಕಾಮಸೂತ್ರ ಕಾಮಸೂತ್ರ (ನಂ)** ಕಾಮವ್ಯಾಪಾರಗಳನ್ನು ಹೇಳುವ ಸೂತ್ರ, ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ಶೃಂಗಾರ ಚೇಷ್ಟೆಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ವಾತ್ಸ್ಯಾಯನಕೃತವಾದ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ. ಕಾಮಸ್ಯ ಮನ್ಮಥವ್ಯಾಪಾರಸ್ಯ ಪ್ರತಿಪಾದಕಂ ಸೂತ್ರಮ್ | “ಹಾಸಭೂಷಣರವಾಚ ರಮण्याಃ ಕಾಮಸೂತ್ರಪದತಾಮುಪಜಗ್ಮುಃ” ಮಾಘಂ ೧೦-೭೪ |

**ಕಾಮಸ್ತುತಿ ಕಾಮಸ್ತುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಾಮವನ್ನು ಸ್ತೋತ್ರ ಮಾಡುವ ಒಂದು ಮಂತ್ರ, ದಾನಿಯು ಕೊಟ್ಟ ದಾನವನ್ನು ಪ್ರತಿಗ್ರಹಿಸುವ (ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ) ದೋಷಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಹೇಳುವ ಯಜುರ್ವೇದದ ಒಂದು ಮಂತ್ರ. ಕಾಮಸ್ಯ ಸ್ತುತಿಃ | “ಕೋಽದಾತ್? ಕಸ್ಮಾ ಅದಾತ್? ಕಾಮೋಽದಾತ್ | ಕಾಮಾಯಾದಾತ್ | ಕಾಮೋ ದಾತಾ | ಕಾಮಃ ಪ್ರತಿಗ್ರಹೀತಾ | ಕಾಮೇತತೇ” |

**ಕಾಮಹನ್ ಕಾಮಹನ್ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಕಾಮಂ ಹತವಾನ್—ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) “ವಿವಪ್” (೩-೨-೮೭) | “ಪುಂಸಾಂ ಸ್ವದರ್ಶಿನಾಂ ಯೋಽಸೌ ಸ್ಪೃಹಾಂ ಚ ವಿಷಯಾಂತರೇ | ಹತವಾನ್ ಕಾಮಹಾ ಪ್ರೋಕ್ತಃ ಸರ್ವಾಶಾಪೂರಕೋ ಮನುಃ” ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ | “ಕಾಮಹಾ ಕಾಮಕೃತ್ ಕಾಂತಃ ಕಾಮಃ ಕಾಮಪ್ರದಃ ಪ್ರಭುಃ” ವಿಂ ಸಂ | 2. ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ.

**ಕಾಮಾಕ್ಷಿ ಕಾಮಾಕ್ಷೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದುರ್ಗಾದೇವಿಯ ಒಂದು ಮೂರ್ತಿ. ಕಾಮಂ ಸುಂದರಮಕ್ಷಿ ಯಸ್ಯಾಃ “ಷಕ್” (೪-೪-೧೧೩) |

**ಕಾಮಾಗ್ನಿ ಕಾಮಾಗ್ನಿ (ಪುಂ)** ಕಾಮಾತುರತೆ, ಕಾಮೋದ್ರೇಕ, ಮನೋವಿಕಾರ, ಬೆದ, ಸಂಭೋಗದ ಆಸೆ.

**ಕಾಮಾಡ್ಕುಶ ಕಾಮಾಂಕುಶ (ಪುಂ)** 1. ನಖ, ಉಗುರು. ಕಾಮೇ ಅಡ್ಕುಶ ಇವ ತದ್ವಿಪಕತ್ವಾತ್ | ಚುಂಬನ ಆಲಿಂಗನ ನಖ ವ್ಯಾಪಾರಾದಿಗಳಿಂದ ಒಂದೊಂದು ಅಂಗದಲ್ಲೂ ಒಂದೊಂದು ತಿಥಿಯಲ್ಲಿ ಕಾಮೋದ್ರೇಕವಾಗುವುದು. [“ಕಾಮ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ಪುರುಷನ ಲಿಂಗ, ಶಿಶ್ನ. ಕಾಮಸ್ಯಾಡ್ಕುಶ ಇವ |

**ಕಾಮಾತುರ ಕಾಮಾತುರ (ವಿಂ)** ಮನ್ಮಥನಿಂದ ಪೀಡಿತ ನಾದ, ಕಾಮೋದ್ರೇಕವುಳ್ಳ, ಕಾಮರೋಗದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕಾಮೇನ ಆತುರಃ | “ಕಾಮಾತುರಾಣಾಂ ನ ಭಯಂ ನ ಲಜ್ಜಾ” |

**ಕಾಮಾತ್ಮಜ ಕಾಮಾತ್ಮಜ (ಪುಂ)** ಕಾಮನ ಮಗ, ಅನಿರುದ್ಧ. ಕಾಮಸ್ಯಾತ್ಮಜಃ |

**ಕಾಮಾತ್ಮತಾ ಕಾಮಾತ್ಮತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಸ್ವಭಾವ. ಕಾಮಪ್ರಧಾನಃ ಇಚ್ಛಾಪ್ರಧಾನಃ ಆತ್ಮಾ ಯಸ್ಯ ತಸ್ಯ ಭಾವಃ | 2. ಅನುರಾಗದಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. ಕಾಮ-ಪ್ರಧಾನಃ ಅನುರಾಗಪ್ರಧಾನಃ ಆತ್ಮಾ ಯಸ್ಯ ತಸ್ಯ ಭಾವಃ “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯) | “ಕಾಮಾತ್ಮತಾ ನ ಪ್ರಶಸ್ತಾ ನ ಚೈವೇಹಾಸ್ತ್ಯ-ಕಾಮತಾ” ಮನುಂ ೨-೨ |

**ಕಾಮಾತ್ಮನ್ ಕಾಮಾತ್ಮನ್ (ವಿಂ)** 1. ಅನುರಾಗಪ್ರಧಾನ ವಾದ ಆತ್ಮವುಳ್ಳ. 2. ವಿಷಯಾಸಕ್ತಿಯಿಂದ ತುಂಬಿದ ಚಿತ್ತವುಳ್ಳ. ಕಾಮಪ್ರಧಾನಃ ಆತ್ಮಾ ಯಸ್ಯ | 3. ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಫಲವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ ಕರ್ಮ ಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ. “ಕಾಮೇಷು ಕಾಮ್ಯೇಷು ಕರ್ಮಸು ಆತ್ಮಾ ಯಸ್ಯ | “ಕಾಮಾತ್ಮಾನಃ ಸ್ವರ್ಗಪರಾಃ ಜನ್ಮಕರ್ಮಫಲಪ್ರದಾಮ್” ಗೀತಾ ೨-೪೩ |

**ಕಾಮಾಧಿಷ್ಠಾನ ಕಾಮಾಧಿಷ್ಠಾನ (ನಂ)** ಇಂದ್ರಿಯ, ಮನಸ್ಸು ಮತ್ತು ಬುದ್ಧಿ. ಕಾಮಸ್ಯಾಧಿಷ್ಠಾನಮ್ | “ಇಂದ್ರಿಯಾಣಿ ಮನೋ ಬುದ್ಧಿರಸ್ಯಾಧಿಷ್ಠಾನಮುಚ್ಯತೇ” ಗೀತಾ ೩-೪೦ |

**ಕಾಮಾಂಧ ಕಾಮಾಂಧ (ಪುಂ)** 1. ಕೋಗಿಲೆ. ಕಾಮೇನ ಕಾಮೋದ್ರೇಕದಿಂದ ಅಂಧವಾಗುತ್ತದೆ — ಅಂಧ + ಣಿच् ನಾಮಧಾಂ “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) | (ವಿಂ) 2. ಕಾಮೋದ್ರೇಕದಿಂದ ಜ್ಞಾನ ಶೂನ್ಯನಾದ. ಕಾಮೇನ ರಾಗೇಣ ಅಂಧಃ ವಿವೇಕಶೂನ್ಯಃ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಠಾಪ್” (೪-೧-೪) | ಕಾಮಾಂಧಾ ಕಾಮಾಂಧಾ. “ಕಾಮಾಂಧಾ ರಾಕ್ಷಸೀ ಸಾ ಪತಿಮತಿಮತನೋತ್ ಮೆಥಿಲಿಪ್ರಾಣನಾಥೇ” ಚಂ ರಾಂ |

**ಕಾಮಾಂಧಾ ಕಾಮಾಂಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಕಸ್ತೂರಿ, ಮೃಗಮದ. ಕಾಮಂ ಯಥೇಷ್ಟಮಂಧಯತಿ — ಅಂಧ + ಣಿच् ನಾಮಧಾಂ “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) | 2. ಶೃಂಗ, ಗಿಡಗಹಕ್ಕಿ.



**ಕಾಮಾಯುಧ ಕಾಮಾಯುಧ** (ಪುಂ) 1. ಮಾವಿನಮರ. ಕಾಮಸ್ಯಾಯುಧಮಿವ ಮುಕ್ತುಲೇ ಆಕಾರೋಽಸ್ಯಸ್ಯ | (ನಂ) 2. ಮನ್ಮಥನ ಆಯುಧ.

**ಕಾಮಾಯುಸ್ ಕಾಮಾಯುಸ್** (ಪುಂ) ಯಥೇಷ್ಟವಾದ ಆಯುಸ್ಸುಳ್ಳ ಗರುಡ. ಕಾಮಂ ಯಥೇಷ್ಟಮಾಯುಸ್ಯ |

**ಕಾಮಾರಿ ಕಾಮಾರಿ** (ಪುಂ) ಶಿವ. ಈಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. ಕಾಮಸ್ಯಾರಿ: |

**ಕಾಮಾರ್ತ ಕಾಮಾರ್ತ** (ವಿಂ) ಕಾಮಪೀಡಿತನಾದ, ಕಾಮ ಬಾಧೆಯನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿರುವ, ಕಾಮರೋಗವುಳ್ಳ. ಕಾಮೇನಾರ್ತ: | “ಕಾಮಾರ್ತಾ ಹಿ ಪ್ರಕೃತಿಕೃಪಣಾಽಚೇತನಾಚೇತನೇಷು” ಮೇಘಂ ೧-೪ |

**ಕಾಮಾಲಿಕಾ ಕಾಮಾಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುರೆ, ಮದ್ಯ. ಕಾಮಮಲತಿ — ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ) “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) |

**ಕಾಮಾವಶಾಯ ಕಾಮಾವಶಾಯ** (ಪುಂ) ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಅಥವಾ ಅಪೇಕ್ಷೆಗಳನ್ನು ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲೇ ಅಡಗಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಅನುರಾಗವನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸುವಿಕೆ. ಕಾಮೇನ ಅವಶಯತೇ — ಅವ + ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) “ಛನ್” (೩-೩-೧೮) |

**ಕಾಮಾವಶಾಯಿತಾ ಕಾಮಾವಶಾಯಿತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಅಥವಾ ಅನುರಾಗವನ್ನು ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲೇ ಅಡಗಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಸತ್ಯಸಂಕಲ್ಪತ್ವರೂಪವಾದ ಯೋಗಿಗಳ ಒಂದು ಐಶ್ವರ್ಯ. ಕಾಮೇನ ಇಚ್ಛಯಾ ಅವಶಾಯಯತಿ — ಅವ + ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) + ಣಿಚ್ “ಣಿನಿ:” (೩-೧-೧೩೪) | —ಶಾಯಿನ್ | ತಸ್ಯ ಭಾವ: “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯) | “ತ್ವ:” (೪-೧-೧೧೯) | —ಅವಶಾಯಿತವಂ — ಅವಶಾಯಿತಮ್.

**ಕಾಮಾವಶಾಯಿನ್ ಕಾಮಾವಶಾಯಿನ್** (ಪುಂ) ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ಎಲ್ಲಾ ವಿಧ ಕಾಮಗಳನ್ನೂ ನಿಗ್ರಹಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಯೋಗಿ. ಕಾಮೇನ ಇಚ್ಛಯಾ ಅವಶಾಯಯತಿ — ಅವ + ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) + ಣಿಚ್ “ಣಿನಿ:” (೩-೧-೧೩೪) |

**ಕಾಮಾವಶಾಯಿತಾ ಕಾಮಾವಶಾಯಿತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) “ಕಾಮಾವಶಾಯಿತಾ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ಕಾಮೇನ ಸ್ವೇಚ್ಛಯಾ ಅವಸ್ಯಯತಿ ಸರ್ವಾಣಿ ವಸ್ತುನಿ — ಅವ + ಷೌ (ಅಂತರ್ಮಣಿ) “ಣಿನಿ:” (೩-೧-೧೩೪) | ತಸ್ಯ ಭಾವ: “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯) | “ಅಣಿಮಾ ಲಘಿಮಾ ಪ್ರಾಪ್ತಿ: ಪ್ರಾಕಾಮ್ಯಂ ಚ ತಥೇಶಿತಾ | ವ್ಯಾಪಿತ್ವಂ ಚ ವಶಿತ್ವಂ ಚ ತಥಾ ಕಾಮಾವಶಾಯಿತಾ” | “ತ್ವ:” (೪-೧-೧೧೯) | —ಸಾಯಿತವಂ — ಸಾಯಿತಮ್.

**ಕಾಮಾವಶಾಯಿನ್ ಕಾಮಾವಶಾಯಿನ್** (ವಿಂ) “ಕಾಮಾವಶಾಯಿನ್” ಪದದ ಅರ್ಥ. ಕಾಮಾನ್ ಅವಸ್ಯಯತಿ — ಅವ + ಷೌ (ಅಂತರ್ಮಣಿ) “ಣಿನಿ:” (೩-೧-೧೩೪) |

**ಕಾಮಾಸಕ್ತ ಕಾಮಾಸಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆಗಳನ್ನು ಪೂರೆಯಿಸುವ ಆಶಯವುಳ್ಳ. 2. ಕಾಮದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು, ಸ್ವರ್ಚಂದನಾದಿ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಅಭಿರುಚಿಯುಳ್ಳವನು. 3. ಕಾಮುಕ. ಕಾಮೇಷು ಆಸಕ್ತ: |

**ಕಾಮಿ ಕಾಮಿ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಮುಕ, ಕಾಮವುಳ್ಳವನು, ಸಂಭೋಗದಲ್ಲಿ ಆಸೆಯುಳ್ಳವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ರತಿ, ಮನ್ಮಥನ ಪತ್ನಿ. “ಕಾಮಿನಿ ಕಾಮುಕೇ ರತ್ಯಾಂ ಸ್ತ್ರೀ” ಮೇದಿಂ |

**ಕಾಮಿಕ ಕಾಮಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಡುಕೋಳಿ, ಬಾತುಕೋಳಿ. ಕಾಮೋಽಸ್ಯಸ್ಯ “ಠನ್” (೪-೨-೧೧೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ “ಡೀಫ್” (೪-೧-೬೩) | —ಕೀ —ಕೀ. 2. ಶೈವಾಗಮದ 28 ಗ್ರಂಥಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಆಗಮಗ್ರಂಥ. (ವಿಂ) 3. ಕಾಮ್ಯ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ದೇವತಾಸ್ತಸ್ಯ ತುಷ್ಯಂತಿ ಕಾಮಿಕಂ ತಸ್ಯ ಸಿದ್ಧಯತಿ” ಭಾಂ ಅನುಂ | 4. ಕಾಮದಿಂದ ನಡೆಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕಾಮೇನ ನಿರ್ವೃತ್ತಮ್ “ಠನ್” (೪-೨-೬೮) |

**ಕಾಮಿತ ಕಾಮಿತ** (ನಂ) 1. ಇಚ್ಛೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಬಯಕೆ. ಕಮು (ಕಾಂತೌ) + ಣಿಡ್ ಭಾವೇ “ಕ್ತ:” (೩-೩-೧೧೪) | 2. ಅನುರಾಗ, ಪ್ರೀತಿ. “ಸ್ಫುಟಮಭಿಲಷಿತಂ ಬಭೂವ ವಧ್ವಾ ವದತಿ ಹಿ ಸಂವೃತಿರೇವ ಕಾಮಿತಾನಿ” ಕಿರಾಂ ೧೦-೪೪ | (ವಿಂ) 3. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಯಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕಮು + ಣಿಡ್ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) |

**ಕಾಮಿನ್ ಕಾಮಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಪತಿ, ಗಂಡ. ಕಾಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪) | “ಹೃತಾಯಾ: ಪ್ರತಿಸಖಿ ಕಾಮಿನಾನ್ಯನಾಮ್ನಾ ಹ್ಲಿಮತ್ಯಾ: ಸರಸಿ ಗಲನ್ಮುಖೇಂದುಕಾಂತೇ:” ಮಾಧಂ ೮-೪೨ | 2. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. “ಪ್ರದೇಯಾತಿಶಯಾತ್ ಕಾಮಿ” ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: | “ಕಾಮದೇವ: ಕಾಮಪಾಲ: ಕಾಮಿ ಕಾಂತ: ಕೃತಾಗಮ:” ವಿಂ ಸಂ | 3. ಚಕ್ರವಾಕಪಕ್ಷಿ. 4. ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ. “ಕಾಮಿ ತು ಕಾಮುಕೇ ಚಕ್ರವಾಕೇ ಪಾರಾವತೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ | 5. ಚಂದ್ರ. 6. ಗುಬ್ಬಚ್ಚಿ. 7. ಸಾರಸ ಪಕ್ಷಿ, ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹಂಸ ಪಕ್ಷಿ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ “ಡೀಫ್” (೪-೧-೬೩) | (ವಿಂ) 8. ಅನುರಾಗವುಳ್ಳವನು, ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳವನು. “ತ್ವದಗ್ರಸುಚೀಸಚಿವೇನ ಕಾಮಿನೋರ್ಮನೋಭವ: ಸೀವ್ಯತಿ ದುರ್ಯಶ:ಪತೌ” ನೈಷಂ ೧-೮೦ | 9. ಕಾಮುಕ, ಕಾಮಪೀಡಿತ, ಸಂಭೋಗಾಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು. ಕಾಮಯತೇ — ಕಮು (ಕಾಂತೌ) + ಣಿಡ್ “ಣಿನಿ:” (೩-೧-೧೩೪) | “ಕಾಮಿನೋ ಕೃತರತೌತ್ಸವಕಾಲೋಪಮಾಕುಲವಭೂಕರಸಜ್ಜಿ”



ಮಾಘಂ ೧೦-೬೧। 10. ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಬಯಸುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। ಕಾಮಿನಿ ಕಾಮಿನೀ.

**ಕಾಮಿನಿ ಕಾಮಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಪ್ರೀತಿಸುವ ಹೆಂಗಸು, ಅನುರಕ್ತಳಾದ ಹೆಂಗಸು, ಕಾಮಾತುರವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಕಾಮೋಸ್ತಯಸ್ಯಾ: "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। "ಪರಿಮಲಿತಮಪಿ ಪ್ರಿಯೆ: ಪ್ರಕಾಮಂ ಕುಚಯುಗ-ಮುಜ್ಜವಲಮೇವ ಕಾಮಿನಿನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೭-೭೦। "ಕಾಮಿನೀಪು ವಿವಾಹೇಷು ಗವಾಂ ಭಕ್ತೇ ತಥೇಂದ್ರೇನೇ। ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಭ್ಯುಪಪತ್ತೌ ಚ ಶಪಥೇ ನಾಸ್ತಿ ಪಾತಕಮ್" ಮನುಂ ೮-೧೧೨। 2. ಹೆಂಗಸು. "ಪರಿವೃದ್ಧರಾಗಮನುಬಂಧಸೇವಯಾ ಮೃಗಯಾ ಜಹಾರ ಚತುರೇವ ಕಾಮಿನಿ" ರಘುಂ ೯-೬೯। 3. ಸುಂದರಿ, ರೂಪವತಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು. "ಮಧುನಿ ವಕ್ತ್ರಾಣಿ ಚ ಕಾಮಿನಿನಾಮಾಮೋದ-ಕರ್ಮವ್ಯತಿಹಾರಮೀಯು:" ಮಾಘಂ ೩-೫೪। 4. ಭೀರು, ಭಯ ವುಳ್ಳವಳು. 6. ಬದನೆಕೆ ಗಿಡ. 7. ಮರದರಿತಿಸ. 8. ಒಂದು ಮದ್ಯ.

**ಕಾಮುಕ ಕಾಮುಕ (ಪುಂ)** 1. ಅಡಕೆಮರ. ಕಮು (ಕಾಂತೌ) "ಉಕ್ಮ್" (೩-೨-೧೫೪)। 2. ಅಶೋಕವೃಕ್ಷ. 3. ಕಾಡಿರುವಂತಿಗೆ. "ಕಾಮುಕಾಸ್ತು ಕಾಮ್ಯಶೋಕಾತಿಮುಕ್ತಕಾ:" ಹೇಮಂ। (ವಿಂ) 4. ಕಾಮಪೀಡಿತನಾದ, ಹೆಚ್ಚು ಕಾಮವೇಗ ವುಳ್ಳ, ಸಂಭೋಗದ ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, ಕಾಮಯಿತುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ "ಉಕ್ಮ್" (೩-೨-೧೫೪)। "ವಶ್ವಯಿಷ್ಯಸಿ ಕುತಸ್ತಮೋವೃತ: ಕಾಮುಕೇತಿ ಚಕೃಷುಸ್ತಮಜ್ಞನಾ:" ರಘುಂ ೧೯-೩೩। 5. ಅತಿ ಯಾಗಿ ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಹೆಚ್ಚು ಅಸೆಪಡುವ. "ಇತ್ಯಾಕರ್ಣ್ಯ ಕ್ಷಿತಿಶಸ್ತ್ರದಶಪರಿಷದಸ್ತಾ ಗಿರಶ್ಚಾಡುಗರ್ಭಾ: ವೈದರ್ಭಿ-ಕಾಮುಕೋಽಪಿ ಪ್ರಸಭವಿನಿಹಿತಂ ದ್ವೈತಭಾರಂ ಬಭಾರ" ನೈಷಂ ೫-೧೩೭। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ-ಕಾ. 6. ಧನ ಮೊದಲಾದವು ವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ ಹೆಂಗಸು. -ಕೀ-ಕೀ. ಸಂಭೋಗದ ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. "ಕಾಮುಕೀ ಮೈಯುನೇಕ್ಷಾ ಚೇತ್ ಕಾಮುಕಾನ್ಯಾ" ಸಿಂ ಕೌಂ (೪-೧-೪೨)।

**ಕಾಮುಕತ್ವ ಕಾಮುಕತ್ವ (ನಂ)** ಕಾಮುಕತನ, ವಿಲಾಸದಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. ಕಾಮುಕಸ್ಯ ಭಾವ: "ತ್ವ:" (೫-೧-೧೧೯)। "ತೇಷಾಂ ದಿಕ್ಷು ಪ್ರಥಿತವಿಧಿಶಾಲಕ್ಷಣಾಂ ರಾಜಧಾನೀಂ ಗತ್ವಾ ಸಘ: ಫಲಮವಿಕಲಂ ಕಾಮುಕತ್ವಸ್ಯ ಲಬ್ಧ್ವಾ" ಮೇಘಂ ೧-೨೪। "ತಲ್" -ಕತಾ -ಕತಾ.

**ಕಾಮುಕಾಯನ ಕಾಮುಕಾಯನ (ಪುಂ)** ಕಾಮುಕನ ಮಗ. ಕಾಮುಕಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಫಕ್" (೪-೧-೯೯)।

**ಕಾಮೇಷು ಕಾಮೇಷು (ವಿಂ)** 1. ಇಷ್ಟಾರ್ಥವನ್ನು ಹೊಂದಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಕಾಮಮಾಪ್ತುಮಿಚ್ಛು: - ಆಪ್ಲ್

(ವ್ಯಾಪ್ತೌ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೭)। 2. ಸಂಭೋಗ ವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ.

**ಕಾಮೇಶ್ವರ ಕಾಮೇಶ್ವರ (ಪುಂ)** 1. ಪರಮೇಶ್ವರ. ಕಾಮಾನಾ-ಮೀಶ್ವರ:। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರೀ -ರೀ. ದೇವಿಯ ಒಂದು ಮೂರ್ತಿ. "ಕಾಮಾಖ್ಯಾ ತ್ರಿಪುರಾ ಚೈವ ತಥಾ ಕಾಮೇಶ್ವರೀ ಶಿವಾ। ಸಾರದಾಽಽ ಮಹೋತ್ಸಾಹಾ ಕಾಮರೂಪಗುಣೈರುತಾ" ಕಾಲಿಕಾಪುಂ।

**ಕಾಮೋಪಹತ ಕಾಮೋಪಹತ (ಪುಂ)** 1. ಮನ್ಮಥನಿಂದ ಪೀಡಿತನಾದ. 2. ಅಸೆಯಿಂದ ಪೀಡಿತನಾದ. ಕಾಮೇನ ಉಪಹತ:।

**ಕಾಮ್ಪಿಲ್ಯ ಕಾಂಪಿಲ್ಯ (ಪುಂ)** 1. ಕಾಂಪಿಲ್ಯದೇಶ. 2. ಕಾಂಪಿಲ್ಯಪುರ, ದ್ರುಪದರಾಜನ ರಾಜಧಾನಿ. [ಈ ಪಟ್ಟಣವು ಫರಾಕಾಬಾದ್ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಫಟೇ ನಗರಕ್ಕೆ ಈಶಾನ್ಯದಲ್ಲಿರುವುದು.] "ಮಾಕಂದೀಮಥ ಗಜ್ಜಾಯಾಸ್ತೀರೇ ಜನಪದಾಯುತಾಂ। ಸೌಖ್ಯವಾತ್ಸೀತ್ ದೀನಮನಾ: ಕಾಮ್ಪಿಲ್ಯಂ ಚ ಪುರೋತ್ತಮಮ್। ದಕ್ಷಿಣಾಂಶ್ಚಾಪಿ ಪಾಶ್ಚಾಲಾನ್ ಯಾವತ್ ಚರ್ಮವತೀಂ ನದೀಮ್। ದ್ರೋಣೇನ ಚೈವ ದ್ರುಪದ: ಪರಿಭೂಯಾ ಪಾಲಿತ:" ಭಾಂ। 3. ಕಪಿಲಹಿಟ್ಟು ಎಂಬ ಓಷಧಿ. "ಕಾಮ್ಪಿಲ್ಯ: ಕರ್ಕಶಶ್ಚಂದ್ರೋ ರಕ್ತಾಂಜೋ ರೋಚನೀತ್ಯಪಿ" ಅಮಂ।

**ಕಾಮ್ಪಿಲ್ಯಕ ಕಾಂಪಿಲ್ಯಕ (ವಿಂ)** ಕಾಂಪಿಲ್ಯದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಕಾಂಪಿಲ್ಯದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. ಕಾಮ್ಪಿಲ್ಯ "ಕುಬ್" (೪-೨-೧೨೧)।

**ಕಾಮ್ಬಲ ಕಾಂಬಲ (ಪುಂ)** ಕಂಬಳಿಯಿಂದ ಹೊದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ರಥ. ಕಾಮ್ಬಲೇನ ಪರಿವೃತೋ ರಥ: "ಅಣ್" (೪-೨-೧೦)। "ರಥೇ ಕಾಮ್ಬಲವಾಸ್ತ್ರಾಘಾ: ಕಾಮ್ಬಲಾದಿಭಿರಾವೃತೇ" ಅಮಂ।

**ಕಾಮ್ಬವಿಕ ಕಾಂಬವಿಕ (ಪುಂ)** ಶಂಖದಿಂದ ಒಡವೆಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. ಕಾಮ್ಬು: ಶಸ್ತ್ರಭೂಷಣಂ ಶಿಲ್ಪಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೫೫)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ವಿಕೀ -ವಿಕೀ.

**ಕಾಮ್ರೋಜ ಕಾಂಭೋಜ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ)** 1. ಕಂಭೋಜ ದೇಶ. 2. ಕಂಭೋಜ ದೇಶದ ದೊರೆಗಳು. ಕಾಮ್ರೋಜಾನಾಂ ರಾಜಾನ್: "ಅಬ್" (೪-೧-೧೬೬)। "ಕಾಮ್ರೋಜಾ: ಸಮರೇ ಸೌಧುಂ ತಸ್ಯ ವೀರ್ಯಮನೀಶ್ವರಾ:" ರಘುಂ ೪-೬೯। ಅದರ "ಕಾಮ್ರೋಜಾಲ್ಪುಕ್" (೪-೧-೧೭೩) ಸೂತ್ರದಿಂದ "ಅಬ್" ಪ್ರತ್ಯಯಕ್ಕೆ ಲೋಪ ಒಂದು "ಕಾಮ್ರೋಜಾ:" ಎಂದಾಗುವುದು. "ಕಾಮ್ರೋಜಾ: ಸಮರೇ ಸೌಧುಮ್" ಇತಿ ಪಾಠ: ಸುಗಮ: ಎಂದು ಸಿದ್ಧಾಂತಕೋಮುದಿಯಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. "ಶಕಾ ಯವನ-ಕಾಮ್ರೋಜಾಸ್ತಾಸ್ತಾ: ಕ್ಷತ್ರಿಯಜಾತಯ:" ಭಾಂ ಅನುಂ ೩೩-೨೧



ಎಂದು "ಅನ್" ಪ್ರತ್ಯಯಕ್ಕೆ ಲೋಪವಿಲ್ಲದ ಪ್ರಯೋಗವೂ ಇರುವುದು. 3. ಕಂಬೋಜದೇಶದ ನಿವಾಸಿಗಳು. ಕಂಬೋಜೋಽಭಿಜನೋ ಯೇಷಾಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೩)। (ಪುಂ) 4. ಪುನ್ನಾಗವಕ್ಷ, ಸುರಗಿಡ. 5. ಕಂಬೋಜದೇಶದ ಕುದುರೆ. ಕಂಬೋಜದೇಶೋ ಭವಃ "ಅನ್" (೪-೨-೧೩೩)। 6. ಬಿಳಿ ಕಗ್ಗಲಿಮರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜಿ -ಜೀ. 1. ಕಾಡುದ್ದಿನಗಿಡ. 2. ಬಿಳಿಕಗ್ಗಲಿಮರ. "ಕಾಂಬೋಜಃ ಪುನರಶ್ವಾನಾಂ ಭೇದೇ ಪುನಾಪಾದಪೇ। ವಲಕ್ಷಖದಿರೆ ಚಾಪಿ ಕಾಂಬೋಜಿ ಮಾಘರ್ಣಿಕಾ" ಹೇಮಂ।

**ಕಾಂಬೋಜಕ ಕಾಂಬೋಜಕ** (ವಿಂ) 1. ಕಂಬೋಜದೇಶದಲ್ಲಿರುವ (ಮನುಷ್ಯ). 2. ಕಂಬೋಜದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಕಾಂಬೋಜ "ಕುಜ್" (೪-೨-೧೩೩)।

**ಕಾಂಬೋಜಿ ಕಾಂಬೋಜೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಾಷಪರ್ಣಿಗಿಡ, ಕಾಡುದ್ದಿನಗಿಡ. 2. ಬಿಳಿ ಕಗ್ಗಲಿಗಿಡ. "ಕಾಂಬೋಜಿ ಮಾಘರ್ಣ್ಯಾಂ ವಲಕ್ಷಖದಿರೆ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಹೇಮಂ।

**ಕಾಂಬೋಜ ಕಾಂಬೋಜ** (ಪುಂ) ಕಾಂಬೋಜದೇಶ. "ಕಾಂಬೋಜವಾಜಿನಿಯುತಾನಿ ಚ ಸತ್ರಿಸಪ್ತಾನಿ" ಯಾದಂ ೧೬-೧೪೬।

**ಕಾಮ್ಯ ಕಾಮ್ಯ** (ನಂ) 1. ಇಚ್ಛೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ. (ವಿಂ) 2. ಸುಂದರವಾದ, ಸುಂದರನಾದ, ರಮಣೀಯವಾದ. ಕಾಮ್ಯತೆ - ಕಮು (ಕಾಂತೌ) + ಣಿಙ್ ಕರ್ಮಂ "ಯತ್" (೩-೧-೧೭)। "ನಾಸೌ ನ ಕಾಮ್ಯೋ ನ ಚ ವೇದ ಸಮ್ಯಕ್ ದ್ರಷ್ಟುಂ ನ ಸಾ ಭಿಕ್ಷುರರ್ಚಿಹಿ ಲೋಕಃ" ರಘುಂ ೬-೩೦। 3. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ ವಿಷಯ, ಕಾಮನಾ ವಿಷಯ. 4. ಫಲಾಭಿಲಾಷೆಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಕರ್ಮ. "ಯತ್ಕಿಂಚಿತ್ಫಲಮುದ್ದಿಶ್ಯ ಯಜ್ಞದಾನಜಪಾದಿಕಮ್। ತ್ರಿಯತೇ ಕಾಮ್ಯಕಂ ಯಚ್ಚ ತತ್ ಕಾಮ್ಯಂ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಮ್"। "ಕಾಮ್ಯೋ ಹಿ ವೇದಾಧಿಗಮಃ ಕರ್ಮಗ್ರೋಗಶ್ಚ ವೈದಿಕಃ" ಮನುಂ ೨-೨। "ಅಥ ತಸ್ಯ ವಿಶಾಂ ಪತ್ಯುರಂತೇ ಕಾಮ್ಯಸ್ಯ ಕರ್ಮಣಃ" ರಘುಂ ೧೦-೪೦। ಕಾಮ್ಯ ಕರ್ಮವಾದರೂ ಫಲಾಭಿಲಾಷೆಯಿಲ್ಲದೆ ಈಶ್ವರಾರ್ಪಣ ಬುದ್ಧಿಯಿಂದ ಮಾಡುವುದು ಸಿದ್ಧಿಪ್ರದವು. "ಯುಕ್ತಃ ಕರ್ಮಫಲಂ ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ ಶಾಂತಿಮಾಪ್ನೋತಿ ನೈಷ್ಠಿಕೀಮ್। ಅಯುಕ್ತಃ ಕಾಮಕಾರೇಣ ಫಲೇ ಸಕ್ತೋ ನಿಬಂಧ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೫-೧೨। "ಯತ್ ಕರೋಷಿ ಯದಶನಾಸಿ ಯಜ್ಞುಹೋಷಿ ದದಾಸಿ ಯತ್ ಯತ್ಪಸ್ಯಸಿ ಕೌಂತೇಯ ತತ್ಕುರುಷ್ವ ಮದರ್ಪಣಮ್" ಗೀತಾ ೯-೨೭।

**ಕಾಮ್ಯಕ ಕಾಮ್ಯಕ** (ನಂ) ಇಂದ್ರಪ್ರಸ್ಥಕ್ಕೆ ಪಶ್ಚಿಮದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ವನ, ಪಾಂಡವರು ವನವಾಸಕ್ಕೆ ಹೊರಟಾಗ ಕೆಲವು ಕಾಲ ತಂಗಿದ್ದ ಒಂದು ವನ. "ಸರಸ್ವತೀದೃಢತಯೋ ಯಮುನಾ

ಚ ನಿಘೇವ್ಯ ತೇ। ಯಯುರ್ವೇನೈವ ವನಂ ಸತತಂ ದಕ್ಷಿಣಾಂ ದಿಶಮ್। ತತಃ ಸರಸ್ವತೀಕೂಲೇ ಸಮೇಷು ಮಹದನ್ವಸು। ಕಾಮ್ಯಕಂ ನಾಮ ದದೃಶುರ್ವನಂ ಮುನಿಜನಪ್ರಿಯಮ್" ಭಾಂ ವನಂ ೫-೨, ೩।

**ಕಾಮ್ಯಕರ್ಮನ್ ಕಾಮ್ಯಕರ್ಮನ್** (ನಂ) 1. ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಕರ್ಮ, ಜ್ಯೋತಿಷ್ಯೋಮಾದಿ ಯಾಗ. "ಕಾಮ್ಯಾನಾಂ ಕರ್ಮಣಾಂ ನ್ಯಾಸಂ ಸನ್ಯಾಸಂ ಕವಯೋ ವಿದುಃ। ಸರ್ವಕರ್ಮಫಲತ್ಯಾಗಂ ಪ್ರಾಹುಸ್ತ್ಯಾಗಂ ವಿಚಕ್ಷಣಾಃ" ಗೀತಾ ೧೮-೨। (ವಿಂ) 2. ಕಾಮ್ಯಕರ್ಮವನ್ನು ಆಚರಿಸುವವನು. ಕಾಮ್ಯ ಕರ್ಮ ಯಸ್ಯ।

**ಕಾಮ್ಯದಾನ ಕಾಮ್ಯದಾನ** (ನಂ) ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ಮಾಡುವ ದಾನ, ಫಲವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ ಕೊಡುವ ಕೊಡುಗೆ. ಕಾಮ್ಯೇನ ಫಲೇಚ್ಛಯಾ ದಾನಮ್।

**ಕಾಮ್ಯಫಲ ಕಾಮ್ಯಫಲ** (ನಂ) ಕರ್ಮದಿಂದ ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ ಫಲ, ಕಾಮ್ಯಕರ್ಮದ ಫಲ.

**ಕಾಮ್ಯಮಾನ ಕಾಮ್ಯಮಾನ** ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಕಮು (ಕಾಂತೌ) + ಣಿಙ್ ಕರ್ಮಂ "ಯಕ್" "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)।

**ಕಾಮ್ಲ ಕಾಮ್ಲ** (ನಂ) 1. ಸ್ವಲ್ಪ ಹುಳಿ. ಕು ಇಷದಮ್ಲಮ್—ಕೋಃ ಕಾದೇಶಃ (೬-೩-೧೦೪)। (ವಿಂ) 2. ಸ್ವಲ್ಪ ಹುಳಿ ಯುಳ್ಳ. ಕಾಮ್ಲಮಸ್ತಸ್ಯ "ಅಕ್" (೫-೨-೧೨೭)।

**ಕಾಯ ಕಾಯ** (ಪುಂ) 1. ದೇಹ, ಶರೀರ, ಮೈ. ಚೀಯತೇಽಸ್ಥ್ಯಾದಿಕಮತ್ರ—ಚಿಜ್ (ಚಯೇ) "ಘಜ್" ಕಶ್ಚ (೩-೩-೪೧)। "ಕೇಶ್ಯಂ ಮಳಿಂಗಾಂ ಸ್ಮಿತಭಾ ಕಠಿನ್ಯಾಃ ಕಾಯೇ ಯದೀಯೇ ನಿರಮಾಯಿ ಸಾರೇಃ" ನೈಷಂ ೧೦-೮೭। 2. ಸಂಘ, ಸಮೂಹ, ರಾಶಿ, ಗುಂಪು. ಚಿಜ್ ಭಾವೇ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮)। 3. ಸ್ವಭಾವ. 4. ಎಂಟು ವಿಧ ವಿವಾಹಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಜಾಪತಿ ದೇವತಾಕವಾದ ಒಂದು ವಿವಾಹ. "ದೇವೋಡಾಜಃ ಸುತಶ್ಚೈವ ಸಪ್ತ ಸಪ್ತ ಪರಾವರಾನ್। ಆರ್ಷೋಡಾಜಃ ಸುತಸ್ತ್ರೀಸ್ತ್ರೀನ್ ಷಟ್ಪದ್ ಕಾಯೋಡಾಜಃ ಸುತಃ" ಮನುಂ ೩-೩೮। 5. ಮೂಲಧನ, ಬಂಡವಾಳ. 6. ಲಕ್ಷ್ಯ, ಗುರಿ, ಉದ್ದೇಶ. (ನಂ) 7. ಪ್ರಜಾಪತಿದೇವತಾಕವಾದ ತೀರ್ಥ (ಅಂಗುಷ್ಠಮೂಲದಿಂದ ಬಿಡುವ ತೀರ್ಥ). 8. ಮನುಷ್ಯ ತೀರ್ಥ. "ಕಾಯಃ ಕದೇವತೇ ಮೂರ್ತೌ ಸಹೈ ಲಕ್ಷ್ಯಸ್ವಭಾವಯೋಃ। ಕಾಯಂ ಮನುಷ್ಯತೀರ್ಥೇ ಚ" ಹೇಮಂ। "ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ವಿಪ್ರಸ್ತೀರ್ಥೇನ ನಿದ್ಯಕಾಲಮುಪಸ್ಪೃಶೇತ್। ಕಾಯತ್ರೈದಶಿಕಾಮ್ಯಾಂ ವಾ ನ ಪಿತ್ರೇಣ ಕದಾಚನ। ಅಙ್ಗುಲಮೂಲಸ್ಯ ತಲೇ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ತೀರ್ಥಂ ಪ್ರಚಕ್ಷತೇ। ಕಾಯಮಙ್ಗುಲಮೂಲೇಽಪಿ ದೇವಂ ಪಿತ್ರಂ ತಯೋರಥಃ" ಮನುಂ ೨-೪೮, ೪೯। 9. ಪ್ರಜಾಪತಿ ದೇವತಾಕವಾದ ಹವಿಸ್ಸು, ಮುಂತಾದುದು. ಕಃ ಪ್ರಜಾಪತಿ-



ದೇವತಾಸ್ಯ “ಅಂ” (೪-೨-೨೪) । ಕಸ್ಯ ಇತ್ (೪-೨-೨೫) ।  
ಕೋ ಬ್ರಹ್ಮಾ ದೇವತಾ ಅಸ್ಯ ಕಾಯಂ ಹವಿಃ ಸಿಂ ಕೌಂ ।

**ಕಾಯಕಲೆ ಕಾಯಕಲೆಶ (ಪುಂ)** ಶರೀರದ ಶ್ರಮ, ದುಡಿತ  
ದಿಂದ ಉಂಟಾದ ನೋವು. ಕಾಯಸ್ಯ ಕಲೆಶಃ । “ದುಃಖಮಿತ್ಯೇವ  
ಯತ್ಕರ್ಮ ಕಾಯಕಲೆಶಭಯಾತ್ಯಜೇತ್ । ಸ ಕೃತ್ವಾ ರಾಜಸಂ ತ್ಯಾಗಂ ನೈವ  
ತ್ಯಾಗಫಲಂ ಲಭೇತ್” ಗೀತಾ ೧೮-೮ ।

**ಕಾಯಚಿಕಿತ್ಸಾ ಕಾಯಚಿಕಿತ್ಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** (ವೈದ್ಯದಲ್ಲಿ  
ಹೇಳಿರುವ) ಎಂಟು ವಿಧ ಆಯುರ್ವೇದಾಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು,  
ದೇಹದಲ್ಲಿ ಸಂಭವಿಸುವ ರೋಗಗಳ ನಿವಾರಣೆಗಾಗಿ  
ಮಾಡುವ ಉಪಚಾರ. [“ಅಷ್ಟಾಂಗ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕಾಯದಂಡ ಕಾಯದಂಡ (ಪುಂ)** ಮೈಯ ನಿಗ್ರಹ, ಶರೀರ  
ವನ್ನು ಹತೋಟಿಯಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳಲು ದಂಡಿಸುವುದು.

**ಕಾಯಬಂಧನ ಕಾಯಬಂಧನ (ನಂ)** ಚೇತನವನ್ನು ಶರೀರ  
ದೊಳಗೆ ಸೇರಿಸುವುದು.

**ಕಾಯವತ್ ಕಾಯವತ್ (ವಿಂ)** 1. ಶರೀರವುಳ್ಳ, ದೇಹವನ್ನು  
ಹೊಂದಿರುವ. ಕಾಯೋಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತು” (೪-೨-೨೪) ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ತೀಪ್” (೪-೨-೨೫) । -ವತಿ -ವತೀ. (ಅವ್ಯಂ)  
2. ಶರೀರದಂತೆ, ದೇಹದಂತೆ. ಕಾಯೇನ ತುಲ್ಯಮ್ “ವತಿಃ”  
(೪-೨-೨೫) ।

**ಕಾಯವಲನ ಕಾಯವಲನ (ನಂ)** ಕವಚ, ಅಂಗಿ.

**ಕಾಯಮಾನ ಕಾಯಮಾನ (ನಂ)** 1. ಕುಟೀರ, ಹುಲ್ಲಿನ  
ಗುಡಿಸಲು. “ಕಾಯಮಾನಂ ತೃಣಕುಟೀ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।  
2. ವೇಶ್ಯಾಗೃಹ. 3. ಆಟದ ಮನೆ, ನರ್ತನಶಾಲೆ.  
“ವೇಶ್ಯಾಗೃಹೇ ಕಾಯಮಾನಂ ತಥೇದಂ ಕೇಲಿಮಂಡಪೇ” ವೈಜಂ ।

**ಕಾಯವ್ಯ ಕಾಯವ್ಯ (ಪುಂ)** ಕಳ್ಳರ ಗುಂಪಿಗೆ ಒಡೆಯನಾದ  
ಒಬ್ಬ ಬೇಡ. ಇವನಿಗೆ ಕಾಪಚ್ಚನೆಂಬುದು ಮತ್ತೊಂದು  
ಹೆಸರು. [ಇವನು ಪರಮಧಾರ್ಮಿಕನಾಗಿದ್ದುದರಿಂದ ಒಂದು  
ದಿನ ಇವನ ಗುಂಪಿನವರೆಲ್ಲರೂ ಸೇರಿ “ನಾವು ಹೇಗೆ  
ನಡೆದುಕೊಂಡರೆ ನಮಗೆ ಸದ್ಗತಿಯುಂಟಾಗುವುದು” ಎಂದು  
ಇವನನ್ನು ಕೇಳಿದರು. “ನೀವು ಯಾವಾಗಲೂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ  
ರನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸಿಕೊಂಡು. ಬ್ರಹ್ಮದ್ವೇಷಿಗಳನ್ನು ಹಿಡಿದು  
ನೀವು ಕೊಲ್ಲಬೇಕು. ಹೆಂಗಸರು, ಶಿಶುಗಳು, ತಪಸ್ವಿಗಳು  
ಇವರನ್ನು ಕೊಲ್ಲಕೂಡದು. ಈ ರೀತಿ ನಡೆದುಕೊಂಡರೆ  
ನಿಮಗೆ ಸದ್ಗತಿಯುಂಟು” ಎಂದು ಹೇಳಿದನು.] ಭಾಂ  
ಶಾಂತಿಂ ೧೩೫ ।

**ಕಾಯಸಂಪದ್ ಕಾಯಸಂಪದ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ರೂಪ, ಲಾವಣ್ಯ,  
ಶರೀರ ಸೌಂದರ್ಯ ಮುಂತಾದುವು. ಕಾಯಸ್ಯ ಸಂಪತ್ ।

“ರೂಪಲಾವಣ್ಯಬಲವಜ್ರಸಂಹನನತ್ವಾನಿ ಕಾಯಸಂಪದಃ” ಪಾಂ  
ಯಂ ಸುಂ ।

**ಕಾಯಸ್ಯ ಕಾಯಸ್ಯ (ಪುಂ)** 1. ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಮೇಶ್ವರ.  
ಕಾಯೇಷು ಸರ್ವಭೂತಾನಾಂ ದೇಹೇಷು ಅಂತರ್ಯಾಮಿತಯಾ ತಿಷ್ಠತಿ — ಕಾಯ  
+ ಷ್ಟಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) “ಕಃ” (೩-೨-೩) । “ಕಾಯಸ್ಯೋಪಿ  
ನ ಕಾಯಸ್ಯಃ ಕಾಯಸ್ಯೋಪಿ ನ ಜಾಯತೇ । ಕಾಯಸ್ಯೋಪಿ ನ  
ಭುಂಜಾನಃ ಕಾಯಸ್ಯೋಪಿ ನ ಬದ್ಧತೇ” ಉತ್ತರಗೀಂ । 2. ಒಬ್ಬ  
ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು, ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಂದ ಶೂದ್ರಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಲೇಖನವು ಈತನ ವೃತ್ತಿ. “ದೃಗ್ಗೋಚರೋ-  
ಽಭೂದಯ ಚಿತ್ರಗುಪ್ತಃ ಕಾಯಸ್ಯ ಉಚ್ಚೈರ್ಗುಣ ಏತದೀಯಃ” ನೈಷಂ  
೧೪-೬೬ । **ಕಾಯಸ್ಯ ನ ಉತ್ಪತ್ತಿ ಮತ್ತು ಶಬ್ದ  
ನಿರ್ವಚನ :**

[1] ಪರಶುರಾಮನು ಕಾರ್ತವೀರ್ಯಾರ್ಜುನನನ್ನು  
ಸಂಹರಿಸಿ ಉಳಿದೆಲ್ಲಾ ಕ್ಷತ್ರಿಯರನ್ನೂ ನಾಶಪಡಿಸಲು  
ಹೊರಟಾಗ ಕೆಲವರು ಕಾಡಿಗೆ ಓಡಿಹೋದರು. ಕೆಲವರು  
ಪಾತಾಳವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿದರು. ಗರ್ಭಿಣಿಯಾಗಿದ್ದ  
ಚಂದ್ರಸೇನರಾಜನ ಪತ್ನಿಯು ದಾಲ್ಕುಮಹರ್ಷಿಯ  
ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಓಡಿಹೋಗಿ ಆಶ್ರಯ ಪಡೆದಳು. ಪರಶು  
ರಾಮನು ಅಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ ಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಸತ್ಕೃತನಾಗಿ  
ತಾನು ಒಂದು ಯಾಚನೆಗಾಗಿ ಬಂದಿರುವುದಾಗಿ ತಿಳಿಸಿದನು.  
ಮಹರ್ಷಿಯೂ ಪರಶುರಾಮನಿಂದ ಒಂದು ವಿಷಯವನ್ನು  
ಯಾಚಿಸಿದನು. ಚಂದ್ರಸೇನನ ಪತ್ನಿಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟುಕೊಡ  
ಬೇಕೆಂದು ಪರಶುರಾಮನು ಕೇಳಿದಾಗ ಋಷಿಯೂ ಆಕೆಯ  
ಗರ್ಭದಲ್ಲಿರುವ ಶಿಶುವನ್ನು ತನಗೆ ಕೊಡಬೇಕೆಂದು ಯಾಚಿಸಿ  
ದನು. ಆಗ “ನಾನು ಯಾವ ವಸ್ತುವಿಗಾಗಿ ಬಂದಿರು  
ವೆನೋ ಅದನ್ನೇ ನೀನೂ ಕೇಳುವೆ. ಆಗಲಿ. ಆಕೆಯ ಗರ್ಭ  
ದಲ್ಲಿರುವ ಶಿಶುವನ್ನು ನೀನು ಬೇಡುವುದರಿಂದ ಅದಕ್ಕೆ  
“ಕಾಯಸ್ಯ” ನೆಂಬ ಹೆಸರಾಗಲಿ. ಆದರೆ ಈ ಶಿಶುವು  
ಕ್ಷತ್ರಧರ್ಮವನ್ನಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳಕೂಡದು” ಎಂದು ಹೇಳಿ  
ಪರಶುರಾಮನು ಹೊರಟುಹೋದನು. ಆಗ ಋಷಿಯು  
ಆ ಶಿಶುವಿಗೆ ಚಿತ್ರಗುಪ್ತನ ಧರ್ಮವಾದ ಕಾಯಸ್ಯನ  
ಕಾರ್ಯವನ್ನೇ ಕೊಟ್ಟನು. ಅದುದರಿಂದ ಆತನ ವಂಶ  
ದವರೆಲ್ಲಾ ಕಾಯಸ್ಯರಾದರು. “ಏವಂ ಹತ್ವಾಽರ್ಜುನಂ ರಾಮಃ  
ಸಂಧಾಯ ನಿಶಿತಾನ್ ಶರಾನ್ । ಏಕ ಏವ ಯಯಿ ಹಂತುಂ ಸರ್ವನಿವಾ-  
ತುರಾನ್ ನೃಪಾನ್ । ಕೇಚಿದ್ಗಹನಮಾಶ್ರಿತೈ ಕೇಚಿತ್ಪಾತಾಲಮಾವಿಶನ್ ।  
ಸಗರ್ಭಾ ಚಂದ್ರಸೇನಸ್ಯ ಭಾರ್ಯಾ ದಾಲ್ಮಯಾಶ್ರಮಂ ಯಯಿ । .....  
..... । ತತಃ ರಾಮೋ-  
ಽಬ್ರವಿಹಾಲ್ಮಯಂ ಯದರ್ಥಮಹಮಾಗತಃ । ಕ್ಷತ್ರಿಯಾಂತಕರಶ್ಚಾಹಂ ತತ್ತ್ವಂ  
ಯಾಚಿತವಾನಸಿ । ಪ್ರಾರ್ಥಿತಶ್ಚ ತ್ವಯಾ ವಿಪ್ರ ಕಾಯಸ್ಯೋ ಗರ್ಭಂ



ಉತ್ತಮಃ। ತಸ್ಮಾತ್ಕಾಯಸ್ಥ ಇತ್ಯಾಖ್ಯಾ ಭವಿಷ್ಯತಿ ಶಿಶೋಃ  
ಶುಭಾ। .....। ಕಾಯಸ್ಥ ಎವ  
ಉತ್ಪನ್ನಃ ಕ್ಷತ್ರಾಣಾಂ ಕ್ಷತ್ರಿಯಾತ್ತತಃ। ರಾಮಾಜ್ಞಯಾ ಸ ದಾಲ್ಮ್ಯೇನ  
ಕ್ಷತ್ರವರ್ಮಾದಿಹಿಂಕೃತಃ। ಕಾಯಸ್ಥವರ್ಮೋ ದತ್ತೋ ವೈ ಚಿತ್ರಗುಪ್ತಸ್ಯ  
ಯಃ ಸ್ಮೃತಃ” ಸ್ಕಾಂದಂ।

(2) ಬ್ರಹ್ಮನು ಚರಾಚರಾತ್ಮಕವಾದ ಸಕಲ ಜಗತ್ತನ್ನೂ  
ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ಅದರ ಪಾಲನೆಯ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಕರ್ತೃಪನಿಗೆ ವಹಿಸಿ  
ತಾನು ಅನೇಕ ಸಹಸ್ರವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ತಪಸ್ಸಿನಲ್ಲಿದ್ದನು.  
ಸಮಾಧಿಸ್ಥನಾಗಿದ್ದ ಬ್ರಹ್ಮನ ಶರೀರದಿಂದ ಲೇಖನಿ ಮತ್ತು  
ಮಸಿಯಕುಡಿಕೆ ಹಿಡಿದ ಒಬ್ಬ ಸುಂದರ ಪುರುಷನು ಉದ್ಭವಿಸಿ  
ಮುಂದೆ ನಿಂತನು. ಸಮಾಧಿಯಿಂದ ಎದ್ದ ಬ್ರಹ್ಮನು  
ನೋಡಿದಾಗ ತನ್ನ ಹೆಸರನ್ನೂ ತನ್ನ ಕೆಲಸವೇನೆಂಬುದನ್ನೂ  
ತಿಳಿಸಬೇಕೆಂದು ಪುರುಷನು ಕೇಳಲು “ನನ್ನ ಶರೀರದಿಂದ  
ನೀನು ಜನಿಸಿದೆಯಾದುದರಿಂದ ನಿನ್ನ ಹೆಸರು  
“ಕಾಯಸ್ಥ” ನೆಂದು ಆಗಲಿ. ಚಿತ್ರಗುಪ್ತನ ಹೆಸರಿನಿಂದ  
ಧರ್ಮರಾಜನ ನಗರಿಯಲ್ಲಿ ಇದ್ದುಕೊಂಡು ಜಗತ್ತಿನ  
ಧರ್ಮಾಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಬರೆಯುವ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ  
ನೀನಿರಬೇಕು” ಎಂದು ಹೇಳಿ ಅಂತರ್ಧಾನ ಹೊಂದಿದನು.]

ಪದ್ಮಪುಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸ್ಥಾ -ಸ್ಥಾ. 1. ಅಳಲೆ ಗಿಡ.  
ಕಾಯಸ್ಥಿಷ್ಠತನಯಾ - ಧರ್ಮಕ್ಕೆ “ಕಃ” (ವಾಂ 3-3-44)।  
2. ನೆಲ್ಲಿಗಿಡ. 3. ಯಾಲಕ್ಕಿ ಗಿಡ. “ಕಾಯಸ್ಥೋಽಪಿ ನೃಜಾತಃ  
ಸ್ಯಾತ್ ಪ್ರಭೇದೇ ಪರಮಾತ್ಮನಿ। ಕಾಯಸ್ಥಾ ತು ಹರಿತಕಯಾಮಲಕಯಾಂ  
ಚ ದರ್ಶಿತಾ” ವಿಶ್ವಂ। “ಕಾಯಸ್ಥೋಽಕ್ಷರಜೀವಕಃ। ಪರಮಾತ್ಮಾ  
ಚ ಕಾಯಸ್ಥಾ ಹರಿತಕಯಾಮಲಕಯಪಿ” ಹೇಮಂ। 4. ಕಾಯಸ್ಥ  
ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು. -ಸ್ಥಿ -ಸ್ಥಿ. 5. ಕಾಯಸ್ಥನ ಹೆಂಡತಿ.

ಕಾರ್ಯಕ ಕಾರ್ಯಕ (ವಿಂ) 1. ಕಾರ್ಯದಿಂದ ನಡೆಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ದೇಹದಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಶರೀರವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ ಉಂಟಾದ  
(ಪುಣ್ಯ ಪಾಪ ಕರ್ಮಗಳು). ಕಾರ್ಯದಿಂದ ನಿರ್ವೃತ್ತಮ್ “ಠಕ್”  
(4-1-99)। “ಅದತ್ತಾನಾಮುಪಾದಾನಂ ಹಿಸಾ ಚೇವಾವಿಧಾನತಃ।  
ಪರದಾರೋಪಸೇವಾ ಚ ಕಾರ್ಯಕಂ ತ್ರಿವಿಧಂ ಸ್ಮೃತಮ್। ವಾಚಾ ವಾಚಾ  
ಕೃತಂ ಕರ್ಮ ಕಾರ್ಯೇನೈವ ಚ ಕಾರ್ಯಕಮ್” ಮನು 12-9, 10. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಕಾ -ಕಾ. 2. ಬಡ್ಡಿ, ಮೂಲಧನದ ವೃದ್ಧಿಂಶ್ಚ.  
“ನಾತಿಸಾಂವತ್ಸರೀಂ ವೃದ್ಧಿಂ ನ ಚಾದೃಷ್ಟಾಂ ಪುನರ್ಹೀತುಂ। ಚಕ್ರವೃದ್ಧಿಃ  
ಕಾಲವೃದ್ಧಿಃ ಕಾರಿತಾ ಕಾರ್ಯಕಾ ಚ ಸಾ” ಮನುಂ 1-143।  
3. ಹಸು ಮತ್ತು ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ  
ಕೊಡುವ ಬಡ್ಡಿ. “ದೋಹ್ಯವಾಹ್ಯಕರ್ಮಯುತಾ ಕಾರ್ಯಕಾ  
ಸಮುದಾಹತಾ”।

ಕಾರ ಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ಯ, ಕೆಲಸ. 2. ಯತ್ನ.  
ಓ ಕೃ (ಕರಣ) ಭಾವೇ “ಘ” (3-3-14)। “ಸಕಾರ-

ನಾನಾರಕಾಸಕಾಯಸಾದದಸಾಯಕಾ” ಮಾಘಂ 19-23। 3. ಅ  
ಆ ಇ ಈ ಮುಂತಾದ ವರ್ಣಗಳನ್ನು ನಿರ್ದೇಶಿಸಲು ಅವುಗಳ  
ಮುಂದೆ ಹಚ್ಚುವ ಒಂದು ಪ್ರತ್ಯಯ. (ವಾಂ 3-3-104)।  
ಅಕಾರಃ ಆಕಾರಃ ಇಕಾರಃ ಓಕಾರಃ ಕಕಾರಃ ಟಕಾರಃ ಪಕಾರಃ  
ಮಕಾರಃ ಇತ್ಯಾದಿ. 4. ಬಲ. ಕೃನ್ ಕರಂ “ಘ”  
(3-3-121)। 5. ರತಿ, ಸುರತ. ಕಸ್ಯ ಸುಖಸ್ಯಾರಃ  
ಪ್ರಾಪ್ತಿಯತ್ರ। 6. ಪತಿ, ಗಂಡ. ಕಂ ಸುಖಂ ಕೃಚ್ಛತಿ - ಕೃ  
(ಗತೌ) “ಅನ್” (3-2-1)। 7. ವಧೆ. 8. ನಿಶ್ಚಯ.  
ಕೃ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ “ಘ”। ಕಂ ನಿಷ್ಯಂದಜಲಂ ಕೃಚ್ಛತಿ।  
9. ಬಲಿ, ಪೂಜಾದ್ರವ್ಯ. 10. ಹಿಮಾಚಲ. 11. ಯತಿ,  
ಸಂನ್ಯಾಸಿ. 12. ಹಸ್ತ, ಕೈ. “ಕಾರೋ ಬಲೇ ವಧೇ ಯತ್ನೇ  
ಹಿಮಾದ್ರೌ ನಿಶ್ಚಯೇ ಯತೌ” ಹೇಮಂ। “ಕಾರಾ ಬಂಧನಗೇಹೇ ಸ್ತ್ರೀ  
ಕರೇ ನಾ” ವೈಜಂ। 13. ಕರ, ರಾಜನಿಗೆ ಕೊಡಬೇಕಾದ  
ತೆರಿಗೆ. “ಕಾರನಾಮ್ನಿ ಚ ಪ್ರಾಚಾಂ ಹಲಾದೇಃ” ಪಾಂ ಸುಂ  
6-3-10। ಕೃನ್ ಧಾತುವಿಗೆ ಕರ್ಮಪದವು ಉಪಪದ  
ವಾದಾಗ “ಅನ್” (3-2-1) ಪ್ರತ್ಯಯ ಬಂದು ಕಾರಃ  
ಎಂದು ರೂಪವಾಗಿ ಮಾಡುವವನು, ಆಯಾ ಕಾರ್ಯ  
ಮಾಡುವವನು ಎಂಬ ಅರ್ಥ ಕೊಡುವುದು. ಕುಮ್ಮಕಾರಃ,  
ಗ್ರಂಥಕಾರಃ, ಸೂಪಕಾರಃ, ಸ್ವರ್ಣಕಾರಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕಾರಕ ಕಾರಕ (ನಂ) 1. ಕರ್ತೃತ್ವಾದಿ ಸಂಜ್ಞಾ ಪ್ರಯೋಜಕ  
ವಾದ ಒಂದು ಕಾರ್ಯ. ಕರೋತಿ ಕರ್ತೃತ್ವಾದಿವ್ಯಪದೇಶಮ್ -  
ಓ ಕೃ (ಕರಣ) “ಘ” (3-1-133)। 2. ಕ್ರಿಯಾ  
ನಿಷ್ಪಾದಕವಾದ (ಕಾರ್ಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ) ಕರ್ತೃ  
ಕರ್ಮಾದಿಗಳು. ಕರೋತಿ ಕ್ರಿಯಾಂ ನಿರ್ವೃತ್ತಯತಿ - ಓ ಕೃ  
“ಘ”। ಕಾರಕವು ಕರ್ತೃ, ಕರ್ಮ, ಕರಣ, ಸಂಪ್ರದಾನ,  
ಅಪಾದಾನ ಮತ್ತು ಅಧಿಕರಣಗಳೆಂದು ಆರುವಿಧ.  
ಕ್ರಿಯಾನಿಷ್ಪಾದಕತ್ವರೂಪವ್ಯಾಪಾರವು ಇರುವುದರಿಂದ  
ಎಲ್ಲಾ ಕಾರಕಗಳಲ್ಲೂ ಕರ್ತೃತ್ವವಿದ್ದರೂ ಆಯಾ ಕಾರಕಗಳ  
ಅವಾಂತರವ್ಯಾಪಾರವಿವಕ್ಷೆಯಿಂದ ಕರ್ಮತ್ವಾದಿ  
ಸಂಜ್ಞೆಯು ಬರುವುದು.

| ಕಾರಕಮ್             | ವ್ಯಾಪಾರಃ                     |
|--------------------|------------------------------|
| (1) ಕರ್ತೃಕಾರಕಮ್    | ಕಾರಕಾಂತರಪ್ರವರ್ತನಮ್           |
| (2) ಕರ್ಮಕಾರಕಮ್     | ಕ್ರಿಯಾಫಲೋದ್ದೇಶ್ಯತ್ವಮ್        |
| (3) ಕರಣಕಾರಕಮ್      | ಕ್ರಿಯಾನಿಯತಪೂರ್ವವೃತ್ತಿತ್ವಮ್   |
| (4) ಸಂಪ್ರದಾನಕಾರಕಮ್ | ಪ್ರೇರಣಾನುಮತ್ಯಾದಿ             |
| (5) ಅಪಾದಾನಕಾರಕಮ್   | ಅವಧಿಭಾವೋಪಗಮತ್ವಮ್             |
| (6) ಅಧಿಕರಣಕಾರಕಮ್   | ಕರ್ತೃಕರ್ಮವ್ಯವಹಿತಕ್ರಿಯಾಧಾರಣಮ್ |

“ನಿಷ್ಪತ್ತಿಮಾತ್ರೇ ಕರ್ತೃತ್ವಂ ಸರ್ವತ್ರೈವಾಸ್ತಿ ಕಾರಕೇ। ವ್ಯಾಪಾರ-  
ಭೇದಾಪೇಕ್ಷಾಣಾಂ ಕರಣತ್ವಾದಿಸಂಭವಃ”। (ನಂ) 3. ಹಿಮದ



ಗಡ್ಡೆಯಿಂದ ಹೊರಟ ನೀರು. (ವಿಂ) 4. ಕರಕ ಸಂಬಂಧ ವಾದ. ಕರಕಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। 5. ಮಾಡುವವನು, ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು, ರಚಿಸುವವನು, ನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡುವವನು. "ದೋಷೇತೈಃ ಕುಲಕ್ಷನಾನಾಂ ವರ್ಣಸಂಕರಕಾರಕೈಃ" ಗೀತಾ ೧-೪೩। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಕಾರಿಕಾ ಕಾರಿಕಾ. "ಯತ್ರ ಪುಷ್ಪಶರಶಾಸ್ತ್ರಕಾರಿಕಾಸಾರಿಕಾಧ್ಯುಷಿತನಾಗದಂತಿಕಾ" ನೆಪಂ ೧೮-೧೫।

**ಕಾರಕದೀಪಕ ಕಾರಕದೀಪಕ (ನಂ)** ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ; ಏಕಕಾರಕಗತವಾದ ಕ್ರಮಪ್ರಾಪ್ತವಾದ ಕ್ರಿಯೆಗಳ ಜೋಡಣೆಯು ಕಾರಕದೀಪಕಾಲಂಕಾರವಾಗುವುದು. "ಕ್ರಮಿಕೈಕಗತಾನಾಂ ತು ಗುಹ್ಯಮ್ ಕಾರಕದೀಪಕಮ್। ಗಚ್ಛತ್ಯಾಗಚ್ಛತಿ ಪುನಃ ಪಾನ್ಯಃ ಪಶ್ಯತಿ ಪೃಚ್ಛತಿ" ಚಂದ್ರಾಂ। ಇಲ್ಲಿ ಕ್ರಮಪ್ರಾಪ್ತವಾದ ಗಮನಾದಿಕ್ರಿಯೆಗಳಿಗೆ ಪಾಂಥರೂಪ ಏಕಕರ್ತೃಕಾರಕಾನ್ವಯವಿರುವುದರಿಂದ ಕಾರಕದೀಪಕಾಲಂಕಾರ. ಒಂದು ಕರ್ತೃಕಾರಕಕ್ಕೆ ಅನೇಕ ಕ್ರಿಯಾನ್ವಯವಿದ್ದು ದೀಪಕಚ್ಛಾಯೆಯಿರುವುದರಿಂದ ಕಾರಕದೀಪಕಾಲಂಕಾರ.

**ಕಾರಕವಿಭಕ್ತಿ ಕಾರಕವಿಭಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಾರಕಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ವಿಭಕ್ತಿ; ದ್ವಿತೀಯಾವಿಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಕರ್ಮಕಾರಕ. ತೃತೀಯಾವಿಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಕರಣಕಾರಕ. ಚತುರ್ಥವಿಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಸಂಪ್ರದಾನಕಾರಕ. ಪಂಚಮಾವಿಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಅಪದಾನಕಾರಕ. ಸಪ್ತಮಾವಿಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಅಧಿಕರಣ ಕಾರಕ ಬೋಧಿತವಾಗುವುದು. "ಉಪಪದವಿಭಕ್ತೇಃ ಕಾರಕವಿಭಕ್ತಿ-ಬೆಲೆಯು" ಪರಿಂ ೨-೩-೧೬।

**ಕಾರಕರ ಕಾರಕರ (ವಿಂ)** ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು. ಕಾರಂ ಕಾರ್ಯಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಠಃ" (೩-೨-೨೧)।

**ಕಾರಜ ಕಾರಜ (ವಿಂ)** 1. ಕಾರ್ಯದಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಕಾರಾತ್ ಜಾಯತೇ-ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಠಃ" (೩-೨-೧೮)। 2. ನಖ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕರಜಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। 3. ನಖದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಕರಜೇ ಭವಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೫೩)।

**ಕಾರಜ್ಜ ಕಾರಂಜ (ವಿಂ)** ಕರಂಜವೃಕ್ಷದ ಕಾಯಿ ಅದರ ತೈಲ ಮುಂತಾದುವು. ಕರಜ್ಜಸ್ಯ ತತ್ಪಲಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ಕಾರಣ ಕಾರಣ (ಪುಂ)** 1. ಕಾರ್ಯಸ್ಥ. ಕರಣ ಎವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್"। (ನಂ) 2. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ ಹೇತು, ಯಾವುದೊಂದು ಇಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ಕಾರ್ಯವು ಆಗುವುದಿಲ್ಲವೋ ಅದು. ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)।

"ತच्च कारणमभूद्विरण्मयं ब्रह्मणोऽसृजदसाविदं जगत्" ಮಾಧಂ ೧೪-೬೭। ಕಾರಣ ಪ್ರ ಸಮವಾಯಿಕಾರಣ, ಅಸಮವಾಯಿಕಾರಣ ಮತ್ತು ನಿಮಿತ್ತಕಾರಣಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. [ವಿವರಕ್ಕೆ ಆಯಾ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].

3. ಉದ್ದೇಶ. "ಹಿತ್ವಾ ತನುಂ ಕಾರಣಮಾನುಷಿಂ ತಾಂ ಯಥಾ ಗುರುಸ್ತೇ ಪರಮಾತ್ಮಮೂರ್ತಿಮ್" ರಘುಂ ೧೬-೨೨। 4. ಶರೀರ, ದೇಹ, ಮೈ. 5. ವಿಷ್ಣು. "ಜೀವಾನಾಂ ಚಕ್ಷುರಾದಿನ್ ಯೋ ಹೇತುನ್ ಕಾರಯತೀತಿ ಸಃ। ಪ್ರೋಚ್ಯತೇ ಕಾರಣಮ್" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ। "ಕರಣಂ ಕಾರಣಂ ಕರ್ತಾ" ವಿಂ ಸಂ।

6. ಇಂದ್ರಿಯ. "ಕಾರ್ಯಕಾರಣಕರ್ತೃತ್ವೇ ಹೇತುಃ ಪ್ರಕೃತೀಕೃತಃ" ಗೀತಾ ೧೩-೨೦। 7. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. "ಅಜಂ ಶಾಶ್ವತಂ ಕಾರಣಂ ಕಾರಣಾನಾಂ ಶಿವಂ ಕೇವಲಂ ಭಾಸಕಂ ಭಾಸಕಾನಾಮ್"। 8. ಪ್ರಮಾಣವಚನ, ಆಧಾರ, ಅಧಿಕಾರಯುತವಾದ ಮಾತು. "ಸಂಭೋಗೋ ದೃಶ್ಯತೇ ಯತ್ರ ನ ದೃಶ್ಯತೇತಾಗಮಃ ಕ್ವಚಿತ್। ಆಗಮಃ ಕಾರಣಂ ತತ್ರ ನ ಸಂಭೋಗ ಇತಿ ಸ್ಥಿತಿಃ" ಮನುಂ ೮-೨೦೦। 9. ಸಾಧನೆ, ಸಲಕರಣೆ. 10. ಕಾರ್ಯ, ಕೆಲಸ. "ನ ಕಶ್ಚಿತ್ ಕಸ್ಯಚಿನ್ಮಿತ್ರಂ ನ ಕಶ್ಚಿತ್ ಕಸ್ಯ-ಚಿದ್ರಿಪುಃ। ಕಾರಣೇನ ಚ ಜಾನಾತಿ ಮಿತ್ರಾಣಿ ಚ ರಿಪುಸ್ತಥಾ"।

11. ವಧೆ, ಸಂಹಾರ. ಕ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 12. ಮೂಲ, ಆಧಿಕಾರಣ. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣಃ ಸಂಭವೇನೈವ ದೇವಾನಾಮಪಿ ದೈವತಮ್। ಪ್ರಮಾಣಂ ಚೈವ ಲೋಕಸ್ಯ ಬ್ರಹ್ಮಾಣೈವ ಹಿ ಕಾರಣಮ್" ಮನುಂ ೧೧-೮೪। 13. ಜನಕ, ತಂದೆ, ಉತ್ಪಾದಕ. "ಯಮಾನಂತರ್ಯಾಮಿಭುವೋಽಪಿ ಕಾರಣಂ ಕಥಂ ಸ ಲಕ್ಷ್ಯಪ್ರಭವೋ ಭವಿಷ್ಯತಿ" ಕುಮಾಂ ೫-೮೧। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಣಾ -ಣಾಂ. 14. ಯಾತನೆ, ನೋವು. "ಕಾರಣಂ ಕರಣೇ ಹೇತುವಧಯೋಶ್ಚ ನಪುಂಸಕಮ್। ಸ್ತ್ರೀ ಯಾತನಾಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ।

**ಕಾರಣಕಾರಣ ಕಾರಣಕಾರಣ (ನಂ)** ಕಾರಣದ ಕಾರಣ. ಕಾರಣಸ್ಯ ಕಾರಣಮ್।

**ಕಾರಣಗತ ಕಾರಣಗತ (ವಿಂ)** ಕಾರಣದಲ್ಲಿರುವ, ಉಪಾದಾನಕಾರಣದಲ್ಲಿರುವ.

**ಕಾರಣಗುಣ ಕಾರಣಗುಣ (ಪುಂ)** ಉಪಾದಾನಕಾರಣದ ಗುಣ. "ಕಾರಣಗುಣಾಃ ಕಾರ್ಯಂ ಸಂಕ್ರಾಮಂತಿ"।

**ಕಾರಣಗುಣೋದ್ಭವ ಕಾರಣಗುಣೋದ್ಭವ (ಪುಂ)** ಉಪಾದಾನ ಕಾರಣಗುಣದಿಂದ ಉಂಟಾದ ಗುಣ. ಕಾರಣಗುಣಾದುಽದ್ಭವತಿ।

**ಕಾರಣತಾ ಕಾರಣತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಾರಣವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಹೇತುವಾಗಿರುವುದು. ಕಾರಣಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೫-೧-೧೧೯)। "ಪ್ರಲಯಸ್ಥಿತಿಸರ್ಗಾಣಾಮೇಕಃ ಕಾರಣತಾಂ ಗತಃ" ಕುಮಾಂ ೨-೬। "ತ್ವಃ" (೫-೧-೧೧೯)। -ಣತ್ವಮ್ -ಣತ್ವಂ.



**ಕಾರಣಧ್ವಂಸ ಕಾರಣಧ್ವಂಸ** (ಫಂ) ಕಾರಣದ ನಾಶ.

**ಕಾರಣಧ್ವಂಸಕ ಕಾರಣಧ್ವಂಸಕ** (ವಿಂ) ಕಾರಣವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ. ಕಾರಣಂ ಧ್ವಂಸಯತಿ - ಧ್ವಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ) + ಣಿಕ್ "ಫಲ್" (3-1-133). "ಣಿತಿ:" (3-1-134). -ಧ್ವಂಸಿನ್ -ಧ್ವಂಸಿನ್. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (4-1-4). -ಧ್ವಂಸಿನಿ -ಧ್ವಂಸಿನೀ.

**ಕಾರಣಮಾಲಾ ಕಾರಣಮಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ; ಮುಂದು ಮುಂದಿನ ವಸ್ತುಗಳಿಗೆ ಕಾರಣ ಭೂತವಾದ ಹಿಂದು ಹಿಂದಿನ ವಸ್ತುಗಳ ಅಥವಾ ಹಿಂದು ಹಿಂದಿನ ವಸ್ತುಗಳಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ ಮುಂದು ಮುಂದಿನ ವಸ್ತುಗಳ ಗುಂಪವು (ಜೋಡಣೆಯು) "ಕಾರಣ ಮಾಲಾ" ಅಲಂಕಾರವಾಗುವುದು. "ನಯೇನ ಶ್ರೀ: ಶ್ರಿಯಾ ತ್ಯಾಗ: ತ್ಯಾಗೇನ ವಿಪುಲಂ ಯಶ:" ಇಲ್ಲಿ ನೀತಿಯಿಂದ ಸಂಪತ್ತು, ಸಂಪತ್ತಿನಿಂದ ತ್ಯಾಗವೂ, ತ್ಯಾಗದಿಂದ ಕೀರ್ತಿಯೂ ಉಂಟಾಗುವುದರಿಂದ ನೀತಿಯು ಸಂಪತ್ತಿಗೂ, ಸಂಪತ್ತು ತ್ಯಾಗಕ್ಕೂ, ತ್ಯಾಗವು ಯಶಸ್ಸಿಗೂ ಕಾರಣವಾಗಿ ವರ್ಣಿತವಾಗಿರುವುದರಿಂದಲೂ "ಭವಂತಿ ನರಕಾ: ಪಾಪಾತ್ ಪಾಪಂ ದಾರಿದ್ರ್ಯ-ಸಂಭವಮ್. ದಾರಿದ್ರ್ಯಮಪ್ರದಾನೇನ ತಸ್ಮಾದ್ವಾನಪರೋ ಭವ" ಇಲ್ಲಿ ಉತ್ತರೋತ್ತರವಾದ ಪಾಪ, ದಾರಿದ್ರ್ಯ ಮತ್ತು ಅಪ್ರದಾನಗಳು ಪೂರ್ವ ಪೂರ್ವಗಳಾದ ನರಕ, ಪಾಪ ಮತ್ತು ದಾರಿದ್ರ್ಯಗಳಿಗೆ ಕಾರಣವಾಗಿ ವರ್ಣಿತವಾಗಿರುವುದರಿಂದಲೂ "ಕಾರಣ ಮಾಲಾ" ಅಲಂಕಾರವು.

**ಕಾರಣಾ ಕಾರಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯಾತನೆ, ಅತಿಯಾದ ನೋವು. ಕೃ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ "ಯುಕ್" (3-3-109). 2. ಪ್ರೇರಣೆ, ಒತ್ತಾಯ.

**ಕಾರಣಿಕ ಕಾರಣಿಕ** (ವಿಂ) ಪರೀಕ್ಷೆಮಾಡುವವನು, ಕಾರಣಗಳಿಂದ ವಿಚಾರ ಮಾಡುವವನು. ಕಾರಣಿ: ಚರತಿ "ಠಕ್" (4-4-6). "ಪರೀಕ್ಷಕ: ಕಾರಣಿಕ:" ಅಮಂ.

**ಕಾರಣೋತ್ತರ ಕಾರಣೋತ್ತರ** (ನಂ) ಕಾರಣವನ್ನು ಹೇಳಿದ ನಂತರ ಕೊಡುವ ಉತ್ತರ, ವಾದಿಯು ತನ್ನ ವ್ಯವಹಾರವನ್ನು ಸ್ಥಿರಪಡಿಸಲು ಹೇಳಿದ ಕಾರಣವನ್ನು ಅಂಗೀಕರಿಸಿ ಅದನ್ನು ತಳ್ಳಿಹಾಕಲು ಕೊಡುವ ಉತ್ತರ. ಕಾರಣೇನ ಉತ್ತರಮ್.

**ಕಾರಣವ ಕಾರಣವ** (ಫಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಪಕ್ಷ, ಹಂಸದ ಒಂದು ಭೇದ. ರಮತೇ - ರಮು (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) "ಠ:" (3-1-111). ಇಷ್ಟತ್ ರಠಃ: ಕಾರಣವ: ಕಾರಣವಂ ವಾತಿ - ವಾ (ಗತಿಗಂಧನಯೋ: "ಕ:" (3-2-3). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಛೀಪ್" (4-1-43). -ವಿ -ವೀ.

**ಕಾರಣಮ ಕಾರಣಮ** (ಫಂ) ಕಾರಣವು ರಾಜನ ಮಗ. ಅವಿಕ್ಷತನೆಂಬ ದೊರೆ. ಕಾರಣಮಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಅಙ್" (4-1-112). [ಈ ರಾಜನು ಒಮ್ಮೆ ವಿಶಾಲತನಯೆಯ ಸ್ವಯಂವರಕ್ಕೆ (ವಿವಾಹಕ್ಕೆ) ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಅಲ್ಲಿ ಸೇರಿದ್ದ ರಾಜರೆಲ್ಲರೂ ಇವನನ್ನು ಸೆರೆ ಹಿಡಿದು ಹಾಕಲಾಗಿ ಕಾರಣಮನು ಅವರೆಲ್ಲರನ್ನೂ ಸೋಲಿಸಿ ಅವಿಕ್ಷತನನ್ನು ಬಿಡಿಸಿ ಕೊಂಡು ಬಂದನು. ಬಳಿಕ ಅವಿಕ್ಷತನು ತಾಯಿತಂದೆಗಳು ಎಷ್ಟು ಹೇಳಿದರೂ ಮದುವೆಯಾಗದೆ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯವನ್ನು ಹಿಡಿಯುತ್ತಾನೆ. ಇವನ ತಾಯಿಯು ಯಾರು ಏನು ಕೇಳಿದರೂ ಕೊಡುವುದಾಗಿ ವ್ರತವೊಂದನ್ನು ಕೈಗೊಳ್ಳಲಾಗಿ ಅವಿಕ್ಷತನು ಅದನ್ನು ಡಂಗುರ ಹೊಡೆಯಿಸಿ ಸಾರಿಸಿದನು. ಕಾರಣಮನು "ನನಗೆ ಮೊಮ್ಮಗನನ್ನು ಕೊಡಬೇಕು" ಎಂದು ಕೇಳಲಾಗಿ ವಿಧಿಯಿಲ್ಲದೆ ಅವಿಕ್ಷತನು ವಿಶಾಲತನಯೆಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ಮರುತ್ತನೆಂಬ ಮಗನನ್ನು ಪಡೆದನು.]

**ಕಾರಣಮಿನ್ ಕಾರಣಮಿನ್** (ಫಂ) 1. ಕಂಚುಗಾರ, ಮಿಶ್ರಲೋಹದ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು. ಕರ ಏವ ಕಾರ:, ಕಾರಂ ಧಮತಿ - ಛಾ (ಶಬ್ದಾಗ್ನಿಸಂಯೋಗಯೋ: "ಣಿತಿ:" (3-2-96). ಷೂಂ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (4-1-4). -ಧಮಿನಿ -ಧಮಿನೀ. 2. ಲೋಹಮಿಶ್ರಣದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಲೋಹದ ಮೊತ್ತವನ್ನು ನಿರ್ಣಯಿಸುವವನು. "ಕಾರಣಮಿ ಕಾಂಸ್ಯಕಾರೇ ಧಾತುವಾದರತೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ.

**ಕಾರಮ ಕಾರಮ** (ವಿಂ) ಕರಭಸಂಬಂಧವಾದ, ಒಂಟೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕರಮಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಙ್" (4-3-120). "ಅಶೋಘ್ನಂ ಕಾರಮ ಮುತ್ರಂ ಮಾನುಷಂ ತು ವಿಷಾಪಹಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ.

**ಕಾರಮ ಕಾರಮ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೆರಿಗೆಯನ್ನು ವಸೂಲುಮಾಡುವ ಜಾಗ. ಕರ ಏವ ಕಾರ:-ತಸ್ಯ ಭೂ: -ಭೂಮಿ: -ಭೂಮಿ:

**ಕಾರಮಾ ಕಾರಮಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಿಯಂಗುವೃಕ್ಷ, ಪ್ರೇಂಕಣ ಗಿಡ.

**ಕಾರಯತ್ ಕಾರಯತ್** (ವಿಂ) (ಕೆಲಸ) ಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವವನು. ಕೃ ಕೃಕ್ (ಕರಣೇ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (3-2-124). "ಪ್ರಕಾಶಮುನ್ಮಾಢ್ಯ ಯದಢ್ಯ ಕಾರಯನ್ಮಯಾತ್ಮನಸ್ತ್ವಾಮನು ಕಂಪತೇ ಸ್ಮ ಸ:" ನೈಷಂ 9-1-133. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (4-1-4). -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

**ಕಾರಯಿತ್ ಕಾರಯಿತ್** (ವಿಂ) (ಕೆಲಸ) ಮಾಡಿಸುವವನು. ಕೃ ಕೃಕ್ (ಕರಣೇ) + ಣಿಕ್ "ತತ್" (3-1-133). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (4-1-4). -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.



ಕಾರಯಿಣ್ಯ ಕಾರಯಿಷ್ಣು (ವಿಂ) ಕೆಲಸ ಮಾಡಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣ) + ಣಿನ್ "ಇಣುನ್" (3-2-136)।

ಕಾರವ ಕಾರವ (ಪುಂ) ಕಾಗೆ, ವಾಯಸ. ಕೇತಿ ರವೋಸ್ಯ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾನ್ "ಜಿಃ" (4-1-63)। -ವಿ -ವೀ.

ಕಾರವೀ ಕಾರವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಡುಸಬ್ಬಸಿಗೆ. 2. ಕರಿ ಜೀರಿಗೆ. 3. ಓಮ, ವಾದಕ್ಕಿ. 4. ಹಿಂಗಿನ ಮರ. 5. ಹೆಣ್ಣು ಕಾಗೆ. "ಕಾರವೀ ಮಧುರಾದೀಪ್ಯತ್ವಕಪತ್ರಿ ಕೃಣಜೀರಕೇ" ಮೇದಿಂ।

ಕಾರವೆಲ್ಲ ಕಾರವೆಲ್ಲ (ಪುಂ) 1. ಹಾಗಲದ ಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಹಾಗಲದ ಕಾಯಿ. 3. ಹಾಗಲದ ಹೂವು. ಕಾರಂ ವೆಲ್ಲತಿ -ವೆಲ್ಲ (ಚಲನೆ) "ಅನ್" (3-2-1)।  
ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"। -ವೆಲ್ಲಕ: -ವೆಲ್ಲಕೆ.

ಕಾರಸ್ಕರ ಕಾರಸ್ಕರ (ಪುಂ) ವಿಷವೃಕ್ಷ. ಕಾರಂ ವಧಂ ಕರೋತಿ-  
ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣ) "ಠ:" (3-2-20)। "ಕಾರಸ್ಕರೋ  
ವೃಕ್ಷ:" ಪಾಂ ಸುಂ 6-1-156।

ಕಾರಾ ಕಾರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಂಧನ, ಸೆರೆ, ಬೇಡಿ. ಕೀರ್ಯತೇ-ಕೃ (ವಿಕ್ಷೇಪ) "ಅಙ್" ದೀರ್ಘಶ್ಚ (3-3-104)।  
2. ಬಂಧನಾಗಾರ, ಸೆರೆಮನೆ. 3. ಚಿನ್ನದ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವ ಹೆಂಗಸು. 4. ದೂತಿ. 5. ವೀಣೆಯ ಬುರುಡೆ, ವೀಣೆಯ ಹೆರಳು. "ಕಾರಾ ಬಂಧನಶಾಲಾಂ ಬಂಧೇ ದ್ವಯಾಂ ಪ್ರಸೇವಕೇ।  
ಸ್ಯಾಡ್ವೇಮಕಾರಿಕಾಂ ಚ" ಹೇಮಂ। 6. ಪೀಡೆ, ಹಿಂಸೆ. "ಕಾರಾ ಪಿಡಾ ಬಂಧನಶಾಲೇ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಕಾರಾಗಾರ ಕಾರಾಗಾರ (ನಂ) ಸೆರೆಮನೆ. ಕಾರಾಯಾ  
ಅಗಾರಮ್। "ಕಿಂ ನ ಮುಕ್ತಾ: ಕುತ: ಸಂತಿ ಕಾರಾಗಾರೆ ಮನೋ-  
ಭುವ:" ನೈಷಂ 17-16।

ಕಾರಾಗುಪ್ತ ಕಾರಾಗುಪ್ತ (ವಿಂ) ಸೆರೆಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಸೆರೆಮನೆಯಲ್ಲಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಕಾರಾಗೃಹ ಕಾರಾಗೃಹ (ನಂ) ಸೆರೆಮನೆ. ಕಾರಾಯಾ ಗೃಹಮ್।  
"ಕಾರಾಗೃಹೇ ನಿಜಿತವಾಸವೇನ ಲಕ್ಷ್ಮೇಶ್ವರೇಣೋಪಿತಮಾಪ್ರಸಾದಾತ್"  
ರಘುಂ 6-40।

ಕಾರಾವಾಸ ಕಾರಾವಾಸ (ಪುಂ) 1. ಸೆರೆಮನೆ. 2. ಸೆರೆ  
ಮನೆಯ ವಾಸ.

ಕಾರಾಪಥ ಕಾರಾಪಥ (ಪುಂ) ಒಂದು ದೇಶ. "ಶಾಸನಾದ್ರಘು-  
ನಾಥಸ್ಯ ಚಕ್ರೇ ಕಾರಾಪಥೇಶ್ವರೌ" ರಘುಂ 14-90।

ಕಾರಾಯಿಕಾ ಕಾರಾಯಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ  
ಬಾತು, ಬೆಳ್ಳಕ್ಕಿ.

ಕಾರಾವರ ಕಾರಾವರ (ಪುಂ) ನಿಷಾದನಿಂದ ಪೈದೇಹಿಯಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು. ಚರ್ಮದ ಕೆಲಸ  
ಮಾಡುವವನು. "ಕಾರಾವರೋ ನಿಷಾದಾತ್ ಚರ್ಮಕಾರ:  
ಪ್ರಸೂಯತೇ" ಮನುಂ 10-36।

ಕಾರಿ ಕಾರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೆಲಸ, ಪ್ರಶ್ನೆ ಮತ್ತು ಉತ್ತರ  
ಕಥನರೂಪವಾದ ಕಾರ್ಯ. ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣ) "ಙ್"  
(3-3-110)। "ಕಾಂ ತ್ವಂ ಕಾರಿಮಕಾರ್ಪಿ: ಸರ್ವಾ ಕಾರಿ-  
ಮಹಮಕಾರ್ಪಮ್"। (ವಿಂ) 2. ಶಿಲ್ಪಿ. "ಕಾರಿ: ಸ್ತ್ರಿಯಾನ್  
ಕ್ರಿಯಾಂ ಸ್ಯಾಡ್ವೇಮಲಿಂಗಸ್ತು ಶಿಲ್ಪಿನಿ" ಮೇದಿಂ।

ಕಾರಿಕಾ ಕಾರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೆಲಸ, ಕಾರ್ಯ. ಡು ಕೃನ್  
(ಕರಣ) "ಙ್" (ವಾಂ 3-3-106)। ಕ್ರಿಯಾಯೋಗೇ  
ಅಸ್ಯ ಗತೀತ್ವಮ್ ತತ್ರ ಕಾರಿಕಾ ಕ್ರಿಯಾ ಕಾರಿಕಾಕೃತ್ಯ  
ಸಿಂ ಕೌಂ। 2. ನಟಿ, ನರ್ತಕಿ. 3. ವಿವರಣ ಶ್ಲೋಕ,  
ಸ್ವಲ್ಪ ಪದಗಳಿಂದ ಬಹಳ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶ್ಲೋಕ.  
ಸಾಂಖ್ಯಕಾರಿಕಾ, ಕಾರಿಕಾವಲಿ: ಇತ್ಯಾದಿ. 4. ತೀವ್ರವಾದ  
ವೇದನೆ, ಕ್ರೂರವಾದ ಯಾತನೆ, ಅತಿಯಾದ ನೋವು.  
5. ಶಿಲ್ಪಿ. "ಕರಾರಿಕಾರಿ ಕೋರಕಾರಕ: ಕಾರಿಕಾಕರ:"  
ಮಾಘಂ 19-104। "ಕಾರಿಕಾ ನಟಯೋಪಿತಿ। ಕೃತೌ ವಿವರಣ-  
ಶ್ಲೋಕೇ ಶಿಲ್ಪಯಾತನಯೋರಪಿ। ನಪುಂಸಕಂ ತು ಕರ್ಮಾದೌ ಕಾರಕಂ  
ಕರ್ತೃಂ ತ್ರಿಪು" ಮೇದಿಂ। 6. ಬಡ್ಡಿ, ವೃದ್ಧ್ಯಂಶ.

ಕಾರಿತ ಕಾರಿತ (ವಿಂ) 1. ಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಡು ಕೃನ್  
(ಕರಣ) + ಣಿನ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102)। 2. ಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಡು ಕೃನ್ + ಸ್ವಾರ್ಥ ಣಿನ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102)।  
"ಕಾರಿತಾರಿವಧಾ ಸೇನಾಜನಾಸೇಧಾ ವರಿತಾರಿಕಾ" ಮಾಘಂ  
19-44। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತಾ -ತಾ. 3. ನ್ಯಾಯವಾದುದ  
ಕ್ಕಿಂತ ಹೆಚ್ಚಾದ ಬಡ್ಡಿ, ಉತ್ತಮಾರ್ಗ (ಸಾಲಕೊಟ್ಟವ)ನು  
ಬಲಾತ್ಕಾರವಾಗಿ ಹೇರಿದ ಬಡ್ಡಿ. "ಚಕ್ರವೃದ್ಧಿ: ಕಾಲವೃದ್ಧಿ:  
ಕಾರಿತಾ ಕಾರಿಕಾ ಚ ಯಾ" ಮನುಂ 6-153।

ಕಾರಿ ಕಾರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣುಳ್ಳದ ಗಿಡ. ಕೃ (ಹಿಸಾಯಾಮ್)  
"ಙ್" (3-3-110)। "ಜಿಃ" (ಗಂ 4-1-45)।

ಕಾರೀರ ಕಾರೀರ (ನಂ) ಬಿದಿರಿನ ಕಾಂಡ, ಬಿದಿರಿನ ಜಲ್ಲೆ.  
ಕರೀರಸ್ಯಾವಯವ: ಕಾಂಡಮ್ "ಅನ್" (4-3-141)।

ಕಾರೀರಿ ಕಾರೀರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಳೆಗೋಸ್ಕರ ಮಾಡುವ  
ಒಂದು ಯಾಗ.

ಕಾರೀಷ ಕಾರೀಷ (ನಂ) 1. ಒಣಗಿದ ಸಗಣೆಯ  
ರಾಶಿ. ಕರೀಷಾಣಾಂ ಸಮೂಹ: "ಅನ್" (4-2-36)।  
(ವಿಂ) 2. ಒಣಗಿದ ಸಗಣೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ.



**ಕಾರು ಕಾರು (ಪುಂ)** 1. ದೇವಶಿಲ್ಪಿ, ವಿಶ್ವಕರ್ಮ. 2. ಶಿಲ್ಪಿ, ವಾಸ್ತುಶಿಲ್ಪಿ, ಶಿಲ್ಪಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞ. ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಉ" (ಉಂ ೧-೧)। "ಇತಿ ಸ್ಮ ಸಾ ಕಾರವರೇಣ ಲೇಖಿತಂ ನಲಸ್ಯ ಚ ಸ್ವಸ್ಯ ಚ ಸಖ್ಯಮೀಕ್ಷತೇ" ನೈಷಂ ೧-೩೮। 3. ಕವಿ, ಹೊಗಳುವವನು, ಸ್ತೋತ್ರ ಮಾಡುವವನು. 4. ಇಂದ್ರ. "ಕಾರ್ಜುನ್ಮರಿಪುಜಿಷ್ಣುಃ" ವೈಜಂ 1. 5. ಪ್ರಾತ್ಯ ನಾದ ವೈಶ್ಯನಿಂದ ಅವಿವಾಹಿತ ವೈಶ್ಯ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. 6. ಬಡಗಿ, ಮರಗೆಲಸದವನು. (ನಂ) 7. ಕಾರ್ಯ, ಕೆಲಸ. 8. ಶಿಲ್ಪ, ಕೈಗಾರಿಕೆ. (ವಿಂ) 9. ಕೈಕೆಲಸದವನು, ಚಿತ್ರಕಾರ್ಯ ಮಾಲಾರಚನೆ ಮುಂತಾದವನ್ನು ಮಾಡುವವನು. "ನಿತ್ಯಂ ಶುದ್ಧಃ ಕಾರುಹಸ್ತಃ ಪುಣ್ಯಂ ಯಚ್ಚ ಪ್ರಸಾರಿತಮ್" ಮನುಂ ೪-೧೨೯। 10. ಸೂಪಕಾರ, ಅಡಿಗೆಯವನು. "ಕರ್ಮೋಪಕರಣಾಃ ಶೂದ್ರಾಃ ಕಾರವಃ ಶಿಲ್ಪಿನಸ್ತಥಾ" ಮನುಂ ೧೦-೧೨೦। 11. ಮಾಡುವವನು. "ರಾಘವಸ್ಯ ತತಃ ಕಾರ್ಯಂ ಕಾರ್ವಾನಿರಪುಜ್ಜವಃ" ಭದ್ರಂ ೭-೨೮। "ಕಾರುಸ್ತು ಕಾರಕೇ ಶಿಲ್ಪೇ ವಿಶ್ವಕರ್ಮಣಿ ಶಿಲ್ಪಿನಿ" ಹೇಮಂ 1.

**ಕಾರುಕ ಕಾರುಕ (ಪುಂ)** 1. ಶಿಲ್ಪಿ, ಶಿಲ್ಪಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. ಕಾರು ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ"। 2. ಬಡಗಿ, ಮರಗೆಲಸದವನು. 3. ಕೈಕೆಲಸದವನು, ಚಿತ್ರಕಾರ. 4. ಕವಿ, ಹೊಗಳುವವನು, ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡುವವನು. 5. ಸೂಪಕಾರ, ಅಡಿಗೆಯವನು. "ನ ಸಾಕ್ಷಿ ನೃಪತಿಃ ಕಾರ್ಯಂ ನ ಕಾರುಕಕುಶಿಲವೌ" ಮನುಂ ೮-೬೪।

**ಕಾರುಕೌರ ಕಾರುಕೌರ (ಪುಂ)** ಗೋಡೆಯಲ್ಲಿ ಕನ್ನ ಕೊರೆದು ಕದಿಯುವವನು. ಕಾರುಣಾ ಶಿಲ್ಪೇನ ಕೌರಃ।

**ಕಾರುಜ ಕಾರುಜ (ಪುಂ)** 1. ಗಜಶಿಶು, ಆನೆಯ ಮರಿ. 2. ಸ್ವರ್ಗ. "ಕಾರುಜಃ ಕಲಮೇ ನಾಕೇ" ವೈಜಂ 1. 3. ವಲ್ಮೀಕಿ, ಹುತ್ರು. 4. ಫೇನ, ನೊರೆ. 5. ನಾಗಕೇಸರವೃಕ್ಷ, ನಾಗ ಸಂಹಿಗಮರ. 6. ಮೈಯಲ್ಲಿ ತಾನಾಗಿ ಹುಟ್ಟುವ ಎಳ್ಳಿನ ಆಕಾರದ ಕಪ್ಪು ಮಚ್ಚೆ, ಸಂಗಾತಿ. 7. ಗೈರಿಕ ಧಾತು. 8. ಶಿಲ್ಪಿಯ ಕುಶಲಕಾರ್ಯ, ಶಿಲ್ಪಿಯು ತಯಾರಿಸಿದ ಯಾವುದಾದರೊಂದು ವಸ್ತು. "ಕಾರುಜಃ ಕಲಮೇ ಫೇನೇ ವಲ್ಮೀಕೀ ನಾಗಕೇಸರೇ। ಗೈರಿಕೇ ಶಿಲ್ಪಿನಾಂ ಚಿತ್ರೇ ಸ್ವಯಂಜಾತತೀಲೇಽಪಿ ಚ" ಹೇಮಂ 1.

**ಕಾರುಣ ಕಾರುಣ (ವಿಂ)** 1. ಅನುಕಂಪಾರ್ಹ, ದಯೆತೋರಿ ಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದವನು. "ದಯಾಲುಃ ಸ್ಯಾತ್ ಕಾರುಣಿಕೋಽನುಕರ್ಮ್ಯಃ ಕಾರುಣಃ ಸಮೌ" ವೈಜಂ 1. 2. ಸ್ವಲ್ಪ ಕೆಂಪಾದ.

**ಕಾರುಣಿಕ ಕಾರುಣಿಕ (ವಿಂ)** ದಯಾಳು, ದಯೆತೋರಿಸುವವನು, ಕನಿಕರವುಳ್ಳವನು. ಕರುಣಾ ಶೀಲಮಸ್ಯ "ಠಕ್"

(೪-೪-೬೧)। "ಸಮ್ಯಕ್ಕಾರುಣಿಕಸ್ಯೇದಂ ವತ್ಸ ತೇ ವಿಚಿ-  
ಕಿಸಿತಮ್" ಭಾಗಂ ೨-೪-೯।

**ಕಾರುಣಿಕಾ ಕಾರುಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಜಲಾಂಕೆ, ಜಿಗಣೆ. **ಕಾರುಣ್ಯ ಕಾರುಣ್ಯ (ನಂ)** ಕರುಣೆ, ದಯೆ, ಕನಿಕರ. ಕರುಣಸ್ಯ ದಯಾಲುಃ ಭಾವಃ "ಉ" (೪-೧-೧೨೪)। ಇತರರ ಕಷ್ಟವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವ ಇಚ್ಛೆ, ಇತರರ ಅನಿಷ್ಟವನ್ನು ನಿವಾರಿಸುವ ಇಚ್ಛೆ, ಸ್ವಾರ್ಥವಿಲ್ಲದೆ ಇತರರ ದುಃಖವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ ಇಚ್ಛೆ, ಇತರರ ದುಃಖವನ್ನು ಕಂಡು ಮರುಕಗೊಳ್ಳುವುದು. ಕರುಣಾ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಉ" ವಾ। "ಕಾರುಣ್ಯಂ ನಿರವಧಿ ಯತ್ತವ ಪ್ರಸಿದ್ಧಂ ಶೀತಾಂಶೋಃ ಸಹಜಮಿವಾರ್ತಹಾರಿ ಶೀತಮ್" ಚಂ ರಾಂ 1. "ಕಾರುಣ್ಯಂ ಸಂವಿಭಾಗಃ ಚ ಯಸ್ಯ ಭೃತ್ಯೇಷು ಸರ್ವದಾ। ಸಂಭವೇತ್ ಸ ಮಹಿಪಾಲಸ್ಯೈಲೋಕ್ಯಸ್ಯಾಪಿ ರಕ್ಷಣೇ"।

**ಕಾರುಣಿನ್ದ ಕಾರುಣಿನ್ದ (ಪುಂ)** ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಂದ ವೈದೇಹಕಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಗ. (ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ವೈಶ್ಯನಿಗೆ ಹುಟ್ಟಿದವಳು ವೈದೇಹಕಿ.) "ವೈಶ್ಯಾದೈದೇಹಕಂ ವಿಪ್ರಾ ಕ್ಷತ್ರಕನ್ಯಾ ತು ಮಾಗಧಮ್" ವೈಜಂ 1. "ವೈದೇಹಕೀ ಕಾರುಣಿನ್ದಮ್" ವೈಜಂ 1.

**ಕಾರುಷ ಕಾರುಷ (ಪುಂ)** 1. ಕರೂಪ ದೇಶದ ರಾಜನಾದ ದಂತವಕ್ತ್ರ. ಕರುಷಾಣಾಂ ರಾಜಾ "ಅ" (೪-೧-೧೬೬)। (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ಕರೂಪದೇಶದ ಜನರು.

**ಕಾರೇಣವ ಕಾರೇಣವ (ವಿಂ)** ಆನೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಆನೆಯಿಂದ ಕರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ ಹಾಲು ಮುಂತಾದುದು. ಕರೇಣೋರಿದಮ್ "ಅ" (೪-೩-೧೨೦)।

**ಕಾರೋತ್ತರ ಕಾರೋತ್ತರ (ಪುಂ)** 1. ಹೆಂಡದ ಮೇಲಿನ ಕೆನೆ. ಕಾರೇಣ ಗಲನಕ್ರಿಯಯಾ उत्तरति—उद्+तृ (ಉವನತರಣಯೋಃ) "ಅ" (೩-೧-೧೩೪)। "ಕಾರೋತ್ತರಃ ಸುರಾಮಣಃ" ಅಮಂ 1. 2. ಕೂಪ, ಬಾವಿ. ಕಾರೇಣ उत्तीर्यते—उद्+तृ ಕರ್ಮಂ "ಅ" (೩-೩-೪೮)। 3. ಹೆಂಡವನ್ನು ಶುದ್ಧಿ ಮಾಡುವ ಜಲ್ಲಡಿ, ಒಂದರಿ.

**ಕಾರ್ಕಂಧವ ಕಾರ್ಕಂಧವ (ವಿಂ)** ಎಲಚಿಮರದ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಬೋರೆ ಗಿಡದಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಕರ್ಕಂಧೋರಿದಮ್ "ಅ" (೪-೩-೧೨೦)।

**ಕಾರ್ಕಲಾಸೇಯ ಕಾರ್ಕಲಾಸೇಯ (ಪುಂ)** ಕೃಕಲಾಸದ ಅಪತ್ಯ, ಓ ತಿಕೇತದ ಮರಿ. ಕೃಕಲಾಸಸ್ಯ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೩)।

**ಕಾರ್ಕವಾಕವ ಕಾರ್ಕವಾಕವ (ವಿಂ)** ಕೃಕವಾಕು ಸಂಬಂಧವಾದ, ಕೋಳಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕೃಕವಾಕೋರಿದಮ್ "ಅ" (೪-೩-೧೨೦)।



**ಕಾರ್ತಿಕ ಕಾರ್ತಿಕ** (ನಂ) 1. ಕರ್ತೃವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಕೃತೃವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಕರ್ತೃವ್ಯ ಭಾವ: "ಆನ್" (೪-೧-೧೨೪)।  
"ಕಾಂತಾರಭಾಜಿ ಮಧಿ ಕೇಕರಾಜಪುತ್ರಾ: ಕಾರ್ತಿಕಕಂದಲಿತಯಾ ದಲಿತಸ್ಯ ವಾಚಾ" ಚಂ ರಾಂ 1. 2. ಒರಟಾಗಿರುವಿಕೆ.  
3. ದೃಢವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ. "ಆಶ್ಲೇಷ-  
ಲೋಪವಧುಸ್ತನಕಾರ್ತಿಕಸಾಕ್ಷಿಣಿಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೧೭।

**ಕಾರ್ತಿಕ ಕಾರ್ತಿಕ** (ವಿಂ) ಬಿಳಿಯ ಕುದುರೆಯಂತಿರುವ, ಬಿಳಿಯ ಕುದುರೆಯನ್ನು ಹೋಲುವ. ಕರ್ತೃ: ಶುಕ್ಲೋಷ್ವ: ಸ ಇವ "ಇಕಕ್" (೪-೩-೧೧೦)।

**ಕಾರ್ತಿಕ ಕಾರ್ತಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಕರ್ತೃನ ಮಗ ವೃಷಕೇತು. ಕರ್ತೃನ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೧೨)। (ನಂ) 2. ಹತ್ತಿಕಡಕು, ಓಲೆ, ತಾಟಂಕ. (ವಿಂ) 3. ಕಿವಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ (ಗುಗ್ಗು ಮೊದಲಾದುದು). ಕರ್ತೃಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ಕಾರ್ತಿಕ ಕಾರ್ತಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಕೃತೃ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಗ್ರಂಥ, ಕೃತೃ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳ ಅರ್ಥ ವಿವರಿಸುವ ಗ್ರಂಥ. ಕೃತಾಂ ಕೃತ್ ಪ್ರತ್ಯಯಾನಾಂ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನೋ ಗ್ರಂಥ: "ಅನ್" (೪-೩-೬೬)। (ನಂ) 2. ಕೃತಯುಗ. ಕೃತಮೇವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮) (ವಿಂ) 3. ಕೃತಯುಗಸಂಬಂಧವಾದ. ಕೃತಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ಕಾರ್ತಿಕಯುಗ ಕಾರ್ತಿಕಯುಗ** (ವಿಂ) ಕೃತಯುಗ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕೃತಯುಗಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ತೃತೀಯ-  
ಪ್ರವರ್ತಿತಕಾರ್ತಿಕಯುಗವೃತ್ತಾಂತ" ರಘುಂ ಗಂ 1.

**ಕಾರ್ತಿಕವೀರ್ಯ ಕಾರ್ತಿಕವೀರ್ಯ** (ಪುಂ) ಕೃತವೀರ್ಯನ ಮಗ, ಕಾರ್ತಿಕವೀರ್ಯಾರ್ಜುನ, ಹೈಹಯದೇಶದ ದೊರೆ. ಕೃತವೀರ್ಯಸ್ಯ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೧೨)। ಕಾರ್ತಿಕ ವೀರ್ಯಾರ್ಜುನನು 85,000 ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಧರ್ಮ ದಿಂದ ರಾಜ್ಯವಾಳಿದನು. ಇವನು ರಾವಣನ ಸಮ ಕಾಲಿಕನು ಮತ್ತು ಬಹಳ ಪರಾಕ್ರಮಿ. ಇವನಿಗೆ ಸಹಸ್ರ ತೋಳುಗಳಿದ್ದವು. ಇವನ ಮಹಿಮೆಯೆಲ್ಲವೂ ದತ್ತಾತ್ರೇಯನ ವರಪ್ರಸಾದಲಬ್ಧವಾದುವು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಅರ್ಜುನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ಅರ್ಜುನ: ಕೃತವೀರ್ಯಸ್ಯ ಸಪ್ತದ್ವಿಪೇಶ್ವರೋ ಭವತ್। ದತ್ತಾತ್ರೇಯಾದ್ಧರೇರಂಶಾತ್ ಪ್ರಾಪ್ತಯೋಗಮಹಾಗುಣ:। ನ ನೂನ ಕಾರ್ತವೀರ್ಯಸ್ಯ ಗತಿಂ ಯಾಸ್ಯಂತಿ ಪಾರ್ಥಿವಾ:। ಯಜ್ಞದಾನತಪೋಯೋಗ-  
ಶ್ರುತವೀರ್ಯಜಯಾದಿಭಿ:" ಭಾಗಂ ೧-೨೩। "ಅನನ್ಯಸಾಧಾರಣ-  
ರಾಜಶಬ್ದೋ ಬಭೂವ ಯೋಗಿ ಕಿಲ ಕಾರ್ತವೀರ್ಯ:" ರಘುಂ ೬-೩೮।

**ಕಾರ್ತಿಕಸ್ವರ ಕಾರ್ತಿಕಸ್ವರ** (ನಂ) 1. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ಕೃತಸ್ವರೇ ಆಕರವಿಶೇಷ ಭವಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೫೩)।

"ಸ ತಪ್ತಕಾರ್ತಿಕಸ್ವರಭಾಸ್ವರಾಮ್ಬರ: ಕಠೋರತಾರಾಧಿಪಲಾಂಛನ-  
ಚ್ಚವಿ:" ಮಾಘಂ ೧-೨೦। "ಜಲದಾಸ್ತದಿತ್ಯುಲಿತಕಾಂತಕಾರ್ತಿಕ-  
ಸ್ವರಾ:" ಮಾಘಂ ೪-೨೪। 2. ದತ್ತೂರಿ ಕಾಯಿ.

**ಕಾರ್ತಿಕಸ್ವರಭೂಷಣ ಕಾರ್ತಿಕಸ್ವರಭೂಷಣ** (ಪುಂ) ಮೇರು ಪರ್ವತ. "ಅಶೋಭಿ ಕಾರ್ತಿಕಸ್ವರಭೂಷಣಸ್ಯ" ನೈಷಂ ೧೦-೬೭।

**ಕಾರ್ತಿಕಕಾರ್ತಿಕ** (ಪುಂ) ಮೌಹೂರ್ತಿಕ, ಜೋಯಿಸ, ಭವಿಷ್ಯವನ್ನು ತಿಳಿದು ಹೇಳುವವನು. ಕೃತಾಂತಂ ವೇತ್ತಿ "ಠಕ್" (೪-೨-೬೦)।

**ಕಾರ್ತಿಕ ಕಾರ್ತಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕಮಾಸ, ಕೃತ್ತಿಕಾ ನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ಮಾಸ. ಕೃತ್ತಿಕಾ-  
ನಕ್ಷತ್ರೇಣ ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ-ಕೃತ್ತಿಕಾ "ಅನ್" (೪-೨-೩)। "ಚಿಪ್" (೪-೧-೧೫)। ಕಾರ್ತಿಕೀ-ಸಾಸ್ಮಿನ್ ಮಾಸೇ "ಅನ್" (೪-೨-೨೧)। "ನಕ್ಷತ್ರನಾಮ್ನಾ ಮಾಸಾಸ್ತು ಜ್ಞೇಯಾ: ಪರ್ವಂತಿ-  
ಯೋಗತ:" ಸೂಂ ಸಿಂ ೧೪-೧೫। ಒಂದು ಚಂದ್ರಮಾಸದ ಅಮಾವಾಸ್ಯೆಯೊಳಗಿನ ಪೂರ್ಣಿಮೆಯ ದಿನ ಬರುವ ಚಂದ್ರ ನಕ್ಷತ್ರದ ಹೆಸರಿನಿಂದ ಆ ತಿಂಗಳ ಹೆಸರಾಗುವುದು. ಚಿತ್ತಾ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಚೈತ್ರಮಾಸ, ವಿಶಾಖಾಸಂಬಂಧದಿಂದ ವೈಶಾಖಮಾಸ ಇತ್ಯಾದಿ. ಪರ್ವಾಂತದಲ್ಲಿ (ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ) ಆಯಾ ನಕ್ಷತ್ರಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಕಾರ್ತಿಕಾದಿಹುಣ್ಣಿಮೆಗೆ ಕೃತ್ತಿಕಾನಕ್ಷತ್ರಮೊದಲುಗೊಂಡು ಎರಡೆರಡು ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಕಾರ್ತಿಕಾದಿಮಾಸಗಳ ವ್ಯವಹಾರವು. ಕಾರ್ತಿಕಮಾಸಕ್ಕೆ ಅಂತ್ಯೋಪಾಂತ್ಯ ಮತ್ತು ಪಂಚಮಮಾಸ (ಆಶ್ವಯುಜ, ಭಾದ್ರಪದ ಮತ್ತು ಫಾಲ್ಗುಣ) ಗಳಿಗೆ ಮೂರು ಮೂರು ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಸಂಬಂಧ ವಿರುವುದು.

| ನಕ್ಷತ್ರಗಳು                               | ಮಾಸಗಳು      |
|--|-------------|
| (1) ಕೃತ್ತಿಕಾ-ರೋಹಿಣೀ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಕಾರ್ತಿಕ.   |             |
| (2) ಮೃಗಶಿರ್ಷ-ಆರಿದ್ರಾ                     | ಮಾರ್ಗಶಿರ್ಷ. |
| (3) ಪುನರ್ವಸು-ಪುಷ್ಯ                       | ಪೌಷ.        |
| (4) ಆಶ್ಲೇಷಾ-ಮಘಾ                          | ಮಾಘ.        |
| (5) ಪೂರ್ವ-ಉ.ಫ-ಹಸ್ತ                       | ಫಾಲ್ಗುಣ.    |
| (6) ಚಿತ್ತಾ-ಸ್ವಾತಿ                        | ಚೈತ್ರ.      |
| (7) ವಿಶಾಖಾ-ಅನೂರಾಧಾ                       | ವೈಶಾಖ.      |
| (8) ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ-ಮೂಲಾ                        | ಜ್ಯೇಷ್ಠ.    |
| (9) ಪೂರ್ವಾಷಾಢಾ-<br>ಉತ್ತರಾಷಾಢಾ            | ಆಷಾಢ.       |
| (10) ಶ್ರವಣ-ಧನಿಷ್ಠಾ                       | ಶ್ರಾವಣ.     |
| (11) ಶತಭಿಷ-ಪೂರ್ವಾಭಾದ್ರಾ-<br>ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರಾ | ಭಾದ್ರಪದ.    |
| (12) ರೇವತಿ-ಅಶ್ವಿನೀ-ಭರಣಿ                  | ಆಶ್ವಯುಜ.    |



“ಕಾರ್ತಿಕಾದಿಫು ಸಂಯೋಗೇ ಕೃತ್ತಿಕಾದಿ ದ್ವಯದ್ವಯಮ್ | ಅನ್ಯೋಪಾನ್ಯೋ  
ಪಂಚಮಶ್ವ ತ್ರಿಧಾ ಮಾಸತ್ರಯಂ ಸ್ಮೃತಮ್” ಸೂಂ ಸಿಂ ೧೪-೧೬ |

2. ತುಲಾರಾಶಿಯಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನಿರುವ ಒಂದು ಸೌರಮಾಸ. ತುಲಾಮಾಸ. 3. ಕೃತ್ತಿಕಾನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪೌರ್ಣ ಮಾಸಿಯುಳ್ಳ ಅರ್ಧಮಾಸ, ಒಂದು ಪಕ್ಷ. 4. ಸ್ಕಂದ, ಪಣ್ಣುಖ. ಕೃತ್ತಿಕಾಣಾಮಯಂ ಪೌಷ್ಪತ್ವೇನ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) | ಕೃತ್ತಿಕಾನಕ್ಷತ್ರಗಳಿಂದ ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದ್ದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಕಾರ್ತಿಕೇಯ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕೀ -ಕೀ. 5. ಕಾರ್ತಿಕಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ, ಕೃತ್ತಿಕಾನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ಕೃತ್ತಿಕಾನಕ್ಷತ್ರೇಣ ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ “ಅನ್” (೪-೨-೩) | “ಜಿಪ್” (೪-೧-೧೫) |

**ಕಾರ್ತಿಕ ಕಾರ್ತಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕಮಾಸ, ಕೃತ್ತಿಕಾ ನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯುಳ್ಳ ತಿಂಗಳು. ಕಾರ್ತಿಕೀ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ ಅಸ್ಮಿನ್ ಮಾಸೇ “ಠಕ್” (೪-೨-೨೩) | 2. ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಒಂದು ವರ್ಷ.

**ಕಾರ್ತಿಕ ಕಾರ್ತಿಕೇ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ತಿಕಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ, ಕೃತ್ತಿಕಾನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ಕೃತ್ತಿಕಾನಕ್ಷತ್ರೇಣ ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ “ಅನ್” (೪-೨-೩) | “ಜಿಪ್” (೪-೧-೧೫) |

**ಕಾರ್ತಿಕೇಯ ಕಾರ್ತಿಕೇಯ** (ಪುಂ) ಪಣ್ಣುಖ, ಸ್ಕಂದ. ಕೃತ್ತಿಕಾನಾಮಪತ್ಯಮ್ “ಠಕ್” (೪-೧-೧೨೦) | [ತಾರಕನೆಂಬ ಅಸುರನೊಬ್ಬನು ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಬಹಳವಾಗಿ ಒಡಿಸುತ್ತಾ ಲೋಕಕಂಟಕನಾಗಿದ್ದನು. ದೇವತೆಗಳು ಅವನನ್ನು ಜಯಿಸಲಾರದೆ ತಮಗೆ ತಕ್ಕ ಸೇನಾಪತಿಯೊಬ್ಬನನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ಬೇಕೆಂದು ಬ್ರಹ್ಮನಲ್ಲಿ ಮೊರೆಯಿಟ್ಟರು. ತಾನೇ ಅವನಿಗೆ ವರವನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಅವನ ಸಂಹಾರಕ್ಕೆ ಯತ್ನಿಸುವುದು ಸರಿಯಲ್ಲವೆಂದೂ ಪರಮೇಶ್ವರನು ಮಾತ್ರ ಅಂತಹ ಸೇನಾನಿಯೊಬ್ಬನನ್ನು ಒದಗಿಸಿಕೊಡಬಲ್ಲನೆಂದೂ ಸತಿಯ ವಿಯೋಗದಿಂದ ಧ್ಯಾನಾಸಕ್ತನಾಗಿರುವ ಪರಮೇಶ್ವರನು ಪಾರ್ವತಿಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗುವಂತೆ ದೇವತೆಗಳು ಯತ್ನಿಸಿದರೆ ಸರಿಯಾದ ಸೇನಾಪತಿಯೊಬ್ಬನು ಜನಿಸುವನೆಂದೂ ಹೇಳಿ ಬ್ರಹ್ಮನು ಅಂತರ್ಧಾನ ಹೊಂದಿದನು. ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಾತಿನಂತೆ ದೇವತೆಗಳು ಮನ್ಮಥನ ಸಾಹಾಯ್ಯದಿಂದ ಪಾರ್ವತೀ ಪರಮೇಶ್ವರರಲ್ಲಿ ಪರಸ್ಪರ ಅನುರಾಗ ಹುಟ್ಟಿಸಲು ಯತ್ನಿಸಿದರು. ಆದರೆ ಅದು ವಿಫಲವಾಗಿ ಕೊನೆಗೆ ಇವರೀವರ ಪರಸ್ಪರತಪಃಫಲವಾಗಿ ಮದುವೆಯಾಗಿ ಪಣ್ಣುಖನೆಂಬ ಕುಮಾರನು ಜನಿಸಿ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಆ ಕುಮಾರನು ತಾರಕಾ

ಸುರನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದನು. ಪರಮೇಶ್ವರನ ವೀರ್ಯವು ಮೊದಲು ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ವಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಅಗ್ನಿಯು ಅದನ್ನು ಗಂಗೆಯಲ್ಲಿ ಬಿಟ್ಟನು. ಗಂಗೆಯೂ ಅದರ ತೇಜಸ್ಸನ್ನು ತಡೆಯಲಾರದೆ ಶರವಣವೊಂದರಲ್ಲಿ ಬಿಟ್ಟಳು. ಅದು ಕ್ರಮೇಣ ಶಿಶುವಾಗಿ ಬೆಳೆಯಲಾರಂಭಿಸಿದಾಗ ಅದಕ್ಕೆ ಸ್ತನ್ಯ ಪಾನಕ್ಕಾಗಿ ದೇವತೆಗಳು ಕೃತ್ತಿಕಾ ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಕಳುಹಿಸಿ ಕೊಟ್ಟರು. ಇದರಿಂದ “ಕಾರ್ತಿಕೇಯ”ನೆಂದೂ ವೀರ್ಯವು ಸ್ತನ್ಯವಾದುದರಿಂದ “ಸ್ಕಂದ”ನೆಂದೂ ಆರುಮಂದಿ ಸ್ತನ್ಯಪಾನ ಮಾಡಿಸಿದುದರಿಂದ “ಷಾಣ್ಮಾತುರ”ನೆಂದೂ ಮುಂತಾಗಿ ಈ ಶಿಶುವಿಗೆ ಹೆಸರಾಯಿತು.]

**ಕಾರ್ತಿಕ ಕಾರ್ತಿಕ** (ನಂ) ಸಾಕಲ್ಯ, ಸಂಪೂರ್ಣತೆ, ಒಟ್ಟು. ಕೃತ್ಸನಸ್ಯ ಭಾವ: “ಏಜ್” (೪-೧-೧೨೪) | “ಕಾರ್ತಿಕೇನ ನಿರ್ವರ್ಣಯಿತುಂ ಚ ರೂಪಮಿಚ್ಛಂತಿ ತತ್ಪೂರ್ವಸಮಾಗತಾನಾಮ್” |

**ಕಾರ್ಪಟ ಕಾರ್ಪಟ** (ಪುಂ) 1. ಛಿಂದಿಬಟ್ಟೆ, ಹರಕುಬಟ್ಟೆ. ಕರ್ಪಟ ಏವ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಅನ್” | 2. ಜತು, ಅರಗು. (ವಿಂ) 3. ಛಿಂದಿಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ಉಟ್ಟಿರುವ ಭಿಕ್ಷುಕ. 4. ಕಾರ್ಯಾರ್ಥಿ, ಅರ್ಜಿದಾರ, ಉಮೇದುವಾರ. “ಕಾರ್ಪಟೋ ಜತುಕಾರ್ಯಿಣಿ:” ಮೇದಿಂ |

**ಕಾರ್ಪಟ ಕಾರ್ಪಟ** (ವಿಂ) 1. ಯಾತ್ರಾರ್ಥಿ, ತೀರ್ಥ ಯಾತ್ರೆ ಮಾಡುವವನು. ಕರ್ಪಟೇನ \ ಚರತಿ “ಠಕ್” (೪-೪-೮) | “ವಿಶ್ರಾಂತಕಾರ್ಪಟಕಪ್ರಸ್ಫುಟಿತಚರಣಭೂಲಿ-  
ಖಸರಕಿಸಲಯಲಾಞ್ಞಿತೋಪಕಂಠ:” ಕಾದಂ | 2. ಮರ್ಮ ವನ್ನು ಅರಿತವನು. “ಕಾರ್ಪಟಕ: ಸ ಮರ್ಮವಿತ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 3. ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. 4. ಯಾತ್ರಾರ್ಥಿಗಳ ಗುಂಪು.

**ಕಾರ್ಪಣ್ಯ ಕಾರ್ಪಣ್ಯ** (ನಂ) 1. ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ಬಡತನ, ಕಷ್ಟದಶೆ. 2. ಜಿಪುಣತನ, ಲೋಭತನ. ಕೃಪಣಸ್ಯ ಭಾವ: | “ಏಜ್” (೪-೧-೧೨೪) | 3. ತ್ಯಾಗಬುದ್ಧಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 4. ಕರ್ತವ್ಯಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದೆ ಕಷ್ಟದ ನಿವೃತ್ತಿಪಾಯವನ್ನು ಆರಿಯದಿರುವಿಕೆ, ದೀನತೆ. “ಕಾರ್ಪಣ್ಯದೋಷೋಪಹತಸ್ವಭಾವ: ಪೃಚ್ಛಾಮಿ ತ್ವಾಂ ಧರ್ಮಸಮೃದ್ಧೇತಾ:” ಗೀತಾ ೨-೭ |

**ಕಾರ್ಪಾಸ ಕಾರ್ಪಾಸ** (ನಂ) 1. ಹತ್ತಿ. 2. ಹತ್ತಿಯಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಬಟ್ಟೆ. 3. ಕಾಗದ. ಕಾರ್ಪಾಸ್ಯಾ: ಅವಯವ: ವಿಕಾರೋ ವಾ “ಅನ್” (೪-೩-೧೩೬) | “ಕಾರ್ಪಾಸ-  
ಕೃತಕೃಪಾಸಿಸತೇರಪಿ ನ ಶಾಮ್ಯತಿ | ಶೀತಂ ಶಾತೋದರೀಪಿನ್-  
ವಕ್ಷೋಜಾಲಿಜ್ಜನಂ ವಿನ್ಯಾ” | (ವಿಂ) 4. ಹತ್ತಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಹತ್ತಿಯ ದಾರದಿಂದ ತಯಾರಾದ.

**ಕಾರ್ಪಾಸಿಕ ಕಾರ್ಪಾಸಿಕ** (ಪುಂ) ಹತ್ತಿಯ ಬಟ್ಟೆ. ಕಾರ್ಪಾಸಿ ಏವ — ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕ:” |



ಕಾರ್ಪಸಿತನ್ತು ಕಾರ್ಪಸಿತಂತು (ಪುಂ) ಹತ್ತಿಯದಾರ, ಹತ್ತಿಯನೂಲು. ಕಾರ್ಪಸಿಸ್ಯ ತನ್ತುಃ |

ಕಾರ್ಪಸಿತಾಂತವ ಕಾರ್ಪಸಿತಾಂತವ (ವಿಂ) ಹತ್ತಿಯ ದಾರದಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ, ಹತ್ತಿಯ ನೂಲಿನ ಸಂಬಂಧ ವಾದ. ಕಾರ್ಪಸಿತಾಂತೋರಿದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | "ಕಾರ್ಪಸಿತಾಂತವಂ ಕ್ರೌಂಚೋ ಗೋಧಾ ಗಾಂ ವಾಗ್ಗುದೋ ಗುಡ್ಧಮ್ ಮನುಂ ೧೨-೬೪ |

ಕಾರ್ಪಸಿಸೌತ್ರಿಕ ಕಾರ್ಪಸಿಸೌತ್ರಿಕ (ವಿಂ) ಹತ್ತಿಯ ದಾರದಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಬಟ್ಟೆ ಮುಂತಾದುದು. ಕಾರ್ಪಸಿ- ಸ್ತುತ್ರೇಣ ನಿವೃತ್ತಃ "ಠಕ್" (೭-೩-೨೦) | "ಶತೇ ದಶಪಲಾ ವೃದ್ಧಿರೋ ಕಾರ್ಪಸಿಸೌತ್ರಿಕೇ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೭೯ |

ಕಾರ್ಪಸಿಕ ಕಾರ್ಪಸಿಕ (ವಿಂ) ಹತ್ತಿಯ ದಾರದಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಬಟ್ಟೆ ಮೊದಲಾದುದು. ಕಾರ್ಪಸಿನ ನಿವೃತ್ತಃ "ಠಕ್" (೪-೧-೭೯) | "ಶತಂ ದಾಸೀಸಹಸ್ರಾಣಾಂ ಕಾರ್ಪಸಿಕ- ನಿವಾಸಿನಾಮ್" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೪೧-೮ |

ಕಾರ್ಪಸಿಕಾ ಕಾರ್ಪಸಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹತ್ತಿಯ ಗಿಡ. ಕಾರ್ಪಸೀವ - ಕಾರ್ಪಸಿ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ" |

ಕಾರ್ಪಸಿ ಕಾರ್ಪಸಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹತ್ತಿಯ ಗಿಡ.

ಕಾರ್ಮ ಕಾರ್ಮ (ವಿಂ) ಫಲವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸದೆ ಕರ್ಮವನ್ನು ಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಕರ್ಮ ಶೀಲಮಸ್ಯ "ಞಃ" (೬-೪-೧೭೨) | ನಿಪಾಂ |

ಕಾರ್ಮಣ ಕಾರ್ಮಣ (ನಂ) 1. ಯಕ್ಷಿಣ, ಗಾರುಡಿ. 2. ಮಂತ್ರ ಓಷಧಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ವಶೀಕರಣಕಾರ್ಯ, ಮೂಲಿಕೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ಸ್ತಂಭನಕಾರ್ಯ, ಮಾಟ, ಶೂನ್ಯ. ಕರ್ಮೇವ "ಅನ್" (೪-೪-೩೬) | "ಚಾಡು ಚಾಕೃತಕಸಂಭ್ರಮಮಾಸಾಂ ಕಾರ್ಮಣತ್ವಮಗಮನ್ ರಮಣೇಷು" ಮಾಘಂ ೧೦-೩೭ | 3. ಬಾಯಿ ಮಾತನ್ನು ಕೇಳಿ ಅದರಂತೆ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ. ವಾಚಿಕಂ ಶ್ರುತ್ವಾ ಕ್ರಿಯಮಾಣಂ ಕರ್ಮೇತರ್ಥಃ ಸಿಂ ಕೌಂ | (ವಿಂ) 4. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವವನು, ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಮಾಡುವವನು, ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಚತುರನಾದವನು. "ಕಾರ್ಮಣಂ ಮನ್ವತನ್ತ್ರಾದಿಯೋಜನೇ ಕರ್ಮತೇಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ |

ಕಾರ್ಮರ ಕಾರ್ಮರ (ಪುಂ) 1. ಕಮ್ಮಾರ, ಕಬ್ಬಿಣದ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು. ಕರ್ಮರ ಏವ - ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮) | 2. ಕಮ್ಮಾರನ ಮಗ. ಕರ್ಮರಸ್ಯ ಅಪत्यಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೧೨) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | -ರೀ -೦೯.

ಕಾರ್ಮರ ಕಾರ್ಮರ (ವಿಂ) ಕಮ್ಮಾರನಿಂದ ಮಾಡ ಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಬ್ಬಿಣದ ಕೆಲಸದವನಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ಮರಣ ಕೃತಮ್ "ವುತ್" (೪-೩-೧೧೮) |

ಕಾರ್ಮಿಕ ಕಾರ್ಮಿಕ (ವಿಂ) ಚಿತ್ರಕಾರನ ಕುಶಲತೆಯಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ, ಕಸೂತಿ ಮೊದಲಾದ ಚಿತ್ರಕಾರ್ಯದಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ. ಕರ್ಮಣಾ ಚಿತ್ರಕರ್ಮಣಾ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೯) | "ಕಾರ್ಮಿಕೇ ರೋಮಬದ್ಧೇ ಚ ತ್ರಿಶಬ್ದಾಗಃ ಕ್ಷಯೋ ಮತಃ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೮೦ |

ಕಾರ್ಮಿಕ ಕಾರ್ಮಿಕ (ನಂ) ಕುಶಲ ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವಿಕೆ. ಉದ್ಯೋಗಶೀಲತೆ, ಕೈಗಾರಿಕೆ. ಕಾರ್ಮಿಕಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಯಕ್" (೪-೧-೧೨೮) |

ಕಾರ್ಮುಕ ಕಾರ್ಮುಕ (ಪುಂ) 1. ವಂಶ, ವೇಣು, ಬಿದಿರು. ಕಾರ್ಮುಕಂ ಸಾಧ್ಯತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) | 2. ನೀರು ಹಲಸಿನ ಗಿಡ. 3. ಬಿಳಿಯ ಕಗ್ಗಲಿಮರ. 4. ಅಶೋಕವೃಕ್ಷ. 5. ಕಾಡಿರುವಂತಿಗೆ ಗಿಡ. (ನಂ) 6. ಧನುಸ್ಸು, ಬಿಲ್ಲು. ಕರ್ಮಣಿ ಪ್ರಭವತಿ - ಕರ್ಮನ್ "ಉಕ್" (೪-೧-೧೦೩) | "ಕಾರ್ಮುಕೇವ ಗುಣಿನಾ ಬಾಣಃ ಸಂಧಾನ- ಮೇಷ್ಯತಿ" ಮಾಘಂ ೨-೯೭ | 7. ಧನೂರಾಶಿ, ಮೇಷದಿಂದ ಒಂಬತ್ತನೆಯ ರಾಶಿ. "ಕಾರ್ಮುಕಂ ತು ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ ಕ್ಷಣಂ ಸಂಕ್ರಮತೇ ರವಿಃ" | (ವಿಂ) 8. ಕರ್ಮಕ್ಷಮನಾದ, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಥನಾದ. "ಕಾರ್ಮುಕಂ ವಂಶವನುಷಃ ಕರ್ಮಶಕ್ತೇ ತು ವಾಚ್ಯವತ್" ಮೇದಿಂ | "ಅಥ ಕಾರ್ಮುಕಃ | ವಂಶೇ ಕಾರ್ಮುಕಮಿಷ್ವಾಸೇ ಕರ್ಮತೇ" ಹೇಮಂ |

ಕಾರ್ಮುಕಿನ್ ಕಾರ್ಮುಕಿನ್ (ವಿಂ) ಧನುಸ್ಸನ್ನು ಹೊಂದಿ ರುವ, ಬಿಲ್ಲನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ. ಕಾರ್ಮುಕ "ಛಿನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) |

ಕಾರ್ಯ ಕಾರ್ಯ (ನಂ) 1. ಕೆಲಸ. ಕ್ರಿಯತೇ - ತು ಕೃತ್ (ಕರಣ) ಕರ್ಮಂ "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) | "ಗುರುತ್ವಾಯ ಗುರುಗೋರಭಯೋರಥ ಕಾರ್ಯಯೋಃ" ಮಾಘಂ ೨-೬ | 2. ಆಚರಣೆ, ಅನುಷ್ಠಾನ, ನಡೆಸುವಿಕೆ, ಮಾಡುವಿಕೆ. 3. ಪ್ರಯೋಜನ, ಫಲ. "ಉಪಸರ್ಪತಿ ಕಾರ್ಯಾರ್ಥಿ ಕೃತಾರ್ಥೋ ನೋಪಸರ್ಪತಿ" ಹಿತೋಂ | 4. ಉದ್ದೇಶ, ಗುರಿ. 5. ಉದ್ಯೋಗ, ವೃತ್ತಿ. 6. ಆರೋಗ್ಯ. "ಭಿಷಕ್ ಕರ್ತಾಽಥ ಕರಣಂ ರಸಾಃ ದೋಷಾಸ್ತು ಕಾರಣಮ್ | ಕಾರ್ಯಮಾರೋಗ್ಯಮೇವೈಕಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ | 7. ಹೇತು, ಕಾರಣ. "ಕಾರ್ಯಂ ಹೇತೌ ಪ್ರಯೋಜನೇ" ಮೇದಿಂ | 8. ಉದ್ಯಮ, ವ್ಯವಸಾಯ. 9. (ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ವಿಧಿಸಲ್ಪಡುವ ವರ್ಣ ಪ್ರತ್ಯಯ ಮೊದಲಾದುವು. "ಕಾರ್ಯಮನುಭವನ್ ಹಿ ಕಾರ್ಯೋ ನಿಮಿತ್ತತಯಾ ನಾಶ್ರೀಯತೇ" ಪರಿಂ | 10. ಕಾರ್ಯ



ವನ್ನು ವಿಧಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ. 11. ಜನ್ಮಲಗ್ನದಿಂದ ಹತ್ತನೆಯ ಸ್ಥಾನ. "ಕಾರ್ಯಾಧೀಶಃ ಸ್ವಗೃಹೇ ಬುಧಗುರುಕವಿಭಿಃ ಸಂಯುತೋ ವೇಕ್ಷಿತೋ ವಾ"। 12. ನ್ಯಾಯಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹೊಡುವ ಮೊಕದ್ದಮೆ, ಋಣಾದಿ ವಿವಾದ, ವ್ಯಾಜ್ಯ. "ನೋತಾದಯೇತ್ಸವಯಂ ಕಾರ್ಯಂ ರಾಜಾ ನಾಪ್ಯಸ್ಯ ಪುರುಷಃ" ಮನುಂ ೮-೪೩। (ವಿಂ) 13. ಕರ್ತವ್ಯ, ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ. "ಕಾರ್ಯಮಿತ್ಯೇವ ಯತ್ಕರ್ಮ ನಿಯತಂ ಕ್ರಿಯತೇರ್ಜುನ। ಸತ್ಯಂ ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ ಫಲಂ ತೇವ ಸ ತ್ಯಾಗಃ ಸಾತ್ವಿಕೋ ಮತಃ" ಗೀತಾ ೧೮-೯। "ತಸ್ಮಾಚ್ಚಾಸ್ತ್ರಂ ಪ್ರಮಾಣಂ ತೇ ಕಾರ್ಯಾಕಾರ್ಯವ್ಯವಸ್ಥಿತೌ" ಗೀತಾ ೧೬-೨೪। 14. ಉತ್ಪತ್ತಿಹೊಂದಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಉತ್ಪಾದನೆಗೆ ವಿಷಯವಾದ, ಜನ್ಮ. 15. ಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಆಚರಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 16. ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಮಾಡಲ್ಪಡುವ.

**ಕಾರ್ಯಕರ ಕಾರ್ಯಕರ** (ವಿಂ) ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು, ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಥನಾದವನು. ಕಾರ್ಯಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃಙ್ (ಕರಣಂ) "ಕಃ" (೩-೨-೨೦)।

**ಕಾರ್ಯಕಾರಣ ಕಾರ್ಯಕಾರಣ** (ನಂ) ಒಂದು ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ನಿರ್ದಿಷ್ಟವಾದ ಒಂದು ಕಾರಣ. ಕಾರ್ಯಸ್ಯ ಕಾರಣಮ್।

**ಕಾರ್ಯಕಾರಣಭಾವ ಕಾರ್ಯಕಾರಣಭಾವ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಕಾರ್ಯ ಮತ್ತೊಂದು ಕಾರಣವಾಗಿರುವಾಗ ಅವುಗಳಿಗಿರುವ ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧ. ಹೇತುಹೇತುಮದ್ಭಾವ. ಕಾರ್ಯಕಾರಣ-ಯೋರ್ಭಾವಃ।

**ಕಾರ್ಯಕಾರಿನ್ ಕಾರ್ಯಕಾರಿನ್** (ವಿಂ) ಕೆಲಸವನ್ನು ಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಕಾರ್ಯಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃಙ್ (ಕರಣಂ) "ಗಿತಿಃ" (೩-೨-೨೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಹೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಕಾರಿಣಿ -ಕಾರಿಣೀ.

**ಕಾರ್ಯಕಾಲ ಕಾರ್ಯಕಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ಯಕಾಲಪಕ್ಷ, ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವ (ಯಥೋದ್ದೇಶಪಕ್ಷಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಾದ) ಒಂದು ಪಕ್ಷ. ಈ ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಸಂಜ್ಞಾ ಪರಿಭಾಷಾಸೂತ್ರಗಳು ವಿಧಿಶಾಸ್ತ್ರದೊಡನೆ ಸೇರಿ ವಾಕ್ಯಾರ್ಥ ಬೋಧವನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಡುವುವು. ಉದಾ: "ವೃದ್ಧಿರಾ-ದೇವ್" (೧-೧-೧) ಎಂಬ ಸಂಜ್ಞಾಶಾಸ್ತ್ರವು "ವೃದ್ಧಿರೇವಿ" (೬-೧-೮೮) ಎಂಬ ವೃದ್ಧಿವಿಧಾಯಕ ಸೂತ್ರದೊಡನೆ ಸೇರಿ ವೃದ್ಧಿಸಂಜ್ಞೆಯನ್ನೂ, ಏವ್ ಪರಕ ಆಕಾರಕ್ಕೆ ವೃದ್ಧಿಯನ್ನೂ ವಿಧಿಸುವುದು. 2. ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಗೊತ್ತಾದ ಕಾಲ, ಕೆಲಸದ ಸಮಯ. "ಯಾಚತೇ ಕಾರ್ಯಕಾಲೇ ಯಃ ಸ ಕಿಂ ಭೂತಃ ಸ ಕಿಂ ಸುಹೃತ್" ಹಿತೋಂ ೨-೩೨।

**ಕಾರ್ಯಕಾಲಾತ್ಯಯ ಕಾರ್ಯಕಾಲಾತ್ಯಯ** (ಪುಂ) ಕಾರ್ಯದ ಮೇಲೆಯ ಅತಿಕ್ರಮ, ಕೆಲಸದ ಸಮಯವು ಮೀರಿ ಹೋಗುವಿಕೆ. ಕಾರ್ಯಕಾಲಸ್ಯ ಅತ್ಯಯೋಽತಿಕ್ರಮಃ। "ಆಪಞ್ಚುನ್ಮಾರ್ಗಗಮನೇ ಕಾರ್ಯಕಾಲಾತ್ಯಯೇಷು ಚ। ಕಲ್ಯಾಣವಚನಂ ಬ್ರೂದಪೃಷ್ಠೋಽಪಿ ಹಿತೋ ನರಃ" ಹಿತೋಂ ೨-೧೨೪।

**ಕಾರ್ಯಕುಶಲ ಕಾರ್ಯಕುಶಲ** (ವಿಂ) ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಥನಾದವನು, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಚತುರನಾದವನು. ಕಾರ್ಯೇಷು ಕುಶಲಃ।

**ಕಾರ್ಯಕೌಶಲ ಕಾರ್ಯಕೌಶಲ** (ನಂ) ಕೆಲಸ ಮಾಡುವುದರಲ್ಲಿ ಜಾಣತನ, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿಪುಣತೆ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ.

**ಕಾರ್ಯಕ್ಷಮ ಕಾರ್ಯಕ್ಷಮ** (ವಿಂ) ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಥನಾದ, ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವುದರಲ್ಲಿ ಶಕ್ತನಾದ. ಕಾರ್ಯೇಷು ಕ್ಷಮಃ।

**ಕಾರ್ಯಗೌರವ ಕಾರ್ಯಗೌರವ** (ನಂ) 1. ಕಾರ್ಯದ ಗುರುತ್ವ, ಕೆಲಸದ ಮಹತ್ತ್ವ, ಕೆಲಸಕ್ಕಿರುವ ಪ್ರಾಮುಖ್ಯ, -ಪ್ರಾಧಾನ್ಯ. ಕಾರ್ಯಸ್ಯ ಗೌರವಮ್। 2. ಹೆಚ್ಚು ಕಾರ್ಯವಿರುವಿಕೆ, ಕೆಲಸಗಳು ಬಹಳವಾಗಿರುವುದು.

**ಕಾರ್ಯಚಿಂತಕ ಕಾರ್ಯಚಿಂತಕ** (ವಿಂ) ಕೆಲಸವನ್ನು ಯೋಚಿಸಿ ಮಾಡುವ, ಮಾಡಿದ ಮತ್ತು ಮಾಡಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಕುರಿತು ಯೋಚಿಸುವ, ವಿವೇಕದಿಂದ ಕಾರ್ಯಮಾಡುವ. ಕಾರ್ಯಂ ಚಿಂತಯತಿ - ಚಿಂತಿ (ಸಂಜ್ಞಾನೇ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಧರ್ಮಜ್ಞಾಃ ಶುಚಯೋಽಲ್ಪಾಃ ಭವೇಯುಃ ಕಾರ್ಯಚಿಂತಕಾಃ। ಕರ್ತವ್ಯಂ ವಚನಂ ತೇಷಾಂ ಸಮೂಹಹಿತವಾದಿನಾಮ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೯೧।

**ಕಾರ್ಯಚಿಂತಾ ಕಾರ್ಯಚಿಂತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಲಸ ಮಾಡುವುದರಲ್ಲಿ ವಿವೇಚನೆ, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಎಚ್ಚರಿಕೆಯಿಂದ ವಿಚಾರ ಮಾಡುವುದು, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಯುಕ್ತಾಯುಕ್ತಪರಿಜ್ಞಾನ. ಕಾರ್ಯೇಷು ಚಿಂತಾ।

**ಕಾರ್ಯಚ್ಯುತ ಕಾರ್ಯಚ್ಯುತ** (ವಿಂ) ಕೆಲಸದಿಂದ ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟವನು, ಕೆಲಸದಿಂದ ತೆಗೆದುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟವನು. ಕಾರ್ಯಾತ್ ಚ್ಯುತಃ।

**ಕಾರ್ಯತಸ್ ಕಾರ್ಯತಸ್** (ಅವ್ಯಂ) ಕಾರ್ಯದಿಂದ, ಕೆಲಸದ ಮೂಲಕ. ಕಾರ್ಯಂ "ತಸಿಃ" (೫-೪-೪೪)। "ಸಖಾ ಗರಿಯಾನ್ ಶತ್ರುಶ್ಚ ಕೃತ್ರಿಮಸ್ತೌ ಹಿ ಕಾರ್ಯತಃ" ಮಾಘಂ ೨-೩೬।

**ಕಾರ್ಯತಾ ಕಾರ್ಯತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ಯದ ಭಾವ, ಕಾರ್ಯವಾಗಿ ಇರುವಿಕೆ. ಕಾರ್ಯಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೫-೧-೧೧೯)। "ತ್ವಃ"। ಕಾರ್ಯತ್ವಮ್ ಕಾರ್ಯತ್ವಮ್.



**ಕಾರ್ಯದರ್ಶನ ಕಾರ್ಯದರ್ಶನ** (ನಂ) ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಕೆಲಸದ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಣೆ. ಕಾರ್ಯದರ್ಶನಮ್ | “ಯದಾ ಸ್ವಯಂ ನ ಕುರ್ಯಾತ್ ನೃಪತಿಃ ಕಾರ್ಯದರ್ಶನಮ್ | ತದಾ ನಿಯುಕ್ತಾಃ ದ್ವಿವಾಸಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ಕಾರ್ಯದರ್ಶನೇ” ಮನುಂ ೮-೯ |

**ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿನ್ ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿನ್** (ಪುಂ) ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿ, ಕೆಲಸವನ್ನು ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುವವನು, ಕಾರ್ಯದ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಣೆ ಮಾಡುವವನು. ಕಾರ್ಯಂ ಪಶ್ಯತಿ - ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣಂ) “ಗಿಣಿಃ” (೩-೨-೭೮) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪) | -ದರ್ಶಿನಿ - ದರ್ಶಿನೀ.

**ಕಾರ್ಯನಿರ್ಣಯ ಕಾರ್ಯನಿರ್ಣಯ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಲಸದ ನಿರ್ಧಾರ, ಕಾರ್ಯದ ತೀರ್ಮಾನ. 2. ಕಾರ್ಯದ ಫಲ, ನಿರ್ಣಯದ ಫಲ. ನಿರ್ಣಯಸ್ಯ ಕಾರ್ಯಮ್ | ಪೂರ್ವನಿರ್ಣಯಃ (೩-೨-೩೭) | “ಉಭಯೋಃ ಪ್ರತಿಭೂತಾಃ ಸಮರ್ಥಃ ಕಾರ್ಯನಿರ್ಣಯೇ” ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೦ |

**ಕಾರ್ಯಪುಟ ಕಾರ್ಯಪುಟ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ ಕೆಲಸವನ್ನು ಮಾಡುವ. 2. ಕೃಪಣ, ಜಪುಣ. 3. ಉನ್ಮತ್ತ, ಹುಚ್ಚ. “ಕಾರ್ಯಪುಟೋನ್ಯಕರೇ ಕೃಪಣೋನ್ಮತ್ತಯೋರಪಿ” ಹೇಮಂ |

**ಕಾರ್ಯಪ್ರವೇಶ ಕಾರ್ಯಪ್ರವೇಶ** (ಪುಂ) 1. ಆಲಸ್ಯ, ಸೋಮಾರಿತನ. ಕಾರ್ಯಂ ಪ್ರವೇಶ್ಯತೇ - ಪ್ರ + ದಿಷ (ಅಪ್ರೋತೌ) ಕರಂ “ಘಸ್” (೩-೩-೧೨೧) | 2. ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ದ್ವೇಷ, ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಆದರವಿಲ್ಲದಿರುವುದು.

**ಕಾರ್ಯಪ್ರೇಷ ಕಾರ್ಯಪ್ರೇಷ** (ಪುಂ) ದೂತ, ಯಾವುದಾದರೊಂದು ಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನು. (1) ನಿಸ್ಸೃಷ್ಟಾರ್ಥಃ, (2) ಮಿತಾರ್ಥಃ ಮತ್ತು (3) ಸಂದೇಶಹಾರಕಃ ಎಂದು ದೂತನು ಮೂರು ಬಗೆ. [ವಿವರಕ್ಕೆ “ದೂತ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] “ನಿಸ್ಸೃಷ್ಟಾರ್ಥೋ ಮಿತಾರ್ಥಶ್ಚ ತಥಾ ಸಂದೇಶಹಾರಕಃ | ಕಾರ್ಯಪ್ರೇಷಸ್ತ್ರಿವಾ ದೂತಃ” ಸಾಂ ೬೦ ೩-೪೭ |

**ಕಾರ್ಯವತ್ ಕಾರ್ಯವತ್** (ವಿಂ) 1. ಕಾರ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಕೆಲಸವುಳ್ಳ. ಕಾರ್ಯಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪) | “ವಿಧಾಯ ವೃತ್ತಿಂ ಭಾರ್ಯಾಯಾಃ ಪ್ರವೇಶೇತ್ ಕಾರ್ಯವಾನ್ವರಃ” ಮನುಂ ೯-೭೪ | 2. ಯಾವುದಾದರೊಂದು ಉದ್ದೇಶವುಳ್ಳ, ಒಂದು ಗುರಿಯುಳ್ಳ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಕೆಲಸದಂತೆ, ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಕೆಲಸದ ಹಾಗೆ. “ಯೋಕಾರ್ಯಂ ಕಾರ್ಯವಚ್ಛಾಸ್ತಿ ಸ ಕಿಮನ್ತ್ರಿ ನೃಪೇಚ್ಛಯಾ | ವರಂ ಸ್ವಾಮಿಮನೋ ದುಃಖಂ ತನ್ನಾಶೋ ನ ತ್ವಕಾರ್ಯತಃ” ಹಿತಂ ೩-೧೦೩ |

**ಕಾರ್ಯವತ್ತಾ ಕಾರ್ಯವತ್ತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು, ಕೆಲಸದಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. ಕಾರ್ಯವತೌ ಭಾವಃ “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯) |

**ಕಾರ್ಯವಶ ಕಾರ್ಯವಶ** (ವಿಂ) ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಅಧೀನನಾದ, ಯಾವುದಾದರೊಂದು ಕಾರ್ಯದ ನಿರ್ಬಂಧಕ್ಕೆ ಒಳಪಟ್ಟ. **ಕಾರ್ಯವಸ್ತು ಕಾರ್ಯವಸ್ತು** (ನಂ) ಮಾಡಲ್ಪಡಬೇಕಾದ ವಿಷಯ; ಯಾವುದು ಮಾಡಲ್ಪಡುವುದೋ ಅದು.

**ಕಾರ್ಯವಿದ್ ಕಾರ್ಯವಿದ್** (ವಿಂ) ಕಾರ್ಯವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ, ವಿಷಯವನ್ನು ಅರಿತಿರುವ. ಕಾರ್ಯಂ ವೇತ್ತಿ - ವಿದ (ಜ್ಞಾನಂ) “ವಿವ್” (೩-೨-೬೧) | “ಜೋಷಂ ಜನಃ ಕಾರ್ಯವಿದಸ್ತು ವಸ್ತು” ನೈಷಂ ೭-೧೦೭ |

**ಕಾರ್ಯವಿನಿಮಯ ಕಾರ್ಯವಿನಿಮಯ** (ಪುಂ) ಕೆಲಸದ ಬದಲಾವಣೆ, ಪರಸ್ಪರ ಕಾರ್ಯದ ಬದಲಾವಣೆ, ಒಬ್ಬನಿಂದ ಮತ್ತೊಬ್ಬನ ಕೆಲಸವನ್ನು ಇನ್ನೊಬ್ಬನು ಮಾಡುವಂತೆ ಬದಲಾಯಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಕಾರ್ಯಸ್ಯ ವಿನಿಮಯಃ | “ಕಥಂ ಕಾರ್ಯವಿನಿಮಯೇನ ಮಯಿ ವ್ಯವಹರತೀನಾತ್ಮಜಃ” ಮಾಲಂ ೧ |

**ಕಾರ್ಯವಿನಿರ್ಣಯ ಕಾರ್ಯವಿನಿರ್ಣಯ** (ಪುಂ) ಕಾರ್ಯದ ನಿಶ್ಚಯ, ಕೆಲಸದ ತೀರ್ಮಾನ. ಕಾರ್ಯಸ್ಯ ವಿನಿರ್ಣಯಃ | “ಧರ್ಮಂ ಶಾಶ್ವತಮಾಶ್ರಿತೃ ಕುರ್ಯಾತ್ ಕಾರ್ಯವಿನಿರ್ಣಯಮ್” ಮನುಂ ೮-೮ |

**ಕಾರ್ಯವಿಪತ್ತಿ ಕಾರ್ಯವಿಪತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ಯನಾಶ, ಕೆಲಸವು ಕೆಟ್ಟುಹೋಗುವುದು. ಕಾರ್ಯಸ್ಯ ವಿಪತ್ತಿಃ | “ನ ಗಣಸ್ಯಾಗ್ರತೋ ಗಚ್ಛೇತ್ ಸಿದ್ಧೇ ಕಾರ್ಯಂ ಸಮಂ ಫಲಮ್ | ಯದಿ ಕಾರ್ಯವಿಪತ್ತಿಃ ಸ್ಯಾನ್ಮುಖರಸ್ತತ್ರ ಹನ್ಯತೇ” ಹಿತಂ ೧-೨೯ |

**ಕಾರ್ಯಶೇಷ ಕಾರ್ಯಶೇಷ** (ಪುಂ) ಕಾರ್ಯದ ಉಳಿಕೆ, ಕೆಲಸವು ಬಾಕಿಯಾಗಿರುವುದು. ಕಾರ್ಯಸ್ಯ ಶೇಷಃ |

**ಕಾರ್ಯಸಂಸಿದ್ಧಿ ಕಾರ್ಯಸಂಸಿದ್ಧಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ಯವು ಕೈಗೊಂಡುಹೋದ, ಕೆಲಸವು ಸಫಲವಾಗುವುದು. ಕಾರ್ಯಸ್ಯ ಸಂಸಿದ್ಧಿಃ | “ಮನಸಾ ಕಾರ್ಯಸಂಸಿದ್ಧೌ ತ್ವರಾಢ್ವಿಗುಣರಹಸಾ” ಕುಮಾರಂ ೨-೬೩ |

**ಕಾರ್ಯಸಾಧಕ ಕಾರ್ಯಸಾಧಕ** (ವಿಂ) ಕೆಲಸವನ್ನು ಸಾಧಿಸುವ, ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಕೈಗೊಂಡಿಸುವ, ಕಾರ್ಯಸ್ಯ ಸಾಧಕಃ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ಸಾಧಿಕಾ -ಸಾಧಿಕಾ. “ಅಲ್ಪಾನಾಮಪಿ ವಸ್ತುನಾಂ ಸಂಹತಿಃ ಕಾರ್ಯಸಾಧಿಕಾ | ತೃಣಗುಣತ್ವಮಾಪನ್ನೈರ್ಬಂಧ್ಯಂತೇ ಮತ್ತದಂತಿನಃ” ಹಿತಂ ೧-೩೪ |

**ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ಯವು ಕೈಗೊಂಡು ಹೋದ, ಕೆಲಸವು ಸಫಲವಾಗುವುದು. ಕಾರ್ಯಸ್ಯ ಸಿದ್ಧಿಃ | “ಅಸ್ತಿತ್ವಂ ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿಃ ಸ್ಫುಟಮಥ ಕಥಯನ್ ಪಕ್ಷತೇಃ ಕಂಪಭೇದಃ” ನೈಷಂ ೩-೧೩೨ |

**ಕಾರ್ಯಸ್ಥಾನ ಕಾರ್ಯಸ್ಥಾನ** (ನಂ) 1. ಕೆಲಸ ನಡೆಸುವ ಜಾಗ, ಕಛೇರಿ, ಕಾರ್ಯಾಲಯ (Office). 2. ಜ್ಯೋತಿಷದಲ್ಲಿ (ಜಾತಕ ಕುಂಡಲಿಯಲ್ಲಿ) ಲಗ್ನದಿಂದ ಹತ್ತನೆಯ ಸ್ಥಾನ.



**ಕಾರ್ಯಾಧಿಪ ಕಾರ್ಯಾಧಿಪ (ಪುಂ)** 1. ಕೆಲಸದ ಯಜಮಾನ, ಅಧ್ಯಕ್ಷ. 2. (ಜ್ಯೋತಿಷದಲ್ಲಿ) ಕಾರ್ಯಸ್ಥಾನಾಧಿಪತಿ, ಲಗ್ನದಿಂದ ಹತ್ತನೆಯ ಸ್ಥಾನದ ಗ್ರಹ. ಕಾರ್ಯಸಾಧಿಪ:।

**ಕಾರ್ಯಾನುಮೇಯ ಕಾರ್ಯಾನುಮೇಯ (ವಿಂ)** 1. ಕೆಲಸದಿಂದ ಉಂಟಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಕೆಲಸದಿಂದ ಉಂಟಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಕೆಲಸದಿಂದ ಉಂಟಿಸಲು ಶಕ್ತವಾದ. ಕಾರ್ಯಣ ಅನುಮೇಯ:। "ಕಾರ್ಯಾನುಮೇಯಾ: ಸರ್ವತ್ರ ಪರೋಕ್ಷಗುಣವೃತ್ತಯ:। ತस्माತ್ ಪರೋಕ್ಷವೃತ್ತಿನಾಂ ಫಲಃ ಕರ್ಮಾನುಭವ್ಯತೇ" ಹಿತೋಂ ೪-೧೦೧।

**ಕಾರ್ಯಾಂತರ ಕಾರ್ಯಾಂತರ (ನಂ)** 1. ಬೇರೆ ಕೆಲಸ, ಮತ್ತೊಂದು ಕೆಲಸ. ಅನ್ಯತ್ ಕಾರ್ಯಮ್। 2. ಕಾರ್ಯದ ಮಧ್ಯಕಾಲ. ಕೆಲಸದ ಮಧ್ಯೆ ವಿರಾಮಕಾಲ. ಕಾರ್ಯಸ್ಯ ಅಂತರಮ್।

**ಕಾರ್ಯಾಂತರಸಚಿವ ಕಾರ್ಯಾಂತರಸಚಿವ (ಪುಂ)** ಬೇರೆ ಕೆಲಸದ ಸಹಾಯಕ. ರಾಜಕೀಯಕ್ಕಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನವಾದ ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಸಹಾಯವಾಗಿರುವವನು. ಕಾರ್ಯಾಂತರೇ ಸಚಿವ: ಸಹಾಯ:। "ಸಚಿವೋ ಮನ್ವಿಚೇತ್ಯೋ:" ಮೇದಿಂ। "ಅಯಮಪರ: ಕಾರ್ಯಾಂತರಸಚಿವೋಸ್ತಮಾನುಪಸ್ಥಿತ:" ಮಾಲಂ ೧।

**ಕಾರ್ಯಾಧಿ ಕಾರ್ಯಾಧಿ (ಪುಂ)** ಕಾರ್ಯದ ಸಮುದ್ರ, ಸಮುದ್ರದಂತಿರುವ ಅನೇಕ ಕೆಲಸಗಳು. ಸಮುದ್ರದಂತಿರುವ ದೊಡ್ಡ ಕೆಲಸ. ಕಾರ್ಯಾಧಿ ಅಧಿಪತಿವಿಃ। "ಭೂತ: ಸ್ತ್ರೀ ವಾ ಗಿಣ್ಯಸ್ಯ ಮನ್ವಿಣ: ಸ್ಯುರ್ಮಹಿಪತೇ:। ಅನೀತಿಪವನಕ್ಷಿಪ್ತ: ಕಾರ್ಯಾಧಿ ಸ ನಿಮಜ್ಜತಿ" ಹಿತೋಂ ೩-೧೩೧।

**ಕಾರ್ಯಾರ್ಥಿ ಕಾರ್ಯಾರ್ಥಿ (ಅವ್ಯಂ)** ಕೆಲಸಕ್ಕಾಗಿ, ಯಾವುದಾದರೊಂದು ಕಾರ್ಯಕ್ಕೋಸ್ಕರ. ಕಾರ್ಯಾರ್ಥಿ ಕಾರ್ಯಾರ್ಥಿಮ್। "ದಿವಾ ವರೇಯು: ಕಾರ್ಯಾರ್ಥಿ ಚಿಹ್ನಿತಾ ರಾಜಾಸನೇ:" ಮನುಂ ೧೦-೪೪।

**ಕಾರ್ಯಾಧಿನ್ ಕಾರ್ಯಾಧಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಕೆಲಸವನ್ನು ಆಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. ಕೆಲಸವನ್ನು ಬೇಡುವವನು. ಕಾರ್ಯ-ಮರ್ಯತೇ - ಅರ್ಥ (ಉಪಾಚಾರ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮)। 2. ಉದ್ಯೋಗವನ್ನು ಬೇಡುವವನು. 3. ನ್ಯಾಯಾಲಯದಲ್ಲಿ ಕಾರಣವನ್ನು ಹಿಡಿದು ವಾದಿಸುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡಿಪ್" (೪-೧-೪)। -ಅಧಿನಿ - ಅಧಿಪತಿ.

**ಕಾರ್ಯಿಕ ಕಾರ್ಯಿಕ (ವಿಂ)** 1. ಕೆಲಸವುಳ್ಳವನು. 2. ಉದ್ಯೋಗವುಳ್ಳವನು. ಕಾರ್ಯಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಠ್" (೪-೨-೧೧೪)। 3. ನ್ಯಾಯವಾದಿ, ನ್ಯಾಯಾಲಯದಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಜ್ಯದ ಕಾರಣವನ್ನು ಹಿಡಿದು ವಾದಿಸುವವನು. "ಯೇ

ಕಾರ್ಯಿಕೇಮ್ಯೋರ್ಥಮೇವ ಗೃಹ್ಣೀಯು: ಪಾಪಚೇತಸ:। ತेषಾಂ ಸರ್ವಸ್ವಮಾದಾಯ ರಾಜಾ ಕುರ್ಯಾತ್ಪ್ರವಾಸನಮ್" ಮನುಂ ೭-೧೨೪। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಕಾರ್ಯಿಕಾ ಕಾರ್ಯಿಕಾ.

**ಕಾರ್ಯಿನ್ ಕಾರ್ಯಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಕಾರ್ಯವುಳ್ಳವನು, ಯಾವುದಾದರೊಂದು ಕೆಲಸ ಹೊಂದಿರುವವನು. ಕಾರ್ಯ-ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)। 2. ಕೆಲಸವನ್ನು ಆಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. 3. ಉದ್ಯೋಗವನ್ನು ಬೇಡುವವನು. 4. (ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಆದೇಶ ಮೊದಲಾದ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ವಿಷಯವಾದ ಸ್ಥಾನಿ. "ಕಾರ್ಯಮನುಭವನ್ ಹಿ ಕಾರ್ಯಿ ನಿಮಿತ್ತತಯಾ ನಾಶ್ರೀಯತೇ" ಪರಿಂ। 5. ಉದ್ಯೋಗವುಳ್ಳವನು, ಯಾವುದಾದರೊಂದು ವ್ಯವಹಾರವುಳ್ಳವನು. 6. (ವ್ಯಾಜ್ಯದಲ್ಲಿ) ವಾದಿ ಅಥವಾ ಪ್ರತಿವಾದಿ.

**ಕಾರ್ಶನಿವ ಕಾರ್ಶನಿವ (ವಿಂ)** ಕೃಶಾನುಸಂಬಂಧವಾದ, ಬೆಂಕಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದೆ. ಕೃಶಾನೋರಿದಮ್ "ಅಘ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಫಲದ್ವಿರುಣಾಂಶುಕರಾಭಿಮಂಶಾತ್ಕಾರ್ಶನಿವಂ ಧಾಮ ಪತಙ್ಗಕಾಂತೆ:" ಮಾಘಂ ೪-೧೬।

**ಕಾರ್ಶ್ಯ ಕಾರ್ಶ್ಯ (ನಂ)** 1. ಕೃಶವಾಗಿರುವಿಕೆ, ತೆಳ್ಳಗಿರುವಿಕೆ, ಬಡಕಲಾಗಿರುವಿಕೆ. ಕೃಶಸ್ಯ ಭಾವ: "ಏನ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ತದದ್ವ ತೇ ವನ್ಯಫಲಾಶಿನ: ಪರಂ ಪರೇತಿ ಕಾರ್ಶ್ಯ ಯಶಸಾ ಸಮಂ ವಪು:" ಕಿರಾಂ ೧-೩೯। 2. ಚಿಕ್ಕದಾಗಿರುವಿಕೆ, ಕಡಮೆ ಯಾಗಿರುವಿಕೆ. "ನಿಬಂಧಸಂಜ್ಞಾತರೂಪಾರ್ಶ್ಯಕಾರ್ಶ್ಯಮಚಿಂತಯಿತ್ವಾ ಗುರುಣಾಹಮುಕ್ತ:" ರಘುಂ ೪-೨೧।

**ಕಾರ್ಷ ಕಾರ್ಷ (ಪುಂ)** ಬೇಸಾಯ (ವ್ಯವಸಾಯ) ಮನೋಧರ್ಮವುಳ್ಳ ಕೃಷೀವಲ, ರೈತ. ಕೃಷಿ: ಶೀಲಮಸ್ಯ "ಅಘ್" (೪-೪-೬೨)।

**ಕಾರ್ಷಕ ಕಾರ್ಷಕ (ಪುಂ)** ಕೃಷೀವಲ, ರೈತ. ಕರ್ಷಕ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಘ್" (೪-೪-೩೮)।

**ಕಾರ್ಷಿಣ ಕಾರ್ಷಿಣ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ಬಗೆಯ ನಾಣ್ಯ, ಕರ್ಷತೂಕದ ಬೆಳ್ಳಿಯ ನಾಣ್ಯ, ಹದಿನಾರು ಅದ್ಯಮಾಪಕಗಳ ತೂಕದ ನಾಣ್ಯ. ಕರ್ಷಸ್ಯೇದಮ್ ಕಾರ್ಷಮ್। ತೇನ ಆಪಣ್ಯತೇ - ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರ) "ಅಘ್" (೩-೩-೬೬)। ಕಾರ್ಷಿಣವು ತಾಮ್ರದ ನಾಣ್ಯವೆಂದು ಕೆಲವರ ಮತ. "ತೇ ಷೋಡಶ ಸ್ಯಾದ್ಧರಣಂ ಪುರಾಣಕವೇ ರಾಜತ:। ಕಾರ್ಷಿಣಸ್ತು ವಿಜ್ಞೇಯ: ತಾಮ್ರಿಕ: ಕಾರ್ಷಿಕ: ಪಣ:" ಮನುಂ ೮-೧೩೬। ಹೀಗೆ "ಕಾರ್ಷಿಣ" ಪದವು ಬೆಳ್ಳಿಯ ಮತ್ತು ತಾಮ್ರದ ಎರಡು ನಾಣ್ಯಗಳಿಗೂ ಹೆಸರಾಗುವುದು. 2. ಹದಿನಾರು ಪಣಗಳು. "ಕಾರ್ಷಿಣೋಽಸ್ಮಿ ಕಾರ್ಷಿಕೇ ಪಣಷೋಡಶಕೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ।



**ಕಾರ್ಪಣಿಕ ಕಾರ್ಷಾಪಣಿಕ** (ವಿಂ) ಕಾರ್ಷಾಪಣಿ ನಾಣ್ಯದಿಂದ ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು. ಕಾರ್ಪಣಿಕೇನ ಕ್ರಿತ: "ಡಿಠನ್" (ವಾಂ ೪-೧-೨೪)।

**ಕಾರ್ಪಿ ಕಾರ್ಷಿ** (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೨೬)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಎಳೆಯುವಿಕೆ. 3. ಉಳುವು, ಬೇಸಾಯ. (ವಿಂ) 4. ಎಳೆಯುವ. 5. ಉಳುವ, ಬೇಸಾಯ ಮಾಡುವ.

**ಕಾರ್ಪಿಕ ಕಾರ್ಷಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಷತೂಕದ ಬೆಳ್ಳಿಯ ನಾಣ್ಯ. ಕರ್ಷ ಭವಮ್ "ಠನ್" (ವಾಂ ೪-೩-೬೦)। (ವಿಂ) 2. ಒಂದು ಕರ್ಷದ ಬೆಲೆಬಾಳುವ. ಕರ್ಷ ನಿಯಮಹತಿ "ಠನ್" (೪-೧-೬೪)। 3. ಒಂದು ಕರ್ಷದಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು. ಕರ್ಷೇಣ ಕ್ರಿತಮ್ "ಠನ್" (೪-೧-೩೭)। 4. ಬೇಸಾಯ ಗಾರ, ರೈತ. ಕರ್ಷ: ಕರ್ಷಣ ಶೀಲಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೬೧)।

**ಕಾರ್ಣ ಕಾರ್ಷ** (ವಿಂ) 1. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಸಂಬಂಧವಾದ. 2. ಕೃಷ್ಣದ್ವೈಪಾಯನರ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕೃಷ್ಣಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। 3. ಕೃಷ್ಣಮೃಗದ (ಜಿಂಕೆಯ) ಸಂಬಂಧವಾದ, ಕೃಷ್ಣಮೃಗದ ಚರ್ಮ (ಕೃಷ್ಣಾ ಜಿನ್)ದಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ. "ಕಾರ್ಣರೋವಬಾಸ್ತಾನಿ ಚರ್ಮಾಣಿ ಬ್ರಹ್ಮ-ಚಾರಿಣಿ:। ಬಸೀರಗ್ರಾನುಪೂರ್ವ್ಯೇಣ ಶಾಣಕ್ಷೋಮಾವಿಕಾನಿ ಚ" ಮನುಂ ೨-೪೧। 4. ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಪಟ್ಟು.

**ಕಾರ್ಣಾಯಿನ್ ಕಾರ್ಷಾಯಿನ್** (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯ ಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. 2. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಕೃಷ್ಣಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಮ್ "ಫಕ್" (೪-೧-೯೯)।

**ಕಾರ್ಣಾಯಿಸ ಕಾರ್ಷಾಯಿಸ** (ನಂ) 1. ಕೃಷ್ಣಲೋಹ, ಕಬ್ಬಿಣ. (ವಿಂ) 2. ಕೃಷ್ಣಲೋಹಸಂಬಂಧವಾದ. 3. ಕೃಷ್ಣಲೋಹದಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ. ಕೃಷ್ಣಾಯಿಸ: ಇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। ಕೃಷ್ಣಾಯಿಸೋ ವಿಕಾರ: "ಅನ್" (೪-೩-೧೩೪) ವಾ। "ಕಾರ್ಣಾಯಿಸಮಲಕ್ಷಾರ: ಪರಿವ್ರಜ್ಯಾ ಚ ನಿಯಶ:" ಮನುಂ ೧೦-೪೨। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡಿಫ್" (೪-೧-೧೪)। ಕಾರ್ಣಾಯಿಸೋ ಕಾರ್ಷಾಯಿಸೀ. "ಅಭಿ ಕಾರ್ಣಾಯಿಸೀ ದಯಾ-ತ್ಸರ್ಪ ಹತ್ವಾ ದ್ವಿಜೋತ್ತಮ:" ಮನುಂ ೧೧-೧೩೩।

**ಕಾರ್ಣಿ ಕಾರ್ಷಿ** (ಪುಂ) 1. ಕೃಷ್ಣದ್ವೈಪಾಯನರ ಮಗ, ಶುಕಮಹರ್ಷಿ. 2. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಮಗ, ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ, ಪ್ರದ್ಯುಮ್ನ. ಕೃಷ್ಣಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಇನ್" (೪-೧-೯೬)। "ಕಾರ್ಣಿ: ಪ್ರತ್ಯಗ್ರಹೀದೇಕ: ಸರಸ್ವಾನಿವ ನಿಮ್ನಗಾ:" ಮಾಘಂ ೧೯-೧೦।

**ಕಾರ್ಣ್ಯ ಕಾರ್ಷ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಕೃಷ್ಣಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಮ್ "ಯನ್"

(೪-೧-೧೦೪)। (ನಂ) 2. ಕೃಷ್ಣತ್ವ, ಕಪ್ಪು. ಕೃಷ್ಣಸ್ಯ ಭಾವ: "ಫ್ಯನ್" (೪-೧-೧೨೪)।

**ಕಾರ್ಮನ್ ಕಾರ್ಮನ್** (ನಂ) 1. ಯುದ್ಧ, ಕಾಳಗ. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) + ಸ್ವಾರ್ಥೇ ಣಿಚ್ ಅಧಿಂ "ಮನಿನ್" (೩ಂ ೪-೧೪೪)। 2. ಎಳೆಯುವಿಕೆ. ಕೃಷ ಭಾವೇ "ಮನಿನ್"।

**ಕಾರ್ಮರೀ ಕಾರ್ಮರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶೀವನೆಯ ಮರ. ಕಾರ್ಮ ಕರ್ಷಣ ರಾತಿ - ರಾ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। ಗೌರಾಂ "ಡಿಫ್" (೪-೧-೪೧)।

**ಕಾರ್ಪ್ಯ ಕಾರ್ಪ್ಯ** (ಪುಂ) ಮತ್ತಿಮರ. ಕೃಷತಿ - ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೪)। "ಫ್ಯನ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪)। "ಸಾಲೇ ತು ಸರ್ಜಕಾರ್ಪ್ಯಾಶ್ವಕರ್ಣಕಾ: ಸಸ್ಯ-ಸಂವರಾ:" ಅಮಂ।

**ಕಾರ್ಪ್ಯವಣ ಕಾರ್ಪ್ಯವಣ** (ನಂ) ಮತ್ತಿಮರದ ಕಾಡು. ಕಾರ್ಪ್ಯಸ್ಯ ವನಮ್। ಣತ್ವಮ್ (೮-೪-೪)।

**ಕಾಲ ಕಾಲ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಕಲತೇ ಸಂಕಲಿತಂ ಭವತ್ಯಸ್ಮಿನ್ ಚರಾಚರಂ ಜಗತ್ - ಕಲ (ಶಬ್ದಸಂಖ್ಯಾನಯೋ:) ಅಧಿಂ "ಫ್ಯನ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ಚಿದಚಿತ್ಕಾಲ-ನಾತ್ಕಾಲ: ಗುಣೇರಾತ್ಮನಿ ಚೇದಶೀ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ:। "ಋತು: ಸುದರ್ಶನ: ಕಾಲ: ಪರಮೇಷ್ಠಿ ಪರಿಗ್ರಹ:" ವಿಂ ಸಂ। "ಕಾಲೋಽಸ್ಮಿ ಲೋಕಕ್ಷಯಕೃತ್ ಪ್ರವೃದ್ಧೋ ಲೋಕಾನ್ ಸಮಾಹರ್ತುಮಿಹ ಪ್ರವೃತ್ತ:" ಗೀತಾ ೧೧-೩೨। 2. ಸಮಯ, ವೇಳೆ, ಹೊತ್ತು. ಕಲಯತಿ ಸರ್ವಾಣಿ ಭೂತಾನಿ - ಕಲ (ಕ್ಷೇಪೇ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಕಾಲವು ವಿಭು ಮತ್ತು ನಿತ್ಯ. ಇದು ಸಕಲ ಕಾರ್ಯಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಸ್ಥಿತಿ ಮತ್ತು ಲಯ ಗಳಿಗೆ ಕಾರಣವಾಗಿರುವುದು. "ಕಾಲ: ಸೃಜತಿ ಭೂತಾನಿ ಕಾಲ: ಸಂಹರತಿ ಪ್ರಜಾ:"। "ಕಲನಾತ್ಸರ್ವಭೂತಾನಾಂ ಸ ಕಾಲ: ಪರಿಕೀರ್ತಿತ:"। ಮತ್ತು ಸ್ಥೂಲ, ಸೂಕ್ಷ್ಮಗಳೆಂದು ಎರಡು ಬಗೆಯಾದುದರಿಂದ ಮೂರ್ತ: ಮತ್ತು ಅಮೂರ್ತ: ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. "ಲೋಕಾನಾಮಂತಕೃತ್ಕಾಲ: ಕಾಲೋಽನ್ಯ: ಕಲನಾತ್ಮಕ:। ಸ ದ್ವಿಧಾ ಸ್ಥೂಲಸೂಕ್ಷ್ಮತ್ವಾತ್ ಮೂರ್ತಚಾಮೂರ್ತ ಉಚ್ಯತೇ" ಸೂಂ ಸಿಂ ೧೦। ಕಾಲವು ಕ್ಷಣ:, ಲವ:, ನಿಮೇಷ:, ಕಾಷ್ಠಾ, ಕಲಾ, ಕ್ಷಣ:, ಮುಹೂರ್ತ:, ಯಾಮ:, ಅಹೋರಾತ್ರ:, ಪಕ್ಷ:, ಮಾಸ:, ಋತು:, ಅಯನಮ್, ಸಂವತ್ಸರ:, ಯುಗಮ್, ಮನ್ವಂತರಮ್, ಪ್ರಲಯ:, ಮಹಾಪ್ರಲಯ: ಈ ವ್ಯವಹಾರಗಳಿಗೆ ಕಾರಣವಾಗಿರುವುದು. ಕಾಲದಲ್ಲಿ (1) ಏಕತ್ವಸಂಖ್ಯಾ, (2) ಪರಿಮಿತಿ:, (3) ಪೃಥಕ್ತ್ವಮ್, (4) ಸಂಯೋಗ: ಮತ್ತು (5) ವಿಭಾಗ: ಎಂಬ ಐದು ಗುಣ ಗಳಿರುವುವು.



ಕಾಲವು ಒಂದೇ ಆದರೂ ಅತೀತ: (ಭೂತ:), ಅನಾಗತ: (ಭವಿಷ್ಯತ್) ಮತ್ತು ವರ್ತಮಾನ: ಎಂಬ ಉಪಾಧಿಭೇದಗಳಿಂದ ಮೂರು ವಿಧ. ಭೂತ ಮತ್ತು ಭವಿಷ್ಯತ್ ಕಾಲಗಳು ಅದೃಶ್ಯತನ: ಮತ್ತು ಅನದೃಶ್ಯತನ: ಎಂದು ಎರಡೆರಡು ವಿಧ.

### ನಿರ್ಮೇಷಾದಿ ಕಾಲ ವಿಭಾಗ:

ಲಘುಕ್ಷರವನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸುವಷ್ಟು ಕಾಲ ಅಥವಾ ರೆಪ್ಪೆಯನ್ನು ಆಡಿಸುವಷ್ಟು ಕಾಲ ನಿರ್ಮೇಷವೆನಿಸುವುದು. ನಿರ್ಮೇಷದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗವು ಕ್ಷಣ.

|               |                     |
|---------------|---------------------|
| ೨ ಕ್ಷಣಿ       | ೧ ಲವ:               |
| ೨ ಲವಿ         | ೧ ನಿಮೇಷ:            |
| ೧೮ ನಿಮೇಷ:     | ೧ ಕಾಷ್ಠಾ            |
| ೩೦ ಕಾಷ್ಠಾ:    | ೧ ಕಲಾ               |
| ೩೦ ಕಲಾ:       | ೧ ಕ್ಷಣ:             |
| ೧೨ ಕ್ಷಣಾ:     | ೧ ಮುಹೂರ್ತ:          |
| ೩೦ ಮುಹೂರ್ತ:   | ೧ ಅಹೋರಾತ್ರ: (ದಿನಮ್) |
| ೩೦ ಅಹೋರಾತ್ರಾ: | ೧ ಮಾಸ:              |
| ೧೨ ಮಾಸಾ:      | ೧ ಸಂವತ್ಸರ: (ವರ್ಷ:)  |

ಇತ್ಯಾದಿ. “ಉತ್ಪತ್ಸ್ಯತೇ ಮಮ ತು ಕೋಽಪಿ ಸಮಾನಧರ್ಮಾ ಕಾಲೋ-  
ಹ್ಯಯಂ ನಿರವಧಿವಿಪುಲಾ ಚ ಪೃಥಿವೀ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೮।  
3. ಆಯಾ ಕಾರ್ಯಗಳಿಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ಸಮಯ.  
“ವರಮೇಕಾಹುತಿ: ಕಾಲೇ ನಾಕಾಲೇ ಲಕ್ಷಕೋಟಯ:” 4.  
ಜ್ಯೋತಿಷದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವ ಒಂದು ಯೋಗ. ಈ  
ಯೋಗವು ಯಾತ್ರಾದಿಗಳಿಗೆ ನಿಷಿದ್ಧವಾದುದು. ಇದು  
ಭಾನುವಾರ ಮೊದಲುಗೊಂಡು ಆಯಾ ವಾರಗಳ ಎದುರಿಗೆ  
ಕಾಣಿಸಿರುವ ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಭವಿಸುವುವು:—

|          |                  |
|----------|------------------|
| ಭಾನುವಾರ  | ... ಉತ್ತರದಿಕ್ಕು  |
| ಸೋಮವಾರ   | ... ವಾಯವ್ಯದಿಕ್ಕು |
| ಮಂಗಳವಾರ  | ... ಪಶ್ಚಿಮದಿಕ್ಕು |
| ಬುಧವಾರ   | ... ನೈಋತ್ಯದಿಕ್ಕು |
| ಗುರುವಾರ  | ... ದಕ್ಷಿಣದಿಕ್ಕು |
| ಶುಕ್ರವಾರ | ... ಆಗ್ನೇಯದಿಕ್ಕು |
| ಶನಿವಾರ   | ... ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕು  |

ಈ ವಾರಗಳಲ್ಲಿ ಇವುಗಳಿಗೆ ಎದುರು ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿ ಪಾಶ  
ಯೋಗವು:—

|         |                  |
|---------|------------------|
| ಭಾನುವಾರ | ... ದಕ್ಷಿಣದಿಕ್ಕು |
| ಸೋಮವಾರ  | ... ಆಗ್ನೇಯದಿಕ್ಕು |
| ಮಂಗಳವಾರ | ... ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕು  |
| ಬುಧವಾರ  | ... ಈಶಾನ್ಯದಿಕ್ಕು |

|          |                  |
|----------|------------------|
| ಗುರುವಾರ  | ... ಉತ್ತರದಿಕ್ಕು  |
| ಶುಕ್ರವಾರ | ... ವಾಯವ್ಯದಿಕ್ಕು |
| ಶನಿವಾರ   | ... ಪಶ್ಚಿಮದಿಕ್ಕು |

ಹಗಲು ಈ ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿ ಕಾಲಪಾಶಯೋಗವು. ರಾತ್ರಿ  
ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಇವುಗಳ ಎದುರು ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿ ಕಾಲಪಾಶ  
ಯೋಗವು. “ಕೌಬೇರಿತೋ ವೈಪರೀತ್ಯೇನ ಕಾಲೋ ವಾರೆರ್ಕಾಣಿ ಸಮುಖೇ  
ತಸ್ಯ ಪಾಶ:। ರಾತ್ರಾವೇತೌ ವೈಪರೀತ್ಯೇನ ಗಣ್ಯೌ ಯಾತ್ರಾಯುಧೇ ಸಮುಖೇ  
ವರ್ಜನೀಯೌ” ಮುಂ ಚಿಂ 1. 5. ಅವಕಾಶ, ಪುರಸ್ಕೃತ, ವಿರಾಮ.  
6. ಅವಧಿ, ಗಡು, ಒಂದು ಗೊತ್ತಾದ ಸಮಯ. 7. ಕಪ್ಪು  
ಬಣ್ಣ. “ಕಾಲೋಽಕಲೋ ಕಲಿ: ಕಾಲೇ ಕಾಲಿಕೇಲಿಕಿಲ:  
ಕಿಲ” ಮಾಘಂ ೧೯-೨೮। 8. ಶನಿಗ್ರಹ. 9. ಯಮ.  
“ಆಮೀಲಾನಿ ಪ್ರಾಣಿನ: ಪ್ರತ್ಯವಸ್ಯನ್ ಕಾಲೋ ನುನಂ ವ್ಯಾದದಾವಾ-  
ನನಾನಿ” ಮಾಘಂ ೧೮-೨೮। 10. ಮಹಾಕಾಲ, ಪರಮೇ  
ಶ್ವರ, ಪರಶಿವ. 11. ಮೃತಿ, ಮರಣ. 12. ಕೋಗಿಲೆ.  
13. ಸಾಂಖ್ಯಮತದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಒಂಬತ್ತು ವಿಧ ತುಷ್ಟಿ  
ಗಳಲ್ಲೊಂದು. (1) ಪ್ರಕೃತಿ:, (2) ಉಪಾದಾನಮ್, (3) ಕಾಲ:,  
(4) ಮಾಗ:— ಇವು ನಾಲ್ಕು ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ ತುಷ್ಟಿಗಳು.  
(5) ಅರ್ಜನದೋಷದರ್ಶನಜನ್ಯವಿಷಯೋಪರಮಜನ್ಯಾ, (6) ರಕ್ಷಣದೋಷ-  
ದರ್ಶನವಿಷಯೋಪರಮಜನ್ಯಾ, (7) ಕ್ಷಯದೋಷದರ್ಶನಜನ್ಯವಿಷಯೋ-  
ಪರಮಜನ್ಯಾ, (8) ಭೋಗದೋಷದರ್ಶನಜನ್ಯವಿಷಯೋಪರಮಜನ್ಯಾ  
ಮತ್ತು (9) ಹಿಸಾದೋಷದರ್ಶನಜನ್ಯವಿಷಯೋಪರಮಜನ್ಯಾ—ಇವು  
ಐದು ಬಾಹ್ಯತುಷ್ಟಿಗಳು. “ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕವಶ್ಚತತಃ: ಪ್ರಕೃತ್ಯು-  
ಪಾದಾನಕಾಲಮಾಗಾತ್ಯಾ:। ಬಾಹ್ಯಾ: ವಿಷಯೋಪರಮಾತ್ಮಶ್ಚ ಚ ನವ  
ತುಷ್ಟಯೋಽಭಿಮತಾ:” ಸಾಂ ಕಾಂ ೫೦। (ವಿಂ) 14. ಕಪ್ಪು  
ಬಣ್ಣದ. 15. ಹಿಂಸಿಸುವ, ಪೀಡಿಸುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಟಾಪ್”  
(೪-೧-೪)। -ಲಾ-ಲಾ. ವರ್ಣವಿಶಿಷ್ಟವಾದರೆ-ಲೀ-ಲೀ  
ಎಂದೂ, ಸಂಜ್ಞಾವಾಚಕವಾದರೆ -ಲಾ-ಲಾ ಎಂದೂ  
ಆಗುವುದು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ-ಲಾ. 16. ದುರ್ಗಾದೇವಿ,  
ಪಾರ್ವತಿ. 17. ಕರಿಯ ತಿಗಡೆಮರ. 18. ಕರಿಯ ಜೀರಿಗೆ.  
19. ನೀಲಿ ಗಡ. 20. ಮಂಜಿಷ್ಠ. “ಕಾಲೋಽಜೇಹಾ ಯಮೋ  
ಮೃತ್ಯು: ಕ್ಯಾಮೋ ನಾ ತದ್ವತಿ ತ್ರಿಷು। ಕಾಲಾ ತು ಕೃಷ್ಣಾಶ್ವಿತೇ  
ನೀಲಿನ್ಯಾಂ ಕೃಷ್ಣಾಜೀರಕೇ” ನಾನಾರ್ಥಂ। -ಲೀ-ಲೀ.  
21. ಕಾಲಿಕಾದೇವಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿಯ ಒಂದು ರೂಪ.  
“ಪ್ರೀತೇನ ತೇನ ಪ್ರಮುಣಾ ನಿಯುಕ್ತಾ ಕಾಲೀ ಕಲತ್ರಸ್ಯ ಮುಧೇ  
ಪ್ರಿಯಸ್ಯ” ಕುಮಾಂ ೯-೪೯। 22. ಕ್ಷೀರಕೇಟ, ಹುಳಿ ಬಂದ  
ಹಾಲಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹುಳು. 23. ಜೊಸ  
ಮೇಘಗಳ ಸಮೂಹ. 24. ಅಪವಾದ. 25. ಸಪ್ತ ಮಾತೃ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬಳು. “ತಾಸಾಂ ಚ ಪಶ್ಚಾತ್ತನಕಪ್ರಮಾಣಾಂ ಕಾಲೀ  
ಕಪಾಲಾಭರಣಾ ಚಕಾಶೇ” ಕುಮಾಂ ೭-೩೯। 26. ಭೀಮ



ಸೇನನ ಒಬ್ಬ ಹೆಂಡತಿ. "ಅಥ ಘಟೋತ್ಕಚಃ। ಭೀಮಸೇನಾ-  
ದ್ವಿಡಿಂಬಾಢಾಂ ಕಾಲ್ಯಾಂ ಸರ್ವಗತಸ್ತತಃ" ಭಾಗಂ ೧-೨೨-೨೪।  
27. ಕಪ್ಪು ಬಣ್ಣದ ಹೆಂಗಸು. 28. ರಾತ್ರಿ. 29. ಅಗ್ನಿಯ  
ಎಳು ಜಿಹ್ವೆಗಳಲ್ಲೊಂದು. 30. ಸತ್ಯವತಿ, ಶಂತನು  
ಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಪತ್ನಿ, ವೇದವ್ಯಾಸರ ತಾಯಿ. 31. ಪರಶಿವನ  
ಒಂಬತ್ತು ಶಕ್ತಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಕಾಲಿ ಕಲೇಬರಾ ಭೂತದಮನಿ  
ಚೇಶಶಕ್ತಯಃ" ವೇಜಂ। "ಕಾದಂಬಿನಿ ಮೇಘಮಾಲಾ ಕಾಲಿ  
ಕೃಷ್ಣನವಾಂಬುದಃ" ವೇಜಂ। 32. ಬಜ್ಜಿ ಬದನೆಕಾಯಿ.  
"ಬೃಹತ್ಯಾಂ ಪ್ರಹಸಾ ಕಾಲಿ ವಾರ್ತಾಕಿ ಹಿಗುದಿ ಕುಲಿ" ವೇಜಂ।  
33. ಹಿಪ್ಪಲಿ. 34. ಹತ್ತು ಎಧ ಮಹಾವಿದ್ಯೆಗಳಲ್ಲಿ  
ಒಂದು. "ಕಾಲಿ ತಾರಾ ಮಹಾವಿದ್ಯಾ ಷೋಡಶಿ ಭುವನೇಶ್ವರಿ।  
ಭೇರವಿ ಕ್ಷಿಪ್ರಮಸ್ತಾ ಚ ವಿಧಾ ಭೂಮಾವತಿ ತಥಾ। ವಗಲಾ  
ಸಿದ್ಧವಿದ್ಯಾ ಚ ಮಾತೃಜ್ಞಿ ಕಮಲಾತ್ಮಿಕಾ। ಏತಾ ದಶ ಮಹಾ-  
ವಿದ್ಯಾಃ ಸಿದ್ಧವಿದ್ಯಾಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾಃ" ತನ್ತ್ರಸಾಂ। "ಕಾಲೋ ಮೃತ್ಯೋ  
ಮಹಾಕಾಲೇ ಸಮಯೇ ಯಮಕೃಷ್ಣಯೋಃ। ಕೃಷ್ಣಾತ್ರಿವೃತ್ತೌ ಕಾಲಾ ತು  
ನೀಲಿಮಜ್ಜಿಷ್ಠಯೋರಪಿ। ಕಾಲಿ ಗೌರ್ಯಾಂ ಕ್ಷೀರಕೀಟೇ ಕಾಲಿಕಾ-  
ಮಾತೃಭೇದಯೋಃ। ನವಾಂಬುಬಾಹುವೃಂದೇಽಪಿ ಪರಿವಾಡೇಽಪಿ ಚ ಕ್ವಚಿತ್"  
ವಿಶ್ವಂ।

**ಕಾಲಕ ಕಾಲಕ (ಪುಂ)** 1. ಸಂಗಾತಿ, ಮೈಮೇಲೆ ಹುಟ್ಟುವ  
ಕಪ್ಪು ಚುಕ್ಕಿ, ಹುಟ್ಟು ಮಜ್ಜೆ. ಕಾಲಯತಿ - ಕಲ (ಕ್ಷೇಪೆ)  
+ ಣಿಚ್ "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ನೀರುಹಾವು.  
(ನಂ) 3. ಯಕೃತ್ತು, ಹೊಟ್ಟೆಯ ಬಲಭಾಗದ ದೊಡ್ಡ  
ಮಾಂಸಗ್ರಂಥಿ. (ವಿಂ) 4. ನೀಲಿಬಣ್ಣದಲ್ಲಿ ಅದ್ದಲ್ಪಟ್ಟ  
ಬಟ್ಟೆ ಮುಂತಾದುದು. ಕಾಲ "ಕನ್" (೪-೪-೩೩)।  
5. ಕೋಪ ಮೊದಲಾದ ಕಾರಣಗಳಿಂದ ತತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ಬಣ್ಣ ಬದಲಾಯಿಸಿದ ಮುಖ ಮೊದಲಾದುದು. ಕಾಲ  
"ಕನ್" (೪-೪-೩೩)। ಕಾಲಕಃ ಪಟಃ। ಕಾಲಿಕಾ ಶಾಡೀ।  
ಕಾಲಕಂ ಮುಖಮ್। ನಾಚಿಕೆ ಅಸೂಯೆ ಮುಂತಾದ ಕಾರಣ  
ಗಳಿಂದ ಬಣ್ಣ ಬದಲಾಯಿಸಿದ ಮುಖ.

**ಕಾಲಕಂಜ ಕಾಲಕಂಜ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ)** 1. ದಾನವರ  
ಒಂದು ಗುಂಪು. (ನಂ) 2. ನೀಲೋತ್ಪಲ, ನೀಲಿ ಕಮಲ,  
ಕನ್ನದಿಲೆ. "ಪೊಲೋಮೇಃ ಕಾಲಕಂಜೇಶ್ವರ ನಿಯತಹೃಷ್ಠೇರಥಿ-  
ಠಿತಮ್" ಭಾಂ ವನಂ ೧೭೩-೨।

**ಕಾಲಕಡ್ಡು ಕಾಲಕಟಂಕಟ (ಪುಂ)** ಶಿವ, ಈಶ್ವರ.  
ಕಾಲರೂಪಃ ಕಡ್ಡುಕಟಃ। "ವೇಣವಿ ಪಣವಿ ತಾಲಿ ಖಲಿ ಕಾಲ-  
ಕಡ್ಡುಕಟಃ"।

**ಕಾಲಕಂಠ ಕಾಲಕಂಠ (ಪುಂ)** 1. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ.  
ಕಾಲಃ ಕಂಠಾಸ್ಯ ವಿಷಪಾನಾತ್। [ಅಮೃತಮಂಥನದ ಸಮಯ

ದಲ್ಲಿ ಉತ್ಪನ್ನವಾದ ಹಾಲಾಹಲವೆಂಬ ವಿಷವನ್ನು  
ಪರಮೇಶ್ವರನು ಪಾನಮಾಡಿದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.]

"ತತಃ ಕರತಲೀಕೃತ್ಯ ವ್ಯಾಪಿ ಹಾಲಾಹಲಂ ವಿಷಮ್। ಅಭಕ್ಷಯ-  
ನ್ಮಹಾದೇವಃ ಕೃಪಯಾ ಭೂತಭಾವನಃ। ತಸ್ಯಾಪಿ ದರ್ಶಯಾಮಾಸ ಸ್ವವೀರ್ಯ  
ಜಲಕಲ್ಮಷಃ। ಯಚ್ಚಕಾರ ಗಲೇ ನೀಲಂ ತಚ್ಚ ಸಾಧೋ-  
ವಿಭೂಷಣಮ್" ಭಾಗಂ ೮-೭। 2. ಮಯೂರ, ನವಿಲು.  
3. ನೀರುಕೋಳಿ. 4. ಗುಬ್ಬಿಚ್ಚಿ. 5. ಕಾಡಿಗೆ ಸೊಗಸಿನ  
ಹಕ್ಕಿ. 6. ಮತ್ತಿಮರ. "ಕಾಲಕಂಠಶ್ಚ ದಾತ್ಯಹೇ ಕಲವಿಜ್ಞೇ  
ಚ ಸ್ವಜನೇ। ಮಯೂರೇ ಪಿತಸಾರೆ ಚ ಸ್ಯಾತ್ ಖಂಡಪರಶೌ  
ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ। ವಾ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೪೪) -ಕಂಠಕಃ  
-ಕಂಠಕಃ. (1) ನೀರುಕೋಳಿ. (2) ಗುಬ್ಬಿಚ್ಚಿ.

**ಕಾಲಕಾಲಿ ಕಾಲಕಲಿ (ಪುಂ)** ವಿರೋಚನನ ಮಗ ಒಬ್ಬ  
ರಾಕ್ಷಸ, ಬಲಿಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಸಹೋದರ. [ಇವನು ದೇವತೆ  
ಗಳಿಗೆ ಹೆದರಿ ಗೋಕುಲದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಬೇಲದ ಮರದ  
ರೂಪದಿಂದ ಇದ್ದನು. ಈ ಮರದ ಕಾಯಿ ಹಣ್ಣುಗಳು  
ನಾರುತ್ತಿದ್ದುದರಿಂದ ಜನ ದನಕರುಗಳು ರೋಗಗ್ರೀಡಿತ  
ರಾಗುತ್ತಿರಲು ಗೋಪಾಲಕರಲ್ಲರೂ ಪರಮೇಶ್ವರನಿಂದ  
ಶಂಕುಕರ್ಣನ ಮೂಲಕ ಈ ಮರದ ಸಮಾಚಾರವನ್ನು  
ತಿಳಿದು ಬಲರಾಮಕೃಷ್ಣರಿಗೆ ಹೇಳಿ ಈ ಮರವನ್ನು ಕಡಿದು  
ಹಾಕಿಸಿದರು.] ಹರಿವಂ।

**ಕಾಲಕಾ ಕಾಲಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸಿ, ಕಾಲಕೇಯ  
ರಾಕ್ಷಸರ ತಾಯಿ, ಮಾರೀಚನ ಹೆಂಡತಿ.

**ಕಾಲಕೂಟ ಕಾಲಕೂಟ (ಪುಂ)** ವಿಷ, ನಂಜು. ಕಾಲಸ್ಯ  
ಮೃತ್ಯೋಃ ಕೂಟೋ ರಾಶಿರಿವ। ಸಮುದ್ರಮಂಥನದ ಸಮಯ  
ದಲ್ಲಿ ಉತ್ಪನ್ನವಾಗಿ ಮಹಾದೇವನಿಂದ ನುಂಗಲ್ಪಟ್ಟ ಒಂದು  
ವಿಷ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" -ಕೂಟಕಮ್ -ಕೂಟಕಮ್. "ತತೋ  
ದುರ್ಯೋಧನಃ ಪಾಪಃ ತದ್ಭಕ್ಷ್ಯೇ ಕಾಲಕೂಟಕಮ್। ವಿಪ್ರಂ ಪ್ರಕ್ಷೇಪಯಾಮಾಸ  
ಭೀಮಸೇನಜಿಘಾಂಸಯಾ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೨೭।

**ಕಾಲಕೃತ್ ಕಾಲಕೃತ್ (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯ. ಕಾಲಂ ಕರೋತಿ-  
ತ್ವ ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) "ಕಿವಿಪ್" (೩-೨-೭೬)। ಸೂರ್ಯನು  
ತನ್ನ ಗತಿಯಿಂದ ಕ್ಷಣ ಮುಹೂರ್ತ ಯಾಮ ದಿವಸ  
ಮುಂತಾದ ಕಾಲವನ್ನು ಗೊತ್ತು ಮಾಡುವುದರಿಂದ  
ಈ ಹೆಸರು. 2. ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಮೇಶ್ವರ. "ತ್ರಯೀಮಯೋಽಯಂ  
ಭಗವಾನ್ ಕಾಲಾತ್ಮಾ ಕಾಲಕೃದ್ವಿಭುಃ" ಸ್ತಂ ಸಿಂ ೧೨-೧೮।

**ಕಾಲಕೃತ ಕಾಲಕೃತ (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯ. ಕಾಲಃ ಕೃತೋ  
ಯೇನ। ಕಾಲಕ್ಕೆ ಸೂರ್ಯನು ಕಾರಣನಾದುದರಿಂದ ಈ  
ಹೆಸರು. 2. ನಿಗದಿಯಾದ ಅವಧಿಯುಳ್ಳ ಗಿರವಿ, ಗೊತ್ತಾದ  
ಗಡುವುಳ್ಳ ಅಡಮಾನ. ಚರವಸ್ತುವಾದರೆ ಗಿರವಿಯಾಗು



ವುದು. ಸ್ಥಿರ ವಸ್ತುವಾದರೆ ಭೋಗ್ಯವೆನ್ನುವರು. ಸಾಲ ಕೊಂಡವನು ಗೊತ್ತಾದ ಅವಧಿಯೊಳಗೆ ಗಿರವಿಯಿಟ್ಟ ವಸ್ತುವನ್ನು ಸಾಲ ತೀರಿಸಿ ಬಿಡಿಸಿಕೊಳ್ಳದಿದ್ದರೆ ಮೊತ್ತವೂ ಬಡ್ಡಿಯೂ ಸೇರಿ ಸಾಲದ ಎರಡರಷ್ಟಾದ ಕೂಡಲೆ ಆ ವಸ್ತುವು ಸಾಲಕೊಟ್ಟವನದೇ ಆಗುವುದು. ಫಲಭೋಗ್ಯ ವಾದ ಮನೆ ಜಮೀನು ಮುಂತಾದುವಕ್ಕೆ ಈ ಅವಧಿಯ ನಿಯಮವಿಲ್ಲ. “ಆಧಿ: ಪ್ರಣಶ್ಯೇತ್ ದ್ವಿಗುಣಂ ಧನೇ ಯದಿ ನ ಮೋಕ್ಷಯತೇ | ಕಾಲೇ ಕಾಲಕೃತೋ ನಶ್ಯೇತ್ ಫಲಭೋಗ್ಯೋ ನ ನಶ್ಯತಿ” ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೪೮ |

**ಕಾಲಕೇಯ ಕಾಲಕೇಯ** (ಪುಂ) ದಾನವರ ಒಂದು ಗುಂಪು. ಕಾಲಕಾಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ “ಢಕ್” (೪-೧-೧೨೦) | “ಹಿರಣ್ಯ-ಪುರಮಿತ್ಯೇವಂ ಖ್ಯಾಯತೇ ನಗರಂ ಮಹತ್ | ರಕ್ಷಿತಂ ಕಾಲಕೇಯೇಶ್ಚ ಪೌಲೋಮೇಶ್ಚ ಮಹಾಸುರಃ” ಭಾಂ ವನಂ ೧೭೩-೧೩ | [ಈ ರಾಕ್ಷಸರು ಹಿರಣ್ಯಪುರದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುತ್ತ ಇಂದ್ರನನ್ನು ಬಹಳವಾಗಿ ಪೀಡಿಸುತ್ತಿದ್ದರು. ಇಂದ್ರನು ಇವರನ್ನು ಜಯಿಸಲಾರದೆ ಹೋಗಲಾಗಿ ಅರ್ಜುನನು ಪಾಶುಪತಾಸ್ತ್ರ ವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿದ ನಂತರ ಸ್ವರ್ಗದಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ಕಾಲವಿದ್ದಾಗ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಈ ರಾಕ್ಷಸರನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದನು. ಈ ರಾಕ್ಷಸರ ಮತ್ತೊಂದು ಗುಂಪು ಹಗಲೆಲ್ಲಾ ಸಮುದ್ರದೊಳಗೆ ವಾಸ ಮಾಡುತ್ತ ರಾತ್ರಿಕಾಲದಲ್ಲಿ ಲೋಕವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಪೀಡಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಇಂದ್ರಾದಿ ದೇವತೆಗಳೆಲ್ಲರೂ ಬ್ರಹ್ಮನಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ ಮೊರೆಯಿಡಲು ಬ್ರಹ್ಮನ ಸಲಹೆಯಂತೆ ಇವರು ಅಗಸ್ತ್ಯ ಮಹರ್ಷಿಯನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸುವರು. ಇವರ ಪ್ರಾರ್ಥನೆ ಯಂತೆ ಅಗಸ್ತ್ಯರು ಸಮುದ್ರದ ನೀರೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಪಾನ ಮಾಡಲು ಅಲ್ಲಿಂದ ಹೊರಬಿದ್ದ ರಾಕ್ಷಸರನ್ನು ದೇವತೆಗಳು ಜಯಿಸಲು ಅನುಕೂಲವಾಯಿತು.] “ಆಸನ್ ಕೃತಯುಗೇ ಧೋರಾ ದಾನವಾ ಯುದ್ಧದುರ್ಮದಾಃ | ಕಾಲಕೇಯಾ ಇತಿ ಖ್ಯಾತಾ ಗಣಾಃ ಪರಮದಾರುಣಾಃ” ಭಾಂ ವನಂ ೧೦೦-೩ |

**ಕಾಲಕ್ಷೇಪ ಕಾಲಕ್ಷೇಪ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಲಸವಿಲ್ಲದೆ ಕಾಲ ಕಳೆಯುವುದು. 2. ಕಾಲವು ವ್ಯರ್ಥವಾಗುವಿಕೆ. ಕಾಲಸ್ಯ ಕ್ಷೇಪಃ | 3. ಸಾವಕಾಶ, ಸಮಯ ಮೀರುವಿಕೆ, ಗೊತ್ತಾದ ಕಾಲವನ್ನು ಮೀರುವುದು.

**ಕಾಲಖಂಡ ಕಾಲಖಂಡ** (ಪುಂ) ಯಕೃತ್ತು, ಹೊಟ್ಟೆಯ ಬಲಭಾಗದ ಮಾಂಸಗ್ರಂಥಿ. ಕಾಲಂ ಚ ಖಂಡಂ ಚ | “ಸ್ವಾದುಕಾರಂ ಕಾಲಖಂಡೋಪದಂಶಂ ಕ್ರೋಷ್ಠಾ ತಿಮ್ಬಂ ವ್ಯಖ್ಯಣದ್ವ್ಯ-ಸ್ವನಂ ಚ” ಮಾಧಂ ೧೮-೭೭ |

**ಕಾಲಗ್ರಂಥಿ ಕಾಲಗ್ರಂಥಿ** (ಪುಂ) ವರ್ಷ, ಸಂವತ್ಸರ. ಕಾಲಸ್ಯ ಗ್ರಂಥಿರಿವ | “ಕಾಲಗ್ರಂಥಿಃ ಸಮಾ ಸಂವತ್ಸರಸಮಾನೋ ಯುಗಾಂಸಕಃ” ಹಾರಾಂ |

**ಕಾಲಧಾತಿನ್ ಕಾಲಘಾತಿನ್** (ಪುಂ) ಕಾಲಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಸಾವಕಾಶವಾಗಿ ಕೊಲ್ಲುವ ವಿಷ ಮೊದಲಾದುದು. ಕಾಲೇನ ಹಂತಿ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತಿಯು) “ಘಿನಿಃ” (೩-೨-೭೮) | **ಕಾಲಚಕ್ರ ಕಾಲಚಕ್ರ** (ನಂ) 1. ಚಕ್ರದಂತೆ ಉರುಳುತ್ತಿರುವ ಕಾಲ. ಕಾಲಃ ಚಕ್ರಮಿವ | ಚಕ್ರದಂತೆ ಯಾವಾಗಲೂ ಉರುಳುತ್ತಿರುವುದರಿಂದ ಕಾಲಕ್ಕೆ ಈ ಹೆಸರು. “ಯಥಾ ಕುಲಾಲಚಕ್ರೇಣ ಭ್ರಮತಾ ಸಹ ಭ್ರಮತಾಂ ತದಾಶ್ರಯಾಣಾಂ ಪಿಪಿಲಿಕಾ-ದೀನಾಂ ಗತಿರನ್ಯೇವ ಪ್ರದೇಶಾಂತರೇವಪ್ಯುಪಲಬ್ಧಮಾನತ್ವಾತ್ एवं ನಕ್ಷತ್ರರಾಶಿಭಿರೂಪಲಕ್ಷಿತೇನ ಕಾಲಚಕ್ರೇಣ ಧ್ರುವಂ ಮೇಠಂ ಚ ಪ್ರದಕ್ಷಿಣೇನ ಪರಿಧಾವತಾ ಸಹ ಪರಿಧಾವಮಾನಾಂ ತದಾಶ್ರಯಾಣಾಂ ಸೂರ್ಯಾದೀನಾಂ ಗ್ರಹಾಣಾಂ ಗತಿರನ್ಯೇವ ನಕ್ಷತ್ರಾಂತರೇ ರಾಶ್ಯಂತರೇಶೋಪ-ಲಬ್ಧಮಾನತ್ವಾತ್” ಭಾಗಂ ೪-೨೨-೨ | 2. ಕಾಲರೂಪವಾದ ಚಕ್ರ. ಕಾಲಸ್ಯ ಕಾಲಗತೇಃ ಚಕ್ರಮಿವ | ಕಾಲವು उत्सर्पिणी ಮತ್ತು अवसर्पिणी ಎಂದು ಎರಡು ಭಾಗವಾಗಿರುವುದು. [ಎವರಕ್ಕೆ “उत्सर्पिणी” ಮತ್ತು “अवसर्पिणी” ಪದ ಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] “एवमेष चरन् पार्थ कालचक्र-मतन्द्रितः | प्रकर्षन् सर्वभूतानि सविता परिवर्तते” ಭಾಂ ವನಂ ೧೬೩-೪೦ | ಜೈನಸಿದ್ಧಾಂತದ ಪ್ರಕಾರ ಅವಸರ್ಪಿಣಿ ಮತ್ತು उत्सर्पिणी ಭೇದಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕಲ್ಪಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕಾಲಚಕ್ರವು ಒಂದು ಸಲ ತಿರುಗಲು 2,000,000,000,000,000 ಸಾಗರ ವರ್ಷಗಳು ಹಿಡಿಯುವುವು.

**ಕಾಲಚಿಂತಕ ಕಾಲಚಿಂತಕ** (ಪುಂ) ಕಾಲಗತಿಯನ್ನು ವಿಚಾರಮಾಡುವ ದೈವಜ್ಞ, ಗ್ರಹಗಳ ಚಾರವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ ಜೋಯಿಸ. ಕಾಲಂ ಚಿಂತಯತಿ—ಚಿಂತಿ (ಸ್ಮೃತ್ಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) |

**ಕಾಲಚಿಹ್ನ ಕಾಲಚಿಹ್ನ** (ನಂ) ಮರಣಲಕ್ಷಣ, ಮೃತ್ಯು ವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಲಕ್ಷಣ. ಕಾಲಸ್ಯ ಮೃತ್ಯೋಜ್ಞಾಪಿಕಂ ಚಿಹ್ನಮ್ | [ಎವರಕ್ಕೆ ಕಾಶೀಖಂಡದಲ್ಲಿ 41 ನೆಯ ಅಧ್ಯಾಯ ನೋಡಿ.]

**ಕಾಲಜ್ಞ ಕಾಲಜ್ಞ** (ಪುಂ) 1. ದೈವಜ್ಞ, ಜ್ಯೋತಿಷದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಕಾಲವಿಚಾರವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ ಜೋಯಿಸ. ಕಾಲಂ ಕಾಲಾವಯವಂ ಜಾನಾತಿ — ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) “ಕಃ” (೩-೨-೩) | 2. ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ. (ವಿಂ) 3. ಕರ್ತವ್ಯಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ಕಾಲವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. “ತೇಜಃ ಕ್ಷಮಾ ವಾ ನೈಕಾಂತಂ ಕಾಲಜ್ಞಸ್ಯ ಮಹೀಪತೇ” ಮಾಧಂ ೨-೮೩ | 4. ಭೂತ ಭವಿಷ್ಯದ್ವರ್ತಮಾನಕಾಲಗಳನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ ಜ್ಞಾನಿ.

**ಕಾಲಜ್ಞಾನ ಕಾಲಜ್ಞಾನ** (ನಂ) 1. ಜ್ಯೋತಿಃಶಾಸ್ತ್ರ. ಕಾಲೋ ಜ್ಞಾಯತೇಜೇನ — ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) ಕರಂ “ಲ್ಯುಡ್”



(೩-೩-೧೧೭) । “ವಿದಿತಸ್ತೇ ಮಯಾ ಭಾವಸ್ತೋಷಿತಸ್ತಪಸಾ-  
ಹ್ಯಹಮ್ । ದद्याಂ ಕಾಲಾಶ್ರಯಂ ಜ್ಞಾನಂ ಗ್ರಹಾಣಾಂ ಚರಿತಂ ಮಹತ್”  
ಸುಂಸಿಂ ೫ । 2. ಮರಣ ಸೂಚಕವಾದ ಚಿಹ್ನೆ. ಕಾಲೋ  
ಮೃತ್ಯುರ್ಜಾಯಿತೇಜೇನ — ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” ।

**ಕಾಲಜ್ಞಾನಿನ್ ಕಾಲಜ್ಞಾನಿನ್** (ವಿಂ) ಕಾಲದ ಅರಿವುಳ್ಳ  
ವನು. ಕಾಲಜ್ಞಾನಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೫-೨-೧೧೫) ।

**ಕಾಲತ್ರಯ ಕಾಲತ್ರಯ-ತ್ರಯ-ತ್ರಿತಯಂ** (ನಂ) ಮೂರು  
ಕಾಲಗಳು, ಭೂತ ಭವಿಷ್ಯತ್ ಮತ್ತು ವರ್ತಮಾನರೂಪ  
ವಾದ ಮೂರು ಕಾಲಗಳು. ಕಾಲಸ್ಯ ತ್ರಯಂ ತ್ರಿತಯಂ ವಾ ।  
“ಶರೀರಭಾಜಾಂ ಭವದೀಯದರ್ಶನಂ ವ್ಯನಕ್ತಿ ಕಾಲತ್ರಯೇಽಪಿ  
ಯೋಗ್ಯತಾಮ್” ಮಾಘಂ ೧-೨೩ ।

**ಕಾಲದಂಡ ಕಾಲದಂಡ** (ಪುಂ) ಜ್ಯೋತಿಷೋಕ್ತವಾದ  
ಆನಂದ ಮೊದಲಾದ 28 ಯೋಗಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಈ  
ಯೋಗಗಳು ವಾರಗಳು ಮತ್ತು ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಸಂಬಂಧದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವುವು.

|          |     |             |
|----------|-----|-------------|
| ಭಾನುವಾರ  | ... | ಭರಣಿ        |
| ಸೋಮವಾರ   | ... | ಆರಿದ್ರ      |
| ಮಂಗಳವಾರ  | ... | ಮಖ          |
| ಬುಧವಾರ   | ... | ಚಿತ್ತ       |
| ಗುರುವಾರ  | ... | ಜ್ಯೇಷ್ಠ     |
| ಶುಕ್ರವಾರ | ... | ಅಭಿಜಿತ್     |
| ಶನಿವಾರ   | ... | ಪೂರ್ವಾಭಾದ್ರ |

ಈ ವಾರಗಳ ಮತ್ತು ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಸಂಬಂಧದಿಂದ  
“ಕಾಲದಂಡ” ಯೋಗವು ಸಂಭವಿಸುವುದು, ಇದು  
ಪ್ರಯಾಣಕ್ಕೆ ನಿಷಿದ್ಧವಾದುದು. [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಯೋಗ”  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕಾಲಧರ್ಮ ಕಾಲಧರ್ಮ** (ಪುಂ) 1. ಮೃತ್ಯು, ಮರಣ.  
ಕಾಲಸ್ಯ ಧರ್ಮ: । “ಅಪ್ರಾಪ್ತವತಿ ತಸ್ಮಿನ್ಸ್ತು ಯೌವನಂ ಪುರುಷ-  
ಧರ್ಮೇ । ಸ ರಾಜಾ ಶಾಂತನುರ್ಧಿಮಾನ್ ಕಾಲಧರ್ಮಮುಪೇಯಿವಾನ್” ಭಾಂ  
ಆದಿಂ ೧೦೧-೧ । 2. ಋತು ಧರ್ಮ. ವಸಂತಾದಿ ಋತು  
ಗಳ ಸ್ವಭಾವ.

**ಕಾಲಧರ್ಮನ್ ಕಾಲಧರ್ಮನ್** (ಪುಂ) ಮೃತ್ಯು, ಮರಣ.  
ಕಾಲಸ್ಯೇವ ಧರ್ಮೋಽಸ್ಯ “ಅನಿಚ್” (೫-೪-೧೨೪) । “ಸ  
ತಯಾ ಸಹ ಸಂಗಮ್ಯ ಭಾರ್ಯಯಾ ಕುರುನಂದನ: । ಪಾಂಡು: ಪರಮಧರ್ಮಾತ್ಮಾ  
ಯುಜುಜೇ ಕಾಲಧರ್ಮಣಾ” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೨೪-೧೨ ।

**ಕಾಲನರ ಕಾಲನರ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ  
ಹನ್ನೆರಡು ರಾಶಿರೂಪವಾದ ಶಿರಸ್ಸು, ಮೊದಲಾದ ಹನ್ನೆರಡು

ಅಂಗಗಳುಳ್ಳ ಕಾಲಪುರುಷ. “ಇತಿ ಕಾಲನರಸ್ಯಾಙ್ಗೇ  
ಸದಸದ್ಗ್ರಹಯೋಗತ:” ಬೃಹಜ್ಜಾಂ । 2. ಸಭಾಸರರಾಜನ ಮಗ.

**ಕಾಲನಾಥ ಕಾಲನಾಥ** (ಪುಂ) ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ,  
ಮಹಾದೇವ. ಕಾಲಸ್ಯ ಭೇರವಸ್ಯ ನಾಥ: । “ಕಾಲನಾಥಾಯ  
ಕಲ್ಯಾಯ ಕ್ಷಯಾಯೋಪಕ್ಷಯಾಯ ಚ” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೨೮೬-೮೯ ।

**ಕಾಲನಾಭ ಕಾಲನಾಭ** (ಪುಂ) ಹಿರಣ್ಯಕೃಷ್ಣನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.  
ಕಾಲ: ಕೃಷ್ಣ: ನಾಭಿರಸ್ಯ “ಅಚ್” (೫-೪-೭೫) । “ಹಿರಣ್ಯಾಕ್ಷ-  
ಸುತಾ: ಪञ್ಚ ವಿಧಾಸ: ಸುಮಹಾಬಲಾ: । ಚರ್ಚರ: ಶಕುನಿಶ್ಚೇವ  
ಭೂತಸಂತಾಪನಸ್ತಥಾ । ಮಹಾನಾಭಶ್ಚ ವಿಕ್ರಾಂತ: ಕಾಲನಾಭ-  
ಸ್ತಥೇವ ಚ” ।

**ಕಾಲನಿಯೋಗ ಕಾಲನಿಯೋಗ** (ಪುಂ) ಕಾಲದ ಆಜ್ಞೆ.  
ಕಾಲದ ನಿಯಮ, ಅದೃಷ್ಟ. ಕಾಲಸ್ಯ ನಿಯೋಗ: ।

**ಕಾಲನೆಮಿ ಕಾಲನೆಮಿ** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ,  
ರಾವಣನ ಸೋದರಮಾವ. ಕಾಲಸ್ಯ ಮೃತ್ಯೋರ್ನೆಮಿರಿವ ।  
2. ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವಿನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

**ಕಾಲನೆಮಿರಿಪು ಕಾಲನೆಮಿರಿಪು** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು.  
2. ಹನುಮಂತ.

**ಕಾಲನೆಮಿಹನ್ ಕಾಲನೆಮಿಹನ್** (ಪುಂ) 1.  
ಕಾಲನೆಮಿಯನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದ ವಿಷ್ಣು. ಕಾಲನೆಮಿ ಹತವಾನ್  
— ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ: ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೮೭) । ಕಾಲಸ್ಯ  
ಕಾಲಚಕ್ರಸ್ಯ ನೇಮಿ ತತ್ಕಲ್ಯಾಯಾಂ ಅವಿಧ್ಯಾಂ ಕಲಿಕಲ್ಮಷಂ ನಿಹಂತಿ  
— ನಿ+ಹನ “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೮೭) । —ನಿಹನ್ —ನಿಹನ್.  
ಕಾಲನೆಮಿಸದೃಶವಾದ ಅವಿದ್ಯೆಯೆಂಬ ಕಲಿದೋಷವನ್ನು  
ನಾಶಪಡಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. “ಕಾಲಚಕ್ರಸ್ಯ ಯಾ  
ನೆಮಿರಿವಿಧ್ಯಾಖ್ಯಾ ಚ ದುರ್ಧರಾ । ತಾಂ ನಾಶಯತಿ ಯಶ್ಚಾಸೌ  
ಕಾಲನೆಮಿನಿಹಾ ಸ್ಮೃತ:” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । “ಕಾಲನೆಮಿನಿಹಾ  
ಶೌರಿ: ಶೂರ: ಶೂರಜನೇಶ್ವರ:” ವಿಂ ಸಂ । 2. ಹನುಮಂತ.

**ಕಾಲಪಥ ಕಾಲಪಥ** (ಪುಂ) ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮಹರ್ಷಿಯ  
ಒಬ್ಬ ಮಗ. “ಮಧುಚ್ಛಂದಶ್ಚ ಭಗವಾನ್ ದೇವರಾತಶ್ಚ  
ವೀರ್ಯವಾನ್ । ಅಕ್ಷಿಣಶ್ಚ ಶಕುಂತಶ್ಚ ಬಭ್ರು: ಕಾಲಪಥ-  
ಸ್ತಥಾ” ಭಾಂ ಅನುಂ ೪-೫೦ ।

**ಕಾಲಪರ್ಣಿ ಕಾಲಪರ್ಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೃಷ್ಣತುಲಸಿ.

**ಕಾಲಪರ್ಯಯ ಕಾಲಪರ್ಯಯ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಲಪರಿ-  
ಭ್ರಮಣ, ಕಾಲವು ತಿರುಗುವುದು, ಕಾಲಗತಿ, ಕಾಲಕ್ರಮ.  
ಕಾಲಸ್ಯ ಪರ್ಯಯ: ವೈಪರೀತ್ಯೇನ ಗಮನಮ್ । 2. ಕಾಲವು ಕಳೆದು  
ಹೋಗುವಿಕೆ, ಸಾವಕಾಶ, ಕಾಲವು ಮೀರುವುದು. “ಮಾ  
ಭತ್ ಕಾಲಸ್ಯ ಪರ್ಯಯ:” ರಾಮಾಂ ।



**ಕಾಲಮುಖ ಕಾಲಮುಖಿ (ಪುಂ) 1. ಕಪ್ಪು ಮುಖವುಳ್ಳ**  
**ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕಪಿ. ಕಾಲಂ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ । "ಯಸ್ಯ**



ಶಾಸ್ತ್ರಾಮೃಗಾ ಮಿತ್ರಾಪ್ಯಕ್ಷಾ: ಕಾಲಮುಖಾಸ್ತಥಾ" ಭಾಂ ವನಂ ೨೯೪-೧೨ | (ವಿಂ) 2. ಕಪ್ಪು ಮುಖವುಳ್ಳವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ "ಹಿಷ್" (೪-೧-೪೪) | -ಮುಖಿ -ಮುಖೀ.

**ಕಾಲಮೇಷಿಕಾ ಕಾಲಮೇಷಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಂಜಿಷ್ಠೆ. 2. ಕರಿಯು ತಿಗಡೆ. ಕಾಲಂ ವರ್ಣಮಿಷತಿ-ಮಿಷ(ಸ್ಪರ್ಧಾಯಾಮ್) "ಅಣ್" (೩-೨-೧) | ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕನ್" (೪-೩-೨೪) | "ಮಜ್ಜಿಷ್ಠಾ ವಿಕಸಾ ಜಿಜ್ಞಾಸಿ ಸಮಜ್ಞಾ ಕಾಲಮೇಷಿಕಾ" | "ಕಾಲಾ ಮಸೂರವಿದಲಾರ್ಧಚಂದ್ರಾ ಕಾಲಮೇಷಿಕಾ" ಅಮಂ |

**ಕಾಲಮೇಷಿ ಕಾಲಮೇಷೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಂಜಿಷ್ಠೆ. 2. ಬಾಹುಜಿಗೆ ಗಿಡ. "ಕಾಲಮೇಷಿ ಕೃಷ್ಣಕಲಾ ಬಾಗುಜಿ ಪುತಿ-ಫಲ್ಯಪಿ" ಅಮಂ |

**ಕಾಲಯವನ ಕಾಲಯವನ** (ಪುಂ) ಯವನರಿಗೆ ಒಡೆಯನಾದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಯಾದವರಿಗೆ ಅಜೆಯನಾದ ಒಬ್ಬ ಶತ್ರು, ಯಾದವರ ಪುರೋಹಿತರಾದ ಗರ್ಗಮುಖಿಯ ಮಗ. "ಯೇ ಚಾನ್ಯೇ ಕಾಲಯವನಸಾತ್ವಕವಿಮದ್ಭೂಮಾದಯಃ" ಮಾಘಂ ೨-೯೮ | [ಯಾದವರು ತಮ್ಮ ಪುರೋಹಿತರಾದ ಗರ್ಗಮುಖಿಯನ್ನು ಒಮ್ಮೆ ಹಾಸ್ಯಮಾಡಲಾಗಿ ಕುಪಿತರಾದ ಮುಖಿಯು ಶಿವನ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ಯಾದವರನ್ನು ಶಿಕ್ಷಿಸುವ ಮಗನೊಬ್ಬ ನನ್ನು ಅಪ್ಪರಸಿಯೊಬ್ಬಳಲ್ಲಿ ಪಡೆದು ಯಾದವರ ಶತ್ರುವಾದ ಯವನರಾಜನಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸಿದರು. ಯವನನು ವಿಶ್ವಾಸದಿಂದ ಈ ಮಗುವನ್ನು ಸಲಹಿದುದರಿಂದ ಮಗುವಿಗೆ ಕಾಲಯವನ ನೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಇವನು ಯಾದವರನ್ನೆಲ್ಲಾ ದ್ವೇಷಿಸುತ್ತಿದ್ದು ಒಮ್ಮೆ ಗುಹೆಯೊಂದರಲ್ಲಿ ಮಲಗಿ ನಿದ್ರಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಮುಚುಕುಂದನನ್ನು ಕಣಕೆ ಅವನ ದೃಷ್ಟಿಪಾತದಿಂದ ಹತನಾದನು.] ಭಾಗಂ ೧೦-೪೧ |

**ಕಾಲಯಾಪನ ಕಾಲಯಾಪನ** (ನಂ) ಕಾಲಹರಣ, ಕಾಲ ಕಳೆಯುವಿಕೆ, ಕಾಲವಿಳಂಬ. ಕಾಲಸ್ಯ ಯಾಪನಮ್ |

**ಕಾಲಯುಕ್ತ ಕಾಲಯುಕ್ತ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಭವ ಮೊದಲಾದ ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಐವತ್ತೆರಡನೆಯ ಸಂವತ್ಸರ. ಈ ಸಂವತ್ಸರದ ಫಲ: ಹಸು, ಎಮ್ಮೆ, ನಟ ನರ್ತಕರು ಇವರಿಗೆ ಹಾನಿ. ಮಳೆಯು ಚೆನ್ನಾಗಿ ನಡೆದರೂ ಪೈರುಗಳು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆಯುವುದಿಲ್ಲ. ಎಳ್ಳು, ಸಾಸವೆ, ಉದ್ದು, ಹತ್ತಿ ಇವುಗಳ ಬೆಲೆ ಹೆಚ್ಚುವುದು. ಹಸು, ಎಮ್ಮೆ, ಚಿನ್ನ, ತಾಮ್ರ ಗಳನ್ನು ಮಾರಿ ಅದರಿಂದ ಧಾನ್ಯಗಳನ್ನು ಕೂಡಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಈ ಕಷ್ಟಕಾಲವನ್ನು ಕಳೆಯಬೇಕು. ರಾಜಪೀಡೆಯು ಹೆಚ್ಚುವುದು. ಭವಿಷ್ಯಂ | (ವಿಂ) 2. ಮೃತ್ಯುವಿನೊಡನೆ ಕೂಡಿದ. ಕಾಲೇಮ ಯುಕ್ತ: | -ಯುಕ್ತಿ: -ಯುಕ್ತಿ: ಕಾಲ ದೊಡನೆ ಸೇರುವುದು.

**ಕಾಲಯೋಗ ಕಾಲಯೋಗ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಲದ ಸಂಬಂಧ. "ಮಹತಾ ಕಾಲಯೋಗೇನ ಪ್ರಕೃತಿ ಯಾಸ್ಯತೇರ್ಷವಃ" ಭಾಂ ವನಂ | 2. ಜ್ಯೋತಿಷೋಕ್ತವಾದ ಒಂದು ಯೋಗ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಕಾಲ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕಾಲಯೋಗಿನ್ ಕಾಲಯೋಗಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. ಕಾಲ ಎವ ಯೋಗೋಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) | "ಕಾಲ-ಯೋಗಿ ಮಹಾನಾದ: ಸರ್ವಕಾಮಶ್ಚತುಷ್ಠಯಃ" ಭಾಂ | 2. ಕಾಲದ ಸಂಬಂಧವುಳ್ಳ. ಕಾಲಸ್ಯ ಯೋಗೋಸ್ತಸ್ಯ |

**ಕಾಲರಾತ್ರಿ ಕಾಲರಾತ್ರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮನ ಹಗಲಿನಲ್ಲಿ ಪ್ರಪಂಚದ ಸೃಷ್ಟ್ಯಾದಿ ವ್ಯಾಪಾರವೆಲ್ಲ ಕೊನೆಗೊಂಡಮೇಲೆ ಎಲ್ಲವೂ ನಾಶವಾಗಿ ಬ್ರಹ್ಮನು ನಿದ್ರಿಸುವ ಕಾಲ, ಬ್ರಹ್ಮನ ರಾತ್ರಿ ಕಾಲ, ಪ್ರಳಯಕಾಲದ ರಾತ್ರಿ, ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಮನುಗಳ ಅಧಿಕಾರದ ಕೊನೆಯ ಕಾಲ. ಕಾಲೋ ರಾತ್ರೀವಿವಿ ಅಪ್ರಕಾಶಕತ್ವಾತ್ | ಈ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಜಗತ್ತಿನ ವ್ಯಾಪಾರವೆಲ್ಲವೂ ಶೂನ್ಯವಾಗಿರುವುದು. "ಯದಾ ಸ ದೇವೋ ಜಾಗತಿ ತದೇದಂ ಚೇಷ್ಟತೇ ಜಗತ್ | ಯದಾ ಸ್ವಪಿತಿ ಶಾಂತಾತ್ಮಾ ತದಾ ಸರ್ವಂ ನಿಮೋಲತಿ" ಮನುಂ ೧-೪೨ | "ಕಾಲರಾತ್ರಿಕರಾಲಾಸ್ಯದಂತಾಂತರ್ಗತಯಾ ಮಯಾ | ದೃಷ್ಟಾಸಿ ಸಖಿ ಸೇವ ತ್ವಂ ಪುನಶ್ಚೈವ ಜನ್ಮನಿ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೪-೨ | 2. ದುರ್ಗಾದೇವಿಯ ಒಂದು ರೂಪ. "ಕಾಲರಾತ್ರಿಮಹಾರಾತ್ರಿ-ಮೋಹರಾತ್ರಿವಿವಿ ದಾಢ್ಯಾ" ದೇವಿಮಾಂ | 3. ಮನುಷ್ಯನ ಜೀವ ಮಾನದಲ್ಲಿ 77ನೆಯ ವರ್ಷದ 7ನೆಯ ತಿಂಗಳಿನ 7ನೆಯ ರಾತ್ರಿ. [ಇದು ಒಹಳ ಕ್ರೂರ ಕಾಲ.] 4. ಕಗ್ಗತ್ತಲೆಯ ರಾತ್ರಿ. 5. ದೀಪಾವಳಿಯ ಆಮಾವಾಸ್ಯೆ. "ದೀಪಾವಳಿ ತು ಯಾ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಕಾಲರಾತ್ರಿವಿವಿ ಸಾ ಮಾತಾ" | 6. ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಅನರ್ಹವಾದ ಕಾಲ. "ರವಿ ಪಠಂ ವಿಧೌ ವೇದಂ ಕುಜವಾರೆ ದ್ವಿತೀಯಕಮ್ | ಬುಧೇ ಸಪ್ತ ಗುರೌ ಪಂಚ ಭಗುವಾರೆ ತೃತೀಯಕಮ್ | ಶನಾಬಾಧಂ ತಥಾಚಾನ್ಯಂ ರಾತ್ರೌ ಕಾಲಂ ವಿವರ್ಜಯೇತ್" |

**ಕಾಲಲೋಹ ಕಾಲಲೋಹ** (ನಂ) ಕಬ್ಬಿಣ, ಉಕ್ಕು.

**ಕಾಲವಿದ್ ಕಾಲವಿದ್** (ವಿಂ) ಕಾಲವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ, ಸಮಯವನ್ನು ಅರಿತಿರುವ. ಕಾಲಂ ವೇದ್ತಿ - ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧) | "ಯುವತ್ಯವಸಿತೇ ಕ್ರಿಯಾವಿಧೌ ಕಾಲವಿತ್ ಕುಶಿಕವಂಶವರ್ಧನಃ" ರಘುಂ ೧೧-೩೭ |

**ಕಾಲವಿಪ್ರಕರ್ಷ ಕಾಲವಿಪ್ರಕರ್ಷ** (ಪುಂ) ದೂರದ ಕಾಲ, ಹತ್ತಿರವಲ್ಲದ ಕಾಲ. ಕಾಲಸ್ಯ ವಿಪ್ರಕರ್ಷಃ |

**ಕಾಲವಿಭಕ್ತಿ ಕಾಲವಿಭಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಲ ವಿಭಾಗ, ಪಕ್ಷ ಮಾಸ ಮತ್ತು ಅಯನ ಮುಂತಾದ ಕಾಲದ ಭಾಗ. ಕಾಲಸ್ಯ ವಿಭಕ್ತಿಃ | "ಕಾಲಂ ಕಾಲವಿಭವತೀಶ್ಚ ನಕ್ಷತ್ರಾಣಿ ಗ್ರಹಾಂತಥಾ | ಸರಿತಃ ಸಾಗರಾನ್ ಶಿಲಾಂತಸಮಾನಿ ವಿಷಮಾಣಿ ಚ" ಮನುಂ



೧-೨೪। -ವಿಭಾಗ: -ವಿಭಾಗ: "ಕಾಲವಿಭಾಗೇ ಚಾನಹೋ-  
ರಾತ್ರಾಣಾಮ್" ಪಾಂ ಸುಂ ೩-೩-೧೩೭।

**ಕಾಲವೃದ್ಧಿ ಕಾಲವೃದ್ಧಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಿಗದಿಯಾದ ಆಯಾ  
ಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಕೊಡುವ ವೃದ್ಧಿ, ತಿಂಗಳು ಕಾಲವರ್ಷ  
ಅರ್ಧವರ್ಷ ಮತ್ತು ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ಕೊಡಬೇಕಾದ ಬಡ್ಡಿ.

"ನಾತಿಸಾಂವತ್ಸರೀ ವೃದ್ಧಿ ನಚಾದೃಷ್ಟಾಂ ಪುನರೇತ್ | ಚಕ್ರವೃದ್ಧಿ:  
ಕಾಲವೃದ್ಧಿ: ಕಾರಿತಾ ಕಾಯಿಕಾ ಚ ಯಾ" ಮನುಂ ೮-೧೫೩।

**ಕಾಲವೃತ್ತ ಕಾಲವೃತ್ತ** (ಪುಂ) ಹುರುಳಿಗಿಡ. ಕಾಲ ಕೃಷ್ಣ  
ವೃತ್ತಮಸ್ಯ |

**ಕಾಲವೃತ್ತಿ ಕಾಲವೃತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಸುರು ಪಾದರೀ  
ಗಿಡ.

**ಕಾಲವೇಗ ಕಾಲವೇಗ** (ಪುಂ) ವಾಸುಕಿಯ ಮಗ.

**ಕಾಲವೇಲಾ ಕಾಲವೇಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಾವ ಶುಭ  
ಕಾರ್ಯಕ್ಕೂ ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ ವೇಳೆ, ಭಾನು ಮೊದಲಾದ  
ವಾರಗಳಲ್ಲಿ ಶನಿಯ ವೇಳೆ. ಕಾಲಸ್ಯ ವೇಲಾ | ಇದು ಪ್ರತಿ  
ದಿನವೂ ಹಗಲು ಅರ್ಧಜಾವ ಮತ್ತು ರಾತ್ರಿ ಅರ್ಧಜಾವ  
ಕಾಲವಿರುವುದು. ಈ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಯಾವ ಕಾರ್ಯವನ್ನೂ  
ಮಾಡಕೂಡದು. "ನಿಷ್ಕನಂ ಪ್ರಹರಾಘ್ನಂ ತು ನಿ:ಸತ್ವಂ ಯಮಘಂಟಕೇ |  
ಕುಲಿಕೇ ಸರ್ವನಾಶ: ಸ್ಯಾತ್ ರಾತ್ರಾವೇತೇ ನ ದೋಷದಾ:" | "ನ ವಾರ-  
ದೋಷಾ: ಪ್ರಭವಂತಿ ರಾತ್ರೀ ದೇವೇಜ್ಯದೇವೇಂದ್ರದಿವಾಕರಾಣಾಮ್ | ದಿವಾ  
ಶಶಾಂಕಾರ್ಕಜಭೂತಾನಾಂ ಸರ್ವತ್ರ ನಿಂದ್ಯೋ ಬುಧವಾರದೋಷ:" |

**ನಿಷಿದ್ಧವಾದ ಅರ್ಧಯಾಮಗಳು:**

|          |  |
|----------|--|
| ಭಾನುವಾರ  | ಹಗಲು 5ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ<br>ರಾತ್ರಿ 6ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ |
| ಸೋಮವಾರ   | ಹಗಲು 2ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ<br>ರಾತ್ರಿ 4ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ |
| ಮಂಗಳವಾರ  | ಹಗಲು 6ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ<br>ರಾತ್ರಿ 7ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ |
| ಬುಧವಾರ   | ಹಗಲು 3ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ<br>ರಾತ್ರಿ 7ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ |
| ಗುರುವಾರ  | ಹಗಲು 7ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ<br>ರಾತ್ರಿ 5ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ |
| ಶುಕ್ರವಾರ | ಹಗಲು 4ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ<br>ರಾತ್ರಿ 3ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ |
| ಶನಿವಾರ   | ಹಗಲು 8ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ<br>ರಾತ್ರಿ 8ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ |

**ಕಾಲಶಾಕ ಕಾಲಶಾಕ** (ಪುಂ) ಕೆರಿಯೇವಿನ ಗಿಡ. "ಕಾಲಶಾಕಂ  
ಮಹಾಶಲ್ಕಾ: ಕ್ಷುಡ್ಗಲೋಹಾಮಿಷಂ ಮಧು | ಆನಂತರ್ಯಾಯೇವ ಕಲ್ಪಯಂತೇ  
ಮುನ್ಯಪ್ಪಾನಿ ಚ ಸರ್ವಶ:" ಮನುಂ ೩-೨೭೨।

**ಕಾಲಶಾಲಿ ಕಾಲಶಾಲಿ** (ಪುಂ) ಕಪ್ಪು ಧಾನ್ಯ, ಕೃಷ್ಣವ್ರೀಹಿ,  
ಕಪ್ಪು ಬತ್ತ.

**ಕಾಲಶಿ(ಸೇ)ಯ ಕಾಲಶಿ(ಸೇ)ಯ** (ನಂ) ಕಡೆದ ಮೊಸರು.  
ಕಲ್ಯಾಣಂ ಭವಮ್ "ಡಕ್" (೪-೩-೫೬) | "ದೃಷ್ಟಾಹತಂ ಕಾಲ-  
ಶಿಯಮ್" ಅಮಂ |

**ಕಾಲಶಿಲ ಕಾಲಶಿಲ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಪರ್ವತ. "ಉಶೀರ-  
ಬೀಜಂ ಮೈನಾಕಂ ಗಿರಿರೇ ಶ್ವೇತಂ ಚ ಭಾರತ | ಸಮತೀತೋಽಸಿ ಕೌಂತೇಯ  
ಕಾಲಶಿಲಂ ಚ ಪಾರ್ಥಿವ" ಭಾಂ ವನಂ ೧೩೯-೧।

**ಕಾಲಸಂರೋಧ ಕಾಲಸಂರೋಧ** (ಪುಂ) ಬಹಳ ಕಾಲದ  
ಪರಗೂ ಇರುವಿಕೆ. ಕಾಲಸ್ಯ ಸಂರೋಧ: | "ನ ಚಾಧೇ: ಕಾಲ-  
ಸಂರೋಧಾನ್ವಿಸರ್ಗೋಽಸ್ತಿ ನ ವಿಕ್ರಯ:" ಮನುಂ ೮-೧೪೩।

**ಕಾಲಸರ್ಪ ಕಾಲಸರ್ಪ** (ಪುಂ) 1. ಕೃಷ್ಣಸರ್ಪ, ಮದಾ ವಿಷ  
ವುಳ್ಳ ಒಂದು ಸರ್ಪ. ಕಾಲ: ಕೃಷ್ಣ: ಸರ್ಪ: | 2. ರಾಹು  
ಕೇತುಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಎಲ್ಲಾ ಗ್ರಹಗಳೂ ಸಂಚರಿಸುವುದ  
ರಿಂದುಂಟಾದ ಒಂದು ಕಟ್ಟು ಯೋಗ.

**ಕಾಲಸಾರ ಕಾಲಸಾರ** (ಪುಂ) 1. ಕೃಷ್ಣಸಾರ, ಕಪ್ಪು ಚುಕ್ಕೆ  
ಯುಳ್ಳ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. ಕಾಲ: ಕೃಷ್ಣವರ್ಣ: ಸಾರ:  
ಪ್ರಧಾನಮಸ್ಯ | (ನಂ) 2. ಹಳದಿ ಚಂದನ.

**ಕಾಲಸಾಹ್ವಯ ಕಾಲಸಾಹ್ವಯ** (ನಂ) ಕಾಲಸೂತ್ರವೆಂಬ  
ಒಂದು ನರಕ. ಕಾಲೇನ ಸಮಾನ: ಸಾಹ್ವಯೋ ಯಸ್ಯ |

**ಕಾಲಸೂತ್ರ ಕಾಲಸೂತ್ರ** (ನಂ) ಒಂದು ನರಕ. ಕಾಲಸ್ಯ  
ಯಸ್ಯ ಸೂತ್ರಮಿವ ಬಂಧನಹೇತುತ್ವಾತ್ |

**ಕಾಲಸೂರ್ಯ ಕಾಲಸೂರ್ಯ** (ಪುಂ) ಪ್ರಳಯಕಾಲದ  
ಸೂರ್ಯ.

**ಕಾಲಸ್ಕಂಧ ಕಾಲಸ್ಕಂಧ** (ಪುಂ) 1. ತಮಾಲವೃಕ್ಷ, ಹೊಂಗೆ  
ಮರ. ಕಾಲ: ಕೃಷ್ಣ: ಸ್ಕಂಧೋಽಸ್ಯ | 2. ತೋಬರಿಗಿಡ.

**ಕಾಲಹರ ಕಾಲಹರ** (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ, ಮೃತ್ಯುಂಜಯ.  
ಕಾಲಂ ಮೃತ್ಯುಂ ಹರತಿ - ಹ್ರತ್ (ಹರಣೇ) "ಅಚ್" (೩-೨-೯) |  
2. ಒಂದು ಶಿವಲಿಂಗ. "ತಸ್ಮಾತ್ಪೂರ್ವಂ ಭದ್ರಕಾಮ: ಪರ್ವತಸ್ತು  
ತ್ರಿಕೋಣಕ: | ಯತ್ರ ಕಾಲಹರೋ ನಾಮ ಶಿವಲಿಂಗಂ ವ್ಯವಸ್ಥಿತಮ್" |  
3. ಕಾಲವನ್ನು ತಿಂದುಹಾಕುವ, ಕಾಲವನ್ನು ಅಪಹರಿಸುವ.  
ಕಾಲಂ ವೇಲಾಂ ಹರತಿ |

**ಕಾಲಹರಣ ಕಾಲಹರಣ** (ನಂ) ಕಾಲ ಕಳೆಯುವಿಕೆ. ಕಾಲಸ್ಯ  
ಹರಣಮ್ |

**ಕಾಲಹಾನಿ ಕಾಲಹಾನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಾವಕಾಶ, ವಿಲಂಬ, ತಡ.  
ಕಾಲಸ್ಯ ಹಾನಿ: |



**ಕಾಲಹೋರಾ ಕಾಲಹೋರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲಗ್ನದ ಅರ್ಧಕಾಲ, ಹಗಲು ಮತ್ತು ರಾತ್ರಿ ಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಮೇಷಾದಿ ಹನ್ನೆರಡು ಲಗ್ನಾಧಿಪತಿಗಳ ಕಾಲ. ಹಗಲು ಮತ್ತು ರಾತ್ರಿಗಳನ್ನು ಹನ್ನೆರಡು ಭಾಗ ಮಾಡಿ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಭಾಗಕ್ಕೂ ಆಯಾ ಗ್ರಹಗಳನ್ನು ಹೋರಾಧಿಪತಿಗಳನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯಬೇಕು.

**ಕಾಲಹೋರಾಕ್ರಮ :**

| ವಾರ         | ಘಳಿಗೆಯ | ಗಂಟೆ       |
|-------------|--------|------------|
| ಭಾನುವಾರ     | ವರೆಗೆ  | ಯಿಂದ-ವರೆಗೆ |
| ಹಗಲು ರಾತ್ರಿ |        |            |
| ರ ಗು        | 2-30   | 6-7        |
| ಶು ಕು       | 5-00   | 7-8        |
| ಬು ರ        | 7-30   | 8-9        |
| ಚಂ ಶು       | 10-00  | 9-10       |
| ಶ ಬು        | 12-30  | 10-11      |
| ಗು ಚಂ       | 15-00  | 11-12      |
| ಕು ಶ        | 17-30  | 12-1       |
| ರ ಗು        | 20-00  | 1-2        |
| ಶು ಕು       | 22-30  | 2-3        |
| ಬು ರ        | 25-00  | 3-4        |
| ಚಂ ಶ        | 27-30  | 4-5        |
| ಶ ಬು        | 30-00  | 5-6        |

ಹೀಗೆಯೇ ಸೋಮವಾರ ಮೊದಲ್ಗೊಂಡು ಎಲ್ಲಾ ವಾರಗಳಲ್ಲೂ ಆಯಾ ವಾರಾಧಿಪತಿಯ ಹೋರೆಯು ಪ್ರಾರಂಭವಾಗುವುದು. ಸೌಮ್ಯಗ್ರಹಗಳ ಹೋರೆಯಲ್ಲಿ ಶುಭ ಕಾರ್ಯ ಮಾಡಬೇಕು.

**ಕಾಲಾ ಕಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಕ್ಷಬ್ರಹ್ಮನ ಮಗಳು, ಕಶ್ಯಪನ ಪತ್ನಿ. "ಪ್ರಜಾಪತೇರೇ ಮಹಾಭಾಗ ದಕ್ಷಕನ್ಯಾಸ್ತ್ರಯೋದಶಃ | ಅದಿತಿ-ದಿತಿರ್ದನುಃ ಕಾಲಾ ದನಾಯುಃ ಸಿಹಿಕಾ ತಥಾ" ಭಾಂ. ಆದಿಂ. ೬೬-೧೨. 2. ಮಂಜಿಷ್ಠ. 3. ಅಶ್ವಗಂಧಿಯ ಗಿಡ. 4. ಹಸುರು ಪಾದರೀ ಗಿಡ. 5. ಕರಿ ಜೀರಿಗೆ. 6. ದುರ್ಗಾ ದೇವಿ. 7. ಕರಿ ತಿಗಡೆ. 8. ನೀಲಿ ಗಿಡ. "ಕಾಲಾ ತು ಕೃಷ್ಣಾ ತ್ರಿವೃತಾ ಮಜ್ಜಿಷ್ಠಾನಿಲಿನಿಪು ಚ" ಮೇದಿಂ. 1.

**ಕಾಲಾಕ್ಷರಿಕ ಕಾಲಾಕ್ಷರಿಕ** (ವಿಂ) ಸರಿಯಾದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಕಲಿತವನು, ವಿದ್ಯೆ ಕಲಿತವನು. ಕಾಲೇ ಅಕ್ಷರಂ ವೇತ್ತಿ - ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಠಕ್" (೪-೨-೬೦) |

**ಕಾಲಾಗುರು ಕಾಲಾಗುರು** (ನಂ) ಕೃಷ್ಣಾಗುರು.

**ಕಾಲಾಗ್ನಿ ಕಾಲಾಗ್ನಿ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಳಯಕಾಲದ ಅಗ್ನಿ. ಕಾಲಃ ಸಕಲಹಿಸಕೋಽಗ್ನಿಃ. 2. ರುದ್ರ. 3. ಪಂಚಮುಖ

ರುದ್ರಾಕ್ಷ. "ಪञ्चವಕ್ತ್ರಃ ಸ್ವಯಂ ರುದ್ರಃ ಕಾಲಾಗ್ನಿರನಿಮಿ ನಾಮತಃ | ಅಗಮ್ಯಾಗಮನಾಚ್ಚವ ಅಭಕ್ಯಸ್ಯ ಚ ಭಕ್ಷಣಾತ್ | ಮುಚ್ಯತೇ ಸರ್ವ-ಪಾಪೇಭ್ಯಃ ಪञ್ಚವಕ್ತ್ರಸ್ಯ ಧಾರಣಾತ್" ಸ್ಕಾಂದಂ. 1.

**ಕಾಲಾಗ್ನಿರೂಪ ಕಾಲಾಗ್ನಿರೂಪ** (ಪುಂ) ಪ್ರಳಯಕಾಲದ ಅಗ್ನಿಯಂತಿರುವ ರುದ್ರ. ಕಾಲಾಗ್ನಿರೀವ ರುದ್ರಃ |

**ಕಾಲಾಜಿನ ಕಾಲಾಜಿನ** (ನಂ) ಕೃಷ್ಣಾಜಿನ, ಕೃಷ್ಣಮೃಗದ ಚರ್ಮ. ಕಾಲಸ್ಯ ಕೃಷ್ಣಮೃಗಸ್ಯ ಅಜಿನಮ್ |

**ಕಾಲಾಜ್ಜನ ಕಾಲಾಜ್ಜನ** (ನಂ) ಕಣ್ಣು ಕಪ್ಪು. ಕಾಲ-ಮಜ್ಜನಮ್ | "ನ ಚಕ್ಷುಃ ಕಾಂತಿವಿಶೇಷಬುದ್ಧ್ಯಾ ಕಾಲಾಜ್ಜನಂ ಮಜ್ಜಲಮಿತ್ಯುಪಾತ್ತಮ್" ಕುಮಾಂ. ೭-೨೦ |

**ಕಾಲಾಂಜ ಕಾಲಾಂಜ** (ಪುಂ) ಕೋಗಿಲೆ.

**ಕಾಲಾತಿಕ್ರಮ ಕಾಲಾತಿಕ್ರಮ** (ಪುಂ) ಕಾಲ ಮೀರುವುದು.

**ಕಾಲಾತಿಕ್ರಮಣ ಕಾಲಾತಿಕ್ರಮಣ** (ನಂ) ಕಾಲ ಮೀರುವುದು. ಕಾಲಸ್ಯಾತಿಕ್ರಮಣಮ್ |

**ಕಾಲಾತಿಪತ್ತಿ ಕಾಲಾತಿಪತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಲ ಮೀರುವುದು, ಕಾಲ ಕಳೆದುಹೋಗುವುದು. ಕಾಲಸ್ಯಾತಿಪತ್ತಿಃ |

**ಕಾಲಾತಿಪಾತ ಕಾಲಾತಿಪಾತ** (ಪುಂ) ಕಾಲಾತಿಕ್ರಮ, ಕಾಲವು ಮೀರುವುದು, ಕಾಲವು ಕಳೆದುಹೋಗುವುದು. ಕಾಲಸ್ಯಾತಿಪಾತಃ |

**ಕಾಲಾತಿರೇಕ ಕಾಲಾತಿರೇಕ** (ಪುಂ) ಕಾಲದ ಅಧಿಕ, ಹೆಚ್ಚು ಕಾಲ. ಕಾಲಸ್ಯಾತಿರೇಕಃ | "ಕಾಲಾತಿರೇಕೇ ದ್ವಿಗುಣಂ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತಂ ಸಮಾಚರೇತ್" |

**ಕಾಲಾತಿತ ಕಾಲಾತಿತ** (ವಿಂ) 1. ಕಾಲವು ಮೀರಿರುವಿಕೆ, ಕಾಲಾತಿಕ್ರಮ. (ವಿಂ) 2. ಕಾಲವು ಮೀರಿರುವ, ಕಾಲವು ಅತಿಕ್ರಮಿಸಿರುವ. ಅತಿತಃ ಕಾಲೋಽಸ್ಯ | ಪರಿನಿಪಾತಃ |

**ಕಾಲಾತ್ಮನ್ ಕಾಲಾತ್ಮನ್** (ಪುಂ) ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಕಾಲಃ ಆತ್ಮಾಽಸ್ಯ | "ಕಾಲಾತ್ಮಾ ಕಾಲಕೃದಿಭುಃ" ಸುಂ. ಸಿಂ. 1.

**ಕಾಲಾತ್ಯಯ ಕಾಲಾತ್ಯಯ** (ಪುಂ) "ಕಾಲಾತಿತ" ಪದದ 1ನೆಯ ಅರ್ಥ. "ಆಧಿಶ್ವರೋಪನಿಧಿಶ್ವರೋನಿ ಕಾಲಾತ್ಯಯ-ಮಹತಃ" ಮನುಂ. ೮-೧೪೫ |

**ಕಾಲಾತ್ಯಯಾಪದಿಷ್ಠ ಕಾಲಾತ್ಯಯಾಪದಿಷ್ಠ** (ಪುಂ) ಐದು ವಿಧ ಹೇತ್ವಾಭಾಸಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ಹೇತು ದೋಷ. ಕಾಲಾತ್ಯಯೇನಾಪದಿಷ್ಠಃ | ["ಹೇತ್ವಾಭಾಸ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕಾಲಾಧ್ಯಕ್ಷ ಕಾಲಾಧ್ಯಕ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. 2. ಸೂರ್ಯ. ಕಾಲಸ್ಯಾಧ್ಯಕ್ಷಃ | "ಕಾಲಾಧ್ಯಕ್ಷಃ ಪ್ರಜಾಧ್ಯಕ್ಷೋ ವಿಶ್ವಕರ್ಮಾ ತಮೋನುಃ" ಭಾಂ. ವನಂ. 1.



**ಕಾಲಾನಲ ಕಾಲಾನಲ (ಪುಂ)** 1. ಕಾಲಾನಲ, ಪ್ರಳಯ ಕಾಲದ ಬೆಂಕಿ. ಕಾಲ: ಸರ್ವಸಂಹಾರಕಾರಕ: ಅನಲ:। “ದಂಟಾ ಕರಾಲಾನಿ ಚ ತೇ ಮುಖಾನಿ ದೃಷ್ಟ್ವೇವ ಕಾಲಾನಲಸನ್ನಿಭಾನಿ” ಗೀತಾ ೧೧-೨೫। 2. ಒಬ್ಬ ರಾಜ. “ಸಮಾನರಸ್ಯ ಪುತ್ರಸ್ತು ವಿಧ್ವಾನ್ ಕಾಲಾನಲೋ ನೃಪ:”।

**ಕಾಲಾನುನಾದಿನ್ ಕಾಲಾನುನಾದಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. 2. ಗುಬ್ಬಿಚ್ಚಿ. 3. ಕಪಿಜಲಪಕ್ಷಿ. ಕಾಲೇ ವರ್ಷ-ಕಾಲೇ ಅನುನದತಿ-ಅನು+ಣದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) “ಞಿನಿ:” (೩-೨-೭೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ “ಜಿಷ್” (೪-೧-೪೧)। -ನಾದಿನಿ-ನಾದಿನ್. “ಕಾಲಾನುನಾದಿ ರೋಮ್ಬೇ ಕಲವಿಜ್ಞೇ ಕಪಿಜಲೇ” ಮೇದಿಂ।

**ಕಾಲಾನುಸಾರಕ ಕಾಲಾನುಸಾರಕ (ನಂ)** 1. ಪೀತಗಂಧ, ಹಳದಿ ಬೆಂದನ. ಕಾಲಂ ಕೃಷ್ಣವರ್ಣ ಮೃಗಮದಮನುಸರತಿ-ಅನು+ಸೃ (ಗತೌ) “ಪ್ಪುಲ್” (೩-೧-೧೩೩)। (ವಿಂ) 2. ಕಾಲ ವನ್ನು ಅನುಸರಿಸುವ. “ಞಿನಿ:” (೩-೨-೭೮)। -ಅನುಸಾರಿನ್ -ಅನುಸಾರಿನ್.

**ಕಾಲಾನುಸಾರ್ಯ ಕಾಲಾನುಸಾರ್ಯ (ನಂ)** 1. ಕಲ್ಲು ಹೂವು. ಕಾಲೋ ಮೃಗಮದೋ ಗಂಧನಾನುಸಾರ್ಯೋ ಯಸ್ಯ। “ಕಾಲಾನುಸಾರ್ಯ-ವೃದ್ಧಾಶಮಪುಷ್ಪಶೀತಶಿವಾನಿ ಚ”। 2. ಒಂದು ವಿಧ ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯ. “ಕಾಲೇಯಕಂ ಚ ಕಾಲಾನುಸಾರ್ಯಮ್” ಅಮಂ। 3. ಅಗುರು ಗಿಡ. “ಕಾಲಾನುಸಾರ್ಯ ಶೇಲೇಯೇ ಕಾಲೀಯೇ ಶಿಶುಪಾದ್ರುಮೇ” ಮೇದಿಂ। ವಾ “ಕಪ್”। -ಸಾರ್ಯಕಮ್ -ಸಾರ್ಯಕಮ್.

**ಕಾಲಾಂತರ ಕಾಲಾಂತರ (ನಂ)** ಬೇರೆ ಸಮಯ, ಮತ್ತೊಂದು ಕಾಲ. ಅನ್ಯ: ಕಾಲ:।

**ಕಾಲಾಪಕ ಕಾಲಾಪಕ (ನಂ)** 1. ಕಲಾಪಿಯಿಂದ ಪ್ರೋಕ್ತ ವಾದ ಶಾಖೆಯ ಧರ್ಮ.

**ಕಾಲಾಘ್ರ ಕಾಲಾಘ್ರ (ನಂ)** ನೀರಿನಿಂದ ತುಂಬಿದ ಕಪ್ಪು ಮೋಡ, ನೀಲಮೋಘ.

**ಕಾಲಾಘ್ರ ಕಾಲಾಘ್ರ (ಪುಂ)** ಒಂದು ದ್ವೀಪ. “ಕುರುನ್ ಯಾತ್ಯುತ್ತರಾನ್ ವೀರ ಕಾಲಾಘ್ರದ್ವೀಪಮೇವ ಚ”।

**ಕಾಲಾಯಸ ಕಾಲಾಯಸ (ನಂ)** ಕಪ್ಪು ಲೋಹ, ಕಬ್ಬಿಣ. ಕಾಲಮಯ: ಜಾತೌ “ಟಕ್” (೪-೪-೯೪)।

**ಕಾಲಾಶುಧಿ ಕಾಲಾಶುಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ವೇಳೆಯ ಅಶುದ್ಧಿ, ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಅನರ್ಹತೆಯನ್ನು ಕೊಡುವ ಒಂದು ಧರ್ಮ. ಗುರುಶುಕ್ರರ ವಕ್ರತೆ, ಅತಿಚಾರ, ವೃದ್ಧತ್ವ, ಅಸ್ತ, ಬಾಲತ್ವ ಮುಂತಾದುವು ಕಾಲಕ್ಕೆ ಅನರ್ಹತೆಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವವು. ಇದರಿಂದ ಕಾಲವು ಅಶುದ್ಧವಾಗು

ವುದು. “ವಕ್ರಾತಿಚಾರವೃದ್ಧಾಸ್ತಬಾಲತ್ವೇ ಗುರುಶುಕ್ರಯೋ:। ಗುರೌ ಮಕರಸಿಂಹಸ್ಯೇ ಕ್ಷಯಮಾಸದ್ವಿಮಾಸಯೋ:। ತ್ರಯೋದಶಾದಿನೇ ಪಕ್ಷೇ ಗುರ್ವಾ-ದಿಸ್ಯೇ ತಥೈವ ಚ। ಲುಪ್ತಾಬ್ದೇ ತ್ರಿವಿಧೋತ್ಪಾತೇ ಕಾಲಾಶುಧಿ-ರೂದಾಹತ:”।

**ಕಾಲಿಕ ಕಾಲಿಕ (ಪುಂ)** 1. ಬಕಪಕ್ಷಿ. ಕಾಲೇ ವರ್ಷಕಾಲೇ ಚರತಿ - “ಠಕ್”। 2. ಸುಂಕದ ಕಟ್ಟೆಯ ಅಧಿಕಾರಿ, ತೆರಿಗೆಯನ್ನು ವಸೂಲು ಮಾಡುವ ಅಧಿಕಾರಿ. “ಕಾಲಿಕೋಽಧಿಕೃತ: ಶುಲ್ಕೇ” ವೈಜಂ। (ನಂ) 3. ದೀರ್ಘಕಾಲವುಳ್ಳ ಪೈರ, ಹೆಚ್ಚುಕಾಲವುಳ್ಳ ಶತ್ರುತ್ವ. ಕಾಲ “ಠಕ್” (೪-೧-೧೦೮)।

**ಕಾಲಿಕಾ ಕಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಅಂಜಿಕೆ, ಪಾರ್ವತಿಯ ಒಂದು ಅವತಾರ, ಶಿವಶಕ್ತಿ. 2. ಕಪ್ಪು ಬಣ್ಣ. “ಬಹುವಿಧೇನ ವಿಯೋಗವಿಧೇನಸಾ ಶಶಮಿಷಾದಯ ಕಾಲಿಕಯಾಚ್ಛಿತ:” ನೈಷಂ ೪-೭೩। 3. ಕ್ರಮವಾಗಿ ಕೊಡತಕ್ಕ ಪದಾರ್ಥಗಳ ಬೆಲೆ, ಕಂತುಗಳಲ್ಲಿ ಕೊಡುವ ವಸ್ತುಗಳ ಮೌಲ್ಯ. 4. ಹೊಸ ಮೋಡ. 5. ಮೋಡಗಳ ಸಾಲು. 6. ಹೆಣ್ಣು ಕಾಗೆ. 7. ಹೆಣ್ಣು ನರಿ. 8. ಮದ್ಯ. 9. ವೃತ್ತಿ ಕಪತ್ರೆ ಗಿಡ. 10. ಕ್ಲೃಪ್ತ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಪಾವತಿ ಮಾಡಿದ ಬಡ್ಡಿ. 11. ಜಟಾಮಾಂಸ. 12. ರೋಮಪಟ್ಟಿ, ಕೂದಲಿನ ಸಾಲು. “ಕಾಲಿಕಾ ಚಂಡಿಕಾಭೇದೇ ಕಾಣ್ಯವೃತ್ತಿಚಕಪತ್ರಯೋ:। ಕ್ರಮದೇಯ-ವಸ್ತುಮೌಲ್ಯೇ ಭೂಸರೀನವಮೇಧಯೋ:। ಪಟಲಶಾಖಾರೋಮಾಲಿಮಾಂಸಿ-ಕಾಕೋಶಿವಾಸು ಚ। ಮೇಧಾವಲೌ ಚ” ಮೇದಿಂ। 13. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಸುವಾಸನೆಯ ಮಣ್ಣು. 14. ಗಿಡ್ಡ ಹೆಂಗಸು, ಮದುವೆಗೆ ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ ಕುಳ್ಳು ಹೆಂಗಸು. “ಕುಂಜಾ ತು ದುರ್ದರ್ಶಾ ಕಾಲಿಕಾಽಪಿ ಚ” ವೈಜಂ। 15. ಕುದುರೆಯ ಹಲ್ಲುಗಳ ಸಾಲು. “ಕಶ್ಯಮಶ್ವಸ್ಯ ಮಧ್ಯಂ ಸ್ಯಾಹಂತವೇಷ್ಠಸ್ತು ನಾಲಿಕಾ। ಕಾಲಿಕಾ ದಂತರೇಖಾ ಸ್ಯಾತ್” ವೈಜಂ। 16. ಸಣ್ಣ ಜೀರಿಗೆ. “ಅಥ ಸೂಕ್ಸಮೋಽಸೌ ಕಣಜೋರಣ ಆಸರ:। ಅಗ್ನಿಮನ್ಯೋ ಹೃದ್ಯಗಂಧಸ್ಸುಗಂಧಿ: ಕಾಲಿಕಾ ಕಣಾ” ವೈಜಂ। 17. ವೈವರ್ಣ್ಯ ಹೊಂದುವುದು, ಬಣ್ಣ ಬದಲಾಯಿಸು ವುದು. “ಕಾಲಿಕಾ ತು ವಿವರ್ಣತಾ” ವೈಜಂ। 18. ಮಸಿ, ಶಾಯಿ. 19. ಬೆಂಕಿಯಲ್ಲಿ ಕಾಯಿಸುವಾಗ ಚಿನ್ನದಲ್ಲಿ ಕಾಣುವ ಕೊಳೆ. 20. ವರುಣನ ಪತ್ನಿ.

**ಕಾಲಿಂಗ ಕಾಲಿಂಗ (ಪುಂ)** 1. ಕಳಿಂಗ ದೇಶದ ರಾಜನ ಮಗ. ಕಾಲಿಂಗಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ “ಅಞ್” (೪-೧-೧೬೮)। 2. ಕಳಿಂಗ ದೇಶದ ದೊರೆ. “ಪ್ರತಿಜಗ್ರಾಹ ಕಾಲಿಂಗ: ತಮಸ್ತ್ರೈರ್ಗಜಸಾಧನ:” ರಘುಂ ೪-೪೦। (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 3. ಕಳಿಂಗ ದೇಶದ ಜನರು. (ವಿಂ) 4. ಕಳಿಂಗ ದೇಶದ



ರಾಜರಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. "ಚಕ್ರಲಿಂಗಧರಾಂಶಕೇ ಕಾಲಿಂಗಾನ್  
ಕಿಂಕರೀಕೃತಾನ್" ಯಾದಂ ೨೨-೧೪೩.

**ಕಾಲಿದಾಸ ಕಾಳಿದಾಸ (ಪುಂ)** ವಿಶ್ವವಿಖ್ಯಾತನಾದ ಕಾಳಿದಾಸ  
ಕವಿ, ರಘುವಂಶ ಕುಮಾರಸಂಭವ ಮುಂತಾದ ಕಾವ್ಯ  
ಗಳನ್ನೂ ಶಾಕುಂತಲ ಮುಂತಾದ ನಾಟಕಗಳನ್ನೂ ಬರೆದ  
ಮಹಾಕವಿ. ಕಾಲ್ಯಾ: ದಾಸ: | ಸಂಜಾಯಾಂ ಹಸ್ವ: | ಕಾಳಿದಾಸ  
ಮಹಾಕವಿಯ ಕಾಲ ದೇಶ ವಿಚಾರದಲ್ಲಿ ನಾನಾ ವಾದವಿವಾದ  
ಗಳು ಹುಟ್ಟಿ ಅವರವರಿಗೆ ತೋರಿಬಂದ ಕಾರಣಗಳಿಂದ  
ಒಬ್ಬೊಬ್ಬ ವಿಮರ್ಶಕಾರರೂ ಒಂದೊಂದು ಕಾಲವನ್ನು  
ನಿರ್ದೇಶಿಸುತ್ತ ಬಂದಿರುವುದರಿಂದ ಕ್ರಿಸ್ತಪೂರ್ವ ಒಂದನೆಯ  
ಶತಮಾನದಿಂದ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ಸದ್ಯ: ಕ್ರಿಸ್ತಶಕ ಐದನೆಯ  
ಶತಮಾನಕ್ಕೆ ತಂದು ನಿಲ್ಲಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. "ಮತೋಽಪ್ಯುನಾ  
ಕೃತಿರಿಯಂ ಸತಿ ಮಾಲವೇಂದ್ರೇ ಶ್ರೋವಿಕರ್ಮಾಕಂಠಪರಾಜವರೇ ಸಮಾಸೀತ್"  
ಎಂಬ ಈ ಕವಿರಚಿತವಾದ ಜ್ಯೋತಿರ್ವಿದ್ಯಾಭರಣಶ್ಲೋಕ  
ದಿಂದಲೂ "ಧನ್ವಂತರಿ: ಕ್ಷಣಕೋಽಮರಸಿಂಹಶತ್ಕುಬೇತಾಲ-  
ಭದ್ರಘಟಕರ್ಪರಕಾಲಿದಾಸಾ: | ಖ್ಯಾತೋ ವರಾಹಮಿಹಿರೋ ನೃಪತೇ:  
ಸಮಾಸಾಂ ರತ್ನಾನಿ ವೈ ವರಕವಿರ್ನವ ವಿಕರ್ಮಸ್ಯ" ಮತ್ತು  
"ಶತ್ಕವಾದಿಪಂಡಿತವರಾ: ಕವಯಸ್ತವನೇಕೇ ಜ್ಯೋತಿರ್ವಿದ:  
ಸಮಭವಂಶ ವರಾಹಪೂರ್ವಾ: | ಶ್ರೋವಿಕರ್ಮಸ್ಯ ಬೃಹಸಂಸಾದಿ ಪ್ರಾಜ್ಯಬುದ್ಧೇ:  
ತೀರಪ್ಯಯಂ ನಯಸಖ: ಕಿಲ ಕಾಲಿದಾಸ:" ಈ ಶ್ಲೋಕಗಳಿಂದಲೂ  
ಈ ಮಹಾಕವಿಯು ಮಾಳವದೇಶದ ಉಜ್ಜಯಿನಿಯಲ್ಲಿ  
ಐದನೆಯ ಶತಮಾನದ ವಿಕ್ರಮಾರ್ಕರಾಜನ ಆಸ್ಥಾನ  
ಪಂಡಿತರಲ್ಲೊಬ್ಬನಾಗಿದ್ದನೆಂದು ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ.  
"ಕಾವ್ಯತ್ರಯಂ ಸುಮತಿಕೃತ್ ರಘುವಂಶಪೂರ್ವಂ ಜಾತಂ ಯತೋ ನನು  
ಕಿಯಂಚ್ಚ ತಿಕರ್ಮವಾದ: | ಜ್ಯೋತಿರ್ವಿದಾಭರಣಕಾಲವಿಧಾನಶಾಸ್ತ್ರಂ  
ಶ್ರೀಕಾಲಿದಾಸಕವಿತೋ ಹಿ ತತೋ ಬಭೂವ" ಎಂಬ ಶ್ಲೋಕದಿಂದ  
ಈ ಮಹಾಕವಿಯು ರಘುವಂಶ ಮೊದಲಾದ ಮೂರು  
ಕಾವ್ಯಗಳನ್ನೂ ಜ್ಯೋತಿರ್ವಿದ್ಯಾಭರಣವೆಂಬ ಜ್ಯೋತಿಷ  
ಗ್ರಂಥವನ್ನೂ ರಚಿಸಿರುವನೆಂದು ತಿಳಿದುಬರುವುದು.  
ಕುಮಾರಸಂಭವ, ಮೇಘದೂತ ಮತ್ತು ರಘುವಂಶಗಳು  
ಈ ಮಹಾಕವಿರಚಿತವೆಂದು ಈ ಕೆಳಗೆ ಕಂಡ ಐತಿಹ್ಯ  
ದಿಂದಲೂ ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ. ಮಹಾವಿದುಷಿಯಾದ  
ಒಬ್ಬ ಕನ್ಯೆಯು ತನ್ನ ತಂದೆಯು ತನ್ನ ವಿವಾಹಕ್ಕಾಗಿ ಕರೆ  
ತರಿಸಿದ ಅನೇಕ ಮಂದಿ ವಿದ್ವಾಂಸರನ್ನು ವಾದದಲ್ಲಿ ಜಯಿಸಿ  
ಅವರಾರನ್ನೂ ವರಿಸಲು ಒಪ್ಪದೆ ಕಳುಹಿಸಿಬಿಡುತ್ತಿರಲು  
ಪರಾಜಯ ಭಯದಿಂದ ಮತ್ತಾರೂ ಬರುತ್ತಲೇ ಇರಲಿಲ್ಲ.  
ಇವರಿಂದ ಕ್ರೋಧಿಸಿರಗೊಂಡ ತಂದೆಯು ಇನ್ನು ಮಂದೆ  
ಶಾಸ್ತ್ರಾರ್ಥವಿಚಾರವೇ ಇಲ್ಲದೆ ಯಾರು ಬಂದರೂ ಕನ್ಯೆ  
ಯನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ವಿವಾಹ ಮಾಡಿಕೊಡುವುದಾಗಿ ನಿಶ್ಚಯಿಸಿ

ದನು. ಹಿಂದೆ ಬಂದಿದ್ದವರಾರೂ ಪುನಃ ಬರಲು ಸಮ್ಮತಿಸ  
ದಿರಲು ದೂತರು ಬಹಳ ಬೇಜಾರಿನಿಂದ ವರನನ್ನು  
ಹುಡುಕುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಒಂದು ಮರದ ಮೇಲೆ ರೆಂಬೆಯ ತುದಿ  
ಯಲ್ಲಿ ನಿಂತು ಬುಡವನ್ನು ಕಡಿಯುತ್ತಿದ್ದ ಕಾಳಿದಾಸನನ್ನು  
ಕಂಡು ಈ ಮಂದಮತಿಯೇ ಈ ಕನ್ಯೆಗೆ ಯೋಗ್ಯ ವರನೆಂದು  
ತಿಳಿದು ಅವನನ್ನು ಕರೆತರಲು ತಂದೆಯು ಅವನ ಗುಣ  
ದೋಷಗಳನ್ನು ವಿಚಾರಮಾಡದೆ ಮಗಳನ್ನು ಕೊಟ್ಟು  
ವಿವಾಹ ನಡೆಯಿಸಿದನು. ಬಳಿಕ ದಂಪತಿಗಳ ಸಂಭಾಷಣ  
ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕಾಳಿದಾಸನ ಅಪಭ್ರಂಶ ಪದಪ್ರಯೋಗಗಳನ್ನು  
ಕಂಡ ಪತ್ನಿಯು ಜುಗುಪ್ಸೆಯಿಂದ ಇವನನ್ನು ಮನೆಯಿಂದ  
ಓಡಿಸಿದಳು. ಆಗ ಕಾಳಿದಾಸನು ಬಹಳ ಖಿನ್ನನಾಗಿ ಕಾಡಿಗೆ  
ಹೋಗಿ ಸರಸ್ವತಿಯ ಉಪಾಸನೆ ಮಾಡಿ ಆ ದೇವಿಯ  
ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ಅಪಾರ ಪಾಂಡಿತ್ಯವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿ ಮನೆಗೆ  
ಹಿಂತಿರುಗಿದನು. ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಇವನು ಮನೆಗೆ ಬಂದಾಗ  
ಬಾಗಿಲು ಹಾಕಿದ್ದುದನ್ನು ಕಂಡು "ಅನಾವೃತಕವಾಟಂ ದ್ವಾರಂ  
ದೇಹಿ" ಎಂದನು. ಇವನ ಧ್ವನಿಯನ್ನು ಕೇಳಿದ ಪತ್ನಿಯು  
ತನ್ನ ಪತಿಯೆಂದು ತಿಳಿದು "ಅಸ್ತಿ ಕಶ್ಚಿತ್ ವಾಗ್ವಿಶೇಷ:?"  
ಎಂದು ಕೇಳಿದಳು. ಆಗ ಈ ಮಹಾಕವಿಯು ಅಸ್ತಿ ಕಶ್ಚಿತ್  
ವಾಕ್ ಈ ಮೂರು ಪದಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು "ಅಸ್ಮಯುತ-  
ರಸ್ಯಾಂ ದಿಶಿ ದೇವತಾತ್ಮಾ" ಎಂದು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ಕುಮಾರಸಂಭವ  
ಕಾವ್ಯವನ್ನೂ "ಕಶ್ಚಿತ್ ಕಾಂತಾವಿರಹಗುಣಾ" ಎಂದು  
ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ಮೇಘದೂತಕಾವ್ಯವನ್ನೂ "ವಾಗ್ವಿಶೇಷ-  
ಸಂಪ್ರಕೃತೌ" ಎಂದು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ರಘುವಂಶವೆಂಬ ಕಾವ್ಯ  
ವನ್ನೂ ರಚಿಸಿದುದಾಗಿ ಕಥೆಯಿರುವುದು. ಈ ಕಾವ್ಯಗಳ  
ರಚನೆಯಿಂದ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಪಡೆದ ಈ ಕವಿಯು ವಿಕ್ರಮಾದಿತ್ಯನ  
ಆಸ್ಥಾನಪಂಡಿತನಾದನು. ಮತ್ತು ಈ ಮಹಾಕವಿಯು  
ಶಾಕುಂತಲ, ಮಾಲವಿಕಾಗ್ನಿಮಿತ್ರ ಮತ್ತು ವಿಕ್ರಮೋರ್ವ  
ಶೀಯಗಳೆಂಬ ನಾಟಕಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುವನು. "ಪ್ರಥಿತಯಶಸಾಂ  
ಭಾಸಸೌಮಿಲ್ಲಕವಿಪುತ್ರಾದೀನಾಂ ಪ್ರಬಂಧಾನತಿಕ್ರಮ್ಯ ವರ್ತಮಾನಕವಿ:  
ಕಾಲಿದಾಸಸ್ಯ ಕೃತೌ ಕಥಂ ಬಹುಮಾನ:" ಎಂಬ ಮಾಲವಿ  
ಕಾಗ್ನಿಮಿತ್ರದ ವಚನದಿಂದ ಮಾಲವಿಕಾಗ್ನಿಮಿತ್ರ ನಾಟಕವು  
ಕಾಳಿದಾಸವಿರಚಿತವೆನ್ನಬಹುದಾದರೂ ಭೋಜದೇವನಿ  
ಗಿಂತಲೂ ಪ್ರಾಚೀನನಾಗಿದ್ದ ಧನಿಕನಿಂದ ಈ ನಾಟಕವು  
ಉದಾಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದರಿಂದಲೂ ಶಾಕುಂತಲನಾಟಕ  
ಕ್ಕಿಂತಲೂ ವಿಭಿನ್ನವಾದ ಶೈಲಿಯು ಇದರಲ್ಲಿರುವುದ  
ರಿಂದಲೂ ಈ ಕಾಳಿದಾಸನಿಗಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದ  
ಮತ್ತೊಬ್ಬ ಕಾಳಿದಾಸನಿಂದ ರಚಿತವಾಗಿರಬಹುದೆಂದೂ  
ಒಂದು ಅಭಿಪ್ರಾಯವಿದೆ. ಆದರೆ ಮಾಲವಿಕಾಗ್ನಿಮಿತ್ರವು  
ಪ್ರಾರಂಭದ ಗ್ರಂಥವಾದುದರಿಂದ ಶೈಲಿಯು ಭಿನ್ನವಾಗಿರ



ಬಹುದೆಂದೂ ಕೆಲವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. ದಂಡಿ ಕವಿಯ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಪದಲಾಲಿತ್ಯವೂ ಭಾರವಿ ಕವಿಯ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಅರ್ಥಗೌರವವೂ ಇರುವಂತೆ ಕಾಳಿದಾಸನ ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಉಪಮಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯವಿರುವುದು. “उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्। दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः”।

**ಕಾಲಿನಿ ಕಾಲಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆರಿದ್ರಾನ್ವಿತ. 2. ಹೊಕ್ಕುಳ ಬಳ್ಳಿ. “निष्ठया स्वातीविशाखे तु राधे आर्द्रा तु कालिनी”। “बालस्य नाभिनालायाममरा कालिनीति च” वंज०।

**ಕಾಲಿಂದ ಕಾಳಿಂದ** (ಪುಂ) 1. ಕಲ್ಲಂಗಡಿ ಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಕಲ್ಲಂಗಡಿ ಹಣ್ಣು. ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕ:”। -कम् -कम्.

**ಕಾಲಿಂದಿ ಕಾಳಿಂದೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಮುನಾನದಿ. ಕಲಿಂದೆ ಮವಾ “अण्” (४-३-५३)। ಕಲಿಂದಸ್ಯೇ “अण्” (४-३-१२०) ವಾ। “डीप्” (४-१-१५)। “कालिन्दीजल-जनितश्रियः श्रयन्ते वैदग्धीमिह सरितः सुरापगायाः” माघ० ४-२६।

**ಕಾಲಿಂದೀಕರ್ಷಣ ಕಾಳಿಂದೀಕರ್ಷಣ** (ಪುಂ) ಬಲರಾಮ. ಕರ್ಷತಿ - कृष (विलेखने) “ल्यु:” (३-१-१३४)। ಕಾಲಿಂದಾ: ಕರ್ಷಣ:। [ಬಲರಾಮನು ಯಮುನಾ ತೀರದಲ್ಲಿ ವಿಹರಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಜಲಕ್ರೀಡೆಗಾಗಿ ಯಮುನೆಯು ತನ್ನ ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬರಬೇಕೆಂದು ಹೇಳಿದನು. ಯಮುನೆಯು ಬರದಿರಲು ತನ್ನ ಹಲದಿಂದ ಯಮುನೆಯ ಪ್ರವಾಹವನ್ನು ಎಳೆದಾಗ ಹೆದರಿದ ಯಮುನೆಯು ಬಲರಾಮನ ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದು ಹರಿಯುತ್ತಾ ಸ್ತೀರೂಪದಿಂದ ಬಲರಾಮನನ್ನು ನಾನಾ ಬಗೆಯಾಗಿ ಸ್ತುತಿಸಿ ನೀಲಾಂಬರ, ಪುಷ್ಪಮಾಲೆ ಮತ್ತು ಅನೇಕ ಆಭರಣಗಳನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಕಳುಹಿಸಿದಳು.] भाग० १०-६५। कालिन्द्या: भेदनः। -भेदनः -भेदनः.

**ಕಾಲಿಂದೀಸು ಕಾಳಿಂದೀಸೂ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಳಿಂದಿಯ ತಾಯಿ, ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ. ಕಾಲಿಂದೀ ಯಮುನಾ ಸುತೆ - षूङ् (प्राणिगर्भविमोचने) “क्विप्” (३-२-६१)।

**ಕಾಲಿಮನ್ ಕಾಳಿಮನ್** (ಪುಂ) ಕೃಷ್ಣವರ್ಣ, ಕಪ್ಪು ಬಣ್ಣ. ಕಾಲಸ್ಯ ಮಾವ: “इमनिच्” (५-१-१२२)। “या विभति कलवल्लकीगुणस्वानमानमतिकालिमाञ्जया” माघ० ४-५७।

**ಕಾಲಿಯ ಕಾಳಿಯ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಸರ್ಪ. ಕೆ ಜಲೆ ಖಾಲಿಯತೆ - आ + लीङ् (संश्लेषणे) “क:” (वा० ३-२-५)। “काले कालियकायकालवपुषः पांसून् गजाम्भोमुच:”

माघ० १७-६९। [ಗರುಡನು ರಮಣಕದ್ವೀಪದಲ್ಲಿ ಸರ್ಪಗಳನ್ನೆಲ್ಲಾ ತಿನ್ನಲು ಬಂದಾಗ ಸರ್ಪಗಳೆಲ್ಲವೂ ತಾವು ಗರುಡನಿಗೆ ಸರದಿಯಂತೆ ಆಹಾರವನ್ನು ಒದಗಿಸಲು ನಿಶ್ಚಯಿಸಿಕೊಂಡುವು. ಈ ಕಾಳಿಯನು ತನ್ನ ಸರದಿ ಬಂದಾಗ ಅದಕ್ಕೆ ಸಂಮತಿಸದೆ ರಮಣಕದ್ವೀಪವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು, ಸೌಭರಿಯ ಶಾಪದಿಂದ ಗರುಡನಿಗೆ ಪ್ರವೇಶವಿಲ್ಲದಿದ್ದ ಕಾಳಿಂದೀನದಿಯ ಮಡುವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿತು. ಈ ಕಾಳಿಯನ ಪ್ರವೇಶದಿಂದ ಕಾಳಿಂದೀನದಿಯ ಮಡುವೆಲ್ಲಾ ವಿಷಮಯವಾಗಿ ಆ ವಿಷ ಜ್ವಾಲೆಯಿಂದ ತೀರದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಪಶು ಪಕ್ಷಿ ಮೊದಲಾದುವೆಲ್ಲಾ ಪ್ರಾಣ ಬಿಡುತ್ತಿರಲು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಕಾಳಿಂದಿಯ ಮಡುವಿನೊಳಕ್ಕೆ ಧುಮುಕಿ ಕಾಳಿಯನ ತಲೆಯ ಮೇಲೆ ನಿಂತು ಬಾಲ ಹಿಡಿದು ತುಳಿಯುತ್ತ ಅದನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲು ಯತ್ನಿಸಿದಾಗ ಅದರ ಪತ್ನಿಯರಾದ ನಾಗಕನ್ಯೆಯರು ಬಂದು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನನ್ನು ನಾನಾ ವಿಧವಾಗಿ ಸ್ತುತಿಸಿ ಕಾಳಿಯನ ಪ್ರಾಣಭಕ್ಷೆಯನ್ನು ಬೇಡುವರು. ಆಗ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಕಾಳಿಯನಿಗೆ ಗರುಡನಿಂದ ಉಂಟಾಗಿದ್ದ ಭಯವನ್ನು ತಪ್ಪಿಸಿ ಪಾತಾಳದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವಂತೆ ಆಜ್ಞೆಯಿತ್ತು ಕಳುಹಿಸಿದನು.] भाग० १०-१६।

**ಕಾಲಿಯದಮನ ಕಾಳಿಯದಮನ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಳಿಯ ಸರ್ಪವನ್ನು ದಂಡಿಸಿದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಕಾಲಿಯ ದಮಯತಿ - दम् (उपशमे) + णिच् “ल्यु:” (३-१-१३४)। [“ಕಾಲಿಯ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] (ನಂ) 2. ಕಾಳಿಯ ಸರ್ಪವನ್ನು ದಂಡಿಸುವುದು. ಭಾವ “ल्युट्” (३-३-११५)।

**ಕಾಲಿಯಹೃದ ಕಾಳಿಯಹೃದ** (ಪುಂ) ಕಾಳಿಂದೀನದಿಯಲ್ಲಿ ಕಾಳಿಯ ಸರ್ಪವು ವಾಸಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಒಂದು ಮಡು. ಕಾಲಿಯಸ್ಯ ಹೃದ:।

**ಕಾಲಿ ಕಾಳೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪರಶಿವನ ಪತ್ನಿ. ಕಾಲಸ್ಯ ಶಿವಸ್ಯ ಪತ್ನಿ - काल “डीप्” (४-१-४८)। 2. ಕಪ್ಪು ಬಣ್ಣದ ಹೆಂಗಸು. ಕಾಲ “डीप्” (४-१-४२)। 3. ಹಿಮವಂತನ ಮಗಳಾದ ಪಾರ್ವತಿ. “सुतामनुजगामाशु गतां कालीं हराश्रमम्”। 4. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. “काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी”। 5. ಭೀಮಸೇನನ ಒಬ್ಬ ಪತ್ನಿ. “युधिष्ठिरात्तु पौरव्यां देवकोऽथ घटोत्कचः। भीमसेनाद्विडिम्बायां काल्यां सर्वगतस्ततः” भाग० ९-२२-३०। 6. ರಾತ್ರಿ. 7. ಅಗ್ನಿಯ ಸಪ್ತಜ್ವಾಲೆಗಳಲ್ಲೊಂದು. 8. ಕಾಳರಾತ್ರಿ. 9. ತಂತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಹತ್ತು ಮಹಾವಿದ್ಯೆಗಳಲ್ಲೊಂದು. [“ಕಾಲ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]



ಕಾಲಿಕ ಕಾಳೀಶ (ಪುಂ) ಬಕಪಕ್ಷ. ಕೆ ಜಲೆ ಅಲಿಕ ಇವ. |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩). -ಕೀ-ಕೀ.

ಕಾಲೀಯ ಕಾಳೀಯ (ನಂ) ಕೃಷ್ಣಚಂದನ.

ಕಾಲೀಯಕ ಕಾಳೀಯಕ (ನಂ) ಕಾಲಾನುಸಾರ್ಯವೆಂಬ  
ಒಂದು ಸುಗಂಧವಸ್ತು.

ಕಾಲೇಯ ಕಾಳೇಯ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. (ನಂ) 2.  
ಕೃಷ್ಣಚಂದನ. "ಆಶ್ವಾನಕಾಲೇಯಕತಾಙ್ಗರಾಗಾಮ್" ಕುಮಾಂ  
೭-೯.

ಕಾಲೇಯಕ ಕಾಳೇಯಕ (ಪುಂ) 1. ಕುಕ್ಕುರ, ನಾಯಿ. 2.  
ಮರದರಿಶಿನ. ಕಲೇಯಮ್ "ಡಕ್" (ವಾಂ ೪-೨-೮).  
ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" | 3. ಕೃಷ್ಣಚಂದನ.

ಕಾಲೇಶ ಕಾಳೇಶ (ಪುಂ) ಕಾಲಕ್ಕೆ ಅಧಿಪತಿಯಾದ ಸೂರ್ಯ.  
ಕಾಲಸ್ಯ ಇಶ: |

ಕಾಲ್ಪನಿಕ ಕಾಲ್ಪನಿಕ (ವಿಂ) 1. ಕಲ್ಪಿತವಾದ, ಸೃಷ್ಟಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಆರೋಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಇಲ್ಲದುದನ್ನು ಹೊರಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಕಲ್ಪನಯಾ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೯).

ಕಾಲ್ಪಸೂತ್ರ ಕಾಲ್ಪಸೂತ್ರ (ವಿಂ) ಕಲ್ಪಸೂತ್ರಗಳನ್ನು ತಿಳಿ  
ದವನು ಅಥವಾ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು. ಕಲ್ಪಸೂತ್ರಂ  
ವೇತ್ಯಧೀತೇ ವಾ "ಅನ್" (೪-೨-೫೯). | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೧೫). -ಸೂತ್ರ-ಸೂತ್ರೀ.

ಕಾಲ್ಯ ಕಾಲ್ಯ (ನಂ) 1. ಪ್ರಾತಃಕಾಲ. ಕಲ್ಯ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್"  
(೫-೪-೩೮). | (ವಿಂ) 2. ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ಆಯಾ  
ಋತುಗಳಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಕಾಲೇ ಭವಮ್ "ಯತ್" (೪-೩-೫೪).  
3. ಸಮಯವು ಒದಗಿಬಂದಿರುವ, ಅದಕ್ಕೆ ತಕ್ಕ ಕಾಲವು  
ಒದಗಿರುವ-ಚಳಿ ಮೊದಲಾದುದು. ಕಾಲ: ಪ್ರಾಪ್ತೋಸ್ಯ  
"ಯತ್" (೫-೧-೧೦೭).

ಕಾಲ್ಯಾ ಕಾಲ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರ್ಭಗ್ರಹಣಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ  
ಕಾಲವುಳ್ಳ ಹಸು. ಕಾಲ: ಗರ್ಭಗ್ರಹಣಯೋಗ್ಯ: ಕಾಲ: ಪ್ರಾಪ್ತೋಸ್ಯ  
"ಯತ್" (೫-೧-೧೦೭). | "ಕಾಲ್ಯೋಪಸರ್ಯಾ ಪ್ರಜನೇ" ಅಮಂ |  
"ಉಪಸರ್ಯಾ ಕಾಲ್ಯಾ ಪ್ರಜನೇ" ಪಾಂ ಸೂಂ ೩-೧-೧೦೪.

ಕಾಲ್ಯಾಣಕ ಕಾಲ್ಯಾಣಕ (ನಂ) ಕಲ್ಯಾಣದ ಭಾವ, ಮಂಗಳ  
ವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಕಲ್ಯಾಣಸ್ಯ ಭಾವ: "ಬುಕ್" (೫-೧-೧೩೩).

ಕಾಲ್ಯಾಣಿನೇಯ ಕಾಲ್ಯಾಣಿನೇಯ (ಪುಂ) ಕಲ್ಯಾಣಿಯ ಮಗ,  
ಅದೃಷ್ಟಶಾಲಿ ಹೆಂಗಸಿನ ಮಗ. ಕಲ್ಯಾಣಿ "ಡಕ್" ಇನ್ಡಾ-  
ದೇಶಾಶ್ರ (೪-೧-೧೨೬).

ಕಾವ ಕಾವ (ನಂ) ಕವಿದೇವತಾಕವಾದ ಒಂದು ಸಾಮ.  
ಕವಿದೇವತಾಸ್ಯ "ಅನ್" (೪-೨-೨೪).

ಕಾವಚಿಕ ಕಾವಚಿಕ (ನಂ) ಕವಚಧಾರಿಗಳ ಸಮೂಹ,  
ಕವಚಗಳನ್ನು ತೊಟ್ಟಿರುವವರ ಗುಂಪು. ಕವಚ "ಠಕ್"  
(೪-೨-೪೧).

ಕಾವಾದ ಕಾವಾದ (ಪುಂ) ಕಲಹ, ಜಗಳ. ಕುತ್ಸಿತ: ಇಷದ್ವಾ  
ವಾದ: ಕಾದೇಶ: (೬-೩-೧೦೫). | "ದೇವಾಕಾನಿನಿ ಕಾವಾದೇ  
ವಾಹಿಕಾಸ್ವಸ್ವಕಾ ಹಿ ವಾ" ಕಿರಾಂ ೧೫-೨೫.

ಕಾವಾರ ಕಾವಾರ (ಪುಂ) ಶೈವಾಲ, ಪಾಚಿ. ಕಂ ಜಲಮಾವೃಣೋತಿ  
-ಆ + ವೃನ್ (ವರಣೆ) "ಅನ್" (೩-೨-೧).

ಕಾವೃಕ ಕಾವೃಕ (ಪುಂ) 1. ಕೋಳಿ, ಹುಂಜ. 2. ಚಕ್ರವಾಕ  
ಪಕ್ಷಿ. 3. ಹಳದಿ ತಲೆಯ ಒಂದು ಹಕ್ಕಿ. ಇಷತ್ ವೃಕಇವ |  
"ಕಾವೃಕ: ಕೃಕವಾಕೌ ಸ್ಯಾತ್ ಪೀತಮಸ್ತಕಕೋಕಯೋ:" ಮೇದಿಂ |

ಕಾವೇರಿ ಕಾವೇರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೊಡಗು ಜಿಲ್ಲೆಯ  
ತಲಕಾವೇರಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ಮೈಸೂರು ಮತ್ತು ಮದರಾಸು  
ಪ್ರಾಂತಗಳಲ್ಲಿ ಹರಿಯುತ್ತಿರುವ ಒಂದು ಮಹಾನದಿ. ಕಂ  
ಜಲಮೇವ ಬೇರಂ ಶರೀರಮ್, ತಸ್ಯ ಇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦).  
"ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫). | "ಕಾವೇರಿಂ ಸರಿತಾಂ ಪತ್ಯು: ಶಕ್ಷ-  
ನೋಯಾಮಿವಾಕರೋತ್" ರಘುಂ ೪-೪೫. | "ತತೋ ಗಚ್ಛೇತ ಕಾವೇರಿಂ  
ವೃತಾಮಪ್ಸರಸಾಂ ಗಣಿ:" | ತತ್ರ ಸ್ನಾತ್ವಾ ನರೋ ರಾಜನ್ ಗೋಸಹಸ್ರ-  
ಫಲಂ ಲಭೇತ್" ಭಾಂ ವನಂ ೮೫. | ಸ್ನಾನಮಾತ್ರದಿಂದಲೇ  
ಸಕಲ ಪಾಪಗಳನ್ನೂ ಪರಿಹರಿಸುವ ಪವಿತ್ರವಾದ ಈ ಮಹಾ  
ನದಿಯು ದಕ್ಷಿಣಭಾರತದಲ್ಲೆಲ್ಲಾ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ. ಈ  
ನದಿಗೆ ಬೆಳಗೊಳದ ಹತ್ತಿರ ಕೃಷ್ಣ ರಾಜಸಾಗರವೆಂಬ ಒಂದು  
ದೊಡ್ಡ ಅಣೆಕಟ್ಟನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿ ಮೈಸೂರು ಸರ್ಕಾರವೂ  
ಮೆಟ್ಟೂರು ಬಳಿ ಒಂದು ಅಣೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟಿ ಮದರಾಸು  
ಸರ್ಕಾರವೂ ಕಾಲುವೆಗಳ ಮೂಲಕ ನೀರು ಹಾಯಿಸಿ  
ಲಕ್ಷೋಪಲಕ್ಷ ಎಕರೆಗಳ ಜಮೀನಿನಲ್ಲಿ ಬತ್ತ ಕಬ್ಬುಗಳನ್ನು  
ಬೆಳೆಯಲು ದೇಶದ ಜನತೆಗೆ ಅನುಕೂಲ್ಯ ಕಲ್ಪಿಸಿಕೊಟ್ಟಿದೆ.  
ಮತ್ತು ಇಂದು ನಮ್ಮ ದೇಶವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ತನ್ನ ದಿವ್ಯ  
ಪ್ರಕಾಶದಿಂದ ಬೆಳಗುತ್ತಿರುವ ವಿದ್ಯಾಚ್ಛಕ್ತಿಯನ್ನು ಈ  
ನದಿಯ ನೀರಿನ ಪ್ರಪಾತದಿಂದಲೇ ಶಿವಸಮುದ್ರ ಮತ್ತು  
ಮೆಟ್ಟೂರುಗಳಲ್ಲಿ ಉತ್ಪಾದಿಸುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಈ ಎಲ್ಲಾ  
ಮೂಲಗಳಿಂದಲೂ ಜನತೆಗೆ ಆಹಾರವಸ್ತುಗಳೂ ಕೈಗಾರಿಕೆ  
ಗಳೂ ಬೆಳೆದು ನಮ್ಮ ಮೈಸೂರು ದೇಶದ ಸಂಪತ್ತು  
ಸರ್ವತೋಮುಖವಾಗಿ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುತ್ತಿದೆ. ಈ  
ನದಿಯು ಮೂರು ಜಾಗಗಳಲ್ಲಿ ಕವಲೊಡೆದು ಮೈಸೂರು  
ಜಿಲ್ಲೆಯ ಶ್ರೀರಂಗಪಟ್ಟಣದಲ್ಲಿ ಆದಿರಂಗನನ್ನೂ ಶಿವ  
ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಮಧ್ಯರಂಗನನ್ನೂ ತಿರುಚ್ಚಿರಪಳ್ಳಿಜಿಲ್ಲೆಯ  
ಶ್ರೀರಂಗದಲ್ಲಿ ಅಂತರಂಗನನ್ನೂ ಪ್ರದಕ್ಷಿಣೆಮಾಡಿ ಹರಿಯು



ತ್ತಿರುವುದು. ಇದು ನಾಲ್ಕುನೂರು ಮೈಲಿಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಅಧಿಕದೂರ ಹರಿದು ಮದರಾಸು ಪ್ರಾಂತದ ಚಿದಂಬರದ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಸಮುದ್ರಕ್ಕೆ ಸೇರುವುದು. 2. ವೇಶ್ಯೆ, ಸೂಳೆ. 3. ಹರಿದ್ರೆ, ಅರಿಶಿನ. "ಕಾವೇರಿ ತು ಹರಿದ್ರಾಯಾಂ ವೇಶ್ಯಾಯಾಂ ಸರಿದಂತರೆ" ಹೇಮಂ.

**ಕಾವ್ಯ ಕಾವ್ಯ (ಪುಂ)** 1. ಭೃಗುಯುಷಿಯ ಮಗನಾದ ಕವಿಯ ಮಗ ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರು. ಕವಿ: ಭೃಗುಪುತ್ರಸ್ಯಾಪत्यಮ್ "ಪು:" (೪-೧-೧೫೧)। "ದೇತೇಯನೀತಿ: ಪಥಿ ಸಾರ್ಥವಾಹ: ಕಾವ್ಯ: ಸ ಕಾವ್ಯೇನ ಸಭಾಮಾಣೀತ್" ನೈಷಂ ೧೦-೫೯। (ನಂ) 2. ಕಾವ್ಯ, ಗ್ರಂಥ, ಗದ್ಯ ಅಥವಾ ಪದ್ಯರೂಪವಾದ ಕವಿಯ ಕವಿತೆ (ಕೃತಿ). ಕವಿ: ಕರ್ಮ "ವ್ಯವ್" (೫-೧-೧೨೪)। "ತೈ: ಶರೀರಂ ಚ ಕಾವ್ಯಾನಾಮಲಕ್ಷ್ಮೀರಾಶ್ಚ ದರ್ಶಿತಾ:। ಶರೀರಂ ತಾವದಿಷ್ಟಾಂ-ವ್ಯವಚ್ಛಿನ್ನಾ ಪದಾವಳಿ" ಕಾವ್ಯಾಂ ೧-೧೦। **ಕಾವ್ಯ ಲಕ್ಷಣ:** ಕಾವ್ಯದ ಲಕ್ಷಣವನ್ನು ಒಬ್ಬೊಬ್ಬ ಲಕ್ಷಣ ಕಾರರೂ ಒಂದೊಂದು ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ. **ಕಾವ್ಯ ಪ್ರಕಾಶಕಾರರು:** "ತದದೋಷಿ ಶಬ್ದಾರ್ಥಸಂಗುಣಾವನಲಕ್ಷತೀ ಪುನ: ಕ್ವಾಪಿ" ರಸಾದ್ಯಪಕರ್ಷಕ ದು:ಶ್ರವತ್ವಾದಿ ದೋಷ ರಹಿತವಾದ, ಮಾಧುರ್ಯಾದಿ ಗುಣವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಕೆಲವು ಕಡೆ ಅಲಂಕಾರವು ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿದ್ದರೂ ಅಂತಹ ಶಬ್ದಾರ್ಥಗಳು ಕಾವ್ಯವೆಂದೂ, ಸಾಹಿತ್ಯದರ್ಪಣಕಾರರು: "ವಾಕ್ಯಂ ರಸಾತ್ಮಕಂ ಕಾವ್ಯಮ್" ಕಾವ್ಯದ ಉಪಾದೇಯತ್ವಕ್ಕೆ ಮುಖ್ಯ ಕಾರಣವಾದ ರಸಪರಿಪೂರ್ಣವಾದ ವಾಕ್ಯವೇ ಕಾವ್ಯವೆಂದೂ, ರಸಗಂಗಾಧರಕಾರರು: "ರಮಣೀಯಾರ್ಥಪ್ರತಿಪಾದಕ: ಶಬ್ದ: ಕಾವ್ಯಮ್" ಚಿತ್ತಾಹ್ಲಾದಕವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಶಬ್ದವೇ ಕಾವ್ಯವೆಂದೂ, ಅಚಾರ್ಯದಂಡಿಯು: "ಛಟಾರ್ಥವ್ಯವಚ್ಛಿನ್ನಾ ಪದಾವಳಿ (ಕಾವ್ಯಸ್ಯ) ಶರೀರಮ್" ರಸಾದ್ಯನುಗತವಾಗಿ ಮನೋಹರವಾಗಿರುವ ಚಮತ್ಕಾರಾ ಧಾಯಕವಾದ ಪದಸಮೂಹವು ಕಾವ್ಯವೆಂದೂ, ಅನಂದ ವರ್ಧನಾಚಾರ್ಯರು: "ಕಾವ್ಯಸ್ಯಾತ್ಮಾ ಧ್ವನಿ:" ಧ್ವನಿಯೇ ಕಾವ್ಯದ ಮುಖ್ಯ ಜೀವಾಳವೆಂದೂ ಈ ರೀತಿ ಅನೇಕ ವಿಧವಾಗಿ ಅಭಿಪ್ರಾಯಪಡುತ್ತಾರೆ.

**ಕಾವ್ಯನಿರ್ಮಾಣಫಲ:** "ಕಾವ್ಯಂ ಯಶಾಸೇಷೈಕೃತೇ ವ್ಯವಹಾರವಿಧೇ ಶಿವೇತರಕ್ಷತಯೇ। ಸಘ: ಪರಿನಿರ್ವೃತಯೇ ಕಾಂತಾ-ಸಮ್ಮಿತತಯೋಪದೇಶಯುಜೇ" ಯಶಸ್ಸು, ದ್ರವ್ಯ (ಧನ), ವ್ಯವಹಾರ ಜ್ಞಾನ, ಅಮಂಗಳನಿವೃತ್ತಿಪೂರ್ವಕ ಶುಭಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಸೌಖ್ಯ, ಕಾಂತಾಸಮ್ಮಿತವಾದ ವಾಕ್ಯದಿಂದ ಉಪದೇಶ ಇವು ಕಾವ್ಯರಚನೆಯ ಫಲವೆಂದು ಕಾವ್ಯಪ್ರಕಾಶಕಾರರೂ, "ಚತುರ್ವರ್ಗಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿ: ಸುಖಾದಲ್ಪಾಧಿಯಾಮಪಿ। ಕಾವ್ಯಾದೇವ ಯತಸ್ತೇನ ತತ್ಸ್ವರೂಪಂ ನಿರೂಪ್ಯತೇ" ಕೇವಲಕೋಮಲಮತಿಯುಳ್ಳ

ಸಾಮಾನ್ಯ ಜನರಿಗೂ ಸುಖವಾಗಿ ಧರ್ಮಾರ್ಥಕಾಮಮೋಕ್ಷ ರೂಪವಾದ ಚತುರ್ವರ್ಗಫಲಲಾಭವೇ ಮುಖ್ಯ ಫಲವೆಂದು ಸಾಹಿತ್ಯದರ್ಪಣಕಾರರೂ ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ.

**ಕಾವ್ಯಪ್ರಭೇದಗಳು:** ಕಾವ್ಯವು ಗದ್ಯ, ಪದ್ಯ ಮತ್ತು ಉಭಯಾತ್ಮಕ (ಚಂಪು)ಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ರಸ ಗಂಗಾಧರಕಾರರಿಂದ ಧ್ವನಿ, ಗುಣೋಭೂತವ್ಯಂಗ್ಯ, ಅರ್ಥ ಚಿತ್ರ ಮತ್ತು ಶಬ್ದಚಿತ್ರಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧವಾದ ಈ ಕಾವ್ಯವು "ತच्चोत्ತಮೋತ್ತಮೋತ್ತಮಮಧ್ಯಮಾಧಮಭೇದಾಚ್ಚತುರ್ಥಾ" ಕ್ರಮವಾಗಿ ಉತ್ತಮೋತ್ತಮ, ಉತ್ತಮ, ಮಧ್ಯಮ ಮತ್ತು ಅಧಮಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ಭೇದಗಳಾಗಿ ವಿಂಗಡಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. "ಕಾವ್ಯಂ ಧ್ವನಿಗುಣಿಭೂತವ್ಯಂಗ್ಯಂ ಚೇತಿ ದ್ವಿಧಾ ಮತಮ್" ಧ್ವನಿ ಮತ್ತು ಗುಣೋಭೂತವ್ಯಂಗ್ಯಗಳೆಂದು ಕಾವ್ಯವು ಎರಡು ವಿಧ ಎಂದು ಸಾಹಿತ್ಯದರ್ಪಣಕಾರರು ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ.

**ಧ್ವನಿಕಾವ್ಯವು:** (1) ಅಭಿಧಾಮೂಲ ಮತ್ತು (2) ಲಕ್ಷಣಾಮೂಲಗಳೆಂದು ಮೊದಲು ಎರಡು ವಿಧ. "ಮೇಧಿ ಧ್ವನೇರಪಿ ದ್ವಾವುದೀರಿತೀ ಲಕ್ಷಣಾಮಿಧಾಮೂಲಿ" ಸಾಂ ೬೦ ೪-೨೦। ಅಭಿಧಾಮೂಲಧ್ವನಿಯು ಸಂಲಕ್ಷ್ಯಕ್ರಮ ಮತ್ತು ಅಸಂಲಕ್ಷ್ಯಕ್ರಮಗಳೆಂದೂ ಲಕ್ಷಣಾಮೂಲಧ್ವನಿಯು ಅರ್ಥಾಂತರ ಸಂಕ್ರಮಿತ ಮತ್ತು ಅತ್ಯಂತ ತಿರಸ್ಕೃತಗಳೆಂದೂ ಭೇದಗಳನ್ನು ಹೊಂದುವುವು. ಸಂಲಕ್ಷ್ಯಕ್ರಮವು ಶಬ್ದಶಕ್ತಿ ಮೂಲ, ಅರ್ಥಶಕ್ತಿಮೂಲ ಮತ್ತು ಉಭಯಶಕ್ತಿಮೂಲ ಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ಶಬ್ದಶಕ್ತಿಮೂಲವು ವಸ್ತು, ಅಲಂಕಾರಭೇದಗಳಿಂದ ಎರಡು ವಿಧ. ಈ ಎರಡು ಭೇದ ಗಳುಳ್ಳ ಅರ್ಥಶಕ್ತಿಮೂಲವೂ ಸ್ವತಃ ಸಂಭವಿ, ಕವಿ ಪ್ರೌಢೋಕ್ತಿ ಮತ್ತು ಕವಿನಿಬದ್ಧಪ್ರೌಢೋಕ್ತಿಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧಗಳಾಗಿ ಒಟ್ಟು ಆರು ವಿಧಗಳಾಗುವುದು. ಈ ರೀತಿಯಾಗಿ ಅನೇಕ ಭೇದಗಳಿಂದ ಅಭಿಧಾಮೂಲ ಮತ್ತು ಲಕ್ಷಣಾಮೂಲಧ್ವನಿಗಳು ಐವತ್ತೊಂದು (51) ವಿಧವಾಗಿ ಆಗುವುವು. ಈ ಐವತ್ತೊಂದು ಭೇದಗಳೂ ಅಂಗಾಂಗಿಭಾವಸಂಕರ, ಏಕಾಶ್ರಯಸಂಕರ, ಸಂದೇಹ ಸಂಕರ ಮತ್ತು ಸಂಸ್ಕೃಷ್ಟಭೇದಗಳಿಂದ ಸಜಾತೀಯ ವಿಜಾತೀಯ ಮೇಳನದಿಂದ ಒಟ್ಟು 5304 ಭೇದಗಳಾಗುವುವು. ಸಂಕರ ಮತ್ತು ಸಂಸ್ಕೃಷ್ಟರಹಿತವಾದ ಶುದ್ಧವಾದ ಐವತ್ತೊಂದು (51) ಭೇದಗಳ ಪರಸ್ಪರ ಯೋಗದಿಂದ 5355 ಭೇದ ಗಳಾಗುವುವು. "ಸಂಕರೇಣ ತ್ರಿರೂಪೇಣ ಸಂಸ್ಕೃಷ್ಟಾ ಚೈಕರೂಪಯಾ। ವೇದಕ್ಷಾಗ್ನಿವಾರಾ: (5304) ಶುದ್ಧೇರಿಷುಬಾಗ್ನಿಸಾಯಕಾ:" (5355) ಸಾಂ ೬೦ ೪-೧೨।

**ಗುಣೋಭೂತವ್ಯಂಗ್ಯಕಾವ್ಯವು:** (1) ಇತರಾಂಗ, (2) ಕಾಕ್ಷಾಕ್ಷಿಪ್ತ, (3) ಪಾಚ್ಯಸಿದ್ಧ್ಯಂಗ್ಯ (4) ಸಂದಿಗ್ಧ



ಪ್ರಾಧಾನ್ಯ, (5) ತುಲ್ಯಪ್ರಾಧಾನ್ಯ, (6) ಅಸ್ಪುಟ, (7) ಅಗೂಢ ಮತ್ತು (8) ಅಸುಂದರಗಳೆಂದು ಎಂಟು ವಿಧ. "ಅಪರಂ ತು ಗುಣಿಭೂತವ್ಯಜ್ಞಂ ವಾಚ್ಯಾದನುತ್ತಮೇ ವ್ಯಜ್ಞಃ | ತತ್ರ ಸ್ಯಾದಿತರಾಜ್ಞ ಕಾಕ್ವಾಕ್ಷಿಪ್ತಂ ಚ ವಾಚ್ಯಸಿದ್ಧಿವ್ಯಜ್ಞಃ | ಸಂದಿಗ್ಧ-ಪ್ರಾಧಾನ್ಯಂ ತುಲ್ಯಪ್ರಾಧಾನ್ಯಮಸ್ಕುಟಮಗೂಢಮ್ | ವ್ಯಜ್ಞಮಸುಂದರಮೇವ ಭೇದಾಸ್ತಸ್ಯೋದಿತಾ ಅಷ್ಟಿ" ಸಾಂ ದಂ ೪-೧೩, ೧೪ | ಮತ್ತು ಕಾವ್ಯವು ಶ್ರವ್ಯ ಮತ್ತು ದೃಶ್ಯಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಗದ್ಯ, ಪದ್ಯ ಮತ್ತು ಉಭಯಾತ್ಮಕ (ಚಂಪು)ಗಳು ಶ್ರವ್ಯಕಾವ್ಯ. ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯವು (1) ನಾಟಕ, (2) ಪ್ರಕರಣ, (3) ಭಾಣ, (4) ಪ್ರಹಸನ, (5) ಡಿಮ, (6) ವ್ಯಾಯೋಗ, (7) ಸಮವಕಾರ, (8) ವೀಧಿ, (9) ಅಂಕ ಮತ್ತು (10) ಈಹಾಪ್ಯಗಳೆಂದು ಹತ್ತುವಿಧ. [ವಿವರಕ್ಕೆ ಆಯಾ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕಾವ್ಯಚಿನ್ರಿಕಾ ಕಾವ್ಯಚಂದ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಾವ್ಯಲಕ್ಷಣ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ಒಂದು ಅಲಂಕಾರ ಗ್ರಂಥ.

**ಕಾವ್ಯಚೌರ ಕಾವ್ಯಚೌರ (ಪುಂ)** ಇತರರು ಬರೆದ ಕಾವ್ಯ ಭಾಗಗಳನ್ನು ಕದ್ದು ಕಾವ್ಯ ಬರೆಯುವವನು, ಬೇರೆಯವರ ಕಾವ್ಯಗಳಿಂದ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ತೆಗೆದು ತನ್ನ ಕಾವ್ಯಕ್ಕೆ ಸೇರಿಸಿ ಬರೆಯುವವನು. ಕಾವ್ಯಸ್ಯ ಚೌರ ಇವ |

**ಕಾವ್ಯಪ್ರಕಾಶ ಕಾವ್ಯಪ್ರಕಾಶ (ಪುಂ)** ಮಮೃಟಕವಿವರಚಿತ ವಾದ ಕಾವ್ಯಾದಿ ಲಕ್ಷಣಗಳನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ಒಂದು ಅಲಂಕಾರ ಗ್ರಂಥ. ಕಾವ್ಯಸ್ಯ ಸ್ವರೂಪಾದಿಪ್ರಕಾಶೋ ಯತ್ರ |

**ಕಾವ್ಯಪ್ರದೀಪ ಕಾವ್ಯಪ್ರದೀಪ (ಪುಂ)** ಕಾವ್ಯಸ್ವರೂಪಾದಿ ಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಒಂದು ಅಲಂಕಾರಗ್ರಂಥ. ಇದು ಕಾವ್ಯ ಪ್ರಕಾಶದ ಒಂದು ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಗ್ರಂಥ.

**ಕಾವ್ಯರಸಿಕ ಕಾವ್ಯರಸಿಕ (ವಿಂ)** ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ನಿರೂಪಿಸ ಲ್ಪಡುವ ರಸಗಳನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಆಸ್ವಾದಿಸಲು ಬಲ್ಲವನು. ಕಾವ್ಯರಸಃ ಆಸ್ವಾದ್ಯತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಠ್" (೪-೨-೧೧೪) |

**ಕಾವ್ಯಲಕ್ಷಣ ಕಾವ್ಯಲಕ್ಷಣ (ನಂ)** ಕಾವ್ಯಗಳ ಸ್ವರೂಪ ವನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು, ಕಾವ್ಯಗಳ ರಚನಾಕ್ರಮ ಮೊದಲಾದು ವನ್ನು ವಿವರಿಸುವುದು.

**ಕಾವ್ಯಲಿಙ್ಗ ಕಾವ್ಯಲಿಂಗ (ನಂ)** ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ; ದುಷ್ಕರವಾದ ಯಾವುದಾದರೊಂದು ವಿಷಯ ವನ್ನು ಹೇಳಿ ಅದು ಮತ್ತೊಂದರಿಂದ ಸಮರ್ಥನೆಯನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದಾಗ ಒಂದು ಹೇತುವಿನಿಂದ ಸಮರ್ಥಿಸಿದರೆ ಅಲ್ಲಿ ಕಾವ್ಯಲಿಂಗಾಲಂಕಾರ. ಇದು ಪದಾರ್ಥಹೇತುಕ, ವಾಕ್ಯಾರ್ಥಹೇತುಕಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಇದರ

**ಲಕ್ಷಣ :** "ಸಮರ್ಥನೀಯಸ್ಯಾರ್ಥಸ್ಯ ಕಾವ್ಯಲಿಙ್ಗಂ ಸಮರ್ಥನಮ್" | **ಉದಾಂ :** "ಜಿತೋಸಿ ಮಂದ ಕಂದರ್ಪ ಮಚ್ಚಿತೋಸ್ತಿ ತ್ರಿಲೋಚನಃ" **ಚಂದ್ರಾಂ** | ಇಲ್ಲಿ ದುಷ್ಕರವಾದ ಮನ್ಮಥನ ವಿಜಯರೂಪ ವಾದ ಅರ್ಥವು "ಮಚ್ಚಿತೋಸ್ತಿ ತ್ರಿಲೋಚನಃ" ಎಂಬ ಹೇತುಭೂತವಾದ ವಾಕ್ಯಾರ್ಥದಿಂದ ಸಮರ್ಥಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರು ವುದರಿಂದ **ವಾಕ್ಯಾರ್ಥಹೇತುಕಕಾವ್ಯಲಿಂಗಾ ಲಂಕಾರ**.

**ಕಾವ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ ಕಾವ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ (ನಂ)** ಶಾಸ್ತ್ರದಂತಿರುವ ಕಾವ್ಯ. ಕಾವ್ಯಂ ಶಾಸ್ತ್ರಮಿವ | ಕಾವ್ಯವು ಶಾಸ್ತ್ರದಂತೆ ಹಿತವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವುದರಿಂದ ಶಾಸ್ತ್ರಸಮಾನವಾದುದು.

**ಕಾವ್ಯಾ ಕಾವ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಬುದ್ಧಿ. ಕವಿ (ವರ್ಣನೆ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) | 2. ಪೂತನೆಯೆಂಬ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸಿ. "ಕಾವ್ಯಂ ಗ್ರಂಥೇ ಪುಮಾನ್ ಶುಕ್ರೇ ಕಾವ್ಯಾ ಸ್ಯಾತ್ ಪೂತನಾಧಿಯೋಃ" **ಮೇದಿಂ** |

**ಕಾವ್ಯಾದರ್ಶ ಕಾವ್ಯಾದರ್ಶ (ಪುಂ)** ದಂಡಿಕವಿವರಚಿತವಾದ ಒಂದು ಲಕ್ಷಣಗ್ರಂಥ. ಇದರಲ್ಲಿ ಮೂರು ಪರಿಚ್ಛೇದಗಳಿರು ವುವು. ಪ್ರಥಮ ಪರಿಚ್ಛೇದದಲ್ಲಿ ವೈದರ್ಭೀ ಮತ್ತು ಗೌಡೀ ರೀತಿಗಳೂ, ಶ್ಲೇಷ ಪ್ರಸಾದ ಮೊದಲಾದ ಹತ್ತು ಕಾವ್ಯ ಗುಣಗಳೂ, ಗದ್ಯಪದ್ಯಕಾವ್ಯಪ್ರಭೇದಗಳೂ, ಅನುಪ್ರಾಸಾಲಂಕಾರ ಭೇದಗಳೂ, ದ್ವಿತೀಯ ಪರಿಚ್ಛೇದ ದಲ್ಲಿ ಸ್ವಭಾವೋಕ್ತಿ ಮೊದಲಾದ ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರಗಳೂ, ತೃತೀಯ ಪರಿಚ್ಛೇದದಲ್ಲಿ ಯಮಕಾಲಂಕಾರಗಳೂ ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಬಿಡಬೇಕಾದ ಹತ್ತುವಿಧ ದೋಷ ಗಳೂ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. ಈ ದಂಡಿಕವಿಯು (1) ಕಾವ್ಯಾ ದರ್ಶ, (2) ದಶಕುಮಾರಚರಿತ ಮತ್ತು (3) ಭಂದೋವಿಚಿತಿ ಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುವನು. "ತ್ರಯೋ-ಽನಯಸ್ತ್ರಯೋ ವೇದಾಸ್ತ್ರಯೋ ದೇವಾಸ್ತ್ರಯೋ ಗುಣಾಃ | ತ್ರಯೋ ದಂಡಿ-ಪ್ರಬಂಧಾಶ್ಚ ತ್ರಿಷು ಲೋಕೇಷು ವಿಶ್ರುತಾಃ" |

**ಕಾವ್ಯಾರ್ಥಪತ್ತಿ ಕಾವ್ಯಾರ್ಥಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅರ್ಥಾ ಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಅರ್ಥಸ್ಯ ಕಸ್ಯಚಿತ್ ಕಾರ್ಯಸ್ಯ ಆಪತ್ತಿಃ ಸಿದ್ಧಿಃ | ದುಷ್ಕರವಾದ ಒಂದು ಕಾರ್ಯದ ವರ್ಣನೆ ಯಿಂದ ಸುಕರವಾದ ಮತ್ತೊಂದು ಕಾರ್ಯವು ಸಿದ್ಧಿಸುವಲ್ಲಿ "ಕಾವ್ಯಾರ್ಥಪತ್ತಿ" ಅಲಂಕಾರವು. **ಲಕ್ಷಣ :** "ಕೈಮುತ್ಯೇನಾರ್ಥಸಂಸಿದ್ಧಿಃ ಕಾವ್ಯಾರ್ಥಪತ್ತಿರೀಪ್ಯತೇ" | **ಉದಾಂ :** "ಸ ಜಿತಸ್ತ್ವನ್ಮುಖೇನೇಂದ್ರಃ ಕಾ ವಾರ್ತಾ ಸರಸೀರಹಾಮ್" **ಚಂದ್ರಾಂ** | ಇಲ್ಲಿ ದುರ್ಜಯನಾದ ಇಂದುವಿನ ಜಯದ ವರ್ಣನೆಯಿಂದ ಸುಜಯವಾದ ಸರಸೀರುಹಗಳ ಜಯವು ಕೈಮುತಕ ನ್ಯಾಯ ದಿಂದ ಸಿದ್ಧವಾದುದರಿಂದ ಕಾವ್ಯಾರ್ಥಪತ್ತಿ ಅಲಂಕಾರವು.



ಕಾಶ ಕಾಶ (ಪುಂ) 1. ಜಂಬುಹುಲ್ಲು, ಜೊಂಡುಹುಲ್ಲು. ಕಾಶತೆ - ಕಾಶ (ದೀಪ್ತ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಕಾಸರೋಗ, ಕೆಮ್ಮಲು. ಕೇನ ಕಫಾತ್ಮಕೇನ ಜಲೇನ ಅಶ್ಯತೆ - ಅಶ್ (ವ್ಯಾಪ್ತ) "ಘಚ್" (೩-೩-೧೨೧)। [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಕಾಸ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 3. ಸೀನು. 4. ಮೂಷಿಕ, ಇಲಿ. ಇಷದನಾತಿ - ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಕೊ: ಕಾದೇಶ: (೬-೩-೧೦೫)। 5. ಕಾಂತಿ, ಪ್ರಕಾಶ. (ನಂ) 6. ಜಂಬುಹುಲ್ಲಿನ ಹೂವು. "ಆಕರ್ಣಮುಲ್ಲಸಿತಮನ್ಬು-ವಿಕಾಸಿಕಾಶನಿಕಾಶಮಾಪ ಸಮತಾ ಸಿತಚಾಮರಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೪-೩೫। "ಪುಂಡರೀಕಾತಪತ್ರಸ್ತಂ ವಿಕಸತ್ಕಾಶಚಾಮರ:" ರಘುಂ ೪-೧೭।

ಕಾಶಕ ಕಾಶಕ (ಪುಂ) 1. ಜಂಬುಹುಲ್ಲು, ಜೊಂಡುಹುಲ್ಲು. ಕಾಶ (ದೀಪ್ತ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ.

ಕಾಶಕೃತ್ಸನ ಕಾಶಕೃತ್ಸ (ಪುಂ) ಎಂಟು ಮಂದಿ ಅದಿ ಶಾಬ್ದಿಕರಲ್ಲೊಬ್ಬ ಮುಖ. "ಇಂದ್ರಚಂದ್ರ: ಕಾಶಕೃತ್ಸನಾಪಿಶಾಲಿ: ಶಾಕಟಾಯನ:। ಪಾಣಿನ್ಯಮರಜೇನೆಂದ್ರಾ ಜಯಂತ್ಯಷ್ಟಾದಿಶಾಬ್ದಿಕಾ:"।

ಕಾಶಕೃತ್ಸನಕ ಕಾಶಕೃತ್ಸಕ (ವಿಂ) ಕಾಶಕೃತ್ಸಮುಖಿಯಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ. ಕಾಶಕೃತ್ಸನೇನ ನಿರ್ವೃತ್ತಮ್ "ಕು" (೪-೨-೮೦)।

ಕಾಶಮಯ ಕಾಶಮಯ (ವಿಂ) 1. ಜಂಬುಹುಲ್ಲಿನಿಂದ ತುಂಬಿದ, ಜೊಂಡುಹುಲ್ಲಿನಿಂದ ನೆರೆದಿರುವ. 2. ಜೊಂಡುಹುಲ್ಲಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಜಂಬುಹುಲ್ಲಿನಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕಾಶೇನ ಪ್ರಚುರ: ಕಾಶವಿಕಾರೋ ವಾ "ಮಯ್" (೪-೪-೨೧)। (೪-೩-೧೪೩) ವಾ।

ಕಾಶಿ ಕಾಶಿ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಕಾಶತೆ - ಕಾಶ (ದೀಪ್ತ) ಕರ್ತಂ "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭)। 2. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. ಭಾವೇ "ಇನ್"। 3. ಮುಖ್ಯ, ಹಿಡಿ. (ಪುಂ ಬಂವಂ) 4. ಕಾಶೀ ಜನಪದ, ಕಾಶೀ ನಗರದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ದೇಶ. "ಕಾಶಿಷ್ವಪಿ ನೃಪೋ ರಾಜನ್ ದಿವೋದಾಸಪಿತಾಮಹ:। ಹೃಯಶ್ವ ಇತಿ ವಿಷ್ಣುತೋ ಬಭೂವ ಜಯತಾಂ ವರ:" ಭಾಂ ಅನುಂ ೮-೧೧। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 5. ಕಾಶಿ, ವಾರಣಾಸಿ. (ವಿಂ) 6. ಪ್ರಕಾಶದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಕಾಶಿಕ ಕಾಶಿಕ (ವಿಂ) 1. ಕಾಶಿಸಂಬಂಧವಾದ. ಕಾಶೇರಿದಮ್ "ಕಮ್" "ವಿಡ್" ವಾ (೪-೨-೧೧೬)। 2. ಕಾಶಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಕಾಶಿಯಲ್ಲಿರುವ. ಕಾಶ್ಯಾಂ ಭವ: "ಕಮ್" "ವಿಡ್" ವಾ (೪-೨-೧೧೬)। 3. ಕಾಶಿಯಿಂದ ಬಂದಿರುವ. ಕಾಶ್ಯಾ ಆಗತ: "ಕಮ್" "ವಿಡ್" ವಾ (೪-೨-೧೧೬)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್

ಕಮಿ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। ಕಾಶಿಕೀ ಕಾಶಿಕೀ. ವಿಥಿ "ಕಾಪ್" (೪-೧-೪)। ಕಾಶಿಕಾ ಕಾಶಿಕಾ.

ಕಾಶಿಕಾ ಕಾಶಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಶಿಕಾವೃತ್ತಿ, ಪಾಣಿನಿಸೂತ್ರಗಳಿಗೆ ಒಂದು ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಗ್ರಂಥ. 2. ಕಾಶೀಪಟ್ಟಣ.

ಕಾಶಿನ್ ಕಾಶಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ. ಕಾಶತೆ - ಕಾಶ (ದೀಪ್ತ) "ಣಿತಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಕಾಸರೋಗವುಳ್ಳವನು, ಕೆಮ್ಮಲುಳ್ಳವನು. ಕಾಶೋ-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೫)। ಕಾಶಿನೀ ಕಾಶಿನೀ.

ಕಾಶಿಪ ಕಾಶಿಪ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾದೇವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 2. ಕಾಶಿದೇಶದ ದೊರೆ, ದಿವೋದಾಸ ಮೊದಲಾದವರು. ಕಾಶಿ ವಾರಾಣಸಿ ಕಾಶಿನ್ ದೇಶಾನ್ ವಾ ಪಾತಿ - ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಕ:" (೩-೨-೪)। ಇದೇ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಕಾಶಿನಾಥ: ಕಾಶಿನಾಥ:, -ನೃಪತಿ: -ನೃಪತಿ: "ಎತಸ್ಯ ಕಾಶಿನೃಪತೇ: ತ್ವಮವೇಶ್ಯ ಲಕ್ಷ್ಮೀಮಕ್ಷಣೋ: ಸುಖಂ ಜನಯ ಸ್ವಜನಮಜ್ಜುನೇತ್ರೇ" ನೆಪಂ ೧೧-೧೧೩।

ಕಾಶಿರಾಜ ಕಾಶಿರಾಜ (ಪುಂ) ಕಾಶಿದೇಶದ ದೊರೆ, ದಿವೋದಾಸ ಮುಂತಾದವರು. ಕಾಶಿನಾಂ ಜನಪದಾನಾಂ ರಾಜಾ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೧)। "ಹೃಯಶ್ವಸ್ಯ ಚ ದಾಯಾದ: ಕಾಶಿರಾಜೋ-ಽಮೃಶಿಷ್ಯತ" ಭಾಂ ಅನುಂ ೮-೧೪।

ಕಾಶಿಲ ಕಾಶಿಲ (ವಿಂ) 1. ಜೊಂಡುಹುಲ್ಲಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಜೊಂಡುಹುಲ್ಲಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕಾಶಿಲವೆಂಬ ಒಂದು ದೇಶ. ಕಾಶ "ಇಲ:" (೪-೨-೮೦)।

ಕಾಶಿಣ್ಣ ಕಾಶಿಣ್ಣ (ವಿಂ) ಹೊಳೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ. ಕಾಶ (ದೀಪ್ತ) ಬಾಹುಂ "ಇಣ್ಣುಕ್"। "ಕಾಶಿಣ್ಣುನಾ ಕನಕವರ್ಣವಿಭೂಷಣೇನ ಚಾತ್ರಕಪೋಲವದನೋ ವಿಲಸತ್ಕಿರೀಟ:" ಭಾಗಂ ೪-೩೦-೬।

ಕಾಶೀ ಕಾಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಶಿ, ವಾರಾಣಸಿ. ಕಾಶತೆ - ಕಾಶ (ದೀಪ್ತ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭)। "ಕೀಪ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫)। ಕಾಶೀ ನಗರವು ಮೋಕ್ಷ ಪ್ರದವಾದ ಏಳು ಪ್ರಸಿದ್ಧ ನಗರಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಕಾಶೀ ಭವೇತ್ತರಣಧರ್ಮತರಿ: ಸ್ಮರಾರೇ:" ನೆಪಂ ೧೧-೧೧೪। ಕಾಶೀನಗರವು ಗಂಗಾನದಿಯ ತೀರದಲ್ಲಿರುವುದು. ಕಾಶಿಯಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವೇಶ್ವರ ದೇವಾಲಯವು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ. ಇದಲ್ಲದೆ ಇಲ್ಲಿ ಅನ್ನಪೂರ್ಣಾ, ಸರ್ವ ಮಂಗಳಾ, ಬಿಂದುಮಾಧವ ಮೊದಲಾದ ದೇವಾಲಯಗಳಿವೆ. ಗಂಗಾನದಿಗೆ ಇಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಸ, ಮಣಿಕರ್ಣಿಕಾ, ಹನೂಮಂತ, ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರ ಮೊದಲಾದ ಹೆಸರಿನ ಘಟ್ಟಗಳಿವೆ. ಪರಮೇಶ್ವರನು ಎಲ್ಲರಿಗೂ ರಾಮತಾರಕ



ಮಂತ್ರೋಪದೇಶ ಮಾಡುವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ ದೇಹತ್ಯಾಗ ಮಾಡಿದವರೆಲ್ಲರಿಗೂ ಮುಕ್ತಿಯು ಲಭಿಸುವುದೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಯುಂಟು. “ಯತ್ನತೋಽಯತ್ನತೋ ವಾಪಿ ಕಾಲಾತ್ ತ್ಯಕ್ತ್ವ ಕಲೇಬರಮ್ | ತಾರಕಸ್ಯೋಪದೇಶೇನ ಕಾಶೀಸಂಸ್ಥೋಽಮೃತೋ ಭವೇತ್” ಕಾಶೀಖಂ. “ಅಯೋಧ್ಯಾ ಮಧುರಾ ಮಾಯಾ ಕಾಶೀ ಕಾಂಕ್ಷಿ ಅವಂತಿಕಾ | ಪುರೀ ದ್ವಾರವತೀ ಚೈವ ಸಪ್ತತಾ ಮೋಕ್ಷದಾಯಿಕಾ:” | ಪ್ರಮಥಗಣಪರಿವಾರದಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬನಾದ ಕುಂಭನು ನಿಕುಂಭನೆಂಬ ಒಬ್ಬ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ಕನಸಿನಲ್ಲಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡು ಶಿವನಿಗೆ ಕಾಶಿಯಲ್ಲಿ ಒಂದು ದೇವಸ್ಥಾನವನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿ ಪೂಜಿಸುವಂತೆ ಹೇಳಲಾಗಿ ನಿಕುಂಭನು ಕಾಶೀರಾಜನಾದ ದಿವೋದಾಸನ ಮೂಲಕ ದೇವಾಲಯವೊಂದನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿ ಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಪೂಜಾದಿಗಳು ನಡೆಯುವಂತೆ ಏರ್ಪಾಡು ಮಾಡಿದನು. ಶಿವನ ಪ್ರಭಾವದಿಂದ ಕ್ಷೇತ್ರಮಹಿಮೆಯು ಕ್ರಮೇಣ ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿತು. ಶಿವನು ಅನವರತವೂ ಕಾಶೀ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುತ್ತಿರುವುದರಿಂದ ಕಾಶೀಕ್ಷೇತ್ರಕ್ಕೆ “ಅನಿಮುಕ್ತಕ್ಷೇತ್ರ”ವೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಇಲ್ಲಿ ಮೋಕ್ಷಹೊಂದಿ ಪ್ರಕಾಶಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಕ್ಷೇತ್ರ (ನಗರ)ವು “ಕಾಶಿ” ಯೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಯಿತು. “ನಿರ್ವಾಣ-ಕಾಶಿನಾಂತ್ರ ಕಾಶೀತಿ ಪ್ರಥಿತಾ ಪುರೀ | ಅವಿಮುಕ್ತೇ ಮಹಾಕ್ಷೇತ್ರೇ ನ ಮುಕ್ತೇ ಶಾಶ್ವತಾ ಕ್ವಚಿತ್” ಕಾಶೀಖಂ. | ನಿರ್ವಾಣ ಹೊಂದಿ ಶಿವಭಾವವನ್ನು ಹೊಂದಿದವರೆಲ್ಲರನ್ನೂ ನೋಡಿದ ಇಂದ್ರಾದಿದೇವತೆಗಳು ಈ ಕ್ಷೇತ್ರರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ದಕ್ಷಿಣ ಮತ್ತು ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿ ವರಣಾ ಮತ್ತು ಅಸಿಗಳೆಂಬ ಎರಡು ನದಿಗಳನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿದುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ “ನಾರಾಣಸಿ” ಯೆಂಬ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಯುಂಟಾಯಿತು. “ವರಣಾಸೀ ಚ ನದೌ ದ್ವೇ ಪುಣ್ಯೇ ಪಾಪಹರೇ ಉಭೇ | ತಯೋರಂತರ್ಗತಾ ಯಾ ತು ಸೌಖ್ಯಾ ವಾರಾಣಸೀ ಸ್ಮತಾ” | “ಮಹೇಂದ್ರಾಗ್ನಿಮುಖಾ ದೇವಾ: ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಮುಕ್ತಿಪಥೋಽಮುಖಾನ್ | ಸರ್ವಾನ್ ಸರ್ವೇಶಮಾಲೋಕಯ ರಕ್ಷಾಂ ಚಕ್ರು: ಪುರಾ ಪುರ: | ಅಸಿ ಮಹಾ-ಸಿರೂಪಾಂ ಚ ಪಾಪಸಂಹತೀಕ್ಷಿಣಿಮ್ | ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಪ್ರವೇಶಂ ಧ್ರುವಾನಾಂ ಧ್ರುವಾ ದೇವಾ ವಿನಿರ್ಮಮು: | ವರಣಾಂ ಚ ವ್ಯಧುಸ್ತತ್ರ ಕ್ಷೇತ್ರವಿಧ್ವ-ನಿವಾರಿಣಿಮ್ | ದ್ವುತ್ಸಯ ಪ್ರವೃತ್ತೇಶ್ಚ ನಿವೃತ್ತಿಕರಣಿಂ ಸುರಾ: | ದಕ್ಷಿಣೋತ್ತರದಿಗ್ಭಾಗೇ ಕೃತ್ವಾಸಿ ವರಣಾಂ ಸುರಾ: | ಕ್ಷೇತ್ರಸ್ಯ ಮೋಕ್ಷನಿ:ಕ್ಷೇಪರಕ್ಷಾಂ ನಿವೃತ್ತಿಮಾಯು:” |

**ಕಾಶೀಖಂಡ ಕಾಶೀಖಂಡ (ಪುಂ)** ಸ್ಕಾಂದಪುರಾಣದಲ್ಲಿ ಕಾಶೀಕ್ಷೇತ್ರಮಹಿಮೆಯನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವ ಒಂದು ಭಾಗ. ಈ ಕಾಶೀಖಂಡದಲ್ಲಿ ವಿಂಧ್ಯನಾರದಸಂವಾದ, ಸತ್ಯಲೋಕದ ಪ್ರಭಾವ, ಆಗಸ್ಯಾಶ್ರಮಕ್ಕೆ ದೇವತೆಗಳ ಆಗಮನ, ಪತಿವ್ರತೆಯ ಚರಿತ್ರೆ, ಸಪ್ತರ್ಷಿ ಲೋಕ, ಧ್ರುವಕುಮಾರನ ತಪಸ್ಸು, ಶಿವಶರ್ಮನಿಗೆ ಸತ್ಯಲೋಕದರ್ಶನ, ಗಂಗಾ

ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ, ಕೃತ್ಯಾಕೃತ್ಯಪ್ರಕರಣ, ಗೃಹಸ್ಥಧರ್ಮ, ಓಂಕಾರವರ್ಣನ, ಓಂಕಾರಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ, ವಿಶ್ವೇಶ್ವರನ ಆವಿರ್ಭಾವ ಮುಂತಾದ ಒಂದು ನೂರು ಅಖ್ಯಾನಗಳು ಉಕ್ತವಾಗಿವೆ.

**ಕಾಶೀನಾಥ ಕಾಶೀನಾಥ (ಪುಂ)** ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. ಕಾಶ್ಯಾ: ನಾಥ: | “ಕಾಲಂ ನಿಕಟತೋ ಜಾತ್ವಾ ಕಾಶೀನಾಥಂ ಸಮಾಶ್ರಯೇತ್ | ಕಾಶೀನಾಥಂ ಸಮಾಶ್ರಿತ್ಯ ಕುತ: ಕಾಲಭಯಂ ನೃಣಾಮ್” ಕಾಶೀಖಂ. |

**ಕಾಶೀಯಾತ್ರಾ ಕಾಶೀಯಾತ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಾಶೀನಗರದ ಯಾತ್ರೆ, ಕಾಶೀಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿರುವ ಪುಣ್ಯತೀರ್ಥಗಳನ್ನು ಕುರಿತ ಪ್ರಯಾಣ. ಕಾಶೀಖಂಡದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಕಾಶೀಯಾತ್ರೆಯ ಕ್ರಮ: ಮೊದಲು ಚಕ್ರಪುಷ್ಕರಿಣಿಯಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನಮಾಡಿ ದೇವತೆಗಳು, ಪಿತೃಗಳು, ಯಾಚಕರು ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ತೃಪ್ತಿಗೊಳಿಸಿ ಆದಿತ್ಯ, ವಿಷ್ಣು, ದಂಡಪಾಣಿ, ಮಹೇಶ್ವರರನ್ನು ನಮಸ್ಕರಿಸಿ ಧುಂಡಿವಿನಾಯಕನ ದರ್ಶನ ಮಾಡಬೇಕು. ಅನಂತರ ನಂದಿಕೇಶ, ತಾರಕೇಶ, ಮಹಾಕಾಳೇಶ್ವರ, ಪುನಃ ದಂಡಪಾಣಿ ಇವರ ಪೂಜೆ ಸಲ್ಲಿಸಿ ವಿಶ್ವೇಶ್ವರನ ದರ್ಶನ ಮಾಡಬೇಕು. ಬಳಿಕ ರತ್ನೇಶ, ಚಂದ್ರೇಶ, ಅನಿಮುಕ್ತೇಶ್ವರ ಮುಂತಾದ 14 ಕ್ಷೇತ್ರಗಳ ದರ್ಶನ ಪಡೆಯಬೇಕು. [ವಿವರಕ್ಕೆ ಕಾಶೀಖಂ ನೋಡಿ.] ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಯು ವಿದ್ಯಾ ವ್ಯಾಸಂಗ ಮುಗಿದ ಬಳಿಕ ಸ್ನಾತಕನಾಗಿ ಗೃಹಸ್ಥನಾಗುವ ಮುಂಚೆ ಕಾಶೀಯಾತ್ರೆ ಮಾಡುವ ಪದ್ಧತಿಯಿತ್ತು. ಕನೈಯ ತಂದೆಯು ಇಂತಹ ಸ್ನಾತಕನನ್ನೇ ಹಿಡಿದು ಕನ್ಯಾದಾನ ಮಾಡುವುದೂ ಒಂದು ಪದ್ಧತಿ. ವಿವಾಹ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಇದೇ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈಗಿನ ಕಾಶೀಯಾತ್ರೆಯು ನಡೆಯುತ್ತಿರುವುದು.

**ಕಾಶೀರಹಸ್ಯ ಕಾಶೀರಹಸ್ಯ (ನಂ)** ಕಾಶೀಕ್ಷೇತ್ರದ ಮಹಿಮೆಯ ಗುಟ್ಟು. ಕಾಶ್ಯಾ: ರಹಸ್ಯಮ್ | “ಯೇಷಾಂ ಹೃದಿ ಸದೇವಾಸ್ತೇ ಕಾಶೀತ್ವಾಶೀವಿಷಾಙ್ಗದ: | ಸಂಸಾರಾಶೀವಿಷವಿಷಂ ನ ತೇಷಾಂ ಪ್ರಭವೇತ್ ಕ್ವಚಿತ್ | ಗರ್ಭರಕ್ಷಾಮಣಿರ್ಮನ್ತ್ರ: ಕಾಶೀವರ್ಣ-ದ್ವಯಾತ್ಮಕ: | ಯಸ್ಯ ಕಂಠೇ ಸದಾ ತಿಷ್ಠೇತ್ ತಸ್ಯಾಕುಶಲಮಿ: ಕುತ: | ಸುಖಾಂ ಪಿಬತಿ ಯೋ ನಿಯಂ ಕಾಶೀವರ್ಣದ್ವಯಾತ್ಮಿಕಾಮ್ | ಸ ನೈರ್ಜರೆಂ ದಶಾಂ ಹಿತ್ವಾ ಸುಖಂ ಪರಿಜಾಯತೇ | ಶ್ರುತಂ ಕರ್ಣಮೃತಂ ಯೇನ ಕಾಶೀತ್ಯಕ್ಷರಯುಗ್ಮಕಮ್ | ನ ಸಮಾಕರ್ಣಯತ್ಯೇವ ಸ ಪುನರ್ಗರ್ಭಜಾಂ ಕಥಾಮ್” ಕಾಶೀಖಂ. |

**ಕಾಶೀಶ ಕಾಶೀಶ-ईश्वर-ಈಶ್ವರ (ಪುಂ)** 1. ವಿಶ್ವೇಶ್ವರ. ಕಾಶ್ಯಾ ईश: ईश्वरो वा | 2. ಕಾಶಿಯ ಒಡೆಯ, ದಿವೋದಾಸ.



**ಕಾಶ್ಯ ಕಾಶ್ಯೇಯ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಶ್ಯರಾಜನ ಮಗ. ಕಾಶ್ಯಪತಯಮ್ "ಢಕ್" (೪-೧-೧೨೨)। (ವಿಂ) 2. ಕಾಶ್ಯಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಕಾಶ್ಯಯಲ್ಲಿರುವ. ಕಾಶ್ಯಾ ಭವ: "ಢಕ್"। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಯಿ-ಯಾ. "ಭರತ: ಸ್ವಲ್ಪ ಕಾಶ್ಯೇಯಿಮುಪಯೇ ಸಾರ್ವಸೇನೀ ಸುಂದಾ ನಾಮ ತರಯಾ ಜಜ್ಞೇ ಭುಮನ್ಯುರ್ಮಿ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೫-೩೨।

**ಕಾಶ್ಮರೀ ಕಾಶ್ಮರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶೀವನೆಯ ಮರ. ಕಾಶ್ಯೇ-ಕಾಶ್ಯ (ದೀಪ್ತೌ) "ವನಿಪ್" (೩-೨-೭೫)। "ಡೀಪ್" ರಥ (೪-೧-೭)। ಪೃಷಂ। "ವಿಲ್ವಾನ್ ಕಪಿತ್ಥಾನ್ ಜಮ್ಬಾಂಶ್ಚ ಕಾಶ್ಮರೀಬದರೀಸ್ತಥಾ" ಭಾಂ ವನಂ ೧೫೮-೪೬।

**ಕಾಶ್ಮರೈ ಕಾಶ್ಮರೈ** (ಪುಂ) ಶೀವನೆಯ ಮರ. ಕಾಶ್ಮರೀ ಸ್ವಾಞ್ "ವ್ಯವ್" (ವಾಂ ೫-೧-೧೨೪)। ಕಾಶ್ಮರೀಶಬ್ದೋ-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಯಪ್" (೫-೨-೧೨೦) ವಾ।

**ಕಾಶ್ಮೀರ ಕಾಶ್ಮೀರ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಕಾಶ್ಮೀರ ದೇಶ. 2. ಕಾಶ್ಮೀರ ದೇಶದ ನಿವಾಸಿಗಳು. (ಪುಂ) 3. ಕಾಶ್ಮೀರ ದೇಶದ ದೊರೆ. (ನಂ) 4. ಪುಷ್ಕರಮೂಲ, ತಾವರೆಯ ಗೆಡ್ಡೆ. ಕಾಶ್ಮೀರೇ ಭವಮ್ "ಅಣ್" (೪-೨-೧೩೩)। 5. ಟಂಕ. 6. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. "ಕಾಶ್ಮೀರಂ ಕುಡ್ಕುಮೇಷಿ ಸ್ಯಾತ್ ಟಂಕಪುಷ್ಕರಮೂಲಯೋಃ" ಮೇದಿಂ।

**ಕಾಶ್ಮೀರಕ ಕಾಶ್ಮೀರಕ** (ವಿಂ) 1. ಕಾಶ್ಮೀರ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. 2. ಕಾಶ್ಮೀರ ದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. ಕಾಶ್ಮೀರೇ ಜಾತೋ ಭವೋ ವಾ "ವುಜ್" (೪-೨-೧೩೪)। "ತತಃ ಕಾಶ್ಮೀರಕಾನ್ ವೀರಾನ್ ಕ್ಷತ್ರಿಯಾನ್ ಕ್ಷತ್ರಿಯರ್ಷಭಃ" ಭಾಂ ಸಮಾಂ ೨೭-೧೭।

**ಕಾಶ್ಮೀರಜ ಕಾಶ್ಮೀರಜ** (ನಂ) 1. ಚಾಂಗಲಕೋಷ್ಠ. 2. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. ಕಾಶ್ಮೀರೇ ಜಾಯತೇ-ಜನೀ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಜಃ" (೩-೨-೧೭)। "ಕಾಶ್ಮೀರಜೇ ರವಿಮಿಶ್ರೋಪಸಂಧ್ಯಮೃಷ್ಟಂ ಧೃತಧ್ವಾಂತಕುರಂಗನಾಭಿಃ" ನೈಷಂ ೨೨-೫೪। 3. ಅತಿಬಜ್ಜೆ. 4. ಪುಷ್ಕರಮೂಲ, ತಾವರೆಯ ಗೆಡ್ಡೆ. "ಕಾಶ್ಮೀರಜಾ-ಸ್ಯಾಸ್ತಿವಿಷಾ ಕುಡ್ಕುಮಪುಷ್ಕರೇ" ವಿಶ್ವಂ।

**ಕಾಶ್ಮೀರಜನ್ಮನ್ ಕಾಶ್ಮೀರಜನ್ಮನ್** (ನಂ) ಕುಂಕುಮ ಕೇಸರಿ. ಕಾಶ್ಮೀರೇ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ। "ಕಾಶ್ಮೀರಜನ್ಮಾನಿಶಿಖಮ್" ಅಮಂ।

**ಕಾಶ್ಮೀರೈ ಕಾಶ್ಮೀರೈ** (ನಂ) 1. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. ಕಾಶ್ಮೀರೇ ಜಾತಮ್ "ಯಃ" (೪-೨-೮೦)। (ವಿಂ) 2. ಕಾಶ್ಮೀರ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. 3. ಕಾಶ್ಮೀರ ದೇಶದಲ್ಲಿರುವ.

**ಕಾಶ್ಯ ಕಾಶ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಶ್ಯರಾಜ. (ನಂ) 2. ಪುಷ್ಕರ ಮೂಲ. ಕಾಶ್ಯ ಸ್ವಾಞ್ "ಅಣ್" (೫-೪-೩೮)।

**ಕಾಶ್ಯ ಕಾಶ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಶ್ಯಪಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ಮುಷಿ. ಕಾಶ್ಯಪಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಅವ್" (೪-೧-೧೦೪)। 2. ಕಾಶ್ಯರಾಜನ ಮಗ. ಕಾಶ್ಯ ಪಾತಿ ನರಕಾತ್। 3. ಕಾಶ್ಯಪಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ವಿಷಹರ ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿತ ಒಬ್ಬ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ["ಕಾಶ್ಯಪ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 4. ಕಣಾದಮುನಿ. 5. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. 6. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಯಿ-ಯಾ. 7. ಕಾಶ್ಯಪ ಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಹೆಂಗಸು. 8. ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ. "ಕ್ಷೋಣಿರ್ಜ್ಯಾ ಕಾಶ್ಯಪಿ ಕ್ಷಿತಿಃ" ಅಮಂ। (ವಿಂ) 9. ಕಾಶ್ಯಪ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕಾಶ್ಯಪಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೨೦)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಯಿ-ಯಾ.

**ಕಾಶ್ಯಪನಂದನ ಕಾಶ್ಯಪನಂದನ** (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. 2. ಅರುಣ. 3. ದೇವತೆಗಳು, ಅಸುರರು ಮುಂತಾದ ಕಾಶ್ಯಪನ ಸಂತಾನಗಳು.

**ಕಾಶ್ಯಪಾಯನ ಕಾಶ್ಯಪಾಯನ** (ಪುಂ) ಕಾಶ್ಯಪನ ಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಕಾಶ್ಯಪಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಫಕ್" (೪-೧-೯೯)।

**ಕಾಶ್ಯಪಿ ಕಾಶ್ಯಪಿ** (ಪುಂ) 1. ಅರುಣ. 2. ಗರುಡ. ಕಾಶ್ಯಪಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಇವ್" (೪-೧-೯೬)। ಅರುಣನು ಸೂರ್ಯನ ಸಾರಥಿಯಾದನು. ಗರುಡನು ಪಕ್ಷಿಗಳ ರಾಜನಾಗಿ ಅಭಿಷಿಕ್ತನಾದನು. "ವಿನತಾ ಚಾಪಿ ಸಿದ್ಧಾರ್ಥಾ ಬಭೂವ ಮುದಿತಾ ತದಾ। ಜನಯಾಮಾಸ ಪುತ್ರೌ ದ್ವೌ ಅರುಣಂ ಗರುಡಂ ತಥಾ। ವಿಕಲಾಙ್ಗೋಽರುಣಸ್ತತ್ರ ಭಾಸ್ಕರಸ್ಯ ಪುರಃಸರಃ। ಪತತ್ರೀಣಾಂ ಚ ಗರುಡ ಇಂದ್ರತ್ವೇನಾಮ್ಯಪಿಚ್ಯತ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೩೧। "ದೇವೇನ ತೇನೈವ ಚ ಕಾಶ್ಯಪಿಶ್ಚ ಸಾಮ್ಯಂ ಸಮೀಕ್ಷಯೋಭಯಪಕ್ಷಭಾಜೌ" ನೈಷಂ ೨೨-೮೯।

**ಕಾಶ್ಯಪಿನ್ ಕಾಶ್ಯಪಿನ್** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ಕಾಶ್ಯಪಮುಷಿಯಿಂದ ಪ್ರೋಕ್ತವಾದುದನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವರು. ಕಾಶ್ಯಪೇನ ಪ್ರೋಕ್ತಮಧೀಯತೇ "ಣಿನಿಃ" (೪-೩-೧೦೩)।

**ಕಾಶ್ಯಪೇಯ ಕಾಶ್ಯಪೇಯ** (ಪುಂ) ಕಾಶ್ಯಪಪತ್ನಿಯರಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ದೇವತೆಗಳು, ಅಸುರರು, ಅರುಣ, ಗರುಡ ಮುಂತಾದವರು. ಕಾಶ್ಯಪಸ್ಯೇಯಂ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। ಕಾಶ್ಯಪಿ ಕಾಶ್ಯಪಭಾರ್ಯಾ, ತಸ್ಯಾ ಅಪತ್ಯಾನಿ "ಢಕ್" (೪-೧-೧೨೦)। "ಇತ್ಯೇತೇ ದ್ವಾದಶಾದಿತಯಾಃ ಕಾಶ್ಯಪೇಯಾಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ ೨೫೫-೧೬। "ನಾಗಕಾಶ್ಯ-ಕರಶ್ಚೈವ ಕಾಶ್ಯಪೇಯೋ ಮಹಾಬಲಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೩-೧೩।

**ಕಾಶ್ಯಾಯನ ಕಾಶ್ಯಾಯನ** (ಪುಂ) ಕಾಶ್ಯರಾಜನ ಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಕಾಶ್ಯಸ್ಯ ಕಾಶ್ಯರಾಜಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಫಕ್" (೪-೧-೯೯)।



**ಕಾಠ ಕಾಷ್** (ಪುಂ) 1. ಸಾಣೆಕಲ್ಲು, ಉಜ್ಜುವಕಲ್ಲು. ಕಷ್ಯತೇ-  
ನೆನ - ಕಠ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಕರಂ "ಘ" (3-3-121)।  
2. ಉಜ್ಜುವ ಸಾಧನ, ನವೆಯನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸಿ  
ಕೊಳ್ಳಲು ಮೈಯನ್ನು ಉಜ್ಜಿಕೊಳ್ಳುವ ಜಾಗ. "ಏತಸ್ಮಿ-  
ನ್ಮದಯತಿ ಕೌಕಿಲಾನಕಾಲೇ ಲೀನಾಲಿ: ಸುರಕರಿಣಾಂ ಕಪಿಲ-  
ಕಾಠ:" ಕಿರಾಂ 4-26।

**ಕಾಠಾಯ ಕಾಷಾಯ** (ವಿಂ) ಕಷಾಯ (ಕೆಂಪು) ಬಣ್ಣದಲ್ಲಿ  
ಆದ್ದಲ್ಲಟ್ಟು, ಕಾಠಿಬಣ್ಣದಲ್ಲಿ ಆದ್ದಲ್ಲಟ್ಟು ಬಟ್ಟೆ ಮೊದಲಾ  
ದುದು, ಕಾಠಿಬಟ್ಟೆ. ಕಠಾಯೇಣ ರಕ್ತಂ "ಅ" (4-2-1)।  
"ಯದಿ ವಾಸಾಂಸಿ ವಸೀರನ್ ರಕ್ತಾನಿ ವಸೀರನ್, ಕಾಠಾಯಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ,  
ಮಾಙ್ಗಿಜಠಕ್ಷತ್ರಿಯೋ, ಹಾರಿದ್ರಂ ವೈಶ್ಯ:" ಆಶ್ವಂ ಗೃಂ। "ಕಾಠಾಯ-  
ಪರಿವೀತೇನ ಸ್ವಪದಾಪಿತವಕ್ಷುಷಾ" ರಘುಂ 14-99।

**ಕಾಠಾಯಿನ್ ಕಾಷಾಯಿನ್** (ಪುಂ) ಕಾಠಿಬಟ್ಟೆಯನ್ನು  
ಉಟ್ಟಿರುವ ಸಂನ್ಯಾಸಿ.

**ಕಾಠ ಕಾಷ್** (ನಂ) 1. ಇಂಧನ, ಸೌದೆ, ಕಟ್ಟಿಗೆ. ಕಾಶತೇ-  
ನೆನ - ಕಾಶ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕ" (3-2-2)। 2.  
ಮರ, ಚೌಬೀನೆ.

**ಕಾಠಕ ಕಾಷ್ಕ** (ನಂ) 1. ಅಗುರು ಚೌದನ. 2. ಮರದ  
ತುಂಡು, ಕಟ್ಟಿಗೆಯ ಚೂರು.

**ಕಾಠಕೂಟ ಕಾಷ್ಕಕೂಟ** (ಪುಂ) ಮರವನ್ನು ಕೊರೆಯುವ  
ಒಂದು ಹುಳು, ಘೂಣವೆಂಬ ಒಂದು ಕ್ರಿಮಿ.

**ಕಾಠಕುಡ್ಡ ಕಾಷ್ಕಕುಟ್ಟ** (ಪುಂ) ಮರಕುಟ್ಟಿಗೆ ಹಕ್ಕಿ. ಕಾಠಂ  
ಕುಡ್ಡಯತಿ - ಕುಡ್ಡ (ಛೇದನಭರ್ತನಯೋ:) "ಅ" (3-2-1)।  
"ಕಾಠಕುಡ್ಡ: ಶತಕ್ಷದೇ। ಶೀರ್ಷಪಾದಸ್ತು ಕಕ್ಷ: ಸ್ಯಾತ್"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। "ಫಲ್" (3-1-133)। -ಕುಡ್ಡಕ: -ಕುಟ್ಟಕ:.

**ಕಾಠಕುಡ್ಡಾಲ ಕಾಷ್ಕಕುಡ್ಡಾಲ** (ಪುಂ) ಹಡಗಿನೊಳಗೆ  
ಸೇರಿರುವ ನೀರನ್ನೂ ಕಸವನ್ನೂ ಹೊರಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಹಾಕುವ  
ಒಂದು ಮರದ ಮೊರಗುದ್ದಲಿ, ಎಲೆಗುದ್ದಲಿ. ಕಾಠಮಯ:  
ಕುಡ್ಡಾಲ:। "ಅಭಿ: ಸ್ತ್ರೀ ಕಾಠಕುಡ್ಡಾಲ:" ಅಮಂ।

**ಕಾಠತಡ್ ಕಾಷ್ತಡ್** (ಪುಂ) ಬಡಗಿ, ಮರಗೆಲಸದವನು,  
ಮರವನ್ನು ಕೆತ್ತುವವನು. ಕಾಠಂ ತಡ್ತತಿ - ತಡ್ (ತವಚನೆ)  
"ವಿವ" (3-2-96)। "ಫಲ್" (3-1-133)।  
-ತಡ್ತಕ: -ತಡ್ತಕ:.

**ಕಾಠತಕ್ಷಣ ಕಾಷ್ತಕ್ಷಣ** (ನಂ) ಮರವನ್ನು ಕೆತ್ತುವಿಕೆ.  
ಕಾಠಸ್ಯ ತಕ್ಷಣಮ್।

**ಕಾಠತನ್ತು ಕಾಷ್ತಂತು** (ಪುಂ) 1. ಮರದ ಒಳಗೆ ದೂರ  
ದಂತೆ ಉದ್ದವಾಗಿರುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹುಳು, ಕಾಠಂ

ತನ್ತುರಿವ। 2. ರೇಷ್ಮೆ ಹುಳು. "ಕೌಶಕಾರ: ಕಾಠತನ್ತು:"  
ಹಾರಾಂ।

**ಕಾಠದಾರ ಕಾಷ್ಕದಾರು** (ಪುಂ) ದೇವದಾರು ಮರ. ಕಾಠಂ-  
ಪ್ರಧಾನೋ ದಾರ:।

**ಕಾಠದ್ರು ಕಾಷ್ಕದ್ರು** (ಪುಂ) ಪಲಾಶವೃಕ್ಷ, ಮುತ್ತುಗದ ಮರ.  
ಕಾಠಪ್ರಧಾನೋ ದ್ರು:।

**ಕಾಠಪದ್ ಕಾಷ್ಕಪಟ್ಟ** (ಪುಂ) ಮರದ ಹಲಗೆ, ದಾರುಫಲಕ.

**ಕಾಠಭಾರಿಕ ಕಾಷ್ಕಭಾರಿಕ** (ವಿಂ) ಸೌದೆ ಹೊರುವವನು.

**ಕಾಠಭೇದ ಕಾಷ್ಕಭೇದ** (ಪುಂ) ಸೌದೆ ಒಡೆಯುವುದು,  
ಸೌದೆ ಸೀಳುವುದು. ಕಾಠಸ್ಯ ಭೇದ:। (ನಂ) -ಭೇದನಮ್  
-ಭೇದನಮ್.

**ಕಾಠಭೇದಕ ಕಾಷ್ಕಭೇದಕ-ಭೇದನ-ಭೇದನ** (ವಿಂ)  
ಸೌದೆ ಒಡೆಯುವವನು. ಕಾಠಂ ಭಿನತ್ತಿ - ಭಿದಿರ್  
(ವಿದಾರಣಂ) "ಫಲ್" (3-1-133)। "ಲ್ಯು:"  
(3-1-134)। ವಾ।

**ಕಾಠಮಯ ಕಾಷ್ಕಮಯ** (ವಿಂ) 1. ಮರದಿಂದ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕಾಠಸ್ಯ ವಿಕಾರ:  
"ಮಯ್"। "ಯಥಾ ಕಾಠಮಯೋ ಹಸ್ತೀ ಯಥಾ ಚರ್ಮಮಯೋ ಮೃಗ:।  
ಯಶ್ಚ ವಿಪ್ರೋಜಘೀಯಾನ: ತ್ರಯಸ್ತೇ ನಾಮ ವಿಭ್ರತಿ" ಮನುಂ  
2-149। 2. ಮರದಂತೆ ಕಠಿನವಾದ ಹೃದಯವುಳ್ಳ.

**ಕಾಠಮೌನ ಕಾಷ್ಕಮೌನ** (ನಂ) ಇಂಗಿತದಿಂದಲೂ ತನ್ನ  
ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ತಿಳಿಯಪಡಿಸದಿರುವಿಕೆ. ಕಾಠಮಿವ  
ಮೌನಮ್।

**ಕಾಠಲೇಖಕ ಕಾಷ್ಕಲೇಖಕ** (ಪುಂ) ಮರವನ್ನು ಕೊರೆ  
ಯುವ ಘೂಣವೆಂಬ ಒಂದು ಹುಳು. ಕಾಠಂ ಲಿಖತಿ -  
ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ) "ಫಲ್" (3-1-133)।

**ಕಾಠಲೋಹಿನ್ ಕಾಷ್ಕಲೋಹಿನ್** (ಪುಂ) ಕಬ್ಬಿಣದ ಹಿಡಿ  
ಹಾಕಿರುವ ಮರದ ಗದೆ. ಕಾಠಂ ಚ ಲೋಹಂ ಚ ಸ್ತೌಷ್ಯ  
"ಛಿ:" (4-2-114)। "ಕಾಠಲೋಹೀ ತು ವಾರ್ತಾಃ"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಕಾಠವತ್ ಕಾಷ್ಕವತ್** (ವಿಂ) 1. ಮರದಿಂದ ಕೂಡಿದ,  
ಸೌದೆಯನ್ನೂ ಹೊಂದಿರುವ. ಕಾಠಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತು" (4-2-94)। (ಅವ್ಯಂ) 2. ಮರದಂತೆ, ಮರದಹಾಗೆ,  
ಮರಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾಗಿ. ಕಾಠೇನ ತುಲ್ಯಮ್ "ವತಿ:" (4-1-114)।

**ಕಾಠವಲ್ಲಿಕಾ ಕಾಷ್ಕವಲ್ಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಟ್ಟುಕರೋಹಿಣಿ.  
ಕಾಠಮಿವ ಶುಷ್ಕಾ ವಲ್ಲಿಕಾ।



**ಕಾಠಾ ಕಾಷ್ಠಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಿಶೆ, ದಿಕ್ಕು. ಕಾಶತೆ — ಕಾಶ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕಶನ್" (ಉಂ ೨-೨)। "ಆಸಾಘ್ರವಾಚಂ ಸ ಭೃಗಂ ದಿವೀಪೇ ಕಾಠಾಮುದೀಚೀಮಿವ ತಿಗ್ಮರಶ್ಮಿಃ" ಕಿರಾಂ ೩-೫೫। 2. ಹದಿನೆಂಟು ನಿಮೇಷಗಳ ಕಾಲ, ಹದಿನೆಂಟು ಸಲ ರೆಪ್ಪೆಯಾಡಿಸುವಷ್ಟು ಕಾಲ, ಕಲೆಯ ಮೂವತ್ತನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. "ಅಷ್ಟಾದಶನಿಮೇಷಾಸ್ತು ಕಾಠಾ ತ್ರಿಶತು ತಾಃ ಕಲಾಃ" ಅಮಂ। 3. ಸೀಮೆ, ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ, ಅವಧಿ. "ಸ್ವಯಂ ವಿಶೀರ್ಣದ್ರುಮಪರ್ಣವೃತ್ತಿತಾ ಪರಾ ಹಿ ಕಾಠಾ ತಪಸಸ್ತಯಾ ಪುನಃ" ಕುಮಾಂ ೫-೨೮। 4. ಉತ್ಕರ್ಷ, ಹೆಚ್ಚಿಗೆ, ಅಧಿಕ. "ಕಾಠಾಗತಸ್ತೇಹರಸಾನುವಿಧಂ ದ್ವಂದ್ವಾನಿ ಭಾವಂ ಕ್ರಿಯಯಾ ವಿವಕ್ಷುಃ" ಕುಮಾಂ ೩-೩೫। 5. ಮರದರಿತಿನ. 6. ಕಶ್ಯಪನ ಒಬ್ಬ ಪತ್ನಿ. 7. ಸ್ಥಾನ, ಜಾಗ. "ಕಾಠಾ ದಾರುಹರಿದ್ರಾಯಾಂ ಕಾಲಮಾನಪ್ರಕರ್ಷಯೋಃ। ಸ್ಯಾದ್ವಿಶಿ ಸ್ಥಾನಮಾತ್ರೇ ಚ ಕಾಠಮಾಖ್ಯಾತ-ಮಿನ್ಧನೇ" ವಿಶ್ವಂ।

**ಕಾಠಾಗಾರ ಕಾಷ್ಠಾಗಾರ** (ನಂ) ಮರದಿಂದ ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮನೆ. ಕಾಠಮಯಮಗಾರಮ್।

**ಕಾಠಾಮ್ಬುವಾಹಿನಿ ಕಾಷ್ಠಾಂಬುವಾಹಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೋಣಿಯ ಆಕಾರದ ಮರದ ತೊಟ್ಟಿ, ಹಡಗಿನಿಂದ ನೀರನ್ನು ಎತ್ತಿ ಸುರಿಯುವ ಒಂದು ಮರದ ಪಾತ್ರೆ.

**ಕಾಠಿಲಾ ಕಾಷ್ಠೀಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಬಾಳೆಗಿಡ. 2. ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

**ಕಾಠೋದುಂಬರಿಕಾ ಕಾಷ್ಠೋದುಂಬರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಲ್ಪತ್ತಿಗಿಡ, ಬ್ರಹ್ಮಮೇಡಿ. ಕಾಠಪ್ರಧಾನಾ ಉದುಂಬರಿಕಾ।

**ಕಾಸ ಕಾಸ** (ಪುಂ) ಕಾಸರೋಗ, ಕೆಮ್ಮಲು. ಕಾಸು (ಶಬ್ದ-ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) ಕರಂ "ಕಾ" (೩-೩-೧೨೧)। ಕಾಸರೋಗ ಲಕ್ಷಣಃ ಹೃದಯದಲ್ಲಿರುವ ಪ್ರಾಣವಾಯುವು ಕಂಠದಲ್ಲಿರುವ ಉದಾನವಾಯುವಿನೊಡನೆ ಸೇರಿ ದೋಷಯುಕ್ತವಾಗಿ, ಒಡೆದ ಕಂಚಿನ ಶಬ್ದದಂತೆ ಮುಖದಿಂದ ಶಬ್ದವು ಹೊರಡುವುದು. ಇದೇ ಕಾಸರೋಗವು. "ಪ್ರಾಣೋಽಪ್ಪಾದಾನು-ಗತಃ ಪ್ರದುಃಃ ಸಂಭಿನ್ನಕಾಂಸ್ಯಸ್ವನತುಲ್ಯಘೋಃ। ನಿರೇತಿ ವವತ್ರಾತ್ ಸಹಸಾ ಸದೋಃ ಕಾಸಃ ಸ ವಿವಿಧಃ ಸ್ವರಾಹತಸ್ತು" ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರಂ ೫೨-೫। ಈ ಕಾಸರೋಗವು (1) ವಾತಜ, (2) ಪಿತ್ತಜ, (3) ಕಫಜ, (4) ಕ್ಷತಜ, ಮತ್ತು (5) ಕ್ಷಯಜ ಗಳೆಂದು ಐದು ವಿಧ. ಈ ಐದು ವಿಧ ಕೆಮ್ಮಲೂ ಗುಣವಾಗದೆ ಉಲ್ಬಣವಾದರೆ ಕ್ಷಯರೋಗಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗುವುದು. "ಸ ವಾತಪಿತ್ತಪ್ರಭವಃ ಕಫಾನ್ವ ಕ್ಷತಾತ್ತಥಾನ್ಯಃ ಕ್ಷಯಜೋಽಪರಶ್ಚ। ಪञ್ಚಪ್ರಕಾರಃ ಕಥಿತೋ ಭಿಷಗ್ಭಿಃ ವಿವಿಧಿತೋ ಯಕ್ಷಮವಿಕಾರಕೃತ್ ಸ್ಯಾತ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರಂ ೫೨-೬।

**ಕಾಸಕರ ಕಾಸಕರ** (ವಿಂ) ಕೆಮ್ಮಲನ್ನು ಯುಮಾಡುವ. ತು ಕೃಮ್ (ಕರಣಂ) "ಕಃ" (೩-೨-೨೦)। ಕಾಸಸ್ಯ ಕರಃ। "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬)। -ಕೃತ್ -ಕೃತ್.

**ಕಾಸಹನ ಕಾಸಹನ** (ವಿಂ) ಕೆಮ್ಮಲನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ, ಕಾಸರೋಗವನ್ನು ವಾಸಿಮಾಡುವ. ಕಾಸಂ ಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) "ಹಕ್" (೩-೨-೫೩)।

**ಕಾಸಜಿತ್ ಕಾಸಜಿತ್** (ವಿಂ) 1. ಕಾಸರೋಗವನ್ನು ಗುಣಪಡಿಸುವ, ಕೆಮ್ಮಲನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. ಕಾಸಂ ಜಯತಿ - ಜಿ (ಜಯೇ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೬೧)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಭಾರಂಗಿ ವೃಕ್ಷ.

**ಕಾಸಮದ ಕಾಸಮದ** (ಪುಂ) ಒಂದು ವೃಕ್ಷ.

**ಕಾಸರ ಕಾಸರ** (ಪುಂ) ಮಹಿಷ, ಎಮ್ಮೆ. ಕೆ ಜಲೇ ಆಸರತಿ - ಆ + ಸು (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಅಧಿಷ್ಟಿತಃ ಕಾಸರಮುಢರಂ ಮುದಾ ವೈವಸ್ವತೋ ದण्डधरस्तमन्वगात्" ಕುಮಾಂ ೧೪-೭।

**ಕಾಸವತ್ ಕಾಸವತ್** (ವಿಂ) ಕಾಸರೋಗವುಳ್ಳವನು. ಕಾಸೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ - "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪)। "ವೇರೇಚನಂ ಮುಖೇನೈವ ಕಾಸವಾನ್ ಧೂಮಾಪಿಬೇತ್" ಚರಕಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೧೮-೬೫।

**ಕಾಸಹನ್ ಕಾಸಹನ್** (ಪು) 1. ಕಂಟಕಾರಿಯ ಕಷಾಯ. "ಕಂಟಕಾರೀಕೃತಃ ಕ್ವಾಥಃ ಸಕೃಷ್ಣಃ ಸರ್ವಕಾಸಹಃ"। (ವಿಂ) 2. ಕಾಸರೋಗವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ, ಕೆಮ್ಮಲನ್ನು ಗುಣಪಡಿಸುವ. ಕಾಸಂ ಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬)।

**ಕಾಸಾರ ಕಾಸಾರ** (ಪುಂ) ಸರಸ್ಸು, ಸರೋವರ, ಕೊಳ. ಕಾಸು (ಶಬ್ದಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) "ಆರನ್" (ಉಂ ೩-೧೩೯)। ಕಸ್ಯ ಜಲಸ್ಯ ಆಸಾರೋಽನ್ವ ವಾ।

**ಕಾಸಾರಿ ಕಾಸಾರಿ** (ಪುಂ) ಕಾಸಮದವೃಕ್ಷ.

**ಕಾಸಿನ್ ಕಾಸಿನ್** (ವಿಂ) ಕಾಸರೋಗವುಳ್ಳವನು, ಕೆಮ್ಮಲುಳ್ಳವನು. ಕಾಸೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫)। "ಮಾಂಸೋಚಿತೇಮ್ಯಃ ಕಾಸಿಮ್ಯೋ ಲಾಬಾದೀನಾಂ ರಸಾ ಹಿತಾಃ" ಚರಕಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೧೮-೧೩೯।

**ಕಾಸು ಕಾಸೂ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶಕ್ತಾಯುಧ. 2. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. 3. ಬುದ್ಧಿ. 4. ಅಸ್ಪೃಷ್ಯವಾದ ಮಾತು. ಕಸ (ಗತೌ) "ಕಃ" (ಉಂ ೧-೮೫)। "ಕಾಸುಃ ಶಕ್ತಿಯಾಧಿ ರಜಿಃ। ಬುದ್ಧಿಃ ವಿಕಲ್ಪವಾಚಿ ಸ್ಯಾತ್" ಹೇಮಂ।



**ಕಾಸು-ಶಬ್ದಕುತಾಯಾಮ್** (ಮಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸಂ) |  
ಕಾಸತೆ | ಚಕಾಸೆ | ಕಾಸಾಂಬಭವ, -ಆಸ, ಚಕ್ರೆ | ಕಾಸತಾಮ್ |  
ಅಕಾಸಿಷ್ಠ | ಕೆಟ್ಟು ಶಬ್ದಮಾಡು, ಕೆಮ್ಮು.

**ಕಾಹಲ ಕಾಹಳ** (ಪುಂ) 1. ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ. ಕುತಿಸಿತು  
ಹಲತಿ - ಹಲ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಅಚ್" (3-1-134) |  
2. ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ, 3. ಬೆಕ್ಕು, ಮಾರ್ಜಾರ. 4. ದೊಡ್ಡ  
ನಗಾರಿ. (ನಂ) 5. ಅಸಭ್ಯವಾದ ಮಾತು. 6. ಒಂದು  
ವಾದ್ಯ. (ವಿಂ) 7. ಶುಷ್ಕವಾದ, ಒಣಗಿರುವ. 8.  
ದೊಡ್ಡದಾದ, ಅತಿಶಯವಾದ. 9. ನೀಚ, ದುರ್ಜನ.  
10. ಅಸಭ್ಯವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವವನು. 11. ಅಸ್ಪೃಶ್ಯವಾಗಿ  
ಮಾತಾಡುವವನು. (ಅವ್ಯಂ) 12. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ, ಅಧಿಕ  
ವಾಗಿ. "ತುರ್ಯಾರಿವೇರಾಹಿತೋತ್ತಾಲತಾಲೇರ್ಗಾಯಿಂತಿಭಿಃ ಕಾಹಲಂ ಕಾಹ-  
ಲಾಭಿಃ" ಮಾಘಂ 12-44. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ -ಫಾ.  
13. ಉದ್ದವಾದ ನಗಾರಿ. 14. ಚಿನ್ನಂಗಾಳಿ. 15. ಒಬ್ಬ  
ಅವ್ವರಸ್ಸು. 16. ದತ್ತೂರಿ ಹೂವಿನಂತಿರುವ ಒಂದು  
ವಾದ್ಯ, ತುತೂರಿ. "ಆತ್ತಯಾ ಯುಧಿ ವಿಜಿತಯ ರತೀಶಂ  
ರಾಜಿತಃ ಕುಸುಮಕಾಹಲಯೇವ" ನೆಳಂ 21-34. -ಕಾ -ಫಾ.  
17. ತರುಣ, ಪ್ರಾಯದ ಹೆಂಗಸು. "ಕಾಹಲಾ ವಾಘಭಾಂಡಸ್ಯ  
ಭೇದೇ ಚಾಪ್ತರಸಾಂ ಭಿದಿ | ಕಾಹಲಿ ತು ತರುಣಾಂ ಸ್ಯಾತ್ ಕಾಹಲ-  
ಶರಣಾಯುಧೇ | ಶಬ್ದಮಾತ್ರೇಽಪಿ ಪುಲಿಂಗ್ಗಸ್ತ್ರಿಪು ಶುಷ್ಕೇ ಭೃಶೇ ಖಲೇ"  
ಮೇದಿಂ |

**ಕಾಹಲಿ ಕಾಹಳಿ** (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಕಂ ಸುಖ-  
ಮಾಹಲತಿ - ಆ + ಹಲ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಇನ್" (3ಂ 4-113) |  
"ಮುಖ್ಯೋಽಮುಖ್ಯಶ್ಚ ದೇಹಶ್ಚ ಕಾಹಲಿಃ ಸರ್ವಕಾಮದಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ |  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ -ಫಾ. 2. ತರುಣ, ಪ್ರಾಯದ ಹೆಂಗಸು.

**ಕಿ - ಜಾನೇ** (ಜುಹಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸಂ) | ಚಿಕೇತಿ | ಚಿಕಾಯ |  
ಕೇತಾ | ಅಕಂಪಿತ್ | ತಿಳಿ, ಅರಿ.

**ಕಿನರ ಕಿಂನರ** (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯನ ಮುಖ ಕುದುರೆಯ  
ಮೈಯುಳ್ಳ ಒಂದು ವಿಚಿತ್ರ ಪ್ರಾಣಿ, ಕುದುರೆಯ ಮುಖ  
ಮತ್ತು ಮನುಷ್ಯನ ದೇಹವುಳ್ಳ ಒಂದು ವಿಚಿತ್ರ ಪ್ರಾಣಿ,  
ದೇವಯೋನಿವಿಶೇಷ. ಕಿ ಕುತಿಸಿತು ನರಃ | ಇವರು  
ಪುಲಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿಯ ಮಕ್ಕಳು. "ರಾಕ್ಷಸಾಶ್ಚ ಪುಲಸ್ತ್ಯಸ್ಯ  
ಬಾನರಾಃ ಕಿನರಾಸ್ತಥಾ | ಯಕ್ಷಾಶ್ಚ ಮನುಜವ್ಯಾಃ ಪುತ್ರಾಸ್ತಸ್ಯ  
ಚ ಭೀಮತಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ 63-64. "ಬಿಂಬೋಷಂ ಬಹು ಮನುತೆ  
ತುರಗ್ಗವಕತ್ರಚುಮ್ಬಂತಂ ಮುಖಮಿಹ ಕಿನರಂ ಪ್ರಿಯಾಯಾಃ" ಮಾಘಂ  
4-36. -ಪುರುಷಃ -ಶುರುಷಃ. "ಯಕ್ಷಾಃ ಕಿಪುರುಷಾಃ ಪೌರಾಃ  
ಯೋಷಿತೋ ವನದೇವತಾಃ" ಕುಮಾರಂ 6-39 |

**ಕಿಪ್ರಭು ಕಿಂಪ್ರಭು** (ಪುಂ) ಅಸಭ್ಯನಾದ ರಾಜ, ಕೆಟ್ಟ  
ದೊರೆ. ಕುತಿಸಿತು ಪ್ರಭುಃ | ಅಸ್ವಪದವಿಗ್ರಹಃ | "ಸ ಕಿಸಿಕ್ಷಾ

ಸಾಧು ನ ಶಾಸ್ತಿ ಯೋಽಧಿಪಂ ಹಿತಾನ್ಯ ಯಃ ಸಂಶೃಣುತೇ ಸ ಕಿಪ್ರಭುಃ"  
ಕಿರಾಂ 1-4 |

**ಕಿಯು ಕಿಂಯು** (ವಿಂ) ಏನನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು?  
ಕಿಮಿಚ್ಛತಿ - ಕಿಮ್ "ಕಯ್" "ತಃ" ಬಾಹುಂ |

**ಕಿರಾಜ ಕಿಂರಾಜ** (ಪುಂ) 1. ಯಾವ ರಾಜ? ಯಾವ  
ದೊರೆ? 2. ಯಾರಿಗೆ ಅಥವಾ ಯಾವ ದೇಶಕ್ಕೆ ದೊರೆ?  
ಕಃ ಕಸ್ಯ ವಾ ರಾಜಾ "ಟಕ್" (4-4-91) | ಕಿಮಿತಿ  
ಪ್ರಶ್ನಾರ್ಥಕಂ ಮಾನ್ತಮವ್ಯಯಮ್ |

**ಕಿರಾಜನ್ ಕಿಂರಾಜನ್** (ಪು) 1. ಕೆಟ್ಟ ದೊರೆ. ಕುತಿಸಿತು  
ರಾಜಾ | ಕ್ಷೇಪಾರ್ಥತ್ವಾತ್ ನ ಟಕ್ (4-4-90) | 2. ಕೆಟ್ಟ  
ದೊರೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ದೇಶ.

**ಕಿರೂಪ ಕಿಂರೂಪ** (ವಿಂ) ಯಾವ ಆಕಾರವುಳ್ಳ?

**ಕಿವತ್ ಕಿಂವತ್** (ವಿಂ) 1. ಯಾವುದನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ?  
ಯಾವುದರೊಡನೆ ಕೂಡಿರುವ? ಕಿ ವಿವ್ರತೇಸ್ಯ "ಮತುಪ್"  
(4-2-94) | ಮಸ್ಯ ವಃ | (ಅವ್ಯಂ) 2. ಯಾವುದರಂತೆ?  
ಯಾವುದಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾಗಿ? 3. ಯಾವುದರಲ್ಲಿರುವಂತೆ?  
ಕಸ್ಯೇವ ಕಸ್ಮಿನ್ನಿವ ವಾ "ವತಿಃ" (4-1-116) |

**ಕಿವದಂತಿ ಕಿಂವದಂತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲೋಕಪ್ರವಾದ, ಜನರು  
ಅಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಮಾತು. ಕಿ + ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ)  
"ಇಚ್" (3ಂ 3-122) | ಗೌರಾಂ "ಡೀಫ್" (4-1-41) |  
ನಿಜವಾಗಲಿ ಸುಳ್ಳಾಗಲಿ ಜನರು ಅಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಮಾತು  
ಕಿವದಂತಿ ಎನಿಸುವುದು.

**ಕಿವಿಷಯಕ ಕಿಂವಿಷಯಕ** (ವಿಂ) ಯಾವ ವಿಷಯಕ್ಕೆ  
ಸಂಬಂಧಪಟ್ಟಿರುವುದು?

**ಕಿವೀರ್ಯ ಕಿಂವೀರ್ಯ** (ವಿಂ) ಎಷ್ಟು ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ?

**ಕಿವ್ಯಾಪಾರ ಕಿಂವ್ಯಾಪಾರ** (ವಿಂ) ಯಾವ ಕೆಲಸವುಳ್ಳವನು?  
ಯಾವ ವೃತ್ತಿಯುಳ್ಳವನು?

**ಕಿಶಾರ ಕಿಂಶಾರು** (ಪುಂ) 1. ಧಾನ್ಯದ ಮುಳ್ಳು, ಧಾನ್ಯದ  
ತುದಿಯ ಭಾಗ. ಕಿಶ್ಚಿತ್ ಕುತಿಸಿತು ವಾ ಶೃಣಾತಿ - ಶ್  
(ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ತುನ್" (3ಂ 1-4) | "ಕಿಶಾರಃ ಸಸ್ಯಶೂಕಂ  
ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ | 2. ಕಂಕಪಕ್ಷಿ, ಹದ್ದು. 3. ಬಾಣ.  
"ಕಿಶಾರುನಾ ಸಸ್ಯಶೂಕೇ ವಿಶಿಖೇ ಕಕ್ಷಪಕ್ಷಿಣಿ" ಮೇದಿಂ |

**ಕಿಶೀಲ ಕಿಂಶೀಲ** (ವಿಂ) 1. ಯಾವ ಸ್ವಭಾವದವನು?  
2. ಯಾವ ನಡತೆಯುಳ್ಳವನು? ಕಿ ಶೀಲಮಸ್ಯ | "ಶೀಲಂ  
ಸ್ವಭಾವೇ ಸದ್ವೃತ್ತೇ" ಅಮಂ |

**ಕಿಶುಕ ಕಿಂಶುಕ** (ಪುಂ) 1. ಪಲಾಶ ವೃಕ್ಷ, ಮುತ್ತಗದ  
ಮರ, ಕಿಶ್ಚಿತ್ ಶುಕ ಇವ | (ನಂ) 2. ಪಲಾಶಕುಸುಮ,



ಮುತ್ರಗದ ಹೂವು. "ಫಲಸ್ತನಸ್ಥಾನವಿಶಿರ್ಣಗಿಹಿವಿಶ-  
ಚ್ಚುಕಾಸ್ಯಸ್ಮರಕಿಶುಕಾಶುಗಮ್" ನೆಪಂ ೧-೮೩. "ಮಹಾ-  
ವನಾನಿವ ಚ ಕಿಶುಕಾನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೬-೫೨.

**ಕಿಶ್ಕುಲಕ ಕಿಂಶುಲಕ** (ಪುಂ) ಪಲಾಶವೃಕ್ಷ. ಮುತ್ರಗದ  
ಮರ. ಕಿಶುಕ ಪದವು "ಲು" ಮಧ್ಯಮವಾಗಿ ನಿಪಾತ  
ಹೊಂದಿರುವುದು. (೬-೩-೧೧೭). ಇದಕ್ಕೆ ಗಿರಿ ಶಬ್ದವು  
ಪರವಾದಾಗ ದೀರ್ಘ ಬರುವುದು. ಕಿಶ್ಕುಲಾಗಾರಿ:

**ಕಿಸಲ ಕಿಂಸಖ** (ವಿಂ) 1. ಯಾವ ಸ್ನೇಹಿತ? 2. ಯಾರ  
ಸ್ನೇಹಿತ? ಕ: ಕಸ್ಯ ವಾ ಸಖಾ "ಟಕ್" (೫-೪-೯೧).

**ಕಿಸಲಿ (ಖಾ) ಕಿಂಸಂಖಿ (ಖಾ)** (ಪುಂ) ಕೆಟ್ಟ ಸ್ನೇಹಿತ,  
ಅಯೋಗ್ಯನಾದ ಗೆಳೆಯ. ಕುತ್ಸಿತ: ಸಖಾ. ಖೇಪಾರ್ಥತ್ವಾತ್  
ನ "ಟಕ್" (೫-೪-೭೦). "ಸ ಕಿಸಲಾ ಸಾಧು ನ ಶಾಸ್ತಿ  
ಯೋಧಿಪಿ ಹಿತಾನ್ಯ ಯ: ಸಂಶೃಣುತೇ ಸ ಕಿಪ್ರಭು:" ಕಿರಾಂ ೧-೫.

**ಕಿಸ್ತುಲ ಕಿಂಸ್ತುಫ್** (ಪುಂ) ಹನ್ನೊಂದು ಕರಣಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು. ["ಕರಣ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕಿಸ್ವಿತ್ ಕಿಂಸ್ವಿತ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಊಹೆ, ವಿತರ್ಕ. 2.  
ಸಂಶಯ. ಕಿಮಯ ಸ್ಥಾಣು: ಕಿಸ್ವಿತ್ ಪುರುಷ: ? "ಅದ್ರೆ:  
ಶೃಙ್ಗಂ ಹರತಿ ಪವನ: ಕಿಸ್ವಿದಿತುನ್ಮುಖಿಭಿ:" ಮೇಘಂ ೧-೧೪.

**ಕಿಕಿ ಕಿ** (ಪುಂ) 1. ನಾರಿಕೇಳವೃಕ್ಷ. ತೆಂಗಿನ ಮರ.  
2. ಹಂಗನಹಕ್ಕಿ. ಕಿಕೀತ್ಯಸ್ಫುಟಶಬ್ದಂ ಕರೋತಿ.

**ಕಿಕೀದಿವಿ ಕಿಂದೀವಿ** (ಪುಂ) ಚಾಪವೃಕ್ಷ, ಹಂಗನಹಕ್ಕಿ.  
ಕಿಕೀತ್ಯವ್ಯಕ್ತಂ ದೀವ್ಯತಿ ವಾಶತೇ-ದಿವು (ಕಿಡಾದಿ) "ಕಿವನ್"  
(೩೦ ೪-೫೬). ನಿಪಾಂ. ಬಾಹುಲಕಾತ್ ಹ್ರಸ್ವದೀರ್ಘಯೋರ್ವಿನಿಮಯ:  
"ಕಿಕೀದೀವಿ:" ರೂಪವೂ ಉಂಟು. "ಅಥ ಚಾಪ:  
ಕಿಕೀದಿವಿ:" ಅಮಂ.

**ಕಿವಿಕಶ ಕಿಕ್ಕಿಶ** (ಪುಂ) ದೇಹದಲ್ಲಿರುವ ಕ್ರಿಮಿ, ತಲೆಯ  
ಕೂದಲು ಮೈಗೂದಲು ದಂತ ನವಿಗಳನ್ನು ತಿನ್ನುವ  
ಒಂದು ಬಗೆಯ ಹುಳು. "ಕೇಶರೋಮನಖಾದಾಶ್ಚ ದಂತಾದಾ:  
ಕಿವಿಕಶಾಸ್ತಥಾ" ಸುಶ್ರುತಂ ೨೪-೧೫.

**ಕಿಲಿ ಕಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ನರಿ. "ಕಿಲಿಲ್ಕಾಮುಖಿ  
ಚ ಸಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಕಿಜ್ಜುರ ಕಿಂಜರ** (ಪುಂ) ಸೇವಕ, ಅಳು. ಕಿಚ್ಚಿತ್ ಕುತ್ಸಿತಂ  
ವಾ ಕರೋತಿ-ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣಂ) "ಅಚ್" (ವಾಂ ೩-೨-೨೧).  
"ಅವೇಹಿ ಮಾ ಕಿಜ್ಜುರಮಷ್ಟಮೂತೆ: ಕುಂಭೋದರಂ ನಾಮ ನಿಕುಂಭ-  
ತುಲಯಮ್" ರಘುಂ ೨-೩೫. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡಾಪ್" (೪-೧-೪).  
-ರಾ -ರಾ. ಸೇವಕ, ಹೆಣ್ಣುಳು. "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೮).  
-ರೀ -ರೀ. ಸೇವಕನ ಹೆಂಡತಿ.

**ಕಿಜ್ಜುಣಿ (ಣಿ) ಕಾ ಕಿಂಕಣಿ (ಣಿ) ಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಿರು  
ಗೆಜ್ಜೆ. ಕಿಚ್ಚಿತ್ ಕಿಣಂ ಕರೋತಿ-ಕಿಣ + ತತ್ಕರೋತಿ  
(ವಾಂ ೩-೧-೨೬) ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪).  
ಗೌರಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧). "ಗ್ರೀವಾಘ್ರಲೋಕಲ-  
ಕಿಜ್ಜುಣಿಕಾನಿನಾದಮಿಶ್ರಂ ದಧದಶನಚರ್ಚುರಶಬ್ದಮಶ್ವ:" ಮಾಘಂ  
೫-೫೮.

**ಕಿಜ್ಜುಣಿ ಕಿಂಕಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಿರುಗೆಜ್ಜೆ, ಕಿರುಗೆಂಟೆ. ಕಿಚ್ಚಿತ್  
ಕಿಣಂ ಕರೋತಿ-ಡು ಕೃಜ್ + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪).  
ಗೌರಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧). "ದಯಿತೇನ ತತ್ಕ್ಷಣಚಲ-  
ದ್ರಶನಾಕಲಕಿಜ್ಜುಣಿರವಮುದಾಸಿ ವಧು:" ಮಾಘಂ ೯-೭೪.

**ಕಿಜ್ಜುಣಿಕಿನ್ ಕಿಂಕಣೀಕನ್** (ವಿಂ) ಕಿರುಗೆಜ್ಜೆಯಿಂದ  
ಕೂಡಿದ, ಕಿರುಗೆಜ್ಜೆಯಿಂದ ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕಿಜ್ಜುಣಿಕಾ-  
ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೬).

**ಕಿಜ್ಜುರ ಕಿಂಕರ** (ಪುಂ) 1. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಕಿಚ್ಚಿತ್  
ಕಿರತಿ-ಕ (ವಿಕೇಪೇ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫). 2.  
ಕೋಗಿಲೆ. 3. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. 4. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. 5.  
ರಕ್ತವರ್ಣ, ಕೆಂಪುಬಣ್ಣ. (ನಂ) 6. ಆನೆಯ ಕುಂಭಸ್ಥಳ.  
(ವಿಂ) 7. ಕೆಂಪುಬಣ್ಣದ.

**ಕಿಜ್ಜುರಾತ ಕಿಂಕರಾತ** (ಪುಂ) 1. ವಕುಳವೃಕ್ಷ, ಅಶೋಕ  
ವೃಕ್ಷ. ಕಿಜ್ಜುರಂ ರಕ್ತವರ್ಣಮತತಿ-ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೇ)  
"ಅಣ್" (೩-೨-೧). 2. ಹಳದಿಗಿಣ್ಣು. 3. ಕಾಮ,  
ಮನ್ಮಥ. 4. ಕೋಗಿಲೆ. 5. ಗಿಣಿ.

**ಕಿಚ್ಚ ಕಿಂಚಿ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭ. 2. ಸಾಕಲ್ಯ,  
ಸಮಗ್ರತೆ, ಸಂಪೂರ್ಣತೆ. "ಕಿಚ್ಚಾರಮ್ಭೇ ಚ ಸಾಕಲ್ಯೇ"  
ಮೇದಿಂ. 3. ಮತ್ತು, ಅದಲ್ಲದೆ. "ಪ್ರಪಿತ್ಸೋ: ಕಿಚ್ಚ ತೇ  
ಮುಕ್ತಿ ನಿ:ಸ್ಪೃಹಸ್ಯ ಕಲೇಬರೇ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೧೬. 4. ಊಹೆ,  
ಸಂಭಾವನೆ.

**ಕಿಚ್ಚನ ಕಿಂಚನ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅಸಾಕಲ್ಯ, ಅಸಂಪೂರ್ಣ  
ವಾಗಿರುವಿಕೆ. 2. ಸ್ವಲ್ಪ, ಅಲ್ಪ. ಕಿಮ್ + ಚನ ಎಂದು  
ಎರಡು ಪದಗಳೆಂದು ಕೆಲವರ ಮತ. 3. ಅನಿರ್ದಿಷ್ಟ  
ವಾದ ಯಾವುದೋ ಒಂದು.

**ಕಿಚ್ಚಿತ್ ಕಿಂಚಿತ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಸ್ವಲ್ಪ, ಅಲ್ಪ. "ತಯೋ:  
ಸಮಾಪತ್ತಿಷು ಕಾತರಾಣಿ ಕಿಚ್ಚಿದ್ವ್ಯವಸ್ಥಾಪಿತಸಂಹೃತಾನಿ"  
ಕುಮಾಂ ೭-೭೫. 2. ಅಸಾಕಲ್ಯ, ಅಸಂಪೂರ್ಣತೆ. ಕಿಮ್ +  
ಚಿತ್ ಎಂದು ಎರಡು ಪದಗಳೆಂದು ಕೆಲವರ ಮತ. 3.  
ಯಾವುದೋ ಒಂದು, ಅನಿರ್ದಿಷ್ಟವಾದುದೋಂದು. "ಪ್ರಸ್ಯಂ  
ಹಿಮಾದ್ರೇಮೃಗನಾಭಿಗನ್ಧಿ ಕಿಚ್ಚಿತ್ ಕವಣತಿಕಿನ್ನರಮಧ್ಯವಾಸ"  
ಕುಮಾಂ ೧-೫೪.



ಕಿಚಿಚ್ಚ ಕಿಂಚಿಚ್ಚ (ವಿಂ) ಸ್ವಲ್ಪ ತಿಳಿದವನು, ಸ್ವಲ್ಪ ವಿಷಯ ಬಲ್ಲವನು. ಕಿಚಿಚ್ಚಜ್ಞಾನಾತಿ - ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। "ಯದಾ ಕಿಚಿಚ್ಚಜ್ಞೋಹಂ ಗಜ ಇವ ಮದಾನ್ವ: ಸಮಭವತ್" ಭರ್ತೃಂ ೧-೮।

ಕಿಚ್ಚುಲುಕ ಕಿಂಚುಲುಕ (ಪುಂ) ಕೆಸರಿನಲ್ಲಿರುವ ಎರುಬು ಹುಳು. ಕಿಚ್ಚಿತ್ ಚುಲುಮ್ಪತಿ - ಚುಲುಮ್ಪ "ತ:" (೩-೨-೧೦೧)। "ಕನ್" (೪-೩-೭೪)। "ಗಣ್ಡಪದ: ಕಿಚ್ಚುಲುಕ:" ಅಮಂ।

ಕಿಚ್ಚ ಕಿಂಚ (ವಿಂ) ಯಾರಿಂದಲೋ ಹುಟ್ಟಿದ, ಯಾವುದ ರಿಂದಲೋ ಹುಟ್ಟಿದ. "ಮನ್ಯೇ ಕಿಚ್ಚಮಹಂ ಧನ್ತಂ ತ್ವಾಮ- ಕ್ಷತ್ರಿಯಜೇ ರಣೇ" ಭರ್ತೃಂ ೬-೧೩೩।

ಕಿಚ್ಚಪ್ಯ ಕಿಂಚಪ್ಯ (ನಂ) ಇದರಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನ ಮಾಡಿ ಸ್ವಲ್ಪ ವಾದರೂ ಜಪ ಮಾಡಲೇಬೇಕಾದ ಒಂದು ತೀರ್ಥ.

ಕಿಚ್ಚಜಲಕ ಕಿಂಚಜಲಕ (ಪುಂ) 1. ಕಮಲ ಮೊದಲಾದ ಹೂವುಗಳ ಕೇಸರ, ಹೂವುಗಳ ಕುಸುರು. ಕಿಚ್ಚಿತ್ ಜಲತಿ - ಜಲ (ಅಪವಾರಣೆ) "ಕ:" ಬಾಹುಂ। "ಕಿಚ್ಚಜಲಕವ್ಯತಿಕರ- ಪಿಚ್ಚರಾನ್ತರಾಭಿಶ್ಚಿತ್ರಶ್ರೀರಲಮಲಕಾಗ್ರವಲ್ಲರೀಭಿ:" ಮಾಘಂ ೮-೪೬। (ನಂ) 2. ಗಗನ, ಆಕಾಶ. "ಕಿಚ್ಚಜಲಕ: ಕೇಸರೇ ಸ್ವೇ ಕಲಿ" ವೈಜಂ।

ಕಿಟ-ಗತೌ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಕೆಟತಿ। ಚಿಕೆಟ। ಕೆಟಿತಾ। ಕೆಟಿಷ್ಯತಿ। ಕೆಟತು। ಅಕೆಟತ್। ಕೆಟೇತ್। ಅಕೆಟೀತ್। ಇತ್ಯಾದಿ. ಹೋಗು, ಹೊಂದು, ತಲುಪು.

ಕರ್ಮಣಿ:-ಕಿಟಯತೇ। ಚಿಕಿಟೇ। ಕೆಟಿತಾ। ಕಿಟಯತಾಮ್। ಅಕಿಟಯತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ:-ಕೆಟಯತಿ, -ತೇ। ಕೆಟಯಾಂಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಕೆಟಯಿತಾ। ಅಕೆಟಯತ್, -ತ। ಕೆಟಯೇತ್, -ತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕುತ್ಸು:-ಕೆಟಿತವ್ಯಮ್। ಕೆಟನೀಯಮ್। ಕೆಟಯಮ್। ಕಿಟಿತ:। ಕಿಟಿತವಾನ್। ಕೆಟನ್, -ಂತಿ।

ಕಿಟ-ತ್ರಾಸೇ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ)। ಕೆಟತಿ। ಚಿಕೆಟ ಇತ್ಯಾದಿ ಎಲ್ಲವೂ "ಕಿಟ-ಗತೌ" ರೂಪಗಳಂತೆ ಆಗುವುವು.

ಕಿಟಿ ಕಿಟಿ (ಪುಂ) ವರಾಹ, ಹಂದಿ. ಕೆಟತಿ-ಕಿಟ (ಗತೌ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೧)।

ಕಿಟಿಮ ಕಿಟಿಮ (ನಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಕುಷ್ಮರೋಗ.

ಕಿಟಿಭ ಕಿಟಿಭ (ಪುಂ) 1. ಹೇನು. ಕಿಟಿರಿವ ಭಾತಿ-ಭಾ (ದೀಪ್ತ) "ಕ:" (೩-೨-೪)। (ನಂ) 2. ಹಾವು ಕಚ್ಚಿದ ನೋವು. "ದ್ವದ್ರವ: ಕರ್ಣಿಕಾಶ್ವೇವ ವಿಸರ್ಪಾ: ಕಿಟಿಭಾನಿ

ಚ। ತೇರ್ಭವಂತಿಹ ದೃಷ್ಟಾನ್ಯಾಂ ಯಥಾಸ್ವಂ ಚಾಪ್ಯುಪದ್ರವಾ:" ಸುಶ್ರುತಂ ಕಲ್ಪಂ ೮-೨೧।

ಕಿಡ್ ಕಿಟ್ಟಿ (ನಂ) 1. ಧಾತುಗಳ ಮಲ. 2. ಕಬ್ಬಿಣದ ತುಕ್ಕು. ಕಬ್ಬಿಣದ ಮೇಲಿನ ಮಲ. ಕಿಡ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। 3. ಮನುಷ್ಯನ ಶರೀರದೊಳಗಿನ ಮಲ. 4. ಎಣ್ಣೆ ತುಪ್ಪ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಗಟ್ಟು.

ಕಿಡ್ವರ್ಜಿತ ಕಿಟ್ಟಿವರ್ಜಿತ (ನಂ) ವೀರ್ಯ, ರೇತಸ್ಸು, ಶುಕ್ರಧಾತು. ಕಿಡ್ವೇನ ಮಲೇನ ವರ್ಜಿತಮ್।

ಕಿಡ್ವಾಲ ಕಿಟ್ಟಾಲ (ಪುಂ) 1. ಧಾತುವಿನ ಮಲ. ಕಿಡ್ವ- ಮಾಲಾತಿ - ಆ + ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೪)। 2. ತಾಮ್ರದ ಪಾತ್ರೆ. "ಕಿಡ್ವಾಲ: ಪುಸಿ ತಾಮ್ರಸ್ಯ ಕಲಶೇ ಲೋಹಗೃಹಕೇ" ಮೇದಿಂ।

ಕಿಡ್ವಿಮ ಕಿಟ್ಟಿಮ (ನಂ) ಉಪ್ಪುಪ್ಪಾದ ನೀರು. "ವಲ್ಲೂರಂ ತು ಸಿತಂ ತೋಯಮತಿಕ್ಷಾರಂ ತು ಕಿಡ್ವಿಮಮ್" ವೈಜಂ।

ಕಿಣ ಕಿಣ (ಪುಂ) 1. ಒಣಗಿದ ಹುಣ್ಣು. ಕಣ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಪೃಷಂ। 2. ಗಾಯದ ಗುರುತು, ಉಜ್ಜಾ ಟದಿಂದ ಉಂಟಾದ ಮೈಮೇಲಿನ ಗುರುತು, ಜಡ್ಡು. "ಜ್ಞಾಸ್ಯಸಿ ಕಿಯದ್ಭುಜೋ ಮೇ ರಕ್ಷತಿ ಮೌರ್ವೀಕಿಣಾಙ್ಕು ಇತಿ" ಶಾಕುಂ ೧-೧೨। 3. ಮಾಂಸಗ್ರಂಥಿ. 4. ಸುಂಡಿಲಿ, ನರೋಲಿ.

ಕಿಣಿಹಿ ಕಿಣಿಹೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತರಣೆ ಗಿಡ. ಕಿಣಿನೋ ತ್ರಣಾನ್ ಹಾಪಯತಿ - ಆ ಹಾಡ್ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಕ:" (೩-೨-೩)। "ಕಿಣಿ" (೪-೧-೪೧)।

ಕಿಣ್ವ ಕಿಣ್ವ (ನಂ) 1. ಸುರಾ ಬೀಜ. ಮದ್ಯವನ್ನು ತಯಾರಿ ಸಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ಮಾದಕ ದ್ರವ್ಯ. "ಸೂತ್ರ- ಕಾರ್ಪಾಸಿಕಿಣ್ವಾನಾಂ ಗೋಮಯಸ್ಯ ಗುಡಸ್ಯ ಚ" ಮನುಂ ೮-೨೩೬। 2. ಪಾಪ.

ಕಿತವ ಕಿತವ (ಪುಂ) 1. ಜೂಜಾಡುವವನು, ಜೂಜು ಗಾರ. 2. ದತ್ತೂರಿಗಿಡ. 3. ವಂಜಕ, ಮೋಸಗಾರ. ಕಿ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। ಕಿತಂ ವಾಯತಿ - ಆ ವೈ (ಶೋಷಣೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। "ಮುಗ್ಧೇ ದುಷ್ಕರಮೇತ- ದಿತೃತೃತಮಾಮುಹಾಮಹಾಸಂ ಬಲಾದಾಶಿಲ್ಯ ಚ್ಚಲಿತಾಸ್ಮಿ ತೇನ ಕಿತವೇನಾಘ ಪ್ರದೋಷಾಗಮೇ" ಅಮರಂ ೪೬। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಕಿತವಾ ಕಿತವಾ.

ಕಿಂತನು ಕಿಂತನು (ಪುಂ) ಜೇಡರಹುಳು. ಕುತಿಸಿತಾ ತನುರಸ್ಯ। "ಅಷ್ಟಪಾದಸ್ತು ಕಿಂತನು:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।



ಕಿಂತಮಾಮ್ ಕಿಂತಮಾಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಅನೇಕರಲ್ಲಿ ಯಾರು?, ಅನೇಕ ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವುದು? ಕಿಮ್ ಸ್ವಾರ್ಥಿಕ: "ತಮಪ್" (೪-೩-೪೪)। "ಆಮ್:" (೪-೪-೧೧)।

ಕಿಂತರಾಮ್ ಕಿಂತರಾಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಯಾರು?, ಎರಡರಲ್ಲಿ ಯಾವುದು? ಕಿಮ್ "ತರಪ್" (೪-೩-೪೭)। "ಆಮ್:" (೪-೪-೧೧)।

ಕಿಂತು ಕಿಂತು (ಅವ್ಯಂ) 1. ಹಿಂದೆ ಹೇಳಿದ ವಿಷಯಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಾದ ಅರ್ಥ, ಆದರೆ. ಕಿಂಚ ತು ಚ। "ನೃಣಾಂ ಪಶ್ಯತ್ಯಸ್ಯ ಕವಚನ ವಿಶಿಷ್ಟಾನ್ ಕಿಂತು ಪತಿಸ್ತದ್ವಿಷದ್ವಕ್ಷ:ಶ್ವಶ್ಚೇ-  
ರನುಮಿತರಮ್ನು ಗೋಚರಯತಿ" ನೆಪಂ ೧೨-೪೯। 2. ಮತ್ತೂ, ಮತ್ತೇನೆಂದರೆ. "ಅಥಿಣೇ ನ ತೃಣವದನಮಾತ್ರಂ ಕಿಂತು ಜೀವನಮಪಿ ಪ್ರತಿಪಾದ್ಯಮ್" ನೆಪಂ ೪-೮೬।

ಕಿಂದಮ ಕಿಂದಮ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಮುಖ. ಈ ಮುಖಿಯು ಮೃಗರೂಪದಿಂದ ಸ್ತ್ರೀಮೃಗರೂಪತಾಳಿದ ತನ್ನ ಪತ್ನಿ ಯೊಡನೆ ಕ್ರೇಡಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಬೇಟೆಗಾಗಿ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಹೋಗಿದ್ದ ಪಾಂಡುಮಹಾರಾಜನು ಮೃಗಗಳೆಂದು ತಿಳಿದು ಪ್ರಯೋಗಿಸಿದ ಬಾಣದಿಂದ ಹತನಾದನು. "ಸುರತಕ್ರೇಡೆಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ನಮ್ಮಿಬ್ಬರನ್ನೂ ನೀನು ಹೊಡೆದೆಯಾದ ಕಾರಣ ಪತ್ನೀಸಂಗಮಾಡಿದೆಯಾದರೆ ನಿನಗೂ ಇಂತಹ ಮರಣವು ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗಲಿ" ಎಂದು ಮುಖಿಯು ಪಾಂಡುವನ್ನು ಶಪಿಸಿದನು. "ಅಸ್ಯಾಂ ಮೃಗ್ಯಾಂ ಚ ರಾಜೇಂದ್ರ ಹರ್ಷಾನ್ಮೇಥುನಮಾಚರಮ್। ಪುರುಷಾರ್ಥ-  
ಫಲಂ ಕರ್ತುಂ ತತ್ತ್ವಯಾ ವಿಫಲೀಕೃತಮ್। ಅಹಂ ಹಿ ಕಿಂದಮೋ ನಾಮ ತಪಸಾ ಭಾವಿತೋ ಮುನಿ:। ವ್ಯಪತ್ರಪನ್ಮನುಷ್ಯಾಣಾಂ ಮೃಗ್ಯಾಂ ಮೇಥುನ-  
ಮಾಚರಮ್। ಮೃಗೋ ಭೃತ್ವಾ ಮೃಗ: ಸಾರ್ಥಂ ಚರಾಮಿ ಗಢೇ ವನೇ। ಮೃಗರೂಪಧರಂ ಹತ್ವಾ ಮಾಮೇವ ಕಾಮಮೋಹಿತಮ್। ಅಸ್ಯ ತು ತ್ವಂ ಫಲಂ ಮೂಢ! ಪ್ರಾಪ್ಸ್ಯಸಿ ದೃಶಮೇವ ಹಿ। ಪ್ರಿಯಯಾ ಸಹ ಸಂವಾಸಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ಕಾಮವಿಮೋಹಿತ:। ತ್ವಮಪ್ಯಸ್ಯಾಮವಸ್ಥಾಢಾಂ ಪ್ರೇತಲೋಕಂ ಗಮಿಷ್ಯಸಿ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೧೭।

ಕಿಂದಾನ ಕಿಂದಾನ (ನಂ) ಒಂದು ಪುಣ್ಯತೀರ್ಥ. ಈ ತೀರ್ಥದಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನಮಾಡಿ ಸ್ವಲ್ಪವಾದರೂ ದಾನ ಮಾಡಲೇ ಬೇಕಾದುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಈ ಹೆಸರು. ಕಿಂಚಿದಪಿ ದಾನ-  
ಮಾವಶ್ಯಕಂ ಯತ್ರ। "ಕಿಂದಾನೇ ಚ ನರ: ಸ್ನಾತ್ವಾ ಕಿಂ ಜಪ್ಯೇ ಚ ಮಹೀಪತೇ। ಅಪ್ರಮೇಯಮವಾಪ್ನೋತಿ ದಾನಂ ಜಪ್ಯಂ ಚ ಭಾರತ" ಭಾಂ  
ವನಂ।

ಕಿನ್ದಾಸ ಕಿನ್ದಾಸ (ಪುಂ) ಕೆಟ್ಟ ಸೇವಕ, ಅಯೋಗ್ಯನಾದ  
ಆಳು. ಕುತ್ಸಿತೋ ದಾಸ:।

ಕಿನ್ದೇವತ ಕಿನ್ದೇವತ (ವಿಂ) ಯಾವ ದೇವತೆಯುಳ್ಳ?

ಕಿನ್ದಾಮಕ ಕಿನ್ದಾಮಕ (ವಿಂ) ಯಾವ ಹೆಸರುಳ್ಳವನು?  
-ನಾಮನ್ -ನಾಮನ್, -ನಾಮಧೇಯ: -ನಾಮಧೇಯ:.

ಕಿನ್ದಿಮಿತ್ತ ಕಿನ್ದಿಮಿತ್ತ (ವಿಂ) 1. ಯಾವ ಕಾರಣವುಳ್ಳ?  
(ಅವ್ಯಂ) 2. ಯಾವ ಕಾರಣದಿಂದ? "ಕಿನ್ದಿಮಿತ್ತ-  
ಮಿಹಾಗತ:" ರಾಮಾಂ।

ಕಿನ್ದು ಕಿನ್ದು (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪ್ರಶ್ನೆ. 2. ವಿತರ್ಕ, ಸಂಶಯ.  
ಕಿಂ ಚ ನು ಚ। "ಕಿನ್ದು ಸ್ಯಾಚ್ಚಿತ್ತಮೋಹೋಷ್ಯಂ ಭವೇದ್ವಾತಗತಿ-  
ಸ್ತ್ವಿವಯಮ್" ರಾಮಾಂ। "ಕಿನ್ದು ಪ್ರಶ್ನವಿತರ್ಕಯೋ:" ಮೇದಿಂ।  
"ಕಿನ್ದು ಮೇ ಸ್ಯಾದಿದಂ ಕೃತ್ವಾ ಕಿನ್ದು ಮೇ ಸ್ಯಾದಕುರ್ವತ:। ಇತಿ  
ಸಚ್ಚಿನ್ತ್ಯ ಮನಸಾ ಪ್ರಾಜ್ಞ: ಕುರ್ವೀತಿ ವಾ ನ ವಾ"।

ಕಿನ್ಯ ಕಿನ್ಯ (ಪುಂ) ಪುರೀಷದಲ್ಲಿ ಜನಿಸುವ ಒಂದು ಕೀಟ.  
ಮಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಒಂದು ಹುಳು. "ಅಯವಾ ವಿಯವಾ:  
ಕಿನ್ಯಾಶ್ಚಿನ್ಯಾ ಗಂಧಪದಾಸ್ತಥಾ। ಕುರವೋ ದ್ವಿಮುಖಾಶ್ಚೇವ  
ಸಪ್ತವೇತೇ ಪುರೀಷಜಾ:" ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರತಂ ೪೪-೮।

ಕಿಮ್ ಕಿಮ್ (ನಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಪ್ರಚ್ಛ  
(ಜಿಪ್ಸಾಯಾಮ್) "ಇಮ್" ಕಾದೇಶಶ್ಚ। ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಡಿಮಿ:"  
(ಉಂ ೪-೧೪೮) ವಾ। "एको नैकः स वः कः किम्" ವಿಂ  
ಸಂ। "य ईप्सितार्थप्राप्त्यर्थं प्रष्टव्यः किमिति स्मृतः"  
ಇತಿ ನಿರ್ಹತಿ:। (ವಿಂ) ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು  
ಕೊಡುವುದು. 2. ವಾದ ವಿಷಯ. 3. ಕುತ್ಸಿತ, ನಿರರ್ಪಣೆ,  
ತುಚ್ಛ. ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಡಿಮಿ:" (ಉಂ ೪-೧೪೮)। "कुर्या  
हरस्यापि पिनाकपाणेः धैर्यच्युति के मम धन्विनोऽन्ये"  
ಕುಮಾಂ ೩-೧೦। 4. ಪ್ರಶ್ನೆ, ಜಿಜ್ಞಾಸಾಪೂರ್ವಕ ಕೇಳಿಕೆ.  
ಪ್ರಶ್ನಾರ್ಥಕವಾದಾಗ ಕಿಮ್ ಶಬ್ದವು ತ್ರಿಲಿಂಗವಾಗುವುದು.  
ತ್ರಿಲಿಂಗವಾದಾಗ ಇದು ಸರ್ವನಾಮಸಂಜ್ಞೆಯನ್ನು  
ಹೊಂದುವುದು. (ಪುಂ) ಯಾವನು? ಯಾವುದು? ಕ:  
ಕೌ ಕೇ। ಕಮ್ ಕೌ ಕಾನ್। ಇತ್ಯಾದಿ. "क इत्थं भाषते  
पाकशासने मयि शासति" ನೆಪಂ ೧೭-೮೪। "कस्त्वं  
कुतो वेति न जातु शेकुस्तं प्रष्टुमप्यप्रतिभातिभारात्"  
ನೆಪಂ ೮-೭। "अलं नलः कर्तुमनग्निसाक्षिकं विधि  
विवाहे तव सारसाक्षि कम्?" ನೆಪಂ ೯-೮೦। "सुरा:  
स वः केन पपे कृपार्णवः" ನೆಪಂ ೯-೯೪। (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
ಯಾವಳು? ಯಾವುದು? ಕಾ ಕೇ ಕಾ:। ಕಾಮ್ ಕೇ ಕಾ:।  
ಕಯಾ ಕಾಮ್ಯಾಮ್ ಕಾಭಿ:। ಇತ್ಯಾದಿ. "का त्वमेकाकिनी  
भीरु निरन्वयजने वने" ಭट्टಿಂ ೪-೬೬। "वेदोऽपि  
देवकीयाज्ञा तत्राज्ञाः काधिकार्हणा?" ನೆಪಂ ೧೭-೪೯।  
"कामेकपत्नीव्रतदुःखशीलाम्" ಕುಮಾಂ ೩-೭। "कया न  
वाचा मुदमुद्गिरन्ति" ನೆಪಂ ೯-೨೬। (ನಂ) ಯಾವುದು?



किमिति ॐ००३ (अव्य०) यावत्कारणदि०द?

“किमित्यपास्याभरणानि यौवने धृतं त्वया वार्धकशोभि  
वत्कलम्” कुमा० ५-४४।



**ಕಿಮಿವ ಕಿಮಿವ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಏತಕ್ಕಾಗಿ? ಯಾವ ಕಾರಣದಿಂದ? "ಕಿಮಿವಾಖಿಲಲೋಕಕೀರ್ತಿಸಂ ಕಥಯತ್ಯಾತ್ಮ-ಗುಣಂ ಮಹಾಮನಾ:" ಮಾಘಂ ೧೬-೩೧. 2. ಯಾವುದು ತಾನೆ, ಏನು ತಾನೆ. "ಪದಮಪಿ ಚಲಿತುಂ ಯುವಾ ನ ಸೇಹೇ ಕಿಮಿವ ನ ಶಕ್ತಿಹರಂ ಸಸಾಧವಸಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೭-೫೨. ಅತ್ರ ಇವ ಶಬ್ದೋ ವಾಕ್ಯಾಲಂಕಾರೇ.

**ಕಿಮು ಕಿಮು** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪ್ರಶ್ನೆ, ಕೇಳಿಕೆ. ಕಿಂ ಚ ಉಚಿತಂ. "ನೋಭಾವಿಲಾಭಃ ಕಿಮು ದರ್ಪಕಶ್ಚ ಭವಂತಿ ನಾಸತ್ಯಯುತೌ ಭವಂತ:" ನೈಷಂ ೧೦-೪೫. 2. ಉದಾಹರಣೆ, ಸಂಭಾವನೆ, ಉತ್ಪತ್ತಿ. "ಕಿಮು ತದಂತರೂಪೌ ಭಿಷಜೌ ದಿವ: ಸ್ಮರನಲೌ ವಿಶತ: ಸ್ಮ ವಿಗಾಹಿತುಮ್" ನೈಷಂ ೪-೫. 3. ಏನು? ಯಾವುದು? "ನಿರಾಸ್ಪದಂ ಪ್ರದನಕುತುಹಲಿತ್ವಮಸ್ಮಾಸ್ವಧೀನಂ ಕಿಮು ನಿ:ಸ್ಪ-ಹಾಣಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೯. 4. ಎಷ್ಟು ಹೆಚ್ಚು? ಎಷ್ಟು ಕಡಮೆ? "ಯೌವನಂ ಧನಸಂಪತ್ತಿ: ಪ್ರಭುತ್ವಮವಿವೇಕಿತಾ. ಏಕೈಕಮಪ್ಯನರ್ಥಾಯ ಕಿಮು ಯತ್ರ ಚತುಷ್ಟಯಮ್" 5. ಎತಕ್ಕ, ಸಂಶಯ. "ವಿನಿಶ್ಚೇತುಂ ಶಕ್ಯೋ ನ ಸುಖಮಿತಿ ವಾ ದು:ಖಮಿತಿ ವಾ ಪ್ರಮೋಹೋ ನಿद्रಾ ವಾ ಕಿಮು ವಿಷವಿಸರ್ಪ: ಕಿಮು ಮದ:" ತಂ ರಾಂ ೧-೩೫. 6. ಹೇಗೆ?, ಯಾವ ರೀತಿ? "ಕಿಮು ದಿವಂ ಪುನರೆತಿ ಯದೀದೃಶ: ಪತಿಸ್ತು ಏಷ ನಿಷೇವ್ಯ ಹಿ ವಾರುಣಿಮ್" ನೈಷಂ ೪-೭೦. 7. ಏತಕ್ಕಾಗಿ? ಯಾವ ಕಾರಣದಿಂದ? "ಮಾರ್ಗಣೇ-ರಥ ತವ ಪ್ರಯೋಜನಂ ನಾಥಸೇ ಕಿಮು ಪತಿ ನ ಭೂತ:" ಕಿರಾಂ ೧೩-೫೯.

**ಕಿಮುತ ಕಿಮುತ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪ್ರಶ್ನೆ, ಕೇಳಿಕೆ. ಕಿಮ್ ಚ ಉಚಿತಂ. 2. ಎಕಲ್ಪ, ಪಕ್ಷಾಂತರ. 3. ತರ್ಕ, ಸಂಶಯ, ಸಂದೇಹ. 4. ಅತಿಶಯ, ಅಧಿಕ, ಹೆಚ್ಚು. "ಸರ್ವ-ವಿನಯಾನಾಂ ಏಕೈಕಮಪ್ಯಾಯತನಂ ಕಿಮುತ ಸಮವಾಯ:" ಕಾದಂ.

**ಕಿಮ್ಪಚ ಕಿಂಪಚ** (ವಿಂ) ಕೃಪಣ, ಜಿಪುಣ. ಕಿಂ ಪಚತಿ-ಓ ಪಚ್ (ಪಾಕೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). ಅತಿಥಿ ಅಭ್ಯಾಗತರಿಗಲ್ಲದೆ ತನಗೋಸ್ಕರ ಮಾತ್ರ ಅಡಿಗೆ ಮಾಡಿ ಕೊಳ್ಳುವವನು ಕಿಂಪಚನು. "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪). -ಪಚಾನ: -ಪಚಾನ:

**ಕಿಮ್ಪಾಕ ಕಿಂಪಾಕ** (ಪುಂ) ತನ್ನೊಬ್ಬನ ಉಪಕಾರಿ ಮಾಡುವ ಅಡಿಗೆ. ಕುತ್ಸಿತ: ಪಾಕ:

**ಕಿಮ್ಪುರುಷ ಕಿಂಪುರುಷ** (ಪುಂ) ಕಿನರ. ಕಿಂಚಿತ್ ಕುತ್ಸಿತೋ ವಾ ಪುರುಷ: ಕೆಲವರಿಗೆ ಕುದುರೆಯ ಮುಖ ಮನುಷ್ಯ ಶರೀರ ಕೆಲವರಿಗೆ ಮನುಷ್ಯ ಮುಖ ಕುದುರೆಯ ಶರೀರ ಈ ರೀತಿ ವಿಕಾರರೂಪವಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ಇವರು ದೇವತೆಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಪಂಗಡವರು. "ಯಕ್ಷಾ: ಕಿಮ್ಪುರುಷಾ: ಪೌರಾ ಯೋಷಿತೌ ವನದೇವತಾ:" ಕುಮಾಂ ೬-೩೯.

**ಕಿಯತ್ ಕಿಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಶ್ನೆ. ಪ್ರಶ್ನಾರ್ಥಕವಾದಾಗ ಸರ್ವನಾಮಸಂಜ್ಞೆ ಹೊಂದುವುದು. ಕಿಮ್ "ವತುಪ್" ಷಷ್ಠ (೫-೨-೪೦). (ಪುಂ) ಕಿಯಾನ್ ಕಿಯಂತಿ ಕಿಯಂತಿ: ಎಷ್ಟು ಹೆಚ್ಚು ನವನು?, ಎಷ್ಟು ದೊಡ್ಡವನು?, ಎಷ್ಟು ದೊಡ್ಡದು?, ಎಷ್ಟು ಪರಿಮಾಣವುಳ್ಳದ್ದು?. ಕಿಂ ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ "ವತುಪ್" ಷಷ್ಠ (೫-೨-೪೦). "ಕಿಯಾನ್ ಕಾಲಸ್ತವೇವಂ ಸ್ಥಿತಸ್ಯ ಸಂಜಾತ:" ಪञ्ಚತಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಿಯತಿ ಕಿಯತೌ ಕಿಯತೃ: ಎಷ್ಟು ಮಾತ್ರದ್ದು?, ಎಷ್ಟು ಹೆಚ್ಚು ನದು?, ಎಷ್ಟು ದೊಡ್ಡವಳು?, ಎಷ್ಟು ದೊಡ್ಡದು?, "ದದೇಷಿಪಿ ತುಮ್ಯಂ ಕಿಯತಿ: ಕದರ್ಥನಾ: ಸುರೇಷು ರಾಗಪ್ರಸವಾ-ಕೇಶಿನಿ:" ನೈಷಂ ೯-೧೩೧. "ಕಿಯತಿ ಪञ್ಚಸಹಸ್ರಿ ಕಿಯತಿ ಲಕ್ಷಾಪಿ ಕೋಟಿರಪಿ ಕಿಯತಿ. ಅದಾರ್ಯೋತ್ತಮನಸಾಂ ರತ್ನಾವತಿ ವಸುಮತಿ ಕಿಯತಿ" (ನಂ) ಕಿಯತ್ ಕಿಯತಿ ಕಿಯಂತಿ. ಎಷ್ಟು?, ಎಷ್ಟು ಮಾತ್ರ?, ಎಷ್ಟು ದೊಡ್ಡದು?, ಎಷ್ಟು ಪರಿಮಾಣವುಳ್ಳದ್ದು?. "ಜ್ಞಾಸ್ಯಸಿ ಕಿಯದ್ಭುಜೋ ಮೇ ರಕ್ಷತಿ ಮೌವೀಕಿಣಾಶ್ಚು ಇತಿ" ಶಾಕುಂ ೧-೧೨. "ನಿಜ: ಕಟಾಕ್ಷ: ಸ್ವಲ್ಪ ವಿಪ್ರಲಮ್ಯ: ಕಿಯಂತಿ ಯಾವದ್ಭೂಣ ವಾಸರಾಣಿ? ನೈಷಂ ೮-೯೧. 2. ಅಲ್ಪ, ಸ್ವಲ್ಪ, ಕೊಂಚ. "ಕಿಯಾನ್ಯಥಾ-ನೆನ ವಿಯದ್ವಿಭಾಗ: ತಮೋನಿರಾಸಾತ್ ವಿಶದೀಕೃತೋಽಯಮ್" ನೈಷಂ ೨೨-೭೧. 3. ಹೆಚ್ಚು, ಅಧಿಕ, ಬಹಳ. "ಕಿಯತಾಪಿ ಚ ಕಾಲೇನ ಕಾಲ: ಕಲಿರಪೇಯಿವಾನ್" ನೈಷಂ ೧೭-೧೬೨. 4. ಕೆಲವು ಮಾತ್ರ. "ವಾರಿತೋಽಪ್ಯನುಜಗಾಮ ಸಯನ್ ತಂ ಕಿಯಂತ್ಯಪಿ ಪದಾನ್ಯಪರಾಣಿ" ನೈಷಂ ೫-೪೩.

**ಕಿಯತ್ಕಾಲಮ್ ಕಿಯತ್ಕಾಲಮ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಎಷ್ಟು ಕಾಲದಲ್ಲಿ?, ಎಷ್ಟು ಸಮಯದಲ್ಲಿ?, ಎಷ್ಟು ಕಾಲದ ವರೆಗೆ? 2. ಕೆಲವು ಕಾಲ, ಕೆಲವು ಕಾಲದವರೆಗೆ.

**ಕಿಯಚ್ಚಿರಮ್ ಕಿಯಚ್ಚಿರಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಎಷ್ಟು ಕಾಲ?, ಎಷ್ಟು ಕಾಲದವರೆಗೆ?, ಎಲ್ಲಿಯವರೆಗೆ?. "ಕಿಯಚ್ಚಿರಂ ಶ್ರಾಮ್ಯಸಿ ಗೌರಿ ವಿಧತೇ ಮಮಾಪಿ ಪೂರ್ವಾಶ್ರಮಸಂಚಿತಂ ತಪ:" ಕುಮಾಂ ೫-೫೦.

**ಕಿಯದ್ದೂರಮ್ ಕಿಯದ್ದೂರಮ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಎಷ್ಟು ದೂರ?, ಎಷ್ಟು ದೂರದವರೆಗೆ?. "ಪಾದೌ ಕಿಯದ್ದೂರಮಿಮೌ ಪ್ರಯಾಸೇ ನಿಧಿತಸೇ ತುಚ್ಛದಯಂ ಮನಸ್ತೇ" ನೈಷಂ ೮-೨೪. 2. ಸ್ವಲ್ಪದೂರ. (ವಿಂ) 3. ಎಷ್ಟು ದೂರದಲ್ಲಿರುವ?. "ಕಿಯತ್ ದೂರಂ ಯಸ್ಯ. "ಮದರ್ಥಸಂದೇಶಮುಣಾಲಮನ್ಯರ: ಪ್ರಿಯ: ಕಿಯದ್ದೂರ ಇತಿ ತ್ವಯೋದಿತೇ" ನೈಷಂ ೧-೧೩೭.

**ಕಿರ ಕಿರ** (ಪುಂ) 1. ವರಾಹ, ಹಂದಿ. ಕಿರತಿ - ಕೃ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫). 2. ಕೆಸದಗುಂಡಿ,



ತಿಪ್ಪೆ ಹಳ್ಳ. 3. ಊರಿನ ಸಮೀಪಪ್ರದೇಶ. ಕೀರ್ಯತೇತ್ರ  
—ಕೃ ಅಧಿಂ “ಕ:” (ವಿಂ) 4. ಎರಚುವ,  
ಬಿಸಾಡುವ, ಚೆಲ್ಲಾಪಿಲ್ಲಿಯಾಗಿ ಹಾಕುವ.

ಕಿರಕ ಕಿರಕ (ಪುಂ) 1. ಹಂದಿಯ ಮರಿ. ಅಲ್ಪ: ಕಿರ:।  
2. ಲೇಖಕ, ಬರಹಗಾರ, ಬರೆಯುವವನು.

ಕಿರಣ ಕಿರಣ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರ ರಶ್ಮಿ, ಕದಿರು.  
ಕೀರ್ಯತೇ —ಕೃ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) “ಕೃ:” (ತಂ ೨-೮೨)। “एको  
हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्द्रो: किरणेष्विवाङ्क:”  
ಕುಮಾಂ ೧-೩। 2. ಸೂರ್ಯ. ಕೀರ್ಯಂತೇ ರಸಮಯೋಸ್ಮಾತ್ —  
ಕೃ ಕರ್ಮಂ “ಕೃ:”।

ಕಿರಣಮಾಲಿನ್ ಕಿರಣಮಾಲಿನ್ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ-  
ಕಿರಣಾನಾಂ ಮಾಲಾಸ್ತಯಸ್ಯ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೬)।

ಕಿರತ್ ಕಿರತ್ (ವಿಂ) ಎರಚುತ್ತಿರುವ, ಚೆಲ್ಲುತ್ತಿರುವ. ಕೃ  
(ವಿಕ್ಷೇಪೇ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। “स पिशङ्गजटावलि:  
किरत्रुरुतेज: परमेण मन्युना” ಕಿರಾಂ ೧೪-೪೭। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ಡಿಪ್” (೪-೧-೬)। ಕಿರಂತಿ ಕಿರಂತೀ.

ಕಿರಾತ ಕಿರಾತ (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಾಧ, ಬೇಡರವನು. ಕಿರಮವ-  
ಸ್ಕರದೇಶಮತತಿ—ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೇ) “ಅನ್” (೩-೨-೧)।  
“विदन्ति मार्गं नखरन्ध्रमुक्तेर्मुक्ताफलै: केसरिणां  
किराता:” ಕುಮಾಂ ೧-೬। 2. ವಾಮನ, ಗಿಡ್ಡ, ಕುಳ್ಳ.  
“पर्यन्ताश्रयिभिर्निजस्य सदृशं नाम्न: किरातै: कृतम्”  
ರತನಾಂ ೨-೩। 3. ಕಾಡುಮನುಷ್ಯ, ಅರಣ್ಯನಿವಾಸಿ,  
ಅನಾಗರಕ. 4. ಕುದುರೆಯ ಪರಿಚಾರಕ, ಕುದುರೆಯ  
ಯೋಗಕ್ಷೇಮ ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಆಳು. 5. ನೆಲಬೇವು.  
6. ಮ್ಲೇಚ್ಛಜಾತಿಯವನು. “किरात: स्यादल्पतनी  
भूनिम्बम्लेच्छयोरपि” ಮೇದಿಂ। 7. ಕಿರಾತವೇಷಧಾರಿ  
ಯಾದ ಪರಮೇಶ್ವರ. [“किरातार्जुनीय” ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.] (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 8. ಕಿರಾತದೇಶ. “तप्तकुण्डं  
समारभ्य रामक्षेत्रान्तिकं शिवे। किरातदेशो विज्ञेयो  
विन्ध्यशैलेऽवतिष्ठते”। (ಸ್ತ್ರೀಂ)—ತೀ-ತೀ. [“किराती”  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಕಿರಾತತೀ ಕಿರಾತತೀ (ಪುಂ) ನೆಲಬೇವು. ಕಿರಾತದೇಶೋ  
ಜನ್ಮಸ್ಥಾನಮಸ್ಯ “ಅಚ್” (೪-೨-೧೨೭)। ಕಿರಾತಶ್ಚಾಸೌ  
ತಿತ್ತಶ್ಚ।

ಕಿರಾತಾರ್ಜುನೀಯ ಕಿರಾತಾರ್ಜುನೀಯ (ನಂ) ಕಿರಾತ  
ಮತ್ತು ಅರ್ಜುನ ಇವರ ಯುದ್ಧವನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವ ಒಂದು  
ಕಾವ್ಯ. ಈ ಕಾವ್ಯವು ಭಾರವಿಕವಿವರಚಿತವಾದುದು.  
किरातं च अर्जुनं च अधिकृत्य कृतो ग्रन्थ: “ಛ:”

(೪-೩-೮೮)। ಈ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಹದಿನೆಂಟು ಸರ್ಗಗಳಿರುವುವು.  
“भारवेरथगौरवम्” ಎಂಬಂತೆ ಬಹಳ ಅರ್ಥಗರ್ಭಿತವಾದ  
ಶೈಲಿಯಲ್ಲಿ ಅತಿ ಸುಂದರವಾಗಿ ನಾರಿಕೇಳಪಾಕದಲ್ಲಿ ಈ  
ಕಾವ್ಯವು ರಚಿತವಾಗಿರುವುದು. [ಕಥಾವಸ್ತು: ಪಾಂಡವರು  
ದ್ವೈತವನದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಒಬ್ಬ ವನೇಚರನು  
ದುರ್ಯೋಧನನ ರಾಜ್ಯಭಾರದ ವೈಖರಿಯನ್ನು ಧರ್ಮ  
ರಾಜನಲ್ಲಿ ವರ್ಣಿಸುತ್ತಿದ್ದುದನ್ನು ಕಂಡು ಶತ್ರುವಿ  
ನಿಂದಂಟಾದ ಪರಾಭವ ಮತ್ತು ಆಗ ತಾವು ಅನುಭವಿ  
ಸುತ್ತಿದ್ದ ಕಷ್ಟ ಇವುಗಳಿಂದ ತಾಳಲಾರದಷ್ಟು ಕೋಪವು  
ಉಕ್ಕಿಬಂದು ದ್ರೌಪದಿ ಮತ್ತು ಭೀಮಸೇನ ಇವರನ್ನು  
ಬಹಳವಾಗಿ ಕೆರಳಿಸಿತು. ಧರ್ಮರಾಜನು ನೀತಿಬೋಧೆ  
ಯಿಂದ ಇವರನ್ನು ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸುತ್ತಿರುವಾಗ ಪರಮ  
ಕಾರುಣಿಕರಾದ ವೇದವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಗಳು ಬಂದು ಶತ್ರು  
ಗಳನ್ನು ಜಯಿಸಲು ಅರ್ಜುನನಿಗೆ “ಪಾಶುಪತಾಸ್ತ್ರ”  
ಮಂತ್ರವನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸಿ ಹೋಗುವರು. ಮಂತ್ರೋಪ  
ದೇಶ ಹೊಂದಿದ ಅರ್ಜುನನು ಇಂದ್ರಕೀಲ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ  
ಪರಮೇಶ್ವರನನ್ನು ಕುರಿತು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ  
ಮೂಕನೆಂಬೊಬ್ಬ ದಾನವನು ಅರ್ಜುನನನ್ನು ಹೆದರಿಸಲು  
ವರಾಹ (ಹಂದಿ) ರೂಪದಿಂದ ಅರ್ಜುನನ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ  
ಬಂದಾಗ ಪರಮೇಶ್ವರನು ಆ ದಾನವನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಲೂ  
ಪರಮಕೃಪೆಯಿಂದ ಅರ್ಜುನನಿಗೆ ಪಾಶುಪತಾಸ್ತ್ರವನ್ನು  
ಅನುಗ್ರಹಿಸಲೂ ಕಿರಾತರೂಪದಿಂದ ಬಂದು ವರಾಹದ  
ಮೇಲೆ ಬಾಣ ಪ್ರಯೋಗಿಸಲು ಅದೇ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಅರ್ಜು  
ನನೂ ಹಂದಿಯನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲು ಬಾಣ ಬಿಡುವನು. ಇದ  
ರಿಂದ ವರಾಹವು ಅಸುವನ್ನು ನೀಗಲು ಅದರ ಮೈಮೇಲಿದ್ದ  
ಬಾಣಗಳನ್ನು ತೆಗೆಯಲು ಹೋದ ಕಿರಾತ-ಅರ್ಜುನನಿಗೆ  
ವಿಶೇಷ ವಾಗ್ವಾದ ನಡೆದು ಕೊನೆಗೆ ಘೋರವಾದ ಅಸ್ತ್ರ  
ಯುದ್ಧ, ಬಾಹುಯುದ್ಧಗಳು ನಡೆಯುವುವು. ಅರ್ಜುನನ  
ವೀರ್ಯಾತಿಶಯದಿಂದ ಮೆಚ್ಚಿದ ಪರಮೇಶ್ವರನು ಅವನ  
ಅನುಗ್ರಹಾರ್ಥವಾಗಿ ನಿಜರೂಪವನ್ನು ತಾಳಿ ಪಾರ್ವತೀ  
ಸಮೇತನಾಗಿ ದರ್ಶನವನ್ನಿತ್ತು ನಿಲ್ಲಲು ಅರ್ಜುನನು ತನ್ನ  
ಅಪರಾಧಕ್ಕಾಗಿ ಕ್ಷಮೆ ಬೇಡಿ ನಾನಾ ವಿಧವಾಗಿ ಸ್ತುತಿ  
ಸುವನು. ಬಳಿಕ ಪ್ರಸನ್ನನಾದ ಪರಶಿವನು ಅರ್ಜುನನಿಗೆ  
ಪಾಶುಪತಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸುವನು. ಇವರಿವರ  
ಈ ವಿಷಯವನ್ನು ವರ್ಣಿಸಿದ ಈ ಕಾವ್ಯಕ್ಕೆ “किरातार्जु-  
नीयम्” ಎಂಬ ಹೆಸರಾಗಿದೆ.]

ಕಿರಾತಾಶಿನ್ ಕಿರಾತಾಶಿನ್ (ಪುಂ) ಗರುಡ. ಕಿರಾತಾನ್  
ಅಶ್ವನಾತಿ — ಅಶ (ಭೋಜನೆ) “ಗಿಣಿ:” (೩-೨-೭೮)।  
[ತನ್ನ ತಾಯಿಯಾದ ವಿನತೆಯನ್ನು ಕದ್ದು, ವಿನ ದಾಸ್ಯದಿಂದ



ಬಿಡಿಸಲು ದೇವಲೋಕದಿಂದ ಅಮೃತವನ್ನು ತರಲು ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದಾಗ ತಾಯಿಯ ಮಾತಿನಂತೆ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಅಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಕಿರಾತರನ್ನು ತಿನ್ನುತ್ತಿದ್ದುದರಿಂದ ಗರುಡನಿಗೆ ಈ ಹೆಸರಾಯಿತು.]

**ಕಿರಾತಿ ಕಿರಾತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಪಾರ್ವತಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಕಿರಾತವೇಷಧಾರಿಯಾದ ಪರಮೇಶ್ವರನೊಡನೆ ಪಾರ್ವತಿಯೂ ಕಿರಾತವೇಷವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. 2. ಬೇಡರವನ ಹೆಗಸು (ಹೆಂಡತಿ). ಕಿರಾತ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೪೮) 3. ಗಂಗಾನದಿ. 4. ಚಾಮರವನ್ನು ಹಿಡಿಯುವ ಹೆಗಸು. "ನೊಸಂಶಯ: ಪಾರ್ವತಾಂ ಕಿರಾತಿಮುಪಾಂತ-ವಾಲವ್ಯಜನಾಂ ಬಭಾಷೆ" ರಘುಂ ೧೬-೫೭. 5. ಕುಟ್ಟಿನಿ, ತಲೆ ಹಿಡಕಿ. "ಕಿರಾತಿ ಕುಟಿನಿ ಗಜ್ಜಾ" ಹೇಮಂ. "ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಚಾಮರಧಾರಿಣ್ಯಾಂ ಕುಟಿನಿಧುರ್ಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ.

**ಕಿರಿ ಕಿರಿ (ಪುಂ)** 1. ವರಾಹ, ಹಂದಿ. ಕಿರಿತಿ ಭೂಮಿ — ಕ್ಕ (ವಿಕ್ಷೇಪೆ) "ಇ:" (೩ಂ ೪-೧೪೨) 2. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೀಪ್".

**ಕಿರಿಟ ಕಿರಿಟ (ಪುಂ)** 1. ಕಿರಿಟ, ಮುಕುಟ, ಮುಡಿ. ಕಿರಿತನೇನ — ಕ್ಕ (ವಿಕ್ಷೇಪೆ) "ಕೀಟನ್" (೩ಂ ೪-೧೮೪) 1. "ದೇವಾಸ್ತದಂತೇ ಹರ್ಮೂಢಾರ್ಯ ಕಿರಿಟಬದ್ಧಾಞ್ಜಲಯೋ ನಿಪತ್ಯ 1. ಶಾಪಾವಸಾನೇ ಪ್ರತಿಪನ್ನಮೂರ್ತಯಾಚಿರೇ ಪಂಚಶರಸ್ಯ ಸೇವಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೧೨. 2. ರುಮಾಲು, ಪೇಟ, ಮುಂಡಾಸ.

**ಕಿರಿಟಿನ್ ಕಿರಿಟಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ಅರ್ಜುನ. ಕಿರಿಟೋಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫) 1. [ಅರ್ಜುನನು ದಾನವರೊಡನೆ ಯುದ್ಧಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಇಂದ್ರನು ಅವನ ತಲೆಯ ಮೇಲೆ ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ ಕಿರಿಟವೊಂದನ್ನು ಇಟ್ಟಿದ್ದರಿಂದ ಅವನಿಗೆ "ಕಿರಿಟಿನ್" ಯೆಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು.] "ಪುರಾಶಕ್ರೇಣ ಮೇ ದತ್ತಂ ಯುಧ್ಯತೋ ದಾನವರ್ಬಂಹಿ: 1. ಕಿರಿಟಂ ಮೃಗ್ಧಿನ್ ಸೂರ್ಯಾಂ ತೇನಾಹುರ್ಮಾ ಕಿರಿಟಿನ್" ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೪೦-೧೭. ಇದು ಅರ್ಜುನನು ಉತ್ತರಕುಮಾರನಿಗೆ ತನ್ನ ಹತ್ತು ಹೆಸರುಗಳನ್ನು ವಿವರಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಹೇಳಿದ ಮಾತು. "ತೃತೀಯೇಷು ಪದೇಷು ಕಿರಿಟಿನಾ ಲುಲಿತದೃಷ್ಟಿ ಮದಾದಿವ ಚಸ್ಥಲೇ" ಕಿರಾಂ ೧೮-೬. (ವಿಂ) 2. ಕಿರಿಟವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ. "ಕಿರಿಟಿನಂ ಗದಿನಂ ಚಕ್ರಿಣಂ ಚ ತೇಜೋರಾಶಿ ಸರ್ವತೋ ದೀಪ್ತಿಮಂತಮ್" ಗೀತಾ ೧೧-೧೭.

**ಕಿರ್ಮಿರ ಕಿರ್ಮಿರ (ಪುಂ)** 1. ಹೆರಿಳಿಗಡ. ಕ್ಕ (ವಿಕ್ಷೇಪೆ) "ಇರನ್" (೩ಂ ೪-೩೦) 1. ನಿಪಾಂ. 2. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. ಇವನು ಭೀಮಸೇನನಿಂದ ಹತನಾದನು. (ವಿಂ) 3. ಚಿತ್ರ ವರ್ಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ, ನಾನಾ ಬಣ್ಣಗಳುಳ್ಳ. "ಕಿರ್ಮಿರೋ ನಾಗರಜ್ಞೇ ಚ ಕರ್ಬುರೇ ರಾಕ್ಷಸಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ. "ನಭೋಪಿ ಕಿರ್ಮಿರಮಕಾರಿ ತೇವಾಮ್" ನೆಪಂ ೧೦-೩೧.

**ಕಿರ್ಮಿರಜಿತ್ ಕಿರ್ಮಿರಜಿತ್ (ಪುಂ)** ಭೀಮಸೇನ. ಕಿರ್ಮಿರಂ ಜಯತಿ — ಜಿ (ಜಯೆ) "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೬೧) 1.

**ಕಿರ್ಮಿರಿತ ಕಿರ್ಮಿರಿತ (ವಿಂ)** 1. ಬೆರಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಿಶ್ರ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ನಾನಾ ಬಣ್ಣವಾಗಿರುವ, ಚಿತ್ರವಿಚಿತ್ರವಾಗಿರುವ. ಕಿರ್ಮಿರೋಸ್ತಸ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತಚ್" (೫-೨-೩೬) 1. "ತತ್ರಾಸ್ಮಿ ಪತ್ಯುರ್ವಿರವಸ್ಯಯೇಹ ಶರ್ಮೋಮಿಕಿರ್ಮಿರಿತಧರ್ಮಲಿಪ್ತು:" ನೆಪಂ ೬-೧೭.

**ಕಿಲ ಕಿಲ (ಅವ್ಯಂ)** ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಕೊಡುವ ಒಂದು ಅವ್ಯಯ. 1. ನಿಜವಾಗಿಯೂ, ವಾಸ್ತವವಾಗಿಯೂ. "ಅಲಂ ನಲಂ ರೋದ್ಧುಮಮಿ ಕಿಲಾಭವನ್ಗುಣಾ ವಿವೇಕ-ಪ್ರಮುಖಾ ನ ಚಾಪಲಮ್" ನೆಪಂ ೧-೫೪. 2. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ, ಎಲ್ಲರಿಗೂ ತಿಳಿದಿರುವುದು. "ದೇವ: ಸ್ವಯಂ ವಸತಿ ತತ್ರ ಕಿಲ ಸ್ವಯಂಭು:" ನೆಪಂ ೧೧-೨೯. 3. ಅಲೀಕ, ಅಸತ್ಯ, ನಟನೆ. "ಅರಮಯನ್ ಭವನಾದಚಿರದೃತೇ: ಕಿಲ ಭಯಾದಪಪಾತುಮನಿಚ್ಛವ:" ಮಾಧಂ ೬-೪೦. 4. ವಾಕ್ಯಾಲಂಕಾರ. "ಅಲಂಕಾರಂ ಪಾದಸರೋರುಹಾಘ್ರೇ ಸರೋರುಹಾಘ್ರಾ: ಕಿಲ ಸಂನಿವೇಶ್ಯ" ಕುಮಾಂ ೯-೨೭. 5. ಆಗಮ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ. "ಕಸಂ ಜಘಾನ್ ಕಿಲ ವಾಸುದೇವ:" 1. "ಸಾನಿಧ್ಯ-ಯೋಗಾತ್ಕಿಲ ತತ್ರ ಶಯಾ: ಸ್ವಯಂವರಕ್ಷೋಭಕೃತಾಮಭಾವ:" ರಘುಂ ೭-೩. 6. ನೃಕಾರ, ತಿರಸ್ಕಾರ. "ಲಘುಕರೀಷ್ಯಮತಿ-ಭಾರಭಙ್ಗುರಾಮಮ್ ಕಿಲ ತ್ವಂ ತ್ರಿವಿವಾದವಾತರ:" ಮಾಧಂ ೧-೩೬. 7. ಊಹೆ, ಸಂಭಾವನೆ, ಹೀಗಿರಬಹುದೆಂಬ ಬುದ್ಧಿ. "ದೋಷಾಪಿ ನೂನಮಹಿಮಾಂಶುರಸೌ ಕಿಲೇತಿ ವ್ಯಾಕೋಶ-ಕೋಕನದತಾಂ ದಧತೇ ನಲಿನ್ಯ:" ಮಾಧಂ ೪-೪೬. 8. ಅರುಚಿ, ಅಸಮಾಧಾನ. "ಎವಂ ಕಿಲ ಕೇಚಿದ್ವದಂತಿ" 1. "ಇದಂ ಕಿಲಾವ್ಯಾಜಮನೋಹರಂ ವಪುಸ್ತಪ:ಕ್ಷಮಂ ಸಾಧಯಿತುಂ ಯ ಇಚ್ಛತಿ" ಶಾಕುಂ ೧-೧೬. 9. ಐತಿಹ್ಯ. "ಪ್ರವರ್ತಯಾಮಾಸ ಕಿಲಾನಸೂಯಾ ತ್ರಿಸೋತಸಂ ತ್ಯಮ್ಬಕಮೌಲಿಮಾಲಾಮ್" ರಘುಂ ೧೩-೫೧. 10. ಹೇತು, ಕಾರಣ. "ಸ ಕಿಲೇವಮುಕ್ತವಾನ್" 1. 11. ವಾರ್ತೆ. 12. ಅನುನಯ. "ಕಿಲಶಬ್ದಸ್ತು ವಾರ್ತಾಃ ಸಂಭಾವ್ಯಾನ್-ನಯಾರ್ಥಯೋ:" ಮೇದಿಂ.

**ಕಿಲಕಿಚ್ಚಿತ ಕಿಲಕಿಚ್ಚಿತ (ನಂ)** ಹೆಂಗಸರ ಸ್ವಭಾವ ಜನ್ಯವಾದ ಹದಿನೆಂಟು ವಿಧ ಅಲಂಕಾರಗಳಲ್ಲೊಂದು, ಒಂದು ವಿಧ ಶೃಂಗಾರಚೇಷ್ಟೆ. ಕಿಲ ಅಲೀಕೇನ ಇಷ್ಟಂ ಚಿತ್ರಮ್ ರಚಿತಮ್. ಹರ್ಷದಿಂದ ಮುಗುಳ್ಳಗೆ ಪರಮಪ್ರೀತಿಪಾತ್ರವಾದ ವಸ್ತುವು ದೊರೆತಾಗ ಕಾರಣವಿಲ್ಲದೆ ಅಳುವುದು ನಗುವುದು ಭಯ ಕೋಪ ಶ್ರಮ ಇವುಗಳ ಸಾಂಕರ್ಯ (ಬೆರಕೆ)ವು "ಕಿಲಕಿಚ್ಚಿತ" ವೆನಿಸುವುದು. "ಸ್ಮಿತ-ಶುಕ್ಲಹದಿತಹಸಿತತ್ರಾಸಕ್ರೋಧಶ್ರಮಾದೀನಾಮ್ 1. ಸಾಂಕರ್ಯಂ ಕಿಲ-



ಕಿಚ್ಚಿತಮಭಿಷ್ಠತಮಸಂಗಮಾದಿಜಾಢ್ವರ್ತಾತ್" ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೦೧।  
"ಆವಾಸ: ಕಿಲಕಿಚ್ಚಿತಸ್ಯ ದಯಿತಾ: ಪಾಶ್ವೇ ವಿಲಾಸಾಲಸಾ::"  
ಭರ್ತಂ ೨-೮೩।

**ಕಿಲಕಿಲಾ ಕಿಲಕಿಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹರ್ಷದ್ವನಿ. "ಆಸೀತ್  
ಕಿಲಕಿಲಾಶಬ್ದಸ್ತಸ್ಮಿನ್ ಗಚ್ಛತಿ ಪಾರ್ಥಿವೇ" ಭಾಂ ಆದಿಂ  
೬೯-೮। 2. ವೀರಪುರುಷನ ಸಿಂಹನಾದ. "ಜಿತಶಾಸ್ತ್ರ-  
ವದನಸ್ಯ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾಪೂರಣೀಕೃತ:। ವೀರಸ್ಯ ಗರ್ಜಿತಂ ಸಿಂಹನಾದ:  
ಕಿಲಕಿಲಾ ತಥಾ"।

**ಕಿಲಾಟ ಕಿಲಾಟಿ** (ಪುಂ) ಹೆಪ್ಪುಗಟ್ಟಿ ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಹಾಲು,  
ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕುದಿಯಿಸಿ ಮುದ್ದೆಯಾದ ಹಾಲು, ಹಾಲು  
ಮೀಸುವ. "ಕಿಲಾಟ: ಶೋಷಿತಧೀರಪಿಂಡಸ್ಸುರಿಭಿರಿಣ್ಯತೇ"  
ಹಾರಾಂ। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"। ಕಿಲಾಟಕ: ಕಿಲಾಟಕಿ: "ನಷ್ಟ-  
ದ್ರವ್ಯಸ್ಯ ಪಕ್ವಸ್ಯ ಪಿಂಡ: ಪ್ರೋಕ್ತ: ಕಿಲಾಟಕ:" ಭಾವಪ್ರಂ।

**ಕಿಲಾಟಿನ್ ಕಿಲಾಟಿನ್** (ಪುಂ) ಬಿದಿರು ಮೆಳೆ, ವಂಶವೃಕ್ಷ.  
ಕಿಲತಿ—ಕಿಲ (ಶ್ವೇತಕ್ರೋಡನಯೋ:) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫)।  
ಅಟತಿ—ಅಟ (ಗತೌ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮)। ಕಿಲಿಚಾಸೌ  
ಅಟಿ ಚ। "ರೇಣು: ಸತೀಲಸ್ತೃಣಕೇತುಮೃತ್ಯುಬೀಜೌ ಕಿಲಾಟಿ ಚ  
ತತ: ಸುಪರ್ವಾ" ಹಾರಾಂ।

**ಕಿಲಾಸ ಕಿಲಾಸ** (ನಂ) 1. ಚೆಬ್ಬು, ಚರ್ಮದ ಮೇಲಿನ  
ಬೆಂಚೆ. 2. ತುರಿಗಜ್ಜೆ. ಕಿಲ (ಶ್ವೇತಕ್ರೋಡನಯೋ:) "ಕ:"  
(೩-೧-೧೩೫)। ಅಸ್ಯತಿ—ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೇ) "ಅಚ್"  
(೩-೧-೧೩೪)। ಕಿಲಂ ಚ ತದಸಂ ಚ। 3. ಕುಷ್ಠರೋಗ.  
ಕಿಲೇನ ಶ್ವೇತೇನ ಅಸತಿ—ಅಸ (ದೀಪ್ತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।  
(ವಿಂ) 4. ಮೈ ಚೆಬ್ಬುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. 5. ಕುಷ್ಠರೋಗ  
ವುಳ್ಳ. ಕಿಲಾಸಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೫-೨-೧೨೭)।

**ಕಿಲಾಸಿನ್ ಕಿಲಾಸಿನ್** (ವಿಂ) 1. ತುರಿಗಜ್ಜೆಯುಳ್ಳವನು.  
2. ಕುಷ್ಠರೋಗವುಳ್ಳವನು. ಕಿಲಾಸಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:"  
(೫-೨-೧೧೫)। 3. ಚೆಬ್ಬುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದವನು.

**ಕಿಲಿಜ್ಜ ಕಿಲಿಜ್ಜ** (ನಂ) 1. ಹುಲ್ಲಿನ ಚಾಪೆ. ಕಿಲಿಜ್ಜೇನ  
—ಕಿಲ (ಶ್ವೇತಕ್ರೋಡನಯೋ:) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೯)।  
ಕಿಲೇರ್ಜಾತ:—ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಙ:" (೩-೨-೯೮)।  
ಪೃಷಂ। (ಪುಂ) 2. ತೆಳುವಾದ ಹಲಗೆ. "ಕಿಲಿಜ್ಜಸ್ತು  
ಸೂಕ್ಷಮದಾರು" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಕಿಲಿಜ್ಜಕ ಕಿಲಿಜ್ಜಕ** (ಪುಂ) 1. ಹುಲ್ಲಿನ ಚಾಪೆ.  
ಕಿಲಿಜ್ಜ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೫-೪-೫)। "ಕಟಕಿಲಿಜ್ಜಕೌ"  
ಅಮಂ। 2. ಹುಲ್ಲಿನ ಹಗ್ಗ, ಹುಲ್ಲಿನಿಂದ ಮಾಡಿದ ಹುರಿ.

**ಕಿಲಿಮ ಕಿಲಿಮ** (ನಂ) ದೇವದಾರು ಮರ. "ಮರಿಚಂ  
ಪಿಪ್ಪಲಿಮೂಲಂ ಮಗಧಾಗಜಪಿಪ್ಪಲಿ। ಸರಲ: ಕಿಲಿಮಂ ಹಿಡ್ಗು  
ಭಾರ್ಗೀತೇಜೋವತೀ ತ್ವಚೌ" ಚರಕಂ ಕಲ್ಪಂ ೭-೧೨।

**ಕಿಲಿಕ್ ಕಿಲಿಕ್** (ಪುಂ) ಅಡ್ಡ, ಕುದುರೆ. "ಅಶ್ವಕಿಲಿಕ್ ಹರಿ-  
ಕ್ರಾಂತ: ಶಾಲಿಹೋತ್ರಾಶ್ಚ ಮುದ್ಗಭುಕ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಕಿಲಿಬಿಷ ಕಿಲಿಬಿಷ** (ನಂ) 1. ಪಾಪ. ಕಿಲಿಬಿಷ—ಕಿಲ (ಕ್ಷೇಪೇ)  
"ಟಿಷ್ಚ್" ಬುಕ್ ಚ (೩ಂ ೧-೫೦)। "ಸ್ವಂ ವಪು: ಸ ಕಿಲ  
ಕಿಲಿಬಿಷಚ್ಛಿದಾಂ ರಾಮಪಾದರಜಸಾಮನುಗ್ರಹ:" ರಘುಂ ೧೧-೩೪।  
2. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. 3. ಅಪರಾಧ, ತಪ್ಪು. "ಅಥ  
ಕಿಲಿಬಿಷಮ್। ಪಾಪೇ ರೋಗೋಽಪರಾಧೇ ಚ" ಹೇಮಂ। "ಕೋ ಮೇ ಲುಬ್ಧಕ  
ದೋಷೋಽಪಿ ವಿಚ್ಛತೇ ಯದಿ ಬಾಲಿಷ। ಅಸ್ವತನ್ತ್ರಂ ಚ ಮಾಂ ಮೃತ್ಯುರ್ವಿವಶಂ  
ಯದಚ್ಚುದತ್। ತಸ್ಯೈವ ವಚನಾದೃಷ್ಟೋ ನ ಕೋಪೇನ ನ ಕಾಮ್ಯಯಾ।  
ತಸ್ಯ ತತ್ಕಿಲಿಬಿಷಂ ಲುಬ್ಧ ವಿಚ್ಛತೇ ಯದಿ ಕಿಲಿಬಿಷಮ್" ಭಾಂ  
ಅನುಂ ೩೫-೩೬।

**ಕಿಲಿಬಿಷಿನ್ ಕಿಲಿಬಿಷಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಪಾಪಮಾಡಿರುವ,  
ಪಾಪಾತ್ಮನಾದ. ಕಿಲಿಬಿಷಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫)।  
2. ಅಪರಾಧವುಳ್ಳ, ತಪ್ಪುಮಾಡಿದವನು. "ಕಿಲಿಬಿಷಿ  
ಚಾಪಿ ಮೇ ವಧ್ಯ ಕಿಲಿಬಿಷಿ ಚಾಪಿ ಪನ್ನಗ। ಆತ್ಮಾನಂ ಕಾರಣಂ  
ಹ್ಯತ್ರ"। 3. ರೋಗವುಳ್ಳವನು.

**ಕಿಶ(ಸ)ರ ಕಿಶ(ಸ)ರ** (ಪುಂ) ಮಾರಾಟಕ್ಕಿಟ್ಟಿರುವ  
ಒಂದು ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ.

**ಕಿಶ(ಸ)ರಿಕ್ ಕಿಶ(ಸ)ರಿಕ್** (ಪುಂ) ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯವನ್ನು  
ಮಾರುವವನು. ಕಿಶ(ಸ)ರ: ಪಣ್ಯಂ ಯಸ್ಯ "ಠನ್"  
(೪-೪-೫೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧)। -ರಿಕೀ  
-ರಿಕೀ.

**ಕಿಶೋರ ಕಿಶೋರ** (ಪುಂ) 1. ಕುದುರೆಯ ಮರಿ. ಕಿಶಿತ್  
ಶೃಣಾತಿ—ಶು ಹಿಸಾಯಾಮ್ "ಆರನ್" ಟಿಲೋಪಶ್ಚ (೩ಂ  
೧-೬೫)। ಕಿಮ: ಅನ್ಯಲೋಪಶ್ಚ। ನಿಪಾಂ। 2. ಸೂರ್ಯ.  
3. ಹದಿನೈದು ವರ್ಷದೊಳಗಿನ ಬಾಲಕ. "ಕಿಶೋರೋ  
ಹಯಶಾವಕೇ। ಸೂರ್ಯೇ ಯುನಿ" ಹೇಮಂ। 4. ಜಿಂಕೆ, ನರಿ, ಹುಲಿ  
ಮೊದಲಾದ ಮೃಗಗಳ ಮರಿ.

**ಕಿಶೋರಿ ಕಿಶೋರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಮಾರಿ, ಕನ್ಯೆ, ಬಾಲಿಕೆ.  
ಕಿಶೋರ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೨೦)।

**ಕಿಲಿಖಿನ್ ಕಿಲಿಖಿನ್** (ಪುಂ) 1. ದಕ್ಷಿಣ ಭಾರತದಲ್ಲಿ ಒಂದು  
ದೇಶ. 2. ಆ ದೇಶದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಪರ್ವತ. ಕಿ ಕಿ  
ದಧಾತಿ—ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಕ:" (೩-೨-೩)।  
ಈ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಗುಹೆಯು ಕಬಿಗಳ ರಾಜನಾದ  
ವಾಲಿಯ ವಾಸಸ್ಥಾನವಾಗಿದ್ದಿತು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಿಲಿಖಿನ್  
ಕಿಲಿಖಿನ್. ವಾಲಿಯ ರಾಜಧಾನಿಯಾದ ಒಂದು ಪಟ್ಟಣ.  
"ಗಚ್ಛ ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಜಾನಿಹಿ ಕಿಲಿಖಿನ್ಯಾಯಾಂ ಕಪೀಶ್ವರಮ್"।  
"ಕಿಲಿಖಿನ್ಯಾಂ ಸಮುಪಾಗಮ್ಯ ವಾಲಿ ಯುಧಿ ನಿಪಾತುತ:" ರಾಮಾಂ।



ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾಕಾಂಡ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾಕಾಂಡ (ಪುಂ) ವಾಲ್ಮೀಕಿ  
ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ವಾಲಿ ಸುಗ್ರೀವರ ವಿಷಯವನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವ  
ಒಂದು ಕಾಂಡ, ರಾಮಾಯಣದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಕಾಂಡ.

ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾನಗರೀ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾನಗರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾಲಿಯ  
ರಾಜಧಾನಿಯಾದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾಪಟ್ಟಣ.

ಕಿಷ್ಕಿಂಧ್ಯ ಕಿಷ್ಕಿಂಧ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಒಡ್ಡದೇಶ. 2. ಆದೇಶದ  
ಒಂದು ಪರ್ವತ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಧ್ಯಾ -ಧ್ಯಾ. 3. ಆ ಪರ್ವತದ  
ಒಂದು ಗುಹೆ. 4. ವಾಲಿಯ ರಾಜಧಾನಿ.

ಕಿಷ್ಕು ಕಿಷ್ಕು (ಪುಂ) 1. ಹನ್ನೆರಡು ಅಂಗುಲಗಳ ಅಳತೆ.  
2. ಹದಿನೆಂಟು ಅಂಗುಲಗಳ ಅಳತೆ, ಒಂದು ಮೊಳೆ.  
"ಕಿಷ್ಕುಹಸ್ತೇ ವಿತಸ್ತೌ ಚ" ಅಮಂ.

ಕಿಷ್ಕುಪರ್ವನ್ ಕಿಷ್ಕುಪರ್ವನ್ (ಪುಂ) 1. ಕಬ್ಬಿನ ಜಲ್ಲೆ.  
2. ಬಿದಿರು. 3. ಜಂಬು ಹುಲ್ಲು. ಕಿಷ್ಕುಮಿತಂ ಪರ್ವಂ ಯಸ್ಯ.  
"ಕಿಷ್ಕುಪರ್ವಾ ಪುಮಾನಿಕ್ಷೌ ವೇಣಿ ಪೊಟಗಲೇಷಿ ಚ" ಮೇದಿಂ.

ಕಿಸಲಯ ಕಿಸಲಯ (ನಂ) ಹೊಸ ಜೆಗುರು. ಕಿಮ್ ಕಿಷ್ಕಿತ್  
ಸಲತಿ - ಫಲ (ಗತೌ) "ಕಯನ್" ಬಾಹುಂ. ಪೃಥಂ.  
"ಪರಿಪಾಟಲಾಜದಲಚಾರುಣಾ ಸಕೃಚ್ಚಲಿತಾಙ್ಗುಲೀಕಿಸಲಯೇನ  
ಪಾಣಿನಾ" ಮಾಘಂ ೧೩-೪೨.

ಕಿಸಲಯಿತ ಕಿಸಲಯಿತ (ವಿಂ) ಚಿಗುರಿರುವ. ಕಿಸಲಯಿ-  
ಸ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತ್ಯ" (೪-೨-೩೬).

ಕೀಕಟ ಕೀಕಟ (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 1. ಮಗಧ ದೇಶ. "ತತಃ  
ಕಲೌ ಸಂಪ್ರವೃತ್ತೇ ಸಮ್ಮೋಹಾಯ ಸುರದ್ವಿಷಾಮ್ | ಬುದ್ಧೋ ನಾಮ್ನಾ ಜಿನಸುತಃ  
ಕೀಕಟೇಷು ಭವಿಷ್ಯತಿ" ಭಾಗಂ ೧-೩-೨೪. "ಮಾಗಧಾಃ  
ಕೀಕಟಾ ಮತಾಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 2. ಕೀಕಟ ದೇಶದ ಜನರು.  
"ಸಾಧವಃ ಸಮುದಾಚಾರಾಸ್ತೇ ಪುಯಂತೇಷಿ ಕೀಕಟಾಃ" ಭಾಗಂ  
೭-೧೦-೧೯. (ಪುಂ) 3. ಅರ್ಜು, ಕುದುರೆ. (ವಿಂ) 4.  
ಲೋಭಿ, ಕೃಪಣ. 5. ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. 6. ನೀಚ.  
"ಕೀಕಟಃ ಕೃಪಣೇ ನಿಃಸ್ವೇ ತ್ರಿಷು ಪುಂಭೂಮಿ ನಿವೃತಿ" ಮೇದಿಂ.  
"ಕೀಕಟಸ್ತುರಗೇ ನಿಃಸ್ವೇ ದೇಶಭೇದೇ ಮಿತಮ್ಪಚೇ" ವಿಶ್ವಂ.

ಕೀಕಟಾಧಿಪ ಕೀಕಟಾಧಿಪ (ಪುಂ) ಮಗಧದೇಶದ ದೊರೆ.  
"ಅಪಾಙ್ಗರಙ್ಗಸ್ಥಲನಾಟಚಲಮ್ಪಟಾಃ ಕಟಾಕ್ಷಧಾರಾಸ್ತವ ಕೀಕಟಾ-  
ಧಿಪಃ" ನೈಷಂ ೧೨-೮೮.

ಕೀಕಸ ಕೀಕಸ (ಪುಂ) 1. ಕೃಮಿ, ಹುಳು. ಕೀ ಇತಿ  
ಕಸತಿ - ಕಸ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). (ನಂ)  
2. ಎಲುಬು, ಮೂಳೆ. "ಕೀಕಸಸ್ತು ಕೃಮೌ ಕೀಕಸಮಸ್ಥನಿ"  
ಹೇಮಂ. (ವಿಂ) 3. ಗಟ್ಟಿಯಾದ, ದೃಢ (ಕಠಿಣ)ವಾದ.

ಕೀಕಸಾಸ್ಯ ಕೀಕಸಾಸ್ಯ (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಕೀಕಸಮಾಸ್ಯ  
ಯಸ್ಯ.

ಕೀಕಿ ಕೀಕಿ (ಪುಂ) ಚಾಪಪಕ್ಷಿ, ಹಂಗನಹಕ್ಕಿ. ಕೀ ಇತಿ ಶಬ್ದಂ  
ಕಾಯತಿ - ಕೇ (ಶಬ್ದೇ) "ಹಿಃ" ಬಾಹುಂ.

ಕೀಚಕ ಕೀಚಕ (ಪುಂ) 1. ಒಳಗೆ ಟೊಳ್ಳಾಗಿರುವ ಬಿದಿರು.  
ಕೀಚಕೇ - ಕೀಕ (ಆಮರ್ಷಣೆ) "ಕುನ್" (೩ಂ ೪-೩೬).  
ಆಚಂತವಿಪರ್ಯಯಃ | ಇದು ಟೊಳ್ಳಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಗಾಳಿಯು  
ತುಂಬಿ ಶಬ್ದವಾಗುವುದು. "ವೇಣವಃ ಕೀಚಕಾಸ್ತೇ ಸ್ಯುಯೆ  
ಸ್ವನಂತನಿಲೋದಿತಾಃ" ಅಮಂ. "ಸ ಕೀಚಕೇರ್ಮಾಸ್ತೀರ್ಣರಂಧ್ರಃ  
ಕೂಜದ್ವಿರಾಪಾದಿತವಂಶಕೃತ್ಯಮ್" ರಘುಂ ೨-೧೨. 2. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ.  
3. ವಿರಾಟರಾಜನ ಸೇನಾಪತಿ. ಇವನು ದ್ರೌಪದಿಯನ್ನು  
ಕಾಮಿಸಿ ಭೀಮಸೇನನಿಂದ ಹತನಾದನು. [ಕೇಕಯ ರಾಜ  
ನಿಗೆ ಮಾಲವಿಯಲ್ಲಿ ಬಾಣಾಸುರನ ಅಂಶದಿಂದ ಜನಿಸಿದ ಈ  
ಕೇಚಕನಿಗೆ ಒಂದು ನೂರ ಐದು ಮಂದಿ ಸಹೋದರ (ಉಪ  
ಕೇಚಕ)ರೂ ಸುದೇಷ್ಠೆಯೆಂಬ ಸಹೋದರಿಯೂ ಇದ್ದರು.  
ವಿರಾಟರಾಜನು ತನ್ನ ಭಾವಮೈದುನನಾದ ಇವನನ್ನು ತನ್ನ  
ಸೇನಾಪತಿಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದ್ದನು. ಪಾಂಡವರು ವನವಾಸ  
ಕಳೆದು ವಿರಾಟರಾಜನ ರಾಜಧಾನಿಗೆ ಬಂದು ಅಜ್ಞಾತವಾಸ  
ದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ದ್ರೌಪದಿಯೂ ಸೈರಂಧ್ರಿಯ ವೇಷದಿಂದ  
ಸುದೇಷ್ಠೆಯ ಹತ್ತಿರ ಇದ್ದಳು. ಅಕ್ಕನ ಮನೆಗೆ ಬಂದ  
ಕೇಚಕನು ದ್ರೌಪದಿಯನ್ನು ಕಂಡು ಮೋಹಿಸಿ ಅವಳ  
ಮೂಲಕ ಸುರೆಯನ್ನು ತನ್ನ ಮನೆಗೆ ತರಿಸಿಕೊಂಡು  
ಅವಳನ್ನು ಭಂಗಪಡಿಸಲು ಯತ್ನಿಸಿದನು. ದ್ರೌಪದಿಯು  
ರಾಜನಲ್ಲಿ ಎಷ್ಟು ಹೇಳಿಕೊಂಡರೂ ಸಾರ್ಥಕವಾಗದೆ ಕೊನೆಗೆ  
ಭೀಮನಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದು ಮೊರೆಯಿಡಲು ಭೀಮಸೇನನು ಒಂದು  
ದಿನ ರಾತ್ರಿ ಸ್ತ್ರೀವೇಷಧಾರಿಯಾಗಿ ನಾಟ್ಯಶಾಲೆಗೆ ಬಂದು  
ಸರಸಸ್ಥಲಾಪಗಳನ್ನಾಡುತ್ತ ಮುಷ್ಟಿಯುದ್ದದಿಂದ ಅವನನ್ನು  
ಸಂಹರಿಸಿದನು.] ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೧೪.

ಕೀಚಕಜಿತ್ ಕೀಚಕಜಿತ್ (ಪುಂ) ಕೇಚಕನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದ  
ಭೀಮಸೇನ. ಕೀಚಕಂ ಜಯತಿ - ಜಿ (ಜಯೇ) "ಕಿವಪ್"  
(೩-೨-೬೧). -ನಿಷೂದನಃ -ನಿಷೂದನಃ. -ಸೂದನಃ  
-ಸೂದನಃ. ಕೀಚಕಂ ನಿಷೂದಯತಿ ಸೂದಯತಿ ವಾ - ಪೂದ (ಕ್ಷರಣೇ)  
"ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪).

ಕೀಟ ಕೀಟ (ಪುಂ) 1. ಕೃಮಿಗಿಂತಲೂ ಸ್ವಲ್ಪ ದೊಡ್ಡ  
ಜಾತಿಯ ಹುಳು. ಕೀಟ (ಬಂಧ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪).  
"ಕೀಟೋಪಿ ಸುಮನಃಸಂಜ್ಞಾದಾರೋಹತಿ ಸತಾಂ ಶಿರಃ" ಹಿತಂ.  
2. ವೃತ್ತಿಕರಾಶಿ. "ಅಲಿಃ ಸರಿಸೃಪಃ ಕೌಪಿಃ ಕೀಟೋ ವೃತ್ತಿಕ-  
ವಾಚಕಃ" ಮುಹಂ ದೀಂ.

ಕೀಟಕ ಕೀಟಕ (ಪುಂ) 1. ಕೃಮಿ, ಹುಳು. ಕೀಟ ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಕಃ" (ವಿಂ) 2. ಕಠಿನವಾದ, ಗಟ್ಟಿಯಾದ. "ಕೀಟಕಃ



ಕೃಮಿಜಾತೌ ನಾ ನಿಷ್ಕುರೇ ಪುನರನ್ಯವತ್" ಮೇದಿಂ. 3. ಮಾಗಧ ಕುಲ, ಸ್ತುತಿಮಾಂಕರ ವಂಶ, ಹೊಗಳಿಕುಂಭಕರ ಬುಡಕಟ್ಟು. ಕೊಟಜ್ಜ ಕೀರ್ತಿ (ಪುಂ) ಕೃಮಿಗಳನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ ಗಂಧಕ. ಕೀರ್ತಿ ಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತೃಯೋಃ) "ತಕ್" (3-2-43)।

ಕೊಟಜ್ಜ ಕೀರ್ತಿ (ನಂ) 1. ಮಾಗುಟ, ರೇಷ್ಮೆ ವಸ್ತ್ರ. "ಕಾರ್ಪಾಸ-ಕೊಟಜೋರ್ಣಿನಾಂ ದ್ವಿಶಫೈಕಶಫಸ್ಯ ಚ" ಮನುಂ 11-166. (ವಿಂ) 2. ಕೃಮಿಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜಾ -ಜಾ. ಲಂಗು. ಕೊಟೇಮ್ಯೋ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಮವಿ) "ಙ:" (3-2-96)।

ಕೊಟಮಣಿ ಕೀರ್ತಿಮಣಿ (ಪುಂ) ಬಿದ್ಯೋತ, ಮಿಂಚುಹುಳು, ಮಿಂಚುಹುಳು. ಕೊಟೇಷು ಮಣಿರಿವ।

ಕೊಟಸಂಜ್ಞ ಕೀರ್ತಿ (ಪುಂ) ವೃತ್ತಿಕರಾಶಿ. ಕೊಟ: ಸಂಜ್ಞಾ ಯಸ್ಯ।

ಕೊವುಷ ಕೀರ್ತಿ (ವಿಂ) ಯಾವ ವಿಧವಾದ? ಯಾವ ತೆರನಾದ? ಎಂತಹ? ಕಿಮಿವ ಪಶ್ಯತಿ - ಕಿಮ್ + ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) "ಕ್ಸ:" (ವಾಂ 3-2-47)। ಕಿಮ: ಕೊ ಆದೇಶ: (6-3-90)। "ಕಿವನ್" (3-2-60)। ಕೊವುಷ ಕೀರ್ತಿ. "ತದ್ವೋ: ಕೊದೃಗಸೌ ವಿವೇಕವಿಭವ: ಕೊದೃಕ್ ಪ್ರಬೋಧಯ:" ಪ್ರಬೋಧಂ 1-12। "ಕಬ್" (3-2-60)। ಕೊವುಷ: ಕೀರ್ತಿ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಕಸೇ "ಟಾಪ್" (4-1-4)। ಕೊವುಷಾ ಕೀರ್ತಿ. ಕವಿ "ಡಿಪ್" (4-1-14)। ಕೊವುಷಿ ಕೀರ್ತಿ. ಕಿವನಿ ಕೊವುಷ್ ಕೀರ್ತಿ.

ಕೊನಾಶ ಕೀರ್ತಿ (ಪುಂ) 1. ಬೇಸಾಯಗಾರ, ರೈತ. ಕಿಲಿಷ್ನಾತಿ - ಕಿಲಿಷ್ (ವಿಬಾಧನೇ) "ಕನ್" ಉಪಧಾಯಾ ಇತ್ವಮ್ ಲಸ್ಯ ಲೋಪ: ನಾಮ್ ಆಗಮಶ್ಚ (ಉಂ 4-4-46)। "ಕೊನಾಶೋ ಗೋವುಷೋ ಯಾನಮಲಕ್ಷಾರಶ್ಚ ವೇಷಮ್ ಚ। ವಿಪ್ರಸ್ಯೋದಾರಿಕಂ ದೇಯ-ಮೇಕಾಂಶಶ್ಚ ಪ್ರಧಾನತ:" ಮನುಂ 9-140. 2. ಯಮಧರ್ಮಯ್ಯ. ಕೊ ಕುತ್ಸಿತಂ ನಾಶಯತಿ - ಣಶ (ಅದೃಶನೇ) + ಣಿಕ್ "ಅಚ್" (3-1-134)। "ಹುತಾಶಕೊನಾಶಜಲೇಶದ್ವಿತೀನಿರಾ-ಕರಿಣ್ಣೋ: ಕೃತಕಾಕುಯಾಚ್ಚಾ:" ನೈಷಂ 6-34. "ಯೇಷಾಂ ಚಿತ್ತೇ ವಸೇದ್ಭುಕ್ತಿ: ಸರ್ವದಾ ಪ್ರೇಮರೂಪಿಣಿ। ನ ತೇ ಪಶ್ಯಂತಿ ಕೊನಾಶಂ ಸ್ವಪ್ನೇಷ್ಯಮಲಮೂರ್ತಯ:" ಭಾಗಂ ಮಾಂ 2-16. (ವಿಂ) 3. ಕೃಷಣ, ರೋಷ, ಜಿಹ್ವಾ. 4. ರೆಹಸ್ಯದಲ್ಲಿ ಕೊಳ್ಳುವವನು. "ಕೊನಾಶ: ಕ್ಷುದ್ರಯಮಯೋ: ಕರ್ಷಕೋಪಾಂಶುಭಾತಿನೋ:" ಹೇಮಂ।

ಕೊರ ಕೀರ್ತಿ (ಪುಂ) 1. ಶುಕ, ಗಿಣಿ. ಕೊತಿ ಇರಯತಿ - ಇರ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಅಚ್" (3-1-134)। "ಸಗವಾಗಿಯ-ಮಿತ್ಯತೋಽಪಿ ಕಿಂ ನ ಮುಧಂ ವಾಸ್ಯತಿ ಕೊರವಾಗಿವ" ನೈಷಂ 2-14।

(ಪುಂಬಂವಂ) 2. ಕಾಶ್ಮೀರ ದೇಶ. 3. ಕಾಶ್ಮೀರದೇಶದ ಜನರು. "ಕೊರ: ಶುಕೇ ಪುಮ್ನಿ ನಿವೃತ್ತಿ" ಮೇದಿಂ. 1. ಬಲ್ಯೆ "ಕನ್" (4-3-44)। ಕೊರಕ: ಕೀರ್ತಿ: ಗಣಿಯ ಮರಿ. ಕೊರೇಶ್ವ ಕೀರ್ತಿ (ಪುಂ) 1. ಮಾವಿನಮರ. 2. ನೀರು ಹಿಜ್ಜೆಮರ. ಕೊರಸ್ಯ ಇಷ್ಟ:।

ಕೊರ್ಣ ಕೀರ್ತಿ (ವಿಂ) 1. ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟ, ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ. ಕ್ (ವಿಷೇಪೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-202)। "ದರ್ಬೇರ್ವಾವಿಲಿಡೆ: ಶ್ರಮವಿವೃತಮುಖಶಿಖಿ: ಕೊರ್ಣವರ್ಮಾ" ಶಾಕುಂ 1-9. 2. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಎರಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕೊರ್ಣ ಶನೇರನುಕಪೋಲ-ಮನೇಕಪಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ 4-34. 3. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗಾಯಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

ಕೊರ್ಣಿ ಕೀರ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎಸೆಯುವುದು. 2. ಮುಚ್ಚುವುದು. 3. ಹರಡುವುದು. ಕ್ (ವಿಷೇಪೇ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)। 4. ಹಿಂಸಿಸುವುದು. ಕ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)।

ಕೊರ್ತನ ಕೀರ್ತಿ (ನಂ) 1. ಹೇಳುವುದು. 2. ಸ್ತುತಿಸುವುದು, ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡುವುದು, ಹೊಗಳುವುದು. ಕೃತ (ಸಂಶಬ್ದನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 3. ವರ್ಣಿಸುವುದು. "ಶ್ರೀಶಬ್ದರಮ್ಯಕೃತಸರ್ಗಸಮಾಪ್ತಲಕ್ಷ್ಮಿ-ಪತೇಶ್ವರಿತಕೊರ್ತನಮಾತ್ರಚಾರ್" ಮಾಘಕವಿವಂಶವರ್ಣನಮ್।

ಕೊರ್ತನಾ ಕೀರ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೇಳುವುದು. ಕೃತ (ಸಂಶಬ್ದನೇ) + ಣಿಕ್ "ಯುಕ್" (3-3-107)। 2. ಯಶಸ್ಸು, ಕೀರ್ತಿ. ಕರ್ಮಂ "ಯುಕ್"।

ಕೊರ್ತನೀಯ ಕೀರ್ತಿ (ವಿಂ) 1. ಸ್ತುತಿಸಲ್ಪಡತಕ್ಕವನು, ಹೊಗಳಲ್ಪಡತಕ್ಕವನು. 2. ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಡತಕ್ಕವನು. 3. ಹೊಗಳಲ್ಪಡುವ. 4. ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಡುವ. ಕೃತ (ಸಂಶಬ್ದನೇ) + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। 5. ಹೊಗಳಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ನೀಯಾ -ನೀಯಾ. "ತಸ್ಯಾ: ಸುರನ್ಯಾಸಪವಿತ್ರಪಾಂಸುಮಪಾಂಸುಲಾನಾಂ ಧುರಿ ಕೊರ್ತನೀಯಾ" ರಘುಂ 2-2।

ಕೊರ್ತಯತ್ ಕೀರ್ತಿ (ವಿಂ) 1. ಹೇಳುತ್ತಿರುವ. ಕೃತ (ಸಂಶಬ್ದನೇ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (3-2-124)। "ವಾಮಿಯಾಯ ದಹನಸ್ಯ ಕೇತನ: ಕೊರ್ತಯನ್ರಿವ ದಿವೌಕಸಾಂ ಪ್ರಿಯಮ್" ಮಾಘಂ 14-26. 2. ವರ್ಣಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಹೊಗಳುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡಿಪ್" (4-1-6)। -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

ಕೊರ್ತಿ ಕೀರ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯಶಸ್ಸು, ಖ್ಯಾತಿ, ಹೆಸರುವಾಸಿ. ಕೊರ್ತೀತೇ - ಕೃತ (ಸಂಶಬ್ದನೇ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಿನ್" (3-3-97)।



ನಿರ್ಯಾಂ. "ಕೀರ್ತಿರೇವ ಭವತಾಂ ಪ್ರಿಯದಾರಾಃ ದಾನನೀರಜರಮೌಕ್ತಿಕ-  
ಹಾರಾ" ನೆಪಂ ೪-೧೨೮. ದಾನಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳಿಂದ  
ಕೀರ್ತಿ, ಕೀರ್ತಿಯಿಂದ ಯಶಸ್ಸು, ಎಂದು ಕೀರ್ತಿ ಯಶಸ್ಸು  
ಗಳಿಗೆ ಭೇದವು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. "ಯಶಃಕೀರ್ತಿಪರಿಭ್ರಾಟೋ  
ಜೀವನ್ಮಪಿ ನ ಜೀವತಿ"। ಆದರೆ ಎರಡು ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿಯೂ  
ಎರಡು ಪದಗಳ ಪ್ರಯೋಗವೂ ಉಂಟು. "ಅಕೃತ್ವಾ  
ಹೇಲಯಾ ಪಾದಮುನ್ವೇಮ್ಭಸು ವಿಧಿಷಾಮ್। ಕಥಂಕಾರಮನಾಲಮ್ಬಾ  
ಕೀರ್ತಿರ್ಮಿಮಿರೋಹತಿ" ಮಾಘಂ ೨-೪೨. 2. ಪ್ರಸಾದ,  
ಸೌಧ, ಮನೆ. 3. ಕಥನ, ಹೇಳುವುದು. 4. ಪ್ರಸಾದ,  
ಅನುಗ್ರಹ. 5. ವಿಸ್ತಾರ. 6. ಕರ್ತೃ, ಕೆಸರು. "ಕೀರ್ತಿ-  
ಯಶಸಿ ವಿಸ್ತಾರೇ ಪ್ರಾಸಾದೇ ಕರ್ಮೇಷು ಚ" ಹೇಮಂ. "ಕೀರ್ತಿಃ  
ಪ್ರಸಾದಯಶಸೋಃ" ಮೇದಿಂ. 7. ದಕ್ಷಿಣ ಪುತ್ರ, ಧರ್ಮಪುರುಷನ  
ಪತ್ನಿ. ಕೀರ್ತಿ: ಲಕ್ಷ್ಮಿ: ಧೃತಿ: ಮೇಧಾ ಪುಷ್ಟಿ: ಶ್ರದ್ಧಾ ಕ್ರಿಯಾ ಬುದ್ಧಿ:  
ಲಜ್ಜಾ ಮತಿ: ಇವೆಲ್ಲರೂ ಧರ್ಮಪುರುಷನ ಪತ್ನಿಯರು.

**ಕೀರ್ತಿತ ಕೀರ್ತಿತ (ನಂ)** 1. ಹೇಳುವುದು. 2. ಹೊಗಳಿ  
ವುದು. 3. ವರ್ಣಿಸುವುದು. ಕೃತ (ಸಂಸಂದನೆ) "ಕ್ತ:"  
(೩-೩-೧೧೪). 4. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು. 5. ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟು.  
6. ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಕೃತ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೦೨).  
"ಕಿಮಿವಾಖಿಲಲೋಕಕೀರ್ತಿತಂ ಕಥಯತ್ಯಾತ್ಮಗುಣಂ ಮಹಾಮನಾಃ"  
ಮಾಘಂ ೧೬-೩೧. "ಜಿತೇಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ ಧುರೀ ಕೀರ್ತಿತಸ್ಥಿತಿಃ"  
ನೆಪಂ ೧-೪೩.

**ಕೀರ್ತಿತವ್ಯ ಕೀರ್ತಿತವ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಸ್ತುತಿಸಲ್ಪಡತಕ್ಕವನು,  
ಹೊಗಳಲ್ಪಡತಕ್ಕವನು. 2. ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಡತಕ್ಕವನು. ಕೃತ  
(ಸಂಸಂದನೆ) + ಣಿವ್ "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬). 3. ಸ್ತುತಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ, ಹೊಗಳಲ್ಪಡುವ. 4. ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಡುವ.

**ಕೀರ್ತಿಪೂರ ಕೀರ್ತಿಪೂರ (ಪುಂ)** ಯಶಸ್ಸಿನ ಪ್ರಮಾಣ,  
ಕೀರ್ತಿಯ ಹೊಸಲು. ಕೀರ್ತಿ: ಪೂರ: ಪ್ರವಾಹ:। "ಕಾಯವ್ಯುಹಃ  
ಕವ ಜಗತಿ ನ ಜಾಗತ್ಯದಃ ಕೀರ್ತಿಪೂರಃ" ನೆಪಂ ೧೨-೪೭.

**ಕೀರ್ತಿಭಾಜ್ ಕೀರ್ತಿಭಾಜ್ (ವಿಂ)** ಪ್ರಾಪ್ತವಂತ, ಕೀರ್ತಿ  
ಯನ್ನು ಪಡೆದವನು, ಹೆಸರುವಾಸಿ ಪಡೆದವನು. ಕೀರ್ತಿ  
ಭಜತೇ - ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಜಿವಿ:" (೩-೨-೬೨).

**ಕೀರ್ತಿಮತ್ ಕೀರ್ತಿಮತ್ (ಪುಂ)** 1. ಉತ್ತಮವಾದವನಾದ  
ಹಿರಿಯ ಹೆಂಡತಿಯಾದ ಸುನೀತಿಯ ಮಗ, ಧೃವ  
ಕುಮಾರನ ತಮ್ಮ. 2. ವಸುದೇವನ ಹಿರಿಯ ಮಗ,  
ದೇವತೆಯ ಮೊದಲನೆಯ ಮಗ. "ವಸುದೇವಸ್ತು ದೇವಕಾಮಪು-  
ತ್ರಾನಜೀವನತ್। ಕೀರ್ತಿಮನ್ತಂ ಸುಪೇಶಂ ಚ ಭದ್ರಸೇನಮುದಾರಣಿಃ।  
ಶ್ವಜುಂಸಮದೇನಂ ಭದ್ರಂ ಸಂಕರ್ಷಣಮಹೀಶ್ವರಮ್"। (ವಿಂ) 3. ಕೀರ್ತಿ  
ಶಾಲಿಯಾದ, ಪ್ರಾಪ್ತವಂತ, ಹೆಸರುವಾಸಿಯಾದ. ಕೀರ್ತಿ-

ರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜೀಪ್"  
(೪-೧-೬)। -ಮತೀ -ಮತೀ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ದಕ್ಷಿಣ,  
ದಾಕ್ಷಾಯಣಿ.

**ಕೀರ್ತಿಯುತ ಕೀರ್ತಿಯುತ, -ಯುಕ್ತ -ಯುಕ್ತ (ವಿಂ)** ಕೀರ್ತಿ  
ಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಕೀರ್ತಿಶಾಲಿಯಾದ, ಹೆಸರುವಾಸಿಯಾದ.

**ಕೀರ್ತಿರಥ ಕೀರ್ತಿರಥ (ಪುಂ)** ವಿದೇಹದ ರಾಜಕುಮಾರ,  
ಪ್ರತಿಭಾಶಾಲಿ ರಾಜನ ಮಗ. ಇವನಿಗೆ ಕೀರ್ತಿರಥ: ಎಂಬ ಹೆಸರೂ  
ಉಂಟು.

**ಕೀರ್ತಿಸೇವ ಕೀರ್ತಿಸೇವ (ವಿಂ)** ಕೀರ್ತಿಯು ಮಾತ್ರ ಉಳಿದಿ  
ರುವ, ಹೆಸರಿನಿಂದ ಮಾತ್ರ ಉಳಿದಿರುವ (ಮೃತನಾದ).  
ಕೀರ್ತಿವಂತನು ಮೃತನಾದರೆ ಅವನ ಕೀರ್ತಿಯು ಮಾತ್ರ  
ಉಳಿಯುವುದು. ಕೀರ್ತಿ: ಶೇಖೋ ಯಸ್ಯ।

**ಕೀರ್ತಿಮಾಣ ಕೀರ್ತಿಮಾಣ (ವಿಂ)** 1. ಹರಡಲ್ಪಡುವ.  
2. ಎರಚಲ್ಪಡುವ, ಕೃ (ವಿಕೀರ್ಣ) "ಶಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪).  
3. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಡುವ.

**ಕೀರ್ತಿ-ಬನ್ವನೇ (ಶ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)**। ಕೀರ್ತಿ।  
ಚಿಕೀರ್ತಿ। ಕೀರ್ತಿತಾ। ಕೀರ್ತಿಸು। ಅಕೀರ್ತಿತು। ಆತ್ಮ, ದೇಹ  
ಮೊದಲಾದವುಗಳಿಂದ ಬಂಧಿಸು, -ಕಟ್ಟಿಸು -ಭದ್ರಪಡಿಸು,  
ಬಿಗಿಹಾಕಿ ಭದ್ರಪಡಿಸು.

**ಕರ್ಮಣಿ:** -ಕೀರ್ತಯತೇ। ಕೀರ್ತಿತಾ। ಕೀರ್ತಿಯಿಷ್ಯತೇ, ಕೀರ್ತಿಯಿಷ್ಯತೇ।  
ಕೀರ್ತಯತಾಂ। ಅಕೀರ್ತಯತು।

**ಕೀರ್ತಿ:** -ಕೀರ್ತಯತಿ, -ತೇ। ಕೀರ್ತಯಾಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ,  
-ಬಂಧು, -ಆಸ। ಕೀರ್ತಯಿತಾ। ಕೀರ್ತಯತು, -ತಾಂ। ಕೀರ್ತಯೇತ್,  
-ತು। ಕೀರ್ತಯಾತ್, ಕೀರ್ತಯಿಷ್ಯತಿ। ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೀರ್ತಿ:** -ಚಿಕೀರ್ತಿಸತಿ। ಚಿಕೀರ್ತಿಸತು। ಅಚಿಕೀರ್ತಿಸತು।  
ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೀರ್ತಿ:** -ಕೀರ್ತಿತವ್ಯಮ್। ಕೀರ್ತಿನೀಯಮ್। ಕೀರ್ತಿವ್ಯಮ್।  
ಕೀರ್ತಿತಃ। ಕೀರ್ತಿತವಾನ್। ಕೀರ್ತನ್, ಕೀರ್ತಂತಿ। ಕೀರ್ತಿತುಮ್।  
ಕೀರ್ತನಮ್। ಕೀರ್ತಿತ್ವಾ। ಸಂಕೀರ್ತಯತು।

**ಕೀರ್ತಿ ಕೀರ್ತಿ (ಪುಸ್ತಕೀಂ)** 1. ಅಗ್ನಿಯಜ್ವಾಲೆ, ಬೆಂಕಿಯ ಉರಿ.  
"ಭೂಮಾವಿಲಾ ಕೀರ್ತಿಪರಮೇವ" ನೆಪಂ ೮-೭೬. 2. ಕೀರ್ತಿ,  
ಬೆಂಕಿ. 3. ಕೀರ್ತಿ, ಭಕ್ತಿ. ಕೀರ್ತಿ - ಕೀರ್ತಿ (ಬನ್ವನೇ)  
"ಕೀರ್ತಿ" (೩-೧-೧೩೪). 4. ಕೀರ್ತಿ. 5. ಕೀರ್ತಿ, ಗುಣ,  
ಹೆಸು ಮೊದಲಾದವುಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಮೇಲುಗುಣ.  
"ಉತ್ತಮಾಯ ದರ್ಶನಲೋಕೇನ ಸಹೇವ ರಜ್ಜವಾ ಕೀರ್ತಿ ಪ್ರಯತ್ನಪರಮಾನವ-  
ದುಸೇವ" ಮಾಘಂ ೪-೪೯. 6. ಮೇಲೆ, ಮೇಲಕ್ಕೆ.  
7. ಕಾವ್ಯ, ಒಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳಲು  
ಮಾಡಿರುವ ಅದರ ಹಿಡಿ. 8. ಬಿಗಿಪಟ್ಟಿ, ಒಂದು ವಸ್ತುವು



ಭದ್ರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲಲು ಹಿಡಿದು ಕಟ್ಟುವ ಪಟ್ಟಿ. (ಪುಂ) 9. ಲೇಶ, ಚೂರು, ಸೂಕ್ಷ್ಮಾಂಶ. "ಕೊಲೋ ಲೇಶ ದ್ವಯೋಃ ಸ್ತಮ್ಭ-  
ಜ್ವಾಲಾಕಫೋಣಿಶಙ್ಕುಃ" ಮೇದಿಂ. 10. ಪ್ರಸವವು ಸಮಾ-  
ಪಿಸಿ ಜನನದ್ವಾರವನ್ನು ಮೇಲುಮುಖವಾದ ತೋಳು ತಲೆ  
ಕಾಲುಗಳಿಂದ ಮುಚ್ಚಿರುವ ಗರ್ಭದೊಳಗಿನ ಶಿಶು, ಗರ್ಭ-  
ದಲ್ಲಿ ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವ ಶಿಶು. "ತತ್ರ ಊರ್ವಬಾಹು-  
ಶಿರಃಪಾದೋ ಯೋ ಯೋನಿಮುಖಂ ನಿರುಣದ್ವಿ ಕಿಲ ಇವ ಸ ಕಿಲಃ"  
ಸುಶ್ರುತಂ ನಿರ್ದಾನಂ ೮-೪. 11. ಅಗುಳಿ, ತಾಪಾಳು.  
12. ಬೀಗ. 13. ತೋಳು. 14. ರುದ್ರ, ಈಶ್ವರ.  
"ಕೊಲೋಽಪ್ಪಲಿ ಕಫಣಿ ಜ್ವಾಲೆ ಬಾಹೌ ನಾ ಶಙ್ಕುಶರ್ಮಯೋಃ"  
ವೈಜಂ. 15. ಹೊಟ್ಟೆಯೊಳಗಿನ ಊತ, ಬಾವು, ಗಡ್ಡೆ.  
16. ಬುಡಿಯ ಕಡಾಣಿ. "ಅಕ್ಷಕೋಲೇ ತ್ವಣಿನ್ ಕಲಿ ಧ್ರುವಃ  
ಕೊಲೋಽಪ್ಪನಿನ್ ಣ್" ವೈಜಂ. (ನಂ) 17. ಕಟ್ಟು, ಬಂಧನ.  
ಕೊಲ (ಬಂಧನೆ) ಭಾವೇ ಕರಣಾದೌ ಚ "ಧನ್" 18. ಜಲ,  
ನೀರು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ-ಲಾ. 19. ಮೊಣಕೈ ಒಟು,  
ಮೊಳಕೈಯಿಂದ ಹೊಡೆತ. ಇದೊಂದು ರಕ್ತಕ್ರೀಡೆಯ  
ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಎದೆಯಮೇಲೆ ಕೊಡುವ ಪ್ರಹಾರ. "ಕೊಲಾ  
ಉರಸಿ, ಕರ್ತರೀ ಶಿರಸಿ, ವಿಧ್ವಾ ಕಪಾಲಯೋಃ" ವಾತ್ಸ್ಯಾಂ ಸೂಂ.

**ಕೊಲಕ ಕೀಲಕ (ಪುಂ)** 1. ಪ್ರಭವ ಮೊದಲಾದ ಅರವತ್ತು  
ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ನಲವತ್ತೆರಡನೆಯದು. 2. ಆಣ, ಮೊಳೆ.  
3. ಗೂಟ, ಹಸುಗಳನ್ನು ಕರೆಯುವಾಗ ತಡೆಗಟ್ಟುವ  
ಗೂಟ. "ಜಾಯಂತೇ ಸರ್ವಶಸ್ಯಾನಿ ಸುಭಿಕ್ಷಂ ನಿರುಪದ್ರವಮ್ |  
ಸೌಮ್ಯವೃಷ್ಟಿರ್ಭವೇದ್ರಾಜನ್ ಕೊಲಕೇ ಚ ಶುಭಂ ಭವೇತ್" 4. (ಹೊಟ್ಟೆ  
ಯಲ್ಲಿ) ಊತ, ಬಾವು, ಗಡ್ಡೆ. 5. ಶಂಕು, ಕೀಲು,  
ಅಗುಳಿ, ತಾಪಾಳು. 6. ಕಂಬ. ಕೊಲತಿ ಬಧ್ನಾತ್ಯನೇನ  
— ಕೊಲ (ಬಂಧನೆ) ಕರಂ "ಧನ್" (೩-೩-೧೧೭). ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಕಃ" 7. ಕುರು, ಸ್ಫೋಟ. "ಸ್ಫೋಟಕಃ ಕೊಲಕೋ ಗಣ್ಡೋ  
ವಿಸ್ಫೋಟಃ ಪಿಟಕಾ ತ್ರಯಿ" ವೈಜಂ.

**ಕೊಲತ್ ಕೀಲತ್ (ವಿಂ)** 1. ಬೀಗಹಾಕುತ್ತಿರುವ. 2. ಅಗುಳಿ  
ಹಾಕುತ್ತಿರುವ. ಕೊಲ (ಬಂಧನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪).

**ಕೊಲನ ಕೀಲನ (ನಂ)** 1. ಬಂಧಿಸುವುದು, ಕಟ್ಟುವುದು.  
ಕೊಲ (ಬಂಧನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). 2. ಬೀಗ  
ಹಾಕುವುದು. 3. ಅಗುಳಿ ಹಾಕಿ ಭದ್ರಪಡಿಸುವುದು,  
ತಾಪಾಳು ಹಾಕುವುದು.

**ಕೊಲನೀಯ ಕೀಲನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಬೀಗಹಾಕಿ ಭದ್ರಪಡಿಸ  
ಬೇಕಾದ. 2. ತಾಪಾಳು ಹಾಕಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಕೊಲ  
(ಬಂಧನೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). 3. ಗೂಟ ಹೊಡೆ  
ಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ.

**ಕೊಲಯತ್ ಕೀಲಯತ್ (ವಿಂ)** 1. ಬೀಗ ಹಾಕಿಸುತ್ತಿರುವ.  
2. ತಾಪಾಳು ಹಾಕಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಗೂಟ ಹೊಡೆಯಿಸು-  
ತ್ತಿರುವ. ಕೊಲ (ಬಂಧನೆ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪).  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

**ಕೊಲಯಿತ್ ಕೀಲಯಿತ್ (ವಿಂ)** 1. ಬೀಗ ಹಾಕಿಸುತ್ತಿರು-  
ವವನು. 2. ತಾಪಾಳು ಹಾಕಿಸುತ್ತಿರುವವನು. 3. ಗೂಟ  
ಹೊಡೆಯಿಸುತ್ತಿರುವವನು. ಕೊಲ (ಬಂಧನೆ) + ಣಿಚ್  
"ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬).  
-ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

**ಕೊಲಾಲ ಕೀಲಾಲ (ನಂ)** 1. ಜಲ, ನೀರು. ಕೊಲಾ ಜ್ವಾಲಾ-  
ಮಲತಿ ವಾರಯತಿ — ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ) "ಅಞ್" (೩-೨-೧).  
2. ರಕ್ತ. 3. ಅಮೃತ. "ಕೊಲಾಲಂ ರುಧಿರೇ ನೋರೆ" ಹೇಮಂ.  
4. ಹಾವಿನ ಹಡೆಯ ಬಂದು ಭಾಗ. "ಕೊಲಾಲಮಸು-  
ಗಮ್ಭಸೋಃ | ಫಣಭಾಗೇ" ನಾನಾರ್ಥರಂ.

**ಕೊಲಾಲಜ ಕೀಲಾಲಜ (ನಂ)** ಮೂಸ. ಕೊಲಾಲಜಾಯತೇ  
— ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುರ್ಭವಿ) "ಙಃ" (೩-೨-೯೮). "ರಸಾದ್ರಕ್ತಂ  
ತತೋ ಮಾಸಂ ಮಾಸಾನೇದಃ ಪ್ರಜಾಯತೇ | ಮೇದಸೋಽಸ್ಥಿ ತತೋ ಮಜ್ಜಾ  
ಮಜ್ಜಃ ಶುಕ್ರಂ ತು ಜಾಯತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೧೪-೧೦.

**ಕೊಲಾಲಧಿ ಕೀಲಾಲಧಿ (ಪುಂ)** ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಕೊಲಾಲಂ  
ಧೀಯತೇಽ — ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕಿಃ"  
(೩-೩-೯೩).

**ಕೊಲಾಲಪ ಕೀಲಾಲಪ (ಪುಂ)** 1. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. ಕೊಲಾಲಂ  
ರಕ್ತಂ ಪಿಬತಿ — ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೪). (ವಿಂ)  
2. ರಕ್ತವನ್ನು ಕುಡಿಯುವವನು. "ಸ ತು ಕೊಲಾಲಪೋ ಯಸ್ತು  
ಪರಾಶ್ಚ ಭೋಕ್ತುಮಿಚ್ಛತಿ" ಭಾಂ ವನಂ.

**ಕೊಲಿತ ಕೀಲಿತ (ನಂ)** 1. ಬಂಧನ, ಕಟ್ಟು. ಕೊಲ (ಬಂಧನೆ)  
ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪). (ವಿಂ) 2. ಪಟ್ಟಿಯಿಂದ  
ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಬೀಗ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೀಗ ಹಾಕಿ ಭದ್ರ  
ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕೊಲ (ಬಂಧನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨).  
4. ಆಣಿಯಿಂದ ಹೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೊಳೆ ಹೊಡೆದು  
ಭದ್ರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸಾ ನಶ್ಚೇತಸಿ ಕೊಲಿತೇವ  
ವಿಶಿಷ್ಠೇಶ್ಚೇತೋಭುವಃ ಪಶ್ಚಿಮಶ್ಚಿಂತಾಸಂತತಿಸಂತುಜಾಲನಿಬಿಡ-  
ಸ್ಯುತೇವ ಲಗ್ನಾ ಪ್ರಿಯಾ" ಮಾಲತೀಂ ೫-೧೦. 5. ಬಂಧನ  
ದಲ್ಲಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಂದು ಮಿತಿಯಲ್ಲಿಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಕೊಲಿತ್ ಕೀಲಿತ್ (ವಿಂ)** 1. ಬೀಗ ಹಾಕುವ. 2. ಆಣ  
ಹೊಡೆಯುವ. 3. ಬಂಧನದಲ್ಲಿಡುವ. ಕೊಲ (ಬಂಧನೆ)  
"ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫).  
ಕೊಲಿತ್ರಿ ಕೀಲಿತ್ರಿ.



ಕೊಶ ಕೀಶ (ಪುಂ) 1. ಕಪಿ, ಮಾನರ, ಕೋತಿ. ಕಸ್ಯ ವಾಯೋ-  
ರಪತ್ಯಮ್ "ಇಬ್" (೪-೧-೧೫). 2. ಕಿ: ವಾಯುಪುತ್ರ: ಹನುಮಾನ್ -  
ಸ: ಇಶೋ ಯಸ್ಯ. "ಕೀ" ಇತಿ ಶಬ್ದಮೀಷ್ಠೆ-ಇಶ (ಐಶ್ವರ್ಯ)  
"ಕ:" (ವಾಂ ೩-೨-೫). 3. ಸೂರ್ಯ. 4. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ.  
(ವಿಂ) 5. ದಿಗಂಬರ, ಬಟ್ಟೆ ಹೊದೆಯದಿರುವವನು,  
ಬೆತ್ತಲೆಯವನು. "ಕೊಶೋ ದಿಗಂಬರೇ ಕಪಿ" ಮೇದಿಂ.

ಕೊಶಪರ್ಣ ಕೀಶಪರ್ಣ (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪಾರ್ಣ, ಉತ್ತರಣ  
ಗಿಡ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ಪರ್ಣಿ-ಪರ್ಣೀ. ಕೊಶಲೋಮಸದೃಶಾನಿ  
ಪರ್ಣಾನ್ಯಸ್ಯಾ: "ಕೀಷ್" (೪-೧-೬೪).

ಕು - ಶಬ್ದೇ (ಅದಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ). ಕೌತಿ ಕುತ:  
ಕುವಂತಿ. ಚುಕಾವ ಚುಕುವತು: ಚುಕುವು: ಚುಕವಿಶ್ಯ, ಚುಕೋಶ.  
ಕೌತಾ. ಕೌತು, ಕುತಾತ್. ಅಕೌತ್ ಅಕುತಾಮ್. ಕುಯಾತ್  
ಕುಯಾತಾಮ್ ಕುಯು: ಕುಯಾತ್ ಕುಯಾಸ್ತಾಮ್ ಕುಯಾಸು: ಅಕೌಷಿತ್.

ಭಾವೇ:-ಕುಯತೇ. ಚುಕುವೇ. ಕಾವಿತಾ, ಕೌತಾ. ಕಾವಿಷ್ಯತೇ,  
ಕೌಪ್ಯತೇ. ಕುಯತಾಮ್. ಅಕುಯತ. ಅಕಾವಿ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ:-ಕಾವಯತಿ, -ತೇ. ಕಾವಯಾಂಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಕಾವಯಿತಾ. ಕಾವಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ. ಕಾವಯತು,  
-ತಾಮ್. ಅಕಾವಯತ್, -ತ. ಕಾವಯೇತ್, -ತ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:-ಕೌತವ್ಯಮ್. ಕವನೀಯಮ್. ಕವ್ಯಮ್. ಕುತ:.  
ಕುತವಾನ್. ಕುವನ್, ಕುವತೀ. ಕೌತುಮ್. ಕುತಮ್. ಕವನಮ್.  
ಕುತ್ವಾ. ಉಕ್ತುಯ.

ಕು ಕು (ಪುಂ) 1. ಕ ಖ ಗ ಘ ಙ ಈ ಐದು ವರ್ಣಗಳ ವರ್ಗ.  
ಇವು ಕಂಠದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವವು. "ಅಕುಹವಿಸರ್ಜನೀಯಾನಾಂ  
ಕಂಠ: 2. ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ, ಸದ್ದು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಭೂಮಿ.  
ಕುವತೇ-ಕುಙ್ (ಶಬ್ದ) "ಕು:" (ವಾಂ ೩-೨-೧೮೦). (ಅವ್ಯಂ)  
4. ಪಾಪ. 5. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. 6. ಸ್ವಲ್ಪ, ಅಲ್ಪ,  
ಕೊಂಚ. 7. ತಡೆ, ಅಡ್ಡಿ. "ಪೃಥಿವ್ಯಾಂ ಕು: ಸಮಾಖ್ಯಾತ: ಕು:  
ಶಬ್ದೇಷು ಪ್ರಕೀರ್ತಿತ: " ಏಕಾಂ. "ಕು: ಸ್ತ್ರೀ ಭುವಿ ಕು ಪಾಪೇಷು  
ಕುತ್ಸಾಪಾಂ ವಾರಣೇಷು ವ್ಯಯಮ್" ನಾನಾರ್ಥಂ. ಕುರೂಪಮ್. ಕುರೂಪಮ್. ಕುರೂಪಮ್.  
"ಕು" ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಅಪಾದಿ ಪದವು ತೃಣ ರಥ ವದ ಪದಗಳೂ  
ಪರವಾದರೆ "ಕತ್" ಆದೇಶವು ಬರುವುದು. ಕದ್ರವಮ್.  
ಕದ್ರವ: ಕದ್ರವಮ್. ಕದ್ರವ: ಕದ್ರವ: ಪಥಿನ್ ಮತ್ಸು,  
ಅಕ್ಷ ಪದಗಳು ಪರವಾದರೂ ಅಲ್ಪಾರ್ಥದಲ್ಲಿಯೂ "ಕಾ"  
ಆದೇಶವು ನಿತ್ಯವಾಗಿ ಬರುವುದು. ಕಾಪಯಮ್. ಕಾಪಯ:.  
ಪುರುಷ ಪದವು ಪರವಾದರೆ ವಿಕಲ್ಪವಾಗಿ "ಕಾ" ಆದೇಶವು  
ಬರುವುದು. ಕಾಪುರುಷ: ಕುಪುರುಷ: ತೃಣ ಪದವು ಪರ  
ವಾದರೆ ಕವ ಕಾ ಮತ್ಸು ಕತ್ ಆದೇಶಗಳು ಬರುವವು.  
ಕವೋಷಮ್ ಕೋಷಮ್ ಕದೃಷಮ್.

ಕುಕ - ಆದಾನೇ (ಮಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ). ಕೊಕತೇ.  
ಚುಕುಕೇ. ಕೊಕಿತಾ. ಕೊಕಿತಾಮ್. ಅಕೊಕತ ಇತ್ಯಾದಿ.  
ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳ, ಸ್ವೀಕರಿಸು. ಕರ್ಮಂ ಕುಕಯತೇ. ಕುಕಯತಾಮ್.  
ಅಕುಕಯತ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕುಕ ಕುಕ (ವಿಂ) 1. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು, ಸ್ವೀಕರಿಸು  
ವವನು. ಕುಕ (ಆದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫).  
2. ಸಮರ್ಥ.

ಕುಕಯ ಕುಕಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಟ್ಟ ಕಥೆ, ದುಃಖದ ಕಥೆ.  
ಕುತಿಸಿತಾ ಕಯಾ. "ಶೃಣ್ವಂತಿ ಯೇಷ್ಯವಿಷಯಾ: ಕುಕಯಾ  
ಮತಿಘ್ನಿ:" ಭಾಗಂ ೩-೧೫-೨೩.

ಕುಕಯ ಕುಕಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಯೋಗ್ಯ ಹುಡುಗಿ, ಕೆಟ್ಟ  
ಹುಡುಗಿ. ಕುತಿಸಿತಾ ಕಯಾ.

ಕುಕಯ ಕುಕಯ (ಪುಂ) ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ.

ಕುಕರ ಕುಕರ (ಪುಂ) 1. ಮೊಂಡುಕೈ. ಕುತಿಸಿತ: ಕರ:.  
(ವಿಂ) 2. ಮೊಂಡುಕೈಯುಳ್ಳವನು. ಕುತಿಸಿತ: ಕರೋ ಯಸ್ಯ.  
3. ಕೆಟ್ಟಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು. ಕುತಿಸಿತಂ ಕರೋತಿ - ತು ಕೃತ್  
(ಕರಣ) "ಕ:" (೩-೨-೨೦).

ಕುಕರ್ಮನ್ ಕುಕರ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟಕೆಲಸ, ಅಕಾರ್ಯ.  
ಕುತಿಸಿತಂ ಕರ್ಮ. (ವಿಂ) 2. ಕೆಟ್ಟ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು.  
ಕುತಿಸಿತಂ ಕರ್ಮ ಯಸ್ಯ.

ಕುಕಲತ್ರ ಕುಕಲತ್ರ (ನಂ) ಕೆಟ್ಟ ಹೆಂಡತಿ, ಅಸಭ್ಯ ಹೆಂಡತಿ.  
ಕುತಿಸಿತಂ ಕಲತ್ರಮ್.

ಕುಕಾರ್ಯ ಕುಕಾರ್ಯ (ನಂ) ಕೆಟ್ಟ ಕೆಲಸ, ನೀಚವಾದ  
ಕಾರ್ಯ. ಕುತಿಸಿತಂ ಕಾರ್ಯಮ್.

ಕುಕಾವ್ಯ ಕುಕಾವ್ಯ (ನಂ) 1. ದುಷ್ಟಕಾವ್ಯ, ದೋಷಗಳಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ಕಾವ್ಯ. 2. ನೀಚ ವಿಷಯವನ್ನು ಕುರಿತ ಕಾವ್ಯ.  
ಕುತಿಸಿತಂ ಕಾವ್ಯಮ್.

ಕುಕೀಲ ಕುಕೀಲ (ಪುಂ) ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಕೋ: ಕೀಲ ಇವ.

ಕುಕುಂಡ ಕುಕುಂಡ (ಪುಂ) ನಾಯಿಕೊಡೆ.

ಕುಕುಂದರ ಕುಕುಂದರ (ಪುಂ) ಹೆಂಗಸರ ಪಿರಗಳ ಮೇಲಿರುವ  
ಗುಳಿಗಳು. ಕುಂ ಭೂಮಿ ದಾರಯತಿ - ದ್ (ವಿದಾರಣ) + ಣಿಕ್  
"ಅನ್" (೩-೨-೧). ಪೃಷೋಂ. ಕುತಿಸಿತಂ ಕುಂದರಮ್.

ಕುಕುರ ಕುಕುರ (ಪುಂ) 1. ಯದುವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ,  
ಅಂಧಕರಾಜನ ಮಗ. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ದಶಾರ್ಹದೇಶ.  
3. ದಶಾರ್ಹದೇಶದ ಜನರು. ಯದುವಂಶದ ಮೂಲ  
ಪುರುಷನಾದ ದಶಾರ್ಹರಾಜನ ಹೆಸರು ಆ ದೇಶಕ್ಕೂ  
ಆ ವಂಶದವ (ಯಾದವ) ರಿಗೂ ಬಂದು ಆ ಹೆಸರಿನಿಂದಲೇ



ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಯಿತು. "ಸತಿ ಮಥಾವಮವನದನವ್ಯಥಾವಿಧುರಿತಾ  
ಧುರಿತಾ: ಕುಕುಲಸ್ತ್ರಿಯ: " ಮಾಘಂ ೬-೧೫।

**ಕುಕುಲ ಕುಕುಲ** (ಪುಂ) 1. ತುಷಾನಲ, ಹೊಟ್ಟೆನೋಳಗಿನ  
ಬೆಣೆ. ಕೊ: ಭೂಮಿ: ಕುಲಮ್। ಕು (ಶಬ್ದ) "ಕುಲ"   
ಕುಗಾಗಮಶ್ವ (೩೦ ೪-೧೦)। ನಿಪಾಂ। (ನಂ) 2. ಸಲಾಕೆ  
ಗಂಧ ತುಂಬಿದ ಹಳ್ಳ. ಗಂಟಾಗಂಧ ತುಂಬಿದ ಗುಳಿ.  
"ಕುಕುಲಂ ಶಕ್ತುಸಂಕೀರ್ಣಶ್ವಶ್ರೇ ನಾ ತು ತುಪಾನಲೇ" ಮೇದಿಂ।  
3. ಕೆವೆಡೆ. 4. ಬೆರಗಿ. "ಯೇಮ್ಯಾಂಶಿ ಶತಶ: ಕುಕುಲಹುತ-  
ಭುಗದಾಹಂ ದಹಂತ: ಸನೇ:" ಪ್ರಬೋಧಂ ೫-೧೬।

**ಕುಕುಲ ಕುಕುಲ** (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಕೆಲಸ, ಅಕಾರ್ಯ, ನೀಚ  
ಕಾರ್ಯ. ಕುತಿಸಿತಂ ಕುತಮ್। 2. ಅನುತಾಪ, ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪ.  
"ಕುಕುಲಮನುತಾಪೇ ಸ್ಯಾದಯುಕ್ತಕರಣೇಪಿ ಚ" ಹೇಮಂ।

**ಕುಕುಲ ಕುಕುಲ** (ಪುಂ) 1. ಹುಂಜ, ಗಂಡುಕೋಳಿ-  
ಕುಕಾ ಆದಾನೇನ ಕುತತಿ-ಕುತ (ಕೌಟಿಲೇ) "ಕ:"  
(೩-೧-೧೩೫)। 2. ಕಾಡುಕೋಳಿ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ  
"ಕೀಫ್" (೪-೧-೬೩)। -ಕೀ-ಖೇ. 3. ಅಗ್ನಿಕಣ, ಬೆಂಕಿಯ ಕಿಡಿ.  
4. ನಿಷಾದನಿಂದ ಶೂದ್ರಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಬೆಂಕಿ ಜಾತಿಯವನು. "ಕುಕುಲ: ಕುಕುಲ-  
ತಾಮ್ರಚೂಡೇ ವಹ್ನಿಕಣೇಪಿ ಚ। ನಿಷಾದಶೂದ್ರಯೋ: ಪುತ್ರೇ" ಹೇಮಂ।

**ಕುಕುಲಮಂಥನ ಕುಕುಲಮಂಥನ** (ಪುಂ) ಕಾಶಿಯಲ್ಲಿರುವ  
ಒಂದು ಪವಿತ್ರಸ್ಥಳ. ಕಾಶೀವಿಶ್ವೇಶ್ವರ ದೇವಾಲಯದೊಳ-  
ಗಿರುವ ಒಂದು ಮಂಟಪ. ಇದು ಮುಕ್ತಿಪ್ರದವಾದ ಸ್ಥಳ.  
ಸತೀಪುತ್ರಸಹಿತನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನೊಬ್ಬನು ಅಕ್ಕಿತ್ಯದ  
ಫಲವಾಗಿ ಕುಕುಲಮಂಥನವನ್ನು ಪಡೆದು ಈ ಮಂಟಪದ  
ಮಹಿಮೆಯಿಂದ ಮೋಕ್ಷ ಪಡೆದನು. [ವಿವರಕ್ಕೆ ಕಾಶೀ  
ಖಂಡದ 98ನೆಯ ಅಧ್ಯಾಯ ನೋಡಿ.]

**ಕುಕುಲವ್ರತ ಕುಕುಲವ್ರತ** (ನಂ) ಭಾದ್ರಪದ ಶುಕ್ಲ  
ಸಪ್ತಮಿಯ ದಿನ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಒಂದು ವ್ರತ. "ಭಾದ್ರೇ ಮಾಸಿ  
ಸಿತೇ ಪಕ್ಷೇ ಸಪ್ತಮ್ಯಾಂ ನಿಯಮೇನ ಯಾ। ಸ್ನಾತ್ವಾ ಶಿವಂ ಲೇಖಯಿತ್ವಾ  
ಮಂಡಲೇನ ಸಹಾಮ್ಬಿಕಮ್। ಪೂಜಯೇತ್ವ ತದಾ ತಸ್ಯಾ ದುಷ್ಟಾಪಂ ನೈವ  
ವಿಧತೇ"।

**ಕುಕುಲಶಿಖ ಕುಕುಲಶಿಖ** (ಪುಂ) ಕುಸುಂಬೆಗಿಡ. ಕುಕುಲಸ್ಯ  
ಶಿಖೇವ ಶಿಖಾಸ್ಯ।

**ಕುಕುಲಾಂಡ ಕುಕುಲಾಂಡ** (ನಂ) ಕೋಳಿಯ ಹೊಟ್ಟೆ.  
ಕುಕುಲಾಂಡಾ ಅಂಡಮ್। ಕುಕುಲಾಂಡಾ: ಪುಂವಜ್ಞಾಃ: (೬-೩-೩೫)।

**ಕುಕುಲಾಸನ ಕುಕುಲಾಸನ** (ನಂ) ಯೋಗಾಸನಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು ಭೇದ. "ನಿಜಹಸ್ತದ್ವಯಂ ಭೂಮಿ ಪಾತಯಿತ್ವಾ  
ಜಿತೇಂದ್ರಿಯ:। ಪದ್ಮ್ಯಾಂ ಬದ್ಧಂ ಯತ್ಕರೋತಿ ಕುರ್ಮರಥಯಮಧ್ಯಗಮ್।

ಸವ್ಯಾಪಸವ್ಯಯುಗಲಂ ಕುಕುಲಾಸನಮುಚ್ಯತೇ"। ಎರಡುಮಂಡಿಗಳ  
ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಎರಡು ಹಸ್ತಗಳನ್ನೂ ನೆಲದಮೇಲೆ ಊರಿ  
ಕೊಂಡು (ನಿಂತು) ಎರಡು ಕಾಲುಗಳಿಂದಲೂ ತೋಳು  
ಗಳನ್ನು ಬಲವಾಗಿ ಬಂಧಿಸಿ ಮಾಡುವುದು "ಕುಕುಲ-  
ಾಸನ" ವೆನಿಸುವುದು. ಈ ಆಸನದಿಂದ ನಾಡಿಗಳು ಶುದ್ಧ  
ವಾಗುವವು.

**ಕುಕುಲ ಕುಕುಲ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಂಭಾಜಾರ. ಕಪಟ. ಮೋಸ.  
ಕುಕುಲ ಇವಾಚರತಿ-ಕುಕುಲ ಆಚಾರಾಶ್ಚ "ವಿವಿ" (ವಾಂ  
೩-೧-೧೧)। "ಇನ್" (೩೦ ೪-೧೧೭)। "ಅಥ ಕುಕುಲ:।  
ಕುಹನಾ ದಮ್ನಚರ್ಯಾ ಚ" ಅಮಿಂ ಚಿಂ।

**ಕುಕುಲ ಕುಕುಲ** (ಪುಂ) ಕಾಡುಕೋಳಿ. ಕುಕ್ ಇತಿ ಕೌತಿ  
ಅವ್ಯಕ್ತಶಬ್ದಂ ಕರೋತಿ-ಕು (ಶಬ್ದ) "ಮಕ್" ಬಾಹುಂ।  
"ಕುಕು" ಶಬ್ದಂ ಭಾಷತೇ-ಮಾಘ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಹ:"  
(೩-೨-೧೦೧) ಇತಿ ವಾ।

**ಕುಕುಲ ಕುಕುಲ** (ಪುಂ) 1. ನಾಯಿ. ಕೋಕಿಲ-ಕುಕ  
(ಆದಾನೇ) "ವಿವಿ" (೩-೨-೧೭೮)। ಕುಕ್। ಕುರ (ಶಬ್ದ)  
"ಕ:" (೩-೧-೧೩೫)। ಕುರ:। ಕುಕ್ ಚಾಸೌ ಕುರಶ್ಚ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ "ಕೀಫ್" (೪-೧-೬೩)। -ಕೀ-ಖೇ.  
ಹೆಣ್ಣುನಾಯಿ. (ನಂ) 2. ಮಾಟಪತ್ರ. "ಕುಕುಲ:  
ಸಾರಮೇಯೇ ನಾ ಗ್ರನ್ಥಿಪರ್ಣೇ ನಪುಂಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ।

**ಕುಕು ಕುಕು** (ಪುಂ) ಉದರ, ಜಠರ, ಹೊಟ್ಟೆ. ಕುಷ  
(ನಿಷ್ಕರ್ಷ) "ಸ:" (೩೦ ೩-೬೮)। ಷಸ್ಯ ಕ: (೮-೨-೪೧)।  
ಕುಕು ಜಠರಮ್ ಸಿಂ ಕೌಂ।

**ಕುಕು ಕುಕು** (ಪುಂ) 1. ಉದರ, ಹೊಟ್ಟೆ. ಕುಷತೇ  
ನಿಷ್ಕಾಸ್ಯತೇ ಮಲೋಽಸ್ಮಾತ್-ಕುಷ (ನಿಷ್ಕರ್ಷ) "ವಿಸ:" (೩೦  
೩-೧೫೫)। "ವಿಪುಲೇನ ಸಾಗರಶಯಸ್ಯ ಕುಕುಲಾ ಭುವನಾನಿ  
ಯಸ್ಯ ಪಪಿರೇ ಯುಗಲಯೇ" ಮಾಘಂ ೧೩-೪೦। 2. ಗರ್ಭಾಶಯ.  
"ವಿಭಕ್ತಾತ್ಮಾ ವಿಭುಸ್ತಾಸಾಮೇಕ: ಕುಕುಲವನೇಕಥಾ" ರಘುಂ  
೧೦-೬೫। 3. ಗುಹೆ, ಗವಿ. "ತದಾಪ್ರಮೃತ್ಯೇವ ವನಹಿಪಾನಾಂ  
ತ್ರಾಸಾರ್ಥಮಸ್ಮಿನ್ನಹಮದ್ರಿಕುಕುಲೈ" ರಘುಂ ೨-೩೮। 4. ಒಂದು  
ವಸ್ತುವಿನ ಅಥವಾ ಪ್ರದೇಶದ ಮಧ್ಯಭಾಗ. "ತತ:  
ಸಾಗರಮಾಸಾಂ ಕುಕುಲೈ ತಸ್ಯ ಮಹೋಮಿಣ:" ಭಾಂ ವನಂ।  
5. ಇಕ್ಷ್ವಾಕುರಾಜನ ಮಗ, ವಿಕುಕ್ಷಿಯ ತಂದೆ. 6. ಬಲಿ  
ಪ್ರವರ್ತಕ.

**ಕುಕುಲ ಕುಕುಲ** (ಪುಂ) 1. ಕಿರಿಸಪತ್ರ, ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟಿದ ಮಗ. ಕುಕುಲ ಜಾತ: -ಜನಿ (ಪ್ರಾಕುಮವಿ) "ಹ:"  
(೩-೨-೧೭)। (ವಿಂ) 2. ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ,  
ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. "ಸ ಚ ಪ್ರಾಪ ಮಧುಪಕ್ಷಂ ಕುಮ್ಭಿ-  
ನಸ್ಯಾಶ್ಚ ಕುಕುಲ:" ರಘುಂ ೧೫-೧೫।



**ಕುಷಿಮ್ಬರಿ ಕುಕ್ಷುಂಭರಿ** (ವಿಂ) ತನ್ನ ಹೊಟ್ಟೆಯನ್ನು ಮಾತ್ರ ತುಂಬಿಕೊಳ್ಳುವವನು, ಲೋಭಿ, ಜಿಪುಣ. ಕುಷಿ ವಿಮರ್ಶಿ - ಡು ಮ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಇನ್" ಮುಂಚ (೩-೨-೨೬) ನಿಪಾಂ.

**ಕುಷಿಶೂಲ ಕುಕ್ಷುಶೂಲ** (ಪುಂ) ಉದರಶೂಲ, ಹೊಟ್ಟೆ ನೋವು, ವಾತದಿಂದ ಆಮದೋಷವುಂಟಾಗಿ ಬರುವ ಹೊಟ್ಟೆಶೂಲ. "ಪ್ರಕುಪ್ಯತಿ ಯದಾ ಕುಕ್ಷೌ ವಹ್ನಿಮಾಕ್ರಮ್ಯ ಮಾಸ್ತಃ। ತದಾಸ್ಯ ಭೋಜನಂ ಭುಕ್ತಂ ಸೋಪಶಮಂ ನ ಪಚ್ಯತೇ। ತಚ್ಚವಸಿತಿಯಾಮಶಕೃತಾ ಶೂಲೇನಾಹನ್ಯತೇ ಮುಹುಃ। ನೈವಾಸನೇ ನ ಶಯನೇ ತಿಷ್ಠನ್ನ ಲಭತೇ ಸುಖಮ್। ಕುಷಿಶೂಲ ಇತಿ ಸ್ಥಾತೋ ವಾತಾದಾಮ-ಸಮುದ್ರವಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ೪೨-೧೨೩-೧೨೪।

**ಕುಷನಕ ಕುಖನಕ** (ಪುಂ) 1. ಮೂಷಕ, ಇಲಿ. 2. ವರಾಹ, ಹಂದಿ. ಕೋ: ಭೂಮಿ: ಕುನಕಃ।

**ಕುಗ್ರಹ ಕುಗ್ರಹ** (ಪುಂ) ಕೆಟ್ಟ ಗ್ರಹ, ಪಾಪಗ್ರಹ. ರವಿ, ಕುಜ, ಶನಿ, ರಾಹು ಮತ್ತು ಕೇತು ಇವರು ಕುಗ್ರಹಗಳು.

**ಕುಗ್ರಾಮ ಕುಗ್ರಾಮ** (ಪುಂ) ಕೆಟ್ಟ ಗ್ರಾಮ, ವಾಸಮಾಡಲು ಸೌಕರ್ಯವಿಲ್ಲದ ಗ್ರಾಮ. ರಾಜ, ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರಿ, ವೈದ್ಯ, ಧನಿಕ ಮತ್ತು ನದಿ ಇವುಗಳ ಸೌಕರ್ಯವಿಲ್ಲದಿದ್ದಲ್ಲಿ ಆ ಗ್ರಾಮವು ವಾಸಾನರ್ಹವಾದುದು.

**ಕುಡ್ - ಶಬ್ದ** (ತುಡಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ)। ಕುತೇ। ಚುಕುಬೇ। ಕುತಾ। ಅಕುತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕುಡ್ಕುಮ ಕುಂಕುಮ** (ನಂ) 1. ಕಾಶ್ಮೀರದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. ಕುಕಯತೇ - ಕುಕ (ಆದಾನೇ) "ಋಮ್" ಬಾಹುಂ। "ಕುಡ್ಕುಮಪಕ್ಷಕಲಕ್ಷಿತದೇಹಾ ಗೌರವಯೋಧರಕಮ್ಮಿತ-ಹಾರಾ। ನೃಪುರಹಂಸರಣತಪದಪದಾ ಕಂ ನ ವಶೀಕುಸ್ತೇ ಭುವಿ ರಾಮಾ" ಭರ್ತುಂ ೨-೯। ಪದ್ಮದ ವಾಸನೆಯುಳ್ಳ ಕಾಶ್ಮೀರದೇಶದ ಕೇಸರಿಯು ಉತ್ತಮವಾದುದು. ಕೇತಕೀ (ತಾಳಿ) ಹೂವಿನ ವಾಸನೆಯುಳ್ಳ ಬಾಹ್ಯೇಕ ದೇಶದ ಕೇಸರಿಯು ಮಧ್ಯಮ ವರ್ಗಕ್ಕೆ ಸೇರಿದುದು. ಪಾರಸೀಕ ದೇಶದ ಜೇನಿನ ವಾಸನೆಯುಳ್ಳ ಕೇಸರಿಯು ಕೆಳಮಟ್ಟಕ್ಕೆ ಸೇರಿದುದು. "ಕಾಶ್ಮೀರ-ದೇಶಜೇ ಕ್ಷೇತ್ರೇ ಕುಡ್ಕುಮಂ ಯದ್ಭವೇದಿ ತತ್। ಸೂಕ್ಷಮಕೇಸರಮಾರಕ್ತಂ ಪದ್ಮಗಂಧಿ ತದುತ್ತಮಮ್। ಬಾಹ್ಯೇಕದೇಶಸಂಜಾತಂ ಕುಡ್ಕುಮಂ ಪಾಂಡುರಮತಮ್। ಕೇತಕೀಗಂಧಸಂಯುಕ್ತಂ ಮಧ್ಯಮಂ ಸೂಕ್ಷಮಕೇಸರಮ್। ಕುಡ್ಕುಮಂ ಪಾರಸೀಕೇ ಯನ್ಮಧುಗಂಧಿ ತದೀರಿತಮ್। ಇಷತ್ಪಾಂಡುರವರ್ಣಂ ಯದಧಮಂ ಸ್ವಲ್ಪಕೇಸರಮ್" ಭಾವಪ್ರಂ। 2. ಕುಂಕುಮ, ಹೆಂಗಸರು ಹಣಗೆ ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವ ಒಂದು ಮಂಗಳವಸ್ತು.

**ಕುಡ್ಕುಮಾದ್ರಿ ಕುಂಕುಮಾದ್ರಿ** (ಪುಂ) ಕಾಶ್ಮೀರದಲ್ಲಿ ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿಗೆ ಸ್ಥಾನವಾದ ಒಂದು ಪರ್ವತ.

**ಕುಚ-ಶಬ್ದ** ತಾರೆ (ಭಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ)। ಕುಚತಿ। ಚುಕುಚ। ಅಕುಚಿತ್। ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಶಬ್ದಮಾಡು.

**ಕುಚ-ಸಂಪರ್ಚನ-ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ-ವಿಲೇಖನೇಷು** (ಭಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸಂ)। ಕುಚತಿ। ಚುಕುಚ। ಕುಚಿತಾ। ಅಕುಚಿತ್। 1. ಸಂಪರ್ಕ ಹೊಂದು, ಬೆರೆ, ಮೊತೆಯಲ್ಲಿ ಸೇರು. 2. ವಕ್ರವಾಗು, ಬಗ್ಗು. 3. ತಡೆ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸು. 4. ಗೆರೆ ಹಾಕು, ಬರೆ.

**ಕುಚ-ಸಂಕ್ಷೋಚನೆ** (ತುಡಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ) ಕುಚತಿ। ಕುಚಿತಾ। ಅಕುಚಿತ್। ಸಂಕ್ಷೋಚಹೊಂದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಎಳೆದುಕೋ, ಚಿಕ್ಕದಾಗು, ಸಣ್ಣದಾಗು.

**ಕುಚ ಕುಚ** (ಪುಂ) ಸ್ತನ, ಮೊಲೆ. ಕುಚತಿ-ಕುಚ (ಸಂಕ್ಷೋಚನೆ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೪)। ಹೆಂಗಸರಿಗೆ ಯೌವನ (ಪ್ರಾಯ) ಪ್ರಾದುರ್ಭಾವವಾದಾಗ ಸ್ತನಗಳು ಮತ್ತು ರೋಮಪಟ್ಟಿಗಳು ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವು. ಹೂವಿನ ಮೊಗ್ಗಿನೊಳಗೆ ಅಡಗಿರುವ ಪರಿಮಳವು ಅದು (ಮೊಗ್ಗು) ಅರಳಿದಾಗ ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡುವಂತೆ ಹೆಂಗಸರಿಗೆ ಯೌವನ ಹುಟ್ಟಿ ಪುಷ್ಪವತಿಯ ರಾದಾಗ ರೋಮಪಟ್ಟಿ ಮತ್ತು ಸ್ತನಗಳು ಮುಂತಾದುವು ಮೇಲಕ್ಕೆದ್ದು ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವು. "ಪುಷ್ಪಾಣಾಂ ಮುಕ್ತುಲೇ ಗಂಧೋ ಯಥಾ ಸನ್ನಪಿ ನಾಪ್ಯತಃ। ತೇಷಾಂ ತದೇವ ತಾರುಣ್ಯೇ ಪುಷ್ಪತ್ವಾದ್ಯವ್ಯವಿತಮೇತಿ ಚ। ರೋಮರಾಜ್ಯಾದಯಃ ಪುಂಸಾಂ ನಾರೀಣಾ-ಮಪಿ ಯೌವನೇ" ಭಾವಪ್ರಂ। ಪುಂಸಾಂ ರೋಮರಾಜ್ಯಾದಯಃ ಪುಂಸಾಂ ನಾರೀಣಾಂ ತು ರೋಮರಾಜ್ಯಾದಯಃ। "ಉಪನೇತುಮುಚ್ಚತೀತಿಮತೇವ ದಿವಂ ಕುಚಯೋರ್ಯುಗೇನ ತರಸಾಽಽಕಲಿತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೯-೭೨।

**ಕುಚತಟ ಕುಚತಟ** (ನಂ) 1. ಸ್ತನಪ್ರದೇಶ, ಮೊಲೆಯ ಮೇಲುಭಾಗ. ಕುಚಯೋಸ್ತಟಮ್। "ಆಹತಂ ಕುಚತಟೇನ ತರಣ್ಯಾಃ ಸಾಧು ಸೋದಮಮುನೇತಿ ಪಪಾತಃ। ತಟಚತಃ ಪ್ರಿಯತಮೋರಸಿ ಹಾರಾತ್ ಪುಷ್ಪವೃಷ್ಟಿರೀವ ಮೌಕ್ತಿಕವೃಷ್ಟಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೦-೭೪। 2. ಮೊಲೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ.

**ಕುಚಂದನ ಕುಚಂದನ** (ನಂ) 1. ಕೆಂಪು ಚಂದನ. ಗಂಧ-ರಹಿತತ್ವಾತ್ ಕುಚಿತಂ ಚಂದನಮ್। 2. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ.

**ಕುಚಫಲ ಕುಚಫಲ** (ಪುಂ) 1. ದಾಳಿಯೆ ಗಿಡ. ಕುಚ ಇವ ಫಲಮಸ್ಯ। (ನಂ) 2. ದಾಳಿಯೆ ಹಣ್ಣು. ಕುಚ ಇವ ಫಲಮ್।

**ಕುಚರ ಕುಚರ** (ವಿಂ) 1. ಪರದೂಷಕ, ಇತರರನ್ನು ದೂಷಿಸುವವನು, ಇತರರ ದೋಷವನ್ನು ಎತ್ತಿ ಹೇಳುವವನು, ನೀಚಸ್ವಭಾವದವನು. ಕುಚಿತಂ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತಿಮಕ್ಷಣಯೋಃ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಕಷ್ಟದ ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ. ಕುಚಿತೇ ಮಾರ್ಗೇ ಚರತಿ - ಚರ



"ಠ:" (೩-೨-೧೬)। 3. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ. ಕೌ ಭೂಮೌ ಚರತಿ - ಚರ "ಠ:" (೩-೨-೧೬)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಠೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಚರೀ -ಚರೀ.

ಕುಚರಿತ ಕುಚರಿತ (ನಂ) ಕೆಟ್ಟ ನಡತೆ, ಕೆಟ್ಟ ಸ್ವಭಾವ. ಕುತಿಸಿತಂ ಚರಿತಮ್।

ಕುಚರ್ಯ ಕುಚರ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಟ್ಟ ನಡತೆ, ದುಷ್ಟತನ. ಕುತಿಸಿತಾ ಚರ್ಯಾ। "ದ್ರೋಹಭಾವಂ ಕುಚರ್ಯಾಂ ಚ ಸ್ತ್ರೀಮ್ಯೋ ಮನುರಕಲ್ಪಯತ್" ಮನುಂ ೧-೧೭।

ಕುಚಾಗ್ರ ಕುಚಾಗ್ರ (ನಂ) ಚೂಚುಕ, ಮೊಲೆಯತೊಟ್ಟು. ಮೊಲೆಯ ತುದಿ. ಕುಚಸ್ಯಾಗ್ರಮ್।

ಕುಚಾಙ್ಗೇರಿ ಕುಚಾಂಗೇರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುಳಿಹಬ್ಬಿಗಿಡ. ಕುತಿಸಿತಾ ಚಾಙ್ಗೇರಿ।

ಕುಚಿಕ ಕುಚಿಕ (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. ಕುಚ (ಸಂಪರ್ಚನಾದೌ) "ಇಕನ್" ಬಾಹುಂ। (ಪುಂವಂವಂ) 2. ಈಶಾನ್ಯ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ದೇಶ. "ಖಲಾಪಲೋ-ಜಟಾಮುರಕುನಠಸಘೋಷಕುಚಿಕಾಖ್ಯಾ:"।

ಕುಚಿತ ಕುಚಿತ (ವಿಂ) 1. ಪರಿಮಿತವಾದ, ಚಿಕ್ಕದಾದ. ಕೊಂಚವಾದ. ಕುಚ (ಸಂಕೋಚನೆ) "ಕಿತತ್" (೩ಂ ೪-೧೮೫)। 2. ಮಿಶ್ರವಾದ, ಬೆರಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕುಚ (ಸಂಪರ್ಚನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಕುಚೇಲ ಕುಚೇಲ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ಸುಧಾಮ ನೆಂಬ ಹೆಸರುಳ್ಳ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಒಬ್ಬ ಮಿತ್ರ. ಕುತಿಸಿತಂ ಚೇಲಂ ವಸ್ತ್ರಮಸ್ಯ। [ಈತನು ಬಹಳ ಬಡತನದಿಂದ ಛಿಂದಿ ಬಟ್ಟೆಯನ್ನೇ ಉಡುತ್ತಿದ್ದುದರಿಂದ ಕುಚೇಲನೆಂಬ ಹೆಸರೂ ಒಂದುಂಟು. ಇವನು ಬಲರಾಮಕೃಷ್ಣರೊಡನೆ ಸಾಂದೀಪನಿಯೆಂಬ ಗುರುವಿನಲ್ಲಿ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದನು. ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮುಗಿಸಿ ಗುರುಕುಲದಿಂದ ಮನೆಗೆ ಬಂದ ಕುಚೇಲನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ಬಹುಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪಡೆದನು. ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಹೊಟ್ಟೆತುಂಬ ಆಹಾರವನ್ನು ಕೊಡಲು ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದೆ ಯಾವಾಗಲೂ ಕುಚೇಲನು ಪರಮಾತ್ಮನ ಧ್ಯಾನದಲ್ಲೇ ಆಸಕ್ತನಾಗಿದ್ದನು. ಪತಿವ್ರತಾರೋಮಣಿಯಾದ ತನ್ನ ಪತ್ನಿಯ ಒತ್ತಾಯದಿಂದ ಪರಮ ಮಿತ್ರನೂ, ಪರಮ ಕಾರುಣಿಕನೂ ಆದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನನ್ನು ಬೇಡಿ ಕುಟುಂಬಭರಣಕ್ಕೆ ಏನಾದರೂ ತರಬೇಕೆಂದು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಸಂದರ್ಶನಾರ್ಥವಾಗಿ ಹೊರಟು ದ್ವಾರಕೆಯನ್ನು ತಲುಪಿ ಕಷ್ಟಪಟ್ಟು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಅರಮನೆಯನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿದನು. ಬಾಲ್ಯಮಿತ್ರನಾದ ಕುಚೇಲನನ್ನು ಕಂಡು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಸತ್ಕರಿಸಿ ಕುಶಲಪ್ರಶ್ನೆಯನ್ನು ಮಾಡಿದನು. ಕುಚೇಲನು ತನಗಾಗಿ

ತಂದಿದ್ದ ಅವಲಕ್ಕಿಯನ್ನು ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ತಿಂದನು. ತಾನು ಅಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ದಿನಗಳಿದ್ದು ಸುಖವಾಗಿ ಕಾಲ ತಳ್ಳಿದ ಕುಚೇಲನು ಸಂಕೋಚದಿಂದ ಏನನ್ನೂ ಕೇಳದೆ ತನ್ನ ಗ್ರಾಮಕ್ಕೆ ಹಿಂತಿರುಗಿ ಬರುವುದರೊಳಗಾಗಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಆಜ್ಞೆಯಂತೆ ವಿಶ್ವ ಕರ್ಮನು ಆ ಗ್ರಾಮವನ್ನು ನವರತ್ನಗಳಿಂದ ದೇದೀಪ್ಯಮಾನವಾದ ಮಹಾಸೌಧಗಳಿಂದಲೂ, ಉದ್ಯಾನವನಗಳಿಂದಲೂ ಸುಂದರ ನಗರವನ್ನಾಗಿ ಮಾರ್ಪಡಿಸಿದ್ದನು. ಕುಚೇಲನಿಗೆ ತನ್ನ ಮನೆಯ ಗುರುತೇ ಸಿಕ್ಕದೆ ಹುಡುಕಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಆತನ ಪತ್ನಿಯು ಪೀತಾಂಬರವನ್ನುಟ್ಟು ದಿವ್ಯಾಲಂಕಾರಗಳಿಂದ ಭೂಷಿತಳಾಗಿ ಅನೇಕಮಂದಿ ದಾಸಿಯರೊಡನೆಯೂ, ದಿವ್ಯ ವಾದ್ಯಗಳೊಡನೆಯೂ ಎದುರುಗೊಂಡು ಬಂದು ತಮ್ಮ ಮನೆಗೆ ಕರೆದುಕೊಂಡು ಹೋದಳು. ಕುಚೇಲನು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಪರಮಾನುಗ್ರಹವನ್ನು ಕೊಂಡಾಡುತ್ತಾ ಸಕಲ ಭೋಗವಸ್ತುಗಳಿದ್ದರೂ ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿ ತೋರಿಸದೆ ಸತೀ ಪುತ್ರರೊಡನೆ ಧರ್ಮ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿದ್ದುಕೊಂಡು ಪರಮಾತ್ಮ ಧ್ಯಾನದಿಂದ ಸುಖವಾಗಿ ಕಾಲ ಕಳೆಯುತ್ತಿದ್ದು ಮುಕ್ತಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿದನು.] ಭಾಗಂ ೧೦-೮೯, ೯೦। (ನಂ) 2. ಹರುಕು ಬಟ್ಟೆ, ಜೂಲು ಬಟ್ಟೆ, ಛಿಂದಿ ಬಟ್ಟೆ. (ವಿಂ) 3. ಹರುಕು ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ಉಟ್ಟಿರುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ -ಲಾ. ಅಗುರುಶುಂಠಿ.

ಕುಚೇಷಾ ಕುಚೇಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಟ್ಟ ವ್ಯಾಪಾರ, ನೀಚ ಕೆಲಸ.

ಕುಚೋದ ಕುಚೋದ್ಯ (ನಂ) ಅಸಂಗತವಾದ ಪ್ರಶ್ನೆ, ಯುಕ್ತವಲ್ಲದ ಕೇಳಿಕೆ. ಕುತಿಸಿತಂ ಚೋದಮ್।

ಕುಜ ಕುಜ (ಪುಂ) 1. ಭೂಮಿಯ ಪುತ್ರನಾದ ಅಂಗಾರಕ, ಕುಜಗ್ರಹ. ಕೊ:ಪೃಥಿವ್ಯಾ ಜಾಯತೇ-ಜನೀ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಠ:" (೩-೨-೧೮)। ಕುಜನಿಗೆ ಮೇಷ ಮತ್ತು ವೃಶ್ಚಿಕ ರಾಶಿಗಳು ಕ್ಷೇತ್ರ. ಮಕರ ರಾಶಿಯು ಉಚ್ಚ. ಕರ್ಕಾಟಕ ರಾಶಿಯು ನೀಚ. ರವಿ, ಚಂದ್ರ ಮತ್ತು ಗುರು ಈ ಮೂವರೂ ಮಿತ್ರರು. ಶುಕ್ರ ಮತ್ತು ಶನಿ ಇವರಿಬ್ಬರೂ ಸಮರು. ಬುಧನು ಶತ್ರು. ಕುಜನು ಪಾಪಗ್ರಹ. ಕ್ಷತ್ರಿಯ. ಮೇಷವು ಇವನ ವಾಹನ. ಇವನ ಬಣ್ಣ ಕೆಂಪು. ರಕ್ತ ಜಂದನ, ರಕ್ತ ಪುಷ್ಪ ಮತ್ತು ರಕ್ತವಸ್ತ್ರಗಳು ಇವನಿಗೆ ಪ್ರಿಯವಾದುವು. ಕುಜನು ಸಾಮಮೇದಾಧಿಪತಿ. ಕುಜನು ಜನ್ಮರಾಶಿಯಿಂದ 3, 6 ಮತ್ತು 11ನೆಯ ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಶುಭಫಲವನ್ನು ಕೊಡುತ್ತಾನೆ. ಕುಜದಶೆಯ ಕಾಲ ಏಳು (7) ವರ್ಷಗಳು. [ಈ ದಶೆಯಲ್ಲಿ ಇತರ ಗ್ರಹಗಳ ಭುಕ್ತಿಯ ವಿವರಕ್ಕೆ "ಅಕ್ಷರಾಕ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ನರಕಾಸುರ [ವಿವರಕ್ಕೆ "ನರಕ"



ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 3. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜಾ-  
-ಜಾ. 4. ಸೀತಾದೇವಿ. [ಜನಕ ಮಹಾರಾಜನು ಯಾಗ  
ಭೂಮಿಯನ್ನು ಉಳುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಸೀತೆಯು ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ  
ದೊರೆತದ್ದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.] 5. ಕಾತ್ಯಾಯನಿ, ದುರ್ಗಾ  
ದೇವಿ. "ಕುಜಾ ಕಾತ್ಯಾಯನೀದೇವ್ಯಾ ಕುಜೋ ನರಕಭೂಮಯೋಃ"  
ಮೇದಿಂ.

**ಕುಜದಿನ ಕುಜದಿನ** (ನಂ) ಕುಜಗ್ರಹದ ದಿನ, ಮಂಗಳವಾರ.  
ಕುಜಸ್ಯ ದಿನಮ್.

**ಕುಜನನಿ ಕುಜನನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಟ್ಟ ತಾಯಿ. ಕುತ್ಸಿತಾ  
ಜನನಿ.

**ಕುಜನ್ಮನ್ ಕುಜನ್ಮನ್** (ಪುಂ) 1. ಭೂಮಿಯ ಪುತ್ರನಾದ  
ಅಂಗಾರಕ ಗ್ರಹ. ಕೋ: ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ. (ನಂ) 2. ಕೀಳು  
ಜನ್ಮ, ಕಡಮೆ ಗುಣದ ಹುಟ್ಟು. ಕುತ್ಸಿತಂ ಜನ್ಮ. (ವಿಂ)  
3. ಕೀಳು ಜನ್ಮದ. ಕುತ್ಸಿತಂ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ.

**ಕುಜಪ ಕುಜಪ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಜಪ, ಕೆಟ್ಟಉದ್ದೇಶದಿಂದ  
ಮಾಡುವ ಜಪ. 2. ಕೆಟ್ಟ ಮಾತು, ಅಯೋಗ್ಯವಾದ  
ಮಾತು. (ವಿಂ) 3. ಕೆಟ್ಟ ಜಪವನ್ನು ಮಾಡುವ.  
4. ಕೆಟ್ಟ ಮಾತನಾಡುವ.

**ಕುಜಂಭ ಕುಜಂಭ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಹ್ಲಾದನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.  
"ಪ್ರಹ್ಲಾದಸ್ಯ ತ್ರಯ: ಪುತ್ರಾ: ವಿಕ್ರಾಂತಾಶ್ಚ ಮಹಾಬಲಾ: | ವಿರೋಚನಶ್ಚ  
ಜಂಭಶ್ಚ ಕುಜಂಭಶ್ಚೇತಿ ವಿಶ್ರುತಾ: | ಹರಿವಂ. 2. ಅಂದ  
ವಿಲ್ಲದ ಹಲ್ಲು. (ವಿಂ) 3. ಅಂದವಿಲ್ಲದ ಹಲ್ಲುಗಳುಳ್ಳ.  
ಕುತ್ಸಿತಾ ಜಂಭಾ ದಂತಾ ಯಸ್ಯ. "ಜಂಭೋ ದಂತವಿಶೇಷೇ ನಾ  
ದಂತೇ" ಮೇದಿಂ.

**ಕುಜಂಭಲ ಕುಜಂಭಲ** (ಪುಂ) ಮನೆಗೆ ಕನ್ನ ಕೊರೆಯುವ  
ಕಳ್ಳ.

**ಕುಜಾಷ್ಟಮ ಕುಜಾಷ್ಟಮ** (ಪುಂ) ಮುಹೂರ್ತಗಳಿಂದ  
ಅಷ್ಟಮ (8ನೆಯ) ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಕುಜನಿರುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾ  
ಗುವ ಒಂದು ದೋಷ. ಆದರೆ ಕುಜನು ಅಷ್ಟಮದಲ್ಲಿ  
ಶತ್ರುಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿದ್ದರೂ ನೀಚರಾಶಿಯಲ್ಲಿದ್ದರೂ ಅಸ್ತಂಗತ  
ನಾಗಿದ್ದರೂ ಬಲಹೀನನಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಈ ದೋಷವಿಲ್ಲ  
ವೆಂದು ಕೆಲವರ ಮತ. ಹೀಗೆಯೇ ಭೃಗುಷಟ್ಕದೋಷವೂ.

"ಲಗ್ನಾದಷ್ಟಮಗ: ಕುಜೋ ನಿಧನಕೃದ್ಭೂಮಾಷ್ಟಮಾಖ್ಯಾಂಽಪ್ಯಯಂ ಯದ್ವೇವ  
ಭೃಗುಷಟ್ಕದೋಷ ಇತಿ ತಲ್ಲಗ್ನಾದ್ಭೃಗು: ಪಠಗ: | ಯದ್ವೇ ಶತ್ರುಜಿತೌ  
ರಿಪೋಗೃಹಗತೌ ನಿಕಸ್ಥಿತೌ ಚಾಸ್ತಗೌ ತೌ ದ್ವೌ ದುರ್ಬಲಿನೌ ವದಂತಿ  
ಚ ಪರೇ ದೋಷಸ್ತು ನಾಸ್ತೀತ್ಯಹೋ" ಕಾಲಾಂ ೭೭. "ಅಸ್ತಗೋ  
ನಿಜಗೋ ಭೋಮೇ ಶತ್ರುಕ್ಷೇತ್ರಗತೇಽಪಿ ಚ | ಕುಜಾಷ್ಟಮೋದ್ಭವೋ ದೋಷೋ  
ನ ಕಿಂಚಿದಪಿ ವಿಧತೇ".

**ಕುಜಿಶ ಕುಜಿಶ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು.  
"ಕುಜಿಶೋ ಮಧುರೋ ಹೃದ್ಯ: ಕಷಾಯೋ ದೀಪನಸ್ತಥಾ | ಬಲ್ಯ:  
ಸ್ನಿಗ್ಧೋ ಗುಲ್ಮಾಹೀ ವಾತಕೃತ್ ರೋಚನೋ ಮತ: | ರಾಜನಿಂ |

**ಕುಜ್ಜಟಿ ಕುಜ್ಜಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಬ್ಬನಿ, ಮಂಜು. "ಕುಜ್ಜಟಿ-  
ಭೂಮಹಿಷಿ ರತಾನ್ಧ್ರಿ ಚ ಕುಹೂಲಿಕಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | ವಾ  
"ಡೀಪ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫) | -ದೀ -ಟೀ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:" |  
-ಟಿಕಾ -ಟಿಕಾ. "ಜೇಯಾ ಕುಜ್ಜಟಿಕಾ ರಕ್ಷಾ ತಮ:ಪ್ರಾಯಾ ಚ  
ಸಾ ತಥಾ | ಕಫಪಿತ್ತಕರೀ ಲೋಕೇ ಭಿಷಗ್ಭಿ: ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾ |"

**ಕುಜ್ಜ-ಕೌಟಿಲ್ಯಾಲ್ಪಿಭಾವಯೋ:** (ಭವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) |  
ಕುಜ್ಜತಿ | ಚುಕುಜ್ಜ | ಕುಜ್ಜಿತಾ | ಕುಜ್ಜತು | ಅಕುಜ್ಜತ್ | ಕುಜ್ಜೇತ್ |  
1. ಬಗ್ಗಿಸು, ವಕ್ರವಾಗಿ ಮಾಡು. 2. ಗುಂಗುರು  
ಗುಂಗುರಾಗಿ ಮಾಡು, ಸುರುಳಿ ಸುತ್ತು, ತಿರುಚಿ ಚಿಕ್ಕದಾಗಿ  
ಮಾಡು.

**ಕುಜ್ಜತ್ ಕುಂಚತ್** (ವಿಂ) 1. ಬಗ್ಗುತ್ತಿರುವ, ಡೊಂಕಾಗು  
ತ್ತಿರುವ. ಕುಜ್ಜ (ಕೌಟಿಲ್ಯೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |  
2. ಕಡಮೆಯಾಗುತ್ತಿರುವ, ಚಿಕ್ಕದಾಗುತ್ತಿರುವ, ಸಣ್ಣ  
ದಾಗುತ್ತಿರುವ. ಕುಜ್ಜ (ಅಲ್ಪಿಭಾವೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | ಕುಜ್ಜಂತೀ ಕುಂಚಂತೀ.

**ಕುಜ್ಜನ ಕುಂಚನ** (ನಂ) 1. ಬಗ್ಗುವುದು, ಡೊಂಕಾಗು  
ವುದು. ಕುಜ್ಜ (ಕೌಟಿಲ್ಯೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |  
2. ಚಿಕ್ಕದಾಗುವುದು, ಕಡಮೆಯಾಗುವುದು, ಸಣ್ಣದಾಗು  
ವುದು. ಕುಜ್ಜ (ಅಲ್ಪಿಭಾವೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |  
"ಕುರ್ಯಾತ್ ಸಿರಾಗತ: ಶೂಲಂ ಸಿರಾಕುಜ್ಜನಪೂರಣಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ  
ನಿರ್ದಾನಂ ೧-೨೭ | 3. ಒಂದು ವಿಧವಾದ ನೇತ್ರರೋಗ.  
"ವಾತಾಘಾ ವರ್ಮ ಸಂಕೋಚ್ಯ ಜನಯಂತಿ ಯದಾ ಮಲಮ್ | ತದಾ  
ದ್ರಷ್ಟುಂ ನ ಶಕ್ನೋತಿ ಕುಜ್ಜನಂ ನಾಮ ತದ್ವಿದುಃ" |

**ಕುಜ್ಜಯತ್ ಕುಂಚಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಬಗ್ಗಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಡೊಂಕುಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಕುಜ್ಜ (ಕೌಟಿಲ್ಯೇ) + ಣಿಚ್  
"ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | 2. ಕಡಮೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ,  
ಚಿಕ್ಕದಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಕುಜ್ಜ (ಅಲ್ಪಿಭಾವೇ) + ಣಿಚ್  
"ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) |  
-ಯಂತೀ -ಯಂತೀ.

**ಕುಜ್ಜಾ ಕುಂಚಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೀಗದಕೈ. ಕುಜ್ಜ (ಕೌಟಿಲ್ಯಾಲ್ಪಿ-  
ಭಾವಯೋ:) "ಅ:" (೩-೩-೧೦೩) |

**ಕುಜ್ಜಿ ಕುಂಚಿ** (ಪುಂ) ಅಷ್ಟಮುಷ್ಟಿ, ಎಂಟು ಹಿಡಿಯ  
ಅಳತೆ. ಕುಜ್ಜ (ಕೌಟಿಲ್ಯಾಲ್ಪಿಭಾವಯೋ:) "ಇನ್" (೩ಂ  
೪-೧೧೭) | "ಅಷ್ಟಮುಷ್ಟಿರ್ಭವೇತ್ ಕುಜ್ಜಿ: ಕುಜ್ಜಯೋಷ್ಟೌ ಚ  
ಪುಷ್ಕಲಮ್" |



**ಕುಜ್ಜಿಕಾ ಕುಂಚಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಬೀಗದೈ. 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. 3. ಗುಲಗಂಜಿ. 4. ಬಿದಿರಿನ ಜಿಗುರು. 5. ಕೆಸರಿನಲ್ಲಿರುವ ಎರುಬುಹುಳು. ಕುಜ್ಜ (ಕೌಟಿಲ್ಯಾಲ್ಪಿಭಾವಯೋ:) "ಫುಲ್" (3-1-133)। "ಕುಜ್ಜಿ-ಕಯನಂ ಭಾಯಯತಿ"।

**ಕುಜ್ಜಿತ ಕುಂಚಿತ (ನಂ)** 1. ತೊರವುಪ್ಪ. (ವಿಂ) 2. ಬಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಕ್ರವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕುಜ್ಜ (ಕೌಟಿಲ್ಯೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। "ಕೃತಾರ್ಥನಶ್ಚಾಡುಭಿರಿಂಜಿತೈ: ಪುರಾ ಪರಾಸಿ ಯ: ಕಿಂಚನಕುಜ್ಜಿತಭ್ರುವಾ" ನೆಪಂ 16-66। 3. ಚಿಕ್ಕದಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕುಜ್ಜ (ಅಲ್ಪಿಭಾವೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। "ಭೂಚಾತುರ್ಯಾಕ್ತುಜ್ಜಿತಾಕ್ಷಾ: ಕಟಾಕ್ಷಾ: ಸ್ನಿಗ್ಧಾ ವಾಚೋ ಲಜ್ಜಿತಾಂತಾಃ ಹಾಸಾ:" ಭರ್ತಂ 2-31।

**ಕುಜ್ಜ್ಯಮಾನ ಕುಂಚ್ಯಮಾನ (ವಿಂ)** 1. ಬಗ್ಗಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಡೊಂಕಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಕುಜ್ಜ (ಕೌಟಿಲ್ಯೇ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (3-2-124)। 2. ಚಿಕ್ಕದಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಕಡಮೆಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಕುಜ್ಜ (ಅಲ್ಪಿಭಾವೇ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (3-2-124)। "ಕುಜ್ಜ್ಯಮಾನಂ ರುಜಾತಂ ವಾ ಗಾತ್ರಂ ಸ್ತನ್ವಮಥಾಪಿ ವಾ" ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ 4-16।

**ಕುಜ್ಜ ಕುಂಜ (ಪುಂಂ)** 1. ಲತೆಗಳ ಪೊದರು, ಬಳ್ಳಿಗಳಿಂದ ಆವೃತವಾದ ಸ್ಥಳ. ಕೌ ಜಾಯತೆ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುಭವಿ) "ಹ:" (3-2-96)। "ನಿರ್ವಿತೋಘೈ: ಕುಜ್ಜಲಿನಾಂಜಿವಾಂಸು: ಜ್ಯಾನಿರ್ವಿಘ್ನೈ: ಕ್ಷೋಮಯಾಮಾಸ ಸಿಂಹಾನ್" ರಘುಂ 9-64। 2. ಅನೆಯ ದವಡೆ. 3. ಅನೆಯ ದಂತ. "ಕುಜ್ಜೋಽಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ನಿಕುಜ್ಜೇಽಪಿ ಹನೌ ದಂತೇಽಪಿ ಹಸ್ತಿನಾಮ್" ಮೇದಿಂ। 4. ಗಂಜಿ, ಗುಹೆ. "ವೃತ್ತಂ ಯದ್ವೇ ಶೂರಮಾಶಿಲಯ ಕಾಚಿತ್ ರನ್ತುಂ ತುರ್ಣಂ ಮೇಹ-ಕುಜ್ಜಂ ಜಗಾಮ" ಮಾಘಂ 19-60।

**ಕುಜ್ಜಕುಟೀರ ಕುಂಜಕುಟೀರ (ಪುಂ)** ಲತೆಗೃಹ, ಲತೆ ಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಮನೆ. "ಗುಜ್ಜತುಜ್ಜಕುಟೀರಕೌಶಿಕ-ಘಟಾಘೃತಕಾರಸಂವೇಲಿತಮ್" ಮಾಲ್ತೀಂ 4-191।

**ಕುಜ್ಜರ ಕುಂಜರ (ಪುಂ)** 1. ಗಂಜಿ, ಅನೆ. ಕುಜ್ಜ: ಪ್ರಶಸ್ತೋ ಹನು: ದಂತೋ ವಾಙ್ಮಯ - ಕುಜ್ಜ "ರ:" (ವಾಂ 4-2-107)। "ಅದ್ರೋದ್ರಕುಜ್ಜಚರಕುಜ್ಜರಗಂಧಕಾಘಸಂಕ್ರಾಂತದಾನಪಯಸೋ ವನ-ಪಾದಪಸ್ಯ" ಮಾಘಂ 4-43। 2. ಕೇಶ, ಕೂದಲು. 3. ಎಂಟು ಸಂಖ್ಯೆ. "ಕುಜ್ಜರೋಜೇಕಪೇ ಕೇಶೇ" ಮೇದಿಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಾ -ರಾ. 4. ಮರಾಟೆಮೊಗ್ಗ. 5. ಹಸುರು ಪಾದರಿ ಗಡ. (ವಿಂ) 6. (ಸಮಾಸದಲ್ಲಿ ಉತ್ತರಪದವಾದರೆ) ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. ರಾಜಕುಜ್ಜರ:, ಕಪಿಕುಜ್ಜರ:।

**ಕುಜ್ಜರತ್ವ ಕುಂಜರತ್ವ (ನಂ)** ಅನೆಯಾಗಿರುವಿಕೆ, ಗಂಜಿರೂಪ ವನ್ನು ತಾಳಿರುವಿಕೆ. ಕುಜ್ಜರಸ್ಯ ಭಾವ: "ತ್ವ:" (4-1-119)।

**ಕುಜ್ಜರಪಿಪ್ಪಲಿ ಕುಂಜರಪಿಪ್ಪಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗಂಜಿ ಹಿಪ್ಪಲಿ.

**ಕುಜ್ಜರಾ ಕುಂಜರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮರಾಟೆಮೊಗ್ಗ. 2. ಹಸುರು ಪಾದರಿ ಗಡ. 3. ಹೆಣ್ಣು ಅನೆ. ಅಜಾದಿಂ "ರಾಪ್" (4-1-4)। ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (4-1-63) -ರೀ -ರೀ.

**ಕುಜ್ಜರಾರಾತಿ ಕುಂಜರಾರಾತಿ (ಪುಂ)** 1. ಶರಭಮೃಗ. 2. ಸಿಂಹ. ಕುಜ್ಜರಸ್ಯಾರಾತಿ:।

**ಕುಜ್ಜರಾಶನ ಕುಂಜರಾಶನ (ಪುಂ)** ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿ ಮರ. ಕುಜ್ಜರೇಶಯತೆ ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-113) "ಬೋಧಿದ್ರೂಮಶ್ಚಲದಲ: ಪಿಪ್ಪಲ: ಕುಜ್ಜರಾಶನ:" ಅಮಂ।

**ಕುಜ್ಜರಾಸನ ಕುಂಜರಾಸನ (ನಂ)** ಅನೆಯಂತೆ ನಿಂತು ಹಾಕುವ ಒಂದು ಆಸನ. ಕುಜ್ಜರಸ್ಯೇವಾಸನಮತ್ರ। "ಅಥ ವಕ್ಷ್ಯೇ ಮಹಾಕಾಲ ಕುಜ್ಜರಾಸನಮುತ್ತಮಮ್। ಕರದ್ವಯೇನ ಪಾದಾಭ್ಯಾಂ ಭೂಮಿ ತಿಷ್ಠೇತ್ ಶಿರ:ಕರ:"।

**ಕುಜ್ಜಲ ಕುಂಜಲ (ನಂ)** ಗಂಜಿ, ಅಂಬಲಿ. ಕುಜ್ಜಿತಂ ಜಲಂ ಯತ್ರ। ಪೃಷಂ।

**ಕುಡ-ಕೌಟಿಲ್ಯೇ (ತುಡಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ)**। ಕುಡತಿ। ಚುಕುಟ। ಕುಡಿತಿ। ಕುಡತು। ಅಕುಡಿತಿ। ವಕ್ರವಾಗು, ಡೊಂಕಾಗು, ಬಗ್ಗು.

**ಕುಡ ಕುಟಿ (ಪುಂ)** 1. ಕೋಟೆ, ದುರ್ಗ. (ಪುಂಂ) 2. ಕೊಡ, ಬಿದಿರಿಗೆ. (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಗೃಹ, ಮನೆ. ಕುಡತಿ - ಕುಡ (ಕೌಟಿಲ್ಯೇ) "ಕ:" (3-1-134)। 4. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. 5. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. "ಅನೋಕಹ: ಕುಡ: ಸಾಲ: ಪಲಾಶಿ ದ್ರುದ್ರಮಾಗಮಾ:" ಅಮಂ। 6. ಸಣ್ಣ ಕಲ್ಲುಗಳನ್ನು ಚೂರು ಮಾಡುವ ಸುತ್ತಿಗೆ, ಚಮ್ಮಟಿಗೆ. "ಕುಡ: ಕೋಟೆ ಪುಮಾನಸ್ತ್ರೀ ಘಟೇ ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸಯೋಗ್ಗೇ" ಮೇದಿಂ। "ಕುಡ: ಕೋಟೆ ಶಿಲಾಕುಡ್ಡೇ ಘಟೇ ಗೇ" ಹೇಮಂ।

**ಕುಡಕ ಕುಟಿಕ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ)** 1. ದಕ್ಷಿಣದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ದೇಶ. "ಚಡ್ವಕ್ರಮಮಾಣ: ಕೋಡ್ವೇಕ್ವುಡಕುಡಕಾನ್ ದಕ್ಷಿಣಕರ್ಣಾಟಕಾನ್ ದೇಶಾನ್ ಯದ್ವಕ್ಷ್ಯಯೋಪಗತ: ಕುಡಕಾಚಲೋಪವನೇ" ಭಾಗಂ 4-6-7। 2. ಕುಟಿಕದೇಶದ ಜನರು. (ನಂ) 3. ಈಚು ಇಲ್ಲದ ನೇಗಿಲು, ದಂಡರಹಿತವಾದ ಲಾಂಗಲ.

**ಕುಡಕಾಚಲ ಕುಟಿಕಾಚಲ (ಪುಂ)** ಕುಟಿಕದೇಶದ ಒಂದು ಪರ್ವತ.

**ಕುಡ್ಡ ಕುಟಿಂಕ (ಪುಂ)** 1. ಮನೆಯ ಭಾವಣೆ. ಕು: ಗೃಹಭೂಮಿ: ಟಡ್ಕಯತೆ ಆಚ್ಛಾದಿತೇಜೇನ - ಟಕಿ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) ಕರಂ



कुटिलग कृषिगत (वि०) 1. चंद्रवागी नंदेयुव,  
 सौष्ठव्यागी हरेगुव. कुटिल गच्छति—गम्लृ (गतौ)  
 "ङः" (वा० ३-२-४८) । स्त्रियाम् "टाप्" (४-१-४) ।  
 -गा -गा. (स्त्री०) 2. नदि, हरे. "णिनिः"  
 (३-२-७८) । -गामिन् -गामिन्. स्त्रियाम् "डीप्"  
 (४-१-५) । -गामिनो -गामिणः.



**ಕುಟಿಲಗತಿ ಕುಟಿಲಗತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಕ್ರವಾದ ಗಮನ, ಸೊಪ್ಪೆಯಾಗಿ ನಡೆಯುವುದು. ಕುಟಿಲಾ ಗತಿಃ। (ವಿಂ) 2. ವಕ್ರವಾದ ಗಮನವುಳ್ಳ, ವಕ್ರವಾಗಿ ನಡೆಯುವ. ಕುಟಿಲಾ ಗತಿಯಸ್ಯ।

**ಕುಟಿಲತಾ ಕುಟಿಲತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಕ್ರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಡೊಂಕಾಗಿರುವಿಕೆ. ಕುಟಿಲಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। 2. ವಂಚನೆ, ಮೋಸ, ಠಕ್ಕು.

**ಕುಟಿಲಪಕ್ಷಮನ್ ಕುಟಿಲಪಕ್ಷಮ್** (ನಂ) ವಕ್ರವಾದ ಕಣ್ಣಿನ ರೆಪ್ಪೆಕೂದಲು. ಕುಟಿಲಂ ಚ ತತ್ ಪಕ್ಷಮ್ ಚ।

**ಕುಟಿಲಮತಿ ಕುಟಿಲಮತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಕ್ರವಾದ ಬುದ್ಧಿ, ಮಜ್ಜುವಲ್ಲದ ಬುದ್ಧಿ. ಕುಟಿಲಾ ಮತಿಃ। (ವಿಂ) 2. ವಕ್ರವಾದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ, ಅಪ್ರಾಮಾಣಿಕವಾದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. ಕುಟಿಲಾ ಮತಿಯಸ್ಯ। "ಕೌಟಿಲ್ಯಃ ಕುಟಿಲಮತಿಃ ಸ ಏಷ ಯೇನ ಕ್ರೋಧಾಗ್ನೌ ಪ್ರಸಭಮದಾಹಿ ನಂದವಂಶಃ" ಮುರಾಂ ೧-೭।

**ಕುಟಿಲಾಶಯ ಕುಟಿಲಾಶಯ** (ವಿಂ) ಕೆಟ್ಟ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಮೋಸದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ.

**ಕುಟಿಲಿಕಾ ಕುಟಿಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬೇಟೆಗಾರನ ಒಂದು ವಿಧವಾದ ನಡೆಗೆ, ವ್ಯಾಧನು ಬೇಟೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಬಗ್ಗಿ ಕೊಂಡು ನಡೆಯುವುದು. 2. ಕಮ್ಮಾರನ ಕಬ್ಬಿಣದ ಇಕ್ಕಳ. ಕುಟಿಲಿಕಾ ವ್ಯಾಧಾನಾಂ ಗತಿವಿಶೇಷಃ ಕರ್ಮಾರೋಪಕರಣಭೂತಂ ಲೋಹಂ ಚ। ಕುಟಿಲಿಕಯಾ ಹರತಿ ಮೃಗಾನ್ ಜ್ಞಾನಾನ್ ವಾ ಕೌಟಿಲಿಕೋ ವ್ಯಾಧಃ ಕರ್ಮಾರೋಪಃ। ಸಿಂ ಕೌಂ।

**ಕುಟಿ ಕುಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಣ್ಣ ಮನೆ, ಕುಟೀರ, ಗುಡಿಸಲು. ಕುಟ (ಕೌಟಿಲ್ಯೇ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭)। "ಙೀಪ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫)। 2. ಕುಟ್ಟಿನಿ, ತಲೆಹಿಡುಕಿ, ಕುಂಟೆಣೆ. 3. ಸುರೆ, ಮದ್ಯ. 4. ಪುಷ್ಪಗುಚ್ಛ, ಹೂವಿನಗೊಂಚಲು. 5. ಆವಿಯು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಬರಲು ಅವಕಾಶವುಳ್ಳ, ರಂಧ್ರವಿರುವ ಮುಚ್ಚಳ. 6. ಮುರೆಯೆಂಬ ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ. "ಕುಟಿ ಸ್ಯಾತ್ ಕುಮ್ಮದಾಸ್ಯಾಂ ಚ ಮುರಾಂ ಚಿತ್ರಗುಚ್ಛಕೇ" ಮೇದಿಂ। "ಕುಟಿ ಸುರಾ। ಚಿತ್ರಗುಚ್ಛಾ ಕುಮ್ಮದಾಸೀ" ಹೇಮಂ।

**ಕುಟಿಕುಟ ಕುಟೀಕುಟಿ** (ನಂ) ಗುಡಿಸಲು ಮತ್ತು ಮನೆ. ಕುಟಿ ಚ ಕುಟಶ್ಚ ಅನಯೋಃ ಸಮಾಹಾರಃ। ನಿಪಾಂ (೨-೪-೧೧)।

**ಕುಟಿಕೃತ ಕುಟೀಕೃತ** (ವಿಂ) ವಕ್ರವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಗ್ಗಿಸಿ ಮನೆಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ (ಬಟ್ಟೆ). ಕುಟಿ + ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) "ಜಿವಃ" "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಅರ್ಣಿಂ ಚ ರಾಜ್ಞವಂ ಚೈವ ಕುಟಿಜಂ ಪಠ್ಯಜಂ ತಥಾ। ಕುಟಿಕೃತಂ ತಥೈವಾತ್ರ ಕಮಲಾಭಂ ಸಹಸ್ರಶಃ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ।

**ಕುಟಿಚಕ ಕುಟೀಚಕ** (ಪುಂ) ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಸಂನ್ಯಾಸಿಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. ಕುಟಿಚಾಂ ಚಕತೇ - ಚಕ(ತೃಪ್ತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಕುಟಿಚಕಃ ಬಹುದಕಃ ಹಂಸಃ ಮತ್ತು ಪರಮಹಂಸಃ ಎಂದು ಸಂನ್ಯಾಸಿಗಳು ನಾಲ್ಕು ಬಗೆ. ಕಾಷಾಯ ದಂಡಧಾರಿಯಾಗಿ ಪುತ್ರನಿರ್ಮಿತವಾದ ಕುಟೀರದಲ್ಲಿದ್ದುಕೊಂಡು ಮಗನ ಅಥವಾ ಬಂಧುಗಳ ಅನ್ನದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು ಕುಟೀಚಕನು. "ಚತುರ್ವಿಧಾ ಭಿಕ್ಷವಸ್ತೇ ಕುಟಿಚಕಬಹುದಕೌ। ಹಂಸಃ ಪರಮಹಂಸಶ್ಚ ಯೋತ್ರ ಪಶ್ಚಾತ್ ಸ ಉತ್ತಮಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ। [ಎವರಕ್ಕೆ "ಏಕದಂಡಿನ್" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕುಟಿಚರ ಕುಟೀಚರ** (ವಿಂ) 1. "ಕುಟಿಚಕ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಕುಟಿಚಾಂ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತಿಭಕ್ಷಣಯೋಃ) "ಠಃ" (೩-೨-೧೬)। 2. ನಳ್ಳಿ. "ವಹಿಃ ಕುಟಿಚರಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಕುಟೀರ ಕುಟೀರ** (ಪುಂ) ಗುಡಿಸಲು, ಸಣ್ಣ ಜೋಪಡಿ. ಹಸ್ವಾ ಕುಟೀ "ರಃ" (೪-೩-೮೮)।

**ಕುಟುಜಕ ಕುಟುಂಜಕ** (ಪುಂ) 1. ಲತಾಗೃಹ, ಬಳ್ಳಿಗಳಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮನೆ. 2. ಧಾನ್ಯಗಳನ್ನಿಡುವ ಬಿದಿರಿನ ತೊಂಬೆ, ಕಣಜ. 3. ಗುಡಿಸಲು, ಜೋಪಡಿ.

**ಕುಟುಂಬ-ಧಾರಣೆ** (ಚುರಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಕುಟುಂಬಯತೇ। ಅಚ್ಕುಟುಂಬತಃ।

**ಕುಟುಂಬ ಕುಟುಂಬ** (ಪುಂ) 1. ಸಂಸಾರ, ಮನೆಯ ಜನರು, ತಾಯಿ ತಂದೆ ಮಕ್ಕಳು ಮುಂತಾದವರು. ಕುಟುಂಬಯತೇ - ಕುಟುಂಬ (ಧಾರಣೆ) ಕರ್ಮಂ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೯)। "ತಸ್ಯ ಭೃತ್ಯಜನಂ ಜಾತ್ವಾ ಸ್ವಕುಟುಂಬಾನ್ಮಹೀಪತಿಃ। ಶ್ರುತಿಶೀಲೇ ಚ ವಿಜ್ಞಾಯ ವೃತ್ತಿಂ ಧರ್ಮ್ಯಾಂ ಪ್ರಕಲ್ಪಯೇತ್" ಮನುಂ ೧೧-೨೨। "ತದ್ವಿಪಹಿತಕುಟುಂಬಃ ಶಾಂತಿಮಾರ್ಗೋತ್ಸುಕೋಭೂತ್" ರಘುಂ ೭-೭೧। 2. ಬಂಧು, ನೆಂಟ. 3. ವಂಶ, ಸಂತತಿ. 4. ಹೆಸರು. 5. (ಜ್ಯೋತಿಷದಲ್ಲಿ) ಲಗ್ನದಿಂದ ಎರಡನೆಯ ಸ್ಥಾನ. ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕಃ" ಕುಟುಂಬಕಮ್ ಕುಟುಂಬಕಮ್। "ಅಯಂ ನಿಜಃ ಪರೋ ವೇತಿ ಗಣನಾ ಲಘುಚೇತಸಾಮ್। ಉದಾರಚರಿತಾನಾಂ ತು ವಸುಧೈವ ಕುಟುಂಬಕಮ್" ಹಿತಂ।

**ಕುಟುಂಬವ್ಯಾಪ್ತ ಕುಟುಂಬವ್ಯಾಪ್ತ** (ವಿಂ) ಸಂಸಾರ ಪೋಷಣೆಯಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದವನು. ಗೃಹಕೃತ್ಯಕ್ಕೆ ಗಮನ ಕೊಡುವವನು (ಯಜಮಾನ). ಕುಟುಂಬೇ ತತ್ಪೋಷಣೆ ವ್ಯಾಪ್ತಃ।

**ಕುಟುಂಬಿಕ ಕುಟುಂಬಿಕ** (ವಿಂ) ಗೃಹಸ್ಥ, ಮನೆಯ ಯಜಮಾನ. ಕುಟುಂಬೋಸ್ತಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೫)। "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫)। ಕುಟುಂಬಿನ್ ಕುಟುಂಬಿನ್. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫)। ಕುಟುಂಬಿನಿ ಕುಟುಂಬಿನಿ. 1. ಹೆಂಡತಿ, ಪತ್ನಿ. "ಪ್ರಾಯೇಣ ಗೃಹಿಣೀನೇತ್ರಾಃ ಕನ್ಯಾರ್ಥೇಷು



ಕುಡುಮ್ಬಿನ: "ಕುಮಾಂ ೬-೮೫। "ಭವತು, ಕುಡುಮ್ಬಿನಿಮಾಹುಯ  
ಪೃಚ್ಛಾಮಿ" ಮುಡಾಂ ೧। 2. ಕುಟುಂಬಗಳ ಸಮೂಹ.  
ಕುಡುಮ್ಬಾನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಇನಿ:" (ವಾಂ ೪-೨-೫೧)।

ಕುಡುಮ್ಬಿತಾ ಕುಟುಂಬಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಸಾರಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ,  
ಗೃಹಸ್ಥನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಕುಡುಮ್ಬಿನೋ ಭಾವ: "ತಲ್"  
(೫-೧-೧೧೧)। "ತ್ವ:"। ಕುಡುಮ್ಬಿತವಮ್ ಕುಟುಂಬಿತಮ್.

ಕುಡೇರಕ ಕುಟೇರಕ (ಪುಂ) ಕಮ್ಮಗ್ಗರಗಿಡ. "ಅಥ  
ಪಣಾಸೇ ಕಠಿಜ್ಜರಕುಡೇರಕೌ" ಅಮಂ।

ಕುಡ್-ಛೇದನಭರ್ತನಯೋ: (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)।  
ಕುಡ್ವಯತಿ, -ತೇ। ಅಚ್ಚುಕುಡ್ವತ್, -ತ। 1. ಕತ್ತರಿಸು. 2. ಅರೆ,  
ಪುಡಿಮಾಡು. 3. ನಿಂದಿಸು, ಅಕ್ಷೇಪಿಸು.

ಕುಡ್-ಪ್ರತಾಪವೇ (ಚುರಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಕುಡ್ವಯತೇ।  
ಅಚ್ಚುಕುಡ್ವತ್। 1. ಕುಟ್ಟು, ಜಜ್ಜು, ಅದುಮಿ ಹಿಂಡು.  
2. ಹೆಚ್ಚಿಸು, ಅಧಿಕಪಡಿಸು.

ಕುಡ್ವಕ ಕುಟ್ಟಕ (ವಿಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸುವವನು, ಒಡೆಯು  
ವವನು, ತುಂಡುಮಾಡುವವನು. ಕುಡ್ವ (ಛೇದನೇ) "ಪ್ವಲ್"  
(೩-೧-೧೩೩)। 2. ಅರೆಯುವವನು, ಪುಡಿಮಾಡುವವನು.  
3. ನಿಂದಿಸುವವನು, ಅಕ್ಷೇಪಿಸುವವನು. 4. ಹೆಚ್ಚಿಸು  
ವವನು, ಅಧಿಕಪಡಿಸುವವನು. 5. ಕುಟ್ಟುವವನು,  
ಜಜ್ಜುವವನು.

ಕುಡ್ವನ ಕುಟ್ಟಿನ (ನಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸುವಿಕೆ, ಒಡೆಯುವುದು,  
ತುಂಡುಮಾಡುವುದು. ಕುಡ್ವ (ಛೇದನಭರ್ತನಯೋ:) "ಲ್ಯುಡ್"  
(೩-೩-೧೧೫)। "ನುನುಡೇ ತನುಕಣ್ಡು ಪಣ್ಡಿತ: ಪಡುಚ್ಚು-  
ಪುಡಕೋಡಿಕುಡ್ವನೇ:" ನೆಪಂ ೨-೪। 2. ಅರೆಯುವುದು, ಪುಡಿ  
ಮಾಡುವುದು. "ಅಜಸಮುಮಿತಕುಡ್ವನೋತ್ಥಿತೇರಪಾಸ್ಯಮಾನಂ  
ಚರಣೇಷು ರೇಣುಭಿ:" ನೆಪಂ ೧-೫೧। 3. ಜಜ್ಜುವುದು, ಕುಟ್ಟು  
ವುದು. 4. ನಿಂದಿಸುವುದು.

ಕುಡ್ವನಿ ಕುಟ್ಟಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪರಪುರುಷನೊಡನೆ ಪರಸ್ತ್ರೀ  
ಯನ್ನು ಸೇರಿಸುವ ಹೆಂಗಸು, ತಲೆಹಿಡುಕಿ. ಕುಡ್ವಯತಿ-ಕುಡ್ವ  
(ಛೇದನೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೩)। "ಛೀಪ್" (೪-೧-೧೫)।

ಕುಡ್ವಮಿತ ಕುಟ್ಟಮಿತ (ನಂ) ಸ್ತ್ರೀಯರ ಸ್ವಭಾವಜನ್ಯವಾದ  
ವಿಲಾಸಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಮೋಡಾಯಿತಂ ಕುಡ್ವಮಿತಂ ವಿಭ್ರಮೋ  
ಲಲಿತಂ ಮದ:" ಸಾಂ ೬೦ ೩-೯೧। "ಕೇಶಸ್ತನಾಧರಾದಿನಾಂ  
ಗ್ರಹೇ ಹರ್ಷೇಽಪಿ ಸಂಭ್ರಮಾತ್। ಆಹು: ಕುಡ್ವಮಿತಂ ನಾಮ ಶಿರ:ಕರ-  
ವಿಭೂನನಮ್" ಸಾಂ ೬೦ ೩-೧೦೩।

ಕುಡ್ವಾಕ ಕುಟ್ಟಾಕ (ವಿಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸುವ, ಒಡೆಯುವ,  
ಬೇರ್ಪಡಿಸುವ. 2. ಕುಟ್ಟುವ, ಜಜ್ಜುವ. ಕುಡ್ವ (ಛೇದನೇ)  
"ಪಾಕನ್" (೩-೨-೧೫೫)। "ಪಡ್ವಾಭಿಷೇಕಮಭಿಲಾಷಯತಿ

ಕಾಲದೇಶೇ ಕುಡ್ವಾಕಭಾವಕುತುಕಂ ಕುರುತೇ ಸ್ಮ ಭೀಮ:" ಚಂ ಭಾಂ ೧।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೪೧)। -ಕೀ-ಕೀ.

ಕುಡ್ವಾರ ಕುಟ್ಟಾರ (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಕುಡ್ವ (ಛೇದನೇ)  
"ಆರನ್" ಬಾಹುಂ। (ನಂ) 2. ಸುರತ, ಸಂಭೋಗ.  
3. ಕಂಬಳ. 4. ಕೇವಲ, ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಇನ್ನೊಂದ  
ರೊಡನೆ ಬೆರೆಯದಿರುವಿಕೆ. "ಜಿಮುತಕುಡ್ವಾರಕುಡ್ವಾರಾ:  
ಕಂದರಾಕರ:" ಹಾರಾಂ। "ಕುಡ್ವಾರಂ ಕೇವಲೇ ರತೇ"  
ಮೇದಿಂ।

ಕುಡ್ವಿತ ಕುಟ್ಟಿತ (ನಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸುವುದು, ಒಡೆಯುವುದು.  
2. ಕುಟ್ಟುವುದು, ಜಜ್ಜುವುದು. 3. ಅರೆಯುವುದು,  
ಪುಡಿಮಾಡುವುದು. 4. ನಿಂದೆ, ಅಕ್ಷೇಪಣ. ಕುಡ್ವ (ಛೇದನೇ)  
ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 5. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಒಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಅರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಪುಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
7. ನಿಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಕ್ಷೇಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕುಡ್ವ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:"  
(೩-೨-೧೦೨)। 8. ಕುಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಜಜ್ಜಲ್ಪಟ್ಟ.

ಕುಡ್ವಿಮ ಕುಟ್ಟಿಮ (ಪುನಂ) 1. ಸಣ್ಣ ಚಪ್ಪಡಿಗಳನ್ನು ಹಾಸಿ  
ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಭೂಮಿ. 2. ರತ್ನ ಖಚಿತವಾದ ಭೂಮಿ.  
ಕುಡ್ವ (ಛೇದನೇ) ಭಾವೇ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೧೮)। ಕುಡ್ವನ ನಿವೃತ್ತಮ್  
"ಇಮಪ್" (ವಾಂ ೪-೨-೨೦)। 3. ಗಾರ ಹಾಕಿದ ನೆಲ,  
ಜಗುಲಿ. "ಕಾಂತೇನುಕಾಂತೋಪಲಕುಡ್ವಿಮೇಷು ಪ್ರತಿಕ್ಷಾಪಂ ಹರ್ಮ್ಯತಲೇಷು  
ಯತ್ರ" ಮಾಘಂ ೩-೪೪। "ಯದಗಾರಘಟಾಡ್ವಕುಡ್ವಿಮಸವದಿನ್ದುಪಲ-  
ತುಂದಿಲಾಪಯಾ" ನೆಪಂ ೨-೮೯।

ಕುಡ್ವೀರ ಕುಟ್ಟೀರ (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಕುಡ್ವ (ಛೇದನೇ)  
"ಹೀರನ್" ಬಾಹುಂ। "ಜಿಮುತಕುಡ್ವೀರಕುಡ್ವೀರಾ:  
ಕಂದರಾಕರ:" ಹಾರಾಂ। (ವಿಂ) 2. ಕತ್ತರಿಸುವ, ಒಡೆಯುವ, ತುಂಡು  
ಮಾಡುವ.

ಕುಡ್ವಮ(ಡ್ವ)ಲ ಕುಟ್ಟಿ(ಡ್ವ)ಲ(ಪುನಂ) 1. ಮೊಗ್ಗು. ಕುಡ್ವ  
(ಕೋಡಲಿ) "ಕಲ:" ಮುಡ್ವ (ಉಂ ಗಣಂ ೧-೧೦೬)। ಕುಡ್ವಿ  
(ದಾಹೇ) "ಕಮಜ್ಜನ್" (ಉಂ ೪-೧೮೬) ವಾ। "ಛೋತಿಸಾಂತ:-  
ಸಮೇ: ಕುಂದಕುಡ್ವಮಲಾಗದತ: ಸ್ಮಿತೇ:" ಮಾಘಂ ೨-೭। (ನಂ) 2.  
ಒಂದು ನರಕ. "ಸಂಘಾತಂ ಚ ಸಕಾಕೋಲಂ ಕುಡ್ವಮಲಂ ಪ್ರತಿಮುತಿ-  
ಕಮ್" ಮನುಂ ೪-೮೯। 3. ಮೊಗ್ಗಿನಂತಿರುವ ಬಾಣದ  
ತುದಿ. "ಕುಡ್ವಮಲಶ್ಚಾಭವದ್ವಿಷ್ಣುಸ್ತಸ್ಮಿನ್ನಿಪುರೇ ತದಾ"  
ಭಾಂ ಕರ್ಣಂ ೩೪-೧೯।

ಕುಠ-ಛೇದನೇ (ಸೌತ್ರ: ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) ಕೊಠಿತಿ। ಚುಕೊಠ।  
ಅಕೊಠಿತ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕುಠ ಕುಠ (ಪುಂ) ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಕುಠ (ಛೇದನೇ) ಕರ್ಮಂ ಖಜಯೆ  
"ಕ:" (ವಾಂ ೩-೩-೫೮)।



ಕುಠರ ಕುಠರ (ಪುಂ) ಮೊಸರು ಕಡೆಯುವ ಕಡು. ಮೊಸರು ಕಡೆಯುವ ಹಾಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಕಡು. ಕುಠ (ಛೇದನೆ) "ಕರನ್" ಬಾಹುಂ.

ಕುಠಾಕು ಕುಠಾಕು (ಪುಂ) ಮರಕುಟಿಸ ಹಕ್ಕಿ. ಕುಠ (ಛೇದನೆ) "ಕಾಕು:" ಬಾಹುಂ.

ಕುಠಾಡ್ಕು ಕುಠಾಟಂಕ (ಪುಂ) ಕುಠಾರ, ಕೊಡಲಿ. ಕುಠಾರ-ಫಃ: ಟಕ್. ಪೃಷೋಂ.

ಕುಠಾರ ಕುಠಾರ (ಪುಂ) 1. ಪರಶು, ಕೊಡಲಿ. ಕುಠ ವೃಷ್ಣಂ ಇಚ್ಛತಿ - ಇ (ಗತೌ) "ಇ" (೩-೨-೧). "ರಾಜನ್ಯೋಚ್ಚಾಸಕೂಟಕೃಷ್ಣನಪಟುರದ್ಧೋರಧಾರ: ಕುಠಾರ:" ಪ್ರಬಂಧಂ ೧-೨. 2. ಗುದ್ದಲಿ, ಮಣ್ಣನ್ನು ಅಗೆಯುವ ಒಂದು ಆಯುಧ. 3. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಕುಠಚತೆ ಛಿವತೆ - ಕುಠ ಕಮಂ "ಬಾರನ್".

ಕುಠಾರಕ ಕುಠಾರಕ (ಪುಂ) ಸಣ್ಣ ಕೊಡಲಿ, ಕೈ ಕೊಡಲಿ. ಕುಠಾರ ಅಲ್ಪಾಣಿ "ಕನ್".

ಕುಠಾರಿಕಾ ಕುಠಾರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣ್ಣ ಕೊಡಲಿ, ಕೈಕೊಡಲಿ. "ವಿಪುಲವಿಲಸಲ್ಲಜ್ಜಾವಲ್ಲಿವಿತಾನಕುಠಾರಿಕಾ ಜಠರಪಿಠರೀ ದುಷ್ಪರೇಯಂ ಕರೋತಿ ವಿಡಮ್ಬನಮ್" ಮೃತ್ ೩-೨೨.

ಕುಠಾರ ಕುಠಾರು (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಕುಠ (ಛೇದನೆ) "ಬಾರ:" ಬಾಹುಂ. 2. ವಾನರ. ಕಪಿ, ಕೋತಿ. "ಕುಠಾರ್ಣಾ ದ್ವೇ ಕೋಶೇ" ಮೇದಿಂ.

ಕುಠಿ-ಪ್ರತಿಘಾತೆ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಏಕಂ ಸಂ) ಕುಠತಿ. ಅಕುಠೀತ್ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕುಠಿ ಕುಠಿ (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. 2. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಕುಠಿ (ಪ್ರತಿಘಾತೆ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭).

ಕುಠಿಕ ಕುಠಿಕ (ಪುಂ) ಕುಪ್ಪರೋಗ. ಕುಠ (ಛೇದನೆ) "ಇನ್" ಬಾಹುಂ. "ಮೃತ್ಕಲಿ ಕುಠಿಕ: ಪ್ರೋಕ್ತ:" ಹಾರಾಂ.

ಕುಠೇರ ಕುಠೇರ (ಪುಂ) 1. ಕಮ್ಮಗ್ಗರ ಗಡ. 2. ಪಕ್ಕಿ, ಬೆಂಕಿ. ಕುಠಿ (ಪ್ರತಿಘಾತೆ) "ಏರ್ಕ್" (೩ಂ ೧-೫೮). (ವಿಂ) 3. ಕಪ್ಪಜೀವಿ. 4. ಎಲೆಗಳನ್ನು ಹಿಮ್ಮವವನು.

ಕುಠೇರ ಕುಠೇರು (ಪುಂ) ಚಾಮರದ ಗಾಳಿ. ಕುಠಿ (ಪ್ರತಿಘಾತೆ) "ಏರ್ಕ್" ಬಾಹುಂ.

ಕುಠ-ಬಾಲ್ಯೆ (ತುಡಾಂ ಪರಂ ಏಕಂ ಸಂ) ಕುಠತಿ. ಚುಕೊಡ. ಕುಡತು. ಅಕುಠೀತ್. ಹುಡುಗನಂತೆ ಆಡು, ಹುಡುಗಾಟ ಮಾಡು.

ಕುಡಿ-ದಾಹೆ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸಂ) ಕುಡತೆ. ಚುಕುಡೆ. ಅಕುಡಿಷ್ಠ. ದಹಿಸು, ಸುಡು.

ಕುಡಿ-ರಕ್ಷಣೆ (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸಂ) ಕುಡಯತಿ, -ತೆ. ಅಕುಕುಡತ್, -ತ. ರಕ್ಷಿಸು, ಕಾಪಾಡು.

ಕುಡಪ(ವ) ಕುಡಪ(ವ) (ಪುಂ) ಪ್ರಸ್ಥದ (ಅಚ್ಚೀರಿನ) ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗದ ಅಳತೆ. ಕುಡಿ (ದಾಹೆ) "ಕಪನ್" "ಕವಚ್" ವಾ ಬಾಹುಂ. "ದ್ರೋಣಸ್ತು ಸಾರ್ಯಾ: ಖಲು ಷೋಡಶಾಂಶ: ಸ್ಯಾದಾಡಕೋ ದ್ರೋಣಚತುರ್ಥಭಾಗ: ಪ್ರಸ್ಥಚತುರ್ಥಾಶಿ ಇಹಾಡಕಸ್ಯ ಪ್ರಸ್ಥಾಙ್ಗಿರಾಣಿ: ಕುಡವ: ಪ್ರದಿಷ್ಟ:".

ಕುಡಿ ಕುಡಿ (ಪುಂ) ದೇಹ, ಶರೀರ, ಮೈ. ಕುಡಯತೆ-ಕುಡಿ (ದಾಹೆ) "ಇನ್" ನಲೋಪಶ್ಚ (೩ಂ ೪-೧೪೩).

ಕುಡ್ಮಲ ಕುಡ್ಮಲ (ಪುಂ) "ಕುಡ್ಮಲ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ. ಕುಡ್ಮಲನ ಕುಡ್ಮಲನ (ನಂ) ಸಂಕೋಚಹೊಂದಿರುವಿಕೆ, ಮೊಗ್ಗು ಗಿರುವಿಕೆ. "ಜಗದತುರ್ನಿಹಿತೇ ಹೃದಿ ನೀರಜೇ ದವಬು-ಕುಡ್ಮಲನೇನ ಪೃಥುಸ್ತನಿಮ್" ನೈಷಂ ೪-೩೦.

ಕುಡ್ಮಲಿತ ಕುಡ್ಮಲಿತ (ವಿಂ) ಮೊಗ್ಗು ಬಿಟ್ಟಿರುವ. ಕುಡ್ಮಲೋಜ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತಚ್" (೫-೨-೩೬).

ಕುಡಚ ಕುಡಚ (ನಂ) ಗೋಡೆ. ಕುಡಚಾಂ ಸಾಧು "ಯತ್" (೪-೪-೯೮). ಪೃಷೋಂ. "ತದಲಕ್ಷ್ಯರತ್ನಮಯಕುಡಚಮಾದರಾದಭಿ-ಘಾತರೀತ ಇತ ಇತ್ಯಯೋ ನೃಪೇ" ಮಾಘಂ ೧೩-೬೨.

ಕುಡಚಚ್ಚೇವಕ ಕುಡಚ್ಚೇವಕ (ವಿಂ) ಗೋಡೆಯಲ್ಲಿ ಕನ್ನ ಕೊರೆಯುವ ಹಳ್ಳ. ಕುಡಚಂ ಛಿನತಿ-ಛಿದಿರ್ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩). "ಞಿನಿ:" (೩-೨-೭೮). -ಛೇವಿನ್-ಛೇವಿನ್.

ಕುಡಚಚ್ಚೇವನ ಕುಡಚ್ಚೇವನ (ವಿಂ) ಗೋಡೆಯಲ್ಲಿ ಕನ್ನ ಕೊರೆಯುವುದು. ಕುಡಚಸ್ಯ ಛೇದನಮ್.

ಕುಡಚಚ್ಚೇವ ಕುಡಚ್ಚೇವ (ನಂ) 1. ಕನ್ನಗತ್ತರಿ, ಕನ್ನ ಕೊರೆಯತಕ್ಕ ಕತ್ತರಿ. ಕುಡಚಂ ಛೇದಂ ಯಸ್ಯ. "ಕುಡಚಚ್ಚೇವಂ ತು ಖಾನಿಕಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 2. ಗೋಡೆಯ ಅಡಿಪಾಯಕ್ಕಾಗಿ ತೋಡುವ ಹಳ್ಳ. ಕುಡಚಸ್ಯ ಛೇವಮ್.

ಕುಡಚಮತ್ಸ್ಯ ಕುಡಚಮತ್ಸ್ಯ (ಪುಂ) ಹಲ್ಲಿ, ಗಾಳಿ. ಕುಡಚ ಮತ್ಸ್ಯ ಇವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಜಿಫ್" (೪-೧-೬೩). -ಮತ್ಸ್ಯಿ-ಮತ್ಸ್ಯಿ.

ಕುಣ-ಆಮನ್ತ್ರಣೆ (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಏಕಂ ಸಂ) ಕುಣಯತಿ, -ತೆ. ಅಕುಕುಣತ್, -ತ. 1. ಸಂಯೋಧಿಸು, ಕರೆ. 2. ಮಾತಾಡು. ಸಂಭಾಷಿಸು.

ಕುಣ-ಶಬ್ದೋಪಕರಣಯೋ: (ತುಡಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸಂ) ಕುಣತಿ. ಕೋಗಿತಾ. ಅಕೋಗಿತ್. 1. ಸದ್ದು ಮಾಡು. 2. ಸಾಹಾಯ್ಯ ಮಾಡು, ಒತ್ತಾಸೆ ಮಾಡು, ಉಪಕರಿಸು.



**कुण**

ಕುಣ ಕುಣ (ಪುಂ) 1. ವಾಯಸ, ಕಾಗೆ. "ಆತ್ಮವಿಷಯೋ  
ಮಹಾನೇಮಿ: ಕಣ್ವಕೋ ಮೌಕಲಿ: ಕುಣ:" ವೈಜಂ. 2. ಕೂರೆ,  
ಹೇನು, ಬಟ್ಟೆಯ ಮೇಲೆ ಬರುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕೃಮಿ.  
ಇದು ಉತ್ತರಪದವಾದಾಗ ವೃಕ್ಷವು ಪುಷ್ಟಿಸುವ ಮತ್ತು  
ಫಲಬಿಡುವ ಕಾಲವನ್ನು ಹೇಳುವುದು. ಪಿಲನಾಂ ಪಾಕ:  
"ಕುಣಪ್" (೪-೨-೨೪)। ಪಿಲಕುಣ:।

ಕುಣಕ ಕುಣಕ (ಪುಂ) ಆಗಲನೆ ಹುಟ್ಟಿದ ಮರಿ, ಸದ್ಯಃ  
ಜನಿಸಿದ ಶಿಶು. ಕುಣ್ಯತೆ ಉಪಕ್ರಿಯತೆ - ಕುಣ (ಶಬ್ದೋಪ-  
ಕರಣಯೋಃ) ಕರ್ಮಂ ಘಜರ್ಯೆ "ಕಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೪೮) ।  
"ಅಹೋ ಬತಾಯಂ ಹರಿಣಕುಣಕಃ ಕೃಪಣಃ ಇಶ್ವರರಥಚರಣಪರಿ-  
ಭ್ರಮಣರಯಣ" ಭಾಗಂ ೪-೮-೯ ।

ಕುಣಂಜ ಕುಣಂಜ (ಪುಂ) ಚಕ್ಕೋತದ ಸೊಪ್ಪು. ಕುಣಂ  
 ಜರಯತಿ - ಜ. (ವಯೋಹನೌ) "ಓ:" ಬಾಹುಂ. ಪೃಷೋಂ.

ಕುಣಪ ಕುಣಪ (ಪುಂ) 1. ಮೃತದೇಹ, ಜೀವವಿಲ್ಲದ ದೇಹ, ಶವ. ಕ್ವಣತಿ - ಕ್ವಣ (ಶಬ್ದ) "ಕಪನ್" ಸಂಪ್ರಸಾರಣಂ ಚ (ತಂ ೩-೧೪೩)। 2. ದುರ್ಗಂಧ, ಕೆಟ್ಟವಾಸನೆ. 3. ಕಟಿ, ಭರ್ಜಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 4. -ಕೀ -ಹೀ. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹಕ್ಕಿ. (ವಿದ್‌ಶಾರಿಕಾ)। "ಕುಣಪಿ ಪುನಃ। ವಿದ್‌ಶಾರಿಕಾಃ ಕುಣಪಃ ಪೂತಿಗಂಧಃ ಶವೇಷಃ ಚ" ಮೇದಿಂ।

ಕುಣಾಲ ಕುಣಾಲ (ಪುಂ) 1. ಅಶೋಕ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಒಬ್ಬ  
ಮಗ. 2, ಒಂದು ದೇಶ, ಕವಣ (ಶಬ್ದ) "ಕಾಲನ್"  
(ಉ ೩-೨೬) । ಕುಣಾಲೋ ದೇಶಭೇದ: ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ಕುಣಿ ಕುಣಿ (ಪುಂ) 1. ನಂದಿಮರ. (ವಿಂ) 2. ಎಕಲವಾದ  
ಕೈಯುಳ್ಳವನು, ಮೊಂಡುಕೈಯುಳ್ಳವನು. ಕುಪ್ಯತೇ - ಕುಣ  
(ಶಬ್ದೋಪಕರಣಯೋಃ) "ಇನ್" (ಉಂ ೪-೧೧೯)। "ಕುಣಿಸ್ತುನ್ನಕ-  
ವೃಕ್ಷೇ ನಾ ಕುಕರೇತ್ವಭಿಧೇಯವತ್" ಮೇದಿಂ। ಗರ್ಭಿಣಿಯಾಗಿರು  
ವಾಗ ಹೆಂಗಸರು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದುದನ್ನು ಕೊಡದಿದ್ದರೆ ಆ  
ಗರ್ಭದ ಬೆಳವಣಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಕೊರತೆಯುಂಟಾಗಿ ಹುಟ್ಟುವ  
ಶಿಶುವು ಕುಂಟು ಕುರುಡು ಕೆವುಡು ಕುಳ್ಳು ಮುಂತಾದ  
ದೋಷಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವುವು. "ದೌಹದವಿಮಾನನಾತ್ ಕುಂಜ-  
ಕುಣಿ ಖಂಜ್ಞಂ ಜಡಂ ವಾಮನಂ ವಿಕೃತಾಕ್ಷಮನಕಂ ವಾ ನಾರೀ ಸುತಂ  
ಜನಯತಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೩-೧೮।

ಕುಣಿತಾ ಕುಣಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೈಯಿಂದ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ  
ಮತ್ತು ಕೊಡುವ ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಮೊಂಡುಕೈಯಿಂದ  
ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. ಕುಣಿರ್ವಿ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। "ತ್ವ:"  
(೪-೧-೧೧೯)। -ತ್ವಮ್-ತ್ವಮ್.

ಕುಣಿನ್ದ ಕುಣಿನ್ದ (ಪುಂ) ಶಬ್ದ, ಸದ್ಬ. ಕುಣ (ಶಬ್ದೋಪ-  
ಕರಣಯೋಃ) ಭಾವೇ "ಕಿನ್ದಚ್" (ಠಂ ೪-೮೬) ।

ಕುಣಪದಿ ಕುಣಪದೀ (ಸ್ತೌಂ) ಕುಯು ಹೆಂಗಡು. ನಡೆ  
ಯಲು ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ ಹೆಂಗಡು. ಕುಣಿರಿವ ಕುಣಿತಶಕ್ತಿ:  
ಪಾದೋಜ್ಯಾ: — ಪಾದಸ್ಯ ಪದ್ಮಾವ: “ಜಿಘ್” ಚ (೪-೪-೧೩೯)।  
ನಿಪಾಂ ।

ಕುಣ್ಠ ಕುಂಠ (ವಿಂ) 1. ಶಕ್ತಿ ಕುಂದಿದ, ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಅಸಮರ್ಥ  
ನಾದ. ಕುಠಿ (ಪ್ರತಿಘಾತೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ವಜ್ರಂ  
ತಪೋವೀರ್ಯಮಹತ್ಸು ಕುಣ್ಠಂ ತ್ವಂ ಸರ್ವತೋಗಾಮಿ ಚ ಸಾಧಕಂ ಚ" ಕುಮಾಂ  
೩-೧೨ । 2. ಮೊಂಡಾಗಿರುವ, ಹರಿತವಾಗಿಲ್ಲದ.  
"ಮೂರ್ಧನಮೂರ್ಧ್ವಾಯತದಂತಮಂಡಲಂ ಧುವನ್ನರೋಧಿ ದ್ವಿರದೋ ನಿಷಾದಿನಾ"  
ಮಾಘಂ ೧೨-೧೨ । 3. ಮೂರ್ಖ, ದಡ್ಡು. "ಕುಣ್ಠೋಽಕ್ರಮಣ್ಯ-  
ಮುಖೈಃ" ಮೇದಿಂ ।

ಕ್ರಾಂತಕ ಕುಂಠಕ (ವಿಂ) 1. ಮೂರ್ಖ, ದಡ್ಡ, ಅವಿವೇಕಿ.  
2. ಸೋಮಾರಿ, ಪಾಲುಮಾರಿಕೆಯುಳ್ಳವನು, ಮೈಗಟ್ಟ.  
3. ಶಕ್ತಿಹೀನನಾದ, ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಅಸಮರ್ಥನಾದ. (ಛಂಭಂವಂ)  
4. ಮೂರ್ಖರಿಂದ ತುಂಬಿದ ದೇಶ.

ಕುಞ್ಠಿತ ಕುಂಠಿತ (ವಿಂ) 1. ಶಕ್ತಿ ಕುಂದಿದ, ಕೆಲಸಕ್ಕೆ  
ಅಸಮರ್ಥವಾದ. ಕುಠಿ (ಪ್ರತಿಷಾತೆ) ಕರ್ತಂ "ಕ್ತಃ"  
(೩-೪-೭೨)। "ತದಜ್ಞಮೋಗಾವಲಿಗಾಯಿನಾಂ ಮಧ್ಯೆ ನಿರುಕ್ತಿ-  
ಕ್ರಮಕುಞ್ಠಿತಾನಾಂ" ನೆಫಂ ೧೦-೧೦೬। 2. ದಡ್ಡನಾದ,  
ವಿವೇಕಶೂನ್ಯನಾದ. 3. ಮೊಂಡಾದ, ಹರಿತವಾಗಿಲ್ಲದ.  
"ವೃತ್ರಸ್ಯ ಹಂತುಃ ಕುಲಿಶಂ ಕುಞ್ಠಿತಾಶ್ರೀವದೃಶ್ಯತೆ" ಕುಮಾಂ ೨-೨೦।  
"ಬಿಭ್ರತೋಽತ್ರಮಚಲೇಽಪ್ಯಕುಞ್ಠಿತಮ್" ರಘುಂ ೧೧-೭೪।

ಕುಞ್ಠಿತತಾ ಕುಂಠಿತತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶಕ್ತಿಹೀನವಿಕೆ.  
ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಅಸಮರ್ಥವಾಗಿರುವಿಕೆ. 2. ದಡ್ಡನಾಗಿರುವಿಕೆ.  
ಕುಞ್ಠಿತಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। "ತ್ವಃ"  
ಕುಞ್ಠಿತತ್ವಮ್ ಕುಂಠಿತತ್ವಮ್.

ಕುಣ್ಡ ಕುಂಡ (ಪುಂ) 1. ಪತಿಯು ಜೀವಿಸಿರುವಾಗ ಪರ ಪುರುಷನಿಗೆ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಕುಣ್ಡಯತೇ ಕುಲಮನೇನ - ಕುಡಿ (ದಾಹೆ) "ಘಬ್" (೩-೩-೧೯)। "ಪರದಾರೆಷು ಜಾಯೇತೇ ದ್ವೌ ಸುತೌ ಕುಣ್ಡಗೋಲಕೌ। ಪತ್ಯೌ ಜೀವತಿ ಕುಣ್ಡಃ ಸ್ಯಾನ್ಮೃತೇ ಭರ್ತರೀ ಗೋಲಕಃ" ಮನುಂ ೩-೧೭೪। 2. ಅಗ್ನಿಕುಂಡ, ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಯನ್ನಿಟ್ಟು ರಕ್ಷಿಸುವ ಒಂದು ಗುಳಿ. "ಚಂಡೀಶಚಂಡಾಕ್ಷಿ- ಹೃತಾಶಕುಣ್ಡೇ ಜುಹಾವ ಯನ್ಮಂದಿರಮಿಂದ್ರಿಯಾಣಾಮ್" ನೃಪಂ ೮-೩೩। 3. ನೀರನ್ನು ತುಂಬಿರುವ ಪಾತ್ರೆ, ಕೊಡ, ಬಿಂದಿಗೆ, ಗಡಿಗೆ. "ಭುವಂ ಕೋಣ್ಣೇನ ಕುಣ್ಡೋಘ್ನಿ ಮೇಘೈನಾವಭೃಥಾದಪಿ" ರಘುಂ ೧-೮೪। 4. ದೇವತೆಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಜಲಾಶಯ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಣ್ಡಿ ಕುಂಡೀ. ಕಮಂಡಲು. ಕುಣ (ಶಬ್ದೋಪ- ಕರಣಯೋಃ) "ಡಃ" (೩೦ ೧-೧೧೧) "ಡೀಃ" (೪-೧-೪೨)।



“ಕುಂಡಂ ದೇವಜಲಾಧಾರೆ ಪಿಠರೇಷ್ಯ ಕಮಂಡಲೌ | ಕುಂಡಿ ಕುಂಡಃ  
ಸ್ಮೃತೌ ಜಾರಾತ್ ಪತಿವತ್ನಿ ಸುತೇಽಪಿ ಚ” ವಿಶ್ವಂ |

ಕುಂಡಕ ಕುಂಡಕ (ಪುಂ) 1. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

“ಕುಂಡಕಶಿವಶ್ರೇಣೀಶ್ಚ ಸುವರ್ಣಾಃ ಕನಕಧ್ವಜಃ” ಭಾಂ ಆದಿಂ  
೨೦-೧-೩ | 2. “ಕುಂಡ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ಕುಂಡ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕಃ” |

ಕುಂಡಕೋಟ ಕುಂಡಕೇಟಿ (ಪುಂ) 1. ಪತಿತಳಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ  
ಹೆಂಗಸಿನ ಮಗ. ಕುಂಡೇ ಯೋನಿಕುಂಡೇ ಕೋಟ ಇವ | 2. ದಾಸಿ  
ಯಲ್ಲಿ ಅನುರಾಗಹೊಂದಿದವನು, ಉಪಪತ್ತಿಯನ್ನು  
ಹೊಂದಿರುವವನು. 3. ಬಾರ್ವಾಹವಾದದಲ್ಲಿ ಅಭಿಷ್ಠಾ  
ನಾದವನು. “ಕುಂಡಕೋಟಸ್ತು ಚಾರ್ವಕವಚನಾಭಿಜ್ಞಪೂರ್ಣಃ”  
ಮೇದಿಂ |

ಕುಂಡಗೋಲಕ ಕುಂಡಗೋಲಕ (ಪುಂ ದ್ವಿವಂ) 1. ಕುಂಡ  
ಮತ್ತು ಗೋಲಕ. ಕುಂಡಕ ಗೋಲಕಶ್ಚ | “ಶ್ರುದ್ಧಿಶಿಷ್ಯೋ  
ಗುರುಶ್ಚೈವ ವಾಗ್ಧುಃ ಕುಂಡಗೋಲಕೌ” ಮನುಂ ೩-೧೫೬ |  
(ನಂ) 2. ಅಂಬಲಿ, ಗಂಜಿ. ಕುಂಡೇ ಗೋಲ ಗೋಲಾಕಾರಂ ಕಂ  
ಜಲಮತ್ರ |

ಕುಂಡಜ ಕುಂಡಜ (ಪುಂ) ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.  
“ಕುಂಡಜಶಿವಶ್ರೇಣೀಶ್ಚ ದುಃಶಲಾ ಚ ಶತಾಧಿಕಾ” ಭಾಂ ಆದಿಂ  
೬೭-೧೦೫ |

ಕುಂಡಪಾಯ ಕುಂಡಪಾಯ (ಪುಂ) ಮೃತ್ಪಾತ್ರದಲ್ಲಿ  
ಸೋಮಪಾನ ಮಾಡುವ ಒಂದು ಯಾಗ. ಕುಂಡೇನ ಪೀಯತೇ-  
ಸ್ಮಿನ್ ಸೋಮಃ “ಣ್ಯತ್” (೩-೧-೧೩೦) | ನಿಪಾಂ |  
“ಕುಂಡಪಾಯವತಾಂ ಕಚ್ಚಿದಗ್ನಿಚಿತ್ಯಾವತಾಂ ತಥಾ” ಭೃಗುಂ  
೬-೬೭ |

ಕುಂಡಭೇದಿನ್ ಕುಂಡಭೇದಿನ್ (ಪುಂ) ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ  
ಮಗ. “ಅನಾಥೃಷ್ಯಃ ಕುಂಡಭೇದಿ ವಿರಾಜಿ ದೀರ್ಘಲೋಚನಃ”  
ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೭ |

ಕುಂಡಲ ಕುಂಡಲ (ನಂ) 1. ಕರ್ಣಾಭರಣ, ಕಿವಿಯ ಒಡವೆ,  
ಹತ್ತಿಕಡಕು. ಕುಂಡಲತೇ - ಕುಂಡಿ (ರಕ್ಷಾಯಾಮ್) “ಕಲಃ”  
(೩ಂ ೧-೧೦೬) | “ಮಹಾರ್ಹವೈದ್ಯಕಿರೀಡಕುಂಡಲತ್ವಿಷಾ  
ಪರಿಪ್ಲವತಸಹಸ್ರಕುಂತಲಮ್ | ತದ್ವಾಮಕಾಂಕ್ಷಾಜ್ಞದಕಣ್ಣಾದಿಭಿ-  
ವಿರೋಚಮಾನಂ ವಸುದೇವ ಏಕತ” ಭಾಗಂ ೧೦-೩-೧೦ |  
2. ವಲಯ, ಬಳೆ, ಕಡಗ. “ಅನುಯಯಿ ವಿವಿಧೋಪಲ-  
ಕುಂಡಲದ್ಯುತಿವಿತಾನಕಸಂವಲಿತಾಂಶುಕಮ್” ಮಾಘಂ ೬-೨೭ |  
3. ಹಗ್ಗ, ರಜ್ಜು. 4. ಸುರುಳಿ. “ಕುಂಡಲಂ ವಲಯೇ ಪಾಶೇ  
ತಾಡಕೇ” ಮೇದಿಂ |

ಕುಂಡಲನ ಕುಂಡಲನ (ನಂ) ಸುರುಳಿಸುತ್ತುವಿಕೆ, ಗುಂಡಾಗಿ  
ಸುತ್ತುವಿಕೆ. ಕುಂಡಲಂ ಕರೋತಿ - ತತ್ಕರೋತಿಂ “ಣಿಕ್”

(ಗಂ ೭-೪-೧೭) | ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) |

“ಯುಕ್ತಂ ಹಿಯಾ ಕುಂಡಲನಂ ಚಲೇನ ಗೋಪಾಯತಿ ಸ್ವಂ ಮುಖಪುಷ್ಕರಂ  
ಸಃ” ನೈಷಂ ೭-೧೫ |

ಕುಂಡಲನಾ ಕುಂಡಲನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುರುಳಿ ಸುತ್ತುವುದು,  
ಗುಂಡಾಗಿ ಸೊನ್ನೆ ಸುತ್ತುವುದು. ಕುಂಡಲಂ ವೇಷ್ಠನಂ ಕರೋತಿ-  
ಕುಂಡಲಂ + ತತ್ಕರೋತಿ “ಣಿಕ್” “ಯುಕ್” (೩-೩-೧೦೭) |  
“ಕಣಿಭಾಪಿತಭಾಷ್ಯಫವಿಕಕಾವಿಷಮಾ ಕುಂಡಲನಾಮವಾಪಿತಾ”  
ನೈಷಂ ೨-೧೫ | “ತನೋತಿ ಭಾನೋಃ ಪರಿವೇಷಕೇತವಾತ್ತದಾ  
ವಿಧಿಃ ಕುಂಡಲನಾಂ ವಿಧೋರಪಿ” ನೈಷಂ ೧-೧೪ |

ಕುಂಡಲಿಕಾ ಕುಂಡಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಾಕೃತದ ಒಂದು  
ಭಂದಸ್ಸು.

ಕುಂಡಲಿತ ಕುಂಡಲಿತ (ವಿಂ) ಗುಂಡಾಗಿ ಸುತ್ತುಲ್ಪಟ್ಟು,  
ಸುರುಳಿಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಕುಂಡಲಂ + ತತ್ಕರೋತಿ “ಣಿಕ್”  
“ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) | “ಆವರ್ತಶೈಲೀಮಭಿನೇತು-  
ಮಿಚ್ಛಂತ್ಯಜ್ಞೇರಮಿ ಕುಂಡಲಿತಮುಜ್ಜಾಃ” ಯಾದಂ ೧೮-೧೬ |

ಕುಂಡಲಿನ್ ಕುಂಡಲಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಕುಂಡಲಂ  
ವೇಷ್ಠನಮಸ್ತಸ್ಯ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೫) | 2. ವರುಣ.  
3. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. (ವಿಂ) 4. ಕುಂಡಲವನ್ನು  
ಧರಿಸಿರುವ. ಕುಂಡಲಂ ಕರ್ಣಾಭರಣಂ ಅಸ್ತಸ್ಯ “ಇನಿಃ”  
(೪-೨-೧೧೫) | “ಕುಂಡಲಿ ವರುಣೇ ಕೇಕಿಭೋಗಿನೋಶ್ಚ  
ಸಕುಂಡಲೇ” ಮೇದಿಂ | 5. ಸೊನ್ನೆ ಸುತ್ತುರುವ, ಸುರುಳಿ  
ಸುತ್ತುರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೫) | -ಲಿನಿ  
-ಲೀ.

ಕುಂಡಲಿನಿ ಕುಂಡಲಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯೋಗಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ  
ಸರ್ಪವಾಗಿ ರೂಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ ಪ್ರಕೃತಿ ಶಕ್ತಿ. “ಅಷ್ಟಪ್ರಕೃತಿ-  
ರೂಪಾ ಕುಂಡಲಿನಿ” | ಇದು ಹೆಂಗಸರಿಗೆ ಆತಿಶಯವಾಗಿಯೂ,  
ಗಂಡಸರಿಗೂ ನಷ್ಟಂಸಕರಿಗೂ ಸಮವಾಗಿಯೂ ಇರುತ್ತದೆ.  
ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಮೂಲಾಧಾರಧಾಮದಲ್ಲಿ ಸುಷುಮ್ನಾ  
ರಂಧ್ರವನ್ನು ನಿರೋಧಿಸುತ್ತ ನಿದ್ರಿಸುತ್ತಿರುತ್ತದೆ.  
ಆಹಾರವು ಜೀರ್ಣವಾಗುವುದಕ್ಕೂ ಸೃಷ್ಟಿಕಾರ್ಯವು  
ಮುಂದುವರೆಯುವುದಕ್ಕೂ ಸಹಾಯಕವಾಗಿದೆ. ಆದರೆ  
ಇದು ಯೋಗಿಗಳಿಗೆ ಜಾಗರಿತವಾಗುತ್ತದೆ. ಬ್ರಹ್ಮಮಾರ್ಗ  
ದಲ್ಲಿ ಯಾತ್ರೆ ಆರಂಭವಾದಾಗ ಇದು ಎಚ್ಚರಗೊಂಡು ತಾನು  
ನಿರೋಧಿಸಿರುವ ರಂಧ್ರವನ್ನು ತೆರೆಯುತ್ತದೆ. ಮತ್ತು  
ಫಣಿಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಹಾವಿನಂತೆ ಉರ್ಧ್ವಮುಖ  
ವಾಗುತ್ತದೆ. ಇದು ಹೀಗೆ ಆರೋಹಣ ಮಾಡಿದಂತೆಲ್ಲಾ  
ಜ್ಞಾನಿಗಳಿಗೆ ಅಂತಃಪ್ರಪಂಚದ ಅನುಭವವು ಆಗುವುದು.  
ನಾರಾಯಣ ಶಿವ ಗಣೇಶ ಮುಂತಾದ ದೇವತಾಮೂರ್ತಿ



ಗಳಲ್ಲಿ ಕಾಣುವ ಸರ್ಪವು ಈ ಪ್ರಬುದ್ಧವಾದ ಕುಂಡಲಿನಿಯೇ ಆಗಿದೆ. ಸಮಾಧಿಯೊಳಗದಲ್ಲಿ ಜ್ಞಾನಿಗಳಿಗೆ ಬ್ರಹ್ಮಾನಂದಾ ಮೃತವನ್ನು ಪಾನಮಾಡಿಸಿ ಅವರು ಜಾಗೃತವಸ್ಥೆಗೆ ಹಿಂತಿರುಗಿದಾಗ ಪುನಃ ಮೂಲಾಧಾರಕ್ಕೆ ಬಂದು ಸೇರುತ್ತದೆ. "ಸಮ್ಮಾಖ್ಯ ಸ್ವಗೃಹಂ ಗತಾಂ ಪುನರಿಸಾಂ ಸಂಚಿಂತಯೇತ್ ಕುಂಡಲಿಮ್" | ಯೋಗಮಾರ್ಗಗಳಲ್ಲಿ ಕುಂಡಲಿನಿಯೋಗವೆಂಬ ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾದ ಪಥವೂ ಉಂಟು. ಅದರ ಕುಂಡಲಿನೀ ಪ್ರವೇಶ ಮತ್ತೂ ಪ್ರಸನ್ನತೆಯುಂಟಾಗದೆ ಯಾವ ಯೋಗದಿಂದಲೂ ಜ್ಞಾನವು ಸಿದ್ಧಿಸುವುದಿಲ್ಲ. ಲೋಕದಲ್ಲಿರುವ ಸರ್ಪಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಈ ಕುಂಡಲಿನೀ ಶಕ್ತಿಯ ಅಂಶವಿರುವುದು. ಅದುದರಿಂದಲೇ ಅದರ ಪ್ರಕೋಪವಾಗದಿರಲೆಂದು ಸರ್ಪಗಳನ್ನು ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಕೊಲ್ಲುವುದು ಪಾಪವೆಂದು ಪರಿಗಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. 2. ಚಕ್ಕುಲಿ ಮುಚ್ಚೋರೆ ಜಿಲ್ಲೆಬಿ ಮುಂತಾದುವು.

**ಕುಂಡಶಾಯಿನ್ ಕುಂಡತಾಯಿನ್** (ಪುಂ) ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಅಪರಾಜಿತ: ಕುಂಡಶಾಯಿ ವಿಶಾಲಾಕ್ಷೋ ದುರಾಧರ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೩೧-೧೦ |

**ಕುಂಡಾಶಿನ್ ಕುಂಡಾಶಿನ್** (ಪುಂ) ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಕುಂಡಾಶಿ ವಿರಜಾಶ್ವೇವ ದುಃಶಲಾ ಚ ಶತಾಧಿಕಾ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೩೧-೧೪ |

**ಕುಂಡಿಕಾ ಕುಂಡಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಮಂಡಲು. 2. ಮಡಕೆ, ಗಡಿಗೆ. ಕುಡಿ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |

**ಕುಂಡಿನ್ ಕುಂಡಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಅವ, ಈಶ್ವರ. "ದೃಢಿ ಛತ್ರೋ ಚ ಕುಂಡಿ ಚ ದ್ವಿಜಾನಾಂ ಧಾರಣಸ್ತಥಾ" ಭಾಂ ವನಂ | 2. ಯತಿ, ಸನ್ಯಾಸಿ. (ವಿಂ) 3. ಗಡಿಗೆಗಳಿಂದ ತುಂಬಿರುವ, ಬಿಂದಿಗೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕುಂಡ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛಿಪ್" (೪-೧-೫) | -ನಿ -೨೬ |

**ಕುಂಡಿನಿ ಕುಂಡಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರತ್ನಖಚಿತ ಪಾತ್ರೆ.

**ಕುಂಡಿನ ಕುಂಡಿನ** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಋಷಿ. ಈ ಋಷಿಯ ಮಗ ಗೋತ್ರಪ್ರವರ್ತಕನಾದ ಕುಂಡಿನೃಷಿ. (ನಂ) 2. ವಿದರ್ಭದೇಶದ ರಾಜಧಾನಿ, ಕುಂಡಿನನಗರ. "ವಿಲಾಸಿನ: ಕುಂಡಿನಮಂಡನಾಯಿತಮ್" ನೈಪಂ ೧೨-೧ |

**ಕುಂಡಿನನಗರ ಕುಂಡಿನನಗರ** (ನಂ) ಭೀಮರಾಜನ ರಾಜಧಾನಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಗರೀ ನಗರೀ. -ಪುರಮ್ -ಪುರಮ್. "ತಸ್ಯ ಕುಂಡಿನಪುರಂ ಪ್ರತಿಸರ್ಪನ್ ಭೂತೇವ್ಯವಸಿತಾನಿ ಶಶಾಸು:" ನೈಪಂ ೫-೬೩ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪುರೀ -ಪುರೀ.

**ಕುಂಡಿನೇಂದ್ರ ಕುಂಡಿನೇಂದ್ರ** (ಪುಂ) ವಿದರ್ಭದೇಶಾಧಿಪತಿ, ಕುಂಡಿನನಗರದ ಮೊರೆ, ಭೀಮರಾಜ. "ಕುಂಡಿನೇಂದ್ರಸುತಯಾ ಕಿಲ ಪೂರ್ವ ಮಾಂ ವರೀತುಮುರೀಕೃತಮಾಸ್ತೇ" ನೈಪಂ ೫-೧೧೪ |

**ಕುಂಡೀರ ಕುಂಡೀರ** (ಪುಂ) 1. ಮನುಷ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಬಲಶಾಲಿ. ಕುಡಿ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಫೀರ್ನ್" ಬಾಹುಂ |

**ಕುಂಡೋದ ಕುಂಡೋದ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಪರ್ವತ. "ಕುಂಡೋದ: ಪರ್ವತೋ ರಮ್ಯೋ ಬಹುಮೂಲಫಲೋದಕ: | ನೈಪಧಸ್ತುಪಿತೋ ಯತ್ರ ಜಲಂ ಶರ್ಮ ಚ ಲಬ್ಧವಾನ್" ಭಾಂ ವನಂ ೮೭-೨೫ |

**ಕುಂಡೋದರ ಕುಂಡೋದರ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಸರ್ಪ. ಕುಂಡ ಇವ ಉದರಮಸ್ಯ | "ಕರ್ಕರಾಕರ್ಕರೋ ನಾಗೋ ಕುಂಡೋದರಮಹೋದರೋ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೩೫-೧೬ | (ವಿಂ) 2. ಗಡಿಗೆಯಂತೆ ದಪ್ಪ ಹೊಟ್ಟೆಯುಳ್ಳವನು.

**ಕುತನಯ ಕುತನಯ** (ಪುಂ) ಅಸಭ್ಯನಾದ ಪುತ್ರ, ಕಟ್ಟಿ ಮಗ. ಕುತ್ಸಿತಸ್ತನಯ: | "ವಿಪ್ರೋಽನಧ್ಯಯನಾತ್ ಕುಲಂ ಕುತನಯಾತ್ ಶೀಲಂ ಖಲೋಪಾಸನಾತ್" ಭರ್ತೃಂ ೧-೩೩ |

**ಕುತನು ಕುತನು** (ಪುಂ) 1. ಕುಬೇರ. ಕುತ್ಸಿತಾ ತನುರಸ್ಯ | "ಕುತನುಕುಹೇಚ್ಛಾವಸವ: ಪಿಶಾಚಕೀ ಸತ್ಯಸಂಕ್ಷರಸ್ವಿಶಿರಾ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಕಟ್ಟಿ ಶರೀರ, ವಿಚಾರವಾದ ದೇಹ. ಕುತ್ಸಿತಾ ತನು: | (ವಿಂ) 3. ವಿಚಾರವಾದ ಮೃಯುಳ್ಳ. ಕುತ್ಸಿತಾ ತನುರಸ್ಯ |

**ಕುತನ್ವಿ ಕುತನ್ವಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಟ್ಟುಹೋಗಿರುವ ವೀಣೆ, ಸರಿಯಾದ ನಾದವಿಲ್ಲದ ವೀಣೆ. ಕುತ್ಸಿತಾ ತನ್ವಿ ಯಸ್ಯ | 2. ಚಕ್ಕು ದೊಣ್ಣೆ, ಸಣ್ಣ ಕೋಲು. "ಸ ದದರ್ಶ ಇವಮಾಸಸ್ಯ ಕುತನ್ವಿಂ ವಿತತಾಂ ಮುನಿ:" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ |

**ಕುತಪ ಕುತಪ** (ಪಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಕುಂ ಭೂಮಿ ತಪತಿ - ತಪ (ಸಂತಾಪೆ) "ಅಪ್" (೩-೧-೧೩೪) | (ಪುನಂ) 2. ದೌಹಿತ್ರ, ಮಗಳ ಮಗ. 3. ವಾದ್ಯ. 4. ಆಡಿನ ಕೂದಲಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ನೇಪಾಳದ ಶಾಲು. 5. ಕುಶ, ದರ್ಭೆ. 6. ಕುತಪಕಾಲ, ಹಗಲಿನ ಎಂಟನೆಯ ಭಾಗ (ಮುಹೂರ್ತ). "ದಿವಸಸ್ಯಾಷ್ಟಮೇ ಭಾಗೇ ಮಂದಿಭವತಿ ಭಾಸ್ಕರ: | ಸ ಕಾಲ: ಕುತಪೋ ಜೇಯ: ಪಿತೃಣಾಂ ದತ್ತಮಕ್ಷಯಮ್" ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ | "ಕುತಪೋಽಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ದೌಹಿತ್ರೇ ವಾಘ್ರೇ ಛಾಗಲಕಮ್ಬಲೇ | ಕುಶೋ ದಿನಸ್ಯಾಷ್ಟಮಾಂಶೋ ನಾ ಸೂರ್ಯೋ" ಮೇದಿಂ | "ಅಹ್ನೋ ಮುಹೂರ್ತಾ ವಿಖ್ಯಾತಾ ದಶ ಪञ್ಚ ಚ ಸರ್ವದಾ | ತತ್ರಾಷ್ಟಮೋ ಮುಹೂರ್ತೋ ಯ: ಸ ಕಾಲ: ಕುತಪ: ಸ್ಮೃತ:" | 7. ಧಾನ್ಯ. "ಧಾನ್ಯೇ ಕುಶೋಷ್ಟಮಾಂಶೋಽಹ್ನ: ಕುತಪಃ ಛಾಗಲಕಮ್ಬಲೇ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 8. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 9. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಕುತ್ಸಿತಂ ಪಾಪಂ ತಪತಿ | 10. ಅತಿಥಿ. 11. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. 12. ಭಾಗಿನೇಯ, ಸಹೋದರಿಯ ಮಗ, ಸೋದರಳಿಯ. "ಕುತಪಸ್ತು ಛಾಗಲಕಮ್ಬಲದರ್ಭಯೋ: | ವೈಶ್ವಾನರೇ ದಿನಕರೇ ದ್ವಿಜನ್ಮನ್ಯತಿಯೌ ಗವಿ | ಭಾಗಿನೇಯೋಷ್ಟಮಾಂಶೋಽಹ್ನೋ ವಾಘ್ರೇ" ಹೇಮಂ |



**ಕುತಸ್ ಕುತಸ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಎಲ್ಲಿಂದ?, ಯಾವ ಕಡೆಯಿಂದ? ಕಿಮ್ "ತಸಿಲ್" (೪-೩-೭). ಕಿಮ್: ಕುಭಾವ: (೭-೨-೧೦೪). "ಕಸ್ತ್ವಮ್? ಕುತ: ಸಮಾಗತೋಸಿ?" ಹಿತೋಂ. 2. ಯಾವ ನಿಂದ? ಯಾವುದರಿಂದ? 3. ಯಾವ ಕಾರಣದಿಂದ? "ಕುತಸ್ತ್ವಾ ಕಶಮಲಮಿದಂ ವಿಷಮೇ ಸಮುಪಸ್ಥಿತಮ್"? ಗೀತಾ ೨-೨೧.

**ಕುತಸ್ತ್ಯ ಕುತಸ್ತ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಎಲ್ಲಿಂದ ಬಂದಿರುವ? 2. ಯಾರಿಂದ ಉಂಟಾದ? ಕುತಸ್ "ತ್ಯಪ್" (೪-೨-೧೦೪).

**ಕುತುಕ ಕುತುಕ** (ನಂ) 1. ಕುತೂಹಲ, ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಬೇಕೆಂಬ ಆಸೆ. ಕುತುಂ ಕಾಯತಿ - ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕ:" (೩-೨-೩). "ನೃಪಮಾನಸಮಿಷ್ಠಮಾನಸ: ಸ ನಿಮಜ್ಜತುಕುತುಕಾಮೃತೋಮಿಷು" ನೈಷಂ ೨-೮. 2. ಉತ್ಸಾಹ. 3. ಆನಂದ.

**ಕುತುಕಿನ್ ಕುತುಕಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಕುತೂಹಲವುಳ್ಳ, ತಿಳಿದು ಕೊಳ್ಳಲು ಆಸೆಯುಳ್ಳ. ಕುತುಕಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫). "ಉದರಂ ಪರಿಮಾತಿ ಮುಷ್ಟಿನಾ ಕುತುಕೀ ಕೋಪಿ ದಮಸ್ವಸು: ಕಿಮು" ನೈಷಂ ೨-೩೫. 2. ಉತ್ಸಾಹವುಳ್ಳ. 3. ಆನಂದವುಳ್ಳ.

**ಕುತುಪ ಕುತುಪ** (ಪುಂ) 1. ತೊಗಲಿನಿಂದ ಮಾಡಿದ ಎಣ್ಣೆಯ ಅಥವಾ ತುಪ್ಪದ ಚೀಲ, -ಚಿಕ್ಕ ಪಾತ್ರೆ. ಅಲ್ಪಾ ಕುತು: "ಝಪ್" (೪-೩-೮೯). "ಕುತು: ಕೃತೇ: ಸ್ನೇಹಪಾತ್ರಂ ಸೇವಾಲ್ಪಾ ಕುತುಪ: ಪುಮಾನ್" ಅಮಂ. 2. ಹದಿನೈದು ಮುಹೂರ್ತಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹಗಲಿನ ಎಂಟನೆಯ ಮುಹೂರ್ತ. ಹದಿನೈದು ಭಾಗಗಳುಳ್ಳ ಹಗಲಿನ ಎಂಟನೆಯ ಭಾಗ.

**ಕುತು ಕುತೂ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚರ್ಮದಿಂದ ಮಾಡಿದ ಎಣ್ಣೆಯ ಅಥವಾ ತುಪ್ಪದ ಪಾತ್ರೆ. ಕುತಿಸಿತಂ ತನ್ಯತೇ - ತನು (ವಿಸ್ತಾರ) "ಕು:" ಬಾಹುಂ. "ಕುತು: ಕೃತೇ: ಸ್ನೇಹಪಾತ್ರಮ್" ಅಮಂ.

**ಕುತುಹಲ ಕುತೂಹಲ** (ನಂ) 1. ಆಸೆ, ಇಚ್ಛೆ, ಆಪೇಕ್ಷೆ. ಕುತುಮಿವ ಹಲತಿ ಹೃದಯಮ್ - ಹಲ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಕ:" (ವಾಂ ೩-೨-೫). "ಅತುಲಂ ವಿದಧೇ ಕುತುಹಲಂ ಭುಜೇತಸ್ಯ ಭಜನ್ ಮಹೀಭುಜ:" ನೈಷಂ ೨-೭. 2. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಸ್ವಭಾವಜನ್ಯವಾದ ವಿಲಾಸಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ವಿಹೃತಂ ತಪನಂ ಮೌಘ್ಯಂ ವಿಕೋಪಶ್ಚ ಕುತುಹಲಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೩-೯೨. "ರಮ್ಯವಸ್ತು-ಸಮಾಲೋಕೇ ಲೋಲತಾ ಸ್ಯಾತ್ಕುತುಹಲಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೦೯. 3. ಉತ್ಸಾಹ. (ವಿಂ) 4. ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. 5. ಅದ್ಭುತವಾದ, ಅಶ್ಚರ್ಯಕರವಾದ.

**ಕುತುಹಲಿತ ಕುತೂಹಲಿತ** (ವಿಂ) 1. ಕುತೂಹಲ ಹೊಂದಿರುವ, ಆಸೆಯುಂಟಾಗಿರುವ. ಕುತುಹಲಮಸ್ಯ ಸಂಜಾತಮ್ "ಐತತ್" (೪-೨-೩೬). 2. ಉತ್ಸಾಹ ಹೊಂದಿದ.

**ಕುತುಹಲಿನ್ ಕುತೂಹಲಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಆಸೆಯುಳ್ಳ, ಆಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. ಕುತುಹಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ - "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫). "ದದರ್ಶ ಸಾನುಜೋ ರಾಮ: ಶುಶ್ರಾವ ಚ ಕುತುಹಲಿ" ರಘುಂ ೧೫-೬೫. 2. ಉತ್ಸಾಹವುಳ್ಳ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫). -ಹಲಿನಿ -ಹಲಿನೀ. "ಕರೇಣ ವಾತಾಯನಲಮ್ಬಿತೇನ ಸ್ಪೃಷ್ಟಸ್ತ್ವಯಾ ಚಣ್ಡಿ ಕುತುಹಲಿನ್ಯಾ" ರಘುಂ ೧೩-೨೧.

**ಕುತ್ರ ಕುತ್ರ** (ಅವ್ಯಂ) ಎಲ್ಲಿ? ಯಾವ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ? ಯಾವುದರಲ್ಲಿ? ಯಾರಲ್ಲಿ? ಕಿಮ್ "ತ್ರಲ್" (೪-೩-೧೦). ಕುಭಾವ: (೭-೨-೧೦೪). "ಹಾ ಸೀತಾ ಕೇನ ನೇತಾ ಮಮ ಹೃದಯಗತಾ ಕೇನ ವಾ ಕುತ್ರ ದೃಷ್ಟಾ" ಹನುಂ ನಾಂ. ಈ ಪದಕ್ಕೆ ಅಪಿ ಚನ ಚಿತ್ ಗಳು ಸೇರಿದಾಗ ಅನಿರ್ದಿಷ್ಟಾರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುದು. **ಕುತ್ರಾಪಿ ಕುತ್ರಚನ ಕುತ್ರಚಿತ್** - "ಕುತ್ರಚಿತ್ಕನಕನಿರ್ಮಿತಾಖಿಲ: ಕ್ವಾಪಿ ಯೋ ವಿಮಲರತ್ನಜ: ಕಿಲ" ನೈಷಂ ೧೮-೧೧.

**ಕುತ್ರತ್ಯ ಕುತ್ರತ್ಯ** (ವಿಂ) ಎಲ್ಲಿರುವ? ಎಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ? ಕುತ್ರ "ತ್ಯಪ್" (೪-೨-೧೦೪).

**ಕುತ್ಸ - ಅವಕ್ಷೇಪಣೆ** (ಚುರಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ). ಕುತ್ಸಯತೇ. ಕುತ್ಸಯಾಂ ಚಕ್ರೆ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಅಚುಕ್ತುಸ್ತತ. ನಿಂದಿಸು, ಅವಹೇಳನ ಮಾಡು.

**ಕುತ್ಸ ಕುತ್ಸ** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ, ಋಷಿ. ಕುತ್ಸಯತೇ ಸಂಸಾರಮ್ - ಕುತ್ಸ (ಅವಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ಕುತ್ಸ ಋಷಿಯ ಮಕ್ಕಳು, ಕುತ್ಸ ಋಷಿಯ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವರು. ಕುತ್ಸಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಾನಿ ಪುಮಾಂಸ: "ಅನ್" (೪-೧-೧೧೪). ಲುಕ್ (೨-೪-೬೫). (ವಿಂ) 3. ನಿಂದಿತವಾದ, ಅಂದವಿಲ್ಲದ, ಚೆನ್ನಾಗಿಲ್ಲದ. "ಸ್ವಚ್ಛಸ್ವಶೈಲೇಕ್ಷಿತ-ಕುತ್ಸಬೇರಸ್ತಾಂ ಪ್ರತ್ಯಗಾಗ್ರಸ್ಥಿತಮಾಂ ಕುಬೇರ:" ನೈಷಂ ೧೦-೧೩.

**ಕುತ್ಸಕುಶಿಕಿಕಾ ಕುತ್ಸಕುಶಿಕಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುತ್ಸವಂಶದವರಿಗೂ ಕುಶಿಕವಂಶದವರಿಗೂ ನಡೆಯುವ ಮದುವೆ. ಕುತ್ಸಾನಾಂ ಕುಶಿಕಾನಾಂ ಚ ಮೈಥುನಮ್ "ವುನ್" (೪-೩-೧೨೫).

**ಕುತ್ಸನ ಕುತ್ಸನ** (ನಂ) 1. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. ಕುತ್ಸ (ಅವಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫). "ನಾಸ್ತಿಕಯಂ ವೇದನಿಂದಾಂ ಚ ದೇವತಾನಾಂ ಚ ಕುತ್ಸನಮ್. ದ್ವೇಷಂ ದಂಭಂ ಚ ಮಾನಂ ಚ ಕ್ರೋಧಂ ತೇಷ್ಯಂ ಚ ವರ್ಜಯೇತ್" ಮನುಂ ೪-೧೬೩. 2. ಅಕ್ಷೇಪಣೆ, ಖಂಡನೆ. 3. ನಿಂದೆಗೆ ಅವಕಾಶ ಕೊಡುವ ಒಂದು ಧರ್ಮ. ನಿಂದಾಸಾಧನವಾದ ಒಂದು ಧರ್ಮ. ಕುತ್ಸಯತೇನೆನ - ಕುತ್ಸ ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭). "ಕುತ್ಸಿತಾನಿ ಕುತ್ಸನೇ:" ಪಾಂ ಸುಂ ೨-೧-೫೩. "ವೈಯಾಕರಣಸೂಚಿ:" ಇಲ್ಲಿ ಪ್ರಶ್ನೆಯನ್ನು ಮರೆಸುವ ಸೂಚಿತವ ರೂಪವಾದ ಧರ್ಮವು ವೈಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ ನಿಂದೆಗೆ ಕಾರಣವಾಗಿರುವುದು.



ಕುರಸಾ ಕುಡ್ಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಂದೆ, ದೂಷಣೆ. ಕುರಸಾ (ಅವಕ್ಷೇಪಣೆ) ಭಾವೆ "ಅ:" (3-3-103). 2. ಅಕ್ಷೇಪಣೆ.

ಕುರಿಸಿತ ಕುಡ್ಲಿತ (ನಂ) 1. ನಂದೆ, ದೂಷಣೆ, ಬೈಗಳು. ಕುರಿಸ (ಅವಕ್ಷೇಪಣೆ) ಭಾವೆ "ಕ:" (3-3-114). (ವಿಂ) 2. ನಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕುರಿಸ ವರ್ತಮಾನ ಕರ್ಮಂ "ಕ:" (3-2-166).

ಕುರಿಸ್ಯ ಕುಡ್ಲ್ಯ (ವಿಂ) ನಂದಿಸುವುದು, ದೂಷಣೆಗೆ ಅರ್ಪಿಸುವುದು, ಕಳೆದುಹೋದ. ಕುರಿಸ (ಅವಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಯತ್" (3-1-124). "ಕುರಿಸ್ಯಾ: ಸ್ಯು: ಕುರಿಸಿಕರ್ತನ ಮಣಯೋರರ್ಥತ: ಪಾತಿತಾ:" ಭರ್ತಂ 1-11.

ಕುರಿಸ್ಯಮಾನ ಕುಡ್ಲ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ನಂದಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವುದು, ದೂಷಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವುದು. ಕುರಿಸ (ಅವಕ್ಷೇಪಣೆ) + ಯಕ್ "ಶಾನಕ್" (3-2-124).

ಕುಠ ಕುಠ (ಪುಂ) 1. ದರ್ಭೆಹುಲ್ಲು. ಕುಠ್ಯತಿ - ಕುಠ (ಪ್ರತಿಭಾವೆ) "ಕ:" (3-1-134). "ಶಾದ್ರೇಷು ಯದಾ ಶಿಷ್ಯೇ ವನಾಂತೇ ವನಗೋಚರಾಃ | ಕುಠಾಸ್ತರಣತಲ್ಪೇಷು ಕಿಂ ಸ್ಯಾತ್ ಸುಖತರಂತತ:" ರಾಮಾಂ | (ಪುಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಬಣ್ಣದ ಕಂಬಳಿ, ಅನೆಯ ಬೆನ್ನಿನಮೇಲೆ ಹೊದಿಸುವ ಚಿತ್ರಗಂಬಳಿ. "ಚಕಾಸತಂ ಚಾಕುಮುಕುಚಮಣಾ ಕುಠೇನ ನಾಗೇಂದ್ರಮಿವೇಂದ್ರವಾಹನಮ್" ಮಾಘಂ 1-6.

ಕುಠೋದರೀ ಕುಠೋದರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಂಭಕರ್ಣನ ಮಗನಾದ ನಿಕುಂಭನ ಮಗಳು, ಕೇಲಕಂಜನಂಬ ರಾಕ್ಷಸನು ಇವಳ ಗಂಡ. ನಿಕುಂಜನಂಬುವನು ಇವಳ ಮಗ. ಹಿಮಾಲಯದಲ್ಲಿ ತಲೆಯಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ನಿಷಧಪರ್ವತಕ್ಕೆ ಕಾಲನ್ನು ನೀಡಿ ಮಲಗಿದ್ದ ಇವಳ ನಟ್ಟುಸಿರಿನ ಗಾಳಿಯಿಂದ ನೂರಾರು ಮೃಗಿಗಳ ದೂರದಲ್ಲಿದ್ದ ಸಕಲ ಜರಾಚರವಸ್ತುಗಳೂ ಪ್ರಾಣಿಗಳೂ ಸೆಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟು ಇವಳ ಹೊಟ್ಟೆಯೊಳಗೆ ಹೋಗಿ ಸೇರಿದ್ದವು. ಮುನಿಗಳು ತಮ್ಮ ಈ ಕಷ್ಟವನ್ನು ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಅವತಾರವಾದ ಕಲ್ಕಿಮಹಾಪುರುಷನಲ್ಲಿ ನಿವೇದಿಸಲಾಗಿ ಕಲ್ಕಿಯು ಖಡ್ಗದಿಂದ ನಿರ್ಭಿನ್ನವಾದ ಈ ರಾಕ್ಷಸಿಯ ದೇಹದೊಳಗಿಂದ ಅನೇಕ ಗಜರಥಪುರುಷರು ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಂದುವು. "ಶೃಣು ವಿಷ್ಣುಯಶಃಪುತ್ರ ಕುಂಭಕರ್ಣಾತ್ಮಜಾತ್ಮಜಾ | ಕುಠೋದರೀತಿ ವಿಸ್ತಾತಾ ಗಗನಾರ್ಧಸಮುತ್ಥಿತಾ | ಕೋಲಕಿಂಜಸ್ಯ ಸಹಿಷಿ ನಿಕುಂಜಜನನಿ ಚ ಸಾ | ಹಿಮಾಲಯೇ ಶಿರಃಕೃತ್ವಾ ಪಾದೌ ಚ ನಿಷಠಾಚಲೇ | ಶೇತೇ ಸ್ತನೌ ಪಾಯಯಂತಿ ನಿಕುಂಜಂ ಪ್ರಸ್ತುತಸ್ತನಿ | ತಸ್ಯಾ ನಿಃಶ್ವಾಸವಾತೇನ ವಿವಶಾ ವಯಮಾಗತಾಃ | ..... |

ಕಲ್ಕಿ: ಕಮಲಪತ್ರಾಕ್ಷ: ಸುರಾರಾತಿನಿಷ್ಠದನ: | ಬಾಣಾಗ್ನಿವೇಲ-

ಚರ್ಮಯಾಂ ಕಾಂಬಲೈರ್ನಿದಾರುಭಿಃ | ಪ್ರಜ್ವಾಲಯೋದರಮಧ್ಯೇನ ಕರ-ವಾಲಂ ಸಮಾದದೇ | ತೇನ ಖಡ್ಗೇನ ಮಹತಾ ಕುಕ್ಷಿ ನಿಭಿಷ್ಠ ಬಂಧುಭಿಃ | ಬಹಿರ್ಬಭೂವ ಸರ್ವೇಶ: ಕಲ್ಕಿ: ಕಲ್ಕವಿನಾಶನ: | ಯೋನಿರನ್ಧ್ರಾದ್-ಗಜರಥಾಸ್ತುರಗಾಶ್ಚಾಭವನ್ ಬಹಿಃ | ನಾಸಿಕಾಕರ್ಣವಿವರಾತ್ ಕೇಽಪಿ ತಸ್ಯಾ ವಿನಿರ್ಗತಾಃ | ತೇ ನಿರ್ಗತಾಸ್ತತಸ್ತಸ್ಯಾ: ಸೈನಿಕಾ ಷಧಿರೋಷಿತಾಃ | ತಾಂ ವಿವ್ಯಧುನಿ:ಕ್ಷಿಪಂತಿಂ ತರಸಾ ಚರಣಿ ಕರೌ | ಮಮಾರಸಾ ಭಿನ್ನದೇಹಾ ಭಿನ್ನಕುಕ್ಷಿಶಿರೋಧರಾ" ಕಲ್ಕಿಪುಂ.

ಕುರಿಸಿತ ಕುಡ್ಲಿತ (ನಂ) 1. ವೇದವಿರುದ್ಧವಾದ ದರ್ಶನ, ಅವೈದಿಕ ಮತ. ಕುರಿಸಿತ ದರ್ಶನಮ್ | 2. ಕೆಟ್ಟ ದೃಷ್ಟಿ, ಕೆಟ್ಟ ನೋಟ.

ಕುರಿಸಿತ ಕುಡ್ಲಿತ (ನಂ) 1. ಒಂದು ಸಾವನ ದಿನ, ಸೂರ್ಯನ ಉದಯದಿಂದ ಮರುದಿನದ ಉದಯದವರೆಗಿನ ಕಾಲ. ಕೊ: ಪೃಥಿವ್ಯಾ: ಭ್ರಮಣೇನ ದಿನಮ್ | "ಉದಯಾದುದಯಂ ಭಾನೋ: ಸಾವನಂ ತತ್ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಮ್ | ಸಾವನಾನಿ ಸ್ಯುರೇತೇನ ಯಜ್ಞಕಾಲ-ವಿಧಿಸ್ತುತಂ:" ಸೂಂ ಸಿಂ 14-16. 2. ಜ್ಯೋತಿಷದಲ್ಲಿ ನಿಷಿದ್ಧವಾದ ದಿವಸ, ತಿಥಿವಾರಾದಿ ಶುದ್ಧಿಯಿಲ್ಲದ ದಿವಸ.

ಕುರಿಸಿತ ಕುಡ್ಲಿತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೇದವಿರುದ್ಧವಾದ ಚಾರ್ವಾಕಾದಿ ದರ್ಶನ, ಅವೈದಿಕ ಮತ. "ಯಾ ವೇದಬಾಹ್ಯಾ: ಸ್ಮೃತಯ: ಯಾಶ್ಚ ಕಾಶ್ಚ ಕುರಿಸಿತಯ: | ಸರ್ವಾಸ್ತಾ ನಿಷ್ಫಲಾ: ಪ್ರೇತೃ ತಮೋ-ನಿಷ್ಠಾ ಹಿತಾ: ಸ್ಮೃತಾ:" ಮನುಂ 12-95. "ಯಾನಿ ಚಾಸತ್ತಕಂ-ಮೂಲಾನಿ ವೇದವಿರುದ್ಧಾನಿ ಚಾರ್ವಾಕದರ್ಶನಾನಿ ಸರ್ವಾಣಿ ಪರಲೋಕೇ ನಿಷ್ಫಲಾನಿ" ಇತಿ ಕುಲ್ಲೂಕಮಢ: | 2. ಕೆಟ್ಟ ದೃಷ್ಟಿ, ಅಸಭ್ಯವಾದ ನೋಟ. 3. ನೋಡಲು ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ ಕಣ್ಣು. ಕುರಿಸಿತಾ ದೃಷ್ಟಿ: | (ವಿಂ) 4. ಕೆಟ್ಟ ದೃಷ್ಟಿಯುಳ್ಳ, ಅಸಭ್ಯವಾದ ನೋಟವುಳ್ಳ. 5. ಶಕ್ತಿಹೀನದ ಕಣ್ಣುಳ್ಳ. ಕುರಿಸಿತಾ ದೃಷ್ಟಿಯಸ್ಯ |

ಕುರಿಸಿತ ಕುಡ್ಲಿತ (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ದೇಶ, ವಾಸಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ ದೇಶ, ಜೀವನಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ ವಸ್ತುಗಳಿಲ್ಲದ ದೇಶ. 2. ಅನೇಕ ಉಪದ್ರವಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇಶ. ಕುರಿಸಿತೋ ದೇಶ: |

ಕುರಿಸಿತ ಕುಡ್ಲಿತ (ಪುಂ) 1. ಕುಬೇರ. ಕುರಿಸಿತೋ ದೇಹೋಽಸ್ಯ | 2. ಅನಾರೋಗ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇಹ. 3. ವಿಹಾರವಾದ ಶರೀರ. ಕುರಿಸಿತೋ ದೇಹ: | (ವಿಂ) 4. ವಿಹಾರವಾದ ಶರೀರವುಳ್ಳ. 5. ಅನಾರೋಗ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮೈಯುಳ್ಳ. ಕುರಿಸಿತೋ ದೇಹೋ ಯಸ್ಯ |

ಕುಡಾಲ ಕುಡ್ಲಾಲ (ಪುಂ) 1. ಕೋವಿದಾರವೃಕ್ಷ, ಕೆಂಗಾಂ ಬಾಳೆದ ಗಿಡ. ಕುಡಾಲಯತಿ - ದಲ (ವಿಶರಣೆ) + ಣಿಕ್ "ಅನ್" (3-2-1) | ಶಕಂ | 2. ನೆಲವನ್ನು ಅಗೆಯುವ



ಗುದ್ದಲಿ, ಏಕಾಶಿ. "ಸಮಾಸಾಘ ಬಿಲಂ ತನ್ವಾಪ್ಯಖನನ್ ಸಗರಾತ್ಮಜಾಃ। ಕುಹಾಲೇಹೈಕೈಶ್ಚೈವ ಸಮದ್ರಂ ಯತ್ನಮಾಸ್ಥಿತಾಃ" ಭಾಂ ವನಂ ೧೦೭। ಕುಹಾಲ ಪೂರ್ವಪದವುಳ್ಳ ಬಹುವ್ರೀಹಿ ಯಲ್ಲಿ ಪಾದಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಅಂತ್ಯಲೋಪ ಬರುವುದಿಲ್ಲ. (೪-೪-೧೩೮)। ಕುಹಾಲಪಾದಃ। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ"। ಕುಹಾಲಕಃ ಕುದ್ದಾಲಕಃ.

**ಕುರ್ರಜ್ಜ ಕುದ್ರಂಗ** (ಪುಂ) ಮಹಾದ್ವಾರದ ದಿಣ್ಣೆಯ ಮೇಲೆ ನಿರ್ಮಿಸಿರುವ ಕಾವಲುಗಾರನ ಮನೆ. ಕುತ್ಸಿತೋ ರಜ್ಞಃ। ಪೃಷ್ಠಂ।

**ಕುರ್ರವ ಕುದ್ರವ** (ಪುಂ) ಹಾರಕವೆಂಬ ಒಂದು ಧಾನ್ಯ. ಕುಂ ಭೂಮಿ ದ್ರವತಿ ದ್ರಾವಯತಿ—ದ್ರು (ಗತೌ) ಅಂತರ್ಮಾವಿತನ್ಯಥಃ: "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।

**ಕುಧಾನ್ಯ ಕುಧಾನ್ಯ** (ನಂ) ಹಾರಕ, ಶಾಮೆ, ನವಣೆ ಮುಂತಾದ ಧಾನ್ಯ. ಕುತ್ಸಿತಂ ಧಾನ್ಯಮ್। "ಕೋರ್ದೂಷಕ-ಶ್ಯಾಮಾಕನಿವಾರಶಾಂತನುರವಕೋಹಾಲಕಪ್ರಿಯಙ್ಗುಮಧೂಲಿಕಾನಂದಿ-ಮುಖೀಕುರುವಿಂದಗವೇಧುಕಸರಬಹಕತೋದಪರ್ಣಿಮುಕುಂದಕವೇಣುಯವಪ್ರಭು-ತಯಃ ಕುಧಾನ್ಯವಿಶೇಷಾಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬-೨೧।

**ಕುಧಿ ಕುಧೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಬುದ್ಧಿ. ಕುತ್ಸಿತಾ ಧಿಃ। (ವಿಂ) 2. ಕೆಟ್ಟ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ, ಅವಿವೇಕಿ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ ಯಿಲ್ಲದವನು. ಕುತ್ಸಿತಾ ಧೀರಸ್ಯ। "ಯೇ ಮೂಢಾಃ ಪ್ರವಿಹಾಯ ಯಾಂತಿ ಕುಧಿಯೋ ಮಿಥ್ಯಾಫಲಾನ್ವೇಷಿಣಃ" ಭರ್ತಂ ೨-೭೯।

**ಕುಧ ಕುಧ್ಯ** (ಪುಂ) ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಕುಂ ಭೂಮಿ ಧರತಿ—ಧೃಕ್ (ಧಾರಣೆ) "ಕಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೪)।

**ಕುನಖ ಕುನಖ** (ಪುಂ) 1. ನಖಗಳು ಕೆಟ್ಟುಹೋಗುವ ಒಂದು ರೋಗ, ಉಗುರಿಗೆ ಏಟು ಬಿದ್ದು ಕೆಟ್ಟುಹೋಗಿ ಅವನ್ನು ಒರಟಾಗಿಯೂ ಕಪ್ಪುಗೂ ಮಾಡುವ ಒಂದು ರೋಗ. "ಅಭಿಘಾತಾತ್ ಪ್ರದುಷ್ಟೋ ಯೋ ನಖೋ ರೂಕ್ಷೋಽಸಿತಃ ಕ್ಷರಃ। ಭವೇತ್ ಕುನಖಂ ವಿಧಾತ್ ಕುಲೀನಮಿತಿ ಸಂಜಿತಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ। (ನಂ) 2. ರೋಗಗ್ರಸ್ತವಾದ ಉಗುರು.

**ಕುನಖಿನ್ ಕುನಖಿನ್** (ವಿಂ) ಕುನಖವೆಂಬ ರೋಗ ವುಳ್ಳವನು. ಕುನಖೋಽಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪)। ಇಂತಹ ರೋಗಗಳು ಜನ್ಮಾಂತರದ ಪಾಪದ ಫಲ. "ಅಯ ನರಕಾನುಭೂತದುಃಖಾನಾಂ ತಿರ್ಯಕ್ತ್ವಮುತ್ಪತ್ತಿರ್ಗಾಣಾಂ ಮಾನುಷ್ಯೇ ಲಕ್ಷಣಾನಿ ಭವಂತಿ ಕುಠ್ಯತಿಪಾತಕೀ ಬ್ರಹ್ಮಹಾ ಯಕ್ಷ್ಮೀ ಸುರಾಪಃ ಶ್ಯಾವದಂತಕಃ ಸುವರ್ಣಹಾರೀ ಕುನಖೀ ಗುರುತ್ವಗೋ ದುಃಕರ್ಮಿ"। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಃ" (೪-೧-೪೪)। ಇಂತಹ ರೋಗಗಳು ಗರ್ಭಿಣಿಯಾಗಿರುವಾಗ ತಾಯಿಯ ದೋಷದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುವು. "ದಿವಾ ಸ್ವಪನ್ತ್ಯಾಃ ಸ್ವಾಪಶೀಲೋಽಜ್ಞನಾದನ್ಯೋ ರೋದನಾದ್ವಿಕೃತದೃಷ್ಟಿಃ

ಸ್ನಾನಾನುಲೇಪನಾತ್ ದುಃಖಶೀಲಃ ತೈಲಾಮೃಜ್ಞಾತ್ ಕುಠಿ ನಖಾವ-ಕರ್ತನಾತ್ ಕುನಖೀತ್ಯಾದಿ" ಸುಶ್ರುತಂ।

**ಕುನಟ ಕುನಟ** (ಪುಂ) 1. ಹೆಮ್ಮರ, ತಿಗಡು ಮರ. 2. ಅಯೋಗ್ಯನಾದ ನಟ, ಅನರ್ಹನಾದ ಅಭಿನಯಕಾರ. ಕುನ್ಸಿತೋ ನಟಃ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಟೀ-ನಟೀ.

**ಕುನಾಥ ಕುನಾಥ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಯಜಮಾನ, ಅಯೋಗ್ಯ ನಾದ ಯಜಮಾನ. ಕುತ್ಸಿತೋ ನಾಥಃ। 2. ರಾಜ, ದೊರೆ, ಭೂಪತಿ. ಕೋ ಭೂಮಿಃ ನಾಥಃ। (ವಿಂ) 3. ಕೆಟ್ಟ ಯಜಮಾನನುಳ್ಳ. 4. ಕೆಟ್ಟ ದೊರೆಯುಳ್ಳ. ಕುತ್ಸಿತೋ ನಾಥೋ ಯಸ್ಯ। ಕುನಾಥಕಃ ಕುಪತಿಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕುನಾಮನ್ ಕುನಾಮನ್** (ವಿಂ) ಕೆಟ್ಟ ಹೆಸರುಳ್ಳವನು, ಬಹಳ ಕೃಪಣ, ಜಿಪುಣ. ಕುತ್ಸಿತಂ ನಾಮ ಯಸ್ಯ।

**ಕುನಾಶಕ ಕುನಾಶಕ** (ಪುಂ) ತೀಟಕ ಸಂಧಿ. ಕುಂ ನಾಶಯತಿ—ಗಣ (ಅದರ್ಶನೆ) + ಣಿಕ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ಕುನಿಷಜ್ಜ ಕುನಿಷಜ್ಜ** (ಪುಂ) ಹತ್ತನೆಯ ಮನುವಿನ ಮಗ, ಬ್ರಹ್ಮಸಾವರ್ಣಿಯ ಮಗ.

**ಕುನೀತಿ ಕುನೀತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ನೀತಿ, ಕೆಟ್ಟ ನಡವಳಿಕೆ. ಕುತ್ಸಿತಾ ನೀತಿಃ। (ವಿಂ) 2. ಕೆಟ್ಟ ನಡವಳಿಕೆಯುಳ್ಳ, ಕೆಟ್ಟ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ. ಕುತ್ಸಿತಾ ನೀತೀರಸ್ಯ।

**ಕುನೃಪ ಕುನೃಪ** (ಪುಂ) ಕೆಟ್ಟ ದೊರೆ, ಅಯೋಗ್ಯನಾದ ರಾಜ. ಕುತ್ಸಿತೋ ನೃಪಃ। -ನೃಪತಿಃ-ನೃಪತಿಃ.

**ಕುನೃಪ ಕುನೃಪ** (ಪುಂ) ಕೆಟ್ಟ ಗಂಡ, ಕೆಟ್ಟ ಯಜಮಾನ. ಕುತ್ಸಿತಃ ಪತಿಃ।

**ಕುಂತ ಕುಂತ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾಸಾಯುಧ, ಕೊಂತವೆಂಬ ಒಂದು ಆಯುಧ. ಕುಂ ಭೂಮಿಮುನತಿ—ಉಂಡಿ (ಕಲೆದನೆ) "ತಃ" ಬಾಹುಂ। ಶಕಂ। "ಕುಂತೇನೋಚ್ಚೈಃ ಸಾದಿನಾ ಹಂತು-ಮಿಷ್ಟಾನ್ನಾಜಾನೇಯೋ ದಂತಿನಸ್ತ್ರಸ್ಯತಿ ಸಮ್" ಮಾಘಂ ೧೮-೨೩। 2. ಕಾಡುಗೋಧಿ. 3. ಕುದ್ರಜಂತು. 4. ಕೋಪ, ಉಗ್ರತೆ. "ಕುಂತಃ ಪ್ರಾಸೇ ಚಂಡಭಾವೇ ಕ್ಷುಧ್ರಜಂತೌ ಗವೇಧುಕೇ" ಮೇದಿಂ।

**ಕುಂತಲ ಕುಂತಲ** (ಪುಂ) 1. ಕೇಶ, ಕೂದಲು. ಕುಂತಂ ಕ್ಷುಧ್ರಜಂತುಂ ಲಾತಿ—ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)। "ಕಾಪಿ ಕುಂತಲಸಂವ್ಯಾನಸಂಯಮವ್ಯಪದೇಶತಃ। ಬಾಹುಮೂಲಂ ಕುರ್ವಿ ನಾಭಿಪಕ್ಷಜಂ ದರ್ಶಯೇತ್ ಸ್ಫುಟಮ್" ಸಾಂ ದಂ। 2. ಚಪ್ಪಕ, ಕುಡಿಯುವ ಪಾತ್ರೆ. 3. ಮುಡಿವಾಳ. 4. ಯವಧಾನ್ಯ (Barley). 5. (ಸಂಗೀತದಲ್ಲಿ) ಒಂದು ಧ್ರುವಕ. (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 6. ಕುಂತಲದೇಶ. "ಸ್ನಾತಾ ತಿಷ್ಠತಿ ಕುಂತಲೇ-ಶ್ವರಸುತಾ ವಾರೋಽಜ್ಞರಾಜಸ್ವಸುಃ ದ್ವೃತೇ ರಾತ್ರೀರಿಯಂ ಜಿತಾ ಕಮಲಯಾ



ದೇವಿ ಪ್ರಸಾದಾಢ ಚ" ಸಾಂ ದಂ ೩। 7. ನೇಗಿಲು.

"ಕುನ್ತಲಃ ಸ್ವಾಢವೇ ದೇಶೇ ಕೇಶಲಾಙ್ಗಲಯೋರಪಿ" ವಿಶ್ವಂ।

"ಕುನ್ತಲಶ್ಚಪಕೇ ವಾಲೇ ಯೇ ಪುಂಭೂಮಿ ನೌವೃತಿ" ಮೇದಿಂ।

**ಕುನ್ತಿ ಕುಂತಿ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಒಂದು ದೇಶ. "ಕುನ್ತಯೋ-  
ವನ್ತಯಶ್ಚೈವ ತಥೈವಾಪರಕುನ್ತಯಃ" ಭಾಂ ಭಿಷ್ಠಂ। 2. ಕುಂತಿ  
ದೇಶದ ರಾಜರು. "ಸುಸ್ಥಲಾಶ್ಚ ಮುಕುಟಾಶ್ಚ ಕುಲಿನ್ದಾಃ  
ಕುನ್ತಿಮಿಃ ಸಹ। ಸಾಲ್ವಾಯನಾಶ್ಚ ರಾಜಾನಃ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ।  
(ಪುಂ) 3. ವಿದರ್ಭದೇಶದ ಕ್ರಥನೆಯ ಒಬ್ಬ ರಾಜನ  
ಮಗ. "ಕಸ್ಯಸ್ಯ ಕುನ್ತಿಃ ಪುತ್ರೋಭೂತ್ ಛಚಿತ್ತಸ್ತಸ್ಯಾಥ ನಿವೃತ್ತಿಃ"  
ಭಾಗಂ ೯-೩-೨।

**ಕುನ್ತಿಭೋಜ ಕುಂತಿಭೋಜ** (ಪುಂ) ಪಾಂಡುರಾಜನ ಪತ್ನಿ  
ಯಾದ ಕುಂತಿಯ ಸಾಕುತಂದೆ. [ಕುಂತಿಭೋಜನಿಗೆ ಹೆಣ್ಣು  
ಮಕ್ಕಳಿಲ್ಲದೆ ಮಿತ್ರನಾದ ಶೂರರಾಜನನ್ನು ಬೇಡಲಾಗಿ  
ಶೂರನು ತನ್ನ ಮಗಳಾದ ಪೃಥೆಯನ್ನು ಸಾಕುಮಗಳಾಗಿ  
ಕೊಟ್ಟನು. ಇದರಿಂದ ಪೃಥೆಗೆ ಕುಂತಿಯೆಂದು ಹೆಸರಾ  
ಯಿತು.] "ಶೂರೋ ನಾಮ ಯದುಶ್ರೇಣೋ ವಸುದೇವಪಿತಾಽಭವತ್।  
ತಸ್ಯ ಕನ್ಯಾ ಪೃಥಾ ನಾಮ ರೂಪೇಣಾಸದೃಶೀ ಭುವಿ। ಪಿತುಃ ಸ್ವಸ್ತ್ರೀಯ-  
ಪುತ್ರಾಯ ಸೌಜನಪತ್ಯಾಯ ವೀರ್ಯವಾನ್। ಅಗ್ರಚಮಗ್ರೇ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾಯ ಸ್ವಸ್ಯಾ-  
ಪತ್ಯಸ್ಯ ವೈ ತದಾ। ಅಗ್ರಜಾತೇತಿ ತಾಂ ಕನ್ಯಾಂ ಶೂರೋಽಜುಗ್ರಹ-  
ಕಾಙ್ಕ್ಷಯಾ। ಅದದತ್ ಕುನ್ತಿಭೋಜಾಯ ಸ ತಾಂ ದುಹಿತರಂ ತದಾ"  
ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೮।

**ಕುನ್ತಿಸುತಾ ಕುಂತಿಸುತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಂತಿಭೋಜರಾಜನ  
ಮಗಳು, ವಸುದೇವನ ತಂಗಿ. ಪೃಥಾದೇವಿ, ಪಾಂಡವರ  
ತಾಯಿ.

**ಕುನ್ತೀ ಕುಂತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶೂರರಾಜನ ಮಗಳು, ಕುಂತಿ  
ಭೋಜನ ಸಾಕುಮಗಳು, ವಸುದೇವನ ತಂಗಿ, ಪಾಂಡು  
ರಾಜನ ಪತ್ನಿ, ಪೃಥಾದೇವಿ. "ಶೂರಃ ಪೂಜ್ಯಾಯ ವೃದ್ಧಾಯ ಕುನ್ತಿ-  
ಭೋಜಾಯ ತಾಂ ದದೌ। ತಸ್ಮಾತ್ ಕುನ್ತೀತಿ ವಿಖ್ಯಾತಾ ಕುನ್ತಿ-  
ಭೋಜಾತ್ಮಜಾ ಪೃಥಾ" ಹರಿವಂ।

**ಕುನ್ತೀತನಯ ಕುಂತೀತನಯ, -ಪುತ್ರ-ಪುತ್ರ, -ಸುತ-ಸುತ**  
(ಪುಂ) ಕುಂತಿಯ ಮಕ್ಕಳು—(1) ಧರ್ಮರಾಜ, (2) ಭೀಮ  
ಸೇನ, (3) ಅರ್ಜುನ ಮತ್ತು (4) ಕರ್ಣ. ಕುನ್ತಿಯಾಃ  
ತನಯಃ ಪುತ್ರಃ ಸುತೌ ವಾ। [ಕುಂತಿಯು ಕನ್ಯಾವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ  
ತಂದೆಯ ಮನೆಯಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಅತಿಥಿಗಳ ಶುಶ್ರೂಷೆಗಾಗಿ  
ನಿಯುಕ್ತಳಾಗಿದ್ದಳು. ಒಂದು ಸಲ ದುರ್ವಾಸಮುನಿಯನ್ನು  
ಪೂಜಿಸಿ ಅದರಿಂದ ಸಂತೋಷಗೊಂಡ ಆ ಮುನಿಯಿಂದ  
ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪಡೆಯುವ ಕೆಲವು ಮಂತ್ರಗಳ ಉಪದೇಶ  
ಹೊಂದಿ ಕನ್ಯೆಯಾಗಿದ್ದಾಗಲೇ ಸೂರ್ಯನ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ

ಕರ್ಣನನ್ನೂ, ಮದುವೆಯಾದ ನಂತರ ಪಾಂಡುವಿಗೆ ಶಾಪ  
ಬಂದುದರಿಂದ ಧರ್ಮ, ವಾಯು ಮತ್ತು ಇಂದ್ರ ದೇವತೆ  
ಗಳ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ಧರ್ಮರಾಜ, ಭೀಮಸೇನ ಮತ್ತು  
ಅರ್ಜುನನನ್ನೂ ಪಡೆದಳು.]

**ಕುನ್ಯ ಕುಂಠು** (ಪುಂ) ಕುಂಠುಸಾಗರಸ್ವಾಮಿಗಳು, ಆರನೆಯ  
ಜೈನಚಕ್ರವರ್ತಿಗಳು. [ಜೈನ ಚಕ್ರವರ್ತಿಗಳಾದ ಈ ಕುಂಠು  
ಸ್ವಾಮಿಗಳು ಬೆಳಗಾವಿ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಐನಾಪುರವೆಂಬ ಗ್ರಾಮ  
ದಲ್ಲಿ ತಮ್ಮ ಸದ್ಗುಣಗಳಿಂದ ಪ್ರಸಿದ್ಧರಾಗಿದ್ದ ಶ್ರೀ ಸರಸ್ವತೀ  
ದೇವಿ-ಸಾತಪ್ಪನವರ ಸುಪುತ್ರರು. ಇವರಿಗೆ ಬಾಲ್ಯ  
ದಿಂದಲೂ ಗುರು-ದೈವ ಭಕ್ತಿ ಬೆಳೆಯುತ್ತ ಬಂದು ಪರಮ  
ವೈರಾಗ್ಯವು ಹುಟ್ಟಿದುದರಿಂದ ಸಂಸಾರದಲ್ಲಿ ಜುಗುಪ್ಸೆ  
ಯುಂಟಾಗಿದ್ದರೂ ತಾಯಿ ತಂದೆಗಳ ನಿರ್ಬಂಧದಿಂದ  
ಸಂಸಾರಬಂಧನಕ್ಕೊಳಗಾಗಿ ಕೊನೆಗೂ ಶಾಂತಿಸಾಗರ  
ಮುನಿಗಳಿಂದ ಜೈನದೀಕ್ಷೆಯನ್ನು ಪಡೆದರು. ಬಳಿಕ ಇವರು  
ತಮ್ಮ ಉಪದೇಶದಿಂದ ಧರ್ಮಜ್ಯೋತಿಯನ್ನು ಬೆಳಗುತ್ತ  
ಜನರ ಅಜ್ಞಾನವನ್ನು ದೂರಮಾಡಿ ಧರ್ಮಜಾಗೃತಿ  
ಯನ್ನುಂಟುಮಾಡಿದರು. ಇವರ ಪ್ರಭಾವದಿಂದ ಅನೇಕ  
ಧಾರ್ಮಿಕಸಂಸ್ಥೆಗಳೂ, ಪುಸ್ತಕಭಂಡಾರಗಳೂ, ವಿದ್ಯಾ  
ಲಯಗಳೂ ಸ್ಥಾಪಿತವಾದುವು. ಇವರು ತಮ್ಮ ಪಾಂಡಿತ್ಯ  
ದಿಂದ ಬೋಧಾಮೃತಸಾರ, ನಿಜಾತ್ಮಶುದ್ಧಿಭಾವನಾ,  
ಮೋಕ್ಷಮಾರ್ಗಪ್ರದೀಪ ಮುಂತಾದ ನಲವತ್ತು ಗ್ರಂಥ  
ಗಳನ್ನೂ ರಚಿಸಿರುತ್ತಾರೆ.]

**ಕುನ್ದ ಕುಂದ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಕುಮಿತಿ ಮಾನ್ತಮವ್ಯಯಮ್।  
ಕುಮ್ ಪರಮಭಿತ್ತಿಪರಜ್ಞಾನಾದಿಭುವಂ ದದಾತಿ - ಡು ದಾಕ್ (ದಾನೇ)  
"ಕಃ" (೩-೨-೩)। "ಭಕ್ತೇಭ್ಯಃ ಪರಮಭಿತ್ತಾದಿಪ್ರದಾನಾತ್  
ಕುನ್ದ ಉಚ್ಯತೇ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ। "ಕುಮುಢಃ ಕುನ್ದರಃ ಕುನ್ದಃ"  
ವಿಂ ಸಂ। 2. ಕುಬೇರನ ನವ (ಒಂಬತ್ತು) ನಿಧಿ  
ಗಳಲ್ಲೊಂದು. 3. ಚರಕ ಯಂತ್ರ, ಕಡೆತ ಹಿಡಿಯುವ  
ಯಂತ್ರ, ನಿಡು ಸುರುಳಿಯ ಬೈರಿಗೆ. (ಪುಂ) 4. ಮೊಲ್ಲೆ  
ಗಿಡ, ಕೋಲುಮಲ್ಲಿಗೆ. ಕು (ಶಬ್ದ) "ದನ್" ನುಮಾಗಮಶ್ಚ  
(೩ಂ ೪-೯೮)। "ಕುನ್ದೋ ಮಾಘ್ಯೇಸ್ತ್ರೀ ಮುಕುನ್ದಭ್ರಮಿ-  
ನಿಧ್ಯಂತರೇಷು ನಾ" ಮೇದಿಂ। 5. ಗುಗ್ಗುಳ, ಲೋಬಾನ,  
ಧೂಪಕ್ಕೆ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ಗೋಂದು. (ನಂ)  
6. ಮೊಲ್ಲೆ ಹೂವು, "ಪ್ರಾತಃ ಕುನ್ದಪ್ರಸವಶಿಥಿಲಂ ಜೀವಿತಂ  
ಛಾರಯೇಥಾ" ಮೇಘಂ ೨-೪೦। 7. ಕಮಲ. 8. ಪರಶತ್ರು  
ಜ್ಞಾನ.

**ಕುನ್ದಕ ಕುಂದಕ** (ಪುಂ) "ಕುನ್ದ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಕಃ"।



ಕುಂದಚತುರ್ಥಿ ಕುಂದಚತುರ್ಥಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾಘಮಾಸದ  
ಶುಕ್ಲ ಚತುರ್ಥಿ.

ಕುಂದಮ ಕುಂದಮ (ಪುಂ) ಬಿಡಾಲ, ಬೆಕ್ಕು, ಮಾರ್ಜಾರ.

ಕುಂದನ ಮೀಯತೆ — ಮಾಙ್ (ಮಾನೆ) "ಙ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)।

"ವಿಡಾಲ: ಕುಂದಮೋ ನಕ್ತಚಾರಿ ದೀಪ್ತಾಕ್ಷಜಾಹಕೌ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। -ಮೀ-ಮೀ.

ಕುಂದರ ಕುಂದರ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಕುಂದಂ ಪರತತ್ವಜ್ಞಾನಂ ರಾತಿ

ದದಾತಿ — ರಾ (ದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। ಕುಂ ಪಾಪಂ

ದಾರಯತಿ ವಾ। "ಕುಮುದ: ಕುಂದರ: ಕುಂದ:" ವಿಂ ಸಂ।

ಕುಂದಾಲ ಕುಂದಾಲ (ನಂ) ಗುಡ್ಡಲಿ, ಅಗೆಯುವ ಅಯುಧ.

ವೆಂಜಂ।

ಕುಂದಿನಿ ಕುಂದಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಮಲಗಳ ಸಮೂಹ.

ಕುಂದಾನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಇನಿ:" (ವಾಂ ೪-೨-೫೧)। 2. ಕಮಲ

ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪ್ರದೇಶ. ಕುಂದಾನ್ಯತ್ರ ಸಂತಿ "ಇನಿ:"

(೫-೨-೧೩೫)।

ಕುಂದಿಲ ಕುಂದಿಲ (ನಂ) ಅರಣ್ಯ, ಕಾಡು. ವೆಂಜಂ।

ಕುಂದು ಕುಂದು (ಪುಂ) ಮೂಷಿಕ, ಇಲಿ. ಕುಂ ಭೂಮಿ ದೃಢಾತಿ—

ದ (ವಿದಾರಣೆ) "ಙು:" ಬಾಹುಂ।

ಕುಪ — ಕ್ರೋಧೆ (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ)। ಕುಪ್ಯತಿ ಕುಪ್ಯತ:

ಕುಪ್ಯಂತಿ। ಚುಕೋಪ ಚುಕುಪತು:। ಕೋಪಿತಾ। ಕೋಪಿಷ್ಯತಿ।

ಕುಪ್ಯತು। ಅಕುಪ್ಯತ್। ಕುಪ್ಯೇತ್। ಕುಪ್ಯಾತ್। ಅಕುಪತ್।

ಅಕೋಪಿಷ್ಯತ್। ಕೋಪಗೊಳ್ಳು, ಸಿಟ್ಟುಮಾಡಿಕೊ.

ಭಾವೆ: ಕುಪ್ಯತೆ। ಚುಕುಪೆ। ಕೋಪಿತಾ। ಕೋಪಿಷ್ಯತೆ।

ಕುಪ್ಯತಾಮ್। ಅಕುಪ್ಯತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗಿಚಿ: ಕೋಪಯತಿ, -ತೆ। ಕೋಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ,

-ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಕೋಪಯಿತಾ। ಕೋಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೆ। ಕೋಪಯತು,

-ತಾಮ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕರ್ಮಣಿ: ಕೋಪ್ಯತೆ। ಕೋಪಯಾಂ ಚಕ್ರೆ, -ಬಭೂವೆ, -ಆಸೆ।

ಕೋಪಯಿತಾ, ಕೋಪಿತಾ। ಕೋಪಯಿಷ್ಯತೆ, ಕೋಪಿಷ್ಯತೆ। ಕೋಪ್ಯ-

ತಾಮ್। ಅಕೋಪ್ಯತ। ಕೋಪ್ಯತೆ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ: ಚುಕುಪಿಷತಿ, ಚುಕೋಪಿಷತಿ। ಚುಕುಪಿಷಾಂ ಚಕಾರ,

ಚುಕೋಪಿಷಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಚುಕುಪಿಷಿತಾ, ಚುಕೋ-

ಪಿಷಿತಾ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು: ಕೋಪಿತವ್ಯಮ್। ಕೋಪನೀಯಮ್। ಕೋಪ್ಯಮ್। ಕುಪಿತ:

ಕುಪಿತವಾನ್, -ವತಿ। ಕುಪ್ಯನ್, ಕುಪ್ಯಂತಿ। ಕೋಪಿತುಮ್।

ಕುಪಿತಮ್। ಕೋಪನಮ್। ಕುಪಿತ್ವಾ, ಕೋಪಿತ್ವಾ। ಪ್ರಕುಪ್ಯ।

ಕುಪಿತ ಕುಪಿತ (ನಂ) 1. ಕೋಪ, ಸಿಟ್ಟು. ಕುಪ (ಕ್ರೋಧೆ)

ಭಾವೆ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। "ವಾಸಸಾಂ ಶಿಥಿಲತಾಮುಪನಾಭಿ

ಹಿನಿರಾಸಮಪದೇ ಕುಪಿತಾನಿ" ಕಿರಾಂ ೧-೬೫। (ವಿಂ)

2. ಕೋಪಗೊಂಡ, ಸಿಟ್ಟುಮಾಡಿಕೊಂಡ. ಕುಪ ಕರ್ತಂ

"ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಭಜತೇ ಕುಪಿತೋಽಪ್ಯುದಾರಧೀರನುನೀತಿ

ನತಿಮಾತ್ರಕೇಣ ಸ:" ಮಾಘಂ ೧೬-೫೫। "ಜಹೌ ನ ಧೈರ್ಯ

ಕುಪಿತೋಽಪಿ ಪಾಂಡವ:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೧।

ಕುಪಿನ್ದ ಕುಪಿನ್ದ (ಪುಂ) ನೇಯಿಗೆಯವನು. ಮಗ್ಗದವನು.

ಕುಪ (ಕ್ರೋಧೆ) "ಕಿನ್ದಚ್" (೩ಂ ೪-೮೬)।

ಕುಪಿನಿನ್ ಕುಪಿನಿನ್ (ಪುಂ) ಬೆಸ್ತ, ಮೀನು ಹಿಡಿಯು

ವವನು. ಕುಪಿನಿ ಅಸ್ತಯಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೬)।

ಕುಪಿನಿ ಕುಪಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೀನಿನ ಬುಟ್ಟಿ, ಮೀನುಗಳು

ತುಂಬುವ ಬುಟ್ಟಿ. ಗುಪ್ಯತೆ ಮತ್ಸ್ಯಾ ಅತ್ರ — ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೆ)

"ಇನಿ:" ಬಾಹುಂ। "ಙೀಪ್"। ಪೃಷಂ।

ಕುಪುತ್ರ ಕುಪುತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಮಗ, ಅಯೋಗ್ಯನಾದ

ಮಗ. ಕುತ್ಸಿತ: ಪುತ್ರ:। 2. ಭೂಮಿಯ ಮಗ—(1)

ಅಂಗಾರಕ್ಕಗ್ಗವ. (2) ನರಕಾಸುರ. ಕೋಪುತ್ರ:।

ಕುಪ್ಯ ಕುಪ್ಯ (ವಿಂ) ನೀಚ, ನಿಕ್ಕಷ್ಟ, ತುಚ್ಛ. ಕುತ್ಸಿತಂ

ಪ್ರಯತೆ — ಪೂಯಿ (ವಿಶರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।

"ಕುಪ್ಯಕುತ್ಸಿತಾವದ್ವೇಗಾಘಾಣಿಕಾ: ಸಮಾ:" ಅಮಂ।

ಕುಪ್ಯ ಕುಪ್ಯ (ನಂ) ಚೆನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿ ಬಿಟ್ಟು ಉಳಿದ ಲೋಹ,

ಹಿತ್ತಾಳೆ ತಾಮ್ರ ಮುಂತಾದುದು. ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಕಪ್"

(೩-೧-೧೧೪)। ಕೃತ್ವಂ ಚ।

ಕುಪ್ಯತ್ ಕುಪ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಕೋಪಗೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಸಿಟ್ಟು

ಗೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ಕುಪ (ಕ್ರೋಧೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।

"ಸೋಮಾಯ ಕುಪ್ಯನ್ನಿವ ವಿಪ್ರಯುಕ್ತ: ಸ ಸೋಮಮಾಚಾಮತಿ ಹ್ಯ-

ಮಾನಮ್" ನೈಪಂ ೮-೭೪। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬)।

ಕುಪ್ಯಂತಿ ಕುಪ್ಯಂತಿ.

ಕುಪ್ಯಶಾಲಾ ಕುಪ್ಯಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಾಮ್ರ ಹಿತ್ತಾಳೆ

ಮುಂತಾದ ಲೋಹಪಾತ್ರೆಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ ಮನೆ.

ಕುಪ್ಯಸ್ಯ ತತ್ಪಾತ್ರನಿರ್ಮಾಣಸ್ಯ ಶಾಲಾ।

ಕುಬೇರ ಕುಬೇರ (ಪುಂ) 1. ಯಕ್ಷರಾಜ, ಧನಾಧಿಪ, ಉತ್ತರ

ದಿಕ್ಕಿನ ಅಧಿಪತಿ. ಕುತ್ಸಿತಂ ಬೇರಂ ಶರೀರಂ ಯಸ್ಯ। [ಸೋಮ

ನೆಂಬುದು ಇವನ ಹೆಸರು. "ಕುಬೇರೋ ಭವ ನಾಮ್ನಾ ತ್ವಂ ಮಮ

ರೂಪೇರ್ಯಾ ಸುತ" ಎಂದು ದೇವಿಯ ಶಾಪದಿಂದ ಇವನಿಗೆ

ಕುರೂಪವು ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗಿ "ಕುಬೇರ"ನೆಂದು ಹೆಸರಾ

ಯಿತು. ಇವನು ವಿಶ್ವವಸ್ತಿನ ಮಗ. ಇಲಬಿಲೆಯು ಇವನ

ತಾಯಿ. ಮದ್ದಿಯೆಂಬವಳು ಇವನ ಪತ್ನಿ. ಮಗ ನಳ

ಕೂಬರ. ಅಲಕೆಯು ಕುಬೇರನ ರಾಜಧಾನಿ. ಇವನ

ವಿಮಾನಕ್ಕೆ ಪುಷ್ಪಕವೆಂದು ಹೆಸರು. ರುದ್ರನನ್ನು ಕುರಿತು



ತಪಸ್ಸು ಮಾಡಿ ಪುಷ್ಪಕವಿಮಾನವನ್ನು ಪಡೆದು ಇವನು ಲಂಕೆಯಲ್ಲಿ ರಾಜ್ಯಭಾರ ಮಾಡುತ್ತಿರಲು ಇವನ ಮಲ ತಾಯಿಯ ಮಕ್ಕಳಾದ ರಾವಣಕುಂಭಕರ್ಣರು ಇವನನ್ನು ಸೋಲಿಸಿ ಲಂಕೆಯನ್ನೂ, ಪುಷ್ಪಕವಿಮಾನವನ್ನೂ ಸ್ವಾಧೀನ ಪಡಿಸಿಕೊಂಡರು. ಬಳಿಕ ಪರಮೇಶ್ವರನ ಅಪ್ಪಣೆಯಂತೆ ಕೈಲಾಸದಲ್ಲಿ ಅಲಕೆಯನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿಕೊಂಡು ಯಕ್ಷರಿಗೆ ರಾಜನಾದನು.] "ಕುಬೇರಸ್ಯ ಮನಃಶಲ್ಯಂ ಶಂಸತೀವ ಪರಾಭವಮ್" ಕುಮಾಂ ೨-೨೨. ೧. "ಕಪ್" (೪-೪-೧೪೪). ಕುಬೇರಕ: ಕುಬೇರಕಃ. ೨. ನಂದಿಮರ. "ಕುಬೇರಸ್ತು ಧನದೇ ನಂದಿ-ಪಾದೇ" ಹೇಮಂ. (ನಂ) ೩. ವಿಕಾರವಾದ ದೇಹ, ಅಂದ ವಿಲ್ಲದ ಮೈ. ಕುತ್ಸಿತಂ ವೇರಮ್.

**ಕುಬೇರದಿಶ್ ಕುಬೇರದಿಶ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಬೇರನು ಒಡೆಯ ನಾಗಿರುವ ಉತ್ತರದಿಕ್ಕು.

**ಕುಬೇರಾಕ್ಷಿ ಕುಬೇರಾಕ್ಷೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಸುರು ಪಾದರಿ ಗಿಡ. ಕುಬೇರಸ್ಯಾಕ್ಷಿವ ಪಿಙ್ಗಲಂ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯಾ: "ಬಕ್" (೪-೪-೧೧೩).

**ಕುಬೇರಾಚಲ ಕುಬೇರಾಚಲ** -ಅದ್ರಿ -ಅದ್ರಿ (ಪುಂ) ಕೈಲಾಸ ಪರ್ವತ. ಕುಬೇರಸ್ಯ ಅಚಲ: ಅದ್ರಿವಾ.

**ಕುಂಜ ಕುಂಜ** (ಪುಂ) ೧. ಉತ್ತರಣಿಗಿಡ. ೨. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. ೩. ಗೂನು. ಬೆನ್ನಮೂಳೆ ಬಗ್ಗಿರುವಿಕೆ. ಹೃದಯಂ ಯದಿ ವಾ ಪೃಠಮುತ್ರತಂ ಕ್ರಮಶಃ ಸರ್ಕು. ಕ್ರುದೋ ವಾಯುರ್ಯದಾ ಕುರ್ಯಾತ್ತಿದಾ ತಂ ಕುಂಜಮಾದಿಶೇತ್" (ವಿಂ) ೪. ವಾಮನ, ಕುಳ್ಳು. ೫. ಗಿಡ್ಡ, ಗೂನ. ಕೌ ಉಜ್ಜತಿ - ಉಜ್ಜ (ಆಜವೇ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಕುಂಜಾ ನಿಕೃತಯೇವ ಯಾಂತಿ ಶನಕೈರಾತ್ಮೇ-ಕ್ಷಣಾಶಕ್ತಿನಃ" ರತ್ನಾಂ ೨-೩.

**ಕುಂಜಾ ಕುಂಜಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ೧. ಗೂನು ಮೈಯುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ೨. ಕಂಸನ ಮನೆಯಲ್ಲಿದ್ದ ಒಬ್ಬ ದಾಸಿ. [ಇವಳು ಪ್ರತಿ ದಿನವೂ ಕಂಸನಿಗೆ ದಿವ್ಯವಾದ ಚಂದನವನ್ನು ಒದಗಿಸು ತ್ತಿದ್ದಳು. ಕಂಸನ ಆಹ್ವಾನದ ಮೇಲೆ ಶ್ರೀಬಲರಾಮ ಕೃಷ್ಣರು ಮಧುರಾಪಟ್ಟಣಕ್ಕೆ ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದಾಗ ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಅವರನ್ನು ಕಂಡ ಕುಂಜೆಯು ಚಂದನವನ್ನೆಲ್ಲಾ ಅವರಿಗೆ ಸಮರ್ಪಿಸಲು ರಾಮಕೃಷ್ಣರು ಅದನ್ನು ತಮ್ಮ ಮೈಗೆಲ್ಲಾ ಅನುಲೇಪ ಮಾಡಿಕೊಂಡರು. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಕುಂಜೆಯ ಕಾಲನ್ನು ಅಗುಷ್ಟದಿಂದ ತುಳಿದುಕೊಂಡು ಗಲ್ಲವನ್ನು ಹಿಡಿದು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ಬೆನ್ನಿನ ಗೂನನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸಿ ಅವಳನ್ನು ಸುಂದರಿಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದನು.] ೩. ದಶರಥನ ಕಿರಿಯ ಹೆಂಡತಿಯಾದ ಕೈಕಯಿಯ ದಾಸಿ. ಇವಳು ಶ್ರೀರಾಮನ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕಕ್ಕೆ ಅಡ್ಡ ಬಂದು ವನವಾಸಕ್ಕೆ ಕಳುಹುವಂತೆ ಕೈಕಯಿಗೆ ಉಪದೇಶಿಸಿದಳು.

**ಕುಂಜ ಕುಂಜ** (ನಂ) ೧. ಅರಣ್ಯ, ಕಾಡು. ಕುಬಿ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) "ರನ್" (೩ಂ ೨-೨೯). ನಿಪಾಂ. ಕುಂಜಮರಣ್ಯಮ್ ಸಿಂ ಕೌಂ. ೨. ಯಜ್ಞಕುಂಡ. ೩. ಕರ್ಣಾಭರಣ, ಹತ್ತುಕಡಕು. ೪. ಶಕಟ, ಗಾಡಿ. ೫. ದಾರ.

**ಕುಭಾರ್ಯ ಕುಭಾರ್ಯ** (ವಿಂ) ಕೆಟ್ಟ ಹೆಂಡತಿಯುಳ್ಳವನು, ಅಯೋಗ್ಯಳಾದ ಪತ್ನಿಯುಳ್ಳವನು. ಕುತ್ಸಿತಾ ಭಾರ್ಯಾ ಯಸ್ಯ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಭಾರ್ಯಾ -ಭಾರ್ಯಾ. ಕೆಟ್ಟ ಹೆಂಡತಿ.

**ಕುಭೃತ್ ಕುಭೃತ್** (ಪುಂ) ೧. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಕುಂ ಪೃಥಿವೀ ವಿಭರ್ತಿ - ಓ ಭೃತ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೨೬). ೨. ಏಳು ಸಂಖ್ಯೆ.

**ಕುಮಾರ ಕುಮಾರ** (ಪುಂ) ೧. ಕುಮಾರಸ್ವಾಮಿ, ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಷಣ್ಮುಖ. ಕೌ ಮಾರಯತಿ ದೃಷ್ಟಾನ್ - ಮೃಡ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೇ) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪). ಕುಮಾರಯತಿ ಕ್ರೀಡತಿ - ಕುಮಾರ (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" ವಾ. "ರಾಜ ತೇಷಾಂ ವ್ರಜತಾಂ ಸುರಾಣಾಂ ಮಧ್ಯೆ ಕುಮಾರೋಽಧಿಕಕಾಂತಿಯುಕ್ತಃ" ಕುಮಾಂ ೧೩-೮. ೨. ಪುತ್ರ, ಮಗ. "ನೀರಾಜ್ಯಮಾನೇ ಸ್ಫಟಿಕಾಚಲೇನ ಸಾನಂದನಿರ್ದಿಷ್ಟದೃಶಂ ಕುಮಾರೇ" ಕುಮಾಂ ೧೨-೨೧. ೩. ಯುವರಾಜ, ರಾಜಕುಮಾರ. [ವಿಶೇಷ ವಾಗಿ ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ಈ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗ.] "ಉಪವೇಷ್ಠು-ಮಹತಿ ಕುಮಾರಃ" ಮುದ್ರಾಂ ೪. ೪. ಶುಕ, ಗಿಡ. ೫. ಅಶ್ವ ಪಾಲಕ, ಕುದುರೆಯ ಯೋಗಕ್ಷೇಮ ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುವವನು, ಕುದುರೆಯ ಆಳು. ೬. ವರುಣ ವೃಕ್ಷ, ವಲಸೆ ಗಿಡ. ೭. ಬಾಲಕ, ಐದುವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನ ಹುಡುಗ. "ಕೌಮಾರಂ ಪञ्चवर्षान्ति पौगण्डं दशमावधि" भागं ೧೦. "ಕುಮಾರಃ ಸ್ಯಾತ್ ಶುಕೇ ಸ್ಕಂದೇ ಯುವರಾಜೇಽಶ್ವಚಾರಕೇ. ಬಾಲಕೇ ವರ್ಣಾದ್ರೌ ನಾ ನ ದ್ವಯೋರ್ಜಾತ್ಯಕಾಶ್ಚನೇ" ಮೇದಿಂ. (ನಂ) ೮. ಶುದ್ಧವಾದ ಚಿನ್ನ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರೀ -ರೀ. ೯. ಪುತ್ರಿ, ಮಗಳು. ೧೦. ಮದುವೆಯಾಗದಿರುವ ಕನ್ಯೆ, ಹೆಣ್ಣರಡು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನ ಕನ್ಯೆ. "ಸಂಪ್ರಾಪ್ತೇ ದ್ವಾದಶೇ ವರ್ಷೇ ಕುಮಾರೀತ್ಯಭಿ-ಧೀಯತೇ" ಸ್ಮೃತಿಃ. "ತೃಣಿ ವರ್ಷಾಣ್ಯುದೀಕ್ಷೇತ ಕುಮಾರ್ಯತುಮತೀ ಸತೀ" ಮನುಂ ೯-೯೦. ೧೧. ಸಣ್ಣ ಗೋರಂಟಿ. ೧೨. ನವಮಾಲಿಕೆ, ಹೆಜ್ಜಾಜಿ. ೧೩. ಪಾರ್ವತಿ, ಗೌರಿ. ೧೪. ಒಂದು ನದಿ. ೧೫. ವಿಷ್ಣು ಕ್ರಾಂತಗಿಡ. ೧೬. ಜಂಬೂ ದ್ವೀಪ. "ಕುಮಾರೀ ಶೈಲತನಯಾನವಮಾಲ್ಯೋರ್ನದೀಭಿರ್ದಿ. ಸಹಾಪ-ರಾಜಿತಾಕನ್ಯಾಜಮ್ಬುದ್ವೀಪೇಷು ಚ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ.

**ಕುಮಾರಧಾರಾ ಕುಮಾರಧಾರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಹಾಭಾರತದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವ ಒಂದು ತೀರ್ಥ. "ಪಿತಾಮಹಸ್ಯ ಸರಸಃ ಪ್ರಸುತಾ ಲೋಕಪಾವನೀ. ಕುಮಾರಧಾರಾ ತತ್ರೈವ ತ್ರಿಘ್ನ ಲೋಕೇಷು



ವಿಶ್ರುತಾ । ಯತ್ರ ಸ್ನಾತ್ವಾ ಕೃತಾರ್ಥೋಸ್ಮಿತ್ಯಾತ್ಮಾನಮವಗच्छति ”  
ಭಾಂ ವನಂ ೮೧ ।

**ಕುಮಾರಪಾಲನ ಕುಮಾರಪಾಲನ** (ಪುಂ) 1. ಶಾಲಿವಾಹನ  
ರಾಜ. (ನಂ) 2. ಬಾಲಕರನ್ನು ಕಾಪಾಡುವುದು.  
(ವಿಂ) 3. ಬಾಲಕರ ಯೋಗಕ್ಷೇಮವನ್ನು ನೋಡಿ  
ಕೊಳ್ಳುವವನು. ಕುಮಾರಂ ಪಾಲಯತಿ - ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) +  
ಣಿच् “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಕುಮಾರಭೃತ್ಯಾ ಕುಮಾರಭೃತ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೂಲಗಿತ್ತಿತನ,  
ಧಾತ್ರಿಯ ಕಾರ್ಯ. ಕುಮಾರಸ್ಯ ಭೃತ್ಯಾ ಭರಣಮ್ । ಆಯು  
ವೇದದ ಎಂಬ ಅಂಗಗಳಲ್ಲೊಂದು. [“ಅಪ್ತಾಙ್ಗ”  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕುಮಾರಯ ಕುಮಾರಯು** (ಪುಂ) ಯುವರಾಜ, ರಾಜ  
ಕುಮಾರ. ಕುಮಾರಂ ಕುಮಾರಂ ಯಾತಿ - ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಕ್ರು:”  
(೩ಂ ೧-೩೭) ।

**ಕುಮಾರಲಲಿತಾ ಕುಮಾರಲಲಿತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಮವೃತ್ತದ  
ಏಳನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಜಗಣ ಸಗಣ ಮತ್ತು  
ಒಂದು ಗುರುವಿರುವ ಒಂದು ವೃತ್ತ. “ಕುಮಾರಲಲಿತಾ  
ಜ್ಞಾ:” ವೃಂ ೨೦ । ಈ ವೃತ್ತದ ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ಜ ಸ ಗು .

101 110 0

**ಕುಮಾರವಾಹಿನ್ ಕುಮಾರವಾಹಿನ್** (ಪುಂ) ಮಯೂರ,  
ನವಿಲು. ಕುಮಾರಂ ಸ್ಕಂದಂ ವಹತಿ-ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಣಿನ್:”  
(೩-೧-೧೩೪) । ಸ್ಕಂದನಿಗೆ ವಾಹನವಾದುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ  
ಈ ಹೆಸರು.

**ಕುಮಾರಶ್ರಮಣಾ ಕುಮಾರಶ್ರಮಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಲ್ಯದಲ್ಲಿ  
ಸಂನ್ಯಾಸವನ್ನು ಪಡೆದ ಜೈನ ಹೆಂಗಸು, ಬಾಲಸಂನ್ಯಾಸಿನಿ.  
ಕುಮಾರಿ ಶ್ರಮಣಾ । ಪುಂಜ್ಞಾವ: (೨-೧-೭೦) ।

**ಕುಮಾರಸಂಭವ ಕುಮಾರಸಂಭವ** (ನಂ) ಪುಣ್ಯವಿನ ಉತ್ಪತ್ತಿ  
ಯನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವ ಕಾಳಿದಾಸಕವಿಯ ಒಂದು ಕಾವ್ಯ.  
ಕುಮಾರಸ್ಯ ಸಂಭವಮಧಿಕೃತ್ಯ ಕೃತೋ ಗ್ರಂಥ: “ಅಣ್” (೪-೩-೮೭) ।  
ಅಣಿ “ಲ್ಯು” (೪-೨-೬೦) ।

**ಕುಮಾರಸು ಕುಮಾರಸೂ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಂಗಾನದಿ.  
2. ಪಾರ್ವತಿ. ಕುಮಾರಂ ಸ್ಕಂದಂ ಸುತೇ - ಷಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭ-  
ವಿಮೋಚನೆ) “ಕಿವ್” (೩-೨-೬೧) ।

**ಕುಮಾರಿಕಾ ಕುಮಾರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮದುಮೆಯಾಗ  
ದಿರುವ ಕನ್ಯೆ. ಕುಮಾರಿ ಸ್ವಾಯೆ “ಕನ್” (೪-೪-೪) ।  
2. ಬಾಲಿಕೆ, ಕನ್ಯೆ. 3. ದೊಡ್ಡಜಾತಿಯ ಯಾಲಕ್ಕಿ.  
4. ನವಮಲ್ಲಿಕೆ. [ಇದು ಮನ್ಮಥನ ಐದು ಬಾಣಗಳ

ಲ್ಲೊಂದು.] 5. ಭಾರತವರ್ಷದ ಒಂಬತ್ತು ಖಂಡಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು. “ಏಂದ್ರಂ ಕಶೇಶಕಲಂ ಕಿಲ ತಾಮ್ರಪರ್ಣಮನ್ಯದ್ಗಭಸ್ತಿ  
ಮದನಶ್ಚ ಕುಮಾರಿಕಾಖ್ಯಮ್ । ನಾಗಂ ಚ ಸೌಮ್ಯಮಿಹ ವಾರುಣ-  
ಮನ್ಯಖಣ್ಡಂ ಗಂಧರ್ವಸಂಜ್ಞಮಿತಿ ಭಾರತವರ್ಷಮಧ್ಯೇ । ವರ್ಣವ್ಯವ-  
ಸ್ಥಿತೀರಿಹೈವ ಕುಮಾರಿಕಾಖ್ಯೇ ಶಿಷೇಷು ಚಾನ್ಯಜಜನಾ ನಿವಸಂತಿ  
ಸರ್ವೇ” ।

**ಕುಮಾರಿನ್ ಕುಮಾರಿನ್** (ವಿಂ) ಕುಮಾರರುಳ್ಳವನು,  
ಮಕ್ಕಳುಳ್ಳವನು. ಕುಮಾರಾ ಅಸ್ಯ ಸಂತೀತಿ - “ಇನಿ:”  
(೪-೨-೧೧೪) ।

**ಕುಮಾರಿಲ ಕುಮಾರಿಲ** (ಪುಂ) ಕುಮಾರಿಲ ಭಟ್ಟಾಚಾರ್ಯರು,  
ಒಬ್ಬ ಮೀಮಾಂಸಕರು. “ಸಾಧು ಕುಮಾರಿಲ ಸಾಧುಪ್ರಜ್ಞೋ-  
ಸ್ಯಾಯುಷ್ಮನ್” ಪ್ರಬಂಧಂ ೬ ।

**ಕುಮಾರೀ ಕುಮಾರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮದುಮೆಯಾಗದಿರುವ  
ಕನ್ಯೆ. ಕುಮಾರ “ಕಿವ್” (೪-೧-೨೦) । “ತೀರ್ಣಿ ವರ್ಷಾಣ್ಯು-  
ದೀಕ್ಷೇತ ಕುಮಾರ್ಯತುಮತೀ ಸತೀ । ಋತ್ವಂ ತು ಕಾಲಾದೇತಸ್ಮಾದ್ವಿದೇತ  
ಸದೃಶಂ ಪತಿಮ್” ಮನುಂ ೯-೯೦ । 2. ಒಂದು ನದಿ.  
3. ಪಾರ್ವತಿ. 4. ನವಮಲ್ಲಿಕೆ. 5. ಜಂಬೂದ್ವೀಪ.  
6. ವಿಷ್ಣು ಕ್ರಾಂತಗಿಡ. 7. ಸಣ್ಣ ಗೋರಂಟಿಗಿಡ.  
8. ಹೆಜ್ಜಾಜಿ, ವೀರಜಾಜಿ. 9. ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ  
ಯಾಲಕ್ಕಿ. “ಕುಮಾರ: ಶೈಲತನಯಾನವಮಾಲಯೋನದಿಭಿರ್ದಿ ।  
ಸಹಾಪರಾಜಿತಾ ಕನ್ಯಾ ಜಮ್ಬೂದೀಪೇಷು ಚ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” ಮೇದಿಂ ।

**ಕುಮಾರೀಕ್ರೀಡನಕ ಕುಮಾರೀಕ್ರೀಡನಕ** (ನಂ) ಹೆಣ್ಣು  
ಮಕ್ಕಳ ಆಟದಸಾಮಾನು. ಕುಮಾರೀಭಿ: ಕ್ರೀಡಯತೇಜೇನ -  
ಕ್ರೀಡ (ವಿಹಾರೇ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭) । ಸ್ವಾಯೆ “ಕ:” ।

**ಕುಮಾರೀತನಯ ಕುಮಾರೀತನಯ, -ಪುತ್ರ -ಪುತ್ರ, -ಸುತ  
-ಸುತ** (ಪುಂ) ಮದುಮೆಯಾಗದಿರುವ ಕನ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ  
ಮಗ. 1. ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ (ಸತ್ಯವತಿಯ ಪುತ್ರ). 2.  
ಕರ್ಣ (ಕುಂತಿಯ ಮಗ). “ಪಿತೃವೇಶಮನಿ ಕನ್ಯಾ ತು ಯಂ ಪುತ್ರಂ  
ಜನಯೇದ್ರಹ: । ತಂ ಕಾನೀನಂ ವದೇತ್ತಾನ್ಮನಾ ವಾಡು: ಕನ್ಯಾಸಮುಕ್ಷವಮ್”  
ಮನುಂ ೯-೧೭೨ ।

**ಕುಮಿತ್ರ ಕುಮಿತ್ರ** (ನಂ) ಕೆಟ್ಟ ಸ್ನೇಹಿತ. ಕುತ್ಸಿತಂ ಮಿತ್ರಮ್ ।

**ಕುಮುದ ಕುಮುದ** (ನಂ) 1. ರಕ್ತೋತ್ಪಲ, ಕೆಂದಾವರೆ.  
ಕೌ ಮೋದತೇ - ಮುದ (ಹರ್ಷೆ) “ಕಿವ್” (೩-೨-೭೬) ।  
“ರಕ್ತೋತ್ಪಲಮಲಿಪ್ರಿಯಮ್ । ಲಕ್ಷ್ಮೀಗೃಹಂ ಕುಮುಚ್ಚಾಯ”  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 2. ಬಿಳಿನೈದಿಲೆ. (ವಿಂ) 3. ಕೃಷ್ಣ,  
ಲೋಭಿ, ಜಿಪ್ಪಣ. ಕುತ್ಸಿತಾ ಮುದಸ್ಯ । “ಕುಮುದ ತ್ರಿಪು ಸ್ಯಾತ್  
ಕೃಪಣೇ ಕೇರವೇ ತು ನಪುಂಸಕಮ್” ಮೇದಿಂ । 4. ತೃಪ್ತಿಯಿಲ್ಲ  
ದವನು. ಸಂತೋಷವಿಲ್ಲದವನು.



**ಕುಮುದ ಕುಮುದ** (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ಕೌ ಪ್ರಕೃತಿಮಂಡಲ ಉಪನಾಹ: ಸಹ ಮೋದತೇ - ಮುದ (ಹರ್ಷ) "ಕ:" (ವಾಂ 3-2-5)। "ಪ್ರಾಕೃತೇ ಮಂಡಲೇ ಭೂಮಿ ಮೋದನಾಚ್ಚ ಮಹಾತ್ಮಮಿ:। ಮುಕ್ತಿಭೂಮಿ-ಪ್ರದಾನಾದ್ವಾ ಕುಮುದ: ಪರಿಕೀರ್ತಿತ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ:। "ಕುಮುದ: ಕುಂದರ: ಕುಂದ:" ವಿಂ ಸಂ। 2. ಒಬ್ಬ ನಾಗರಾಜ, ಕುಶಲ ಮಹಾರಾಜನ ಪತ್ನಿಯಾದ ಕುಮುದವ್ಯತಿಯ ಸಹೋದರ. "ನಾಗೇನ ಲೌಲ್ಯಾತ್ ಕುಮುದೇನ ನೂನಮುಪಾತ್ತಮಂತರ್ದವಾಸಿನಾ ತತ್" ರಘುಂ 16-96। 3. ದಕ್ಷಿಣ ದಿಗ್ಗಜ. 4. ಒಬ್ಬ ವಾನರ. 5. ಕರ್ಪೂರ. 6. ಶಾಲ್ಮಲಿದ್ವೀಪದ ಒಂದು ಪರ್ವತ. 7. ಒಬ್ಬ ದೈತ್ಯ. (ನಂ) 8. ಬಿಳಿನೈದಿಲೆ. ಕೌ ಮೋದತೇ - ಮುದ (ಹರ್ಷ) "ಕ:" (3-1-135)। (ವಾಂ 3-2-5) ವಾ। "ಕಲರವಮುಪಗೀತೇ ಷಡ್ಪದೋಧೇನ ವಕ್ತ: ಕುಮುದಕಮಲಖಂಡೇ ತುಲ್ಯರೂಪಾಮವಸ್ಥಾಮ್" ಮಾಘಂ 11-15। 9. ರಕ್ತೋತ್ಪಲ, ಕೆಂದಾವರೆ, ಕೆಂಪುನೈದಿಲೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ದಾ -ದಾ. 10. ಶೀವನೆಯ ಮರ. 11. ಕಿರಿಯ ಶಿವನಿಮರ. "ಕುಮುದ: ಕಪೌ। ದಿಙ್ನಾಗನಾಗಯೋರ್ದೇವಭೇದೇ ಚ ಸಿತೋತ್ಪಲೇ। ಕುಮುದಾ ಕುಮ್ಭಿಗಮ್ಭಾರ್ಯಾ:" ಹೇಮಂ।

**ಕುಮುದನಾಥ ಕುಮುದನಾಥ** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಕುಮುದಸ್ಯ ನಾಥ:। -ಪತಿ: -ಪತಿ:

**ಕುಮುದಬಂಧು ಕುಮುದಬಂಧು** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಕುಮುದಸ್ಯ ಬಂಧು:। -ಬಾಂಧವ: -ಬಾಂಧವ:

**ಕುಮುದವತೀ ಕುಮುದವತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಮುದಲತೆ, ಬಿಳಿನೈದಿಲೆಯ ಬಳ್ಳಿ. ಕುಮುದಾನಿ ಸಂತ್ಯಸ್ಯಾಮ್ "ಮತುಪ್" (5-2-94)। ಮಸ್ಯ ವ: (6-2-9)।

**ಕುಮುದಾ ಕುಮುದಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಕುಮುದ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ಕುಮುದಾಕರ ಕುಮುದಾಕರ** (ಪುಂ) ಬಿಳಿನೈದಿಲೆಗೆ ಸ್ಥಾನವಾದ ಜಲಾಶಯ. ಕುಮುದಾನಾಮಾಕರ:। "ಶುಕ್ಲ: ಸತಾರೇಮ್ಕುಲೀಕೃತ: ಸ್ಥುಲ: ಕುಮುದತೀನಾಂ ಕುಮುದಾಕರೇರಿವ" ಮಾಘಂ 12-4।

**ಕುಮುದಿಕಾ ಕುಮುದಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಿರಿಯ ಶಿವನಿಮರ. ಕೌ ಮೋದತೇ-ಮುದ (ಹರ್ಷ) "ಕ:" (3-1-135)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (5-3-95)।

**ಕುಮುದಿನಿ ಕುಮುದಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕುಮುದಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇಶ. ಕುಮುದಾನ್ಯತ್ರ ಸಂತಿ "ಇನಿ:" (5-2-135)। "ಸಪದಿ ಕುಮುದಿನಿಭಿರ್ಮಿಲಿತಂ ಹಾ ಕಪಾಪಿ ಕ್ಷಯಮಗಮದಪೇತಾ-ಸ್ತಾರಕಾಸ್ತಾ: ಸಮಸ್ತಾ:" ಮಾಘಂ 11-24। 2. ಕುಮುದಲತೆ, ಬಿಳಿನೈದಿಲೆಯ ಬಳ್ಳಿ. ಕುಮುದಾನಿ ಸಂತ್ಯಸ್ಯಾಮ್ "ಇನಿ:" (5-2-135)। 3. ಕುಮುದಗಳ ಸಮೂಹ,

ಬಿಳಿನೈದಿಲೆಗಳ ರಾಶಿ. ಕುಮುದಾನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಇನಿ:" (ವಾಂ 4-2-51)।

**ಕುಮುದತ್ ಕುಮುದತ್** (ವಿಂ) 1. ಬಿಳಿನೈದಿಲೆ ಹೂವು ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವ ಪ್ರದೇಶ. ಕುಮುದಾನಿ ಸಂತ್ಯತ್ರ "ಛಮತುಪ್" (4-2-69)। ವತ್ವಮ್ (6-2-10)। "ಹಂಸಶ್ರೇಣಿಷು ತಾರಾಸು ಕುಮುದತ್ಸು ಚ ವಾರಿಷು" ರಘುಂ 4-19। 2. ಅತ್ಯಲ್ಪಿಯುಳ್ಳ. ಕುಮುದಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (5-2-94)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (4-1-6)। ಕುಮುದತೀ ಕುಮುದತ್ಸೀ.

**ಕುಮುದತೀ ಕುಮುದತ್ಸೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಿಳಿನೈದಿಲೆಯಲತೆ. ಕುಮುದತ್ "ಜಿಪ್" (4-1-6)। "ಋಪಯತಿ ಯಥಾ ಶಶಾಂಕಂ ನ ತಥಾ ಹಿ ಕುಮುದತೀಂ ದಿವಸ:" ಶಾಕುಂ 3-14। 2. ಬಿಳಿನೈದಿಲೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪ್ರದೇಶ. ಕುಮುದಾನ್ಯತ್ರ ಸಂತಿ "ಛಮತುಪ್" (4-2-69)। "ಜಿಪ್" (4-1-6)। "ಶುಕ್ಲ: ಸತಾರೇಮ್ಕುಲೀಕೃತ: ಸ್ಥುಲ: ಕುಮುದತೀನಾಂ ಕುಮುದಾಕರೇರಿವ" ಮಾಘಂ 12-4। 3. ಕುಶಲಮಹಾರಾಜನ ಪತ್ನಿ, ಕುಮುದನಂಬ ಸರ್ಪರಾಜನ ಸಹೋದರಿ. "ಅತಿಥಿಂ ನಾಮ ಕಾಕುತ್ಸ್ಥಾತ್ ಪುತ್ರಮಾಪ ಕುಮುದತೀ" ರಘುಂ 19-1।

**ಕುಮ್ಬಾ ಕುಂಬಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯಜ್ಞಶಾಲೆಯ ಸುತ್ತಲೂ ಕಟ್ಟಿದ ಬೇಲಿ. ಕುಮ್ಭತೇಜನಾ - ಕುಬಿ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) "ಅಙ್" (3-3-105)। 2. ದಪ್ಪಬಟ್ಟಿ, ದುಪ್ಪಟ್ಟಿ. "ಕುಮ್ಬಾ ತು ಸ್ಥೂಲಶಾಟಕ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಕುಮ್ಭ ಕುಂಭ** (ಪುಂ) 1. ಲೋಹದ ಕೊಡ, ಬಿಂದಿಗೆ, ಮಣ್ಣಿನ ಗಡಿಗೆ. ಕುಂ ಉಮ್ಭತಿ ಉಮ್ಭ (ಪೂರ್ಣ) "ಅಙ್" (3-2-1)। "ತದಗ್ರಜಾಗ್ರತ್ಪೃಥುಷಾತಕುಮ್ಭಕುಮ್ಭೌ ನ ಸಂಭಾವಯತಿ ಸ್ತನೌ ಕ:" ನೈಷಂ 10-122। 2. ಅನೆಯ ತಲೆಯ ಮುಂಭಾಗದ ಮಾಂಸಹಿಂಡ. "ಮತ: ಕಿಮೇರಾವತಕುಮ್ಭಕೇತವ-ಪ್ರಗಲ್ಭಪೀನಸ್ತನದಿಗ್ಧವಸ್ತವ" ನೈಷಂ 9-52। 3. ಕುಂಭಕರ್ಣನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. 4. ಪ್ರಹ್ಲಾದನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಪ್ರಹ್ಲಾದಸ್ಯ ತ್ರಯ: ಪುತ್ರಾ: ಸ್ಥಾತಾ: ಸರ್ವತ್ರ ಭಾರತ। ವಿಶೇಷತಶ್ಚ ಕುಮ್ಭಶ್ಚ ನಿಕುಮ್ಭ ಇತಿ ನಾಮತ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ। 5. (ಜ್ಯೋತಿಷದಲ್ಲಿ) ಕುಂಭರಾಶಿ, ಗ್ರಹಗಳು ಸಂಚರಿಸುವ ಹನ್ನೆರಡು ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಹನ್ನೊಂದನೆಯದು. 6. ಪ್ರಾಣಾಯಾಮದ ಅಂಗವಾದ ಶ್ವಾಸನಿರೋಧ, ಪ್ರಾಣಾಯಾಮದಲ್ಲಿ ಬಾಯಿ ಮತ್ತು ಮೂಗುಗಳನ್ನು ಮುಚ್ಚಿಕೊಂಡು ಶ್ವಾಸವನ್ನು ತಡೆಯುವುದು. 7. ವೇಶ್ಯೆಯ ಪತಿ, ವಿಟ ಪುರುಷ, ಕಾಮುಕ. 8. ತೀವ್ರವಾಗಿ ಬಲಿತಿರುವ ಕಾಮಾಲೆ ರೋಗ. "ನೇತ್ರಕಾಮಲಾ ಕಲಿಬಿ ಕುಮ್ಭ: ಸ್ವಾತ್ಸಾ ಮಹತ್ತರಾ" ವೈಜಂ। 9. ಎರಡು ಖಂಡಗಳ ಅಳತೆ, ಇಪ್ಪತ್ತು



ಕೊಳಗದ ಅಳತೆ. “ದಶದ್ರೋಣಾ ಭವೇತ್ತಾರಿ ಕ್ರಮಸ್ತು ದ್ರೋಣ-  
ವಿಶತಿ:” 10. ಈಗಿನ ಅವಸರ್ಪಣೆಯಲ್ಲಿ 19ನೆಯ  
ಅರ್ಹಂತರ ತಂದೆ. (ನಂ) 11. ಕೆಂಪು ತಿಗಡೆಯ ಮರ.  
12. ಗುಗ್ಗುಳ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಭಾ-ಭಾ. 13. ವೇಶ್ಯ,  
ಸೂಳೆ. -ಭೀ-ಭೀ. 14. ಹಸರು ಪಾದರಿ. 15. ನೀರು  
ಕಾಗೆ. 16. ಸಣ್ಣ ಮಡಕೆ. 17. ಕಿರಿಯ ಶಿವನಿಮರ.  
“ಕ್ರಮೋ ವೇಶ್ಯಾಪತೌ ಪಟೇ. ದ್ವಿಪಾತ್ನೇ ರಾಕ್ಷಸೇ ರಾಶೌ ಕ್ರಮಂ  
ತ್ರಿವೃತ್ತಿ ಗುಗ್ಗುಲೌ. ಕ್ರಮ್ಯುಕ್ತಾಯಾಂ ಪಾಟಲಾಯಾಂ ವಾರಿಪರ್ಣ್ಯಾ  
ಚ ಕಡ್ಕಲೇ” ಹೇಮಂ.

**ಕ್ರಮಕ ಕುಂಭಕ (ಪುಂ)** ಪ್ರಾಣಾಯಾಮದ ಅಂಗವಾದ  
ಶ್ವಾಸನಿರೋಧ. ಕ್ರಮ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕ:” (1) ಪೂರಕ:,  
(2) ಕ್ರಮಕ: ಮತ್ತು (3) ರೇಚಕ: ಎಂದು ಪ್ರಾಣಾ  
ಯಾಮದ ಅಂಗಗಳು ಮೂರು. ವಾಯುವನ್ನು ಎಳೆದು  
ಕೊಂಡು ತುಂಬುವುದು ಪೂರಕವು. ತುಂಬಿದ ವಾಯುವನ್ನು  
ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು ಕುಂಭಕ. ಆ ವಾಯು  
ವನ್ನು ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಿಡುವುದು ರೇಚಕವು. “ಪೂರಕಂ ಪೂರಣಂ  
ವಾಯೋ: ಕ್ರಮಕ: ಸ್ಥಾಪನಂ ಕ್ವಚಿತ್. ಬಹಿರ್ನಿ:ಸಾರಣಂ ತಸ್ಯ  
ರೇಚಕ: ಪರಿಕೀರ್ತಿತ: ದಕ್ಷಿಣೇ ರೇಚಯೇದ್ವಾಯಂ ವಾಮೇನ ಪೂರಿತೋದರ: |  
ಕ್ರಮೇನ ಧಾರಯೇನ್ನಿತ್ಯಂ ಪ್ರಾಣಾಯಾಮಂ ವಿದ್ವುರ್ಬುದ್ಧಾ:”

**ಕ್ರಮಕರ್ಣ ಕುಂಭಕರ್ಣ (ಪುಂ)** ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ, ವಿಶ್ವವಸ್ತಿನ  
ಮಗ, ರಾವಣನ ತಮ್ಮ. ಕ್ರಮಾವಿವ ಕರ್ಣಾವಿಸ್ಯ |  
[ಸುಮಾಲಿಕನ್ಯೆಯಾದ ಕೈಕಸಿಯು ಒಂದು ದಿನ ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲ  
ದಲ್ಲಿ ಪುತ್ರಾರ್ಥಿನಿಯಾಗಿ ಒಂದು ವಿಶ್ವವಸ್ತನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿ  
ಸಲು ಆತನು “ಈ ಸಮಯಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ ನಿನ್ನಲ್ಲಿ ಕ್ರೂರ  
ಕರ್ಮಿಗಳಾದ ರಾಕ್ಷಸರು ಹುಟ್ಟಲಿ” ಎಂದು ವರವನ್ನಿತ್ತನು.  
ಅದರಿಂದ ಮೊದಲು ಹತ್ತು ತಲೆಗಳಿಂದಲೂ ಇಪ್ಪತ್ತು  
ತೋಳುಗಳಿಂದಲೂ ಭಯಂಕರರೂಪದ ರಾವಣನು ಹುಟ್ಟಿ  
ದನು. ಬಳಿಕ ಬೃಹದಾಕಾರದ ಕುಂಭಕರ್ಣನೂ, ವಿಕಾರ  
ರೂಪದ ಶೂರ್ಪಣಖೆಯೂ ಹುಟ್ಟಿದರು. ಇದರಿಂದ  
ಖಿನ್ನಳಾದ ಕೈಕಸಿಯು ಮತ್ತೆ ವಿಶ್ವವಸ್ತನ್ನು ಬೇಡಲಾಗಿ  
ಧರ್ಮಾತ್ಮನಾದ ವಿಭೀಷಣನು ಜನಿಸಿದನು.

ಕುಂಭಕರ್ಣನ ಘೋರ ತಪಸ್ಸಿನಿಂದ ಮೆಚ್ಚಿದ ಬ್ರಹ್ಮನು  
ಅವನಿಗೆ ವರವನ್ನು ಕೊಡಲು ಉದ್ಯುಕ್ತನಾದಾಗ ಅದರಿಂದ  
ಹೆದರಿದ ದೇವತೆಗಳ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಂತೆ ಕುಂಭಕರ್ಣನನ್ನು  
ಮಂಕುಗೊಳಿಸುವಂತೆ ಬ್ರಹ್ಮನು ಸರಸ್ವತಿಗೆ ಹೇಳಲಾಗಿ  
ನಿರ್ದೇವತ್ವವನ್ನು ಕೇಳಲು ಹೊರಟ ಕುಂಭಕರ್ಣನ  
ಬಾಯಿಂದ ಸರಸ್ವತಿಯು ನಿದ್ರಾವತ್ಸ್ವರೂಪವಾದ ವರ  
ವನ್ನು ಕೇಳಿಸಿದಳು. ಅದರಿಂದ ಕುಂಭಕರ್ಣನಿಗೆ ಸದಾ

ನಿದ್ರೆಬರುವ ವರ ಲಭಿಸಿತು. ಬಲಿಷ್ಠವರ್ತಿಯ ಮಗಳಾದ  
ವೃತ್ರಜ್ವಾಲೆಯೆಂಬವಳು ಕುಂಭಕರ್ಣನ ಹೆಂಡತಿ. ಕುಂಭ  
ನಿಕುಂಭರೆಂಬವರು ಇವನ ಮಕ್ಕಳು. ಹನುಮಂತನು  
ಸೀತಾನ್ವೇಷಣಮಾಡಿ ಲಂಕೆಯನ್ನು ನಾಶಗೊಳಿಸಿ ಹೋದ  
ನಂತರ ಸೀತೆಯನ್ನು ರಾಮನಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿ ಶರಣಾಗತನಾಗ  
ಬೇಕೆಂದು ಕುಂಭಕರ್ಣನು ಎಷ್ಟು ಹೇಳಿದರೂ ರಾವಣನು  
ಕೇಳದಿರಲು ಅವನ ಅವಿವೇಕವನ್ನು ನಂದಿಸುತ್ತ ಹೋಗಿ  
ನಿದ್ರಿಸುವನು. ರಾವಣನು ಶ್ರೀರಾಮನೊಡನೆ ಘೋರ  
ಯುದ್ಧ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಕುಂಭನಿಕುಂಭರೆಂಬರೂ ಮಡಿ  
ಯಲು ರಾವಣನಿಂದ ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಕುಂಭಕರ್ಣನು  
ಪುನಃ ರಾವಣನಿಗೆ ಹೇಳಿದ ವಿವೇಕದ ಮಾತು ವಿಫಲ  
ವಾಗಲು ಘೋರ ಯುದ್ಧ ಮಾಡಿ ಶ್ರೀರಾಮನಿಂದ ಹತ  
ನಾದನು.] ರಾಮಾಂ |

**ಕ್ರಮಕಾಮಲಾ ಕುಂಭಕಾಮಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಾಮಾಲೆ  
ರೋಗದ ಒಂದು ಭೇದ.

**ಕ್ರಮಕಾರ ಕುಂಭಕಾರ (ಪುಂ)** ಮಡಕೆಯನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ  
ಕುಂಬಾರ, ವೈಶ್ಯಹಂಗಿನಲ್ಲಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ಹುಟ್ಟಿದ  
ಒಬ್ಬ ಬೆರಕೆಜಾತಿಯವನು. ಕ್ರಮಂ ಕರೋತಿ - ಓ ಕೃನ್  
(ಕರಣ) “ಅನ್” (3-2-1) | “ವೇಶ್ಯಾಯಾಂ ವಿಪ್ರತಶ್ಚೋರಾತ್  
ಕ್ರಮಕಾರ: ಸ ಉಚ್ಯತೇ” | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ “ಡೀಶ್”  
(4-1-63) |

**ಕ್ರಮಕಾರಕ ಕುಂಭಕಾರಕ (ವಿಂ)** ಮಡಕೆಯನ್ನು  
ತಯಾರಿಸುವವನು. ಕ್ರಮಂ ಕರೋತಿ - ಓ ಕೃನ್ (ಕರಣ)  
“ಘ್ನಲ್” (3-1-133) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಠಾಪ್” (4-1-4) |  
-ಕಾರಿಕಾ -ಕಾರಿಕಾ.

**ಕ್ರಮಜ ಕುಂಭಜ (ಪುಂ)** 1. ಅಗ್ನ್ಯಮಹರ್ಷಿ. ಕ್ರಮಾ-  
ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುಮವಿ) “ಓ:” (3-2-96) |  
2. ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿ. 3. ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯ. (ವಿಂ)  
4. ಕುಂಭದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ.

**ಕ್ರಮಜನ್ಮನ್ ಕುಂಭಜನ್ಮನ್ (ಪುಂ)** 1. ಅಗ್ನ್ಯ  
ಮಹರ್ಷಿ. 2. ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿ. 3. ದ್ರೋಣಾ  
ಚಾರ್ಯ. ಕ್ರಮಾಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ | [ಮಿತ್ರವರುಣರೆಂಬ  
ಯುಷಿಗಳು ಒಂದು ದಿನ ಊರ್ವಶಿಯನ್ನು ಕಂಡು ಮೋಹಿತ  
ರಾಗಿ ವೀರ್ಯಸ್ಥಲನವಾಗಲು ಅದನ್ನು ಒಂದು ಕುಂಭ  
ದಲ್ಲಿಟ್ಟರು. ಅದರಿಂದ ಅಗ್ನ್ಯರೂ ವಸಿಷ್ಠರೂ ಜನಿಸಿದರು.  
“ಅಗಸ್ತ್ಯಶ್ಚ ವಸಿಷ್ಠಶ್ಚ ಮಿತ್ರಾವರುಣಯೋರ್ಹೃಷಿ | ರೇತ:  
ಸಿವಿಚಿತ್ರ: ಕ್ರಮೇ ಉತ್ಪತ್ತಿ: ಸನ್ನಿವಿಧೌ ದೃತಮ್” ಭಾಗಂ  
6-16-4 | ಭರದ್ವಾಜಮಹರ್ಷಿ ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ



ಫೃತಾಚೆಯೆಂಬ ಅಪ್ಪರಸ್ಸನ್ನು ಕಂಡು ವೀರ್ಯಸ್ಥನ  
ವಾಗಲು ಅದನ್ನು ಒಂದು ದ್ರೋಣದಲ್ಲಿರಿಸಲು ಅದರಿಂದ  
ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರು ಜನಿಸಿದರು. ಭಾಂ. ಆದಿಂ. ೬೪.]

“ಪಶ್ಚವಟಾಂ ತತೋ ರಾಮಃ ಶಾಸನಾತ್ ಕುಮ್ಮಜನ್ಮನಃ” ರಘುಂ  
೧೨-೩೧.

**ಕುಮ್ಮದಾಸಿ ಕುಂಭದಾಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮೇಶೈ, ಸೂಳೆ.  
2. ತಲೆ ಹಿಡುಕೆ, ಕುಂಟೆ.

**ಕುಮ್ಮನಾಭ ಕುಂಭನಾಭ (ಪುಂ)** ಬಲಿಷ್ಠವರ್ತಿಯ ಒಬ್ಬ  
ಮಗ. “ಬಲೇಃ ಪುತ್ರಶತಂ ತ್ವಾಸೀತ್ ಬಾಣಜ್ಯೇಷಂ ನರಾಧಿಪ |  
ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರಶ್ಚ ಸೂರ್ಯಶ್ಚ ಚಂದ್ರಮಾಶ್ಚೇಂದ್ರತಾಪನಃ | ಕುಮ್ಮನಾಭೋ  
ಗರ್ದಭಾಕ್ಷಃ ಕುಕ್ಷಿರೀತ್ಯೇವಮಾದಯಃ” ಹರಿವಂ.

**ಕುಮ್ಮಪದೀ ಕುಂಭಪದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕುಂಭದಂತೆ ಕಾಲು  
ಗಳುಳ್ಳ ಹೆಂಡ್ತು. ಕುಮ್ಮಸ್ಯೇವ ಪಾದಾವಸ್ಯಾಃ “ಡೀಪ್”  
(೪-೪-೧೩೯).

**ಕುಮ್ಮಪಾದ ಕುಂಭಪಾದ (ವಿಂ)** ಕುಂಭದಂತೆ ಕಾಲು  
ಗಳುಳ್ಳವನು. ಕುಮ್ಮಸ್ಯೇವ ಪಾದಾವಸ್ಯಾಃ.

**ಕುಮ್ಮಮಣ್ಡಕ ಕುಂಭಮಂಡೂಕ (ಪುಂ)** ಕುಂಭದೊಳಗೆ  
ವಾಸಿಸುವ ಮಂಡೂಕ (ಕಪ್ಪೆ) ದಂತೆ ಅಲ್ಪವಾದ ತಿಳಿವಳಿಕೆ  
ಯುಳ್ಳವನು, ಕೇವಲ ಪರಿಮಿತಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ  
ಸಂಚರಿಸುವವನು. ಕುಮ್ಮೋ ಮಣ್ಡಕ ಇವ.

**ಕುಮ್ಮಯೋನಿ ಕುಂಭಯೋನಿ (ಪುಂ)** 1. ಅಗಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿ.  
2. ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿ. 3. ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯ. ಕುಮ್ಮಃ  
ಯೋನಿಹೃತ್ಯತಿಥ್ಯಾನ್ಮಸ್ಯ | [“ಕುಮ್ಮಜನ್ಮನ್” ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.] “ಪ್ರಸಸಾದೋದಯಾದಮ್ನಃ ಕುಮ್ಮಯೋನಿಮಹೋಜಮಃ” ರಘುಂ  
೪-೨೧. “ಕುಮ್ಮಯೋನಿರಲಕ್ಷ್ಮೀಂ ತಸ್ಮೈ ದಿವ್ಯಪರಿಸ್ರಹಮ್”  
ರಘುಂ ೧೪-೪೪.

**ಕುಮ್ಮಶಾಲಾ ಕುಂಭಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕುಂಭಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ  
ಮನೆ, ಕುಂಬಾರನು ಮಡಕೆಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ  
ಕಾರಖಾನೆ. ಕುಮ್ಮಾಯ ಕುಮ್ಮನಿರ್ಮಾಣಾರ್ಥ ಶಾಲಾ |

**ಕುಮ್ಮಸನ್ನಿ ಕುಂಭಸಂಧಿ (ಪುಂ)** ಅನೆಯ ತಲೆಯಮೇಲೆ  
ಎರಡು ದುಬ್ಬುಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ. ಕುಮ್ಮಯೋಃ ಸನ್ನಿಃ |

**ಕುಮ್ಮಸಂಭವ ಕುಂಭಸಂಭವ (ಪುಂ)** 1. ಅಗಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿ.  
2. ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿ. 3. ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯ. ಕುಮ್ಮಃ  
ಸಂಭವಃ ಉತ್ಪತ್ತಿಃ ಸ್ಥಾನಮಸ್ಯ | [“ಕುಮ್ಮಜನ್ಮನ್” ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.]

**ಕುಮ್ಮಾ ಕುಂಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮೇಶೈ, ಸೂಳೆ. ಕು ನಿಂದಿತ-  
ವ್ಯಾಪಾರೇಣ ಉಮ್ಮತಿ ಪುರಯತಿ ಉದರಮ್ - ಉಮ್ಮ (ಪುರಣೆ)  
“ಅಡ್” (೩-೩-೧೦೩).

**ಕುಮ್ಮಾಂಡ ಕುಂಭಾಂಡ (ಪುಂ)** ಬಾಣಾಸುರನ ಒಬ್ಬ ಮಂತ್ರಿ.  
ಕುಮ್ಮ ಇವ ಅಂಡಮಸ್ಯ | “ಕುಮ್ಮಾಂಡವಚನೇರೇವ ದಾನವೇಂದ್ರಃ  
ಪ್ರಚೋದಿತಃ | ವಾಚಂ ರೂಪಮತಿಕೃದ್ಧಃ ಪ್ರೋವಾಚ ವದತಾಂ ವರಃ”  
ಹರಿವಂ | ಬಾಣಾಸುರನು ಪರಾಜಯ ಹೊಂದಿದನಂತರ  
ಈ ಕುಂಭಾಂಡನು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ಆ ದೇಶಕ್ಕೆ  
ರಾಜನಾದನು. “ಕುಮ್ಮಾಂಡ ಮನ್ವಿಣಾಂ ಶ್ರೇಷ್ಠ ಪ್ರಿತೋಽಸ್ಮಿ  
ತವ ಸುಖತಃ | ಸುಕೃತಂ ತೇ ವಿಜಾನಾಮಿ ರಾಷ್ಟ್ರಿಕೋಽಸ್ತು ಭವಾನಿಹ”  
ಹರಿವಂ |

**ಕುಮ್ಮಾವಿಪ ಕುಂಭಾವಿಪ, -ಅವಿಪತಿ -ಅಧಿಪತಿ (ಪುಂ)**  
ಕುಂಭರಾಶಿಯ ಅಧಿಪತಿಯಾದ ಶನಿಗ್ರಹ. ಕುಮ್ಮಸ್ಯಾವಿಪೋ-  
ವಿಪತಿರ್ವಾ |

**ಕುಮ್ಮಿಕಾ ಕುಂಭಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮೇಶೈ, ಸೂಳೆ. ಕುಮ್ಮಾ  
ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕಃ” | 2. ಕಿರಿಯ ಶಿವನಿಮರ.

**ಕುಮ್ಮಿನ್ ಕುಂಭಿನ್ (ಪುಂ)** 1. [ತಲೆಯ ಮೇಲೆ ಕುಂಭ  
(ದುಬ್ಬು) ಗಳಿರುವ] ಗಜ, ಆನೆ. ಕುಮ್ಮಾವಸ್ಯ ಸ್ತಃ “ಇನಿಃ”  
(೪-೨-೧೧೪) | 2. ಮೊಸಳೆ. 3. ಗುಗ್ಗುಳ. (ವಿಂ)  
4. ಘಟವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ, ಬಿಂದಿಗೆಯನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವ.

**ಕುಮ್ಮಿಲ ಕುಂಭಿಲ (ಪುಂ)** 1. ಮನೆಗೆ ಕನ್ನ ಕೊರೆಯುವ  
ಕಳ್ಳ. 2. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. 3. ಸ್ಯಾಲ, ಮೈದನ,  
ಪತ್ತಿಯ ಸಹೋದರ. 4. ಗ್ರಂಥಚೋರ, ಇತರರ ಗ್ರಂಥ  
ಭಾಗವನ್ನು ತನ್ನದನ್ನಾಗಿ ಹೇಳಿ ಬಳಸಿಕೊಳ್ಳುವವನು,  
ಮತ್ತೊಬ್ಬನ ಕಾವ್ಯದಿಂದ ವಿಷಯವನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿ  
ಬರೆಯುವವನು. 5. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. “ಕುಮ್ಮಿಲೋ  
ಽಪಚೋರಯೋಃ | ಶಲೋಕಚ್ಛಾಯಾಹರೇ ಶ್ಯಾಲೇ” ಹೇಮಂ |

**ಕುಮ್ಮಿ ಕುಂಭೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮಡಕೆ. 2. ಹಸುರು  
ಪಾದರಿ ಗಿಡ. 3. ನೀರುಕಾಗೆ. 4. ಕಿರಿಯ ಶಿವನಿ  
ಮರ. “ಕುಮ್ಮಿಃ ಪಾಟಲಾಂ ಪಾಟಲಾಂ ವಾರಿಪರ್ಣ್ಯಾಂ ಚ ಕಡ್‌ಫಲೇ”  
ಹೇಮಂ |

**ಕುಮ್ಮಿಕ ಕುಂಭೀಕ (ಪುಂ)** 1. ಪುನ್ನಾಗವೃಕ್ಷ, ಸುರಹೊನ್ನೆ  
ಮರ, ಸುರಗಿ ಮರ. ಕುಮ್ಮಿವ ಕಾಯತಿ - ಕೆ (ಶಬ್ದ)  
“ಕಃ” (೩-೨-೩) | 2. ನೀರುಕಾಗೆ.

**ಕುಮ್ಮಿಧಾನ್ಯ ಕುಂಭೀಧಾನ್ಯ (ನಂ)** ಕುಂಭದಲ್ಲಿ ತುಂಬು  
ವಷ್ಟು ಧಾನ್ಯ. ಕುಮ್ಮಿಮಿತಂ ಧಾನ್ಯಮ್ |

**ಕುಮ್ಮಿಧಾನ್ಯಕ ಕುಂಭೀಧಾನ್ಯಕ (ವಿಂ)** ಒಂದು ವರ್ಷಕ್ಕೆ  
ಬೇಕಾಗುವಷ್ಟು ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಕೂಡಿಸಿಟ್ಟಿರುವವನು.  
ಕುಮ್ಮಿಮಿತಂ ಧಾನ್ಯಮಸ್ಯ ವಾ “ಕಪ್” (೪-೨-೧೪೪) |  
“ಕುಮ್ಮಿಧಾನ್ಯಕೋ ವಾ ಸ್ಥಾತ್ ಕುಮ್ಮಿಧಾನ್ಯಕ ಏವ ವಾ” ಮನುಂ  
೪-೭ |



**ಕುಂಭಿನಸ ಕುಂಭೀನಸ** (ಪುಂ) 1. ಕೂರವಾದ ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಕುಂಭೀವ ನಸಾ ನಾಸಾಸ್ಯ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸೀ-ಸೀ. 2. ಲವಣಾಸುರನ ತಾಯಿ. 3. ಚಿತ್ರರಥನ ಹೆಂಡತಿ.

**ಕುಂಭಿನಸಿ ಕುಂಭೀನಸಿ** (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ.

**ಕುಂಭಿಪಾಕ ಕುಂಭೀಪಾಕ** (ಪುಂ) ಪಾಪಾತ್ಮರನ್ನು ಆವಿಗೈಯಲ್ಲಿ ಮಡಕೆಯಂತೆ ಬೇಯಿಸುವ ಒಂದು ನರಕ. "ಯಸ್ವಿಹ ವಾ ಉಗ್ರಃ ಪಶುನ್ ಪಕ್ಷಿಣೋ ವಾ ಪ್ರಾಣತಃ ಉಪರನ್ವಯತಿ ತಮಪಕರಣಂ ಪುರುಷಾದೇರಪಿ ವಿಗೃಹಿತಂ ಅಮುತ್ರ ಯಮಾನುಚರಾಃ ಕುಂಭಿಪಾಕೇ ತಪ್ತತೇಲೇ ಉಪರನ್ವಯಂತಿ" ಭಾಗಂ ೪-೨೬-೧೩.

**ಕುಂಭೀರ ಕುಂಭೀರ** (ಪುಂ) ನಕ್ಷತ್ರ, ಮೊಸಳೆ. ಕುಂಭಿನಂ ಗಜ-ಮೀರಯತಿ - ಇರ (ಗತೌ) "ಅಣ್" (೩-೨-೧). "ಗದಂಭತ್ವಂ ತು ಸಂಪ್ರಾಪ್ಯ ದಶ ವರ್ಷಾಣಿ ಜೀವತಿ | ಸಂವತ್ಸರಂ ತು ಕುಂಭೀರಃ ತತಃ ಜಾಯೇತ ಮಾನವಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೧೧-೪೯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೬೩) | -ಸೀ-ಸೀ.

**ಕುಂಭೀರಾಸನ ಕುಂಭೀರಾಸನ** (ನಂ) ಯೋಗಾಸನಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. ಒಂದು ಕಾಲಿನ ಮೇಲೆ ಇನ್ನೊಂದು ಕಾಲಿನ ಅಡಿಯನ್ನೂ, ತಲೆಯಮೇಲೆ ಎರಡು ಕೈಗಳನ್ನೂ ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ದಂಡಾಕಾರವಾಗಿ ನಿಂತುಕೊಳ್ಳುವುದು ಕುಂಭೀರಾಸನ. "ಪಾದೋಪರಿ ಪದಂ ದತ್ತವಾ ಶಿರೋಪರಿ ಕರದ್ವಯಮ್ | ತಿಷ್ಠೇದ್ಭಂಡಾಕೃತಿರ್ಮಮೌ ಕುಂಭೀರಾಸನಮುಚ್ಯತೇ |"

**ಕುಂಭೀಲ ಕುಂಭೀಲ** (ಪುಂ) ನಕ್ಷತ್ರ, ಮೊಸಳೆ. ಕುಂಭೀರ ಸ್ಯ ಲತ್ವಮ್ |

**ಕುಂಭೋದರ ಕುಂಭೋದರ** (ಪುಂ) 1. ಈಶ್ವರನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ. "ಅವೇಹಿ ಮಾಂ ಕಿಂಕರಮಷ್ಟಮೂತಃ ಕುಂಭೋದರಂ ನಾಮ ನಿಕುಂಭತುಲಯಮ್" ರಘುಂ ೨-೩೪ | (ವಿಂ) 2. ಕುಂಭದಂತೆ ಹೊಟ್ಟೆಯುಳ್ಳ. ಕುಂಭ ಇವ ಉದರಂ ಯಸ್ಯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ವಾ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೪೪) | **ಕುಂಭೋದರೀ ಕುಂಭೋದರೀ**. **ಕುಂಭೋದರಾ ಕುಂಭೋದರಾ**.

**ಕುಂಭೋದ್ರವ ಕುಂಭೋದ್ರವ** (ಪುಂ) ಕುಂಭದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ, ಗಡಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ : 1. ಅಗಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿ. 2. ವಸಿಷ್ಠ ಮಹರ್ಷಿ. 3. ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯ. ಕುಂಭಾಡುಡ್ಡವೋ ಯಸ್ಯ |

**ಕುಯೋಗ ಕುಯೋಗ** (ಪುಂ) ತಿಥಿ ವಾರ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಸಂಬಂಧ ದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಕೆಟ್ಟ ಯೋಗ. ["ಯೋಗ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕುರಡ್ಕುರ ಕುರಂಕರ** (ಪುಂ) ಸಾರಸಪಕ್ಷಿ, ನೀರುಹಕ್ಕಿ, ತಾವರೆ ಹಕ್ಕಿ. ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | ಕುರಸ್ಯ ಶಬ್ದಸ್ಯ ಕರಃ | ಪೃಷೋಂ | ಮುಮ್ |

**ಕುರಜ್ಜ ಕುರಂಗೆ** (ಪುಂ) 1. ಹುಲ್ಲೆ, ಜಿಂಕೆ. ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) "ಅಜ್ಜಚ್" (೩ಂ ೧-೧೧೮) | ಬಾಹುಂ ಉತ್ವಮ್ | "ಮುಕ್ತಾತತ್ತ್ವಕುರಜ್ಜಕಾನನಭುವಃ ಶಿಲಾಃ ಸ್ವಲದ್ವಾರಯಃ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೩-೧ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೬೩) | **ಕುರಜ್ಜೀ ಕುರಂಗೆ**. "ಯದೇತದೀಯೇನ ತತಃ ಕೃತಾರ್ಥಾ ಸ್ವಚಕ್ಷುಷಿ ಕಿಂ ಕುರುತೇ ಕುರಜ್ಜೀ" ನೈಷಂ ೭-೩೦ | 2. ಒಂದು ಪುಣ್ಯ ತೀರ್ಥ. "ಕರತೋಯಾಂ ಕುರಜ್ಜೇ ಚ ತ್ರಿರಾತ್ರೋಪೋಷಿತೋ ನರಃ | ಅಶ್ವಮೇಧಮವಾಪ್ನೋತಿ ವಿಗಾಹ್ಯ ಪ್ರಯತಃ ಶುಚಿಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ ೨೪-೧೨ | ಸ್ವಾರ್ಥಂ "ಕಃ" | -ಕಃ -ಕಃ.

**ಕುರಜ್ಜನಯನಾ ಕುರಂಗೆನಯನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿಂಕೆಯಂತೆ ಕಣ್ಣುಗಳಂಥ ಹೆಂಗಸು. ಕುರಜ್ಜಸ್ಯೇವ ನಯನೇ ಯಸ್ಯಾಃ | "ಕಿಂತ್ವೇಕಾ ಯಮುನಾ ಕುರಜ್ಜನಯನಾ ನೇತ್ರಾಂಬುಭಿರ್ವರ್ಧತೇ" ಉದ್ಧಂ |

**ಕುರಜ್ಜಮ ಕುರಂಗೆಮ** (ಪುಂ) ಜಿಂಕೆ, ಹುಲ್ಲೆ, ಚಿಗರಿ. ಕೌ ರಜ್ಜಂ ಮಿಮೀತೇ - ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ಡಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) | "ಞಃ ಕುರಜ್ಜಮೋ ರಿಶ್ಯಃ ಸಾದೃಶ್ಯಶ್ಚಾರುಲೋಚನಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಕುರಚಿಲ್ಲ ಕುರಚಿಲ್ಲ** (ಪುಂ) ಏಡಿ, ನಳ್ಳೆ. ಕುರೇ ಶಬ್ದೇ ಚಿಲ್ಲತಿ - ಚಿಲ್ಲ (ಶೈಥಿಲ್ಯೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |

**ಕುರಡ ಕುರಟ** (ಪುಂ) ಚಪ್ಪಲಿಯನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು, ಚರ್ಮದ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು. ಕುರಿಸತಂ ರಟತಿ - ರಟ (ಪರಿಭಾಷಣಂ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಚರ್ಮಕಃ ಕುರಡಃ ಪಾದುಕತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಕುರಂಟಕ ಕುರಂಟಕ** (ಪುಂ) ಹಳದಿ ಹೂವಿನ ಗೋರಂಟಿ ಗಿಡ. ಣಟತಿ - ಣಟಿ (ಸ್ತೇಯೇ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | ಕುರಿಸತಃ ಣಟಕಃ | "ತತ್ರ ಪೀತೋ ಕುರಂಟಕಃ" ಅಮಂ |

**ಕುರಂಟಿ ಕುರಂಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರದ ಬೊಂಬೆ. "ಕುರಂಟೋ ಶಿಷ್ಟಿಕಾಭೇದೇ ಕುರಂಟಿ ದಾರುಪುತ್ರೀ" ಹೇಮಂ |

**ಕುರಂಟ ಕುರಂಟ** (ಪುಂ) ಅಂಡರೋಗ, ವೃಷಣವು ಉದಿ ಕೊಳ್ಳುವ ಒಂದು ರೋಗ. ಕುರ (ಶಬ್ದೇ) "ಅಂಡನ್" ಬಾಹುಂ | **ಅಂಡರೋಗಕ್ಕೆ ಕಾರಣಃ** "ಮೂತ್ರಧಾರಣ-ಶೀಲಸ್ಯ ಮೂತ್ರಜಃ ಸ ತು ಗಚ್ಛತಃ | ಅಮ್ಬೋಭಿಃ ಪೂರ್ಣದೃತಿವತ್ ಕ್ಷೋಭಂ ಯಾತಿ ಸರುಡ್ಮದ್ಫುಃ | ಮೂತ್ರಕುಂಠಮಧಃ ಸ್ಯಾಚ್ಚ ಚಾಲಯನ್ ಫಲಕೋಪಯೋಃ | ವಾತಕೋಪಿಭಿರಾಹಾರೈಃ ಶೀತತೋಯಾವಗಾಹನೈಃ | ಧಾರಣೇ ರಣಭಾರಾಽವಿಷಮಾಙ್ಗಪ್ರವರ್ತನೈಃ | ಪವನೋ ವಿಗುಣೀಕೃತ್ಯ ಸ್ವನಿವೇಶಾದಧೋ ನಯತ್ | ಕುರ್ಯಾದ್ವಿಷ್ಣುಷಣಸಂಧಿಸ್ಥೋ ಗ್ರಂಥ್ಯಾಭಂ ಶ್ವಯಯುಂ ತದಾ" | **ಅದರ ಚಿಕಿತ್ಸೆ** : "ಬಹುವಾರಸ್ಯ ಬೀಜಂ ಚ ಪಿಪ್ಪಲಿವಾ ತಚ್ಚಾರ್ದಕೈಃ ಸಹ | ಕುರಂಟಂ ನಾಶಯೇದ್ವೇದ್ರೇ ಲೇಪನಾನ್ಮಾತ್ರ ಸಂಶಯಃ |"



**ಕುರರ ಕುರರ** (ಪುಂ) ಕುರವ ಹಕ್ಕಿ, ಮೀನು ತಿನ್ನುವ ಒಂದು ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಪಕ್ಷಿ, ಕಡಲಹದ್ದು. ಕು (ಶಬ್ದ) "ಕರನ್" (ಽಂ ೩-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। **ಕುರರ ಕುರರೇ**. "ತತ್ರ ಮಾನಯದ್ರಕ್ಷ: ಕ್ರೋಶಂತಿ ಕುರರೋಮಿವ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬-೧೨।

**ಕುರಲ ಕುರಲ** (ಪುಂ) 1. ಚೂರ್ಣಕುಂತಲ, ಮುಂಗುರುಳು. 2. ಕುರವ ಹಕ್ಕಿ, ಕಡಲ ಹದ್ದು. ಕುರರ ರಸ್ಯ ಲ:। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। -ಲಿ-ಲೀ.

**ಕುರವ ಕುರವ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಂಪು ಹೂವಿನ ದೊಡ್ಡ ಗೋರಂಟಿ. ಕು ಇಷತ್ ಅಲಿಗಾಂ ರವೋ ಯತ್ರ। 2. ಕೆಂಪು ಹೂವಿನ ಮುಳ್ಳು ಗೋರಂಟಿ. 3. ಬಿಳಿ ಗೋರಂಟಿ. 4. ಕೆಟ್ಟ ಶಬ್ದ. ಕುತ್ಸಿತೋ ರವ:। (ನಂ) 5. ಗೋರಂಟಿ ಹೂವು. (ವಿಂ) 5. ಕೆಟ್ಟ ಶಬ್ದವುಳ್ಳ. ಕುತ್ಸಿತೋ ರವೋ ಯತ್ರ। ವಾ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೪೪)। **ಕುರವಕ: ಕುರವಕ:**. "ಮಧುಲಿಹಾಂ ಮಧುದಾನವಿಶಾರದಾ: ಕುರವಕಾ ರವಕಾರಣತಾಂ ಯಯು:" ರಘುಂ ೯-೨೯। **ಕುರವಕಮ್ ಕುರವಕಮಃ**. "ಚೂಡಾಪಾಶೋ ನವಕುರವಕಂ ಚಾಹು ಕರ್ಣೋ ಶಿರೋಪಂ ಸೀಮಂತೇ ಚ ತ್ವದ್ವಿಭಾಗಮಜಂ ಯತ್ರ ನೌಪಂ ವಧುನಾಮ್" ಮೇಘಂ ೨-೨।

**ಕುರಸ ಕುರಸ** (ಪುಂ) 1. ಮದ್ಯ. ಕುತ್ಸಿತೋ ರಸೋಽತ್ರ। "ಸ್ಯಾದಾಸವೋಽಪಿ ಕುರಸ:" ಹಾರಾಂ। 2. ಕೆಟ್ಟ ರಸ. (ವಿಂ) 3. ಕೆಟ್ಟ ರಸವುಳ್ಳ. ಕುತ್ಸಿತೋ ರಸೋಽಸ್ಯ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಸಾ-ರಸಾ. ಬೆಂಡೆ ಗಿಡ.

**ಕುರಾಲ ಕುರಾಲ** (ಪುಂ) ಕಪ್ಪುಕಾಲಿನ ಒಂದು ಬಣ್ಣದ ಕುದುರೆ.

**ಕುರೀ ಕುರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ತೃಣಧಾನ್ಯ.

**ಕುರೀರ ಕುರೀರ** (ನಂ) 1. ಮೈಥುನ, ಸಂಭೋಗ. ತು ಕುಶ್ (ಕರಣ) "ಕೀರನ್" (ಽಂ ೪-೩೩)। ತ್ವಂ ಚ। ಕುರೀರಂ ಮೈಥುನಮ್ ಸಿಂ ಕೌಂ। 2. ಹೆಂಗಸರ ತಲೆಯುಡಿಗೆ, ಅಲಂಕಾರದ ತೊಡಿಗೆ.

**ಕುರು ಕುರು** (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಅಜಮೀಢರಾಜನ ಮೊಮ್ಮಗನಾದ ಸಂವರಣನ ಮಗ, ದೈತರಾಷ್ಟ್ರ ಮತ್ತು ಪಾಂಡು ಇವರ ಮೂಲಪುರುಷ. ಶುಭಾಂಗಿಯೆಂಬವಳು ಕುರುವಿನ ಪತ್ನಿ. ವಿದೂರಧನು ಇವನ ಮಗ. "ಯೋಜಮೀಡಿಸುತಸ್ತ್ವನಯ: ಶ್ರುತ: ಸಂವರಣಸ್ತತ:। ತಪತ್ಯಾಂ ಸೂರ್ಯಕನ್ಯಾಂ ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರಪತಿ: ಕುರು:" ಭಾಗಂ ೯-೨೨-೩। "ತತ್ರ ಅಜಮೀಡಾದೃಕ್ಷಾಂ ಸಂವರಣೋ ಜಜ್ಞೇ ಸ ವಂಶಕರ:। ಸಂವರಣಸ್ತು ವೈವಸ್ವತೀಂ ತಪತೀಂ ನಾಮೋಪಯೇಮೇ। ತಸ್ಯಾಮಸ್ಯ ಜಜ್ಞೇ ಕುರು:। ಕುರುಸ್ತು ಕ್ಷಲ್ವ ದಾಶಾಹೀಮುಪಯೇಮೇ ಶುಭಾಕ್ಷೀಂ ನಾಮ।

ತಸ್ಯಾಮಸ್ಯ ಜಜ್ಞೇ ವಿದೂರಥ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೩। (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ಕುರುದೇಶ. ಕುರುಣಾಂ ನಿವಾಸೋ ಜನಪದ: ಕುರವ: -ಕುರು "ಅಞ್" (೪-೨-೬೯)। ಅಞೋ ಲುಪ್ (೪-೨-೮೧)। "ವಿತನ್ವತಿ ಕ್ಷೇಮದೇವಮಾತೃಕಾಶ್ವಿರಾಯ ತಸ್ಮಿನ್ ಕುರವಶ್ವಕಾ-ಸತಿ" ಕಿರಾಂ ೧-೧೭। ಈ ದೇಶವು ಹಸ್ತಿನಾಪುರದಿಂದ ಹಿಡಿದು ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರಕ್ಕೆ ವಕ್ಷಿಣಕ್ಕೂ ಪಂಚಾಲ ದೇಶದ ಪೂರ್ವಭಾಗಕ್ಕೂ ಸೇರಿದಂತಿರುವುದು. "ಹಸ್ತಿನಾಪುರಮಾರಮ್ಯ ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರಸ್ಯ ದಕ್ಷಿಣೇ। ಪಂಚಾಲಪೂರ್ವಭಾಗೇ ತು ಕುರುದೇಶ: ಪ್ರಕೀರ್ತಿತ:"। 3. ಕುರುದೇಶದ ದೊರೆಗಳು. "ತವಾಚ ಪಾರ್ಥ ಪಶ್ಯಂತಾನ್ ಸಮವೇತಾನ್ ಕುರುನಿತಿ" ಗೀತಾ ೧-೨೫। 4. ಕುರುದೇಶದ ಜನರು. (ಪುಂ) 5. ಒದಸ, ಅನ್ನ. "ಕುರುಪಾಂತರೇ ಭಕ್ತೇ ಪುಮಾನ್ ಪುಂಭೂಮಿ ನಿವೃತಿ" ಮೇದಿಂ। 6. ಆಗ್ನೀಧ್ರರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮಗ, "ಜಂಬುದ್ವೀಪೇಶ್ವರೋ ಯಸ್ತು ಆಗ್ನಿಧ್ರೋ ಮುನಿಸತ್ತಮ:। ತಸ್ಯ ಪುತ್ರಾ ವಭೂವುಸ್ತೇ ಪ್ರಜಾಪತಿಸಮಾ ನವ:। ನಾಭಿ: ಕಿಪುಷಶ್ಚೈವ ಹರಿವರ್ಷ ಇಲಾವೃತ:। ರಮ್ಯೋ ಹಿರಣ್ಯಾನ್ ಪಠಶ್ಚ ಕುರುಮದ್ರಾಶ್ವ ಏವ ಚ। ಕೇತುಮಾಲಸ್ತಥೈವಾನ್ಯ: ಸಾಧುಚೇಷ್ಟೋ ನೃಪೋಽಭವತ್" ವಿಷ್ಣುಪುಂ। (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 7. ಆಗ್ನೀಧ್ರರಾಜನ ಮಗ ಕುರುರಾಜನು ಆಳುತ್ತಿದ್ದ ಒಂದು ದೇಶ. ಇದಕ್ಕೆ "ಉತ್ತರಕುರು" ಎಂದು ಹೆಸರು. [ಆಗ್ನೀಧ್ರನು ತಾನು ಆಳುತ್ತಿದ್ದ ಭೂಮಂಡಲ ವನ್ನು ಒಂಬತ್ತು ಭಾಗ ಮಾಡಿ ತನ್ನ ಒಂಬತ್ತು ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳಿಗೂ ಹಂಚಿದನು. ಕುರುರಾಜನು ಆಳುತ್ತಿದ್ದ ಭೂಭಾಗಕ್ಕೆ "ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರ" ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಇದೇ "ಉತ್ತರಕುರು" ದೇಶ.] "ವಿಜಿತಯ: ಪ್ರಾಜ್ಯಮಯಚ್ಛ-ದ್ವುತರಾನ್ ಕುರುನಕುಪ್ಯಂ ವಸು ವಾಸವೋಪಮ:" ಕಿರಾಂ ೧-೩೫। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕುಡ್" (೪-೧-೬೬)। ಕುರು: ಕುರುಣ: ಕುರು ರಾಜನ ಮಗಳು. ಕುರೋಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ "ಞ:" (೪-೧-೧೭)। ತಸ್ಯ ಲುಕ್" (೪-೧-೧೭೪)।

**ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರ ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರ** (ನಂ) 1. ಭಾರತವರ್ಷದೊಳಗಣ ಒಂದು ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ, ಸರಸ್ವತೀ-ದೃಷದ್ವತೀ ನದಿಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ದೇಶ. ಇದಕ್ಕೆ ಬ್ರಹ್ಮನ ಉತ್ತರ ವೇದಿ ಅಂತರ್ವೇದಿ ವಿಶ್ವನಕ್ಷೇತ್ರ ಮತ್ತು ಸಮಂತಪಂಚಕ ಗಳೆಂಬ ಹೆಸರೂ ಉಂಟು. ಕ್ಷತ್ರಿಯವಂಶವನ್ನು ನಾಶ ಮಾಡಲು ಹೊರಟ ಪರಶುರಾಮನು ಕ್ಷತ್ರಿಯರ ರಕ್ತದಿಂದ ಐದು ಮಡುಗಳನ್ನು ತುಂಬಿದುದರಿಂದ "ಸಮಂತ ಪಂಚಕ" ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಈ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಯುದ್ಧಮಾಡಿ ಮಡಿದವರಿಗೆ ಪುಣ್ಯಲೋಕಪ್ರಾಪ್ತಿ ಯುಂಟೆಂದು ಐತಿಹ್ಯವುಂಟು. ಸ್ವಾಯಂಭುವಮನುವಿನ



ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಇದಕ್ಕೆ “ಬ್ರಹ್ಮಾವರ್ತ” ಎಂದು ಹೆಸರು. ಈಗ ಇದು ದೆಹಲಿಗೆ ಉತ್ತರದಲ್ಲಿರುವ “ಕರ್ನಾಲ್” ಜಿಲ್ಲೆಯಲ್ಲಿ ಒಂದು ರೇಲ್ವೆ ನಿಲ್ದಾಣವಾಗಿದೆ. 2. ಕೌರವ ಪಾಂಡವರು ಯುದ್ಧಮಾಡಿದ ಒಂದು ಭೂಪ್ರದೇಶ. “ಧರ್ಮಕ್ಷೇತ್ರ ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರ ಸಮವೇತಾ ಯುಯುತ್ಸವಃ | ಮಾಮಕಾಃ ಪಾಂಡ-ವಾಶ್ಚೈವ ಕಿಮಕುರ್ವಂತ ಸಂಜಯ” ಗೀತಾ ೧-೧ |

ಕುರುಜಾಙ್ಗಲ ಕುರುಜಾಂಗಲ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಕುರುದೇಶ  
ಮತ್ತು ಜಾಂಗಲ ದೇಶ. ಕುರವಶ್ಚ ಜಾಙ್ಗಲಾಶ್ಚ । (ನಂ) 2.  
ಕುರುದೇಶ ಮತ್ತು ಜಾಂಗಲ ದೇಶ. ಕುರವಶ್ಚ ಜಙ್ಗಲಿ  
ಚ ತेषಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ । “ವಿಶಿಷ್ಟಲಿಙ್ಗೋ ನದೀದೇಶೋಽಗ್ರಾಮಾಃ”  
(ಪಾಂ ಸುಂ ೨-೪-೭) ಇತಿ ಏಕವದ್ಭಾವಃ । 3. ಕುರು  
ಕ್ಷೇತ್ರ. ಕುರುಪು ಜಾಙ್ಗಲಮ್ । “ತಸ್ಯ ನಾಮ್ನಾಽಭಿವಿಕ್ಷ್ಯಾತಂ  
ಪೃಥಿವ್ಯಾಂ ಕುರುಜಾಙ್ಗಲಮ್ । ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರಂ ಸ ತಪಸಾ ಪುಷ್ಯಂ ಚಕ್ರಂ  
ಮಹಾತಪಾಃ” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೦೧-೩೮ ।

ಕುರುಷ್ಠ ಕುರುಂಟಿ (ಪುಂ) ಹಳದಿ ಗೋರಂಟಿ ಗಿಡ. ಕುತ್ಸಿತಂ  
 ಣ್ಣತಿ - ಣ್ಣತಿ (ಸ್ತೇಯೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।

ಕುರುಷ್ಠಿ ಕುರುಂಟೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರದ ಬೀಜ. ಕುರುಷ್ಠ  
 “ಙೀಘ್” (೪-೧-೪೧) । “ಕುರುಷ್ಠಿ ದಾರುಪುತ್ರಾಂ ಚ ಕುರುಷ್ಠೋ  
 ಜ್ಞಿಷ್ಠಿಕಾಂತರೇ” ವಿಶ್ವಂ ।

ಕುರತ ಕುರುತ (ಪುಂ) ಬಿವಿರಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಗೆರಸಿ.  
ಕುರ (ಶಬ್ದ) "ಉತಕ್" ಬಾಹ್ಯಂ ।

ಕುರುಪಾಂಡವ ಕುರುಪಾಂಡವ(ಪುಂ ಡ್ವಿವಂ) ಕೌರವರು ಮತ್ತು ಪಾಂಡವರು.

ಕೃಷ್ಣಾಕ್ಷರ ಕುರುಪುಂಗವ (೪ಂ) ಕುರುಶ್ರೇಷ್ಠ, ಕುರು  
ವಂಶದಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯನಾದವನು. ಕೃಷ್ಣ ಪುಷ್ಪವ: |

ಕುರಬಿಲ್ವ ಕುರುಬಿಲ್ವ (ಫುಂ) ಪದ್ಮರಾಗ, ಕೆಂಪು.

ಕುರಬಿತ್ತ ಕುರುಚಿತ್ತ (ಪುಂ) ಜಿನ್ನದ ಒಂದು ಪಲದ ತೂಕ.  
ಕುರುಬಿತ್ತ:।

ಕುರರಾಜ್ ಕುರುರಾಜ್, -ರಾಜ -ರಾಜ (ಪುಂ) 1. ಕುರು  
ದೇಶದ ದೂರ, ದುರ್ಯೋಧನ. 2. ಯುಧಿಷ್ಠಿರ,  
ಧರ್ಮರಾಜ. ಕುರುಣಾ ರಾತ್ ರಾಜಾ ವಾ - ರಾಜಾ "ಠಕ್"  
(೪-೪-೯೧)। "ತ್ವಯಿ ಭಕ್ತಿಮತಾ ನ ಸತ್ಕೃತಃ ಕುರರಾಜಾ  
ಗುರುರೇವ ಚೇದಿಪಃ। ಪ್ರಿಯಮಾಸಮೃಗಾಘಿಪೋಜ್ಜಿತಃ ಕಿಮವಶಃ  
ಕರಿಕುಂಭಜೋ ಮಣಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೬-೪೪। "ಕುರರಾಜ-  
ನಿರ್ದಯನಿಪಿಡನಾಭಯಾನ್ಮುಖಮಧ್ಯರೋಹಿ ಮುರವಿದ್ವಿಷಃ ಶ್ರಿಯಾ"  
ಮಾಘಂ ೧೩-೧೧।

**ಕುಸಲ ಕುರುಲ (ಪುಂ) ವಣೆಯ ಮೇಲಿನ ಜೋಡಣೆಯಂತಲ,**  
**ಮುಂಗುರುಳು. ಕು ಇಳಲಡತಿ-ಲಡ (ವಿಲಾಸೆ) "ಅಚ್"**

(३-१-१३४)। पृषो०। "स तु भाले भ्रमरकः कुल्लो  
भ्रमरालकः" अभि० चि०।

ಕುಸುಕ ಕುರುವಕ (ಪುಂ) 1. ಹಳದಿ ಗೋರಂಟಿ ಗಿಡ.  
2. ಕೆಂಪು ಗೋರಂಟಿ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 3. ದರಿದ್ರ,  
ಬಡವ. "ನಿ:ಸ್ವೇ ಕುಸುಕ: ಸೋಣಾಮಲಾನಜ್ಜಿಷ್ಟಿಪ್ರಭೇದಯೋ:"  
ಮೇದಿಂ ।

ಕುರುವಿನ್ದ ಕುರುವಿಂದ (ಪುಂ) 1. ಭದ್ರಮುಸ್ತ, ಕೊನ್ನಾಡಿ  
ಗಡ್ಡ. ಕುರುನ್ ವಿಂದತಿ - ವಿದಲ್ (ಲಾಭ) "ಶ:"  
(3-1-138)। ಮುಮ್ (7-1-49)। 2. ಪದ್ಮರಾಗ.  
"ಬಹಲಾನುರಾಗಕುರುವಿನ್ದದಲಪ್ರತಿಬದ್ಧಮಧ್ಯಮಿವ ದಿವಲಯಮ್"  
ಮಾಘಂ 9-೮। 3. ಮುಕುರ, ಕನ್ನಡಿ. 4. ಮಾಷ,  
ಉದ್ದು. 5. ಅಲಸಂದ, ಕಾರಾಮಣಿ. 6. ಚಂದನ, ಗಂಧ,  
ಮೈಗೆ ಪೂಸುವ ಒಂದು ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ. "ಕುರುವಿನ್ದ:  
ಪದ್ಮರಾಗೇ ಮುಕುರವ್ರಿಹಿಮೇದಯೋಃ। ಕುಲಮಾಘೇ ಹಿಡ್ಗುಲೇ ಮುಸ್ತೆ"  
ಹೇಮಂ।

ಕುರೂಪ ಕುರೂಪ (ನಂ) 1. ಅಂದವಿಲ್ಲದ ರೂಪ, ವಿಕಾರ ರೂಪ, ವಿಕಾರವಾದ ಆಕಾರ. ಕುತ್ಸಿತಂ ರೂಪಮ್. (ವಿಂ)  
2. ವಿಕಾರವಾದ ರೂಪವುಳ್ಳ, ಕುತ್ಸಿತಂ ರೂಪಂ ಯಸ್ಯ।  
“ಸುರೂಪಂ ವಾ ಕುರೂಪಂ ವಾ ಪುಮಾನಿತ್ಯೇವ ಭುಜ್ಜತೇ” ಮನುಂ ೧-೧೪।

कुकुट ऊऊFड (पुं०) ऊऊड, ऊऊ. कुरिति शब्दं  
कुटति—कुट (कौटिल्ये) “कः” (३-१-१३५)। स्त्रियाम्  
“ङीप्” (४-१-६३)। -टो-ङ्.

कुर्कुर कूर्कुर (पुं०) कर्कुर, कर्कुरः कुरिति अव्यक्त-  
शब्द कुरति—कुर “कः” (३-१-१३५)। “उपकर्तुमपि  
प्राप्तं निःस्वं मन्वन्ति कुर्कुरम्” पञ्चतन्त्रम्।

कुर्व-क्रीडायाम् (भ्वा० आत्म० अक० से०) । कूर्दते ।  
 चुकूर्दे । कूर्दिता । कूर्दिष्यते । कूर्दताम् । अकूर्दत ।  
 अउ०दि. अक०वा०, तौ, कारु.

भावे :—कूर्चते । कूर्चताम् । अकूर्चत १३०. ८.

णिचिः—कूर्दयति, -ते । कूर्दयां चकार, -चक्रे,  
-बभूव, -आस । कूर्दयिता । कूर्दयिष्यति, -ते । १७८७. ८.

कृत्सुः—कूर्दितव्यः । कूर्दनीयः । कूर्धः । कूर्दितः ।  
 कूर्दितवान्, कूर्दितवती । कूर्दमानः । कूर्दितम् । कूर्दनम् ।  
 कूर्दित्वा । १३७५८.

कुर्वन्तु कर्णम् (पुं०) 1. जम्भार, मण्डप. इ. कृन्  
(करणे) "शतृ" (३-२-१२४)। (वि०) 2. मण्डप  
त्तरुव. "कुर्वन्तमित्यतिभरेण नगानवाचः पुष्पविराम  
मलिनां च नगानवाचः" भाष० ६-७९, १०-३०।



3. ಸೇವಕ. ಆಳು. 4. ಕೆಲಸಗಾರ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬)। -ತೀ-೩೬. "ಮಧ್ಯಸಮುದ್ರಂ ಕುಕುಮಃ ಪಿಶಾಂಗೀರ್ಯಾ ಕುರ್ವತೀ ಕಾಂಚನವಪ್ರಭಾಸಾ" ಮಾಘಂ ೩-೩೩।

**ಕುರ್ವದ್ರಪ ಕುರ್ವದ್ರಪ (ನಂ)** (ಭೌದ್ಧ ಮತದಲ್ಲಿ) ಫಲೋತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಅವ್ಯವಹಿತಪೂರ್ವದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಕಾರಣ. ನೀರು ಗೊಬ್ಬರ ಇತ್ಯಾದಿಗಳಿಂದ ಬೀಜದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಆತಿಶಯವುಂಟಾಗಿ ಉತ್ತರಕ್ಷಣದಲ್ಲಿ ಅಂಕುರವು ಹುಟ್ಟುವುದು. ಇದರಿಂದ ಅಂಕುರವು ಹುಟ್ಟುವ ಮೊದಲು ಈ ಆತಿಶಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಬೀಜವು ಈ ಮತದಲ್ಲಿ "ಕುರ್ವದ್ರಪ" ವಾಗುವುದು.

**ಕುರ್ವಾಣ ಕುರ್ವಾಣ (ವಿಂ)** 1. ಸೇವಕ, ಆಳು. 2. ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಡು ಕು (ಕರಣ) "ಶಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಕುರ್ವಾಣಾನಾಂ ಸಾಂಪರಾಯಾಂತರಾಯಾಂ ಮೂಢಾಣಾಂ ಮೃತ್ಯುನಾ ಮಾರ್ಜನಾಯ" ಮಾಘಂ ೧೮-೮।

**ಕುಲ-ಸಂಸ್ಥಾನೇ ಬನ್ಧುಃ ಚ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೆಡ್)**। ಕೋಲತಿ। ಚುಕೋಲ। ಕೋಲತು। ಅಕೋಲಿತ್। 1. ಒಟ್ಟು ಗೂಡಿಸು. 2. ಸಂಬಂಧ ಬೆಳೆಸು.

**ಕುಲ ಕುಲ (ನಂ)** 1. ವಂಶ, ಬೀಜ. ಕೋಲತಿ - ಕುಲ (ಸಂಸ್ಥಾನೇ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫)। "ಯ: ಕುಲೇಜನಿ ಜಗನ್ಮುಕುತೇ ವ: ಪ್ರಾರ್ಥಕೇಪ್ಸಿತಮಪೂರಿ ನ ಯೇನ" ನೈಷಂ ೫-೧೧೯। ರಘುಂ ೩-೧। 2. ಸಮಾನ ಜಾತಿಯ ಪಶುಗಳ ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. "ಸೇನಾಗಜೇನ ಮಥಿತಸ್ಯ ನಿಜಪ್ರಸುನೈರ್ಮಲೇ ಯಥಾಗತ-ಮಗಾಮಿ ಕುಲೇರಲಿನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೫-೪೩। ಕೋಶಗಳಲ್ಲಿ "ಕುಲ" ಪದಕ್ಕೆ ತಿರ್ಯಕ್ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಗುಂಪು ಎಂಬ ಅರ್ಥವಿದ್ದರೂ ಮನುಷ್ಯರ ಗುಂಪು ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲೂ ಮಹಾಕವಿಯ ಪ್ರಯೋಗವಿದೆ. "ಏತಂ ನಲಂ ತಂ ದಮಯಂತಿ ಪಶಯ ತ್ಯಜಾತಿಮಿತ್ಯಾಲಿಕುಲಪ್ರಬೋಧಾನ್" ನೈಷಂ ೬-೬೦। 3. ಗೃಹ, ಮನೆ. 4. ತನು, ಶರೀರ, ಮೈ. 5. ಜನಪದ, ದೇಶ. 6. ಎರಡು ನೇಗಿಲುಗಳಿಂದ ಉಳಲ್ಪಡುವಷ್ಟು ಜಮೀನು; ಅದು ಎತ್ತುಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟಿ ಉಳುವ ನೇಗಿಲು ಒಂದು ಹಲ. ಅಂತಹ ಎರಡು ಹಲಗಳಿಂದ ಉಳಬಹುದಾದ ಭೂಮಿಯು ಕುಲವು. "ದಶೀ ಕುಲಂ ತು ಭುಜ್ಜೀತ ವಿಶೀ ಪಚ್ಚ ಕುಲಾನಿ ಚ। ಗ್ರಾಮಂ ಗ್ರಾಮಶತಾಘ್ಯಕ್ಷ: ಸಹಸ್ರಾಧಿ-ಪತಿ: ಪರಮ್" ಮನುಂ ೭-೧೧೯। 7. ಮುಖಗಳಿಗೆ ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ, ಮುಷಿತರ್ಪಣ. "ಋಷಿಣಾಂ ತಪಃಂ ಯತ್ತಕೋಲಕುಲಂ ಕುಲಂ ಚ ತತ್" ವೈಜಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲೀ-೦೬. 8. ಹೆಗ್ಗುಳ್ಳದ ಗಿಡ. "ಕುಲ-ಕಾರ್ಯಾಣಿ ಕುಲೀ" ಮೇದಿಂ।

**ಕುಲಕ ಕುಲಕ (ಪುಂ)** 1. ಕಾಗೆತೂಬರೆ ಗಿಡ. ಕುಲಸ್ಯ ಗೃಹಸ್ಯ ಪ್ರತಿಕ್ರೂತಿರೀವ "ಕನ್" (೫-೩-೧೬)। "ಕಾಕೇಂದು: ಕುಲಕ: ಕಾಕಪೀಲಕ: ಕಾಕತಿದ್ಧುಕೇ" ಅಮಂ। 2. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ. "ಕುಲಕೋ ನಾಕಕಾಕೇಂದ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 3. ವಲ್ಮೀಕಿ, ಹುತ್. 4. ಒಂದು ವಂಶದ ಯಜಮಾನ. 5. ಒಂದು ಗುಂಪಿನ ಯಜಮಾನ. (ನಂ) 6. ನಾಲಿಗೆಯ ಮೇಲಿನ ಕೊಳೆ. "ಕುಲಕಂ ರಸನಾಮಲಮ್" ಹಾರಾಂ। 7. ಒಂದೇ ಕರ್ತೃ ಮತ್ತು ಕ್ರಿಯಾಪದಗಳ ಸಂಬಂಧವುಳ್ಳ (ಏಕಾನ್ವಯವುಳ್ಳ) ನಾಲ್ಕು ಶ್ಲೋಕಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚು ಶ್ಲೋಕಗಳ ಸಮುದಾಯ. "ದ್ವಾಮ್ಯಾಂ ಯುಗ್ಮಮಿತಿ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ತ್ರಿಮಿ: ಶ್ಲೋಕೈವಿಶೇಷಕಮ್। ಕಾಲಾಪಕಂ ಚತುರ್ಮಿ: ಸ್ಯಾತ್ ತದ್ಧರ್ವ ಕುಲಕಂ ಸತಮ್"। 8. ಪಡವಲ ಗಿಡ. ಕುಲ (ಸಂಸ್ಥಾನೇ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫)। "ಕುಲಕಂ ಪಚ್ಚಾದಿಶ್ಲೋಕಸಮವಾಯೇ ಪಟೋಲಕೇ। ಕುಲಕ: ಕುಲಪ್ರಧಾನೇ ವಲ್ಮೀಕೇ ಕಾಕತಿದ್ಧುಕೇ"।

**ಕುಲಕುಲಕ ಕುಲಕಂಟಕ (ವಿಂ)** ವಂಶಕ್ಕೆ ಮುಳ್ಳಿನಂತಿರುವವನು, ಕುಲಕ್ಕೆ ಅಪಕೀರ್ತಿ ತರುವ ನೀಚಮನುಷ್ಯ. ಕುಲಕುಲಕ ಕುಲಕ ಇವ।

**ಕುಲಕನ್ಯಕಾ ಕುಲಕನ್ಯಕಾ, -ಕನ್ಯಾ -ಕನ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸತ್ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಕನ್ಯೆ, ಒಳ್ಳೆಯ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಹುಡುಗಿ. "ಗೃಹೇ ಗೃಹೇ ಪುರುಷಾ: ಕುಲಕನ್ಯಕಾಃ ತದ್ವಹಂತಿ। ನ ಚ ಕೋಽಪಿ ಲಜ್ಜಾಪ್ರಸಾಧನಮನಪರಾಧಮುಘಸ್ವಭಾವಂ ಕುಲಕುಮಾರೀಜನಂ ಪ್ರಭವಾಮಿತಿ ವಾಗನಲೇನ ಪ್ರಜ್ವಲಯತಿ" ಮಾಲತೀಂ ೭।

**ಕುಲಕಲಚ್ಚ ಕುಲಕಲಂಕ (ವಿಂ)** ವಂಶಕ್ಕೆ ಕೆಟ್ಟ ಹೆಸರು ತರುವವನು, ಮನೆತನಕ್ಕೆ ಅಪಕೀರ್ತಿ ತರುವವನು. ಕುಲಸ್ಯ ಕಲಚ್ಚ ಇವ।

**ಕುಲಕುಣಿ ಕುಲಕುಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮೇಶ್ವರಿ, ಸೂಳೆ.

**ಕುಲಕ್ಷಯ ಕುಲಕ್ಷಯ (ಪುಂ)** ವಂಶಕ್ಷಯ, ವಂಶವು ನಾಶವಾಗುವುದು, ವಂಶವು ಅಳಿದುಹೋಗುವುದು. ಕುಲಸ್ಯ ಕ್ಷಯ:। "ಕುಲಕ್ಷಯೇ ಪ್ರಣಶ್ಯಂತಿ ಕುಲವರ್ಮಾ: ಸನಾತನಾ:" ಗೀತಾ ೧-೪೦।

**ಕುಲಗುರು ಕುಲಗುರು (ಪುಂ)** ವಂಶಪರಂಪರೆಯಾಗಿ ಬಂದ ಆಚಾರ್ಯರು. ಕುಲಸ್ಯ ಗುರು:।

**ಕುಲಘನ ಕುಲಘನ (ವಿಂ)** ವಂಶವನ್ನು ಹಾಳುಮಾಡುವವನು. ಕುಲಂ ಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:) "ಕ:" (೩-೨-೫)। "ಸ್ತ್ರೀಷು ದುಷ್ಠಾಸು ವಾಣ್ಯೇ ಜಾಯತೇ ವರ್ಣಸಂಕ್ಷರ:। ಸಂಕ್ಷರೋ ನರಕಾಯೇವ ಕುಲಘನಾನಾಂ ಕುಲಸ್ಯ ಚ" ಗೀತಾ।

**ಕುಲಜ ಕುಲಜ (ವಿಂ)** 1. ಕುಲದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ, ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಕುಲೇ ವಂಶೇ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಜ:"



(೩-೨-೯೭)। “ಪತಿವರಾಢಾ: ಕುಲಜಂ ವರಸ್ಯ ವಾ ಯಃ ಕಮಪ್ಯಾಚರಿತಾತಿಥಿ ಯದಿ” ನೆಫಂ ೯-೮೧। 2. ಸತ್ಕುಲದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ, ಒಳ್ಳೆಯ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. “ಕುಲಜೇ ವೃತ್ತಸಂಪನ್ನೇ ಧರ್ಮಜ್ಞೇ ಸತ್ಯವಾದಿನಿ। ಮಹಾಪಕ್ಷೇ ಧನಿನ್ಯಾರ್ಥೇ ನಿಕ್ಷೇಪಂ ನಿಕ್ಷಿಪೇದ್ಬುಧಃ” ಮನುಂ ೮-೧೭೯। ಸ್ತ್ರಿಯಾಢ್ -ಜಾ -ಜಾ. “ಕುಲಾಭಿಮಾನಿ ಕುಲಜಾಂ ನರಾಧಿಪಃ” ಕಿರಾಂ ೧-೩೧।

**ಕುಲಜನ ಕುಲಜನ** (ಪುಂ) ಸತ್ಕುಲದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು, ಒಳ್ಳೆಯ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು.

**ಕುಲಟಾ ಕುಲಟಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನೆಮನೆಗೂ ತಿರುಗಾಡು ತಿರುಗುವ ಹೆಂಗಸು, ಅಸಭ್ಯ ಹೆಂಗಸು, ಸ್ವೇರಿಣಿ, ವ್ಯಭಿ ಚಾರಿಣಿ. ಅಟತಿ-ಅಟ (ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। ಕುಲಸ್ಯ ಅಟಾ। ಶಕಂ। “ಮೂಢ ದುರ್ಯೋಧನ, ಕುಲಟಾವಿಪ್ರಲಮ್ಯ-ಮಾನಮಾತ್ಮಾನಂ ಬಹುಮನ್ಯಮಾನಃ ಅಧುನಾ ಕಿಂ ವಕ್ಷ್ಯಸಿ” ವೇಣೀಂ ೨।

**ಕುಲತನ್ತು ಕುಲತಂತು** (ಪುಂ) ಒಂದು ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ಇರುವವರಲ್ಲಿ ಕೊನೆಯ ಪ್ರಜೆ, ತಂತುವಿನಂತೆ ಮುಂದಕ್ಕೆ ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ ಸಂತತಿಯು ಬೆಳೆಯಲು ಕಾರಣವಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ಕುಲಸ್ಯ ತನ್ತುರಿವ।

**ಕುಲತಿಥಿ ಕುಲತಿಥಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿದಿಗೆ, ಪಪ್ಪಿ ಮತ್ತು ದಶಮಿ ಹೊರತಾದ ಸಮತಿಥಿಗಳು, ಚೌತಿ, ಅಷ್ಟಮಿ, ದ್ವಾದಶಿ ಮತ್ತು ಚತುರ್ದಶೀ ತಿಥಿಗಳು. “ದ್ವಿತೀಯಾ ದಶಮಿ ಪಠ್ಣಿ ಕುಲಾಕುಲಮುದಾಹುತಮ್। ವಿಷಮಾಶ್ವಾಕುಲಾಃ ಸರ್ವಾಃ ಶೇಷಾಶ್ಚ ತಿಥಯಃ ಕುಲಾಃ” ತನ್ತ್ರಸಾಂ।

**ಕುಲತಲಕ ಕುಲತಲಕ** (ಪುಂ) ವಂಶಕ್ಕೆ ತಲಕದಂತಿರುವವನು, ವಂಶಕ್ಕೆ ಅಲಂಕಾರಪ್ರಾಯನಾದವನು. ಕುಲಸ್ಯ ತಲಕಮಿವ।

**ಕುಲತಥ ಕುಲತಥ** (ಪುಂ) 1. ಹುರುಳಿ ಗಿಡ. “ತಾಮ್ರವೃತ್ತಃ ಕುಲತಥಃ ಸ್ಯಾತ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। (ನಂ) 2. ಹುರುಳಿ.

**ಕುಲದೀಪ ಕುಲದೀಪ -ಪ್ರದೀಪ -ಪ್ರದೀಪ** (ಪುಂ) ವಂಶವನ್ನು ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುವವನು, ವಂಶಕ್ಕೆ ಕೀರ್ತಿಗಾರವೆಗಳನ್ನು ತರುವವನು. ಕುಲಸ್ಯ ದೀಪ ಇವ ಪ್ರದೀಪ ಇವ ವಾ। “ಜಾತಃ ಕುಲೇ ತಸ್ಯ ಕಿಲೋರುಕೀರ್ತಿಃ ಕುಲಪ್ರದೀಪೋ ನೃಪತಿರಿದಿಲೀಪಃ” ರಘುಂ ೬-೭೪।

**ಕುಲದೇವತಾ ಕುಲದೇವತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ವಂಶದಲ್ಲಿ ಆರಾಧಿಸಲ್ಪಡುವ ದೇವತೆ, ವಂಶಪರಂಪರೆಯಾಗಿ ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ ದೇವತೆ. ಕುಲಸ್ಯ ದೇವತಾ। “ತಾಮರ್ಚಿತಾಮ್ಯಃ ಕುಲದೇವತಾಮ್ಯಃ ಕುಲಪ್ರತಿಷ್ಠಾಂ ಪ್ರಣಮಯ್ಯ ಮಾತಾ” ಕುಮಾಂ ೭-೨೭।

**ಕುಲದ್ರುಮ ಕುಲದ್ರುಮ** (ಪುಂ) ಚಳ್ಳೆ ಹೊಂಗೆ ಬಿಲ್ಲು ಅರಳಿ ಕದಂಬ ಬೇವು ಅಲ ಅತ್ತಿ ನೆಲ್ಲಿ ಮತ್ತು ಹುಣಿಸೆ ಮರಗಳು. “ಶ್ಲೇಷ್ಮಾತಕಃ ಕರಂಜಶ್ಚ ಬಿಲ್ವಾಶ್ವತ್ಥಕದಂಬಕಾಃ। ನಿಂಬೋ ವಟೋದುಂಬರೌ ಚ ಭಾತ್ರೀ ಚಿಷ್ತಾ ದಶ ಸ್ಮೃತಾಃ”।

**ಕುಲಧರ್ಮ ಕುಲಧರ್ಮ** (ಪುಂ) ಕುಲಾಚಾರ, ಮನೆತನದಲ್ಲಿ ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ಧರ್ಮ. “ಉತ್ತಮಕುಲಧರ್ಮಿಣಾಂ ಮನುಷ್ಯಾಣಾಂ ಜನಾರ್ದನಃ। ನರಕೇ ನಿಯತಂ ವಾಸೋ ಭವತೀತ್ಯನುಶುಶ್ರುಮ” ಗೀತಾ ೧-೪೪।

**ಕುಲಧಾರಕ ಕುಲಧಾರಕ** (ಪುಂ) ಮಗ, ವಂಶವನ್ನು ಮುಂದೆ ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ಬೆಳೆಸುವವನು, ವಂಶವನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನು. ಕುಲಂ ಧಾರಯತಿ - ಧೃನ್ (ಧಾರಣೆ) + ಣಿಕ್ “ಞ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩)। “ಪುತ್ರೋ ದ್ವಿತೀಯಃ ಕುಲಧಾರಕಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಕುಲಧುರ್ಯ ಕುಲಧುರ್ಯ** (ವಿಂ) ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯನಾದವನು, ಮನೆಯ ಯಜಮಾನ, ಸಂಸಾರದ ಭಾರವನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವವನು, ಪ್ರಾಯದ ಮಗ. ಧುರಾಂ ಬಹತಿ “ಯತ್” (೪-೪-೭೭)। ಕುಲಸ್ಯ ಧುರ್ಯಃ। “ತದ್ಬಹಿತಕುಡುಂಬಃ ಶಾಂತಿಮಾರ್ಗೋತ್ಸುಕೋಽಭೂತ್ ನ ಹಿ ಸತಿ ಕುಲಧುರ್ಯೇ ಸೂರ್ಯವಂಶಾ ಗೃಹಾಯ” ರಘುಂ ೭-೭೧।

**ಕುಲನಕ್ಷತ್ರ ಕುಲನಕ್ಷತ್ರ** (ನಂ) ಆದ್ರಾಸಕ್ಷತ್ರ ಹೊರತಾದ ಸಮನಕ್ಷತ್ರಗಳು, ಭರಣಿ, ರೋಹಿಣಿ, ಪುಷ್ಯ, ಮಘ, ಉತ್ತರಾಷ್ಣಾ, ಚಿತ್ತ, ಮುಂತಾದ ಸಮಸಂಖ್ಯಾಕ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು. “ವಾರುಣಾರ್ಥಾಭಿಜಿನ್ಮೂಲಂ ಕುಲಾಕುಲಮುದಾಹುತಮ್। ಕುಲಾನಿ ಸಮಧಿಷ್ಣಯಾನಿ ಶೇಷಾಣಿ ಚಾಕುಲಾನಿ ವೈ” ತನ್ತ್ರಸಾಂ।

**ಕುಲನಾರೀ ಕುಲನಾರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸತ್ಕುಲದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಹೆಂಗಸು, ಒಳ್ಳೆಯ ಮನೆತನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಹೆಂಗಸು.

**ಕುಲನಾಶ ಕುಲನಾಶ** (ಪುಂ) 1. ವಂಶದ ನಾಶ, ವಂಶವು ಅಳಿದುಹೋಗುವುದು. ಕುಲಸ್ಯ ನಾಶಃ। ಮನೆಯ ಯಜಮಾನನ ಪೋಷ್ಯವರ್ಗಕ್ಕೆ ಸೇರಿದ ಹೆಂಡತಿ ಮಗಳು ತಂಗಿ ಸೊಸೆ ಮೊದಲಾದ ಹೆಂಗಸರನ್ನು ಖೇಡಿಸಿ ಅವರು ಕಣ್ಣೀರು ಬಿಡುವಂತಾದರೆ ಅಂತಹ ಮನೆಯು ಬೇಗ ನಾಶವಾಗುವುದು. ಮನೆಯ ಯಜಮಾನನು ಇವರನ್ನು ಸಂತೋಷದಿಂದಿರಿಸದಿದ್ದರೆ ಇವರ ಶಾಪಕ್ಕೊಳಗಾಗಿ ಆ ಮನೆಯು ಯಾವ ವಿಧದಲ್ಲೂ ಏಳಿಗೆಗೆ ಬರಲಾರದು. ಇವರೆಲ್ಲರೂ ಸಂತುಷ್ಟರಾಗಿ ಮನೆಯನ್ನು ಹರಸಿದರೆ ಅದು ಎಲ್ಲಾ ವಿಧದಲ್ಲೂ ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವುದು. “ಶೋಚಂತಿ ಜಾಮಯೋ ಯತ್ರ ವಿನಶ್ಯತ್ಯಾಶು ತತ್ಕುಲಮ್। ನ ಶೋಚಂತಿ ತು ಯತ್ರೈತಾ ವರ್ವತೇ ತದ್ವಿ ಸರ್ವದಾ। ಜಾಮಯೋ ಯಾನಿ ಗೇಹಾನಿ ಶಪಂತ್ಯಪ್ರತಿಪೂಜಿತಾಃ। ತಾನಿ ಕೃತ್ಯಾಹತಾನಿವ ವಿನಶ್ಯಂತಿ



ಸಮಂತತ: " ಮನುಂ ೩-೪೭,೮. ವೇದವಿಹಿತವಾದ ಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನವೂ ಪರಮಾತ್ಮನ ಪೂಜೆಯೂ ಶುದ್ಧವಾದ ನಡತೆಯೂ ಇರುವವರೆಗೂ ವಂಶವು ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದು ವುದು. "ಯಾವಚ್ಚ ವೇದಧರ್ಮಾಃ ಸ್ಯುಃ ಯಾವತ್ ಸ್ಯಾಚ್ಚಕ್ಷರಾರ್ಚನಮ್ | ಯಾವತ್ ಸ್ಯಾತ್ ಶುಚಿ ಕೃತ್ಯಂ ಚ ತಾವನ್ನ ಕುಲನಾಶನಮ್" | 2. ಉಷ್ಣ, ಒಂಟೆ. ಕುಲಂ ಭೂಗನಂ ನಾಶನಾತಿ - ನ + ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಅಶ್" (೩-೧-೧೩೪) | ಒಂಟೆಯ ಕತ್ತು ಎತ್ತರವಾಗಿದ್ದು ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿರುವ ಪದಾರ್ಥಗಳನ್ನು ತಿನ್ನಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ತೀಷ್" (೪-೧-೬೩) | -ನಾಶನಿ -ನಾಶನೀ. (ನಂ) 3. ವಂಶವು ಅಳಿದುಹೋಗುವಿಕೆ. ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | (ವಿಂ) 4. ವಂಶವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ. ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ನಾಶನಿ -ನಾಶನೀ. 5. ಯಾದವವಂಶವನ್ನು ನಾಶ ಪಡಿಸಿದ ಮುಸಲ (ಒನಕೆ). [ಒಂದು ದಿನ ಕೆಲವು ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಸಂದರ್ಶನಕ್ಕಾಗಿ ದ್ವಾರಕೆಗೆ ಬಂದಿದ್ದಾಗ ಕೆಲವು ಯಾದವರು ಸಾಂಬಸಿಗೆ ಹೆಂಗಸಿನ ವೇಷ ಹಾಕಿ ಅವಳು ಎಂತಹ ಮಗುವನ್ನು ಹೆರುವಳೆಂದು ಕೇಳಲಾಗಿ ಇದರಿಂದ ಕೋಪಗೊಂಡ ಆ ಋಷಿಗಳು "ವಂಶ ವನ್ನು ನಾಶಗೊಳಿಸುವ ಒನಕೆಯನ್ನು ಹೆರುವಳು" ಎಂದು ಹೇಳಿದರು. ಅದರಂತೆ ಸಾಂಬಸು ಉಕ್ಕಿನ ಒನಕೆಯೊಂದನ್ನು ಹೆತ್ತನು. ಇದರಿಂದ ಹೆದರಿದ ಯಾದವರು ಆ ಒನಕೆಯನ್ನು ಪುಡಿಮಾಡಿ ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಎಸೆದರು. ಜೊತೆಗೆ ಗಾಂಧಾರಿಯ ಶಾಪವೂ ಒಂದಿದ್ದುದರಿಂದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಆಜ್ಞೆಯಂತೆ ತೀರ್ಥಯಾತ್ರೆಗೆ ಹೊರಟು ಪ್ರಭಾಸಕ್ಷೇತ್ರವನ್ನು ಸೇರಿದರು. ಅಲ್ಲಿ ಸಾತ್ಯಕಿ ಕೃತವರ್ಮರಿಗೆ ಪಾಗ್ವಾದ ನಡೆದು ಸಾತ್ಯಕಿಯು ಕೃತವರ್ಮನ ತಲೆಯನ್ನು ಕಡಿದುಹಾಕಿದನು. ಇದರಿಂದ ಕೋಪಗೊಂಡ ಉಭಯಪಂಗಡದವರೂ, ತಾವು ಹಿಂದೆ ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಬಿಸಾಡಿದ್ದ ಮುಸಲದ ಪುಡಿಯು ಶರಕಾಂಡ ಗಳಾಗಿ ಬೆಳೆದದ್ದರಿಂದ ಅವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಪರಸ್ಪರ ಹೊಡೆದಾಡಿ ಹತರಾದರು. ಇದರಿಂದ ಯಾದವ ಕುಲವೇ ಅಳಿದುಹೋಯಿತು.] ಭಾಂ ಮೌಸಲಂ |

**ಕುಲಪತಿ ಕುಲಪತಿ** (ಕುಂ) 1. ಒಂದು ಮನೆಯ ಯಜಮಾನ. 2. ಒಂದು ವಂಶದ ಯಜಮಾನ. ಕುಲಸ್ಯ ಪತಿಃ | 3. ಹತ್ತು ಸಹಸ್ರ ಮಂದಿ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳನ್ನು ಅಶನ ವಸನಗಳಿಂದ ಪೋಷಿಸಿ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿಸುವ ಮುನಿ. "ಮುನೀನಾಂ ದಶಸಾಹಸ್ರಂ ಯೋಜ್ಞದಾನಾದಿಪೋಷಣಾತ್ | ಅಧ್ಯಾಪಯತಿ ವಿಪ್ರವಿರಸೌ ಕುಲಪತಿಃ ಸ್ಮೃತಃ" | ಇದೇ ಅರ್ಥ

ದಲ್ಲಿ ಈಗಿನ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯದ ಅಧ್ಯಕ್ಷರಲ್ಲಿ ಈ ಪದದ ಪ್ರಯೋಗವಿರುವುದು. ಹಿಂದಿನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ನಳಂದ ತಕ್ಷಶಿಲಾ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯಗಳು ಇಂತಹ ಕುಲಪತಿಗಳ ಆಡಳಿತಕ್ಕೊಳಪಟ್ಟಿದ್ದು ವೆಂದು ಚರಿತ್ರೆಯಿರುವುದು.

**ಕುಲಪರಂಪರಾ ಕುಲಪರಂಪರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಂಶಪರಂಪರೆ, ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವವರ ಶ್ರೇಣಿ, -ಪಜ್ಜಾ. ಒಂದೇ ಬಗೆಯ ವಸ್ತುಗಳ ಸಾಲು ಪರಂಪರೆಯೆನಿಸುವುದು. ಹಾಗೆಯೇ ಒಂದು ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಜನರೆಲ್ಲರೂ ಆ ವಂಶದ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿ ಸೇರುವರು.

**ಕುಲಪವತ ಕುಲಪವತ** (ಕುಂ) ಒಂದು ದ್ವೀಪದ ಒಂದು ಭೂಭಾಗದ ಮೇರೆಯನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಪರ್ವತಗಳು. "ಋಷಿಮಿ ಸವಿತುರ್ಮಗಿಂ ಭಿನಶಿ ಕುಲಪವತಾನ್" ಭೃಗುಂ ೬-೩೫ | ಒಂದೊಂದು ದ್ವೀಪದಲ್ಲೂ ಏಳೇಳು ಕುಲ ಪರ್ವತಗಳಿರುವುವು. "ಮಯಿದಾಕಾರಕಾಸ್ತೇಷಾಂ ತಥಾನೈ ವರ್ಷ- ಪವತಾಃ | ಸಪ್ತೈವ ತೇಷಾಂ ನಾಮಾನಿ ಶೃಣುಷ್ವ ಮುನಿಸತ್ತಮ" |

1. **ಜಂಬೂದ್ವೀಪದ ಭಾರತವರ್ಷದ ಸಪ್ತ ಕುಲಪವತಗಳು**: (1) ಮಹೇಂದ್ರ, (2) ಮಲಯ, (3) ಸಹ್ಯ, (4) ಶಕ್ತಿಮಾನ್, (5) ಶ್ವೇತ, (6) ವಿಂಧ್ಯ, ಮತ್ತು (7) ಪಾರಿಯಾತ್ರ |

2. **ಪ್ಲಕ್ಷದ್ವೀಪದ ಸಪ್ತಕುಲಪವತಗಳು**: (1) ಗೋಮೇದ, (2) ಚಂದ್ರ, (3) ನಾರದ, (4) ಕುಂದುಭಿ, (5) ಸೋಮಕ, (6) ಸುಮನಾ ಮತ್ತು (7) ವೆಂಭಾಜ |

3. **ಶಾಲ್ಮಲಿದ್ವೀಪದ ಸಪ್ತಕುಲಪವತ ಗಳು**: (1) ಕುಮುದ, (2) ಉತ್ತತ, (3) ವಲಾಹಕ, (4) ದ್ರೋಣ, (5) ಕಜ್ಜ, (6) ಮಹಿಷ ಮತ್ತು (7) ಕುಮುದಾನ್ |

4. **ಕುಶದ್ವೀಪದ ಸಪ್ತಕುಲಪವತಗಳು**: (1) ವಿಧುಮ, (2) ಹೇಮಶಿಲ, (3) ಶ್ರುತಿಮಾನ್, (4) ಪುಷ್ಪವಾನ್, (5) ಕುಶೇಶಯ, (6) ಹರಿಃ ಮತ್ತು (7) ಮನ್ಯರಾಚಲ |

5. **ಕ್ರೌಂಚದ್ವೀಪದ ಸಪ್ತಕುಲಪವತಗಳು**: (1) ಕೌಶ್ವ, (2) ವಾಮನ, (3) ಅರ್ಥಕಾರಕ, (4) ರತ್ನಶಿಲ, (5) ದಿವಾವೃತ್, (6) ಪುಂಡರೀಕವಾನ್ ಮತ್ತು (7) ಕುಂದುಭಿ |

6. **ಶಾಕದ್ವೀಪದ ಸಪ್ತಕುಲಪವತಗಳು**: (1) ಉದಯಗಿರಿ, (2) ಜಲಧಾರ, (3) ರೇವತಕ, (4) ಶ್ಯಾಮ, (5) ಅಮ್ಭೋಗಿರಿ, (6) ಅಮ್ಬಿಕೇಯ ಮತ್ತು (7) ಕೇಸರಿ |

7. **ಪುಷ್ಕರದ್ವೀಪದ ಕುಲಪವತ**: ಈ ದ್ವೀಪ ದಲ್ಲಿ ಮಾನಸೋತ್ತರ ಎಂಬ ಒಂದು ಪರ್ವತ ಮಾತ್ರ ವಿರುವುದು. "ಏಕಶ್ಚಾತ್ರ ಮಹಾಭಾಗ ಪ್ರಖ್ಯಾತೋ ವರ್ಷಪವತಃ | ಮಾನಸೋತ್ತರಸಂಜೋ ವೈ ಮಧ್ಯತೋ ವಲಯಾಕೃತಿಃ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ |



**ಕುಲಪಾಸನ ಕುಲಪಾಂಸನ** (ವಿಂ) ವಂಶಕ್ಕೆ ಕಳಂಕ ತರುವವನು, ವಂಶದ ಹೆಸರನ್ನು ಕೆಡಿಸುವವನು. ಕುಲಂ ಪಾಸಯತಿ - ಪಸಿ (ನಾಶನೆ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಕುಲಪಾಂಸುಲ ಕುಲಪಾಂಸುಲ** (ವಿಂ) ವಂಶದಲ್ಲಿ ಪಾಪ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವವನು. "ಆ: ದುರಾತ್ಮನ್ ಕುಕ್ಕುಲ-ಗಾಂಸುಲ, ಏವಮತಿಕಾಂತಮಯಾದಿ ತ್ವಯಿ ನಿಮಿತ್ತಮಾತ್ರೇಣ ಪಾಂಡವ-ಕ್ರೋಧೇನ ಭವಿತವ್ಯಮ್" ವೇಣೀಂ ೧ ।

**ಕುಲಪಾಲಕ ಕುಲಪಾಲಕ** (ವಿಂ) 1. ಕುಲವನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನು, ಮನೆಯ ಯೋಗಕ್ಷೇಮವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡಿ ಕೊಳ್ಳುವವನು. 2. ವಂಶದ ಹೆಸರನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನು, ವಂಶದ ಗೌರವವನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನು, ಸತ್ಪುತ್ರ. ಕುಲಂ ಪಾಲಯತಿ - ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಟಾಪ್" - ಪಾಲಿಕಾ - ಪಾಲಿಕಾ. ವಂಶಕ್ಕೆ ಗೌರವ ತರುವ ಸತ್ಪುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಹೆಂಗಸು. "ಕುಲಸ್ತ್ರೀ ಕುಲಪಾಲಿಕಾ" ಅಮಂ ।

**ಕುಲಪಾಲಿ(ಲಿ) ಕುಲಪಾಲಿ(ಲಿ)** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸತ್ಪುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಹೆಂಗಸು, ವಂಶದ ಖ್ಯಾತಿ ಗೌರವಗಳನ್ನು ಕಾಪಾಡುವ ಹೆಂಗಸು. ಕುಲಂ ಪಾಲಯತಿ - ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಃ" (೩ಂ ೪-೧೧೭) । ವಾ "ಙೀಪ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫) ।

**ಕುಲಪುತ್ರ ಕುಲಪುತ್ರ** (ಪುಂ) ಸತ್ಪುಲದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಸತ್ಪುತ್ರ, ಒಳ್ಳೆಯ ಮನೆತನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ಕುಲಕ್ಕೆ ಗೌರವ ತರುವ ಮಗ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ - ಪುತ್ರೀ - ಪುತ್ರೀ.

**ಕುಲಪುರುಷ ಕುಲಪುರುಷ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ವಂಶದ ದೊಡ್ಡ ಮನುಷ್ಯ. 2. ಒಂದು ವಂಶದ ಮೂಲಪುರುಷ.

**ಕುಲಪ್ರಸೂತ ಕುಲಪ್ರಸೂತ** (ವಿಂ) ಸತ್ಪುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಕುಲೇ ಸತ್ಕುಲೇ ಪ್ರಸೂತ: ।

**ಕುಲಭೂತ ಕುಲಭೂತ** (ಪುಂ) ಕುಲಪರ್ವತ. ["ಕುಲ-ಪರ್ವತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕುಲಭೂಷಣ ಕುಲಭೂಷಣ** (ವಿಂ) ವಂಶಕ್ಕೆ ಅಲಂಕಾರ ಪ್ರಾಯನಾದ. ಕುಲಂ ಭೂಷಯತಿ - ಭೂಷ (ಅಲಂಕಾರ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಕುಲಭೂತಾ ಕುಲಭೂತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗರ್ಭಿಣಿ ಹೆಂಗಸಿಗೆ ಬೇಕಾದುದನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಪೋಷಿಸುವುದು, ಬಸಿರು ಹೆಂಗಸಿನ ಬಯಕೆಯನ್ನು ಈಡೇರಿಸಿ ಉಪಚರಿಸುವುದು. ಕುಲ: ವಂಶಜನ: ಭೂತಾ ಭರಣಮ್ । 2. ಸೂಲಗಿತ್ತಿ, ಹೆರಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಸಹಾಯಕಳಾದ ಹೆಂಗಸು. 3. ವಂಶವನ್ನು ಕಾಪಾಡುವುದು. ಕುಲಸ್ಯ ಭೂತಾ ಭರಣಮ್ ।

**ಕುಲಮಿತ್ರ ಕುಲಮಿತ್ರ** (ನಂ) ವಂಶದ ಸುಹೃತ್ತು, ಮನೆತನಕ್ಕೆ ಬಂದ ಗೆಳೆಯ, ಒಂದು ಕುಲದಲ್ಲಿ ಅಭಿಮಾನ ದಿಂದಿರುವ ಗೆಳೆಯ. ಕುಲಸ್ಯ ಮಿತ್ರಮ್ ।

**ಕುಲಯೋಷಿತ್ ಕುಲಯೋಷಿತ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೊಡ್ಡ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಯೋಗ್ಯ ಹೆಂಗಸು.

**ಕುಲವಧು ಕುಲವಧೂ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸತ್ಪುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಹೆಂಗಸು, ಗೌರವದಿಂದ ವಂಶದ ಹೆಸರನ್ನು ಕಾಪಾಡುವ ಹೆಂಗಸು, ಮಾನದಿಂದ ಮನೆಯಲ್ಲಿರುವ ಹೆಂಗಸು. ಕುಲೇ ಸ್ಥಿತಾ ವಧು: ।

**ಕುಲವರ್ಧನ ಕುಲವರ್ಧನ** (ವಿಂ) ಕುಲವನ್ನು ಬೆಳೆಸುವವನು, ವಂಶವನ್ನು ಮುಂದಕ್ಕೆ ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವವನು. ಕುಲಂ ವರ್ಧಯತಿ - ವೃಧ್ (ವೃದ್ಧಿ) "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಕುಲವಾರ ಕುಲವಾರ** (ಪುಂ) ಮಂಗಳ ಮತ್ತು ಶುಕ್ರವಾರಗಳು. "ರವಿಶ್ವಂದ್ರೋ ಗುರು: ಸೌರಿ: ಚತುರ್ವಾರಾಕುಲಾ ಇಮೇ । ಭೂಮಿಶುಕ್ರೋ ಕುಲಾಪ್ಯೋ ತು ಬುಧವಾರ: ಕುಲಾಕುಲ:" ತನ್ಮಸಾಂ ।

**ಕುಲವೃದ್ಧ ಕುಲವೃದ್ಧ** (ಪುಂ) ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹಿರಿಯನಾದವನು, ಒಂದು ಸಂಸಾರದ ಯಜಮಾನ. ಕುಲೇ ವೃದ್ಧ: ।

**ಕುಲವ್ರತ ಕುಲವ್ರತ** (ನಂ) ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ವ್ರತ, ಕುಲಕ್ರಮಾಗತವಾದ ನಿಯಮಾಚರಣೆ. ಕುಲೇ ಆಚರಣೀಯಂ ವ್ರತಮ್ । "ಗಲಿತವಯಸಾಮಿಕ್ಷಾಕುಣಾಮಿದಂ ಹಿ ಕುಲವ್ರತಮ್" ರಘುಂ ೩-೭೦ ।

**ಕುಲಶಿಖರಿನ್ ಕುಲಶಿಖರಿನ್** (ಪುಂ) ಕುಲಪರ್ವತಗಳು. ["ಕುಲಪರ್ವತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ಕುಲಶಿಖರಿಣ: ಕ್ಷುಡ್ರಾ ನಂತೇ ನ ವಾ ಜಲರಾಶಯ:" ಮತ್ಯಂ ೧-೯೦ ।

**ಕುಲಶೇಖರ ಕುಲಶೇಖರ** (ಪುಂ) ಮುಕುಂದಮಾಲಾ ಸ್ತೋತ್ರವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ವಿಷ್ಣುಭಕ್ತರು. [ಇವರು ವಿಷ್ಣುಭಕ್ತರಾದ "ಆಳ್ವಾರ್" ಶ್ರೇಣಿಯಲ್ಲಿ ಸೇರಿದವರು. ಕುಲಶೇಖರಾಳ್ವಾರವರು "ಕೋಳಿಕೃಷ್ಣ" ರಾಜಧಾನಿಯಲ್ಲಿದ್ದ ದೃಢವ್ರತರಾಜನ ಮಕ್ಕಳು. ಈ ರಾಜನಿಗೆ ಬಹಳ ಕಾಲ ಮಕ್ಕಳಿಲ್ಲದಿರಲು ಮಹಾವಿಷ್ಣುವನ್ನು ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಪೂಜಿಸಿ ಈ ಮಗನನ್ನು ಪಡೆದರು. ಇವರು ಬಾಲ್ಯದಲ್ಲೇ ನಾಲ್ಕು ವೇದಗಳಲ್ಲೂ ಪಡಂಗಗಳಲ್ಲೂ ಧನುರ್ವಿದ್ಯೆಯಲ್ಲೂ ರಥಗಜಪುರಗಶಾಸ್ತ್ರಗಳಲ್ಲೂ ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಪರಿಣತರಾಗಿದ್ದರು. ಇವರ ಅಪಾರವಾದ ಭಕ್ತಿಗೆ ಮೆಚ್ಚಿದ ಶ್ರೀರಾಮನು ಅನೇಕ ಸಲ ಇವರಿಗೆ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ ಅನುಗ್ರಹಿಸಿರುವ ಪ್ರಸಂಗಗಳೂ ಉಂಟು.]

**ಕುಲಶೇಖರ ಕುಲಶೇಖರ** (ವಿಂ) ಶಿಲ್ಪಿಗಳ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದವನು, ಶಿಲ್ಪಿಗಳ ವಂಶದ ಪ್ರಧಾನಪುರುಷ. "ಕುಲಿಕ: ಸ್ಯಾತ್ ಕುಲಶೇಖರ:" ಅಮಂ ।



**ಕುಲಶೇಖರಿನ್ ಕುಲಶ್ರೇಷ್ಠಿನ್** (ಪುಂ) ಶಿಲ್ಪಕುಲದ ಯಜಮಾನ.

**ಕುಲಸಂಭವ ಕುಲಸಂಭವ** (ವಿಂ) ಯಾವುದಾದರೊಂದು ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಕುಲ ಸಂಭವೋತ್ಪತ್ತಿ. "ಬೀಜ್ಯಸ್ತು ಕುಲಸಂಭವಃ" ಅಮಂ.

**ಕುಲಸ್ತ್ರೀ ಕುಲಸ್ತ್ರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸತ್ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಹೆಂಗಸು, ಮನೆತನದ ಗೌರವವನ್ನು ಕಾಪಾಡುವ ಹೆಂಗಸು. ಕುಲೇ ಸ್ಥಿತಾ ಸ್ತ್ರೀ. "ಕುಲಸ್ತ್ರೀ ಕುಲಪಾಲಿಕಾ" ಅಮಂ.

**ಕುಲಸ್ಥಕ ಕುಲಸ್ಥಕ** (ಪುಂ) 1. ಹುರುಳಿ ಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಹುರುಳಿ. "ತಾಮ್ರವೃತ್ತಃ ಕುಲಸ್ಥಕಃ" ವೈಜಂ. 3. ಕೃಷ್ಣ ಸರ್ಪ. "ಕೃಷ್ಣಸರ್ಪಃ ಕುಲಸ್ಥಕಃ" ವೈಜಂ.

**ಕುಲಹೀನ ಕುಲಹೀನ** (ವಿಂ) ನೀಚವಂಶದವನಾದ, ನೀಚ ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಕುಲೇನ ಹೀನಃ.

**ಕುಲಹುಂಡಕ ಕುಲಹುಂಡಕ** (ಪುಂ) ಅವರ್ತ, ನೀರಿನ ಸುಳಿ. "ಅಥಾಮ್ಭಸಾಂ ಭ್ರಮಃ. ಪುರೋತಿಃ ಪತ್ರಜ್ಞಾಂ ವದಾಲಃ ಕುಲಹುಂಡಕಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಕುಲಾಕುಲ ಕುಲಾಕುಲ** (ಪುಂ) 1. ಬುಧವಾರ. "ರವಿಶ್ವಂದ್ರೋ ಗುರುಃ ಸೌರಶ್ವತವಾರಶ್ಚಾಕುಲಾ ಇಮೇ. ಭೌಮಶುಕ್ರೌ ಕುಲಾಖ್ಯೌ ತು ಬುಧವಾರಃ ಕುಲಾಕುಲಃ" ತನ್ತ್ರಸಾಂ. 2. ಬಿದಿಗೆ, ಪಿಪ್ಪಿ, ಮತ್ತು ದ್ವಾದಶೀತಿಥಿಗಳು. "ದ್ವಿತೀಯಾ ದ್ವಾದಶೀ ಷಷ್ಠಿ ಕುಲಾಕುಲಮುದಾಹತಮ್" ತನ್ತ್ರಸಾಂ. 3. ಆದ್ರಾ, ಮೂಲ, ಅಭಿಜಿತ್ ಮತ್ತು ಶತಭಿಷಕ್ ಈ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು. "ವಾರುಣಾರ್ಧಾಭಿಜಿನ್ಮೂಲಂ ಕುಲಾಕುಲಮುದಾಹತಮ್" ತನ್ತ್ರಸಾಂ.

**ಕುಲಾಜ್ಞನಾ ಕುಲಾಂಗನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸತ್ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಹೆಂಗಸು, ಒಳ್ಳೆಯ ಮನೆತನದ ಹೆಂಗಸು. ಕುಲಸ್ಯ ಸತ್ಕುಲಸ್ಯಾಜ್ಞನಾ. "ಅಸನ್ತುಷ್ಟಾ ದ್ವಿಜಾ ನಷ್ಟಾಃ ಸನ್ತುಷ್ಟಶ್ಚ ಗೃಹೀಪತಿಃ. ಸಲಜ್ಜಾ ಗಣಿಕಾ ನಷ್ಟಾ ನಿರ್ಲಜ್ಜಾ ಚ ಕುಲಾಜ್ಞನಾ".

**ಕುಲಾಜ್ಞಾರ ಕುಲಾಂಗಾರ** (ಪುಂ) ಕುಲದೊಪಕ, ನಡತೆಯಿಂದ ತನ್ನ ವಂಶವನ್ನು ಕೆಡಿಸುವವನು, ವಂಶಕ್ಕೆ ಅಪಕೀರ್ತಿ ತರುವವನು. ಕುಲಸ್ಯಾಜ್ಞಾರ ಇವ.

**ಕುಲಾಚಲ ಕುಲಾಚಲ** (ಪುಂ) ಕುಲಪರ್ವತಗಳು. ["ಕುಲಪರ್ವತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕುಲಾಚಾರ ಕುಲಾಚಾರ** (ಪುಂ) 1. ಕುಲಧರ್ಮ. ಮನೆತನದಲ್ಲಿ ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ಧರ್ಮ. ಕುಲಸ್ಯಾಚಾರಃ. 2. ಜೀವ ಪ್ರಕೃತಿಯನ್ನು ದಿಕ್ಕು ಕಾಲ ಆಕಾಶ ಕ್ಷಿತಿ ಅಪ್ಪು ತೇಜಸ್ಸು ವಾಯು ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮಬುದ್ಧಿಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಧ್ಯಾನ. "ಜೀವಃ ಪ್ರಕೃತಿಸ್ತತ್ವಂ ಚ ದಿವಕಾಲಾಕಾಶಮೇವ ಚ. ಕ್ಷಿತಿಪ್ರಜಾಪಯವಶ್ಚ ಕುಲಮಿತ್ಯಭಿವಿಧೀಯತೇ."

ಬ್ರಹ್ಮಬುದ್ಧಯಾ ನಿವಿಕಲ್ಪಮೇತೇಷ್ವಾಚರಣಂ ಚ ಯತ್. ಕುಲಾಚಾರಃ ಸ ಏವೋಕ್ತೋ ಧರ್ಮಕಾಮಾರ್ಥಮೋಕ್ಷದಃ."

**ಕುಲಾಚಾರ್ಯ ಕುಲಾಚಾರ್ಯ** (ಪುಂ) ಮನೆತನದ ಗುರು, ಕುಲಗುರು, ವಂಶಪರಂಪರೆಯಿಂದ ಬಂದ ಗುರು. ಕುಲಸ್ಯಾಚಾರ್ಯಃ.

**ಕುಲಾದ್ರಿ ಕುಲಾದ್ರಿ** (ಪುಂ) ಕುಲಪರ್ವತಗಳು. ["ಕುಲಪರ್ವತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕುಲಾಧಾರಕ ಕುಲಾಧಾರಕ** (ಪುಂ) ವಂಶವನ್ನು ಎತ್ತಿ ಹಿಡಿಯುವವನು, ಕುಲವನ್ನು ಬುದ್ಧಾರಮಾಡುವ ಪುತ್ರ.

**ಕುಲಾಯ ಕುಲಾಯ** (ಪುಂ) 1. ಹಕ್ಕಿಗಳ ಗೂಡು, ಹಕ್ಕಿಗಳು ವಾಸಮಾಡುವ ಸ್ಥಳ. ಕುಲಂ ಪಕ್ಷಿಸಮೂಹೋಪತೇಜಃ - ಅಯ (ಗತೌ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧). "ದದತಮನ್ತರಿತಾಽಹಿಮದೀಧಿತಿ ಸ್ವಗುಲಾಯ ಕುಲಾಯಿನಿಲಾಯಿತಾಮ್. ಜಲದಕಾಲಮಬೋಧಕತಂ ದಿಶಾಮಪರಯಾಪ ರಥಾವಯವಾಯುಃ" ಮಾಘಂ ೬-೪೧. 2. ಸ್ಥಾನ, ಜಾಗ, ಸ್ಥಳ, ಮನೆ. "ಕುಲಾಯಸ್ತು ಪುಮಾನ್ ಸ್ಥಾನಮಾತ್ರೇ ಸ್ಯಾತ್ಪಕ್ಷಿವಾಸಕೇ" ಮೇದಿಂ. "ಗೇಹೇ ಕುಲಾಯೋ ನೋಡೋಸ್ತ್ರೀ" ವೈಜಂ.

**ಕುಲಾಯಿಕಾ ಕುಲಾಯಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಕ್ಷಿಗಳ ವಾಸಸ್ಥಾನ, ಹಕ್ಕಿಗಳ ಗೂಡು. "ಕುಲಾಯಿಕಾ ಪಕ್ಷಿಶಾಲಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಕುಲಾಲ ಕುಲಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಕುಂಬಾರ, ಮಣ್ಣಿನ ಪಾತ್ರೆ ಹೆಚ್ಚು ಮುಂತಾದವನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. ಕುಲಮಲತಿ - ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ) "ಅಲ್" (೩-೨-೧). "ಅನಲಸಜ್ಜತಿತಾಪಮುಪೇತು ನೋ ಕುಸುಮಚಾಪಕುಲಾಲವಿಲಾಸಜಮ್" ನೈಷಂ ೪-೭. 2. ಕುಕ್ಕುಭಪಕ್ಷಿ, ಕಾಡುಕೋಳಿ. 3. ಘೂಕ, ಗೂಬೆ. "ಕುಲಾಲಃ ಕುಮ್ಭಕಾರೇ ಸ್ಯಾತ್ಕುಕ್ಕುಭಂ ಕೌಶಿಕೇಽಪಿ ಚ" ವಿಶ್ವಂ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಃ" (೪-೧-೬೩). -ಲಿ-೦೬, ಕುಂಬಾರನ ಹೆಂಡತಿ.

**ಕುಲಾಲಕುಕ್ಕುಡ ಕುಲಾಲಕುಕ್ಕುಟ** (ಪುಂ) ಕಾಡುಕೋಳಿ, ನೀರುಕೋಳಿ.

**ಕುಲಾಲಿ ಕುಲಾಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕುಂಬಾರನ ಹೆಂಡತಿ. ಕುಲಾಲಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ "ಙೀಃ" (೪-೧-೬೩). 2. ನೀಲ ಕಮಲದ ಒಂದು ಭೇದ. 3. ಕುಳುತ್ಕಾಂಕ್ಷನ.

**ಕುಲಾಹ ಕುಲಾಹ** (ಪುಂ) ಕಂದು ಬಣ್ಣದ ಕಪ್ಪು ಮಂಡಿಯ ಕುದುರೆ. ಕುಲಮಾಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತೌಃ) "ಹಃ".

**ಕುಲಿ ಕುಲಿ** (ಪುಂ) 1. ಹಸ್ತ, ಕೈ. ಕುಲ (ಸಂಸ್ಥಾನೇ ಬಂಧುಃ) "ಙ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭). "ಕುಲಿಹಸ್ತೋ ಭುಜಾದಲಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಿಃ -೦೬, -ಲಿ -೦೬. 2. ಹೆಣ್ಣುಳ್ಳದ ಗಿಡ. ವಾ "ಙೀಃ" (ಗಂ ೪-೧-೪೫).



**ಕುಲಿಕ ಕುಲಿಕ (ಪುಂ)** 1. ಐವತ್ತೂ ಅಂಗುಲ ಉದ್ದದ ಬಾಣ. "ಅಯ: ಶಲಾಕಾ ಕೂಟೋತ್ತರೀ ಪತ್ರಕೂಟಪತ್ರಣ: | ದ್ವಿವಿವಿಶಯಙ್ಗುಲಿ ಸ್ಯಾನ್ನಿಚೋಡೇ ದ್ವಿವಿವಿಶಯಙ್ಗುಲೋತ್ತರ: | ಸ್ಯುಶ್ವೋಡ-  
ಲಿಙ್ಗಕಸ್ತಾಲ: ಕುಲಿಕೋ ಬಿಂಬಸಾರಕ: " ವೈಜಂ. 2. ಶಿಲ್ಪಿ  
ಗಳ ಕುಲದ ಯಜಮಾನ, ಶಿಲ್ಪಿಗಳ ಕುಲದಲ್ಲಿ ಶ್ರೇಷ್ಠ  
ನಾದವನು. "ಕಾರವ: ಶಿಲ್ಪಿನ: ಸರ್ವೇ ಕುಲಿಕಾಸ್ತೇ ಕುಲೋತ್ತಮಾ: "  
ವೈಜಂ. 3. ಎಂಟು ಸರ್ಪನಾಯಕರಲ್ಲೊಬ್ಬ. "ಅನಂತೋ  
ವಾಸುಕಿ: ಪದ್ಮೋ ಮಹಾಪದ್ಮೋಪಿ ತಕ್ಷಕ: | ಕರ್ಕೋಡ: ಕುಲಿಕ:  
ಶಙ್ಖ ಇತ್ಯಪ್ತೋ ನಾಗನಾಯಕಾ: " ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 4. ಒಂದು  
ಜಾತಿಯ ಮುಳ್ಳುಗಿಡ. 5. ಒಂದು ವಂಶದ ಯಜಮಾನ.  
6. ಭಾನುವಾರ ಮೊದಲಾದ ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಶುಭಕಾರ್ಯ  
ಗಳಿಗೆ ನಿಸಿದವಾದ ವೇಳೆ, ಗುಳಿಕ ಕಾಲ.

| ವಾರಗಳು   | ಹಗಲು ಗುಳಿಕಕಾಲ                             |
|----------|---|
| ಭಾನುವಾರ  | 7ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ<br>30ರಿಂದ 4-30 ಗಂಟೆಯವರೆಗೆ    |
| ಸೋಮವಾರ   | 6ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ<br>1-30 ರಿಂದ 3 ಗಂಟೆಯವರೆಗೆ    |
| ಮಂಗಳವಾರ  | 5ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ<br>12 ರಿಂದ 1-30 ಗಂಟೆಯವರೆಗೆ.  |
| ಬುಧವಾರ   | 4ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ<br>10-30 ರಿಂದ 12 ಗಂಟೆಯವರೆಗೆ. |
| ಗುರುವಾರ  | 3ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ<br>9 ರಿಂದ 10-30 ಗಂಟೆಯವರೆಗೆ.  |
| ಶುಕ್ರವಾರ | 2ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ<br>7-30 ರಿಂದ 9 ಗಂಟೆಯವರೆಗೆ.   |
| ಶನಿವಾರ   | 1ನೆಯ ಅರ್ಧಯಾಮ<br>6 ರಿಂದ 7-30 ಗಂಟೆಯವರೆಗೆ.   |

**ಈ ದೋಷಕ್ಕೆ ಅಪವಾದ:**

"ವಾರೇಶೋ ಸಬಲೇ ಚಾಪಿ ಬಲಾಢ್ಯೇ ಲಗನಗೇ ಶುಭೇ |  
ಕುಲಿಕೋದ್ಭವದೋಪಸ್ತು ವಿನಶ್ಯತಿ ನ ಸಂಶಯ: " |

**ಕುಲಿಜ್ಜ ಕುಲಿಂಗ (ಪುಂ)** 1. ನೀರಿನೊಳಗಾದುವ ಕುಕ್ಕುಟ  
ಯೆಂಬ ಹಕ್ಕಿ. ಕೌ ಭೂಮೌ ಲಿಙ್ಗತಿ - ಲಿಗಿ (ಗತೌ)  
"ಅಚ್" (3-1-134). 2. ಗುಬ್ಬಿಚ್ಚಿ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (4-1-63). ಕುಲಿಜ್ಜಿ ಕುಲಿಂಗೀ.  
(ನಂ) 3. ಕೆಟ್ಟ ಗುರುತು. ಕುತಿಸಿತಂ ಲಿಙ್ಗಮ್. (ವಿಂ) 4.  
ಕೆಟ್ಟ ಗುರುತುಳ್ಳ. ಕುತಿಸಿತಂ ಲಿಙ್ಗಂ ಯಸ್ಯ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
ಕುಲಿಜ್ಜಾ ಕುಲಿಂಗಾ. 5. ಮರಸೇಬಿನ ಗಿಡ.

**ಕುಲಿಜ್ಜಕ ಕುಲಿಂಗಕ (ಪುಂ)** ಗುಬ್ಬಿಚ್ಚಿ. ಕುಲಿಜ್ಜ ಸಂಜಾಯಾ  
"ಕನ್" (4-3-67).

**ಕುಲಿಜ ಕುಲಿಜ (ವಿಂ)** ಕೈಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಕೈಯಲ್ಲಿ  
ಉಂಟಾದ. ಕುಲೌ ಹಸ್ತೇ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭಾವಿ) "ಡ:"  
(3-2-99).

**ಕುಲಿನ್ ಕುಲಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. (ವಿಂ) 2.  
ಒಳ್ಳೆಯ ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಸತ್ಕುಲದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ.  
ಪ್ರಶಸ್ತಂ ಕುಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-136). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಡೀಪ್" (4-1-4). -ನಿ-ನೀ.

**ಕುಲಿಂದ ಕುಲಿಂದ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ)** 1. ಒಂದು ದೇಶ.  
"ಕಾಲಿಂದಾ: ಕಾಲವಾಶ್ವೇವ ಕುಠಕಾ: ಕರಡಾಸ್ತಥಾ" ಭಾಂ  
ಭಿಷಂ. 2. ಕುಳಿಂದ ದೇಶದ ಜನರು. 3. ಕುಳಿಂದ  
ದೇಶದ ದೊರೆಗಳು. ಕುಲಿಂದಾನಾಂ ರಾಜಾನ್: "ಅಜ್"  
(4-1-166). ಅಜ್ಞೋ ಲುಕ್ (2-4-62).

**ಕುಲಿಶ ಕುಲಿಶ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು.  
ಕುತಿಸಿತಂ ಷಿಷದ್ವಾ ಲಿಶತಿ - ಕು + ಲಿಶ (ಗತೌ) "ಕ:"  
(3-1-134). (ಪುಂ) 2. (ಇಂದ್ರನ) ವಜ್ರಾಯುಧ.  
ಕುಲೌ ಹಸ್ತೇ ಶತೇ - ಶಿಙ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಡ:" (3-2-101).  
ಕುಲಿನ್: ಪರ್ವತಾನ್ ಶ್ಯತಿ - ಶೋ (ತನೂಕರಣೇ) "ಕ:"  
(3-2-3) ವಾ. "ಕುಲಿಶೋ ನ ಸ್ತ್ರೀ ದಂಭೋಲೌ ನಾ ಜ್ಞಾಪಾಂತರೇ"  
ಮೇದಿಂ. "ವೃತ್ರಸ್ಯ ಹಂತು: ಕುಲಿಶಂ ಕುಠಿತಾಶ್ಚಿವ ಲಕ್ಷ್ಯತೇ"  
ಕುಮಾಂ 2-20.

**ಕುಲಿಶದ್ರುಮ ಕುಲಿಶದ್ರುಮ (ಪುಂ)** ಮುಂಡುಕಳ್ಳಿಗಿಡ.  
ಕುಲಿಶಾಖ್ಯೋ ದ್ರುಮ: | ಕುಲಿಶ ಇವ ದ್ರುಮೋ ವಾ |

**ಕುಲಿಶಧರ ಕುಲಿಶಧರ (ಪುಂ)** ವಜ್ರಾಯುಧವನ್ನು ಧರಿ  
ಸಿರುವ ಇಂದ್ರ. ಕುಲಿಶಂ ಧರತಿ - ಧೃಜ್ (ಧಾರಣೇ) "ಅಚ್"  
(3-1-134). ಕುಲಿಶಸ್ಯ ಧರ: |

**ಕುಲಿಶಪಾಣಿ ಕುಲಿಶಪಾಣಿ (ಪುಂ)** ಇಂದ್ರ. ಕುಲಿಶಂ ಪಾಣಿ  
ಯಸ್ಯ. "ನವಕನಕಪಿಶಾಙ್ಗಂ ವಾಸರಾಣಾಂ ವಿಧಾತು: ಕಕುಭಿ  
ಕುಲಿಶಪಾಣೇರ್ಭಾತಿ ಭಾಸಾಂ ವಿತಾನಮ್" 11-43.

**ಕುಲಿಶಾಕ್ಷುಶಾ ಕುಲಿಶಾಂಕುಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಬೌದ್ಧರ  
ಹದಿನಾರು ವಿದ್ಯಾದೇವತೆಗಳಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ದೇವತೆ. "ವಿಜ್ಞಾ  
ದೇವ್ಯಸ್ತು ಷೋಡಶ: | ರೋಹಿಣಿ ಪ್ರಜ್ಞಾಪ್ತಿರ್ವಜ್ರಶಙ್ಖಲಾ ಕುಲಿ-  
ಶಾಕ್ಷುಶಾ" ಇತ್ಯಾದಿ ಅಭಿಂ ಚಿಂ.

**ಕುಲಿಶಾಸನ ಕುಲಿಶಾಸನ (ಪುಂ)** ಶಾಕ್ಯಮುನಿ. ಕುಲಿಶವತ್  
ದೃಢಾಸನಂ ಯಸ್ಯ. "ಸರ್ವಾರ್ಥಸಿದ್ಧಿಸ್ತು ಮಹಾಶ್ರಮಣ: ಕುಲಿ-  
ಶಾಸನ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಕುಲಿ ಕುಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಹೆಣ್ಣುಳ್ಳದ ಗಿಡ. ಕೋಲತಿ -  
ಕುಲ (ಸಂಸ್ಥಾನೇ) "ಕ:" (3-1-134). ಗೌರಾಂ "ಡೀಪ್"  
(4-1-41). "ಪ್ರವೋದನಿ ಕುಲಿ ಕ್ಷುಡ್ರಾ ದುಸ್ಪರ್ಶಾ



ರಾಷ್ಟ್ರಿಕೇತೃಪಿ" ಅಮಂ. 2. ಹೆಂಡತಿಯ ಅಕ್ಕ, ಹೆಂಡತಿಯ ಹಿರಿಯ ಸಹೋದರಿ, ನಾದಿನಿ. "ಪತ್ಯಾಸ್ತು ಭಗಿನಿ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ಜ್ಯೇಷ್ಠಶ್ವಶ್ರು: ಕುಲೀ ಚ ಸಾ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ. 1

**ಕುಲಿಕ ಕುಲೀಕ** (ಪುಂ) ಪಕ್ಕಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಕುಲ (ಸಂಸ್ಥಾನ) "ಇಕನ್" ಬಾಹುಂ. 1

**ಕುಲೀನ ಕುಲೀನ** (ಪುಂ) 1. ಉತ್ತಮ ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಕುದುರೆ. ಒಳ್ಳೆಯ ಜಾತಿಯ ಕುದುರೆ. ಕುಲಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಖ:" (೪-೧-೧೩೯). "ಆಜಾನೇಯಾ: ಕುಲೀನಾ: ಸ್ಯು:" ಅಮಂ. 1 ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ "ಙೀಃ" (೪-೧-೬೩). (ನಂ) 2. ಉಗುರುಸುತ್ತು, ಉಗುರಿನ ಒಂದು ವಿಧ ರೋಗ. (ವಿಂ) 3. ಸತ್ಕುಲಪ್ರಸೂತ, ಒಳ್ಳೆಯ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. "ಯಸ್ಯಾಸ್ತಿ ವಿದ್ವಾಂಸ ನರ: ಕುಲೀನ: ಸ ಪಣ್ಡಿತ: ಸ ಶ್ರುತವಾನ್ ಗುಣಜ್ಞ:" ಭರ್ತುಂ ೧-೩೨. "ಮಹಾಕುಲಕುಲೀನಾರ್ಯಸಮ್ಯ-ಸಜ್ಜನಸಾಧವ:" ಅಮಂ. 1 4. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಅಡಗಿ ಕೊಂಡಿರುವ. ಕೌ ಭೂಮೌ ಲೀನ: 1

**ಕುಲೀನಕ ಕುಲೀನಕ** (ಪುಂ) ಕಾಡು ಹೆಸರು. "ವನಮುದ್ಗಂ ತುರವಕನಿಗುಡಕಕುಲೀನಕಾ:" ಅಭಿಂ ಚಿಂ. 1

**ಕುಲೀನಸ ಕುಲೀನಸ** (ನಂ) ಜಲ, ನೀರು. ಕುಲೀನಂ ಭೂಗನಂ ಸ್ಯತಿ-ಪೌ (ಅಂತರ್ಮಣಿ) "ಕ:" (೩-೨-೩). "ಕುಲೀನಸಂ ಕವನ್ಮಂ ಚ ಪ್ರಾಣದಂ ಸರ್ವತೋಮುಖಮ್" ಅಭಿಂ ಚಿಂ. 1

**ಕುಲೀರ ಕುಲೀರ** (ಪುಂ) 1. ಎಡಿ, ನಳ್ಳಿ. ಕುಲ (ಸಂಸ್ಥಾನ) "ಇರನ್" ಬಾಹುಂ. 2. ಕರ್ಕಾಟಕ ರಾಶಿ, ಮೇಷ ಮೊದಲಾಗಿ ನಾಲ್ಕನೆಯ ರಾಶಿ.

**ಕುಲುಕ ಕುಲುಕ** (ನಂ) ನಾಲಿಗೆಯ ಕೊಳೆ. ಕುಲ (ಸಂಸ್ಥಾನ) "ಉಲ್" ಬಾಹುಂ. 1 "ಮಲಂ ವಿದ್ವಂ ತದಕ್ಷಿಜಮ್. ದ್ವಿಷಿಕಾ ದ್ವಿಷಿಕಾ ಜೈಹ್ವಂ ಕುಲುಕಮ್" ಅಭಿಂ ಚಿಂ. 1

**ಕುಲುಕಗುಂಜಾ ಕುಲುಕಗುಂಜಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೊಳ್ಳೆಯ ಬೆಂಕಿ. "ಉಲ್ಕಾ ಕುಲುಕಗುಂಜಾ ಸ್ಯಾತ್" ಹಾರಾಂ. 1

**ಕುಲೂತ ಕುಲೂತ** (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 1. ಒಂದು ದೇಶ. 2. ಕುಲೂತ ದೇಶದ ಜನರು. 3. ಕುಲೂತ ದೇಶದ ರಾಜರು.

**ಕುಲೋದ್ಭವ ಕುಲೋದ್ಭವ** (ಪುಂ) ವಂಶದ ರಕ್ಷಣೆಯ ಭಾರವನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವವನು, ಕುಲಂ ವಂಶಭಾರಂ ರಕ್ಷಣಾದಿಕಮ್ ಉದ್ಭವತಿ ಉದ್ + ವಹ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). 1 "ಪುತ್ರೋ ಮಮಾನುರೂಪಶ್ಚ ಶೂರಶ್ಚೇತಿ ಕುಲೋದ್ಭವ:" ಭಾಂ ವಿರಾಂ. 1

**ಕುಲಮಾಘ ಕುಲಮಾಘ** (ಪುಂ) 1. ಅಲಸಂದೆ, ಕಾರಾಮಣಿ. 2. ಅರ್ಧ ಬೆಂದ ಗೋಧಿ ಮುಂತಾದ ಧಾನ್ಯ. 3. ಕಡಲೆ. (ನಂ) 4. ಅಂಬಲಿ, ಗಂಜಿ. "ಕುಲಮಾಘಂ ಸ್ಯಾತ್ ಕಾಞ್ಜಿಕೇ. 1 ಕುಲಮಾಘೋರ್ಧ್ವಸ್ವಿನ್ನಧಾನ್ಯೇ ಯಾವಕೇ ಚಣಕೇಽಪಿ ಚ" ಹೇಮಂ. 1

**ಕುಲ್ಯ ಕುಲ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಮಾನ್ಯನಾದ ಪುರುಷ, ಗೌರವಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದವನು. ಕುಲೇ ಸತ್ಕುಲೇ ಭವ: "ಯತ್" (೪-೩-೪೩). (ನಂ) 2. ಎಲುವು, ಮೂಳೆ. ಕುಲ (ಸಂಸ್ಥಾನ) "ಯಕ್" (೩ಂ ೪-೧೧೧). 3. ಮಾಂಸ. 4. ಶೂರ್ಪ, ಮೊರೆ, ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಕೇರುವ ಒಂದು ಸಾಧನ. 5. ಎಂಟು ಕೊಳಗದ ಅಳತೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 6. ಕೃತ್ರಿಮ ವಾದ ಸಣ್ಣ ಹೊಳೆ, ಅಗಂದು ತೋಡಿ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ನದಿ. 7. ಬದನಿಕೆ ಗಿಡ. 8. ನದಿ, ಹೊಳೆ. "ಸೇನಾಸ್ವಾನಾದ್ವಿತ್ತಿನಾ-ಮಾತ್ಮನೇವ ಸ್ಥೂಲಾಸ್ತಾವತ್ ಪ್ರಾವಹನ್ ದಾನಕುಲ್ಯಾ:" ಮಾಘಂ ೧೮-೨೬. 9. ಸತ್ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಹೆಂಗಸು. "ಕೇನಾಪಿ ದೌಷ್ಟಕುಲೇನ ಕುಲ್ಯಾ ಮಾಹಾಕುಲೀ ಪ್ರಿಯಾಮ್. ಹತಾ ಮಾಹಾ-ಕುಲೀನಸ್ಯ ತಸ್ಯ ಲಿಪ್ಸಾಮಹೇವಯಮ್" ಭರ್ತುಂ ೭-೮೮. (ವಿಂ) 10. ಕುಲಕ್ಕೆ ಹಿತವಾದ, ವಂಶಕ್ಕೆ ಅನುಕೂಲವಾದ. ಕುಲಾಯ ಹಿತಮ್ "ಯತ್" (೪-೧-೪). 11. ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಕುಲದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ. "ಕುಲ್ಯಂ ಸ್ಯಾತ್ ಕೀಕಸೇ-ಪ್ಯಷ್ಟ್ರೋಣಿಶೂರ್ಪಾಮಿಷೇಷು ಚ. 1 ಕುಲ್ಯಾ ಪಯ:ಪ್ರಣಾಲ್ಯಾಂ ಚ ನದ್ಯಾಂ ಜೀವಂತಿಕೌಷಧೌ. 1 ಕುಲೋದ್ಭವೇ ಕುಲಹಿತೇ ತ್ರಿಷು ಮಾನ್ಯೇ ಪುನ: ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ. 1

**ಕುಲ್ಲುಕ ಕುಲ್ಲುಕ** (ಪುಂ) ಕುಲ್ಲುಕಭಟ್ಟಾಚಾರ್ಯರು, ಮನುಷ್ಯತಿಯ ವ್ಯಾಖ್ಯಾರರಾದ ಒಬ್ಬ ವಿದ್ವಾಂಸರು.

**ಕುವ ಕುವ** (ನಂ) ನೈದಿಲೆ, ಉತ್ಪಲ. ಕು ಭೂಮಿ ವಾತಿ ಗಂಧತಿ - ವಾ (ಗತಿಗಂಧನಯೋ:) "ಕ:" (೩-೨-೩). 1 "ಕುವಲಂ ತುತ್ಪಲಂ ಕುವಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 1

**ಕುವಚಸ್ ಕುವಚಸ್** (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಮಾತು, ಅಪವಾದ, ದೂಷಣೆ. ಕುತ್ಸಿತಂ ವಚ: 1 (ವಿಂ) 2. ಕೆಟ್ಟ ಮಾತುಳ್ಳ, ಅಸಭ್ಯವಾದ ಮಾತುಳ್ಳ. ಕುತ್ಸಿತಂ ವಚೋ ಯಸ್ಯ. 1

**ಕುವತ್ ಕುವತ್** (ವಿಂ) ಕೂಗುತ್ತಿರುವ, ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಕು (ಶಬ್ದ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). 1 "ದ್ರುಮಙ್ಗಲವನಿಸಂವಿಗ್ನಾ: ಕುವತ್ಪಕ್ಷಿಕುಲಾಕುಲಾ:" ಭರ್ತುಂ ೯-೧. 1

**ಕುವಲ ಕುವಲ** (ಪುಂ) 1. ಎಲಚಿ ಮರ, ಬೋರೆಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಉತ್ಪಲ, ನೈದಿಲೆ. ಕೌ ವಲತಿ-ವಲ (ಸಂಚಲನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). 3. ಮುಕ್ತಾಫಲ, ಮುತ್ತು. 4. ಬೋರೆಹಣ್ಣು, ಎಲಚಿ ಹಣ್ಣು. 5. ಜಲ, ನೀರು. "ಕುವಲಂ ಚೋತ್ಪಲೇ ಮುಕ್ತಾಫಲೇ ಚ ಬದರಿಫಲೇ" ಮೇದಿಂ. 1 6. ಜೀವ. ಕೌ ಭೂಮೌ ಕುತ್ಸಿತಂ ವಾ ವಲಂತೇ ಆಸಂಸಾರಂ ಭ್ರಾಮ್ಯಂತೀತಿ (ಕುವಲಾ ಜೀವಾ:) ಕು + ವಲ (ಸಂಚಲನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). 1



**ಕುವಲಕುಣ ಕುವಲಕುಣ** (ಪುಂ) ಬೋರೆಗಿಡವು ಹಣ್ಣು ಬಿಡುವುದು, ಎಲಚಿಯು ಹಣ್ಣಾಗುವಿಕೆ. ಕುವಲಸ್ಯ ಪಾಕ: "ಕುಣ್" (೪-೨-೨೪) ।

**ಕುವಲಯ ಕುವಲಯ** (ನಂ) 1. ಉತ್ಪಲ, ನೈದಿಲೆ. ಕೋವಲಯಮಿವ । "ಪುತ್ರಪ್ರೇಮ್ಣಾ ಕುವಲಯದಲಪ್ರಾಪಿ ಕರ್ಣಂ ಕರೋತಿ" ಮೇಘಂ ೧-೪೪ । 2. ಭೂಮಂಡಲ. ಕೋವಲಯಮ್ ।

**ಕುವಲಯದೃಶ ಕುವಲಯದೃಶ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುವಲಯದಂತೆ ಕಪ್ಪಾದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಕುವಲಯೇ ಇವ ದೃಶೌ ಯಸ್ಯಾ: ।

**ಕುವಲಯಾನಂದ ಕುವಲಯಾನಂದ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಅಲಂಕಾರ ಗ್ರಂಥ, ಜಯದೇವವಿರಚಿತವಾದ ಚಂದ್ರಾಲೋಕದ ಒಂದು ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ. ಇದನ್ನು ರಚಿಸಿದವರು ಮಹಾ ವಿದ್ವಾಂಸರಾದ ಶ್ರೀಮದಪ್ಪಯ ದೀಕ್ಷಿತರು. ಜಯದೇವ ಕವಿಯು ರಚಿಸಿದ ಒಂದು ನೂರು ಅಲಂಕಾರಗಳನ್ನು ಇವರು ಉದಾಹರಣೆಗಳೊಡನೆ ವಿವರಿಸಿ ಮುಂದೆ ರಸವದಾದಿ ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು ಅಲಂಕಾರಗಳನ್ನು ತಾವೇ ಹೊಸದಾಗಿ ಬರೆದಿರುವರು. "ಯेषಾಂ ಚಂದ್ರಾಲೋಕೇ ದೃಶ್ಯಂತೇ ಲಕ್ಷ್ಯಲಕ್ಷಣ-ಶ್ಲೋಕಾಃ । ಪ್ರಾಯಸ್ತ ಏವ ತೇಷಾಮಿತರೇಷಾಂ ತ್ವಭಿನವಾ ವಿರಚ್ಯಂತೇ" ಕುವಂ ೪ । ಗ್ರಂಥದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಇವರು ತಮ್ಮ ಮತ್ತು ಗ್ರಂಥದ ಹೆಸರುಗಳನ್ನು ಹೇಳಿಕೊಂಡಿರುತ್ತಾರೆ. "ಅಮ್ ಕುವಲಯಾನಂದಮಕರೋದಪ್ಪದೀಕ್ಷಿತಃ । ನಿಯೋಗಾತ್ಕೃತಪತೆ-ನಿರೂಪಾಧಿಕೃಪಾವಧೇಃ" ಕುವಂ ೧೭೧ । ಚಂದ್ರಾಲೋಕಕ್ಕೂ ತಮ್ಮ ಗ್ರಂಥ (ಕುವಲಯಾನಂದ)ಕ್ಕೂ ಶ್ಲೇಷೆಯಿಂದ ಸಂಬಂಧ ಕಲ್ಪಿಸಿ ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ. "ಚಂದ್ರಾಲೋಕೋ ವಿಜಯತಾಂ ಶರದಾಗಮಸಂಭವಃ । ಹೃದ್ಯಃ ಕುವಲಯಾನಂದೋ ಯತ್ಪ್ರಸಾದಾದಭೂದಯಮ್" ಕುವಂ ೧೭೨ ।

**ಕುವಲಯಾಪಿಡ ಕುವಲಯಾಪಿಡ** (ಪುಂ) ಕಂಸನ ಒಂದು ಆನೆ. [ಬಲರಾಮಶ್ರೀಕೃಷ್ಣರು ಮಧುರಗೆ ಬಂದಾಗ ಅವರನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲು ಕಂಸನು ಊರಿನ ಮಹಾದ್ವಾರದಲ್ಲಿ ಈ ಆನೆಯನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸಿದ್ದನು. ಅವರು ಊರಿನ ಹೆಬ್ಬಾಗಿಲಿಗೆ ಬಂದಕೂಡಲೆ ಈ ಆನೆಯು ಅವರ ಮೇಲೆ ಬೀಳಲು ಹೋದಾಗ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಅದರ ಕೊಂಬನ್ನು ಕಿತ್ತು ಅದನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದನು.] "ಸ್ವವಿಕ್ರಮೇ ಪ್ರತಿಹತೇ ಕ್ರುಜರೆಂದ್ರೋತ್ಯ-ಮರ್ಷಿತಃ । ಚೋದಮಾನೋ ಮಹಾಮಾತ್ರೈಃ ಕೃಷ್ಣಮಭ್ಯದ್ರವದ್ಭುಷಾ । ತಮಾಪತಂತಮಾಸಾಞ್ ಭಗವಾನ್ ಮಧುಸೂದನಃ । ನಿಗೃಹ್ಯ ಪಾಣಿನಾ ಹಸ್ತಂ ಪಾತಯಾಮಾಸ್ ಭೂತಲೇ । ಪಾತತಸ್ಯ ಪದಾಕ್ರಮ್ಯ ಮೃಗೇಂದ್ರ ಇವ ಲೀಲಯಾ । ದಂತಮುತ್ಪಾಡಯ ತೇನೇಹಂ ಹಸ್ತಿಪಾಂಶ್ಚಾಹನದ್ವರಿಃ" ಭಾಗಂ ೧೦-೪೩ ।

**ಕುವಲಯಾಶ್ವ ಕುವಲಯಾಶ್ವ** (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. ಇವನು ಬೃಹದಶ್ವ (ಶತ್ರುಜಿತ)ನ ಮಗ. ಇವನಿಗೆ "ಯತಧ್ವಜ" ನೆಂದು ಮೊದಲಿನ ಹೆಸರು. ಮಂಧುವೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನನ್ನು ಕೊಂದದ್ದರಿಂದ ಇವನಿಗೆ "ಮಂಧುವಾರ" ನೆಂಬ ಹೆಸರೂ ಉಂಟು. [ಪಾತಾಳ ಕೇತುವೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನೊಬ್ಬನು ಗಾಲವ ಯುಷಿಯ ತಪಸ್ಸಿನ ತೊಂದರೆ ಕೊಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಯುಷಿಯು ತಪಸ್ಸಿನ ಕ್ಷಯದ ಭಯದಿಂದ ಶಾಪ ಕೊಡಲು ಯೋಚಿಸುತ್ತಿರಲು ಕುವಲಯ ಬಣ್ಣದ ಒಂದು ಕುದುರೆಯು ಆ ಯುಷಿಯ ಮುಂದೆ ಬಂದು ನಿಂತಿತು. ಯುಷಿಯು ಅಶರೀರವಾಣಿಯ ಆದೇಶದಂತೆ ಅದನ್ನು ಯತಧ್ವಜನಿಗೆ ಕೊಡಲಾಗಿ ಅವನು ಅದನ್ನೇರಿ ಪಾತಾಳಕೇತುವನ್ನು ಸಂಹರಿಸಲು ಹೊರಟನು. ಆಗ ರಾಕ್ಷಸನು ಹಂದಿಯ ರೂಪವನ್ನು ತಾಳಿ ಪಾತಾಳವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿದನು. ರಾಜನೂ ಬೆನ್ನಟ್ಟಿ ಹೋಗಿ ಅವನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ಅವನಿಂದ ಸೆರೆ ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟಿದ್ದ ಕುಂಡಲೆ ಮತ್ತು ಮದಾಲಸೆಯೆಂಬ ಇಬ್ಬರು ತರುಣಿಯರನ್ನು ಸೆರೆಯಿಂದ ಬಿಡಿಸಿಕೊಂಡು ನಗರಕ್ಕೆ ಹಿಂತಿರುಗಿದನು. ಗಾಲವ ಯುಷಿಯಿಂದ ಕುವಲಯ ಬಣ್ಣದ ಅಶ್ವವನ್ನು ಪಡೆದದ್ದರಿಂದ ಇವನಿಗೆ "ಕುವಲಯಾಶ್ವ" ನೆಂಬ ಹೆಸರೂ ಬಂದಿತು.]

**ಕುವಲಾಶ್ವ ಕುವಲಾಶ್ವ** (ಪುಂ) ಯತಧ್ವಜನೆಂಬ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. ["ಕುವಲಾಶ್ವ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕುವಲೇಶಯ ಕುವಲೇಶಯ** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಕುವಲೇ ಜಲೇ ಶೇತೇ - ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಅಚ್" (೩-೨-೧೪) । ಕೌ ಭೂಮೌ ಬಲಂತೇ ಆಸಂಸಾರಂ ಭ್ರಾಮ್ಯಂತೀತಿ ಕುವಲಾ ಜೀವಾಃ, ತೇ ಚ ತೇ ಇಶಾಃ ಕುವಲೇಶಾಃ, ತಾನ್ನಿಯಚ್ಛನ್ ಯಾತಿ-ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) ವಾ । "ಕುತ್ಸಿತಂ ಬಲಮೇಷಾಂ ತೇ ಕುವಲಾ ಜೀವಸಂಜಕಾಃ । ದೇಹೇಂದ್ರಿಯಾದೇರಿಶಾಸ್ತೇ ಕುವಲೇಶಾ ಇತಿ ಸ್ಮೃತಾಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । "ಶುಭಾಙ್ಗಃ ಶಾಂತಿದಃ ಸ್ಪಷ್ಟಾ ಕುಮುದಃ ಕುವಲೇಶಯಃ" ವಿಂ ಸಂ ।

**ಕುವಾದ ಕುವಾದ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಮಾತು, ಅಪವಾದ, ದೂಷಣೆ. ಕುತ್ಸಿತೋ ವಾದಃ । (ವಿಂ) 2. ಕೆಟ್ಟವನಾದುವು. ಕುತ್ಸಿತೋ ವಾದೋಽಸ್ಯ । "ಸಮೌ ಕುವಾದಕುಚರೌ" ಅಮಂ ।

**ಕುವಿಡಾ ಕುವಿಡಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಟ್ಟ ವಿದ್ಯೆ. ಕುತ್ಸಿತಾ ವಿಡಾ ।

**ಕುವಿನ್ದ ಕುವಿನ್ದ** (ಪುಂ) ನೇಯ್ಗೆಯವನು, ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ನೇಯುವವನು. ಕುಂ ಭೂಮಿ ವಿನ್ದತಿ - ವಿದಲ್ (ಲಾಭೇ) "ಶಃ" (ವಾಂ ೩-೧-೧೩೮) ।



**ಕುವಿವಾಹ ಕುವಿವಾಹ** (ಪುಂ) ಆಯಾ ವರ್ಣದವರಿಗೆ ವಿಹಿತ ವಾದುದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನವಾದ ರೀತಿಯ ವಿವಾಹ, ನಿಷಿದ್ಧ ವಾದ ವಿವಾಹ, ಅಶಾಸ್ತ್ರೀಯವಾದ ಮದುವೆ. ಕುತಿಸಿತು ವಿವಾಹ: "ಚತುರ್ಣಾಮಪಿ ವರ್ಣಾನಾಂ ಪ್ರೇತೃ ಚೇಹ ಹಿತಾಹಿತಾನ್ | ಅಘಟಾವಿಮಾನ್ ಸಮಾಸೇನ ಸ್ತ್ರೀವಿವಾಹಾನ್ರಿಬೋಧತ" ಮನುಂ ೩-೨೦ |

**ಕುವೃತ್ತಿ ಕುವೃತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ವ್ಯಾಪಾರ, ಕೆಟ್ಟ ನಡತೆ, ಕೆಟ್ಟ ಆಚಾರ. ಕುತಿಸಿತಾ ವೃತ್ತಿ: | 2. ಕೆಟ್ಟ ಜೀವನ, ನಿಂದಿತವಾದ ಜೀವನ. (ವಿಂ) 3. ಕೆಟ್ಟ ವ್ಯಾಪಾರವುಳ್ಳ. ಕುತಿಸಿತಾ ವೃತ್ತಿರಿಸ್ಯ | 4. ನಿಂದಿತವಾದ ಜೀವನವುಳ್ಳ.

**ಕುವೇಣಿ(ಗಿ) ಕುವೇಣಿ(ಣೀ)** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೀನು ಗಳನ್ನು ಹಿಡಿದು ತುಂಬುವ ಬುಟ್ಟಿ. ಇಷತ್ ವೇಣಂತೆ ಮತ್ಸ್ಯಾ ಅಸ್ಯಾಮ್-ವೇಣಿ (ಗತೌ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭) | ವಾ "ಜಿಫ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫) | 2. ಅಡ್ಡಾದಿಡ್ಡಿಯಾಗಿ ಹೆಣೆದಿರುವ ಜಡೆ. ಕುತಿಸಿತಾ ವೇಣಿ |

**ಕುವೇರ ಕುವೇರ** (ಪುಂ) ಕುಬೇರ, ಧನಾಧಿಪತಿ, ಯಕ್ಷರಾಜ. ["ಕುವೇರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕುವೇರಕ ಕುವೇರಕ** (ಪುಂ) ನಂದಿಮರ.

**ಕುವೇರಾಕ್ಷಿ ಕುವೇರಾಕ್ಷಿ** (ಪುಂ) ಕೈಲಾಸಪರ್ವತ.

**ಕುಶ ಕುಶ** (ಪುನಂ) 1. ದರ್ಭೆಹುಲ್ಲು. ಕೌ ಶೇತೆ - ಶಿಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಙ:" (೩-೨-೧೦೧) | ಕುಂ ಪಾಪಂ ಶ್ಯತಿ-ಶೋ (ತನ್ಮೂಲಕರಣಂ) "ಕ:" (೩-೨-೪) ವಾ | "ದಿಶ ವನಹರಿ-ಣಿಮ್ಯೋ ವಂಶಕಾಂಡಚ್ಛವಿಣಾಂ ಕಬಲಮುಪಲಕೋಟಿಚ್ಛಿನ್ನಮೂಲಂ ಕುಶಾನಾಮ್" ಭರ್ತಂ ೨-೩೪ | (ಪುಂ) 2. ಕುಶಮಹಾರಾಜ, ಶ್ರೀರಾಮನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. ದೋಷಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಸೀತೆಯುಗರ್ಭವನ್ನು ಕುಶ ಮತ್ತು ಗೋಪುಚ್ಛಗಲಿಂದ ಸವರಿ ದುದರಿಂದ ಶ್ರೀರಾಮನ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಕುಶ ಮತ್ತು ಲವ ರೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. "ಸ ತೌ ಕುಶಲವೋನ್ಮುಷ್ಠಗರ್ಭವಲೇದೌ ತದಾಪ್ಯಯಾ | ಕವಿ: ಕುಶಲವಾವೇವ ಚಕಾರ ಕಿಲ ನಾಮತ:" ರಘುಂ ೧೫-೩೨ | ಲೋಕಾಪವಾದದ ಕಾರಣದಿಂದ ಶ್ರೀರಾಮನು ಸೀತೆಯನ್ನು ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ಮೂಲಕ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಿಬಿಟ್ಟನು. ವಾಲ್ಮೀಕಿಮಹರ್ಷಿಯು ಗರ್ಭಿಣಿ ಯಾಗಿದ್ದ ಸೀತೆಯನ್ನು ತಮ್ಮ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಸಲಹು ತ್ತಿದ್ದರು. ಅಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಅವಳ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಕುಶಲವರೆಂದು ಹೆಸರಿಟ್ಟರು. ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಜಾತಕರಣಾದಿ ಎಲ್ಲಾ ಸಂಸ್ಕಾರ ಗಳನ್ನೂ ನಡೆಸಿ ತಾವು ರಚಿಸಿದ ಶ್ರೀಮದ್ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಅವರಿಗೆ ಉಪದೇಶಿಸಿದರು. ಕುಶಲವರು ಅದನ್ನು ಶ್ರೀರಾಮನ ಆಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹರ್ಷಿಯ ಅಪ್ಪಣೆ ಯಂತೆ ಹಾಡಿದರು. "ಅಥ ಪ್ರಾಚೇತಸೋಪಜ್ಞಂ ರಾಮಾಯಣಮತಂದ್ರಿತ:"

ಮೆಥಿಲೆಯ ಕುಶಲವೌ ಜಗತ್ಕುಶಲೋದಿತೌ" ರಘುಂ ೧೫-೩೨ |

3. ಎತ್ತಿನ ಕುತ್ತಿಗೆಯ ಮೇಲೆ ನೋಗವನ್ನಿಟ್ಟು ಕಟ್ಟುವ ದರ್ಭೆಯ ಹಗ್ಗ. 4. ಸಪ್ತದ್ವೀಪಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ಕುಶ ದ್ವೀಪ. ಈ ದ್ವೀಪದಲ್ಲಿ ದೇವತೆಗಳು ಒಂದು ಕುಶಸ್ತಂಭ ವನ್ನು ತಯಾರಿಸಿ ಇಟ್ಟಿರುವುದರಿಂದ ದ್ವೀಪಕ್ಕೆ ಈ ಹೆಸರಾಯಿತು. ಈ ದ್ವೀಪದ ರಾಜನಾದ ಹಿರಣ್ಯ ರೇತಸ್ಸೆಂಬುವವನು ತನ್ನ ಏಳು ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಇದನ್ನು ಭಾಗಮಾಡಿ ಕೊಟ್ಟನು. ಈ ದ್ವೀಪವು ಫೃತಸಮುದ್ರ ದಿಂದ ಸುತ್ತುವರೆಯಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದು. (ನಂ) 5. ಜಲ. ನೀರು. (ವಿಂ) 6. ಪಾಪಾತ್ಮ. 7. ಮದಿಸಿದವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಶಾ-ಶಾ. 8. ಕುದುರೆಯ ಕಡಿವಾಣ. ಲಗಾಮು. 9. ರಜ್ಜು. ಹಗ್ಗ. 10. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಸಾಮ ಗಾನ ಮಾಡುವಾಗ ಸ್ತೋತ್ರಗಳ ಎಣಿಕೆಗಾಗಿ ಇಡುವ ಮರದ ಗೂಟ. ಅಯಸ್ಕುಶಾ | -ಶಿ-ಶಿ. 11. ಫಾಲ. ನೇಗಿಲಿಗುಳ. "ಕುಶೋ ರಾಮಸುತೇ ಛೀಪೇ ಯೋತ್ರೇ ದರ್ಭೆ ಕುಶಂ ಜಲೇ | ಕುಶೀ ಫಾಲೇಽಪಿ ಬಲ್ಗಾಯಾಂ ಕುಶಾ ಪಾಪಿಷ್ಠಮತ್ತಯೋ: | ಕುಶೋ ವಾಚ್ಯವದಾಪ್ಯಾತ:" ವಿಶ್ವಂ | "ಕುಶೀ ಫಾಲೇ ಕುಶಾ ರಜ್ವಾಂ ತ್ರಿಘ ಪಾಪಿಷ್ಠಮತ್ತಯೋ:" ಮೇದಿಂ |

**ಕುಶಕಾಶ ಕುಶಕಾಶ** (ಪುನಂ) ಕುಶ (ದರ್ಭೆ) ಮತ್ತು ಜೊಂಡು ಹುಲ್ಲು. ಕುಶಾಶ್ಚ ಕಾಶಾಶ್ಚ | ವಾ ಏಕವಕ್ಷಾವ: (೨-೪-೧೨) | ಕುಶಕಾಶಮ್ ಕುಶಕಾಶಾ: |

**ಕುಶಾಕ್ಷಿಪ ಕುಶಾಕ್ಷಿಪ** (ಪುಂ) ಸಪ್ತದ್ವೀಪಗಳಲ್ಲೊಂದು, ಪ್ರಪಂಚದ ಒಂದು ಭೂಭಾಗ.

**ಕುಶಾಚಾರ ಕುಶಾಚಾರ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ನದಿ.

**ಕುಶಾಚವಜ ಕುಶಾಚವಜ** (ಪುಂ) ಜನಕಮಹಾರಾಜನ ತಮ್ಮ. ಭರತ ಶತ್ರುಘ್ನರ ಮಾವ. "ತಸ್ಯ ಪುತ್ರದ್ವಯಂ ಜನ್ಮೇ ಧರ್ಮಜಸ್ಯ ಮಹಾತ್ಮನ: | ಜ್ಯೇಷ್ಠೋಽಹಂ ಮನುಜೋ ವೀರೋ ಮಮ ಭ್ರಾತಾ ಕುಶಾಚವಜ:" ರಾಮಾಂ | ಕುಶಾಚವಜನ ರಾಜಧಾನಿ ಸಾಂಕಾಶ್ಯನಗರ. "ಸಾಂಕಾಶ್ಯೇ ಭ್ರಾತರಂ ಶೂರಮರ್ಯಾಸಿಂ ಕುಶಾಚವಜಮ್" ರಾಮಾಂ | ಈ ರಾಜನು ಮಂಡವಿ ಮತ್ತು ಶ್ರುತಕೀರ್ತಿಯರೆಂಬ ತನ್ನ ಇಬ್ಬರು ಹೆಣ್ಣುಮಕ್ಕಳನ್ನು ಭರತಶತ್ರುಘ್ನರಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು ಮದುವೆ ಮಾಡಿದನು.

**ಕುಶನಾಭ ಕುಶನಾಭ** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರವಂಶದ ಕುಶಮಹಾ ರಾಜನ ನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. ಕುಶ ಇವ ನಾಭಿರಸ್ಯ "ಅಚ್" (೫-೪-೭೫) | [ಈ ರಾಜನು ಮಹೋದಯವೆಂಬ ನಗರವನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿ ರಾಜ್ಯವಾಳು ತ್ತಿದ್ದನು. ಈತನಿಗೆ ಫೃತಾಚಿಯಲ್ಲಿ ನೂರು ಮಂದಿ ಹೆಣ್ಣು ಮಕ್ಕಳು ಹುಟ್ಟಿದರು. ಇವರು ಒಮ್ಮೆ ಉದ್ಯಾನವನದಲ್ಲಿ



ವಿಹರಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ವಾಯುದೇವನು ಇವರನ್ನು ಕಂಡು ಮೋಹಿಸಲು ತಂದೆಯ ಅನುಮತಿಯಿಲ್ಲದೆ ಅದಕ್ಕೆ ಇವರು ಸಮ್ಮತಿಸಿಲ್ಲ. ವಾಯುವು ಕೋಪಗೊಂಡು ಇವರ ಶರೀರದೊಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಕುಬ್ಜೆಯರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದನು. ಬ್ರಹ್ಮದತ್ತನೆಂಬ ಒಬ್ಬ ಮುನಿಯು ಇವರನ್ನು ಮದುವೆ ಯಾಗಿ ತನ್ನ ತಪೋಬಲದಿಂದ ಸುಂದರಿಯರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದನು. ಇದರಿಂದ ಈ ಕನ್ಯೆಯರು ವಾಸಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಪ್ರದೇಶಕ್ಕೆ "ಕನ್ಯಾಕುಬ್ಜ" ಎಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು.] ರಾಮಾಂ ।

**ಕುಶಪುಷ್ಪ ಕುಶಪುಷ್ಪ** (ನಂ) ದರ್ಭೆ ಮತ್ತು ಹೂವು. ಕುಶಾಶ್ವ ಪುಷ್ಪಾಣಿ ಚ ।

**ಕುಶಲ ಕುಶಲ** (ನಂ) 1. ಕಲ್ಯಾಣ, ಶುಭ, ಮಂಗಳ. ಕುತಿಸಿತಂ ಶಲತೇ ಸಂವೃಣೋತಿ — ಶಲ (ಚಲನೆ ಸಂವರಣಂ ಚ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ಕಲ್ಯಾಣಂ ವೋ ವಿಧತ್ತಾಂ ಕರತಮದಧುನೀಲೋಲಕಲ್ಲೋಲಮಾಲಾಖಲಲ್ಲೋಲಮ್ಬಕೋಲಾಹಲಮುಖ-ರಿತದಿಕ್ಚಕ್ರವಾಲಾಂತರಾಲಮ್" ಚಂ ಭಾಂ ೧-೧ । 2. ಆರೋಗ್ಯ, ಕ್ಷೇಮ, ಸೌಖ್ಯ, ನೆಮ್ಮದಿ. "ಅಪಿ ಕುಶಲ-ಮಮರ್ತ್ಯಾಃ ಸ್ವಾಗತಂ ಸಾಂಪ್ರತಂ ವಃ" ಚಂ ರಾಂ । 3. ಜಾಣನ, ಕಾರ್ಯಚತುರತೆ. 4. ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ದಕ್ಷತೆ. 5. ಪುಣ್ಯ, ಸುಕೃತ. 6. ತೃಪ್ತಿ. (ವಿಂ) 7. ದಕ್ಷನಾದ, ಸಮರ್ಥ ನಾದ. "ಹ್ರೀಪ್ರತ್ಯುಹಪ್ರಶಮಕುಶಲಾಃ ಶಿಖವಶ್ಚಕ್ರಾಸಾಮ್" ಮಾಘಂ ೯-೮೭ । 8. ಶಿಕ್ಷಿತನಾದ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪಳಗಿದ. 9. ಚೆನ್ನಾಗಿರುವ, ಒಳ್ಳೆಯ ಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರುವ. 10. ಅರ್ಹ ನಾದ, ಯೋಗ್ಯನಾದ. "ಕುಶಲಂ ನಿಪುಣಂ ಪುಣ್ಯಂ ಪರ್ಯಾಪ್ತೌ ಮಜ್ಜಲೇ ಕ್ಷಮೇ" ವೈಜಂ । 11. ನಿಪುಣ, ಅಭಿಜ್ಞ. "ಯೇ ಚೈವ ಪುರುಷಾಃ ಕಲಾಸು ಕುಶಲಾಸ್ತೇವೇವ ಲೋಕಸ್ಥಿತಿಃ" ಭರ್ತೃ ೧-೧೮ । 12. ಜಾಣನಾದ, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಚತುರನಾದ. "ಭಜತೇ ವಿदेशमधिकेन जितस्तदनुप्रवेशमथवा कुशलः" ಮಾಘಂ ೯-೪೮ । 13. ದರ್ಭೆಯನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ. ಕುಶಾನ್ ಲಾತಿ — ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೪) ।

**ಕುಶಲಕಾಮ ಕುಶಲಕಾಮ** (ವಿಂ) ಮಂಗಳವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಶುಭವನ್ನು ಬಯಸುವ. ಕುಶಲಂ ಕಾಮಯತೇ — ಕಮು (ಕಾಂತೌ) "ಅಞ್" (೩-೨-೧) ।

**ಕುಶಲತಾ ಕುಶಲತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಕ್ಷತೆ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. ಕುಶಲಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) । 2. ನಿಪುಣತೆ, ಅಭಿಜ್ಞತೆ, ಜಾಣತನ. "ಯಥಾ ಯಥಾ ನಿಷೇವಂತೇ ವಿಷಯಾನ್ ವಿಷಯಾತ್ಮಕಾಃ । ತಥಾ ತಥಾ ಕುಶಲತಾ ತेषಾಂ ತೇಷುಪಜಾಯತೇ" ಮನುಂ ೧೨-೭೩ ।

**ಕುಶಲಪ್ರವನ ಕುಶಲಪ್ರಶ್ನ** (ಪುಂ) ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಆರೋಗ್ಯ ಕ್ಷೇಮಗಳನ್ನು ಕೇಳುವುದು. ಕುಶಲಸ್ಯ ಪ್ರವನಃ ।

**ಕುಶಲವ ಕುಶಲವ** (ಪುಂ ದ್ವಿವಂ) ಶ್ರೀರಾಮನ ಮಕ್ಕಳಾದ ಕುಶಲವರು. ಕುಶಾಶ್ವ ಲವಶ್ವ । "ಸೈಥಿಲೇಯೌ ಕುಶಲವೌ ಜಗತುರ್ಗುಣೋದಿತೌ" ರಘುಂ ೧೪-೬೩ ।

**ಕುಶಲವತ್ ಕುಶಲವತ್** (ವಿಂ) ಕ್ಷೇಮದಿಂದಿರುವ. ಆರೋಗ್ಯವಂತ. ಕುಶಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪) । ಮಸ್ಯ ವಃ (೮-೨-೯) । "ಸರ್ವತಃ ಕುಶಲವಾನಸಿ ಕಚ್ಚಿತ್ವಂ ಸ ನೈಷಥ ಇತಿ ಪ್ರತಿಭಾ ನಃ" ನೈಷಂ ೪-೭೪ ।

**ಕುಶಲಿನ್ ಕುಶಲಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಮಂಗಳವುಳ್ಳ, ಶುಭವುಳ್ಳ. ಕುಶಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) । 2. ಕ್ಷೇಮವುಳ್ಳ. "ಸಂಪ್ರತ್ಯುಪೇಯಾಃ ಕುಶಲೀ ಪುನರ್ಯುಧಃ ಸಸ್ತೇಹಮಾಶೀರೀತಿ ಭರ್ತು-ರೀರಿತಾ" ಮಾಘಂ ೧೪-೯೪ । 3. ಜಾಣನಾದ, ಕಾರ್ಯ ಚತುರನಾದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪) । ಕುಶಲಿನಿ ಕುಶಲಿನೀ. "ಕುಶಲಿನಿ ಕ್ಷೇಮಸ್ಯ ವಾರ್ತಾಪಿ ನ" ಸಾಂ ದಂ ।

**ಕುಶಸ್ಥಲ ಕುಶಸ್ಥಲ** (ನಂ) ಕನ್ಯಾಕುಬ್ಜದೇಶ.

**ಕುಶಸ್ಥಲೀ ಕುಶಸ್ಥಲೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪಂತಿನಗರದ ಒಂದು ಹೆಸರು. ["ಅವಂತಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕುಶಾ ಕುಶಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಜ್ಜು, ಹಗ್ಗ. "ಕುಶೀ ಕಾಲೇ ಕುಶಾ ರಜ್ವಾಮ್" ಮೇದಿಂ । 2. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಸಾಮಗಾನ ಮಾಡುವಾಗ ಸ್ತೋತ್ರದ ಎಣಿಕೆಗಾಗಿ ಇಡುವ ಮರದ ಗೂಟ.

**ಕುಶಾಕರ ಕುಶಾಕರ** (ಪುಂ) ಯಜ್ಞದ ಅಗ್ನಿ. ಕುಶೇರಾಕೀರ್ಯಂತೇ — ಆ + ಕ (ವಿಕೇಪೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭) ।

**ಕುಶಾಕ್ಷ ಕುಶಾಕ್ಷ** (ಪುಂ) ದರ್ಭೆಯಂತೆ ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ದೃಷ್ಟಿ ಯುಳ್ಳ ವಾನರ, — ಕಪಿ. ಕುಶ ಇವ ತೀಕ್ಷ್ಣಮಕ್ಷಿ ಅಸ್ಯ ।

**ಕುಶಾಗ್ರ ಕುಶಾಗ್ರ** (ನಂ) ದರ್ಭೆಯ ತುದಿ. ಕುಶಸ್ಯಾಗ್ರಮ್ । **ಕುಶಾಗ್ರಧೀ ಕುಶಾಗ್ರಧೀ**, -ಬುದ್ಧಿ -ಬುದ್ಧಿ (ವಿಂ) ದರ್ಭೆಯ ತುದಿಯಂತೆ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. ಕುಶಾಗ್ರವತ್ ಸೂಕ್ಷ್ಮಾ ಧೀಃ ಬುದ್ಧಿರ್ವಾ ಯಸ್ಯ । "ಅಪ್ಯಾಗ್ರಣಿ-ಮನ್ತ್ರಕೃತಾಮೃಷಿಣಾಂ ಕುಶಾಗ್ರಬುದ್ಧೇ ಕುಶಲೀ ಗುರುತೇ" ರಘುಂ ೪-೪ ।

**ಕುಶಾಗ್ರೀಯ ಕುಶಾಗ್ರೀಯ** (ವಿಂ) ದರ್ಭೆಯ ತುದಿಗೆ ಸಮಾನವಾದ, ದರ್ಭೆಯ ಅಗ್ರದಂತಿರುವ (ಸೂಕ್ಷ್ಮಬುದ್ಧಿ ಮುಂತಾದುದು). ಕುಶಾಗ್ರಮಿವ "ಛಃ" (೪-೩-೧೦೪) । "ಕುರ ಬುದ್ಧಿ ಕುಶಾಗ್ರೀಯಾಮನುಕಾಮಿನತಾಂ ತ್ಯಜ" ಭೃಗುಂ ೪-೧೪ ।

**ಕುಶಾರಣಿ ಕುಶಾರಣಿ** (ಪುಂ) ದುರ್ವಾಸಮಹರ್ಷಿ. "ದ್ವರ್ವಾ-ಸಾಸ್ತು ಕುಶಾರಣಿಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।



ಕುಶಾವತೀ ಕುಶಾವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಶಮಹಾರಾಜನ ರಾಜ  
ಧಾನಿ. "ಸ ನಿವೇಶ್ಯ ಕುಶಾವತಿಯಾಂ ರಿಪುನಾಗಾಡ್ಕುಶಂ ಕುಶಮ್"  
ರಘುಂ ೧೫-೧೭.

ಕುಶಾಶ್ವ ಕುಶಾಶ್ವ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಒಬ್ಬ  
ಮೊರೆ. "ಸೃಜಯಸ್ಯ ಸುತಃ ಶ್ರೀಮಾನ್ ಸಹದೇವಃ ಪ್ರತಾಪವಾನ್ |  
ಕುಶಾಶ್ವಃ ಸಹದೇವಸ್ಯ ಪುತ್ರಃ ಪರಮಧಾರ್ಮಿಕಃ" ರಾಮಾಂ |  
2. ಚಂದ್ರವಂಶದ ಕುಶರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

ಕುಶಾಸನ ಕುಶಾಸನ (ನಂ) 1. ದರ್ಭೆಯ ಆಸನ.  
ಕುಶಾಸನಮ್ | 2. ಭೂಮಿಯನ್ನು ಆಳುವುದು. ಕೋ:  
ಶಾಸನಮ್ | 3. ಕೆಟ್ಟ ಅಶ್ವಿಕೆ. ಕುತ್ಸಿತಂ ಶಾಸನಮ್ |  
(ವಿಂ) 4. ದರ್ಭೆಯ ಆಸನವುಳ್ಳ. ಕುಶಾಸನ ಆಸನಂ ಯಸ್ಯ |

ಕುಶಿ ಕುಶಿ (ಪುಂ) ಘೋಕ, ಗೂಗಿ.

ಕುಶಿಕ ಕುಶಿಕ (ಪುಂ) 1. ಕುಶರಾಜನ ಮಗ. ಚಂದ್ರ  
ವಂಶದ ಒಬ್ಬ ಮೊರೆ. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನ ತಾತ. ಗಾಧಿಯ  
ತಂದೆ. ಕುಶಃ ಜನಕತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಠ್" (೪-೨-೧೧೫) |  
"ಕುಶಪುತ್ರಾ ವಭೂವುಹಿ ಸ್ವತವಾರೋ ದೇವವರ್ಚಸಃ | ಕುಶಿಕಃ  
ಕುಶನಾಭಶ್ಚ ಕುಶಾಶ್ವೋ ಮೃತಿಮಾಸ್ತಯಾ" | 2. ನೇಗಿಲ ಗುಳ.  
3. ಸರ್ಪವೃಕ್ಷ. ಮತ್ತಿಮರ. 4. ತಾರಗಿಡ. "ಕುಶಿಕೋ  
ಮುನಿಭೇದೇ ಸ್ಯಾತ್ಕಲೇ ಸರ್ಜೆ ವಿಭಿತ್ತಿಕೇ" ಹೇಮಂ |

ಕುಶಿನ್ ಕುಶಿನ್ (ಪುಂ) 1. ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹರ್ಷಿ. "ಪ್ರಾಚೇತ-  
ಸಸ್ತು ವಾಲ್ಮೀಕಿವಾಲ್ಮೀಕಿಶ್ಚ ಕುಶೀ ಕವಿಃ" ವೈಜಂ |  
2. ದರ್ಭೆ ಹಿಡಿದಿರುವ. ದರ್ಭೆಯನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ.  
ಕುಶೋಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) | "ದಿನೇಷ್ಟಮೇ ತು  
ದೀಕ್ಷಿತೋಽಹಂ ಯಥಾವಿಧಿ | ದೃಷ್ಟಿ ಮುಷ್ಟಿ ಕುಶೀ ಚೀರೀ  
ಘೃತಾಕ್ತೋ ಮೇಖಲೀಕೃತಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ |

ಕುಶಿ ಕುಶಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಬ್ಬಿಣದ ನೇಗಿಲ ಗುಳ. ಕು  
ಭೂಮಿ ಇಯತಿ - ಶೋ (ತನುಕರಣ) "ಙಃ" (೩-೨-೧೦೧) |  
"ಙೀಃ" (೪-೧-೪೨) | 2. ಮುರಿದ ಮೂಳೆಗೆ  
ಕಟ್ಟುವ ದಬ್ಬೆ. "ಕುಶಿ ಭಗನಾಸ್ಥಿಬಂಧಃ ಸ್ಯಾತ್"  
ವೈಜಂ |

ಕುಶಿಲ ಕುಶಿಲ (ವಿಂ) ಕೆಟ್ಟ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ. ಕುತ್ಸಿತಂ  
ಶಿಲಂ ಯಸ್ಯ |

ಕುಶಿಲವ ಕುಶಿಲವ (ಪುಂ) 1. ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹರ್ಷಿ.  
2. ಗಾಯಕ, ಹಾಡುಗಾರ. "ಕುಶಿಲವೋ ಕುಶಲವನಾಮ-  
ಧಾರಿಣಿ" ಚಂ ರಾಂ | 3. ನಟ, ಅಭಿನಯಕಾರ. ಕುತ್ಸಿತಂ  
ಶಿಲಂ ವಾತಿ - ವಾ (ಗತಿಗನ್ಧನಯೋಃ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) |  
4. ಸ್ತುತಿಪಾಠಕ, ಹೊಗಳುವವ. 5. ಯಾಚಕ. ಭಿಕ್ಷುಕ.  
"ಕುಶಿಲವಸ್ತು ವಾಲ್ಮೀಕೀ ನಟಯಾಚಕಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ |

ಕುಶಿವಶ ಕುಶಿವಶ (ಪುಂ) ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹರ್ಷಿ.  
"ಪ್ರಾಚೇತಸಸ್ತು ವಾಲ್ಮೀಕಿಃ ಕವಿಜ್ಯೇಷಃ ಕುಶಿವಶಃ"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಕುಶಿಲ ಕುಶಿಲ (ಪುಂ) 1. ಕಣಜ, ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಕೂಡಿ  
ಡುವ ಜಾಗ, ಉಗ್ರಾಣ. 2. ಹುರಿಯುವ ಬಾಣಲೆ.  
3. ತುಪಾಕ್ಷಿ, ಹೊಟ್ಟೆನೋಳಗಿನ ಬೆಂಕಿ.

ಕುಶಿಲಧಾನ್ಯ ಕುಶಿಲಧಾನ್ಯ (ನಂ) 1. ಮೂರು ವರ್ಷ  
ಗಳಿಗಾಗುವಷ್ಟು ಕೂಡಿಸಿಟ್ಟಿರುವ ಧಾನ್ಯ. (ವಿಂ) 2.  
ಮೂರು ವರ್ಷಗಳಿಗಾಗುವಷ್ಟು ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಕೂಡಿಸಿಟ್ಟಿರು  
ವವನು. ಕುಶಿಲಪರಿಮಿತಂ ಧಾನ್ಯಂ ಯಸ್ಯ | ವಾ "ಕಪ್"  
(೪-೪-೧೫೪) | -ಧಾನ್ಯಕಃ -ಧಾನ್ಯಕಃ.

ಕುಶಿಶಯ ಕುಶಿಶಯ (ನಂ) 1. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ, ತಾವರೆ  
ಹೂವು. ಕುಶಿ ಜಲೇ ಶೇತೇ - ಶೋಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಅಚ್"  
(೩-೨-೧೫) | "ಕುಶಿಶಯೇರತ್ರ ಜಲಾಶಯೋಪಿತಾ ಮುದಾ ರಮಂತೇ  
ಕಲಭಾ ವಿಕಸ್ವರೇಃ" ಮಾಘಂ ೪-೩೩ | 2. ಕುಶದ್ವೀಪದ  
ಸಪ್ತಕುಲಪರ್ವತಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಕುಶಿಶಯೋ ಹರಿಶ್ಚೈವ  
ಸಪ್ತಮೋ ಮನ್ಯರಾಚಲಃ" | 3. ಸಾರಸ ಪಕ್ಷಿ, ನೀರುಹಕ್ಕಿ.  
ತಾವರೆಹಕ್ಕಿ.

ಕುಶಿವಕ ಕುಶಿವಕ (ನಂ) ದರ್ಭೆಯ ನೀರು, ದಾನ  
ಮಾಡುವಾಗ ದರ್ಭೆಯೊಡನೆ ಬಿಡುವ ನೀರು. ಕುಶಸಹಿತ-  
ಮುದಕಮ್ |

ಕುಷ-ನಿಷ್ಕರ್ಷ (ಕ್ರಯಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಕುಷಾತಿ | ಚುಕುಷ |  
ಕುಷಿತಾ | ಕುಷಾತು | ಅಕುಷಿತಾ | ಅಕುಷಾತು |  
1. ಇಷ್ಟೆಂದು ನಿಶ್ಚಯಿಸು. 2. ಹೊರಕ್ಕೆ ತಳ್ಳು, ಹೊರಕ್ಕೆ  
ಹೊರಡಿಸು. "ತತೋಽಕುಷಾಢ್ವಶಶೀವಃ ಕ್ಷುಧಃ ಪ್ರಾಣಾನ್  
ವನೋಕಸಾಮ್" ಭಟ್ಟಿಂ ೧೭-೮೦ |

ಕುಷಾಕು ಕುಷಾಕು (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 2. ಸೂರ್ಯ.  
ಕುಷ (ನಿಷ್ಕರ್ಷ) "ಕಾಕುಃ" (೩ಂ ೩-೭೭) | 3. ವಾನರ,  
ಕಪಿ. (ವಿಂ) 4. ನೀಚ, ಅಧಮ. 5. ದಹಿಸುವ,  
ಸುಡುವ. 6. ಇತರರಿಗೆ ಖೇದವುಂಟುಮಾಡುವ, ಇತರರ  
ಮನ ನೋಯಿಸುವ. "ಕುಷಾಕುರ್ಮಕಂಠೇ ಭಾನೋ ಪರೋತ್ತಾಪಿನಿ  
ಪಾವಕೇ" ವಿಶ್ವಂ |

ಕುಷಿತಕ ಕುಷಿತಕ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಮುಷಿ.

ಕುಷಿನ್ ಕುಷಿನ್ (ಪುಂ) ಅರವತ್ತು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನ ಗಜ,  
ಅನೆ. "ಮದವೃಂದಃ ಕುಷಿ ಕಮ್ಬುಃ ಶುಣ್ಡಾಲಃ ಷಷ್ಟಿಹಾಯನಃ"  
ವೈಜಂ |

ಕುಣ ಕುಷ್ಠ (ನಂ) 1. ಚಂಗಲುಕೋಷ್ಠಃ ಕುಷಾತಿ ರೋಗಮ್  
- ಕುಷ (ನಿಷ್ಕರ್ಷ) "ಕಥನ್" (೩ಂ ೨-೨) | 2. ಶ್ವಿತ್ರ,



ಶ್ಲೇಷ, ತೋನ್ಮರೋಗ. ಕುಠಾತ್ಯಜ್ಞಮ್ - ಕುಠ "ಕಥನ್" (ಽಽಂ ೨-೨) | "ತ್ವಂ ಸರ್ವಭಕ್ಷೋ ಭವ ಭೀಮಕರ್ಮಾ ಕುಠಾಭಿ-  
ಭೂತೋಜಲ ಭೂಮಗರ್ಭಃ" ಕುಮಾಂ' ೧-೧೬ | ಏಳು ವಿಧ ಮಹಾ  
ಕುಷ್ಮಗಳು ಹನ್ನೊಂದು ವಿಧ ಕ್ಷುದ್ರ ಕುಷ್ಮಗಳೆಂದು ಕುಷ್ಮ  
ರೋಗವು ಹದಿನೆಯು ವಿಧ. "ತತ್ರ ಮಹಾಕುಠಾನ್ಯ-  
ಣೋದುಮ್ಬರರ್ಷ್ಯಜಿಹ್ವಕಪಾಲಕಾಕಣಕಪುಂಡ್ರೀಕದ್ರೋಣಿಣಿತಿ" |  
ಶುದ್ರಕುಠಾನ್ಯಪಿ ಸ್ಥೂಲಾಣ್ಯಂ ಮಹಾಕುಠಮೇಕಕುಠಂ ಚರ್ಮದಲಂ  
ವಿಸರ್ಪಃ ಪರಿಸರ್ಪಃ ಸಿಂಧುಂ ವಿಚ್ಚಿಕಾ ಕಿಟಿಂ ಪಾಮಾ ರಸಕಾ  
ಚೇತಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ನಿಧಾನಂ ೪-೪ | ಎಲ್ಲಾ ಕುಷ್ಮಗಳೂ ವಾತ  
ಪಿತ್ತ ಕಫ ಮತ್ತು ಕೃಮಿ ದೋಷಗಳಿಂದಂಟಾಗುವವು.  
"ಸರ್ವಾಣಿ ಕುಠಾನಿ ಸವಾತಾನಿ ಸಪಿತ್ತಾನಿ ಸಶ್ಲೇಷ್ಮಾಣಿ  
ಸಕೃಮಿಣಿ ಚ ಭವಂತಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ನಿಧಾನಂ ೪-೬ | ವಾತ  
ದೋಷದಿಂದ ಅರುಣ ಕುಷ್ಮವೂ ಪಿತ್ತದೋಷದಿಂದ  
ಉದುಂಬರ, ಮುಷ್ಯಜಿಹ್ವ, ಕಪಾಲ ಮತ್ತು ಕಾಕಣ  
ಕುಷ್ಮಗಳೂ ಶ್ಲೇಷ್ಮದೋಷದಿಂದ ಪುಂಡ್ರೀಕ ಮತ್ತು  
ದ್ರೋಣಿಣಿ ಕುಷ್ಮಗಳೂ ಸಂಭವಿಸುವವು. "ತತ್ರ ವಾತೇನಾಣ್ಯಂ,  
ಪಿತ್ತೇನೋದುಮ್ಬರರ್ಷ್ಯಜಿಹ್ವಕಪಾಲಕಾಕಣಕಾನಿ, ಶ್ಲೇಷ್ಮಣಾ ಪುಂಡ-  
ರೀಕಂ ದ್ರೋಣಿಣಿ ಚೇತಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ನಿಧಾನಂ ೪-೭ |

**ಕುಠನ ಕುಷ್ಮಘ್ನ** (ವಿಂ) ಕುಷ್ಮರೋಗವನ್ನು ನಾಶ  
ಪಡಿಸುವ (ಔಷಧ). ಕುಠಂ ಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ)  
"ಟಕ್" (೩-೨-೪೩) |

**ಕುಠನಾಶನ ಕುಷ್ಮನಾಶನ** (ಪುಂ) 1. ಹಂದಿಗಡ್ಡೆ,  
ವಾರಾಹಿಗಿಡ. ಕುಠಂ ನಾಶಯತಿ - ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) + ಣಿಕ್  
"ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ಬಿಳಿ ಸಾಸುವೆ. (ನಂ)  
3. ಕುಷ್ಮರೋಗವನ್ನು ವಾಸಿಮಾಡುವಿಕೆ. ಕುಠ + ಣಶ  
+ ಣಿಕ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | (ವಿಂ) 4.  
ಕುಷ್ಮರೋಗವನ್ನು ವಾಸಿಮಾಡುವ, ತೋನ್ಮರೋಗವನ್ನು  
ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. -ನಾಶಿನ್ - ನಾಶಿನ್. ಕುಷ್ಮ ರೋಗ  
ವನ್ನು ಗುಣಪಡಿಸುವ. ಕುಠ + ಣಶ + ಣಿಕ್ "ಣಿಃ"  
(೩-೧-೧೩೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪) |  
-ನಾಶಿನಿ - ನಾಶಿನೀ.

**ಕುಠಲ ಕುಷ್ಮಲ** (ನಂ) ಭೂತಲ. ಭೂಮಿ. ಕೋಃ ಸ್ಥಲಮ್ |  
ಪತ್ವಮ್ (೮-೩-೯೬) | "ಶಯಾನಾಂ ಕುಠಲೇ ತಾರಾಮ್ ದಿವಿಷಾ-  
ಮಿವ ನಿರ್ಮಲಾಮ್" ಭೃಗುಂ ೧-೮೪ |

**ಕುಠಹತ್ ಕುಷ್ಮಹತ್** (ಪುಂ) 1. ಕಗ್ಗಲಿಮರ. ಕುಠಂ  
ಹರತಿ - ಹತ್ (ಹರಣೆ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬) | "ಖದಿರೋ  
ಬಾಲಪತ್ರಕಃ | ಯುಪದ್ರುಃ ಕುಠಹತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | (ವಿಂ)  
2. ಕುಷ್ಮರೋಗವನ್ನು ವಾಸಿಮಾಡುವ.

**ಕುಠಿತ ಕುಷ್ಮಿತ** (ವಿಂ) ಕುಷ್ಮರೋಗವುಂಟಾಗಿರುವ.  
ತೋನ್ಮ ಹಿಡಿದಿರುವ. ಕುಠಮಸ್ಯ ಸಂಜಾತಮ್ "ಇತ್" (೪-೨-೩೬) |  
"ದಂಪತ್ಯೋಃ ಸ್ನೇಹವಾಹುತ್ಯಾತ್ ದುಷ್ಟಶೋಣಿತ-  
ಶುಕ್ರಯೋಃ | ಯದಪತ್ಯಂ ತಯೋರ್ಜಿತಂ ಜೇಯಂ ತದಪಿ ಕುಠಿತಮ್" |

**ಕುಠಿನ್ ಕುಷ್ಮಿನ್** (ವಿಂ) ಕುಷ್ಮರೋಗಿ, ತೋನ್ಮ ಒಡಿ  
ದವನು. ಕುಠಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪) | ಕುಠಿನಿ ಕುಷ್ಮಿನೀ.

**ಕುಠಲ ಕುಷ್ಮಲ** (ನಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸುವಿಕೆ. ಕುಠ (ನಿಷ್ಕರ್ಷೆ)  
"ಕಮಲನ್" (ಽಽಂ ೪-೧೮೬) | 2. ಹೊದಿಕೆ.

**ಕುಠಾಂಡ ಕುಷ್ಮಾಂಡ** (ಪುಂ) 1. ಕುಂಬಳದ ಗಿಡ. ಇವತ್  
ಋಷಾ ಅಂಡೇವಸ್ಯ | ಪೃಷೋಃ | 2. ಈಶ್ವರನ ಪ್ರಮಥ  
ಗಣಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಠಾಂಡೀ ಕುಷ್ಮಾಂಡೀ.  
3. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

**ಕುಠಾಂಡಕರಸಾಯನ ಕುಷ್ಮಾಂಡಕರಸಾಯನ** (ನಂ)  
ಕುಷ್ಮಾಂಡ ಲೇಹ್ಯ, ಕುಂಬಳಕಾಯಿ ಲೇಹ್ಯ.

**ಕುಸ-ಶ್ಲೇಷಣೆ** (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಕುಸ್ಯತಿ | ಚುಕೋಸ |  
ಕುಸಿತಾ | ಅಕೋಸೀತ್ | ಆಲಿಂಗಿಸು, ಅಪ್ಪಿಕೊ.

**ಕುಸಿತ ಕುಸಿತ** (ಪುಂ) 1. ವೇಶ. ಜನಪದ. ಕುಸ (ಶ್ಲೇಷಣೆ)  
"ಇತ್" (ಽಽಂ ೪-೧೦೬) | 2. ಒಂದು ವೇವತೆ.

**ಕುಸಿತಾಯಿ ಕುಸಿತಾಯೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಸಿತ ದೇವತೆಯ ಪತ್ನಿ.  
ಕುಸಿತಸ್ಯ ಪತ್ನಿ "ಏ" ಆದೇಶ: "ಡೀಪ್" ಚ (೪-೧-೩೭) |

**ಕುಸಿದ ಕುಸಿದ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ದೇವತೆ. 2. ವೇಶ,  
ಜನಪದ. ಕುಸ (ಶ್ಲೇಷಣೆ) "ಇದಃ" (ಽಽಂ ೪-೧೦೬) |

**ಕುಸಿದಾಯಿ ಕುಸಿದಾಯೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಸಿದ ದೇವತೆಯ  
ಪತ್ನಿ. ಕುಸಿದಸ್ಯ ಪತ್ನಿ "ಏ" ಆದೇಶ: "ಡೀಪ್" ಚ  
(೪-೧-೩೭) |

**ಕುಸೀದ ಕುಸೀದ** (ನಂ) 1. ಬಡ್ಡಿಯಿಂದ ನಡೆಸುವ ಜೀವನ.  
ಸಾಲ ಕೊಟ್ಟು ಅದರಿಂದ ಬರುವ ಬಡ್ಡಿಯ ಹಣದಿಂದ  
ಜೀವಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 2. ಬಡ್ಡಿಯ ಹಣದಿಂದ  
ಜೀವಿಸುವವನು. "ಕುಸೀದ ವೃದ್ಧಿಜೀವನೇ | ವೃದ್ಧಾಜೀವಿ"  
ಹೇಮಂ | ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ" | ಕುಸೀದಕಃ ಕುಸೀದಕಃ.

**ಕುಸೀದಿನ್ ಕುಸೀದಿನ್** (ವಿಂ) ಬಡ್ಡಿಗಾಗಿ ಹಣವನ್ನು ಸಾಲ  
ಕೊಡುವವನು. ಕುಸೀದಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪) | -ದಿನಿ - ದಿನೀ.

**ಕುಸೀದಪಥ ಕುಸೀದಪಥ** (ಪುಂ) ನ್ಯಾಯವಾದುದಕ್ಕಿಂತ  
ಹೆಚ್ಚು ಬಡ್ಡಿಗಾಗಿ ಸಾಲ ಕೊಡುವುದು. "ಕೃತಾನುಸಾರಾದಧಿಕಾ  
ವ್ಯತಿರಿಕ್ತಾ ನ ಸಿದ್ಧಯತಿ | ಕುಸೀದಪಥಮಾಹುಸ್ತಂ ಪಶ್ಚಕಂ ಶತ-  
ಮಹತಿ" ಮನುಂ ೮-೧೪೨ |



**ಕುಸಿದಿಕ ಕುಸಿದಿಕ** (ವಿಂ) ಬಡ್ತಿಗಾಗಿ ದಣವನ್ನು ಸಾಲ ಕೊಡುವವನು. ಕುಸಿದಿ ವೃದ್ಧಿ, ತದರ್ಥ ದ್ರವ್ಯ ಕುಸಿದಿ, ತತ್ಪ್ರ-  
ಯಚ್ಛತಿ "ಠನ್" "ಠಚ್" ವಾ (೪-೪-೩೧) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
ಕುಸಿದಿಕಿ ಕುಸಿದಿಕೇ.

**ಕುಸುಮ ಕುಸುಮ** (ನಂ) 1. ಪುಷ್ಪ. ಹೂವು. ಕುಸುಮ -  
ಕುಮ (ಶ್ಲೇಷಣೆ) "ತಮ:" (ತಂ ೪-೧-೧೦೬) | "ಸುಗಂಧಯ-  
ದ್ವಿಷ: ಪುಷ್ಪಮಲ್ಲಾನಿ ಕುಸುಮ ದಿವ: | ಭೂರಿ ತಪಾಪತತ್ತಸ್ಮಾ-  
ದ್ವಾಪಾತ ದಿವಂ ಯಶ:" ಮಾಧಂ ೧೯-೨೦ | 2. ಒಂದು ವಿಧ  
ನೇತ್ರರೋಗ. 3. ಹೆಂಗಸರ ರಜಸ್ಸು. 4. ಫಲ, ಹಣ್ಣು.  
"ಕುಸುಮ ಸ್ವೀರಜೋನೇತ್ರರೋಗಯೋ: ಫಲಪುಷ್ಪಯೋ:" ಮೇದಿಂ |

**ಕುಸುಮಕಾರ್ಮುಕ ಕುಸುಮಕಾರ್ಮುಕ** (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ. ಕಾಮದೇವ.  
ಕುಸುಮ ಕಾರ್ಮುಕಮಸ್ಯ | "ಕುಸುಮಕಾರ್ಮುಕಕಾರ್ಮುಕ-  
ಸಂಹಿತದ್ರುತಶಿಲೀಮುಖಖಂಡಿತವಿಗ್ರಹಾ:" ಮಾಧಂ ೬-೧೬ |

**ಕುಸುಮಚಾಪ ಕುಸುಮಚಾಪ**, -ಬಾಣ-ಬಾಣ, -ಸಾಯಕ  
-ಸಾಯಕ (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ. ಕಾಮದೇವ. ಕುಸುಮ ಚಾಪೋ  
ಬಾಣ: ಸಾಯಕೋ ವಾಸ್ಯ | "ಕುಸುಮಚಾಪಮತೇಜಯದಂಶುಭಿಹಿಮಕರೋ  
ಮಕರೋಜಿತಕೇತನಮ್" ರಘುಂ ೯-೩೯ |

**ಕುಸುಮಧನ್ವನ್ ಕುಸುಮಧನ್ವನ್** (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ. ಕಾಮ  
ದೇವ. ಕುಸುಮ ಧನುರಸ್ಯ |

**ಕುಸುಮಪುರ ಕುಸುಮಪುರ** (ನಂ) ಪಾಟಲಿಪುತ್ರ ನಗರ.  
ಚಂದ್ರಗುಪ್ತನ ರಾಜಧಾನಿ. "ಅಯೇ, ಕುಸುಮಪುರವೃತ್ತಾಂತಜ್ಞ: |  
ಅಹಂ ಭವತ್ಪ್ರಣಿಧಿರೇವೇತಿ ಗತಾರ್ಥ:" ಮುದ್ರಾಂ ೨ |

**ಕುಸುಮಮಯ ಕುಸುಮಮಯ** (ವಿಂ) ಹೂವಿನಿಂದ ತುಂಬಿದ.  
ಹೂವು ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವ. ಕುಸುಮ "ಮಯ" (೪-೪-೨೧) |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೫) | -ಮಯಿ-ಮಯೇ.

**ಕುಸುಮವಿಚಿತ್ರಾ ಕುಸುಮವಿಚಿತ್ರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೃತ್ತ  
ರತ್ನಾಕರೋಕ್ತವಾದ ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು  
ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: "ನಯಸಹಿತೌ ನ್ಯೌ ಕುಸುಮ-  
ವಿಚಿತ್ರಾ" ವೃಂ ೨೦ | ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ನ ಯ ನ ಯ  
||| 100 ||| 100

(ವಿಂ) 2. ಪುಷ್ಪಗಳಿಂದ ವಿಚಿತ್ರವಾಗಿರುವ, ಹೂವುಗಳಿಂದ  
ವಿಚಿತ್ರವಿಚಿತ್ರವಾಗಿರುವ. "ಉಪವನಭೂಮೌ ಹಿಮಗಿರಿಪುತ್ರಿ ಮಣಿ-  
ಮಯಭೂಷಾ ಮಧುರತರಾಕ್ಷಿ | ಭರಮರಕದಂಬೇರಕಲಯದಿಧಾಂ ಕುಸುಮ-  
ವಿಚಿತ್ರಾಂ ಕುರವಕಶಾಖಾಮ್" |

**ಕುಸುಮಶಯನ ಕುಸುಮಶಯನ** (ನಂ) ಹೂವಿನ ಹಾಸಿಗೆ.

**ಕುಸುಮಾಕರ ಕುಸುಮಾಕರ** (ಪುಂ) ಪುಷ್ಪಗಳಿಗೆ ಆಕರ  
ವಾಗಿರುವ ವಸಂತಯುತ. ಕುಸುಮಾನಾಮಾಕರ: | "ಮಾಸಾನಾಂ  
ಮಾರ್ಗಶಿಖೋಽಹಮೃತನಾಂ ಕುಸುಮಾಕರ:" ಗೀತಾ ೧೦-೩೫ |

**ಕುಸುಮಾಗಮ ಕುಸುಮಾಗಮ** (ಪುಂ) ಪುಷ್ಪಗಳ ಕಾಲವಾದ  
ವಸಂತ ಯುತ. ಕುಸುಮಾನಾಮಾಗಮೋ ಯತ್ರ |

**ಕುಸುಮಾಂಜನ ಕುಸುಮಾಂಜನ** (ನಂ) ಹಿತ್ತಾಳೆ ಭಸ್ಮ  
ದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಅಂಜನ.

**ಕುಸುಮಾಂಜಲಿ ಕುಸುಮಾಂಜಲಿ** (ಪುಂ) 1. ಪುಷ್ಪಗಳ  
ಅಂಜಲಿ, ಹೂವಿನ ಬೆಣಗಸೆ. ಕುಸುಮಾನಾಮಾಂಜಲಿ: | 2.  
ಉದಯನಾಚಾರ್ಯರಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು  
ನಿರೂಪಿಸುವ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ. "ಕುಸುಮಾಂಜಲಿರಪರ ಇವ  
ಪ್ರಕೀರ್ಯಂತೆ ಕಾವ್ಯವನ್ಧ ಷೋಽತ್ರ" ವೇಣೀಂ ೧-೫ |

**ಕುಸುಮಾಯುಧ ಕುಸುಮಾಯುಧ** (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ. ಕಾಮ  
ದೇವ. ಕುಸುಮಾನಾಯುಧಾನ್ಯಸ್ಯ | "ಶ್ವಾಸಾನಿಲಾಮೋದ  
ಭರಾನುಮೇಯಾಂ ದಧದ್ವಿವಾಣಿಂ ಕುಸುಮಾಯುಧಸ್ಯ" ನೈಷಂ ೭-೩೬ |

**ಕುಸುಮಾವಚಯ ಕುಸುಮಾವಚಯ** (ಪುಂ) 1. ಗಿಡಗಳ  
ತುದಿಯಲ್ಲಿರುವ ಪುಷ್ಪಗಳನ್ನು ಕೋಲು ಮೊದಲಾದ  
ಸಾಧನಗಳ ಸಾಹಾಯ್ಯದಿಂದ ಬಿಡಿಸುವುದು. 2. ಗಿಡಗಳಲ್ಲಿ  
ಕಳೆತನದಿಂದ ಹೂವನ್ನು ಬಿಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಕುಸುಮ +  
ಅವ + ಚಿಕ್ (ಚಯಂತೆ) "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬) | "ಛಕ್"  
(೩-೩-೪೦) | -ಅವಚಾಯ: -ಅವಚಾಯ: ಭೂಮಿಯಲ್ಲೇ  
ನಿಂತು ಕೈಯಿಂದ ಗಿಡಗಳ ಹೂವುಗಳನ್ನು ಬಿಡಿಸುವುದು.

**ಕುಸುಮಾಶುಗ ಕುಸುಮಾಶುಗ** (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ. ಕಾಮದೇವ.  
ಕುಸುಮಾನ್ಯಾಶುಗಾ ಅಸ್ಯ | "ತನೋತ್ಯಕೀರ್ತಿ ಕುಸುಮಾಶುಗಸ್ಯ ಸೇಫಾ  
ಬತೇಂದೀವರಕರ್ಣಪೂರಾ" ನೈಷಂ ೧೦-೧೧೮ |

**ಕುಸುಮಾಸವ ಕುಸುಮಾಸವ** (ಪುಂ) 1. ಜೇನುತುಪ್ಪ.  
2. ಪುಷ್ಪದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮದ್ಯ.

**ಕುಸುಮಿತ ಕುಸುಮಿತ** (ವಿಂ) ಪುಷ್ಟಿಸಿರುವ, ಹೂವು  
ಬಿಟ್ಟಿರುವ, ಹೂವುಗಳಿಂದ ತುಂಬಿರುವ. ಕುಸುಮಾನ್ಯಸ್ಯ  
ಸಂಜ್ಞಾತಾನಿ-ಕುಸುಮ "ಇತಚ್" (೪-೨-೩೬) | "ಕುಸುಮಿತ-  
ತರುಜಾಲಸಂತತಾನಿ ಭರಮರಯುತಾನಿ ಸಮುದ್ರತೀರಜಾನಿ" ರಾಮಾಂ |

**ಕುಸುಮೇಷು ಕುಸುಮೇಷು** (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ. ಕಾಮದೇವ.  
ಕುಸುಮಾನಿ ಇವೋಜ್ಯ | "ಅನಿಶಂ ನಿಜೇರಕರಣ: ಕರಣಂ  
ಕುಸುಮೇಷುರೂಪತಿ ಯದ್ವಿಶಿಷ್ಠೇ:" ಮಾಧಂ ೯-೬೭ |

**ಕುಸುಮೋಚಯ ಕುಸುಮೋಚಯ** (ಪುಂ) 1. ಪುಷ್ಪಗಳ  
ಸಮೂಹ, ಹೂವುಗಳ ತಾಳಿ. ಕುಸುಮಾನಾಮುಚಯ: |  
2. ಹೂವಿನ ಗೊಂಚಲು. ಕುಸುಮಾನಾಮುಚಯೋ ಯತ್ರ |

**ಕುಸುಮಭ ಕುಸುಮಭ** (ಪುಂ) 1. ಕಮಂಡಲು. ಕುಸ (ಶ್ಲೇಷಣೆ)  
"ತಮ:" (ತಂ ೪-೧-೧೦೬) | 2. ಕುಂಕುಮದ ಹೂವು.  
ಕುಂಕುಮಾಕೇಸರಿ. 3. ಕುಸುಮೆಗಿಡ. (ನಂ) 4. ಕುಸುಮೆಹೂವು.  
"ಸ್ಯಾತ್ಕುಸುಮಂ ವಹ್ನಿಶಿಖಂ ಮಹಾರಜನಮಿತ್ಯಪಿ" ಅಮಂ |



“ಸ್ಯಾನ್ಮಹಾರಜನೆ ಕಲಿಬಂ ಕುಸುಮಂ ಕರಕೇ ಪುಮಾನ್”  
ಅಮಂ । “ವಿಹಿತಾಂಜಲಿರ್ಜನತಯಾ ದಧತೀ ವಿಕಸತ್ಕುಸುಮ-  
ಕುಸುಮಾಣತಾಮ್” ಮಾಧಂ ೧-೧೪ । 5. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ.  
“ಕುಸುಮಂ ಹೇಮನಿ ಮಹಾರಜನೆ ನಾ ಕಮಂಡಲೌ” ಮೇದಿಂ ।

**ಕುಸುಮರಾಗ ಕುಸುಂಭರಾಗ (ಪುಂ)** 1. ಕುಸುಂಭರಾಗವಿನ  
ಬಣ್ಣ. ಕುಸುಮಸ್ಯ ತತ್ಪುಷ್ಪಸ್ಯ ರಾಗಃ । 2. ಕುಸುಂಭ  
ಹೂವಿನ ಬಣ್ಣದಂತಿರುವ ಪತಿ-ಪತ್ನಿಯರ ಅನುರಾಗ.—  
ಗಂಡಹೆಂಡಿರ ಪ್ರೇಮ. ಕುಸುಮಸ್ತದ್ರಸ ಇವ ರಾಗಃ ।

**ಕುಸುಮವತ್ ಕುಸುಂಭವತ್ (ವಿಂ)** ಕಮಂಡಲುವನ್ನು  
ಹಿಡಿದಿರುವ (ಸಂನ್ಯಾಸಿ). ಕುಸುಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್”  
(೪-೨-೧೪) । “ಕಲ್ಪತಕೇಶನಖರಮಶ್ರುಃ ಪಾತ್ರಿ ದಣ್ಡಿ ಕುಸುಮ-  
ವಾನ್” ಮನುಂ ೬-೪೨ ।

**ಕುಸು ಕುಸೂ (ಪುಂ)** ಕೆಸರಿನಲ್ಲಿರುವ ಎರುಬುಹುಳು. “ಗಂಧ-  
ಪದಃ ಕಿಂಚುಲಕಃ ಕುಸುಃ” ಅಭಿಂ ಚಿಂ ।

**ಕುಸುಲ ಕುಸೂಲ (ಪುಂ)** 1. ಕಣಜ, ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಕೂಡಿ  
ಸಿಡುವ ಮನೆ. ಕುಸ (ಶ್ಲೇಷಣೆ) “ಒಲವ್” (೩೦ ೪-೯೦) ।  
2. ಹುರಿಯುವ ಬಾಣಲಿ.

**ಕುಸುಲಧಾನ್ಯ ಕುಸೂಲಧಾನ್ಯ (ನಂ)** 1. ಮೂರು ವರ್ಷ  
ಗಳಿಗಾಗುವಷ್ಟು ಕೂಡಿಸಿಟ್ಟಿರುವ ಧಾನ್ಯ. (ವಿಂ) 2.  
ಮೂರು ವರ್ಷಗಳಿಗಾಗುವಷ್ಟು ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಕೂಡಿ  
ಸಿಟ್ಟಿರುವವನು. ಕುಸುಲಮಿತಂ ಧಾನ್ಯಂ ಯಸ್ಯ । ವಾ “ಕಪ್”  
(೪-೪-೧೫೪) । -ಧಾನ್ಯಕಃ-ಧಾನ್ಯಕಃ. “ಕುಸುಲಧಾನ್ಯಕೋ  
ವಾ ಸ್ಯಾತ್ಕುಮ್ಭಿಧಾನ್ಯಕ ಉ ವಾ” ಮನುಂ ೪-೭ ।

**ಕುಸುಲಪಾದ ಕುಸೂಲಪಾದ (ವಿಂ)** ಬಾಣಲಿಯಂತೆ ಅಗಲ  
ವಾಗಿಯೂ ಗುಂಡಾಗಿಯೂ ಇರುವ ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳವನು.  
ಕುಸುಲಾವಿವ ಪಾದೌ ಯಸ್ಯ ।

**ಕುಸುತಿ ಕುಸುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಶಾರ್ಙ್ಗ, ರಕ್ಕು, ಮಂಚನೆ, ಕಪಟ.  
ಕುಸ್ತಿತಾ ಸೃತಿಃ — ಸೃ (ಗತೌ) “ಕ್ತಿವ್” (೩-೩-೧೭೪) ।  
“ಕುಸುತಿರ್ನಿಕೃತಿಃ ಶಾಠ್ಯಮ್” ಅಮಂ । 2. ಇಂದ್ರಜಾಲ  
ವಿದ್ಯೆ, ಯಕ್ಷಿಣೀ ವಿದ್ಯೆ. “ಇಂದ್ರಜಾಲಂ ತು ಕುಹಕಂ ಜಾಲಂ ಕುಸುತಿ-  
ರಿದ್ಯಪಿ” ಅಭಿಂ ಚಿಂ । 3. ಕಟ್ಟು ಮಾರ್ಗ, ತಪ್ಪು  
ದಾರಿ. ಶಾಸ್ತ್ರೀಯವಲ್ಲದ ಮಾರ್ಗ. (ವಿಂ) 4. ಕಪಟ,  
ಮಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. ಕುಸ್ತಿತಾ ಸೃತಿಃ ಪದವಿ ಯಸ್ಯ ।  
“ಕಸ್ಮಾದ್ವಯಂ ಕುಸುತಯಃ ಕ್ಷಲಯೋನಯಸ್ತೇ ದಾಕ್ಷಿಣ್ಯದೃಷ್ಟಿಪದವಿಂ  
ಭವತಃ ಪ್ರಣೀತಾಃ” ಭಾಗಂ ೮-೨೩-೭ ।

**ಕುಸ್ತುಮ ಕುಸ್ತುಭ (ಪುಂ)** 1. ಎಷ್ಟು. ಕುಸ್ತುಮತೇ — ಷ್ಠು  
(ಸ್ತುಮ್) “ಕಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೪) । 2. ಸಮುದ್ರ.  
ಕುಂ ಭುವಂ ಸ್ತುಮ್ನಾತಿ ।

**ಕುಸ್ತುಂಬರೀ ಕುಸ್ತುಂಬರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕೊಡುಂಬರಿ. ಕುಸ್ತಿತಾ  
ತುಂಬರೀ । ಪೃಷಂ । “ಛತ್ರಾ ಕುಸ್ತುಂಬರೀ ಧಾನ್ಯಾ ಧನ್ಯಾ ಧಾನಾ  
ಧನೀಯಿಕಾ” ವೈಜಂ ।

**ಕುಸ್ತುಂಬುರು ಕುಸ್ತುಂಬುರು (ನಂ)** ಕೊಡುಂಬರಿ, ಧನಿಯು.  
ಕುಸ್ತಿತಂ ತುಂಬತಿ — ತುಬಿ (ಅರ್ಧೇ) “ಉಃ” ಬಾಹುಂ । ಸುದ್  
(೬-೧-೧೪೩) । “ಕುಸ್ತುಂಬುರು ಚ ಧಾನ್ಯಂ ಚ ಭಂಗಾ ಸ್ಯಾನ್ಮಾತುಲಾ-  
ನಿಕಾ” ವೈಜಂ ।

**ಕುಹ ಕುಹ (ಪುಂ)** 1. ಕುಬೇರ. ಕುಹಯತೇ ವಿಸ್ಮಾಪಯತೇ — ಕುಹ  
(ವಿಸ್ಮಾಪನೇ) + ಣಿವ್ “ಅವ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ಶ್ರೀದಃ  
ಸಿತೋದರಕುಹೇಶಸಖಾಃ” ಅಭಿಂ ಚಿಂ । (ವಿಂ) 2.  
ಆಶ್ಚರ್ಯವುಂಟುಮಾಡುವ.

**ಕುಹಕ ಕುಹಕ (ಪುಂ)** 1. ಐಂದ್ರಜಾಲಿಕ, ಮಾಯಾವಿ,  
ಯಕ್ಷಿಣಗಾರ. ಕುಹ (ವಿಸ್ಮಾಪನೇ) “ಕವುನ್” (೩೦ ೨-೩೮) ।  
“ಕವಚಿದರ್ಶನಮಿन्द्रಜಾಲತಶ್ಚೇತ್ ಕುಹಕಾಃ ಸಂತಿ ಪರಃಶತಾಃ  
ಪೃಥಿವ್ಯಾಮ್” ಯಾದಂ ೧೫-೪೧ । 2. ಒಂದು ಸರ್ಪ.  
“ತತೋಽಪ್ತಾನ್ಮಹಾತಲೇ ಕಾದ್ರವೇಯಾಣಾಂ ಮರ್ಪಾಣಾಂ ನೈಕಶಿರಸಾಂ  
ಕ್ರೋಧವಶೋ ನಾಮ ಗಣಃ ಕುಹಕತಕ್ಷಕಕಾಲಿಯಸುಷೇಣಾದಿಪ್ರಧಾನಾಃ  
ಮಹಾಭೋಗವಂತಃ” ಭಾಗಂ ೪-೨೪-೨೯ । (ನಂ) 3. ಇಂದ್ರ  
ಜಾಲವಿದ್ಯೆ, ಯಕ್ಷಿಣ, ಮಾಯೆ, ತಂತ್ರ, ಇಲ್ಲದಿರುವ  
ವನ್ನು ಇರುವಂತೆ ತೋರಿಸುವ ವ್ಯಾಪಾರ. “ಇಂದ್ರಜಾಲಂ ತು  
ಕುಹಕಮ್” ಅಭಿಂ ಚಿಂ । “ತೇಜೋವಾರಿಮೃದಾಂ ಯಥಾ ವಿನಿಮಯೋ  
ಯತ್ರ ತ್ರಿಸರ್ಗೋಽಮೃಷಾ ಧಾನ್ಯಾ ಸ್ವೇನ ಸದಾ ನಿರಸ್ತಕುಹಕಂ ಸತ್ಯಂ  
ಪರಂ ಧೀಮಹಿ” ಭಾಗಂ ೧-೧-೧ । 4. ಕಪಟ, ಮೋಸ.  
(ವಿಂ) 5. ಮಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ, ಕಪಟ. “ಭೂತಸ್ತು  
ವಶಕಃ । ವ್ಯಸಕಃ ಕುಹಕೋ ದಾಂಡಾಜಿನಿಕೋ ಮಾಯಿಜಾಲಕೌ”  
ಅಭಿಂ ಚಿಂ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ — ಹಿಕಾ — ಹಿಕಾ.

**ಕುಹಕಸ್ವನ ಕುಹಕಸ್ವನ (ಪುಂ)** ವನಕುಹುಟ, ಕಾಡುಕೋಳಿ.  
“ಕುಮ್ಭಕಾರಃ ಕುಕುಡಸ್ತು ಕುಕುಭಃ ಕುಹಕಸ್ವನಃ” ಅಭಿಂ ಚಿಂ ।

**ಕುಹನ ಕುಹನ (ಪುಂ)** 1. ಮೂಷಿಕ, ಇಲಿ. ಕುಹಿಷತ್ಪ್ರಯತ್ನೇನ  
ಹನ್ಯತೇ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) “ಅಪ್” ಬಾಹುಂ । (ನಂ)  
2. ಒಂದು ವಿಧ ಮಣ್ಣಿನ ಪಾತ್ರೆ. 3. ಗಾಜಿನ ಪಾತ್ರೆ.  
“ಕುಹನಂ ಮೃತ್ತಿಕಾಭಾಂಡವಿಶೇಷೇ ಕಾಚಭಾಂಡೇ” ಮೇದಿಂ ।  
(ವಿಂ) 4. ಅಸೂಯೆಯುಳ್ಳವನು, ಇತರರ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ  
ಯನ್ನು ನೋಡಿ ಸಹಿಸಲಾರದವನು. “ಕುಹನೋ ಮೃಷಿಕೇ  
ಸೇಷ್ಯೋ” ಹೇಮಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ನಾ — ನಾ. 5. ಡಂಭಾಚಾರ,  
ಧನಸಂಪಾದನೆಗಾಗಿ ಧಾರ್ಮಿಕ ವೇಷ ಹಾಕುವುದು. “ಕುಹನಾ  
ದಮ್ಭಕರ್ಮಣಿ” ಹೇಮಂ । 6. ಕಪಟ, ಮೋಸ. ಕಾರಣಾಂತರ  
ದಿಂದ ರೂಪಬದಲಾವಣೆ. “ಮನುಷ್ಯಭಾವಾಭಿನಯವ್ಯವಸ್ಥಿತಾಂ  
ಕುಶಿಲವಾಹಾಂ ಕುಹನಾಂ ವಹನ್ ಪ್ರಭುಃ” ಯಾದಂ ೧೪-೬೧ ।



ಕುಹರ ಕುಹರ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಸರ್ಪ. ಕು ಭೂಮಿ ಹರತಿ-  
ಹಜ್ (ಹರಣ) "ಅವ್" (೩-೨-೯)। (ನಂ) 2. ಬಿಲ,  
ರಂಧ್ರ, ಡೂಡು, ಹಳ್ಳ, ಗುಣ. "ಹಾರಾಗ್ರಜಾಗ್ರದಗುಡಾಶಮ-  
ರಶಿಮಿಪಿನಾಭನಾಭಿಕುಹರಾಂಧಕಾರಮ್" ನೈಷಂ ೧೦-೧೦೪।  
3. ಗುಹ, ಗು. "ಕುಹರಂ ಗಹ್ವರೇ ಛಿದ್ರೇ ಕಲಿಬಂ ನಾಗಾಂತರೇ  
ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ। "ತೈ: ಕಿ ಮತ್ತಕರೋಂದ್ರಕುಮ್ಭಕುಹರೇ ನಾರೋಪ-  
ಣಿಯಾ: ಕರಾ:" ಪ್ರಂ ರಾಂ। 4. ಸಂಭೋಗ, ರತಿಕ್ರೀಡೆ.

ಕುಹರಿತ ಕುಹರಿತ (ನಂ) 1. ಬಿಹದ್ವನಿ, ಕೋಗಿಲೆಯ  
ಕೂಗು. 2. ರತದ್ವನಿ, ಸಂಭೋಗಕಾಲದ ಶಬ್ದ. 3. ಶಬ್ದ.  
"ಕುಹರಿತಂ ಪಿಕಾಲಾಪೇ ರತೀತೇ ರತನಿಶ್ವನೇ" ವಿಶ್ವಂ।

ಕುಹಲಿ ಕುಹಲಿ (ಪುಂ) ವಿವಾಹ ಮೊದಲಾದ ಶುಭ  
ಮಹೋತ್ಸವಗಳಲ್ಲಿ ಪುಡಿಯಡಕೆಯೊಡನೆ ಕೊಡುವ  
ತಾಂಬೂಲ. "ಸೈವ ವಂದನಮಾಲಾ ಸ್ಯಾತ್ ಕುಹಲಿ: ಪೂಗ-  
ಪುಷ್ಪಿಕಾ" ವೈಜಂ।

ಕುಹಿಡ ಕುಹಿಡ (ಪುಂ) ಹಿಮದ ರಾಶಿ, ಮಂಜಿನ ಸಮೂಹ.  
"ಅಥ ಹಿಮಾನಿ ಹಿಮಸಂಹತಿ:। ಕುಹಿಡೋಸ್ತ್ರೀ ಕುಹಿಲಿ: ಸ್ತ್ರೀ  
ಕುಹಿಡಿಭೂಮಿಕಾ ತ್ರಯಿ" ವೈಜಂ।

ಕುಹ ಕುಹೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಂದ್ರನ ಕಲೆಯು ಕಾಣಿಸದಿರುವ  
ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ. ಕುಹ (ವಿಸ್ಮಾಪನೆ) + ಣಿಕ್ "ಕು:" ಬಾಹುಂ।  
"ಕುಹುಷು ದೃಶ್ಯೇತರತಾಂ ಕಿಮೇತ್ಯ ಸಾಯುಜ್ಯಮಾಪ್ನೋತಿ ಭವನ್ಮುಖಸ್ಯ"  
ನೈಷಂ ೮-೩೭। 2. ಅಮಾವಾಸ್ಯೆಯ ಅಧಿಷ್ಠಾನ ದೇವತೆ.  
3. ಪುಟ್ಟದ್ವೀಪದ ಏಳು ನದಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಅನುಮತಿ:  
ಸಿನಿವಾಲಿ ಸರಸ್ವತೀ ಕುಹ: ರಜನಿ ನಂದಾ ರಾಕೇತಿ" ಭಾಗಂ  
೪-೨೦-೧೦। 4. ಕೋಗಿಲೆಯ ಕೂಗು, ಹಿಹಸ್ವರ. "ಕುಹ:  
ಸ್ಯಾತ್ ಕೋಕಿಲಾಲಾಪನಶ್ಚೇಂದ್ರಕಲಯೋರಪಿ" ವಿಶ್ವಂ।

ಕುಹಕಂಠ ಕುಹೂಕಂಠ (ಪುಂ) ಕೋಗಿಲೆ. ಕುಹರೀತಿ ಶಬ್ದ:  
ಕಂಠೇಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ಕಂಠಿ-ಕಂಠೀ.

ಕುಹರವ ಕುಹೂರವ (ಪುಂ) 1. ಕೋಗಿಲೆ. ಕುಹರೀತಿ  
ರವೋಸ್ಯ। 2. "ಕುಹೂ" ಎಂಬ ಶಬ್ದ. "ಕುತುಹಲೇನೇವ  
ಮುಹು: ಕುಹರವಂ ವಿಡಮ್ಯ ಡಿಮ್ಬೇನ ಪಿಕ: ಪ್ರಕೋಪಿತ:" ನೈಷಂ  
೯-೩೮।

ಕುಹರತ್ ಕುಹೂರುತ್ (ಪುಂ) 1. ಕೋಗಿಲೆ. ಕುಹರೀತಿ  
ಶಬ್ದೋ ಯಸ್ಯ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. "ಕುಹೂ" ಎಂಬ  
ಶಬ್ದ, ಕೋಗಿಲೆಯ ಕೂಗು, ಹಿಹದ್ವನಿ. "ಪಿಕೇನ ರೋಷಾ-  
ಱಣಚಕ್ಷುಷಾ ಮುಹು: ಕುಹರತಾಹುಯತ ಚಂದ್ರವೇರಿಣಿ" ನೈಷಂ ೧-೧೦೦।

ಕುಹಲ ಕುಹೂಲ (ನಂ) ಗುಣಗಳಿಂದ ಶುಭದ ಹಳ್ಳ.  
ಕುಹೇಡಿ(ಲಿ) ಕುಹೇಡಿ(ಲಿ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಮದ ರಾಶಿ,  
ಮಂಜಿನ ಸಮೂಹ, ಅಕಾಶದಲ್ಲಿ ಮಳೆಹಸಿಗಿಂತಲೂ ಸಣ್ಣ

ಹಸಿಯಾಗಿ ಬೀಳುವ ಮಂಜು, ಇಬ್ಬನಿ. "ಕುಹಿಡೋಸ್ತ್ರೀ  
ಕುಹಿಲಿ: ಸ್ತ್ರೀ ಕುಹೇಡಿಭೂಮಿಕಾ ತ್ರಯಿ" ವೈಜಂ।

ಕುಹಾನ ಕುಹಾನ (ನಂ) ಕೆಟ್ಟ ಶಬ್ದ. ಕುಹಿಸಿತಂ ಹಾನಮ್।  
ಕು-ಶಬ್ದ (ಕ್ರಯಂ ತಮಂ ಅಕಂ ಸಂ)। ಕುನಾತಿ। ಕುನೀತಿ।  
ಅಕಾವೀತ್। ಅಕವಿಷ್ಠ। ಶಬ್ದಮಾಡು. ಸದ್ವಮಾಡು.  
ಕು ಕೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭೂಮಿ, ಸಲ. "ಭೂಮಿತವಾತ್ರಿ  
ಗಿರಿಕರ್ಣಿಕಾವಿಧಿವಿಧಿಪಾ ಸಮುದ್ರಾಂಬರಮೇಖಲಾ ಕು:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।  
2. ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ, ಸದ್ದು. ಕುಡ್ (ಶಬ್ದ) "ವಿವಪ್"  
(೩-೩-೧೦೮)। 3. ಹೆಣ್ಣು ಪಿಶಾಚಿ.

ಕುಕುಡ ಕುಕುಡ (ಪುಂ) ಸತ್ಕಾರಪೂರ್ವಕ ಸಾಲಂಕೃತ  
ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ದಾನಮಾಡುವವನು, ಅಭರಣಗಳಿಂದ  
ಅಲಂಕರಿಸಿದ ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಮದುವೆ ಮಾಡುವವನು.  
ಕು: ಶಬ್ದ:, ಕು: ಶಬ್ದಸ್ಯ ಕು: ಭು: -ಕುಕು ದದಾತಿ -ಡು ದಾಜ್  
(ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೪)। "ಸತ್ಕೃತ್ಯಾಲಂಕೃತಾಂ ಕನ್ಯಾಂ ಯೋ  
ದದಾತಿ ಸ ಕುಕುಡ:" ಅಮಂ।

ಕುಡ್-ಶಬ್ದ (ತುಡಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸಂ)। ಕುತೇ। ಚುಕುತೇ।  
ಕುವಿತಾ। ಅಕುವಿಷ್ಠ। ಶಬ್ದಮಾಡು, ಸದ್ವಮಾಡು, ಕೂಗು.

ಕುಚ ಕುಚ (ಪುಂ) 1. ಸ್ತನ, ಮೂಲೆ. ಕು (ಶಬ್ದ) "ಚಡ್"  
ದೀರ್ಘಶ್ಚ (ತಂ ೪-೯೧)। "ಕುಚಕುಚೌ ಸ್ತನೌ ಮತೌ" ಇತಿ  
ಕೋಶ:। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಚಿ-ಚೀ. 2. ಚಿತ್ರವನ್ನು ಬರೆಯುವ  
ಕೂರ್ಚ, -ಕುಂಚ. "ಕುಚಿ ಚಿತ್ರಲೇಖನಿಕಾ" ಸಿಂ ಕೌಂ।  
ಅಲ್ಪ "ಕ:" (೪-೩-೮೪)। ಕುಚಿಕಾ ಕುಚಿಕಾ. 1.  
ಸಣ್ಣ ಕುಂಚ. 2. ಬೀಗದ ಕೈ. "ಅಥ ತುಲಿಕಾ। ಕುಚಿಕಾ"।  
"ಕುಚಿಕಾಕಾಂ ತು ಕುಚಿಕಾ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ಕುಚವಾರ ಕುಚವಾರ (ಪುಂ) ಒಂದು ದೇಶ.

ಕುಜ-ಅವ್ಯಕ್ತೆ ಶಬ್ದ (ಮಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ)। ಕುಜತಿ।  
ಚುಕುಜ। ಕುಜಿತಾ। ಕುಜಿಷ್ಯತಿ। ಕುಜತು। ಅಕುಜತ್।  
ಕುಜೇತ್। ಕುಜ್ಯಾತ್। ಅಕುಜೀತ್। ಅಕುಜಿಷ್ಯತ್। ಅಪ್ಯಕ್ತೆ  
ವಾಗಿ ಕೂಗು, ಅಪ್ಯಕ್ತೆವಾಗಿ ಶಬ್ದಮಾಡು. "ಚುತಾಡ್ಕುರಾ-  
ಸ್ವಾದಕಷಾಯಕಂಠ: ಪುಂಕೋಕಿಲೋ ಯನ್ಮಧುರಂ ಚುಕುಜ" ಕುಮಾಂ  
೩-೩೨।

ಭಾವ: ಕುಜ್ಯತೇ। ಚುಕುಜೇ ಕುಜಿಷ್ಯತೇ। ಕುಜ್ಯತಾಮ್।  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ: ಕುಜಯತಿ, -ತೇ। ಕುಜಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರಂ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಕುಜಯಿತಾ। ಕುಜಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ।  
ಕುಜಯತು, -ತಾಮ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕರ್ಮಣಿ: ಕುಜ್ಯತೇ। ಕುಜಯಾಂಚಕ್ರಂ, -ಬಭೂವೇ, -ಆಸೇ।  
ಕುಜ್ಯತಾಮ್। ಅಕುಜ್ಯತ। ಇತ್ಯಾದಿ.



ಕೂಟಕರ್ಮನ್ ಕೂಟಿಕರ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ಮೋಸದ ಕಾರ್ಯ.  
ವಂಚನೆ, ಪ್ರತಾರಣ. (ವಿಂ) 2. ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ.



ಕೂಟಕಾರಕ ಕೂಟಕಾರಕ (ವಿಂ) 1. ಮಿಥ್ಯಾವಾದಿ, ಸುಳ್ಳುಸಾಕ್ಷಿ ಹೇಳುವವನು. ಕೂಟ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩). "ಸಮುದ್ರಯಾ ಬಂದಿ ಚ ತೈಲಿಕ: ಕೂಟಕಾರಕ:" ಮನುಂ ೩-೧೫೮. 2. ಮಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. ಕಪಟ.

ಕೂಟಕೃತ್ ಕೂಟಕೃತ್ (ವಿಂ) 1. ಕಪಟ, ಮೋಸಗಾರ, ಮಂಚಕ. ಕೂಟ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬). "ತುಲಾಶಾಸನಮಾನಾನಾಂ ಕೂಟಕೃತ್ತಾಣಕಸ್ಯ ಚ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೨೪೦. 2. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. "ಪಿಙ್ಗಾಕ್ಷ: ಕಠಮದರೇವತಜಟಾಡ್ವಯಾ: ಕೂಟಕೃತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 3. ಕಾಯಸ್ಥ, ಗುಮಾಸ್ತ. ಲೆಕ್ಕ ಬರೆಯುವವನು. "ಕಾಯಸ್ಯ ಕೂಟಕೃತ್ಪಂಜೀಕರೋ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಕೂಟಾಪಸ ಕೂಟಾಪಸ (ಪುಂ) ಕಪಟಸಂನ್ಯಾಸಿ.

ಕೂಟಾಕಲ ಕೂಟಾಕಲ (ಪುಂ) 1. ಪಿತ್ತಜ್ವರ. 2. ಅನೆಯ ಜ್ವರ. "ಯಥಾಭಿಹನ್ಯಾತ್ಕೂಟೇನ ಮೃಗಯುಧಂ ವನೇಶರ: | ತಥಾ ಪಾತಾ- ತ್ಮಕೋ ನಾಗಂ ಹಂತಿ ವೈ ಕೂಟಾಕಲ:" | "ಅಚಿರೇಣ ವೈಕೃತವಿವರ್ತ- ದಾಣ: ಕಲಮಂ ಕಠೋರ ಇವ ಕೂಟಾಕಲ:" | ಮಾಲತೀಂ ೧-೪೨.

ಕೂಟಾಲಕ ಕೂಟಾಲಕ (ಪುಂ) 1. ಕುಲಾಲ, ಕುಂಬಾರ, ಮಣ್ಣಿನ ರಾಶಿಯನ್ನಿಟ್ಟು ಕೊಂಡು ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು. 2. ಕುಂಬಾರನ ಆವಿಗೆ ಮನೆ, ಮಡಕೆ ಮಾಡಲಾದುವನ್ನು ಬೇಯಿಸುವ ಆವಿಗೆ ಮನೆ. ಕೂಟ ಪಾಲಯತಿ-ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣ) + ಣಿಚ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩).

ಕೂಟಪೂರ್ವ ಕೂಟಪೂರ್ವ (ಪುಂ) ಅನೇಕರಿಗೆ ಬರುವ ತ್ರಿದೋಷ (ವಾತ ಪಿತ್ತ ಕಫ) ಜ್ವರ. "ಪಿತ್ತಜ್ವರ: ಪಾಕಲೋಪ್ಯ ಕೂಟ- ಪೂರ್ವಸ್ತ್ರಿದೋಷಜ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಕೂಟಯನ್ತ್ರ ಕೂಟಯಂತ್ರ (ನಂ) ಪಕ್ಷಿ ಮತ್ತು ಮೃಗಗಳನ್ನು ಹಿಡಿಯುವ ಬೋನು. ಬಲ. ಕೂಟರೂಪ ಯನ್ತ್ರಮ್. "ಉನ್ಮಾಥ: ಕೂಟಯನ್ತ್ರಮ್ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ.

ಕೂಟಯುದ್ಧ ಕೂಟಯುದ್ಧ (ನಂ) ಕಪಟಯುದ್ಧ, ಮೋಸ ದಿಂದ ಮಾಡುವ ಕದನ. "ಕೂಟಯುದ್ಧವಿಧಿಜ್ಞೇಽಪಿ ತಸ್ಮಿನ್ ಸನ್ಮಾರ್ಗಯೋಧಿನಿ" ರಘುಂ ೧೭-೬೯.

ಕೂಟಲೇಖ ಕೂಟಲೇಖ (ಪುಂ) -ಲೇಖ -ಲೇಖ್ಯ (ನಂ) ಕೃತ್ರಿಮವಾದ ಪತ್ರ. ಮೋಸದ ದಸ್ತವೇಷು. ಸುಳ್ಳು ಕಾಗದ.

ಕೂಟವ್ಯವಹಾರ ಕೂಟವ್ಯವಹಾರ (ಪುಂ) ಮೋಸದ ವ್ಯವಹಾರ, ಮೋಸದ ನಡವಳಿಕೆ.

ಕೂಟವ್ಯವಹಾರಿನ್ ಕೂಟವ್ಯವಹಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಕಪಟದಿಂದ ವರ್ತಿಸುವವನು. ಮೋಸದಿಂದ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು.

ಕೂಟೇನ ವ್ಯವಹರತಿ - ವಿ+ಅವ+ಹ್ರ (ಹರಣ) "ಣಿನಿ:" (೩-೨-೭೮).

ಕೂಟಶಸ್ ಕೂಟಶಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ರಾಶಿರಾಶಿಯಾಗಿ, ಗುಂಪು ಗುಂಪಾಗಿ. ಕೂಟ "ಶಸ್" (೪-೪-೪೩).

ಕೂಟಶಾಸನ ಕೂಟಶಾಸನ (ನಂ) ಕೃತ್ರಿಮವಾದ ಆಜ್ಞೆ, ಮೋಸದ ಆಜ್ಞೆ.

ಕೂಟಸಂಕ್ರಾಂತಿ ಕೂಟಸಂಕ್ರಾಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ನಾನ ತರ್ಪಣಾದಿ ಗಳಿಗೆ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದ ಅರ್ಧರಾತ್ರಿಯ ನಂತರ ಸಂಭವಿಸುವ ಸಂಕ್ರಮಣ. ಅರ್ಧರಾತ್ರಿಯ ನಂತರ ಸೂರ್ಯನು ಮುಂದಿನ ರಾಶಿಗೆ ಹೋಗುವುದು. "ಅರ್ಧರಾತ್ರೆ ವ್ಯತಿತಿ ತು ಯದಾ ಸಂಕ್ರಮತೇ ರವಿ: | ಸಾ ಜೇಯಾ ಕೂಟಸಂಕ್ರಾಂತಿರ್ಮುನಿಭಿ: ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾ" |

ಕೂಟಸಾಕ್ಷಿನ್ ಕೂಟಸಾಕ್ಷಿನ್ (ವಿಂ) ಸುಳ್ಳು ಹೇಳು ವವನು, ಸುಳ್ಳುಸಾಕ್ಷಿ ಹೇಳುವವನು. ಕೂಟ: ಸಾಕ್ಷಿ. "ನ ದದಾತಿ ಹಿ ಯ: ಸಾಕ್ಷ್ಯಂ ಜಾನನ್ನಪಿ ನರಾಧಮ: | ಸ ಕೂಟ- ಸಾಕ್ಷಿಣಾಂ ಪಾಪೇಸ್ತುಲ್ಯೋ ದೃಢೇನ ಚೈವ ಹಿ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೭೭.

ಕೂಟಸ್ಥ ಕೂಟಸ್ಥ (ಪುಂ) 1. ಅಚಿತ್ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದೆ ಸ್ವಸ್ವ ರೂಪದಿಂದಿರುವ ಮುಕ್ತಾತ್ಮ. ಕೂಟವತ್ ನಿವಿಕಾರೇಣ ನಿಶ್ಚಲ: ಸನ್ ಸಾಧಾರಣಾಕಾರೇಣ ತಿಷ್ಠತಿ - ಷ್ಠಾ (ಗತಿ- ನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ:" (೩-೨-೪). "ದ್ವಾವಿಮೌ ಪುರುಷೌ ಲೋಕೇ ಕ್ಷರಶ್ಚಾಕ್ಷರ ಏವ ಚ | ಕ್ಷರ: ಸರ್ವಾಣಿ ಭೂತಾನಿ ಕೂಟಸ್ಥೋಕ್ಷರ ಛಯತೇ" ಗೀತಾ ೧೫-೧೬. "ಅಕ್ಷರಶಬ್ದನಿರ್ದಿಷ್ಟ: ಕೂಟಸ್ಥ: ಅಚಿತ್ಸಸರ್ಗವಿಯುಕ್ತ: ಸ್ವೇನ ರೂಪೇಣಾವಸ್ಥಿತೋ ಮುಕ್ತಾತ್ಮಾ" ರಾಂ ಭಾಂ. ಕೂಟ (ರಾಶಿ) ದಂತೆ ನಿಶ್ಚಲನಾಗಿರುವ ಅಥವಾ ಮಾಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವ ಈಶ್ವರನು ಕೂಟಸ್ಥ. ಕೂಟ: ರಾಶಿರಿವ ಸ್ಥಿತ: ಅಥವಾ ಕೂಟ: ಮಾಯಾ ವಚ್ಚನಾ, ಅನೇಕಮಾಯಾವಚ್ಚನಾದಿಪ್ರಕಾರೇಣ ಸ್ಥಿತ: ಕೂಟಸ್ಥ:" ಶಾಂ ಭಾಂ. 2. ವ್ಯಾಘ್ರನಖ, ಹುಲಿಯುಗುರು ಗಿಡ. (ವಿಂ) 3. ಅಗ್ರದಲ್ಲಿರುವ, ತುದಿಯಲ್ಲಿರುವ.

ಕೂಟಸ್ಥನಿತ್ಯ ಕೂಟಸ್ಥನಿತ್ಯ (ಪುಂ) ಯಾವ ರೀತಿಯ ಪರಿಣಾಮವೂ ಇಲ್ಲದೆ ನಾಶವಿಲ್ಲದೆ ಸ್ವಸ್ವರೂಪದಿಂದಿರುವ ಪರಮಾತ್ಮ.

ಕೂಟಾಗಾರ ಕೂಟಾಗಾರ (ನಂ) 1. ಚಂದ್ರಶಾಲೆ, ಉಪ್ಪರಿಗೆ ಮೇಲಿನ ಮನೆ, ಮಹಡಿಯ ಮೇಲಿನ ಕೊಠಡಿ. "ವೆಡಭಿ ಚಂದ್ರಶಾಲಿಕಾ | ಕೂಟಾಗಾರಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 2. ಕ್ರೀಡಾ ಗೃಹ, ಆಟದ ಮನೆ.

ಕೂಟಾರ್ಥಭಾಷಾ ಕೂಟಾರ್ಥಭಾಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂದಿಗ್ಧ ವಾದ ಅರ್ಥವುಳ್ಳ ಮಾತು, ಅಸಪ್ಪಾರ್ಥವುಳ್ಳ ಭಾಷೆ.



2. ಕಲ್ಪಿತಕಥೆ, ಪ್ರಬಂಧ. ಇದೇ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ -ಭಾಷಿತಮ್ -ಭಾಷಿತಮ್.

ಕೂಟಾರ್ಥಭಾಷಿನ್ ಕೂಟಾರ್ಥಭಾಷಿನ್ (ವಿಂ) ಕಲ್ಪಿತ ಕಥೆಗಳನ್ನು ಹೇಳುವವನು. ಕೂಟಾರ್ಥ ಭಾಷತೇ - ಭಾಷ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಣಿನಿ:" (3-2-98)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡಿಪ್" (4-1-5)। -ಭಾಷಿಣಿ -ಭಾಷಿಣೀ.

ಕೂಣ-ಸಂಕೋಚೇ (ಚುರಾಂ ಉಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಕೂಣಯತಿ, -ತೇ। ಕೂಣಯಾಂ ಬಭೂವ, -ಆಸ, -ವಕಾರ, -ವಕ್ರೇ। ಅಚುಕೂಣತ್, -ತ। ಸಂಕೋಚಹೊಂದು, ಚಿಕ್ಕದಾಗು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಎಳೆದುಕೊ.

ಕೂಣಿ ಕೂಣಿ (ವಿಂ) ರೋಗಾದಿಗಳಿಂದ ವಕ್ರವಾದ ತೋಳುಗಳುಳ್ಳವನು. ಕೂಣ (ಸಂಕೋಚೇ) "ಇನ್" (ಉಂ 4-1-19)।

ಕೂಣಿಕಾ ಕೂಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎಣ್ಣೆಯ ಬುಡದಲ್ಲಿ ತಂತಿಗಳನ್ನು ಎಳೆದು ಕಟ್ಟುವ ಬಿದಿರಿನ ಗೂಟ. ಕೂಣ (ಸಂಕೋಚೇ) + ಣಿಕ್ "ಫ್ವಲ್" (3-1-133)। "ಮೂಲೇ ವಂಶಶಲಾಕಾ ಸ್ಯಾತ್ ಕೂಣಿಕಾ ಕಲಿಕಾಪಿ ಚ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ। 2. ವಿಷಾಣ, ಕೊಯಿ, ದನ ಎಮ್ಮೆ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ತಲೆಯ ಮೇಲಿನ ಕೋಡು. "ವಿಷಾಣಂ ಕೂಣಿಕಾ ಶೃಂಗಮ್" ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ಕೂಣಿತ ಕೂಣಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಂಕೋಚಹೊಂದಿದ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಎಳೆದುಕೊಂಡ. ಕೂಣ (ಸಂಕೋಚೇ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (3-4-92)। 2. ಸಂಕೋಚಹೊಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಿಕ್ಕದಾಗುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕೂಣ + ಣಿಕ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

ಕೂಣಿತಾಕ್ಷ ಕೂಣಿತಾಕ್ಷ (ವಿಂ) ಶೈಲ, ಗಿಡುಗ ಹಕ್ಕಿ. ಕೂಣಿತೇ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯ "ಷಕ್" (4-4-113)। -ಕ್ಷಿಣ -ಕ್ಷಿಣ.

ಕೂದರ ಕೂದರ (ಪುಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಹೆಂಗಸು ಋತುಮತಿ ಯಾಗಿರುವಾಗ ಮೊದಲನೆಯ ದಿನ ಋತುಯ ಸಂಗಮ ದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವನು, ಋತುವಾಗಿದ್ದಾಗ ಮೊದಲನೆಯ ದಿನ ಋತುಯೊಡನೆ ಸಂಭೋಗದಿಂದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಕುತ್ಸಿತಮುದರಂ ಯಸ್ಯ। "ಬ್ರಾಹ್ಮಣ್ಯಾ-ಮೃಗವೀರ್ಯೇಣ ಋತೋ: ಪ್ರಥಮವಾಸರೇ। ಕುತ್ಸಿತೇ ಚೋದರೇ ಜಾತ: ಕೂದರಸ್ತೇನ ಕೀರ್ತಿತ:" ಬಹುವೇಂ।

ಕೂಪ ಕೂಪ (ಪುಂ) 1. ಬಾವಿ. ಕುವಂತಿ ಮಂಡೂಕಾ ಅತ್ರ-ಕು (ಶಬ್ದೇ) "ಪ:" ದೀರ್ಘಶ್ಚ (ಉಂ 3-2-9)। "ತದ್ವಿರೋ ಭವ ವಿದ್ವತ್ಸು ಕೂಪಾಂ ವೃತ್ತಿ ವೃಥಾ ಮಾ ಕೃಥಾ: ಕೂಪೇ ಪಶ್ಯ ಪಯೋ-

ನಿಧಾವಪಿ ಘಟೋ ಗೃಹ್ಣಾತಿ ತುಲ್ಯಂ ಜಲಮ್" ಭರ್ತಂ 1-40।

2. ಹಳ್ಳ, ಗುಳಿ, ರಂಧ್ರ. "ತ್ವನ್ನಾಭಿಕರಣ್ಯ ತಥೆ ನಿವಾಸಿ ನ ದೃಶ್ಯತೇ ಸಮ್ಪ್ರತಿ ಮಧ್ಯಭಾಗ:" ಚಂ ಭಾ. 3. ಹಡಗಿನ ಧ್ವಜಸ್ತಂಭ, ಹಡಗಿನ ಪಟದ ಕಂಬ. 4. ಹಡಗನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಮರದ ಅಥವಾ ಕಬ್ಬಿಣದ ಕಂಬ. 5. ನದಿಯ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಮರ ಅಥವಾ ಬಂಡೆ. "ಕೂಪ: ಕೂಪಗತಾಂಶ್ಚಮೃಗಮಾನಗುಣವೃಕ್ಷಕೇ" ವಿಶ್ವಂ। 6. ತೋಗಲಿನ ಎಣ್ಣೆಯ ಚೀಲ.

ಕೂಪಕ ಕೂಪಕ (ಪುಂ ದ್ವಿವಂ) 1. ಹೆಂಗಸರ ಪಿರೈಗಳ ಮೇಲಿರುವ ಗುಳಿಗಳು, ಜಫನ ಕೂಪ. ಕೂಪಾವಿವ "ಕನ್" (4-3-96)। (ಪುಂ) 2. ಹಡಗನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಕಂಬ. 3. ಎಣ್ಣೆಯ ಪಾತ್ರೆ, ತೋಗಲಿನ ಎಣ್ಣೆಯ ಚೀಲ. 4. ನದಿಯ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಮರ ಅಥವಾ ಬಂಡೆ. 5. ಬಾವಿ. 6. ಚಿತ್ತೆ. "ಕೂಪಕೋ ಗುಣವೃಕ್ಷೋ ಸ್ಯಾತ್ ತೆಲಪಾತ್ರೇ ಕುಕ್ರುದರೇ। ಉದಪಾನೇ ಚಿತ್ತಾಯಾಂ ಚ" ವಿಶ್ವಂ। 7. ನೀರು ಬತ್ತಿಹೋದ ನದಿಯಲ್ಲಿ ತೋಡಿದ ಹಳ್ಳ, ಚಿಲುಮೆ. ಅಲ್ಪ: ಕೂಪ: "ಕನ್" (4-3-94)।

ಕೂಪಕಚ್ಛಪ ಕೂಪಕಚ್ಛಪ, -ಕೂಪ -ಕೂಪ (ಪುಂ) ಬಾವಿಯೊಳಗಿನ ಆಮೆಯಂತೆ ಅಲ್ಪಜ್ಞಾನದವನು, ಬಾವಿ ಯೊಳಗೆ ಅಲ್ಪಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿರುವ ಆಮೆಯಂತೆ ಕೇವಲ ಅಲ್ಪಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತ ಆಪ್ತೇ ಪ್ರಪಂಚವೆಂದು ತಿಳಿದಿರುವವನು, ಪ್ರಪಂಚದ ಅರಿವಿಲ್ಲದವನು. ಕೂಪ ಕಚ್ಛಪ ಇವ ಕೂಪ ಇವ ವಾ।

ಕೂಪಮಂಡೂಕ ಕೂಪಮಂಡೂಕ (ಪುಂ) ಬಾವಿಯೊಳಗಿನ ಕಪ್ಪೆಯಂತೆ ಬೇರೆ ಯಾವ ವಿಷಯವನ್ನೂ ಅರಿಯದವನು. ವಿಚಾರರೂಪ, ಪ್ರಪಂಚದ ಅರಿವಿಲ್ಲದವನು. ಕೂಪ ಮಂಡೂಕ ಇವ।

ಕೂಪಚಕ್ರ ಕೂಪಚಕ್ರ (ನಂ) ಬಾವಿಯ ರಾಟೆ, ಬಾವಿ ಯಿಂದ ನೀರನ್ನು ಎಳೆಯುವ ಚಕ್ರ.

ಕೂಪಾಡ್ಕ ಕೂಪಾಡ್ಕ (ಪುಂ) ರೋಮಾಂಚ, ಮೈಕೊದ ಲೇಳುವುದು. ಕೂಪಾಕಾರೋಽಕ್ಷಶಿಕ್ಷಿತಮಸ್ಮಿನ್।

ಕೂಪಿಕಾ ಕೂಪಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊಳೆಯ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಬಂಡೆ. "ಕೂಪಿಕಾಽಽಭೋಗತೋಪಲೇ" ಮೇದಿಂ।

ಕೂಪಿ ಕೂಪಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಳ್ಳ, ಗುಳಿ. 2. ನಾಭಿಕೂಪ, ಹೊಕ್ಕಳ ಗುಳಿ. 3. ಗಾಜಿನ ಪಾತ್ರೆ. 4. ಎಣ್ಣೆಯ ಪಾತ್ರೆ.

ಕೂಪೋದಕ ಕೂಪೋದಕ (ನಂ) ಬಾವಿಯೊಳಗಿನ ನೀರು. ಕೂಪಸ್ಯ ಉದಕಮ್। "ಕೂಪೋದಕಪ್ರಭಂ ಕೂಪನಯೇನ ಜಾತಾಮಸ್ವಾಮಿಕ-ಪ್ರಭುಪರಿಗ್ರಹಬುದ್ಧಿಮೌಜ್ಞನ್" ಯಾದಂ 20-99।



**ಕೃಪ್ಯ ಕೂಪ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಬಾವಿಯಲ್ಲಿರುವ. ಕೃಪೆ ಭವ: "ಯತ್" (೪-೧-೨) 2. ಗುಳಿಯಲ್ಲಿರುವ, ಹಳ್ಳದಲ್ಲಿರುವ.

**ಕೃಬರ ಕೂಬರ** (ಪುಂ) 1. ಗಾಡಿಯ ಮೂಕಿ, ನೋಗವನ್ನಿಟ್ಟು ಕಟ್ಟುವ ಗಾಡಿಯ ಒಂದು ಉದ್ದದ ಮರ. ಕೃಬತೆ - ಕೃಡ್ (ಶಬ್ದ) "ಫರಚ್" ಬಾಹುಂ 1. 2. ಕುಬ್ಜ, ಬಗ್ಗಿದ ಬೆನ್ನುಳ್ಳವನು, ಗೂನು ಬೆನ್ನಿನವನು. (ಪುಂ) 3. ಎತ್ತುಗಳು ಎಳೆಯುವ ಗಾಡಿ. "ಗನ್ತ್ರಿ ಸ್ತ್ರೀ ಕೃಬರಂ ನ ಸ್ತ್ರೀ ರಥೇ ಕಂಬಲವಾಹ್ಯಕೇ" ವೈಜಂ. (ವಿಂ) 4. ರಮ್ಯವಾದ, ಸುಂದರವಾದ, ಅಂದವಾದ. "ಕೃಬರ: ಕುಜಕೇ ಚಾರೌ ಕೃಬರಶ್ಚ ಯುಗಧರ:" ವಿಶ್ವಂ.

**ಕೃಬರಿನ್ ಕೂಬರಿನ್** (ಪುಂ) ರಥ, ಗಾಡಿ. ಕೃಬರೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) 1. "ಪಾದೈ: ಪುರ: ಕೃಬರಿಣಾಂ ವಿದಾರಿತಾ: ಪ್ರಕಾಮಮಾಕ್ರಾಂತತಲಾಸ್ತತೌ ಗಜಾ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೨೧.

**ಕೂಮ ಕೂಮ** (ನಂ) ಸರೋವರ, ದೊಡ್ಡ ಕೊಳ. ಕೋ: ಭೂಮಿ: ಉಮಾ ಕಾಂತಿರಯಸ್ಮಾತ್.

**ಕೂರ ಕೂರ** (ಪುಂ) ಅನ್ನ. ವೇಶ್ (ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬) 1. ಕು; ಕೌ ಭೂಮೌ ಉವಂ ಲಾತಿ-ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೪) 1. ಲಸ್ಯ ರ: 1. "ಭಕ್ತಮನ್ಯ: ಕೂರಮನ್ತ್ರಂ ಭಿಷ್ಟಾ ದೀದಿವಿರೋದನ:" ಅಭಿಂ ಚಿಂ 1. "ಇತಶ್ಚ ಕೂರಚ್ಯುತ-ತೈಲಮಿಶ್ರಂ ಪಿಪ್ಪಲಂ ಹಸ್ತೀ ಪ್ರತಿಗ್ರಾಹ್ಯತೇ" ಮೃಚ್ಛಂ ೪ 1. "ಸ್ಥಿತೇಽಪಿ ಕೂರೇ ಮುಹುರೇವ ಯಾಚತೇ" ನೈಷಂ ೧೬-೧೧ 1.

**ಕೂರ್ಚ ಕೂರ್ಚ** (ಪುಂ) 1. ಕುಂಚ, ಕೊಳೆಯನ್ನು ತೆಗೆಯಲು ಅನುಕೂಲವಾದ ಒರಟು ಕೂದಲಿನ ಗುಚ್ಚ, ಜುಗು ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಗುಚ್ಚ. ಕುರತಿ - ಕುರ (ಶಬ್ದ) "ಚಡ್" ದೀರ್ಘಶ್ಚ ಬಾಹುಂ 1. 2. ಹುಬ್ಬುಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಮೂಗಿನ ಮೇಲುಭಾಗ. 3. ಕುಶಮುಷ್ಟಿ, ದರ್ಭೆಯ ಒಂದು ಪಿಡಿ. 4. ದಂಭ, ವೇಷ, ಕಪಟ. 5. ಆತ್ಮ ಶ್ಲಾಘನ. 6. ಗಡ್ಡ, ಮೀಸೆ. "ಸ್ವಾಗತಮನೇಕಪ್ರಕಾರಾಣಾಂ ಜೀರ್ಣಕೂರ್ಚಿನಾಮನಧ್ಯಾಯಕಾರಣಾನಾಂ ತಪೋಧನಾನಾಮ್" ತಂ ರಾಂ ೪ 1. 7. ನವಿಲು ಗರಿ. 8. ಕಾಲಿನ ಹೆಬ್ಬರಳಿನ ಮಧ್ಯದ ಮೇಲುಭಾಗ. "ಗುಲ್ಫಶೀರ್ಷಸ್ತ್ವಿನ್ದ್ರಬಸ್ತಿ: ಕೂರ್ಚಸ್ತ್ವಿನ್ದ್ರಗುಠ-ಕಾಂತರಮ್" ವೈಜಂ 1. 9. ಔಠ, ಆಸನ. "ಪಿಠೇ ಇಮಶ್ರುಣಿ ಕೂರ್ಚೋಽಸ್ತ್ರೀ ಭ್ರೂಮಧ್ಯೇ ಕತ್ಯನೇ ಕುಶೇ" ವೈಜಂ 1. 10. ತಲೆ. 11. ಕಪಟ, ಮೋಸ, ವಂಚನೆ. (ವಿಂ) 12. ಕಠಿನವಾದ, ಗಟ್ಟಿಯಾದ. "ಕೂರ್ಚಮಸ್ತ್ರೀ ಭ್ರೂವೋರ್ಮಧ್ಯೇ ಕಠಿನ-ಇಮಶ್ರುಕೈತವೇ" ಮೇದಿಂ 1. "ಕ್ಷಿಪ್ರಂ ತ್ವಿನ್ದ್ರಗುಠಾನ್ದ್ರಗುಲಿಮಧ್ಯತ: 1. ಕೂರ್ಚ ಕ್ಷಿಪ್ರಸ್ಯೋಪರಿ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ 1.

**ಕೂರ್ಚಕ ಕೂರ್ಚಕ** (ಪುಂ) 1. ಗುಚ್ಚ, ಗೊಂಚಲು, ಕಂತೆ. ಕೂರ್ಚ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:" 1. 2. ಕೊಳೆಯನ್ನು ತೆಗೆಯಲು ಅನುಕೂಲವಾದ ಒರಟು ಕೂದಲಿನ ಕುಂಚ. 3. ಚಿತ್ರಕಾರನ ಕುಂಚ, ವರ್ತಿಕೆ. 4. ಗಡ್ಡ, ಮೀಸೆ.

**ಕೂರ್ಚಲ ಕೂರ್ಚಲ** (ವಿಂ) ಗಡ್ಡ ಮೀಸೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕೂರ್ಚಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಲಚ್" (೪-೨-೧೬) 1.

**ಕೂರ್ಚಶಿರಸ್ ಕೂರ್ಚಶಿರಸ್** (ನಂ) ಪಾದದ ಮೇಲುಭಾಗ, ಕಾಲಿನ ಅಡಿಯ ಮೇಲುಮೈ. ಕೂರ್ಚಸ್ಯ ಶಿರ: 1.

**ಕೂರ್ಚಶೇಖರ ಕೂರ್ಚಶೇಖರ** (ಪುಂ) ತೆಂಗಿನಮರ. ಕೂರ್ಚಮಿವ ಶೇಖರಮಸ್ಯ 1.

**ಕೂರ್ಚಾಲ ಕೂರ್ಚಾಲ** (ಪುಂ) ಯಜ್ಞ ಪಶು. "ಕೂರ್ಚಾಲೋ-ಸ್ಪಟಿ ಪಶು:" ವೈಜಂ 1.

**ಕೂರ್ಚಿಕಾ ಕೂರ್ಚಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಯಿಸಿ ಗಟ್ಟಿಮಾಡಿದ ಹಾಲು, ಹಾಲಿನ ಗಿಣ್ಣು. ಕೂರ್ಚಿತಿ - ಕೂರ್ಚ (ವಿಕಾರೇ) ಸಂಜಾಯಾ "ಫುಲ್" (೩-೩-೧೦೯) 1. ಇದು (1) ದಧಿಕ್ಕುರ್ಚಿಕಾ ಮತ್ತು (2) ತಕ್ಕಕ್ಕುರ್ಚಿಕಾ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಹಾಲನ್ನು ಮೊಸರಿಸೊಡನೆ ಕಾಯಿಸಿ ಪಕ್ವಮಾಡಿದರೆ ದಧಿಕ್ಕುರ್ಚಿಕೆ ಯೂ ಮಜ್ಜೆಗೆಯೊಡನೆ ಕಾಯಿಸಿ ಪಕ್ವಮಾಡಿದರೆ ತಕ್ಕಕ್ಕುರ್ಚಿಕೆಯೂ ಆಗುವುದು. "ದಧ್ನಾ ಸಹ ಚ ಯತ್ ಪವಂ ಕ್ಷೀರಂ ಸಾ ದಧಿಕ್ಕುರ್ಚಿಕಾ 1. ತಕ್ರೇಣ ಪವಂ ಯತ್ ಕ್ಷೀರಂ ಸಾ ಭವೇತ್ ತಕ್ಕಕ್ಕುರ್ಚಿಕಾ" 1. 2. ಸೂಜಿ. 3. ಬೀಗದ ಕೈ. 4. ಚಿತ್ರ ಬರೆಯುವ ತೂಲಿಕೆ, ಕುಂಚ. 5. ಮೊಗ್ಗು. "ಕೂರ್ಚಿಕಾ ಕ್ಷೀರವಿಕ್ರತೌ ಕುಶ್ವಿಕಾಢಾಂ ಚ ಕುಡ್ಮಲೇ 1. ಅಲೇಖ್ಯಕ್ಕುರ್ಚಿಕಾ ಸೂಚ್ಯಾ:" ಹೇಮಂ 1.

**ಕೂರ್ಚಿನ್ ಕೂರ್ಚಿನ್** (ವಿಂ) ಉದ್ದವಾದ ಗಡ್ಡ ಬೆಳೆಸಿರುವವನು. ಕೂರ್ಚಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) 1.

**ಕೂರ್ದನ ಕೂರ್ದನ** (ನಂ) 1. ಹಾರುವುದು, ನೆಗೆಯುವುದು. ಕುರ್ದ (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) 1. 2. ಆಟವಾಡುವುದು. "ದೇವನಂ ಕೂರ್ದನಂ ಖೇಲಾ ಲಲನಂ ವರ್ಕರೋಽಪಿ ಚ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ 1.

**ಕೂರ್ದನಿ ಕೂರ್ದನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಿತ್ರಪೂರ್ಣಮಾ, ಚೈತ್ರ ಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ, ಮದನಮಹೋತ್ಸವದ ದಿವಸ. ಕೂರ್ದತೇಽತ್ರ - ಕುರ್ದ (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) 1. "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೪) 1.

**ಕೂರ್ಪ ಕೂರ್ಪ** (ಪುಂ) ಹುಬ್ಬುಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಮೂಗಿನ ಮೇಲುಭಾಗ. ಕುರಂ ಪಾತಿ - ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಕ:" (೩-೨-೪) 1. "ಕೂರ್ಚ ಕೂರ್ಪ ಭ್ರೂವೋರ್ಮಧ್ಯೇ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ 1.



**ಕುರ್ಪರ ಕೂರ್ಪರ (ಪುಂ) 1.** ಮೊಳಕೆ. ಕುರ (ಶಬ್ದ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೧೭೮)। ಪಿಪತಿ - ಪ (ಪಾಲನಪೂರಣಯೋಃ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಕುರಾ ಶಬ್ದದ ಪರಃ। "ಪ್ರತಿ-ಕುಶ್ವಿತಕುರ್ಪರೇಣ ತೇನ ಶ್ರವಣೋಪಾಂತಿಕನೀಯಮಾನಗವ್ಯಮ್" ಮಾಘಂ ೨೦-೧೯। 2. ಮಂಡಿ, ತೊಡೆಗೂ ಕೆಳಕಾಲಿಗೂ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಸಂಧಿ. "ಕುರ್ಪರಃ ಸ್ಯಾತ್ ಕಫೋಣಿ ಚ ಜಾನುನ್ಯಪಿ ಚ ಪುಸ್ಯಯಮ್" ಮೇದಿಂ।

**ಕುರ್ಪಾಸ ಕೂರ್ಪಾಸ (ಪುಂ) ಮೈಗಾಪ್.** ಗುತ್ತನಾಗಿರುವ ಹೆಂಗಸರ ಕುಪ್ಪಸ. ತೋಳಿಲ್ಲದ ರವಿಕೆ. ಕುರ್ಪರೇ ಅಸ್ಯತೇ - ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೯)। "ಕುರ್ಪಾಸಿತ್ವರ್ಧ-ಚೋಲಕಃ" ಹಾರಾಂ। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ"। ಕುರ್ಪಾಸಕಃ ಕೂರ್ಪಾಸಕಃ. "ಮನೋಜ್ಞಕುರ್ಪಾಸಕಪಿಡಿತಸ್ತನಾಃ" ಋತುಸಂ ೪-೮। "ಕುರ್ಪಾಸಕಂ ಕ್ಷತನಖಕ್ಷತಮುಕ್ಷಿಪಂತಿ" ಮಾಘಂ ೪-೨೩।

**ಕುರ್ಮ ಕೂರ್ಮ (ಪುಂ) 1.** ಕಚ್ಚುಪ್ಪ, ಅಮೆ. ಕುರ್ಮಿತಃ ಕೌ ವಾ ಕುರ್ಮಿಃ ವೇಗಾಽಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೪-೭೪)। "ಯದಾ ಸಂಹರತೇ ಚಾಯಂ ಕುರ್ಮೋಽಜ್ಞಾನೀವ ಸರ್ವಶಃ। ಇಂದ್ರಿಯಾಣಿನ್ದ್ರಿಯಾರ್ಥೇಭ್ಯಸ್ತಸ್ಯ ಪ್ರಜ್ಞಾ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಾ" ಗೀತಾ ೨-೪೮। 2. ಮಹಾ ವಿಷ್ಣುವಿನ ಹತ್ತು ಅವತಾರಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡನೆಯದು. [ದೇವಾಸುರರು ಅಮೃತಕ್ಕಾಗಿ ಸಮುದ್ರವನ್ನು ಕಡೆಯು ತ್ರಿದ್ವಾಗ ಪರಮಾತ್ಮನು ಕೂರ್ಮರೂಪದಿಂದ ಅವತರಿಸಿ ಮಂದರಾಚಲವು ಸಮುದ್ರದೊಳಗೆ ಮುಳುಗದಂತೆ ತನ್ನ ಬೆನ್ನಿನ ಮೇಲೆ ಹೊತ್ತಿದ್ದನು.] "ಸುರಾಸುರಾಣಾಮುದ್ಧಿ ಮಥನತಾಂ ಮಂದರಾಚಲಮ್। ದಧ್ರೇ ಕಮಠರೂಪೇಣ ಪೃಠೇ ಏಕಾದಶೇ ವಿಭುಃ" ಭಾಗಂ ೧-೩-೧೬। 3. ದೇಹದೊಳಗೆ ಉನ್ನಿಲನ ಮಾಡುವ ಒಂದು ವಾಯು. "ವಾಗ್ದಾರೆ ನಾಗ ಆಖ್ಯಾತಃ ಕುರ್ಮಂ ಉನ್ಮೀಲನೇ ಸ್ಮೃತಃ" ಅಮಂ। 4. ಕೂರ್ಮಮುದ್ರೆ, ದೇವರ ಧ್ಯಾನಕ್ಕಾಗಿ ಕೈಬೆರಳುಗಳ ಜೋಡಣೆಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಒಂದು ಮುದ್ರೆ. "ವಾಮಹಸ್ತಸ್ಯ ತರ್ಜನ್ಯಾ ದಕ್ಷಿಣಸ್ಯ ಕನಿಠ್ಯಾ। ತಥಾ ದಕ್ಷಿಣತರ್ಜನ್ಯಾ ವಾಮಾಂಗುಲೇನ ಯೋಜಯೇತ್। ಉತ್ತರಂ ದಕ್ಷಿಣಾಂಗುಲಂ ವಾಮಸ್ಯ ಮಧ್ಯಮಾದಿಕಾಃ। ಅಂಗುಲೀಯೋಜಯೇತ್ ಪೃಠೇ ದಕ್ಷಿಣಸ್ಯ ಕರಸ್ಯ ಚ। ವಾಮಸ್ಯ ಪಿತೃತೀರ್ಥೇನ ಮಧ್ಯಮಾನಾಮಿಕೇ ತಥಾ। ಅಧೋಮುಖೇ ಚ ತೇ ಕುರ್ಯಾತ್ ದಕ್ಷಿಣಸ್ಯ ಕರಸ್ಯ ಚ। ಕುರ್ಮಪೃಠಸಮಂ ಕುರ್ಯಾದ್ಧಕ್ಷಿಣಾಂ ಚ ಸರ್ವತಃ। ಕುರ್ಮಮುದ್ರೆಯಮಾಖ್ಯಾತಾ ದೇವತಾಧ್ಯಾನಕರ್ಮಣಿ" ತನ್ತ್ರಸಾಂ। 5. ಕದ್ರುವಿನ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಸರ್ಪ. "ಶೇಷೋಜಂತೋ ವಾಸುಕಿಶ್ಚ ತಕ್ಷಕಶ್ಚ ಭುಜಙ್ಗಮಃ। ಕುರ್ಮಶ್ಚ ಕುಲಿಕಶ್ಚೈವ ಕಾದ್ರವೇಯಾಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೪-೪೧। 6. ಕುಬೇರನ ಒಬ್ಬತ್ತು ನಿಧಿಗಳಲ್ಲೊಂದು.

**ಕುರ್ಮಕಲ್ಪ ಕೂರ್ಮಕಲ್ಪ (ಪುಂ) ಚತುರ್ಮುಖಬ್ರಹ್ಮನ** ಒಂದು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಬರುವ ಶ್ವೇತವರಾಹಾದಿ ಪಿತೃಕಲ್ಪದ ವರೆಗಿನ ಮೂವತ್ತು ಕಲ್ಪಗಳಲ್ಲೊಂದು.

**ಕುರ್ಮಚಕ್ರ ಕೂರ್ಮಚಕ್ರ (ನಂ) 1.** ತಂತ್ರಸಾರದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ ಕೂರ್ಮಾಕಾರದ ಒಂದು ಚಕ್ರ. 2. ನಕ್ಷತ್ರಭೇದದಿಂದ ದೇಶಭೇದಗಳ ಶುಭಾಶುಭ ಫಲಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಒಂದು ಚಕ್ರ. ಕೂರ್ಮರೂಪಿಯಾದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಒಬ್ಬತ್ತು ಭಾಗವಾಗಿರುವ ಭಾರತವರ್ಷವನ್ನು ಆಕ್ರಮಿಸಿ ಕೊಂಡು ಪೂರ್ವಾಭಿಮುಖವಾಗಿ ಪವಳಿಸಿರುವನು. "ಪ್ರಾಡ್‌ಮುಖೋ ಭಗವಾನ್ ದೇವಃ ಕುರ್ಮರೂಪಿ ವ್ಯವಸ್ಥಿತಃ। ಆಕ್ರಮ್ಯ ಭಾರತಂ ವರ್ಷಂ ನವಭೇದಂ ಯಥಾಕ್ರಮಮ್"। ಈ ಚಕ್ರದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ದೇಶಗಳು: "ಮಧ್ಯೇ ಸಾರಸ್ವತಾ ಮತ್ಸ್ಯಾಃ ಶೂರಸೇನಾಃ ಸಮಾಧುರಾಃ। ಪಂಚಾಲಶಾಲ್ವಮಾಂಡವ್ಯಕುರುಕ್ಷೇತ್ರಗಜಾ-ಹ್ವಯಾಃ। ಮರುನೇಮಿಷವಿಂಧ್ಯಾದ್ರಿಪಾಂಡ್ಯಧೋಪಾಃ ಸಯಾಮುನಾಃ। ಕಾಶ್ಯಯೋಧ್ಯಾ ಪ್ರಯಾಗಶ್ಚ ಗಯಾ ವೇದೇಹಕಾದಯಃ"। ಪೂರ್ವ ದಿಕ್ಕಿನ ದೇಶಗಳು: "ಪ್ರಾಚ್ಯಾಂ ಮಾಗಧಶೋಣಿ ಚ ವಾರೆಂದ್ರೋ-ಗೌಡರಾಡಕಾಃ। ವರ್ಧಮಾನತಮೋಲಿಪ್ತಪ್ರಾಗ್ಜ್ಯೋತಿಷೋದಯಾದ್ರಯಃ"। ಅಗ್ನೇಯ ದಿಕ್ಕಿನ ದೇಶಗಳು: "ಆಗ್ನೇಯಾಮಜ್ಞವಜ್ಞೋ-ಪವತ್ಸತ್ಪುರಕೋಶಲಾಃ। ಕಲಿಂಜೋದ್ರಾನ್ಧ್ರಕಿಂಕಿಣ್ಧಾವಿದರ್ಮ-ಶಬರಾದಯಃ"। ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನ ದೇಶಗಳು: "ದಕ್ಷಿಣೇ-ವಂತಿಮಾಹೇಂದ್ರಮಲಯಾ ಋಷ್ಯಮೂಕಕಾಃ। ಚಿತ್ರಕೂಟಮಹಾರಣ್ಯ-ಕಾಂಚೀಸಿಂಹಲಕೋಡ್ಕುಣಾಃ। ಕಾವೇರಿ ತಾಮ್ರಪರ್ಣಿ ಚ ಲಕ್ಷ್ಮಾ-ತ್ರಿಕೂಟಕಾದಯಃ"। ನೈಋತ್ಯ ದಿಕ್ಕಿನ ದೇಶಗಳು: "ನೇಋತೇ ದ್ರವಿಡಾನಂತಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರಾಶ್ಚ ರೇವತಃ। ಯವನಃ ಪಹಲವಃ ಸಿಂಧುಃ ಪಾರಸೀಕಾದಯೋ ಮತಾಃ"। ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕಿನ ದೇಶಗಳು: "ಪಶ್ಚಿಮೇ ಹೈಹಯಾಸ್ತಾದ್ರಿಮಲೇಕ್ಷವಾಸ-ಶಕಾದಯಃ"। ನಾಯು ದಿಕ್ಕಿನ ದೇಶಗಳು: "ವಾಯವ್ಯೇ ಗುಜ್ಜರಾಶ್ಚ ನಾಟ್ಯಾಲಂಧರಾದಯಃ"। ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಿನ ದೇಶಗಳು: "ಉತ್ತರೇ ಚೀನೇನೇಪಾಲಹೂಣಕೇಕಯಮಂದರಾಃ। ಗಾಂಧಾರಹಿಮವತ್ಕ್ರೌಂಶ್ವಗಂಧಮಾದನಮಾಲವಾಃ। ಕೇಲಾಸಮದ್ರ-ಕಾಶ್ಮೀರಮಲೇಕ್ಷದೇಶಾಃ ಖಸಾದಯಃ"। ಈಶಾನ ದಿಕ್ಕಿನ ದೇಶಗಳು: "ಏಶಾನೇ ಸ್ವರ್ಣಭೂಮಿಶ್ಚ ಗಂಧಾರಾಸ್ತು ಟಡ್ಕುಣಃ। ವಾಲ್ಹೀಕಿಬ್ರಹ್ಮಪುರಕಕೇರಾತಾ ದರದಾದಯಃ"। "ಮಧ್ಯಪ್ರಾಗ್‌ಗ್ನಿಯಾಮ್ಯಾದಿಕೃತ್ತಿಕಾದಿತ್ರಯತ್ರಯಃ। ಕುರ್ಮವೇ-ಯುತೇಸ್ತೇಸ್ತು ಪಿಂಡಯಂತೇ ತನ್ನಿವಾಸಿನಃ" ಜ್ಯೋತಿಷಂ। ವೇದಾದಿಗಳಿಂದ ಸಂಭವಿಸುವ ದೇಶಗಳು. "ಅತಿವೃಷ್ಟಿರನಾವೃಷ್ಟಿಃ ಶಲಭಾ ಮೃಷಿಕಾಃ ಖಗಾಃ। ಸ್ವಚಕ್ರಂ ಪರಚಕ್ರಂ ಚ ಸಪ್ತೇತೇ ಸಂಭವಂತಿ ಚ। एवं ದೇಶಗೃಹಗ್ರಾಮಕ್ಷೇತ್ರನಾಮಕ್ಷತೋ ವದೇತ್। ತಥಾ ಚ ಯತ್ರ ನಕ್ಷತ್ರೇ ದಿವ್ಯಪಾರ್ಥಿವನಾಭಸಾಃ। ದೃಶ್ಯಂತೇ



ಸುಮಹೋತ್ಪಾತಾಃ ಸ್ವಾಂ ದಿಶಾಂ ತತ್ರ ಪಿಡಯೇತ್ | ಸೌರಿರ್ಬಲಾಧಿಪೋ  
ದುಃಪ್ರಾಪ್ತಃ ಸ್ವಲ್ಪವೀರ್ಯಃ ಶುಭಾವಹಃ | ಏಕದಾ ಪಿಡಯೇದ್ವತ್ರ ಸಾನುಜಃ  
ಕೂರ್ಮಪಂಚಕೇ | ತತ್ರ ಸ್ಥಾನೇ ಮಹಾವಿಘ್ನೋ ಜಾಯತೇ ನಾತ್ರ  
ಸಂಶಯಃ | ದುಃಪ್ರಾಪ್ತಸ್ಥಾನೇ ಗತೇ ಚಂದ್ರೇ ಕರ್ತವ್ಯಂ ಶಾಂತಿ-  
ಪೌಷ್ಟಿಕಮ್” |

**ಕೂರ್ಮಪುರಾಣ ಕೂರ್ಮಪುರಾಣ (ನಂ)** ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ  
ಪ್ರಣೀತವಾದ ಹದಿನೆಂಟು ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಕೂರ್ಮ  
ಪ್ರೋಕ್ತಮ್ ಪುರಾಣಮ್ | ಮಹಾವಿಷ್ಣುವು ಕೂರ್ಮಾವತಾರ  
ವನ್ನೆತ್ತಿದಾಗ ಮಹರ್ಷಿಗಳಿಗೆ ಇಂದ್ರದ್ಯುಮ್ನನ ಪ್ರಸಂಗ  
ದಿಂದ ಚತುರ್ವಿಧ ಪುರುಷಾರ್ಥ (ಧರ್ಮ, ಅರ್ಥ, ಕಾಮ  
ಮತ್ತು ಮೋಕ್ಷ) ಗಳ ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯವನ್ನು ಈ ಪುರಾಣದಲ್ಲಿ  
ವಿವರವಾಗಿ ತಿಳಿಸಿದುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ “ಕೂರ್ಮಪುರಾಣಮ್”  
ಎಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು. ಈ ಪುರಾಣದಲ್ಲಿ 17,000  
ಶ್ಲೋಕಗಳಿವೆ. ಇದರ ಪೂರ್ವಭಾಗದಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಮೀ-ಪ್ರದ್ಯುಮ್ನ  
ಸಂವಾದ, ವರ್ಣಾಶ್ರಮ ಧರ್ಮಗಳು, ಜಗತ್ತಿನ ಉತ್ಪತ್ತಿ  
ಕ್ರಮ, ಕಾಲಮಾನ. ಪ್ರಳಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ಪರಮಾತ್ಮನ  
ಸ್ತುತಿ, ಸೃಷ್ಟಿಕ್ರಮ, ಶಂಕರನ ಚರಿತ್ರೆ, ಪಾರ್ವತಿಯ  
ಸಹಸ್ರನಾಮ, ಯೋಗನಿರೂಪಣೆ, ಭೃಗುವಂಶ ಮತ್ತು  
ಸ್ವಾಯಂಭುವಮನುಮಂಶಗಳ ವರ್ಣನೆ, ದೇವತೆಗಳ  
ಉತ್ಪತ್ತಿ, ದಕ್ಷಯಜ್ಞಧ್ವಂಸ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಚರಿತ್ರೆ,  
ಮಾರ್ಕಂಡೇಯ-ಕೃಷ್ಣ ಸಂವಾದ ಮುಂತಾದ ವಿಷಯ  
ಗಳೂ ಉತ್ತರ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಸಗೀತೆ, ನಾನಾ ತೀರ್ಥಗಳ  
ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ, ನಾನಾ ಧರ್ಮಗಳ ನಿರೂಪಣೆ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾದಿ  
ಚಾತುರ್ವರ್ಣ್ಯದ ವೃತ್ತಿ, ಸಂಕರವರ್ಣದ ವೃತ್ತಿ, ಕಾಮ  
ಮತ್ತು ಮೋಕ್ಷಗಳ ಪ್ರತಿಪಾದನೆ ಇತ್ಯಾದಿ ವಿಷಯಗಳೂ  
ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಫಲಶ್ರುತಿಯೂ ಉಕ್ತವಾಗಿವೆ. ಇದು ಆರು  
ತಾಮ್ರಪುರಾಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. “ಮಾತಸ್ಯ ಕೌರ್ಮ ತಥಾ ಲೇಙ್ಗ  
ಶೇವ ಸ್ಕಾಂದ ತಥೈವ ಚ | ಆಗ್ನೇಯಂ ಚ ಷಡೇತಾನಿ ತಾಮಸಾನಿ  
ನಿಬೋಧತ” ಪಾಞ್ವುಂ |

**ಕೂರ್ಮಪುರಾಣ ಕೂರ್ಮಪುರಾಣ (ಫಂ)** 1. ದೊಡ್ಡ ಗೋರಂಟಿ  
ಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಆಮೆಯ ಬೆನ್ನು. ಆಮೆಯ ಚಿಪ್ಪು.  
3. ಶ್ರಾವ, ಮಣ್ಣಿನ ತಟ್ಟೆ.

**ಕೂರ್ಮರಾಜ ಕೂರ್ಮರಾಜ (ಫಂ)** 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ  
ಕೂರ್ಮಾವತಾರ, ಕೂರ್ಮರೂಪದಿಂದ ಅವತರಿಸಿದ  
ಮಹಾವಿಷ್ಣು. 2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಆಮೆ. ಕೂರ್ಮರಾಜ ರಾಜಾ  
“ಠಕ್” (4-4-91) |

**ಕೂರ್ಮವಿತಾರ ಕೂರ್ಮವಿತಾರ (ಫಂ)** ಕೂರ್ಮರೂಪದಿಂದ  
ಪರಮಾತ್ಮನ ಅವತಾರ.

**ಕೂಲ-ಆವರಣ (ಫಂ)** (ಭಾಂ ಪರಂ ಸಂಕಂ ಸಂ) | ಕೂಲತಿ | ಚುಕೂಲ |  
ಕೂಲಿತಾ | ಅಕೂಲಿತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಅವರಿಸು, ಮುಚ್ಚು,  
ಮರೆಮಾಡು.

**ಕೂಲ ಕೂಲ (ನಂ)** 1. ಕೆರೆ ನದಿ ಮೊದಲಾದ ಮೃಗಗಳ ತೀರ,  
-ದಡ. ಕೂಲತಿ ಆವೃಣೋತಿ ಪ್ರವಾಹಮ್ - ಕೂಲ (ಆವರಣ)  
“ಕಃ” (3-1-134) | “ವಿದಲಿತಮಹಾಕೂಲಾಮುಕ್ಷಣಾಂ  
ವಿಷಾಣವಿಘಟನೇ” ಮಾಘಂ 12-99 | 2. ಸರಸ್ಸು, ಕೊಳ.  
3. ಸೈನ್ಯದ ಹಿಂಭಾಗ. 4. ತಟಾಕ, ಕೆರೆ, ಏರಿ.  
5. ಸ್ತೂಪ, ದಿಣ್ಣ, ದಿಬ್ಬ. 6. ಸೈನ್ಯದ ಮಧ್ಯಭಾಗ.  
“ಕೂಲ ತೀರೇ ಚಮೂಕದೌ” ವೈಜಂ | 7. ಸಮೀಪ, ಹತ್ತಿರದ  
ಪ್ರದೇಶ. “ತವಾಪಿ ಹಾ ಹಾ ವಿರಹಾತ್ಕುಳಾಕುಲಾಃ ಕುಲಾಯಕುಲೇಷು  
ವಿಲುಠಯ ತೇಷು ತೇ” ನೈಷಂ 1-141 | “ಕೂಲ ತಡೆ ಸೈನ್ಯಪೃಠೆ  
ತಟಾಗಸ್ತುಪಯೋರಪಿ” ಹೇಮಂ |

**ಕೂಲಕ ಕೂಲಕ (ಫಂ)** 1. ತೀರ, ದಡ. 2. ಸ್ತೂಪ,  
ದಿಣ್ಣ, ದಿಬ್ಬ. ಕೂಲ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕಃ” | 3. ವಲ್ಮೀಕಿ,  
ಹುತ್ತ್ವ. “ಕೂಲಕಃ ಕೃಮಿಶೇಲೇ ಚ ಪ್ರತೀರಸ್ತುಪಯೋರಪಿ”  
ವಿಶ್ವಂ | ಮೇದಿನೀ ಕೋಶದಲ್ಲಿ “ಕೂಲಕಂ ನ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್”  
ಎಂದು ಪುನಃಪುನಃಕಲಿಂಗದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿದೆ.

**ಕೂಲಕ್ಷುಷ ಕೂಲಂಕಷ (ಫಂ)** 1. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು.  
“ಪುಮಾನ್ ಕಚಙ್ಗಲೋ ವಾಂಕಃ ಕೂಲಕ್ಷುಷಪರಾಂಗವೌ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |  
(ವಿಂ) 2. ತೀರವನ್ನು ವ್ಯಾಪಿಸುವ. ದಡವನ್ನು  
ಮುಟ್ಟುವ. ದಡವನ್ನು ಕೊರೆಯುವ. ಕೂಲಂ ಕಪತಿ - ಕಪ  
(ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಖಚ್” (3-2-42) | ಮುಮ್ (6-3-67) |  
“ಕೂಲಂಕಷಿಘಾಃ ಸರಿತಸ್ತಥಾಪರಾಃ ಪ್ರವರ್ತಯಾಮಾಸುರಿಭಾ  
ಮದಾಮ್ಬುಭಿಃ” ಮಾಘಂ 12-60 | (ಸ್ತ್ರೀಂ) - ಕಷಾ - ಕಷಾ.  
3. ಹೊಳೆ, ನದಿ.

**ಕೂಲಚರ ಕೂಲಚರ (ವಿಂ)** 1. ತೀರದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ,  
ದಡದಲ್ಲಿ ತಿರುಗಾಡುವ. 2. ತೀರದಲ್ಲಿ ಮೇಯುವ.  
ಕೂಲೇ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತಿಭಕ್ಷಣಯೋಃ) “ಠಕ್” (3-2-16) |  
ಕೂಲಚರಪ್ರಾಣಿಗಳು ; “ತತ್ರ ಗಜ-ಗವಯ-ಮಹಿಷ-ಹು-ಚಮರ-  
ಸುಮರ-ರೋಹಿತ-ವರಾಹ-ಖಡ್ಗಿ-ಗೋಕರ್ಣ-ಕಾಲಪುಷ್ಪಕ-ಆದ್ರವ್ಯಜ್ಞ-  
ಅರಣ್ಯಗವಯಪ್ರಭೃತಯಃ ಕೂಲಚರಾಃ ಪಶವಃ” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ  
46-94 |

**ಕೂಲಭೂ ಕೂಲಭೂ - ಭೂಮಿ - ಭೂಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ನದಿಯ  
ತೀರ, ದಡ, ತೀರಭೂಮಿ, ತೀರಪ್ರದೇಶ.

**ಕೂಲಮುದ್ರಜ ಕೂಲಮುದ್ರಜ (ವಿಂ)** ದಡವನ್ನು ಭೇದಿ  
ಸುವ, ತೀರವನ್ನು ಕೊರೆಯುವ ನದಿ ಮುಂತಾದುದು.  
ಕೂಲಮುದ್ರಜತಿ - ಉದ್ + ರೂಜಿ (ಭಜ್ಜೇ) “ಖಚ್” (3-2-31) |



ಮುಗಾಗಮ: (೬-೩-೬೭)। “ಮದೋದಗ್ರಾ: ಕಕುಚಂತ: ಸರಿತಾಂ ಕೂಲಮುದ್ರಾ:” ರಘುಂ ೪-೨೨।

**ಕೂಲಮುದ್ರಹ ಕೂಲಮುದ್ರಹ** (ವಿಂ) ತೀರದವರೆಗೂ ತುಂಬಿ ಪ್ರವಹಿಸುವ, ದಡದವರೆಗೂ ತುಂಬಿ ಹರಿಯುವ (ನದಿ, ಹೊಳೆ). ಕೂಲಮುದ್ರಹತಿ — ಉ + ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಸಶ್” (೩-೨-೩೧)। ಮುಗಾಗಮ: (೬-೩-೬೭)। “ಉತ್ತಿರ್ಣಿ ವಾ ಕಥಂ ಭೀಮಾ: ಸರಿತ: ಕೂಲಮುದ್ರಾ:” ಭಟ್ಟಿಂ ೬-೯೫।

**ಕೂಲವತ್ ಕೂಲವತ್** (ವಿಂ) ದಡಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವ. ಕೂಲವತ್ ಸ್ತ: “ಮತುಪ್” (೫-೨-೧೩೬)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)। -ವತಿ-ವತಿ. ನದಿ, ಹೊಳೆ.

**ಕೂಲಿನ್ ಕೂಲಿನ್** (ವಿಂ) ತೀರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವ, ದಡ ಗಳಿರುವ. ಕೂಲಿನ್ ಸ್ತ: “ಇನಿ:” (೫-೨-೧೩೬)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೫)। ಕೂಲಿನಿ ಕೂಲಿನೀ. ನದಿ, ಹೊಳೆ.

**ಕೂರ ಕೂರ** (ಪುಂ) “ಕೂರ” ಪದದ ಅರ್ಥ.

**ಕೂರ್ಮಾಂಡ ಕೂರ್ಮಾಂಡ** (ಪುಂ) 1. ಈಶ್ವರನ ಪ್ರಮಥ ಗಣಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. 2. ಒಬ್ಬ ಯುಷಿ, “ಕೂರ್ಮಾಂಡೋ ರಾಜಪುತ್ರ-ಶ್ಚೇತನ್ಯಂತೇ ಸ್ವಾಹಾಸಮನ್ವಿತೇ:” ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೨೮೫। (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 3. ಆ ಯುಷಿದೃಷ್ಟವಾದ ಮಂತ್ರಗಳು. “ಕೂರ್ಮಾಂಡೇವಾಪಿ ಜುಹುಯಾತ್ ಧೃತಮಗ್ನೌ ಯಥಾವಿಧಿ” ಮನುಂ ೮-೧೦೬। ಗೌರಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪೧)। -ಡಿ-ಡಿ. 4. ಆ ಯುಷಿದೃಷ್ಟವಾದ ಮಂತ್ರಗಳು. “ತೀರಾತ್ರೋಪೋಷಿತೋ ಹೃತ್ವಾ ಕೂರ್ಮಾಂಡಿಭಿಘೃತಂ ಶುಚಿ:” ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೩೦೩। 5. ಕುಂಬಳದ ಗಿಡ. ಕು ಇಷತ್ ಕೂರ್ಮಾ ಅಂಡೇಷು ಯಸ್ಯ। (ನಂ) 6. ಕುಂಬಳಕಾಯಿ. “ಪಿತ್ತಘ್ನಂ ತೇಷು ಕೂರ್ಮಾಂಡಂ ಬಾಲಂ ಮಧ್ಯಂ ಕಫಾವಹಮ್। ಶುಕ್ಲಂ ಲಘುಣಂ ಸಕ್ಷಾರಂ ದೀಪನಂ ಬಸ್ತಿ-ಶೋಧನಮ್” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬-೨೧೩। ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕ:”। ಕೂರ್ಮಾಂಡಕ: ಕೂರ್ಮಾಂಡಕಃ.

**ಕೂರ್ಮಾಂಡಿ ಕೂರ್ಮಾಂಡೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 2. ಕುಂಬಳದ ಗಿಡ. ಕೂರ್ಮಾಂಡಿ ಗೌರಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪೧)।

**ಕೂಹ ಕೂಹ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಮದರಾಶಿ, ಹಿಮದ ಗಡ್ಡೆ. ಕು ಇಷತ್ ಕೂಹತೇಷ್ವ - ಕೂಹ (ವಿತರ್ಕೆ) ಅಧಿಂ ಧಾರ್ಯೆ “ಕ:” (ವಾಂ ೩-೩-೫೮)।

**ಕುಕ ಕುಕ** (ಪುಂ) ಕಂಠಮಧ್ಯ, ಕುತ್ತಿಗೆಯ ಮಧ್ಯಭಾಗ. ಕ್ರಿಯತೇಜಸ್ವಿ-ಓ ಕುಕ್ (ಕರಣೆ) “ಕಕ್” ಬಾಹುಂ। “ಕುಕಸ್ತು ಕನ್ಧರಾಮಧ್ಯಮ್” ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

**ಕುಕಣ ಕುಕಣ** (ಪುಂ) 1. ಕಬ್ಬಿಕ್ಕಿ. ತಿತ್ತಿರಿ ಪಕ್ಕಿಯ ಒಂದು ಭೇದ. ಕು ಇತಿ ಕಣತಿ — ಕಣ (ಶಬ್ದ) “ಅಚ್”

(೩-೧-೧೩೪)। ಕುಕಣ ಕಣಠೇನ ಅಣತಿ — ಅಣ (ಶಬ್ದ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) ವಾ। ಶಕಂ। “ಕುಕಣಕ್ರೂರೈ ಸಮೌ” ಅಮಂ। 2. ಒಂದು ಕುಮಿ. “ಕುಪಣ: ಕುಮಿಸದ್ವಿಷ್ಟ:” ಹಾರಾಂ। 3. ಒಂದು ದೇಶ.

**ಕುಕಣೀಯ ಕುಕಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಕುಕಣ ದೇಶದಿಂದ ಬಂದ. 2. ಕುಕಣ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಕುಕಣ “ಛ:” (೪-೨-೧೪೫)।

**ಕುಕರ ಕುಕರ** (ಪುಂ) ಸೀನನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ದೇಹದೊಳಗಿನ ಒಂದು ವಾಯು. “ಕುಕರಾಚ್ಚ ಕ್ಷುತಂ ಜೇಯಂ ದೇವದತ್ತಾದ್ವಿಜೃಂಭ-ಣಮ್” ಅಮಂ।

**ಕುಕಲಾ ಕುಕಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಪ್ಪಲಿ. ಕುಕ ಕುಕಾಕಾರಂ ಲಾತಿ — ಲಾ (ಆದಾನೆ) “ಕ:” (೩-೨-೩)।

**ಕುಕಲಾಸ ಕುಕಲಾಸ** (ಪುಂ) ಹೆಂಟೆಗೊದ್ದ, ಒತಿಕೇತ. ಕುಕ ಕಣಠಂ ಲಾಸಯತಿ — ಲಸ (ಶಿಲ್ಪಯೋಗ) + ಣಿಚ್ “ಅನ್” (೩-೨-೧)। “ಶ್ರಮೇಣ ಮಹತಾ ಯುಕ್ತಾಸ್ತಸ್ಮಿನ್ಸ್ತೋಯೇ ಸುಸಂವೃತೇ। ದದೃಶುಸ್ತೇ ಮಹಾಕಾಯಂ ಕುಕಲಾಸಮವಸ್ಥಿತಮ್” ಭಾಂ ಅನುಂ ೭೦-೪।

**ಕುಕವಾಕು ಕುಕವಾಕು** (ಪುಂ) 1. ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ. ಕುಕೇಣ ವಕ್ತಿ — ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) “ಕುನ್” ಕಶ್ಚ (ಉಂ ೧-೬)। “ಅನುನಯಮಗೃಹೀತ್ವಾ ನ್ಯಾಯಸುಪ್ತಾ ಪರಾಶ್ಚಿ ರುತಮಥ ಕುಕವಾಕೋ-ಸ್ತಾರಮಾಕರ್ಣ್ಯ ಕಲ್ಯೇ” ಮಾಘಂ ೧೧-೯। 2. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. 3. ಹೆಂಟೆಗೊದ್ದ, ಒತಿಕೇತ. “ಕುಕವಾಕು-ಸ್ತಾಮ್ರಚೂಡೇ ಮಯೂರಕುಕಲಾಸಯೋ:” ಹೇಮಂ।

**ಕುಕವಾಕುಧ್ವಜ ಕುಕವಾಕುಧ್ವಜ** (ಪುಂ) ಮಯೂರವೇ ಧ್ವಜವಾಗಿರುವ ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಸ್ಕಂದ. ಕುಮಾರಸ್ವಾಮಿ. ಕುಕವಾಕುಮಯೂರೋ ಧ್ವಜಶ್ಚಿಹ್ನಮಸ್ಯ। “ಬಾಲಚರ್ಯ: ಸಿದ್ಧಸೇನ: ಕುಕವಾಕುಧ್ವಜಶ್ಚ ಸ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಕುಕಾಟಿಕಾ ಕುಕಾಟಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುತ್ತಿಗೆಯ ಹಿಂಭಾಗ, ಹೆಕ್ಕುತ್ತು. ಕುಕ ಕಣಠಮತಿ — ಅಟ(ಗತೌ) “ಇನ್” (ಉಂ ೪-೧೧೭)। ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” (೫-೪-೫)। “ಕುಕಾಟಿಕಾಂತೇ ಛಿತ್ತೇ ತು ಗಚ್ಛತ್ಯಪಿ ಸಮೀರಣೇ। ಸಮ್ಯಕ್-ನಿವೇಶ್ಯ ಬಧ್ನೀಯಾತ್ ಸೀವ್ಯೇಚ್ಛಾಪಿ ನಿರಂತರಮ್” ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೨-೩೨।

**ಕುಚ್ಛ ಕುಚ್ಛ** (ನಂ) 1. ಕಷ್ಟ, ತೊಂದರೆ. ಕುಚ್ಛತಿ — ಕುಚಿ (ಕ್ಷೇದನೆ) “ರಕ್” ಛಕಾರಾದೇಶಶ್ಚ (ಉಂ ೨-೨೧)। “ರಾಮೇಣ ಮೈಥಿಲಸುತಾಂ ದಶಕಣ್ಠಕುಚ್ಛಾತ್ರಪ್ರತೃದ್ಧತಾಂ ಭೃತಿಮತೀಂ ಭರತೌ ವವಂದೇ” ರಘುಂ ೧೩-೭೭। 2. ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯ ಚಾಂದ್ರಾಯಣ ಮುಂತಾದ ಪ್ರತ. “ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯಂ ಚರೇತ್ಕುಚ್ಛಮದಮೇಕಂ



ಸಮಾಹಿತ: "ಮನುಂ ೧೧-೧೦೫೧- 3. ಪಾಪ. "ಕೃಷ್ಣಮಂ-  
ಹಸಿ. ಕೃಷ್ಣೇ ಸಾಂತ್ಪನೇ" ಹೇಮಂ. (ವಿಂ) 4. ಕೃಷ್ಣ  
ಸಾಂತ್ಪನವಾದ, ಕೃಷ್ಣದಿಂದ ಮಾಡಬಹುದಾದ. "ಅತೋಜ್ಯಾ-  
ತ್ವಸಾಧ್ಯ: ಸ್ಯಾತ್ ಕೃಷ್ಣೋಜ್ಯಂ ಮಿಶ್ರಲಕ್ಷಣ:" ಸುಶ್ರುತಂ. 1  
5. ತೊಂದರೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ಪೀಡಿಸುವ. "ಸದಾಹ-  
ವೇದನಂ ಕೃಷ್ಣಂ ಕುರ್ಯಾತಾಂ ಮೃತ್ಸಂಕ್ಷಯಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ. 2  
೫೮-೧೭. 6. ಕೃಷ್ಣವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ಕೃಷ್ಣಕ್ಕೆ ಕಾರಣ  
ವಾದ. "ಕೃಷ್ಣಂ ಗತಸ್ಯಾಪಿ ದಶಾವಿಪಾಕಂ ಧರ್ಮಾನಿ ಚೇತ:  
ಸ್ವಲತು ತ್ವದೀಯಮ್" ನೇಷಂ ೧೪-೮೧. 7. ನೀಚ, ಪಾಪಿ.  
8. ಕೃಷ್ಣವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿರುವ, ಕೃಷ್ಣಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗಿರುವ.

**ಕೃಷ್ಣಸಾಂತ್ಪನ ಕೃಷ್ಣಸಾಂತ್ಪನ (ಪುನಂ) ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ**  
ಕೃಷ್ಣಿ ಅಚರಿಸಬೇಕಾದ ಒಂದು ವ್ರತ. ಗೋಮೂತ್ರ,  
ಗೋಮಯ, ಕ್ಷೀರ, ಮೊಸರು, ತುಪ್ಪ ಮತ್ತು ಕುಶೋದಕ  
ಗಳನ್ನು ಒಂದಾಗಿ ಬೆರೆಸಿ ಅದನ್ನು ಒಂದು ದಿನ ಅಹಾರ  
ವನ್ನಾಗಿ ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಮರುದಿನ ಉಪವಾಸವಿರುವುದು  
ಕೃಷ್ಣಸಾಂತ್ಪನವ್ರತ. "ಗೋಮೃತ್ ಗೋಮಯಂ ಕ್ಷೀರಂ ದಧಿ  
ಸಪಿ: ಕುಶೋದಕಮ್. 1. ಏಕರಾತ್ರೋಪವಾಸಶ್ಚ ಕೃಷ್ಣಂ ಸಾಂತ್ಪನಂ  
ಸ್ಮೃತಮ್" ಮನುಂ ೧೧-೨೧೨. ಈ ಆರನ್ನೂ ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿ  
ಆರು ದಿವಸ ಅಹಾರವಾಗಿ ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಏಳನೆಯ  
ದಿವಸ ಉಪವಾಸವಿರುವುದು ಮಹಾಸಾಂತ್ಪನವ್ರತ.  
"ಪೃಥಕ್ ಸಾಂತ್ಪನದ್ವಯೈ: ಷಡಹ: ಸೋಪವಾಸಿಕ: 1. ಸಪ್ತಾಹೇನ  
ತು ಕೃಷ್ಣೋಜ್ಯಂ ಮಹಾಸಾಂತ್ಪನ: ಸ್ಮೃತ:" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೩೧೫.  
**ಕೃಷ್ಣಿನ್ ಕೃಷ್ಣಿನ್ (ವಿಂ)** ಕೃಷ್ಣದಿಂದ ಕೂಡಿರುವ,  
ಕೃಷ್ಣವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿರುವ. ಕೃಷ್ಣಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:"  
(೫-೨-೧೩೧).

**ಕೃಷ್ಣ-ಕರಣ (ತನಾಂ ಉಂ ಸಕಂ ಸಂ) 1.**

|       |     |         |          |             |
|-------|-----|---------|----------|-------------|
| ಲಟ್—  | ಪರಂ | ಕರೋತಿ   | ಕುರುತ:   | ಕುರ್ವಂತಿ 1. |
|       |     | ಕರೋಷಿ   | ಕುರುಥ:   | ಕುರುಯ 1.    |
|       |     | ಕರೋಮಿ   | ಕುರ್ವ:   | ಕುರ್ಮ: 1.   |
| ಆತ್ಮಂ |     | ಕುರುತೇ  | ಕುರ್ವತಿ  | ಕುರ್ವತೇ 1.  |
|       |     | ಕುರುಷೇ  | ಕುರ್ವಾಥೇ | ಕುರುಧ್ವೇ 1. |
|       |     | ಕುರ್ವೇ  | ಕುರ್ವಹೇ  | ಕುರ್ಮಹೇ 1.  |
| ಲಿಟ್— | ಪರಂ | ಚಕಾರ    | ಚಕ್ರತು:  | ಚಕ್ರು: 1.   |
|       |     | ಚಕರ್ಥ   | ಚಕ್ರಥು:  | ಚಕ್ರ 1.     |
|       |     | ಚಕಾರ    | ಚಕ್ರವ    | ಚಕ್ರಮ 1.    |
|       |     | ಚಕರ     |          |             |
| ಆತ್ಮಂ |     | ಚಕ್ರೇ   | ಚಕ್ರಾತೇ  | ಚಕ್ರೀರೇ 1.  |
|       |     | ಚಕ್ರಾಪೇ | ಚಕ್ರಾಥೇ  | ಚಕ್ರಧ್ವೇ 1. |
|       |     | ಚಕ್ರೇ   | ಚಕ್ರವಹೇ  | ಚಕ್ರಮಹೇ 1.  |

|          |     |           |              |                |
|----------|-----|-----------|--------------|----------------|
| ಲುಟ್—    | ಪರಂ | ಕರ್ತಾ     | ಕರ್ತಾರೌ      | ಕರ್ತಾರ: 1.     |
|          |     | ಕರ್ತಾಸಿ   | ಕರ್ತಾಸ್ಥಿ:   | ಕರ್ತಾಸ್ಥಿ 1.   |
|          |     | ಕರ್ತಾಸ್ಮಿ | ಕರ್ತಾಸ್ವಿ:   | ಕರ್ತಾಸ್ಮಿ: 1.  |
| ಆತ್ಮಂ    |     | ಕರ್ತಾ     | ಕರ್ತಾರೌ      | ಕರ್ತಾರ: 1.     |
|          |     | ಕರ್ತಾಸಿ   | ಕರ್ತಾಸಾಥೇ    | ಕರ್ತಾಧ್ವೇ 1.   |
|          |     | ಕರ್ತಾಹಿ   | ಕರ್ತಾಸ್ವಿಹೇ  | ಕರ್ತಾಸ್ಮಿಹೇ 1. |
| ಲೂಟ್—    | ಪರಂ | ಕರಿಷ್ಯತಿ  | ಕರಿಷ್ಯತ:     | ಕರಿಷ್ಯಂತಿ 1.   |
|          |     | ಕರಿಷ್ಯಾಸಿ | ಕರಿಷ್ಯಾಥ:    | ಕರಿಷ್ಯಾಥ 1.    |
|          |     | ಕರಿಷ್ಯಾಮಿ | ಕರಿಷ್ಯಾವ:    | ಕರಿಷ್ಯಾಮ: 1.   |
| ಆತ್ಮಂ    |     | ಕರಿಷ್ಯತೇ  | ಕರಿಷ್ಯೇತೇ    | ಕರಿಷ್ಯಂತೇ 1.   |
|          |     | ಕರಿಷ್ಯಸೇ  | ಕರಿಷ್ಯೇಥೇ    | ಕರಿಷ್ಯಧ್ವೇ 1.  |
|          |     | ಕರಿಷ್ಯೇ   | ಕರಿಷ್ಯಾವಹೇ   | ಕರಿಷ್ಯಾಮಹೇ 1.  |
| ಲೋಟ್—    | ಪರಂ | ಕರೋತು     | ಕುರುತಾಮ್     | ಕುರ್ವಂತು 1.    |
|          |     | ಕುರುತಾತ್  |              |                |
|          |     | ಕುರು      | ಕುರುತಮ್      | ಕುರುತ 1.       |
|          |     | ಕುರುತಾತ್  |              |                |
|          |     | ಕರವಾಣಿ    | ಕರವಾವ        | ಕರವಾಮ 1.       |
| ಆತ್ಮಂ    |     | ಕುರುತಾಮ್  | ಕುರ್ವಾತಾಮ್   | ಕುರ್ವತಾಮ್ 1.   |
|          |     | ಕುರುಷ್ವ   | ಕುರ್ವಾಥಾಮ್   | ಕುರುಧ್ವಮ್ 1.   |
|          |     | ಕರವೇ      | ಕರವಾವಹೇ      | ಕರವಾಮಹೇ 1.     |
| ಲಙ್—     | ಪರಂ | ಅಕರೋತ್    | ಅಕುರುತಾಮ್    | ಅಕುರ್ವನ್ 1.    |
|          |     | ಅಕರೋ:     | ಅಕುರುತಮ್     | ಅಕುರುತ 1.      |
|          |     | ಅಕರವಮ್    | ಅಕುರ್ವ       | ಅಕುರ್ಮ 1.      |
| ಆತ್ಮಂ    |     | ಅಕುರುತ    | ಅಕುರ್ವಾತಾಮ್  | ಅಕುರ್ವತ 1.     |
|          |     | ಅಕುರುಥಾ:  | ಅಕುರ್ವಾಥಾಮ್  | ಅಕುರುಧ್ವಮ್ 1.  |
|          |     | ಅಕುರ್ವಿ   | ಅಕುರ್ವಹಿ     | ಅಕುರ್ಮಹಿ 1.    |
| ಲಿಙ್—    | ಪರಂ | ಕುರ್ಯಾತ್  | ಕುರ್ಯಾತಾಮ್   | ಕುರ್ಯು: 1.     |
|          |     | ಕುರ್ಯಾ:   | ಕುರ್ಯಾತಮ್    | ಕುರ್ಯಾತ 1.     |
|          |     | ಕುರ್ಯಾಮ್  | ಕುರ್ಯಾವ      | ಕುರ್ಯಾಮ 1.     |
| ಆತ್ಮಂ    |     | ಕುರ್ವೀತ   | ಕುರ್ವೀಯಾತಾಮ್ | ಕುರ್ವೀರನ್ 1.   |
|          |     | ಕುರ್ವೀಥಾ: | ಕುರ್ವೀಯಾಥಾಮ್ | ಕುರ್ವೀಧ್ವಮ್ 1. |
|          |     | ಕುರ್ವೀಯ   | ಕುರ್ವೀವಹಿ    | ಕುರ್ವೀಮಹಿ 1.   |
| ಆಶೀಲಿಙ್— |     |           |              |                |
|          | ಪರಂ | ಕ್ರಿಯಾತ್  | ಕ್ರಿಯಾಸ್ತಾಮ್ | ಕ್ರಿಯಾಸು: 1.   |
| ಆತ್ಮಂ    |     | ಕೃಷೀಷ್ಠ   | ಕೃಷೀಯಾಸ್ತಾಮ್ | ಕೃಷೀರನ್ 1.     |
| ಲಙ್—     | ಪರಂ | ಅಕಾರ್ಷೀತ್ | ಅಕಾರ್ಷಾತ್    | ಅಕಾರ್ಷು: 1.    |
|          |     | ಅಕಾರ್ಷಿ:  | ಅಕಾರ್ಷಮ್     | ಅಕಾರ್ಷ 1.      |
|          |     | ಅಕಾರ್ಷಮ್  | ಅಕಾರ್ಷ್ವ     | ಅಕಾರ್ಷಮ್ 1.    |
| ಆತ್ಮಂ    |     | ಅಕೃತ      | ಅಕೃಷಾತಾಮ್    | ಅಕೃಷತ 1.       |



ಲೃಙ್— ಪರಂ ಅಕರಿಸ್ಯತ್ ಅಕರಿಸ್ಯತಾಮ್ ಅಕರಿಸ್ಯನ್.  
ಆತ್ಮಂ ಅಕರಿಸ್ಯತ ಅಕರಿಸ್ಯತಾಮ್ ಅಕರಿಸ್ಯನ್ತ.

ಈ ಧಾತುವು ಸಂದರ್ಭಾನುಸಾರ ಈ ಕೆಳಗಿನ  
ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವುದು:

1. ಮಾಡು. “ಚಕ್ರೇವ ಲಲನೋಽಪು ರಾಜೀ: ಸ್ಪರ್ಶ-  
ಲೋಭವಶಲೋಕರಾಣಾಮ್” ಮಾಘಂ ೧೦-೬೬. “ತೀರ್ಥಗಾಮಿ  
ಕರವಂ ವಿಧಾನತಸ್ತಜ್ಜುಷಸ್ವ ಜುಹ್ವಾನಿ ಚಾನಲೇ” ಮಾಘಂ  
೧೪-೯. 2. ತಯ್ಯಾಡಿಸು. ಘಟಂ ಕರೋತಿ. 3. ನೇಮಿಸು.  
ತಂ ಸೇವಕಮಕರೋತ್. 4. ಉಂಟುಮಾಡು. “ಅಕೃತಾರ್ಥೇಽಪಿ  
ಮನಸಿಜೇ ರತಿಮುಭಯಪ್ರಾರ್ಥನಾ ಕುರುತೇ” ಶಾಕುಂ ೨-೧. “ಕುರ್ಯಾ  
ಹರಸ್ಯಾಪಿ ಪಿನಾಕಪಾಣೇರ್ಧೈಶ್ಚ್ಯುತಿ ಕೇ ಮಮ ಧನ್ವಿನೋಜ್ಯೇ”  
ಕುಮಾರಂ ೩-೧೦. 5. ರಚಿಸು. “ಅಂಜಲಿ ಪ್ರಾಡ್ಘಮುಖ:  
ಕುರ್ವನ್ ಪವನಾಯಾತ್ಮಯೋನಯೇ” ರಾಮಾಂ. 6. ಸಂಚರಿಸು,  
ಜೋಡಿಸು. “ರಸಗಜ್ಞಾಧರನಾಮ್ನೀ ಕರೋತಿ ಕುತುಕೇನ ಕಾವ್ಯ-  
ಮೀಮಾಂಸಾಮ್” ರಸಗಂ. 7. ನೆರವೇರಿಸು. “ಅರ್ಹಣಾಮರ್ಹತೇ  
ಚಕ್ರಮುನಯೋ ನಯಚಕ್ಷುಃ” ರಘುಂ ೧-೫೫. 8. ಹೇಳು,  
ವಿವರಿಸು. “ತಾಸ್ತಾ: ಕಥಾ: ಕುರ್ವನ್”. 9. ನಡೆಸು,  
ಅಡ್ಡೆ ಹಾಕಿಸು. “ಶಾಸನಂ ಮೇ ಕುರ್ವನ್”. 10. ಸಾಧಿಸು.  
“ಸತ್ಸಂಜ್ಞತಿ: ಕಥಯ ಕಿಂ ನ ಕರೋತಿ ಪುಂಸಾಮ್”. 11. ಉಚ್ಛ್ರಿಸು,  
ಹೇಳು. “ಮಾನುಷಿಂ ಗಿರಂ ಕೃತ್ವಾ”. 12. ಇಡು,  
ಇರಿಸು. “ಕುರು ಕರೇ ಗುಹ್ಯಮೇಕಮಯೋಧನಮ್” ನೈಷಂ ೪-೫೯.  
13. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳು, ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳು. “ಬಹಿರತೋ ಮುಕುರಂ ಚ ಕುರ್ವನ್  
ಮೇ” ನೈಷಂ ೪-೫೯. 14. ನೆಚ್ಚುಯಿಸು. “ಮನಸಿ ಕೃತ್ವಾ”.  
15. ಒಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳು, ಸಂಪಾದಿಸು. “ಉರಸಿ ಕೃತ್ವಾ” ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕರ್ಮಣಿ:—ಕ್ರಿಯತೇ ಕ್ರಿಯತೇ ಕ್ರಿಯಂತೇ. ಚಕ್ರೇ ಚಕ್ರಾತೇ  
ಚಕ್ರೀ. ಕರ್ತಾ ಕರ್ತಾರೋ ಕರ್ತಾರ:। ಕಾರಿತಾ ಕಾರಿತಾರೋ  
ಕಾರಿತಾರ:। ಕರಿಸ್ಯತೇ ಕರಿಸ್ಯತೇ ಕರಿಸ್ಯಂತೇ. ಕಾರಿಸ್ಯತೇ  
ಕಾರಿಸ್ಯತೇ ಕಾರಿಸ್ಯಂತೇ. ಕ್ರಿಯತಾಮ್. ಅಕ್ರಿಯತ. ಕ್ರಿಯತ.  
ಕೃಷೀಷ್ಠ. ಕಾರಿಸೀಷ್ಠ. ಅಕಾರಿ ಅಕಾರಿಸಾತಾಮ್, ಅಕೃಷಾ-  
ತಾಮ್. ಅಕಾರಿಸತ, ಅಕೃಷತ. ಅಕಾರಿಸ್ಯತ, ಅಕರಿಸ್ಯತ.

ಣಿಚಿ:—ಕಾರಯತಿ, -ತೇ. ಕಾರಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಕಾರಯಿತಾ. ಕಾರಯಿಸ್ಯತಿ, -ತೇ.  
ಕಾರಯತು, ಕಾರಯತಾಮ್. ಅಕಾರಯತ್, -ತ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ:—ಚಿಕೀರ್ಷತಿ, -ತೇ. ಚಿಕೀರ್ಷಾಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಚಿಕೀರ್ಷಿತಾ. ಚಿಕೀರ್ಷಿಸ್ಯತಿ, -ತೇ.  
ಚಿಕೀರ್ಷತು, -ತಾಮ್. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:—ಕರ್ತವ್ಯಮ್. ಕರಣೀಯಮ್. ಕಾರ್ಯಮ್. ಕೃತ್ಯಮ್.  
ಕೃತ:। ಕೃತವಾನ್. ಕುರ್ವನ್, ಕುರ್ವತೀ. ಕುರ್ವಾಣ:। ಕರ್ತುಮ್.  
ಕೃತಮ್. ಕರಣಮ್. ಕೃತ್ವಾ. ಪ್ರಕೃತ್ಯ. ಊರಿಕೃತ್ಯ. ಉರೀಕೃತ್ಯ.

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

- (1) ಅಧಿ + ಕೃಙ್ = ಅಧಿಕರೋತಿ. ಅಧಿಕಾರ:।  
1. ಅಧಿಕಾರ, ಯೋಗ್ಯತೆ. “ಹೃತಾಧಿಕಾರಾಂ ಮಲಿನಾಂ ಪಿಂಡ-  
ಮಾತ್ರೋಪಜೀವಿನಾಮ್” ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೭೦. 2. ಪ್ರಭುತ್ವ,  
ಅಡಳಿತ. “ಕ್ಷಣಾದಾಯುಷ್ಮಾನ್ ಸ್ವಾಧಿಕಾರಭೂಮೌ ವರ್ತಿಸ್ಯತೇ”  
ಶಾಕುಂ ೭. 3. ಗಣನೆ, ಎಣಿಕೆ. “ಸಂಸತ್ಸು ಜಾತೇ  
ಪುರುಷಾಧಿಕಾರೇ ನ ಪೂರಣಿ ತಂ ಸಮುಪೇತಿ ಸಂಖ್ಯಾ” ಕಿರಾಂ ೩-೫೧.  
4. ಯಾಜಮಾನ್ಯ. “ಅಧಿಕಾರವಿಲಂಬಿತಾಪವರ್ಗಸ್ಥಿರ-  
ಸಂಜ್ಞಾತ್” ಯಾದಂ ೧೫-೭.

- (2) ಅನು + ಕೃಙ್ = ಅನುಕರೋತಿ. ಅನುಕರಣಮ್.  
1. ಸಾಮ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ. “ಆಮೋದಮುಪಜಿಘ್ರಂತೌ ಸ್ವನಿ:-  
ಶ್ವಾಸಾನುಕಾರಿಣಮ್” ರಘುಂ ೧-೪೩. 2. ಅನುಕರಿಸು,  
ಅಣಕಿಸು, ಒಬ್ಬ ಮಾಡಿದಂತೆ ಮಾಡು.

- (3) ಅಪ + ಕೃಙ್ = ಅಪಕರೋತಿ. ಅಪಕಾರ:। ಅಪಕೃತ:।  
ಅಪಕೃತಿ:। ಅಪಕಾರ ಮಾಡು, ಕೆಡಕು ಮಾಡು. “ಅಪಕೃತಂ  
ವಸುದೇವಮಮೋಚಯದ್ವಿತಯಾ ಸಹ ದೀನವಿಲಾಪಯಾ” ಯಾದಂ ೩-೫೫.  
“ತ್ವಮಿವ ಕೋಽಪಿ ಪರಾಪಕೃತೌ ಕೃತೌ ನ ದದೃಶೇ ನ ಚ ಮನ್ಮಥ  
ಶುಶ್ರುವೇ” ನೈಷಂ ೪-೯೮.

- (4) ಅಪ + ಆ + ಕೃಙ್ = ಅಪಾಕರೋತಿ. ಅಪಾಕೃತಿ:।  
ಅಪಾಕರಣಮ್. 1. ಅವಮಾನ. “ನಿಶಮ್ಯ ಸಿದ್ಧಿ ದ್ವಿಷತಾ-  
ಮಪಾಕೃತೌ:” ಕಿರಾಂ ೧-೨೭. 2. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳು,  
ವಿಡು. “ವತ್ಸಮಪಾಕರೋತಿ”. 3. ತಳ್ಳಿಹಾಕು, ತಿರಸ್ಕರಿಸು,  
ಪರ್ಜಿಸು.

- (5) ಆ + ಕೃಙ್ = ಆಕಾರ:। ಆಕೃತಿ:। ಆಕಾರ, ರೂಪ.  
“ಆಕಾರಸದೃಶಪ್ರಜ್ಞ: ಪ್ರಜ್ಞಯಾ ಸದೃಶಾಗಮ:” ರಘುಂ ೧-೧೫.

- (6) ಉಪ + ಕೃಙ್ = ಉಪಕರೋತಿ. ಉಪಕಾರ:। ಉಪಕೃತಮ್.  
ಉಪಕೃತಿ:। ಉಪಕಾರಮಾಡು, ಸಹಾಯಮಾಡು.  
“ಶಾಮ್ಯೇತ್ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರೇಣ ನೋಪಕಾರೇಣ ದುರ್ಜನ:” ಕುಮಾರಂ ೨-೪೦.  
“ಪ್ರತಿಕರ್ಮ ಕರ್ತುಮುಪಚಕ್ರಮಿರೇ ಸಮಯೇ ಹಿ ಸರ್ವಮುಪಕಾರಿ ಕೃತಮ್”  
ಮಾಘಂ ೯-೪೩.

- (7) ಉಪ + ಆ + ಕೃಙ್ = ಉಪಾಕರಣಮ್. ಉಪಾಕೃತ್ಯ.  
ಉಪಕರವು, ಪ್ರಾರಂಭ. “ಶ್ರಾವಣ್ಯಾಂ ಪ್ರಾಂಶುಪದಾಂ ವಾಽಪ್ಯುಪಾ-  
ಕೃತ್ಯ ಯಥಾವಿಧಿ” ಮನುಂ ೪-೯೫.

- (8) ದುಃ + ಕೃಙ್, ದುಃ + ಕೃಙ್ = ದುಃಕೃತಮ್. ದುಃಕೃತಿ:।  
ಅಕಾರ್ಯ, ಕೆಟ್ಟ, ಕೆಲಸ.

- (9) ನಿ + ಕೃಙ್ = ನಿಕಾರ:। ಅವಮಾನ. “ಪುರ:ಸರಾ  
ಧಾಮವತಾಂ ಯಶೋಧನಾ: ಸುದು:ಸಹಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ನಿಕಾರಮೀದೃಶಮ್”  
ಕಿರಾಂ ೧-೪೩.



(10) ನಿರ್ + ಆ + ಕೃ = ನಿರಾಕೃತಿಃ। ತಿರಸ್ಕೃತಿಃ।  
“ಹುತಾಶಕೀನಾಶಜಲೇಶದ್ವೀನಿರಾಕರಣಿಣಿಃ ಕೃತಕಾಕುಯಾಚ್ಛಾಃ”  
ನೈಷಂ ೬-೭೫।

(11) ನಿಃ + ಕೃ = ನಿಷ್ಕೃತಿಃ। ಶುದ್ಧಿಕ್ರಿಯಾ, ಪಾಪಾಶ್ಚಿತ್ತಂ. “ಏಷಾ ವಿಚಿತ್ರಾಭಿಹಿತಾ ಸುರಾಪಾನಸ್ಯ ನಿಷ್ಕೃತಿಃ” ಮನುಂ ೧೧-೯೮।

(12) ಪರಾ + ಕೃ = ಪರಾಕರೋತಿ। ಪರಾಕೃತಿಃ। ತಿರಸ್ಕಾರಂ. “ತಾ ಹನುಮಾನ್ ಪರಾಕುರ್ವನ್ನಗಮತ್ ಪುಷ್ಪಕಂ ಪ್ರತಿ” ಭದ್ರಂ ೮-೫೦।

(13) ಪರಿ + ಕೃ = ಪರಿಷ್ಕರೋತಿ। ಪರಿಷ್ಕರಣಮ್। ಪರಿಷ್ಕಾರಃ। ಪರಿಷ್ಕೃತಃ। ಅಲಂಕರಿಸು, ಭೂಷಿಸು. “ಜಜ್ಞೇ ನಿವೇಶನವಿಭಾಗಪರಿಷ್ಕೃತಾನಾಂ ಲಕ್ಷ್ಮೀಃ ಪುರೋಪವನಜಾ ವನಪಾದಪಾನಾಮ್” ಕಿರಾಂ ೭-೪೦।

(14) ಪ್ರ + ಕೃ = ಪ್ರಕರೋತಿ। ಪ್ರಕುರೋತಿ। ಪ್ರಕಾರಃ। ಪ್ರಕೃತಃ। ಪ್ರಕೃತಿಃ। ಪ್ರಕೃತ್ಯಾ। 1. ಪ್ರಸ್ತಾಪ, ಪ್ರಸ್ತುತಂ. “ವಿಷಯಾತ್ಮತಯಾರೋಪ್ಯೇ ಪ್ರಕೃತಾರ್ಥೋಪಯೋಗಿನಿ” ಸಾಂ ೧೦-೩೪। 2. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. “ಪ್ರಕೃತಜಪವಿಧಿನಾಮಾಸ್ಯಮುದ್ರಿಸಿದಂತಮ್” ಮಾಘಂ ೧೧-೪೨। 3. ಪ್ರಕೃತಿ, ಸ್ವಭಾವ. “ಸಿಂಹಃ ಶಿಶುರಪಿ ನಿಪತತಿ ಮದಮಲಿನಕಪೋಲಭಿತ್ತಿಷು ಗಜೇಷು। ಪ್ರಕೃತಿರಿಯಂ ಸತ್ವವತಾಂ ನ ಖಲು ವಯಸ್ತೇಜಸಾಂ हेतुः” ಭರ್ತಂ ೧-೩೦। “ಯಶಸಿ ಚಾಭಿರುಚಿವ್ಯಸನಂ ಶ್ರುತೌ ಪ್ರಕೃತಿಸಿದ್ಧಮಿದಂ ಹಿ ಮಾಹಾತ್ಮನಾಮ್” ಭರ್ತಂ ೧-೫೨। 4. ಕಾರಣ, ಹೇತು. “ಮೂಲಪ್ರಕೃತಿರವಿಕೃತಿಃ” ಸಾಂ ಕಾಂ ೩। 5. (ಪರಸ್ಪ್ರೀಯಲ್ಲಿ) ಬಲಾತ್ಕಾರವಾಗಿ ಪ್ರವೇಶಿಸು. “ಪರದಾರಾನ್ ಪ್ರಕುರೋತಿ”। 6. ರೀತಿ, ಸಾದೃಶ್ಯ, ಪ್ರಕಾರ. “ಪ್ರಕಾರವಚನೇ ಶಾಲ್” ಪಾಂ ಸುಂ ೫-೩-೨೩।

(15) ಪ್ರತಿ + ಕೃ = ಪ್ರತಿಕರೋತಿ। ಪ್ರತಿಕಾರಃ। ಪ್ರತೀಕಾರಃ। ಪ್ರತಿಕೃತಮ್। ಪ್ರತಿಕೃತಿಃ। 1. ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಮಾಡು, ಬದಲಾಗಿ ಮಾಡು. “ಕೃತಪ್ರತಿಕೃತಪ್ರೀತೇಸ್ತಯೋರ್ಮುಕ್ತಾಂ ಸುರಾಸುರೈಃ। ಪರಸ್ಪರಶರವ್ರಾತಾಃ ಪುಷ್ಪವೃಷ್ಟಿ ನ ಸೇಹಿರೇ” ರಘುಂ ೧೨-೯೪। “ಕ್ಷಯಯುಕ್ತಿಮುಪೇಕ್ಷತೇ ಕೃತೌ ಕುರೋತಿ ತತ್ಪ್ರತಿಕಾರಮನ್ಯಥಾ” ಕಿರಾಂ ೨-೯। 2. ನಿವಾರಣೆಯ ಉಪಾಯ, ಪರಿಹಾರೋಪಾಯ. “ವಿಕಾರಂ ಖಲು ಪರಮಾರ್ಥತೋಜ್ಞಾತ್ವಾನಾರಂಭಃ ಪ್ರತೀಕಾರಸ್ಯ” ಶಾಕುಂ ೩। 3. ಪ್ರತಿಬಿಂಬ, ವಿಗ್ರಹ. “ತಸ್ಯಾ ಏವ ಪ್ರತಿಕೃತಿಸಖೋ ಯತ್ಕಲ್ಪನಾಜಹಾರ” ರಘುಂ ೧೪-೮೭। 4. ಹಿಂಸಿಸು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕೊಂಡು. “ರಿಕ್ವಿಭಾಜಾ ಕೃಣಂ ಪ್ರತಿಕುರ್ಯುಃ” ಗೌತಮಘಂ ೧೨-೩೭।

(16) ವಿ + ಕೃ = ವಿಕರೋತಿ। ವಿಕಾರಃ। ವಿಕೃತಿಃ। 1. ವಿಕಾರಹೊಂದು, ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದು. “ವಿಕಾರ-

ಹೇತೌ ಸತಿ ವಿಕೃತೀಯೇಷಾಂ ನ ಚೇತಾಸಿ ತ ಏವ ಧೀರಾಃ” ಕುಮಾಂ ೧-೫೯। 2. ಕೋಪ, ಸಿಟ್ಟು. “ಸಾವಲೇಪಮುಪ-  
ಲಿಪ್ತಿಸ್ತೇ ಪರೇರಮ್ಯುಪೇತಿ ವಿಕೃತಿ ರಜಸ್ಯಪಿ” ಕಿರಾಂ ೧೩-೫೬। 3. ಹಿಂಸಿಸು, ತೊಂದರೆಹೊಂದು. “ಹೀನಾನ್ಯನುಪಕರ್ತೃಣಿ ಪ್ರವೃದ್ಧಾನಿ ವಿಕುರ್ವತೇ” ರಘುಂ ೧೭-೫೮।

(17) ವಿ + ಆ + ಕೃ = ವ್ಯಾಕರೋತಿ। ವ್ಯಾಕರಣಮ್। ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ, ವಿವರಣೆ. ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿ ಹೇಳುವುದು, ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸುವುದು, ವಿಶದವಾಗಿ ಹೇಳುವುದು. “ನಾಮರೂಪೇ ವ್ಯಾಕರವಾಣಿ” ಚಾಂದೋಗ್ಯಂ।

(18) ವಿ + ಪ್ರ + ಕೃ = ವಿಪ್ರಕರೋತಿ। ವಿಪ್ರಕೃತಃ। 1. ವಿರೋಧಿಸು, ತೊಂದರೆಪಡಿಸು. “ತಸ್ಮಿನ್ ವಿಪ್ರಕೃತಾಃ ಕಾಲೇ ತಾರಕೇಣ ದಿವೌಕಸಃ” ಕುಮಾಂ ೨-೧। 2. ಅಪಕಾರ ಮಾಡು. “ತ್ವಯಾ ವಿಪ್ರಕೃತಶ್ಚೇದಃ” ಮಾಘಂ ೨-೩೮।

(19) ಸಂ + ಕೃ = ಸಂಸಕರೋತಿ। ಸಂಸ್ಕಾರಃ। ಸಂಸೃತಃ। 1. ಅಲಂಕರಿಸು, ಭೂಷಿಸು. “ಸ್ಫುರದಂಶುಜಾಲಮಥ ಶೀತಶ್ಚಃ ಕಕುಭಂ ಸಮಸ್ಕುರುತ ಮಾಧವನೀಮ್” ಮಾಘಂ ೧-೨೫। ಭೂಷಣೇ ಸುಭಾಗಮಃ। 2. ಶುದ್ಧಿಮಾಡು. “ವಾಣ್ಯೇಕಾ ಸಮಲಂಕರೋತಿ ಪುರುಷಂ ಯಾ ಸಂಸೃತಾ ಧಾರ್ಯತೇ” ಭರ್ತಂ ೧-೧೫। 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಶಿಕ್ಷಣ ಕೊಡು, ತರಬೇತುಮಾಡು, ಪಳಗಿಸು. “ಅಥವಾ ಶಶ್ವದಾರ್ಯೋಪದೇಶಸಂಸ್ಕರಣಮಾಣಮತಯಃ ಸದೇವ ಸ್ವತನ್ತ್ರಾ ವಯಮ್” ಮುದ್ರಾಂ ೩। 4. ನಯಮಾಡು, ನಾಡುಕೊಡು, ಹೊಗಳಿಸು. “ಪ್ರಯುಕ್ತಸಂಸ್ಕಾರ ಇವಾಧಿಕಂ ವಶಿ” ರಘುಂ ೩-೧೮।

ಫಲವು ಕರ್ತೃಗಾಮಿಯಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಕೃ ಧಾತುವು ಅತ್ಯುನ್ನತವಾದಿಯಾಗುವುದು :

(1) ಗನ್ವನಮ್ = ಹಿಂಸೆ. “ಉಕ್ತುರೋತಿ”। ಸೂಚಯತೀತ್ಯರ್ಥಃ। ಸೂಚನಂ ಹಿಸಾ।

(2) ಅವಕ್ಷೇಪಣಮ್ = ಭರ್ತನ, ಹೆದರಿಕೆ. “ಶ್ಯೇನೋ ವರ್ತಿಕಾಮುಡಾಕುರೋತಿ”। ಭರ್ತಯತೀತ್ಯರ್ಥಃ।

(3) ಸೇವನಮ್ = ಗೌರವಿಸು, ಪೂಜಿಸು. “ಹರಿಮುಪಕುರೋತಿ”। ಸೇವತೇ ಇತ್ಯರ್ಥಃ।

(4) ಸಾಹಸಿಕಯಮ್ = (ಪರಸ್ಪ್ರೀಯನ್ನು) ಬಲಾತ್ಕಾರವಾಗಿ ಕಡೆಸುವುದು, -ಭಂಗಪಡಿಸುವುದು. “ಪರದಾರಾನ್ ಪ್ರಕುರೋತಿ”। ತेषು ಸಹಸಾ ಪ್ರವರ್ತತೇ ಇತ್ಯರ್ಥಃ।

(5) ಪ್ರತಿಯನ್ = ಗುಣಾಂತರವನ್ನು ಹೊಂದಿಸುವುದು, ಬೇರೆ ಗುಣವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದು. “ಏಧೋದಕಸ್ಯೋಪ-  
ಸ್ಕುರೋತಿ”। ಗುಣಮಾಧತ್ತೇ ಇತ್ಯರ್ಥಃ।



(6) ಪ್ರಕಥನಮ್ = ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೇಳುವುದು. “ಗಾಥಾ: ಪ್ರಕುರತೇ” । ಪ್ರಕಥಯತೀತೀರ್ಯ: ।

(7) ಉಪಯೋಗ: = ವಿವರಣೆಗೊಳಿಸು, ಬಳಸು. “ಶತಂ ಪ್ರಕುರತೇ” । ಧರ್ಮಾರ್ಥಿ ವಿನಿಯುಕ್ತೇ ಇತೀರ್ಯ: ।

(8) ಪ್ರಹಸನಮ್ = ಕ್ಷಮಿಸುವುದು ಮತ್ತು ತಿರಸ್ಕರಿಸುವುದು. “ಶತ್ರುಮಧಿಕುರತೇ” । ಕ್ಷಮತೇ, ಅಭಿಭವತಿ ವಾ ।

(9) ಶಬ್ದವೇ ಕರ್ಮವಾಗಿರುವ ಮತ್ತು

(10) ಅಕರ್ಮಕವಾಗಿರುವ ವಿ ಪೂರ್ವಕ ಕೃತ್ ಧಾತುವು ಅತ್ಯಂತವಾದಿಯಾಗುವುದು. “ಸ್ವರಾನ್ ವಿಕುರತೇ” । ಉಚ್ಚಾರಯತೀತೀರ್ಯ: । “ಕ್ಷಾತ್ರಾ ವಿಕುರತೇ” । ವಿಕಾರಂ ಲಬಂತೇ ಇತೀರ್ಯ: ।

ಕೃಣ್ಣ ಕೃಣು (ಕೃಂ) ಚಿತ್ರಗಾರ, ಚಿತ್ರ ಬರೆಯುವವನು. ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣ) “ನು:” ಣತ್ವಂ ಚ ಬಾಹುಂ । “ಚಿತ್ರಕರೇ ಕೃಣು:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಕೃತ್ ಕೃತ್ (ಕೃಂ) 1. “ಧಾತೋ:” ಸೂತ್ರದ ಅಧಿಕಾರದಲ್ಲಿ ಧಾತುಗಳ ಮುಂದೆ ವಿಹಿತವಾದ ಪ್ರತ್ಯಯ, ಧಾತೃಧಿಕಾರದಲ್ಲಿ ವಿಹಿತವಾದ “ತಿಡ್” ಭಿನ್ನವಾದ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು. “ಕೃದತಿಡ್” (3-1-93) । “ಧಾತೋ: (3-1-91) ಎಂಬ ಸೂತ್ರದ ಅಧಿಕಾರದಲ್ಲಿ ಧಾತುಗಳ ಮುಂದೆ ವಿಹಿತವಾಗುವ ಷ್ವಲ್, ತೃತ್, ಲ್ಯು:, ಣಿನಿ:, ಅಚ್, ಕ: ಇತ್ಯಾದಿ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು “ಕೃತ್” ಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳವು. ಕೃನ್ “ಷ್ವಲ್” = ಕಾರಕ: । ಕೃನ್ “ತೃತ್” = ಕರ್ತಾ । ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) “ಷ್ವಲ್” = ಜನಕ: । ಟುನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) “ಲ್ಯು:” = ನಂದನ: । ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನ) “ಣಿನಿ:” ಗ್ರಾಹಿ । ಇತ್ಯಾದಿ ಧಾತುಗಳಿಗೆ ಈ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು ಸೇರಿದರೆ ಪ್ರಾತಿಪದಿಕ ಸಂಜ್ಞೆ ಮತ್ತು ನಾಮಸಂಜ್ಞೆ ಹೊಂದಿ ಅನಂತರ ಸು ಆ ಜಸ್ ಇತ್ಯಾದಿ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು ಬರುವುವು. “ಕೃತ್ತದ್ವಿತಿಸಮಾಸಾಶ್ಚ” (1-2-46) । “ಉಣಾಘಂತಂ ಕೃದಂತಂ ಚ ತದ್ವಿತಾಂತಂ ಸಮಾಸಜಮ್ । ನಾಮಸಂಜ್ಞಾ ಭವೇತ್ತೇಷಾಂ ಸ್ವಾಘೃತ್ಪತ್ತಿ: ತತ:ಪರಮ್” । (ವಿಂ) 2. ಮಾಡುವವನು. ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣ) “ಕಿವಪ್” (3-2-96) ।

ಕೃತ ಕೃತ (ತಂ) 1. ಕಾರ್ಯ, ಕೆಲಸ. ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣ) ಭಾವೇ “ಕ್ತ:” (3-3-114) । 2. ಕೃತಯುಗ, ಸತ್ಯಯುಗ, ಚತುರ್ಯುಗಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದನೆಯದು ; ರವಿ ಚಂದ್ರ ಬೃಹಸ್ಪತಿಗಳು ಮೂವರೂ ಪುಷ್ಯ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಸೇರಿದಾಗ ಕೃತಯುಗಾರಂಭವಾಗುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ಆದಿಯುಗ ಮತ್ತು ದೇವಯುಗಗಳೆಂಬ ಹೆಸರೂ ಉಂಟು. ಈ ಯುಗದಲ್ಲಿ ಜನರು ಹುಟ್ಟಿದ ಮಾತ್ರ

ದಿಂದಲೇ ಕೃತಕೃತೃರಾಗುವುದರಿಂದ ಈ ಯುಗಕ್ಕೆ ಈ ಹೆಸರು. “ಕೃತಕೃತೃ: ಪ್ರಜಾ ಜಾತಾ ತಸ್ಮಾತ್ ಕೃತಯುಗಂ ವಿದು:” । ಕೃತಯುಗಮಾನ: ದೇವವರ್ಷಗಳು 4,800, ಮಾನುಷವರ್ಷಗಳು 17,28,000. ಇದರಲ್ಲಿ ಆರನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ ಸಂಧ್ಯಾಸಂಧ್ಯಾಂಶಗಳನ್ನು ಕಳೆದರೆ 4,000 ದೇವವರ್ಷಗಳು ಕೃತಯುಗಮಾನ. “ತದ್ವಾದಶಸಹಸ್ರಾಣಿ ಚತುರ್ಯುಗಮುದಾಹೃತಮ್ । ಸೂರ್ಯಾದಿಸಂಖ್ಯಯಾ ದ್ವಿತ್ರಿಸಾಗರೇರಯುತಾಹತೈ: । ಸಂಧ್ಯಾಸಂಧ್ಯಾಂಶಸಹಿತಂ ವಿಜ್ಞೇಯಂ ತಚ್ಚತುರ್ಯುಗಮ್ । ಕೃತಾದಿನಾಂ ವ್ಯವಸ್ಥೇಯಂ ಧರ್ಮಪಾದವ್ಯವಸ್ಥಯಾ” ಸುಂ ಸಿಂ 1-15-16 । “ಪದೇಶ್ಚತುರ್ಭಿ: ಸುಕೃತೇ ಸ್ಥಿರೀಕೃತೇ ಕೃತೇಽಮುನಾ ಕೇ ನ ತಪ: ಪ್ರಪೇದಿರೇ । ಭುವಂ ಯದೇಕಾಡ್ಭಿಕ್ಷುಕನಿಷ್ಠಯಾ ಸ್ಪೃಶನ್ ದಧಾವಧರ್ಮೋಽಪಿ ಕೃಶಸ್ತಪಸ್ವಿತಾಮ್” ನೆಷಂ 1-9 । ಕೃತಯುಗದಲ್ಲಿ ಜನ ರೆಲ್ಲರೂ ದ್ವೇಷಾಸೂಯೆಗಳಲ್ಲದೆ ಅನ್ಯೋನ್ಯಸ್ನೇಹದಿಂದ ಬಾಳುತ್ತಿದ್ದರು. ಈ ಯುಗದಲ್ಲಿ ಜನರು ಹೃಷ್ಯಪುಷ್ಯ ರಾಗಿದ್ದು ಯಾರೊಬ್ಬರನ್ನೂ ಯಾಚಿಸದಿದ್ದುದರಿಂದ ಯಾಚಕರೇ ದುರ್ಲಭವಾಗಿರುತ್ತಿದ್ದರು. ಧರ್ಮಪುರುಷನು ಈ ಯುಗದಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕು ಪಾದಗಳನ್ನೂ ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಊರಿ ನಿಂತಿದ್ದರಿಂದ ಧರ್ಮವೂ ನೆಲದಲ್ಲಿ ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಂತು ರಾಜರೂ ಸಕಲ ಪ್ರಜೆಗಳೂ ಧರ್ಮಾತ್ಮರಾಗಿದ್ದರು. “ಪದೇಶ್ಚತುರ್ಭಿ: ಸುಕೃತೇ ಸ್ಥಿರೀಕೃತೇ ಕೃತೇಽಮುನಾ ಕೇ ನ ತಪ: ಪ್ರಪೇದಿರೇ” । ಕಲಿಯುಗದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಪರಮಾತ್ಮನು ಕಲ್ಕಿರೂಪದಿಂದ ಅವತರಿಸಿ ದುಷ್ಕರಾಜರನ್ನೂ ಚೋರ ರನ್ನೂ ಧ್ವಂಸಮಾಡಿ ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗದಲ್ಲಿ ಭೂಮಿ ಯನ್ನು ಬ್ರಾಹ್ಮಣರಿಗೆ ವಹಿಸಿಕೊಡುವನು. ಕಲ್ಕಿಯಿಂದ ಅಧರ್ಮವು ನಾಶವಾಗಿ ಧರ್ಮವು ಬೆಳೆಯುತ್ತಾ ಬಂದು ಪ್ರಜೆಗಳೆಲ್ಲರೂ ತಮ್ಮ ತಮ್ಮ ಧರ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ನಿರತರಾಗುವರು. ಸುವೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ಕೆರೆಕಟ್ಟೆಗಳು ತುಂಬಿ ತುಳುಕಾಡುವುವು. ದೇವಾಲಯಗಳು ಭಕ್ತರಿಂದ ವಿರಾಜಿಸುವುವು. ಋಷಿಗಳೆಲ್ಲರೂ ತಪೋನಿಷ್ಠರಾಗಿ ಆಶ್ರಮಗಳಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವರು. ಎಲ್ಲಾ ಋತುಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಭೂಮಿಯು ಸಸ್ಯ ಸಮೃದ್ಧವಾಗಿ ಋತುಧರ್ಮಗಳು ಚೆನ್ನಾಗಿ ನಡೆಯುವುವು. ಜನರೆಲ್ಲರೂ ಧಾರ್ಮಿಕರಾಗಿ ಪ್ರತಿನಿಯಮಾನುಷ್ಠಾನ ನಿರತರಾಗುವರು. ಬ್ರಾಹ್ಮಣರೆಲ್ಲರೂ ಜಪಯಜ್ಞಾಸಕ್ತ ರಾಗಿಯೂ, ಕ್ಷತ್ರಿಯರೆಲ್ಲರೂ ಪರಾಕ್ರಮಶಾಲಿಗಳಾಗಿ ಧರ್ಮದಿಂದ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಪಾಲಿಸುವವರಾಗಿಯೂ, ವೈಶ್ಯರು ವಾಣಿಜ್ಯದಿ ವ್ಯವಹಾರಪರರಾಗಿಯೂ, ತುರೀಯ ವರ್ಣದವರು ವ್ಯವಸಾಯಾದಿ ವೃತ್ತಿಯುಳ್ಳವರಾಗಿಯೂ ಇರುತ್ತಾ ತಮ್ಮ ತಮ್ಮ ಧರ್ಮಗಳನ್ನು ಪಾಲಿಸುವರು. “ತತಶ್ಚೋರಕ್ಷಯಂ ಕೃತ್ವಾ ದ್ವಿಜೇಽಮ್ಯ: ಪೃಥಿವೀಮಿಮಾಮ್ । ವಾಜಿಮೇಧ



ಮಹಾಯಜ್ಞ ವಿಧಿವತ್ಕಲ್ಪಯಿಷ್ಯತಿ। ತತೋಽಧರ್ಮವಿನಾಶೋ ವೈ  
ಧರ್ಮವೃದ್ಧಿಶ್ಚ ಭಾರತ। ಭವಿಷ್ಯತಿ ಕೃತೇ ಪ್ರಾಪ್ತೇ ಕ್ರಿಯಾಂಶ್ಚ  
ಜನಸ್ತಥಾ। ಆರಾಮಾಶ್ಚೈವ ಚೈತ್ಯಾಶ್ಚ ತಟಾಕಾವಸಥಾಸ್ತಥಾ।  
ಪುಷ್ಕರಿಣ್ಯಶ್ಚ ವಿವಿಧಾ ಭವಿಷ್ಯಂತಿ ಕೃತೇ ಯುಗೇ। ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಃ  
ಸಾಧವಶ್ಚೈವ ಮುನಯಶ್ಚ ತಪಸ್ವಿನಃ। ಆಶ್ರಮಾಹುತ-  
ಪಾಷಾಣಢಾಃ ಸ್ಥಿತಾಃ ಸತ್ಯರತಾಃ ಪ್ರಜಾಃ। ಜನಿಷ್ಯಂತೇ ಚ ಬೀಜಾನಿ  
ರೋಪ್ಯಮಾಣಾನಿ ಚೈವ ಹಿ। ಸರ್ವೇಷ್ವತುಷು ರಾಜೇಂದ್ರ ಸರ್ವ ಸಸ್ಯಂ  
ಭವಿಷ್ಯತಿ। ನಾನಾದಾನೇಷು ನಿರತಾ ವ್ರತೇಷು ನಿಯಮೇಷು ಚ।  
ಜಪಯಜ್ಞಪರಾ ವಿಪ್ರಾಃ ಧರ್ಮಕಾಮಾ ಮುದಾ ಯುತಾಃ” ಇತ್ಯಾದಿ.  
ಭಾಂ ವನಂ ೧೧। 3. ಅನ್ವ ಮೊದಲಾದ ಹವಿಸ್ಸು.  
“ಯಾದಿತ್ವಕೃತಂ ಹವ್ಯಂ ತಙ್ಗುಲಾಸ್ತು ಕೃತಾಕೃತಮ್। ಅನ್ನಾದಿ  
ಕೃತಮ್” ವೈಜಂ। 4. ಫಲ. 5. ನಾಲ್ಕು ಸಂಖ್ಯೆ.  
6. ಪಗಡೆಯ ದಾಳದಲ್ಲಿ ಬೀಳುವ ನಾಲ್ಕು ಅಂಕಗಳು.  
(ವಿಂ) 7. ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ಕ್ತಃ”  
(೩-೨-೧೦೨)। “ಪ್ರತಿಕರ್ಮ ಕರ್ತುಮುಪಚಕ್ರಮಿರೇ ಸಮಯೇ ಹಿ  
ಸರ್ವಮುಪಕಾರಿ ಕೃತಮ್” ಮಾಘಂ ೧-೪೩। 8. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 9. ಪರ್ಯಾಪ್ತವಾದ, ಸಾಕಾಗುವಷ್ಟು.  
10. ವಿಹಿತವಾದ. “ಕೃತಂ ಪರ್ಯಾಪ್ತಿಯುಗಯೋಃ ವಿಹಿತೇ ಹಿಸಿತೇ  
ಫಲೇ” ಹೇಮಂ। 11. ಉತ್ತು ಬೀಜಬಿತ್ತಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ.  
“ಅಕೃತಂ ಚ ಕೃತಾತ್ ಕ್ಷೇತ್ರಾತ್ ಗೌರಜಾವಿಕಮೇವ ಚ। ಹಿರಣ್ಯಂ  
ಧಾನ್ಯಮಗ್ನಂ ಚ ಪೂರ್ವ ಪೂರ್ವಮದೋಷವತ್” ಮನುಂ ೧೦-೧೧೪।  
12. ಉಂಟಾದ, ಹುಟ್ಟಿದ, ಸಂಭವಿಸಿದ. ಕೃತ್ ಕರ್ಮಂ  
“ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨)। “ಜಪಹೋಮೈರಪೈತೇನಃ ಯಾಜನಾಧ್ಯಾಪನೈಃ  
ಕೃತಮ್” ಮನುಂ ೧೦-೧೧೧। 13. ತನ್ನ ಉಂಟಕ್ಕಾಗಿ  
ಸೇವಕನಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. “ಭಕ್ತಾಯೈವ ಸ್ಥಿತಃ ಕೃತಃ”  
ವೈಜಂ। (ಅವ್ಯಂ) -ತಮ್ -ತಮ್. 14. ಸಾಕು.  
15. ಸಾಕುಮಾಡು, ನಿಲ್ಲಿಸು. “ಕೃತಂ ಸಂದೇಹೇನ”। ಸಂದೇಹ  
ಪಡುವುದು ಸಾಕು, ಸಂದೇಹಪಡುವುದನ್ನು ಸಾಕುಮಾಡು,  
ಸಂದೇಹ ಬೇಡ. -ತೇ-ತೇ. 16. ಅದಕ್ಕಾಗಿ, ಅದಕ್ಕೋಸ್ಕರ.  
“ದೇವಾತಿಥ್ಯರ್ಚನಕೃತೇ ಗುರುಭೃತ್ಯಾರ್ಥಮೇವ ವಾ। ಸರ್ವತಃ ಪ್ರತಿ-  
ಗೃಹ್ಣೀಯಾದಾತ್ಮವೃತ್ತ್ಯರ್ಥಮೇವ ಚ” ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೨೧೬।

**ಕೃತಕ ಕೃತಕ** (ವಿಂ) 1. ಕೃತ್ರಿಮವಾದ, ಸ್ವಭಾವದಲ್ಲದ.  
ಕಾರ್ಯದಿಂದ ಉಂಟಾದ, ಸಲಕರಣೆಗಳಿಂದ ತಯಾರಾದ.  
ಕೃತಮೇವ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” (೪-೪-೪)। “ಲಿಂಪದ್ವಿಃ ಕೃತಕಂ  
ಕೃತೋಽಪಿ ರಜತಂ ರಾಜ್ಞಾಂ ಯಶಃ ಪಾರದೈಃ” ನೆಪಂ ೧೨-೧೧।  
(ಅವ್ಯಂ) -ಕಮ್ -ಕಮ್. 2. ಕೃತ್ರಿಮವಾಗಿ,  
ಅಸ್ವಾಭಾವಿಕವಾಗಿ, ಅಸತ್ಯವಾಗಿ. “ಅಪಯಾತಿ ಸರೋಪಯಾ  
ನಿರಸ್ತೇ ಕೃತಕಂ ಕಾಮಿನಿ ಚುಕ್ಷುವೇ ಮೃಗಾಕ್ಷಯಾ” ಮಾಘಂ  
೧-೮೩।

**ಕೃತಕರ್ಮವ್ಯ ಕೃತಕರ್ಮವ್ಯ** (ವಿಂ) ಮಾಡಬೇಕಾದುದನ್ನು  
ಮಾಡಿರುವ, ಕರ್ಮವ್ಯವನ್ನು ನೆರವೇರಿಸಿರುವ. ಕೃತಂ ಕರ್ಮವ್ಯ  
ಯೇನ। “ಕಿಂತ್ವಸೌ ಸ್ವಾಮಿನಃ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಪ್ರವಣತಾಂ ವಿಚಿನ್ತ್ಯ  
ಕೃತಕರ್ಮವ್ಯಮಿವಾತ್ಮಾನಂ ಮತ್ವಾ ಸ್ವಯಮೇವ ಧರ್ಮಃ ಶೂನ್ಯ-  
ವ್ಯಾಪಾರೋಽಭೂತ್” ಪ್ರಬೋಧಂ ೬।

**ಕೃತಕರ್ಮನ್ ಕೃತಕರ್ಮನ್** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ, ವಿಷ್ಣು.  
ಕೃತಂ ಸ್ವಯಮನುಷ್ಠಿತಂ ಕರ್ಮ ತದಾಚಾರೋಜೇನ। “ಸ್ವಾನುಷ್ಠಿತ-  
ತದಾಚಾರಃ ಕೃತಕರ್ಮೇತಿ ಕಥ್ಯತೇ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ। “ಇಂದ್ರಕರ್ಮಾ  
ಮಹಾಕರ್ಮಾ ಕೃತಕರ್ಮಾ ಕೃತಾಗಮಃ” ವಿಂ ಸಂ। (ನಂ) 2.  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಕಾರ್ಯ. ಕೃತಂ ಕರ್ಮ। (ವಿಂ) 3.  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಕೆಲಸವುಳ್ಳ, ತನ್ನ ಕೆಲಸ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವ.  
ಕೃತಂ ಕರ್ಮ ಯೇನ। 4. ಕಾರ್ಯಚತುರನಾದ, ದಕ್ಷನಾದ,  
ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಥನಾದ.

**ಕೃತಕಾರ್ಯ ಕೃತಕಾರ್ಯ** (ನಂ) 1. ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಕೆಲಸ.  
ಕೃತಂ ಕಾರ್ಯಮ್। (ವಿಂ) 2. ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಕೆಲಸವುಳ್ಳ,  
ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನೆರವೇರಿಸಿದ. ಕೃತಂ ಕಾರ್ಯ ಯೇನ। “ಸಮೂಹಕಾರ್ಯ  
ಆಯಾತಾನ್ ಕೃತಕಾರ್ಯಾನ್ ವಿಸರ್ಜಯೇತ್” ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೮೯।

**ಕೃತಕಾಲ ಕೃತಕಾಲ** (ಪುಂ) ಗೊತ್ತುಮಾಡಿರುವ ಸಮಯ,  
ನಿಗದಿಮಾಡಿರುವ ಕಾಲ. ಕೃತಃ ಕಾಲಃ। “ಕೃತಶಿಲ್ಪೋಽಪಿ  
ನಿವಸೇತ್ ಕೃತಕಾಲಂ ಗುರೋಗೃಹೇ” ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೮೪।

**ಕೃತಕೃತ್ಯ ಕೃತಕೃತ್ಯ** (ನಂ) 1. ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಕಾರ್ಯ,  
ನೆರವೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಕೆಲಸ. ಕೃತಂ ಕೃತ್ಯಮ್। (ವಿಂ) 2.  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಕರ್ಮವುಳ್ಳ, ಕರ್ಮವನ್ನು ನೆರವೇರಿಸಿದ.  
ಕೃತಂ ಕೃತ್ಯ ಯೇನ। “ಸಂಪದಾ ಸುಸ್ಥಿರಮನ್ಯೋ ಭವತಿ ಸ್ವಲ್ಪಯಾಪಿ  
ಯಃ। ಕೃತಕೃತ್ಯೋ ವಿಧಿರ್ಮನ್ಯೇ ನ ವರ್ಧಯತಿ ತಸ್ಯ ತಾಮ್” ಮಾಘಂ  
೨-೩೨। “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯)। -ಕೃತ್ಯತಾ -ಕೃತ್ಯತಾ.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೃತಾರ್ಥನಾಗುವಿಕೆ, ಮಾಡಬೇಕಾದುದನ್ನು  
ಮಾಡಿರುವುದು. “ರಾಜ್ಯಪ್ರಾಪ್ತಿಕೃತಾರ್ಥಮೇಕಮಪರಂ ತೀರ್ಣ-  
ಪ್ರತಿಜ್ಞಾರ್ಣವಂ ಸೌಹಾರ್ದಾತ್ ಕೃತಕೃತ್ಯತೇವ ನಿಯತಂ ಲಬ್ಧಾಂತರಾ  
ಭೇತ್ಸ್ಯತಿ” ಮುದ್ರಾಂ ೨-೨೩।

**ಕೃತಕೇತರ ಕೃತಕೇತರ** (ವಿಂ) 1. ಕೃತ್ರಿಮವಲ್ಲದ, ಸ್ವಭಾವ  
ವಾದ. ಕೃತಕಾತ್ ಇತರಃ। 2. ಅಪೌರುಷೇಯವಾದ,  
ಮನುಷ್ಯರಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಡದ. “ಉಚ್ಚೈರ್ಗತಿರ್ಜಗತಿ ಸಿದ್ಧಯತಿ  
ಧರ್ಮತಶ್ಚೇತ್ ತಸ್ಯ ಪ್ರಮಾ ಚ ವಚನೈಃ ಕೃತಕೇತರೇಶ್ಚೇತ್”  
ವೆಂ ರಾಂ।

**ಕೃತಕೋಟಿ ಕೃತಕೋಟಿ** (ಪುಂ) 1. ಕಶ್ಯಪಮಹರ್ಷಿ. 2. ಉಪ  
ವರ್ಷಮುಷಿ. “ಕೃತಕೋಟಿस्तು ಕಾಶ್ಯಪಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।  
“ಉಪವರ್ಷೋ ಹಲಭೃತಿಃ ಕೃತಕೋಟಿರಯಾಚಿತಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।



ಕೃತಕ್ರಿಯ ಕೃತಕ್ರಿಯ (ವಿಂ) ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಕ್ರಿಯವುಳ್ಳ, ಕ್ರಿಯಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಂಡ, ಬೆಲೆಕೊಟ್ಟು ತೆಗೆದುಕೊಂಡ. ಕೃತ: ಕ್ರಯೋ ಯೇನ.

ಕೃತಕ್ರಿಯ ಕೃತಕ್ರಿಯ (ವಿಂ) 1. ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಕೆಲಸವುಳ್ಳ, ಕೆಲಸವನ್ನು ನೆರವೇರಿಸಿದ. ಕೃತಾ ಕ್ರಿಯಾ ಯೇನ. "ವಿಪ್ರ: ಶುಧ್ಯತ್ಯಪ: ಸ್ಪೃಷ್ಟ್ವಾ ಕ್ಷತ್ರಿಯೋ ವಾಹನಾಯುಧಮ್ | ವೈಶ್ಯ: ಪ್ರತೊದಂ ರಶ್ಮೀನ್ ವಾ ಯಷ್ಟಿಂ ಶೂದ್ರ: ಕೃತಕ್ರಿಯ:" ಮನುಂ ೪-೧೯ | 2. ಅಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಕರ್ತವ್ಯವುಳ್ಳ. ಕೃತಂ ಕಾರ್ಯಂ ಯಸ್ಯ | "ಸ ಬಭವ ದುರಾಸದ: ಪರಗುಣಾಥವೇವಿದಾ ಕೃತಕ್ರಿಯ:" ರಘುಂ ೮-೪ |

ಕೃತಕ್ಷಣ ಕೃತಕ್ಷಣ (ವಿಂ) 1. ಅವಕಾಶವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. 2. ಸಮಯವನ್ನು ಕಾಯುವ, ಸರಿಯಾದ ಕಾಲವನ್ನು ನಿರೀಕ್ಷಿಸುವ, ಗೊತ್ತಾದ ಕಾಲವನ್ನು ಕಾದು ನೋಡುವ. ಕೃತ: ಕ್ಷಣೋ ಯೇನ | "ವಯಂ सर्वे कृतक्षणा-स्तिष्ठाम:" पञ्चतं | "तमुत्तङ्कः प्रत्युवाच कृतक्षण एवास्मि शीघ्रमिच्छामि यथोपपन्नमन्नमुपस्कृतम्" भा० आदि० ३ |

ಕೃತಘನ ಕೃತಘನ (ವಿಂ) ಮಾಡಿದ ಉಪಕಾರವನ್ನು ಮರೆತಿರುವ. ಮಾಡಿದ ಉಪಕಾರಕ್ಕೆ ಬದಲಾಗಿ ಅಪಕಾರಮಾಡುವ, ಉಪಕಾರಮಾಡಿದವನನ್ನು ಹಿಂಸಿಸುವ. ಕೃತಂ ಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತೋ:) "ಕ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪) | "परलोकगतो देवः कृतघ्नैर्नानुगम्यते" मुद्रा० २-२० | "बालघ्नाश्च कृतघ्नाश्च विशुद्धानपि धर्मतः | शरणागतहंतृश्च स्त्रीहन्तृश्च न संवसेत्" मनु० ११-१९२ | ಕೃತಘನನಿಗೆ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತವೇ ಇಲ್ಲ. "ब्रह्मणे च सुरापे च चोरे च गुस्तल्पगे | निष्कृतिर्विहिता सद्भिः कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः" | ಇವರೆಲ್ಲರೂ ಕೃತಘನರು: "भर्तृपिण्ड-पहर्ता च पितृपिण्डापहारकः | यस्माद्गृहीत्वा विद्यां च दक्षिणां न प्रयच्छति | पुत्रान् स्त्रियं च यो द्वेष्टि यश्चैतान् घातयेन्नरः | कृतस्य दोषं वदति सकामात्र करोति यः | न स्मरेच्च कृतं यश्च आश्रमान् यश्च दूषयेत् | सर्वा-स्तान् ऋषिभिः सार्यं कृतघ्नानब्रवीन्मनुः" स्कान्द० |

ಕೃತಘನತಾ ಕೃತಘನತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೃತಘನನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಮಾಡಿದ ಉಪಕಾರವನ್ನು ಮರೆಯುವಿಕೆ, ಉಪಕಾರ ಮಾಡಿದವನಿಗೆ ಅಪಕಾರಮಾಡುವಿಕೆ. ಕೃತಘನಸ್ಯ ಭಾವ: "तल्" (५-१-११९) | "निग्रहे तावत् पर्वतको-स्माभिः व्यापादित इति कृतघ्नतायाः स्वयं हस्तो दत्तः स्यात्" मुद्रा० ३ | "त्व:" (५-१-११९) | ಕೃತಘನತ್ವಮ್ ಕೃತಘನತ್ವಮ್.

ಕೃತಜ್ಞ ಕೃತಜ್ಞ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಪರಮಾತ್ಮ. ಕೃತಂ ಸುಕೃತ-ಮಾನುಕೂಲ್ಯವಜ್ಞಾನಾತಿ-ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "कः" (३-२-३) | "प्राणिभिर्यत्कृतं कर्म तज्ज्ञात्वा फलदो यतः | पत्रपुष्पा-दिना तुष्टः कृतज्ञो मोक्षदानतः" इति निरुक्तिः | "अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान्" वि० सं० | 2. ನಾಯಿ. ನಾಯಿಯು ಉಪಕಾರವನ್ನು ಮರೆಯುವುದಿಲ್ಲ. (ವಿಂ) 3. ಮಾಡಿದ ಉಪಕಾರವನ್ನು ಸ್ಮರಿಸುವವನು, ಉಪಕಾರಕ್ಕೆ ತಕ್ಕ ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರವನ್ನು ಮಾಡುವವನು. "कृतज्ञः कुक्कुरे पुंसि मर्यादिन्यभिधेयवत्" मेदि० |

ಕೃತಜ್ಞತಾ ಕೃತಜ್ಞತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉಪಕಾರವನ್ನು ಸ್ಮರಿಸುವುದು. "कृतज्ञातामस्य वदन्ति संपदः" किरा० १-१४ | 2. ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರಮಾಡುವುದು. ಕೃತಜ್ಞಸ್ಯ ಭಾವ: "तल्" (५-१-११९) | "तेनाप्यसौ ममानेन प्राणाः परिरक्षिता इति कृतज्ञतामनुबुध्यमानेन पैतृकं च परिचयं आत्मनोजन्तरम् अमात्यपदं ग्राहितः" मुद्रा० ३ |

ಕೃತತೀರ್ಥ ಕೃತತೀರ್ಥ (ವಿಂ) 1. ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರಗಳ ಯಾತ್ರೆ ಮಾಡಿದವನು. 2. ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ಆಚಾರ್ಯನಲ್ಲಿ ವಿದ್ಯೆ ಕಲಿತವನು. 3. ಉಪಾಯವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. 4. ಜಲಾವತಾರ ಮಾಡಿದವನು, ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಸರಿಯಾದ ತೊರೆಯಲ್ಲಿ ಇಳಿದವನು. ಕೃತಂ ತೀರ್ಥಂ ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಉಪಾಯ: ಉಪಾಯ: जलाव-तारो वा येन | "विषमोऽपि विगाह्यते नयः कृततीर्थः पयसामिवाशयः" किरा० २-३ |

ಕೃತದಾರ ಕೃತದಾರ (ಪುಂ) ಮದುವೆಯಾದವನು, ಪತ್ನಿಯನ್ನು ಪಡೆದುಕೊಂಡಿರುವವನು. "कृतदारोऽपरान् दारान् भिक्षित्वा योऽधिगच्छति" मनु० ११-५ |

ಕೃತದಾಸ ಕೃತದಾಸ (ಪುಂ) ಕಾಲಪರಿಮಿತಿಯನ್ನು ನಿಗದಿ ಮಾಡಿ ಸೇವಕನಾಗಿರುವವನು, ಇಷ್ಟುಕಾಲ ನಿನ್ನಲ್ಲಿ ಸೇವಕ ನಾಗಿರುವೆನೆಂದು ಒಪ್ಪಿರುವವನು, ಹದಿನೈದು ವಿಧ ದಾಸ (ಸೇವಕ)ರಲ್ಲೊಬ್ಬ. ಕೃತೋ ದಾಸ: | ಹದಿನೈದು (15) ವಿಧ ದಾಸ (ಸೇವಕ) ರು:

- (1) गृहजातः = ಮನೆಯಲ್ಲಿ ದಾಸಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು.
- (2) क्रीतः = ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟವನು.
- (3) लब्धः = ದಾನವಾಗಿ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟವನು.
- (4) दायदुपागतः = ತಂದೆಯ ಕಾಲದಿಂದ ಬಂದು ತನ್ನ ಭಾಗಕ್ಕೆ ಸೇರಿದವನು.
- (5) अनाकालभृतः = ದುರ್ಭಿಕ್ಷುಕಾಲದಲ್ಲಿ ಅನ್ನಕೊಟ್ಟು ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ದಾಸನಾಗಿರುವವನು.



- (6) ಆಹಿತ: = ಯಜಮಾನನಿಂದ ಹಣ ಪಡೆದು ಅದಕ್ಕಾಗಿ ದಾಸನಾಗಿರುವವನು.
- (7) ಕೃಣದಾಸ: = ತಾನುಮಾಡಿದ ಸಾಲವನ್ನು ತೀರಿಸಿದವನಲ್ಲಿ ಒಪ್ಪಿ ದಾಸನಾಗಿರುವವನು.
- (8) ಯುದ್ಧಪ್ರಾಪ್ತ: = ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಜಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ದಾಸನಾಗಿರುವವನು.
- (9) ಪ್ರಣೇಜಿತ: = ವಿವಾದದಲ್ಲಿ ಜಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ದಾಸನಾಗಿರುವವನು.
- (10) ಉಪಗತ: = “ನಾನು ನಿನ್ನವನು” ಎಂದು ತಾನಾಗಿ ಬಂದು ದಾಸನಾಗಿರುವವನು.
- (11) ಪ್ರವ್ರಜ್ಯಾವಸಿತ: = ಸಂನ್ಯಾಸಿಯಾಗಿದ್ದು ಭ್ರಷ್ಟನಾಗಿ ಬಂದು ದಾಸನಾಗಿರುವವನು.
- (12) ಕೃತದಾಸ: = ಇಷ್ಟುಕಾಲ ದಾಸನಾಗಿರುವನೆಂದು ಒಪ್ಪಿರುವವನು.
- (13) ಭಕ್ತದಾಸ: = ಭಕ್ತರಿಗಾಗಿ ದಾಸತ್ವವನ್ನು ಅಂಗೀಕರಿಸಿ ಬಂದವನು.
- (14) ಬಡಬಾಹುತ: = ದಾಸಿಯಿಂದ ಕರೆತರಲ್ಪಟ್ಟು ಅವಳನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ತಾನೂ ದಾಸನಾಗಿರುವವನು.
- (15) ವಿಕೃತಾ = ತನ್ನನ್ನು ಮಾರಿಕೊಂಡು ದಾಸನಾಗಿರುವವನು.

**ಕೃತಧಿ ಕೃತಧೀ (ವಿಂ)** 1. ವಿದ್ಯಾವಂತ, ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸದಿಂದ ಒಳ್ಳೆಯ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯನ್ನು ಪಡೆದವನು. ಕೃತಾ ಲವಾ ಧೀಯೇನ | “ಮಹಾರಮ್ಭಾ: ಕೃತಧಿಯಸ್ತಿಷ್ಠಂತಿ ಚ ನಿರಾಕುಲಾ:” ಮಾಘಂ ೨-೭೯ | 2. ಸ್ಥಿರಚಿತ್ತನಾದ. 3. ವಿವೇಕಶಾಲಿಯಾದ, ಯುಕ್ತಾಯುಕ್ತ ಪರಿಜ್ಞಾನವುಳ್ಳ. “ಪುತ್ರೇಮ್ಯ: ಕೃತವೇದಿನಾಂ ಕೃತಧಿಯೋ ಯೇಷಾಮಭಿನ್ನಾ ವಯಮ್” ಮುद्रಾಂ ೪-೨೦ |

**ಕೃತಧ್ವಜ ಕೃತಧ್ವಜ (ಪುಂ)** ಕುಶಧ್ವಜನ ಮೊಮ್ಮಗ, ಧರ್ಮಧ್ವಜನ ಮಗ. “ಕುಶಧ್ವಜಸ್ತಸ್ಯ ಪುತ್ರಸ್ತತೋ ಧರ್ಮಧ್ವಜೋ ನೃಪ: | ಧರ್ಮಧ್ವಜಸ್ಯ ದ್ವೌ ಪುತ್ರೌ ಕುಶಧ್ವಜಮಿತಧ್ವಜೌ” ಭಾಗಂ ೯-೧೩ |

**ಕೃತನಾಮಧೇಯ ಕೃತನಾಮಧೇಯ (ವಿಂ)** 1. ಹೆಸರುವಾಸಿಯಾದವನು, ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಪಡೆದವನು, ಪ್ರಖ್ಯಾತ, ಕೀರ್ತಿವಂತ. ಕೃತಂ ನಾಮಧೇಯಂ ಯಸ್ಯ | 2. ಹೆಸರಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಾಮಕರಣ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಕೃತನಿಶ್ಚಯ ಕೃತನಿಶ್ಚಯ (ವಿಂ)** 1. ನಿಶ್ಚಯಿಸಿಕೊಂಡವನು, ತೀರ್ಮಾನಮಾಡಿಕೊಂಡವನು. ಕೃತೋ ನಿಶ್ಚಯೋ

ಯೇನ | “ಇಹೈವ ತಾವತ್ ಕೃತನಿಶ್ಚಯೋಹ್ಯಹಂ ಯದಿ ವ್ರಜೇಯಂ ಪಲವಗೇಶವ-ರಾಲಯಮ್” ರಾಮಾಂ | “ಹತೋ ವಾ ಪ್ರಾಪ್ಸ್ಯಸಿ ಸ್ವರ್ಗಂ ಜಿತ್ವಾ ವಾ ಭೋಷ್ಯಸೇ ಮಹೀಮ್ | ತಸ್ಮಾದ್ಉತ್ತಿಷ್ಠ ಕೌಂತೇಯ ಯುಧಾಯ ಕೃತನಿಶ್ಚಯ:” ಗೀತಾ ೨-೩೭ | 2. ಸ್ಥಿರಚಿತ್ತವುಳ್ಳ. ದೃಢವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ಕೃತೋ ನಿಶ್ಚಯೋ ಯೇನ |

**ಕೃತಪುಣ್ಯ ಕೃತಪುಣ್ಯ (ವಿಂ)** ಬಾಣಪ್ರಯೋಗದಲ್ಲಿ ಚತುರನಾದ, ಬಾಣಗಳನ್ನು ಬಿಡುವುದರಲ್ಲಿ ಜಾಣನಾದ, ಬಾಣ ಪ್ರಯೋಗವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅಭ್ಯಾಸಮಾಡಿದ. ಕೃತ: ಅಮ್ಯಸ್ತ: ಪುಣ್ಯೋ ಯೇನ |

**ಕೃತಪ್ರಣಾಮ ಕೃತಪ್ರಣಾಮ (ವಿಂ)** 1. ನಮಸ್ಕಾರ ಮಾಡಿದವನು. ಕೃತ: ಪ್ರಣಾಮೋ ಯೇನ | “ಕೃತಪ್ರಣಾಮಸ್ಯ ಮಹೀ ಮಹೀಭುಜೇ ಜಿತಾಂ ಸಪತ್ನೇನ ನಿವೇದಯಿಷ್ಯತ:” ಕಿರಾಂ ೧-೨ | 2. ನಮಸ್ಕಾರ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟವನು. ಕೃತ: ಪ್ರಣಾಮೋ ಯಸ್ಯ |

**ಕೃತಪ್ರತಿಜ್ಞ ಕೃತಪ್ರತಿಜ್ಞ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಮಾಡಿದವನು. ಕೃತಾ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ ಯೇನ | 2. ಮಾಡಿದ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯನ್ನು ಈಡೇರಿಸಿದವನು, ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯನ್ನು ಪೂರ್ಣಗೊಳಿಸಿದವನು.

**ಕೃತಬುದ್ಧಿ ಕೃತಬುದ್ಧಿ (ವಿಂ)** ಸುಸಂಸ್ಕೃತ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ, ಪಕ್ವವಾದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. “ಪಶ್ಯತ್ಯಕೃತಬುದ್ಧಿತ್ವಾನ್ ಸ ಪಶ್ಯತಿ ದುರ್ಮತಿ:” ಗೀತಾ ೧೮-೧೬ |

**ಕೃತಮ್ ಕೃತಮ್ (ಅವ್ಯಂ)** ಸಾಕು, ಸಾಕುಮಾಡು, ನಿಲ್ಲಿಸು. “ಕೃತಮ್ ಯುಗೋಲಮರ್ಥೇ ಸ್ಯಾತ್” ಮೇದಿಂ |

**ಕೃತಮತಿ ಕೃತಮತಿ (ವಿಂ)** ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ನಿಶ್ಚಯಿಸಿಕೊಂಡ, ನಿರ್ಣಯಮಾಡಿಕೊಂಡ. ಕೃತಾ ಮತೀಯೇನ | “ಸತ್ವಹಿತ-ಕೃತಮತಿ: ಸಹಸಾ ತಮಸಾ ವಿನಾಶಯತಿ ಸರ್ವಮಾವೃತ:” ಮಾಘಂ ೧೪-೧೩ |

**ಕೃತಮಾಲ ಕೃತಮಾಲ (ಪುಂ)** 1. ಕಟ್ಟಿಗಿಡ. ಕೃತಾ ಮಾಲಾಸ್ಯ ಪುಷ್ಪೇ: | “ಕಾಶ್ಮರಯಾ: ಕೃತಮಾಲಮುದ್ಗತದಲಂ ಕೋಯಿಷ್ಠಿಕಷ್ಟಿ-ಕತೇ” ಮಾಲತೀಂ ೯-೭ | 2. ಕಣಿಗಿಲೆ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 3. ಹಾರವನ್ನು ತಯಾರಿಸಿದವನು. ಕೃತಾ ಮಾಲಾ ಯೇನ |

**ಕೃತಮುಖ ಕೃತಮುಖ (ವಿಂ)** ವಿದ್ಯಾವಂತ, ಜಾಣ, ಬುದ್ಧಿವಂತ, ನಿಪುಣ. ಕೃತಂ ಸಂಸ್ಕೃತಂ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ | “ವೈಜ್ಞಾನಿಕ: ಕೃತಮುಖ: ಕೃತೌ ಕುಶಲ ಇತ್ಯಪಿ” ಅಮಂ |

**ಕೃತಯುಗ ಕೃತಯುಗ (ನಂ)** ಚತುರ್ಯುಗಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು, ಕೃತ, ತ್ರೇತಾ, ದ್ವಾಪರ ಮತ್ತು ಕಲಿಗಳೆಂಬ ನಾಲ್ಕು ಯುಗಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯದು. ಈ ಯುಗದಲ್ಲಿ ಜನರೆಲ್ಲರೂ ಭಗವದ್ಧ್ಯಾನಪರರಾಗಿಯೂ ಸುಶೀಲರಾಗಿಯೂ ಧರ್ಮಾತ್ಮರಾಗಿಯೂ ಸದಾಚಾರಸಂಪನ್ನರಾಗಿಯೂ ಇರುವುದರಿಂದಲೂ ಭೂಮಿಯು ಸಕಲಸಸ್ಯಸಮೃದ್ಧವಾಗಿ



ಜಗತ್ತೆಲ್ಲವೂ ಸುಭಿಕ್ಷವಾಗಿಯೂ ರಾಜರೆಲ್ಲರೂ ಧರ್ಮದಿಂದ ಪ್ರಜಾಪರಿಪಾಲನನಿರತರಾಗಿಯೂ ಇರುವುದರಿಂದಲೂ ಈ ಯುಗಕ್ಕೆ ಸ್ವರ್ಣಯುಗವೆಂದೂ ಹೆಸರು.

**ಕೃತಲಕ್ಷಣ ಕೃತಲಕ್ಷಣ** (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಕೃತಂ ಲಕ್ಷಣಂ ಚಕ್ರಾದಿಲಾಂಛನಂ ಯೇನ | “ಕೃತಂ ಹಿ ಲಾಂಛನಂ ಯೇನ ಉಪಾದೇಯೇ ಜನ್ತುಃ | ಪರಮಾತ್ಮಾ ಹೃಷೀಕೇಶಃ ಸ ತು ಸ್ಯಾತ್ ಕೃತಲಕ್ಷಣಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | “ಅವಿಜ್ಞಾತಾ ಸಹಸ್ರಾಂಶು-ವಿಧಾತಾ ಕೃತಲಕ್ಷಣಃ” ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ಸದ್ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಒಳ್ಳೆಯ ಗುಣಗಳಿಂದ ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾದ. ಕೃತಾನಿ ಲಕ್ಷಣಾನಿ ಯಸ್ಯ | 3. ಗುರುತುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. “ಜ್ಞಾತಿಸಮ್ಬಂಧಿಭಿಃ ಸ್ತವೇತೇ ತ್ಯಕ್ತವ್ಯಾಃ ಕೃತಲಕ್ಷಣಾಃ” ಮನುಂ ೧-೨೩೧ | 4. ಮುದ್ರೆಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಕೃತವತ್ ಕೃತವತ್** (ವಿಂ) ಮಾಡಿದವನು. ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ಕ್ತವತ್” (೩-೨-೧೦೨) | “ಪ್ರಯತ್ನಂ ಕೃತವಂತೋಽಪಿ ದೃಶ್ಯಂತೇ ಹ್ಯಪಲಾ ಜನಾಃ | ಮಾರ್ಗತ್ಯಾಯಶತೇರರ್ಥಾನ್ ಅಮಾರ್ಗಶ್ಚಾಪರಃ ಸುಖೀ” ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೬೩-೪ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) | -ವತೀ -ವತೀ.

**ಕೃತವಸತಿ ಕೃತವಸತಿ** (ವಿಂ) ವಸತಿಯನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸಿಕೊಂಡ, ಮನೆಮಾಡಿಕೊಂಡ, ವಾಸಸ್ಥಾನವನ್ನು ಏರ್ಪಡಿಸಿಕೊಂಡ. ಕೃತಾ ವಸತಿಯೇನ | “ಅಮೃತಕರಶಿರೋಮಣಿಗಿರಿಂದ್ರೇ ಕೃತವಸತಿ-ವಂಶಿಭಿರ್ಗಣೇನಂದ” ಕುಮಾಂ ೧-೪೨ |

**ಕೃತವಿದ್ಯ ಕೃತವಿದ್ಯ** (ವಿಂ) ವಿದ್ಯಾವಂತ, ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿದವನು, ವಿದ್ಯೆಕಲಿತವನು. ಕೃತಾ ಅಮ್ಯಸ್ತಾ ವಿದ್ಯಾ ಯೇನ | “ಶೂರಶ್ಚ ಕೃತವಿದ್ಯಶ್ಚ ಯಶ್ಚ ಜಾನಾತಿ ಸೇವಿತುಮ್” ಪञ्ಚತಂ |

**ಕೃತವೀರ್ಯ ಕೃತವೀರ್ಯ** (ಪುಂ) ಕಾರ್ತವೀರ್ಯಾರ್ಜುನನ ತಂದೆ, ಚಂದ್ರವಂಶದ ಧನಕರಾಜನ ಮಗ.

**ಕೃತವೇತನ ಕೃತವೇತನ** (ವಿಂ) ಕೂಲಿಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ ಆಳು, ಸಂಬಳ ತೆಗೆದುಕೊಂಡ ಸೇವಕ. ಕೃತಂ ವೇತನಂ ಯಸ್ಯ |

**ಕೃತವೇದಿನ್ ಕೃತವೇದಿನ್** (ವಿಂ) ಮಾಡಿದುದನ್ನು ನೆನೆದು ಕೊಳ್ಳುವವನು, ಉಪಕಾರವನ್ನು ಸ್ಮರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವನು, ಕೃತಜ್ಞ, ಮಾಡಿದುದಕ್ಕೆ ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರ ಮಾಡುವವನು. ಕೃತಂ ವೇದಿ - ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) “ಣಿಃ” (೩-೨-೭೮) | “ಪುತ್ರೇಮ್ಯಃ ಕೃತವೇದಿನಾಂ ಕೃತಧಿಯೋ ಯೇಷಾಮಭಿಜ್ಞಾ ವಯಮ್” ಮುಡ್ರಾಂ ೪-೨೦ | “ನ ತಥಾ ಕೃತವೇದಿನಾಂ ಕರಿಷ್ಯನ್ ಪ್ರಿಯತಾಮೇತಿ ಯಥಾ ಕೃತಾವದಾನಃ” ಕಿರಾಂ ೧೩-೩೨ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪) | -ವೇದಿನಿ -ವೇದಿನೀ.

**ಕೃತಶಿಲ್ಪ ಕೃತಶಿಲ್ಪ** (ವಿಂ) ಕುಶಲವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿತ ವನು, ಕಲಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿದವನು. ಕೃತಮಮ್ಯಸ್ತಂ ಶಿಲ್ಪಂ ಯೇನ | “ಕೃತಶಿಲ್ಪೋಽಪಿ ನಿವಸೇತ್ ಕೃತಕಾಲಂ ಗುರೋಗೃಹೇ | ಅಂತೇವಾಸೀ ಗುರುಪ್ರಾಪ್ತಭೋಜನಸ್ತತ್ಕಲಪ್ರದಃ” ಯಾಜಂ ೨-೧೮೪ |

**ಕೃತಶ್ರಮ ಕೃತಶ್ರಮ** (ವಿಂ) ಬಹಳ ಪರಿಶ್ರಮಹೊಂದಿರುವ, ಉತ್ಸಾಹದಿಂದ ಶ್ರಮಪಟ್ಟಿರುವ. ಕೃತಃ ಶ್ರಮೋ ಯೇನ | “ಶಾಸ್ತ್ರೇಷು ಕೃತಶ್ರಮಃ” |

**ಕೃತಸಂಜ್ಞ ಕೃತಸಂಜ್ಞ** (ವಿಂ) ಸಂಕೇತಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಗುರುತು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕೃತಾ ಸಂಜ್ಞಾ ಸಂಕೇತೋ ಯಸ್ಯ | “ಗುಲ್ಮಾಂಶ್ಚ ಸ್ಥಾಪಯೇದಾಪ್ತಾನ್ ಕೃತಸಂಜ್ಞಾನ್ ಸಮಂತತಃ” ಮನುಂ ೭-೧೯೦ |

**ಕೃತಸಂಸ್ಕಾರ ಕೃತಸಂಸ್ಕಾರ** (ವಿಂ) 1. ಜಾತಕರ್ಮ ನಾಮ ಕರಣ ಮೊದಲಾದ ಸಂಸ್ಕಾರಗಳನ್ನು ಪಡೆದಿರುವ. ಕೃತಃ ಸಂಸ್ಕಾರೋ ಯಸ್ಯ | “ಕುಮಾರಾಃ ಕೃತಸಂಸ್ಕಾರಾಸ್ತೇ ಧಾತ್ರೀಸ್ತನ್ಯ-ಪಾಯಿನಃ” ರಘುಂ ೧೦-೭೮ | 2. ಶುದ್ಧಿಕಾರ್ಯ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಅಲಂಕಾರ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಕೃತಸನ್ನಾಹ ಕೃತಸನ್ನಾಹ** (ಪುಂ) ಯುದ್ಧಕವಚ ತೊಟ್ಟು ಸಿದ್ಧನಾಗಿರುವವನು.

**ಕೃತಸಾಪತ್ನಿಕಾ ಕೃತಸಾಪತ್ನಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸವತಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಹೆಂಗಸು, ಎರಡನೆಯ ಹೆಂಡತಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನ ಹಿರಿಯ ಹೆಂಡತಿ. ಸಪತ್ನ्या ಭಾವಃ “ಽಪ್ಯಕ್” (೪-೧-೧೨೪) | “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪೧) | ಯಲೋಪಃ (೬-೪-೧೪೦) | ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” (೪-೩-೭೪) | ಸಾಪತ್ನಿಕಾ | ಕೃತಾ ಸಾಪತ್ನಿಕಾ ಯಸ್ಯಾಃ |

**ಕೃತಹಸ್ತ ಕೃತಹಸ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಬಾಣಸಂಧಾನ ಮತ್ತು ಉಪಸಂಹಾರಗಳಲ್ಲಿ ಕೈಚಟುವಟಿಕೆಯುಳ್ಳ, ಬಾಣ ಪ್ರಯೋಗದಲ್ಲಿ ನಿಪುಣನಾದ. ಕೃತೋಽಮ್ಯಸ್ತೋ ಹಸ್ತೋ ಯಸ್ಯ | 2. ದಕ್ಷನಾದ, ಎಲ್ಲಾ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲೂ ನಿಪುಣನಾದ.

**ಕೃತಾಕೃತ ಕೃತಾಕೃತ** (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಕೃತಶ್ಚ ಅಕೃತಶ್ಚ | ಅನಿತ್ಯಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವ ಸಂಸಾರ ಪ್ರವರ್ತಕಧರ್ಮ ಮತ್ತು ನಿತ್ಯಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವ ಸಂಸಾರನಿವರ್ತಕ ಧರ್ಮಗಳೆಂದು ಧರ್ಮವು ಎರಡು ವಿಧ. ಈ ಎರಡು ಫಲಗಳನ್ನು ಕೊಡುವ ಧರ್ಮವಾದುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಕೃತಾಕೃತನು. “ಅನಿತ್ಯನಿತ್ಯಫಲದೌ ಪ್ರವರ್ತಕನಿವರ್ತಕೌ | ದೌ ಯಸ್ಯ ಸ್ವರೂಪಂ ಸಃ ಕೃತಾಕೃತ ಇತಿರೀತಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | “ಲೋಕಾಧ್ಯಕ್ಷಃ ಸುರಾಧ್ಯಕ್ಷೋ ಧರ್ಮಾಧ್ಯಕ್ಷಃ ಕೃತಾಕೃತಃ” ವಿಂ ಸಂ | (ನಂ) 2. ಕಾರ್ಯ ಮತ್ತು ಕಾರಣ. ಕೃತಂ ಕಾರ್ಯಂ ಚ ಅಕೃತಂ ಕಾರಣಂ ಚ ಅನಯೋಃ ಸಮಾಹಾರಃ | 3. ಕರಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮತ್ತು ಕರಗಿಸಲ್ಪಡದಿರುವ



ಚಿನ್ನ ಮತ್ತು ಬೆಳ್ಳಿ. 4. ಅಭರಣವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಮತ್ತು ಮಾಡಲ್ಪಡದಿರುವ ಚಿನ್ನ ಮತ್ತು ಬೆಳ್ಳಿ. "ಸ್ಯಾತ್ ಕೋಶಶ್ಚ ಹಿರಣ್ಯಂ ಚ ಹೇಮರೂಪ್ಯೇ ಕೃತಾಕೃತೇ" ಅಮಂ. (ವಿಂ) 5. ಭಾಗಶಃ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಭಾಗಶಃ ಮಾಡಲ್ಪಡದಿರುವ. ಕೃತಂ ಚಾಕೃತಂ ಚ |

**ಕೃತಾಗಮ ಕೃತಾಗಮ** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು ಪರಮಾತ್ಮ. ಕೃತಃ ಆಗಮೋ ವೇದಲಕ್ಷಣೋ ಯೇನ | "ಕೃತಾಗಮೋ ಯೇನ ಕೃತಾ ಆಗಮಾ ವೇದಲಕ್ಷಣಾಃ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ | "ಇಂದ್ರಕರ್ಮಾ ಮಹಾಕರ್ಮಾ ಕೃತಕರ್ಮಾ ಕೃತಾಗಮಃ" ವಿಂ ಸಂ | "ಅಸ್ಯ ಮಹತೋ ಭೂತಸ್ಯ ನಿಃಶ್ವಸಿತಮೇದದೃಗ್ವೇದೋ ಯಜುರ್ವೇದಃ ಸಾಮವೇದಶ್ಚೇತಿ" ಶ್ರುತಿಃ |

**ಕೃತಾಗಸ್ ಕೃತಾಗಸ್** (ವಿಂ) ಅಪರಾಧ ಮಾಡಿದವನು, ತಪ್ಪು ಮಾಡಿದವನು. ಕೃತಮಾಗೋ ಯೇನ | "ಕೃತಾಗಾಃ ಕೌಡಿಲ್ಯೋ ಭುಜಗ ಇವ ನಿಯಾಯಿ ನಗರಾತ್" ಮುद्रಾಂ ೩-೧೧ |

**ಕೃತಾಙ್ಕ ಕೃತಾಂಕ** (ಪುಂ) 1. ನಾಲ್ಕು ಎಣಿಕೆಯುಳ್ಳ ಪಗಡೆಯ ದಾಳ. (ವಿಂ) 2. ಸಂಖ್ಯೆಹಾಕಿರುವ. 3. ಏನಾದರೊಂದು ಬರೆದು ಗುರುತುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕೃತೋಙ್ಕೋ ಯಸ್ಯ | 4. ಬರೆಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕಟಘಾ ಕೃತಾಙ್ಕೋ ನಿರ್ವಾಸ್ಯಃ ಸ್ಥಿವಂ ಚೈವಾವಕರ್ತಯೇತ್" ಮನುಂ ೮-೨೮೨ |

**ಕೃತಾಂಜಲಿ ಕೃತಾಂಜಲಿ** (ಪುಂ) 1. ಮುಟ್ಟಿದರೆ ಮುನಿ ಯೆಂಬ ಒಂದು ಗಿಡ. ಕೃತೋಂಜಲಿರಿವ ಪತ್ರಸಂಕೋಚೋಽಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಭಕ್ತಿವಿನಯಗಳಿಂದ ನಮಸ್ಕರಿಸಲು ಕೈಜೋಡಿಸಿ ಕೊಂಡಿರುವ. ಕೃತೋಂಜಲಿಯೇನ | "ಸ್ವರೂಪಮಾಸ್ಥಾಯ ತತೋ ಹುತಾಶನಸ್ತ್ರಸನ್ ವಲತ್ಕಂಪಕೃತಾಂಜಲಿಃ ಸನ್" ಕುಮಾಂ ೯-೬ |

**ಕೃತಾತ್ಮನ್ ಕೃತಾತ್ಮನ್** (ವಿಂ) 1. ಶುದ್ಧವಾದ ಆತ್ಮನುಳ್ಳ. 2. ಶಾಸ್ತ್ರಗಳಿಂದ ಪರಿಶುದ್ಧವಾದ ಹೃದಯವುಳ್ಳ. ಕೃತಃ ಶುದ್ಧಃ ಸಂಸ್ಕೃತಃ ಆತ್ಮಾ ಹೃದಯಂ ಯಸ್ಯ |

**ಕೃತಾತ್ಯಯ ಕೃತಾತ್ಯಯ** (ಪುಂ) ಮಾಡಿದ ಪುಣ್ಯಗಳ ನಾಶ, ಅನುಭವಿಸಿದ ಪುಣ್ಯಫಲಗಳ ನಾಶ. ಕೃತಸ್ಯಾತ್ಯಯಃ | "ಕೃತಾತ್ಯಯೇಽನುಶಯವಾನ್" |

**ಕೃತಾದರ ಕೃತಾದರ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೀತಿ ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕೃತಃ ಆದರೋ ಯಸ್ಯ |

**ಕೃತಾನತಿ ಕೃತಾನತಿ** (ವಿಂ) 1. ನಮಸ್ಕಾರಮಾಡಿದವನು. ಗೌರವಿಸಿದವನು. ಕೃತಾ ಆನತಿಯೇನ | "ಕೃತಾನತಿರ್ವ್ಯಾಹೃತ-ಸಾನ್ತವವಾದೇ ಜಾತಸ್ಪೃಹಃ ಪುಣ್ಯಜನಃ ಸ ಜಿಷ್ಣೌ" ಕಿರಾಂ ೩-೩೧ | 2. ನಮಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನು. ಕೃತಾ ಆನತಿಯೇನ |

**ಕೃತಾನುಕಂಪ ಕೃತಾನುಕಂಪ** (ವಿಂ) 1. ದಯೆತೋರಿಸಿದ, ಕರುಣಿತೋರಿಸಿದ. ಕೃತಾ ಅನುಕಂಪಾ ಯೇನ | "ಕೃತಾನುಕಂಪಃ

ತ್ರಿದಶೇಷು ತೇಷು ಭೂಯೋಪಿ ಭೂತಾಧಿಪತಿರ್ಬಭಾಷೇ" ಕುಮಾಂ ೧೨-೪೩ | 2. ದಯೆತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕೃತಾ ಅನುಕಂಪಾ ಯಸ್ಯ |

**ಕೃತಾನುಕರ ಕೃತಾನುಕರ** (ವಿಂ) ಒಬ್ಬ ಮಾಡಿದುದನ್ನು ಅನುಕರಿಸುವವನು, ಒಬ್ಬ ಮಾಡಿದಂತೆ ಮಾಡುವವನು. ಕೃತಮನುಕರೋತಿ - ಅನು + ಙ್ ಕೃ (ಕರಣಂ) "ಠಃ" (೩-೨-೨೦) |

**ಕೃತಾನುಕರಣ ಕೃತಾನುಕರಣ** (ನಂ) ಒಬ್ಬ ಮಾಡಿದಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ಕೃತಸ್ಯಾನುಕರಣಮ್ | ಅನು + ಙ್ ಕೃ (ಕರಣಂ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |

**ಕೃತಾನುಕಾರ ಕೃತಾನುಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಮಾಡಿದಂತೆ ಮಾಡುವುದು, ಒಬ್ಬ ಮಾಡಿದುದನ್ನು ಅನುಕರಿಸುವುದು. ಕೃತಸ್ಯಾನುಕಾರಃ - ಅನು + ಙ್ ಕೃ (ಕರಣಂ) "ಘಃ" (೩-೩-೧೮) | (ವಿಂ) 2. ಅನುಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕೃತೋನುಕಾರೋ ಯಸ್ಯ | "ದದರ್ಶಂ ಗೋಪಾನುಪಧೇನು ಪಾಂಡವಃ ಕೃತಾನುಕಾರಾನಿವ ಗೋಭಿರಾಜಂವೇ" ಕಿರಾಂ ೪-೧೩ |

**ಕೃತಾನುಕೃತ ಕೃತಾನುಕೃತ** (ನಂ) ಒಬ್ಬ ಮಾಡಿದಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ಕೃತಸ್ಯಾನುಕೃತಮ್ |

**ಕೃತಾನುವಾಧ ಕೃತಾನುವಾಧ** (ವಿಂ) ಸಂಬಂಧಹೊಂದಿರುವ, ಬೆರೆತಿರುವ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿರುವ. ಕೃತಃ ಅನುವಾಧೋ ಯೇನ | "ಮುಖಾಮೋದಂ ಮದಿರಯಾ ಕೃತಾನುವಾಧಮುದ್ರಮನ್" ಮಾಘಂ ೨-೨೦ |

**ಕೃತಾಂತ ಕೃತಾಂತ** (ಪುಂ) 1. ಸಿದ್ಧಾಂತ, ತೀರ್ಮಾನ, ನಿರ್ಣಯ. ಕೃತೋಂತೋ ಯೇನ | 2. ವಿಧಿ, ದೈವ, ಅದೃಷ್ಟ. "ಕ್ರೂರಸ್ತಸ್ಮಿನ್ನಪಿ ನ ಸಹತೇ ಸಂಗಮಂ ನೌ ಕೃತಾಂತಃ" ಮೇಘಂ ೨-೪೨ | 3. ಯಮ. ಕೃತೋಂತೋ ನಾಶೋ ಯೇನ | "ರಜ್ಜೇವ ಪುರುಷಂ ಬಧ್ವಾ ಕೃತಾಂತಃ ಪರಿಕರ್ಷತಿ" ರಾಮಾಂ | 4. ಪಾಪ ಕಾರ್ಯ, ಅಮಂಗಳಕಾರ್ಯ. 5. ಶಿರಗ್ರಹ. "ಕೃತಾಂತೋ ಯಮಸಿದ್ಧಾಂತದೇವಾಕುಶಲಕರ್ಮಸು" ಮೇದಿಂ | 6. ಶನಿವಾರ. "ಕೃತಾಂತಕುಜಯೋರಿರಿಯಸ್ಯ ಜನ್ಮದಿನಂ ಭವೇತ್" | 7. ಭರಣೀ ನಕ್ಷತ್ರ. 8. ಎರಡು ಸಂಖ್ಯೆ.

**ಕೃತಾನ್ತ ಕೃತಾನ್ತ** (ನಂ) ಪಕ್ಕಮಾಡಿದ ಅನ್ನ ರೊಟ್ಟಿ ಲಾಡು ಹೋಳಿಗೆ ಮೊದಲಾದುವು. ಕೃತಂ ಪಕ್ವಂ ಚ ತದನ್ವಂ ಚ |

**ಕೃತಾಪರಾಧ ಕೃತಾಪರಾಧ** (ವಿಂ) ಅಪರಾಧಮಾಡಿದವನು, ತಪ್ಪುಮಾಡಿದವನು. ಕೃತೋಪರಾಧೋ ಯೇನ | "ನಾಹಂತಿ ಕೃತಾಪರಾಧೋಽಪ್ಯುತ್ಸವದಿವಸೇಷು ಪರಿಜನೋ ಬಂಧುಮ್" ಮಾಲಂ ೪-೧೬ |



**ಕೃತಾಭಿಷೇಕ ಕೃತಾಭಿಷೇಕ** (ಪುಂ) 1. ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕನಾದ ರಾಜಕುಮಾರ. ಕೃತಾಭಿಷೇಕೋ यस್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ಅಭಿಷೇಕಾ -ಅಭಿಷೇಕಾ. "ಕೃತಾಭಿಷೇಕಾ ಮಹಿಷಿ" ಅಮಂ | 3. ಸ್ನಾನ ಮಾಡಿದ. ಕೃತಾಭಿಷೇಕೋ ಯೇನ | "ಕೃತಾಭಿಷೇಕೇದಿವ್ಯಾಂ ತ್ರಿಸೋತಸಿ ಚ ಸಪ್ತಭಿಃ" ರಘುಂ ೧೦-೬೩ | "ಕೃತಾಭಿಷೇಕಾಂ ಹುತಜಾತವೇದಸಂ ತ್ವಗುತ್ತರಾಸಂಜ್ಞವತೀಮಧೀತಿನೀಮ್" ಕುಮಾಂ ೫-೧೬ |

**ಕೃತಾಭ್ಯನುಜ್ಞ ಕೃತಾಭ್ಯನುಜ್ಞ** (ವಿಂ) 1. ಅನುಮತಿಕೊಡ ಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಪ್ಪಣೆ ನೀಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕೃತಾ ಅಭ್ಯನುಜ್ಞಾ ಯಸ್ಯ | "ಭ್ರೂಸಂಜಯಾನೇನ ಕೃತಾಭ್ಯನುಜ್ಞಃ ಸುರೇಶ್ವರಂ ತಂ ಜಗದೀಶ್ವರೇಣ" ಕುಮಾಂ ೧೨-೭ | 2. ಅನುಮತಿ ಕೊಟ್ಟವನು. ಕೃತಾ ಅಭ್ಯನುಜ್ಞಾ ಯೇನ |

**ಕೃತಾಭ್ಯಾಸ ಕೃತಾಭ್ಯಾಸ** (ವಿಂ) ಅಭ್ಯಾಸಮಾಡಿದ, ಪಳಗಿದ, ಶಿಕ್ಷಣ ಪಡೆದ. ಕೃತಾಭ್ಯಾಸೋ ಯೇನ |

**ಕೃತಾರ ಕೃತಾರು** (ಪುಂ) ಹಿಮಾಲಯದ ಎತ್ತರ ಪ್ರದೇಶ ದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ ಸುಂದರವಾದ ಕೊಂಬುಗಳುಳ್ಳ ಎತ್ತಿನ ಅಕಾರದ ಬಾಲವಿಲ್ಲದ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. "ಕುಚಾರುಚಾರುಪುಚ್ಛಃ ಸ್ಯಾತ್ ಸುವಿಷಾಣೋ ವೃಷಾಕೃತಿಃ | ಕೃತಾರಸ್ತು ಸ ನಿಷ್ಪುಚ್ಛೋ ಜಾಯತೇ ಹಿಮವತ್ಪತೇ" ವೇಜಂ |

**ಕೃತಾರ್ಥ ಕೃತಾರ್ಥ** (ವಿಂ) 1. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಿದವನು, ಕರ್ತವ್ಯವನ್ನು ನೆರವೇರಿಸಿದವನು, ಮಾಡಬೇಕಾದುದನ್ನು ಮಾಡಿ ಪೂರೈಸಿದವನು. ಕೃತಾರ್ಥೋ ಯೇನ | "ಪ್ರತ್ಯಾಗತಂ ತ್ವಾಸ್ಮಿ ಕೃತಾರ್ಥಮೇವ ಸ್ತನೋಪಪಿಡಂ ಪರಿರಂಭುಕಾಮಾ" ಕಿರಾಂ ೩-೫೪ | 2. ಸಫಲವಾದ, ಫಲಹೊಂದಿದ. "ವಿಲೋಕನೇನೈವ ತವಾಮುನಾ ಮುನೇ ಕೃತಃ ಕೃತಾರ್ಥೋಽಸ್ಮಿ ನಿರ್ಬಾಹಿತಾಂಹಸಾ" ಮಾಘಂ ೧-೨೯ |

**ಕೃತಾರ್ಥತಾ ಕೃತಾರ್ಥತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಫಲನಾಗಿರುವಿಕೆ, ಫಲ ಕೈಗೊಂಡಿರುವಿಕೆ. ಕೃತಾರ್ಥಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೫-೧-೧೧೯) | "ವಿಶದೋಚ್ಚವಸಿತೇನ ಮೇದಿನಿ ಕಥಯಾಮಾಸ ಕೃತಾರ್ಥತಾಮಿವ" ರಘುಂ ೮-೩ | "ನಿರೀಕ್ಷ್ಯ ಮೇನೇ ಶರದಃ ಕೃತಾರ್ಥತಾ" ಕಿರಾಂ ೪-೩ |

**ಕೃತಾರ್ಥನ ಕೃತಾರ್ಥನ** (ವಿಂ) ಯಾಚನೆಮಾಡಿದವನು, ಬೇಡಿದವನು. ಕೃತಾ ಅರ್ಥನಾ ಯೇನ | "ಕೃತಾರ್ಥನಶ್ಚಾಡುಃಪಿ-ರಿಕ್ಷಿತೈಃ ಪುರಾ ಪರಾಸಿ ಯಃ ಕಿಂಚನಕುಂಚಿತಭ್ರುವಾ" ನೈಷಂ ೧೬-೮೮ |

**ಕೃತಾರ್ಥನೀಯ ಕೃತಾರ್ಥನೀಯ** (ವಿಂ) ಸಫಲನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ, ಪ್ರಯೋಜನವುಳ್ಳವನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡ

ಬೇಕಾದ. ಕೃತಾರ್ಥ + ತತ್ಕರೋತಿ ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | "ತೃಪಾಮಪಾಕೃತ್ಯ ಮನಾಕುರ ಸ್ಫುಟಂ ಕೃತಾರ್ಥನೀಯಃ ಕತಮಃ ಸುರೋತ್ತಮಃ" ನೈಷಂ ೯-೫೧ |

**ಕೃತಾರ್ಥಯತ್ ಕೃತಾರ್ಥಯತ್** (ವಿಂ) ಸಫಲನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡು ತ್ತಿರುವ, ಪ್ರಯೋಜನಹೊಂದಿದವನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡು ತ್ತಿರುವ. ಕೃತಾರ್ಥ + ತತ್ಕರೋತಿ ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಕೃತಾರ್ಥಯತ್ರಾರ್ಥಿಜನಾನಾರತಂ ಬಭೂವ ತಸ್ಯಾಮರಭೂಹಃ ಕರಃ" ನೈಷಂ ೧೫-೬೮ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) | -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ. "ಇಯಂ ಶಿವಾಯಾ ನಿಯತೇರಿವಾಯತಿಃ ಕೃತಾರ್ಥಯಂತಿ ಜಗತಃ ಫಲೈಃ ಕ್ರಿಯಾಃ" ಕಿರಾಂ ೪-೨೧ |

**ಕೃತಾರ್ಥೀಕರಣ ಕೃತಾರ್ಥೀಕರಣ** (ನಂ) ಸಫಲನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ಕೃತಾರ್ಥ + ಡು ಕೃ (ಕರಣಂ) "ಚಿವಃ" (೫-೪-೫೦) | ದೀರ್ಘಃ (೭-೪-೨೬) | ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) |

**ಕೃತಾರ್ಥೀಕೃತ ಕೃತಾರ್ಥೀಕೃತ** (ವಿಂ) ಸಫಲನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡ ಲ್ಪಟ್ಟ. ಕೃತಾರ್ಥ + ಡು ಕೃ (ಕರಣಂ) "ಚಿವಃ" (೫-೪-೫೦) | ದೀರ್ಘಃ (೭-೪-೨೬) | ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

**ಕೃತಾಲಯ ಕೃತಾಲಯ** (ವಿಂ) ಮನೆಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವ, ವಸತಿಯನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ. ಕೃತಃ ಅಲಯೋ ಯೇನ |

**ಕೃತಾವದಾನ ಕೃತಾವದಾನ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಸಿದ್ಧಕಾರ್ಯ ಗಳನ್ನು ಮಾಡಿರುವ, ಕೀರ್ತಿಬರುವ ಕೆಲಸಗಳನ್ನು ಮಾಡಿ ರುವ. ಕೃತಮವದಾನಂ ಯೇನ | 2. ಕೆಲಸಮಾಡಿದವನು. "ನ ತಥಾ ಕೃತವೇದಿನಾಂ ಕರಿಷ್ಯನ್ ಪ್ರಿಯತಾಮೇತಿ ಯಥಾ ಕೃತಾವದಾನಃ" ಕಿರಾಂ ೧೩-೩೨ |

**ಕೃತಾವಧಾನ ಕೃತಾವಧಾನ** (ವಿಂ) 1. ಎಚ್ಚರಿಕೆ ತೆಗೆದು ಕೊಂಡಿರುವ, ಜಾಗರೂಕನಾಗಿರುವ. ಕೃತಮವಧಾನಂ ಯೇನ | 2. ಏಕಾಗ್ರಚಿತ್ತನಾದ, ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ನೆಟ್ಟ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. "ಕೃತಾವಧಾನಂ ಜಿತಬಾಹಿಣಧ್ವನೌ ಸುರಕ್ತಗೋಪಿ-ಜನಗೀತನಿಃಸ್ವನೇ" ಕಿರಾಂ ೪-೩೩ |

**ಕೃತಾವಧಿ ಕೃತಾವಧಿ** (ವಿಂ) 1. ಅವಧಿ ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಾಯಿದೆ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಗಡು ನಿಗದಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕೃತಃ ಅವಧಿರಯಸ್ಯ | "ಅಭಿಯೋಗ ಇಮಾನ್ ಮಹಿಭುಜೋ ಭವತಾ ತಸ್ಯ ಕೃತಃ ಕೃತಾವಧಿಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೪೬ | 2. ಎಲ್ಲ ನಿಗದಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಗಡಿ ಗೊತ್ತುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಕೃತಾವಸಕ್ತಿಕ ಕೃತಾವಸಕ್ತಿಕ** (ವಿಂ) ಕಾಲ ಮಡಿಸಿ ಕೊಡು ಬೆನ್ನು ಮತ್ತು ಮಂಡಿಗಳ ಸುತ್ತಲೂ ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟಿ ಕುಳಿತುಕೊಂಡಿರುವವನು. ಕೃತಾ ಅವಸಕ್ತಿಕಾ ಯೇನ | "ಕೃತಾವಸಕ್ತಿಕಃ ಕೃತಪೃಥಜಾನುಜಙ್ಗಾವಧಃ" |



**ಕೃತಾಸ್ತ್ರ ಕೃತಾಸ್ತ್ರ** (ವಿಂ) ಬಾಣಗಳ ಸಂಧಾನ ಮತ್ತು ಪ್ರಯೋಗಗಳನ್ನು ಅಭ್ಯಾಸಮಾಡಿದವನು. ಬಾಣಪ್ರಯೋಗವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕಲಿತಿಯವನು. ಕೃತಂ ಶಿಕ್ಷಿತಮಸ್ತ್ರಂ येन । “ಕೃತಹಸ್ತಃ ಸುಹಸ್ತಶ್ಚ ಕೃತಾಸ್ತ್ರಃ ಕೃತಪುಷ್ಪಕಃ” ವೈಜಂ । “ಕೃತಾಸ್ತ್ರಾಸ್ತ್ರವಿದಾಂ ಶ್ರೇಷ್ಠಾಃ ಪರಸ್ಪರಜಯೈಷಿಣಃ” ರಾಮಾಂ ।

**ಕೃತಾಹಾರ ಕೃತಾಹಾರ** (ವಿಂ) ಆಹಾರವನ್ನು ತೆಗೆದು ಕೊಂಡ, ಊಟಮಾಡಿದ. ಕೃತಃ ಆಹಾರೋ येन । “ದೇವಾ-ದೇಶಾದೇಶ ವೈಶಂಪಾಯನಃ ಸ್ನಾತಃ ಕೃತಾಹಾರಶ್ಚ ದೇವಪಾದಮೂಲಂ ಪ್ರತಿಹಾರ್ಯಾನೀತಃ” ಕಾದಂ ।

**ಕೃತಿ ಕೃತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾರ್ಯ, ಕೆಲಸ. ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣಂ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) । “ಜಗತಾಂ ಕಾರಕಃ ಕೃಷ್ಣಃ ಕೃತಿಮುರರಿಸ್ಪೋರಿಯಮ್” । 2. ಸೃಷ್ಟಿ, ನಿರ್ಮಾಣ. “ಕೃತಿಃ ಸ್ಮರಸ್ಯೇವ ನ ಧಾತುರೇಷಾ ನಾಸ್ಯಾ ಹಿ ಶಿಲ್ಪೀತರಕಾರುಜೇಯಃ” ನೈಷಂ ೧೦-೧೩೧ । 3. ಕವಿರಚಿತವಾದ ಕಾವ್ಯ, ಪ್ರಬಂಧ. “ಭಾಸಸೌಮಿಲ್ಲಕವಿಪುತ್ರಾದೀನಾಂ ಪ್ರಬಂಧಾನತಿಕ್ರಮ್ಯ ವರ್ತಮಾನಕವೇಃ ಕಾಲಿದಾಸಸ್ಯ ಕೃತೌ ಕಥಂ ಬಹುಮಾನಃ?” ಮಾಲಂ ೧ । 4. ಇಪ್ಪತ್ತು ನೆಯ ಛಂದಸ್ಸು. “ಧೃತಿಶ್ಚಾತಿಧೃತಿಶ್ಚೇವ ಕೃತಿಃ ಪ್ರಕೃತಿರಾಕೃತಿಃ” ವೃಂ ೨೦ । 5. ಇಪ್ಪತ್ತು ಸಂಖ್ಯೆ. 6. ಹಿಂಸೆ. ಕೃಜ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) । “ಕೃತಿಃ ಕರಣಹಿಸಯೋಃ” ಮೇದಿಂ । 7. (ನಾಟಕದಲ್ಲಿ) ನಿರ್ವಹಣಸಂಧಿಯ ಒಂದು ಅಂಗ. ಮುಖ್ಯಪ್ರಯೋಜನ ಪಡೆದು ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಸ್ಥೈರ್ಯ (ನೆಮ್ಮದಿ) ಪುಂಟಾಗುವುದು ಕೃತಿ. “ಲಬ್ಧಾರ್ಥಶಮನಂ ಕೃತಿಃ” ಸಾಂ ೬೦ ೬-೧೧೧ । “ಏತೇ ಭಗವಂತೋ ವ್ಯಾಸವಾಲ್ಮೀಕಿಪ್ರಭೃತಯೋಽಭಿಷೇಕಂ ಧಾರಯಂತಸ್ತಿಷ್ಠಂತಿ” ವೇಣೀಂ ೬ । ಅನೇನ ಪ್ರಾಪ್ತರಾಜ್ಯಾಭಿಷೇಕಮಜ್ಞಲಃ ಸ್ಥಿರೀಕರಣಂ ಕೃತಿಃ” ಸಾಂ ೬೦ ೬ । 8. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. “ಯಸ್ಮಾತ್ಪ್ರಸನ್ನಾ-ತ್ಸುಕೃತಂ ತೇಷಾಂ ಸ ಕೃತಿರುಚ್ಯತೇ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । “ಅನುಕ್ತಮೋ-ದುರಾಧರ್ಷಃ ಕೃತಜಃ ಕೃತಿರಾತ್ಮವಾನ್” ವಿಂ ಸಂ । 9. ಒಬ್ಬ ಯೋಧ. “ಸಪ್ತಾಶ್ವಮೇಧಾನಾಹುತಯ ರಾಜಸೂಯಂ ಚ ಪಾರ್ಥಿವಃ ಕೃತಿರ್ನಾಮಾಚ್ಯವತ್ಸ್ವರ್ಗಾದಿಸತ್ಯವಚನಾತ್ಸಕೃತ್” ಮಾರ್ಕಂ ।

**ಕೃತಿಕರ ಕೃತಿಕರ** (ಪುಂ) 1. ಇಪ್ಪತ್ತು ಕೈಗಳುಳ್ಳ ರಾವಣ, ಕೃತಿಸಂಖ್ಯಾಃ ಕರಾ ಯಸ್ಯ । (ವಿಂ) 2. ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು. ಕೃತೇಃ ಕರಃ ।

**ಕೃತಿನ್ ಕೃತಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಕಾರ್ಯಮಾಡಿದವನು, ಕೆಲಸವನ್ನು ನಡೆಸಿದವನು. ಕೃತಮನೇನ — ಕೃತ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೮೮) । “ಕಿಮು ಚೋದಿತಾಃ ಪ್ರಿಯಹಿತಾರ್ಥಕೃತಃ ಕೃತಿನೋ ಭವಂತಿ ಸುಹೃದಃ ಸುಹೃದಾಮ್” ಮಾಘಂ ೯-೪೭ । 2. ಪುಣ್ಯ

ಶಾಲಿ, ಅದೃಷ್ಟವಂತ. “ಕರೌ ವ್ಯಾಧುನ್ವತ್ಯಾಃ ಪಿಬಸಿ ರತಿಸರ್ವಸ್ವಮಧರಂ ವಯಂ ತತ್ವಾನ್ವೇಷಾನ್ಮಧುಕರ ಹತಾಸ್ತ್ವಂ ಸ್ವಲ್ಪ ಕೃತೀ” ಶಾಕುಂ ೧-೨೧ । “ಕೃತಿನಃ ಕಾರ್ತಯುಗೇನ ಕರ್ಮಣಾ ತೇ” ಯಾದಂ ೧೪-೬೪ । 3. ಕುಶಲ. ಬುದ್ಧಿವಂತ. ಜಾಣ, ನಿಪುಣ. ಕೃತಂ ಕರ್ಮ ಪ್ರಶಸ್ತಮಸ್ಯ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪) । “ಅಯುಕ್ತಿಮುಪೇಕ್ಷತೇ ಕೃತೀ ಕುರುತೇ ತತ್ಪ್ರತಿಕಾರಮನ್ಯಥಾ” ಕಿರಾಂ ೨-೯ । 4 ಪಂಡಿತ, ಜ್ಞಾನಿ. ತಿಳಿವಳಿಕೆಯುಳ್ಳವನು. 5. ಸಮರ್ಥ. “ಆತ್ಮನಾ ಕೃತಿನಾ ಚ ತ್ವಮಾತ್ಮನೈವ ಪ್ರಲೀಯಸೇ” ಕುಮಾಂ ೨-೧೦ ।

**ಕೃತೀ - ಛೇದನೇ** (ತುಡಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಕೃಂತತಿ । ಚಕರತ್ । ಕರತೀತಾ । ಕೃಂತತು । ಅಕೃಂತತ್ । ಕೆತ್ತರಿಸು, ತುಂಡುಮಾಡು.

**ಕರ್ಮಣಿಃ**—ಕೃತ್ಯತೇ । ಕೃತ್ಯತಾಮ್ । ಅಕೃತ್ಯತ । ಅಕರತೀ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕಿಂಚಿಃ**—ಕರತಯತಿ, -ತೇ । ಅಕೀಕೃತತ್, -ತ । ಅಚ-ಕರತತ್, -ತ ।

**ಕನಿಃ**—ಚಿಕರತೀಪತಿ, ಚಿಕೃತ್ಸತಿ ।

**ಕೃತ್ಸುಃ**—ಕರತೀವ್ಯಮ್ । ಕರತೀನೀಯಮ್ । ಕೃತ್ಯಮ್ । ಕೃತಃ । ಕೃತವಾನ್ । ಕೃಂತನ್, ಕೃಂತಂತೀ । ಕರತೀತುಮ್ । ಕೃತಮ್ । ಕರತೀನಮ್ । ಕರತೀತ್ವಾ । ನಿಕೃತ್ಯ ।

**ಕೃತೀ - ವೇಷ್ಠನೇ** (ರುಢಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಕೃಣತಿ ಕೃಂತಃ ಕೃಂತಂತಿ । ಚಕರತ್ । ಕೃಣತು । ಅಕೃಣತ್ । ಕೃಂತಯಾತ್ । ಅವರಿಸು, ಸುತ್ತುಗಟ್ಟು. ಉಳಿದೆಲ್ಲ ರೂಪಗಳೂ ತುಡಾಂ ಕೃತೀ ಧಾತುವಿನಂತೆ ಆಗುವವು.

**ಕೃತೇ ಕೃತೇ** (ಅವ್ಯಂ) ನಿಮಿತ್ತಾರ್ಥಕವಾದ ಒಂದು ಅವ್ಯಯ. -ಹಿಸ್ಕರ. ಅದಕ್ಕಾಗಿ, ಅದಕ್ಕೋಸ್ಕರ. ರಾಜಃ ಕೃತೇ ರಾಜನಿಗೋಸ್ಕರ. ಪ್ರಾಣಿನಾಂ ಕೃತೇ ಪ್ರಾಣಿಗಳಿಗೋಸ್ಕರ. “ಕೃತೇ ಕಾನಿಠಿಣೀಯಸ್ಯ ಜ್ಯೇಷ್ಠಿಣೀಯಂ ವಿವಾಸಿತಮ್” ಭट्टಿಂ ೪-೮೪ ।

**ಕೃತ ಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ಕೆತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತುಂಡುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕೃತೀ (ಛೇದನೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । “ಕೃತಃ ಕೀರ್ಣಾ ಮಹೀ ರೇಜೇ ದಂತಗಾತ್ರೈಶ್ಚ ದಂತಿನಾಮ್” ಮಾಘಂ ೧೯-೮೧ । 2. ಸುತ್ತುವರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಳಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಕೃತಂ ಕ್ಷಿಣ್ಣೇ ವೇಷ್ಠಿತೇ ಚ” ಹೇಮಂ ।

**ಕೃತವತ್ ಕೃತವತ್** (ವಿಂ) 1. ಕೆತ್ತರಿಸಿದವನು, ತುಂಡು ಮಾಡಿದವನು. ಕೃತೀ (ಛೇದನೇ) “ಕ್ತವತುಃ” (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಸುತ್ತುಗಟ್ಟಿದವನು. ಕೃತೀ (ವೇಷ್ಠನೇ) “ಕ್ತವತುಃ” (೩-೨-೧೦೨) ।



**ಕೃತಿ ಕೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಜಿಂಕೆ ಹುಲಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಚರ್ಮ. ಕೃತ್ಯತೇ—ಕೃತಿ (ಛೇದನೆ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪)। 2. ಚರ್ಮ, ತೊಗಲು. “ಕ್ಷಣಂ ಕ್ಷಣೋತ್ಕ್ರಿಸ್ತಗಜೇಂದ್ರಕೃತ್ತಿನಾ ಸ್ಫುಟೋಪಮಂ ಭೂತಿಸಿತೇನ ಶಂಭುನಾ” ಮಾಘಂ ೧-೪। 3. ಭುಜ ಪತ್ರ, ಗಿಡ. 4. ಕೃತ್ತಿಕಾನಕ್ಷತ್ರ. 5. ಮನೆ, ವಾಸಸ್ಥಳ. “ಕೃತ್ತಿಶ್ಚರ್ಮತ್ವಚೋರ್ಮಜೇ ಕೃತ್ತಿಕಾಯಾಂ ದ್ವಯಂ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” ಮೇದಿಂ।

**ಕೃತ್ತಿಕಾ ಕೃತ್ತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಚಂದ್ರನನ್ನು ಮದುವೆಯಾದ ದಕ್ಷಸುತೆಯರಾದ ಅಶ್ವಿನೀ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಮೂರನೆಯದು. ಕೃತ್ತಿಕಾನಕ್ಷತ್ರವು ಬಂಡಿ ಯಾಕಾರದ ಆರು ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಒಂದು ಪುಂಜ. ಈ ಆರು ನಕ್ಷತ್ರಗಳೇ ಆರು ಕೃತ್ತಿಕಾದೇವತೆಗಳು. ಈ ನಕ್ಷತ್ರವು ಅಗ್ನಿದೇವತಾಕವಾದುದು. ಇದರ ಮೊದಲನೆಯ ಪಾದವು ಮೇಷರಾಶಿಗೂ ಉಳಿದ ಮೂರು ಪಾದಗಳು ವೃಷಭ ರಾಶಿಗೂ ಸೇರಿದುವು. ಇದು ರಾಕ್ಷಸ ಗಣಕ್ಕೂ ಅಜ (ಅಡು) ಯೋನಿಗೂ ಸೇರಿದುದು. ಈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವರಿಗೆ ಸೂರ್ಯದಶೆಯು ಪ್ರಾರಂಭವಾಗುವುದು. ಈ ದಶೆಯ ಪ್ರಮಾಣ ಆರು ವರ್ಷಗಳು. ಸ್ಕಂದ ಕುಮಾರನಿಗೆ ಸ್ತನ್ಯಪಾನ ಮಾಡಿಸಲು ಇಂದ್ರಾದಿ ದೇವತೆ ಗಳು ಈ ಆರು ಕೃತ್ತಿಕಾದೇವತೆಗಳನ್ನು ಕಳುಹಿಸಿದರು. ಕುಮಾರನು ಆರು ಮುಖಗಳಿಂದ ಇವರಲ್ಲಿ ಸ್ತನ್ಯಪಾನ ಮಾಡಿದುದರಿಂದ “ಷಣ್ಮುಖ”ನೆಂದೂ ಕೃತ್ತಿಕಾ ದೇವತೆ ಗಳು ಒಂದು ಪೋಷಿಸಿದುದರಿಂದ “ಕಾರ್ತಿಕೇಯ” ನೆಂದೂ ಹೆಸರಾಯಿತು. “ಪ್ರಾಪ್ಯಾಕೃತ್ತಿ ಕಾಮಪಿ ಷಡ್ಭಿರೇತೃ ನಿಷೇವ್ಯಮಾಣಃ ಖಲ್ವ ಕೃತ್ತಿಕಾಭಿಃ” ಕುಮಾಂ ೧೧-೨। ತಾವು ಸ್ತನ್ಯಪಾನಮಾಡಿಸಿ ಪೋಷಿಸಿದುದರಿಂದ ತಮ್ಮ ಮಗ ನೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಬರಬೇಕೆಂದು ಕೇಳಿಕೊಂಡುದರಿಂದ ಕಾರ್ತಿಕೇಯನೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಯಾಯಿತು. “ತಂ ಕುಮಾರಂ ತತೋ ಜಾತಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಸೇಂದ್ರಾ ಮರುದ್ಗಣಾಃ। ತದಾ ಕ್ಷೀರಪ್ರದಾನಾರ್ಥ ಕೃತ್ತಿಕಾಃ ಸಂನಿಯೋಜಯನ್। ತಾಃ ಕ್ಷೀರಂ ತಸ್ಯ ದೇವಸ್ಯ ಸಮಯೇನ ದದುಸ್ತದಾ। ಸ್ಯಾದಸ್ಮಾಕಮಯಂ ಪುತ್ರಃ ಖ್ಯಾತೋ ನಾಮ್ನೇತಿ ರಾಘವ। ಅನ್ಯೋನ್ಯಂ ಪಿಬತಸ್ತಾಸಾಂ ತನಯಸ್ಯ ಮುಖಾನಿ ಷಡ್। ಸಮಭೂವನ್ ಮಹಾಬಾಹೋ ಷಣ್ಮುಖಸ್ತೇನ ವಿಶ್ರುತಃ। ತತಸ್ತಾ ದೇವತಾ ಋಚುಃ ಕಾರ್ತಿಕೇಯ ಇತಿ ಪ್ರಭುಃ। ಪುತ್ರೋಽಯಂ ಜಗತಿ ಖ್ಯಾತೋ ಭವಿಷ್ಯತಿ ನ ಸಂಶಯಃ” ರಾಮಾಂ ಬಾಲಂ।

**ಕೃತ್ತಿವಾಸ ಕೃತ್ತಿವಾಸ (ಪುಂ)** ಮಹಾದೇವ, ಗಜಚರ್ಮ ವನ್ನು ಧರಿಸಿದ ಪರಮೇಶ್ವರ. ಕೃತ್ತಿ ಗಜಚರ್ಮ ವಸ್ತು—ವಸ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) “ಅಣ್” (೩-೨-೧)।

**ಕೃತ್ತಿವಾಸಸ್ ಕೃತ್ತಿವಾಸಸ್ (ಪುಂ)** ಗಜಚರ್ಮವೇ ವಸ್ತ್ರ ವಾಗಿಉಳ್ಳ ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಶಿವ. ಕೃತ್ತಿಃ ವಾಸೋ ಯಸ್ಯ।

[ಮಹಿಷಾಸುರನ ಮಗನಾದ ಗಜಾಸುರನು ಉಗ್ರ ತಪಸ್ಸು ಮಾಡಿ ಪರಮೇಶ್ವರನನ್ನು ಮೆಚ್ಚಿಸಿ ವರವನ್ನು ಪಡೆದು ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಖೇಡಿಸತೊಡಗಿದನು. ಇವನ ಬಾಧೆಯನ್ನು ತಡೆಯಲಾರದ ದೇವತೆಗಳು ಪರಮೇಶ್ವರನಲ್ಲಿ ಮೊರೆ ಯಿಟ್ಟರು. ಪರಶಿವನು ಈ ಅಸುರನನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲು ಬಂದಾಗ ಅಸುರನು “ನಿನ್ನಿಂದಲೇ ನಾನು ಸಾಯಬೇಕೆಂದು ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಖೇಡಿಸಿದೆನು. ನನ್ನನ್ನು ಕೊಂದು ನನ್ನ ಚರ್ಮವನ್ನು ನೀನು ಧರಿಸಿ ‘ಕೃತ್ತಿವಾಸಸ್’ ಎಂಬ ಹೆಸರನ್ನು ಹೊಂದಬೇಕು” ಎಂದು ಕೇಳಿಕೊಳ್ಳಲು ಈಶ್ವರನು ಅವನನ್ನು ಕೊಂದು ಗಜಚರ್ಮಧಾರಿಯಾದನು.] ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ। “एकैश्वर्ये स्थितोऽपि प्रणतबहुफले यः स्वयं कृत्तिवासाः कान्तासंमिश्रदेहोऽप्यविषयमनसां यः परस्ताद्यतीनाम्” मालं १-१।

**ಕೃತ್ತಿವಾಸೇಶ್ವರ ಕೃತ್ತಿವಾಸೇಶ್ವರ (ಪುಂ)** ಕಾಶಿಯಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಶಿವಲಿಂಗ.

**ಕೃತ್ ಕೃತ್ (ಪುಂ)** 1. ಶಿಲ್ಪಿ, ಚಿತ್ರಗಾರ. ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣ) “ಕ್ರುಃ” (೩-೩-೩೦)। 2. ದಕ್ಷ, ಸಮರ್ಥ. 3. ಜಾಣ, ಕುಶಲ.

**ಕೃತ್ಯ ಕೃತ್ಯ (ನಂ)** 1. ಕಾರ್ಯ, ಕೆಲಸ. ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣ) “ಕೃಪ್” (೩-೧-೧೧೦)। 2. (ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ) ತವ್ಯ, ಅನೀಯರ್, ಯತ್, ಕೃಪ್, ಏತ್ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು. “ಕೃತ್ಯಾಃ” ಪಾಂ ಸುಂ ೩-೧-೯೫। 3. ಕರ್ತವ್ಯ, ಅವಶ್ಯ ವಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯ, ವೇದವಿಹಿತ ಕರ್ಮಾ ಚರಣ. (ವಿಂ) 4. ಕುಪಿತನಾದ, ಕೋಪಗೊಂಡ. “ಕೃತ್ಯಾ ಕ್ರಿಯಾದೇವತಯೋಃ ಕಾರ್ಯೇ ಕಲಿ ಕುಪಿತೇ ತ್ರಿಘ್ನು” ವೈಜಂ।

**ಕೃತ್ಯಜ ಕೃತ್ಯಜ್ಜ (ವಿಂ)** ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದುದನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ, ಕರ್ತವ್ಯವನ್ನು ಅರಿತಿರುವ. ಕೃತ್ಯಂ ಜಾನಾತಿ — ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) “ಕಃ” (೩-೨-೩)।

**ಕೃತ್ಯವತ್ ಕೃತ್ಯವತ್ (ವಿಂ)** ಕಾರ್ಯವುಳ್ಳವನು, ಅವಶ್ಯ ವಾದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು. ಕೃತ್ಯಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್” (೫-೨-೯೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)। -ವತೀ -ವತೀಃ

**ಕೃತ್ಯವತ್ಸನ್ ಕೃತ್ಯವತ್ಸನ್ (ನಂ)** ಕಾರ್ಯವಿಧಾನ ಮಾರ್ಗ, ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಸಾಧಿಸುವ ಉಪಾಯ, ಕಾರ್ಯ ವನ್ನು ನಡೆಸುವ ರೀತಿ. ಕೃತ್ಯಸ್ಯ ವತ್ಸಮ್। “ಸ ತು ತತ್ರ ವಿಶೇಷದುರ್ಲಭಃ ಸದ್ಗುಣಸ್ಯಸ್ಯತಿ ಕೃತ್ಯವತ್ಸಮ್ ಯಃ” ಕಿರಾಂ ೨-೩।

**ಕೃತ್ಯವಸ್ತು ಕೃತ್ಯವಸ್ತು (ನಂ)** ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಕೆಲಸ. ಕೃತ್ಯಸ್ಯ ವಸ್ತು। “ಶಾಸನೇಽಪಿ ಗುರುಣಿ ವ್ಯವಸ್ಥಿತಂ ಕೃತ್ಯವಸ್ತುಃ ನಿಯುಕ್ತವ್ ಕಾಮತಃ” ಮಾಘಂ ೧೪-೧೫।



ಕೃತ್ಯವಿದ್ ಕೃತ್ಯವಿದ್ (ವಿಂ) ಕೆಲಸವನ್ನು ಬಲ್ಲವನು, ಕಾರ್ಯದ ವಿಧಾನವನ್ನು ಅರಿತಿರುವವನು. ಕೃತ್ಯಂ ವೇತ್ತಿ — ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೬೧)। “ಕೃತ್ವಾ ಕೃತ್ಯವಿದ-ಸ್ತೀರ್ಣವಂತಃ ಪ್ರಣಿಧಯಃ ಪದಮ್” ಮಾಘಂ ೨-೧೧೧।

ಕೃತ್ಯಾ ಕೃತ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾರ್ಯ, ಕೆಲಸ. 2. ಅಭಿಜಾರಿಕ ಕಾರ್ಯದ ದೇವತೆ, ಶೂನ್ಯದೇವತೆ, ಮಾಟದ ಬೊಂಬೆ. ದ್ವೇಷಿಗಳು ಯಾರನ್ನಾದರೂ ನಾಶಪಡಿಸಬೇಕಾದರೆ ಮಾಟಮಾಡಿಸಿ ಶೂನ್ಯದೇವತೆ (ಮಾಟದ ಬೊಂಬೆ) ಯನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸುವರು. ಸಂಬಂಧಪಟ್ಟವರು ಅದರಿಂದ ಬಹಳ ಕಷ್ಟನಷ್ಟಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸಬೇಕಾಗಬಹುದು. ತಕ್ಕ ಪ್ರತೀಕಾರ ನಡೆಸಿ ಅದರಿಂದ ಪಾರಾಗಲೂ ಬಹುದು. “ಕೃತ್ಯಾ ಕ್ರಿಯಾ ದೇವತಯೋಃ” ವೈಜಂ।

ಕೃತ್ಯಾಕೃತ್ಯ ಕೃತ್ಯಾಕೃತ್ಯ (ನಂ) ಮಾಡಬೇಕಾದ ಮತ್ತು ಮಾಡಬಾರದ ಕೆಲಸ. ಕೃತ್ಯಂ ಚ ಅಕೃತ್ಯಂ ಚ ಅನಯೋಃ ಸಮಾಹಾರಃ।

ಕೃತ್ರಿಮ ಕೃತ್ರಿಮ (ಪುಂ) 1. ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಪುತ್ರರಲ್ಲೊಬ್ಬ; ತಾಯಿತಂದೆಗಳ ಐಹಿಕ-ಪಾರಲೌಕಿಕಹಿತಾಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನಾಗಿ ಪುತ್ರನ ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದವನು ಕೃತ್ರಿಮ ಪುತ್ರನು. “ಸದೃಶಂ ತು ಪ್ರಕುರ್ಯಾಚಿ ಗುಣದೋಷವಿಚಕ್ಷಣಮ್। ಪುತ್ರಂ ಪುತ್ರಗುಣೈರ್ಯುಕ್ತಂ ಸ ವಿಜೇಯಶ್ಚ ಕೃತ್ರಿಮಃ” ಮನುಂ ೯-೧೬೯। (1) ಔರಸಃ, (2) ಶ್ವೇತಜಃ, (3) ದತ್ತಃ, (4) ಕೃತ್ರಿಮಃ, (5) ಗೃಹೋತ್ಪನ್ನಃ, (6) ಅಪವಿಡ್ಧಃ, (7) ಕಾನೀನಃ, (8) ಸಹೋದಃ, (9) ಕ್ರಿತಿಃ, (10) ಪೌನರ್ಭವಃ, (11) ಸ್ವಯಂದತ್ತಃ ಮತ್ತು (12) ಶೌದ್ರಃ ಇವರು ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಪುತ್ರರು (ಮಕ್ಕಳು). (ನಂ) 2. ವಿಡ್ಲವಣ. 3. ಕಾಚಲವಣ. 4. ರಸಾಂಜನ, (ವಿಂ) 5. ಕಾರ್ಯದಿಂದ ಉಂಟಾದ, ಉಪಾಧಿಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ, ಅಸ್ವಾಭಾವಿಕವಾದ. ಕೃತ್ಯಾ ನಿರ್ವೃತ್ತಮ್ — ತು ಕೃಜ್ (ಕರಣೇ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೩-೮೮)। “ಮಪ್” (೪-೪-೨೦)। “ಸಖಾ ಗರಿಯಾನ್ ಶತ್ರುಶ್ಚ ಕೃತ್ರಿಮಸ್ತೌ ಹಿ ಕಾರ್ಯತಃ” ಮಾಘಂ ೨-೩೬।

ಕೃತ್ರಿಮಪುತ್ರ ಕೃತ್ರಿಮಪುತ್ರ (ಪುಂ) ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಪುತ್ರರಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕನೆಯವನು. ಕೃತ್ರಿಮಶ್ಚಾಸೌ ಪುತ್ರಶ್ಚ। [“ಕೃತ್ರಿಮ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕಃ” — ಪುತ್ರಕಃ — ಪುತ್ರಕಃ. ಪುತ್ರಕಃ, ಬಟ್ಟೆಯಿಂದ ಮಾಡಿದ ಬೊಂಬೆ. “ಮಂದಾಕಿನಿ-ಸೈಕತವೇದಿಕಾಭಿಃ ಸಾ ಕಂದುಕೈಃ ಕೃತ್ರಿಮಪುತ್ರಕೈಶ್ಚ” ಕುಮಾಂ ೧-೨೯।

ಕೃತ್ಯಾ ಕೃತ್ಯಾ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಮಾಡಿ. ನಿರ್ಮಿಸಿ. ರಚಿಸಿ, ಸೃಷ್ಟಿಸಿ, ತು ಕೃಜ್ (ಕರಣೇ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೪-೨೧)।

“ಕೃತ್ವಾ ದೃಶೌ ತೇ ಬಹುವರ್ಣಾಚಿತ್ರೇ ಕಿಂ ಕೃಷ್ಣಸಾರಸ್ಯ ತಯೋರ್ಮೃಗಸ್ಯ” ನೈಷಂ ೮-೩೮। 2. ಹಿಂಸಿಸಿ, ಪೀಡಿಸಿ, ತೊಂದರೆ ಪಡಿಸಿ. ಕೃಜ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೪-೨೧)।

ಕೃತ್ಸನ ಕೃತ್ಸನ (ನಂ) 1. ಜಲ, ನೀರು. 2. ಉದರ, ಹೊಟ್ಟೆ. ಕೃತೀ (ಛೇದನೇ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೩-೧೭)। (ವಿಂ) 3. ಎಲ್ಲಾ, ಸಮಸ್ತ, ಸಕಲ, ಸಂಪೂರ್ಣ. “ಕೃತ್ಸನಾಪಿ ಸಾ ತವ ಕ್ವಾ ವಿಜಿತಶ್ಚಿ ಯಸ್ಯಾಃ” ನೈಷಂ ೧೧-೮೬।

ಕೃತ್ಸನವಿದ್ ಕೃತ್ಸನವಿದ್ (ವಿಂ) ಸರ್ವಜ್ಞ, ಸಕಲವನ್ನೂ ತಿಳಿದವನು, ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಬಲ್ಲವನು. ಕೃತ್ಸನಂ ವೇತ್ತಿ — ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೬೧)। “ತಾನಕೃತ್ಸನವಿದೋ ಮಂದಾನ್ ಕೃತ್ಸನವಿಘ್ನ ವಿಚಾಲಯೇತ್” ಗೀತಾ ೩-೨೯।

ಕೃದಂತ ಕೃದಂತ (ಪುಂ) ಧಾತುವಿಗೆ ಕೃತ್ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸುವುದರಿಂದ ನಿಷ್ಪನ್ನವಾದ ಶಬ್ದ. ಕೃತ್ ಅಂತೇ ಯಸ್ಯ।

ಕೃದರ ಕೃದರ (ಪುಂ) 1. ಕಣಜ, ಉಗ್ರಾಣ. 2. ಗೃಹ, ಮನೆ. ಕೃ + ರ್ (ವಿದಾರಣ) “ಅರಃ” (೩-೪-೪೧)। ನಿಪಾಂ।

ಕೃದತ್ತ ಕೃದತ್ತ (ನಂ) ಲಾಂಗಲ, ನೇಗಿಲು. ಕೃತೀ (ಛೇದನೇ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೩-೧೦೯)।

ಕೃದಂತನ ಕೃದಂತನ (ನಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸುವುದು, ತುಂಡುಮಾಡುವುದು. ಕೃತೀ (ಛೇದನೇ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪)। ಮುಮ್ ಬಾಹುಂ। “ಕೃದಂತನಂ ನಖಕೇಶಾನಾಂ ಛೇದನಂ ಚ ವನಸ್ಪತೇಃ। ಶಾಖಾಶೌಚೇ ನ ಕರ್ತವ್ಯಂ ಪಠನಂ ಪಾಠನಂ ತಥಾ” ನಾರದಃ। (ವಿಂ) 2. ಕತ್ತರಿಸುವವನು, ತುಂಡುಮಾಡುವವನು. ಕೃತೀ ಕರ್ತಂ “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪)। 3. ಕತ್ತರಿಸುವ ಸಾಧನ. ಕೃತೀ ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೧೪)। —ನಿ-೨೬.

ಕೃಪ ಕೃಪ (ಪುಂ) ಕೃಪಾಚಾರ್ಯ, ಅಶ್ವತ್ಥಾಮನ ಸೋದರಮಾವ, ಗೌತಮವಂಶದ ಶಾರದ್ವತಮುಷಿಯ ಮಗ. ಈ ಅಚಾರ್ಯರು ಏಳು ಮಂದಿ ಚರಂಜೀವಿಗಳ ಲ್ಲೊಬ್ಬರು. “ಅಶ್ವತ್ಥಾಮಾ ಬಲಿವ್ಯಾಸೋ ಹನುಮಾಶ್ಚ ವಿಭೀಷಣಃ। ಕೃಪಃ ಪರಶುರಾಮಶ್ಚ ಸಪ್ತೇತಿ ಚಿರಜೀವಿನಃ”। [ಶಾರದ್ವತಮುಷಿಯು ತಪಸ್ಸಿನಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಅವರ ತಪೋ ಭಂಗಕ್ಕಾಗಿ ಇಂದ್ರನಿಂದ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸನ್ನು ಕಂಡು ಮೋಹಗೊಂಡುದರಿಂದ ಅವರ ವೀರ್ಯಸ್ಥಲನವಾಗಿ ಅದನ್ನು ಒಂದು ಜೊಂಡುವನದಲ್ಲಿ ಬಿಟ್ಟರು. ಅದರಿಂದ ಒಂದು ಗಂಡು ಮತ್ತು ಒಂದು ಹೆಣ್ಣು ಶಿಶುಗಳು ಹುಟ್ಟಿದುವು. ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಬೇಟೆಗೆ ಬಂದಿದ್ದ ಶಂತನು



ರಾಜನು ಈ ಶಿಶುಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಬಂದು ಕೃಪೆಯಿಂದ ಸಲಹಿದುದರಿಂದ ಕೃಪ ಮತ್ತು ಕೃಪಿಯೆಂದು ಹೆಸರಿಟ್ಟನು. ಬಳಿಕ ಶಾರದ್ವತಮುಷಿಯು ಬಂದು ತನ್ನ ಮಕ್ಕಳೆಂದು ಹೇಳಿ ಕರೆದುಕೊಂಡು ಹೋಗಿ ಕೃಪನಿಗೆ ಧನುರ್ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸಮಾಡಿಸಿದರು. ಬಳಿಕ ಕೃಪಾಚಾರ್ಯರು ಕೌರವ ಪಾಂಡವರಿಗೆ ಧನುರ್ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿಸಿದರು. ಇವರು ರುದ್ರಾಂಶಸಂಭೂತರು. "ಯಸ್ತು ಸಾಜನ್ ಕೃಪೋ ನಾಮ ಬ್ರಹ್ಮಾಣಿರಮವತ್ ಕ್ಷಿತೌ | ರುದ್ರಾಣಾಂತು ಗಣಾದ್ವಿಧಿ ಸಂಭೂತ-ಮಮಿತೌಜಸಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೩೭-೭೭ | ಕೃಪಿಯನ್ನು ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರು ಮದುವೆಯಾದರು. ಕೃಪಾಚಾರ್ಯರು ಕೌರವರ ಪಕ್ಷ ಸೇರಿ ಪಾಂಡವರೊಡನೆ ಯುದ್ಧಮಾಡಿ ಅರ್ಜುನನಿಂದ ಪರಾಜಿತರಾದರು.]

**ಕೃಪಣ ಕೃಪಣ** (ಪುಂ) 1. ಕೃಮಿ, ಹುಳು. ಕೃಪ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) "ಕೃಪುನ್" ಬಾಹುಂ | (ವಿಂ) 2. ಲೋಭಿ, ಜಿಪುಣ. "ಕೃಪಣೇನ ಸಮೋ ದಾತಾ ನ ಕಶ್ಚಿದ್ಭುವಿ ಜಾಯತೇ | ಅನನ್ಯನೇವ ವಿದ್ವಾನ್ ಯಃ ಪರೇಮ್ಯಃ ಪ್ರಯಚ್ಛತಿ" | 3. ವಿವೇಕಶೂನ್ಯ, ಮನೋಬಲವಿಲ್ಲದವನು. "ಕಾಮಾರ್ತಾ ಹಿ ಪ್ರಕೃತಿಕೃಪಣಾ-ಶ್ಚೇತನಾಚೇತನೇಷು" ಮೇಘಂ ೧-೫ | 4. ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. "ತತಃ ಸ ಪುರುಷವ್ಯಾಘ್ರಸ್ತದ್ಧನಂ ಸಹಲಕ್ಷ್ಮಣಃ | ದ್ವಿಜೇಮ್ಯೋ ಬಾಲವೃದ್ಧೇಮ್ಯಃ ಕೃಪಣೇಮ್ಯೋ ಹೃದಾಪಯತ್" ರಾಮಾಂ | 5. ದೀನ, ಮೊದಲ ಕಷ್ಟದಲ್ಲಿ ಸಿಕ್ಕಿರುವವನು, ದುಃಖವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿರುವವನು. "ರಾಜನೃಪತ್ಯಂ ರಾಮಸ್ತೇ ಪಾಲ್ಯಾಶ್ಚ ಕೃಪಣಾ ಜನಾಃ" ಉಂ ರಾಂ ೪-೨೫ | 6. ನೀಚ, ಕೆಟ್ಟವನು. "ಕಿಂತ್ವಜ್ಞೀಕೃತಮುತ್ಸೃಜನ್ ಕೃಪಣವತ್ ಶ್ಲಾಘ್ಯೋ ಜನೋ ಲಜ್ಜತೇ ನಿರ್ವಾಹಃ ಪ್ರತಿಪನ್ನವಸ್ತುಷು ಸತಾಮೇತದ್ವಿ ಗೋತ್ರವ್ರತಮ್" ಮುಡ್ರಾಂ ೨-೧೮ | 7. ದಯನೀಯ, ದಯೆತೋರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯ ನಾದ. "ಕೃಪಾಶ್ರಯೇ ಯಃ ಕೃಪಣೇ ಪತತ್ರಣಿ" ನೈಷಂ ೧-೧೩೨ | 8. ಪಶುವಿನಂತೆ ಇತರರ ಸೇವೆಮಾಡುವವನು, ಆತ್ಮ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿಯದೆ ಇತರರಿಗಾಗಿಯೇ ಜೀವಿಸಿರುವವನು.

ಆತ್ಮಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದವರು ಈ ಲೋಕದಲ್ಲಿ ದೇವತೆಗಳಿಗಾಗಿ ಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನಮಾಡುತ್ತ ದಾಸರಾಗಿರುತ್ತಾರೆ. ಈ ಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನದಿಂದ ಸ್ವರ್ಗಪ್ರಾಪ್ತಿಯಾದರೂ ಅಲ್ಲೂ ಇವರು ದೇವತೆಗಳ ಭೋಗಸಾಮಗ್ರಿಗಳಾಗಿರುತ್ತಾರೆ. "ಏತದಕ್ಷರಂ ಗಾರ್ಗ್ಯ ವಿದಿತ್ವಾಽಸ್ಮಾಲ್ಲೋಕಾತ್ ಪ್ರೇತಿ, ಸಕೃಪಣಃ" ಬೃಹದಾಂ | ಕೃಪಣಃ ಪರಿಕ್ರೀತ ಇವ ದಾಸಾದಿಃ ಭಾಷ್ಯಮ್ |

**ಕೃಪಣತ್ವ ಕೃಪಣತ್ವ** (ನಂ) 1. ಲೋಭಿತನ, ಕಾರ್ಪಣ್ಯ, ಜಿಪುಣತನ. ಕೃಪಣಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತ್ವಃ" (೫-೧-೧೧೯) |

2. ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ಬಡತನ. 3. ನೀಚತನ. 4. ಅಜ್ಞಾನಿ ಯಾಗಿರುವಿಕೆ, ತಿಳಿಗೇಡಿತನ.

**ಕೃಪಣಿನ್ ಕೃಪಣಿನ್** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ಲೋಭಿಗಳುಳ್ಳ ದೇಶ, ಜಿಪುಣರಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇಶ. ಕೃಪಣಾಃ ಸಂತ್ಯತ್ರ ದೇಶಃ | "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೩೧) |

**ಕೃಪಾ ಕೃಪಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಯೆ, ಕನಿಕರ, ಕಷ್ಟವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸಿ ಹಿತವನ್ನು ಮಾಡುವ ಬುದ್ಧಿ, ಮರುಕ. ಕೃಪ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) "ಅಙ್" (೩-೩-೧೦೪) | "ಕೃಪಾ ನೃಪಾಣಾಮುಪರಿ ಕ್ವಚಿನ್ನ ತೇ ನತೇನ ಹಾ ಹಾ ಶಿರಸಾ ರಸಾದೃಶಾಮ್" ನೈಷಂ ೧೨-೪೩ | 2. ಅನುಗ್ರಹಿಸುವ ಇಚ್ಛೆ. "ತಪಃಫಲತ್ವೇನ ಹರೇಃ ಕೃಪೆಯಮಿಮಂ ತಪಸ್ಯೇವ ಜನಂ ನಿಯುಕ್ತೇ" ನೈಷಂ ೬-೯೩ |

**ಕೃಪಾಕರ ಕೃಪಾಕರ** (ವಿಂ) ದಯೆತೋರಿಸುವ, ಕನಿಕರ ಪಡುವ. ಕೃಪಾಃ ಕರಃ |

**ಕೃಪಾಮಯ ಕೃಪಾಮಯ** (ವಿಂ) ದಯೆಯಿಂದ ತುಂಬಿದ, ಕನಿಕರದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕೃಪಾಃ ಪ್ರಚುರಃ "ಮಯತ್" (೫-೪-೨೧) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | -ಮಯಿ -ಮಯಿ. "ಅಥಾನ್ಯಮುದ್ವಿಷ್ಯ ನೃಪಂ ಕೃಪಾಮಯಿ ಮುಖೇನ ತದ್ವಿಡ್‌ಮುಖಸಮುಖೇನ ಸಾ" ನೈಷಂ ೧೨-೫೨ |

**ಕೃಪಾಣ ಕೃಪಾಣ** (ಪುಂ) 1. ಖಡ್ಗ, ದೊಡ್ಡ ಕತ್ತಿ. ಕೃಪಾಂ ನುದತಿ - ಣುದ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಙ್" (೩-೨-೧೦೧) | "ದೇವಾಽದಾ ಪ್ರವಿತರಂತಿ ನ ತೇ ತದೇವ ನೇದಂ ಕೃಪಾ ನಿಜಕೃಪಾಣಕರಗ್ರಹಾಯ" ನೈಷಂ ೧೧-೧೨೬ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಣೀ -ಣೀ. 2. ಚಾಕು, ಸಣ್ಣ ಕತ್ತಿ. 3. ಕತ್ತರಿ. "ಕೃಪಾಣಃ ಸ್ವಲ್ಪಗೋ ಛುರಿಕಾಕರ್ತ-ಯೋರಪಿ ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ | ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ" | ಕೃಪಾಣಕಃ ಕೃಪಾಣಕಃ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಟಾಪ್" | ಕೃಪಾಣಿಕಾ ಕೃಪಾಣಿಕಾ. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. "ಕೃಪಾಣಿಕಾಃ ಕುಕುರಾಃ ಕಮ್ಪಿತಾಃ-ರಕಮ್ಪಯನ್" ಯಾದಂ ೨೨-೧೩೪ |

**ಕೃಪಾಲು ಕೃಪಾಲು** (ವಿಂ) ದಯಾಶೀಲ, ಕನಿಕರವುಳ್ಳವನು. ಕೃಪಾಂ ಲಾತಿ - ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಙ್" (ವಾಂ ೩-೨-೧೮೦) |

**ಕೃಪಿ ಕೃಪಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಾರದ್ವತಮುಷಿಯ ಮಗಳು, ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರ ಹೆಂಡತಿ, ಅಶ್ವತ್ಥಾಮನ ತಾಯಿ. ["ಕೃಪ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕೃಪಿಟ ಕೃಪಿಟಿ** (ನಂ) 1. ಉದರ, ಹೊಟ್ಟೆ. 2. ಜಲ, ನೀರು. ಕೃಪ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) "ಕೀಡನ್" (ಉಂ ೪-೧೬೪) | "ಕೃಪಿಟಂ ಕುಕ್ಷಿವಾರಿಣಿಃ" ಸಿಂ ಕೌಂ | "ಕೃಪಿಟಂ ಚೋದರೆ ಜಲೇ" ಹೇಮಂ | 3. ಸೌದೆ. 4. ಅರಣ್ಯ, ಕಾಡು.

**ಕೃಪಿಟಪಾಲ ಕೃಪಿಟಪಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಕೃಪಿಟಂ ಪಾಲಯತಿ - ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಅಙ್" (೩-೨-೧) |



2. ದೋಷ ನಡೆಸುವ ಹುಟ್ಟುಗೋಲು. "ಕೃಪಿಡಪಾಲ  
ಉದಿಷ್ಟ: ಕೇನಿಪಾತಸಮುದ್ರಯೋ:" ಮೇದಿಂ. 3. ವಾಯು,  
ಗಾಳಿ.

**ಕೃಪಿಡಯೋನಿ** ಕೃಪಿಟಯೋನಿ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ.  
ಕೃಪಿಡಸ್ಯ ಜಲಸ್ಯ ಯೋನಿ: "ಕಿಂಚಿತ್ಕೃಪಿಡಯೋನಿ ತಂ  
ದಿವಸ್ಪತಿರಭಾಷತ" ಕುಮಾರಂ ೧೦-೧೬. "ಆಕಾಶಾದಗ್ನಿ: |  
ಅಗ್ನೇರಾಪ:" ಶ್ರುತಿ: |

**ಕೃಪು - ಸಾಮರ್ಥ್ಯ** (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ವೇತ್) ಕಲ್ಪತೇ |  
ಚಕ್ರಲೇಪೇ | ಕಲ್ಪತಾ, ಕಲ್ಪಿತಾ | ಕಲ್ಪಸ್ಯತಿ, ಕಲ್ಪಸ್ಯತೇ,  
ಕಲ್ಪಿಷ್ಯತೇ | ಕಲ್ಪತಾಮ್ | ಅಕಲ್ಪತ | ಕಲ್ಪತ | ಕಲ್ಪಿಷಿಷ್ಠ |  
ಇತ್ಯಾದಿ. ಕಲ್ಪಿಸು, ಏರ್ಪಡಿಸು, ಸಿದ್ಧಪಡಿಸು. "ಕಲ್ಪಿಷ್ಯತೇ  
ಹರೇ: ಪ್ರೀತಿಲಕ್ಷ್ಮಾ ಚೋಪಹನಿಷ್ಯತೇ" ಭಟ್ಟಿಂ ೧೬-೧೨ |

**ಭಾವೇ:**—ಕಲ್ಪಯತೇ | ಚಕ್ರಲೇಪೇ | ಕಲ್ಪತಾ, ಕಲ್ಪಿತಾ |  
ಕಲ್ಪಸ್ಯತೇ, ಕಲ್ಪಿಷ್ಯತೇ | ಕಲ್ಪಯತಾಮ್ | ಅಕಲ್ಪಯತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಣಿಚಿ:**—ಕಲ್ಪಯತಿ, ಕಲ್ಪಯತೇ | ಕಲ್ಪಯಾಂ ಚಕಾರ,  
—ಚಕ್ರೇ, —ಬಭೂವ, —ಆಸ | ಕಲ್ಪಯಿತಾ, ಕಲ್ಪಿತಾ | ಕಲ್ಪ-  
ಯಿಷ್ಯತಿ, —ತೇ | ಕಲ್ಪಯತು, —ತಾಮ್ | ಅಕಲ್ಪಯತು, —ತ |  
ಕಲ್ಪಯೇತ್, —ತ | ಅಚಕ್ರಲೇಪತ್, —ತ | ಅಚೀಕ್ರಲೇಪತ್,  
ಅಚೀಕ್ರಲೇಪತ |

**ಘನತಾತ್ ಕರ್ಮಣಿ:**—ಕಲ್ಪಯತೇ | ಕಲ್ಪಯಾಂ ಚಕ್ರೇ, —ಬಭೂವೇ,  
—ಆಸೇ | ಕಲ್ಪಿತಾ, ಕಲ್ಪಯಿತಾ | ಕಲ್ಪಯತಾಮ್ | ಅಕಲ್ಪಯತ |  
ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತಸು:**—ಕಲ್ಪಿತವ್ಯಮ್, ಕಲ್ಪತವ್ಯಮ್ | ಕಲ್ಪನೀಯಮ್ |  
ಕಲ್ಪಯಮ್ | ಕಲ್ಪತ: | ಕಲ್ಪತವಾನ್ | ಕಲ್ಪಮಾನ: | ಕಲ್ಪಿತುಮ್,  
ಕಲ್ಪತುಮ್ | ಕಲ್ಪತಮ್ | ಕಲ್ಪನಮ್ | ಕಲ್ಪಿತ್ವಾ, ಕಲ್ಪತವ್ |  
ಪರಿಕಲ್ಪಯ |

**ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:**

(1) ಅನು + ಕೃಪು = ಅನುಕಲ್ಪ: | ಮುಖ್ಯವಾದುದ  
ಕೈಂಠಲೂ ಹೀನವಾದ ನಿಯಮ, ಗೌಣ ವಿಧಿ.

(2) ಅವ + ಕೃಪು = ಅವಕಲ್ಪಿ: | ಅವಧಾರಣ,  
ನಿಶ್ಚಯ.

(3) ಆ + ಕೃಪು = ಆಕಲ್ಪ: | ಭೂಷಣ, ಅಲಂಕಾರ,  
ಬೆಡವೆ. "ಅವಧಿ ದರ್ಶನೀಯಾನಾಮಾಕಲ್ಪಮನವಂ ದಿವ:" ಯಾದಂ  
೧೬-೧೮ |

(4) ಉಪ + ಕೃಪು = ಉಪಕಲ್ಪನಮ್ | ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವುದು.

(5) ಪ್ರ + ಕೃಪು = ಪ್ರಕಲ್ಪನಮ್ | 1. ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವುದು.  
2. ಉಂಟು ಮಾಡುವುದು.

(6) ವಿ + ಕೃಪು = ವಿಕಲ್ಪ: | 1. ಸಂಶಯಪಡು,  
ಸಂದೇಹಿಸು. "ರಾತ್ರಿದಿವವಿಭಾಗೇಷು ಯದಾದಿಷ್ಟಂ ಮಹೀಕ್ಷಿ-  
ತಾಮ್ | ತತ್ತಿಷ್ಠೇವೇ ನಿಯೋಗೇನ ಸ ವಿಕಲ್ಪಪರಾಡ್ಘಮು:" ರಘುಂ  
೧೭-೪೯ | 2. ಬದಲಾವಣೆಮಾಡು, ಪಕ್ಕಾಂತರವನ್ನು  
ಅಂಗೀಕರಿಸು, ಎರಡರಲ್ಲಿ ಯಾವುದಾದರೊಂದನ್ನು  
ಮಾಡು. "ತಸ್ಯ ಧ್ವಜವಿಕಲ್ಪ: ಸ್ಯಾತ್ ಯಥೇಷ್ಟಂ ನೃಪತೇಸ್ತಥಾ"  
ಮನುಂ ೯-೨೨೮ |

(7) ಸಮ್ + ಕೃಪು = ಸಂಕಲ್ಪ: | ಮನೋವ್ಯಾಪಾರ,  
ಹೀಗೆ ಮಾಡುವನೆಂಬ ನಿರ್ಣಯರೂಪವಾದ ಮನಸ್ಸಿನ  
ವ್ಯಾಪಾರ. "ಸಂಕಲ್ಪಿತಂ ಪ್ರಥಮಮೇವ ಮಯಾ ತವಾರ್ಥಂ ಭರ್ತಾರ-  
ಮಾತ್ಮಸದೃಶಂ ಸುಕೃತೈರ್ಗತಾ ತ್ವಮ್" ಶಾಕುಂ ೪-೧೨ |

**ಕೃಮಿ ಕೃಮಿ** (ಪುಂ) 1. ಹುಳು, ಜಂತು. ಕ್ರಾಮತಿ —ಕ್ರಮ  
(ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಇತ್" (ಉಂ ೪-೧೨೧) | ಸಂಪ್ರಂ |  
"ಕೃಮಿಕೀಟಪತಜ್ಜಾಂಶ್ಚ ಯುಕ್ತಾಮಕ್ಷಿಕಮತ್ಕುಣಮ್" ಮನುಂ ೧-೪೦ |  
2. ಅರಗು. 3. ಗರ್ಭ, ಕಡ್ಡೆ. (ವಿಂ) 4. ಹುಳು  
ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಕೃಮಿರ್ನಾ ಕ್ರಿಮಿವತ್ ಕೀಡೇ ಲಾಕ್ಷಾಢ್ಯಾಂ  
ಕೃಮಿಲೇ ಸ್ವರೇ" ಮೇದಿಂ | ಪುರೀಷಜ: , ಕಫಜ: ಮತ್ತು ರಕ್ತಜ: .  
ಎಂದು ಮೂರು ಬಗೆಯ ಕೃಮಿಗಳು ಅನೇಕ ವಿರುದ್ಧಾ  
ಹಾರ ದೋಷದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವುವು. ಪುರೀಷ (ಮಲ)ದಿಂದ  
ಹುಟ್ಟುವ ಕೃಮಿಗಳು (1) ಅಯವಾ:, (2) ವಿಯವಾ:,  
(3) ಕಿಪ್ಯಾ:, (4) ಚಿಪ್ಯಾ:, (5) ಗಣ್ಡಪದಾ:, (6) ಕೂರವ:  
ಮತ್ತು (7) ದ್ವಿಮುಖಾ: ಎಂದು ಏಳು ವಿಧ. ಬೆಳ್ಳಗೆ ತೆಳ್ಳ  
ಗಿರುವ ಈ ಹುಳುಗಳು ಯಾವಾಗಲೂ ಮಲದ್ವಾರವನ್ನು  
ಬಾಧಿಸುವುವು. ಅದೇ ಜಾತಿಯ ಕೆಲವು ದೊಡ್ಡ ಹುಳು  
ಗಳು ಹೊಟ್ಟೆ ಮತ್ತು ಮಲದ್ವಾರಗಳನ್ನು ಚುಚ್ಚುವುವು,  
ಅಗ್ನಿಮಾಂದ್ಯವುಂಟುಮಾಡುವುವು ಇತ್ಯಾದಿ. "ಸ್ವೇತಾ:  
ಸೂಕ್ಷ್ಮಾಸ್ತುದಂತೀತೇ ಗುದಂ ಪ್ರತಿಸರಂತಿ ಚ | ತೇಷಾಮೇವಾಪರೇ ಪುಚ್ಛೆ:  
ಪೃಥವಶ್ಚ ಭವಂತಿ ಹಿ | ಶೂಲಾಗ್ನಿಮಾನ್ದಪಾಂಡುತ್ವವಿಷ್ಠಮ್-  
ಬಲಸಂಕ್ಷಯಾ: | ಪ್ರಸೇಕಾರುಚಿಹ್ನೋಗವಿಡ್ಘ್ನೇದಾಸ್ತು ಪುರೀಷಜೆ:"  
ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರತಂ ೪೪-೯, ೧೦ | (1) ದರ್ಭಪುಷ್ಪಾ:,  
(2) ಮಹಾಪುಷ್ಪಾ:, (3) ಪ್ರಲೂನಾ:, (4) ಚಿಪಿಟಾ:, (5) ಪಿಪಿಲಿಕಾ:  
ಮತ್ತು (6) ದಾರುಣಾ: ಎಂದು ಕಫವಿಕಾರದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ  
ಕೃಮಿಗಳು ಆರು ವಿಧ. ಇವು ಮಜ್ಜೆ, ಕಣ್ಣು, ಕಿವಿ, ದವಡೆ  
ಗಳನ್ನು ತಿಂದುಹಾಕುವುವು. ಅದರಿಂದ ತಲೆನೋವು,  
ಎದೆನೋವು, ವಾಂತಿ ಮುಂತಾದುವು ಉಂಟಾಗುವುವು.  
"ಮಜ್ಜಾದಾ ನೇತ್ರಲೇಹಾರಸ್ತಾಲುಶ್ರೋತ್ರಭುಜಸ್ತಥಾ | ಶಿರೋಹ್ನೋಗ-  
ವಮಶ್ಚುಪ್ರತಿಷ್ಠಾಯಕರಾಶ್ಚ ತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರತಂ ೪೪-೧೪ |  
(1-3) ರಕ್ತರೋಮನಖಾದಾ:, (4) ದಂತಾದಾ:, (5) ಕಿವಿಕಾಶಾ:,  
(6) ಕುಣ್ಡಜಾ: ಮತ್ತು (7) ಪರಿಸರ್ಪಾ: ಎಂದು ರಕ್ತಜ



ಕೃಮಿಗಳು ಏಳು ವಿಧ. ಇವು ರಕ್ತಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಕುಷ್ಠ, ಹೊಪ್ಪೆ ಮುಂತಾದ ರೋಗಗಳನ್ನು ಉಂಟು ಮಾಡುವವು. "ರಕ್ತಾಧಿಷ್ಠಾನಜಾನ್ ಪ್ರಾಯೋ ವಿಕಾರಾನ್ ಜನಯಂತಿ ತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ उत्तरतः ५४-१६। ಅರ್ಜುನ, ಅಧ್ಯಶನ (ತಿಂದ ಆಹಾರವು ಜೀರ್ಣವಾಗುವ ಮುನ್ನ ಭೋಜನ) ಮೈಗೆ ಹೊಂದದೆ ಇರುವ (ದೇಹಕ್ಕೆ ಸುವಿ ವುಂಟುಮಾಡದ) ಆಹಾರ, ಮೈಗೆ ಹಿತವಿಲ್ಲದ ಹಳಸಿ ಕೊಳೆತುಹೋಗಿರುವ ಆಹಾರ, ವ್ಯಾಯಾಮವಿಲ್ಲದಿರುವುದು, ಹಗಲು ನಿದ್ರೆ, ಗುರು ಅತಿಶ್ರಿಗ್ಧ ಮತ್ತು ಶೀತಕರವಾದ ಮಾಷ (ಉದ್ದು), ಪಿಷ್ಟಾನ್ನ (ಹಿಟ್ಟು ಮುಂತಾದುದು), ಕಾಡುಹೆಸರು, ತಾವರೆದಂಟು, ತಾವರೆ ಗೆಡ್ಡೆ ಮುಂತಾದುವುಗಳನ್ನು ತಿನ್ನುವುದು ಇವುಗಳಿಂದ ನಾನಾವಿಧವಾದ ಕೃಮಿಗಳು ಹುಟ್ಟುವವು. "ಅಜೀರ್ಣಾ-ಧ್ಯಶನಾಸಾತ್ಮ್ಯವಿರುದ್ಧಮಲಿನಾಶನೈಃ। ಅವ್ಯಾಯಾಮದಿವಾಸ್ವಪ್ನ-ಗುರ್ವತಿಸ್ತಿಗ್ಧಶೀತಲೈಃ। ಮಾಷಪಿಷ್ಟಾನ್ನವಿಢಲಬಿಸಶಾಲೂಕ-ಸೇರುಕೈಃ" ಇತ್ಯಾದಿ. ಸುಶ್ರುತಂ उत्तरतः ५४-३, ४।

**ಕೃಮಿಕ ಕೃಮಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಸಣ್ಣ ಹುಳು. ಅಲ್ಪ: ಕೃಮಿ: "ಕನ್" (५-३-८५)। "ಋದಂತಂ ವಿಗತಜ್ಞಾನಂ ಕೃಮಯ: ಕೃಮಿಕಂ ಯಥಾ" भागः ३-३१-२७। 2. ಅಡಕೆ.

**ಕೃಮಿಕಪಟಕ ಕೃಮಿಕಂಟಿಕ** (ನಂ) ಕೃಮಿಗಳನ್ನು ನಾಶ ಮಾಡುವ 1. ವಾಯಿವಿಳಂಗ. 2. ಇಲಿಯಾಲದ ಗಿಡ. 3. ಉದುಂಬರ ವೃಕ್ಷ, ಅತ್ತಿಮರ.

**ಕೃಮಿಕರ್ಣಕ ಕೃಮಿಕರ್ಣಕ** (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಕಿವಿಯ ರೋಗ. ಕೃಮಿಯುಕ್ತ: ಕರ್ಣೋ यस्य। वा कप्। ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: "यदा तु मूर्च्छन्त्यथवापि जन्तवः सृजन्त्यपत्या-न्यथवापि मक्षिकाः। तदञ्जनत्वाच्छ्रवणो निरुच्यते भिषग्भिराद्यैः कृमिकर्णको गदः" ಸುಶ್ರುತಂ उत्तरतः २०-१३। ಇದರ ಚಿಕಿತ್ಸೆ: "कृमिकर्णकनाशार्थं कृमिघ्नं योजयेद्विधिम्। वार्ताकुपूपश्च हितः सार्षपस्नेह एव वा" ಸುಶ್ರುತಂ उत्तरतः २१-५१। ಕಿವಿಯಲ್ಲಿ ದುರ್ಗಂಧ ವುಂಟಾದರೆ "कृमिघ्नं हरितालेन गवां मूत्रयुतेन च। गुग्गुलोः कर्णदौर्गन्ध्ये धूपनं श्रेष्ठमुच्यते। छर्दनं धूमपानं च कवलस्य च धारणम्" ಸುಶ್ರುತಂ उत्तरतः २१-५२, ५३।

**ಕೃಮಿಕೋಶೋತ್ಥ ಕೃಮಿಕೋಶೋತ್ಥ** (ನಂ) ರೇಷ್ಮೆಯ ವಸ್ತ್ರ, ಮಗುಟ. ಕೃಮಿಕೋಶಾದುತ್ಥಮ್।

**ಕೃಮಿಗ್ರನ್ಥಿ ಕೃಮಿಗ್ರಂಥಿ** (ಪುಂ) ಸಂಧಿರೋಗಗಳಲ್ಲೊಂದು, ಕಣ್ಣಿನ ರೆಪ್ಪೆ ಮತ್ತು ಕಣ್ಣು ಕೂದಲುಗಳ ಮಧ್ಯೆ (ಕಣ್ಣು ಕೂದಲ ಬುಡದಲ್ಲಿ) ಬರುವ ಒಂದು ರೋಗ. ಈ ಕೂದಲ

ಬುಡದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಕೃಮಿಗಳು ಮೊದಲು ನವೆಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವವು. ಅನಂತರ ಕಣ್ಣಿನೊಳಕ್ಕೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಕಣ್ಣಿನತ್ತೆ ತಿಂದುಹಾಕುವವು. "कृमिग्रन्थिर्वर्त्मनः पक्ष्मणश्च कण्डूं कुर्युः कृमयः सन्धिजाताः। नानारूपा वर्त्मशुक्लस्य सन्धौ चरन्तोऽन्तर्नयनं दूषयन्ति" ಸುಶ್ರುತಂ उत्तरतः २-९।

**ಕೃಮಿಘ್ನ ಕೃಮಿಘ್ನ** (ಪುಂ) 1. ವಾಯಿವಿಳಂಗ. ಕೃಮಿ ಹನ್ತಿ-ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) "ಕ:" (३-२-५३)। 2. ಗೇರು ಮರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜನಾ -ಘ್ನ. ಅರಿಶಿನ. -ಜನಿ -ಘ್ನ. ವಾಯಿವಿಳಂಗ.

**ಕೃಮಿಜ ಕೃಮಿಜ** (ನಂ) 1. ಅಗುರು ಚಂದನ. (ವಿಂ) 2. ಕೃಮಿಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ. ಕೃಮೇಜಾತ: - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭಾವಿ) "ಙ:" (३-२-९८)।

**ಕೃಮಿಣ ಕೃಮಿಣ** (ವಿಂ) ಕೃಮಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಹುಳುಗಳು ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. ಕೃಮಯೋಜ್ಜತಸ್ಯ "ನ:" (३-२-१००)।

**ಕೃಮಿದಂತಕ ಕೃಮಿದಂತಕ** (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ದಂತ ರೋಗ. ದಂತರೋಗವು (1) ದಾಲನ:, (2) ಕೃಮಿದಂತಕ:, (3) ದಂತಹರ್ಷಕ:, (4) ಭಜ್ಜನಕ:, (5) ದಂತಶರ್ಕರಾ, (6) ಕಪಾಲಿಕಾ, (7) ಶ್ಯಾವದಂತಕ: ಮತ್ತು (8) ಹನುಮೋಕ್ಷ: ಎಂದು ಎಂಟು ವಿಧ. ಕೃಮಿದಂತಕದಲ್ಲಿ ಹಲ್ಲುಗಳು ಕಪ್ಪಾ ಗುವವು, ಒಡಕಾಗುವವು, ಬುಡವು ಸಡಿಲವಾಗಿ ಆಡು ವುವು. ರಕ್ತ ಸುರಿಯುವುದು. ನೋವಿನಿಂದ ನಡುಗು ವುವು. "कृष्णच्छिद्री चलः स्रावी ससंरम्भो महारुजः। अनिमित्तरुजो वाताद्विजेयः कृमिदन्तकः" ಸುಶ್ರುತಂ निदानः १६-२९।

**ಕೃಮಿಪರ್ವತ ಕೃಮಿಪರ್ವತ** (ಪುಂ) ವಲ್ಮೀಕಿ, ಹುತ್ತ. ಕೃಮಿಣಾಂ ಪರ್ವತಃ।

**ಕೃಮಿಪುರೀಷಕ ಕೃಮಿಪುರೀಷಕ** (ಪುಂ) ಪುರೀಷ (ಮಲ)ದ ಮೇಲೆ ಓಡಾಡುವ ಒಂದು ವಿಧ ನೀಲಿ ನೋಣ.

**ಕೃಮಿಫಲ ಕೃಮಿಫಲ** (ಪುಂ) 1. ಅತ್ತಿಮರ. ಕೃಮಯ: फलेऽस्य। (ನಂ) 2. ಅತ್ತಿಹಣ್ಣು.

**ಕೃಮಿಭಕ್ಷ ಕೃಮಿಭಕ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ನರಕ. ಕೃಮಿಭಿ-ಭಕ್ಷಯತೇಽತ್ರ - ಭಕ್ಷ (ಅದನೇ) "ಘ್" (३-३-१२१)। ["ಕೃಮಿಭೋಜನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. (ವಿಂ) 2. ಕೃಮಿ ಗಳನ್ನು ತಿನ್ನುವ. ಕೃಮಿನ್ ಭಕ್ಷಯತಿ - ಭಕ್ಷ + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" (३-२-१३४)।

**ಕೃಮಿಭೋಜನ ಕೃಮಿಭೋಜನ** (ಪುಂ) 1. ಕೃಮಿಯಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿ ಕೃಮಿಗಳಿಂದಲೇ ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟು ಯಾತನೆ ಅನುಭವಿಸುವ ಒಂದು ನರಕ. ಕೃಮಿಭಿಭುಜಯತೇಽತ್ರ - ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವ-



ಹಾರಯೋ:) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ಯಸ್ವಿಹಾಸಂವಿಭಜ್ಯಾ-  
ಶ್ನಾತಿ ಯತ್ಕಿಂಚನೋಪನತಮನಿರ್ಮಿತಪಶ್ಚಯಜ್ಞೋ ವಾಯಸಸಂಸ್ತುತಃ  
ಸ ಪರತ್ರ ಕೃಮಿಭೋಜನೇ ನರಕಾಧಮೇ ನಿಪತತಿ ತತ್ರ ಶತಸಹಸ್ರ-  
ಯೋಜನೇ ಕೃಮಿಕುಂಡೇ ಕೃಮಿಭೂತಃ ಸ್ವಯಂ ಕೃಮಿಭಿರೇವ ಭಕ್ಷ್ಯ-  
ಮಾಣಃ ಕೃಮಿಭೋಜನೋ ಯಾವತ್ತದಪ್ರತ್ತಾಪ್ರಹುತಾದೋಽನಿರ್ವೇಶಮಾತ್ಮಾನಂ  
ಯಾತಯತೇ" ಭಾಗಂ ೪-೨೬-೧೮। (ವಿಂ) 2. ಕೃಮಿಗಳನ್ನು  
ತಿನ್ನುವ, ಕೃಮಿಗಳೇ ಆಹಾರವಾಗಿ ಉಳ್ಳ.

ಕೃಮಿಮತ್ ಕೃಮಿಮತ್ (ವಿಂ) ಕೃಮಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ,  
ಹುಳುಗಳು ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಹುಳುತಿರುವ. ಕೃಮಯೋಽ  
ಸಂತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್"  
(೪-೧-೬)। -ಮತಿ-ಮತಿ.

ಕೃಮಿರಿಪು ಕೃಮಿರಿಪು (ಪುಂ) ವಾಯುವಿಳಂಗ. ಕೃಮಿಗಳಿ-  
ರಿಪುಃ।

ಕೃಮಿಶೈಲ ಕೃಮಿಶೈಲ (ಪುಂ) ಪಲ್ಮೀಕ, ಹುಟ್ಟು. ಕೃಮಿಗಳಿ-  
ಶೈಲ ಇವ.

ಕೃಮಿಲಕ ಕೃಮಿಲಕ (ಪುಂ) ಕಾಡುಹೆಸರು. ಕೃಮಿನ್  
ಇರಯತಿ-ಇರ (ಗತೌ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। ರಸ್ಯ ಲಃ।

ಕೃವಿ ಕೃವಿ (ಪುಂ) ಮಗ್ಗದವನು ನೇಯ್ಗೆಗಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿ-  
ಸುವ ಒಂದು ವಸ್ತು. ಡು ಕೃಮ್ (ಕರಣಂ) "ಕಿವನ್"  
(೩ಂ ೪-೫೬)। "ಕೃವಿಸ್ತಂತುವಾಯದ್ರವ್ಯಮ್" ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಕೃವಿ ಕೃವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆತ್ತರಿ. "ಕರ್ತೃಕಾ ಕರ್ತೃನಿ ಕೃವಿ"  
ವೈಜಂ।

ಕೃಶ-ತನುಕರಣಂ (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ)। ಕೃಶಯತಿ। ಚಕೃಶ್।  
ಕೃಶಿತಾ। ಕೃಶಿಷ್ಯತಿ। ಕೃಶಯತು। ಅಕೃಶಯತ್। ಕೃಶಯೇತ್।  
ಕೃಶಯಾತ್। ಅಕೃಶಯತ್। ಅಕೃಶಿಷ್ಯತ್। ಕೃಶಯಾಗು, ತೆಳ್ಳ  
ನಾಗು, ಸಣ್ಣದಾಗು.

ಭಾವೇ:-ಕೃಶಯತೇ। ಚಕೃಶೇ। ಕೃಶಿತಾ। ಕೃಶಿಷ್ಯತೇ।  
ಕೃಶಯತಾಮ್। ಅಕೃಶಯತು। ಕೃಶಯೇತು। ಕೃಶಿಷ್ಯೇತು। ಅಕೃಶಿ-  
ಷ್ಯತು। ಅಕೃಶಿಷ್ಯತು।

ಣಿಚಿ:-ಕೃಶಯತಿ, -ತೇ। ಕೃಶಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಕೃಶಯಿತಾ। ಕೃಶಯತು, -ತಾಮ್।  
ಅಕೃಶಯತ್, -ತು। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತು:-ಕೃಶಿತವ್ಯಮ್। ಕೃಶನೀಯಮ್। ಕೃಶಯಮ್। ಕೃಶಾಃ।  
ಕೃಶಿತವಾನ್। ಕೃಶಯನ್, ಕೃಶಯಂತಿ। ಕೃಶಿತುಮ್। ಕೃಶಮ್।  
ಕೃಶನಮ್। ಕೃಶಿತ್ವಾ। ಪರಿಕೃಶಯ.

ಕೃಶ ಕೃಶ (ಪುಂ) 1. ವಿಷು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಕೃಶ (ತನುಕರಣಂ)  
"ಕ್ತಃ" (೮-೨-೫೫)। ತಲೋಪಃ ಇಡಭಾವಶ್ಚ ನಿಪಾತ್ಯತೇ।  
"ಸರ್ವತ್ರಾವ್ಯಾಹತಗತಿಃ ಲಘಿಮ್ನಾ ಕೃಶ ಇರೀತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ।

"ಅಣುಬೃಹತ್ ಕೃಶಃ ಸ್ಥೂಲಃ ಗುಣಭೃನ್ನಿಗುಣೋ ಮಹಾನ್" ವಿಂ ಸಂ।  
2. ಉಷ್ಣ, ಬಿಸಿ, ಕಾವು. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 3. ಕೇಡುಗ್ರಹಂ.  
"ಕೇತವೋ ವಿಕಚಾಃ ಕೃಶಾಃ" ವೈಜಂ। (ನಂ) 4. ತೆಳ್ಳ  
ಗಿರುವಿಕೆ, ಸಣ್ಣಗಿರುವಿಕೆ. ಕೃಶ ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)।  
(ವಿಂ) 5. ಸಣ್ಣದಾದ, ತೆಳುವಾದ. "ಕೃಶಮಪಿ ಕೃಶತಾಂ  
ಪುನರ್ನಯಂತಿ ವಿಪುಲತರೋನ್ಮುಖಲೋಚನಾವಲಗನಮ್" ಮಾಘಂ  
೭-೩೩। 6. ಚಿಕ್ಕದಾದ, ಪುಟ್ಟ. 7. ಅಲ್ಪ. "ವನಾನಿ  
ದಹತೋ ವಹ್ನೇಃ ಸಖಾ ಭವತಿ ಮಾರುತಃ। ಸ ಏವ ದೀಪನಾಶಾಯ  
ಕೃಶೇ ಕಸ್ಯಾಸ್ತಿ ಗೌರವಮ್"। 8. ದುರ್ಬಲ, ಬಲಹೀನ,  
ಬಡಕಲಾಗಿರುವ. "ಕ್ಷತ್ರಿಯಂ ಚೈವ ಸರ್ಪಂ ಚ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ವಾ ಬಹು-  
ಶ್ರುತಮ್। ನಾವಮನ್ಯೇತ ವೈ ಭೂಷಣಃ ಕೃಶಾನಪಿ ಕದಾಚನ" ಮನುಂ  
೪-೧೩೫। 9. ಉಷ್ಣವಾದ, ಬಿಸಿಯಾದ. "ಉಷ್ಣಂ ಜ್ವಲಃ  
ಖರಃ ಕೂರೋ ಬಾಲಸ್ತಿಗ್ಗಮಃ ಕೃಶಾಚುಪಃ" ವೈಜಂ।

ಕೃಶತಾ ಕೃಶತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತೆಳ್ಳಗಿರುವಿಕೆ, ಸಣ್ಣಗಿರುವಿಕೆ.  
ಕೃಶಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। 2. ಚಿಕ್ಕದಾಗಿರು-  
ವುದು, ಸಣ್ಣದಾಗಿರುವುದು. 3. ಅಲ್ಪವಾಗಿರುವುದು.  
4. ಬಡಕಲಾಗಿರುವುದು, ಬಲಹೀನವಾಗಿರುವುದು.  
"ಕೃಶಮಪಿ ಕೃಶತಾಂ ಪುನರ್ನಯಂತಿ" ಮಾಘಂ ೭-೩೩। "ತ್ವಃ"  
(೪-೧-೧೧೯)। -ತ್ವಮ್ ಕೃಶಮ್.

ಕೃಶಧನ ಕೃಶಧನ (ವಿಂ) ಅಲ್ಪಧನವುಳ್ಳವನು, ಕೊಂಚ  
ಹಣವುಳ್ಳವನು, ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. ಕೃಶಂ ಧನಂ ಯಸ್ಯ।

ಕೃಶಬುದ್ಧಿ ಕೃಶಬುದ್ಧಿ (ವಿಂ) ಅಲ್ಪಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು.  
ಕೃಶಾ ಬುದ್ಧಿರಸ್ಯ।

ಕೃಶರ ಕೃಶರ (ಪುಂ) ಎಳ್ಳು ಅಕ್ಕಿ ಬೆರಸಿ ಪಕ್ವಮಾಡಿದ ಅನ್ನ.  
ಗೃಹಯಜ್ಞದಲ್ಲಿ ಶನಿಗ್ರಹದ ಪ್ರೀತಿಗಾಗಿ ಕೃಶರದ ಬಲಿ  
ಯನ್ನು ಕೊಡಬೇಕು. "ಗೃಹೋದನಂ ರವೇದಧಾತ್ ಸೋಮಾಯ ಧೃತ-  
ಪಾಯಸಮ್। ಸಂಯಾವಕಂ ಕುಜೇ ದಧಾತ್ ಕ್ಷೀರಾಂ ಸೋಮಸೂನವೇ।  
ದಧ್ಯೋದನಶ್ಚ ಜೀವಸ್ಯ ಶುಕ್ರಾಯ ತು ಧೃತೋದನಮ್। ಶನೇಶ್ವರಾಯ  
ಕೃಶರಮಾಜಮಾಸಂ ಚ ರಾಹವೇ। ಚಿತ್ರೋದನಶ್ಚ ಕೇತುಮ್ಯಃ ಸರ್ವಂ ಭಕ್ಷಯಃ  
ಸಮರ್ಚಯೇತ್"।

ಕೃಶಲಾ ಕೃಶಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಲೆಯ ಕೂದಲು. ಕೃಶಂ ಕಾಶ್ಯ  
ಲಾತಿ -ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೪)।

ಕೃಶಾಙ್ಗ ಕೃಶಾಙ್ಗ (ವಿಂ) ತೆಳುವಾದ ಮೈಯುಳ್ಳ.  
ಕೃಶಮಙ್ಗಲಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್"। ಕೃಶಾಙ್ಗೀ ಕೃಶಾಙ್ಗೀ  
ತೆಳುವಾದ ಮೈಯುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. "ಉತ್ತಸ್ಯುರಮೃತ್ಯುತಿ-  
ವಾಂಞ್ಞೇವ ನಿಜಾಸನಾನ್ವೇಕರತಾಃ ಕೃಶಾಙ್ಗಃ" ನೆಪಂ ೮-೭।

ಕೃಶಾನ್ ಕೃಶಾನ್ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಕೃಶಯತಿ - ಕೃಶ  
(ತನುಕರಣಂ) "ಆನುಕ್" (೩ಂ ೪-೨)। "ಋತೇ ಕೃಶಾನೋನ್ ಹಿ



ಮನ್ತ್ರಪೂತಮಹಂತಿ ತೇಜಾಸ್ಯಪರಾಣಿ ಹವ್ಯಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೪೧।  
2. ಅಗ್ನಿದೇವತೆ. "ಆಖಂಡಲೋ ದಂಡಧರಃ ಕೃಶಾನ್ತುಃ ಪಾಶೀತಿ  
ನಾಥಃ ಕಕುಭಾಂ ಚತುರ್ಭಿಃ" ನೈಷಂ ೧೦-೧೦। 3. ಚಿತ್ರ  
ಮೂಲದ ಗಿಡ. 4. ಹರಳು ಗಿಡ. 5. ಅಗ್ನಿದೇವತಾಕವಾದ  
ಕೃತ್ತಿಕಾ ನಕ್ಷತ್ರ. 6. ಮೂರು ಸಂಖ್ಯೆ.

ಕೃಶಾನ್ತರೇತಸ್ ಕೃಶಾನ್ತರೇತಸ್ (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ,  
ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. ಕೃಶಾನ್ತು ರೇತೋ ಯಸ್ಯ।  
[ಪಾರ್ವತಿಯೊಡನೆ ಅನೇಕ ವರ್ಷಗಳಕಾಲ ರತಿಕ್ರೀಡೆಯಲ್ಲಿ  
ಮಗ್ನನಾಗಿದ್ದ ಪರಮೇಶ್ವರನನ್ನು ಬಹಳ ಕಾಲದಿಂದಲೂ  
ಕಾಣದೆ ತಾರಕಾಸುರನಿಂದ ಪೀಡಿತರಾದ ದೇವತೆಗಳು ಬಹಳ  
ಕಾತುರರಾಗಿ ಪರಮೇಶ್ವರನನ್ನು ಕಂಡುಬರಲು ಅಗ್ನಿ  
ಪುರುಷನನ್ನು ಕಳುಹಿಸುವರು. ಅಗ್ನಿಯು ಕಪೋತವೇಷ  
ದಿಂದ ಪರಮೇಶ್ವರನ ಶಯನಗೃಹವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿದಾಗ  
ಶಿವನು ಸಂಭೋಗಭಂಗದಿಂದ ಕುದ್ಡನಾಗುವನು. ಆಗ  
ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ವಾಸ್ತವವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿದು ತಾರಕಾಸುರನ  
ವಧೆಗಾಗಿ ಸಮರ್ಥನಾದ ಸೇನಾನಿಯ ಉತ್ಪತ್ತಿಯಾಗಲು  
ತನ್ನ ವೀರ್ಯವು ಸಾರ್ಥಕವಾಗಬೇಕೆಂಬ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ  
ಅದನ್ನು ಅಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಇರಿಸಿದನು. ಅದರಿಂದ ಪರಮೇಶ್ವರ  
ನಿಗೆ "ಕೃಶಾನ್ತರೇತಸ್" ಎಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು.] ಕಾಲಿಕಾಪುಂ।  
(ನಂ) 2. ಅಗ್ನಿಯ ತೇಜಸ್ಸು.

ಕೃಶಾಶ್ವ ಕೃಶಾಶ್ವ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. 2. ತೆಳುವಾದ  
ಕುದುರೆ. ಕೃಶಾಶ್ವಃ। 3. ಒಬ್ಬ ನಾಟ್ಯಚಾರ್ಯ.  
(ವಿಂ) 4. ತೆಳುವಾದ ಕುದುರೆಯುಳ್ಳ. ಕೃಶಾಶ್ವೋ  
ಯಸ್ಯ।

ಕೃಶಾಶ್ವಿನ್ ಕೃಶಾಶ್ವಿನ್ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ನಟರು, ನಾಟ್ಯ  
ಚಾರ್ಯರಾದ ಕೃಶಾಶ್ವಮುನಿಯ ನಟಸೂತ್ರವನ್ನು  
ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವರು. ಕೃಶಾಶ್ವೇನ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ನಟಸೂತ್ರ-  
ಮಖ್ಯತೇ - "ಇನಿಃ" (೪-೩-೧೧೧)। "ಕೃಶಾಶ್ವಿನೋ ನಟಾಃ"  
ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಕೃಶಿಕಾ ಕೃಶಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಲಿಕವಿಯ ಗಿಡ. ಕೃಶೇವ -  
ಸ್ವಾಥೆ "ಕಃ"।

ಕೃಶೋದರ ಕೃಶೋದರ (ವಿಂ) ತೆಳುವಾದ ಹೊಟ್ಟೆಯುಳ್ಳ.  
ಕೃಶೋದರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೆಳುವಾದ ಹೊಟ್ಟೆಯುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು.  
ಕೃಶಮುದರಂ ಯಸ್ಯಾಃ - ವಾ "ಕೃಶಿ" (೪-೧-೪೪)। ಪಕ್ಷಿ  
ಕೃಶೋದರಾ ಕೃಶೋದರಾ. "ಸಹಾಮುನಾ ತತ್ರ ಪಯಃಪಯೋನಿಧಿ  
ಕೃಶೋದರಿ ಕ್ರಿಡ ಯಾಮನೋರಯಮ್" ನೈಷಂ ೧-೪೧।

ಕೃಶ್ಯತ್ ಕೃಶ್ಯತ್ (ವಿಂ) 1. ತೆಳುವಾಗುತ್ತಿರುವ, ಸಣ್ಣ  
ಗಾಗುತ್ತಿರುವ. 2. ಚಿಕ್ಕದಾಗುತ್ತಿರುವ, ಪುಟ್ಟದಾಗು

ತ್ತಿರುವ. ಕೃಶ (ತನುಕರಣ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೃಶಿ" (೪-೧-೬)। -ಂತಿ -೨೨೬.

ಕೃಷ-ವಿಲೇಖನೇ (ಭವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ)। ಕರ್ಷತಿ।  
ಚಕರ್ಷ। ಕೃಷಾ ಕೃಷಾರೌ ಕೃಷಾರಃ। ಕೃಷಯತಿ, ಕೃಷಯತಿ।  
ಕರ್ಷತು। ಅಕರ್ಷತ್। ಕರ್ಷೇತ್। ಕೃಷ್ಯಾತ್। ಅಕಾಕ್ಷೀತ್,  
ಅಕಾಕ್ಷೀತ್। ಅಕೃಷತ್, ಅಕೃಷಯತ್। ಅಕೃಷಯತ್। ಅಕೃಷಯತ್,  
ಎಳೆ, ಸೆಳೆ.

ಕರ್ಮಣಿಃ:-ಕೃಷ್ಯತೇ। ಚಕೃಷೇ। ಕೃಷಾ, ಕೃಷಾರ್। ಕೃಷಯತೇ,  
ಕೃಷಯತೇ। ಕೃಷಯತಾಮ್। ಅಕೃಷಯತ। ಕೃಷಯತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿಃ:-ಕರ್ಷಯತಿ, -ತೇ। ಕರ್ಷಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಕರ್ಷಯಿತಾ। ಕರ್ಷಯತು, -ತಾಮ್। ಕರ್ಷಯೇತ್,  
-ತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸುಃ:-ಕೃಷ್ಯವ್ಯಃ, ಕೃಷ್ಯವ್ಯಃ। ಕರ್ಷಣೀಯಃ। ಕೃಷ್ಯಃ।  
ಕೃಷಃ। ಕೃಷ್ಯವಾನ್। ಕರ್ಷನ್, ಕರ್ಷಂತಿ। ಕೃಷ್ಯನ್, ಕೃಷ್ಯಂತಿ,  
ಕೃಷ್ಯಂತಿ। ಕೃಷ್ಯನ್, ಕೃಷ್ಯಂತಿ, ಕೃಷ್ಯಂತಿ। ಕೃಷ್ಯಮ್।  
ಕೃಷ್ಯಮ್। ಕೃಷ್ಯಮ್। ಕರ್ಷಣಮ್। ಕೃಷ್ಯವಾ। ಅಕೃಷ್ಯ.

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು :

(1) ಅನು+ಕೃಷ = ಅನುಕರ್ಷತಿ। ಅನುಕರ್ಷಃ। ಹಿಂದಿ  
ನಿಂದ ಎಳೆದುಕೊಂಡು, ಎಳೆದು ಮುಂದಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಪಡಿಸು.  
ಒಂದು ವಾಕ್ಯದ ಅರ್ಥ ಹೇಳುವಾಗ ಅದಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ ಪದ  
ಗಳನ್ನು ಹಿಂದಿನ ವಾಕ್ಯದಿಂದ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು  
(ಪ್ರಕೃತ ವಾಕ್ಯಾರ್ಥಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದಂತೆ ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು)  
ಅನುಕರ್ಷವು.

(2) ಅಪ+ಕೃಷ = ಅಪಕರ್ಷತಿ। ಅಪಕರ್ಷಃ। 1. ಕಡಮೆ  
ದರ್ಜೆಯದಾಗಿ ಮಾಡು, ಗುಣತಗ್ಗಿಸು, ಹೀನವಾಗಿ  
ಮಾಡು, ಕೀಳಾಗಿ ಮಾಡು. 2. (ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ)  
ಮುಂದಿನ ಸೂತ್ರದಿಂದ ಹಿಂದಿನ ಸೂತ್ರದ ವಾಕ್ಯಾರ್ಥಕ್ಕೆ  
ಬೇಕಾಗುವ ಪದಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

(3) ಅಪ+ಆ+ಕೃಷ = ಅಪಾಕರ್ಷಣಮ್। ಹಿಂತಿರುಗಿಸು,  
ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸು. "ತಮಶಕಯಮಪಾಕೃಷ್ಣಂ ನಿರ್ದೇಶಾತ್ ಸ್ವರ್ಗಿಣಃ  
ಪಿತುಃ" ರಘುಂ ೧೨-೧೭।

(4) ಅಭಿ+ಕೃಷ = ಅಭಿಕರ್ಷತಿ। ಎದುರಾಗಿ  
ಎಳೆದುಕೊಂಡು.

(5) ಅವ+ಕೃಷ = ಅವಕರ್ಷತಿ। ಮೇಲಿನಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ  
ಎಳೆದುಕೊಂಡು.

(6) ಆ+ಕೃಷ = ಆಕರ್ಷತಿ। ಆಕರ್ಷಣಮ್। ಎಳೆದುಕೊಂಡು.

(7) ಉತ್+ಕೃಷ = ಉತ್ಕರ್ಷಃ। 1. ಹಿರಿಮೆ (ಯುಂಟು  
ಮಾಡು), ಮೇಲ್ಮೆ (ಕೊಡು). 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆದುಕೊಂಡು.



(8) ನಿಃ + ಕೃಷ = ನಿಃಕೃಷ್ಣಮ್ | ನಿಃಕರ್ಷಃ | 1. ನಿಶ್ಚಯ. 2. ಎಳೆದುಕೊ. "ಗಾಮಾತ್ತಸಾರಾಂ ರಘುರಪ್ಯವೇಕ್ಷ್ಯ ನಿಃಕೃಷ್ಣಮರ್ಥಂ ಚಕಮೇ ಕುಬೇರಾತ್" ರಘುಂ ೪-೨೬ |

(9) ಪ್ರ + ಕೃಷ = ಪ್ರಕರ್ಷತಿ | ಪ್ರಕರ್ಷಃ | ಪ್ರಕೃಷ್ಠಃ | 1. ಹೆಚ್ಚಿಸು, ಅಧಿಕಪಡಿಸು. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಎಳೆ. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಎಳೆ.

(10) ಸಮ್ + ಕೃಷ = ಸಂಕರ್ಷತಿ | ಸಂಕರ್ಷಣಮ್ | ಚೆನ್ನಾಗಿ ಎಳೆ.

(11) ಸಮ್ + ಆ + ಕೃಷ = ಸಮಾಕರ್ಷತಿ | ಸಮಾಕೃಷ್ಯ | ಬಹಳ ದೂರದವರೆಗೂ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಎಳೆ.

ಕೃಷ-ವಿಲೇಖನ (ತುಡಾಂ ತಮಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) 1. ಕೃಷತಿ, ಕೃಷತೇ | ಚಕರ್ಷ, ಚಕೃಷೇ | ಕೃಷ್ಣಾ, ಕೃಷ್ಣಾ | ಕೃಷ್ಯತಿ, -ತೇ, ಕೃಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ಕೃಷತು, -ತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಕರ್ಮಣಿ ನಿಚಿ ಕೃತ್ಸು ಚ ಭವಾದಿಂ ಕೃಷ ಧಾತುವತ್ ರೂಪಾಣಿ | ಕೇವಲಾಚ್ಛತರಿ ಕೃಷನ್, ಕೃಷತೀ, ಕೃಷಂತೀ ಶಾನಚಿ ಕೃಷಮಾಣಃ, ಕೃಷ್ಯಮಾಣಃ, ಕೃಷ್ಯಮಾಣಃ | ಇತಿ ವಿಶೇಷಃ | 1. ಎಳೆ, ಸೆಳೆ, ಅಕರ್ಷಿಸು. 2. ಉಳು, ನೇಗಿಲುಹೊಡೆ.

ಕೃಷಕ ಕೃಷಕ (ಪುಂ) 1. ಪೃಷ್ಠ, ಎತ್ತು. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನ) "ಕೃಷುನ್" (ತಂ ೨-೩೯) | 2. ನೇಗಿಲಗುಳ. 3. ರೈತ, ಬೇಸಾಯಗಾರ. 4. ಎಳೆಯುವವನು. "ಕೃಷಕಃ ಪುಸಿ ಫಾಲೇ ಸ್ಯಾತ್ ಕರ್ಷಕೇ ತ್ವಮಿಧೇಯವತ್" ಮೇದಿಂ |

ಕೃಷಾಣ ಕೃಷಾಣ (ಪುಂ) ರೈತ, ಬೇಸಾಯಗಾರ, ಉಳು ವವನು. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನ) "ಆನಕ್" ಬಾಹುಂ | "ಗೋಪಾಃ ಸೀಮಾಕೃಷಾಣಾಶ್ಚ ಸರ್ವೇ ಚ ವನಗೋಚರಾಃ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೫ |

ಕೃಷಿ ಕೃಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೇಸಾಯ, ವ್ಯವಸಾಯ, ಭೂಮಿ ಯನ್ನು ಉಳುವುದು, ಸಾಗುವಳಿ, ಪೈರು ಬೆಳೆಯಲು ಉಳುಮೆ. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನ) "ಇಕ್" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮) | "ಶರೀರಮಾಶ್ಚ ಖಲು ಧರ್ಮಸಾಧನಮ್" ಸಕಲಧರ್ಮಕಾರ್ಯಂ ಗಳಿಗೂ ಶರೀರವು ಸಾಧನವಾದುದು. ಅದುದರಿಂದ ಈ ಶರೀರವನ್ನು ಪೋಷಿಸುವುದು ಮನುಷ್ಯನ ಆದ್ಯಕರ್ತವ್ಯ. ಎಷ್ಟೇ ಧನಕನಕವಸ್ತುಭೂಷಣಗಳಿದ್ದರೂ ಶರೀರಪೋಷಣೆಗೆ ಬೇಕಾದ ಅನ್ನವೊಂದಿಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ಉಪವಾಸವಿರಬೇಕಾಗುವುದು. ಆ ಅನ್ನಕ್ಕಾಗಿ ಕೃಷಿಯು ಅವಶ್ಯವಾದುದು. ಅನ್ನವೇ ಪ್ರಾಣ, ಅನ್ನವೇ ಬಲ. ಅನ್ನವೇ ಎಲ್ಲಾ ಕಾರ್ಯಗಳಿಗೂ ಸಾಧನ. ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಮನುಷ್ಯಸಾಮಾನ್ಯವೂ ಅನ್ನದಿಂದಲೇ ಜೀವಿಸಬೇಕಾದುದರಿಂದ ಅನ್ನವನ್ನು ಕೊಡುವ ವ್ಯವಸಾಯಕ್ಕೆ ಆದ್ಯತೆಯನ್ನು ಕೊಡಬೇಕು. "ಕಂಠೇ ಹಸ್ತೇ ಚ ಕರ್ಣಂ ಚ ಸುವರ್ಣಂ ಯದಿ ವಿವ್ರತೇ | ಉಪವಾಸಸ್ತಥಾಪಿ ಸ್ಯಾತ್ ಅಗ್ನಾಭಾವೇನ ದೇಹಿನಾಮ್ | ಅಗ್ನಿಂ ಪ್ರಾಣಾ ಬಲಶ್ಚಾಶ್ವಮಗ್ನಿಂ

ಸರ್ವಾರ್ಥಸಾಧಕಮ್ | ಅಗ್ನಿಂ ತು ಧಾನ್ಯಸಂಭೂತಂ ಧಾನ್ಯಂ ಕೃಷ್ಯಾ ವಿನಾ ನ ಚ | ತಸ್ಮಾತ್ ಸರ್ವಂ ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ ಕೃಷಿ ಯತ್ನೇನ ಕಾರಯೇತ್ | ಕೃಷಿಧನ್ಯಾ ಕೃಷಿರ್ಮೇಧ್ಯಾ ಜನ್ತುನಾಂ ಜೀವನಂ ಕೃಷಿಃ | ಹಿಸಾದಿದೋಷ-ಯುಕ್ತೋಪಿ ಮುಚ್ಯತೇಽತಿಥಿಪೂಜನಾತ್ | ತೇನಾರ್ಚಿತಂ ಜಗತ್ಸರ್ವ-ಮತಿಥಿಯೇನ ಪೂಜಿತಃ | ಅರ್ಚಿತಾಸ್ತೇನ ದೇವಾಶ್ಚ ಸ ಏವ ಪುರುಷೋತ್ತಮಃ" ಕೃಷಿಪರಾಶರಃ |

ಕೃಷಿಕ ಕೃಷಿಕ (ಪುಂ) 1. ನೇಗಿಲಗುಳ. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನ) "ಕಿಕನ್" (ತಂ ೨-೪೧) | 2. ರೈತ, ಬೇಸಾಯಗಾರ, ಉಳುಮೆಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನ) "ಕಿಕನ್" (ತಂ ೨-೪೧) | "ಕುಡುಂಬಿ ಕರ್ಷಕಃ ಕ್ಷೇತ್ರೀ ಹಲಿ ಕೃಷಿಕಾರ್ಷಕೌ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ |

ಕೃಷಿಕರ್ಮನ್ ಕೃಷಿಕರ್ಮನ್ (ನಂ) ಬೇಸಾಯ, ಉಳುಮೆ, ಬೆಳೆಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ವ್ಯವಸಾಯ.

ಕೃಷಿಜೀವಿನ್ ಕೃಷಿಜೀವಿನ್ (ವಿಂ) ವ್ಯವಸಾಯದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಕೃಷ್ಯಾ ಜೀವತಿ-ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ನಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮) |

ಕೃಷಿಪರಾಶರ ಕೃಷಿಪರಾಶರ (ಪುಂ) ವ್ಯವಸಾಯದ ವಿಷಯ ವನ್ನು ಹೇಳುವ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ.

ಕೃಷಿಫಲ ಕೃಷಿಫಲ (ನಂ) ಸಸ್ಯ, ಪೈರು, ಬೆಳೆ. ಕೃಷಿಃ ಫಲಮ್ | "ತ್ವಯ್ಯಾಯತಂ ಕೃಷಿಫಲಮಿತಿ ಭೂವಿಲಾಸಾನಭಿಜ್ಞಃ" ಮೇಘಂ ೧-೧೬ |

ಕೃಷಿವಲ ಕೃಷಿವಲ (ಪುಂ) ರೈತ, ಬೇಸಾಯಗಾರ, ಉಳುಮೆಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಕೃಷಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ - "ವಲಕ್" (೪-೨-೧೧೨) | ದೀರ್ಘಃ (೬-೩-೧೧೮) | "ಸುಖೇನ ಲಭ್ಯಾ ದಧತಃ ಕೃಷಿವಲೈರಕೃಷ್ಣಪಚ್ಯಾ ಇವ ಸಸ್ಯ-ಸಂಪದಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೧೭ |

ಕೃಷ್ಣ ಕೃಷ್ಣ (ನಂ) 1. ಎಳೆಯುವಿಕೆ. 2. ಉಳುಮೆ. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) | (ವಿಂ) 3. ಎಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಕೃಷ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ನಾಮಿಮಥೈಶ್ಚ ಶಲಯವಾಸಸೋಽನ್ಯು ಮಿಮಿಲ ದಿಕ್ಷು ಕ್ರಮಕೃಷ್ಣಚಕ್ಷುಃ" ನೈಫಂ ೬-೨೦ | 4. ಉಳಲ್ಪಟ್ಟ (ಭೂಮಿ). "ಭಗನೋತ್ತರಾ-ನಂತರಪೂರಿತಾಂತರಾ ಬಭೂವುಃ ಕೃಷ್ಣಸಮೀಕೃತಾ ಇವ" ಮಾಘಂ ೧೨-೨೧ |

ಕೃಷ್ಣಪಚ್ಯ ಕೃಷ್ಣಪಚ್ಯ (ವಿಂ) ಉತ್ತಮಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದು ತಾನಾಗಿಯೇ ಹಣ್ಣಾಗುವ ಧಾನ್ಯ ಮುಂತಾದುದು. ಕೃಷ್ಣೇನ ಸ್ವಯಮೇವ ಪಚ್ಯತೇ-ಙ್ ಪಚ್ಯ (ಪಾಕೆ) "ಕೃಷ್ಣ" (೩-೧-೧೧೪) | ನಿಪಾಂ | "ಸುಖೇನ ಲಭ್ಯಾ ದಧತಃ ಕೃಷಿವಲೈರಕೃಷ್ಣಪಚ್ಯಾ ಇವ ಸಸ್ಯಸಂಪದಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೧೭ |



ಕೃಷಿ ಕೃಷ್ಣಿ (೪೦) 1. ಪಂಡಿತ. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) ಕರ್ತಂ  
“ಕ್ರಿಚ್” (3-3-194)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಅಕರ್ಷಣ,  
ಎಳೆಯುವುದು. ಕೃಷ ಭಾವೇ “ಕ್ರಿನ್” (3-3-194)।  
3. ಉಳುಮೆ, ಬೇಸಾಯ. “ಅಥ ಕೃಷಿ: ಸ್ಯಾದಾಕರ್ಷೆ ಸ್ತ್ರೀ  
ಬುಧೇ ಪುಮಾನ್” ಮೇದಿಂ। “ಕೃಷಿ: ಕರ್ಷೆ ಬುಧೇ ಪುಮಾನ್”  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಕೃಷೋಪ ಕೃಷ್ಣೋಪ್ತ (ವಿಂ) ಉತ್ತು ಬಿತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಉತ್ತಿರುವ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕೃಷಿ  
ಉಪ್ಪ:।

ಕೃಷಿ ಕೃಷ್ಣ (೪೦) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಹತ್ತು ಅವತಾರ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಒಂಬತ್ತನೆಯ ಅವತಾರ. ವೈಕುಂಠದಲ್ಲಿ ದ್ವಾರ  
ಪಾಲಕರಾಗಿದ್ದ ಜಯವಿಜಯರು ಸನಕಾದಿಮುನಿಗಳ  
ಶಾಪಕ್ಕೆ ಗುರಿಯಾಗಿ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಮೂರನೆಯ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ  
ಶಿಶುಪಾಲ-ದಂತವಕ್ತ್ರರಾಗಿ ಮುಟ್ಟಿದಾಗ ಅವರ ಸಂಹಾರ  
ಕ್ಕಾಗಿ ಅವತರಿಸಿದ ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ದೇವಕೀ-ವಸುದೇವರ  
ಎಂಟನೆಯ ಮಗ. ಕರ್ಣತೀರ್ಥ-ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) “ನಕ್”  
ಗತ್ವಂ ಚ ಬಾಹ್ಲಂ। “ಕೃಷಿಭವಾಚಕ: ಶಬ್ದೋ ಗೃಹ ನಿರ್ವೃತಿ  
ವಾಚಕ:। ಕೃಷಿಃ ಸ್ತುತವ್ಯೋ ಯೋಗಾತ್ ಕೃಷಿಃ ಭವತಿ ಸಾತ್ವತ:”  
ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೭೦। “ಏಕಾಂತಲೀಲಾರಸತೋ ನಿರ್ವೃತ: ಕೃಷಿ  
ಉಚ್ಯತೇ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ:। “ಅಗ್ರಾಹ್ಯ: ಶಾಶ್ವತ: ಕೃಷಿ:  
ವಿಂ ಸಂ।

ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಾ ವತಾರ: ತಂಗಿ ದೇವಕಿಯ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟುವ ಮಗನು ತನಗೆ ಮೃತ್ಯುವಾಗುವನೆಂಬ ಆಕಾಶ  
ವಾಣಿಯನ್ನು ಕೇಳಿದ ಕಂಸನು ದೇವಕೀ-ವಸುದೇವರನ್ನು  
ಸೆರೆಯಲ್ಲಿಟ್ಟು ಮೊದಲ ಆರು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಕೊಲ್ಲುತ್ತ  
ಬಂದನು. ಏಳನೆಯ ಗರ್ಭವನ್ನು ಪರಮಾತ್ಮನು  
ವಸುದೇವನ ಇನ್ನೊಬ್ಬ ಪತ್ನಿಯಾದ ರೋಹಿಣೀ ದೇವಿಯ  
ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಇರಿಸಿದನು. ಅವಳಲ್ಲಿ ಬಲರಾಮನು ಜನಿಸಿದನು.  
ದೇವಕೀದೇವಿಯ ಎಂಟನೆಯ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ವಿಷ್ಣುವು  
ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಶ್ರಾವಣ ಕೃಷ್ಣಾಷ್ಟಮಿ ಬುಧವಾರ ರೋಹಿಣೀ  
ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಮಧ್ಯರಾತ್ರಿಯ ವೇಳೆಯಲ್ಲಿ ಭೂಲೋಕದಲ್ಲಿ  
ಅವತರಿಸಿದನು. ಇದೇ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಾ ವತಾರ. ಚತು  
ರ್ಭುಜಗಳಿಂದ ಶಂಖ ಚಕ್ರ ಗದಾದ್ವಾಯುಧಗಳನ್ನು ಧರಿಸಿ  
ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಾ ವತಾರವಾದಕೂಡಲೇ ದೇವಕೀ-ವಸುದೇವರು  
ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು ಬಗೆಬಗೆಯಾಗಿ ಸ್ತುತಿಸುವರು. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ  
ಆದೇಶದಂತೆ ವಸುದೇವನು ಶಿಶುವನ್ನು ನಂದಗೋಕುಲಕ್ಕೆ  
ಕೊಂಡುಹೋಗಿ ಯಶೋದೆಯ ಬಳಿ ಮಲಗಿಸಿ  
ಯಶೋದಾ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಯೋಗಮಾಯೆಯನ್ನು

ದೇವಕಿಯ ಬಳಿ ತಂದು ಮಲಗಿಸಿದನು. ದೇವಕಿಯು  
ಪ್ರಸವಿಸಿದ ಸುದ್ದಿಯನ್ನು ಕೇಳಿದ ಕಂಸನು ಯೋಗಮಾಯೆ  
ಯನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲು ಬಂದಾಗ ತನಗೆ ಮೃತ್ಯುವಾದ ಕೃಷ್ಣನು  
ನಂದಗೋಕುಲದಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯುತ್ತಿರುವುದನ್ನು ತಿಳಿದು ಬಹಳ  
ಚಿಂತಾಕ್ರಾಂತನಾಗುವನು.

ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಬಾಲಲೀಲೆಗಳು: ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಿಗೆ  
ನಂದಗೋಕುಲದಲ್ಲಿ ಚಾತಕರ್ಮ ನಾಮಕರಣಾದಿ  
ಮಹೋತ್ಸವಗಳು ಬೆಳೆದುವು. ಈ ಶಿಶುವು ತನ್ನನ್ನು  
ಕೊಲ್ಲುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಕಂಸನು ಕಳುಹಿಸಿದ ಪೂತನೆಯೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸಿ  
ಯನ್ನೂ ಶಕಟಾಸುರ, ತೃಣಾಪರ್ತ, ಅಘಾಸುರ, ಬಕಾಸುರ,  
ವತ್ಸಾಸುರರನ್ನೂ ಸಂಹರಿಸುವುದು. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಜೇಷ್ಠ  
ಗಳನ್ನು ನೋಡಿ ಯಶೋದೆಯು ಅವನನ್ನು ಒಂದು  
ಒರಳುಕಲ್ಲಿಗೆ ಕಟ್ಟಿಹಾಕುವ ಸಾಹಸ ಮಾಡಿದಾಗ ಒರಳನ್ನು  
ಎಳೆದುಕೊಂಡು ಹೋಗಿ ಅರ್ಜುನವೃಕ್ಷಗಳನ್ನು ಕೆಡವಿ  
ಯಮಳಾರ್ಜುನರ ಶಾಪವಿಮೋಚನೆಮಾಡುವನು. ಭಾಗಂ  
೧೦-೧, ೧೦। ಮಣ್ಣನ್ನು ತಿನ್ನಲು ಹೋದಾಗ  
ಯಶೋದೆಯು ಬಾಯಿತೆರೆದು ನೋಡಲು ಅವಳಿಗೆ  
ವಿಶ್ವರೂಪಪ್ರದರ್ಶನವಾಗುವುದು. ಭಾಗಂ ೧೦-೮।  
ರಾಕ್ಷಸರ ಹಾವಳಿಗಳನ್ನೂ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಅಮಾನುಷವಾದ  
ಮತ್ತು ಅದ್ಭುತವಾದ ಬಾಲಲೀಲೆಗಳಿಂದ ವಿಪತ್ತು  
ಗಳೆಲ್ಲವೂ ಪರಿಹಾರವಾದುದನ್ನೂ ಕಂಡ ಗೋಪ  
ಗೋಪಾಲಕರೆಲ್ಲರೂ ಬೃಂದಾವನಕ್ಕೆ ತೆರಳುವರು. ಭಾಗಂ  
೧೦-೧೧। ಗೋಪಾಲಕರೊಡನೆ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಗೋವು  
ಗಳನ್ನು ಕಾಯುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಬ್ರಹ್ಮನು ಎಲ್ಲಾ ಗೋಪಾಲಕ  
ರನ್ನೂ ಹಸುಕರುಗಳನ್ನೂ ಅಪಹರಿಸಿಕೊಂಡು ಹೋಗು  
ವುದು. ಒಂದು ವರ್ಷಕಾಲ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಆಯಾ  
ಗೋಪಾಲಕರು ಮತ್ತು ದನಕರುಗಳ ರೂಪದಿಂದಿರಲಾಗಿ  
ಬ್ರಹ್ಮನು ಗರ್ವಭಂಗದಿಂದ ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಮತ್ತೆ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ  
ನಲ್ಲಿಗೆ ತಂದೊಪ್ಪಿಸಿ ಅವನನ್ನು ಸ್ತುತಿಸುವುದು. ಭಾಗಂ  
೧೦-೧೩, ೧೪। ಧೇನುಕಾಸುರವಧೆ, ಕಾಳಿಯಸರ್ಪ  
ಮರ್ದನ ಮತ್ತು ಸರ್ಪದ ವಿಷಜ್ವಾಲೆಯಿಂದ ಮೃತರಾದ  
ಗೋವುಗಳ ಮತ್ತು ಗೋಪಾಲಕರ ಪುನರುಜ್ಜೀವನ.  
ಭಾಗಂ ೧೦-೧೫, ೧೬। ನಂದಗೋಪನು ಇಂದ್ರಿಯಾಗವನ್ನು  
ಮಾಡಲು ಯತ್ನಿಸಿದಾಗ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಅದನ್ನು ತಡೆದು  
ಗೋವರ್ಧನಪೂಜೆಯನ್ನು ಮಾಡಿಸುವನು. ಅದರಿಂದ  
ಇಂದ್ರನು ಕೋಪಗೊಂಡು ಮೇಘಗಳಿಗೆಲ್ಲಾ ಆಜ್ಞೆಮಾಡಿ  
ಭಯಂಕರವಾದ ಸಿಡಿಲು ಗುಡುಗು ಸಹಿತವಾದ ಪ್ರಚಂಡ  
ವೃಷ್ಟಿಯನ್ನು ಕರೆಯಲು ಗೋಪಾಲಕರೆಲ್ಲರೂ ಪರಮ  
ಪುರುಷನಾದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನನ್ನು ಮರೆಹೊಕ್ಕಿ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿ



ಕೊಳ್ಳುವರು. ಆಗ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಗೋವರ್ಧನ ಪರ್ವತವನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆತ್ತಿಹಿಡಿದು ಮಳೆಗಾಳಿಯಿಂದ ಎಲ್ಲರಿಗೂ ರಕ್ಷಣೆ ಕೊಟ್ಟುದನ್ನು ನೋಡಿ ಇಂದ್ರನು ಅವಮಾನಗೊಂಡು ಮೇಘಗಳೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕರೆಯಿಸುವನು. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಕ್ಷಮೆಯಾಚಿಸಿದ ಇಂದ್ರನಿಂದ ಗೋವಿಂದ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ. ಭಾಗಂ ೧೦-೨೪-೨೭। ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ವೇಣುಗಾನವನ್ನು ಕೇಳಿ ಗೋಪಾಂಗನೆಯರೆಲ್ಲರೂ ಬಂದು ಅವನೊಡನೆ ಪ್ರೇಮಸಲ್ಲಾಪ ನಡೆಸುವುದು. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ತಮ್ಮ ಸೌಂದರ್ಯಕ್ಕೆ ಮೆಚ್ಚಿರು ವನೆಂದು ತಿಳಿದ ಗೋಪಾಂಗನೆಯರ ಅಹಂಕಾರವನ್ನು ಕಂಡು ಅಲ್ಲಿಂದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಅಂತರ್ಧಾನ. ಆಗ ಗೋಪಾಂಗನೆಯರು ವಿರಹಾರ್ತರಾಗಿ “ಜಯತಿ ತೇಽಧಿಕಂ ಜನ್ಮನಾ ಬ್ರಜಃ ಶ್ರಯತ ಇಂದಿರಾ ಶಶ್ವದಶ್ಚ ಹಿ। ದಯಿತ ದೃಶ್ಯತಾಂ ದಿಕ್ಷು ತಾವಕಾ-ಸ್ತ್ವಯಿ ಧೃತಾಸವಸ್ತ್ವಾಂ ವಿಚಿನ್ವತೇ” ಇತ್ಯಾದಿ ಬಗೆಬಗೆಯಾಗಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಆಗಮನಕ್ಕಾಗಿ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸುವುದು. ಅಲ್ಲಿ ಪರಮಾತ್ಮನ ಪ್ರಾದುರ್ಭಾವ. ಗೋಪಾಂಗನೆಯರೊಡನೆ ರಾಸಕ್ರೀಡೆ. ಭಾಗಂ ೧೦-೨೯-೩೩। ಧನುರ್ಯಾಗದ ನೆಪದಿಂದ ಬಲರಾಮ-ಕೃಷ್ಣರನ್ನು ಮಧುರಗೆ ಕರೆತರಲು ಕಂಸನು ಅಕ್ರೂರನನ್ನು ಕಳುಹಿಸುವನು. ಅಕ್ರೂರನು ಬರುವಾಗ ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಯಮುನಾನದಿಯಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಅವನಿಗೆ ತನ್ನ ದಿವ್ಯರೂಪವನ್ನು ತೋರಿಸಿದನು. ಭಾಗಂ ೧೦-೩೯। ರಾಮ ಕೃಷ್ಣರು ಮಧುರೆಯನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಕಂಸನಿಗೆ ಚಂದನವನ್ನು ತಯಾರಿಸಿ ಕೊಡುತ್ತಿದ್ದ ಕುಬ್ಜೆಯ ಕುರೂಪವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸಿ ಸುಂದರಿಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿ ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದುದು. ಮಲ್ಲಶಾಲಾಪ್ರವೇಶ. ಮುಷ್ಠಿಕಾಸುರ-ಚಾಣೂರರ ವಧೆ. ಕಂಸನ ಸಂಹಾರ. ಭಾಗಂ ೧೦-೪೧-೪೪। ದೇವಕೀ-ವಸುದೇವರ ಬಂಧ ವಿಮೋಚನೆ. ಉಗ್ರಸೇನ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ-ಬಲರಾಮರ ಉಪನಯನ. ಸಾಂದೀಪಿನಿಯಲ್ಲಿ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ. ಗುರುವಿನ ಮೃತಪುತ್ರನನ್ನು ಬದುಕಿಸಿ ತಂದೊಪ್ಪಿಸುವುದು. ಇತ್ಯಾದಿ ಇತ್ಯಾದಿ. ಭಾಗಂ ೧೦-೪೫।

**ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ-ಬಲರಾಮರ ವಿನಾಹ ಮುಂತಾದುವು :** ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸಾನಂತರ ಮಧುರಗೆ ಬಂದು ತನ್ನ ಸೋದರತ್ತೆಯ ಮಕ್ಕಳಾದ ಪಾಂಡವರ ಯೋಗಕ್ಷೇಮ ತಿಳಿಯಲು ಹಸ್ತಿನಾವತಿಗೆ ಅಕ್ರೂರನನ್ನು ಕಳುಹಿಸುವುದು. ಭಾಗಂ ೧೦-೪೮। ಕಂಸವಧೆಯಿಂದ ಕುಪಿತನಾದ ಜರಾಸಂಧನೊಡನೆ ಯುದ್ಧ. ಬಲರಾಮನಿಗೆ ರೇವತಿಯೊಡನೆ ವಿವಾಹ. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಿಂದ ರುಕ್ಮಿಣೀಹರಣ. ರುಕ್ಮಿಣೀಕಲ್ಯಾಣ. ಭಾಗಂ ೧೦-೫೦-೫೨-೫೪।

**ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಅಷ್ಟಮಹಿಷಿಯರು ಮತ್ತು ಅವರಲ್ಲಿ ಸಂತಾನಗಳು :**

- (1) **ರುಕ್ಮಿಣೀ**— ಪ್ರದ್ಯುಮ್ನ, ಚಾರುದೇಷ್ಠ, ಸುದೇಷ್ಠ, ಚಾರುದೇಹ, ಸುಚಾರು, ಚಾರುಗುಪ್ತ, ಚಾರುಚಂದ್ರ, ವಿಚಾರು, ಭದ್ರಚಾರು ಮತ್ತು ಚಾರುಮತಿಯೆಂಬ ಕನ್ಯೆ.
- (2) **ಸತ್ಯಭಾಮಾ**— ಭಾನು, ಸುಭಾನು, ಸ್ವರ್ಭಾನು, ಪ್ರಭಾನು, ಭಾನುಮಂತ, ಚಂದ್ರಭಾನು, ಬೃಹದ್ಭಾನು, ಅತಿಭಾನು, ಶ್ರೀಭಾನು, ಪ್ರತಿಭಾನು ಮತ್ತು ಒಬ್ಬ ಕನ್ಯೆ.
- (3) **ಜಾಂಬವತೀ**— ಸಾಂಬ, ಸುಮಿತ್ರ, ಪುರುಜಿತ್, ಶತಜಿತ್, ಸಹಸ್ರಜಿತ್, ವಿಜಯ, ಚಿತ್ರಕೇತು, ವಸುಮಾನ, ದ್ರವಿಡ, ಕೃತು ಮತ್ತು ಒಬ್ಬ ಕನ್ಯೆ.
- (4) **ಭದ್ರಾ**— ಸಂಗ್ರಾಮಜಿತ್, ಬೃಹತ್ಸೇನ, ಶೂರ, ಪ್ರಹರಣ, ಅರಿಜಿತ್, ಜಯ, ಸುಭದ್ರ, ವಾಮ, ಆಯು, ಸತ್ಯಕ ಮತ್ತು ಒಬ್ಬ ಕನ್ಯೆ.
- (5) **ಮಿತ್ರವಿಂದಾ**— ವೃಕ, ಹರ್ಷ, ಅನಿಲ, ಗೃಧ್ರ, ವರ್ಧನ, ಉನ್ನಾದ, ಮಹಾಶ, ಪಾವನ, ವಡ್ಡಿ, ಕ್ಷುಧಿ.
- (6) **ಸತ್ಯಾ**— ವೀರ, ಚಂದ್ರ, ಅಶ್ವಸೇನ, ಚಿತ್ರಗು, ವೇಗವಂತ, ವೃಷ, ಆಮ್ರ, ಕುಂತಿ, ಶಂಕು.
- (7) **ಕಾಳಿಂದೀ**— ಶ್ರುತ, ಕವಿ, ವೃಷ, ವೀರ, ಸುಬಾಹು, ಭದ್ರ, ಶಾಂತಿ, ದರ್ಶ, ಪೂರ್ಣಮಾಸ ಮತ್ತು ಸೋಮಕ.
- (8) **ಲಕ್ಷ್ಮಣಾ**— ಪ್ರಘೋಷ, ಗಾತ್ರವಂತ, ಸಿಂಹಬಲ, ಪ್ರಬಲ, ಊರ್ಧ್ವಗ, ಮಹಾಶಕ್ತಿ, ಸಹ, ಓಜ, ಅಪರಿಜಿತ್ ಮತ್ತು ಒಬ್ಬ ಕನ್ಯೆ.

ಇವರಲ್ಲದೆ ಮತ್ತೊಬ್ಬ ಪತ್ನಿ ರೋಹಿಣಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವರು : ಪ್ರದ್ಯುಮ್ನ, ಅನಿರುದ್ಧ, ದೀಪ್ತಿಮಂತ, ಭಾನು, ಸಾಂಬ, ಮಧು, ಬೃಹದ್ಭಾನು, ಚಿತ್ರಭಾನು, ವೃಕ, ಅರುಣ, ಪುಷ್ಕರ, ಶ್ರುತವೇಗ, ಸುನಂದನ, ಕವಿ, ನೃಗೋಧ, ವಿರೂಪ ಮತ್ತು ಚಿತ್ರಭಾನು. ಭಾಗಂ ೧೦-೬೧। ಇವರೆಲ್ಲರ ಮತ್ತು ಇನ್ನು ಹದಿನಾರು ಸಾವಿರ ಮಂದಿ ಪತ್ನಿಯರ



ಮನೆಗಳಲ್ಲೂ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ನಿರತನಾಗಿ ಸಂಸಾರ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದನು. ಈ ಆಶ್ಚರ್ಯವನ್ನು ನೋಡುವ ಕುತೂಹಲದಿಂದ ನಾರದ ಮಹರ್ಷಿಯು ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಮನೆಗೂ ಹೋಗಿ ನೋಡಿದಾಗ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು :

ಒಂದು ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಪಗಡೆಯಾಟವಾಡುತ್ತಲೂ  
 .. ಸ್ನಾನಕ್ಕಾಗಿ ಸಿದ್ಧನಾಗುತ್ತಲೂ  
 .. ಯಾಗ ಮಾಡುತ್ತಲೂ  
 .. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಭೋಜನ ಮಾಡಿಸುತ್ತಲೂ  
 .. ಸಂಧ್ಯಾವಂದನೆ ಮಾಡುತ್ತಲೂ  
 .. ಜಪಮಾಡುತ್ತಲೂ  
 .. ಆನೆ ಕುದುರೆಗಳ ಮೇಲೆ ಸವಾರಿ ಮಾಡುತ್ತಲೂ  
 .. ಮಂಚದ ಮೇಲೆ ಮಲಗಿಕೊಂಡೂ  
 .. ಮಂತ್ರಿಗಳೊಡನೆ ಮಂತ್ರಾಲೋಚನೆ ಮಾಡಿಕೊಂಡೂ  
 .. ವಾರಾಂಗನೆಯರೊಡನೆ ಜಲಕ್ರೀಡಾ ಸಕ್ತನಾಗಿಯೂ

ಮುಂತಾಗಿ ಅದ್ಭುತವಾದ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ನಿರತನಾಗಿದ್ದನು.

“ನರಕಂ ನಿಹತಂ ಶ್ರುತ್ವಾ ತಥೋದ್ರಾಹಂ ಚ ಯೋಷಿತಾಮ್ । ಕೃಷ್ಣನೇಕೇನ ಬಹ್ವಿನಾಂ ತದ್ವಿಧೃತುಃ ಸ್ಮ ನಾರದಃ । ಚಿತ್ರಂ ಬತೇತದೇಕೇನ ವಪುಷಾ ಯುಗಪತ್ ಪೃಥಕ್ । ಗೃಹೈಃ ದ್ವಿಚಕ್ರಸಾಹಸ್ರಂ ಸ್ತ್ರಿಯಾಃ ಏಕಃ ತದಾವಹತ್ । ಇತ್ಯುತ್ಸುಕೋ ದ್ವಾರವತೀಂ ದೇವರ್ಷಿಃ ಪುಷ್ಕರಮಾಗಮತ್ । .....

..... । ತತೋಽನ್ಯದಾವಿಶದ್ಗೃಹಂ ಕೃಷ್ಣಪತ್ನಯಾಃ ಸ ನಾರದಃ । ದಿವ್ಯಂತಮಕ್ಷೇಪಸ್ತತ್ರಾಪಿ ಪ್ರಿಯಯಾ ಚೋದ್ಭವೇನ ಚ । ಪೂಜಿತಃ ಪರಯಾ ಭಕ್ತಯಾ ಪ್ರತಿಯುತ್ಥಾನಾಸನಾದಿಭಿಃ । ಸ ತು ವಿस्ಮಿತಃ ತತ್ಕಥಾಂ ತುಷ್ಣಿಮನ್ಯದಗಾದ್ಗೃಹಮ್ । ತತ್ರಾಪ್ಯಚಕ್ರತಃ ಗೋವಿಂದಂ ಲಾಲಯಂತಂ ಸುತಾನ್ ಶಿಷ್ಯಾನ್ । ತತೋಽನ್ಯಸ್ತಸ್ಮಿನ್ ಗೃಹೇಽಪಶ್ಯನ್ಮಜ್ಜನಾಯ ಕೃತೋದ್ರಮಮ್ । ಜುಹ್ವಂತಂ ಚ ವಿತಾನಾಗ್ನಿನಿ ಯಜಂತಂ ಪೃಷ್ಠಭಿರ್ಮಲೈಃ । ಭೋಜಯಂತಂ ದ್ವಿಜಾನ್ ಕ್ವಾಪಿ ಭುಂಜಾನಮವಶೇಷಿತಮ್ । ಕ್ವಾಪಿ ಸಂಧ್ಯಾಮುಪಾಸೀನಂ ಜಪಂತಂ ಬ್ರಹ್ಮವಾಗ್ಯತಮಮ್ । ಅಶ್ವಗಂಜೈರಯೈಃ ಕ್ವಾಪಿ ವಿಚರಂತಂ ಗದಾಗ್ರಜಮ್ । ಕ್ವಚಿಕ್ಷುಷ್ಯಾನ್ ಪರ್ಯಂಕ್ತುಃ ಸ್ತೂಯಮಾನ್ ಚ ವಂದಿಮಃ । ಮನ್ತ್ರಯಂತಂ ಚ ಕಸ್ಮಿನ್ಮಿನ್ಮನ್ತ್ರಿಭಿಃ ಸೋದ್ಭವಾದಿಭಿಃ । ಜಲಕ್ರೀಡಾರತಂ ಚಾಪಿ ವಾರಮುಖ್ಯಾಬಲಾವೃತಮ್ ” ಭಾಗಂ ೧೦-೬೯ । ಇತ್ಯಾದಿ. ಧರ್ಮರಾಜನ ರಾಜಸೂಯಯಾಗದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಿಗೆ ಅಗ್ರಪೂಜೆಮಾಡಿದಾಗ ಅಸಹನೆಯಿಂದ ಕೋಪಗೊಂಡು ನಿಂದಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಶಿಶುಪಾಲನನ್ನು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಸಂಹರಿಸಿ

ಮದ್ದು. ಭಾಗಂ ೧೦-೭೪ । ದಂತವಕ್ತ್ರ ಮತ್ತು ವಿದೂರಧರ ವಧೆ. ಭಾಗಂ ೧೦-೭೮ । ಕಡು ಬಡವನಾಗಿದ್ದ ಕುಚೇಲನು ಪತ್ನಿಯ ಪ್ರೇರಣೆಯಿಂದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಲ್ಲಿಗೆ ತನ್ನ ಕಷ್ಟವನ್ನು ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳಲು ಹೋಗಿ ಆತನಿಂದ ಸತ್ಕಾರ ಹೊಂದಿ ತಮ್ಮ ಊರಿಗೆ ಬಂದು ಸೇರುವುದರೊಳಗಾಗಿ ತನ್ನನ್ನು ಅಮಿತವಾದ ಐಶ್ವರ್ಯವಂತನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ವಾತ್ಸಲ್ಯವನ್ನು ಕೊಂಡಾಡಿದುದು. ಭಾಗಂ ೧೦-೮೦, ೮೧ । ದುರ್ಯೋಧನನ ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ದುಃಶಾಸನನು ದ್ರೌಪದಿಯ ವಸ್ತ್ರಾಪಹಾರ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ದ್ರೌಪದಿಗೆ ಅಕ್ಷಯವಸ್ತ್ರವನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿ ಮಾನ ಸಂರಕ್ಷಣೆ ಮಾಡಿದುದು. ಭಾಗಂ ೧೦-೯೦ । ದುರ್ಯೋಧನನ ಪ್ರೇರಣೆಯಿಂದ ದುರ್ವಾಸಮಹರ್ಷಿಯು, ಎಲ್ಲರೂ ಊಟಮಾಡಿ ಪಾತ್ರೆಯು ಖಾಲಿಯಾಗಿದ್ದಾಗ ಪಾಂಡವರಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದು ಭಿಕ್ಷೆ ಬೇಡಲು ದ್ರೌಪದಿಯು ಏನೂ ತೋಚದೆ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನನ್ನು ಸ್ಮರಿಸಿಕೊಂಡಳು. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಪರಮವಿಶ್ವಾಸದಿಂದ ಒಂದು ಅಕ್ಷಯ ಪಾತ್ರೆಯ ಅಂಚಿನಲ್ಲಿ ಅಂಟಿಕೊಂಡಿದ್ದ ಒಂದು ಶಾಕ ದಳವನ್ನು ಆಪೋಶನ ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ದುರ್ವಾಸರಿಗೂ ಶಿಷ್ಯವರ್ಗಕ್ಕೂ ತೃಪ್ತಿಯುಂಟುಮಾಡಿ ಪಾಂಡವರನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಿದುದು. ಭಾಗಂ ೧೦-೨೬೪ । ಪಾಂಡವರಿಗೆ ಅರ್ಧ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಕೊಡಿಸುವುದಕ್ಕಾಗಿ ದುರ್ಯೋಧನನಲ್ಲಿಗೆ ದೂತನಾಗಿ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ದುರ್ಯೋಧನನು ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನನ್ನು ಕಟ್ಟಿಹಾಕುವಂತೆ ಮನಸ್ಸು ಮಾಡಲು ತನ್ನ ವಿಶ್ವರೂಪವನ್ನು ತೋರಿಸಿ ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಚಕಿತರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದುದು ಮತ್ತು ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನಿಗೂ ಭೀಷ್ಮ ದ್ರೋಣ ವಿದುರಾದಿಗಳಿಗೂ ದಿವ್ಯ ಚಕ್ಷುಸ್ಸನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದುದು. ಭಾಗಂ ೧೦-೨೬೫ । ಕರ್ಣನನ್ನು ಪಾಂಡವರೊಡನೆ ಸೇರಬೇಕೆಂದು ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸಿದುದು. ಭಾಗಂ ೧೦-೨೬೬ । ರಣರಂಗದಲ್ಲಿ ಅರ್ಜುನನು ತನ್ನ ಬಂಧುಗಳ ಮೇಲೆ ಯುದ್ಧಮಾಡಲು ಹಿಂಜರಿದಾಗ ಶ್ರೀ ಭಗವದ್ಗೀತೆಯನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸಿ ತನ್ನ ದಿವ್ಯ ಮಹಿಮೆಯನ್ನು ತೋರಿಸಿ ಯುದ್ಧೋದ್ಯಮಕ್ಕೆ ನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದುದು. ಭಾಗಂ ೧೦-೨೬೭ । ಕರ್ಣಾರ್ಜುನರ ಘೋರಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಅರ್ಜುನನ ಮೇಲೆ ಪ್ರಯೋಗಿಸಿದ ನಾಗಾಸ್ತ್ರದ ಗುರಿಯನ್ನು ತಪ್ಪಿಸಲು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಅರ್ಜುನನ ರಥವು ನೆಲಕ್ಕೆ ಕುಸಿಯುವಂತೆ ಮಾಡಿ ಅವನನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಿದುದು. ಭಾಗಂ ೧೦-೨೬೮ । ತಾಯಿಯ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ದ್ದಾಗ ಅಶ್ವತ್ಥಾಮನ ಬ್ರಹ್ಮಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೆ ತುತ್ತಾಗಿದ್ದ ಪರಿಕ್ಷಿತ್ತನ್ನು ಬದುಕಿಸಿದುದು. ಭಾಗಂ ೧೦-೨೬೯ । ಕುರುಕುಲನಾಶಕ್ಕೂ ಸಕಲ ರಾಜರ



ವಿನಾಶಕ್ಕೂ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನೇ ಕಾರಣನೆಂದು ತಿಳಿದ ಉದಂಕ ಮುನಿಯು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಿಗೆ ಶಾಪವನ್ನು ಕೊಡಲು ಹೋದಾಗ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಆ ಮುನಿಗೆ ತನ್ನ ನಿಜರೂಪವನ್ನು ತೋರಿದುದು. ಭಾಂ ಆದಿಂ ೪೩. ಇತ್ಯಾದಿ ಇತ್ಯಾದಿ. 2. ಅರ್ಜುನ, ಇದು ಅರ್ಜುನನ ಹತ್ತು ಹೆಸರುಗಳಲ್ಲೊಂದು. “ಕೃಷ್ಣ ಇತ್ಯೇವ ದಶಮಂ ನಾಮ ಚಕ್ರೇ ಪಿತಾ ಮಮ। ಕೃಷ್ಣಾವದಾತಸ್ಯ ಸತಃ ಪ್ರಿಯವಾದಾಲಕಸ್ಯ ವೇ” ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೪೦-೨೨. 3. ಮಹಾದೇವ. “ದೀರ್ಘಶ್ಚ ಹರಿಕೇಶಶ್ಚ ಸುತೀರ್ಥಃ ಕೃಷ್ಣ ಏವ ಚ” ಭಾಂ. 4. ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ. “ಯೋ ವ್ಯಸ್ಯ ವೇದಾಂಶ್ಚತುರೋ ಭಗವಾಂಸ್ತಪಸಾ ಋಷಿಃ। ಲೋಕೇ ವ್ಯಾಸತ್ವಮಾಪೇದೇ ಕಾಣ್ಯಾತ್ ಕೃಷ್ಣತ್ವಮೇವ ಚ” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೦೫. 5. ಕೋಗಿಲೆ. 6. ಕಲಿಯುಗ. 7. ಕಾಗೆ. 8. ಕಪ್ಪುಬಣ್ಣ. 9. ಕರಮರ್ಧಕ ವೃಕ್ಷ. ಕಮರಿಕೆಗಿಡ. 10. ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷ, ತಿಂಗಳಿನ ಎರಡನೆಯ ಅರ್ಧಭಾಗ. “ಚಂದ್ರವೃದ್ಧಿಕರಃ ಶುಕ್ಲಃ ಕೃಷ್ಣಶ್ಚಂದ್ರಕ್ಷಯಾತ್ಮಕಃ” ತಿಥಿತಂ. 11. ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷದ ದೇವತೆ. “ಭೂಮೋ ರಾತ್ರಿಸ್ತಥಾ ಕೃಷ್ಣಃ ಷಷ್ಠಾಸಾ ದಕ್ಷಿಣಾಯನಮ್” ಗೀತಾ ೮-೨೫. 12. ಶೂದ್ರ. 13. ಅನೆ. 14. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. (ನಂ) 15. ದುರಿತ, ಪಾಪ. 16. ಮೆಣಸು. 17. ಕೃಷ್ಣಲೋಹ, ಕಬ್ಬಿಣ. (ವಿಂ) 18. ಕಪ್ಪುಬಣ್ಣದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಣಾ-ಷ್ಣ. 19. ದ್ರೌಪದಿ, ಪಾಂಡವರ ಪತ್ನಿ. “ಕೃಷ್ಣೇವಾಬ್ರವನ್ ಕೃಷ್ಣಾಂ ಕೃಷ್ಣಾಭೂತ್ ಸಾ ಹಿ ವರ್ಣತಃ। ತಥಾ ತನ್ಮಿಥುನ್ ಜಜ್ಞೇ ದ್ರುಪದಸ್ಯ ಮಹಾಮತೇ” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೮೧-೫೭. 20. ಹಿಪ್ಪಲಿ. 21. ದ್ರಾಕ್ಷಿ. 22. ನೀಲಿಗಿಡ. 23. ಕರಿ ಜೀರಿಗೆ. 24. ಶೀವನೆಯ ಮರ. 25. ಕಟುಕ ರೋಹಿಣಿ. 26. ಬಾಹುಜಿಗೆ ಗಿಡ. “ಕೃಷ್ಣಃ ಕಾಕೇ ಪಿಕೇ ವರ್ಣೇ ವಿಷ್ಣೌ ವ್ಯಾಸೇಽರ್ಜುನೇ ಕಲೌ। ಕೃಷ್ಣಾ ತು ನೀಲ್ಯಾಂ ದ್ರೌಪದಾಂ ಪಿಪ್ಪಲಿ-ದ್ರಾಕ್ಷಯೋರಪಿ। ಕೃಷ್ಣಂ ತು ಮರಿಚೇ ಲೋಹೇ” ಹೇಮಂ. 27. ಕೃಷ್ಣಾನದಿ. “ವ್ಯಾಸಾರ್ಜುನಾಗ್ನಿಹರಿಕೋಕಿಲಕಾಕಶ್ಚದ್ರತಾಮಿಸ್ತಪಕ್ಷ-ಕರಿನೀಲಗುಣೇಷು ಕೃಷ್ಣಃ। ದ್ರವ್ಯೇ ತ್ರಿಷು ದ್ರುಪದಜಾತಟಿಣಿಕಾಸು ಕೃಷ್ಣಾಥ ಲೋಹಮರಿಚೇ ದುರಿತಂ ಚ ಕೃಷ್ಣಮ್” ನಾನಾರ್ಥಂ.

**ಕೃಷ್ಣಕ ಕೃಷ್ಣಕ** (ಪುಂ) 1. ಕರಿ ಎಳ್ಳು. ಕೃಷ್ಣಪ್ರಕಾರ: “ಕನ್” (೪-೪-೩)। (ನಂ) 2. ಕೃಷ್ಣಾ ಜನನೆಯ ಒಬ್ಬ ಮನುಷ್ಯ. ಕೃಷ್ಣಾಜಿನ “ಕನ್” ಅಜಿನಪದಲೋಪಶ್ಚ (೪-೩-೮೨)।

**ಕೃಷ್ಣಕನ್ದ ಕೃಷ್ಣಕನ್ದ** (ನಂ) ಕಂದಾವರೆ, ರಕ್ಷೋತ್ಪಲ. ಕೃಷ್ಣಃ ಕನ್ದೋಽಸ್ಯ।

**ಕೃಷ್ಣಕರ್ಮನ್ ಕೃಷ್ಣಕರ್ಮನ್** (ನಂ) 1. ಆಕೃತ್ಯ, ಕೆಟ್ಟಕೆಲಸ, ನಿಷಿದ್ಧವಾದ ಕಾರ್ಯ. ಕೃಷ್ಣಂ ಕರ್ಮ। 2. ಗಾಯವನ್ನು ಒಣಗಿಸಿ ಕಪ್ಪಾಗಿಸುವ ಕಾರ್ಯ. “ದಾಹುತ್ವಾತ್ ಶುಕ್ಲಾನಾಂ

ಕೃಷ್ಣಕರ್ಮ ಹಿತಂ ಭವೇತ್। ಭಲ್ಲಾತಕಾನ್ ವಾಸಯೇತ್ ಕೀರೇ ಪ್ರಾಡ್ಮುತ್ರಭಾವಿತಾನ್” ಇತ್ಯಾದಿ ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೧। (ವಿಂ) 3. ಕೆಟ್ಟಕೆಲಸಮಾಡುವ, ನಿಷಿದ್ಧವಾದ ಪಾಪ ಕಾರ್ಯಮಾಡುವ. ಕೃಷ್ಣಂ ಕರ್ಮ ಯಸ್ಯ।

**ಕೃಷ್ಣಕಾಕ ಕೃಷ್ಣಕಾಕ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕಾಗೆ, ಮಂಡಕಾಗೆ, ಡೊಂಬಕಾಗೆ.

**ಕೃಷ್ಣಕಾಯ ಕೃಷ್ಣಕಾಯ** (ಪುಂ) ಮಹಿಷ, ಎಮ್ಮೆ. ಕೃಷ್ಣಃ ಕಾಯೋಽಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಟಾಪ್” (೪-೧-೪)। ಅತ್ರ ಯೋಪ-ಧತ್ವಾತ್ ನ ಡಿಃ। -ಕಾಯಾ -ಕಾಯಾ.

**ಕೃಷ್ಣಕೋಹಲ ಕೃಷ್ಣಕೋಹಲ** (ಪುಂ) ಜೂಜುಗಾರ, ಜೂಜಾಟದವನು. “ಛೂತಕೃತ್ ಕೃಷ್ಣಕೋಹಲಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಕೃಷ್ಣಗಜ್ಜಾ ಕೃಷ್ಣಗಂಗಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೃಷ್ಣಾನದಿ.

**ಕೃಷ್ಣಗತಿ ಕೃಷ್ಣಗತಿ** (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಕೃಷ್ಣಾ ಧೂಮರೂಪಾ ಗತಿಯಸ್ಯ। “ಆಯೋಧನೇ ಕೃಷ್ಣಗತಿ ಸಹಾಯಮವಾಪ್ಯ ಯಃ ಕ್ಷತ್ರಿಯಕಾಲರಾತ್ರಿಮ್” ರಘುಂ ೬-೪೨.

**ಕೃಷ್ಣಗರ್ಭ ಕೃಷ್ಣಗರ್ಭ** (ಪುಂ) ಕರಿಶಿವನಿಯ ಮರ. ಕೃಷ್ಣ-ವರ್ಣೋ ಗರ್ಭೋಽಸ್ಯ।

**ಕೃಷ್ಣಗಿರಿ ಕೃಷ್ಣಗಿರಿ** (ಪುಂ) 1. ನೀಲಪರ್ವತ. 2. ಸೇಲಂ ಜಿಲ್ಲೆಯಲ್ಲಿ ಒಂದು ಗ್ರಾಮ.

**ಕೃಷ್ಣಗ್ರೀವ ಕೃಷ್ಣಗ್ರೀವ** (ಪುಂ) 1. ನೀಲಕಂಠ, ಮಹಾದೇವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಕೃಷ್ಣಾ ಗ್ರೀವಾಽಸ್ಯ। (ವಿಂ) 2. ಕಪ್ಪಾದ ಕುತ್ತಿಗೆಯುಳ್ಳ. ಕೃಷ್ಣಾ ಗ್ರೀವಾ ಯಸ್ಯ।

**ಕೃಷ್ಣಚಕ್ರು (ಕ) ಕೃಷ್ಣಚಂಚು (ಕ)** (ಪುಂ) ಚಣಕ, ಕಡಲೆ. ಕೃಷ್ಣಾ ಚಕ್ರಸ್ಯ ವಾ “ಕಪ್” (೪-೪-೧೫೪)।

**ಕೃಷ್ಣಚತುರ್ದಶಿ ಕೃಷ್ಣಚತುರ್ದಶಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷದ ಚತುರ್ದಶಿ, ಮಾಸದ ಎರಡನೆಯ ಅರ್ಧದ ಹದಿನಾಲ್ಕನೆಯ ದಿನ.

**ಕೃಷ್ಣಚಂದನ ಕೃಷ್ಣಚಂದನ** (ನಂ) ಹರಿಚಂದನ, ಬಿಳಿಚಂದನ. ಕೃಷ್ಣಪ್ರಿಯಂ ಚಂದನಮ್।

**ಕೃಷ್ಣಚಂದ್ರ ಕೃಷ್ಣಚಂದ್ರ** (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ, ವಾಸುದೇವ. ಕೃಷ್ಣಶ್ಚಂದ್ರ ಇವ।

**ಕೃಷ್ಣಚೂರ್ಣ ಕೃಷ್ಣಚೂರ್ಣ** (ನಂ) 1. ಕಬ್ಬಿಣದ ತುಕ್ಕು, ಕಬ್ಬಿಣದ ಕಲುಬು. 2. ಅರದಿಂದ ಕಬ್ಬಿಣವನ್ನು ಉಜ್ಜಿ ಬಂದ ಪುಡಿ, ಕೃಷ್ಣಂ ಕೃಷ್ಣವರ್ಣಂ ಚೂರ್ಣಮ್, ಕೃಷ್ಣಲೋಹಸ್ಯ ಚೂರ್ಣಂ ವಾ।

**ಕೃಷ್ಣಜ ಕೃಷ್ಣಜ** (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಮಗ, ಪ್ರದ್ಯುಮ್ನ. ಕೃಷ್ಣಾತ್ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರಭವಿ) “ಜಃ” (೩-೨-೯೮)।



ಕೃಷ್ಣಜಟಾ ಕೃಷ್ಣಜಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಟಾಮಾಂಸಿ. ಕೃಷ್ಣಾ ಜಟಾ ಯಸ್ಯಾ: |

ಕೃಷ್ಣಜನ್ಮಖಂಡ ಕೃಷ್ಣಜನ್ಮಖಂಡ (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಜನ್ಮ (ಅವತಾರ) ವನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವ ಬ್ರಹ್ಮವೈವರ್ತ ಪುರಾಣದ ಒಂದು ಭಾಗ.

ಕೃಷ್ಣಜನ್ಮಾಷ್ಟಮಿ ಕೃಷ್ಣಜನ್ಮಾಷ್ಟಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಅವತರಿಸಿದ ಶ್ರಾವಣ ಕೃಷ್ಣಾಷ್ಟಮಿ. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಹುಟ್ಟಿದ ದಿವಸ, ಸಿಂಹಮಾಸದ ಕೃಷ್ಣ ಪಕ್ಷದ ಅಷ್ಟಮಿ.

ಕೃಷ್ಣಜೀರಕ ಕೃಷ್ಣಜೀರಕ (ಪುಂ) ಕರಿಜೀರಿಗೆ. ಕೃಷ್ಣಾ ಜೀರಕ: |

ಕೃಷ್ಣತಾ ಕೃಷ್ಣತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಪ್ಪಾಗಿರುವುದು. ಕೃಷ್ಣಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) | "ತ್ವ:" (೪-೧-೧೧೯) | -ತ್ವಮ್ -ತ್ವಮ್.

ಕೃಷ್ಣತ್ವಚ್ ಕೃಷ್ಣತ್ವಚ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೃಷ್ಣಾಜಿನ, ಜಿಂಕೆಯ ಚರ್ಮ. ಕೃಷ್ಣಸ್ಯ ಕೃಷ್ಣಮೃಗಸ್ಯ ತ್ವಕ್ | "ಕಂಠಪ್ರಭಾಸಜ್ಜ-ವಿಶೇಷನಿಲಾಂ ಕೃಷ್ಣತ್ವಚಂ ಗ್ರಂಥಿಮತೀಂ ದಧಾನಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೪೬ |

ಕೃಷ್ಣದೇಹ ಕೃಷ್ಣದೇಹ (ಪುಂ) 1. ಕಪ್ಪುಮೈ. 2. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. (ವಿಂ) 3. ಕಪ್ಪುದೇಹವುಳ್ಳ.

ಕೃಷ್ಣದ್ವಾದಶೀ ಕೃಷ್ಣದ್ವಾದಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷದ ದ್ವಾದಶೀ ತಿಥಿ, ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷದ ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ದಿವಸ.

ಕೃಷ್ಣದ್ವೈಪಾಯನ ಕೃಷ್ಣದ್ವೈಪಾಯನ (ಪುಂ) ಪರಾಶರ ಮಹರ್ಷಿಯ ಪುತ್ರ, ವೇದವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ. ದ್ವೈಪಾಯನಂ ಜನ್ಮಭೂಮಿರಸ್ಯ | ದ್ವೈಪಾಯನ ಎವ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮) | "ತಮಹಮರಾಗಮಕೃಷ್ಣಂ ಕೃಷ್ಣದ್ವೈಪಾಯನಂ ವಂದೇ" ವೇಣೀಂ ೧-೪ |

"ಕೃಷ್ಣದ್ವೈಪಾಯನಂ ವ್ಯಾಸಂ ವಿಧಿ ನಾರಾಯಣಂ ವಿಭುಮ್ | ಕೋಹ್ಯನ್ಯ: ಪುಂಡರೀಕಾಕ್ಷಾತ್ ಮಹಾಭಾರತಕೃದ್ಭವೇತ್" ವಿಷ್ಣುಪುಂ | [ಪರಾಶರ ಮುನಿಯು ಒಂದು ಸಲ ದೋಣಿಯಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ಯಮುನಾ ನದಿಯನ್ನು ದಾಟುತ್ತಿದ್ದಾಗ ದೋಣಿಯನ್ನು ನಡೆಸುತ್ತಿದ್ದ ದಾಶರಾಜನ ಮಗಳಾದ ಸತ್ಯವತಿಯನ್ನು ಮೋಹಿಸಿದುದರಿಂದ ನದಿಯ ಮಧ್ಯದಲ್ಲೇ ಆಗಲೇ ಮಗುವೊಂದು ಜನಿಸಿತು. ಶಿಶುವು ಕೃಷ್ಣವರ್ಣವಾದುದರಿಂದಲೂ ಯಮುನಾನದಿಯ ದ್ವೀಪದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದುದರಿಂದಲೂ

"ಕೃಷ್ಣದ್ವೈಪಾಯನ" ರೆಂದೂ ಈ ಮಹರ್ಷಿಯು ತಪಃಪ್ರಭಾವದಿಂದ ವೇದಗಳ ವಿಭಾಗಮಾಡಿದುದರಿಂದ "ವೇದವ್ಯಾಸ" ರೆಂದೂ ಹೆಸರಾಯಿತು. "ಕನ್ಯಾಪುತ್ರೋ ಮಮ ಪುರಾ ದ್ವೈಪಾಯನ ಇತಿ ಶ್ರುತ: | ಯೋ ವ್ಯಸ್ಯ ವೇದಾಂಶ್ಚತುರ-ಸ್ತಪಸಾ ಭಗವಾನ್ ಋಷಿ: | ಲೋಕೇ ವ್ಯಾಸತ್ವಮಾಪೇದೇ ಕಾಣ್ಯಾತಿ ಕೃಷ್ಣತ್ವಮೇವ ಚ | ಸತ್ಯವಾದೀ ಶಮಪರ: ತಪಸ್ವೀ ದಗ್ಧಕಿಲ್ವಿಷ: |

ಸದೋತ್ಪನ್ನ: ಸ ತು ಮಹಾನ್ ಸಹ ಪಿತ್ರಾ ತತೋ ಗತ:"] ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೦೪ |

ಕೃಷ್ಣಧನ ಕೃಷ್ಣಧನ (ನಂ) ಅನ್ಯಾಯದಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಿದ ಹಣ, ಕಳ್ಳತನ ಜೂಜು ಕಾಳಸಂತೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಪಾದಿಸಿದ ಹಣ. ಕೃಷ್ಣಂ ಅನ್ಯಾಯಾಜಿತಂ ಧನಮ್ |

ಕೃಷ್ಣಧಾನ್ಯ ಕೃಷ್ಣಧಾನ್ಯ (ನಂ) ಕಪ್ಪುಧಾನ್ಯ; ಉದ್ದು. ಎಳ್ಳು, ರಾಗಿ ಮುಂತಾದುವು.

ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷ ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರನ ಕಲೆಗಳು ಕಡಮೆಯಾಗುವ ತಿಂಗಳಿನ ಎರಡನೆಯ ಅರ್ಧಭಾಗ, ಕೃಷ್ಣ ಪ್ರತಿಪತ್ತಿನಿಂದ ಅಮಾವಾಸ್ಯೆವರೆಗಿನ ಹದಿನೈದು ದಿನಗಳುಳ್ಳ ಪಕ್ಷ. ಕೃಷ್ಣ: ಪಕ್ಷ: | 2. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಪಕ್ಷ.

ಕೃಷ್ಣಪದೀ ಕೃಷ್ಣಪದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಪ್ಪುಕಾಲಿನ ಹೆಂಗಸು. ಕೃಷ್ಣ: ಪಾದೋಽಸ್ಯಾ: | ಪಾದಸ್ಯ ಲೋಪೋ "ಜಿಪ್" ಚ (೪-೪-೧೩೯) ನಿಪಾಂ | "ಪಾದ: ಪತ್" (೬-೪-೧೩೦) ಇತಿ ಪದಾದೇಶ: |

ಕೃಷ್ಣಪರ್ಣಿ ಕೃಷ್ಣಪರ್ಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೃಷ್ಣತುಲಸಿ. ಕೃಷ್ಣಂ ಪರ್ಣಮಸ್ಯಾ: |

ಕೃಷ್ಣಪಾಕಫಲ ಕೃಷ್ಣಪಾಕಫಲ (ಪುಂ) ಕರಮರ್ಧವೃಕ್ಷ, ಕಮರಿಕೆಗಿಡ. "ಕೃಷ್ಣಪಾಕಫಲಾವಿಗ್ನಸುಷೇಣಾ: ಕರಮರ್ದಕೇ" ಅಮಂ |

ಕೃಷ್ಣಪುಚ್ಛ ಕೃಷ್ಣಪುಚ್ಛ (ಪುಂ) ರೋಹಿತವೆಂಬ ಕಪ್ಪು ಬಾಲದ ಒಂಥು ಜಾತಿಯ ಮೀನು, ಕೆಂಪು ಮೀನು. ಕೃಷ್ಣ: ಪುಚ್ಛೋಽಸ್ಯ |

ಕೃಷ್ಣಫಲ ಕೃಷ್ಣಫಲ (ಪುಂ) ಕಮರಿಕೆಗಿಡ. ಕೃಷ್ಣಂ ಫಲಮಸ್ಯ |

ಕೃಷ್ಣಭಕ್ತ ಕೃಷ್ಣಭಕ್ತ (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನನ್ನು ಪೂಜಿಸುವವನು, ಕೃಷ್ಣೋಪಾಸಕ.

ಕೃಷ್ಣಭೂಮಿ ಕೃಷ್ಣಭೂಮಿ (ಪುಂ) ಕಪ್ಪುಮಣ್ಣಿನ ಪ್ರದೇಶ. ಕೃಷ್ಣಾ ಭೂಮಿರಸ್ಯ "ಅಚ್" (ವಾಂ ೪-೪-೭೪) | "ಪಾಂಡು-ಕೃಷ್ಣತೋ ಭೂಮಿ: ಪಾಂಡು-ಕೃಷ್ಣಮೃತ್ತಿಕೇ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ |

ಕೃಷ್ಣಭೇದಿ ಕೃಷ್ಣಭೇದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಟುಕರೋಹಿಣಿ.

ಕೃಷ್ಣಮುಖ ಕೃಷ್ಣಮುಖ (ಪುಂ) 1. ಕಪ್ಪುಮುಖದ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕಪಿ. (ವಿಂ) 2. ಕಪ್ಪುಮುಖವುಳ್ಳ. 3. ಕಪ್ಪು ತುದಿಯುಳ್ಳ, ತುದಿಯಲ್ಲಿ ಕಪ್ಪಾಗಿರುವ. ಕೃಷ್ಣಂ ಮುಖಂ ವದನಮ್ ಅಗ್ರಭಾಗೋ ವಾ ಯಸ್ಯ | "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) | -ಮುಖತಾ -ಮುಖತಾ. 1. ಕಪ್ಪುಮುಖದಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. 2. ಕಪ್ಪು ತುದಿಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. "ಸ್ತನಯೋ: ಕೃಷ್ಣಮುಖತಾ ರೋಮರಾಜ್ಯದ್ಗಮಸ್ತಥಾ" ಸುಶ್ರುತಂ |

ಕೃಷ್ಣಮೃಗ ಕೃಷ್ಣಮೃಗ (ಪುಂ) ಕಪ್ಪುಚುಕ್ಕೆಯ ಜಿಂಕೆ, ಬೆಗರಿ. ಕೃಷ್ಣೋ ಮೃಗ: | "ಋಣ್ ಕೃಷ್ಣಮೃಗಾಂಶ್ಚೈವ ಮೇಧ್ಯಾದನ್ಯಾನ್



ವನೇಚರಾನ್" ಭಾಂ ವನಂ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ತೀಪ್" (೪-೧-೬೩) ।

-ಸುಗಿ - ಮೃಗೀ.

ಕೃಷ್ಣಯಜುರ್ವೇದ ಕೃಷ್ಣಯಜುರ್ವೇದ (೪ಂ) ಶುಕ್ಲ ಮತ್ತು ಕೃಷ್ಣಗಳೆಂಬ ಎರಡು ಯಜುರ್ವೇದಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. ತೈತ್ತಿರೀಯ ಯಜುರ್ವೇದವು ಇದರ ಒಂದು ಶಾಖೆ. (ವೈಶಂಪಾಯನ ಶಿಷ್ಯರಾದ) ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕ್ಯಮಹರ್ಷಿಯು ಒಂದು ದಿನ ಗುರುವಾದ ವೈಶಂಪಾಯನರಲ್ಲಿ ಅಧಿಕ್ಷೇಪವಾಗಿ ಮಾತಾಡಲು ಅಧ್ಯಯನಮಾಡಿದ ವೇದವೆಲ್ಲವೂ ಹೊರಟು ಹೋಗಲೆಂಬ ಗುರುವಿನ ಶಾಪದಿಂದ ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕ್ಯರು ವೇದವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಪಾಠಮಾಡಿದರು. ಇತರ ಮಹರ್ಷಿಗಳೆಲ್ಲರೂ ತಿತ್ತಿರಿಪಕ್ಷಿರೂಪದಿಂದ ಆ ವೇದವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಗ್ರಹಿಸಿ ಪ್ರಚಾರಮಾಡಿದುದರಿಂದ ಈ ವೇದಕ್ಕೆ "ತೈತ್ತಿರೀಯ ಯಜುರ್ವೇದ"ವೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು.

ಯಜುರ್ವೇದವು ಎಂಬತ್ತಾರು ಭೇದಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು.

ಚರಕಶಾಖೆಯವರ ಭೇದಗಳು 12: (1) ಚರಕಾ:, (2) ಆಹ್ವರಕಾ:, (3) ಕಠಾ:, (4) ಪ್ರಾಚ್ಯಕಠಾ:, (5) ಕಾಪಿಠಲಕಠಾ:, (6) ಚಾರಾಯಣೀಯಾ:, (7) ವಾರ್ತಾಂತಿರೀಯಾ:, (8) ಶ್ವೇತಾಶ್ವತರಾ:, (9) ವಾರಾಹಾ:, (10) ಅಪಮನ್ಯವ:, (11) ಜಾಗಲೇಯಾ: ಮತ್ತು (12) ಮೈತ್ರಾಯಣೀಯಾ: ।

ಮೈತ್ರಾಯಣೀಯ ಶಾಖೆಯವರ ಭೇದಗಳು 7: (1) ಮಾನವಾ:, (2) ಮೈತ್ರಾಯಣೀಯಾ:, (3) ಕುಂದ್ರಮಾ:, (4) ಚೈಕೇಯಾ:, (5) ಹಾರಿದ್ರವೇಯಾ:, (6) ಶ್ಯಾಮಾ: ಮತ್ತು (7) ಶ್ಯಾಮಾಯಣೀಯಾ: ।

ನಾಜಸನೇಯ ಶಾಖೆಯವರ ಭೇದಗಳು 15: (1) ಕಾಪ್ವಾ:, (2) ಮಾಧ್ಯಂದಿನಾ:, (3) ಶಾವೀಯಾ:, (4) ಶ್ಯಾಮಾಯಣೀಯಾ:, (5) ಕಾಪೋಲಾ: (6) ಪೌಂಡ್ರವತ್ಸಾ:, (7) ಆವಟಿಕಾ:, (8) ಪರಮಾವಟಿಕಾ:, (9) ಪಾರಾಶರ್ಯಾ:, (10) ವೈಧೇಯಾ:, (11) ವೈನೇಯಾ:, (12) ಅಧೀಯಾ:, (13) ಗಾಲಯಾ:, (14) ವೈಜಪಾ: ಮತ್ತು (15) ಕಾತ್ಯಾಯಣೀಯಾ: ।

ತೈತ್ತಿರೀಯಕ ಶಾಖೆಯವರ ಭೇದಗಳು 2: (1) ಅಶ್ವೀಯಾ:, (2) ಕಾಣ್ಡಿಕೇಯಾ: ।

ಕಾಂಡಿಕೇಯರ ಭೇದಗಳು 5: (1) ಆಪಸ್ತಂಬೀ, (2) ಬೌಧಾಯನೀ, (3) ಸತ್ಯಾಪಾಥೀ, (4) ಹಿರಣ್ಯಕೇಶೀ ಮತ್ತು (5) ಅಧೀಯಾ: । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಈಗ ದಕ್ಷಿಣದೇಶದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ವ್ಯಾಪಕವಾಗಿರುವುದು ತೈತ್ತಿರೀಯ ಶಾಖೆ. ಈ ತೈತ್ತಿರೀಯ ಶಾಖೆಯಲ್ಲಿ ಸंहಿತಾ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣಮ್, ಆರಣ್ಯಕಮ್, ಉಪನಿಷದ: ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಭಾಗಗಳಿರುವುವು. ಸಂಹಿತೆ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಮತ್ತು

ಆರಣ್ಯಕೋಪನಿಷತ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ಒಟ್ಟು 82 ಪ್ರಶ್ನೆಗಳಿರುವುದರಿಂದ ಅಶೀತಿದ್ವಯವಾಗುವುದು.

ಸಂಹಿತೆಯಲ್ಲಿ ಸಪ್ತ (7) ಕಾಂಡಗಳಿರುವುವು.

|                 |              |
|-----------------|--------------|
| 1 ನೆಯ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ | 8 ಪ್ರಶ್ನೆಗಳು |
| 2 ನೆಯ ..        | 6 ..         |
| 3 ನೆಯ ..        | 5 ..         |
| 4 ನೆಯ ..        | 7 ..         |
| 5 ನೆಯ ..        | 7 ..         |
| 6 ನೆಯ ..        | 6 ..         |
| 7 ನೆಯ ..        | 5 ..         |

44

ಬ್ರಾಹ್ಮಣದಲ್ಲಿ ಅಷ್ಟಕಗಳು (3) ಮೂರು.

|                  |              |
|------------------|--------------|
| 1 ನೆಯ ಅಷ್ಟಕದಲ್ಲಿ | 8 ಪ್ರಶ್ನೆಗಳು |
| 2 ನೆಯ ..         | 8 ..         |
| 3 ನೆಯ ..         | 12 ..        |

(ಕಾಶಕವಾ ಸೇರಿ)

ಆರಣ್ಯಕೋಪನಿಷತ್ತುಗಳಲ್ಲಿ 10 ..

ಒಟ್ಟು 82 ಪ್ರಶ್ನೆಗಳು.

ಸಂಹಿತೆಯಲ್ಲಿ ಯಜ್ಞಮಂತ್ರಗಳೂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣದಲ್ಲಿ ವಿಧಿವಾಕ್ಯಗಳೂ ಆರಣ್ಯಕದಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮಮೇಧ, ಪಿತೃಮೇಧ, ಪ್ರವರ್ಗ್ಯ ಮುಂತಾದುವುಗಳೂ ಉಪನಿಷತ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ತತ್ತ್ವವಿಚಾರಗಳೂ ಉಕ್ತವಾಗಿವೆ.

ಸಂಹಿತೆಯ ಪ್ರಮಾಣ:

|            |        |
|------------|--------|
| ಕಾಂಡಗಳು    | 7      |
| ಪ್ರಶ್ನೆಗಳು | 44     |
| ಅನುವಾಕಗಳು  | 651    |
| ಹನಸುಗಳು    | 2198   |
| ಪದಗಳು      | 192090 |
| ಅಕ್ಷರಗಳು   | 253868 |

ಕೃಷ್ಣಯಜುರ್ವೇದೀಯ ಕೃಷ್ಣಯಜುರ್ವೇದೀಯ (ವಿಂ)

ಕೃಷ್ಣಯಜುರ್ವೇದ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಕೃಷ್ಣಯಜುರ್ವೇದದ.

ಕೃಷ್ಣಯಾಮ ಕೃಷ್ಣಯಾಮ (೪ಂ) ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಕೃಣೋ ಯಾಮೋ ವರ್ಮ ಯಸ್ಯ ।

ಕೃಷ್ಣರಕ್ತ ಕೃಷ್ಣರಕ್ತ (೪ಂ) 1. ಕಪ್ಪು ಮತ್ತು ಕೆಂಪು ಬೆರೆತ ಬಣ್ಣ. ಕೃಷ್ಣಮಿಶ್ರ ರಕ್ತ: । (ವಿಂ) 2. ಕಪ್ಪು ಮತ್ತು ಕೆಂಪು ಬೆರೆತ ಬಣ್ಣದ, ಧೂಮ್ರವರ್ಣದ. ಕೃಷ್ಣಾಸೌ ರಕ್ತಶ್ಚ ।



ಕೃಷ್ಣಲ ಕೃಷ್ಣ ಲ (ಪುಂ) 1. ಗುಲಗಂಜಿ ಗಿಡ. ಕೃಷ್ಣಾ ವರ್ಣ  
ಲಾತಿ - ಲಾ(ಆದಾನೆ) "ಕ:" (3-2-3)। (ನಂ) 2.  
ಗುಲಗಂಜಿಕಾಯಿ. 3. ಮಧ್ಯಯವದ ತೂಕ. (ಇದೊಂದು  
ಪ್ರಾಚೀನ ಕಾಲದ ತೂಕ).

|             |              |
|-------------|--------------|
| ೮ ತಸರೆಣವ:   | ೧ ಲಿಕ್ಷಾ     |
| ೩ ಲಿಕ್ಷಾ:   | ೧ ರಾಜಸರ್ಪ:   |
| ೩ ರಾಜಸರ್ಪ:  | ೧ ಗೌರಸರ್ಪ:   |
| ೬ ಗೌರಸರ್ಪ:  | ೧ ಯವೋ ಮಧ್ಯಮ: |
| ೩ ಮಧ್ಯಯವ:   | ೧ ಕೃಷ್ಣಲಮ್   |
| ೫ ಕೃಷ್ಣಲಾನಿ | ೧ ಮಾಃ:       |

"ತಸರೆಣವೋಽಪಿ ವಿಜ್ಞೇಯಾ ಲಿಕ್ಷಿಕಾ ಪರಿಮಾಣತಃ। ತಾ  
ರಾಜಸರ್ಪಸ್ತಿಸ್ತಃ ತೇ ತ್ರಯೋ ಗೌರಸರ್ಪಃ। ಸರ್ಪಾಃ ಷಟ್  
ಯವೋ ಮಧ್ಯಃ ತ್ರಯವನ್ತೇಕಕೃಷ್ಣಲಮ್" ಮನುಂ ೮-೧೩೩, ೩೪।  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ-ಉ. ಗುಲಗಂಜಿಗಿಡ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"।  
-ಲಕ:-೮೪:.

ಕೃಷ್ಣಲವಣ ಕೃಷ್ಣ ಲವಣ (ನಂ) ಸೌವರ್ಚಲವೆಂಬ ಲವಣ.

ಕೃಷ್ಣಲೋಹ ಕೃಷ್ಣ ಲೋಹ (ನಂ) 1. ಅಯಸ್ಕಾಂತ, ಸೂಜಿ  
ಗಲ್ಲು. 2. ಕಬ್ಬಿಣ.

ಕೃಷ್ಣಲೋಹಿತ ಕೃಷ್ಣ ಲೋಹಿತ (ಪುಂ) 1. ಕಪ್ಪು ಕೆಂಪು  
ಬೆರೆತ ಬಣ್ಣ. ಕೃಷ್ಣಮಿಶ್ರೋ ಲೋಹಿತಃ। (ವಿಂ) 2. ಕಪ್ಪು  
ಕೆಂಪು ಬೆರೆತ ಬಣ್ಣದ, ಧೂಮ್ರವರ್ಣದ.

ಕೃಷ್ಣವಕ್ತ್ರ ಕೃಷ್ಣ ವಕ್ತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಕೃಷ್ಣ ಮುಖದ ವಾನರ,  
ಕಪಿ. ಕೃಷ್ಣ ವಕ್ತ್ರಂ ಯಸ್ಯ। (ವಿಂ) 2. ಕಪ್ಪು ಮುಖವುಳ್ಳ.  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಢಾಪ್" (೪-೧-೪)। -ವಕ್ತ್ರಾ -ವಕ್ತ್ರಾ.

ಕೃಷ್ಣವರ್ಣ ಕೃಷ್ಣ ವರ್ಣ (ಪುಂ) 1. ಕಪ್ಪು ಬಣ್ಣ. ಕೃಷ್ಣೋ  
ವರ್ಣಃ। 2. ರಾಹು. ಕೃಷ್ಣೋ ವರ್ಣೋಽಸ್ಯ। (ವಿಂ) 3. ಕಪ್ಪು  
ಬಣ್ಣದ. ಕೃಷ್ಣೋ ವರ್ಣೋ ಯಸ್ಯ।

ಕೃಷ್ಣವರ್ಮನ್ ಕೃಷ್ಣ ವರ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ ಬೆಂಕಿ. ಕೃಷ್ಣ  
ವರ್ಮಾಽಸ್ಯ। "ಶ್ರದ್ಧಾ ತ್ರಿದಶಗೋಪಮಾತ್ರಕೇ ದಾಹಶಕ್ತಿಮಿವ  
ಕೃಷ್ಣವರ್ಮನಿ" ರಘುಂ ೧೧-೪೨। 2. ಚಿತ್ರಕವೃಕ್ಷ, ಚಿತ್ರ  
ಮೂಲದ ಗಿಡ. 3. ರಾಹುಗ್ರಹ. (ವಿಂ) 4. ನೀಚ  
ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವವನು. ಕೃಷ್ಣಮಶುದ್ಧ ವರ್ಮಾಚರಣಂ  
ಯಸ್ಯ। "ಕೃಷ್ಣವರ್ಮಾ ಪುಮಾನಗ್ನೌ ದುರಾಚಾರೇ ವಿಘ್ನಂತುಃ"  
ಮೇದಿಂ।

ಕೃಷ್ಣವಲ್ಲಿ ಕೃಷ್ಣ ವಲ್ಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೃಷ್ಣ ತುಲಸಿ.  
2. ಸೊಗದೆ ಗಿಡ.

ಕೃಷ್ಣವಾನರ ಕೃಷ್ಣ ವಾನರ (ಪುಂ) ಗೋಲಾಂಗೂಲವೆಂಬ  
ಒಂದು ಜಾತಿಯ ವಾನರ, ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕಪಿ.

ಕೃಷ್ಣವೃಂತಾ ಕೃಷ್ಣ ವೃಂತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಸುರು ಪಾದರಿ ಗಿಡ.  
ಕೃಷ್ಣಾ ವೃಂತಮಸ್ಯಾಃ।

ಕೃಷ್ಣವೃಂತಿಕಾ ಕೃಷ್ಣ ವೃಂತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶೀವನೆಯ ಮರ.  
ಕೃಷ್ಣವೃಂತಾ ಸಂಜಾಯಾಂ "ಕನ್" (೫-೩-೮೭)।

ಕೃಷ್ಣವೇಣಿ ಕೃಷ್ಣ ವೇಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭಾರತದೇಶದಲ್ಲಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧ  
ವಾಗಿ ಪ್ರವಹಿಸುವ ಒಂದು ನದಿ, ಕೃಷ್ಣಾನದಿ. "ತತೋ  
ದೇವಹದೇಽರ್ಯೇ ಕೃಷ್ಣವೇಣಿಜಲೋದ್ಭವೇ। ಜಾತಿಃ ಸ್ಮರಣ್ಣದೇ ಸ್ನಾತ್ವಾ  
ಭವೇಜ್ಜಾತಿಃ ಸ್ಮರೋ ನರಃ" ಭಾಂ ವನಂ ೮೫-೩೮।

ಕೃಷ್ಣವ್ರಿಹಿ ಕೃಷ್ಣ ವ್ರಿಹಿ (ಪುಂ) ಕಪ್ಪು ಬತ್ತ. ಕೃಷ್ಣೋ  
ವ್ರಿಹಿಃ।

ಕೃಷ್ಣಶಕುನಿ ಕೃಷ್ಣ ಶಕುನಿ (ಪುಂ) ಕಾಗೆ. ಕೃಷ್ಣಃ ಶಕುನಿಃ।

ಕೃಷ್ಣಶಾರ ಕೃಷ್ಣ ಶಾರ (ಪುಂ) ಕಪ್ಪು ಮತ್ತು ಚಿತ್ರವರ್ಣದ  
ಜಿಂಕೆ. ಕೃಷ್ಣಾಶ್ರಾಸೌ ಶಾರಶ್ಚ।

ಕೃಷ್ಣಶಾಲಿ ಕೃಷ್ಣ ಶಾಲಿ (ಪುಂ) ಕಪ್ಪು ಬತ್ತ. ಕೃಷ್ಣಃ  
ಶಾಲಿಃ।

ಕೃಷ್ಣಶೃಂಗ ಕೃಷ್ಣ ಶೃಂಗ (ಪುಂ) ಮಹಿಷ, ಎಮ್ಮೆ. ಕೃಷ್ಣ  
ಶೃಂಗಮಸ್ಯ।

ಕೃಷ್ಣಸಖ ಕೃಷ್ಣ ಸಖ (ಪುಂ) ಕೃಷ್ಣನ ಗೆಳೆಯ. ಅರ್ಜುನ.  
ಕೃಷ್ಣಸ್ಯ ಸಖಾ "ಢಾಪ್" (೫-೪-೧೧)।

ಕೃಷ್ಣಸರ್ಪ ಕೃಷ್ಣ ಸರ್ಪ (ಪುಂ) ಕಾಳಿಂಗ ಸರ್ಪ. ಕೃಷ್ಣಃ ಸರ್ಪಃ।  
"ಆಶೀರ್ವಿಷಃ ಕೃಷ್ಣಸರ್ಪಃ ಸುಪ್ತಂ ಚೈನಮದಂಶಯತ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ  
೬೧। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಢಾಪ್"।

ಕೃಷ್ಣಸರ್ಪ ಕೃಷ್ಣ ಸರ್ಪ (ಪುಂ) ಕರಿ ಸಾಸವ. ಕೃಷ್ಣಃ  
ಸರ್ಪಃ।

ಕೃಷ್ಣಸಾರ ಕೃಷ್ಣ ಸಾರ (ಪುಂ) ಸಾರಗದ ಒಂದು ಭೇದ,  
ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ, ಮೈಯಲ್ಲಿ ಕಪ್ಪು ಚುಕ್ಕೆಗಳುಳ್ಳ  
ಚಿತ್ರವರ್ಣದ ಜಿಂಕೆ. ಕೃಷ್ಣಾಶ್ರಾಸೌ ಸಾರಶ್ಚ। "ಕೃಷ್ಣಸಾರೆ  
ದದಚ್ಚಕ್ಷುಸ್ತ್ವಯಿ ಚಾಧಿಜ್ಯಕಾಮುಕೇ" ಶಾಕುಂ ೧-೬।

ಕೃಷ್ಣಸಾರಙ್ಗ ಕೃಷ್ಣ ಸಾರಂಗ (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ  
ಜಿಂಕೆ. ಕೃಷ್ಣಾಶ್ರಾಸೌ ಸಾರಙ್ಗಶ್ಚ।

ಕೃಷ್ಣಸಾರಥಿ ಕೃಷ್ಣ ಸಾರಥಿ (ಪುಂ) 1. ಕೃಷ್ಣನೇ ಸಾರಥಿ  
ಯಾಗಿ ಉಳ್ಳ ಅರ್ಜುನ. ಕೃಷ್ಣಃ ಸಾರಥಿರಯಸ್ಯ। 2. ಕೃಷ್ಣನ  
ಸಾರಥಿ, ದಾರುಕ. ಕೃಷ್ಣಸ್ಯ ಸಾರಥಿಃ।

ಕೃಷ್ಣಸ್ಕಂಧ ಕೃಷ್ಣ ಸ್ಕಂಧ (ಪುಂ) ಹೊಂಗೆಮರ. ತಮಾಲ  
ವೃಕ್ಷ. ಕೃಷ್ಣಃ ಸ್ಕಂಧೋಽಸ್ಯ।

ಕೃಷ್ಣಾ ಕೃಷ್ಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಕೃಷ್ಣ" ಪದದ ದ್ವೈಪದಿ  
ಮೊದಲಾದ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗದ ಅರ್ಥ.



ಕೃಷ್ಣಾಗುಹ ಕೃಷ್ಣಾಗುರು (ಪುಂ) ಅಗುರು ಚಂದನ. ಕಪ್ಪು ಜಾತಿಯ ಚಂದನವೃಕ್ಷ.

ಕೃಷ್ಣಾಚಲ ಕೃಷ್ಣಾಚಲ (ಪುಂ) 1. ಕೃಷ್ಣನಿಗೆ ಪ್ರಿಯವಾದ ರೈವತಕ ಪರ್ವತ. ಕೃಷ್ಣಪ್ರಿಯ: ಅಚಲ: 2. ಇಂದ್ರನೀಲ ಪರ್ವತ. ಕೃಷ್ಣ: ಅಚಲ:.

ಕೃಷ್ಣಾಜಿನ ಕೃಷ್ಣಾಜಿನ (ನಂ) ಜಿಂಕೆಯ ಚರ್ಮ, ಕೃಷ್ಣ ಮೃಗದ ತೊಗಲು. ಕೃಷ್ಣಸ್ಯ ಅಜಿನಮ್.

ಕೃಷ್ಣಾಯಸ ಕೃಷ್ಣಾಯಸ (ನಂ) ಕೃಷ್ಣಲೋಹ, ಕಬ್ಬಿಣ. ಕೃಷ್ಣಮಯ: "ಠಕ್" (೪-೪-೧೪).

ಕೃಷ್ಣಾಷ್ಟಮಿ ಕೃಷ್ಣಾಷ್ಟಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಅವತರಿಸಿದ ಸಿಂಹಮಾಸದ ಬಹುಳ ಅಷ್ಟಮಿ, ಜನ್ಮಾಷ್ಟಮಿ. ["ಕೃಷ್ಣಜಯಂತಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷದ ಅಷ್ಟಮಿ ತಿಥಿ.

ಕೃಷ್ಣಿಕಾ ಕೃಷ್ಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾಜಸಾಸವ. ಕರಿಸಾಸವ. ಕೃಷ್ಣವರ್ಣೋತ್ತಿಶಯೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೫).

ಕೃಷ್ಣೇಕ್ಷು ಕೃಷ್ಣೇಕ್ಷು (ಪುಂ) ಕಾಡು ಕಬ್ಬು. ಕೃಷ್ಣಶ್ರಾಸೌ ಇಕ್ಷುಶ್ಚ.

ಕೃಷ್ಣೋದರ ಕೃಷ್ಣೋದರ (ಪುಂ) ಕಪ್ಪು ಹೊಟ್ಟೆಯುಳ್ಳ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಸರ್ಪ. ಕೃಷ್ಣಮುದರಮಸ್ಯ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಢಿಷ್" (೪-೧-೬೩). -ಉದರೀ -ಉದರೀ.

ಕೃಷ್ಣೋದಂಬರಿಕಾ ಕೃಷ್ಣೋದಂಬರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಲ್ಪತ್ತಿ ಗಿಡ. ಕೃಷ್ಣಸ್ಯ ಕಾಕಸ್ಯ ಪ್ರಿಯಾ ಉದಂಬರಿಕಾ.

ಕೃಷ್ಯ ಕೃಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಎಳೆಯಲ್ಪಡುವ. 2. ಎಳೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಎಳೆಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಕ್ಯಪ್" (೩-೧-೧೧೦). 4. ಉಳಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಉಳಲ್ಪಡುವ. ಉಳಲು ಶಕ್ಯವಾದ. "ಕೃಷ್ಯಾ ದಹನ್ವಪಿ ಖಲು ಕ್ಷಿತಿಮಿನ್ಧನೇಹೋ ಬ್ರಿಜಪ್ರರೋಹಜನನಿಂ ಜ್ವಲನ: ಕರೋತಿ" ರಘುಂ ೧-೮೦.

ಕೃಷ್ಯಮಾಣ ಕೃಷ್ಯಮಾಣ (ವಿಂ) 1. ಉಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪). 2. ಎಳೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. "ಪುರೋ ವಿಲಗ್ನೇಹರದೃಷ್ಟಿಪಾತೈ: ಸುವರ್ಣಸುತೈರಿವ ಕೃಷ್ಯಮಾಣ: " ಕುಮಾಂ ೭-೪೦.

ಕೃಸರ ಕೃಸರ (ಪುಂ) ತಿಲಾನ್ನ. ಎಳ್ಳಿನೊಡನೆ ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಅನ್ನ. "ತಲತಂಡುಲಸಂಪಕ್ವ: ಕೃಸರ: ಸೌಮಿಧೀಯತೆ".

ಕ - ವಿಕೋಪ (ತುಡಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) 1. ಕಿರತಿ. ಚಕಾರ, ಚಕರತು. ಚಕರಿತ. ಚಕರಿಸ. ಕರಿತಾ, ಕರಿತಾ. ಕರಿಷ್ಯತಿ, ಕರಿಷ್ಯತಿ. ಕಿರತು. ಕಿರ. ಕಿರಾಣಿ. ಅಕಿರತ್. ಕಿರೇತ್. ಕಿರೀತ್. ಅಕಾರೀತ್. ಅಕರಿಷ್ಯತ್.

ಅಕರಿಷ್ಯತ್. 1. ಎರಚು, ಎಸೆ, ಬಿಸಾಡು, ಚೆಲ್ಲು. "ಅವಾಕಿರನ್ ಬಾಲಲತಾ: ಪ್ರಸೂನೇರಾಚಾರಲಾಜೇರಿವ ಪೌರಕನ್ಯಾ:" ರಘುಂ ೨-೧೦. 2. ಹರಡು.

ಕರ್ಮಣಿ:—ಕೀರ್ಯತೆ. ಚಕರೆ. ಕರಿತಾ, ಕರಿತಾ. ಕಾರಿತಾ. ಕರಿಷ್ಯತೆ, ಕರಿಷ್ಯತೆ, ಕಾರಿಷ್ಯತೆ. ಕೀರ್ಯತಾಮ್. ಅಕೀರ್ಯತ. ಕೀರ್ಯತ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕಾರಿ:—ಕಾರಯತಿ, -ತೆ. ಕಾರಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ, ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಕಾರಯಿತಾ. ಕಾರಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೆ. ಕಾರಯತು, -ತಾಮ್. ಅಕಾರಯತ್, -ತ. ಕಾರಯೇತ್, -ತ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕಾರಿ:—ಚಿಕರಿಸತಿ. ಚಿಕರಿಸಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕರ್ಮ:—ಕರಿತವ್ಯ:, ಕರಿತವ್ಯಮ್. ಕರಣೀಯಮ್. ಕಾರ್ಯಮ್. ಕರ್ಮಂ ಕೀರ್ಣಮ್. ಕೀರ್ಣವಾನ್. ಕಿರನ್, ಕಿರತೀ, ಕಿರಂತೀ. ಕರಿತುಮ್. ಕರಿತುಮ್. (ಭಾವೇ) ಕೀರ್ಣಮ್. ಕರಣಮ್. ಕೀರ್ತಾ. ವಿಕೀರ್ಯ.

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಅನು+ಕ = ಅನುಕಿರತಿ. ಅನಂತರ ಎಸೆ, -ಚೆಲ್ಲು, -ಎರಚು.

(2) ಅಪ+ಕ = ಅಪಸ್ಕಿರತೆ. ಹರ್ಷ ಅಶ್ರಯ ಭಕ್ಷಣ ಈ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಚತುಷ್ಪಾತ್ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಮತ್ತು ಪಕ್ಷಿಗಳ ವ್ಯಾಪಾರ (ಅರ್ಥ)ವು ತೋರಿದಾಗ ಅಪ ಪೂರ್ವಕ ವಾದ ಕ ಧಾತುವಿಗೆ "ಸುಡ್" ಆಗಮ ಮತ್ತು ಆತ್ಮನೇ ಪದಗಳು ಬರುವುವು. ಅಪಸ್ಕಿರತೆ ವೃಥಾ ಹೃಡ: | ಭಕ್ಷಾರ್ಥಿ ಕುಕ್ಕುಡ: ಅಪಸ್ಕಿರತೆ. ಆಶ್ರಯಾರ್ಥಿ ಇವಾ ಅಪಸ್ಕಿರತೆ.

(3) ಅವ+ಕ = ಅವಕಿರತಿ. 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಚೆಲ್ಲು. 2. ದೂರಕ್ಕೆ ಎಸೆ. ಮಲವೆಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ "ಸುಡ್" (೬-೧-೧೪೮). ಅವಸ್ಕರ: | ನಿಯಮಭ್ರಷ್ಟನೆಂಬ ಅರ್ಥ ದಲ್ಲಿ ಅವಕೀರ್ಣಿ.

(4) ಆ+ಕ = ಆಕಿರತಿ. ಆಕೀರ್ಣಮ್. 1. ಸುತ್ತಲೂ ಎರಚು. 2. ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡು, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ವ್ಯಾಪಿಸು. "ಆಕೀರ್ಣಮೃಷಿಪತ್ನಿನಾಮುಡಜದ್ವಾರರೋಧಿಭಿ: | ಅಪತ್ಯೇರಿವ ನೋವಾರಭಾಗಧೇಯೋಚಿತೈರ್ಮುಗೈ:" ರಘುಂ ೧-೪೦.

(5) ಉದ್+ಕ = ಉತ್ಕಿರತಿ. ಉತ್ಕೀರ್ಣಮ್. 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎರಚು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಸೆ. 2. ಕಲ್ಲು ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಮೇಲೆ ಚಿತ್ರವನ್ನು ಕೆತ್ತು, -ಚಿತ್ರವನ್ನು ಕೊರೆ. "ಲೀನೇವ ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿತೇವ ಲಿಖಿತೇವೋತ್ಕೀರ್ಣರೂಪೇವ ಚ" ಮಾಲತೀಂ ೪-೧೦.



(6) ಸಮ್+ಉ+ಕ್ = ಸಮುಕ್ತರತಿ. ಸಮುಕ್ತೀರ್ಣಃ. ರಂಧ್ರ ಮಾಡು, ವೆಜ್ಜು ಕೊರೆ. "ಮಣಿ ವಜ್ರಸಮುಕ್ತೀರ್ಣ ಸೂತ್ರಸ್ಯೇವಾಸ್ತಿ ಮೇ ಗತಿಃ" ರಘುಂ ೧-೪.

(7) ಪ್ರ+ಕ್ = ಪ್ರಕಿರತಿ. ಪ್ರಕೀರ್ಣಃ. ಬೆರಸು, ಕಲಸು.

(8) ಪ್ರತಿ+ಕ್ = ಪ್ರತಿಕಿರತಿ. ಹಿಂಸಿಸು, ಪೀಡಿಸು. ಹಿಸಾಯಾಂ ಸುಡಾಗಮಃ (೬-೧-೧೪೧). "ಸ ಮುಖಕಾಂತಾ-ಸ್ತನಸಂಜ್ಞಮಙ್ಗುರೇರೋವಿದಾರಂ ಪ್ರತಿಚಕ್ರೇ ನಖಃ" ಮಾಘಂ ೧-೪೭.

(9) ಸಮ್+ಕ್ = ಸಂಕಿರತಿ. ಸಂಕೀರ್ಣಮ್. ಮಿಶ್ರವಾಗು, ಬೆರೆ. ಸಂಕರಃ.

ಕ್ - ಹಿಸಾಯಾಮ್ (ಕ್ರಿಯಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ). ಕೃಣಾತಿ. ಚಕಾರ. ಕರಿತಾ, ಕರಿತಾ. ಕರಿಷ್ಯತಿ, ಕರಿಷ್ಯತಿ. ಕೃಣಾತು. ಅಕೃಣಾತ್, ಅಕೃಣೀತಾಮ್. ಕೃಣೀಯಾತ್. ಇತ್ಯಾದಿ. ಹಿಂಸಿಸು, ಪೀಡಿಸು.

ಕರ್ಮಣಿಃ-ಕೀರ್ಯತೇ. ಚಕರೇ. ಕರಿತಾ ಕರಿತಾ, ಕಾರಿತಾ. ಇತ್ಯಾದಿ. ಉಳಿದುವು ಕ್ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) ಧಾತುವಿನ ರೂಪಗಳಂತೆ ಆಗುವುವು.

ಣಿಚಿಃ-ಕಾರಯತಿ, -ತೇ. ಇತ್ಯಾದಿ ಕ್ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) ಧಾತುವಿನ ರೂಪಗಳಂತೆ ಆಗುವುವು.

ಕೃತ್ಸುಃ-ಕೃಣನ್ ಕೃಣತೀ ಈ ರೂಪಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಉಳಿ ದೆಲ್ಲವೂ ಕ್ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) ರೂಪಗಳಂತೆ ಆಗುವುವು.

ಕ್ವ - ಹಿಸಾಯಾಮ್ (ಕ್ರಿಯಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ). ಕೃಣಾತಿ, ಕೃಣೀತೇ. ಅಕಾರೀತ್, ಅಕರಿಷ್ಠ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕ್ವತ - ಸಂಶಬ್ದನೇ (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ). ಕೀರ್ತಯತಿ, -ತೇ. ಅಚಕೀರ್ತತ್, -ತ. ಅಚೀಕೃತತ್, -ತ. ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಹೇಳು. 2. ಹೆಸರು ಹಿಡಿದು ಕರೆ. 3. ಹೊಗಳು. 4. ವರ್ಣಿಸು. 5. ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡು.

ಕ್ಲೃಪ್ತ ಕ್ಲೃಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಏರ್ಪಟ್ಟಿರುವ. 2. ಸಿದ್ಧ ವಾಗಿರುವ. ಸಜ್ಜಾಗಿರುವ. ಕೃಪ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨). "ಕ್ಲೃಪ್ತಪುಷ್ಪಶಯನಾಲಿತಾಗೃಹಾನೇತ್ಯ ದ್ವಿತೀಕೃತ-ಮಾರ್ಗದರ್ಶನಃ" ರಘುಂ ೧೧-೧೩. 3. ಮಾಡಿರುವ. 4. ಸೃಷ್ಟಿ ಯಾಗಿರುವ, ಉತ್ಪತ್ತಿಹೊಂದಿದ. 5. ನಿಶ್ಚಿತವಾದ, ತೀರ್ಮಾನವಾದ. 6. ವಿಹಿತವಾದ, ಗೊತ್ತಾದ, ನಿಗದಿ ಯಾದ. "ಕ್ಲೃಪ್ತಾನಾಂ ಪಶುಸೋಮಾನಾಂ ನಿಷ್ಕೃತ್ಯರ್ಥಮಸಂಭವೇ" ಮನುಂ ೧೧-೨೭.

ಕ್ಲೃಪ್ತಕೀಲಾ ಕ್ಲೃಪ್ತಕೀಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಕ್ಕುಪತ್ರ, ವ್ಯವಸ್ಥಾಪತ್ರ, ಮನೆ ಜಮೀನು ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಖಾತೆ ಪತ್ರ, ಪಟ್ಟಿ. ಕ್ಲೃಪ್ತ ಕೀಲಯತಿ - ಕೀಲ (ಬಂಧನ) +

ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಪಟೋಲಿಕಾ ಕ್ಲೃಪ್ತ-ಕೀಲಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಕ್ಲೃಪ್ತಧೂಪ ಕ್ಲೃಪ್ತಧೂಪ (ಪುಂ) ಸಿಲ್ವಕ, ಲೋಬಾನ, ಮಲ್ಲೇಚ್ಛ ದೇಶದ ಒಂದು ವಾಸನಾದ್ರವ್ಯ. ಕ್ಲೃಪ್ತ ಧೂಪ ಯೇನ.

ಕ್ಲೃಪ್ತಿ ಕ್ಲೃಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಲ್ಪನ, ಏರ್ಪಾಡು. ಕೃಪ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪). 2. ಅವಧಾರಣ, ನಿಶ್ಚಯ. 3. ನಿರ್ಮಾಣ, ತಯಾರಿಕೆ. 4. ಸಿದ್ಧತೆ, ಸಜ್ಜು. 5. ಗೊತ್ತುವಳಿ. ವಿಧಿ. 6. ಸೃಷ್ಟಿ, ಉತ್ಪತ್ತಿ.

ಕೇಕಯ ಕೇಕಯ (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 1. ಕೇಕಯ ದೇಶ. "ಉಭೌ ಭರತಶತ್ರುಘ್ನೌ ಕೇಕಯೇಷು ಪರಂತಪೌ" ರಾಮಾಂ. (ಪುಂ) 2. ಕೇಕಯ ದೇಶದ ದೊರೆ. "ಸತ್ಕೃತ್ಯ ಕೇಕಯೋ ರಾಜಾ ಭರತಸ್ಯ ದದೌ ಧನಮ್" ರಾಮಾಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಯಿ-ಯಾ. ಕೇಕಯ ರಾಜನ ಮಗಳು. ಜನ್ಯ ಜನಕ ಭಾ ವ ರೂ ಪ ವಾ ದ ಪುಂಯೋಗವಿರುವುದರಿಂದ "ಪುಂಯೋಗಾದಾಖ್ಯಾಯಾಮ್" (೪-೧-೪೮) "ಙೀಘ್".

ಕೇಕರ ಕೇಕರ (ನಂ) 1. ಮಾಲುಗಣ್ಣು, ಓರೆಗಣ್ಣು. (ವಿಂ) 2. ಹಳ್ಳಿಟ್ಟುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳವನು, ವಿಹಾರವಾದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳವನು, ಮಾಲುಗಣ್ಣುಳ್ಳವನು. ಕೇ ಮೂಢಿ ಕತು ಶೀಲಮಸ್ಯ - ಡು ಕುಙ್ (ಕರಣ) "ಠಃ" (೩-೨-೨೦).

ಕೇಕಾ ಕೇಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಯೂರದ ತಬ್ಬ, ನವಿಲಿನ ಕೂಗು. ಕೇ ಮೂಢಿ ಕಾಯತಿ - ಕೇ (ಶಬ್ದ) "ಠಃ" (೩-೨-೧೦೧). "ಛಡ್ಜಸಂವಾದಿನಿಃ ಕೇಕಾ ದ್ವಿಧಾ ಭಿನ್ನಾಃ ಶಿಖಂಡಿಭಿಃ" ರಘುಂ ೧-೩೯.

ಕೇಕಾವಲ ಕೇಕಾವಲ (ಪುಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಕೇಕಾ ವಲತೇ - ವಲ (ಸಂವರಣ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಙೀಘ್" (೪-೧-೬೩). -ವಲಿ -ವಲೀ.

ಕೇಕಿಕ ಕೇಕಿಕ (ಪುಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಕೇಕಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೬).

ಕೇಕಿನ್ ಕೇಕಿನ್ (ಪುಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಕೇಕಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಙಿನಿಃ" (೪-೨-೧೧೬).

ಕೇತ ಕೇತ (ಪುಂ) ತ್ರಾಸ, ಭಯ. ಕಿಡ (ತ್ರಾಸ) "ಘಙ್" (೩-೩-೧೮).

ಕೇನಿಕಾ ಕೇನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಸ್ತ್ರಗೃಹ, ಡೇರೆ, ಗುಡಾರ. "ಸ್ಯುಲಂ ದ್ವಯೇ ಕೇನಿಕಾ ಪಟಕುಟಚಪಿ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ.

ಕೇತ ಕೇತ (ಪುಂ) 1. ಗೃಹ, ಮನೆ, ವಾಸಸ್ಥಳ. ಕಿಡ (ನಿವಾಸ) ಅಧಿಂ "ಘಙ್" (೩-೩-೧೨೧). "ಮತ್ಸ್ಯೋ



ಯುಗಾಂತಸಮಯೇ ಮನುನೋಪಲಬ್ಧಃ ಕ್ಷೋಣಿಮಯೋ ನಿಖಿಲಜೀವ-  
ನಿಕಾಯಕೇತಃ" ಭಾಗಂ ೨-೭-೧೨. 2. ವಾಸಮಾಡುವುದು,  
ಇರುವುದು. ಕಿತ ಭಾವೇ "ವಜ್ರ" (೩-೩-೧೮). "ಅವಾಙ್-  
ಮುಖಾಃ ಪಕ್ಷಿಗಣಾ ದಿನಾಂತೇ ವಿಶಂತಿ ಕೇತಾರ್ಥಮಿವಾಶು ವೃಕ್ಷಮ್"  
ಭಾಂ ಕರ್ಣಂ ೮೯-೧೫.

**ಕೆತಕ ಕೇತಕ (ಪುಂ)** 1. ತಾಳೆ ಮರ. ಕಿತ (ನಿವಾಸಿ)  
"ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩). "ವಿಲಾಸಿನಿವಿಭ್ರಮದಂತ-  
ಪತ್ರಮಾಪಾಂಡುರಂ ಕೆತಕಬಹ್ಮಮನ್ಯಃ" ರಘುಂ ೬-೧೭. (ನಂ) 2.  
ತಾಳೆ ಹೂವು. ಕೆತಕಯಾಃ ಪುಷ್ಪಂ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೩೫).  
ಅಣಿ "ಲುಕ್" (ವಾಂ ೪-೩-೧೬೬). ಡಿಪಿ ಲುಕ್  
(೧-೨-೪೯). "ದಧಾನಮಾಶಾಮು ಚರಿಣ್ಯ ದುರ್ದಶಃ ಸ  
ಕೌತುಕೀ ತತ್ರ ದದಶ ಕೆತಕಮ್" ನೆಪಂ ೧-೭೮. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಕೀ-೩೮. 3. ತಾಳೆ ಮರ. ಕೆತಕ ಜಾತಿಂ "ಡಿಫ್"  
(೪-೧-೬೩). "ಸರಜಸಮಪಹಾಯ ಕೆತಕೀನಾಂ ಪ್ರಸವಮುಪಾಂತಿಕ-  
ನಿಪರೇಣುಕೀರ್ಣಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೦-೨೬. 4. ತಾಳೆ ಹೂವು.  
ಬಹುಲಗ್ರಹಣಾತ್ ಕ್ವಚಿತ್ ಡಿಪಿ ನ ಲುಕ್.

**ಕೆತನ ಕೇತನ (ಪುಂ)** 1. ಧ್ವಜ, ಬಾವುಟ, ಪತಾಕೆ.  
ಕೆತನೇ ಜ್ಞಾಯತೇಜೇನ - ಕಿತ (ನಿವಾಸಾದೌ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೭). "ಇತ್ಯಸ್ಯ ತೇನ ಕದಲೀಮಧುಶ್ರೀಃ ಪ್ರಭಾವನೀ  
ಕೆತನವಂಜಯಂತಿಃ" ಮಾಘಂ ೬-೬೯. "ಭಗ್ನಂ ಭೀಮೇನ ಮಹತಾ  
ಭವತೋ ರಥಕೆತನಮ್" ವೇಣಿಂ ೨-೨೪. 2. ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು.  
"ಅಗಣಿತಮಹಿಮಾನಃ ಕೆತನಂ ಮಜ್ಜಲಾನಾಂ ಕಥಮಿವ ಭುವನೇಽಸ್ಮಿನ್  
ತಾದೃಶಾಃ ಸಂಭವಂತಿ" ಮಾಲತೀಂ ೨-೯. 3. ನಿವಾಸ, ಗೃಹ,  
ವಾಸಸ್ಥಳ. "ನ ತತ್ರ ವೃಕ್ಷಚ್ಛಾಯಾ ವಾ ಪಾನೀಯಂ ಕೆತನಾನಿ  
ಚ" ಭಾಂ ವನಂ. 4. ನಿಮಂತ್ರಣ, ಆಹ್ವಾನ, ಕರೆ.  
"ಯಾವಂತಃ ಪತಿತಾ ವಿಪ್ರಾ ಜಡೋನ್ಮತ್ತಾಸ್ತಥೈವ ಚ | ದೇವೇ  
ವಾಪ್ಯಥವಾ ಪಿಶ್ಯೇ ತಾವಶ್ರಾಹಂತಿ ಕೆತನಮ್" ಭಾಂ. 5. ಕೃತ್ಯ.  
6. ಸ್ಥಾನ, ಜಾಗ. "ಏತದ್ರಾಜಾಸನಂ ಸರ್ವಭೂತಸಂಶ್ರಯಕೆತನಮ್"  
ವಿಷ್ಣುಪುಂ.

**ಕೆತು ಕೇತು (ಪುಂ)** 1. ನವಗ್ರಹಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ಕೇತುಗ್ರಹ,  
ರಾಹುವಿನ ಶರೀರ. ಚಾಯ್ (ಪೂಜಾನಿಶಾಮನಯೋಃ) "ತುಃ"  
ಕಿಃ ಆದೇಶಶ್ಚ (ತಂ ೧-೭೩). ಕೇತುವು ಒಂದು ಛಾಯಾ  
ಗ್ರಹ ಮತ್ತು ಪಾಪಗ್ರಹ. "ಅರ್ಧೋನೇಂದ್ರಕಸೌರಾರಾಃ ಪಾಪಾಃ  
ಸೌಮ್ಯಾಸ್ತಥಾಪರೇ | ಪಾಪಯುಕ್ತೋ ಬುಧಃ ಪಾಪೋ ರಾಹುಕೇತು ಚ  
ಪಾಪದೌ" | ಈ ಗ್ರಹವು ಜನ್ಮರಾಶಿಯಿಂದ ಮೂರು (3)  
ಆರು (6) ಹತ್ತು (10) ಮತ್ತು ಹನ್ನೊಂದ (11) ನೆಯ  
ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿದ್ದರೆ ಶುಭಫಲಪ್ರದವಾದುದು. "ಕೆತುಪ್ಲವ-  
ಭೌಮಮಂದಗತಯಃ ಷಠ್ತ್ರಿಸಂಸ್ಥಾಃ ಶುಭಾಃ ಚಂದ್ರಾರ್ಕಾವಿಪಿ ತೇ ಚ

ತೌ ಚ ದಶಮೌ ಚಂದ್ರಃ ಪುನಃ ಸಪ್ತಮಃ | ಜೀವಃ ಸಪ್ತನವದ್ವಿ-  
ಪಂಚಮಗತೋ ಯುಗ್ಮೇಷು ಸೋಮಾತ್ಮಜಃ ಶುಕ್ರಃ ಷಡ್ದಶಸಪ್ತವರ್ಜಮಿತರೇ  
ಸರ್ವೇಷ್ಯುಪಾಂತೇ ಶುಭಾಃ" ಜ್ಯೋತಿಷಂ. ಕೇತುಗ್ರಹಕ್ಕೆ  
ಮಾನರಾಶಿಯು ಕ್ಷೇತ್ರ. ಸಿಂಹರಾಶಿಯು ತ್ರಿಕೋಣವಾಗು  
ವುದು. ಧನುರಾಶಿಯು ಉಚ್ಚಸ್ಥಾನ. ಮಿಥುನವು ನೀಚ  
ಸ್ಥಾನ. ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರ ಮತ್ತು ಕುಜರು ಮಿತ್ರರು.  
ಬುಧ ಗುರುಗಳು ಸಮಾನರು. ಶುಕ್ರ ಶನಿಗಳು ಶತ್ರುಗಳು.  
"ಸಿಹಸ್ತ್ರಿಕೋಣಂ ಧನುರ್ದಶಸಂಜ್ಞಂ ಮೀನೋ ಗೃಹಂ ಶುಕ್ರಶನೀ ವಿಪಕ್ಷೌ |  
ಸೂರ್ಯಾರವಂದ್ರಾಃ ಸುಹೃದಃ ಸಮಾನೌ ಜೀವೇಂದ್ರಜೌ ಷಟ್ ಶಿಖಿನಃ  
ಪರಾಂಶಾಃ" ಜ್ಯೋತಿಷಂ.

**ಕೇತುದಶಾ ಪ್ರಮಾಣ ಏಳು (7) ವರ್ಷಗಳು.**  
ಇತರ ಗ್ರಹಗಳ ದಶಗಳಲ್ಲಿ ಕೇತುವಿನ ಅಂತರ್ದಶಾ  
(ಭುಕ್ತಿ) ಮಾನಃ:

| ದಶೆ      | ವರ್ಷ | ಮಾಸಗಳು | ದಿನಗಳು |
|----------|------|--------|--------|
| ರವಿದಶೆ   | -    | 4      | 6      |
| ಚಂದ್ರದಶೆ | -    | 7      | -      |
| ಕುಜದಶೆ   | -    | 4      | 27     |
| ರಾಹುದಶೆ  | 1    | -      | 18     |
| ಗುರುದಶೆ  | -    | 11     | 6      |
| ಶನಿದಶೆ   | 1    | 1      | 9      |
| ಬುಧದಶೆ   | -    | 11     | 27     |
| ಕೇತುದಶೆ  | -    | 4      | 27     |
| ಶುಕ್ರದಶೆ | 1    | 2      | -      |

**ಕೇತುಮಹಾದಶೆಯಲ್ಲಿ ತನ್ನ (ಸ್ವ) ಮತ್ತು  
ಇತರ ಗ್ರಹಗಳ ಅಂತರ್ದಶಾ (ಭುಕ್ತಿ) ಮಾನಃ:**

|             | ವರ್ಷ | ಮಾಸಗಳು | ದಿನಗಳು |
|-------------|------|--------|--------|
| ಸ್ವಭುಕ್ತಿ   | -    | 4      | 27     |
| ಶುಕ್ರಭುಕ್ತಿ | 1    | 2      | -      |
| ರವಿಭುಕ್ತಿ   | -    | 4      | 6      |
| ಚಂದ್ರಭುಕ್ತಿ | -    | 7      | -      |
| ಕುಜಭುಕ್ತಿ   | -    | 4      | 27     |
| ರಾಹುಭುಕ್ತಿ  | 1    | -      | 18     |
| ಗುರುಭುಕ್ತಿ  | -    | 11     | 6      |
| ಶನಿಭುಕ್ತಿ   | 1    | 1      | 9      |
| ಬುಧಭುಕ್ತಿ   | -    | 11     | 27     |

2. ಧೂಮಕೇತು. ["ಧೂಮಕೇತು" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕೆತುಭ ಕೇತುಭ (ಪುಂ)** ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಕೆತುರಿವ  
ಭಾತಿ - ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕಃ" (೩-೨-೪).



**ಕೆತುಮತ್ ಕೇತುಮತ್** (ಪುಂ) 1. ದಿವೋದಾಸರಾಜನ ವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. "ಕ್ಷೇಮಸ್ಯ ಕೆತುಮಾನ್ ಪುತ್ರಃ ಸುಕೇತು-  
ರಸ್ಯ ಚಾತ್ಮಜಃ" ಹರಿವಂ. 2. ಧನ್ವಂತರಿಯ ಒಬ್ಬ ಮಗ. 3. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. (ವಿಂ) 4. ಚಿಹ್ನೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದವನು, ಗುರುತುಳ್ಳವನು. ಕೆತುರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪). 5. ಬುದ್ಧಿವಂತ, ಪ್ರಜ್ಞಾಶಾಲಿ. 6. ಪ್ರಕಾಶ ಮಾನವಾದ. 7. ಧ್ವಜದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೬). -ಮತೀ-ಮತೀ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುಮಾಲಿಯಂಬ ರಾಕ್ಷಸನ ಹೆಂಡತಿ.

**ಕೆತುಮಾಲ ಕೇತುಮಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಆಗ್ನೇಧನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. (ಪುಂ) 2. ಜಗತ್ತಿನ ಒಂಬತ್ತು ದ್ವೀಪಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ಜಂಬುದ್ವೀಪದ ಪಶ್ಚಿಮ ಭಾಗ. "ಪಶ್ಚಿಮೇ ಕೆತುಮಾಲಾಖ್ಯೇ ರೋಮಕಾಖ್ಯಾ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ" ಸುಂ ಸಿಂ ೧೨-೩೯. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಮಾಲಾ -ಮಾಲಾ. ಅವಂತಿದೇಶದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ನದಿ.

**ಕೆತುಮಾಲಿನ್ ಕೇತುಮಾಲಿನ್** (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ದಾನವ. "ದುರ್ಬರಃ ಕೆತುಮಾಲಿ ಚ ಶತ್ರುಹಂತಾ ಪ್ರಮದನಃ" ಹರಿವಂ.

**ಕೆತುರತ್ನ ಕೇತುರತ್ನ** (ನಂ) ನವರತ್ನಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ವೈಡೂರ್ಯ. ವೈಡೂರ್ಯಕ್ಕೆ ಕೇತುವು ಅಧಿಪತಿಯಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ಕೆದರ ಕೇದರ** (ವಿಂ) ವಿಕಾರದೃಷ್ಟಿಯುಳ್ಳವನು.

**ಕೆದಾರ ಕೇದಾರ** (ಪುಂ) 1. ಗದ್ದೆ, ನೀರಿನ ಆಸರೆಯಿಂದ ಬತ್ತ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಬೆಳೆಯತಕ್ಕ ಭೂಮಿ. ಕೆನ ಜಲೇನ ದೀಯಂತೆ-ದ್ (ವಿದಾರಣೆ) ಕರ್ಮಂ "ಖಜ್" (೩-೩-೧೯). "ಕೆದಾರಭಾಜಾ ಶಿಶಿರಪ್ರವೇಶಾತ್ ಪುण्याಯ ಮನ್ಯೇ ಮೃತ-ಮುತ್ಪಲಿನ್ಯಾ" ನೈಷಂ ೭-೩೫. 2. ಅಲವಾಲ, ಗಿಡದ ಬುಡದಲ್ಲಿ ನೀರು ನಿಲ್ಲಲು ಸುತ್ತಲೂ ಕಟ್ಟಿ ಕಟ್ಟಿದ ಪಾತಿ. 3. ಗದ್ದೆಯೊಳಗೆ ಮಾಡಿರುವ ಒಂದು ಸಣ್ಣ ಕುಂಟೆ. "ವೃಷಃ ಪಿಬತಿ ಕೆದಾರೆ ನಿಃಸ್ರವಾಕುಲಿತಂ ಪಯಃ" ರಾಮಾಂ. 4. ಹಿಮಾಚಲದ ಒಂದು ಭಾಗವಾದ ಕೇದಾರಕ್ಷೇತ್ರ. 5. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 6. ಶಿವಲಿಂಗ. "ಕೆದಾರೋದ್ರಿ ಶಿವೇ ಕ್ಷೇತ್ರೇ ಭೂಮಿಭೇದಾಲವಾಲಯೋಃ" ಮೇದಿಂ.

**ಕೆದಾರನಾಥ ಕೇದಾರನಾಥ** (ಪುಂ) ಹಿಮಾಲಯದಲ್ಲಿ ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ ಪರಶಿವ. ಕೆದಾರಕ್ಷೇತ್ರಸ್ಯ ನಾಥಃ.

**ಕೆದಾರೆಶ್ವರ ಕೇದಾರೆಶ್ವರ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಶಿಯಲ್ಲಿ ನೆಲೆಸಿರುವ ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. (ನಂ) 2. ಹಿಮಾಲಯದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಪುಣ್ಯ ತೀರ್ಥ.

**ಕೆನ ಕೇನ** (ಪುಂ) ಕೇನೋಪನಿಷತ್ತು.

**ಕೆನತೀ ಕೇನತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರತಿ, ಮನ್ಮಥನ ಪತ್ನಿ. ಕೆ ಸುಖಾರ್ಥ ನತಿಃ - ಬಾಹುಂ "ಕೀಪ್". "ಅಸ್ಯ ಪ್ರಿಯಾ ರಾಗಲತಾ ಕೆಲಿಕಲಾವತೀ. ಸೇಃ ಕೆನತೀ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಕೆನಾರ ಕೇನಾರ** (ಪುಂ) 1. ಕುಂಭಿಯೆಂಬ ಒಂದು ನರಕ. ಕೆ ಮೃಗ್ಗಿ ನಾರಃ - ನೃ (ನಯೆ) "ಖಜ್" (೩-೩-೧೯). 2. ಶಿರಸ್ಸು, ತಲೆ. 3. ಕಪೋಲ, ಕೆನ್ನೆ, ಗಂಡಸ್ಥಲ. 4. ಸಂಧಿ, ಸೇರಿಕೆ, ದೇಹದಲ್ಲಿ ಎರಡು ಮೂಳೆಗಳು ಸೇರುವ ಜಾಗ (ಕೀಲು). "ಕೆನಾರಃ ಕುಂಭಿನರಕೇ ಶಿರಃ-ಕಪಾಲಸಂಧಿಭಿಃ" ಮೇದಿಂ.

**ಕೆನಿಪಾತ ಕೇನಿಪಾತ** (ಪುಂ) 1. ದೋಣಿ ನಡೆಸುವ ಹುಟ್ಟು ಗೋಲು, ಜಲ್ಲೆ. 2. ಹಡಗಿನ ಚುಕ್ಕಾಣಿ ಹಲಗೆ. ಕೆ ನಿಪಾತೋಽಸ್ಯ. ವಾ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೫೪). -ನಿಪಾತಕಃ -ನಿಪಾತಕಃ.

**ಕೆಂದ್ರ ಕೇಂದ್ರ** (ಪುಂ) ತಿಂದುಕ ವೃಕ್ಷ, ತೂಬರೆ ಗಿಡ.

**ಕೆಂದ್ರ ಕೇಂದ್ರ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ಮಂಡಲದ ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಒಂದು ಅವರಣದ ಮಧ್ಯಭಾಗ. 2. ಲಗ್ನ ಮತ್ತು ಅದರಿಂದ 4, 7 ಮತ್ತು 10 ನೆಯ ಸ್ಥಾನಗಳು. 3. ಪ್ರಯಾಣಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಒಂದು ಶುಭಯೋಗ. "ಆಪೊಕ್ಲಿಮಗತೇ ಚಂದ್ರೇ ಕೆಂದ್ರಸ್ಥೇ ಸುರಪೂಜಿತೇ. ಯೋಗಃ ಕೆಂದ್ರ ಇತಿ ಖ್ಯಾತೋ ಯಾತುರಿಷ್ಟಾರ್ಥಸಿದ್ಧಿದಃ".

**ಕೆಂದ್ರಿನ್ ಕೇಂದ್ರಿನ್** (ಪುಂ) ಕೇಂದ್ರದಲ್ಲಿರುವ ಗ್ರಹ. ಕಂದ್ರಂ ಸ್ಥಾನತ್ವೇನಾಸ್ತಿಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫).

**ಕೆಮದ್ರಮ ಕೇಮದ್ರಮ** (ಪುಂ) ಜನ್ಮಕಾಲದಲ್ಲಿ ಗ್ರಹಗಳ ಒಂದು ಯೋಗ, ಫಲಭಂಗವುಂಟುಮಾಡುವ ಒಂದು ಅಶುಭ ಯೋಗ. "ರವಿವರ್ಜಂ ದ್ವಾದಶಗೌರನಫಾ ಚಂದ್ರಾತ್ ದ್ವಿತೀಯಗಃ ಸುನಫಾ. ತುಭಯಸ್ಥಿತೇರ್ಧುರಾ ಕೆಮದ್ರಮಸಂಜಿತೋ-ನ್ಯಃ". ಜನನಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನ ಹೊರತು ಇತರ ಎಲ್ಲಾ ಗ್ರಹಗಳೂ ಚಂದ್ರನಿಗೆ ದ್ವಾದಶದಲ್ಲಿದ್ದರೆ "ಅನಫಾ" ಎಂಬ ಯೋಗವೂ ಚಂದ್ರನಿಗೆ ದ್ವಿತೀಯದಲ್ಲಿದ್ದರೆ "ಸುನಫಾ" ಎಂಬ ಯೋಗವೂ ದ್ವಿತೀಯ ಮತ್ತು ದ್ವಾದಶ ಎರಡು ಕಡೆಗಳಲ್ಲೂ ಇದ್ದರೆ "ತುರಭುರಾ" ಎಂಬ ಯೋಗವೂ ಚಂದ್ರನಿಗೆ ದ್ವಿತೀಯ ಮತ್ತು ದ್ವಾದಶ ಎರಡು ಕಡೆಗಳಲ್ಲೂ ಗ್ರಹಗಳಲ್ಲಿದ್ದರೆ "ಕೆಮದ್ರಮಃ" ಎಂಬ ಯೋಗವೂ ಉಂಟು ಗುವುದು.

"ಅನಫಾ" ಯೋಗದ ಫಲಃ "ಸುಚ್ಛಿಲಂ ವಿಷಯ-ಸುಖಾನಿವಿತಂ ಪ್ರಭುಖ್ಯಾತಿಯುಕ್ತಮನಫಾಯಾಮ್".

"ಸುನಫಾ" ಯೋಗದ ಫಲಃ "ಸುನಫಾಯಾಂ ಭೀಷಣ-ಕೀರ್ತಿಯುಕ್ತಮಾತ್ಮಾಜಿತೇಶ್ವರೈಃ ಚ".



“ಕುರಳು” ಯೋಗದ ಫಲ: “ಬಹುಭೃತ್ಯಕುಟುಂಬಾ-  
ರಮ್ಭಮದ್ವಿಗ್ನಚಿತ್ತಮಪಿ ದೊರಗುರೆ”.

“ಕೆಮದ್ರಮ” ಯೋಗದ ಫಲ: “ಭೃತಕಂ ದುಃಖಿನ-  
ಮಧನಂ ಜಾತಂ ಕೆಮದ್ರಮೇ ವಿಧಾತ್” ಜ್ಯೋತಿಷಂ. “ನೃಪತೇವಶ-  
ಜಾತೋಽಪಿ ಕೆಮದ್ರಮಭವೋ ನರ:। ಮಲಿನೋ ದುಃಖಿತೋ ನಿಕೋ  
ನಿ:ಸ್ವೋ ದಾಸೋ ಭವೇತ್ ಸ್ವಲ್ಪ:” ಜಾತಕಪಂ.

“ಕೆಮದ್ರಮ” (ಕೇಮದುಮ) ಯೋಗದ ಭಂಗ  
“ಚಂದ್ರೇ ಕೇಂದ್ರಗತೇಽಥವಾ ಗ್ರಹಯುತೇ ಸರ್ವೇಶ್ಚ ದೃಷ್ಟೇ ವಿಧೌ ಸರ್ವೆ:  
ಕಂಠಕಸಂಜಿತೈರ್ಗ್ರಹಯುತೈ: ಕೆಮದ್ರಮೋ ನೇಷ್ಯತೇ” ಜಾತಕಪಂ.

ಕೆಯೂರ ಕೇಯೂರ (ನಂ) 1. ವಂಕಿ, ತೋಳಿನ ಒಂದು  
ಅಭರಣ. ಕೆ ಬಾಹುಶಿರಸಿ ಯುತಿ—ಯು (ಮಿಶ್ರಣ)  
“ಊರ:” (ಉಂ ೪-೯೦). ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಅಲುಕ್ (೬-೨-೯).  
“ವಾಮೇತರ: ಸಂಶಯಮಸ್ಯ ಬಾಹು: ಕೆಯೂರವಂಶೋಚ್ಚವಸಿತೈರ್ನುನೋದ”  
ರಘುಂ ೬-೬೮. 2. ಒಂದು ವಿಧ ರತಿಬಂಧ. “ಸ್ತ್ರೀಜಹ್ನು  
ಚೈವ ಸಂಪೀಡ್ಯ ದೋರ್ಮಾಲಿಜ್ಜಯ ಸುಂದರೀಮ್. ಕಾರಯೇತ್  
ಸ್ಥಾಪನಂ ಕಾಮೀ ಬಂಧ: ಕೆಯೂರಸಂಜಿತ:” ಸ್ಮರದೀಂ.

ಕೆಯೂರಿನ್ ಕೇಯೂರಿನ್ (ವಿಂ) ತೋಳಿನಲ್ಲಿ ವಂಕಿಯನ್ನು  
ತೊಟ್ಟಿರುವ. ಕೆಯೂರಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪).

ಕೆರಲ ಕೇರಲ (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 1. ಕೇರಳ ದೇಶ, ಮಲಬಾರ್  
ಪ್ರದೇಶ. 2. ಕೇರಳ ದೇಶದ ಜನರು. (ಪುಂ) 3. ಕೇರಳ  
ದೇಶದ ದೊರೆ. “ಭಯೋತ್ಸೃಷ್ಟವಿಭೂಷಣಾಂ ತೇನ ಕೆರಲ-  
ಯೋಷಿತಾಮ್” ರಘುಂ ೪-೪೪. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಿ -ಲೀ.  
4. ಕೇರಳ ದೇಶದ ಹೆಂಗಸು. 5. ಕೇರಳೀಯ ಜ್ಯೋತಿಷ  
ಗ್ರಂಥ. 6. ಹೋರೆ, ಲಗ್ನದ ಅರ್ಧಭಾಗ, ಸುಮಾರು  
ಒಂದು ಗಂಟೆ ಕಾಲ.

ಕೆಲೆ — ಚಲನೆ (ಭಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ). ಕೆಲತಿ. ಚಿಕೆಲ.  
ಕೆಲಿತಾ. ಕೆಲಿಷ್ಯತಿ. ಕೆಲತು. ಅಕೆಲತ್. ಕೆಲೇತ್.  
ಕೆಲಾತ್. ಅಕೆಲೀತ್. ಅಕೆಲಿಷ್ಯತ್. 1. ಅಲುಗಾಡು,  
ಚಲಿಸು. 2. ಹೋಗು, ಮುಂದೆ ಸಾಗು, ಮುಂದಕ್ಕೆ ನಡೆ.  
ಣಿಚಿ:—ಕೆಲಯತಿ, -ತೆ. ಕೆಲಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಕೆಲಯಿತಾ. ಕೆಲಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೆ. ಕೆಲಯತು,  
-ತಾಮ್. ಅಕೆಲಯತ್ -ತ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತು:—ಕೆಲಿತವ್ಯಮ್. ಕೆಲನೀಯಮ್. ಕೆಲಯಮ್. ಕೆಲಿತ:.  
ಕೆಲಿತವಾನ್. ಕೆಲನ್, ಕೆಲಂತಿ. ಕೆಲಿತುಮ್. ಕೆಲಿತಮ್.  
ಕೆಲನಮ್. ಕೆಲಿತವಾ. ಪ್ರಕೆಲಯ.

ಕೆಲಕ ಕೇಲಕ (ಪುಂ) 1. ನರ್ತಕ, ನರ್ತನಮಾಡುವವನು,  
ಕುಣಿಯುವವನು. 2. ಕತ್ತಿಯ ಅಲುಗಿನ ಮೇಲೆ ಕುಣಿಯು  
ವವನು. ಕೆಲ (ಚಲನೆ) “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩).

“ಲಯಪುತ್ರೀ ನದೀ ನರ್ತು: ಸ್ವಧಾರಾದಿನರ್ತಕೇ. ಪ್ಲವಕ:  
ಕೆಲಕಶ್ಚ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಕೆಲಿ ಕೇಲಿ (ಪುಸ್ತಕಂ) 1. ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ಪರಿಹಾಸ,  
ರತಿಕ್ರೀಡೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ನಾಯಿಕಾ ನಾಯಕರ ವಿನೋದ.  
ಕೆಲ (ಚಲನೆ) “ಇನ್” (ಉಂ ೪-೧೧೭). “ಉಪಚಾರಕ್ರಿಯಾ  
ಕೆಲಿ: ಸ್ಪರ್ಶೋ ಭೂಷಣವಾಸಸಾಮ್. ಸಹ ಖಡ್ವಾಸನಂ ಚೈವ ಸರ್ವಂ  
ಸಂಗ್ರಹಣಂ ಸ್ಮೃತಮ್” ಮನುಂ ೮-೩೪೭. ಸ್ತಗ್ಗಾಧಾನುಲೇಪನ-  
ಪ್ರೇಷಣಾದ್ಯುಪಚಾರಕರಣಂ ಕೆಲಿ: ಪರಿಹಾಸಾಲಿಜ್ಜನಾದಿ: ಇತಿ  
ಕುಲ್ಲೂತಭಟ:। 2. ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ. “ಮಿಲನಿಮಿಲಂ ಸಸೃಜು-  
ವಿಲೋಕಿತಾ: ನಭಸ್ವತಸ್ತಂ ಕುಸುಮೇಷು ಕೆಲಯ:” ನೈಷಂ ೧-೯೭.  
“ರಾಧಾಮಾಧವಯೋರ್ಜಯಂತಿ ಯಮುನಾಕುಲೇ ರಹ:ಕೆಲಯ:” ಗೀತಗೋಂ  
೧. 3. ಸ್ತ್ರೀಯರಿಗೆ ಸ್ವಭಾವಸಿದ್ಧವಾದ ಹದಿನೆಂಟು ವಿಧ  
ಅಲಂಕಾರಗಳಲ್ಲೊಂದು. .... ಹಸಿತಂ ಚಾಕಿತಂ  
ಕೆಲಿರೀತ್ಯಷ್ಟಾದಶಸಂಖ್ಯಕಾ:। ಸ್ವಭಾವಜಾಶ್ಚ ಭಾವಾಶ್ಚ ದಶ  
ಪುಸಾಂ ಭವಂತ್ಯಮಿ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೯೨. ವಿಹಾರಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ಪತಿಯೊಡನೆ ನಾಯಿಕೆಯ ಕ್ರೀಡೆಯು ಕೇಳಿಯೆನಿಸುವುದು.  
“ವಿಹಾರೆ ಸಹ ಕಾಂತೇನ ಕ್ರೀಡಿತಂ ಕೆಲಿರೀಚ್ಯತೇ” ಸಾಂ ದಂ  
೩-೧೧೦. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ. 5. ಮುಚ್ಚಿಟ್ಟು  
ಕೊಳ್ಳುವುದು, ಮರೆಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಬೇರೆ ವೇಷದಿಂದ  
ತನ್ನ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಬಚ್ಚಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಕೆಲಿಕ ಕೇಲಿಕ (ಪುಂ) ಅಶೋಕವೃಕ್ಷ. ಕೆಲಿ: ಪ್ರಯೋಜನ-  
ಮಸ್ತಯಸ್ಯ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪).

ಕೆಲಿಕಲಾ ಕೇಲಿಕಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕ್ರೀಡಾವಿದ್ಯೆ, ಆಟದ  
ಕಲೆ. ಕೆಲಿರೂಪಕಲಾ. 2. ಸರಸ್ವತಿಯ ವೀಣೆ. 3. ಆಟ  
ದಲ್ಲಿ ಜಾಣ್ಮೆ. 4. ವಿಷಯಾಸಕ್ತಿ, ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಲಾಲಸೆ.

ಕೆಲಿಕಲಾವತೀ ಕೇಲಿಕಲಾವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರತಿ, ಮನ್ಮಥನ  
ಪತ್ನಿ. “ಅಸ್ಯ ಪ್ರಿಯಾ ರಾಗಲತಾ ಕೆಲಿಕಲಾವತೀ”  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಕೆಲಿಕೋರ್ಣ ಕೇಲಿಕೋರ್ಣ (ಪುಸ್ತಕಂ) ಉಷ್ಣ, ಒಂಟಿ. ಕೆಲಯಾ  
ಕೀರ್ಯತೇ—ಕು (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨). “ಭೂತಘ್ನ  
ಉಷ್ಣೋ ದಾಶೇರೋ ರವಣ: ಕಂಠಕಾಶನ:। ದೀರ್ಘಗ್ರೀವ: ಕೆಲಿ  
ಕೋರ್ಣ:” ಅಭಿಂ ಚಿಂ.

ಕೆಲಿಕುಚ್ಚಿಕಾ ಕೇಲಿಕುಂಚಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾದಿನಿ,  
ಪತ್ನಿಯ ಕಿರಿಯಸಹೋದರಿ. ಕೆಲಯಾಂ ಕುಚ್ಚತಿ ಕುಟಿಲಿ-  
ಭವತಿ—ಕುಚ್ಚ (ಕುಟಿಲೀ) “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩).  
“ಪತ್ನಾಸ್ತು ಭಗಿನಿ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ಜ್ಯೇಷ್ಠಶ್ವಶ್ರು: ಕುಲೀ ಚ ಸಾ।  
ಕನಿಷ್ಠಾ ಶ್ಯಾಲಿಕಾ ಹಾಲೀ ಯನ್ತ್ರಣಿ ಕೆಲಿಕುಚ್ಚಿಕಾ”  
ಅಭಿಂ ಚಿಂ.



ಕೆಲಿಕೋಶ ಕೇಲಿಕೋಶ (ಪುಂ) ಅಟಗಾರ, ಅಭಿನಯಕಾರ, ನಟ. ಕೆಲಿನಾಂ ಕೋಶ ಇವ.

ಕೆಲಿಗೃಹ ಕೇಲಿಗೃಹ (ನಂ) 1. ಕ್ರೀಡಾಮಂದಿರ, ಅಟದ ಮನೆ. 2. ರತಿಗೃಹ, ಸಂಭೋಗ ಗೃಹ. ಕೆಲ್ಯಾ: ಗೃಹಮ್.

ಕೆಲಿನಾಗರ ಕೇಲಿನಾಗರ (ಪುಂ) ಭೋಗಿ, ವಿಷಯಾಸಕ್ತ. ಕೆಲಿಪ್ರಧಾನೋ ನಾಗರ:.

ಕೆಲಿಮಂಡಪ ಕೇಲಿಮಂಡಪ, -ಮಂದಿರ -ಮಂದಿರ (ನಂ) "ಕೆಲಿಗೃಹ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ಕೆಲಿಮುಖ ಕೇಲಿಮುಖ (ಪುಂ) 1. ಪರಿಹಾಸ್ಯ, ವಿನೋದ. 2. ಕ್ರೀಡೆ, ಅಟ. ಕೆಲಿ: ಮುಖಮತ್ರ. "ಪರಿಹಾಸ: ಕೆಲಿಮುಖ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಕೆಲಿಸಚಿವ ಕೇಲಿಸಚಿವ (ಪುಂ) (ನಾಟಕದಲ್ಲಿ) ನಾಯಕನ ನರ್ಮಸಚಿವ, ಕ್ರೀಡಾಸಚಿವ, ವಿದೂಷಕ. ಕೆಲೈ ಸಚಿವ:.

ಕೆಲಿಸ್ಥಳಿ ಕೇಲಿಸ್ಥಳಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕ್ರೀಡಾರಂಗ. ಅಟದ ಮೈದಾನ.

ಕೇವ - ಸೇವನೆ (ಭಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಕೇವತೆ। ಚಿಕೇವೆ। ಕೇವಿತಾ। ಕೇವಿತಾಮ್। ಅಕೇವತೆ। ಕೇವತೆ। ಅಕೇವಿಷ್ಠೆ। ಅಕೇವಿಷ್ಯತೆ। ಸೇವಿಸು. ಸೇವೆಮಾಡು. ಉಳಿಗ ಮಾಡು.

ಕೇವತೆ ಕೇವರ್ತ (ಪುಂ) ಬೆಸ್ತರವನು, ಮೀನು ಹಿಡಿಯುವವನು.

ಕೆವಲ ಕೇವಲ (ವಿಂ) 1. ಅಸಹಾಯ, ಅದ್ವಿತೀಯ, ಒಂದು ಅಥವಾ ಒಬ್ಬ ಮಾತ್ರ. ಕೇವ (ಸೇವನೆ) "ಕಲ:" (ತಂ ೧-೧೦೬)। "ನಮಸ್ತಿಸ್ಮರ್ಮತೇ ತುಮ್ಯಂ ಪ್ರಾಕ್ಸೃಷ್ಟೆ: ಕೆವಲಾತ್ಮನೇ" ಕುಮಾಂ ೨-೪। 2. ಏಕಾಕಿ, ಒಬ್ಬಂಟಿಗ, ಇತರರ ಸಂಪರ್ಕವಿಲ್ಲದ, ಬೇರೆಯಾಗಿರುವ. ಇತರರೊಡನೆ ಬೆರೆಯದಿರುವ. 3. ಸಮಗ್ರವಾದ. ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ. "ಅನನ್ಯಗುರ್ವಸ್ತಿವ ಕೇನ ಕೇವಲ: ಪುರಾಣಮೂರ್ಮಹಿಮಾವಗಮ್ಯತೇ" ಮಾಘಂ ೧-೩೫। 4. ಶುದ್ಧವಾದ, ಮಿಶ್ರವಲ್ಲದ, ಬೆರೆಕೆಯಿಲ್ಲದ. 5. ಅಸೂಯೆಯುಳ್ಳವನು. (ಅವ್ಯಂ) 6. ಒಂದು ಮಾತ್ರ, ಅದೊಂದೇ. "ನ ಕೇವಲಂ ಗಂಚ್ಛತಿ ತಸ್ಯ ಕಾಲೇ ಯು: ಶರೀರಾವಯವಾ ವಿವೃದ್ಧಿಮ್" ರಘುಂ ೧೮-೪೯। 7. ಅವಧಾರಣಾ, ನಿಶ್ಚಯ. "ನ ಕೇವಲಂ ಸದ್ವಿನಿ ಮಾಗಧೀಪತೇ: ಪಥಿ ವ್ಯಜೃಂಭಂತ ದಿವೀಕಸಾಮಪಿ" ರಘುಂ ೩-೧೯। "ವಚಸ್ತಸ್ಯ ಸಪದಿ ಕ್ರಿಯಾ ಕೇವಲಮುತ್ತರಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೨೨। (ನಂ) 8. ನಿರ್ಲೋಪ. "ಕೇವಲ: ಕುಹನೇ ಪುಮಾನ್। ನಪುಂಸಕಂತು ನಿರ್ಣೀತಿ ವಾಚ್ಯವಂಚೈಕಕೃತ್ಸನಯೋ:" ಮೇದಿಂ। 9. ಪ್ರಕೃತಿ ಪುರುಷವಿವೇಕ ಜ್ಞಾನ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ-ಲಾ. ಅಸಂಜಾಯ

"ಠಾಪ್"। -ಲಿ-ಲಿ. ಸಂಜಾಯಾಂ ಛಂದಸಿ ಚ "ಠಿಪ್" (೪-೧-೩೦)।

ಕೆವಲವ್ಯತಿರೇಕ ಕೇವಲವ್ಯತಿರೇಕ (ನಂ) ಮೂರು ವಿಧ ಲಿಂಗ ಅಥವಾ ಅನುಮಾನಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. ಅನುಮಾನವು (1) ಅನ್ವಯವ್ಯತಿರೇಕ, (2) ಕೆವಲಾನ್ವಯ ಮತ್ತು (3) ಕೆವಲವ್ಯತಿರೇಕ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ.

(1) ಅನ್ವಯವ್ಯತಿರೇಕ : ಅನ್ವಯವ್ಯಾಪ್ತಿ ಮತ್ತು ವ್ಯತಿರೇಕವ್ಯಾಪ್ತಿ ಎರಡೂ ಇರುವುದು ಅನ್ವಯವ್ಯತಿರೇಕ. "ಅನ್ವಯೇನ ವ್ಯತಿರೇಕೇಣ ಚ ವ್ಯಾಪ್ತಿಮತ್ ಅನ್ವಯವ್ಯತಿರೇಕ"। "ಹೇತುಸಾಧ್ಯಯೋರ್ವ್ಯಾಪ್ತಿ: ಅನ್ವಯವ್ಯಾಪ್ತಿ:-ಯತ್ರ ಭೂಮಸ್ತತ್ರಾಗ್ನಿ: -ಯಥಾ ಮಹಾನಸಮ್"। ಹೇತುಸಾಧ್ಯಗಳಿಗೆ ಸಾಹಚರ್ಯವಿರುವುದು ಅನ್ವಯವ್ಯಾಪ್ತಿ. ಹೇತುವಾದ ಧೂಮ ಮತ್ತು ಸಾಧ್ಯವಾದ ಅಗ್ನಿಗಳಿಗೆ ಸಾಹಚರ್ಯವು ಮಹಾನಸದಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ ಅನ್ವಯವ್ಯಾಪ್ತಿ. "ಸಾಧ್ಯಾಭಾವ-ಹೇತುಭಾವಯೋ: ವ್ಯಾಪ್ತಿ: ವ್ಯತಿರೇಕವ್ಯಾಪ್ತಿ:-ಯತ್ರ ವಹ್ನಿಭಾವ: ತತ್ರ ಭೂಮಾಭಾವ:-ಯಥಾ ಮಹಾಹ್ನದ:" ಸಾಧ್ಯಭಾವ ಮತ್ತು ಹೇತುಭಾವಗಳ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯು ವ್ಯತಿರೇಕವ್ಯಾಪ್ತಿ. ವಹ್ನಿಭಾವ ಮತ್ತು ಧೂಮಾಭಾವಗಳಿಗೆ ಮಹಾಪ್ರದದಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯಿರುವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ ವ್ಯತಿರೇಕವ್ಯಾಪ್ತಿ. ಈ ರೀತಿ ಹೇತುಸಾಧ್ಯಗಳ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯಾದ ಅನ್ವಯವ್ಯಾಪ್ತಿಯೂ ಸಾಧ್ಯಭಾವ ಹೇತುಭಾವಗಳ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯಾದ ವ್ಯತಿರೇಕ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯೂ ಇಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ "ಅನ್ವಯವ್ಯತಿರೇಕ".

(2) ಕೆವಲಾನ್ವಯ : ಅನ್ವಯವ್ಯಾಪ್ತಿ ಮಾತ್ರವಿರುವ ಹೇತುವು ಕೇವಲಾನ್ವಯ. "ಅನ್ವಯವ್ಯಾಪ್ತಿಮಾತ್ರಕಂ ಕೆವಲಾನ್ವಯಿ-ಛಟೋಭಿಧೇಯ: ಪ್ರಮೇಯತ್ವಾತ್-ಯಥಾ ಪಟ:"। ಇಲ್ಲಿ ಘಟವು ಪಕ್ಷ, ಅಭಿಧೇಯತ್ವವು ಸಾಧ್ಯ. ಪ್ರಮೇಯತ್ವವು ಹೇತು. ಯತ್ರಾಭಿಧೇಯತ್ವಮ್ ತತ್ರ ಪ್ರಮೇಯತ್ವಮ್-ಯಥಾ ಪಟ:। ಎಲ್ಲಿ ಅಭಿಧೇಯತ್ವವಿರುವುದೋ ಅಲ್ಲಿ ಪ್ರಮೇಯತ್ವವಿರುವುದೆಂದು ಇಲ್ಲಿ ಅನ್ವಯವ್ಯಾಪ್ತಿಯಿರುವುದು. ಅಭಿಧೇಯತ್ವ ಪ್ರಮೇಯತ್ವಗಳು ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಇರುವುದರಿಂದಲೂ ಮತ್ತು ಸಾಧ್ಯಭಾವ ಹೇತುಭಾವಗಳು ಅಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದುದರಿಂದಲೂ ವ್ಯತಿರೇಕವ್ಯಾಪ್ತಿಯಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಅದುದರಿಂದ ಇದು ಕೇವಲಾನ್ವಯ.

(3) ಕೆವಲವ್ಯತಿರೇಕ : ವ್ಯತಿರೇಕವ್ಯಾಪ್ತಿಮಾತ್ರವಿರುವ ಹೇತುವು ಕೇವಲವ್ಯತಿರೇಕ. "ಸಾಧ್ಯಾಭಾವಹೇತು-ಭಾವಯೋ: ವ್ಯಾಪ್ತಿ: ವ್ಯತಿರೇಕವ್ಯಾಪ್ತಿ:-ವ್ಯತಿರೇಕವ್ಯಾಪ್ತಿಮಾತ್ರಕಂ ಕೆವಲವ್ಯತಿರೇಕ। ಪೃಥಿವೀತರೇಮ್ಯೋ ಭಿಧೇತೇ ಗಂಧವತ್ವಾತ್-ಯದಿತರೇಮ್ಯೋ ನ ಭಿಧೇತೇ ನ ತದ್ಗಂಧವತ್-ಯಥಾ ಜಲಮ್"



ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪಕ್ಷವಾದ ಪೃಥಿವಿಯಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಗಂಧವಿರುವುದರಿಂದಲೂ ತದಿಂತರವಾದ ಜಲಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ಗಂಧವಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದಲೂ ಎಲ್ಲದಕ್ಕಿಂತ ಇದು ಭಿನ್ನವಾದುದು. ಮತ್ತು ಇಲ್ಲಿ ಅನ್ವಯವ್ಯಾಪ್ತಿಯಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಎಲ್ಲಿ ಜಲ ಮೊದಲಾದ ಇತರ ವಸ್ತುವಿಗಿಂತಲೂ ಭೇದವಿರುವುದಿಲ್ಲವೋ ಅಲ್ಲಿ ಗಂಧವತ್ತ್ವವಿಲ್ಲವೆಂಬ ವ್ಯತಿರೇಕವ್ಯಾಪ್ತಿ ಮಾತ್ರ ಬರುವುದರಿಂದ ಕೇವಲವ್ಯತಿರೇಕ.

**ಕೆವಲಾನ್ವಯಿ ಕೇವಲಾನ್ವಯಿ (ವಿಂ)** ["ಕೆವಲವ್ಯತಿರೇಕ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕೆಶ ಕೇಶ (ಪುಂ)** 1. ತಲೆಯ ಕೂದಲು. ಕೆ ಶಿರಸಿ ಶೇತೆ - ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನ) "ಡ:" (3-2-101). ತಲೆಯ ಕೂದಲು ಅಸ್ಥಿಧಾತುವಿನ ಒಂದು ಉಪಧಾತು. ಇದು ತಂದೆಯ ಅಂಶದಿಂದ ಉಂಟಾದುದು. "ಗರ್ಭಸ್ಯ ಕೇಶಮಶ್ರು-ಲೋಮಾಸ್ಥಿನಖದಂತಸಿರಾಸ್ನಾಯುಧಮನೀರೆತ:ಪ್ರಭೃತಿನಿ ಸ್ಥಿರಾಣಿ ಪಿತೃಜಾನಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ 3-33. ಎಷ್ಟೇ ವಯಸ್ಸಾದರೂ ನಖ ಮತ್ತು ಕೇಶಗಳನ್ನು ಕತ್ತರಿಸುತ್ತಿದ್ದರೂ ಬೆಳೆಯುತ್ತಲೇ ಇರುವುವು. "ಶರೀರೇ ಕ್ಷೀಯಮಾಣಃಪಿ ವರ್ಧತೇ ದ್ವಾವಿಮೌ ಸದಾ। ಸ್ವಭಾವಂ ಪ್ರಕೃತಿ ಕೃತ್ವಾ ನಖಕೇಶಾವಿತಿ ಸ್ಥಿತಿ:" ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ 4-61. ಕೋಪ ಶೋಕ ಮತ್ತು ಹೆಚ್ಚು ಶ್ರಮದ ಕಾರ್ಯಗಳಿಂದ ದೇಹದ ಉಷ್ಣಾಂಶವು ತಲೆಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಪಿತ್ತದೊಡನೆ ಕಲೆತು ತಲೆಯ ಕೂದಲನ್ನು ಬೆಳೆಗೆ ಮಾಡುವುದು. "ಕ್ರೋಧಶೋಕ-ಶ್ರಮಕೃತ: ಶರೀರೋಷ್ಮಾ ಶಿರೋಗತ:। ಪಿತ್ತಂ ಚ ಕೇಶಾನ್ ಪಚತಿ ಪಲಿತಂ ತೇನ ಜಾಯತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ ನಿದಾನಂ 13-37. "ಲತಾಪ್ರತಾನೋದ್ಗ್ರಥಿತ: ಸ ಕೇಶೇರಧಿಜ್ಯಧನ್ವಾ ವಿಚಾರ ದಾಬಮ್" ರಘುಂ 2-2. 2. ವರುಣ, ಜಲಾಧಿಪತಿ. ಕಸ್ಯ ಜಲಸ್ಯ ಇಶ:। 3. ಮುಡಿವಾಳ, "ಕೇಶ: ಸ್ಯಾತ್ ಪುಸಿ ವರುಣೇ ಹಿಬೇರೇ ಕುಂತಲೇಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ. 4. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. "ಕೇಶ: ಶಿರಸಿಜೇ ಪಾಶಪಾಣೌ ಹಿಬೇರದೈತ್ಯಯೋ:" ಹೇಮಂ.

**ಕೆಶಕರ್ಮನ್ ಕೇಶಕರ್ಮನ್ (ನಂ)** 1. ತಲೆಯನ್ನು ಬಾಚಿ ಜಡೆ ಹೆಣೆದು ಶೃಂಗರಿಸುವುದು. ಕೇಶಾನ್ ಕರ್ಮ ರಚನಾ। "ಸಾಹಂ ಬ್ರುವಾಣಾ ಸೇರನ್ಧ್ರಿ ಕುಶಲಾ ಕೇಶಕರ್ಮಣಿ" ಭಾಂ ವಿರಾಂ 3-12. 2. ಚೂಡಾಕರ್ಮ, ಜುಟ್ಟುಬಿಡಿಸುವುದು.

**ಕೆಶಕಲಾಪ ಕೇಶಕಲಾಪ (ಪುಂ)** ತಲೆಯ ಕೂದಲಿನ ಸಮೂಹ. ಕೇಶಾನ್ ಕಲಾಪ:।

**ಕೆಶಕಾರಿನ್ ಕೇಶಕಾರಿನ್ (ವಿಂ)** ತಲೆಯ ಕೂದಲನ್ನು ಬಾಚಿ ಹೆಣೆದು ಶೃಂಗರಿಸುವವನು. ಕೇಶಂ ತಸ್ಯ ರಚನಾ

ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣ) "ಣಿನಿ:" (3-2-92)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-4)। -ಕಾರಿಣಿ -ಕಾರಿಣೀ. "ನಿಹಿನವರ್ಣಾ ಸೇರನ್ಧ್ರಿ ಬಿಭತ್ಸಾಂ ಕೇಶಕಾರಿಣಿಮ್" ಭಾಂ ವಿರಾಂ 14-34.

**ಕೆಶಕೀಡ ಕೇಶಕೀಟ (ಪುಂ)** 1. ತಲೆಯ ಕೂದಲಿಗೆ ಸೇರುವ ಕೃಮಿ, ಹೇನು. ಕೇಶ ಕೀಡ:। (ನಂ) 2. ತಲೆಯ ಕೂದಲು ಮತ್ತು ಹೇನು. ಕೇಶಾಶ್ಚ ಕೀಡಾಶ್ಚ ಅನಯೋ: ಸಮಾಹಾರ:। "ಕೇಶಕೀಡಾವಪಶ್ಚಂ ಚ ಪದಾ ಸ್ಪೃಷ್ಟಂ ಚ ಕಾಮತ:" ಮನುಂ 4-209.

**ಕೆಶಗರ್ಭ (ಕ) ಕೇಶಗರ್ಭ (ಕ) (ಪುಂ)** ವೇಣಿ, ಜಡೆ. ಕೇಶ: ಗರ್ಭಸ್ಯ - ವಾ "ಕಪ್" (4-4-144)। "ಕವರ: ಕೇಶಗರ್ಭಕ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಕೆಶಗ್ರಹ ಕೇಶಗ್ರಹ (ಪುಂ)** 1. ರಶ್ಮಿರೇಡೆಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಕಚ್ಚಗ್ರಹಣ. ಕೇಶಸ್ಯ ಗ್ರಹ:। "ರತೇಷು ಕೇಶಗ್ರಹ:" ಕಾದಂ. 2. ತಲೆಯ ಕೂದಲನ್ನು ಹಿಡಿದೆಳೆಯುವುದು. "ಕೇಶಗ್ರಹಾನ್ ಪ್ರಹಾರಾಂಶ್ಚ ಶಿರಸ್ಯೇತಾನ್ ವಿವರ್ಜಯೇತ್" ಮನುಂ 4-23.

**ಕೆಶಗ್ರಹಣ ಕೇಶಗ್ರಹಣ (ನಂ)** "ಕೇಶಗ್ರಹ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಕೇಶಾನ್ ಗ್ರಹಣಮ್ - ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

**ಕೆಶಗ್ರಾಹಮ್ ಕೇಶಗ್ರಾಹಮ್ (ಅವ್ಯಂ)** ಕೂದಲನ್ನು ಹಿಡಿದು ಕೊಂಡು. ಕೇಶಾನ್ ಗೃಹೀತ್ವಾ - ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಣಮುಲ್" (3-4-44)।

**ಕೆಶಧನ್ ಕೇಶಧನ್ (ನಂ)** ಇಂದ್ರಿಯಪ್ರಕವೆಂಬ ರೋಗ, ತಲೆಯ ಕೂದಲನ್ನು ಉದುರಿಸುವ ಒಂದು ರೋಗ. ಕೇಶಾನ್ ಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಡಕ್" (3-2-43)। ["ಇಂದ್ರಲುಪ್ತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕೆಶಚಣ ಕೇಶಚಣ (ವಿಂ)** ಕೂದಲಿನಿಂದ ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾದ, ಒಳ್ಳೆಯ ಕೂದಲಿನಿಂದ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಹೊಂದಿದ. ಕೇಶ: ವತ್ತ: "ಚಣಪ್" (4-2-26)।

**ಕೆಶಚ್ಛಿದ್ ಕೇಶಚ್ಛಿದ್ (ಪುಂ)** 1. ನಾಪಿತ, ಕ್ಷೌರಿಕ, ನಾಯಿಂದ. ಕೇಶಾನ್ ಚಿನತ್ತಿ ಚಿದಿರ್ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ಕ್ವಿಪ್" (3-2-61)। (ವಿಂ) 2. ಕೂದಲನ್ನು ಕತ್ತರಿಸುವವನು.

**ಕೆಶಜಾಹ ಕೇಶಜಾಹ (ನಂ)** ಕೇಶಮೂಲ, ತಲೆಯ ಕೂದಲಿನ ಬುಡ. ಕೇಶಾನ್ ಮೂಲಮ್ "ಜಾಹ್" (4-2-24)।

**ಕೆಶಟ ಕೇಶಟ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. ಕೌ ಬ್ರಹ್ಮಾ ಇಶ: ಮಹಾದೇವ: ತೌ ಅದತ: ಯಂ ಪ್ರಲಯಕಾಲೇ - ಅದ (ಗತೌ) "ಅವ್"



(೩-೧-೧೩೪) 1. ಅಜ್ಜ, ಮೇಕೆ. ಕೆಶು ಕಾಶಾದಿತು-  
ಜಾತೇಷು ಅಟತಿ 3. ಅಗಣೆ. ಕೆಶು ಶಿರೋರೂಪೇಷು ಅಟತಿ 4. ಸಹೋದರ. 5. ಹೆಮ್ಮರ, ಅಗಡುಮರ. 6. ಮನ್ಮಥನ  
ಬಾಣ. "ಕೆಶಃ ಶೋಣಕೇ ವಿಷ್ಣೌ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1.

**ಕೆಶಪಕ್ಷ ಕೇಶಪಕ್ಷ - ಪಾಶ - ಪಾಶ (ಪುಂ)** ತಲೆಯ  
ಕೂದಲಿನ ಸಮೂಹ. ಕೆಶಾನಾಂ ಪಕ್ಷಃ ಪಾಶೋ ವಾ 1. "ಕೆಶಪಕ್ಷೇ  
ಪರಾಮೃಷ್ಠಾ ಪಾಪೇನ ಹತಬುದ್ಧಿನಾ" ಭಾಂ ಆದಿಂ 1. "ತಿಮಿರ-  
ಮಿವ ದಧಾನಾಃ ಕ್ಷಂಸಿನಃ ಕೆಶಪಾಶಾನ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೨೦ 1.

**ಕೆಶಪರ್ಣಿ ಕೇಶಪರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಪಾವರ್ಣ, ಉತ್ತರೇಣಿ  
ಗಿಡ.

**ಕೆಶಪ್ರಸಾಧನಿ ಕೇಶಪ್ರಸಾಧನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ತಲೆಯ ಕೂದ  
ಲನ್ನು ಬಾಚಿ ಶೃಂಗಿಸುವ ಬಾಚಣಿಗೆ. ಕೆಶಃ ಪ್ರಸಾಧ್ಯತೇ-  
ನಯಾ-ಪ್ರ+ಸಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) 1.  
"ಕೆಶಪ್ರಸಾಧನಿ ಕೆಶಯಾ ರಜೋಜಂತುಮಲಾಪಹಾ" ಸುಶ್ರುತಂ  
ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೨೪-೨೯ 1.

**ಕೆಶಭೂ ಕೇಶಭೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಶಿರಸ್ಸು, ತಲೆ. ಕೆಶಾನಾಂ ಭೂಃ  
ಉತ್ಪತ್ತಿಃ ಸ್ಥಾನಮ್ 1. -ಭೂಮಿಃ-ಭೂಮಿಃ. "ದಾರುಣಾ ಕಂಠುರಾ  
ರೂಕ್ಷಾ ಕೆಶಭೂಮಿಃ ಪ್ರಜಾಯತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ 1.

**ಕೆಶಮಾರ್ಜಕ ಕೇಶಮಾರ್ಜಕ (ಪುಂ)** ಬಾಚಣಿಗೆ. ಕೆಶಾನ್  
ಮಾರ್ಜಿ - ಮೃಜು (ಶುದ್ಧಿ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) 1.

**ಕೆಶಮಾರ್ಜನ ಕೇಶಮಾರ್ಜನ (ನಂ)** 1. ತಲೆಯನ್ನು ಬಾಚು  
ವುದು. ಕೆಶಾನಾಂ ಮಾರ್ಜನಮ್ - ಮೃಜು (ಶುದ್ಧಿ) "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೫) 1. 2. ಬಾಚಣಿಗೆ. ಮೃಜು ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೭) 1.

**ಕೆಶ(ಸ)ರ ಕೇಶ(ಸ)ರ (ಪುಂ)** 1. ವಕುಳವೃಕ್ಷ, ಪವಳದ  
ಗಿಡ. 2. ಸುರಗಿ ಮರ, ಸುರಹೊನ್ನೆ ಮರ. ಪ್ರಶಸ್ತಾಃ  
ಕೆಸರಾಃ ಸಂತ್ಯಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) 1. 3. ನಾಗ  
ಸಂಪಿಗೆ ಮರ. 4. ಕುದುರೆ ಮತ್ತು ಸಿಂಹದ ಹೆಗಲಿನ  
ಕೂದಲು. (ಪುಂ) 5. ಕಿಂಜಲ್ಕ, ಪದ್ಮ ಮೊದಲಾದುವು  
ಗಳ ಬಳಗಿನ ಕುಸುರು. "ಸರಜಸಾರುಣಕೆಶರಚಾರುಮಿಃ"  
ಮಾಘಂ ೬-೪೭ 1. (ನಂ) 6. ಸಿಂಹದ, ಇಂಗಲೀಕೆ.  
7. ವಕುಳವೃಕ್ಷ. 8. ಸುರಗಿಹೂವು. 9. ನಾಗಸಂಪಿಗೆ  
ಹೂವು. 10. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 11. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ.  
ಕೇ ಜಲೇ ಶಿರಸಿ ವಾ ಶೀಯತಿ - ಶ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಅಪ್"  
(೩-೩-೫೭) 1. "ಕೆಶರಂ ಹಿಡ್ಗುಲೇ ಕ್ಲಿಬಂ ಕಿಂಜಲ್ಕೇ ನ  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಪುಮಾನ್ 1. ಸಿಂಹಸರಾಪಾಂ ಪುಮಾಣಾಂ ವಕುಲೇ ನಾಗಕೆಸರೇ"  
ಮೇದಿಂ 1. 12. ಚಾಮರ. "ಚಾಮರಂ ರೋಮಗುತ್ಸಂ ಚ ಕೆಶರಂ  
ಚಾವಕೂಲಕಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1.

**ಕೆಶರಚನಾ ಕೇಶರಚನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ತಲೆಯನ್ನು ಬಾಚಿ ಜಡ  
ಹೆಣೆಯುವುದು. ಕೆಶಾನಾಂ ರಚನಾ 1.

**ಕೆಶರಜ್ಜನ ಕೇಶರಂಜನ (ಪುಂ)** 1. ಗರಗದ ಗಿಡ. ಕೆಶಾನ್  
ರಜ್ಜಯತಿ - ರಜ್ಜ (ರಾಗೇ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೧-೧೩೪) 1.  
2. ತಲೆಯ ಕೂದಲಿಗೆ ಬಣ್ಣ ಹಾಕುವುದು. ಕೆಶಾನಾಂ  
ರಜ್ಜನಮ್ 1.

**ಕೆಶರಾಜ ಕೇಶರಾಜ (ಪುಂ)** ಗರಗದ ಸೊಪ್ಪು. ಕೆಶಾ  
ರಜ್ಯಂತೇಜೇನ - ರಜ್ಜ (ರಾಗೇ) ಕರಂ "ವಬ್" (೩-೩-೧೨೧) 1.  
"ಭೃಗುರಾಜಃ ಕೆಶರಾಜೋ ಭೃಗುರಾಜಃ ಕೆಶರಜ್ಜನಃ" ಭಾವಪ್ರಂ 1.

**ಕೆಶಲುಚ್ಚಕ ಕೇಶಲುಚ್ಚಕ (ಪುಂ)** ಜೈನಸಂನ್ಯಾಸಿ. ಕೆಶಾನ್  
ಲುಚ್ಚತಿ - ಲುಚ್ಚ (ಅಪನಯನ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) 1.  
"ಆಃ ಪಾಪ, ಪಾಪಪಾಪಸದ. ಚಂಡಾಲವೇಷ, ಕೆಶಲುಚ್ಚಕ"  
ಪ್ರಬೋಧಂ 1. "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೧-೧೩೪) 1. -ಲುಚ್ಚನಃ  
-ಲುಚ್ಚನಃ.

**ಕೆಶವ ಕೇಶವ (ಪುಂ)** 1. ಎಷ್ಟು. ಕಶ್ಚ ಇತಿ ಕೆಶೋ -  
ತೌ ಪುತ್ರಪೌತ್ರತ್ವೇನ ಸ್ತೋಜ್ಯ, ಪ್ರಶಸ್ತೋಃ ಕೆಶಾಃ ಸಂತ್ಯಸ್ಯ ವಾ  
"ವಃ" (೪-೨-೧೦೯) 1. "ಶಂಭೋಃ ಪಿತಾಮಹೋ ಬ್ರಹ್ಮಪಿತಾ  
ಶಕ್ರಾಽಧಿಪತಿಃ" ಪಾಶಪುಂ 1. "ಪ್ರಶಸ್ತನೀಲಕೆಶತ್ವಾತ್ ಕೆಶವಃ  
ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ 1. "ನಾರಸಿಂಹವಪುಃ ಶ್ರೀಮಾನ್  
ಕೆಶವಃ ಪುರುಷೋತ್ತಮಃ" ವಿಂ ಸಂ 1. "ಪ್ರತಿವಾಚಮದತ್ತ  
ಕೆಶವಃ ಶಪಮಾನಾಯ ನ ಚೇದಿಭೂಜೇ" ಮಾಘಂ ೧೬-೨೫ 1.  
ಕೇಶಿಯೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನನ್ನು ಕೊಂದದ್ದರಿಂದ "ಕೇಶವ"ನೆಂಬ  
ಹೆಸರಾಯಿತು. "ಯಸ್ಮಾತ್ಪ್ರವಯೇವ ದುಷ್ಟಾತ್ಮಾ ಹತಃ ಕೆಶೋ  
ಜನಾರ್ದನಃ 1. ತಸ್ಮಾತ್ ಕೆಶವನಾಮ್ನಾ ತ್ವಂ ಲೋಕೇ ಜ್ಞೇಯೋ  
ಭವಿಷ್ಯಸಿ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ 1. 2. ಸುರಗಿಮರ, ಸುರಹೊನ್ನೆ  
ಮರ. (ವಿಂ) 3. ಉತ್ತಮವಾದ ಕೇಶಪಾಶವುಳ್ಳ,  
ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ತುರುಬಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಕೆಶವಃ ಕೆಶಸಂಯುತಃ 1.  
ಪುಷ್ಪಾಗೇ ವಾಸುದೇವೇ ಚ" ಹೇಮಂ 1.

**ಕೆಶವರ್ಧನ ಕೇಶವರ್ಧನ (ನಂ)** 1. ತಲೆಯ ಕೂದಲನ್ನು  
ಬೆಳೆಸುವುದು. ಕೆಶಾನಾಂ ವರ್ಧನಮ್ 1. 2. ತಲೆಯ ಕೂದ  
ಲನ್ನು ಕತ್ತರಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 3. ತಲೆಯ ಕೂದಲನ್ನು  
ಬೆಳೆಸುವ. ಕೆಶಾನ್ ವರ್ಧಯತಿ - ವೃಘು (ವೃದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೧-೧೩೪) 1. 4. ತಲೆಯ ಕೂದಲನ್ನು  
ಕತ್ತರಿಸುವ. ಕೆಶಾನ್ ವರ್ಧಯತಿ - ವರ್ಧ (ಹೆದನ) + ಣಿಚ್  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೧-೧೩೪) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ - ವರ್ಧನಾ - ವರ್ಧನಾ.

**ಕೆಶವರ್ಧನಿ ಕೇಶವರ್ಧನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸಹದೇವೀಲತೆ.  
ಕೆಶಾ ವರ್ಧಂತೇಜಯಾ - ವೃಘು (ವೃದ್ಧಿ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೭) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೫) 1.



ಕೆಶವಧಿನಿ ಕೇಶವರ್ಧಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸದದೇವೀಶತ.

ಕೇಶಾನ್ ವರ್ಧಯತಿ - ವೃಧು (ವೃದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್ "ಣಿನಿ:"  
(೩-೧-೧೩೪)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)।

ಕೆಶವಾಲಯ ಕೇಶನಾಲಯ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು ದೇವಸ್ಥಾನ.

ಕೆಶವಸ್ಥಾಲಯ: 2. ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಣ್ಯಮರ.

ಕೆಶವೇಶ ಕೇಶವೇಶ (ಪುಂ) 1. ಹೆರಳು, ತುರುಬು. ಕೆಶಾನಾಂ  
ವೇಶ: 2. ಕೇಶರಚನ, ಜಡೆ ಹೆಣೆಯುವುದು. "ಯಥಾ  
ಕುಲಧರ್ಮ ಕೆಶವೇಶಾನ್ ಕಾರಯೇತ್" ಆಶ್ವಂ ಗುಂ।

ಕೆಶಹಸ್ತ ಕೇಶಹಸ್ತ (ಪುಂ) ಕೇಶಕಲಾಪ, ಕೂದಲಿನ  
ಸಮೂಹ. ಕೆಶಾನಾಂ ಹಸ್ತ:। "ಕಸ್ಯಾಶ್ಚಿದ್ವಿತತಚಲ-  
ನ್ವಿಷ್ಣಾಙ್ಗುಲಿಕೋ ಲಕ್ಷ್ಮೀವಾನ್ ಸರಸಿ ರರಾಜ ಕೆಶಹಸ್ತ:"  
ಮಾಘಂ ೮-೨೭।

ಕೆಶಾಕೇಶಿ ಕೇಶಾಕೇಶಿ (ಅವ್ಯಂ) ಪರಸ್ಪರ ಕೂದಲನ್ನು  
ಹಿಡಿದುಕೊಂಡು ನಡೆದ ಯುದ್ಧ. ಕೆಶೇಷು ಕೆಶೇಷು ಗೃಹೀತ್ವಾ  
ಪ್ರವೃತ್ತಂ ಯುದ್ಧಮ್ "ಇಚ್" (೫-೪-೧೨೭)। ಪೂರ್ವಪದಸ್ಯ ದೀರ್ಘ:  
(೬-೩-೧೩೭)। "ಕೆಶಾಕೇಶ್ಯಮವಶ್ಯುಧ್ವಂ ರಕ್ಷಸಾಂ ವಾನರೈಃ  
ಸಹ" ಭಾಂ ವನಂ ೨೮೪-೩೭।

ಕೆಶಾದ ಕೇಶಾದ (ಪುಂ) ತಲೆಯ ಕೂದಲನ್ನು ತಿನ್ನುವ  
ಒಂದು ಕೃಮಿ. ಕೇಶಾನ್ ಅತ್ತಿ-ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ) "ಅನ್"  
(೩-೨-೧)।

ಕೆಶಾಂತ ಕೇಶಾಂತ (ಪುಂ) 1. ಹದಿನಾರನೆಯ ವರ್ಷದಲ್ಲಿ  
ಮಾಡುವ ಕೇಶಖಂಡನಸಂಸ್ಕಾರ, ಗೋದಾನಕರ್ಮಂ.  
ಕೇಶಾನ್ ಅಂತಯತಿ ಛೇದನಾತ್ ಹಂತಿ-ಅಂತ + ಣಿಚ್ (ನಾಮಧಾಂ)  
"ಅನ್" (೩-೨-೧)। "ಕೆಶಾಂತ: ಷೋಡಶೇ ವರ್ಷೇ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ  
ವಿಧೀಯತೇ। ರಾಜನ್ಯಬಂಧೋರ್ಧ್ವಾಂಶೋ ವೈಶ್ಯಸ್ಯ ದ್ವ್ಯಧಿಕೇ ತತ:"  
ಮನುಂ ೨-೬೫। 2. ತಲೆಯ ಕೂದಲಿನ ತುದಿ, ತುರುಬಿನ  
ತುದಿಯ ಭಾಗ. "ಧೂಪೋಷ್ಮಣಾ ತ್ಯಾಜಿತಮಾರ್ಧಭಾವಂ ಕೆಶಾಂತ-  
ಮಂತ:ಕುಸುಮಂ ತದೀಯಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೧೪।

ಕೆಶಾಂತಿಕ ಕೇಶಾಂತಿಕ (ವಿಂ) ತಲೆಯ ಕೂದಲಿನ  
ತುದಿಯವರೆಗಿನ. ಕೆಶಾಂತ: ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ "ಠನ್"  
(೫-೧-೫೭)। "ಕೆಶಾಂತಿಕೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ದಂಡ: ಕಾರ್ಯ:  
ಪ್ರಮಾಣತ:। ಲಲಾಟಸಂಮಿತೋ ರಾಜ: ಸ್ಯಾತ್ ನಾಸಾಂತಿಕೋ  
ವಿಶ:" ಮನುಂ ೨-೪೬।

ಕೆಶಾರಿ ಕೇಶಾರಿ (ಪುಂ) ತಲೆಯ ಕೂದಲಿನ ಶತ್ರು,  
ಕೆಶಾನಾಮರಿ:।

ಕೆಶಾರ್ಹಿ ಕೇಶಾರ್ಹಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಹಾನೀಲಿ ಗಿಡ. ಕೆಶಾಂ  
ಕೆಶವರ್ಣಮರ್ಹತಿ - ಅರ್ಹ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಅನ್" (೩-೨-೧)।

ಕೆಶಿ ಕೇಶಿ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ದಾನವ.

ಕೆಶಿಕ ಕೇಶಿಕ (ವಿಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಕೇಶಪಾಶವುಳ್ಳ.  
ಬಹಳ ಕೂದಲುಳ್ಳ. ಪ್ರಶಸ್ತಾ: ಕೆಶಾ ಯಸ್ಯ "ಠನ್"  
(೫-೨-೧೧೫)।

ಕೆಶಿಕಾ ಕೇಶಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶತಾವರಿ ಗಿಡ.

ಕೆಶಿವಜ ಕೇಶಿವಜ (ಪುಂ) ನಿಮಿವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ.

ಕೆಶಿನ್ ಕೇಶಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. [ಇವನು  
ಕುದುರೆಯ ರೂಪವನ್ನು ತಾಳಿ ಗೋಕುಲದಲ್ಲಿ ಬಲರಾಮ-  
ಕೃಷ್ಣರನ್ನೂ ಗೋಪಬಾಲಕರನ್ನೂ ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಿರಲು  
ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಿಂದ ಹತನಾದನು. "ಕೇಶಿ ತು ಕಂಸಪ್ರಹಿತ: ಕುರೈಮಹಿಂ  
ಮಹಾಹಯೋ ನಿರ್ಜಯನ್ ಮನೋಜವ:। ಸದಾವಧೂತಾಭ್ರವಿಮಾನ-  
ಸಂಕುಲಂ ಕುರ್ವನ್ ನಮೋ ಹೇಷಿತಭೀಷಿತಾಖಿಲ:। ತಂ ತ್ರಾಸಯಂತಂ  
ಭಗವಾನ್ ಸ್ವಗೋಕುಲಂ ತದ್ದೇಷಿತೈರ್ವಾಲಿವಿಘ್ನಣಿತಾಮ್ಬುದಮ್। ಆತ್ಮಾ-  
ನಮಾಜೌ ಮೃಗಯಂತಮಗ್ರಣೀರೂಪಾಹ್ವಯತ್ ಸ ವ್ಯನದನ್ಮಗೇಂದ್ರವತ್।

.....। ಸಮೇಧಮಾನೇನ ಸ ಕೃಷ್ಣಬಾಹುನಾ  
ನಿರುದ್ಧವಾಯುಚ್ಚರಣಾಂಶ್ರಿ ವಿಕಿಪನ್। ಪ್ರಸ್ವಿನ್ನಗಾತ್ರ: ಪರಿವೃತ್ತ-  
ಲೋಚನ: ಪಪಾತ ಲೇಘಂ ವಿಸೃಜನ್ ಕ್ಷಿತೌ ವ್ಯಸು:"] ಭಾಗಂ  
೧೦-೩೭। 2. ಒಬ್ಬ ದಾನವ. [ಇವನು ಪ್ರಜಾಪತಿಯ  
ಮಗಳಾದ ದೇವಸೇನೆಯನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿಕೊಂಡು ಹೋಗು  
ತ್ತಿದ್ದಾಗ ಇಂದ್ರನು ದೇವಸೇನೆಯನ್ನು ಇವನಿಂದ ಬಿಡಿಸಿ  
ಕಾರ್ತಿಕೇಯನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು ಮದುವೆ ಮಾಡಿಸಿದನು.]  
ಭಾಂ ವನಂ ೨೨೩, ೨೯। (ವಿಂ) 3. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ  
ಕೂದಲುಳ್ಳ. ಪ್ರಶಸ್ತಾ: ಕೆಶಾ ಯಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। ಕೆಶಿನಿ ಕೇಶಿನೀ.

ಕೆಶಿನಿಷ್ಠದನ ಕೇಶಿನಿಷ್ಠದನ (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಕೆಶಿನಂ  
ನಿಷ್ಠದಯತಿ - ನಿ + ಷ್ಠ (ಕ್ಷರಣೇ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:"  
(೩-೧-೧೩೪)। ["ಕೆಶಿನ್" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಕೆಶಿನಿ ಕೇಶಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಡಿಯಾಲದಗಿಡ. 2. ಜಟಾ  
ಮಾಂಸ. ಕೆಶಾ: ಕೆಶಾಕಾರಾ ಜಟಾ: ಸನ್ಯಸ್ಯ "ಇನಿ:"  
(೫-೨-೧೧೫)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। 3. ದಮಯಂತಿಯ  
ಒಬ್ಬ ಗೆಳತಿ. "ರಚಯ ಚಾರುಮತಿ ಸ್ತನಯೋರ್ವೃತಿ ಕಲಯ  
ಕೆಶಿನಿ ಕೇಶ್ಯಮಸಂಯತಮ್" ನೆಪಂ ೪-೧೧೪। 4. ಅಜಮೀಢನ  
ಪತ್ನಿ, ಜಹ್ನುವಿನ ತಾಯಿ. 5. ಸಗರಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಪತ್ನಿ.  
6. ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸು.

ಕೆಶಿ ಕೇಶಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀಲಿ ಗಿಡ.

ಕೆಶೋಚ್ಚಯ ಕೇಶೋಚ್ಚಯ (ಪುಂ) ಕೇಶಪಾಶ, ತಲೆಯ  
ಕೂದಲಿನ ಸಮೂಹ. ಕೆಶಾನಾಮುಚ್ಚಯ:।

ಕೆಶ್ಯ ಕೇಶ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಗರಗದ ಸೊಪ್ಪು. (ನಂ) 2.  
ಕೃಷ್ಣಾಗುರು. (ವಿಂ) 3. ತಲೆಯ ಕೂದಲನ್ನು ಬಾಚಿ



ಶೃಂಗರಿಸುವ ಸಾಧನವಾದ ಬಾಚಣಿಗೆ ಮೊದಲಾದುದು.  
ಕೇಶಾಯ ಹಿತ: "ಯತ್" (೪-೧-೪)। "ಕೇಶಪ್ರಸಾಧನಿ  
ಕೇಶಯಾ ರಜೋಜಂತುಮಲಾಪಹಾ" ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೨೪-೨೯।

ಕೆಸರ ಕೇಸರ (ಪುಂ) 1. ಕುದುರೆ ಮತ್ತು ಸಿಂಹದ ಹೆಗಲಿನ  
ಕೂದಲು. ಕೆ ಸರತಿ-ಸೃ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।  
"ಸಿತತ್ವಿಷಶ್ಚ್ಚಲತಾಮುಪೇಯುಷೋ ಮಿಷೇಣ ಪುಂಜಸ್ಯ ಚ  
ಕೆಸರಸ್ಯ ಚ" ನೆಪಂ ೧-೬೨। 2. ಕಮಲ ಮೊದಲಾದ  
ಹೂವುಗಳ ಕುಸುರು. ಕೆ ಜಲೇ ಸರತಿ-ಸೃ (ಗತೌ)  
"ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ನಿಪಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಹರಿತಕಪಿಶಂ  
ಕೆಸರೇರರ್ಥಹಢೆ:" ಮೇಘಂ ೧-೨೧। "ದುಧುವರ್ವಾಜಿನ: ಸ್ಕನ್ಧಾನ್  
ಲಗ್ನಕುಡ್ಕುಮಕೆಸರಾನ್" ರಘುಂ ೪-೬೭। (ಪುಂ) 3. ಸುರಗಿ  
ಮರ, ಸುರಹೊನ್ನೆ ಮರ. ಪ್ರಶಸ್ತಾ: ಕೆಸರಾ ಅಸ್ಯ।  
4. ನಾಗಸಂಖಿಗೆ ಮರ. 5. ಪಕ್ಕುಳವೃಕ್ಷ, ಪವಳದ ಗಿಡ.  
(ನಂ) 6. ಹಿಂಗು. 7. ಪಕ್ಕುಳವೃಕ್ಷ. "ಸಸ್ತಾಂ ನಿತಮ್ಬಾ-  
ದವಲಮ್ಬಮಾನಾ ಪುನ:ಪುನ: ಕೆಸರದಾಮಕಾಂಚೀಮ್" ಕುಮಾಂ  
೩-೪೪। 8. ಸುರಗಿ ಹೂವು. 9. ನಾಗಸಂಖಿಗೆ ಹೂವು.  
"ಕೆಸರೋ ನಾಗಕೆಸರೇ। ತುರಗ್ಗಸಿಂಹಯೋ: ಸ್ಕನ್ಧಕೇಶೇಷು  
ವಕುಲದ್ರುಮೇ। ಪುಷ್ಪಾಗವೃಕ್ಷೇ ಕಿಂಜಲ್ಕೇ ಸ್ಥಾತ್ ಕೆಸರಂ ತು  
ಹಿಡ್ಗುನಿ" ಹೇಮಂ। 10. ಸ್ಪರ್ಶ, ಚಿನ್ನ.

ಕೆಸರವತ್ ಕೇಸರವತ್ (ವಿಂ) ಕೇಸರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ.  
ಕೆಸರಾ ಅಸ್ಯ ಸಂತಿ- "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಜಿಪ್" (೪-೧-೬)। -ವತೀ -ವತೀ.

ಕೆಸರವರ ಕೇಸರವರ (ನಂ) ಕುಂಕುಮ ಕೇಸರಿ.

ಕೆಸರಾಚಲ ಕೇಸರಾಚಲ (ಪುಂ) ಸುಮೇರು ಪರ್ವತ.  
ಭೂಪದಸ್ಯ ಕೆಸರೇ ಸ್ಥಿತೋಚಲ:।

ಕೆಸರಾಮ್ಲ ಕೇಸರಾಮ್ಲ (ಪುಂ) 1. ಹೇರಿಳೆಗಿಡ, ನಿಂಬೆಗಿಡ  
ಮುಂತಾದುವು. (ನಂ) 2. ಹೇರಿಳೆಹಣ್ಣು, ನಿಂಬೆಹಣ್ಣು  
ಮುಂತಾದುವು.

ಕೆಸರಿನ್ ಕೇಸರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಸಿಂಹ. ಕೆಸರೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ  
"ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)। "ಸ ಪಾಟಲಾಃ ಗವಿ ತಸ್ಥಿ-  
ವಾಸಂ ಧನುರ್ಧರ: ಕೆಸರಿಣಂ ದದರ್ಶ" ರಘುಂ ೨-೨೯। "ಕಿ  
ಜಿಣಂ ತೃಣಮತ್ತಿ ಮಾನಮಹತಾಮಗ್ರೇಸರ: ಕೆಸರೀ" ಭರ್ತುಂ ೧-೨೧।  
2. ಕುದುರೆ. 3. ಹನುಮಂತನ ತಂದೆಯಾದ ಒಬ್ಬ ವಾನರ.  
"ಸೂರ್ಯದತ್ತವರ: ಸ್ವರ್ಣ: ಸುಮೇರ್ನಾಮ ಪರ್ವತ:। ಯತ್ರ ರಾಜ್ಯಂ  
ಪ್ರಶಾಸ್ತಯಸ್ಯ ಕೆಸರೀ ನಾಮ ವೈ ಪಿತಾ" ರಾಮಾಂ। 4. ಸುರಗಿ  
ಮರ. 5. ನಾಗಸಂಖಿಗೆ ಗಿಡ. "ಕೆಸರೈವಣಿ ಪುಷ್ಪಾಗೇ  
ನಾಗಕೆಸರಸಿಂಹಯೋ:" ಹೇಮಂ। 6. ತೋಟಮಾದಳದ ಗಿಡ.  
"ಮಾತುಲುಜ್ಞೇ ತು ರುಚಕೋ ವರಾಮ್ಲ: ಕೆಸರೀ ಶಠ:" ವೇಜಂ।

ಕೆಸರಿಸುತ ಕೇಸರಿಸುತ (ಪುಂ) ಅಂಜನೇಯ, ಹನುಮಂತ.  
ಕೆಸರಿಣ: ಸುತ:।

ಕೈ - ಶಬ್ದೇ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ)। ಕಾಯತಿ। ಚಕೌ।  
ಕಾತಾ। ಕಾಸ್ಯತಿ। ಕಾಯತು। ಅಕಾಯತ್। ಕಾಯೇತ್।  
ಕೇಯಾತ್। ಅಕಾಸೀತ್। ಅಕಾಸ್ಯತ್। ಕೂಗು, ಡಬ್ಬಮಾಡು.  
ಕರ್ಮಣಿ:-ಕೀಯತೇ। ಚಕೇ। ಕಾಯಿತಾ, ಕಾತಾ।  
ಕಾಯಿಷ್ಯತೇ -ಕಾಸ್ಯತೇ। ಕೀಯತಾಮ್। ಅಕೀಯತ। ಕೀಯೇತ।  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ:-ಕಾಪಯತಿ, -ತೇ। ಕಾಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಕಾಪಯಿತಾ। ಕಾಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ।  
ಕಾಪಯತು, ಕಾಪಯತಾಮ್। ಅಕಾಪಯತ್, -ತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ:-ಚಿಕಾಸತಿ। ಚಿಕಾಸಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ,  
-ಆಸ। ಚಿಕಾಸಿತಾ। ಚಿಕಾಸಿಷ್ಯತಿ। ಚಿಕಾಸತು।  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:-ಕಾತವ್ಯಮ್। ಕಾನೀಯಮ್। ಕೇಯಮ್। ಕಾತಮ್।  
ಕಾತವಾನ್। ಕಾಯನ್, ಕಾಯಂತೀ। ಕಾತುಮ್। ಕಾತಮ್। ಕಾನಮ್।  
ಕಾತ್ವಾ। ಪ್ರಕಾಯ।

ಕೆಕಿರಾತ ಕೈಂಕಿರಾತ (ನಂ) ಅಶೋಕ ಕುಸುಮ, ಅಶೋಕ  
ವೃಕ್ಷದ ಹೂವು. ಕೆಕಿರಾತಾನಾಂ ವಿಕಾರ: "ಅಣ್" (೪-೩-೧೩೪)।  
"ಕೀರ್ಣ: ಪಿಷ್ಟಾತಕೌಢೇ: ಕೃತದಿವಸಮುಖೇ:  
ಕುಡ್ಕುಮಖೋದಗೋರೇ: ಹೇಮಾಲಕ್ಷ್ಮಾರಭಾಭಿರ್ಭರನಮಿತಶಿರ:ಶೇಷರೇ:  
ಕೆಕಿರಾತೇ:" ರತ್ನಾಂ ೧-೧೦।

ಕೆಕುಕ ಕೈಂಕುಕ (ನಂ) ಮುತ್ತಗದ ಹೂವು. ಕೆಕುಕಸ್ಯ  
ವಿಕಾರ: "ಅಣ್" (೪-೩-೧೩೪)।

ಕೆಕಸಿ ಕೈಕಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬ್ರಹ್ಮನ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ  
ಸುಮಾಲಿಯೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನ ಮಗಳು, ರಾವಣನ ತಾಯಿ.  
"ರಾಕಾ ಪುಷ್ಪೋತ್ಕಟಾ ಚೈವ ಕೆಕಸಿ ಚ ಶುಚಿಸ್ಮಿತಾ।  
ಕುಂಭಿನಸಿ ಚ ಇತ್ಯೇತಾ: ಸುಮಾಲೇ: ಪ್ರಸವಾ: ಸುತಾ:" ರಾಮಾಂ।  
ತಂದೆಯ ಆದೇಶದಂತೆ ಕೈಕಸಿಯು ವಿಶ್ವವಸ್ತಿನ ಶುಶ್ರೂಷೆ  
ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದು ಒಂದು ದಿನ ಸಂಜೆಯಲ್ಲಿ ತಾನು ಪುತ್ರಾರ್ಥಿ  
ಯಾಗಿ ಬಂದಿರುವ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಸಿದಳು. ಸಾಯಂಕಾಲ  
ದಲ್ಲಿ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಕ್ರೂರರಾದ ಮಕ್ಕಳೇ ಅವಳಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟುವರೆಂದು ಮಹರ್ಷಿಯು ಹೇಳಿದರು. "ವಿಜಾತಂ  
ತೇ ಮಯಾ ಭದ್ರೇ ಕಾರಣಂ ಯನ್ಮನೋಗತಮ್। ಸುತಾಭಿಲಾಷೋ ಮತ್ತಸ್ತೇ  
ಮತ್ತಮಾತೃಜ್ಞಗಾಮಿನಿ। ದಾರುಣಾಃ ತು ವೇಲಾಃ ಯಸ್ಮಾತ್ತ್ವಂ  
ಮಾಮುಪಸ್ಥಿತಾ। ಶೃಣು ತಸ್ಮಾತ್ ಸುತಾನ್ ಭದ್ರೇ ಯಾದೃಶಾನ್  
ಜನಯಿಷ್ಯಸಿ। ದಾರುಣಾನ್ ದಾರುಣಾಕಾರಾನ್ ದಾರುಣಾಭಿ-  
ಜವಪ್ರಿಯಾನ್। ಪ್ರಸವಿಷ್ಯಸಿ ಸುಶ್ರೋಣಿ ರಾಕ್ಷಸಾನ್ ಕೂರಕರ್ಮಣ:"।



ಇದರಿಂದ ಕ್ರೂರರೂಪಿಗಳಾದ ರಾವಣಕುಂಭಕರ್ಣರು ಜನಿಸಿದರು. ಆಗ ಖಿನ್ನಳಾಗಿ ಪುನಃ ಬೇಡಿಕೊಳ್ಳಲು ಧರ್ಮಾತ್ಮನಾದ ವಿಭೀಷಣನು ಜನಿಸಿದನು. "ಪಶ್ಚಿಮೋ ಯಸ್ತವ ಸುತೋ ಭವಿಷ್ಯತಿ ಶುಭಾನನೇ। ಮಮ ವಂಶಾನುರೂಪಃ ಸಃ ಧರ್ಮಾತ್ಮಾ ಚ ನ ಸಂಶಯಃ" ರಾಮಾಂ।

**ಕೆಕೇಯ ಕೈಕೇಯ** (ಪುಂ) ಕೇಕಯದೇಶದ ದೊರೆ. ಕೆಕಯಾನಾಂ ರಾಜಾ "ಅನ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೬೬)। ಯಾದೇರಿಯಾದೇಶಃ (೭-೩-೨)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಕೇಯಿ ಕೈಕೇಯಿಃ. ಕೆಕಯಸ್ಯಾಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ "ಅನ್" (೪-೧-೧೬೬)। "ಕೈಪ್" (೪-೧-೧೫)। ಕೇಕಯ ರಾಜನ ಮಗಳು, ದಶರಥ ಮಹಾರಾಜನ ಕಿರಿಯ ಹೆಂಡತಿ, ಭರತನ ತಾಯಿ. [ಕೈಕೇಯಿಯು ತನ್ನ ಮಗ ನಾದ ಭರತನಿಗೆ ರಾಜ್ಯವು ದೊರಕಬೇಕೆಂದು ಶ್ರೀರಾಮನ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕವನ್ನು ತಡೆದು ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು ಹದಿನಾಲ್ಕು ವರ್ಷಗಳ ವನವಾಸಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಿದಳು. ಬಳಿಕ ಭರತನು ಈ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿದು ತಾಯಿಯ ಈ ಕಾರ್ಯದಿಂದ ಬಹಳವಾಗಿ ದುಃಖಿಸಿ ಕಾಡಿಗೆ ಹೋಗಿದ್ದ ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು ಪುನಃ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಬರಬೇಕೆಂದು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದನು. ಶ್ರೀರಾಮನು ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯನ್ನು ಮೀರಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ ವೆನ್ನಲು ಭರತನು ಶ್ರೀರಾಮನ ಪಾದುಕೆಗಳನ್ನು ತಂದು ನಗರಪ್ರವೇಶಮಾಡದೆ ನಂದಿಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿ ಪಾದುಕೆಗಳಿಗೆ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕಮಾಡಿ ಶ್ರೀರಾಮನು ವನವಾಸವನ್ನು ಮುಗಿಸಿ ಕೊಂಡು ಬರುವವರೆಗೂ ಪಾದುಕೆಗಳ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ರಾಜ್ಯ ಪರಿಪಾಲನೆ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದನು.] ರಾಮಾಂ। ಕೆಕೇಯಾಸ್ತನಯೋ ಜಜ್ಞೇ ಭರತೋ ನಾಮ ಶೀಲವಾನ್। ಜನಯಿತ್ರಿಮಲಂಚಕ್ರೇ ಯಃ ಪ್ರಶ್ರಯ ಇವ ಶ್ರಿಯಮ್" ರಘುಂ ೧೦-೭೦।

**ಕೆಟಭ ಕೈಟಭ** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣುವಿನ ಕರ್ಣಸ್ಮೋತಸ್ಸಿನಿಂದ (ಕಿವಿಯ ಮಲದಿಂದ) ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ, ಮಧು ವೆಂಬ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸನ ತಮ್ಮ. [ಕಲ್ಪದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ವಿಷ್ಣುವು ಪಟಪತ್ರದಲ್ಲಿ ಪವಳಿಸಿದ್ದಾಗ ಕಿವಿಯ ಮಲದಿಂದ ಮಧುಕೈಟಭರೆಂಬ ಇಬ್ಬರು ರಾಕ್ಷಸರು ಹುಟ್ಟಿ ವಿಷ್ಣುವಿನ ನಾಭಿಕಮಲದಲ್ಲಿದ್ದ ಬ್ರಹ್ಮನನ್ನು ಹಿಂಸಿಸತೊಡಗಿದರು. ಬ್ರಹ್ಮನ ಸ್ತೋತ್ರದಿಂದ ಎಚ್ಚರಗೊಂಡ ವಿಷ್ಣುವು ಅವ ರೊಡನೆ ಘೋರ ಯುದ್ಧಮಾಡಿ ತನ್ನ ಪರಾಕ್ರಮಕ್ಕೆ ಮೆಚ್ಚಿದ ಅವರಿಂದಲೇ ಅವರನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವ ವರವನ್ನು ಪಡೆದು ಇಬ್ಬರು ರಾಕ್ಷಸರನ್ನೂ ಸಂಹರಿಸಿದನು. "ಅಥ ದೀರ್ಘಸ್ಯ ಕಾಲಸ್ಯ ದ್ವಿ ದೈತೌ ಯುಧದುರ್ಮದೌ। ಋತುಃ ಪ್ರೀತಮನಸೌ ದೇವಂ ನಾರಾಯಣಂ ಪ್ರಭುಮ್। ಪ್ರೀತೌ ಸ್ವಸ್ತವ ಯುಧೇನ ಶ್ಲಾಘ್ಯಸ್ತ್ವಂ ಮೃತ್ಯುರಾವಧೌಃ। ಆವಾಂ ಜಹಿ ನ ಯತ್ರೋರ್ವಿ ಸಲಿಲೇನ ಪರಿಪ್ಲುತಾ। ಹತೌ ಚ ತವ ಪುತ್ರತ್ವಂ ಪ್ರಾಪ್ನುಯಾವ ಸುರೋತ್ತಮ। ಸ ತು ಗೃಹ್ಯ

ಮೃಘೇ ದೋರ್ಮಾ ದೈತೌ ತೌ ಸಮಪೀಡಯತ್। ಜಗ್ಮತುರ್ನಿಷಣಂ ಚಾಪಿ ತಾವುಭೌ ಮಧುಕೈಟಭೌ"] ಹರಿವಂ।

**ಕೆಟಭಜಿತ್ ಕೈಟಭಜಿತ್** (ಪುಂ) ಕೈಟಭನೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನನ್ನು ಕೊಂದ ವಿಷ್ಣು. ಕೆಟಭಂ ಜಿತವಾನ್ — ಜಿ (ಜಯೆ) "ಖಿವಪ್" (೩-೨-೬೧)। ["ಕೆಟಭ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕೆಟಭಾರಿ ಕೈಟಭಾರಿ** (ಪುಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಕೆಟಭಸ್ಯಾರಿಃ।

**ಕೆಟಭಿ ಕೈಟಭಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಹಾಕಾಳಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

**ಕೆಟರ್ಯ ಕೈಟರ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ತೇಗದಮರ. ಕೆಟಂ ಭಯಂ ರಾತಿ ಅತೀತೀಕೃತ್ವಾತ್ — ರಾ (ದಾನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)। ಕೆಟರ್ಯಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಘಜ್" (ವಾಂ ೫-೧-೧೨೪)। 2. ನೆಲ ಬೇವು. 3. ತಪಸಿ ಗಿಡ.

**ಕೆತಕ ಕೈತಕ** (ನಂ) 1. ತಾಳೆಹೂವು. ಕೆತಕಸ್ಯ ವಿಕಾರಃ (ಗುಣಮ್) "ಅನ್" (೪-೩-೧೩೫)। (ವಿಂ) 2. ತಾಳೆ ಹೂವಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕೆತಕಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಪುಂಡರೀಕಮುಖಿ ಪೂರ್ವದಿಙ್ಮುಖಂ ಕೆತಕೈರಿವ ರಜೋಭಿರಾಹತಮ್" ಕುಮಾಂ ೮-೫೮।

**ಕೆತವ ಕೈತವ** (ಪುಂ) 1. ಶಕುನಿ, ದುರ್ಯೋಧನನ ಮಾವ. 2. ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. 3. ಮೂರ್ಖ, ತಿಳಿಗೇಡಿ. 4. ಜೂಜುಗಾರ. 5. ದತ್ತೂರಿ ಗಿಡ. ಕಿತವ ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಅನ್" (೫-೪-೩೮)। (ನಂ) 6. ಮೋಸ, ವಂಚನೆ. 7. ಜೂಜಾಟ. ಕಿತವಸ್ಯ ಭಾವಃ ಕರ್ಮ ವಾ "ಅನ್" (೫-೧-೧೩೦)। 8. ವ್ಯಾಜ, ನೆಪ. "ಸ್ವದೃಶೋಜನಯಂತಿ ಸಾಂತವನಾಂ ಕುರಕುಣ್ಡಯನಕೆತವಾನ್ಮೃಗಾಃ" ನೈಷಂ ೨-೨೧। 9. ಕಪಟ, ಅಸತ್ಯ, ಅಲೀಕ. "ವಿಶಕ್ತುಸೇ ಕೆತವರ್ನತೀತಂ ಚೇದಂತಶ್ಚರಃ ಪಂಚಶರಃ ಪ್ರಮಾಣಮ್" ನೈಷಂ ೮-೯೪।

**ಕೆತವಕ ಕೈತವಕ** (ನಂ) ಅಟದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ ಮೋಸ. "ಮತ್ತ ಕೆತವಕೇನೈವ ಯಜ್ಜಿತೋಽಸ್ಮಿ ದುರೋದರೇ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೮೫-೧೦।

**ಕೆತವೇಯ ಕೈತವೇಯ** (ಪುಂ) ಅಂಶುಮಂಶನ ಮಗ ಉಲ್ಲಾಕ. ಕಿತವಾಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೦)। "ಉಲ್ಲೂಕಃ ಕೆತವೇಯಶ್ಚ ವೀರಶ್ರಾಂಶುಮತಃ ಸುತಃ" ಹರಿವಂ।

**ಕೆತವ್ಯ ಕೈತವ್ಯ** (ಪುಂ) ಶಕುನಿಯ ಮಗ. "ಉಲ್ಲೂಕ ಗಚ್ಛ ಕೆತವ್ಯ ಪಾಂಡವಾನ್ ಸಹಸೋಮಕಾನ್" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೬೦-೬।

**ಕೆವಾರ ಕೈದಾರ** (ವಿಂ) ಕೇದಾರ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಕೆಸರು ಗದ್ದೆಗಳಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದ ಬತ್ತ ಗೋಧಿ ಮೊದಲಾದುವು. ಕೆದಾರ-ಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಕೆದಾರಾ ಮಧುರಾ ವೃಷ್ಟಾ ಬಲ್ಯಾಃ ಪಿತ್ತನಿಬರ್ಹಣಾಃ। ಔಷತ್ಕಷಾಯಾಲ್ಪಮಲಾ ಗುರವಃ ಕಫಶುಕ್ರಲಾಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬-೧೭।



ಕೆದಾರಕ ಕೈದಾರಕ (ನಂ) ಗದ್ದೆಗಳ ಸಮೂಹ. ಕೆದಾರಾಣಿ  
ಸಮೂಹ: " ಕುಜ್ " (೪-೨-೪೦) । " ಠಜ್ " (೪-೨-೪೧) ।  
ಕೆದಾರಿಕಮ್ ಕೈದಾರಿಕಮ್. " ಯಜ್ " (೪-೨-೪೦) ।  
ಕೆದಾರ್ಯಮ್ ಕೈದಾರ್ಯಮ್. " ಕೆದಾರಕಂ ಸ್ಯಾತ್ ಕೆದಾರ್ಯ  
ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಕೆದಾರಿಕಂ ಗಣಂ " ಅಮಂ । " ಕೆದಾರಿಕಾಣಾಮಭಿತಃ  
ಸಮಾಕುಲಾಃ ಸಹಾಸಮಾಲೋಕಯತಿ ಸ್ಮ ಗೋಪಿಕಾಃ " ಮಾಘಂ  
೧೨-೪೨ ।

ಕೆನ್ನರ ಕೈನ್ನರ (ವಿಂ) 1. ಕೆನ್ನರಬಂಡದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ.  
ಕಿನ್ನರ: ಕಿನ್ನರವರ್ಷಮಭಿಜನೋಽಸ್ಯ " ಅಜ್ " (೪-೩-೯೩) ।  
2. ಕೆಂಪುರುಷಸಂಬಂಧವಾದ. ಕಿನ್ನರಸ್ಯೇದಮ್ " ಅಣ್ " (೪-೩-೧೨೦) ।

ಕೆಮ್ಮುತಿಕ ಕೈಮ್ಮುತಿಕ (ಪುಂ) ಕೈಮ್ಮುತಿಕನ್ಯಾಯ. ಅಧಿಕ  
ಪ್ರಯಾಸದಿಂದ ಸಾಧಿಸಬಹುದಾದ ಕಾರ್ಯವು ಅಲ್ಪ  
ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದಲೇ ಸಾಧ್ಯವಾಗುವಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಯತ್ನ  
ದಿಂದ ಸಾಧ್ಯವೆಂಬುದನ್ನು ಬೇರೆ ಹೇಳಬೇಕೆ ಎಂಬ ಅರ್ಥ  
ದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ ಒಂದು ನ್ಯಾಯ. ಕಿಮ್ಮುತ ಇತ್ಯರ್ಥದಾಗತಃ  
" ಠಕ್ " (೪-೩-೭೪) ।

ಕೆಯಟ ಕೈಯಟ (ಪುಂ) ಪಾತಂಜಲಮಹಾಭಾಷ್ಯದ  
ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕಾರರು, ಜೈಯಟರ ಮಗ.

ಕೆರವ ಕೈರವ (ಪುಂ) 1. ಶತ್ರು, ಹಗ್ಗ. (ನಂ) 2. ಬಿಳಿ  
ನೈದಿಲೆ, ಕುಮ್ಮುದ. ಕೆ ರವೋ ಯಸ್ಯ ಕೆ ಜಲೇ ರೌತಿ ವಾ ಕೆರವೋ  
ಹಂಸಃ । ತಸ್ಯೇದಂ (ಪ್ರಿಯಮ್) " ಅಣ್ " (೪-೩-೧೨೦) ।  
(ವಿಂ) 3. ಕಪಟ. ಮೋಸಗಾರ, ವಂಚಕ. " ಕೆರವಃ  
ಕಿತವೇ ರಿಪೌ । ನಪುಸಕಂ ಚ ಕುಮುಡೇ " ಮೇದಿಂ ।

ಕೆರವಬಂಧು ಕೈರವಬಂಧು (ಪುಂ) ಕುಮ್ಮುದ (ಬಿಳಿ ನೈದಿಲೆ)  
ಗಳ ಬಂಧುವಾದ ಚಂದ್ರ. ಬಿಳಿ ನೈದಿಲೆಯು ಚಂದ್ರೋದಯ  
ವಾದ ನಂತರ ಅರಳುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ಕೆರವಸ್ಯ  
ಬಂಧುಃ ।

ಕೆರವಿಣಿ ಕೈರವಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಿಳಿ ನೈದಿಲೆಯ ಬಳ್ಳಿ.  
2. ಸರೋವರ, ಬಿಳಿ ನೈದಿಲೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪ್ರದೇಶ.  
3. ಬಿಳಿ ನೈದಿಲೆಗಳ ಸಮೂಹ. ಕೆರವ " ಇನಿ: " ಡಿಫ್ ಚ  
(೪-೨-೧೩೫) ।

ಕೆರವಿನ್ ಕೈರವಿನ್ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಕೆರವಂ ಪ್ರಕಾಶಯತಯಾ-  
ಸ್ಯಾಸ್ತಿ " ಇನಿ: " (೪-೨-೧೧೫) ।

ಕೆರವಿ ಕೈರವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಬೆಳದಿಂಗಳು. " ನಪುಸಕಂ  
ಚ ಕುಮುಡೇ ಚಂದ್ರಿಕಾಃ ತು ಕೆರವಿ " ಮೇದಿಂ ।

ಕೆರಾತ ಕೈರಾತ (ಪುಂ) 1. ಬಲಶಾಲಿಯಾದ ಪುರುಷ.  
2. ನೆಲಬೇವು. ಕಿರಾತದೇಶ ಭವಃ " ಅಣ್ " (೪-೩-೫೩) ।

(ವಿಂ) 3. ಕಿರಾತನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕಿರಾತಸ್ಯೇದಮ್  
" ಅಣ್ " (೪-೩-೧೨೦) । " ಕೆರಾತಂ ವೇಶಮಾಸ್ಥಾಯ ಕಾಚನದ್ರುಮ-  
ಸನ್ನಿಭಮ್ " ಭಾಂ ವನಂ ೩೯-೨ ।

ಕೆರಾಲ ಕೈರಾಲ (ನಂ) ವಾಯುವಿಳಂಗ. ಕಿರಂ ಪರ್ಯಂತ-  
ಭೂಮಿಮಲತಿ - ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ) " ಅಣ್ " (೩-೨-೧) ।

ಕೆರಾಲಿ ಕೈರಾಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾಯುವಿಳಂಗ. ಕೆರಾಲ ಗೌರಾಂ  
" ಡಿಫ್ " (೪-೧-೪೧) ।

ಕೆಲಾಸ ಕೈಲಾಸ (ಪುಂ) ಕೈಲಾಸ ಪರ್ವತ, ಬೆಳ್ಳಿಯ ಬೆಟ್ಟ.  
ಕೆ ಜಲೇ ಲಾಸೋ ಲಸನ್ ದೀಪ್ತೀರಸ್ಯ ಕೆಲಸಃ ಸ್ಫಟಿಕಃ  
ತಸ್ಯಾಯಮ್ " ಅಣ್ " (೪-೩-೧೨೦) । ಕೈಲಾಸ ಪರ್ವತವು  
ಪರಶಿವ ಮತ್ತು ಕುಬೇರ ಇವರ ವಾಸಸ್ಥಳ. ಇದು  
ಹಿಮವತ್ಪರ್ವತದ ಶಿಖರಗಳಲ್ಲಿ ಉತ್ತರ ಭಾಗದಲ್ಲಿದೆ.  
ಇದಕ್ಕೆ ರಜತಾದ್ರಿಯೆಂದೂ ಹೆಸರು. [ತಮ್ಮನಾದ  
ರಾವಣನು ತನ್ನನ್ನು ಜಯಿಸಿ ಲಂಕೆ ಮತ್ತು ಪುಷ್ಪಕ  
ವಿಮಾನಗಳನ್ನು ಸ್ವಾಧೀನಪಡಿಸಿಕೊಂಡ ಬಳಿಕ ಕುಬೇರನು  
ಪರಮೇಶ್ವರನೊಡನೆ ಸ್ನೇಹ ಬೆಳಸಿ ಕೈಲಾಸದಲ್ಲಿ ಅಲಕಾ  
ಪಟ್ಟಣವನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿಕೊಂಡು ಯಕ್ಷರಾಜನಾದನು.  
ಈ ಅಲಕೆಯ ಸಮೀಪದಲ್ಲೇ ಪರಮೇಶ್ವರನು ನೆಲೆಸಿರು  
ವುದು. " ಹೇಮಕೂಟಸ್ತು ಸುಮಹಾನ್ ಕೆಲಾಸೋ ನಾಮ ಪರ್ವತಃ ।  
ಯತ್ರ ವೈಶ್ರವಣೋ ರಾಜನ್ ಗುಹ್ಯಕಃ ಸಹ ಮೋದತೇ " ] ಭಾಂ  
ಭೀಷಂ ೬-೪೧ । " ಅಲಕಾಂ ಸಮಯಾ ಚೈಷಃ ಕೆಲಾಸಃ  
ಶಕ್ತುರಾಲಯಃ " ಕಾಶೀಕ್ಷಂ । ಕೈಲಾಸ ಪರ್ವತವು ದೇವಾಂಗ  
ನೆಯರ ವಿಹಾರಸ್ಥಾನವಾಗಿರುವುದು. " ಕೆಲಾಸಸ್ಯ  
ತ್ರಿದಶಾವನಿತಾದರ್ಪಣಸ್ಯಾತಿಥಿಃ ಸ್ಯಾಃ " ಮೇಘಂ ೧-೫೮ ।

ಕೆಲಾಸನಾಥ ಕೈಲಾಸನಾಥ (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇ  
ಶ್ವರ. 2. ಕುಬೇರ. ಕೆಲಾಸಸ್ಯ ನಾಥಃ । " ಸಾಮಂತಸಂಭಾ-  
ವನಯೇವ ಧೀರಃ ಕೆಲಾಸನಾಥಂ ತರಸಾ ಜಿಗೀಷುಃ " ರಘುಂ ೫-೨೮ ।  
-ಪತಿಃ - ಪತಿಃ.

ಕೆಲಾಸಿಕಸ್ ಕೈಲಾಸಿಕಸ್ (ಪುಂ) ಕೈಲಾಸವೇ ವಾಸಸ್ಥಾನ  
ವಾಗಿ ಉಳ್ಳ 1. ಪರಮೇಶ್ವರ. 2. ಕುಬೇರ. ಕೆಲಾಸಃ  
ಆಕೋ ಯಸ್ಯ । -ನಿಕೇತನಃ - ನಿಲೇತನಃ.

ಕೆವರ್ಟ ಕೈವರ್ಟ (ಪುಂ) ಬೆಸ್ತರವನು, ಮೀನು ಹಿಡಿಯು  
ವವನು. ಕೆ ಜಲೇ ವರತೇ - ವೃತು (ವರತೇ) " ಅಚ್ " (೩-೧-೧೩೪) ।  
ಕೆವರ್ಟಿ ಮತ್ಸ್ಯಾಃ । ತೇಷಾಮಯಂ ಘಾತಕಃ  
" ಅಣ್ " (೪-೩-೧೨೦) । ನಿಷಾದನಿಂದ ಆಯೋಗವಿ  
ಯಲ್ಲಿ ದಾಶನೆಂಬುವನು ಹುಟ್ಟುವನು. ಈ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯ  
ದಾಶನನ್ನು " ಕೈವರ್ಟ " ನೆನ್ನುವರು. " ನಿಷಾದೋ ಮಾರ್ಗವಂ  
ಸುತೇ ದಾಶಃ ನಿಕರ್ಮಜೀವಿನಮ್ । ಕೆವರ್ಟಮಿತಿ ಯಂ ಗ್ರಾಹುರಾರ್ಯಾಃ



ವರ್ತನಿವಾಸಿನ: " ಮನುಂ ೧೦-೩೪ | ಇವನು ದೋಣೆ ನಡೆಸುವುದು ಮೀನು ಹಿಡಿಯುವುದು ಇವುಗಳಿಂದ ಜೀವಿಸುವನು. "ಕೆವತೆ ದಾಶಧೀವರೌ" ಅಮಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ)

-ತೆ-೩೯೬. ಬೆಸ್ತರವನ ಹೆಂಡತಿ.

ಕೆವತೆರ್ಮುಸ್ತ ಕೈವರ್ತೇಮುಸ್ತ (ನಂ) ಕೊನ್ನಾಂಗಿಡ್ಡೆಯ ಒಂದು ಭೇದ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:" | -ಮುಸ್ತಕ:-ಮುಸ್ತ ಕೆ:

ಕೆವಲ್ಯ ಕೈವಲ್ಯ (ನಂ) ಅತ್ಯಂತಿಕ ದುಃಖನಾಶರೂಪವಾದ ಮೋಕ್ಷ, ಸಂಸಾರಬಂಧವಿಮೋಚನೆ. ಬಂಧವಿರಹಾತ್ ಕೆವಲ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ಪ್ಯಬ್" (೪-೧-೧೨೪) | [ಎವರಕ್ಕೆ "ಮೋಕ್ಷ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಕೆಶಿಕ ಕೈಶಿಕ (ಪುಂ) 1. ಶೃಂಗಾರ ರಸ. 2. ಅನುರಾಗ, ಪ್ರೇಮ. ಕೆಶೇಷು ಕೆಶವಿನ್ಯಾಸಾದೌ ಸಾಧು: "ಠಕ್" (೪-೪-೧೦೨) | 3. ಕೃಷ್ಣನ ಸಹೋದರ, ವಿದರ್ಭರಾಜನ ಮಗ. (ನಂ) 4. ಕೇಶಸಮೂಹ, ತಲೆಯ ಕೂದಲಿನ ಸಮೂಹ. ಕೆಶಾನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಠಕ್" (೪-೨-೪೭) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 5. ಕೆಶಿಕೀ ಕೈಶಿಕೀ. ನಾಟಕಾದಿ ರೂಪಕಗಳಲ್ಲಿ ಬರುವ ನಾಲ್ಕು ವೃತ್ತಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. (1) ಕೆಶಿಕೀ, (2) ಸಾತ್ವತೀ, (3) ಭಾರತೀ ಮತ್ತು (4) ಆರಭಟೀ ಎಂದು ವೃತ್ತಿಗಳು ನಾಲ್ಕು. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಶೃಂಗಾರರಸವನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವುದು ಕೈಶಿಕೀವೃತ್ತಿ. "ಶೃಂಗಾರೇ ಕೆಶಿಕೀ ಬೀರೇ ಸಾತ್ವತೀರಭಟೀ ಪುನ: | ರಸೇ ರೌದ್ರೇ ಚ ಬಿಭತ್ಸೇ ವೃತ್ತಿ: ಸರ್ವತ್ರ ಭಾರತೀ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೨೨ |

ಕೆಶೋರ ಕೈಶೋರ (ನಂ) ಕೆಶೋರಭಾವ, ಬಾಲ್ಯ. ಹನ್ನೊಂದ ರಿಂದ ಹದಿನೈದರೊಳಗಿನ ವಯಸ್ಸು. ಕೆಶೋರಸ್ಯ ಭಾವ: "ಅಬ್" (೪-೧-೧೨೯) | "ಕೌಮಾರಂ ಪಶ್ಚಮಾಂದಾಂತಂ ಪೌಗಂಡಂ ದಶಮಾವಧಿ | ಕೆಶೋರಮಾಪಶ್ಚದಶಾತ್ ಯೌವನಂ ತು ತತ: ಪರಮ್" |

ಕೆಶಯ ಕೈಶಯ (ನಂ) ತಲೆಯ ಕೂದಲಿನ ಸಮೂಹ, ತುರುಬು. ಕೆಶಾನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಯಬ್" (೪-೨-೪೮) | "ರಚಯ ಚಾಸ್ಮತಿ ಸ್ತನಯೋರ್ವೃತ್ತಿ ಕಲಯ ಕೆಶಿನಿ ಕೆಶಯಮಸಂಯತಮ್" ನೆಪಂ ೪-೧೧೪ |

ಕೊಕ ಕೊಕ (ಪುಂ) 1. ಚಕ್ರವಾಕಪಕ್ಷಿ. ಕುಕ (ಆದಾನೆ) "ಅಬ್" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ವಿಷ್ಣು. "ಕೊಕ: ಪುರಾಣ-ಪುರುಷ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 3. ತೋಳ. "ವನೇ ಯುಥಪರಿಭ್ರಷ್ಟಾ ಮೃಗೀ ಕೊಕೇರಿವಾದಿತಾ" ರಾಮಾಂ | 4. ಕೋಗಿಲೆ. 5. ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. 6. ಖರ್ಜೂರದ ಮರ. 7. ಹಲ್ಲಿ, ಗಾಳಿ. "ಕೊಕಶ್ಚಕ್ರೇ ವೃಕೇ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಂ ಖರ್ಜೂರಿದ್ರುಮ-ದಧೀರೆ" ಮೇದಿಂ |

ಕೊಕದೇವ ಕೊಕದೇವ (ಪುಂ) ಕಪ್ಪೋತ, ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ. ಕೊಕ ಇವ ದೀವ್ಯತಿ-ದಿವು (ಶ್ರೀಡಾಯಾಮ್) "ಅಬ್" (೩-೧-೧೩೪) |

ಕೊಕನದ ಕೊಕನದ (ನಂ) 1. ಕೆಂಪು ನೈದಿಲೆ. ಕೊಕಾನ್ ನದತಿ (ನಾದಯತಿ) ಅಂತರ್ಮಾವಿತರ್ಥ: - ಣದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಕ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪) | "ದರೋದಗತ: ಕೊಕ-ನದೌಕೋರಕ: ಧೃತಪ್ರವಾಲಾಡ್ಕುರಸಚ್ಚಯಶ್ಚ ಯ:" ನೆಪಂ ೧-೧೧೨ | 2. ಕೆಂದಾವರೆ, ಕೆಂಪು ಕಮಲ. "ಅಥ ಕೊಕನದಂ ರಕ್ತಕುಮುದೇ ರಕ್ತಪಕ್ಷಜೇ" ಮೇದಿಂ | "ವ್ಯಾಕೋಶಕೊಕನದತಾಂ ದಧತೇ ನಲಿನ್ಯ:" ಮಾಧಂ ೪-೪೬ |

ಕೊಕನದಚ್ಚವಿ ಕೊಕನದಚ್ಚವಿ (ಪುಂ) 1. ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣ. (ವಿಂ) 2. ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣದ. ಕೊಕನದಸ್ಯ ಚವಿರಿವ ಚವಿರಿಸ್ಯ |

ಕೊಕಬಂಧು ಕೊಕಬಂಧು (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಕೊಕಯೋ: ಚಕ್ರವಾಕಯೋ: ಬಂಧುರಿವ (ಮೇಲನಕಾರಿತ್ವಾತ್) |

ಕೊಕಾಹ ಕೊಕಾಹ (ಪುಂ) ಶ್ವೇತಾಶ್ವ, ಬಿಳಿಯ ಕುದುರೆ. "ಸಿತೇ ತು ಕರ್ಕಕೊಕಾಹೌ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ |

ಕೊಕಿಲ ಕೊಕಿಲ (ಪುಂ) 1. ಕೋಗಿಲೆ. ಕುಕ (ಆದಾನೆ) "ಇಲಬ್" (೩ಂ ೧-೪೪) | "ಚೂತಾಡ್ಕುರಾಸ್ವಾದಕಘಾಯಕಂಠ: ಪುಸ್ಕೋಕಿಲೋ ಯನ್ಮಧುರಂ ಚುಕೂಜ" ಕುಮಾಂ ೩-೩೨ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಟಾಪ್" | ಕೊಕಿಲಾ ಕೊಕಿಲಾ. ಹೆಣ್ಣು ಕೋಗಿಲೆ. "ವಿಧುವಿರೋಧಿತೀರಭಿಧಾಯಿನಿಂ ನನು ನ ಕಿಂ ಪುನರಿಚ್ಛಸಿ ಕೊಕಿಲಾಮ್" ನೆಪಂ ೪-೧೦೭ | 2. ಅಂಗಾರ, ಅರ್ಧ ಬೆಂದಿ ರುವ ಕೊಳ್ಳಿ. "ಸ್ಯಾದಜ್ಞಾರೆ ಕೊಕಿಲಾಜ್ಜಲೌ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಕೊಕಿಲಕ ಕೊಕಿಲಕ (ನಂ) ಹದಿನೇಳನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: "ಹೃದಶಭಿನಂಜೌ ಭಜಜಲಾಗತಿ ನತ್ಕುಟಕಮ್ | ಮುನಿಗುಹಕಾರ್ಣವೇ: ಕೃತಯತಿ ವದ ಕೊಕಿಲಕಮ್" ವೃಂ ೨೦ | ನೆಗಣ ಜಗಣ ಭಗಣ ಜಗಣದ್ವಯ ಲಘು ಮತ್ತು ಗುರುವರ್ಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ ಏಳು ಅರು ಮತ್ತು ಅನಂತರ ನಾಲ್ಕನೆಯ ವರ್ಣಗಳಿಗೆ ಯತಿಯಿದ್ದರೆ "ಕೊಕಿಲಕಮ್" ಎಂಬ ವೃತ್ತವಾಗುವುದು. ಈ ವೃತ್ತದ ಗಣ ವಿನ್ಯಾಸ:

ನ ಜ ಭ ಜ ಜ ಲ ಗು |  
||| ||| ||| ||| ||| | ೦

ಕೊಕಿಲಾಕ್ಷ ಕೊಕಿಲಾಕ್ಷ (ಪುಂ) ಕೊಳವಳೆ ಗಿಡ. ಕೊಕಿಲಸ್ಯಾಕ್ಷೀವ ರಕ್ತಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ "ಅಬ್" (೪-೪-೭೬) |

ಕೊಕಿಲಾಬಾಸ ಕೊಕಿಲಾಬಾಸ (ಪುಂ) ಕೋಗಿಲೆಗಳಿಗೆ ವಾಸಸ್ಥಾನವಾದ ಮಾವಿನ ಮರ, ಕೊಕಿಲಾನಾಮಾಬಾಸ: |



**ಕೊಕಿಲಾಸನ ಕೋಕಲಾಸನ** (ನಂ) ರುದ್ರಯಾಮಲದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ ಅಸನಗಳಲ್ಲೊಂದು ಭೇದ. "ನಿಠ್ಯಾಧ್ಯಾಯ-ಸಂಚಾರಂ ಕೊಕಿಲಾಸನೇನ ಚ | ಉರ್ವ್ವ ಹಸ್ತದ್ವಯಂ ಕೃತ್ವಾ ತದಗ್ರೇ ಪಾದಯೋಃ ಸುಧೀಃ | ಬದ್ಧಾಙ್ಗುಲದ್ವಯಂ ನಾಥ ಶನೈಃ ಶನೈಃ ಪ್ರಕಾರಯೇತ್ | ಪದಾಸನಂ ಸಮಾಕೃತ್ಯ ಕೂರೋಪರಿ ಸಂಸ್ಥಿತಃ" |

**ಕೊಕಿಲೇಕ್ಷು ಕೋಕಲೇಕ್ಷು** (ಪುಂ) ಕಪ್ಪು ಬಣ್ಣದ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕಬ್ಬು. ಕೊಕಿಲ ಇವ ಕೃಷ್ಣಃ ಇಕ್ಷುಃ |

**ಕೊಕ್ಕುಣ ಕೋಂಕಣ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಕೊಂಕಣ ದೇಶ. ಇದು ದಕ್ಷಿಣ ಭಾರತದ ಪಶ್ಚಿಮತೀರದಲ್ಲಿರುವುದು. "ಅಥಾಪರೇ ಜನಪದಾ ದಕ್ಷಿಣಾ ಭರತರ್ಮಭ | ಕೌಕುಡ್ವಾಸ್ತಥಾ ಚೋಲಾಃ ಕೊಕ್ಕುಣಾ ಮಾಲವಾ ನರಾಃ" ಭಾಂ ಭಿಷಮಂ ೧-೬೦ | 2. ಕೊಂಕಣ ದೇಶದ ದೊರೆಗಳು. ಕೊಕ್ಕುಣಾನಾಂ ರಾಜಾನಃ "ಅಬ್" (೪-೧-೧೬೬) | ಅಬ್ರೋ ಲುಕ್ (೨-೪-೬೨) | "ಶರೇರ್ಮ್ಯಚಿತಾಸ್ತೇನ ಕೊಕ್ಕುಣಾಃ ಸಮರಾಜ್ಞಣೇ" ಯಾದಂ ೨೨-೨೧೨ | 3. ಕೊಂಕಣ ದೇಶದ ಜನರು. (ನಂ) 4. ಒಂದು ಆಯುಧ. "ಕೊಕ್ಕುಣಃ ಸ್ಯಾಜ್ಜನಪದೇ ಕೊಕ್ಕುಣಂತವಾಯು-ಧಾಂತರೇ" ಹೇಮಂ |

**ಕೊಕ್ಕುಣಾ ಕೋಂಕಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರೇಣುಕಾದೇವಿ, ಪರಶು ರಾಮನ ತಾಯಿ. -ಸುತಃ-ಸುತಃ. ಪರಶುರಾಮ.

**ಕೊಚ ಕೋಚ** (ಪುಂ) 1. ಬೆಸ್ತರವನಿಂದ ಕಟ್ಟುಕರ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು, ಒಬ್ಬ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು. 2. ಸಂಕೋಚ ಹೊಂದುವುದು, ಚಿಕ್ಕದಾಗುವುದು, ಇಂಗುವುದು. ಕುಚ (ಸಂಪರ್ವನಾದಿ) ಭಾವೇ "ಘಬ್" (೩-೩-೧೮) | (ವಿಂ) 3. ಸಂಕೋಚಹೊಂದುವ, ಚಿಕ್ಕದಾಗುವ, ಇಂಗುವ. ಕುಚ ಕರ್ತಂ "ಘಃ" (೩-೧-೧೪೦) |

**ಕೊಜಾಗರ ಕೋಜಾಗರ** (ಪುಂ) ಅಶ್ವಯುಜಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. [ಈ ದಿವಸ ರಾತ್ರಿ ಜಾಗರಣೆಮಾಡಿ ಪಗಡೆ ಯಾಟವಾಡುತ್ತಾ ಕಾಲಕಳೆಯಬೇಕು. ಮತ್ತು ವಿಶೇಷವಾಗಿ ದೇವತಾರ್ಚನೆ ಮಾಡಬೇಕು. ಈ ವ್ರತವನ್ನು ಆಚರಿಸಿದವರಿಗೆ ಪುಷ್ಕಳವಾದ ಐಶ್ವರ್ಯವನ್ನು ಕೊಡುವುದಾಗಿ ಲಕ್ಷ್ಮಿಯ ಉಕ್ತಿಯಿರುವುದು.] ಕೊ ಜಾಗತಿ ಇತಿ ಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾ ಉಕ್ತಿರತ್ರ ಕಾಲೇ | "ಆಶ್ವಿನೇ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಾಂ ತು ಚರೇಜ್ಜಾಗರಣಂ ನಿಶಿ | ಕೌಮುದ್ಯಾಂ ಪೂಜಯೇಲ್ಲಕ್ಷ್ಮೀಮಿಂದ್ರಮೈರಾವತೇ ಸ್ಥಿತಮ್ | ನಿಶಿಥೇ ವರದಾ ಲಕ್ಷ್ಮೀಃ ಕೊ ಜಾಗತೀತಿ ಭಾಷಿಣಿ | ತಸ್ಮೈ ವಿದ್ವಾಂಸ ಪ್ರಯಂಚಾಮಿ ಅಕ್ಷೈಃ ಕ್ರೀಡಾಂ ಕರೋತಿ ಯಃ" ಲಿಂಗಪುಂ |

**ಕೊಟ ಕೋಟಿ** (ಪುಂ) 1. ಕೋಟಿ, ದುರ್ಗ. ಕುಟ (ಕೌಟಿಲ್ಯ) ಅಧಿಂ "ಘಬ್" (೩-೩-೧೨೧) | 2. ಕೊಟಲ, ವಕ್ರ

ವಾಗಿರುವುದು. ಕುಟ ಭಾವೇ "ಘಬ್" | 3. ಅಡಕೆಮರ. "ಕರಮದ್ವಸ್ತಂತುಸಾರೋ ಗುವಾಕಃ ಕೊಟ ಇತ್ಯಪಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಕೊಟರ ಕೋಟಿರ** (ಪುಂ) 1. ಮರದ ಪೊಟರೆ. ಕೊಟ ರಾತಿ - ರಾ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | "ವಿದೂರಥಃ ಪ್ರತಿಭಯಮಾಸ್ಯಕಂದರಂ ಚಲತ್ಕರ್ಣಾಧರಮಿವ ಕೊಟರಂ ತರಃ" ಮಾಘಂ ೧೭-೧೭ | 2. ಕಂದರ, ಗುಹೆ.

**ಕೊಟರೀ ಕೋಟಿರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಗ್ನಳಾದ ಹೆಂಗಸು, ಬೆತ್ತಲೆಯ ಹೆಂಗಸು. ಕೊಟ ಕೌಟಿಲ್ಯ ರಿಣಾತಿ - ರೀ (ಗತೀ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬) | 2. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. ಪಾರ್ವತಿ.

**ಕೊಟವೀ ಕೋಟಿವೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಗ್ನಳಾದ ಹೆಂಗಸು, ಬೆತ್ತಲೆಯ ಹೆಂಗಸು. ಕೊಟ ಕೌಟಿಲ್ಯ ದುರ್ಗ ವಾ ವಾತಿ - ವಾ (ಗತೀ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | 2. ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ.

**ಕೊಟಿ ಕೋಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಗ್ರಭಾಗ, ತುದಿ. ಕುಟ (ಕೌಟಿಲ್ಯ) "ಇಃ" (೩೦ ೪-೧೩೮) | "ನುನುದೇ ತನುಕುಂಡು-ಪುಂಡಿತಃ ಪಟುಚ್ಚತ್ಪುಟಕೊಟಿಕುಡ್ವನೈಃ" ನೇಷಂ ೨-೪ | 2. ಬಿಲ್ಲಿನ ತುದಿ. "ತೇನ ಭೂಮಿನಿಹಿತೈಕಕೊಟಿ ತತ್ಕಾರ್ಮುಕಂ ಚ ಬಲಿನಾಧಿ-ರೋಪಿತಮ್" ರಘುಂ ೧೧-೮೧ | 3. ಒಂದು ನೂರು ಲಕ್ಷ ಸಂಖ್ಯೆ, 1,00,00,000 ಸಂಖ್ಯೆ. "ಆಲೋಕಿತಾಮಪಿ ಪುನಃ ಪಿವತಾಂ ದೃಶೇನಾಮಿಚ್ಛಾಪಿ ಗಂಚ್ಛತಿ ನ ವತ್ಸರಕೊಟಿಭಿರ್ವಃ" ನೇಷಂ ೧೧-೨೪ | 4. ಅತ್ಯುತ್ಕರ್ಷ, ಅತಿಶಯ. "ಅನೇನ ಸಾರ್ಥಂ ತವ ಯೌವನೇನ ಕೊಟಿ ಪರಾಮಂಚಿದುರೋಽವಿರೋಹತ್" ನೇಷಂ ೮-೬೧ | 5. ಶಸ್ತ್ರಾಸ್ತ್ರಗಳ ಅಂಚು, ಕತ್ತಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಅಂಚು. "ಹುತಾನ್ಯಪಿ ಕ್ಷೇನನಸ್ರಾಪಕೊಟಿ-ವ್ಯಾಸಕ್ತಕೇಶಾನಿ ಚಿರೇಣ ಪೇತುಃ" ರಘುಂ ೭-೪೬ | 6. ಕಮಾನಿನ ಆಕಾರದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಎರಡೂ ಕಡೆಗಳ ಕೋಡುಗಳು, ಅರ್ಧಚಂದ್ರನ ಎರಡು ಕಡೆಗಳ ತುದಿಯ ಭಾಗ. "ಆವರ್ಜಿತಜಟಾಮೌಲಿವಿಲಿಂಬಿಶಿಕೋಟಯಃ" ಕುಮಾಂ ೨-೨೬ | 7. ತ್ರಿಕೋಣಮಿತಿಯ ಒಂದು ರೇಖೆ. "ಕೊಟಿ-ಜ್ಯಯಾ ವಿಭಜ್ಯಾಪ್ತೇ ಛಾಯಾ ಕರ್ಣಾವಹದೇ" ಸೂಂ ಸಿಂ ೩-೨೧ | 8. ಪೂರ್ವಪಕ್ಷ, ವಿಷಯನಿರ್ಣಯಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಏಕ ಪಕ್ಷವಾದ. 9. ಸಂಶಯದ ಪ್ರಕಾರ. "ವಿಪ್ರತಿಪತ್ತಿ-ವಾಕ್ಯಜನ್ಯಕೊಟಯುಪಸ್ಥಿತಿಃ" | 10. ವಸ್ತುವಿನ ವಿಭಾಗ, ವಸ್ತುವಿನ ವರ್ಗ. ಪ್ರಜಾಕೊಟಿಃ ಶಿಷ್ಯಕೊಟಿಃ |

**ಕೊಟಿಜಿತ್ ಕೋಟಿಜಿತ್** (ಪುಂ) ಕಾಳದಾಸ ಕವಿ. ಕೊಟಿ ಜಿತವಾನ್ | "ರಘುಕಾರಃ ಕಾಲಿದಾಸೋ ಮೇಧಾರುದ್ರಃ ಕೊಟಿ-ಜಿತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |



**ಕೊಡಿಕೆಯ ಕೊಡಿಕೆಯರ್ಥ (ನಂ)** ಮಹಾಕಾಳೇಶ್ವರ ಸನ್ನಿಧಿ  
ಯಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ತೀರ್ಥ. ಕೊಡಿಕೆಯರ್ಥಾನಿತ್ಯ.

**ಕೊಡಿಕಾತ್ರ ಕೊಡಿಕಾತ್ರ (ನಂ)** 1. ದೋಣಿ ನಡೆಸುವ ಜಲೈ.  
2. ಚುಕ್ಕಾಣಿ ಹಲಗೆ. ಕೊಡಿಕಾತ್ರ ಪಾತ್ರ ಜಲಾಶಯಸ್ಯ.

**ಕೊಡಿಕ ಕೊಡಿಕ (ಪುಂ)** 1. ಇಂದ್ರ. 2. ನಕುಲ, ಮುಂಗಸಿ,  
ಕೇರ. 3. ಇಂದ್ರಗೋಪಕೇಟ. 4. ಜಟಿ. ಕೊಡಿಕ ರಾತಿ —  
ರಾ (ದಾನೆ) "ಕ:" (3-2-3). "ಕೊಡಿಕ: ಸ್ಯಾಜ್ಜಟಾ  
ಸಟಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. "ಕೊಡಿಕ: ಪುಸಿ ನಕುಲೇ ಶಕ್ರಗೋಪಕ-  
ಶಕ್ರಯೋ:" ಮೇದಿಂ.

**ಕೊಡಿಕವರ್ಷ ಕೊಡಿಕವರ್ಷ (ನಂ)** ಬಾಣಪುರ, ದೇವೀಕೊಡಿಕೆ,  
ಬಾಣಾಸುರನ ನಗರ. "ದೇವೀಕೊಡಿಕೆ ಬಾಣಪುರ ಕೊಡಿಕವರ್ಷ-  
ಮುಖಾವನಮ್. ಸ್ಯಾಚ್ಚೋಣಿತಪುರಂ ಚ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಕೊಡಿಕ ಕೊಡಿಕ (ಪುಂ)** 1. ಹೆಚ್ಚೆಯನ್ನು ಒಡೆಯುವ  
ಮರದ ಕೊಡಿಕೆ. ಕೊಡಿಕಾ ಅಗ್ರೇಣ ಇತಿ—ಶೋ (ತನುಕರಣಂ)  
"ಕ:" (3-2-4). "ಕೊಡಿಕಾ ಲೋಪಭೇದನ:" ಅಮಂ. 2. ವಾಸುಕಿಯ  
ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಂದು ಸರ್ಪ. (ಅವ್ಯಂ) —ಶಸ್ —ಶಸ್. ಕೊಡಿಕಗಟ್ಟಲೆಯಲ್ಲಿ, ಕೊಡಿಕ  
ಸಂಖ್ಯೆಯಲ್ಲಿ. ಕೊಡಿಕ "ಶಸ್" (4-4-43). "ಶಕ್ಯೋಸ್ಯ  
ಮನ್ಯುರ್ಮವತಾ ವಿನೇತುಂ ಗಾ: ಕೊಡಿಕಾ: ಸ್ಪರ್ಶಯತಾ ಘಟೋಚ್ಚಿ:"  
ರಘುಂ 2-49.

**ಕೊಡಿಕ ಕೊಡಿಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕೊಡಿಕಸಂಖ್ಯೆ, ಒಂದು  
ನೂರು ಲಕ್ಷ. "ಪ್ರತೋದೇಶಾಪಕೊಡಿಕಾಃ ಹುಂಕಾರೈ: ಸಾಧು ವಾಹಿತೈ:"  
ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೮೯-೩೦.

**ಕೊಡಿಕ ಕೊಡಿಕ (ಪುಂ)** 1. ಜಟಿ. 2. ಕಿರೀಟ. ಕೊಡಿಕ-  
ಮೀರಯತಿ — ಇರ (ಗತೌ) "ಅನ್" (3-2-1). "ಕಡಿಕೇ  
ಕೊಡಿಕೇ ಸ್ವಲಸಿ ಜಹಿ ಜಮ್ಬಾರಿಮುಕುಟಮ್" ಆನಂದಲಂ.

**ಕೊಡಿಕ ಕೊಡಿಕ (ಪುಂ)** ದುರ್ಗ, ಕೊಡಿಕ. ಕುಡಿಕ (ಪ್ರತಾಪನೇ)  
"ಘಜ್" (3-3-19). ಬಾಹುಂ ಗುಣ:

**ಕೊಡಿಕ ಕೊಡಿಕವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸ್ವಲ್ಪವಾದ ಹೆಂಗಸು,  
ಚಿತ್ತಲೆಯ ಹೆಂಗಸು. ಕೊಡಿಕ ವಾತಿ — ವಾ (ಗತೌ) "ಕ:"  
(3-2-3). 2. ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ. "ಕೊಡಿಕವೀ  
ಬಾಹ್ರವೀ ಕೆಡಮೀ ಕೆಡಮಾ ಯಾದವೀ ಕಬ್ಬುರೀ ಚೇಶ್ವರೀ ಚೇಶ್ವರಾ"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 3. ಬಾಣಾಸುರನ ತಾಯಿ.

**ಕೊಡಿಕ ಕೊಡಿಕಾರ (ಪುಂ)** 1. ಬಾವಿ. ಕುಡಿಕ (ಛೇದನೇ)  
"ಆರಕ್" ಬಾಹುಂ. 2. ಭದ್ರಮುಸ್ತೆ, ಕೊನ್ನಾರಿ ಗೆಡ್ಡೆ.  
"ಕೊಡಿಕಾರಿ ಕುಪನಾಗರೌ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 3. ಪುಷ್ಕರಿಣಿಯ  
ತೀರ, ಸರೋವರದ ಸೋಪಾನ. "ಕೊಡಿಕಾರಿ ನಾಗರೇ  
ಕುಪೇ ಪುಷ್ಕರಿಣ್ಯಾಶ್ರ ಪಾಡಕೇ" ಹೇಮಂ! 4. ಪಟಂಗ,

ಕಾಮುಕ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ. 5. ಕೊಡಿಕೆಯಿಂದ ಭದ್ರವಾದ  
ನಗರ.

**ಕೊಡಿಕ ಕೊಡಿಕ (ಪುಂ)** ಮಂಡಲಾಕಾರವಾಗಿ ವಿಳುವ ಒಂದು  
ವಿಧ ಚರ್ಮವ್ಯಾಧಿ, ಹುಳುಕಡ್ಡಿ, ದದ್ರುಕುಷ್ಠ. ಕುಣತಿ—  
ಕುಡಿ (ಪ್ರತಿವಾತೇ) "ಅಚ್" (3-1-134). ["ಕುಡಿ"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕೊಣ ಕೊಣ (ಪುಂ)** 1. ಪಿಟೀಲು, ನಗಾರಿ ಮೊದಲಾದ  
ವನ್ನು ನುಡಿಯಿಸುವ ಸಾಧನ. ಕುಣಯತೇ — ಕುಣ (ಶಬ್ದೋಪ-  
ಕರಣಯೋ:) "ಘಜ್" (3-3-121). "ಸುವರ್ಣಕೊಣಾಭಿಹತ:  
ಪ್ರಾಣದಳಾಮದ್ವಂದುಭಿ:" ರಾಮಾಂ. 2. ಕೊಣೆ, ಕೊಂಡಿ,  
ಮನೆ ಮೊದಲಾದವುಗಳ ಒಂದು ಭಾಗ. 3. ಶಸ್ತ್ರ  
ಮತ್ತು ಆಸ್ತ್ರಗಳ ತುದಿ, ಕತ್ತಿ ಮೊದಲಾದವುಗಳ ತುದಿ.  
4. ಒಂದು ವಿಧ ವಾದ್ಯ. 5. ಕೋಲು, ದೋಣೆ. "ಕೊಣಾ  
ವಾಹಪ್ರಭೇದೇ ಸ್ಯಾತ್ ವೀಣಾದೀನಾಂ ಚ ವಾದನೇ. ಏಕದೇಶೇ ಗೃಹಾ-  
ದೀನಾಮಶ್ರೌ ಚ ಲಗುಡೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ. 6. ಕುಜಗ್ರಹ.  
"ಕೊಣಾ ವೀಣಾದಿವಾದನೇ. ಲಗುಡೇಽಶ್ರೌ ಲೋಹಿತಾಂಜ್ಞೇ" ಹೇಮಂ. 7. ಶನಿಗ್ರಹ.  
"ಕೊಣಾಶ್ರೌ ಲಗುಡೇಽರ್ಜು" ನಾನಾರ್ಥರಂ. 8. ವಿದಿಕ್ಕು, ಎರಡು ದಿಕ್ಕುಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ. 9. ಒಂದು  
ಮೂಲೆ, ಭಿನ್ನ ಭಿನ್ನ ದಿಕ್ಕುಗಳಿಗೆ ಹೋಗುವ ರೇಖೆಗಳ  
ಸಂಧಿಸ್ಥಾನ.

**ಕೊಣಕುಣ ಕೊಣಕುಣ (ಪುಂ)** ತಿಗಣೆ. ಕೊಣೆ ಮಸ್ತಕೇಕದೇಶ  
ಕುಣತಿ—ಕುಣ (ಶಬ್ದೋಪಕರಣಯೋ:) "ಅಚ್" (3-1-134).

**ಕೊಣಾಘಾತ ಕೊಣಾಘಾತ (ಪುಂ)** ಒಂದು ಲಕ್ಷ ಡವಣೆ  
ಗಳನ್ನೂ ಹತ್ತು ಸಾವಿರ ನಗಾರಿಗಳನ್ನೂ ಒಂದೇ ಸಮಯ  
ದಲ್ಲಿ ಬಾರಿಸುವುದು. "ಢಕಾಶತಸಹಸ್ರಾಣಿ ಭೇರೀಶತಶತಾನಿ  
ಚ. ಏಕದಾ ಯತ್ರ ವಾಹಂತೇ ಕೊಣಾಘಾತ: ಸ ಉಚ್ಯತೇ"  
ಭರತ:

**ಕೊಣಿ ಕೊಣಿ (ವಿಂ)** ಮೊಂಡು ಕೈಯುಳ್ಳವನು. ಹಸ್ತ  
ವಿಲ್ಲದವನು.

**ಕೊಡಿಕ ಕೊಡಿಕ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ವಿಧ ನೇತ್ರರೋಗ. ಕುಡ  
(ಪ್ರತಿಭಾವೇ) "ಘಜ್" (3-3-19). 2. ದುರ್ಮಾಂಸ,  
ಕೊಳೆತ ಮಾಂಸ. 3. ದುರ್ಗಂಧ. ಕೆಟ್ಟವಾಸನೆ. 4. ಭಗಂದರ  
ರೋಗ. ಕುಡಯತಿ ಕ್ಷಿಣಯತಿ ಗುಡಮ್ — ಕರ್ತಂ "ಅಚ್"  
(3-1-134). 5. ಮೊಸರನ್ನು ಕಡೆಯುವುದು.  
(ವಿಂ) 6. ನೋವಿನಿಂದ ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕೊಡಿಕಸ್ತು ಮಥನೇ  
ನೇತ್ರರೂಪಭೇದೇ ಶಠಿತೇ ತ್ರಿಪು" ಹೇಮಂ.

**ಕೊಡಿಕ ಕೊಡಿಕ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ದೇಶ.  
2. ಧನೂರಾಶಿ. (ನಂ) 3. ಧನುಸ್ಸು, ಬಿಲ್ಲು. ಕು



(ಶಬ್ದ) “ವಿಚ್” (೩-೨-೭೫)। ಕೌಡ್‌ಢೋಸ್ತು। “ಕೌಡ್‌ಢ-  
ಪಾಣಿ ನಿನದತ್ಪ್ರತಿರೋಧಕಾನಾಮಾಪಾತದ್ವಪ್ರಸಹ್ಮಾವಿರಭೂದನಿ-  
ಕಮ್” ಮಾಲಂ ೫-೧೦। “ಉಡ್‌ಢೆ ಭುಜದಢೆ ತವ ಕೌಡ್‌ಢೆ  
ಪರಿಸ್ಕುರತಿ। ಅರಿಮಢ್‌ಢಲರವಿಮಢ್‌ಢಲರಮ್‌ಭಾಕುಚಮಢ್‌ಢಲಾನಿ  
ವೆಪಂತೆ”। 4. ಧನುಸ್ಸಿನಂತಿರುವ ಭೃಲತೆ, ಹುಟ್ಟು.  
“ಅಥ ಕೌಡ್‌ಢ ಚಾಪೇ ನಾ ನಿವೃದಂತರೆ। ಭುವ್ಯಯೋ” ಮೇದಿಂ।

**ಕೌಡ್‌ವ ಕೋದ್ರವ** (ಪುಂ) ಹಾರಕಧಾನ್ಯ. ಕೇನ ವಾಯುನಾ  
ದ್ರವತಿ — ದ್ರು (ಗತೌ) “ಅಪ್” (೩-೩-೫೭)। ಪೃಷಂ।  
“ಅಶ್ರಾದ್ವಿಯಾನಿ ಧಾನ್ಯಾನಿ ಕೌಡ್‌ವಾಃ ಪುಲಕಾಸ್ತಥಾ” ಭಾಂ।

**ಕೌಪ ಕೋಪ** (ಪುಂ) 1. ಕೋಪ. ಸಿಟ್ಟು. ಕುಪ (ಕ್ರೋಧ) +  
ಭಾವೇ “ಘ” (೩-೩-೧೮)। “ಪೌನಃಪುನ್ಯಾದಸಗಂಧೇನ  
ಮತ್ತೋ ಮೃದನ್ ಕೌಪಾಲ್‌ಲೋಕಮಾಯೋಧನೋರ್ವಾಮ್” ಮಾಘಂ  
೧೮-೫೭। 2. ಶೃಂಗಾರರಸಕ್ಕೆ ಅಂಗವಾದ ಪ್ರಣಯ  
ಮತ್ತು ಈರ್ಷ್ಯಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಮುನಿಸು. ನಾಯಿಕಾ  
ನಾಯಕರ ಅಸಭ್ಯವರ್ತನೆಗಳಿಂದ ಪ್ರಣಯ ಕೋಪವುಂಟಾ  
ಗುವುದು. ಪತಿಯು ಬೇರೆ ನಾಯಿಕೆಯರಲ್ಲಿ ಅನುರಕ್ತ  
ನಾಗಿರುವುದು ತಿಳಿದಾಗ ನಾಯಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಈರ್ಷ್ಯಾಕೋಪ  
ವುಂಟಾಗುವುದು. “ಮಾನಃ ಕೌಪಃ ಸ ತು ದ್ವೇಷಾ ಪ್ರಣಯೇರ್ಷ್ಯಾ-  
ಸಮುದ್ಭವಃ। ದ್ವಯೋಃ ಪ್ರಣಯಮಾನಃ ಸ್ಯಾತ್ ಪ್ರಮೋದೇ ಸುಮಹತ್ಯಪಿ।  
ಪ್ರೇಮ್ಣಃ ಕುಟಿಲಗಾಮಿತ್ವಾತ್ಕೌಪೋ ಯಃ ಕಾರಣಂ ವಿನಾ। ಪತ್ಯುರನ್ಯ-  
ಪ್ರಿಯಾಸಂಜ್ಞೇ ದೃಷ್ಟೇಷ್ಯಾನುಮಿತೇ ಶ್ರುತೇ। ಇರ್ಷ್ಯಾಮಾನೋ ಭವೇತ್  
ಸ್ತ್ರೀಣಾಮ್” ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೯೭-೧೯೯। ಉದಾ.: “ನವನಕ್ಷ-  
ಪದಮಂಗಳಂ ಗೋಪಯಸ್ಯಂಶುಕೇನ ಸ್ಥಗಯಸಿ ಪುನರೋಷಂ ಪಾಣಿನಾ  
ದಂತದೃಷ್ಟಮ್। ಪ್ರತಿದಿಶಮಗರಸ್ತ್ರೀಸಂಜ್ಞಾಂಸಿ ವಿಸರ್ಪಂನವ-  
ಪರಿಮಲಗಂಧಃ ಕೇನ ಶಕ್ಯೋ ವರೀತುಮ್”।

**ಕೌಪಕ್ರಮ ಕೋಪಕ್ರಮ** (ಪುಂ) 1. ಕೋಪದ ಕ್ರಮ, ಕೋಪದ ವಿಧಿ. ಕೌಪಸ್ಯ ಕ್ರಮಃ। (ನಂ) 2. ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಡುವ ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿ. ಉಪಕ್ರಮ್ಯತೇ—ಉಪ +  
ಕ್ರಮು (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ) ಕರ್ಮಂ “ಘ” (೩-೩-೧೯)। ಕಸ್ಯ  
ಬ್ರಹ್ಮಣಃ ಉಪಕ್ರಮಃ।

**ಕೌಪನ ಕೋಪನ** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಅಸುರ. “ಶರಮಃ  
ಶಲಭಶ್ಚೇವ ಕುಪನಃ ಕೌಪನಃ ಕ್ಷಯಃ” ಹರಿವಂ। (ನಂ) 2.  
ಕೋಪವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದು, ರೇಗಿಸುವುದು. ಕುಪ +  
ಣಿಚ್ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। (ವಿಂ) 3.  
ಕೋಪವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ಸಿಟ್ಟಿಬಿಡುವ, ರೇಗಿಸುವ.  
ಕುಪ + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪)। 4. ಕೋಪದ  
ಸ್ವಭಾವದ. ಕುಪ ತಾಂತ್ರಿಕವಾಗಿ “ಯುಚ್” (೩-೨-೧೫೧)।  
“ಆಸೀದ್ವಿಭಾವಸುರ್ನಾಮ ಮಹರ್ಷಿಃ ಕೌಪನೋ ಭೃಗುಃ” ಭಾಂ  
ಆದಿಂ ೨೯-೧೬। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಕೌಪನಾ ಕೋಪನಾ. ಕೋಪ

ಸ ಭಾವದ ಹೆಂಗಸು. “ಕಯಾಸಿ ಕಾಮಿನ್ ಸುರತಾಪರಾಧಾತ್  
ಪಾದಾನತಃ ಕೌಪನಯಾವಧತಃ” ಕುಮಾಂ ೩-೮।

**ಕೌಪನೀಯ ಕೋಪನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಕೋಪಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ಕೋಪಗೊಳಿಸಲ್ಪಡಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ.  
3. ಕೋಪಗೊಳಿಸಲ್ಪಡಲು ಶಕ್ಯನಾದ. ಕುಪ (ಕ್ರೋಧ) +  
ಣಿಚ್ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬)। “ತವ್ಯಃ”। ಕೌಪಯಿತವ್ಯಃ  
ಕೋಪಯಿತವ್ಯಃ।

**ಕೌಪಯತ್ ಕೋಪಯತ್** (ವಿಂ) ಕೋಪವನ್ನುಂಟುಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ, ಸಿಟ್ಟಿಬಿಡುತ್ತಿರುವ, ರೇಗಿಸುತ್ತಿರುವ. ಕುಪ  
(ಕ್ರೋಧ) + ಣಿಚ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್”  
(೪-೧-೬)। —ಯಂತಿ —ಯಂತೀ. “ಶಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪)।  
—ಯಮಾನಾ —ಯಮಾನಾ.

**ಕೌಪಯಿತ್ ಕೋಪಯಿತ್** (ವಿಂ) ಕೋಪವುಂಟುಮಾಡುವ,  
ರೇಗಿಸುವ. ಕುಪ (ಕ್ರೋಧ) + ಣಿಚ್ “ತೃಚ್” (೩-೧-೧೩೩)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೫)। —ಯಿತ್ರಿ —ಯಿತ್ರಿ.

**ಕೌಪವತ್ ಕೋಪವತ್** (ವಿಂ) ಕೋಪವುಳ್ಳ, ರೇಗಿದ.  
ಕೌಪೋಸ್ತಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್” (೫-೨-೯೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)। —ವತಿ —ವತೀ. “ಕೌಪವತ್ಯನು-  
ನಯಾನಗೃಹೀತ್ವಾ” ಮಾಘಂ ೧೦-೨೯।

**ಕೌಪಿತ ಕೋಪಿತ** (ನಂ) 1. ರೇಗಿಸುವುದು, ಸಿಟ್ಟಿಬಿಡು  
ವುದು. ಕುಪ (ಕ್ರೋಧ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪)।  
(ವಿಂ) 2. ರೇಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೋಪಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕುಪ +  
ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। “ಕೌಪಿತಂ ವಿರಹ-  
ಕ್ಷೇದಿತಚಿತ್ತಾ ಕಾಂತಮೇವ ಕಲಯಂತ್ಯನುನಿನ್ಯೇ” ಮಾಘಂ ೧೦-೨೯।

**ಕೌಪಿತವತ್ ಕೋಪಿತವತ್** (ವಿಂ) ಕೋಪಗೊಳಿಸಿದವನು.  
ರೇಗಿಸಿದವನು. ಕುಪ (ಕ್ರೋಧ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತವತುಃ”  
(೩-೨-೧೦೨)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)। —ವತಿ  
—ವತೀ.

**ಕೌಪಿನ್ ಕೋಪಿನ್** (ಪುಂ) 1. ನೀರು ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ.  
(ವಿಂ) 2. ಕೋಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವನು. ಅವಶ್ಯಂ ಕುಪ್ಯತಿ —  
ಕುಪ (ಕ್ರೋಧ) “ಣಿನಿಃ” (೩-೩-೧೭೦)। 3. ಕೋಪ  
ವುಂಟುಮಾಡುವ. ಕೌಪಯತಿ — ಕುಪ + ಣಿಚ್ “ಣಿನಿಃ”  
(೩-೧-೧೩೪)।

**ಕೊಮಲ ಕೋಮಲ** (ನಂ) 1. ಜಲ, ನೀರು. ಕು (ಶಬ್ದ)  
“ಕಲಃ” ಮುಡಾಗಮಶ್ಚ (೩-೧-೧೦೬)। ಬಾಹುಂ ಗುಣಃ।  
(ವಿಂ) 2. ಮೃದುವಾದ, ಮೃದುವಾದ, ಮೃತ್ವನೆಯ,  
ಸುಕುಮಾರವಾದ. 3. ಮನೋಹರವಾದ, ರಮಣೀಯ  
ವಾದ. “ನಿಶಾ ಚ ಶಯ್ಯಾ ಚ ಶಶಾಂಕುಕೋಮಲಾ” ನೈಷಂ



೧-೪೯। 4. ಮಧುರವಾದ. ಇಂಪಾದ. "ಅನವದವಾ-  
ಲಯಗಾಮಿ ಕೊಮಲಂ ನವಗೀತಮಪ್ಯನವಗೀತತಾಂ ದಧತ್" ಮಾಘಂ  
೧೩-೬೬। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ-ಲಾ. 5. ಹಾಲೆಗಿಡ.

**ಕೊಮಲಕ ಕೋಮಲಕ** (ನಂ) 1. ತಾವರೆಯ ದಂಟು.  
ಕೊಮಲ ಸಂಜಾಯಾಂ "ಕನ್"। 2. "ಕೊಮಲ" ಪದದ  
ಅರ್ಥ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"।

**ಕೊಮಾಸಿಕಾ ಕೋಮಾಸಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಕ್ಷಿಗಳನ್ನು ಹಿಡಿ  
ಯುವ ಬಲೆ. ಕು ಇಷತ್ ತಮೇವ ಅತಸೀವೃಕ್ಷ ಇವ ಆಸ್ತೇ-ಆಸ  
(ಅಪವೇಶನೇ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಟಾಪ್"।

**ಕೋಯಿಟಿ (ಕ) ಕೋಯಿಟಿ (ಕ)** (ಪುಂ) ನೀರು ಸಡಗೆಯ  
ಉದ್ದದ ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳ ಬಿಳಿಯ ಕೊಕ್ಕರೆ, ಬಕಪಕ್ಷಿ. ಕಂ ಜಲಂ  
ಯಿಟಿರಿವಾಸ್ಯ। ಪೃಷೋಂ। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೪-೩-೭೪)।  
"ಪ್ರತುದಾನ್ ಜಾಲಪಾದಾಂಶ್ಚ ಕೋಯಿಟಿನಖವಿಷ್ಕಿರಾನ್" ಮನುಂ  
೪-೧೩। "ಕಾಶ್ಮರ್ಯಾ: ಕೃತಮಾಲಮುದಗತದಲಂ ಕೋಯಿಟಿಕಾಶ್ವಿ-  
ಕತೇ" ಮಾಲತೀಂ ೯-೭।

**ಕೋಯಿಟಿ ಕೋಯಿಟಿ** (ಪುಂ) ಬಿಳಿಯ ಕೊಕ್ಕರೆ,  
ಬಕಪಕ್ಷಿ.

**ಕೋರ ಕೋರ** (ಪುಂ) ಶರೀರಚಲನೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ  
ಬೆರಳು ಮಂಡಿ ಮೊಣಕೆ ಮುಂತಾದುವುಗಳ ಎಂಟು  
ವಿಧ ಸಂಧಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಕುಲ (ಸಂಸ್ಥಾನೇ) "ಅಚ್"  
(೩-೧-೧೩೪)। ಲಸ್ಯ ರ:।

**ಕೋರದ ಎಂಟು ವಿಧ ಸಂಧಿಗಳು:** (1) ಕೋರಾ:,  
(2) ತಲೂಲಾ:, (3) ಸಾಮುದ್ಗಾ:, (4) ಪ್ರತರಾ:,  
(5) ತುನ್ನಸೇವನ್ಯ:, (6) ವಾಯಸತುಂಡಾ:, (7) ಮಂಡಲಾ:  
ಮತ್ತು (8) ಶಾಕ್ಷಾವರ್ತಾ:।

(1) "ಕೋರ" ಸಂಧಿಗಳು ಬೆರಳು ಮಣಿಕಟ್ಟು  
ಕಾಲುಗಳ ಗಂಟು (ಗುಲ್ಫ)ಗಳು ಮಂಡಿ ಮತ್ತು ಮೊಣಕೆ  
ಗಳಲ್ಲಿರುವವು. "ತೇಷಾಮಡ್ಗುಲಿಮಣಿಬಂಧಗುಲ್ಫಜಾನುಕುಂಪರೇಷು  
ಕೋರಾ:"। ಇವು ಯಾವಾಗಲೂ ಅಸ್ಥಿಭಾಗಗಳಲ್ಲಿ ಉನ್ನತ  
ವಾದ ಅಸ್ಥಿ (ಎಲುಬು)ಗಳ ಸಂಧಾನರೂಪವಾಗಿವೆ  
ವುಳ್ಳವು.

(2) "ಉಲೂಖಲ" ಸಂಧಿಗಳು ಕೆಡು ವೆಂಕ್ಷಣ  
(ತೊಡೆಗಳ ಸಂಧಿ) ದಶನಗಳಲ್ಲಿರುವವು. "ಕಕ್ಷಾವಕ್ಷಣ-  
ದಶನೇಷುಲೂಖಲಾ:"। ಇವುಗಳೂ ಉಲೂಖಲಗಳಂತೆ ಗುಳಿ  
ಗಳುಳ್ಳ (ಅಳವಾದ) ಉಳಿದ ಅಸ್ಥಿಮುಂಡಗಳ ಸಂಧಾನ  
ರೂಪ ವ್ಯಾಪಾರವುಳ್ಳವು.

(3) "ಸಾನುದ್ಗ" ಸಂಧಿಗಳು ಹೆಗಲು ಗುದ  
ಸ್ಥಾನ ಭಾಗ ಮತ್ತು ನಿತಂಬಗಳಲ್ಲಿರುವವು. "ಅಂಸಪೀಠ-

ಗುದಭಗಾನಿತಮ್ಬೇಷು ಸಾಮುದ್ಗಾ:"। ಇವು ಬುಟ್ಟಿಗಳನ್ನು  
ತಯಾರಿಸುವವನ ಕಾರ್ಯದಂತೆ ಕಡಮೆ ಚಲನೆಯುಳ್ಳವು.

(4) "ಪ್ರತರ" ಸಂಧಿಗಳು ಕುತ್ತಿಗೆ ಬೆನ್ನಲುಬು  
ಗಳಲ್ಲಿರುವವು. "ಶ್ರೀವಾಪುಷ್ಪವಂಶಯೋ: ಪ್ರತರಾ:"। ಇವು  
ಅಲ್ಪ ಚಲನೆಯುಳ್ಳ ಮತ್ತು ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಸೇರಿಕೊಂಡಿ  
ರುವ ಅಸ್ಥಿಖಂಡಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದುವು.

(5) "ತುನ್ನಸೇವನೀ" ಸಂಧಿಗಳು ತಲೆ ಕಟಿ  
ಪ್ರದೇಶ ಮತ್ತು ಕಪಾಲಗಳಲ್ಲಿರುವವು. "ಶಿರ:ಕದೀಕಪಾಲೇಷು  
ತುನ್ನಸೇವನ್ಯ:"।

(6) "ವಾಯಸತುಂಡ" ಸಂಧಿಗಳು ಹನು (ಕೆನ್ನೆ  
ಗಳ ಮೇಲು ಭಾಗ)ಗಳ ಎರಡು ಕಡೆಯೂ ಇರುವವು.  
"ಹನ್ವೋರಭಯತಸ್ತು ವಾಯಸತುಂಡಾ:"। ಇವು ಕೆನ್ನೆಗಳ ಮೇಲು  
ಭಾಗ ಮತ್ತು ತಲೆಯ ಮಧ್ಯೆ ಹಣೆಯ ಎಲುಬುಗಳಲ್ಲಿ  
ರುವ ಕಪೋಲಸಂಧಿಗಳೊಡನೆ ಸೇರಿ ಬಾಯಿ ತೆರೆದು  
ಮುಚ್ಚುವಂತೆ ಮಾಡುವವು.

(7-8) "ಮಂಡಲ-ಶಂಖಾವರ್ತ" ಸಂಧಿಗಳು  
ಕ್ರಮವಾಗಿ ಕುತ್ತಿಗೆ ಹೃದಯ ಕಣ್ಣು ಮೂತ್ರಕೋಶನಾಡಿ  
ಗಳು ಮತ್ತು ಕಿವಿ ಶೃಂಗಾಟಕಗಳಲ್ಲಿರುವವು. "ಕಂಠ-  
ಹೃದಯನೇತ್ರಕಲೋಮನಾಡಿಷು ಮಂಡಲಾ: ಶ್ರೋತ್ರಶೃಂಗಾಟಕೇಷು ಶಾಕ್ಷಾ-  
ವರ್ತಾ:"। ಇವು ಕ್ರಮವಾಗಿ ಶ್ವಾಸಮಾರ್ಗ ಮತ್ತು ಕರ್ಣ  
ಕುಹರಗಳಲ್ಲಿರುವ ಎಳೆಯ ಮೂಳೆಗಳ ಸಂಧಿಗಳು. ಸುಶ್ರುತಂ  
ಶಾರೀರಂ ೪-೨೭।

**ಕೋರಕ ಕೋರಕ** (ಪುಂ) 1. ಹೂವಿನ ಮೊಗ್ಗು. ಕುರ್ಯತೇ-  
ಕುರ (ಶಬ್ದ) "ಕುನ್" (೩ಂ ೪-೩೪)। "ಮರದವನಿರುಹಾಂ  
ರಜೋ ವಧೂಮ್ಯ: ಸಮುಪಹರನ್ ವಿಚಕಾರ ಕೋರಕಾಣಿ"  
ಮಾಘಂ ೭-೨೬। 2. ತಕ್ಕೋಲವೃಕ್ಷದ ಪರಿಮಳದ್ರವ್ಯ.  
3. ಮೃಣ್ಮಯ ತಾವರೆಯ ದಂಟು. "ಕೋರಕೋಸ್ತೀ ಕುಡ್ಮಲೇ  
ಸ್ಯಾತ್ ಕವಕಾಲಕಮೃಣಾಲಯೋ:" ಮೇದಿಂ।

**ಕೋರಕಿತ ಕೋರಕಿತ** (ವಿಂ) ಮೊಗ್ಗು ಬಿಟ್ಟಿರುವ, ಮೊಗ್ಗು  
ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ. ಕೋರಕಾ ಅಸ್ಯ ಸಂಜಾತಾ: "ಇತಚ್"  
(೪-೨-೩೬)। "ಯಸ್ತೇ ನವ: ಪಲ್ಲವಿತ: ಕರಾಮ್ಯಾಂ ಸ್ಮಿತೇನ  
ಯ: ಕೋರಕಿತಸ್ತವಾಸ್ತೇ" ನೈಷಂ ೩-೧೨೧।

**ಕೋರಜ್ಜಿ ಕೋರಂಗೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಣ್ಣ ಜಾತಿಯ  
ಯಾಲಕ್ಕಿ. ಕುರತಿ - ಕುರ (ಶಬ್ದ) "ಅಜ್ಜಚ್" ಬಾಹುಂ।  
ಗೌರಾಂ "ಜಿಫ್" (೪-೧-೪೧)। "ಸೂಕ್ಸಮೋಪಕುಶ್ವಿಕಾ  
ತುತ್ಯಾ ಕೋರಜ್ಜಿ ತ್ರಿಪುಟಾ ತ್ರುಟಿ:" ಅಮಂ। 2. ಹಿಪ್ಪಲಿ.

**ಕೋರದ್ದ ಕೋರದ್ದಾಪ** (ಪುಂ) ದಾರಕ ಧಾನ್ಯ. ಕೋರಂ  
ದ್ವಯತಿ - ದುಪ (ವೈಕೃತ್ಯ) + ಣಿಚ್ "ಅಣ್" (೩-೨-೧)।



“ಸಕೋರ್ದುಃ ಶ್ಯಾಮಾಕಃ ಕಛಾಯಮಧುರೋ ಲಘುಃ | ವಾತಲಃ  
ಕಫಪಿತ್ತಘನಃ ಶೀತಸಂಗ್ರಾಹಿಶೋಷಣಃ” ಚರಕಂ ಸೂತ್ರಂ  
೨೭-೧೫ |

**ಕೊಲ ಕೋಲ** (ಪುಂ) 1. ಪರಾಪ, ಹಂದಿ. ಕುಲ (ಸಂಸ್ಥಾನೇ)  
“ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) | “ಕೋಲೇ ಧೃತಘಟೋ ದೇಯ ಉಘ್ರೇ  
ಗುಙ್ಗಾ ಹಯೇಷುಕಮ್” ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೨೭೩ | 2. ತೆಪ್ಪ,  
ಹರಿಗೋಲು. 3. ಎದೆ, ಭುಜಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ. 4. ಶನಿಗ್ರಹ. 5. ಅಲಿಂಗನ. 6. ಚಿತ್ರಮೂಲದ ಗಿಡ.  
7. ತೋಡೆ, ಮಡಿಲು. 8. ಬೆಸ್ತರ ಜಾತಿಯ ಕನ್ಯೆಯಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು. 9. ಒಬ್ಬ ದೊರೆ.  
(ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 10. ಒಂದು ದೇಶ. “ಕಲ್ಯಾಣಾದಯಾ-  
ಕ್ರೀಡಶ್ಚತ್ವಾರಸ್ತಸ್ಯ ಚಾತ್ಮಜಾಃ | ಪಾಂಡ್ಯಶ್ಚ ಕೇರಲಶ್ಚೈವ  
ಕೋಲಶ್ಚೋಲಶ್ಚ ಪಾರ್ಥಿವಃ | ತेषಾಂ ಜನಪದಾಃ ಸ್ಥಿತಿತಾಃ ಪಾಂಡ್ಯಾಃ  
ಕೋಲಾಃ ಸಕೇರಲಾಃ” ಹರಿವಂ | (ನಂ) 11. ಎಲಚಿಹಣ್ಣು,  
ಬೋರೆ ಹಣ್ಣು. ಕೋಲ್ಯಾಃ ಫಲಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೩೫) |  
ತಸ್ಯ ಲುಕ್ (೪-೩-೧೬೩) | 12. ಮೆಣಸು. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಲಾ -ಲಾ. 13. ಹಿಪ್ಪಲಿ. 14. ಚವ್ಯ. “ಕೋಲಂ  
ಕೋಲಿಫಲೇ ಕಲಿಬಂ ಪಿಪ್ಪಲಿಚವ್ಯಯೋಃ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ | ನಾಽಙ್ಕುಪಾಲಿ  
ಶನೌ ಚಿತ್ರೇ ವರಾಹೋತ್ಸಜ್ಞಭೇಲಕೇ” ಮೇದಿಂ |

**ಕೊಲಕ ಕೋಲಕ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ.  
2. ಮೆಣಸು.

**ಕೊಲಕಕರ್ಕಟಿಕಾ ಕೋಲಕಕರ್ಕಟಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು  
ಜಾತಿಯ ಖರ್ಜೂರ. ಕೊಲ ಇವ ಕರ್ಕಟಿಕಾ | -ಕರ್ಕಟಿ  
-ಕರ್ಕಟಿಕಾ.

**ಕೊಲಕುಣ ಕೋಲಕುಣ** (ಪುಂ) ಮತ್ಸ್ಯುಣ, ತಿಗಣೆ.

**ಕೊಲಪುಚ್ಛ ಕೋಲಪುಚ್ಛ** (ಪುಂ) ರಣಹದ್ದು. ಕೊಲಸ್ಯೇವ  
ಪುಚ್ಛೋಽಸ್ಯ |

**ಕೊಲಮ್ಬಕ ಕೋಲಂಬಕ** (ಪುಂ) ವೀಣೆಯ ಮೈ, ತಂತಿ  
ಯಿಲ್ಲದ ವೀಣೆಯ ಶರೀರ, ತಂತಿಯಿಲ್ಲದ ವೀಣಾದಂಡ  
ಬುರುಡೆ ಮತ್ತು ಕಿವಿಗಳು. ಕುಲ (ಸಂಸ್ಥಾನೇ) “ಅಮ್ಬಚ್”  
ಬಾಹುಂ | “ಕೊಲಮ್ಬಕಸ್ತು ಕಾಯೋಽಸ್ಯಾಃ” ಅಮಂ |

**ಕೊಲವಲ್ಲಿ ಕೋಲವಲ್ಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಜಹಿಪ್ಪಲಿ. ಕೊಲ  
ವರಾಹ ಇವ ವಲ್ಲಿ ತಲ್ಲೊಮತುಲ್ಯಶುಕ್ಲಾ ಅಸ್ಯ |

**ಕೊಲಾ ಕೋಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) “ಕೊಲ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ಕೊಲಾಪುರ ಕೋಲಾಪುರ** (ನಂ) ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿಯ ವಾಸಸ್ಥಾನ  
ವಾದ ಒಂದು ಪಟ್ಟಣ.

**ಕೊಲಾಹಲ ಕೋಲಾಹಲ** (ಪುಂ) ಗುಂಪಿನ ಗಲಭೆ, ಗದ್ದಲ.  
ಕೊಲಮಾಹಲತಿ - ಆ + ಹಲ (ವಿಲೇಖನೆ) “ಅಚ್”

(೩-೧-೧೩೪) | “ಕೊಲಾಹಲೇನೋಚ್ಚಲತಾಂ ದಿವೌಕಸಾಂ  
ಮಹಾಚಮುನಾಂ ಗುರುಭಿರ್ವಜ್ರಜೈಃ” ಕುಮಾಂ ೧೪-೧೬ |

**ಕೊಲಾಹಲಿನ್ ಕೋಲಾಹಲಿನ್** (ವಿಂ) ಗುಂಪಿನ ಗಲಭೆ  
ಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಗದ್ದಲದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕೊಲಾಹಲೋ-  
ಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ |

**ಕೊಲಿ (ಲಿ) ಕೋಲಿ (ಲಿ) (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಎಲಚಿ ಮರ,  
ಬೋರೆ ಗಿಡ. ಕುಲ (ಸಂಸ್ಥಾನೇ) “ಇನ್” (೩ಂ ೪-೧೧೭) |  
ವಾ “ಙೀಪ್” (ಗಂ ೪-೧-೪೫) |

**ಕೋಲ್ಯಾ ಕೋಲ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಪ್ಪಲಿ. ಕೊಲಮಹತಿ “ಯತ್”  
(೫-೧-೬೬) |

**ಕೊಲ್ಲ (ಕ) ಕೋಲ್ಲ (ಕ) (ಪುಂ)** ದಕ್ಷಿಣ ಭಾರತದಲ್ಲಿ  
ಇರುವ ಒಂದು ಪರ್ವತ. “ಕರ್ಣಾಟಕಮಹಾಡವಿಚಿತ್ರಕೂಟ-  
ನಾಸಿಕಕೊಲ್ಲಗಿರಿಚೋಲಾಃ” | “ಋಷಭಃ ಕೂಟಕಃ ಕೊಲ್ಲಕಃ  
ಸಹಯೋ ದೇವಗಿರಿಃ” ಭಾಗಂ ೫-೧೯-೧೬ |

**ಕೊವಿದ ಕೋವಿದ** (ಪುಂ) 1. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. ಕೌವೇದಃ  
ತಂ ವೇತ್ತಿ-ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೫) | “ಶ್ರೋತ-  
ಮಾರ್ಗಸುಖಗಾನಕೋವಿದಬ್ರಹ್ಮಾಷ್ಟಚರಣಗರ್ಭಮುಜ್ಜ್ವಲಮ್” ಮಾಘಂ  
೧೪-೬೯ | 2. ತಿಳಿದವನು, ಬಲ್ಲವನು. “ಆತ್ಮನೇವ  
ಗುಣದೋಷಕೋವಿದಃ ಕಿಂ ನ ವೇತ್ತಿ ಕರಣೀಯವಸ್ತುಃ” ಮಾಘಂ  
೧೪-೫೪ |

**ಕೊವಿದಾರ ಕೋವಿದಾರ** (ಪುಂ) ಕೆಂಗಾಂಚಾಳದ ಗಿಡ. ಕು  
ಭೂಮಿ ವಿದೃಣಾತಿ - ವಿ + ದೃ (ವಿದಾರಣೆ) “ಅನ್”  
(೩-೨-೧) | ಪೃಷಂ | “ಕೊವಿದಾರಕಲಿಕಾಽತಿಕೋಮಲಾ  
ತಕ್ರಸಿದ್ಧತಲಿತಲಿಪಾಚಿತಾ” ಪಾಕಶಾಸ್ತ್ರಮ್ |

**ಕೊಶ (ಷ) ಕೋಶ (ಷ) (ಪುನಂ)** 1. ಅಂಡ, ಮೊಟ್ಟೆ,  
ತಟ್ಟೆ. ಕುಷ್ಯತಿ ನಿಷ್ಕ್ರಾಮತ್ಯಸ್ಮಾತ್ - ಕುಷ (ನಿಷ್ಕರ್ಷೆ)  
“ಘ್” (೩-೩-೧೯) | 2. ಪಾಸಪಾತ್ರೆ, ಕುಡಿಯುವ  
ಪಾತ್ರೆ. 3. ಕತ್ತಿಯ ಒರೆ. 4. ಮುಚ್ಚಳ.  
5. ಶಬ್ದಕೋಶ, ಅಮರ ಮೊದಲಾದ ನಿಘಂಟು.  
6. ಖಜಾನೆ, ಬೆಂಕಿಸು, ಧನರಾಶಿ. “ತಮಧವರೇ ವಿಶ್ವಜಿತಿ  
ಕ್ಷಿತಿಶಿಂ ನಿಃಶೇಷವಿಶ್ರಾಣಿತಕೊಶಜಾತಮ್” ರಘುಂ ೫-೧ |  
7. ಸಮೂಹ. 8. ಕಾಯಿ ಧಾನ್ಯ ಮೊದಲಾದುವು  
ಗಳ ಸಿಪ್ಪೆ. 9. ಕುಡ್ಮಲ, ಮೊಗ್ಗು. “ಆಸಾರ-  
ಸಿಕ್ತಕ್ಷಿತಿಬಾಷ್ಪಯೋಗಾತ್ ಮಾಮಕ್ಷಿಣೋಽತ್ರ ವಿಭಿನ್ನಕೋಶಃ”  
ರಘುಂ ೧೩-೨೯ | 10. ಹಲಸು ತೆಂಗು ಮೊದಲಾದ ಫಲ  
ಗಳ ಒಳಭಾಗ. 11. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 12. (ವೇದಾಂತಿ  
ಗಳ ಮತದಲ್ಲಿ) ಜೀವನಿಗೆ ಅವರಣವಾಗಿರುವ (1) ಅನ್ನ  
ಮಯ. (2) ಪ್ರಾಣಮಯ, (3) ಮನೋಮಯ,



(4) ವಿಜ್ಞಾನಮಯ ಮತ್ತು (5) ಆನಂದಮಯಗಳೆಂಬ ಐದು ಕೋಶಗಳು. 13. ಗೋಳ, ಪರ್ವಲ, ಗುಂಡು. 14. ಯೋನಿ, ಸ್ತ್ರೀಯರ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ. 15. ಜಾಯಿ ಕಾಯಿ. "ಕೊಶ: ಕೋಷ ಇವಾಣ್ಡಕೇ। ಕುಡ್ಮಲೇ ಚಪಕೇ ದಿವ್ಯೇರ್ಥಚಯೇ ಯೋನಿಶಿಮ್ಬಯೋ:। ಜಾತೀಕೋಷೇಸಿಪಿಧಾನೇ" ಹೇಮಂ। 16. ಶಾಸ್ತ್ರ. 17. ಗೃಹ. ಮನೆ. 18. ಪುಸ್ತಕಗಳ ರಾಶಿ. 19. ದೇಹ, ಶರೀರ. "ಕೊಶೋಸ್ತ್ರೀ ಕುಡ್ಮಲೇಶ್ವರೀ ಗುಹ್ಯೇಷ್ವರೇ ಶಾಸ್ತ್ರಾದಿವ್ಯಯೋ:। ಗೃಹೇ ದೇಹೇ ಪುಸ್ತಕೋಷೇ ಪೇಶ್ಯಾಮಸಿಪಿಧಾನಕೇ" ನಾನಾರ್ಥರಂ। 20. ರೇಷ್ಮೆ ಹುಳುವಿನ ಗೂಡು. 21. ಗರ್ಭಕೋಶ. 22. ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ ಅನೇಕ ಶ್ಲೋಕಗಳ ಸಮುದಾಯ.

**ಕೊಶ(ಪ)ಕಾರ ಕೋಶ(ಷ) ಕಾರ (ಪುಂ)** 1. ನಿಷ್ಕಂಟು ಕಾರ. ಕೊಶ (ಪ) ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣ) "ಅಣ್" (3-2-1)। 2. ರೇಷ್ಮೆಹುಳು. ಕೊಶ ತನ್ತುಭಿಃ ಸ್ವವೇಷ್ಠನಂ ಕರೋತಿ - ಕೃಜ್ "ಅಣ್"। "ಸಂವೇಷ್ಠಮಾನಂ ಬಹುಭಿರ್ಮೋಹಾ-ತ್ತನ್ತುಭಿರಾತ್ಮಜೈಃ। ಕೊಶಕಾರ ಇವಾತ್ಮಾನಂ ವೇಷ್ಠಯಶ್ಚಾವಬುಧ್ಯಸೇ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ 329-26। (ವಿಂ) 3. ಕತ್ತಿಯ ಒರೆಯನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. ಡು ಕೃಜ್ "ಫ್ವಲ್" (3-1-133)। -ಕಾರಕ: -ಕಾರಕಃ. "ನಿಜಲಾಲಾ-ಸಮಾಯೋಗಾತ್ ಕೊಶಂ ವಾ ಕೊಶಕಾರಕಃ" ಯಾಜ್ಞಂ 3-149। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ಕಾರಿಕಾ -ಕಾರಿಕಾ.

**ಕೊಶ(ಪ)ಕೃತ್ ಕೋಶ(ಷ) ಕೃತ್ (ಪುಂ)** 1. "ಕೊಶ (ಪ) ಕಾರ" ಪದದ ಅರ್ಥ. 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕಬ್ಬು. "ನೈಪಾಲೋ ದೀರ್ಘಪತ್ರಶ್ಚ ನೇಲಪೋರೋಶ್ಚ ಕೊಶಕೃತ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ 84-150।

**ಕೊಶ(ಪ)ಗೃಹ ಕೋಶ(ಷ) ಗೃಹ (ನಂ)** ಬೊಕ್ಕಸ, ಧನಾಗಾರ, ಹಣವನ್ನು ಕೂಡಿಸಿಡುವ ಕೊಠಡಿ. ಕೊಶ(ಪ)ಸ್ಯ ಗೃಹಮ್। "ಹಿರಣ್ಮಯೀ ಕೋಷಗೃಹಸ್ಯ ಮಧ್ಯೇ ವೃಷ್ಟಿಶಾಸು: ಪತಿತಾ ನಮಸ್ತಃ" ರಘುಂ 4-29।

**ಕೊಶ(ಪ)ಪಾಲ ಕೋಶ(ಷ) ಪಾಲ (ಪುಂ)** ಬಿಜಾಂಚಿ. ಬೊಕ್ಕಸದ ಅಧಿಕಾರಿ, ಬಿಜಾನೆಯ ಉಸ್ತುವಾರಿ ನೋಡಿ ಕೊಳ್ಳುವವನು, ಕೋಶಾಧ್ಯಕ್ಷ. ಕೊಶ (ಪ) ಪಾಲಯತಿ - ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣ) + ಣಿಚ್ "ಅಣ್" (3-2-1)। "ನಿರ್ಯಾಂತು ಕೊಶ (ಪ) ಪಾಲಾಶ್ಚ ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರಾಶ್ರಮಂ ಪ್ರತಿ" ಭಾಂ ಆಶ್ರಮಂ 22-21। "ಫ್ವಲ್" (3-1-133)। -ಪಾಲಕ: -ಪಾಲಕಃ.

**ಕೊಶ(ಪ)ಪೆಟಕ ಕೋಶ(ಷ) ಪೆಟಕ (ಪುಂ)** ಹಣದ ಪೆಟ್ಟಿಗೆ.

**ಕೊಶ(ಪ)ಫಲ ಕೋಶ(ಷ) ಫಲ (ನಂ)** 1. ಒಂದು ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ, ತಕ್ಕೋಲವೃಕ್ಷದ ಪರಿಮಳದ್ರವ್ಯ. 2. ಜಾಯಿಕಾಯಿ.

**ಕೊಶ(ಪ)ವತ್ ಕೋಶ(ಷ) ವತ್ (ವಿಂ)** ಧನಿಕ, ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ. ಕೊಶೋ (ಪ) ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (4-2-98)। "ಧರ್ಮಾತ್ಮಾ ಕೊಶ(ಪ) ವಾಂಶ್ರಾಪಿ ದೇವರಾಜ ಇವಾಪರಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ 2-11। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-6)। -ವತೀ -ವತೀ.

**ಕೊಶ(ಸ)ಲ ಕೋಶ(ಷ) ಲ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ)** ಕೋಸಲ ದೇಶ, ಆಯೋಧ್ಯಾನಗರವು ರಾಜಧಾನಿಯಾಗಿದ್ದು ಇಕ್ಷ್ವಾಕು ವಂಶದ ಚಕ್ರವರ್ತಿಗಳಿಂದ ಆಳಲ್ಪಡುತ್ತಿದ್ದ ಒಂದು ದೇಶ.

**ಕೊಶ(ಪ)ಶಾಯಿಕಾ ಕೋಶ(ಷ) ಶಾಯಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸಣ್ಣ ಕತ್ತಿ. ಕೊಶೋ (ಪ) ಶತೇ - ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನ) "ಫ್ವಲ್" (3-1-133)।

**ಕೊಶಾ(ಪಾ)ಗಾರ ಕೋಶಾ(ಷಾ) ಗಾರ (ನಂ)** ಬೊಕ್ಕಸ, ಬಿಜಾನೆ, ಹಣವನ್ನು ಶೇಖರಿಸಿಡುವ ಮನೆ.

**ಕೊಶಾ(ಪಾ)ತಕೀ ಕೋಶಾ(ಷಾ) ತಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಕಹಿ ಹೀರೆ ಗಿಡ. 2. ಪಡವಲ ಗಿಡ. ಕೊಶ(ಪ)ಮತತಿ - ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನ) "ವುನ್" (3ಂ 2-33)।

**ಕೊಶಾ(ಪಾ)ಧಿಪತಿ ಕೋಶಾ(ಷಾ) ಧಿಪತಿ (ಪುಂ)** 1. ಧನಾಧ್ಯಕ್ಷ, ಬೊಕ್ಕಸದ ಅಧಿಕಾರಿ. ಕೊಶ(ಪ)ಸ್ಯಾಧಿಪತಿಃ। 2. ಕುಬೇರ. ಇದೇ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ -ಅಧೀಶ: -ಅಧೀಶಃ, -ಅಧ್ಯಕ್ಷ: -ಅಧ್ಯಕ್ಷಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೊಶಿ(ಪಿ)ನ್ ಕೋಶಿ(ಷಿ)ನ್ (ವಿಂ)** ಕೋಶವುಳ್ಳವನು, ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ, ಹಣವಂತ. ಕೊಶೋಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (4-2-114)।

**ಕೊಶಿ(ಪಿ) ಕೋಶೀ(ಷೀ) (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ತೊಗಲಿನ ಪಾದರಕ್ಷೆ, ಜಪ್ಪಲಿ. "ಪನ್ನಂಧ್ರಿ ಪಾದವಿರಜಾಃ ಕೊಶಿ ಪಾದರಥಿ ಭವೇತ್" ಹಾರಾಂ।

**ಕೋಷ ಕೋಷ (ಪುಂ)** "ಕೊಶ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

**ಕೊಶ ಕೋಷ (ಪುಂ)** 1. ಮನೆಯ ಒಳ ಕೊಠಡಿ. 2. ಹೊಟ್ಟೆಯ ಒಳಭಾಗ, ಒಳಹೊಟ್ಟೆ. 3. ಉಗ್ರಾಣ, ಕಣಜ, ಧಾನ್ಯವನ್ನು ತುಂಬುವ ಮನೆ. ಕುಷ (ನಿಷ್ಕರ್ಷ) "ಯನ್" (3ಂ 2-4)। 4. ಹೊಟ್ಟೆಯೊಳಗಿನ ಅಂಗಗಳು, ಅಂತರವಯವಗಳು, ಕರುಳು ಯಕೃತ್ತು ಹೃದಯ ಮುಂತಾದುವು. (ವಿಂ) 5. ತನ್ನದಾದ, ಸ್ವಂತವಾದ. "ಕೊಶಃ ಕುಸುಲೇ ಚಾತಮೀಯೇ ಮಧ್ಯೇ ಕುಕ್ಷೇಗೃಹಸ್ಯ ಚ" ಮೇದಿಂ।



ನಾನಾರ್ಥರತ್ನಮಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಪುನಃ. “ಕುಶೇರಂತಗೃಹಸ್ಯಾಂತಃ  
ಕುಮೇ ಕೊಠಪಾಲಮ್” ನಾನಾರ್ಥರಂ.

**ಕೊಠಪಾಲ ಕೋಷ್ಠಪಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಉಗ್ರಾಣವನ್ನು  
ರಕ್ಷಿಸುವವನು. ಕೊಠ ಪಾಲಯತಿ—ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿच्  
“ಅನ್” (೩-೨-೧) 2. ಪೋಲೀಸಿನವನು, ಪೋಲೀಸು  
ಪಾದೆ, ನಗರ ರಕ್ಷಕ.

**ಕೊಠಾಗಾರ ಕೋಷ್ಠಾಗಾರ** (ನಂ) 1. ಧಾನ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು  
ಕೂಡಿಸಿಡುವ ಮನೆ, ಉಗ್ರಾಣ. ಕೊಠಮಗಾರಮಿವ. “ತತಃ  
ಪರ್ಯಾಪ್ತಭರಿತಕೊಠಾಗಾರಂ ಮಾಸಶೋಣಿತಮ್ ಗೃಹಂ ಭವಿಷ್ಯತಿ”  
ವೇಣೀಂ ೩. 2. ಬೊಕ್ಕಸ, ಧನಗೃಹ, ಖಜಾನೆ.

**ಕೊಠಾಗಾರಿಕ ಕೋಷ್ಠಾಗಾರಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಕೋಷ್ಠ  
ಗಾರದಲ್ಲಿ ನಿಯುಕ್ತನಾದವನು, ಉಗ್ರಾಣದ ಅಧಿಕಾರಿ,  
ಉಗ್ರಾಣದ ಪಾರುಪತ್ಯಗಾರ. ಕೊಠಾಗಾರೆ ನಿಯುಕ್ತ: “ಠನ್”  
(೪-೪-೭೦) 2. ಕೋಷ್ಠಾಗಾರದಲ್ಲಿರುವ, ಉಗ್ರಾಣ  
ದಲ್ಲಿರುವ.

**ಕೊಠಾಗಾರಿನ್ ಕೋಷ್ಠಾಗಾರಿನ್** (ಪುಂ) ಕಣಜದ ಹುಳು.  
**ಕೊಠಾಗ್ನಿ ಕೋಷ್ಠಾಗ್ನಿ** (ಪುಂ) ಹೊಟ್ಟೆಯೊಳಗಿನ ಅಗ್ನಿ,  
ತಿಂದ ಆಹಾರವನ್ನು ಜೀರ್ಣವಾಗಿಸುವ ಒಂದು ಶಕ್ತಿ.

**ಕೋಣ ಕೋಷ್ಠ** (ನಂ) 1. ಸ್ವಲ್ಪ ಬಿಸಿ. ಕು ಇಷದ್ವಣಮ್.  
ಕೋ: ಕಾದೇಶ: (೬-೩-೧೦೭) (ವಿಂ) 2. ಸ್ವಲ್ಪ ಬಿಸಿಯಾಗಿ  
ರುವ, ಬೆಚ್ಚಗಿರುವ. “ಭುವಂ ಕೋಣೇನ ಕುಂಡೋಘ್ನಿ ಮೇಧೇನಾವ-  
ಭೃಥಾದಪಿ” ರಘುಂ ೧-೮೪.

**ಕೋಸಲ ಕೋಸಲ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಕೋಸಲ ದೇಶ. ಕುಸ  
(ಸಂಶ್ಲೇಷಣೆ) “ಕಲಚ್” (೩ಂ ೧-೧೦೬) 2. ಕೋಸಲ  
ದೇಶದ ನಿವಾಸಿಗಳು. ಸರಯೂ ನದಿಯ ಇಬ್ಬಾಗ  
ಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಕೋಸಲವು (1) ಪ್ರಾಚ್ಯಕೋಸಲ ಮತ್ತು  
(2) ಉತ್ತರ ಕೋಸಲಗಳೆಂದು ಎರಡು ಭಾಗವಾಗಿದೆ.  
ಅಯೋಧ್ಯಾ ನಗರದಿಂದ ಕೂಡಿದುದು ಉತ್ತರ ಕೋಸಲ  
ದೇಶ. “ಇತಿ ಸ್ಮ ಪೃಚ್ಛತುನುಲಮಾದೃತಃ ಪ್ರಿಯಾಸಖೀರುತ್ತರ-  
ಕೋಸಲೇಶ್ವರ:” ರಘುಂ ೩-೫. “ದಕ್ಷಿಣಾ ಯೇ ಚ ಪಂಚಾಲಾಃ  
ಪೂರ್ವಾಃ ಕುಂತಿಷು ಕೋಸಲಾಃ” ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೧೪-೨೭.

**ಕೋಹಲ ಕೋಹಲ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ವಿಧ ವಾದ್ಯ.  
2. ನಾಟ್ಯಶಾಸ್ತ್ರಪ್ರವರ್ತಕರಾದ ಒಬ್ಬ ಯಜ್ಞ. ಕೌ  
ಹಲತಿ—ಹಲ (ವಿಲೇಖನೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪).  
“ಕೋಹಲೋ ವಾದ್ಯಭೇದಃ ಸ್ಯಾತ್ ನಾಟಕಶಾಸ್ತ್ರಪ್ರವರ್ತಕಃ”  
ಮೇದಿಂ. 3. ಮದ್ಯ.

**ಕೌಕೃತ್ಯ ಕೌಕೃತ್ಯ** (ನಂ) 1. ಅಕೃತ್ಯ, ಅಕಾರ್ಯ, ಅಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ ಕಾರ್ಯ. ಕುತಿಸಿತಂ ಕೃತ್ಯಮ್—ಸ್ವಾರ್ಥ “ಅನ್”

(೪-೪-೩೮) 2. ಅನುತಾಪ, ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪ. “ಕೌಕೃತ್ಯ-  
ಮನುತಾಪೇ ಸ್ಯಾತ್ ಅಯುಕ್ತಕರಣೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ.

**ಕೌಕೃಕುಟ ಕೌಕೃಟ** (ನಂ) 1. ಕುಕ್ಕುಟಾಸನ, ಯೋಗದ  
ಅಂಗಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ಆಸನದ ಒಂದು ಭೇದ. (ವಿಂ) 2.  
ಕುಕ್ಕುಟಸಂಬಂಧವಾದ, ಕೋಳಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
ಕುಕ್ಕುಟಸ್ಯೇದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦).

**ಕೌಕೃಕುಟಿಕ ಕೌಕೃಟಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಷಧಾರಿ, ಮಂಚಕ,  
ಮಾಯಾವಿ. 2. ಕೃಮಿಕೀಟಾದಿಗಳು ಕಾಲಿಗೆ ಸಿಕ್ಕುವು  
ದೆಂಬ ಭಯದಿಂದ ಕೋಳಿಯು ಕಾಲಿಡುವಷ್ಟು ಮಾತ್ರ  
ಪ್ರದೇಶವನ್ನು ನೋಡಿಕೊಂಡು ನಡೆಯುವ ಸಂನ್ಯಾಸಿ,  
ಪ್ರಾಣಿಹಿಂಸೆಯ ಭಯದಿಂದ ತಾನು ಹೆಜ್ಜೆಯಿಡುವ ಜಾಗ  
ವನ್ನು ಮಾತ್ರ ನೋಡಿಕೊಂಡು ನಡೆಯುವ ಭಿಕ್ಷುಕ.  
ಕುಕ್ಕುಟಿ ಮಾಯಾ ಕುಕ್ಕುಟಿಪಾದಪತನಾರ್ಹಪ್ರದೇಶಂ ಚ ಪश्यತಿ—  
“ಠಕ್” (೪-೪-೪೬). “ಅಥ ಕೌಕೃಕುಟಿಕೋಽದೂರಪ್ರೇರಿತಾಕ್ಷಃ  
ಚ ದಾಮ್ಭಿಕಃ” ಮೇದಿಂ.

**ಕೌಕೃಕುಟಿಕಂದಲ ಕೌಕೃಟಿಕಂದಲ** (ಪುಂ) ಒಂದು  
ಜಾತಿಯ ಸರ್ಪ. “ಕೌಕೃಕುಟಿಕಂದಲಃ. ಗೋನಾಸಗೋನಸೌ”  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಕೌಕ್ಷ ಕೌಕ್ಷ** (ವಿಂ) 1. ಹೊಟ್ಟೆಗೆ ತೊಡಿಸುವ ಒಡವೆ  
ಮುಂತಾದುದು. ಕುಕ್ಷೌ ಭವ: “ಅನ್” (೪-೩-೫೩).  
2. ಹೊಟ್ಟೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕುಕ್ಷೇರಿದಮ್ “ಅನ್”  
(೪-೩-೧೨೦).

**ಕೌಕ್ಷಕ ಕೌಕ್ಷಕ** (ವಿಂ) ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿರುವ, ಉದರ  
ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. ಕುಕ್ಷೌ ಭವ: “ವುಜ್” (೪-೨-೧೨೭).

**ಕೌಕ್ಷೇಯಕ ಕೌಕ್ಷೇಯಕ** (ಪುಂ) ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. ಕುಕ್ಷೌ  
ಭವ: (ಅಸಿ:) “ಠಕಜ್” (೪-೨-೯೬). “ಕೌಕ್ಷೇಯಕೋ  
ಮಂಡಲಾಗ್ರಃ ಕರವಾಲಃ ಕೃಪಾಣವತ್” ಅಮಂ. “ಕೌಕ್ಷೇಯಕೇಣ  
ಸನ್ನಿಹಿತವಿಷಧರೇಣಿವ ಚಂದನಲತಾ” ಕಾದಂ.

**ಕೌಚವಾರ್ಯ ಕೌಚವಾರ್ಯ** (ವಿಂ) ಕೂಚವಾರದೇಶದವ  
ನಾದ, ಕೂಚವಾರದೇಶನಿವಾಸಿಯಾದ. ಕೌಚವಾರೋ-  
ಽಭಿಜನೋಽಸ್ಯ “ಯಕ್” (೪-೩-೯೪).

**ಕೌಚುಮಾರಯೋಗ ಕೌಚುಮಾರಯೋಗ** (ಪುಂ) ಶರೀರ  
ಸಂಬಂಧವಾದ ನಷ್ಟಗಳನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸಿ ಸೌಭಾಗ್ಯ  
ವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಒಂದು ವಿಧ ಯೋಗ. ಕುಚುಮಾರಸ್ಯಾಯಂ  
ಯೋಗಃ.

**ಕೌಚ ಕೌಚ** (ಪುಂ) ಕೌಚ ಪರ್ವತ, ಮಾಲ್ಯವತ  
ಪರ್ವತ. ಕುಚ್ಛ ಎವ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಅನ್” ಪೃಷೋಂ. “ಕೌಚಃ  
ಕೌಚಶ್ಚ ಮಾಲ್ಯವಾನ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.



**ಕೌಜರ ಕೌಂಜರ** (ನಂ) 1. ಕುಂಜರಾಸನ, ಅನೆಯಂತೆ ಕೂಡುವುದು. (ವಿಂ) 2. ಅನೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕುಜರಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ರೀ-ರೀ. "ಆಪನ್ನ: ಕೌಜರೀ ಯೋನಿ-ಮಾತಮಸ್ಮೃತಿವಿನಾಶಿನೀಮ್" ಭಾಗಂ ೮-೪-೧೨।

**ಕೌಟ ಕೌಟ** (ಪುಂ) 1. ಕುಟಜವೃಕ್ಷ, ಬೆಟ್ಟಮಲ್ಲಿಗೆ ಗಿಡ. ಕೂಡೆ ಅದ್ರಿಶೃಂಗೇ ಭವ: "ಅಞ್" (೪-೩-೫೩)। (ನಂ) 2. ಮಿಥ್ಯಾವಚನ, ಸುಳ್ಳುಮಾತು. (ವಿಂ) 3. ಸ್ವಂತ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವ, ಸ್ವತಂತ್ರನಾದ, ಪರಾಧೀನನಲ್ಲದ. ಕುಟಾ ಭವ: "ಅಞ್" (೪-೩-೫೩)। 4. ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ.

**ಕೌಟಕಿಕ ಕೌಟಕಿಕ** (ವಿಂ) ಮಾಂಸವನ್ನು ಮಾರುವವನು. ಕೂಟಕಂ ಮಾಂಸಕೂಟಂ ಪಣ್ಯಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೫೧)।

**ಕೌಟಜ ಕೌಟಜ** (ಪುಂ) ಬೆಟ್ಟಮಲ್ಲಿಗೆ ಗಿಡ. ಕೂಟಮೇವ ಕೌಟಮದ್ರಿಶೃಂಗಮ್ - ತತ್ರ ಜಾತ:।

**ಕೌಟತಕ್ಷ ಕೌಟತಕ್ಷ** (ಪುಂ) ಸ್ವತಂತ್ರನಾದ ಬಡಗಿ, ಊರಿನವರಿಗೆ ಅಧೀನನಲ್ಲದೆ ಸ್ವತಂತ್ರನಾಗಿ ಮರಗೆಲಸ ಮಾಡುವವನು. ಕುಟಾ ಭವ: ಕೌಟ: ಸ್ವತಂತ್ರ: ಸ ಚಾಸೀ ತಕ್ಷಾಶ್ಚ "ಠಕ್" (೪-೪-೯೫)। "ಕೌಟತಕ್ಷೋಜಧೀನಕ:" ಅಮಂ।

**ಕೌಟಸಾಕ್ಷ್ಯ ಕೌಟಸಾಕ್ಷ್ಯ** (ನಂ) ಮೋಸದ ಸಾಕ್ಷ್ಯ, ಸುಳ್ಳುಪ್ರಮಾಣ ವಚನ, ತಾನು ಹೇಳುವುದು ನಿಜವೆಂದು ಸುಳ್ಳು ಹೇಳುವುದು. ಕೂಟ: ಸಾಕ್ಷೀ - ತಸ್ಯ ಭಾವ: "ಫ್ಯಬ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ಯಸ್ಮಿನ್ ಯಸ್ಮಿನ್ ವಿವಾದೇ ತು ಕೌಟಸಾಕ್ಷ್ಯಂ ಕೃತಂ ಭವೇತ್। ತತ್ತತ್ಕಾರ್ಯಂ ನಿವರ್ತೇತ ಕೃತಂ ಚಾಪ್ಯಕೃತಂ ಭವೇತ್" ಮನುಂ ೮-೧೧೭।

**ಕೌಟಿ ಕೌಟಿ** (ಪುಂ) ಸುಳ್ಳುಸಾಕ್ಷಿಯ ಮಗ, ಸುಳ್ಳು ಹೇಳುವವನ ಮಗ. ಕೂಟಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಙ್" (೪-೧-೯೫)।

**ಕೌಟಿಕ ಕೌಟಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಬೇಡರವನು, ವ್ಯಾಧ, ಬಲೆಯನ್ನು ಬೀಸಿ ಮೃಗಗಳನ್ನು ಹಿಡಿಯುವವನು. ಕೂಟೇನ ಮೃಗಬಂಧನಯನ್ತ್ರೇಣ ಚರತಿ-"ಠಕ್" (೪-೪-೮)। 2. ಮೃಗಗಳ ಮಾಂಸವನ್ನು ಮಾರಿ ಜೀವಿಸುವವನು.

**ಕೌಟಿಲಿಕ ಕೌಟಿಲಿಕ** (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಾಧ, ಬೇಡರವನು. ಕುಟಿಲಿಕಾ ವ್ಯಾಧಾನಾಂ ಗತಿವಿಶೇಷ: - ಕುಟಿಲಿಕಯಾ ಹರತಿ "ಅಞ್" (೪-೪-೧೮)। 2. ಕಮ್ಮಾರ, ಕಬ್ಬಿಣದ ಕೆಲಸಗಾರ. ಕುಟಿಲಿಕಾ ಕರ್ಮಾರೋಪಕರಣಭೂತಂ ಲೋಹಮ್-ಕುಟಿಲಿಕಯಾ ಹರತಿ "ಅಞ್" (೪-೪-೧೮)।

**ಕೌಟಿಲ್ಯ ಕೌಟಿಲ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಜಾಣ್ಮೆ, ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಬರೆದ ಒಬ್ಬ ಮುನಿ. ಕುಟಿಲ ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಫ್ಯಬ್"

(ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪)। "ಕೌಟಿಲ್ಯ: ಕುಟಿಲಮತಿ: ಸ ಏಷ ಯೇನ ಕ್ರೋಧಾನ್ತೋ ಪ್ರಸಭಮದಾಹಿ ನಂದವಂಶ:" ಮುದ್ರಾಂ ೧-೭। [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಚಾಣಕ್ಯ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] (ನಂ) 2. ವಕ್ರತೆ, ಡೊಂಕಾಗಿರುವಿಕೆ. ಕುಟಿಲಸ್ಯ ಭಾವ: "ಫ್ಯಬ್" (೪-೧-೧೨೪)। 3. ಅಪ್ರಾಮಾಣಿಕತೆ, ಠಕ್ಕು, ಅನೀತಿ, ಮೋಸ. "ಆಜನ್ಮಸಿದ್ಧಂ ಕೌಟಿಲ್ಯಂ ಕ್ಷಲಸ್ಯ ಚ ಹಲಸ್ಯ ಚ। ಸೌಧು ತಯೋರ್ಮುಖಾಕ್ಷೇಪಮಲಮೇಕೇವ ಸಾ ಕ್ಷಮಾ"।

**ಕೌಟೀರ್ಯ ಕೌಟೀರ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ವತಂತ್ರ, ಅಧೀನನಿರ್ದವನು. 2. ಅಸಹಾಯ, ಒಬ್ಬಂಟಿಗ. ಕುಟೀರ: ಕೇವಲ: ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಫ್ಯಬ್"। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರ್ಯಾ-ರ್ಯಾಫ. 3. ದುರ್ಗಾರ ದೇವಿ.

**ಕೌಟುಂಬ ಕೌಟುಂಬ** (ವಿಂ) 1. ಕುಟುಂಬಭರಣಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ ದ್ರವ್ಯ. ಕುಟುಂಬಂ ತದ್ಭರಣಂ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಅಞ್"। 2. ಕುಟುಂಬಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಕುಟುಂಬಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕೌಟುಂಬಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಕುಟುಂಬಭರಣದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದ, ಸಂಸಾರಿ. ಕುಟುಂಬೇ ಪ್ರಸೃತ: "ಠಕ್"। "ಪದೇಪದೇ-ಭ್ಯಂತರವಹ್ನಿನಾದಿತ: ಕೌಟುಂಬಿಕ: ಕ್ಷುಧ್ಯತಿ ವೈ ಜನಾಯ" ಭಾಗಂ ೪-೧೩-೮। 2. ಕುಟುಂಬದಲ್ಲಿರುವವನು, ಕುಟುಂಬಕ್ಕೆ ಸೇರಿದವನು. ಕುಟುಂಬೇ ಭವ: "ಠಕ್" (ವಾಂ ೪-೩-೬೦)। "ಅಥ ಚ ಯತ್ರ ಕೌಟುಂಬಿಕಾ ದಾರಾಪತ್ಯಾದಯೋ ನಾಮ್ನಾ ಕರ್ಮಣಾ ವೃಕಸೃಗಾಲಾ ಏವಾನಿಚ್ಛತೋಽಪಿ ಕದರ್ಯಸ್ಯ ಕುಟುಂಬಿನ: ತರಣವತ್ಸರಕ್ಷಯಮಾಣಂ ಮಿಷತೋಽಪಿ ಹರಂತಿ" ಭಾಗಂ ೪-೧೪-೩।

**ಕೌಡವಿಕ ಕೌಡವಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಅಚ್ಚೇರು ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಬಿತ್ತಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಪ್ರದೇಶ (ಭೂಮಿ). ತಪ್ಯತೇ-ಸ್ಮಿನ್ನಿತಿ ವಾಪ: ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ - ಕುಡವಸ್ಯ ವಾಪ: "ಠಕ್" (೪-೧-೪೫)। 2. ಅಚ್ಚೇರು ಅಕ್ಕಿಯನ್ನು ಬೇಯಿಸುವ ಪಾತ್ರೆ. 3. ಅಚ್ಚೇರು ಅಕ್ಕಿಯ ಅನ್ನವನ್ನು ಬೇಯಿಸುವವನು. ಕುಡವಂ ಪವತಿ "ಠಕ್" (೪-೧-೫೨)। 4. ಅಚ್ಚೇರು ಅಳತೆಯ ಧಾನ್ಯ. ಕುಡವ: ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೫೭)। 5. ಅಚ್ಚೇರು ಧಾನ್ಯವನ್ನು ತರುವವನು. ಕುಡವಮವಹರತಿ "ಠಕ್" (೪-೧-೫೨)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ವಿಕೀ-ವಿಕೀ.

**ಕೌಣಪ ಕೌಣಪ** (ಪುಂ) ರಾಕ್ಷಸ. ಕುಣಪಸ್ಯ ಭಕ್ಷಣಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ "ಅಞ್" (೪-೪-೬೧)। "ಅಹೋ ಸಂಪ್ರತಿ ಇತಸ್ತತ: ಪ್ರವರ್ತಮಾನಕೌಣಪನಿಕರಸ್ಯ ಮಹತೀ ರೌದ್ರತಾ" ಮಾಲತೀಂ ೫।



ಕೌಣಪದಂತ ಕೌಣಪದಂತ (ಪುಂ) ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯರು.  
ಕೌಣಪಸ್ಯ ದಂತಾ ಇವ ದಂತಾ ಯಸ್ಯ। “ಭೀಷ್ಮ: ಕೌಣಪದಂತಶ್ಚ  
ಸ್ವೇಚ್ಛಾಮೃತು: ಪುರಾವಸು:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಕೌಣಡಾಯನ ಕೌಂಡಾಯನ (ವಿಂ) 1. ಕುಂಡದ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ  
ಇರುವ ಪ್ರದೇಶ. 2. ಕುಂಡದಿಂದ ಉಂಟಾದ.

ಕೌಂಡಿನ ಕೌಂಡಿನ (ಪುಂ) ಕೌಂಡಿನಯುಷಿಯ ಶಿಷ್ಯ.  
ಕೌಂಡಿನಸ್ಯ ಛಾತ್ರ: “ಅನ್” (೪-೨-೧೧೧)। ಯಲೋಪ:  
(೬-೪-೧೫೧)।

ಕೌಂಡಿನೇಯಕ ಕೌಂಡಿನೇಯಕ (ವಿಂ) 1. ಕುಂಡಿನ ನಗರ  
ದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. 2. ಕುಂಡಿನ ನಗರದಲ್ಲಿ ಇರುವ. ಕುಂಡಿನ  
ಜಾತ: ಭವೋ ವಾ “ಢಕನ್” (೪-೨-೧೫)।

ಕೌಂಡಿನ್ಯ ಕೌಂಡಿನ್ಯ (ಪುಂ) ಕುಂಡಿನಯುಷಿಯ ಗೋತ್ರ  
ದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಕುಂಡಿನಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ “ಯನ್”  
(೪-೧-೧೦೫)।

ಕೌತಸ್ಕುತ ಕೌತಸ್ಕುತ (ವಿಂ) ಎಲ್ಲರಿಂದ ಬಂದಿರುವ?  
ಕುತ: ಕುತ: ಆಗತ: ? ವೀಪ್ಸಾयां ದ್ವಿರ್ಭಾವ: “ಅನ್”  
(೪-೩-೭೪)। ವಿಸರ್ಗಸ್ಯ ಸ: (೮-೩-೪೮)। “ಯದ್ವಸ್ತಿ  
ನಾಕೇ ಭುವನೇಶ್ವರಾಧಸ್ತದಾ ನ ಕೌತಸ್ಕುತಲೋಕಬಾಧ:” ನೈಷಂ  
೧೦-೧೨೫।

ಕೌತುಕ ಕೌತುಕ (ನಂ) 1. ಕುತೂಹಲ, ಅಶ್ಚರ್ಯದ  
ವಿಷಯವನ್ನು ನೋಡುವ ಅಥವಾ ತಿಳಿಯುವ ಆಸೆ.  
ಕುತುಕಸ್ಯ ಭಾವ: “ಅನ್” (೫-೧-೧೩೦)। “ಭರ್ತೃನ್ಯಾ  
ಮುಹುರಭಿಲಾಷತಾ ನಿಧಯೇ ನೈವಾಹೋ ವಿರಮತಿ ಕೌತುಕಂ ಪ್ರಿಯಮ್”  
ಮಾಧಂ ೮-೬೯। “ನವನಿಧುವನಲಿಲಾ: ಕೌತುಕೇನಾತಿವೀಕ್ಷ್ಯ”  
ಮಾಧಂ ೧೧-೧೮। 2. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಇಚ್ಛೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ.  
“ಪಶ್ಯಂತ್ಯಾಸ್ತಂ ನೃಪಂ ತಸ್ಯಾ ಲಜ್ಜಾಕೌತುಕಯೋರ್ದಶಿ” ಕಥಾಸಂ।  
3. ಉತ್ಸವ, ಹಬ್ಬ. “ಕಥಂ ಸುತಾया: ಪಿತೃಗೃಹಕೌತುಕಂ ನಿಶಮ್ಯ  
ದೇಹ: ಸುರವರ್ಯ ನೇಜ್ಜತೇ” ಭಾಗಂ ೪-೩-೧೩। 4. ಕ್ರೇಡೆ, ಆಟ,  
ವಿನೋದ. 5. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. 6. ಸಾಂಪ್ರದಾಯಿಕ  
ವಾದ ಮಂಗಳಕಾರ್ಯ, ವಂಶಪರಂಪರೆಯಿಂದ ನಡೆಯುವ  
ಮಂಗಳಕಾರ್ಯ. “ಪತಿವ್ರತಾಭಿ: ಪರಿಗೃಹ್ಯ ನಿನ್ಯ  
ಕಲ್ಪತಾಸನಂ ಕೌತುಕವೇದಿಮಧ್ಯಮ್” ಕುಮಾಂ ೭-೧೨। 7. ಕಂಕಣ,  
ವಿವಾಹಾದಿ ಶುಭಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಕೈಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಮಂಗಳ  
ಸೂತ್ರ. “ವೈವಾಹಿಕ: ಕೌತುಕಸಂವಿಧಾನೈಗೃಹೇ ವ್ಯಗ್ರಪುರಂದ್ರ-  
ವರ್ಗಮ್” ಕುಮಾಂ ೭-೨। 8. ಸುಖಾನುಭವದ ಕಾಲ.  
9. ಸಂಗೀತ ನೃತ್ಯ ಮೊದಲಾದುವು. “ಕೌತುಕಂ ತ್ವಮಿಲಾಪ  
ಸ್ಯಾದುತ್ಸವೇ ನರ್ಮಹರ್ಷಯೋ:। ತಥಾ ಪರಂಪರಾಯಾತಮಜ್ಜಲೇ ಚ  
ಕುತುಹಲೇ। ವಿವಾಹಸೂತ್ರಗೀತಾದಿಭೋಗಯೋರಪಿ ನ ದ್ವಯೋ:” ಮೇದಿಂ।

“ಕೌತುಕಂ ನರ್ಮಣಿಚ್ಛಾಯಾಮುತ್ಸವೇ ಕುತುಕೇ ಮುಡಿ। ಪಾರಂಪರ್ಯ-  
ಗತಸ್ಥಾನೇ ಮಜ್ಜಲೋದಾಹಸೂತ್ರಯೋ:। ಗೀತಾದಿ ಭೋಗಕಾಲೇ ಚ”  
ಹೇಮಂ।

ಕೌತುಕಕ್ರಿಯಾ ಕೌತುಕಕ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿವಾಹ  
ಮಹೋತ್ಸವ ಮೊದಲಾದ ಮಂಗಳಕಾರ್ಯ. “ಕನ್ಯಕಾ-  
ತನಯಕೌತುಕಕ್ರಿಯಾಂ ಸ್ವಪ್ರಭಾವಸದೃಶೀಂ ವೀತೇನತು:” ರಘುಂ  
೧೧-೫೩।

ಕೌತುಕಗೃಹ ಕೌತುಕಗೃಹ (ನಂ) 1. ಶಯ್ಯಾಗೃಹ,  
ಮಲಗುವ ಮನೆ. 2. ವಿನೋದ ಗೃಹ. 3. ವಿವಾಹ  
ಮಂದಿರ, ಕಲ್ಯಾಣ ಗೃಹ.

ಕೌತುಕತೋರಣ ಕೌತುಕತೋರಣ (ನಂ) ವಿವಾಹ ಹಬ್ಬ  
ಮೊದಲಾದ ಮಹೋತ್ಸವಗಳಲ್ಲಿ ಕಟ್ಟುವ ತೋರಣ.  
“ಗೋಪುರದ್ವಾರಮಾರ್ಗೇಷು ಕೃತಕೌತುಕತೋರಣಾಮ್। ಚಿತ್ರಧ್ವಜಪತಾಕಾಗ್ರ-  
ರಂತ:ಪ್ರತಿಹತಾತಪಾಮ್” ಭಾಗಂ ೧-೧೧-೧೩।

ಕೌತುಕಮಂಗಳ ಕೌತುಕಮಂಗಳ (ನಂ) ಮಂಗಳಕಾರ್ಯ,  
ಕಂಕಣಧಾರಣಮಹೋತ್ಸವ.

ಕೌತುಕಮಯ ಕೌತುಕಮಯ (ವಿಂ) ನೋಡಬೇಕೆಂಬ  
ಅಥವಾ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಬೇಕೆಂಬ ಆಸೆಯಿಂದ ತುಂಬಿರುವ.

ಕೌತುಕರಸ ಕೌತುಕರಸ (ಪುಂ) 1. ಕ್ರೇಡೆ, ಆಟ, ವಿನೋದ.  
2. ಸಂಗೀತ. 3. ಆನಂದ, ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ.

ಕೌತುಕವತ್ ಕೌತುಕವತ್ (ವಿಂ) ಕುತೂಹಲದಿಂದ  
ಕೂಡಿದ, ಆಸೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕೌತುಕ “ಮತುಪ್”  
(೫-೨-೧೪)। “ವಿದ್ಯಾ ವಿದರ್ಭೇಂದ್ರಸುತಾಧರೋಷೇ ನೃತ್ಯಂತಿ  
ಕಲ್ಪಂತರಭೇದಭಾಜ:। ಇತಿವ ರೇಖಾಭಿರಪಶ್ರಮಸ್ತಾ: ಸಂಖ್ಯಾತ-  
ವಾನ್ ಕೌತುಕವಾನ್ ವಿಧಾತಾ” ನೈಷಂ ೭-೪೧। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)। -ವತ್ತಿ-ವತ್ತಿ.

ಕೌತುಕಾಗಾರ ಕೌತುಕಾಗಾರ (ನಂ) 1. ವಿನೋದ ಗೃಹ.  
2. ವಿವಾಹ ಮಂದಿರ, ಕಲ್ಯಾಣ ಮಂಟಪ. 3. ಶಯ್ಯಾಗೃಹ,  
ಮಲಗುವ ಮನೆ. “ಕನಕಕಲಶಯುಕ್ತಂ ಭಕ್ತಿ-  
ಶೋಭಾಸನಾಥಂ ಕ್ಷಿತಿವಿರಚಿತಶಯ್ಯಂ ಕೌತುಕಾಗಾರಮಾಗಾತ್”  
ಕುಮಾಂ ೭-೧೪।

ಕೌತುಕಿನ್ ಕೌತುಕಿನ್ (ವಿಂ) 1. ನೋಡುವ ಅಥವಾ  
ತಿಳಿಯುವ ಆಸೆಯುಳ್ಳ. ಕೌತುಕಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:”  
(೫-೨-೧೧೫)। “ದಧಾನಮಾಶಾಸು ಚರಿಣ್ಣು ದುರ್ಯಶ: ಸ  
ಕೌತುಕೀ ತತ್ರ ದದರ್ಶ ಕೇತಕಮ್” ನೈಷಂ ೧-೭೮। 2. ಆಸೆ  
ಯುಳ್ಳ, ಅಭಿಲಾಷೆಯುಳ್ಳ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್”  
(೪-೧-೫)। -ಕಿನಿ-ಕಿನಿ. “ಯಸ್ತನ್ವಿ ಭರ್ತಾ ಧುಸೃಣೇನ  
ಸಾಯಂ ದಿಶ: ಸಮಾಲಂಬನಕೌತುಕಿನ್ಯಾ:” ನೈಷಂ ೮-೮೦।



**ಕೌತುಹಲ ಕೌತೂಹಲ** (ನಂ) 1. ಆಸೆ, ಆಸೆಕ್ಷೆ. 2. ಉತ್ಸಾಹ, ನೋಡುವ ಅಥವಾ ತಿಳಿಯುವ ಆಸೆ. ಕುತುಹಲಸ್ಯ ಭಾವ: "ಅಣ್" (೪-೧-೧೩೦). 3. ಆಶ್ಚರ್ಯದ ದೃಶ್ಯ. "ವಿರೋಧಿವರ್ಣಾಭರಣಾಶ್ಮಭಾಸಾಂ ಮಲ್ಲಾಜಿಕೌತುಹಲಮೀಕ್ಷಮಾ-  
ಗಾಮ್" ನೆಪಂ ೧೦-೯೬. (ವಿಂ) 4. ಆಶ್ಚರ್ಯಕರ ವಾದ. 5. ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ.

**ಕೌತುಹಲಿನ್ ಕೌತೂಹಲಿನ್** (ವಿಂ) ಕುತೂಹಲವುಳ್ಳ, ಆಸೆಯುಳ್ಳ. ಕೌತುಹಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫).  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫). -ಹಲಿನಿ -ಹಲಿನೀ.  
"ಶ್ರುತೇತಿ ವಾಕ್ಯಂ ಹೃದಯಪ್ರಿಯಾಯಾ: ಕೌತುಹಲಿನ್ಯಾ ವಿಮಲ-  
ಸ್ಮಿತಶ್ರೀ:" ಕುಮಾಂ ೧೧-೯.

**ಕೌತುಹಲ ಕೌತ್ಸ** (ಪುಂ) 1. ವರತಂತುಮಹರ್ಷಿಯ ಶಿಷ್ಯ, ಕುತ್ಸಯುಷಿಯ ಮಗ. ಕುತ್ಸಸ್ಯ ಶ್ರುತೇರಪತ್ಯಮ್ "ಅಣ್" (೪-೧-೧೧೪). "उपात्तविद्यो गुरुदक्षिणार्थी कौत्सः प्रपेदे वरतन्तुशिष्यः" ರಘುಂ ೫-೧. ಬಹುವಚನದಲ್ಲಿ ಗೋತ್ರಪ್ರತ್ಯಯಕ್ಕೆ "ಲುಕ್" (೨-೪-೬೫). ಕುತ್ಸಾ: ಕುತ್ಸಾಃ. (ನಂ) 2. ಕುತ್ಸಯುಷಿಯು ಕಂಡು ಗಾನಮಾಡಿದ ಸಾಮ. ಕುತ್ಸೇನ ದೃಷ್ಟಂ ಸಾಮ. (ವಿಂ) 3. ಕುತ್ಸಯುಷಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕುತ್ಸಸ್ಯಾಯಮ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೨೦).

**ಕೌದಾಲಿಕ ಕೌದಾಲೀಕ** (ಪುಂ) ಬೆಸ್ತನಿಂದ ಅಗಸರ ಹೆಂಗಸು ನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು.

**ಕೌದ್ರವೀಣ ಕೌದ್ರವೀಣ** (ನಂ) ಹಾರಕವನ್ನು ಬೆಳೆಯುವ ಭೂಮಿ. ಕೌದ್ರವಸ್ಯ ಭವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ "ಅಣ್" (೪-೨-೧).  
ಭೂಮಿ.

**ಕೌನಖ್ಯ ಕೌನಖ್ಯ** (ನಂ) 1. ನಖ ರೋಗ, ಉಗುರು ಕೆಟ್ಟಿರು ವುದು. ಕುನಖಸ್ಯ ಭಾವ: "ಏಜ್" (೪-೧-೧೨೪).  
"सुवर्णचौरः कौनख्यं सुरापः श्यावदन्तताम्" ಮನುಂ ೧೧-೪೯. 2. ನಖ ರೋಗದಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. ಕುನಖಿನೋ ಭಾವ: "ಏಜ್" (೪-೧-೧೨೪).

**ಕೌಂತಿಕ ಕೌಂತಿಕ** (ಪುಂ) ಕೊಂತವೆಂಬ ಆಯುಧದಿಂದ ಯುದ್ಧ ಮಾಡುವವನು, ಚೂಪಾದ ಎಸೆಗೋಲೇ ಆಯುಧ ವಾಗಿ ಉಳ್ಳವನು. ಕುಂತ: ಪ್ರಹರಣಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೫೭).

**ಕೌಂತೀ ಕೌಂತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರೇಣುಕವೆಂಬ ಒಂದು ಗಂದಿಗರ ವಸ್ತು. ಕುಂತಿಷು ದೇಶೇಭಿ ಭವಾ "ಅಣ್" (೪-೩-೫೩).

**ಕೌಂತೀಯ ಕೌಂತೀಯ** (ಪುಂ) 1. ಕುಂತಿಯ ಮಗ. (1) ಧರ್ಮರಾಜ, (2) ಭೀಮ ಮತ್ತು (3) ಅರ್ಜುನ. ಕುಂತ್ಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೦). "कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति" ಗೀತಾ ೯-೩೧. 2. ಅರ್ಜುನ ವೃಕ್ಷ, ಕೆಂಪು ಮತ್ತಿಮರ.

**ಕೌಪ ಕೌಪ** (ನಂ) 1. ಬಾವಿಯ ನೀರು. ಬಾವಿಯ ನೀರು ಉಪ್ಪಾಗಿದ್ದರೆ ಪಿತ್ತವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದು. "राक्षारं पित्तलं कौपं श्लेष्मघ्नं दीपनं लघु" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೫-೩೩. (ವಿಂ) 2. ಕೂಪಸಂಬಂಧವಾದ, ಬಾವಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಕೂಪಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೨೦). ವಸಂತ ಮತ್ತು ಗ್ರೀಷ್ಮ ಋತುಗಳಲ್ಲಿ ಬಾವಿಯ ಅಥವಾ ಚೆಲುವೆಯ ನೀರನ್ನು ಕುಡಿಯಬೇಕು. "वसन्ते कौपं प्राश्रवणं वा सेवेत, ग्रीष्मेऽप्येवम्" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೫-೮.

**ಕೌಪೀನ ಕೌಪೀನ** (ನಂ) 1. ಅರ್ಕಾಯ, ಪಾಪಕಾರ್ಯ. ಕೂಪೇ ನರಕೇ ಪತನಮರ್ಹತಿ "ಅಣ್" (೪-೨-೨೦). ನಿಪಾಂ. 2. ಶರೀರದ ಗುಹ್ಯಪ್ರದೇಶ, ಪುರುಷಲಿಂಗ. 3. ಗುಹ್ಯ ಪ್ರದೇಶವನ್ನು ಮುಚ್ಚುವ ಚೂರು ಬಟ್ಟೆ, ಲಂಗೋಟಿ. "कौपीनं शतखण्डजर्जरतरं कन्या पुनस्तादृशी" ಭರ್ತೃಂ ೩-೯೧. "कौपीनं स्यादकार्येऽपि चीरगुह्यप्रदेशयोः" ಮೇದಿಂ.

**ಕೌಬೇರ ಕೌಬೇರ** (ವಿಂ) ಕುಬೇರನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕುಬೇರ-  
ಸ್ಯಾಯಮ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೨೦). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫). -ಕೌ-ಕೌ. ಕುಬೇರನ ದಿಕ್ಕು, ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕು. "कौबेरदिग्भागमपास्य मार्गमागस्त्यमुष्णांशु-  
रिवावतीर्णः" ಮಾಧಂ ೩-೧. "ततः प्रतस्थे कौबेरीं भास्वानिव रघुदिशम्" ರಘುಂ ೪-೬೬.

**ಕೌಮಾರ ಕೌಮಾರ** (ಪುಂ) 1. ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾದ ವನು, ಯಾವ ಪತಿಯನ್ನೂ ಸೇರದಿರುವ (ಯಾರನ್ನೂ ಮದುವೆಯಾಗದಿರುವ) ಕುಮಾರಿಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾದ ವನು. ನ ಪೂರ್ವ: ಪತಿಯಸ್ಯಾ: ತಾಮಪೂರ್ವಪತಿಮ್ ಕುಮಾರೀಮ್  
उपपन्नः - ಕುಮಾರೀ "ಅಣ್" (೪-೨-೧೩). ನಿಪಾಂ. 2. ಕುಮಾರ, ಬಾಲಕ. ಕುಮಾರ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಣ್" (೪-೪-೩೮). (ನಂ) 3. ಜೀವಿತಕಾಲದ ಒಂದು ವಯಸ್ಸು, ಬಾಲ್ಯ ಯೌವನ ಮೊದಲಾದ ಅವಸ್ಥೆಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಕುಮಾರಸ್ಯ ಭಾವ: "ಅಜ್" (೪-೧-೧೨೯). "देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा। तथा देहान्तरप्राप्तिः धीरस्तत्र न मुह्यति" ಗೀತಾ ೨-೧೩. (ವಿಂ) 4. ಕುಮಾರನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕುಮಾರಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೨೦). "तत्र विद्याव्रतस्नातः कौमारं व्रतमास्थितः" ಭಾಂ ವನಂ ೯೫-೧೭. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫). -ಕೌ-ಕೌ. "कौमारीं दर्शयंश्चेष्टां प्रेक्षणीयो वनौकसाम्। हृदन्निव हसन्मुग्धबालसिंहावलोकितः" ಭಾಮೃ ೩-೨-೨೮.



**ಕೊಮಾರಭೃತ್ಯ ಕೌಮಾರಭೃತ್ಯ** (ನಂ) ಮಕ್ಕಳ ಚಿಕಿತ್ಸೆ. ಕುಮಾರನನ್ನು ಪೋಷಿಸುವ ದಾದಿಯ ಹಾಳೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ ದೋಷದ ಶಮನಕ್ಕಾಗಿಯೂ ದುಷ್ಪ್ರಗ್ರಹ (ಬಾಲಗ್ರಹ) ಗಳಿಂದಲೂ ಕೆಟ್ಟ ಸ್ವಸ್ಥಪಾನದಿಂದಲೂ ಉಂಟಾದ ವ್ಯಾಧಿಗಳನ್ನು ನಿವಾರಣೆ ಮಾಡುವುದಕ್ಕೂ ನಡೆಸುವ ಚಿಕಿತ್ಸೆ. “ಕೊಮಾರಭೃತ್ಯ ನಾಮ ಕುಮಾರಭರಣಧಾತ್ರಿ-ಕ್ಷೀರದೋಷಸಂಶೋಧನಾರ್ಥ ದುಷ್ಟಸ್ತನ್ಯಗ್ರಹಸಮುತ್ಥಾನಾಂ ಚ ವ್ಯಾಧಿನಾಮುಪಶಮನಾರ್ಥಮ್” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೧-೫.

**ಕೊಮಾರಹರ ಕೌಮಾರಹರ** (ವಿಂ) ಕನ್ಯಾವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. ಕೊಮಾರ ಹರತಿ—ಹ್ರ (ಹರಣ) “ಅಚ್” (೩-೨-೯). “ಯ: ಕೊಮಾರಹರ: ಸ ಏವ ಹಿ ವರಸ್ತಾ ಏವ ಚೈತ್ರಕ್ಷಪಾಸ್ತೇ ಚೋನ್ಮೀಲಿತಮಾಲತೀಸುರಭಯ: ಪ್ರೌಢಾ: ಕದಂಬಾನಿಲಾ:” ಸಾಂ ದಂ.

**ಕೊಮಾರಿಕೇಯ ಕೌಮಾರಿಕೇಯ** (ಪುಂ) ಕುಮಾರಿಯ ಮಗ, ಕನ್ಯಾವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ (ಮದುವೆಗೆ ಮುಂಚೆ) ಹುಟ್ಟಿದ ಮಗ, ಕನೀಸ. ಕುಮಾರಿಕಾಯಾ: ಅಪत्यಮ್ “ಠಕ್” (೪-೧-೧೨೦).

**ಕೊಮಾರೀ ಕೌಮಾರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾದ ಕನ್ಯೆ, ಬೇರೆ ಯಾರನ್ನೂ ಮದುವೆಯಾಗದವನ ಪತ್ನಿ. ಅಪೂರ್ವಪತಿ: ಕುಮಾರೀ ಪತಿಮುಪಪನ್ನಾ “ಅನ್” (೪-೨-೧೩). “ಙೀಪ್” (೪-೧-೧೫). “ಉಪಲಮ್ಯಾಮಪश्यन्त: ಕೊಮಾರೀಂ ಪತತಾಂ ವರ” ಭट्टಿಂ ೭-೯೦. 2. ಕಾರ್ತಿಕೇಯನ ಶಕ್ತಿ.

**ಕೊಮುದ ಕೌಮುದ** (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕ ಮಾಸ. ಕೌ ಮೋದಂತೇ ಜನಾ ಯಸ್ಮಿನ್—ಮುದ (ಹರ್ಷ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೬). ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಅಲುಕ್ (೬-೩-೧೪). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ದೀ-ದೀ. 2. ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಬೆಳದಿಂಗಳು. “ಕೊಮುದ: ಸ್ಯಾತ್ ಕಾರ್ತಿಕಿಕೇ ಚಂದ್ರಿಕಾಯಾಂ ತು ಕೊಮುದೀ” ಮೇದಿಂ.

**ಕೊಮುದೀ ಕೌಮುದೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಬೆಳದಿಂಗಳು. ಕುಮುದಸ್ಯೇಯಂ ಪ್ರಕಾಶಕತ್ವಾತ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦). “ಙೀಪ್” (೪-೧-೧೫). “ಆನಂದಿತೋರ್ವಿನ್ದ್ರಮುಖಾರವಿನ್ದಮಂದಂ ನುದಂತೀಂ ಹೃದಿ ಕೊಮುದೀನಾಮ್” ನೈಷಂ ೧೦-೧೦೩. 2. ಅಶ್ವಯುಜಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. “ಆಶ್ವಿನೇ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಾಂ ತು ಚರೇಜ್ಜಾಗರಣಂ ನಿಶಿ. ಕೊಮುದೀ ಸಾ ಸಮಾ-ಖ್ಯಾತಾ ಕಾರ್ಯಾ ಲೋಕವಿಭೂತಯೇ”. 3. ಕಾರ್ತಿಕಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ, ಕಾರ್ತಿಕೇಯನ ಹುಟ್ಟಿದ ದಿನ, ಕೃತ್ತಿಕೋತ್ಸವದ ದಿನ. 4. ವ್ಯಾಕರಣ ಮತ್ತು ಇತರ ಕೆಲವು ಗ್ರಂಥಗಳ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನದ ಹೆಸರು. ಆಯಾ ಗ್ರಂಥಗಳ ಅರ್ಥಪ್ರಕಾಶಕ ವಾದುದರಿಂದ ಆ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ್ಕೆ ಈ ಹೆಸರು. ಸಾಂಖ್ಯತತ್ವ-

ಕೊಮುದೀ, ಪ್ರಕ್ರಿಯಾಕೊಮುದೀ, ಲಘುಕೊಮುದೀ, ಸಿದ್ಧಾಂತಕೊಮುದೀ, ಪದಾರ್ಥಕೊಮುದೀ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೊಮುದೀಚಾರ ಕೌಮುದೀಚಾರ** (ಪುಂ) ಅಶ್ವಯುಜ ಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ಕೊಮುದಾಶ್ವನದ್ರಿಕಾಯಾಶ್ವಾರೋಷ.

“ಕೊಜಾಗರ: ಶರತ್ಪರ್ವಕೊಮುದೀಚಾರಮಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” ತ್ರಿಕಾಣಡಂ.

**ಕೊಮುದೀನಾಥ ಕೌಮುದೀನಾಥ-ಪತಿ-ಪತಿ** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ.

**ಕೊಮುದೀಮುಖ ಕೌಮುದೀಮುಖ** (ನಂ) 1. ಚಂದ್ರಿಕೆಯ ಪ್ರಾದುರ್ಭಾವ, ಬೆಳದಿಂಗಳು ಹುಟ್ಟುವುದು. 2. ದೀಪೋತ್ಸವ ತಿಥಿಯ ಪ್ರಾರಂಭ. ಕೊಮುದಾ: ಚಂದ್ರಿಕಾಯಾ: ದೀಪೋತ್ಸವ-ತಿಥೇರ್ವಾ ಮುಖಮ್. “ಅಥೇಪ್ಸಿತಂ ಭರ್ತುರಪಸ್ಥಿತೋದಯಂ ಸಖೀ-ಜನೋದ್ದೀಕ್ಷಣಕೊಮುದೀಮುಖಮ್” ರಘುಂ ೩-೧.

**ಕೊಮೋದಕೀ ಕೌಮೋದಕೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಗಡೆ. ಕೊ: ಪೃಥಿವ್ಯಾ: ಪಾಲಕತ್ವಾತ್ ಮೋದಕ: ಕುಮೋದಕೋ ವಿಷ್ಣು: ತಸ್ಯೇಯಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦). “ಕೊಮೋದಕೀ ಗದಾ ಖಡ್ಗೋ ನಂದಕ: ಕೊಸ್ತುಭೋ ಮಣಿ:” ಅಮಂ. “ನಿತ್ಯಂ ಹರೇ: ಸನ್ನಿಹಿತಾ ನಿಕಾಮಂ ಕೊಮೋದಕೀ ನಂದಯತಿ ಸ್ಮ ಚೇತ:” ಮಾಧಂ ೩-೧೮.

**ಕೊಮೋದೀ ಕೌಮೋದೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಗಡೆ. ಕುಂ ಮೋದಯತಿ—ಮುದ (ಹರ್ಷ) + ಣಿಚ್ “ಅನ್” (೩-೨-೧). ಕುಮೋದೋ ವಿಷ್ಣು: ತಸ್ಯೇಯಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦). “ಙೀಪ್” (೪-೧-೧೫).

**ಕೊಮ್ಭಕರ್ಣಿ ಕೌಂಭಕರ್ಣಿ** (ಪುಂ) ಕುಂಭಕರ್ಣನ ಮಗ. ಕುಮ್ಭಕರ್ಣಸ್ಯಾಪत्यಮ್ “ಇಚ್” (೪-೧-೧೫). “ಮುಷ್ಟಿನಾ ಕೊಮ್ಭಕರ್ಣಿ ಚ ಕ್ರುದ್ಧ: ಪ್ರಾಣೇರತೀತ್ಯಜತ್” ಭट्टಿಂ ೧೫-೧೨೦. **ಕೊಮ್ಭಕಾರಿ ಕೌಂಭಕಾರಿ** (ಪುಂ) ಕುಂಬಾರನ ಮಗ. ಕುಮ್ಭಕಾರಸ್ಯಾಪत्यಮ್ “ಇಚ್” (೪-೧-೧೫೩). ಪಕ್ಷೇ “ಞ್ಯ:” (೪-೧-೧೫೨). -ಕಾರ್ಯ:-ಕಾರ್ಯಾ: ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ವಾ “ಙೀಪ್” (ಗಂ ೪-೧-೪೫). -ಕಾರಿ-ಕಾರಿ.

**ಕೊಮ್ಭಾಯನ ಕೌಂಭಾಯನ** (ಪುಂ) 1. ಕುಂಭಕ್ಕೆ ಹತ್ತಿರದ ಪ್ರದೇಶ. ಕುಮ್ಭಸ್ಯಾದ್ವರಭವೋ ದೇಶ: “ಫಕ್” (೪-೨-೮೦). 2. ಕುಂಭವಿರುವ ಪ್ರದೇಶ. ಕುಮ್ಭೋಸ್ತಸ್ಯಸ್ಮಿನ್ ದೇಶೋ ಪಕ್ಷಾದಿ “ಫಕ್” (೪-೨-೮೦). ಈ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಕರ್ಣಾದಿ “ಫಿಜ್” (೪-೨-೮೦). ಕೊಮ್ಭಾಯನಿ: ಕೌಂಭಾಯನಿ: ಸಂಕ್ಷಾಪಾದಿ “ಞ್ಯ:” (೪-೨-೮೦). ಕೊಮ್ಭ: ಕೌಂಭ:.

**ಕೊಮ್ಭೇಯಕ ಕೌಂಭೇಯಕ** (ವಿಂ) 1. ಕುಂಭೆಯಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಸಣ್ಣ ಗಡಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. 2. ಸಣ್ಣ ಗಡಿಗೆಯಲ್ಲಿರುವ. ಕುಮ್ಭ್ಯಾಂ ಜಾತ: ಭವೋ ವಾ—ಕುಮ್ಭಿ “ಠಕ್” (೪-೨-೧೫).



**ಕೊರವ ಕೊರವ** (ಪುಂ) 1. ಕುರುರಾಜನ ಮಗ. ಕುರೋಪತ್ಯಮ್ "ಅಙ್" (೪-೧-೮೬)। 2. ಕುರುವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. "ತಮುಚ್ಚತಂ ರಥೇನೈಕಮಾಶುಕಾರಿಣಿಮಾಹವೇ | ಅನೇಕಮಿವ ಸನ್ವಾಸಾ-  
ನ್ಮೇನಿರೇ ತತ್ರ ಕೊರವಾಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೪೮-೧೮। "ಮಥ್ನಾಮಿ ಕೊರವಶತಂ ಸಮರೇ ನ ಕೋಪಾತ್" ವೇಣಿಂ ೧-೧೫। (ವಿಂ) 3. ಕುರುಸಂಬಂಧವಾದ. ಕುರೋರಿದಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಕ್ಷತ್ರಪ್ರಧನಪಿಶುನಂ ಕೊರವಂ ತದ್ಭಜೇತಾಃ" ಮೇಘಂ ೧-೪೮। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)।  
**ಕೊರವೊ ಕೊರವೊ**. "ದ್ರುಪದಃ ಕೊರವಾನ್ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಪ್ರಾಭಾವತ ಸಮಂತತಃ | ಶರಜಾಲೇನ ಮಹತಾ ಮೋಹಯನ್ ಕೊರವೀಂ ಚಮುಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೪೮-೧೭।

**ಕೊರವಕ ಕೊರವಕ** (ವಿಂ) 1. ಕುರುವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. 2. ಕುರು ದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. ಕುರೌ ಕುರುವಂಶೇ ಜಾತಃ ಕುರುಜಾತಃ ಭವೋ ವಾ "ವುಙ್" (೪-೨-೧೩೦)। 3. ಕುರುವಕ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಗೋರಂಟಿ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕುರವಕಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ಕೊರವರಾಜ ಕೊರವರಾಜ** (ಪುಂ) ಕುರು ದೇಶದ ದೊರೆ, ಕೊರವರ ದೊರೆ, ಮರ್ಯಾದೇಧನ. "ಮಾನಿನಃ ಪ್ರಣೃಪಸ್ಯ ಕೊರವರಾಜಸ್ಯ ಪದವೀಮನ್ವೇಷ್ಠುಮ್" ವೇಣಿಂ ೬।

**ಕೊರವೇಯ ಕೊರವೇಯ** (ಪುಂ) ಕುರುರಾಜನ ಮಗ. ಕುರೋ-  
ಪತ್ಯಮ್ "ಡಕ್"। "ಸಮಾ ಹಿ ಕೊರವೇಯಾಣಾಂ ವಯಂ ತೇ ಚೈವ ಪುತ್ರಕಃ"।

**ಕೊರವ್ಯ ಕೊರವ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಕುರುವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು, ಮರ್ಯಾದೇಧನ. ಕುರೋಪತ್ಯಮ್ "ಞಃ" (೪-೧-೧೭೦)। 2. ಕುರುದೇಶದ ದೊರೆ. ಕುರುಣಾಂ ರಾಜಾ "ಞಃ"। ಕೊರವ್ಯೇ ಸಾಧುಃ "ಯತ್" (೪-೪-೯೮)। ತದ್ರಾಜಸಂಜ್ಞೆಯಿಲ್ಲದ ಈ "ಯತ್" ಪ್ರತ್ಯಯಕ್ಕೆ ಬಹುವಚನದಲ್ಲಿ ಲುಕ್ ಬರುವುದಿಲ್ಲ. ಕೊರವ್ಯಾಃ। "ಕೊರವ್ಯಾಃ ಪಶವಃ ಪ್ರಿಯಾಗರಿಭವಕಲೇಶೋಪಶಾಂತಿಃ ಫಲಮ್" ವೇಣಿಂ ೧-೨೫। 3. ಕುರು ವೆಂಬ ಒಬ್ಬ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಮಗ. ಕುರು "ಞಃ" (೪-೧-೧೫೨)। ಕೊರವ್ಯಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಃ ಸಿಂ ಕೊಂ।

**ಕೊರ್ಮ ಕೊರ್ಮ** (ಪುಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಹತ್ತು ಅವತಾರಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡನೆಯದು. "ಕೊರ್ಮೇ ಧೃತೋದ್ರಿರಮೃತೋನ್ಮಥನೇ ಸ್ವಪೃಷ್ಠೇ ಗ್ರಾಹಾತ್ ಪ್ರಪನ್ನಮಿಭರಾಜಮಮೃಚದಾರ್ತಮ್" ಭಾಗಂ ೧೧-೪-೧೮। 2. ಬ್ರಹ್ಮನ ಒಂದು ಕಲ್ಪ, ಚತುರ್ಮುಖನ ಒಂದು ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ದಿನ, ಬ್ರಹ್ಮನ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಹದಿನೈದನೆಯ ದಿನ. ["ಕಲ್ಪ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 3. ಕೂರ್ಮ ಪುರಾಣ. ಕೂರ್ಮಮಧಿಕೃತ್ಯ ಕೃತೋ ಗ್ರಂಥಃ "ಅಙ್" (೪-೩-೮೫)।

(ನಂ) 4. ಯೋಗಾಸನಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. (ವಿಂ) 5. ಕೂರ್ಮಸಂಬಂಧವಾದ, ಆಮೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕೂರ್ಮಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ಕೊಲ ಕೊಲ** (ಪುಂ) 1. ತಂತ್ರಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಕೃತಿಯ ಉಪಾಸಕ. (ನಂ) 2. ತಂತ್ರಶಾಸ್ತ್ರ. (ವಿಂ) 3. ಕುಲಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ವಂಶಸಂಬಂಧವಾದ. ಕುಲಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦)। 4. ಕುಲಾಚಾರದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದ. 5. ಕುಲಾಚಾರವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ. ಕುಲೇ ಕುಲಾಚಾರೇ ಸಾಧುಃ ಕುಲಂ ಕುಲಾಚಾರಂ ವೇತ್ತಿ ವಾ "ಅಙ್" (೪-೪-೯೮)। (೪-೨-೫೯) ವಾ। 6. ಸತ್ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. "ಭೃತ್ಯಂ ವಿಪನ್ನಂ ಪತಯಃ ಕೊಲಂ ಗಾತ್ರಾಪಯಸ್ವಿನಿಃ" ಭಾಗಂ ೧೨-೩-೩೬।

**ಕೊಲದಿನೇಯ ಕೊಲದಿನೇಯ** (ಪುಂ) ಕುಲದಿನೇಯ ಮಗ. ಸಾಧ್ವಿಯಾಗಿದ್ದು ಭಿಕ್ಷೆಗಾಗಿ ಮನೆಗಳಿಗೆ ತಿರುಗುವವಳು ಕುಲದಿನೇಯ. ಕುಲದಿನೇಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಡಕ್" (೪-೧-೧೨೦)। ವಾ "ಇನಡ್" (೪-೧-೧೨೭)। ಪಕ್ಷೇ ಕೊಲದಿನೇಯಃ ಕೊಲದಿನೇಯಃ ವ್ಯಭಿಚಾರಕ್ಕಾಗಿ ಮನೆ ಮನೆಗೂ ಹೋಗುವವಳೂ ಕುಲದಿನೇಯ. ಈ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ "ಡಕ್" (೪-೧-೧೩೧)। ಕೊಲದಿನೇಯಃ ಕೊಲದಿನೇಯಃ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। ಕೊಲದಿನೇಯಿ ಕೊಲದಿನೇಯಿ. ಕೊಲದಿನೇಯಿ ಕೊಲದಿನೇಯಿ.

**ಕೊಲತ್ಯ ಕೊಲತ್ಯ** (ವಿಂ) ಕುಳುತ್ಯದೊಡನೆ ಬೇಯಿಸಿ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹುರುಳಿಯೊಡನೆ ಬೆರೆಸಿ ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಸಿದ್ಧವಾದ. ಕುಲತ್ಯೇನ ಸಂಸ್ಕೃತಮ್ "ಅಙ್" (೪-೪-೪)। "ಪಾಯೇನ್ವಾಮಲಕೊಲತ್ಯಸುರಾಸೌವೀರಕಾದಿಭಿಃ" ಸುಶ್ರುತಂ।

**ಕೊಲತ್ಯೋನ ಕೊಲತ್ಯೋನ** (ನಂ) ಹುರುಳಿಯನ್ನು ಬೆಳೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಭೂಮಿ. ಕುಲತ್ಯಸ್ಯ ಭವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ "ಲಙ್" (೫-೨-೧)।

**ಕೊಲಪುತ್ರಕ ಕೊಲಪುತ್ರಕ** (ನಂ) ಕುಲಪುತ್ರನ ಭಾವ. ಕುಲಪುತ್ರಸ್ಯ ಭಾವಃ "ವುಙ್" (೫-೧-೧೩೩)।

**ಕೊಲಾಲ ಕೊಲಾಲ** (ವಿಂ) ಕುಲಾಲಸಂಬಂಧವಾದ, ಕುಂಬಾರನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕುಲಾಲಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ಕೊಲಾಲಕ ಕೊಲಾಲಕ** (ವಿಂ) ಕುಂಬಾರನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕುಲಾಲೇನ ಕೃತಮ್, ಸಂಜಾಯಾಮ್ "ವುಙ್" (೪-೩-೧೧೮)।

**ಕೊಲಿಕ ಕೊಲಿಕ** (ವಿಂ) 1. ವಂಶಪರಂಪರಾಗತವಾದ. ಕುಲಾದಾಗತಃ "ಕಕ್" (೪-೩-೭೫)। 2. ತಂತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಆಚಾರ, ಕುಲಾಚಾರ. 3. ಪಾಪದ, ಅಪೈದಿಕ ಮೃತದವನು. "ಪಾಪಿಣ್ಯಕೊಲಿಕೋ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।



**ಕೌಲಿಶಾಯನಿ ಕೌಶಿಯಾನಿ** (ವಿಂ) 1. ಕುಲಶಕ್ತಿ ದತ್ತಿರದ ಪ್ರದೇಶ. ಕುಲಿಶಸ್ಯ ಅದ್ವರಭವೋ ದೇಶ: "ಫಿಜ್" (೪-೨-೮೦)। 2. ಕುಲಶವಿರುವ ಪ್ರದೇಶ. ಕುಲಿಶಾಃ ಸ್ವಸ್ಮಿನ್ ದೇಶ "ಫಿಜ್" (೪-೨-೮೦)।

**ಕೌಲಿನ ಕೌಲೀನ** (ನಂ) 1. ಉತ್ತಮ ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ವುದು. ಕುಲಿನಸ್ಯ ಭಾವ: "ಅನ್" (೪-೧-೧೩೦)। 2. ಲೋಕಾಪವಾದ, ಜನಾಪವಾದ. "ಕೌಲಿನಮೀತೇನ ಗುಹಾನ್ನಿರಸ್ತಾ ನ ತೇನ ವೇದೇಹಸುತಾ ಮನಸ್ತ:" ರಘುಂ ೧೪-೮೪। 3. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. "ಕೌಲಿನಮಾತ್ಮಾಶ್ರಯಮಾಚರಣೇ ತೇಮ್ಯ: ಪುನಶ್ಚೇದಮುವಾಚ ವಾಕ್ಯಮ್" ರಘುಂ ೧೪-೩೬। 4. ಪಶು ಪಕ್ಷಿ ಸರ್ಪ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಕಾಳಗ. "ಕೌಲಿನ ಸುಕುಲಿನತ್ವೇ ಪ್ರಾಣಿವೃತ್ತಾಪವಾದಯೋ:" ನಾನಾರ್ಥರಂ। 5. ಅಕೃತ್ಯ, ಅಯೋಗ್ಯವಾದ ಕಾರ್ಯ. 6. ಯುದ್ಧ. ಕಾಳಗ. 7. ಶರೀರದ ಗುಹ್ಯ ಪ್ರದೇಶ. "ಕೌಲಿನ ಗುಹ್ಯಜನ್ಯಯೋ: ಕುಕರ್ಮಣಿ ಕುಲಿನತ್ವೇ ಯುಧೇ ಪಶ್ವಹಿಪಕ್ಷಿಣಾಮ್" ಮೇದಿಂ। (ವಿಂ) 8. ಕುಲಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಬಂದ. ವಂಶಪರಂಪರೆಯಾಗಿ ಬಂದ. 9. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. ಕೌಲಿನಮ್ ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಅಲುಕ್।

**ಕೌಲೇಯಕ ಕೌಲೇಯಕ** (ಪುಂ) 1. ನಾಯಿ. ಕುಲೇ ಭವ: ಸ್ವಾ "ಠಕಜ್" (೪-೨-೯೬)। (ವಿಂ) 2. ಸಪ್ತಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಕುಲಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಠಕಜ್" (೪-೧-೧೪೦)। "ಕೌಲೇಯಕ: ಸಾರಮೇಯ: ಕುಲಿನೇ" ಮೇದಿಂ।

**ಕೌಲ್ಮಾಷಿಣ ಕೌಲ್ಮಾಷೀಣ** (ನಂ) ಅಲಸಂದೆಯನ್ನು ಬೆಳೆ ಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಭೂಮಿ. ಕುಲ್ಮಾಷಾಣಾ ಭವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ "ಖಜ್" (೪-೨-೧)।

**ಕೌಶ ಕೌಶ** (ಪುಂ) 1. ಕುಶದ್ವೀಪ. ಕುಶ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೬೮)। 2. ಕಾನ್ಯಕುಬ್ಜ ದೇಶ. (ವಿಂ) 3. ಕುಶ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕುಶಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ಕೌಶಲ ಕೌಶಲ** (ನಂ) 1. ದಕ್ಷಿಣ. ಜಾಣತನ, ನಿಪುಣತನ. ಕುಶಲಸ್ಯ ಭಾವ: "ಅನ್" (೪-೧-೧೩೦)। "ಹಾವಹಾರಿ ಹಸಿತಂ ವಚನಾನಾಂ ಕೌಶಲಂ ದೃಶಿ ವಿಕಾರವಿಶೇಷ:" ಮಾಘಂ ೧೦-೧೩। 2. ಯೋಗಕ್ಷೇಮ. "ಪೃಥ್ವಾ ಕೌಶಲಮನ್ಯೋನ್ಯಂ ರಥೇವೇವಾವತಸ್ಥಿರೇ" ಭಾಂ ವನಂ ೨೪೫-೩೦।

**ಕೌಶಲಿ ಕೌಶಲಿ** (ಪುಂ) ಜಾಣೆಯ ಮಗ. ಕುಶಲಾಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಇಜ್" (೪-೧-೯೬)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ವಾ "ಡೀಪ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫)। ಕೌಶಲಿ ಕೌಶಲೀ.

**ಕೌಶಲಿಕಾ ಕೌಶಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಶಲಪ್ರಶ್ನೆ, ಕ್ಷೇಮ ಸಮಾಚಾರದ ಪ್ರಶ್ನೆ. ಕುಶಲಂ ಪೃच्छತಿ ಕುಶಲ "ಠಕ್" (ವಾಂ ೭-೩-೭)।

**ಕೌಶಲಿ ಕೌಶಲೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕುಶಲಪ್ರಶ್ನೆ. 2. ಗೌರವ ಪೂರ್ವಕ ಬಿಟ್ಟುಕೊಡು ಕಾಣಿಕೆ. "ಕೌಶಲಿ ಕುಶಲಪ್ರಶನ:" "ಸಂದೇಶ: ಪ್ರಾಭುತ ಕೌಶಲಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಕೌಶ(ಸ)ಲೇಯ ಕೌಶ(ಸ)ಲೇಯ** (ಪುಂ) ಕೌಶಲೇಯ ಮಗ, ಶ್ರೀರಾಮ. ಕೌಶ(ಸ)ಲೇಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೦)। ಯಲೋಪ: (೬-೪-೧೪೮)।

**ಕೌಶ(ಸ)ಲೈಯ ಕೌಶ(ಸ)ಲೈಯ** (ಪುಂ) 1. ಕೌಶಲ ರಾಜನ ಮಗ. ಕೌಶ(ಸ)ಲೈಯ ಅಪತ್ಯಮ್ ಪುಮಾನ್. "ಅಯಜ್" (೪-೧-೧೬೯)। 2. ಕೌಶಲ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲ್ಯಾ-ಲ್ಯಾ. ಕೌಶಲ್ಯಾದೇವಿ, ಶ್ರೀರಾಮನ ತಾಯಿ. ಕೌಶಲದೇಶ ಭವಾ।

**ಕೌಶಲೈಯ ಕೌಶಲೈಯ** (ನಂ) 1. ಜಾಣತನ. ಕುಶಲಸ್ಯ ಭಾವ: "ಅಯಜ್" (೪-೧-೧೨೪)। 2. ಕುಶಲ, ಕ್ಷೇಮ. ಕುಶಲ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಯಜ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪)।

**ಕೌಶ(ಸ)ಲೈಯತನಯ ಕೌಶ(ಸ)ಲೈಯತನಯ -ಸುತ -ಸುತ, -ಸುನು -ಸುನು** (ಪುಂ) ಕೌಶಲೈಯ ಮಗ, ಶ್ರೀರಾಮ. ಕೌಶ(ಸ)ಲೈಯಾ: ತನಯ: ಸುತ: ಸುನುರ್ವಾ।

**ಕೌಶ(ಸ)ಲೈಯನಿ ಕೌಶ(ಸ)ಲೈಯನಿ** (ಪುಂ) ಕೌಶಲ ರಾಜನ ಮಗ, ಶ್ರೀರಾಮ. ಕೌಶ(ಸ)ಲೈಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಫಿಜ್" (೪-೧-೧೫೫)। "ಪರಮಪ್ರಕೃತೇರೇವಾಯಮಿಷ್ಯತೇ। ಪ್ರತ್ಯಯಸನ್ನಿಯೋಗೇನ ಪ್ರಕೃತಿರೂಪಂ ನಿಪಾತ್ಯತೇ" ಮಿಂ ಕೌಂ। "ಕೌಶಲೈಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ ಕೌಶಲೈಯನಿ ರಾಮ:, ತಸ್ಯ ವಲ್ಲಭಾಮ್" ಇತಿ ಭದ್ರಿಂ ವ್ಯಾಖ್ಯಾ। "ಮಿತ್ರಿಯಾಮಹೇ ನ ಗಂಕ್ಷಾಮ: ಕೌಶಲೈಯನಿವಲ್ಲಭಾಮ್। ಉಪಲಮ್ಭ್ಯಾಮಪಶ್ಯಂತ: ಕೌಮಾರೀ ಪತತಾಂ ವರ" ಭದ್ರಿಂ ೭-೯೦।

**ಕೌಶಾಂಬ ಕೌಶಾಂಬ** (ವಿಂ) ಕುಶಾಂಬನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕುಶಾಂಬಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। ಕೌಶಾಂಬಿ ಕೌಶಾಂಬೀ.

**ಕೌಶಾಂಬಿ ಕೌಶಾಂಬೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಶಾಂಬನಿಂದ ನಿರ್ಮಿತ ವಾದ ಒಂದು ನಗರ. ಕುಶಾಂಬೇನ ನಿವೃತ್ತಾ ನಗರೀ "ಅನ್" (೪-೨-೬೮)। "ಕುಶಾಂಬಸ್ತು ಮಾಹಾತೇಜಾ ಕೌಶಾಂಬೀಮಕರೋ-ತ್ಪುರೀಮ್" ರಾಮಾಂ। ಈ ನಗರವು ಈಗಿನ ಅಲಹಾಬಾದಿನ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಯಮುನಾನದಿಯ ತೀರದಲ್ಲಿರುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ಈಗ "ಕೋಸ" ಎಂಬ ಹೆಸರಾಗಿದೆ. "ವತ್ಸ ಪಟ್ಟಣ" ಎಂಬ ಮತ್ತೊಂದು ಹೆಸರೂ ಉಂಟು.

**ಕೌಶಿಕ ಕೌಶಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಕುಶಿಕಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಮಹರ್ಷಿ. ಕುಶಿಕಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಮ್ ಪುಮಾನ್ "ಅಜ್" (೪-೧-೧೦೪)। "ಕೌಶಿಕೇನ ಸ ಕಿಲ ಕ್ಷಿತಿಶಿವರೋ



ರಾಮಕವರವಿಧಾತಶಾಂತಯೇ" ರಘುಂ ೧೧-೧. 2. ಗಾಧಿ ಯಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಇಂದ್ರ. ಕುಶಿಕಸ್ಯಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಅಣ್" (೪-೧-೧೨). [ಕುಶಿಕ ರಾಜನು ಇಂದ್ರನಿಗೆ ಸಮಾಸನಾದ ಮಗನನ್ನು ಪಡೆಯಬೇಕೆಂದು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತಿರಲು ಇಂದ್ರನು ತನ್ನ ಅಂಶದಿಂದ ಅವನ ಮಗನಾಗಿ ಹುಟ್ಟಲು ಬಿಟ್ಟನು. ಇವನೇ ಗಾಧಿ ಮಹಾರಾಜನು.] "ಕುಶಿಕಸ್ತು ತಪಸ್ತೇಪೇ ಪುತ್ರಮಿन्द्रಸಮಪ್ರಭಮ್ | ಲಭೇಯಮಿತಿ ತಂ ಶಕ್ರ-ಸ್ತ್ರಾಸಾದಭ್ಯೇತ್ಯ ಜಗ್ಮಿವಾನ್ | ಸ ಗಾಧಿರಭವದ್ರಾಜಾ ಮಥವಾನ್ ಕೌಶಿಕಃ ಸ್ವಯಮ್" ಹರಿವಂ. 3. ಗೂವೆ. "ಕೌಶಿಕಃ ಸ್ವಮಖಿಲಂ ಪರಿಪश्यन् मन्यते स्म खलु कौशिकमेव" ನೈಷಂ ೫-೬೪. 4. ಕೋಶಕಾರ, ನಿಘಂಟುಕಾರ. 5. ಹಾವಾಡಿಗ. 6. ಗುಗ್ಗುಳ, ಧೂಪದ ಪುಡಿ. 7. ಮಜ್ಜೆ, ದೇಹಸಾರ. "ಮಜ್ಜಾ ತು ಕೌಶಿಕಃ ಶುಕ್ರಕರೋಽಸ್ಥನಃ ಸ್ನೇಹಸಮ್ಮವೌ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ. 8. ಜರಾಸಂಧನ ಬಿಟ್ಟು ಸೇನಾಪತಿ. "ಸ ತು ಸೇನಾಪತಿ ರಾಜಾ ಸಸ್ಮಾರ ಭರತರ್ಷಭಾ ಕೌಶಿಕಂ ಚಿತ್ರಸೇನಂ ಚ ತಸ್ಮಿನ್ ಯುಧ್ಧ ಉಪಸ್ಥಿತೇ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೨೨-೩೨. 9. ನಕುಲ, ಮುಂಗಸಿ. 10. ಕೋಶಾಧ್ಯಕ್ಷ. "ಕೌಶಿಕೋ ನಕುಲೇ ವ್ಯಾಲಗ್ರಾಹೇ ಗುಗುಲುಶಕ್ರಯೋಃ | ಕೋಶಶೋ-ಲೂಕಯೋಶ್ಚ ಸ್ಪಾತ್ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಮುನಾವಪಿ" ಮೇದಿಂ. 11. ಬಿಟ್ಟು ಅಸುರ. 12. ಶೃಂಗಾರರಸ. "ವಾತ್ಸಲ್ಯಶಾಂತೌ ತು ರಸೌ ಶೃಂಗಾರಃ ಕೌಶಿಕಃ ಸ್ಮೃತಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. (ನಂ) 13. ರೇಷ್ಮೆ ಬಟ್ಟೆ. "ಸೋಪರೋದಕಗೋಮೂತ್ರಃ ಶುಧ್ಯತ್ಯಾವಿಕಕೌಶಿಕಮ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೧೮೬. (ವಿಂ) 14. ಕೋಶ (ಬರೆ) ದಲ್ಲಿರುವ (ಕತ್ತಿ). 15. ಕೃಮಿಕೋಶದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ, ರೇಷ್ಮೆ ಮಳುವಿನ ಹೊಟ್ಟೆಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)-ಕೀ-ಕೇ. 16. ಪಾರ್ವತಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 17. ಒಂದು ನದಿ. "ಕೌಶಿಕೀ ಚಂಡಿಕಾನದಿಃ" ಹೇಮಂ.

ಕೌಶಿಕಪ್ರಿಯ ಕೌಶಿಕಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಮಹರ್ಷಿಗೆ ಪ್ರೀತಿಪಾತ್ರನಾದ ಶ್ರೀರಾಮ. ಕೌಶಿಕಸ್ಯ ಪ್ರಿಯಃ |

ಕೌಶಿಕಫಲ ಕೌಶಿಕಫಲ (ಪುಂ) ತೆಂಗಿನಮರ.

ಕೌಶಿಕಾ ಕೌಶಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾನಪಾತ್ರೆ, ಕುಡಿಯುವ ಪಾತ್ರೆ.

ಕೌಶಿಕಾರಾತಿ ಕೌಶಿಕಾರಾತಿ (ಪುಂ) ವಾಯುಸ, ಕಾಗೆ. ಕೌಶಿಕಸ್ಯಾರಾತಿಃ |

ಕೌಶೀಧಾನ್ಯ ಕೌಶೀಧಾನ್ಯ (ನಂ) ಕೋಶದೊಳಗೆ ಬೆಳೆಯುವ ಧಾನ್ಯ, ಕಾಯಿಸೊಳಗೆ ಬಿಡುವ ತೊಗರಿ, ಅವರೆ, ಎಳ್ಳು, ಹೆಸರು ಮೊದಲಾದ ಧಾನ್ಯ.

ಕೌಶೀಯ ಕೌಶೀಯ (ನಂ) 1. ರೇಷ್ಮೆ. 2. ರೇಷ್ಮೆಪಟ್ಟು. ಕೌಶೀಯ ವಿಕಾರಃ "ಢ್" (೪-೩-೪೨). "ಕೌಶೀಯ

ವ್ರಜದಪಿ ಗಾಢತಾಮಜಸಂ ಸಸಂಸೇ ವಿಗಲಿತನೀವಿ ನೋರಜಾಕ್ಷಯಾಃ" ಮಾಘಂ ೮-೬ |

ಕೌಶೀತಕ ಕೌಶೀತಕ (ಪುಂ) ಕುಷೀತಕಪುತ್ರನಾದ ಕಹೋಡ ಮುಷಿ. ಕುಷೀತಕಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಅಣ್" (೪-೧-೧೧೪) |

ಕೌಶೀತಕಿ ಕೌಶೀತಕಿ (ಪುಂ) 1. ಕುಷೀತಕಪುತ್ರನಾದ ಕಹೋಡ ಮುಷಿ. ಕುಷೀತಕಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಙ್" (೪-೧-೧೧೫) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೌಶೀತಕೀ ಕೌಶೀತಕೀ. 2. ಅಗಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿ, ಲೋಪಾಮುದ್ರೆ. "ದೀಪ್ತಾಗ್ನಿರೌವಂಶೇಶ್ಚ ಸಮುದ್ರ-ಚುಲಕೋಽಸ್ಯ ತು | ಪ್ರಿಯಾ ಕೌಶೀತಕೀ ಲೋಪಾಮುದ್ರಾಪ್ರಾ ಚ ವಿದರ್ಮಜಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಕೌಶೀತಕಿನ್ ಕೌಶೀತಕಿನ್ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ಕುಷೀತಮುಷಿಯ ಶಿಷ್ಯರು.

ಕೌಶೀತಕೇಯ ಕೌಶೀತಕೇಯ (ಪುಂ) ಕಾಶ್ಯಪಮುಷಿ. ಕುಷೀತ-ಕಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಢ್" (೪-೧-೧೧೪) |

ಕೌಶಿಠ್ಯ ಕೌಶಿಠ್ಯ (ವಿಂ) ಹೊಟ್ಟೆಯ ಒಳಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ. ಕೌಶಿಠ್ಯ ಭವಃ "ಯತ್" (೪-೩-೫೫) | "ಉದರಂ ಚ ಗುದೌ ಕೌಶಿಠ್ಯೌ ವಿವಿಕ್ತಾರೋಽಯಮುದಾಹತಃ" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೧೫ |

ಕೌಸಲ ಕೌಸಲ (ವಿಂ) ಕೋಸಲದೇಶ ಸಂಬಂಧವಾದ.

ಕೌಸೀದ್ಯ ಕೌಸೀದ್ಯ (ನಂ) 1. ಬಡ್ಡಿಯ ಸಂಪಾದನೆ, ಲೇಣಿ ದೇಣಿಗೆಯಿಂದ ಹಣವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವ ವ್ಯಾಪಾರ. ಕುಸೀದಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಽಯಮ್" (೫-೧-೧೨೪) | 2. ಸೋಮಾರಿತನ, ಮೃಗಚ್ಛೇದನ, ಪಾಲುವಾರಿಕೆ.

ಕೌಸುಮ ಕೌಸುಮ (ವಿಂ) 1. ಪುಷ್ಪಸಂಬಂಧವಾದ. ಕುಸುಮಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೨೦) | "ವಿನಯತಿ ಸುದೃಶೋ ದೃಶಃ ಪರಾಗಂ ಪ್ರಣಯಿನಿ ಕೌಸುಮಮಾನನಾನಿಲೇನ" ಮಾಘಂ ೭-೫೭ | 2. ಕುಸುಮದಿಂದ ಉಂಟಾದ, ಹೂವಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕುಸುಮೇನ ನಿರ್ವೃತ್ತಮ್ "ಅಣ್" (೫-೧-೭೯) |

ಕೌಸುಮ ಕೌಸುಮ (ವಿಂ) 1. ಕುಸುಮ ಗಿಡದ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಕುಸುಮ ಹೂವಿನ ದಳಗಳಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಕುಸುಮ ಹೂವಿನ ಬಣ್ಣ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಕುಸುಮ ಹೂವಿನ ಬಣ್ಣದಲ್ಲಿ ಅದ್ದಲ್ಪಟ್ಟ. ಕುಸುಮೇನ ರಕ್ತಮ್ "ಅಣ್" (೪-೨-೧) | "ಶೃಂಗಾಣಿ ದ್ರುತಕನಕೋಜ್ವಲಾನಿ ಗಂಧಾಃ ಕೌಸುಮಂ ಪೃಥುಕುಚಕುಮ್ಭಸಾಕ್ಷಿ ವಾಸಃ" ಮಾಘಂ ೮-೩೦ |

ಕೌಸ್ತುಭ ಕೌಸ್ತುಭ (ಪುಂ) ಶ್ರೀವಿಷ್ಣುವಿನ ವಕ್ಷಸ್ಥಳದಲ್ಲಿರುವ ಮಣಿ. ಕುಂ ಭುವಂ ಸ್ತುಮ್ನಾತಿ ಇತಿ ಕುಸ್ತುಭೋ ವಾರಿಧಿಃ, ತತ್ರ ಭವಃ "ಅಣ್" (೪-೩-೫೩) | ಕುಂ ಭುವಂ ಸ್ತುಮ್ನಾತಿ ಕುಸ್ತುಭೋ ವಿಷ್ಣುಃ, ತಸ್ಯಾಯಮ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೨೦) ವಾ | [ದೇವದಾನವರು ಅಮೃತಕ್ಕಾಗಿ ಸಮುದ್ರಮಂಥನ ಮಾಡಿ



ದಾಗ ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಮೊರೆತ ಈ ಮೊರೆತನ್ನು ವಿಷ್ಣುವು  
ತನ್ನ ಎದೆಮಲ್ಲಿ ಧರಿಸಿಕೊಂಡನು.] “ವಶಃಸ್ಯಲವ್ಯಾಪಿ-  
ಸುಂ ದಧಾತುಃ ಸಕೌಸ್ತುಭಂ ಹೇಪಯತೀವ ಕೃಣಾಮ್” ರಘುಂ ೬-೪೯।  
ಕೌಸ್ತುಭಧಾಮನ್ ಕೌಸ್ತುಭಧಾಮನ್ (ಪುಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣು-  
ಕೌಸ್ತುಭಸ್ಯ ಧಾಮ।

ಕೌಸ್ತುಭಭೃತ್ ಕೌಸ್ತುಭಭೃತ್ (ಪುಂ) ಕೌಸ್ತುಭಮಣಿ-  
ಯನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ ವಿಷ್ಣು. ಕೌಸ್ತುಭಂ ಬಿಭರ್ತಿ - ಡು  
ಭೃಜ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) “ವಿವಪ್” (೩-೨-೭೬)।

ಕೌಸ್ತುಭವಕ್ಷಸ್ ಕೌಸ್ತುಭವಕ್ಷಸ್ (ಪುಂ) ಕೌಸ್ತುಭದಿಂದ  
ಅಲಂಕೃತವಾದ ಎದೆಮಲ್ಲಿ ವಿಷ್ಣು. ಕೌಸ್ತುಭೋ ವಕ್ಷಸಿ ಯಸ್ಯ।

ಕ್ರಕಚ ಕೃಕಚ (ಪುಂ) 1. ಮುಳ್ಳು ಅಜ್ಜಿಗಿಡ. (ಪುಂ) 2.  
ಗರಗಸ. ಮರವನ್ನು ಕೊಯ್ಯುವ ಒಂದು ಮುಳ್ಳು ಕತ್ತಿ.  
ರಂಪ. ಕೃ ಇತಿ ಕವತಿ - ಕಚ (ಶಬ್ದ) “ಅಚ್”  
(೩-೧-೧೩೪)। 3. ಜ್ಯೋತಿಷದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವ  
ಒಂದು ಯೋಗ. “ಷಠ್ಯಾದಿತಿಯೋ ಮನ್ದಾತ್ ವಲೋಮಂ  
ಕ್ರಕಚಃ ಸ್ಮೃತಃ”। ತಿಥಿ-ವಾರಗಳ ಯೋಗದಿಂದ  
ಈ ಯೋಗವು ಸಂಭವಿಸುವುದು.

| ವಾರ      | ತಿಥಿ    |
|----------|---------|
| ಶನಿವಾರ   | ಪಷ್ಯ    |
| ಶುಕ್ರವಾರ | ಸಪ್ತಮಿ  |
| ಗುರುವಾರ  | ಅಷ್ಟಮಿ  |
| ಬುಧವಾರ   | ನವಮಿ    |
| ಮಂಗಳವಾರ  | ದಶಮಿ    |
| ಸೋಮವಾರ   | ಏಕಾದಶಿ  |
| ಭಾನುವಾರ  | ದ್ವಾದಶಿ |

ಕ್ರಕಚಕ್ಷದ ಕೃಕಚಕ್ಷದ (ಪುಂ) ತಾಳೆಮರ. ಕ್ರಕಚ ಇವ  
ಕ್ಷದೋ ಯಸ್ಯ। “ಕೇತಕಃ ಕ್ರಕಚಕ್ಷದಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಕ್ರಕಚಪತ್ರ ಕೃಕಚಪತ್ರ (ಪುಂ) 1. ತೇಗದ ಮರ. 2. ತಾಳೆ  
ಮರ. ಕ್ರಕಚ ಇವ ಪತ್ರಮಸ್ಯ।

ಕ್ರಕಚಪಾದ್ ಕೃಕಚಪಾದ್ - ಪಾದ - ಪಾದ (ಪುಂ) ಒತಿಕೇತ.  
ಹೆಂಟೆಗೊಡ್ಡ. ಕ್ರಕಚ ಇವ ಪಾದೋ ಯಸ್ಯ ವಾ ಅನ್ಯಲೋಪಃ।  
“ವೇದಾರಃ ಕ್ರಕಚಪಾದ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। “ಭಶಾ ವಿದಾರಃ  
ಕ್ರಕಚಪಾದಃ” ಹಾರಾಂ।

ಕ್ರಕಚಪೃಥಿ ಕೃಕಚಪೃಥಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ  
ಮೀನು.

ಕ್ರಕಚವ್ಯವಹಾರ ಕೃಕಚವ್ಯವಹಾರ (ಪುಂ) ಗರಗಸದಿಂದ  
ಕೊಯ್ಯಲ್ಪಡುವ ಮರದ ಸಂಖ್ಯೆ ಮತ್ತು ಅದರ ಕೊಯ್ತು  
ಮೊತ್ತವನ್ನು ಕಂಡುಹಿಡಿಯಬಲ್ಲ ಒಂದು ಗಣಿತ.

ಕ್ರಕಚಾ ಕೃಕಚಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೇತಕೇದ್ಯಕ್ಷ. ತಾಳೆಮರ.  
ಕ್ರಕಚಸ್ತದಾಕಾರೋಽಸ್ಯಸ್ಯಾಃ “ಅಚ್” (೫-೨-೧೨೩)।

ಕ್ರಕಣ ಕೃಕಣ (ಪುಂ) ಕಬ್ಬಿಕ್ಕಿ. ಗವ್ವುಗ ಹಕ್ಕಿ. ಕೃ ಇತಿ  
ಕಣತಿ - ಕಣ (ಶಬ್ದ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)।

ಕ್ರಕರ ಕೃಕರ (ಪುಂ) 1. ಕಬ್ಬಿಕ್ಕಿ. ಗವ್ವುಗ ಹಕ್ಕಿ. ಕೃ ಇತಿ  
ಶಬ್ದಂ ಕರ್ತು ಶೀಲಮಸ್ಯ - ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣ) “ಕಃ”  
(೩-೨-೨೦)। 2. ಗರಗಸ. ರಂಪ. 3. ದರಿದ್ರ. ಬಡವ.  
4. ಮುಳ್ಳು ಅಜ್ಜಿಗಿಡ. “ಕ್ರಕರಃ ಕರೀರವೃಕ್ಷೇ ದೀನೇ ಕ್ರಕಚೇ  
ಚ ಪಕ್ಷಿಭೇದೇ ಚ” ಮೇದಿಂ।

ಕ್ರತು ಕೃತು (ಪುಂ) 1. ಯಜ್ಞ. ಯಾಗ. ಕ್ರಿಯತೇ - ಡು ಕೃಜ್  
(ಕರಣ) “ಕ್ತುಃ” (೩-೧-೭೭)। “ಕ್ರತುಂ ವಿಧತೇ ಯದಿ  
ಸಾರ್ವಕಾಮಿಕಂ ಕಥಂ ಸ ಮಿಥ್ಯಾಸ್ತು ವಿಧಿಸ್ತು ವೈದಿಕಃ” ನೈಷಂ  
೯-೭೫। 2. ವಿಷ್ಣು. ದೇವಯಜ್ಞಾದಯಃ ಪञ್ಚಮಹಾಯಜ್ಞಾಃ  
ಔಪಾಸನಾದಯಃ ಸಪ್ತ ಪಾಕಯಜ್ಞಾಃ ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರಾದಯಃ ಸಪ್ತ  
ಹವಿರ್ಯಜ್ಞಾಃ ಅಗ್ನಿಷ್ಠೋಮಾದಯಃ ಸಪ್ತ ಸೋಮಸಂಸ್ಥಾಃ ಕ್ರತವಃ ತೇ ಚ  
ಪರಿಗಣಿತಯಜ್ಞಾಃ ತೈರ್ಯಜ್ಞಕ್ರತುಭಿಃ ಆರಾಧ್ಯಃ ಕ್ರಿಯತೇ ಇತಿ ಕ್ರತುಃ।  
“ಅಗ್ನಿಷ್ಠೋಮಾದಯಃ ಸಪ್ತಸಂಸ್ಥಾಃ ಕ್ರತವಃ ಇರಿತಾಃ। ಆರಾಧ್ಯಃ  
ಕ್ರಿಯತೇ ತೈಸ್ತೈರೀತಿ ಕ್ರತುರ್ದೀರಿತಃ” ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ್ತಃ। “ಯಜ್ಞ  
ಇಜ್ಯೋ ಮಹೇಜ್ಯಶ್ಚ ಕ್ರತುಃ ಸತ್ರಂ ಸತಾಂ ಗತಿಃ” ವಿಂ ಸಂ।  
3. ಸಂಕಲ್ಪ. ಉದ್ದೇಶ. “ಕಾಮಃ ಕ್ರತುಃ ಕರ್ಮ ಜನ್ಮೇತ್ಯೇವಮೇಷಾಂ  
ಕ್ರಮೋ ಭವೇತ್। ಪುಂಸೋ ಯಾ ವಿಷಯಾಪೇಕ್ಷಾ ಸ ಕಾಮ ಇತಿ ಭಣ್ಯತೇ।  
ಸ ಏವ ವರ್ಧಮಾನಶ್ಚೇತ್ ಕ್ರತುತ್ವಂ ಪ್ರತಿಪದ್ಯತೇ”। 4. ಬ್ರಹ್ಮನ  
ಮಾನಸಪುತ್ರನಾದ ಒಬ್ಬ ಯುಷಿ. 5. ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಅಭಿಲಾಷೆ.  
6. ಇಂದ್ರಿಯ. 7. ಪ್ರಜ್ಞೆ. ಪ್ರತಿಭೆ. 8. ಪೂಜೆ.  
ಉಪಾಸನೆ. “ಅಥ ಖಲು ಕ್ರತುಮಯಃ ಪುರುಷಃ ಯಥಾ ಕ್ರತುರಸ್ಮಿನ್  
ಲೋಕೇ ಪುರುಷೋ ಭವತಿ” ಛಾಂದೋಗ್ಯಂ। 9. ಹತ್ತು ಮಂದಿ  
ಪ್ರಜಾಪತಿಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. “ಮರೀಚಿಮಶ್ವಜ್ಞಿರಸೌ ಪುಲಸ್ತ್ಯಂ  
ಪುಲಹಂ ಕ್ರತುಮ್। ಪ್ರವೇತಸಂ ವಮಿಷಂ ಚ ಭೃಗು ನಾರದಮೇವ ಚ”  
ಮನುಂ ೧-೩೫। 10. ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗ. “ಯಜೇತ  
ರಾಜಾ ಕ್ರತುಭಿವಿವಿಧೈರಾಪ್ತದಕ್ಷಿಣೈಃ” ಮನುಂ ೭-೭೯।

ಕ್ರತುದ್ವಿಷ್ ಕೃತುದ್ವಿಷ್ (ಪುಂ) 1. ಯಜ್ಞದ ಶತ್ರು. ಅಸುರ,  
ರಾಕ್ಷಸ. ಕ್ರತುಂ ದ್ವೇಷಿ - ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತಿಯ) “ವಿವಪ್”  
(೩-೨-೬೧)। (ವಿಂ) 2. ಯಜ್ಞವನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸು  
ವವನು, ನಾಸ್ತಿಕ.

ಕ್ರತುಧ್ವಂಸಿನ್ ಕೃತುಧ್ವಂಸಿನ್ (ಪುಂ) ದಕ್ಷಯಾಗವನ್ನು  
ನಾಶಗೊಳಿಸಿದ ಪರಮೇಶ್ವರ. ಕ್ರತುಂ ದಕ್ಷಯಜ್ಞಂ ಧ್ವಂಸಯತಿ -  
ಧ್ವಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ) “ಗಿಣಿಃ” (೩-೪-೭೮)।

ಕ್ರತುಪಶು ಕೃತುಪಶು (ಪುಂ) ಯಜ್ಞದ ಪಶು, ಅಶ್ವ.



ಕ್ರತುಪುರುಷ ಕೃತುಪುರುಷ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ಯಜ್ಞಸ್ವರೂಪ  
ನಾದ ಪುರುಷಾಕಾರದ ಯಜ್ಞವರಾಹಸ್ವಾಮಿ. ಕ್ರತುಃ  
ಪುರುಷ ಇವ.

ಕ್ರತುಫಲ ಕೃತುಫಲ (ನಂ) ಯಾಗದ ಫಲ.

ಕ್ರತುಭುಜ್ ಕೃತುಭುಜ್ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. ಕ್ರತು ಕ್ರತುರ್ದೇಯ  
ಹವಿರ್ಭುಜ್ತೇ - ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಭ್ಯವಹಾರಯೋಃ) "ವಿವ್" (3-2-98). 2. ವಿಷ್ಣು.

ಕ್ರತುರಾಜ್ ಕೃತುರಾಜ್ (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗ.  
2. ರಾಜಸೂಯಯಾಗ. ಕ್ರತುಃ ರಾಜತೇ - ರಾಜ (ದೀಪ್ತೌ)  
"ವಿವ್" (3-2-61). ಕ್ರತುನಾಂ ರಾಜಾ "ಟಕ್" (4-4-91). -ರಾಜಃ - ರಾಜಃ. "ಯಥಾಶ್ವಮೇಧಃ ಕ್ರತುರಾಡ್  
ಸರ್ವಪಾಪಾನೋದನಃ" ಮನು 11-260.

ಕ್ರತುವಿಕ್ರಿಯಿನ್ ಕೃತುವಿಕ್ರಿಯಿನ್ (ವಿಂ) ದ್ರವ್ಯದ ಅಸೆ  
ಯಿಂದ ಯಾಗದ ಫಲವನ್ನು ಮಾರುವವನು. ಕ್ರತು  
ವಿಕ್ರೀಣೀತೇ - ಡು ಕ್ರಿವ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯೇ) "ಗಿನಿಃ" (3-1-134). "ಪಿಶುನಾನೃತಿನೋಶ್ವಾನಂ ಕ್ರತುವಿಕ್ರಿಯಿಣ-  
ಸ್ತಥಾ. ಶಿಲೂಪತುನ್ನವಾಯಾನ್ ಕೃತಧನಸ್ಯಾನ್ಮಮೇವ ಚ" ಮನು 8-214.

ಕ್ರತುತಮ ಕೃತುತಮ (ಪುಂ) ಯಾಗಗಳಲ್ಲಿ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ  
ರಾಜಸೂಯಯಾಗ. ಕ್ರತುತಮಃ. "ರಾಜಸೂಯೋ ನೃಪಾಧ್ವರಃ.  
ಕ್ರತುತಮಶ್ಚ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಕ್ರಥ - ಹಿಸಾಯಾಮ್ (ಭಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ). ಕ್ರಥತಿ.  
ಚಕ್ರಾಥ. ಅಕ್ರಥೀತ್, ಅಕ್ರಾಥೀತ್. ಹಿಂಸಿಸು, ಕೊಲ್ಲು.

ಕ್ರಥ - ಪ್ರತಿಹರ್ಷ (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ). ಕ್ರಥಯತಿ, -ತೇ.  
ಕ್ರಥಯಾಂ ಬಭೂವ, -ಆಸ, -ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ. ಅನಂದ  
ಹೊಂದು, ಹರ್ಷಿಸು, ಸಂತೋಷಪಡು.

ಕ್ರಥನ ಕೃಥನ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. (ನಂ) 2.  
ಮಾರಣ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. ಕ್ರಥ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). "ರಾಜನ್ಯೋಚ್ಚಾಸಕೂಟಕ್ರಥನಪಠುರದ್ಧೋರ-  
ಧಾರಃ ಕುಠಾರಃ" ಪ್ರಬೋಧಂ 1-6.

ಕ್ರಥನಕ ಕೃಥನಕ (ಪುಂ) ಉಷ್ಣ, ಒಂಟೆ. ಕ್ರಥನೇ ದಂತಕರಣಕ-  
ಕಂಠಕಚ್ಚೇದನೇ ಪ್ರಸುತಃ "ಕನ್". ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಫ್" (4-1-63). -ನಕೀ - ನಕೀ.

ಕ್ರಥಕೇಶಿಕ ಕೃಥಕೇಶಿಕ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ವಿದರ್ಭ ದೇಶ.  
"ಅಥೇಶ್ವರೇಣ ಕ್ರಥಕೇಶಿಕಾನಾಂ ಸ್ವಯಂವರಾರ್ಥ ಸ್ವಸುರಿನ್ದುಮತ್ಯಾಃ"  
ರघುಂ 4-39.

ಕ್ರದಿ - ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೇ ಚ (ಭಾಂ ಪರಂ ಆಹ್ವಾನೇ ಸಕಂ  
ರೋದನೇ ಅಕಂ ಸೇಂ). ಕ್ರದತಿ. ಚಕ್ರದ. ಕ್ರಂದಿತಾ.

ಕ್ರಂದಿಷ್ಯತಿ. ಕ್ರಂದತು. ಅಕ್ರಂದತ್. ಕ್ರಂದೇತ್. ಕ್ರಂದಾತ್.  
ಅಕ್ರಂದೀತ್. ಅಕ್ರಂದಿಷ್ಯತ್. 1. ಕರ, ಕೂಗು. 2. ಕುದುರೆ  
ಯಂತೆ ಕೆನೆ. 3. ಮೇಘದಂತೆ ಗರ್ಜಿಸು. 4. ನೀರಿನಂತೆ  
ಭೋಗರ್. 5. ಎಣ್ಣೆ ಹಾಕದ ಚಕ್ರದಂತೆ ಕಿರುಗುಟ್ಟು.  
6. ರೋದಿಸು, ಅಳು. "ನ ನಿಂದಿತಂ ಕರ್ಮ ತದಸ್ತಿ ಲೋಕೇ  
ಸಹಸ್ರಶೋ ಯನ್ ಮಯಾ ವ್ಯಧಾಯಿ. ಸೋಹಂ ವಿಪಾಕಾವಸರೇ  
ಮುಕ್ತುಂದ ಕ್ರಂದಾಮಿ ಸಂಪ್ರತ್ಯಗತಿಸ್ತವಾಗ್ರೇ" ಸ್ತೋಂ 20.

ಕ್ರಮಣಿಃ - ಕ್ರಮಣೀ. ಚಕ್ರದೇ. ಕ್ರಂದಿತಾ. ಕ್ರಂದಿಷ್ಯತೇ.  
ಕ್ರಂದಿತಾಮ್. ಅಕ್ರಂದತ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕ್ರಂದಯಿ - ಕ್ರಂದಯತಿ, -ತೇ. ಕ್ರಂದಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಕ್ರಂದಯಿತಾ. ಕ್ರಂದಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ.  
ಕ್ರಂದಯತು, -ತಾಮ್. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕ್ರಂದಿನಿ - ಚಿಕ್ರಂದಿಷತಿ. ಚಿಕ್ರಂದಿಷಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ,  
-ಆಸ. ಚಿಕ್ರಂದಿಷಿತಾ. ಚಿಕ್ರಂದಿಷಿಷ್ಯತಿ. ಚಿಕ್ರಂದಿಷತು.  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕ್ರಂದಿಸು - ಕ್ರಂದಿತವ್ಯಃ. ಕ್ರಂದನೀಯಃ. ಕ್ರಂದಃ. ಕ್ರಂದಿತಃ.  
ಕ್ರಂದಿತವಾನ್. ಕ್ರಂದನ್, ಕ್ರಂದಂತಿ. ಕ್ರಂದಿತುಮ್. ಕ್ರಂದಿತಮ್.  
ಕ್ರಂದನಮ್. ಕ್ರಂದಿತವಾ. ಆಕ್ರಂದ.

ಕ್ರಂದತ್ ಕೃಂದತ್ (ವಿಂ) 1. ಕರೆಯುತ್ತಿರುವ. 2. ಅಳು  
ತಿರುವ. ಕ್ರದಿ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೇ ಚ) "ಶತ್" (3-2-124). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ಂತಿ -ಂಃ.

ಕ್ರಂದನ ಕೃಂದನ (ನಂ) 1. ಅಪ್ಪಾನ, ಕರೆಯುವುದು. ಕ್ರದಿ  
(ಆಹ್ವಾನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ಅಳುವುದು.  
ಕ್ರದಿ (ರೋದನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). (ಪುಂ) 3.  
ಬಿಡಾಲ, ಮಾರ್ಜಾರ, ಬೆಕ್ಕು. (ವಿಂ) 4. ಕರೆಯುವ,  
ಕೂಗುವ. 5. ಕಿರಿಚುವ. ಕ್ರದಿ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೇ ಚ)  
ಕರಂ "ಲ್ಯುಃ". ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಫ್" (4-1-63).  
ಕ್ರಂದನೀ ಕೃಂದನೀ.

ಕ್ರಂದಿತ ಕೃಂದಿತ (ನಂ) 1. ಕೂಗು, ಕರೆ, ಅಪ್ಪಾನ.  
2. ಅಳುವುದು. ಕ್ರದಿ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೇ ಚ) ಭಾವೇ  
"ಕ್ತಃ" (3-3-114).

ಕ್ರಮ ಕೃಮ (ಪುಂ) 1. ನಡೆಯುವುದು, ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹೆಜ್ಜೆ  
ಯಿಡುವುದು. ಕ್ರಮು (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಘಬ್" (3-3-18).  
"ಭೂಮಿಮಹತ್ಯಪ್ಯವಿಲಂಬಿತಕ್ರಮಂ ಕ್ರಮೇಲಕೇಸ್ತತ್ಕ್ಷಣಮೇವ ಚಿಚ್ಛಿದೇ"  
ಮಾಘಂ 12-18. 2. ತಲೆಮೇರೆ, ವಂಶಪರಂಪರೆ.  
"ಕ್ರಮಾದಭ್ಯಾಗತಂ ದ್ರವ್ಯಂ ಹುತಮಪ್ಯುದ್ಧರೇತು ಯಃ. ದಾಯಾದೇಭ್ಯೋ  
ನ ತದ್ವಾತ್ ವಿಧಯಾ ಲಬ್ಧಮೇವ ಚ" ಯಾಜ್ಞಂ 2-119.  
3. ಶ್ರೇಣಿ, ಪರಂಪರೆ, ಸಾಲು, ಒಂದಾದ ಮೇಲೊಂದು.  
"ವರ್ಣಕ್ರಮೇಣ ಸರ್ವಾಣಿ ಪಶ್ಯೇತ್ ಕಾರ್ಯಾಣಿ ಕಾರ್ಯಿಣಾಮ್" ಮನುಂ



೮-೨೪। "ನಿಮಿತ್ತನೈಮಿತ್ತಕಗೋಷ್ಯ ಕ್ರಮಃ" ಶಾಕುಂ ೭-೩೦।  
 4. ಪಾದವಿನ್ಯಾಸ, ಹೆಜ್ಜೆಯಿಡುವಿಕೆ. "ತಾವದಸ್ಯ ನ ಮಮೌ  
 ನಭಸ್ತಲೇ ಲಕ್ಷಿತಾಕಂಶಧಿಗುಣತಃ ಕ್ರಮಃ" ಮಾಘಂ ೧೪-೭೫।  
 5. ಶಕ್ತಿ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. "ಕ್ರಮಂ ಬಬಂಧ ಕ್ರಮಿತುಂ ಸಕೋಪಃ  
 ಪ್ರತರ್ಕಯನ್ ಅನ್ಯಮಗೇಂದ್ರನಾದಾನ್" ಭಟ್ಟಿಂ ೨-೯। 6. ವೇದ  
 ಪಾಠದ ಬಂದು ರೀತಿ. 7. ಆಕ್ರಮಣ, ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ  
 ಮೇಲೆ ಬಿದ್ದು ಅಧೀನಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 8. ವಿಷ್ಣು  
 ನಿಯಮಿತವಾಗಿ ಕ್ರಮತಃ (ತಾಯನಾರ್ಥ: "ತಡ್") ಸ್ಥಿತೌ ಭವತಿ।  
 "ಕ್ರಮಣಾತ್ಕ್ರಮಹೇತುತ್ವಾತ್ ಕ್ರಮ ಏವ ತದಾಹುತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ।  
 "ಇಶ್ವರೋ ವಿಕ್ರಮೀ ಧನ್ವೀ ಮೇಧಾವೀ ವಿಕ್ರಮಃ ಕ್ರಮಃ" ವಿಂ ಸಂ।  
 9. ಸಂಪ್ರದಾಯ. ಹಿಂದಿನ ಕಾಲದಿಂದ ಬಂದ ನಡವಳಿಕೆ,  
 ಪ್ರಾಚೀನಪದ್ಧತಿ. 10. ಶಾಸ್ತ್ರವಿಧಾನ, ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತ  
 ನಡವಳಿಕೆ. "ಆಪ್ತೇನ ತಕ್ಷಣಾ ಭಿಷಜೇವ ತಕ್ಷಣಂ ಪ್ರವಕ್ರಮೇ  
 ಲಕ್ಷಣಪೂರ್ವಕಃ ಕ್ರಮಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೨೫। 11. ಜಲನ,  
 ಗಮನ. 12. ಕಂಪನ, ನಡುಕ. "ಕ್ರಮಃ ಶಕ್ತೌ ಪರಿ-  
 ಪಾಟ್ಯಾಂ ಕ್ರಮಶ್ಚಲನಕಂಪಯೋ" ವಿಶ್ವಂ। (ನಂ) 13.  
 ಪಂಕ್ತ, ಕೆಸರು.

ಕ್ರಮಕ ಕ್ರಮಕ (ಪುಂ) ವೇದದ ಕ್ರಮಪಾಠವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ  
 ಮಾಡುವವನು. ಕ್ರಮಮಾಪ್ತೇ ವೇದ ವಾ "ಕ್ರಮ" (೪-೨-೬೧)।

ಕ್ರಮಣ ಕ್ರಮಣ (ನಂ) 1. ಚರಣ, ಪಾದ, ಕಾಲು.  
 ಕ್ರಮಾತ್ಯನೇನ - ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್"  
 (೩-೩-೧೧೭)। "ಚರಣಃ ಕ್ರಮಣಃ ಪಾದಃ ಪದೋಽಘ್ನಿಶ್ಚಲನಃ  
 ಕ್ರಮಃ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ। (ನಂ) 2. ನಡೆಯುವುದು,  
 ಸಂಚರಿಸುವುದು. ತಿರುಗಾಡುವುದು. ಕ್ರಮ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್"  
 (೩-೩-೧೧೫)। "ಭೂಶುದ್ಧಿಮಾರ್ಜನಾತ್ ದಾಹಾತ್ ಕಾಲಾದ್-  
 ಗೋಕ್ರಮಣಾತ್ತಥಾ" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೧೮೮।

ಕ್ರಮಣೀಯ ಕ್ರಮಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಹೋಗಲು ಶಕ್ತವಾದ,  
 ನಡೆದುಹೋಗಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ)  
 "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। 2. ದಾಟಲು ಶಕ್ತವಾದ.  
 3. ದಾಟಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 4. ದಾಟಲ್ಪಡುವ.

ಕ್ರಮಣ ಕ್ರಮಣ (ವಿಂ) 1. ಮುಂದೆ ಹೋಗು  
 ತ್ತಿರುವ, ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ. ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಶಾನಚ್"  
 (೩-೨-೧೨೪)। "ಕ್ರಮಣಾಶ್ಚಕಾರ ಛಾ ನಾಗೇನೈರಾವತೀ-  
 ಜಸಾ" ರಘುಂ ೧೭-೩೦। 2. ದಾಟುತ್ತಿರುವ. 3. ಹೆಜ್ಜೆ  
 ಹಾಕುತ್ತಿರುವ.

ಕ್ರಮಶಸ್ ಕ್ರಮಶಸ್ (ವಿಂ) 1. ಕ್ರಮವಾಗಿ, ವರಸೆಯಾಗಿ,  
 ಬಂದರೆ ಮುಂದೆ ಬಂದಾಗ. ಕ್ರಮ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಶಸ್"। "ಕ್ರಮಶಸ್ತೇ  
 ಪುನಸ್ತಸ್ಯ ಚಾಪಾತ್ಸಮಮಿವೋದಯಃ" ರಘುಂ ೧೨-೪೭।

ಕ್ರಮಸಂಹಿತಾ ಕ್ರಮಸಂಹಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕ್ರಮಪಾಠದ ರೀತಿ  
 ಯಲ್ಲಿರುವ ಸಂಹಿತೆ.

ಕ್ರಮಾಗತ ಕ್ರಮಾಗತ (ವಿಂ) 1. ವಂಶಪರಂಪರೆಯಿಂದ  
 ಬಂದ, ಕುಲಕ್ರಮದಿಂದ ಬಂದ. 2. ವರಸೆಯಾಗಿ ಬಂದ,  
 ಬಂದಾದ ಮೇಲಿಂದರಂತೆ ಬಂದ. ಕ್ರಮಾದಾಗತಃ।

ಕ್ರಮಾಧ್ಯಯನ ಕ್ರಮಾಧ್ಯಯನ (ನಂ) ಕ್ರಮಪಾಠದ ರೀತಿ  
 ಯಲ್ಲಿ ವೇದವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವುದು.

ಕ್ರಮಾಧ್ಯಾಯಿನ್ ಕ್ರಮಾಧ್ಯಾಯಿನ್ (ವಿಂ) ಕ್ರಮಪಾಠ  
 ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ವೇದವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು.

ಕ್ರಮಾನ್ವಯ ಕ್ರಮಾನ್ವಯ (ಪುಂ) ಕ್ರಮವಾದ ಸಂಬಂಧ.

ಕ್ರಮಾಯಾತ ಕ್ರಮಾಯಾತ (ವಿಂ) ಕ್ರಮವಾಗಿ ಬಂದ.  
 ಕ್ರಮಾದಾಗತಃ।

ಕ್ರಮಿ ಕ್ರಮಿ (ಪುಂ) ಕ್ರಮಿ, ಹುಳು. ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ)  
 "ಇನ್"।

ಕ್ರಮಿಕ ಕ್ರಮಿಕ (ವಿಂ) 1. ಕ್ರಮವಾಗಿ ಬಂದ, ಬಂದಾದ  
 ಮೇಲಿಂದರಂತೆ ಬಂದ. ಕ್ರಮೋತ್ಪತ್ತಯ "ಠನ್"  
 (೪-೨-೧೧೫)। "ಕ್ರಮಿಕೇಗತಾನಾಂ ತು ಗುಂಭಃ ಕಾರಕ-  
 ದೀಪಕಮ್" ಚಂದ್ರಾಂ। 2. ಕುಲಕ್ರಮವಾಗಿ ಬಂದ, ವಂಶ  
 ಪರಂಪರೆಯಿಂದ ಬಂದ. "ಆಪ್ತೇರಲುಂಭಃ ಕ್ರಮಿಕೇಸ್ತೇ ವ  
 ಕಚ್ಚಿದನುಷ್ಠಿತಾಃ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೪-೩೬।

ಕ್ರಮಿಕಪಟಕ ಕ್ರಮಿಕಪಟಕ (ನಂ) 1. ವಾಯುವಿಕ್ಷೇಪ.  
 2. ಉದ್ದಂಬರ. 3. ಕುಸುಮೇ.

ಕ್ರಮ - ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ (ಮಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಕ್ರಾಮ್ಯತಿ,  
 ಕ್ರಾಮತಿ। ಚಕ್ರಾಮ। ಕ್ರಮಿತಾ। ಕ್ರಮಿಷ್ಯತಿ। ಕ್ರಾಮ್ಯತು,  
 ಕ್ರಾಮತು। ಅಕ್ರಾಮ್ಯತ್, ಅಕ್ರಾಮತ್। ಕ್ರಾಮ್ಯೇತ್, ಕ್ರಾಮೇತ್।  
 ಕ್ರಾಮ್ಯಾತ್, ಅಕ್ರಮೀತ್, ಅಕ್ರಮಿಷ್ಯತ್। 1. ಹೋಗು,  
 ನಡೆ. 2. ಹೆಜ್ಜೆಯಿಡು. 3. ಹಾರು, ನೆಗೆ. 4. ಏರು,  
 ಹತ್ತು. ಮೇಲೆ ವ್ಯಾಪಿಸು. "ಲೋಕಸ್ಯಾಗ್ರೇ ಪಶ್ಯತೋ ಧೃಷ್ಟಮಾಶು  
 ಕ್ರಾಮತುಚ್ಚೈರ್ಮುತೌ ಯಸ್ಯ ತೇಜಃ" ಮಾಘಂ ೧೬-೪೩।  
 5. ಆಕ್ರಮಿಸು, ಸ್ವಾಧೀನಪಡಿಸಿಕೊ. 6. ಹರಡು, ವ್ಯಾಪಿಸು.  
 7. ಮೀರು, ಮೇಲಾಗು. 8. ಮೀರು, ಅತಿಕ್ರಮಿಸು.

ಕ್ರಮಣಿಃ - ಕ್ರಮ್ಯತೇ। ಚಕ್ರಮೇ। ಕ್ರಮಂತಾಃ। ಕ್ರಮ್ಯತೇ।  
 ಕ್ರಮ್ಯತಾಮ್। ಅಕ್ರಮ್ಯತಃ। ಕ್ರಾಮ್ಯೇತಃ। ಕ್ರಮಿಷ್ಯತಃ। ಅಕ್ರಮಿಷ್ಯತಃ।  
 ಅಕ್ರಮ್ಯತಃ।

ಕ್ರಮಿಣಿಃ - ಕ್ರಮಯತಿ, -ತೇ। ಕ್ರಮಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ,  
 -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಕ್ರಮಯಿತಾ। ಕ್ರಮಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ।  
 -ಕ್ರಮಯತು, -ತಾಮ್। ಅಕ್ರಮಯತ್, -ತಃ। ಕ್ರಮಯೇತ್, -ತಃ।  
 ಅಕ್ರಮಯೇತ್, -ತಃ।



ಸನಿ:—ವಿಕ್ರಮಿಷತಿ। ವಿಕ್ರಮಿಷಾಂ ಚಕಾರ, —ಬಹುವ್ರ, —ಆಸ। ವಿಕ್ರಮಿಷಿತಾ। ವಿಕ್ರಮಿಷ್ಯತಿ। ವಿಕ್ರಮಿಷತು। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:—ಕ್ರಮಿತವ್ಯಮ್। ಕ್ರಮಣೀಯಮ್। ಕ್ರಮ್ಯಮ್। ಕ್ರಾಂತ:। ಕ್ರಾಂತವಾನ್। ಕ್ರಾಮ್ಯನ್, ಕ್ರಾಮನ್ ಕ್ರಾಮ್ಯಂತೀ, ಕ್ರಾಮಂತೀ। ಕ್ರಮ್ಯಮಾಣ:, ಕ್ರಮಮಾಣ:। ಕ್ರಮಿಷ್ಯನ್, ಕ್ರಮಿಷ್ಯಂತೀ, ಕ್ರಮಿಷ್ಯಂತೀ। ಕ್ರಮ್ಯಮಾಣ:। ಕ್ರಮಿತುಮ್। ಕ್ರಾಂತಮ್। ಕ್ರಮಣಮ್। ಕ್ರಾಂತವಾ, ಕ್ರಮಿತವಾ। “ಕ್ರಾಮದ್ವಿಧನಪದವೀಮನೇಕಸಂಖ್ಯೇಸ್ತೇಜೋಭಿ: ಶುಚಿ-ಮಣಿಜನ್ಮಭಿವಿಭಿನ್ನ:” ಕಿರಾಂ ೪-೩೪।

“ಕ್ರಮ” ಧಾತುವು ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಕೆಲವು ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದಲೂ ಅತ್ಯುಪಪದಿಯಾಗುವುದು: “ವೃತ್ತಿ-ಸರ್ಗ-ತಾಯನೇಷು ಕ್ರಮ:” (೧-೩-೩೮)।

(1) ವೃತ್ತಿರಪ್ರತಿಬಂಧ:—“ಋಚಿ ಕ್ರಮತೇ ಬುದ್ಧಿ:” ನ ಪ್ರತಿ-ಹನ್ಯತೇ ಇತ್ಯರ್ಥ:।

(2) ಸರ್ಗ ಉತ್ಸಾಹ:—“ಅಧ್ಯಯನಾಯ ಕ್ರಮತೇ” ಉತ್ಸಾಹತೇ ಇತ್ಯರ್ಥ:।

(3) ತಾಯನ ವೃದ್ಧಿ:—“ಕ್ರಮಂತೇಽಸ್ಮಿನ್ ಶಾಸ್ತ್ರಾಣಿ” ಸ್ಫೋಟಾನಿ ಭವಂತೀತ್ಯರ್ಥ:।

ಉಪ ಪರಾ (ಉಪಸರ್ಗ) ಪೂರ್ವಕವಾದರೆ ಮೇಲಿನ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಉಪಕ್ರಮತೇ ಪರಾಕ್ರಮತೇ।

ಆಙ್ ಪೂರ್ವಕವಾದರೆ ಉದ್ಗಮನ (ಮೇಲಕ್ಕೆ ಬರುವುದು) ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ. “ಆಕ್ರಮತೇ ಸೂರ್ಯ:”। ಉದಯತೇ ಇತ್ಯರ್ಥ:।

ವಿ ಪೂರ್ವಕವಾದರೆ ಪಾದವಿಹರಣಾರ್ಥ (ಪಾದವಿನ್ಯಾಸಾರ್ಥ)ದಲ್ಲಿ “ಸಾಧು ವಿಕ್ರಮತೇ ವಾಜಿ” ಇತ್ಯಾದಿ.

ಪ್ರ ಉಪ ಪೂರ್ವಕವಾದರೆ ಸಮಾನಾರ್ಥದಲ್ಲಿ “ಪ್ರಕ್ರಮತೇ ಉಪಕ್ರಮತೇ ವಾ ಭೋಕ್ತುಮ್”। ಪ್ರಾರಂಭೇ ಅನಯೋಸ್ತುತ್ಯಾರ್ಥತಾ।

“ಅನುಪಸರ್ಗಾದ್ವಾ” (೧-೩-೪೩)। ಯಾವ ಉಪಸರ್ಗ ಯೋಗವೂ ಇಲ್ಲದಿದ್ದಲ್ಲಿ ಮೇಲೆ ಹೇಳಿದ ವೃತ್ತಿ ಮೊದಲಾದ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಉಳಿದ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ವಿಕಲ್ಪವಾಗಿ ಅತ್ಯುಪಪದಿಯಾಗುವುದು. ಕ್ರಾಮತಿ-ಕ್ರಮತೇ। ಕ್ರಮಮಾಣ:। “ಉಪಾಕ್ರಂತಾಽಽಕುಲಂ ಧೋರೈ: ಕ್ರಮಮಾಣೈನಿಶಾಚರೈ:” ಭಟಿಂ ೮-೨೪।

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಅತಿ + ಕ್ರಮ = ಅತೀಕ್ರಮತಿ। ಅತೀಕ್ರಮ:। ಅತಿ-ಕ್ರಾಂತ:। 1. ಮೀರು, ಉಲ್ಲಂಘಿಸು. ಮೀರಿ ನಡೆ. “ಅತೀಕ್ರಮೇತ್ ಪ್ರಮತ್ತಂ ಯಾ ಮತ್ತಂ ರೋಗಾರ್ತಮೇವ ವಾ। ಸಾ ತ್ರಿನ್ ಮಾಸಾನ್ ಪರಿತ್ಯಾಜ್ಯಾ ವಿಭೂಷಣಪರಿಚ್ಛದಾ” ಮನುಂ ೯-೪೮।

2. ಕೆಳೆದುಹೋಗು. “ಅತೀಕ್ರಾಂತಪಾರ್ಥಿವಗುಣಾನ್” ಮುद्रಾಂ ೧। 3. ದಾಟು, ದಾಟಿ ಮುಂದೆ ಸಾಗು. “ಸ ನದೀ: ಪವಂತಾಂಶ್ಚಾಪಿ ಸಲಿಲಾನಿ ಸರಾಂಸಿ ಚ। ಅಚಿರೇಣಾತಿಚಕ್ರಾಮ ಸೇವರ: ಸೇ ವರನ್ನಿವ” ಭಾಂ ಆದಿಂ। “ಹಿಮವಂತಮತೀಕ್ರಮ್ಯ ಗಂಧಮಾದನಮೇವ ಚ। ಅತೀಕ್ರಾಮತ್ ಸ ದುರ್ಗಾಣಿ ದಿವಾರಾತ್ರ-ಮತಂದ್ರಿತ:” ಭಾಂ ವನಂ ೩೭-೪೧। 4. ಕಾಲು ಕೆಳೆ, ಕಾಲು ಮೀರಿ ಹೋಗು.

(2) ವಿ + ಅತಿ + ಕ್ರಮ = ವ್ಯತೀಕ್ರಮತಿ। ವ್ಯತೀಕ್ರಮ:। ಕಾಲು ಕೆಳೆ, ಕಾಲು ಮೀರಿ ಹೋಗು. “ಸುಮಹಾಂತಂ ಕಾಲಂ ವ್ಯತೀಚಕ್ರಾಮ”।

(3) ಸಮ್ + ಅತಿ + ಕ್ರಮ = ಸಮತೀಕ್ರಮತಿ। ಸಮೀಕ್ರಮ:। ದಾಟು, ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ದಾಟಿಹೋಗು. “ಅವಂತೀ ಕೃಷವಂತಂ ಚ ಸಮತೀಕ್ರಮ್ಯ ಪವಂತಮ್” ಭಾಂ।

(4) ಅನು + ಕ್ರಮ = ಅನುಕ್ರಮತಿ। ಅನುಕ್ರಮ:। ಅನು-ಕ್ರಾಂತಮ್। ವರಸೆಯಾಗಿ ನಡೆ, ಒಬ್ಬನೊಂದೆ ಒಬ್ಬನಂತೆ ಹೋಗು.

(5) ಅಪ + ಕ್ರಮ = ಅಪಕ್ರಮತಿ। ಅಪಚಕ್ರಾಮ। ಅಪಕ್ರಮ:। ಹಿಮ್ಮೆಟ್ಟು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಸರಿದುಹೋಗು. “ಹಿತ್ವಾ ಸೇನಾಮಪಚಕ್ರಾಮ ಚಾಪಿ ತದಾ ನಾಶಂಸೇ ವಿಜಯಾಯ ಸಂಜಯ” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧-೧೭೯।

(6) ಅಭಿ + ಕ್ರಮ = ಅಭಿಕ್ರಮತಿ। ಅಭಿಚಕ್ರಾಮ। ಅಭಿಕ್ರಮ:। 1. ಎದುರುಗೊಳ್ಳು, ಎದುರಾಗಿ ಹೋಗು. “ತಮಭಿಕ್ರಮ್ಯ ಸರ್ವೇಽಽ ವಯಂ ವಾರ್ತಾಮಹೇ ವಸು” ಭಾಂ। 2. ಅರಂಭಿಸು, ಉಪಕ್ರಮಿಸು. “ನೆಹಾಭಿಕ್ರಮನಾಶೋಽಸ್ತಿ ಪ್ರತ್ಯವಾಯೋ ನ ವಿಧತೇ। ಸ್ವಲ್ಪಮಪ್ಯಸ್ಯ ಧರ್ಮಸ್ಯ ತ್ರಾಯತೇ ಮಹತೋ ಭಯಾತ್” ಗೀತಾ ೨-೪೦।

(7) ಆ + ಕ್ರಮ = ಆಕ್ರಮತಿ। ಆಕ್ರಮಣಮ್। ಆಕ್ರಮ್ಯ। 1. ಆಕ್ರಮಿಸು, ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ ಜಯಿಸು, ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ ಸ್ವಾಧೀನಪಡಿಸಿಕೊ. “ಹರೀರಾಕ್ರಮಣೇನ ಸಂನತಿ ಕಿಲ ಬಿಭ್ರತಿ ಭೀತಸಂಭವ:” ಮಾಘಂ ೧೬-೩೪। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗು. “ಆಕ್ರಮತೇ ಸೂರ್ಯ:”। ಉದಯತೇ ಇತ್ಯರ್ಥ:।

(8) ಉದ್ + ಕ್ರಮ = ಉದಕ್ರಮತಿ। ಉದಕ್ರಾಂತ:। ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗು, ಹಾರಿಹೋಗು. “ತಾನ್ ಕೃತ್ವಾ ಪತಂಗಶ್ರೇಷ್ಠ: ಸರ್ವಾನುತ್ಕ್ರಾಂತಜೀವಿತಾನ್” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೩೨-೨೨।

(9) ವಿ + ಉದ್ + ಕ್ರಮ = ವ್ಯುತ್ಕ್ರಮತಿ। ವ್ಯುತ್ಕ್ರಮ:। 1. ಕಡೆಗಣಿಸು, ಅಲ್ಲಕ್ಕೊಂದೆ ಮುಂದೆ ನಡೆ. “ಇತ್ಯಾದತೇನ ಕಥಿತೋ ರಘುನಂದನೇನ ವ್ಯುತ್ಕ್ರಮ್ಯ ಲಕ್ಷ್ಮಣಮುಖೌ ಭರತೌ ವವಂದೇ” ರಘುಂ ೧೩-೭೨। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗು. 3. ಉಲ್ಲಂಘಿಸು, ಮೀರಿ ನಡೆ.



- (10) **उप + क्रमु = उपक्रमते । उपचक्रमे । उपक्रमः ।**  
 उपक्रम्य । 1. ಪ್ರಾರಂಭಿಸು, ಮೊದಲುಮಾಡು. "इदमीदृ-  
 गनीदृगाशयः प्रसभं वक्तुमुपक्रमेत कः" किरा० २-२८ ।  
 "रामोपक्रममाचख्यौ रक्षःपरिभवं नवम्" रघु० १२-४२ ।  
 2. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಹೋಗು, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಹೋಗು. "कुसुम-  
 धर्माणो हि योषितः सुकुमारोपक्रमाः" मालती० ७ ।  
 3. ರೋಗಿಯ ಚಿಕಿತ್ಸೆಮಾಡು. "आतुरमुपक्रममाणेन  
 भिषजाऽऽयुरादावेव परीक्षितव्यं, सत्यायुषि व्याधि-  
 ऋतु-अग्नि-वयो-देहबल-सत्त्व-सात्म्य-प्रकृति-भेषजदेशान्  
 परीक्षेत" सुश्रुत० सूत्र० ३५-३ ।
- (11) **निर् (स्) + क्रमु = निष्क्रामति ।** ಹೊರಕ್ಕೆ  
 ಹೊರಡು. "जिगीषया मही पाण्डुनिरक्रामत् पुरात्  
 प्रभो" भा० आदि० ११२-२१ । ಕೆಲವೆಡೆ ಅತ್ಯಂತ  
 ಪದಿತ್ಯವೂ ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಂಟು. "वातापे निष्क्रमस्वेति  
 पुनः पुनरुवाच ह" भा० वन० १९-८ ।
- (12) **अभि + निर् (स्) + क्रमु = अभिनिष्क्रामति ।**  
 ಎದುರಾಗಿ ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡು. "प्रविश्य चाभिनिष्क्रान्तं  
 सुग्रीवं वानरर्षभाः" रामा० ।
- (13) **वि + निर् (स्) + क्रमु = विनिष्क्रामति ।**  
 ಸರಿಯಾಗಿ ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೊರಡು.
- (14) **परा + क्रमु = पराक्रमते । पराक्रमः । पराक्रम-  
 णम् ।** ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ ಆಕ್ರಮಿಸು.
- (15) **परि + क्रमु = परिक्रामति ।** ಅಲೆದಾಡು,  
 ಸುತ್ತಲೂ ತಿರುಗಾಡು, ಸುತ್ತುಡು. "परिक्रामति संसारे  
 चक्रवद्वह्वेदनः" भा० वन० १०९-३८ ।
- (16) **सम् + परि + क्रमु = संपरिक्रामति ।** ಸುತ್ತಲೂ  
 ಹೋಗು, ಸುತ್ತಲೂ ನಡೆ. "बहूनि संपरिक्रम्य तीर्था-  
 न्यायतनानि च" भा० आदि० १-१२ ।
- (17) **प्र + क्रमु = प्रक्रमते । प्रचक्रमे ।** ಪ್ರಾರಂಭಿಸು,  
 ಮೊದಲುಮಾಡು. "तदानपेक्ष्य स्वशरीरमादवं तपो  
 महत्सा चरितुं प्रचक्रमे" कुमा० ५-१८ ।
- (18) **वि + क्रमु = विक्रपते ।** ಹೆಜ್ಜೆಯಿಡು. "साधु  
 विक्रमते वाजी" सि० कौ० । ಈ ಧಾತುವು ಬೇರೆ ಅರ್ಥ  
 ಗಳಲ್ಲಿ ಪರಸ್ಪರವದಿಯಾಗುವುದು. "ते विक्रमन्तः स्फुरता  
 दृढेन विक्षिप्यमाणा धनुषा नरेन्द्राः" ।
- (19) **सम् + क्रमु = संक्रामति । संक्रमणम् ।** ಸಂವೃಂಧ  
 ಹೊಂದು, ಸೇರು. "औपसर्गिकरोगाश्च संक्रामन्ति  
 नरात्तरम" सुश्रुत० निदा० ५-३४ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**क्रमु कृमु (पुं०) ಅಡಕೆಮರ.** ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ) "उः"  
 बाहु० ।

**क्रमुक कृमुक (पुं०) 1. ಅಡಕೆಮರ.** ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ)  
 संज्ञायां "कन्" (५-३-७५) । 2. ಭದ್ರಮುಸ್ತಕ, ಕೆಂಪು  
 ಬಣ್ಣದ ಕೊನ್ನಾರಿ. 3. ಬಿಳಿಲೋಧ್ಯದ ಗಿಡ. 4. ಹೂವರಿಚಿ  
 ಗಿಡ, ಬ್ರಹ್ಮದಾರು ಗಿಡ. 5. ಕೆಂಪು ಅರಗಿನ ಮರ.  
 "क्रमुकः पट्टिकाख्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्रमादनः" अम० ।  
 (न०) 6. ಅಡಕೆ. "क्रमुकः श्वेतलोध्रे च पूगे च  
 ब्रह्मदारुणि" नानार्थर० । "आस्वादितार्द्रक्रमुकाः समुद्रा-  
 दम्यागतस्य प्रतिपत्तिमीयुः" माघ० ३-८१ ।

**क्रमेल कृमैल (पुं०) ಉಷ್ಣ, ಒಂಟಿ.** ಕ್ರಾಮತಿ — ಕ್ರಮ  
 (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ) "विच्" (३-२-७५) । एलयति — इल  
 (गतौ) "अच्" (३-१-१३४) । कम् चासौ एलश्च ।  
 स्वार्थे "कः" । -लकः -लकः. "भूमिर्महत्यप्यविलम्बित-  
 क्रमं क्रमेलकैस्तत्क्षणमेव चिच्छिदे" माघ० १२-१८ ।  
 जाति० "डीष्" (४-१-६३) । -ली -ली, -लकी -लकी.

**क्रय कृय (पुं०) ಬೆಲೆಯನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ವಸ್ತುವನ್ನು  
 ಕೊಳ್ಳುವುದು.** ಡು ಕ್ರೀತ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯ) "अच्"  
 (३-३-५६) । "क्रयविक्रयमध्वानं भक्तं च सपरिव्ययम्"  
 मनु० ७-१२७ ।

**क्रयण कृयण (न०) ಕ್ರಯ, ಬೆಲೆಯನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ವಸ್ತು  
 ವನ್ನು ಕೊಳ್ಳುವುದು.** ಡು ಕ್ರೀತ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯ) भावे  
 "ल्युट्" (३-३-११५) ।

**क्रयणीय कृयणीय (वि०) 1. ಬೆಲೆ ಕೊಟ್ಟು ಕೊಳ್ಳ  
 ಲ್ಪಡುವ.** 2. ಬೆಲೆ ಕೊಟ್ಟು ಕೊಳ್ಳಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.  
 3. ಬೆಲೆ ಕೊಟ್ಟು ಕೊಳ್ಳಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಡು ಕ್ರೀತ್  
 (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯ) कर्मादौ "अनीयर्" (३-१-९६) ।

**क्रयनियम कृयनियम (पुं०) ಮಾರುವವನ ಮತ್ತು  
 ಕೊಳ್ಳುವವನ ಕಟ್ಟಲೆ, ವ್ಯಾಪಾರದ ನಿಬಂಧನೆ.** ಕ್ರಯ  
 नियमः ।

**क्रयलेख कृयलेख (न०) ಕ್ರಯಪತ್ರ, ಮನೆ ಜಮೀನು  
 ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಕ್ರಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಪತ್ರ.** ಕ್ರಯಸ್ಯ  
 लेखम् । "गृहं क्षेत्रादिकं क्रीत्वा तुल्यमूल्याक्षरान्वितम् ।  
 पत्रं कारयते यत्तु क्रयलेखं तदुच्यते" ।

**क्रयविक्रय कृयविक्रय (पुं० द्विव०) ಕ್ರಯ ಮತ್ತು  
 ವಿಕ್ರಯ.** ಕೊಳ್ಳುವುದು ಮತ್ತು ಮಾರುವುದು. ಕ್ರಯಶ್ಚ  
 विक्रयश्च । "आगमं निर्गमं स्थानं तथा वृद्धिक्षयावुभौ ।  
 विचार्य सर्वपण्यानां कारयेत् क्रयविक्रयौ" मनु० ८-४०१ ।



**ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಾನುಶಯ ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಾನುಶಯ** (ಪುಂ) ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಗಳ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ (ಸರಿಯಾಗಿ ನಡೆದಿಲ್ಲದ್ದು) ಉಂಟಾಗುವ ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪ, ಕೊಳ್ಳುವುದು ಮತ್ತು ಮಾರುವುದು ಈ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪ. ಕ್ರಯೇ ವಿಕ್ರಯೇ ಚಾನುಶಯಃ | ಇದು ಮನುಷ್ಯನ ವ್ಯವಹಾರಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಭವಿಸಬಹುದಾದ ಹದಿನೆಂಟು ವಿಧ ವಿವಾದಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಾನುಶಯೋ ವಿವಾದಃ ಸ್ವಾಮಿಪಾಲಯೋಃ" ಮನುಂ ೮-೫ | ["ಅಷ್ಟಾದಶವಿವಾದಪದ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಿಕ ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಿಕ** (ವಿಂ) ವರ್ತಕ, ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಗಳಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು, ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಕೊಳ್ಳುವುದು ಮತ್ತು ಮಾರುವುದು ಇವುಗಳಿಂದ ಜೀವನ ನಡೆಸುವವನು. ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಾಭ್ಯಾಂ ಜೀವತಿ "ಠನ್" (೪-೪-೧೩) | ಕ್ರಯೇಣ ವಿಕ್ರಯೇಣ ಚ ಜೀವತಿ - ಕ್ರಯ "ಠನ್" ವಿಕ್ರಯ "ಠನ್" (೪-೪-೧೩) | ಕ್ರಯಿಕಃ ಕ್ರಯಿಕಃ, ವಿಕ್ರಯಿಕಃ ವಿಕ್ರಯಿಕಃ. ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಗ್ರಹಣಂ ಸಂಘಾತವಿಗೃಹೀತಾರ್ಥಮ್ ಸಿಂ ಕೌಂ |

**ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಿನ್ ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಿನ್** (ವಿಂ) ಕೊಳ್ಳುವವನು ಮತ್ತು ಮಾರುವವನು. ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಾವಸ್ಯ ಸ್ತಃ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫) | "ಶುಲ್ಕಸ್ಥಾನಂ ಪರಿಹರಣಕಾಲೇ ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಿನ್" ಮನುಂ ೮-೪೦೦ |

**ಕ್ರಯಾರೋಹ ಕ್ರಯಾರೋಹ** (ಪುಂ) ಪಣ್ಯವೀಧಿ, ಅಂಗಡಿಯ ಬೀದಿ. ಕ್ರಯಾರೋಹತೀತೃ - ಆ + ರೂ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) ಅಧಿಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧) | "ಮಹಾಘೋಷಂ ಕ್ರಯಾರೋಹಂ ಹೃದ್ ಪಣ್ಯಾಜಿರಂ ವಿದುಃ" ಹಾರಾಂ |

**ಕ್ರಯಿಕ ಕ್ರಯಿಕ** (ವಿಂ) 1. ವರ್ತಕ, ವ್ಯಾಪಾರಿ. ಕ್ರಯೇಣ ಜೀವತಿ "ಠನ್" (೪-೪-೧೩) | 2. ವಸ್ತುವನ್ನು ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಕೊಳ್ಳುವವನು. ಕ್ರಯಃ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠನ್" (೫-೧-೧೦೯) | "ಪರ್ಯಪಿತೃಕ್ರಯಿಕಲೋಕಮಗ್ನಪಣ್ಯಪೂರ್ಣಾಪಣಾ ವಿಪಣಿನೋ ವಿಪಣಿವಿಭೇಜುಃ" ಮಾಘಂ ೫-೨೪ |

**ಕ್ರಯ ಕ್ರಯ** (ವಿಂ) ಮಾರಲು ಅಂಗಡಿಯಲ್ಲಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ ವಸ್ತು. ಮಾರಾಟಕ್ಕಾಗಿ ಇಟ್ಟಿರುವ ಪದಾರ್ಥ. ಡು ಕ್ರೋ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯ) "ಯತ್" (೬-೧-೮೨) | ನಿಪಾಂ | "ಕೇತಾರಃ ಕ್ರೀಣೀಯುರೀತಿ ಬುದ್ಧ್ಯಾ ಆಪಣೇ ಪ್ರಸಾರಿತಂ ಕ್ರಯಮ್" ಸಿಂ ಕೌಂ |

**ಕ್ರಯ ಕ್ರಯ** (ನಂ) ಹಸಿ ಮೂಸ. "ಅಕ್ಷಸ್ಥಾದಸ್ಥಿಸಂಸ್ಥಂ ಸ್ಥಪುರಗತಮಪಿ ಕ್ರಯಮವ್ಯಗ್ರಮತಿ" ಮಾಲತೀಂ ೫-೧೬ |

**ಕ್ರಯಧಾತನ ಕ್ರಯಧಾತನ** (ಪುಂ) ಜಿಂಕೆ, ಹುಲ್ಲೆ. ಕ್ರಯಾರ್ಥ ಧಾತೃತೇಜ್ಞಃ-ಹನ (ಹಿಸಾಗತೃಃ) + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩) |

**ಕ್ರಯಭುಜ್ ಕ್ರಯಭುಜ್** (ಪುಂ) ಮೂಸವನ್ನು ತಿನ್ನುವ ರಾಕ್ಷಸ. ಕ್ರಯಂ ಭುಜ್ತೇ - ಭುಜ (ಪಾಲನಾಭ್ಯವಹಾರಯೋಃ) "ವಿವ್" (೩-೨-೭೬) |

**ಕ್ರಯಾದ್ ಕ್ರಯಾದ್** (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ. ಕ್ರಯಮತಿ - ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ) "ವಿಟ್" (೩-೨-೬೯) | "ಕ್ರಯಾದ್ಗಣಪರೀವಾರ-ಶ್ರಿತಾಗ್ನಿರೀವ ಜಜ್ಞಮಃ" ರಘುಂ ೧೫-೧೬ | (ವಿಂ) 2. ಹಸಿ ಮೂಸವನ್ನು ತಿನ್ನುವ (ಮೃಗ ಪಕ್ಷಿಗಳು). "ಕ್ರಯಾನ್ಯುಗಃ ಪುಷ್ಕರಾಪ್ಯಾನಕಾನಾಂ ಪ್ರತ್ಯಾಶಾಭಿರ್ಮೇದಸೋ ದಾರಿತಾನಿ" ಮಾಘಂ ೧೮-೭೮ |

**ಕ್ರಯಾದ್ ಕ್ರಯಾದ್** (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ. 2. ಜೇಷ್ಠಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮೂಸವನ್ನು ತಿನ್ನುವವನು. ಪವಮಾಂಸಮತಿ - ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ) "ಅಞ್" (೩-೨-೧) | ಪವಮಾಂಸಶಬ್ದಸ್ಯ ಕ್ರಯಾದೇಶಃ | ಪೃಷಂ | 3. ಮೂಸವನ್ನು ತಿನ್ನುವ ಹುಲಿ ಮೊದಲಾದ ಮೃಗಗಳು. "ಪ್ರಮಥ್ಯ ಕ್ರಯಾದ್ ಮರಣಸಮಯೇ ರಕ್ಷಿತವತಃ ಪರಿಷ್ವಜ್ಞಂ ಲಬ್ಧ್ವಾ ತವ ಕಥಮಿವಾನ್ಯತ್ರ ರಮತಾಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೪-೯ | 4. ರುರುಂಜಿ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. ಇದು ಇರುವ ನರಕ್ಕೆ "ರೇರವ" ಪೆಂದು ಹೆಸರು. "ಯತ್ರ ನಿಪತಿತಂ ಪುರುಷಂ ಕ್ರಯಾದಾ ನಾಮ ಕರವಃ ತಂ ಕ್ರಯೇಣ ಧಾತಯಂತಿ" ಭಾಗಂ ೫-೨೬-೧೨ | (ವಿಂ) 5. ಮೂಸವನ್ನು ತಿನ್ನುವ.

**ಕ್ರಯಾಶಿನ್ ಕ್ರಯಾಶಿನ್** (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ. ಕ್ರಯಮಶನಾತಿ - ಅಶ (ಭೋಜನೇ) "ಣಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮) | (ವಿಂ) 2. ಮೂಸವನ್ನು ತಿನ್ನುವ.

**ಕ್ರಶಿತ ಕ್ರಶಿತ** (ವಿಂ) ಕೃಶವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಡಕಲಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕೃಶ ತತ್ಕರೋತಿಂ (ಗಂ ೭-೪-೨) ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ನಿಜಮೇಕ್ಷಿ ಮಂದಮನಿಶಂ ನಿಶಿತೈಃ ಕ್ರಶಿತಂ ಶರೀರಮಶರೀರಶರೈಃ" ಮಾಘಂ ೧-೬೧ |

**ಕ್ರಶಿಮನ್ ಕ್ರಶಿಮನ್** (ಪುಂ) ಕೃಶತೆ, ತೆಳ್ಳಗಿರುವಿಕೆ. ಬಡಕಲಾಗಿರುವಿಕೆ. ಕೃಶಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಇಮನಿಚ್" (೫-೧-೧೨೨) | "ಕ್ರಶಿಮಶಮನಯಾನಯಾ ತದಾಪ್ತುಂ ಕುಚಿಕುಚಿತಾಥ ಭವದ್ವಿಧಾವಿಧಾಭಿಃ" ನೈಷಂ ೪-೧೨೧ |

**ಕ್ರಶಿಷ್ಠ ಕ್ರಶಿಷ್ಠ** (ವಿಂ) ಬಹುಮಂದಿಯಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಕೃಶವಾಗಿರುವ, -ಹೆಚ್ಚು ತೆಳ್ಳಗಿರುವ. ಅಯಮೇತೇಷಾಮತಿಶಯೇನ ಕೃಶಃ "ಇಷ್ಠನ್" (೫-೩-೫೫) |

**ಕ್ರಶೀಯಸ್ ಕ್ರಶೀಯಸ್** (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ಕೃಶವಾಗಿರುವ, ಅಧಿಕವಾಗಿ ಬಡಕಲಾಗಿರುವ. ಅತಿಶಯೇನ ಕೃಶಃ "ಇಯಸುನ್" (೫-೩-೫೭) | "ಭ್ರಮನ್ಮುಖ್ಯಾಭುಗಾರಿಕಾಯಾಮಾಯಸ್ಯ ಭೇಮಿ-ವಿರಹಾತ್ಕ್ರಶೀಯಾನ್" ನೈಷಂ ೬-೩೬ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಯಸಿ -ಯಸೀ.



ಕ್ರಾಕಚಿಕ ಕ್ರಾಕಚಿಕ (ಪುಂ) ಗರಗಸದ ಕೆಲಸದಿಂದ ಜೀವಿಸು ವವನು, ಮರಗಳನ್ನು ಕೊಯ್ದು ಜೀವನ ಮಾಡುವವನು. ಕ್ರಕಚೇನ ಜೀವತಿ - ಕ್ರಕಚ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೨) ।

"ಮಾಯುರಕಾಃ ಕ್ರಾಕಚಿಕಾ ವೇಧಕಾ ರುಚಿಕಾಸ್ತಥಾ" ರಾಮಾಂ ।

ಕ್ರಾಂತ ಕ್ರಾಂತ (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) ಕರ್ತಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಟಾಪ್" ।

ಕ್ರಾಂತಾ ಕ್ರಾಂತಾ. (ನಂ) 2. ಚರಣ, ಕಾಲು, ಪಾದ.

"ಮನಸೀಂದ್ರಿ ದಿಶಃ ಶ್ರೋತ್ರೇ ಕ್ರಾಂತೇ ವಿಷ್ಣುಂ ಬಲೇ ಹರಮ್ । ವಾಚ್ಯಗ್ನಿ ಮಿತ್ರಮುತ್ಸರ್ಗಂ ಪ್ರಜನೇ ಚ ಪ್ರಜಾಪತಿಮ್" ಮನುಂ ೧೨-೧೨೧ ।

3. ಕ್ರಮಣ, ಹೆಜ್ಜೆಯಿಡುವುದು, ನಡೆಯುವುದು. ಕ್ರಮ ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) । (ವಿಂ) 4. ಅಕ್ರಮಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟು. 5. ಹತ್ತಲ್ಪಟ್ಟು. ಕ್ರಮ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । 6. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ. "ಕ್ರಾಂತಂ ರುಚಾ ಕಾಶ್ಚನವಪ್ರಭಾಜಾ ನವಪ್ರಭಾಜಾಲಭೃತಾಂ ಮಣಿನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೩ । 7. ದಾಟಲ್ಪಟ್ಟು. 8. ಅತಿಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಮೀರ ಲ್ಪಟ್ಟು. 9. ಸಂಬಂಧಿಸಿರುವ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. ಕ್ರಮ ಕರ್ತಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) । "ಕ್ರಾಂತಕ್ರಾಂತವದನಪ್ರತಿಬಿಂಬೇ ಭಗನಬಾಲಸಹಕಾರಮುಗಂಧಿ" ಮಾಘಂ ೧೦-೩ ।

ಕ್ರಾಂತದರ್ಶಿನ್ ಕ್ರಾಂತದರ್ಶಿನ್ (ವಿಂ) ಬಾಹ್ಯೇಂದ್ರಿಯಕ್ಕೆ ಗೋಚರವಾಗದ ವಸ್ತುವನ್ನು ನೋಡುವವನು, ಸರ್ವಜ್ಞ. ಕ್ರಾಂತಂ ಬಾಹ್ಯೇಂದ್ರಿಯವಿಷಯತಾಮತಿಕ್ರಾಂತಂ ಸರ್ವಂ ವಸ್ತು ದ್ರಷ್ಟುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ - ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) "ಣಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮) ।

ಕ್ರಾಂತಿ ಕ್ರಾಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗತಿ, ಗಮನ, ನಡೆಯುವುದು. 2. ಹೆಜ್ಜೆಯಿಡುವುದು. ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಕ್ರಿನ್" (೩-೩-೯೪) । ದೀರ್ಘಃ (೬-೪-೧೫) । 3. ಗ್ರಹಗಳ ವಕ್ರಗತಿ. 4. ಸೂರ್ಯನು ಸಂಚರಿಸುವ ಮಾರ್ಗ. 5. ದಾಟುವುದು. 6. ಮೀರುವುದು, ಅತಿಕ್ರಮಿಸುವುದು, ಉಲ್ಲಂಘಿಸುವುದು.

ಕ್ರಾಂತಿಕೇತ್ರ ಕ್ರಾಂತಿಕೇತ್ರ (ನಂ) ಗ್ರಹಗಳ ವಕ್ರಗತಿಯನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಯಂತ್ರ. ಕ್ರಾಂತಿಜ್ಞಾಪಕಂ ಕೇತ್ರಮ್ ।

ಕ್ರಾಮತ್ ಕ್ರಾಮತ್ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತುತ್ತಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರುತ್ತಿರುವ. ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಕ್ರಾಮನ್ ದಂತೀ ದಂತಿನಃ ಸಾಹಸಿಕವಾದಿಪಾ- ದೃಣ್ಣಿ ಮೃತ್ಯುಶಯಾತಲಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೧೮-೪೩ । 2. ವ್ಯಾಪಿಸು ತ್ತಿರುವ, ಹರಡುತ್ತಿರುವ. "ಕ್ರಾಮದ್ವಿಧನಪದವಿಮನೇಕ- ಸಂಖ್ಯೇಸ್ತೇಜೋಃ ಶುಚಿಮಣಿಜನ್ಮಭಿವಿಭಿನ್ನಃ" ಕಿರಾಂ ೫-೩೪ । 3. ದಾಟುತ್ತಿರುವ. 4. ಮೀರುತ್ತಿರುವ, ಅತಿಕ್ರಮಿಸು ತ್ತಿರುವ, ಉಲ್ಲಂಘಿಸುತ್ತಿರುವ. 5. ಹೆಜ್ಜೆಯಿಡುತ್ತಿರುವ.

"ಕ್ರಾಮತೋಽಸ್ಯ ದದೃಶುದಿವೀಕಸೋ ದೂರಮೂರ್ಮಲಿನಿಲಮಾಯತಮ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೭೭ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) । ಕ್ರಾಮಂತೀ ಕ್ರಾಮಂತೀ.

ಕ್ರಾಯಕ ಕ್ರಾಯಕ (ವಿಂ) ಬೆಲೆ ಕೊಟ್ಟು ವಸ್ತುವನ್ನು ಕೊಳ್ಳುವವನು, ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಕೊಳ್ಳುವವನು. ಡು ಕ್ರೀವ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯೇ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

ಕ್ರಮಿ ಕ್ರಮಿ (ಪುಂ) 1. ಹುಳು, ಕೀಟ. ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಙ್" (೩ಂ ೪-೧೨೧) । "ವ್ರಣಿ ಪುಯ್ಕಿಲಃ ಕ್ರಮಿಕುಲ- ಶತೈರಾವೃತತನುಃ" ಭರ್ತಂ ೨-೭೮ । 2. ಕ್ರಮಿ ರೋಗ.

ಕ್ರಮಿಕಣ್ಡಕ ಕ್ರಮಿಕಣ್ಡಕ (ನಂ) 1. ವಾಯುವಿಳಂಗ. 2. ಉದುಂಬರ. 3. ಇಲಿಯಾಲದ ಗಿಡ.

"ಕ್ರಮಿಕಣ್ಡಕಂ ತು ಚಿತ್ರಾಙ್ಗವಿಡ್ಙ್ಗೋದ್ಗುಮ್ಬರೇಷು ಚ" ಮೇದಿಂ ।

ಕ್ರಮಿಣ ಕ್ರಮಿಣ್ (ಪುಂ) 1. ವಾಯುವಿಳಂಗ. (ವಿಂ) 2. ಕ್ರಮಿಯನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ. ಕ್ರಮಿ ಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) "ಟಕ್" (೩-೨-೫೩) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) । -ಙ್ನಿ - ಙ್ನಿ.

ಕ್ರಮಿಜ ಕ್ರಮಿಜ (ನಂ) ಅಗುರು. ಕ್ರಮಿಮ್ಯೋ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಙ್" (೩-೨-೧೦೧) । "ವಂಶಕಾಗುರು ರಾಜಾಹಲೋಹಂ ಕ್ರಮಿಜಜೋಙ್ಗಕಮ್" ಅಮಂ ।

ಕ್ರಮಿಶೈಲ ಕ್ರಮಿಶೈಲ (ಪುಂ) ವಲ್ಮೀಕಿ, ಹುತ್ತ, ಕ್ರಮಿ- ನಿರ್ಮಿತಃ ಶೈಲಃ । "ಕ್ರಮಿಶೈಲಸ್ತು ವಲ್ಮೀಕಿಃ ಶಕ್ರಮೂರ್ಧಾಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಕ್ರಿಯಾ ಕ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜೇಷ್ಠ, ವ್ಯಾಪಾರ. 2. ಕರಣ, ಮಾಡುವುದು. ಡು ಕ್ರೀವ್ (ಕರಣೇ) "ಶಃ" (೩-೩-೧೦೦) । "ನಿರ್ವರ್ತಯತೇಽರಿಃ ಕ್ರಿಯಾ ಸ ಶ್ರುತಶ್ರವಸಃ ಸುತಃ" ಮಾಘಂ ೨-೪೧ । 3. ಕಾರ್ಯ, ಕೆಲಸ. 4. ನಿಷ್ಕೃತಿ, ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ. 5. ಸಂಪ್ರದಾರಣ, ವ್ಯವಹಾರದ ವಿಚಾರಣೆಯ ಅಂತ್ಯ ಘಟ್ಟ, ಪಾದವು ಒಂದು ತೀರ್ಮಾನಕ್ಕೆ ಬರುವುದು. 6. ಉಪಕ್ರಮ, ಪ್ರಾರಂಭ. 7. ಪೂಜೆ. 8. ಸಾಮ ಮೊದಲಾದ ನಾಲ್ಕು ಉಪಾಯಗಳು. 9. ಶಿಕ್ಷಣ. ಉಪ ದೇಶ, ಪ್ರವಚನ, ಬೋಧನೆ. "ಅವನ್ಯಯತನಾಶ್ಚ ಬಭೂವುರತ್ರ ತೇ ಕ್ರಿಯಾ ಹಿ ವಸ್ತುಪಹಿತಾ ಪ್ರಸಿದತಿ" ರಘುಂ ೩-೨೯ । 10. ದಕ್ಷನ ಮಗಳು, ಧರ್ಮಪುರುಷನ ಪತ್ನಿ. "ಕೀರ್ತಿ- ಲಕ್ಷ್ಮೀರ್ಧೃತಿರ್ಮೇಧಾ ಪುಣ್ಡಿಃ ಶ್ರದ್ಧಾ ಕ್ರಿಯಾ ತಥಾ । ಬುದ್ಧಿಲಜ್ಜಾ ಮತಿಶ್ಚೈವ ಪತ್ನಯೋ ಧರ್ಮಸ್ಯ ತಾ ದಶ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೭-೧೪ । 11. ಸಾಕ್ಷ್ಯಗಳು ಕಾಗದ ಪತ್ರಗಳು ಇವುಗಳ ಆಧಾರದ ಮೇಲೆ ನಡೆಸುವ ನ್ಯಾಯಾಂಗ ವಿಚಾರಣೆ. 12. (ವ್ಯಾಕರಣ ದಲ್ಲಿ) ಧಾತುವಿನ ಅರ್ಥ, ವ್ಯಾಪಾರ, ಕರ್ತೃವಿನ ಕಾರ್ಯ.



ಕ್ರಿಯೆಯು ಸಾಧ್ಯ ಮತ್ತು ಸಿದ್ಧಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಪವತಿ ಕರೋತಿ ಮುಂತಾದುವುಗಳಲ್ಲಿ ಧಾತುವಾಚ್ಯ ಕ್ರಿಯೆಯು ಸಾಧ್ಯ. ಪಾಕ: ರಾಗ: ಮುಂತಾದ ಕಡೆ "ಘ" ಮೊದಲಾದ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳಿಂದ ಹೇಳಲ್ಪಡುವ ಕ್ರಿಯೆಯು ಸಿದ್ಧ. "ಸಾಧ್ಯತ್ವೇನ ಕ್ರಿಯಾ ತತ್ರ ಧಾತುರೂಪನಿಬಂಧನಾ | ಸಿದ್ಧಭಾವಸ್ತು ಯಸ್ತಸ್ಯಾ: ಸ ಧರ್ಮಾದಿನಿಬಂಧನ:" | 13. ವೈದ್ಯ ಚಿಕಿತ್ಸೆ, ವ್ಯಾಧಿಯ ನಿವಾರಣೋಪಾಯ. "ಅಥಾತ: ಕ್ರಿಯಾಕಲ್ಪಂ ವ್ಯಾಖ್ಯಾಸ್ಯಾಮ:" ಸುಶ್ರುತಂ | 14. ಶ್ಲೋಕ. "ಕ್ರಿಯಾ ತು ಚೇಷ್ಟಾಕರಣಸಂಪ್ರಧಾರಣಕರ್ಮಸು | ಶಿಕ್ಷಾರಂಭೋಪಾಯಪೂಜಾಚಿಕಿತ್ಸಾನಿಷ್ಕೃತಿಷ್ವಪಿ" ನಾನಾರ್ಥರಂ | 15. ಅರಿವು, ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ಜ್ಞಾನ. "ಶಿಷ್ಟಾ ಕ್ರಿಯಾ ಕಸ್ಯ-ಚಿದಾತ್ಮಸಂಸ್ಥಾ ಸಂಕ್ರಾಂತಿರನ್ಯಸ್ಯ ವಿಶೇಷಯುಕ್ತಾ | ಯಸ್ಯೋಭಯಂ ಚಾಸ್ತಿ ಸ ಶಿಕ್ಷಕಾಣಾಂ ಧುರ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಯಿತವ್ಯ ಏವ" ಮಾಲಂ | 1-16 | 16. ಕವಿಯ ಕೃತಿ, ಕಾವ್ಯ. "ಶೃಣುತ ಮನೋ-ಭಿರವಹಿತ: ಕ್ರಿಯಾಮಿಮಾಂ ಕಾಲಿದಾಸಸ್ಯ" ವಿಕ್ರಂ | 1-2 | 17. ಚಲನೆ, ಗಮನ, ವೈಶೇಷಿಕಮತದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವ ಪಂಚಕರ್ಮಗಳಲ್ಲೊಂದು. 18. ಪ್ರಯೋಗ, ಬಳಕೆ, ಅಭ್ಯಾಸ. 19. ಅನುಷ್ಠಾನ, ಆಚರಣೆ. "ಕ್ರಿಯಾ-ಪ್ರಬಂಧಾದಯಮಧ್ವರಾಣಾಮಜಸ್ರಮಾಹುತಸಹಸ್ರನೇತ್ರ:" ರಘುಂ | 6-23 |

**ಕ್ರಿಯಾಕಲ್ಪ ಕ್ರಿಯಾಕಲ್ಪ** (ಪುಂ) ಚಿಕಿತ್ಸೆಯ ವಿಧಾನ. ಕ್ರಿಯಾಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ಕಲ್ಪೋ ವಿಧಿ: | "ಅಥಾತ: ಕ್ರಿಯಾ-ಕಲ್ಪಂ ವ್ಯಾಖ್ಯಾಸ್ಯಾಮ:" ಸುಶ್ರುತಂ | 14-1 |

**ಕ್ರಿಯಾಕಾರ ಕ್ರಿಯಾಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ಹೊಸ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ. ಕ್ರಿಯಾಂ ಶಿಕ್ಷಾರಂಭಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಅನ್" (3-2-1) | "ಕ್ರಿಯಾಕಾರೋ ನವಚ್ಚಾತ್ರ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | (ವಿಂ) 2. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವವನು. ಕ್ರಿಯಾಂ ಕಾರ್ಯಂ ಕರೋತಿ ಡು ಕೃತ್ "ಅನ್" (3-2-1) |

**ಕ್ರಿಯಾಗುಪ್ತ ಕ್ರಿಯಾಗುಪ್ತ** (ನಂ) ಕ್ರಿಯಾಪದವು ಗುಪ್ತವಾಗಿರುವ ಒಂದು ವಾಕ್ಯ. ಕ್ರಿಯಾ ಕ್ರಿಯಾಪದಂ ಗುಪ್ತಂ ಯತ್ರ | "ಆಗತ: ಪಾಂಡವಾ: ಸರ್ವೇ ದುರ್ಯೋಧನ ಸಮೀಹಯಾ | ತಸ್ಮೈ ಗಾಂ ಚ ಸುವರ್ಣಂ ಚ ರತ್ನಾನಿ ವಿವಿಧಾನಿ ಚ" | ಯ: ವನಸಮೀಹಯಾ ಧನೇಚ್ಛಯಾ ಆಗತ: ತಸ್ಮೈ ಸರ್ವೇ ಪಾಂಡವಾ: ಗಾಂ ಸುವರ್ಣಂ ವಿವಿಧಾನಿ ಚ ರತ್ನಾನಿ ಅದು: | ಅತ್ರ "ಅದು:" ಇತಿ ಕ್ರಿಯಾಪದಂ ಗುಪ್ತಮ್ |

**ಕ್ರಿಯಾತಿಪತ್ತಿ ಕ್ರಿಯಾತಿಪತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ಯದ ಅನಿಷ್ಟತೆ, ಕೆಲಸವು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಆಗದಿರುವಿಕೆ. ಕ್ರಿಯಾತಿ-ಪತ್ತಿ: ಅನಿಷ್ಟತೆ: | "ಲಿಙ್ನಿಮಿತ್ತೇ ಲಿಙ್ ಕ್ರಿಯಾತಿ-ಪತ್ತೌ" ಪಾಂ ಸೂಂ 3-3-139 | "ಸುವೃಷ್ಟಿಃ ಕೇವಲವಿಷಯಾತ್ ತದಾ ಸುಖಮಭಿವಿಷ್ಯತ್" ಸಿಂ ಕೌಂ |

**ಕ್ರಿಯಾತ್ಮಕ ಕ್ರಿಯಾತ್ಮಕ** (ವಿಂ) ಕಾರ್ಯದ ಸ್ವಭಾವದ. ಕ್ರಿಯಾ ಆತ್ಮಾ ಸ್ವಭಾವ: ಯಸ್ಯ | "ಕಪ್" (4-4-144) |

**ಕ್ರಿಯಾತ್ವೇಷ ಕ್ರಿಯಾತ್ವೇಷ** (ಪುಂ) ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ದ್ವೇಷ. ಕೆಲಸಮಾಡಲು ಬೇಡವಾಗಿರುವುದು. ಕ್ರಿಯಾಂ ದ್ವೇಷ: |

**ಕ್ರಿಯಾತ್ವೇಷಿನ್ ಕ್ರಿಯಾತ್ವೇಷಿನ್** (ಪುಂ) ಹೀನಪ್ರತಿವಾದಿ, ತನ್ನಲ್ಲಿ ತಪ್ಪಿರುವುದೆಂದು ತಿಳಿದು ನ್ಯಾಯಾಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಸಾಕ್ಷ್ಯ ಮತ್ತು ಕಾಗದಪತ್ರಗಳನ್ನು ಒಪ್ಪದಿರುವ ಪ್ರತಿವಾದಿ. ಕ್ರಿಯಾಂ ವ್ಯವಹಾರಾಭಿಮತಂ ಸಾಕ್ಷಿಲೇಖಾದಿಕಂ ದ್ವೇಷಿನ್ - ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) "ಗಿಣಿ:" (3-2-98) | "ಲೇಖಂ ಚ ಸಾಕ್ಷಿಣಶ್ಚೇವ ಕ್ರಿಯಾ ಜ್ಞೇಯಾ ಮನೀಷಿಭಿ: | ತಾಂ ಕ್ರಿಯಾಂ ದ್ವೇಷಿ ಯೋ ಮೋಹಾತ್ ಕ್ರಿಯಾತ್ವೇಷಿ ಸ ಉಚ್ಯತೇ" | ಹೀನ ಪ್ರತಿವಾದಿಯು ಐದು ವಿಧ: "ಅನ್ಯವಾದೀ ಕ್ರಿಯಾತ್ವೇಷಿ ನೋಪಸ್ಥಾತಾ ನಿರುತ್ತರ: | ಆಹುತಪ್ರಪಲಾಯಿ ಚ ಹೀನ: ಪञ್ಚವಿಧ: ಸ್ಮೃತ:" |

**ಕ್ರಿಯಾಪದ ಕ್ರಿಯಾಪದ** (ನಂ) ಮಾಡುವ ಕೆಲಸವನ್ನು ಹೇಳುವ ಪದ, ಕಾರ್ಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಪದ.

**ಕ್ರಿಯಾಪರ ಕ್ರಿಯಾಪರ** (ವಿಂ) ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದವನು, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಅಸಕ್ತನಾದವನು. ಕ್ರಿಯಾಂ ಪರ: ಆಸಕ್ತ: |

**ಕ್ರಿಯಾಪರ್ವ ಕ್ರಿಯಾಪರ್ವ** (ಪುಂ) ಕಾರ್ಯದ ಸಮಾಪ್ತಿ, ಕೆಲಸದ ಕೊನೆ. ಕ್ರಿಯಾಪರ್ವ: | "ಕ್ರಿಯಾಪರ್ವೋಪನು-ಜೀವಿಸಾತ್ಕೃತಾ: ಕೃತಜ್ಞತಾಮಸ್ಯ ವದಂತಿ ಸಂಪದ:" ಕಿರಾಂ | 1-14 |

**ಕ್ರಿಯಾಪಾದ ಕ್ರಿಯಾಪಾದ** (ಪುಂ) ನಾಲ್ಕು ಭಾಗಗಳುಳ್ಳ ವ್ಯವಹಾರ (ವಿವಾದ)ದಲ್ಲಿ ಮೂರನೆಯದು. (1) ಪೂರ್ವಪಕ್ಷ: (2) ಉತ್ತರಪಕ್ಷ: (3) ಕ್ರಿಯಾಪಾದ: ಮತ್ತು (4) ನಿರ್ಣಯ: ಇವು ವಿವಾದದ ನಾಲ್ಕು ಪಾದಗಳು. "ಪೂರ್ವಪಕ್ಷ: ಸ್ಮೃತ: ಪಾದೋ ದ್ವಿತೀಯಶ್ಚೋತ್ತರ: ಸ್ಮೃತ: | ಕ್ರಿಯಾಪಾದಸ್ತಥಾನ್ಯಶ್ಚ ತುರೀಯೋ ನಿರ್ಣಯ: ಸ್ಮೃತ:" | ಕ್ರಿಯಾಪಾದವು ಸಾಧ್ಯವಾದ ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಾಧನರೂಪವಾದುದು.

**ಕ್ರಿಯಾಫಲ ಕ್ರಿಯಾಫಲ** (ನಂ) 1. ಮಾಡಿದ ಪಾವಪುಣ್ಯ ಕಾರ್ಯಗಳ ಫಲ, ಕಾರ್ಯದ ಪರಿಣಾಮ, ಪುನರ್ಜನ್ಮ ಮೊದಲಾದ ಫಲ. ಕ್ರಿಯಾಫಲ: | "ಉತ್ಪತ್ತಿರಾಪ್ತಿ-ವಿಕ್ರತಿ: ಸಂಕೃತಿಶ್ಚ ಚತುರ್ವಿಧಮ್ | ಕ್ರಿಯಾಫಲಂ ಪ್ರಾಹುರಾರ್ಯಾ: ಕೇವಲೈ ತಸ್ಮಿನ್ ವಿಶ್ವತೇ" | 2. ಯಾಗ ಮೊದಲಾದ ಕಾರ್ಯಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಫಲ - ಸ್ವರ್ಗಾದಿಗಳು.

**ಕ್ರಿಯಾಮ್ಯಾವೃತ್ತಿ ಕ್ರಿಯಾಮ್ಯಾವೃತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕ್ರಿಯೆಯ ಪುನಃಪುನಃ, ಕಾರ್ಯವು ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಆಗುವುದು. ಕ್ರಿಯಾಫಲ ಅಮ್ಯಾವೃತ್ತಿ: | "ಸಂಖ್ಯಾಯಾ: ಕ್ರಿಯಾಮ್ಯಾವೃತ್ತಿಗಣನೇ ಕೃತ್ವಮುಚ್" ಪಾಂ ಸೂಂ 4-4-17 |



**ಕ್ರಿಯಾಭ್ಯುಪಗಮ ಕ್ರಿಯಾಭ್ಯುಪಗಮ** (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಸಮ್ಮತಿ ಕೊಡುವುದು, ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಒಪ್ಪಿಗೆಯಾಯುವುದು. ಕ್ರಿಯಾಭ್ಯುಪಗಮಃ | 2. ಕರಾರು. ಗುತ್ತಿಗೆ ಪತ್ರ, ಜಮಾನು ಮುಂತಾದುವುಗಳ ವ್ಯವಹಾರ ಪತ್ರ. “ಕ್ರಿಯಾ-ಭ್ಯುಪಗಮಾತ್ವೇತದ್ವಿಜಾರ್ಥ ಯತ್ ಪ್ರದೀಯತೇ | ತಸ್ಯೇಹ ಭಾಗಿನೌ ದೃಢಿ ಬಿಜಿ ಕ್ಷೇತ್ರೀಕ ಏವ ಚ” ಮನುಂ ೧-೫೩ |

**ಕ್ರಿಯಾಯುಕ್ತ ಕ್ರಿಯಾಯುಕ್ತ** (ವಿಂ) ಕಾರ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ವ್ಯಾಪಾರವುಳ್ಳ, ಜಲನೆಯುಳ್ಳ. ಕ್ರಿಯಾ ಯುಕ್ತಃ |

**ಕ್ರಿಯಾಯೋಗ ಕ್ರಿಯಾಯೋಗ** (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ಯದ ಸಂಬಂಧ. ಕ್ರಿಯಾ ಯೋಗಃ | 2. ಕ್ರಿಯಾಪದದೊಡನೆ ಸಂಬಂಧ. ಕ್ರಿಯಾ ಯೋಗಃ | “ಉಪಸರ್ಗಾಃ ಕ್ರಿಯಾಯೋಗೇ” ಪಾಂ ಸೂಂ ೧-೪-೫೯ | 3. ಯೋಗಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದ ಕ್ರಿಯೆ, ಅಷ್ಟಾಂಗದ ಯೋಗಕ್ಕೆ ಉಪಾಯವಾದ ವ್ಯಾಪಾರ. ಕ್ರಿಯೇವ ಯೋಗಃ ಯೋಗೋಪಾಯಃ | “ತಪಃ ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯೇಶ್ವರಪ್ರಣಿಧಾನಾನಿ ಕ್ರಿಯಾಯೋಗಾಃ” | “ಕ್ರಿಯಾ-ಯೋಗಸ್ತು ಯೋಗಸ್ಯ ಪರಮಂ ತತ್ತ್ವ ಕಾರಣಮ್” ಅಗ್ನಿಪುಂ |

**ಕ್ರಿಯಾವತ್ ಕ್ರಿಯಾವತ್** (ವಿಂ) 1. ಕಾರ್ಯವುಳ್ಳವನು, ಕೆಲಸಗಾರ, ಕಾರ್ಯಿ. ಕ್ರಿಯಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್” (೫-೨-೯೪) | 2. ಕಾರ್ಯನಿರತ, ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತ ನಾದವನು. “ಕರ್ಮಕ್ಷಮೋಽಲಂಕರ್ಮಿಣಃ ಕ್ರಿಯಾವಾನ್ ಕರ್ಮಸೂತ್ರತಃ” ಅಮಂ | “ತ್ವಂ ಯೋನಿಃ ಸರ್ವಭೂತಾನಾಂ ತ್ವಮಾಚಾರಃ ಕ್ರಿಯಾವತಾಮ್” ಭಾಂ ಏನಂ ೩-೩೬ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) | -ವತಿ -ವತಿ |

**ಕ್ರಿಯಾವಸತ್ರ ಕ್ರಿಯಾವಸತ್ರ** (ವಿಂ) ವ್ಯವಹಾರದಲ್ಲಿ ಪರಾಜಯ ಹೊಂದಿದವನು, ವಿರುದ್ಧಸಾಕ್ಷ್ಯದಿಂದ ಅಪಜಯ ಹೊಂದಿದ ವಾದಿ ಅಥವಾ ಪ್ರತಿವಾದಿ. ಕ್ರಿಯಾ ಅವಸತ್ರಃ |

**ಕ್ರಿಯಾವಾದಿನ್ ಕ್ರಿಯಾವಾದಿನ್** (ವಿಂ) ವ್ಯವಹಾರದಲ್ಲಿ ಕಾರ್ಯವು ಸಾಧ್ಯವಾಗುವಂತೆ ಸಾಕ್ಷ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಮಾಣವನ್ನಿಟ್ಟು ವಾದಿಸುವವನು. ಕ್ರಿಯಾ ಕ್ರಿಯಾಸಾಧ್ಯಂ ವದತಿ-ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಃ ವಾಚಿ) “ಞಿನಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) |

**ಕ್ರಿಯಾವಿಶೇಷಣ ಕ್ರಿಯಾವಿಶೇಷಣ** (ನಂ) ಧಾತೃರ್ಥದಿಂದ ಉಕ್ತವಾದ ಕ್ರಿಯೆಯ (ವ್ಯಾಪಾರದ) ರೀತಿ-ಕಾಲ-ದೇಶಾದಿ ವಿಶೇಷ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಪದ, ಧಾತುವಿನ ಅರ್ಥದ ವಿವರವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಪದ. ಕ್ರಿಯಾ ವಿಶೇಷಣಮ್ | “ಸುರಭಿತಮಕರಂದಂ ಮಂದಮಾವಾತಿ ವಾತಃ” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಆವಾತಿ ಎಂಬ ಕ್ರಿಯೆಗೆ, ಸುರಾಭಿತಮಕರಂದಂ ಮಂದಂ ಎಂಬ ವಿವರ ಪದಗಳೂ ಗಾಳಿಯು ಬೀಸುವ ರೀತಿ ನೀತಿಗಳನ್ನು ವಿವರಿಸುವುದರಿಂದ ವಿಶೇಷಣಗಳಾದುವು.

**ಕ್ರಿಯಾಶಕ್ತಿ ಕ್ರಿಯಾಶಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಗೆ ಸಾಧನವಾದ ಪರಮಾತ್ಮನ ಶಕ್ತಿ. ಕ್ರಿಯೇವ ಶಕ್ತಿಃ |

**ಕ್ರಿಯಾಸಮಭಿಹಾರ ಕ್ರಿಯಾಸಮಭಿಹಾರ** (ಪುಂ) ಹೆಚ್ಚು ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಮತ್ತು ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ. ಕ್ರಿಯಾಸಮಭಿಹಾರಃ- ಸಮ್+ಅಭಿ+ಹ್ರಜ್ (ಹರಣೇ) “ಘಜ್” (೩-೩-೧೮) | ಪೌನಃ-ಪುನಃ ಭೃಶಾರ್ಥಶ್ಚ ಕ್ರಿಯಾಸಮಭಿಹಾರಃ | “ಕ್ರಿಯಾಸಮಭಿಹಾರೆಣ ವಿರಾಧ್ಯಂತಂ ಕ್ಷಮೇತ ಕಃ” ಮಾಘಂ ೨-೪೩ |

**ಕ್ರಿಯೇಂದ್ರಿಯ ಕ್ರಿಯೇಂದ್ರಿಯ** (ನಂ) ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯ. ಕ್ರಿಯಾಸಾಧನಮಿಂದ್ರಿಯಮ್ | ವಾಕ್-ಪಾಣಿ-ಪಾದ-ಪಾಯು-ಉಪಸ್ಥಾಃ ಇವು ಐದೂ ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಗಳು.

**ಡು ಕ್ರಿಜ್ - ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯ** (ಕ್ರಿಯಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) | ಕ್ರಿಣಾತಿ ಕ್ರಿಣೀತಃ ಕ್ರಿಣಂತಿ | ಕ್ರಿಣೀತೇ ಕ್ರಿಣಾತೇ ಕ್ರಿಣಂತೇ | ಚಿಕ್ರಾಯ ಚಿಕ್ರಿಯತುಃ ಚಿಕ್ರಿಯುಃ | ಚಿಕ್ರಿಯೇ ಚಿಕ್ರಿಯಾತೇ ಚಿಕ್ರಿಯೀರೇ | ಕ್ರೇತಾ | ಕ್ರೇಪ್ಯತಿ, -ತೇ | ಕ್ರಿಣಾತು, ಕ್ರಿಣೀತಾಮ್ | ಅಕ್ರಿಣಾತು, ಅಕ್ರಿಣೀತ | ಕ್ರಿಣೀಯಾತು, ಕ್ರಿಣೀತ | ಕ್ರಿಯಾತು, ಕ್ರೀಷ್ಯತಿ | ಅಕ್ರೀಷೀತು, ಅಕ್ರೀಷ್ಯತಿ | ಅಕ್ರೀಷ್ಯತು, -ತ | ಬೆಲೆ ಕೊಟ್ಟು ಕೊಂಡುಕೊ.

**ಕರ್ಮಣಿಃ**:-ಕ್ರಿಯತೇ | ಚಿಕ್ರಿಯೇ | ಕ್ರಿಯಿತಾ | ಕ್ರೇತಾ | ಕ್ರಿಯಿಷ್ಯತೇ, ಕ್ರೇಪ್ಯತೇ | ಕ್ರಿಯಿತಾಮ್ | ಅಕ್ರಿಯತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಣಿಚಿಃ**:-ಕ್ರಾಪಯತಿ, -ತೇ | ಕ್ರಾಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಕ್ರಾಪಯಿತಾ | ಕ್ರಾಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ಕ್ರಾಪಯತು, -ತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕ್ರತುಃ**:-ಕ್ರೇತವ್ಯಮ್ | ಕ್ರಯಣೀಯಮ್ | ಕ್ರಯಮ್ (ಕ್ರೇತುಂ ಶಕ್ಯಮ್) | ಕ್ರೇಯಮ್ (ಕ್ರಯಣಾರ್ಹಮ್) | ಕ್ರೀತಃ | ಕ್ರೀತವಾನ್ | ಕ್ರೀಣನ್, -ಂತಿ | ಕ್ರೀಣಾನ್ | ಕ್ರತುಮ್ | ಕ್ರೀತಮ್ | ಕ್ರಯಣಮ್ | ಕ್ರೀತವಾ | ವಿಕ್ರೀಯ |

**ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:**

(1) ಆ + ಕ್ರಿಜ್ = ಆಕ್ರಿಣಾತಿ | ಕಡಮೆ ಬೆಲೆಗೆ ಕೊಳ್ಳು. “ಶುಲ್ಕಾಕ್ರಿತಾಂ ಭಾರ್ಯಾಮ್” ದಶಕುಂ |

(2) ನಿಃ + ಕ್ರಿಜ್ = ನಿಃಕ್ರಿಣಾತಿ | ನಿಃಕ್ರಯಃ | ಕ್ರಿಯೆ ಮಾಡು, ಮಾರು, ಬೆಲೆಗೆ ಕೊಡು. “ನ ನಿಃಕ್ರಯವಿಸರ್ಗಾಭ್ಯಾಂ ಭರ್ತುರ್ಭಾರ್ಯಾ ವಿಮುಚ್ಯತೇ | ಏವಂ ಧರ್ಮಂ ವಿಜಾನೀಮಃ ಪ್ರಾಕ್ ಪ್ರಜಾಪತಿ-ನಿರ್ಮಿತಮ್” ಮನುಂ ೧-೪೬ |

(3) ಪರಿ + ಕ್ರಿಜ್ = ಪರಿಕ್ರಿಣಾತಿ | ಪರಿಕ್ರಯಣಮ್ | ಪರಿಕ್ರೀತಃ | ಕಾಲ ಗೊತ್ತುಮಾಡಿ ಕೊಲಿ ಕೊಟ್ಟು (ಅಳನ್ನು) ಕೊಳ್ಳುವುದು. “ನಿಯತಕಾಲಂ ಭರ್ತೃಸ್ವೀಕರಣಂ ಪರಿಕ್ರಯ-ಣಮ್” ಸಿಂ ಕೌಂ | “ಸಂಭಾಗಾಯ ಪರಿಕ್ರೀತಃ ಕರ್ತಾಸ್ಮಿ ತವ ನಾಪ್ರಿಯಮ್” ಭಟ್ಟಂ ೮-೭೮ |



(4) ವಿ+ಕ್ರೀ=ವಿಕ್ರೀಣಾತಿ । ವಿಕ್ರಯಣಮ್ । ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಕೊಡು, ಮಾರು, ಬೆಲೆ ಕಟ್ಟಿ ಪದಾರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡು. "ವಿಲೋಕಯಂತ್ಯಾಃ ಫಲವಿಕ್ರಯಿಣ್ಯಾಃ ವಿಕ್ರೇತುರ್ಮಾತಮಾನಮ್-ದ್ವಿಮಶಃ" ಯಾದಂ ೪-೩೧ ।

(5) ಸಮ್+ಕ್ರೀ=ಸಂಕ್ರೀಣಾತಿ । ಹೆಚ್ಚು ಬೆಲೆಕೊಟ್ಟು ಕೊಳ್ಳು. "ನ ಚ ಮೇ ವಿಕ್ರೇತೇ ವಿಕ್ರೇತುಂ ಪುರುಷಂ ಕವಚಿತ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ।

ಕ್ರೀ ಕ್ರೀ (ವಿಂ) ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಕೊಳ್ಳುವವನು, ಬೆಲೆ ಕೊಟ್ಟು ವಸ್ತುವನ್ನು ಕೊಳ್ಳುವವನು. ಡು ಕ್ರೀಜ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯೇ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬) ।

ಕ್ರೀಡಕ ಕ್ರೀಡಕ (ವಿಂ) 1. ಆಟಗಾರ, ಆಟವಾಡುವವನು. ಕ್ರೀಡ (ವಿಹಾರೆ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । 2. ದ್ವಾರ ಪಾಲಕ.

ಕ್ರೀಡತ್ ಕ್ರೀಡತ್ (ವಿಂ) ಆಟವಾಡುತ್ತಿರುವ. ಕ್ರೀಡ (ವಿಹಾರೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಕ್ರೀಡಂತೋ ವೀಡಯಾ ತತ್ರ ವೀರಾಃ ಪರ್ಯಚರನ್ ಮುದಾ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೪೧-೧೮ । "ಕ್ರೀಡ-ಕ್ರೀಡದ್ವಿಜಾಲಿಗರುದಿತಮಸ್ತುಫಾಲವಾಚಾಲವೀಚಿಃ" ನೆಪಂ ೧೨-೧೦೨ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) । ಕ್ರೀಡಂತಿ ಕ್ರೀಡಂತಿ.

ಕ್ರೀಡನ ಕ್ರೀಡನ (ನಂ) 1. ಆಟ, ಕ್ರೀಡೆ. ಕ್ರೀಡ (ವಿಹಾರೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) । "ಬಾಲಕ್ರೀಡನಮಿಂದುಶೇಖರ-ಧನುರ್ಮಜ್ಜಾವಧಿ ಪ್ರಹ್ಲತಾ ತಾತೇ ಕಾನನಸೇವನಾವಧಿ ಕೃಪಾ ಸುಗ್ರೀವ-ಸಖ್ಯಾವಧಿ" ಹನುಂ ನಾಂ । 2. ಆಟದ ಸಾಮಾನು. ಕ್ರೀಡ ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭) ।

ಕ್ರೀಡನಕ ಕ್ರೀಡನಕ (ನಂ) ಆಟದ ಸಾಮಾನು. ಕ್ರೀಡನ ಸಂಜಾಯಾಮ್ "ಕನ್" (೫-೩-೭೫) । "ವತ್ಸ, ಅಪರಂ ತೇ ಕ್ರೀಡನಕಂ ದಾಸ್ಯಾಮಿ" ಶಾಕುಂ ೭ । "ಕ್ರೀಡತೇ ಭಗವಾನ್ ಭೂತೆರ್ಬಾಲಃ ಕ್ರೀಡನಕೇರಿವ" ಭಾಂ ವನಂ ೩೦-೩೭ ।

ಕ್ರೀಡನೀಯ ಕ್ರೀಡನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಆಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ (ಆಟದ ಸಾಮಾನು). ಕ್ರೀಡ (ವಿಹಾರೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । "ಕ್ರೀಡತಃ ಕ್ರೀಡನೀಯಾನಿ ದದುಃ ಪಕ್ಷಿಗಣಾಶ್ರಹ" ಭಾಂ ಅನುಂ ೮೬-೨೧ । 2. ಆಟವಾಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ.

ಕ್ರೀಡಾ ಕ್ರೀಡಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಟ, ಕ್ರೀಡೆ. ಕ್ರೀಡ (ವಿಹಾರೆ) "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩) । "ತಾಮ್ಯೋ ಮೋಕ್ಷಸ್ತವ ಯದಿ ಸಖೇ ಧರ್ಮಲಬ್ಧಸ್ಯ ನ ಸ್ಯಾತ್ ಕ್ರೀಡಾಲೋಲಾಃ ಶ್ರವಣಪರ್ಷಣಿಜಿತೈ-ಭಯೇಸ್ತಾಃ" ಮೇಘಂ ೧-೬೧ । 2. ಪರಿಹಾಸ್ಯ.

ಕ್ರೀಡಾಕಾನನ ಕ್ರೀಡಾಕಾನನ (ನಂ) ಉದ್ಯಾನವನ, ಕೈ ತೋಟ. ಕ್ರೀಡಾರ್ಥ ಕಾನನಮ್ । "ಅಸ್ಮಾಕಂ ತು ಮನೋರಯೋ-

ಪರಚಿತಪ್ರಾಸಾದವಾಪೀತಕ್ರೀಡಾಕಾನನಕೇಲಿಕೌತುಕಜುಷಾಮಾಯುಃ ಪರಂ ಕ್ಷೀಯತೇ" ಮೃತ್ಯುಂ ೩-೧೪ ।

ಕ್ರೀಡಾಕೋಪ ಕ್ರೀಡಾಕೋಪ (ಪುಂ) ಪ್ರಣಯಕೋಪ. "ಕಥಮಪಿ ಸಖಿ ಕ್ರೀಡಾಕೋಪಾದ್ವಜೇತಿ ಮಬೋದಿತೇ" ಅಮರಂ ೧೫ ।

ಕ್ರೀಡಾಕೌಶಲ ಕ್ರೀಡಾಕೌಶಲ (ನಂ) ಆಟದಲ್ಲಿ ನಿಪುಣತೆ. ಆಟದಲ್ಲಿ ಜಾಣತನ. ಕ್ರೀಡಾಯಾಂ ಕೌಶಲಮ್ ।

ಕ್ರೀಡಾಗೃಹ ಕ್ರೀಡಾಗೃಹ (ನಂ) ಆಟದ ಮನೆ, ವಿಹಾರ ಗೃಹ.

ಕ್ರೀಡಾನಾರೀ ಕ್ರೀಡಾನಾರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇಶ್ಯೆ, ಸೂಳೆ. ಕ್ರೀಡಾರ್ಥ ನಾರೀ ।

ಕ್ರೀಡಾರತ್ನ ಕ್ರೀಡಾರತ್ನ (ನಂ) ಸುರತಕ್ರೀಡೆ, ಸಂಭೋಗ. ಕ್ರೀಡಾಯಾ ರತ್ನಮ್ । "ಉಪಸೃಷ್ಟಂ ತ್ರಿಭದ್ರಂ ಚ ಕ್ರೀಡಾರತ್ನಂ ಮಹಾ-ಸುಖಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಕ್ರೀಡಾರಥ ಕ್ರೀಡಾರಥ (ಪುಂ) ವಿನೋದಕ್ಕಾಗಿ ತಯಾರಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟ ರಥ. ಕ್ರೀಡಾರ್ಥ ರಥಃ ।

ಕ್ರೀಡಾಲೋಲ ಕ್ರೀಡಾಲೋಲ (ವಿಂ) ಆಟದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತನಾದ. "ಕ್ರೀಡಾಲೋಲಾಃ ಶ್ರವಣಪರ್ಷಣಿಜಿತೈರ್ಭಯೇಸ್ತಾಃ" ಮೇಘಂ ೧-೬೧ ।

ಕ್ರೀಡಾವತ್ ಕ್ರೀಡಾವತ್ (ವಿಂ) 1. ಆಟವಾಡುವವನು. ಕ್ರೀಡಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪) । (ಅವ್ಯಂ) 2. ಆಟದಂತೆ. ಕ್ರೀಡಯಾ ತುಲ್ಯಮ್ "ವತಿಃ" (೫-೧-೧೧೫) ।

ಕ್ರೀಡಾಶೈಲ ಕ್ರೀಡಾಶೈಲ (ಪುಂ) ಕ್ರೀಡಾಪರ್ವತ, ಆಟದ ಬೆಟ್ಟ. "ಕ್ರೀಡಾಶೈಲೇ ಯದಿ ಚ ವಿಚರೇತ್ ಪಾದಚಾರೆಣ ಗೌರೀ" ಮೇಘಂ ೧-೬೦ ।

ಕ್ರೀಡಾಸಚಿವ ಕ್ರೀಡಾಸಚಿವ (ಪುಂ) ನರ್ಮಾಸಚಿವ, ವಿದೂಷಕ, ಹಾಸ್ಯಗಾರ.

ಕ್ರೀಡಿತ ಕ್ರೀಡಿತ (ನಂ) 1. ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ. ಕ್ರೀಡ (ವಿಹಾರೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) । "ಕೃಪೇ ಪರವತಸ್ತವಯಾ ವೃಷಗಿರೀಶಿತುಃ ಕ್ರೀಡಿತಮ್" ದಯಾಶಂ । (ವಿಂ) 2. ಆಟ ವಾಡಿದವನು. ಕ್ರೀಡ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) । 3. ಆಟವಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕ್ರೀಡ + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।

ಕ್ರೀಡಿತು ಕ್ರೀಡಿತು (ವಿಂ) ಆಡುವವನು. ಕ್ರೀಡ (ವಿಹಾರೆ) "ತುಚ್" (೩-೩-೧೩೩) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) । ಕ್ರೀಡಿತ್ರೋ ಕ್ರೀಡಿತ್ರೋ.

ಕ್ರೀಡು-ವಿಹಾರೆ (ಮಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ) । ಕ್ರೀಡತಿ । ವಿಕ್ರೀಡ । ಕ್ರೀಡಿತಾ । ಕ್ರೀಡಿಷ್ಯತಿ । ಕ್ರೀಡತು । ಅಕ್ರೀಡತ್ ।



ಕ್ರೋಡೇತ್ | ಕ್ರೋಡ್ಯಾತ್ | ಅಕ್ರೋಡೀತ್ | ಅಕ್ರೋಡಿಷ್ಯತ್ | ಉಂ  
ವಾಡು, ಕ್ರೋಡಿಸು. "ಅಕರ್ಮತನ್ವೈರವತಾರಭೇದಃ ಕ್ರೋಡಸ್ಯ-  
ನಂತರಪಿ ಜನ್ತುಜಾತಃ" ಯಾದಂ ೨೦-೨೯ |

ಭಾವೇ:-ಕ್ರೋಡಯತೇ | ಚಿಕ್ರೋಡೆ | ಕ್ರೋಡಿತಾ | ಕ್ರೋಡಿಷ್ಯತೇ |  
ಕ್ರೋಡಯತಾಂ | ಅಕ್ರೋಡಯತ | ಕ್ರೋಡಯತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ:-ಕ್ರೋಡಯತಿ, -ತೇ | ಕ್ರೋಡಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಕ್ರೋಡಯಿತಾ | ಕ್ರೋಡಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ |  
ಕ್ರೋಡಯತು, -ತಾಂ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ:-ಚಿಕ್ರೋಡಿಷತಿ | ಚಿಕ್ರೋಡಿಷಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ,  
-ಆಸ | ಚಿಕ್ರೋಡಿಷಿತಾ | ಚಿಕ್ರೋಡಿಷಿಷ್ಯತಿ | ಚಿಕ್ರೋಡಿ-  
ಷತು | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:-ಕ್ರೋಡಿತವ್ಯಮ್ | ಕ್ರೋಡನೀಯಮ್ | ಕ್ರೋಡಯಮ್ |  
ಕ್ರೋಡಿತಃ | ಕ್ರೋಡಿತವಾನ್ | ಕ್ರೋಡನ್, ಕ್ರೋಡಂತಿ | ಕ್ರೋಡಿತುಮ್ |  
ಕ್ರೋಡಿತಮ್ | ಕ್ರೋಡನಮ್ | ಕ್ರೋಡಿತವಾ | ಸಂಕ್ರೋಡಯ |

ಕ್ರೋಧೇಶ ಕ್ರೋಡೋದ್ದೇಶ (ಪುಂ) ಅಟವಾಡುವ ಪ್ರದೇಶ,  
ಅಟದ ಮೈದಾನ.

ಕ್ರೋತ ಕ್ರೋತ (ಪುಂ) 1. ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಪುತ್ರರಲ್ಲೊಬ್ಬ.  
ಉ ಕ್ರೋತ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯೇ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ರ:" (೩-೨-೧೦೨) |  
"ಕಾನೀನಶ್ಚ ಸಹೋದಶ್ಚ ಕ್ರೋತಃ ಪೌನರ್ಮವಸ್ತಥಾ" ಮನುಂ ೯-೧೬೦ |  
(ನಂ) 2. ಕ್ರಯ, ಬೆಲೆ ಕೊಟ್ಟು ಕೊಳ್ಳುವುದು. ಕ್ರೋತ್  
ಭಾವೇ "ಕ್ರ:" (೩-೩-೧೧೪) | (ವಿಂ) 3. ಕ್ರಯಕ್ಕೆ  
ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ರ:" (೩-೨-೧೦೨) | ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಕನ್" | ಕ್ರೋತಕಮ್ ಕ್ರೋತಕವತ್.

ಕ್ರೋತಾನುಶಯ ಕ್ರೋತಾನುಶಯ (ಪುಂ) ಕ್ರಯದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ  
ಉಂಟಾಗುವ ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪ, ಕ್ರಯದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಸಂಶಯ  
ಪಡುವುದು. ಕ್ರೋತೇ ಅನುಶಯಃ | "ಕ್ರೋತವಾ ಮೂರ್ಛಾ ಯತ್  
ಪಣ್ಯಂ ಕ್ರೇತಾ ನ ಬಹು ಮನ್ಯತೇ | ಕ್ರೋತಾನುಶಯ ಇತ್ಯೇತದ್ವಿವಾದ-  
ಪದಮುಚ್ಯತೇ" ನಾರದಃ | ಕ್ರಯದ ಮೊಬಲಗಿನ ಅಥವಾ  
ಕೊಂಡ ವಸ್ತುವಿನ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಸಂಶಯವುಂಟಾದರೆ  
ಹತ್ತು ದಿನಗಳೊಳಗಾಗಿ ಅಂತಹ ವಸ್ತುವನ್ನು ಹಿಂತಿರುಗಿಸ  
ಬಹುದು. ವಿಕ್ರಯಮಾಡಿದವನೂ ಅದನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ  
ಪಡೆಯಬಹುದು. "ಕ್ರೋತವಾ ವಿಕ್ರೀಯ ವಾ ಕಿಂಚಿತ್  
ಯಸ್ಯೇಹಾನುಶಯೋ ಭವೇತ್ | ಸೋಽಂತರ್ದಶಾಹಾಂತದ್ರವ್ಯಂ ದद्याಂವೇವಾ-  
ದದೀತ ವಾ" ಮನುಂ ೮-೨೨೨ |

ಕ್ರುಚ್ಚ - ಕೌಟಿಲ್ಯಾಲ್ಪಿಭಾವಯೋ: (ಘಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) |  
ಕ್ರುಚ್ಚತಿ | ಚುಕ್ರುಚ್ಚ | ಕ್ರುಚ್ಚತಾ | ಕ್ರುಚ್ಚಿಷ್ಯತಿ | ಕ್ರುಚ್ಚತು |  
ಅಕ್ರುಚ್ಚತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಪಕ್ರವಾಗಿಸು. ಡೊಂಕು  
ಮಾಡು. 2. ಚಿಕ್ಕದಾಗಿ ಮಾಡು.

ಕರ್ಮಣಿ:-ಕ್ರುಚ್ಚಯತೇ | ಚುಕ್ರುಚ್ಚೇ | ಕ್ರುಚ್ಚಿತಾ |  
ಕ್ರುಚ್ಚಿಷ್ಯತೇ | ಕ್ರುಚ್ಚಯತಾಂ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ:-ಕ್ರುಚ್ಚಯತಿ, -ತೇ | ಕ್ರುಚ್ಚಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಕ್ರುಚ್ಚಯಿತಾ | ಕ್ರುಚ್ಚಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ |  
ಕ್ರುಚ್ಚಯತು, -ತಾಂ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ:-ಚುಕ್ರುಚ್ಚಿಷತಿ | ಚುಕ್ರುಚ್ಚಿಷಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ,  
-ಆಸ | ಚುಕ್ರುಚ್ಚಿಷಿತಾ | ಚುಕ್ರುಚ್ಚಿಷಿಷ್ಯತಿ | ಚುಕ್ರುಚ್ಚಿಷತು |  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:-ಕ್ರುಚ್ಚಿತವ್ಯಃ | ಕ್ರುಚ್ಚನೀಯಃ | ಕ್ರುಚ್ಚಯಃ |  
ಕ್ರುಚ್ಚಿತಃ | ಕ್ರುಚ್ಚಿತವಾನ್ | ಕ್ರುಚ್ಚನ್, ಕ್ರುಚ್ಚಂತಿ |  
ಕ್ರುಚ್ಚಿತುಮ್ | ಕ್ರುಚ್ಚಿತಮ್ | ಕ್ರುಚ್ಚನಮ್ | ಕ್ರುಚ್ಚಿತವಾ |  
ಅಕ್ರುಚ್ಚಯ |

ಕ್ರುಚ್ಚ ಕ್ರುಂಚ್ಚ (ಪುಂ) ಉದ್ದವಾದ ಕೊಕ್ಕುಳ್ಳ ನೀರು  
ಕೊಕ್ಕರೆ. ಕ್ರುಚ್ಚ (ಕೌಟಿಲ್ಯೇ) "ಕ್ವಿನ್" (೩-೨-೫೯) |  
ಕ್ರುಚ್ಚ ಕ್ರುಂಚ್ಚ (ಪುಂ) ಉದ್ದವಾದ ಕೊಕ್ಕುಳ್ಳ ನೀರು  
ಕೊಕ್ಕರೆ. ಕ್ರುಚ್ಚತಿ - ಕ್ರುಚ್ಚ (ಕೌಟಿಲ್ಯೇ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) |

ಕ್ರುಧ ಕ್ರುದ್ಧ (ನಂ) 1. ಕೋಪ, ಸಿಟ್ಟು. ಕ್ರುಧ (ಕ್ರೋಧೇ)  
"ಕ್ರ:" (೩-೩-೧೧೪) | (ವಿಂ) 2. ಕೋಪಗೊಂಡ,  
ಸಿಟ್ಟುಮಾಡಿಕೊಂಡ. ಕ್ರುಧ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ರ:" (೩-೪-೨೨) |  
"ತಸ್ಯ ಕ್ರುಧಸ್ಯ ನೇತ್ರಾಭ್ಯಾಂ ಪ್ರಾಪತಗ್ನಸ್ರವಿಂದವಃ" ರಾಮಾಂ |  
"ಕ್ರುಧಸ್ಯ ದಂತಿನಃ ಪತ್ತಿಜಿಘೃಷೋರಸಿನಾ ಕರಮ್" ಕುರ್ಮಾಂ  
೧೬-೩೮ |

ಕ್ರುಧವತ್ ಕ್ರುದ್ಧವತ್ (ವಿಂ) ಕೋಪಗೊಂಡ, ಸಿಟ್ಟುಮಾಡಿ  
ಕೊಂಡ. ಕ್ರುಧ (ಕ್ರೋಧೇ), "ಕ್ರವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨) |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ವತೀ -ವತೀ.

ಕ್ರುಧ್ ಕ್ರುಧ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೋಪ, ಸಿಟ್ಟು. ಕ್ರುಧ (ಕ್ರೋಧೇ)  
"ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೨೬) | "ವಿಸೃಜಂತ್ಯವಿಕಲ್ಪಿಣಃ ಪರೇ  
ವಿಷಮಾಶೀವಿಷವನ್ನರಾಃ ಕ್ರುಧಮ್" ಮಾಘಂ ೧೬-೩೨ | ಹಲ್ಂತ-  
ತ್ವಾತ್ ವಾ "ಢಾಪ್" | ಕ್ರುಧಾ ಕ್ರುಧಾ. "ವೃಷ್ಟಿಭಾಗುರಿ-  
ರಲ್ಲೋಪಮವಾಪ್ಯೋಹಪಸರ್ಗಯೋಃ | ಆಪಂ ಚೈವ ಹಲ್ಂತಾನಾಂ ಯಥಾ  
ವಾಚಾ ನಿಶಾ ದಿಶಾ" ಸಿಂ ಕೌಂ |

ಕ್ರುಧ - ಕ್ರೋಧೇ (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ) | ಕ್ರುಧಯತಿ |  
ಚುಕ್ರುಧ | ಕ್ರೋಧಾ | ಕ್ರೋತ್ಸಯತಿ | ಕ್ರುಧಯತು | ಅಕ್ರುಧಯತ್ |  
ಕ್ರುಧಯೇತ್ | ಕ್ರುಧಯಾತ್ | ಅಕ್ರುಧಯತ್ | ಅಕ್ರೋತ್ಸಯತ್ | ಕೋಪ  
ಗೊಳ್ಳು, ಸಿಟ್ಟುಮಾಡಿಕೊ.

ಭಾವೇ:-ಕ್ರುಧಯತೇ | ಚುಕ್ರುಧೇ | ಕ್ರೋಧಾ | ಕ್ರೋತ್ಸಯತೇ |  
ಕ್ರುಧಯತಾಂ | ಅಕ್ರುಧಯತ | ಇತ್ಯಾದಿ.







(ವಿಂ) 2. ಮಲಬದ್ಧವಾದ ಹೊಟ್ಟೆಯುಳ್ಳ. ಕೂರ ಕೋಪ  
ಯಸ್ಯ । “ಕೂರಕೋಪಸ್ಯಾತಿತಿಕ್ಷಣಾಗ್ನೇರಲ್ಪಮೋಷಮಲ್ಪಗುಣಂ ವಾ  
ಭಕ್ತವತ್ ಪಾಕಮುಪೇತಿ, ತತ್ರ ಸಮುದೋಷಾ ದೋಷಾ ಯಥಾಕಾಲ-  
ಮನಿಹ್ಮೀಯಮಾಣಾ ವ್ಯಾಧಿವಿಭ್ರಮಂ ಬಲವಿಭ್ರಮಂ ಚಾಪಾದಯಂತಿ,  
ತಮನಲ್ಪಮಮಂದಮೋಷಂ ಚ ಪಾಯಯೇತ್” ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ  
೩೪-೭ ।

ಕೂರದ್ವ್ಯ ಕ್ರೂರದ್ವ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಶನಿಗ್ರಹ. 2. ಕುಜಗ್ರಹ.  
ಕೂರಾ ದ್ವಕ್ ಯಸ್ಯ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ವಕ್ರದ್ವ್ಯ, ಭಯಂಕರ  
ವಾದ ನೋಟ. ಕೂರಾ ದ್ವಕ್ । 4. ಪಾಪಗ್ರಹದ ದ್ವ್ಯ.  
(ವಿಂ) 5. ಭಯಂಕರವಾದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ. ಭಯಂಕರ  
ವಾದ ನೋಟವುಳ್ಳ. ಕೂರಾ ದ್ವಕ್ ಯಸ್ಯ । 6. ದುರ್ಜನ,  
ಹಿಂಸಿಸುವವನು, ಹೀಡಿಸುವವನು. “ಕೂರದ್ವ್ಯ ಪಿಶುನೇ  
ವಾಚ್ಯಲಿङ्ಗಃ ಪುನಿ ಶನೇಶ್ವರೇ” ಮೇದಿಂ ।

ಕೂರಧೃತ ಕ್ರೂರಧೃತ (ಪುಂ) ಕರಿದತ್ತೂರಿ ಗಿಡ.

ಕೂರಪ್ರಸಾದನ ಕ್ರೂರಪ್ರಸಾದನ (ಪುಂ) ಸೇವಕ, ವಿಧೇಯ.  
ಕೂರಂ ಪ್ರಸಾದಯತಿ — ಪ್ರ + ಷದ್ಲ್ (ವಿಗರಣಾದೌ) + ಣಿच्  
“ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಕೂರಾವಿನ್ ಕ್ರೂರಾವಿನ್ (ಪುಂ) ರಣಹದ್ದು. ಕೂರಂ  
ರೌತಿ — ಕ (ಶಬ್ದೇ) “ಣಿತಿ:” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಕೂರಲೋಚನ ಕ್ರೂರಲೋಚನ (ಪುಂ) 1. ಶನಿಗ್ರಹ. 2. ಕುಜ  
ಗ್ರಹ. ಕೂರೇ ಲೋಚನೇ ಯಸ್ಯ । “ಸಪ್ತಾಚಿರ್ನಿಲವಸನ: ಪಾತಾಙ್ಗಿ:  
ಕೂರಲೋಚನ:” ಹಾರಾಂ ।

ಕೂರಾತ್ಮನ್ ಕ್ರೂರಾತ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಕ್ರೂರಸ್ವಭಾವದ ಶನಿ  
ಗ್ರಹ. (ವಿಂ) 2. ಕ್ರೂರಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳವನು. ಕೂರ:  
ಆತ್ಮಾ ಸ್ವಭಾವ: ಯಸ್ಯ ।

ಕ್ರೋಣ ಕ್ರೋಣ (ವಿಂ) ಬೆಲೆಕೊಟ್ಟು ಕೊಳ್ಳುವವನು. ಡು ಕ್ರೋನ್  
(ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯೇ) “ನಿ:” ಬಾಹುಂ ।

ಕ್ರೋಣ್ಯ ಕ್ರೋಣ್ಯ (ವಿಂ) ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಕೊಳ್ಳಲು  
ಅರ್ಹವಾದ. ಡು ಕ್ರೋನ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯೇ) “ತವ್ಯ:” (೩-೧-೯೬) ।

ಕ್ರೇತೃ ಕ್ರೇತೃ (ವಿಂ) ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಪಡೆಯುವವನು, ಬೆಲೆಕೊಟ್ಟು  
ಕೊಳ್ಳುವವನು. ಡು ಕ್ರೋನ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯೇ) “ತೃच्”  
(೩-೧-೧೩೩) । “ಕ್ರೇತಾ ಶುಲ್ಕಂ, ರಾಜಪಣ್ಯಚ್ಛೇದಾನುರೂಪಂ ಚ  
ವೈಧರಣಂ ದತ್ತಾತ್, ಅನ್ಯತ್ರ ಕ್ರೇತಾ ಷಡ್ಛತಮರ್ಯಯಂ ಚ” ಅರ್ಥಶಾಂ  
ಅಧಿಂ ೨ ಅಂ ೧೨ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಜೀಪ್” (೪-೧-೧) ।

ಕ್ರೇತೃ ಕ್ರೇತೃ.

ಕ್ರೇಯ ಕ್ರೇಯ (ವಿಂ) ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಪಡೆಯಲು -ಅರ್ಹವಾದ,  
ಕೊಳ್ಳಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಡು ಕ್ರೋನ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯೇ)  
“ಯತ್” (೩-೧-೯೭) ।

ಕ್ರೋಡ ಕ್ರೋಡ (ಪುಂ) 1. ಪರಾಹ, ಸೂಕರ, ಹಂದಿ. ಕ್ರೂಡ  
(ನಿಮಜ್ಜನೆ) “ಬಜ್” (೩-೩-೧೯) । ಕ್ರೋಡೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ  
“ಅಜ್” (೪-೨-೧೨೭) । “ಕ್ರೋಡಕುಲದೃಶ್ಯಮಾನಭದ್ರ-  
ಮುಸ್ತಾರಸಾಮೋದ:” ಕಾದಂ । 2. ಶನಿಗ್ರಹ. 3. ವಾರಾಹೀ  
ಕಂದ. ಹಂದಿಗೆಡ್ಡೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ಎದೆ, ಭುಜಗಳ  
ಮಧ್ಯಭಾಗ. 5. ತೊಡೆ, ಮಡಿಲು. “ಕ್ರೋಡಕೀಡದ್ವಿಜಾಲಿ-  
ಗರುದುದಿತಮಸ್ತಸ್ಕಾಲವಾಚಾಲವೀಚಿ:” ನೈಷಂ ೧೨-೧೦೧ ।

“ಕ್ರೋಡ: ಶನೌ ಸೂಕರೇ ನಾ ನ ಪುಮಾನಙ್ಕವಕ್ಷಸೋ:” ಮೇದಿಂ ।

ಕ್ರೋಡಕನ್ಯಾಕ್ರೋಡಕನ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾರಾಹೀಕಂದ, ಹಂದಿ  
ಗೆಡ್ಡೆ.

ಕ್ರೋಡಪತ್ರ ಕ್ರೋಡಪತ್ರ (ನಂ) 1. ಪುಟಗಳು ನಷ್ಟವಾಗಿ  
ರುವ ಗ್ರಂಥಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಹೊಸದಾಗಿ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಪತ್ರ  
(ಪುಟ) ಗಳು, ಬರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ ಗ್ರಂಥವು ಪೂರ್ತಿಯಾಗಲು  
ಮಧ್ಯೆ ಮಧ್ಯೆ ಹೊಸದಾಗಿ ಬರೆದು ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಪತ್ರಗಳು.  
ಕ್ರೋಡೇ ಉಪಚಾರಾತ್ ಮಧ್ಯೆ ಸ್ಥಿತಂ ಪತ್ರಮ್ । 2. ಶಾಸ್ತ್ರ ಗ್ರಂಥ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವ ಲಕ್ಷಣಗಳಿಗೆ ಉಪಾಪೋಹಗಳಿಂದ  
ಶಂಕೆ ಮತ್ತು ಸಮಾಧಾನರೂಪವಾಗಿ ಬರೆದಿಟ್ಟಿರುವ ಪತ್ರ.

ಕ್ರೋಡಪಾದ ಕ್ರೋಡಪಾದ (ಪುಂ) ಕಮಠ, ಆಮೆ. ಕ್ರೋಡ  
ಪಾದೌ ಯಸ್ಯ ।

ಕ್ರೋಡಾ ಕ್ರೋಡಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುದುರೆಯ ಎದೆ. “ಅಶ್ವಾನಾ-  
ಮುರ: ಕ್ರೋಡಾ” ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ಕ್ರೋಡಾಙ್ಗಿ ಕ್ರೋಡಾಙ್ಗಿ (ಪುಂ) ಕಮಠ, ಆಮೆ. ಕ್ರೋಡ  
ಅಙ್ಗಿ ಅಸ್ಯ ।

ಕ್ರೋಡೀಕರಣ ಕ್ರೋಡೀಕರಣ (ನಂ) ಅಲಿಂಗನ. ಅಪ್ಪಿ  
ಕೊಳ್ಳುವುದು. ಕ್ರೋಡ+ಚ್ವಿ: + ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೫) । “ಕ್ರಿನ್” (೩-೩-೯೪) । -ಕ್ರಿತಿ:  
-ಕ್ರಿತ್.

ಕ್ರೋಧ ಕ್ರೋಧ (ಪುಂ) ಕೋಪ, ಸಿಟ್ಟು. ಕ್ರೂ (ಕ್ರೋಧೇ)  
ಭಾವೇ “ಘಜ್” (೩-೩-೧೮) । ಇದು ರೋದ್ರರಸದ ಸ್ಥಾಯಿ  
ಭಾವ. “ರೋದ್ರ: ಕ್ರೋಧಸ್ಯಾಪಿಭಾವೋ ರಕ್ತೋ ರೋದ್ರಾಧಿದೇವತ:”  
ಸಾಂ ದಂ ೩-೨೨೭ । “ವಕ್ಷ:ಪೀಠೇರಾತ್ಸರೋರಾತ್ಮನೇವ ಕ್ರೋಧೇ-  
ನಾನ್ಧಾ: ಪ್ರಾವಿಶನ್ ಪುಷ್ಕರಾಣಿ” ಮಾಘಂ ೧೮-೧೭ ।  
ಕಾಮವು (ಇಷ್ಟಾರ್ಥವು) ಪೂರ್ತಿಯಾಗದಿದ್ದಲ್ಲಿ ರಜೋಗುಣ  
ವುಂಟಾಗಿ ಅದು ಕ್ರೋಧವಾಗಿ ಪರಿಣಮಿಸುವುದು. “ಕಾಮ  
ಏಷ ಕ್ರೋಧ ಏಷ: ರಜೋಗುಣಸಮುದ್ಭವ:” ಗೀತಾ ೩-೩೭ ।  
ಕ್ರೋಧವು ಕಾಮದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದು. “ಸಜ್ಞಾತ್  
ಸಂಜಾಯತೇ ಕಾಮ: ಕಾಮಾತ್ ಕ್ರೋಧೋಽಭಿಜಾಯತೇ” ಗೀತಾ  
೨-೬೨ ।



**ಕ್ರೋಧಕೃತ್ ಕ್ರೋಧಕೃತ್** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಕ್ರೋಧಂ ಕರೋತಿ—  
ಓ ಕೃಜ್ (ಕರಣಂ) “ವಿವ್” (೩-೨-೮೯). ಸೂತ್ರೇಽಸ್ಮಿನ್  
ಉಪಪದನಿಯಮಾಭಾವಾತ್ ಅನ್ಯತ್ರಾಪಿ ಉಪಪದೇ ವಿವ್. “ಕ್ರೋಧಕೃತ್  
ಕ್ಷತ್ರಿಯಮ್ಯೋ ಯಃ ಪೂರ್ವ ಕ್ರೋಧಂ ಕರೋತಿ ಸಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ.  
“ಕ್ರೋಧಹಾ ಕ್ರೋಧಕೃತ್ ಕರ್ತಾ” ವಿಂ ಸಂ. ಪರಮಾತ್ಮನ  
ಅಜ್ಞಾನರೂಪವಾದ ಶ್ರುತಿಸ್ಮೃತಿಗಳನ್ನು ಮೀರಿ ನಡೆಯು  
ವವನು ಅವನ ಕೋಪಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರನಾಗಿ ದುರ್ಗತಿಯನ್ನು  
ಹೊಂದುವನು. “ಶ್ರುತಿರಸ್ಮೃತಿ ಮಮೇವಾಜ್ಞೇ ಯಸ್ತೇ ತಲ್ಲಙ್ಗ್ಯ  
ಗಚ್ಛತಿ. ಆಜ್ಞಾಚ್ಛೇದಿ ಮಮ ದ್ವೇಷಿ ನರಕೇ ಪ್ರತಿವರ್ತತೇ”.

**ಕ್ರೋಧಜ ಕ್ರೋಧಜ** (ಪುಂ) 1. ಅಜ್ಞಾನ, ಮೋಹ. ಕ್ರೋಧಾತ್  
ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತವಿ) “ಜಃ” (೩-೨-೯೮). “ಕ್ರೋಧಾ-  
ದ್ಭವತಿ ಸಮೋಹಃ ಸಮೋಹಾತ್ ಸ್ಮೃತಿವಿಭ್ರಮಃ” ಗೀತಾ ೨-೬೩.  
2. ಕ್ರೋಧದಿಂದ ಉಂಟಾದ ಎಂಟು ವ್ಯಸನಗಳು. “ಪೇಶುನ್ಯಂ  
ಸಾಹಸಂ ದ್ರೋಹಃ ಇರ್ಷ್ಯಾಸುಯಾರ್ಥದ್ವೇಷಃ. ವಾದೃಙ್ಜಂ ಚ ಪಾಠ್ಯಂ  
ಕಾಮಜೋಷಿ ಗಣೋಷ್ಠಕಃ” ಮನುಂ ೭-೪೮. (1) ಒಬ್ಬನಲ್ಲಿ  
ಇಲ್ಲದಿರುವ ದೋಷವನ್ನು ಹೇಳುವುದು ಪೈಶುನ್ಯವು.  
(2) ಸಾಧುಜನರನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸುವುದು ಸಾಹಸವು.  
(3) ಮೋಸದಿಂದ ಕೊಲ್ಲುವುದು ದ್ರೋಹವು. (4) ಇತರರ  
ಗುಣಗಳನ್ನು ಸಹಿಸದಿರುವುದು ಈರ್ಷ್ಯೆ. (5) ಇತರರ  
ಗುಣಗಳಲ್ಲಿ ದೋಷವನ್ನು ಹೇಳುವುದು ಅಸೂಯೆ.  
(6) ಇತರರಿಗೆ ಕೊಡಬೇಕಾದುದನ್ನು ಕೊಡದಿರುವುದೂ  
ಇತರರ ವಸ್ತುವನ್ನು ಅಪಹರಿಸುವುದೂ ಅರ್ಥ  
ದೂಷಣವು. (7) ಕಠಿನವಾಗಿ ಮಾತನಾಡಿ ಕೋಪಿಸಿಕೊಳ್ಳು  
ವುದು ವಾಕ್ ಸಾರುಷ್ಯವು. ಮತ್ತು (8) ಹೊಡೆಯು  
ವುದು ದಂಡಸಾರುಷ್ಯವು. ಇವು ಎಂಟು ಕ್ರೋಧ  
ದಿಂದ ಉಂಟಾದ ವ್ಯಸನಗಳು. “ದಶ ಕಾಮಸಮುತ್ಥಾನಿ  
ತಥಾಷ್ಟೌ ಕ್ರೋಧಜಾನಿ ಚ” ಮನುಂ ೭-೪೫.

**ಕ್ರೋಧನ ಕ್ರೋಧನ** (ಪುಂ) 1. ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳ  
ಲೋಕ. (ವಿಂ) 2. ಕೋಪದ ಸ್ವಭಾವದವನು.  
ಕ್ರುಧ (ಕ್ರೋಧೇ) “ಯುಚ್” (೩-೨-೧೫೧). “ಯದ್ರಾಮೇಣ ಕೃತಂ  
ತದೇವ ಕುರುತೇ ದ್ರೋಣಾಯನಿಃ ಕ್ರೋಧನಃ” ವೇಣೀಂ ೩-೩೧.  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಕ್ರೋಧನಾ ಕ್ರೋಧನಾ.

**ಕ್ರೋಧಸಂಭವ ಕ್ರೋಧಸಂಭವ** (ಪುಂ) 1. ಕೋಪದ ಉತ್ಪತ್ತಿ.  
ಕೋಪವು ಹುಟ್ಟುವುದು. ಕ್ರೋಧಸ್ಯ ಸಂಭವಃ. (ವಿಂ) 2.  
ಕೋಪದಿಂದ ಉಂಟಾದ, ಕೋಪದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ. ಕ್ರೋಧಃ  
ಸಂಭವೋಽಸ್ಯ.

**ಕ್ರೋಧಹನ್ ಕ್ರೋಧಹನ್** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಕ್ರೋಧಂ ಹಂತಿ—  
ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ) “ವಿವ್” (೩-೨-೮೭). ಕಾಶ್ಯಪ-

ಪ್ರಾರ್ಥನಯಾ ಶತ್ರಿಯನಿರಾಸಕರಂ ಕ್ರೋಧಂ ಹತವಾನ್. “ಕಾಶ್ಯಪಸ್ಯ  
ಪ್ರಾರ್ಥನಯಾ ಯಃ ಕ್ರೋಧಂ ಶತ್ರಿಹಾನಿದಮ್. ಹತವಾನ್ ಕ್ರೋಧಹಾ ಪ್ರೋಕ್ತಃ  
ಪಙ್ಕಜಃ ಕ್ರೋಧನಾಶನಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ. “ಕ್ರೋಧಹಾ ಕ್ರೋಧಕೃತ್  
ಕರ್ತಾ ವಿಶ್ವವಾಹುರ್ಮಹೀಧರಃ” ವಿಂ ಸಂ. (ವಿಂ) 2. ಕೋಪ  
ವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವವನು, ಕೋಪವನ್ನು ಅಡಗಿಸು  
ವವನು. “ತೃಚ್” (೩-೧-೧೩೩). (ವಿಂ)—ಹಂತಾ—ಹಂತಾ.

**ಕ್ರೋಧಾಲ್ ಕ್ರೋಧಾಲ್** (ವಿಂ) ಕೋಪಸ್ವಭಾವದ. ಕ್ರೋಧ  
“ಆಲುಚ್” ಬಾಹುಂ. “ಕ್ರೋಧಾಲ್ವಿಪುಲವಲೋ ನಿಶಾಧಿಹಾರಿ”  
ಸುಶ್ರುತಂ.

**ಕ್ರೋಧಿ ಕ್ರೋಧಿ** (ಪುಂ) ಪ್ರಭವ ಮೊದಲಾದ ಅರವತ್ತು  
ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಮೂವತ್ತೆಂಟನೆಯ ಸಂವತ್ಸರ.

**ಕ್ರೋಧಿನ್ ಕ್ರೋಧಿನ್** (ವಿಂ) ಕೋಪವುಳ್ಳವನು. ಕ್ರೋಧೋ-  
ಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೫).

**ಕ್ರೋಶ ಕ್ರೋಶ** (ಪುಂ) 1. ಕರೆ, ಕೂಗುವುದು. 2. ರೋದನ,  
ಅಳುವುದು. ಕ್ರುಶ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೇ ಚ) “ಘಜ್”  
(೩-೩-೧೮). 3. ಯೋಜನದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು  
ಭಾಗ, ಮೂರು ಮೈಲಿಗಳ ದೂರ, ಒಂದು ಹರಿದಾರಿ.

**ಕ್ರೋಶತ್ ಕ್ರೋಶತ್** (ವಿಂ) 1. ಕರೆಯುತ್ತಿರುವ, ಕೂಗು  
ತ್ತಿರುವ. 2. ಅಳುತ್ತಿರುವ. ಕ್ರುಶ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೇ ಚ)  
“ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪). “ವ್ಯಾವರ್ತಿಷ್ಠ ಕ್ರೋಶತಃ ಸಖ್ಯುರ್ದ್ವೈಃ  
ತ್ಯಕ್ತಶ್ಚಾತ್ಮಾ ಕಾ ಚ ಲೋಕಾನುವೃತ್ತಿಃ” ಮಾಘಂ ೧೮-೬೪.  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬). ಕ್ರೋಶಂತಿ ಕ್ರೋಶಂತೀ.  
“ಉಪೇಯುರ್ಮಧುಪಾಯಿನ್ಯಃ ಕ್ರೋಶಂತ್ಯಸ್ತಂ ಕಪಿಸ್ತ್ರಿಯಃ” ಭಟ್ಟಂ  
೬-೧೨೪.

**ಕ್ರೋಶಚ್ಛನಿ ಕ್ರೋಶಚ್ಛನಿ** (ಪುಂ) ಡಕ್ಕಿ, ಭೇರಿ, ನಗಾರಿ.  
ಕ್ರೋಶಂ ವ್ಯಾಪ್ಯ ಚ್ಛನಿರಸ್ಯ.

**ಕ್ರೋಶಯುಗ ಕ್ರೋಶಯುಗ** (ನಂ) ಎರಡು ಕ್ರೋಶಗಳ  
ದೂರ, ಎರಡು ಹರಿದಾರಿಗಳಷ್ಟು ದೂರ. ಕ್ರೋಶಯುಗಮ್.

**ಕ್ರೋಷ್ ಕ್ರೋಷ್** (ಪುಂ) ಜಂಬುಕ, ನರಿ. ಕ್ರುಶ (ಆಹ್ವಾನೇ)  
“ತುನ್” (೩ಂ ೧-೬೯). ಉಕಾರಾಂತವಾದ ಈ ಶಬ್ದ  
ವನ್ನು ತೃಜಂತ ಶಬ್ದದಂತೆ (ಉಕಾರಾಂತದಂತೆ) ಪ್ರಯೋ  
ಗಿಸಬೇಕು. “ತೃಜತ್ ಕ್ರೋಷ್” (೭-೧-೯೫).

ಕ್ರೋಷಾ ಕ್ರೋಷಾರೌ ಕ್ರೋಷಾರಃ. ಹೇ ಕ್ರೋಷಾ. ಕ್ರೋಷಾರಂ  
ಕ್ರೋಷಾರೌ ಕ್ರೋಷನ್. “ವಿಭಾಷಾ ತೃತೀಯಾದಿಛ್ವಂಚಿ” (೭-೧-೯೭).

ಕ್ರೋಷಾ } ಕ್ರೋಷುಮ್ಯಾಂ ಕ್ರೋಷುಃ.  
ಕ್ರೋಷುನಾ }

ಕ್ರೋಷೇ } ಇತ್ಯಾದಿ.  
ಕ್ರೋಷವೇ }



“ಕೊಪ್ಪನ್ ಸಮಶೃಗೋತ್ ಕೂರಾನ್ ರಸತೋಜ್ಜುಭಸಿನಿ:”  
 ಭಟಿಂ ೬-೪। ಕೃತ ಕರ್ತಂ “ತೃಚ್” (೩-೧-೨೩೩)।  
 “ಇವಕೊಪ್ಪಗದ್‌ಭೋಲೂಕಸಾಮಬಾಣಾರ್ತನಿ:ಸ್ವನೇ” ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೧೪೮।  
 ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪)। ಕೊಪ್ಪಿ ಕೊಪ್ಪಿ.

ಕೊಪ್ಪವಿಷ್ಣು ಕೊಪ್ಪವಿಷ್ಣು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಂಬಾಲದ  
 ಹುಲ್ಲು. ಕೊಪ್ಪವಿಷ್ಣು.

ಕೊಪ್ಪಿ ಕೊಪ್ಪಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ನರಿ. 2. ಬಿಳಿ  
 ನೆಲಗುಂಬಳ. 3. ನೀರು ಹಿಪ್ಪಲಿ. 4. ಕರಿ ನೆಲಗುಂಬಳ.  
 “ಕೊಪ್ಪಿ ಶೃಗಾಲಿಕಾ ಕೀರವಿದಾರಿಲಾಙ್ಗಲಿಫು ಚ” ವಿಶ್ವಂ।  
 “ವಿದಾರಿಲಾಕೀರಶುಕಲೇಖುಗನ್ಧಾ ಕೊಪ್ಪಿ ಚ ಯಾ ಸಿತಾ”  
 ಅಮಂ।

ಕೊಪ್ಪ ಕೊಪ್ಪ (ಪುಂ) 1. ನೀರು ಕೊಕ್ಕರೆ. ಕೊಪ್ಪ ಪ್ರಜಾಡಿಂ  
 “ಅನ್” (೪-೪-೩೮)। “ಧ್ವನತಿ ಸ್ವ ಧನುರ್ಧನಾಂತ-  
 ಮತ್ತಪ್ಪುರಕೊಪ್ಪವಾನುಕಾರಮುಚ್ಚೇ:” ಮಾಘಂ ೨೦-೧೯।  
 2. ಸಮುದ್ರದಿಂದ ಸುತ್ತುವರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ ಪ್ರಪಂಚದ ಸಪ್ತ  
 ದ್ವೀಪಗಳಲ್ಲೊಂದು. “ದ್ವೀಪಸ್ಯ ಪಶ್ಯ ದಯಿತಂ ದೃತಿಮಂತಮೇತಂ  
 ಕೊಪ್ಪಸ್ಯ ಚಂಚಲದೃಗ್‌ಚಲವಿಭ್ರಮೇಣ” ನೆಪಂ ೧೧-೪೯।  
 3. ಕೊಪ್ಪ ದ್ವೀಪದ ಒಂದು ಪರ್ವತ. “ತತ್ರಾದ್ವೀಪಸ್ತಿ  
 ಭವದಙ್ಗಿವಿಹಾರಯಾಚಿ ಕೊಪ್ಪ: ಸ್ಫುರಿಷ್ಯತಿ ಗುಣಾನಿವ  
 ಯಸ್ತ್ವದೀಯಾನ್” ನೆಪಂ ೧೧-೪೦। 4. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ.  
 (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೊಪ್ಪ ಕೊಪ್ಪ. ಹೆಣ್ಣು ಕೊಕ್ಕರೆ. ಕೊಪ್ಪಿ  
 ಕೊಪ್ಪಿ. ಕೊಪ್ಪನ ಪತ್ನಿಯಾದ ತಾಮ್ರಯ ಮಗಳು,  
 ಕೊಕ್ಕರೆಯ ತಾಯಿ.

ಕೊಪ್ಪದಾರಣ ಕೊಪ್ಪದಾರಣ, -ನಿಷ್ಪದನ -ನಿಷ್ಪದನ  
 (ಪುಂ) ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪಣ್ಣುಖ. ಕೊಪ್ಪಸ್ಯ ಪರ್ವತಸ್ಯ  
 ದಾರಣ: ನಿಷ್ಪದನೋ ವಾ।

ಕೊಪ್ಪಪದಾ ಕೊಪ್ಪಪದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೃತ್ತರತ್ನಕರೋಕ್ತ  
 ವಾದ ಇಪ್ಪತ್ತದನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ  
 ಲಕ್ಷಣ: “ಕೊಪ್ಪಪದಾ ಸ್ತೌ ಭರೌ ನನನಾ ನಗೌ ಮುನಿ-  
 ಶರವಸುಶರವಿರತಿಯುತಾ” ವೃಂ ೨೦। ಈ ವೃತ್ತದ ಗಣ  
 ವಿನ್ಯಾಸ:

ಭ ತ ಭ ರ ನ ನ ನ ನ ಗು  
 ೦|| ೦೦|| ೦|| ೦|| ೦|| ೦|| ೦|| ೦|| ೦|| ೦||

ಕೊಪ್ಪರಿಪು ಕೊಪ್ಪರಿಪು (ಪುಂ) ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪಣ್ಣುಖ.  
 ಕೊಪ್ಪಸ್ಯ ರಿಪು:।

ಕೊಪ್ಪಾದನ ಕೊಪ್ಪಾದನ (ನಂ) 1. ಹಿಪ್ಪಲಿ. 2. ತಾವರೆಯ  
 ದಂಟು. 3. ಚಿಂಚೋಟಕ. “ಕೊಪ್ಪಾದನಂ ತು ಪಿಪ್ಪಲ್ಯಾಂ  
 ಚಿಂಚೋಟಕಮುಣಾಲಯೋ:” ಮೇದಿಂ।

ಕೊಪ್ಪಾರಣ್ಯ ಕೊಪ್ಪಾರಣ್ಯ (ನಂ) ಜನಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಸಮೀಪದ  
 ಒಂದು ಪಂ. “ತತ: ಪರಂ ಜನಸ್ಥಾನಾತ್ ತ್ರಿಕೋಶಂ ಗಮ್ಯ  
 ರಾಘವೌ। ಕೊಪ್ಪಾರಣ್ಯಂ ವಿವಿಶತು: ಗಹನಂ ತೌ ಮಹೀಜಸೌ”  
 ರಾಮಾಂ।

ಕೊಪ್ಪ ಕೊಪ್ಪ (ವಿಂ) 1. ವರಾಹ ಸಂಬಂಧವಾದ. 2. ಮಹಾ  
 ವಿಷ್ಣುವಿನ ವರಾಹಾವತಾರಸಂಬಂಧವಾದ. ಕೊಪ್ಪದಮ್  
 “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦)।

ಕೊಪ್ಪ ಕೊಪ್ಪ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೊಪ್ಪದಿಯೆಂಬುವಳ ಮಗಳು.  
 ಕೊಪ್ಪ “ಅನ್” (೪-೧-೮೦)।

ಕೊಪ್ಪ ಕೊಪ್ಪ (ನಂ) 1. ದಯೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಕರಿನ  
 ವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಕಲ್ಲುವದೆಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. ಕೊಪ್ಪ  
 ಭಾವ: “ಅನ್” (೪-೧-೧೨೪)। “ಪ್ರಿಯೇ, ಕೊಪ್ಪಮಪಿ ಮೇ  
 ತ್ವಯಿ ಪ್ರಯುಕ್ತಮನುಕೂಲಪರಿಣಾಮಂ ಸಂವೃತ್ತಮ್” ಶಾಕುಂ ೭।  
 2. ಉಗ್ರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಭಯಂಕರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಘೋರ  
 ವಾಗಿರುವಿಕೆ. “ಕೃತೇ ಕೊಪ್ಪಾತ್ಸಮಾಯಾತೌ ಮಾಂ ವಿಶ್ವಾಸಯಿತುಂ  
 ನು ಕಿಮ್” ಭಟಿಂ ೮-೧೦೪।

ಕಲಮ ಕಲಮ (ಪುಂ) ಆಯಾಸ, ದಣ್ಣವು, ಬಳಲಿಕೆ. ಕಲಮು  
 (ಗ್ಲಾನಿ) “ಅನ್” (೩-೩-೧೮)। ಕಿಂ ಶೀತಲಂ: ಕಲಮ-  
 ವಿನೋದಿಭಿರಾಶ್ವಾತಾನ್ ಸಂಚಾರಯಾಮಿ ನಲಿನಿರ್ದಲತಾಲವೃತ್ತೇ:”  
 ಶಾಕುಂ ೩-೧೮। “ವಿನೋದಿತದಿನಕಲಮಾ: ಕೃತರುಚಶ್ಚ  
 ಜಾಮ್ಬೂನದೇ:” ಮಾಘಂ ೪-೬೬।

ಕಲಮಥ ಕಲಮಥ (ಪುಂ) ಆಯಾಸ, ದಣ್ಣವು, ಬಳಲಿಕೆ.  
 ಕಲಮು(ಗ್ಲಾನಿ) “ಅನ್” ಬಾಹುಂ। “ಕಲಮಥ: ಕಲಮೇ” ಅಮಂ।

ಕಲಮಿತ್ವ ಕಲಮಿತ್ವ (ನಂ) ಆಯಾಸ, ಬಳಲಿಕೆ, ದಣ್ಣವು.  
 ಕಲಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪) ತಸ್ಯ ಭಾವ:  
 “ತ್ವ:” (೪-೧-೧೧೯)। “ಕಲಮಿತ್ವಂ ಕುರುತೇಽಪ್ಯಯಮ್”  
 ಭಟಿಂ ೭-೪।

ಕಲಮಿನ್ ಕಲಮಿನ್ (ವಿಂ) ಆಯಾಸವುಳ್ಳವನು, ದಣ್ಣವುಳ್ಳ  
 ವನು, ಬಳಲಿಕೆಯುಳ್ಳವನು. ಕಲಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:”  
 (೪-೨-೧೧೪)।

ಕಲಮು - ಗ್ಲಾನಿ (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ)। ಕಲಾಮ್ಯತಿ,  
 ಕಲಾಮತಿ। ಚಕಲಾಮ। ಕಲಮಿತಾ। ಕಲಮಿಷ್ಯತಿ। ಕಲಾಮ್ಯತು,  
 ಕಲಾಮತು। ಅಕಲಾಮ್ಯತ್, ಅಕಲಾಮತ್। ಕಲಾಮ್ಯೇತ್, ಕಲಾಮೇತ್।  
 ಇತ್ಯಾದಿ. ಆಯಾಸ ಹೊಂದು, ಬಳಲು, ದಣ್ಣ. “ಲಕ್ಷ್ಮಾ-  
 ಪ್ರದಾಹಾಕ್ಷವಧದ್ಭಿ: ಕಲಾಮ್ಯತೃಸಾವಪ್ಯಧುನಾತಿಮಾತ್ರಮ್”  
 ಭಟಿಂ ೧೨-೩೮।

ಭಾವೇ:-ಕಲಮ್ಯತೇ। ಚಕಲಮೇ। ಕಲಮಿತಾ। ಕಲಮಿಷ್ಯತೇ।  
 ಕಲಮ್ಯತಾಮ್। ಅಕಲಮ್ಯತ। ಕಲಮ್ಯೇತ। ಇತ್ಯಾದಿ.



ಗಿಣಿ:-ಕಲಮಯತಿ, -ತೆ। ಕಲಮಯಾ ಬಭೂವ, -ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಆಸ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ:-ಚಿಕಲಮಿಷತಿ। ಚಿಕಲಮಿಷಾ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:-ಕಲಮಿತವ್ಯಮ್। ಕಲಮನೀಯಮ್। ಕಲಮ್ಯಮ್। ಕಲಾಂತ:। ಕಲಾಂತವಾನ್। ಕಲಾಮ್ಯನ್, ಕಲಾಮ್ಯಂತಿ। ಕಲಾಮನ್, ಕಲಾಮಂತಿ। ಕಲಮಿತುಮ್। ಕಲಾಂತಮ್। ಕಲಮನಮ್। ಕಲಮಿತ್ವಾ, ಕಲಾಂತವಾ। ಪ್ರಕಲಮ್ಯ।

ಕಲಾಂತ ಕ್ಲಾಂಠ (ನಂ) 1. ದಣವು, ಬಳಲಿಕೆ. ಕಲಮು (ಗಲಾನಿ) ಭಾವೆ "ಕ್ತ:" (3-3-114)। (ವಿಂ) 2. ಬಳಲಿದ, ಆಯಾಸಗೊಂಡ. ಕಲಮು ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (3-4-92)। "ತಮಾತಪಕಲಾಂತಮನಾತಪತ್ರಮಾಚಾರಪೂತಂ ಪವನ: ಸಿಫೇವ" ರಘುಂ 2-13।

ಕಲಾಂತಿ ಕ್ಲಾಂಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಣವು, ಬಳಲಿಕೆ, ಆಯಾಸ. ಕಲಮು (ಗಲಾನಿ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)।

ಕಲಾಂತಿವಿನೋದನ ಕ್ಲಾಂಠಿವಿನೋದನ (ನಂ) 1. ದಣ ಪಾರಿಸುವಿಕೆ, ಬಳಲಿಕೆಯನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವಿಕೆ, ಆಯಾಸ ವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವಿಕೆ. ಕಲಾಂತಿ: ವಿನೋದನಮ್। (ವಿಂ) 2. ಆಯಾಸವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವ, ಬಳಲಿಕೆಯನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. ಕಲಾಂತಿ: ವಿನೋದನ:।

ಕಲಾಂತಿವಿನೋದಿನ್ ಕ್ಲಾಂಠಿವಿನೋದಿನ್ (ವಿಂ) ಆಯಾಸ ವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವ, ದಣವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. ಕಲಾಂತಿ ವಿನೋದಯತಿ - ವಿ + ಣುದ (ಪ್ರೇರಣೆ) + ಗಿಣಿ "ಗಿಣಿ:" (3-2-94)।

ಕಿಲದ್-ಆರ್ದ್ರಿಭಾವೆ (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ)। ಕಿಲದತಿ। ಚಿಕಲೇದ। ಕಲೇತ್ತಾ, ಕಲೇದಿತಾ। ಕಲೇತ್ಸಯತಿ, ಕಲೇದಿಷ್ಯತಿ। ಕಿಲದತು। ಅಕಿಲದತ್। ಕಿಲದೇತ್। ಕಿಲದಾತ್। ಅಕಿಲದತ್। ಅಕಲೇತ್ಸಯತ್, ಅಕಲೇದಿಷ್ಯತ್। ಒದ್ದೆಯಾಗು, ತೇವವಾಗು. "ನ ಕುರ್ಯಾತ್ ಸ್ನೇಹಸೇಕಂ ಚ ತೇನ ಕಿಲದತಿ ಹಿ ಬ್ರಹ್ಮ:" ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ 2-64।

ಭಾವೆ:-ಕಿಲದತೇ। ಚಿಕಿಲದೇ। ಕಲೇದಿತಾ, ಕಲೇತ್ತಾ। ಕಲೇದಿಷ್ಯತೇ, ಕಲೇತ್ಸಯತೇ। ಕಿಲದತಾಮ್। ಅಕಿಲದತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗಿಣಿ:-ಕಲೇದಯತಿ, -ತೆ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:-ಕಲೇದಿತವ್ಯಮ್, ಕಲೇತ್ತವ್ಯಮ್। ಕಲೇದನೀಯಮ್। ಕಲೇದಮ್। ಕಿಲದ್ನ:। ಕಿಲದ್ನವಾನ್। ಕಿಲದನ್। ಕಿಲದಂತಿ, ಕಿಲದಂತಿ। ಕಲೇದಿತುಮ್, ಕಲೇತ್ತುಮ್। ಕಿಲದಮ್। ಕಲೇದನಮ್। ಕಿಲದಿತ್ವಾ, ಕಲೇದಿತ್ವಾ, ಕಿಲದ್ವಾ। ವಿಕಿಲದ.

ಕಿಲದತ್ ಕ್ಲದ್ಠತ್ (ವಿಂ) ಒದ್ದೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ತೇವ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಕಿಲದ್ (ಆರ್ದ್ರಿಭಾವೆ) "ಶತ್" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-6)। ಕಿಲದಂತಿ ಕ್ಲದ್ಠಂತಿ.

ಕಿಲದತ್ ಕ್ಲಂಠತ್ (ವಿಂ) ಒದ್ದೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ತೇವ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಕಿಲದಿ (ಪರಿವೇಶನೆ) "ಶತ್" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-6)। ಕಿಲದಂತಿ ಕ್ಲಂಠಂತಿ. "ಶೀತಾಂಶೋರಶುಜಾಲೈರ್ಜಲಧರಮಲಿನಾಂ ಕಿಲದಂತಿ ಕೃತ್ತಿಮೇಭಿಮ್" ಮುद्रಾಂ 3-20।

ಕಿಲದ್ ಕ್ಲನ್ (ನಂ) 1. ಒದ್ದೆ, ತೇವ. ಕಿಲದ್ (ಆರ್ದ್ರಿಭಾವೆ) ಭಾವೆ "ಕ್ತ:" (3-3-114)। (ವಿಂ) 2. ಒದ್ದೆಯಾದ, ತೇವವಾದ. ಕಿಲದ್ ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (3-4-92)। "ಕುನ್ಯಾ: ಪ್ರಸವಸಂಯುಕ್ತೇರಸ್ತ: ಕಿಲದ್ನಮುರೋಽಭವತ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ 145-148।

ಕಿಲದ್ವರ್ಮನ್ ಕ್ಲನ್ ವರ್ತುನ್ (ನಂ) ರೋಗದಿಂದ ನೀರು ಸುರಿಯುತ್ತಿರುವ ಕಣ್ಣು. "ಅಝಂ ಬಾಹ್ಯತ: ಶೂನಮಂತ: ಕಿಲದ್ನಂ ಸ್ವತಃಪಿ। ಕಣ್ಣಿನಿರಸ್ತೋದಭೂಯಿಷ್ಠಂ ಕಿಲದ್ವರ್ಮ ತದ್ವ್ಯತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರತಂ 3-21।

ಕಿಲದ್ವಾಕ್ ಕ್ಲನ್ ವಾಕ್ (ವಿಂ) ರೋಗದಿಂದ ನೀರು ಸುರಿಯು ತ್ತಿರುವ ಕಣ್ಣು ಗಳುಳ್ಳವನು. ಕಿಲದ್ವಾ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯ - "ವಕ್" (4-4-113)।

ಕಿಲಶ-ಉಪಾಪೇ (ದಿವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸಂ)। ಕಿಲಶ್ಯತೇ। ಚಿಕಿಲಶೇ। ಕಲೇಶಿತಾ। ಕಲೇಶಿಷ್ಯತೇ। ಕಿಲಶ್ಯತಾಮ್। ಅಕಿಲಶ್ಯತ। ಕಿಲಶ್ಯತೇ। ಕಲೇಶಿಷಿಷ್ಠ। ಅಕಲೇಶಿಷ್ಠ। ಅಕಲೇಶಿಷ್ಯತ। ಬಾಧೆಪಡು, ಯಾತನೆ ಹೊಂದು.

ಭಾವೆ:-ಕರ್ತೃಪ್ರಯೋಗದ ಏಕಪದನದ ರೂಪ ಗಳಂತಾಗುವುದು.

ಗಿಣಿ:-ಕಲೇಶಯತಿ, -ತೆ। ಕಲೇಶಯಾ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಕಲೇಶಯಿತಾ। ಕಲೇಶಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೆ। ಕಲೇಶಯತು, -ತಾಮ್। ಅಕಲೇಶಯತ್, -ತ। ಕಲೇಶಯೇತ್, -ತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:-ಕಲೇಶಿತವ್ಯಮ್। ಕಲೇಶನೀಯಮ್। ಕಲೇಶ್ಯಮ್। ಕಿಲಶಿತ:। ಕಿಲಶಿಷ್ಠ:। ಕಿಲಶಿತವಾನ್। ಕಿಲಶ್ಯಮಾನ:। ಕಲೇಶಿತುಮ್। ಕಿಲಶಿಷ್ಠಮ್। ಕಿಲಶಿತ್ವಾ, ಕಿಲಶಿಷ್ಠವಾ। ಪರಿಕಿಲಶ್ಯ.

ಕಿಲಶು-ವಿವಾಧನೆ (ಕ್ರಿಯಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ವಂ)। ಕಿಲಶನಾತಿ। ಚಿಕಲೇಶ। ಕಲೇಶಿತಾ, ಕಲೇಷ್ಠಾ। ಕಲೇಶಿಷ್ಯತಿ, ಕಲೇಶ್ಯತಿ। ಕಿಲಶನಾತು। ಅಕಿಲಶನಾತ್। ಕಿಲಶನೀಯಾತ್। ಕಿಲಶ್ಯಾತ್। ಇತ್ಯಾದಿ. ತೊಂದರೆಪಡಿಸು, ಹೀಡಿಸು, ಬಾಧಿಸು. "ಇತ್ಯ-ಮಾರಾಧ್ಯಮಾನೋಽಪಿ ಕಿಲಶನಾತಿ ಭುವನತ್ರಯಮ್" ಕುಮಾಂ 2-40।



ಕರ್ಮಣಿ:—ಕಿಲಿಶಯತೆ. ಚಿಕಿಲಿಶೆ. ಕಲಿಶಿತಾ, ಕಲಿಶಿತಾ. ಕಲಿಶಿಷ್ಯತೆ. ಕಲಿಶಿಷ್ಯತೆ. ಕಿಲಿಶಯತಾಂ. ಅಕಿಲಿಶಯತ. ಕಿಲಿಶಯತ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ:—ಕಲಿಶಯತಿ, -ತೆ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತು:—ಕಲಿಶಿತವ್ಯಮ್, ಕಲಿಶಿತವ್ಯಮ್. ಕಲಿಶನೀಯ: ಕಲಿಶಯ: ಕಿಲಿಶಿತ: ಕಿಲಿಶಿತ: ಕಿಲಿಶಿತವಾನ್, ಕಿಲಿಶಿತವಾನ್. ಕಿಲಿಶನನ್, ಕಿಲಿಶನತೀ. ಕಲಿಶಿತುಮ್, ಕಲಿಶಿತುಮ್. ಕಿಲಿಶಿತಮ್, ಕಿಲಿಶಿತಮ್. ಕಿಲಿಶಿತವಾ, ಕಿಲಿಶಿತವಾ. ಪರಿಕಿಲಿಶಯ. "ಉದ್ವಿಜಿತಪ್ರಹರಣವ್ರಣಕರ್ಕಶೇನ ಕಿಲಿಶನನಿವಾಸ್ಯ ಭುಜಮಧ್ಯ-ಮುರಸ್ಥಲೇನ" ರಘುಂ ೧೩-೭೩.

ಕಿಲಿಶಿತ ಕ್ಲಿಶಿತ (ನಂ) 1. ತೊಂದರೆ, ಪೀಡೆ, ಬಾಧೆ. ಕಿಶು ಭಾವೆ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪). (ವಿಂ) 2. ತೊಂದರೆಗೊಂಡ, ಕ್ಲಿಶಿತದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕಿಲಿಶು (ವಿವಾಧನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). ವಾ ಇಡಾಗಮ: ಇಡಭಾವೆ ಕಿಲಿಶಿತ: 3. ತೊಂದರೆ ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ನೋಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಕಿಲಿಶು ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).

ಕಿಲಿಶಿತವತ್ ಕ್ಲಿಶಿತವತ್ (ವಿಂ) ತೊಂದರೆಯನ್ನು ಅನುಭವಿಸಿದ. ಕಿಲಿಶ (ಉಪತಾಪೆ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨). "ಉಪದ್ರುತಶ್ಚಿರಂ ದ್ವಂದ್ವಯೋ: ಕಿಲಿಶಿತವಾನಹಮ್" ಭೃಗುಂ ೨೨-೭. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). -ವತೀ -ವತೀ.

ಕಿಲಿಶಯಮಾನ್ ಕ್ಲಿಶಯಮಾನ್ (ವಿಂ) ಪೀಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ತೊಂದರೆ ಪಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಕಿಲಿಶು (ವಿವಾಧನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪). "ವಿದ್ವಾನ್ ತಥೈವ ಯ: ಶಕ್ತ: ಕಿಲಿಶಯಮಾನ್: ಪ್ರಕುಪ್ಯತಿ" ಭಾಂ ವನಂ ೨೯-೧೫.

ಕಿಲಿಶ ಕ್ಲಿಶ್ಯ (ನಂ) 1. ತೊಂದರೆ, ಪೀಡೆ, ಬಾಧೆ. ಕಿಲಿಶು (ವಿವಾಧನೆ) ಭಾವೆ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪). 2. ಪೂರ್ವಾಪರ ವಿರೋಧವುಳ್ಳ ಮಾತು, ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ ಮಾತು. "ಅಥ ಸಂಕುಲಕಿಲಿಶೇ ಪರಸ್ಪರಪರಾಹತೇ" ಅಮಂ. (ವಿಂ) 3. ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ತೊಂದರೆಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಕಿಲಿಶು (ವಿವಾಧನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). 4. ನೋಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ಅಕಿಲಿಶಬಾಲತರೂಪಲಲೋಭನೀಯಂ ಪಿತಂ ಮಯಾ ಸದಯಮೇವ ರತೋತ್ಸವೇಷು" ಶಾಕುಂ ೬-೨೦. 5. ಕೆಟ್ಟಿರುವ. "ಇದಮುಪನತ-ಮೇವ ರೂಪಮಕಿಲಿಶಕಾಂತಿ ಪ್ರಥಮಪರಿಗೃಹಿತಂ ಸ್ಯಾನ್ನವೇತಿ ವ್ಯವಸ್ಯನ್" ಶಾಕುಂ ೫-೧೯. 6. ಕೆಡದಿದ್ದ, ತಾರುಮಾರು ಹೊಂದಿದ. "ಅರ್ಧಪಿತಸ್ತನಂ ಮಾತುರಾಮರ್ದಕಿಲಿಶಕೇಸರಮ್" ಶಾಕುಂ ೭-೧೪. 7. ಗಲ್ಲುನಿಹೊಂದಿದ, ಕಳೆಗುಂದಿದ. "ಹಿಮಕಿಲಿಶಪ್ರಕಾಶಾನಿ ಜ್ಯೋತೀಷೀವ ಮುಖಾನಿ ವ:" ಕುಮಾಂ ೨-೧೯.

ಕಿಲಿಶತತ್ವ ಕ್ಲಿಶ್ಯತತ್ವ (ನಂ) ಒಂದು ಸಮಸ್ತವಾದದಲ್ಲಿ ಮಧ್ಯೆ ಮೇರೆ ದದಾಗ ವ್ಯವಧಾನದಿಂದ ವಿವಕ್ಷಿತವಾದ ಅರ್ಥವು ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ತೋರುತ್ತದೆ. "ಕಿಲಿಶತತ್ವಮರ್ಥಪ್ರತೀತೀರ್ವ್ಯವ-ಹಿತತ್ವಮ್" ಮಾಂ ೬೦ ೭.

ಕಿಲಿಶತತ್ವಮ್ ಕ್ಲಿಶ್ಯತತ್ವಮ್ (ನಂ) ಒಂದು ವಿಧ ನೇತೃತ್ವ. "ಮೃದ್ವತ್ಪವೇದನಂ ತಾಂತ್ರಂ ಯದ್ವತ್ ಸಮಮೇವ ಚ. ಅಕಸ್ಮಾಚ್ಚ ಭವೇದ್ರಕ್ತಂ ಕಿಲಿಶತತ್ವಮ್ ತದಾದಿಶೇತ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರತಂ ೩-೧೮.

ಕಿಲಿಶ ಕ್ಲಿಶ್ಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೀಡೆ, ತೊಂದರೆ, ಕ್ಲಿಶ. ಕಿಲಿಶ (ಉಪತಾಪೆ) ಭಾವೆ "ಕ್ತುನ್" (೩-೩-೧೧೪). 2. ಸೇವೆ, ಶುಶ್ರೂಷೆ.

ಕಲಿತ ಕ್ಲಿಶ (ಪುಂ) ವಿಷಯವಿಲ್ಲದ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹುಳು, ಕ್ರಿಮಿ. "ಕಲಿತ: ಕೃಮಿಸರಾರೀ ಚ ಯಚ್ಚಾಪ್ಯುತ್ಕಲಿಶಕಸ್ತಥಾ" ಸುಶ್ರುತಂ ಕಲ್ಪಂ ೮-೧೧.

ಕಲಿತಕ ಕ್ಲಿಶಕ (ನಂ) 1. ಅತಿಮಧುರ. ಕಲಿಬ (ಅಧಾಪ್ಯ) ಭಾವೆ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪). ಕಲಿತ-ಮಧಾಪ್ಯ ಕಲತಿ -ಕಲ (ಅಪೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೧). "ಮಧುಕಂ ಕಲಿತಕಂ ಯದಿಮಧುಕಂ ಮಧುಯದಿಕಾ" ಅಮಂ. 2. ಹೊಂಗೆ ಬೀಜ.

ಕಲಿತಕಿಕಾ ಕ್ಲಿಶಕಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರಿನಿಂದ. ಕಲಿತಕಮಸ್ಯ-ಸ್ಯಾ: "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫). ರಸ್ಯ ಲತ್ವಮ್.

ಕಲಿತನಕ ಕ್ಲಿಶನಕ (ನಂ) ಕುರಟೆಗೆ ಗಿಡ.

ಕಲಿಬ-ಅಧಾಪ್ಯ (ಮಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸಂ) ಕಲಿಬನೆ. ಚಿಕಲಿಬೆ. ಅಕಲಿಬಿಷ್ಠ. ಅಧ್ಯಾಪ್ಯನಾಗು, ಅಶಕ್ತನಾಗು, ಕಳೆಗುಂದಿದವನಾಗು.

ಕಲಿಬ ಕ್ಲಿಶ (ಪುಂ) 1. ಪಂಡ, ನಪುಂಸಕ, ವೀರ್ಯವಿಲ್ಲದವನು, ಗಂಡಸೂ ಹೆಂಗಸೂ ಅಲ್ಲದ ವ್ಯಕ್ತಿ. ಕಲಿಬ (ಅಧಾಪ್ಯ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). ಯಾವನ ಮೂತ್ರದಲ್ಲಿ ನೋರೆಯಿರುವುದಿಲ್ಲವೋ ಯಾವನ ಮೂತ್ರವು ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿಹೋಗುವುದೋ ಯಾವನ ಜನನೇಂದ್ರಿಯದಲ್ಲಿ ಉನ್ನಾದ ಮತ್ತು ವೀರ್ಯಗಳಿರುವುದಿಲ್ಲವೋ ಅವನು ನಪುಂಸಕ. "ನ ಮೂತ್ರಂ ಫೇನಿಲಂ ಯಸ್ಯ ವಿಷ್ಠಾ ಚಾಪ್ಯು ನಿಮಜ್ಜತಿ. ಮೇಢಂ ಚೋಮಾದಶುಕ್ರಮ್ಯಾ ಹೀನ: ಕಲಿಬ: ಸ ಉಚ್ಯತೇ" ಕಾತ್ಯಾಂ. "ನಾಟೇ ಮೃತೇ ಪ್ರವ್ರಜಿತೇ ಕಲಿಬೇ ಚ ಪತಿಸ್ತೇ ಪತೌ" ಪರಾಂ.

ಪಂಡನು ಹದಿನಾಲ್ಕು ವಿಧ: "ಚತುರ್ದಶವಿಧ: ಶಾಸ್ತ್ರೇ ಷಂಡೋ ದೃಷ್ಟೋ ಮನೀಷಿಭಿ: ಚಿಕಿತ್ಸಸ್ಯಾಚಿಕಿ-ತ್ಸ್ಯಾಶ್ಚ ತೇಷಾಮುಕ್ತೋ ವಿಧಿ: ಕ್ರಮಾತ್. (1) ನಿಸರ್ಗಷಂಡೋ



(2) ಉಪಶ್ರವ (3) ಪಕ್ಷಿಪಂಡಸ್ತಥೇವ ಚ | (4) ಅಭಿಷಾಪಾದ-  
ಗುರೋಃ (5) ರೋಗಾತ್ (6) ದೇವಕೋಪಾತ್ತಥೇವ ಚ | (7) ಇರ್ಯಾ-  
ಪಂಡಸ್ತಥಾ (8) ಆಸೇವ್ಯಾ (9) ವಾತೇತಾ (10) ಮುಖಭಗಃ |  
(11) ಆಕ್ಷೇಪ್ತಾ (12) ಮೋಘಬೀಜಶ್ಚ (13) ಶಾಲೀನಃ  
(14) ಅನ್ಯಾಪತಿಸ್ತಥಾ" ನಾರದಃ | ಪಂಡತನಕ್ಕೆ ಕಾರಣಃ  
ಪುರುಷನ ಶುಕ್ರ (ವೀರ್ಯ) ವು ಹೆಚ್ಚಾಗಿದ್ದರೆ ಪುಂಶಿಶುವೂ  
ಹೆಂಗಸಿನ ಆರ್ತವವು (ರಜಸ್ಸು) ಅಧಿಕವಾಗಿದ್ದರೆ ಸ್ತ್ರೀ  
ಶಿಶುವೂ ಎರಡೂ ಸಮವಾಗಿದ್ದರೆ ನಪುಂಸಕಶಿಶುವೂ  
ಜನಿಸುವುವು. "ತತ್ರ ಶುಕ್ರವಾಹುಲ್ಯಾತ್ ಪುಮಾನ್ ಆರ್ತವವಾಹುಲ್ಯಾತ್  
ಸ್ತ್ರೀ ಸಾಮ್ಯಾದುಭಯೋನೃಪುಂಸಕಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೩-೫ |  
2. ಧೈರ್ಯವಿಲ್ಲದವನು. 3. ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಉತ್ಸಾಹವಿಲ್ಲ  
ದವನು. 4. ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದವನು, ಪೌರುಷವಿಲ್ಲದವನು.  
5. ನಪುಂಸಕಲಿಂಗ, ಶಬ್ದದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಧರ್ಮ.  
ಲಿಂಗವು ಪ್ರಾಕೃತಗುಣಗತವಾದ ಅವಸ್ಥೆಯ ಒಂದು ಧರ್ಮ.  
ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಲಿಂಗವೂ ತ್ರಿಗುಣಪ್ರಕೃತಿಯುಳ್ಳದ್ದಾದುದರಿಂದ  
ಶಬ್ದಗಳೂ ಗುಣತ್ರಯಾತ್ಮಕಗಳಾದುವು. ಶಬ್ದಗಳು  
ಆಯಾ ಗುಣಗಳಿಗನುಸಾರವಾಗಿ ಸತ್ತ್ವಗುಣಾಧಿಕ್ಯದಿಂದ  
ಪುಲ್ಲಿಂಗವೆಂದೂ ರಜೋಗುಣಾಧಿಕ್ಯದಿಂದ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗವೆಂದೂ  
ಎರಡೂ ಗುಣಗಳ ಸಾಮ್ಯದಿಂದ ನಪುಂಸಕಲಿಂಗವೆಂದೂ  
ವ್ಯವಹರಿಸಲ್ಪಡುವುವು. ಆದರೆ ಈ ಲಿಂಗಗಳು ಶಬ್ದನಿಷ್ಠ  
ಮತ್ತು ಅರ್ಥನಿಷ್ಠಗಳೆಂದು ವೈಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ ಭಿನ್ನಾಭಿ  
ಪ್ರಾಯವಿದೆ.

ಕಲಿಬತಾ ಕ್ಲೇಬತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಪುಂಸಕತ್ವ, ನಪುಂಸಕನಾಗಿರು  
ವಿಕೆ. ಕಲಿಬಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೫-೧-೧೧೯) | "ತಲ್" |  
ಕಲಿಬತ್ವಮ್ ಕ್ಲೇಬತ್ವಮ್.

ಕಲೇದ ಕ್ಲೇದ (ಪುಂ) 1. ಒದ್ದೆ, ತೇವ. ಕಿಲ್ಲ (ಆದ್ರಿಭಾವೇ)  
"ಘ್" (೩-೩-೧೮) | "ತದ್ಋಜನಕಲೇದಸಮಾಕುಲಾಕ್ಷಂ  
ಪ್ರಮಲಾನಬೀಜಾಡ್ಕುರಕರ್ಣಪೂರಮ್" ರಘುಂ ೭-೨೭ | 2. ದೇಹ  
ದೊಳಗಿರುವ ಉಪದ್ರವ. "ಸ ತೌ ಕುಶಲವೋನ್ಮೂಲಗರ್ಭಕಲೇದೌ  
ತದಾಹ್ವಯಾ" ರಘುಂ ೧೫-೩೨ | 3. ಕೊಳೆತು ಹೋಗು  
ವುದು, ಕೊಳೆತು ನಾರುವುದು. 4. ಸೋರುವುದು.  
ಜಿನುಗುವುದು.

ಕಲೇದಕ ಕ್ಲೇದಕ (ಪುಂ) 1. ದೇಹದೊಳಗೆ ತೇವವುಂಟು  
ಮಾಡುವ ಶ್ಲೇಷ್ಮ, ಕಫ. ಕಲೇದಯತಿ - ಕಿಲ್ಲ (ಆದ್ರಿ-  
ಭಾವೇ) + ಣಿಕ್ "ಞ್" (೩-೧-೧೩೩) | 2. ದೇಹ  
ದೊಳಗಿನ ಹತ್ತು ಅಗ್ನಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಹತ್ತು ಜಠರಾಗ್ನಿ  
ಗಳು: (1) ಭ್ರಾಜಕಃ, (2) ರಂಜಕಃ, (3) ಕಲೇದಕಃ,  
(4) ಸ್ನೇಹಕಃ, (5) ಧಾರಕಃ, (6) ಬನ್ಧಕಃ, (7) ದ್ರಾವಕಃ,

(8) ವ್ಯಾಪಕಃ, (9) ಪಾಚಕಃ ಮತ್ತು (10) ಶ್ಲೇಷ್ಮಕಃ |  
(ವಿಂ) 3. ತೇವವುಂಟುಮಾಡುವ (ನೀರು ಮುಂತಾ  
ದುದು).

ಕಲೇದನ್ ಕ್ಲೇದನ್ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಕಿಲ್ಲ (ಆದ್ರಿಭಾವೇ)  
"ಕನಿಃ" (೩ಂ ೧-೧೫೭) | ನಿಪಾಂ |

ಕಲೇದನ ಕ್ಲೇದನ (ಪುಂ) 1. ತೇವವುಂಟುಮಾಡುವ ದೇಹ  
ದೊಳಗಿನ ಶ್ಲೇಷ್ಮ, ಕಫ. ಕಲೇದಯತಿ - ಕಿಲ್ಲ (ಆದ್ರಿಭಾವೇ) +  
ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) | ದೇಹದಲ್ಲಿರುವ ಕಫ  
ಗಳು: (1) ಕಲೇದನಃ, (2) ಅವಲಂಬನಃ, (3) ರಸನಃ,  
(4) ಸ್ನೇಹನಃ ಮತ್ತು (5) ಶ್ಲೇಷ್ಮಣಃ | ಇವುಗಳ ಸ್ಥಾನ  
ಗಳು: (ಕ್ರಮವಾಗಿ) (1) ಆಮಾಶಯಃ, (2) ಹೃದಯಮ್,  
(3) ಕಂಠಃ, (4) ಶಿರಃ, (5) ಸಂಧಯಃ | "ಕಫಸ್ಯಂತಾನಿ  
ನಾಮಾನಿ ಕಲೇದನಶ್ಚಾವಲಂಬನಃ | ರಸನಃ ಸ್ನೇಹನಶ್ಚಾಪಿ ಶ್ಲೇಷ್ಮಣಃ  
ಸ್ಥಾನಭೇದತಃ | ಆಮಾಶಯೇಷು ಹೃದಯೇ ಕಂಠೇ ಶಿರಸಿ ಸಂಧಿಷು |  
ಸ್ಥಾನೇಷ್ವೇಷು ಮನುಷ್ಯಾಣಾಂ ಶ್ಲೇಷ್ಮಾ ತಿಷ್ಠತೀತನುಕ್ರಮಾತ್"  
ಭಾವಪ್ರಂ | (ನಂ) 2. ತೇವಮಾಡುವಿಕೆ, ಒದ್ದೆಮಾಡುವಿಕೆ,  
ನೆನೆಯಿಸುವುದು. ಕಿಲ್ಲ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |  
3. ಸೋರುವುದು, ಜಿನುಗುವುದು. (ವಿಂ) 4. ತೇವ  
ಮಾಡುವ, ಒದ್ದೆಮಾಡುವ.

ಕಲೇದ್ ಕ್ಲೇದ್ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಕಿಲ್ಲ (ಆದ್ರಿಭಾವೇ) "ತಃ"  
(೩ಂ ೧-೧೦) |

ಕಲೇಶ ಕ್ಲೇಶ (ವಿಂ) ನೆನೆಯಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ, ತೋಯಿ  
ಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಕಿಲ್ಲ (ಆದ್ರಿಭಾವೇ) "ಞ್ಯತ್"  
(೩-೧-೧೨೪) | "ಅಶ್ಲೇಷೋಽಯಮದಾಹೋಽಯಮಕಲೇಶೋಽಶೋಷ್ಯ  
ಏವ ಚ" ಗೀತಾ ೨-೨೪ |

ಕಲೇಶ ಕ್ಲೇಶ (ಪುಂ) 1. ಕಷ್ಟ, ತೊಂದರೆ, ದುಃಖ. ಕಿಲ್ಲ  
(ವಿಬಾಧನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) | "ಯಾಂತಿ ನಿರ್ವಹಣಮಸ್ಯ  
ಸಂಸೃತಿಕಲೇಶನಾಟಕವಿಡಂಬನಾವಿಧೇಃ" ಮಾಘಂ ೧೪-೬೩ |  
2. ಆಯಾಸ, ಶ್ರಮ, ದಣಿವು. "ಅಹ್ಲಾಯ ಸಾ ನಿಯಮಜಂ  
ಕಲಮಮುತ್ಸಸರ್ಜಂ ಕಲೇಶಃ ಫಲೇನ ಹಿ ಪುನರ್ನವತಾಂ ವಿಧತ್ಸೆ" ಕುಮಾಂ  
೫-೮೬ | 3. ಸಿಟ್ಟು, ಕೋಪ. 4. ವ್ಯವಸಾಯ. "ಕಲೇಶೋ  
ದುಃಖೇಽಪಿ ಕೋಪೇಽಪಿ ವ್ಯವಸಾಯೇಽಪಿ ಚ ದೃಶ್ಯತೇ" ಮೇದಿಂ |  
5. ಯೋಗಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಐದು ವಿಧ ಕ್ಲೇಶಗಳು:  
(1) ಅವಿಧ್ಯಾ, (2) ಅಸ್ಥಿಮತಾ, (3) ರಾಗಃ, (4) ದ್ವೇಷಃ  
ಮತ್ತು (5) ಅಭಿನಿವೇಶಃ ಎಂದು ಕ್ಲೇಶವು ಐದು ಪ್ರಕಾರ.  
ಅನಿತ್ಯವನ್ನು ನಿತ್ಯವೆಂದೂ ಅಶುಚಿಯನ್ನು ಶುಚಿಯೆಂದೂ  
ದುಃಖವನ್ನು ಸುಖವೆಂದೂ ಅನಾತ್ಮನನ್ನು ಆತ್ಮನೆಂದೂ  
ತೀಳಿಯುವುದು ಅವಿದ್ಯೆ. ಬುದ್ಧಿಪುರುಷರನ್ನು ಒಂದಾಗಿ



ತಿಳಿದುಕೊಂಡು ನಾನು ನನ್ನದು ಎಂಬ ಅಭಿಮಾನ, ಅಹಂಕಾರ ಮಹಾಕಾರಗಳು ಅಸ್ತಿತ್ವ. ಮನುಷ್ಯನ ಪ್ರವೃತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ ಆಶೆಯು ರಾಗವೆನಿಸುವುದು. ನಿವೃತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ ಜಿಹಾಸೆಯು ದ್ವೇಷ. ಜರಾಮರಣ ಮೊದಲಾದ ಭಯವು ಅಭಿನಿವೇಶ. “ಅವಿದ್ಯಾಸ್ಮಿತಾರಾಗ-ದ್ರೇಷಾಭಿನಿವೇಶಾಃ ಪञ्च ಕಲೇಶಾಃ” ಪಾಂ ಯಂ ಸೂಂ | ಕ್ಲೇಶಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದುದರಿಂದ ಇವೆಲ್ಲವೂ ಕ್ಲೇಶಗಳು. “ಕಲೇಶಕರ್ಮ-ಫಲಭೋಗವರ್ಜಿತಂ ಪುನಿಶೇಷಮಮುಮೀಶ್ವರಂ ವಿदुಃ” ಮಾಘಂ ೧೪-೬೨ |

**ಕಲೇಶಕ ಕ್ಲೇಶಕ** (ವಿಂ) 1. ತೊಂದರೆಕೊಡುವ, ಕಷ್ಟವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. 2. ಆಯಾಸವುಂಟುಮಾಡುವ. ಕಿಲಶ್ (ವಿಬಾಧನೆ) “ಕು” (೩-೨-೧೪೬) |

**ಕಲೇಶಕ್ಷಮ ಕ್ಲೇಶಕ್ಷಮ** (ವಿಂ) ಕಷ್ಟವನ್ನು ಸಹಿಸಿಕೊಳ್ಳತಕ್ಕವನು. ಕಲೇಶಂ ಕ್ಷಮತೇ |

**ಕಲೇಶದ ಕ್ಲೇಶದ** (ವಿಂ) 1. ಕಷ್ಟವನ್ನು ಕೊಡುವ, ತೊಂದರೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಕಲೇಶಂ ದದಾತಿ — ತು ದಾನ್ (ದಾನೇ) “ಕ” (೩-೨-೩) | 2. ಆಯಾಸವುಂಟುಮಾಡುವ.

**ಕಲೇಶನಾಶನ ಕ್ಲೇಶನಾಶನ** (ನಂ) 1. ಕಷ್ಟವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವುದು. 2. ಆಯಾಸವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು. ಕಲೇಶಸ್ಯ ನಾಶನಮ್ | (ವಿಂ) 3. ಕಷ್ಟವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವ. 4. ಆಯಾಸವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. ಕಲೇಶಂ ನಾಶಯತಿ— ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) + ಣಿಕ್ “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪) |

**ಕಲೇಶಭಾಜ್ ಕ್ಲೇಶಭಾಜ್** (ವಿಂ) 1. ಕಷ್ಟವನ್ನು ಹೊಂದುವವನು. 2. ಆಯಾಸಪಡುವವನು. ಕಲೇಶಂ ಭಜತೇ — ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) “ಞಿ” (೩-೨-೬೨) |

**ಕಲೇಶಯತ್ ಕ್ಲೇಶಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಕಷ್ಟಪಡಿಸುವ. 2. ಆಯಾಸಪಡಿಸುವ. ಕಿಲಶ್ (ವಿಬಾಧನೆ) + ಣಿಕ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) |

**ಕಲೇಶಾಪಹ ಕ್ಲೇಶಾಪಹ** (ವಿಂ) 1. ಕಷ್ಟವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವವನು, ತೊಂದರೆಯನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವವನು. ಕಲೇಶಮಪಹಂತಿ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯಾಃ) “ಙ” (೩-೨-೪೦) | 2. ಆಯಾಸವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವ. ಕಲೇಶಾಪಹಃ ಪುತ್ರಃ |

**ಕಲೇಶಿತ ಕ್ಲೇಶಿತ** (ವಿಂ) 1. ತೊಂದರೆಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕಿಲಶ್ (ವಿಬಾಧನೆ) + ಣಿಕ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಆಯಾಸಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಕಲೇಶಿತ ಕ್ಲೇಶಿತ** (ವಿಂ) 1. ಕಷ್ಟವುಂಟುಮಾಡುವ, ತೊಂದರೆಪಡಿಸುವ, ನೋಯಿಸುವ. ಕಿಲಶ್ (ವಿಬಾಧನೆ) “ತು” (೩-೧-೧೩೩) | 2. ಆಯಾಸವುಂಟುಮಾಡುವ,

ಶ್ರಮವನ್ನು ಕೊಡುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ತೀಪ್” (೪-೧-೪) |

**ಕಲೇಶಿತ್ರಿ ಕ್ಲೇಶಿತ್ರಿ**.

**ಕಲೇಶಿನ್ ಕ್ಲೇಶಿನ್** (ವಿಂ) ಕ್ಲೇಶವುಳ್ಳ, ತೊಂದರೆಯುಳ್ಳ. ಕಲೇಶೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಙಿ” (೪-೨-೧೧೪) |

**ಕಲೇತಕಿಕ ಕ್ಲೇತಕಿಕ** (ನಂ) ಅತಿಮಧುರದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮದ್ಯ. ಕಲೇತಕೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್ “ಠ” (೪-೧-೭೯) |

**ಕಲೇಖ್ಯ ಕ್ಲೇಖ್ಯ** (ನಂ) 1. ನಪುಂಸಕತನ. 2. ಅಧಾಷ್ಟ್ಯ, ಧೈರ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವುದು. 3. ಅಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಪೌರುಷವಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ಕಲೇಖ್ಯಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಘ” (೪-೧-೧೨೪) | “ಕಲೇಖ್ಯಂ ಮಾ ಸ್ಮ ಗಮಃ ಪಾರ್ಥ ನೇತತ್ವಯ್ಯುಪಪದ್ಯತೇ | ಕ್ಷುಬ್ರಂ ಹೃದಯದೋರ್ದೇವಂ ತ್ಯಕ್ತ್ವೋತ್ತಿಷ್ಠ ಪರಂತಪ” ಗೀತಾ ೨-೩ | 4. ನಪುಂಸಕಲಿಂಗ.

**ಕಲೋಮನ್ ಕ್ಲೋಮನ್** (ನಂ) ಹೊಟ್ಟೆಯೊಳಗಿರುವ ಜಲಾಶಯ, ಮೂತ್ರಕೋಶ. ಕಲವತೇ—ಕಲುಙ್ (ಗತೌ) “ಮನಿನ್” (೩ಂ ೪-೧೪೪) |

**ಕವ ಕ್ವ** (ಅವ್ಯಂ) ಎಲ್ಲಿ ? ಯಾವ ಜಾಗದಲ್ಲಿ ? ಯಾರಲ್ಲಿ ? ಯಾವುದರಲ್ಲಿ ? ಕಿಮ್ “ಅತ್” (೪-೩-೧೨) | ಕವಾದೇಶಃ (೭-೨-೧೦೪) | “ಕವಾಸ್ತೇ ದುರ್ಯೋಧನೋಽಸೌ ಕಥಯತ ನ ಕ್ಷಾ ದ್ರಷ್ಟುಮಮ್ಯಾಗತೌ ಸ್ವಃ” ವೇಣೀಂ ೪-೨೬ | ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳಿಗಿರುವ ಬಹಳ ಅಂತರವನ್ನು ಹೇಳುವ ಮತ್ತು ಅಸಂಭವವಾದ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಹೇಳುವ ವಾಕ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡು “ಕವ” ಶಬ್ದಗಳು ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವುವು. “ಕವ ಸೂರ್ಯಪ್ರಭವೋ ಬಂಶಃ ಕವ ಚಾಲ್ಪವಿಷಯಾ ಮತಿಃ” ರಘುಂ ೧-೨ | “ಕವ ವಯಂ ಕವ ಪರೋಕ್ಷಮನ್ಮಥೋ ಮೃಗಶಾಖೈಃ ಸಮಮೇಧಿತೋ ಜನಃ” ಶಾಕುಂ ೨-೧೮ | “ಕವ” ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಕವ, ಕಿತ್ ಗಳು ಸೇರಿದರೆ ಕೆಲವು ಕಡೆ, ಯಾವುದೋ ಒಂದು ಕಡೆ ಮುಂತಾದ ಅನಿರ್ದಿಷ್ಟವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುವು. ಕವಚನ ಕೃಚನ. ಯಾವುದೋ ಒಂದು ಕಡೆ, ಒಂದು ಜಾಗದಲ್ಲಿ. “ಭ್ರಮಣರಯವಿಕೀರ್ಣಭಾಸಾ ಕ್ಷಗೇನ ಕವಚನ ಪತನಯೋಗ್ಯ ದೇಶಮನ್ವಿಷ್ಯತಾಃ” ನೈಷಂ ೨-೧೦೮ | ಕವಚಿತ್ ಕೃಚಿತ್. ಕೆಲವು ಕಡೆಯಲ್ಲಿ, ಕೆಲವು ಜಾಗದಲ್ಲಿ, “ಕವಚಿತ್ ಪಥಾ ಸಂಚರತೇ ಸುರಾಣಾಂ ಕವಚಿತ್ ಧನಾನಾಂ ಪತತಾಂ ಕವಚಿಚ್ಚ” ರಘುಂ ೧೩-೧೯ |

**ಕವಙ್ಗು ಕ್ವಂಗು** (ಪುಂ) ನವಣೆಯೆಂಬ ಒಂದು ಧಾನ್ಯ. “ಕಙ್ಗುಸ್ತು ಕಙ್ಗುನಿ ಕವಙ್ಗುಃ ಪ್ರಿಯಙ್ಗುಃ ಪಿತೃತಙ್ಗುಲಾ” ಅಭಿಂ ಚಿಂ |

**ಕವಣ - ಶಬ್ದ** (ಭವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ) | ಕವಣತಿ | ಕವಣಾಣ | ಕವಣಿತಾ | ಕವಣಿಷ್ಯತಿ | ಕವಣತು | ಅಕವಣಿತ್, ಅಕವಣಿತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ, ಶಬ್ದ ಮಾಡು, ಸದ್ದುಮಾಡು.



ಭಾವೇ:—ಕವಣ್ಯತೇ। ಕವಣಂ। ಕವಣಿತಾ। ಕವಣಿಷ್ಯತೇ।  
ಕವಣ್ಯತಾಮ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ:—ಕವಣಯತಿ, -ತೇ। ಕವಣಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ।  
-ಬಭೂವ -ಆಸ। ಕವಣಯಿತಾ। ಕವಣಯಿಷ್ಯತಿ -ತೇ।  
ಕವಣ್ಯತು, -ತಾಮ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:—ಕವಣಿತವ್ಯಮ್। ಕವಣನೀಯಮ್। ಕವಣ್ಯಮ್।  
ಕವಣಿತ:। ಕವಣಿತವಾನ್। ಕವಣನ್, ಕವಣಂತೀ। ಕವಣಿತುಮ್।  
ಕವಣಿತಮ್। ಕವಣನಮ್। ಕವಣಿತ್ವಾ। ಪ್ರಕವಣ್ಯ।  
“ದು:ಸಹಾ ಹಿ ಪರಿಕ್ಷಿಪ್ತಾ: ಕವಣದ್ವಿರಲಿಗಾಥಕ:” ಭट्टಿಂ  
೬-೮೪।

ಕವಣ ಕೃಣ (ಪುಂ) 1. ಅಭರಣಗಳ ಶಬ್ದ, ಒಡವೆಗಳ ಸದ್ದು.  
ಕವಣ (ಶಬ್ದ) ವಾ “ಅಪ್” (೩-೩-೬೪)। ಪಕ್ಷೆ “ಘ”  
(೩-೩-೧೮)। ಕವಾಣ: ಕೃಣ: “ಭೂಷಣಾನಾಂ ತು ಶಿಞ್ಜಿತಮ್।  
ನಿಕ್ವಾಣೋ ನಿಕ್ವಣ: ಕವಾಣ: ಕವಣ: ಕವಣನಮಿತ್ಯಪಿ”  
ಅಮಂ 1. 2. ಸದ್ದು, ಶಬ್ದ. (ವಿಂ) 3. ಶಬ್ದಮಾಡುವ,  
ಸದ್ದುಮಾಡುವ.

ಕವಣತ್ ಕೃಣತ್ (ವಿಂ) ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಸದ್ದುಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ. ಕವಣ (ಶಬ್ದ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)।  
“ಪ್ರಸ್ಯಂ ಹಿಮಾದ್ರೇರ್ಮೃಗನಾಭಿಗನ್ವಿ ಕಿಞ್ಚಿತ್ಕವಣತ್ಕಿತ್ತರಮಧ್ಯು-  
ವಾಸ” ಕುಮಾಂ ೧-೪೪। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)।  
ಕವಣಂತೀ ಕೃಣಂತೀ.

ಕವಣನ ಕೃಣನ (ಪುಂ) 1. ಸಣ್ಣ ಮಡಕೆ, ಚಿಕ್ಕ ಮಣ್ಣಿನ  
ಪಾತ್ರೆ. ಕವಣ (ಶಬ್ದ) ಕರ್ತಂ “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪)।  
“ಕವಣನೋ ಹೃಡಿಕಾಸುತ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1. 2. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು.  
ಕವಣ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೧-೧೧೪)। 3. ತಂತೀವಾದ್ಯದ  
ಶಬ್ದ. 4. ಅಭರಣಗಳ ಶಬ್ದ, ಒಡವೆಗಳ ಸದ್ದು.  
5. ವೀಣೆ ಮೊದಲಾದ ತಂತೀವಾದ್ಯಗಳ ಶಬ್ದ.

ಕವಣಿತ ಕೃಣಿತ (ನಂ) 1. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು. ಕವಣ (ಶಬ್ದ)  
ಭಾವೇ “ಕ್ತ:” (೩-೩-೧೧೪)। 2. ವೀಣೆ ಮೊದಲಾದ  
ತಂತೀವಾದ್ಯಗಳ ಟಂಕಾರ, ತಂತಿಯ ಶಬ್ದ. “ರಕ್ತವೈನಿಕ-  
ಹತಾಧರತನ್ಮಿಮಂಡಲಕವಣಿತಚಾರು ಚುಕುಜೆ” ಮಾಧಂ ೧೦-೬೪।  
3. ಹೆಂಗಸರ ಸುರತಕಾಲದ ಮಾತು. “ಅನರ್ಥಕೇರಜನಿ  
ವಿದಗ್ಧಕಾಮಿನೀರತಾಂತರಕವಣಿತವಿಲಾಸಕೌಶಲೆ:” ಮಾಧಂ  
೧೭-೩೩। (ವಿಂ) 4. ಶಬ್ದಮಾಡಿದ, ಸದ್ದುಮಾಡಿದ.  
ಕವಣ ಕರ್ತಂ “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨)।

ಕವಣ್ಯ ಕೃತ್ಯ (ವಿಂ) ಎಲ್ಲಿ ಇರುವುದು? ಎಲ್ಲಿ ಉಂಟಾ  
ದುದು? ಯಾರಲ್ಲಿ ಇರುವುದು? ಯಾರಲ್ಲಿ ಉಂಟಾ  
ದುದು? ಕವ “ಲ್ಯಪ್” (೪-೨-೧೦೪)।

ಕವಣ್ಯ - ನಿಷ್ಪಾಕೇ (ಭಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಕವಣ್ಯತಿ।  
ಚಕವಾಥ। ಕವಣ್ಯತಾ। ಕವಣ್ಯಪ್ಯತಿ। ಕವಣ್ಯತು। ಅಕವಣ್ಯತ್।  
ಕವಣ್ಯತ್। ಕವಣ್ಯಾತ್। ಅಕವಣ್ಯತ್। ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಕುಡಿ  
ಯಿಸು, ಮರಳಿಸು. 2. ಬೇಯಿಸು.

ಕರ್ಮಣಿ:—ಕವಣ್ಯತೇ। ಚಕವಣ್ಯೇ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ:—ಕವಾಣಯತಿ, -ತೇ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕವಣನ ಕೃಣನ (ನಂ) 1. ಬೇಯಿಸುವುದು. 2. ಕುಡಿಯಿಸು  
ವುದು, ಮರಳಿಸುವುದು. ಕವಣ್ಯ (ನಿಷ್ಪಾಕೇ) ಭಾವೇ  
“ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 3. ಕುಡಿಯಿಸುವವನು.  
4. ಬೇಯಿಸುವವನು. ಕವಣ್ಯ ಕರ್ತಂ “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪)।  
ಕವಣಿತ ಕೃಣಿತ (ವಿಂ) 1. ಕುಡಿಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಬೇಯಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕವಣ್ಯ (ನಿಷ್ಪಾಕೇ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)।  
“ಪ್ರಿಯಾವಿಯೋಗಕವಣಿತಾದಿವೇಲಾಚ್ಚಂದ್ರಾಚ್ಚ ರಾಹುಗ್ರಹಪೀಡಿತಾತ್”  
ನೇಷಂ ೧೦-೨೨।

ಕವಾಣ ಕೃಣ (ಪುಂ) “ಕವಣ” ಶಬ್ದದ ಅರ್ಥ. ಕವಣ  
(ಶಬ್ದ) “ಘ” (೩-೩-೧೮)।

ಕವಾಣ ಕೃಣ (ಪುಂ) ಕಷಾಯ, ಮರಳಿಸಿ ಇಳಿಸಿದ ಭಟ್ಟಿ.  
ಕವಣ್ಯ (ನಿಷ್ಪಾಕೇ) ವಾ “ಣ:” (೩-೧-೧೪೦)। ಪಕ್ಷೆ  
“ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। ಕವಣ್ಯ: ಕೃಣ್ಯ:

ಕವಾಣಯಿತವ್ಯ ಕೃಣಯಿತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕಾಯಿಸಲ್ಪಡ  
ಬೇಕಾದ. 2. ಕುಡಿಯಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. 3. ಬೇಯಿಸ  
ಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. ಕವಣ್ಯ (ನಿಷ್ಪಾಕೇ) + ಣಿಚ್ “ತವ್ಯ:”  
(೩-೧-೯೬)। “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬)। ಕವಾಣನೀಯ:  
ಕೃಣನೀಯ:

ಕವಾಣ್ಯಮಾಣ ಕೃಣ್ಯಮಾಣ (ವಿಂ) ಕುಡಿಯಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.  
ಕವಣ್ಯ (ನಿಷ್ಪಾಕೇ) + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ “ಶಾನ್” (೩-೨-೧೨೪)।  
“ಜಲಾಶಯೇಷು ತಪ್ತೇಷು ಕವಾಣ್ಯಮಾಣೇಷು ವಹ್ನಿನಾ” ಭಾಂ ಆದಿಂ  
೨೪೨-೯।

ಕೃಣ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು, ನಾರಸಿಂಹ. 2. ರಾಕ್ಷಸ.  
3. ಪ್ರಳಯ, ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶ. 4. ಭೂಮಿ, ಕ್ಷೇತ್ರ.  
5. ಕ್ಷೇತ್ರವಾಲ, ರೈತ. 6. ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು. 7. ನಾಶ.  
“ಕೃಣ: ಸಂವರ್ತೆ ರಾಕ್ಷಸೇ ಚ ನಾರಸಿಂಹೇ ಚ ವಿಜೃತಿ। ಕ್ಷೇತ್ರೇ ನಾಶೇ  
ಕ್ಷೇತ್ರಪಾಲೇ” ಮೇದಿಂ 1. 8. ವಕ್ಷಸ್ಥಲ, ಎದೆ. 9. ವ್ಯಾಕರಣ  
ಶಾಸ್ತ್ರ. “ಕೃಣ: ಕ್ಷೇತ್ರೇ ವಕ್ಷಸಿ ಪ್ರೋಕ್ತೋ ಬುಧಿ: ಕೃಣ: ಶಬ್ದಶಾಸನೇ”  
एकां 1.

ಕೃಣ ಕೃಣ (ಪುಂ) 1. ಉತ್ಸವ, ಹಬ್ಬ, ಸಂತೋಷದ ಕಾಲ.  
ಕೃಣೋತಿ ದು:ಖಮ್—ಕೃಣು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)।  
“ಕೃಣಂ ಕೃಣೋತ್ಪಿಪ್ತಗಜೇಂದ್ರಕೃತ್ತಿನಾ ಸ್ಫುಟೋಪಮಂ ಭೂತಿಸಿತೇನ



ಶಮ್ಭುನಾ" ಮಾಘಂ ೧-೪। 2. ಒಂದು ಮುಹೂರ್ತದ ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ, ನಾಲ್ಕು ನಿಮೇಷಗಳ ಕಾಲ.

**ಕಾಲಮಾನ:**

|                       |                          |
|-----------------------|--------------------------|
| ಕ್ಷಣದ್ವಯ              | 1 ಲವ:                    |
| ಲವದ್ವಯ                | 1 ನಿಮೇಷ:                 |
| ಅಷ್ಟಾದಶ (1೮) ನಿಮೇಷ:   | 1 ಕಾಷ್ಠಾ                 |
| ತ್ರಿಶತ್ (30) ಕಾಷ್ಠಾ:  | 1 ಕಲಾ                    |
| ತ್ರಿಶತ್ (30) ಕಲಾ:     | 1 ಕ್ಷಣ:                  |
| ದ್ವಾದಶ (12) ಕ್ಷಣಾ:    | 1 ಮುಹೂರ್ತ:               |
| ತ್ರಿಶತ್ (30) ಮುಹೂರ್ತ: | 1 ಅಹೋರಾತ್ರ: (ಒಂದು ದಿನಮ್) |
| ದಿವಸದ 1/8 ಭಾಗ         | 1 ಮುಹೂರ್ತ                |
| ಮುಹೂರ್ತದ 1/2 ಭಾಗ      | 1 ಕ್ಷಣ                   |
| ಕ್ಷಣದ 1/8 ಭಾಗ         | 1 ಕಲೆ                    |
| ಕಲೆಯ 1/8 ಭಾಗ          | 1 ಕಾಷ್ಠ                  |
| ಕಾಷ್ಠಯ 1/8 ಭಾಗ        | 1 ನಿಮೇಷ                  |
| ನಿಮೇಷದ 1/2 ಭಾಗ        | 1 ಲವ                     |
| ಲವದ 1/2 ಭಾಗ           | 1 ಕ್ಷಣ.                  |

"ಇತಿ ವಿಜ್ಞಾಪಿತೋ ರಾಜಾ ಧ್ಯಾನಸ್ತಿಮಿತಲೋಚನ: | ಕ್ಷಣಮಾತ್ರ-  
ಮೃಷಿಃಸ್ತಸ್ಥೌ ಸುಪ್ತಮೀನ ಇವ ಹೃದ:" ರಘುಂ ೧-೭೩।  
3. ಬಿಡುವು, ವಿರಾಮ, ಪುರಸ್ಕಾರ, ಅವಕಾಶ. "ಅಹಮಪಿ  
ಲಬ್ಧಕ್ಷಣ: ಸ್ವಗೇಹಂ ಗಚ್ಛಾಮಿ" ಮಾಲಂ ೧। 4. ಪ್ರಶಸ್ತ  
ವಾದ ಮುಹೂರ್ತ. 5. ಕೆಲಸವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಯಾವ  
ಕಾರ್ಯವೂ ಇಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 6. ಮಧ್ಯಭಾಗ. 7. ಪರ  
ತಂತ್ರತೆ, ಇತರರಿಗೆ ಅಧೀನನಾಗಿರುವಿಕೆ. 8. ನಿಮೇಷ  
ಕಾಲದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. 9. ಪರಮಾಣು.  
10. ಒಂದು ಪರ್ವಕಾಲ. 11. ಒಂದು ಮುಹೂರ್ತ  
ಕಾಲ. "ತದಾಕುಲೋಸ್ತೌ ಕುಲದೈವತಸ್ಯ ಸ್ಮೃತಿ ತತಾನ ಕ್ಷಣಮೇಕ-  
ತಾನ:" ನೈಷಂ ೧೦-೬೯। "ಕ್ಷಣ: ಕಾಲವಿಶೇಷ ಸ್ವಾತ್ಮವ-  
ರ್ಣವಸರೆ ಮಹೇ | ವ್ಯಾಪಾರವಿಕಲತ್ವೇ ಚ ಪರತನ್ತ್ರತ್ವಮಧ್ಯಯೋ:"  
ಹೇಮಂ | (ಅವ್ಯಂ) 12. ಒಂದು ಸಮಯದಲ್ಲಿ, ಒಂದು  
ಮುಹೂರ್ತಕಾಲದಲ್ಲಿ. "ಸಂರಂಭಂ ಮೈಥಿಲಿಹಾಸ: ಕ್ಷಣಸೌಮ್ಯಾ  
ನಿನಾಯ ತಾಮ್" ರಘುಂ ೧೨-೩೬।

**ಕ್ಷಣಕ್ಷಣ ಕ್ಷಣಕ್ಷಣ** (ಅವ್ಯಂ) ಕ್ಷಣಕಾಲ ಮಾತ್ರ. "ಕ್ಷಣಮಾತ್ರ  
ಕ್ಷಣಕ್ಷಣಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಕ್ಷಣಕ್ಷೇಪ ಕ್ಷಣಕ್ಷೇಪ** (ಪುಂ) ಕ್ಷಣಕಾಲ ವಿಕಟ, ಕ್ಷಣಕಾಲ  
ಸಾವಕಾಶ. ಕ್ಷಣಸ್ಯ ಕ್ಷೇಪ: | "ಪ್ರಸ್ಥಾನಕಾಲಕ್ಷಮವೇಷ-  
ಕಲ್ಪನಾಕೃತಕ್ಷಣಕ್ಷೇಪಮದೇಕ್ಷತಾಚ್ಯುತಮ್" ಮಾಘಂ ೧೨-೧।

**ಕ್ಷಣದ ಕ್ಷಣದ** (ಪುಂ) 1. ದೈವಜ್ಞ, ಜೋಯಿಸ್,  
ಮೌಹೂರ್ತಿಕ. ಕ್ಷಣ ಯಾತ್ರಾದಿಮುಹೂರ್ತ ದದಾತಿ - ಟು ದಾಖ್  
(ದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। (ನಂ) 2. ಜಲ, ನೀರು.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ದಾ-ದಾ. 3. ರಾತ್ರಿ. ಕ್ಷಣಮವಕಾಶ ದದಾತಿ |  
ವಿಶ್ರಾಂತಿಗಾಗಿ ವಿರಾಮಕೊಡುವುದರಿಂದ ರಾತ್ರಿಗೆ  
ಈ ಹೆಸರು. "ಕ್ಷಣದ ತೋ ಕ್ಷಣದೋ ಗಣಕೇ ಕ್ಷಣದಾ ನಿಶಿ"  
ಹೇಮಂ | "ವಿಶದಾಶಮಕೂಟಧಿತಿ: ಕ್ಷಣಾಕೃತ: ಕ್ಷಣದಾಸು ಯತ್ರ  
ಚ ರುಚಿಕತಾ ಗತಾ:" ಮಾಘಂ ೧೩-೫೩।

**ಕ್ಷಣದಾಕರ ಕ್ಷಣದಾಕರ** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಕ್ಷಣದಾ ಕರೋತಿ-  
ಟು ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಕ:" (೩-೨-೨೦)। "ಉದಿತೇ ತತ:  
ಸಪದಿ ಲಬ್ಧಪದೇ: ಕ್ಷಣದಾಕರೇಽನುಪದಿಭಿ: ಪ್ರಯಯೇ" ಮಾಘಂ  
೯-೭೦।

**ಕ್ಷಣದಾಚರ ಕ್ಷಣದಾಚರ** (ಪುಂ) ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿ  
ಸುವ ರಾಕ್ಷಸ. ಕ್ಷಣದಾಚರ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತಿಭಕ್ಷಣಯೋ:  
"ಕ:" (೩-೨-೧೬)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೧೫)।  
-ಚರೀ -ಚರೀ.

**ಕ್ಷಣದಾನ್ವಯ ಕ್ಷಣದಾನ್ವಯ** (ನಂ) ಇರುಳುಗಣ್ಣು, ರಾತ್ರಿ  
ಕಾಣದಿರುವ ಕಣ್ಣು. ಕ್ಷಣದಾಯಾಮಾನ್ವಯ ಸ್ಯಸ್ಯ |

**ಕ್ಷಣದೃತಿ ಕ್ಷಣದೃತಿ -ಪ್ರಭಾ -ಪ್ರಭಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿದ್ಯುತ್ತು,  
ಮಿಂಚು. ಕ್ಷಣ ದೃತಿ: ಪ್ರಭಾ ವಾ ಅಸ್ಯಾ: |

**ಕ್ಷಣನ ಕ್ಷಣನ** (ನಂ) ಹನನ, ವಧೆ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. ಕ್ಷಣ  
(ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ಕ್ಷಣಭಗ್ನ ಕ್ಷಣಭಗ್ನ** (ವಿಂ) ಕ್ಷಣಕಾಲದಲ್ಲಿ ನಾಶ  
ವಾಗುವ, ಶಾಶ್ವತವಲ್ಲದ. ಕ್ಷಣಾತ್ ಭಗ್ನಗುರ: | "ಸದೃಶ್ಯ  
ಕ್ಷಣಭಗ್ನಗುರಂ ತದಕ್ಷಿಲಂ ಧನ್ಯಸ್ತು ಸನ್ಯಸ್ಯತಿ" ಭರ್ತಂ ೩-೨೦।

**ಕ್ಷಣಮಾತ್ರ ಕ್ಷಣಮಾತ್ರ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ಕ್ಷಣಕಾಲ.  
"ವಿಶತಿವಿವಿಧಕ್ಷಣಾನಾಂ ಕ್ಷಣಮಾತ್ರಂ ಪಾತ್ರಂ ಭವತಿ" ಚಂ  
ರಾಂ | (ಅವ್ಯಂ) 2. ಒಂದು ಕ್ಷಣಕಾಲದಲ್ಲಿ. "ಕ್ಷಣಮಾತ್ರ-  
ಮೃಷಿಃಸ್ತಸ್ಥೌ ಸುಪ್ತಮೀನ ಇವ ಹೃದ:" ರಘುಂ ೧-೭೩।

**ಕ್ಷಣರಾಮಿ ಕ್ಷಣರಾಮಿ** (ಪುಂ) 1. ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ.  
2. ಗುಬ್ಬಿಜ್ಜೆ. ಕ್ಷಣಾತ್ ಪರಂ ರಮತೇ |

**ಕ್ಷಣಶಸ್ ಕ್ಷಣಶಸ್** (ಅವ್ಯಂ) ಕ್ಷಣಕ್ಷಣವಾಗಿ, ಒಂದೊಂದು  
ಕ್ಷಣದಲ್ಲಿಯೂ. ಕ್ಷಣಂ ಕ್ಷಣಮರ್ಜಯತಿ "ಶಸ್" (೫-೪-೪೩)।  
"ಕ್ಷಣಶ: ಕಣಶಶ್ಚೈವ ವಿಧಾಮರ್ಯಂ ಚ ಸಾಧಯೇತ್" |

**ಕ್ಷಣಾಂತರ ಕ್ಷಣಾಂತರ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ಕ್ಷಣಕಾಲದ ಮಧ್ಯ  
ಭಾಗ. ಕ್ಷಣಸ್ಯ ಅಂತರಮ್ | 2. ಬೇರೆ ಕ್ಷಣ, ಮತ್ತೊಂದು  
ಕ್ಷಣ. ಅನ್ಯತ್ ಕ್ಷಣಮ್ | -ಅಂತರೇ -ಅಂತರೇ. (ಅವ್ಯಂ)  
ಬೇರೆಕ್ಷಣದಲ್ಲಿ, ಉತ್ತರಕ್ಷಣದಲ್ಲಿ, ಕೊಂಚ ಕಾಲಾನಂತರ.



ಕರ್ಣಿಕ ಕ್ಷಣಿಕ (ವಿಂ) 1. ಕ್ಷಣಮಾತ್ರವಿರುವ, ಕ್ಷಣಕಾಲ ಮಾತ್ರವಿರುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಅಸ್ಥಿರವಾದ, ಶಾಶ್ವತವಲ್ಲದ. ಕ್ಷಣೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೫)। "ಸ್ವಪ್ನೇಷು ಕ್ಷಣಿಕಸಮಾಗಮೋತ್ಸವೇಶ್ವ" ರಘುಂ ೮-೯೨। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ -ಕಾ. 2. ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು.

ಕರ್ಣಿಕತಾ ಕ್ಷಣಿಕತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಕ್ಷಣಕಾಲ ಮಾತ್ರವಿರುವಿಕೆ, ನಾಲ್ಕು ನಿಮೇಷಗಳಕಾಲ ಮಾತ್ರವಿರುವಿಕೆ. ಕರ್ಣಿಕಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। "ಏತದ್ವಲೆ: ಕರ್ಣಿಕತಾಮಪಿ ಭೂರಾಗ್ರಸ್ಪರ್ಶಯಿಷಾಂ ರಯರಸಾದಸಮಾಪಯದ್ವಿ:" ನೃಪಂ ೧೧-೧೨೭।

ಕರ್ಣಿತ ಕ್ಷಣಿತ (ವಿಂ) ಒಂದು ಕ್ಷಣಕಾಲವುಂಟಾಗಿರುವ, ಕ್ಷಣಕಾಲ ಅವಕಾಶ ದೊರೆತಿರುವ. ಕರ್ಣೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತಕ್" (೪-೨-೩೬)।

ಕರ್ಣಿನ್ ಕ್ಷಣಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಒಂದು ಕ್ಷಣಕಾಲವುಳ್ಳ. ಕರ್ಣೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। 2. ಅಸ್ಥಿರವಾದ, ಶಾಶ್ವತವಾದ. 3. ವಿಶ್ರಾಂತಿಯುಳ್ಳ. 4. ಸಂತೋಷವುಳ್ಳ. "ತಂ ವಿಶ್ರಾಂತಂ ಶುಭೇ ದೇಶೇ ಕರ್ಣಿನಂ ಕಲ್ಯಮಚ್ಯುತಮ್" ಭಾಂ ಸಮಾಂ ೧೩-೫೪। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೫)। ಕರ್ಣಿನಿ ಕ್ಷಣಿನೀ. 5. ರಾತ್ರಿ.

ಕರ್ಣು - ಹಿಸಾಯಾಮ್ (ತನಾಂ ತಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಕರ್ಣೋತಿ, ಕರ್ಣುತೆ। ಚಕ್ಷಾಣ, ಚಕ್ಷಣೇ। ಕರ್ಣಿತಾ। ಕರ್ಣಿಷ್ಯತಿ, -ತೆ। ಕರ್ಣೋತು, ಕರ್ಣುತಾಮ್। ಇತ್ಯಾದಿ. ಹಿಂಸಿಸು, ಪೀಡಿಸು.

ಕರ್ಣು ಕ್ಷುತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಿಂಸೆ, ಪೀಡೆ, ಬಾಧೆ. 2. ವಧೆ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. 3. ಭೇದಿಸುವುದು, ಒಡೆಯುವುದು, ಸೀಳುವುದು. ಕರ್ಣು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕಿವಪ್" (ವಾಂ ೩-೩-೯೪)। 4. ನಾಶ.

ಕರ್ಣು ಕ್ಷುತ (ನಂ) 1. ಗಾಯ. ಕರ್ಣು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಸದ್ಯೋ ವಸಂತೇನ ಸಮಾಗತಾನಾಂ ನಕ್ಷತ್ರತಾನಿವ ವನಸ್ಥಳಿನಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೨೯। 2. ಉಜ್ಜ್ವಲವು, ತಿಕ್ಕುವುದು, ಗೀರುವುದು. "ಅಜಸ್ರಮಾಸ್ಕಾಲಿತ-ವಲ್ಲಕೀಗುಣಕತೋಜ್ಜ್ವಲಾಙ್ಗುಲನಕ್ಷಾಶುಭಿನ್ನಯಾ" ಮಾಧಂ ೧-೯। 3. ನಾಶ. "ಕರ್ಣಾತ್ ಕಿಲ ತ್ರಾಯತ ಇತ್ಯುದಯ: ಕರ್ಣಸ್ಯ ಶಬ್ದೋ ಭುವನೇಷು ರೂಢ:" ರಘುಂ ೨-೫೩। 4. ಪೀಡೆ, ಹಿಂಸೆ. 5. ಏಳು, ಹೊಡೆತ. 6. ಭೇದಿಸುವುದು, ಒಡೆಯುವುದು. ಕರ್ಣು ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 7. ಭೇದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಲಿನೀ ಕರ್ಣಸೇತುವನ್ಯನಾಂ ಜಲಸಂಧಾತ ಇವಾಸಿ ವಿಧ್ರುತ:" ಕುಮಾಂ ೪-೬। 8. ನಾಶ ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ರೂಪಾಣಾಮಪಿ ಮೂರ್ಧನ: ಕರ್ಣಹಂಕಾರಶಸಿನ:"

ಕುಮಾಂ ೨-೨೬। 9. ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 10. ಗಾಯಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ಣು ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ತ್ಯಾಜ್ಯೋ ದುಷ್ಟ: ಪ್ರಿಯಾಽಪ್ಯಾಸೀದಙ್ಗುಲಿ-ವಾರಗಧತಾ" ರಘುಂ ೧-೨೮। 11. ಹೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ರಘೋರವಷ್ಟಭಭಯೇನ ಪತ್ನಿಣಾ ಹೃದಿ ಕರ್ಣೋ ಗೋತ್ರಮಿವಾಪ್ಯ-ಮರ್ಷಣ:" ರಘುಂ ೩-೫೩।

ಕರ್ಣಕಾಸ ಕ್ಷುತಕಾಸ (ಪುಂ) ಐದು ವಿಧ ಕೆಮ್ಮಲು ರೋಗಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಕರ್ಣಾತ್ ಕಾಸ:। [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಕಾಸ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಕರ್ಣಜ ಕ್ಷುತಜ (ನಂ) 1. ರಕ್ತ, ನೆತ್ತರು. ಕರ್ಣಾಜ್ಜಾಯತೇ-ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತಭವಿ) "ಜ:" (೩-೧-೯೮)। "ಸ ಚ್ಚಿತ್ರಮೂಲ: ಕರ್ಣಜೇನ ರೇಣುಸ್ತಸ್ಯೋಪರಿಷ್ಠಾತ್ಪವನಾವಧುತ:" ರಘುಂ ೭-೪೩। 2. ಒಂದು ವಿಧ ಕಾಸರೋಗ. "ಸವಾತಪಿತ್ತಪ್ರಭವ: ಕರ್ಣಾಚ್ಚ ಕರ್ಣಾತ್ತಥಾನ್ಯ: ಕರ್ಣಜೋಽಪರಶ್ಚ। ಪಂಚಪ್ರಕಾರ: ಕರ್ಣಿತೋ ಭಿಷಗ್ಭಿ: ವಿವರ್ಧಿತೋ ಯಕ್ಷಮವಿಕಾರಕೃತ್ ಸ್ಯಾತ್" ಸುಶ್ರುತಂ ತತ್ತರತಂ ೫೨-೬। 3. ಕೀವು. (ವಿಂ) 4. ಗಾಯದಿಂದ ಉಂಟಾದ.

ಕರ್ಣಯೋನಿ ಕ್ಷುತಯೋನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರೌಢೆಯಾದ ಹೆಂಗಸು, ಕನ್ಯಾವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಮೀರಿದವಳು, ಮತುಮತಿಯಾದವಳು. ಕರ್ಣಾ ಯೋನಿರಯಸ್ಯ। "ಸಾ ಚೇದಕರ್ಣಯೋನಿ: ಸ್ಯಾತ್ ಗತಪ್ರತ್ಯಾಗತಾಪಿ ವಾ" ಮನುಂ ೯-೧೭೬।

ಕರ್ಣವೃತ್ತಿ ಕ್ಷುತವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಡತನ, ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ದುರವಸ್ಥೆ, ಯಾವ ಆಶ್ರಯವೂ ಇಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಕರ್ಣಾ ವೃತ್ತಿ:। (ವಿಂ) 2. ದುರವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿರುವ, ಜೀವನೋಪಾಯವಿಲ್ಲದಿರುವ. ಕರ್ಣಾ ವೃತ್ತಿರಯಸ್ಯ।

ಕರ್ಣವ್ರತ ಕ್ಷುತವ್ರತ (ವಿಂ) ಅವಕೀರ್ಣ, ಪ್ರತವನ್ನು ಭಂಗ ಪಡಿಸಿಕೊಂಡವನು. ಕರ್ಣಂ ವ್ರತಂ ಯಸ್ಯ।

ಕರ್ಣಾರಿ ಕ್ಷುತಾರಿ (ವಿಂ) ಶತ್ರುಗಳಲ್ಲದವನು, ನಾಶವಾದ ಶತ್ರುಗಳಲ್ಲದವನು. ಕರ್ಣಾ: ಅರಯೋ ಯಸ್ಯ।

ಕರ್ಣಿ ಕ್ಷುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಾಶ, ಹಾನಿ. ಕರ್ಣು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। "ಹಯಾನಾಂ ನ ಕರ್ಣಿ: ಕಾಚಿತ್ ನ ರಥಸ್ಯ ನ ಮಾತಲೇ:" ಭಾಂ ವನಂ ೧೭೨-೧೯। 2. ಗಾಯ. "ದ್ವಿಷಾಂ ಕರ್ಣಿರ್ಮಾ: ಪ್ರಥಮೇ ಶಿಲೀಮುಖಾ: ವಿಭಿಷಾ ದೇಹಾವರಣಾನಿ ಚಕ್ರೀ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೫೫। 3. ಅವಚಯ, ಕೆಡೆಮೆ. "ಅಮೀ ಚ ಕಥಮಾದಿತಾ: ಪ್ರತಾಪಕರ್ಣಿಶೀತಲಾ:" ಕುಮಾಂ ೨-೨೪। 4. ಕತ್ತರಿಸುವುದು, ಒಡೆಯುವುದು, ಭೇಷ್ಠಪಡಿಸುವುದು. 5. ಕೀಳುವುದು. "ವಿಸ್ತಂಭಂ ಕ್ರಿಯತಾಂ ವರಾಹತತಿಭಿ: ಮುಸ್ತಾಕರ್ಣಿ: ಪಲ್ವಲೇ" ಶಾಕುಂ ೨-೬।



ಕತಿನ್ ಕ್ಷುತಿನ್ (ವಿಂ) ಗಾಯಗೊಂಡವನು. ಕತಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ  
“ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೫) ।

ಕತಿಮತ್ ಕ್ಷುತಿಮತ್ (ವಿಂ) ಗಾಯಗೊಂಡವನು.  
ಕತಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೧೧೫) । “ಅಸೃಗ್ಜನೋಸ್ತ್ರ-  
ಕತಿಮಾನವಮಜ್ಜವಸಾದನಮ್” ಮಾಘಂ ೧೯-೭೮ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ಮತೀ-ಮತೀ.

ಕತೋದರ ಕ್ಷುತೋದರ (ನಂ) ಅರ್ಜುಣಾದಿ ದೋಷಗಳಿಂದ  
ಉಂಟಾದ ಹೊಟ್ಟೆಯೊಳಗಿನ ರೋಗ, ಅಮಶಂಕೆ, ರಕ್ತಾತಿ  
ಸಾರ. ಕತಾತ್ ತದರಮ್ ತದರರೋಗ: ।

ಕತ್ತ ಕ್ಷುತ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಪಿತಾಮಹ. 2. ಸೂತ,  
ಸಾರಥಿ. ಕದ (ಸೌತಧಾತು:) “ತತ್” (೩ಂ ೨-೧೪) ।  
3. ದಾಸೀಪುತ್ರ, ಸೇವಕಿಯ ಮಗ, ವಿದುರ. “ತತ:  
ಪ್ರೀತಮನಾ: ಕತ್ತಾ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರಂ ವಿಶಾಂಪತೇ” ಭಾಂ ಆದಿಂ  
೨೦೦-೧೭ । 4. ದ್ವಾರಪಾಲಕ. 5. ಸೇವಕ, ಅಳು.  
6. ಶೂದ್ರನಿಂದ ಕ್ಷತ್ರಿಯಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು.  
“ಕತ್ತಾ ಶೂದ್ರಾತ್ ಕತ್ತಿತ್ರಿಯಾಣಿ ಪ್ರತಿಹಾರೇ ಚ ಸಾರಥೌ ।  
ಭುಜಿಷ್ಯಾತನಯೇಷಿ ಸ್ಯಾನ್ನಿಶುಕ್ತವೇಷಸೋ: ಪುಮಾನ್” ಮೇದಿಂ ।  
7. ಶೂದ್ರನಿಂದ ವೈಶ್ಯಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು,  
ಅಯೋಗವ. “ಕತ್ತಾರ್ಯಾಶೂದ್ರಯೋ: ಸುತ:” ಅಮಂ । “ಶೂದ್ರಾ-  
ದಾಯೋಗವ: ಕತ್ತಾ” ಮನುಂ ೧೦-೧೨ । 8. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು.  
(ವಿಂ) 9. ಕತ್ತರಿಸುವವನು, ತುಂಡುಮಾಡುವವನು.

ಕತ್ತ ಕ್ಷುತ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಕ್ಷತ್ರಿಯ. ಕತಾತ್ ತ್ರಾಯತೇ — ತ್ರೈಡ್  
(ಪಾಲನೆ) “ಕ:” (೩-೨-೪) ಪೃಷಂ । “ಕತ್ತಾತ್ ಕಿಲ  
ತ್ರಾಯತ ಇತ್ಯುದಗ್ರ: ಕತ್ತಸ್ಯ ಶಬ್ದೋ ಭುವನೇಷು ರೂಢ:” ರಘುಂ  
೨-೫೩ । “ಕತ್ತಸ್ಯಾತಿಪ್ರವೃದ್ಧಸ್ಯ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾನ್ ಪ್ರತಿ ಸರ್ವಶ: ।  
ಬ್ರಹ್ಮೈವ ಸನಿಯನ್ತು ಸ್ಯಾತ್ಕತ್ತಂ ಹಿ ಬ್ರಹ್ಮಸಂಭವಮ್” ಮನುಂ ೯-೩೨೦ ।  
2. ರಾಷ್ಟ್ರ, ನಾಡು, ದೇಶ. (ನಂ) 3. ಜಲ, ನೀರು.  
4. ದೇಹ, ಶರೀರ. 5. ಧನ, ಸಂಪತ್ತು, ಐಶ್ವರ್ಯ.

ಕತ್ತಕರ್ಮನ್ ಕ್ಷುತ್ಕರ್ಮನ್ (ನಂ) ಕ್ಷತ್ರಿಯನ ಕೆಲಸ,  
ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಗೆ ಸ್ವಭಾವಸಿದ್ಧವಾದ ಕಾರ್ಯ. ಶೌರ್ಯ  
ಪ್ರದರ್ಶನ, ತೇಜಸ್ಸು, ಧೈರ್ಯ, ಕಾರ್ಯದಕ್ಷತೆ, ಯುದ್ಧ  
ದಲ್ಲಿ ಹೆದರಿ ಓಡಿಹೋಗದಿರುವುದು, ದಾನ ಮತ್ತು  
ಪ್ರಭುತ್ವ ಇವೆಲ್ಲವೂ ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಗೆ ಸ್ವಭಾವಸಿದ್ಧವಾದ  
ಕರ್ಮಗಳು. “ಶೌರ್ಯಂ ತೇಜೋ ಧೃತಿರ್ದಾಕ್ಷಿಣ್ಯಂ ಯುಧೇ ಚಾಪ್ಯಪಲಾಯನಮ್ ।  
ದಾನಮಿಶ್ವರಭಾವಶ್ಚ ಕತ್ತಕರ್ಮ ಸ್ವಭಾವಜಮ್” ಗೀತಾ ೧೮-೪೩ ।

ಕತ್ತಧರ್ಮ ಕ್ಷುತ್ಧರ್ಮ (ಪುಂ) ಕ್ಷತ್ರಿಯನ ಕರ್ತವ್ಯ, ಪ್ರಜಾ  
ಪಾಲನರೂಪವಾದ ಕಾರ್ಯ. ಕತ್ತಸ್ಯ ಧರ್ಮ: । “ರಾಜ್ಯಸ್ಥ:  
ಕತ್ತಿತ್ರಿಯಾಣಿ ಪ್ರಜಾ ಧರ್ಮೇಣ ಪಾಲಯನ್ । ಕುರ್ಯಾದಧ್ಯಯನಂ ಸಮ್ಯ-

ಗ್ಯಜೇದಜ್ಞಾನ್ ಯಥಾವಿಧಿ । ದद्याದಾನಂ ದ್ವಿಜಾತಿಮ್ಯೋ ಧರ್ಮಬುದ್ಧಿ-  
ಸಮನ್ವಿತ: । ಸ್ವಭಾರ್ಯಾನಿರತೋ ನಿಯಂ ಪಙ್ಚಭಾಗಾಹ್: ಸದಾ ನೃಪ: ।  
ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರಾರ್ಯಕುಶಲ: ಸಂಧಿವಿಗ್ರಹತತ್ವವಿತ್ । ದೇವಬ್ರಾಹ್ಮಣ-  
ಭಕ್ತಶ್ಚ ಪಿತೃಕಾರ್ಯಪರಸ್ತಥಾ । ಧರ್ಮೇಣ ಯಜನಂ ಕಾರ್ಯಮಧರ್ಮ-  
ಪರಿವರ್ಜನಮ್ । ತತ್ತಮಾಂ ಗತಿಮಾಪ್ನೋತಿ ಕತ್ತಿತ್ರಿಯಾಣಿವಮಾಚರನ್”  
ಹಾರೀತಂ । ರಾಜ್ಯಭಾರ ವಹಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ ರಾಜನ  
ಧರ್ಮ: ಪ್ರಜಾಪರಿಪಾಲನ, ವೇದಶಾಸ್ತ್ರಾಧ್ಯಯನ,  
ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ ಯಾಗಮಾಡುವುದು, ಧರ್ಮಬುದ್ಧಿ  
ಯಿಂದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣರಿಗೆ ದಾನಮಾಡುವುದು, ಸ್ವಭಾರ್ಯ  
(ಪತ್ನಿ) ಯಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಅನುರಾಗ, ವರಮಾನದ ಆರನೆಯ  
ಒಂದು ಭಾಗದಷ್ಟು ಮಾತ್ರ ಪ್ರಜೆಗಳಿಂದ ಕಂದಾಯ  
ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಸಂಧಿವಿಗ್ರಹಾದಿ ಪಡ್ಡುಣಗಳಲ್ಲಿ  
ಪ್ರಾವೀಣ್ಯ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕತ್ತಬಂಧು ಕ್ಷುತ್ಬಂಧು (ಪುಂ) 1. ಕ್ಷತ್ರಿಯ. ಕತ್ತಂ ರಾಷ್ಟ್ರಂ  
ಬಂಧುರಿವ । “ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ಕುಶಲಂ ಪೃಚ್ಛೇತ್ ಕತ್ತಬಂಧುಮನಾಮಯಮ್ ।  
ವೈಶ್ಯಂ ಕ್ಷೇಮಂ ಸಮಾಗಮ್ಯ ಶೂದ್ರಮಾರೋಗ್ಯಮೇವ ಚ” ಮನುಂ ೨-೧೨೭ ।  
2. ಕ್ಷತ್ರಿಯಧರ್ಮದಲ್ಲಿಲ್ಲದ ಹೀನ ಕ್ಷತ್ರಿಯ. ಕತ್ತಸ್ಯ  
ಬಂಧುರಿವ ।

ಕತ್ತಭೃತ್ ಕ್ಷುತ್ಭೃತ್ (ಪುಂ) 1. ಕ್ಷತ್ರಿಯ. 2. ರಾಷ್ಟ್ರದ  
ಹೊರೆಯನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವವನು.

ಕತ್ತವರ್ಧನ ಕ್ಷುತ್ವರ್ಧನ (ವಿಂ) ರಾಷ್ಟ್ರವನ್ನು ವಿಸ್ತಾರ  
ಗೊಳಿಸುವವನು, ರಾಜ್ಯವನ್ನು ದೊಡ್ಡದು ಮಾಡುವವನು.  
ಕತ್ತಂ ರಾಷ್ಟ್ರಂ ವರ್ಧಯತಿ—ವೃಥು (ವೃದ್ಧಿ) “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಕತ್ತವಿದ್ಯಾ ಕ್ಷುತ್ವಿದ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧನುರ್ವಿದ್ಯೆ, ಅಸ್ತ್ರವಿದ್ಯೆ.  
ಕತ್ತಸ್ಯ ವಿದ್ಯಾ ।

ಕತ್ತಾಂತಕ ಕ್ಷುತ್ಾಂತಕ (ಪುಂ) ಕ್ಷತ್ರಿಯರನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸಿದ  
ಪರಶುರಾಮ. ಕತ್ತಾಣಾಮಂತಕ: । “ವಧೇನ ಸಂಖ್ಯೆ ಪಿಶಿತಾ-  
ಶನಾನಾಂ ಕತ್ತಾಂತಕಸ್ಯಾಭಿಭವೇನ ಚೈವ” ಭದ್ರಿಂ ೩-೧ ।

ಕತ್ತಿತ್ರಿಯ ಕ್ಷುತ್ತ್ರಿಯ (ಪುಂ) ಚಾತುರ್ವರ್ಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಎರಡನೆಯ  
ವರ್ಣದವನು. ಕತ್ತಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ “ಘ:” (೪-೧-೧೩೮) ।  
ಘಸ್ಯ ಇಯಾದೇಶ: (೭-೧-೨) । “ಬ್ರಾಹ್ಮಣ: ಕತ್ತಿತ್ರಿಯೋ ವೈಶ್ಯಸತ್ರಯೋ  
ವರ್ಣಾ ದ್ವಿಜಾತಯ:” ಮನುಂ ೧೦-೪ ।

ಕತ್ತಿತ್ರಿಯಾ ಕ್ಷುತ್ತ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು.  
ಕತ್ತಿತ್ರಿಯ “ಠಾಪ್” । ಯೋಪಧತ್ವಾತ್ ನ ಡೀಪ್ ।

ಕತ್ತಿತ್ರಿಯಾಣಿ ಕ್ಷುತ್ತ್ರಿಯಾಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಜಾತಿಯ  
ಹೆಂಗಸು. ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಂದ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ-  
ದವಳು. ಕತ್ತಿತ್ರಿಯ ವಾ ಅನುಕ್ “ಡೀಪ್” ಚ (ವಾಂ ೪-೧-೪೯) ।  
ಪಕ್ಷೇ “ಠಾಪ್” । ಕತ್ತಿತ್ರಿಯಾ ಕ್ಷುತ್ತ್ರಿಯಾ.



ಕಾವ್ಯ ಕೃತ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೃತ್ರಿಯನ ಪತ್ನಿ. ಕಾವ್ಯ  
“ಕೃತ್ರಿ” (೪-೧-೪೮) ।

ಕವ - ಶಕಲೀಕರಣ ಭಕ್ಷಣ ಚ (ಸೌತ್ರಧಾತುಃ) । 1. ತುಂಬು  
ಮಾಡು, ಚೂರುಮಾಡು. 2. ತಿನ್ನು, ಭಕ್ಷಿಸು.

ಕವನ್ ಕೃದ್ವನ್ (ನಂ) 1. ಅನ್. 2. ಜಲ, ನೀರು.  
ಕವ “ಮನಿನ್” (೩ಂ ೪-೧೪೪) ।

ಕವ್ಯ ಕೃಂತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕೃಮಿಸಲ್ಪಡುವ. ಕಮ್ (ಸಹನೆ)  
“ತವ್ಯ” (೩-೧-೧೬) । 2. ಕೃಮಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.  
“ಕವ್ಯಮದ್ವ ಭವತಾ ಕರುಣಾರ್ಣವೇನ” ಚಂ ಭಾಂ ।  
“ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೧೬) । ಕಮಣಿಯಮ್ ಕೃಮಣೀಯಮ್.

ಕವತ್ ಕೃಂತೃ (ವಿಂ) ಸಹನೆಯುಳ್ಳವನು. ತಾಳ್ಮೆಯುಳ್ಳ  
ವನು, ಸೈರಣಿಯುಳ್ಳವನು. ಕಮಃ (ಸಹನೆ) “ತನ್”  
(೩-೨-೨೩೫) । “ಯೇ ಕವಂತಾರೋ ನಾಭಿಜಲ್ಪಂತಿ ಚಾನ್ಯಾನ್”  
ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೦೨-೩೧ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಕೃತ್ರಿ” (೪-೧-೫) ।  
ಕವತ್ರಿ ಕೃಂತೃ.

ಕವ್ ಕೃತ್ರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೃತ್ರಿ.

ಕವ ಕೃತ್ರಿ (ಪುಂ) ಜಲ, ನೀರು.

ಕವಣ ಕೃತ್ರಿ (ಪುಂ) 1. ಬೃಹದ್ವಸಂಸ್ಥಾಪಿಸಿ. ಕವಯತಿ  
ವಿಷಯರಾಗಮ್ — ಕೃತ್ರಿ (ಕವಣ) + ಕೃತ್ರಿ “ಲ್ಯು” (೩-೧-೧೩೪) ।  
ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕಃ” । ಕವಣಕಃ ಕೃತ್ರಿಕಃ. “ನಗನಕವಣಕೇ  
ದೇಶೋ ರಜಕಃ ಕಿಂ ಕರಿಷ್ಯತಿ” ಚಾಣಕ್ಯಂ ೧೧೦ । 2. (ಕಾಲ)  
ಕಳೆಯುವುದು. ಕೃತ್ರಿ + ಕೃತ್ರಿ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।  
(ವಿಂ) 3. ಕಾಲ ಕಳೆಯುವ. ಕೃತ್ರಿ + ಕೃತ್ರಿ “ಲ್ಯು” ।

ಕವಣಿ ಕೃತ್ರಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೋಣಿ ನಡೆಯಿಸುವ ಹುಟ್ಟು,  
ಗಣಿ, ಜಲ್ಲೆ. ಕವ (ಕವಣಿ) ಕರ್ಮಂ “ಲ್ಯುಟ್” । “ಕೃತ್ರಿ”  
(೪-೧-೧೫) ।

ಕವಣಿಯ ಕೃತ್ರಿಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ನಾಶಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 3. ನಾಶಪಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ. 4. ನಾಶಪಡಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 5. ಕಡಮೆ  
ಮಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ಕಡಮೆ ಮಾಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ. 7. ಕಡಮೆ ಮಾಡಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 8. ಕಡಮೆ  
ಮಾಡಿಸಬೇಕಾದ. ಕೃತ್ರಿ (ಕವಣಿ) + ಕೃತ್ರಿ “ಅನೀಯರ್”  
(೩-೧-೧೬) ।

ಕವಯಮಾಣ ಕೃತ್ರಿಯಮಾಣ (ವಿಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸುವಂತೆ  
ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಕಡಮೆಯಾಗುವಂತೆ ಮಾಡಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. ಕೃತ್ರಿ (ಕವಣಿ) + ಕೃತ್ರಿ “ಶಾನ್” (೩-೨-೧೨೪) ।

ಕವಯತ್ ಕೃತ್ರಿಯತ್ (ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಹೋಗ  
ಲಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಕೃತ್ರಿ (ಕವಣಿ) + ಕೃತ್ರಿ “ಶತ್ರಿ”

(೩-೨-೧೨೪) । “ಸ್ನೇಹಮದ್ವದಯಃ ಕವಯತ್ರೀಷ್ಣ ಏಷ  
ಸಮುಪೇತಿ ನಿವೃತ್ತಿಮ್” ಮಾಘಂ ೧೫-೧೨ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಕೃತ್ರಿ”  
(೪-೧-೬) । -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

ಕವಯಿತವ್ಯ ಕೃತ್ರಿಯಿತವ್ಯ (ವಿಂ) “ಕವಣಿಯ” ಪದದ  
ಅರ್ಥ. ಕೃತ್ರಿ (ಕವಣಿ) + ಕೃತ್ರಿ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೧೬) ।  
ಕವಯಿಷ್ಣು ಕೃತ್ರಿಯಿಷ್ಣು (ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ.  
ಕೃತ್ರಿ (ಕವಣಿ) + ಕೃತ್ರಿ “ಇಷ್ಣು” । “ಅಥ ತೇ ಕಾಲರೂಪಸ್ಯ  
ಕವಯಿಷ್ಣೋರಮುಷ್ಯ ವೈ । ಅಕೌಹಿಣೀನಾಂ ನಿಧನಂ ದ್ರಕ್ಷಾಮ್ಯರ್ಜುನ-  
ಸಾರಥೇ” ಭಾಗಂ ೧೦-೩೭-೨೨ ।

ಕವಾ ಕೃತ್ರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೃತ್ರಿ. ಕವಯತಿ ಕೃತ್ರಿ — ಕೃತ್ರಿ  
(ಕವಣಿ) + ಕೃತ್ರಿ “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ವ್ಯಲೋಕ-  
ಯನ್ಮಿಷಿತೇಸ್ತದಿನ್ಮಯೇರ್ಮಹಾತಪಃಸಾಕ್ಷ್ಯ ಇವ ಸ್ಥಿತಾಃ ಕವಾಃ”  
ಕುಮಾರಂ ೫-೨೫ । 2. ಅರಿವಿನ.

ಕವಾಕರ ಕೃತ್ರಿಕರ (ಪುಂ) (ಕೃತ್ರಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ)  
ಚಂದ್ರ. ಕವಾಂ ಕರೋತಿ—ಕೃತ್ರಿ (ಕರಣಂ) “ಕೃತ್ರಿ” (೩-೨-೨೦) ।  
“ಶನಕೇರಥಾಸ್ಯ ತನುಜಾಲಕಾಂತರಸ್ಫುರಿಸ್ತಕವಾಕರಕರೋತ್ತರಾ-  
ಕೃತಿಃ” ಮಾಘಂ ೧೨-೨೦ । ಕೃತ್ರಿ “ಕವಪ್” (೩-೨-೬೧) ।  
-ಕೃತ್ರಿ - ಕೃತ್ರಿ. “ವಿಶದಾಶಮಕೃತ್ರಿಕೃತಿಃ ಕವಾಕೃತಃ ಕವದಾಸು  
ಯತ್ರ ಚ ಕೃತ್ರಿಕೃತಾ ಗತಾಃ” ಮಾಘಂ ೧೩-೫೩ ।

ಕವಾಚರ ಕೃತ್ರಿಚರ (ಪುಂ) 1. (ಕೃತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ)  
ಕೃತ್ರಿ. ಕವಾಚಾಂ ಚರತಿ—ಚರ (ಗತೌ) “ಕೃತ್ರಿ” (೩-೨-೧೬) ।  
“ನಿರ್ಣಯೇ ಚ ಮತಿ ಕೃತ್ರಿ ನಿಧಾಯಾಸಿ ಕವಾಚರಃ” ಭಾಂ  
ವನಂ ೨೮೮ । “ದನುಜಃ ಸ್ವಿದಯಂ ಕವಾಚರೋ ವಾ ವನಜೇ  
ನೇತಿ ಬಲಂ ಬತಾಸಿ ಸತ್ವೇ” ಕಿರಾಂ ೧೩-೮ । (ವಿಂ) 2.  
ಕೃತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ.

ಕವಾಟ ಕೃತ್ರಿಟ (ಪುಂ) (ಕೃತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ) ಕೃತ್ರಿ.  
ಕವಾಯಾಮತಿ—ಅಟ (ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) ।  
“ತತಃ ಕವಾಟಃ ಪೃಥುಪಿಙ್ಗಲಾಕ್ಷಿಃ ಕ್ವಂ ಪ್ರಾವೃಷಣೈರಿವ  
ಚಾಸ್ತನಶೋಷೈಃ” ಭಟ್ಟಿಂ ೨-೩೦ ।

ಕವಾತ್ಯಯ ಕೃತ್ರಿತ್ಯಯ (ಪುಂ) ಕೃತ್ರಿಯ ಕೊನೆ,  
ಪ್ರಭಾತ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲ. ಕವಾಯಾ ಅತ್ಯಯಃ । -ಅವಸಾನಮ್  
-ಅವಸಾನಮ್.

ಕವಾನಾಥ ಕೃತ್ರಿನಾಥ (ಪುಂ) 1. (ಕೃತ್ರಿಗೆ ಒಡೆಯನಾದ)  
ಚಂದ್ರ. ಕವಾಯಾ ನಾಥಃ । “ಮಹಾರಥಃ ಪುಷ್ಯರಥಂ ರಥಾಕ್ಷಿ  
ಕ್ಷಿಪ್ರಂ ಕವಾನಾಥ ಇವಾಧಿರೂಢಃ” ಮಾಘಂ ೩-೨೨ । -ಪತಿಃ  
-ಪತಿಃ. 2. ಕವಾಕರ.

ಕವಾಪಿ ಕೃತ್ರಿಪಿ (ವಿಂ) 1. ಕಡಮೆಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ನಾಶ  
ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕೃತ್ರಿ (ಕವಣಿ) + ಕೃತ್ರಿ “ಕೃತ್ರಿ” (೩-೨-೧೦೨) ।



ಕಪಿತವತ್ ಕ್ಷು ಪಿತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಕಡಮೆಮಾಡಿಸಿದವನು.

2. ನಾಶಪಡಿಸಿದವನು. ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯ) + ಣಿच् "ಕ್ತವತು:" (3-2-102)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-6)। -ವತಿ -ವತಿ.

ಕ್ಷಯ ಕ್ಷು ಪ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕಡಮೆಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ನಾಶ ಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯ) + ಣಿच् "ಯತ್" (3-1-99)।

ಕ್ಷಮ ಕ್ಷು ಮ (ವಿಂ) 1. ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಅರ್ಹನಾದ. ಕ್ಷಮುಷ್ (ಸಹನೆ) "ಅಚ್" (3-1-134)। "ದಿಗ್ಜ್ಞನಾ: ಕ್ಷಣ-ಮವಿಲೋಕನಕ್ಷಮಾ: ಶರೀರಿಣಾಂ ಪರಿಹರಣೀಯತಾಂ ಯು:" ಮಾಘಂ 19-61. 2. ಶಕ್ತನಾದ, ಸಮರ್ಥನಾದ. "ಉಭ ಏವ ಕ್ಷಮೇ ಬೋಧುಮಯೋರ್ಬಿಜಮಾಹಿತಮ್" ಕುಮಾಂ 2-60. 3. ಉಚಿತವಾದ, ಯೋಗ್ಯವಾದ, ತಕ್ಕದಾದ. "ಪ್ರಸ್ಥಾನ-ಕಾಲಕ್ಷಮವೇಷಕಲ್ಪನಾಕೃತಕ್ಷಣಕ್ಷೇಪಮುದೇಕ್ಷತಾಚ್ಯುತಮ್" ಮಾಘಂ 12-1. 4. ಹಿತವಾದ, ಅನುಕೂಲವಾದ. 5. ಸಹನೆ ಯುಳ್ಳ, ತಾಳ್ಮೆಯುಳ್ಳ. "ಅತೋಽತ್ರ ಕಿಂಚಿದ್ಭವತೀಂ ಬಹುಕ್ಷಮಾಂ ದ್ವಿಜಾತಿಭಾವಾದುಪಪನ್ನಾಪಲ:" ಕುಮಾಂ 4-40. 6. ಅನು ರೂಪವಾದ, ಸದೃಶವಾದ. 7. ಯುಕ್ತವಾದ, ಸಂಗತ ವಾದ. "ನ ಸಮಯಪರೀಕ್ಷಣಂ ಕ್ಷಮಂ ತೇ ನಿಕೃತಿಪರೇಷು ಪರೇಷು ಭೂರಿದಾಮ್ನ:" ಕಿರಾಂ 1-45.

ಕ್ಷಮಣ ಕ್ಷು ಮಣ (ನಂ) ಸಹಿಸುವಿಕೆ, ತಾಳ್ಮೆಯಿಂದಿರುವಿಕೆ. ಕ್ಷಮುಷ್ (ಸಹನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಕ್ಷಮತಾ ಕ್ಷು ಮತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯೋಗ್ಯತೆ. ಅರ್ಹತೆ. ಕ್ಷಮಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (4-1-119)। 2. ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. 3. ಶಬ್ದ ಶಕ್ತಿ, ಅರ್ಥವನ್ನು ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವ ಶಬ್ದದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಸಾಮರ್ಥ್ಯ.

ಕ್ಷಮಾ ಕ್ಷು ಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಹನೆ, ತಾಳ್ಮೆ. ಕ್ಷಮುಷ್ (ಸಹನೆ) "ಅಡ್" (3-3-104)। "ಅಪರಾಧಶತಕ್ಷಮಂ ನೃಪ: ಕ್ಷಮಯಾ-ತ್ಯೇತಿ ಭವಂತಮೇಕಯಾ" ಮಾಘಂ 16-48. ಇತರರು ಎಷ್ಟೇ ಕೋಪಿಸಿಕೊಂಡರೂ ಹೊಡೆದು ಬಡಿದರೂ ಅವರ ವಿಷಯ ದಲ್ಲಿ ಸ್ವಲ್ಪವೂ ಕೋಪಿಸಿಕೊಳ್ಳಲೂ ಹೊಡೆಯಲೂ ಯತ್ನಿ ಸದೆ ಅವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಶುದ್ಧವಾದ ಮನೋವಾಕ್ಯಗಳಿಂದ ಸಹಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು ಕ್ಷಮೆಯೆನಿಸುವುದು. "ಆಕ್ರೂಢೋ ಭಿಹತೋ ವಾಪಿ ನಾಕ್ರೋಶಃ ಚ ಹಂತಿ ಚ। ಅದೃಷ್ಟಿರ್ವಾಙ್ಮನ:-ಕಾರ್ಯೇಸ್ತಿತಿಕೋ: ಸಾ ಕ್ಷಮಾ ಮಾ"। "ಜ್ಞಾನೇ ಮೌನಂ ಕ್ಷಮಾ ಶಕ್ತೌ ತ್ಯಾಗೋ ಇಲಾಘಾವಿಪರ್ಯಯ:" ರಘುಂ 1-22. ಇದು ಮನುಷ್ಯಸಾಮಾನ್ಯಕ್ಕೂ ಇರಬೇಕಾದ ದಶವಿಧ ಧರ್ಮಗಳ ಒಂದೊಂದು. "ಧೃತಿ: ಕ್ಷಮಾ ದಮೋಽಸ್ತೇಯಂ ಶೌಚಮಿन्द्रಿಯನಿಗ್ರಹ:। ಧೀರ್ವಿಧ್ಯಾ ಸತ್ಯಮಕ್ರೋಧೋ ದಶಕಂ ಧರ್ಮಲಕ್ಷಣಮ್" ಮನುಂ 6-92.

2. ಭೂಮಿ. "ವಿಭೂಷಣಾನ್ಯುನ್ಮುಚು: ಕ್ಷಮಾಂ ಪೇತುರ್ಬಂಜು-ವಲಯಾನಿ ಚೈವ" ಭट्टಿಂ 3-22. 3. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. "ಜಯಂತಿ ಮಲ್ಲಿಕಾರ್ಜುನ ಕಾಲೀ ಭದ್ರಕಾಲೀ ಕಪಾಲಿನಿ। ದುರ್ಗಾ ಶಿವಾ ಕ್ಷಮಾ ಧಾತ್ರಿ ಸ್ವಾಹಾ ಸ್ವಧಾ ನಮೋಽಸ್ತು ತೇ"।

ಕ್ಷಮಾಕರ ಕ್ಷು ಮಾಕರ (ವಿಂ) ತಾಳ್ಮೆಯನ್ನು ತೋರು ವವನು, ಸಹನೆಯುಳ್ಳವನು.

ಕ್ಷಮಾಜ ಕ್ಷು ಮಾಜ, -ತನಯ -ತನಯ, -ಸುನು -ಸೂನು (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯ ಮಗನಾದ 1. ಅಂಗಾರಕ. 2. ನರಕಾಸುರ. ಕ್ಷಮಾಯಾ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಙ:" (3-2-98)। ಕ್ಷಮಾಯಾಸ್ತನಯ: ಸುನುರ್ವಾ।

ಕ್ಷಮಾತಲ ಕ್ಷು ಮಾತಲ (ನಂ) ಭೂಮಿಯ ಮೇಲ್ಮೈ, ನೆಲದ ಹೊರಮೈ. ಕ್ಷಮಾಯಾಸ್ತಲಮ್। "ದ್ರುತದ್ರವದ್ರವಚರಣಕ್ಷತ-ಕ್ಷಮಾತಲೋಲ್ಲಸದ್ಬಹುಲರಜೋವಗುಣಿತಮ್" ಮಾಘಂ 19-60.

ಕ್ಷಮಾನ್ವಿತ ಕ್ಷು ಮಾನ್ವಿತ (ವಿಂ) ಸಹನೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕ್ಷಮಯಾ ಅನ್ವಿತ:।

ಕ್ಷಮಾಪತಿ ಕ್ಷು ಮಾಪತಿ (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯ ಒಡೆಯ, ರಾಜ, ದೊರೆ. ಕ್ಷಮಾಯಾ: ಪತಿ:। "ಅಶಕ್ತಂ ಯುಧಮಧುನಾ ವಿಶಂತ್ವಮಿ ಕ್ಷಮಾಪತೀನಿತಿ ನಿರರಾಜಯನ್ನಿವ" ಮಾಘಂ 19-16.

ಕ್ಷಮಾಭುಜ್ ಕ್ಷು ಮಾಭುಜ್ (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯನ್ನು ಪಾಲಿಸುವ ರಾಜ, ದೊರೆ. ಕ್ಷಮಾಂ ಭುನಕ್ತಿ - ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವ-ಹಾರಯೋ:) "ಕ್ವಿಪ್" (3-2-96)। "ನ ಮಮೌ ಕಪಾಡತಟ-ವಿಸ್ತೃತಂ ತನೌ ಮುರವೇರಿವಕ್ಷ ಉರಸಿ ಕ್ಷಮಾಭುಜ:" ಮಾಘಂ 13-10.

ಕ್ಷಮಾಭೃತ್ ಕ್ಷು ಮಾಭೃತ್ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ಕ್ಷಮಾಂ ಬಿಭರ್ತಿ - ಭು ಭೃತ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಕ್ವಿಪ್" (3-2-96)। "ಭವ ಸಾನುಚರಸ್ತ್ವಮುಚ್ಚಕೈರ್ಮಹತಾಮಪ್ಯುಪರಿ ಕ್ಷಮಾಭೃತಾಮ್" ಮಾಘಂ 16-9. 2. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. "ಅವಾರಿತಂ ಗತಮುಭಯೇಷು ಭೂರೀಶ: ಕ್ಷಮಾಭೃತಾಮಥ ಕಟಕಾಂತ-ರೇಷ್ವಪಿ" ಮಾಘಂ 19-27.

ಕ್ಷಮಾವತ್ ಕ್ಷು ಮಾವತ್ (ವಿಂ) ಸಹನೆಯುಳ್ಳ, ತಾಳ್ಮೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕ್ಷಮಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (4-2-94)। "ಏಕ: ಕ್ಷಮಾವತಾಂ ದೋಷೋ ದ್ವಿತೀಯೋ ನೋಪಪದ್ಯತೇ। ಯದೇನ ಕ್ಷಮಯಾ ಯುಕ್ತಮಶಕ್ತಂ ಮನ್ಯತೇ ಜನ:" ಗರುಡಪುಂ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-6)। -ವತಿ -ವತಿ.

ಕ್ಷಮಾಶೀಲ ಕ್ಷು ಮಾಶೀಲ (ವಿಂ) ಸಹಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದವನು, ಸೈರಣೆಯ ಸ್ವಭಾವದವನು.

ಕ್ಷಮಿತ ಕ್ಷು ಮಿತ (ವಿಂ) ಸಹಿಸುವವನು, ತಾಳ್ಮೆಯುಳ್ಳ ವನು. ಕ್ಷಮತೇ - ಕ್ಷಮುಷ್ (ಸಹನೆ) "ತನ್" (3-2-134)।



“ಸಹಿಷ್ಣುಃ ಸಹನಃ ಕ್ಷಂತಾ ತಿತಿಕ್ಷುಃ ಕ್ಷಮಿತಾ ಕ್ಷಮೀ” ಅಮಂ ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೫) । -ತ್ರಿ-ತ್ರಿಃ.

ಕ್ಷಮಿನ್ ಕ್ಷಮಿನ್ (ವಿಂ) ಕ್ಷಮಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದವನು.  
ಕ್ಷಮತೇ—ಕ್ಷಮುಃ (ಸಹನೆ) “ವಿನ್ಯು” (೩-೨-೧೪೧) ।  
“ತರುಣಾನಪಿ ರಕ್ಷತಿ ಕ್ಷಮೀ ಸ ಶರಣ್ಯಃ ಶರಣಾಗತಾನ್ ದ್ವಿಷಃ”  
ಮಾಘಂ ೧೬-೫೪ ।

ಕ್ಷಮ್ಯ ಕ್ಷಮ್ಯ (ವಿಂ) ಕ್ಷಮಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಮನ್ನಿಸಬಹುದಾದ. ಕ್ಷಮುಃ (ಸಹನೆ) “ಯತ್” (೩-೧-೯೮) ।

ಕ್ಷಯ ಕ್ಷಯ (ಪುಂ) 1. ನಿವಾಸ, ಮನೆ, ವಾಸಸ್ಥಳ. ಕ್ಷಿಯತೇತ್—ಕ್ಷಿ (ನಿವಾಸಗಾತ್ರೋಃ) “ಅಚ್” (೩-೩-೫೬) ।  
2. ನಾಶ. ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯೇ) “ಅಚ್” (೩-೩-೫೬) । “ಕಾಲೋಽಸ್ಮಿ ಲೋಕಕ್ಷಯಕೃತ್ ಪ್ರವೃದ್ಧಃ” ಗೀತಾ ೧೧-೩೨ । “ಸಪದಿ ಕ್ಷುಮದಿನಿಭಿರ್ಮಿಲಿತಂ ಹಾ ಕ್ಷಪಾಪಿ ಕ್ಷಯಮಗಮದಪೇತಾಸ್ವಾರ-ಕಾಸ್ತಾಃ ಸಮಸ್ತಾಃ” ಮಾಘಂ ೧೧-೨೪ । 3. ಪ್ರಳಯ, ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶ, ಕಲ್ಪದ ಕೊನೆ. ಕ್ಷಿಯಂತೇ ಪ್ರಾಣಿನೋಽತ್ರ ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯೇ) “ಅಚ್” (೩-೩-೫೬) । 4. ಅಪಚಯ, ಕಡಮೆ. ಕ್ಷಯಣಮ್—ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯೇ) “ಅಚ್” । “ಸಮಾ-ರಕ್ಷದಿವಮಾಯುಷಃ ಕ್ಷಯೇ ತತಾನ ಸೋಪಾನಪರಂಪರಾಮಿವ” ರಘುಂ ೩-೬೯ । 5. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. 6. ಕ್ಷಯರೋಗ. ಕ್ಷಯತಿ ದೇಹಮ್—ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯೇ) ಅಂತರ್ಮಾವಿಶ್ಯತಃ “ಅಚ್” । ಈ ರೋಗವು ಪ್ರಬಲವಾಗಿ ಕಾಯಮನೋವ್ಯಾಪಾರಗಳನ್ನು ಕಡಮೆಮಾಡುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಕ್ಷಯರೋಗವೆಂದು ಹೆಸರು. “ಸಂಶೋಷಣಾಧರಸಾದಿನಾಂ ಶೋಷ ಇತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ । ಕ್ರಿಯಾಕ್ಷಯಕರತ್ವಾಚ್ಚ ಕ್ಷಯ ಇತ್ಯುಚ್ಯತೇ ಪುನಃ” ಸುಶ್ರುತಂ ೪೧-೪ । ರಾಜನಾದ ಚಂದ್ರನಿಗೂ ಈ ಕ್ಷಯಸಂಬಂಧವಿರುವುದರಿಂದ ಇದನ್ನು “ರಾಜಯಕ್ಷಮಾ” ಎಂದೂ ಕೆಲವರು ಹೇಳುವರು. “ರಾಜಶ್ಚಂದ್ರಮಸೌ ಯಸ್ಮಾತ್ ಅಭೂದೇಷ ಕಿಲಾಮಯಃ । ತಸ್ಮಾತ್ತಂ ರಾಜಯಕ್ಷಮೇತಿ ಕೇಚಿದಾಹುಃ ಪುನರ್ಜನಾಃ” ಸುಶ್ರುತಂ ೪೧-೫ । (1) ಅನ್ನದ್ವೇಷ, (2) ಜ್ವರ, (3) ಶ್ವಾಸ, (4) ಕೆಮ್ಮಲು, (5) ರಕ್ತಕಾರುವುತ್ತು ಮತ್ತು (6) ಸ್ವರವಿಕಾರ ಈ ಆರು ವಿಧ ದೋಷಗಳು ಕ್ಷಯರೋಗದಲ್ಲಿ ಕಂಡುಬರುವುವು. “ಭಕ್ತದ್ವೇಷೋ ಜ್ವರಃ ಶ್ವಾಸಃ ಕಾಸಃ ಶೋಣಿತದರ್ಶನಮ್ । ಸ್ವರಭೇದಶ್ಚ ಜಾಯತೇ ಷಡ್ವಿಧೇ ರಾಜಯಕ್ಷಮಣಿ” ಸುಶ್ರುತಂ ೪೧-೧೧ । 7. ಮಲಮಾಸ, ಕ್ಷಯ ಮಾಸ, ಎರಡು ಸಂಕ್ರಮಣಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಚಂದ್ರಮಾಸ. [ಸಂಕ್ರಮಣವೇ ಇಲ್ಲದ ಚಂದ್ರಮಾಸವು ಅಧಿಕಮಾಸ. ಎರಡು ಸಂಕ್ರಮಣಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಚಂದ್ರಮಾಸವು ಕ್ಷಯ ಮಾಸ.] “ಅಸಂಕ್ರಾಂತಿಮಾಸೋಽಧಿಮಾಸಃ ಸ್ಫುಟಂ ಸ್ಯಾತ್

ದ್ವಿಸಂಕ್ರಾಂತಿಮಾಸಃ ಕ್ಷಯಾಹುಃ ಕದಾಚಿತ್ । ಕ್ಷಯಃ ಕಾರ್ತಿಕಾದಿತ್ರಯೇ ನಾನ್ಯತಃ ಸ್ಯಾತ್ ತದಾ ವರ್ಷಮಧ್ಯೇಽಧಿಮಾಸದ್ವಯಂ ಚ” ಸಿದ್ಧಾಂತಶಿಂ ।  
8. ಪ್ರಭವಾದಿ ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲೊಂದು. 9. ಇಳಿ, ತಗ್ಗು. 10. ಗಮನ. 11. ರಾಜನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞರ ಅಷ್ಟ ವರ್ಗದಲ್ಲಿ ಸೇರಿದ ತ್ರಿವರ್ಗದಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯದು. “ಕ್ಷಯಃ ಸ್ಥಾನಂ ಚ ವೃದ್ಧಿಶ್ಚ ತ್ರಿವರ್ಗೋ ನೌತಿವೇದಿನಾಮ್” ಅಮಂ । ಶತ್ರುವಿಗಿತಲೂ ಶಕ್ತಿಯು ಕಡಮೆಯಾಗಿರುವುದು ಕ್ಷಯ. ಶತ್ರುವಿಗಿತಲೂ ಮಿಗಿಲಾದ ಶಕ್ತಿ ಹೊಂದಿರುವುದು ವೃದ್ಧಿ. ಈ ಉಪಚಯಾಪಚಯ (ಹೆಚ್ಚು ಕಡಮೆ)ಗಳೆರಡೂ ಇಲ್ಲದೆ ಸಮವಾಗಿರುವುದು ಸ್ಥಾನ.

ಕ್ಷಯಕಾರ ಕ್ಷಯಕಾರ (ವಿಂ) 1. ನಾಶಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ, ಹಾನಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಕ್ಷಯಂ ಕರೋತಿ—ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) “ಅಣ್” (೩-೨-೧) । 2. ಕಡಮೆಮಾಡುವ.

ಕ್ಷಯಕಾಲ ಕ್ಷಯಕಾಲ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಳಯಕಾಲ, ಕಲ್ಪದ ಕೊನೆಯಕಾಲ, ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶದ ಕಾಲ. 2. ಇಳಿತದ ಕಾಲ, ತಗ್ಗಿನ ಕಾಲ.

ಕ್ಷಯಕಾಸ ಕ್ಷಯಕಾಸ (ಪುಂ) ಕ್ಷಯರೋಗದ ಕೆಮ್ಮಲು, ಕ್ಷಯರೋಗದ ಸಂಬಂಧವಾದ ಕೆಮ್ಮಲು. ಕ್ಷಯಾತ್ ಕಾಸಃ ।

ಕ್ಷಯಕ್ಷುರ ಕ್ಷಯಂಕರ (ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸುವ, ಕಡಮೆ ಮಾಡುವ. ಕ್ಷಯಂ ಕರೋತಿ—ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) “ಅಚ್” ಬಾಹುಂ । ಸುಮಾಗಮಃ । “ಶತ್ರುಪಕ್ಷಕ್ಷಯಕ್ಷುರಃ” ಭಾಂ ।

ಕ್ಷಯಜ ಕ್ಷಯಜ (ಪುಂ) ಕ್ಷಯರೋಗಸಂಬಂಧವಾದ ಕೆಮ್ಮಲು, ಕ್ಷಯರೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾದ ಕೆಮ್ಮಲು. ಕ್ಷಯಾತ್ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) “ಙ್” (೩-೨-೯೮) ।

ಕ್ಷಯಣ ಕ್ಷಯಣ (ನಂ) ನಾಶಹೊಂದುವಿಕೆ, ಅಳಿದುಹೋಗುವಿಕೆ. ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯೇ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।

ಕ್ಷಯನಾಶಿನ್ ಕ್ಷಯನಾಶಿನ್ (ವಿಂ) ರೋಗವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ. ಕ್ಷಯಂ ರೋಗಂ ನಾಶಯತಿ—ಣಶ (ಅದರ್ಶನೇ) + ಣಿಚ್ “ಣಿನಿಃ” (೩-೨-೭೮) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೫) । -ನಾಶಿನಿ -ನಾಶಿನೀ.

ಕ್ಷಯನಾಶಿನಿ ಕ್ಷಯನಾಶಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಿಹಿಹಾಲೆಗಿಡ.

ಕ್ಷಯಪಕ್ಷ ಕ್ಷಯಪಕ್ಷ (ಪುಂ) ಕೃಷ್ಣ ಪಕ್ಷ, ಮಾಸದಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರನು ಕ್ಷಯಹೊಂದುವ ಎರಡನೆಯ ಅರ್ಧ ಭಾಗ. ಕ್ಷಿಯತೇಽಸ್ಮಿನ್ ಚಂದ್ರಃ—ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯೇ) “ಅಚ್” (೩-೩-೫೬) । “ಕ್ಷಯಪಕ್ಷ ಇವೇಂದವಿಃ ಕಲಾಃ ಸಕಲಾ ಹಂತಿ ಸ ಶಕ್ತಿಸಂಪದಃ” ಕಿರಾಂ ೩-೩೭ ।

ಕ್ಷಯಮಾಸ ಕ್ಷಯಮಾಸ (ಪುಂ) “ಕ್ಷಯ” ಪದದ 7ನೆಯ ಅರ್ಥ.



ಅಭ್ಯುಕ್ತ ಕ್ಷಯಯುಕ್ತ (ವಿಂ) ಕ್ಷಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಕ್ಷೀಣವಾದ, ಕಡಮೆಯಾದ. ಅಭ್ಯುಕ್ತಮ್. "ಅಭ್ಯ-ಯುಕ್ತಮಪಿ ಸ್ವಭಾವಜಂ ದಧತಂ ಧಾಮ ಶಿವಂ ಸಮೃದ್ಧಯೇ" ಕಿರಾಂ ೨-೧೧.

ಅಭ್ಯುಕ್ತಿ ಕ್ಷಯಯುಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕ್ಷಯದಯೋಗ, ನಾಶದಕಾಲ, ಕ್ಷೀಣಸ್ಥಿತಿ, ಅಳಿವು. ಅಭ್ಯುಕ್ತಯುಕ್ತಿ: ಯೋಗ:। "ಅಚಿರೇಣ ಪರಸ್ಯ ಭಯಸಿಂ ವಿಪರೀತಾಂ ವಿಗಣಯ್ಯ ಚಾತ್ಮನ:। ಅಭ್ಯುಕ್ತಿಮುಪೇಕ್ಷತೇ ಕೃತೀ ಕುರುತೇ ತತ್ಪ್ರತಿಕಾರಮನ್ಯಥಾ" ಕಿರಾಂ ೨-೯.

ಅಭ್ಯರೋಗ ಕ್ಷಯರೋಗ (ಪುಂ) ಶರೀರವು ಕ್ಷಯಹೊಂದುವ ಒಂದು ರೋಗ, ಧಾತುಗಳನ್ನು ಕ್ಷೀಣಗೊಳಿಸಿ ಶರೀರವನ್ನು ದುರ್ಬಲವಾಗಿ ಮಾಡುವ ಒಂದು ವ್ಯಾಧಿ. ಅತಿಯಾದ ಸ್ತ್ರೀ ಸಂಭೋಗದಿಂದ ದೇಹದಲ್ಲಿ ಶುಕ್ರಧಾತುವು ಕಡಮೆಯಾಗಿ ಎಲ್ಲಾ ಧಾತುಗಳೂ ಕ್ಷೀಣವಾಗುವವು. ಅದರಿಂದ ಮನುಷ್ಯನು ಕ್ಷಯರೋಗಕ್ಕೆ ತುತ್ತಾಗುವನು. "ಅತಿವ್ಯ-ವಾಯಿನೋ ವಾಪಿ ಕ್ಷೀಣೇ ರೇತಸ್ಯನಂತರಮ್। ಕ್ಷೀಯಂತೇ ಧಾತವ: ಸರ್ವೇ ತತ: ಶುಷ್ಯಂತಿ ಮಾನವ:" ಸುಶ್ರುತಂ ೪೧-೧೦.

ಅಭ್ಯವಾಯು ಕ್ಷಯವಾಯು (ಪುಂ) ಕಲ್ಪದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಬೀಸುವ ಗಾಳಿ, ಚಂಡಮಾರುತ. ಅಭ್ಯವಾಯು ಪ್ರಲಯವಾಯು:। "ಯುಷ್ಮಾನುಚೇತನ್ ಅಭ್ಯವಾಯುಕಲ್ಪಾನ್ ಸೀತಾ ಸ್ಫುಲಿಂಜಂ ಪರಿಗೃಹ್ಯ ಜಾತಮ:" ಭೃಗುಂ ೧೦-೩೬.

ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕ್ಷಿ(ಅಭ್ಯ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಕ್ಷಿತಿಪ: ಅಭ್ಯಯುಕ್ತತಾನ್ವಕೋ ಹರಲೋಕಂ ಸ ವಿಡಮ್ಬಯಿಷ್ಯತಿ" ಮಾಘಂ ೧೬-೪೮. 2. ಕಡಮೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಅಭ್ಯಯುಕ್ತಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। 2. ಕ್ಷಯರೋಗವುಳ್ಳವನು. "ದಕ್ಷಸ್ಯ ಶಾಪೇನ ಶಶೋ ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ ಪ್ಲುಟೋ ಹಿಮೇನೇವ ಸರೋಜಕೋಶ:" ಕುಮಾರಂ ೯-೧೭. 3. ಕಡಮೆಯಾಗುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಕ್ಷಯ ಹೊಂದುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಕ್ಷಿ (ಅಭ್ಯ) ತಾಚ್ಛೀಲ್ಯೇ "ಇನಿ:" (೩-೨-೧೫೭)।

ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಕ್ಷಯಹೊಂದುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಕಡಮೆಯಾಗುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಕ್ಷಿ (ಅಭ್ಯ) "ಇಣುಕ್" ಬಾಹುಂ. 2. ನಾಶದ ಸ್ವಭಾವದ. "ಎವಂ ಹಿ ಲೋಕಾ: ಋತುಭಿ: ಕೃತಾ ಅಮೀ ಅಭ್ಯಯುಕ್ತವ: ಸಾತಿಶಯಾ ನ ನಿರ್ಮಲಾ:" ಭಾಗಂ ೭-೭-೪೦.

ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ (ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸಲು ಶಕ್ತವಾದ. ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ ಶಕ್ಯಮ್ ಯಾನ್ತಾದೇಶ: (೬-೧-೮೧)। ನಿಪಾಂ.

ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ ಸ್ಯಂದತೇ ಮುಚ್ಚತಿ ವಾ - ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ (ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ವಿಕಾರಹೊಂದುವ ಸ್ವಭಾವದ ಸರ್ವಪ್ರಾಣಿಗಳು. ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಕ್ಷಯ ಮತ್ತು ಅಕ್ಷಯ ಎಂದು ಇಬ್ಬರು ಪುರುಷರು ಪ್ರಸಿದ್ಧರು. ವಿಕಾರಸ್ವಭಾವದ ಪ್ರಕೃತಿಯೊಡನೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ ಸಕಲ ಪ್ರಾಣಿಗಳೂ ಕ್ಷಯಪುರುಷರು. ಪ್ರಕೃತಿ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದೆ ತಮ್ಮ ನಿಜಸ್ವರೂಪದಲ್ಲಿರುವ ಮುಕ್ತಾತ್ಮರು ಅಕ್ಷಯ ಪುರುಷರು. ಪ್ರಕೃತಿ ಸಂಬಂಧವೂ ಪ್ರಕೃತಿ ಪರಿಣಾಮವಾದ ದೇಹಸಂಬಂಧವೂ ಇಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಅಕ್ಷಯನು ಕೊಟಸ್ಥನೆಂದು ಹೇಳಲ್ಪಡುವನು. "ದ್ವಾವಿಮೌ ಪುರುಷೌ ಲೋಕೇ ಅಭ್ಯಯುಕ್ತಾಶ್ಚೇವ ಚ। ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ: ಸರ್ವಾಣಿ ಭೂತಾನಿ ಕೂಡಸ್ಯೋಷಕಾಃ ಉಚ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೧೫-೧೬. "ಅಭ್ಯಯುಕ್ತಂ ನೇರೇ ಅಭ್ಯಯುಕ್ತದೇ" ಮೇದಿಂ. (ನಂ) 3. ಜಲ, ನೀರು. 4. ದೇಹ, ಶರೀರ. (ವಿಂ) 5. ವಿಕಾರಸ್ವಭಾವದ, ಮಾರ್ಪಡುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಅಸ್ಥಿರವಾದ.

ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ (ವಿಂ) ಮೇಘದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತಭಾವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೧೭)।

ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ (ನಂ) 1. ಸ್ತವಿಸುವುದು, ಸೋರುವುದು. 2. ಸುರಿಯುವುದು. 3. ಬೆವರು ಹರಿಯುವುದು. ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ (ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ವರ್ತಂತೇ ಸ್ಮ ಸ ಕಥಂಚಿದಾಲಿಖನ್ ಅಭ್ಯಯುಕ್ತಾಶ್ಚೇವ ಸರ್ವವರ್ತಿಕ:" ರಘುಂ ೧೯-೧೯. 4. ಚಲಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 5. ಸೋರುವ, ಜನಿಸುವ. ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)।

ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಸ್ತವಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸೋರುತ್ತಿರುವ. 2. ಹರಿಯುತ್ತಿರುವ. 3. ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಸುರಿಯುತ್ತಿರುವ. ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ (ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಮುನಿಭಿ: ಪುಲಕಾಶ್ಚಿತಾಖಿಲಾಶ್ಚೇವ: ಅಭ್ಯಯುಕ್ತನಂದಯುಬಾಷ್ಪದಿಗ್ಧ-ದೇಹೈ:" ಯಾದಂ ೧೫-೭೭. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬)। ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ ಕ್ಷಯಂಶೇ. "ಅಭ್ಯಯುಕ್ತಸಹತಯಸ್ತಸ್ಯ ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ: ಶಾಶ್ವ-ಶೈಲತ:" ಯಾದಂ ೧೬-೮೬.

ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ (ಪುಂ) 1. ವರ್ಷಾಕಾಲ, ಮಳೆಗಾಲ. ಅಭ್ಯಯುಕ್ತ: ಮೇಘಾ: ಸಂತ್ಯತ್ರ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। "ವರ್ಷಾಸ್ತಿಪಾತ್ಯ:



ಪ್ರಾವೃತ್ ಮೇಘಾತ್ ಕಾಲಾಗಮೌ ಧರೀ " ಅಭಿಂ ಚಿಂ । (ವಿಂ) 2. ಸ್ರವಿಸುವ, ಸೋರುವ. 3. ಸುರಿಯುವ. 4. ಜಲಿಸುವ. 5. ವಿಹಾರಹೊಂದುವ.

**ಕಾಲ - ಶೌಚಕರ್ಮಣಿ** (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಕಾಲಯತಿ, -ತೇ । ಕಾಲಯಾಂ ಬಭೂವ, -ವಕಾರ, -ವಕ್ರೇ, -ಆಸ । ಕಾಲಯಿತಾ । ಕಾಲಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ । ಕಾಲಯತು, -ತಾಮ್ । ಅಚಿಕಾಲತ್, -ತ । ತೊಳೆ, ಶುದ್ಧಿಮಾಡು. "ಕಾಲಯಾಮಿ ತವ ಪಾದಪದ್ಮಜಂ ನಾಥ ದಾರುದೃಪದೋ: ಕಿಮಂತರಮ್" ।

**ಕರ್ಮಣಿ:**—ಕಾಲಯತೇ । ಚಕ್ಷಾಲೇ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಸನಿ:**—ಚಿಕಾಲಯಿಷತಿ, -ತೇ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತ್ಸು:**—ಕಾಲಿತವ್ಯಮ್ । ಕಾಲನೀಯಮ್ । ಕಾಲ್ಯಮ್ । ಕಾಲಿತ: । ಕಾಲಿತವಾನ್ । ಕಾಲಯನ್, ಕಾಲಯಂತಿ । ಕಾಲಯಿತುಮ್ । ಕಾಲಿತಮ್ । ಕಾಲನಮ್ । ಕಾಲಯಿತ್ವಾ । ಪ್ರಕಾಲಯ ।

**ಕವ ಕ್ವ ವ** (ಪುಂ) 1. ಸೀನು, ಮೂಗಿನ ಒಂದು ರೋಗ. ಟುಕ್ತು (ಶಬ್ದ) "ಅಪ್" (3-3-49) । 2. ಕಾಸ, ಕೆಮ್ಮಲು. 3. ಕರಿಸಾಸವೆ. ಕೌತಿ—ಟು ಕ್ತು ಅಂತರ್ಮಾವಿತರ್ಥ: "ಅಪ್" (3-1-134) । "ಕವ: ಕ್ವುತೇ ರಾಜಿಕಾಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ ।

**ಕವಕ ಕ್ವ ವಕ** (ಪುಂ) 1. ಕರಿಸಾಸವೆ. 2. ಉತ್ತರೇಣ ಗಿಡ.

**ಕವತು ಕ್ವ ವತು** (ಪುಂ) 1. ಕೆಮ್ಮಲು, ಕಾಸ. 2. ಸೀನು, ಮೂಗಿನ ಒಂದು ರೋಗ. ಟು ಕ್ತು (ಶಬ್ದ) "ಅಪುಕ್" (3-3-49) । ಮೂಗಿನೊಳಗಿನ ಮರ್ಮವು ಕೆಟ್ಟು ಹೋದಾಗ ಕಫದೊಡನೆ ಮೂಗಿನಿಂದ ಹೊರಡುವ ಶಬ್ದ ದಿಂದ ಕೂಡಿದ ವಾಯುವೇ ಸೀನು. "ಧಾಣಾಶ್ರಿತೇ ಮರ್ಮಣಿ ಸಂಪ್ರದೃಷ್ಟೇ ಯಸ್ಯಾನಿಲೋ ನಾಸಿಕಯಾ ನಿರೇತಿ । ಕಫಾನುಯಾತೋ ಬಹುಶ: ಸಶಬ್ದ: ತಂ ರೋಗಮಾಹು: ಕವತುಂ ವಿವಿಜಾ: " ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರತಂ 22-11. ಮೂಗಿನ ರೋಗಗಳು (1) ಅಪೀನಸ:, (2) ಪೂತಿನಸ್ಯಮ್, (3) ನಾಸಾಪಾಕ:, (4) ಶೋಣಿತಪಿತ್ತಮ್, (5) ಪೂಯಶೋಣಿತಮ್, (6) ಕವತು:, (7) ಭ್ರಂಶತು:, (8) ದೀಪ್ತ: (9) ನಾಸಾನಾಹ:, (10) ಪರಿಸ್ತವ: ಮತ್ತು (11) ನಾಸಾಶೋಷ: ಎಂದು ಹನ್ನೊಂದು ಬಗೆ. "ಅಪೀನಸ: ಪೂತಿನಸ್ಯ ನಾಸಾಪಾಕ: ತಥೈವ ಚ । ನಥಾ ಶೋಣಿತಪಿತ್ತಂ ಚ ಪೂಯಶೋಣಿತಮೇವ ಚ । ಕವತುಭ್ರಂಶತುಃ ನಾಸಾನಾಹ: ಪರಿಸ್ತವ: । ನಾಸಾಶೋಷೇಣ ಸಹಿತಾ ದಶೈಕಶ್ಚೇರಿತಾ ಗದಾ: " ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರತಂ 22-3, 4.

**ಕಾತ್ರಿ ಕ್ವ ತ್ರಿ** (ನಂ) 1. ಕ್ಷತ್ರಿಯರ ಸಮೂಹ. ಕ್ಷತ್ರಿಯರ ಗುಂಪು. ಕಾತ್ರಿಣಾಂ ಸಮೂಹ: "ಅಙ್" (4-2-37) । (ವಿಂ) 2. ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಕಾತ್ರಿಣೀಯಮ್

"ಅಙ್" (4-3-120) । "ಶೌರ್ಯ ತೇಜೋ ಭೃತಿರ್ದೀಪ್ತಾ ಯುಧೇ ಚಾಪ್ಯಪಲಾಯನಮ್ । ದಾನಮೀಶ್ವರಭಾವಶ್ಚ ಕಾತ್ರಿಣಾಂ ಕಮಸ್ವಭಾವಜಮ್" ಗೀತಾ 18-43. "ಆತ್ಮಕರ್ಮಕಮಂ ದೇಹಾತ್ರಿ ಧರ್ಮ ಇವಾಶ್ರಿತ: " ರಘುಂ 1-12. "ಕಾತ್ರಿ ಧರ್ಮಾಶ್ರಿತ ಇವ ತನುಂ ಬ್ರಹ್ಮಕೋಶಸ್ಯ ಗುಪ್ತೈ" ಉಂ ರಾಂ 6-9.

**ಕಾತ್ರಿ ಕ್ವ ತ್ರಿ** (ಪುಂ) ಕ್ಷತ್ರಿಯನ ಮಗ, ಕ್ಷತ್ರಿಯನ ಭಿನ್ನಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಗ. ಜಾತೌ ಕಾತ್ರಿಣ್ಯ ಕಾತ್ರಿಣ್ಯ: ಸಿಂ ಕೌಂ (4-1-136) ।

**ಕಾನ್ತಿ ಕ್ವಂತ್** (ನಂ) 1. ತಾಳ್ಮೆ, ಸೆರಣೆ, ಸಹನೆ. ಕಮೂಷ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114) । (ವಿಂ) 2. ಕ್ಷಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ವನು. ಕಮೂಷ್ (ಸಹನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102) । 3. ಸಹಿಸುವವನು, ತಾಳ್ಮೆಯುಳ್ಳವನು. ಕಮೂಷ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-4-62) ।

**ಕಾನ್ತಿ ಕ್ವಂತ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಹನೆ, ಸೆರಣೆ, ತಾಳ್ಮೆ. ಕಮ (ಸಹನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94) । ಶಕ್ತಿಯಿದ್ದರೂ ಇತರರಿಂದ ಆದ ಅಪಕಾರಕ್ಕೆ ಪ್ರತೀಕಾರ ಮಾಡದೆ ಸೈರಿಸುವುದು. "ಶಮೋ ದಮ: ತಪ: ಶೌಚಂ ಕಾನ್ತೀರಾರ್ಜವಮೇವ ಚ । ಜ್ಞಾನ ವಿಜ್ಞಾನಮಾಸ್ತಿಕಯಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ಕರ್ಮ ಸ್ವಭಾವಜಮ್" ಗೀತಾ 18-42

**ಕಾಮ ಕ್ವಾಮ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಕೌ (ಕಯೇ) "ಕ್ತ:" (3-4-62) । ನಿಷ್ಠಾತಸ್ಯ "ಮ:" (6-2-43) । "ಕಾಮೋ ಧ್ರುವಸಮೀಪಸ್ಥ: ಚತುರ್ನಕ್ಷತ್ರಸಂಯುತ: " ಇತಿ ನಿರ್ಣಿತ: । "ನಕ್ಷತ್ರ ನೇಮಿರ್ನಕ್ಷತ್ರೀ ಕಾಮ: ಕಾಮ: ಸಮೀಹನ: " ವಿಂ ಸಂ । 2. ಕ್ಷೀಣತೆ, ಕಡಮೆಯಾಗುವುದು, ಬರ. (ವಿಂ) 3 ಬಡಕಲಾದ, ಕ್ಷೀಣವಾದ. "ಮಧ್ಯೇ ಕಾಮಾ ಚಕಿತಹರಿಣಿ ಪ್ರೇಕ್ಷಣಾ ನಿಮ್ನನಾಭಿ: " ಮೇಘಂ 2-19. 4. ಸ್ವಲ್ಪವಾದ, ಕಡಮೆಯಾದ. "ಕಾಮಚ್ಛಾಯಾಂ ಭವನಮಧುನಾ ಮದ್ವಿಯೋಗೇನ ನೂನಮ್" ಮೇಘಂ 2-17. 5. ಚಿಕ್ಕದಾದ, ಸಣ್ಣದಾದ. 6. ಶಕ್ತಿಕುಂದಿದ, ದುರ್ಬಲವಾದ.

**ಕಾರ ಕ್ವಾರ** (ಪುಂ) 1. ಲವಣ, ಉಪ್ಪು. ಕಾರ (ಸಂಚಲನೆ) ವಾ "ಣ:" (3-1-140) । 2. ಧೂತ, ಪಟಂಗ. 3. ಗಾಜು. 4. ಭಸ್ಮ, ಬೂದಿ. 5. ಲವಣರಸ. "ಕಾರೋ ರಸಾಂತರೇ ಧೂತೇ ಲವಣೇ ಕಾಚಭಸ್ಮನೋ: " ಮೇದಿಂ. 6. ಗುಡ, ಬೆಲ್ಲ. "ಕಾರ: ಕಾಚೇ ರಸೇ ಗುಡೇ । ಭಸ್ಮನಿ ಧೂತಲವಣೇ" ಹೇಮಂ । (ವಿಂ) 7. ಉಗ್ರವಾದ, ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ, ಕೊರೆಯುವ, ಕೋರೈಸುವ, ಸಹಿಸಲಾಗದ. "ಮಂದೇ ಗಂಧವಹ: ಕಾರೋ ವಹ್ನಿರಿನ್ದುಶ್ಚ ಜಾಯತೇ । ಚರ್ವಾ ಚಂದನಪಾತಶ್ಚ ಶಸ್ತ್ರಪಾತ: ಪ್ರವಾಸಿನಾಮ್" ಕಾವ್ಯಾಂ 2-104. 8 ಹರಿಯುವ, ಪ್ರವಹಿಸುವ. 9. ಸೋರುವ, ಜನುಗುವ,



**ಕಾರಕ ಕ್ಷಾರಕ** (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿಗಳ ಬೋನು. 2. ಮೀನು ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಬುಟ್ಟಿ. ಕರ (ಸಂಚಲನೆ) "ಫ್ವಲ್" (3-1-133). 3. ಹಕ್ಕಿಗಳನ್ನು ಹಿಡಿಯುವ ಬಲೆ. "ಕಾರಕ: ಪಕ್ಷಿಮತ್ಸ್ಯಾದಿಪಿಡಕೇ ಜಾಲಕೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ. 4. ರಸ, ಹಣ್ಣು ಕಾಯಿಗಳ ದ್ರವ. 5. ಮೊಗ್ಗು. "ಕಾರಕೋ ರಸೇ. ಕೋರಕೇ ಪಕ್ಷ್ಯಾದಿಪಾಶೇ" ಹೇಮಂ. 6. ರಜಕ, ಅಗಸ.

**ಕಾರಣ ಕ್ಷಾರಣ** (ನಂ) 1. ಸೋರಿಸುವುದು. ಕರ (ಸಂಚಲನೆ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ವ್ಯಭಿಚಾರದ ಅಪವಾದ.

**ಕಾರತ್ರಯ ಕ್ಷಾರತ್ರಯ** (ನಂ) ಬಿಳಿಗಾರ ಸೋಡಾಕಾರ್ಬೋನೇಟು ಖನಿಜ ಮತ್ತು ಪೆಟ್ರೋಲ್ಯುಮ್ (ಯವಕ್ಷಾರ) ಇವು ಕ್ಷಾರತ್ರಯ.

**ಕಾರವಶಕ ಕ್ಷಾರವಶಕ** (ನಂ) (1) ನುಗ್ಗೆ, (2) ಮೂಲಂಗಿ, (3) ಪಲಾಶ (ಮುತ್ತಂಗ), (4) ಜುಕ್ಕಿಕಾ (ಪುಲ್ಲಂಪುರಿಜೆ), (5) ಚಿತ್ರಕ (ಚಿತ್ರಮೂಲ), (6) ಆದ್ರ್ವಕ (ಹಸಿಶುಂಠಿ), (7) ನಿಂಬ (ಬೇವು), (8) ಇಕ್ಷು (ಕಬ್ಬು), (9) ಶೈವಿರಿಕ (ಉತ್ತರೇಣಿ), ಮತ್ತು (10) ಮೋಚಿಕಾ (ಕೀರೆ) ಇವು ಹತ್ತು (ಕ್ಷಾರದಶು) ಕ್ಷಾರದ್ರವ್ಯಗಳು.

**ಕಾರದೇಶ ಕ್ಷಾರದೇಶ** (ಪುಂ) ಲವಣಪ್ರಧಾನವಾದ ಮಣ್ಣಿನ ಭೂಮಿ. ಚೌಳುಮಣ್ಣಿನ ಭೂಮಿ. ಕಾರಪ್ರಧಾನೋದೇಶ:.

**ಕಾರದ್ರ ಕ್ಷಾರದ್ರ**, -ವೃಕ್ಷ-ವೃಕ್ಷ (ಪುಂ) ಘಂಟಾಪಾಟಲಿ ವೃಕ್ಷ, ಮೊಕ್ಕಮರ. ಕಾರಪ್ರಧಾನೋ ದ್ರು: ವೃಕ್ಷೋ ವಾ. ||

**ಕಾರನದೀ ಕ್ಷಾರನದೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನರಕದಲ್ಲಿರುವ ಉಪ್ಪು ನೀರಿನ ಒಂದು ನದಿ. ಕಾರಪ್ರಧಾನಾ ನದೀ.

**ಕಾರಪತ್ರ ಕ್ಷಾರಪತ್ರ** (ಪುಂ) ಚಕ್ಕೋತದ ಸೊಪ್ಪು. ಕಾರ: ಪತ್ರೇಽಸ್ಯ.

**ಕಾರಭೂಮಿ ಕ್ಷಾರಭೂಮಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಪ್ಪು ಮಣ್ಣಿನ ಭೂಮಿ, ಚೌಳುಮಣ್ಣಿನ ಭೂಮಿ, ಕರಳು ಭೂಮಿ. ಕಾರಯುಕ್ತಾ ಭೂಮಿ:.

**ಕಾರಮೃತ್ತಿಕಾ ಕ್ಷಾರಮೃತ್ತಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಪ್ಪು ಮಣ್ಣು, ಚೌಳುಮಣ್ಣು.

**ಕಾರಮೇಹ ಕ್ಷಾರಮೇಹ** (ಪುಂ) ಪಿತ್ತವಿಕಾರದಿಂದ ಉಂಟಾದ ಒಂದು ಮೂತ್ರ ರೋಗ.

**ಕಾರಮೇಹಿನ್ ಕ್ಷಾರಮೇಹಿನ್** (ವಿಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಮೂತ್ರ ರೋಗವುಳ್ಳವನು. "ಕಾರಮೇಹಿನ್ ತ್ರಿಫಲಾಕಷಾಯಂ ಪಾಯೇತ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ 11-9.

**ಕಾರಷಡ್ಕ ಕ್ಷಾರಷಟ್ಟಿ** (ನಂ) (1) ಅಪಾಮಾರ್ಗ (ಉತ್ತರೇಣಿ), (2) ಕುಟಜ (ಬೆಟ್ಟಮಲ್ಲಿಗೆ), (3) ಲಾಂಗಲಿ (ನೀರು ಹಿಪ್ಪಲಿ), (4) ತಿಲ ಮತ್ತು (5) ಮುಷ್ಯಕ (ಮೊಕ್ಕಮರ) ಇವು ಕ್ಷಾರಷಟ್ಟಿ.

**ಕಾರಸಮುದ್ರ ಕ್ಷಾರಸಮುದ್ರ** (ಪುಂ) ಉಪ್ಪುನೀರಿನ ಸಮುದ್ರ. ಕಾರಪ್ರಧಾನ: ಸಮುದ್ರ:.

**ಕಾರಸೂತ್ರ ಕ್ಷಾರಸೂತ್ರ** (ನಂ) ಮೂಲವ್ಯಾಧಿಯ ಚಿಕಿತ್ಸೆಗಾಗಿ ಮೂಲಕ್ಕೆ ಕಟ್ಟುವ ಒಂದು ದಾರ. ದಾರಕ್ಕೆ ಅರಿಸಿನದ ಪುಡಿಯನ್ನು ಸವರಿ ಕಳ್ಳಿಹಾಲಿನಲ್ಲಿ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅದ್ದಿ ಅದನ್ನು ಮೂಲಕ್ಕೆ ಕಟ್ಟಿದರೆ ಮೂಲವನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿ ಮೂಲವ್ಯಾಧಿಯನ್ನು ಗುಣಪಡಿಸುವುದು. "ಭಾವಿತಂ ರಜನೀಚ್ಛುಣ್: ಸ್ತುಹೀಕ್ಷೀರೇ ಪುನ: ಪುನ: | ಬಂಧನಾತ್ ಸುದೃಢಂ ಸೂತ್ರಂ ಭಿನ್ನತನ್ಯ-ಶೌಭಗಂದರಮ್" |

**ಕಾರಿಕಾ ಕ್ಷಾರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಸಿವು. ಕರ (ಸಂಚಲನೆ) "ಫ್ವಲ್" (3-1-133). "ಕ್ಷುತ್ ಕಾರಿಕಾ ಭೋಗಪಿಶಾಚಿಕಾ ಚ" ಹಾರಾಂ.

**ಕಾರಿತ ಕ್ಷಾರಿತ** (ವಿಂ) 1. ವೈಭಿಚಾರದ ಅಪವಾದದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ವೈಭಿಚಾರದ ದೋಷಕ್ಕೆ ಸಿಲುಕಿದವನು. ಕರ (ಸಂಚಲನೆ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102). 2. ಸೋರು ವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ತವಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಕಾರೋದ ಕ್ಷಾರೋದ** (ಪುಂ) ಲವಣಸಮುದ್ರ, ಉಪ್ಪು ಸಮುದ್ರ. ಕಾರ: ಉದಕೇಽಸ್ಯ ವಾ ಉದಾದೇಶ: (ವಾಂ 6-3-47). ಇದು ಸಪ್ತ ಸಮುದ್ರಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಕಾರೋದೇಕ್ಷುರಸೋದಸುರೋದಧತೋದಕ್ಷೀರೋದಧಧಿಮಂಜೋದಶುದೋದಾ: ಸಪ್ತಜಲಧಯ:" ಭಾಗಂ 4-1-33.

**ಕಾಲ ಕ್ಷಾಲ** (ಪುಂ) ತೊಳೆಯುವುದು, ಶುದ್ಧಿ ಮಾಡುವುದು. ಕಾಲ (ಶೌಚಕರ್ಮಣಿ) + ಣಿಕ್ "ಘ್" (3-3-18).

**ಕಾಲನ ಕ್ಷಾಲನ** (ನಂ) 1. ತೊಳೆಯುವುದು, ಶುದ್ಧಿ ಮಾಡುವುದು. ಕಾಲ (ಶೌಚಕರ್ಮಣಿ) + ಣಿಕ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). (ವಿಂ) 2. ತೊಳೆಯುವ, ಶುದ್ಧಿ ಮಾಡುವ. ಕಾಲ ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯು:" (3-1-134).

**ಕಾಲನೀಯ ಕ್ಷಾಲನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ತೊಳೆಯಲ್ಪಡುವ. 2. ತೊಳೆಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ತೊಳೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಕಾಲ (ಶೌಚಕರ್ಮಣಿ) + ಣಿಕ್ ಕರ್ಮಾದೌ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96). "ತವ್ಯ:" | ಕಾಲಯಿತವ್ಯ: ಕ್ಷಾಲಯಿತವ್ಯ:.

**ಕಾಲಯತ್ ಕ್ಷಾಲಯತ್** (ವಿಂ) ತೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ, ಶುದ್ಧಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಕಾಲ (ಶೌಚಕರ್ಮಣಿ) + ಣಿಕ್ "ಘತ್"



(೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ  
-ಯಂಶೀ.

ಕಾಲಯಿತ್ ಕ್ಷಾಲ್ಯಮಾನ್ (ವಿಂ) ತೋಳೆಯುಪ್ಪಟ್ಟು, ಶುದ್ಧಿಮಾಡ  
ಮಾಡುವ. ಕಾಲ (ಶೌಚಕರ್ಮಣಿ) + ಣಿಚ್ "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಯಿತ್ರಿ  
-ಯಿತ್ರಿ.

ಕಾಲಯಿತ್ ಕ್ಷಾಲ್ಯಮಾನ್ (ವಿಂ) ತೋಳೆಯುಪ್ಪಟ್ಟು, ಶುದ್ಧಿಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟು. ಕಾಲ (ಶೌಚಕರ್ಮಣಿ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।  
"ಮಲಿನಂ ರಣರೇಣುಭಿರ್ಮುಹುರ್ದಿಪತಾಂ ಕಾಲಯಿತ್ಮನಾಶ್ರುಭಿ:"  
ಮಾಘಂ ೧೬-೬೨।

ಕಾಲಯಿತ್ ಕ್ಷಾಲ್ಯಮಾನ್ (ವಿಂ) ತೋಳೆಯುಪ್ಪಟ್ಟು, ಶುದ್ಧಿಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟು. ಕಾಲ (ಶೌಚಕರ್ಮಣಿ) + ಣಿಚ್ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)।

ಕ್ಷಿ - ಕ್ಷಯೇ (ಭಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅಂತರ್ಮಾವಿತಪ್ಯಯಸ್ತು ಸಕಂ  
ಸೇಂ)। ಕ್ಷಯತಿ। ಚಿಕ್ಷಾಯಿ। ಕ್ಷೇತಾ। ಕ್ಷಯತಿ। ಕ್ಷಯತು।  
ಅಕ್ಷಯತ್। ಕ್ಷಯೇತ್। ಕ್ಷಯಾತ್। ಅಕ್ಷಯಿತ್। ಅಕ್ಷಯಿತ್ಯುತ್।  
ಕ್ಷಯಹಂಕಾರಂ, ಕ್ಷಯೇಸು, ಕಡಮೆಯಾಗುವ.

ಭಾವೇ:-ಕ್ಷಯೇತೆ। ಚಿಕ್ಷಯೇತೆ। ಕ್ಷಯಿತಾ, ಕ್ಷೇತಾ।  
ಕ್ಷಯಿಷ್ಯತೆ, ಕ್ಷಯೇತೆ। ಕ್ಷಯಿತಾಮ್। ಅಕ್ಷಯಿತು। ಕ್ಷಯೇತು।  
ಕ್ಷಯಿಷಿಷ್ಠ, ಕ್ಷಯಿಷಿಷ್ಠು। ಅಕ್ಷಯಿಷಿಷ್ಠು, ಅಕ್ಷಯಿಷಿಷ್ಠು.

ಣಿಚಿ:-ಕ್ಷಯಯತಿ, -ತೆ। ಕ್ಷಯಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಕ್ಷಯಯಿತಾ। ಕ್ಷಯಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೆ।  
ಕ್ಷಯಯತು, -ತಾಮ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕರ್ಮಣಿ:-ಕ್ಷಯಯತೆ। ಕ್ಷಯಯಾಂ -ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವೆ, -ಆಸೆ।  
ಕ್ಷಯಯಿತಾ, ಕ್ಷಯಯಿತಾ। ಕ್ಷಯಯಿಷ್ಯತೆ, ಕ್ಷಯಯಿಷ್ಯತೆ। ಕ್ಷಯಯ-  
ತಾಮ್। ಅಕ್ಷಯಯತು। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ:-ಚಿಕ್ಷಯಿಷತಿ। ಚಿಕ್ಷಯಿಷಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ,  
-ಆಸ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತು:-ಕ್ಷಯಯಮ್। ಕ್ಷಯಯಿಷಮ್। ಕ್ಷಯಯಮ್ (ಕ್ಷಯಯ-  
ಶಯಮ್)। ಕ್ಷಯಯಮ್ (ಕ್ಷಯಯಯಮ್)। ಕ್ಷಯಯಿಷ:। ಕ್ಷಯಯಿಷವಾನ್।  
(ಆದಿಕರ್ಮಣಿ ಕರ್ತರಿ ಕ್ತ: ಅಪ್ಯದರ್ಶೇ ದೀರ್ಘ:). ಭಾವಕರ್ಮಣೋಸ್ತು  
ಕ್ಷಯಯ: ಕಾಮೋ ಮಯಾ। ಆಕ್ರೋಶೇ ದೇವ್ಯೇ ಚ ವಾ ದೀರ್ಘ:। ಕ್ಷಯಯಿಷು-  
ರ್ಭವ ಕ್ಷಯಯಿಷುರ್ವಾ। ಕ್ಷಯಯಿಷಯ್ಯ ತಪಸ್ವೀ ಕ್ಷಯಯಿಷು ವಾ। ಕ್ಷಯಯನ್,  
ಕ್ಷಯಯಂತಿ। ಕ್ಷಯಯತುಮ್। ಕ್ಷಯಯಮ್। ಕ್ಷಯಯಿಷು। ಪ್ರಕ್ಷಯಯಿಷು.

ಕ್ಷಿ - ನಿವಾಸಗತಯೋ: (ತುಡಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ)।  
ಕ್ಷಯತಿ। ಚಿಕ್ಷಾಯಿ। ಕ್ಷೇತಾ। ಕ್ಷಯತಿ, ಕ್ಷಯತು। ಅಕ್ಷಯತ್।  
ಕ್ಷಯೇತ್। ಇತ್ಯಾದಿ. ಉಳಿದೆಲ್ಲ ರೂಪಗಳೂ ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯೇ)  
ಧಾತುವಿನ ರೂಪಗಳಂತಾಗುವುವು. 1. ವಾಸವಾಡು.  
2. ನಡೆ, ಸಂಚರಿಸು, ಚಲಿಸು.

ಕ್ಷಿ - ಹಿಸಾಯಾಮ್ (ಸ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ)। ಕ್ಷಿಣೋತಿ।  
ಚಿಕ್ಷಾಯಿ। ಕ್ಷೇತಾ। ಕ್ಷಯತಿ। ಕ್ಷಿಣೋತು। ಅಕ್ಷಿಣೋತ್।  
ಕ್ಷಿಣಯಾತ್। ಇತ್ಯಾದಿ. ಉಳಿದೆಲ್ಲ ರೂಪಗಳೂ ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯೇ)  
ಧಾತುವಿನ ರೂಪಗಳಂತಾಗುವುವು. ಹಿಂಸಿಸು, ಓಡಿಸು,  
ನೋಯಿಸು.

ಕ್ಷಿ ಕ್ಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಿವಾಸ, ವಾಸಸ್ಥಳ, ಮನೆ. 2. ಗಮನ,  
ಚಲನೆ, ಸಂಚಾರ. ಕ್ಷಿ (ನಿವಾಸಗತಯೋ:) "ಡಿ:" ಬಾಡುಂ।  
3. ಕ್ಷಯ, ಕಡಮೆಯಾಗುವುದು. ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯೇ) "ಡಿ:"।  
"ಕ್ಷಿಣಿನಿವಾಸೇ ಗತೌ ಕ್ಷಯೇ" ಮೇದಿಂ। 4. ಹಿಂಸೆ, ಓಡೆ,  
ನೋವು.

ಕ್ಷಿತ ಕ್ಷಿತ (ನಂ) 1. ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ಓಡಿಸುವುದು,  
ನೋಯಿಸುವುದು. ಕ್ಷಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:"  
(೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ನೋಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.  
ಕ್ಷಿ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। ಕ್ಷಿತ:  
ಕಾಮೋ ಮಯಾ। 3. ಕಡಮೆಯಾಗಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.  
ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯೇ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 5. ಕಡಮೆಯಾದ.  
ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯೇ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೧)।  
ಕ್ಷಿತಾಯುರ್ಭವ.

ಕ್ಷಿತ ಕ್ಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಭಿವಿ, ಭೂಮಿ. ಕ್ಷಿ (ನಿವಾಸೇ)  
"ಕ್ತಿಚ್" (೩-೩-೧೭೪)। "ಕ್ಷುಣ್ಣಾಸು ಕ್ಷಿತೀಷು ಕ್ಷಿಪನ್ನಿವ  
ಯಶ:ಕ್ಷೋಣಿಜಬಿಜವ್ರಜಮ್" ನೆಪಂ ೧೨-೬೬। "ಕ್ಷಿತೀ-  
ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಸಿಪಿ ಮುಖಾರವಿನ್ದೇವಧೂಜನಶ್ಚಂದ್ರಮಧ್ಯಾಕಾರ" ಮಾಘಂ  
೩-೫೨। 2. ನಿವಾಸ, ಮನೆ, ವಾಸಸ್ಥಳ. ಕ್ಷಿ (ನಿವಾಸೇ)  
ಅಧಿಂ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। 3. ಪ್ರಳಯಕಾಲ,  
ಜಗತ್ತಿನ ಕೊನೆಯಕಾಲ. 4. ಕ್ಷಯ, ಅವನತಿ, ಕಡಮೆ  
ಯಾಗುವುದು. "ಕ್ಷಿತಿನಿವಾಸೇ ಮೇದಿನ್ಯಾಂ ಕಾಲಭೇದೇ ಕ್ಷಯೇ  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ। 5. ಮನುಷ್ಯ. 6. ಕೆಂಪು ಬೂರುಗದ  
ಮರ. 7. ನಾಶ.

ಕ್ಷಿತಿಕಣ ಕ್ಷಿ ಕ್ಷಿ (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯ ಧೂಳು. "ವಾತಕೇತು:  
ಕ್ಷಿತಿಕಣ: ಸ್ಯಾತ್ ಪಾಶುರ್ಮೇದಿನೀದ್ರವ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಕ್ಷಿತಿಕಮ್ಪ ಕ್ಷಿ ಕ್ಷಿ (ಪುಂ) ಪರ್ವತಗಳ ಚಲನೆಯಿಂದ  
ಆಗುವ ಭೂಮಿಯ ನಡುಕ, ಭೂಕಂಪ, ಭೂಮಿಯು ಅಲು  
ಗಾಡುವುದು. ಕ್ಷಿತೀ: ಕಮ್ಪ:। ಭೂಮಿಯನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವ  
ಗಜಗಳು ಅದಿಶೇಷ ಕೂರ್ಮ ಇವುಗಳ ಚಲನೆಯಾದರೆ  
ಪರ್ವತಗಳು ಚಲಿಸಿ ಭೂಕಂಪವಾಗುವುದು. "ಮೇಘೇ ವೃಶ್ಚಿಕಮೇ  
ಗಜ: ಪ್ರವಲತಿ ವ್ಯಾಸಾದಿಭಿ: ಕಥ್ಯತೇ ವಾಪೇ ಮೀನಕುಲೀರಮೇ  
ಚ ವೃಷಮೇ ಸತ್ಯಂ ಚಲೇತ್ ಕಚ್ಛಪ:। ಯುಕ್ತೇ ಕುರ್ಮಭವೇ ಮೃಗೇಂದ್ರ-  
ಮಿಥುನೇ ಕನ್ಯಾಮೃಗೇ ಪನ್ನಗಸ್ತೇವಾಮೇಕತಮೋ ಯದಿ ಪ್ರವಲತಿ ಕ್ಷೋಣಿ



ತದಾ ಕಂಪತೆ" । ಕೂರ್ಮವೂ ಅದಿಶೇಷನೂ ಚಲಿಸಿದರೆ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಮರಣವುಂಟಾಗುವುದು. ಗಜಗಳು ಚಲಿಸಿದರೆ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗಳಲ್ಲೂ ಸಂಖ್ಯವುಂಟಾಗುವುದು. "ಕಚ್ಛಪೇ ಮರಣಂ ಜೇಯಂ ಮರಣಂ ಚಾಪಿ ಪತ್ರಗೇ । ಸರ್ವತ್ರ ಸುಖದಂ ಚೈವ ಪೃಥಿವ್ಯಾಂ ಚಲಿತೇ ಗಜೇ" । ತಿಂಗಳಿನ ಮೂರು, ನಾಲ್ಕು ಮತ್ತು ಐದನೆಯ ದಿನಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಪಕ್ಷದ ಮೂರು ಮತ್ತು ಐದನೆಯ ದಿನಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಭೂಕಂಪವು ಸಂಭವಿಸಿದರೆ ಪ್ರಧಾನನಾದ ದೊರೆಯ ನಾಶವಾಗುವುದು. "ತ್ರಿವಿಂಶತ್ಯುಪಚ್ಚಮದಿನೇ ಮಾಸೇ ಪಕ್ಷೇ ತ್ರಿಪಚ್ಚಕೇ । ಭವತಿ ಯದಾ ಭೂಕಂಪಃ ಪ್ರಧಾನನೃಪನಾಶನಂ ಕುರುತೆ" ಅದ್ಭುತಸಾಂ । "ಕ್ಷಿತಿಕೃದಿವ ಕ್ಷಿತಿಕಂಪಕೀರ್ಣ-ಶೃಂಗಃ" ಭೃಗುಂ ೪-೪೫ ।

**ಕ್ಷಿತಿಕೃತ್ ಕ್ಷಿತಿಕ್ಲೃತ್** (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯ ಒಡೆಯ, ರಾಜ, ದೊರೆ. ಕ್ಷಿತಿ ಕ್ಷಿಯತಿ — ಕ್ಷಿ (ನಿವಾಸಗತಿಯು) "ವಿವ್" (೩-೨-೭೬) । "ಕ್ಷಿತಿಕೃತೇವಾಸೌ ಕ್ಷಿತಿಕೃತ್" ಇತಿ ಭೃಗುಮಲ್ಲಃ ಇತಿ ಮಾಧವ್ಯಾಖ್ಯಾನೇ ಮಲ್ಲಿನಾಥಃ । "ಅಪದಾಂತರಂ ಚ ಪರಿತಃ ಕ್ಷಿತಿಕೃತಾಮೃತಾನ್ ದ್ರುತಭ್ರಮಿತಹೇಮನೇಮಯಃ" ಮಾಧಂ ೧೩-೪ ।

**ಕ್ಷಿತಿಕೋವ ಕ್ಷಿತಿಕ್ಲೋದ** (ಪುಂ) ಪಾಂಸು, ರಜಸ್ಸು, ಭೂಮಿಯ ಧೂಳು. ಕ್ಷಿತೆಃ ಕೋದಃ ।

**ಕ್ಷಿತಿಜ ಕ್ಷಿತಿಜ** (ಪುಂ) 1. ಅಂಗಾರಕ, ಕುಜಗ್ರಹ. 2. ನರಕಾಸುರ. 3. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. 4. ಭೂನಾಗ, ಮಣ್ಣುಹುಳು, ಎರುಬುಹುಳು. ಕ್ಷಿತೇಜಯತೆ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತಭಾವಿ) "ಜಃ" (೩-೨-೧೮) । (ನಂ) 5. ದಿಗಂತ, ಬಾನಿನ ಅಂಚು, ಭೂಮಿಯೂ ಆಕಾಶವೂ ಸೇರುವಂತೆ ಕಾಣುವ ರೇಖೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಜಾ —ಜಾ. 6. ಸೀತಾದೇವಿ, ಜಾನಕಿ. (ವಿಂ) 7. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

**ಕ್ಷಿತಿತಟ ಕ್ಷಿತಿತಟ** (ನಂ) ಭೂತಲ, ಭೂಮಿಯ ಮೇಲು ಮೈ, ಭೂಮಿಯ ಹೊರಮೈ. ಕ್ಷಿತೆಸ್ತಟಮ್ । "ಕ್ಷಿತಿತಟ-ಶಯನಾಂತಾದುತ್ಥಿತಂ ದಾನಪಚ್ಛಿಲ್ಲುತಬಹುಲಶರೀರಂ ಶಾಯಯತ್ಯೇಷ ಭೂಯಃ" ಮಾಧಂ ೧೧-೭ ।

**ಕ್ಷಿತಿತನಯ ಕ್ಷಿತಿತನಯ** (ಪುಂ) 1. ಕುಜಗ್ರಹ, ಅಂಗಾರಕ. 2. ನರಕಾಸುರ. ಕ್ಷಿತೆಸ್ತನಯಃ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ತನಯಾ —ತನಯಾ. 3. ಸೀತಾದೇವಿ. ಎವಂ —ಪುತ್ರಃ —ಕೃತ್ಯಃ, —ಸುತಃ —ಸುತಃ, —ಸುತುಃ —ಸೂನುಃ ಇತ್ಯಾದಿ. "ವ್ಯಕ್ತತ್ವಂ ನಿಯತಮನೇನ ನಿನ್ಯುರಸ್ಯಾಃ ಸಾಪತ್ಯಂ ಕ್ಷಿತಿಸುತವಿಧಿಷೌ ಮಹಿಷ್ಯಃ" ಮಾಧಂ ೮-೧೫ ।

**ಕ್ಷಿತಿತಲ ಕ್ಷಿತಿತಲ** (ನಂ) ಭೂಮಿಯ ಮೇಲುಮೈ, ಭೂಮಿಯ ಹೊರಮೈ. ಕ್ಷಿತೆಸ್ತಲಮ್ । "ಭೇಮಿಮವಾಪಯತ ಜನ್ಯಜನಸ್ತದನ್ಯಂ ಗಙ್ಗಾಮಿವ ಕ್ಷಿತಿತಲಂ ರಘುಂಶದೀಪಃ" ನೈಷಂ ೧೧-೧೫ ।

**ಕ್ಷಿತಿದೇವ ಕ್ಷಿತಿದೇವ** (ಪುಂ) ಭೂಸುರ, ಭೂದೇವ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಕ್ಷಿತೀ ದೇವ ಇವ ।

**ಕ್ಷಿತಿದರ ಕ್ಷಿತಿಧರ** (ಪುಂ) ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಕ್ಷಿತಿ ಧಾರಯತಿ — ಧೃ (ಧಾರಣೆ) + ಣಿಕ್ "ಖಕ್" (೩-೨-೪೬) । ಹ್ರಸ್ವಃ (೬-೪-೧೪) । "ಭುವನತಲಮಶೇಷಂ ಪ್ರತ್ಯವೇಕ್ಷಿಷ್ಯಮಾಣಃ ಕ್ಷಿತಿದರತಟಪಿಠಾದುತ್ಥಿತಃ ಸಪ್ತಸಪ್ತಿಃ" ಮಾಧಂ ೧೧-೪೮ ।

**ಕ್ಷಿತಿದೇನು ಕ್ಷಿತಿಧೇನು** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇನುವಿನಂತಿರುವ ಭೂಮಿ. ಕ್ಷಿತಿದೇನುರೀವ । "ರಾಜನ್ ದುಧುಕ್ಷಸಿ ಯದಿ ಕ್ಷಿತಿದೇನುಮೇನಾಂ ತೇನಾಽವತ್ಸಮಿವ ಲೋಕಮಮಂ ಪುಷಾಣ" ಭರ್ತುಂ ೨-೩೭ ।

**ಕ್ಷಿತಿನಾಥ ಕ್ಷಿತಿನಾಥ**, —ಪತಿ —ಪತಿ, —ಭರ್ತು —ಭರ್ತು (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯ ಒಡೆಯ, ರಾಜ, ದೊರೆ. ಕ್ಷಿತೆಃ ನಾಥಃ ಪತಿಃ ಭರ್ತಾ ವಾ । "ಪರಿಶಿಶಿಲಿಷುಃ ಕ್ಷಿತಿನಾಥೀನು ಕ್ಷಿತೀಶ್ವರಾಃ ಕುಲಿಶಾತ್ಪರೇಣ ಗಿರಯೋ ಗಿರೀನಿವ" ಮಾಧಂ ೧೩-೧೫ । "ಇದಂ ನಿಗದ್ಯ ಕ್ಷಿತಿನಾಥೀನಿ ಸ್ಥಿತೇ ತಯಾಭ್ಯಧಾಯಿ ಸ್ವಗತಂ ವಿದಗಧಯಾ" ನೈಷಂ ೯-೨೨ ।

**ಕ್ಷಿತಿಪ ಕ್ಷಿತಿಪ** (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವ ರಾಜ, ದೊರೆ. ಕ್ಷಿತಿ ಪಾತಿ — ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) । "ಕ್ಷಿತಿಪೇನ ತಾವದನಪೇಕ್ಷಿತಕ್ರಮಂ ಭುಜಪಚ್ಚರೇಣ ರಭಸಾದ-ಗೃಹ್ಯತ" ಮಾಧಂ ೧೩-೯ ।

**ಕ್ಷಿತಿಪಾಲ ಕ್ಷಿತಿಪಾಲ** (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯನ್ನು ಕಾಪಾಡುವ ರಾಜ, ದೊರೆ. ಕ್ಷಿತಿ ಪಾಲಯತಿ — ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಕ್ "ಅನ್" (೩-೨-೧) । "ಶಿಲೋಂಚಯೋಽಪಿ ಕ್ಷಿತಿಪಾಲಮುಚ್ಛೇಃ ಪ್ರೋತ್ಯಾ ತಮೇವಾರ್ಥಮಭಾಷತೇವ" ರಘುಂ ೨-೫೧ । "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । —ಪಾಲಕಃ —ಪಾಲಕಃ ।

**ಕ್ಷಿತಿಭುಜ ಕ್ಷಿತಿಭುಜ** (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಕ್ಷಿತಿ ಭುಜ್ಞತೆ — ಭುಜ (ಪಾಲನಾಭ್ಯವಹಾರಯಃ) "ವಿವ್" (೩-೨-೭೬) । "ಇತರಾನಪಿ ಕ್ಷಿತಿಭುಜೋಽನುಜನ್ಮನಃ ಪ್ರಮನಾಃ ಪ್ರಮೋದಪರಿಫುಲ-ಚಕ್ಷುಃ" ಮಾಧಂ ೧೩-೧೪ ।

**ಕ್ಷಿತಿಭೃತ್ ಕ್ಷಿತಿಭೃತ್** (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ಕ್ಷಿತಿ ವಿಭೃತಿ — ಭೃ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯಃ) "ವಿವ್" (೩-೨-೭೬) । "ದೃಷ್ಟೇರಿವ ಕ್ಷಿತಿಭೃತಾಂ ದ್ವಿರದೇರುದಾರ-ತಾರಾವಲಿವಿರಚನಂ ವ್ಯವೃತ್ತಿವಾಸಾಃ" ಮಾಧಂ ೫-೨೧ । 2. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. "ಅಮುನಾ ಧನೈಃ ಕ್ಷಿತಿಭೃತಾತಿಭೃತಾ ಸಮತೀತ್ಯ ಭಾತಿ ಜಗತೀ ಜಗತೀ" ಕಿರಾಂ ೫-೨೦ ।



ಕ್ಷಿತೀಹ್ ಕ್ಷಿತಿರುಹ್ (ಪುಂ) ವ್ಯುಕ್ತ, ಮರ. ಕ್ಷಿತೌ  
ರೋಹಿತಿ - ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡುರಭಿ ಚ) "ವಿವಪ್"  
(೩-೨-೭೬)। "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫)। -ರುಹ: -ರುಹಂ.  
"ತವ ಕಿತವ! ಕಿಮಾಹಿತೈವೈಥಾ ನ: ಕ್ಷಿತೀಹ್ಪಲ್ಲವಪುಷ್ಪ-  
ಕರ್ಣಪುರೈ:" ಮಾವಂ ೭-೫೪।

ಕ್ಷಿತೀವ್ಯುದಾಸ ಕ್ಷಿತಿವ್ಯುದಾಸ (ಪುಂ) ಭೂಗೃಹ, ಭೂಮಿ  
ಯೊಳಗಿನ ಗುಹೆ. ಕ್ಷಿತಿ ವ್ಯುದಸ್ಯತಿ - ವಿ + ಉದ್ + ಅಸು  
(ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಅಣ್" (೩-೨-೧)।

ಕ್ಷಿತೀಂದ್ರ ಕ್ಷಿತಿಂದ್ರ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಕ್ಷಿತೌ ಇಂದ್ರ  
ಇವ। -ಪಾಕಶಾಸನ: -ಪಾಕಶಾಸನಃ.

ಕ್ಷಿತೀಶ ಕ್ಷಿತಿಶ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಪರಮಾತ್ಮ. ಕ್ಷಿತೀಶೀಶ್ವರಃ  
ತದ್ಭಾರಾವತರಣಸಮರ್ಥೋ ಭವತಿ - ಇಶ (ಐಶ್ವರೈ) "ಕ:"  
(೩-೧-೧೩೫)। "ಭೂಭಾರವಲೇಶಹಾರೀ ಯ: ಕ್ಷಿತೀಶ: ಸ ಚ  
ಕುಪ್ಯತೇ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ:। "ದೇವಕೀನಂದನ: ಸಪ್ತಾ ಕ್ಷಿತೀಶ:  
ಪಾಪನಾಶನ:" ವಿಂ ಸಂ। 2. ಭೂಮಿಯ ಒಡೆಯ,  
ರಾಜ, ದೊರೆ. ಕ್ಷಿತೀಶ:। "ತತ: ಕ್ಷಿತೀಶ: ಸ ನಿಜಾಂ  
ತನುಜಾಂ ಮಧ್ಯೆ ಮಹಾರಾಜಕಮಾಜುಹಾವ" ನೈಷಂ ೧೦-೧೨।  
-ಇಶ್ವರ: -ಕೃತ್ಯುರಃ. "ಕೌಶಿಕೇನ ಸ ಕಿಲ ಕ್ಷಿತೀಶ್ವರೋ  
ರಾಮಮಧ್ವರವಿಧಾತಶಾಂತಯೇ" ರಘುಂ ೧೧-೧।

ಕ್ಷಿತೀದಿತಿ ಕ್ಷಿತಿದಿತಿ (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯ ಅದಿತಿ, ದೇವಕಿ.

ಕ್ಷಿಪ - ಪ್ರೇರಣೆ (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ)। ಕ್ಷಿಪ್ಯತಿ।  
ವಿಕ್ಷೇಪ। ಕ್ಷೇಪ್ತಾ। ಕ್ಷೇಪ್ಯತಿ। ಕ್ಷಿಪ್ಯತು। ಅಕ್ಷಿಪ್ಯತ್।  
ಕ್ಷಿಪ್ಯೇತ್। ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಎಸೆ, ಬಿಸಾಡು. 2. (ಬಾಣ  
ವನ್ನು) ಪ್ರಯೋಗಿಸು. "ವಾಣಂ ಲಕ್ಷ್ಮಣೋಽಕ್ಷಿಪ್ಯದಕ್ಷಿಪ-  
ದ್ರೋದ್ರಮಿन्द्रಜಿತ್" ಮಹಿಂ ೧೭-೪೩।

ಕರ್ಮಣಿ: -ಕ್ಷಿಪ್ಯತೇ। ವಿಕೃಪೇ। ಕ್ಷೇಪ್ತಾ। ಕ್ಷೇಪ್ಯತೇ।  
ಕ್ಷಿಪ್ಯತಾಮ್। ಅಕ್ಷಿಪ್ಯತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಯು: -ಕ್ಷೇಪ್ಯತುಮ್। ಕ್ಷೇಪಣೀಯಮ್। ಕ್ಷೇಪ್ಯ:। ಕ್ಷಿಪ್ತ:।  
ಕ್ಷಿಪ್ತವಾನ್। ಕ್ಷಿಪ್ಯನ್, ಕ್ಷಿಪ್ಯಂತಿ। ಕ್ಷೇಪ್ಯತುಮ್। ಕ್ಷಿಪ್ತಮ್।  
ಕ್ಷೇಪಣಮ್। ಕ್ಷಿಪ್ತವಾ। ಪ್ರಕ್ಷಿಪ್ಯ। [ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗ-  
ಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳಿಗೆ ತುದಾಂ  
ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) ಧಾತುವಿನಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಕ್ಷಿಪ - ಪ್ರೇರಣೆ (ತುದಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ)। ಕ್ಷಿಪತಿ,  
-ತೇ। ವಿಕೃಪ, ವಿಕೃಪೇ। ಕ್ಷೇಪ್ತಾ। ಕ್ಷೇಪ್ಯತಿ, -ತೇ।  
ಕ್ಷಿಪತು, -ತಾಮ್। ಅಕ್ಷಿಪತ್, ಅಕ್ಷಿಪತ। ಕ್ಷಿಪೇತ್, -ತ।  
ಕ್ಷಿಪ್ಯಾತ್, ಕ್ಷಿಪ್ಯಾಷಿಟ್। ಅಕ್ಷೇಪ್ಯಾತ್, ಅಕ್ಷೇಪ್ಯತ। ಅಕ್ಷೇಪ್ಯತ್,  
-ತ। 1. ಎಸೆ, ಬಿಸಾಡು. 2. ಕೆಳಗಿಳಿಸು, ಹೊರಡಿಸು.  
3. (ಬಾಣವನ್ನು) ಪ್ರಯೋಗಿಸು. "ಅಕ್ಷಿಪದ್ರೋದ್ರಮಿन्द्रಜಿತ್"

ಮಹಿಂ ೧೭-೪೩। 4. ಇಡು, ಇರಿಸು. 5. ತೆಗೆದು  
ಹಾಕು, ತಳ್ಳಿಹಾಕು. 6. ದೂರಿಸು. 7. ಹರಡು.  
8. ಕೊಲ್ಲು.

ಕರ್ಮಣಿ: -ಕ್ಷಿಪ್ಯತೇ। ಕ್ಷಿಪ್ಯತಾಮ್। ಅಕ್ಷಿಪ್ಯತ। ಕ್ಷಿಪೇತ್।  
ಅಕ್ಷೇಪಿ। ಉಳಿದ ರೂಪಗಳು ಕರ್ತೃಲಿಂಗದ ಅತ್ಯಂತ  
ಪದದ ರೂಪಗಳಂತಾಗುವವು.

ಣಿಚಿ: -ಕ್ಷೇಪಯತಿ, -ತೇ। ಕ್ಷೇಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕೇ,  
-ಚಭೂವ, -ಆಸ। ಕ್ಷೇಪಯಿತಾ। ಕ್ಷೇಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ।  
ಕ್ಷೇಪಯತು, -ತಾಮ್। ಅಕ್ಷೇಪಯತ್, -ತ। ಕ್ಷೇಪಯೇತ್, -ತ।  
ಕ್ಷೇಪ್ಯಾತ್, ಕ್ಷೇಪಯಿಷಿಟ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ: -ಚಿಕ್ಷಿಪ್ಸತಿ, -ತೇ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಯು: -ಕ್ಷೇಪ್ಯತುಮ್। ಕ್ಷೇಪಣೀಯಮ್। ಕ್ಷೇಪ್ಯ:। ಕ್ಷಿಪ್ತಮ್।  
ಕ್ಷಿಪ್ತವಾನ್। ಕ್ಷಿಪನ್, ಕ್ಷಿಪತಿ, ಕ್ಷಿಪಂತಿ। ಕ್ಷಿಪಮಾಣ:।  
ಕ್ಷೇಪ್ಯತುಮ್। ಕ್ಷಿಪ್ತಮ್। ಕ್ಷೇಪಣಮ್। ಕ್ಷಿಪ್ತವಾ। ನಿಕ್ಷಿಪ್ಯ।

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಅತಿ + ಕ್ಷಿಪ = ಅತಿಕ್ಷಿಪತಿ। ಅತಿಕ್ಷಿಪ್ತ:।  
ದೂರಕ್ಕೆ ತಳ್ಳು, ದೂರಕ್ಕೆ ಎಸೆ. ಅತಿಕ್ಷಿಪ್ತವೆಂಬುದು  
ಅಸ್ಥಿಭಂಗದ ಭೇದವಾದ ಆರು ವಿಧ ಸಂಧಿಮುಕ್ತಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು. ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಮೂಳೆಗಳು ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ  
ಕೀಲುಗಳು ಸಂಧಿಗಳು. ಅಥವಾದಿಗಳಿಂದ ಆ ಸಂಧಿಗಳ  
ಭಂಗವುಂಟಾದರೆ ಅದು "ಸಂಧಿಮುಕ್ತ" ವೆನಿಸುವುದು.  
ಇದು (1) ತಪ್ಪಿಷ್ಠಮ್, (2) ವಿಶ್ಲಿಷ್ಠಮ್, (3) ವಿವರ್ತಿಸಮ್,  
(4) ಅವಕ್ಷಿಪ್ತಮ್, (5) ಅತಿಕ್ಷಿಪ್ತಮ್ ಮತ್ತು (6) ತಿರ್ಯಕ್-  
ಕ್ಷಿಪ್ತಮ್ ಎಂದು ಆರು ವಿಧ. ಸುಶ್ರುತಂ ನಿಧಾನಂ ೧೫-೫।  
ಎರಡು ಮೂಳೆಗಳೂ ಸಂಧಿಭಂಗದಿಂದ ದೂರಕ್ಕೆ ಸರಿದು  
ಹೋಗುವುದು "ಅತಿಕ್ಷಿಪ್ತ" ವು. ಇದು ಬಹಳ  
ವೇದನೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದು. "ಅತಿಕ್ಷಿಪ್ತೇ ದ್ವಯೋಃ  
ಸಂಧ್ಯಸ್ಥನೋರತಿಕ್ರಾಂತತಾ ವೇದನಾ ಚ" ಸುಶ್ರುತಂ ನಿಧಾನಂ  
೧೫-೭।

(2) ಅಧಿ + ಕ್ಷಿಪ = ಅಧಿಕ್ಷಿಪತಿ। ಅಧಿಕ್ಷೇಪ:।  
ತಿರಸ್ಕರಿಸು. "ಭವಾದೃಶೇಷು ಪ್ರಮದಾಜನೋಚಿತಂ ಭವತ್ಯಧಿಕ್ಷೇಪ  
ಇವಾನುಶಾಸನಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೨೮।

(3) ಅವ + ಕ್ಷಿಪ = ಅವಕ್ಷಿಪತಿ। ಅವಕ್ಷೇಪಣಮ್।  
1. ಕೆಳಗೆ ಇರಿಸು. 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಎಸೆ. "ಉತ್ಕ್ಷೇಪಣಂ ತಥಾ-  
ವಕ್ಷೇಪಣಮಾಕುಚ್ಚನಂ ತಥಾ" ಭಾಷಾಪಂ। 3. ನಿಂದಿಸು,  
ದೂರಿಸು.

(4) ಆ + ಕ್ಷಿಪ = ಆಕ್ಷಿಪತಿ। ಆಕ್ಷೇಪ:। 1. ಆಕರ್ಷಿಸು,  
ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಎಳೆ. "ವದನಮಪಹರಂತಿ ತತ್ಕೃತಾಕ್ಷೇಪಮೀಶ:"



ಕುಮಾಂ ೭-೧೫। 2. ಹೆದರಿಸು. 3. ತಿರಸ್ಕರಿಸು. "ವಿರುದ್ಧಮಾಕ್ಷೇಪವಚಸ್ತಿತಿಸ್ಥಿತಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೪-೨೫। 4. ಇಡು, ಇರಿಸು. "ಗೋರೋಚನಾಕ್ಷೇಪನಿತಾಂತಗೌರೆ" ಕುಮಾಂ ೭-೧೫। 5. ಎಸೆ, ಬಿಸಾಡು. 6. ತೆಗೆದುಹಾಕು. "ತೇ ಜಗ್ಮುರದ್ರಿಪತಯಃ ಸರಸೀವಿಗಾಡುಮಾಕ್ಷಿಪ್ತಕೇತುಕುಶಸೇನಗಜ-ಚ್ಚಲೇನ" ಮಾಘಂ ೫-೩೧। ಇತ್ಯಾದಿ.

(5) ಪರಿ+ಆ+ಕ್ಷಿಪ = ಪರ್ಯಾಕ್ಷಿಪತಿ। ಪರ್ಯಾಕ್ಷಿಪತ್। ಬಂಧಿಸು. ಕಟ್ಟು. "ಪರ್ಯಾಕ್ಷಿಪತ್ಕಾಚಿದುದಾರಬಂಧಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೧೪।

(6) ಉದ್+ಕ್ಷಿಪ = ಉಕ್ಷಿಪತಿ। ಉಕ್ಷೇಪಃ। ಉಕ್ಷೇಪಣಮ್। 1. ಮೇಲೆ ಇಡು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಸೆ. "ಉಕ್ಷೇಪಣಂ ತಥಾವ ಕ್ಷೇಪಣಮಾಕುಚ್ಚನಂ ತಥಾ" ಭಾಷಾಪಂ। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರು. "ಬಿನ್ದುಕ್ಷೇಪಾನ್ ಪಿಪಾಸುಃ ಪರಿಸರತಿ ಶಿಖೀ ಭ್ರಾಂತಿಮದ್ವಾರಿ-ಯನ್ತ್ರಮ್" ಮಾಲಂ ೨-೧೨। 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ಹಿಡಿ. "ಉಕ್ಷಿಪ್ತಕಾಂಡಪಟಕಾಂತರಲೀಯಮಾನಮಂದಾ-ನಿಲಪ್ರಶಮಿತಶ್ರಮಧರ್ಮತೋಯಃ" ಮಾಘಂ ೫-೨೨।

(7) ನಿ + ಕ್ಷಿಪ = ನಿಕ್ಷಿಪತಿ। ನಿಕ್ಷೇಪಃ। ಇಡು, ಇರಿಸು. "ಅನ್ಯಂ ಭೂಮಿ ಇವಚ್ಚಂಡಾಲವಾಯಸೇಮ್ಯಶ್ಚ ನಿಕ್ಷಿಪೇತ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೧೦೩।

(8) ಪರಿ + ಕ್ಷಿಪ = ಪರಿಕ್ಷಿಪತಿ। ಪರಿಕ್ಷೇಪಃ। ಸುತ್ತಲೂ ಇಡು, ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡು. "ಗಜ್ಜಾಸ್ತೋತಃ ಪರಿಕ್ಷಿಪ್ತಂ ವಪ್ರಾಂತರ್ಜ್ವಲಿತೌಷಧಿ" ಕುಮಾಂ ೬-೩೮।

(9) ಪ್ರ+ಕ್ಷಿಪ = ಪ್ರಕ್ಷಿಪತಿ। ಪ್ರಕ್ಷೇಪಃ। 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಇಡು, ಸರಿಯಾಗಿ ಇರಿಸು. 2. ಎಸೆ, ಬಿಸಾಡು. "ನಾಮೇಧ್ಯಂ ಪ್ರಕ್ಷಿಪೇದಗ್ನಿ ನ ಚ ಪಾದಿ ಪ್ರತಾಪಯೇತ್" ಮನುಂ ೪-೫೩। 3. ಒಳಸೇರಿಸು, ಗ್ರಂಥದಲ್ಲಿ ಹೊಸದಾಗಿ ವಿಷಯವನ್ನು ಸೇರಿಸು.

(10) ಪ್ರತಿ + ಕ್ಷಿಪ = ಪ್ರತಿಕ್ಷಿಪತಿ। ಪ್ರತಿಕ್ಷೇಪಃ। 1. ತಡೆ, ಪ್ರತಿರೋಧಿಸು, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸು. "ಅಂತಃ ಸಿರಾಣಾಂ ಇವಸನಃ ಸ್ಥಿತೋ ದೃಷ್ಟಿ ಪ್ರತಿಕ್ಷಿಪನ್" ಸುಶ್ರುತಂ। 2. ಅಧಿಕ್ಷೇಪ ಮಾಡು, ತಿರಸ್ಕರಿಸು. 3. ನಿವಾರಿಸು, ಹೋಗಲಾಡಿಸು.

(11) ವಿ+ಕ್ಷಿಪ = ವಿಕ್ಷಿಪತಿ। ವಿಕ್ಷೇಪಃ। 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಎಸೆ, ಬಿಸಾಡು. "ವಿಕ್ಷಿಪ್ಯಮಾಣಾ ಧನುಷಾ ನರೇಂದ್ರಾಃ" ಭಾಂ। 2. ಕದಲು, ಬೇರೆ ಕಡೆಗೆ ಚಲಿಸು. (ಯೋಗಕ್ಕೆ ಅಡ್ಡಿ ಮಾಡುವ ಚಿತ್ತಚಾಂಚಲ್ಯರೂಪವಾದ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ) "ಲಯೇ ಸಂಬೋಧಯೇತ್ ಚಿತ್ತಂ ವಿಕ್ಷಿಪ್ತಂ ಶಮಯೇತ್ ಪುನಃ"।

(12) ಸಮ್+ಕ್ಷಿಪ = ಸಂಕ್ಷಿಪತಿ। ಸಂಕ್ಷೇಪಃ। ಸಂಗ್ರಹಿಸು, ವಿಸ್ತಾರವಾದುದನ್ನು ಚಿಕ್ಕದಾಗಿ ಮಾಡು. "ಆತಪಾತ್ಯಯ-ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತನಿವಾರಾಸು ನಿಷಾದಿಭಿಃ" ರಘುಂ ೧-೫೨।

ಕ್ಷಿಪ ಕ್ಷಿಪ (ವಿಂ) 1. ಎಸೆಯುವವನು, ಬಿಸಾಡುವವನು. ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫)। 2. ಇಡುವವನು, ಇರಿಸುವವನು.

ಕ್ಷಿಪಕ ಕ್ಷಿಪಕ (ಪುಂ) 1. ಬಿಲ್ಲುಗಾರ, ಬಾಣವನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸುವವನು. (ವಿಂ) 2. ಇಡುವವನು, ಇರಿಸುವವನು. ಕ್ಷಿಪ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ" (೫-೩-೭೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಠಾಪ್" (೪-೧-೪)। ಅಸ್ಯ ನೇತ್ವಮ್ (ವಾಂ ೭-೩-೪೫)। ಕ್ಷಿಪಕಾ ಕ್ಷಿಪಕಾ.

ಕ್ಷಿಪಣ ಕ್ಷಿಪಣ (ನಂ) 1. ಇಡುವುದು, ಇರಿಸುವುದು. ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಕಯಃ" ವಾಹುಂ। (ವಿಂ) 2. ಎಸೆಯುವವನು, ಬಿಸಾಡುವವನು.

ಕ್ಷಿಪಣಿ ಕ್ಷಿಪಣಿ (ಪುಂ) 1. ಅಸ್ತ್ರ, ಆಯುಧ. ಕ್ಷಿಪ್ಯತೇ — ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) ಕರ್ಮಂ "ಅನಿಃ" (೩ಂ ೨-೧೦೭)। ಸ ಚ ಕಿತ್। ಕಿತ್ವಾನ್ ಗುಣಃ। 2. ವೇಗವಾಗಿ ಓಡುವ ಕುದುರೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ನಾಗಾಲೋಟ. 3. ಬಲೆ. 4. ಮೀನಿನ ಬಲೆ. 5. ಅಧ್ವಯುಕ್ತ, ಯಜುರ್ವೇದದ ಮಂತ್ರವನ್ನು ಹೇಳುವ ಯುಕ್ತಿಕ್ಕು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 6. ನೌಕಾ ದಂಡ. ಹಡಗನ್ನು ನಡೆಸುವ ಗಡೆ (ಜಲ್ಲೆ). ಕ್ಷಿಪ ಕರಂ "ಅನಿಃ" ವಾ "ಡೀಪ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫)। -ಣಿ -ಣೀ.

ಕ್ಷಿಪಣು ಕ್ಷಿಪಣು (ಪುಂ) 1. ವಾತ, ಗಾಳಿ. ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಅನುಜ್" (೩ಂ ೩-೫೨)। "ಕ್ಷಿಪಣುರ್ವತಿಃ" ತಣಾಂ। "ಖರ್ವಾಸಃ ಕ್ಷಿಪಣುರ್ಬಲಿಧ್ವಜಃ ಸರಯುರಜ್ಞತಿಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 2. ಅಸ್ತ್ರ, ಆಯುಧ. 3. ವ್ಯಾಧಿ, ಬೇಡರವನು.

ಕ್ಷಿಪಣ್ಯು ಕ್ಷಿಪಣ್ಯು (ಪುಂ) 1. ವಸಂತಯುತು. ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಕನ್ಯುಚ್" (೩ಂ ೩-೫೧)। "ಕ್ಷಿಪಣ್ಯುರ್ವಸಂತಃ" ಇತ್ಯು-ಜ್ಜವಲದತ್ತಃ। 2. ಶರೀರ, ಮೈ. 3. ವಾಸನಾದ್ರವ್ಯ. (ವಿಂ) 4. ಸುವಾಸನೆಯುಳ್ಳ, ಪರಿಮಳವುಳ್ಳ. "ಕ್ಷಿಪಣ್ಯುಸ್ತು ಪುಮಾನ್ ದೇಹೇ ಸುರಭಿ ವಾಚ್ಯಲಿಙ್ಗಕಃ" ಮೇದಿಂ।

ಕ್ಷಿಪತ್ ಕ್ಷಿಪತ್ (ವಿಂ) 1. ಎಸೆಯುತ್ತಿರುವ, ಬಿಸಾಡುತ್ತಿರುವ. ಎರಚುತ್ತಿರುವ. ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಸವಿಕ್ರಮಕ್ರಮಣಚಲೈರತಸ್ತತಃ ಪ್ರಕೀರ್ಣಕೈಃ ಕ್ಷಿಪತ ಇವ ಕ್ಷಿತೇ ರಜಃ" ಮಾಘಂ ೧೭-೩೬। 2. ಇಡುತ್ತಿರುವ, ಇರಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಕ್ಷುಣಾಸು ಕ್ಷಿತಿಷು ಕ್ಷಿಪನ್ನಿವ ಯಶಃಕ್ಷೋಣಿಜಬಿಜವ್ರಜಮ್" ನೈಷಂ ೧೨-೬೬। 3. (ಬಾಣವನ್ನು) ಪ್ರಯೋಗಿಸುತ್ತಿರುವ, - ಬಿಡುತ್ತಿರುವ. "ಇತಿವ ಚಾಪಂ ದಧದಾಶುಗಂ ಕ್ಷಿಪನ್ನಯಂ ನಯಂ ಸಮ್ಯಗುಪಾದಿಶದ್ವಿಷಾಮ್" ನೈಷಂ ೧೨-೩೪। 4. ಹರಡುತ್ತಿರುವ. 5. ತೆಗೆದುಹಾಕು



ತ್ತಿರುವ, ತಳ್ಳಿಹಾಕುತ್ತಿರುವ. "ನಾಭ್ಯಂ ಪಯಃ ಕೇಚಿದತಾರಿಷುಭುಜೈಃ ಕ್ಷಿಪದ್ವಿರ್ಮಿನಿಪರೇರಿವೋಮಿಮಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೭೬ | 6. ದೂಷಿಸುತ್ತಿರುವ. 7. ಕೊಲ್ಲುತ್ತಿರುವ. 8. ಹೊರಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೬) | ಕ್ಷಿಪತಿ, ಕ್ಷಿಪಂತಿ ಕ್ಷಿಪತಿ, ಕ್ಷಿಪಂತಿ. "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಕ್ಷಿಪಮಾಣಃ ಕ್ಷಿಪಮಾಣಃ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪) | -ಮಾಣಾ -ಮಾಣಾ.

ಕ್ಷಿಪತಿ ಕ್ಷಿಪತಿ (ಪುಂ) ಬಾಹು, ತೋಳು.

ಕ್ಷಿಪಾ ಕ್ಷಿಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಇಡುವುದು, ಇರಿಸುವುದು. 2. ಎಸೆಯುವುದು. ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಅಡ್" (೩-೩-೧೦೪) |

ಕ್ಷಿಪ್ತ ಕ್ಷಿಪ್ತ (ನಂ) 1. ಎಸೆಯುವುದು, ಬಿಸಾಡುವುದು. 2. ಇಡುವುದು, ಇರಿಸುವುದು. 3. (ಬಾಣವನ್ನು) ಪ್ರಯೋಗಿಸುವುದು. 4. ಹರಡುವುದು. 5. ತಳ್ಳಿಹಾಕುವುದು. 6. ದೂಷಿಸುವುದು. 7. ಕೊಲ್ಲುವುದು. 8. ಹೊರಡಿಸುವುದು. ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) | (ವಿಂ) 9. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟು, ಬಿಸಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. "ವಿಸ್ಮೇರತಾಮಾಪುರವಿಸ್ಮರಂತಃ ಕ್ಷಿಪ್ತಂ ಮಿಥಃ ಕನ್ದುಕಮಿಂದುಮುಖ್ಯಃ" ನೈಷಂ ೬-೪೨ | 10. ತೆಗೆದುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು, ತಳ್ಳಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು. ಕ್ಷಿಪ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಕ್ಷಿಪ್ತಾ ಇವೇಂದೋಃ ಸ ಉಚೋಽಭಿವೇಲಂ ಮುಕ್ತಾವಲೀರಾಕಲಯಾಂಚಕಾರ" ಮಾಘಂ ೩-೭೩ | 11. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ಕ್ಷಿಪ್ತಂ ಪುರೋ ನ ಜಗೃಹೇ ಮುಹುರೀಕ್ಷುಕಾಣ್ಡಂ ನಾಪೇಕ್ಷತೇ ಸ್ಮ ನಿಕಟೋಪಗತಾಂ ಕರಣುಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೪೦ | 12. ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟು. "ಕ್ಷಿಪ್ತಂ ಸಮೀರೈಃ ಸರಿತಾಂ ಪುರಃ ಪತಜ್ಜಲಾನ್ಯನೈಷಿಧ್ರಜ ಏವ ಪಕ್ವತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೨-೪೮ | 13. ನಿಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ದೂಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 14. ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟು. "ಕೇಸರೀ ನಿಷ್ಕುರಕ್ಷಿಪ್ತಮೃಗಪೂಗೋ ಮೃಗಾಧಿಪಃ" ಮಾಘಂ ೨-೪೩ | 15. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ತಿರಸ್ಕೃತಾ ವಿಪ್ರಲಬ್ಧಾಃ ಶಪ್ತಾಃ ಕ್ಷಿಪ್ತಾ ಹತಾ ಅಪಿ" ಭಾಗಂ ೨-೧೮-೪೮ | 16. ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 17. ಚಂಚಲವಾದ (ಮನಸ್ಸು). 18. ವಾಯುರೋಗದಿಂದ ಪೀಡಿತನಾದ. 19. ಕೆಳಗೆ ಬಿದ್ದಿರುವ. ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" | "ಕ್ಷಿಪ್ತಮಾಯತಮದರ್ಶಯದುವ್ಯಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೦-೭೭ |

ಕ್ಷಿಪ್ತಕುಕ್ಕುರ ಕ್ಷಿಪ್ತಕುಕ್ಕುರ (ಪುಂ) ಹುಚ್ಚುನಾಯಿ.

ಕ್ಷಿಪ್ತಚಿತ್ತ ಕ್ಷಿಪ್ತಚಿತ್ತ (ವಿಂ) ಚಂಚಲವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಚಿತ್ತಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯವಿಲ್ಲದ. ಕ್ಷಿಪ್ತಂ ಚಿತ್ತಂ ಯಸ್ಯ |

ಕ್ಷಿಪ್ತಯೋನಿ ಕ್ಷಿಪ್ತಯೋನಿ (ವಿಂ) ಹೇಯವಾದ ಜನ್ಮವುಳ್ಳವನು, ತುಚ್ಛವಾದ ಜನ್ಮತಾಳಿದವನು, ಪತ್ತಿಯ

ಅಧೀನದಲ್ಲಿಲ್ಲದ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಕ್ಷಿಪ್ತಾ ನಿಂದಿತಾ ಯೋನಿಯಸ್ಯ |

ಕ್ಷಿಪ್ತವತ್ ಕ್ಷಿಪ್ತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಸೆದವನು. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಬಿಸಾಡಿದವನು. ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತವತ್" (೩-೨-೧೦೨) | "ಹಸ್ತೇನಾಘ್ರೇ ವೀತಭೀತಿ ಗೃಹೀತ್ವಾ ಕಂಚಿ-ದ್ವಾಳಃ ಕ್ಷಿಪ್ತವಾನ್ಮುಖಮುಚ್ಚೇ" ಮಾಘಂ ೧೮-೪೮ | 2. ಇಟ್ಟವನು, ಇರಿಸಿದವನು. 3. ಹರಡಿದವನು. 4. ನಿಂದಿಸಿದವನು. 5. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಿದವನು. 6. ಹೊರಡಿಸಿದವನು, ಕಳುಹಿಸಿದವನು. 7. ಕೊಂದವನು. 8. ತಳ್ಳಿಹಾಕಿದವನು.

ಕ್ಷಿಪ್ತಾ ಕ್ಷಿಪ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾತ್ರಿ.

ಕ್ಷಿಪ್ತಿ ಕ್ಷಿಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಇಡುವುದು, ಇರಿಸುವುದು. ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪) | 2. ಹೊರಡಿಸುವುದು, ಕಳುಹಿಸುವುದು. 3. ಎಸೆಯುವುದು, ಎರಚುವುದು, ಬಿಸಾಡುವುದು. 4. ತೆಗೆದುಹಾಕುವುದು, ತಳ್ಳಿಹಾಕುವುದು. 5. ನಿಂದಿಸುವುದು. 6. ಹರಡುವುದು. 7. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸುವುದು. 8. (ನಾಟಕದಲ್ಲಿ) ರಹಸ್ಯವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವುದು. "ರಹಸ್ಯಾರ್ಥಸ್ಯ ತ್ವದ್ಭೇದಃ ಕ್ಷಿಪ್ತಿಃ ಸ್ಯಾತ್" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೯ | "ಏಕಸ್ಯ ತಾವತ್ಪಾಕೋಽಯಂ ದಾರುಣೋ ಭುವಿ ವರ್ತತೇ | ಕೇಶಗ್ರಹೇ ದ್ವಿತೀಯೇಸ್ಮಿನ್ ನೂನಂ ನಿಃಶೇಷಿತಾಃ ಪ್ರಜಾಃ" ವೇಣೀಂ ೩-೧೪ | 9. ಸಮಸ್ಯೆಯನ್ನು ಪೂರ್ತಿಮಾಡುವುದು. 10. ಕೊಲ್ಲುವುದು.

ಕ್ಷಿಪ್ತು ಕ್ಷಿಪ್ತು (ವಿಂ) 1. ಎಸೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದ. 2. ಇಡುವ ಸ್ವಭಾವದ. 3. ತಳ್ಳುವ ಸ್ವಭಾವದ. 4. ನಿಂದಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ. 5. (ಬಾಣವನ್ನು) ಪ್ರಯೋಗಿಸುವ. ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) ತಚ್ಛಿಲಾದಿಷು "ಕ್ತುಃ" (೩-೨-೧೪೦) | "ಕ್ಷಿಪ್ತು-ರೇನಮೃಜುಮಾಶು ಸಪಕ್ಷಂ ಸಾಯಕಂ ಧನುರೀವಾಜನಿ ವಕ್ರಃ" ನೈಷಂ ೪-೧೦೨ | 6. ಕೊಲ್ಲುವ ಸ್ವಭಾವದ. "ತವ ಸರ್ವಗತಸ್ಯ ಸಂಪ್ರತಿ ಕ್ಷಿತಿಪಃ ಕ್ಷಿಪ್ತುರಮಿಶುಮಾನಿವ" ಮಾಘಂ ೧೬-೪೦ | 7. ತಿರಸ್ಕರಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ. "ನಿರಾಕರಿಣುಃ ಕ್ಷಿಪ್ತುಃ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ |

ಕ್ಷಿಪ್ಯತ್ ಕ್ಷಿಪ್ಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಎಸೆಯುತ್ತಿರುವ. 2. ಇಡುತ್ತಿರುವ. 3. ನಿಂದಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಹರಡುತ್ತಿರುವ. 5. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಕ್ತುಃ" (೩-೨-೧೨೪) | 6. ಕೊಲ್ಲುತ್ತಿರುವ. 7. ತೆಗೆದುಹಾಕುತ್ತಿರುವ, ತಳ್ಳಿಹಾಕುತ್ತಿರುವ. 8. ಹೊರಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ನೂಕುತ್ತಿರುವ.



**ಕ್ಷಿಪ್ಯಮಾಣ ಕ್ಷ್ವಪ್ಯಮಾಣ** (ವಿಂ) 1. ಎಸೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಬಿಸಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) ಕರ್ಮಂ “ಶಾನಕ್” (3-2-124)। 2. ತಳ್ಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಕಡೆವಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. “ಜಗ್ಮತು: ಪೃಥುಕಭಾವವಿಹಾರಕ್ಷಿಪ್ಯಮಾಣಯಮಲಾರ್ಜುನ-ಕಕ್ಷ್ಯಾಮ್” ಯಾದಂ 21-34।

**ಕ್ಷಿಪ್ರ ಕ್ಷ್ವಪ್ಯ** (ನಂ) 1. ಬೇಗ, ಜಾಗ್ರತೆ, ಶೀಘ್ರ. ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) “ರಕ್” (3-2-13)। 2. ಕ್ಷಿಪ್ರಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ, ಅಶ್ವಿನಿ, ಹಸ್ತ ಮತ್ತು ಪುಷ್ಯ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು. “ಕ್ಷಿಪ್ರ ದತ್ತರವೀಜ್ಯಮ್” ಕಾಲಾಂ 4। ವ್ಯಾಪಾರ ಶಿಲ್ಪಕಾರ್ಯ ಔಷಧ ಯಾನ ಮೊದಲಾದ ಕ್ಷಿಪ್ರಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಕ್ಷಿಪ್ರ ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಆರಂಭಿಸಬೇಕು. 3. ಸಕ್ಕಿ ಸಂಬಂಧವಾದ ಹಸೊಂದು ಮರ್ಮಗಳಲ್ಲೊಂದು. “ತತ್ರ ಸಕ್ವಿಮಮಾಣಿ ಕ್ಷಿಪ್ರತಲಹೃದಯಕುರ್ವಕುರ್ವಶಿರೋಗುಲ್ಫೇಂದ್ರವಸ್ತಿಜಾನ್ವಾಪ್ಯುಲೋಹಿತಾಕ್ಷಾಣಿ ವಿಟಪಂ ಚೇತಿ” ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ 6-6। ಕಾಲಿನ ಹೆಬ್ಬೆರಳುಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಈ ಕ್ಷಿಪ್ರಮರ್ಮವಿರುವುದು. ಈ ಮರ್ಮಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಏಟುಬಿದ್ದರೆ ಅಕ್ಷೇಪಕ (ವಾತ) ವ್ಯಾಧಿಯು ಬಂದು ಮರಣ ಸಂಭವಿಸುವುದು. “ತತ್ರ ಪಾದಸ್ಯಾಡ್ಗುಲಾಡ್ಗುಲಯೋರ್ಮಧ್ಯೆ ಕ್ಷಿಪ್ರನಾಮ ಮರ್ಮ ತತ್ರ ವಿಡ್ವಸ್ಯಾ-ಕ್ಷೇಪಕೇಣ ಮರಣಮ್” ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ 6-24। (ವಿಂ) 4. ಶೀಘ್ರವಾದ, ವೇಗವಾದ. ಬೇಗ ಹೋಗುವ. “ಮಹಾರಥ: ಪುಷ್ಯರಥಂ ರಥಾಕ್ಷಿ ಕ್ಷಿಪ್ರಂ ಕ್ಷಪಾನಾಥ ಇವಾಧಿರೂಢ:” ಮಾಘಂ 3-22।

**ಕ್ಷಿಪ್ರಕಾರಿನ್ ಕ್ಷ್ವಪ್ಯಕಾರಿನ್** (ವಿಂ) ಬೇಗ ಕೆಲಸಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಕ್ಷಿಪ್ರಂ ಕರೋತಿ—ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣ) “ಗಿರಿ:” (3-2-96)। “ಇತಿ ನರಪತಿರಸ್ತ್ರಂ ಯದಾವಿಶ್ವಕಾರ ಪ್ರಕುಪಿತ ಇವ ರೋಗ: ಕ್ಷಿಪ್ರಕಾರಿ ವಿಕಾರಮ್” ಮಾಘಂ 20-96। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡಿಪ್” (4-1-5)। —ಕಾರಿಣಿ—ಕಾರಿಣೀ.

**ಕ್ಷಿಪ್ರನಿಶ್ಚಯ ಕ್ಷ್ವಪ್ಯನಿಶ್ಚಯ** (ವಿಂ) ಕರ್ತವ್ಯಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಬೇಗ ಒಂದು ನಿರ್ಣಯಕ್ಕೆ ಬರುವವನು. “ಆಯತ್ಯಾ ಗುಣದೋಷಜ್ಞ: ತದಾತ್ವೇ ಕ್ಷಿಪ್ರನಿಶ್ಚಯ:। ಅತೀತೇ ಕಾರ್ಯಶೇಷಜ್ಞ: ಶತ್ರುಭಿರ್ನಾಭಿಭೂಯತೇ” ಮನುಂ 6-199।

**ಕ್ಷಿಪ್ರಹೋಮ ಕ್ಷ್ವಪ್ಯಹೋಮ** (ಪುಂ) ಸಾಯಂಕಾಲ ಮತ್ತು ಪ್ರಾತಃಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡತಕ್ಕ ಹೋಮ. ಕ್ಷಿಪ್ರಂ ಹೃಯತೇ—ಹೃ (ದಾನಾದನಯೋ:) “ಮನ್” (3-1-140)। ಹೋಮಗಳು ಕ್ಷಿಪ್ರಹೋಮ ಮತ್ತು ತಂತ್ರಹೋಮಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಮತ್ತು ಸಾಯಂಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಬೇಗ ಮಾಡಿ ಮುಗಿಸುವುದು ಕ್ಷಿಪ್ರಹೋಮ. ಪರಿಸಮೂಹ ನಾದಿ ಅಂಗಗಳಿಂದ ವಿಸ್ತಾರವಾದುದು ತಂತ್ರಹೋಮ.

**ಕ್ಷಿಯಾ ಕ್ಷ್ವಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಾಶ. 2. ಕಡಮೆಯಾಗುವುದು. 3. ಧರ್ಮದ ವ್ಯತಿಕ್ರಮ, ಧರ್ಮಮಾರ್ಗವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ನಡೆಯುವುದು. ಕ್ಷೀಪ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಅಙ್” (3-3-104)।

**ಕ್ಷಿವು—ನಿರಸನೆ** (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಕ್ಷೇವತಿ। ಚಿಕ್ಷೇವ। ಕ್ಷೇವಿತಾ। 1. ಉಗುಳು, ಬಾಯಿಂದ ಹೊರಡಿಸು. 2. ಪಾಂತಿಮಾಡು.

**ಕ್ಷೀಜ—ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ** (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ)। ಕ್ಷೀಜತಿ। ಚಿಕ್ಷೀಜ। ಅಕ್ಷೀಜತ್। ಅಸೃಷ್ಟವಾಗಿ ಶಬ್ದಮಾಡು.

**ಭಾವೆ :—**ಕ್ಷೀಜ್ಯತೇ। ಚಿಕ್ಷೀಜೇ। ಕ್ಷೀಜಿತಾ। ಕ್ಷೀಜಿಷ್ಯತೇ। ಕ್ಷೀಜ್ಯತಾಮ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಗಿಚಿ :—**ಕ್ಷೀಜಯತಿ, -ತೇ। ಕ್ಷೀಜಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಕ್ಷೀಜಯಿತಾ। ಕ್ಷೀಜಯತು, -ತಾಮ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕ್ಷೀಜನ ಕ್ಷ್ವೇಜನ** (ನಂ) ಬಿದಿರುಮೆಳೆಯ ಶಬ್ದ, ಬಿದಿರಿ ನೊಳಗೆ ಗಾಳಿಯು ತುಂಬಿ ಹೊರಡುವ ಶಬ್ದ. ಕ್ಷೀಜ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) “ಲ್ಯುಡ್” (3-3-115)। “ಪ್ರವಾಣ: ಪ್ರವಣಸ್ತನ್ತ್ಯಾ: ಮರ್ದಲಸ್ಯ ತು ಗುಂದಲ:। ಕ್ಷೀಜನಂ ತು ಕೀಚ-ಕಾನಾಮ್” ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

**ಕ್ಷೀಣ ಕ್ಷ್ವೇಣ** (ವಿಂ) 1. ಕಡಮೆಯಾದ. 2. ದುರ್ಬಲವಾದ, ಬಡಕಲಾದ. 3. ನಾಶಹೊಂದಿದ. ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯ) “ಕ್ತ:” (3-4-92)। ದೀರ್ಘ: (6-4-60)। ನಿಷ್ಠಾತಸ್ಯ ನತ್ವಮ್ (6-2-46)। “ತೇ ತಂ ಭುಕ್ತ್ವಾ ಸ್ವರ್ಗಲೋಕಂ ವಿಶಾಲಂ ಕ್ಷೀಣೇ ಪುಣ್ಯೇ ಮರ್ತ್ಯಲೋಕಂ ವಿಶಂತಿ” ಗೀತಾ 9-21। 4. ಅವನತಿ ಹೊಂದಿದ, ಕ್ಷಯಹೊಂದಿದ. “ವಾರೆಂಕಸ್ಯ ಸುದು:ಖದ: ಕಲಹದ: ಕ್ಷೀಣೇಂದುವಾರೆಂಕದ:” ಕಾಲಾಂ 292। 5. ಚಿಕ್ಕದಾದ, ಪುಟ್ಟದಾದ. 6. ಸಣ್ಣದಾದ, ತೆಳುವಾದ. “ಕ್ಷೀಣೇನ ಮಧ್ಯೇಽಪಿ ಸತೋದರೇಣ ಯತ್ಪ್ರಾಪ್ಯತೇ ನಾಕ್ರಮಣಂ ವಲಿಮ್ಯ:” ನೈಋಂ 9-61।

**ಕ್ಷೀಣಚಂದ್ರ ಕ್ಷ್ವೇಣಚಂದ್ರ** (ಪುಂ) ಎರಡು ಪಕ್ಷಗಳ ಅಷ್ಟಮಿಗಳ ಮಧ್ಯಕಾಲದ ಚಂದ್ರ, ಕೃಷ್ಣಾಷ್ಟಮಿಯಿಂದ ಮುಂದೆ ಶುಕ್ಲಾಷ್ಟಮಿಯವರೆಗಿನ ಕಾಲದ ಚಂದ್ರ. “ಕೃಣಾಷ್ಟಮಿ ದಲಾದ್ಧ್ವಂ ಯಾವಚ್ಚುಲಾಷ್ಟಮಿದಲಮ್। ತಾವತ್ಕಾಲಂ ಶಶಿ ಕ್ಷೀಣ: ಪೂರ್ಣಸ್ತತ್ರೋಪರಿ ಸ್ಮಾ:”।

**ಕ್ಷೀಣವತ್ ಕ್ಷ್ವೇಣವತ್** (ವಿಂ) ಕ್ಷೀಣನಾದ, ಕೃಶನಾದ, ದುರ್ಬಲನಾದ. ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯ) “ಕ್ತವತು:” (3-2-102)। ದೀರ್ಘ: (6-4-60)। ನಿಷ್ಠಾತಸ್ಯ ನತ್ವಮ್ (6-2-46)।



ಕ್ಷೀಣಾಢಟಕರ್ಮನ್ ಕ್ಷೀಣಾಢಟಕರ್ಮಾನ್ (ಪುಂ) ಜನದೇವ.  
ಕ್ಷೀಣಾನಿ ಅಘಟೌ ಜ್ಞಾನಾವರಣೀಯಾದಿನಿ ಕರ್ಮಾಣಿ ಅಸ್ಯ |  
“ಅಹನ್ ಜಿನಃ ಪಾರಗತಿಃ ತ್ರಿಕಾಲವಿತ್ ಕ್ಷೀಣಾಢಟಕರ್ಮಾ  
ಪರಮೇಷ್ಠಯಧೀಶ್ವರಃ” ಅಭಿಂ ಚಿಂ |

ಕ್ಷೀಬ ಕ್ಷೀಬ (ವಿಂ) ಮುರಿದು, ಮುರಿದುಮುರಿದು ಉನ್ನಾಡ  
ಮುಂದಿದ. ಕ್ಷೀಬ (ಮದೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) | ನಿಪಾಂ  
(೮-೨-೫೫) | “ವಿವೇಶ ಲೋಲಂ ಹೃದಯಂ ನಲಸ್ಯ ಜೀವಃ ಪುನಃ  
ಕ್ಷೀಬಮಿವ ಪ್ರವೌಘಃ” ನೈಷಂ ೬-೧೧೧ |

ಕ್ಷೀಬತಾ ಕ್ಷೀಬತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುರಿದುರುವುದು, ಅಮಲೇರಿರು  
ವುದು. ಕ್ಷೀಬಸ್ಯ ಭಾವಃ “ತಲ್” (೫-೧-೧೧೧) | “ಕ್ಷೀಬತಾ-  
ಮುಪಗತಾಸ್ವನುವೇಲಂ ತಾಸು ರೋಷಪರಿತೋಷವತೀಘ್ನಿಃ” ಮಾಘಂ  
೧೦-೩೪ |

ಕ್ಷೀರ ಕ್ಷೀರ (ನಂ) 1. ಹಾಲು. ವಸ್ಯತೇ-ವಸ್ತು (ಅದನೇ)  
“ಇರನ್” (೩ಂ ೪-೩೪) | ಉಪಧಾಲೋಪಃ (೬-೪-೯೮) |  
ಚತ್ವರ್ಮ (೮-೪-೫೫) | ಸಸ್ಯ ಷತ್ವರ್ಮ (೮-೩-೬೦) |  
“ಚಿತ್ರಂ ತು ಯದ್ವಿಶದಿಮಾದ್ರಯಮಾದಿಶಂತಿ ಕ್ಷೀರಂ ಚ ನಾಂಬು ಚ  
ಮಿಥಃ ಪೃಥಗಾತನೋತಿ” ನೈಷಂ ೧೧-೩೧ | 2. ಜಲ,  
ನೀರು. 3. ಗಿಡ ಮರಗಳ ಹಾಲು. “ಮಿತ್ವಾ ಸಘಃ  
ಕಿಸಲಯಪುಟಾನ್ ದೇವದಾರುದ್ರಮಾಣಾಂ ಯೇ ತತ್ಕ್ಷೀರಸ್ಮೃತಿಸುರಭಯೋ  
ದಕ್ಷಿಣೇನ ಪ್ರವೃತ್ತಾಃ” ಮೇಘಂ ೨-೪೪ |

ಕ್ಷೀರಕ ಕ್ಷೀರಕ (ಪುಂ) ಹಾಲುಕುರುಕು ಗಿಡ.

ಕ್ಷೀರಕಣ್ಠ ಕ್ಷೀರಕಣ್ಠ (ಪುಂ) 1. ಶಿಶು, ಎಳೆಯ ಮಗು,  
ಹಾಲು ಕುಡಿಯುವ ಮಗು. ಕ್ಷೀರಂ ಕಣ್ಠೇ ಯಸ್ಯ | 2. ಮರಿ.  
3. ಎಳೆಯ ಗಿಡ. “ಪೃಥುಕಾರ್ಭೋತ್ತಾನಶಯಾಃ ಕ್ಷೀರಕಣ್ಠಃ  
ಕುಮಾರಕಃ” ಅಭಿಂ ಚಿಂ |

ಕ್ಷೀರಕಂದ ಕ್ಷೀರಕಂದ (ಪುಂ) ಕರಿಯ ನೆಲಗುಂಬಳ.  
ಕ್ಷೀರಮಿವ ಕಂದೋಽಸ್ಯ |

ಕ್ಷೀರಕಾಂಡ ಕ್ಷೀರಕಾಂಡ (ಪುಂ) 1. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ  
ಗಿಡ. 2. ಕಳ್ಳಗಿಡ. ಕ್ಷೀರಯುಕ್ತಂ ಕಾಂಡಂ ಯಸ್ಯ | ವಾ “ಕಪ್”  
(೫-೪-೧೫೪) | -ಕಾಂಡಕಃ -ಕಾಂಡಕಃ |

ಕ್ಷೀರಕೋಟ ಕ್ಷೀರಕೋಟಿ (ಪುಂ) ಹಾಲಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಹುಳು.  
“ಕಾಲಿಕಾ ಕ್ಷೀರಕೋಟಃ ಸ್ಯಾತ್” ಹಾರಾಂ |

ಕ್ಷೀರಖರ್ಜೂರ ಕ್ಷೀರಖರ್ಜೂರ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರದಂತೆ ಮಧುರ  
ವಾದ ಖರ್ಜೂರ. ಕ್ಷೀರವತ್ ಸ್ವಾದುಃ ಖರ್ಜೂರಃ |

ಕ್ಷೀರಘೃತಂ ಕ್ಷೀರಘೃತಮ್ (ನಂ) ಹಾಲನ್ನು ಕಡೆದು ಬಂದ  
ಬೆಣ್ಣೆಯ ತುಪ್ಪ. ಕ್ಷೀರಮಥನಾತ್ ಸಮುದ್ಭೂತನವನೀತೋತ್ಥಿತಂ  
ಘೃತಮ್ | “ಕ್ಷೀರಘೃತಂ ಪುನಃ ಸಂಗ್ರಾಹಿ ರಕ್ತಪಿತ್ತಭ್ರಮಮುಚ್ಛಾಪ್ರಶಮನಂ  
ನೇತ್ರರೋಗಹಿತಂ ಚ” ಮುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೫-೧೦೫ |

ಕ್ಷೀರಜ ಕ್ಷೀರಜ (ನಂ) 1. ಮೊಸರು. ಕ್ಷೀರಾಜ್ಯಾಯತೇ-ಜನಿ  
(ಪ್ರಾಡುಭಾವಿ) “ಜಃ” (೩-೨-೯೮) | “ಪಾಯಸಂ ಪರಮಾನ್ನಂ  
ಚ ಕ್ಷೀರೇಯಿ ಕ್ಷೀರಜಂ ದಧಿ” ಅಭಿಂ ಚಿಂ | (ವಿಂ) 2.  
ಹಾಲಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ.

ಕ್ಷೀರದಲ ಕ್ಷೀರದಲ (ಪುಂ) ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.  
ಕ್ಷೀರಂ ದಲೇಽಸ್ಯ |

ಕ್ಷೀರಧಾತ್ರಿ ಕ್ಷೀರಧಾತ್ರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಾಲು ಕೊಡುವ ದಾದಿ,  
ಮಗುವಿಗೆ ಮೊಲೆಯೂಡಿಸಿ ಆರೈಕೆಮಾಡುವ ದಾದಿ.

ಕ್ಷೀರಧಿ ಕ್ಷೀರಧಿ (ಪಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ, ಪಾಲ್‌ಗಡಲು.  
ಕ್ಷೀರಂ ಧೀಯತೇಽ - ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಕಿಃ”  
(೩-೩-೯೩) | “ನೇನಂ ತ್ಯಜ ಕ್ಷೀರಧಿಮನ್ಯನಾಶ್ಚೈರಸ್ಯಾನುಜಾ-  
ಯೋದ್ಗಮಿತಾಮರಶ್ರೀಃ” ನೈಷಂ ೬-೮೦ |

ಕ್ಷೀರಧೇನು ಕ್ಷೀರಧೇನು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ದಾನಕ್ಕಾಗಿ  
ಕ್ಷೀರದಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಧೇನು. [ವಿವರಕ್ಕೆ ಹೇಮಾದ್ರಿ  
ದಾನ ಖಂಡದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಕ್ಷೀರನದಿ ಕ್ಷೀರನದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಾಲಿನ ಹೊಳೆ, ಪಾಲಾರ್  
ಎಂಬ ಹೊಳೆ.

ಕ್ಷೀರನಿಧಿ ಕ್ಷೀರನಿಧಿ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ, ಪಾಲ್‌ಗಡಲು.  
ಕ್ಷೀರಂ ನಿಧೀಯತೇಽ - ನಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ)  
“ಕಿಃ” (೩-೩-೯೩) | “ದಿಲೀಪ ಇತಿ ರಾಜೇಂದುರಿನ್ದುಃ  
ಕ್ಷೀರನಿಧಾವಿವ” ರಘುಂ ೧-೧೨ |

ಕ್ಷೀರನೀರ ಕ್ಷೀರನೀರ (ನಂ) 1. ಅಲಿಂಗನ, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳು  
ವುದು. ಕ್ಷೀರಮಿಶ್ರಿತಂ ನೀರಮಿವ | 2. ಹಾಲು ಮತ್ತು  
ನೀರು. ಕ್ಷೀರಂ ಚ ನೀರಂ ಚ ಅನಯೋಃ ಸಮಾಹಾರಃ | “ಕ್ಷೀರ-  
ನೀರಸಮಂ ಮಿಶ್ರಂ ಪ್ರಶಂಸಂತಿ ವಿಚಕ್ಷಣಾಃ | ನೀರಂ ಕ್ಷೀರಯತೇ  
ತತ್ರ ವಹ್ನೌ ತಪ್ಯತಿ ತತ್ಪಯಃ” ವೇತಾಲಪಂ | 3. ಹಾಲಿನಂತಿ  
ರುವ ನೀರು. ಕ್ಷೀರಮಿವ ನೀರಮ್ |

ಕ್ಷೀರಪ ಕ್ಷೀರಪ (ಪುಂ) 1. ಶಿಶು, ಹಾಲು ಕುಡಿಯುವ ಮಗು.  
ಕ್ಷೀರಂ ಪಿಬತಿ - ಪಾ (ಪಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೪) |  
(ವಿಂ) 2. ಹಾಲು ಕುಡಿಯುವವನು.

ಕ್ಷೀರಪಯೋಧಿ ಕ್ಷೀರಪಯೋಧಿ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ, ಪಾಲ್  
ಗಡಲು. ಕ್ಷೀರಸ್ಯ ಪಯೋಧಿಃ | -ಪಯೋನಿಧಿಃ - ಪಯೋನಿಧಿಃ |  
“ಬ್ರಹ್ಮಾ ತದ್ವಿಧಾರ್ಯಾಥಿ ಸಹ ದೇವೈಸ್ತಯಾ ಸಹ ಜಗಾಮ ಸತ್ರಿನಯನ-  
ಸ್ತೀರಂ ಕ್ಷೀರಪಯೋನಿಧಿಃ” ಭಾಗಂ ೧೦-೧-೧೧ |

ಕ್ಷೀರಪಣಿನ್ ಕ್ಷೀರಪಣಿನ್ (ಪುಂ) ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.  
ಕ್ಷೀರಯುಕ್ತಂ ಪರ್ಣಮಸ್ಯಸ್ಯ “ಇನಿಃ” (೫-೨-೧೧೫) |

ಕ್ಷೀರಪರ್ಣಿ ಕ್ಷೀರಪರ್ಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.  
ಕ್ಷೀರಂ ಪರ್ಣೇಽಸ್ಯಾಃ - ಗೌರಾಂ “ಡೀಘ್” (೪-೧-೪೧) |



**ಕೊರಪಾಣ ಕ್ಷೀರಪಾಣ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಹಾಲನ್ನು ಕುಡಿಯುವ ಉಶೀನರ ದೇಶದ ಜನರು. ಪೀಯತೇ - ಪಾ (ಪಾನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್"। ಕೊರಂ ಪಾನಂ ಯೇಷಾಂ ತೇ ಕೊರಪಾಣಾಃ ಉಶೀನರಾಃ ಇತಿ ಸಿಂ ಕೌಂ। ನಸ್ಯ ಗತ್ವಮ್ (೮-೪-೯)। ಭಾವೇ ಕರಣಂ ಚ "ಲ್ಯುಟ್"। ವಾ ಗತ್ವಮ್ (೮-೪-೧೦)। ಕೊರಪಾಣಮ್, -ಪಾನಮ್ ಕ್ಷೀರಪಾಣಮ್, -ಪಾನಮ್. ಭಾವೇ- 2. ಹಾಲು ಕುಡಿಯುವುದು. ಕರಣಂ 3. ಹಾಲು ಕುಡಿಯುವ ಪಾತ್ರೆ.

**ಕೊರಪಾಯಿನ್ ಕ್ಷೀರಪಾಯಿನ್** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಹಾಲು ಕುಡಿಯುವ ಉಶೀನರ ದೇಶದ ಜನರು. ಪುನಃ ಪುನಃ ಕೊರಂ ಪಿಬಂತಿ - ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೮೧)। "ಕೊರಪಾಯಿಣ ಉಶೀನರಾಃ" ಸಿಂ ಕೌಂ। (ವಿಂ) 2. ಹಾಲು ಕುಡಿಯುವ. ಕೊರಂ ಪಿಬತಿ - ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೮೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಪಾಯಿನಿ - ಪಾಯಿನೀ.

**ಕೊರಭೃತ ಕ್ಷೀರಭೃತ** (ಪುಂ) ಹಾಲಿನಿಂದ ಕಾಪಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಗೊಲ್ಲ, ಹಾಲಿನ ರೂಪದಲ್ಲಿ ವೇತನ (ಸಂಬಳ)ವನ್ನು ಪಡೆದು ಜೀವಿಸುವ ಗೋಪಾಲಕ. ಕೊರೇಣ ಭೃತಃ। "ಗೋಪಃ ಕೊರಭೃತೋ ಯಸ್ತು ಸ ದುಹ್ಯಾದೃಶತೋ ವರಾಮ್" ಮನುಂ ೮-೨೩೧।

**ಕೊರಮೋರಟಾ ಕ್ಷೀರಮೋರಟಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಾಲುಕುರುಟಿಗೆ ಗಿಡ.

**ಕೊರಲತಾ ಕ್ಷೀರಲತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರಿಯ ನೆಲಗುಂಬಳದ ಗಿಡ. ಕೊರಪ್ರಧಾನಾ ಲತಾ।

**ಕೊರವತ್ ಕ್ಷೀರವತ್** (ವಿಂ) ಹಾಲಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕೊರ-ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ವತೀ - ವತೀ ಒಂದು ಪದ.

**ಕೊರವರ್ಗ ಕ್ಷೀರವರ್ಗ** (ಪುಂ) ಹಾಲಿನ ವರ್ಗ, ಔಷಧದ ಉಪಯೋಗಕ್ಕಾಗಿ ಅರ್ಹವಾದ ಹಾಲುಗಳು. ಕೊರಾಣಾಂ ವರ್ಗಃ। (1) ಹಸುವಿನ ಹಾಲು, (2) ಆಡಿನ ಹಾಲು. (3) ಒಟ್ಟೆಯ ಹಾಲು, (4) ಕುರಿಯ ಹಾಲು. (5) ಎಮ್ಮೆಯ ಹಾಲು, (6) ಕುದುರೆಯ ಹಾಲು, (7) ಸ್ತ್ರೀಯ ಹಾಲು ಮತ್ತು (8) ಆನೆಯ ಹಾಲು ಈ ಎಂಟು ಹಾಲುಗಳು ಕ್ಷೀರವರ್ಗಕ್ಕೆ ಸೇರಿರುವು. "ಗವ್ಯಮಾಜಂ ತಥಾ ಕೌಡ್ರಮಾವಿಕಂ ಮಾಹಿಷಂ ಚ ಯತ್। ಅಶ್ವಾ-ಯಾಶ್ಚೈವ ನಾರ್ಯಾಶ್ಚ ಕರಣುನಾಂ ಚ ಯತ್ಪಯಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೫-೪೭।

**ಕೊರವಲ್ಲಿ ಕ್ಷೀರವಲ್ಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರಿಯ ನೆಲಗುಂಬಳದ ಗಿಡ. ಕೊರವತೀ ವಲ್ಲಿ।

**ಕೊರವಾರಿಧಿ ಕ್ಷೀರವಾರಿಧಿ** (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ. ಕೊರಸ್ಯ ವಾರಿಧಿಃ। एवं ಕೊರವಾರಿಧಿಃ ಕ್ಷೀರವಾರಿಧಿಃ.

**ಕೊರವಿಕೃತಿ ಕ್ಷೀರವಿಕೃತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಡಿಯಿಸಿದ ಹಾಲಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಹಾಲುಮೇವ. ಕೊರಸ್ಯ ವಿಕೃತಿಃ।

**ಕೊರವಿದಾರಿ ಕ್ಷೀರವಿದಾರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕರಿಯ ನೆಲಗುಂಬಳ. ಕೊರವತೀ ವಿದಾರಿ। 2. ಬೆಳೆಯ ನೆಲಗುಂಬಳ. ಕೊರಮಿವ ಶುಕ್ಲಾ ವಿದಾರಿ।

**ಕೊರವೃಕ್ಷ ಕ್ಷೀರವೃಕ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಅಲದ ಮರ. 2. ಅತ್ತಿ ಮರ. 3. ಅರಳಿ ಮರ. 4. ಹಾಲೆ ಗಿಡ. 5. ಹಿಪ್ಪೆ ಮರ. "ಕೊರವೃಕ್ಷಕರ್ಷಾಯೇವ ಕೊರೇಣ ಚ ವಿಮಿಶ್ರಿತಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೨೪-೧೫।

**ಕೊರಶರ ಕ್ಷೀರಶರ** (ಪುಂ) ಬಿಸಿ ಹಾಲಿಗೆ ಮೊಸರನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಪಕ್ವಮಾಡಿದ ಒಂದು ವಸ್ತು. ಕೊರಂ ಶೀಯತೇ-ಶ್ಚ (ಪಾಕೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭)।

**ಕೊರಶಿರ್ಷ ಕ್ಷೀರಶಿರ್ಷ** (ಪುಂ) ಸರಳವೃಕ್ಷದ ಹಾಲು ಮಡ್ಡಿ.

**ಕೊರಶುಕ್ಲಾ ಕ್ಷೀರಶುಕ್ಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆಳೆಯ ನೆಲಗುಂಬಳ. ಕೊರಮಿವ ಶುಕ್ಲಾ। "ವಿದಾರಿ ಕೊರಶುಕ್ಲೇಕ್ಷುಗನ್ಧಾ ಕ್ರೋಡ್ರೀ ಚ ಯಾ ಸಿತಾ" ಅಮಂ।

**ಕೊರಸಂತಾನಿಕಾ ಕ್ಷೀರಸಂತಾನಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಸಿಹಾಲಿಗೆ ಬೆರಸಿದ ಮೊಸರು. ಕೊರಸ್ಯ ಸಂತಾನೋಽಸ್ಯಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೫)।

**ಕೊರಸಮುದ್ರ ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ** (ಪುಂ) ಹಾಲಿನ ಸಮುದ್ರ, ಪಾಲ್‌ಗಡಲು. ಇದು ಸಪ್ತಸಮುದ್ರಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಕೊರಸ್ಯ ಸಮುದ್ರಃ। (1) ಲವಣ, (2) ಇಕ್ಷು, (3) ಸುರಾ, (4) ಸರ್ಪಿಸ್, (5) ದಧಿ, (6) ಕ್ಷೀರ ಮತ್ತು (7) ಜಲ ಸಮುದ್ರಗಳೆಂದು ಸಮುದ್ರಗಳು ಏಳು. ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರವು ಕ್ರೌಂಚ ದ್ವೀಪದ ಸುತ್ತಲೂ ಇರುವುದು. ಅವ್ಯತಕ್ಕಾಗಿ ದೇವತೆಗಳು ಈ ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರವನ್ನು ಮುಳುಗಿಸಿದಾಗ ಸಮುದ್ರದಿಂದ ಚಂದ್ರ, ಲಕ್ಷ್ಮಿ, ಉಚ್ಚೈಶ್ರವಸ್ಸು, ಐರಾವತ, ಕೌಸ್ತುಭಮಣಿ, ಅಪ್ಸರಸ್ಸು ಮೊದಲಾದವರ ಅವಿರ್ಭಾವ ವಾಯಿತು.

**ಕೊರಸಾಗರ ಕ್ಷೀರಸಾಗರ** (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ.

**ಕೊರಸಾರ ಕ್ಷೀರಸಾರ** (ಪುಂ) 1. ಬೆಣ್ಣೆ. ಕೊರಸ್ಯ ಸಾರಃ। 2. ಹಾಲಿನ ಮೇಲಿನ ಕೆನೆ. 3. ಗಟ್ಟಿ ಹಾಲಿನ ಮೇವ. "ಕೊರಸಾರಮಪನೀಯ ಶಾಙ್ಕಯಾ ಸ್ವೀಕೃತಂ ಯದಿ ಪಲಾಯನಂ ತ್ವಯಾ" ಉದ್ಗಂ।



ಕೀರಸ್ವಾಮಿನ್ ಕ್ಷೀರಸ್ವಾಮಿನ್ (ಪುಂ) ಅಮರಕೋಶದ  
ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಾರನಾದ ಒಬ್ಬ ಪೈಯಾಕರಣ.

ಕೀರಾ ಕ್ಷೀರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೋಕ್ಕಣಿ ಗಿಡ.

ಕೀರಾನ್ ಕ್ಷೀರಾನ್ (ನಂ) ಹಾಲಿನಲ್ಲಿ ಬೇಯಿಸಿದ ಅನ್ನ.  
ಕೀರಣ ಪವಮನಮ್.

ಕೀರಾಣಿ ಕ್ಷೀರಾಣಿ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ. ಕೀರಸ್ಯಾಣಿ.

ಕೀರಾಣಿಜ ಕ್ಷೀರಾಣಿಜ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. 2. ಉಚ್ಚೈಃ  
ಶ್ರವಸ್ಸು, ಇಂದ್ರನ ಕುದುರೆ. 3. ಐರಾವತ, ಇಂದ್ರನ  
ಅನೆ. 4. ಕೌಸ್ತುಭಮಣಿ. 5. ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷ. 6. ಧನ್ವಂತರಿ.

(ನಂ) 7. ಅಮೃತ. 8. ಮುತ್ತು, ಮೌಕ್ತಿಕ. 9. ಕಾಲ  
ಕೂಟವೆಂಬ ಒಂದು ಮಹಾವಿಷ. ಕೀರಾಣಿಜಾತಿ: -

ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತವಿ) "ಡ:" (3-2-94). (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಜಾ -ಜಾ. 10. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. 11. ಅಪ್ಸರಸ್ಸು. ಭಾಗಂ

೮-೮. "ಕೀರಾಣಿಜಂ ತು ಮೌಕ್ತಿಕೇ. ವಶಿರೇ ಕೀರಾಣಿಜಸ್ತು  
ಚಂದ್ರೇ ಕೀರಾಣಿಜಾ ಶ್ರಿಯಾಮ್" ಹೇಮಂ.

ಕೀರಾಣಿಜತನಯ ಕ್ಷೀರಾಣಿಜತನಯ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ.  
ಕೀರಾಣಿಜತನಯ: (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತನಯಾ -ತನಯಾ.

2. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. 3. ಪುತ್ರ: -ಪುತ್ರಃ, -ಸುತ: -ಸುತಃ,  
-ಸುತು: -ಸುತುಃ.

ಕೀರಾಣಿಜಾ ಕ್ಷೀರಾಣಿಜಾ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ. ಕೀರ-  
ಸ್ಯಾಣಿಜಾ: (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಅಣಿಜಾ: -ಅಣಿಜಾ:.

ಕೀರಾಣಿಜಾ ಕ್ಷೀರಾಣಿಜಾ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ. ಕೀರ-  
ಸ್ಯಾಣಿಜಾ: (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಅಣಿಜಾ: -ಅಣಿಜಾ:.

ಕೀರಾಣಿಜಾ ಕ್ಷೀರಾಣಿಜಾ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ. ಕೀರ-  
ಸ್ಯಾಣಿಜಾ: (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಅಣಿಜಾ: -ಅಣಿಜಾ:.

ಕೀರಾಣಿಜಾ ಕ್ಷೀರಾಣಿಜಾ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ. ಕೀರ-  
ಸ್ಯಾಣಿಜಾ: (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಅಣಿಜಾ: -ಅಣಿಜಾ:.

ಕೀರಾಣಿಜಾ ಕ್ಷೀರಾಣಿಜಾ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ. ಕೀರ-  
ಸ್ಯಾಣಿಜಾ: (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಅಣಿಜಾ: -ಅಣಿಜಾ:.

ಕೀರಾಣಿಜಾ ಕ್ಷೀರಾಣಿಜಾ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ. ಕೀರ-  
ಸ್ಯಾಣಿಜಾ: (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಅಣಿಜಾ: -ಅಣಿಜಾ:.

ಕೀರಾಣಿಜಾ ಕ್ಷೀರಾಣಿಜಾ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ. ಕೀರ-  
ಸ್ಯಾಣಿಜಾ: (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಅಣಿಜಾ: -ಅಣಿಜಾ:.

ಕೀರಾಣಿಜಾ ಕ್ಷೀರಾಣಿಜಾ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ. ಕೀರ-  
ಸ್ಯಾಣಿಜಾ: (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಅಣಿಜಾ: -ಅಣಿಜಾ:.

ಕೀರಾಣಿಜಾ ಕ್ಷೀರಾಣಿಜಾ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ. ಕೀರ-  
ಸ್ಯಾಣಿಜಾ: (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಅಣಿಜಾ: -ಅಣಿಜಾ:.

ಕೀರಾಣಿಜಾ ಕ್ಷೀರಾಣಿಜಾ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ. ಕೀರ-  
ಸ್ಯಾಣಿಜಾ: (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಅಣಿಜಾ: -ಅಣಿಜಾ:.

ಕೀರಾಣಿಜಾ ಕ್ಷೀರಾಣಿಜಾ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ. ಕೀರ-  
ಸ್ಯಾಣಿಜಾ: (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಅಣಿಜಾ: -ಅಣಿಜಾ:.

ಕೀರಾಣಿಜಾ ಕ್ಷೀರಾಣಿಜಾ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ. ಕೀರ-  
ಸ್ಯಾಣಿಜಾ: (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಅಣಿಜಾ: -ಅಣಿಜಾ:.

ಕೀರೋದ ಕ್ಷೀರೋದ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ. ಕೀರಮುದಕಂ  
ಯಸ್ಯ. ಉದಕಸ್ಯೋದಾದೇಶ: (3-2-94). "ಚಂದ್ರಂ ವಿಶ್ವಾ  
ತದ್ವಿಲಾಸಮನೇತುಮ್ ಕೀರೋದಮಾಶ್ರಯತಿ ಕಿ ತೃಪಿತಶ್ಚಕೋರ:"  
ಚಂ ರಾಂ.

ಕೀರೋದಜ ಕ್ಷೀರೋದಜ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. 2. ಐರಾವತ.  
3. ಉಚ್ಚೈಃ ಶ್ರವಸ್ಸು. 4. ಕಲ್ಪತರು. 5. ಕೌಸ್ತುಭಮಣಿ.  
6. ಧನ್ವಂತರಿ. (ನಂ) 7. ವಿಷ. 8. ಮುತ್ತು.  
9. ಅಮೃತ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜಾ -ಜಾ. 10. ಲಕ್ಷ್ಮಿ.  
11. ಅಪ್ಸರಸ್ಸು.

ಕೀರೋದತನಯ ಕ್ಷೀರೋದತನಯ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತನಯಾ -ತನಯಾ. 2. ಲಕ್ಷ್ಮಿ.

ಕೀರೋದನ ಕ್ಷೀರೋದನ (ನಂ) ಕ್ಷೀರಾಣಿಜ, ಕ್ಷೀರೋದನೇ ಪಕ್ಷ  
ವಾದ ಅನ್ನ. ಕೀರಣ ಪವಮೋದನಮ್.

ದ್ವಿ-ಶಬ್ದ (ಅದಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ). ಕೌತಿ ಕೃತ: ಕೃವಂತಿ.  
ಕೃಷಾವ ಕೃಷವತು: ಕೃಷವು: ಕೃಷಿತಾ. ಕೃಷಿಷ್ಯತಿ. ಕೌತು.  
ಅಕ್ಷಾತ್. ಕೃಷಾತ್. ಕೃಷಾತ್. ಅಕ್ಷಾವಿತ್. ಅಕ್ಷವಿಷ್ಯತ್.  
1. ಸೀನು. 2. ಶಬ್ದಮಾಡು. "ಅಧ್ಯುವಾಸ ರಥಂ ತೇ  
ಪುರಾಚ್ಚಕ್ಷಾವ ಚಾಶುಭಮ್" ಭೃಗುಂ 14-65.

ಭಾವೇ: -ಕೃಷಯೇ. ಕೃಷವೇ. ಕೃಷಿತಾ, ಕೌತಾ. ಕೃಷಿಷ್ಯತೇ,  
ಕೃಷಯೇ. ಕೃಷಯಾಮ್. ಅಕ್ಷಯತ. ಇತ್ಯಾದಿ. "ಅಪಯಾತಿ  
ಸರೋಪಯಾ ನಿರಸ್ತೇ ಕೃತಕಂ ಕಾಮಿನಿ ಕೃಷವೇ ಮೃಗಾಕ್ಷಯಾ"  
ಮಾಘಂ 9-63.

ಕೃಷಿ: -ಕೃಷಯತಿ, -ತೇ. ಕೃಷಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಕೃಷಯಿತಾ. ಕೃಷಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ.  
ಕೃಷಯತು, -ತಾಮ್. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃಷಿ: -ಕೃಷಯತಿ. ಕೃಷಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ,  
-ಆಸ. ಕೃಷಯಿತಾ. ಕೃಷಯಿಷ್ಯತಿ. ಕೃಷಯತು.  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃಷು: -ಕೃಷಯತಿ. ಕೃಷಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ,  
-ಆಸ. ಕೃಷಯಿತಾ. ಕೃಷಯಿಷ್ಯತಿ. ಕೃಷಯತು.  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಅವ ಪೂರ್ವಕವಾದ ಈ ಕೃಷು ಧಾತುವು ಕೆಳಗಿರುವ ವಸ್ತು  
ವನ್ನು ಸೀನಿನಿಂದ ಕೆಡಿಸು, -ಅಶುದ್ಧ ಮಾಡು ಎಂಬ ಅರ್ಥ  
ವನ್ನು ಕೊಡುವುದು. "ಅನರ್ಚಿತಂ ವೃಥಾಮಾಸಮವೀರಾಯಾಶ್ಚ  
ಯೋಷಿತ: ದ್ವಿಪದನಂ ನಗಯಂತಂ ಪತಿತಾನಮವಕ್ಷುತಮ್" ಮನುಂ  
4-213.



**ಕುಣ್ಣ ಕ್ಷುಣ್ಣ** (ವಿಂ) 1. ಅಭ್ಯಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪುನಃ ಪುನಃ ಉಚ್ಛರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಅಥವಾ ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಚಿಂತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕ್ಷುಡಿರ್ (ಸಂಪೇಷಣೆ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। ನಿಷ್ಠಾತಸ್ಯ ನಃ (2-2-42)। "ಕ್ಷುಣ್ಣಂ ಯದಂತಃಕರಣೇನ ವೃಕ್ಷಾಃ ಫಲಂತಿ ಕಲ್ಪೋಪಪದಾಸ್ತದೇವ" ಮಾಘಂ 3-49। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತುಳಿದು ಸವೆಸಲ್ಪಟ್ಟ (ದಾರಿ), ನಡೆದು ಪಳಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಮಾರ್ಗ). "ರೇಕ್ಷಾಮಾತ್ರಮಪಿ ಕ್ಷುಣ್ಣಾದಾಮನೋರ್ವರ್ಮನಃ ಪರಮ್। ನ ವ್ಯತೀಯುಃ ಪ್ರಜಾಸ್ತಸ್ಯ ನಿಯಂತುರ್ನೇಮಿವೃತ್ತಯಃ" ರಘುಂ 1-17। 3. ಪುಡಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೂರ್ಣವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಉತ್ಪಾಟಯ ಮೇಶಶೃಂಗಾಣಿ ಕ್ಷುಣ್ಣಾನಿ ಹರಿತಾಂ ಕುರೇ" ಕುಮಾರಂ 2-43। 4. ಒಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೀಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೂರುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕ್ಷುಣ್ಣಾಸು ಕ್ಷಿತಿಃ ಕ್ಷಿಪನ್ನಿವ ಯಶಃಕ್ಷೋಣಿಜಬಿಜವ್ರಜಮ್" ನೈಷಂ 12-66।

**ಕ್ಷುತ್ ಕ್ಷುತ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೀನು, ಮೂಗಿನ ಒಂದು ರೋಗ. ಟುಕ್ಷು (ಶಬ್ದ) "ಕ್ವಿಪ್" (ವಾಂ 3-3-94)।

**ಕ್ಷುತ ಕ್ಷುತ** (ನಂ) 1. ಸೀನು. ಟುಕ್ಷು (ಶಬ್ದ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-3-114)। "ಋತುಭುಜಯುಗಗಲದ್ವಲಯಸ್ವನಿತಂ ಪ್ರತಿಕ್ಷುತಮಿವೋಪಶ್ರುವೇ" ಮಾಘಂ 14-91। "ಸ್ನಾತ್ವಾ ಪೀತ್ವಾ ಕ್ಷುತೇ ಸುಪ್ತೇ ಭುಕ್ತ್ವಾ ರಥ್ಯೋಪಸರ್ಪಣೇ। ಆಚಾಂತಃ ಪುನರಾಚಾಮೇತ್ ವಾಸೋ ವಿಪರಿಧಾಯ ಚ" ಯಾಜ್ಞಂ 1-196। (ವಿಂ) 2. ಸೀನಿದವನು. ಟುಕ್ಷು ಕರ್ತಂ "ಕ್ತಃ" (3-4-92)।

**ಕ್ಷುತಕ ಕ್ಷುತಕ** (ಪುಂ) ಕರಿಸಾಸವೆ.

**ಕ್ಷುತಕರ ಕ್ಷುತಕರ** (ವಿಂ) ಸೀನನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ. ಕ್ಷುತಂ ಕರೋತಿ - ಟು ಕ್ಷು (ಕರಣ) "ಠಃ" (3-2-20)।

**ಕ್ಷುತಾಭಿಜನನ ಕ್ಷುತಾಭಿಜನನ** (ಪುಂ) ಕರಿಸಾಸವೆ. ಕ್ಷುತಮಭಿಜನಯತಿ - ಅಭಿ + ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134)। "ಕ್ಷವಃ ಕ್ಷುತಾಭಿಜನನೋ ರಾಜಿಕಾ ಕೃಷ್ಣಿಕಾಸುರೀ" ಅಮಂ।

**ಕ್ಷುತಿ ಕ್ಷುತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೀನು. ಟುಕ್ಷು (ಶಬ್ದ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)।

**ಕ್ಷುಡ್ ಕ್ಷುಡ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪುಡಿಮಾಡುವುದು, ಚೂರ್ಣ ಮಾಡುವುದು. 2. ಒಡೆಯುವುದು, ಚೂರುಮಾಡುವುದು. 3. ತುಳಿದು ಮರ್ದನಮಾಡುವುದು. ಕ್ಷುಡಿರ್ (ಸಂಪೇಷಣೆ) "ಕ್ವಿಪ್" (ವಾಂ 3-3-94)।

**ಕ್ಷುಡಿರ್ - ಸಂಪೇಷಣೆ** (ಋಷಾಂ ಉಮಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ)। ಕ್ಷುಣ್ಣಂತಿ ಕ್ಷುಂತಃ ಕ್ಷುಂತೇ ಕ್ಷುಂತೇ ಕ್ಷುಂತೇ। ಚುಕ್ಷೋದ, ಚುಕ್ಷುದೇ। ಕ್ಷೋತ್ತಾ। ಕ್ಷೋತ್ಸ್ಯತಿ, ಕ್ಷೋತ್ಸ್ಯತೇ। ಕ್ಷುಣ್ಣತು, ಕ್ಷುಣ್ಣಾಮ್। ಅಕ್ಷುಣ್ಣತ್। ಅಕ್ಷುಣ್ಣತಃ। ಕ್ಷುಣ್ಣಾತ್, ಕ್ಷುಣ್ಣೀತ್। ಕ್ಷುಣ್ಣಾತ್,

ಕ್ಷುಣ್ಣೀತ್। ಅಕ್ಷುಣ್ಣತ್, ಅಕ್ಷುಣ್ಣೀತ್। ಅಕ್ಷುಣ್ಣೀತ್, -ತಃ। 1. ಪುಡಿಮಾಡು, ಚೂರ್ಣಮಾಡು. "ಕ್ಷುಣ್ಣಿ ಸರ್ಪಾನ್ ಪಾತಾಲೇ ಕ್ಷಿನ್ವಿ ಕ್ಷಣದಾಚರಾನ್" ಭದ್ರಂ 6-36। 2. ಚೂರುಮಾಡು, ಒಡೆದುಹಾಕು. 3. (ದಾರಿ) ಪಳಗಿಸು, ನಡೆದು ರೂಢಿಸು. 4. ತುಳಿದು ಮರ್ದಿಸು, ತುಳಿದು ತುಳಿದು ಗಟ್ಟಿ (ಹದ) ಮಾಡು.

**ಕರ್ಮಣಿಃ** - ಕ್ಷುಣ್ಣತೇ। ಕ್ಷುಣ್ಣತಾಮ್। ಅಕ್ಷುಣ್ಣತಃ। ಕ್ಷುಣ್ಣತಃ। ಅಕ್ಷೋದೀತ್। ಉಳಿದುವು ಆತ್ಮನೇಪದದ ರೂಪಗಳಂತಾಗುವುವು.

**ಣಿಚಿಃ** - ಕ್ಷೋದಯತಿ, -ತೇ। ಕ್ಷೋದಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ।

**ಕ್ರುತ್ಸುಃ** - ಕ್ಷೋತ್ತವ್ಯಮ್। ಕ್ಷೋದನೀಯಮ್। ಕ್ಷೋದಮ್। ಕ್ಷುಣ್ಣಃ। ಕ್ಷುಣ್ಣವಾನ್। ಕ್ಷುಣ್ಣನ್, ಕ್ಷುಣ್ಣಂತೀ। ಕ್ಷುಣ್ಣಾನ್। ಕ್ಷೋತ್ತಮ್। ಕ್ಷುಣ್ಣಮ್। ಕ್ಷೋದನಮ್। ಕ್ಷುತ್ವಾ। ಸಂಕ್ಷುಣ್ಣ।

**ಕ್ಷುಡ್ ಕ್ಷುಡ್** (ವಿಂ) 1. ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. 2. ಕೃಷಣ, ಜಿಪುಣ. 3. ಚಿಕ್ಕದಾದ, ಸಣ್ಣದಾದ. 4. ನೀಚ, ಅಧಮ. ಕ್ಷುಡಿರ್ (ಸಂಪೇಷಣೆ) "ಕ್" (ಉಂ 2-13)। "ಕ್ಷುಡ್ವೇಪಿ ನುನಂ ಶರಣಂ ಪ್ರಪನ್ನೇ ಮಮತ್ವಮುಚ್ಚೈಃ ಶಿರಸಾಂ ಸತೀವ" ಕುಮಾರಂ 1-12। 5. ಕ್ರೂರ, ದಯೆಯಿಲ್ಲದವನು, ಹಿಂಸಿಸುವವನು. "ಕ್ಷುಡ್ವೋ ದರಿದ್ರೇ ಕೃಪಣೇ ನಿಕೃಷ್ಟೇಷ್ವನೃಶಂಸಯೋಃ" ಹೇಮಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕ್ಷಾ -ದ್ರಾ. 6. ಜೇನು ಹುಳು. "ಕ್ಷುಡ್ವಾಭಿರಕ್ಷುಡ್ವತರಾಭಿರಾಕುಲಂ ವಿದಶ್ಯಮಾನೇನ ಜನೇನ ದುಢ್ವೇ" ಮಾಘಂ 12-44। 7. ಅಂಗಹೀನಳಾದ ಹೆಂಗಸು, 8. ನಟಿ, ನರ್ತಕಿ. 9. ಕಂಟಕಾರಿ, ಹೆಗ್ಗುಳ್ಳ. 10. ವೇಶ್ಯ, ಸೂಳೆ. 11. ನೋಣ. 12. ಕಲಹಪ್ರಿಯಳಾದ ಹೆಂಗಸು. 13. ಪುಲ್ಲಂಪುರಿಚಿ. "ಕ್ಷುಡ್ವಾವ್ಯಜ್ಞಾನದೀಕಂಟಕಾರಿಕಾಸರಾಸು ಚ। ಚಾಕ್ಷೇರೀ ವೇಶ್ಯಯೋಹಿಸ್ತಾಮಕ್ಷಿಕಾಮಾತ್ರಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ।

**ಕ್ಷುಡ್ವಕ ಕ್ಷುಡ್ವಕ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಸೇನಜಿತ್ತಿನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ಆಯುಧಗಳಿಂದ ಜೀವಿಸುವವರು. (ವಿಂ) 3. ಸಣ್ಣದಾದ, ಚಿಕ್ಕದಾದ. ಕ್ಷುಡ್ವಕ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ್" (4-4-4)। "ಕ್ಷುಡ್ವಕಾಣಾಂ ಪಶುನಾಂ ತು ಹಿಸಾಯಾಂ ದ್ವಿಶತೋ ದಮಃ" ಮನುಂ 6-297।

**ಕ್ಷುಡ್ವಕಮಾನಸ ಕ್ಷುಡ್ವಕಮಾನಸ** (ನಂ) ಕಾಶ್ಮೀರದಲ್ಲಿ ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿಯನ್ನು ಬೆಳೆಯುವ ಜಾಗ (ಸರಸ್ವತಿ). "ಕಾಶ್ಮೀರೇಷು ಸರೋ ನಾಮನಾ ದಿವ್ಯಂ ಕ್ಷುಡ್ವಕಮಾನಸಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ।

**ಕ್ಷುಡ್ವಕಮ್ಬ ಕ್ಷುಡ್ವಕಮ್ಬ** (ಪುಂ) ಗುಳ್ಳೆತಂಬಿ, ಚಿಕ್ಕ ತಂಬಿ, ಕ್ಷುಡ್ವಕಃ ಕಮ್ಬಃ।







ಕುಪಾರ್ತ ಕ್ಷುಧಾರ್ತ, -ಅದಿತ -ಅದಿತ (ವಿಂ) ಹಸಿವಿನಿಂದ ಹೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕುಪಾರ್ತ ಆರ್ತ: ಅದಿತೋ ವಾ |

ಕುಪಾವತ್ ಕ್ಷುಧಾವತ್ (ವಿಂ) ಹಸಿವಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕುಪಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ವತೀ -ನತಿ |

ಕುಪಾವಿಷ್ಠ ಕ್ಷುಧಾವಿಷ್ಠ (ವಿಂ) ಹಸಿವಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕುಪಾರ್ತ ಆವಿಷ್ಠ: |

ಕುಪಿತ ಕ್ಷುಧಿತ (ವಿಂ) ಹಸಿದಿರುವ, ಹಸಿವು ಉಂಟಾಗಿರುವ. ಕುಪಾಸ್ಯ ಸಂಜಾತಾ "ಇತಚ್" (೪-೨-೩೬) | ಕುಪ (ಕುಪಾಸ್ಯಾಮ್) ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | ಇಡಾಗಮ: (೭-೨-೪೨) ವಾ | "ತಥಾ ನ ತಾಪಾಯ ಪಯೋನಿಧೀನಾಮಶ್ವಾಮುಖೋತ್ಯ: ಕುಪಿತ: ಶಿಖಾವಾನ್" ನೆಪಂ ೮-೮೧ |

ಕುಪ್ಯತ್ ಕ್ಷುಧ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಉಪಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಕುಪ (ಕುಪಾಸ್ಯಾಮ್) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಕುಪ್ಯತಾ ಜಗೃಹಾತೇ ತೌ ರಕ್ಷಸಾ ದೀರ್ಘಬಾಹುನಾ" ಭೃಗುಂ ೬-೪೪ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೨-೬) | ಕುಪ್ಯಂತೀ ಕ್ಷುಧ್ಯಂತೀ |

ಕುಪ ಕ್ಷುಪ (ಪುಂ) 1. ಸಣ್ಣ ರೆಂಬೆ ಮತ್ತು ಬುಡಗಳುಳ್ಳ ಮರ. ಕುಪ (ಶಬ್ದ) "ಪ:" ಬಾಹುಂ | "ನಮಸ: ಕಲಮೇರಪಾಸಿತಂ ಜಲದೇವೈರೀತರಕ್ಷುಪಂ ನಗಮ್" ನೆಪಂ ೨-೬೭ | 2. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಪುತ್ರ, ಸತ್ಯಭಾಮೆಯ ಮಗ. "ಜಗ್ನಿರೇ ಸತ್ಯಭಾಮಾಯಾಂ ಭಾನುರ್ಮಿರಯ: ಕುಪ:" ಹರಿವಂ |

ಕುಪ್ಪ ಕ್ಷುಪ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಕಡಗೋಲು, ಮೊಸರನ್ನು ಕಡೆಯುವ ಕೋಲು, ಮಂಡು. ಕುಪ (ಸಂಚಲನೆ) "ಕ್ತ:" (೭-೨-೧೮) | ಮನ್ಯನದಂಡಶ್ಚೇತ್ ಇಡಭಾವೋ ನಿಪಾತ್ಯತೇ | "ಶೋಭೇವ ಮಂದರಕುಪ್ಪಕುಪಿತಾಮ್ಭೋಧಿವರ್ಣನಾ" ಮಾಘಂ ೨-೧೦೭ | 2. ಒಂದು ವಿಧ ರತಿಬಂಧ. ಕುಪ ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | "ಪಾರ್ವೋಪರಿ ಪದೇ ಕೃತ್ವಾ ಯೋನಿ ಲಿಂಗೇನ ತಾಡಯೇತ್ | ಬಾಹುಭ್ಯಾಂ ಧಾರಣಂ ಗಾಢಂ ಬಂಧೋಜ್ಯಂ ಕುಪ್ಪ-ಸಂಜಕ:" ರತಿಮಂ |

ಕುಪ್ಪಾಚಲ ಕ್ಷುಪ್ಪಾಚಲ (ಪುಂ) ಅಮೃತಕ್ಕಾಗಿ ಕ್ಷೀರ ಸಮುದ್ರವನ್ನು ಕಡೆದ ಮಂದರಪರ್ವತ. "ಭೋಗೀಂದ್ರ-ವೇಷ್ಠಶತವೃಷ್ಠಿಕೃತಾಭಿರವ್ಧಿಕುಪ್ಪಾಚಲ: ಕನಕಕೇತಕಗೋತ್ರ-ಗಾತ್ರ" ನೆಪಂ ೧೧-೬೧ |

ಕುಪ-ಸಂಚಲನೆ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) | ಕುಪತೇ | ಕುಪುತೇ | ಕುಪಿತಾ | ಕುಪಿಷ್ಯತೇ | ಕುಪಿತಾಮ್ | ಅಕುಪತ | ಕುಪತ | ಕುಪಿಷ್ಠ | ಅಕುಪತ್ | ಅಕುಪಿಷ್ಠ | ಅಕು-ಮಿಷ್ಯತ | ಚಲಿಸು, ಅಲಗಾಡು.

ಭಾವೇ:-ಕುಪ್ಯತೇ | ಕುಪ್ಯತಾಮ್ | ಅಕುಪ್ಯತ | ಕುಪ್ಯತ | ಅಕುಪಿ | ಉಳಿದೆಲ್ಲ ರೂಪಗಳೂ ಕರ್ತಂ ರೂಪಗಳಂತಾಗುವವು.

ಣಿಚಿ:-ಕುಪಯತಿ, -ತೇ | ಕುಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಕುಪಯಿತಾ | ಕುಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ಕುಪಯತು, -ತಾಮ್ | ಅಕುಪಯತ್, -ತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:-ಕುಪಿತವ್ಯಮ್ | ಕುಪಣೀಯಮ್ | ಕುಪ್ಯಮ್ | ಕುಪ್ತೋ ಮನ್ಯ: | ಅನ್ಯತ್ರ ಕುಪಿತ: | ಕುಪಿತವಾನ್, -ವತೀ | ಕುಪಿತಮ್ ಕುಪಿತಂ ವಾ ತೇನ | ಪ್ರಕುಪಿತ: ಪ್ರಕುಪಿತೋ ವಾ ಚೇತ್ರ: | ಕುಪಿತುಮ್ | ಕುಪಿತಮ್ | ಕುಪಣಮ್ | ಕುಪಿತ್ವಾ, ಕುಪಿತ್ವಾ | ಪರಿಕುಪ್ಯ, ಪರಿಕುಪ್ಯ |

ಕುಪ-ಸಂಚಲನೆ (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) | ಕುಪ್ಯತಿ | ಕುಪುತ | ಇತ್ಯಾದಿ ಸರ್ವ "ಕುಪ" ಧಾತುವತ್ |

ಕುಪ-ಸಂಚಲನೆ (ಕ್ರಯಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) | ಕುಪ್ನಾತಿ | ಕುಪುತ | ಕುಪಿತಾ | ಕುಪಿಷ್ಯತಿ | ಕುಪ್ನಾತು | ಅಕುಪ್ನಾತ್ | ಕುಪ್ನೀಯಾತ್ | ಕುಪ್ಯಾತ್ | ಅಕುಪಿತ್ | ಅಕುಪಿಷ್ಯತ್ |

ಭಾವೇ:-ಕುಪ್ಯತೇ | ಇತ್ಯಾದಿ ಸರ್ವ ಮ್ವಾಂ "ಕುಪ" ಧಾತುವತ್ |

ಕೃತ್ಸು:-ಕುಪ್ನನ್, ಕುಪ್ನಂತೀ ಇತಿ ವಿಶೇಷ: | ಶೇಷಂ ಸರ್ವ ಕುಪಿತವತ್ |

ಕುಪಿತ ಕ್ಷುಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಚಲಿಸಿದ, ಕೋಪಗೊಂಡ, ಎಲ್ಲೆ ಮೀರಿದ. ಕುಪ (ಸಂಚಲನೆ) ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | "ಸ್ಮಾಹ ಚಲಯತಿ ಭುವಂ ಮಸತಿ ಕುಪಿತಸ್ಯ ನಾದಮನುಕುರ್ವ-ದಮ್ಬಧೇ:" ಮಾಘಂ ೧೫-೪೪ | 2. ಕಲಕಲ್ಪಿ, ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಅಸಮಾಧಾನಗೊಂಡ. "ಪ್ರಾಹ ಮುರರಿಪುತಿರಸ್ಕರಣಕುಪಿತ: ಸ್ಮ ವಾಚಮಿತಿ ಜಾಹ್ನವೀಸುತ:" ಮಾಘಂ ೧೫-೪೫ | 3. ಉದ್ಭವಾದ, ಬಿರುಸಾದ. "ಇತಿರೀತೇ ವಚಸಿ ವಚಸ್ವಿನಾಮುನಾ ಯುಗಕ್ಷಯಕುಪಿತಮರ್ದಗರೀಯಸಿ" ಮಾಘಂ ೧೭-೧ | 4. ಕೋಪಗೊಂಡ, ಸಿಟ್ಟಿಗೊಂಡ. "ಕುಪಿತಸ್ಯ ಮಹಿಮತಸ್ತ್ವಯಿ ಪ್ರಥಮೋಪನ್ಯಸನಂ ವೃಥಾ ಮಮ" ಮಾಘಂ ೧೬-೫೧ | 5. ಹೆದರಿದ, ಭಯಗೊಂಡ, ಕಳವಳಗೊಂಡ. 6. ಕಲಕಲ್ಪಿ. "ಶೋಭೇವ ಮಂದರಕುಪ್ಪಕುಪಿತಾಮ್ಭೋಧಿವರ್ಣನಾ" ಮಾಘಂ ೨-೧೦೭ |

ಕುಪ್ನತ್ ಕ್ಷುಪ್ನತ್ (ವಿಂ) ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ಎಲ್ಲೆ ಮೀರುತ್ತಿರುವ. ಕುಪ (ಸಂಚಲನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) | ಕುಪ್ನಂತೀ ಕ್ಷುಪ್ನಂತೀ | [ಕ್ರಯಾಂ]



**ಕುಮ್ಯತ್ ಕ್ವುಭ್ಯತ್** (ವಿಂ) ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ಎಲ್ಲಿಮಾರಿ ಬರುತ್ತಿರುವ, ಕೋಭೆಹೊಂದುತ್ತಿರುವ. ಕುಮ(ಸಚ್ಚಲನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। ಕುಮ್ಯಂತಿ ಕ್ವುಭ್ಯಂತೀ. [ದಿವಾಂ]। "ತುರ್ಯೈಗುಕ್ಯೇ ಕುಮ್ಯ-ದಕುಪಾರಾನುಕಾರಿಣಿ" ಮಾಘಂ ೧೯-೨೬।

**ಕುಮಾ ಕ್ವುಮಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅತಃಪ್ರಕೃತ್ಯ, ಅಗಸೇಮರ. ಕೌತಿ - ಟುಕು (ಶಬ್ದ) "ಮಕ್" ಬಾಹುಂ।

**ಕುರ - ವೀಲೇಖನೆ** (ತುಡಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಕುರತಿ। ಕುಕೋರ। ಕೋರಿತಾ। ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಕತ್ತರಿಸು. 2. ಗೆರೆ ಎಳೆ.

**ಕುರ ಕ್ವುರ** (ಪುಂ) 1. ನಾಪಿತನ ಕತ್ತಿ, ಕತ್ತಿರಕತ್ತಿ. ಕುರ (ವೀಲೇಖನೆ) "ರನ್" (೩ಂ ೩-೨೯)। ಗುಣಾಭಾವಶ್ಚ ನಿಪಾಂ। "ಸಮುಪಜಾತಕೋಪೋಜ್ಯ ನಾಪಿತ: ತಂ ಕುರಂ ದ್ವಾರಾದೇವ ಕ್ಷಿಪ್ತವಾನ್" ಹಿತಂ। "ಆಧೋರಣಾನಾಂ ಗಜಸಂನಿಪಾತೇ ಶಿರಾಸಿ ಚಕ್ರ-ನಿಶಿತೈ: ಕುರಾಘೈ:" ರಘುಂ ೭-೪೬। 2. ಹಸು ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಕಾಲಿನ ಗೊರಸು. 3. ಬಾಣ. 4. ಕೊಳವಳೆ ಗಿಡ. 5. ಒಂಡೀತಕ ವೃಕ್ಷ, ಮಂಗಾರಿ ಗಿಡ. 6. ನೆಗ್ಗಿಲು ಗಿಡ. 7. ಬಿಡ್ಡ, ಕತ್ತಿ. "ಕುರ: ಸ್ಯಾತ್ ಕ್ಷೇದನದ್ರವ್ಯೇ ಕೋಕಿಲಾಕ್ಷೇ ಚ ಗೋಕ್ಷರೇ" ಮೇದಿಂ। "ನಾಪಿತಸ್ಯೋಪಕರಣೇ ಕೋಕಿಲಾಕ್ಷೇಽಪಿ ಚ ಕುರ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। "ಕುರೇಣ ಶಿತಧಾರೆಣ ಚಕರ್ತಾಸ್ಯ ಶರಾಸನಮ್" ರಾಮಾಂ।

**ಕುರಕ ಕ್ವುರಕ** (ಪುಂ) 1. ತಿಲಕವೃಕ್ಷ. 2. ನೆಗ್ಗಿಲು ಗಿಡ. 3. ಕೊಳವಳೆ ಗಿಡ. 4. ಹಸು ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಕಾಲಿನ ಗೊರಸು. ಕುರ (ವೀಲೇಖನೆ) "ಕ್ವುನ್" (೩ಂ ೨-೯೦)।

**ಕುರಕರ್ಮನ್ ಕ್ವುರಕರ್ಮನ್** (ನಂ) ಕ್ವುರ, ಕೇಶಖಂಡನ, ಚೌಲ ಸಂಸ್ಕಾರ. ಕುರಸಾಧ್ಯಂ ಕರ್ಮ। "ಯೋ ಜನ್ಮಮಾಸೇ ಕುರಕರ್ಮ ಯಾತ್ರಾಂ ಕರ್ಣಸ್ಯ ವೇಧಂ ಕುರತೇ ಚ ಮೋಹಾತ್। ನೂನಂ ಸ ರೋಗಂ ಧನಪುತ್ರನಾಶಂ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ ಮೂಢೋ ವಧವನ್ವನಾನಿ"। ಆದುದರಿಂದ ಜನ್ಮ (ಹುಟ್ಟಿದ) ಮಾಸದಲ್ಲಿ ಚೌಲವನ್ನು ಮಾಡಕೂಡದು. ಚೌಲಕರ್ಮಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ಕಾಲ: ಮೂರನೆಯ ಪಯಸ್ಸಿನ ನಂತರ ವಿಷಮ ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ಉತ್ತರಾಯಣದಲ್ಲಿ ಶುದ್ಧ ಪಾಡ್ಯ ಚೌತಿ ಪಕ್ಷಿ ಅಷ್ಟಮಿ ನವಮಿ ದ್ವಾದಶಿ ಚತುರ್ದಶಿ ಹುಣ್ಣಿಮೆ ಮತ್ತು ಅವಾವಾಸ್ಯೆ ತಿಥಿಗಳನ್ನೂ ಗ್ರಹಣ ಸಂಕ್ರಮಣಗಳನ್ನೂ ಬಿಟ್ಟು ಉಳಿದ ತಿಥಿಗಳಲ್ಲೂ ಸೋಮ, ಬುಧ, ಗುರು ಮತ್ತು ಶುಕ್ರವಾರಗಳಲ್ಲೂ, ಅರ್ವಿ ನಿ ಮೃಗಶಿರ್ಷ ಪುಷ್ಯ ಹಸ್ತ ಚಿತ್ತ ಶ್ರವಣ ಧನಿಷ್ಠೆ ಮತ್ತು ರೇವತಿ ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲೂ

ಕರ್ಕಾಟಕ ಕನ್ಯಾ ಮಿಥುನ ಮೀನ ತುಲಾ ವೃಷಭ ಮಕರ ಲಗ್ನಗಳಲ್ಲೂ ಮಾಡುವುದು ಪ್ರಶಸ್ತವು. ರೋಹಿಣಿ ಉತ್ತರಾಷಾಢಿ ಸ್ವಾತಿ ಶತಭಿಷೆ ಉತ್ತರಾಷಾಢಿ ಮತ್ತು ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರೇಗಳಲ್ಲಿ ಮಧ್ಯಮ. "ತೃತೀಯವರ್ಷೇಽಪ್ಯಥ-ಪञ्ಚಮೇಽಂದೇ ಗತತ್ರಿಭಾಗೇ ಪ್ರವದಂತಿ ಚೌಲಮ್। ತದಗತೇಽನ್ ಗುಣಶಕ್ತೇಜ:ಪ್ರಕಾಶಿತಂ ವ್ಯೋಮ್ನಿ ಚ ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷೇ॥ ಆದಿತ್ಯ-ಸಾಮ್ಯವಸುವೇಣವಪೌರ್ಣಾತಿಥ್ಯತ್ವಷ್ಟದಿವಚಂಡಕಿರಣೇಷು ದಿವಾ ಪ್ರಶಸ್ತಮ್। ಸ್ವಾತಿವಿಧಾತೃವಣೋತ್ತರಭಾನಿ ಮಧ್ಯಾನ್ಯಾಹ್ನ-ನಿಶಾಸ್ವಪಿ ನ ಚ ಕುರಕರ್ಮ ಕಾರ್ಯಮ್" ಮುಹೂಂ ೬೦। "ಕರ್ಯಜ್ಞನಾಮಿಥುನಮೀನತುಲೋಕ್ಷನಕ್ರಾ: ಪೂಜ್ಯಾ:" ಮುಹೂಂ ೬೦।

**ಕುರಧಾನ ಕ್ವುರಧಾನ** (ನಂ) ಕ್ವುರಕನ ಕತ್ತಿ ಸಾಣೆಕಲ್ಲು ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಇಡುವ ಚೀಲ. ಕುರೋ ಧೀಯತೇ - ಟು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭)।

**ಕುರಪತ್ರ ಕ್ವುರಪತ್ರ** (ಪುಂ) ಕತ್ತಿಯ ಅಲುಗಿನಂತೆ ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ತುದಿಯುಳ್ಳ ಬಾಣ. ಕುರ ಇವ ಪತ್ರಮಸ್ಯ।

**ಕುರಪ್ರ ಕ್ವುರಪ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಕುಡಗಲು, ಹುಲ್ಲು ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಕೊಯ್ಯುವ ಒಂದು ಆಯುಧ. ಕುರಂ ಪ್ರಾತಿ - ಪ್ರಾ (ಪೂರ್ಣ) "ಕ:" (೩-೨-೪)। 2. ಕತ್ತಿಯಂತೆ ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ತುದಿಯುಳ್ಳ ಬಾಣ. "ಪ್ರಾಯೋ ವಿಷಾಣಪರಿಮೋಕ್ಷ-ಲಘುತಮಾಜ್ಞಾನ್ ಕ್ಷಡ್ಗಾಂಶ್ರಕಾರ ನೃಪತಿರ್ನಿಶಿತೈ: ಕುರಪ್ರೈ:" ರಘುಂ ೯-೬೨।

**ಕುರಭಾಂಡ ಕ್ವುರಭಾಂಡ** (ನಂ) ಕ್ವುರಕನ ಕತ್ತಿಯ ಚೀಲ, ಕ್ವುರಕನ ಕತ್ತಿಯನ್ನು ಇಡುವ ಚೀಲ. ಕುರಸ್ಯ ಭಾಂಡಮ್। "ಶೀಘ್ರಮಾನೀಯತಾಂ ಕುರಭಾಂಡಂ ಕುರಕರ್ಮಕರಣಾಯ ಗಚ್ಛಾಮಿ" ಪञ್ಚತಂಂ।

**ಕುರಮದಿನ್ ಕ್ವುರಮದಿನ್** (ಪುಂ) ನಾಪಿತ, ಕ್ವುರಕ. ಕುರಂ ಮೃದ್ನಾತಿ ಧರ್ಷಯತಿ - ಮೃದ (ಕೋದ) "ಗಿರಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)।

**ಕುರಮುಂಡಿನ್ ಕ್ವುರಮುಂಡಿನ್** (ಪುಂ) ನಾಪಿತ, ಕ್ವುರಕ, ನಾಯಿಂದ. ಕುರೇಣ ಮುಂಡಯತಿ - ಮುಂಡ + ಗಿನ್ "ಗಿರಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)।

**ಕುರಾಙ್ಗ ಕ್ವುರಾಂಗ** (ಪುಂ) ನೆಗ್ಗಿಲು ಗಿಡ. ಕುರ ಇವಾಙ್ಗಮಸ್ಯ।

**ಕುರಿಕಾ ಕ್ವುರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಕು, ಚೂರಿ, ಸಣ್ಣಕತ್ತಿ. ಕುರತಿ - ಕುರ (ವೀಲೇಖನೆ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೪-೪-೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪)। ಅತ ಇತ್ವಮ್।

**ಕುರಿಕಾಪತ್ರ ಕ್ವುರಿಕಾಪತ್ರ** (ಪುಂ) ಶರ, ಬಾಣ. ಕುರಿಕೇವ ಪತ್ರಮಸ್ಯ।



ಧುರಿನ್ ಕ್ಷುರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ನಾಟಕ, ಕ್ಷೇರಿಕ, ನಾಯಿಂದ.  
ಧುರೋಽಸ್ತಿ-ಧುರ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
"ಜೀಪ್" (೪-೧-೫). -ಘೋ-ಣೀ. 2. ನಾಟಕನ ಹೆಂಡತಿ.  
3. ವರಾಹಕೃಷ್ಣಾಯಂಬ ಗಿಡ.

ಧುರಿ ಕ್ಷುರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಾಕು, ಚೂರಿ, ಸಣ್ಣ ಕತ್ತಿ.  
ಅಲ್ಪ: ಧುರ: "ಧುರಿ ಧುರಿ ಕೃಪಾಣಿಕಾ" ಅಭಿಂ  
ಚಿಂ.

ಧುಲಿ ಕ್ಷುಲಿ (ವಿಂ) 1. ಅಲ್ಪ, ಸ್ವಲ್ಪ. ಧುಲಿ ಲಾತಿ - ಲಾ  
(ಆದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩). 2. ಕನಿಷ್ಠ, ಕಿರಿಯ.  
3. ನೀಚ, ಅಧಮ.

ಧುಲಿಕ ಕ್ಷುಲಿಕ (ಪುಂ) 1. ಗುಳ್ಳೆ ಶಂಖ. (ವಿಂ) 2.  
ನೀಚ, ಅಧಮ. 3. ಅಲ್ಪವಾದ, ಸ್ವಲ್ಪವಾದ. 4. ಸಣ್ಣ  
ವಾದ, ಚಿಕ್ಕವಾದ. ಧುಲಿ ಲಾತಿ - ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ:"  
(೩-೨-೩). ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೪-೪-೫). ಧುಲಿ  
ಲಾತಿ - ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕನ್" (೩ಂ ೨-೩೨) ವಾ.  
"ಧುಲಿಕಸ್ತ್ರೀಷು ನೇಚೇಷು" ಮೇದಿಂ. 5. ಪಾಮರ,  
ಅಜ್ಞಾನಿ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು, ಮೂರ್ಖ. 6. ದುಃಖ  
ಗೊಂಡವನು, ನೊಂದವನು. 7. ಕನಿಷ್ಠ, ಕಿರಿಯ.  
"ಧುಲಿಕ: ಪಾಮರೇ ಸ್ವಲ್ಪೇ ಕನಿಷ್ಠೇ ದುಃಖಿತೇ ಖಲೇ" ಹೇಮಂ.

ಕ್ಷೇತ್ರ ಕ್ಷೇತ್ರ (ವಿಂ) 1. ಕಡಮೆಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ. 2. ಕಡಮೆಮಾಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ಕಡಮೆ  
ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 4. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ನಾಶ  
ಪಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 6. ನಾಶಪಡಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ.  
ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯ) ಅಂತರ್ಮಾವಿವರ್ತನ: "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬).

ಕ್ಷೇತ್ರ ಕ್ಷೇತ್ರ (ನಂ) 1. ಒತ್ತ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಬೆಳೆಯುವ  
ಭೂಮಿ, ಗದ್ದೆ. ಕ್ಷೀಯತೇ ಧಾನ್ಯೇಶ್ವರ - ಕ್ಷಿ (ನಿವಾಸಗತ್ಯೋಃ)  
"ಫ್ಲನ್" (೩ಂ ೪-೧೫೯). "ಚೀಯತೇ ಬಾಲಿಷತ್ಯಾಪಿ  
ಸತ್ಕ್ಷೇತ್ರಪತಿತಾ ಕೃಷಿ:" ಮುಡ್ರಾಂ ೧-೩. 2. ಸ್ಥಾನ, ಜಾಗ,  
ಪ್ರದೇಶ. "ಸತ್ಯ: ಸೀರೋತ್ಕರ್ಷಣಸುರಭಿ ಕ್ಷೇತ್ರಮಾರುಹಃ ಮಾಲಮ್"  
ಮೇಘಂ ೧-೧೬. 3. ಪುಣ್ಯಸ್ಥಲ, ಯಾತ್ರಾಸ್ಥಲ, ತಿರುಪತಿ  
(ಆದಿವರಾಹ ಕ್ಷೇತ್ರ), ಕಂಚಿ (ಸತ್ಯಪ್ರತ ಕ್ಷೇತ್ರ), ಶ್ರೀರಂಗ  
ಕ್ಷೇತ್ರ, ಮೇಲುಕೋಟೆ (ಯಾದವಗಿರಿ-ವೈಕುಂಠವರ್ಧನ  
ಕ್ಷೇತ್ರ), ಕಾಶಿ, ಪ್ರಯಾಗ (ಗಯಾ ಭಾಸ್ಕರ ಕ್ಷೇತ್ರ), ಕಾಮ  
ರೂಪ, ಶ್ರವಣಬೆಳಗೊಳ ಮೊದಲಾದುವು. "ಆಸನ್ನಂ  
ಯುವಯೋ: ಕ್ಷೇತ್ರಮಿದಂ ವಾರಾಣಸೀ ತು ಯತ್. ಕಥಿತಂ ನಾತಿಹೀ  
ಚ ವರ್ತತೇ ನರಸತ್ತಮೀ". "ನಾಚಿರಾತ್ ಕಾಮದಂ ಪುಣ್ಯಂ ಕ್ಷೇತ್ರಂ  
ಪೀಠಂ ನಿಗದ್ಯತೇ. ಕಾಮರೂಪಂ ಮಹಾಪೀಠಂ ಗುಹ್ಯಾದ್ಗುಹ್ಯತಮಂ  
ಪರಮ್" ಕಾಲಿಕಾಪುಂ. 4. ಕಳತ್ರ, ಪತಿ, ಹೆಂಡತಿ.

"ಅಪಿ ನಾಮ ಕುಲಪತೇರಿಯಮಸರ್ವಣಕ್ಷೇತ್ರಸಂಭವಾ ಸ್ಯಾತ್" ಶಾಕುಂ  
೧. 5. ಶರೀರ, ದೇಹ. "ಇದಂ ಶರೀರಂ ಕೌಂತೇಯ ಕ್ಷೇತ್ರ-  
ಮಿತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ" ಗೀತಾ ೧೩-೧. ಇದಂ ಶರೀರಂ - "ದೇವೋಽ-  
ಹಮ್, ಮನುಷ್ಯೋಽಹಮ್, ಸ್ಥೂಲೋಽಹಮ್, ಕೃಶೋಽಹಮ್ ಇತ್ಯಾತ್ಮನಾ  
ಭೋಕ್ತೃ ಸಹ ಸಾಮಾನಾಧಿಕರ್ಷಣೇನ ಪ್ರತಿಯಮಾನಂ ಭೋಕ್ತು-  
ರಾತ್ಮನೋಽನ್ತರಭೂತಸ್ಯ ಭೋಗಕ್ಷೇತ್ರಮಿತಿ ಶರೀರಯಾತ್ಮಾತ್ಮ-  
ವಿದ್ವಿರಭಿಧೀಯತೇ" ಇತಿ ಶ್ರೀರಾಮಾನುಜಭಾಷ್ಯಮ್. "ಇದಮಿತಿ  
ಸರ್ವನಾಮ್ನೋಕ್ತಂ ವಿಶಿನಿಷ್ಠಿ ಶರೀರಮಿತಿ. ಹೇ ಕೌಂತೇಯ  
ಕ್ಷತತ್ರಾಣಾತ್ ಕ್ಷಯಾತ್, ಕ್ಷರಣಾತ್ ಕ್ಷೇತ್ರವಚ್ಚ ಅಸ್ಮಿನ್ ಕರ್ಮಫಲ-  
ನಿಷ್ಪತ್ತಿ: ಕ್ಷೇತ್ರಮಿತ್ಯೇವಮ್ ಅಭಿಧೀಯತೇ ಕಥ್ಯತೇ" ಇತಿ  
ಶ್ರೀಶಂಕರಭಾಷ್ಯಮ್. "ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಶರೀರೇ ಕೇದಾರೆ ಸಿದ್ಧಸ್ಥಾನ-  
ಕಲತ್ರಯೋಃ" ಮೇದಿಂ. "ಯೋಗಿನೋ ಯಂ ವಿಚಿನ್ವಂತಿ ಕ್ಷೇತ್ರಾ-  
ಮ್ಯನ್ತರವಾರಿಣಮ್" ಕುಮಾರಂ ೬-೭೭. 6. ಗೃಹ, ಮನೆ.  
7. ಯೋನಿ, ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನ. "ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಭಾರ್ಯಾಜ್ಞಕೇದಾರ-  
ಪುಣ್ಯಭೂಮಿಹಯೋನಿಷು" ನಾನಾರ್ಥರಂ. 8. ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರ  
ಮೇಶ್ವರ. 9. ಅಂತಃಕರಣ, ಮನಸ್ಸು. 10. ಸೂರ್ಯಾದಿ  
ಗ್ರಹಗಳ ಗೃಹ, ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ ಹನ್ನೆರಡು ರಾಶಿಗಳು.  
"ಕುಜಶುಕ್ರಬುಧೇಂದ್ರಕಸೌಮ್ಯಶುಕ್ರಾವನಿಭುವಾಮ್. ಜೀವಾಕಿಮಾನು-  
ಜೇಜ್ಯಾನಾಂ ಕ್ಷೇತ್ರಾಣಿ ಸ್ಯುರಜಾದಯಃ" ಜ್ಯೋತಿಷಂ.

| ಗೃಹ   | ಕ್ಷೇತ್ರ      |
|-------|--------------|
| ಕುಜ   | ಮೇಷ, ವೃಶ್ಚಿಕ |
| ಶುಕ್ರ | ವೃಷಭ, ತುಲಾ   |
| ಬುಧ   | ಮಿಥುನ, ಕನ್ಯಾ |
| ಚಂದ್ರ | ಕರ್ಕಾಟಕ      |
| ರವಿ   | ಸಿಂಹ         |
| ಗುರು  | ಧನಸ್ಸು, ಮೀನ  |
| ಶನಿ   | ಮಕರ, ಕುಂಭ    |

ಈ ಗ್ರಹಗಳು ಆಯಾ ಕ್ಷೇತ್ರಗಳಿಗೆ ಅಧಿಪತಿಗಳು.  
11. ಲೀಲಾವತಿಯಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ವೃತ್ತ ತ್ರಿಕೋಣ  
ಚತುಷ್ಕೋಣ ಮೊದಲಾದುವು.

ಕ್ಷೇತ್ರಕರ ಕ್ಷೇತ್ರಕರ (ಪುಂ) ರೈತ, ಭೂಮಿಯ ಸಾಗುವಳಿ  
ಮಾಡುವ ಬೇಸಾಯಗಾರ. ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃತ್  
(ಕರಣ) "ಕ:" (೩-೨-೨೧).

ಕ್ಷೇತ್ರಜ ಕ್ಷೇತ್ರಜ (ಪುಂ) 1. ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಪುತ್ರರಲ್ಲೊಬ್ಬ,  
ವಂಶಾಭಿವೃದ್ಧಿಗಾಗಿ ಹಿರಿಯರ ಅನುಮತಿಯಿಂದ ಪತಿಯ  
ಸಹೋದರರಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಗ. ಕ್ಷೇತ್ರೇ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ  
(ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೯೭). "ಯಸ್ತಲ್ಪಜಃ ಪ್ರಮಿತಸ್ಯ  
ಕಲಿವಸ್ಯ ವ್ಯಾಧಿತಸ್ಯ ವಾ. ಸ್ವಧರ್ಮೇಣ ನಿಯುಕ್ತಾಯಾಂ ಸ ಪುತ್ರಃ  
ಕ್ಷೇತ್ರಜಃ ಸ್ಮೃತಃ" ಮನುಂ ೯-೧೬೭. ಇದು ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ



ನಿಷಿದ್ಧ. "ಕಲಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ. (ವಿಂ) 2. ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. 3. ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಉತ್ಪನ್ನವಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜಾ-ಜಾ. 4. ಬೀಜಹೆಣ್ಣು.

**ಕ್ಷೇತ್ರಜಾತ ಕ್ಷೇತ್ರಜಾತ** (ಪುಂ) "ಕ್ಷೇತ್ರಜ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಕ್ಷೇತ್ರೇ ಜಾತಃ. "ಕ್ಷೇತ್ರಜಃ ಕ್ಷೇತ್ರಜಾತಸ್ತು ಸಗೋತ್ರೇಣೇತರೇಣ ವಾ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೨೮.

**ಕ್ಷೇತ್ರಜ ಕ್ಷೇತ್ರಜ್ಞ** (ಪುಂ) 1. ಜೀವ, ಈ ಕ್ಷೇತ್ರ (ಶರೀರ)ವು ನನ್ನದೆಂಬ ಜ್ಞಾನವುಳ್ಳ ಜೀವಾತ್ಮ. ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಶರೀರಂ ಮಮೇತಿ ಜಾನಾತಿ - ಜಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫). 2. ಪರಮಾತ್ಮ. ಕ್ಷೇತ್ರೇಷು ಸರ್ವದೇಹೇಷು ಅನ್ತರ್ಯಾಮಿತಯಾ ಆತ್ಮ-ಸ್ವರೂಪಂ ಜಾನಾತಿ - ಜಾ "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫). "ಇದಂ ಶರೀರಂ ಕೀರ್ತಯ ಕ್ಷೇತ್ರಮಿತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ. ಏತದ್ವೋ ವೇತ್ತಿ ತಂ ಪ್ರಾಹುಃ ಕ್ಷೇತ್ರಜಃ ಇತಿ ತದ್ವಿದಃ. ಕ್ಷೇತ್ರಜಂ ಚಾಪಿ ಮಾಂ ವಿದ್ವಿ ಸರ್ವಕ್ಷೇತ್ರೇಷು ಭಾರತ. ಕ್ಷೇತ್ರಕ್ಷೇತ್ರಜಯೋರ್ಜ್ಞಾನಂ ಯತ್ತ್ವಜ್ಞಾನಂ ಮತಂ ಮಮ" ಗೀತಾ ೧೩-೧, ೨. 3. ವಿಷ್ಣು. ಮುಕ್ತೇಮ್ಯಃ ಸ್ವಾನುಭವಂ ದಾತುಂ ತದೇಕಾಂತಂ ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಜಾನಾತಿ. "ಕ್ಷೇತ್ರಂ ತು ಪರಮವ್ಯಯಮ್ ಮುಕ್ತೇಮ್ಯೋ ವೇತ್ತಿ ನಿಯತಃ. ದಾತುಂ ಸ್ವಾನುಭವಂ ಯತ್ರ ಕ್ಷೇತ್ರಜಃ ಸ ತು ಕಥ್ಯತೇ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ. "ಯಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ನ ನಿವರ್ತಂತೇ ತದ್ವಾಮ ಪರಮಂ ಮಮ" ಗೀತಾ ೮-೨೧. "ಅವ್ಯಯಃ ಪುರುಷಃ ಸಾಕ್ಷೀ ಕ್ಷೇತ್ರಜೋಷ್ವರ ಏವ ಚ" ವಿಂ ಸಂ. 4. ಅಂತರ್ಯಾಮಿ. ಜೀವಾತ್ಮನನ್ನು ಪ್ರೇರಿಸಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡಿಸುವವನು. "ಯೋಽಸ್ಯಾತ್ಮನಃ ಕಾರಯಿತಾ ತಂ ಕ್ಷೇತ್ರಜಂ ಪ್ರವಕ್ಷತೇ. ಯಃ ಕರೋತಿ ತು ಕರ್ಮಾಣಿ ಸ ಭೂತಾತ್ಮೋಚ್ಯತೇ ಬುಧಃ" ಮನುಂ ೧೨-೧೨. (ವಿಂ) 5. ನಿಪುಣ, ಜಾಣ, ಬುದ್ಧಿವಂತ. 6. ರೈತ, ಬೇಸಾಯಗಾರ. 7. ಭೂಮಿಯ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿದವನು.

**ಕ್ಷೇತ್ರಪ ಕ್ಷೇತ್ರಪ** (ಪುಂ) ಕ್ಷೇತ್ರವನ್ನು ಕಾಪಾಡುವ ಒಂದು ದೇವತೆ. ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಪಾತಿ - ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೪).

**ಕ್ಷೇತ್ರಪತಿ ಕ್ಷೇತ್ರಪತಿ** (ಪುಂ) 1. ಭೂಮಿಯ ಒಡೆಯ, ಜಮೀನುದಾರ. ಕ್ಷೇತ್ರಸ್ಯ ಪತಿಃ. 2. ತನಗೆ ಆಧಾರವಾದ ದೇಹಕ್ಕೆ ಒಡೆಯನಾದ ಜೀವಾತ್ಮ. "ಜೀವಂ ಕ್ಷೇತ್ರಪತಿ ಪ್ರಾಹುಃ ಕೇಚಿದಗ್ನಿಮಥಾಪರೇ. ಸ್ವತನ್ತ್ರ ಏವ ಸ ಕಶ್ಚಿತ್ ಕ್ಷೇತ್ರಸ್ಯ ಪತೀರಿಷ್ಯತೇ" ತನ್ತ್ರಸಾಂ.

**ಕ್ಷೇತ್ರಪಾಲ ಕ್ಷೇತ್ರಪಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಜಮೀನನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನು, ಹೊಲ ಗದ್ದೆಗಳನ್ನು ಕಾಯುವವನು. ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಪಾಲಯತಿ - ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿच् "ಅಣ್" (೩-೨-೧). "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩). -ಪಾಲಕಃ - ಪಾಲಕಃ. "ವೃಷಾಪೇಹಿ

ಪರಕ್ಷೇತ್ರಾದಾಪಾತಿ ಕ್ಷೇತ್ರಪಾಲಕಃ" ಚಂದ್ರಾಂ. 2. ಕ್ಷೇತ್ರವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವ ಒಂದು ದೇವತೆ. 3. ಭೈರವ. ಒಟ್ಟು 49 ಭೈರವ ಭೇದಗಳೆಂದು ಪ್ರಯೋಗಸಾರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ.

**ಕ್ಷೇತ್ರಭಕ್ತಿ ಕ್ಷೇತ್ರಭಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಮೀನಿನ ವಿಭಾಗ.

**ಕ್ಷೇತ್ರರಕ್ಷ ಕ್ಷೇತ್ರರಕ್ಷ** (ವಿಂ) ಜಮೀನನ್ನು ಕಾಯುವವನು, ಹೊಲ ಗದ್ದೆ ತೋಟಗಳನ್ನು ಕಾಯುವವನು. ಕ್ಷೇತ್ರಂ ರಕ್ಷತಿ - ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಅच्" (೩-೧-೧೩೪).

**ಕ್ಷೇತ್ರರಹ ಕ್ಷೇತ್ರರಹ** (ವಿಂ) ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಕ್ಷೇತ್ರೇ ರೋಹಿತಿ - ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಹಾ - ರಹಾ. ಸೌತಕಾಯಿ.

**ಕ್ಷೇತ್ರವಿದ್ ಕ್ಷೇತ್ರವಿದ್** (ಪುಂ) 1. ರೈತ, ನೆಲದ ಸ್ವರೂಪವನ್ನೂ ವ್ಯವಸಾಯವನ್ನೂ ತಿಳಿದವನು. ಕ್ಷೇತ್ರಂ ವೇತ್ತಿ - ವಿದ (ಜ್ಞಾನೆ) "ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧). 2. "ಕ್ಷೇತ್ರಜ" ಪದದ ಅರ್ಥ. "ಯಮಕ್ಷರಂ ಕ್ಷೇತ್ರವಿದೋ ವಿಧುಸ್ತಮಾತ್ಮಾನಮಾತ್ಮನೈವಲೋಕ-ಯಂತಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೫೦.

**ಕ್ಷೇತ್ರಸಂಭವ ಕ್ಷೇತ್ರಸಂಭವ** (ವಿಂ) ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಕ್ಷೇತ್ರೇ ಸಂಭವತಿ - ಸಂ + ಭೂ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). -ಸಂಭೂತಃ - ಸಂಭೂತಃ.

**ಕ್ಷೇತ್ರಾಜೀವ ಕ್ಷೇತ್ರಾಜೀವ** (ಪುಂ) 1. ರೈತ, ಬೇಸಾಯಗಾರ. ಕ್ಷೇತ್ರಮಾಜೀವೋ ಯಸ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಬೇಸಾಯದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು.

**ಕ್ಷೇತ್ರಾಧಿವೇಶತಾ ಕ್ಷೇತ್ರಾಧಿವೇಶತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರದ ದೇವತೆ.

**ಕ್ಷೇತ್ರಾಧಿಪ ಕ್ಷೇತ್ರಾಧಿಪ** (ಪುಂ) 1. ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರದ ದೇವತೆ. 2. ಜಮೀನಿನ ಒಡೆಯ. 3. ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ ಹನ್ನೆರಡು ರಾಶಿಗಳ ಅಧಿಪತಿಗಳು. ಕ್ಷೇತ್ರಸ್ಯ ಕ್ಷೇತ್ರಾಣಾಂ ವಾಧಿಪಃ. -ಅಧಿಪತಿಃ - ಅಧಿಪತಿಃ.

**ಕ್ಷೇತ್ರೀ ಕ್ಷೇತ್ರೀ** (ಪುಂ) 1. ಜಮೀನಿನ ಒಡೆಯ. ಕ್ಷೇತ್ರ-ಮಸ್ತಯಸ್ಯ "ಠನ್" (೫-೨-೧೧೫). "ಕ್ಷೇತ್ರೇಷ್ವರೈಷು ತು ಪಶುಃ ಸಪಾದಂ ಪಣಮಹಂತಿ. ಸರ್ವತ್ರ ತು ಸದೋ ದೇಯಃ ಕ್ಷೇತ್ರೀಕಸ್ಯೇತಿ ಧಾರಣಾ" ಮನುಂ ೮-೨೪೧. 2. ಯಜಮಾನ, ಪತ್ನಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು, ಪತಿ. "ಆಂಶವಾತಾಹುತಂ ಬೀಜಂ ಯಸ್ಯ ಕ್ಷೇತ್ರೇ ಪ್ರರೋಹತಿ. ಕ್ಷೇತ್ರೀಕಸ್ಯೇವ ತದ್ಬೀಜಂ ನ ವಪ್ತಾ ಲಭತೇ ಫಲಮ್" ಮನುಂ ೯-೫೪.

**ಕ್ಷೇತ್ರೀ ಕ್ಷೇತ್ರೀ** (ಪುಂ) 1. ಜೀವಾತ್ಮ. 2. ಪರಮಾತ್ಮ. 3. ರೈತ, ಬೇಸಾಯಗಾರ. 4. ಜಮೀನುದಾರ. "ಯಾವತ್ ಸಸ್ಯಂ ವಿನಶ್ಯೇತ್ ತಾವತ್ ಸ್ಯಾತ್ ಕ್ಷೇತ್ರೀಣಃ ಫಲಮ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೬೧. 5. ಪತಿ, ಯಜಮಾನ. ಕ್ಷೇತ್ರಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ



“ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೫)। “ತಥೆವಾಕ್ಷೇತ್ರಣಿಂ ಬೀಜಂ ಪರಕ್ಷೇತ್ರ-  
ಪ್ರವಾಪಿಣಿ:। ಕುರ್ವಂತಿ ಕ್ಷೇತ್ರಣಾಮರ್ಥಂ ನ ಬೀಜಿ ಲಬಹತೆ ಫಲಮ್”  
ಮನುಂ ೧-೫೧।

**ಕ್ಷೇತ್ರಿಯ ಕ್ಷೇತ್ರಿಯ (ಪುಂ)** 1. ವರ್ತಮಾನ (ಈಗಿನ) ಶರೀರ  
ದಲ್ಲಿ ಚಿಹ್ನೆಗೆ ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ ವ್ಯಾಧಿ, ಬೇರೆ ಶರೀರ  
(ಜನ್ಮಾಂತರ)ದಲ್ಲಿ ಚಿಹ್ನೆಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ವ್ಯಾಧಿ.  
ಪರಕ್ಷೇತ್ರ ಚಿಕಿತ್ಸಾ:—ಪರಕ್ಷೇತ್ರ “ಘ” ಪರಶಬ್ದಸ್ಯ ಲೋಪಶ್ಚ  
(೪-೨-೧೨)। “ದಂಡಯಂ ಕ್ಷೇತ್ರಿಯೋ ಯೇನ ಮಯ್ಯಪಾತಿತಿ  
ಸಾಂಜೀವಿತ್” ಭಟಂ ೪-೩೨। 2. ಕ್ಷೇತ್ರಸ್ವಾಮಿ, ಜಮೀನ  
ನಿನ ಯಜಮಾನ. “ಕ್ಷೇತ್ರಿಯಸ್ಯಾತ್ಯಯೇ ದಂಡಯೋ ಭಾಗಾದೃಶ-  
ಗುಣೋ ಭವೇತ್। ತತೋರ್ಧದಂಡೋ ಮೃತ್ಯುನಾಮಜ್ಞಾನಾತ್ಕ್ಷೇತ್ರೀಕಸ್ಯ  
ತು” ಮನುಂ ೮-೨೪೩। (ವಿಂ) 3. ಪರಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಅಸಕ್ತ  
ನಾದವನು, ಜಾರ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿ. 4. ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.  
ಜಮೀನಿನಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದ.

**ಕ್ಷೇಪ ಕ್ಷೇಪ (ಪುಂ)** 1. ಇಡುವುದು, ಇರಿಸುವುದು. ಕ್ಷಿಪ  
(ಪ್ರೇರಣೆ) “ಘ” (೩-೩-೧೮)। “ಗೋರೋಚನಾಕ್ಷೇಪ-  
ನಿತಾಂತಗೋರೆ” ಕುಮಾಂ ೭-೧೭। 2. ಪ್ರೇರಿಸುವುದು,  
ಮುಂದಕ್ಕೆ ನೂಕುವುದು. 3. ಎಸೆಯುವುದು, ಬಿಸಾಡು  
ವುದು. 4. ನಿಂದಿಸುವುದು, ದೂಷಿಸುವುದು. 5. ಎಂಬ,  
ಸಾವಕಾಶ. “ಪ್ರಸ್ಥಾನಕಾಲಕ್ಷಮವೇಷಕಲ್ಪನಾಕೃತಕ್ಷಣಕ್ಷೇಪಮುದೇ-  
ಕ್ಷತಾಚ್ಯುತಮ್” ಮಾಘಂ ೧೨-೧। 6. ಗರ್ವ, ಕೊಬ್ಬು.  
7. ಲಂಘನ, ದಾಟುವುದು, ಮೀರುವುದು. 8. ತಿರಸ್ಕಾರ,  
ಅವಮಾನಗೊಳಿಸುವುದು. 9. ಗುಚ್ಛ, ಗೊಂಚಲು.  
10. ಕಳುಹಿಸುವುದು. 11. ಚಲಿಸುವುದು, ಅಲುಗಾಡು  
ವುದು. “ಕ್ರುದ್ಧಕ್ಷೇಪಾನುಗಮಧುಕರಶ್ರೀಮುಷಾಮಾತ್ಮಬಿಂಬಂ ಪಾತ್ರಿ-  
ಕುರ್ವನ್ ದಶಪುರವಧುನೇತ್ರಕೌತೂಹಲಾನಾಮ್” ಮೇಘಂ ೧-೪೭।  
“ಕ್ಷೇಪೋ ಗರ್ವೇ ಲಜ್ಜನನಿಂದಯೋ:। ವಲಿಮ್ಬೇ ರಣಹೇಲಾಸು” ಹೇಮಂ।  
“ಗುಚ್ಛೋ ಗುಲುಚ್ಛ: ಕ್ಷೇಪ: ಸ್ಯಾತ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಕ್ಷೇಪಕ ಕ್ಷೇಪಕ (ವಿಂ)** 1. ಇರಿಸುವವನು, ಇಡುವವನು.  
2. ಗ್ರಂಥಗಳಲ್ಲಿ ಹೊಸ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸುವವನು.  
ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) “ಘ” (೩-೧-೧೩೩)। 3. ನಿಂದಿಸು  
ವವನು. 4. ಎಸೆಯುವವನು, ಬಿಸಾಡುವವನು. 5.  
ಕಳುಹಿಸುವವನು. 6. ಪ್ರೇರಿಸುವವನು, ಮುಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳು  
ವವನು. 7. ಅತಿಕ್ರಮಿಸುವವನು, ಮೀರಿ ನಡೆಯುವವನು.  
8. (ಬಾಣ) ಪ್ರಯೋಗಿಸುವವನು.

**ಕ್ಷೇಪಣ ಕ್ಷೇಪಣ (ನಂ)** 1. ಇರಿಸುವುದು, ಇಡುವುದು. ಕ್ಷಿಪ  
(ಪ್ರೇರಣೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫)। 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸು  
ವುದು, ಅವಮಾನಗೊಳಿಸುವುದು, 3. ಎಸೆಯುವುದು,

ಬಿಸಾಡುವುದು. 4. ನಿಂದಿಸುವುದು, ದೂಷಿಸುವುದು.  
5. ಗ್ರಂಥದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಹೊಸ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸು  
ವುದು. 6. ಕಾಲಕಳೆಯುವುದು, (ಆಯುಸ್ಸನ್ನು) ಕಳೆಯು  
ವುದು. “ಆಯುಷ: ಕ್ಷೇಪಣಾರ್ಥಂ ಚ ದಾತವ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀಧನಂ  
ವಿನಾ” ಹಾರೀತಂ। “ಉಪಾಕರ್ಮಣಿ ಚೋತ್ಸರ್ಗೇ ತ್ರಿರಾತ್ರಂ ಕ್ಷೇಪಣಂ  
ಸ್ಮೃತಮ್” ಮನುಂ ೪-೧೧೯। 7. ಕವಣಿಯಿಂದ ಎಸೆಯು  
ವುದು. “ಕ್ಷೇಪಣೈರ್ಮುಷ್ಟಿಭಿಃ ಕವಾಕರೋಹೋದ್ಭೂತನಿ: ಸ್ವನೇ:” ಭಾಂ  
ವಿರಾಂ ೧೩।

**ಕ್ಷೇಪಣಿ ಕ್ಷೇಪಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಲಂಗರು, ನೌಕಾದಂಡ.  
2. ಮೀನು ಹಿಡಿಯುವ ಬಲೆ. 3. ಕವಣಿ, ಕಲ್ಲು ಎಸೆ  
ಯುವ ಒಂದು ಹಗ್ಗ. ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) “ಲ್ಯುಡ್”  
(೩-೩-೧೧೫)। “ಛಿಪ್” (೪-೧-೧೫)।

**ಕ್ಷೇಪಣೀಯ ಕ್ಷೇಪಣೀಯ (ಪುಂ)** 1. ಭಿಂಡಿಪಾಲವೆಂಬ  
ಒಂದು ಕಬ್ಬಿಣದ ಆಯುಧ. (ನಂ) 2. ಕವಣಿ. ಕ್ಷಿಪ  
(ಪ್ರೇರಣೆ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೧೬)। “ನಾರಾಚಕ್ಷೇಪಣಿ-  
ಯಾಶ್ಮನಿಷ್ಠೇಷೋತ್ಪತ್ತಿತಾನಲಮ್” ರಘುಂ ೪-೭೭। (ನಂ) 3.  
ಎಸೆಯಲ್ಪಡುವ. 4. ಎಸೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 5.  
ಎಸೆಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ.

**ಕ್ಷೇಪಿಮನ್ ಕ್ಷೇಪಿಮನ್ (ಪುಂ)** ಶೀಘ್ರತೆ, ವೇಗ. ಕ್ಷಿಪಸ್ಯ  
ಭಾವ: “ಇಮನಿಚ್” (೪-೧-೧೨೨)। ಯಣಾದಿಲೋಪ: ಪೂರ್ವಸ್ಯ  
ಚ ಗುಣ: (೬-೪-೧೫೬)।

**ಕ್ಷೇಪಿಷ್ಠ ಕ್ಷೇಪಿಷ್ಠ (ವಿಂ)** ಅತಿಶೀಘ್ರವಾದ, ಬಹಳ  
ವೇಗವಾದ. ಅತಿಶಯೇನ ಕ್ಷಿಪ: “ಇಷ್ಠನ್” (೪-೩-೫೫)।  
ರೇಫಲೋಪ: ಪೂರ್ವಸ್ಯ ಚ ಗುಣ: (೬-೪-೧೫೬)।

**ಕ್ಷೇಪಿಯಸ್ ಕ್ಷೇಪಿಯಸ್ (ವಿಂ)** ಎರಡರಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಶೀಘ್ರ  
ವಾದ. —ಅತಿವೇಗವಾದ. ಅನಯೋರಯಮತಿಶಯೇನ ಕ್ಷಿಪ:  
“ಇಯಸ್” (೪-೩-೫೭)। ರೇಫಲೋಪ: ಪೂರ್ವಸ್ಯ ಚ ಗುಣ:  
(೬-೪-೧೫೬)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಛಿಪ್” (೪-೧-೬)। —ಯಸೀ.

**ಕ್ಷೇಪ್ತ ಕ್ಷೇಪ್ತ (ವಿಂ)** “ಕ್ಷೇಪಕ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ಕ್ಷಿಪ  
(ಪ್ರೇರಣೆ) “ತತ್” (೩-೧-೧೩೩)। “ಉಪಸ್ಪೃಶ್ಯ ದದೌ  
ಶಾಪಂ ಕ್ಷೇಪ್ತಾರಂ ವಾಲಿನಂ ಪ್ರತಿ” ರಾಮಾಂ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಛಿಪ್”  
(೪-೧-೫)। ಕ್ಷೇಪ್ತ ಕ್ಷೇಪ್ತೀ.

**ಕ್ಷೇಪ್ತವ್ಯ ಕ್ಷೇಪ್ತವ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಎಸೆಯಲ್ಪಡುವ, ಬಿಸಾಡ  
ಲ್ಪಡುವ. 2. ಇಡಲ್ಪಡುವ. 3. ಎಸೆಯಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ. 4. ಎಸೆಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 5. ಇಡಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ. 6. ಇಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) “ತವ್ಯ:”  
(೩-೨-೧೬)। 7. ನಿಂದಿಸಲ್ಪಡುವ. “ನ ಚಾಪ್ಯೇವ ತವ್ಯಾ



ಮುಖ್ಯ: ಕೊಪ್ಪವಾ ಬ್ರಹ್ಮವಾದಿನ: " ಭಾಂ ಆದಿಂ ೩೧-೩೫ |

8. ಗ್ರಂಥಕ್ಕೆ ಹೊಸದಾಗಿ ಸೇರಿಸಬೇಕಾದ (ವಿಷಯ).

ಕೊಪ್ಪ ಕ್ಷೇಮ (ವಿಂ) 1. ಎಸೆಯಲ್ಪಡುವ. 2. ಇಡಲ್ಪಡುವ. 3. ಗ್ರಂಥಕ್ಕೆ ಹೊಸದಾಗಿ ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಮುಂದಕ್ಕೆ ನೂಕಲ್ಪಡುವ. 5. ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ನಿಂದಿಸಲ್ಪಡುವ. ಕ್ಷಿಪ(ಪ್ರೇರಣೆ) "ಪ್ರಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) |

ಕೊಪ್ಪ ಕ್ಷೇಮ (ಪುಂ) 1. ಕರಿಯಕಬೋರ. ಕ್ಷಿಣೋತಿ - ಕ್ಷಿಣು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಮನ್" (೩ಂ ೧-೧೪೦) | "ಚಂಡಾ ಧನಹರಿ ಕೊಪ್ಪದೃಷ್ಟಗಣಹಾಸಕಾ: " ಅಮಂ | 2. ಧರ್ಮ ಪುರುಷನಿಂದ ಶಾಂತಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ವ್ಯವಸಾಯ ಪ್ರಜ್ಞೆ ವೈ ಕೊಪ್ಪ ಶಾಂತಿರಸುಯತ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ | 3. ಕಳಿಂಗ ದೇಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. "ಕೊಪ್ಪೋತ್ತರೀಯ: ಕುಹರ: ಕಲಿಜ್ಞೇಶು ನರಾಧಿಪ: " ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೭ | (ಪುಂ) 4. ದೊರೆತ ವಸ್ತುವನ್ನು ಭದ್ರವಾಗಿ ರಕ್ಷಿಸುವುದು. 5. ಶುಭ, ಮಂಗಳ, ಕಲ್ಯಾಣ, ಕುಶಲ. ಕ್ಷಯಶುಭಂ - ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯ) "ಮನ್" (೩ಂ ೧-೧೪೦) | 6. ಕುಶಲ, ನೆಮ್ಮದಿ, ಸುಖ. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ಕುಶಲಂ ಪೃಚ್ಛೇತ್ಕತ್ರಬಂಧುಮನಾಮಯಮ್ | ವೈಷ್ಯಂ ಕೊಪ್ಪಂ ಸಮಾಗಮ್ಯ ಶೂದ್ರಮಾರೋಗ್ಯಮೇವ ಚ" ಮನುಂ ೨-೧೨೭ | "ಆಶಾಸ್ಯ ರಾಜಾಜ್ಜಲಿಹೋಮಭಾಜಾ ಕೊಪ್ಪಾಶಿಷಾ ಕಿಂಚಿದಶೋಹೃದ್ಯಮ್" ಯಾದಂ ೧೩-೮೬ | (ನಂ) 7. ರಕ್ಷಣೆ, ಪಾಲನೆ, ಕಾಪಾಡುವುದು. "ಕೊಪ್ಪಂ ಕಲ್ಯಾಣರಕ್ಷಯೋ: " ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | "ವಿತನ್ವತಿ ಕೊಪ್ಪಮದೇವಮಾತೃಕಾ: ಚಿರಾಯ ತಸ್ಮಿನ್ ಕುರವಶ್ಚಕಾಸತಿ" ಕಿರಾಂ ೧-೧೭ | 8. ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ. "ಕೊಪ್ಪಂ ತು ಮಜ್ಜಲೇ | ಲಬ್ಧಸಂರಕ್ಷಣೆ ಮೋಕ್ಷೇ" ಹೇಮಂ | (ವಿಂ) 9. ಕುಶಲವುಳ್ಳ, ಮಂಗಳವುಳ್ಳ. ಕೊಪ್ಪಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) | "ಕೃತಾ: ಕೊಪ್ಪಾಶ್ಚ ಪನ್ಥಾನ: ಸುಖಂ ಗಂಞಂತಿ ಕ್ಷೇಚರಾ: " ರಾಮಾಂ | 10. ನೆಮ್ಮದಿಯುಳ್ಳ, ಸುಖವುಳ್ಳ.

ಕೊಪ್ಪ ಕ್ಷೇಮಕ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. "ಏತಸ್ಮಿನ್ನೇವ ಕಾಲೇ ತು ಪುರೀ ವಾರಾಣಸೀ ನೃಪ | ಪುಣ್ಯಾ ನಿವೇಶಯಾಮಾಸ ಕೊಪ್ಪಕೋ ನಾಮ ರಾಕ್ಷಸ: " ಹರಿವಂ | 2. ಕಬೋರ, ಒಂದು ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ. 3. ಪ್ಲಕ್ಷದ್ವೀಪದ ಒಂದು ಭಾಗ (ವರ್ಷ). ಇಲ್ಲಿ ಕ್ಷೇಮಕನು ಅಳುತ್ತಿದ್ದನು. ವಿಷ್ಣುಪುಂ ೨-೪-೫ |

ಕೊಪ್ಪ ಕ್ಷೇಮಕರ (ವಿಂ) ಮಂಗಳವನ್ನು ಉಂಟು ಮಾಡುವ, ಒಳ್ಳೆಯದನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ. ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | ಕೊಪ್ಪ ಕರ: | "ಪನ್ಥಾನಂ ವ: ಪ್ರವಕ್ಷ್ಯಾಮಿ ಶಿವಂ ಕೊಪ್ಪಕರಂ ದ್ವಿಜಾ: " ಭಾಂ ಆದಿಂ ೩೫-೩೭ | ಕೊಪ್ಪ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃನ್ "ಅಣ್" (೩-೨-೪೪) | -ಕಾರ: -ಕಾರ: | "ಪಿತು: ಪ್ರಿಯಕ್ಕರೋ ಭರ್ತಾ ಕೊಪ್ಪಕರಸ್ತಪಸ್ವಿನಾಮ್" ಮೃದ್ವಿಂ ೫-೭೭ | ಚಾತ್

"ಕೃಷ್" | ಕೊಪ್ಪಕರ: ಕ್ಷೇಮಂಕರ: | "ಕೊಪ್ಪಕರೋಽರಿಷ್ಟತಾತಿ: ಶಿವತಾತಿ: ಶಿವಕ್ಕರ: " ಅಮಂ | "ಕೊಪ್ಪಕರಾಣಿ ಕಾರ್ಯಾಣಿ ಪರ್ಯಾಲೋಚಯತಾಂ ತತ: " ಮೃದ್ವಿಂ ೬-೧೦೫ | "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | -ಕಾರಕ: -ಕಾರಕ:

ಕೊಪ್ಪ ಕ್ಷೇಮಕೃತ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಕೊಪ್ಪ ನಿವೃತ್ತಾಂತಾಂ ತತ್ಸಂಕೋಚನವಿಮೋಚನರೂಪಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣೆ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬) | "ಅಸಂಕೋಚಜ್ಞಾನರೂಪಕೊಪ್ಪ ಕರಣಾತ್ ಸತಾಮ್ | ಕೊಪ್ಪಕೃತ್" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ: | "ಅನಿವರ್ತೀ ನಿವೃತ್ತಾತ್ಮಾ ಸಂಕೋಪ್ತಾ ಕೊಪ್ಪಕೃತ್ ಶಿವ: " ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ಶುಭವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ, ಮಂಗಳವನ್ನು ಉಂಟು ಮಾಡುವ. ಕೊಪ್ಪ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣೆ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬) |

ಕೊಪ್ಪ ಕ್ಷೇಮಂಕರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ. "ಕೊಪ್ಪಾನ್ ದೇವೇಷು ಸಾ ದೇವೀ ಕೃತ್ವಾ ದೈತ್ಯಪತೇ: ಕ್ಷಯಮ್ | ಕೊಪ್ಪ ಕ್ಷೇಮೇನೋಕ್ತಾ ಪೂಜ್ಯಾ ಲೋಕೇ ಭವಿಷ್ಯತಿ" |

ಕೊಪ್ಪ ಕ್ಷೇಮತರ (ನಂ) ಹೆಚ್ಚು ಕ್ಷೇಮ, ಅತಿಶಯವಾದ ಸೌಖ್ಯ, ಒಹಳ ನೆಮ್ಮದಿ. ಅತಿಶಯೇನ ಕೊಪ್ಪಮ್ | "ಧಾರ್ತ-ರಾಷ್ಟ್ರಾ ರಣೇ ಹನ್ಯುಸ್ತನ್ಮೇ ಕೊಪ್ಪತರಂ ಭವೇತ್" ಗೀತಾ ೧-೪೬ |

ಕೊಪ್ಪ ಕ್ಷೇಮಧನ್ವನ್ (ಪುಂ) ರಘುವಂಶದ ಪುಂಡರೀಕ ರಾಜನ ಮಗ. "ಸ ಕೊಪ್ಪಧನ್ವಾನಮಮೋಧಧನ್ವಾ ಪುತ್ರಂ ಪ್ರಜಾ-ಕ್ಷೇಮವಿಧಾನದಕ್ಷಮ್" ರಘುಂ ೧೮-೯ |

ಕೊಪ್ಪ ಕ್ಷೇಮಧರ್ಮನ್ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ರಾಜ. ಕೊಪ್ಪ ಧರ್ಮೋ ಯಸ್ಯ | "ತತಶ್ಚ ಶಿಶುನಾಗಸ್ತಸ್ಯ ಪುತ್ರಶ್ಚ ಕಾಕವರ್ಣೋ ಭವಿತಾ ತಸ್ಯ ಪುತ್ರ: ಕೊಪ್ಪಧರ್ಮಾ ತಸ್ಯಾಪಿ ಕ್ಷತ್ರೀಜಾ: " ವಿಷ್ಣುಪುಂ |

ಕೊಪ್ಪ ಕ್ಷೇಮಫಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉದುಂಬರವೃಕ್ಷ, ಅತ್ತಿ ಮರ. ಕೊಪ್ಪ ಫಲಮಸ್ಯಾ: |

ಕೊಪ್ಪ ಕ್ಷೇಮಮೂರ್ತಿ (ಪುಂ) ದುರ್ಯೋಧನನ ಒಬ್ಬ ಸಹೋದರ. "ಉಗ್ರಶ್ರವಾ ಉಗ್ರಸೇನ: ಕೊಪ್ಪಮೂರ್ತಿಸ್ತಥೈವ ಚ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೭ |

ಕೊಪ್ಪ ಕ್ಷೇಮವತ್ (ವಿಂ) ಕ್ಷೇಮದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಮಂಗಳವುಳ್ಳ. ಕೊಪ್ಪಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪) |

ಕೊಪ್ಪ ಕ್ಷೇಮಶೂರ (ಪುಂ) ಭಯವಿಲ್ಲದ ಜಾಗದಲ್ಲಿ ಪರಾಕ್ರಮವನ್ನು ತೋರಿಸುವವನು. ಕೊಪ್ಪ ಮಜ್ಜಲಸ್ಥಾನೇ ಶೂರ: | "ಕಿಂ ಕೊಪ್ಪಶೂರೈವಿಬುಧೈರಸಂಯುಗವಿಕಲ್ಪನೈ: | ರಹೋಜುಷಾ ವಾ ಹರಿಣಾ ಶಂಭುನಾ ವಾ ವನೌಕಸಾ" ಭಾಗಂ ೧೦-೪-೩೬ |

ಕೊಪ್ಪ ಕ್ಷೇಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ. 2. ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸು. "ಅಮ್ಬಿಕಾ ಲಕ್ಷಣಾ ಕೊಪ್ಪಾ ದೇವೀ ರಮಾ ಮನೋರಮಾ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೨೩ |



**ಕೊಮಾಸನ ಕ್ಷೇಮಾಸನ** (ನಂ) ಯೋಗಾಸನಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. "ಅಥ ಕೊಮಾಸನಂ ವಕ್ಷ್ಯೇ ಯತ್ ಕೃತ್ವಾ ಪ್ರೇಕ್ಷಯೇದ್ವಿವಮ್ | ದಕ್ಷಹಸ್ತೇ ದಕ್ಷಪಾದಂ ಕೇವಲಂ ಸ್ಥಾಪಯೇತ್ಸುಧಿಃ" ಋಷಿಃ |

**ಕೊಮೇಂದ್ರ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ** (ಪುಂ) ಕಾಶ್ಮೀರದ ಒಬ್ಬ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ನಾದ ಮಹಾಕವಿ. ಈ ಕವಿಯು ಕ್ರಿ.ಶ. ಹನ್ನೊಂದನೆಯ ಶತಮಾನದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿದ್ದುದಾಗಿ ಚರಿತ್ರೆಯಿಂದ ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ. ಈತನಿಗೆ "ವ್ಯಾಸದಾಸ"ನೆಂಬ ಹೆಸರೂ ಉಂಟು.

**ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ ವಿರಚಿತ ಗ್ರಂಥಗಳು:** 1. ಬೃಹತ್ ಕಥಾಮಂಜರಿ. 2. ಭಾರತಮಂಜರಿ. 3. ಕಲಾವಿಲಾಸ. 4. ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿ. 5. ಸುವ್ಯಕ್ತತಿಲಕ. 6. ಸಮಯಮಾತೃಕಾ. 7. ವ್ಯಾಸಾಷ್ಟಕ. 8. ಲೋಕ ಪ್ರಕಾಶ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೋಮ್ಯ ಕ್ಷೇಮ್ಯ** (ವಿಂ) ಮಂಗಳಕ್ಕೆ ಹಿತವಾದ, ಶುಭಕ್ಕೆ ಅನುಕೂಲವಾದ. ಕೋಮಾಯ ಹಿತಮ್ "ಯತ್" (೪-೧-೫) |

**ಕೋಯ ಕ್ಷೇಯ** (ವಿಂ) ಕಡಮೆಯಾಗಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. (ಪಾಪ). ಕ್ಷೇತುಂ ಯೋಗ್ಯಮ್-ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯೇ) "ಯತ್" (೩-೧-೯೭) |

**ಕೌ - ಕೌಯೇ** (ಭ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ) | ಕಾಯತಿ | ಚಕ್ಷೌ | ಕಾತಾ | ಕಾಸ್ಯತಿ | ಕಾಯತು | ಕಾಯಾಣಿ | ಅಕ್ಷಾಯತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಕ್ಷಯಹೊಂದು, ನಾಶವಾಗು. 2. ಕಡಮೆಯಾಗು. **ಭಾವೇ:**-ಕಾಯತೇ | ಚಕ್ಷೇ | ಕಾಯಿತಾ, ಕಾತಾ | ಕಾಯಿಷ್ಯತೇ, ಕಾಸ್ಯತೇ | ಕಾಯತಾಮ್ | ಅಕ್ಷಾಯತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕಿಚಿ:**-ಕಪಯತಿ, -ತೇ | ಕಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಕಪಯಿತಾ | ಕಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ಕಪಯತು, -ತಾಮ್ |

**ಕರ್ಮಣಿ:**-ಕಪ್ಯತೇ | ಕಪಯಾಂ ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ | ಕಾಪಿತಾ, ಕಪಿತಾ, ಕಪಯಿತಾ | ಕಾಪಿಷ್ಯತೇ, ಕಪಿಷ್ಯತೇ, ಕಪಯಿಷ್ಯತೇ | ಕಪ್ಯತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕನಿ:**-ಚಿಕ್ಷಾಸತಿ | ಚಿಕ್ಷಾಸಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಚಿಕ್ಷಾಸಿತಾ | ಚಿಕ್ಷಾಸಿಷ್ಯತಿ | ಚಿಕ್ಷಾಸತು | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೇವಲಾತ್ ಪ್ಯಂತಾಚ್ಚ ಕೃತ್ಸು:**-ಕಾತವ್ಯಮ್, ಕಪಯಿತವ್ಯಮ್ | ಕಾಣೀಯಮ್, ಕಪಣೀಯಮ್ | ಕೋಯಮ್, ಕಪ್ಯಮ್ | ಕಾಮಃ, ಕಪಿತಃ | ಕಾಮವಾನ್, ಕಪಿತವಾನ್ | ಕಾಯನ್, ಕಪಯನ್ | ಕಾಯಂತಿ, ಕಪಯಂತಿ | ಕಾತುಮ್, ಕಪಯಿತುಮ್ | ಕಾಮಮ್, ಕಾಪಿತಮ್ | ಕಾಣಮ್, ಕಪಯಣಮ್ | ಕಾತ್ವಾ, ಕಪಯಿತ್ವಾ | ಪ್ರಕಾಶ, ಪ್ರಕಪ್ಯ |

**ಕೋಮ್ಯ ಕ್ಷೇಮ್ಯ** (ನಂ) ಕ್ಷೇಮತಃ, ಕಡಮೆಯಾಗುವುದು. ಕೋಮಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಪ್ಯಮ್" (೪-೧-೧೨೪) |

**ಕೌತ ಕ್ಷೌತ** (ವಿಂ) ಭೂಮಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕ್ಷಿತೇರಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) |

**ಕೌತ್ರ ಕ್ಷೌತ್ರ** (ನಂ) 1. ಕ್ಷೇತ್ರಗಳ ಸಮೂಹ. ಕೌತ್ರಾಣಾಂ ಸಮೂಹಃ "ಅನ್" (೪-೨-೩೮) | 2. ಭೂಮಿ, ನೆಲ, ಜಮೀನು. ಕೌತ್ರ ಸ್ವಾಯ್ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮) | (ವಿಂ) 3. ಭೂಮಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕೌತ್ರಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) |

**ಕೌರೇಯ ಕ್ಷೌರೇಯ** (ವಿಂ) 1. ಕ್ಷೇರದಲ್ಲಿ ಪಕ್ವವಾದ (ಕ್ಷೇರಾನ್ವ). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಯಿ-ಯಾ. 2. ಗಂಜಿ, ಅಂಬಲಿ. ಕೌರೇ ಸಂಸ್ಕೃತಮ್ ಸಂಸ್ಕೃತಾ ವಾ "ಠನ್" (೪-೨-೨೦) | "ಕೌಪ್" (೪-೧-೧೫) |

**ಕೌಡ ಕ್ಷೌಡ** (ಪುಂ) ಅನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಕಂಬ. ಕೌಡ (ಕ್ಷೇಪೇ) "ಘನ್" (೩-೩-೧೨೧) | ಪೃಷಂ |

**ಕೌಣಿ ಕ್ಷೌಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೃಥ್ವಿ. ಭೂಮಿ. ಕೃಣು (ಶಬ್ದೇ) "ನಿಃ" ಬಾಹುಂ | ವಾ "ಕೌಷ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫) | -ಗೌ-ಣೀ. "ಶಮ್ಭೋರ್ಮಾ ಬತ ಸಂಧಿವೇಲನದನಂ ಭಾಜಿ ವ್ರತಂ ದ್ರಾಗತಿ ಕೌಣಿ ನೃತ್ಯತಿ ಮೃತೀರಣ್ವಪುಷ್ಪೋಽಸೃಗ್ವೃಷ್ಟಿಸಂಧ್ಯಾ-ಧಿಯಾ" ನೈಷಂ ೧೨-೯೨ |

**ಕೌಣಿ(ಗಿ)ಜ ಕ್ಷೌಣಿ(ಣೀ)ಜ** (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. 2. ಕುಜಗ್ರಹ, ನರಕಾಸುರ. ಕೌಣ್ಯಾಂ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಜಃ" (೩-೨-೯೭) | (ವಿಂ) 3. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

**ಕೌಣಿ(ಗಿ)ತಲ ಕ್ಷೌಣಿ(ಣೀ)ತಲ** (ನಂ) ಭೂಮಿಯ ಮೇಲು ಮೈ, ಭೂಮಿಯ ಹೊರಮೈ. ಕೌಣ್ಯಾಸ್ತಲಮ್ | "ತದ್ದಿವಿಪಲಕ್ಷಮಪೃಥುಶಾಲ್ಮಲಿತುಲಜಾಲೈಃ ಕೌಣಿತಿಲೇ ಮೃದ್ವಿನಿ ಮಾರುತಚಾರುಕೀರ್ಣಃ" ನೈಷಂ ೧೧-೭೦ |

**ಕೌಣಿ(ಗಿ)ಧರ ಕ್ಷೌಣಿ(ಣೀ)ಧರ** (ಪುಂ) ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಕೌಣಿ(ಗಿ) ಧಾರಯತಿ - ಧೃ (ಧಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಖಚ್" (೩-೨-೪೬) | ಲ್ಹಸ್ವಃ (೬-೪-೯೪) |

**ಕೌಣಿ(ಗಿ)ಪತಿ ಕ್ಷೌಣಿ(ಣೀ)ಪತಿ** (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯ ಒಡೆಯ, ರಾಜ, ದೊರೆ. ಕೌಣ್ಯಾಃ ಪತಿಃ | "ವಿವೇಶ ಗತ್ವಾ ಸ ವಿಲಾಸಕಾನನಂ ತತಃ ಕ್ಷಣಾತ್ ಕೌಣಿಪತಿರ್ಧೃತಿಂ ಚಕ್ಷು" ನೈಷಂ ೧-೭೪ |

**ಕೌಣಿ(ಗಿ)ಪಾಲ ಕ್ಷೌಣಿ(ಣೀ)ಪಾಲ** (ಪುಂ) ಭೂಮಿ ಯನ್ನು ಕಾಪಾಡುವ ರಾಜ, ದೊರೆ. ಕೌಣಿ(ಗಿ) ಪಾಲಯತಿ-ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಅನ್" (೩-೨-೧) |

**ಕೌಣಿ(ಗಿ)ಭುಜ್ ಕ್ಷೌಣಿ(ಣೀ)ಭುಜ್** (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಕೌಣಿ(ಗಿ)ಭುನಕ್ತಿ-ಭುಜ (ಪಾಲನಾಭ್ಯವಹಾರಯಃ)



“ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬)। “ಮೃಗಂ ಕಿಮಿಚ್ಛತ್ರಕದಂಡತಾಂಡವಂ  
ಭುಜಾಭುಜಿ ಖೋಣಿಭುಜಾಂ ದಿದೃಕ್ಷುಃ” ನೆಪಂ ೧-೭೯।

ಖೋಣಿ(ಗಿ)ಭೃತ್ ಕ್ಷೋಣಿ(ಣಿ)ಭೃತ್ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ,  
ದೊರೆ. ಖೋಣಿ (ಗಿ) ವಿಭತಿ - ಡು ಭೃತ್ (ಧಾರಣ-  
ಪೋಷಣಯೋಃ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬)। 2. ಪರ್ವತ.  
ಬೆಂಟ. “ಖೋಣಿಭೃತಾಮತುಲಕರ್ಕಶವಿಗ್ರಹಾಣಾಮ್” ನೆಪಂ  
೧೩-೫।

ಖೋಣಿ(ಗಿ)ಮಂಡಲ ಕ್ಷೋಣಿ(ಣಿ) ಮಂಡಲ (ನಂ)  
ಭೂಮಂಡಲ, ಭೂಮಿಯ ವಲಯ.

ಖೋಣಿ(ಗಿ)ರುಹ್ ಕ್ಷೋಣಿ(ಣಿ) ರುಹ್ (ಪುಂ) 1.  
ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಖೋಣಿ ರೋಹತಿ - ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ)  
“ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬)। (ವಿಂ) 2. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟುವ. ರುಹ “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೫)। -ರುಹಃ.  
-ರುಹಃ.

ಖೋತವ್ಯ ಕ್ಷೋತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಚೂರ್ಣಮಾಡಲ್ಪಡುವ.  
ಪುಡಿಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಚೂರ್ಣಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ.  
3. ಚೂರ್ಣಮಾಡಲು ಶಕ್ತವಾದ. ಕ್ಷುದಿರ್ (ಸಂಪೇಷಣೆ)  
ಕರ್ಮಾದೌ “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬)। “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬)।  
ಖೋದನೀಯಮ್ ಕ್ಷೋದನೀಯಮ್.

ಖೋತ್ ಕ್ಷೋತ್ (ವಿಂ) ಅರೆಯುವವನು, ಪುಡಿಮಾಡು  
ವವನು, ಚೂರ್ಣಮಾಡುವವನು. ಕ್ಷುದಿರ್ (ಸಂಪೇಷಣೆ)  
“ತೃತ್” (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ತೃತ್” (೪-೧-೫)।  
ಖೋತ್ರಿ ಕ್ಷೋತ್ರಿ.

ಖೋದ ಕ್ಷೋದ (ಪುಂ) 1. ಅರೆಯುವುದು, ಪುಡಿಮಾಡು  
ವುದು, ಚೂರ್ಣಮಾಡುವುದು. ಕ್ಷುದಿರ್ (ಸಂಪೇಷಣೆ) ಭಾವೆ  
“ಘತ್” (೩-೩-೧೮)। 2. ಚೂರ್ಣ, ಪುಡಿ, ಹಿಟ್ಟು.  
ಕ್ಷುದಿರ್ ಕರ್ಮಂ “ಘತ್” (೩-೩-೧೯)। 3. ರಜಸ್ಸು,  
ಧೂಳು. “ಆನೇಮಿಮಗ್ನಃ ಶಿತಿಕಿಂಠಪಕ್ಷಿಖೋದಯುತಶ್ಚುಕ್ಷುಭಿರೇ  
ರಥೋಃ” ಮಾಘಂ ೩-೨೭। “ಖೋದಃ ಸ್ಯಾತ್ ಪುಂಸಿ ರಜಸಿ  
ಪೇಷಣೆ ಚ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ” ಮೇದಿಂ। 4. ಅರೆಯುವ ಕಲ್ಲು,  
ಗುಂಡುಕಲ್ಲು. ಕ್ಷುದಿರ್ ಕರಂ “ಘತ್” (೩-೩-೧೨೧)।

ಖೋದಕ್ಷಮ ಕ್ಷೋದಕ್ಷಮ (ಪುಂ) ತಿಕ್ಕಾಟವನ್ನು ಸಹಿಸಿ  
ಕೊಳ್ಳುವ, ವಿಚಾರವಿಮರ್ಶೆಯನ್ನು ಸಹಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ. ಖೋದಂ  
ಪೇಷಣೆ ಕ್ಷಮತೇ - ಕ್ಷಮುಷ್ (ಸಹನೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)।  
“ಪಠಃ ಖಣ್ಡನಖಣ್ಡತೋಽಪಿ ಸಹಜಾತ್ ಖೋದಕ್ಷಮೇ ತನ್ಮಹಾಕಾವ್ಯೇ”  
ನೆಪಂ ೬-೧೧೩।

ಖೋದನ ಕ್ಷೋದನ (ನಂ) 1. ಅರೆಯುವುದು, ಪುಡಿಮಾಡು  
ವುದು, ಚೂರ್ಣಮಾಡುವುದು. ಕ್ಷುದಿರ್ (ಸಂಪೇಷಣೆ) ಭಾವೆ

“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। (ವಿಂ) 2. ಅರೆಯುವವನು,  
ಪುಡಿಮಾಡುವವನು, ಚೂರ್ಣಮಾಡುವವನು. ಕ್ಷುದಿರ್  
ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೧-೧೩೪)।

ಖೋದನೀಯ ಕ್ಷೋದನೀಯ (ವಿಂ) “ಖೋತವ್ಯ” ಪದದ  
ಅರ್ಥ. ಕ್ಷುದಿರ್ (ಸಂಪೇಷಣೆ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬)।  
ಖೋದಸ್ ಕ್ಷೋದಸ್ (ನಂ) ಜಲ, ನೀರು. ಕ್ಷುದಿರ್ (ಸಂಪೇಷಣೆ)  
“ಅಸುನ್” (೩-೪-೧೮೮)।

ಖೋದಿತ ಕ್ಷೋದಿತ (ವಿಂ) ಅರೆಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪುಡಿಮಾಡಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೂರ್ಣಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕ್ಷುದಿರ್ (ಸಂಪೇಷಣೆ) +  
ಣಿಕ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। “ಉಪಾಹರನ್ನಶ್ವಮಜಸ್ತಚ್ಚಲೈಃ  
ಖುರಾಚ್ಚಲೈಃ ಖೋದಿತಮನ್ದುರೋದರಮ್” ನೆಪಂ ೧-೫೭।

ಖೋದಿಮನ್ ಕ್ಷೋದಿಮನ್ (ಪುಂ) ಕುದುರೆ, ಅಲ್ಪತನ.  
ಚಿಕ್ಕದಾಗಿರುವಿಕೆ. ಕ್ಷುದ್ರಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಇಮನಿಕ್” (೫-೧-೧೨೨)।  
ಯಣಾದಿಲೋಪಃ ಪೂರ್ವಸ್ಯ ಚ ಗುಣಃ (೬-೪-೧೫೬)।

ಖೋದಿಷ ಕ್ಷೋದಿಷ್ (ವಿಂ) ಎಲ್ಲದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬಹಳ  
ಚಿಕ್ಕದಾದ. ಅಯಮೇಷಾಮತಿಶಯೇನ ಕ್ಷುದ್ರಃ “ಇಷನ್” (೫-೩-೫೫)।  
ರೇಫಲೋಪಃ ಪೂರ್ವಸ್ಯ ಚ ಗುಣಃ (೬-೪-೧೫೬)।

ಖೋದೀಯಸ್ ಕ್ಷೋದೀಯಸ್ (ವಿಂ) ಎರಡರಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಚಿಕ್ಕ  
ದಾದ. ಅಯಮನಯೋರತಿಶಯೇನ ಕ್ಷುದ್ರಃ “ಇಯಸುನ್” (೫-೩-೫೭)।  
ರೇಫಲೋಪಃ ಪೂರ್ವಸ್ಯ ಚ ಗುಣಃ (೬-೪-೧೫೬)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ತೃತ್” (೪-೧-೬)। -ಯಸೀ -ಯಸೀ. “ಬೃಹತ್ಸಹಾಯಃ  
ಕಾರ್ಯಾಂತಂ ಖೋದೀಯಾನಪಿ ಗಚ್ಛತಿ” ಮಾಘಂ ೨-೧೦೦।

ಖೋದ ಕ್ಷೋದ (ವಿಂ) 1. ಅರೆಯಲ್ಪಡುವ, ಪುಡಿಮಾಡ  
ಲ್ಪಡುವ, ಚೂರ್ಣಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಕ್ಷುದಿರ್ (ಸಂಪೇಷಣೆ)  
ಕರ್ಮಂ “ಘತ್” (೩-೧-೧೨೪)।

ಖೋಧುಕ ಕ್ಷೋಧುಕ (ವಿಂ) ಹಸಿವಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಖೋಮ ಕ್ಷೋಮ (ಪುಂ) 1. ಅಲುಗಾಟ, ಕುಲುಕಾಟ. ಕ್ಷುಮ  
(ಸಂಚಲನೆ) “ಘತ್” (೩-೩-೧೮)। “ತಮಾತಿತ್ಯಕ್ರಿಯಾ-  
ಶಾಂತರಥಖೋಮಪರಿಶ್ರಮಮ್” ರಘುಂ ೧-೫೮। 2. ಚಲಿಸು  
ವುದು, ಕದಲುವುದು, ಮುಂದೆ ಸರಿಯುವುದು. “ಮಿನ-  
ಖೋಮಾಚ್ಚಲಕುಬಲಯಶ್ರೀತುಲಾಮೇಷ್ಯತೀತಿ” ಮೇಘಂ ೨-೩೨।  
3. ಕಣಕುವುದು, ರೇಗಿಸುವುದು, ಸಿಟ್ಟಿಬಿಡುವುದು.  
“ಪ್ರಾಯಃ ಸ್ವಂ ಮಹಿಮಾಂ ಖೋಮಾತ್ ಪ್ರತಿಪದ್ಯತೇ ಹಿ ಜನಃ”  
ಶಾಕುಂ ೭-೩೧। 4. ಮನೋವಿಕಾರ, ಕಳವಳ, ದಿಗಿಲು.  
“ಖೋಮಾಶು ಹೃದಯಂ ನಯದ್ವನಾಂ ರಾಗವೃದ್ಧಿಮಕರೋತ್ತಮಯದ್ವನಾಮ್”  
ಮಾಘಂ ೧೦-೯೦। 5. ಕೋಪ, ಸಿಟ್ಟು. “ಖೋಮಾತ್ರಿಲೋಚನ-  
ಸುತೋ ಧನುರೀಕ್ಷಮಾಣಃ ಪ್ರೋವಾಚ ವಾಚಮುಚಿತಾಂ ಪರಿಮೃಶ್ಯ  
ಶಕ್ತಿಮ್” ಕುಮಾರಂ ೧೭-೧೬।



ಶೋಭಕ ಕ್ಷೋಭಕ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಪರ್ವತ, ಒಂದು ಬೆಟ್ಟ. (ವಿಂ) 2. ಅಲುಗಾಡಿಸುವವನು. ಅಲ್ಲಾಡಿಸುವವನು. ಕ್ಷುಭ (ಸञ्चलने) "ಫ್ವಲ್" (3-1-133)।

ಶೋಭಣ ಕ್ಷೋಭಣ (ಪುಂ) 1. ಮನ್ಮಥನ ಐದು ಬಾಣಗಳ ಲೋಂದು. 2. ವಿಷ್ಣು. ಬಂಧನಾರ್ಹಿನಿನ್ಯಾನ್ ಬಂಧನಿಂ ಚ ಪ್ರಕೃತಿಂ ಶೋಭಯತಿ - ಕ್ಷುಭ (ಸञ्चलने) + ಣಿच् "ಲ್ಯು:" (3-1-134)। "ಪ್ರಕೃತೇರ್ಬಂಧನಾರ್ಹಿಣಾಂ ಶೋಭಣಾತ್ ಶೋಭಣಃ ಸ್ಮೃತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ। "ತದ್ಭವಃ ಶೋಭಣೋ ದೇವಃ ಶ್ರೀಗರ್ಭಃ ಪರಮೇಶ್ವರಃ" ವಿಂ ಸಂ। 3. ಶಿವ. ಪರಮೇಶ್ವರ. "ನಮೋ ಬುದ್ಧಾಯ ಲುಬ್ಧಾಯ ಕ್ಷುಬ್ಧಾಯ ಶೋಭಣಾಯ ಚ" ಶಿಂ ಸಂ। (ನಂ) 4. ಕಳವಳವುಂಟುಮಾಡುವುದು. ಗಾಬರಿ ಹುಟ್ಟಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 5. ಕಳವಳವುಂಟುಮಾಡುವ, ದಿಗಿಲುಂಟುಮಾಡುವ. 6. ಚಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವ. ಕ್ಷುಭ + ಣಿच् "ಲ್ಯು:" (3-1-134)।

ಶೋಭ ಕ್ಷೋಭ (ಪುಂ) 1. ಜಂಪಕವೃಕ್ಷ, ಸಂಪಿಗೆಮರ. (ನಂ) 2. ಮಧು, ಜೇನುತುಪ್ಪ. ಕ್ಷುಧ್ರಾಮಿಃ ಸರಳಾಭಿಃ ಕೃತಮ್-ಕ್ಷುಧ್ರ "ಅಬ್" (4-3-119)। "ತಸ್ತಾರ ಸರಳಾಭಿಃ ಸ ಕ್ಷೋಭಪಟಲೇರಿವ" ರಘುಂ 4-63। 3. ನೀಚತನ, ಅಲ್ಪತನ, ಕೀಳುತನ. ಕ್ಷುಧ್ರಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಅಙ್" (4-1-122)। 4. ಜಲ, ನೀರು. "ಕ್ಷೋಭಂ ಮಧುನಿ ಪಾನೀಯೇ" ಮೇದಿಂ। 5. ಧೂಳಿ. 6. ವೈದೇಹನಿಗೆ ಮಾಗಧಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು.

ಶೋಭಕ ಕ್ಷೋಭಕ (ಪುಂ) ಅಯುಧಜೀವಿಗಳ ಗುಂಪು. ಕ್ಷುಧ್ರಕ ಏವ ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಜ್ಯಟ್" (4-3-114)।

ಶೋಭ ಕ್ಷೋಭ (ನಂ) ಜೇನುಮೇಣ. ಕ್ಷೋಭೇ ಭವಮ್ "ಠಕ್"।

ಶೋಭ ಕ್ಷೋಭ (ನಂ) 1. ರೇಷ್ಮೆವಸ್ತ್ರ, ಪಟ್ಟಿವಸ್ತ್ರ. ಕ್ಷೋತಿ-ತುಕ್ಷು (ಶಬ್ದೇ) "ಮನ್" (3-1-140)। "ಶ್ರಿಯಃ ಗಣ-ನಿಷಣ್ಣಾಃ ಕ್ಷೋಮಾಂತರಿತಮೇಖಲೇ" ರಘುಂ 10-6। 2. ನಾರು ಬಟ್ಟೆ. ಕ್ಷುಮಾಯಾ ವಿಕಾರಃ "ಅಙ್" (4-3-134)। (ನಂ) 3. ಮಹಡಿ, ಉಪ್ಪರಿಗೆ. 4. ಅಟ್ಟಣೆ, ಚಪ್ಪರದ ಮೇಲಿನ ಮನೆ, ಹೊಲ ಗದ್ದೆಗಳನ್ನು ಕಾಯಲು ಚಪ್ಪರದ ಮೇಲೆ ಕಟ್ಟಿರುವ ಗುಡಿಸಲು. "ಕ್ಷೋಮಂ ಸ್ಯಾದತಸೀವಸ್ತ್ರೇ ದುಕುಲೇಽಪಿ ಚ" ಹೇಮಂ। "ಕ್ಷೋಮಮಢೇ ದುಕುಲೇ ಚ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಶೋಭ ಕ್ಷೋಭ (ಪುಂ) ಕಚೋರ.

ಶೋಭ ಕ್ಷೋಭ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗಸೆಮರ. ಕ್ಷುಮೇವ ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಅಙ್" (4-4-36)। "ಜಿಪ್" (4-1-14)।

ಶೋಭ ಕ್ಷೋಭ (ನಂ) ಕ್ಷೋಭ, ಕೇಶಖಂಡನ. ತಲೆಯ ಕೂದಲನ್ನು ಕತ್ತರಿಸುವುದು, ಭದ್ರಾಕರಣ. ಕ್ಷುರಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಙ್" (4-3-120)।

ಶೋಭ ಕ್ಷೋಭ (ಪುಂ) ನಾಪಿತ. ನಾಯಿಂದ. ಕ್ಷೋರಮಾಡುವವನು. ಕ್ಷೋರಂ ಶಿಲ್ಪಂ ಯಸ್ಯ "ಠಕ್" (4-4-44)।

ಕ್ಷು-ತೇಜನೇ (ಅದಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಕ್ಷುತಿತಿ। ಕ್ಷುಣಾವ। ಕ್ಷುತಿತಿ। ಇತ್ಯಾದಿ. ಸಾಣೆಹಿಡಿ, ಹರಿತಮಾಡು, ಜೊಪ್ಪು ಮಾಡು. ಸಮ್ ಪೂರ್ವಕ "ಕ್ಷು" ಧಾತುವು ಆತ್ಮನೇಪದಿಯಾಗುವುದು. ಸಂಕ್ಷುತೇ ಸಂಕ್ಷುತವಾತೇ ಸಂಕ್ಷುತವೇ। ಸಂಕ್ಷುತವೇ ಸಂಕ್ಷುತವಾತೇ ಸಂಕ್ಷುತವಿರೇ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ:-ಕ್ಷುಣಾವಯತಿ, -ತೇ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:-ಕ್ಷುಣಾವಿತವ್ಯಮ್। ಕ್ಷುಣವಣೀಯಮ್। ಕ್ಷುಣವ್ಯಮ್। ಕ್ಷುಣಾವ್ಯಮ್। ಕ್ಷುಣತಃ। ಕ್ಷುಣತವಾನ್। ಕ್ಷುಣವನ್, ಕ್ಷುಣವತೀ। ಕ್ಷುಣವಿತುಮ್। ಕ್ಷುಣತಮ್। ಕ್ಷುಣವಣಮ್। ಕ್ಷುಣವಿತವಾ। ಪ್ರಕ್ಷುಣತುಮ್।

ಕ್ಷುಣ ಕ್ಷುಣ (ನಂ) ಸಾಣೆಹಿಡಿಯುವುದು, ಹರಿತಮಾಡುವುದು. ಕ್ಷು (ತೇಜನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಕ್ಷುಣವಣೀಯ ಕ್ಷುಣವಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸಾಣೆಹಿಡಿಯಲ್ಪಡುವ, ಹರಿತಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಹರಿತಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಹರಿತಮಾಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಕ್ಷು (ತೇಜನೇ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। "ತವ್ಯಃ"। ಕ್ಷುಣವಿತವ್ಯಮ್ ಕ್ಷುಣವಿತವ್ಯಮ್.

ಕ್ಷುಣವ್ಯ ಕ್ಷುಣವ್ಯ (ವಿಂ) ಸಾಣೆಹಿಡಿಯಲ್ಪಡುವ, ಹರಿತಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಕ್ಷು (ತೇಜನೇ) "ಯತ್" (3-1-97)।

ಕ್ಷುಣತ ಕ್ಷುಣತ (ನಂ) 1. ಸಾಣೆಹಿಡಿಯುವುದು, ಹರಿತಮಾಡುವುದು. ಕ್ಷು (ತೇಜನೇ) "ಕ್ತಃ" (3-3-114)। (ವಿಂ) 2. ಹರಿತಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಾಣೆಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಕ್ಷು ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

ಕ್ಷುಣತವತ್ ಕ್ಷುಣತವತ್ (ವಿಂ) ಸಾಣೆಹಿಡಿದವನು, ಹರಿತವಾಗಿ ಮಾಡಿದವನು. ಕ್ಷು (ತೇಜನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತವತುಃ" (3-2-102)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (4-1-6)। -ವತೀ -ವತೀ.

ಕ್ಷುಣವತ್ ಕ್ಷುಣವತ್ (ವಿಂ) ಸಾಣೆಹಿಡಿಯುತ್ತಿರುವ, ಜೊಪ್ಪು ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಕ್ಷು (ತೇಜನೇ) "ಶತ್" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (4-1-6)। ಕ್ಷುಣವತೀ ಕ್ಷುಣವತೀ.

ಕ್ಷಮಾ ಕ್ಷಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭೂಮಿ. ಕ್ಷಮತೇ-ಕ್ಷಮಪ್ (ಸಹನೆ) "ಅಚ್" (3-5-64)। ಉಪಶಾಲೋಪಶ್ಚ। "ಕ್ಷಮಾಂ ಲಮ್ಭಯಿತ್ವಾ ಕ್ಷಮಯೋಪಪನ್ನಂ ವನೇ ತಪಃ ಕ್ಷಾಂತತರಶ್ಚಕಾರ" ರಘುಂ 16-9। 2. "ಒಂದಂ" ಸಂಖ್ಯೆ.



ಕಸಾಜ ಕ್ಷ್ಣುಜ (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯ ಪುತ್ರ. 1. ಕುಜಗ್ರಹ. 2. ನರಕಾಸುರ. ಕಸಾಜಾ ಜಾಯತೆ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಓ:" (3-2-104) 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846. 847. 848. 849. 850. 851. 852. 853. 854. 855. 856. 857. 858. 859. 860. 861. 862. 863. 864. 865. 866. 867. 868. 869. 870. 871. 872. 873. 874. 875. 876. 877. 878. 879. 880. 881. 882. 883. 884. 885. 886. 887. 888. 889. 890. 891. 892. 893. 894. 895. 896. 897. 898. 899. 900. 901. 902. 903. 904. 905. 906. 907. 908. 909. 910. 911. 912. 913. 914. 915. 916. 917. 918. 919. 920. 921. 922. 923. 924. 925. 926. 927. 928. 929. 930. 931. 932. 933. 934. 935. 936. 937. 938. 939. 940. 941. 942. 943. 944. 945. 946. 947. 948. 949. 950. 951. 952. 953. 954. 955. 956. 957. 958. 959. 960. 961. 962. 963. 964. 965. 966. 967. 968. 969. 970. 971. 972. 973. 974. 975. 976. 977. 978. 979. 980. 981. 982. 983. 984. 985. 986. 987. 988. 989. 990. 991. 992. 993. 994. 995. 996. 997. 998. 999. 1000.

ಕರ್ಮಣಿ:-ಕಸಾಯತೆ. ಕಸಾಯತಾಯ್. ಅಕಸಾಯತ. ಕಸಾಯತೆ. ಅಕಸಾಯಿ. ಶೇಷಂ ಪ್ರಾಗ್ವತ್. ಣಿಚಿ:-ಕಸಾಪಯತಿ, -ತೆ. ಕಸಾಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಕಸಾಪಯಿತಾ. ಕಸಾಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೆ. ಕಸಾಪಯತು, -ತಾಮ್. ಇತ್ಯಾದಿ. ಕೃತು:-ಕಸಾಯಿತವ್ಯ: ಕಸಾಯನೀಯ: ಕಸಾಯ: ಕಸಾತ: ಕಸಾತವಾನ್. ಕಸಾಯನ್, ಕಸಾಯಂತಿ. ಕಸಾತಮ್. ಕಸಾಯನಮ್. ಇತ್ಯಾದಿ. ಕಸಾರಹ್, ಕ್ಷ್ಣುರುಹ್ (ಪುಂ) (ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ) ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಕಸಾಯಾಂ ರೋಹಿತಿ-ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಕಿವಪ್" (3-2-106). "ಆಘಾಮಾಸೇ ಮತ್ತರೋತ್ಪಾತವಾತಾಶಿಲ್ಪ್ಯ-ದಂತಕಸಾರಹಾಂ ಧರ್ಮಣೋತ್ಯೇ:" ಮಾಘಂ 10-35. ಇಗುಪಧೇತಿ "ಕ:" (3-1-135). -ರಹ:-ರುಹ: ಕಸಾವಲಯ ಕ್ಷ್ಣುನಲಯ (ಪುಂ) ಭೂಮಂಡಲ, ವರ್ತು ಲಾಕಾರದ ಭೂಮಿ. ಕಸಾಯಾ ವಲಯಮ್. ಕಸೀಲ - ನಿಮೇಷಣೆ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ). ಕಸೀಲತಿ. ಚಿಕಸೀಲ. ಕಸೀಲತು. ಅಕಸೀಲತ್. ಇತ್ಯಾದಿ. ಕಣ್ಣು ಮುಚ್ಚು. ಕಸೀಲನ ಕ್ಷ್ಣುಲನ (ನಂ) ಕಣ್ಣು ಮುಚ್ಚಿ ಕೊಳ್ಳುವುದು, ಕಣ್ಣನ್ನು ರೆಪ್ಪೆಗಳಿಂದ ಮುಚ್ಚುವುದು. ಕಸೀಲ (ನಿಮೇಷಣೆ) ಭಾವೆ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-115). ಕ್ವಿವಡ - ಸ್ತೇಹೇ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸೇಂ). ಕ್ವೇಡತೆ. ಚಿಕ್ವಿವಡೆ. ಇತ್ಯಾದಿ. ಕ್ವಿವಣ ಕ್ಷ್ಣುಣ್ಣ (ವಿಂ) ಸ್ನಿಗ್ಧವಾದ, ಜಿಡ್ಡಿ ನಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕ್ವಿವಡ (ಸ್ತೇಹೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). ಕ್ವೇಡ ಕ್ಷ್ಣುಡ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ, ನಂಜು. ಕ್ವಿವಡ (ಸ್ತೇಹೇ) "ಅಚ್" (3-1-134). 2. ಹಲ್ಲಿಲ್ಲದ ಬಾಯಿಂದ ಅಡಿದ ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾದ ಮಾತು. 3. ಸ್ನೇಹ. 4. ಮೋಚನ, ಬಿಡುಗಡೆ. 5. ಒಂದು ವಿಧ ಕಿವಿಯ ರೋಗ, ಕಿವಿಯಲ್ಲಿ ಜೋಯ್ ಎಂಬ ಶಬ್ದವುಂಟಾಗುವುದು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಡಾ -ಡಾ. 6. ಸಿಂಹಗರ್ಜನೆ. 7. ತ್ಯಾಗ. 8. ಬಿದಿರಿನ ಕೋಲು. 9. ಧ್ವನಿ, ಶಬ್ದ. 10. ಔಡಲ ಗಿಡ. (ನಂ) 11. ಕೆಂಪು ಎಕ್ಕದ ಗಿಡದ ಕಾಯಿ. 12. ಸಬ್ಬಸಿಗೆ ಹೂವು. (ವಿಂ) 13. ವಕ್ರವಾದ, ಡೊಂಕಾಗಿರುವ. "ಕ್ವೇಡ: ಕರ್ಣಮಯೇ ಧ್ವನೌ. ವಿಷೇ ವಕ್ರೇ ಕ್ವೇಡಾ ಸಿಂಹನಾದವಂಶ-ಶಲಾಕಯೋ: ಕ್ವೇಡಂ ಲೋಹಿತಾರ್ಕಫಲೇ ಧೋಷಾಪುಷ್ಪೇ" ಹೇಮಂ. ಕ್ವೇಡನ ಕ್ಷ್ಣುಡನ (ನಂ) 1. ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವುದು. ಕ್ವಿವಡ (ಸ್ತೇಹೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-115). 2. ತ್ಯಾಗ.



ಕವಿತೆ ಕ್ಷೇಪಿತ (ನಂ) 1. ಸಿಂಹಗರ್ಜನೆ, ಸಿಂಹನಾದ. 2. ಕೋಪದಿಂದ ಗುರುಗುಟ್ಟುವುದು. ಕ್ಷಿಪ (ಸ್ನೇಹ) ಭಾವ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। "ನಾನಾಧರ್ಮಶ್ರೇಷ್ಠಾಪಿ ನಾನಾವೇಷಧರೇಸ್ತಥಾ। ಹೇಷಿತಸ್ವನಮಿಶ್ರೇಶ್ಚ ಕ್ಷೇಪಿತಾಸ್ಕೋಟಿತ-ಸ್ವನೇ: ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೯-೬।

ಕ್ಷೇಲ - ಚಲನೆ (ಭಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ)। ಕ್ಷೇಲತಿ। ಚಿಕ್ಷೇಲ। ಅಚಿಕ್ಷೇಲತ್। ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಹಾರು, ನೆಗೆ. 2. ಚಲಿಸು, ಅಲುಗಾಡು.

ಕ್ಷೇಲನ ಕ್ಷೇಲನ (ನಂ) 1. ಹಾರುವುದು, ನೆಗೆಯುವುದು. 2. ಚಲಿಸುವುದು, ಅಲುಗಾಡುವುದು. ಕ್ಷೇಲ

(ಚಲನೆ) ಭಾವ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 3. ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ.

ಕ್ಷೇಲಾ ಕ್ಷೇಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ. ಕ್ಷೇಲ (ಚಲನೆ) "ಅ:" (೩-೩-೧೦೩)।

ಕ್ಷೇಲಿಕಾ ಕ್ಷೇಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ. ಕ್ಷೇಲ (ಚಲನೆ) "ಅ:" (೩-೩-೧೦೩)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"।

ಕ್ಷೇಲಿ ಕ್ಷೇಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ. ಕ್ಷೇಲ ಗೌರಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧)। "ಕ್ಷೇಲ್ಯಾವಲೋಕಹಸಿತೈರ್ವ್ರಜ-ಸುಂದರೀಣಾಮುತ್ಸುಭಯನ್ ರತಿಪತಿ ರಮಯಾಂಚಕಾರ" ಭಾಗಂ ೧೦-೨೯-೪೬।

ಇತಿ "ಕ" ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್।

## ಖ

ಖ ಖ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ ಕರ್ವರ್ಗದ ಎರಡನೆಯ ಮತ್ತು ಕಂಠದಲ್ಲಿ ಅಭ್ಯಂತರಸ್ಪೃಶ್ಯಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಅಕ್ಷರ. "ಕಾದಯೋ ಮಾವಸಾನಾ: ಸ್ಪರ್ಶಾ:"। "ಸ್ಪೃಷ್ಟಂ ಪ್ರಯತನಂ ಸ್ಪರ್ಶಿನಾಮ್" ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಖ ಖ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. (ನಂ) 2. ಇಂದ್ರಿಯ. ಖರ್ವತಿ ಮನೋಽಸ್ಮಿನ್-ಖರ್ವ (ಗತೌ) "ಡ:" (೩-೨-೧೦೧)। "ಋರ್ವ ನಾಭೇರ್ಯಾನಿ ಖಾನಿ ತಾನಿ ಮೇಧ್ಯಾನಿ ಸರ್ವಶ:" ಮನುಂ ೫-೧೩೨। 3. ಅಕಾಶ, ಗಗನ, ಅಂತರಿಕ್ಷ. "ಕ್ರೋಧಂ ಪ್ರಭೋ ಸಂಹರ ಸಂಹರೇತಿ ಯಾವದ್ಗಿರ: ಖೇ ಮಹತಾಂ ಚರಂತಿ" ಕುಮಾಂ ೩-೭೨। 4. ಪುರ, ಪಟ್ಟಣ. 5. ಕ್ಷೇತ್ರ, ಭೂಮಿ, ಮೈದಾನ. 6. ಶೂನ್ಯ, ಖಾಲಿ, ಬರಿದು. 7. ಬಿಂದು, ಸೊನ್ನೆ. 8. ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ಅನುಭವ. 9. ಸ್ವರ್ಗ. 10. ಸುಖ. "ಖಂ ಸ್ವಸಂವಿಧಿ ವ್ಯೋಮನೋಂದ್ರಿಯೇ। ಶೂನ್ಯೇ ಬಿಂದು ಸುಖೇ ಖಸ್ತು ಸೂರ್ಯೇ" ಹೇಮಂ। "ಖಮಿಂದ್ರಿಯೇ ಪುರೇ ಕ್ಷೇತ್ರೇ ಶೂನ್ಯೇ ಬಿಂದು ವಿಹಾಯಸಿ। ಸಂವೇದನೇ ದೇವಲೋಕೇ ಶರ್ಮಯಪಿ ನಪುಂಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ। 11. ಕಾಗೆಬಂಗಾರ. 12. ಕರ್ಮ, ಕೆಲಸ. 13. ಲಗ್ನದಿಂದ ಹತ್ತನೆಯ ರಾಶಿ. 14. ಪರಬ್ರಹ್ಮ. "ಕಂ ಬ್ರಹ್ಮ ಖಂ ಬ್ರಹ್ಮ ಯದೇವ ಕಂ ತದೇವ ಖಮ್" ಛಾಂದೋಗ್ಯಂ। 15. ಛಿದ್ರ, ರಂಧ್ರ.

ಖಕಾಮಿನಿ ಖಕಾಮಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಮುಂಡು ಮುಳುಕನ ಹಕ್ಕಿ. 2. ದುರ್ಗಾವೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ. ಖಂ ಸುಖ-ಮಾಕಾಶಂ ವಾ ಕಾಮಯತೇ - ಕಮು (ಕಾಂತೌ) ಣಿಡ್ "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। "ಚರ್ಚಿಕಾ ಚಿಲ್ಲದಯಿತೇ ಖಕಾಮಿನಿಯಿ ಪ್ರಕೀರ್ತಯತೇ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಖಕುಂತಲ ಖಕುಂತಲ (ಪುಂ) ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಖಮಾಕಾಶ: ಕುಂತಲಮಿವಾಸ್ಯ। "ಪುರಾರಿಪಶ್ಚಾನನಭೇರವಾದ್ರಿಹಾಸಪ್ರಹಾಸಾಶ್ಚ ಖಕುಂತಲಶ್ಚ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಖಖಟ ಖಖಟ (ಪುಂ) ಸೀಮೆಸುಣ್ಣ.

ಖಗ ಖಗ (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ. ಹಕ್ಕಿ. ಖೇ ಗಚ್ಛತಿ-ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಡ:" (೩-೨-೧೦೧)। "ಅಧುನೀತ ಖಗ: ಸ ನೆಕಧಾ ತನುಮುತ್ಫುಲ್ಲತನೂಹೀಕೃತಾಮ್" ನೆಷಂ ೨-೨। 2. ಸೂರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹಗಳು. "ಆಪೋವಿಲಮೇ ಯದಿ ಖಗಾ: ಸ ಕಿಲೇಂದುವಾರ:" ಲೀಲಾಂ। 3. ಭ್ರಮರ. ದುಂಬಿ. 4. ಸೂರ್ಯ. 5. ಶಲಭ, ಪೆಂಡಂಗದ ಹುಳು, ಮಿಡತೆ. 6. ದೇವತೆ. 7. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. "ತಮಾಸೀವ ಯಥಾ ಸೂರ್ಯ: ವೃಕ್ಷಾನಗ್ನಿರ್ಧನಾನ್ ಖಗಾ:" ಭಾಂ ವನಂ ೨೬೦। 8. ಬಾಣ. (ವಿಂ) 9. ಅಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. "ಸುರಾಸುರೇರವಧ್ಯಂ ಹಿ ಪುರಮೇತತ್ಖಗಂ ಮಹತ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ



೧೬೩. "ಖಗ: ಸೂರ್ಯೇ ಗ್ರಹೇ ದೇವೇ ಮಾರ್ಗಣೇ ಚ ವಿಹೃಜ್ಜಮೇ" ಮೇದಿಂ.

"ಖಗಾ: ಸೂರ್ಯೇಂದ್ರವಿಶರಗ್ರಹಗೀರ್ವಣವಾಯವ: " ನಾನಾರ್ಥಂ.

**ಖಗಗತಿ ಖಗಗತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಕ್ಷಿಗಳ ಗಮನ, ಹಕ್ಕಿಗಳ ಹಾರಾಟ, ಹಕ್ಕಿಗಳ ಸಂಚಾರ. ಖಗಾನಾಂ ಗತಿ: | ಪಕ್ಷಿಗಳ ಗಮನ (ಹಾರಾಟ)ದಲ್ಲಿ ಒಂದು ನೂರ ಒಂದು ಭೇದ ಗಳುಂಟು. ಪ್ರಡೀನಮ್‌, ಉಡೀನಮ್‌, ಅವಡೀನಮ್‌, ಡೀನಮ್‌, ನಿಡೀನಮ್‌, ತಿರ್ಯಗಡೀನಮ್‌, ವಿಡೀನಮ್‌, ಪರಿಡೀನಮ್‌ ಮುಂತಾದುವು ಹಕ್ಕಿಗಳ ಹಾರಾಟದ ಪ್ರಭೇದಗಳು.

**ಖಗಜ್ಞಾ ಖಗಂಗಳ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಕಾಶಗಂಗೆ. ಖಸ್ಯಾಕಾಶಸ್ಯ ಗಜ್ಞಾ |

**ಖಗತ ಖಗತ** (ವಿಂ) ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ, ಆಕಾಶಕ್ಕೆ ಹೋಗಿರುವ.

**ಖಗಪತಿ ಖಗಪತಿ** (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿಗಳ ರಾಜನಾದ ಗರುಡ.

ಖಗಾನಾಂ ಪತಿ: | ["ಪಕ್ಷಿರಾಜ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಖಗಮ ಖಗಮ** (ಪುಂ) ಆಂತರಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ ಸಿದ್ಧರು ಗಂಧರ್ವರು ಮುಂತಾದವರು. ಖೇ ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭) |

**ಖಗಸ್ಥಾನ ಖಗಸ್ಥಾನ** (ನಂ) ಪಕ್ಷಿಗಳ ವಾಸಸ್ಥಾನ, ಹಕ್ಕಿಗಳು ವಾಸಮಾಡುವ ಮರದ ಪೊಟರೆ. ಖಗಾನಾಂ ಸ್ಥಾನಮ್ |

**ಖಗಾಂತಕ ಖಗಾಂತಕ** (ಪುಂ) ಶೈಲಪಕ್ಷಿ, ಗಿಡಗದ ಹಕ್ಕಿ. ಖಗಸ್ಯಾಂತಕ: |

**ಖಗಾಸನ ಖಗಾಸನ** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಖಗ: ಆಸನಮಸ್ಯ |

**ಖಗೇಂದ್ರ ಖಗೇಂದ್ರ** (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿಗಳ ರಾಜನಾದ ಗರುಡ. ಖಗಾನಾಮಿन्द्र: |

**ಖಗೇಶ್ವರ ಖಗೇಶ್ವರ** (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿಗಳ ರಾಜನಾದ ಗರುಡ. ಖಗಾನಾಮೀಶ್ವರ: | "ಖಗೇಶ್ವರ: ಸಂಶ್ರುತಹೇಮಕೂಟಂ ನಿರೀಶತೇ ಕಿಪುರೂಪಾಸ್ಪದಂ ನ: " ಯಾದಂ ೧೮-೧೩ |

**ಖಗೋಲ ಖಗೋಲ** (ಪುಂ) ಗೋಳಾಕಾರದ ಆಕಾಶದ ಪರಿಧಿಯಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನ ಕಿರಣಗಳು ಹರಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಮತ್ತು ಸೂರ್ಯಾದಿ ಗ್ರಹಗಳಿಗೆ ಆಧಾರವಾದ ಪ್ರದೇಶ.

**ಖಚರ ಖಚರ** (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಖೇ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಛ:" (೩-೨-೧೬) | 2. ಸೂರ್ಯ. 3. ವಾಯು. 4. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 5. ಸೂರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹಗಳು. 6. ಗಂಧರ್ವ. 7. ರಾಕ್ಷಸ. 8. ಬಾಣ. (ವಿಂ) 9. ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೪) | -ಚರಿ -ಚರೀ.

**ಖಚಾರಿನ್ ಖಚಾರಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಸ್ತಂಭ, ಕಾರ್ತಿಕೇಯ. ಖೇ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತಿಭಕ್ಷಣಯೋ:) "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) | "ಖಚಾರಿ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ ಚ

ಶೂರ: ಶರವಣೋದ್ಭವ:" ಭಾಂ ವನಂ ೧೩೨ | (ವಿಂ) 2.

ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪) |

-ಚಾರಿಣಿ -ಚಾರಿಣೀ.

**ಖಚಿತ ಖಚಿತ** (ವಿಂ) 1. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವ, ಬೆರೆತಿರುವ. 2. ಹರಡಿರುವ, ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವ. ಖಚ (ಬಂಧನೇ, ಭೂತಪ್ರಾಕೃತಭಾವಿ ವಾ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | "ಕರಮ್ಬಿತಂ ಚ ಖಚಿತಂ ಋಷಿತಂ ಗುರುಗುಣಿತಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 2. ಜಿನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿ ಮೊದಲಾದ ಆಭರಣಗಳಲ್ಲಿ ನೆಟ್ಟು ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, -ಕೂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, -ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೆಂಪು ಮತ್ತು ಮೊದಲಾದುವು. ಖಚ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |

**ಖಜ - ಮನ್ಯೆ** (ಭವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಖಜತಿ | ಚಖಾಜ | ಅಖಾಜಿತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಮಧಿಸು, ಕಡೆ, ಕಲಕು.

**ಖಜ ಖಜ** (ಪುಂ) 1. ಮಂತ್ರ, ಕಡಗೋಲು, ಮೊಸರನ್ನು ಕಡೆಯುವ ಕೋಲು, ಮಂಥದಂಡ. ಖಜತಿ ಮಥನಾತಿ - ಖಜ (ಮನ್ಯೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಪಯಸ್ಯಂತಹಿತಂ ತೈಲಂ ಯದ್ವಸ್ತಿಸ್ಮಿನ್ಯತೇ ಖಜೈ: | ಶುಕ್ರಂ ನಿರ್ಮಥ್ಯತೇ ತದ್ವದ್ವೇಹಸಂಕಲ್ಪಜೈ: ಖಜೈ:" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೨೧೪ | 2. ಯುದ್ಧ, ಕದನ. 3. ಸೌಟು, ಸಟ್ಟುಗ. ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕ:" | ಖಜಕ: ಖಜಕಃ.

**ಖಜಪ ಖಜಪ** (ಪುಂ) ಫೃತ, ತುಪ್ಪ. ಖಜ್ಯತೇ ಮಥ್ಯತೇ - ಖಜ (ಮನ್ಯೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕಪನ್" (೩ಂ ೩-೧೪೨) |

**ಖಜಲ ಖಜಲ** (ನಂ) 1. ನೀಹಾರ, ಮಂಜು, ಇಬ್ಬನಿ. 2. ಆಕಾಶದಿಂದ ಬಿದ್ದ ನೀರು, ಮಳೆ. ಖೇ ಗಗನೇ ಸಂಶ್ರುತಂ ಆಕಾಶಾತ್ ಪತಿಸಂ ವಾ ಜಲಮ್ |

**ಖಜಾ ಖಜಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಂಥನ, ಮೊಸರು ಕಡೆಯುವುದು. ಖಜ (ಮನ್ಯೆ) ಭಾವೇ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೪) | 2. ಸೌಟು, ಸಟ್ಟುಗ. ಖಜ ಕರಂ "ಅ:" | 3. ಮಾರಣ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. 4. ಕಡಗೋಲು, ಮಂತ್ರ, ಮಂಥದಂಡ. "ಖಜಾಂ ಚ ದರ್ವೀಂ ಚ ಕರೇಣ ಧಾರಯನ್" ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೧೦-೧ |

**ಖಜಾಕ ಖಜಾಕ** (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಖಜ (ಮನ್ಯೆ) "ಆಕ:" (೩ಂ ೪-೧೩) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಸೌಟು, ಸಟ್ಟುಗ. ಖಜಾ ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕ:" |

**ಖಜಿತ್ ಖಜಿತ್** (ಪುಂ) ಬೌದ್ಧ. ಖೇನ ಶೂನ್ಯಭಾವನಯಾ ಜಯತಿ ಸಂಸಾರಮ್ - ಜಿ (ಜಯೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧) |

**ಖಜ್ಯೋತಿಸ್ ಖಜ್ಯೋತಿಸ್** (ಪುಂ) ಮಿಂಚಿನ ಹುಳು, ಮಿಣುಕುಹುಳು. ಖೇ ಗಗನೇ ಜ್ಯೋತಿರಸ್ಯ |

**ಖಜಿ - ಗತಿವೈಕಲ್ಯ** (ಭವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) | ಖಜ್ಜತಿ | ಚಖಜ್ಜ | ಖಜ್ಜಿತಾ | ಖಜ್ಜಿಪ್ಯತಿ | ಖಜ್ಜತು | ಇತ್ಯಾದಿ. ಕುಂಟು, ಕುಂಟುತ್ತ, ನಡೆ.



**ಖಜ ಖಂಜ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಕಾಲಿಲ್ಲದ ಕುಂಟ, ಹೆಳವ.  
ಖಜತಿ - ಖಜಿ (ಗತಿವೈಕಲ್ಯ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।  
ಒಂದು ಕಾಲಿಲ್ಲದವನು ಖಂಜ. ಎರಡು ಕಾಲುಗಳೂ  
ಇಲ್ಲದವನು ಪಂಗು. ಹೆಂಗಸರು ಗರ್ಭಿಣಿಯಾಗಿರುವಾಗ  
ಅವರು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದ ಆಹಾರ ಹಣ್ಣು ಮುಂತಾದವನ್ನು  
ಕೊಡದಿದ್ದರೆ ಜನಿಸುವ ಶಿಶುವು ಯಾವುದಾದರೊಂದು  
ಅಂಗದಲ್ಲಿ ವೈಕಲ್ಯಹೊಂದಿ ಹುಟ್ಟುವುದು. "ದೌಹದವಿಮಾನ-  
ನಾನ್ವ ಕುಜ್ಜಂ ಕೃಣಿ ಖಜ್ಜಂ ಜಡ ವಾಮನಂ ವಿಕೃತಾಕ್ಷಮನಶಂ  
ವಾ ನಾರೀ ಸುತಂ ಜನಯತಿ" ಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೩-೧೮।

**ಖಜಕ ಖಂಜಕ** (ಪುಂ) ಕುಂಟ, ಹೆಳವ. ಖಜತಿ-ಖಜಿ  
(ಗತಿವೈಕಲ್ಯ) "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ಖಜನ ಖಂಜನ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಡಿಗೆ ಸೊಗಸಿನ ಹಕ್ಕಿ,  
ಕೆಂಬೂತದ ಹಕ್ಕಿ. ಖಜತಿ-ಖಜಿ (ಗತಿವೈಕಲ್ಯ) "ಲ್ಯು:"  
(೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಃ" (೪-೧-೬೩)।  
-ನೀ -ನೀ. (ನಂ) 2. ಕುಂಟುವುದು, ಕುಂಟು ನಡೆಗೆ,  
ಕುಂಟುತ್ತ ನಡೆಯುವುದು. ಖಜಿ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್"  
(೩-೩-೧೧೪)।

**ಖಜನಕ ಖಂಜನಕ** (ಪುಂ) ಕಾಡಿಗೆ ಸೊಗಸಿನ ಹಕ್ಕಿ,  
ಕೆಂಬೂತದ ಹಕ್ಕಿ. ಖಜನ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"।

**ಖಜನರತ ಖಂಜನರತ** (ನಂ) ಸಾಧುಗಳ ರಹಸ್ಯ ಮೈಥುನ.  
ಖಜನಸ್ಯೇವ ಗುಪ್ತಂ ರತಮ್।

**ಖಜರೀಟ ಖಂಜರೀಟ** (ಪುಂ) ಕಾಡಿಗೆ ಸೊಗಸಿನ ಹಕ್ಕಿ,  
ಕೆಂಬೂತದ ಹಕ್ಕಿ. ಖಜ ಇವ ಋಚ್ಛತಿ - ಋ (ಗತೌ)  
"ಕೀಡನ್" ಬಾಹುಂ।

**ಖಜಾ ಖಂಜಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರೋಕ್ತವಾದ ಒಂದು  
ಮಾತ್ರಾವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: ಪೂರ್ವಾರ್ಧದಲ್ಲಿ  
ಮೂವತ್ತು (30) ಲಘುಗಳೂ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಒಂದು  
ಗುರುವೂ ಉತ್ತರಾರ್ಧದಲ್ಲಿ ಇಪ್ಪತ್ತೆಂಟು (28) ಲಘು  
ಗಳೂ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಒಂದು ಗುರುವೂ ಇದ್ದರೆ "ಖಜಾ"  
ವೃತ್ತವಾಗುವುದು. "ಶಿಖಾ" ವೃತ್ತದ ಪೂರ್ವಾರ್ಧ  
ಮತ್ತು ಉತ್ತರಾರ್ಧಗಳು "ಖಜಾ" ವೃತ್ತದಲ್ಲಿ  
ಉತ್ತರಾರ್ಧ ಮತ್ತು ಪೂರ್ವಾರ್ಧಗಳಾಗಿ ಬದಲಾವಣೆ  
ಹೊಂದುವುವು. "ವಿನಿಮಯವಿಹಿತಶಕಲಯುಗಲಲಘುಲಲಿತ-  
ಪದವಿತತಿರಚಿತಗುಣನಿಚಯಾ। ಶ್ರುತಿಸುಖಕೃದಿಯಮಪಿ ಜಗತಿ  
ಜಶಿರ ಉಪಗತವತಿ ನಿ ಸತಿ ಭವತಿ ಖಜಾ" ವೃಂ ೨೦।

**ಖಟ-ಕಾಡ್‌ಖಾಯಾಮ್** (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಖಟತಿ।  
ಚಖಾಟ। ಖಟಿತಾ। ಖಟತು। ಇತ್ಯಾದಿ. ಅಪೇಕ್ಷಿಸು,  
ಬಯಸು.

**ಖಟ ಖಟ** (ಪುಂ) 1. ಅಂಧಕೂಪ, ಕತ್ತಲೆಯ ಬಾವಿ, ಪಾಳು  
ಬಾವಿ. ಖಟ (ಕಾಡ್‌ಖಾಯಾಮ್) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।  
2. ಕಫ, ಶ್ಲೇಷ್ಮ. 3. ನೇಗಿಲು. 4. ಮನೆಗೆ ಹೊದಿ  
ಸುವ ಹುಲ್ಲು. 5. ಕೈಕೊಡಲಿ. 6. ಕಲ್ಲು ಹೊಡೆಯುವ  
ಉಳಿ. 7. ಮುಷ್ಟಿಯಿಂದ ಹೊಡೆಯುವುದು. "ಖಟೋ-  
ಽಧಕೂಪಕಯೋ: ಪ್ರಹಾರಾಂತರಾಡ್‌ಖಯೋ:" ಮೇದಿಂ।

**ಖಟಕ ಖಟಕ** (ಪುಂ) 1. ವಿವಾಹದ ಮಾತುಕತೆಗಾಗಿ ಮಧ್ಯ  
ವರ್ತಿಯಾಗಿ ನಿಂತು ಪರಸ್ಪರ ಸಂಘಟನೆ ಮಾಡಿಸುವವನು.  
2. ಅರ್ಧಮಡಿಸಿದ ಹಸ್ತ.

**ಖಟಕಾಮುಖ ಖಟಕಾಮುಖ** (ಪುಂ) ಬಾಣವನ್ನು ಎಳೆದು  
ಬಿಡುವ (ಪ್ರಯೋಗಿಸುವ) ಒಂದು ರೀತಿ. ಖಟಕಸ್ಯೇವಾ-  
ಮುಖಮತ್ರ।

**ಖಟಿಕ ಖಟಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಮುಷ್ಟಿ, ಮಡಿಸಿದ ಹಸ್ತ.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಟಿಕಾ -ಟಿಕಾ. 2. ಬರೆಯುವ ಸೀಮೆಸುಣ್ಣ.  
3. ಕರ್ಣಚ್ಚಿದ್ರ, ಕಿವಿಯ ಹೊರಭಾಗದ ಬಾಯಿ.  
4. ಲಾಮಂಚ.

**ಖಟಿನಿ ಖಟಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬರೆಯುವ ಸೀಮೆಸುಣ್ಣ.

**ಖಟಿ ಖಟೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಣ್ಣ ಹಾಕುವ ಕುಂಚ. 2. ಬರೆ  
ಯುವ ಸೀಮೆಸುಣ್ಣ. "ವರ್ಣಲೇಖಾ ಚ ಕಟಿನೀ ಕವಖಟೀ  
ಖಟಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಖಡ್-ಸಂವರಣ** (ಚುರಾಂ ಉಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಖಡ್ವಯತಿ, -ತೇ।  
ಅಖಡ್ವತ್, -ತ। ಇತ್ಯಾದಿ. ಮುಚ್ಚು, ಮರೆಪಾಡು.

**ಖಡ್ವನ ಖಟ್ಟಿನ** (ವಿಂ) ಪಾಮನ, ಕುಳ್ಳ, ಗಿಡ್ಡ. ಖಡ್ವ (ಸಂವರಣ)  
ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೩)।

**ಖಡ್ವಾಶ ಖಟ್ಟಾಶ** (ಪುಂ) ಪುನುಗು ಬೆಕ್ಕು. ಖಡ್ವ: ಸನ್  
ಅನುತೇ - ಅಶ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ -ಶೀ -ಶೀ.

**ಖಡ್ವಿಕ ಖಟ್ಟಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಬೇಡರವನು, ಬೇಟೆಗಾರ, ಬಲೆ  
ಹರಡಿ ಮೃಗ ಪಕ್ಷಿಗಳನ್ನು ಹಿಡಿದು ಕೊಲ್ಲುವವನು.  
2. ಎಮ್ಮೆಯ ಹಾಲಿನ ಮೇಲಿನ ಕೆನೆ.

**ಖಡ್ವಿಕಾ ಖಟ್ಟಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂಚ. "ನಿಷಠಾ ಖಡ್ವಿಕಾ-  
ಸಂದಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಖಡ್ವೇರಕ ಖಟ್ಟೇರಕ** (ವಿಂ) ಪಾಮನ, ಕುಳ್ಳ, ಗಿಡ್ಡ. ಖಡ್ವ  
(ಸಂವರಣ) "ಎರಕ್" ಬಾಹುಂ।

**ಖಡ್ವಾ ಖಟ್ಟಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಂಚ. ಖಡ್ವತೇ ನಿಡ್ರಾಲುಮಿ: -  
ಖಟ (ಕಾಡ್‌ಖಾಯಾಮ್) "ಖನ್" (೩ಂ ೧-೧೪೯)। "ಸಹ  
ಖಡ್ವಾಸನಂ ಚೈವ ಸರ್ವ ಸಂಗ್ರಹಣಂ ಸ್ಮೃತಮ್" ಮನುಂ ೮-೩೪೭।  
2. ಉಯ್ಯಾಲೆ, ತೂಗುಮಂಚ.



ಖಡ್ವಾಕಾ ಖಡ್ವಾಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಂಜೆ. ಖಡ್ವಾ ಸ್ವಾರ್ಥೆ  
“ಕ:” 2. ಸಣ್ಣ ಮಂಜೆ. ಅಲ್ಪಾರ್ಥೆ “ಕನ್” (೪-೩-೮೫)।

ಖಡ್ವಾಜ್ಞ ಖಡ್ವಾಂಗ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯಮಂತ್ರದ ದಿಲೀಪ  
ಮಹಾರಾಜ. “ಖಡ್ವಾಜ್ಞಸ್ತು ದಿಲೀಪರಾಡ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।  
2. ತ್ರಿಶೂಲ, ಪರಮೇಶ್ವರನ ಅಯುಧ. “ಸಂಸ್ಕಾರ-  
ಕ್ಷಾಣದೀರ್ಘ ಪಠು ರಠತಿ ಕೃತಾವೃತ್ತಿ ಖಡ್ವಾಜ್ಞಘಟಾ” ಮಾಲತೀಂ  
೪-೪ ।

ಖಡ್ವಾಜ್ಞಧರ ಖಡ್ವಾಂಗಧರ (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ. ಧರತಿ—  
ಧೃತ್ (ಧಾರಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । ಖಡ್ವಾಜ್ಞಸ್ಯ  
ಧರ: । “ಗಿಣಿ:” (೩-೧-೧೩೪) । -ಧಾರಿನ್ -ಧಾರಿನ್.  
ಎವಮ್ ಖಡ್ವಾಜ್ಞಭೃತ್ ಖಡ್ವಾಂಗಭೃತ್.

ಖಡ್ವಾಜ್ಞಿನ್ ಖಡ್ವಾಂಗಿನ್ (ವಿಂ) ತ್ರಿಶೂಲವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ.  
ಖಡ್ವಾಜ್ಞೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪) ।  
“ಖಡ್ವಾಜ್ಞಿ ಚಿರವಾಸಾ ವಾ ಇಮಶ್ಚುಲೋ ವಿಜನೇ ವನೇ” ಮನುಂ  
೧೧-೧೦೪ ।

ಖಡ್ವಾರೂಢ ಖಡ್ವಾರೂಢ (ವಿಂ) ಅವಿಧೇಯ, ದಾರಿಬಿಟ್ಟು  
ನಡೆಯುವವನು. ಖಡ್ವಾಂ ಆರೂಢ: । “ವೃತಸ್ತ್ವಂ ಪಾತ್ರೇಸಮಿತೆ:  
ಖಡ್ವಾರೂಢ: ಪ್ರಮಾದವಾನ್” ಭಟಿಂ ೪-೧೦ । ಖಡ್ವಾರೂಢೋ  
ಜಾಲ್ಮ: ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ಖಡ್ವ-ಭೇದನೆ (ಚುರಾಂ ಉಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಖಡ್ವಯತಿ -ತೇ ।  
ಅಚೀಖಡತ್, -ತ । ಇತ್ಯಾದಿ. ಭೇದಿಸು.

ಖಡಿ -ಮನ್ಯೆ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಖಂಡತೇ ।  
ಚಖಂಡೆ । ಅಖಂಡಿಷ್ಠ । ಇತ್ಯಾದಿ. ಮಧಿಸು, ಕಡೆ.

ಖಡಿ-ಭೇದನೆ (ವಾ ಚುರಾಂ ಉಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಖಂಡಯತಿ, -ತೇ ।  
ಖಂಡಯಾಂ ಬಭೂವ, ಚಕ್ರೇ-ಚಕಾರ, -ಆಸ । ಇತ್ಯಾದಿ. ಒಡೆ,  
ಭೇದಿಸು, ಚೂರುಮಾಡು, ಬೇರ್ಪಡಿಸು.

ಖಡ ಖಡ (ಪುಂ) 1. ಒಡೆಯುವುದು, ಚೂರುಮಾಡುವುದು.  
ಖಡಯತಿ-ಖಡ (ಭೇದನೆ) + ಗಿಣಿ “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) ।  
2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹುಲ್ಲು. 3. ಮಜ್ಜೆಗೆ ಪಳಿದು,  
ತರಕಾರಿ ಸಂಬಾರಗಳೊಡನೆ ಕುದಿಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮೊಸರು.  
4. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹುಲ್ಲು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜಿ -ಜಿ.  
ಸೀಮೆಸುಣ್ಣ.

ಖಡಕ ಖಡಕ (ನಂ) ಸ್ಥೂಣ, ಮೋಟುಮರ, ಕಂಬ. ಖಡ  
ಸಂಜಾಯಾ “ಕನ್” (೪-೩-೮೭) ।

ಖಡ್ವ ಖಡ್ವ (ಪುಂ) 1. ಕತ್ತಿ. ಖಂಡಿತೇನೇನ-ಖಡಿ (ಭೇದನೆ)  
“ಗನ್” (೩ಂ ೧-೨೪) । “ಖಡ್ವನಿರ್ಲಿನ್ಮೂರ್ಧಾನಿ ವ್ಯಾಪ-  
ತಂತೋಽಪಿ ವಾಜಿನ:” ಕುಮಾಂ ೧೬-೨೬ । 2. ಗಂಡಕಮ್ಮಗ,  
ಖಡ್ವಮ್ಮಗ, ಗೇಂಡಾಮಗ. “ಪ್ರಾಯೋ ವಿಷಾಣಪರಿಮೋಕ್ಷ-

ಲಘುತಮಾಜ್ಞಾನ್ ಖಡ್ವಾಂಶ್ಚಕಾರ ನೃಪತಿನಿಶಿತೆ: ಕುರಪ್ರೆ:”  
ರಘುಂ ೧-೬೨ । 3. ಗಂಡಕಮ್ಮಗದ ಕೊಂಬು. 4. ಒಬ್ಬ  
ಬುದ್ಧ. “ಖಡ್ವೋ ಗಂಡಕಶೃಂಗಾಸಿಬುದ್ಧಭೇದೇಘು ಗಂಡಕೇ”  
ಮೇದಿಂ ।

ಖಡ್ವಕೋಶ ಖಡ್ವಕೋಶ (ಪುಂ) ಕತ್ತಿಯ ಬರೆ. ಖಡ್ವಸ್ಯ  
ಕೋಶ: ।

ಖಡ್ವಧರ ಖಡ್ವಧರ (ವಿಂ) ಕತ್ತಿಯನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವವನು,  
ಯೋಧ. ಧರತಿ-ಧೃತ್ (ಧಾರಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) ।  
ಖಡ್ವಸ್ಯ ಧರ: ।

ಖಡ್ವಧಾರಾ ಖಡ್ವಧಾರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕತ್ತಿಯ ಅಲುಗು.  
ಖಡ್ವಸ್ಯ ಧಾರಾ ।

ಖಡ್ವಧಾರಾವ್ರತ ಖಡ್ವಧಾರಾವ್ರತ (ನಂ) ಕತ್ತಿಯ ಅಲುಗಿನ  
ಮೇಲೆ ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವಷ್ಟು ಕಷ್ಟವಾದ ಉಗ್ರವ್ರತ.  
ಖಡ್ವಧಾರಾಯಾಂ ಸ್ಥಿತೀರಿವ ದುಷ್ಕರಂ ವ್ರತಮ್ ।

ಖಡ್ವಪಾಣಿ ಖಡ್ವಪಾಣಿ, -ಹಸ್ತ -ಹಸ್ತ (ವಿಂ) ಕೈಯಲ್ಲಿ  
ಕತ್ತಿಯನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವವನು, ಯೋಧ. ಖಡ್ವ: ಪಾಣಿ  
ಹಸ್ತೇ ವಾ ಯಸ್ಯ ।

ಖಡ್ವಧೇನು ಖಡ್ವಧೇನು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಗೇಂಡಾಮಗ.  
ಖಡ್ವಿಣಿ ಧೇನು: ಜಾತಿವಾಕ್ಯಕೇನ ಸಹ ತತ್ಪುರುಷಸಮಾಸ:  
(೨-೧-೬೪) । ಪುಂವದ್ಭಾವ: (೬-೩-೪೨) । 2. ಸಣ್ಣ ಕತ್ತಿ,  
ಚೂಕು, ಚೂರಿ. “ಖಡ್ವಧೇನು: ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಖಡ್ವಪುತ್ರಿಕಾ-  
ಗಂಡಕಸ್ತ್ರಿಯೋ:” ಮೇದಿಂ ।

ಖಡ್ವಪುತ್ರಿಕಾ ಖಡ್ವಪುತ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣ್ಣ ಕತ್ತಿ, ಚೂಕು,  
ಚೂರಿ. ಖಡ್ವಸ್ಯ ಪುತ್ರಿಕೇವ ।

ಖಡ್ವಫಲ ಖಡ್ವಫಲ (ನಂ) ಕತ್ತಿಯಧಾರೆ, ಕತ್ತಿಯ  
ಅಲುಗು.

ಖಡ್ವವತ್ ಖಡ್ವವತ್ (ವಿಂ) 1. ಖಡ್ವವನ್ನು ಧರಿಸಿರು  
ವವನು, ಕತ್ತಿಯನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವವನು. ಖಡ್ವೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ  
“ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಜಿಪ್” (೪-೧-೬) ।  
-ವತಿ -ವತಿ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಖಡ್ವದಂತೆ, ಕತ್ತಿಯ  
ಹಾಗೆ. ಖಡ್ವೇನ ತುಲ್ಯಮ್ “ವತಿ:” (೪-೧-೧೧೪) ।

ಖಡ್ವಸಖ ಖಡ್ವಸಖ (ವಿಂ) ಕತ್ತಿಯೇ ಸಹಾಯವಾಗಿ  
ಉಳ್ಳವನು. ಖಡ್ವ: ಸಖಾ ಯಸ್ಯ “ಟಚ್” (೪-೪-೯೧) ।

ಖಡ್ವಾಘಾತ ಖಡ್ವಾಘಾತ (ಪುಂ) ಖಡ್ವದ ಪ್ರಹಾರ,  
ಕತ್ತಿಯ ಎಟು. ಖಡ್ವಸ್ಯಾಘಾತ: ।

ಖಡ್ವಾಗರಿಡ ಖಡ್ವಾಗರಿಡ (ಪುಂ) 1. ಅಸ್ಥಿಧಾರಾವ್ರತವನ್ನು  
ಹಿಡಿದವನು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕಾದು ಕೆಂಪಾಗಿರುವ ಕತ್ತಿಯ  
ಅಲುಗಿನಮೇಲೆ ನಿಂತು ತಪಸ್ಸುಮಾಡುವವನು. 2. ಕತ್ತಿಯ



ಅಯುಃ. "ಖಡ್ಗಾರೌದಸ್ತು ಫಲಕಾಸಿಧಾರಾವ್ರತಚಾರಿಣಿಃ" ಮೇದಿಂ.

**ಖಡ್ಗಿಕ ಖಂಡಿಕ (ಪುಂ)** 1. ಎಮ್ಮೆಯ ಹಾಲು. 2. ನೊರೆ. 3. ವ್ಯಾಧಿ, ಬೇಡರವನು. 4. ಖಡ್ಗಧಾರಿ, ಕತ್ತಿಯನ್ನು ಹಿಡಿದವನು, ಕತ್ತಿಯ ಸಿಪಾಯಿ. "ಖಡ್ಗಿಕೋ ಮಹಿಷೀಕ್ಷೀರೆ ಫನಶೌನಿಕಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ.

**ಖಡ್ಗಿನ್ ಖಂಡಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ಗಂಡಕಮ್ಮಗ, ಗೇಂಡಾಮಗ. (ವಿಂ) 2. ಖಡ್ಗಧಾರಿ, ಕತ್ತಿಯನ್ನು ಹಿಡಿದವನು. ಖಡ್ಗೋ-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫). ಖಡ್ಗಿನಿ ಖಂಡಿನೀ.

**ಖಂಡ ಖಂಡ (ಪುಂ)** 1. ಒಡಕು, ಬಿರುಕು. ಖಡಿ (ಭೇದನೆ) "ಖ್" (೩-೩-೧೮). (ಪುಂ) 2. ತುಂಡು, ಚೂರು, ಮೇಳು. ಖಡಿ ಕರ್ಮಂ "ಖ್" (೩-೩-೧೯). "ಅಧ್ವಾನಮಧ್ವಾಂತವಿಕಾರಲಕ್ಷ್ಯಸ್ತಸ್ತಾರ ತಾರಾಧಿಪಖಂಡ-ಧಾರಿ" ಕುಮಾಂ ೭-೪೮. 3. ಗ್ರಂಥದ ಒಂದು ಭಾಗ, ಅಧ್ಯಾಯ. (ನಂ) 4. ಕಡ್ಡುಪು. 5. ಕಬ್ಬಿನಿಂದ ತಯಾರಾದ ಬೆಲ್ಲ ಕಲ್ಲುಸಕ್ಕರೆ ಮುಂತಾದುವು. (ವಿಂ) 6. ಒಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ತುಂಡುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಖಡಿ ಕರ್ಮಂ "ಖ್" (೩-೩-೧೯).

**ಖಂಡಕ ಖಂಡಕ (ಪುಂ)** 1. ಕಲ್ಲುಸಕ್ಕರೆ. ಖಂಡೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಕಃ" (೪-೨-೮೦). (ವಿಂ) 2. ಒಡೆಯುವವನು, ಚೂರು ಮಾಡುವವನು. ಖಡಿ (ಭೇದನೆ) "ಖ್" (೩-೧-೧೩೩).

**ಖಂಡಕಥಾ ಖಂಡಕಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. ಚಂಪು: ಖಂಡಕಥಾ ಕಥಾ ಆಖ್ಯಾಯಿಕಾ ಪರಿಕಥಾ ಇವು ಕಾವ್ಯಗಳ ಭೇದಗಳು.

**ಖಂಡಕಾವ್ಯ ಖಂಡಕಾವ್ಯ (ನಂ)** ಪದಿನೇಳು ಸರ್ಗಗಳುಳ್ಳ ಮಹಾಕಾವ್ಯಕ್ಕಿಂತಲೂ ಕಡಮೆ ಸರ್ಗಗಳುಳ್ಳ ಚಿಕ್ಕ ಕಾವ್ಯ. ಕೆಲವು ಮಾತ್ರ ಕಾವ್ಯಲಕ್ಷಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಸಣ್ಣ ಕಾವ್ಯ, ಮೇಘದೂತಾದಿ ಕಾವ್ಯಗಳು. "ಖಂಡಕಾವ್ಯಂ ಭವತ್ ಕಾವ್ಯಸ್ಯೇಕದೇಶಾನುಸಾರಿ ಚ" ಸಾಂ ೬೦.

**ಖಂಡಕೂಷ್ಮಾಂಡಕ ಖಂಡಕೂಷ್ಮಾಂಡಕ (ಪುಂ)** ಕೂಷ್ಮಾಂಡಕ ರಸಾಯನ. ಖಂಡೇನ ಪವಮ್ ಕೂಷ್ಮಾಂಡಕಮತ್ರ.

**ಖಂಡಖರ್ಜುರ ಖಂಡಖರ್ಜುರ (ನಂ)** ಸಿಹಿ ಖರ್ಜುರ, ಖಂಡಖರ್ಜುರ. ಖಂಡವತ್ ಸ್ವಾದು ಖರ್ಜುರಮ್.

**ಖಂಡಜ ಖಂಡಜ (ಪುಂ)** ಕಲ್ಲುಸಕ್ಕರೆ. ಖಂಡಾತ್ ಜಾಯಂತಿ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಜಃ" (೩-೨-೯೮).

**ಖಂಡಧಾರಾ ಖಂಡಧಾರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕತ್ತರಿ. ಖಂಡೇ ಏಕದೇಶ-ಧಾರಾ ಯಸ್ಯಾಃ.

**ಖಂಡನ ಖಂಡನ (ನಂ)** 1. ಒಡೆಯುವುದು, ಮುರಿಯುವುದು, ತುಂಡುಮಾಡುವುದು, ಚೂರುಮಾಡುವುದು. ಖಡಿ (ಭೇದನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). "ಘಟಯ ಭುಜಬಂಧನಂ ಜನಯ ರದಖಂಡನಂ ಯೇನ ವಾ ಭವತು ಸುಖಜಾತಮ್" ಗೀತಗೋಂ. 2. ಆಶಾಭಂಗಪಡಿಸುವುದು. 3. ಅಡ್ಡಿ ಪಡಿಸುವುದು, ಆತಂಕಪಡಿಸುವುದು. 4. ನಿರಾಕರಿಸುವುದು, ತಪ್ಪನ್ನು ಹೇಳಿ ತಳ್ಳಿಹಾಕುವುದು.

**ಖಂಡನೀಯ ಖಂಡನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಒಡೆಯಲ್ಪಡುವ, ತುಂಡುಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಒಡೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ತುಂಡುಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಒಡೆಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ, ತುಂಡುಮಾಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಖಡಿ (ಭೇದನೆ) + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). 4. ನಿರಾಕರಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ, ಖಂಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 5. ನಿರಾಕರಿಸಬಹುದಾದ.

**ಖಂಡಪರಶು ಖಂಡಪರಶು (ಪುಂ)** 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಖಂಡ: ಪರಶುರಸ್ಯ. "ಖಂಡಪರಶುಕೋದಂಡಪ್ರಕಾಂಡಖಂಡನ-ಶೌಂಡಭುಜದಂಡ" ರಘುಂ ಗಂ. 2. ಪರಶುರಾಮ. "ಯೇನೈವ ಖಂಡಪರಶುರ್ಭಗವಾನ್ ಪ್ರಚಂಡಭ್ರಾಣಿಪತಿಃ ಸ್ತುಭವನೇಷು ಗುರುಃ ಪ್ರಹೃಃ" ಮಂ ವೀಂ ೨-೩೫. 3. ವಿಷ್ಣು. ಖಂಡ: ರೋದ್ರ-ಸಂಗ್ರಾಮಖಂಡನ: ಪರಶುರಸ್ಯ. "ತೀವ್ರಕೋಪಾತ್ ಪರಶುನಾ ರೋದ್ರ-ಸಂಗ್ರಾಮಖಂಡನಾತ್. ಇತ್ಯುಕ್ತ: ಖಂಡಪರಶುರ್ನಿವಾರ್ಣ: ಶೋಕನಾಶನ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: "ಸುಧನ್ವಾ ಖಂಡಪರಶುಃ" ವಿಂ ಸಂ.

**ಖಂಡಪ್ರಲಯ ಖಂಡಪ್ರಲಯ (ಪುಂ)** ಅವಾಂತರ ಪ್ರಳಯ, ಬ್ರಹ್ಮನ ಒಂದು ದಿನದ ಕೊನೆಯ ಭಾಗ. (ಒಂದು ಸಾವಿರ ಚತುರ್ಯುಗಗಳಾದರೆ ಬ್ರಹ್ಮನಿಗೆ ಒಂದು ದಿನ) "ಚತುರ್ಯುಗಸಹಸ್ರಾಣಿ ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ದಿನಮುಚ್ಯತೇ". ಬ್ರಹ್ಮನ ಒಂದು ದಿನದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ ಅವಾಂತರ ಪ್ರಳಯಕ್ಕೆ "ಬ್ರಹ್ಮಲಯ" ವೆಂದು ಹೆಸರು. ಆ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಇನ್ನೂ ಪುಣ್ಯಪಾಪಗಳು ಉಳಿದಿರುವ ಜನರು ಮಾತ್ರ ಬ್ರಹ್ಮನ ಶರೀರವನ್ನು (ಮುಖವನ್ನು ಬ್ರಾಹ್ಮಣರೂ ಬಾಹುಗಳನ್ನು ಕ್ಷತ್ರಿಯರೂ ತೊಡೆಗಳನ್ನು ವೈಶ್ಯರೂ ಪಾದಗಳನ್ನು ಶೂದ್ರರೂ) ಪ್ರವೇಶಿಸುವರು. ರಾತ್ರಿಯ ಅಂತ್ಯದಲ್ಲಿ (ಪುನಃ ಸೃಷ್ಟಿಕಾಲದಲ್ಲಿ) ಆಯಾ ಸ್ಥಾನಗಳಿಂದ ಅವರು ಹೊರಡುವರು. ಈ ಪ್ರಳಯದಲ್ಲಿ ಭೂಮಿಯ ಒಂದು ಯೋಜನ ಪ್ರದೇಶ ಮಾತ್ರ ನಾಶವಾಗುವುದು. ಅದುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ "ಖಂಡ ಪ್ರಳಯ" ವೆಂದು ಹೆಸರು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಹರಿವಂಶ" ೧೮, ೧೯ ಅಧ್ಯಾಯಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಖಂಡಸ್ಯ ಭೂಮ್ಯಾದಿ-ಪ್ರಲಯಃ.



ಖಂಡವಿಕಾರ ಖಂಡವಿಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಕಾಕಂಬಿ, ಬೆಲ್ಲದ ಪಾಕ. 2. ಕಲ್ಲುಸಕ್ಕರೆ.

ಖಂಡಶರ್ಕರಾ ಖಂಡಶರ್ಕರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಲ್ಲುಸಕ್ಕರೆ. "ಯೋ ಮತ್ಸ್ಯಪಿಂಡಿಕಾಖಂಡಶರ್ಕರಾಣಾಂ ಸ್ವಕೋ ಗುಣಃ | ತೇನ ತೇನೈವ ನಿರ್ದೇಶ್ಯಸ್ತೇಷಾಂ ವಿಶ್ವಾವಣೋ ಗುಣಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೫-೧೬೪ |

ಖಂಡಶಸ್ ಖಂಡಶಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ತುಂಡು ತುಂಡಾಗಿ, ಜೊರು ಜೊರಾಗಿ. ಖಂಡ "ಶಸ್" (೪-೪-೪೩) |

ಖಂಡಾಭ್ರಂ ಖಂಡಾಭ್ರಂ (ನಂ) 1. ಬಿಡಿಬಿಡಿಯಾದ ಮೇಘ. 2. ದಂತಕ್ಷುಡ. "ಖಂಡಾಭ್ರಮಭ್ರಲೇಶೋ ಸ್ಯಾತ್ತಥಾ ದಂತ-ಖತಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ |

ಖಂಡಾಮಲಕ ಖಂಡಾಮಲಕ (ನಂ) ನೆಲ್ಲಿಚಟ್ಟು, ಜೊರು ಮಾಡಿದ ನೆಲ್ಲಿಕಾಯಿ. ಖಂಡಂ ಖಂಡಿತಮಾಮಲಕಮ್ |

ಖಂಡಾಲಿ ಖಂಡಾಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸರೋವರ. ಖಂಡಂ ಪದಾಧಿಖಂಡಮಾಲತಿ - ಆ + ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | ಗೌರಾಂ "ಜಿಃ" (೪-೧-೪೧) | 2. ಕಾಮುಕ ಹೆಂಗಸು. ಖಂಡಂ ದಂತಾದಿಖತಮಾಲತಿ |

ಖಂಡಿಕ ಖಂಡಿಕ (ಪುಂ) 1. ಬಟಾಣಿ. 2. ನೆಲಗಡಲೆ. "ಕಲಾಯಸ್ತು ಸತೀನಕಃ | ಹರೇಃ ಖಂಡಿಕಾಶ್ಚ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ | 3. ಬಾಹುಮೂಲ, ಕಕ್ಷ, ಕಂಕುಳು. ಖಂಡೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೫) | "ದೊಮ್ಮಲೆ ಖಂಡಿಕಃ ಕಕ್ಷಾ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ | 4. ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಭಾಗಭಾಗವಾಗಿ ಒದು ವವನು, ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ. (ವಿಂ) 5. ಕುದ್ರನಾದ, ಕೋಪಗೊಂಡ. "ಖಂಡಿಕೋಪಾಧ್ಯಾಯಃ ಶಿಷ್ಯಾಯ ಚಪೇಟಿಕಾಂ ದದಾತಿ" |

ಖಂಡಿತ ಖಂಡಿತ (ವಿಂ) 1. ಒಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಜೊರು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಖಡಿ (ಭೇದನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ದಂಡಕಾರಣ್ಯವಾಸಾಯ ಖಂಡಿತಾಮರ-ಶತ್ರವೇ" | "ಖಂಡಿತಾಶಂಸಯಾ ತೇಷಾಂ ಪರಾಙ್ಮುಖತಯಾ ತಯಾ" ಕಿರಾಂ ೧೫-೩ | 3. ವಿರೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಮುರಿದ ಅಂಗಗಳುಳ್ಳ, ಅಂಗವಿಕಲ. 5. ನಿರಾಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಳ್ಳಿ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸಪದಿ ತರಪಲ್ಲವೇನ ವಧ್ವಾ ವಿಗತದಯಂ ಖಲು ಖಂಡಿತೇನ ಮಮ್ಲೇ" ಮಾಘಂ ೭-೩೧ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತಾ -ತಾ. ಎಂಟು ವಿಧ ನಾಯಿಕೆಯರಲ್ಲೊಬ್ಬ ನಾಯಿಕೆ, ಪತಿಯು ಪರಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಅಸಕ್ತನಾದುದನ್ನು ಕಂಡು ಅಸೂಯೆಯಿಂದ ಕೋಪಗೊಂಡ ಹೆಂಗಸು. "ಜಾತೇಜ್ಯಾಸಙ್ಗವಿಕೃತೇ ಖಂಡಿತೇರ್ಪಾಕಿಷಾಯಿತಾ" ದಶರೂಂ | "ಪರ್ಯುತ್ಸುಕವಮಬಲಾ ನಿಶಿ ಖಂಡಿತೇವ" ರಘುಂ ೫-೬೭ | "ತದವಿತಯಮವಾದೀರ್ಯನ್ಮಮ ತ್ವಂ ಪ್ರಿಯೇತಿ ಪ್ರಿಯಜನಪರಿಮುಕ್ತಂ ಯದ್ಕೂಲಂ ದಧಾನಃ" ಮಾಘಂ ೧೧-೩೩ |

ಖಂಡಿನ್ ಖಂಡಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಕಾಡುಹೆಸರು. (ವಿಂ) 2. ಖಂಡಗಳುಳ್ಳ, ಭಾಗಗಳುಳ್ಳ. ಖಂಡೋಽಸ್ಯಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) | 3. ಖಂಡಿಸುವವನು, ಒಡೆಯುವವನು, ಜೊರುಮಾಡುವವನು. 4. ಕತ್ತರಿಸುವವನು. ಖಂಡ-ಯತಿ-ಖಡಿ (ಭೇದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಣಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನೀ -ನೀ. 5. ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ. ಖಂಡಾಃ (ನವ) ಸನ್ಯಸ್ಯಾಃ "ಇನಿಃ" | "ಜಿಃ" (೪-೧-೫) | "ವನಮುದ್ಗಂ ತುವರಕನಿಗುಡಕಕುಲಿನಕಾಃ | ಖಂಡಿ ಚ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ |

ಖಂಡೀರ ಖಂಡೀರ (ಪುಂ) ಹಳದಿ ಹೆಸರು. "ಪೀತೇಽಸ್ಮಿನ್ ವಸುಖಂಡೀರಪ್ರವೇಲಜಯಶಾರದಾಃ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ |

ಖಂಡ್ಯ ಖಂಡ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಒಡೆಯಲ್ಪಡುವ. 2. ಭೇದಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ, ಒಡೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ವಿರೋಧಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಖಡಿ (ಭೇದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಯತ್" (೩-೧-೧೭) | 4. ನಿರಾಕರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ತಳ್ಳಿ ಹಾಕಲು ಅರ್ಹವಾದ. 5. ನಿರಾಕರಿಸಲ್ಪಡುವ.

ಖತಮಾಲ ಖತಮಾಲ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ. ಮೋಡ. 2. ಧೂಮ, ಹೊಗೆ. ಖತಮಾಲ ಇವ | "ಖತಮಾಲಸ್ತು ಪುಲಿಂಜೋ ಭೂಮೇಽಪಿ ಚ ವಲಾಹಕೇ" ಮೇದಿಂ |

ಖದ - ಸ್ಥೈರ್ಯ ಹಿಸಾಯಾಂ ಚ (ಮಾಂ ಪರಂ ಸ್ಥೈರ್ಯ ಅಕಂ ಹಿಸಾಯಾಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಖದತಿ | ಚಕ್ಷಾದ | ಅಖಾದಿತ್, ಅಖದಿತ್ | 1. ಸ್ಥಿರನಾಗು, ನಿಶ್ಚಲನಾಗು. 2. ಹಿಂಸಿಸು, ಖಂಡಿಸು.

ಖದಿಕಾ ಖದಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರಳು, ಪುರಿ. ಖೇ ಆಕಾಶೇ ದೀಯತೇ ಭರ್ಜನಕಾಲೇ - ದೊ (ಅವಖಂಡನೆ) ಖದಿಕಾ "ಕಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೫೮) | ಸಂಜ್ಞಾಯಾಂ "ಕನ್" (೪-೩-೮೭) | "ಮಂಡೋ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಮ್ಬು ಖದಿಕಾ ಲಾಜಾಃ ಪಾರಿ ತು ದೊಹನಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಖದಿರ ಖದಿರ (ಪುಂ) 1. ಕಗ್ಗಲಿಮರ. ಖದ (ಸ್ಥೈರ್ಯ) "ಕಿರಚ್" (೩ಂ ೧-೫೧) | "ಖದಿರೋ ದಂತಧಾವನಃ" ಅಮಂ | 2. ಚಂದ್ರ. ಖದ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕಿರಚ್" (೩ಂ ೧-೫೧) | "ಪ್ರಾಚೀನಬಹಿಃ ಖದಿರಃ ಕಪಿಲಾಶ್ವೋ ವರಕ್ತುಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 3. ಚಂದ್ರ. ಖೇ ಆಕಾಶೇ ದೀಯತೇ - ದ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಕಿರಚ್" (೩ಂ ೧-೫೧) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರೀ -ರೀ. ಮುಟ್ಟಿದರೆ ಮುನಿವಗಿಡ. "ಖದಿರೀ ಶಾಕಭೇದೇ ಸ್ತ್ರೀ ನಾ ಚಂದ್ರೇ ದಂತಧಾವನೇ" ಮೇದಿಂ |

ಖದಿರಕುಣ ಖದಿರಕುಣ (ಪುಂ) ಕಗ್ಗಲಿಮರವು ಹೂಬಿಡುವ ಕಾಲ. ಖದಿರಸ್ಯ ಪಾಕಃ "ಕುಣಪ್" (೪-೨-೨೪) |



**ಖದಿರಪತ್ರಿಕಾ ಖದಿರಪತ್ರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಾಚಿಕೆಗಿಡ, ಮುಟ್ಟಿದರೆ ಮುನಿವಗಿಡ, ಮುಟ್ಟಲು ಮುರಿಕೆಗಿಡ. ಖದಿರಸ್ಯ ಪತ್ರಮಿವ ಪತ್ರಮಸ್ಯಾ: ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕನ್" (೪-೪-೪)। ಅತ ಇತ್ವಮ್ (೭-೩-೪೪)। 2. ದುರ್ಗಂಧದ ಕಗ್ಗಲಿಮರ. **ಖದಿರಸಾರ ಖದಿರಸಾರ** (ಪುಂ) ಕಾಚು, ಕಗ್ಗಲಿಮರದ ಗೋಂದು.

**ಖದಿರಾ ಖದಿರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾಚಿಕೆಗಿಡ, ಮುಟ್ಟಿದರೆ ಮುನಿವಗಿಡ.

**ಖದೋತ ಖದೋತ** (ಪುಂ) 1. ಮಿಂಚುಹುಳು, ಮಿಣುಕು ಹುಳು. 2. ಸೂರ್ಯ. ಕ್ವಂ ದೋತಯತಿ - ದ್ಯುತ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿಕ್ "ಅನ್" (೩-೨-೧)। ಕ್ವೇ ದೋತೇ - ದ್ಯುತ (ದೀಪ್ತೌ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) ವಾ। "ಖದೋತಾಲಿ ವಿಸಿತನಿಭಾಂ ವಿಶ್ವದುನ್ಮೇಷದೃಷ್ಟಿಮ್" ಮೇಘಂ ೨-೧೮।

**ಖದೋತಕ ಖದೋತಕ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ವಿಷವೃಕ್ಷ. ಖದೋತ ಇವ ಕಾಯತಿ - ಕೇ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। 2. ಸೂರ್ಯ. ಕ್ವಂ ದೋತಯತಿ - ದ್ಯುತ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿಕ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ಖದೋತನ ಖದೋತನ** (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಕ್ವಂ ದೋತಯತಿ - ದ್ಯುತ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)।

**ಖಧೂಪ ಖಧೂಪ** (ಪುಂ) 1. ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಹರಡುವ ವಾಸನೆಯ ಪುಡಿ, ಆಕಾಶವನ್ನು ವ್ಯಾಪಿಸುವ ಧೂಪದ ಪುಡಿ. ಖಮಾಕಾಶಂ ಧೂಪಯತಿ - ಧೂಪ (ಭಾಷಾರ್ಥೆ) + ಣಿಕ್ "ಅನ್" (೩-೨-೧)। "ಽಕ್ಷಾನ್ ಪ್ರಚಕ್ರ್ಮಗರಸ್ಯ ಮಾರ್ಗಾನ್ ಧ್ವಜಾನ್ ಬಬಂಧುರ್ಮುಚು: ಖಧೂಪಾನ್" ಭೃಗುಂ ೩-೪। 2. ಆಕಾಶಬಾಣ, ತಾರಾ ಮಂಡಲ, ಒಳಗಡೆ ಮಧ್ಯನ್ನು ಹೊತ್ತಿಸುವುದರಿಂದ ಬಹಳ ದೂರದವರೆಗೂ ಹಾರಬಲ್ಲ ಒಂದು ಲೋಹದ ಅಥವಾ ಕಾಗದದ ಕೋಶ.

**ಖನಕ ಖನಕ** (ಪುಂ) 1. ಕನ್ನ ಕೊರೆದು ಕದಿಯುವವನು, ಚೋರ, ಕಳ್ಳ. ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಮೂಷಿಕ, ಇಲಿ. (ವಿಂ) 3. (ಗುದ್ದಲಿಯಿಂದ ಭೂಮಿಯನ್ನು) ಅಗೆಯುವವನು. "ಖನಕೋ ನಂದುರೌ ಸನ್ಧಿಚೋರೆ ತ್ರಿಷ್ವವದಾರಕೇ" ಮೇದಿಂ।

**ಖನತ್ ಖನತ್** (ವಿಂ) 1. ಕನ್ನ ಕೊರೆಯುತ್ತಿರುವ. ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। 2. (ಭೂಮಿ ಯನ್ನು) ಅಗೆಯುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। **ಖನಂತಿ ಖನಂತಿ**.

**ಖನನ ಖನನ** (ನಂ) (ಭೂಮಿಯನ್ನು) ತೋಡುವುದು, ಅಗೆಯುವುದು. ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।

**ಖನನೀಯ ಖನನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಅಗೆಯಲ್ಪಡುವ. 2. ಅಗೆಯಬೇಕಾದ. 3. ಅಗೆಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 4. ಅಗೆ ಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) ಕರ್ಮಾದೌ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬)। **ಖನಿತವ್ಯ: ಖನಿತವ್ಯ:**.

**ಖನಮಾನ ಖನಮಾನ** (ವಿಂ) "ಖನತ್" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)।

**ಖನಯಿತ್ ಖನಯಿತ್** (ವಿಂ) ತೋಡಿಸುವವನು, ಅಗೆ ಯಿಸುವವನು. ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) + ಣಿಕ್ "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ತ್ರಿ-೨,೯.

**ಖನಯಿತ್ರಿ ಖನಯಿತ್ರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಖನಿತ್ರಿ, ಗುದ್ದಲಿ, ಅಗೆ ಯುವ ಆಯುಧ. ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) + ಣಿಕ್ "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। "ಖನಯಿತ್ರಿ ಶುಭಾ ಯಾತ್ರಾ ಜಯಾರ್ಥೆ ಯುಧಕಾಙ್ಕ್ಷಿಭಿಃ। ಪಶ್ಚವರ್ಣಾಶುಕಯುತಾ ಚಾಲನೀಯಾ ಪುರಸ್ಥಿತಾ" ನಾರದೀಯಪಂಚರಾತ್ರಮ್।

**ಖನಿ ಖನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರತ್ನ ಚಿನ್ನ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನ, ಆಕರ, ಗಣಿ. ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಇ:" (೩ಂ ೪-೧೪೦)। "ಖನಿಭಿಃ ಸುಪುತ್ರೇ ರತ್ನಂ ಕ್ಷೇತ್ರೈಃ ಸಸ್ಯಂ ವನಗಂಜಾನ್" ರಘುಂ ೧೭-೬೬। 2. ಅಗೆಯುವುದು. 3. ಹಳ್ಳ, ಗುಳಿ.

**ಖನಿತ್ ಖನಿತ್** (ವಿಂ) (ಭೂಮಿಯನ್ನು) ಅಗೆಯುವವನು, (ನಲವನ್ನು) ತೋಡುವವನು. ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಕೂಪಸ್ಯ ಖನಿತಾ ಯದ್ವತ್ಪ್ರಾಕಾರಸ್ಯೇವ ಕಾರಕ:" ಹಿತಂ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪)। -ತ್ರಿ-೨,೯.

**ಖನಿತ್ರ ಖನಿತ್ರ** (ನಂ) ಗುದ್ದಲಿ, ನಲವನ್ನು ಅಗೆಯುವ ಆಯುಧ. ಖನಿತೇಜೇನ - ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಇತ್ರ:" (೩-೨-೧೮೪)। "ಯಥಾ ಖನನ್ ಖನಿತ್ರೇಣ ನರೋ ವಾರ್ಯಧಿ-ಗಚ್ಛತಿ। ತಥಾ ಗುಹ್ಯತಾಂ ವಿಧ್ಯಾಂ ಶುಶ್ರೂಪುರಧಿಗಚ್ಛತಿ" ಮನುಂ ೨-೨೧೮।

**ಖನಿತ್ರ ಖನಿತ್ರ** (ಪುಂ) ಇಕ್ಷ್ವಾಕು ಮಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಕರಂಧಮರಾಜನ ತಂದೆ, ರಂಭನ ಮಗ. "ವಿವಿಶತಿ-ಸುತೋ ರಮ್ಭಃ ಖನಿತ್ರೋಽಸ್ಯ ಧಾರ್ಮಿಕ:" ಭಾಗಂ ೯-೨-೨೪।

**ಖನು - ಅವದಾರಣೆ** (ಮ್ವಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಖನತಿ, -ತೇ। ಚಖಾನ, ಚಖ್ನೇ। ಖನಿತಾ। ಖನಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ। ಖನತು, -ತಾಮ್। ಅಖನತ್, -ತ। ಖನೇತ್, -ತ। ಖಾಯಾತ್, ಖನ್ಯಾತ್, ಖನಿಷೀಷ್ಠ। ಅಖಾನೀತ್ ಅಖನೀತ್, ಅಖನಿಷ್ಠ। ಅಖನಿಷ್ಯತ್, -ತ।

**ಕರ್ಮಣಿ:**-ಖಾಯತೇ, ಖನ್ಯತೇ। "ಯೇ ವಿಭಾಷಾ" ವಾ ಆತ್ವಮ್। ಖನೇ। ಖನಿತಾ। ಖನಿಷ್ಯತೇ। ಖಾಯತಾಮ್,



ಖನ್ಯತಾಮ್ | ಅಖಾಯತ, ಅಖನ್ಯತ | ಖಾಯತ, ಖನ್ಯತ |  
ಇತ್ಯಾದಿ. (ಭೂಮಿಯನ್ನು) ಅಗೆ, (ನೆಲವನ್ನು) ತೋಡು.

ಣಿವಿ:—ಖಾನಯತಿ, -ತೇ | ಖಾನಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ,  
-ವಭೂವ, -ಆಸ | ಖಾನಯಿತಾ | ಖಾನಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ |  
ಖಾನಯತು, -ತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ:—ಚಿಖನಿವತಿ, -ತೇ | ಚಿಖನಿವಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ |  
ಚಿಖನಿವಿತಾ | ಚಿಖನಿವಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ಚಿಖನಿವತು,  
-ತಾಮ್ | ಅಚಿಖನಿವತ್, -ತ | ಚಿಖನಿವೇತ್, -ತ |  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:—ಖನಿತವ್ಯಮ್ | ಖನನೀಯಮ್ | ಖೇಯಮ್ | ಖಾತ: |  
ಖಾತವಾನ್ | ಖನನ್, ಖನಂತೀ | ಖನಮಾನ: | ಖನಿತುಮ್ |  
ಖಾತಮ್ | ಖನನಮ್ | ಖನಿತ್ವಾ, ಖಾತ್ವಾ | उत्खाय |

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) उद् + खनु = उत्खनति | उत्खननम् | उत्खात: |  
ಕೇಳು, ಬುಡಸಹಿತ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಅಗೆದು ತೆಗೆ, ಕಿತ್ತುಹಾಕು.  
“फलैः संवर्धयामासुत्खातप्रतिरोपिता:” ರಘುಂ ೪-೩೭ |

(2) नि + खनु = निखनति | निचखान | निखात: |  
ನೆಡು, ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಇಡು. “निचखान जयस्तम्भान्  
गङ्गास्रोतोन्तरेषु स:” ರಘುಂ ೪-೩೬ |

(3) परि + खनु = परिक्रनति | परिक्रननम् |  
“कण्टिकक्षीरिणस्तु समूलान् परिखायत् वासयेदपामार्गम्”  
आश्व० श्रौ० सू० |

ಖನ್ಯಮಾನ ಖನ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ಅಗೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ,  
ತೋಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) ಕರ್ಮಂ “ಶಾನವ್”  
(೩-೨-೧೨೪) |

ಖಪುರ ಖಪುರ (ಪುಂ) 1. ಅಡಕೆಮರ. ಖಮಾಕಾಶಂ ಪಿಪತಿ—ಪೃ  
(ಪಾಲನಪೂರಣಯೋ:) “ಕ:” (ವಾಂ ೩-೨-೪) | 2. ಭದ್ರ  
ಮುಸ್ತೆ. 3. ಘಟ, ಕಲಶ, ಬಿಂದಿಗೆ. “ಖಪುರ: ಕ್ರಮುಕೇ  
ಭದ್ರಮುಸ್ತಕೇ ಕಲಶೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ | 4. ಲತನ, ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳಿ.  
5. ಮರದ ರಸ, ಮರದ ಹಾಲು. 6. ಅಡಕೆ. “ಖಪುರೋ  
ಲತನೇ ಪೂಗವೃಕ್ಷೇ ನಿರ್ಯಾಸಪೂಗಯೋ:” ನಾನಾರ್ಥಂ | (ನಂ) 7.  
ಅಕಾಶದಲ್ಲಿರುವ ನಗರ, ಕಾಲಕೇಯರಂಬ ರಾಕ್ಷಸರ ಪಟ್ಟಣ.  
ಖೇ ಆಕಾಶೇ ಚರಂ ಪುರಮ್ | 8. ಗಂಧರ್ವನಗರ. 9. ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರ  
ನಗರ. (ವಿಂ) 10. ಅಲಸ, ಸೋಮಾರಿ, ಮೃಗಳ್ಳಿ.  
ಖಮಿನ್ದ್ರಿಯಂ ಪಿಪತಿ—ಪೃ “ಕ:” | “ಖಪುರೋ ಮುಸ್ತಕೇ ಪೂಗಲಸಕೇ  
ಖಪುರಂ ಘಟೇ” ಹೇಮಂ | ಹೇಮಕೋಶದಲ್ಲಿ “ಘಟ”ವೆಂಬ  
ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ನಪುಂಸಕಲಿಂಗವಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ.

ಖಪುಷ್ಪ ಖಪುಷ್ಪ (ನಂ) ಗಗನಕುಸುಮ, ಅಕಾಶದಲ್ಲಿ ಬಿಡುವ  
ಹೂವು. ಖಸ್ಯ ಪುಷ್ಪಮ್ | ಅಸಂಭವ ಮತ್ತು ಸುಳ್ಳು  
ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವ ಪದ. “एष  
वन्ध्यासुतो याति खपुष्पकृतशेखर:” |

ಖಭ್ರಾಂತಿ ಖಭ್ರಾಂತಿ (ಪುಂ) 1. ಗಿಡ, ಶೈಲನಪಕ್ಷಿ. ಖೇ  
ಭ್ರಾಂತಿಭ್ರಮಣಂ ಮಾಸಾನ್ವೇಷಣಾಯ ಯಸ್ಯ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಅಕಾಶ  
ದಲ್ಲಿ ಸಂಚಾರ. “चिरम्भणस्तु चिल्ल: स्यात् खभ्रान्ति:  
कण्ठनीडक:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಖಮಣಿ ಖಮಣಿ (ಪುಂ) ಅಕಾಶದಲ್ಲಿ ಮಣಿಯಂತಿರುವ  
ಸೂರ್ಯ. ಖೇ ಮಣಿರಿವ |

ಖಮೂತಿ ಖಮೂತಿ (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. ಖಮಾಕಾಶ:  
ಮೂತಿ: ಯಸ್ಯ | 2. ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವರೂಪ. “स ब्रह्म परमभ्येति  
वायुभूतः खमूतिमान्” ಮನುಂ ೨-೮೨ |

ಖರ ಖರ (ಪುಂ) 1. ಗರ್ವಭ, ಕತ್ತೆ. 2. ಹೇಸರಗತ್ತೆ.  
ಖಂ ಮುಖಬಿಲಮತಿಶಯೇನಾಸ್ತಸ್ಯ “ರ:” (ವಾಂ ೪-೨-೧೦೭) |  
“वेशरोऽश्वतरः खर:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 3. ಕಾಗೆ, ವಾಯಸ.  
4. ಹದ್ದು. 5. ರಾಕ್ಷಸ. 6. ಸೂರ್ಯನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ.  
7. ಬೇಸಿಗೆಕಾಲ. 8. ಪ್ರಭವಾದಿ ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರ  
ಗಳಲ್ಲೊಂದು. 9. ವಿಶ್ವವಸ್ತಿನ ಮಗನಾದ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ.  
[ರಾವಣನ ಬಲತಾಯಿಯಾದ ರಾಕೆಯ ಮಗ. ಇವನ  
ತಮ್ಮ ದೂಷಣ. ತಂಗಿ ಶೂರ್ಪಣಖೆ. ರಾವಣನು  
ಇವನನ್ನು ಹದಿನಾಲ್ಕು ಸಾವಿರ ರಾಕ್ಷಸಸೈನ್ಯದೊಡನೆ  
ದಂಡಕಾರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಇರಿಸಿದ್ದನು. ಶ್ರೀರಾಮನು ಪಂಚವಟಿ  
ಯಲ್ಲಿ ಸೀತೆ ಮತ್ತು ಲಕ್ಷ್ಮಣರೊಂದಿಗೆ ಇದ್ದಾಗ  
ಶೂರ್ಪಣಖೆಯು ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು ಮೋಹಿಸಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣ  
ನಿಂದ ಕೆವಿ ಮೂಗುಗಳನ್ನು ಕೊಯ್ಯಿಸಿಕೊಂಡು ಖರನಲ್ಲಿಗೆ  
ಹೋಗಿ ದೂರು ಹೇಳಿದಳು. ಖರನು ಸಕಲ ಸೈನ್ಯ  
ದೊಡನೆ ಯುದ್ಧಮಾಡಿ ಶ್ರೀರಾಮನಿಂದ ಸೈನ್ಯಸಮೇತ  
ನಾಗಿ ಹತನಾದನು.] (ವಿಂ) 10. ಕಠಿಣವಾದ, ಗಟ್ಟಿ  
ಯಾದ. 11. ತೀವ್ರವಾದ, ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ. 12. ಉಗ್ರ  
ವಾದ, ಕ್ರೂರವಾದ. ಖಮಿನ್ದ್ರಿಯಮತಿಶಯೇನ ರಾತಿ—ರಾ(ದಾನೇ)  
“ಕ:” (೩-೨-೪) | “खरो गर्दभतीक्ष्णयो:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಖರಕರ ಖರಕರ, -ಕಿರಣ -ಕಿರಣ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ.  
ಖರಾ: ತೀಕ್ಷ್ಣಾ: ಕರಾ: ಕಿರಣಾ ವಾಸ್ಯ |

ಖರಕುಟಿ ಖರಕುಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕತ್ತೆಯ ದೊಡ್ಡಿ, ಕತ್ತೆ  
ಗಳನ್ನು ಕೂಡುವ ಮನೆ. 2. ನಾಪಿತನ ಮನೆ, ಕ್ಷೌರಿಕನ  
ಮನೆ. ಖರಾ ಧುರವತ್ವಾತ್ ತೀಕ್ಷ್ಣಾ ಕುಟಿ | “अथ खरकुटी  
नापितशालिका” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |



ಖರಕೇತು ಖರಕೇತು (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ.

ಖರಕೋಣ ಖರಕೋಣ (ಪುಂ) ತಿತ್ತಿರಿಪಕ್ಷಿ.

ಖರಗನ್ಧಾ ಖರಗಂಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾಗಬಲಗಿಡ.  
ಬೋಳೆಗಡಲೆ. ಖರೋ ಗಂಧೋ ಯಸ್ಯಾ: |

ಖರಧಾತನ ಖರಧಾತನ, -ಧ್ವಂಸಿನ್ -ಧ್ವಂಸಿನ್ (ಪುಂ)  
ಖರನೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದ ಶ್ರೀರಾಮ. ಖರಂ  
ತತ್ರಾಮಕರಾಕ್ಷಸಂ ಧಾತಯತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) +  
ಸ್ವಾರ್ಥೇ ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) | ಧ್ವಂಸಯತಿ - ಧ್ವಂಸು  
(ಅವಲಂಕರಣ) + ಣಿಚ್ "ಣಿಣಿ:" (೩-೧-೧೩೪) ವಾ |

ಖರಣಸ್ ಖರಣಸ್ (ವಿಂ) 1. ಚೂಪಾದ ಮೂಗುಳ್ಳವನು.  
ಖರಾ ತೀಕ್ಷ್ಣ ನಾಸಿಕಾ ಯಸ್ಯ | ನಾಸಿಕಾಯಾ ವಾ ನಸ್  
(ವಾಂ ೪-೪-೧೧೮) | ನಸ್ಯ ಗತ್ವಮ್ | ಪಕ್ಷೆ "ಅಚ್"  
(೪-೪-೧೧೮) | ಖರಣಸ್: ಖರಣಸ್: 2. ಕತ್ತೆಯಂತೆ  
ಮೂಗುಳ್ಳವನು. ಖರಸ್ಯ ನಾಸೇವ ನಾಸಾ ಯಸ್ಯ |

ಖರದಂಡ ಖರದಂಡ (ನಂ) ಕಮಲ, ತಾವರೆಹೂವು. ಖರ:  
ಉಗ್ರ: ದೃಢೋಽಸ್ಯ |

ಖರದೂಷಣ ಖರದೂಷಣ (ಪುಂ) 1. ದತ್ತೂರಿಗಿಡ. ಖರಮುಗ್ಧ  
ದೂಷಣಂ ಉನ್ಮಾದಕತ್ವರೂಪದೋಷೋ ಯತ್ರ | (ಪುಂ ದ್ವಿವಂ) 2.  
ದಂಡಕಾರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಖರ ಮತ್ತು ದೂಷಣ  
ರೆಂಬ ಇಬ್ಬರು ರಾಕ್ಷಸರು. ಖರಾ ದೂಷಣಾ | "ಖರದೂಷಣಯೋ-  
ಭ್ರಾತೃ: ಪರ್ಯದೇವಿಷ್ಠ ಸಾ ಪುರ: " ಮೃದ್ಧಿಂ ೪-೩೪ |

ಖರಧಾರ ಖರಧಾರ (ವಿಂ) ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ಅಲುಗುಳ್ಳ  
ಅಯುಧ. ಖರಾ ಧಾರಾ ಯಸ್ಯ | "ತತ್ರ ವಕ್ರಂ ಕುಪ್ಠಂ ಖಂಡಂ  
ಖರಧಾರಮತಿಸ್ಥೂಲಮಲ್ಪಮತಿರ್ದೀರ್ಘಮತಿಹ್ರಸ್ವಮಿತ್ಯಷ್ಟೈಶಸ್ತ್ರ-  
ದೋಷಾ: " ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೮-೯ |

ಖರನಾದಿನ್ ಖರನಾದಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಗಾಗಿ ಕೂಗುವ,  
ಬರಬಾಗಿ ಶಬ್ದ ಮಾಡುವ. ಖರಂ ನದತಿ - ಗದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ  
ಶಬ್ದೇ) "ಣಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮) | 2. ಕತ್ತೆಯಂತೆ  
ಕೂಗುವ. ಖರ ಇವ ನದತಿ |

ಖರಪತ್ನೀ ಖರಪತ್ನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬೆಂಡಗಿಡ. ಖರಂ  
ಪತ್ನಮಸ್ಯಾ: | ಗೌರಾಂ "ಜಿಷ್" (೪-೧-೪೧) | 2. ಕಲ್ಲತ್ತಿ  
ಗಿಡ, ಬ್ರಹ್ಮಮೇಡಿಗಿಡ.

ಖರಪುಷ್ಪಾ ಖರಪುಷ್ಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾರಂಬೇಳೆ ಗಿಡ.

ಖರಪ್ರಿಯ ಖರಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) ಪಾರಾವತ, ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ.

ಖರಮಯೂಖ ಖರಮಯೂಖ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಖರಾ:  
ತೀಕ್ಷ್ಣಾ: ಮಯೂಖಾ ಅಸ್ಯ |

ಖರಯಾನ ಖರಯಾನ (ನಂ) ಕತ್ತೆಯಿಂದ ಎಳೆಯಲ್ಪಡುವ  
ಗಾಡಿ.

ಖರಶಾಲ ಖರಶಾಲ (ನಂ) 1. ಕತ್ತೆಯ ದೊಡ್ಡಿ, ಕತ್ತೆಗಳನ್ನು  
ಕೂಡುವ ಮನೆ. ಖರಾಣಾಂ ಶಾಲಾ | ವಾ ನಪುಂಸಕತ್ವಮ್  
(೨-೪-೨೫) | ಪಕ್ಷೆ -ಶಾಲಾ -ಶಾಲಾ. (ವಿಂ) 2. ಕತ್ತೆಯ  
ದೊಡ್ಡಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಖರಶಾಲೇ ಜಾತ: "ಅಣ್"  
(೪-೩-೨೫) | ಅಣಾಂ "ಲುಕ್" (೪-೩-೩೫) |

ಖರಾ ಖರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವತಾಳೆ ಮರ.

ಖರಾಗರೀ ಖರಾಗರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವತಾಳೆ ಮರ.

ಖರಾಶ್ವಾ ಖರಾಶ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಓಮ, ವಾದಕ್ಕಿ, ಅಜವಾನ.  
ಖರೇಶ್ಯತೇ - ಅಶ್ವ (ಭೋಜನೇ) "ವ:" (೩ಂ ೪-೯೫) |

ಖರಾಹ್ವಾ ಖರಾಹ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಓಮ, ವಾದಕ್ಕಿ, ಅಜವಾನ.

ಖರಿಕಾ ಖರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಡಿ ಕಸೂರಿ.

ಖರು ಖರು (ಪುಂ) 1. ಈಶ್ವರ, ಶಿವ. 2. ದರ್ಪ, ಕೊಬ್ಬು.  
3. ಅರ್ಜು. ಕುದುರೆ. ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಕು:" ರಶ್ಮಿ  
(೩ಂ ೧-೩೬) | 4. ದಂತ, ಹಲ್ಲು. 5. ಬಿಳುಪು. "ಖರು:  
ಸ್ಯಾದಶ್ವಹರಯೋ: ದಂಪಂತಿಸಿತೇಷು ಚ" ಹೇಮಂ | 6. ಕಾಮ,  
ಮನ್ಮಥ. (ವಿಂ) 7. ಬಿಳುಪಾದ. "ಖರರಶ್ವೇ ಹರೇ  
ದಂಪಂತೇ ಶ್ವೇತೇ ತು ವಾಚ್ಯವತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 8. ನಿಷಿದ್ಧ  
ವಾದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಅಭಿರುಚಿಯುಳ್ಳವನು. "ನಿಷಿದ್ಧೇಕ-  
ರಶ್ವಾ ಖರು:" ಅಭಿಂ ಚಿಂ | 9. ಕ್ರೂರನಾದ. 10. ತೀಕ್ಷ್ಣ  
ವಾದ. 11. ಮೂರ್ಖ. "ಖರು: ಕಾಮ: ಕರೋ ಮೂರ್ಖ-  
ಶ್ವಶ್ಚ" ಸಿಂ ಕೌಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 12. ಪತಿಯನ್ನು  
ತಾನಾಗಿ ವರಿಸಿದ ಕನ್ಯೆ, ಸ್ವಯಂವರ ಮಾಡಿಕೊಂಡವಳು.  
"ಖರು: ಪತಿವರಾ ಕನ್ಯಾ" ಸಿಂ ಕೌಂ |

ಖರ್ಜ - ಪೂಜಾಯಾಮ್ ವ್ಯಥನೇ ಚ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) |  
ಖರ್ಜಂತಿ | ಚಖರ್ಜ | ಖರ್ಜಿತಾ | ಖರ್ಜಿಷ್ಯತಿ | ಖರ್ಜತು |  
ಅಖರ್ಜತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಪೂಜಿಸು, ಗೌರವಿಸು.  
2. ನೋಯಿಸು.

ಕರ್ಮಣಿ: -ಖರ್ಜಯಂತಿ | ಚಖರ್ಜ | ಖರ್ಜಿತಾ | ಖರ್ಜಿಷ್ಯಂತಿ |  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ: -ಖರ್ಜಯತಿ, -ತೇ | ಖರ್ಜಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ,  
-ವಭೂವ, -ಆಸ | ಖರ್ಜಯಿತಾ | ಖರ್ಜಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ |  
ಖರ್ಜಯತು, -ತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು: -ಖರ್ಜಿತವ್ಯಮ್ | ಖರ್ಜನೀಯಮ್ | ಖರ್ಜಯಮ್ | ಖರ್ಜಿತ: |  
ಖರ್ಜಿತವಾನ್ | ಖರ್ಜನ್, ಖರ್ಜಂತಿ | ಖರ್ಜಿತುಮ್ | ಖರ್ಜಿತಮ್ |  
ಖರ್ಜನಮ್ | ಖರ್ಜಿತವಾ | ಪ್ರಖರ್ಜಯ |

ಖರ್ಜನ ಖರ್ಜನ (ನಂ) 1. ಪೂಜಿಸುವುದು, ಗೌರವಿಸುವುದು.  
ಖರ್ಜ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ವೃಥಾ  
ಪಡಿಸುವುದು, ನೋಯಿಸುವುದು. 3. ಕರೆಯುವುದು.



**ಖಜಿಕಾ ಖರ್ಜಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉಪದಂಶ, ವ್ಯಂಜನ, ಸಂಜಿಕೊಳ್ಳುವ ವಸ್ತು. 2. ಉಪದಂಶವೆಂಬ ರೋಗ, ರತಿರೋಗ, ಗುಹ್ಯಸ್ಥಾನದ ಒಂದು ರೋಗ, ಗರಮಿರೋಗ. ಖರ್ಜ (ವ್ಯಥನೆ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ಖರ್ಜ ಖರ್ಜೂರ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನದಿ, ತುರಿ. ಖರ್ಜ (ವ್ಯಥನೆ) "ಝ:" (೩ಂ ೧-೮೧)। 2. ಖರ್ಜೂರದ ಮರ. 3. ಕೇಟಿ. ಕೃಮಿ, ಹುಳು. "ಖರ್ಜು: ಖರ್ಜೂರಿಕೀಟಕಣ್ಡುಭು" ಹೇಮಂ।

**ಖರ್ಜೂರ ಖರ್ಜೂರ** (ಪುಂ) 1. ಖರ್ಜೂರದ ಮರ. ಖರ್ಜಂತಿ- ಖರ್ಜ (ವ್ಯಥನೆ) "ಝರ:" (೩ಂ ೪-೯೦)। 2. ವೃಶ್ಚಿಕ, ಜೇಳು. (ನಂ) 3. ಖರ್ಜೂರ. 4. ಬೆಳ್ಳಿ. 5. ಅರಿದಳ. 6. ಕಣ, ಧಾನ್ಯಗಳನ್ನು ಒಕ್ಕುವ ಜಾಗ. "ಖರ್ಜೂರಂ ಲ್ಪ-ಫಲಯೋ: ಖರ್ಜೂರ: ಕೀಟವೃಕ್ಷಯೋ:" ಮೇದಿಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರೀ -ರೀ. ಕಾಡುಖರ್ಜೂರದ ಮರ, ಈಜಲಮರ. "ಖರ್ಜೂರಿ-ಸ್ಕನ್ಧನದ್ವಾನಾಂ ಮದೋದ್ಗಾರಸುಗಂಧಿಪು" ರಘುಂ ೪-೭೫।

**ಖರ್ಜೂರಕ ಖರ್ಜೂರಕ** (ಪುಂ) ವೃಶ್ಚಿಕ, ಜೇಳು.

**ಖರ್ಪರ ಖರ್ಪರ** (ಪುಂ) 1. ಜೋರ. ಕಳ್ಳ. 2. ಧೂರ್ತ, ಪಟಂಗ, ಮಂಚಕ. 3. ಭಿಕ್ಷುಪಾತ್ರ. 4. ಕಪಾಲ, ತಲೆ ಬುರುಡೆಯು ಜಿಪ್ಪು. "ಖರ್ಪರಸ್ತಸ್ಕರೇ ಧೂತೇ ಮಿಕ್ಷಾಪಾತ್ರ-ಕಪಾಲಯೋ:" ಮೇದಿಂ। 5. ಛತ್ರಿ, ಕೊಡೆ. "ಅಥ ಖರ್ಪರ: ವಾರಿತ್ರಾ ಮೂರ್ಖೋಲಶ್ಚ ಸೇವ ಪತ್ರಪಿಶಾಚಿಕಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। (ನಂ) 6. ಮೈಲುತುತ್ತು.

**ಖರ್ಪರಿಕಾ ಖರ್ಪರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೈಲುತುತ್ತು.

**ಖರ್ಪರೀ ಖರ್ಪರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೈಲುತುತ್ತು.

**ಖರ್ವ - ಗತೌ** (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಖರ್ವತಿ। ಚಖರ್ವ। ಅಖರ್ವೀತ್। ಹೋಗು, ಮುಂದೆ ನಡೆ. ಚಲಿಸು.

**ಖರ್ಬುಜ ಖರ್ಬುಜ** (ನಂ) ಖರ್ಬುಜದ ಹಣ್ಣು. "ಖರ್ಬುಜಂ ಮೂತ್ರಲಂ ಬಲಯಂ ಕೋಷಶುದ್ಧಿಕರಂ ಗುರು। ಸ್ನಿಗ್ಧಂ ಸ್ವಾದುತರಂ ಶೀತಂ ವೃಷ್ಯಂ ಪಿತ್ತಾನಿಲಾಪಹಮ್" ಭಾವಪ್ರಂ।

**ಖರ್ಮ ಖರ್ಮ** (ನಂ) 1. ರೇಷ್ಮೆಬಟ್ಟೆ. 2. ಪಾರುಷ, ಪರಾಕ್ರಮ. "ಖರ್ಮ ದುಕ್ಲೇ ಪೌರಃ ಚ" ಹೇಮಂ।

**ಖರ್ವ - ದರ್ಪೆ** (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ)। ಖರ್ವತಿ। ಚಖರ್ವ। ಅಖರ್ವೀತ್। ದರ್ಪಹೊಂದು, ಕೊಚ್ಚಿದವನಾಗು.

**ಖರ್ವ ಖರ್ವ** (ವಿಂ) 1. ವಾಮನ, ಕುಳ್ಳ, ಗಿಡ್ಡ. ಖರ್ವ (ದರ್ಪೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಖರ್ವಮಾಹ್ಯದಮರೋಘ-ನಿವಾಸಂ ಪರ್ವತಂ ಕ್ವಚನ ಚಂಪಕಸಂಪತ್" ನೈಪಂ ೨೧-೨೮। 2. ನೀಚ. "ಖರ್ವ ಸಂಖ್ಯಾಂತರೇ ಕಲಿವಂ ನೀಚೇ ವಾಮನಕೇ ತ್ರಿಭು" ಮೇದಿಂ। (ಪುಂ) 3. ಕುಬೇರನ ನವನಿಧಿಗಳ

ಲೊಂದು. 4. ಕುಬ್ಜಕವೃಕ್ಷ. (ನಂ) 5. ಒಂದು ಸಹಸ್ರ ಕೋಟಿ ಸಂಖ್ಯೆ.

**ಖರ್ವಟ ಖರ್ವಟ** (ಪುಂ) ನಗರ ಮತ್ತು ಹಳ್ಳಿಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ನದೀ ಪರ್ವತಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಗ್ರಾಮ. "ಏಕತೌ ಯತ್ರ ತು ಗ್ರಾಮ: ನಗರಂ ಚೈತತ್: ಸ್ಥಿತಮ್। ಮಿಶ್ರಂ ತು ಖರ್ವಟೌ ನಾಮ ನದೀಗಿರಿಸಮಾಕುಲ:"।

**ಖರ್ವಶಾಖ ಖರ್ವಶಾಖ** (ವಿಂ) 1. ವಾಮನ, ಕುಳ್ಳ, ಗಿಡ್ಡ. ಖರ್ವ: ಶಾಖಾ: ಹಸ್ತಪಾದಾದಯೋ ಯಸ್ಯ। 2. ಸಣ್ಣ ರೆಂಬೆ ಗಳುಳ್ಳ ಚಿಕ್ಕಮರ.

**ಖರ್ವಿತ ಖರ್ವಿತ** (ವಿಂ) 1. ಚಿಕ್ಕದಾಗಿರುವ, ಸಣ್ಣದಾಗಿರುವ, ಹ್ರಸ್ವವಾಗಿರುವ. ಖರ್ವ (ಗತೌ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತಾ-ತಾ. 2. ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ. "ಸಂಮಿಶ್ರಯೇಚ್ಚತುರ್ದಶ್ಯಾ ಅಮಾವಾಸ್ಯಾ ಭವೇತ್ ಕ್ವಚಿತ್। ಖರ್ವಿತಾಂ ತಾಂ ವಿಧು: ಕೇಚಿತ್ ಗತಾಘ್ವಾಮಿತಿ ಚಾಪರೇ" ಕರ್ಮಪ್ರಂ। 3. ಹಿಂದಿನ ದಿನದಲ್ಲಿದ್ದ ತಿಥಿಗಿಂತ ಮರುದಿನ ಕಡಮೆ ಕಾಲದಲ್ಲಿರುವ ತಿಥಿ, ಕ್ಷಯದಲ್ಲಿ ಬರುವ ತಿಥಿ.

**ಖಲ - ಸಂಖ್ಯೆ** (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಖಲತಿ। ಚಖಲ। ಖಲಿತಾ। ಖಲಿಷ್ಯತಿ। ಖಲತು। ಅಖಲತ್। ಖಲೇತ್। ಖಲ್ಯಾತ್। ಅಖಾಲೀತ್। ಸೇವಿಸು, ಶೇಖರಿಸು ಕೊಡು.

**ಕರ್ಮಣಿ:**-ಖಲ್ಯತೇ। ಚಖಲೇ। ಖಲಿತಾ। ಖಲಿಷ್ಯತೇ। ಖಲ್ಯತಾಮ್। ಅಖಲ್ಯತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಖಲ ಖಲ** (ಪುಂ) 1. ಕಣ, ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಒಕ್ಕುವ ಜಾಗ. ಖಲ (ಸಂಖ್ಯೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಖಲಾತ್ ಕ್ಷೇತ್ರಾದಗಾರಾದ್ವಾ ಯತೌ ಖಾಪ್ಯುಪಲಮ್ಯತೇ" ಮನುಂ ೧೧-೧೭। 2. ಹೊಂಗೆಮರ. ಖಂ ತದ್ವರ್ಣಂ ಲಾತಿ - ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೪)। 3. ಸೂರ್ಯ. ಖೇ ಲೀಯತೇ - ಲೀಡ್ (ಶ್ಲೇಷಣೆ) "ಡ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)। 4. ಧೂಳಿನ ರಾಶಿ. (ನಂ) 5. ನೆಲ, ಭೂಮಿ. 6. ಸ್ಥಾನ, ಜಾಗ. 7. ಎಳ್ಳಿನ ಹಿಂಡಿ. 8. ಕಲ್ಲುಪತ್ತು, ಔಷಧ ಮೊದಲಾದವು ವನ್ನು ಅರೆಯುವ ಗುಳಿಕಲ್ಲು. (ವಿಂ) 9. ನೀಚ, ಕೆಟ್ಟ ಸ್ವಭಾವದವನು. 10. ಕ್ರೂರ, ದಯೆಯಿಲ್ಲದವನು. 11. ಅಧಮ, ಕಳೆಮಟ್ಟದ. 12. ದುರ್ಜನ, ಕೆಟ್ಟವನು. "ಸರ್ಪ: ಕ್ರೂರ: ಖಲ: ಕ್ರೂರ: ಸರ್ಪಾತ್ ಕ್ರೂರತರ: ಖಲ:। ಮನ್ತ್ರೋಪಧಿವಶ: ಸರ್ಪ: ಖಲ: ಕೇನ ನಿವಾರ್ಯತೇ"। "ಸ್ವಪ್ರಾಣಾನ್ ಯ: ಪರಪ್ರಾಣೈ: ಸುಪುಣ್ಣಾತ್ಯಥೃಣ: ಖಲ:" ಭಾಗಂ ೧-೭-೩೭। "ಖಲಂ ಭೂಸ್ಥಾನಕಲ್ಕೇಷು ಕ್ರೂರೇ ನೀಚೇಷು ಮೇಲ:" ಮೇದಿಂ।



ಖಲಕ ಖಲಕ (ಪುಂ) ಕುಟ, ಬಿಂಡಿಗೆ, ಕೊಡ. ಕ್ಷಂ ಮಧ್ಯೆ  
ಶೂನ್ಯ ಲಾತಿ-ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೪)।  
ಸಂಜಾಯಾ "ಕನ್"।

ಖಲಕುಲ ಖಲಕುಲ (ಪುಂ) 1. ಕುಳಿತ್ತು, ಹುರುಳಿ. ಖಲಕಾ  
ಖಲಭೂಮಿ ಲೀಯತೆ-ಲೀಡ್ (ವಿಲೇಷಣೆ) "ಡ:" (ವಾಂ  
೩-೨-೪೮)। "ದಶ ಗ್ರಾಮ್ಯಾಣಿ ಧಾನ್ಯಾನಿ ಭವಂತಿ ಬ್ರಿಹಿ-  
ಗವಾಸ್ತಲಮಾಪಾ ಅಣುಪ್ರಿಯಙ್ಗವೋ ಗೋಷಮಾಶ್ರ ಖಲ್ವಾ: ಖಲ-  
ಕುಲಾಶ್ರ"। (ನಂ) 2. ನೀಚವಂಶ. ಹೀನಕುಲ.

ಖಲಜ ಖಲಜ (ವಿಂ) ಕಣದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಧಾನ್ಯವನ್ನು  
ಒಕ್ಕುವ ಜಾಗದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಖಲೆ ಜಾಯತೆ-ಜನಿ  
(ಪ್ರಾಕೃಭವಿ) "ಡ:" (೩-೨-೯೭)।

ಖಲತಾ ಖಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೀಚತನ. 2. ದುಷ್ಟತನ.  
ಖಲಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। 3. ಅಕಾಶದ  
ಲತೆ, ಅಕಾಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಬಳ್ಳಿ. ಖಸ್ಯ ಲತಾ।  
"ಅನಿರಾಕೃತತಾಪಸಂಪದಂ ಫಲಹೀನಾಂ ಸುಮನೋಭಿರುಜ್ಜಿತಾಂ।  
ಖಲತಾಂ ಖಲತಾಮಿವಾಸತೀಂ ಪ್ರತಿಪದ್ಯತ ಕಥಂ ಬುದ್ಧೋ ಜನ:"  
ಮಾಘಂ ೧೬-೨೪।

ಖಲತಿ ಖಲತಿ (ಪುಂ) 1. ಪಟ್ಟಿತಲೆ. ಖಲಂತಿ ಕೇಶಾ:  
ಅಸ್ಮಾತ್-ಅಪಾದಾನೆ "ಅತಿ:" (೩-೪-೭೪)। ನಿಪಾಂ।  
(ವಿಂ) 2. ಪಟ್ಟಿತಲೆಯುಳ್ಳವನು, ಕೂದಲು ಹುಟ್ಟಿದಿರು  
ವುದರಿಂದ ಬೋಳುತಲೆಯುಳ್ಳವನು.

ಖಲತಿಕ ಖಲತಿಕ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಒಂದು  
ಪರ್ವತ, ಒಂದು ಬೆಟ್ಟ. ಖಲತಿರಿವ ಕಾಯತಿ-ಕೆ (ಶಬ್ದ)  
"ಕ:" (೩-೨-೩)। (ನಂ) 3. ಖಲತಿಕಪರ್ವತದ  
ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಅರಣ್ಯ. ಖಲತಿಕಸ್ಯ ಪರ್ವತಸ್ಯಾದ್ವರಭವಾನಿ  
ಖಲತಿಕಂ ವನಾನಿ ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಖಲಧಾನ ಖಲಧಾನ (ಪುಂ) ಕಣ, ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಒಕ್ಕುವ  
(ತೆನೆಬಿಡಿಯುವ) ಜಾಗ. ಖಲಂತಿ ಧಾನ್ಯಾನ್ಯತ್ರ। ಪೃಷಂ।  
"ಖಲಧಾನಂ ಪುನ: ಖಲಮ್" ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ಖಲಪ್ಪ ಖಲಪ್ಪ (ವಿಂ) ಗುಡಿಸುವವನು, ಭೂಮಿಯನ್ನು  
ಗುಡಿಸಿ ಬೊಕ್ಕುಟಮಾಡುವವನು. ಖಲಂ ಭುವಂ ಪುನಾತಿ-ಪೂ  
(ಪವನೇ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬)।

ಖಲಯಜ ಖಲಯಜ್ಞ (ಪುಂ) ಕಣದಲ್ಲಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ  
ಯಜ್ಞ, ಕಣದಲ್ಲಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ ದೇವತಾಪೂಜೆ. ಖಲೆ  
ಕರ್ತವ್ಯ: ಯಜ್ಞ:।

ಖಲಿ ಖಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎಣ್ಣೆಯ ಗಸಿ. 2. ತಾಯಿ. ಲ.  
ಖಲ (ಸಂಜಯೆ) "ಇನ್" (ತಂ ೪-೧೧೭)। "ಸ್ಥಾಲ್ಯಾಂ  
ವೈಡ್ಯಮಯಾಂ ಪವತಿ ತಿಲಖಲೀಂ ಚಂದನೇರಿನ್ಧನೋಷಿ:"।

ಖಲಿನ್ ಖಲಿನ್ (ವಿಂ) ಕಣವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು.  
ಖಲೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। ಖಲಿನಿ ಖಲಿನೀ.

ಖಲಿನಿ ಖಲಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಣಗಳ ಸಮೂಹ. ಖಲಾನಾಂ  
ಸಮೂಹ: "ಇನಿ:" (೪-೨-೫೧)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)।  
2. ದುರ್ಜನರ ಗುಂಪು. 3. ಮುರೆಯೆಂಬ ಒಂದು  
ಗಂದಿಗರ ವಸ್ತು.

ಖಲಿವರ್ಧನ ಖಲಿವರ್ಧನ (ಪುಂ) ಹುಳುಕು ಹಲ್ಲು.  
"ಮಾರುತೇನಾಧಿಕೋ ದಂತೋ ಜಾಯತೆ ತೀವ್ರವೇದನ:। ಖಲಿವರ್ಧನ-  
ಸಂಜೋಷೋ ಜಾಯತೆ ರಕ್ತಂ ನ ಶಾಮ್ಯತಿ" ಭಾವಪ್ರಂ।

ಖಲೀನ ಖಲೀನ (ಪುಂ) 1. ಕುದುರೆಯ ಕಡಿವಾಣ,  
-ಲಗಾಮು. ಖೇ ಮುಖವಿಲೇ ಲೀನ:। "ತುಭಯತ: ಖಲೀನ-  
ಕನಕಕಟಕಾವಲಗನಾಮ್ಯಾಂ ಪದೇ ಪದೇ ಕೃತಾಕುಶಲನಪ್ರಯತ್ನಾಮ್ಯಾಂ  
ಪುರುಷಾಮ್ಯಾಮವಕೃಷ್ಯಮಾಣಮ್" ಕಾದಂ। (ವಿಂ) 2. ಅಕಾಶ  
ದಲ್ಲಿ ಅಡಗಿರುವ. ಖೇ ಆಕಾಶೇ ಲೀನ:। ಪೃಷಂ ವಾ ಹ್ರಸ್ವ:  
ಖಲಿನ: ಖಲಿನೀ.

ಖಲೀಕಾರ ಖಲೀಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಅಪಕಾರ. ಖಲ +  
ಅಭೂತತದ್ವಾವೇ ಚಿವ: ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣ) ಭಾವೇ  
"ಘಜ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಭರ್ತ್ಸನ, ದೆವರಿಸು  
ವುದು. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। -ಕರಣಮ್  
-ಕರಣಮ್.

ಖಲು ಖಲು (ಅವ್ಯಂ) ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಉಪಯೋಗಿ  
ಸುವ ಒಂದು ಅವ್ಯಯ. 1. ಜಿಜ್ಞಾಸೆ, ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು  
ಅಸೆ. "ನ ಖಲೂಗ್ರಾಘಾ ಪಿನಾಕಿನಾ ಗಮಿತ: ಸೋಽಪಿ  
ಸುಹೃದ್ಗತಾಂ ಗತಿಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೨೪। 2. ವಾಚ್ಯಾಲಂಕಾರ.  
"ಸರ್ವ: ಪ್ರಿಯ: ಖಲು ಭವತ್ಯನುರೂಪವೇಷ್ಠ:" ಮಾಘಂ ೫-೬।  
3. ನಿಶ್ಚಯ. "ಗೃಹಾಣ ಶಸ್ತ್ರಂ ಯದಿ ಸರ್ಗಂ ಏಷ ತೇ ನ  
ಖಲ್ವನಿಜಿತು ರಘುಂ ಕೃತೀ ಭವಾನ್" ರಘುಂ ೩-೫೧।  
4. ಅನುನಯ, ವಿನಯದಿಂದ ಬೇಡಿಕೆ. "ನ ಖಲು ನ  
ಖಲು ಬಾಣ: ಸನಿಪಾತ್ಯೋಷ್ಯಮಸ್ಮಿನ್" ಶಾಕುಂ ೧। 5. ನಿಷೇಧ.  
ನಿಷೇಧಾರ್ಥಕವಾದ "ಖಲು" ಯೋಗದಿಂದ ಧಾತುವಿಗೆ  
"ಕ್ವಾ" ಪ್ರತ್ಯಯವು ಬರುವುದು. "ನಿರ್ಧಾರಿತೇಽಥೇ ಲೇಖನ  
ಖಲೂಕ್ವಾ ಖಲು ವಾಚಿಕಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೭೦। 6. ಪಾದ  
ಪೂರಣಾರ್ಥ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ಅವ್ಯಯ.  
7. ನಿಯಮ, ಅವಧಾರಣ. "ಪರಪ್ರಣೀತಾನಿ ವಚಾಸಿ  
ಚಿನ್ವತಾಂ ಪ್ರವೃತ್ತಿಸಾರಾ: ಖಲು ಮಾದೃಶಾಂ ಗಿರ:" ಕಿರಾಂ ೧-೨೫।  
8. ಕಾರಣ. "ನ ವಿದೀಯೇ ಕಥಿನಾ: ಖಲು ಸ್ತ್ರೀಯ:"  
ಕುಮಾಂ ೪-೫।



**ಖಲುಕ್ ಖಲುಕ್** (ಪುಂ) ಅಂಧಕಾರ. ಕೆತ್ತಲೆ. ಖಮಿನ್ದ್ರಿಯ  
ನೆತ್ರವ್ಯಾಪಾರಂ ಲುಚ್ಛತಿ - ಲುಚ್ಛ (ಅಪನಯನೆ) "ಕ್ವಿಪ್"  
(3-2-96)। "ದಿನಾಂತಕೋ ವಿಯದ್ಭೂತಿ: ಖಲುಗ್ವತ್ರ:"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಖಲೂರಿಕಾ ಖಲೂರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಸ್ತ್ರಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡುವ  
ಪ್ರದೇಶ, ಶಸ್ತ್ರಾಭ್ಯಾಸಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಭೂಮಿ.  
"ಖುರಲಿ ತು ಶ್ರಮೋ ಯೋಗ್ಯಾಮ್ಯಾಸ: ತದ್ಭೂ: ಖಲೂರಿಕಾ" ಅಭಿಂ  
ಚಿಂ।

**ಖಲೇಕಪೋತ ಖಲೇಕಪೋತ** (ಪುಂ) ಕಣದಲ್ಲಿ ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ಬಂದು ಕೂಡುವ ಕಪೋತ (ಪಾರಿವಾಳ) ಪಕ್ಷಿಗಳು. ಇದಕ್ಕೆ  
ಸಮಾನವಾದ ಬಂದು ಜಾಗದಲ್ಲಿ "ಖಲೇಕಪೋತನಯಾ:"  
ಎಂದು ಹೇಳುವರು. ನೂರಾರು ಕಪೋತ (ಪಾರಿವಾಳ)  
ಪಕ್ಷಿಗಳು ಕಾಳುಗಳನ್ನು ತನ್ನಲು ಕಣದಲ್ಲಿ ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ ಶಿಶು  
ವೃದ್ಧ ತಾರತಮ್ಯವಿಲ್ಲದೆ ಬಂದುಕೂಡುವಂತೆ ವಿಶೇಷಣ  
ವಿಶೇಷ್ಯ ಭಾವವಿಲ್ಲದೆ ಕರ್ಮಾದಿಕಾರಕಗಳು ಕ್ರಿಯೆಯಲ್ಲಿ  
ಯುಗಪತ್ (ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ) ಅನ್ವಯಹೊಂದುವ ಸ್ಥಳ  
ದಲ್ಲಿ "ಖಲೇಕಪೋತನಯಾ:" ಎಂದು ಶಾಸ್ತ್ರಕಾರರು ಹೇಳು  
ತ್ತಾರೆ.

**ಖಲೇಧಾನಿ ಖಲೇಧಾನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೇಟೆ, ಕಣದಲ್ಲಿ  
ಒಕ್ಕಟ್ಟಾಗಿ ಎತ್ತುಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಕಂಬ. ಖಲೇ ಧೀಯಂತೆ  
ವೃಷಭಾ ಅತ್ರ - ತು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಲ್ಯುಟ್"  
(3-2-117)। "ಜಿಪ್" (4-1-14)। 2. ಧೂಳು.

**ಖಲೇವಾಲಿ ಖಲೇವಾಲೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಣದಲ್ಲಿ ಒಕ್ಕಟ್ಟಾಗಿ  
ಹುಲ್ಲುಕಡ್ಡಿಗಳನ್ನು ತುಳಿಯಲು ಎತ್ತುಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವ  
ಕಂಬ. ಖಲೇ ವಾಲ್ಯಂತೆ ಚಾಲ್ಯಂತೆ ವೃಷಭಾ ಅತ್ರ - ಬಲ  
(ಸಂಚಲನೆ) "ಘಜ್" (3-2-121)। "ಮೇಘಿಮೇಯಿ:  
ಖಲೇವಾಲಿ ಖಲೇ ಗೋಬಂಧದಾಹ ಯತ್" ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

**ಖಲೇಶಯ ಖಲೇಶಯ** (ಪುಂ) ಬಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು.  
"ಶಫರ: ಶ್ವೇತಕೋಲ: ಸ್ಯಾತ್ ಖಲೇಶಯ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಖಲ್ಯಾ ಖಲ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಣಗಳ ಸಮೂಹ. ಖಲಾನಾಂ  
ಸಮೂಹ: "ಯ:" (4-2-40)।

**ಖಲ್ಲ ಖಲ್ಲ** (ಪುಂ) 1. ಕಲ್ಲುಪತ್ತು, ಔಷಧ ಮೊದಲಾದುವು  
ವನ್ನು ಆರೆಯುವ ಬಂದು ಕಲ್ಲಿನ ಮಾತ್ರೆ. ಖಲ (ಸಂಚಯ)  
"ಕ್ವಿಪ್" (3-2-96)। ಖಲ್। ತ ಲಾತಿ - ಲಾ  
(ಆದಾನೆ) "ಕ:" (2-2-3)। 2. ಚರ್ಮ, ತೊಗಟು.  
3. ಗುಂಡಿ, ಹಳ್ಳ, ಗುಳಿ. 4. ಜಾತಕ ಪಕ್ಷಿ. 5. ಚರ್ಮದ  
ಜೀಲ. 6. ಬಂದು ಜಾತಿಯ ಬಟ್ಟೆ, ವಸ್ತ್ರ. "ಖಲ್ಲೋ  
ನಿಮ್ನೆ ವಸ್ತ್ರಭೇದೇ ಖರ್ಮವಾತಕಪಕ್ಷಿಣೋ:" ಹೇಮಂ।

**ಖಲ್ಲಿಕಾ ಖಲ್ಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರಿಯುವ ಓಡು, ಬಾಣಲಿ.  
ಖಲ್ಲ ಸಂಜ್ಞಾया "ಕನ್"।

**ಖಲ್ಲಿ ಖಲ್ಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೈಕಾಲು ತೊಡೆ ಮಂಡಿಗಳಲ್ಲಿ  
ಉಂಟಾಗುವ ಚುಚ್ಚು ನೋವು. ಖಲ್ಲ ಗೌರಾಂ "ಜಿಪ್"  
(4-1-41)। "ಖಲ್ಲಿ ತು ಪಾದಜಂಜೋರಕರಮೂಲಾವಮೋಟನಿ"  
ಭಾವಪ್ರಂ।

**ಖಲ್ಲಿಟ ಖಲ್ಲಿಟ** (ಪುಂ) 1. ಪಟ್ಟಿಹಲೆ. (ವಿಂ) 2. ಪಟ್ಟಿ  
ತಲೆಯುಳ್ಳವನು. "ಸಂತರಾತ್ರಾತ್ ಪ್ರಜಾಯಂತೆ ಖಲ್ಲಿಟಸ್ಯ  
ಶುಭಾ: ಕವಾ:। ದಗ್ಧಹಸ್ತಿದಂತಲೇಪಾತ್ ಸಾಜಾಕ್ಷೀರರಸಾಂಜ್ಞ-  
ನಾತ್"।

**ಖಲ್ವ ಖಲ್ವ** (ಪುಂ) 1. ಅವರೆ. 2. ಚಣಕ, ಕೆಡಲೆ. ಇವು  
ಹತ್ತುವಿಧ ಗ್ರಾಮ್ಯಧಾನ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಸೇರಿದುವು. "ದಶ  
ಗ್ರಾಮ್ಯಾಣಿ ಧಾನ್ಯಾನಿ ಭವಂತಿ ವ್ರಿಹಿಯವಾಸ್ತಿಲಮಾಘಾ ಅಣು-  
ಪ್ರಿಯಜ್ಞವೋ ಗೋಮಾಶ್ಚ ಖಲ್ವಾ: ಖಲಕುಲಾಶ್ಚ"।

**ಖಲ್ವಾಟ ಖಲ್ವಾಟ** (ಪುಂ) 1. ಪಟ್ಟಿಹಲೆ. (ವಿಂ) 2.  
ಪಟ್ಟಿಹಲೆಯುಳ್ಳವನು. ಖಲ (ಸಂಚಯ) "ಕ್ವಿಪ್" (3-2-96)।  
ಖಲಂ ವಾಟತಿ - ವಟ (ವೇಟನೆ) "ಅಣ್" (3-2-1)।  
"ಖಲ್ವಾಟೋ ದಿವಸೇಶ್ವರಸ್ಯ ಕಿರಣೈ: ಸಂತಾಪಿತೋ ಮಸ್ತಕೇ"  
ಭರ್ತುಂ 2-90।

**ಖಶ ಖಶ** (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 1. ಉತ್ತರ ಭಾರತದಲ್ಲಿ ಪರ್ವತ  
ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಬಂದು ದೇಶ. 2. ಆ ದೇಶದ ಜನರು.

**ಖಶ್ವಾಸ ಖಶ್ವಾಸ** (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಖಸ್ಯ ಶ್ವಾಸ ಇವು।  
"ಖಶ್ವಾಸ: ಕ್ಷಿಪಣುರ್ಬಲಿಧ್ವಜ: ಸರಯುರ್ದೃತಿ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಖಣ್ಣ ಖಣ್ಣ** (ಪುಂ) 1. ಕ್ರೋಧ, ಕೋಪ, ಸುಟ್ಟು. 2. ಬಲಾ  
ತ್ತಾರ. ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಪ:" (3-2-26)। ನಸ್ಯ  
ಪತ್ವಂ ಚ ನಿಪಾಂ। "ಖಣ್ಣ: ಕ್ರೋಧೇ ಬಲಾತ್ಕೃತೌ" ಮೇಡಿಂ।

**ಖಸ ಖಸ** (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 1. ಉತ್ತರ ಭಾರತದ ಬಂದು ದೇಶ.  
(ಪುಂ) 2. ನವೆ, ತುರಿಕಜ್ಜಿ, ಬಂದು ಚರ್ಮವ್ಯಾಧಿ. 3.  
ಸರ್ವಣ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಪ್ರಾತ್ಯಕ್ಷಕ್ರಿಯೆಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವನು.  
"ಖಲ್ಲೋ ಮಲ್ಲಶ್ಚ ರಾಜನ್ಯಾದ್ವಾಲ್ಯಾಸ್ತಿಚ್ಚಿವಿರೇವ ಚ। ನಟಶ್ಚ  
ಕರಣಶ್ಚೇವ ಖಸೋ ದ್ರವಿಡ ಏವ ಚ" ಮನುಂ 10-22।

**ಖಸಮ ಖಸಮ** (ಪುಂ) ಬುದ್ಧದೇವ. ಖಂ ಶೂನ್ಯ ಸಮಂ ಯಸ್ಯ।  
ಬುದ್ಧನು ಸಕಲವೂ ಶೂನ್ಯವೆಂದೂ ಜಗತ್ತು ಅಸ್ಥಿರ  
ವೆಂದೂ ತಿಳಿದುಕೊಂಡಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಖರ್ಮ-  
ಚಕ್ರರಾಗಾಶನಿತ್ರಿಶರಣಾ: ಖಸಮೋ ದಶಾಹ್:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಖಸರ್ಪಣ ಖಸರ್ಪಣ** (ಪುಂ) ಬುದ್ಧದೇವ. ಖೇ ಉರ್ವದೇಶೋ  
ಸರ್ಪಣಮಸ್ಯ। "ಚಿಂತಾಮಣಿ: ಪದಮಣಿ: ಬಹುರೂಪ: ಖಸರ್ಪಣ:"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।



**ಖಸುಚಿ ಖಸೂಚಿ** (ಫಂ) ಆಕಾಶವನ್ನು ತೋರಿಸುವವನು. ಇದೊಂದು ನಿಂದಾವಚನ. ಯಾವುದಾದರೊಂದು ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರಶ್ನೆಮಾಡಿದಾಗ ಅದಕ್ಕೆ ಉತ್ತರ ಹೇಳಲು ಅಸಮರ್ಥನಾಗಿ ಆ ಪ್ರಶ್ನೆಯನ್ನು ಮರೆಸಲು ಆಕಾಶವನ್ನು ತೋರಿಸುತ್ತ ಮಾತಾಡುವವನು ಖಸೂಚಿ. ತದಾಂ : "ವೈ-ಕರಣಖಸುಚಿ:" ಸಿಂ ಕೌಂ | ವ್ಯಾಕರಣ ಪ್ರಶ್ನೆಯನ್ನು ಕೇಳಿದಾಗ ಆಕಾಶವನ್ನು ತೋರಿಸುತ್ತ ಮಾತನಾಡುವ ನಿಂದ್ಯನಾದ ವೈಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ ಈ ಪ್ರಯೋಗ.

**ಖಸುಮ ಖಸ್ಯಮ** (ಫಂ) 1. ಸಿಂಹಿಕೆಯ ಮಗನಾದ ಒಬ್ಬ ಅಸುರ. "ಸಿಹಿಕಾಯಾಂ ಸಮುತ್ಪನ್ನಾ ವಿಪ್ರಚಿತ್ತಿಸುತಾಸ್ತಥಾ | ವ್ಯಾಂಶಃ ಶಲ್ಯಶ್ಚ ಬಲವಾನ್ ನಭಃಶ್ಚೈವ ಮಹಾಬಲಃ | ವಾತಾಪಿ-ನಮುಚಿಶ್ಚೈವ ಇತ್ಯಲಃ ಖಸುಮಸ್ತಥಾ" | 2. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

**ಖಸ್ತನಿ ಖಸ್ತನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಕಾಶವೇ ಸ್ತನವಾಗಿ ಉಳ್ಳ ಪೃಥ್ವಿ. ಖಮಾಕಾಶಃ ಸ್ತನಮಿವಾಸ್ಯಾಃ |

**ಖಾಜಿಕ ಖಾಜಿಕ** (ಫಂ) ಲಾಜ, ಪರಿ, ಆರಳು. ಕ್ಷೇ ಋವಭಾಗೆ ಆಜಃ ಕ್ಷೇಪಃ-ತತ್ರ ಸಾಧುಃ "ಠ್" (೪-೪-೧೦೩) |

**ಖಾಂಡಪರಶವ ಖಾಂಡಪರಶವ** (ವಿಂ) 1. ವಿಷ್ಣು ಸಂಬಂಧವಾದ. 2. ಪರಮೇಶ್ವರನ ಸಂಬಂಧವಾದ. 3. ಪರಶುರಾಮನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಖಾಂಡಪರಶೋರಿದಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦) |

**ಖಾಂಡವ ಖಾಂಡವ** (ಫಂ) 1. ಸಿಂಹೀದಕ. ಮಿಠಾಯಿ. (ನಂ) 2. ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರದ ಒಂದು ವನ. ಖಾಂಡವೀ ನಗರವಿದ್ದ ಜಾಗದಲ್ಲಿ ಈ ವನವು ನಿರ್ಮಿತವಾಗಿದ್ದುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಈ ಹೆಸರು. [ಜಂದ್ರವಂಶದ ಸುದರ್ಶನನೆಂಬ ಒಬ್ಬ ರಾಜನು ಹಿಮವತ್‌ಪರ್ವತದ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ದೇವತೆಗಳು ಯಕ್ಷಗಂಧರ್ವರು ತಪಸ್ವಿಗಳು ಇವರೆಲ್ಲರಿಗೂ ಆಶ್ರಯವಾಗಿದ್ದ ದೊಡ್ಡ ವನವೊಂದನ್ನು ಒಡೆದು ಸಕಲ ಸಂಪತ್ತನ್ನೂ ಪಡೆದು ಖಾಂಡವಿಯೆಂಬ ಮಹಾನಗರವೊಂದನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿ ಸಕಲ ರಾಜರನ್ನೂ ದೇವಗಂಧರ್ವರನ್ನೂ ಜಯಿಸಿ ಅಸಂಖ್ಯಾತವಾದ ರತ್ನಕನಕ ರಾಶಿಗಳಿಂದ ನಗರವನ್ನು ತುಂಬಿ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಪಟ್ಟಣಗಳಿಂದ ಜನರನ್ನು ಕರೆತಂದು ಅಲ್ಲಿ ನೆಲೆಸಿರುವಂತೆ ಮಾಡಿದನು. ಇವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ನೋಡಿ ಸಹಿಸದಿದ್ದ ಇಂದ್ರನ ಮಾತಿನಂತೆ ವಾರಾಣಸಿಯ ವಿಜಯನೆಂಬ ಒಬ್ಬ ರಾಜನು ಸುದರ್ಶನನನ್ನು ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಜಯಿಸಿ ಖಾಂಡವಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಜನರನ್ನು ಅವರವರ ಪೂರ್ವಸ್ಥಾನಗಳಿಗೆ ಕಳುಹಿಸಿ ಆ ನಗರವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸಿ ಇಂದ್ರನ ಸಂತೋಷಾರ್ಥವಾಗಿ ಅಲ್ಲಿ

ಮೊದಲಿನಂತೆಯೇ ದೊಡ್ಡ ಉದ್ಯಾನವನವೊಂದನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿದನು.

ಅನೇಕ ಸಂವತ್ಸರಗಳಕಾಲ ನಡೆದ ಶ್ವೇತಕೀಯ ಯಾಗದ ಹವಿಸ್ಸಿನಿಂದ ಅರ್ಜೀರ್ಣಗೊಂಡಿದ್ದ ಅಗ್ನಿಯು ಖಾಂಡವ ವನವನ್ನು ಭಕ್ಷಿಸಲು ಏಳು ಸಲ ಪ್ರಯತ್ನಿಸಿದರೂ ಅಲ್ಲಿದ್ದ ಆನೆಗಳು ಸೊಂಡಿಲಿನಿಂದ ನೀರನ್ನು ತಂದು ತಂದು ಬೆಂಕಿಯನ್ನು ಆರಿಸುತ್ತಲೇ ಇದ್ದುವು. ಕೊನೆಗೆ ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಾತಿ ನಂತೆ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಾರ್ಜುನರನ್ನು ಬೇಡಲಾಗಿ ಅವರ ಅನುಮತಿಯಂತೆ ಖಾಂಡವವನವನ್ನು ಭಕ್ಷಿಸಲು ಅಗ್ನಿಯು ಯತ್ನಿಸಿದಾಗ ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಆರಿಸಲು ಇಂದ್ರನು ಮಳೆ ಸುರಿಸಿದನು. ಆಗ ಅರ್ಜುನನು ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಶರಗಳಿಂದ ದೊಡ್ಡ ಚಪ್ಪರವನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿ ಮಳೆಗೆ ತಡೆಮಾಡಲು ಇಂದ್ರನು ಕೋಪಗೊಂಡು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಾರ್ಜುನರ ಮೇಲೆ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಬಂದು ಸೋತುಹೋದನು. ಅಗ್ನಿಯು ಖಾಂಡವವನವನ್ನು ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ಭಕ್ಷಿಸಿ ಸಂತೋಷಗೊಂಡನು. ಈ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ಅರ್ಜುನನಿಗೆ ಗಾಂಡೀವಧನುಸ್ಸು ದಿವ್ಯರಥ ಶ್ವೇತಾಶ್ವಗಳು ಇವೆಲ್ಲವೂ ಲಭಿಸಿದುವು. | ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೪೮-೨೪೩ |

**ಖಾಂಡವಪ್ರಸ್ಥ ಖಾಂಡವಪ್ರಸ್ಥ** (ಫಂ) ಇಂದ್ರಪ್ರಸ್ಥ ನಗರ. ಖಾಂಡವರು ದುರ್ಯೋಧನನಿಂದ ಕೇಳಿದ ಐದು ಗ್ರಾಮಗಳಲ್ಲೊಂದು, ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನಿಂದ ಅರ್ಧರಾಜ್ಯ ಪಡೆದು ಧರ್ಮರಾಜನು ನಿರ್ಮಿಸಿದ ನಗರ. "ಅಸ್ಮಾಭಿಃ ಖಾಂಡವ-ಪ್ರಸ್ಥೇ ಯುಷ್ಮದಾಸೋಽಭಿಚಿಂತಿತಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ | ["ಇಂದ್ರಪ್ರಸ್ಥ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಖಾಂಡವಿಕ ಖಾಂಡವಿಕ** (ಫಂ) ಮಿಠಾಯಿ ಮೊದಲಾದ ಸಿಂಹೀದಕಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. ಖಾಂಡವ ಶಿಲ್ಪ-ಮಸ್ಯ "ಠ್" (೪-೪-೫೧) | "ಆರಾಲಿಕಾ ಸುಪಕಾರಾಃ ಯೇ ಚ ಖಾಂಡವಿಕಾಸ್ತಥಾ" ಭಾಂ ಆಶ್ರಮಂ |

**ಖಾಂಡವೀ ಖಾಂಡವೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುದರ್ಶನ ರಾಜನು ನಿರ್ಮಿಸಿದ್ದ ಒಂದು ಮಹಾನಗರ. ["ಖಾಂಡವ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಖಾತ ಖಾತ** (ನಂ) 1. ಅಗೆಯುವುದು, ತೋಡುವುದು. ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) | 2. ಪುಷ್ಕರಿಣಿ, ಕೊಳ, ಕೆರೆ. ತಟಾಕ. ಖನುಂ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಪೂರ್ತ ಖಾತಾದಿ ಕರ್ಮ ಯತ್" ಅಮಂ | 3. ಕಾಲುವೆ. 4. ಕಂದಕ, ಕೋಟೆಯ ಸುತ್ತಲೂ ನೀರನ್ನು ತುಂಬಲು ತೋಡುವ ಹಳ್ಳ. (ವಿಂ) 5. ಅಗೆಯಲ್ಪಟ್ಟು. 6. ಕೆದಕಲ್ಪಟ್ಟು, ತುಳಿದು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಬ್ಬಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಖನು



ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ"। "ಖಾತಂ ಕುರೇ ರಥ್ಯತುರಙ್ಗಪುಂಗವೈರಪತ್ಯಕಾಹಾಟಕ-  
ಮೇದಿನೀರಜಃ" ಕುಮಾಂ ೧೪-೨೦। 7. ಭೇದಿಸಲ್ಪಟ್ಟು,  
ಬದೆಯಲ್ಪಟ್ಟು, ಸೀಳಲ್ಪಟ್ಟು.

ಖಾತಕ ಖಾತಕ (ನಂ) 1. ಬೆಚ್ಚಿಕ್ಕವಾಗಿ ತೋಡಲ್ಪಟ್ಟು  
ಕೊಳೆ. ಪುಷ್ಕರಿಣಿ. ಖಾತ ಸಂಜಾಯಾ "ಕನ್" (೪-೩-೭೪)।  
"ಪುಷ್ಕರಿಣಿಯಾ ತು ಖಾತಕಮ್" ಅಭಿಂ ಚಿಂ। (ವಿಂ) 2.  
ಅಧರ್ಮ, ಸಾಲಗಾರ, ಸಾಲಪಡೆದವನು. "ಉತ್ತಮಗೌ  
ಧನಸ್ವಾಮಿ ಅಧರ್ಮಸ್ತು ಖಾತಕಃ"। 3. ಶತ್ರು ಸೈನ್ಯವನ್ನು  
ಭೇದಿಸುವವನು. "ಖಾತಕವ್ಯುಹತತ್ವಜಂ ಬಲಹರ್ಷಣಕೋವಿದಮ್"  
ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೧೧೮। 4. ಅಗೆಯುವವನು, ನೆಲವನ್ನು  
ತೋಡುವವನು. ಖನು ಕರ್ಮಂ "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಖಾತಭೂ ಖಾತಭೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಂದಕ, ಕೋಟೆಯ  
ಸುತ್ತಲೂ ನೀರು ಶುಂಬಲು ತೋಡಿದ ಹಳ್ಳ. ಖಾತಯುಕ್ತಾ  
ಭೂಃ। 2. ಕಾಲುವೆ.

ಖಾತಿ ಖಾತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗೆಯುವುದು. ನೆಲವನ್ನು ತೋಡು  
ವುದು. ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।

ಖಾತ್ರ ಖಾತ್ರ (ನಂ) 1. ಖನಿತ್ರ. ಗುದ್ದಲಿ, ನೆಲವನ್ನು ಅಗೆ  
ಯುವ ಆಯುಧ. 2. ಕೊಳೆ, ಸರಸ್ಸು. ಖನು (ಅವದಾರಣೆ)  
"ಫ್ಲಿನ್" (೩ಂ ೪-೧೬೧)। "ಖಾತ್ರಂ ಖನಿತ್ರಂ ಜಲಾಧಾರಶ್ಚ"  
ಸಿಂ ಕೌಂ। 3. ವನ, ಕಾಡು. 4. ಸೂತ್ರ, ದಾರ.

ಖಾದ್ - ಭಕ್ಷಣೆ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಖಾದತಿ।  
ಚಖಾದ। ಖಾದಿತಾ। ಖಾದಿಷ್ಯತಿ। ಖಾದತು। ಅಖಾದತ್।  
ಖಾದೇತ್। ಖಾದಾತ್। ಅಖಾದೀತ್। ಅಖಾದಿಷ್ಯತ್। 1. ಭಕ್ಷಿಸು,  
ತಿನ್ನು. 2. ಹಿಂಸಿಸು. ನೋಯಿಸು.

ಕರ್ಮಣಿಃ-ಖಾದತೇ। ಚಖಾದೇ। ಖಾದಿತಾ। ಖಾದಿಷ್ಯತೇ।  
ಖಾದಿತಾಮ್। ಅಖಾದಿತಃ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿಃ-ಖಾದಯತಿ। ಖಾದಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ।  
ಖಾದಯಿತಾ। ಖಾದಯಿಷ್ಯತಿ। ಖಾದಯತು। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿಃ-ಚಿಖಾದಿಷತಿ। ಚಿಖಾದಿಷಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ,  
-ಆಸ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸುಃ-ಖಾದಿತವ್ಯಃ। ಖಾದನೀಯಃ। ಖಾದ್ಯಃ। ಖಾದಿತಃ।  
ಖಾದಿತವಾನ್। ಖಾದನ್, ಖಾದಂತಿ। ಖಾದಿತುಮ್। ಖಾದಿತಮ್।  
ಖಾದನಮ್। ಖಾದಿತ್ವಾ। ಪ್ರಖಾದ್ಯ।

ಖಾದಕ ಖಾದಕ (ವಿಂ) 1. ಭಕ್ಷಿಸುವವನು, ತಿನ್ನುವವನು.  
ಖಾದ್ (ಭಕ್ಷಣೆ) "ಕುನ್" (೩-೨-೧೪೬)। "ಅನುಮಂತಾ  
ವಿಶಸಿತಾ ನಿಹಂತಾ ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಿ। ಸಂಸ್ಕರ್ತಾ ಚೋಪಹರ್ತಾ ಚ  
ಖಾದಕಶ್ಚೇತಿ ಘಾತಕಾಃ" ಮನುಂ ೪-೪೧। 2. ಸಾಲಗಾರ.  
"ಖಾದಕೋ ವಿಕೃತಹೀನಃ ಸ್ಯಾತ್ ಲಗನಕೋ ವಿಕೃತವಾನ್ ಯದಿ"।

ಖಾದತ್ ಖಾದತ್ (ವಿಂ) ತಿನ್ನುತ್ತಿರುವ. ಖಾದ್ (ಭಕ್ಷಣೆ)  
"ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ದೇವಾನ್ ಪಿತೃಶ್ಚಾರ್ಚಯಿತ್ವಾ  
ಖಾದನ್ಮಾಸಂ ನ ದುಷ್ಯತಿ" ಮನುಂ ೪-೩೨। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೬)। ಖಾದಂತಿ ಖಾದಂತಿ.

ಖಾದತಮೋದತಾ ಖಾದತಮೋದತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಬೇಕಾದ  
ಹಾಗೆ ಉಟವಾಡಲಿ ಮತ್ತು ಸಂತೋಷಪಡಲಿ" ಎಂದು  
ಉಪಚಾರದ ಮಾತು ಹೇಳುವ ಸಮಾರಂಭ. ಖಾದನ  
ಮೋದವಮ್ ಇತ್ಯುಚ್ಯತೇ ಯಸ್ಯಾಂ ಕ್ರಿಯಾಯಾಮ್।

ಖಾದನ ಖಾದನ (ಪುಂ) 1. ದಂತ, ಹಲ್ಲು. ಖಾದಯನೇನ -  
ಖಾದ್ (ಭಕ್ಷಣೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭)। (ನಂ) 2.  
ಭಕ್ಷಣ, ತಿನ್ನುವುದು.

ಖಾದನೀಯ ಖಾದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ತಿನ್ನುಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ, -ಶಕ್ಯವಾದ. ಖಾದ್ (ಭಕ್ಷಣೆ) "ಅನೀಯರ್"  
(೩-೧-೯೬)। 2. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ತಿನ್ನಬೇಕಾದ. 3. ತಿನ್ನು  
ಲ್ಪಡುವ. "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬)। ಖಾದಿತವ್ಯಃ ಖಾದಿ  
ತವ್ಯಃ. "ಅತ್ರೇವ ದಗ್ಧ್ವಾ ಖಾದಿತವ್ಯೋಷ್ಯಮ್" ಹಿತೋಂ ೪।

ಖಾದಿತ ಖಾದಿತ (ವಿಂ) ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟ, ಭಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಖಾದ್  
(ಭಕ್ಷಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಆಶಾಙ್ಕಮಾನೋ  
ವೇದೇಹೀ ಖಾದಿತಾಂ ನಿಹಂತಾಂ ಮೃತಾಂ" ಮೃತ್ವಿಂ ೬-೬। "ಅತೋ  
ನಿರ್ಮಣ್ಡಕಂ ಸರೋ ವಿಲೋಕಯ ಮಣ್ಡುಕನಾಥೋಽಪಿ ತೇನ ಖಾದಿತಃ"  
ಹಿತೋಂ ೪।

ಖಾದಿತವತ್ ಖಾದಿತವತ್ (ವಿಂ) ಭಕ್ಷಿಸಿದವನು, ತಿಂದವನು.  
ಖಾದ್ (ಭಕ್ಷಣೆ) "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ತತಃ  
ಗೃಹೀತೋಽಯಂ ಮಹಾಪ್ರಸಾದಃ ಇತ್ಯುಕ್ತ್ವಾ ಸ ಕ್ರಮಶಃ ಮಣ್ಡುಕಾನ್  
ಖಾದಿತವಾನ್" ಹಿತೋಂ ೪। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)।  
-ವತಿ -ವತಿ.

ಖಾದಿತ್ ಖಾದಿತ್ಯ (ವಿಂ) "ಖಾದಕ" ಪದದ 1ನೆಯ  
ಅರ್ಥ. ಖಾದ್ (ಭಕ್ಷಣೆ) "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಖಾದಿನ್ ಖಾದಿನ್ (ವಿಂ) ಭಕ್ಷಿಸುವವನು, ತಿನ್ನುವವನು.  
ಖಾದ್ (ಭಕ್ಷಣೆ) "ಣಿಃ" (೩-೨-೭೮)। "ಲೋಪಮದೀ  
ತೃಣಚ್ಛೇದಿ ನಖಖಾದಿ ಚ ಯೋ ನರಃ। ಸ ವಿನಾಶಂ ವ್ರಜತ್ಯಾಶು  
ಸೂಚಕೋಽಶ್ಚುಚಿರೇವ ಚ" ಮನುಂ ೪-೭೧। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೫)। -ನಿ -ನಿ.

ಖಾದಿರ ಖಾದಿರ (ಪುಂ) 1. ಕಗ್ಗಲಿಮರದ ಗೋಂದು,  
ಕಾಚು. (ವಿಂ) 2. ಕಗ್ಗಲಿಮರದ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
ಖಾದಿರಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

ಖಾದುಕ ಖಾದುಕ (ವಿಂ) ಹಿಂಸಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದವನು.  
ದುರ್ಜನ.







**ಖಿತ್ರ ಖಿದ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. 2. ರೋಗ. ಖಿದ (ದೈನ್ಯ) "ರಕ್" (ಉಂ ೨-೧೩)। ಖಿದ್ರೋ ರೋಗೋ ದರಿದ್ರಶ್ಚ ಸಿಂ ಕೌಂ।

**ಖಿತ್ರ ಖಿನ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ದೈನ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಖಿದ (ದೈನ್ಯ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। 2. ಆಯಾಸಗೊಂಡ, ದಣಿ ದಿರುವ. "ಸ್ಥಾಪಯೇದಾಸನೇ ತಸ್ಮಿನ್ ಖಿತ್ರ: ಕರ್ಯೇಕ್ಷಣೇ ನೃಣಾಂ" ಮನುಂ ೭-೧೪೧। "ಖಿತ್ರಾನಖಿತ್ರಮತಿರಾಪತತೋ ಮನುಷ್ಯಾನ್" ಮಾಘಂ ೪-೨೭। 3. ಧೈರ್ಯಗಟ್ಟಿ, ಧೈರ್ಯಕುಂದಿದ.

**ಖಿಲ - ಉಚ್ಛೇ** (ತುಡಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಖಿಲತಿ। ಖೇಲಿತಾ। ಅಖೇಲಿತ್।

**ಖಿಲ ಖಿಲ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. "ಖಿಲೋ ನಾರಾಯಣ: ಪ್ರೋಕ್ತಸ್ತದ್ಗುಣಾ: ಇಷವ: ಸ್ಮೃತಾ:"। 2. ಅವಕಾಶ, ರಂಧ್ರ. 3. ಶೂನ್ಯತೆ, ಬರಿದಾಗಿರುವಿಕೆ. (ನಂ) 4. ದೊಡ್ಡ ಗ್ರಂಥದ ಸಂಗ್ರಹ, ಶ್ರೀಸೂಕ್ತ ಪುರುಷಸೂಕ್ತ ಮೊದಲಾದವು. "ಆಖ್ಯಾನಾನೀತಿಹಾಸಾಂಶ್ಚ ಪುರಾಣಾನಿ ಖಿಲಾನಿ ಚ" ಮನುಂ ೩-೨೩೨। (ವಿಂ) 5. ಉಳಿದೆ ಇರುವ ಭೂಮಿ. ಖಿಲ (ಉಚ್ಛೇ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಖಿಲಾ ಖಿಲಾ. "ದ್ವೇ ಖಿಲಾಪ್ರಹತೇ ಸಮೇ। ತ್ರಿಭು" ಅಮಂ।

**ಖಿಲೀಕರಣ ಖಿಲೀಕರಣ** (ನಂ) 1. ಆತಂಕಪಡಿಸುವುದು. ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವುದು. 2. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. ಅಖಿಲಂ ಖಿಲಂ ಕ್ರಿಯತೇ - ಖಿಲ + ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ಚ್ವಿ:" (ವಾಂ ೪-೪-೪೦)। ಇತ್ (೭-೪-೩೨)। ದೀರ್ಘ: (೭-೪-೨೬)। 3. ಶಕ್ತಿ ಕುಂದಿಸುವುದು.

**ಖಿಲೀಕೃತ ಖಿಲೀಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಶಕ್ತಿ ಕುಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಖಿಲಂ ಖಿಲಂ ಕೃತಮ್ "ಚ್ವಿ:" (ವಾಂ ೪-೪-೪೦)। ಇತ್ (೭-೪-೩೨)। ದೀರ್ಘ: (೭-೪-೨೬)। "ತೌ ಸುಕೇತುಸುತಯಾ ಖಿಲೀಕೃತೇ ಕೌಶಿಕಾದಿವಿದಿತಶಾಪಯಾ ಪಥಿ" ರಘುಂ ೧೧-೧೪। 3. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಖಿಲಿಭೂತ ಖಿಲೀಭೂತ** (ವಿಂ) 1. ನಡೆದು ಸವೆಯ ದಿರುವ. ಅಖಿಲಂ ಖಿಲಂ ಭೂತಮ್ "ಚ್ವಿ:" (ವಾಂ ೪-೪-೪೦)। ಇತ್ (೭-೪-೩೨)। ದೀರ್ಘ: (೭-೪-೨೬)। "ಖಿಲಿಭೂತೇ ವಿಮಾನಾನಾಂ ತದಾಪಾತಮಯಾತ್ಪಥಿ" ಕುಮಾಂ ೨-೪೪। 2. ನಾಶ ವಾದ. 3. ಶಕ್ತಿ ಕುಂದಿದ. "ಪ್ರಜಾಗರಾತ್ ಖಿಲಿಭೂತಸ್ತಸ್ಯಾ: ಸ್ವಪ್ನೇ ಸಮಾಗಮ:" ಶಾಕುಂ ೬-೨೨।

**ಖಿಲೇಷು ಖಿಲೇಷು** (ಪುಂ) ಹರಿವಂಶವೆಂಬ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ. ಖಿಲಸ್ಯ ನಾರಾಯಣಸ್ಯ ಇಷು: ಗುಣ: ಯತ್ರ। "ಖಿಲೋ ನಾರಾಯಣ: ಪ್ರೋಕ್ತ: ತದ್ಗುಣಾ ಇಷವ: ಸ್ಮೃತಾ:"।

**ಖಿಲ್ಯ ಖಿಲ್ಯ** (ಪುಂ) ಉಚ್ಚು ಸಾಗುವಳಿ ಮಾಡಿದ ಜಮೀನು ಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಇರುವ ಉಳಿದಿರುವ ಭೂಮಿ. ಖಿಲೇ ಭವ: "ಯತ್" (೪-೩-೪೪)।

**ಖುರ - ಛೇದನೆ** (ತುಡಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಖುರತಿ। ಖುರೋ। ಅಖುರೀತ್। ಕತ್ತರಿಸು, ತುಂಡುಮಾಡು.

**ಖುರ ಖುರ** (ಪುಂ) 1. ನಖವೆಂಬ ಒಂದು ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ. 2. ಹಸು ಎಮ್ಮೆ ಮೊದಲಾದವುಗಳ ಕಾಲಿನ ಗೊರಸು. ಖುರ (ಛೇದನೆ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೪)। "ತಸ್ಯಾ: ಖುರನ್ಯಾಸ-ಪವಿತ್ರಪಾಂಸುಮಪಾಂಸುಲಾನಾಂ ಧುರಿ ಕೀರ್ತನೀಯಾ" ರಘುಂ ೨-೨। 3. ಮಂಚದ ಕಾಲು. 4. ಕ್ಷೌರದ ಕತ್ತಿ.

**ಖುರಣಸ್ ಖುರಣಸ್** (ವಿಂ) ಗೊರಸಿನಂತೆ ಮೂಗುಳ್ಳು. ಖುರ ಇವ ನಾಸಿಕಾ ಯಸ್ಯ ವಾ ನಸ್ ಆದೇಶ: (ವಾಂ ೪-೪-೧೧೮)। ಪಕ್ಷೆ "ಅಚ್" ಅಪಿ (೪-೪-೧೧೮)। ಖುರಣಸ: ಖುರಣಸ:। ಉಭಯತ್ರ ಣತ್ವಮ್ (೮-೪-೩)।

**ಖುರಪ್ರ ಖುರಪ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಜೊಪಾದ ಅಲುಗುಳ್ಳು ಅಸ್ತು. ಖುರ ಇವ ಪ್ರಾತಿ ಪೂರಯತಿ—ಪ್ರಾ (ಪೂರಣ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। 2. ಕುಡುಗೋಲು, ಕುಯಿಲಗತ್ತಿ, ಕುಡುಲು.

**ಖುರಲಿ ಖುರಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶಸ್ತ್ರಾಭ್ಯಾಸ, ಆಯುಧ ಪ್ರಯೋಗದ ಅಭ್ಯಾಸ. ಖುರ ಇವ ಆಲಾತಿ—ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। ಗೌರಾಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೪೧)। "ಶಸ್ತ್ರಾಭ್ಯಾಸಶ್ಚ ಖುರಲಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 2. ಬಾಣವನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸುವುದು, ಬಾಣವನ್ನು ಗುರಿ ಯಿಟ್ಟು ಹೊಡೆಯುವುದು. "ಅಸ್ತ್ರಪ್ರಯೋಗಖುರಲಿಕಲಹೇ ಗಣಾನಾಮ್" ಮಂ ವೀಂ ೨-೩೪। "ಖುರಲಿ ಲಕ್ಷ್ಯಬಂಧನಮ್" ಕೇಶವ:।

**ಖುರಾಕ ಖುರಾಕ** (ಪುಂ) ಪಶು. ಕಾಲಿನಲ್ಲಿ ಗೊರಸಿರುವ ಪ್ರಾಣ. ಖುರ (ಛೇದನೆ) "ಆಕ:" (ಉಂ ೪-೧೪)।

**ಖುರಾಲಕ ಖುರಾಲಕ** (ಪುಂ) ಕಬ್ಬಿಣದ ಬಾಣ. ಖುರ ಇವಾಲತಿ ಪರ್ಯಾಪ್ನೋತಿ—ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ) "ಫ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ಖುರಾಲಿಕ ಖುರಾಲಿಕ** (ಪುಂ) 1. ನಾಚಿಕೆ ಆಯುಧಗಳ ಚೀಲ, ಕ್ಷೌರಕತ್ತಿಯ ಚೀಲ. ಖುರಾಣಾಮಾಲಿಭಿ: ಕಾಯತಿ—ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। 2. ಕಬ್ಬಿಣದ ಆಯುಧ. 3. ತಲೆದಿಂಬು.

**ಖುಲಕ ಖುಲಕ** (ಪುಂ) ಮೊಳಕಾಲು ಮತ್ತು ಪಾದಗಳ ಸಂಧಿ (ಮಧ್ಯ) ಭಾಗ. ಖುರ (ಛೇದನೆ) "ಖುನ್" (ಉಂ ೨-೩೩)। "ಆಗುಲ್ಫಕರ್ಣಾತ್ ಸುಮಿತಸ್ಯ ಜಂತೋಸ್ತಸ್ಯಾಷ್ಟಭಾಗಂ ಖುಲಕಾ-ದ್ವಿಭಜ್ಯ" ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೧೮-೨೬।



**ಖುಲ್ಲ ಖುಲ್ಲ** (ನಂ) 1. ನಖವೆಂಬ ಒಂದು ಸುಗಂಧವಸ್ತು. ಕ್ಷುದಿರ್ (ಸಂಪೇಷಣೆ) "ಕ್ವಿಪ್" (ವಾಂ 3-3-94)। ಕ್ಷುದ್ ಲಾತಿ - ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ:" (3-3-8)। ಪೃಷಂ। (ವಿಂ) 2. ಸಣ್ಣದಾದ, ಚಿಕ್ಕದಾದ. 3. ಅಲ್ಪ, ಕೊಂಚ. 4. ಕನಿಷ್ಠ. ಕಿರಿಯ.

**ಖುಲ್ಲಕ ಖುಲ್ಲಕ** (ವಿಂ) 1. ನೀಚ. 2. ದರಿದ್ರ. ಬಡವ. 3. ಕಠಿಣ. ಒರಟು ಸ್ವಭಾವದ. 4. ಅಲ್ಪ, ಕೊಂಚ. 5. ಸಣ್ಣದಾದ, ಚಿಕ್ಕದಾದ. ಖುಲ್ಲ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"। 6. ದುರ್ಜನ, ಕೆಟ್ಟವನು. "ಖುಲ್ಲಕ: ಖಲನೀಚಯೋ:" ಹೇಮಂ।

**ಖುಲ್ಲತಾತ ಖುಲ್ಲತಾತ** (ಪುಂ) ಚಿಕ್ಕಪ್ಪ, ತಂದೆಯ ತಮ್ಮ. ತಂದೆಯ ಕಿರಿಯ ಸಹೋದರ. ಖುಲ್ಲ: ತಾತ:।

**ಖುಲ್ಲಮ ಖುಲ್ಲಮ** (ಪುಂ) ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. ಖುಲ್ಲೇನ ಮೀಯತೆ— ಮಾಡ್ (ಮಾನೆ) ಧನರ್ಥ "ಕ:" (ವಾಂ 3-3-48)। "ಪನ್ಯಾಸ್ತು ಖುಲ್ಲಮೋ ವಹ:। ವಾಟ: ಪಥಶ್ಚ ಮಾರ್ಗಶ್ಚ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಖೇಚರ ಖೇಚರ** (ಪುಂ) 1. ವಿದ್ಯಾಧರ. 2. ಸೂರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹ. 3. ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ ರಾಶಿ. 4. ಪಾದರಸ. (ನಂ) 5. ತೃಣ, ಹುಲ್ಲು. 6. ಕುದುರೆ. "ವಿಜ್ಞಾಧರ: ಕಾಮರೂಪಿ ಖೇಚರ: ಸ್ಥಿರಯೌವನ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। (ವಿಂ) 7. ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. ಖೇ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಛ:" (3-2-16)। ಸಪ್ತಮ್ಯಾ "ಅಲುಕ್" (6-3-14)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-14)। -ಚರೀ -ಚರೀ.

**ಖೇಚರೀ ಖೇಚರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯೋಗಾಂಗವಾದ ಒಂದು ಮುದ್ರೆ. "ಕಪಾಲಕುಹರೇ ಜಿಹ್ವಾ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ವಿಪರೀತಗಾ। ಭ್ರೂವೋರ್ಂತರ್ಗತಾ ದೃಷ್ಟಿ: ಮುಧ್ರಾ ಭವತಿ ಖೇಚರೀ"। ಇದೊಂದು ತಂತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಪೂಜಾಸಮಯದ ಮುದ್ರೆ.

**ಖೇಟ ಖೇಟ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹ. ಖೇ ಅಟತಿ-ಅಟ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (3-1-134)। 2. ರೈತರ ಹಳ್ಳಿ, ಗ್ರಾಮ. 3. ಕಫ, ಶ್ಲೇಷ್ಮ. 4. ಒಂದು ಅಸ್ತ್ರ. 5. ಕುದುರೆ. 6. ನಾಸಾಮಲ, ಸಿಂಬಳ. (ಪುಂ) 7. ಬಲರಾಮನ ಗದೆ. 8. ಬೇಟೆ. ಕರ್ಮಂ "ಘನ್" (3-3-19)। (ನಂ) 9. ತೃಣ, ಹುಲ್ಲು. 10. ಗುರಾಣಿ. 11. ಚರ್ಮ. (ವಿಂ) 12. ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. 13. ಬಡ್ಡಿಯ ಹಣದಿಂದ ಜೀವಿಸುವ. 14. ನೀಚ, ಕೆಟ್ಟ ಸ್ವಭಾವದವನು. "ಖೇಟ: ಸಿಂಧಾಣಕೇ ಹೀನೇ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಖೇಟಕ ಖೇಟಕ** (ಪುಂ) 1. ರೈತರಹಳ್ಳಿ, ಬೇಸಾಯಗಾರರ ಗ್ರಾಮ. 2. ಬಲರಾಮನ ಗದೆ. 3. ಗುರಾಣಿ. ಖೇಟ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"।

**ಖೇಟಿನ್ ಖೇಟಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಕಾಮುಕ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ. 2. ವೈತಾಳಿಕ. ಹೊಗಳುಭಟ. ಸುತ್ತಪಾಠಕ.

**ಖೇದ ಖೇದ** (ಪುಂ) 1. ಶೋಕ, ದುಃಖ. ಖಿದ "ಘನ್" (3-3-18)। "ಶೋಕ: ಶುಕ್ ಶೋಚನಂ ಖೇದ:" ಅಭಿಂ ಚಿಂ। 2. ಆಯಾಸ, ಬಳಲಿಕೆ, ದಣಿವು. "ರತಿಖೇದಸಮುತ್ಪನ್ನಾ ನಿद्रಾ ಸಂಜ್ಞಾವಿಪರ್ಯಯ:" ಸಾಂ ದಂ। 3. ಖೇಡ, ಹಿಂಸೆ.

**ಖೇದನ ಖೇದನ** (ನಂ) 1. ಶೋಕ, ದುಃಖ. ಖಿದ (ದೈನ್ಯ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)। 2. ಆಯಾಸ, ಬಳಲಿಕೆ. 3. ದುಃಖಪಡಿಸುವುದು. 4. ಆಯಾಸಗೊಳಿಸುವುದು. ಖಿದ + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)। (ವಿಂ) 5. ದುಃಖಪಡಿಸುವ. 6. ಆಯಾಸಪಡಿಸುವ. ಖಿದ+ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (3-1-134)।

**ಖೇದನೀಯ ಖೇದನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ದುಃಖಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಆಯಾಸಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ಖಿದ (ದೈನ್ಯ) ಕರ್ಮಂ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। 3. ಕುಗ್ಗಿಸಲ್ಪಡುವ, ನಿರುತ್ಸಾಹ ಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. "ತವ್ಯ:" (3-1-96)। ಖೇತವ್ಯ: ಖೇತವ್ಯಃ.

**ಖೇದಿತ ಖೇದಿತ** (ವಿಂ) 1. ಆಯಾಸಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ದುಃಖಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಖಿದ(ದೈನ್ಯ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102)। 3. ನೋಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಖೇದಿನ್ ಖೇದಿನ್** (ವಿಂ) 1. ದುಃಖವುಳ್ಳವನು. 2. ಆಯಾಸ ವುಳ್ಳವನು, ದಣಿದಿರುವವನು. ಖೇದೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114)।

**ಖೇಯ ಖೇಯ** (ನಂ) 1. ಕಂದಕ, ಕೋಟೆಯ ಸುತ್ತಲೂ ನೀರನ್ನು ತುಂಬಲು ತೋಡಿರುವ ಹಳ್ಳ. ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಕಪ್" (3-1-111)। (ವಿಂ) 2. ತೋಡಲ್ಪಡುವ, ಅಗೆಯಲ್ಪಡುವ. 3. ಅಗೆಯಲು ಶಕ್ತವಾದ. 4. ಅಗೆಯ ಬೇಕಾದ.

**ಖೇಲನ ಖೇಲನ** (ನಂ) 1. ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ. ಖೇಲ್ (ಚಲನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)। 2. ಪಗಡೆಯಹಾಸು. ಖೇಲ್ ಅಭಿಂ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-116)। 3. ಆಟದ ಸಾಮಾನು. ಖೇಲ್ ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-116)।

**ಖೇಲನೀ ಖೇಲನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಗಡೆಯಹಾಯಿ. ಖೇಲಯತೇಜಯಾ— ಖೇಲ್ (ಚಲನೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-116)। "ಡೀಪ್" (4-1-14)।



ಖೇಲಾ ಖೇಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಟ, ಕ್ರೀಡೆ. ಖೇಲ (ಚಲನೆ) "ಅ." (೩-೩-೧೦೩)। "ಕ್ರೀಡಾ ಖೇಲಾ ಚ ಕುರ್ದನಮ್" ಅಮಂ।

ಖೇಲಿ ಖೇಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ. 2. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. 3. ಸೂರ್ಯ. 4. ಬಾಣ. 5. ಗಾನ, ಸಂಗೀತ. ಖೇಲ ಅಲತಿ - ಅಲ (ಭೂಷಣಾದಿ) "ಇನ್" (೩-೪-೧೧೭)। (ವಿಂ) 6. ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ.

ಖೊಡ್ - ಗತಿಪ್ರತಿಘಾತೆ (ಭ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ)। ಖೊಡತಿ। ಚುಖೊಡ। ಖೊಡಿತಾ। ಖೊಡಿಷ್ಯತಿ। ಖೊಡತು। ಇತ್ಯಾದಿ. ಸಂಚಾರಕ್ಕೆ ಅಡ್ಡಿಮಾಡು, ನಡೆಯಲು ಅಡ್ಡಿಮಾಡು.

ಖೊಡ ಖೋಡ (ವಿಂ) ಕುಂಟ, ಒಂದು ಕಾಲಿಲ್ಲದವನು. ನಡೆಯಲು ಅಶಕ್ತನಾದವನು. ಖೊಡತಿ - ಖೊಡ್ (ಗತಿಪ್ರತಿಘಾತೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಖೊಡೆ ಕ್ವಜ್ಜ:" ಅಮಂ।

ಖೊರ(ಲ) ಖೋರ(ಲ) (ವಿಂ) 1. ಕುಂಟ, ಒಂದು ಕಾಲಿಲ್ಲದವನು. ಖೋರ್ಕ್ (ಲ) (ಗತಿಪ್ರತಿಘಾತೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। (ಪುಂ) 2. ರುಮಾಲು, ಟೋಪಿ ಮುಂತಾದುದು.

ಖೊಲಕ ಖೋಲಕ (ಪುಂ) 1. ತಲೆಯ ಕಾಪು, ರುಮಾಲು, ಟೋಪಿ ಮುಂತಾದುವು. 2. ವಲ್ಮೀಕಿ, ಮತ್ಸ್ಯ. 3. ಅಡಕೆ ಕಾಯಿನ ಚಿಪ್ಪು (ಸಿಪ್ಪೆ). 4. ಒಂದು ಅಡಿಗೆಯ ಪಾತ್ರೆ. "ಸ್ಯಾತ್ ಖೊಲಕಸ್ತು ಪಾಕೇ ಶಿರಸ್ತ್ರವಲ್ಮೀಕಿಪೂಗಕೋಶೇಷು" ಮೇದಿಂ। 5. ಪ್ಲೂಗ್. "ಮೂರ್ಯಾಣೇ ನಾಕೌ ಚ ಖೊಲ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಖ್ಯಾ - ಪ್ರಕಥನೆ (ಅದಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ)। ಖ್ಯಾತಿ। ಚಖ್ಯಾ। ಖ್ಯಾತಾ। ಖ್ಯಾಸ್ಯತಿ। ಖ್ಯಾತು। ಅಖ್ಯಾತ್। ಚಕ್ಷಿಡ್ ಧಾತುವಿಗೆ ಅರ್ಥಧಾತುಕವು ಪರವಾದರೆ ಖ್ಯಾ ಆದೇಶವು ಒಂದು ಉಭಯಪದಿಯಾಗುವುದು.

ಕರ್ಮಣಿ: - ಖ್ಯಾಯತೆ। ಚಖ್ಯೆ। ಖ್ಯಾಯಿತಾ, ಖ್ಯಾತಾ। ಖ್ಯಾಯಿಷ್ಯತೆ, ಖ್ಯಾಸ್ಯತೆ। ಖ್ಯಾಯತಾಮ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ: - ಖ್ಯಾಪಯತಿ, -ತೆ। ಖ್ಯಾಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು: - ಖ್ಯಾತವ್ಯಮ್। ಖ್ಯಾನೀಯಮ್। ಖ್ಯೇಯಮ್। ಖ್ಯಾತ:। ಖ್ಯಾತವಾನ್। ಖ್ಯಾನ್, ಖ್ಯಾತೀ, ಖ್ಯಾಂತೀ। ಖ್ಯಾತುಮ್। ಖ್ಯಾತಮ್। ಖ್ಯಾನಮ್। ಖ್ಯಾತ್ವಾ। ಆಖ್ಯಾಯ। 1. ಹೇಳು. 2. ಪ್ರಸಿದ್ಧಪಡಿಸು.

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಅನು + ಆ + ಖ್ಯಾ = ಅನ್ವಾಖ್ಯಾತಿ। ಅನ್ವಾಖ್ಯಾನಮ್। ಒಂದೆ ಹೇಳಿದ ವಿಷಯವನ್ನು ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳು.

(2) ಅಭಿ + ಖ್ಯಾ = ಅಭಿಖ್ಯಾತಿ। ಅಭಿಖ್ಯಾ। ಅಭಿಖ್ಯಾತು, ಹೇಳು. "ಕಾಪ್ಯಭಿಖ್ಯಾ ತಯೋರಾಸೀತ್ ವ್ರಜತಾ: ಶುದ್ಧವೇಷಯಾ:" ರಘುಂ ೧-೪೬।

(3) ಆ + ಖ್ಯಾ = ಆಖ್ಯಾತಿ। ಆಖ್ಯಾನಮ್। 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೇಳು, ಸರಿಯಾಗಿ ಹೇಳು. "ಆಖ್ಯಾಹಿ ಮೇ ಕೌ ಭವಾನುಗ್ರಹೋ ನಮೋಸ್ತು ತೇ ದೇವವರ ಪ್ರಸಾದ" ಗೀತಾ ೧೧-೩೧। "ಆಖ್ಯಾತಾಸಿ ಹತಂ ಶತ್ರುಮಭಿವಿಕ್ತಂ ವಿಭೀಷಣಮ್ ಭದ್ರಿಂ ೨೨-೧೫।

(4) ಉಪ + ಆ + ಖ್ಯಾ = ಉಪಾಖ್ಯಾನಮ್। ಒಂದೆ ನಡೆದ ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳು.

(5) ಪ್ರ + ಖ್ಯಾ = ಪ್ರಖ್ಯಾತಿ। 1. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಹೊಂದು. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೇಳು.

(6) ಪ್ರತಿ + ಆ + ಖ್ಯಾ = ಪ್ರತ್ಯಾಖ್ಯಾನಮ್। ಪ್ರತ್ಯಾಖ್ಯಾತಮ್। ತಿರಸ್ಕರಿಸು, ನಿರಾಕರಿಸು.

(7) ವಿ + ಖ್ಯಾ = ವಿಖ್ಯಾತಿ। ವಿಖ್ಯಾತ:। ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಹೊಂದು.

(8) ವಿ + ಆ + ಖ್ಯಾ = ವ್ಯಾಖ್ಯಾತಿ। ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಮ್। ಅರ್ಥವನ್ನು ವಿವರಿಸು, ಅರ್ಥವನ್ನು ವಿವರವಾಗಿ ಹೇಳು.

ಖ್ಯಾತ ಖ್ಯಾತ (ನಂ) 1. ಹೇಳುವುದು. ಪ್ರಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವುದು. ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) ಭಾವೆ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಪಡೆದ, ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾದ. ಖ್ಯಾ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಖ್ಯಾತಂ ನಮಃ ಶಬ್ದಮಯೇನ ನಾಮ್ನಾ ಕಾಂತಂ ನಮೋಮಾಸಮಿವ ಪ್ರಜಾನಾಮ್" ರಘುಂ ೧೮-೬। "ಖ್ಯಾತ: ಪ್ರಾಜಃ ಕೃತಜ್ಞಶ್ಚ ಸಾನುಕ್ರೋಶಶ್ಚ ರಾಘವ:"। 3. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ಪ್ರಸಿದ್ಧಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಖ್ಯಾ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಖ್ಯಾತಗರ್ಹಣ ಖ್ಯಾತಗರ್ಹಣ (ವಿಂ) ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿ ನಿಂದ್ಯನಾದ, ಎಲ್ಲರಿಗೂ ತಿಳಿದಂತೆ ನಿಂದೆಗೆ ಪಾತ್ರನಾದ. ಖ್ಯಾತಾ ಗರ್ಹಣಾ ಯಸ್ಯ।

ಖ್ಯಾತಗರ್ಹಿತ ಖ್ಯಾತಗರ್ಹಿತ (ವಿಂ) ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿ ನಿಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಎಲ್ಲರಿಗೂ ತಿಳಿದಂತೆ ನಿಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಕೆಟ್ಟ ಹೆಸರನ್ನು ಗಳಿಸಿದ. ಗರ್ಹಿತ ಭಾವೆ "ಕ್ತ:"। ಖ್ಯಾತಂ ಗರ್ಹಿತಂ ಯಸ್ಯ।

ಖ್ಯಾತಿ ಖ್ಯಾತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ. 2. ಕೀರ್ತಿ, ಹೆಸರು ವಾಸಿ. ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। "ಯೇನಾಸ್ಮಿನ್ ಕರ್ಮಣಾ ಲೋಕೇ ಖ್ಯಾತಿಮಿಚ್ಛತಿ ಪುಷ್ಕಲಾಮ್। ನ ಚ ಶೋಚತ್ಯಸಂಪತ್ತೌ ತದ್ವಿಜೇಯಂ ತು ರಾಜಸಮ್" ಮನುಂ ೧೨-೩೬। 2. ಪ್ರಶಂಸೆ, ಹೊಗಳಿಕೆ. 3. ಜ್ಞಾನ, ಅರಿವು, ತಿಳುವಳಿಕೆ. "ಖ್ಯಾತಿ ಚ ಸತ್ತ್ವಗುಣಾನ್ಯತಯಾಧಿಗಮ್ಯ ವಾಚ್ಯಂತಿ ತಾಮಪಿ ಸಮಾಧಿಭೃತೌ ನಿರೋದ್ಭುಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೫೫। 4. ದಕ್ಷಿಣ



ಒಬ್ಬ ಮಗಳು, ಧರ್ಮಪುರುಷನ ಒಬ್ಬ ಪತ್ನಿ. 7. ಕರ್ಮಮನ ಮಗಳು. (ಪುಂ) 8. ನಾಲ್ಕನೆಯ ಮನುವಿನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

**ಖ್ಯಾತಿಕರ ಖ್ಯಾತಿಕರ** (ವಿಂ) ಕೀರ್ತಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಕರೋತಿ - ಕೃ ಕೃ (ಕರಣ) "ಅಚ್" (3-1-134)।  
ಖ್ಯಾತೀ: ಕರ:।

**ಖ್ಯಾತಿಮತ್ ಖ್ಯಾತಿಮತ್** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಪಡೆದ. 2. ಕೀರ್ತಿಶಾಲಿಯಾದ. ಖ್ಯಾತಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (4-2-94)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (4-1-6)। -ಮತೀ -ಮತೀ.

**ಖ್ಯಾನ ಖ್ಯಾನ** (ನಂ) 1. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ಅರಿವು. 2. ಹೇಳುವುದು, ತಿಳಿಸುವುದು. 3. ಹೊಗಳಿಕೆ. ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

**ಖ್ಯಾಪಕ ಖ್ಯಾಪಕ** (ವಿಂ) 1. ಹೇಳುವವನು. 2. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಪಡಿಸುವವನು. 3. ತಿಳಿಸುವವನು. ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) + ಣಿಚ್ "ಫ್ವಲ್" (3-1-133)।

**ಖ್ಯಾಪನ ಖ್ಯಾಪನ** (ನಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವುದು. ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಪಡಿಸುವುದು. 2. ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವುದು. ತಿಳಿಯುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। "ಖ್ಯಾಪನೇನಾನುತಾಪೇನ ತಪಸಾಧ್ಯಯೇನ ಚ। ಪಾಪಕೃನ್ಮುಚ್ಯತೇ ಪಾಪಾತ್ತಥಾ ದಾನೇನ ಚಾಪದಿ" ಮನುಂ 11-227।

**ಖ್ಯಾಪನೀಯ ಖ್ಯಾಪನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 2. ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಪಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। "ತವ್ಯ:" (3-1-96)। ಖ್ಯಾಪಯಿತವ್ಯ: ಖ್ಯಾಪಯಿತವ್ಯ:

**ಖ್ಯಾಪಿತ ಖ್ಯಾಪಿತ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರಕಾಶ ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102)। 2. ತಿಳಿಯುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ತಿಳಿಯಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಖ್ಯಾಪ್ಯ ಖ್ಯಾಪ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರಕಾಶ ಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಪಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಪಡಿಸಬೇಕಾದ. ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) + ಣಿಚ್ "ಯತ್" (3-1-97)।

ಇತಿ "ಖ" ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್

## ಗ

**ಗ ಗ** ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ "ಕ" ವರ್ಗದ ಮೂರನೆಯ ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಂತರಸ್ಪೃಷ್ಪಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಕಂಠದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಅಕ್ಷರ. "ಕಾದಯೋ ಮಾವಸಾನಾ: ಸ್ಪರ್ಶಾ:"। "ಸ್ಪೃಷ್ಟಂ ಪ್ರಯತನಂ ಸ್ಪರ್ಶಿನಾಮ್" ಸಿಂ ಕೌಂ। ಸಂವಾರ, ನಾದ, ಘೋಷ ಮತ್ತು ಅಲ್ಪಪ್ರಾಣ ಇವು ಇದರ ಬಾಹ್ಯ ಪ್ರಯತ್ನಗಳು.

**ಗ ಗ** (ಪುಂ) 1. ಗಣಪತಿ. 2. ಗಂಧರ್ವ. (ನಂ) 3. ಗಾನ, ಸಂಗೀತ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಾ ಗಾ. 4. ಗಾಢಾ. ಗೆ (ಶಬ್ದ) "ಕ:" (3-2-3)। "ಗೋ ಗಣೇಶ: ಸಮುದ್ರಿಷ್ಟ: ಗಂಧರ್ವೋ ಗ: ಪ್ರಕೀರ್ತಿತ:। ಗಂ ಗೀತಂ ಗಾ ಚ ಗಾಥಾ" ಏಕಾಂ। 5. ಭಂಡ: ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ "ಗುರು" ಸಂಜ್ಞೆಯ ಪರ್ಣ. "ಯರಾವಂತಗಲೌ ಸತೌ" ವುಂ 20। "ಗುರೇಕೋ ಗಕಾರಸ್ತು ಲಕಾರೋ ಲಘುರೇಕಕ:" ಛಂದೋಮಂ। ಗಮ್ಲ ಧಾತುವಿಗೆ ಸುಬಂತವು ಉಪಪದವಾದಲ್ಲಿ "ಡ" ಪ್ರತ್ಯಯವು ಬಂದು ಗ: ಎಂದಾಗುವುದು. ಯಾನೇನ ಗಚ್ಛತಿ ಯಾನಗ:, ಕಂಠಂ ಗಚ್ಛತಿ ಕಂಠಗ: ಇತ್ಯಾದಿ. "ನ

ನಾವಂ ನ ಖರಂ ನೋಢ್ರಂ ನೇರಿಣಸ್ಥೋ ನ ಯಾನಗ:" ಮನುಂ 4-120। ಗೆ ಧಾತುವಿಗೆ ಸುಬಂತವು ಉಪಪದವಾದಲ್ಲಿ "ಕ" ಪ್ರತ್ಯಯವು ಬಂದು ಗ: ಎಂದಾಗುವುದು. ಸಾಮ ಗಾಯತಿ ಸಾಮಗ:, ಛಂದೋಗ: ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಗಕಾರ ಗಕಾರ** (ಪುಂ) "ಗ" ಎಂಬ ಅಕ್ಷರ. ಗ "ಕಾರ:" (ವಾಂ 3-3-108)। "ಗುರೇಕೋ ಗಕಾರಸ್ತು ಲಕಾರೋ ಲಘುರೇಕಕ:" ಛಂದೋಮಂ।

**ಗಗನ ಗಗನ** (ನಂ) 1. ಆಕಾಶ, ಅಂತರಿಕ್ಷ. ಗಚ್ಛಂತ್ಯಸ್ಮಿನ್-ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಯುಚ್" ಗಶ್ಚಾಂತಾದೇಶ: (3-2-98)। "ಅವೋಚದೇನಂ ಗಗನಸ್ಪೃಶಾ ರಘು: ಸ್ವರೇಣ ಧೀರೇಣ ವಿವರ್ತಯನ್ನಿವ" ರಘುಂ 3-43। 2. ಶೂನ್ಯ, ಸೊನ್ನೆ.

**ಗಗನಗ ಗಗನಗ** (ವಿಂ) ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಹೋಗುವ, ಅಂತರಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. ಗಗನೇ ಗಚ್ಛತಿ ಗಗನ (ಗತೌ) "ಡ:" (ವಾಂ 3-2-48)।



**ಗಗನಗತಿ ಗಗನಗತಿ** (ಪುಂ.) 1. ದೇವತೆ. 2. ಸಿದ್ಧ ಗಂಧರ್ವ ಮೊದಲಾದ ಖೇಚರರು. "ಪ್ರೇಕ್ಷಿಷ್ಯಂತೇ ಗಗನಗತಯೋ ನೂನಮಾವರ್ಜ್ಯ ದೃಷ್ಟೀರೇಕಂ ಮುಕ್ತಾಗುಣಮಿವ ಭುವಃ ಸ್ಥೂಲಮಧ್ಯೇಂದ್ರನೀಲಮ್" ಮೇಘಂ ೧-೪೬. 3. ಸೂರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚಾರ. ಗಗನೇ ಗತಿಃ. "ಗಗನಗತಿವಿಹೀನಾ ಯೇ ಧನಾಃ ಪಲ್ವಲಾಂತೇ" ಚಂ ರಾಂ. (ವಿಂ) 5. ಅಂತರಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಗಮನವುಳ್ಳ ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚಾರವುಳ್ಳ.

**ಗಗನಚರ ಗಗನಚರ** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. 2. ಸಿದ್ಧ ಗಂಧರ್ವ ಮೊದಲಾದ ಖೇಚರರು. 3. ಸೂರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹ. 4. ಪಕ್ಷಿ. ಹಕ್ಕಿ. ಗಗನೇ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಛ:" (೩-೨-೧೬). "ಞಿಞಿ:" (೩-೨-೭೮). -ಚಾರಿನ್ -ಚಾರಿನ್. (ವಿಂ) 5. ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ.

**ಗಗನಚರೇಶ್ವರ ಗಗನಚರೇಶ್ವರ** (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿರಾಜನಾದ ಗರುಡ. ಗಗನಚರಾಣಾಮೀಶ್ವರಃ. "ನಿಪೂದಯನ್ ಬಹುವಿಧಮತ್ಸ್ಯಜೀವಿನೋ ಬುಭುಕ್ಷಿತೋ ಗಗನಚರೇಶ್ವರಸ್ತದಾ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೮-೨೧.

**ಗಗನನದಿ ಗಗನನದಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಕಾಶಗಂಗೆ. "ಕಾಂತಾನಾಂ ಗಗನನದೀತರಙ್ಗಶೀತಃ" ಕಿರಾಂ ೭-೧೦.

**ಗಗನಧ್ವಜ ಗಗನಧ್ವಜ** (ಪುಂ) ಮೇಘ. ಮೋಡ. ಗಗನಸ್ಯ ಧ್ವಜ ಇವ.

**ಗಗನಪ್ರಿಯ ಗಗನಪ್ರಿಯ** (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ದೈತ್ಯ. "ಪ್ರಹ್ಲಾದೋ-ಽಶ್ವಶಿರಾಃ ಕುಂಭಃ ಸಂಹ್ಲಾದೋ ಗಗನಪ್ರಿಯಃ" ಹರಿವಂ. 1.

**ಗಗನವಿಹಾರ ಗಗನವಿಹಾರ** (ಪುಂ) ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚಾರ. ಗಗನೇ ವಿಹಾರಃ.

**ಗಗನವಿಹಾರಿನ್ ಗಗನವಿಹಾರಿನ್** (ವಿಂ) ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. ಗಗನೇ ವಿಹರತಿ - ವಿ + ಹ್ವ (ಹರಣೇ) "ಞಿಞಿ:" (೩-೨-೭೮). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೫). "ಸ ಹಿ ಗಗನವಿಹಾರಿ ಕಲ್ಮಷಧ್ವಂಸಕಾರಿ" ಹಿತೋಂ. -ವಿಹಾರಿಣಿ -ವಿಹಾರಿಣೀ.

**ಗಗನಸದ್ ಗಗನಸದ್** (ವಿಂ) ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. ಗಗನೇ ಸಿದತಿ - ಷಡ್ (ವಿಶರಣಗತ್ಯವಸಾದನೇಷು) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೬೧). "ವಿಸ್ಮೇರಾನ್ ಗಗನಸದಃ ಕರೋತ್ಯಮುಷ್ಮಿ-ತ್ವಾಕಾಶೇ ರಚಿತಮಭಿತಿ ಚಿತ್ರಕರ್ಮ" ಮಾಘಂ ೪-೫೩.

**ಗಗನಸಿಂಧು ಗಗನಸಿಂಧು** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಕಾಶಗಂಗೆ. ಗಗನಸ್ಯ ಸಿಂಧುಃ. "ಗಗನಸಿಂಧುಫೇನಪಟಲಜಾಲಾಂತರಸ್ಯ" ಕಾದಂ.

**ಗಗನಸ್ಥ ಗಗನಸ್ಥ** (ವಿಂ) ಆಕಾಶದಲ್ಲಿರುವ. ಗಗನೇ ತಿಷ್ಠತಿ - ಷ್ಟಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಕಃ" (೩-೨-೪). -ಸ್ಥಿತಃ -ಸ್ಥಿ ತಃ.

**ಗಗನಸ್ಪೃಶ್ ಗಗನಸ್ಪೃಶ್** (ವಿಂ) ಆಕಾಶವನ್ನು ಮುಟ್ಟುವ. ಗಗನಂ ಸ್ಪೃಶತಿ - ಸ್ಪೃಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶೌ) "ವಿವನ್" (೩-೨-೫೮). **ಗಗನಾಙ್ಗನಾ ಗಗನಾಂಗನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪ್ಸರಸ್ಸು. ಗಗನಸ್ಥಾ ಅಙ್ಗನಾ.

**ಗಗನಾಧ್ವಗ ಗಗನಾಧ್ವಗ** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. 2. ಸೂರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹ. 3. ಸಿದ್ಧ ಗಂಧರ್ವ ಮೊದಲಾದವರು. 4. ಪಕ್ಷಿ. ಹಕ್ಕಿ. ಗಗನಾಧ್ವಾನಂ ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಛ:" (೩-೨-೪೮).

**ಗಗನೇಚರ ಗಗನೇಚರ** (ವಿಂ) ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ ದೇವತೆ ಸೂರ್ಯಾದಿಗ್ರಹ ಸಿದ್ಧ ಗಂಧರ್ವ ಪಕ್ಷಿ ಮೊದಲಾದವು. ಗಗನೇ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಛ:" (೩-೨-೧೬). ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಅಲುಕ್ (೬-೩-೧೪). "ತಸ್ಮಿನ್ ಕಥಿತೇ ಮಾತ್ರಾ ಕಾರಣೇ ಗಗನೇಚರಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೭-೧೪. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛಾಪ್" -ಚರಾ -ಚರಾ.

**ಗಗನೋಲ್ಮುಕ ಗಗನೋಲ್ಮುಕ** (ಪುಂ) ಮಂಗಳಗ್ರಹ. ಗಗನೇ ಉಲ್ಮುಕ ಇವ.

**ಗಜ್ಜಾ ಗಂಗಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗಾನದಿ. ವಿಷ್ಣು ವಿನ ಪಾದದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ನದಿ. ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಗನ್" (೩ಂ ೧-೧೨೦). "ಗಜ್ಜಾಪ್ರಪಾತಾಂತವಿರುಡಶಘಂ ಗೌರಿ-ಗುರೋರ್ಗೃಹರಮಾವಿವೇಶ" ರಘುಂ ೨-೨೬. ಇಕ್ಷ್ವಾಕುಮಂಶದ ಭಗೀರಥನು ತನ್ನ ಪಿತಾಮಹರಾದ ಸಗರಪುತ್ರರ ಸದ್ಗತಿಗಾಗಿ ಬ್ರಹ್ಮನನ್ನು ಕುರಿತು ತಪಸ್ಸುಮಾಡಿ ಗಂಗೆಯನ್ನು ಭೂಲೋಕಕ್ಕೆ ಕರೆತಂದುದರಿಂದ ಗಂಗೆಗೆ "ಭಾಗೀರಥಿ" ಎಂದೂ ವಿಷ್ಣು ಪಾದದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿ ಹೊರಟುಬಂದುದರಿಂದ "ವಿಷ್ಣುಪದಿ" ಎಂದೂ ಜಹ್ನುಮಹರ್ಷಿಯ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿದಾಗ ಅವರು ಪಾನಮಾಡಿ ಭಗೀರಥನ ಪ್ರಾರ್ಥನೆ ಯಂತೆ ಗಂಗೆಯನ್ನು ಕಿವಿಯಲ್ಲಿ ಬಿಟ್ಟುದರಿಂದ "ಜಾಹ್ನವಿ" ಎಂದೂ ಹಿಮವತ್ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ಬೆಳೆದುಬಂದದ್ದರಿಂದ "ಹೇಮವತಿ" ಎಂದೂ ಆಕಾಶದಿಂದ ಬೀಳುತ್ತಿದ್ದ ಗಂಗೆಯ ವೇಗವನ್ನು ಪರಿವನು ತನ್ನ ಜಟಾಜೂಟದಲ್ಲಿ ಅಡಗಿಸಿಕೊಂಡಾಗ ಭಗೀರಥನು ಪರಿವನನ್ನು ಕುರಿತು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡಲಾಗಿ ಅದರಿಂದ ಮೆಚ್ಚಿದ ಪರಮೇಶ್ವರನ ಜಟಾಕುಹರದಿಂದ ಗಂಗೆಯು ಪೂರ್ವ ದಿಕ್ಕಿಗೂ ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕಿಗೂ ಮತ್ತು ಭಗೀರಥನ ಮಾರ್ಗವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿಯೂ ಮೂರು ಭಾಗವಾಗಿ ಪ್ರವಹಿಸಿದ್ದರಿಂದ "ತ್ರಿಪಥಗಾ" ಎಂದೂ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಹೊಂದಿತು.

"ತ್ರಿವಿಕ್ರಮಪದೋದ್ಭವಬ್ರಹ್ಮಾಂಡಸುಪಿರೋದ್ಭವಾ. ಪರಾ ವಿಷ್ಣು-ಪದಿ ಗಜ್ಜಾ ಸಮುದ್ರಾಪ್ತಿಕಾರಿಣಿ" ಸ್ಕಾಂದಂ. "ಸರ್ವಲೋಕ-



ಪ್ರಭುರ್ಬ್ರಹ್ಮಾ ರಾಜಾನಮಿದಮಬ್ರವೀತ್ । ತಾರಿತಾ ನರಶಾದ್ಲ ದಿವಂ  
ಯಾತಾಶ್ಚ ದೇವತ್ । ಷಷ್ಠಿಃ ಪುತ್ರಾಃ ಸಹಸ್ರಾಣಿ ಸಗರಸ್ಯ  
ಮಹಾತ್ಮನಃ । ಸಾಗರಸ್ಯ ಜಲಂ ಲೋಕೇ ಯಾವತ್ ಸ್ಥಾಸ್ಯತಿ  
ಪಾರ್ಥಿವ । ಸಗರಸ್ಯಾತ್ಮಜಾಃ ಸರ್ವೇ ದಿವಿ ಸ್ಥಾಸ್ಯಂತಿ ದೇವತ್ ।  
ಇಯಂ ತು ದುಹಿತಾ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ತವ ಗಜ್ಜಾ ಭವಿಷ್ಯತಿ । ತ್ವತ್ಕೃತೇನ  
ಚ ನಾಮನಾಥ ಲೋಕೇ ಸ್ಥಾಸ್ಯತಿ ವಿಶ್ರುತಾ । ಗಜ್ಜಾ ತ್ರಿಪಥಗಾ  
ನಾಮ ದಿವ್ಯಾ ಭಾಗಿರಥೀತಿ ಚ । ತ್ರಿನ್ ಪಥೋ ಭಾವಯಂತೀತಿ  
ತಸ್ಮಾತ್ತ್ರಿಪಥಗಾ ಸ್ಮೃತಾ ” ರಾಮಾಂ ।

ನದಿಗಳಲ್ಲೆಲ್ಲಾ ಗಂಗಾನದಿಯು ಸರ್ವಶ್ರೇಷ್ಠವಾದುದು  
ಮತ್ತು ಮೋಕ್ಷಪ್ರದವಾದುದು. “ತೀರ್ಥಾನಾಂ ಪರಮಂ ತೀರ್ಥಂ  
ನದೀನಾಮುತ್ತಮಾ ನದೀ । ಮೋಕ್ಷದಾ ಸರ್ವಭೂತಾನಾಂ ಮಹ್ಯಂ ಪ್ರಾಹ  
ದಿವಾಮಣಿಃ ” ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ ।

ಗಂಗಾನದಿಯು ಸ್ನಾನದಿಂದಲೂ ಗಂಗಾತೀರ್ಥಸ್ಪರ್ಶ  
ಮಾತ್ರದಿಂದಲೂ ಸಕಲಪಾಪಗಳೂ ಪರಿಹೃತವಾಗುವುವು.  
“ಸ್ಪೃಶ್ವಾ ಸ್ವರ್ಗಮವಾಪ್ನೋತಿ ಪೀತ್ವಾ ಜ್ಞಾನಮವಾಪ್ನುಯಾತ್ ।  
ಗಜ್ಜಾಸ್ನಾನೇ ತು ಭಕ್ತಯಾ ವೈ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ ಪರಮಂ ಪದಮ್ ”  
ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡಪುಂ । “ಬ್ರಹ್ಮಹಾ ಗುರುಹಾ ಗೋಪ್ತಃ ಸ್ಪೃಶ್ವಾ ವಾ  
ಸರ್ವಪಾತಕೈಃ । ತಸ್ಯಾಸ್ತೀರ್ಥಂ ನರಃ ಸ್ಪೃಶ್ವಾ ಸರ್ವಪಾಪೈಃ  
ಪ್ರಮುಚ್ಯತೇ ” ವರಾಹಪುಂ ।

**ಗಜ್ಜಾಕ್ಷೇತ್ರ ಗಂಗಾಕ್ಷೇತ್ರ (ನಂ)** ಗಂಗಾನದಿ ಮತ್ತು ಅದರ  
ಎರಡೂ ಕಡೆಗಳಲ್ಲಿರುವ ಒಂದೊಂದು ಗಾವುದದ ಪ್ರದೇಶ.

**ಗಜ್ಜಾಜ ಗಂಗಾಜ (ಪುಂ)** 1. ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯ. 2. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ. ಗಜ್ಜಾಪುತ್ರ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ)  
“ಜಃ” (೩-೨-೯೭) । [“ಗಜ್ಜಾಪುತ್ರ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಗಜ್ಜಾತೇಯ ಗಂಗಾತೇಯ (ಪುಂ)** ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು.  
“ಗಜ್ಜಾತೇಯೋ ಗಲಾನಿಲಃ ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಗಜ್ಜಾದತ್ತ ಗಂಗಾದತ್ತ (ಪುಂ)** ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯ.

**ಗಜ್ಜಾದ್ವಾರ ಗಂಗಾದ್ವಾರ (ನಂ)** ಹರಿದ್ವಾರ, ಗಂಗೆಯು  
ಸ್ವರ್ಗದಿಂದ ಒಂದು ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಇಳಿದ ಸ್ಥಳ. ಗಜ್ಜಾಪುತ್ರ  
ಭೂಮಿವತರಣದ್ವಾರಮ್ । ಇದಕ್ಕೆ ಮಾಯಾಪುರಿಯೆಂದು ಹೆಸರು.  
“ತತೋ ಮಾಯಾಪುರೀಂ ಪ್ರಾಪ ದುಷ್ಪ್ರಾಪಾಂ ಪಾಪಕಾರಿಭಿಃ । ಯತ್ರ  
ಸಾ ವೇಣವೀ ಮಾಯಾ ಜನ್ತುನ್ ಪಾಶೇನ್ ಪಾಶಯೇತ್ । ಕೇಚಿ-  
ದ್ದುಚುಹರಿದ್ವಾರಂ ಮೋಕ್ಷದ್ವಾರಂ ಪರೇ ಜಗುಃ । ಗಜ್ಜಾದ್ವಾರಂ ಚ ಕೇಷ್ಯಾಹುಃ  
ಕೇಚಿನ್ಮಾಯಾಪುರೀಂ ಪುನಃ । ಯತೋ ವಿನ್ಯಿರ್ಗತಾ ಗಜ್ಜಾ ಸ್ಯಾತಾ  
ಭಾಗಿರಥೀ ಭುವಿ ” ಕಾಶೀಖಂ ।

**ಗಜ್ಜಾಧರ ಗಂಗಾಧರ (ಪುಂ)** ಆಕಾಶದಿಂದ ಮೇಗವಾಗಿ  
ಬರುತ್ತಿದ್ದ ಗಂಗೆಯನ್ನು ತಲೆಯಲ್ಲಿ ಧರಿಸಿದ ಪರಮೇಶ್ವರ.  
ಧರತಿ — ಧೃತ್ (ಧಾರಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಗಜ್ಜಾಪುತ್ರಾಧರಃ । “ಮಹಾಪುಣ್ಯಾಂ ಗಗನತಃ ಪತಂತೀಂ ವೈ ಮಹೇಶ್ವರಃ ।  
ದಧಾರ ಶಿರಸಾ ಗಜ್ಜಾಂ ತಾಮೇವ ದಿವಿ ಸೇವತೇ ” ಭಾಂ ।

**ಗಜ್ಜಾಪುತ್ರ ಗಂಗಾಪುತ್ರ, -ಸುತ -ಸುತ, -ಸುನು -ಸೂನು**  
(ಪುಂ) 1. ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯ. ಗಜ್ಜಾಪುತ್ರಾಃ ಪುತ್ರಃ ಸುತಃ  
ಸುನುರ್ವಾ । [ಗಂಗೆಯು ಒಂದು ದಿನ ಬ್ರಹ್ಮನ ಆಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ  
ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದಿದ್ದ ಇಕ್ಷ್ವಾಕುವಂಶದ  
ಮಹಾಭಿಷೇಕಗೂ ಇವಳಿಗೂ ಪರಸ್ಪರ ಮೋಹವುಂಟಾ  
ಯಿತು. ಅದರಿಂದ ಬ್ರಹ್ಮನು ಅವರಿಬ್ಬರಿಗೂ ಭೂಮಿ  
ಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವಂತೆ ಶಾಪವಿತ್ತನು. ಮಹಾಭಿಷೇಕನು  
ಶಂಕನುವಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದನು. ಗಂಗೆಯು ಭೂಲೋಕಕ್ಕೆ  
ಬರುತ್ತಿದ್ದಾಗ ವಸಿಷ್ಠರಿಂದ ಶಪ್ತರಾದ ಅಷ್ಟವಸುಗಳೂ  
ಭೂಲೋಕದಲ್ಲಿ ತಮಗೆ ತಾಯಿಯಾಗಬೇಕೆಂದು ಕೇಳಿ  
ಕೊಳ್ಳಲಾಗಿ “ಅಸ್ತು” ಎಂದಳು.

ಒಂದು ದಿನ ಶಂಕನುವು ಗಂಗಾತೀರದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸು  
ತ್ತಿದ್ದಾಗ ಇವನಿಗೂ ಗಂಗೆಗೂ ಪರಸ್ಪರ ಮೋಹವುಂಟಾ  
ಯಿತು. ತಾನು ಅಡಿದ ಮಾತಿಗೂ ಮಾಡಿದ ಕೆಲಸಕ್ಕೂ  
ಅಡ್ಡಿ ಬರಕೂಡದೆಂಬ ಕರಾರಿನ ಮೇಲೆ ಗಂಗೆಯು ಶಂಕನು  
ವನ್ನು ಮದುವೆಯಾದಳು. ಕಾಲಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಗಂಗೆಯು  
ತಾನು ಹೆತ್ತ ಮಕ್ಕಳೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಹುಟ್ಟಿದ ಕೂಡಲೆ ನದಿ  
ಯಲ್ಲಿ ಬಿಸಾಡುತ್ತ ಬಂದಳು. ಏಳು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ತ್ಯಜಿಸುವ  
ವರಗೂ ರಾಜನು ಸುಮ್ಮನಿದ್ದನು. ಎಂಟನೆಯ  
ಮಗುವನ್ನೂ ಗಂಗೆಯು ಹಿಂದಿನಂತೆಯೇ ಮಾಡಲು  
ಹೊರಟಾಗ ರಾಜನು ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸಲು ಗಂಗೆಯು ತನ್ನ  
ಒಪ್ಪಂದವು ಮುರಿಯಿತಾದುದರಿಂದ ತಾನನ್ನು ಇಲ್ಲಿ  
ಇರುವುದಿಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳಿ ಅಷ್ಟವಸುಗಳ ವಿಷಯ  
ವನ್ನೂ ತಿಳಿಸಿ ಸಮಯಬಂದಾಗ ಮಗುವನ್ನು  
ತಂದೊಪ್ಪಿಸುವುದಾಗಿ ಹೇಳಿ ಶಿಶುವಿನೊಡನೆ ಹೊರಟು  
ಹೋದಳು. ಈ ಎಂಟನೆಯ ಮಗನೇ ಭೀಷ್ಮಾ  
ಚಾರ್ಯನು. “ಏತತ್ ಶ್ರುತ್ವಾ ವಚೋ ರಾಜಃ ಸಸ್ಮಿತಂ ಮೃದು  
ವತ್ಸು ಚ । ವಸುನಾಂ ಸಮಯಂ ಶ್ರುತ್ವಾಸ್ಯಾಭ್ಯಾಗಚ್ಛದನಿಂದಿತಾ ।  
ಉವಾಚ ಚೈವ ರಾಜಃ ಸಾ ಹ್ಲಾದಯಂತಿ ಮನೋಗಿರಾ । ಭವಿಷ್ಯಾಮಿ  
ಮಹೀಪಾಲ ಮಹಿಷೀ ತೇ ವಶಾನುಗಾ । ಯತ್ತು ಕುರ್ಯಾಮಹಂ ರಾಜನ್  
ಶುಭಂ ವಾ ಯದಿ ವಾಙ್ಶುಭಮ್ । ನ ತದ್ವಾರಯಿತವ್ಯಾಸ್ಮಿ ನ  
ವಕ್ತವ್ಯಾ ತಥಾಪ್ರಿಯಮ್ । ಏವಂ ಹಿ ವರ್ತಮಾನೇಹಂ ತ್ವಯಿ ವತ್ಸ್ಯಾಮಿ  
ಪಾರ್ಥಿವ । ವಾರಿತಾ ವಿಪ್ರಿಯಂ ಚೋಕ್ತಾ ತ್ಯಜೇಯಂ ತ್ವಾಮಸಂಶಯಮ್ ।  
ತಥೇತಿ ರಾಜಾ ಸಾ ತುಕ್ತಾ ತಥಾ ಭರತಸತ್ತಮ । ಪ್ರಹೃಷ್ಮತುಲಂ  
ಲೇಭೇ ಪ್ರಾಪ್ಯ ತಂ ಪಾರ್ಥಿವೋತ್ತಮಮ್ । ನ ಪ್ರಶ್ನವ್ಯೇತಿ ಮನ್ವಾನಃ ನ  
ಸ ತಾಂ ಕಿಂಚಿದುಕ್ತವಾನ್ ।..... । ಜಾತಂ ಜಾತಂ  
ಚ ಸಾ ಪುತ್ರಂ ಕ್ಷಿಪತ್ಯಮ್ಭಸಿ ಭಾರತ ।..... ।



ಪುರಂದ್ರಿ ಸುಮಹತ್ಯಾಪಂ ಸಂಪ್ರಾಪ್ತಂ ತೇ ವಿಗೃಹಿತೇ । ಸ್ತ್ರೀ ಉವಾಚ—  
ಪುತ್ರಕಾಮ ನ ತೇ ಹನಿಮಿ ಪುತ್ರಂ ಪುತ್ರವತಾಂ ವರ । ಜಿಣ್ಯೋಸ್ತು ಮಮ  
ವಾಸೋಽಯಂ ಯಥಾ ಸಮಯಃ ಕೃತಃ ” ] ಇತ್ಯಾದಿ. ಭಾಂ ಆದಿಂ ।  
2. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪಣ್ಣುಖ. [ಪಾರ್ವತೀ ಪರಮೇಶ್ವರರು  
ಕ್ರೋಧಾಸಕ್ತರಾಗಿದ್ದಾಗ ಅಗ್ನಿಯು ಮೋಗಿ ವಿಘ್ನವುಂಟು  
ಮಾಡಿದ್ದರಿಂದ ಕುಪಿತಳಾದ ಪಾರ್ವತಿಯು ಅಗ್ನಿಯೇ  
ಈ ಗರ್ಭವನ್ನು ಧರಿಸಬೇಕೆಂದು ಹೇಳಲಾಗಿ ಅಗ್ನಿಯು ಕೆಲವು  
ಕಾಲ ಧರಿಸಿ ತಾಳಲಾರದೆ ಅದನ್ನು ಗಂಗೆಯಲ್ಲಿ ಬಿಟ್ಟನು.  
ಗಂಗೆಯು ಶರವಣದಲ್ಲಿ ಬಿಟ್ಟಳು. ಅಲ್ಲಿ ಪಣ್ಣುಖನ  
ಜನನವಾಯಿತು. ಇದರಿಂದ ಪಣ್ಣುಖನಿಗೆ “ಗಜಾಪುತ್ರಃ”  
ಎಂದೂ “ಶರವಣಭವಃ” ಎಂದೂ ಹೆಸರಾಯಿತು.]

**ಗಜಗಾಯತ್ರಾ ಗಂಗಾಯಾತ್ರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗಾನದಿಯಲ್ಲಿ  
ಸ್ನಾನಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಯಾತ್ರೆ. ಗಜ್ಞಾ ಗಜ್ಞಾಸ್ನಾನಮುದ್ಧಿಷ್ಯ  
ಯಾತ್ರಾ ।

**ಗಜಗಾಲಹರೀ ಗಂಗಾಲಹರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಂಗಾನದಿಯ  
ಅಲೆಗಳ ಸಾಲು. 2. ಜಗನ್ನಾಥಪಂಡಿತನು ರಚಿಸಿದ  
ಗಂಗಾನದಿಯ ಸ್ತೋತ್ರ.

**ಗಜಗಾವತಾರ ಗಂಗಾವತಾರ** (ಪುಂ) 1. ಗಂಗೆಯು ಸ್ವರ್ಗ  
ಲೋಕದಿಂದ ಇಳಿದು ಬಂದ ಪ್ರದೇಶ, ಗಂಗಾದ್ವಾರ,  
ದರಿದ್ವಾರವೆಂಬ ಕ್ಷೇತ್ರ. ಗಜ್ಞಾಯಾ ಅವತಾರೋತ್ರ ।  
[“ಗಜ್ಞಾದ್ವಾರ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ಗಂಗೆಯು  
ಭೂಲೋಕಕ್ಕೆ ಇಳಿದುಬಂದುದು. ಗಜ್ಞಾಯಾ ಅವತಾರಃ ।  
ಸಗರಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಯಜ್ಞಾಶ್ವವನ್ನು ಹುಡುಕಲು ಹೋದ  
ಅವನ ಅರವತ್ತು ಸಹಸ್ರಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳೂ ಕಪಿಲ  
ಮಹರ್ಷಿಯ ಕೋಪಾಗ್ನಿಯಿಂದ ದಗ್ಧರಾಗಲು ಅವರ  
ಪ್ರಪೌತ್ರ (ಮರಿಮಗ) ನಾದ ಭಗೀರಥನು ಅವರಿಗೆ ಸದ್ಗತಿ  
ಯುಂಟಾಗಿಸಲು ಭೂಲೋಕಕ್ಕೆ ಗಂಗೆಯನ್ನು ಕರೆತರಲು  
ಬ್ರಹ್ಮನನ್ನು ಕುರಿತು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡಲಾಗಿ ಅದರಿಂದ  
ಮಂಚ್ಚಿದ ಬ್ರಹ್ಮನು ಅದಕ್ಕೆ ಒಪ್ಪಿದನು. ಗಂಗೆಯು ಇಳಿದು  
ಬರುವ ವೇಗವನ್ನು ತಡೆಯಲು ಪರಶಿವನು ಒಪ್ಪಿದನು.  
ಗಂಗೆಯು ಮೊದಲು ಪರಮೇಶ್ವರನ ಜಟಿಗಳ ಮೇಲೆ  
ಬಿದ್ದು ಅಲ್ಲಿಂದ ಮುಂದೆ ಭಗೀರಥನೊಡನೆ ಬರುತ್ತ ದಾರಿ  
ಯಲ್ಲಿ ಜಹ್ನುವಿನ ಯಜ್ಞಶಾಲೆಗೆ ನುಗ್ಗಲಾಗಿ ಜಹ್ನುವು  
ಗಂಗೆಯನ್ನು ಆಪೋಶನ ಮಾಡಿದನು. ಬಳಿಕ ಭಗೀರಥನ  
ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಂತೆ ಜಹ್ನುವು ತನ್ನ ಕಿವಿಯಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ  
ಬಿಟ್ಟನು.

ಪರಮೇಶ್ವರನ ಜಟಾಗಹ್ವರದಿಂದ ಹೊರಟ ಗಂಗೆಯು  
ವಿಕು ಶಾಖೆಗಳಾಗಿ ಪ್ರವಹಿಸಿತು. ಹ್ಲಾದಿನಿ, ಪಾವನಿ

ಮತ್ತು ನಳಿನಿಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಶಾಖೆಗಳು ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿಗೂ  
ಸುಚಕ್ಷೆ, ಸೀತೆ ಮತ್ತು ಸಿಂಧುಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಶಾಖೆಗಳು  
ಪಶ್ಚಿಮದಿಕ್ಕಿಗೂ ಪ್ರವಹಿಸಿ ಒಂದು ಶಾಖೆಯು ಭಗೀರಥ  
ನೊಡನೆ ಬಂದಿತು. ಈರೀತಿ ಮೂರು ಮಾರ್ಗಗಳಲ್ಲಿ  
ಹರಿದುಬಂದುದರಿಂದ ಗಂಗೆಗೆ “ತ್ರಿಪಥಗಾ” ಎಂಬ ಹೆಸ  
ರಾಯಿತು. —ಅವತರಣಮ್—ಅನಂತರಣಮ್.

**ಗಜ್ಞಾಸಾಗರ ಗಂಗಾಸಾಗರ**(ಪುಂ)ಗಂಗಾನದಿಯೊಡನೆ ಸೇರಿದ  
ಸಮುದ್ರ, ಗಂಗಾ ಸಮುದ್ರಗಳ ಸಂಗಮ. ಗಜ್ಞಾ ಸಜ್ಞತಃ  
ಸಾಗರಃ ।

**ಗಜ್ಞೋದ್ಭವ ಗಂಗೋದ್ಭವ** (ಪುಂ) ಗಂಗೆಯು ಭೂಲೋಕ  
ದಲ್ಲಿ ಮೊದಲು ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡ ಸ್ಥಳ. ಗಜ್ಞಾಯಾ ಉದ್ಭವಃ  
ಪ್ರಥಮಪ್ರಕಾಶೋ ಯತ್ರ । “ಗಜ್ಞೋದ್ಭವಂ ಸಮಾಸಾಽಽ ತರ್ಪಯೇತ್  
ಪಿತೃದೇವತಾಃ । ವಾಜಪೇಯಮವಾಪ್ನೋತಿ ಬ್ರಹ್ಮಭೂತೋ ಭವೇತ್ ಸದಾ”  
ಭಾಂ ವನಂ ೮೧ ।

**ಗಚ್ಛ ಗಚ್ಛ** (ಪುಂ) ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ಕ್ವಿಪ್”  
(ವಾಂ ೩-೩-೯೪) । ಗತ್ । ಗತಂ ಗಮನಂ ಛಯತಿ — ಛೋ  
(ಛದನೆ) “ಕಃ” (೩-೨-೪) । “ವೃಕ್ಷಃ ಕಾರಸ್ಕರೋ ಗಚ್ಛಃ  
ಪಲಾಶೀ ವಿಷ್ಠರಃ ಸ್ಥಿರಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಗಚ್ಛತ್ ಗಚ್ಛತ್** (ವಿಂ) 1. ಹೋಗುತ್ತಿರುವ, ನಡೆಯು  
ತ್ತಿರುವ. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) ।  
“ದ್ವೇಷಭವಂಭೋಜನಸ್ಯ ಗಚ್ಛತಃ ಶೈಲೋಪಮಾತೀತಗಜಸ್ಯ  
ನಿಮ್ನಗಾಃ” ಮಾಘಂ ೧೨-೬೧ । 2. ಪಡೆಯುವ, ಹೊಂದುವ.  
“ಗಚ್ಛತಾ ದಶರಥೇನ ನಿರ್ವೃತಿ ಭೂಜಾಮಸುಲಭಾ ಭುಜಾಬಲಾತ್”  
ವಂ ರಾಂ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) । ಗಚ್ಛಂತೀ  
ಗಚ್ಛಂತೀ. “ಗಚ್ಛಂತೀರಲಸಮವೇಕ್ಷ್ಯ ವಿಸ್ಮಯಿನ್ಯಸ್ತಾಸ್ತನ್ವೀ-  
ನ ವಿದಧಿರೇ ಗತಾನಿ ಹಸ್ಯಃ” ಮಾಘಂ ೮-೭ ।

**ಗಜ-ಮದೇ ಶಬ್ದೇ ಚ** (ಭ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) । ಗಜತಿ ।  
ಜಗಾಜ । ಗಜಿತಾ । ಅಗಜತ್ । ಅಗಜಿತ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.  
1. ಶಬ್ದಮಾಡು, ಗರ್ಜಿಸು. 2. ಮದಿಸು. “ಹಯಾ ಜಿಹೇಷಿರೇ  
ಹೃಷಾದ್ಗಮ್ಭೀರಂ ಜಗಜುರ್ಗಜಾಃ” ಭट्टಿಂ ೧೪-೫ ।

**ಗಜ - ಶಬ್ದೇ** (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) । ಗಾಜಯತಿ, —ತೇ ।  
ಇತ್ಯಾದಿ. ಶಬ್ದಮಾಡು, ಗರ್ಜಿಸು.

**ಗಜ ಗಜ** (ಪುಂ) 1. ಅನೆ. ಗಜತಿ — ಗಜ (ಮದೇ) “ಅಚ್”  
(೩-೧-೧೩೪) । “ಠ್ಠೇ ಗಜೇನ ಸರಿತಃ ಸರಘಾವತಾರೆ  
ರಿಕ್ತೋದಪಾತ್ರಕರಮಾಸ್ತ ಚಿರಂ ಜನಾಃ” ಮಾಘಂ ೫-೩೩ ।  
2. ಎಂಟು ಸಂಖ್ಯೆ. 3. ಒಂದು ಅಳತೆ. “ಅರತ್ನಿನಾಂ  
ಶತಾನ್ಯಷ್ಟೌ ಏಕಷಷ್ಟಯನ್ವಿತಾನಿ ಚ । ಗಜಪ್ರಮಾಣಮಾಖ್ಯಾತಂ  
ಮುನಿಭಿರ್ಮಾನಿಕೋವಿದೇಃ” । 4. ಒಂದು ಗಜದ ಅಳತೆ,



ಮನುಷ್ಯನ ಮೂವತ್ತು ಅಂಗುಲಗಳ ಅಳತೆ. "ಸಾಧಾರಣ-  
ನರಾಙ್ಗುಲ್ಯಾ ತ್ರಿಶದಙ್ಗುಲಕೋ ಗಜಃ" 5. ವಾಸ್ತುಪುರುಷನ  
ಒಂದು ಸ್ಥಾನ. "ಗಜೋ ಮಾನೇ ಮತಙ್ಗಜೇ | ವಾಸ್ತುನಃ ಸ್ಥಾನಭೇದೇ  
ಚ" ಮೇದಿಂ | 6. ಔಷಧವನ್ನು ಪುಟಹಾಕಲು ತೋಡುವ  
ಹಳ್ಳಿ-ಗುಣ. "ಹಸ್ತಪ್ರಮಾಣಗತೋ ಯಃ ಪುಟಃ ಸ ತು ಗಜಾಹ್ವಯಃ |  
ಇತ್ಯಂ ಚಾರತ್ನಿಕೇ ಕುಣ್ಡೇ ಪುಟೋ ವಾರಾಹಃ ಉಚ್ಯತೇ" ವೈದ್ಯಕ-  
ಪ್ರಯೋಗಾಮೃತಮ್ | 7. ಮಹಿಷಾಸುರನ ಮಗನಾದ ಒಬ್ಬ  
ಅಸುರ, ಗಜಾಸುರ. "ಮಹಿಷಾಸುರಪುತ್ರೋಽಸೌ ಸಮಾಪಾತಿ  
ಗಜಾಸುರಃ | ಪ್ರಮಥನ್ ಪ್ರಮಥಾನ್ ಸರ್ವಾನ್ ನಿಜವೀರೈರಮದೋದತಃ"  
ಕಾಶೀಖಂ | 8. ಸುಗ್ರೀವನ ಸೈನ್ಯದಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ವಾನರ.  
"ಗಜೋ ಗವಾಕ್ಷೋ ಗವಯಃ ಶರಭೋ ಗಂಧಮಾದನಃ" ರಾಮಾಂ |

**ಗಜಕರ್ಣ ಗಜಕರ್ಣ** (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಯಕ್ಷ. ಗಜಸ್ಯ ಕರ್ಣ ಇವ  
ಕರ್ಣೋಽಸ್ಯ | "ಕುಸ್ತುಂಬಕಃ ಪಿಶಾಚಶ್ಚ ಗಜಕರ್ಣೋ ವಿಶಾಲಕಃ"  
ಭಾಂ |

**ಗಜಕೂರ್ಮಾಶಿನ್ ಗಜಕೂರ್ಮಾಶಿನ್** (ಪುಂ) ಅನೆ ಮತ್ತು  
ಅಮೆಗಳನ್ನು ತಿಂದ ಗರುಡ. ಗಜಕೂರ್ಮವಿಶ್ವನಾತಿ - ಅಶ  
(ಭೋಜನೆ) ಣಿನಿಃ (3-2-96) | [ತಪಸ್ವಿಗಳಾದ ವಿಭಾವಸು-  
ಸುಪ್ರತೀಕರೇಬ ಇಬ್ಬರು ಮುನಿಸಹೋದರರಿಗೆ ಅಸ್ತಿಯ  
ವಿಭಾಗದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ವಾಗ್ವಾದ-ಮನಸ್ತಾಪಗಳು ಬೆಳೆದು  
ಪರಸ್ಪರ ಶಾಪದಿಂದ ಇಬ್ಬರೂ ಅನೆ ಮತ್ತು ಅಮೆಗಳಾಗಿ  
ಹುಟ್ಟಿ, ಒಂದು ಸರೋವರದಲ್ಲಿ ಇಬ್ಬರೂ ಸೇರಿ ಜನ್ಮಾಂ  
ತರ ದ್ವೇಷದಿಂದ ಅಲ್ಲೂ ಕಾದಾಡುತ್ತಿದ್ದರು. ಗರುಡನು  
ತಾಯಿಯ ಶಾಪವಿಮೋಚನೆಗಾಗಿ ಅಮೃತವನ್ನು ತರಲು  
ಹೋಗುತ್ತ ತಾಯಿಯ ಮಾತಿನಂತೆ ನಿಷಾದ (ಬೇಡ)  
ರನೇಕರನ್ನು ತಿಂದರೂ ತೃಪ್ತನಾಗದೆ ಕೊನೆಗೆ ತಂದೆಯ  
ಮಾತಿನಂತೆ ಈ ಸರೋವರಕ್ಕೆ ಬಂದು ಅಲ್ಲಿ ಕಾದಾಡು  
ತ್ತಿದ್ದ ಈ ಗಜ ಮತ್ತು ಕೂರ್ಮಗಳನ್ನು ಹಿಡಿದು ಭಕ್ಷಿಸಿ  
ದನು.] ಭಾಂ ಆದಿಂ 29 |

**ಗಜಕೃಣಾ ಗಜಕೃಷ್ಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಜಹಿಪ್ಪಲಿ. ಗಜ ಇವ  
ಕೃಣಾ |

**ಗಜಗಮನ ಗಜಗಮನ** (ನಂ) ಅನೆಯಂತೆ ಗಂಭೀರವಾದ  
ನಡೆಗೆ. ಗಜ ಇವ ಗಮನಮ್ |

**ಗಜಗಾಮಿನಿ ಗಜಗಾಮಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನೆಯಂತೆ ಗಂಭೀರ  
ವಾದ ನಡೆಗೆಯುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಗಜ ಇವ ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ಲ  
(ಗತೌ) "ಣಿನಿಃ" (3-2-96) | "ಜಿಪ್" (4-1-4) |

**ಗಜಚಿರ್ಮಟ ಗಜಚಿರ್ಮಟಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಾವು ಮೆಕ್ಕಗಿಡ.

**ಗಜಚ್ಛಾಯಾ ಗಜಚ್ಛಾಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಿಥಿ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ  
ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ಯೋಗ. ಮುಖಾ

ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರನೂ ಹಸ್ತನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನೂ  
ಇರುವಾಗ ಬರುವ ಒಂದು ಪುಣ್ಯತಿಥಿ. "ಯದೇಂದ್ರಃ ಪಿತೃದೈವತ್ಯೇ  
ಹಂಸಶ್ಚೈವ ಕರೇ ಸ್ಥಿತಃ | ಯಸ್ಯಾಂ ತಿಥಿರ್ಭವೇತ್ಸಾ ಹಿ ಗಜಚ್ಛಾಯಾ  
ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ" | ಇದೊಂದು ಶ್ರಾದ್ಧಕಾಲ. "ವ್ಯತಿಪಾತೋ  
ಗಜಚ್ಛಾಯಾ ಗ್ರಹಣಂ ಚಂದ್ರಸೂರ್ಯಯೋಃ | ಶ್ರಾದ್ಧಂ ಪ್ರತಿ ರುಚಿಶ್ಚೇತೇ  
ಶ್ರಾದ್ಧಕಾಲಾಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾಃ" ಯಾಜ್ಞಂ 1-216 | 2. ಸೂರ್ಯ  
ಗ್ರಹಣಕಾಲ. "ಸೆಹಿಕೇಯೋ ಯದಾ ಭಾನ್ತು ಗ್ರಸತೇ ಪರ್ವಸಂಧಿಷು |  
ಗಜಚ್ಛಾಯಾ ತು ಸಾ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಶ್ರಾದ್ಧಂ ತತ್ರ ಪ್ರಕಲ್ಪಯೇತ್" |

**ಗಜದವಕಾ ಗಜದವಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನೆಯ ಮೇಲೆ ಏರಿಸಿರುವ  
ನಗಾರಿ. "ಗಜದವಕಾ ಮದಾಮ್ನಾತಃ" ಹಾರಾಂ |

**ಗಜತಾ ಗಜತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನೆಗಳ ಗುಂಪು. ಗಜಾನಾಂ ಸಮೂಹಃ  
"ತಲ್" (ವಾಂ 4-2-43) | "ಅಲೋಕಯಾಮಾಸ ಹರಿಮಂಹೀಧರಾ-  
ನಧಿಶ್ರಯಂತೀರ್ಗಜತಾಃ ಪರಃ ಶತಾಃ" ಮಾಘಂ 12-40 |

**ಗಜದಂತ ಗಜದಂತ** (ಪುಂ) 1. ಅನೆಯ ಕೊಂಬುಗಳಂತೆ  
ಕೊಂಬುಗಳುಳ್ಳ ವಿನಾಯಕ, ಗಣಪತಿ. 2. ಅನೆಯ  
ಕೊಂಬು. ಗಜಸ್ಯ ದಂತಃ | "ಗಜದಂತಮಯಿ ದಿವ್ಯಾಂ ಶಿಬಿ-  
ಕಾಮಂತರಿಕ್ಷಗಾಮ್" ರಾಮಾಂ | 3. ನಾಗದಂತ, ಮನೆಯ  
ಗೋಡೆಯಲ್ಲಿ ಬಟ್ಟೆ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ತೂಗುಹಾಕಲು  
(ಇಡಲು) ಹೊಡೆದಿರುವ ಅನೆಯ ಕೊಂಬುಗಳಂತಿರುವ  
ಗೂಟ. 4. ಹಲ್ಲಿನ ಮೇಲೆ ಹುಟ್ಟಿರುವ ಹಲ್ಲು. (ವಿಂ) 5.  
ಅನೆಯ ಕೊಂಬಿನಂತೆ ಹಲ್ಲುಗಳುಳ್ಳ.

**ಗಜದಾನ ಗಜದಾನ** (ನಂ) 1. ಅನೆಯ ಮದದ ನೀರು.  
ಗಜಸ್ಯ ದಾನಮ್ | ಅನೆಯ ಮೈಯಿಂದ ಮದೋದಕವು  
ಹೊರಡುವ ಜಾಗಗಳು-ಸೊಂಡಿಲು, ಗಂಡ (ಕಪೋಲ)  
ಸ್ಥಲಗಳು, ಜನನೇಂದ್ರಿಯ, ಕಣ್ಣುಗಳು. "ಕರಾತ್ ಕರಾಮ್ಯಾಂ  
ಮೇಧಾನ್ವ ನೇತ್ರಾಮ್ಯಾಂ ಚ ಮದಃಪ್ರತಿಃ" | 2. ಅನೆಯ ದಾನ,  
ಅನೆಯ ಕೊಡುಗೆ.

**ಗಜನಾಸಾ ಗಜನಾಸಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನೆಯ ಸೊಂಡಿಲು.  
ಗಜಸ್ಯ ನಾಸಾ |

**ಗಜನಾಸೋರು ಗಜನಾಸೋರೂ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನೆಯ ಸೊಂಡಿಲಿ-  
ನಂತೆ ತೊಡೆಯುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಗಜಸ್ಯ ನಾಸೇವ ಕರು ಯಸ್ಯಾಃ |  
ಅನೆಯ ಸೊಂಡಿಲಿನಂತೆ ಹೆಂಗಸರ ತೊಡೆಗಳು ಮೇಲುಗಡೆ  
ದಪ್ಪವಾಗಿದ್ದು ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬರಬರುತ್ತಾ ಸಣ್ಣದಾಗಿರು-  
ವುವು. "ಧರ್ಮಸ್ತು ಗಜನಾಸೋರು ಸದ್ವಿರಾಚರಿತಃ ಪುರಾ"  
ರಾಮಾಂ |

**ಗಜಪತಿ ಗಜಪತಿ** (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಅನೆ. ಗಜಾನಾಂ  
ಪತಿಃ | 2. ಬಹಳ ಎತ್ತರವಾದ ಅನೆ. 3. ಅನೆಗಳ  
ಗುಂಪಿನ ಯಜಮಾನ, ಸಲಗ.



ಗಜಪತಿವ್ಯಯಸ ಗಜಪತಿವ್ಯಯಸ (ವಿಂ) ಅನೆಯ ಪ್ರಮಾಣ  
ವುಳ್ಳ, ಅನೆಯಷ್ಟು ಎತ್ತರವುಳ್ಳ. ಗಜಪತಿ: ಪ್ರಮಾಣಮಸ್ಯ  
“ದ್ವಯಸತ್” (೪-೨-೩೭)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೧೫)।  
-ದ್ವಯಸಿ - ದ್ವಯಸಿಃ. “ಗಜಪತಿವ್ಯಯಸೀರಪಿ ಹೇಮನಸ್ತುಹಿನಯನ್  
ಸರಿತ: ಪೃಷತಾಂ ಪತಿ:” ಮಾಘಂ ೬-೫೫।

ಗಜಪಿಪ್ಪಲಿ ಗಜಪಿಪ್ಪಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಜಪಿಪ್ಪಲಿ. ಗಜೋಪಪದಾ  
ಪಿಪ್ಪಲಿ। “ಚವಿಕಾಯಾ: ಫಲಂ ಪ್ರಾಜ್ಞ: ಕಥಿತಾ ಗಜಪಿಪ್ಪಲಿ।  
ಗಜಕೃಣಾ ಕಡುರ್ವಾತಶ್ಲೇಷಮನುತ್ ವಹ್ನಿವರ್ಧನಿ” ಸುಶ್ರುತಂ।

ಗಜಪುಜ್ಜವ ಗಜಪುಂಗಳವ (ಪುಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಅನೆ. ಗಜಾನಾ  
ಪುಜ್ಜವ:।

ಗಜಪುಟ ಗಜಪುಟ (ಪುಂ) ಒಂದು ಹಸ್ತ (ಮೊಳ) ದ  
ಪ್ರಮಾಣದ (ಅಳವುಳ್ಳ) ಹಳ್ಳ, ಔಷಧವನ್ನು ಪುಟಹಾಕಲು  
ತೋಡುವ ಗುಣ. “ಹಸ್ತಪ್ರಮಾಣೋ ಗತೋ ಯ: ಪುಟ: ಸ ತು  
ಗಜಾಹ್ವಯ:”।

ಗಜಪುರ ಗಜಪುರ (ನಂ) ಹಸ್ತಿನಾಪುರ, ಧರ್ಮರಾಜನ  
ರಾಜಧಾನಿ. ಗಜಸ್ಯ ಹಸ್ತಿನಾಮಕನೃಪಸ್ಯ ಪುರಮ್। “ಸ ನಿಯಯೋ  
ಗಜಪುರಾತ್ ಯಾಜಕ: ಪರಿವಾರಿತ:” ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೬೭-೬।

ಗಜಪ್ರಿಯಾ ಗಜಪ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನೇಬೇಲದ ಮರ. ಗಜಸ್ಯ  
ಪ್ರಿಯಾ।

ಗಜಬಂಧನ ಗಜಬಂಧನ (ನಂ) ಅನೆಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಕಂಬ.  
ಗಜಾ ಬಂಧಂತೇಷ್ವ-ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)।  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಬಂಧನಿ - ಬಂಧನಿಃ. ಅನೆಯ ಕರವಟ್ಟಿಗೆ, ಗಜ  
ಶಾಲೆ. “ಙೀಪ್” (೪-೧-೧೫)। -ಬಂಧಿನಿ - ಬಂಧಿನಿಃ.  
ಗಜಾನಾಂ ಬಂಧೋಸ್ತೇಷ್ವ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೫)। “ಙೀಪ್”  
(೪-೧-೫)। ಗಜಶಾಲೆ.

ಗಜಭಕ್ಷಯ ಗಜಭಕ್ಷಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನೇಬೇಲದ ಮರ.  
ಗಜೇಭಕ್ಷಯತೇ - ಭಕ್ಷ (ಅದನೆ) “ಞ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪)।

ಗಜಮಂಡಲಿಕಾ ಗಜಮಂಡಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುತ್ತುಗಟ್ಟಿ  
ನಿಂತಿರುವ ಅನೆಗಳ ಒಂದು ವರ್ತುಲ. ಗಜಾನಾಂ ಮಂಡಲೀ  
ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕ:”।

ಗಜಮಾಚಲ ಗಜಮಾಚಲ (ಪುಂ) ಅನೆಯ ಗರ್ವವನ್ನು  
ಅಡಗಿಸುವ ಸಿಂಹ. ಗಜಸ್ಯ ಮಾಚಂ ಕಲ್ಕಂ ಲುನಾತಿ - ಲೂಜ್  
(ಛೇದನೆ) “ಙ:” ಬಾಹುಂ। “ಕಂಠೀರವಸ್ತು ಪಾರೀಂದ್ರ: ಕೇಸರೀ  
ಗಜಮಾಚಲ:” ಹಾರಾಂ।

ಗಜಮುಕ್ತಾ ಗಜಮುಕ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಮೌತ್ತಿಕ - ಮೌಕ್ತಿಕ  
(ನಂ) ಅನೆಯ ಕುಂಭಸ್ಥಳದಲ್ಲಿರುವ ಮುತ್ತು. ಗಜಸ್ಯ  
ಕುಂಭೋದ್ಭವಾ (ವಂ) ಮುಕ್ತಾ ಮೌತ್ತಿಕಂ ವಾ। “ಧರ್ಮಜನಿತಪುಲಕೇನ  
ಲಸದ್ಗಜಮೌತ್ತಿಕಾವಲಿಗುಣೇನ ವಕ್ಷಸಾ” ಕಿರಾಂ ೧೨-೪೦।

ಮುತ್ತುಗಳು ಉತ್ಪನ್ನವಾಗುವ ಮೂಲಗಳು:

(1) ಜಿಮೂತ: (ಮೇಘ), (2) ಕರೀ (ಅನೆ), (3) ಮತ್ಸ್ಯ:  
(ಮೀನು), (4) ಅಹಿ: (ಸರ್ಪ), (5) ಬಂಶ: (ಬಿದಿರು),  
(6) ಶಹ್ವ: (ಶಂಖ), (7) ವರಾಹ (ಹಂದಿ) ಜಾ: ಮುತ್ತು  
(8) ಶುಕ್ತಿ: (ಮುತ್ತಿನ ಚಿಪ್ಪು) “ಽದ್ಭವಾಶ್ಚ ವಿಜ್ಞೇಯಾ ಅಷ್ಟೌ  
ಮೌತ್ತಿಕಯೋನಯ:”।

ಗಜಮುಖ ಗಜಮುಖ, -ವದನ - ವದನ, -ವಕ್ತ್ರ - ವಕ್ತ್ರ  
(ಪುಂ) ವಿನಾಯಕ, ಗಣಪತಿ. ಗಜಸ್ಯ ಮುಖಮಿವ ಮುಖ  
ವದನಮಿವ ವದನಂ ವಕ್ತ್ರಮಿವ ವಕ್ತ್ರಂ ವಾಸ್ಯ। [ವಿವರಕ್ಕೆ  
“ಗಜಾನನ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಗಜಮೋಟನ ಗಜಮೋಟನ (ಪುಂ) ಅನೆಯನ್ನು ಸಂಹರಿಸುವ  
ಸಿಂಹ. ಗಜಂ ಮೋಟಯತಿ - ಮುಟ (ಸಂಚೂರ್ಣನೆ) “ಲ್ಯು:”  
(೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬೩)।  
-ಮೋಟನಿ - ಮೋಟನಿಃ.

ಗಜಯುಥ ಗಜಯುಥ (ನಂ) ಅನೆಗಳ ಗುಂಪು. ಗಜಾನಾಂ ಯುಥಮ್।  
ಗಜರಾಜ ಗಜರಾಜ (ಪುಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಅನೆ. ಗಜಾನಾಂ  
ರಾಜಾ “ಠಕ್” (೪-೪-೯೧)।

ಗಜರಿಪು ಗಜರಿಪು (ಪುಂ) ಅನೆಯ ಶತ್ರು, ಸಿಂಹ. ಗಜಸ್ಯ  
ರಿಪು:।

ಗಜವತ್ ಗಜವತ್ (ವಿಂ) ಅನೆಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ, ಅನೆ  
ಗಳಿಂದ ತುಂಬಿರುವ. ಗಜಾ: ಸಂತ್ಯಾಸ್ಮಿನ್ “ಮತುಪ್”  
(೪-೨-೯೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬)। -ವತೋ  
-ವತೀಃ.

ಗಜವೀಥಿ ಗಜವೀಥಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತರ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿರುವ  
ರೋಹಿಣಿ ಮೃಗಶಿರಾ ಮತ್ತು ಆದ್ರಾ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು.  
“ರೋಹಿಣ್ಯಾದ್ರಾಮೃಗಶಿರೋ ಗಜವೀಥಿಭಿರಧೀಯತೇ”॥

ಗಜಶಾಸ್ತ್ರ ಗಜಶಾಸ್ತ್ರ (ನಂ) ಅನೆಗಳ ಲಕ್ಷಣ ಅವುಗಳ  
ಚಿಕಿತ್ಸೆ ಅವನ್ನು ಪಳಗಿಸುವುದು ಮುಂತಾದವನ್ನು ಕುರಿತ  
ಒಂದು ಗ್ರಂಥ.

ಗಜಶಿಕ್ಷಾ ಗಜಶಿಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನೆಗಳನ್ನು ಪಳಗಿಸಿ ನಡೆಸು  
ವುದು ಮುಂತಾದವನ್ನು ಕಲಿಯುವುದು. “ತಥೈವ ಗಜ-  
ಶಿಕ್ಷಾयां ನೌತಿಶಾಸ್ತ್ರೇಷು ಪಾರಗ:” ಭಾಂ ಆದಿಂ।

ಗಜಶಿರಸ್ ಗಜಶಿರಸ್ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ದೈತ್ಯ. ಗಜಸ್ಯೇವ  
ಶಿರೋಜ್ಯ। “ಗಜೋದರೋ ಗಜಶಿರಾ ಗಜಸ್ಕಂಧೋ ಗಜೇಕ್ಷಣ:”  
ಹರಿವಂ। (ನಂ) 2. ಅನೆಯ ತಲೆ.

ಗಜಸಾಹಸ್ಯ ಗಜಸಾಹಸ್ಯಯ (ನಂ) ಹಸ್ತಿನಾಪುರ. “ಸ  
ತುರ್ಯಶತಶಹ್ವಾನಾಂ ಭೇರಿಣಾಂ ಚ ಮಹಾಸ್ವನೇ:। ಹರ್ಷಯನ್ ಸರ್ವಶ:  
ಪೌರಾನ್ ವಿವೇಶ ಗಜಸಾಹಸ್ಯಮ್” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೧೨-೪೫।



ಗಜಸ್ಕಂಧ ಗಜಸ್ಕಂಧ (ಫಂ) ಒಬ್ಬ ದೈತ್ಯ. ["ಗಜಶಿರಸ್" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಗಜಸ್ನಾನ ಗಜಸ್ನಾನ (ನಂ) ಆನೆಯು ಮಾಡುವ ಸ್ನಾನ. ಗಜಸ್ಯ ಸ್ನಾನಮ್. ಆನೆಯು ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿ ಮೈ ಅದ್ದುವುದು. ಅಥವಾ ಸೊಂಡಿಲಿನಿಂದ ಮೈಗೆ ನೀರೆರಚಿ ಕೊಳ್ಳುವುದು. ಆದರೆ ಮರುಕ್ಷಣದಲ್ಲೇ ಮೈಗೆಲ್ಲಾ ಧೂಳನ್ನು ಎರಚಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಇದರಿಂದ ಅದರ ಸ್ನಾನವು ವ್ಯರ್ಥ. ಅಂತೆಯೇ ಪರಮಾತ್ಮನ ಧ್ಯಾನ, ಅವನಲ್ಲಿ ಭಕ್ತಿ ಇವುಗಳಿಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ಯಾವ ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ತೀರ್ಥಸ್ನಾನ ಮಾಡಿದರೂ ಅದು ಗಜಸ್ನಾನದಂತೆ ವ್ಯರ್ಥವೆಂದು ಶ್ರೀ ಕುಲಶೇಖರಾಚಾರ್ಯ ಅವರು ಮುಕುಂದಮಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. "ತೀರ್ಥಾನಾಮವಗಾಹನಾನಿ ಚ ಗಜಸ್ನಾನಂ ವಿನಾ ಯತ್ಪದದ್ವಂದ್ವಾಂಭೋರಹಸ್ಮೃತಿ ವಿಜಯತೇ ದೇವಃ ಸ ನಾರಾಯಣಃ" ಮಂ ಮಾಂ |

ಗಜಾಗ್ರಣಿ ಗಜಾಗ್ರಣಿ (ಫಂ) ಐರಾವತ.

ಗಜಾಜೀವ ಗಜಾಜೀವ (ಫಂ) ಆನೆಗಳನ್ನು ಕಾಪಾಡುವುದು ಮುಂತಾದ ಕಾರ್ಯಗಳಿಂದ ಜೀವನ ಮಾಡುವವನು, ಮಾವಟಿಗ. ಗಜೇರಾಜೀವೋ ಜೀವನಮಸ್ಯ — ಆ + ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಜ್ವ" (3-3-18) |

ಗಜಾನನ ಗಜಾನನ (ಫಂ) ವಿನಾಯಕ, ಗಣಪತಿ. ಗಜ-ಸ್ಯಾನನಮಿವ ಆನನಮಸ್ಯ | ಗಣಪತಿಯ ಉತ್ಪತ್ತಿ ಕಥೆಗಳು ಅನೇಕವಾಗಿರುವುವು.

(1) ಗಣಪತಿಯು ಪಾರ್ವತಿಯು ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ತಲೆಯಿಲ್ಲದೆ ಜನಿಸಿದನು. ಆಗ ಪರಮೇಶ್ವರನು ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಕೈಲಾಸದಲ್ಲಿ ಕತ್ತರಿಸಿ ಇಟ್ಟಿದ್ದ ಗಜಾಸುರನ ತಲೆಯನ್ನು ತಂದು ಸೇರಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಗಣಪತಿಗೆ "ಗಜಾನನ"ನೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಸ್ಕಾಂದಂ ಗಣೇಶಖಂಡಃ |

(2) ಪಾರ್ವತಿಯು ಒಂದು ದಿನ ಅಂಗಲೇಪನ ಮಾಡಿ ಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಕೆಳಗೆ ಬಿದ್ದ ಲೇಪನ ವಸ್ತುಗಳನ್ನೆಲ್ಲಾ ಸೇರಿಸಿ ಒಂದು ಬೊಂಬೆಯನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿದಳು. ಅದು ಆನೆಯಂತೆ ಇದ್ದುದರಿಂದ ಗಂಗೆಯಲ್ಲಿ ಬಿಟ್ಟಳು. ಗಂಗೆಯು ಅದನ್ನು "ಮಗು" ಎಂದು ಕರೆಯಲು ಪಾರ್ವತಿಯು ಹಾಗೆಯೇ ಕರೆದಳು. ಅದಕ್ಕೆ ಜೀವಕಳೆ ಬಂದಿತು. ಆಗ ಶಿಶುವಿಗೆ "ಗಜಾನನ"ನೆಂದು ಹೆಸರಿಟ್ಟು ದೇವಗಣಗಳಿಗೆ ಅಧಿಪತಿಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದುದರಿಂದ "ಗಣಪತಿ"ಯೆಂದೂ ಹೆಸರಾಯಿತು. ಸ್ಕಾಂದಂ ಕೌಮಾರಖಂಡಃ |

(3) ದಕ್ಷಯಜ್ಞವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸಿದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ವೀರಭದ್ರನು ವಿನಾಯಕನ ತಲೆಯನ್ನೂ ಕತ್ತರಿಸಿದನು.

ಅದರಿಂದ ಹೆದರಿದ ಬ್ರಹ್ಮಾದಿ ದೇವತೆಗಳು ವಿನಾಯಕನನ್ನು ಬದುಕಿಸಿಕೊಡಬೇಕೆಂದು ಪರಶಿವನಲ್ಲಿ ಮೊರೆಯಿಟ್ಟರು. ಈಶ್ವರನ ಆಜ್ಞೆಯಂತೆ ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿಗೆ ತಲೆಯನ್ನಿಟ್ಟು ಮಲಗಿದ್ದ ಒಂದು ಆನೆಯ ಶಿರಸ್ಸನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿ ತಂದು ಸೇರಿಸಿದರು. ಆಗ ವಿನಾಯಕನಿಗೆ "ಗಜಾನನ"ನೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. [ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ ಗಣಪತಿಖಂಡಃ | ಇತ್ಯಾದಿ.]

ಗಜಾಯುರ್ವೇದ ಗಜಾಯುರ್ವೇದ (ಫಂ) ಆನೆಗಳ ವಿಷಯವಾಗಿ ಬರೆದ ಒಂದು ವೈದ್ಯಗ್ರಂಥ, ಗಜವೈದ್ಯ, ಆನೆಗಳ ರೋಗ ಮತ್ತು ಅವುಗಳ ಚಿಕಿತ್ಸೆ ಕುರಿತ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ.

ಗಜಾರಿ ಗಜಾರಿ (ಫಂ) ಆನೆಗೆ ಶತ್ರುವಾದ ಸಿಂಹ. ಗಜಸ್ಯಾರಿಃ |

ಗಜಾರೋಹ ಗಜಾರೋಹ (ಫಂ) ಆನೆಯ ಮೇಲೆ ಹತ್ತಿ ಸವಾರಿಮಾಡುವವನು, ಮಾವಟಿಗ. ಗಜಮಾರೋಹಿತಿ — ಆ + ರೂ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಅಞ್" (3-2-1) | "ಛನ್ವಿನ-ಸ್ತುರಗಾರೂಢಾಃ ಗಜಾರೋಹಾನ್ ಶರೈಃ ಕ್ಷತಾನ್" ಕುಮಾಂ 16-39 |

ಗಜಾಶನ ಗಜಾಶನ (ಫಂ) 1. ಆನೆಬೇಲದಮರ. 2. ಅಶ್ವತ್ಥ ವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿಮರ. 3. ತಾವರೆಯ ದಂಟು. ಗಜೇರಸ್ಯತೇ — ಅಶ (ಭೋಜನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-113) |

ಗಜಾಸುರ ಗಜಾಸುರ (ಫಂ) ಆನೆಯ ಜನ್ಮವತ್ತಿದ ಒಬ್ಬ ಅಸುರ. ಸಕಲ ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞನೂ ದೇವಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಪೂಜಾ ನಿರತನೂ ಆಗಿದ್ದ ಮಹೇಶನೊಬ್ಬ ರಾಜನೊಬ್ಬನು ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಅವನಿಂದ ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ದಾಗಿ ತಿಳಿದ ನಾರದಮಹರ್ಷಿಯ ಶಾಪದಿಂದ ಗಜಮುಖ ನಾದ ಒಬ್ಬ ಅಸುರನಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದನು. ಈತನೇ ಮಹಿಷಾಸುರನ ಮಗನಾದ ಗಜಾಸುರನು. [ಎವರಕ್ಕೆ "ಕೃತ್ತಿವಾಸಸ್" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಗಜಾಸ್ಯ ಗಜಾಸ್ಯ (ಫಂ) 1. ಗಣಪತಿ. ಗಜಸ್ಯೇವಾಸ್ಯಂ ಯಸ್ಯ | 2. ಗಜಾಸುರ. (ನಂ) 3. ಆನೆಯ ಮುಖ. (ವಿಂ) 4. ಆನೆಯ ಮುಖದಂತೆ ಮುಖವುಳ್ಳ.

ಗಜೇಂದ್ರ ಗಜೇಂದ್ರ (ಫಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಆನೆ. ಗಜಃ ಇಂದ್ರ ಇವ | 2. ಆನೆಗಳ ಹಿಂಡುಗಳ ಯಜಮಾನ, ಸಲಗ. ಗಜಾನಾಮಿन्द्रಃ | "ಯಾಂ ಚಂದ್ರಕರ್ಮದಜಲಸ್ಯ ಮಹಾನದೀನಾಂ ತೇಶ್ರಿಯಂ ವಿಕಸತೀ ವಿಧುರ್ಗಜೇಂದ್ರಾಃ" ಮಾಘಂ 5-40 | 3. ಅಗಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿಯ ಶಾಪದಿಂದ ಆನೆಯಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಇಂದ್ರದ್ಯುಮ್ನ. [ಪರಮಭಕ್ತನಾದ ಇಂದ್ರದ್ಯುಮ್ನ ರಾಜನು ಒಂದು ದಿನ ದೇವತಾರ್ಚನೆ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದ ಅಗಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿಯು ತಮ್ಮನ್ನು ಗೌರವಿಸಲಿಲ್ಲವೆಂಬ ಕಾರಣದಿಂದ ಆನೆಯಾಗಿ ಹುಟ್ಟುವಂತೆ ರಾಜನಿಗೆ ಶಾಪ



ವಿತ್ತರು. ಇವನು ಅನೆಯಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದರೂ ಸಂಸ್ಕಾರ ವಿಶೇಷದಿಂದ ಸರ್ವದಾ ಪರಮಾತ್ಮನ ಧ್ಯಾನದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತ ನಾಗಿದ್ದನು. ಒಂದು ದಿನ ವರುಣನ ಉದ್ಯಾನವನದಲ್ಲಿದ್ದ ತಟಾಕವೊಂದರಲ್ಲಿ ನೀರು ಕೊಡಿಯಲು ಹೋಗಿ ಮೊಸಳೆಯ ಬಾಯಿಗೆ ಸಿಕ್ಕಿಕೊಂಡಾಗ ಇಂದ್ರಾದಿ ದೇವತೆಗಳೆಲ್ಲರನ್ನೂ ಬೇಡಿಕೊಂಡರೂ ಯಾರೂ ರಕ್ಷಣೆಗೆ ಬರಲಿಲ್ಲ. ಕೊನೆಗೆ ಇವನ ಮೂರೆಗೆ ಕಿವಿಗೊಟ್ಟ ವಿಷ್ಣುವು ಆ ಕೂಡಲೆ ಗರುಡಾರೂಢನಾಗಿ ಬಹಳ ರಭಸದಿಂದ ಒಂದು ಚಕ್ರಾಯುಧ ದಿಂದ ಮೊಸಳೆಯನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ಗಜೇಂದ್ರನನ್ನು ಬದುಕಿಸಿ ದನು.] "ತಂ ತದ್ವದಾತಮುಪಲಭ್ಯ ಜಗನ್ನಿವಾಸಃ ಸ್ತೋತ್ರಂ ನಿಶಮ್ಯ ದಿವಿಜೈಃ ಸಹ ಸಂಸ್ತುಬ್ಧಿಃ | ಛಂದೋಮಯೇನ ಗರುಡೇನ ಸಮುಹ್ಯಮಾನಃ | ಚಕ್ರಾಯುಧೋಽಭ್ಯಗಮದಾಶು ಯತೋ ಗಜೇಂದ್ರಃ | ಸೌಂತಃಸರಸ್ಯುರಬಲೇನ ಗೃಹೀತ ಆತಃ | ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಗರುಡಮತಿ ಹರಿಃ ಸ್ವ ಉಪಾತುಚಕ್ರಮ್ | ಉತ್ಥಿಷ್ಯ ಸಾಂಬುಜಕರಂ ಗಿರಮಾಹ ಕೃಚ್ಛಾತ್ ನಾರಾಯಣಾಖಿಲಗುರೋ | ಭಗವನ್ನಮಸ್ತೇ | ತಂ ವೀಕ್ಷ್ಯ ಪಿಂಡಿತಮಜಃ ಸಹಸಾವತೀರ್ಯ ಸಗ್ರಾಹ- ಮಾಶು ಸರಸಃ ಕೃಪಯೋಜ್ಜಹಾರ | ಗ್ರಾಹಾದ್ವಿಪಾಟಿತಮುಖಾದರಿಣಾ ಗಜೇಂದ್ರಂ ಸಂಪ್ರಸುತಾಂ ಹರೀರಮುಚದ್ವುಸ್ತ್ರಿಯಾಣಾಮ್" ಭಾಗಂ ೮-೩-೩೧-೩೩ | ದೇವಲ ಶಾಪದಿಂದ ಮೊಸಳೆಯಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದ್ದ ಹೂಹೂ ಎಂಬ ಗಂಧರ್ವನಿಗೂ ಅಗಸ್ತ್ಯ ಶಾಪ ದಿಂದ ಗಜವಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದ್ದ ಇಂದ್ರದ್ಯುಮ್ನ ರಾಜನಿಗೂ ಶಾಪದಿಂದ ವಿಮೋಚನೆಯಾಯಿತು.]

**ಗಜಗಂಜ (ಪುಂ)** 1. ದನಗಳ ಕೊಟ್ಟಿಗೆ. "ಗೋಠಾಗಾರೇಽಪಿ ಗಜಗಂಜಃ ಸ್ಥಾತ್" ಹಾರಾಂ | 2. ಗಣ. 3. ಧನಕನಕಾದಿ ಗಳನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಿಡುವ ಮನೆ, ಜವಾಹಿರಿಯ ಕೊಠಡಿ. 4. ಅಗೌರವ, ಅವಮರ್ಯಾದೆ. ಗಜಿ (ಶಬ್ದ) ಅಧಿಂ ಭಾವೇ ವಾ "ಘಜ್" | (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಜಗಂಜಾ. 5. ಮದ್ಯದ ಮನೆ, ಹೆಂಡದ ಅಂಗಡಿ. "ಗಜಗಂಜೋ ಭಾಂಡಾಗಾರೇ ರೀಡಾ- ಸ್ವಯೋರ್ಗಂಜಾ ಸುರಾಗೃಹೇ" ಹೇಮಂ | 6. ಮದ್ಯವನ್ನು ಕುಡಿಯುವ ಪಾತ್ರೆ.

**ಗಜಗಂಜನ (ವಿಂ)** ಅವಮಾನಪಡಿಸುವವನು. ಗಜಿ (ಶಬ್ದ) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) | "ನೆತ್ರೇ ಖಜ್ಜನಗಜ್ಜನೇ ಸರಸಿಜಪ್ರಸ್ಪರ್ಶಿ ಪಾಣಿಧ್ಯಮ್" ಸಾಂ ೬೦ |

**ಗಜಗಂಜಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮದ್ಯಶಾಲೆ, ಹೆಂಡದ ಅಂಗಡಿ.

**ಗಡ - ಸೇವನೆ (ಛಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)** | ಗಡತಿ | ಜಗಾಡ | ಅಗಾಡೀತ್, ಅಗಾಡೀತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಸೋರು, ಸ್ತವಿಸು, ಜನುಗು, ತೊಟ್ಟಕ್ಕು.

**ಗಡಗಡ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. 2. ವಿಘ್ನ. ಗಡ (ಸೇವನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಗಡೋ ಮೀನಾ-

ನ್ತರಾಯಯೋಃ" ಮೇದಿಂ | 3. ಕಂದಕ, ಕೋಟೆಯ ಸುತ್ತಲೂ ನೀರು ತುಂಬಲು ತೋಡುವ ಹಳ್ಳ. 4. ವ್ಯವಧಾನ, ತೆರೆ, ಗೋಡೆ, ಬೇಲಿ ಮುಂತಾದುವು.

**ಗಡಕ ಗಡಕ (ಪುಂ)** ಮೀನಿನ ಮರಿ.

**ಗಡಿ ಗಡಿ (ಪುಂ)** 1. ಪಳಗಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಯಸ್ಸುಳ್ಳ ಹೋರಿ. 2. ಗಾಡಿಯನ್ನು ಎಳೆಯಲು ಸರಿಯಾಗಿ ಪಳಗದ ಎತ್ತು. "ಅಸಂಜಾತಕಿಣಸ್ಕನ್ಧಃ ಸುಖಂ ಸ್ವಪಿತಿ ಗೌಗಡಿಃ" ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ |

**ಗಡು ಗಡು (ಪುಂ)** 1. ಗಳಗಂಡ. 2. ಹೆಕ್ಕತ್ತು ಮತ್ತು ತಲೆಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಏಳುವ ಮಾಂಸಗ್ರಂಥಿ, ಗಂಡಮಾಲೆಯೆಂಬ ಒಂದು ರೋಗ. ಗಡ (ಸೇವನೆ) "ಃ" ಬಾಹುಂ | 3. ಕೆಸರಿನಲ್ಲಿರುವ ಎರುಲು ಹುಳು. "ಗಡುಃ ಕಿಚ್ಚುಲಕಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 4. ಒಂದು ಆಯುಧ, ಭಲ್ಯ, ಹಗುರವಾದ ಈಟಿ. (ವಿಂ) 5. ಗೂನ, ಗೂನುಬೆನ್ನಿನವನು. 6. ಕತ್ತಿನಲ್ಲಿರುವ ಮಾಂಸಗ್ರಂಥಿಯಂತೆ ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ ವಸ್ತು. "ಕಾವ್ಯಾ- ನ್ತಗಡುಭೂತತ್ವಾತ್ ನಾಲಕ್ಷಾರಃ ಪ್ರಹೇಲಿಕಾ" ಸಾಂ ೬೦ | "ಗಡಃ ಪೃಠಗುಡೇ ಕುಜೇ" ಮೇದಿಂ |

**ಗಡುಕ ಗಡುಕ (ಪುಂ)** ಒಂದು ನೀರಿನ ಪಾತ್ರೆ, ಗಿಂಡಿ. ಗಡುಃ ಗಲಗಾಂಡಿವ ಕಾಯತಿ - ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕಃ" (೩-೨-೪) |

**ಗಡುರ (ಲ) ಗಡುರ (ಲ) (ಪುಂ)** ಕುಬ್ಜ, ಕುಳ್ಳ, ಗಿಡ್ಡ, ಗುಜ್ಜಾರಿ. ಗಡುರಾತಿ - ರಾ (ದಾನ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | ಗಡುರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಲಕ್" (೪-೨-೯೭) ವಾ | "ಗಡುಲಃ ಕುಜೇ" ಅಮಂ |

**ಗಡೇರ ಗಡೇರ (ಪುಂ)** ಮೇಷ, ಟಗರು. ಗಡ (ಸೇವನೆ) "ಏರಕ್" (ಉಂ ೧-೪೮) |

**ಗಡೋಲ ಗಡೋಲ (ಪುಂ)** ಹಸಿ ಬೆಲ್ಲ, ಅಪಕ್ವವಾದ ಬೆಲ್ಲ.

**ಗಣ - ಸಂಖ್ಯಾನೆ (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)** | ಗಣಯತಿ, -ತೇ | ಗಣಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಗಣಯಿತಾ | ಗಣಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ಗಣಯತು, -ತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಎಣಿಸು, ಲೆಕ್ಕಮಾಡು. "ಲೀಲಾಕಮಲಪತ್ರಾಣಿ ಗಣಯಾಮಾಸ ಪಾರ್ವತೀ" ಕುಮಾಂ ೬-೮೪ |

**ಗಣ ಗಣ (ಪುಂ)** 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. ಗಣಯತೇ - ಗಣ (ಸಂಖ್ಯಾನೆ) + ಣಿच् "ಘಜ್" (೩-೩-೧೯) | "ಅಚ್" (೩-೩-೪೬) ವಾ | "ಋತಾನಿ ಶೃಷ್ಣನ್ ವಯಸಾಂಗಣೋಽಂತೇವಾಸಿತ್ವ- ಮಾಪ ಸ್ಫುಟಮಜ್ಞಾನಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೩-೪೪ | 2. ಪ್ರಮಥ ಗಣ. "ಗಣಾ ನಮೇಋಪ್ರಸವಾವತಂಸಾ ಭೂರ್ಜತ್ವಚಃ ಸ್ಪಶಂವತೀ- ದಧಾನಾಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೪೪ | 3. ಸಂಖ್ಯೆ. 4. ಸೇನೆಗಳ ಸಮೂಹ, ಅನೆ ಕುದುರೆ ರಥ ಮತ್ತು ಕಾಲಾಳುಗಳಿಂದ



ಕೂಡಿದ ಸೇನೆಗಳ ಒಂದು ಗುಂಪು. ಸೇನಾವಿವರಣ ಚಕ್ರ.

| ಸೇನೆಗಳ ಗುಂಪು | ಆನೆ | ರಥ | ಕುದುರೆ | ಕಾಲಾಳು |
|--------------|-----|----|--------|--------|
| ಪತ್ರಿ        | 1   | 1  | 3      | 5      |
| ಸೇನಾಮುಖಿ     | 3   | 3  | 9      | 15     |
| ಗುಲ್ಮ        | 9   | 9  | 27     | 45     |
| ಗಣ           | 27  | 27 | 81     | 135    |

“एकैभेकरथा अथवा पत्तिः पञ्चपदातिका । पत्यङ्ग-  
स्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादाख्या यथोत्तरम् । सेनामुखं गुल्मगणौ  
वाहिनी पृतना चमूः । अनीकिनी दशानीकिन्यक्षौहिणी ”  
अम० । [ಎವರಕ್ಕೆ “ಅನೀಕಿನಿ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]  
5. ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಗುಂಪು. ದೇವ ಮನುಷ್ಯ ರಾಕ್ಷಸ ವರ್ಗ  
ಗಳಿಗೆ ಸೇರಿದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಗುಂಪು.

**ದೇವಗಣದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು:** ಅಶ್ವಿನಿ, ಮೃಗಶಿರ, ಪುನರ್ವಸು, ಪುಷ್ಯ, ಹಸ್ತ, ಸ್ವಾತಿ, ಅನೂರಾಧ, ಶ್ರವಣ ಮತ್ತು ರೇವತಿ.

**ಮನುಷ್ಯಗಣದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು:** ಭರಣಿ, ರೋಹಿಣಿ, ಆರಿದ್ರ, ಪೂರ್ವಫಲ್ಗುನಿ, ಉತ್ತರಫಲ್ಗುನಿ, ಪೂರ್ವಾಷಾಢ, ಉತ್ತರಾಷಾಢ, ಪೂರ್ವಾಭಾದ್ರ ಮತ್ತು ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರ.

**ರಾಕ್ಷಸಗಣದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು:** ಕೃತ್ತಿಕೆ, ಆಶ್ಲೇಷ, ಮಖ, ಚಿತ್ತ, ವಿಶಾಖ, ಜ್ಯೇಷ್ಠ, ಮೂಲ, ಧನಿಷ್ಠ ಮತ್ತು ಶತಭಿಷ. ವಿವಾಹಕ್ಕಾಗಿ ವಧೂವರರ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಹೊಂದಿಕೆಗೆ ಈ ಗಣಕೂಟವನ್ನು ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ನೋಡಬೇಕು. 6. ಪಂಗಡ, ವಂಶ, ಬುಡಕಟ್ಟು. 7. ಭಂದ:ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವ ಗುರು ಲಭುರೂಪವಾದ ವರ್ಣಗಳ ಸಮೂಹ. (1) ಜಗಣ:, (2) ತಗಣ:, (3) ನಗಣ:, (4) ಭಗಣ:, (5) ಮಗಣ:, (6) ಯಗಣ:, (7) ರಗಣ: ಮತ್ತು (8) ಸಗಣ:, (9) ಗ: (ಗುರು:), (10) ಲ: (ಲಘು:). ಸಕಲ ವಾಙ್ಮಯವೂ ಈ ಹತ್ತು ವರ್ಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು. “म्यरस्तजभनगैर्लान्तैरेभिर्दशभिरक्षरैः । समस्तं वाङ्मयं व्याप्तं त्रैलोक्यमिव विष्णुना” वृ० २० । 8. ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಪದಗಳ ಮತ್ತು ಧಾತುಗಳ ಗುಂಪು.

(1) ಪದಗಳ ಗುಂಪು: ಗೌರಾದಿ:, उत्सादि:, बाह्यादि:, नडादि:, गर्गादि:, शुभ्रादि:, कल्याण्यादि:, दिगादि:, कथादि:, गुडादि: ಇತ್ಯಾದಿ.

(2) ಧಾತುಗಳ ಗುಂಪು: भ्वादि:, अदादि:, जुहोत्यादि:, दिवादि:, स्वादि:, तुदादि:, रुधादि:, तनादि:, क्थादि: ಮತ್ತು चुरादि: ।

**ಗಣಕ ಗಣಕ (ಫಂ) 1.** ದೈವಜ್ಞ. ಜ್ಯೋತಿಷಿಕ, ಜೋಯಿಸ. ಗಣಯತಿ—ಗಣ(ಸಂಖ್ಯಾನೆ) + ಣಿಕ್ “ण्वल्” (३-१-१३३) । 2. ಎಣಿಸುವವನು, ಲೆಕ್ಕಮಾಡುವವನು. 3. ದೇವಲ ನಿಂದ ವೈಶ್ಯ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಬೆರಕೆಜಾತಿಯವನು. 4. ಜರ್ಮಕಾರನ ಮಗ, ಒಬ್ಬ ಸಂಕೀರ್ಣಜಾತಿಯವನು.

**ಗಣಕಾರ್ಣಿಕಾ ಗಣಕರ್ಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಇಂದ್ರವಾರುಣಿ, ಹಾವುಮಕ್ಕಿ ಗಿಡ.

**ಗಣಕೂಟ ಗಣಕೂಟ (ಫಂ)** ವಿವಾಹದ ಸಲುವಾಗಿ ವಧೂವರರ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಹೊಂದಿಕೆಗೆ ನೋಡಬೇಕಾದ ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಕೂಟಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು, ವಧೂವರರ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಹೊಂದಿಕೆಗಾಗಿ ನೋಡಬೇಕಾದ ದೇವ ಮನುಷ್ಯ ರಾಕ್ಷಸ ವರ್ಗಗಳಿಗೆ ಸೇರಿದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಗುಂಪು. [“ಗಣ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಗಣಚಕ್ರಕ ಗಣಚಕ್ರಕ (ನಂ)** ಧಾರ್ಮಿಕರು ಒಟ್ಟುಗೂಡಿ ಊಟಮಾಡುವುದು. ಧಾರ್ಮಿಕಗಣಾನಾಂ ಚಕ್ರಮತ್ರ “कप्” । “धार्मिकाणां तु संभूय भोजने गणचक्रकम्” त्रिकाण्ड० । **ಗಣತಿಥಿ ಗಣತಿಥಿ (ವಿಂ)** ಅನೇಕ ಗುಂಪುಗಳ, ಅನೇಕ ಸಮೂಹಗಳ. ಗಣ “डट्” (४-२-४८) । ತಿಥುಕಾಗಮ: (५-२-५२) ।

**ಗಣದಾಸ ಗಣದಾಸ (ಫಂ)** ಅಗ್ನಿ ಮಿತ್ರರಾಜನ ಆಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ನಾಟ್ಯಾಚಾರ್ಯ.

**ಗಣದೇವತಾ ಗಣದೇವತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗುಂಪುಗುಂಪಾಗಿರುವ ದೇವತೆಗಳು. ಗಣಭೂತಾ ದೇವತಾ: । “आदित्यविश्ववसव-  
स्तुषिता भास्वरानिला: । महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च  
गणदेवता:” अम० ।

**ಗಣನ ಗಣನ (ನಂ)** 1. ಎಣಿಕೆ, ಎಣಿಸುವುದು. ಗಣಯತೆ—  
ಗಣ (ಸಂಖ್ಯಾನೆ) “ल्युट्” (३-३-११५) । “युच्”  
(३-३-१०७) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಣನಾ ಗಣನಾ. 2. ಸಂಖ್ಯೆ.  
“गणना न बभूव कृष्णपक्षे हतभग्नदिविकल्पितेऽपि  
तस्मिन्” याद० १५-१२४ । 3. ಎಣಿಕೆ, ಪರಿಗಣನೆ.  
“अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्” ।



**ಗಣನಾಥ ಗಣನಾಥ** (ಪುಂ) 1. ಗಣಪತಿ, ವಿನಾಯಕ, ದೇವ  
ಗಣಗಳ ಯಜಮಾನ. 2. ಈಶ್ವರ, ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.  
ಗಣಾನಾಥ: 3. ಗುಂಪುಗಳ ಯಜಮಾನ. -ನಾಯಕ:  
-ನಾಯಕಿ.

**ಗಣನೀಯ ಗಣನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಎಣಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಎಣಿ  
ಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಎಣಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 4. ಎಣಿಸ  
ಬೇಕಾದ. ಗಣ (ಸಂಖ್ಯಾನೆ) + ಣಿच् ಕರ್ಮದೊ "ಅನೀಯ್"  
(3-1-96) 1.

**ಗಣಪ ಗಣಪ** (ಪುಂ) 1. ಗಣಪತಿ, ವಿನಾಯಕ. 2. ಈಶ್ವರ.  
ಪರಶಿವ. ಪರಮೇಶ್ವರ. ಗಣಾನ್ ಪಾತಿ - ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ)  
"ಕ:" (3-2-3) 1.

**ಗಣಪತಿ ಗಣಪತಿ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಮುಖ ಗಣಗಳ ಯಜಮಾನ,  
ವಿನಾಯಕ, ವಿಘ್ನೇಶ್ವರ. ದೇವಗಣಾನಾಥ: 1. ["ಗಜಾನನ"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಗಣಪತಿಯು ವಿದ್ಯಾಧಿದೇವತೆ. ಸಕಲ  
ವಿಘ್ನಗಳಿಗೂ ನಿಯಾಮಕನಾಗಿದ್ದು ವಿಘ್ನಗಳೆಲ್ಲವನ್ನೂ  
ಪರಿಹರಿಸುವುದರಿಂದ ಸಕಲ ಕಾರ್ಯಾರಂಭದಲ್ಲೂ ವಿಘ್ನೇ  
ಶ್ವರನ ಪೂಜೆಯನ್ನು ಮಾಡಬೇಕು. ವಿಘ್ನಗಳ ಪರಿಹಾರ  
ಕ್ಕಾಗಿ ವಿನಾಯಕನನ್ನು ಬ್ರಹ್ಮರುದ್ರಾದಿಗಳು ನೇಮಿಸಿದರು.  
"ವಿನಾಯಕ: ಕರ್ಮವಿಘ್ನಸಿದ್ಧಯर्थ विनियोजित:। गणा-  
नामाधिपत्ये च रुद्रेण ब्रह्मणा तथा" याज्ञ० 1-291।  
ಮಹಾಭಾರತವನ್ನು ಬರೆಯಲು ಗಣಪತಿಯನ್ನು ಕೇಳಿ  
ಕೊಳ್ಳಬೇಕೆಂದು ಬ್ರಹ್ಮನು ಹೇಳಲು ವೇದವ್ಯಾಸ  
ಮಹರ್ಷಿಯು ಗಣಪತಿಯನ್ನು ಸ್ಮರಿಸಿದರು. ಆ ಕೂಡಲೆ  
ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದ ಗಣಪತಿಯನ್ನು ವೇದವ್ಯಾಸರು ವಿಶೇಷವಾಗಿ  
ಪೂಜಿಸಿ ಮಹಾಭಾರತವನ್ನು ಬರೆಯಲು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದರು.  
"एवमाभाष्य तं ब्रह्मा जगाम स्वं निवेशनम्। ततः  
सस्मार हेरम्बं व्यासः सत्यवतीसुतः। स्मृतमात्रो गणेशानो  
भक्तचिन्तितपूरकः। तत्राजगाम विघ्नेशो वेदव्यासो यतः  
स्थितः। पूजितश्चोपविष्टश्च व्यासेनोक्तस्तदानघ।  
लेखको भारतस्यास्य भव त्वं गणनायक। मयैव प्रोच्य-  
मानस्य मनसा कल्पितस्य च" भा० आदि० 1-94-99।

ಗಣಪತಿಯು ಮಹಾಭಾರತವನ್ನು ಬರೆಯಲು ಒಪ್ಪಿ  
ತನ್ನ ಲೇಖನಿಗೆ ಸ್ವಲ್ಪವೂ ವಿರಾಮಕೊಡದೆ ಹೇಳುತ್ತಿರ  
ಬೇಕೆಂದು ತಿಳಿಸಲು ತಾನು ಹೇಳುವುದನ್ನು ಬಿನ್ನಾಗಿ  
ಅರ್ಥಮಾಡಿಕೊಂಡು ಬರೆಯಬೇಕೆಂದೂ ವ್ಯಾಸರು ಹೇಳಿ  
ದರು. ಗಣಪತಿಯು "ಅಸ್ತು" ಎಂದನು. "श्रुत्वा तत्  
प्राह विघ्नेशो यदि मे लेखनी क्षणम्। लिखतो नाव-  
तिष्ठेत तदा स्यां लेखको हयहम्। व्यासोऽप्युवाच तं

देवमबुद्ध्वा मा लिख क्वचित्। ओमित्युक्त्वा गणेशोऽपि  
बभूव किल लेखकः" भा० आदि० 1-94, 99।  
2. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 3. ಗುಂಪುಗಳ ಯಜಮಾನ.

**ಗಣಪತಿಕಲ್ಪ ಗಣಪತಿಕಲ್ಪ** (ಪುಂ) ವಿಘ್ನ ಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ  
ಮಾಡುವ ಗಣಪತಿಯ ಪೂಜೆಯ ವಿಧಾನ. ಗಣಪತ್ಯುದ್ದೇಶೇನ  
ಕಲ್ಪ: 1. [ವಿವರಕ್ಕೆ ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕ್ಯ ಸ್ಮೃತಿಯಲ್ಲಿ "ಗಣಪತಿ  
ಕಲ್ಪ ಪ್ರಕರಣ" ನೋಡಿ.]

**ಗಣಪವತ ಗಣಪವತ** (ಪುಂ) ಪ್ರಮುಖಗಣಗಳಿಗೆ ಆಶ್ರಯ  
ವಾದ ಕೈಲಾಸಪರ್ವತ. ಗಣಭೂಮಿ: ಪವತ: 1. "ಕೆಲಾಸೋ  
ಗಣಪವತಶ್ಚ ರಜತಪ್ರಸ್ಥ: ಕುಬೇರಾಚಲ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1.

**ಗಣಭರ್ತ ಗಣಭರ್ತ** (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ,  
ಮಹಾದೇವ. ಗಣಾನಾಥ: 1. "शृङ्गाण्यमुष्य भजते  
गणभर्तुरक्षा कुर्वन् वधूजनमनस्सु शशाङ्कशङ्काम्" कुमा०  
4-42। 2. ವಿನಾಯಕ, ಗಣಪತಿ. 3. ಗುಂಪಿನ  
ನಾಯಕ, ಮುಂದಾಳು, ಮುಖಂಡ.

**ಗಣಭೋಜನ ಗಣಭೋಜನ** (ನಂ) ಕೂಟಭೋಜನ, ಗುಂಪಿನ  
ಊಟ, ಗುಂಪಿನಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ಮಾಡುವ ಊಟ.

**ಗಣಯಿತ್ ಗಣಯಿತ್** (ವಿಂ) ಎಣಿಸುವ, ಲೆಕ್ಕಮಾಡುವ.  
ಗಣ (ಸಂಖ್ಯಾನೆ) + ಣಿच् "ತೃच्" (3-1-133)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ತೀಪ್" (4-1-4) 1. -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

**ಗಣರಾತ್ರ ಗಣರಾತ್ರ** (ನಂ) ಅನೇಕ ರಾತ್ರಿಗಳ ಸಾಲು,  
ಅನೇಕ ರಾತ್ರಿಗಳು. ಗಣಾನಾಥ: ಬಹುನಾಥ: ರಾತ್ರಿಣಾಂ  
ಸಮಾಹಾರ:-ದ್ವಿಗು: (2-1-41) 1. "ಅಚ್" (4-4-67) 1.  
"ಗಣರಾತ್ರಂ ನಿಶಾ ಬಹುಯ:" ಅಮಂ 1.

**ಗಣರೂಪ ಗಣರೂಪ** (ಪುಂ) ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. "अर्काह्व-  
वसुकास्फोटगणरूपविकीरणा:" ಅಮಂ 1.

**ಗಣಶಸ್ ಗಣಶಸ್** (ಅವ್ಯಂ) ಗುಂಪುಗುಂಪಾಗಿ. ಗಣ  
ವಿಪ್ಸಾಯಾಂ ಕಾರಕಾರ್ಥೆ "ಶಸ್" (4-4-42) 1.

**ಗಣಹಾಸಕ ಗಣಹಾಸಕ** (ಪುಂ) 1. ಕರಿಯಕಚೋರ. ಗಣ  
ಹಾಸಯತಿ-ಹಸೆ (ಹಸನೆ) + ಣಿच् "ಘ್ವಲ್" (3-1-133) 1.  
"चण्डा धनहरी क्षेमदुष्पन्नगणहासका:" ಅಮಂ 1.  
(ವಿಂ) 2. ಗುಂಪನ್ನು ನಗಿಸುವವನು, ಗುಂಪನ್ನು ನಗು  
ವಂತೆ ಮಾಡುವವನು, ನಕಲಿಯವನು, ಹಾಸ್ಯಗಾರ.

**ಗಣಾಗ್ರಣಿ ಗಣಾಗ್ರಣಿ** (ಪುಂ) 1. ಗಣಪತಿ, ಪ್ರಮುಖಗಣ  
ಗಳ ಅಧಿಪತಿ. ಗಣಾನಾಮಗ್ರಣಿ: 1. 2. ಗುಂಪಿನ ಯಜಮಾನ,  
ಗುಂಪಿನ ಮುಂದಾಳು.

**ಗಣಾಚಲ ಗಣಾಚಲ** (ಪುಂ) ಪ್ರಮುಖ ಗಣಗಳಿಂದ ತುಂಬಿದ  
ಕೈಲಾಸಪರ್ವತ. ಗಣಭೂಮಿ: ಅಚಲ: 1.



**ಗಣಾಧಿಪ ಗಣಾಧಿಪ** (ಪುಂ) 1. ಗಣಪತಿ, ವಿನಾಯಕ. 2. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಗಣಾನಾಮಧಿಪ: -ಅಧಿಪತಿ: -ಅಧಿಪತಿ: "ಕ್ಷಣಮಭ್ಯಪದತ ಜನೇನ ಮೃಘಾ ಗಗನಂ ಗಣಾಧಿಪತಿಮೂರ್ತಿರिति" ಮಾಘಂ ೯-೨೭. 3. ಗುಂಪಿನ ಯಜಮಾನ, ಗುಂಪಿನ ಮುಖಂಡ.

**ಗಣಾಧೀಶ ಗಣಾಧೀಶ**, -ಅಧ್ಯಕ್ಷ -ಅಧ್ಯಕ್ಷ (ಪುಂ) "ಗಣಾಧಿಪ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಗಣಾನಾಮಧೀಶ: ಅಧ್ಯಕ್ಷೋ ವಾ। **ಗಣಾನ ಗಣಾನ** (ನಂ) ಬಹುಜನರಿಗೆ ಮಾಡಿದ ಅನ್ನ, ಮಠ ಭತ್ತ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಲ್ಲಿ ಅನೇಕರಿಗೆ ಮಾಡಿದ ಅನ್ನ. ಗಣಾಯ ಅನ್ನಮ್। "ಗಣಾನ ಗಣಿಕಾನಂ ಚ ವಿಧುಷಾ ಚ ಜುಗುಪ್ಸಿತಮ್" ಮನುಂ ೪-೨೦೯।

**ಗಣಾಭ್ಯಂತರ ಗಣಾಭ್ಯಂತರ** (ವಿಂ) 1. ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಸಮಾನವಾದ ಮಠ ಭತ್ತಗಳಲ್ಲಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವವನು, ಧಾರ್ಮಿಕ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಸೇರಿ ಜೀವಿಸುವವನು. 2. ಗುಂಪಿನ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಸೇರಿರುವವನು. "ಬ್ರಹ್ಮದ್ವಿತ್ ಪರಿವಿತ್ತಿಶ್ಚ ಗಣಾಭ್ಯಂತರ ಏವ ಚ" ಮನುಂ ೩-೧೫೪।

**ಗಣಿ ಗಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಣನೆ, ಎಣಿಕೆ. ಗಣ (ಸಂಖ್ಯಾನೇ) "ಇನ್" (ತಂ ೪-೧೧೭)।

**ಗಣಿಕಾ ಗಣಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೇಷ್ಟ್ರಾಂಗನೆ, ಸೂಳೆ. ಗಣ: ಸಮೂಹೋ ಭರ್ತೃತ್ವೇನಾಸ್ತಿಸ್ಯಾ: "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೫)। "ನಿರಕಾಸಯದ್ರವಿಮಪೇತವಸ್ತು ವಿಯದಾಲಯಾದಪರದಿಗಣಿಕಾ" ಮಾಘಂ ೯-೧೦। 2. ಕಾಡುಮಲ್ಲಿಗೆ. 3. ತಕ್ಕಿಲೆಗಿಡ. 4. ಹೆಣ್ಣಾನೆ. "ಗಣಿಕೇಮ್ಯಾ ಯುಷಿಕಾಃ ತರ್ಕಾರ್ಯಾ ಪಞ್ಚ-ಯೋಷಿತಿ" ಹೇಮಂ। 5. ನೆಲ್ಲಿಗಿಡದ ಒಂದು ಭೇದ.

**ಗಣಿಕಾರಿಕಾ ಗಣಿಕಾರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೆಲ್ಲಿಗಿಡದ ಒಂದು ಭೇದ.

**ಗಣಿತ ಗಣಿತ** (ನಂ) 1. ಗಣನೆ, ಎಣಿಕೆ. ಲೆಕ್ಕಾಚಾರ. ಗಣ (ಸಂಖ್ಯಾನೇ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। "ಪಾರೆ ಪರಾರ್ಥ ಗಣಿತಂ यदि स्याद्गणयनि:शेषगुणोऽपि स स्यात्" ನೇಷಂ ೩-೪೦। 2. ಲೆಕ್ಕ. ಗಣಿತಶಾಸ್ತ್ರ. 3. ಗ್ರಹಗಳ ಸ್ಥಿತಿ ಚಲನೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಲೆಕ್ಕಾಚಾರ. (ವಿಂ) 4. ಎಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಗಣ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಗಣಿತವ್ಯ ಗಣಿತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಎಣಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಎಣಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಎಣಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 4. ಪರಿಗಣಿಸಲ್ಪಡುವ.

**ಗಣಿತಾಧ್ಯಾಯ ಗಣಿತಾಧ್ಯಾಯ** (ಪುಂ) ಸಿದ್ಧಾಂತ ಶಿರೋಮಣಿಯ ಒಂದು ಅಧ್ಯಾಯ. ಗ್ರಹಗಳ ಚಲನವಲನಗಳನ್ನು

ತಿಳಿಸುವ ಈ ಗ್ರಂಥದ ಒಂದು ಭಾಗ. ಗಣಿತಮಧೀಯತೇಽವ ಅಧಿ + ಇಡ್ (ಅಧ್ಯಯನೇ) ಅಧಿಂ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೨೨)।

**ಗಣಿತಿನ್ ಗಣಿತಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಗಣಿತಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. 2. ಎಣಿಸುವವನು. ಲೆಕ್ಕಾಚಾರ ಮಾಡುವವನು. ಗಣಿತಮನೇನ "ಇತಿ:" (೪-೨-೮೮)।

**ಗಣೇಯ ಗಣೇಯ** (ವಿಂ) ಎಣಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಗಣ (ಸಂಖ್ಯಾನೇ) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" (೩-೧-೯೭)। "ಪಾರೆ ಪರಾರ್ಥ ಗಣಿತಂ यदि स्यात् गणयनि:शेषगुणोऽपि स स्यात्" ನೇಷಂ ೩-೪೦।

**ಗಣೇರು ಗಣೇರು** (ಪುಂ) 1. ಬೆಟ್ಟಕಣಿಗಿಲೆ ಗಿಡ. ಗಣ (ಸಂಖ್ಯಾನೇ) "ಀಃ" ಬಾಹುಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಹೆಣ್ಣಾನೆ. 3. ಮೇಶ್ವ, ಸೂಳೆ. "ಗಣೇರು: ಕರ್ಣಿಕಾರದ್ರೋ ಕರಿಣಿವೇದ್ಯಯೋ: ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ।

**ಗಣೇರುಕಾ ಗಣೇರುಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಲೆಹಿಡುಕೆ, ಕುಂಟೆಣೆ. ಗಣೇರುಕು ವೇಷ್ಯಾಸು ಕಾಯತಿ-ಕೇ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ:" (೩-೨-೪)। "ಅಥ ಕುಡುನಿ। ಇಜ್ಯಾ ಸ್ಯಾದ್ರಲ್ತತಾಲಿ ಚ ಘಟೇದಾಸೀ ಗಣೇರುಕಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಗಣೇಶ ಗಣೇಶ**, -ईशान -ಈಶಾನ, -ईश्वर -ಈಶ್ವರ (ಪುಂ) 1. ಗಣಪತಿ, ವಿನಾಯಕ. 2. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಗಣಾನಾಮಿಶ: ईशान: ईश्वरो वा।

**ಗಣೇಶಖಂಡ ಗಣೇಶಖಂಡ** (ಪುಂ) ಸ್ಕಾಂದಪುರಾಣದಲ್ಲಿ ಗಣಪತಿಯ ಅವಿರ್ಭಾವ ಮುಂತಾದುವನ್ನು ವರ್ಣಿಸಿರುವ ಒಂದು ಭಾಗ.

**ಗಣ್ಡ ಗಣ್ಡ** (ಪುಂ) 1. ಕಪೋಲ, ಕೆನ್ನೆ. ಗಡಿ (ವದನೇಕದೇಶ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಗಣ್ಡೇಷು ಸ್ಫುಟರಚನಾಜ್ಜಪತ್ರ-ವಲ್ಲಿ ಪರ್ಯಾಪ್ತಂ ಪಯಸಿ ವಿಭೂಷಣಂ ವಧೂನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೮-೫೯। 2. ಅನೆಯ ಕಪೋಲ, ಅನೆಯ ಹಣೆ ಮತ್ತು ಕೆವಿಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ. "ಅದ್ರೀಂದ್ರಕುಂಜಚರಕುಂಜರ-ಗಣ್ಡಕಾಪಸಂಕ್ರಾಂತದಾನಪಯಸೋ ವನಪಾದಪಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೫-೪೩। 3. ಗುರುತು, ಚಿಹ್ನೆ. "ಗಣ್ಡೋಜ್ಜವಲಾಮುಜ್ಜವಲನಾಭಿಚಕ್ರಯಾ ವಿರಾಜಮಾನಾ ನವಯೋದರಶ್ರಿಯಾ" ಮಾಘಂ ೧೨-೮। 4. ಹೊಪ್ಪೆ, ಗುಳ್ಳೆ. 5. ಗಡ್ಡೆ, ಕುರು. "ಅಯಮಪರೋ ಗಣ್ಡಸ್ಯೋಪರಿ ಪಿಡಕ: ಸಂವೃತ:" ಮುಡ್ರಾಂ ೫। 6. ಒಂದು ವಿಧ ವೀರ್ಯಂ. "ವಾಕ್ಕೇಲ್ಯಧಿವಲೇ ಗಣ್ಡಮವಸ್ಯಂದಿತನಾಲಿಕೇ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೫೬। ಪ್ರಕೃತಾರ್ಥಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದಂತೆ ಅರ್ಥಾಂತರದಲ್ಲಿ ಆಡುವ ಕಳವಳದ ಮಾತು. "ಗಣ್ಡಂ ಪ್ರಸ್ತುತಸಮ್ಬಂಧಿ-ಭಿನ್ನಾರ್ಥ ಸತ್ವರಂ ವಚ:" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೬೦। "ಅಧ್ಯಾಸಿತಂ ತವ ಚಿರಾಜ್ಜಘನಸ್ಥಲಸ್ಯ ಪರ್ಯಾಪ್ತಮೇವ ಕರಮೋ ಮಮೋ-



ಯುಗ್ಮಮ್" (ಪ್ರವಿಶ್ಯ) ಕಚ್ಚುಕೀ — "ದೇವ ಭಗ್ನಂ ಭಗ್ನಮ್" ಇತ್ಯಾದಿ. ಇಲ್ಲಿ ರಥದ ಕೇತನ (ಧ್ವಜ)ವು ಭಗ್ನವಾಯಿತೆಂದು ಅರ್ಥಾಂತರದಲ್ಲಿ ಆಡಿದ ಕಂಚುಕಿಯ ಸಂಭ್ರಮದ ಮಾತು ಪ್ರಸ್ತುತವಾದ ಊರುಯುಗ್ಮಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿ ದುರ್ಯೋಧನನ ಊರುಭಂಗ ಸಂಬಂಧವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುದರಿಂದ "ಗಂಡ" ವೆಂಬ ವೀಧಿಯು ಒಂದು ಅಂಗ. 7. ಕುದುರೆಯ ಒಂದು ಅಭರಣ. 8. ನೋರೆ. 9. (ಜ್ಯೋತಿಷದಲ್ಲಿ) ಸ್ವಲ್ಪ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು (27) ಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ ಹತ್ತನೆಯದು. 10. ಅಶ್ವಿನಿ ಮೊದಲಾದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಗಂಡಕಾಲ; ಅಶ್ವಿನಿ ಮಹಿ ಮತ್ತು ಮೂಲಾ ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲು ಮೂರು ಘಳಿಗೆಗಳೂ ಆಶ್ಲೇಷ ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಮತ್ತು ರೇವತೀ ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಕೊನೆಯ ಮೂರು ಘಳಿಗೆಗಳೂ ಗಂಡಕಾಲ. ಈ ಗಂಡಕಾಲವು ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಮತ್ತು ಮೂಲಗಳಿಗೆ ಹಗಲಿ ನಲ್ಲೂ ಆಶ್ಲೇಷ ಮತ್ತು ಮಹಿಗಳಿಗೆ ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲೂ ರೇವತಿ ಮತ್ತು ಅಶ್ವಿನಿ ನಕ್ಷತ್ರಗಳಿಗೆ ಎರಡು ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲಗಳಲ್ಲೂ ಇರುವುದು. ಈ ಗಂಡಕಾಲದಲ್ಲಿ ಶಿಶುವು ಹುಟ್ಟಿದರೆ ದೋಷ. ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದರೆ ಶಿಶು ವಿಗೂ ರಾತ್ರಿಕಾಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದರೆ ತಾಯಿಗೂ ಹಗಲು ಹುಟ್ಟಿದರೆ ತಂದೆಗೂ ದೋಷ. "ಸಂಧ್ಯಾರಾತ್ರಿದಿವಾಭಾಗೇ ಗಂಡಯೋಗೋದ್ಭವಃ ಶಿಶುಃ. ಆತ್ಮಾನಂ ಮಾತರಂ ತಾತಂ ವಿनिಹಂತಿ ಯಥಾಕ್ರಮಮ್". 11. ಖಡ್ಗಮೃಗ. 12. ವೀರ. 13. ಕತ್ತಿನ ಮೇಲಿನ ಒಂದು ಗಂಟು. "ಗಂಡಃ ಸ್ಯಾತ್ ಪುಸಿ ಖಡ್ಗಗಿರಿ. ಗ್ರಹಯೋಗಪ್ರಭೇದೇ ಚ ವೀರ್ಯಜ್ಞೇ ಪಿಡಕೇಽಪಿ ಚ. ಚಿಹ್ನವೀರಕಪೋಲೇಃ ಹಯಭೂಷಣಬುದ್ಬುದೇ" ಮೇದಿಂ. 14. ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ. 15. ಉಪಾಯ. "ಗಂಡೋ ದ್ರೋಣ ಕಪೋಲೇ ಪಿಡಕೇ ಗವೇ ಮೃಗಾಂತರೇ ಯೋಗೇ. ಮೂಲಾದಿದುಷ್ಟಭಾಗೇ ಹಯಭೂಷಣ ಬುದ್ಬುದೇಽಪ್ಯುಪಾಯೇ ಚ" ನಾನಾರ್ಥರಂ.

**ಗಂಡಕ ಗಂಡಕ (ಪುಂ)** 1. ಖಡ್ಗಮೃಗ. ಗಂಡ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ". 2. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಜಿಷ್" (೪-೧-೬೩). **ಗಂಡಕಿ ಗಂಡಕೀ**. 2. ವಿಷ್ಣು. 3. ಒಂದು ವಿದ್ಯೆ. 4. ಮೂನಿನ ಮರಿ. "ಗಂಡಕಃ ಶಕುಲಾರ್ಭಕಃ" ಅಮಂ. 5. ಮೊಪ್ಪ, ಗುಳ್ಳೆ. "ಅನೇಕವೇಶಾಘಾತನಿರ್ಮಿತಬಹುಗಾತ್ರ-ಗಂಡಕಮ್" ಕಾದಂ. 6. ಒಂದು ಅಭರಣ, ಒಂದು ಒಡವೆ. "ವ್ಯಾಘ್ರನಖಪಡ್ತಿಮಂಡಿತಾ ಗಂಡಕಾಭರಣಾ ಚ" ಕಾದಂ. 7. ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು. 8. ಗ್ರಂಥಿ, ಗಂಟು. (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 9. ಪಾಂಜಾಲ ದೇಶಕ್ಕೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ದೇಶ. 10. ಆ ದೇಶದ ರಾಜರು. "ತತಃ ಸ ಗಂಡಕಾನ್ ಶೂರೋ

ವಿದೇಹಾನ್ ಭರತರ್ಷಭಃ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೨೯-೪. 11. ಆ ದೇಶದ ಜನರು.

**ಗಂಡಕಾರಿ ಗಂಡಕಾರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮುಟ್ಟಿದರೆ ಮುನಿವ ಗಿಡ.

**ಗಂಡಕಿ ಗಂಡಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಹೆಣ್ಣು ಖಡ್ಗಮೃಗ. 2. ನೇಪಾಳ ಮತ್ತು ಉತ್ತರ ಭಾರತದಲ್ಲಿ ಪ್ರವಹಿಸುತ್ತಿರುವ ಒಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧ ನದಿ. ಈ ನದಿಯಲ್ಲಿ ನೇಪಾಳದ ಗಡಿಯೊಳಗೆ ಸಿಕ್ಕುವ ಶಿಲೆಗಳೇ ಸಾಲಗ್ರಾಮಗಳು. ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಪರಮಾತ್ಮನ ಸಾನ್ನಿಧ್ಯವಿರುವುದೆಂಬ ಐತಿಹ್ಯವುಂಟು. 3. ಗಂಡಕೇನದಿಯ ಅಧಿಷ್ಠಾತ್ಯದೇವತೆ. ಈ ದೇವಿಯು ವಿಷ್ಣುವನ್ನು ಕುರಿತು ಉಗ್ರವಾದ ತಪಸ್ಸನ್ನಾಚರಿಸಿ ವಿಷ್ಣುವು ತನ್ನ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಬಂದಿರಬೇಕೆಂಬ ವರವನ್ನು ಕೇಳಿದಳು. ಸಾಲಗ್ರಾಮ ರೂಪದಿಂದ ನದಿಯ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಇರುವುದಾಗಿ ವಿಷ್ಣುವು ವರವನ್ನಿತ್ತುದರಿಂದ ಸಾಲಗ್ರಾಮಗಳನ್ನು ಎಲ್ಲರೂ ಆರಾಧಿಸುತ್ತಿರುವರು. "ಗಂಡಕಯಾಪಿ ಪುರಾ ತಪ್ತಂ ವರ್ಷಣಾಮಯುತಂ ವಿಧೇ. ತತಃ ಸಾಕ್ಷಾಜ್ಜಗನ್ನಾಥೋ ಹರಿರಭಕ್ತಜನಪ್ರಿಯಃ. ತವಾಚ ಮಧುರಂ ವಾಕ್ಯಂ ಪ್ರೀತಃ ಪ್ರಣತ-ವತ್ಸಲಃ. ಗಂಡಕಿ ತ್ವಾಂ ಪ್ರಸನ್ನೋಽಸ್ಮಿ ತಪಸಾ ವಿस्ಮಿತೋಽನ್ಯಥೇ. ಕಿಂ ದೇಯಂ ತದ್ವದಸ್ವಾಶು ಪ್ರೀತೋಽಸ್ಮಿ ವರವರ್ಣಿನಿ. ಗಂಡಕಯಾಪಿ ಪುರೋ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಶಕ್ತ್ಯುಚಕ್ರಗದಾಧರಮ್. ಪ್ರಾಚ್ವಲಿಃ ಪ್ರಣತಾ ಭೂತ್ವಾ ಮಧುರಂ ವಾಕ್ಯಮಬ್ರವೀತ್. ಯದಿ ದೇವ ಪ್ರಸನ್ನೋಽಸಿ ದೇಯೋ ಮೇ ವಾಚ್ಛಿತೋ ವರಃ. ಮಮ ಗರ್ಭಗತೋ ಭೂತ್ವಾ ವಿಷ್ಣೋ ಮತ್ಪುತ್ರತಾಂ ವ್ರಜ. ತತಃ ಪ್ರಸನ್ನೋ ಭಗವಾನ್ ಚಿಂತಯಾಮಾಸ ಗೋಪತೇ. ಗಂಡಕೀಮವದತ್ ಪ್ರೀತಃ ಶೃಣು ದೇವಿ ವಚೋ ಮಮ. ಸಾಲಗ್ರಾಮ-ಶಿಲಾರೂಪಿ ತವ ಗರ್ಭಗತಃ ಸದಾ. ತಿಷ್ಠಾಮಿ ತವ ಪುತ್ರತ್ವೇ ಭಕ್ತಾನುಗ್ರಹಕಾರಣಾತ್. ಮತ್ಸಾನ್ನಿಧ್ಯಾನ್ನದೀನಾಂ ತ್ವಮತಿಶ್ರೇಷ್ಠಾ ಭವಿಷ್ಯಸಿ. ದರ್ಶನಾತ್ ಸ್ಪರ್ಶನಾತ್ ಸ್ನಾನಾತ್ ಪಾನಾಚ್ಚೈವಾವ-ಗಾಹನಾತ್". ಇತ್ಯಾದಿ ವರಾಹಪುಂ. "ಗಂಡಕಯಾಶ್ಚೈಕದೇಶೋ ಚ ಸಾಲಗ್ರಾಮಸ್ಥಲಂ ಸ್ಮೃತಮ್. ಪಾಪಾಣಾಂ ತದ್ಭವಂ ಯತ್ತತ್ ಸಾಲಗ್ರಾಮಮಿತಿ ಸ್ಮೃತಮ್" ಸ್ಮೃತಿಃ.

**ಗಂಡಕಿಶಿಲಾ ಗಂಡಕೀಶಿಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸಾಲಗ್ರಾಮ ಶಿಲೆ.

**ಗಂಡಕುಸುಮ ಗಂಡಕುಸುಮ (ನಂ)** ಆನೆಯ ಮದೋದಕ, ಆನೆಯ ಕಪೋಲದಿಂದ ಹೊರಡುವ ಮದದ ನೀರು. "ತುಕ್ತೋ ಗಂಡಕುಸುಮಮ್" ಹಾರಾಂ.

**ಗಂಡಕುಪ ಗಂಡಕೂಪ (ಪುಂ)** ಬೆಟ್ಟದ ತುದಿಯ ಪ್ರದೇಶ. ಗಂಡೆ ಗಂಡವದುದುಪವಂತಭೃಗೌ ಕುಪ ಇವ. "ತದೇಶೋ ಗಂಡ-ಕುಪಸ್ತು ಪವಂತಸ್ಯಾಭಿಖೀಯತೇ" ಹಾರಾಂ.



**ಗಣಕಫಲಕ ಗಂಡಕಫಲಕ (ನಂ)** ಹಲಗೆಯಂತೆ ವಿಸ್ತಾರವಾದ ಕೆನ್ನೆ. ಗಣಕ: ಫಲಕಮಿವ. "ಧೃತಮುಖಗಣಕಫಲಕ-ವಿಬಭುಕಸದ್ವಿರಾಸ್ಯಕಮಲೈ: ಪ್ರಮದಾ:" ಮಾಘಂ ೯-೪೭.

**ಗಣಕಭಿತ್ತಿ ಗಂಡಭಿತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗೋಡೆಯಂತೆ ವಿಸ್ತಾರವಾದ ಕೆನ್ನೆ. ಗಣಕ: ಭಿತ್ತಿರಿವ. "ಅಥ ಮದಗುಣಕಲೋಕ-ಪಾಲದ್ವಿಪಾನಾಮನುಗತಮಲಿವೃಂದೈರ್ಗಣಕಭಿತ್ತಿವಿಹಾಯ" ರಘುಂ ೧೨-೧೦೨.

**ಗಣಕಮಾಲಾ ಗಂಡಮಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕತ್ತಿನಲ್ಲಿ ರಸಗ್ರಂಥಿಯು ಕಟ್ಟುವುದರಿಂದ ಆಗುವ ಉರಿತದ ಬೇನೆ, ಗಂಡಮಾಲೆಯೆಂಬ ಒಂದು ರೋಗ.

**ಗಣಕಮಾಲಿಕಾ ಗಂಡಮಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮುಟ್ಟಿದರೆ ಮುನಿವ ಗಿಡ. ಗಣಕಾನಾಂ ಗ್ರಂಥಿನಾಂ ಮಾಲಾ ಯತ್ರ.

**ಗಣಕಮಾಲಿನ್ ಗಂಡಮಾಲಿನ್ (ವಿಂ)** ಗಂಡಮಾಲೆಯೆಂಬ ರೋಗವುಳ್ಳವನು. ಗಣಕಮಾಲಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೬). "ಆಮರೀ ಗಣಕಮಾಲೀ ಚ ಶಿವಶ್ರಯೋ ಪಿಶುನಸ್ತಥಾ" ಮನುಂ ೩-೧೬೧.

**ಗಣಕಯಂತ ಗಂಡಯಂತ (ಪುಂ)** ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಗಡಿ (ವದನೇಕದೇಶ) "ಇಚ್" (೩ಂ ೩-೧೨೮).

**ಗಣಕಲೇಖಾ ಗಂಡಲೇಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಕಪೋಲ, ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ ಗಂಡಸ್ಥಳ. ಲಿಖ್ಯತೇಷ್ವ ಲೇಖಾ ಸ್ಥಳೀ - ಗಣಕ: ಲೇಖೇವ. "ತದೀಷದಾರ್ಪಣಗಣಕಲೇಖಮುಚ್ಛ್ವಾಸಿಕಾಲಾ-ಜ್ಜನರಾಗಮಕ್ಷಣೋ:" ಕುಮಾಂ ೭-೮೨.

**ಗಣಕಶಿಲಾ ಗಂಡಶಿಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಬಂಡೆ, ದೊಡ್ಡ ಕಲ್ಲು. ಗಣಕ: ಭೂಮೇಶ್ವರತಪ್ರದೇಶ ಇವ ಶಿಲಾ. "ಇಂಟೊಡ್ಗುಣಶಿರೋಮಾತ್ರ: ಕ್ಷಣಾದ್ಗಣಕಶಿಲಾಸಮ:" ಭಾಗಂ ೩-೧೩-೩೧.

**ಗಣಕಶಿಲ ಗಂಡಶಿಲ (ಪುಂ)** 1. ಬೆಟ್ಟದಿಂದ ಉರುಳಿ ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಿದ್ದಿರುವ ದೊಡ್ಡ ಬಂಡೆ. ಶಿಲಾನಾಂ ಗಣಕ ಇವ. ಪರಿನಿಪಾತ: "ಅಥ ಗಣಕಶಿಲೋದ್ರಿಚ್ಯುತಸ್ಥಲಾಶಮಭಾಲಯೋ:" ಹೇಮಂ. "ಸಂಪ್ರಾಪೇ ನಿಸ್ತುತಮದಾಮ್ಬುಭಿರ್ಗಜೇಂದ್ರೈ: ಪ್ರಸ್ಯಂದಿ-ಪ್ರಚಲಿತಗಣಕಶಿಲಶೋಭಾ" ಕಿರಾಂ ೭-೩೭. 2. ಹಣೆ.

**ಗಣಕಸಾಹ್ಯಾ ಗಂಡಸಾಹ್ಯಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗಂಡಕೇನದಿ. "ಗಜ್ಞಾ ಚ ಶತಕುಂಭಾ ಚ ಸರಯುರ್ಗಣಕಸಾಹ್ಯಯಾ" ಭಾಂ ವನಂ.

**ಗಣಕಸ್ಥಲ ಗಂಡಸ್ಥಲ (ನಂ)** ಕಪೋಲ ಪ್ರದೇಶ, ಕೆನ್ನೆ, ಹಣೆ ಮತ್ತು ಕಿವಿಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ: (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸ್ಥಳೀ -ಸ್ಥಲೀ. "ಚಕಾರ ಬಾಣೇರಸುರಾಜ್ಞನಾನಾಂ ಗಣಕಸ್ಥಳೀ: ಪ್ರೋಷಿತಪತ್ರಲೇಖಾ:" ರಘುಂ ೬-೭೨.

**ಗಣಕಾಙ್ಗ ಗಂಡಾಂಗ (ಪುಂ)** ಖಡ್ಗಮೃಗ. ಗಣಕ ಇವ ಅಙ್ಗಮಸ್ಯ.

**ಗಣಕಾಂತ ಗಂಡಾಂತ (ನಂ)** ಕೆಲವು ತಿಥಿ-ನಕ್ಷತ್ರ-ಲಗ್ನಗಳ ಸಂಧಿಕಾಲ. ಯಾತ್ರ ಉದ್ವಾಹ ಮೊದಲಾದುವು ಈ ಸಂಧಿಕಾಲದಲ್ಲಿ ನಿಷಿದ್ಧ.

**ತಿಥಿಗಂಡಾಂತ:** ಪೂರ್ಣ (ಪಂಚಮೀ, ದಶಮೀ, ಪೂರ್ಣಿಮಾ) ತಿಥಿಗಳ ಕೊನೆಯ ಒಂದು ಘಳಿಗೆಯೂ ನಂದ (ಪ್ರತಿಪತ್, ಪಷ್ಕಿ, ಏಕಾದಶೀ) ತಿಥಿಗಳ ಮೊದಲನೆಯ ಒಂದು ಘಳಿಗೆಯೂ ಅಂದರೆ ಪಂಚಮೀ-ಪಷ್ಕಿಗಳ ದಶಮೀ-ಏಕಾದಶಿಗಳ ಮತ್ತು ಪೂರ್ಣಿಮಾ-ಪ್ರತಿಪತ್ತುಗಳ ಅಂತರಾಳದ ಎರಡೆರಡು ಘಳಿಗೆಗಳು ತಿಥಿಗಂಡಾಂತಗಳು.

**ನಕ್ಷತ್ರಗಂಡಾಂತ:** ರೇವತೀ ಆಶ್ಲೇಷಾ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಎರಡು ಘಳಿಗೆಗಳೂ ಅಶ್ವಿನೀ ಮುಖಾ ಮೂಲಾ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಮೊದಲನೆಯ ಎರಡು ಘಳಿಗೆಗಳೂ ಅಂದರೆ ರೇವತೀ-ಅಶ್ವಿನೀ ಆಶ್ಲೇಷಾ-ಮುಖಾ ಮತ್ತು ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ-ಮೂಲಾ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಅಂತರಾಳದ ನಾಲ್ಕು ನಾಲ್ಕು ಘಳಿಗೆಗಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಂಡಾಂತಗಳು.

**ಲಗ್ನಗಂಡಾಂತ:** ಕರ್ಕಾಟಕ ವೃಶ್ಚಿಕ ಮೀನಗಳ ಕೊನೆಯ ಅರ್ಧ ಘಳಿಗೆ ಸಿಂಹ ಧನುಸ್ಸು ಮೇಷ ಲಗ್ನಗಳ ಮೊದಲನೆಯ ಅರ್ಧ ಘಳಿಗೆ ಅಂದರೆ ಕರ್ಕಾಟಕ-ಸಿಂಹ ವೃಶ್ಚಿಕ-ಧನುಸ್ಸು ಮತ್ತು ಮೀನ-ಮೇಷ ಲಗ್ನಗಳ ಅಂತರಾಳದ ಒಂದೊಂದು ಘಳಿಗೆಯೂ ಲಗ್ನಗಂಡಾಂತ.

"ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಪೌಷ್ಣಭಸಾರ್ಪಭಾನ್ಯಘಟಿಕಾಯುಗಮ್ ಚ ಮೂಲಾಶ್ವಿನೀ ಪಿಶ್ಯಾದೀ ಘಟಿಕಾಢ್ಯಂ ನಿಗದಿತಂ ತದ್ವಸ್ಯ ಗಣಕಾಂತಕಮ್. ಕರ್ಕಾಟ್ಯಣಜಭಾನ್ತತೋಽಘಟಿಕಾ ಸಿಂಹಾಶ್ವಮೇಷಾದಿಗಾ ಪೂರ್ಣಾಂತೇ ಘಟಿಕಾತ್ಮಕಂ ತ್ವಶುಭದಂ ನಂದಾತಿಶೇಷಾದಿಮಮ್" ಮುಂ ಚಿಂ.

**ಗಣಕಾರಿ ಗಂಡಾರಿ (ಪುಂ)** ಕೋವಿದಾರವೃಕ್ಷ, ಕೆಂಗಾಂಚಾಳದ ಗಿಡ. ಗಣಕಸ್ಯ ಗಣಕರೋಗಸ್ಯಾರಿ:

**ಗಣಕಾಲಿ ಗಂಡಾಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಬಳ್ಳಿಗಿರಿ.

**ಗಣಕ ಗಂಡಿ (ಪುಂ)** ಬುಡದಿಂದ ರೆಂಬೆಗಳವರೆಗಿನ ವೃಕ್ಷದ ಮಧ್ಯದ ದೂಲ. ಗಡಿ (ವದನೇಕದೇಶ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭).

**ಗಣಕ ಗಂಡಿಕ (ಪುಂ)** ಬೆಣಚುಕಲ್ಲು, ನೋರೆಯಂತಿರುವ ಸಣ್ಣ ಕಲ್ಲುಗಳು. ಗಣಕ: ಬುದ್ಬುದ ಇವಾಕಾರೋಽಸ್ತಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೪).

**ಗಣಕೀರ ಗಂಡೀರ (ಪುಂ)** ಮಂಗರವಳ್ಳಿ. ಗಡಿ (ವದನೇಕದೇಶ) "ಈನ್" ಬಾಹುಂ. "ಗಣಕೀರಸ್ತು ಸಮಠಿಲಾ" ಅಮಂ.

**ಗಣಕು(ಗ್ಡ) ಗಂಡು(ಡೂ) (ಪುಂ)** 1. ತಲೆದಿಂಬು. ಗಡಿ (ವದನೇಕದೇಶ) "ಉ:" ಬಾಹುಂ "ಊಡ್" (ವಾಂ ೪-೧-೬೬) ವಾ. 2. ಗ್ರಂಥಿ, ಗಂಟು. 3. ಎಲುಬು, ಮೂಳೆ.



ಗಣ್ಡುಲ ಗಂಡೂಲ (ವಿಂ) ಗ್ರಂಥಿಯುಳ್ಳ, ಗಂಟುಳ್ಳ, ಗಣ್ಡು-  
ರಸ್ಯಾಸ್ತಿ ವಾ "ಲಕ್" (೪-೨-೯೭)। ಪಕ್ಷೆ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪)। ಗಣ್ಡುಮಾನ್ ಗಂಡೂಮಾನ್.

ಗಣ್ಡುಪದ ಗಂಡೂಪದ (ಪುಂ) ಕೆಸರಿನಲ್ಲಿರುವ ಎರುಬು  
ಹುಳು. ಗುಣ್ಡವೋ ಗ್ರಂಥಯಃ ಪದಾನ್ಯಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೨-೯೩)। -ಪದೀ-ಪದೀ. "ಗಣ್ಡುಪದಃ ಕಿಂಚುಲುಕೋ  
ನಿಹಾಕಾ ಗೋಧಿಕಾ ಸಮೇ"। "ಶಿಲೀ ಗಣ್ಡುಪದೀ" ಅಮಂ।

ಗಣ್ಡುಷ ಗಂಡೂಷ (ಪುಂ) 1. ಬಾಯಿಯೊಳಗಿನ ನೀರು,  
ಬಾಯಿ ತುಂಬಿ ಇರುವ ನೀರು. ಗಡಿ (ವದನೇಕದೇಶ) "ಝನ್" (೩ಂ ೪-೭೮)। "ಗಣ್ಡುಷಮುಜ್ಜಿತವತಾ ಪಯಸಃ ಸರೋಃ  
ನಾಗೇನ ಲಬ್ಧಪರವಾರಣಮಾಸ್ತೇನ" ಮಾಘಂ ೪-೩೬। 2. ಬಾಯಿ  
ಮುಕ್ಕಳಿಸಲು ಕೈತುಂಬಿ ಇರುವ ನೀರು. ಬೆರಳುಗಳನ್ನು  
ಬಗ್ಗಿಸಿ ಮಡಿಸಿದ ಹಸ್ತದ ಕುಳಿಯಲ್ಲಿ (ಸೆರೆಯಲ್ಲಿ) ಇರುವ  
ನೀರು. 3. ಅನೆಯ ಸೊಂಡಿಲಿನ ತುದಿ. 4. ಬಾಯಿ  
ಮುಕ್ಕಳಿಸುವುದು. "ಗಣ್ಡುಷೋ ಮುಖಪೂರ್ಣಿ ಸ್ಯಾತ್ ಗಜ-  
ಹಸ್ತಾಙ್ಗುಲಾವಪಿ। ಪ್ರಸೃತಿಪ್ರಮಿತೇಽಪಿ ಸ್ಯಾತ್" ಹೇಮಂ।

ಗಣ್ಡೋಪಧಾನ ಗಂಡೂಪಧಾನ (ನಂ) ತಲೆದಿಂಬು. ಕಪೋಲ  
ವನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ಮಲಗಲು ಹಿತವಾಗಿರುವ ದಿಂಬು.  
ಗಣ್ಡಃ ಉಪಧೀಯತೇಽನ್ - ಉಪ + ಧಾನ್ (ಧಾರಣೆ) ಅಧಿಂ  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ಮೃದುಗಣ್ಡೋಪಧಾನಾನಿ ಶಯನಾನಿ  
ಮುಖಾನಿ ಚ" ಮುಶ್ರುತಂ।

ಗಣ್ಡೋಲ ಗಂಡೂಲ (ಪುಂ) 1. ಗಾಸ, ಕಬ್ಬಳ, ಬಾಯಿತುಂಬಿ  
ಇರುವ ವಸ್ತು. ಗಡಿ (ವದನೇಕದೇಶ) "ಕೋಲಕ್" (೩ಂ ೧-೬೬)। 2. ಹಸಿಬೆಲ್ಲ. ಅಪಕ್ವವಾದ ಬೆಲ್ಲ.  
"ಗಣ್ಡೋಲಗಣ್ಡೋಲಿ ಗುಡಕಪರ್ಯಾಯಿ" ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಗಣ್ಯ ಗಣ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಎಣಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಎಣಿಸಲು  
ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಎಣಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 4. ಗೌರವಿಸ  
ಲ್ಪಡುವವನು. ಗಣ (ಸಂಖ್ಯಾನೇ) + ಣಿಕ್ "ಯತ್" (೩-೧-೯೭)। 5. ಗಣನೆಗೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಡುವ, ಭಾವಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. "ಆಶೀವಿಷೇಣ ರದನಚ್ಛದದಂಶದಾನಮೇತೇನ ತೇ  
ಪುನರನರ್ಥತಯಾ ನ ಗಣ್ಯಮ್" ನೈಷಂ ೧೧-೨೦। 6. ಯೋಗ್ಯ  
ಸ್ಥಾನವನ್ನು ಪಡೆದ. ಗುಂಪಿನಲ್ಲಿ ಮಾನ್ಯತೆ ಪಡೆದ.  
ಯೋಗ್ಯರ ಗುಂಪಿನಲ್ಲಿ ಸೇರಿದ. ಗಣ ಲಬ್ಧಾ-ಗಣ "ಯತ್" (೪-೪-೮೪)। 7. ಗಣದಲ್ಲಿರುವ, ಗುಂಪಿನಲ್ಲಿರುವ. ಗಣ  
ಭವಮ್ - ಗಣ "ಯತ್" (೪-೩-೪೪)।

ಗತ ಗತ (ನಂ) 1. ಗಮನ, ನಡನೆ. ಗಮ್ (ಗತೀ) ಭಾವೇ  
"ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। "ಗತಂ ತಿರಸ್ಕೀನಮನೂಸಾರಥಃ  
ಪ್ರಸಿದ್ಧಮೂರ್ವಜ್ವಲನಂ ಹವಿರ್ಭುಜಃ" ಮಾಘಂ ೧-೨। "ಗತಮಲಸಂ"

ಪರಿಪಾಣ್ಡುತಾ ವಿಷಾದಃ" ಕಿರಾಂ ೧೦-೪೯। (ವಿಂ) 2.  
ತಲುಪಿರುವ, ಸೇರಿರುವ. ಗಮ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)।  
3. ಅದೃಶ್ಯವಾದ, ನಾಶವಾದ. "ಸಂವಿಶೇತು ಯಥಾಕಾಲ-  
ಮುತಿಷ್ಠೇಚ್ಚ ಗತಕಲಮಃ" ಮನುಂ ೭-೨೨೪। 4. ಪ್ರಾಪ್ತ  
ವಾದ, ಹೊಂದಿರುವ. "ಗತೇತಿಭೂಮಿ ಪ್ರಣಯೇ ಪ್ರಯುಕ್ತಾನ-  
ಬುದ್ಧಿಪೂರ್ವ ಪರಿಲುಪ್ತಸಂಜಃ" ಭದ್ರಿಂ ೧೧-೨೯। 5. ಹೊರಟಿ  
ರುವ, ಸರಿದಿರುವ. ಮುಂದಕ್ಕೆ ಚಲಿಸಿರುವ. "ಗತಯಾ ಪುರಃ  
ಪ್ರತಿಗವಾಕ್ಷಮುಖಂ ದಧತೀ ರತೇನ ಭೂಮತುಕತಾಮ್" ಮಾಘಂ  
೯-೨। 6. ಅತೀತವಾದ, ಕಳೆದುಹೋದ. "ಪಶ್ಚರಾತ್ರೇ ಪಶ್ಚ-  
ರಾತ್ರೇ ಪಕ್ಷೇ ಪಕ್ಷೇಽಥವಾ ಗತೇ। ಕುರ್ವೀತ ವೇಷಾಂ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಮರ್ಥಸಂಸ್ಥಾಪನಂ  
ನೃಪಃ" ಮನುಂ ೮-೪೦೨। 7. ತೀರಿಹೋದ, ಮೃತಿಹೊಂದಿದ.  
"ಗತ ಏವ ನ ತೇ ನಿವರ್ತತೇ ಸ ಸಖಾ ದೀಪ ಇವಾನಿಲಾಹತಃ"  
ಕುಮಾಂ ೪-೩೦। 8. ಹೊರಟುಹೋದ. ಪ್ರಯಾಣ  
ಮಾಡಿದ. "ಗತೇ ತಸ್ಮಿನ್ ಗೃಹೀತಾರ್ಥೇ ರಾಮಃ ಸುಗ್ರೀವರಾಕ್ಷಸೌ"  
ಭದ್ರಿಂ ೨೧-೧೮। 9. ತೀರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 10. ಹೊಂದ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಗಮ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಗತಕಾಲ ಗತಕಾಲ (ಪುಂ) ಹಿಂದಿನ ಕಾಲ. ಕಳೆದುಹೋದ  
ಕಾಲ. ಗತಃ ಕಾಲಃ।

ಗತಕಲಮ ಗತಕ್ಲಮ (ವಿಂ) ನಾಶವಾದ ಆಯಾಸವುಳ್ಳ.  
ನಿವಾರಣೆಯಾದ ಶ್ರಮವುಳ್ಳ, ವಿಶ್ರಾಂತಿಪಡೆದ. ಆಯಾಸ  
ವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸಿಕೊಂಡ. ಗತಃ ಕಲಮಃ ಯಸ್ಯ। "ಸಂವಿಶೇತು  
ಯಥಾಕಾಲಮುತಿಷ್ಠೇಚ್ಚ ಗತಕಲಮಃ" ಮನುಂ ೭-೨೨೪।

ಗತಚೇತನ ಗತಚೇತನ (ವಿಂ) ಪ್ರಜ್ಞೆ ತಪ್ಪಿದ. ಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದ.  
ಗತಾ ಚೇತನಾ ಯಸ್ಯ। -ಚೇತಸ್ -ಚೇತಸ್.

ಗತತ್ರಯ ಗತತ್ರಯ (ವಿಂ) ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದ. ನಾಚಿಕೆಯನ್ನು  
ಬಿಟ್ಟಿರುವ. ಗತಾ ತ್ರಯಾ ಯಸ್ಯ।

ಗತದಿನ ಗತದಿನ, -ದಿವಸ -ದಿವಸ (ಪುಂ) ಕಳೆದ ದಿನ,  
ಹಿಂದಿನ ದಿನ, ನೆನ್ನೆಯ ದಿವಸ.

ಗತನಾಸಿಕ ಗತನಾಸಿಕ (ವಿಂ) ಮೂಗಿಲ್ಲದವನು.  
ಮೂಗನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡವನು. ಗತಾ ನಾಸಿಕಾ ಯಸ್ಯ।

ಗತಪಾಪ ಗತಪಾಪ (ವಿಂ) ಪಾಪವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡವನು.  
ಗತಂ ಪಾಪಂ ಯಸ್ಯ।

ಗತಪಾರ ಗತಪಾರ (ವಿಂ) 1. ಕೊನೆಯನ್ನು ಮುಟ್ಟಿದವನು.  
2. ದಡವನ್ನು ಮುಟ್ಟಿದವನು. ಗತಂ ಪಾರಂ ಯೇನ।

ಗತಪ್ರತ್ಯಾಗತ ಗತಪ್ರತ್ಯಾಗತ (ವಿಂ) ಹೋಗಿ ಮತ್ತೆ  
ಬಂದವನು. ಹೊರಟುಹೋದ ನಂತರ ಪುನಃ ಹಿಂದಕ್ಕೆ  
ಬಂದವನು. ಪೂರ್ವ ಗತಃ ಪಶ್ಚಾದಾಗತಃ। "ಗತಪ್ರತ್ಯಾಗತೇ ಚೈವ  
ಸ ಹಿ ಕಷ್ಟತರೋ ರಿಪುಃ" ಮನುಂ ೭-೧೮೬।



ಗತಭರ್ತೃಕಾ ಗತಭರ್ತೃಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪತಿಯಿಲ್ಲದವಳು. ಗಂಡನನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡವಳು. ಗತೋ ಭರ್ತಾ ಯಸ್ಯಾ: |

ಗತಭಿ ಗತಭೀ (ವಿಂ) ಭಯವಿಲ್ಲದ, ಹೆದರಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. ಗತಾ ಭೀರಸ್ಯ |

ಗತರಸ ಗತರಸ (ವಿಂ) 1. ರಸವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡಿರುವ, ಶುಷ್ಕವಾದ, ಒಣಗಿದ. 2. ಹಳೆಯದಾದ. ಗತೋ ರಸೋ ಯಸ್ಯ | "ಯಾತಯಾಮ್ ಗತರಸಮ್" |

ಗತವತ್ ಗತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಿದವನು, ಸೇರಿದವನು, ತಲುಪಿದವನು. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨) |

"ಇತ್ಯುಕ್ತ್ವಾ ಸಪದಿ ಹಿತಂ ಪ್ರಿಯಂ ಪ್ರಿಯಾಹ್ನೇ ಧಾಮ ಸ್ವಂ ಗತವತಿ ರಾಜರಾಜಭೃತ್ಯೇ" ಕಿರಾಂ ೪-೪೧ | 2. ಪಡೆದವನು, ಹೊಂದಿದವನು. 3. ಹೊರಟುಹೋದವನು, ತೆರಳಿದವನು.

ಗತವ್ಯಥ ಗತವ್ಯಥ (ವಿಂ) ದುಃಖವಿಲ್ಲದ, ದುಃಖವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡ. ಗತಾ ವ್ಯಥಾ ಯಸ್ಯ |

ಗತಶ್ರೀ ಗತಶ್ರೀ (ವಿಂ) 1. ಐಶ್ವರ್ಯವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿದ, ಐಶ್ವರ್ಯವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. ಗತಾ ಪ್ರಾಪ್ತಾ ಶ್ರೀರಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಐಶ್ವರ್ಯವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡ. ಗತಾ ನಷ್ಟಾ ಶ್ರೀ: ಯಸ್ಯ | "ಗತಶ್ರೀರ್ವನಗೋಚರ:" ರಾಮಾಂ |

ಗತಸಂಘ ಗತಸಂಘ (ವಿಂ) ವಿಠಲಾಗ, ವಿರಕ್ತ, ಸಂಬಂಧವನ್ನು ಬಿಟ್ಟಿರುವ. ಗತ: ಸಂಘೋ ಯಸ್ಯ |

ಗತಸ್ಪೃಹ ಗತಸ್ಪೃಹ (ವಿಂ) ಆಸೆಯನ್ನು ತೊರೆದಿರುವ, ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ. ಗತಾ ಸ್ಪೃಹಾ ಯಸ್ಯ | "ಗತಸ್ಪೃಹೋಽಪ್ಯಾಗಮನ-ಪ್ರಯೋಜನಂ ವದೇತಿ ವಕ್ತುಂ ವ್ಯವಸೀಯತೇ ಯಯಾ" ಮಾಧಂ ೧-೧೦ |

ಗತಸ್ಮಯ ಗತಸ್ಮಯ (ವಿಂ) 1. ಅಹಂಕಾರವಿಲ್ಲದ. ಗತ: ಸ್ಮಯೋಽಹಂಕಾರೋ ಯಸ್ಯ | "ಸ ಸಂತತಂ ದರ್ಶಯತೇ ಗತಸ್ಮಯ: ಕೃತಾಧಿಪತ್ಯಾಮಿವ ಮಾಧು ಬಂಧುತಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೧೦ | 2. ಆಶ್ಚರ್ಯವಿಲ್ಲದ. ಗತ: ಸ್ಮಯೋ ವಿಸ್ಮಯೋ ಯಸ್ಯ |

ಗತಾಕ್ಷಿ ಗತಾಕ್ಷಿ (ವಿಂ) ಕಣ್ಣುಗಳಿಲ್ಲದವನು, ಅಂಧ. ಕುರುಡ. ಗತಮಕ್ಷಿ ಯಸ್ಯ "ಷಕ್" (೪-೪-೧೧೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧) | ಗತಾಕ್ಷಿ ಗತಾಕ್ಷಿ.

ಗತಾಗತಿ ಗತಾಗತಿ (ನಂ) 1. ಹೋಗುವುದು ಮತ್ತು ಬರುವುದು. ಗತಂ ಚಾಗತಂ ಚಾನಯೋ: ಸಮಾಹಾರ: | "ಗತಾಗತೇಹೈಸ-ಕುಲಾನ್ಯಮುನಿ ಚ್ಚಾಯಾಪಥಂ ಸಂಜನಯಂತ್ಯಪೂರ್ವಮ್" ಯಾದಂ ೧೮-೩೨ | 2. ಈ ದೇಹವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಸ್ವರ್ಗಾದಿ ಲೋಕಗಳನ್ನು ಹೊಂದುವುದು ಪುನಃ ಭೂಲೋಕಕ್ಕೆ ಬರುವುದು. "ಎವಂ ತ್ರಯಿಧರ್ಮಮನುಪ್ರಪನ್ನಾ ಗತಾಗತಂ ಕಾಮಕಾಮಾ ಲಬಂತೇ" ಗೀತಾ ೧-೨೧ | (ವಿಂ) 3. ಹೋಗಿರುವ ಮತ್ತು ಬಂದಿರುವ, ಹೋಗಿ ಮತ್ತು ಬಂದಿರುವ. ಗತಾಸಾಬಾಗತಶ್ಚ |

ಗತಾಗತಿ ಗತಾಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೋಗುವುದು ಮತ್ತು ಬರುವುದು. ಗತಂ ಚಾಗತಿಶ್ಚ | 2. ಸಾಯುವುದು ಮತ್ತು ಹುಟ್ಟುವುದು.

ಗತಾಧವನ್ ಗತಾಧವನ್ (ವಿಂ) 1. ದಾಟಿಲ್ಲದ, ದಾರಿಯುಳ್ಳ, ದಾರಿಯನ್ನು ದಾಟಿರುವ. ಗತೋಽಧವಾ ಯೇನ | "ಬಲೇರಧ್ಯುಷಿತಾ ಸ್ತಸ್ಯ ವಿಜಿಗಿಷೋಗತಾಧವನ:" ರಘುಂ ೪-೪೬ | 2. ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನಿ, ತತ್ತ್ವವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. "ಗತಾಧವಾ ಛಿನ್ನಸಂಶಯ:" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಚತುರ್ಧತಿಯೊಡನೆ ಕೂಡಿದ ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ.

ಗತಾನುಗತ ಗತಾನುಗತ (ವಿಂ) 1. ಗಮನವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಗಮನ. ಹೋಗುವುದನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಹೋಗುವುದು. ಗತಸ್ಯಾನುಗತಮ್ | 2. ಹೋಗುವವನನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಹೋಗುವುದು, ಒಬ್ಬ ಮಾಡಿದಂತೆ ತಾನೂ ಮಾಡುವುದು.

ಗತಾನುಗತಿಕ ಗತಾನುಗತಿಕ (ವಿಂ) 1. ಹೋಗುವವನನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಹೋಗುವ. ಗತಾನುಗತಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೪) | 2. ಒಬ್ಬನು ನಡೆದ ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ, ಒಳ್ಳೆಯದೋ ಕೆಟ್ಟದ್ದೋ ಒಬ್ಬ ಮಾಡಿದಂತೆ ತಾನೂ ಮಾಡುವವನು, ಅಂಧಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವವನು. ಇದು ಲೋಕದ ಸ್ವಭಾವ. ಸಾಧುತ್ವಾ ಸಾಧುತ್ವ-ಕರ್ತವ್ಯಾಕರ್ತವ್ಯಜ್ಞಾನವು ಜನರಿಗಿರುವುದಿಲ್ಲ. "ಗತಾನು-ಗತಿಕೋ ಲೋಕೋ ನ ಲೋಕ: ಪಾರಮಾರ್ಥಿಕ:" ಪञ्ಚತಂ |

ಗತಾಂತ ಗತಾಂತ (ವಿಂ) 1. ಕೊನೆಯನ್ನು ಮುಟ್ಟಿದ, ಕಾರ್ಯದ ಸಮಾಪ್ತಿಯನ್ನು ಕಂಡ. ಗತಾಂತ: ಕಾರ್ಯಸ್ಯ ಚರಮಸೀಮಾ ಯೇನ | 2. ಮುಮೂರ್ಷು, ಅವಸಾನಕಾಲವನ್ನು ಹೊಂದಿದ. ಗತಾಂತೋಽವಸಾನಕಾಲೋ ಯೇನ |

ಗತಾಯುಸ್ ಗತಾಯುಸ್ (ವಿಂ) ಕಳೆದುಹೋದ ಆಯುಸ್ಸುಳ್ಳ, ಜೀವಿತಕಾಲವು ಕಳೆಯುತ್ತ ಬಂದಿರುವ. ಗತಂ ಗತಪ್ರಾಯಮಾಯುರ್ಜೀವಿತಕಾಲೋ ಯಸ್ಯ |

ಗತಾರ್ತವಾ ಗತಾರ್ತವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯಶುಕಾಲವು ನಿಂತು ಹೋಗಿರುವ ಹೆಂಗಸು. ಮುಟ್ಟು ನಿಂತಿರುವ ಹೆಂಗಸು, ಸುಮಾರು ಐವತ್ತು ವರ್ಷಗಳ ವಯಸ್ಸು, ಕಳೆದಿರುವ ಹೆಂಗಸು. ಗತಮಾರ್ತವಂ ಯಸ್ಯಾ: | "ದ್ವಾದಶಾಕ್ಷರಾದ್ಧ್ವಮಾ-ಪञ್ಚಾಶತ್ಸಮಂ ಸ್ತ್ರೀಯ: | ಮಾಸಿ ಮಾಸಿ ಭಗದ್ವಾರಾ ಪ್ರಕೃತ್ಯೇವಾರ್ತವಂ ಸ್ರವೇತ್" ಭಾವಪ್ರಂ | 2. ರೋಗದಿಂದ ಮಧ್ಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮುಟ್ಟು ನಿಂತಿರುವ ಹೆಂಗಸು, ಬಂಜೆ.

ಗತಾರ್ಥ ಗತಾರ್ಥ (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅರ್ಥವುಳ್ಳ, ಅರ್ಥವಾಗಿರುವ. ಗತ: ಅವಗತೋಽರ್ಥೋ ಯಸ್ಯ | 2. ಚರಿತಾರ್ಥವಾದ, ಒಂದರಿಂದಲೇ ಮತ್ತೊಂದು ವಿಷಯವನ್ನು



ಹೇಳಿದಂತೆ ಆಗಿರುವ, ಇನ್ನೊಂದರಿಂದ ಸಿದ್ಧವಾದ.

3. ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರಯೋಜನವನ್ನು ಕಳೆದು ಕೊಂಡ. "ಗತಾರ್ಥ ಷಡ್ವಿಧಂ ಬಲಮ್" ಯಾದಂ ೨೨-೩೧.

ಗತಾಸು ಗತಾಸು (ವಿಂ) ಪ್ರಾಣವು ಹೋಗಿರುವ, ಮೃತಿ ಹೊಂದಿದ. ಗತಾ: ಅಸವ: ಯಸ್ಯ. "ಗತಾಸುರಂತರಾ ದಂತಿ ವರಣ್ಡಕ ಇವಾಭವತ್" ಮಾಧಂ ೧೯-೬೫.

ಗತಿ ಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಮನ, ನಡೆಗೆ. ಸಂಚಾರ. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪). "ಮಣಿ ವಜ್ರಸಮುಕ್ತೀಂ ಸುತ್ರಸ್ಯೇವಾಸ್ತಿ ಮೇ ಗತಿ:" ರಘುಂ ೧-೪. 2. ವಸ್ತು, ವಿಷಯ. "ತಪ: ಕಿಲೇದಂ ತದವಾಪ್ತಿಸಾಧನಂ ಮನೋರಥಾನಾ-ಮಗತಿರ್ನ ವಿವ್ರತೇ" ಕುಮಾರಂ ೫-೬೪. 3. ದಶ, ಅವಸ್ಥೆ, ಸ್ಥಿತಿ. "ಶರಾರ್ಥಮೇವೈತದ್ವಯ ಲಪ್ಸ್ಯಸೇ ಗತಿ ಶಿರೋಮಣಿ ದೃಷ್ಟಿವಿಷಾಜ್ಜಿಘೃಷತ:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೨೫. 4. ಉಪಪತ್ತಿ, ಉಪಾಯ, ಕಾರ್ಯಸಾಧಿಸುವ ಯುಕ್ತಿ. "ಅಪಕ್ರಮಣಾನುಪೇಕ್ಷಣೇ ದ್ವಯಿ ಗತಿ:" ಮುದ್ರಾಂ ೩. 5. ಸ್ಥಾನ. "ಗುರುಕ್ರಿಯಾರಂಭಫಲೇರಲಂಕೃತಂ ಗತಿ ಪ್ರತಾಪಸ್ಯ ಜಗತ್ಪ್ರಮಾಥಿನ:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೪೨. 6. ಸರಣಿ, ಪದ್ಧತಿ, ಮಾರ್ಗ. 7. ಆಧಾರ, ಆಶ್ರಯ, ರಕ್ಷಣ ಸ್ಥಾನ. "ಆತ್ಮೇವ ಹ್ಯಾತ್ಮನ: ಸಾಕ್ಷಿ ಗತಿರಾತ್ಮಾ ತಥಾತ್ಮನ: | ಮಾವಮಂಥಾ: ಸ್ವಮಾತ್ಮಾನಂ ನೃಣಾಂ ಸಾಕ್ಷಿಣಮುತ್ತಮಮ್" ಮನುಂ ೮-೮೪. 8. ಹೋಗಿ ಹೋಗಿದ ಸ್ಥಾನ, ಸೇರಬೇಕಾದ ಜಾಗ. "ಉಪಾಗಮೇ ದುಶ್ಚರಿತಾ ಇವಾಪದಾಂ ಗತಿ ನ ನಿಶ್ಚೇತುಮಲಂ ಶಿಲೀಮುಖಾ:" ಕಿರಾಂ ೪-೩೫. 9. ಪ್ರಮಾಣ, ನಿರ್ಣಯಮಾಡುವ ರುಜುವಾತಂ (ಋಜುವಾತಂ, ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ ವಚನ), ಗುರುತು. "ಕೃಪೇತಿ ಚೇದಸ್ತು ಮೃಗ: ಕ್ಷತ: ಕ್ಷಣಾದನೇನ ಪೂರ್ವ ನ ಮಯೇತಿ ಕಾ ಗತಿ:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೧೫. 10. ಸ್ವರೂಪ, ವಸ್ತುಸ್ಥಿತಿ, ನಿಜಸ್ಥಿತಿ. "ಚರತಸ್ತಪಸ್ತವ ವನೇಷು ಸಹಾ ನ ವಯಂ ನಿರೂಪಯಿತುಮಸ್ಯ ಗತಿಮ್" ಕಿರಾಂ ೬-೩೬. 11. ಪರಿಣಾಮ, ಕೊನೆ, ಅವಸಾನ. 12. ಯಾತ್ರೆ. 13. ರಕ್ತ ಮೊದಲಾದುವು ಗಳ ಸುರಿತ, ದ್ರವವಸ್ತುವು ಪ್ರವಹಿಸುವುದು. 14. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. 15. ಕರ್ಮಮನ ಕನ್ಯೆಯರಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬಳು, ಪುಲಹ ಮುಷಿಯ ಪತ್ನಿ. "ಪುಲಹಸ್ಯ ಗತಿರ್ಮಯಾ ತ್ರಿನಸೂತ ಸತೀ ಸುತಾನ್" ಭಾಗಂ ೪-೧-೩೮. 16. ನಾಡಿಯ ಹುಣ್ಣು. "ಗತಿರ್ಮಗಿಂ ದಶಾಯಾಂ ಚ ಜಾನೇ ಯಾತ್ರಾಂಭುಪಾಯಯೋ: | ನಾಡೀಕ್ಷಣ-ಸರಣ್ಯಾಂ ಚ" ವಿಶ್ವಂ. 17. (ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ) ಗತಿಸಂಜ್ಞೆ ಯುಳ್ಳ ಶಬ್ದಗಳು.

ಈ ಮುಂದಿನ ಸೂತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಶಬ್ದ ಗಳು ಆಯಾ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಗತಿಸಂಜ್ಞೆಯನ್ನು ಹೊಂದುವುವು.

"ಪ್ರಾದಯ:" (೧-೪-೫೮), "ಉಪಸರ್ಗಿ: ಕ್ರಿಯಾಯೋಗೇ" (೧-೪-೫೯), "ಗತಿಶ್ಚ" (೧-೪-೬೦), "ಝರ್ಯಾದಿ ಚ್ವಿಡಾಚಶ್ಚ" (೧-೪-೬೧), "ಅನುಕರಣಂ ಚಾನಿತಿಪರಮ್" (೧-೪-೬೨), "ಆದರಾನಾದರಯೋ: ಸದಸತೀ" (೧-೪-೬೩), "ಭೂಷಣೇಜಲಮ್" (೧-೪-೬೪), "ಅಂತರಪರಿಯೋ" (೧-೪-೬೫), "ಕಣೇ ಮನಸೀ ಶ್ರದ್ಧಾಪ್ರತಿಪಾತೇ" (೧-೪-೬೬), "ಪುರೋಽವ್ಯಯಮ್" (೧-೪-೬೭), "ಅಸ್ತಂ ಚ" (೧-೪-೬೮), "ಅಚ್ಚ ಗತ್ಯರ್ಥ-ವದೇಷು" (೧-೪-೬೯), "ಅದೋಽನುಪದೇಶಂ" (೧-೪-೭೦), "ತಿರೋಽಂತರ್ಥಂ" (೧-೪-೭೧), "ವಿಭಾಷಾ ಕೃತಿ" (೧-೪-೭೨), "ಉಪಾಜೇಽನ್ವಾಜೇ" (೧-೪-೭೩), "ಸಾಕ್ಷಾ-ತ್ಪ್ರಭೃತೀನಿ ಚ" (೧-೪-೭೪), "ಅನರ್ಥಾವಾನ್ ಉರಸಿಮನಸೀ" (೧-೪-೭೫), "ಮಧ್ಯೇ ಪದೇ ನಿವಚನೇ ಚ" (೧-೪-೭೬), "ನಿತ್ಯಂ ಹಸ್ತೇ ಪಾಣಾವುಪಯಮನೇ" (೧-೪-೭೭), "ಪ್ರಾಘ್ವಂ ಬನ್ಧನೇ" (೧-೪-೭೮) ಮತ್ತು "ಜೀವಿಕೋಪನಿಷದಾವೌಪಮ್ಯೇ" (೧-೪-೭೯) ಈ ಸೂತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವ ಶಬ್ದ ಗಳು ಕ್ರಿಯಾಯೋಗದಿಂದ ಆಯಾ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಗತಿಸಂಜ್ಞೆ ಯನ್ನು ಹೊಂದಿ "ಕ್ರುಗತಿಪ್ರಾದಯ:" (೨-೨-೧೮) ಎಂಬ ಸೂತ್ರದಿಂದ ಅವುಗಳಿಗೆ ಗತಿಸಮಾಸ ಬರುವುದು.

ಗತಿಭಜ್ಞ ಗತಿಭಂಗೆ (ಪುಂ) ಹೊರಡಲು ಅಡ್ಡಿ, ಸಂಚಾರಕ್ಕೆ ತಡೆ. ಗತಿಭಜ್ಞ: "ಶಕುಂತಲಾ—(ಗತಿಭಜ್ಞ ರೂಪಯಿತ್ವಾ) ಕೋ ನು ಖಲು ನಿವಸನೇ ಮೇ ಸಜ್ಜತೇ" ಶಾಕುಂ ೪.

ಗತಿಮತ್ ಗತಿಮತ್ (ವಿಂ) 1. ಚಲನೆಯುಳ್ಳ, ಸಂಚಾರ ವುಳ್ಳ. ಗತಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೫-೪-೯೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ತೀಪ್" (೪-೧-೬). -ಮತೀ -ಮತೀ. 2. ನಳಿಕೆ, ಕೊಳವೆ.

ಗತೀಲಾ ಗತೀಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನದಿ, ಹೊಳೆ. 2. ವೇತ್ರಲತೆ, ಬೆತ್ತದ ಗಿಡ. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಇಲಕ್" (೩-೧-೫೭).

ಗತಿಸತ್ತಮ ಗತಿಸತ್ತಮ (ಪುಂ) ಪರಮಾತ್ಮ. ಗತಿ: ಪ್ರಾಪ್ಯ-ಸ್ಥಾನಮ್, ಗತಿಶ್ಚಾಸೌ ಸತ್ತಮಶ್ಚ. "ಆದಿತಯೋ ಜ್ಯೋತಿ-ರಾದಿತಯ: ಸಹಿಷ್ಣುಗತಿಸತ್ತಮ:" ವಿಂ ಸಂ.

ಗತ್ವರ ಗತ್ವರ (ವಿಂ) 1. ಗಮನಶೀಲ, ಸಂಚರಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಕವರಪ್" (೩-೨-೧೬೪). "ವಿದುರೋ ಜಿತ್ವರ: ಪ್ರಾಪ ಲಕ್ಷಮಣೋ ಗತ್ವರಾನ್ ಕಪಿನ್" ಭಟ್ಟಂ ೭-೨೨. 2. ಅಸ್ಥಿರವಾದ, ಶಾಶ್ವತವಲ್ಲದ, ಕ್ಷಣಿಕವಾದ. "ಅಭಿಮಾನಧನಸ್ಯ ಗತ್ವರೇರಸುಭಿ: ಸ್ಥಾಸ್ತು ಯಶಶ್ಚಿವಿವಿವತ:" ಕಿರಾಂ ೨-೧೯. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ತೀಪ್" (೪-೧-೧೫). ಗತ್ವರೋ ಗತ್ವರೋ.

ಗತ್ವಾ ಗತ್ವಾ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಹೋಗಿ. ನಡೆದು ಹೋಗಿ. 2. ಹೊಂದಿ, ತಲುಪಿ, ಸೇರಿ. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಕ್ತ್ವಾ"



(೩-೪-೨೧)। “ಗತ್ವಾ ನೂನಂ ವೇಬುಧಂ ಸದಾ ರಮ್ಯಂ ಮುಂಚ್ಛಾ-  
ಭಾಜಾಮಾಜಗಾಮಾಂತರಾತ್ಮಾ। ಭೂಯೋ ದೃಷ್ಟಪ್ರತ್ಯಯಾಃ ಪ್ರಾಪ್ತಸಂಜಾಃ  
ಸಾಧೀಯಸ್ತೇ ಯದ್ರಣಾಯಾದ್ರಿಯಂತೇ” ಮಾಘಂ ೧೮-೬೩।

**ಗದ - ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ** (ಭವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಗದತಿ।  
ಜಗಾದ। ಗದಿತಾ। ಗದಿಷ್ಯತಿ। ಗದತು। ಅಗದತ್। ಗದೇತ್।  
ಅಗಾದೀತ್। ಅಗದೀತ್। ಅಗದಿಷ್ಯತ್। ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾತನಾಡು.  
ಸ್ವಪ್ನವಾಗಿ ಮಾತನಾಡು. “ತಥ್ಯಾಮುತಥ್ಯಾನುಜವಜಗಾದಾಗ್ರೇ  
ಗದಾಗ್ರಜಮ್” ಮಾಘಂ ೨-೬೯।

**ಕರ್ಮಣಿ:**—ಗದ್ಯತೇ। ಜಗದೇ। ಗದಿತಾ। ಗದಿಷ್ಯತೇ।  
ಗದ್ಯತಾಮ್। ಅಗದ್ಯತ। ಗದ್ಯತೇ। ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಣಿವಿ:**—ಗಾದಯತಿ, -ತೇ। ಗಾದಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಗಾದಯಿತಾ। ಗಾದಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ।  
ಗಾದಯತು, -ತಾಮ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಸನಿ:**—ಜಿಗದಿಷತಿ। ಜಿಗದಿಷಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ,  
-ಆಸ। ಜಿಗದಿಷಿತಾ। ಜಿಗದಿಷಿಷ್ಯತಿ। ಜಿಗದಿಷತು।  
ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತ್ಸು:**—ಗದಿತವ್ಯಮ್। ಗದನೀಯಮ್। ಗದ್ಯಮ್। ಉಪಸರ್ಗೇ ತು  
ಪ್ರಗಾಢಃ। ಗದಿತಃ। ಗದಿತವಾನ್। ಗದನ್, ಗದಂತೀ। ಗದಿತುಮ್।  
ಗದಿತಮ್। ಗದನಮ್। ಗದಿತ್ವಾ। ನಿಗದ್ಯ।

**ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:**

(1) ನಿ+ಗದ = ನಿಗದತಿ। ನಿಜಗಾದ। ನ್ಯಗಾದೀತ್।  
ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೇಳು, ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಹೇಳು. “ಪೀಠಾ  
ನಿವರ್ತಧ್ವಮಿತಿ ನ್ಯಗಾದೀತ್ ತಾತಸ್ಯ ಶೋಕಾಪನುಡಾ ಭವೇತ”  
ಭट्टಿಂ ೩-೧೫।

(2) ಪ್ರತಿ+ಗದ = ಪ್ರತಿಗದತಿ। ಪ್ರತಿಜಗಾದ। ಪ್ರತಿ  
ಹೇಳು, ಉತ್ತರಕೇಡು. “ಆಭಿಗರ್ವಾಭಿರವ್ಯಗ್ರಃ ಪ್ರಶ್ನಂ  
ಪ್ರತಿಜಗಾದ ಹ” ಭಾಂ ಅನುಂ।

(3) ವಿ+ಗದ = ವಿಗದತಿ। ವಿಗದೀತ್। ವಿರುದ್ಧ  
ವಾಗಿ ಮಾತನಾಡು. “ನ ಹಿ ನಿಮ್ಬಾತ್ ಕೀರೇತ್ ಕೌದ್ರಂ ಲೋಕೇ  
ವಿಗದಿತಂ ವಚಃ” ರಾಮಾಂ।

**ಗದ ಗದ** (ಪುಂ) 1. ರೋಹಿಣೀರ್ಧದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ  
ವಸುದೇವನ ಒಬ್ಬ ಮಗ, ಬಲರಾಮನ ಮದ್ವು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ  
ತಮ್ಮ. “ಬಲಂ ಗದಂ ಸಾರಣಂ ಚ ದುರ್ಮದಂ ವಿಪುಲಂ ಧ್ರುವಮ್।  
ವಸುದೇವಸ್ತು ರೋಹಿಣ್ಯಾಂ ಕೃತಾದಿನುದಪಾದಯತ್” ಭಾಗಂ ೯-೨೪-೪೬।  
2. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. ಗದತಿ - ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ)  
“ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ಅಸಾಧ್ಯಂ ಕುರುತೇ ಕೌಪಂ ಪ್ರಾಪ್ತೇ  
ಕಾಲೇ ಗದೋ ಯಥಾ” ಮಾಘಂ ೨-೮೪। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ದಾ -ದಾ.

ಒಂದು ಆಯುಧ. “ಗದೋ ಭ್ರಾತರೀ ವಿಷ್ಣೋಃ ಸ್ಯಾದಾಮಯೇ  
ನಾಸ್ಸಯುಧೇ ಗದಾ” ಮೇದಿಂ।

**ಗದಗದ ಗದಗದ** (ನಂ) ಗದ್ದದ ವಚನ. “ವಕ್ರಜಂ ಕಂಠೋಠ-  
ತಾಲೂನಾಮನ್ಯತಮೇ ಗದಗದವಾಕ್ಯತಾ” ಸುಶ್ರುತಂ।

**ಗದತ್ ಗದತ್** (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾತನಾಡುತ್ತಿರುವ, ಸ್ವಪ್ನ  
ವಾಗಿ ಹೇಳುತ್ತಿರುವ. ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಶತೃ”  
(೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಕೀಪ್” (೪-೧-೬)। ಗದಂತೀ  
ಗದಂತೀ.

**ಗದನ ಗದನ** (ನಂ) ಮಾತನಾಡುವುದು, ಹೇಳುವುದು. ಗದ  
(ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫)।

**ಗದಯಿತ್ಸು ಗದಯಿತ್ಸು** (ಪುಂ) 1. ಕಾಮ. ಮನ್ಮಥ. ಗದೀ  
(ದೇವಶಬ್ದೇ) + ಣಿವಿ “ಇತ್ಸು” (೩-೩-೨೯)। 2. ಶಬ್ದ,  
ಸದ್ದು. (ವಿಂ) 3. ಕಾಮುಕ. 4. ಹೆಚ್ಚು ಮಾತನಾಡು  
ವವನು. “ಗದಯಿತ್ಸುಃ ಪುಮಾನ್ ಕಾಮೇ ಜಲ್ಪಾಕೇ ಕಾಮುಕೇಽಪಿ  
ಚ” ಮೇದಿಂ।

**ಗದಾ ಗದಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗದ, ಒಂದು ಆಯುಧ. ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ  
ವಾಚಿ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ಟಾಪ್” (೪-೧-೪)।  
“ಸಂಚೂರ್ಣಯಾಮಿ ಗದಯಾ ನ ಸುಯೋಧನೋರು ಸಂಧಿಂ ಕರೋತು ಭವತಾಂ  
ನೃಪತಿಃ ಪಣೇನ” ವೇಣೀಂ ೧-೧೫।

**ಗದಾಗದ ಗದಾಗದ** (ಪುಂ ದ್ವಿವಂ) ಅಶ್ವಿನೀದೇವತೆಗಳು.  
ಗದಮಾಗಚ್ಛತಿ ಗದಾಗೋ ರುಗ್ಣಃ, ತಂ ದಾಯತಃ ಶೋಧಯತಃ - ದೇಪ್  
(ಶೋಧನೆ) “ಕಃ” (೩-೨-೩)। “ನಾಸಿಕಯಾಯುಜೌ ದಸ್ರೌ  
ಗದಾಗದೌ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಗದಾಗ್ರಜ ಗದಾಗ್ರಜ** (ಪುಂ) 1. ಬಲರಾಮ. 2. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ.  
ಗದಸ್ಯಾಗ್ರಜಃ। “ಗೃಹೀತಕುಂಡಲೋ ಗಂತುಮನ್ವಮಂತ ಗದಾಗ್ರಜಃ”  
ಯಾದಂ ೧೬-೧೩೧।

**ಗದಾಗ್ರಣಿ ಗದಾಗ್ರಣಿ** (ಪುಂ) ಎಲ್ಲಾ ರೋಗಗಳಿಗಿಂತಲೂ  
ದೊಡ್ಡದಾದ ಕ್ಷಯರೋಗ.

**ಗದಾಧರ ಗದಾಧರ** (ಪುಂ) 1. ಗದೆಯನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ ಎಷ್ಟು.  
ಧರತಿ-ಧೃನ್ (ಧಾರಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। ಗದಾಯಾ  
ಧರಃ। “ಕೌಮೋದಕೀಧಾರಣಾಚ್ಚ ಗದಾಧರ ಇತಿರೀತಃ” ಇತಿ  
ನಿರೂಕ್ತಿಃ। “ಶಕ್ತಭೃನ್ನಂದಕೀ ಚಕ್ರೀ ಶಾರ್ಙ್ಗಧನ್ವಾ ಗದಾಧರಃ”  
ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 2. ಗದೆಯನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ.

**ಗದಾಭೃತ್ ಗದಾಭೃತ್** (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ಗದಾಂ ವಿಭರ್ತಿ-  
ಙ್ ಭೃತ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಕಿವಪ್” (೩-೨-೭೬)।  
(ವಿಂ) 2. ಗದೆಯನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ.

**ಗದಾಯುಧ ಗದಾಯುಧ** (ವಿಂ) ಗದೆಯನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ.  
ಗದಾ ಆಯುಧಂ ಯಸ್ಯ।



**ಗದಾಯುದ್ಧ ಗದಾಯುದ್ಧ** (ನಂ) ಗದೆಯಿಂದ ನಡೆದ ಯುದ್ಧ. ಗದಾಯುದ್ಧವು ಭೀಮ-ಜರಾಸಂಧ ಭೀಮ-ದುರ್ಯೋಧನ ಇವರಿಗೆ ನಡೆಯಿತು.

**ಗದಾವಸಾನ ಗದಾವಸಾನ** (ನಂ) ಮಧುರೆಯಲ್ಲಿ ಜರಾಸಂಧನ ಗದೆಯು ಬಿದ್ದ ಪ್ರದೇಶ. ಗದಾಯಾ ಅವಸಾನಮತ್ರ. ಕಂಸನ ವಧೆಯಿಂದ ಕುಪಿತನಾದ ಜರಾಸಂಧನು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಮೇಲಿನ ವೈರದಿಂದ ತನ್ನ ಗದೆಯನ್ನು ತೊಂಬತ್ತೊಂಬತ್ತು ಸಲ ತಿರುಗಿಸಿ ಗಿರಿವೃದ್ಧಿಯಿಂದ ಮಧುರೆಯ ಕಡೆಗೆ ಎಸೆದನು. ಅದು ತೊಂಬತ್ತೊಂಬತ್ತು ಯೋಜನಗಳ ದೂರದಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದಿತು. ಅದರಿಂದ ಮಧುರೆಯ ಸಮೀಪದ ಆ ಪ್ರದೇಶಕ್ಕೆ "ಗದಾವಸಾನಮ್" ಎಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು. "ನಿಹತೇ ವಾಸುದೇವೇನ ತದಾ ಕಂಸೇ ಮಹೀಪತೌ | ಜಾತೌ ವೈ ವೈರನಿಬಂಧಃ ಕೃಷ್ಣೇನ ಸಹ ನಸ್ಯ ವೈ | ಭ್ರಾಮಯಿತ್ವಾ ಶತಗುಣಮೇಕೌನಂ ಯೇನ ಭಾರತ | ಗದಾ ಕ್ಷಿಪ್ತಾ ಬಲವತಾ ಮಾಗಧೇನ ಗಿರಿವ್ರಜಾತ್ | ತಿಷ್ಠತೌ ಮಧುರಾಯಾಂ ವೈ ಕೃಷ್ಣಸ್ಯಾಘ್ನತಕರ್ಮಣಃ | ಏಕೋನಯೋಜನಶತೇ ಸಾ ಪಪಾತ | ಗದಾ ಶುಭಾ | ಗದಾವಸಾನಂ ತತ್ ಕ್ಷ್ಯಾತಂ ಮಧುರಾಯಾಃ ಸಮೀಪತಃ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೧೯ |

**ಗದಿ ಗದಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾತು, ನುಡಿ. ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭) | "ಎವಂ ಗದಿಃ ಕರ್ಮಗ-ತಿವಿಸರ್ಗಂ ಧ್ರಾಣೌ ರಸೌ ದೃಕ್ ಸಾಶಃ ಶ್ರುತಿಶ್ಚ" ಭಾಗಂ ೧೨-೧೯ |

**ಗದಿತ ಗದಿತ** (ನಂ) 1. ಮಾತು, ನುಡಿ. ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) | "ಅಂತರ್ಬಾಹಿ-ಭರೋಪರೋಧಿ ಗದಿತಂ ಚಿಂತಾಜಡಂ ದರ್ಶನಮ್" ಶಾಕುಂ ೪-೫ | (ವಿಂ) 2. ನುಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಗದ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

**ಗದಿತವತ್ ಗದಿತವತ್** (ವಿಂ) ಮಾತನಾಡಿದ, ಹೇಳಿದ. ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ವತೀ -ವತಿಃ. "ಇತಿ ಗದಿತವತೀ ಣಾ ಜಘಾನ್ ಸ್ಫುರಿತಮನೋರಮಪಕ್ಷಮಕೇಸರೇಣ" ಮಾಧಂ ೭-೫೬ |

**ಗದಿತ್ ಗದಿತ್ಯ** (ವಿಂ) ಮಾತನಾಡುವವನು. ಹೇಳುವವನು. ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ತೃತ್" (೩-೧-೧೩೩) |

**ಗದಿನ್ ಗದಿನ್** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಗದಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೬) | "ವನಮಾಲಿ ಗದಿ ಶಾಙ್ಗಿ ಶಾಙ್ಗಿ ಚಕ್ರೀ ಚ ನಂದಕೀ | ಶ್ರೀಮಾನ್ಮಾರಾಯಣೋ ವಿಷ್ಣುರ್ವಾಸುದೇವೋಽಭಿರಕ್ಷತು" | "ಕಿರೀಟಿನಂ ಗದಿನಂ ಚಕ್ರಹಸ್ತಮಿಚ್ಛಾಮಿ ತ್ವಾಂ ದ್ರಷ್ಟುಮಹಂ ತಥೈವ" ಗೀತಾ ೧೧-೪೬ |

**ಗದ್ಗದ-ವಾಕ್ಸ್ವಲನೇ** (ಕಣ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಗದ್ಗದಾತಿ | ಕಷ್ಟದಿಂದ ಮಾತನಾಡು, ಕಂಠದಲ್ಲಿ ಸ್ವರವು ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟು ಮಾತನಾಡು.

**ಗದ್ಗದ ಗದ್ಗದ** (ಪುಂ) 1. ಕಥಸಹಿತವಾದ ವಾತದಿಂದ ಕಂಠದಲ್ಲಿ ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟು ಹೊರಡುವ ಮಾತು. ಗದ್ಗದ (ವಾಕ್ಸ್ವಲನೇ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮) | "ತತ್ಕಿ ರೋದಿಧಿ ಗದ್ಗದೇನ ವಚಸಾ ಕಸ್ಯಾಗ್ರತೌ ರುದ್ಧತೇ" ಅಮರಂ ೫೭ | 2. ಮದ ಸಂತೋಷ ಹಿಂಸೆ ಮುಂತಾದುವುಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಸ್ವರಭೇದ.

**ಗದ್ಗದಧ್ವನಿ ಗದ್ಗದಧ್ವನಿ** (ಪುಂ) 1. ಗದ್ಗದಸ್ವರ, ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾದ ಮಾತು, ಕಥದ ತೊಂದರೆ ಸಂತೋಷ ಅಥವಾ ಕಷ್ಟ ಇವುಗಳಿಂದ ಹೊರಡುವ ಅಸ್ಪಷ್ಟ ಧ್ವನಿ. ಗದ್ಗದಃ ಕಫಾದಿನಾ ಅಸ್ಪಷ್ಟಃ ಧ್ವನಿಃ | 2. ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾದ ಮಾತುಳ್ಳವನು.

**ಗದ್ಯ ಗದ್ಯ** (ನಂ) 1. ಗದ್ಯಕಾವ್ಯ. ಪಾದಗಳ ನಿಯಮವಿಲ್ಲದ ಪದಗಳ ಸಮೂಹ. ಗದ್ಯತೇ - ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಕರ್ಮಂ "ಯತ್" (೩-೧-೧೦೦) | ಶ್ರವ್ಯಕಾವ್ಯವು ಗದ್ಯ ಪದ್ಯ ಮತ್ತು ಮಿಶ್ರ (ಗದ್ಯಪದ್ಯಾತ್ಮಕ ಚಂಪು) ಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ರಘುವಂಶ ಕುಮಾರಸಂಭವ ಮೊದಲಾದುವು ಪದ್ಯಕಾವ್ಯಗಳು. ಕಾದಂಬರಿ ಹರ್ಷಚರಿತ ಮೊದಲಾದುವು ಗದ್ಯಕಾವ್ಯಗಳು. ಚಂಪೂರಾಮಾಯಣ ಚಂಪೂಭಾರತ ಯಶಸ್ವಿಲಕ ಮುಂತಾದುವು ಮಿಶ್ರಕಾವ್ಯಗಳು. "ಅಪಾದಃ ಪದಸಂತಾನೋ ಗದ್ಯಮ್" ಕಾವ್ಯಾಂ ೧-೨೩ | ವಾಮನರು ಗದ್ಯಕಾವ್ಯವನ್ನು (1) ವೃತ್ತಗದ್ಯ, (2) ಚೂರ್ಣಮ್ ಮತ್ತು (3) ಉತ್ಕಲಿಕಾಪ್ರಾಯಮ್ ಎಂದು ಮೂರು ಬಗೆಯಾಗಿ ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. "ಗದ್ಯಂ ವೃತ್ತಗದ್ಯಂ ಚೂರ್ಣಮುತ್ಕಲಿಕಾಪ್ರಾಯಂ ಚ" ಕಾವ್ಯಾಂ ಸೂಂ ೧-೩-೨೨ | (1) ಪದ್ಯಭಾಗವನ್ನು ಹೋಲುವ ಗದ್ಯವು ವೃತ್ತಗಂಧಿಯು. "ಪದ್ಯಭಾಗವತ್ ವೃತ್ತಗದ್ಯ" ೧-೩-೨೩ | ಉದಾ: "ಪಾತಾಲತಾಲತಲವಾಸಿಷು ದಾನವೇಷು" ಇಲ್ಲಿ ವಸಂತತೀಲಕ ವೃತ್ತದ ಛಾಯೆಯಿರುವುದು. (2) ದೀರ್ಘಸಮಾಸವಿಲ್ಲದೆ ಲಲಿತ ಪದಗಳುಳ್ಳದ್ದು ಜೋರ್ಗದ್ಯ. "ಅನಾವಿಢ್ಢಲಲಿತಪದಂ ಚೂರ್ಣಮ್" ೧-೩-೨೪ | ಉದಾ: "ಅಮ್ಯಾಸೋ ಹಿ ಕರ್ಮಣಾಂ ಕೌಶಲಮಾವಹತಿ" | (3) ದೀರ್ಘಸಮಾಸಗಳಿಂದಲೂ ಉದ್ದತಪದಗಳಿಂದಲೂ ಕೂಡಿರುವುದು ಉತ್ಕಲಿಕಾಪ್ರಾಯ ಗದ್ಯ. "ವಿಪರೀತಮ್ ಉತ್ಕಲಿಕಾಪ್ರಾಯಮ್" ೧-೩-೨೫ | ಉದಾ: "ಕುಲಿಶಶಿಖರ ಖರನಖರಪ್ರಚಯಪ್ರಚಂಡಚಪೇಟಾಪಾಟಿತಮತ್ತಮಾತಙ್ಗಕುಮ್ಮಸ್ಥಲಗಲ ನ್ಮದಂಚ್ಛಡಾಚ್ಛುರಿತಚಾರುಕೇಸರಭಾರಭಾಸುರಮುಖೇ ಕೇಸರಿಣಿ" | ಸಾಹಿತ್ಯದರ್ಪಣಕಾರರು ಮುಕ್ತಕವೆಂಬ ಮತ್ತೊಂದು



ಭೇದವನ್ನು ಹೇಳಿ ಗದ್ಯಕಾವ್ಯವು ನಾಲ್ಕು ಬಗೆಯೆಂದು ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ. “ವೃತ್ತಗಂಧೋಜ್ಜಿತಂ ಗದ್ಯಂ ಮುಕ್ತಕಂ ವೃತ್ತಗಂಧಿ ಚ | ಭವೇದ್ವತ್ಕಲಿಕಾಪ್ರಾಯಂ ಚೂರ್ಣಕಂ ಚ ಚತುರ್ವಿಧಮ್” ಸಾಂ ದಂ ೬-೩೩೦, ೩೧ | ಇವರು ಗದ್ಯಕಾವ್ಯವು ವಸ್ತುಭೇದದಿಂದ (1) ಕಥಾ ಮತ್ತೂ (2) ಆಖ್ಯಾಯಿಕಾ ಎಂದು ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ. ಕಲ್ಪಿತ ವಸ್ತುವುಳ್ಳ ಕಾದಂಬರಿ ಮೊದಲಾದುದು ಕಥೆ. ನಿಜವಾಗಿ ನಡೆದ ವಸ್ತುವುಳ್ಳ ಹರ್ಷಚರಿತೆ ಮೊದಲಾದುದು ಆಖ್ಯಾಯಿಕೆ. ಆರ್ಯಾದ್ಯಾದಿಯು ಗದ್ಯಕಾವ್ಯವು ಒಂದೇ ವಿಧವೆಂದೂ ಆಖ್ಯಾಯಿಕೆ, ಕಥೆಗಳೆಂದು ಹೆಸರು ಮಾತ್ರ ಬೇರೆಯೆಂದೂ ಈ ಒಂದರೊಳಗೇ ಎಲ್ಲ ಭೇದಗಳೂ ಅಂತರ್ಭಾವ ಹೊಂದುವುದೆಂದೂ ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ. “ತತ್ಕಥಾಖ್ಯಾಯಿಕಾ ಚೇತಿ ಜಾತಿಃ ಸಂಜಾಡ್ಯಾನಿವಿತಾ | ಅಶ್ವೇವಾಂತರ್ಭವಿಷ್ಯಂತಿ ಶೇಷಾಶ್ಚಾಖ್ಯಾನಜಾತಯಃ” ಕಾವ್ಯಾಂ ೧-೨೮ | (ವಿಂ) 2. ಹೇಳಲ್ಪಡುವ, ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಡುವ.

**ಗಂತವ್ಯ ಗಂತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಹೋಗಬೇಕಾದ. 2. ಸೇರಬೇಕಾದ, ತಲುಪಬೇಕಾದ. 3. ಹೊಂದಬೇಕಾದ, ಪಡೆಯಬೇಕಾದ. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬) | 4. ತಿಳಿಯಬೇಕಾದ. 5. ತಲುಪಲ್ಪಡುವ. ಸೇರಲ್ಪಡುವ. ಗಮ್ಲ ಕರ್ಮಂ “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬) | “ರಾಜಾ ಸ್ತೇನೇನ ಗಂತವ್ಯೋ ಮುಕ್ತಕೇಶೇನ ಧಾವತಾ | ಆಚಕ್ಷಾಣೇನ ತಸ್ತೇಯಮೇವ ಕರ್ಮಾಸ್ಮಿ ಶಾಪಿ ಮಾಮ್” ಮನುಂ ೮-೩೧೪ | 6. ಹೊಂದಲ್ಪಡುವ, ಪಡೆಯಲ್ಪಡುವ. 7. ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ. “ಅನೀಯರ್” | ಗಮನೀಯಮ್ ಗಮನೀಯಮ್.

**ಗಂತು ಗಂತು** (ಪುಂ) 1. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ತುನ್” (೩-೧-೬೯) | (ವಿಂ) 2. ಪಥಿಕ, ದಾರಿ ನಡೆಯುವವನು, ಪ್ರಯಾಣಮಾಡುವವನು. “ಯಾತುಗಂತುಶ್ಚ ಪಥಿಕಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಗಂತುಕಾಮ ಗಂತುಕಾಮ** (ವಿಂ) ಹೋಗಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು. ಗಂತು ಕಾಮೋ ಯಸ್ಯ | ತುಮನೋ ಮಕಾರಲೋಪಃ |

**ಗಂತು ಗಂತು** (ವಿಂ) 1. ಸಂಚರಿಸುವ ಶೀಲದವನು, ನಡೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ತನ್” (೩-೨-೧೩೫) | 2. ನಡೆಯುವವನು, ಹೋಗುವವನು. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ತತ್” (೩-೧-೧೩೩) | “ಕ್ವಾಸಿ ಗಂತಾ ಮಹಾಕಾಯ ಕ್ಷುಧಿತಾಯಾ ಮಮೇಪ್ಸಿತಃ” ರಾಮಾಂ | 3. ಪಡೆಯುವ, ಹೊಂದುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ತೀಪ್” (೪-೧-೫) | ಗಂತ್ರಿ ಗಂತ್ರಿ.

**ಗಂತ್ರಿ ಗಂತ್ರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎತ್ತುಗಳು ಎಳೆಯುವ ಗಾಡಿ. ಗಮ್ಯತೇಜನಯಾ — ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ಛತ್” (೩-೪-೧೫೮) |

“ತೀಪ್” (೪-೧-೪೧) | 2. ನಡೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದ ಹೆಂಗಸು.

**ಗಂಧ — ಅರ್ಧನೆ** (ಚುರಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಗಂಧಯತೇ | ಅಜಗಂಧತ | ಹಿಂಸಿಸು. ಓಡಿಸು.

**ಗಂಧ ಗಂಧ** (ಪುಂ) 1. ವಾಸನೆ, ಕಂಪು. ಗಂಧ (ಅರ್ಧನೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) | ಗಂಧವು ಪೃಥಿವಿಯ ವಿಶೇಷ ಗುಣ. “ಗಂಧವತೀ ಪೃಥಿವೀ” ತಂ ಸಂ | “ಗಂಧೇನ ಸ್ಫುರತಾ ಮನಾಗನುಸೃತೋ ಭಕ್ತಸ್ಯ ಸರ್ಪಿಷ್ಮತಃ” ತಂ ರಾಂ ೪-೧ | 2. ಪರಿಮಳ, ಸೌರಭ. “ವಿಕಾಸಿ ವಪ್ರಾಂಭಸಿ ಗಂಧಸುಚಿತಂ ನಮಂತಿ ನಿಧ್ರಾತುಮಿವಾಸಿತೋತ್ಪಲಮ್” ಕಿರಾಂ ೪-೨೬ | 3. ಹಿಂದಿನ ಕೇಸರಿ ಮುಂತಾದ ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ. “ಶೃಂಗಾಣಿ ದ್ರುತಕನಕೋಜ್ವಲಾನಿ ಗಂಧಾಃ ಕೀಸುಮ್ಭಂ ಪೃಥುಕುಚಕ್ರುಮ್ಭಸಜ್ಜಿ ವಾಸಃ” ಮಾಘಂ ೮-೩೦ | 4. ಗಂಧಕ. 5. ಸಂಬಂಧ. 6. ಜೊರು, ತುಂಡು. 7. ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ. “ಗಂಧಃ ಸಮ್ಬಂಧಲೇಶಯಃ | ಗಂಧಕಾಮೋದಗರ್ವೇಷು” ಹೇಮಂ | “ವಾಮಶ್ರಾಯಂ ನದತಿ ಮಧುರಂ ಚಾತಕಸ್ತೇ ಸಗಂಧಃ” ಮೇಘಂ ೧-೯ | 8. ನುಗ್ಗೆ ಮರ. 9. ಬಲ, ಶಕ್ತಿ. “ಗಂಧೋ ಗರ್ವೇ ಬಲೇಽಪಿ ಚ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | (ವಿಂ) 10. ನೆರೆಮನೆಯವನು, ಪಕ್ಕದ ಮನೆಯವನು. 11. ಪರಿಮಳವುಳ್ಳ, ಸುವಾಸನೆಯುಳ್ಳ. ಗಂಧೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಅಚ್” (೫-೨-೧೨೭) | “ಗಂಧಃ ಪ್ರತಿ-ವೇಶ್ಯಾಮೋದಲೇಶಸಮ್ಬಂಧಗಂಧಕೇ” ಮೇದಿಂ |

**ಗಂಧಕ ಗಂಧಕ** (ಪುಂ) 1. ಗಂಧಕ, ಗಂಧಕಶಿಲೆ. 2. ನುಗ್ಗೆ ಮರ.

**ಗಂಧಕಾರಿಕಾ ಗಂಧಕಾರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ಮರಂಧ್ರ, ಪರಗೃಹದಲ್ಲಿ ಶಿಲ್ಪಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡುವ ಹೆಂಗಸು. ಗಂಧ ಗಂಧಪ್ರಧಾನಮಲಂಕಾರಂ ಕರೋತಿ—ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) “ಞ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) |

**ಗಂಧಕಾಲಿ ಗಂಧಕಾಲೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸತ್ಯವತಿ, ವ್ಯಾಸ ಮಹರ್ಷಿಯ ತಾಯಿ. “ಭೀಷ್ಮಃ ಪುನಃ ಪಿತುಃ ಪ್ರಿಯಚಿಕಿರ್ದಯಾ ಸತ್ಯವತೀ ಮಾತರಮುದವಾಹಯತ್ ಯಾಮಾಹುರ್ಗಂಧಕಾಲೀಮಿತಿ” ಭಾಂ ಆದಿಂ |

**ಗಂಧಕಾಠ ಗಂಧಕಾಠ** (ನಂ) ಗಂಧದ ಕಟ್ಟಿಗೆ.

**ಗಂಧಕುಟಿ ಗಂಧಕುಟೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುರೆಯೆಂಬ ಒಂದು ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ.

**ಗಂಧಕೇಲಿಕಾ ಗಂಧಕೇಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಸ್ತೂರಿ, ಮೃಗದ ಮದ. ಗಂಧ ಕೇಲತಿ—ಕೇಲ್ (ಗತೌ) “ಞ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) |

**ಗಂಧಗಜ ಗಂಧಗಜ** (ಪುಂ) ಮದೋದಕವನ್ನು ಸುರಿಸುವ ಆನೆ, ಮದೋದಕದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಆನೆ.



ಗಂಧಗ್ರಾಹಕ ಗಂಧಗ್ರಾಹಕ (ಪುಂ) ವಾಸನೆಯನ್ನು ಕಂಡು ಹಿಡಿಯುವ ಘ್ರಾಣೇಂದ್ರಿಯ, ಮೂಗು. ಗಂಧ ಗೃಹ್ಣಾತಿ-ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನ) "ಘ್ರುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

ಗಂಧಜಲ ಗಂಧಜಲ (ನಂ) ಪನ್ನೀರು, ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ ಮಿಶ್ರವಾದ ನೀರು.

ಗಂಧತನ್ಮಾತ್ರ ಗಂಧತನ್ಮಾತ್ರ (ನಂ) ಉತ್ಕಟಾವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿದ ಮತ್ತು ಪೃಥಿವಿಗೆ ಉಪಾದಾನಕಾರಣವಾದ ಸ್ಥೂಲ ಪೃಥಿವ್ಯಾಂಶದ್ರವ್ಯ, ಸ್ಥೂಲಪೃಥಿವಿಯ ಅವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹೊಂದುವ ಮೊದಲು ಸ್ಥೂಲಪೃಥಿವಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ ಗಂಧಗುಣವುಳ್ಳ ದ್ರವ್ಯ, ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ಪಾರ್ಥಿವಾಂಶ.

ಗಂಧತುರ್ಯ ಗಂಧತುರ್ಯ (ನಂ) ರಣಕಹಳೆ, ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ವಾದ್ಯ.

ಗಂಧತೈಲ ಗಂಧತೈಲ (ನಂ) ಸುವಾಸನೆಯ ತೈಲ, ಭೃಂಗಾ ಮಲಕ ತೈಲ ಮುಂತಾದುದು.

ಗಂಧದಾರ ಗಂಧದಾರು (ನಂ) ಗಂಧದ ಕಟ್ಟಿಗೆ.

ಗಂಧದ್ವಿಪ ಗಂಧದ್ವಿಪ -ಹಸ್ತೀ-ಹಸ್ತೀ (ಪುಂ) 1. ಮದೋದಕದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಆನೆ. "ಗಂಧೇನ ಜೇತು: ಪ್ರಮುಖಾಗತಸ್ಯ ಗಂಧದ್ವಿಪಸ್ಯೇವ ಮತಃಪ್ರಜೌಘ" ಕಿರಾಂ ೧೭-೧೭ । 2. ಚಂದನ ಮೊದಲಾದ ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯಗಳ ವಾಸನೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಆನೆ, ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಜಾತಿಯ ಆನೆ. "ಜಙ್ಗಮಾನಿವ ವಿನ್ಯಾದೀನ್ ಜಗೃಹೇ ಗಂಧಹಸ್ತಿನ:" ಯಾದಂ ೨೨-೧೫೨ ।

ಗಂಧಧಾರಿನ್ ಗಂಧಧಾರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಮಹಾದೇವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. "ಅಜಶ್ಚ ಬಹುರೂಪಶ್ಚ ಗಂಧಧಾರಿ ಕಪರ್ದಪಿ" ಭಾಂ ಅನುಂ । (ವಿಂ) 2. ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೫) । -ಧಾರಿಣಿ -ಧಾರಿಣೀ.

ಗಂಧನ ಗಂಧನ (ನಂ) 1. ಉತ್ಸಾಹ. 2. ಇತರರ ತಪ್ಪನ್ನು ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವುದು. 3. ಹಿಂಸಿಸುವುದು. 4. ಸೂಚಿಸುವುದು. 5. ಕೊಲ್ಲುವುದು, ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. ಗಂಧ (ಅರ್ಧನೆ) ಭಾವೇ ಕರಂ ವಾ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫, ೧೧೭) । "ಗಂಧನಮುತ್ಸಾಹೇ ಸ್ಯಾತ್ಪ್ರಕಾಶನೇ ಸೂಚನೇಽಪಿ ಹಿಸಾಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ । "ಉತ್ಸಾದನೇ ಚ ಹಿಸಾಯಾಂ ಸೂಚನೇ ಚಾಪಿ ಗಂಧನಮ್" ಅಮಂ ।

ಗಂಧನಕುಲ ಗಂಧನಕುಲ (ಪುಂ) ಮೂಗಿಲಿ, ದುರ್ಗಂಧದ ಇಲಿ. ಗಂಧೇನ ಲೇಶೇನ ನಕುಲಸದೃಶತ್ವಾತ್ ದುರ್ಗಂಧಪ್ರಧಾನೋ ವಾ ನಕುಲ: ।

ಗಂಧನಾಕುಲಿ ಗಂಧನಾಕುಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸರ್ಪಾಕ್ಷಿ, ಈಶ್ವರೀ ಹಂಪು. ಗಂಧಸಹಿತಾ ನಾಕುಲಿ ।

ಗಂಧನಾಲಿ ಗಂಧನಾಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾಸನೆಯನ್ನು ಕಂಡು ಹಿಡಿಯುವ ಕೊಳವೆಯಂತಿರುವ ಮೂಗು. ಗಂಧಸ್ಯ ನಾಲೀವ । "ಗಂಧನಾಲಿ ಚ ನಾಸಿಕಯಾಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಗಂಧಪತ್ರ ಗಂಧಪತ್ರ (ಪುಂ) 1. ತುಲಸಿಗಿಡ. ಗಂಧಯುಕ್ತ ಪತ್ರಮಸ್ಯ । 2. ಮರುಗ. 3. ಬಿಲ್ವಪತ್ರಗಿಡ. 4. ಕಿತ್ತಲೆ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 5. ವಾಸನೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಎಲೆಯುಳ್ಳ ಗಿಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪತ್ರಾ -ಪತ್ರಾ. 6. ಕಬೋರ.

ಗಂಧಪಲಾಶಿಕಾ ಗಂಧಪಲಾಶಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹರಿದ್ರೆ, ಅರಿಶಿನ. ಗಂಧಯುಕ್ತ ಪಲಾಶಮಸ್ಯಾ: "ಕಪ್" ।

ಗಂಧಪಾಷಾಣ ಗಂಧಪಾಷಾಣ (ಪುಂ) ಗಂಧಕಶಿಲೆ, ಉಪಧಾತುಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ.

ಗಂಧಪುಷ್ಪ ಗಂಧಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಕೇತಕೀವೃಕ್ಷ, ತಾಳೆಮರ. 2. ವೇತಸವೃಕ್ಷ, ಹಬ್ಬೆಗಿಡ. 3. ಅಂಕೋಲೆಗಿಡ. (ನಂ) 4. ಸುವಾಸನೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹೂವು. ಗಂಧಸಹಿತ ಪುಷ್ಪಮ್ ।

ಗಂಧಫಲ ಗಂಧಫಲ (ಪುಂ) 1. ಕಪಿತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಬೇಲದ ಮರ. 2. ಬಿಲ್ವವೃಕ್ಷ, ಬಿಲ್ವಪತ್ರ ಗಿಡ. ಗಂಧಯುಕ್ತ ಫಲಮಸ್ಯ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಫಲಾ -ಫಲಾ. 3. ಮೆಂತ್ಯ. 4. ಬಿಳಿನೆಲಗುಂಬಳ. 5. ಅನೆಬೇಲ. -ಲೀ -ಲೀ. 6. ಪ್ರಿಯಂಗುವೃಕ್ಷ, ಪ್ರೇಂಕಣ ಗಿಡ. 7. ಸಂಪಿಗೆಯ ಮೊಗ್ಗು. "ವಿಪ್ಲವಕಸೇನಾ ಗಂಧಫಲೀ ಕಾರಮ್ಭಾ ಪ್ರಿಯಕಶ್ಚ ಸಾ" । "ಚಂಪಕೋ ಹೇಮಪುಷ್ಪಕ: । ಏತಸ್ಯ ಕಲಿಕಾ ಗಂಧಫಲೀ" ಅಮಂ । "ಗಂಧಫಲಯಪಿ ಗುಂದ್ರಾಯಾಂ ಚಂಪಕಸ್ಯ ಚ ಕೋರಕೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಗಂಧಬೀಜಾ ಗಂಧಬೀಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೆಂತ್ಯ. ಗಂಧೋ ಬೀಜೇ ಯಸ್ಯಾ: ।

ಗಂಧಮಾದ ಗಂಧಮಾದ (ಪುಂ) 1. ಸುಗ್ರೀವ ಸೈನ್ಯದಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ವಾನರ. 2. ಆಕೂರನ ಒಬ್ಬ ಸಹೋದರ.

ಗಂಧಮಾದನ ಗಂಧಮಾದನ (ಪುಂ) 1. ಭ್ರಮರ, ಮುಂಬಿ. 2. ಗಂಧಕ. 3. ಸುಗ್ರೀವನ ಸೈನ್ಯದಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ವಾನರ. "ಗಜೋ ಗವಾಕ್ಷೋ ಗವಯ: ಶರಭೋ ಗಂಧಮಾದನ: । ಮಂದ್ರಶ್ಚ ದ್ವಿವಿದಶ್ಚೈವ ಹನುಮಾನ್ ಜಾಮ್ಬವಾಸ್ತಥಾ" ರಾಮಾಂ । (ಪುನಂ) 4. ಗಂಧಮಾದನಪರ್ವತ, ಸಪ್ತಕುಲಪರ್ವತಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಗಂಧೇನ ಮಾದಯತಿ -ಮದೀ (ಹೃ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) । "ಪದ್ಮಭೇದಪಿಶುನಾ: ಸಿಂಹೇವಿರೇ ಗಂಧಮಾದನ-ವನಾಂತಮಾರುತಾ:" ಕುಮಾಂ ೮-೮೬ । (ನಂ) 5. ಗಂಧಮಾದನ ಪರ್ವತದ ಒಂದು ಅರಣ್ಯ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಮಾದನೀ -ಮಾದನೀ. 6. ಸುರ, ಮದ್ಯ. "ಗಂಧಮಾದನ: ಕರ್ಪಾದ್ರಿಭಿದೋರಲಿನಿ ಗಂಧಕೇ । ಗಂಧಮಾದನೀ ಸುರಾಯಾಮ್" ಹೇಮಂ ।



ಗಂಧಮಾರ್ಜರಿ ಗಂಧಮಾರ್ಜರ (ಪುಂ) ಪುನುಗುಬೆಕ್ಕು.

ಗಂಧಪ್ರಧಾನೋ ಮಾರ್ಜರಿಃ |

ಗಂಧಮೂಲಿ ಗಂಧಮೂಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಚೋರ. ಗಂಧ ಮೂಲಮಸ್ಯಾಃ | “ಶರೀ ಗಂಧಮೂಲಿ ಪಙ್ಗುನಿಕೇತಯಪಿ” ಅಮಂ |

ಗಂಧಮೂಲಿಕ ಗಂಧಮೂಲಿಕ (ಪುಂ) ಮೂಗಿಲಿ.

ಗಂಧಮೂಲಿ ಗಂಧಮೂಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂಗಿಲಿ.

ಗಂಧಮೃಗ ಗಂಧಮೃಗ (ಪುಂ) 1. ಪುನುಗುಬೆಕ್ಕು. 2. ಕಸ್ತೂರಿ ಮೃಗ. ಗಂಧಪ್ರಧಾನೋ ಮೃಗಃ |

ಗಂಧಮೇಯುನ ಗಂಧಮೇಯುನ (ಪುಂ) ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. ಗಂಧೇನ ಗಂಧಪ್ರಾಣೇನ ಮೇಯುನಮಸ್ಯ |

ಗಂಧಮೋದನ ಗಂಧಮೋದನ (ಪುಂ) ಗಂಧಕ. ಗಂಧೇನ ಮೋದಯತಿ — ಮುಹ (ಹರ್ಷ) + ಗಿಚ್ “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪) |

ಗಂಧಮೋಹಿನಿ ಗಂಧಮೋಹಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಪಿಗೆಯ ಮೋಗು. ಗಂಧೇನ ಮೋಹಯತಿ — ಮುಹ (ಬೇಚಿಲ್ಯ) + ಗಿಚ್ “ಗಿಣಿಃ” (೩-೨-೭೮) | “ಕೀಪ್” (೪-೧-೪) |

ಗಂಧಯುಕ್ತಿ ಗಂಧಯುಕ್ತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯಗಳ ಮೇಳನ, ಸುಗಂಧವಸ್ತುಗಳ ಮಿಶ್ರಣ, ಪರಿಮಳದ್ರವ್ಯಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವುದು. ಗಂಧದ್ರವ್ಯಾಣಾಂ ಯುಕ್ತಿಃ ಯೋಜನಮ್ |

ಗಂಧರಾಜ ಗಂಧರಾಜ (ಪುಂ) 1. ಸುಗಂಧರಾಜನಿಡ. ಗಂಧಾನಾಂ ಗಂಧಯುಕ್ತಾನಾಂ ರಾಜಾ “ಟಕ್” (೪-೪-೯೧) | (ನಂ) 2. ಗಂಧದ ಮರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ರಾಜಿ — ರಾಜೀ. 3. ನಖಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ.

ಗಂಧವ ಗಂಧವ (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. ಗಂಧಮರ್ವತಿ — ಅವ (ಗತೀ) “ಅಙ್” (೩-೨-೧) | ಶಕಂ | 2. ಕಸ್ತೂರಿ ಮೃಗ. 3. ಪುಂಸ್ಕೋಕಿಲ, ಗಂಡುಕೋಗಿಲಿ. 4. ಅಂತರಾಭವಸತ್ತ್ವ, ಮರಣಾನಂತರ ಪುನಃ ಬೇರೆ ಶರೀರವನ್ನು ಹೊಂದುವ ಪೂರ್ವ ಮಧ್ಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ಯಾತನಾಶರೀರವುಳ್ಳ ಜೀವ. ಅಂತರಾಭವಸತ್ತ್ವವು ಬೇರೆ ಪ್ರಾಣಿಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಅವೇಶವಂಟುಮಾಡುವುದು. 5. ಗಂಧವ, ದೇವಯೋನಿ ವಿಶೇಷ, ದೇವಗಾಯಕ.

ಗಂಧವಕನ್ಯಾ ಗಂಧವಕನ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಧವರ ಹುಡುಗಿ.

ಗಂಧವತೆಲ ಗಂಧವತೆಲ (ನಂ) ಏರಂಡ ತೆಲ, ಹರಳೆಣ್ಣೆ.

ಗಂಧವನಗರ ಗಂಧವನಗರ — ಪುರ — ಪುರ (ನಂ) 1.

ಗಂಧವರ ಪಟ್ಟಣ. ಇದು ಗುಹ್ಯಕಲೋಕಕ್ಕೆ ಮೇಲು ಭಾಗದಲ್ಲೂ ವಿದ್ಯಾಧರಲೋಕದ ಕೆಳಭಾಗದಲ್ಲೂ ಇರುವುದು. 2. ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಅಶುಭಸೂಚಕವಾದ ಒಂದು ಪಟ್ಟಣ.

ಗಂಧವಪತ್ನಿ ಗಂಧವಪತ್ನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಧವನ ಹೆಂಡತಿ, ಅಪ್ಪರಸ್ತು.

ಗಂಧವರಾಜ ಗಂಧವರಾಜ (ಪುಂ) ಗಂಧವರ ಒಡೆಯನಾದ ಚಿತ್ರರಥ.

ಗಂಧವಲೋಕ ಗಂಧವಲೋಕ (ಪುಂ) ಗುಹ್ಯಕಲೋಕ ಮತ್ತು ವಿದ್ಯಾಧರಲೋಕಗಳ ಮಧ್ಯಲೋಕ.

ಗಂಧವವಧು ಗಂಧವವಧೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಂಧವನ ಪತ್ನಿ. 2. ಕಚೋರ.

ಗಂಧವವಿದ್ಯಾ ಗಂಧವವಿದ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಗೀತವಿದ್ಯೆ, ಗಾನಕಲೆ.

ಗಂಧವವೇದ ಗಂಧವವೇದ (ಪುಂ) ಸಾಮವೇದದ ಉಪವೇದವಾದ ಸಂಗೀತಶಾಸ್ತ್ರ.

ಗಂಧವವಿವಾಹ ಗಂಧವವಿವಾಹ (ಪುಂ) ಎಂಟುವಿಧ ವಿವಾಹಗಳಲ್ಲೊಂದು ಭೇದ, ವಧುವರರ ತಾಯಿತಂದೆಗಳಾರನ್ನೂ ಕೇಳದೆ ಅವರ ಅನುಮತಿ ಪಡೆಯದೆ ಪರಸ್ಪರ ಪ್ರೇಮದಿಂದ ತಮ್ಮ ಇಷ್ಟದಂತೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಮದುವೆ. “ಇಚ್ಛಯಾನ್ಯೋನ್ಯಸಂಯೋಗಃ ಕನ್ಯಾಯಾಶ್ಚ ವರಸ್ಯ ಚ | ಗಾಂಧವಃ ಸ ತು ವಿಜ್ಞೇಯಃ ಮೇಥುನ್ಯಃ ಕಾಮಸಂಭವಃ” ಮನುಂ ೩-೩೨ |

ಗಂಧವಹಸ್ತ ಗಂಧವಹಸ್ತ (ಪುಂ) ಏರಂಡವೃಕ್ಷ, ಹರಳುನಿಡ. ಗಂಧವಸ್ಯ ಶರಭಮೃಗಸ್ಯ ಹಸ್ತ ಇವ ಪತ್ರಮಸ್ಯ | “ಅಮೃತಪಿಪ್ಪಲಾಕ್ಷುಲವರ್ಧಮಾನಾ ಗಂಧವಹಸ್ತತ್ರಿಪುಟೀಕಲಾಶ್ಚ” ಹಾರಾಂ |

ಗಂಧವಗಿಜ್ ಗಂಧವಗಿಜ್ (ಪುಂ) ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯಗಳ ವ್ಯಾಪಾರಿ.

ಗಂಧವತ್ ಗಂಧವತ್ (ವಿಂ) 1. ವಾಸನೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಪರಿಮಳಯುಕ್ತವಾದ. ಗಂಧೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪) | 2. ದುರ್ಗಂಧಯುಕ್ತವಾದ, ಕಟ್ಟಿ ವಾಸನೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. “ಗಂಧವದ್ಧಿರಚಂದನೋಕ್ಷಿತಾ ಜೀವಿತೇಶವಸತಿ ಜಗಾಮ ಸಾ” ರಘುಂ ೧೧-೨೦ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಕೀಪ್” (೪-೧-೬) | —ವತೀ —ವತೀ.

ಗಂಧವತೀ ಗಂಧವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೃಥಿವಿ, ಭೂಮಿ. ಗಂಧೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪) | ಮಸ್ಯ “ವಃ” (೮-೨-೯) | “ಕೀಪ್” (೪-೧-೬) | ಪೃಥಿವಿಯಲ್ಲಿ ಗಂಧಗುಣವಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. “ತತ್ರ ಗಂಧವತೀ ಪೃಥಿವೀ” ತಂ ಸಂ | 2. ಸತ್ಯವತಿ, ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯ ತಾಯಿ, ಪರಾಶರಮಹರ್ಷಿಯ ಪರಪ್ರಸಾದದಿಂದ ದಾಶಕನ್ಯೆಯಾದ ಇವಳ ದೇಹದಲ್ಲಿ ಸೌಗಂಧ್ಯವುಂಟಾದುದರಿಂದ ಸತ್ಯವತಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು. “ಉಮುಕ್ತಾ ವರಂ ವಕ್ಷೇ ಗಾತ್ರ



ಸೌಗಂಧ್ಯಮುತ್ತಮಮ್। ಸ ಚಾಸ್ಯ ಭಗವಾನ್ ಪ್ರಾದಾತ್ ಮನಸಃ  
ಕಾಙ್ಕ್ಷಿತಂ ಪ್ರಭುಃ। ತೇನ ಗಂಧವತೀತ್ಯೇವ ನಾಮಾಸ್ಯಾಃ ಪ್ರಚಿತಂ  
ಭುವಿ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೪। 3. ಸುರೇ, ಮಂದ್ಯ. 4. ಮುರೇ  
ಮುಂಬು ಒಂದು ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ. 5. ಮಲ್ಲಿಗೆ ಗಿಡ.  
6. ಜಾಜಿಗಿಡ.

ಗಂಧವಹ ಗಂಧವಹ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ವಹತಿ—ವಹ  
(ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಗಂಧಸ್ಯ ವಹಃ।  
"ದ್ವಿದಕ್ಷಿಣಾ ಗಂಧವಹಂ ಮುಖೇನ ವ್ಯಲಿಕನಿಶ್ವಾಸಮಿವೋತ್ಸಸಜಂ"  
ಕುಮಾಂ ೩-೨೫। (ವಿಂ) 2. ವಾಸನೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿ  
ರುವ. ಪರಿಮಳವನ್ನು ಹೊತ್ತು ತರುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ವಹಾ  
—ವಹಾ. 3. ಫ್ರಾಣಿ, ಮೂಗು, ನಾಸಿಕೆ. ಗಂಧಸ್ಯ ವಹಾ।  
ಗಂಧವಾರಿ ಗಂಧವಾರಿ (ನಂ) ಪನ್ನೀರು, ಪರಿಮಳದ್ರವ್ಯ  
ಮಿಶ್ರವಾದ ನೀರು.

ಗಂಧವಾಹ ಗಂಧವಾಹ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಗಂಧ  
ವಹತಿ—ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಅಞ್" (೩-೨-೧)। ವಾಯುವು  
ಗಂಧವನ್ನು ಹೊತ್ತು ತರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಇಹ ಹಿ  
ದಹತಿ ಚೇತಃ ಕೇತಕೀಗಂಧಬಂಧುಃ ಪ್ರಸರದಸಮಬಾಣಪ್ರಾಣವದ್ಗಂಧ-  
ವಾಹಃ" ಗೀತಗೋಂ। 2. ಕಸ್ತೂರಿ ಮೃಗ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
—ವಾಹೀ —ವಾಹೀ. ನಾಸಿಕೆ, ಮೂಗು.

ಗಂಧಲಕ್ಷಣ ಗಂಧಲಕ್ಷಣ (ಪುಂ) ಫುಮರ, ದುಂಬಿ.

ಗಂಧಶತೀ ಗಂಧಶತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಚೋರ.

ಗಂಧಶುಣ್ಡಿಣಿ ಗಂಧಶುಣ್ಡಿಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂಗಿಲಿ. ಗಂಧ-  
ಯುಕ್ತಃ ಶುಣ್ಡಿ ಮುಖಮಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫)। "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೫)।

ಗಂಧಶೇಖರ ಗಂಧಶೇಖರ (ನಂ) ಮೃಗಮಂದ, ಕಸ್ತೂರಿ.  
"ಮೃಗನಾಭಿರ್ಮೃಗಮದೋ ಗಂಧಶೇಖರಮಿತ್ಯಪಿ" ಹಾರಾಂ।

ಗಂಧಸಾರ ಗಂಧಸಾರ (ಪುಂ) ಚಂದನವೃಕ್ಷ, ಗಂಧದಮರ.  
ಗಂಧಯುಕ್ತಃ ಸಾರೋಜ್ಯ.

ಗಂಧಸೋಮ ಗಂಧಸೋಮ (ನಂ) ಬಿಳಿನೈದಿಲೆ. ಗಂಧಾರ್ಥ  
ಸೋಮೋ ಯಸ್ಯ। "ಹೀಬೇರಂ ವಾರಿವಾಲಕಮ್। ಸಿತೋತ್ಪಲಂ  
ಗಂಧಸೋಮಮ್" ಹಾರಾಂ।

ಗಂಧಹಾರಿಕಾ ಗಂಧಹಾರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪರಗೃಹದಲ್ಲಿ ಇದ್ದು  
ಕೊಂಡು ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ ಹೆಂಗಸು.  
ಗಂಧಂ ಹರತಿ — ಹೃತ್ (ಹರಣ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।  
"ಢಾಪ್" (೪-೧-೪)।

ಗಂಧಾ ಗಂಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಪಿಗೆ ಹೂವಿನ ಮೊಗ್ಗು.  
2. ಕಚೋರ. 3. ಮೂರಲೆ ಹೊನ್ನೆ. ಗಂಧೋಜ್ಯಸ್ಯಾಃ।

ಗಂಧಾಲು ಗಂಧಾಲು (ಪುಂ) ಮೂಗಿಲಿ.

ಗಂಧಾಜೀವ ಗಂಧಾಜೀವ (ಪುಂ) ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯಗಳ  
ವ್ಯಾಪಾರಿ, ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾರಿ ಜೀವಿಸುವವನು.  
ಗಂಧೇನ ಗಂಧದ್ರವ್ಯೇಣಾಜೀವತಿ — ಆ + ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ)  
"ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಗಂಧೇನ ಆಜೀವೋ ಜೀವಿಕಾ  
ಯಸ್ಯ ವಾ।

ಗಂಧಾಡ್ಯ ಗಂಧಾಡ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಕಿತ್ತಲೆಗಿಡ. ಗಂಧೇನ ಆಡ್ಯಃ।  
(ನಂ) 2. ಚಂದನ, ಗಂಧ. (ವಿಂ) 3. ಸುಗಂಧದಿಂದ  
ತುಂಬಿದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಡ್ಯಾ —ಡ್ಯಾ. 4. ಮಾದಳದ  
ಗಿಡ.

ಗಂಧಾರ ಗಂಧಾರ (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 1. ಗಂಧಾರದೇಶ.  
(ವಿಂ) 2. ಪರಿಮಳದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಸುವಾಸನೆಯುಳ್ಳ.  
ಗಂಧಮೃತ್ಯತಿ — ಋ (ಗತೌ) "ಅಞ್" (೩-೨-೧)।

ಗಂಧಾಶಮನ್ ಗಂಧಾಶಮನ್ (ಪುಂ) ಗಂಧಕಶಿಲೆ. ಗಂಧ-  
ಯುಕ್ತೋಜಮಾ। "ಗಂಧಾಶಮನಿ ತು ಗಂಧಕಃ" ಅಮಂ।

ಗಂಧಿನ್ ಗಂಧಿನ್ (ವಿಂ) ಸುಗಂಧಯುಕ್ತವಾದ, ಪರಿಮಳ  
ದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಗಂಧೋಜ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। ಗಂಧಿನಿ ಗಂಧಿನೀ.

ಗಂಧಿನಿ ಗಂಧಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುರೆಯೆಂಬ ಒಂದು ಸುಗಂಧ  
ದ್ರವ್ಯ.

ಗಂಧಿಪರ್ಣ ಗಂಧಿಪರ್ಣ (ಪುಂ) ಏಳಲೆ ಬಾಳೆಗಿಡ.

ಗಂಧೇಂದ್ರಿಯ ಗಂಧೇಂದ್ರಿಯ (ನಂ) ಫ್ರಾಣೇಂದ್ರಿಯ,  
ಮೂಗು. ಗಂಧಗ್ರಾಹಕಮಿन्द्रಿಯಮ್।

ಗಂಧೋತ್ತಮ ಗಂಧೋತ್ತಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂದ್ಯ, ಹೆಂಡ.  
ಗಂಧೇನ ಉತ್ತಮಾ।

ಗಂಧೋದಕ ಗಂಧೋದಕ (ನಂ) ಪನ್ನೀರು, ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ  
ಗಂಧದ ಕೂಡಿದ ನೀರು.

ಗಂಧೋಲಿ ಗಂಧೋಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಣಜದ ಹುಳು.  
ಗಂಧಯತೇ—ಗಂಧ (ಅರ್ಧೇ) "ಆಲಚ್" ಬಾಹುಂ। "ಗಂಧೋಲಿ  
ವರಡಾ ದ್ವಯಃ" ಅಮಂ। 2. ತುಂತಿ.

ಗಂಧಸ್ತಿ ಗಂಧಸ್ತಿ (ಪುಂ) 1. ರಶ್ಮಿ, ಕಿರಣ. ಗಂಧಯತೇ ಇತಿ ಗಃ  
ಜೇಯವರ್ಗಃ ವಿಷಯಃ, ತಂ ಗಂಧಸ್ತಿ ದೀಪಯತಿ — ಗಂಧ (ಗಂಧಸ್ತನ-  
ದೀಪ್ಯತಃ) "ಕ್ತಿಚ್" (೩-೩-೧೭೪)। "ತಥಾತಿತಪ್ತಂ  
ಸವಿತುರ್ಗಂಧಸ್ತಿಭಿರ್ಮುಖಂ ತದೀಯಂ ಕಮಲಶ್ರಿಯಂ ದಧೌ" ಕುಮಾಂ  
೪-೨೧। 2. ಸೂರ್ಯ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಸ್ವಾಹಾದೇವಿ,  
ಅಗ್ನಿಯ ಪತ್ನಿ. "ಗಂಧಸ್ತಿಃ ಕಿರಣೋ ಸೂರ್ಯೋ ನಾ ಸ್ವಾಹಾಃ ತು  
ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ।

ಗಂಧಸ್ತಿಪಾಣಿ ಗಂಧಸ್ತಿಪಾಣಿ (ಪುಂ) ಕಿರಣವೇ ಕೈಯಾಗಿ  
ಉಳ್ಳ ಸೂರ್ಯ. ಗಂಧಸ್ತಿಃ ಪಾಣಿರೀವಾಸ್ಯ।



ಗಭಸ್ತಿಮತ್ ಗಭಸ್ತಿಮಾತ್ (ಪುಂ) (ಅತಿಶಯವಾದ ಕಿರಣ ಗಳುಳ್ಳ) ಸೂರ್ಯ. ಗಭಸ್ತಯೋ ಭೂಮ್ನಾ ಸಂತಯಸ್ಯ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪). "ವಿಭಾವಸು: ಸಾರಥಿವೇವ ವಾಯುನಾ ಧನವ್ಯಪಾಯೇನ ಗಭಸ್ತಿಮಾನಿವ" ರಘುಂ ೩-೩೭.

ಗಭಸ್ತಿಮಾಲಿನ್ ಗಭಸ್ತಿಮಾಲಿನ್ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಗಭಸ್ತಿನಾ ಮಾಲಾಸ್ತಯಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೬).

ಗಭಸ್ತಿಹಸ್ತ ಗಭಸ್ತಿಹಸ್ತ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಗಭಸ್ತಯೋ ಹಸ್ತಾ ಇವ ಯಸ್ಯ.

ಗಭೀರ ಗಭೀರ (ವಿಂ) 1. ಅಗಾಧವಾದ, ಅಳವಾದ. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ईरन्" ಭಾಷ (೩ಂ ೪-೩೫). "ಗಭೀರರಂಧ್ರೇಷು ಭೃಗುಂ ಮಹಿಭೃತ: ಪ್ರತಿವನೇಶ್ವರಮಿತೇನ ಸಾನುಷು" ಕಿರಾಂ ೧೪-೪೬. 2. ಗಹನವಾದ, ತಿಳಿಯಲಿಲ್ಲ ಅಶಕ್ತವಾದ. 3. ಗೂಢವಾದ. ರಹಸ್ಯವಾದ. "ಗಭೀರೋ ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯಾ-ತ್ಪ್ರಶಮನಶ್ಚಿರತನ್ತಸುಜನ:" ಮಂವಿಂ ೨-೧೫. 4. ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಅಶಕ್ತವಾದ. ಪ್ರವೇಶಕ್ಕೆ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದ, ಹೋಗಲಾಗದ.

ಗಭೀರಾತ್ಮನ್ ಗಭೀರಾತ್ಮನ್ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಗಭೀರ: ಅನ್ಯೇಷಾಂ ಚತುರ್ಮುಖಾದೀನಾಮಪ್ರಧೃಷ್ಯ: ಆತ್ಮಾ ಯಸ್ಯ. "ಧಾತ್ರಾದೀನಾಮಪ್ರಧೃಷ್ಯ ಗಾಂಭೀರೈ ಯಸ್ಯ ವಿद्यತೇ. ಗಭೀರಾತ್ಮಾ ಸ ವಿಜ್ಞೇಯ: ವಸ್ವರ್ಗೋ ಮನುರೂತಮ:" ಇತಿ ನಿರ್ಹಿತಿ: "ಚತುರಶ್ಚೋ ಗಭೀರಾತ್ಮಾ" ವಿಂ ಸಂ.

ಗಮ್ಲ - ಗತೌ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ). ಗಚ್ಛತಿ. ಜಗಾಮ. ಗಂತಾ. ಗಮಿಷ್ಯತಿ. ಗಚ್ಛತು. ಅಗಚ್ಛತ್. ಗಚ್ಛೇತ್. ಗಮ್ಯಾತ್. ಅಗಮತ್. ಅಗಮಿಷ್ಯತ್. 1. ಹೋಗು, 2. ಹೊಂದು, ಸೇರು, ತಲುಪು.

ಭಾವೇ:—ಗಮ್ಯತೇ. ಜಗ್ಮೇ. ಗಂತಾ. ಗಂಸ್ಯತೇ. ಗಮ್ಯತಾಮ್. ಅಗಮ್ಯತ. ಗಮ್ಯೇತ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗಿಚಿ:—ಗಮಯತಿ, -ತೇ. ಗಮಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಗಮಯಿತಾ. ಗಮಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ. ಗಮಯತು, -ತಾಮ್. ಅಗಮಯತ್, -ತ. ಗಮಯೇತ್, -ತ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ:—ಜಿಗಮಿಷತಿ. ಜಿಗಮಿಷಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಜಿಗಮಿಷಿತಾ. ಜಿಗಮಿಷಿಷ್ಯತಿ. ಜಿಗಮಿಷತು. ಅಜಿಗಮಿಷತ್. ಜಿಗಮಿಷೇತ್. ಜಿಗಮಿಷ್ಯಾತ್. ಅಜಿಗಮಿಷಿತ್. ಅಜಿಗಮಿಷಿಷ್ಯತ್.

ಕೃತ್ಸು:—ಗಮ್ಯತು. ಗಮನೀಯಮ್. ಗಮ್ಯಮ್. ಭಾವೇ—ಗತಮ್. ಗತವಾನ್. ಕರ್ತಂ—ಗತ: ಗಚ್ಛನ್, ಗಚ್ಛಂತಿ. ಗಮ್ತುಮ್. ಗತಮ್. ಗಮನಮ್. ಗತ್ವಾ. ಆಗಮ್ಯ, ಆಗಮ್ಯ.

ಪ್ರಯಾತು ಕೃತ್ಸು:—ಗಮಯಿತವ್ಯ: ಗಮನೀಯ: ಗಮ್ಯ: ಗಮಿತ: ಗಮಿತವಾನ್. ಗಮಯನ್, ಗಮಯಂತಿ. ಗಮಯಮಾನ: ಗಮಯಿತುಮ್. ಗಮಿತಮ್. ಗಮನಮ್. ಗಮಯಿತ್ವಾ, ಆಗಮ್ಯ.

ಸಮ್ ಪೂರ್ವಕಂ ಗಮ್ಲ ಧಾತುವು ಅತ್ಯಂತವದಿಯಾಗು ವುದು. ಸಂಗಚ್ಛತೇ. ಸಂಜಗ್ಮೇ. ಸಂಗಂತಾ. ಸಂಗಂಸ್ಯತೇ. ಸಂಗಚ್ಛತಾಮ್. ಸಮಗಚ್ಛತ. ಸಂಗಚ್ಛೇತ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಅಧಿ + ಗಮ್ಲ = ಅಧಿಗಚ್ಛತಿ. ಅಧ್ಯಗಚ್ಛತ್. ಅಧಿಗತಮ್. ಅಧಿಗಮ್ಯ. 1. ಹೊಂದು, ಪಡೆ. "ಅಧಿಗಮ್ಯ ಜಗತ್ಯಧೀಶ್ವರಾದಥ ಮುಕ್ತಿ ಪುರುಷೋತ್ತಮಾತ್ತತ:" ನೈಷಂ ೨-೧. 2. ಹೋಗು, ಹೊಂದು, ಸೇರು. "ಅಧಿಗತನಿಲಯಾನಾ-ಮೌಪವಾಹದ್ವಿಪಾನಾಂ ಮದಪಯಸಿ ವಿತನ್ವನ್ ಮಜ್ಜನೋನ್ಮಜ್ಜ-ನಾನಿ" ಯಾದಂ ೧೯-೭೭.

(2) ಸಮ್ + ಅಧಿ + ಗಮ್ಲ = ಸಮಧಿಗಚ್ಛತಿ. ಸಮಧಿಗಮ್ಯ. ಹೊಂದು, ಸರಿಯಾಗಿ ಪಡೆ. "ಯತ್ತೇ ಸಮಧಿಗಚ್ಛಂತಿ ಯಸ್ಯೇತೇ ತಸ್ಯ ತದ್ವನಮ್" ಮನುಂ ೮-೪೧೬.

(3) ಅನು + ಗಮ್ಲ = ಅನುಗಚ್ಛತಿ. ಅನ್ವಗಚ್ಛತ್. ಅನುಗಮನಮ್. ಅನುಸರಿಸಿ ಹೋಗು, ಹಿಂಬಾಲಿಸಿ ಹೋಗು. "ಮಾರ್ಗ ಮನುಷ್ಯೇಶ್ವರಧರ್ಮಪತ್ನೀ ಶ್ರುತೇರಿವಾರ್ಥ ಸ್ಮೃತಿರನ್ವಗಚ್ಛತ್" ರಘುಂ ೨-೨.

(4) ಅಪ + ಗಮ್ಲ = ಅಪಗಚ್ಛತಿ. ಅಪಜಗಾಮ. ಹೊರಟುಹೋಗು. "ಸಾ ಕನ್ಯಾಪಜಗಾಮಾಥ ಸಮೀಪಾತ್ತಸ್ಯ ಧೀಮತ:" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೫೪-೧೪.

(5) ಅಭಿ + ಗಮ್ಲ = ಅಭಿಗಚ್ಛತಿ. ಅಭಿಜಗಾಮ. ಅಭಿಗತ: ಎದುರಿಗೆ ಬಾ. "ಅಭಿಗಮ್ಯ ತತ: ಕ್ಷಿಪ್ರಂ ರಾಕ್ಷಸೀ ಧಾನ್ಯಮಾಲಿನೀ" ರಾಮಾಂ. "ತಮಮ್ಯಗಚ್ಛತ್ಪ್ರಥಮೋ ವಿಧಾತಾ ಶ್ರೀವತ್ಸಲಕ್ಷ್ಮಾ ಪುರುಷಶ್ಚ ಸಾಕ್ಷಾತ್" ಕುಮಾಂ ೭-೪೩.

(6) ಅವ + ಗಮ್ಲ = ಅವಗಚ್ಛತಿ. ಅವಗತಮ್. ಅವಗಮ್ಯ. ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳು, ಅರಿತುಕೊಳ್ಳು. "ತದೇವ ಧ್ಯಾನಾದವಗತೋಽಸ್ಮಿ" ಶಾಕುಂ ೭. "ನ ಚ ಮೇಽವಗಚ್ಛತಿ ಯಥಾ ಲಘುತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೯-೫೬.

(7) ಆ + ಗಮ್ಲ = ಆಗಚ್ಛತಿ. ಆಗಮನಮ್. ಆಗತ: ಆಗಮ್ಯ. ಆಗಮಿಸು, ಬಾ. "ಆಗಚ್ಛತೋಽನುಚಿ ಗಜಸ್ಯ ಘಂಟಯೋ: ಸ್ವನಂ ಸಮಾಕರ್ಣ್ಯ ಸಮಾಕುಲಾಙ್ಗನಾ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೩೪.

(8) ಅಧಿ + ಆ + ಗಮ್ಲ = ಅಧ್ಯಾಗಚ್ಛತಿ. ಅಧ್ಯಾಗಮ್ಯ. ಪಡೆ.



(9) ಅಭಿ+ಆ+ಗಮ್ಲ=ಅಮ್ಯಾಗಚ್ಛತಿ | ಅಮ್ಯಾಗತಃ | ಎದುರಿಗೆ ಬಾ, ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ಬಾ. “ಅಮ್ಯಾಗತಂ ಸುರರಿಪೋಃ ಸುರರಾಜಸೈನ್ಯಂ ಶ್ರೋಮಂ ಜಗಾಮ ಪರಮಂ ಭಯವೇಪಮಾನಮ್” ಕುಮಾಂ ೧೭-೧೧ |

(10) ಉಪ+ಆ+ಗಮ್ಲ=ಉಪಾಗಚ್ಛತಿ | ಉಪಾಗಮಃ | ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬಾ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಾ. “ವಿಚಿಂತಯಂತಿ ಯಮನನ್ಯ-ಮಾನಸಾ ತಪೋಧನಂ ವೇತಿಸಿ ನ ಮಾಮುಪಾಗತಮ್” ಶಾಕುಂ ೪-೧ |

(11) ಪ್ರತಿ+ಆ+ಗಮ್ಲ=ಪ್ರತ್ಯಾಗಚ್ಛತಿ | ಪ್ರತ್ಯಾಗತಃ | ಹಿಂತಿರುಗಿ ಬಾ. “ರಣಾತ್ ಪ್ರತ್ಯಾಗತಂ ಶೂರಂ ಭಾರ್ಯಾ ಚ ಗತಯೌವನಾಮ್” ಚಾಣಕ್ಯಂ |

(12) ಉದ್+ಗಮ್ಲ=ಉದ್ಗಚ್ಛತಿ | ಉದ್ಗತಃ | 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೊರಡು. “ರೋಮೋದ್ಗಮಃ ಪ್ರಾದುರಭೂದುಮಾಯಾಃ” ಕುಮಾಂ ೭-೭೭ | 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳು. “ಉದ್ಗತೇಂದುಮವಿಭಿನ್ನತಮಿಸ್ತಾಂ ಪಶ್ಯತಿ ಸ್ಮ ರಜನೀಗವಿತೃಪ್ತಃ” ಕಿರಾಂ ೧-೨೪ |

(13) ಪ್ರತಿ+ಉದ್+ಗಮ್ಲ=ಪ್ರತ್ಯುದ್ಗಚ್ಛತಿ | ಪ್ರತ್ಯುದ್ಗತಃ | ಎದುರುಗೊಂಡು ಹೋಗು. “ಶ್ರುತಪ್ರಕಾಶಂ ಯಶಸಾ ಪ್ರಕಾಶಃ ಪ್ರತ್ಯುಜ್ಜಗಾಮಾತಿಥಿಮಾತಿಥೇಯಃ” ರಘುಂ ೫-೨ |

(14) ಉಪ+ಗಮ್ಲ=ಉಪಗಚ್ಛತಿ | 1. ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಹೋಗು, ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಹೋಗು. “ಸದನಮುಪಗತೋಽಹಂ ಪೂರ್ವಮಭ್ಯಾಜಯೋನಿಃ ಸಪದಿ ಮುನಿಭಿರುಚ್ಚೇರಾಸನೇಷುಜ್ಜಿತೇಷು” ಪ್ರಬೋಧಂ ೨-೧೦ | 2. ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ. “ಉಪಗತಮವಧೀರ-ಯನ್ತ್ಯಭವ್ಯಾಃ ಸ ನಿಪುಣಮೇತ್ಯ ಕಯಾಚಿದೇವಮೇವ” ಕಿರಾಂ ೧೦-೫೧ |

(15) ಅಭಿ+ಉಪ+ಗಮ್ಲ=ಅಮ್ಯುಪಗಚ್ಛತಿ | ಅಮ್ಯುಪ-ಗಮಃ | 1. ಅಂಗಳಿಕರಿಸು, ಒಪ್ಪಿಕೊ, ಸಂಮತಿಸು. “ಕರಿಷ್ಯಾಮ್ಯೇವಂ ನೋ ಪುನರिति ಭವೇದಮ್ಯುಪಗಮಃ” ರತ್ನಾಂ ೨-೧೯ | 2. ಎದುರಾಗಿ ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಹೋಗು.

(16) ನಿರ+ಗಮ್ಲ=ನಿರ್ಗಚ್ಛತಿ | ನಿರ್ಗಮಃ | ಹೊರಡು, ಹೊರಟುಹೋಗು. “ಅಧಿವಿತ್ತಾ ತು ಯಾ ನಾರೀ ನಿರ್ಗಚ್ಛೇದ್ರುಷಿತಾ ಗೃಹಾತ್” ಮನುಂ ೧-೮೩ |

(17) ಪರಾ+ಗಮ್ಲ=ಪರಾಗಚ್ಛತಿ | ಪರಾಗತಃ | 1. ಪ್ರಾಪಿಸು, ಹರಡು. “ನವಪಲಾಶಪಲಾಶವನಂ ಪುರಃ ಸ್ಕುಟ-ಪರಾಗಪರಾಗತಪಕ್ಷಜಮ್” ಮಾಘಂ ೬-೨ | 2. ಹಿಂತಿರುಗಿ ಬಾ.

(18) ಪರಿ+ಗಮ್ಲ=ಪರಿಗಚ್ಛತಿ | ಪರಿಗತಃ | 1. ಸುತ್ತು, ಸುತ್ತುಲೂ ತಿರುಗು, ಸುತ್ತುಲೂ ಹೋಗು. “ಯಥಾ ಹಿ ಮೇರುಭಗವತಾ (ಸೂರ್ಯೇಣ) ನಿಯತಃ ಪರಿಗಮ್ಯತೇ” ಮಾಂ ವನಂ | 2. ಬಳಸು, ಸುತ್ತುವರೆ, ಸುತ್ತುಗಟ್ಟು.

“ಅಥ ಸ ವಲ್ಕದುಕೂಲಕುಥಾದಿಭಿಃ ಪರಿಗತೋ ಜ್ವಲದುಢತ-ವಾಲಧಿಃ” ಮೃದ್ವಿಂ ೧೦-೧ |

(19) ಪ್ರತಿ+ಗಮ್ಲ=ಪರಿಗಚ್ಛತಿ | ಪ್ರತಿಗತಃ | ಹಿಂತಿರುಗಿ ಹೋಗು.

(20) ವಿ+ಗಮ್ಲ=ವಿಗಚ್ಛತಿ | ವಿಗಮಃ | ಹೊರಟು ಹೋಗು, ಮರೆಯಾಗಿ ಹೋಗು, ಮಾಯವಾಗು. “ಋಚಿ-ಭರ್ತುರಸ್ಯ ವಿರಹಾಧಿಗಮಾದಿತಿ ಸಂಧ್ಯಯಾಪಿ ಸಪದಿ ವ್ಯಗಮಿ” ಮಾಘಂ ೧-೧೭ |

(21) ಸಮ್+ಗಮ್ಲ=ಸಂಗಚ್ಛತೇ | ಸಂಗಮಃ | ಒಟ್ಟು ಗೂಡು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರು, ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಸೇರು. “ಸಂಜಗಮಾತೇ ತಾವಪಾಯಾನಪೇಕ್ಷಾ ಸೇನಾಂಭೋಧಿ ಧೀರನಾದೌ ರಯೇಣ” ಮಾಘಂ ೧೮-೧ |

ಗಮ ಗಮಂ (ಪುಂ) 1. ಜೈತ್ರಯಾತ್ರ. ವಿಜಯಕ್ಕಾಗಿ ಹೊರಟ ಪ್ರಯಾಣ. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ಅಪ್” (೩-೩-೫೮) | 2. ಮಾರ್ಗ. ದಾರಿ. “ಅಶ್ವಸ್ಯೇಕಾಹಗಮಃ” ಪಾಂ ಸುಂ ೫-೨-೧೯ | 3. ಹೋಗುವುದು, ನಡೆಯುವುದು. 4. ಉಪಭೋಗ, ಸಂಭೋಗ, ಹೆಂಗಸಿನೊಡನೆ ಸಂಬಂಧ. “ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯಾ ಸುರಾಪಾನಂ ಸ್ತೇಯಂ ಗುರ್ವಜ್ಞನಾಗಮಃ” ಮನುಂ ೧೧-೫೪ | 5. ಜೂಜು, ದ್ಯೂತ, ಪಗಡೆಯಾಟ ಮುಂತಾದುದು. 6. ಯೋಜಿಸದೆ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ. ದುಡುಕಿ ಮಾಡುವ ಕೆಲಸ. 7. ಸಮಾನವಾದ ಪಾಠ, ಎರಡು ಗ್ರಂಥಗಳಲ್ಲಿರುವ ಒಂದೇ ವಿಷಯ, ಏಕರೀತಿಯಾದ ಸಾಹಿತ್ಯ. “ಗಮೋಽಪ್ಪವತ್ಪ್ರಭೇದಯೋಃ | ಸದ್ವಕ್ತೃಪಾಠೇಪಿ” ಹೇಮಂ |

ಗಮಕ ಗಮಕ (ವಿಂ) 1. ನಡೆಯಿಸುವವನು, ಚಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವವನು, ಹೊರಡಿಸುವವನು. ಗಮಯತಿ — ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) | 2. ಬೋಧಿಸುವ. ತಿಳಿಸುವ, ಬೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವ. “ಯತ್ ಪ್ರೌಢಿತ್ವಮುದಾರತಾ ಚ ವಚಸಾಂ ಯಚ್ಚಾರ್ಥತೋ ಗೌರವಂ ತಚ್ಚೇದಸ್ತಿ ತತಸ್ತದೇವ ಗಮಕಂ ಪಾಂಡಿತ್ಯವೈದಗಧ್ಯಯೋಃ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೭ | 3. ಸಂಗೀತದ ಒಂದು ಸ್ವರ.

ಗಮಕಾರಿತ್ವ ಗಮಕಾರಿತ್ವ (ನಂ) ವೇಗ, ತೀವ್ರತೆ. “ರಮಸೋ ಗಮಕಾರಿತ್ವಮ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಗಮಯ ಗಮಯ (ಪುಂ) 1. ರಸ್ತೆ, ದಾರಿ. 2. ಪಥಿಕ. ಪ್ರಯಾಣಿಕ. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ಅಥಃ” (೩-೩-೧೧೩) | “ಗಮಕಃ ಪಥಿಕಃ ಪನ್ಯಾಶ್ರ” ಸಿಂ ಕೌಂ |

ಗಮನ ಗಮನ (ನಂ) 1. ನಡೆಯುವುದು, ಹೋಗುವುದು, ಸಂಚಾರ. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) | “ಶ್ರೋಣಿಭಾರಾದಲಸಗಮನಾ ಸ್ತೋಕನಮ್ರಾ ಸ್ತನಾಮ್ಯಾಮ್” ಮೇಘಂ



೨-೧೯। 2. ವಿಜಯಕ್ಕಾಗಿ ಹೊರಟ ಪ್ರಯಾಣ.  
3. ಹೆಂಗಸಿನೊಡನೆ ಸಂಭೋಗ. 4. ಉತ್ಕೃಷ್ಟಪಣ  
ಮೊದಲಾದ ಐದು ವಿಧ ಕರ್ಮಗಳನ್ನೊಳಗೊಂಡು. ["ಕರ್ಮನ್"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಗಮನಿಕಾ ಗಮನಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಭಿಪ್ರಾಯ ನಿರೂಪಣೆ,  
ವಿಷಯದ ವಿವರಣೆ.

**ಗಮನೀಯ ಗಮನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಹೋಗಲು ಶಕ್ಯವಾದ.  
2. ಹೋಗಲು ಅರ್ಹವಾದ. 3. ಹೋಗಬೇಕಾದ.  
4. ತಿಳಿಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 5. ತಿಳಿಯಲು ಅರ್ಹವಾದ.  
6. ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ. ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಅನೀಯ್"  
(೩-೧-೯೬)। 7. ಹೊರಡಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 8. ಹೊರಡಿ  
ಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 9. ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 10. ತಿಳಿಸಲು  
ಯೋಗ್ಯವಾದ. 11. ತಿಳಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 12. ತಿಳಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. ಗಮ್ (ಗತೌ) + ಗಿಚ್ "ಅನೀಯ್" (೩-೧-೯೬)।

**ಗಮಯತ್ ಗಮಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಹೊರಡಿಸುತ್ತಿರುವ.  
2. ತಿಳಿಸುತ್ತಿರುವ, ಬೋಧಿಸುತ್ತಿರುವ. ಗಮ್ (ಗತೌ) +  
ಗಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛಿಪ್"  
(೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

**ಗಮಯಿತವ್ಯ ಗಮಯಿತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. "ಗಮನೀಯ" ಪದದ  
7-12ರ ಅರ್ಥ. ಗಮ್ (ಗತೌ) + ಗಿಚ್ "ತವ್ಯ:"  
(೩-೧-೯೬)। 2. (ಕಾಲ) ಕಳೆಯಲ್ಪಡುವ. "ಅವಿನೋದ-  
ದೀರ್ಘಯಾಮಾ ಕಥಂ ನು ರಾತ್ರಿಗಮಯಿತವ್ಯಾ" ವಿಕ್ರಂ ೩-೪।

**ಗಮಯಿತ್ ಗಮಯಿತ್** (ವಿಂ) 1. ಹೊರಡಿಸುವ, ಹೊರಡು  
ವಂತೆ ಮಾಡುವ. 2. ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವ. ಗಮ್ (ಗತೌ) +  
ಗಿಚ್ "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛಿಪ್"  
(೪-೧-೫)। -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

**ಗಮಿತ ಗಮಿತ** (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಗಮ್  
(ಗತೌ) + ಗಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ವಿಧುರಂ  
ಕಿಮತ: ಪರಂ ಪರೇರವಗೀತಾಂ ಗಮಿತೇ ದಶಾಮಿಮಾಮ್" ಕಿರಾಂ  
೨-೭। 2. ಹೊಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಹೋಗುವಂತೆ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕೋಟರಮಕಾಲವೃಷ್ಟಯಾ ಪ್ರಬಲ-  
ಪುರೋವಾತಯಾ ಗಮಿತೇ" ಮಾಲಂ ೪-೨।

**ಗಮ್ಭಾರೀ ಗಂಭಾರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶೀವಣೆಯ ಮರ. "ಗಮ್ಭಾರೀ  
ಸರ್ವತೋಮದ್ರಾ" ಅಮಂ।

**ಗಮ್ಭೀರ ಗಂಭೀರ** (ಪುಂ) 1. ಜಂಬೀರವೃಕ್ಷ. ನಿಂಬೆ ಗಿಡ.  
2. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ. ಗಚ್ಛತಿ ಜಲಮತ್ರ - ಗಮ್ (ಗತೌ)  
"ಈರನ್" ಭಾಷ (೩ಂ ೪-೩೫)। 3. ತಗ್ಗಾದ, ಅಳವಾದ.  
"ಗಮ್ಭೀರಾ: ಪ್ರಾವಹುಷ್ಣು: ಸಮಜಾಯಂತ ಚ ಹೃದಾ:" ಮೃದ್ವಿಂ

೧೭-೬೩। 4. ಗಂಭೀರವಾದ, ಮನವನ್ನು ಆಕರ್ಷಿಸುವ.  
"ಸ್ನಿಗ್ಧಗಮ್ಭೀರನಿರ್ವಿಘ್ನಮೇಕಂ ಸ್ಯಂದನಮಾಸ್ಥಿತೌ" ರಘುಂ  
೧-೩೬। 5. ಗೂಢವಾದ, ಗಹನವಾದ. 6. ಗಾಢವಾದ,  
ಘನವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ.

**ಗಮ್ಭೀರವೇದಿನ್ ಗಂಭೀರವೇದಿನ್** (ವಿಂ) ತುಂಟತನದ  
ಆನೆ, ತಕರಾರುಮಾಡುವ ಆನೆ, ಎಷ್ಟೇ ಶಿಕ್ಷಿಸಿದರೂ ಲಕ್ಷ್ಯ  
ಮಾಡದ ಆನೆ. ಗಮ್ಭೀರಂ ಮಂದಂ ವೇದಿ - ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ)  
"ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮)। "ಚಿರಕಾಲೇನ ಯೋ ವೇದಿತಿ ಶಿಕ್ಷಾಂ  
ಪರಿಚಿತಾಮಪಿ। ಗಮ್ಭೀರವೇದಿ ವಿಜ್ಞೇಯ: ಸ ಗಜೋ ಗಜ-  
ವೇದಿಭಿ:"। "ಅಕ್ಷುಷಂ ದ್ವಿರದಸ್ಯೇವ ಯಂತಾ ಗಮ್ಭೀರವೇದಿನ್:"  
ರಘುಂ ೪-೩೯।

**ಗಮ್ಭೀರಶೀಲ ಗಂಭೀರಶೀಲ** (ವಿಂ) ಗಂಭೀರಸ್ವಭಾವದ,  
ಉನ್ನತಮಟ್ಟದ ಸ್ವಭಾವದ. ಗಮ್ಭೀರಂ ಶೀಲಂ ಯಸ್ಯ।

**ಗಮ್ಯ ಗಮ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ  
ಹೋಗಬಹುದಾದ. ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಯತ್" (೩-೧-೯೮)।  
2. ಹೊಂದಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ಹೊಂದಲ್ಪಡುವ.  
4. ತಿಳಿಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 5. ತಿಳಿಯಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ. 6. ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ. "ಋತುಮಾಂ ಸ್ವಪ್ನಾಭಿಗಮ್ಯಂ  
ವಿಧಾತುಂ ಪುರುಷಂ ಪರಮ್" ಮನುಂ ೧೨-೧೨೨। 7. ಸ್ತ್ರೀಯರು  
ಭೋಗಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ (ಪುರುಷ). 8. ಪುರುಷರು  
ಭೋಗಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ (ಹೆಂಗಸು). "ಅವರುಹಾಸು ದಾಸೀಭಿ  
ಭುಜಿಷ್ಯಾಸು ತವೇವ ಚ। ಗಮ್ಯಾಸ್ವಪಿ ಪುಮಾನ್ ದಾಪ್ಯ: ಪಂಚಾಶತ್-  
ಪಣಿಕಂ ದಮಮ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೨೯೦। 9. ವಾಸಿಯಾಗುವ,  
ನಿವೃತ್ತಿಹೊಂದುವ, ಗುಣವಾಗುವ (ರೋಗ). "ನ ಗಮ್ಯೋ  
ಮನ್ವಾಣಾಂ ನ ಚ ಭವತಿ ಭೇಷಜ್ಯವಿಷಯೋ ನ ಚಾಪಿ ಪ್ರಧ್ವಂಸಂ  
ವ್ರಜತಿ ವಿವಿಧೈ: ಶಾಂತಿಕಶತೈ:" ಮೃತಂ ೨-೭೭। 10. ಅನು  
ರೂಪನಾದ, ಸದೃಶನಾದ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ.  
"ಗಮ್ಯಂ ತ್ವಭಾವೇ ದಾತೃಣಾಂ ಕನ್ಯಾ ಕುರ್ಯಾತ್ ಸ್ವಯಂವರಮ್" ಯಾಜ್ಞಂ  
೧-೬೪।

**ಗಮ್ಯತಾ ಗಮ್ಯತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊಂದಲು ಅರ್ಹವಾಗಿರು  
ವಿಕೆ, ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಹೋಗಲು ಯೋಗ್ಯವಾಗಿರುವಿಕೆ.  
2. ಗ್ರಹಣಮಾಡಲು (ತಿಳಿಯಲು) ಸಾಧ್ಯವಾಗಿರುವಿಕೆ,  
ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಗಮ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೫-೧-೧೧೯)।  
"ತ್ವ:"। ಗಮ್ಯತ್ವಮ್ ಗಮ್ಯತ್ವಮ್.

**ಗಮ್ಯಮಾನ ಗಮ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.  
ಗಮ್ (ಗತೌ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
2. ಹೊಂದಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. "ಗಮ್ಯಮಾನಂ ನ ತೇನಾಸೀದಗತಂ  
ಕ್ರಾಮತಾ ಪುರ:" ಮೃದ್ವಿಂ ೮-೨।



ಗಯ ಗಯ (ಪುಂ) 1. ಸುಗ್ರೀವ ಸೈನ್ಯದಲ್ಲಿದ್ದ ಒಬ್ಬ ವಾನರ. 2. ಪ್ರಿಯವ್ರತರಾಜನ ವಂಶದ ನಕ್ಷತ್ರ ಮಗ. "ವಿಭೂತಿಯಾಂ ಚ ಪೃಥುಷಣಸ್ತಸ್ಮಾಜ್ಜಿತಃ ಆಕೂತ್ಯಾಂ ನಕ್ಷಾತ್ ದ್ರುತಿಪುತ್ರೋ ಗಯೋ ರಾಜಪ್ರವರಃ ತದಾರಾಧನಾ ಅಜಾಯತ" ಭಾಗಂ ೪-೧೪-೬. 3. ಚಂದ್ರವಂಶದ ಆಯುರಾಜನ ಮಗ, ಸಹಜವಾಗಿ ಸಹೋದರ. "ನಹುಷಃ ವೃದ್ಧಶರ್ಮಣಿಂ ರಜಿ ಗಯಮನೇನಸಮ್ | ಸ್ವರ್ಮನಿವಿ ಸುತಾನೇತಾನಾಯೋಃ ಪುತ್ರಾನ್ ಪ್ರಚಕ್ಷತೇ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೯-೨೮. 4. ಒಬ್ಬ ಗಂಧರ್ವ. [ಒಂದು ದಿನ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಅರ್ಘ್ಯಕೊಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ, ತಾಯ್ತೊಲಜರ್ವಣ ಮಾಡುತ್ತ ವಿಮಾನದಲ್ಲಿ ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದ ಇವನ ತಂಬುಲವು ಬಿದ್ದು ಕೃಷ್ಣನ ಅಂಜಲಿಯು ಅಶುದ್ಧವಾಯಿತು. ಅದರಿಂದ ಕೃಷ್ಣನ ಕೋಪಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರನಾದ ಗಯನು ನಾರದರ ಮಾತಿ ನಂತೆ ಅರ್ಜುನನನ್ನು ಮರೆಹೊಕ್ಕು ರಕ್ಷಣೆಯನ್ನು ಕೇಳಿದನು. ರಕ್ಷಿಸುವುದಾಗಿ ಅರ್ಜುನನು ಅಭಯಕೊಟ್ಟನು. ಇವನಿಗಾಗಿ ಕೃಷ್ಣಾ ಜ್ವನರಿಬ್ಬರಿಗೂ ಯುದ್ಧ ನಡೆಯಿತು. ದೇವತೆಗಳ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಂತೆ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಶರಣಾಗತನಾದ ಗಯನನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಿದನು.] ಈ ಕಥೆಗೆ ಯಾವ ಪುರಾಣ ದಲ್ಲೂ ಆಧಾರವಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಗಯಚರಿತ್ರೆಯು ಮಾತ್ರ ಲೋಕಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿರುವುದು. 5. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. ಇವನು ಲೋಕಕಂಟಕನಾಗಿದ್ದನು. ಬ್ರಹ್ಮನು ಇವನ ನಿಗ್ರಹಕ್ಕಾಗಿ ಯೋಚಿಸಿ ತಾನು ಮಾಡಬೇಕಾದ ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಯಜ್ಞ ವೇದಿಕೆಯನ್ನು ಇವನ ಶರೀರದ ಮೇಲೆ ನಿರ್ಮಿಸಬೇಕೆಂದು ಕೇಳಲು ಇವನು ಅದಕ್ಕೆ ಒಪ್ಪಿದನು. ಬ್ರಹ್ಮನು ಒಂದು ದೊಡ್ಡ ಚಪ್ಪಡಿಯನ್ನು ಇವನ ಶರೀರದ ಮೇಲೆ ಹಾಕಿ ವೇದಿಕೆಯನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿದನು. ಆಗ ಇವನ ಶರೀರವು ಅಲುಗಾಡಿತು. ತನ್ನ ಶರೀರವು ಅಲುಗಾಡದಿರಬೇಕಾದರೆ ತಾನು ಸತ್ತಮೇಲೆ ಆ ಪ್ರದೇಶವು ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರವಾಗ ಬೇಕೆಂದೂ ಈ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಪಿತೃಗಳ ಪ್ರೀತ್ಯರ್ಥವಾಗಿ ಕೊಡುವ ಪಿಂಡವು ಅಕ್ಷಯ್ಯವಾಗಬೇಕೆಂದೂ ವಿಷ್ಣುವನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದನು. ವಿಷ್ಣುವು "ಆಗಲಿ" ಎಂದನು. ಅವನ ಕಾಲಾನಂತರ ಆ ಪ್ರದೇಶಕ್ಕೆ "ಗಯಾ" ಎಂಬ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಬಂದಿತು. ಈಗ ಯಾತ್ರಿಕರೆಲ್ಲರೂ ಈ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಪಿತೃಗಳಿಗೆ ಪಿಂಡಪ್ರದಾನ ಮಾಡುತ್ತಾರೆ. 6. ಧನ, ಸಂಪತ್ತು. 7. ಗೃಹ, ಮನೆ. 8. ಗೃಹೋಪಕರಣ. 9. ಒಬ್ಬ ರಾಜರ್ಷಿ. 10. ಹವಿರ್ಧಾನರಾಜನ ಮಗ. 11. ಗಯಾ ಕ್ಷೇತ್ರದ ಪರ್ವತ. 12. ಅಮೂರ್ತರಜಸ್ಸಿನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

ಗಯಶಿರಸ್ ಗಯಶಿರಸ್ (ನಂ) ಗಯಾಕ್ಷೇತ್ರದ ಸಮೀಪ ದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಪರ್ವತ.

ಗಯಾ ಗಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಯಾಕ್ಷೇತ್ರ. ಹಿಂದುಗಳ ಒಂದು ಪವಿತ್ರ ಯಾತ್ರಾಸ್ಥಳ. ಗಯೋ ಗಯಾಸುರಃ ಕಾರಣತ್ವೇನಾ- ಸ್ತಯಸ್ಯಾ: "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) | ["ಗಯ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಗಯಾಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ: "ಗಯನಾಮ್ನಾ ಗಯಾಸ್ಯಾತಾ ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಭಿಕಾಂಕ್ಷಿತಮ್ | ಕಾಂಕ್ಷಂತಿ ಪಿತರಃ ಪುತ್ರಾನ್ ನರಕಾ- ದ್ವಯಭೀರವಃ | ಗಯಾಂ ಯಾಸ್ಯತಿ ಯಃ ಪುತ್ರಃ ಸ ನಸ್ತ್ರಾತಾ ಭವಿಷ್ಯತಿ | ಗಯಾಪ್ರಾಪ್ತಂ ಸುತಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಪಿತೃಣಾಮುಸ್ಸವೋ ಭವೇತ್ | ಪದ್ಮಚಾಮಪಿ ಜಲಂ ಸ್ಪೃಷ್ಟ್ವಾ ಸೋಽಸ್ಮಮ್ಯಂ ಕಿಂ ನ ದಾಸ್ಯತಿ | ಗಯಾಂ ಗತ್ವಾನ್ನದಾತಾ ಯಃ ಪಿತರಸ್ತೇನ ಪುತ್ರಿಣಃ | ಪಕ್ಷತ್ರಯನಿವಾಸೀ ಚ ಪುನಾತ್ಯಾಸಪ್ತಮಂ ಕುಲಮ್ | ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯಾ ಸುರಾಪಾನಂ ಸ್ತೇಯಂ ಗುರ್ವಜ್ಜನಾಗಮಃ | ಪಾಪಂ ತತ್ಸಂಕ್ಷಜಂ ಸರ್ವಂ ಗಯಾಶ್ರಾದ್ಧಾದ್ವಿನಶ್ಯತಿ | ಆತ್ಮಜೋಽಪ್ಯನ್ಯಜೋ ವಾಪಿ ಗಯಾಭೂಮೌ ಯದಾ ತದಾ | ಯಶ್ಚಾಮ್ನಾ ಪಾತಯೇತ್ಪಿಣ್ಡಂ ತನ್ನಯೇದ್ಬ್ರಹ್ಮ ಶಾಶ್ವತಮ್ | ನಾಮಗೋತ್ರೇ ಸಮುಚ್ಚಾರ್ಯ ಪಿಣ್ಡಪಾತನಮೀಕ್ಷತೇ | ಯೇನ ಕೇನಾಪಿ ಕಸ್ಮೇಚಿತ್ ಸ ಯಾತಿ ಪರಮಾಂ ಗತಿಮ್" ವಾಯುಪುಂ |

ಗರ ಗರ (ಪುಂ) 1. ನುಂಗುವುದು, ತಿನ್ನುವುದು. ಗೃ(ನಿಗರಣ) ಭಾವೇ "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭) | 2. ವಿಷ, ನಂಜು. ಗೀಯಂತೆ ಮಹ್ಯತೇ ಗೃ ಕರ್ಮಂ "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭) | "ತಸ್ಮಾದಿದಂ ವಿಷಂ ಭುಂಜೇ ಪ್ರಜಾನಾಂ ಸ್ವಸ್ತಿರಸ್ತು ಮೇ" ಭಾಗಂ ೮-೨-೪೧ | 3. ಉಪವಿಷ, ಕೃತ್ರಿಮವಾದ ವಿಷ. 4. ರೋಗ. ಗಿರತಿ ಜೀವಮ್ - ಗೃ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | 5. ವತ್ಸನಾಥ ವೆಂಬ ವಿಷ. (ನಂ) 6. ಹನ್ನೊಂದು ವಿಧ ಕರಣಗಳ ಲ್ಲೊಂದು, ಐದನೆಯ ಕರಣ.

ಗರಜನ ಗರಘ್ನ (ಪುಂ) 1. ವಿಷನಾಶಕವಾದ ಮತ್ಸ್ಯ. 2. ಕರಿಗಗ್ಗರ ಗಿಡ. 3. ಭಾರಂಗಿ ಗಿಡ. ಗರಂ ಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತಿಯು:) "ಠಕ್" (೩-೨-೪೩) |

ಗರಣ ಗರಣ (ನಂ) ನುಂಗುವುದು, ತಿನ್ನುವುದು. ಗೃ(ನಿಗರಣ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) |

ಗರದ ಗರದ (ನಂ) 1. ವಿಷ, ನಂಜು. (ವಿಂ) 2. ವಿಷ ಪ್ರಯೋಗಮಾಡುವವನು, ವಿಷವನ್ನು ಹಾಕುವವನು. ಗರಂ ದದಾತಿ - ಡು ದಾಜ್ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | "ಅಗಾರ- ದಾಹೀ ಗರದಃ ಕುಂಡಾಶಿ ಸೋಮವಿಕ್ರಯಿ | ಸಮುದ್ರಯಾಯಿ ಬಂದಿ ಚ ತೆಲಿಕಃ ಕೂಟಕಾರಕಃ" ಮನುಂ ೩-೧೪೮ |

ಗರಲ ಗರಲ (ನಂ) 1. ನಂಜು, ಹಾವಿನ ವಿಷ. ಗರಂ ಲಾತಿ - ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | 2. ಹುಲ್ಲಿನ ಹೊರೆ. 3. ಒಂದು ಅಳತೆ. "ಗರಲಂ ಪನ್ನಗವಿಷೇ ತೃಣಫೂಲಕ- ಮಾನಯೋಃ" ಹೇಮಂ |



ಗರಲಪುರೀ ಗರಲಪುರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಂಜನಗೂಡು.

ಗರಲಾರಿ ಗರಲಾರಿ (ಪುಂ) ಮರಕತ ಮಣಿ.

ಗರವ್ರತ ಗರವ್ರತ (ನಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಗರ  
ವಿಷಸಹಿತಸರ್ಪಭೋಜನಂ ವ್ರತಮಸ್ಯ |

ಗರಹನ್ ಗರಹನ್ (ಪುಂ) 1. ಕರಿಬೇವಿನ ಗಿಡ. 2. ಗಂಟು  
ಭಾರಂಗಿ. "ಗರಹಾ ಕಾಲಶಾಕೋಽಪಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಗರಾ ಗರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವತಾಳೆ ಮರ.

ಗರಾಗರೀ ಗರಾಗರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವತಾಳೆ ಮರ. ಗರಂ  
ಮೃಷಿಕವಿಷಮಾಗರಗತಿ-ಗು (ನಿಗರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |  
ಗೌರಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧) | "ವೇಣಿ ಗರಾಗರೀ ದೇವತಾಲೋ  
ಜಿಮೂತ ಇತ್ಯಪಿ" ಅಮಂ |

ಗರಮನ್ ಗರಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಗುರುತ್ವ, ಭಾರ, ತೂಕ.  
ಗುರೋರ್ಭವಿ: ವಾ "ಇಮನಿಚ್" (೪-೧-೧೨೨) | ಪಕ್ಷೆ-"ಅಣ್"  
(೪-೧-೧೩೧) | ಗೌರವಮ್ ಗೌರವಮ್. 2. ಘನತೆ,  
ಗೌರವ, ಮಯೂರ. "ಅಚೇಷ್ಠತಾಪದಭೂಮಿರೇಣು: ಪಾದಾ-  
ಹತೌ ಯತ್ಸದೃಶಂ ಗರಿಷ್ಠಂ:" ಮಾಘಂ ೩-೨೮ |

ಗರಿಷ್ಠ ಗರಿಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಭಾರವಾದ. 2. ಅತಿ  
ದೊಡ್ಡದಾದ. 3. ಘನತೆಯುಳ್ಳ. ಅತಿಶಯೇನ ಗುರು:  
"ಇಷ್ಠನ್" (೪-೩-೪೪) | ಗುರೋ: ಗರ್ ಆದೇಶ: (೬-೪-೧೪೭) |

ಗರೀಯಸ್ ಗರೀಯಸ್ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಭಾರವಾದ.  
2. ಬಹಳ ದೊಡ್ಡದಾದ. 3. ಹೆಚ್ಚು ಘನತೆಯುಳ್ಳ.  
ಅಯಮನಯೋರತಿಶಯೇನ ಗುರು: "ಇಯಸುನ್" (೪-೩-೪೭) | ಗುರೋ:  
ಗರ್ ಆದೇಶ: (೬-೪-೧೪೭) | "ಸಕ್ಷಾ ಗರೀಯಾನ್ ಶತ್ರುಷ್ಠ  
ಕೃತ್ರಿಮಸ್ತೌ ಹಿ ಕಾರ್ಯತ:" ಮಾಘಂ ೨-೩೬ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೬) | -ಯಸಿ-ಯಸೀ. "ಶಿವಮೌಘಿಕಂ ಗರೀಯಸಿಂ  
ಫಲನಿಷ್ಪತ್ತಿಮದ್ವಿಷಿತಾಯತಿಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೩೪ |

ಗರುಡ ಗರುಡ (ಪುಂ) 1. ಕಶ್ಯಪನ ಮಗ, ವಿನತೆಯ ಪುತ್ರ,  
ಪಕ್ಷಿರಾಜ. ಗರುಡಾಂ ಡಯತೆ-ಡೀಡ್ (ವಿಹಾಯಸಾ ಗತೌ) "ಡ:"  
(೩-೨-೧೦೧) | ಪೃಷೋಂ | ಗು (ನಿಗರಣೆ) "ಉಡ್" (೩ಂ ೪-೧೪೯) ವಾ | "ವಿನತಾಪಿ ಮುಸಿದ್ವಾರ್ಥಾ ಬಭೂವ ಮುದಿತಾ  
ತದಾ | ಜನಯಾಮಾಸ ಪುತ್ರೌ ದ್ವಾವರಣಂ ಗರುಡಂ ತಥಾ | ವಿಕಲಾಕ್ಷೋ  
ರಣಸ್ತತ್ರ ಭಾಸ್ಕರಸ್ಯ ಪುರ:ಸರ: | ಪತತ್ರಾಣಾಂ ತು ಗರುಡ  
ಇಂದ್ರತ್ವೇನಾಮ್ಯಪಿಚ್ಯತ" ಭಾಂ ಆದಿಂ | "ಗರುಡಾ ಇವ  
ಪನ್ನಗಾನುದಗ್ರಾನ್ ದ್ರುಮಪುಂಡಾನಿವ ಮಾರುತಾ: ಪ್ರಚಂಡಾ:" ಯಾದಂ  
೧೪-೧೧೩ | 2. ಗರುಡನ ಆಕಾರದಲ್ಲಿರುವ ಮನೆ.  
3. ಗರುಡನ ಆಕಾರದಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲಿಸುವ ಸೇನೆಗಳ ವ್ಯೂಹ.  
"ದಂಡವ್ಯುಹೇನ ತನ್ಮಾರ್ಗಂ ಯಾತು ಶಕಡೇನ ವಾ | ವರಾಹಮಕರಾಮ್ಯಾಂ  
ವಾ ಸುಚ್ಯಾ ವಾ ಗರುಡೇನ ವಾ" ಮನುಂ ೭-೧೮೭ | ಹಿಂಭಾಗ

ದಲ್ಲಿ ಕಿರಿದಾಗಿಯೂ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿಯೂ  
ಇರುವಂತೆ ಸೈನ್ಯವನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು ವರಾಹವ್ಯೂಹ. ಇದೇ  
ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಮಧ್ಯಭಾಗವು ಮತ್ತಷ್ಟು ಅಗಲವಾಗಿರುವಂತೆ  
ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು ಗರುಡವ್ಯೂಹ. "ಮೂಕ್ಷಮುಖಪಶ್ಚಾದ್ಭಾಗ:  
ಪೃಥುಮಧ್ಯೋ ವರಾಹವ್ಯುಹ: | ಏಷ ಏವ ಪೃಥುತರಮಧ್ಯೋ ಗರುಡವ್ಯುಹ:  
ಇತಿ ಕುಲ್ಲಂಕಮಢ್ಠ:" |

ಗರುಡಧ್ವಜ ಗರುಡಧ್ವಜ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಗರುಡ: ಧ್ವಜೋಽಸ್ಯ |  
"ಅಕ್ಷಸ್ತು ತಾಕ್ಷ್ಯೋ ವಹನಾತ್ ರಥಾವಯವಸಾಮ್ಯತ: | ಸ ಏವ ತು  
ಧ್ವಜೋ ಯಸ್ಯ ಸ ಉಕ್ತೋ ಗರುಡಧ್ವಜ:" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: |  
"ಮಹರ್ಥಿ ಕೃದ್ಧೋ ವೃದ್ಧಾತ್ಮಾ ಮಹಾಶೋ ಗರುಡಧ್ವಜ:" ವಿಂ ಸಂ |  
"ಪರ್ಯಾಸಿ ಭಕ್ತ್ಯಾ ಗರುಡಧ್ವಜಸ್ಯ ಧ್ವಜಾನಿಬೋಚ್ಚಿಕ್ಷಿಪಿರೇ  
ಫಣಿನ್ದ್ರಾ: ಮಾಘಂ ೩-೭೭ |

ಗರುಡಪುರಾಣ ಗರುಡಪುರಾಣ (ನಂ) ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಗಳಿಂದ  
ರಚಿತವಾದ ಹದಿನೆಂಟು ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಗರುಡಾಯ  
(ವಿಷ್ಣುನಾ) ಉಕ್ತಂ ಪುರಾಣಮ್ | ಈ ಪುರಾಣವು ವಿಷ್ಣುವಿ  
ನಿಂದ ಗರುಡನಿಗೆ ಪ್ರೋಕ್ತವಾದುದು. "ಮರೀಚಿ ಶೃಣು  
ವಚ್ಯಮ್ ಪುರಾಣಂ ಗಾರುಡಂ ಶುಭಮ್ | ಗರುಡಾಯಾನ್ವೀತ್ ಪೃಥ್ವಿಂ  
ಭಗವಾನ್ ಗರುಡಾಸನ:" ನಾರದೀಯಪುಂ | ಈ ಪುರಾಣದಲ್ಲಿ  
ಹತ್ತೊಂಬತ್ತು ಸಹಸ್ರ (19,000) ಗ್ರಂಥಗಳಿರುವವು.  
[255 ನೆಯ ಪುಟದಲ್ಲಿ ಈ ಸಂಖ್ಯೆಯು 950 ಎಂದು  
ತಪ್ಪಾಗಿ ಬಿದ್ದಿರುವುದು.] ಗರುಡಪುರಾಣದ ಪೂರ್ವಭಾಗದ  
ದಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯಾದಿ ಪೂಜಾವಿಧಿ, ದೀಕ್ಷಾವಿಧಿ, ಲಕ್ಷ್ಮಿ  
ಮೊದಲಾದವರ ಪೂಜಾಕ್ರಮ, ಯೋಗಾಧ್ಯಾಯ, ವಿಷ್ಣು  
ಸಹಸ್ರನಾಮಕೀರ್ತನ, ವಿಷ್ಣು ಧ್ಯಾನ, ಗೋಪಾಲಾರ್ಚನೆ,  
ಶ್ರೀಧರಾರ್ಚನೆ, ದುರ್ಗಾರ್ಚನೆ, ಸುರಾರ್ಚನೆ, ಮಾಹೇಶ್ವರೀ  
ಪೂಜೆ, ಮೂರ್ತಿಧ್ಯಾನ, ಅಷ್ಟಾಂಗಯೋಗಗಳು, ದಾನ  
ಧರ್ಮಗಳು, ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತಗಳು, ಸಾಮುದ್ರಿಕ, ಸ್ವರಜ್ಞಾನ,  
ರತ್ನಪರೀಕ್ಷೆ, ಪುಣ್ಯತೀರ್ಥಗಳ ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ, ವಾಸ್ತುಮಾನ,  
ಪ್ರಾಸಾದಗಳ ಲಕ್ಷಣ, ವರ್ಣಧರ್ಮ ಮುಂತಾದ ಮಾನವ  
ಜೀವನಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ ಅನೇಕ ವಿಷಯಗಳೂ ಉತ್ತರಭಾಗದ  
ದಲ್ಲಿ ಮನುಷ್ಯನ ಉತ್ತರಕರ್ಮಗಳಿಗೆ ಬೇಕಾದ ವಿಷಯ  
ಗಳೂ ಉಕ್ತವಾಗಿವೆ.

ಗರುಡಮುರಾ ಗರುಡಮುರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರುಡನ ಆಕಾರ  
ದಂತೆ ಹಸ್ತಗಳ ಬೆರಳುಗಳನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಮಾಡುವ  
ಒಂದು ಮುದ್ರೆ, ಎರಡೂ ಹಸ್ತಗಳನ್ನು ವಿಮುಖ  
(ಹಿಮ್ಮುಖ) ವಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಕಿರುಬೆರಳುಗಳನ್ನು  
ಜೋಡಿಸಿ ಗಂಟೆಗೆ ಎರಡು ತರ್ಜಿನಿ ಮತ್ತು ಅಂಗುಷ್ಠ  
(ಹೆಬ್ಬೆರಳು)ಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿಕೊಂಡು ಮಧ್ಯದ ಬೆರಳು



ಮತ್ತು ಅನಾಮಿಕಗಳನ್ನು ಎರಡು ರೆಕ್ಕೆಗಳಂತೆ ಅಡಿಸುತ್ತ  
ಮಾಡುವುದು ಗರುಡಮುದ್ರೆ. ಇದು ವಿಷ್ಣುವಿಗೆ ಪ್ರೀತಿಕರ  
ವಾದುದು. "ಹಸ್ತೌ ತು ವಿಮುಖೌ ಕೃತ್ವಾ ಪ್ರಥಯಿತ್ವಾ  
ಕನಿಷ್ಠಿಕೇ | ಮಿಥಸ್ತರ್ಜನಿಕೇ ಶಿಲಿಷ್ಠೇ ಶಿಲಿಷ್ಠಾವಙ್ಗುಲಕೌ  
ತಥಾ | ಮಧ್ಯಮಾನಾಮಿಕಾಗ್ರೇ ತು ದ್ವೌ ಪಕ್ಷಾವಿವ ಚಾಲಯೇತ್ |

ಏಷಾ ಗರುಡಮುದ್ರಾ ಸ್ಯಾತ್ ವಿಷ್ಣೋಃ ಸಂತೋಷವರ್ಧನೀ" ತನ್ವಸಾಂ |

**ಗರುಡವ್ಯುಹ ಗರುಡವ್ಯೂಹ** (ಪುಂ) ಗರುಡನ ಅಕಾರದಂತೆ  
ಸೇನೆಗಳನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು. ["ಗರುಡ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಗರುಡಾಗ್ರಜ ಗರುಡಾಗ್ರಜ** (ಪುಂ) ಗರುಡನ ಅಣ್ಣ, ವಿನತೆಯ  
ಹಿರಿಯಮಗ, ಆರಾಣ. ಗರುಡಸಾಗ್ರಜಃ | "ವಿಭಿನ್ನವರ್ಣಾ  
ಗರುಡಾಗ್ರಜೇನ ಸೂರ್ಯಸ್ಯ ರಥಾಃ ಪರಿತಃ ಸ್ಫುರಂತ್ಯಾಃ" ಮಾಘಂ  
೪-೧೪ |

**ಗರುಡಾಕ್ಷಿತ ಗರುಡಾಂಕಿತ** (ನಂ) ಮರಕತ ಮಣಿ. ಗರುಡ  
ಇವಾಕ್ಷಿತಮ್ |

**ಗರುಡಾಶಮನ್ ಗರುಡಾಶ್ಮನ್** (ಪುಂ) ಮರಕತ ಮಣಿ.

**ಗರುಡಾಸನ ಗರುಡಾಸನ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ಯೋಗಾ  
ಸನದ ಒಂದು ಭೇದ.

**ಗರುಡೋಪನಿಷತ್ ಗರುಡೋಪನಿಷತ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಥರ್ವ  
ವೇದದ ಒಂದು ಉಪನಿಷತ್ತು.

**ಗರುತ್ ಗರುತ್** (ಪುಂ) ಗರಿ, ರೆಕ್ಕೆ. ಗಿರತಿ - ಗೃ (ನಿಗರಣೆ)  
"ಉತಿಃ" (ಉಂ ೧-೧೪) | "ವಿಲಾಸೇದಂಭೋಲೇದಲಿತ-  
ಗರುತಸ್ಸರ್ವಗಿರಯಃ ಸ ಚೈಕೋ ಮೇನಾಕಃ ಪಯಸಿ ಮಮ ಮಗನೌ  
ನಿವಸತಿ" ಪ್ರಂ ರಾಂ ೫-೫೦ |

**ಗರುತಮತ್ ಗರುತಮತ್** (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ, ವಿನತೆಯ ಮಗ.  
ಪ್ರಶಸ್ತೌ ಗರುತೌ ಸ್ತೋಷ್ಯ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೧೪) | "ಗರುತಮತಃ  
ಕಂಪಿತದಿವ್ಯವೃಕ್ಷಂ ಪಶಾನಿಲಂ ಪಾತುಮಪೇತ್ಯ ನಾಗಾಃ" ಯಾದಂ  
೧೮-೧೪ | (ವಿಂ) 2. ರೆಕ್ಕೆಗಳೆಲ್ಲ. "ತಯೋರುಪಾಂತಸ್ಥಿತ-  
ಸಿದ್ಧಸೈನಿಕಂ ಗರುತಮದಾಶಿವಿಷಮಿಮದರ್ಶನೇ" ರಘುಂ ೩-೫೭ |

**ಗರುಡೋಧಿನ್ ಗರುಡೋಧಿನ್** (ಪುಂ) ಲಾವಕ್ಕೆ, ಭಾರತೀ  
ಪಕ್ಕೆ, ಗವ್ಯಜುಗಜಾತಿಯ ಒಂದು ಪಕ್ಕೆ. ಗರುತಾ ಯುಧಯತಿ-  
ಯುಧ (ಸಂಪ್ರಹಾರೇ) "ಗಿರಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮) | "ಫಲೇಖಲಾ  
ಗರುಡೋಧಿ ಭಾರತೀ ವ್ಯೋಮನಾಸಿಕಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಗರ್ಗ ಗರ್ಗ** (ಪುಂ) 1. ಅಂಗಿರಸ ಮುನಿ, ಭರದ್ವಾಜ ಮುನಿಯ  
ವಂಶದ ಒಬ್ಬ ಮುನಿ. "ವಿತಥ ಚಾಭಿಷಿಚ್ಯಾಥ ಭರದ್ವಾಜೋ  
ವನಂ ಯಯೌ | ಸ ಚಾಪಿ ವಿತಥಃ ಪುತ್ರಾನ್ ಜನಯಾಮಾಸ ಪಂಚ ವೈ |  
ಸುಹೋತ್ರಂ ಚ ಸುಹೋತಾರಂ ಗಯಂ ಗರ್ಗಂ ತಥೈವ ಚ | ಕಪಿಲಂ ಚ  
ಮಹಾತ್ಮಮಾನ್" ಹರಿವಂಶಂ | 2. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. 3. ಕೆಸರಿನ  
ಎರುಬುರುಳು. ಗೃ (ನಿಗರಣೆ) "ಗಃ" (ಉಂ ೧-೧೨೫) |

"ಗರ್ಗೋ ಮುನಿವಿಶೇಷೇ ಸ್ಯಾದ್ವೇ ಕಿಂಚುಲಕೇರ್ಷಿಪಿ ಚ" ಹೇಮಂ |  
(ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 4. ಗರ್ಗಮುಷಿಯ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ-  
ದವರು, ಗರ್ಗಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವರು. ಗರ್ಗಸ್ಯಾಪತ್ಯಾನಿ  
ಪುಮಾಸಃ ಗರ್ಗ "ಯನ್" (೪-೧-೧೦೫) | ಯಜ್ಞೋ ಲುಕ್  
(೨-೪-೬೪) |

**ಗರ್ಗರ ಗರ್ಗರ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
ಗರ್ಗರೀ ಗರ್ಗರೀ. ಹೆಣ್ಣು ಮೀನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ನೀರಿನ  
ಪಾತ್ರೆ. 3. ಕೊಡ, ಬಿಂದಿಗೆ, ಹೂಜಿ ಮೊದಲಾದುವು.  
ಗರ್ಗೇತಿ ಶಬ್ದಂ ರಾತಿ - ರಾ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) |  
4. ಮೊಸರು ಕಡೆಯುವ ಪಾತ್ರೆ. "ಅಥ ಗರ್ಗರೋ ಮೀನೇ  
ಸ್ಯಾತ್ ಗರ್ಗರೀ ತು ಮನ್ಯನೀ" ಹೇಮಂ | "ಕಲಸೀ ಗರ್ಗರೀ  
ತುಲ್ಯಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಗರ್ಗರೂಪ್ಯ ಗರ್ಗರೂಪ್ಯ** (ನಂ) ಗರ್ಗವಂಶದವರಿಂದ ಬಂದ.  
ಗರ್ಗಮ್ಯಃ ಆಗತಮ್ "ರೂಪ್ಯಃ" (೪-೩-೮೩) |

**ಗರ್ಗಸಂಹಿತಾ ಗರ್ಗಸಂಹಿತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರ್ಗಾಚಾರ್ಯರಿಂದ  
ವಿರಚಿತವಾದ ಕಾಲಜ್ಞಾನವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಒಂದು  
ಜ್ಯೋತಿಷ ಗ್ರಂಥ.

**ಗರ್ಗಾಟ ಗರ್ಗಾಟ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು.  
"ಕೋಲಪುಚ್ಚಸ್ತು ಕಚ್ಛಃ ಸ್ಯಾತ್ ಗರ್ಗಾಟೋ ಯೋಗನಾಲಿಕಃ" ಹಾರಾಂ |

**ಗರ್ಗೀಯ ಗರ್ಗೀಯ** (ವಿಂ) ಗರ್ಗಾರೀ ಹಿತವಾದ. ಗರ್ಗಮ್ಯೋ  
ಹಿತಮ್ "ಛಃ" (೫-೧-೫) |

**ಗರ್ಜ - ಶಬ್ದೇ** (ಶ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) | ಗರ್ಜತಿ | ಜಗರ್ಜ |  
ಗರ್ಜಿತಾ | ಗರ್ಜಿಷ್ಯತಿ | ಗರ್ಜತು | ಅಗರ್ಜತ್ | ಗರ್ಜೇತ್ |  
ಗರ್ಜಾತ್ | ಅಗರ್ಜೀತ್ | ಅಗರ್ಜಿಷ್ಯತ್ | ಗರ್ಜಿಸು, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ  
ಕೂಗು, ಅಬ್ಬರಿಸು, ಮೇಘದಂತೆ ಶಬ್ದ ಮಾಡು.

**ಭಾವೇ**:-ಗರ್ಜಯತೇ | ಜಗರ್ಜೆ | ಗರ್ಜಿತಾ | ಗರ್ಜಯತಾಂ |  
ಅಗರ್ಜಯತ |

**ಗಿರಿನಿಃ**:-ಗರ್ಜಯತಿ, -ತೇ | ಗರ್ಜಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಗರ್ಜಯಿತಾ | ಗರ್ಜಯತು, -ತಾಂ ಇತ್ಯಾದಿ.  
**ಸನಿಃ**:-ಜಿಗರ್ಜಿಷತಿ | ಜಿಗರ್ಜಿಷಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ,  
-ಆಸ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತ್ಸು**:-ಗರ್ಜಿತವ್ಯಮ್ | ಗರ್ಜನೀಯಮ್ | ಗರ್ಜಯಮ್ | ಗರ್ಜಿತಃ |  
ಗರ್ಜಿತವಾನ್ | ಗರ್ಜನ್, ಗರ್ಜಂತಿ | ಗರ್ಜಿತುಮ್ | ಗರ್ಜಿತಮ್ |  
ಗರ್ಜನಮ್ | ಗರ್ಜಿತ್ವಾ | ಪ್ರಗರ್ಜಯ |

**ಗರ್ಜ - ಶಬ್ದೇ** (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಗರ್ಜಯತಿ, -ತೇ |  
ಗರ್ಜಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಗರ್ಜ ಗರ್ಜ** (ಪುಂ) 1. ಗಜದ ಗರ್ಜನೆ, ಅನೆಯ ಕೂಗು.  
ಗರ್ಜ (ಶಬ್ದೇ) "ಧೇನ್" (೩-೩-೧೮) | 2. ಮೇಘಗರ್ಜನೆ,



ಮೋಡದ ಶಬ್ದ, ಗುಡುಗು. "ಅಜಹ್ನುಃ ಸ್ವಗೀತೇನ ಗರ್ಜ-  
ತಮರಶೋಭಿನಾ | ಸ್ವಕಾಂತ್ಯಾ ಕರ್ಣತಾಲೇನ ಕಲ್ಪತಸಂಗೀತ-  
ಖಲನಮ್" ಯಾದಂ ೧೬-೯ | ಗುಹಮತ್ವಾತ್ ಭಾವೇ "ಅಃ"  
(೩-೩-೧೦೩) | ಗರ್ಜಾ ಗರ್ಜಾಃ.

**ಗರ್ಜತ್ ಗರ್ಜಾತ್** (ವಿಂ) 1. ಗರ್ಜಿಸುತ್ತಿರುವ, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ  
ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಅಬ್ಬರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಗರ್ಜ (ಶಬ್ದ)  
"ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಗರ್ಜನ್ ಹರಿಃ ಸಾಮ್ಭಸಿ ಶೈಲಕುಂಜೇ  
ಪ್ರತಿಧ್ವನಿರಾತ್ಮಕೃತಾನ್ ನಿಶಮ್ಯ" ಭಟ್ಟಿಂ ೨-೯ | 2. ಗುಡುಗು  
ತಿರುಳು. "ಗರ್ಜತ್ಪ್ರಜನ್ಯನಾದಂ ಸ್ಫುರಿತರವಿಕುಂಚಂ ಚಕ್ಷುರಭುಧ್ರ  
ರೌದ್ರಮ್" ಮನ್ವರಾಜಸ್ತವಃ |

**ಗರ್ಜನ ಗರ್ಜನ** (ನಂ) 1. ಆನೆಯ ಗರ್ಜನೆ. 2. ಮೇಘ  
ಗರ್ಜನೆ. 3. ಧ್ವನಿ, ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು. ಗರ್ಜ (ಶಬ್ದ) ಭಾವೇ  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | 4. ಕೋಪ, ಸಿಟ್ಟು. 5. ಯುದ್ಧ.  
ಗರ್ಜ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | "ಗರ್ಜನಂ ಸ್ತನಿತೇ  
ಕ್ರುಧಿ" ಹೇಮಂ |

**ಗರ್ಜನೀಯ ಗರ್ಜನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. 2. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ಗಟ್ಟಿ  
ಯಾಗಿ ಕೂಗಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಗರ್ಜ (ಶಬ್ದ) ಕರ್ಮಾದಿ  
"ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) |

**ಗರ್ಜಯತ್ ಗರ್ಜಯತ್** (ವಿಂ) ಗರ್ಜಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿ  
ರುವ. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಶಬ್ದಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ  
ಕೂಗಿಸುತ್ತಿರುವ. ಗರ್ಜ (ಶಬ್ದ) + ಣಿच् "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಯಂತಿ -ಯಂತಿಃ.

**ಗರ್ಜರ ಗರ್ಜರ** (ನಂ) ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳಿ. ಗರ್ಜ (ಶಬ್ದ) "ಅಃ" ಬಾಹುಂ |  
"ಗರ್ಜರಂ ಗೃಜ್ಜನಂ ಪ್ರೋಕ್ತಮ್ ತಥಾ ಸಾರಙ್ಗವರ್ಣಕಮ್" ಭಾವಪ್ರಂ |

**ಗರ್ಜಿ ಗರ್ಜಿ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ ಗರ್ಜನೆ, ಮೋಡದ ಶಬ್ದ,  
ಗುಡುಗು. ಗರ್ಜ (ಶಬ್ದ) ಭಾವೇ "ಇನ್" (೩-೪-೧೧೭) |  
2. ಆನೆಯ ಗರ್ಜನೆ.

**ಗರ್ಜಿತ ಗರ್ಜಿತ** (ಪುಂ) 1. ಮದಿಸಿದ ಆನೆ. ಗರ್ಜಯತಿ-ಗರ್ಜ  
(ಶಬ್ದ) + ಣಿच् ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | 2. ಮೇಘ  
ಗರ್ಜನೆ. ಗುಡುಗು. (ವಿಂ) 3. ಗರ್ಜಿಸಿದ, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ  
ಕೂಗಿದ. "ಗರ್ಜಿತೋ ಮತ್ತಕುಂಜರೇ | ಗರ್ಜಿತಂ ಜಲದಧ್ವಾನೇ"  
ಹೇಮಂ | 4. ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಶಬ್ದವುಂಟಾದ, ಗರ್ಜನೆ  
ಯುಂಟಾದ. ಗರ್ಜಾಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ "ಇತಚ್" (೪-೨-೩೬) |

**ಗರ್ಜಿತು ಗರ್ಜಿತು** (ವಿಂ) ಗರ್ಜಿಸುವ, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗುವ,  
ಮೇಘದಂತೆ ಶಬ್ದಮಾಡುವ. ಗರ್ಜ (ಶಬ್ದ) "ತುಚ್"  
(೩-೧-೧೩೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | ಗರ್ಜಿತ್ರಿ  
ಗರ್ಜಿತ್ರಿಃ.

**ಗರ್ಜ್ಯ ಗರ್ಜ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಗಟ್ಟಿ  
ಯಾಗಿ ಕೂಗಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಗರ್ಜ (ಶಬ್ದ) + ಣಿच्  
"ಞತ್" (೩-೧-೧೨೪) |

**ಗರ್ತ ಗರ್ತ** (ಪುಂ) 1. ಹಳ್ಳ, ಗೂಳಿ, ರಂಧ್ರ. ಗಿರತಿ - ಗೃ  
(ನಿಗರ್ಣ) "ತನ್" (೩-೩-೮೬) | 2. ಗವಿ, ಗುಹೆ.  
3. ಬಿಲ. 4. ಕಾಲುವೆ. ನಾಲೆ. "ಸ್ನಾನಂ ಸಮಾಚರೇತ್ತಿತ್ಯಂ  
ಗರ್ತಪ್ರಸವಣೇಷು ಚ" ಮನುಂ ೪-೨೦೩ | 5. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ.  
6. ಗೃಹ, ಮನೆ. 7. ತ್ರಿಗರ್ತದೇಶದ ಒಂದು ಭಾಗ.  
8. ಹೆಂಗಸರ ಪಿರೈಗಳ ಗುಳಿಗಳು. "ಗರ್ತಸ್ತ್ರಿಗರ್ತಭೇದೇ  
ಸ್ಯಾದವಶೇ ಚ ಕುಕುಂದರೇ" ಮೇದಿಂ | 9. ಸಭಾಭವನದ ಕಂಬ.  
10. ರಥ.

**ಗರ್ತಾಶ್ರಯ ಗರ್ತಾಶ್ರಯ** (ಪುಂ) ಬಿಲ ಮತ್ತು ಗುಹೆಗಳಲ್ಲಿ  
ವಾಸಿಸುವ ಇಲಿ ಮೊದಲಾದವು. ಗರ್ತಃ ಆಶ್ರಯೋ यस್ಯ |  
"ಶ್ರೀಷ್ಯಾಶ್ರಯಾಶ್ರಿತಾಸ್ತ್ವೇಷಾಂ ಮೃಗಗರ್ತಾಶ್ರಯಾಽಪ್ಸರಾಃ" ಮನುಂ  
೭-೭೨ |

**ಗರ್ತಿಕಾ ಗರ್ತಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಗ್ಗದ ಮನೆ, ನೇಯ್ಗೆಯ  
ಮನೆ. ಗರ್ತಾಸ್ತೀತ್ಯಸ್ಯಾಃ "ಕನ್" (೪-೨-೧೧೫) | ನೇಯ್ಗೆ  
ಯವನು ಹಳ್ಳದೊಳಗೆ ಕಾಲುಗಳನ್ನಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಮಗ್ಗದ  
ಮೇಲೆ ಕೂಡುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ತನ್ತುಶಾಲಾ ತು  
ಗರ್ತಿಕಾ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ |

**ಗರ್ದ-ಶಬ್ದ** (ವಾ ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಪಕ್ಷೇ ಸ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) |  
ಗರ್ದಯತಿ, -ತೇ | ಗರ್ದಯಾಂ ಚಕ್ರೇ, -ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ |  
ಇತ್ಯಾದಿ. ಪಕ್ಷೇ ಗರ್ದತಿ | ಜಗರ್ದ | ಗರ್ದಿತಾ | ಗರ್ದಿಷ್ಯತಿ |  
ಇತ್ಯಾದಿ. ಕೂಗು, ಶಬ್ದಮಾಡು, ಕಿರುಚು.

**ಗರ್ದಭ ಗರ್ದಭ** (ಪುಂ) 1. ರಾಸಭ, ಕತ್ತೆ. ಗರ್ದ (ಶಬ್ದ)  
"ಅಮಚ್" (೩-೩-೧೨೨) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೬೩) | -ಭಿ -ಭೀ. (1) ಹೆಣ್ಣು ಕತ್ತೆ. (2) ಒಂದು  
ರೋಗ. (3) ಸಗಣೆಯ ಹೆಣ್ಣು. 2. ಗಂಧ, ವಾಸನೆ.  
(ನಂ) 3. ಕುಮುದ, ಬಿಳಿನೈದಿಲೆ. 4. ವಾಯುವಿಳಂಗ.  
"ಗರ್ದಭಂ ಶ್ವೇತಕುಮುದೇ ಗರ್ದಭೋ ಗಂಧಮಿಥ್ಯಾಪಿ | ರಾಸಭೇ ಗರ್ದಭೋ  
ಕ್ಷುಧ್ರರೋಗಜನ್ತುವಿಶೇಷಯೋಃ" ಮೇದಿಂ |

**ಗರ್ದಭಕ ಗರ್ದಭಕ** (ವಿಂ) ಕತ್ತೆಯಂತಿರುವ. ಕತ್ತೆಯನ್ನು  
ಹೋಲುವ.

**ಗರ್ದಭಾಗ ಗರ್ದಭಾಗ** (ಪುಂ) ಪ್ರತಭಂಗ ಹೊಂದಿ  
ದವನು ಪಾಪಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಒಂದು ಯಾಗ.  
ಇದಕ್ಕಾಗಿ ಕುರುಡು ಕತ್ತೆಯನ್ನು ಪಶುವನ್ನಾಗಿಟ್ಟುಕೊಂಡು  
ನಿರ್ಮುತಿದೇವತಾಕವಾದ ಯಾಗವನ್ನು ಆಚರಿಸಬೇಕು.



“ಅವಕೋರ್ಣಿ ತು ಕಾಣೇನ ಗರ್ಭೇನ ಚತುರ್ಥೇ | ಪಾಕಯಜ-  
ವಿಧಾನೇನ ಯಜೇತ ನಿರ್ವೃತ್ತಿ ನಿಶಿ | ಹೃತ್ವಾಗನೌ ವಿಧಿವದ್ವಿಮಾನ್  
ಸಂತತಂ ಚ ಸಮೇತ್ಯಚಾ | ವಾತೇಂದ್ರಗುರುವಹ್ನಿನಾಂ ಜುಹ್ವಾತ್  
ಸರ್ಪಿಷಾಽಽಹುತೀಃ | ಕಾಮತೋ ರೇತಸಃ ಸೇಕಂ ವ್ರತಸ್ಥಸ್ಯ ದ್ವಿಜನ್ಮನಃ |  
ಅತಿಕ್ರಮಂ ವ್ರತಸ್ಯಾಹುಃ ಧರ್ಮಜಾ ಬ್ರಹ್ಮವಾದಿನಃ | ಮಾರುತಂ ಪುರುಹುತಂ  
ಚ ಗುಹಂ ಪಾವಕಮೇವ ಚ | ಚತುರೋ ವ್ರತಿನೋಽಪ್ಯೇತಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಾ  
ತೇಜೋಽವಕೀರ್ಣಿನಃ” ಮನುಂ ೧೧-೧೧೮-೨೧ |

**ಗರ್ಭಾಂಶ ಗರ್ಭಾಂಶ (ಪುಂ)** 1. ಬಸುರಿಮರ. 2. ಹಿಪ್ಪಲಿ.

ಗರ್ಭಂ ಗಂಧಮಮತಿ—ಅಮ (ಗತ್ಯಾದೌ) “ಙ್” (ಉಂ ೧-೧೧೧) |

**ಗರ್ಭಾಹ್ವಯ ಗರ್ಭಾಹ್ವಯ (ಪುಂ)** ಬಿಳಿನೈದಿಲೆ.

**ಗರ್ಭಿಕಾ ಗರ್ಭಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪಾತಪಿತ್ತದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ಚರ್ಮದ ರೋಗ. ಸುತ್ತಲೂ ಗುಳ್ಳೆಗಳಿದ್ದು ರಕ್ತದಿಂದ ತುಂಬಿದ ಕುರು, ರಕ್ತಕುರು. “ಮಂಡಲಂ ವೃತ್ತಮುತ್ಸನ್ನಂ ಸರಕತಂ ಪಿಡಕಾವೃತಮ್ | ಕ್ಷಜಾಕಾರೀ ಗರ್ಭಿಕಾಂ ತಾಂ ವಿಶ್ವಾತ್ಪಾಪಿತ್ತಜಾಮ್” |

**ಗರ್ಭ - ಅಭಿಕಾಙ್ಕ್ಷಾಯಾಮ್ (ಚುರಾಂ ಉಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)** |

ಗರ್ಭಯತಿ, -ತೇ | ಗರ್ಭಯಾಂ ಚಕ್ರೇ, -ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ |

ಗರ್ಭಯತು, -ತಾಮ್ | ಅಜಗದತ್, -ತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಗರ್ಭ ಗರ್ಭ (ಪುಂ)** ಅತಿಯಾದ ಆಸೆ, ಮಿತಿಮೀರಿದ ಆಸೆ. ಲೋಭ. ಗೃಹ (ಅಭಿಕಾಙ್ಕ್ಷಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ “ಘ್” (೩-೩-೧೮) |

**ಗರ್ಭನ ಗರ್ಭನ (ವಿಂ)** ಅತ್ಯಾಶೆಯುಳ್ಳ, ದುರಾಶೆಯುಳ್ಳ.

ಲೋಭ. ಗೃಹ (ಅಭಿಕಾಙ್ಕ್ಷಾಯಾಮ್) “ಯು” (೩-೨-೧೫೦) |

“ಕಪಿಶ್ಚಕ್ರಮಣೋಽಪಿ ನಾಸೌ ಭವತಿ ಗರ್ಭನಃ” ಭಟ್ಟಿಂ ೭-೧೬ |

**ಗರ್ಭ ಗರ್ಭ (ಪುಂ)** 1. ಭ್ರೂಣ, ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ಶಂಕ್ರತೋಣಿತ

ಸಂಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಮಾಂಸಪಿಂಡ, ಬಸಿರು.

ಗೌರೀತೇ ಉದ್ಗೌರೀತೇ—ಗೃ (ನಿಗರಣೇ) “ಭನ್” (ಉಂ ೩-೧೫೨) |

“ನರಪತಿಕುಲಭೂಯೈ ಗರ್ಭಮಾಧತ್ತ ರಾಜ್ಞಿ ಗುಹಿರಭಿನಿವಿಷ್ಟಂ ಲೋಕಪಾಲಾನುಭಾವೈಃ” ರಘುಂ ೨-೭೫ | 2. ಶಿಶು, ಮಗು.

“ಕಾಮಾನ್ಮಿಥುನಸಂಯೋಗೇ ಶುದ್ಧಶೋಣಿತಶುಕ್ರಜಃ | ಗರ್ಭಃ ಸಂಜಾಯತೇ ನಾರ್ಯಾಃ ಸ ಜಾತೌ ಬಾಲ ಉಚ್ಯತೇ” ಭಾವಪ್ರಂ | 3. ಕುಕ್ಕಿ, ಮೊಟ್ಟೆ, ಗರ್ಭಾಶಯ.

4. ರೂಪಕಗಳ ಪಂಚ ಸಂಧಿಗಳ ಲೋಮ. ಮೊದಲು ದೃಷ್ಟವಾಗಿ ಬಳಕೆ ಕಾರಣಾಂತರದಿಂದ ನಷ್ಟವಾದ (ಮುಖ್ಯ ಭಲಕ್ಕೆ ಮೂಲಿಕಾರಣವಾದ) ಬೇಡದ ಪುನರನ್ವೇಷಣವು ಗರ್ಭಸಂಧಿ.

“ಕಲಪ್ರಧಾನೋ-ಪಾಯಸ್ಯ ಪ್ರಾಗುದ್ವಿಗ್ನಸ್ಯ ಕಿಂಚನ | ಗರ್ಭೋ ಯತ್ರ ಸಮುದ್ದೇದೋ ಹಾಸಾನ್ವೇಷಣವಾನ್ ಮುಹುಃ” ಸಾಂ ೬೦ | 5. ಹಲಸಿನ ಹೆಣ್ಣಿನ

ಮೇಲಿನ ಮುಳ್ಳು. 6. ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಬಳಭಾಗ. ಗರ್ಭ-ಮಂಥನದ ಕರ್ಮಸಾಂದ್ರಂ ಭಾಜನಾನಿ ರಜತಸ್ಯ ಭಜಂತಿ” ನೈಷಂ ೨೧-೨೬ | 7. ಕೊಠಡಿ. 8. ದೇವಸ್ಥಾನದ ಗರ್ಭಗೃಹ.

9. ಭಾದ್ರಪದ ಕೃಷ್ಣಚತುರ್ದಶಿಯ ದಿನ ತುಂಬಿ ಹರಿಯುವ ಗಂಗಾನದಿಯ ಪಾತ್ರ. “ಭಾದ್ರಕೃಣ್ಣಚತುರ್ದಶ್ಯಾಂ ಯಾವದಾಪ್ಲವತೇ ಜಲಮ್ | ತಾವದ್ಗರ್ಭಂ ವಿಜಾನೀಯಾತ್” |

10. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 11. ಅನ್ನ, ಆಹಾರ. 12. ಸಂಧಿ, ಸೇರಿಕೆ. “ಗರ್ಭೋ ಭ್ರೂಣೇರ್ಭಕೇ ಕುಕ್ಷೌ ಸಂಧೌ ಪನಸಕಂಠಕೇ” ಮೇದಿಂ |

**ಗರ್ಭಕ ಗರ್ಭಕ (ಪುಂ)** 1. ತುರುಬಿನ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಹೂವು. (ನಂ) 2. ಎರಡು ರಾತ್ರಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ಹಗಲು.

**ಗರ್ಭಕರ ಗರ್ಭಕರ (ಪುಂ)** 1. ಪುತ್ರಜೀವವೆಂಬ ವೃಕ್ಷ. ಗರ್ಭಂ ಕರೋತಿ ಉತ್ಪಾದಯತಿ ತತ್ಸೇವನೇನ—ಙ್ ಕುಳ್ (ಕರಣೇ) “ಙ್” (೩-೨-೨೦) | (ವಿಂ) 2. ಗರ್ಭವನ್ನು ಉಂಟು ಮಾಡುವ.

**ಗರ್ಭಕಾರ ಗರ್ಭಕಾರ (ಪುಂ)** ಗರ್ಭೋತ್ಪತ್ತಿ ಮಾಡುವ ಪತಿ. ಗರ್ಭಂ ಕರೋತಿ—ಙ್ ಕುಳ್ (ಕರಣೇ) “ಅನ್” (೩-೨-೧) |

“ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) | -ಕಾರಕಃ—ಕಾರಕಃ. “ಗಿಣಿಃ” (೩-೨-೭೮) | -ಕಾರಿನ್—ಕಾರಿನ್.

**ಗರ್ಭಕಾರಣ ಗರ್ಭಕಾರಣ (ನಂ)** ಗರ್ಭವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ ವಸ್ತು.

**ಗರ್ಭಕೋಶ ಗರ್ಭಕೋಶ (ಪುಂ)** ಗರ್ಭವನ್ನು ಧರಿಸುವ ಚೀಲ, ಗರ್ಭಾಶಯ. ಗರ್ಭಸ್ಯ ಕೋಶ ಇವ |

**ಗರ್ಭಗೃಹ ಗರ್ಭಗೃಹ (ನಂ)** 1. ಮನೆಯ ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಮನೆಯ ಬಳಭಾಗ. ಕೊಠಡಿ. ಗರ್ಭ ಇವ ಗೃಹಮ್ | 2. ದೇವಾಲಯದೊಳಗಿನ ಭಾಗ. “ಕಾಂತಾ ಗರ್ಭಗೃಹೇ ಗವಾಕ್ಷವಿವರವ್ಯಾಪಾರಿತಾಕ್ಷ್ಯಾ ಬಹಿಃ ಸಖ್ಯಾ ವಕ್ತ್ರಮಭಿ-ಪ್ರಯಂಚತಿ ಪರಂ ಪರ್ಯಶ್ರುಣಿ ಲೋಚನೇ” ಸಾಂ ೬೦ |

**ಗರ್ಭಗ್ರಹಣ ಗರ್ಭಗ್ರಹಣ (ನಂ)** ಗರ್ಭವನ್ನು ಧರಿಸುವುದು, ಬಸಿರಾಗುವುದು. ಗರ್ಭಸ್ಯ ಗ್ರಹಣಮ್ |

**ಗರ್ಭಚಲನ ಗರ್ಭಚಲನ (ನಂ)** ಗರ್ಭವು ಗರ್ಭಾಶಯವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಕವಲುವುದು, ಗರ್ಭಕೋಶದಿಂದ ಬೇರೆ ಕಡೆಗೆ ಹಾರುವುದು.

**ಗರ್ಭಚೇತ ಗರ್ಭಚೇತ (ಪುಂ)** ಹುಟ್ಟಿದಾಗಿನಿಂದ ಸೇವಕನಾಗಿರುವವನು. ಗರ್ಭಾತ್ ಚೇತಃ |

**ಗರ್ಭಚ್ಯುತಿ ಗರ್ಭಚ್ಯುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗರ್ಭಸ್ತಾವ, ಗರ್ಭವು ಒಡೆದು ಬೀಳುವುದು. ಗರ್ಭಸ್ಯ ಚ್ಯುತಿಃ | ಪ್ರಸವಕಾಲಕ್ಕೆ ಮುಂಚೆ ಗರ್ಭಕ್ಕೆ ಏಳು ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ತೊಂದರೆ



ಏರ್ಪಟ್ಟರೆ ಗರ್ಭಸ್ತ್ರಾವ, ಗರ್ಭಪಾತಗಳು ಸಂಭವಿಸುವವು. ಪೂರ್ಣಗರ್ಭಿಣಿಯಾಗಿರುವಾಗ ಮೈಥುನ (ಸಂಭೋಗ). ವಾಹನ (ಆನೆ ಕುದುರೆ ಗಾಡಿ ಮೊದಲಾದುವು) ಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಯಾಣ. ದಾರಿ ನಡೆಯುವುದು, ಜಾರುವುದು, ಎಡವುವುದು. ಗರ್ಭಕ್ಕೆ ಹೆಚ್ಚು ಹಿಂಸೆಯಾಗುವ ಕಾರ್ಯ, ಓಡುವುದು, ಏಟು ಬೀಳುವುದು, ಇಕ್ಕಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಮಲಗುವುದು. ಉಪವಾಸ, ಮಗವಾಗಿ ನಡೆಯುವುದು, ಕಾರವಾದ ಆಹಾರ ಸೇವನೆ. ಅತಿಸಾರ, ವಾಂತಿ, ಭೇದಿ, ಉಯ್ಯಾಲೆ ಆಡುವುದು ಇತ್ಯಾದಿಗಳಿಂದ ಗರ್ಭವು ಸ್ವಸ್ಥಾನವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಕದಲುವುದು. ಅದರಿಂದ ಗರ್ಭಸ್ತ್ರಾವ ಗರ್ಭಪಾತಗಳು ಉಂಟಾಗುವವು. "ಗ್ರಾಮ್ಯಧರ್ಮ-ಯಾನ-ವಾಹನಾಧವಗಮನ-ಪ್ರಸ್ಥಲನ-ಪ್ರಪತನ-ಪ್ರಪಿಡನ-ಧಾವನಾಭಿಘಾತಾತಿರೂಕ್ಷಕಡ್ಡುತಿಕ-ಭೋಜನ-ಶೋಕಾತಿಕಾರಸೇವನಾತಿಸಾರ-ವಮನ-ವಿರೇಚನ-ಪ್ರೇಕ್ಷಾಲನಾಜೀರ್ಣಗರ್ಭಶಾತಪ್ರಭೃತಿಭಿಃ ಬಂಧನಾನ್ಮುಚ್ಯತೇ ಗರ್ಭಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ನಿರ್ದಾನಂ ೩-೩.

**ಗರ್ಭದ ಗರ್ಭದ (ಪುಂ)** 1. ಪುತ್ರಜೀವವೆಂಬ ವೃಕ್ಷ. ಗರ್ಭದದಾತಿ - ತು ದಾನ್ (ದಾನ) "ಕಃ" (೩-೨-೩). 2. ಗರ್ಭವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಔಷಧ.

**ಗರ್ಭದಾಸ ಗರ್ಭದಾಸ (ಪುಂ)** ಗೃಹಪಾತ ದಾಸಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಸೇವಕ, ಹುಟ್ಟಿದಾಗಿನಿಂದ ಸೇವಕನಾಗಿರುವವನು. ಗರ್ಭಾತ್ ಗರ್ಭಮಾರಮ್ಯ ದಾಸಃ.

**ಗರ್ಭಧರಾ ಗರ್ಭಧರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗರ್ಭಿಣಿ, ಬಸಿರು ಹೆಂಗಸು, ಗರ್ಭ ಧರಿಸಿದ ಹೆಂಗಸು.

**ಗರ್ಭಧಾರಣ ಗರ್ಭಧಾರಣ (ನಂ)** ಗರ್ಭವನ್ನು ಧರಿಸುವುದು, ಶುಕ್ರಶೋಣಿತಗಳು ಬೆರೆತು ಗರ್ಭಾಶಯದೊಳಕ್ಕೆ ಸೇರುವುದು.

**ಗರ್ಭಧ್ವಂಸ ಗರ್ಭಧ್ವಂಸ (ಪುಂ)** ಸ್ತ್ರಾವಪಾತ ಮುಂತಾದುವುಗಳಿಂದ ಆಗುವ ಗರ್ಭದ ನಾಶ. ಗರ್ಭಸ್ಯ ಧ್ವಂಸಃ.

**ಗರ್ಭನಾಡಿ ಗರ್ಭನಾಡಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹೊಕ್ಕುಳಕುಡಿ, ಹೊಕ್ಕುಳ ಬಳ್ಳಿ. ಗರ್ಭಸ್ಯ ನಾಡಿ. "ತತೋ ಗರ್ಭನಾಡೀಮಷ್ಟಾಙ್ಗುಲಮಾಯಮ್ಯ ಸೂತ್ರೇಣ ಬಧ್ವಾ ಛೇದयेತ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೧೦-೧೨.

**ಗರ್ಭಪಾಕಿನ್ ಗರ್ಭಪಾಕಿನ್ (ಪುಂ)** ಪಚ್ಚಿದಾನ್ಯ, ಅರವತ್ತು ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಹಣ್ಣಾಗಿ ಕುಯ್ಲಿಗೆ ಬರುವ ಬತ್ತ. ಗರ್ಭಸ್ಯ ಪಾಕಃ ಪುಷ್ಟಿಃ ಸಾಧ್ಯತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫).

**ಗರ್ಭಪಾತ ಗರ್ಭಪಾತ (ಪುಂ)** ಗರ್ಭದ ಪತನ, ಅತಿಯಾದ ಆಯಾಸ ಅಥವಾ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಗರ್ಭನಾಶ, ಗರ್ಭವು ಗರ್ಭಕೋಶದಿಂದ ಜಾರಿ ಬೀಳುವುದು. ಗರ್ಭಸ್ಯ ನಾಶಃ. ಇದು ಗರ್ಭ ಧರಿಸಿದ ಐದು

ತಿಂಗಳನಂತರ ಸಂಭವಿಸಿದರೆ ಗರ್ಭಪಾತ. ಐದು ತಿಂಗಳೊಳಗಾದರೆ ಗರ್ಭಸ್ತ್ರಾವ.

**ಗರ್ಭಪಾತಕ ಗರ್ಭಪಾತಕ (ಪುಂ)** ಕೆಂಪುಹೂವಿನ ನುಗ್ಗೆ ಮರ. ಗರ್ಭ ಪಾತಯತಿ - ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಞ್" (೩-೧-೧೩೩). ಇದರ ಸೊಪ್ಪಿನ ಸೇವನೆಯಿಂದ ಗರ್ಭಪಾತವಾಗುವುದು.

**ಗರ್ಭಪಾತಿಣಿ ಗರ್ಭಪಾತಿಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. ಗರ್ಭ ಪಾತಯತಿ - ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಣಿಣಿಃ" (೩-೨-೨೮). "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪).

**ಗರ್ಭಪೋಷಣ ಗರ್ಭಪೋಷಣ (ನಂ)** ಗರ್ಭವನ್ನು ಪೋಷಿಸುವುದು, ಗರ್ಭವು ಬೆಳೆಯಲು ಮಾಡುವ ಉಪಕಾರ. ಗರ್ಭಸ್ಯ ಪೋಷಣಮ್. ಗರ್ಭವು ಬೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆಯಲು ಅವಶ್ಯವಾದ ನಿಯಮಗಳು. ಗರ್ಭಿಣಿಯು ಗರ್ಭಧಾರಣ ಮಾಡಿದಂದಿನಿಂದ ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಸಂತೋಷದಿಂದಿರಬೇಕು, ಶುಚಿಯಾದ ವಸ್ತ್ರಾಲಂಕಾರಗಳನ್ನು ಧರಿಸಬೇಕು. ಮಂಗಳ ಕಾರ್ಯ ಮತ್ತು ಗುರು ದೇವತಾಬ್ರಾಹ್ಮಣಪೂಜೆಗಳಲ್ಲಿ ನಿರತಳಾಗಿರಬೇಕು. ಮಲಿನವಾದ ಏಕಾರವಾದ ಮತ್ತು ಏಕಲವಾದ ದೇಹಗಳನ್ನು ಮುಟ್ಟಕೂಡದು. ಕೆಟ್ಟ ವಾಸನೆಯನ್ನು ಸೇವಿಸಕೂಡದು. ಭಯಂಕರ ದೃಶ್ಯಗಳನ್ನು ನೋಡಕೂಡದು. ಉದ್ದೇಗಕರವಾದ ಕಥೆಗಳನ್ನು ಕೇಳಕೂಡದು. ನೀರಸವಾದ ಆಹಾರ ಮತ್ತು ತಂಗಳನ್ನುಗಳನ್ನು ತಿನ್ನಕೂಡದು. ಪಾಳುಮನೆಗಳು ಮತ್ತು ಮರದ ನೆರಳುಗಳಲ್ಲಿ ಇರಕೂಡದು. ಕೋಪದ ಮತ್ತು ಭಯಂಕರ ಮಾತುಗಳನ್ನು ಅಡಲೂ ಕೇಳಲೂ ಕೂಡದು. ಶರೀರಕ್ಕೆ ಆಯಾಸ ಕರವಾದ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡಕೂಡದು. ಪದೇ ಪದೇ ತೈಲಾಭ್ಯಂಗ ಮಾಡಕೂಡದು. ಮೃದುವಾದ ಹಾಸಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಮಲಗಬೇಕು. ಇಷ್ಟವಾದ ಹಿತವಾದ ದ್ರವವಾದ ಮಧುರವಾದ ಮತ್ತು ಜಿಡ್ಡಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ಆಹಾರಗಳನ್ನು ಸೇವಿಸಬೇಕು ಇತ್ಯಾದಿ. "ಗರ್ಭಿಣಿ ಪ್ರಥಮದಿವಸಾತ್ ಪ್ರಭೃತಿ ನಿದ್ರಾಂ ಪ್ರಹೃಷ್ಠಾ ಶುಚ್ಯಲಡ್ಕೃತಾ ಶುಕ್ಲವಸನಾ ಶಾಂತಿಮಙ್ಗಲ-ದೇವತಾಬ್ರಾಹ್ಮಣಗುರುಪರಾ ಚ ಭವೇತ್. ಮಲಿನವಿಕೃತಹೀನಗಾತ್ರಾಣಿ ನ ಸ್ಪೃಶೇತ್, ದುರ್ಗಂಧದೃಶನಾನಿ ಪರಿಹರೇತ್, ಉದ್ದೇಗನಿಷ್ಠಾ ಕಥಾಃ ಶುಷ್ಕಂ ಪರ್ಯುಷಿತಂ ಕುಥಿತಂ ಕಿಲಿಪ್ತಂ ಚಾನ್ತಂ ನೋಪಭುಂಜೀತ. ಬಹಿರ್ನಿಷ್ಕ್ರಮಣಂ ಶೂನ್ಯಾಗಾರಚೈತ್ಯಶಮಶಾನವೃಕ್ಷಾಶ್ರಯಾನ್ ಕ್ರೋಧ-ಭಯಕ್ಷುರಾನ್ ಭಾವಾನ್ ಉಚ್ಛೇರ್ಮಾಘಾಡಿಕಂ ಚ ಪರಿಹರೇದಾನಿ ಚ ಗರ್ಭಂ ವ್ಯಾಪಾದಯಂತಿ, ನ ಚಾಭೀಕ್ಷಂ ತೈಲಾಮೃತ್ಸಾಧನಾದಿನಿ ಸೇವೇತ್. ನ ಚಾಯಾಸಯೇಂಚರೀರಮ್" ಇತ್ಯಾದಿ. ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೧೦-೩.



**ಗರ್ಭಪ್ರಸವ ಗರ್ಭಪ್ರಸವ (ಪುಂ)** ಏತುವನ್ನು ಹೆರುವುದು, ಮಗುವನ್ನು ಹಡೆಯುವುದು. ಗರ್ಭಸ್ಯ ಪ್ರಸವಃ। ಗರ್ಭಿಣಿಯನ್ನು ಒಂಬತ್ತನೆಯ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಶುಭದಿವಸದಲ್ಲಿ ಸೂತಿಕಾ ಗೃಹಕ್ಕೆ ಕರೆದೊಯ್ಯಬೇಕು. ಕ್ರಮೇಣ ಗರ್ಭವು ಹೊಟ್ಟೆಯಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಜಾರಿದಾಗ ಹೊಟ್ಟೆಯು ಸಡಿಲವಾಗುವುದು. ಹೃದಯವು ಲಘುವಾಗುವುದು. ತೊಡೆಗಳಲ್ಲಿ ಸೆಳೆತ ಪ್ರಾರಂಭವಾಗುವುದು. ಆಗ ಪ್ರಸವಕಾಲವು ಸನ್ನಿಹಿತವಾಯಿತೆಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕು. “ನವಮೇ ಮಾಸಿ ಸ್ಮೃತಿಕಾಗಾರ-ಮೇನಾಂ ಪ್ರವೇಶಯತ್ ಪ್ರಶಸ್ತೇ ತಿಥ್ಯಾದೌ”। “ಜಾತೇ ಹಿ ಶಿಶಿಲೇ ಕುಕ್ಷೌ ಮುಕ್ತೇ ಹೃದಯಬಂಧನೇ। ಸಶೂಲೇ ಜಘನೇ ನಾರೀ ಜೇಯಾ ಸಾ ತು ಪ್ರಜಾಯಿನಿ” ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೧೦-೪, ೬।

**ಗರ್ಭಭರ್ಮನ್ ಗರ್ಭಭರ್ಮನ್ (ನಂ)** ಗರ್ಭದ ಪೋಷಣೆ, ಸೂಲಗಿತ್ತಿಯ ಕಾರ್ಯ. ಗರ್ಭಸ್ಯ ಭರ್ಮಃ। “ಕುಮಾರಭೃತ್ಯಾ-ಕುಶಲೇರನುಷ್ಠಿತೇ ಮಿಷಗಿಭಿರಾಪ್ತೇರಥ ಗರ್ಭಭರ್ಮಣಿ” ರಘುಂ ೩-೧೨।

**ಗರ್ಭಮಾಸ ಗರ್ಭಮಾಸ (ಪುಂ)** ಗರ್ಭವನ್ನು ಧರಿಸಿದ ಮಾಸ. ಗರ್ಭಸ್ಯ ತದಾರಮ್ಭಸ್ಯ ಮಾಸಃ।

**ಗರ್ಭರಕ್ಷಾ ಗರ್ಭರಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗರ್ಭದ ರಕ್ಷಣೆ, ಬಿಸಿರನ್ನು ಕಾಪಾಡುವುದು.

**ಗರ್ಭಲಂಛನ ಗರ್ಭಲಂಛನ (ನಂ)** ಗರ್ಭವು ಸುರಕ್ಷಿತವಾಗಿರಲು ಮಾಡುವ ಒಂದು ಕರ್ಮ. ಗರ್ಭೋಽಮೋಘವೀರಯತಯಾ ಲಂಛಯತೇಜೇನ — ಡು ಲಮಫ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)।

**ಗರ್ಭವತೀ ಗರ್ಭವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗರ್ಭಿಣಿ, ಬಿಸಿರು ಹೆಂಗಸು. ಗರ್ಭೋಽಸ್ತೃತ್ಯಾ: “ಮತುಫ್” (೪-೨-೯೪)। “ಙೀಫ್” (೪-೧-೬)।

**ಗರ್ಭವಸತಿ ಗರ್ಭವಸತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗರ್ಭಕ್ಕೆ ಸ್ಥಾನವಾದ ಹೊಟ್ಟೆ, ಗರ್ಭಾಶಯ. ಗರ್ಭಃ ಕುಕ್ಷಿರೇವ ವಸತಿಃ। “ಸ ತತ್ರ ಗರ್ಭವಸತೌ ವಸತ್ಯಾತ್ಮೇಂಶ್ಚಯಾ ಹರಿಃ” ಹರಿವಂ।

**ಗರ್ಭವಾಸ ಗರ್ಭವಾಸ (ಪುಂ)** ಗರ್ಭಕ್ಕೆ ಸ್ಥಾನವಾದ ಕುಕ್ಷಿ, ಹೊಟ್ಟೆ. ವಸತ್ಯಾಸ್ಮಿನ್ ವಾಸಃ ವಾಸಸ್ಥಾನಮ್, ಗರ್ಭ ಏವ ವಾಸಃ। “ಅಸಕ್ತಗರ್ಭವಾಸೇಷು ವಾಸಂ ಜನ್ಮ ಚ ದಾರುಣಮ್” ಮನುಂ ೧೨-೭೮।

**ಗರ್ಭವ್ಯೂಹ ಗರ್ಭವ್ಯೂಹ (ಪುಂ)** ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ನಿಲ್ಲಿಸುವ ಸೇನೆಗಳ ಗುಂಪು. ಗರ್ಭ ಇವ ಗೂಡು ವ್ಯೂಹಃ। ಗರ್ಭವ್ಯೂಹವು ಪದ್ಮದ ಆಕಾರದಲ್ಲಿ ಇರಬೇಕು. “ಪಶ್ಚಾದೈ ತಸ್ಯ ಪಶ್ಚಾಸ್ತು ಗರ್ಭವ್ಯೂಹಃ ಸುದುಃಖಃ। ಸೂಚೀಪದಸ್ಯ ಗರ್ಭಸ್ಥೌ ಗೂಡೌ ವ್ಯೂಹಃ ಕೃತಃ ಪುನಃ” ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ।

**ಗರ್ಭಶಯಾ ಗರ್ಭಶಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗರ್ಭದ ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನ, ಗರ್ಭವು ನಿಲ್ಲುವ ಸ್ಥಾನ, ಹೊಟ್ಟೆ, ಗರ್ಭಕೋಶ. ಗರ್ಭಸ್ಯ

ಶಯೇವ। “ಯೋ ಯಃ ಪಾಂಚಾಲಗೋತ್ರೇ ಶಿಶುರಧಿಕವಯಾ ಗರ್ಭಶಯಾಂ ಗತೌ ವಾ” ವೇಣೀಂ ೩-೩೨।

**ಗರ್ಭಸಂಕ್ರಮಣ ಗರ್ಭಸಂಕ್ರಮಣ (ನಂ)** ಗರ್ಭಕೋಶವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು, ಬೇರೆ ಶರೀರವನ್ನು ಹೊಂದಲು ಜೀವನು ಗರ್ಭಕೋಶದೊಳಕ್ಕೆ ಸೇರುವುದು. ಗರ್ಭ ಸಂಕ್ರಮಣಮ್।

**ಗರ್ಭಸಂಕ್ರಮಣ ಗರ್ಭಸಂಕ್ರಮಣ (ಪುಂ)** ರೋಗಾದಿಗಳಿಂದ ಪ್ರಸವಕಾಲಕ್ಕಿಂತ ಮುಂಚೆ ಗರ್ಭವು ತನ್ನ ಜಾಗದಿಂದ ಕಳಚಿ ಬೀಳುವುದು. ಗರ್ಭಸ್ಯ ಸಂಕ್ರಮಣಃ।

**ಗರ್ಭಸ್ತ್ರಾವ ಗರ್ಭಸ್ತ್ರಾವ (ಪುಂ)** ಪ್ರಸವಕಾಲಕ್ಕಿಂತ ಮುಂಚೆ ರೋಗಾದಿಗಳಿಂದ ಗರ್ಭವು ಗರ್ಭಕೋಶದಿಂದ ಜಾರಿಬೀಳುವುದು. ಗರ್ಭಸ್ಯ ಸ್ತ್ರಾವಃ। ಗರ್ಭ ಧರಿಸಿದ ಐದು ತಿಂಗಳೊಳಗೆ ಗರ್ಭನಾಶವಾದರೆ ಗರ್ಭಸ್ತ್ರಾವ. ಐದು ತಿಂಗಳ ನಂತರವಾದರೆ ಗರ್ಭಪಾತ.

**ಗರ್ಭಾಗಾರ ಗರ್ಭಾಗಾರ (ನಂ)** 1. ವಾಸದ ಮನೆ, ಮನೆಯ ಮಧ್ಯಭಾಗ. ಗರ್ಭ ಇವಾಗಾರಮ್। 2. ಗರ್ಭಕೋಶ, ಗರ್ಭದ ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನ. ಗರ್ಭ ಏವಾಗಾರಮ್।

**ಗರ್ಭಾಧಾನ ಗರ್ಭಾಧಾನ (ನಂ)** 1. ಗರ್ಭವನ್ನು ಇಡುವುದು, ಗರ್ಭಕೋಶದಲ್ಲಿ ವೀರ್ಯವನ್ನು ಸೇರಿಸುವುದು, ಬಿಸಿರು ಮಾಡುವುದು. 2. ಮನುಷ್ಯನ ದೇಹಕ್ಕೆ ಆಗಬೇಕಾದ ದದಿನಾರು ಸಂಸ್ಕಾರಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಗರ್ಭ ಆಧೀಯತೇಜೇನ — ಡು ಧಾಕ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)। ಗರ್ಭಾಧಾನಕ್ಕೆ ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ ತಿಥಿವಾರಾದಿಗಳು: ಉಭಯ ಪಕ್ಷಗಳ ಪಕ್ಷಿ, ಅಷ್ಟಮಿ, ಚತುರ್ದಶಿ ಮತ್ತು ಹದಿನೈದನೆಯ (ಪೂರ್ಣಿಮೆ ಮತ್ತು ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ) ತಿಥಿಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಉಳಿದ ತಿಥಿಗಳೂ ಸೋಮ ಬುಧ ಗುರು ಮತ್ತು ಶುಕ್ರವಾರಗಳೂ ರೋಹಿಣಿ ಉತ್ತರ ಫಲ್ಗುನಿ ಹಸ್ತ ಸ್ವಾತಿ ಅನೂರಾಧೆ ಮೂಲ ಶ್ರವಣ ಉತ್ತರಾಷಾಢ ಶತಭಿಷ ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರೇ ಮತ್ತು ರೇವತೀ ನಕ್ಷತ್ರಗಳೂ ಅಷ್ಟಮಿ ಶುದ್ಧಿಯಿರುವ ವೃಷಭ ಮಿಥುನ ಕರ್ಕಾಟಕ ಸಿಂಹ ಕನ್ಯಾ ತುಲಾ ಧನುಸ್ಸು ಕುಂಭ ಮತ್ತು ಮೀನ ಲಗ್ನಗಳೂ ಪ್ರಶಸ್ತವಾದುವು. “ವಿಷ್ಣುಪ್ರಜೇಶರವಿಮಿತ್ರಸಮೀರಪೌಷ್ಣಮೂಲೋತ್ತರಾ-ವರಣಭಾನಿ ನಿಷೇಕಕಾರ್ಯೇ। ಪೂಜ್ಯಾನಿ ಪುಷ್ಯವಸುಶೀತಕರಾಶ್ವಿ-ಚಿತ್ರಾದಿತ್ಯಾಶ್ಚ ಮಧ್ಯಮಫಲಾ ವಿಫಲಾಃ ಸ್ಯುರನ್ಯೇ॥ ಷಷ್ಠ್ಯ-ಷಡಮಿಪಚ್ಚದಶೀಚತುರ್ಥಿಃ ಚತುರ್ದಶೀಮಪ್ಯುಭಯತ್ರ ಹಿತ್ವಾ। ಶೇಷಾಃ ಶುಭಾಃ ಸ್ಯುಸ್ಥಿಥಯೋ ನಿಷೇಕೇ ವಾರಾಃ ಶಶಾಂಕಾರ್ಥಸಿತೇಂದುಜಾ-ನಾಮ್॥ ವೃಷಮಿಥುನಕುಲೀರಸಿಹಕನ್ಯಾತುಲಘಟಾಪಜ್ಞಾಃ ಶುಭಂ ವಹಂತಿ। ಯದಿ ಶುಭಫಲಶಾಲಿನೋಽನುಕೂಲೇ ನಿಧನಶುದ್ಧಿಯುತೇ ನಿಷೇಕಕಾರ್ಯೇ” ಮುಹೂಂ ದಂ ೩೩೬, ೩೭, ೩೮। “ಗರ್ಭಾಧಾನ-



ಕ್ಷಣಪರಿಚಯಾನುಮಾದ್ಯಮಾಲಾ: ಸೇವಿಷ್ಯಂತೇ ನಯನಸುಭಗಂ ಸೇ  
ಭವಂತಂ ಬಲಾಕಾ: " ಸೇವಂ ೧-೨೧.

**ಗರ್ಭಾವಕ್ರಾಂತಿ ಗರ್ಭಾವಕ್ರಾಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರ್ಭಾವಕ್ರಾಂತಿಯು**  
ಜೀವನ ಪ್ರವೇಶ. ಗರ್ಭಾವಕ್ರಾಂತಿ: ಅವತಾರ: । ["ಗರ್ಭಾ-  
ತ್ಯತಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಗರ್ಭಾಶಯ ಗರ್ಭಾಶಯ (ಪುಂ) ಗರ್ಭಾಶಯ.** ಗರ್ಭಾವು  
ನಿಲ್ಲುವ ಜಾಗ, ಗರ್ಭಕ್ಕೆ ಆಧಾರವಾದ ಸ್ಥಾನ. ಗರ್ಭ:  
ಆಶೇತೇತ್ರ - ಆ+ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೆ) "ಘ:" (೩-೩-೧೧೮)।  
ಪುರುಷನಿಗಿಂತಲೂ ಹೆಂಗಸಿಗೆ ಅಧಿಕವಾಗಿರುವ ಮೂರು  
ಅಶಯಗಳಲ್ಲಿ ಗರ್ಭಾಶಯವು ಒಂದು. ಇದು ಪಿತ್ತಾಶಯ  
ಮತ್ತು ಪಶ್ಚಾತ್ತಯಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವುದು. "ಪುರುಷೋ-  
ಽಧಿಕಾಶ್ರಾನ್ಯೇ ನಾರೀಣಾಮಾಶಯಾಸ್ತ್ರಯ: । ಏಕೋ ಗರ್ಭಾಶಯ:  
ಪ್ರೋಕ್ತ: ಪಿತ್ತಪಕ್ಷಾಶಯಾಂತರೇ" ಭಾವಪ್ರಂ ।

**ಗರ್ಭಾಷ್ಟಮ ಗರ್ಭಾಷ್ಟಮ (ಪುಂ) 1.** ಗರ್ಭಾಷ್ಟಮದ ಮೊದಲು  
ಗೊಂಡು ಎಂಟನೆಯ ವರ್ಷ ಅಥವಾ ಎಂಟನೆಯ ತಿಂಗಳು.  
ಗರ್ಭಾತ್ ಗರ್ಭಾಲಾತ್ ಅಷ್ಟಮ: । ಗರ್ಭಾಷ್ಟಮ (ಗರ್ಭಾ-  
ಧಾರಣವಾದ ಎಂಟನೆಯ ವರ್ಷ)ದಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗುವ  
ಉಪನಯನವು ನಡೆಯಬೇಕು. "ಗರ್ಭಾಷ್ಟಮೇಂದೇ ಕುರ್ವಿತಿ  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯೋಪನಾಯನಮ್ । ಗರ್ಭಾದಿಕಾದಶೇ ರಾತ್ರೋ ಗರ್ಭಾತ್ ದ್ವಾದಶೇ  
ವಿಶ: " ಮನುಂ ೨-೩೬ । 2. ಎಂಟನೆಯ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟಿದವನು.

**ಗರ್ಭಾಸ್ಪಂದನ ಗರ್ಭಾಸ್ಪಂದನ (ನಂ) ಗರ್ಭಾಸ್ಪಂದನ** ಚಿಹ್ನೆ,  
ಗರ್ಭಾಸ್ಪಂದನ ಉದರದಲ್ಲಿ ಶಿಶುವು ಮೃತವಾಗಿರುವ ಲಕ್ಷಣ.  
ಪ್ರಸವವೇದನೆಯಿಲ್ಲದೆ ಗರ್ಭಾಸ್ಪಂದನ ಮೃಯಲ್ಲಿ ಹಸುರು  
ಬೆರೆತ ಕೆಂಪುಬಣ್ಣ ಪಾಂಡುತ್ವ ಉಚ್ಚಾಸ್ಪಂದನದಲ್ಲಿ ದುರ್ವಾಸನೆ  
ಹೊಟ್ಟೆಯ ಉಬ್ಬರ ಇವೆಲ್ಲ ಉದರದಲ್ಲಿ ಶಿಶುವು ಮೃತ  
ವಾಗಿರುವುದರ ಲಕ್ಷಣಗಳು. "ಗರ್ಭಾಸ್ಪಂದನಮಾಬೀನಾಂ ಪ್ರಣಾಶ:  
ಶ್ಯಾವಪಾಣ್ಡುತಾ । ಭವತ್ಯುಚ್ಚವಾಸಪೂರ್ತೀತ್ವಂ ಶೂನತಾಂತರ್ಮೃತೇ  
ಶಿಶೌ " ಸುಶ್ರುತಂ ನಿರ್ದಾನಂ ೧-೧೨ ।

**ಗರ್ಭಾಕ್ಷಾತ್ರ ಗರ್ಭಾಕ್ಷಾತ್ರ (ಪುಂ) ಗರ್ಭಾಕ್ಷಾತ್ರ,** ಪ್ರಸವ  
ಕಾಲಕ್ಕಿಂತಲೂ ಮುಂಚೆ ರೋಗಾದಿಗಳಿಂದ ಗರ್ಭಾವು  
ಗರ್ಭಾಕ್ಷಾತ್ರದಿಂದ ಜಾರಿ ಬೀಳುವುದು. ["ಗರ್ಭಾಕ್ಷಾತ್ರ"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಗರ್ಭಾಕ್ಷಿ ಗರ್ಭಾಕ್ಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರ್ಭಾಕ್ಷಿ,** ಗರ್ಭಾಕ್ಷಿ ಧರಿಸಿದ  
ಹೆಂಗಸು, ಬಸಿರು ಹೆಂಗಸು. ಗರ್ಭಾಕ್ಷಿಯು: "ಇತಿ:"  
(೪-೨-೧೧೪) । "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪) । ಗರ್ಭಾಕ್ಷಿಯು  
ನಿಯಮಗಳು: ಬಸಿರು ಹೆಂಗಸು ಅನೆ ಕುದುರೆ ಬೆಟ್ಟ  
ಮಹಡಿ ಇವುಗಳನ್ನು ಹತ್ತಿಕೊಡದು. ವ್ಯಾಯಾಮ

(ಅಂಗಸಾಧನೆ) ಮೇಗವಾದ ನಡಿಗೆ ಗಾಡಿಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಯಾಣ  
ಇವನ್ನು ಬಿಡಬೇಕು. ದಂಟಿಸಿಕೊಡದು. ದೇಹದಿಂದ  
ರಕ್ತವನ್ನು ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಿಡಿಕೊಡದು. ಹೆದರಿಸಿಕೊಡದು.  
ಕುಕ್ಕುಟಾಸನದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ಮೃದುವು  
(ಸಂಭೋಗ) ಹಗಲು ನಿದ್ರೆ ರಾತ್ರಿ ಜಾಗರಣೆ ಇವು  
ಕೊಡದು. "ಗರ್ಭಿಣಿ ಕುಂಜರಾಶ್ವಾದಿಶೇಲಹರ್ಷಾದಿರೋಹಣಮ್ ।  
ವ್ಯಾಯಾಮಂ ಶೀಘ್ರಗಮನಂ ಶಕಟಾರೋಹಣಂ ತ್ಯಜೇತ್ । ಶೋಕಂ ರಕ್ತ-  
ವಿಮೋಕ್ಷಂ ಚ ಸಾಧ್ಯವಸಂ ಕುಕ್ಕುಟಾಸನಮ್ । ವ್ಯವಾಯಂ ಚ ದಿವಾಸ್ವಾಪಂ  
ರಾತ್ರೌ ಜಾಗರಣಂ ತ್ಯಜೇತ್ " । ತದಾಪ್ರಭೃತಿ ವ್ಯವಾಯಂ ವ್ಯಾಯಾಮ-  
ಮತೀತರ್ಪಣಮತೀಕರ್ಷಣಂ ದಿವಾಸ್ವಪ್ನಂ ರಾತ್ರಿಜಾಗರಣಂ ಶೋಕಂ  
ಯಾನಾರೋಹಣಂ ಭಯಂ ಚೈಕಾಂತತ: ಸ್ನೇಹಾದಿಕ್ರಿಯಾಂ ಶ್ಲೇಷಣಿತಮೋಕ್ಷಣಂ  
ಚಾಕಾಲೇ ವೇಗವಿಧಾರಣಂ ಚ ನ ಸೇವೇತ್ " ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ  
೩-೧೬ ।

**ಗರ್ಭಿಣಿರೋಹದ ಗರ್ಭಿಣಿರೋಹದ (ನಂ) ಗರ್ಭಿಣಿ**  
ಹೆಂಗಸು ಬಯಸುವ ವಸ್ತು. ಗರ್ಭದಲ್ಲಿರುವ ಶಿಶುಗಳು  
ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದುದನ್ನೆಲ್ಲಾ ತಾಯಿಯೂ ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಾಳೆ.  
ಆ ಶಿಶು ಮತ್ತು ತಾಯಿ ಇಬ್ಬರೂ ಬಯಸುವುದರಿಂದ  
ಗರ್ಭಕ್ಕೆ "ದೋಹದಮ್" ಎಂದು ಹೆಸರು. "ಸುದಕ್ಷಿಣಾ  
ದೋಹದಲಕ್ಷಣಂ ದಧಿ" ರಘುಂ ೩-೧ । ಗರ್ಭಿಣಿಯು ಬಯಸಿ-  
ದುದನ್ನು ಒದಗಿಸಿಕೊಟ್ಟರೆ ಗುಣಶಾಲಿಯಾದ ಪುತ್ರನು  
ಹುಟ್ಟುವನು. ಅದಿಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ಯಾವ ಇಂದ್ರಿಯ ತೃಪ್ತಿ  
ಗಾಗಿ ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವಳೋ ಶಿಶುವಿನ ಆ ಇಂದ್ರಿಯವು ಊನ  
ವಾಗುವುದು. "ಇಂದ್ರಿಯಾರ್ಥಸ್ತು ಯಾನ್ ಯಾನ್ ಸಾ ಭೋಕ್ತು-  
ಮಿಚ್ಛತಿ ಗರ್ಭಿಣಿ । ಗರ್ಭಾಭಿಭಯಾತ್ತಾಸ್ತಾನ್ ಭಿಷಗಾಹುತ್ಯ  
ದಾಪಯೇತ್ । ತಾ ಪ್ರಾಪ್ತದೋಹದಾ ಪುತ್ರಂ ಜನಯೇತ್ ಗುಣಾನ್ವಿತಮ್ ।  
ಅಲಬ್ಧದೋಹದಾ ಗರ್ಭಂ ಲಬ್ಧೇತಾತ್ಮನಿ ವಾ ಭಯಮ್ । ಯೇ  
ಯೇಷ್ವಿಂದ್ರಿಯಾರ್ಥೇ ದೋಹದೇ ವೈ ವಿಮಾನನಾ । ಪ್ರಜಾಯೇತ್ ಸುತಸ್ಯಾತಿ:  
ತಸ್ಮಿನ್ ಸ್ತಸ್ಮಿನ್ ಸ್ತಥೇಂದ್ರಿಯೇ " ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೩-೧೯-೨೧ ।  
["ಖಜ್ಜ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಗರ್ಭಾಕ್ಷಿವೇಕ್ಷಣ ಗರ್ಭಾಕ್ಷಿವೇಕ್ಷಣ (ನಂ) ಗರ್ಭಾಕ್ಷಿಯು**  
ಉಪಚಾರ, ಸೂಲಗಿತ್ತಿನ. ಗರ್ಭಾಕ್ಷಿಯು ಅವೇಕ್ಷಣಮ್ ।  
"ಕುಮಾರಮೃತ್ಯಾ ಸ್ಯಾದ್ಬಾಲತನ್ತ್ರಂ ಗರ್ಭಾಕ್ಷಿವೇಕ್ಷಣಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಗರ್ಭಾಕ್ಷಿ ಗರ್ಭಾಕ್ಷಿ (ಪುಂ) ನಾಟಕದ ಅಂಕಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ**  
ಬರುವ ಒಂದು ಅಂಕ, ನಾಂದಿ ಅಮುಖ ಪ್ರರೋಚನಾ  
ಇವುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಅಂಕದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಬರುವ  
ಬೇರೊಂದು ಅಂಕ. ಗರ್ಭಾಕ್ಷಿ ಅಂಕ: "ಅಂಕೋದರ-  
ಪ್ರವಿಷ್ಟೋ ಯೋ ರಜ್ಜದ್ವಾರಾ ಮುಕ್ತಾದಿಭಿಃ । ಅಂಕೋಽಪರ: ಸ  
ಗರ್ಭಾಕ್ಷಿ: ಸಬೀಜ: ಫಲವಾನಪಿ" ಸಾಂ ೬-೨೦ ।



**ಗರ್ಭಿತ ಗರ್ಭಿತ (ನಂ) 1.** ಒಂದು ಕಾವ್ಯದೋಷ. ಗರ್ಭಾಂಶ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತತ್" (೪-೨-೩೬)। ಒಂದು ವಾಕ್ಯಾರ್ಥವು ಪೂರ್ವಿಯಾಗುವ ಮೊದಲು ಆ ವಾಕ್ಯದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಬೇರೊಂದು ವಾಕ್ಯದ ಪದಗಳು ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವುದು ಗರ್ಭಿತವು. "ವಾಕ್ಯಾಂತರಪದಾನಾಂ ವಾಕ್ಯಾಂತರೇಽನುಪ್ರವೇಶೋ ಗರ್ಭಿತತಾ" ಸಾಂ ದಂ 1. "ರಮಣಿ ಚರಣಪ್ರಾಂತೇ ಪ್ರಣತಿಪ್ರವಣೇಽಧುನಾ। ವದಾಮಿ ಸಖಿ ತೇ ತತ್ತ್ವಂ ಕದಾಚಿತ್ತೋಚಿತಾ: ಕ್ರುಧ:"। ಕಾಲಿಗೆ ಬಿದ್ದು ನಮಸ್ಕಾರ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ ಪತಿಯ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಕೋಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು ಉಚಿತವಲ್ಲವೆಂಬ ವಾಕ್ಯದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ತತ್ತ್ವೋಪದೇಶದ ಮಾತು ಬಂದು ಪ್ರಕೃತಾರ್ಥಕ್ಕೆ ಅಡ್ಡಿಯುಂಟುಮಾಡುವುದರಿಂದ ಇದೊಂದು ಕಾವ್ಯದೋಷ. (ವಿಂ) 2. ಯಾವುದಾದರೊಂದರ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. "ನಾಮ ಕಾರ್ಯ ನಾಟಕಸ್ಯ ಗರ್ಭಿತಾರ್ಥ-ಪ್ರಕಾಶಕಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೪೨।

**ಗರ್ಭತೃಪ್ತ ಗರ್ಭೀತ್ಯಪ್ತ (ವಿಂ) 1.** ಗರ್ಭದಲ್ಲೇ ತೃಪ್ತಿ ಹೊಂದಿದ. 2. ಅನ್ನದಲ್ಲಿ ತೃಪ್ತಿಹೊಂದಿದ. ಗರ್ಭ ತೃಪ್ತ: ಅಲುಕಸಂ (೨-೧-೪೮)।

**ಗರ್ಭೇಶ್ವರ ಗರ್ಭೀಶ್ವರ (ಫಂ) ಹುಟ್ಟಿದಂದಿನಿಂದಲೇ ರಾಜ ನಾಗಿರುವ, ಜನ್ಮತಃ ಬಡೆಯನಾಗಿರುವ. ಗರ್ಭಾತ್ ಇಶ್ವರ:**

**ಗರ್ಭೇಶ್ವರತಾ ಗರ್ಭೀಶ್ವರತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುಟ್ಟಿದಂದಲೇ ರಾಜ ನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಗರ್ಭೇಶ್ವರಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। "ತ್ವ:" (೪-೧-೧೧೯)। -ಇಶ್ವರತ್ವಮ್ -ಈಶ್ವರತ್ವಮ್.** "ಗರ್ಭೇಶ್ವರತ್ವಮಭಿನವಯಿವನತ್ವಮಪ್ರತಿಮರೂಪತ್ವಮಮಾನುಷಶಕ್ತಿ-ತ್ವಂ ಚೇತಿ ಮಹತೀಯಂ ಖಲ್ವನರ್ಥಪರಂಪರಾ" ಕಾದಂ।

**ಗರ್ಭೋತ್ಪತ್ತಿ ಗರ್ಭೋತ್ಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರ್ಭವು ಹುಟ್ಟುವುದು. ಗರ್ಭವು ನಿರ್ಮಾಣವಾಗುವುದು, ಗರ್ಭವು ರೂಪಗೊಳ್ಳುವುದು. ಗರ್ಭಸ್ಯ ಉತ್ಪತ್ತಿ:** ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ಸಂಯೋಗ ವಾದಾಗ ವಾಯುವು ಶರೀರದಿಂದ ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ಸಂಘರ್ಷ ಜನ್ಮವಾದ ತೇಜಸ್ಸನ್ನು ಪ್ರೇರಿಸುವುದು. ಬಳಿಕ ಈ ವಾಯು ಮತ್ತು ತೇಜಸ್ಸುಗಳ ಮೇಳನದಿಂದ ಪುರುಷನ ವೀರ್ಯವು ಹೊರಬಂದು ಸ್ತ್ರೀಯರ ಅರ್ತವ (ಶೋಣಿತ) ದೊಡನೆ ಬೆರೆತು ಗರ್ಭಕೋಶವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು. "ತತ್ರ ಸ್ತ್ರೀಪುಸಯೋ: ಸಂಯೋಗೇ ತೇಜಃ ಶರೀರಾದ್ವಾಯುರ್ದೀರಯತಿ। ತತಸ್ತೇಜೋ-ಽನಿಲಸಂನಿಪಾತಾಚ್ಚಕ್ರಂ ಚ್ಯುತಂ ಯೋನಿಮಭಿಪ್ರಪದ್ಯತೇ ಸಂಸೃಜ್ಯತೇ ಚಾತಂವೇನ, ತತೋಽನಿಲೋಮಸಂಯೋಗಾತ್ ಸಂಸೃಜ್ಯಮಾನೋ ಗರ್ಭಾಶಯ-ಮನುಪ್ರತಿಪದ್ಯತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೩-೪। ಜೀವನು ಪುಣ್ಯ ಪಾಪ ಕರ್ಮಗಳ ಫಲವಾದ ಸ್ವರ್ಗ ನರಕಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸಿಯೂ ಕರ್ಮಶೇಷವನ್ನು, ಪುನಃ ದೇಹವನ್ನು

ಪಡೆದೇ ಕಳೆಯಬೇಕು. ಅದುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನ ಸಂಕಲ್ಪ ದಂತೆ ಕರ್ಮಶೇಷಾನುಗುಣವಾದ ಮಾನುಷ ಅಥವಾ ತೀರ್ಯಕ್ ಜನ್ಮವನ್ನು ಪಡೆಯುವನು. ಇದಕ್ಕಾಗಿ ಜೀವನು ಮೊದಲು ಆಹಾರಗಳ ಮೂಲಕ ಪುರುಷನ ವೀರ್ಯ ವನ್ನು ಸೇರಿ ಬಳಿಕ ಹೆಂಗಸಿನ ಗರ್ಭಕೋಶವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸು ವನು. ವೀರ್ಯವು ಮೊದಲನೆಯ ರಾತ್ರಿ ಶೋಣಿತ (ಹೆಂಗಸಿನ ಅರ್ತವ) ದೊಡನೆ ಸೇರುವುದು. ಐದು ರಾತ್ರಿ ಗಳಲ್ಲಿ ಅದು ಗುಳ್ಳೆಯಂತೆ ಉಂಡೆಯಾಗುವುದು. ಹತ್ತು ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಕಠಿನವಾಗುವುದು. ಒಂದು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಂಸದ ಮುದ್ದೆಯಾಗಿ ಅದರಲ್ಲಿ ತಲೆಯೂ ಎರಡನೆಯ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಕೈಕಾಲು ಮೊದಲಾದ ಅದಯವಗಳೂ ಮೊದಲನೆಯ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ನಖ ರೋಮ ಎಲ್ಲವು ಚರ್ಮ ಮತ್ತು ಸ್ತ್ರೀ ಪುರುಷ ಚಿಹ್ನೆಗಳೂ ನಾಲ್ಕನೆಯ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಸಪ್ತಧಾತು ಗಳೂ ಐದನೆಯ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಹಸಿವು ಬಾಯಾರಿಕೆಗಳೂ ಕಂಡುಬರುವುವು. ಆರನೆಯ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಗರ್ಭಾಶಯದಲ್ಲಿ ಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಹೆಂಗಸಿನ ಹೊಟ್ಟೆಯ ಬಲಗಡೆಗೆ ತಿರುಗಿ ಕೊಂಡಿರುವುದು. ತಾಯಿಯು ಸೇವಿಸುವ ಆಹಾರದಿಂದಲೇ ಜೀವನು ಬೆಳೆದು ಪುಷ್ಪನಾಗುವನು. ಹತ್ತನೆಯ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಸವ (ಹೆರಿಗೆ) ವಾಗುವವರೆಗೂ ಗರ್ಭಕೋಶದಲ್ಲಿ ಸೇರಿ ಕೊಂಡಿರುವ ಈ ಜೀವನು ನಾನಾವಿಧ ಕಷ್ಟಗಳನ್ನು ಅನು ಭವಿಸಬೇಕಾಗುವುದು. "ಕರ್ಮಣಾ ದೈವೇನೇಣ ಜನ್ತುರ್ದೇಹೋ-ಪತ್ತಯೇ। ಸ್ತ್ರಿಯಾ: ಪ್ರವಿಷ್ಟ ಉದರಂ ಪುಸೋ ರೇತ:ಕಣಾಶ್ರಯ:। ಕಲಲಂ ತ್ವೇಕರಾತ್ರೇಣ ಪಚ್ಚರಾತ್ರೇಣ ಬುದ್ಧದಮ್। ದಶಾಹೇನ ತು ಕರ್ಕಶ್ವ: ಪೇಶ್ಯಣಂ ವಾ ತತ: ಪರಮ್। ಮಾಸೇನ ತು ಶಿರೋ ದ್ವಾಭ್ಯಾಂ ಬಾಹ್ವಃಪ್ರಾಚ್ಯಾಙ್ಗವಿಪ್ರಹ:। ನಖಲೋಮಾಸ್ಥಿಚರ್ಮಾಣಿ ಲಿಙ್ಗಚ್ಚಿದ್ರೋಙ್ಗವಸ್ತ್ರಾಭಿ:। ಚತುರ್ಭಿರ್ದಾತವ: ಸಪ್ತ ಪಂಚಭಿ: ಕ್ಷುತ್ತೃಡ್ಢಿವ:। ಪಙ್ಚಭಿರ್ಜಾಯುಣಾ ವೀತ: ಕುಕ್ಷಿ ಭ್ರಾಮ್ಯತಿ ದಕ್ಷಿಣೇ। ಮಾತುರ್ಜಂಧಾನಪಾನಾನ್ನೇರೇಧದ್ವಾತುರಸಮ್ಮತೇ। ಶತೇ ವಿಷ್ಮುತ್ರಯೋಗತೇ ಸ ಜನ್ತುರ್ಜನ್ತುಸಂಭವೇ। ಕೃಮಿಭಿ: ಕ್ಷತಸರ್ವಾಙ್ಗ: ಸೌಕ್ರಮಾರ್ಯಾತ್ರಪ್ರತಿಕ್ಷಣಮ್। ಮೂರ್ಚಾಮಾನ್ಯೋತ್ಕಲೇಶೇಸ್ತತ್ರಯ: ಕ್ಷುಧಿತೈರ್ಮುಹು: " ಭಾಗಂ ೩-೩೧।

**ಗರ್ಭುತ್ ಗರ್ಭುತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1.** ಲಾಳದ ಗಿಡ, ನಾಣಲ ಗಿಡ. 2. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 3. ತೃಣಧಾನ್ಯ. ಗ್ (ನಿಗರಣ) "ಉತಿ:" ಮುಡ್ ಚ (೩೦ ೧-೯೫)। "ಗರ್ಭುತ್ ಸುವರ್ಣ ಲತಾವಿಶೇಷಶ್ಚ" ಸಿಂ ಕೌಂ। "ಗರ್ಭುತ್ ಸುವರ್ಣನಲಯೋ:" ಮೇದಿಂ।

**ಗರ್ವ - ದರ್ಪ (ಭಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ)।** ಗರ್ವತಿ। ಜಗರ್ವ। ಗರ್ವಿತಾ। ಅಗರ್ವೀತ್। ಇತ್ಯಾದಿ. ಗರ್ವಹೊಂದು, ಅಹಂಕಾರ ಪಡು.



ಗರ್ವ - ಮಾನೇ (ಚುರಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸೆಂ) | ಗರ್ವಯತೇ |  
ಅಜಗರ್ವತ |

ಗರ್ವ ಗರ್ವ (ಪುಂ) 1. ಅಹಂಕಾರ, ಅಭಿಮಾನ. ಗರ್ವ (ಮಾನೇ) +  
ಣಿच् "घञ्" (३-३-१८) | 2. ದುರು, ಸೋಕು, ಕೊಬ್ಬು, ಹಮ್ಮು. ಗರ್ವ (ದರ್ಪೆ) "घञ्" (३-३-१८) |  
ಇದು ಮೂವತ್ತಮೂರು ವ್ಯಭಿಚಾರಿ ಭಾವಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಇತರರಲ್ಲಿ ತಿರಸ್ಕಾರವಿದ್ದು ತಾನೇ ಸುಂದರನೆಂಬ ಅಭಿಮಾನ ತನ್ನ ಸೌಂದರ್ಯವನ್ನು ನೋಡಿಕೊಂಡು ತಾನೇ ಮೆಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳುವುದು ಅವಿನಯ ಇತ್ಯಾದಿಗಳು ಗರ್ವದ ಕಾರ್ಯ. ಸಾಂ ದಂ ३-१५४ | 3. ಅಹಂಕಾರದ ಮಾತು. "ಗರ್ವೋ-  
ಽವಲೇಪಜಂ ವಾಕ್ಯಮ್" ಸಾಂ ದಂ ६-२०० |

ಗರ್ವಾಟ ಗರ್ವಾಟ (ಪುಂ) ದ್ವಾರಪಾಲಕ, ಬಾಗಿಲನ್ನು ಕಾಯುವವನು, ಕಾವಲುಗಾರ. ಗರ್ವಣಾಟತಿ - ಅಟ (ಗತೀ) "अच्" (३-१-१३४) | "ब्राह्मस्थितो वेत्रधारकः। दौसाधिको वर्तुको गर्वाटो दण्डवासिनि" त्रिकाण्ड० |

ಗರ್ವಿತ ಗರ್ವಿತ (ವಿಂ) 1. ಗರ್ವವುಂಟಾಗಿರುವ, ಅಹಂಕಾರವುಂಟಾಗಿರುವ. ಗರ್ವಾಸ್ಯ ಸಂಜಾತ: "इतच्" (५-२-३६) | 2. ಉನ್ಮತ್ತ, ಮದಿಸಿದವನು. 3. ಅಹಂಕಾರಗೊಂಡ, ಗರ್ವಗೊಂಡ. "प्रेमगर्वितविपक्षमत्सरादायताच्च मदना-  
न्महीक्षिताम्" ರಘುಂ १९-२० |

ಗರ್ಹ - ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೆಂ) | ಗರ್ಹತೇ |  
ಜಗರ್ಹ | ಗರ್ಹಿತಾ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಕೆಟ್ಟಮಾತನ್ನಾಡು, ಬಯ್ಯು.

ಗರ್ಹ - ನಿಂದಾಯಾಮ್ (ವಾಂ ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಪಕ್ಷೇ ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೆಂ) | ಗರ್ಹಯತಿ, -ತೇ | ಗರ್ಹಯಾಂಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ, -ಬಮುವ, -ಆಸ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಪಕ್ಷೇ ಗರ್ಹತಿ | ಜಗರ್ಹ | ಗರ್ಹಿತಾ | ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ನಿಂದಿಸು, ದೂಷಿಸು, ತೆಗಳಿಸು. 2. ಕೆಟ್ಟಮಾತನ್ನಾಡು, ಬಯ್ಯು.

ಗರ್ಹಣ ಗರ್ಹಣ (ನಂ) 1. ನಿಂದೆ, ತೆಗಳಿಕೆ. 2. ಬೈಗಳು. ಗರ್ಹ (ನಿಂದಾಯಾಮ್) + ಣಿच् "ल्युट्" (३-३-११५) |  
ಭಾವೇ "युच्" (३-३-१०७) | ಗರ್ಹಣಾ ಗರ್ಹಣಾ.

ಗರ್ಹಣೀಯ ಗರ್ಹಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ನಿಂದಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ನಿಂದಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 3. ನಿಂದಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಗರ್ಹ (ನಿಂದಾಯಾಮ್) + ಣಿच् "अनीयर्" (३-१-९६) |  
"तव्यः" | ಗರ್ಹಿತವ್ಯ: ಗರ್ಹಿತವ್ಯಃ.

ಗರ್ಹತ್ ಗರ್ಹತ್ (ವಿಂ) 1. ನಿಂದಿಸುತ್ತಿರುವ, ತೆಗಳುತ್ತಿರುವ. ಗರ್ಹ (ನಿಂದಾಯಾಮ್) "शतृ" (३-२-१२४) | 2. ಕೆಟ್ಟ ಮಾತನ್ನಾಡುತ್ತಿರುವ, ಬಯ್ಯುತ್ತಿರುವ. ಗರ್ಹ (ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) "शतृ" | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "डीप्" (४-१-६) | ಗರ್ಹಂತೀ

ಗರ್ಹಂತೀ. "शानच्" | ಗರ್ಹಮಾಣ: ಗರ್ಹಮಾಣಾಃ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ಮಾಣಾ -ಮಾಣಾಃ.

ಗರ್ಹಯತ್ ಗರ್ಹಯತ್ (ವಿಂ) "गर्हत्" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಗರ್ಹ (ನಿಂದಾಯಾಮ್) + ಣಿच् "शतृ" (३-२-१२४) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "डीप्" (४-१-६) | -ಯಂತೀ -ಯಂತೀ.

ಗರ್ಹಿ ಗರ್ಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. 2. ಬೈಗಳು. ಗರ್ಹ (ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) "अः" (३-३-१०३) |

ಗರ್ಹಿತ ಗರ್ಹಿತ (ನಂ) 1. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. 2. ಬೈಗಳು. ಗರ್ಹ (ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "क्तः" (३-३-११४) | (ವಿಂ) 3. ನಿಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ದೂಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಬಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಗರ್ಹ ಕರ್ಮಂ "क्तः" (३-२-१०२) |

ಗರ್ಹಿತವತ್ ಗರ್ಹಿತವತ್ (ವಿಂ) 1. ನಿಂದಿಸಿದವನು, ದೂಷಿಸಿದವನು. 2. ಬೈದವನು. ಗರ್ಹ (ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) "क्तवतुः" (३-२-१०२) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "डीप्" (४-१-६) | -ವಂತೀ -ವಂತೀ.

ಗರ್ಹ್ಯ ಗರ್ಹ್ಯ (ವಿಂ) 1. ನಿಂದಿಸಲ್ಪಡುವ, ದೂಷಿಸಲ್ಪಡುವ. ಗರ್ಹ (ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) "ण्यत्" (३-१-१२४) | 2. ನಿಂದಿಸಲು ಶಕ್ಯನಾದ. 3. ನಿಂದಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ, ನಿರ್ದ, ಅಲ್ಪ, ಅಧಮ. "पित्रा भर्त्रा सुतैर्वीपि नेच्छेद्विरहमात्मनः। एषां हि विरहेण स्त्री गर्ह्ये कुर्यादुभे कुले" मनु० ५-१४९ |

ಗರ್ಹ್ಯವಾದಿನ್ ಗರ್ಹ್ಯವಾದಿನ್ (ವಿಂ) ನಿಂದ್ಯವಾದ ಮಾತನ್ನಾಡುವ, ಕೆಟ್ಟಮಾತನ್ನಾಡುವ. ಗರ್ಹ್ಯ ವದತಿ - ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "णिनिः" (३-२-७८) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "डीप्" (४-१-५) | -ವಾದಿನೀ -ವಾದಿನೀ.

ಗಲ - ಅದನೇ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೆಂ) | ಗಲತಿ | ಜಗಾಲ | ಗಲಿತಾ | ಗಲಿಷ್ಯತಿ | ಗಲತು | ಅಗಲತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಭಕ್ಷಿಸು, ತಿನ್ನು, ನುಂಗು.

ಗಲ - ಪ್ರಸ್ರವಣೇ (ಚುರಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸೆಂ) | ಗಾಲಯತೇ | ಗಾಲಯಾಂ ಚಕ್ರೆ | ಗಾಲಯಿತಾ | ಗಾಲಯತಾಮ್ | 1. ಜಾರು, ಕಳಚು. 2. ಸ್ರವಿಸು, ಸೋರು.

ಗಲ ಗಲ (ಪುಂ) 1. ಕಂಠ, ಕುತ್ತಿಗೆ. ಗಲತಿ - ಗಲ (ಅದನೇ) "अच्" (३-१-१३४) | "गले कस्तुरीयं शिरसि शशिलेखा न कुसुमम्" कुव० | 2. ಸಾಲವೃಕ್ಷದ ರಸ, ಮತ್ತಿಮರದ ಹಾಲು. "गलः कण्ठे सजरसे" मेदि० | 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. 4. ಒಂದು ವಿಧ ವಾದ್ಯ.

ಗಲಕ ಗಲಕ (ಪುಂ) 1. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. ಗಲ (ಅದನೇ) ಬಾಹುಂ "वृन्" | 2. ಕಂಠ, ಕುತ್ತಿಗೆ. ಸ್ವಾರ್ಥ "कन्" |



ಗಲಕಂಬಲ ಗಲಕಂಬಲ (ಪುಂ) ಗಂಗೆದೊಗಲು. ಗಲೆ ಕಂಬಲ ಇವ.

ಗಲಗಂಡ ಗಲಗಂಡ (ಪುಂ) ಹೆಕ್ಕತ್ತು ಮತ್ತು ತಲೆಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಏಳುವ ದುರ್ಮಾಸದ ಗಂಟು, ಕತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಪಾತ ಮತ್ತು ಕಪ್ಪಗಳು ಹಚ್ಚಾಗಿ ಸೇರಿ ಏಳುವ ಒಂದು ಮಾಂಸ ಗ್ರಂಥಿ. ಗಲಗಂಡವು ಕತ್ತಿನ ಒಂದು ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಏಳುವುದು. ಗಂಡಮಾಲೆಯು ಕತ್ತಿನ ಸುತ್ತಲೂ ಏಳುವುದು.

ಗಲಗ್ರಹ ಗಲಗ್ರಹ (ಪುಂ) 1. ಅಧ್ಯಯನವನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದ ದಿನದ ಮುಂದಿನ ಅನಧ್ಯಯನ ದಿನ. "ಆರम्ಭಾನಂತರं यत्र प्रत्यारम्भो न दृश्यते। गर्गादिमुनयः सर्वे तमेवाहुर्गल-ग्रहम्" ನಾರದ:। 2. ಕೃಷ್ಣ ಪಕ್ಷದ ಚತುರ್ಥಿ ಸಪ್ತಮಿ ಅಷ್ಟಮಿ ನವಮಿ ಮತ್ತು ತ್ರಯೋದಶಿಯಿಂದ ನಾಲ್ಕು ತಿಥಿಗಳು. "कृष्णपक्षे चतुर्थी च सप्तम्यादिदिनत्रयम्। त्रयोदशीचतुष्कं च अष्टावेते गलग्रहाः"। 3. ಕುತ್ತಿಗೆ ಯಲ್ಲಿ ಹಿಡಿಯುವುದು, ಕುತ್ತಿಗೆಯನ್ನು ಹಿಡಿದೆತ್ತುವುದು. ಗಲೆ ಗ್ರಹ:।

ಗಲತ್ ಗಲತ್ (ವಿಂ) 1. ಸುರಿಯುತ್ತಿರುವ, ಹರಿಯುತ್ತಿರುವ, ಸೋರುತ್ತಿರುವ. ಗಲ (ಅದನೆ) "शतृ" (३-२-१२४)। "हीमत्याः सरसि गलन्मुखेन्दुकान्तेः" माघ० ८-४२। 2. ಜಾರುತ್ತಿರುವ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಸರಿದು ಬೀಳುತ್ತಿರುವ. "गलद्भिरन्या वलयप्रसूनैरम्यर्चना-मातनुतेव शौरेः" याद० १३-५९। स्त्रियाम् "डीप्" (४-१-६)। ಗಲಂತಿ ಗಲಂತಿ. 3. ತಿನ್ನುತ್ತಿರುವ, ನುಂಗುತ್ತಿರುವ. ಗಲ (ಅದನೆ) "शतृ" (३-२-१२४)।

ಗಲನ ಗಲನ (ನಂ) 1. ಜಾರಿ ಬೀಳುವುದು. 2. ಸೋರು ವುದು. 3. ತಿನ್ನುವುದು, ನುಂಗುವುದು. ಗಲ (ಪ್ರಸವಣೆ ಅದನೆ ವಾ) "ल्युट्" (३-३-११५)।

ಗಲನೀಯ ಗಲನೀಯ (ವಿಂ) 1. ತಿನ್ನಲ್ಪಡುವ, ನುಂಗಲ್ಪ ಡುವ. 2. ನುಂಗಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ನುಂಗಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಗಲ(ಅದನೆ)ಕರ್ಮದಿ "अनीयर्" (३-१-९६)।

ಗಲಂತಿಕಾ ಗಲಂತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಿಂಡಿ, ಹೂಜಿ. ಗಲಂತಿ "कन्" (५-४-५)। "कर्क्यालुर्गलन्तिका" अम०।

ಗಲಂತಿ ಗಲಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೂಜಿ. ಗಲ (ಅದನೆ) "शतृ" (३-२-१२४)। "डीप्" (४-१-६)।

ಗಲಮೇಖಲಾ ಗಲಮೇಖಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಂಠಾಭರಣ, ಅಡ್ಡಿಗೆ. ಗಲಸ್ಯ ಮೇಖಲೇವ।

ಗಲವಾರ್ತ ಗಲವಾರ್ತ (ಪುಂ) ಇಷ್ಟದಂತೆ ಉಟಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಗಂಟಲು ಬೇಸೆಯಿಲ್ಲದ, ಆರೋಗ್ಯವಂತ.

ಗಲೆ ಗಲವ್ಯಾಪಾರೆ ಭೋಜನಾದೌ ವಾರ್ತ: ನಿರಾಮಯ:। "दृश्यन्ते चैव तीर्थेषु गलवार्तास्तपस्विनः" पञ्चत०।

ಗಲವಿವ್ರಧಿ ಗಲವಿದ್ರಧಿ (ಪುಂ) ಒಂದು ಕಂಠರೋಗ, ಕಂಠ ದೊಳಗೆ ಕೀವುತುಂಬಿದ ಬಾವು. "सर्वे गलं व्याप्य समुत्थितो यः शोफो रुजो यत्र च सन्ति सर्वाः। स सर्वदोषो गलविद्रधिस्तु यस्यैव तुल्यः खलु सर्वजस्य" सुश्रुत० निदान० १६-५९।

ಗಲವ್ರತ ಗಲವ್ರತ (ಪುಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು.

ಗಲಶುಂಡಿಕಾ ಗಲಶುಂಡಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಿರುನಾಲಗೆ. ಗಲೆ ಶುಂಡಿಕೇವ। "तालूहरं बस्तिशीर्षं चिबुके गल-शुण्डिके" याज्ञ० ३-८७। 2. ದವಡೆಯ ಒಂದು ರೋಗ. "तालुगतास्तु गलशुण्डिका तुण्डिकेरी अधुषः कच्छपः अबुदम् मांससंघातः तालुपुष्पुटः तालुशोषः ಮತ್ತು तालुपाकः ಇವು ದವಡೆಯ ರೋಗಗಳು. सुश्रुत० निदान० १४-४०।

ಗಲಶುಂಡಿ ಗಲಶುಂಡೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಿರುನಾಲಗೆಯ ಊತ, ಕಿರುನಾಲಗೆಯು ಊದಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಗಲಸ್ತನ ಗಲಸ್ತನ (ಪುಂ) ಅಡಿನ ಕತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಸ್ತನಗಳಂತೆ ಜೋಲಾಡುವ ಮಾಂಸಪಿಂಡ. ಗಲೆ ಸ್ತನ ಇವ.

ಗಲಸ್ತನಿ ಗಲಸ್ತನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಸ್ತನಗಳಿರುವ ಅಡು. ಗಲೆ ಸ್ತನಿ ಯಸ್ಯಾ:।

ಗಲಹಸ್ತ ಗಲಹಸ್ತ (ಪುಂ) 1. ಹೊರಕ್ಕೆ ನೂಕಲು ಕತ್ತಿಗೆ ಹಾಕಿರುವ ಹಸ್ತ, ಕತ್ತುಹಿಡಿದು ತಳ್ಳಲು ಕತ್ತಿನ ಮೇಲೆ ಇಟ್ಟಿರುವ ಕೈ. ಗಲೇರ್ಪಿತೋ ಹಸ್ತ:। 2. ಅರ್ಧಚಂದ್ರಾ ಕಾರದ ಬಾಣ.

ಗಲಹಸ್ತಿತ ಗಲಹಸ್ತಿತ (ವಿಂ) ಕತ್ತುಹಿಡಿದು ನೂಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಗಲಹಸ್ತೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತ: "इतच्" (५-२-३६)। "वियोगि-वैरात् कुचयोर्नखाङ्गादधेन्दुलीलैर्मलहस्तितेव" नैष० ६-२५।

ಗಲಾ ಗಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂಟ್ಟಿದರೆ ಮುನಿವ ಗಿಡ.

ಗಲಾಡ್ಕುರ ಗಲಾಂಕುರ (ಪುಂ) ಕಂಠದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಒಂದು ರೋಗ.

ಗಲಾನಿಲ ಗಲಾನಿಲ (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. ಗಲೇನಿಲ: प्राणवायुरस्य। "गङ्गाटयो गला-निलः" त्रिकाण्ड०।

ಗಲಿ ಗಲಿ (ಪುಂ) ಶಕ್ತಿಯಿದ್ದರೂ ಭಾರ ಹೊರಲು ಮೊಂಡು ಹಿಡಿಯುವ ವೃಷಭ, ಗಾಡಿ ಎಳೆಯಲು ಸರಿಯಾಗಿ ಪಳಗದ ಎತ್ತು.



ಗಲಿತ ಗಲಿತ (ವಿಂ) 1. ಜಾರಿ ಬಿದ್ದಿರುವ. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಜಾರಿ ಕೊಂಡಿರುವ. ಗಲ (ಪ್ರಸವಣ) ಕತಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಹಿತಯಾ ಗಲಿತನಿವಿ ನಿರಸ್ಯನ್ನಂತರೀಯಮವಲಮ್ಬಿತಕಾಶ್ವಿ" ಕಿರಾಂ ೧-೪೮। 2. ಪರಿಣತವಾದ. ಪಕ್ವವಾದ. ಇಳಿ ಮುಖವಾದ. "ಗಲಿತವಯಸಾಮಿಕ್ಷವಾಕುಣಾಮಿದಂ ಹಿ ಕುಲ-ವ್ರತಮ್" ರಘುಂ ೩-೭೦।

ಗಲೋದ್ದೇಶ ಗಲೋದ್ದೇಶ (ಪುಂ) ಕುದುರೆಯ ಕುತ್ತಿಗೆಯ ಸಮಾಪದ ಅವಯವ. ಗಲಸ್ಯ ಉದ್ದೇಶ:।

ಗಲೋದ್ಭವ ಗಲೋದ್ಭವ (ಪುಂ) ಕುದುರೆಯ ಕತ್ತಿನಲ್ಲಿರುವ ರೋಮಾವರ್ತ, ಕುದುರೆಯ ಕತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿರುವ ರೋಮಾವರ್ತವೆಂಬ ಕೂದಲಿನ ಸುಳಿ. ಗಲೇ ಉದ್ಭವನಿ - ಉದ್ + ಭೂ "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭)। "ರೋಮಾನೋ ಗಲೋದ್ಭವ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಗಲಭ - ಧಾಟ್ಯ (ಸ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸಂ)। ಗಲಭತೆ। ಜಗಲಭೆ। ಅಗಲಿಭಟ। ಧೈರ್ಯದಿಂದಿರು. ದಿಟ್ಟತನ ದಿಂದಿರು. "ಯಾ ಕಥಂಚನ ಸಖೀವಚನೇನ ಪ್ರಾಗಭಿಪ್ರಿಯತಮಂ ಪ್ರಜಗಲಭೆ" ಮಾಘಂ ೧೦-೧೮।

ಗಲಭ ಗಲ್ಪ (ಪುಂ) ಧೈರ್ಯಶಾಲಿ, ಸಾಹಸವುಳ್ಳವನು.

ಗಲ್ಯಾ ಗಲ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಂಠಗಳ ಸಮೂಹ. ಕತ್ತುಗಳ ಸಮುದಾಯ. ಗಲಾನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಯ:" (೪-೨-೪೯)।

ಗಲ್ಲ ಗಲ್ಲ (ಪುಂ) ಕಪ್ಪುಗಲ್ಲ. ಕೆನ್ನೆ.

ಗಲ್ಲಕ ಗಲ್ಲಕ (ಪುಂ) 1. ಪಾನಪಾತ್ರೆ, ಕುಡಿಯುವ ಲೋಟಿ ಮೊದಲಾದುವು. 2. ಇಂದ್ರನೀಲಮಣಿ.

ಗಲ್ಲಚಾತುರೀ ಗಲ್ಲಚಾತುರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಿಂಬು, ಕೆನ್ನೆಯನ್ನು ಇಟ್ಟು ಕೊಂಡು ಮಲಗಲು ಹಿತವಾದ ದಿಂಬು.

ಗಲ್ಲರಣ ಗಲ್ಲರಣ (ನಂ) ಹುಲಿಯು ಮಾಂಸವನ್ನು ತಿನ್ನುವಾಗ ಕೋಪದಿಂದ ಮಾಡುವ ಗರ್ಜನೆ. "ರಲ್ಲಿ-ಗಲ್ಲರಣಶಬ್ದಸಂದರ್ಭಪರಿಪೂರಿತನಭಸ್ತಲ:" ಮಾಲತೀಂ ೩।

ಗಲ್ವರ್ಕ್ ಗಲ್ವರ್ಕ್ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರನೀಲಮಣಿ. "ಗಲ್ವರ್ಕ್ಶ್ಚ ಸುಸಾರವತ್। ಅಶ್ವಸಾರಸ್ತ್ವಿವಂದ್ರನೀಲ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 2. ಪದ್ಮರಾಗ. "ಸಸಾರಗಲ್ವರ್ಕ್ಸುವರ್ಣರೂಪೈ:" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ। 3. ಪಾನಪಾತ್ರೆ, ಕುಡಿಯುವ ಪಾತ್ರೆ.

ಗವಯ ಗವಯ (ಪುಂ) 1. ಸುಗ್ರೀವ ಸೈನ್ಯದಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ವಾನರ. "ಗಯೋ ಗವಾಕ್ಷೋ ಗವಯ: ಶರಭೋ ಗಂಧಮಾದನ:" ರಾಮಾಂ। 2. ಕಾಡುಹಸು. ಗಂಗೆದೊಡಲಿಲ್ಲದ ಹಸುವಿನಂತಿರುವ ಒಂದು ಪಶು. ಗಾ ತದವಯವಂ ಸಾದೃಶ್ಯೇನ ಅಯತೇ - ಅಯ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಗೋಸದೃಶೋ ಗವಯ:" ಗವಯವನ್ನು ಮೊದಲನೆಯ ಸಲ ನೋಡಿದವನಿಗೆ ಹಸು

ವಿನ ಹೋಲಿಕೆಯನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಅದರ ಪರಿಚಯವನ್ನುಂಟು ಮಾಡಬೇಕು. "ಗ್ರಾಮೀಣಸ್ಯ ಪ್ರಥಮತ: ಪಶ್ಯತೋ ಗವಯಾದಿಕಮ್। ಸಾದೃಶ್ಯಧೀರ್ಗವಾದೀನಾಂ ಯಾ ಸ್ಯಾತ್ಸಾ ಕರಣಂ ಮತಮ್। ಗವಯಾದಿ-ಪದಾನಾಂ ತು ಶಕ್ತಿವೀರೂಪಮಾಫಲಮ್" ಭಾಷಾಪಂ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। ಗವಯಿ ಗವಯಿ. ಯೋಪಧತ್ವ-ಪ್ರಯುಕ್ತಪ್ರತಿಪೇಧೋ ನಾಸ್ತಿ (ವಾಂ ೪-೧-೬೩)।

ಗವಲ ಗವಲ (ಪುಂ) 1. ಕಾಡುಕೋಣ. ಗುಡ್ (ಶಬ್ದ) ಭಾವೇ "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭)। ಗವಂ ಶಬ್ದ ಲಾತಿ - ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। -ಲೀ -ಲೀ. (ನಂ) 2. ಕಾಡುಕೋಣದ ಕೊಯ್ಲು. "ಗವಲಾಸಿತಕಾಂತಿ ತಸ್ಯ ಮಧ್ಯಸ್ಥಿತಧೋರಾಯತ-ಬಾಹುಧಂಡನಾಸಮ್" ಮಾಘಂ ೨೦-೧೨।

ಗವಾಕ್ಷ ಗವಾಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಕೆಟಕಿ. ಗವಾಮಕ್ಷಿವಾಕ್ಷಿ ಯಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೪-೭೬)। "ಗವಾಕ್ಷಮಾಗಮ್ಯ ಗಜೇಂದ್ರಯಾತಾ ಕಾಚಿತ್ ಪ್ರಸಸ್ಮಾರ ಕೃತಾವಶೇಷಮ್" ಯಾದಂ ೧೩-೪೭। 2. ಸುಗ್ರೀವ ಸೈನ್ಯದಲ್ಲಿ ಗೋಲಾಂಗೂಲ ಜಾತಿಯ ಒಬ್ಬ ವಾನರ. "ಗಯೋ ಗವಾಕ್ಷೋ ಗವಯ: ಶರಭೋ ಗಂಧಮಾದನ:" ರಾಮಾಂ। 3. ಒಬ್ಬ ಕ್ಷತ್ರಿಯ, ಶಕುನಿಯ ಸಹೋದರ.

ಗವಾಕ್ಷಕ ಗವಾಕ್ಷಕ (ಪುಂ) ಕೆಟಕಿ.

ಗವಾಕ್ಷಜಾಲ ಗವಾಕ್ಷಜಾಲ (ನಂ) ಕೆಟಕಿಯ ಸಂದಿ, ಕೆಟಕಿ ಯೊಳಗಿನ ವಿವರ. "ಅಂತರ್ನಿವಿಷ್ಟೋಜ್ವಲರತ್ನಭಾಸೋ ಗವಾಕ್ಷ-ಜಾಲೇರಭಿನಿಷ್ಪತನ್ತಯ:" ಭट्टಿಂ ೧-೮।

ಗವಾಕ್ಷಿ ಗವಾಕ್ಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬುಡುಮೆಯ ಗಿಡ. 2. ಹಾವುಮೆಕ್ಕಿಗಿಡ.

ಗವಾಚಿ ಗವಾಚಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು.

ಗವಾದನ ಗವಾದನ (ನಂ) 1. ತೃಣ, ಹುಲ್ಲು, ದನಕರುಗಳ ಆಹಾರ. ಗೋಭಿರಘತೇ - ಅದ (ಭಕ್ಷಣ) ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಅವನಿ -ಅವನೀ. 2. ದನಕರು ಗಳು ಮೇಯಲು ಹುಲ್ಲು ಹಾಕುವ ತೊಟ್ಟಿ. ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। 3. ಬುಡುಮೆಯ ಗಿಡ. 4. ಹಾವುಮೆಕ್ಕಿಗಿಡ. "ಗವಾದ-ನೀಂದ್ರವಾಣಿ। ಧಾಸಸ್ಥಾನಂ ಗವಾದೀನಾಮ್" ಹೇಮಂ।

ಗವಾನೃತ ಗವಾನೃತ (ನಂ) ಗೋವಿನ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿದ ಸುಳಿ. ಗವಿ ಗೋವಿಷಯೇನೃತಾ। "ಪಶ್ವ ಪಶ್ವನೃತೇ ಹಂತಿ ದಶ ಹಂತಿ ಗವಾನೃತೇ। ಶತಮಶ್ವಾನೃತೇ ಹಂತಿ ಸಹಸ್ರಂ ಪುಷ್ಪಾನೃತೇ" ಮನುಂ ೮-೯೮।

ಗವಾಮಯನ ಗವಾಮಯನ (ನಂ) ಹತ್ತು ಮಕ್ಕಳು ಹನ್ನೆರಡು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡಬಹುದಾದ ಒಂದು ಯಾಗ.



**ಗವಾಮೃತ ಗವಾಮೃತ** (ನಂ) ಗೋಕ್ಷೀರ, ಹಸುವಿನ ಹಾಲು.

**ಗವಾಮೃತ ಗವಾಮೃತ** (ಪುಂ) 1. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು.  
2. ಗೋಪಾಲಕ, ಹಸುಗಳನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನು. ಗವಾ  
ಮೃತ: | ಅಲುಕ್ | "ಯಥಾ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಯವೀಯಾಂಸಿ ಸಹದೇವ  
ಗವಾಮೃತಮ್" ಭಾಂ | 3. ಸೂರ್ಯ. 4. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ.

**ಗವಾವಿಕ ಗವಾವಿಕ** (ನಂ) ದನಗಳು ಮತ್ತು ಕುರಿಗಳು.  
ಗಾವಶ್ಚ ಅವಯಶ್ಚ (೨-೪-೧೧) ನಿಪಾತನಾತ್ಸಾಧು: |

**ಗವಾಶ್ವ ಗವಾಶ್ವ** (ನಂ) ಗೋವುಗಳು ಮತ್ತು ಕುದುರೆಗಳು.  
ಗಾವಶ್ಚ ಅಶ್ವಾಶ್ಚ (೨-೪-೧೧) ನಿಪಾತನಾತ್ಸಾಧು: |

**ಗವಾಹ್ನಿಕ ಗವಾಹ್ನಿಕ** (ನಂ) ಹಸುವು ಒಂದು ದಿನದಲ್ಲಿ  
ತಿನ್ನುವಷ್ಟು ಆಹಾರ. ಅಹ್ನಿ ಭವಮ್ "ಠಕ್" ಗೋ:  
ಆಹ್ನಿಕಮ್ | "ನಿರ್ದೇಗಸ್ತು ಯೋ ದದ್ಯಾತ್ ಮಾಸಮೇಕಂ  
ಗವಾಹ್ನಿಕಮ್ | ಏಕಮನ್ತಂ ತಥಾಶ್ನೀಯಾತ್ ಶ್ರೂಯತಾಂ ತಸ್ಯ ಯತ್  
ಫಲಮ್" ಭಾಂ ಅನುಂ |

**ಗವಿನೀ ಗವಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋವುಗಳ ಸಮೂಹ, ಹಸುಗಳ  
ಗುಂಪು. ಗವಾಂ ಸಮೂಹ: "ಇನಿ:" (ವಾಂ ೪-೧-೫೧) |  
"ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | ಸ್ತ್ರೀತ್ವಂ ಲೋಕಾತ್ |

**ಗವಿಷ್ಠ ಗವಿಷ್ಠ** (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ದೈತ್ಯ. ಗವಿಷ್ಠಸ್ತು ಮಹಾತೇಜಾ  
ಯ: ಪ್ರಖ್ಯಾತೋ ಮಹಾಸುರ: | ದ್ರುಮಸೇನ ಇತಿ ಖ್ಯಾತೋ ಪೃಥಿವ್ಯಾಂ  
ಸಮಜಾಯತ" ಭಾಂ ಆದಿಂ |

**ಗವೇಧು ಗವೇಧು** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡುಗೋಧಿ. ಗವಾ ಏಧತೇ -  
ಏಧ (ವೃದ್ಧಿ) "ಕ್ರು:" (ಉಂ ೧-೩೭) |

**ಗವೇಧುಕಾ ಗವೇಧುಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡುಗೋಧಿ. ಗವೇಧು  
ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಕನ್" (೫-೩-೫) |

**ಗವೇಂದ್ರ ಗವೇಂದ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಉತ್ತಮವಾದ ವೃಷಭ, ಶ್ರೇಷ್ಠ  
ಎತ್ತು. ಗೌರಿಂದ್ರ ಇವ | 2. ದನಗಳ ಯಜಮಾನ.

**ಗವೇಷಣ ಗವೇಷಣ** (ವಿಂ) 1. ಹುಡುಕುವವನು. ಗವೇಷ  
(ಅನ್ವೇಷಣೆ) ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ಹಸು  
ವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. 3. ನೀರನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು.  
ಗೋ+ಇಷು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) |

**ಗವೇಷಣಾ ಗವೇಷಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹುಡುಕುವುದು, ಅನ್ವೇ  
ಷಣೆ. ಗವೇಷ(ಅನ್ವೇಷಣೆ)+ ಣಿಚ್ "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭) |  
2. ನೀರನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು. 3. ಹಸುವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿ  
ಸುವುದು. ಗೋ+ಏಷು (ಗತೀ) "ಯುಚ್" |

**ಗವೇಷಿತ ಗವೇಷಿತ** (ವಿಂ) ಹುಡುಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಗವೇಷ(ಅನ್ವೇಷಣೆ)  
"ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |

**ಗವೇಷಿನ್ ಗವೇಷಿನ್** (ವಿಂ) ಹುಡುಕುವವನು. ಗವೇಷ  
(ಅನ್ವೇಷಣೆ) "ಣಿತಿ:" (೩-೧-೧೩೪) |

**ಗವ್ಯ ಗವ್ಯ** (ನಂ) 1. ಮರಳಿ, ಬಿಟ್ಟಿರುವ ಹೆದೆ. "ಮೌರ್ವಿ  
ಜೀವೋ ಗುಣೋ ಗವ್ಯಾ ಶಿಕ್ಷಾ ಬಾಣಾಸನಂ ದೃಣಾ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ |  
2. ಬಣ್ಣಕ್ಕಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ವಸ್ತು. (ವಿಂ) 3.  
ಹಸುವಿನ ಹಾಲು ಮೊಸರು ಮುಂತಾದುವು. 4. ಹಸುವಿ  
ನಲ್ಲಿರುವ. 5. ಹಸುವಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ. 6. ಹಸು  
ವಿಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಹಸುವಿಗೆ ಹಿತವಾದ. ಗವಿ ಭವಮ್  
ಗೋರಾಗತಮ್ ಗವೇ ಹಿತಂ ವಾ "ಯತ್" (ವಾಂ ೪-೧-೮೫) |  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವ್ಯಾ-ವ್ಯಾ. 7. ಗೋವುಗಳ ಸಮೂಹ. ಗವಾಂ  
ಸಮೂಹ: "ಯ:" (೪-೨-೫೦) | 8. ಗೋರೋಚನ. ಗೋ:  
ವಿಕಾರ: "ಯತ್" (೪-೩-೧೬೦) | "ಶ್ರವಣೋಪಾಂತಿಕ-  
ನೀಯಮಾನಗವ್ಯಮ್" | ಮೇದಿನೀಕೋಶದಲ್ಲಿ (ನಂ) ಲಿಂಗ  
ದಲ್ಲಿಯೂ ಅಭಿಧಾನ ಚಿಂತಾಮಣಿಯಲ್ಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲಿಂಗ  
ದಲ್ಲಿಯೂ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. 9. ಗವ್ಯಾತಿ, ಎರಡು ಕ್ರೋಶ  
ಗಳ ದೂರ. "ಗವ್ಯಾ ಗವ್ಯುತಗವ್ಯುತೀ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ |

**ಗವ್ಯುತ ಗವ್ಯುತ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ಕ್ರೋಶದ ದೂರ.  
2. ಎರಡು ಕ್ರೋಶಗಳ ದೂರ, ಒಂದು ಗಾವುದ. ಒಂದು  
ಸಾವಿರ ಧನುಸ್ಸುಗಳಷ್ಟು ದೂರವು ಒಂದು ಕ್ರೋಶ.  
ಎರಡು ಕ್ರೋಶಗಳು ಒಂದು ಗಾವುದ. "ಧನ್ವಂತರಸಹಸ್ರಂ  
ತು ಕ್ರೋಶ: ಕ್ರೋಶದ್ವಯಂ ಪುನ: | ಗವ್ಯುತಂ ಸ್ತ್ರೀ ತು ಗವ್ಯುತಿ:" |

**ಗವ್ಯುತಿ ಗವ್ಯುತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎರಡು ಕ್ರೋಶಗಳ ದೂರ,  
ಒಂದು ಗಾವುದ. "ಗವ್ಯಾ ಗವ್ಯುತಗವ್ಯುತೀ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ |

**ಗಹನ ಗಹನ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಮಹಾಗುಣ ಅತಿಭೂಮಿತಯಾ  
ದ್ವಿಜೇಯ: - ಗಾಹ್ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಯುಚ್" (ಉಂ ೨-೭೯) |  
(ನಂ) 2. ಅರಣ್ಯ, ಕಾನನ, ಕಾಡು. ಗಾಹತೇ - ಗಾಹ್  
(ವಿಲೋಡನೆ) "ಯುಚ್" (ಉಂ ೨-೭೯) | 3. ಗಹ್ವರ,  
ಗುಹೆ. 4. ಮುಖ. (ವಿಂ) 5. ಅಳವಾದ, ಪ್ರವೇಶಿಸಲು  
ಕಷ್ಟವಾದ. 6. ತಿಳಿಯಲು ಕಷ್ಟವಾದ. 7. ಹೋಗಲು  
ಕಷ್ಟವಾದ. "ಮತಿಭೇದತಮಸ್ತಿರೋಹಿತೇ ಗಹನೇ ಕೃತ್ಯವಿಧಿ  
ವಿವೇಕಿನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೩೩ |

**ಗಹ್ವ ಗಹ್ವ** (ನಂ) 1. ಗಾಂಭೀರ್ಯ, ಅಳವಾಗಿರುವಿಕೆ.  
2. ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ ಪ್ರದೇಶ, ಇಕ್ಕಟ್ಟಾದ ಜಾಗ.

**ಗಹ್ವರ ಗಹ್ವರ** (ಪುಂ) 1. ಲತಾಗೃಹ, ಮೇಲುಗಡೆ ಬಳ್ಳಿ  
ಗಳಿಂದ ಅಡ್ಡತವಾದ ಪ್ರದೇಶ. (ನಂ) 2. ಬಿಲ, ಬೆಟ್ಟದ  
ಗವಿ, ಅಕ್ಕಿತ್ತಮವಾದ ಗುಹೆ. ಗಾಹತೇ - ಗಾಹ್ (ವಿಲೋಡನೆ)  
"ಫರಚ್" (ಉಂ ೩-೧) | ನಿಪಾಂ | "ಗಜ್ಞಾಪ್ರಪಾತಾಂತ-  
ನಿರೂಡಶಘಂ ಗೌರಿಗುರೋಗ್ಹರಮಾವಿವೇಶ" ರಘುಂ ೨-೨೬ |  
3. ಮಂಥ, ಕವಟ. 4. ವನ, ಕಾಡು. "ಅಥ ಗಹ್ವರಮ್ |  
ಗುಹಾಗಹನದಂಭೇಷು ನಿಕುಂಜೇ ತು ಪುಮಾನಯಮ್" ಮೇದಿಂ |



5. ಇಕ್ಕಟ್ಟಾದ ಜಾಗ. 6. ರೋದನ, ಅಸ್ವಪ್ನವಾಗಿ ಗದ್ದದ ಸ್ವರದೊಡನೆ ಅಳುವುದು. "ಠದಿತಂ ಕೃದಿತಂ ಕೃಷ್ಣಂ ತದಪುಷ್ಪಂ ತು ಗಹ್ವರಮ್" ಅಭಿಂ ಚಿಂ.

**ಗಾ - ಸ್ತುತೌ** (ಜುಹೋಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) | ಜಿಗಾತಿ ಜಿಗಿತಃ ಜಿಗತಿ | ಜಗೌ ಜಗತುಃ | ಗಾತಾ | ಗಾಸ್ಯತಿ | ಜಿಗಾತು ಜಿಗಿತಾತ್ ಜಿಗಿತಾಮ್ ಜಿಗತು | ಅಜಿಗಾತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಸ್ತುತಿಸು, ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡು, ಹೊಗಳು.

**ಗಾಡ್ - ಗತೌ** (ಮಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಂಕಂ ಅನಿಂ) | ಗಾತೇ ಗಾತೇ ಗಾತೇ | ಗಾಸೇ ಗಾಥೇ ಗಾಧವೇ | ಜಗೇ ಜಗಾತೇ ಜಗಿರೇ | ಗಾತಾ ಗಾತಾರೌ ಗಾತಾರಃ | ಗಾಸ್ಯತೇ | ಗಾತಾಮ್ ಗಾತಾಮ್ ಗಾತಾಮ್ | ಗಾಸ್ವ ಗಾಥಾಮ್ ಗಾಧವಮ್ | ಅಗಾತ ಅಗಾತಾಮ್ | ಗೇತ ಗೇಯಾತಾಮ್ ಗೇರನ್ | ಗಾಸೀಷ್ಠ | ಅಗಾಸ್ತ | ಅಗಾಸ್ಯತ | ಹೋಗು, ಹೊರಡು. **ಕರ್ಮಂ** :- ಗೀಯತೇ | ಜಗೇ | ಜಗಿಷೇ | ಗಾಯಿತಾ, ಗಾತಾ | ಗಾಯಿಷ್ಯತೇ, ಗಾಸ್ಯತೇ |

**ಗಿಚಿ** :- ಗಾಪಯತಿ, -ತೇ | ಗಾಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಗಾಪಯಿತಾ | ಗಾಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ಗಾಪಯತು, -ತಾಮ್ | ಅಗಾಪಯತ್, -ತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಗಿನಿ** :- ಜಿಗಾಸತೇ | ಜಿಗಾಸಾಂ ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, ಆಸ | ಜಿಗಾಸಿತಾ | ಜಿಗಾಸಿಷ್ಯತೇ | ಜಿಗಾಸತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಗುತ್ಸು** :- ಗಾತವ್ಯಮ್ | ಗಾನೀಯಮ್ | ಗೇಯಮ್ | ಗೀತಮ್ | ಗೀತವಾನ್, -ವತೀ | ಗಾಯನ್, ಗಾಯಂತೀ | ಗಾತುಮ್ | ಗೀತಮ್ | ಗಾನಮ್ | ಗೀತ್ವಾ | ಪ್ರಗಾಯ |

**ಗುನ್ತಾತ್ ಗುತ್ಸು** :- ಗಾಪಯಿತವ್ಯಮ್ | ಗಾಪನೀಯಮ್ | ಗಾಪ್ಯಮ್ | ಗಾಪಿತಃ | ಗಾಪಿತವಾನ್, -ವತೀ | ಗಾಪಯನ್, -ಯಂತೀ | ಗಾಪಯಮಾನ್ | ಗಾಪಯಿತುಮ್ | ಗಾಪಿತಮ್ | ಗಾಪನಮ್ | ಗಾಪಯಿತ್ವಾ | ಪ್ರಗಾಪ್ಯ |

**ಗಾಙ್ಗ ಗಾಂಗಂ** (ಪುಂ) 1. ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯ. 2. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪುಷ್ಕರಿಣಿ. ಗಾಙ್ಗಾಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಅಙ್" (೪-೧-೧೧೨) | (ನಂ) 3. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. "ಯಂ ಗಂಭಿರಂ ಸುಷುಪ್ತೇ ಗಾಙ್ಗಾ ಪಾವಕಾಢೀಪ್ತತೇಜಸಮ್ | ತದ್ವತ್ ಪವಂತೇ ನ್ಯಸ್ತಂ ಹಿರಣ್ಯಂ ಸಮ-ಪದ್ಯತ" ಭಾಂ ವನಂ | 4. ಮಳೆಯ ನೀರು. (ವಿಂ) 5. ಗಂಗಾನದಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಗಾಙ್ಗಾಯಾ ಇದಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦) | "ವಿಕೀರ್ಣಸಪ್ತರ್ಷಿಬಲಿಪ್ರಹಾಸಿಭಿಸ್ತಥಾ ನ ಗಾಙ್ಗೈಃ ಸಲಿಲೈರ್ದಿವಚ್ಯುತೈಃ" ಕುಮಾಂ ೪-೩೭ |

**ಗಾಙ್ಗೇಯ ಗಾಂಗೇಯಂ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು.

**ಗಾಙ್ಗಾಯನಿ ಗಾಂಗಾಯನಿ** (ಪುಂ) 1. ಗಂಗಾಪುತ್ರನಾದ ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯ. ಗಾಙ್ಗಾಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಫಿಙ್" (೪-೧-೧೪೪) | 2. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪುಷ್ಕರಿಣಿ.

**ಗಾಙ್ಗೇಯ ಗಾಂಗೇಯಂ** (ಪುಂ) 1. ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯ. 2. ಪುಷ್ಕರಿಣಿ. ಗಾಙ್ಗಾಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೩) | (ನಂ) 3. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. "ಗಾಙ್ಗೇಯಮುತ್ಪಾದ್ಯ ವಸು ಪ್ರಕೃಷ್ಠಮ್" | 4. ಭದ್ರಮುಸ್ತೆ. 5. ತಾವರೆ ಮೊದಲಾದವುಗಳ ಗಡ್ಡೆ. "ಕಶೇಹೇಸ್ತನೋರ್ಗಾಙ್ಗೇಯಮ್" ಅಮಂ |

**ಗಾಙ್ಗೇಕೀ ಗಾಂಗೇಕೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೀರೇಡ. ಗಾಙ್ಗ ಜಲಮೀರಯತಿ - ಓರ (ಗತೌ ಕಂಪನೇ ಚ) "ಕುಃ" (೩ಂ ೧-೩೭) | "ಕನ್" (೪-೩-೭೪) |

**ಗಾಡ ಗಾಡ** (ನಂ) 1. ಅತಿಶಯ, ಹೆಚ್ಚು. ಗಾಹ (ವಿಲೋಡನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | (ವಿಂ) 2. ಅತಿಶಯವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. 3. ಸೇವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಳುಗಿ ಸ್ನಾನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಶ್ರಮಫೇನಮುಚಾ ತಪಸ್ವಿಗಾಡಾಂ ತಮಸಾಂ ಪ್ರಾಪ ನದೀ ತುರಙ್ಗಮೇಣ" ರಘುಂ ೧-೭೨ | 4. ಪ್ರವೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. (ಅವ್ಯಂ) 5. ದೃಢವಾಗಿ, ಬಲವಾಗಿ. "ತೇ ಪ್ರಾಪುರ್ದೃಢ ಭುಜಙ್ಗಮಭೀಮಭಾವಂ ಗಾಡಂ ಬಬನ್ಧುರಪಿ ತಾಂಸ್ತ್ರಿದಶೇಂದ್ರಮುಖ್ಯಾನ್" ಕುಮಾಂ ೧೭-೪ |

**ಗಾಡಮುಠಿ ಗಾಡಮುಠಿ** (ಪುಂ) 1. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. ಗಾಡೋ ಮುಠಿರತ್ರ | (ವಿಂ) 2. ಕೃಪಣ, ಜಿಪುಣ. ಗಾಡೋ ಮುಠಿರೈಸ್ಯ | "ಗಾಡಮುಠಿಃ ಕೃಪಾಣೇ ನಾ ಕೃಪಾಣೇ ತ್ವಮಿಧೇಯವತ್" ಮೇದಿಂ |

**ಗಾಣಪತ ಗಾಣಪತ** (ವಿಂ) 1. ಗಣಪತಿ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಗಣಪತೇರಿದಮ್ "ಅಙ್" (೪-೧-೮೪) | 2. ಗುಂಪಿನ ಯಜಮಾನನ ಸಂಬಂಧವಾದ.

**ಗಾಣಪತ್ಯ ಗಾಣಪತ್ಯ** (ನಂ) ಗಣಪತಿಯ ಭಾವ. ಗಣಪತೇ ಭವಿಃ "ಯಕ್" (೪-೧-೧೨೮) | "ಮಹಾದೇವಪ್ರಸಾದೇನ ಗಾಣಪತ್ಯಂ ಚ ವಿನಂದತಿ" ಭಾಂ ವನಂ |

**ಗಾಣಿಕ ಗಾಣಿಕ** (ವಿಂ) ಗಣಪಾಠವನ್ನು ತಿಳಿದವನು ಅಥವಾ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು. ಗಣಂ ವೇತ್ಯಧೀತೇ ವಾ "ಠಕ್" (೪-೨-೬೦) |

**ಗಾಣಿಕಯ ಗಾಣಿಕಯ** (ನಂ) ವೇಶ್ಯೆಯರ ಸಮೂಹ, ಸೂಳೆಯರ ಗುಂಪು. ಗಾಣಿಕಾನಾಂ ಸಮೂಹಃ "ಯನ್" (ವಾಂ ೪-೨-೪೦) | "ಗಾಣಿಕಾದೇಸ್ತು ಗಾಣಿಕಯಮ್" ಅಮಂ |

**ಗಾಣಿಡ ಗಾಂಡಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಟು, ಗ್ರಂಥಿ. ಗಡಿ (ಬದನೆಕ-ದೇಶ) "ಙ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭) |

**ಗಾಣ್ಡೀವ ಗಾಂಡೀವ** (ಪುಂ) ಅರ್ಜುನನ ಧನುಸ್ಸು. ಗಾಣಿಡ್ವನ್ಧಿರಸ್ಯಸ್ತಿ - ವಾ "ಡೀಫ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೪) | "ವಃ" (೪-೨-೧೧೦) | ಡೀವೋಽಭಾವೇ ಗಾಣಿಡವಮ್ ಗಾಂಡಿ ವಮಃ. ಈ ಧನುಸ್ಸು ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ಇಂದ್ರನಿಗೂ



ಇಂದ್ರನಿಂದ ವರುಣನಿಗೂ ವರುಣನಿಂದ ಅಗ್ನಿಗೂ ಬಂದು ಸೇರಿತು. ಖಂಡವದಹನ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಅರ್ಜುನನು ಮಾಡಿದ ಉಪಕಾರಕ್ಕಾಗಿ ಅಗ್ನಿಯು ಇದನ್ನು ಅರ್ಜುನನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟನು.

**ಗಾಣಿ(ಙಿ)ವಧನ್ವನ್ ಗಾಂಡಿ(ಡಿ)ವಧನ್ವನ್ (ಫಂ)** ಅರ್ಜುನ. ಗಾಣಿ(ಙಿ)ವ ಧನುರಸ್ಯ |

**ಗಾಣಿ(ಙಿ)ವಿನ್ ಗಾಂಡಿ(ಡಿ)ವಿನ್ (ಫಂ)** ಅರ್ಜುನ. ಗಾಣಿ(ಙಿ)ವಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) |

**ಗಾತವ್ಯ ಗಾತವ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಗಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಹಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಹಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಹಾಡಲು ಶಕ್ತವಾದ. ಗೈ (ಶಬ್ದ) "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) |

"ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | ಗಾನೀಯಮ್ ಗಾನೀಯಮ್.

**ಗಾತಾಗತಿಕ ಗಾತಾಗತಿಕ (ವಿಂ)** ಗಮನ ಮತ್ತು ಆಗಮನ ದಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಹೋಗುವುದು ಮತ್ತು ಬರುವುದು ಇವುಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಗತಾಗತೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೯) |

**ಗಾತಾನುಗತಿಕ ಗಾತಾನುಗತಿಕ (ವಿಂ)** ಗಮನ ಮತ್ತು ಅನುಗಮನದಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಗತಾನುಗತೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೯) |

**ಗಾತು ಗಾತು (ಫಂ)** 1. ಕೋಗಿಲೆ. 2. ಭ್ರಮರ, ದಂಬಿ. 3. ಗಂಧರ್ವ. ಗೈ (ಶಬ್ದ) "ತು:" (೩ಂ ೧-೭೨) | "ಗಾತು: ಪುಸ್ಕೋಕಿಲೇ ಭೃಂಗೆ ಗಂಧರ್ವೈ ಗಾಯನೇಽಪಿ ಚ" ಹೇಮಂ | 4. ಪಥಿಕ. ಪ್ರಯಾಣಿಕ. ಗಾಡ್ (ಗತೌ) ಕರ್ತಂ "ತು:" (೩ಂ ೧-೭೨) | (ನಂ) 5. ಗಾನ, ಹಾಡುವುದು. ಗೈ (ಶಬ್ದ) ಭಾವೇ "ತು:" | 6. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. ಗಾಡ್ (ಗತೌ) ಅಧಿಂ "ತು:" | (ವಿಂ) 7. ಸಿಟ್ಟಿನಿಂದ ಕೂಡಿದವನು, ಕೋಪಪುಳ್ಳವನು. ಗಾತೇ ಕೋಪಂ ಗಚ್ಛತಿ - ಗಾಡ್ "ತು:" | 8. ಗಾಯಕ, ಹಾಡುವವನು, ಸಂಗೀತಗಾರ. ಗೈ (ಶಬ್ದ) ಕರ್ತಂ "ತು:" | "ಗಾತುರ್ನಾ ಕೋಕಿಲೇ ಭೃಂಗೆ ಗಂಧರ್ವೈ ತ್ರಿಭು ರೋಷಣೇ" ಮೇದಿಂ | 9. ಸ್ತೋತ್ರ, ಸ್ತುತಿ. 10. ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ.

**ಗಾತು ಗಾತು (ವಿಂ)** ಹಾಡುಗಾರ, ಗಾಯಕ. ಗೈ (ಶಬ್ದ) "ತು:" (೩-೧-೧೩೩) | "ಗಾತಾ ಚತುರ್ಣಿ ವೇದಾನಾಮುದ್ಗಾತಾ ಪ್ರಥಮರ್ತ್ವಿಜಾಮ್ | ಸ ನಾರದೋಽಥ ವಿಪ್ರಿಃ" ಹರಿವಂ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | ಗಾತ್ರೀ ಗಾತ್ರೀ.

**ಗಾತ್ರ ಗಾತ್ರ (ನಂ)** 1. ಶರೀರ, ದೇಹ, ಮೈ. ಗಾತ್ರೇಜೇನ - ಗಾಡ್ (ಗತೌ) "ಟ್ರನ್" (೩ಂ ೪-೧೫೯) | "ಶಯೋತ್ಸಜ್ಞೇ ನಿಹಿತಮಸಕ್ತದ್ಬುಃಖದ್ಬುಃಖೇನ ಗಾತ್ರಮ್" ಮೇಧಂ ೨-೩೦ |

2. ಅಂಗ, ಅವಯವ. 3. ಆನೆಯ ಶರೀರದ ಮುಂಭಾಗ. "ಗಾತ್ರಂ ಗಜಾಗ್ರಜಙ್ಗಾದಿಭಾಗೇಽಪ್ಯಜ್ಞೇ ಕಲೇಬರೇ" ಮೇದಿಂ |

**ಗಾತ್ರಕಮ್ಪ ಗಾತ್ರಕಂಪ (ಫಂ), -ಕಮ್ಪನ -ಕಂಪನ (ನಂ)** ಶರೀರದ ಕಂಪನ, ಮೈನಡುಕ. ಗಾತ್ರಸ್ಯ ಕಮ್ಪ: ಕಮ್ಪನಂ ವಾ |

**ಗಾತ್ರಭಜ್ಞ ಗಾತ್ರಭಂಗ (ಫಂ)** ಮೈ ಮುರಿಯುವಿಕೆ. ನಿದ್ರೆಯಿಂದ ಎಳುವಾಗ ಕೈಕಾಲುಗಳನ್ನು ನೀಡಿ ಮೈ ಮುರಿಯುವುದು. ಗಾತ್ರಸ್ಯ ಭಜ್ಞ: |

**ಗಾತ್ರಮಾರ್ಜನೀ ಗಾತ್ರಮಾರ್ಜನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮೈಯನ್ನು ಒರಸುವ ಬಟ್ಟೆ, ಚೌಕ. ಗಾತ್ರಂ ಮೃಜಯತೇಽನಯಾ - ಮೃಜು (ಶುದ್ಧಿ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) |

**ಗಾತ್ರಯಷ್ಠಿ ಗಾತ್ರಯಷ್ಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕೋಲಿನಂತೆ ತೆಳ್ಳನೆಯ ದೇಹ. ಗಾತ್ರಂ ಯಷ್ಠಿರಿವ | "ರೋಮಾಶ್ಚಲಕ್ಷಣೇ ಸ ಗಾತ್ರಯಷ್ಠಿಂ ಭಿತ್ತ್ವಾ ನಿರಾಕ್ರಾಮದರಾಲಕೇಽಯಾ:" ರಘುಂ ೬-೮೧ |

**ಗಾತ್ರರೂಹ ಗಾತ್ರರೂಹ (ನಂ)** ಮೈಗೂಡಲು. ಗಾತ್ರೇ ರೋಹಿತಿ - ರೂಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಕ:" (ವಾಂ ೩-೨-೫) | "ನ ವಿಕ್ರಿಯೇತಾಥ ಯದಾ ವಿಕಾರೋ ನೇತ್ರೇ ಜಲಂ ಗಾತ್ರರೂಹೇಷು ಹೃಃ" ಭಾಗಂ ೨-೩-೨೪ |

**ಗಾತ್ರವತ್ ಗಾತ್ರವತ್ (ವಿಂ)** ಉತ್ತಮವಾದ ದೇಹವುಳ್ಳ, ಅಂದವಾದ ಮೈಯುಳ್ಳ. ಪ್ರಶಸ್ತಂ ಗಾತ್ರಂ ಯಸ್ಯ - "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ವತ್ತಿ -ವತಿ.

**ಗಾತ್ರಾನುಲೇಪನೀ ಗಾತ್ರಾನುಲೇಪನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮೈಗೆ ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯವನ್ನು ಬಳಿಯುವ ಕುಂಚ, -ಕೂರ್ಚ, -ವರ್ತಿಕೆ, -ತೂಲಿಕೆ. ಗಾತ್ರಮನುಲಿಪ್ಯತೇಽನಯಾ - ಅನು + ಲಿಪ (ಅಪದೇಹೇ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | 2. ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯಗಳನ್ನು ಅರೆದು ಮಾಡಿದ ಗಂಧದ ಬಿಲ್ಲೆ, ಬಣಿಸಿದ ಗಂಧದ ಬಿಲ್ಲೆ.

**ಗಾತ್ರ ಗಾತ್ರ (ಫಂ)** 1. ಹಾಡು. 2. ಸ್ತೋತ್ರ.

**ಗಾತ್ರಕ ಗಾತ್ರಕ (ವಿಂ)** ಹಾಡುವವನು, ಸಂಗೀತಗಾರ. ಗಾಯತಿ - ಗೈ (ಶಬ್ದ) "ಯಕ್" (೩-೧-೧೪೬) | "ದುಃಸಹಾ ಹಿ ಪರಿಕ್ಷಿಪ್ತಾ: ಕವಣಾಙ್ಗಿರಲಿಗಾಯಕೈ:" ಭಟಿಂ ೬-೮೪ |

**ಗಾಥಾ ಗಾಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಶ್ಲೋಕ, ಪದ್ಯ. 2. ಪ್ರಾಕೃತ ಮೊದಲಾದ ಭಾಷೆ. 3. ಆರ್ಯಾ (ಮಾತೃ) ವೃತ್ತದ ಒಂದು ಭೇದ. "ಪಾದೇ ದ್ವಾದಶ ವಿಷಮೇ ಮಾತ್ರಾಪ್ರಾಷ್ಟಾದಶ ದ್ವಿತೀಯೇ ಹಿ | ಪञ्चदಶ ಚೇತ್ ತುರೀಯೇ ಕಥಿತಾ ಗಾಥಾ ತಥೈವಾರ್ಯಾ" ಛಂದೋಮಂ | 4. ಗಾನ, ಹಾಡು. "ಗಾಥಾ ಶ್ಲೋಕೇ ಸಂಸ್ಕೃತಾನ್ಯ-ಭಾಷಾಃ ಗೇಯವೃತ್ತಯೋ:" ಮೇದಿಂ |



ಗಾಥಾಕಾರ ಗಾಥಾಕಾರ (ವಿಂ) ಶ್ಲೋಕಗಳನ್ನು ರಚಿಸುವವನು, ಪದ್ಯಗಳನ್ನು ಬರೆಯುವವನು. ಗಾಥಾಂ ಕರೋತಿ—ಓ ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಅಙ್" (೩-೨-೧)।

ಗಾಥಿನ್ ಗಾಥಿನ್ (ವಿಂ) ಸಂಗೀತದಲ್ಲಿ ಒಳ್ಳೆಯ ಪರಿಶ್ರಮವಿರುವವನು, ಬೆನ್ನಾಗಿ ಸಂಗೀತವನ್ನು ಕಲಿತವನು. ಗಾಥಾ-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೬)।

ಗಾಥ ಗಾಥ (ಪುಂ) 1. ಸ್ಥಾನ. ಜಾಗ. "ಅನಾಸಾದಿತಗಾಥಂ ಚ ಪಾತಾಲತಲಮವ್ಯಯಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೧-೧೩। 2. ಹೊಂದಲು ಇಚ್ಛೆ, ಪಡೆಯಲು ಆಸೆ. ಗಾಥ (ಲಿಪ್ಸಾಯಾಮ್) "ಘಙ್" (೩-೩-೧೮)। 3. ತಳಕ್ಕೆ ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು, ಅಳವಡಾದ ಜಾಗವನ್ನು ಮುಟ್ಟುವುದು. (ವಿಂ) 4. ಅಳವಿಲ್ಲದ, ತಳವನ್ನು ಮುಟ್ಟಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. "ಸರಿತ: ಕುರ್ವತೀ ಗಾಥಾ: ಪಥಶ್ರಾಶ್ಯಾನಕರ್ದಮಾನ್" ರಘುಂ ೪-೨೪।

ಗಾಥಿ ಗಾಥಿ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರನ ಅಂಶದಿಂದ ಜಂದ್ರವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನ ತಂದೆ. ಗಾಥ (ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಯಾಮ್) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭)। ["ಕೌಶಿಕ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ಸ ಪಿತಾ ಮಮ ಕಾಕುತ್ಸ್ಥ ಗಾಥಿ: ಪರಮಧಾರ್ಮಿಕ:" ರಾಮಾಂ।

ಗಾಥಿಜ ಗಾಥಿಜ (ಪುಂ) ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮಹರ್ಷಿ. ಗಾಥೇ-ಜಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃಭವಿ) "ಙ:" (೩-೨-೯೮)। "ಕುಬೇರಶ್ಚ ಧನೇಶ್ವರೈ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ್ಯಂ ಚೈವ ಗಾಥಿಜ:" ಮನುಂ ೭-೪೨।

ಗಾಥಿನ್ ಗಾಥಿನ್ (ಪುಂ) ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮಹರ್ಷಿಯ ತಂದೆ, ಕನ್ಯಾಕುಬ್ಜದ ದೊರೆ. "ಶೀಘ್ರಮಾಖ್ಯಾತ ಮಾಂ ಪ್ರಾಪ್ತಂ ಕೌಶಿಕಂ ಗಾಥಿನ: ಸುತಮ್" ರಾಮಾಂ।

ಗಾಥಿಪುರ ಗಾಥಿಪುರ (ನಂ) ಗಾಥಿಯ ನಗರ. ಕನ್ಯಾಕುಬ್ಜ. ಗಾಥೇ: ಪುರಮ್।

ಗಾಥು - ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಲಿಪ್ಸಯೋಗ್ರಂಥೇ ಚ (ಮ್ವಾಂ ಆರಮಂ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ-ಯಾಮಕರ್ಮಕ: ಲಿಪ್ಸಾಯಾಂ ಗ್ರಂಥೇ ಚ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಗಾಥತೇ। ಜಗಾಥೇ। ಗಾಥಿತಾ। ಅಗಾಥಿಪಿಠ। 1. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲು. "ಗಾಥಿತಾಸೇ ನಮೋ ಭೂಯ: ಸ್ಫುಟನ್ಮೇಷವಟಾವಲಿ" ಭಟ್ಟಿಂ ೨೨-೨। 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸು. ಆಸೆಪಡು. 3. ಜೋಡಿಸು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸು.

ಗಾಥೇಯ ಗಾಥೇಯ (ಪುಂ) ಗಾಥಿಯ ಮಗ, ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮಹರ್ಷಿ. ಗಾಥೇರಪತ್ಯಮ್ - ಗಾಥಿ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೨)। "ಗಾಥೇಯದಿಷ್ಟಂ ವಿರಸಂ ರಸಂತಂ ರಾಮೋಽಪಿ ಮಾಯಾಚಣಮಸ್ತ್ರ-ಚುಚ್ಚು:" ಭಟ್ಟಿಂ ೨-೩೨।

ಗಾಥ ಗಾಥ (ನಂ) 1. ಗೀತ, ಹಾಡುವುದು. ಗೆ (ಶಬ್ದ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ಉದಕಾಂಠ ಕಂಠ-

ಪರಿವರ್ತಿಕಲಸ್ವರಶ್ಚಾನ್ಯಗಾನಪರಯಾಽಪರಯಾ" ಮಾಧಂ ೯-೪೪। 2. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು. 3. ಗಮನ, ಹೋಗುವಿಕೆ. ಗಾಡ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪)। 4. ಸ್ತೋತ್ರ, ಹೋಗಳಿಕೆ. ಗಾ (ಸ್ತುತೌ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪)।

ಗಾನಕಲಾ ಗಾನಕಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಗೀತವಿದ್ಯೆ.

ಗಾನವಿದ್ಯಾ ಗಾನವಿದ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಗೀತವಿದ್ಯೆ, ಹಾಡು ಗಾರಿಕೆಯ ಶಾಸ್ತ್ರ, ಗಾಂಧರ್ವವಿದ್ಯೆ.

ಗಾನಿನ್ ಗಾನಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಗಮನವುಳ್ಳ, ಜಲಸಮಯುಳ್ಳ, ನಡೆಯುವ. 2. ಸಂಗೀತದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 3. ಹೋಗಳಿಕೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಗಾನಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪)। ಗಾನಿನಿ ಗಾನಿನೀ.

ಗಾನಿನಿ ಗಾನಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಜೆ, ಬಂದು ಟಿಪ್ಪಣದ ಮೂಲಿಕೆ.

ಗಾಂತ್ರಿ ಗಾಂತ್ರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎತ್ತಿನಗಾಡಿ, ಎತ್ತುಗಳು ಎಳೆಯುವ ಗಾಡಿ. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಫ್ರನ್" ವೃದ್ಧಿಶ್ಚ (೩ಂ ೪-೧೪೯)।

ಗಾಂಧಿನಿ ಗಾಂಧಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಶಿರಾಜನ ಮಗಳು, ಶ್ವಫಲಕರಾಜನ ಪತ್ನಿ, ಅಕ್ರೂರನ ತಾಯಿ. [ಕಾಶಿರಾಜನ ಪತ್ನಿಯು ಗರ್ಭಿಣಿಯಾಗಿ ಹನ್ನೆರಡು ವರ್ಷಗಳಾದರೂ ಪ್ರಸವವಾಗಲಿಲ್ಲ. ಆಗ ರಾಜನು ಯದುಮಂಶದ ಶ್ವಫಲಕನನ್ನು ಕರೆಯಿಸಿ ಈ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಸಿದನು. ಶ್ವಫಲಕನು ಗರ್ಭದಲ್ಲಿರುವುದು ಸ್ತ್ರೀ ಶಿಶುವೆಂದು ತಿಳಿದು ಗರ್ಭದಿಂದ ಬೇಗ ಹೊರಕ್ಕೆ ಬರಬೇಕೆಂದು ಹೇಳಿದನು. ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಒಂದೊಂದು ಗೋದಾನ ಮಾಡಿದರೆ ಬರುವುದಾಗಿ ಆ ಶಿಶುವು ತಿಳಿಸಲು ರಾಜನು ಅದಕ್ಕೆ ಒಪ್ಪಿದನು. ಪ್ರಸವವಾಯಿತು. ಅನಾವೃಷ್ಟಿಗೆ ಒಳಗಾಗಿದ್ದ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಸುವೃಷ್ಟಿಯುಂಟಾಯಿತು. ಕಾಶಿರಾಜನು ತನ್ನ ಮಗಳನ್ನು ಶ್ವಫಲಕನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು ಮದುವೆ ಮಾಡಿದನು. ಇವಳೇ ಗಾಂಧಿನಿ.] 2. ಗಂಗಾನದಿ. ಗಾಂ ಭೂಮಿ ದಾಯತಿ ಶೋಧಯತಿ—ದೈಪ್ (ಶೋಧನೆ) "ಗಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪)। ಪೃಷಂ।

ಗಾಂಧಿನಿಸುತ ಗಾಂಧಿನೀಸುತ (ಪುಂ) 1. ಅಕ್ರೂರ. ಗಾಂಧಿನಿಯಾ: ಸುತ:। "ವಿಲಿಕ್ಷಿತಸ್ಥಿತಮಿವಿವಿಕ್ಷಯ ರುಕ್ಮಯಾ ರಿಪೋಗಿರಾ ಗುರುಮಪಿ ಗಾಂಧಿನಿಸುತಮ್" ಮಾಧಂ ೧೭-೧೨। 2. ಭೀಷ್ಮ ಜಾಯಮ್. "ಗಾಂಧೀಯೋ ಗಾಂಧಿನಿಸುತ:। ದೇವವ್ರತ: ಶಾಂತನವೋ ಗಾಂಧೀಯೋ ಗಾಂಧಿನಿಸುತ: ಸ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 3. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪುಣ್ಯ.

ಗಾಂಧರ್ವ ಗಾಂಧರ್ವ (ಪುಂ) 1. ಎಂಟು ವಿಧ ವಿವಾಹಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. ವಧೂವರರಲ್ಲಿ ಪರಸ್ಪರ ಅನುರಾಗವು ಬೆಳೆದು



ತಮ್ಮ ಇಚ್ಛೆಯಿಂದಲೇ ಆಶ್ರಯವಿಲ್ಲದವರ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿ ನಡೆಯುವ ವಿವಾಹವು ಗಾಂಧರ್ವವು. "ಇಚ್ಛಾ-  
ಯಾನ್ಯೋನ್ಯಸಂಯೋಗಃ ಕನ್ಯಾಶ್ಚ ವರಸ್ಯ ಚ | ಗಾಂಧರ್ವಃ ಸ ತು  
ವಿಜೇಯಃ ಮೇಥುನ್ಯಃ ಕಾಮಸಂಭವಃ" ಮನುಂ ೩-೩೨ | 2. ಭಾರತ  
ವರ್ಷದ ಉಪದ್ವೀಪಗಳಲ್ಲೊಂದು. 3. ಸಾಮವೇದದ  
ಉಪವೇದ. 4. ಅಶ್ವ. ಕುದುರೆ. ಗಾಂಧರ್ವ ಏವ ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಅಣ್" (೪-೪-೩೮) | "ಗಾಂಧರ್ವಭೃಷಿತಯಾ ಸಮಾನತಾಂ  
ಸ ಸಾಮವೇದಸ್ಯ ದಶೈಃ ಬಲೋದಧಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೧೧ |  
(ನಂ) 5. ಸಂಗೀತಶಾಸ್ತ್ರ. ಗಾನವಿದ್ಯೆ. 6. ಗಾಂಧರ್ವ  
ದೇವತಾಕವಾದ ಅಶ್ವ. ಗಾಂಧರ್ವೋ ದೇವತಾಸ್ಯ "ಅಣ್"  
(೪-೨-೨೪) | "ಗಾಂಧರ್ವಮಾದತ್ಸ್ವ ಯತಃ ಪ್ರಯೋಕ್ತುರ್ನಚಾರಿ-  
ಹಿಸಾ ವಿಜಯಶ್ಚ ಹಸ್ತೇ" ರಘುಂ ೪-೪೭ | 7. ಗೀತ.  
ಹಾಡು. "ಆಲಾಪೇರಿವ ಗಾಂಧರ್ವಮದೀಯತ ಪದಾತಿಮಿಃ"  
ಮಾಘಂ ೧೧-೪೭ | (ವಿಂ) 8. ಗಾಂಧರ್ವ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
ಗಾಂಧರ್ವಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೨೦) | 9. ಸಂಗೀತಗಾರ.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವೈ -ವೀ. 10. ಮರ್ಗಾದೇವಿ. ಪಾರ್ವತಿ.  
11. ಮಾತು.

**ಗಾಂಧರ್ವಕಲಾ ಗಾಂಧರ್ವಕಲಾ, -ವಿಜ್ಞಾ -ವಿದ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)**  
ಗಾನಕಲೆ, ಸಂಗೀತವಿದ್ಯೆ, ಸಂಗೀತಶಾಸ್ತ್ರ.

**ಗಾಂಧರ್ವಿಕ ಗಾಂಧರ್ವಿಕ (ವಿಂ)** ಸಂಗೀತಗಾರ. ಹಾಡು  
ಗಾರ, ಗಾಯಕ. ಗಾಂಧರ್ವ ಶಿಲ್ಪಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೪೪) |

**ಗಾಂಧಾರ ಗಾಂಧಾರ (ಪುಂ)** 1. ತಂತಿಯಿಂದಲೂ ಕಂತ  
ದಿಂದಲೂ ಹುಟ್ಟುವ ಸಂಗೀತದ ಸಪ್ತಸ್ವರಗಳಲ್ಲೊಂದು.  
ಸ್ವರಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿ ಮೂರನೆಯದು. ಗಾಂಧಾರದೇಶ ಭವಃ  
"ಅಣ್" (೪-೩-೪೩) | ಇದು ಅಡು ಮತ್ತು ಕುರಿಗಳ  
ಸ್ವರದಂತಿರುವುದು. "ಅಜಾವಿಕಂ ತು ಗಾಂಧಾರಂ ಕೌಶ್ವಃ  
ಕವಣತಿ ಮಧ್ಯಮಮ್" ಅಮಂ | (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ಗಾಂಧಾರ  
ದೇಶ. 3. ಗಾಂಧಾರ ದೇಶದ ದೊರೆಗಳು. 4. ಗಾಂಧಾರ  
ದೇಶದ ಜನರು.

**ಗಾಂಧಾರಿ ಗಾಂಧಾರಿ (ಪುಂ)** ಗಾಂಧಾರದೇಶದ ರಾಜನ ಮಗ,  
ಶಕುನಿ. ಗಾಂಧಾರಸ್ಯಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಇ಼" (೪-೧-೧೪) |

**ಗಾಂಧಾರೀ ಗಾಂಧಾರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಗಾಂಧಾರದೇಶದ  
ಸುಬಲರಾಜನ ಮಗಳು, ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಪತ್ನಿ, ಕೌರವರ  
ತಾಯಿ. ಗಾಂಧಾರಸ್ಯಾಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ "ಅಣ್" (೪-೧-೧೨) |  
"ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೪) | [ಗಾಂಧಾರಿಯು ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ  
ಶೌರ್ಯ ಧೈರ್ಯಾದಿ ಗುಣಗಳನ್ನು ಕೇಳಿ ಕುರುಡನಾಗಿ  
ದ್ವರೂ ಅವನನ್ನೇ ಮದುವೆಯಾದಳು. ಈಕೆಯು ಪರಶಿವ  
ನನ್ನು ಪೂಜಿಸಿ ನೂರು ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳಾಗಬೇಕೆಂದು ವರ

ವನ್ನು ಪಡೆದಳು. ಕುಂತಿಯು ಧರ್ಮರಾಜನನ್ನು ಪ್ರಸವಿಸಿದ  
ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿದು ಗರ್ಭಿಣಿಯಾಗಿದ್ದ ಗಾಂಧಾರಿಯೂ  
ತನ್ನ ಹೊಟ್ಟೆಯನ್ನು ಹಿಸುಕಿಕೊಂಡಳು. ಗರ್ಭವು ಬಡೆದು  
ಜೊರಾಗಿ ನೂರು ಮಾಂಸ ಪಿಂಡಗಳು ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಿದ್ದುವು.  
ಗಾಂಧಾರಿಯು ಅದರಿಂದ ದುಃಖಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ವ್ಯಾಸ  
ಮಹರ್ಷಿಯು ಬಂದು ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸಿ ಅವನ್ನು ನೂರು  
ತುಪ್ಪದ ಗಡಿಗೆಗಳಲ್ಲಿಟ್ಟು ರಕ್ಷಿಸುವಂತೆ ಹೇಳಿದರು. ಕಾಲ  
ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಆ ಗಡಿಗೆಗಳಿಂದ ನೂರು ಮಕ್ಕಳು ಎದ್ದು  
ಬಂದರು. ಇವರೇ ದುರ್ಯೋಧನ ಮೊದಲಾದ ಕೌರವರು.  
ಬಳಿಕ ಗಾಂಧಾರಿಯು ದುಶ್ಯಲಯೆಂಬ ಒಬ್ಬ ಮಗಳನ್ನೂ  
ಹೆತ್ತಳು. ಪಾಂಡವರಿಗೂ ಕೌರವರಿಗೂ ದ್ವೇಷವು ಪ್ರಬಲ  
ವಾಗಿ ಯುದ್ಧವು ಪ್ರಾರಂಭವಾಗಲು ಇವಳು ತನ್ನ  
ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಅನೇಕ ಸಲ ಬುದ್ಧಿಯನ್ನು ಹೇಳಿದಳು. ಯುದ್ಧ  
ವನ್ನು ಮಾಡಲೇಕೊಡದೆಂದು ಅನೇಕ ಸಲ ಒತ್ತಿ ಒತ್ತಿ  
ಹೇಳುತ್ತಿದ್ದಳು.] 2. ಅಜಮಿಥ ರಾಜನ ಪತ್ನಿ.

**ಗಾಂಧಾರೀತನಯ ಗಾಂಧಾರೀತನಯ, -ಸುತ -ಸುತ,**  
-ಸುತು -ಸೂನು (ಪುಂ) ದುರ್ಯೋಧನ ಮೊದಲಾದ  
ನೂರುಮಂದಿ ಕೌರವರು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತನಯಾ -ತನಯಾ,  
-ಸುತಾ -ಸುತಾ. ಮಕ್ಕಳೆ.

**ಗಾಂಧಾರೇಯ ಗಾಂಧಾರೇಯ (ಪುಂ)** ಗಾಂಧಾರಿಯ ಮಕ್ಕಳಾದ  
ನೂರುಮಂದಿ ಕೌರವರು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಯಿ -ಯಿ.  
ಗಾಂಧಾರಿಯ ಮಗಳಾದ ಮಕ್ಕಳೆ. ಗಾಂಧಾರ್ಯಾಃ ಅಪತ್ಯಮ್  
"ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೦) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೪) |

**ಗಾಂಧಿಕ ಗಾಂಧಿಕ (ಪುಂ)** 1. ಸಂಗಾಧದ್ರವ್ಯಗಳ ವ್ಯಾಪಾರಿ.  
ಗಾಂಧಿ ಗಾಂಧಿವ್ಯಂ ಪಣ್ಯಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೪೧) |  
2. ಲೇಖಕ, ಗುರೂಪ್ತೆ. "ಗಾಂಧಿಕೋ ಲೇಖಕೋಪಿ ಸ್ಯಾತ್"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಗಾಮಿನ್ ಗಾಮಿನ್ (ವಿಂ)** ಹೋಗುವವನು, ನಡೆಯುವ  
ವನು. ಗಾಂಧಿ-ಗಾಮ್ (ಗತೌ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) |  
ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಇದು ಸಮಾಸದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಬರುವುದು.  
ಅದರಂತೆ ನಡೆಯುವ. ಅದಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾಗಿ ಹೋಗುವ  
ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಇದರ ಪ್ರಯೋಗ. "ಸಮೇವ ಸಮಾಕ್ರಾಂತಂ  
ಹ್ಯಂ ದ್ವಿರದಗಾಮಿನಾ" ರಘುಂ ೪-೪ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್"  
(೪-೧-೪) | -ಗಾಮಿನಿ -ಗಾಮಿನೀ. "ಅವ್ಯಕ್ತಾಙ್ಗಿ  
ಸೌಮ್ಯನಾಮ್ನಿ ಹಂಸವಾರಣಗಾಮಿನೀಮ್" ಮನುಂ ೩-೧೦ |

**ಗಾಮುಕ ಗಾಮುಕ (ವಿಂ)** ಸಂಚಾರದ ಸ್ವಭಾವದ,  
ನಡೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಗಾಮ್ (ಗತೌ) "ಠಕ್"  
(೩-೨-೧೪೪) |



**ಗಾಂಭೀರ್ಯ ಗಾಂಭೀರ್ಯ** (ನಂ) 1. ಅಳವಾಗಿರುವಿಕೆ, ತಳವನ್ನು ಮುಟ್ಟಲಾಗದಿರುವಿಕೆ. ಗಾಂಭೀರಸ್ಯ ಭಾವ: "ವ್ಯಜ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ಗಾಂಭೀರ್ಯ ದಧದಪಿ ರಂತುಮಜ್ಞನಾಭಿ: ಸಂಕ್ಷೋಭಂ ಜಘನವಿಘಟನೆನ ನೇತ:" ಮಾಘಂ ೮-೨೬। 2. ಭಯಂಕರ ಕೋಪ ಹರ್ಷ ಇತ್ಯಾದಿಗಳಿಂದ ಯಾವ ವಿಧವಾದ ವಿಕಾರವನ್ನೂ ಹೊಂದದಿರುವಿಕೆ. "ಭೀಶೋಕಕ್ರೋಧಹರ್ಷಾಃ ಗಾಂಭೀರ್ಯ ನಿವಿಕಾರತಾ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೫೩। ಇದು ನಾಯಕನ ಎಂಟು ವಿಧ ಸಾತ್ತ್ವಿಕ ಗುಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಶೋಭಾ ವಿಲಾಸೋ ಮಾಧುರ್ಯ ಗಾಂಭೀರ್ಯ ಸ್ಥೈರ್ಯತೇಜಸೀ। ಲಲಿತೋದಾರ್ಯ-ಮಿತೃಷ್ಣಾ ಸತ್ತ್ವಜಾ: ಪೌರುಷಾ ಗುಣಾ:" ಸಾಂ ದಂ ೩-೫೦। "ನಿರಸ್ತಗಾಂಭೀರ್ಯಮಪಾಸ್ತಪುಷ್ಪಕಂ ಪ್ರಕಮ್ಪಯಾಮಾಸ ನ ಮಾನಸಂ ನ ಸ:" ಮಾಘಂ ೧-೫೫। 3. ಚಿತ್ತಚಾಂಚಲ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಮನಸ್ಸು ನಿಶ್ಚಲವಾಗಿರುವಿಕೆ. "ಪುಷ್ಪೋ ಗಾಂಭೀರ್ಯಮನೋಹರಂ ವಪು:" ರಘುಂ ೩-೩೨। (ವಿಂ) 4. ಅಳವಿರುವ. ಗಾಂಭೀರ ಭವಮ್-ಗಾಂಭೀರ "ಜ್ಯ:" (೪-೩-೫೮)।

**ಗಾಯ ಗಾಯ** (ಪುಂ) ಗಾನ, ಹಾಡುವುದು. ಗೈ (ಶಬ್ದ) "ವಜ್" (೩-೩-೧೮)।

**ಗಾಯಕ ಗಾಯಕ** (ವಿಂ) ಹಾಡುಗಾರ. ಸಂಗೀತಗಾರ. ಗೈ (ಶಬ್ದ) "ಞ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಗತಮನುಗತವೀಣೇ-ರೇಕತಾಂ ವೇಣುನಾದೈ: ಕಲಮವಿಕಲತಾಲಂ ಗಾಯಕೈರ್ಬೋಧಿತೈ:" ಮಾಘಂ ೧೧-೧೦। **ಸಂಗೀತಗಾರನಲ್ಲಿರುವ ಮೂಲ ಗಳು:** ಲಜ್ಜೆ ಪಡುವುದು, ಹೆದರುವುದು, ಅಸ್ವಪ್ನವಾದ ಉಚ್ಚಾರಣೆ, ಮೂಗಿನಿಂದಲೇ ಸ್ವರ ಹೊರಡುವುದು, ಕಾಗೆಯಂತೆ ಕರ್ಕಶಸ್ವರ, ಹಾಡುವಾಗ ತಲೆಯಾಡಿಸುವುದು, ತಾಳಲಯಗಳನ್ನು ತಪ್ಪಿ ಹಾಡುವುದು, ಅಪಸ್ವರ ಮುಂತಾದುವು.

**ಗಾಯತ್ ಗಾಯತ್** (ವಿಂ) ಹಾಡುತ್ತಿರುವ. ಗೈ (ಶಬ್ದ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬)। **ಗಾಯಂತಿ ಗಾಯಂತಿ.** "ತುರ್ಯಾರಾವಿರಾಹಿತೋತ್ತಾಲತಾಲ-ಗಾಯಂತಿಭಿ: ಕಾಹಲಂ ಕಾಹಲಾಭಿ:" ಮಾಘಂ ೧೮-೫೪।

**ಗಾಯತ್ರಿ ಗಾಯತ್ರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಗ್ಗಲಿಮರ. ಗಾಯಂತೆ ತ್ರಾಯತೆ - ತ್ರೈತ್ಯ (ಪಾಲನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। "ಗಾಯತ್ರಿ ಬಾಲತನಯ: ಖದಿರೋ ದಂತಧಾವನ:" ಅಮಂ 1. 2. ಅರು ಅಕ್ಷರಗಳ ಪಾದಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಛಂದಸ್ಸು, ಅರನೆಯ ಛಂದಸ್ಸು. "ಉಕ್ತಾತ್ಯುಕ್ತಾ ತಥಾ ಮಧ್ಯಾ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾನ್ಯಾ ಸುಪ್ತವಿಕಾ। ಗಾಯತ್ರಿಪಿಣಗನುಷ್ಠುಪ್ ಚ ಬೃಹತೀ ಪಙ್ಕ್ತಿರೇವ ಚ" ವೃಂ ೨೦। 3. ಗಾಯತ್ರೀದೇವಿ, ಬ್ರಹ್ಮನ ಪತ್ನಿ, ವೇದಗಳ ಮಾತೆ. "ಗಾಯಂತೆ ತ್ರಾಯತೆ ಯಸ್ಮಾದ್ಗಾಯತ್ರೀಯಂ ತತ: ಸ್ಮೃತಾ"।

4. ಗಾಯತ್ರೀಮಂತ್ರ, ಬ್ರಹ್ಮೋಪದೇಶದ ಮಂತ್ರ. ತನ್ನ ಉಪಾಸಕನನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವ ಬ್ರಹ್ಮನನ್ನು ಇದು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಮಂತ್ರವೂ ಗಾಯತ್ರಿಯೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಯಿತು. "ಕರ್ಮಣಾ ಜಾಯತೇ ದ್ವಿಜ:" ಬ್ರಹ್ಮೋಪದೇಶರೂಪವಾದ ಉಪನಯನ ಸಂಸ್ಕಾರದಿಂದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣತ್ವವು ಬರುವುದರಿಂದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣತ್ವಕ್ಕೆ ಈ ಮಂತ್ರವು ಹೇತುವಾಯಿತು. "ಗಾಯತ್ರಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಮಸೃಜತ, ತ್ರಿಷ್ಠುಭಾ ರಾಜನ್ಯಂ, ಜಗತ್ಯಾ ವೈಶ್ಯಮ್"। ಗಾಯತ್ರೀಜಪವು ಸಕಲ ಪಾಪಗಳನ್ನೂ ಪರಿಹರಿಸುವುದು. "ಗಾಯತ್ರೀಂ ಜಪತೇ ಯಸ್ತು ಕಲ್ಯಾಣಮುತ್ಥಾಯ ಯೋ ದ್ವಿಜ:। ಸ ಲಿಂಪತಿ ನ ಪಾಪೇನ ಪದ್ಮಪತ್ರಮಿವಾಂಭಸಾ"। ಗಾಯತ್ರಿಯು ಪರಬ್ರಹ್ಮಸ್ವರೂಪವು ಮತ್ತು ಸಕಲ ವೇದಗಳ ಸಾರಭೂತವಾದುದು. "ಗಾಯತ್ರೇವ ಪರೋ ವಿಷ್ಣು: ಗಾಯತ್ರೇವ ಪರ:ಶಿವ:। ಗಾಯತ್ರೇವ ಪರೋ ಬ್ರಹ್ಮಾ ಗಾಯತ್ರೇವ ತ್ರಯೀ ಯತ:" ಕಾಶೀಖಂ 1. "ಅಕಾರಶ್ಚಾಪ್ಯುಕಾರಶ್ಚ ಮಕಾರಂ ಚ ಪ್ರಜಾಪತಿ:। ವೇದತ್ರಯಾನ್ನಿರದ್ಭುತ್ ಭೂರ್ಬುವ: ಸ್ವರಿ-ತೀತಿ ಚ। ತ್ರಿಮ್ಯ ಏವ ತು ವೇದಮ್ಯ: ಪಾದಂ ಪಾದಮದ್ಭುತ್"।

**ಗಾಯನ್ ಗಾಯನ್** (ವಿಂ) 1. ಗಾಯಕ. ಹಾಡುಗಾರ, ಸಂಗೀತಗಾರ. ಗಾಯತಿ-ಗೈ (ಶಬ್ದ) "ಞ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ದೇವಾನಾಂ ಗಾಯನಾ ಹೃತೇ ಚಾರಣಾ: ಸ್ತುತಿಪಾಠಕಾ:" ಕಾಶೀಖಂ 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬)। ಗಾಯನಿ ಗಾಯನೀ. 2. ಹಾಡುಗಾರಿಕೆಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. "ಸ್ತೇನಗಾಯನ-ಯೋಶ್ವಾಸಂ ತಕ್ಷಣೋ ವಾಘುಷಿಕಸ್ಯ ಚ" ಮನುಂ ೪-೨೧೦। 3. ಸ್ತುತಿಪಾಠಕ, ಹೊಗಳುವವನು. "ಸತ್ಯಂ ಕಿಲೇತತ್ ಸಾ ಪ್ರಾಹ ದೇವಾನಾಮಪಿ ಗಾಯನ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೭೮।

**ಗಾರಿತ್ರ ಗಾರಿತ್ರ** (ನಂ) ಅನ್ನ. ಗೃ (ನಿಗರಣ) "ಗಿತ್ರನ್" (೩ಂ ೪-೧೭೦)। ಗಾರಿತ್ರಮೋದನಮ್ ಇತಿ ಸಿಂ ಕೌಂ 1.

**ಗಾರುಡ ಗಾರುಡ** (ನಂ) 1. ವಿಷ್ಣುವಿನಿಂದ ಗರುಡನಿಗೆ ಉಕ್ತವಾದ ಒಂದು ಪುರಾಣ. ಗಾರುಡಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)। ಇದು ವ್ಯಾಸ ಮಹರ್ಷಿ ವಿರಚಿತವಾದ ಹದಿನೆಂಟು ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲಿ ಹದಿನೇಳನೆಯದು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಗಾರುಡಪುರಾಣ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ವಿಷವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ ಗರುಡಮಂತ್ರ, ವಿಷಮಂತ್ರ. 3. ಗರುಡನ ಆಕಾರದಂತೆ ನಿಲ್ಲಿಸಲ್ಪಡುವ ಸೈನ್ಯಗಳ ಗುಂಪು, ಗರುಡವೃಂದ. "ಗಾರುಡಂ ಚ ಮಹಾವ್ಯುಹಂ ಚಕ್ರೇ ಶಾಂತನವಸ್ತಥಾ" ಭಾಂ ಭೀಷಮಂ ೫೬-೨। 4. ಮಂರಕತಮಂಟ, ಪಚ್ಚಿ, ಗಾರುಡಮಂಟ. "ರಾಶಿರ್ಮಣಿ-ನಾಮಿವ ಗಾರುಡಾನಾಂ ಸಪದ್ಮರಾಗ: ಫಲಿತೋ ವಿಭಾತಿ" ರಘುಂ ೧೩-೫೩। 5. ಗರುಡದೇವತಾಕವಾದ ಅಸ್ತ್ರ. ಗಾರುಡೋ ದೇವತಾಸ್ಯ "ಅಞ್" (೪-೨-೨೪)। 6. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ.



ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ(ಪುಂ)ವಿಷಯದ್ದು. ಗಾರ್ಹಿಕ ವಿಷಯವೇ  
ಜೀವತಿ - "ಠಕ್" (೪-೪-೧೨)।

ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ(ನಂ) 1. ಮರಣ, ಪಶ್ಯ. ಗಾರ್ಹಿಕ  
ಇದಂ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಗಾರ್ಹಿಕಂ ಮರಣ-  
ಮರಣಗರ್ಭಂ ಹರಿನ್ಮಣಿ:" ಅಮಂ। "ತಸ್ಯೋಲ್ಲಸತಕಾಶ್ವನ-  
ಕುಣ್ಡಲಾಗ್ರಪ್ರತ್ಯುಪ್ತಗಾರ್ಹಿಕತರಣಭಾಸಾ" ಮಾಘಂ ೩-೫।  
2. ಗಾರ್ಹಿಕದೇವತಾಕವಾದ ಅಸ್ತು. ಗಾರ್ಹಿಕಾನ್ ದೇವತಾಸ್ಯ  
"ಅನ್" (೪-೨-೨೪)। "ಗಾರ್ಹಿಕಂ ತೀರಗತಸ್ತರಸ್ವೀ  
ಭುಜ್ಜನಾಶಾಯ ಸಮಾದೇಶ್ವರಮ್" ರಘುಂ ೧೬-೭೭।

ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ(ಪುಂ) 1. ಗಾರ್ಹಿಕ ಮಗ. ಗಾರ್ಹಿಕ: ಕುತ್ಸಿತ-  
ಮಪತ್ಯಮ್ ವಾ "ಞ:" (೪-೧-೧೪೭)। ಪಕ್ಷೆ "ಠಕ್"  
ಗಾರ್ಹಿಕ: ಗಾರ್ಹಿಕ: ಇಲ್ಲಿ ತಂದೆಯ ಹೆಸರನ್ನು ಹೇಳಿದ  
ತಾಯಿಯ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ಮಗನನ್ನು ಹೇಳುವುದರಿಂದ  
ಮಗನು ಕುತ್ಸಿತ (ನಿಂದಿತ-ನಿಕ್ಕಿಷ್ಟ) ನಾದನು. 2. ಗಾರ್ಹಿಕ  
ಗೋತ್ರದವರ ಸಂಘ, ಗಾರ್ಹಿಕವಂಶದವರ ಸಮೂಹ,  
ಗಾರ್ಹಿಕ ಗುಂಪು.

ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ(ಪುಂ) ಗಾರ್ಹಿಕ ಮಗ. ಗಾರ್ಹಿಕಾಪತ್ಯಂ  
ಪುಮಾನ್ "ಯಜ್" (೪-೧-೧೦೫)। "ಕನ್"। ಯಲೋಪ:  
(೬-೪-೧೫೧)।

ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ(ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಾರ್ಹಿಕ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ  
ಹೆಂಗಸು. ಗಾರ್ಹಿಕ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ "ಯಜ್" (೪-೧-೧೦೫)।  
"ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೬)। ಯಲೋಪ: (೬-೪-೧೫೦)।

ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ(ವಿಂ) 1. ಗಾರ್ಹಿಕ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
ಗಾರ್ಹಿಕೇದಮ್ "ಛ:" (೪-೨-೧೧೪)। 2. ಗಾರ್ಹಿಕನಿಂದ  
ಪ್ರೋಕ್ತವಾದ, ಗಾರ್ಹಿಕನಿಂದ ಮೊದಲು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಗಾರ್ಹಿಕೇಣ ಪ್ರೋಕ್ತಮ್ "ಛ:" (೪-೩-೧೦೧)।

ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ(ಪುಂ) ಗಾರ್ಹಿಕಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಗಾರ್ಹಿಕಾ-  
ಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಯಜ್" (೪-೧-೧೦೫)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್"  
(೪-೧-೧೬)। ಯಲೋಪ: (೬-೪-೧೫೦)। ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ.

ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ(ವಿಂ) ಗಾರ್ಹಿಕದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕದೇಶ  
ಭವ: "ಕುಜ್" (೪-೨-೧೨೭)।

ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ(ವಿಂ) ಗಾರ್ಹಿಕ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಕತ್ತೆಯ  
ಮೂತ್ರ ಮೊದಲಾದುದು. ಗಾರ್ಹಿಕೇದಮ್ "ಅನ್"  
(೪-೩-೧೨೦)।

ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ(ನಂ) ಲೋಭ, ಅತಿಯಾದ ಆಸೆ. ಗಾರ್ಹಿಕ  
ಉಪ್ಪು "ಯಜ್" (ವಾಂ ೭-೩-೩೧)। "ಪೀತ್ವಾ ಜಲಾನಾಂ  
ನಿಧಿನಾತಿಗಾರ್ಹಿಕಾತ್ ವೃದ್ಧಿಂ ಗತೇಷ್ಯಾತ್ಮನಿ ನೈವ ಮಾಂತಿ:"  
ಮಾಘಂ ೩-೭೩।

ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ(ವಿಂ) ಗೃಹಸಂಬಂಧವಾದ, ಹದಿನ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. ಗಾರ್ಹಿಕೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ(ಪುಂ) ಹದಿನ ರೆಕ್ಕೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ  
ಬಾಣ. ಗಾರ್ಹಿಕ: ಪಕ್ಷಿ ಯಸ್ಯ। ಬಾಣಗಳಿಗೆ ಹದಿನ ರೆಕ್ಕೆ  
ಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ(ವಿಂ) ಗಾರ್ಹಿಕ (ಶಿಶುವಿನ) ಶುದ್ಧ ಮತ್ತು  
ಬೆಳವಣಿಗೆಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ, ಗಾರ್ಹಿಕ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
ಗಾರ್ಹಿಕೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಗಾರ್ಹಿಕೋಮೈಜಾತಿಕರ್ಮ-  
ಚೌಡಮೌಜಿನಿಬಂಧನ:" ಮನುಂ ೨-೨೭।

ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ(ವಿಂ) ಗಾರ್ಹಿಕದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ಗಾರ್ಹಿಕ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. "ಬೇಜಿಕಂ ಗಾರ್ಹಿಕಂ ವೇನೌ ದ್ವಿಜಾನಾಮಪಮೃಜ್ಯತೇ"  
ಮನುಂ ೨-೨೭।

ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ(ನಂ) ಗಾರ್ಹಿಕಿಯರ ಸಮೂಹ, ಬಿಸಿರು  
ಹೆಂಗಸರ ಗುಂಪು. ಗಾರ್ಹಿಕಿನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಅನ್" (೪-೨-೩೮)।

ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ(ವಿಂ) ಗೃಹಸಂಬಂಧವಾದ, ಮನೆಗೆ ಸಂಬಂಧಿ  
ಸಿದ. ಗಾರ್ಹಿಕೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ(ವಿಂ) ಗೃಹಪತಿ ಸಂಬಂಧವಾದ,  
ಮನೆಯ ಯಜಮಾನನಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಗಾರ್ಹಿಕೇದಮ್  
"ಅನ್" (೪-೧-೮೪)।

ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ(ಪುಂ) 1. ಯಜ್ಞದ ಮೂರು  
ಅಗ್ನಿಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು, ಮನೆಯ ಯಜಮಾನನು ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರ  
ಕಾಗಿ ಇಟ್ಟಿರುವ ಅಗ್ನಿ. ಗಾರ್ಹಿಕಿನಾ ಸಂಯುಕ್ತ:-ಗಾರ್ಹಿಕ  
"ಯಜ್" (೪-೪-೯೦)। 2. ಮನೆಯ ಯಜಮಾನತನ.

ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ(ಪುಂ) ಗೃಹಸ್ಥನು ಪ್ರತಿದಿನವೂ  
ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ ಪಂಚಯಜ್ಞಗಳು. ಗಾರ್ಹಿಕ  
ಮೇಧ: "ತಥೈವ ರಾಜಭೂಗಾರ್ಹಿಕೇವಿತಾನವಿದ್ಯೋರವಿಜೃಂಭಿ-  
ತೇಷು" ಭಾಗಂ ೫-೧೧-೨।

ಗಾರ್ಹಿಕ ಗಾರ್ಹಿಕ(ನಂ) 1. ಗೃಹಸ್ಥನ ಭಾವ, ಮನೆಯ  
ಯಜಮಾನನಾಗಿರುವಿಕೆ, ವಿವಾಹಾನಂತರ ಸಂಸಾರಿಯಾಗಿ  
ಮನೆಯಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವಿಕೆ. ಗಾರ್ಹಿಕೇದಮ್ ಭಾವ: "ಯಜ್"  
(೫-೧-೧೨೪)। 2. ಗೃಹಸ್ಥನ ಕರ್ತವ್ಯವಾದ ಪಂಚ  
ಯಜ್ಞಗಳು. ಗಾರ್ಹಿಕೇದಮ್ ಕರ್ಮ "ಯಜ್" (೫-೧-೧೨೪)।

ಗಾಲ ಗಾಲ(ಪುಂ) 1. ಪ್ರವಹಿಸುವುದು, ಹರಿಯುವುದು.  
2. ಸುರಿಯುವುದು, ಸೋರುವುದು. ಗಾಲ (ಪ್ರಸವಣಿ)  
ಭಾವೆ "ಯಜ್" (೩-೩-೧೮)।

ಗಾಲ ಗಾಲ(ನಂ) 1. ಕರಗಿಸುವುದು. ಗಾಲ (ಪ್ರಸವಣಿ) +  
ಣಿವ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಹರಿಯುವುದು.



**ಗಾಲವ ಗಾಲವ**(ಪುಂ) 1. ಲೋಧ್ಯದ ಗಿಡ. ಗಾಲ ನೆವಸಾವಂ  
ವಾಯತಿ — ಅಂವೆ (ಶಿವಣಿ) “ಕ:” (೩-೨-೩)। “ಗಾಲವ:  
ಶಾವರೋ ಲೋಧ:” ಅಮಂ । 2. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನ ಒಬ್ಬ ಶಿಷ್ಯ.  
[ಈ ಯುಷಿಯು ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನಲ್ಲಿ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿ  
ಗುರುದಕ್ಷಿಣೆಯನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಬೇಕೆಂದು ಹೇಳಿದನು.  
ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಇಷ್ಟಪಡಲಿಲ್ಲ. ಆದರೂ  
ಶಿಷ್ಯನು ಬಲಾತ್ಕಾರಮಾಡಿದುದರಿಂದ ಒಂದು ಕಿವಿಯು  
ಮಾತ್ರ ಕಪ್ಪಾಗಿರುವ 800 ಬಿಳಿಯ ಕುದುರೆಗಳನ್ನು  
ತಂದೊಪ್ಪಿಸಬೇಕೆಂದು ಹೇಳಲು ಗಾಲವನು ವಿಷ್ಣುವನ್ನು  
ಕುರಿತು ತಪಸ್ಸುಮಾಡಿದನು. ವಿಷ್ಣುವಿನ ಆಜ್ಞೆಯಂತೆ  
ಗರುಡನು ಈತನನ್ನು ಯಯಾತಿರಾಜನಲ್ಲಿಗೆ ಕರೆತಂದು  
ಬಿಟ್ಟನು. ಯಯಾತಿಯು ತನ್ನ ಮಗಳಾದ ಮಾಧವಿ  
ಯನ್ನು ಕಳುಹಿಸಿಕೊಟ್ಟು ಅವಳ ಮೂಲಕ ಅಶ್ವಗಳನ್ನು  
ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಳ್ಳಬಹುದೆಂದು ಹೇಳಿದನು. ಗಾಲವನು  
ಮಾಧವಿಯ ಮೂಲಕ ಕೆಲವು ರಾಜರಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ 600  
ಕುದುರೆಗಳನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿ ಅವುಗಳನ್ನೂ ಮತ್ತೆ 200  
ಕುದುರೆಗಳಿಗೆ ಬದಲಾಗಿ ಮಾಧವಿಯನ್ನೂ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನಿಗೆ  
ಒಪ್ಪಿಸಿದನು.]

**ಗಾಲಿ ಗಾಲಿ** (ಪುಂ) ಆಕ್ರೋಶ, ಬೈಗಳು, ಶಾಪ. ಗಲ  
(ಪ್ರಸವಣಿ) + ಗಿಚ್ “ಇನ್” (ತಂ ೪-೧೧೭)। “ಗಾಲಿ:  
ಶಪನಮ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಗಾಲಿತ ಗಾಲಿತ** (ವಿಂ) ದ್ರವವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕರಗಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಗಲ (ಪ್ರಸವಣಿ) + ಗಿಚ್ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)।  
“ಗಾಲಿತಸ್ಯ ಸುವರ್ಣಸ್ಯ ಷೋಡಶಾಂಶೇನ ಸೀಸಕಮ್” ।

**ಗಾಲೋಡಿತ ಗಾಲೋಡಿತ** (ನಂ) 1. ವಿಚಾರಮಾಡುವುದು,  
ವಿಮರ್ಶಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 2. ರೋಗಗೀಡಿತನಾದವನು.  
3. ಉನ್ಮಾದಹೊಂದಿದವನು, ಚಿತ್ತಭ್ರಮೆಹೊಂದಿದವನು.  
4. ಮೂರ್ಛ.

**ಗಾಲೋಡ್ಯ ಗಾಲೋಡ್ಯ** (ನಂ) ಕಮಲದ ಬೀಜ.

**ಗಾಹು - ವಲೋಡನೆ** (ಘಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ವೇಂ) । ಗಾಹತೇ ।  
ಜಗಾಹೇ । ಗಾಹಿತಾ, ಗಾಹಾ । ಗಾಹಿಷ್ಯತೇ, ವಾಹ್ಯತೇ । ಗಾಹತಾಮ್ ।  
ಅಗಾಹತ । ಗಾಹತ । ಗಾಹಿಷೀಷ್ಠ । ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಪ್ರವೇಶಿಸು,  
ಒಳಕ್ಕೆ ಹೋಗು. 2. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿ ಸ್ನಾನಮಾಡು.  
3. ಹೊಂದು, ಪಡೆ. “ಅಗಾಹತಾಷ್ಟಾದಶತಾಂ ಜಿಗಿಷಯಾ  
ನವದ್ವಯದ್ವಿಪಠ್ಯಜಯಶ್ರಿಯಾಮ್” ನೈಷಂ ೧-೪ ।

**ಕರ್ಮಣಿ:**—ಗಾಹ್ಯತೇ । ಜಗಾಹೇ । ಗಾಹಿತಾ, ಗಾಹಾ ।  
ಗಾಹಿಷ್ಯತೇ, ವಾಹ್ಯತೇ । ಗಾಹ್ಯತಾಮ್ । ಅಗಾಹ್ಯತ । ಗಾಹ್ಯತೇ ।  
ಅಗಾಹಿ । ಅಗಾಹಿಷ್ಯತ ।

**ಸನಿ:**—ಜಿಗಾಹಿಷತೇ, ಜಿಗಾಹ್ಯತೇ । ಜಿಗಾಹಿಷಾಂ ಚಕ್ರೇ,  
ಜಿಗಾಹ್ಯಾಂ ಚಕ್ರೇ, —ಬಭೂವ, —ಆಸ । ಜಿಗಾಹಿಷಿತಾ,  
ಜಿಗಾಹ್ಯಿತಾ । ಜಿಗಾಹಿಷತಾಮ್, ಜಿಗಾಹ್ಯತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತ್ಸು:**—ಗಾಹಿತವ್ಯ:, ಗಾಹ್ಯವ್ಯ: । ಗಾಹನೀಯ: । ಗಾಹ್ಯ: ।  
ಗಾಹ:, ಗಾಹವಾನ್ । ಗಾಹಮಾನ: । ಗಾಹುಮ್, ಗಾಹಿತುಮ್ । ಗಾಹಮ್ ।  
ಗಾಹಿತ್ವಾ, ಗಾಹ್ಯವಾ । ವಿಗಾಹ್ಯ ।

**ಗಾಹ ಗಾಹ** (ಪುಂ) 1. ಅಳ. ಗಾಹ್ಯತೇ—ಗಾಹು (ವಲೋಡನೆ)  
ಕರ್ಮಂ “ವಾ” (೩-೩-೧೯) । 2. ನೀರು ಮೊದಲಾ  
ದುವುಗಳಲ್ಲಿ ಮುಳುಗುವುದು. 3. ನೀರಿನೊಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯು  
ವುದು. ಗಾಹು ಭಾವೇ “ವಾ” (೩-೩-೧೮) । (ವಿಂ) 4.  
ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗುವ, ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿ ಸ್ನಾನ  
ಮಾಡುವ. 5. ಪ್ರವೇಶಿಸುವ. ಗಾಹತೇ — ಗಾಹು ಕರ್ಮಂ  
“ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಗಾಹನ ಗಾಹನ** (ನಂ) 1. ನೀರಿನೊಳಗೆ ಮುಳುಗುವುದು,  
ನೀರಿನೊಳಗೆ ಮುಳುಗಿ ಸ್ನಾನಮಾಡುವುದು. ಗಾಹು  
(ವಲೋಡನೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) । 2. ನೀರಿ  
ನೊಳಗೆ ಇಳಿಯುವುದು. 3. ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು.

**ಗಾಹನೀಯ ಗಾಹನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಮುಳುಗಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ, ಮುಳುಗಿ ಸ್ನಾನಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಗಾಹು  
(ವಲೋಡನೆ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । 2. ಮುಳುಗಲು  
ಶಕ್ಯವಾದ, ಸ್ನಾನಮಾಡಬಹುದಾದ. 3. ಪ್ರವೇಶಿಸ  
ಬಹುದಾದ. 4. ನೀರಿನೊಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ,  
ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ.

**ಗಾಹಮಾನ ಗಾಹಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ನೀರಿನೊಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯು  
ತ್ತಿರುವ. 2. ನೀರಿನೊಳಗೆ ಮುಳುಗಿ ಸ್ನಾನಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ. ಗಾಹು(ವಲೋಡನೆ) “ಶಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪) ।  
3. ಪ್ರವೇಶಿಸುತ್ತಿರುವ. “ತಸ್ಮಿನ್ ವನಂ ಗೋಪ್ತರಿ ಗಾಹ-  
ಮಾನೇ” ರಘುಂ ೨-೧೪ ।

**ಗಾಹಿತ ಗಾಹಿತ** (ವಿಂ) 1. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
2. ನೀರಿನೊಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಗಾಹು (ವಲೋಡನೆ) +  
ಗಿಚ್ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) । 3. ಪ್ರವೇಶಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಗಾಹಿತು ಗಾಹಿತು** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರವೇಶಿಸುವ. 2. ನೀರಿನಲ್ಲಿ  
ಮುಳುಗುವ, ಮುಳುಗಿ ಸ್ನಾನಮಾಡುವ. 3. ನೀರಿನೊಳಕ್ಕೆ  
ಇಳಿಯುವ. ಗಾಹು (ವಲೋಡನೆ) “ಶತ್” (೩-೧-೧೨೪) ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪) । ಗಾಹಿತ್ರಿ ಗಾಹಿತ್ರಿ.

**ಗಾಹ್ಯ ಗಾಹ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರವೇಶಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಮುಳುಗಿ  
ಸ್ನಾನಮಾಡಬಹುದಾದ. 3. ಸ್ನಾನಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ. ಗಾಹು (ವಲೋಡನೆ) “ಘ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪) ।  
4. ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.



ಗಿರ್ ಗಿರ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಾತು, ಭಾಷೆ. ಗೃ (ಶಬ್ದ) "ವಿವ್" (ವಾಂ 3-3-94)। ಇತ್ (3-1-100)। "ಪ್ರಾಪಯನ್ ಪವನವ್ಯಾಧೇಗಿರಮತ್ತರಪಕ್ಷತಾಮ್" ಮಾವಂ 2-15। "ಠಾಪ್"। ಗಿರಾ ಗಿರಾ. 2. ಸರಸ್ವತಿ.

ಗಿರಿ ಗಿರಿ (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಗಿರತಿ - ಗೃ (ನಿಗರಣ) "ಕಿ:" ಬಾಹುಂ। ಇಕ್ (ವಾಂ 3-3-100)। "ವನಂ ತದೇತನ್ಮಹಿತಂ ತಪೋವನಂ ಗಿರಿ ಚ ವೇಶಿ ತ್ರಿದಿವೇಶ್ವರಾಲಯಮ್" ಯಾದಂ 14-28। 2. ಬೆಂಜು. 3. ಶಿಲಾಜಿತ್ತು. 4. ಬಂದು ಎಧ ನೇತ್ರರೋಗ. 5. ಸಂಗುಪ್ಪದು. (ವಿಂ) 6. ಪೂಜ್ಯ, ಗೌರವಾರ್ಹ. "ಗಿರಿ: ಪೂಜ್ಯೇಷ್ವರಿಜಿ ಕನ್ದುಕೆ। ಶೇಲೆ ಗೇರೇಕೆ ಗಿರಿವಿಪಿ" ಹೇಮಂ।

ಗಿರಿಕ ಗಿರಿಕ (ಪುಂ) ಅಶ್ವರ, ಪರಶಿವ. ಗಿರೋ ಕಾಯತಿ - ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕ:" (3-2-4)।

ಗಿರಿಕಚ್ಚಪ ಗಿರಿಕಚ್ಚಪ (ಪುಂ) ಬೆಟ್ಟದ ಗವಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸ ಮಾಡುವ ಆಮೆ. ಗಿರೋ ಪರ್ವತಗುಹಾಪಾಂ ಕಚ್ಚಪ:

ಗಿರಿಕಣ್ಡಕ ಗಿರಿಕಂಟಕ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರನ ಪತ್ನಿಯುಧ. ಗಿರೇ: ಕಣ್ಡಕ ಇವ।

ಗಿರಿಕರ್ಣಿಕಾ ಗಿರಿಕರ್ಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ. ಗಿರಿ: ಕರ್ಣ ಇವ ಯಸ್ಯಾ:। "ಕನ್" (4-3-94)। "ಭೂಮಿತಧಾತ್ರಿ ಗಿರಿಕರ್ಣಿಕಾಽಪಿವಿದೀಪಾ ಸಮುದ್ರಾಂಬರಮೇಖಲಾ ಕ್ಕು:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಗಿರಿಕರ್ಣಿ ಗಿರಿಕರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎಷ್ಟು ಕ್ರಾಂತಿ ಗಡ. 2. ಸಟ್ಟುಗದ ಹೆಂಜು.

ಗಿರಿಕಾ ಗಿರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆಟ್ಟಲಿ. ಗಿರಿರೇವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:" (4-3-94)।

ಗಿರಿಚರ ಗಿರಿಚರ (ಪುಂ) 1. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ. ಗಿರೋ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಠ:" (3-2-16)। (ವಿಂ) 2. ಪರ್ವತ ದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. "ಗಿರಿಚರ ಇವ ನಾಗ: ಪ್ರಾಣಸಾರಂ ವಿಭರ್ತಿ" ಶಾಕುಂ 2-4। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಢಿಪ್" (4-1-15)। -ಚರಿ -ಚರಿ.

ಗಿರಿಜ ಗಿರಿಜ (ನಂ) 1. ಅಭ್ಯುಕ್ತ, ಕಾಗೆಬುಗಾರ. 2. ಶಿಲಾ ಜಿತ್ತು. 3. ಕೃಷ್ಣಲೋಹ, ಕಬ್ಬಿಣ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜಾ -ಜಾ. 4. ಮಾದಳದಗಡ. 5. ಗೌರಿ, ಪಾರ್ವತಿ. ಗಿರೇಜಯತೆ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತವೇ) "ಢ:" (3-2-90)। "ತೌ ಪಾರಿಜಾತ-ಪ್ರಸವಪ್ರಸಕ್ತೋ ಮಹತ್ ಸಿಘೇವೇ ಗಿರಿಜಾಗಿರೀಶೌ" ಕುಮಾಂ 1-30। (ವಿಂ) 6. ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಗಿರೋ ಜಾಯತೆ - ಜನಿ "ಢ:" (3-2-90)।

ಗಿರಿಜಾತನಯ ಗಿರಿಜಾತನಯ (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪುಷ್ಕುಲ. 2. ಗಣಪತಿ. ಗಿರಿಜಾಯಾಸ್ತನಯ:। एवं -ನಂದನ: -ಸಂದನ:, -ಪುತ್ರ: -ಪುತ್ರ:, -ಸುತ: -ಸುತ:, -ಸುತು: -ಸುತು:.

ಗಿರಿಜಾಪತಿ ಗಿರಿಜಾಪತಿ (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. ಗಿರಿಜಾಯಾ: ಪತಿ:।

ಗಿರಿಜಾಮಲ ಗಿರಿಜಾಮಲ (ನಂ) ಅಭ್ಯುಕ್ತ. ಕಾಗೆಬುಗಾರ. ಗಿರಿಜಾಯಾ: ಬೀಜರೂಪಂ ಮಲಮ್।

ಗಿರಿಜ್ವರ ಗಿರಿಜ್ವರ (ಪುಂ) ವಜ್ರಾಯುಧ. ಗಿರಿ ಜ್ವರಯತಿ - ಜ್ವರ (ರೋಗ) + ಗಿಚ್ "ಅಚ್" (3-1-134)।

ಗಿರಿದುರ್ಗ ಗಿರಿದುರ್ಗ (ನಂ) ಬೆಟ್ಟದ ಕೋಟೆ, ಪರ್ವತ ರೂಪವಾದ ಕೋಟೆ, ಶತ್ರುಗಳ ಭಯವಿಲ್ಲದೆ ರಾಜರು ವಾಸಮಾಡುವ ಸ್ಥಳ. ಗಿರಿರೇವ ದುರ್ಗಮ್। "ಘನವದುರ್ಗ ಮಹಿದುರ್ಗಮದುರ್ಗ ವಾಕ್ಸಮೇವ ಚ। ನೃದುರ್ಗ ಗಿರಿದುರ್ಗ ವಾ ಸಮಾಶ್ರಿತಯ ವಸೇತ್ ಪುರೀಮ್। ಸರ್ವೇಣ ತು ಪ್ರಯತ್ನೇನ ಗಿರಿದುರ್ಗ ಸಮಾಶ್ರಯೇತ್" ಮನುಂ 9-90, 91।

ಗಿರಿನದಿ ಗಿರಿನದಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಹರಿಯುವ ಹೊಳೆ, ಬೆಟ್ಟದಿಂದ ಹೊರಡುವ ಪ್ರವಾಹ.

ಗಿರಿನಂದಿನಿ ಗಿರಿನಂದಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಿಮವಂತನ ಮಗಳು, ಪಾರ್ವತಿ. ಗಿರೇ: ಹಿಮಾದ್ರೇ: ನಂದಿನಿ। 2. ಗಂಗಾ ನದಿ. 3. ನದಿ. ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ನದಿಗಳು ಬೆಟ್ಟಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಕಲಿಂದಗಿರಿನಂದಿನಿ-ತಟಸುರದ್ರಮಾಲಂಬಿನಿ ಮದೀಯಮತಿಚುಂಬಿನಿ ಭವತು ಕಾಪಿ ಕಾದಂಬಿನಿ" ರಸಗಂ।

ಗಿರಿಪುಷ್ಪಕ ಗಿರಿಪುಷ್ಪಕ (ನಂ) ಶಿಲಾಜಿತ್ತು. ಗಿರೇ: ಪುಷ್ಪಮಿವ ಕಾಯತಿ - ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕ:" (3-2-4)।

ಗಿರಿಪ್ರಿಯಾ ಗಿರಿಪ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ಚಮರೀಮೃಗ. ಗಿರಿ: ಪ್ರಿಯಾಸ್ಯಾ:।

ಗಿರಿಭಿಡ್ ಗಿರಿಭಿಡ್ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. 2. ನದಿ, ಹೊಳೆ. ಗಿರಿ ಭಿನತ್ತಿ - ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣ) "ವಿವ್" (3-2-61)।

ಗಿರಿಭೂ ಗಿರಿಭೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಾರ್ವತಿ. 2. ಗಂಗಾನದಿ. 3. ಪರ್ವತಪ್ರದೇಶ. (ವಿಂ) 4. ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಗಿರೋ ಭವತಿ - ಭೂ "ವಿವ್" (3-2-96)।

ಗಿರಿಮಲ್ಲಿಕಾ ಗಿರಿಮಲ್ಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆಟ್ಟಮಲ್ಲಿಗೆ. ಗಿರಿಮಲ್ಲೀವ "ಕನ್" (4-3-96)।

ಗಿರರಾಜ್ ಗಿರರಾಜ್ (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತಗಳ ರಾಜ, ಹಿಮವಂತ. ಗಿರಿಣಾಂ ರಾಜ್। 2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಪರ್ವತ,



ಮೊದ್ಲ ಬಿಟ್ಟು. ಗಿರೀಶ ರಾಜತೇ—ರಾಜ (ದೀಪ್ತ) “ವಿವ್”  
(೩-೨-೬೧) ।

ಗಿರರಾಜ ಗಿರರಾಜ (ಪುಂ) ಪರ್ವತಗಳ ರಾಜ, ಹಿಮವಂತ.

ಗಿರೀಣಾ ರಾಜಾ “ಽಚ್” (೪-೪-೯೧) ।

ಗಿರರಾಜಪುತ್ರೀ ಗಿರರಾಜಪುತ್ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಮವಂತನ  
ಮಗಳಾದ ಪಾರ್ವತಿ. ಗಿರರಾಜಸ್ಯ ಪುತ್ರೀ । “ಸಂಭಾವಿತಾನಾಂ  
ಗಿರರಾಜಪುತ್ರೀ ಗೃಹೇಭವನ್ಮಜ್ಜಲಗೀತಕಾನಿ” ಕುಮಾಂ  
೧೧-೩೪ ।

ಗಿರವಾಸಿನ್ ಗಿರವಾಸಿನ್ (ವಿಂ) ಬಿಟ್ಟದಲ್ಲಿ ವಾಸ  
ಮಾಡುವ. ಗಿರೌ ವಸತಿ — ವಸ (ನಿವಾಸ) “ಗಿರಿತಿ”  
(೩-೧-೧೩೪) ।

ಗಿರಿವ್ರಜ ಗಿರಿವ್ರಜ (ಪುಂ) ಜರಾಸಂಧನ ನಗರ, ಮಗಧ  
ದೇಶದ ರಾಜಧಾನಿ. ಗಿರೀಣಾಂ ವ್ರಜೋ ಯತ್ರ ।

ಗಿರಿಶ ಗಿರಿಶ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಗಿರಿಸ್ಯಾಸ್ತಿ  
“ಶಃ” (೪-೨-೧೦೦) । “ಪ್ರತ್ಯಾಹತಾಸ್ತ್ರೋ ಗಿರಿಶ-  
ಪ್ರಭಾವಾತ್ಮನಯವಶಾಂ ಶಿಥಿಲೀಚಕಾರ” ರಘುಂ ೨-೪೧ ।

ಗಿರಿಶಯ ಗಿರಿಶಯ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಗಿರೌ  
ಶೇತೇ — ಶೀಙ್ (ಸ್ವಪ್ನ) “ಅಚ್” (೩-೨-೧೪) ।

ಗಿರಿಶೃಂಗ ಗಿರಿಶೃಂಗ (ಪುಂ) 1. ಗಣಪತಿ. (ನಂ) 2.  
ಪರ್ವತದ ಶಿಖರ. ಗಿರೇಃ ಶೃಂಗಮಾಕಾರೇಣಾಸ್ತಸ್ಯ “ಅಚ್”  
(೪-೨-೧೧೭) ಗಿರೇಃ ಶೃಂಗಂ ಶಿಖರಂ ವಾ ।

ಗಿರಿಸಾರ ಗಿರಿಸಾರ (ಪುಂ) 1. ಕಬ್ಬಿಣ. 2. ತವರ. ಗಿರೇಃ  
ಸಾರಃ । 3. ಮಲಯ ಪರ್ವತ. “ಗಿರಿಸಾರಃ ಪುಮಾನ್  
ಲೋಹೇ ವಜ್ರೇ ಮಲಯಪರ್ವತೇ” ಮೇದಿಂ ।

ಗಿರಿಸುತ ಗಿರಿಸುತ (ಪುಂ) 1. ಮೈನಾಕಪರ್ವತ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
—ಸುತಾ — ಸುತಾ. 2. ಪಾರ್ವತಿ. ಗಿರೇಃ ಸುತಃ ಸುತಾ ವಾ ।

ಗಿರಿಸ್ತವಾ ಗಿರಿಸ್ತವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಿರಿನದಿ, ಬಿಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ  
ಹರಿಯುವ ನದಿ. ಗಿರೇಃ ಸ್ರವತಿ — ಸ್ತು (ಗತೌ) “ಅಚ್”  
(೩-೧-೧೩೪) ।

ಗಿರಿಂದ್ರ ಗಿರಿಂದ್ರ (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತಗಳ ರಾಜ, ಹಿಮವಂತ.  
ಗಿರೀಣಾಮಿन्द्रಃ । “ವಿನೋದಯಾಮಾಸ ಗಿರಿಂದ್ರಪುತ್ರೀಮ್” ಕುಮಾಂ  
೯-೧೮ । 2. ಕೃತಾಸಕ್ತ, ಬಡೆಯನಾದ ಪರಮೇಶ್ವರ.  
ಗಿರೇಃ ಕೆಲಾಸಸ್ಯ ಇಂದ್ರಃ ಇಶ್ವರಃ ।

ಗಿರೀಶ ಗಿರೀಶ (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಈಶ್ವರ. ಗಿರೇಃ ಕೆಲಾಸಸ್ಯ  
ಇಶಃ । “ಗಿರೀಶಗೌರೈರ್ಹೃದಯಂ ಜಹಾರ ಮುಧೇ ನ ಹೃದಾ ಕಿಮು  
ಬಾಲಕೇಲಿಃ” ಕುಮಾಂ ೧೧-೪೦ । 2. ಹಿಮಾಚಲ, ಪರ್ವತ  
ಗಳ ರಾಜ. ಗಿರೀಣಾಮೀಶಃ । 3. ಬೃಹಸ್ಪತಿ. ಗಿರಾಂ  
ವಾಚಾಮೀಶಃ । “ಗಿರೀಶೋ ವಾಕ್ಪತೌ ಹರೇ । ಅದ್ರಿರಾಜೇ” ಹೇಮಂ ।

ಗಿಲ ಗಿಲ (ಪುಂ) 1. ಮೊಸಳೆ. ಗಿರತಿ — ಗೃ (ನಿಗರಣ)  
“ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । ರಸ್ಯ “ಲಃ” (೮-೨-೨೧) ।  
(ವಿಂ) 2. ನುಂಗುವ, ತಿನ್ನುವ.

ಗಿಲನ ಗಿಲನ (ನಂ) ನುಂಗುವುದು. ತಿನ್ನುವುದು. ಗೃ  
(ನಿಗರಣ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) ।

ಗಿಲಿ ಗಿಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನುಂಗುವುದು. ಗೃ (ನಿಗರಣ) “ಇಕ್”  
(ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮) ।

ಗೀತ ಗೀತ (ನಂ) 1. ಗಾನ, ಹಾಡುಗಾರಿಕೆ. ಗೀಯತೇ — ಗೈ  
(ಶಬ್ದ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) । “ಗೀತಾಂತರೇಷು  
ಶ್ರಮವಾರಿಲೇಶಃ ಕಿಂಚಿತ್ಸಮುಚ್ಚವಾಸಿತಪತ್ರಲೇಖಮ್” ಕುಮಾಂ  
೩-೩೮ । (ವಿಂ) 2. ಹಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಗೈ ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಃ”  
(೩-೨-೧೦೨) । 3. ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. “ಅತ್ರ  
ಗಾಥಾ ವಾಯುಗೀತಾಃ ಕೀರ್ತಯಂತಿ ಪುರಾವಿದಃ” ಮನುಂ ೯-೪೨ ।

ಗೀತಗೋವಿಂದ ಗೀತಗೋವಿಂದ (ನಂ) ಜಯದೇವ ಕವಿ  
ರಚಿತವಾದ ಗೀತಗೋವಿಂದ ಕಾವ್ಯ. ಗೀತೋ ಗೋವಿಂದೋಽತ್ರ ।  
ಈ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಹನ್ನೆರಡು ಸರ್ಗಗಳಿರುವುವು. ಇದರಲ್ಲಿ  
ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಚರಿತ್ರೆಯು ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದು.

ಗೀತಜ ಗೀತಜ (ವಿಂ) ಸಂಗೀತವನ್ನರಿತವನು, ಸಂಗೀತ  
ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಅಭ್ಯಾಸಮಾಡಿದವನು. ಗೀತಂ ಜಾನಾತಿ—ಜ್ಞಾ  
(ಅವಬೋಧನ) “ಕಃ” (೩-೨-೩) ।

ಗೀತಪ್ರಿಯ ಗೀತಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾದೇವ, ಮಹೇಶ್ವರ.  
(ವಿಂ) 2. ಸಂಗೀತದಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳವನು. ಗೀತಂ ಪ್ರಿಯಂ  
ಯಸ್ಯ ।

ಗೀತಮೋದಿನ್ ಗೀತಮೋದಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಕನ್ನರ. ಗೀತೇನ  
ಮೋದತೇ—ಮುದ (ಹರ್ಷ) “ಗಿರಿತಿ” (೩-೨-೭೮) । (ವಿಂ) 2.  
ಸಂಗೀತದಿಂದ ಸಂತೋಷಪಡುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಕೀಪ್”  
(೪-೧-೪) । —ಮೋದಿನಿ — ಮೋದಿನೀ.

ಗೀತಾ ಗೀತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆತ್ಮವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ  
ಶ್ಲೋಕರೂಪವಾದ ಗ್ರಂಥ. ರಾಮಗೀತಾ, ಭಗವದ್ಗೀತಾ,  
ಶಿವಗೀತಾ ಇತ್ಯಾದಿ. ಅದರ ಗೀತಾ ಪದವು ಶ್ರೀಮದ್ಭಗವತ್  
ದ್ವೀತಿಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ. “ಗೀತಾ ಸುಗೀತಾ ಕರ್ತವ್ಯಾ  
ಕಿಮನ್ಯಃ ಶಾಸ್ತ್ರಸಂಕ್ಷರೈಃ । ಯಾ ಸ್ವಯಂ ಪಶ್ಯನಾಭಸ್ಯ  
ಮುಖಪದ್ಮಾದಿನಿಸ್ತುತಾ” । ಶ್ರೀಭಗವದ್ವೀತಿಯು ಮಹಾ  
ಭಾರತದ ಭೀಷ್ಮಪರ್ವದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. ಯುದ್ಧ  
ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ನೋಡಿ ಬಹಳ ಮರುಕಗೊಂಡು  
ಯುದ್ಧದಿಂದ ವಿಘ್ನವಿನಾಗಿದ್ದ ಅರ್ಜುನನಿಗೆ ಪುನಃ  
ಯುದ್ಧೋನ್ಮುಖನಾಗುವಂತೆ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಮಾಡಿದ  
ತತ್ತ್ವೋಪದೇಶವೇ ಈ ಭಗವದ್ವೀತೆ. ಇದು ಅರ್ಜುನನ



ವ್ಯಾಜದಿಂದ ಇಡೀ ಜಗತ್ತಿಗೇ ಮಾಡಿದ ತತ್ತ್ವೋಪದೇಶ.

ಶ್ರೀಮದ್ಭಗವದ್ಗೀತೆಯಲ್ಲಿ ಹದಿನೆಂಟು ಅಧ್ಯಾಯಗಳಿವೆ.

- 1 ನೆಯ ಅಧ್ಯಾಯದಲ್ಲಿ ಅರ್ಜುನವಿಷಾದಯೋಗ.
- 2 ನೆಯ " ಸಾಂಖ್ಯಯೋಗ.
- 3 ನೆಯ " ಕರ್ಮಯೋಗ.
- 4 ನೆಯ " ಜ್ಞಾನಯೋಗ.
- 5 ನೆಯ " ಕರ್ಮಸಂನ್ಯಾಸಯೋಗ.
- 6 ನೆಯ " ಧ್ಯಾನ(ಯೋಗಾಭ್ಯಾಸ)ಯೋಗ.
- 7 ನೆಯ " ವಿಜ್ಞಾನಯೋಗ.
- 8 ನೆಯ " }
- 9 ನೆಯ " } ಅಕ್ಷರ ಪರಬ್ರಹ್ಮಯೋಗ.
- ಮತ್ತು
- 10 ನೆಯ " }
- 11 ನೆಯ " ವಿಶ್ವರೂಪಸಂದರ್ಶನಯೋಗ.
- 12 ನೆಯ " ಭಕ್ತಿಯೋಗ.
- 13 ನೆಯ " ಕ್ಷೇತ್ರಕ್ಷೇತ್ರಜ್ಞ ವಿಭಾಗಯೋಗ.
- 14 ನೆಯ " ಗುಣತ್ರಯವಿಭಾಗಯೋಗ.
- 15 ನೆಯ " ಪುರುಷೋತ್ತಮಯೋಗ.
- 16 ನೆಯ " ದೈವಾಸುರಸಂಪದ್ವಿಭಾಗಯೋಗ.
- 17 ನೆಯ " ಶ್ರದ್ಧಾತ್ರಯವಿಭಾಗಯೋಗ.
- 18 ನೆಯ " ಮೋಕ್ಷಸಂನ್ಯಾಸಯೋಗ.

ಗೀತಾಚಾರ್ಯ ಗೀತಾಚಾರ್ಯ (ಪುಂ) ಅರ್ಜುನನಿಗೆ ಭಗವದ್ಗೀತೆಯನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸಿದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ.

ಗೀತಿ ಗೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಾನ, ಹಾಡುಗಾರಿಕೆ. ಗೀತೆ—ಗ (ಶಬ್ದ) ಭಾವ " ಕ್ತಿನ್ " (೩-೩-೯೪) । " ಶ್ರುತಾಪಸರೋ-ಗೀತಿರಪಿ ಕ್ಷಣೇಽಸ್ಮಿನ್ ಹರಃ ಪ್ರಸಂಖ್ಯಾತಪರೋ ಬಭೂವ " ಕುಮಾಂ ೩-೪೦ । 2. ಮಾತೃವೃತ್ತದ ಒಂದು ಭೇದ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: ಅರ್ಯಾವೃತ್ತದ ಪೂರ್ವಾರ್ಧದ ಲಕ್ಷಣವು ಎರಡು ಅರ್ಧಗಳಲ್ಲೂ ಇದ್ದು ಅವರಂತೆಯೇ ಯತಿ ನಿಯಮವೂ ಇದ್ದರೆ " ಗೀತಿ " ವೃತ್ತವಾಗುವುದು. " ಆರ್ಯಾಪ್ರಥಮದಲೋಕ್ತಂ ಯದಿ ಕಥಮಪಿ ಲಕ್ಷಣಂ ಭವೇದ್ಬುಭಯೋಃ । ದಲಯೋಃ ಕೃತಯತಿಸೋಭಾಂ ತಾಂ ಗೀತಿಂ ಗೀತವಾನ್ ಭುಜ್ಜೇಶಃ " ವೃಂ ೨೦ ।

ಗೀತಿಕಾ ಗೀತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಾನ, ಹಾಡುಗಾರಿಕೆ. ಗೀತಿ ಸ್ವಾರ್ಥ " ಕಃ " । 2. ಹಾಡಿನಂತಿರುವ ಸಣ್ಣ ಪದ್ಯ, ಚಿಕ್ಕ ಕಂಡನೆ. ಗೀತಿರೀತಿ ಕಾಯತಿ ।

ಗೀರಥ ಗೀರಥ (ಪುಂ) 1. ಗುರು, ಬೃಹಸ್ಪತಿ. ಗೀಃ ರಥ ಇವಾಸ್ಯ । 2. ಜೀವಾತ್ಮ.

ಗೀರ್ಣ ಗೀರ್ಣ (ವಿಂ) 1. ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಗ (ಶಬ್ದ) ಕರ್ಮ " ಕ್ತಃ " (೩-೨-೧೦೨) । 2. ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ನುಂಗಲ್ಪಟ್ಟ. ಗ (ನಿಗರಣ) " ಕ್ತಃ " (೩-೨-೧೦೨) ।

ಗೀರ್ಣಿ ಗೀರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ತೋತ್ರ. 2. ವರ್ಣನೆ. 3. ನುಂಗುವುದು. ಗ (ಶಬ್ದ ನಿಗರಣ ವಾ) ಭಾವ " ಕ್ತಿನ್ " (೩-೩-೧೧೪) ।

ಗೀರ್ವಿ ಗೀರ್ವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾರ್ವತಿ, ಸರಸ್ವತಿ. ಗಿರಃ ಅಧಿಷ್ಠಾತ್ರಿ ದೇವಿ ।

ಗೀರ್ಪತಿ ಗೀರ್ಪತಿ (ಪುಂ) ಗುರು, ಬೃಹಸ್ಪತಿ. ಗಿರಾಂ ಪತಿಃ । ವಾ ರೇಫಃ (ವಾಂ ೮-೨-೬೯) । ಪಕ್ಷೆ ವಿಸರ್ಗೋಪಧಮಾನೀಯೌ । ಗೀಃಪತಿಃ ಗೀಃಪತಿಃ ಗೀಃಪತಿಃ । ಕಸ್ಕಾದಿತ್ವಾತ್ ಪತ್ವಮ್ ಗೀರ್ಪತಿಃ ಗೀರ್ಪತಿಃ ಇತಿ ಕೇಚಿತ್ । " ಗೀರ್ಪತಿರ್ಧಿಷಣೌ ಗುರುಃ " ಅಮಂ ।

ಗೀರ್ವಿ (ವಿಂ) ಗೀರ್ವಿ (ವಾಂ) ೧ (ಪುಂ) ದೇವತೆ, ಅಮರ. ಗೀರವ ಬಾಣಃ ಯಸ್ಯ ।

ಗುಗುಲು ಗುಗುಲು (ಪುಂ) 1. ಗುಗುಳದ ಗಿಡ, ಹಾಲುಮಡ್ಡಿ ಗಿಡ. ಗುಜತಿ — ಗುಜ (ಶಬ್ದ) " ಕ್ವಿಪ್ " (೩-೨-೧೭೮) । ಗುಜೋ ವ್ಯಾಧೇರ್ಗುಜತಿ — ಗುಜ (ರಕ್ಷಣ) " ತಃ " ಬಾಹುಂ । ಡಲಯೋರಭೇದಃ । (ನಂ) 2. ಹಾಲುಮಡ್ಡಿ.

ಗುಗುಲಕ ಗುಗುಲಕ (ವಿಂ) ಹಾಲುಮಡ್ಡಿಯ ವ್ಯಾಪಾರಿ, ಗುಗುಲುವನ್ನು ಮಾರುವವನು. ಗುಗುಲುಃ ಪಣ್ಯಮಸ್ಯ " ಷನ್ " (೪-೪-೫೩) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ " ಷಾನ್ " (೪-೨-೪೨) । — ಲುಕೇ — ಲುಕೇ.

ಗುಚ್ಛ ಗುಚ್ಛ (ಪುಂ) 1. ಗೊಂಡಲು, ಕಂತೆ. ಗುತಂ ಚಯತಿ — ಛ (ಛೇದನ) " ಕಃ " (೩-೨-೩) । " ವವುರಯುಕ್ತದಗುಚ್ಛ-ಸುಗಂಧಯಃ " ಮಾಧಂ ೬-೫೦ । 2. ಪುಷ್ಪಗುಚ್ಛ, ಹೂವಿನ ಗೊಂಡಲು. 3. ಹುಲ್ಲು ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಹೊರ. 4. 32 ಎಳೆಗಳ ಮುತ್ತಿನವಾರ. 5. ಸವಿಲಿನ ಗರಿ. 6. ಕಥೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ, ಗ್ರಂಥಭಾಗ. 7. ಪೊದರು, ಪೊದೆ. " ಗುಚ್ಛಗುಲಮ್ ತು ವಿವಿಧಂ ತಥೈವ ತೃಣಜಾತಯಃ " ಮನುಂ ೧-೪೮ ।

ಗುಚ್ಛಪತ್ರ ಗುಚ್ಛಪತ್ರ (ಪುಂ) ತಾಳವೃಕ್ಷ. ಪನ್ನೇಮರ. ಗುಚ್ಛಾಕೃತೀನಿ ಪತ್ರಾಣ್ಯಸ್ಯ ।

ಗುಚ್ಛಫಲ ಗುಚ್ಛಫಲ (ಪುಂ) 1. ಬಾಳೆಗಿಡ. 2. ಚಿಲ್ಲದಗಿಡ. 3. ಹಾಲೆಗಿಡ. 4. ಕಾಚೆಗಿಡ. 5. ದ್ರಾಕ್ಷೆಗಿಡ. ಗುಚ್ಛಾ-ಕೃತೀನಿ ಫಲಾನ್ಯಸ್ಯ ।



ಗುಜ್ಜ ಗುಂಜ (ಪುಂ) 1. ಮಧುರವಾದ ಧ್ವನಿ, ಇಂಪಾದ ಧ್ವನಿ. ಗುಜಿ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) ಭಾವೇ "ಖ" (3-3-18). 2. ಹೂವಿನ ಗೊಂಚಲು. ಗುಜ್ಜತಿ - ಗುಜಿ ಕರ್ತಂ "ಅ" (3-1-134).

ಗುಜ್ಜತ್ ಗುಂಜತ್ (ವಿಂ) 1. ಇಂಪಾಗಿ ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಗುಜಿ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಶ" (3-2-124). 2. ಕೂಗುತ್ತಿರುವ, ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ. "ಗುಜ್ಜತುಜ್ಜ-ಕುಡೀರಕೌಶಿಕವಟಾಭುತಕಾರಸಂವೇಲಿತಂ" ಮಾಲತೀಂ 4-19.

ಗುಜ್ಜನ ಗುಂಜನ (ನಂ) ಇಂಪಾಗಿ ಧ್ವನಿಹೊರಡಿಸುವುದು, ಮಧುರವಾಗಿ ಕೂಗುವುದು. ಗುಜಿ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

ಗುಜ್ಜಾ ಗುಂಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗುಲಗಂಜಿ ಬಳ್ಳಿ. ಗುಜಿ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) ಭಾವೇ "ಅ" (3-1-134). 2. ತಮಟೆ. 3. ಮಧುರವಾದ ಧ್ವನಿ, ಇಂಪಾದ ಧ್ವನಿ. "ಗುಜ್ಜಾ ತು ಕೃಷ್ಣಲಾಘಾ ಸ್ಯಾತ್ಪಡಹೇ ಮಧುರಧ್ವನಿ" ಹೇಮಂ. 4. ಎರಡು ಗೋಧಿಗಳ ತೂಕ. 5. ನಾಲ್ಕು ಅಕ್ಕಿಗಳ ತೂಕ. 6. ಚರ್ಚೆ, ವಿಚಾರಮಾಡುವುದು. "ತರ್ಕನಿರ್ಣಯೋ ಗುಜ್ಜಾ ಚರ್ಚಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 7. ಮದ್ಯಗೃಹ.

ಗುಡಿಕಾ ಗುಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಾತ್ರ, ಗುಳಿಗೆ. 2. ದುಂಡಾಗಿ ಇರುವ ವಸ್ತು, ಗೋಲಿ. ಬಡೆ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (4-4-29). ಪೃಷಂ. 3. ಮುತ್ತು, ಮಣ್ಣಿಕ. "ತಾಮ್ರೋದರೇಷು ಪತಿಸಂ ತರಪಲ್ಲವೇಷು ನಿರ್ಧತಹಾರಗುಡಿಕಾವಿಶದಂ ಹಿಮಾಮ್ಬ:" ರಘುಂ 4-90.

ಗುಡೀ ಗುಟೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಗುಡಿಕಾ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ಗುಡ - ರಕ್ಷಣೆ (ತುಡಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ). ಗುಡತಿ. ಜುಗುಡ. ಅಗುಡೀತ್. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗುಡ ಗುಡ (ಪುಂ) 1. ಬೆಲ್ಲ, ಕಬ್ಬಿನರಸದ ಪಾಕ. ಗುಡ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಕ:" (3-1-134). "ಸ ಪುರಾಣೋಽಧಿಕಗುಣೋ ಗುಡ: ಪಥ್ಯತಮ:ಸ್ಮೃತ:" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ 44-161. 2. ಗೋಲಿ, ದುಂಡಾಗಿರುವ ವಸ್ತು. "ಪ್ರಾದುರಾಸನ್ ಮಹೀಪಾಲ ಕೃಷ್ಣಾಯ-ಸಮಯಾ ಗುಡಾ:" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ. 3. ಚೆಂಡು, ಗೋಳ. 4. ಮಾತ್ರ, ಗುಳಿಗೆ. 5. ಕಾಕಂಬಿ, ಸರಿಯಾದ ಬೆಲ್ಲದ ಪಾಕಕ್ಕೆ ಬರದಿರುವ ಅರ್ಧಪಾಕದ ಕಬ್ಬಿನ ರಸ. 6. ಗ್ರಾಸ, ತುತ್ತು. 7. ಅನೆಯ ಯುದ್ಧಕವಚ, ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಅನೆಯ ದೇಹದ ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಹಾಕುವ ಹೊದಿಕೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಡಾ -ಡಾ. 8. ಕಳ್ಳಗಿಡ. 9. ಹತ್ತಿಗಿಡ. 10. ಮಾತ್ರ, ಗುಳಿಗೆ. "ಗುಡ: ಕುಜ್ಜರಸಸಾಹೇ ಗೋಲಕೇ-ವಿಕಾರಯೋ: ಗುಡಾ ತು ಗುಡಿಕಾಸ್ತುಹಯೋ:" ಹೇಮಂ. "ಗುಡ:

ಸ್ಯಾತ್ ಗೋಲಕೇ ಹಸ್ತಿಸಸಾಹೇವುಪಿಕಾರಯೋ: ಗುಡಾ ಸ್ತುಹಯಾಂ ಚ ಕಥಿತಾ ಷುಡಿಕಾಯಾಂ ಚ ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ.

ಗುಡಕ ಗುಡಕ (ಪುಂ) 1. ಬೆಲ್ಲದ ಪಾಕದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಟಿಪ್ಪಣಿ. 2. ಮಾತ್ರ, ಗುಳಿಗೆ. 3. ಚೆಂಡು, ದುಂಡಾಗಿರುವ ವಸ್ತು. 4. ಗ್ರಾಸ, ತುತ್ತು.

ಗುಡಪರ್ಪಟಕ ಗುಡಪರ್ಪಟಕ (ಪುಂ) ಸಿಹಿ ಹಪ್ಪಳ, ಬೆಲ್ಲ ಸೇರಿಸಿ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ತೆಳುರೊಟ್ಟಿ.

ಗುಡಪುಷ್ಪ ಗುಡಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) ಮಧುರವೃಕ್ಷ, ಹಿಪ್ಪೆಮರ. ಗುಡ ಇವ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ.

ಗುಡಫಲ ಗುಡಫಲ (ಪುಂ) ಪಿಲ್ಲುವೃಕ್ಷ, ಗೋನುಮರ. ಗುಡ ಇವ ಫಲಮಸ್ಯ.

ಗುಡಶರ್ಕರಾ ಗುಡಶರ್ಕರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆಲ್ಲದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಸಕ್ಕರೆ.

ಗುಡಶಿಖ್ರ ಗುಡಶಿಖ್ರ (ಪುಂ) ಕೆಂಪುನುಗ್ಗೆ ಮರ.

ಗುಡಾ ಗುಡಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಳ್ಳಗಿಡ. 2. ಹತ್ತಿಗಿಡ. 3. ಮಾತ್ರ, ಗುಳಿಗೆ.

ಗುಡಾಕಾ ಗುಡಾಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಲಸ್ಯ. 2. ನಿದ್ರೆ. ಗುಡಿ (ವೇಷ್ಠನೆ) "ಆಕನ್".

ಗುಡಾಕೇಶ ಗುಡಾಕೇಶ (ಪುಂ) 1. ಅರ್ಜುನ. ಗುಡಾಕಾ ನಿद्रಾ ಅಲಸ್ಯಂ ಇಂದ್ರಿಯಾಣಿ ವಾ ತಸ್ಯಾ ಇಶ: "ಮಮ ದೇಹೇ ಗುಡಾಕೇಶ ಯಚ್ಚಾನ್ಯದ್ವೇಷಮಹೇಸಿ" ಗೀತಾ 11-9. (ವಿಂ) 2. ನಿದ್ರೆಯನ್ನು ಜಯಿಸಿದವನು.

ಗುಡಾಚಲ ಗುಡಾಚಲ (ಪುಂ) ದಾನಕ್ಕಾಗಿ ಬೆಲ್ಲದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಬೆಟ್ಟ. ಗುಡೇನ ನಿರ್ಮಿತೋಚಲ:

ಗುಡಾಪುಷ್ಪ ಗುಡಾಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) ಬೆಲ್ಲವನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಹಿಟ್ಟಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ರೊಟ್ಟಿ, ಒಬ್ಬಿಟ್ಟು, ಹೋಳಿಗೆ ಮುಂತಾದ ಭಕ್ಷ್ಯ. ಗುಡೇನ ಮಿಶ್ರಿತೋಪುಷ್ಪ:

ಗುಡಾಶಯ ಗುಡಾಶಯ (ಪುಂ) ಪಿಲ್ಲುವೃಕ್ಷ, ಬೆಟ್ಟಗೋನು ಮರ. ಗುಡ ಇವ ಮಧುರರಸ: ಆಶೇತೇಶ್ವರ - ಆ + ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) ಅಧಿಂ "ಅ" (3-2-14).

ಗುಡ್ಡುಕಿ ಗುಡ್ಡುಕಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. ಗುಡ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಊಟ್" ಬಾಹುಂ. "ಗುಡ್ಡುಕಿ ತನ್ವಿಕಾಸ್ಮತಾ" ಅಮಂ.

ಗುಡೋಕ್ತಾ ಗುಡೋಕ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. (ಬೆಲ್ಲದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ) ಸಕ್ಕರೆ. ಉದ್ಭವತ್ಯಸ್ಮಾತ್ - ಉ + ಭೂ "ಅ" (3-3-49). ಗುಡ: ಉದ್ಭವೋಽಸ್ಯಾ: (ವಿಂ) 2. ಬೆಲ್ಲದಿಂದ ಉಂಟಾದ.



ಗುಡೋದನ ಗುಣೋದನ (ನಂ) ಬೆಲ್ಲದ ಅನ್ನ, ಸಕ್ಕರೆ ಪೊಂಗಲು. ಗುಡಮಿಶ್ರಮೋದನಮ್ | "ಗುಡೋದನಂ ಪಾಯಸಂ ಚ ಹವಿಷ್ಯಂ ಕ್ಷೀರ-ವಾಷ್ಠಿಕಮ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೩೦೪ |

ಗುಣ - ಆಮನ್ತ್ರಣ (ಚುರಾಂ ರಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಗುಣಯತಿ, -ತೇ | ಅಜುಗುಣತ್, -ತ | ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಆಮಂತ್ರಿಸು, ಕರೆ. 2. ಅಭಿವೃದ್ಧಿಪಡಿಸು, ಹೆಚ್ಚಿಸು.

ಗುಣ ಗುಣ (ಪುಂ) 1. ಸತ್ತ್ವ ರಜಸ್ಸು ಮತ್ತು ತಮಸ್ಸು ಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಗುಣಗಳು. "ಸತ್ತ್ವಂ ರಜಸ್ತಮ ಇತಿ ಪ್ರಕೃತೇರ್ಗುಣಾಸ್ತೇಯುಕ್ತಃ ಪರಃ ಪುರುಷ ಏಕ ಇಹಾಸ್ಯ ವತ್ತೇ | ಸ್ಥಿತಿಯಾದಯೇ ಹರಿವಿರಿಶ್ವಿಹರೆತಿ ಸಂಜ್ಞಾಃ ಶ್ರೇಯಾಸಿ ತತ್ರ ಖಲು ಸತ್ತ್ವತನೋನೃಣಾಂ ಸ್ಯುಃ" ಭಾಗಂ ೧-೨-೨೩ | "ಸ್ವಮುತಿಭೇದೇನ ಗುಣಾಗ್ರವರ್ತಿತಾ ಪತಿಃ ಪ್ರಜಾನಾಮಿವ ಸರ್ಗಮಾತ್ಮನಃ" ರಘುಂ ೩-೨೭ | 2. ಬಿಲ್ಲಿನ ಅಂಚು, ಹೆದ, ಬಿಲ್ಲನ್ನು ಎಳೆದುಕಟ್ಟುವ ಮೌರ್ವಿ. ಗುಣ (ಆಮನ್ತ್ರಣ) ಕರ್ಮಂ "ಧಮ್" (೩-೩-೧೯) | "ಅಥ ನಮಸ್ಯ ಇವ ತ್ರಿದಶಾಯುಧಂ ಕನಕಪಿಙ್ಗುತಡಿತ್ವಗುಣಸಂಯುತಮ್" ರಘುಂ ೯-೫೪ | 3. ಧೈರ್ಯ, ಸ್ಥೈರ್ಯ, ಶೌರ್ಯ, ದಯೆ, ಪಾತಲ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಆತ್ಮಧರ್ಮಗಳು. "ಗುಣ-ಸಿಂಧುರಸೌ ಗುಣಾತಿವರ್ತಿ ಗಾತಿರಂತಸ್ಥಿತಿರಾಗಮೈಕಗಮ್ಯಃ" ಯಾದಂ ೧೫-೫ | 4. ಪಾಚಕ, ಅಡಿಗೆಯವನು. ಗುಣ ಅದಂತಃ + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಆರಾಲಿಕಾ ಆನ್ವಸಿಕಾಃ ಸೂದಾ ಆದಿನಿಕಾ ಗುಣಾಃ" ಅಮಂ | 5. ರಾಜನ ಸಂಬಂಧವಾದ ಆರು ಗುಣಗಳು. (1) ಸಂಧಿಃ, (2) ವಿಗ್ರಹಃ, (3) ಯಾನಮ್, (4) ಆಸನಮ್, (5) ದ್ವಿಧಿಭಾವಃ ಮತ್ತು (6) ಆಶ್ರಯಃ ಇವು ರಾಜನ ಆರು ಗುಣಗಳು. "ಸಂಧಿ ಚ ವಿಗ್ರಹಂ ಚೈವ ಯಾನಮಾಸನಮೇವ ಚ | ದ್ವಿಧಿಭಾವಂ ಸಂಧಯಂ ಚ ಷಡ್ಗುಣಾಃ ಸ್ಥಿತಿರಂತಸ್ಥಿತಿರಾಗಮೈಕಗಮ್ಯಃ" ಮನುಂ ೭-೧೬೦ | "ಷಡ್ಗುಣಾಃ ಶಕ್ತಿಯಸ್ತಿಲಃ ಸಿದ್ಧಯಶ್ಚೋದಯಾಸ್ತ್ರಯಃ" ಮಾಘಂ ೨-೨೬ | 6. ರಜ್ಜು, ಹಗ್ಗ. "ಗುಣವಂತೋಽಪಿ ಸೀದಂತಿ ನ ಗುಣ-ಗ್ರಾಹಕೋ ಯದಿ | ಸಗುಣೋಽಪಿ ಪೂರ್ಣಕುಂಭೋ ಯಥಾ ಕೂಪೇ ನಿಮಜ್ಜತಿ" | 7. ತಂತು, ದಾರ. "ಕಾಂಚೀಗುಣ ಇವ ಪತಿಸ್ತಃ ಸ್ಥಿತಂಕರತಃ ಫಣಿ ಸ್ಫುರತಿ" | 8. ದ್ರವ್ಯಗಳನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿರುವ ಶುಕ್ಲ (ಬಿಳುಪು) ಕೃಷ್ಣ (ಕಪ್ಪು) ರಕ್ತ (ಕೆಂಪು) ಪೀತ (ಹಳದಿ) ಮುಂತಾದುವು. 9. ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಗುಣಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ ವರ್ಣಗಳು, ಅ ಕಾರ ಎ ಕಾರ ಮತ್ತು ಆ ಕಾರಗಳು. "ಅದೇಙ್ಗುಣಃ" ಪಾಂ ಸೂಂ ೧-೧-೨ | 10. ಶಬ್ದ ಮತ್ತು ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿರುವ ಗುಣಗಳು. (1) ಆಜಃ, (2) ಪ್ರಸಾದಃ, (3) ಶ್ಲೇಷಃ, (4) ಸಮತಾ, (5) ಸಮಾಧಿಃ, (6) ಮಾಧುರ್ಯಮ್, (7) ಸೌಕುಮಾರ್ಯಮ್, (8) ಉದಾರತಾ, (9) ಅರ್ಥವ್ಯಕ್ತಿಃ ಮತ್ತು (10) ಕಾಂತಿಃ

ಇವು ಶಬ್ದಾರ್ಥನಿಷ್ಕಗುಣಗಳು. "ಆಜಃ ಪ್ರಸಾದ ಶ್ಲೇಷಸಮತಾಸಮಾಧಿಮಾಧುರ್ಯಸೌಕುಮಾರ್ಯಾದಾರತಾರ್ಥವ್ಯಕ್ತಿಕಾಂತಯೋ ಬಂಧಗುಣಾಃ" ಕಾವ್ಯಾಂ ಸೂಂ ೩-೨-೪ | ಸಾಹಿತ್ಯದರ್ಪಣ ಕಾರರು (1) ಆಜಃ, (2) ಮಾಧುರ್ಯಮ್ ಮತ್ತು (3) ಪ್ರಸಾದಃ ಎಂದು ಮೂರು ಗುಣಗಳನ್ನು ಮಾತ್ರ ಹೇಳಿ ಇವು ರಸಧರ್ಮಗಳೆಂದೂ ಪರಂಪರಾಸಂಬಂಧದಿಂದ ಶಬ್ದಾರ್ಥ ಧರ್ಮಗಳಾಗುವವೆಂದೂ ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ. "ರಸಸ್ಯಾ-ಜ್ಞಿತ್ವಮಾಪ್ತಸ್ಯ ಧರ್ಮಾಃ ಶೌರ್ಯಾದಯೋ ಯಥಾ | ಗುಣಾಃ ಮಾಧುರ್ಯ-ಮೋಜೋಽಪಿ ಪ್ರಸಾದ ಇತಿ ತೇ ತ್ರಿಧಾ | ಏಷಾಂ ಶಬ್ದಗುಣತ್ವಂ ತು ಗುಣ-ವೃತ್ಯೋಚ್ಯತೇ ಬುದ್ಧಿಃ" ಸಾಂ ದಂ ೮-೧, ೯ | ಇವರು, ವಾಮನರು ಹೇಳಿರುವ ಹತ್ತು ಗುಣಗಳಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ಈ ಮೂರು ಗುಣ ಗಳಲ್ಲಿಯೇ ಅಂತರ್ಭಾವ ಹೊಂದುವವೆಂದೂ ಹೇಳಿರು ತ್ತಾರೆ. "ಶ್ಲೇಷಃ ಸಮಾಧಿರೋದಾರ್ಯ ಪ್ರಸಾದ ಇತಿ ಯೇ ಪುನಃ | ಗುಣಾಃ ಸ್ಥಿರಂತಸ್ಥಿತಿರಾಗಮೈಕಗಮ್ಯಃ ತೇ" ಸಾಂ ದಂ ೮-೯ | ಇತ್ಯಾದಿ. 11. ಉತ್ಕರ್ಷ, ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ. "ಶ್ರೀಮತಿಶಯಿನಿ ಸಮೇತ್ಯ ಜಗ್ಮುರ್ಗುಣಮಹತಾಂ ಮಹತೇ ಗುಣಾಯ ಯೋಗಃ" ಕಿರಾಂ ೧೦-೨೫ | 12. ನೈಯಾಯಿಕರು ಹೇಳಿರುವ ರೂಪ ರಸ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು ಗುಣಗಳು. (1) ರೂಪಮ್, (2) ರಸಃ, (3) ಗಂಧಃ, (4) ಸ್ಪರ್ಶಃ, (5) ಸಂಖ್ಯಾ, (6) ಪರಿಮಾಣಮ್, (7) ಪೃಥಕ್ತ್ವಮ್, (8) ಸಂಯೋಗಃ, (9) ವಿಭಾಗಃ, (10) ಪರತ್ವಮ್, (11) ಅಪರತ್ವಮ್, (12) ಗುರುತ್ವಮ್, (13) ದ್ರವತ್ವಮ್, (14) ಸ್ನೆಹಃ, (15) ಶಬ್ದಃ, (16) ಬುದ್ಧಿಃ, (17) ಸುಖಮ್, (18) ದುಃಖಮ್, (19) ಇಚ್ಛಾ, (20) ದ್ವೇಷಃ, (21) ಪ್ರಯತ್ನಃ, (22) ಧರ್ಮಃ, (23) ಅಧರ್ಮಃ ಮತ್ತು (24) ಸಂಸ್ಕಾರಃ ಇವು ನ್ಯಾಯಮತದ ಗುಣಗಳು. 13. ಆವೃತ್ತಿ, ಮಾಡಿದು ದನ್ನು ಮತ್ತೆಮಾಡುವುದು. 14. ಯೋಗ್ಯತೆ, ಅರ್ಹತೆ. "ತದ್ಗುಣಃ ಕರ್ಣಮಾಗತ್ಯ ಚಾಪಲಾಯ ಪ್ರಚೋದಿತಃ" ರಘುಂ ೧-೯ | 15. ಎಣಕ ಪಿಟೀಲು ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ತಂತಿ. "ಯಾ ವಿಭತಿ ಕಲವಲ್ಕಲಗುಣಸ್ವಾನಮಾನಮತಿಕಾಲಿಮಾಽಲ್ಯಾ" ಮಾಘಂ ೪-೫೭ | 16. ಗಣಿತಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಗುಣಕ ಸಂಖ್ಯೆ. 17. ಇಂದ್ರಿಯ. 18. ಅಧಿಕ, ಹೆಚ್ಚು. 19. ಎಣಕ. 20. ತ್ಯಾಗ. 21. ಭೀಮಸೇನ. 22. "ಮೂರು" ಸಂಖ್ಯೆ. 23. ವಿಶೇಷಣ, ಮತ್ತೊಂದಕ್ಕೆ ಅಧೀನವಾದ ಪದ (ವಿಶೇಷ್ಯ). 24. ಸ್ವಭಾವ, ಧರ್ಮ. (ವಿಂ) 25. ಅಪ್ರಧಾನವಾದ, ಮುಖ್ಯವಲ್ಲದ. "ಗುಣೋ ಮೌರ್ವ್ಯಮಿಪ್ರಧಾನೇ ರೂಪಾದೌ ಸೂದ ಇಂದ್ರಿಯೇ | ತ್ಯಾಗಶೌರ್ಯಾದಿಸತ್ತ್ವಾದಿಸಂಧ್ಯಾಧಾವೃತ್ತಿ-ರಜ್ಜುಃ | ಶುಕ್ಲಾದಾವಪಿ ವಟಶ್ಚಾ ಚ" ಮೇದಿಂ | "ಗುಣೋ ಜ್ಯಾಸೂದ-ತನ್ತುಃ | ರಜ್ಜೌ ಸತ್ತ್ವಾದೌ ಸಂಧ್ಯಾದೌ ಶೌರ್ಯಾದೌ ಭೀಮ ಇಂದ್ರಿಯೇ | ರೂಪಾದಾವಿಪ್ರಧಾನೇ ಚ ದೋಷಾನ್ಯಸ್ಥಿಮ್ನ ವಿಶೇಷಣೇ" ಹೇಮಂ |



**ಗುಣಕ ಗುಣಕ (ವಿಂ)** 1. ಗಣಕ, ಎಣಿಸುವವನು. ಗುಣಯತಿ—  
ಗುಣ (ಆಮನ್ವಯ) “ಫ್ವಲ್” (3-1-133)। 2. ಗುಣಿಸು  
ವವನು, ಹೆಚ್ಚಿಸುವವನು, ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವವನು. ಗುಣಯತಿ  
ಆವರ್ತಯತಿ — ಗುಣ “ಫ್ವಲ್”।

**ಗುಣಕಯನ ಗುಣಕಥನ (ನಂ)** ಗುಣವರ್ಣನೆ, ಹೊಗಳಿಕೆ,  
ಪ್ರಶಂಸೆ. ಗುಣಾನಾಂ ಕಯನಮ್। “ಸಂಸ್ಪರ್ಶಃ ಸ್ತನಸಂಸ್ಪರ್ಶೋ ವೀಕ್ಷಣಂ  
ರತ್ನವೀಕ್ಷಣಮ್। ತಸ್ಯಾಃ ಕೇಲಿಕಲಾಲಾಪಸಮಯಃ ಸಮಯಃ ಸಖೇ”।

**ಗುಣಕರ್ಮನ್ ಗುಣಕರ್ಮನ್ (ನಂ)** 1. ಅಪ್ರಧಾನವಾದ  
ಕಾರ್ಯ. 2. (ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಅಪ್ರಧಾನ ಕರ್ಮ.  
3. ಸತ್ತ್ವರಜಸ್ಸುಮೋಗುಣಜನ್ಯವಾದ ಕಾರ್ಯ.

**ಗುಣಕಾರ ಗುಣಕಾರ (ಪುಂ)** 1. ಘೋಷಿಸೇನ. ಗುಣಮ್ ಅನುಸ-  
ರೂಪಂ ಗುಣಂ ಕರೋತಿ — ಟು ಕೃಜ್ (ಕರಣ) “ಅಞ್” (3-2-1)।  
ಅಜ್ಞಾತವಾಸದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ವಿರಾಟರಾಜನಲ್ಲಿ ಅಡಗಿರುವ  
ನಾಗಿ ಸೇರಿದ್ದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. “ವೀರೇಣುರ್ನಾಗಬಲೋ  
ಗುಣಕಾರೋ ವೃಕೋದರಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। (ವಿಂ) 2. ಅಡಗಿ  
ಯವನು. 3. ಒಳ್ಳೆಯ ಭಕ್ತ್ಯಭೋಜ್ಯಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸು  
ವವನು, ಶುಚಿರುಚಿಯಾದ ತಿಂಡಿ ಮತ್ತು ಆಹಾರವಸ್ತು  
ಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು.

**ಗುಣಕೀರ್ತನ ಗುಣಕೀರ್ತನ (ನಂ)** ಗುಣವರ್ಣನೆ, ಪ್ರಶಂಸೆ,  
ಹೊಗಳಿಕೆ. ಗುಣಾನಾಂ ಕೀರ್ತನಮ್।

**ಗುಣಗಾನ ಗುಣಗಾನ (ನಂ)** ಗುಣಕೀರ್ತನ, ಗುಣಗಳನ್ನು  
ಹೊಗಳುವುದು. ಗುಣಾನಾಂ ಗಾನಮ್।

**ಗುಣಗೃಹ್ಯ ಗುಣಗೃಹ್ಯ (ವಿಂ)** ಗುಣಪಕ್ಷಪಾತಿ, ಗುಣದಲ್ಲಿ  
ಪ್ರೇಮವುಳ್ಳವನು. ಗುಣಗೃಹ್ಯತೇ—ಗ್ರಹ (उपादाने) “ಕೃಪ್”  
(3-1-119)। “ನನು ವಕ್ತೃವಿಶೇಷನಿಃಸ್ಪೃಹಾಃ ಗುಣಗೃಹ್ಯಾ  
ವಚನೇ ವಿಪಶ್ಚಿತಃ” ಕಿರಾಂ 2-5।

**ಗುಣಗೌರಿ ಗುಣಗೌರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಗುಣಗಳಿಂದ ಶುದ್ಧ  
ಳಾದವಳು. 2. ಗುಣಗಳಿಂದ ಪಾರ್ವತಿಗೆ ಸಮಾನ  
ಳಾದವಳು. ಗುಣೇನ ಗೌರಿ।

**ಗುಣಗ್ರಹಣ ಗುಣಗ್ರಹಣ (ನಂ)** 1. ಗುಣಗಳನ್ನು ಗ್ರಹಿಸು  
ವುದು, ಒಬ್ಬನ ಗುಣಗಳನ್ನು ಸರಿಯಾಗಿ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳು  
ವುದು. ಗುಣಾನಾಂ ಗ್ರಹಣಮ್। 2. ಹಗ್ಗವನ್ನು ಹಿಡಿದು  
ಕೊಳ್ಳುವುದು.

**ಗುಣಗ್ರಹೀತ್ ಗುಣಗ್ರಹೀತ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಗುಣಗಳನ್ನು ಸಂ  
ಯಾಗಿ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವವನು, ಒಬ್ಬನ ಗುಣಗಳನ್ನು  
ಸರಿಯಾಗಿ ಅರ್ಥಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವವನು. ಗುಣಾನಾಂ ಗ್ರಹೀತಾ।  
2. ಹಗ್ಗವನ್ನು ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ತೀಪ್”  
(4-1-5)। —ಗ್ರಹೀತ್ರಿ —ಗ್ರಹೀತ್ರಿ.

**ಗುಣಗ್ರಾಮ ಗುಣಗ್ರಾಮ (ಪುಂ)** ಗುಣಗಳ ಸಮೂಹ. ಗುಣಾನಾಂ  
ಗ್ರಾಮಃ।

**ಗುಣಗ್ರಾಹಕ ಗುಣಗ್ರಾಹಕ (ವಿಂ)** 1. ಗುಣಗಳನ್ನು ತಿಳಿದು  
ಕೊಳ್ಳುವವನು. ಗುಣಾನ್ ಗೃಹ್ಣಾತಿ — ಗ್ರಹ (उपादाने)  
“ಫ್ವಲ್” (3-1-133)। 2. ಹಗ್ಗವನ್ನು ಹಿಡಿದು  
ಕೊಳ್ಳುವವನು. “ಗುಣವಂತೋಽಪಿ ಸಿದಂತಿ ನ ಗುಣಗ್ರಾಹಕೋ  
ಯದಿ। ಸಗುಣೋಽಪಿ ಪೂರ್ಣಕುಮ್ಮೋ ಯಥಾ ಕೂಪೇ ನಿಮಜ್ಜತಿ”।

**ಗುಣಗ್ರಾಹಿನ್ ಗುಣಗ್ರಾಹಿನ್ (ವಿಂ)** ಗುಣವನ್ನು ಗ್ರಹಿಸುವ  
ಸ್ವಭಾವದವನು. ಗುಣಾನ್ ಗೃಹ್ಣಾತಿ — ಗ್ರಹ (उपादाने)  
“ಞಿನಿಃ” (3-2-94)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ತೀಪ್” (4-1-5)।  
—ಗ್ರಾಹಿಣಿ —ಗ್ರಾಹಿಣೀ. “ಶ್ರೀಹರ್ಷೋ ನಿಪುಣಃ ಕವಿಃ ಪರಿಷದ-  
ಪ್ಯಪಾ ಗುಣಗ್ರಾಹಿಣಿ ಲೋಕೇ ಹಾರಿ ಚ ವತ್ಸರಾಜಚರಿತಂ ನಾಟಕಂ  
ಚ ದಕ್ಷಾ ವಯಮ್” ರತ್ನಾಂ 1-5।

**ಗುಣಜ್ಞ ಗುಣಜ್ಞ (ವಿಂ)** ಗುಣವನ್ನು ಅರಿತಿರುವ. ಗುಣಾನ್  
ಜಾನಾತಿ — ಜ್ಞಾ (अवबोधने) “ಕಃ” (3-2-3)।  
“ಭಗವತಿ ಕಮಲಾಲಯೇ, ಭೃಷಮಗುಣಜ್ಞಾಸಿ” ಮುದ್ರಾಂ 2।  
“ಯಸ್ಯಾಸ್ತಿ ವಿದ್ವಾನ್ ಸ ನರಃ ಕುಲೀನಃ ಸ ಪಂಡಿತಃ ಸ ಶ್ರುತವಾನ್  
ಗುಣಜ್ಞಃ” ಭರ್ತೃಂ 1-32।

**ಗುಣತ್ರಯ ಗುಣತ್ರಯ (ನಂ)** ಸತ್ತ್ವ ರಜಸ್ಸು ತಮಸ್ಸುಗಳೆಂಬ  
ಮೂರು ಗುಣಗಳು. ಗುಣಾನಾಂ ತ್ರಯಮ್।

**ಗುಣಧರ್ಮ ಗುಣಧರ್ಮ (ಪುಂ)** ಸ್ವಂತ ಉದ್ಯೋಗದ ಧರ್ಮ,  
ಹಕ್ಕಿನ ಧರ್ಮ. “ಯೋ ಗುಣೇನ ಪ್ರವರ್ತತೇ ಗುಣಧರ್ಮಃ ಸ  
ಉಚ್ಯತೇ”। ರಾಜಸಿಗೆ ಪ್ರಜಾವಾಲಿನ ರೂಪವಾದ  
ಧರ್ಮವು ಗುಣಧರ್ಮವು.

**ಗುಣನ ಗುಣನ (ನಂ)** 1. ಎಣಿಸುವುದು, ಎಣಿಕೆಮಾಡು  
ವುದು. 2. ಗುಣಿಸುವುದು. ಗುಣಾಕಾರ ಮಾಡುವುದು.  
ಗುಣ (आग्नेडेने) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-115)।

**ಗುಣನಿಕಾ ಗುಣನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಅಭ್ಯಾಸ, ಅಪ್ರತಿ,  
ಪುನರುಚ್ಚಾರಣೆ. ಗುಣ (आग्नेडेने) + ಣಿಕ್ “ಯುಕ್”  
(3-3-107)। ಸಂಜ್ಞಾयां “ಕನ್”। ಕಾತ್ಪೂರ್ವಸ್ಯಾತ್ ಇಕಾರಃ।  
“ಹೇತುಃ ಪರಿಚಯಸ್ಥೈರ್ಯೇ ವಕ್ತುಗುಣನಿಕೇವ ಸಾ” ಮಾಧಂ 2-95।  
2. ನರ್ತನ, ಕುಣಿದಾಟ. 3. ಮಾಲೆ, ಸರ. “ದರಿದ್ರಾಣಾಂ  
ಚಿಂತಾಮಣಿಗುಣನಿಕಾ” ಆನಂದಲಂ। 4. ಶೂನ್ಯ, ಪೂಜ್ಯ,  
ಸೊನ್ನೆ. “ಗುಣನಿಕಾ ತು ಶೂನ್ಯಾಂಕಂ ನರ್ತನೇ ಪಾಠನಿಶ್ರಯೇ”  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಗುಣನಿಧಿ ಗುಣನಿಧಿ (ವಿಂ)** ಗುಣಗಳಿಗೆ ಅಶ್ರಯಸ್ಥಾನ  
ವಾದ, ಗುಣಗಳಿಗೆ ಆಧಾರವಾದ. ಗುಣಾ ನಿಧೀಯಂತೇಽಸ್ಮಿನ್—  
ನಿ + ಟು ಧಾನ್ (धारणपोषणयोः) “ಕಿಃ” (3-3-92)।



ಗುಣನಿ ಗುಣನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಭ್ಯಾಸ, ಆವೃತ್ತಿ, ಪುನಃ  
ರೂಪಾಂತರಣ.

ಗುಣನೀಯ ಗುಣನೀಯ (ಪುಂ) 1. ಅಭ್ಯಾಸ, ಆವೃತ್ತಿ,  
ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಉಚ್ಚರಿಸುವುದು. "ಅಮ್ಯಾಸೋ ಗುಣನೀಯಃ  
ಸ್ಯಾತ್" ಹಾರಾಂ. (ವಿಂ) 2. ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಡುವ, ಅಧಿಕ  
ಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಹೆಚ್ಚಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 4. ಹೆಚ್ಚಿಸಲು  
ಶಕ್ಯವಾದ. ಗುಣ (ಆಮ್ರೇಡನೆ) + ಣಿच् "ಅನೀಯರ್"  
(3-1-96). 5. ಎಣಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 6. ಎಣಿಸಲು  
ಶಕ್ಯವಾದ. 7. ಎಣಿಸಲ್ಪಡುವ.

ಗುಣಪೂಗ ಗುಣಪೂಗ (ಪುಂ) ಗುಣಗಳ ಸಮೂಹ. ಗುಣಾನಾಂ  
ಪೂಗಃ. "ಘನತಾಂ ಧ್ರುವಂ ನಯತಿ ತೇನ ಭವದ್ಗುಣಪೂಗಪೂರಿತ-  
ಮತೃಪ್ತತಯಾ" ಮಾಘಂ 9-64.

ಗುಣಪ್ರವೃದ್ಧ ಗುಣಪ್ರವೃದ್ಧ (ವಿಂ) ಸತ್ತ್ವರಜಸ್ತಮೋಗುಣ  
ಗಳಿಂದ ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿದ. ಗುಣೈಃ ಸತ್ತ್ವರಜಸ್ತಮೋಭಿಃ  
ಪ್ರವೃದ್ಧಾಃ. "ಅಧಶ್ಚೋರ್ವಂ ಪ್ರಸೃತಾಸ್ತಸ್ಯ ಶಾಖಾ ಗುಣಪ್ರವೃದ್ಧಾ  
ವಿಷಯಪ್ರವಾಲಾಃ" ಗೀತಾ 15-2.

ಗುಣಭೃತ್ ಗುಣಭೃತ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಗುಣಂ ಬಿಭರ್ತಿ  
ಸ್ವಸಂಕಲ್ಪೇನ ಸರ್ವಂ ಸ್ವಗುಣಭೃತಸರ್ವಾವಸ್ಥಾಂ ಕುರ್ವನ್ ಬಿಭರ್ತಿ — ಡು  
ಭೃತ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ವಿವಪ್" (3-2-96).  
"ಸಂಕಲ್ಪಾತ್ ಸ್ವಗುಣಿಭೃತಸರ್ವಾವಸ್ಥಾಮಿದಂ ಜಗತ್. ಕುರ್ವನ್ ಬಿಭರ್ತಿ  
ನಿತ್ಯಂ ಯಃ ಗುಣಭೃತ್ ಸ ಸ್ಮೃತೋ ಬುಧಃ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ.  
"ಗುಣಭೃನ್ನಿಗುಣೋ ಮಹಾನ್" ವಿಂ ಸಂ. (ವಿಂ) 2. ಒಳ್ಳೆಯ  
ಗುಣಶಾಲಿಯಾದ, ಉತ್ತಮ ಗುಣಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ.

ಗುಣಭೋಕ್ತೃ ಗುಣಭೋಕ್ತೃ (ವಿಂ) ವಸ್ತುಗಳ ಗುಣಗಳನ್ನು  
ಭೋಗಿಸುವವನು, ಸತ್ತ್ವಾದಿಗುಣಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ  
ವವನು, ಸತ್ತ್ವಾದಿ ಗುಣಗಳ ಭೋಗದಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಥನಾದ  
ವನು. ಗುಣಾನಾಂ ಭೋಕ್ತಾ. "ಅಸಕ್ತಂ ಸರ್ವಭೃತ್ವೇವ ನಿರ್ಗುಣಂ  
ಗುಣಭೋಕ್ತೃ ಚ" ಗೀತಾ 13-14. ಇಲ್ಲಿ ವಸ್ತುತಃ ಸ್ವಭಾವ  
ವಾಗಿ ಗುಣಸಂಬಂಧವು ಬಾಧಿತವಾದರೂ ಅದು ಔಪಾಧಿಕ  
ವಾದುದು. ಅವನ್ನು ಹೊಂದುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವು ಮಾತ್ರ  
ನಿಷ್ಠವಾದುದು.

ಗುಣಭ್ರಂಶ ಗುಣಭ್ರಂಶ (ಪುಂ) ಗುಣಗಳ ನಾಶ, ಉತ್ತಮ  
ಗುಣಗಳು ನಾಶಹೊಂದುವಿಕೆ. ಗುಣಾನಾಂ ಭ್ರಂಶಃ.

ಗುಣಮಯ ಗುಣಮಯ (ವಿಂ) 1. ಉತ್ತಮ ಗುಣಗಳಿಂದ  
ತುಂಬಿರುವ, ಗುಣಾತ್ಮಕ. ಪ್ರಚುರಗುಣಃ—ಗುಣ ಪ್ರಾಚುರ್ಯ "ಮಯತ್"  
(4-4-21). "ತ್ರಿಭಿರ್ಗುಣಮಯೈರ್ಭವೈರೇಭಿಃ ಸರ್ವಮಿದಂ ಜಗತ್"  
ಗೀತಾ 7-13. "ತಯಾ ಬದ್ಧಮನಶ್ಚಕ್ಷುಃ ಪಾಶೈರ್ಗುಣಮಯೈಸ್ತದಾ" ಭಾಂ  
ಆದಿಂ. 2. ತಂತುಮಯವಾದ, ದಾರದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಗುಣಲುಬ್ಧ ಗುಣಲುಬ್ಧ (ವಿಂ) ಗುಣದಲ್ಲಿ ಆಸೆಯುಳ್ಳ,  
ಗುಣಪಕ್ಷಪಾತಿಯಾದ. ಗುಣೇಷು ಲುಬ್ಧಃ. "ವೃಣತೇ ಹಿ  
ವಿಮೃಶ್ಯಕಾರಿಣಿ ಗುಣಲುಬ್ಧಾಃ ಸ್ವಯಮೇವ ಸಂಪದಃ" ಕಿರಾಂ  
2-30.

ಗುಣವಚನ ಗುಣವಚನ (ಪುಂ) ಶುಕ್ಲಾದಿ ಗುಣವಿಶಿಷ್ಟವಾದ  
ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಹೇಳುವ ಶಬ್ದ, ಬಿಳುಪು ಕೆಂಪು ಮಾರ್ದವ  
ಕಾಠಿನ್ಯ ಮುಂತಾದ ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪದಾರ್ಥ  
ಗಳನ್ನು ಹೇಳುವ ಶಬ್ದ. ಗುಣಮುಕ್ತವಾನ್—ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ)  
ಭೂತೇ ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134). "ವೌತೋ ಗುಣವಚನಾತ್"  
ಪಾಂ ಸೂಂ 4-1-44. ಮೃದ್ವಿ ಮೃದ್ವಃ. "ಗುಣವಚನಬ್ರಾಹ್ಮಣಾ-  
ದಿಭ್ಯಃ ಕರ್ಮಣಿ ಚ" ಪಾಂ ಸೂಂ 4-1-124. ಜಡಸ್ಯ ಕರ್ಮ  
ಭಾವೋ ವಾ ಜಾಡಧಮ್. ಮೂಢಸ್ಯ ಭಾವಃ ಕರ್ಮ ವಾ ಮೌಢಧಮ್.

ಗುಣವತ್ ಗುಣವತ್ (ವಿಂ) ಗುಣಸಂಪನ್ನನಾದ, ಸದ್ಗುಣ  
ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಗುಣಾ ಅಸ್ಯ ಸಂತಿ "ಮತುಪ್" (4-2-94).  
"ಗುಣವಂತಮಪ್ಯಯಮಪಾಸ್ಯ ಜನಮಖಿಲಮವ್ಯವಸ್ಥಿತಃ" ಮಾಘಂ  
14-10. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (4-1-6). —ವತೀ—ವತಿ.  
"ಗುಣವತ್ಯುಪಾಯನಿಲಯೇ ಸ್ಥಿತಿಹೇತೋ ಸಾಧಿಕೇ ತ್ರಿವರ್ಗಸ್ಯ"  
ಮುद्रಾಂ 1-4.

ಗುಣವರ್ಣನ ಗುಣವರ್ಣನ (ನಂ) ಗುಣಗಳನ್ನು ವಿವರಿಸು  
ವುದು, ಗುಣಗಳನ್ನು ನಿರೂಪಿಸುವುದು. ಗುಣಾನಾಂ ವರ್ಣನಮ್.

ಗುಣವಾಚಕ ಗುಣವಾಚಕ (ವಿಂ) ಗುಣಗಳನ್ನು ಹೇಳುವ  
ಶಬ್ದ, ವಿಶೇಷಣ. ಗುಣಾ ಉಚ್ಯಂತೇಜೇನ—ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ)  
ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-119).

ಗುಣವೃಕ್ಷ (ಕ) ಗುಣವೃಕ್ಷ (ಕ) (ಪುಂ) ಹಡಗಿನ ಹಗ್ಗ  
ವನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಕಂಬ. ಗುಣಾನಾಂ ನೌಕಾಬಂಧನರಜ್ಜುನಾಂ ವೃಕ್ಷಃ  
ಸಂಜಾಯಾಂ "ಕನ್" (4-3-69).

ಗುಣವೃತ್ತಿ ಗುಣವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲಕ್ಷಣಾವೃತ್ತಿ, ಸಾದೃಶ್ಯಾದಿ  
ಗುಣಗಳಿಂದ ಶಬ್ದದ ಅರ್ಥವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಕ್ತಿ. ಗುಣೇನ  
ವೃತ್ತಿಃ.

ಗುಣಸಂಘ ಗುಣಸಂಘ (ಪುಂ) ಗುಣದ ಕಾರ್ಯವಾದ ಸುಖ  
ದುಃಖಗಳಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿ. ಗುಣೇಷು ಗುಣಕಾರ್ಯೇಷು ಸುಖದುಃಖಾದಿಷು  
ಸಂಘಃ ಆಸಕ್ತಿಃ. "ಕಾರಣಂ ಗುಣಸಂಘೋಽಸ್ಯ ಸದಸದ್ವಿನಿ-  
ಜನ್ಮಸು" ಗೀತಾ 13-21.

ಗುಣಸಂಪದ್ ಗುಣಸಂಪದ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗುಣಸಮೃದ್ಧಿ, ಗುಣಾತಿ  
ಶಯ. ಗುಣಸ್ಯ ಸಂಪದ್. "ಗುಣಸಂಪದಾ ಸಮಧಿಗಮ್ಯ ಪರಂ  
ಮಹಿಮಾನಮತ್ರ ಮಹಿತೇ ಜಗತಾಮ್" ಕಿರಾಂ 4-24.

ಗುಣಸಂಪನ್ನ ಗುಣಸಂಪನ್ನ (ವಿಂ) ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ,  
ಗುಣಶಾಲಿಯಾದ. ಗುಣೈಃ ಸಂಪನ್ನಃ.



ಗುಣಸಾಗರ ಗುಣಸಾಗರ (ಪುಂ) 1. ಚತುರ್ಮುಖ ಬ್ರಹ್ಮ. ಗುಣಾನಾಂ ಸಾಗರ ಇವಾಧಾರಃ। (ವಿಂ) 2. ಗುಣಗಳಿಗೆ ಆಧಾರವಾದ.

ಗುಣಸಿಂಧು ಗುಣಸಿಂಧು (ವಿಂ) ಗುಣಗಳಿಗೆ ಸಮುದ್ರದಂತಿರುವ, ಗುಣಗಳಿಗೆ ಆಧಾರವಾದ. ಗುಣಾನಾಂ ಸಿಂಧುರಿವ। “ಗುಣಸಿಂಧುರಸೌ ಗುಣಾತಿವರ್ತೀ ಗತಿರಂತಸ್ಥಿತೀರಾಗಮೇಕಗಮ್ಯಃ” ಯಾದಂ ೧೪-೪।

ಗುಣಹೀನ ಗುಣಹೀನ (ವಿಂ) ಗುಣವಿಲ್ಲದವನು, ಅಯೋಗ್ಯ, ಅಸಭ್ಯ. ಗುಣಃ ಹೀನಃ।

ಗುಣಾ ಗುಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗುಣಕುಳ್ಳು, ಗುಣೋಪ್ಪದೇಶಃ: “ಅಚ್” (೪-೨-೧೨೭)।

ಗುಣಾಕರ ಗುಣಾಕರ (ವಿಂ) ಗುಣಗಳ ಗಣ, ಗುಣಗಳಿಗೆ ವಾಸಸ್ಥಾನ. ಗುಣಾನಾಮಾಕರಃ।

ಗುಣಾಢ್ಯ ಗುಣಾಢ್ಯ (ಪುಂ) 1. “ಬೃಹತ್ಕಥಾ” ಗ್ರಂಥವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಕವಿ. (ವಿಂ) 2. ಗುಣಗಳಿಂದ ತುಂಬಿರುವ. ಗುಣೇರಾಢ್ಯಃ।

ಗುಣಾತಿವರ್ತಿನ ಗುಣಾತಿವರ್ತಿನ (ಪುಂ) ಸತ್ತ್ವರಜಸ್ತಮೋರೂಪವಾದ ಮಾಯಾಗುಣಗಳನ್ನು ಮೀರಿದವನು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಗುಣಾನ್ ಮಾಯಾಗುಣಾನ್ ಅತಿವರ್ತತೀ - ಅತಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) “ಗಿಣಿಃ” (೩-೨-೭೮)। “ಗುಣಸಿಂಧುರಸೌ ಗುಣಾತಿವರ್ತೀ” ಯಾದಂ ೧೪-೪।

ಗುಣಾತಿಶಯ ಗುಣಾತಿಶಯ (ಪುಂ) ಹೆಚ್ಚು ಗುಣಗಳು, ಅಧಿಕವಾದ ಉತ್ತಮ ಗುಣಗಳು. ಗುಣಾನಾಮತಿಶಯಃ।

ಗುಣಾತೀತ ಗುಣಾತೀತ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. ಗುಣಾನ್ ಸತ್ವಾದೀನ್ ಮಾಯಾಗುಣಾನ್ ಅತೀತಃ। (ವಿಂ) 2. ದೇಹಾಕಾರವಾಗಿ ಪರಿಣಾಮಹೊಂದಿದ ಪ್ರಕೃತಿಯಿಂದ ಉಂಟಾದ ಈ ಸತ್ತ್ವಾದಿ ಗುಣಗಳನ್ನು ದಾಟಿದ ಜೀವಾತ್ಮ, ಸ್ಥಿತಪ್ರಜ್ಞ. ಜೀವನು ಸತ್ತ್ವರಜಸ್ತಮೋಗುಣಗಳನ್ನು ಮೀರಿ ಜನ್ಮ ಮೃತ್ಯು ಮುಪ್ಪು ಇವುಗಳ ದುಃಖದಿಂದ ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟವನಾಗಿ ಜ್ಞಾನೈಕಸ್ವರೂಪನಾದ ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರಿಸಿ ಅನುಭವಿಸುತ್ತಾನೆ. “ಗುಣಾನೇತಾನತೀತ ತ್ರೀನ್ ದೇಹಿ ದೇಹಸಮುಢ್ಢವಾನ್। ಜನ್ಮಮೃತ್ಯುಜರಾದುಃಖೈಃ ವಿಮುಕ್ತೋಽಮೃತಮಶ್ನುತೀ” ಗೀತಾ ೧೪-೨೦। “ಸರ್ವಾರಂಭಪರೀತ್ಯಾಗೀ ಗುಣಾತೀತಃ ಸ ಉಚ್ಯತೀ” ಗೀತಾ ೧೪-೨೪।

ಗುಣಾಧಾನ ಗುಣಾಧಾನ (ನಂ) ಅಧಿಕವಾದ ಗುಣಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸುವುದು, ಬೇರೆ ಗುಣಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿಸುವುದು. ಗುಣಸ್ಯ ಗುಣಾಂತರಸ್ಯಾಧಾನಮ್।

ಗುಣಾಧಾರ ಗುಣಾಧಾರ (ವಿಂ) ಗುಣಗಳಿಗೆ ಆಧಾರವಾದ, ಗುಣಗಳಿಗೆ ವಾಸಸ್ಥಾನವಾದ. ಗುಣಾನಾಮಾಧಾರಃ।

ಗುಣಾನುರಾಗ ಗುಣಾನುರಾಗ (ಪುಂ) ಗುಣದಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿ, ಇತರರ ಗುಣದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವಾಸ. ಗುಣೇಷ್ವನುರಾಗಃ। “ಗುಣಾನುರಾಗಾದಿವ ಸತ್ಯಮೈಯಿವಾನ್ ಬಾಧತೇಽಸ್ಯ ತ್ರಿಗುಣಃ ಪರಸ್ಪರಮ್” ಕಿರಾಂ ೧-೧೧।

ಗುಣಾನುರೋಧ ಗುಣಾನುರೋಧ (ಪುಂ) ಗುಣಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರ, ಗುಣಗಳಿಗೆ ಅನುರೂಪವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಗುಣಾನಾಮನುರೋಧಃ।

ಗುಣಾಂತರ ಗುಣಾಂತರ (ನಂ) ಬೇರೆ ಗುಣ. ಅನ್ಯೋ ಗುಣಃ। “ಪಾತ್ರವಿಶೇಷೇ ನ್ಯಸ್ತಂ ಗುಣಾಂತರಂ ವ್ರಜತೀ ಶಿಲ್ಪಮಾಧಾತುಃ” ಮಾಲಂ ೧-೬।

ಗುಣಾನ್ವಿತ ಗುಣಾನ್ವಿತ (ವಿಂ) 1. ಸದ್ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಗುಣಶೀಲನಾದ. 2. ವಿವೇಕ ವೈರಾಗ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಮೋಕ್ಷೋಪಾಯಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. “ಪ್ರಕ್ಷೀಣದೋಷಾಯ ಗುಣಾನ್ವಿತಾಯ” ವೇದಾಂತಸಾಂ।

ಗುಣಾಭಿಲಾಷಿನ್ ಗುಣಾಭಿಲಾಷಿನ್ (ವಿಂ) ಗುಣದಲ್ಲಿ ಆಸೆಯುಳ್ಳ, ಗುಣವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಗುಣಮಭಿಲಷತೀ - ಅಭಿ + ಲಷ (ಕಾಂತೀ) “ಗಿಣಿಃ” (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಜಿಫ್” (೪-೧-೪)। -ಲಾಭಿಣಿ -ಲಾಷಿಣೀ. “ಅಗಚ್ಛದಂಶೇನ ಗುಣಾಭಿಲಾಷಿಣಿ ನವಾವತಾರಂ ಕಮಲಾದಿ-ವೋತ್ಪಲಮ್” ರಘುಂ ೩-೩೬।

ಗುಣಾಲಂಕೃತ ಗುಣಾಲಂಕೃತ (ವಿಂ) ಸದ್ಗುಣಗಳಿಂದ ಭೂಷಿತನಾದ, ಒಳ್ಳೆಯ ಗುಣಗಳಿಂದ ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಗುಣೇರಲಂಕೃತಃ।

ಗುಣಾಶ್ರಯ ಗುಣಾಶ್ರಯ (ವಿಂ) ಗುಣಗಳಿಗೆ ಆಧಾರವಾದ, ಗುಣಗಳಿಗೆ ವಾಸಸ್ಥಾನವಾದ. ಗುಣಾನಾಮಾಶ್ರಯಃ।

ಗುಣಿಕಾ ಗುಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಊತ, ಬಾವು, ಗೆಡ್ಡೆ.

ಗುಣಿತ ಗುಣಿತ (ವಿಂ) 1. ಗುಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಗುಣ (ಆಮನ್ತ್ರಣೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। “ಅನಧಿಗತ-ಮನೋರಥಸ್ಯ ಪೂರ್ವ ಶತಗುಣಿತೇವ ಗತಾ ಮಮ ತ್ರಿಯಾಮಾ” ವಿಕ್ರಂ ೩-೨೨। 2. ದೊಡ್ಡದಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೆಳೆಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಪಶ್ಚಾದಾಪಿ ವಿರಹಗುಣಿತಂ ತಂ ತಮಾತ್ಮಾಭಿಲಾಷಿ ನಿವೇಕ್ಷಯಾಃ ಪರಿಣತಶರಚ್ಚಂದ್ರಿಕಾಸು ಕ್ಷಪಾಸು” ಮೇಘಂ ೨-೪೭। 3. ಎಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಲೆಕ್ಕಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಗುಣಿತವ್ಯ ಗುಣಿತವ್ಯ (ವಿಂ) “ಗುಣನೀಯ” ಪದದ ಅರ್ಥ, ಗುಣ “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬)।

ಗುಣಿನ್ ಗುಣಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಧನುಸ್ಸು, ಬಿಲ್ಲು. “ಸ್ಥಾವರಂ ತು ಧನುರ್ಗುಣಿ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। (ವಿಂ) 2. ಒಳ್ಳೆಯ ಗುಣ



ಗಣಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಗುಣಾ ಅಸ್ಯ ಸಂತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)।  
 "ನಾಗುಣಿ ಗುಣಿನಂ ವೇತ್ತಿ ಗುಣಿ ಗುಣಿಷು ಮತ್ತರೀ। ಗುಣಿ ಚ  
 ಗುಣರಾಗಿ ಚ ವಿರಲಃ ಸರಲೋ ಜನಃ"। 3. ರಜ್ಜುಸಹಿತ  
 ವಾದ. 4. ತಂತುಸಹಿತವಾದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್"  
 (೪-೧-೫)। ಗುಣಿನಿ ಗುಣೀಶ್ವರ.

**ಗುಣಿಭಾವ ಗುಣೀಭಾವ** (ಪುಂ) ಅಪ್ರಧಾನವಾಗಿ ಆಗುವುದು.

"ಯತ್ರ ವಸ್ತವಲಕ್ಷಾರರಸಾದಿರೂಪವ್ಯಜ್ಞಾನಾಂ ರಸಾಭ್ಯಂತರೇ  
 ಗುಣಿಭಾವಃ ತತ್ರ ಪ್ರಧಾನಕೃತ ಉಚ್ಯತೇ" ಸಾಂ ೬೦।

**ಗುಣಿಭೂತ ಗುಣೀಭೂತ** (ವಿಂ) ಮುಖ್ಯವಲ್ಲದ, ಅಪ್ರಧಾನ  
 ವಾದ, ಅಪ್ರಧಾನವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಗುಣಃ ಗುಣಃ  
 ಭೂತಃ - ಗುಣ + ಭೂ "ಜಿವಿ:" (೪-೪-೫೦)। ತತಃ  
 "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಸರ್ವೇಪಿ ಗುಣೈರಯುಕ್ತೋ ನಿರ್ವಿಘ್ನಃ  
 ಕಿಂ ಕರೀಷ್ಯತಿ। ಗುಣಿಭೂತಾ ಗುಣಾಃ ಸರ್ವೇ ತಿಷ್ಠಂತಿ ಹಿ  
 ಪರಾಕ್ರಮೇ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೧೬-೧೧।

**ಗುಣಿಭೂತವ್ಯಜ್ಞಾನ ಗುಣೀಭೂತವ್ಯಂ ಗುಣೀಭೂತ**  
 ವ್ಯಂ ಗುಣೀಭೂತವ್ಯಂ. ವ್ಯಂ ಗುಣೀಭೂತವ್ಯಂ ಅಪ್ರಧಾನವಾಗಿಯೇ ಇದ್ದು  
 ಚಮತ್ಕಾರಾಧಾಯಕವಾಗಿರುವಲ್ಲಿ ಅದು ಗುಣೀಭೂತ  
 ವ್ಯಂ ಗುಣೀಭೂತವ್ಯಂ. "ಯತ್ರ ವ್ಯಜ್ಞಾನಮಪ್ರಧಾನಮೇವ ಸಂಚಮ-  
 ತ್ಕಾರಕಾರಣಂ ತದ್ವಿತ್ತೀಯಮ್" ರಸಗಂ. ೩. ಉದಾ: "ರಾಜ-  
 ವಿರಹಜ್ವಾಲಾಸಂತಾಪಿತಸಹ್ಯಶೈಲಶಿಖರೇಷು। ಶಿಶಿರೇ ಸುಖಂ  
 ಶಯಾನಾಃ ಕಪಯಃ ಕುಪ್ಯಂತಿ ಪವನತನಯಾಃ"। ಇಲ್ಲಿ  
 ಅಂಜನೇಯನು ಜಾನಕಿಯ ಕುಶಲವನ್ನು ತಿಳಿಸಿದುದರಿಂದ  
 ಶ್ರೀರಾಮನ ವಿರಹತಾಪವೆಲ್ಲವೂ ಕಡಮೆಯಾಯಿತೆಂಬ  
 ವ್ಯಂ ಗುಣೀಭೂತವ್ಯಂ. ಶಿಶಿರಯುತವಿನಲ್ಲಿ ಶೈತ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ  
 ಸಹ್ಯಾದ್ರಿ ಶಿಖರದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀರಾಮನ ವಿರಹಜ್ವಾಲೆಯ ಶಾಖೆ  
 ದಿಂದ ಸುಖವಾಗಿ ಮಲಗಿದ್ದ ಕಪಿಗಳು ಅಂಜನೇಯನ  
 ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಕೋಪಗೊಂಡವು ಎಂಬ ವಾಚ್ಯಾರ್ಥಕ್ಕೆ  
 ಗುಣೀಭೂತವಾಗಿ ಚಮತ್ಕಾರಾಧಾಯಕವಾಗಿರುವುದರಿಂದ  
 ಇಲ್ಲಿ ಗುಣೀಭೂತವ್ಯಂ ಗುಣೀಭೂತವ್ಯಂ. "ಅಪರಂ ತು ಗುಣಿಭೂತ-  
 ವ್ಯಜ್ಞಾನಂ ವಾಚ್ಯಾದನುತ್ತಮೇ ವ್ಯಜ್ಞಾನೇ" ಸಾಂ ೬೦।

**ಗುಣೋತ್ಕರ್ಷ ಗುಣೋತ್ಕರ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಉತ್ಕೃಷ್ಟವಾದ ಗುಣ  
 ಗಳು. ಗುಣಾನಾಮುತ್ಕರ್ಷಃ। "ಮುಖಾದಿತ್ವಂ ನಿವರ್ತಯೇವ ಪದ್ಮಾದಿತ್ವೇನ  
 ರೂಪಾತ್। ತದ್ಭಾವಿತಗುಣೋತ್ಕರ್ಷಂ ತತ್ತ್ವಾಪಲ್ಲವರೂಪಕಮ್" ಕಾವ್ಯಾಂ  
 ೨-೯೫। "ಭೂಯಸ್ತವ ಗುಣೋತ್ಕರ್ಷಮೇತೇ ವಿಧೇ ಕರೀಷ್ಯತಃ" ರಾಮಾಂ।

**ಗುಣೋದಧಿ ಗುಣೋದಧಿ** (ವಿಂ) ಗುಣಗಳಿಗೆ ಸಮುದ್ರದಂತೆ  
 ರುವ, ಗುಣಗಳಿಗೆ ಆಶ್ರಯವಾದ. ಗುಣಾನಾಮುದಧಿಃ।  
 "ಗುಣೋದಧಿತ್ವಂ ಗುಣಕರ್ತೃರಾತ್ಮನಾ ತಿರಸ್ಕರಣ್ಯಾ ಪಿಹಿತಾತ್ಮ-  
 ದೃಷ್ಟಿಮಿ:" ಯಾದಂ ೧೪-೩೭।

**ಗುಣೋಪೇತ ಗುಣೋಪೇತ** (ವಿಂ) ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ.  
 ಗುಣೋಪೇತಃ। "ಪುತ್ರಮೇವಗುಣೋಪೇತಂ ಚಕ್ರವರ್ತಿನಮಾಪ್ನುಹಿ" ಶಾಕುಂ  
 ೧-೧೧।

**ಗುಣನ ಗುಣನ** (ನಂ) 1. ಮುಚ್ಚುವುದು, ಮರೆಮಾಡು  
 ವುದು. ಗುಣಿ (ವೇಷ್ಠನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।  
 2. ಬಳಿಯುವುದು, ಹಚ್ಚುವುದು. "ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರಂ ತ್ರಯೋ  
 ವೇದಾಸ್ವಿದಧಂತ ಭಸ್ಮಗುಣನಮ್" ಪ್ರಬೋಧಂ ೨-೨೬। 3. ಸುತ್ತು  
 ವರಿಯುವುದು.

**ಗುಣಿತ ಗುಣಿತ** (ವಿಂ) 1. ಧೂಳಿನಿಂದ ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ.  
 2. ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸುತ್ತುವರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಗುಣಿ  
 (ವೇಷ್ಠನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಗುಣಿ ಗುಣಿ** (ಪುಂ) 1. ಅರೆಯುವುದು, ಪುಡಿಮಾಡುವುದು.  
 ಗುಡಿ (ವೇಷ್ಠನೆ) + ಗಿಣಿ ಭಾವೇ "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬)।  
 2. ಕಬ್ಬು. (ವಿಂ) 3. ಅರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಪುಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಗುಣಕ ಗುಣಕ** (ಪುಂ) 1. ಧೂಳು. 2. ಜೋಣ, ಪುಡಿ.  
 3. ಎಣ್ಣೆಯ ಪಾತ್ರೆ. 4. ಮಧುರಧ್ವನಿ, ಇಂಪಾದ  
 ಮಾತು. (ವಿಂ) 5. ಮಲಿನವಾದ, ಕೂಳಿಯಾದ. ಗುಡಿ  
 (ವೇಷ್ಠನೆ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಗುಣಕೋ ಮಲಿನೇ  
 ಭೂಲೋ ಕಲೋಕ್ತಿರ್ನೇಹಪಾತ್ರಯೋಃ" ಮೇದಿಂ।

**ಗುಣನ ಗುಣನ** (ನಂ) "ಗುಣನ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

**ಗುಣಿತ ಗುಣಿತ** (ವಿಂ) 1. ಅರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಪುಡಿಮಾಡ  
 ಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಧೂಳಿನಿಂದ ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಬಳಿಯ  
 ಲ್ಪಟ್ಟ. ಗುಡಿ (ವೇಷ್ಠನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಗುಣ್ಯ ಗುಣ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಗುಣಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ಎಣಿ  
 ಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಗುಣಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಎಣಿಸ  
 ಲ್ಪಡುವ. ಗುಣ(ಆಮನ್ವಯ) + ಗಿಣಿ "ಯತ್" (೩-೧-೯೭)।  
 (ವಿಂ) 4. ಉತ್ತಮ ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪ್ರಶಸ್ತಾ  
 ಗುಣಾ ಅಸ್ಯ ಸಂತಿ "ಯಪ್" (ವಾಂ ೪-೨-೧೨೦)। "ದಿತ್ಸಯಾ  
 ತದಪಿ ಪಾರ್ಥಿವೋರ್ಜನಂ ಗುಣ್ಯಗುಣ್ಯ ಇತಿ ನ ವ್ಯಜೀಗಣತ್"  
 ಮಾಧಂ ೧೪-೪೭।

**ಗುಣ ಗುಣ** (ಪುಂ) 1. ಗೊಂಚಲು. 2. ಹುಲ್ಲು ಮೊದಲಾ  
 ದುವುಗಳ ಹೊರೆ. 3. ಹಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. 4. ಮಾಚಿ  
 ಪತ್ರೆ. 5. ಹೂವಿನ ಗೊಂಚಲು. ಗುಣ (ಪರಿವೇಷ್ಠನೆ)  
 "ಸಃ" (೩-೩-೬೮)। "ಗುಣಃ ಸ್ಯಾತ್ ಸ್ತಬಕೇ ಸ್ತಮ್ಬೇ  
 ಹಾರಭಿದ್ಗ್ರಂಥಿಪರ್ಣಯೋಃ" ಮೇದಿಂ।

**ಗುಣಕ ಗುಣಕ** (ಪುಂ) 1. ಗೊಂಚಲು. 2. ಹೂವಿನ  
 ಗೊಂಚಲು. 3. ಜಾಮರ. 4. ಪುಸ್ತಕದ ಭಾಗ,  
 ಅಧ್ಯಾಯ.



ಗುತ್ಸಾರ್ಥ ಗುತ್ಸಾರ್ಥ (ಪುಂ) ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು ಎಳೆಗಳ ಮುಕ್ತಿನ ಹಾರ. "ಗುತ್ಸಗುತ್ಸಾರ್ಥಗೋಸ್ತನಾಃ" ಅಮಂ.

ಗುದ - ಕ್ರಿಡಾಯಾಮ್ (ಭಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸಂ) | ಗೋದತೇ | ಜುಗುಡೇ | ಅಗೋದಿಷ್ಟ | ಕ್ರೇಡಿಸಂ, ಆಟವಾಡು.

ಗುದ ಗುಡ (ನಂ) ಗುದಸ್ಥಾನ, ಮಲದ್ವಾರ, ಅಪಾನದ್ವಾರ. ಗೋದತೇ - ಗುದ (ಕ್ರಿಡಾಯಾಮ್) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫) |

ಗುದಕೀಲ ಗುದಕೀಲ (ಪುಂ) ಅರ್ಶೋರೋಗ, ಮೂಲ ವ್ಯಾಧಿ. ಗುದೇ ಕೀಲ ಇವ | "ಸ್ಥೂಲಕಂದಸ್ತು ನಾತ್ಯುಷ್ಣಃ ಶೂರಣೋ ಗುದಕೀಲಹಾ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬-೩೦೭ |

ಗುದಗ್ರಹ ಗುದಗ್ರಹ (ಪುಂ) ಮಲಬದ್ಧತೆ, ಹೊಟ್ಟೆ ಕಟ್ಟುವುದು. ಗುದಂ ತದ್ವ್ಯಾಪಾರಂ ಗೃಹ್ಣಾತಿ - ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |

ಗುದಪಾಕ ಗುದಪಾಕ (ಪುಂ) ಅತಿಸಾರ ಆಮಶಂಕೆ ಮೊದಲಾದ ರೋಗಗಳಿಂದ ಮಲದ್ವಾರದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಉರಿತ. ಗುದಸ್ಯ ಪಾಕಃ |

ಗುದಭ್ರಂಶ ಗುದಭ್ರಂಶ (ಪುಂ) ಗುದವು ಜಾರಿಬೀಳುವುದು, ಅಸನದ್ವಾರದ ಮಾಂಸಖಂಡವು ಕೆಳಕ್ಕೆ ಜಾರುವುದು. ಗುದಸ್ಯ ಭ್ರಂಶಃ | ದೇಹಬಲವಿಲ್ಲದವನಿಗೆ ಅತಿಸಾರ ಆಮಶಂಕೆ ಹೆಚ್ಚು ಧಾರ ಹೊರುವುದು ಇವುಗಳಿಂದ ಗುದಭ್ರಂಶವುಂಟಾಗುವುದು. "ಪ್ರವಾಹಣಾತಿಸಾರಾಮ್ಯಾಂ ನಿರ್ಗಂಚ್ಛತಿ ಗುದಂ ಬಹಿಃ | ರೂಕ್ಷದುರ್ಬಲದೇಹಸ್ಯ ಗುದಭ್ರಂಶಂ ತಮಾದಿಶೇತ್" | "ಗುದಭ್ರಂಶಮಿಮಂ ಕುಂಚ್ಛಂ ಪಾನಾಮ್ಯಜ್ಞಾತ್ ಪ್ರಸಾಧಯೇತ್" ಸುಶ್ರುತಂ | ಬಹಳ ದಿನ ಗಳ ಅತಿಸಾರರೋಗವುಳ್ಳವರಿಗೆ ಗುದವು ದುರ್ಬಲವಾಗಿ ಗುದಭ್ರಂಶವಾಗುವುದು. ಗುದವು ದುರ್ಬಲವಾಗಿರುವಾಗ ಒಪ್ಪಕಾರಿಯಿಂದ ಎಣ್ಣೆಯನ್ನು ಬಿಡಬೇಕು. "ಪ್ರಾಣೇಣ ಗುದದೌರ್ಬಲ್ಯಂ ದೀರ್ಘಕಾಲಾತಿಸಾರಿಣಾಮ್ | ಭವೇತ್ತಸ್ಮಾದ್ಧಿತಂ ತೇಷಾಂ ಗುದೇ ತೈಲಾವಚಾರಣಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರತಂ ೪೦-೧೧೨ |

ಗುದರೋಗ ಗುದರೋಗ (ಪುಂ) ಮಲದ್ವಾರದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ವ್ಯಾಧಿ. ಇದು ಪಾಪಕಾರ್ಯದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ರೋಗ. "ಸುರಾಲಯೇ ಜಲೇ ವಾಪಿ ಶಕ್ರುನ್ಮೂತ್ರಂ ಕರೋತಿ ಯಃ | ಗುದರೋಗೋ ಭವೇತ್ತಸ್ಯ ಪಾಪರೂಪಃ ಸುದಾರುಣಃ" |

ಗುದಸ್ತಂಭ ಗುದಸ್ತಂಭ (ಪುಂ) ಮಲದ್ವಾರದ ವ್ಯಾಪಾರ ವನ್ನು ತಡೆಯುವುದು. ಮಲಬದ್ಧತೆ.

ಗುದಾಚ್ಚುರ ಗುದಾಚ್ಚುರ (ಪುಂ) ಅರ್ಶೋರೋಗ, ಮೂಲ ವ್ಯಾಧಿ. ಗುದೇ ಅಚ್ಚುರ ಇವ |

ಗುಧ - ಪರಿವೇಷ್ಟನೆ (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸಂ) | ಗುಧ್ಯತಿ | ಜುಗುಧ | ಗೋಧಿತಾ | ಗೋಧಿಷ್ಯತಿ | ಗುಧ್ಯತು | ಅಗುಧ್ಯತ್ | ಗುಧ್ಯೇತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಸುತ್ತುಗಟ್ಟು, ಮರೆಮಾಡು, ಮುಚ್ಚು.

ಕರ್ಮಣಿಃ - ಗುಧ್ಯತೇ | ಜುಗುಧೇ | ಗೋಧಿತಾ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗುಧಿತ ಗುಧಿತ (ವಿಂ) ಸುತ್ತುಗಟ್ಟು, ಮುಚ್ಚು. ಗುಧ (ಪರಿವೇಷ್ಟನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

ಗುಧೇರ ಗುಧೇರ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಕ, ಕಾಪಾಡುವವನು. ಗುಧ (ಪರಿವೇಷ್ಟನೆ) "ಆರಕ್" (೩-೧-೬೧) |

ಗುಂದಲ ಗುಂದಲ (ಪುಂ) ಮದ್ದಲೆಯು ತಬ್ಬು. ಗುಮಿತ್ಯವ್ಯಕ್ತ-ಶಬ್ದೇನ ದಲ್ಯತೇ - ದಲ (ವಿಶರಣೆ) ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬) | "ಪ್ರವಾಣಃ ಪ್ರವಣಸ್ತನ್ಯಾಃ ಮದಲಸ್ಯ ತು ಗುಂದಲಃ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ |

ಗುಂದ್ರ ಗುಂದ್ರ (ಪುಂ) 1. ಕಾಗೆ ಬಿದಿರು, ನಾಣಲ ಕಡ್ಡಿ. ಗುಣಾನ್ ರಾತಿ - ರಾ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೪) | ಪೃಷಂ | "ಅಥ ತೇಜನಃ | ಗುಂದ್ರೋ ಮುಜಃ ಶರಃ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗುಂದ್ರಾ ಗುಂದ್ರಾ. 2. ನವಣೆ. 3. ಭದ್ರಮುಸೆ, ಕೆಂಪು ಕೊನ್ನಾರಿ. 4. ಕಾಡು ಗೋಧಿ.

ಗುಂದ್ರಲಾ ಗುಂದ್ರಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚೆಕ್ಕೋರ ಪಕ್ಷಿ.

ಗುಪ್ - ರಕ್ಷಣೆ (ಭಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ವಂ) | ಗೋಪಾಯತಿ | ಗೋಪಾಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಆಯಪ್ರತ್ಯಯಾಭಾವೇ ಜುಗೋಪ | ಗೋಪಾಯಿತಾ, ಗೋಪಿತಾ, ಗೋಪ್ತಾ | ಗೋಪಾಯಿಷ್ಯತಿ, ಗೋಪಿಷ್ಯತಿ, ಗೋಪ್ಸ್ಯತಿ | ಗೋಪಾಯತು | ಅಗೋಪಾಯತ್ | ಗೋಪಾಯೆತ್ | ಗೋಪಾಯ್ಯಾತ್, ಗುಪ್ಯಾತ್ | ಅಗೋಪಾಯಿತ್, ಅಗೋಪಿತ್, ಅಗೋಪ್ಸಿತ್ | ಅಗೋಪಾಯಿಷ್ಯತ್, ಅಗೋಪಿಷ್ಯತ್, ಅಗೋಪ್ಸ್ಯತ್ | ರಕ್ಷಿಸು, ಕಾಪಾಡು.

ಕರ್ಮಣಿಃ - ಗೋಪಾಯತೇ, ಗುಪ್ಯತೇ | ಗೋಪಾಯಾಂ ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಜುಗುಪೇ | ಗೋಪಾಯಿತಾ, ಗೋಪಿತಾ, ಗೋಪ್ತಾ | ಗೋಪಾಯಿಷ್ಯತೇ, ಗೋಪಿಷ್ಯತೇ, ಗೋಪ್ಸ್ಯತೇ | ಗೋಪಾಯತಾಮ್, ಗುಪ್ಯತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿಃ - ಗೋಪಾಯತಿ, -ತೇ | ಗೋಪಯತಿ, -ತೇ | ಗೋಪಾಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಗೋಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಗೋಪಾಯಿತಾ, ಗೋಪಯಿತಾ | ಗೋಪಾಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ಗೋಪಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ಗೋಪಾಯತು, -ತಾಮ್ | ಗೋಪಯತು, -ತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗುಪ್ ಗುಪ್ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಕ, ಕಾಪಾಡುವವನು. ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೆ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬) | "ನಾವಾ ಸ್ಮರಃ ಕಿಂ ಹರಭೀತಿಗುಪ್ ತೇ ಪಯೋಧರೇ" ನೈಷಂ ೬-೬೬ |

ಗುಪಿಲ ಗುಪಿಲ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. 2. ರಕ್ಷಕ, ಕಾಪಾಡುವವನು. ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಇಲಚ್" (೩-೧-೫೭) | ಗುಪಿಲೋ ರಾಜಾ ಸಿಂ ಕೌಂ |

ಗುಪ್ತ ಗುಪ್ತ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. "ಅನ್ಯೈರ್ನಿರವಬೋಧೋ ಯಃ ಗುಪ್ತ ಇತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | "ಗುಹ್ಯಂ ಗಂಭೀರಂ ಗುಹ್ನಂ"



ಗುಪ್ತಶ್ರವಣಾದಾಧರ:” ವಿಂ ಸಂ 1. ಯುದ್ಧ. 3. ಪೃಥ್ವಿರ ಹಸರಿಗೆ ಸೇರಿಸುವ ಒಂದು ಉಪಪದ. “ಗುಪ್ತದಾಸಾತ್ಮಕಂ ನಾಮ ಪ್ರಶಸ್ತಂ ಗುಪ್ತಶೂದ್ರಯೋ:” (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪ್ರಾ -ಶೂ. 4. ನಸುಗುನ್ನಿಗಿಡ. 5. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಹೆಂಗಸು. “ಬ್ರಾಹ್ಮಣಿ ಯದ್ವಗುಪ್ತಾಂ ತು ಗಚ್ಛೇತಾಂ ವೈಶ್ಯಪಾರ್ಥಿವೌ” ಮನುಂ ೮-೩೭೬. (ನಂ) 6. ರಕ್ಷಣೆ. ಗುಪ್ತ (ರಕ್ಷಣೆ) ಭಾವೆ “ಕ್ತ:” (೩-೩-೧೧೪). (ವಿಂ) 7. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಾಪಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 8. ಗೂಢವಾದ, ರಹಸ್ಯವಾದ. “ಸ ಗುಪ್ತಮೂಲಪ್ರತ್ಯಂತ: ಗುಪ್ತಪಾಣಿರಯಾನ್ವಿತ:” ರಘುಂ ೪-೨೬. (ಅವ್ಯಂ) 9. ರಹಸ್ಯವಾಗಿ.

ಗುಪ್ತಕಥಾ ಗುಪ್ತಕಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಹಸ್ಯ ಸಮಾಚಾರ, ಗುಟ್ಟಾದ ಸುದ್ದಿ.

ಗುಪ್ತಗತಿ ಗುಪ್ತಗತಿ (ಪುಂ) 1. ಗೂಢಚಾರ. ಗುಪ್ತಾ ಗತಿಯೆಸ. (ವಿಂ) 2. ರಹಸ್ಯವಾದ ಸಂಚಾರವುಳ್ಳ.

ಗುಪ್ತಚರ ಗುಪ್ತಚರ (ಪುಂ) 1. ಗೂಢಚಾರ, ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವ ಸೇವಕ, ದೂತ. 2. ಬಲರಾಮ. “ಸಂತಂಕೋ ಗುಪ್ತಚರ: ಕ್ವಿಮದಾರ್ಯಕಕುಣ್ಡಲ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಗುಪ್ತಿ ಗುಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಕ್ಷಣೆ, ಕಾಪಾಡುವುದು. ಗುಪ್ತ (ರಕ್ಷಣೆ) ಭಾವೆ “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೧೪). “ಸಂಸ್ಥಾಸ್ಯ ಚ ಸರ್ಗಸ್ಯ ಗುಪ್ತಯಥೆ ಸ ಮಹಾದೃತಿ:” ಮನುಂ ೧-೮೭. 2. ಮರೆಮಾಡುವುದು. ಮುಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಒಳಗೇ ಅಡಗಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. “ಭಯಗೌರವಲಜ್ಜಾದೇಹೈರ್ವಾಚಾರ-ಗುಪ್ತಿರವಹಿತಾ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೫೮. 3. ದುರ್ಗವನ್ನು ಕಟ್ಟಿ ಮರೆಮಾಡುವುದು, ಕೋಟೆಯಿಂದ ಮುಚ್ಚುವುದು. “ಬೃಹನ್ಮಣಿಶಿಲಾಸಾಲಂ ಗುಪ್ತಾವಪಿ ಮನೋಹರಮ್” ಕುಮಾಂ ೬-೩೮. 4. ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡುವಿಕೆ. 5. ಕಾರಾಗಾರ, ಬಂದಿಖಾನೆ. “ದಲಿತದಲಕಪಾಟ: ಪಟಪದಾನಾಂ ಸರೋಜೇ ಸರಭಸ ಇವ ಗುಪ್ತಿ-ಸ್ಕೂಟಮಕ: ಕರೋತಿ” ಮಾಘಂ ೧೧-೬೦. 6. ಹಡಗಿನ ಕೆಳಗಿನ ಅಂತಸ್ತು. 7. ಭೂಮಿಯೊಳಗಿನ ಹಳ್ಳ, ಕಸದ ಗುಂಡಿ. 8. ಮೋಗದ ಅಂಗವಾದ ಯಮ. “ಗುಪ್ತಿಯೇ ಭೂಗರ್ತರಕ್ಷಯೋ: ಕಾರಾಯಾಮ್” ಹೇಮಂ. 9. ಹಳ್ಳಕ್ಕಾಗಿ ಭೂಮಿಯನ್ನು ತೋಡುವುದು. 10. ಹಡಗಿನ ಬಿರುಕು. 11. ಒಂದು ಮಂತ್ರ ಸಂಸ್ಕಾರ.

ಗುಪ್ತ ಗುಂಫ (ಪುಂ) 1. ಮಾಲೆಯ ರಚನೆ, ಹೂವನ್ನು ಕಟ್ಟಿ ವುದು. 2. ಜೋಡಿಸುವುದು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸುವುದು. ಗುಪ್ತ (ಗ್ರಂಥೆ) ಭಾವೆ “ಫ” (೩-೩-೧೮). 3. ಅಂಗದ, ತೋಳಿನ ಒಂದು ಅಭರಣ. “ಗುಪ್ತಸ್ತು ಗುಪ್ತೇ ಬಾಹೋರಲಂಕಾರೇ ಚ ಕೀರ್ತಯತೇ” ಮೇದಿಂ. 4. ಮೂಸೆ, ಗಲ್ಲದ ಕೂದಲು.

ಗುಪ್ತ ಗುಂಫತ್ (ವಿಂ) 1. ಹೂವುಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುತ್ತಿರುವ, ಹೂವುಗಳನ್ನು ಪೋಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಗುಪ್ತ (ಗ್ರಂಥೆ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪). 2. ವಾಕ್ಯಗಳನ್ನು ಜೋಡಿಸುತ್ತಿರುವ.

ಗುಪ್ತನ ಗುಂಫನ (ನಂ) 1. ಶಬ್ದಾರ್ಥಗಳ ಜೋಡಣೆ. 2. ಮಾಲಾರಚನೆ. ಗುಪ್ತ (ಗ್ರಂಥೆ) ಭಾವೆ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫).

ಗುಪ್ತನಾ ಗುಂಫನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಾಕ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಶಬ್ದಾರ್ಥಗಳ ಜೋಡಣೆ, ರಮಣೀಯವಾದ ವಾಕ್ಯರಚನೆ. ಗುಪ್ತ (ಗ್ರಂಥೆ) + ಣಿಚ್ “ಯುಚ್” (೩-೩-೧೦೭). “ವಾಕ್ಯೇ ಶಬ್ದಾರ್ಥಯೋ: ಸಮ್ಯಗ್ರಚನಾ ಗುಪ್ತನಾ ಸ್ಮೃತಾ” 2. ಮಾಲೆ ಮೊವಲಾದುವುಗಳ ರಚನೆ.

ಗುಪ್ತಗತ ಗುಂಫಿತ (ವಿಂ) ಜೋಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಗುಪ್ತ (ಗ್ರಂಥೆ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨).

ಗುಪ್ತಗತ ಗುಂಫಿತ (ವಿಂ) 1. ಜೋಡಿಸುವ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸುವ. 2. ಹೂವುಗಳನ್ನು ಪೋಷಿಸುವ. ಗುಪ್ತ (ಗ್ರಂಥೆ) “ತುಚ್” (೩-೧-೧೩೩). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಛೀಪ್” (೪-೧-೫). -ಶ್ರೀ -ಶ್ರೀ.

ಗುರಿ-ಉಚಮನೆ (ತುಡಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ). ಗುರತೆ. ಜುಗುರೆ. ಗುರಿತಾ. ಗುರಿಪಯತೆ. ಗುರಿತಾಮ್. ಅಗುರತ. ಇತ್ಯಾದಿ. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತು.

ಕರ್ಮಣಿ:—ಗುರಂತೆ. ಜುಗುರೆ. ಗುರಿತಾ. ಗುರಂತಾಮ್. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತು:—ಗುರಿತವ್ಯಮ್. ಗುರಣೀಯಮ್. ಗುರಿಯಮ್. ಗುರ್ಮ: ಗುರ್ಮವಾನ್. ಗುರ್ಮಾಣ: ಗುರಿತುಮ್. ಗುರ್ಮಮ್, ಗುರ್ಮಮ್. ಗುರಿತ್ವಾ. ಉದ್ಗುರ್ಮ.

ಗುರಣ ಗುರಣ (ನಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವುದು. ಗುರಿ (ಉಚಮನೆ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫).

ಗುರ್ಮಾಣ ಗುರ್ಮಾಣ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುತ್ತಿರುವ. ಗುರಿ (ಉಚಮನೆ) ಕರ್ಮಂ “ಗಾನ್” (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ಮಾಣಾ -ಮಾಣಾ.

ಗುರು ಗುರು (ಪುಂ) 1. ಬೃಹಸ್ಪತಿ, ದೇವತೆಗಳ ಆಚಾರ್ಯ. ಗುಣಾತಿ ಉಪದಿಶತಿ — ಗು (ಶಬ್ದೆ) “ಕ್ರು:” ಉಕಾರ ಅಂತಾ-ದೇಶಾನ್ವ (ಉಂ ೧-೨೪). “ಗುರುಕಾವ್ಯಾನುಗಾಂ ವಿಭ್ರಚ್ಚಾಂದ್ರಿ-ಮಭಿನಮ: ಶ್ರಿಯಮ್” ಮಾಘಂ ೨-೨. 2. ಆಚಾರ್ಯ, ಉಪಾಧ್ಯಾಯ. “ಗುರೋ: ಸದಾರಸ್ಯ ನಿಪಿಡಚ ಪಾದೌ ಸಮಾಪ್ಯ ಸಾನ್ಧ್ಯಂ ಚ ವಿಧಿ ದಿಲಿಪ:” ರಘುಂ ೨-೨೩. 3. ತಂದೆ. “ಸ್ಪಾನ್ವಿಷೇಕಾದಿಕ್ರುದ್ಗುರು:” ಅಮಂ. “ನ ಕೇವಲಂ ತದ್ಗುರುಕ-ಪಾರ್ಥಿವ: ಕ್ಷಿತಾವಭೂದೇಕಧನುರ್ಧರೋಪಿ ಸ:” ರಘುಂ ೩-೩೧.



4. ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರ. "उपाध्यायः पिता ज्येष्ठभ्राता चैव महीपतिः। मातुलः श्वशुरस्त्राता मातामहपिता-मही। वर्णज्येष्ठः पितृव्यश्च पुंस्येते गुरवः स्मृताः"।  
 5. ಪೂಜ್ಯ, ಗೌರವಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದವನು. "प्रत्यग्रहीदग्रज-शासनं तदाज्ञा गुरुणा ह्यविचारणीया" रघु० १४-४६।  
 6. ಉಪದೇಶಕ, ಅತ್ಯವಿದ್ಯೋಪದೇಶಕ. "ती गुरुगुरुपत्नी च प्रीत्या प्रतिननन्दतुः" रघु० १-५७। 7. ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯ. 8. ಸಂಪ್ರದಾಯ ಪ್ರವರ್ತಕ. 9. ಪುರೋಹಿತ. 10. ಪರಮಾತ್ಮ. 11. ಗುರುಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ ವರ್ಣ. ದೀರ್ಘವರ್ಣ ಅನುಸ್ವಾರ ಮತ್ತು ವಿಸರ್ಗಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ವರ್ಣ ಸಂಯುಕ್ತಾಕ್ಷರದ ಹಿಂದಿನ ವರ್ಣ ಇವು ಗುರುಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ ವರ್ಣಗಳು. "सानुस्वारो विसर्गान्तो दीर्घो युक्तपरश्च लः। वा पादान्तस्त्वसौ ग्वक्रः" वृ० २०। ಪಾದಾಂತದಲ್ಲಿರುವ ಲಘುವರ್ಣಕ್ಕೆ ವಿಕಲ್ಪವಾಗಿ "ಗುರು" ಸಂಜ್ಞೆಯುಂಟು. 12. ಪುಷ್ಯ ನಕ್ಷತ್ರ. 13. ಸೂರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ನವಗ್ರಹಗಳ ಲ್ಲೊಂದು ಗ್ರಹ. ಗುರುವಿಗೆ ಧನುಸ್ಸು ಮತ್ತು ಮೀನ ರಾಶಿಗಳು ಕ್ಷೇತ್ರಗಳು. ಕರ್ಕಾಟಕ ರಾಶಿಯು ಉಚ್ಚ. ಮಕರವು ನೀಚರಾಶಿ. ರವಿ ಚಂದ್ರ ಕುಜರು ಮಿತ್ರರು. ಶನಿಯು ಸಮ. ಬುಧಶುಕ್ರರು ಶತ್ರುಗಳು. ಗುರುವು ಶುಭ ಗ್ರಹ. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಪುರುಷಗ್ರಹ. 2, 5, 7, 9 ಮತ್ತು 11 ನೆಯ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿರುವಾಗ ಗುರುವು ಶುಭಫಲವನ್ನು ಕೊಡು ತಾನೆ. "गुरुरद्रिद्विनवपञ्चमे शुभफलदः, एकादशस्थाः सर्वे" गोचारद०। [ಇನ್ನೂ ವಿವರಕ್ಕೆ "ಜೀವ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] (ವಿಂ) 14. ದೊಡ್ಡದಾಗಿರುವ. "अबैमि ते सारमतः खलु त्वां कार्ये गुरुण्यात्मसमं नियोक्ष्ये" कुमा० ३-१३। 15. ಭಾರವಾಗಿರುವ. "गुरुणा स्तनभारेण मुखचन्द्रेण भास्वता" भर्तृ० २-१७। 16. ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅತಿಯಾದ. "गुरुसमीर-समीरितभूधरा इव गजा गगनं विजगाहिरे" कुमा० १४-५०। 17. ದುಷ್ಟರವಾದ, ಕಷ್ಟವಾದ. 18. ಉದ್ದವಾದ, ದೀರ್ಘವಾದ, ದೊಡ್ಡದಾದ. 19. ಬಲಶಾಲಿಯಾದ. 20. ಕಠಿನವಾದ, ಜೀರ್ಣವಾಗದಿರುವ. 21. ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾದ. "गुरुनिष्केकादिकरे पुरोषसि बृहस्पती। पित्रादौ ना बृहत्ख्यातदुभंरेषु च स त्रिषु" नानार्थ०। स्त्रियाम् वा "डीप्" (४-१-४४)। ಗುರೈ ಗುರ್ವಿ. "तेन धूर्जगतो गुर्वी सचिवेषु निचिक्षिपे" रघु० १-३४।  
 ಗುರುಕರ್ಮನ್ ಗುರುಕರ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ಆಚಾರ್ಯನ ಕೆಲಸ, ಗುರುವಿನ ಕಾರ್ಯ. ಗುರೋ: ಕರ್ಮ। "तथा गुरुकर्मसु"

आप० ष० १-२-२४। 2. ದೊಡ್ಡ ಕಾರ್ಯ. ಗುರು ಕರ್ಮ।

ಗುರುಕಾರ ಗುರುಕಾರ (ಪುಂ) ಅರ್ಚನೆ, ಪೂಜೆ.

ಗುರುಕಾರ್ಯ ಗುರುಕಾರ್ಯ (ನಂ) 1. ಆಚಾರ್ಯನ ಕೆಲಸ. 2. ದೊಡ್ಡ ಕಾರ್ಯ, ಅತಿಮುಖ್ಯವಾದ ಕೆಲಸ.

ಗುರುಕುಲ ಗುರುಕುಲ (ನಂ) ಗುರುವಿನ ಮನೆ. ಗುರೋ: ಕುಲಮ್।

ಗುರುಕುಲವಾಸ ಗುರುಕುಲವಾಸ (ಪುಂ) ಆಚಾರ್ಯನ ಮನೆ ಯಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವುದು. ಪೂರ್ವಕಾಲದಲ್ಲಿ ಆಚಾರ್ಯನ ಮನೆಯಲ್ಲೇ ವಾಸಮಾಡುತ್ತ ಆಚಾರ್ಯನ ಸೇವೆಮಾಡಿ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡುವ ಪದ್ಧತಿಯಿತ್ತು.

ಗುರುಕುಲವಾಸಿನ್ ಗುರುಕುಲವಾಸಿನ್ (ಪುಂ) ಗುರುವಿನ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ. ಗುರುಕುಲೇ ವಸತಿ—ವಸ (ನಿವಾಸಿ) "गिनिः" (३-१-१३४)।

ಗುರುಕೃತ ಗುರುಕೃತ (ವಿಂ) ದೊಡ್ಡದಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಶಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟ.

ಗುರುಕರ್ಮ ಗುರುಕರ್ಮ (ಪುಂ) ಗುರುವಿನ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಬಂದ ಉಪದೇಶ, ವಂಶಪರಂಪರೆಯಾಗಿ ಬಂದ ಉಪದೇಶ. ಗುರುಕರ್ಮ ಕರ್ಮೋ ಯತ್ರ।

ಗುರುಜನ ಗುರುಜನ (ಪುಂ) 1. ಬಳಿ ಸಾಸುವೆ. ಗುರು ಗುರುತಾಂ ಹಂತಿ—ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:) "टक्" (३-२-५३)। (ವಿಂ) 2. ಗುರುವನ್ನು ಹಿಂಸಿಸುವ.

ಗುರುಜನ ಗುರುಜನ (ಪುಂ) 1. ಪೂಜ್ಯ, ಗೌರವಾರ್ಹ. 2. ಹಿರಿಯವನು, ದೊಡ್ಡವನು, ತಾಯಿ ತಂದೆ ಮೊದಲಾದವರು. "इतस्तपस्विकार्यम् इतो गुरुजनाज्ञा" शाकु० २।

ಗುರುತಮ ಗುರುತಮ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. (ವಿಂ) 2. ಅತಿಶಯವಾಗಿ ಗೌರವಿಸಬೇಕಾದ ತಾಯಿ ತಂದೆ ಮತ್ತು ಆಚಾರ್ಯ. ಅತಿಶಯೇನ ಗುರು: "तमप्"। "त्रयः पुरुषस्यातिगुरवो भवन्ति माता पिताचार्यश्च"। 3. ಬಹಳ ಭಾರವಾದ. 4. ಬಹಳ ಮುಖ್ಯವಾದ.

ಗುರುತರ ಗುರುತರ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಪೂಜ್ಯರಾದ. 2. ಹೆಚ್ಚು ಭಾರವಾದ. 3. ಹೆಚ್ಚು ಮುಖ್ಯವಾದ. ಅನಯೋರತಿಶಯೇನ ಗುರು: "तरप्"।

ಗುರುತಲ್ಪ ಗುರುತಲ್ಪ (ನಂ) 1. ಆಚಾರ್ಯನ ಹಾಸಿಗೆ. 2. ಆಚಾರ್ಯನ ಪತ್ನಿ, ಗುರುಪತ್ನಿ. ಗುರುಸ್ತಲ್ಪಮ್। (ವಿಂ) 3. ಆ ಗುರುಪತ್ನಿಯೊಡನೆ ಸಂಭೋಗಮಾಡುವವನು. "तल्पं शय्याट्टदारेषु" अम०। ಇದು ಮಹಾಪಾತಕಗಳ



ಲೋಂದು. "ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯಾ ಸುರಾಪಾನಂ ಗುರುತಲ್ಪಗಮನಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ-  
ಸ್ವರ್ಣಾಪಹರಣಂ ದ್ವಿಜಾತೀನಾಂ ಮಹಾಪಾತಕಮ್" ಇತಿ ಚ್ಯವನಃ।

**ಗುರುತಲ್ಪಗ ಗುರುತಲ್ಪಗ** (ವಿಂ) ಗುರುಪತ್ನಿಯೊಡನೆ  
ಸಂಭೋಗಮಾಡುವವನು. ಇವನೊಬ್ಬ ಮಹಾಪಾತಕಿ.  
ಗುರುತಲ್ಪಗ ಭಾರ್ಯೆ ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಓಃ"  
(ವಾಂ ೩-೨-೪೮)। "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)। -ಗಾಮಿನ್  
-ಗಾಮಿನ್. ಪಿತೃಷ್ಟಸ್ಯ (ಸೋದರತ್ವ) ಮೊದಲಾದವರಲ್ಲಿ  
ಸಂಭೋಗ ಮಾಡುವವನೂ ಗುರುತಲ್ಪಗಾಮಿ. "ಪಿತುಃ  
ಸ್ವಸಾರಂ ಮಾತುಶ್ಚ ಮಾತುಲಾನಿ ಸ್ತುಷಾಮಪಿ। ಮಾತುಃ ಸಪತ್ನೀ  
ಭಗಿನಿಮಾಚಾರ್ಯತನಯಾಂ ತಥಾ। ಆಚಾರ್ಯಪತ್ನೀ ಸ್ವಮುತಾಂ  
ಗಚ್ಛಂತು ಗುರುತಲ್ಪಗಃ" ಯಜ್ಞಂ ೩-೨೩೨, ೩೩।

**ಗುರುತಲ್ಪಿನ್ ಗುರುತಲ್ಪಿನ್** (ವಿಂ) ಗುರುಪತ್ನಿಯಲ್ಲಿ  
ಪ್ರವೇಶಿಸುವವನು. ಗುರುತಲ್ಪಗ ಭಾರ್ಯಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಛಿಃ"  
(೪-೨-೧೧೪)। "ಗುರುತಲ್ಪಗಭಿಭಾಷ್ಯಂತಸ್ತಪ್ತೇ ಸ್ವಪ್ಯಾದಯೋ-  
ಮಯೇ" ಮನುಂ ೧೧-೧೦೩।

**ಗುರುತಾ ಗುರುತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭಾರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ತೂಕ  
ವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಗುರುಭಾವಿಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। "ಯಾತಂ  
ಯಚ್ಚ ನಿತಮ್ಬಯೋಗುರುತಯಾ ಮಂದಂ ವಿಲಾಸಾದಿವ" ಶಾಕುಂ ೨-೨।  
2. ಅವಶ್ಯಕತೆ, ಪ್ರಾಧಾನ್ಯ. "ಅವಧಾರ್ಯ ಕಾರ್ಯಗುರುತಾ-  
ಮಭವತ್ ಭಯಾ ಸಾಂದ್ರತಮಸಂತಮಸಮ್" ಮಾಘಂ ೯-೨೨।

**ಗುರುತ್ವ ಗುರುತ್ವ** (ನಂ) 1. ಭಾರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ತೂಕವಾಗಿರು-  
ವಿಕೆ. ಗುರುಭಾವಿಃ "ತ್ವಃ" (೪-೧-೧೧೯)। 2. ಮೇಲಿ-  
ನಿಂದ ವಸ್ತುವು ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳಲು ಕಾರಣವಾದ ವಸ್ತುವಿನ  
ಒಂದು ಧರ್ಮ. "ಆಶ್ವಪತ್ತನಸಮವಾಯಿಕಾರಣಂ ಗುರುತ್ವಮ್"।  
ಈ ಗುರುತ್ವವು ಅತೀಂದ್ರಿಯವಾದುದು. 3. ಗೌರವ,  
ಪೂಜ್ಯತೆ. 4. ಮರ್ಯಾದೆ, ಗಣ್ಯತೆ. 5. ಹಿರಿಯತನ,  
ದೊಡ್ಡತನ. 6. ಬೃಹತ್ತ್ವ, ದೊಡ್ಡದಾಗಿರುವಿಕೆ. 7. ತಂದೆ  
ಯಾಗಿರುವಿಕೆ. "ಮೇನೇ ಪರಾರ್ಥಮಾತ್ಮಾನಂ ಗುರುತ್ವೇನ ಜಗದ್ಗುರೋಃ"  
ರಘುಂ ೧೦-೬೪। 8. ಅಜ್ಞಾಯನಾಗಿರುವಿಕೆ.

**ಗುರುದಕ್ಷಿಣಾ ಗುರುದಕ್ಷಿಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗುರುವಿನ ಕಾಣಿಕೆ.  
ಗುರುವಿಗೆ ಅರ್ಪಿಸುವ ಸಂಭಾವನೆ. ಗುರುದಕ್ಷಿಣಾ।  
"ಉಪಾತ್ತವಿಧೋ ಗುರುದಕ್ಷಿಣಾರ್ಥಿ ಕೌತ್ಸಃ ಪ್ರಪೇದೇ ವರತಂತುಗಿಷ್ಯಃ"  
ರಘುಂ ೪-೧।

**ಗುರುದಿನ ಗುರುದಿನ** (ನಂ) ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ದಿವಸ, ಗುರುವಾರ.  
ಗುರುದಿನಮ್।

**ಗುರುದೇವತ ಗುರುದೇವತ** (ಪುಂ) ಪುಷ್ಯ ನಕ್ಷತ್ರ. ಗುರುದೇವತಮಸ್ಯ।

**ಗುರುಪತ್ನಿ ಗುರುಪತ್ನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗುರುವಿನ ಹೆಂಡತಿ. ಗುರೋಃ  
ಪತ್ನಿ।

**ಗುರುಪತ್ರ ಗುರುಪತ್ರ** (ನಂ) 1. ತೆಗೆರೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪತ್ರಾ  
-ಪತ್ರಾ. 2. ಹುಣಿಸೆಮರ.

**ಗುರುಪುತ್ರ ಗುರುಪುತ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಗುರುವಿನ ಮಗ, ಉಪಾ-  
ಧ್ಯಾಯನ ಮಗ. ಗುರೋಃ ಪುತ್ರಃ। ಗುರುಪುತ್ರನೆಲ್ಲೂ ಗುರುವಿನಂ-  
ತೆ ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ವರ್ತಿಸಬೇಕು. "ಶ್ರೇಯಃಸು ಗುರುವ-  
ದ್ವಿತಿ ನಿಯಮೇವ ಸಮಾಚರೇತ್। ಗುರುಪುತ್ರೇಷು ಚಾರ್ಯೇಷು ಗುರೋಃಶ್ಚೈವ  
ಸ್ವಬಂಧುಷು" ಮನುಂ ೨-೨೦೭। 2. ಪಿತೃವ್ಯ ಮಾತುಲ  
ಮಾತಾಮಹ ಮುಂತಾದ ಹಿರಿಯರ ಮಕ್ಕಳು.

**ಗುರುಪ್ರಸಾದ ಗುರುಪ್ರಸಾದ** (ಪುಂ) ಗುರುವಿನ ಅನುಗ್ರಹ.  
ಗುರುವಿನ ಒಲವು. ಗುರುವಿನ ದಯೆ. ಗುರೋಃ ಪ್ರಸಾದಃ।

**ಗುರುಪ್ರಿಯ ಗುರುಪ್ರಿಯ** (ಪುಂ) ಗುರುವಿನ ಪ್ರೀತಿಗೆ ಪಾತ್ರನಾದ.

**ಗುರುಭ ಗುರುಭ** (ನಂ) 1. ಗುರುದೇವತಾಕವಾದ ಪುಷ್ಯ  
ನಕ್ಷತ್ರ. 2. ಗುರುವು ಅಧಿಪತಿಯಾಗಿರುವ ಧನುಸ್ಸು ಮತ್ತು  
ಮೀನ ರಾಶಿಗಳು.

**ಗುರುಭಾರ್ಯಾ ಗುರುಭಾರ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗುರುಪತ್ನಿ, ಗುರುವಿನ  
ಹೆಂಡತಿ.

**ಗುರುಮತ್ ಗುರುಮತ್** (ವಿಂ) ಗುರುವರ್ಣದೊಡನೆ  
ಕೂಡಿದ, ಗುರುವರ್ಣಸಹಿತವಾದ. ಗುರುಃ ಗುರುವರ್ಣೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ  
"ಮತುಃ" (೪-೨-೯೪)। "ಇಜಾದೇಶ್ಚ ಗುರುಮತೋಽನುಚ್ಛಃ"  
ಪಾಂ ಸೂಂ ೩-೧-೩೬। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಮತೀ -ಮತೀ. ಗರ್ಭಿಣಿ,  
ಬಸಿರು ಹೆಂಗಸು.

**ಗುರುಮರ್ದಲ ಗುರುಮರ್ದಲ** (ಪುಂ) ಧಿಮಿಕೆಯೆಂಬ ಒಂದು  
ವಾದ್ಯ.

**ಗುರುರತ್ನ ಗುರುರತ್ನ** (ನಂ) 1. ಪುಷ್ಪರಾಗ. 2. ಗೋಮೇದ  
ರತ್ನ. ಗುರೋಃ ಪ್ರಿಯಂ ರತ್ನಮ್।

**ಗುರುರಾಹು ಗುರುರಾಹು** (ಪುಂ) ಗುರು ಮತ್ತು ರಾಹುಗಳ  
ಯೋಗ, ಗುರು ರಾಹುಗಳು ಒಂದೇ ರಾಶಿಯಲ್ಲಿರುವುದು.  
ಗುರು ರಾಹುಗಳು ಒಂದೇ ರಾಶಿಯಲ್ಲಿರುವಾಗ ಶುಭ  
ಕಾರ್ಯವು ನಿಸಿದ್ಧ. "ಏಕರಾಶೌ ಸ್ಥಿತೌ ಸ್ಯಾತಾಂ ಯದಿ  
ರಾಹುಬೃಹಸ್ಪತೌ। ವಿವಾಹವ್ರತಯಜ್ಞಾದಿ ಸರ್ವಂ ತತ್ರ ವಿವರ್ಜಯೇತ್"।

**ಗುರುವತ್ ಗುರುವತ್** (ಅವ್ಯಂ) ಗುರುವಿನಂತೆ. ಗುರುಣಾ  
ತುಲ್ಯಮ್। "ಅಧ್ಯಾಪಯನ್ ಗುರುಮತೋ ಗುರುವನ್ಮಾನಮರ್ಹತಿ" ಮನುಂ  
೨-೨೦೮।

**ಗುರುವರ್ತಿನ್ ಗುರುವರ್ತಿನ್** (ಪುಂ) ಗುರುವಿನ ಗೃಹದಲ್ಲಿ  
ವಾಸಮಾಡುವವನು, ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ, ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ. ಗುರೋಃ  
ಗುರುಕುಲೇ ವರ್ತತೇ - ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)।

**ಗುರುವಾರ ಗುರುವಾರ**, -ವಾಸರ -ವಾಸರ (ಪುಂ) ಬೃಹಸ್ಪತಿ  
ವಾರ. ಗುರೋಃ ವಾರಃ ವಾಸರೋ ವಾ।



**ಗುರುವೃತ್ತಿ ಗುರುವೃತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರ್ಜುನನ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಶಿಷ್ಯನ ನಡತೆ. ಗುರೌ ವೃತ್ತಿಃ। ಶಿಷ್ಯನು ಯಾವಾಗಲೂ ಗುರುವಿನ ಹಿತವನ್ನು ಬಯಸಬೇಕು. ಗುರುವು ಹೇಳಿದ್ದರೂ ತನ್ನ ವ್ಯಾಸಂಗದಲ್ಲಿ ಅಸಕ್ತನಾಗಿರಬೇಕು. ಗುರುವಿನ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ತ್ರಿಕರಣಕುದ್ಧಿಯಿಂದ ಇರಬೇಕು. ಗುರುವಿನ ಎದುರಿಗೆ ಯಾವ ವಿಧವಾದ ಅಡಂಬರವನ್ನೂ ತೋರಿಸಕೂಡದು. ಗುರುವಿನ ಅಪ್ಪಣೆಯಿಲ್ಲದೆ ಅವರೆದುರಿಗೆ ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳಕೂಡದು. ಗುರುವನ್ನು ಯಾರಲ್ಲಿಯೂ ಯಾವಾಗಲೂ ದೂಷಿಸಕೂಡದು. ಯಾರು ದೂಷಿಸಿದರೂ ಅದನ್ನು ಕಿವಿಯಿಂದ ಕೇಳಲೂಕೂಡದು. ಗುರುವಿನ ಹೆಸರನ್ನು ಹಿಡಿದು ಕರೆಯಕೂಡದು. “ಆತ್ಮನಾಮ ಗುರೋನಾಮ ನಾಮಾತೀತಕೃಪಣಸ್ಯ ಚ। ಶ್ರೇಯಸ್ಕಾಮೋ ನ ಗೃಹ್ಣೀಯಾತ್ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಪತ್ಯಕಲತ್ರಯಃ”। ಗುರುವಿನಲ್ಲಿ ಭಯಭಕ್ತಿ ವಿನಯಾದಿಗಳಿಂದ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳಬೇಕು ಇತ್ಯಾದಿ. “ಪಿತುರ್ದೇವಗುಣಾ ಮಾತಾ ಗೌರವೇಣಾತಿ ನಿಶ್ಚಿತಮ್। ಮಾತುಃ ಶತಗುಣಃ ಪೂಜ್ಯೋ ಜ್ಞಾನದಾತಾ ಗುರುಃ ಪ್ರಭೋ” ತನ್ತ್ರಸಾಂ। “ನೋದಿತೋ ಗುರುಃ ನಾನ್ಯಮಪ್ರಚೋದಿತ ಏವ ವಾ। ಕುರ್ಯಾದಿಧ್ಯಯನೇ ಯತ್ನಮಾಚಾರ್ಯಸ್ಯ ಹಿತೇಷು ಚ। ಸ್ಥಾಸ್ಯತಾಮಿತಿ ಚೋಕ್ತಃ ಸನ್ನಾಸೀತಾಭಿಮುಖಂ ಗುರೋಃ। ಹೀನಾನ್ವವಸ್ತ್ರವೇಪಃ ಸ್ಯಾತ್ ಸರ್ವದಾ ಗುರುಸನ್ನಿಧೌ। ಗುರೋರೈವ ಪರಿವಾದೋ ನಿಂದಾ ವಾಪಿ ಪ್ರವರ್ತತೇ। ಕರ್ಣೌ ತತ್ರ ಪಿಷಾತವ್ಯೌ ಗನ್ತವ್ಯಂ ವಾ ತತೋಜ್ಯತಃ” ಮನುಂ ೨।

**ಗುರುತ್ತಮ ಗುರುತ್ತಮ** (ವಿಂ) ಅತ್ಯಂತ ಪೂಜ್ಯನಾದ, ಪರಮಪೂಜ್ಯನಾದ. ಗುರುಃ ತ್ತಮಃ।

**ಗುರ್ಜರ ಗುರ್ಜರ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಗುರ್ಜರ ದೇಶ. 2. ಗುರ್ಜರ ದೇಶದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವವರು.

**ಗುರ್ವಿಣಿ ಗುರ್ವಿಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರ್ಭಿಣಿ, ಬಸಿರುಹೆಂಗಸು. ಗುರುಃ ಅಲಘುಗರ್ಭೋಽಸ್ಯಾ ಅಸ್ತಿ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೬)। “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪)।

**ಗುರ್ವಿ ಗುರ್ವೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರ್ಭಿಣಿ, ಬಸಿರುಹೆಂಗಸು.

**ಗುಲ ಗುಲ** (ಪುಂ) 1. ಬೆಲ್ಲ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ-ಲಾ. 2. ಕಳ್ಳಿ ಗಡ. -ಲಿ-ಲಿ. 3. ಗುಳಿಗೆ, ಮಾತ್ರೆ. 4. ಒಂದು ರೋಗ, ಸಿಡುಬು. “ಗುಲಃ ಸ್ಯಾದೇಕ್ಷವೇ ಪುಮಾನ್। ಗುಲಿ ತು ಗುಡಿಕಾರೋಗಭಿದೋಃ ಸ್ತುಹ್ಯಾ ಗುಲಾ ಸ್ಮೃತಾ” ಮೇದಿಂ।

**ಗುಲಿಕಾ ಗುಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೋಲಿ, ಗುಂಡು. 2. ಗುಳಿಗೆ, ಮಾತ್ರೆ. ಗುಡಃ ಗೋಲಾಕಾರೋಽಸ್ಯಸ್ಯಾಃ “ಠನ್” (೪-೨-೧೧೪)। 3. ಒಂದು ವಿಧ ರೋಗ, ಸಿಡುಬು ರೋಗ.

**ಗುಲಿ ಗುಲೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) “ಗುಲ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ಗುಲಿಜ್ಜು ಗುಲಿಂಕ** (ಪುಂ) ಗುಬ್ಬಜ್ಜಿ.

**ಗುಲುಚ್ಚ ಗುಲುಚ್ಚ** (ಪುಂ) ಗೊಂಚಲು. ಗುಚ್ಚ ಪುಷ್ಪಂ। “ಗುಚ್ಛೋ ಗುಲುಚ್ಛಃ ಖೇಪಃ ಸ್ಯಾತ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಗುಲ್ಫ ಗುಲ್ಫ** (ಪುಂ) ಕಾಲಿನ ಗಂಟು, ಕಾಲಿನ ಹರಡು. ಗಲತಿ - ಗಲ (ಅದನೆ) “ಫಕ್” ಉಕಾರಶ್ಚ (೩ಂ ೪-೨೬)। “ಆಗುಲ್ಫಕೀರ್ಣಾಪಣಮಾರ್ಗಪುಷ್ಪಮ್” ೩ಂ ೭-೪೪।

**ಗುಲ್ಫಜಾಹ ಗುಲ್ಫಜಾಹ** (ನಂ) ಕಾಲಿನ ಗಂಟುಗಳ ತಳಭಾಗ. ಗುಲ್ಫಸ್ಯ ಮೂಲಮ್ “ಜಾಹ್” (೪-೨-೨೪)।

**ಗುಲ್ಮ ಗುಲ್ಮ** (ಪುಂ) 1. ಮಧ್ಯದ ದೂಲವಿಲ್ಲದ ಗಿಡ. ಗುಡತಿ - ಗುಡ (ರಕ್ಷಾಯಾಮ್) “ಮನ್” ವಾಹುಂ। 2. ಲತೆ ಹುಲ್ಲು ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಪೊದರು. “ಪ್ರಚ್ಛನ್ನಸ್ತಸ್ಯಾಹನೇಃ ಸಗುಲ್ಮಜಾಲೇಲಕ್ಷಮೀವಾನನುಪದಮಸ್ಯ ಸಂಪ್ರತಸ್ಥೇ” ಕಿರಾಂ ೧೨-೪೪। 3. ಸೇನೆಗಳ ಗುಂಪು. 45 ಪದಾತಿ (ಕಾಲಾಳು) ಗಳು 27 ಕುದುರೆಗಳು 9 ರಥಗಳು 9 ಆನೆಗಳು ಇವುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಸೇನೆಗಳ ಸಮೂಹ. 4. ಸುಂಕದ ಕಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿರುವ ಕಾವಲು ಸೈನ್ಯ. 5. ಹೊಟ್ಟೆಯ ಎಡಭಾಗದಲ್ಲಿ ಇರುವ ಮಾಂಸಗ್ರಂಥಿ, ಪ್ಲೀಹ. 6. ಪ್ಲೀಹರೋಗ, ಹೊಟ್ಟೆಯ ಎಡಭಾಗದ ಮಾಂಸಗ್ರಂಥಿಯು ಬೆಳೆದು ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ರೋಗ. ಹೃದಯ ಮತ್ತು ಬಸ್ತಿ (ಹೊಕ್ಕಳ ಕೆಳಭಾಗ) ಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ (ವಾತಾಧಿಕ್ಯದಿಂದ) ಜಲಿಸುತ್ತಲೂ (ವಾತವು ಕಡಮೆಯಾಗಿರುವಾಗ) ಒಂದೇ ಕಡೆ ಇರುವುದಾಗಿಯೂ ಕೆಲವು ವೇಳೆ ದೊಡ್ಡದಾಗಿಯೂ ಕೆಲವು ಕಾಲ ಚಿಕ್ಕದಾಗಿಯೂ ವಿಚಿತ್ರವ್ಯಾಪಾರವುಳ್ಳ ವರ್ತುಲವಾದ ಮಾಂಸಗ್ರಂಥಿಯೇ ಗುಲ್ಮವ್ಯಾಧಿ. “ಹೃದಸ್ತಯೋರಂತರೇ ಗ್ರನ್ಥಿಃ ಸಂಚಾರೀ ಯದಿ ವಾಚಲಃ। ಚಯಾಪಚಯವಾನ್ ವೃತ್ತಃ ಸ ಗುಲ್ಮ ಇತಿ ಕೀರ್ತಿತಃ” ಸುಶ್ರುತಂ ತ್ತರತಂ ೪೨-೪। “ಗುಪಿತಾನಿಲಮೂಲತ್ವಾದ್ಗೂಡಮೂಲೋದಯಾದಪಿ। ಗುಲ್ಮವದ್ವಾ ವಿಶಾಲತ್ವಾದ್ಗುಲ್ಮ ಇತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ” ಸುಶ್ರುತಂ ತ್ತರತಂ ೪೨-೪। ವಾತಜ, ಪಿತ್ತಜ, ಕಫಜ, ಕ್ಷುತಜಗಳೆಂದು ಗುಲ್ಮ ರೋಗವು ಅನೇಕ ಕಾರಣಗಳಿಂದ ಬರುವುದು.

**ಗುಲ್ಮಮೂಲ ಗುಲ್ಮಮೂಲ** (ನಂ) ಹಸಿರುಂಟಿ. ಗುಲ್ಮ ಇವ ಮೂಲಮಸ್ಯ।

**ಗುಲಿಮನ್ ಗುಲಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಗುಲ್ಮರೋಗವುಳ್ಳವನು. ಗುಲ್ಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪)। “ಪೇಯಾ ವಾತಹರೇಃ ಸಿದ್ಧಾಃ ಕೌಲತ್ಯಾಃ ಸಂಸ್ಕೃತಾ ರಸಾಃ। ಖಲಾಃ ಸಪಂಚಮೂಲಾಶ್ಚ ಗುಲಿಮನಾಂ ಭೋಜನೇ ಹಿತಾಃ” ಸುಶ್ರುತಂ ತ್ತರತಂ ೪೨-೪೪। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪)। **ಗುಲಿಮಿನಿ ಗುಲಿನೀ**. 2. ಎಸ್ತಾರವಾಗಿ ಹರಡುವ ದ್ರಾಕ್ಷೆಯ ಬಳ್ಳಿ, ವೀಳೆಯ ದಲೆಯ ಬಳ್ಳಿ ಮುಂತಾದುವು. “ಪಿತ್ತವದ್ರಕ್ತಗುಲಿಮನ್ಯಾ ನಾರ್ಯಾಃ ಕಾರ್ಯಃ ಕ್ರಿಯಾವಿಧಿಃ” ಸುಶ್ರುತಂ ತ್ತರತಂ ೪೨-೧೯।



ಗುಲ್ಮಿ ಗುಲ್ಮೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೆಲ್ಲಿಮರ. 2. ಯಾಂಕುಗಿಡ. 3. ವಸ್ತುಗೃಹ. ಡೇರ. ಗುಲ್ಮ: ತದಾಕಾರಫಲಮ್ ಅಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭)। ಗೌರಾಂ "ಜಿಞ್" (೪-೧-೪೧)।

ಗುವಾಕ ಗುವಾಕ (ಪುಂ) ಅಡಕೆಮರ. ಗುವನ್ಯನೇನ - ಗು (ಪುರೀಪೋತ್ಸರ್ಗ) "ಆಕ:" (೩೦ ೪-೧೫)। ನಿಪಾಂ।  
ವಾಹುಂ ದೀರ್ಘ: ಗುವಾಕ: ಗುವಾಕ:

ಗುಹ ಗುಹ (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ. ಸ್ಕಂಧ. ಪುಂ. ಗುಹತಿ ದೇವಸೇನಾಮ್-ಗುಹ (ಸಂವರಣ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫)। "ಗುಹೋಪಿ ಷೇಷಾಂ ಪ್ರಥಮಾಪ್ತಜನ್ಮನಾಂ ನ ಪುತ್ರವಾತ್ಸಲ್ಯಮಪಾ-  
ಕರೋತಿ" ಕುಮಾಂ ೫-೧೪। 2. ವಿಷ್ಣು. ಗುಹತಿ ರಕ್ಷತಿ-  
ಗುಹ "ಕ:"। "ರಕ್ಷತೀತಿ ಗುಹ: ಸ್ಮೃತ:" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ:।  
"ಕರಣಂ ಕಾರಣಂ ಕರ್ತಾ ವಿಕರ್ತಾ ಗುಹನೋ ಗುಹ:" ವಿಂ ಸಂ।  
3. ಶ್ರೀರಾಮನ ಮಿತ್ರನಾದ ಒಬ್ಬ ನಿಷಾದ ರಾಜ. ಶೃಂಗ  
ಬೇರಪುರದ ದೊರೆ. "ಆಸಸಾದ ಮಹಾವೀರ: ಶೃಂಗವೇರಪುರಂ  
ಪ್ರತಿ। ಯತ್ರ ರಾಜಾ ಗುಹೋ ನಾಮ ರಾಮಸ್ಯಾತ್ಮಸಮ: ಸಖಾ"  
ರಾಮಾಂ। 4. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಹಾ -ಹಾ.  
5. ನರಿಬಾಲದ ಗಿಡ. 6. ಪರ್ವತದ ಅಕೃತ್ರಿಮವಾದ ಬಿಲ.  
7. ಗುಹೆ, ಗವಿ. "ಗುಹಾಯಾ ನಿರಗಾಧಾಲಿ ಸಿಹೋ ಮೃಗಭಿವ  
ದ್ಭವನ್" ಭಟಿಂ ೬-೧೧೮। 8. ಹೃದಯ. 9. ಮಾಯೆ.  
10. ಬುದ್ಧಿ.

ಗುಹುಷ್ಣಿ ಗುಹುಷ್ಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ಕಂಧಪಷ್ಣಿ, ಮಾರ್ಗಾರ್ಣವ  
ಮಾಸದ ರುಕ್ಲ ಪಷ್ಣಿ.

ಗುಹಾಚರ ಗುಹಾಚರ (ನಂ) ಪರಬ್ರಹ್ಮ. ಗುಹಾಚರಾಂ ವುದ್ಧಿ  
ವಿಷಯತಯಾ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಠ:" (೩-೨-೧೬)।

ಗುಹಾಶಯ ಗುಹಾಶಯ (ಪುಂ) 1. ಮೂಷಿಕ. ಇಲಿ. ಗುಹಾಚರಾಂ  
ಶೇತೆ-ಶಿಙ್ (ಸ್ವಪ್ನ) "ಅಚ್" (೩-೨-೧೫)। 2. ಹುಲಿ,  
ಸಿಂಹ ಹೊದಲಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳು. 3. ಅಂತರ್ಯಾಮಿಯಾದ  
ಪರಮಾತ್ಮ. "ಶ್ರುತಂ ಮಯಾ ಸಿದ್ಧಜನಾದಿಹ ಸ್ವಯಂ ಗುಹಾಶಯ:  
ಪ್ರಾಪ್ಸ್ಯತಿ ತೇ ಗುಹಾಮಿತಿ" ಯಾದಂ ೧೪-೨೭। 4. ಪ್ರಾಣಿ.  
ನಿದ್ರಾಕಾಲದಲ್ಲಿ ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ಸುಖವಾಗಿರುವುದರಿಂದ  
ಈ ಹೆಸರು.

ಗುಹಾಹಿತ ಗುಹಾಹಿತ (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ. ಹೃದಯ  
ಕುಹರದಲ್ಲಿ ಧ್ಯಾನದಿಂದ ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಪರಮಾತ್ಮ. ಗುಹಾ-  
ಮಾಹಿತ:।

ಗುಹ-ಸಂವರಣ (ಮ್ವಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ವೇಂ)। ಗುಹತಿ, -ತೇ।  
ಜುಗುಹ ಜುಗುಹತು: ಜುಗುಹು:। ಜುಗುಹೇ ಜುಗುಹತೇ ಜುಗುಹೀರೆ। ಗುಹಿತಾ,  
ಗುಹಾ। ಗುಹಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ। ಖೋಷ್ಯತಿ, -ತೇ। ಗುಹತು, -ತಾಮ್।  
ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಮುಚ್ಚು, ಮರೆಮಾಡು. "ಗುಹಿಷ್ಯಾಮಿ

ಕ್ಷಿತಿ ಕೃತೇರಥ ಗಾತ್ರೈವನೌಕಸಾಮ್" ಭಟಿಂ ೧೬-೪೧।  
2. ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡು, ಮರೆಮಾಡು. "ಆಕಾರೋ ಗುಹಿತು  
ಶಕ್ಯ:" ಭಾಂ। 3. ರಕ್ಷಿಸು. ಕಾಪಾಡು.

ಕರ್ಮಣಿ:-ಗುಹಯತೇ। ಗುಹಯತಾಮ್। ಅಗುಹಯತ। ಗುಹಯತೇ।  
ಅಗುಹಿ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗಿಹಿ:-ಗುಹಯತಿ, -ತೇ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:-ಗುಹಿತವ್ಯಮ್, ಗುಹ್ಯವ್ಯಮ್। ಗುಹನೀಯಮ್। ಗುಹಯಮ್,  
ಗುಹಯಮ್। ಗುಹ:। ಗುಹವಾನ್। ಗುಹನ್, ಗುಹಂತಿ। ಗುಹಮಾನ:।  
ಗುಹಿತುಮ್, ಗುಹ್ಯಮ್। ಗುಹಮ್। ಗುಹನಮ್। ಗುಹಿತವಾ, ಗುಹ್ಯವಾ,  
ಗುಹವಾ। ನಿಗುಹಯ।

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಉ+ಗುಹ=ಉಗುಹತಿ। ಉಗುಹನಮ್। ಅಠಿಂಗಿಸಂ,  
ಅಪ್ಪಿಕೊ. "ಭುಜಾಂತರೇಣೋಪಜುಗುಹ ಸಾದರಮ್" ಯಾದಂ  
೧೪-೫೪।

(2) ನಿ+ಗುಹ = ನಿಗುಹತಿ। ನಿಗುಹನಮ್। ಮುಚ್ಚು,  
ಮರೆಮಾಡು.

ಗುಹೇರ ಗುಹೇರ (ಪುಂ) 1. ಲೋಹಕಾರ. ಕಂಚುಗಾರ.  
2. ರಕ್ಷಕ. ಗುಹ (ಸಂವರಣ) "ಆರಕ್" (೩೦ ೧-೬೧)।

ಗುಹ್ಯ ಗುಹ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಕಚ್ಚುಪ, ಅಮೆ. ಗುಹಾಮಹತಿ "ಯತ್"  
(೫-೧-೬೬)। 2. ವಿಷ್ಣು. ಗುಹಯತೇ ಸಂವ್ರಿಯತೇ ಪರಮೋಪ-  
ನಿಷದ್ವಿಷಯೇಣ ವಪುಷಾ। "ಪಂಚೋಪನಿಷದಜ್ಞೇನ ಗುಹ್ಯವಾತ್  
ಗುಹ್ಯ ಉಚ್ಯತೇ" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ:। "ಗುಹ್ಯೋ ಗುಹೀರೋ ಗುಹನೋ  
ಗುಪ್ತಶ್ಚಕ್ರಗದಾಧರ:" ವಿಂ ಸಂ। 3. ಅಹಂಕಾರ. (ನಂ) 4.  
ರಹಸ್ಯ. 5. ಉಪಸ್ಥ, ಹೆಂಗಸು ಮತ್ತು ಗಂಡಸರ ಚಿಹ್ನೆ,  
ಯೋನಿ ಮತ್ತು ಶಿಶ್ನ. ಗುಹ (ಸಂವರಣ) "ಕೃಪ್"  
(ವಾಂ ೬-೧-೭೧)। "ಗುಹ್ಯಂ ರಹಸ್ಯುಪಸ್ಥೇ ಚ ಗುಹ್ಯ: ಕಮಠ-  
ದಮ್ಭಯೋ:" ಮೇದಿಂ।

ಗುಹ್ಯಕ ಗುಹ್ಯಕ (ಪುಂ) ಯಕ್ಷ. ಕುಬೇರನ ಅನುಚರ,  
ದೇವಯೋನಿವಿಶೇಷ. ಗುಹತಿ ರಕ್ಷತಿ ನಿಧಿ - ಗುಹ  
(ಸಂವರಣ) "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಪುಷಂ। "ಶಿಲೋಚ್ಚಯಂ  
ಚಾರುಶಿಲೋಚ್ಚಯಂ ತಮೇಷ ಕ್ಷಣಾನೇಷ್ಯತಿ ಗುಹ್ಯಕಸ್ತವಾಮ್"  
ಕಿರಾಂ ೩-೨೧। "ಇತ್ಯೌತ್ಸುಕ್ಯಾದಪರಿಗಣಯನ್ ಗುಹ್ಯಕಸ್ತಂ  
ಯಯಾಚೇ" ಮೇಘಂ ೧-೫।

ಗುಹ್ಯಕೇಶವರ ಗುಹ್ಯಕೇಶ್ವರ (ಪುಂ) ಯಕ್ಷರ ಅಧಿಪತಿಯಾದ  
ಕುಬೇರ. ಗುಹ್ಯಕಾನಾಮೀಶವರ:।

ಗುಹ್ಯಗುರು ಗುಹ್ಯಗುರು (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಈಶ್ವರ.



ಗುಹದೀಪಕ ಗುಹ್ಯದೀಪಕ (ಪುಂ) ಖದ್ಯೋತ, ಮಿಣುಕು ಹುಳು. ಗುಹ್ಯ: ಸನ್ ದೀಪಯತಿ - ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿच् "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಗುಹ್ಯನಿಷ್ಯಂದ ಗುಹ್ಯನಿಷ್ಯಂದ (ಪುಂ) ಮೂತ್ರ. ಗುಹ್ಯಾತ್ ಉಪಸ್ಥಾತ್ ನಿಷ್ಯಂದತೇ - ನಿ + ಸ್ಯಂದ್ (ಪ್ರಸವಣೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।

ಗುಹ್ಯಪುಷ್ಪ ಗುಹ್ಯಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ. ಅರಳಿಮರ. ಗುಹ್ಯಂ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ।

ಗುಹ್ಯಭಾಷಿತ ಗುಹ್ಯಭಾಷಿತ (ನಂ) 1. ಮಂತ್ರ. 2. ರಹಸ್ಯವಾದ ಮಾತು. ಗುಹ್ಯಂ ಗುಪ್ತಂ ಭಾಷಿತಮ್।

ಗುಹ ಗುಹ (ವಿಂ) 1. ರಹಸ್ಯವಾಗಿದ್ದಲ್ಲಟ್ಟು. ಬಚ್ಚಿಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಗುಹ (ಸಂವರಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ತಸ್ಯ ಸಂವೃತ-ಮನ್ತ್ರಸ್ಯ ಗುಹಾಕಾರೇಙ್ಗಿತಸ್ಯ ಚ" ರಘುಂ ೧-೨೦। 2. ಮರೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ರೂಪವನ್ನು ಮುಚ್ಚಿಕೊಂಡಿರುವ, ರೂಪವನ್ನು ಮರೆಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವ. "ತಾನ್ವಿದಿತ್ವಾ ಸುಚರಿತಗೃಹೈಸ್ತತ್ಕರ್ಮಕಾರಿಭಿ:" ಮನುಂ ೯-೨೬೧। 4. ರಹಸ್ಯವಾದ, ಬಹಳ ಗುಟ್ಟಾದ. "ಗುಹಂ ನುಪುರಶಬ್ದಮಾತ್ರಮಪಿ ಮೇ ಕಾಂತಂ ಶ್ರುತೌ ಪಾತಯೇತ್" ವಿಕ್ರಂ ೩-೧೫। 5. ಅಗೋಚರವಾದ, ಕಾಣದಿರುವ. "ಕಾಮಿನೀಕುಚಕಲಶವತ್ ಗುಹಂ ಚಮತ್ಕರೋತಿ" ಸಾಂ ದಂ। (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 6. ರಹಸ್ಯವಾಗಿ. "ದ್ವಯೋರ್ನಾಯಿಕಯೋರ್ಬಹಿರ್ದೇಶಿತಾನುರಾಗೋಜ್ಯಸ್ಯಾಂ ನಾಯಿಕಾಯಾ ಗುಹಂ ವಿಪ್ರಿಯಮಾಚರತಿ" ಸಾಂ ದಂ।

ಗುಹಚಾರ ಗುಹಚಾರ (ಪುಂ) 1. ರಹಸ್ಯಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿಯುಕ್ತನಾದವನು. ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಣ್" (೫-೪-೩೮)। ಗುಹ: ಚಾರ:। (ವಿಂ) 2. ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವವನು. ಗುಹಂ ಚರತಿ।

ಗುಹಚಾರಿನ್ ಗುಹಚಾರಿನ್ (ವಿಂ) ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವವನು. ಚಾರ್ಯಾದಿಭಯದಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಂಡು ತಿರುಗಾಡುವವನು. ಗುಹಂ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)।

ಗುಹಜ ಗುಹಜ (ಪುಂ) ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಪುತ್ರರಲ್ಲೊಬ್ಬ. ["ಗುಹೋತ್ಪನ್ನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಗುಹನಿಡ ಗುಹನಿಡ (ಪುಂ) ಖಂಜನಪಕ್ಷಿ. ಕಾಡಿಗೆ ಸೊಗಸಿನ ಹಕ್ಕಿ, ವಾಸವಿಹಕ್ಕಿ. ಗುಹಂ ನಿಡಂ ಯಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೬೩)। -ನಿಡೀ -ನೀಡಿ.

ಗುಹಪತ್ರ ಗುಹಪತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಅಂಕೋಲೆ ಮರ. 2. ಮುಳ್ಳು ಅಜ್ಜಿಗಿಡೆ.

ಗುಹಪಥ ಗುಹಪಥ (ಪುಂ) 1. ರಹಸ್ಯವಾದ ದಾರಿ, ಸುರಂಗದ ದಾರಿ, ಕಿರುದಾರಿ. ಗುಹ:ಪಥಾ:। 2. ಮನಸ್ಸು, ಅಂತಃಕರಣ. ಗುಹ: ಪಥಾ: ಯಸ್ಯ।

ಗುಹಪಾದ ಗುಹಪಾದ (ಪುಂ) ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಗುಹಾ: ಪಾದಾ ಯಸ್ಯ। ಪೃಷಂ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಫ್" ಪಾದಸ್ಯ ಲೋಪಶ್ಚ (೫-೪-೧೩೯)। ಪಾದ: ಪತ್ (೬-೪-೧೩೦)। -ಪದೀ -ಪದೀ.

ಗುಹಪಾದ ಗುಹಪಾದ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಗುಹಾ: ಪಾದಾ ಯಸ್ಯ। (ವಿಂ) 2. ಮುಚ್ಚಿದ ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳ, ಮರೆಮಾಡಿದ ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳ. "ಉಪಾನದ್ಗುಹಪಾದಶ್ಚ" ಹಿತೌಂ।

ಗುಹಪುರುಷ ಗುಹಪುರುಷ (ಪುಂ) ರಹಸ್ಯಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿಯುಕ್ತನಾದ ಸೇವಕ. ಗುಹಪುರುಷೋ ಪುರುಷಶ್ಚ।

ಗುಹಮಾರ್ಗ ಗುಹಮಾರ್ಗ (ಪುಂ) ರಹಸ್ಯವಾದ ಮಾರ್ಗ, ಭೂಮಿಯೊಳಗೆ ಸುರಂಗದ ಮಾರ್ಗ. ಗುಹೋ ಮಾರ್ಗ:।

ಗುಹಮೇಥುನ ಗುಹಮೇಥುನ (ಪುಂ) ವಾಯುಸ, ಕಾಗೆ. ಗುಹಂ ರಹಸ್ಯಂ ಮೇಥುನಂ ಯಸ್ಯ। "ಕಾಕೋ ರತಜ್ವರ: ಸೂತ್ರೀ ಶ್ರಾವಕೋ ಗುಹಮೇಥುನ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಗುಹವರ್ಚಸ್ ಗುಹವರ್ಚಸ್ (ಪುಂ) ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. ಗುಹಂ ಬರ್ಚಾಂಸ್ಯ। "ವ್ಯಙ್ಗಸ್ತು ನಂದಕೋ ಭೇಕೋ ಗುಹವರ್ಚಾ: ಕೃತಾಲಯ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಗುಹವ್ಯಙ್ಗ್ಯಾ ಗುಹವ್ಯಙ್ಗ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಲಂಕಾರಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಜನಲಕ್ಷಣಾಭೇದವಾದ ವ್ಯಂಜ್ಯದ ಒಂದು ಭೇದ. ಎಂಟು ವಿಧವಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ ಪ್ರಯೋಜನಲಕ್ಷಣೆಯು ಮತ್ತೆ ಗುಹವ್ಯಂಜ್ಯ ಅಗುಹ ವ್ಯಂಜ್ಯಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ["ಅಗುಹವ್ಯಂಜ್ಯ"ಕ್ಕೆ "ಅಗುಹ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ವಾಕ್ಯಾರ್ಥಭಾವನೆಯಿಂದ ಪರಿಪಕ್ವಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವರಿಗೆ ಮಾತ್ರ ವೇದ್ಯವು "ಗುಹವ್ಯಂಜ್ಯ". ಗುಹಂ ವಾಕ್ಯಾರ್ಥಭಾವನಾಪರಿಪಕ್ವಬುದ್ಧಿಮಾತ್ರವೇ ವ್ಯಙ್ಗ್ಯಂ ಯತ್ರ। "ಉಪಕೃತಂ ಬಹು ತತ್ರ ಕಿಮುಚ್ಯತೇ ಸುಜನತಾ ಪ್ರಥಿತಾ ಭವತಾ ಪರಮ್। ವಿದಧದೀದೃಶಮೇವ ಸದಾ ಸಖೇ ಸುಖಿತಮಾಸ್ವ ತತ: ಶರದಾಂ ಶತಮ್"। ಇಲ್ಲಿ ಅಪಕಾರಿಯನ್ನು ಕುರಿತು ಹೇಳುವಾಗ ಉಪಕೃತಂ ಸುಜನತಾ ಸುಖಿತಂ ಈ ಪದಗಳ ಮುಖ್ಯಾರ್ಥಕ್ಕೆ ಬಾಧವು ಬಂದು ವಿಪರೀತಲಕ್ಷಣೆಯಿಂದ ಅಪಕಾರಾತಿಶಯವು ವ್ಯಂಜ್ಯಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ತೋರುತ್ತದೆ. ಈ ವ್ಯಂಜ್ಯಾರ್ಥವು ಪರಿಣತಬುದ್ಧಿಗಳಿಗೆ ಮಾತ್ರ ತೋರುವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ "ಗುಹವ್ಯಂಜ್ಯ".

ಗುಹಾಙ್ಗ ಗುಹಾಙ್ಗ (ಪುಂ) 1. ಕಮಠ, ಆಮೆ. ಗುಹಾನಿ ಅಙ್ಗಾನ್ಯಸ್ಯ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೬೩)।



(ವಿಂ) 2. ಗುಪ್ತವಾದ ಅಂಗಗಳುಳ್ಳ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಸ್ವಾಕ್ಷ-  
ತ್ವಾತ್ ವಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೪)। ಗುಡಾಕ್ಷಿ ಗೂಢಾಂಗೀ.  
ಗುಡಾಕ್ಷಿ ಗೂಢಾಂಗಾ.

ಗುಡಾಕ್ಷಿ ಗೂಢಾಂಗೈ (ಪುಂ) ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಗುಡಾ  
ಅಧ್ಯಯೋಜ್ಯ.

ಗುಡೋತ್ಪನ್ನ ಗೂಢೋತ್ಪನ್ನ (ಪುಂ) ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಪುತ್ರರ  
ಲ್ಲೊಬ್ಬ. ಗುಡಂ ಯಥಾತಥಾ ಉತ್ಪನ್ನಃ। ಯಾವನೊಬ್ಬನ ಪತ್ನಿ  
ಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಪುತ್ರನು ಯಾವ ಪುರುಷನಿಂದ ಜನಿಸಿದವ  
ನೆಂದು ತಿಳಿಯಲಾಗುವುದಿಲ್ಲವೋ ಅವನು ಗೂಢೋತ್ಪನ್ನನು.  
ಯಾವನ ಪತ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದನೋ ಅವನ ಮಗನೆಂದು  
ತಿಳಿಯಬೇಕು. "ಉತ್ಪದ್ಯತೇ ಗೃಹೇ ಯಸ್ಯ ನ ಚ ಜಾಢೇತ ಕಸ್ಯ  
ಸಃ। ಸ ಗೃಹೇ ಗುಡ ಉತ್ಪನ್ನಸ್ತಸ್ಯ ಸ್ಯಾಢಸ್ಯ ತಲ್ಪಜಃ"  
ಮನುಂ ೯-೧೭೦।

ಗುಡೋತ್ಮನ್ ಗೂಢೋತ್ಮನ್ (ಪುಂ) ಪರಮಾತ್ಮ. ಗುಡಃ  
ಆತ್ಮಾ। ಪೃಷಂ। ವರ್ಣದ ಅಗಮದಿಂದ (ಇರುವ  
ಅಕ್ಷರದ ಜೊತೆಗೆ ಮತ್ತೊಂದು ಅಕ್ಷರವು ಸೇರುವುದರಿಂದ)  
ಹ್ರಸ್ವ ಪದವೂ, ವರ್ಣವಿಪರ್ಯಯದಿಂದ (ಅಕ್ಷರದ ಬದಲಾ  
ವಣಿಯಿಂದ) ಸಿಹ್ ಪದವೂ, ಇರುವ ವರ್ಣವು ವಿಕಾರ  
ಹೊಂದುವುದರಿಂದ ಗುಡೋತ್ಮನ್ ಪದವೂ, ವರ್ಣಲೋಪದಿಂದ  
ಪೃಷೋದರ ಪದವೂ ನಿಷ್ಪನ್ನವಾಗುವವು. "ಭವೇದ್ವರ್ಣಗಮಾ-  
ದ್ವಸಃ ಸಿಹೋ ವರ್ಣವಿಪರ್ಯಯಾತ್। ಗುಡೋತ್ಮಾ ವರ್ಣವಿಹೃತೇರ್ವರ್ಣಲೋಪಾತ್  
ಪೃಷೋದರಃ"।

ಗುಥ ಗೂಠ (ನಂ) ಅಮೇಧ್ಯ, ಮಲ. ಗು (ಪುರಿಷೋತ್ಸರ್ಗ)  
"ಥಕ್" (೩-೨-೧೨)। ನಿಪಾಂ।

ಗುನ್ ಗೂನ (ವಿಂ) ಮಲವಿಸರ್ಜನೆಯಾದವನು. ಗು  
(ಪುರಿಷೋತ್ಸರ್ಗ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। ದೀರ್ಘಃ ನತ್ವಂ ಚ  
(ವಾಂ ೮-೨-೪೪)।

ಗುರಣ ಗೂರಣ (ನಂ)ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. ಗುರೀ (ಹಿಸಾಯಾಮ್)  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।

ಗುರೀ - ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ (ದಿವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಗುರೈತೇ।  
ಜುಗುರೇ। ಗುರಿತಾ। ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಹಿಂಸಿಸು. 2. ದೋಷಂ,  
ನಡೆ, ಮುಂದೆ ಸಾಗು.

ಗುಬಾಕ ಗೂವಾಕ (ಪುಂ) ಅಡಕೆ ಮರ. ಗುಬಾಕ ಪೃಷಂ।

ಗುಹಮಾನ ಗೂಹಮಾನ (ವಿಂ) ಮರೆಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ,  
ಮುಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ಗುಹ (ಸಂವರಣ) "ಶಾನಕ್"  
(೩-೨-೧೨೪)। "ಗುಹಮಾನಃ ಸ್ವಮಾಹಾತ್ಮ್ಯಮ್" ಭट्टಿಂ ೮-೪೪।

ಗು - ಸೇವನೆ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ)। ಗರತಿ। ಜಗಾರ।  
ಸೇವನೆಮಾಡು, ಸಿಂಪಡಿಸು, ಚೆಮುಕಿಸು.

ಗುಜ - ಶಬ್ದ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಗರ್ಜತಿ। ಜಗರ್ಜೆ।  
ಗರ್ಜಿತಾ। ಗರ್ಜಿಷ್ಯತಿ। ಗರ್ಜತು। ಇತ್ಯಾದಿ. ಶಬ್ದಮಾಡು,  
ಗರ್ಜನೆಮಾಡು.

ಭಾವಿಃ-ಗುಜ್ಯತೇ। ಜಗುಜೇ। ಗರ್ಜಿತಾ। ಗುಜ್ಯತಾಮ್।  
ಅಗುಜ್ಯತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗಿಣಿಃ-ಗರ್ಜಯತಿ, -ತೇ। ಗರ್ಜಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ,  
-ವಭೂವ, -ಆಸ।

ಕೃತ್ಸುಃ-ಗರ್ಜಿತವ್ಯಮ್। ಗರ್ಜನೀಯಮ್। ಗರ್ಜ್ಯಮ್। ಗುಜಿತಃ।  
ಗುಜಿತವಾನ್। ಗರ್ಜನ್, ಗರ್ಜಂತೀ। ಗರ್ಜಿತುಮ್। ಗುಜಿತಮ್।  
ಗರ್ಜನಮ್। ಗರ್ಜಿತವಾ। ಅನುಗುಜ್ಯ.

ಗುಜಿ - ಶಬ್ದ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಗುಜ್ಜತಿ।  
ಜಗುಜ್ಜಿ। ಗುಜ್ಜಿತಾ। ಗುಜ್ಜಿಷ್ಯತಿ। ಗುಜ್ಜತು। ಅಗುಜ್ಜತ್।  
ಗುಜ್ಜೇತ್। ಇತ್ಯಾದಿ. ಶಬ್ದಮಾಡು.

ಕರ್ಮಣಿಃ-ಗುಜ್ಜಯತೇ। ಜಗುಜ್ಜೇ। ಗುಜ್ಜಿತಾ।  
ಗುಜ್ಜಿಷ್ಯತೇ। ಗುಜ್ಜಯತಾಮ್। ಅಗುಜ್ಜಯತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗುಜ್ಜನ ಗುಂಜನ (ಪುಂ) 1. ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳು. ಗುಜ್ಜಯತೇ ಕಥ್ಯತೇ  
ಭಕ್ಷಯತ್ವೇನ ರೋಗೇಷು-ಗುಜಿ (ಶಬ್ದ) ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೩)। "ಲಗುನಂ ಗುಜ್ಜನಂ ಚೈವ ಪಲಾಣ್ಡುಂ ಕವಕಾನಿ  
ಚ" ಮನುಂ ೪-೪। (ನಂ) 2. ವಿಷಬಳಿದ ಪಶುವಿನ ಮಾಂಸ.  
"ಗುಜ್ಜನಂ ವಿಷದಿಗ್ಧಸ್ಯ ಪಶೋಮಸಿ ರಸೋನಕೇ" ಹೇಮಂ।

ಗುಜ್ಜಿಮ ಗುಂಜಿಮ (ಪುಂ) ಯದುವಂಶದ ಶೂರರಾಜನ  
ಮಗ, ವಸುದೇವನ ಸಹೋದರ.

ಗುಂಡಿವ ಗುಂಡೀವ (ಪುಂ) ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ನರಿ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। ಗುಂಡಿವಿ ಗುಂಡೀವೀ.

ಗುತ್ಸ ಗುತ್ಸ (ಪುಂ) 1. ಕಾಮದೇವ, ಮನ್ಮಥ. ಗುತ್ಸಯತೇನ-  
ಗುತ್ಸು (ಅಭಿಕಾಡ್ಕಾಯಾಮ್) "ಸಃ" (೩-೩-೬೯)।  
(ವಿಂ) 2. ಕಾಮುಕ, ವಿಷಯಾಸಕ್ತ. 3. ಮಂಥಾವಿ,  
ಜಾಣ, ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿ. 4. ಸ್ತುತ್ಯ, ಹೊಗಳಲ್ಪಡುವವನು.  
5. ಹೊಗಳುವವನು.

ಗುತ್ಸು - ಅಭಿಕಾಡ್ಕಾಯಾಮ್ (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)।  
ಗುತ್ಸಯತಿ। ಜಗತ್ಸು। ಗುತ್ಸಿತಾ। ಗುತ್ಸಿಷ್ಯತಿ। ಗುತ್ಸಯತು।  
ಅಗುತ್ಸಯತ್। ಇತ್ಯಾದಿ. ಸಜಂತವಾದಾಗ ಇದು ಪ್ರಲಂಭ  
ನಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ಆತ್ಮನೇಪದಿಯಾಗುವುದು. "ಮಾಣವಕಂ  
ಗರ್ಭಯತೇ" ಪ್ರತಾರಯತೀತ್ಯರ್ಥಃ। ಅನ್ಯತ್ರ "ಶ್ವಾನಂ ಗರ್ಭಯತಿ"  
ಅಭಿಕಾಡ್ಕಾಮಸ್ಯೋತ್ಪಾದಯತಿ ಇತ್ಯರ್ಥಃ।

ಗುತ್ಸು ಗುತ್ಸು (ಪುಂ) 1. ಕಾಮದೇವ, ಮನ್ಮಥ. ಗುತ್ಸು  
(ಅಭಿಕಾಡ್ಕಾಯಾಮ್) "ಕ್ರುಃ" (೩-೧-೨೩)। ಗುತ್ಸುಃ ಕಾಮಃ  
ಸಿಂ ಕೌಂ। (ವಿಂ) 2. ಲಂಚ, ಆತ್ಮಶಯ್ಯೆಳ್ಳವನು.



ಗೃಧ್ರ ಗೃಧ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬುದ್ಧಿ. 2. ಅಪಾನವಾಯು. ಗೃಧ್ರ (ಅಭಿಕಾಡ್‌ಖಾಯಾ) "ಕ್ರ:" ಬಾಹುಂ |  
 ಗೃಧ್ನು ಗೃಧ್ನು (ವಿಂ) ಉಬ್ಬು, ಅತ್ಯಂತಯುಳ್ಳವನು. ಗೃಧ್ರ (ಅಭಿಕಾಡ್‌ಖಾಯಾಮ್) "ಕ್ರು:" (೩-೨-೧೪೦) |  
 ಗೃಧ್ಯ ಗೃಧ್ಯ (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. ಗೃಧ್ರ (ಅಭಿಕಾಡ್‌ಖಾಯಾಮ್) "ಕ್ಯಪ" (೩-೧-೧೧೦) | "इत्यः शिष्येण गुरुवत् गृध्यमर्थमवाप्त्यसि" भट्टि० ६-५५ |  
 ಗೃಧ್ರ ಗೃಧ್ರ (ಪುಂ) 1. ಹದ್ದು. ಗೃಧ್ರ (ಅಭಿಕಾಡ್‌ಖಾಯಾಮ್) "ಕ್ರು" (೩ಂ ೨-೨೪) | "अप्रबोधाय सुखाप गृध्रच्छाये वरुधिनी" रघु० १२-५० | (ವಿಂ) 2. ಉಬ್ಬು, ಅತ್ಯಂತಯುಳ್ಳವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೬೩) | "कोटि-स्फुरत्पिशितपिण्डयुतेव गृध्री" प्रबोध० ४-३ |  
 ಗೃಧ್ರಕೂಟ ಗೃಧ್ರಕೂಟ (ಪುಂ) ಒಂದು ಪರ್ವತ.  
 ಗೃಧ್ರನಖಿ ಗೃಧ್ರನಖೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬದರೀವೃಕ್ಷ, ಎಲಚಿಗಿಡ. ಗೃಧ್ರಸ್ಯ ನಖಸ್ತದಾಕಾರೋಸ್ತಸ್ಯ "ಅಕ್" (೪-೨-೯೭) | ಗೌರಾಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೪೧) |  
 ಗೃಧ್ರಪತಿ ಗೃಧ್ರಪತಿ (ಪುಂ) ಜಟಾಯುವಕ್ಷಿ.  
 ಗೃಧ್ರಪತ್ನಿ ಗೃಧ್ರಪತ್ನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಣ.  
 ಗೃಧ್ರರಾಜ ಗೃಧ್ರರಾಜ (ಪುಂ) ಜಟಾಯುವಕ್ಷಿ.  
 ಗೃಧ್ರಸಿ ಗೃಧ್ರಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾತರೋಗ. ಗೃಧ್ರಮಿವ ಸ್ಯತಿ-  
 ಪಿ (ಅಂತಕರ್ಮಣಿ) "ಕ್ರ:" (೩-೨-೩) | ಗೌರಾಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೪೧) | "पाणिप्रत्यङ्गुलीनां तु कण्ठरा याऽ-  
 निलादिता। सक्थः क्षेपं निगृह्णीयाद्गृध्रसीति हि सा स्मृता" सुश्रुत० निदान० १-७४ |  
 ಗೃಢಿ ಗೃಢಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ಕರುಹಾಕಿದ ಹಸು, ಮೊದಲನೆಯ ಸಲ ಪ್ರಸವಿಸಿದ ಹಸು. ಗೃಢಾತಿ ಸಕ್ರದ್‌ಗರ್ಭಂ -ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) "ಕ್ರಿಚ್" (೩-೩-೧೭೪) | 2. ಒಂದು ಮಗುವನ್ನು ಪ್ರಸವಿಸಿದ ಹೆಂಗಸು.  
 ಗೃಹ ಗೃಹ (ನಂ) 1. ಮನೆ. ಗೃಹಾತಿ ಧಾನ್ಯಾದಿಕಂ -ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) "ಕ್ರ:" (೩-೧-೧೪೪) | "जगत्पते जाम्बवती-  
 मिहार्हणां गृहाण पत्नीं गृहमागतःस्वयम्" याद० १४-४३ | 2. ಕಳ್ಳತನ. ಪತ್ನಿ. ಯಾವಾಗಲೂ ಗೃಹದಲ್ಲೇ ಇರುವುದರಿಂದ ಪತ್ನಿಗೂ ಗೃಹವೆಂದು ಹೆಸರು. ಅದುದರಿಂದಲೇ "गृहिणी गृहमुच्यते" ಎಂಬ ಪದವಿರುವುದು. 3. ಗೃಹ ಸ್ಥಾಪನೆ. "तदुपहितकुटुम्बः शान्तिमार्गोत्सुकोऽभूत् न हि सति कुलधुर्ये सूर्यवंश्या गृहाय" रघु० ७-७१ | (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ಗೃಹಾ: ಗೃಹಾ: 4. ಮನೆ, ವಾಸಸ್ಥಳ. "इमे नो गृहाः, यावत्प्रविशामि" मुद्रा० १ | 5. ಕಳ್ಳತನ,

ಪತ್ನಿ. 6. ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಯಾವಾಗಲೂ ಇರುವ ಪರಿವಾರದವರು, ಸಂಸಾರ, ಕುಟುಂಬ. "गृहं गृहाश्च पुंभूमि-  
 कलत्रेष्वपि च सवनि" मेदि० | 7. ನಾಮಧೇಯ. ಹೆಸರು. 8. ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ ಹನ್ನೆರಡು ರಾಶಿಗಳು. "गृहस्थस्य क्रियाः सर्वाः न सिध्यन्ति गृहं विना।  
 यतस्तस्मात् गृहारम्भप्रवेशसमयं ब्रुवे। परगृहे कृताः सर्वाः श्रौतस्मार्तादिकाः क्रियाः। निष्फलाः स्युर्यत-  
 स्तस्मादधीशः फलमश्नुते" | ಅದುದರಿಂದ ಯಾಗಾದಿಗಳನ್ನು ಸ್ವಂತಮನೆಯಲ್ಲಿ ಆರಿಸಬೇಕು.

ಗೃಹಕಕ್ಷಪ ಗೃಹಕಕ್ಷಪ (ಪುಂ) ಒರಳು ಗುಂಡು, ರಂಜುವ ಗುಂಡುಕಲ್ಲು. ಗೃಹೇ ಕಕ್ಷಪ ಇವ |

ಗೃಹಕಪೋತ ಗೃಹಕಪೋತ (ಪುಂ) ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಸಾಕಿ ಪಳಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ. "आवतिभिर्गृहकपोतशिरो-  
 धराभिः" माघ० ४-५२ |

ಗೃಹಕರ್ತೃ ಗೃಹಕರ್ತೃ (ಪುಂ) 1. ಗುಬ್ಬಿಜ್ಜಿ. (ವಿಂ) 2. ಗೃಹನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡುವವನು, ಮನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವವನು. ಗೃಹಂ ಕರೋತಿ - ಕೃ ಕೃ (ಕರಣ) "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೫) | -ಕರ್ತೃ.

ಗೃಹಕರ್ಮನ್ ಗೃಹಕರ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ಮನೆಯ ಕೆಲಸ. 2. ಗೃಹನಿರ್ಮಾಣಕಾರ್ಯ. ಗೃಹನಿರ್ಮಾಣಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯನಾದ ಭೂಮಿ: ಶುಕ್ಲವರ್ಣದ ಮತ್ತು ಹಳ್ಳ ತಿಟ್ಟಿಲ್ಲದೆ ಸಮವಾಗಿರುವ ಭೂಮಿಯು ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದುದು. "सर्वेषां चैव वर्णानां समभूमिः शुभावहा। शुक्लवर्णा च सर्वेषां शुभा भूमिरुदाहृता" | ಗೃಹನಿರ್ಮಾಣಕ್ಕೆ ನಿಷಿದ್ಧನಾದ ಮರಗಳು: ಹಾಲುತೊಟ್ಟಿಕ್ಕುವ ಮರಗಳು, ಪಕ್ಷಿಗಳು ವಾಸಮಾಡುವ ಮರಗಳು, ಗಾಳಿಯಿಂದ ಬಿದ್ದ ಮತ್ತು ಬೆಂಕಿಯಿಂದ ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟ ಮರಗಳು, ಅನೆಯಿಂದ ಮುರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ ಮತ್ತು ಸಿಡಿಲುಬಡಿದ ಮರಗಳು. ಜೈತ್ರ ಮತ್ತು ದೇವಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದ ಮರಗಳು, ರಂಧ್ರ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದ ಮರಗಳು, ದೇವತೆಗಳು ವಾಸಿಸುವ ಮರಗಳು, ಈಚಲು ಬೇವು ಮತ್ತು ತಾರೆ ಮರಗಳು, ಮುಳ್ಳು ಮರಗಳು ಇವೆಲ್ಲವೂ ಗೃಹನಿರ್ಮಾಣಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಕೂಡದು. "क्षीरिवृक्षोद्भवं दारु गृहेषु न निवेशयेत्।  
 कृताधिवासं विहगैः अनिलानलपीडितम्। गर्जैविभग्नं च तथा विद्युन्निर्घातपीडितम्। चैत्यदेवालयोत्पन्नं वज्रभग्नं श्मशानजम्। देवाद्यधिष्ठितं दारु नीपनिम्बविभीतकान्।  
 कण्टकिनोऽसारतरुन् वर्जयेत् गृहकर्मणि" ज्योतिषतन्त्रम् |



**ಕೂಸಖನನದ ಫಲ :** ಐಶಾನಾದಿ ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿ ಬಾವಿಯನ್ನು ತೋಡಿದರೆ ಅದರ ಫಲ : ವಾಸ್ತುಪುರುಷನ (ಮನೆಯ) ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಬಾವಿಯನ್ನು ತೋಡಿದರೆ ಯಜಮಾನನಿಗೆ ಅರ್ಥಸಾಕವಾಗುವುದು.

ಐಶಾನದಲ್ಲಿ ಬಾವಿಯಿದ್ದರೆ ಪುಷ್ಕ.

ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ,, ಐಶ್ವರ್ಯವೃದ್ಧಿ.

ಆಗ್ನೇಯದಲ್ಲಿ ,, ಪುತ್ರನಾಶ.

ದಕ್ಷಿಣದಲ್ಲಿ ,, ಸ್ತ್ರೀವಿನಾಶ.

ನೈಋತ್ಯದಲ್ಲಿ ,, ಮನೆ ಕಟ್ಟಿದವನ ಮರಣ.

ಪಶ್ಚಿಮದಲ್ಲಿ ,, ಸಂಪತ್ತು.

ವಾಯವ್ಯದಲ್ಲಿ ,, ಶತ್ರುಪೀಡೆ.

ಉತ್ತರದಲ್ಲಿ ,, ಸೌಖ್ಯ.

**ಗೃಹನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಸ ಫಲ (ಚಾಂದ್ರೋತ್ತಾ) :**

“ಚೈತ್ರೇ ವ್ಯಾಧಿಮವಾಪ್ನೋತಿ ಯೋ ನವಂ ಕಾರಯೇದ್ಗೃಹಮ್ । ವೈಶಾಖೇ ಧನರತ್ನಾನಿ ಜ್ಯೇಷ್ಠೇ ಮೃತ್ಯುಂ ತಥೈವ ಚ । ಆಷಾಢೇ ಭೃತ್ಯರತ್ನಾನಿ ಪಶುವರ್ಜಮವಾಪ್ನುಯಾತ್ । ಶ್ರಾವಣೇ ಮಿತ್ರಲಾಭಂ ಚ ಹಾನಿಂ ಭಾದ್ರಪದೇ ತಥಾ । ಯುಧ್ಧಂ ಚೈವಾಶ್ವಿನೇ ಮಾಸಿ ಕಾರ್ತಿಕೇ ಧನಧಾನ್ಯಕಮ್ । ಧನವೃದ್ಧಿ ಮಾರ್ಗಶಿರೈ ಪೌಷೇ ತಸ್ಕರತೋ ಭಯಮ್ । ಮಾಘೇ ಚಾಗ್ನಿಭಯಂ ವಿಶ್ವಾಲಕ್ಷ್ಮೀವೃದ್ಧಿಶ್ಚ ಫಾಲ್ಗುಣೇ ” ।

(ಸೌರೋತ್ತಾ) : “ಗೃಹಸಂಸ್ಥಾಪನಂ ಸೂರ್ಯೇ ಮೇಘಸ್ಥೇ ಶುಭದಂ ಭವೇತ್ । ವೃಷಸ್ಥೇ ಧನವೃದ್ಧಿಃ ಸ್ಯಾತ್ ಮಿಥುನೇ ಮರಣಂ ಭವೇತ್ । ಕರ್ಕಟೇ ಶುಭದಂ ಪ್ರಾಕೃತಂ ಸಿಂಹೇ ಭೃತ್ಯವಿವರ್ಧನಮ್ । ಕನ್ಯಾ ರೋಗಂ ತುಲಾ ಸೌಖ್ಯಂ ವೃಶ್ಚಿಕೇ ಧನಧಾನ್ಯಕಮ್ । ಕಾರ್ಮುಕೇ ಚ ಮಹಾಹಾನಿರ್ಮಕರೇ ಸ್ಯಾದ್ವಿನಾಶಮ್ । ಕುಂಭೇಶ್ವರೇ ರತ್ನಲಾಭಃ ಸ್ಯಾನ್ಮಿತ್ರೇ ಮೃತ್ಯು-ಭಯಾವಹಮ್ ” ವಿಶ್ವಕರ್ಮವಿರಚಿತಂ ವಾಸ್ತುಶಾಸ್ತ್ರಮ್ ।

**ಗೃಹಕರ್ಮಕರ ಗೃಹಕರ್ಮಕರ (ಪುಂ)** ಮನೆಯ ಆಳು, ಮನೆಯ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು.

**ಗೃಹಕಾರಕ ಗೃಹಕಾರಕ (ಪುಂ)** ಮನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವವನು, ಗೃಹನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡುವವನು. ಗೃಹಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ಫಲ್” (೩-೧-೧೩೩) । ಇವನೊಬ್ಬ ಮಿಶ್ರ ಜಾತಿಯವನು. “ಮೃದ್ವಚಕ್ರಸಂಯೋಗಾತ್ ಕುಂಭಕಾರೋ ಯಥಾ ಘಟಮ್ । ಕರೋತಿ ತೃಣಮೃತ್ಕಾಠಃ ಗೃಹಂ ವಾ ಗೃಹಕಾರಕಃ ” ಗ್ರಾಂ ೩-೧೪೬ ।

**ಗೃಹಕಾರಿನ್ ಗೃಹಕಾರಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ಮನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವವನು, ಗೃಹನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡುವವನು. ಗೃಹಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ಗಿರಿ” (೩-೧-೧೩೪) । 2. ಕಣಜದ ಮಳು. ಗೃಹೋಪಕರಣ (ಮನೆಯ ಬಳಕೆಯ ವಸ್ತು) ಗಳನ್ನು ಅಪವರಿಸಿದವನು ಕಣಜದ ಹಳುವಾಗಿ ಮಟ್ಟು

ವನು. “ಬಕೋ ಭವತಿ ಹೃತ್ವಾಗ್ನಿ ಗೃಹಕಾರೋ ಹೃದ್ವುಪಸ್ಕರಮ್ ” ಮನುಂ ೧೨-೬೬ ।

**ಗೃಹಕುಕ್ಕುಟ ಗೃಹಕುಕ್ಕುಟ (ಪುಂ)** ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಸಾಕಿದ ಕೋಳಿ. ಗೃಹೇ ಕುಕ್ಕುಟಃ । “ಸ್ವೇತಾಯ ದಕ್ಷಾದ್ಗೃಹಕುಕ್ಕುಟಾಯ ಚತುರ್ಥಭಕ್ತಾಯ ಬೃಹಸ್ಪತಾಯ ” ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೧-೧೯ ।

**ಗೃಹಗೋಧಾ ಗೃಹಗೋಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗೌಳಿ, ಹಲ್ಲಿ. ಗೃಹಸ್ಯ ಗೋಧೇವ ।

**ಗೃಹಗೋಧಿಕಾ ಗೃಹಗೋಧಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗೌಳಿ, ಹಲ್ಲಿ. ಅಲ್ಪಾ ಗೋಧಾ ಗೋಧಿಕಾ, ಗೃಹಸ್ಯ ಗೋಧಿಕಾ ।

**ಗೃಹಚುಲ್ಲೀ ಗೃಹಚುಲ್ಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪೂರ್ವ ಮತ್ತು ಪಶ್ಚಿಮಾಭಿಮುಖವಾದ ಎರಡು ಸಮಾನವಾದ ಕೊಠಡಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮನೆ. “ಪೂರ್ವಾಪರೇ ತು ಶಾಲೇ ಗೃಹಚುಲ್ಲೀ ದಕ್ಷಿಣೋತ್ತರೇ ಕಾಚಮ್ ” ಬೃಹತ್ಸಂ ೪೩-೪೦ ।

**ಗೃಹಚ್ಛಿದ್ರ ಗೃಹಚ್ಛಿದ್ರ (ನಂ)** ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಮನಸ್ಸಾಪ, -ಕಚ್ಚಾಟ, -ಭಿನ್ನಾಭಿಪ್ರಾಯ, -ಬಡಕು.

**ಗೃಹಜ ಗೃಹಜ (ಪುಂ)** ಮನೆಯ ದಾಸಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು, ಸೇವಕಿಯ ಮಗ. “ಧ್ವಜಾಹುತೋ ಭಕ್ತದಾಸೋ ಗೃಹಜಃ ಕ್ರಿತ್-ದತ್ತಿಮೋ । ಪೇತ್ರಕೋ ದಂಡದಾಸಶ್ಚ ಸಪ್ತೇತೇ ದಾಸಯೋನಯಃ ” ಮನುಂ ೮-೪೧೫ ।

**ಗೃಹಜನ ಗೃಹಜನ (ಪುಂ)** ಕುಟುಂಬದ ಜನರು, ಮನೆಯ ಸಂಸಾರಕ್ಕೆ ಸೇರಿದವರು, ಪುತ್ರ ಹೆಂಡತಿ ಮೊದಲಾದವರು. “ಗೃಹಜನಮಾಹುಯ ಪೃಚ್ಛಾಮಿ ” ಮುರ್ದಾಂ ।

**ಗೃಹತಟಿ ಗೃಹತಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಬೀದಿ, ಮನೆಯ ಮುಂಭಾಗ. ಗೃಹಸ್ಯ ತಟಿವ ।

**ಗೃಹದೀಪ್ತಿ ಗೃಹದೀಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹೆಂಗಸು, ಮನೆಯನ್ನು ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುವ ಗೃಹಲಕ್ಷ್ಮಿ. “ಪ್ರಜನಾರ್ಯ ಮಹಾಭಾಗಾ ಪೂಜಾರ್ಹಾ ಗೃಹದೀಪ್ತಯಃ ” ಮನುಂ ೯-೨೬ ।

**ಗೃಹದೇವತಾ ಗೃಹದೇವತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ವಾಸ್ತುಪುರುಷನ ಶರೀರದಲ್ಲಿರುವ ಅಗ್ನಿ ಮೊದಲಾದ ನಲವತ್ತೈದು ದೇವತೆಗಳು. ಗೃಹೇ ವಾಸ್ತವೋ ದೇವತಾ ।

**ಗೃಹದೇವಿ ಗೃಹದೇವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮನೆಯ ಗೋಡೆಯ ಮೇಲೆ ಬರೆದು ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ ದೇವತೆ. ಜರೆಯಂಬ ರಾಕ್ಷಸಿ. ಗೃಹೇ ತತ್ಕುಡ್ಯೇ ವಿಲಿಖ್ಯ ಪೂಜ್ಯಾ ದೇವಿ । “ಜರಾ ನಾಮಾಸ್ಮಿ ಭದ್ರಂ ತೇ ರಾಕ್ಷಸೀ ಕಾಮರೂಪಿಣಿ । ತವ ವೇಶಮನಿ ರಾಜೇಂದ್ರ ಪೂಜಿತಾ ನ್ಯವಸಂ ಸುಖಮ್ । ಗೃಹೇ ಗೃಹೇ ಮನುಷ್ಯಾಣಾಂ ನಿದ್ರಾಂ ತಿಷ್ಠಾಮಿ ರಾಕ್ಷಸೀ । ಗೃಹದೇವೀತಿ ನಾಮ್ನಾ ವೈ ಪುರಾ ಸೃಷ್ಟಾ ಸ್ವಯಂಭುವಾ । ದಾನವಾಣಾಂ ವಿನಾಶಾಯ ಸ್ಥಾಪಿತಾ ದಿವ್ಯರೂಪಿಣಿ । ಯೋ ಮಾಂ ಭಕ್ತ್ಯಾ ಲಿಖೇತ್ ಕುಡ್ಯೇ ಸುಪುತ್ರಾಂ ಯೌವನಾನ್ವಿತಾಮ್ ।



ಗೃಹೇ ತಸ್ಯ ಭವೇದ್ವದ್ವಿರನ್ಯಥಾ ಹಾನಿಮಾನ್ಯುಯಾತ್ | ಗಂಧಪುಷ್ಪ-  
ಸ್ತಂಥಾ ಭೂಪಿ: ಭಕ್ಯೈರ್ಭೋಜ್ಯೈಶ್ಚ ಪೂಜಿತಾ | ಸಾಙ್ಗಂ ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರಾರ್ಥಂ  
ಚಿಂತಯಾಮ್ಯನಿಶಂ ತವ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೧೭ |

ಗೃಹವೇಹಲಿ ಗೃಹವೇಹಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನೆಯ ಹೊಸ್ತಿಲು.  
ಗೃಹಸ್ಯ ವೇಹಲಿ | "ಯಾಸಾಂ ಬಲಿ: ಸಪದಿ ಮದ್ಗೃಹವೇಹಲಿನಾಮ್"  
ಮೃಚ್ಛಂ ೧-೨ |

ಗೃಹದ್ರೂಮ ಗೃಹದ್ರೂಮ (ಪುಂ) ಕುರಟಗೆಗಿಡ. ಗೃಹಮಿವ ದ್ರೂಮ: |

ಗೃಹದ್ವಾರ ಗೃಹದ್ವಾರ (ನಂ) ಮನೆಯ ಬಾಗಿಲು.

ಗೃಹನಾಶನ ಗೃಹನಾಶನ (ಪುಂ) ಕಾಡುಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ.

ಗೃಹನೀಡ ಗೃಹನೀಡ (ಪುಂ) ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಗೂಡು ಕಟ್ಟಿಕೊಳ್ಳುವ  
ಗುಬ್ಬಿಚ್ಚಿ. ಗೃಹೇ ನೆಡಮಸ್ಯ |

ಗೃಹಪ ಗೃಹಪ (ಪುಂ) ಮನೆಯ ಯಜಮಾನ. ಗೃಹಂ ಪಾತಿ-  
ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩) |

ಗೃಹಪತಿ ಗೃಹಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಮನೆಯ ಯಜಮಾನ.  
ಗೃಹಸ್ಯ ಪತಿ: | 2. ಮಂತ್ರಿ. "ಭವೇದ್ಗೃಹಪತಿ: ಪುಸಿ  
ಗೃಹಸ್ಥೇಷಿ ಚ ಮನ್ತ್ರಿಣಿ" ಮೇದಿಂ | 3. ಯಾಗ ಮಾಡಿ  
ವವನು. "ಗೃಹಪತಿಗೃಹೀ ಸತ್ರಿ" ಹೇಮಂ | 4. ಯಜಮಾನ,  
ಪ್ರಧಾನ, ಗ್ರಾಮದ ಮುಖ್ಯಸ್ಥ. 5. ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ  
ಮುಗಿದನಂತರ ಮದುವೆಯಾದವನು, ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮ  
ವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದವನು.

ಗೃಹಪಾಲ ಗೃಹಪಾಲ (ಪುಂ) 1. ಮನೆಯನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವವನು.  
2. ನಾಯಿ. ಗೃಹಂ ಪಾಲಯತಿ - ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್  
"ಅಣ್" (೩-೨-೧) |

ಗೃಹಪ್ರವೇಶ ಗೃಹಪ್ರವೇಶ (ಪುಂ) ಶುಭಮುಹೂರ್ತದಲ್ಲಿ  
ಮನೆಗೆ ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು. ಗೃಹೇ ಶಾಸ್ತ್ರ-  
ವಿಧಾನೇನ ಪ್ರವೇಶ: |

ಗೃಹಪೋತಕ ಗೃಹಪೋತಕ (ಪುಂ) ವಾಸ್ತುಪುರುಷನ ಸ್ಥಾನ  
ಅಥವಾ ಗೃಹವಾಸ್ತು.

ಗೃಹಬಂಧು ಗೃಹಬಂಧು (ಪುಂ) ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಸಾಕಿದ ಮಂಗಳಿ.  
ಗೃಹಸ್ಥಿತೋ ಬಂಧು: |

ಗೃಹಬಲಿ ಗೃಹಬಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೈಶ್ವದೇವಮಂಜು ಒಂದು  
ಯಜ್ಞ. ಭೂತಬಲಿ, ಭೂತಯಜ್ಞ, ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಗೃಹಸ್ಥನು  
ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಗೃಹೇ  
ದೇವೋ ಬಲಿ: | "ತತೋ ಗೃಹಬಲಿ ಕುರ್ಯಾದಿತಿ ಧರ್ಮೋ ವ್ಯವಸ್ಥಿತ:"  
ಮನುಂ ೩-೨೬೪ |

ಗೃಹಬಲಿಭುಜ್ ಗೃಹಬಲಿಭುಜ್ (ಪುಂ) 1. ವಾಯಸ, ಕಾಗೆ.  
2. ಗುಬ್ಬಿಚ್ಚಿ. ಗೃಹಬಲಿ ಭುಜ್ಕತೇ - ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವ-

ಹಾರಯೋ:) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬) | "ನಿಡಾರಮ್ಭೈರ್ಗೃಹಬಲಿ-  
ಭುಜಾಮಾಕುಲಗ್ರಾಮಚೇತ್ಯಾ:" ಮೇವಂ ೧-೨೩ |

ಗೃಹಭಜ್ಞ ಗೃಹಭಜ್ಞ (ಪುಂ) 1. ಮನೆ ಮುರಿಯುವುದು,  
ಮನೆಯವರಲ್ಲಿ ಅಂತಃಕಲಹವನ್ನುಂಟುಮಾಡಿ ಸಂಸಾರ  
ವನ್ನು ಕೆಡಿಸುವುದು. 2. ಮನೆಯನ್ನು ಒಡೆದುಹಾಕು  
ವುದು, ಮನೆಯನ್ನು ಕೆಡವುವುದು. ಇದೇ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ  
-ಭಜನಮ್ - ಭಂಜನಮ್.

ಗೃಹಭರ್ತೃ ಗೃಹಭರ್ತೃ (ಪುಂ) ಮನೆಯ ಯಜಮಾನ. ಗೃಹಸ್ಯ  
ಭರ್ತಾ | "ಗೃಹಭರ್ತೃಸ್ತತ್ಪುತ್ರೇ ಪಿಡಾಮಜ್ಞೇ ಪ್ರಯಚ್ಛಂತಿ" ಬೃಹತ್ಸಂ  
೪೩-೪೮ |

ಗೃಹಭೇದಿನ್ ಗೃಹಭೇದಿನ್ (ವಿಂ) ಗೃಹಚ್ಛಿದ್ರವನ್ನು ಉಂಟು  
ಮಾಡುವ, ಮನೆಯವರಲ್ಲಿ ಕಲಹವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ,  
ಮನೆಯನ್ನು ಮುರಿಯುವ. ಗೃಹಂ ಭಿನತ್ತಿ - ಭಿದಿರ್  
(ವಿದಾರಣೆ) "ಣಿತಿ:" (೩-೨-೭೮) |

ಗೃಹಭೋಜಿನ್ ಗೃಹಭೋಜಿನ್ (ವಿಂ) ಮನೆಯಲ್ಲೇ ಇದ್ದು  
ಕೊಂಡು ಉಟಿಮಾಡುವವನು, ಸಹವಾಸಿ.

ಗೃಹಮಣಿ ಗೃಹಮಣಿ (ಪುಂ) ದೀಪ. ಗೃಹೇ ಮಣಿರಿವ |  
"ದಶೇನ್ವನೋ ಗೃಹಮಣಿ: ಸ್ನೇಹಾಶ: ಕಂಜಲಧ್ವಜ:" ಹಾರಾಂ |

ಗೃಹಮಾಚಿಕಾ ಗೃಹಮಾಚಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಪಟಹಕ್ಕಿ, ಬಾವಲಿ  
ಹಕ್ಕಿ. "ಚರ್ಮಚಟಾಂ ತು ಜನುನಿ ಗೃಹಮಾಚಿಕಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಗೃಹಮಾರ್ಜನಿ ಗೃಹಮಾರ್ಜನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನೆಯನ್ನು  
ಗುಡಿಸಿ ಚೊಕ್ಕಟಮಾಡುವ ಸೇವಕಿ. ಗೃಹಂ ಮಾರ್ಜಿ - ಮೃಜ್  
(ಶುದ್ಧಿ) "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) | "ತಪಶ್ಚರಂತಿಮಾಜಾಯ  
ಸ್ವಪಾದಸ್ಪರ್ಶನಾಶಯಾ | ಸಖ್ಯೋಪೇತ್ಯಾಗ್ರಹೀತ್ ಪಾಣಿ ಯೋಙ್  
ತದ್ಗೃಹಮಾರ್ಜನಿ" ಭಾಗಂ ೧೦-೮೩-೧೧ |

ಗೃಹಮೃಗ ಗೃಹಮೃಗ (ಪುಂ) ನಾಯಿ. ಗೃಹೇ ಮೃಗ ಇವ |

ಗೃಹಮೇವ ಗೃಹಮೇವ (ಪುಂ) 1. ಗೃಹಸ್ಥ, ಪತ್ನಿಯೊಡನೆ  
ಕೂಡಿರುವವನು. ಗೃಹೇಣ ಪತ್ನಿಯಾ ಮೇಧತೇ ಸಂಗಚ್ಛತೇ - ಮೇಧ  
(ಸಂಗಮೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ಪಂಚಸೂನಾ  
ನಿಮಿತ್ತವಾದ ಹಿಂಸಾಕಾರ್ಯ. (1) ಚುಲ್ಲೆ (ಒಲೆ),  
(2) ಪೆಣ್ಣಿ (ಅರೆಯುವ ಕಲ್ಲು), (3) ಉಪ್ಪು: (ಗೃಹೋಪ  
ಕರಣವಾದ ಕಸಬರಿಕೆ ಮುಂತಾದುದು), (4) ಕಣ್ಣಿನಿ  
(ಗುಂಡುಕಲ್ಲು, ಒನಕೆ) ಮತ್ತು (5) ನೀರಿನ ಪಾತ್ರೆ ಇವು  
ಐದೂ ಗೃಹಸ್ಥನಿಗೆ ಪಾಪವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡತಕ್ಕವು.  
ಮೇಧ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ವಜ್" (೩-೩-೧೮) | "ಪಶ್ವ-  
ಸುನಾ ಗೃಹಸ್ಥಸ್ಯ ಚುಲ್ಲೆ ಪೆಣ್ಣುಪುಪ್ಪು: | ಕಣ್ಣಿನಿ ಚೋದ-  
ಕುಂಭಶ್ಚ ಬध्यತೇ ಯಾಸ್ತು ವಾಹಯನ್" ಮನುಂ ೩-೬೮ | 3. ಪಂಚ  
ಯಜ್ಞಗಳನ್ನು ಮಾಡುವವನು. 4. ಮರುದ್ದೇವತೆ.



**ಗೃಹೇಧಿನ್ ಗೃಹಮೇಧಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಗೃಹಸ್ಥ, ಗೃಹ ಯಜ್ಞಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸುವವನು. ಗೃಹೇಣ ಪತ್ನ्या ಸಂಗಚ್ಛತೇ—ಮೇಧ (ಸಂಗಮ) “ಗಿಣಿ:” (೩-೨-೭೮)। “ಯಶಸೇ ವಿಜಿಗಿಷ್ಣಾಂ ಪ್ರಜಾಯೇ ಗೃಹೇಧಿನಾಮ್” ರಘುಂ ೧-೬। “ಅಧ್ಯಾಪನಂ ಬ್ರಹ್ಮಯಜ್ಞ: ಪಿತೃಯಜ್ಞಸ್ತು ತರ್ಪಣಮ್। ಹೊಮೋ ದೈವೋ ಬಲಿಭೌತೋ ನೃಯಜ್ಞೋಽತಿಥಿಪೂಜನಮ್। ಪಂಚೈತಾನ್ ಯೋ ಮಹಾಯಜ್ಞಾನ್ ನ ಹಾಪಯತಿ ಶಕ್ತೀತ:। ಸ ಗೃಹೇಽಪಿ ವಸನ್ನಿತ್ಯ ಸ್ನಾನಾದೋಷೇನ ಲಿಪ್ಯತೇ” ಮನುಂ ೩-೭೦, ೭೧। 2. ಪಂಚಸೂನಾನಿಮಿತ್ತವಾದ ಹಿಂಸಾಕಾರ್ಯವನ್ನು ಆಚರಿಸುವ ಗೃಹಸ್ಥ. [“ಗೃಹೇಧಿ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಗೃಹೇಧಿ: ಪಂಚಸೂನಾನಿಮಿತ್ತಹಿಸಾ ಅಸ್ತಿಸ್ಯ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪)। —ಮೇಧಿನಿ —ಮೇಧಿನೀ. ಪತ್ನಿ. ಪತ್ನಿಗೂ ಯಜ್ಞಸಂಬಂಧವಿರುವುದರಿಂದ ಈ ವೈಸರು. “ನ ವ್ಯವಾಹರ ವರಾರೋಹಾಂ ಗೃಹಿಣಿಂ ಗೃಹೇಧಿನಿಮ್” ಭಾಗಂ ೪-೨೬-೧೩। 3. ಮರುದ್ವೇವತೆ.

**ಗೃಹೇಧೀಯ ಗೃಹಮೇಧೀಯ** (ವಿಂ) ಮರುದ್ವೇವತಾಕ ವಾದ ಹವಿಸ್ಸು ಮೊದಲಾದುದು. ಗೃಹೇಧಿ ದೇವತಾ ಅಸ್ಯ ವಾ “ಛ:” (೪-೨-೩೨)। ಪಕ್ಷೆ “ಯತ್” —ಮೇಧ್ಯಮ್ —ಮೇಧ್ಯಮ್.

**ಗೃಹಯನ್ತ್ರ ಗೃಹಯಂತ್ರ** (ನಂ) 1. ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಬಟ್ಟೆಗಳನ್ನು ಹರವಲು ಹಾಕಿರುವ ಕಂಬ ಅಥವಾ ತಂತಿ ಮುಂತಾದುದು. ಗೃಹೇ ಯನ್ತ್ರಮ್। 2. ಉತ್ಸವ ದಿವಸಗಳಲ್ಲಿ ಧ್ವಜಗಳನ್ನು ಏರಿಸಲು ಏರ್ಪಡಿಸಿರುವ ಮರದ ಅಥವಾ ಲೋಹದ ಕಂಬ. “ಗೃಹಯನ್ತ್ರಪತಾಕಾಶ್ರೀರಪೀರಾದರನಿಮಿತಾ” ಕುಮಾಂ ೬-೪೧।

**ಗೃಹಾಲೃ ಗೃಹಯಾಲೃ** (ವಿಂ) ಗ್ರಹಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಸ್ವೀಕರಿಸುವ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ. ಗೃಹಯತಿ — ಗೃಹ (ಗೃಹಣ) + ಗಿಣಿ “ಆಲೃ” (೩-೨-೧೪೮)।

**ಗೃಹವಾಟಿಕಾ ಗೃಹವಾಟಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನೆಗೆ ಸೇರಿದಂತಿ ರುವ ಉದ್ಯಾನವನ, ಮನೆಯ ಹತ್ತಿರವಿರುವ ಉಪವನ. ಗೃಹಸಮೀಪೇ ವಾಟಿಕೇವ। “ನಿಷ್ಕುಟೋ ಗೃಹವಾಟಿಕಾ” ಹಾರಾಂ।

**ಗೃಹವಿತ್ತ ಗೃಹವಿತ್ತ** (ವಿಂ) ಮನೆಯ ಯಜಮಾನ, ಮನೆಯೇ ಐಶ್ವರ್ಯವಾಗಿ ಉಳ್ಳವನು. ಗೃಹಂ ವಿತ್ತಂ ಯಸ್ಯ।

**ಗೃಹಸಂವೇಶಕ ಗೃಹಸಂವೇಶಕ** (ಪುಂ) ವಾಸ್ತುವಿದ್ಯೆಯಿಂದ ಜೀವನ ನಡೆಸುವವನು, ಮನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟಿ ಅದರಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು.

**ಗೃಹಸಾರ ಗೃಹಸಾರ** (ಪುಂ) ಅಸ್ತಿ, ಸ್ವತ್ತು, ಒಡವೆ ಮುಂತಾದುವು. ಗೃಹಸ್ಯ ಸಾರ:। “ಗೃಹಿತಗೃಹಸಾರಮೇನ ಸಪುತ್ರಕಲತ್ರಂ ಸಂಯಮ್ಯ” ಮುಡ್ರಾಂ ೧।

**ಗೃಹಸ್ಥ ಗೃಹಸ್ಥ** (ಪುಂ) ಗೃಹದಲ್ಲಿ ಪತ್ನಿಯೊಡನೆ ಇರುವವನು, ಎರಡನೆಯ (ಗೃಹಸ್ಥ) ಆಶ್ರಮವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದವನು, ಮನೆಯ ಯಜಮಾನ. ಗೃಹೇ ದಾರೆಷು ತಿಷ್ಠತಿ — ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) “ಕ:” (೩-೨-೪)। “ಗೃಹಸ್ಥಸ್ತು ಯದಾ ಪಶ್ಯೇದ್ವಲಿಪಲಿತಮಾತ್ಮನ:। ಅಪತ್ಯಸ್ಯೇವ ಚಾಪತ್ಯಂ ತದಾರಣ್ಯಂ ಸಮಾಶ್ರಯೇತ್” ಮನುಂ ೬-೨।

**ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮ ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮ** (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ನಾಲ್ಕು ಆಶ್ರಮಗಳಲ್ಲೊಂದು, ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಪೂರ್ಣವಾದನಂತರ ವಿವಾಹ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಸ್ವೀಕರಿಸುವ ಆಶ್ರಮ. ಗೃಹಸ್ಥರೂಪಮಾಶ್ರಮಮ್।

**ಗೃಹಸ್ಥಧರ್ಮ ಗೃಹಸ್ಥಧರ್ಮ** (ಪುಂ) ಪತ್ನೀಸಮೇತನಾಗಿ ಮನೆಯ ಯಜಮಾನನು ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ ಧರ್ಮ. ಗೃಹಸ್ಥಸ್ಯ ಧರ್ಮ:। [ಗೃಹಸ್ಥನ ಕರ್ತವ್ಯ:—ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಪೂರ್ತಿಯಾದ ಬಳಿಕ ಗುರುಗಳ ಅನುಮತಿಯಿಂದ ಪ್ರತ ಸಮಾವರ್ತನಮಾಡಿ ಸತ್ಕುಲಪ್ರಸೂತಳಾದ ಲಕ್ಷಣೋಪೇತಳಾದ ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಬೇಕು. ಗೃಹಸ್ಥನಾಗಿ ಪಂಚಸೂನಾನಿಮಿತ್ತವಾದ ಹಿಂಸಾಕೃತ್ಯಗಳಿಗೆ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತವಾಗಿ ಪಂಚಯಜ್ಞಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸಬೇಕು. [ಪಂಚಸೂನಾ: “ಗೃಹೇಧಿ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] (1) ಬ್ರಹ್ಮಯಜ್ಞ:, (2) ದೇವಯಜ್ಞ:, (3) ಪಿತೃಯಜ್ಞ:, (4) ಭೂತಯಜ್ಞ: ಮತ್ತು (5) ಮನುಷ್ಯಯಜ್ಞ: ಇವು ಐದೂ ಗೃಹಸ್ಥನು ಪ್ರತಿದಿನದಲ್ಲೂ ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞಗಳು. ಗೃಹಸ್ಥನು ಅಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಹೋಮಮಾಡಿದರೆ ಆ ಹವಿಸ್ಸು ಸೂರ್ಯನನ್ನು ಸೇರುವುದು. ಸೂರ್ಯನಿಂದ ಮಳೆಯಾಗುವುದು, ಮಳೆಯಿಂದ ಬೆಳೆ (ಅನ್ನ). ಅದರಿಂದ ಜನರು ಬದುಕುವರು. ಸಕಲ ಪ್ರಾಣಿಗಳೂ ವಾಯುವನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿ ಜೀವಿಸಿರುವಂತೆ ಎಲ್ಲಾ ಆಶ್ರಮಗಳೂ ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮವನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿರುವುವು. “ಅಗ್ನಿಂ ಪ್ರಾಸ್ತಾಹುತಿ: ಸಮ್ಯ-ಗಾದಿತ್ಯಮುಪತಿಷ್ಠತೇ। ಆದಿತ್ಯಾಜ್ಞಾಯತೇ ವೃಷ್ಟಿ: ವೃಷ್ಟೇರನ್ನಂ ತತ: ಪ್ರಜಾ:। ಯಥಾ ವಾಯುಂ ಸಮಾಶ್ರಿತ್ಯ ವರ್ತಂತೇ ಸರ್ವಜನ್ತವ:। ತಥಾ ಗೃಹಸ್ಥಮಾಶ್ರಿತ್ಯ ವರ್ತಂತೇ ಸರ್ವ ಆಶ್ರಮಾ:” ಮನುಂ ೩-೭೬, ೭೭। ಉಳಿದ ಎಲ್ಲಾ ಆಶ್ರಮಗಳೂ ಗೃಹಸ್ಥನನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿ ಜೀವಿಸಬೇಕಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಆ ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮ ಧರ್ಮವನ್ನು ಜಿನ್ನಾಗಿ ಅನುಷ್ಠಿಸಬೇಕು. ವೇದಾಧ್ಯಯನದಿಂದ ಋಷಿಗಳನ್ನೂ ಹೋಮ (ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯ)ದಿಂದ ದೇವತೆಗಳನ್ನೂ ತರ್ಪಣಾದಿಗಳಿಂದ ಪಿತೃಗಳನ್ನೂ ಅನ್ನ (ಅತಿಥಿಸತ್ಕಾರ)ದಿಂದ ಮನುಷ್ಯರನ್ನೂ ಬಲಿಕರ್ಮದಿಂದ ಭೂತ (ಇತರ ಪ್ರಾಣಿ)ಗಳನ್ನೂ ಅರ್ಚಿಸುವುದು ಗೃಹಸ್ಥನ



ಧರ್ಮ. "ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯೇನಾರ್ಚಯೇತರ್ಷಿನ್ ಹೋಮೇದೇವಾನ್ಯಥಾವಿಧಿ |  
ಪಿತುನ್ ಶ್ರಾದ್ಧೇಶ್ಚ ನೃನಶ್ಚೈಃ ಭೂತಾನಿ ಬಲಿಕರ್ಮಣಾ" ಮನುಂ ೩-೮೧ |  
ಅತಿಥಿಸತ್ಕಾರಮಾಡಿದ ನಂತರ ದಂಪತಿಗಳಿಬ್ಬರೂ ಭೋಜನ  
ಮಾಡಬೇಕು. "ಭುಕ್ತವತ್ಸ್ವಥ ವಿಪ್ರೇಷು ಸ್ವೇಷು ಭೃತ್ಯೇಷು ಚೈವ ಹಿ |  
ಭುಜ್ಜೀಯಾತಾಂ ತತಃ ಪಶ್ಚಾದವಶಿಷ್ಟಂ ತು ದಂಪತೀ" ಮನುಂ  
೩-೧೧೬ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮ ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮ (ಪುಂ) ನಾಲ್ಕು ಅಶ್ರಮಗಳಲ್ಲಿ  
ಎರಡನೆಯದು, ವಿವಾಹವಾದನಂತರ ಧರ್ಮಚಾರಿಣಿ  
ಯೊಡನೆ ಕೂಡಿ ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡುವ ಒಂದು  
ಅಶ್ರಮ. ಗೃಹಸ್ಥರೂಪಃ ಆಶ್ರಮಃ |

ಗೃಹಸ್ಥಿಣಾ ಗೃಹಸ್ಥೋಕ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನೆಗೆ ಅಧಾರವಾದ  
ಕಂಬ.

ಗೃಹಾಕ್ಷ ಗೃಹಾಕ್ಷ (ಪುಂ) ಗವಾಕ್ಷ, ಕಿಟಕಿ. ಗೃಹಸ್ಯ ಅಕ್ಷಿವ  
"ಅಕ್ಷ" (೪-೪-೭೬) |

ಗೃಹಾಗತ ಗೃಹಾಗತ (ಪುಂ) 1. ಅತಿಥಿ, ಅನಾಹೂತನಾಗಿ  
ಮನೆಗೆ ಬಂದವನು. ಗೃಹಮಾಗತಃ | (ವಿಂ) 2. ಮನೆಗೆ  
ಬಂದವನು. "ಸುರೇಂದ್ರಮಾತ್ರಾಶ್ರಿತಗರ್ಭಗೌರವಾತ್ಪ್ರಯತ್ನಮುಕ್ತಾಸನಯಾ  
ಗೃಹಾಗತಃ" ರಘುಂ ೩-೧೧ |

ಗೃಹಾಚಾರ ಗೃಹಾಚಾರ (ಪುಂ) 1. ಮನೆಯ ಯಜಮಾನನ  
ಕರ್ತವ್ಯ, ಅತಿಥಿಸತ್ಕಾರ ಮುಂತಾದುದು. 2. ಮನೆಯ  
ಆಚಾರ, ಮನೆಯ ಸಂಪ್ರದಾಯ, ಮನೆಯಲ್ಲಿ ನಡೆದು  
ಕೊಂಡು ಬಂದ ಪದ್ಧತಿ. ಗೃಹೇ ಆಚಾರಃ |

ಗೃಹಾಧಿಪ ಗೃಹಾಧಿಪ (ಪುಂ) 1. ಮನೆಯ ಯಜಮಾನ.  
2. ಮೇಷಾದಿ ರಾಶಿಗಳ ಅಧಿಪತಿ. -ಅಧಿಪತಿಃ -ಅಧಿಪತಿಃ |

ಗೃಹಾಭಿಪಾಲನ ಗೃಹಾಭಿಪಾಲನ (ನಂ) ಮನೆಯನ್ನು  
ಕಾಯುವುದು. ಮನೆಯನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವುದು.

ಗೃಹಾಂಬು ಗೃಹಾಂಬು (ನಂ) ಅಂಬಲಿ, ಗಂಜಿ.

ಗೃಹಾಂಜಿ ಗೃಹಾಂಜಿ (ನಂ) ಅಂಬಲಿ, ಗಂಜಿ.

ಗೃಹಾಯನಿಕ ಗೃಹಾಯನಿಕ (ಪುಂ) ಗೃಹಸ್ಥ, ಮನೆಯ  
ಯಜಮಾನ. ಗೃಹರೂಪಮಯನಮಸ್ಯಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೫) |

ಗೃಹಾರಾಮ ಗೃಹಾರಾಮ (ಪುಂ) ಮನೆಯ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ  
ಕೈತೋಟ, ಉದ್ಯಾನವನ. ಗೃಹೇ ಗೃಹಸಮೀಪೇ ಆರಾಮಃ |

ಗೃಹಾರ್ಥ ಗೃಹಾರ್ಥ (ಪುಂ) ಮನೆಯ ಕಾರ್ಯ, ಗೃಹಕೃತ್ಯ.  
"ಪತಿಸೇವಾ ಗುರೋ ವಾಸೋ ಗೃಹಾರ್ಥೋಽಗ್ನಿಪರಿಪ್ರೀಕ್ಷಾ" ಮನುಂ  
೨-೬೭ |

ಗೃಹಾಲಿಕಾ ಗೃಹಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೃಹಿಣಿ, ಹೆಣ್ಣು. ಗೃಹೇ  
ಆಲಿಖಿತ ಕಾಯಿತಿ - ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) |  
"ಗೃಹಗಾಂಧಾ ಗೃಹಾಲಿಕಾ" ಹಾರಾಂ |

ಗೃಹಾಗ್ರಹಣಿ ಗೃಹಾಗ್ರಹಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನೆಯ  
ಮೊಸ್ದಲು. ಗೃಹಮವಗೃಹಯತೇಜಯಾ - ಅವ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ)  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) |

ಗೃಹಾಶಯಾ ಗೃಹಾಶಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೀಳ್ಕೆದೆಯ ಬಳ್ಳಿ.  
ಗೃಹೇ ಇವ ಛಾಯಾಯುಕ್ತಸ್ಥಾನೇ ಆಶೀತೇ - ಆ + ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನ)  
"ಅಚ್" (೩-೨-೧೫) |

ಗೃಹಾಶಮನ್ ಗೃಹಾಶಮನ್ (ಪುಂ) ಗುಂಡುಕಲ್ಲು, ರುಬ್ಬುವ  
ಕಲ್ಲು, ಅರೆಯುವ ಕಲ್ಲು. ಗೃಹಸ್ಥಿತೋಽಸ್ಮಾ | "ಗೃಹಾಶಮಾ  
ಗೃಹಕಚ್ಚಪಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಗೃಹಾಶ್ರಮ ಗೃಹಾಶ್ರಮ (ಪುಂ) ಗೃಹರೂಪವಾದ ಅಶ್ರಮ,  
ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮುಗಿದನಂತರ ಸ್ನಾತಕನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವ  
ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮ, ನಾಲ್ಕು ಅಶ್ರಮಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡನೆಯದು.  
ಗೃಹಮೇವಾಶ್ರಮಃ | "ಎವಂ ಗೃಹಾಶ್ರಮೇ ಸ್ಥಿತವಾ ವಿಧಿವತ್ಸ್ನಾತಕೋ  
ದ್ವಿಜಃ | ವನೇ ವಸೇತು ನಿಯತೋ ಯಥಾವದ್ವಿಜಿತೇಂದ್ರಿಯಃ"  
ಮನುಂ ೬-೧ |

ಗೃಹಾಶ್ರಮಿನ್ ಗೃಹಾಶ್ರಮಿನ್ (ಪುಂ) ಗೃಹಸ್ಥ. ಗೃಹಾಶ್ರಮೋ-  
ಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) |

ಗೃಹಾಶ್ರಯಾ ಗೃಹಾಶ್ರಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೀಳ್ಕೆದೆಯ ಬಳ್ಳಿ.  
ಗೃಹಾಸಕ್ತ ಗೃಹಾಸಕ್ತ (ಪುಂ) ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಸಾಕಿದ ಮೃಗ  
ಮತ್ತು ಪಕ್ಷಿಗಳು. ಗೃಹೇ ಆಸಕ್ತಾಃ | "ಗೃಹಾಸಕ್ತಾಃ ಪಕ್ಷಿಮೃಗಾಃ  
ಛೇಕಾಃ ಸ್ಯುರ್ಗೃಹಯಕಾಶ್ಚ ತೇ" ಅಮಂ |

ಗೃಹಿನ್ ಗೃಹಿನ್ (ಪುಂ) ಮನೆಯ ಯಜಮಾನ, ಗೃಹಸ್ಥ.  
ಸಂಸಾರಿ, ಕುಟುಂಬಿ. ಗೃಹಂ ಭಾರ್ಯಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿಃ"  
(೪-೨-೧೧೫) | "ಪಿಡಯಂತೇ ಗೃಹಿಣಃ ಕಥಂ ನು ತನಯಾ-  
ವಿಸ್ತೇಷದ್ಘೋಷೇನೈವ" ಶಾಕುಂ ೪-೫ |

ಗೃಹಿಣಿ ಗೃಹಿಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು, ಮನೆಯ ಯಜಮಾನಿ.  
ಗೃಹಂ ಗೃಹಕೃತ್ಯಂ ಕರ್ತವ್ಯತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯಾಃ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) |  
"ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | "ಪ್ರಾಪ್ತೇ ಗೃಹಿಣೀನೇತ್ರಾಃ ಕನ್ಯಾರ್ಥೇಷು  
ಕುಡುಮ್ಬಿನಃ" ಕುಮಾಂ ೬-೮೫ | "ನ ಗೃಹಂ ಗೃಹಮಿತ್ಯಾಹುಃ  
ಗೃಹಿಣಿ ಗೃಹಮುಚ್ಯತೇ" | "ಯಾನ್ತೇವಂ ಗೃಹಿಣಿಪದಂ ಪುತ್ರತಯೋ  
ವಾಮಾಃ ಕುಲಸ್ಯಾಧಯಃ" ಶಾಕುಂ ೪-೧೭ |

ಗೃಹಿತ ಗೃಹಿತ (ವಿಂ) 1. ಸ್ವೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |  
"ಗೃಹಿತೇನ್ವಗೃಹಯಂತೇನ ಪೊತೊಪಜೀವಿನಃ" ಯಾದಂ ೨೨-೧೦೨ |  
2. ಧರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಗೃಹಿತಕುಂಡಲೋ ಗನ್ತುಮನ್ವಮಂತ ಗದಾಗ್ರಜಃ"  
ಯಾದಂ ೧೬-೧೩೧ | 3. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಗೃಹಿತಮಧ್ಯಾತ್ಮ-  
ದೃಶಾ ಕಥಂಚನ" ಮಾಘಂ ೧-೩೩ | 4. ಬಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಕೈಗೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸಂಗ್ರಾಮಾಂವರದೀಕ್ಷಿತೋ ನರಪತಿಃ"



ಗತನಿ ಗೃಹೀತವತಾ " ವೇಣಿಂ ೧-೨೫. 5. ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳು  
ಲ್ಪಟ್ಟು. "ಗೃಹೀತಾ: ಪಾಣಿಭಿರ್ವೀರೈ: ವಿಕೋಶಾ: ಖಡ್ಗರಾಜಯ: "  
ಕುಮಾಂ ೧೬-೧೪. 6. ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟು, ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟು.  
"ಪುತ್ರವತೀ ಶಕ್ತುಂತಲಾ ತಕ್ಷಾಪನಿವೃತ್ತೌ ಸ್ಮೃತಿಮತಾ ದುಷ್ಯಂತೇನ  
ಗೃಹೀತಾ " ಶಾಕುಂ ೭.

ಗೃಹೀತಗರ್ಭ ಗೃಹೀತಗರ್ಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಗರ್ಭಿಣಿ  
ಹೆಂಗಳೂ, ಬಿಸಿರು ಹೆಂಗಳೂ. ಗೃಹೀತೌ ಗರ್ಭೌ ಯಾ।  
"ಗೃಹೀತಗರ್ಭಾಣಾಮಾರ್ತವವಹಾನಾಂ ಸ್ತೌತಸಾಂ ವರ್ಮಾನಿವರೂಢ್ಯಂತೇ  
ಗರ್ಭೇಣ" ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೪-೨೪.

ಗೃಹೀತಚೇತಸ್ ಗೃಹೀತಚೇತಸ್ (ವಿಂ) ಅರ್ಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟು  
ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಸೆಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟು ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ಗೃಹೀತಂ ಚೇತೌ  
ಯಸ್ಯ। "ಅಹೋ ಅಚ್ಛೇಂದ್ರಿಯಾರಾಮೋ ಯೋವಿನ್ಮಯೇಹ ಮಾಯಾ।  
ಗೃಹೀತಚೇತಾ: ಕೃಪಣ: ಪತಿಷ್ಯೇ ನರಕೇ ಭುವಮ್" ಭಾಗಂ  
೬-೧೮-೩೯.

ಗೃಹೀತದಿಶ್ (ಏಕ) ಗೃಹೀತದಿಶ್ (ಏಕ) (ವಿಂ) ಪಶಾಯನ  
ಮಾಡಿದ, ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಂಡು ಹಿಡಿದುಕೊಂಡ. ದಿಕ್ಕುಗಳನ್ನು  
ಅಶ್ರಯಿಸಿದ. ಗೃಹೀತಾ ದಿಶೋ ಯೈ: ವಾ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೫೪)।  
"ಗೃಹೀತದಿಕ್ಕೇರಪುನಿವೃತ್ತಿಭಿಶ್ಚಿರಾಯ ಯಾಥಾರ್ಥಮಲಮ್ಬಿ  
ದಿಗಜೈ: " ಮಾಘಂ ೧-೬೪.

ಗೃಹೀತವತ್ ಗೃಹೀತವತ್ (ವಿಂ) ಸ್ವೀಕರಿಸಿದ, ತೆಗೆದು  
ಕೊಂಡ. ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) "ಕ್ತವತು: " (೩-೨-೧೦೨)।

ಗೃಹೀತವಿಜ್ಞ ಗೃಹೀತವಿಜ್ಞ (ವಿಂ) ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಗ್ರಹಿಸಿದ,  
ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿದ, ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿತ. ಗೃಹೀತಾ  
ವಿಜ್ಞಾ ಯೇನ।

ಗೃಹೀತಸಾರ ಗೃಹೀತಸಾರ (ವಿಂ) ನಷ್ಟವಾದ ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ,  
ಎಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟು ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ. ಗೃಹೀತ: ಸಾರೌ ಯಸ್ಯ।  
"ಕವಚಿಚ್ಚ ದ್ರುಸಹೇನ ಕಾಯಾಮ್ಯಂತರವಹ್ನಿನಾ ಗೃಹೀತಸಾರ:  
ಸ್ವಕುಡುಸ್ವಾಯ ಕ್ರುದ್ಯತಿ " ಭಾಗಂ ೪-೧೪-೧೯.

ಗೃಹೇನದಿನ್ ಗೃಹೇನದಿನ್ (ವಿಂ) ಹೇಡಿ, ಅಂಜುಬುರುಕ.  
ರಣಭೀರು. ಗೃಹೇ ನರ್ದತಿ — ನರ್ದ (ಶಬ್ದ) "ಗಿಣಿ: "  
(೩-೨-೭೮)। ನಿಪಾಂ (೨-೧-೪೮)। ಮನೆಯಲ್ಲೇ ಕುಳಿತು  
ಜಂಭಹೊಡೆಯುವವನು — ಹೊರಗಡೆ ಅಂಜುಬುರುಕ  
ಮಿಂಬ ಸಿಂದೆಯನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈ  
ಪ್ರಯೋಗ.

ಗೃಹೇರುಹ ಗೃಹೇರುಹ (ಪುಂ) ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮರ.  
ಗೃಹೇ ರೋಹತಿ — ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದಿ) "ಕ: " (೩-೧-೧೩೫)।  
"ಭಿನ್ನಭಾಂಡೌ ಚ ಖಡ್ಗೌ ಚ ಕುಕ್ರುಡಂ ಶುನಕಂ ತಥಾ। ಅಪ್ರಶಸ್ತಾನಿ  
ಸರ್ವಾಣಿ ಯತ್ರ ವೃಕ್ಷೌ ಗೃಹೇರುಹ: " ಭಾಂ ೧.

ಗೃಹೇಶ ಗೃಹೇಶ, -ಓಶ್ವರ -ಈಶ್ವರ (ಪುಂ) 1. ಮನೆಯ  
ಯಜಮಾನ, ಗೃಹಸ್ಥ. 2. ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ ರಾಶಿಗಳ  
ಅಧಿಪತಿ. ಗೃಹಸ್ಯ ಗೃಹಾಣಾಂ ವಾ ಓಶ: ಓಶ್ವರೌ ವಾ।

ಗೃಹೋಲಿಕಾ ಗೃಹೋಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೌಳ. ಪಲ್ಲಿ.

ಗೃಹ್ಣತ್ ಗೃಹ್ಣತ್ (ವಿಂ) 1. ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ.  
ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಗೃಹ್ಣನ್  
ವಿಷಾಣೇ ಹರವಾಹನಸ್ಯ ಸ್ಪೃಶನ್ಮುಮಾಕೇಸರಿಣಿ ಸಲೀಲಮ್" ಕುಮಾಂ  
೧೧-೪೪. 2. ಸ್ವೀಕರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೬)। ಗೃಹ್ಣತೀ ಗೃಹ್ಣತೀ. "ಶಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
ಗೃಹ್ಣಾನ: ಗೃಹ್ಣಾನ:

ಗೃಹ್ಯ ಗೃಹ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಸಾಕಿದ ಹಕ್ಕಿ ಮೃಗಗಳು.  
ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) "ಕಪ್" (೩-೧-೧೧೯)। 2. ಗೃಹ್ಯಗ್ನಿ.  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣನು ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ರಕ್ಷಿಸಿ ಇಡುವ ಅಗ್ನಿ.  
3. ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರ. (ನಂ) 4. ಗೌದಸ್ಥಾನ, ಮಲದ್ವಾರ.  
5. ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ ಜಾತಕರ್ಮ ನಾಮಕರಣ  
ಉಪನಯನ ವಿವಾಹ ಮುಂತಾದ ಕಾರ್ಯ. 6. ಮನೆ  
ಯಲ್ಲಿ ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ ವೇದವಿಹಿತಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು  
ಕುರಿತ ಸೂತ್ರ, ಗೃಹ್ಯಸೂತ್ರ. (ವಿಂ) 7. ಪಕ್ಷಪಾತಿ  
ಯಾದ, ತನ ಕಡೆಯಿರುವ. "ನನು ವಕ್ತೃವಿಶೇಷನಿಸ್ಪೃಹಾ  
ಗುಣಗೃಹ್ಯಾ ವಚನೇ ವಿಪಶ್ಚಿತ: " ಕಿರಾಂ ೨-೫. 8. ಮನೆ  
ಯಲ್ಲಿರುವ, ಮನೆಗೆ ಸಂಬಂಧಪಟ್ಟ. 9. ಪರಾಧೀನನಾದ.  
"ಗೃಹ್ಯಂ ತು ಮಲವರ್ಮನಿ। ಗೃಹ್ಯೋಸ್ವೇರಿಣಿ ಪಥ್ಯೇ ಚ  
ಗೃಹಾಸಕ್ತಮೃಗಾಂಡಜೇ" ಮೇದಿಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಹ್ಯಾ-ಹ್ಯಾ.  
10. ಶಾಖಾನಗರ, ಉಪನಗರ, ನಗರದ ಬಡಾವಣೆ.  
"ಗೃಹ್ಯಾ ತು ಶಾಖಾನಗರೇ" ಮೇದಿಂ।

ಗೃಹ್ಯಕ ಗೃಹ್ಯಕ (ಪುಂ) ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಸಾಕಿದ 1. ಪಕ್ಷಿ.  
2. ಮೃಗ. (ವಿಂ) 3. ಮನೆಗೆ ಸಂಬಂಧಪಟ್ಟ.  
4. ಪರಾಧೀನನಾದ. ಗೃಹ್ಯತೇ — ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) "ಕಪ್"  
(೩-೧-೧೧೯)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೪-೪-೫)।

ಗೃಹ್ಯಕರ್ಮನ್ ಗೃಹ್ಯಕರ್ಮನ್ (ನಂ) ಮನೆಯಲ್ಲಿ ನಡೆಸ  
ಬೇಕಾದ ಮತಸಂಬಂಧವಾದ ಸಂಸ್ಕಾರ, ಗೃಹ್ಯಸೂತ್ರದಲ್ಲಿ  
ವಿಹಿತವಾದ ಕಾರ್ಯ.

ಗೃಹ್ಯಪರಿಶಿಷ್ಟ ಗೃಹ್ಯಪರಿಶಿಷ್ಟ (ನಂ) ಗೃಹ್ಯಕರ್ಮಗಳನ್ನು  
ಹೇಳುವ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ.

ಗೃಹ್ಯಮಾಣ ಗೃಹ್ಯಮಾಣ (ವಿಂ) 1. ಹಿಡಿಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.  
ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
"ಅನೇನ ಚೇದಿಚ್ಛಸಿ ಗೃಹ್ಯಮಾಣಮ್" ರಘುಂ ೬-೨೪.  
2. ಸ್ವೀಕರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.



ಗೃಹ್ಯಸೂತ್ರ ಗೃಹ್ಯಸೂತ್ರ (ನಂ) ಗೃಹ್ಯಕರ್ಮಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಮತ್ತು ವಿಧಿಸುವ ಒಂದು ಸೂತ್ರಗ್ರಂಥ. ವೇದೋಕ್ತವಾದ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಒಂದು ಸೂತ್ರಗ್ರಂಥ. ಗೋಮಿಲ-ಗೃಹ್ಯಸೂತ್ರಮ್ ಆಶ್ವಲಾಯನಗೃಹ್ಯಸೂತ್ರಮ್ आपस्तम्बगृह्यसूत्रम् कात्यायनगृह्यसूत्रम् शाङ्खायनगृह्यसूत्रम् ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗೃಹ್ಯಾಗ್ನಿ ಗೃಹ್ಯಾಗ್ನಿ (ಪುಂ) ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬ ಗೃಹಸ್ಥ ಪ್ರಾಹ್ಮಣನೂ ರಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ ಗಾರ್ಹಪತ್ಯಾಗ್ನಿ.

ಗ - ನಿಗರಣಿ (ತುಡಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸಂ) | ಗಿರತಿ, ಗಿಲತಿ | ಜಗಾರ, ಜಗಾಲ | ಗರಿತಾ, ಗಲಿತಾ, ಗರಿತಾ, ಗಲಿತಾ | ಗಿರತು, ಗಿಲತು | ಅಗಿರತ್, ಅಗಿಲತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. ತಿನ್ನು, ಭಕ್ಷಿಸು, ನುಂಗು.

ಕರ್ಮಣಿ:—ಗೀಯತೆ | ಜಗರೆ, ಜಗಲೆ | ಗಾರಿತಾ, ಗಾಲಿತಾ | ಗರಿತಾ, ಗಲಿತಾ | ಗೀಯತಾಮ್ | ಅಗೀಯತ | ಗೀಯತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು :

(1) अव + गृ = (ಈ ಉಪಸರ್ಗಯೋಗದಿಂದ ಈ ಧಾತುವು ಆತ್ಮನೇಪದಿಯಾಗುವುದು.) ಅವಗಿರತೆ | ಮೆಲ್ಲಗೆ ಹೇಳು, ತಗ್ಗಿದ ಧ್ವನಿಯಲ್ಲಿ ಹೇಳು.

(2) उद् + गृ = उद्गिरति | ವಾಂತಿಮಾಡು, ಕಹು. "प्रशमार्दचिषामेतदनुद्गीर्णसुरायुधम्" ಕುಮಾಂ ೨-೨೦ |

(3) सम् + गृ = (आत्म०) संगिरते | ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡು. "वसूनि देशांश्च निवर्तयिष्यन् रामं नृपः संगिरमाण एव" ಭट्टಿಂ ೩-೮ |

ಗೇಡುಕ ಗೇಡುಕ (ಪುಂ) ಚೆಂಡು. ಗಾತೆ - ಗಾಡ್ (ಗತೌ) "विच्" (೩-೨-೭೫) | ಗಾ ಗಚ್ಛನ್ನಿಂದುರಿವ ಇವಾರ್ಥ "कन्" (೫-೩-೯೬) |

ಗೆಯ ಗೇಯ (ನಂ) 1. ಗಾನ, ಗೀತ. ಸಂಗೀತ. ಗೀಯತೆ - ಗೆ (ಶಬ್ದ) ಭಾವೆ "यत्" (೩-೪-೬೮) | ನಿಪಾಂ | "अनन्ता वाङ्मयस्याहो गेयस्येव विचित्रता" ಮಾಧಂ ೨-೭೨ | (ವಿಂ) 2. ಗಾಯಕ, ಹಾಡುಗಾರ, ಸಂಗೀತಗಾರ. ಗೆ ಕರ್ಮಂ "यत्" | ನಿಪಾಂ | 3. ಹಾಡಲ್ಪಡುವ. ಗೀಯತೆ-ಗೆ ಕರ್ಮಂ "यत्" | ನಿಪಾಂ | "गेयो माणवकः याम्नाम्" ಮಿಂ ಕೌಂ |

ಗೆಯಪದ ಗೇಯಪದ (ನಂ) ಆಸನದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತವನ ಮುಂದೆ ಮೇಣ ಮೊದಲಾದ ತಂತಿ ವಾದ್ಯವನ್ನು ನುಡಿಸುವುದು. "तन्त्रीभाण्डं पुरस्कृत्योपविष्टस्यासने पुरः | शुष्कं गानं गेयपदम्" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೧೪ |

ಗೆಣ್ಣು ಗೇಷ್ಣ (ಪುಂ) ಗಾಯಕ, ಹಾಡುಗಾರ, ಸಂಗೀತಗಾರ. ಗೆ (ಶಬ್ದ) "इणुच्" (೩ಂ ೩-೧೬) |

ಗೆಹ ಗೇಹ (ನಂ) ಮನೆ, ವಾಸಸ್ಥಾನ. ಗೋ ಗಣಪತಿ: ಇಹ: ಇಪ್ಸಿತೋ ಯಸ್ಮಿನ್ | "एतान्यपि सतां गेहे नोच्छिद्यन्ते कदाचन" ಹಿತಂ |

ಗೆಹಿನ್ ಗೇಹಿನ್ (ಪುಂ) ಗೃಹಸ್ಥ. ಮನೆಯ ಯಜಮಾನ. ಗೇಹೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "इनिः" (೫-೨-೧೧೫) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "डीप्" (೪-೧-೫) | ಗೇಹಿನೋ ಗೇಹಿನೀ. ಪತ್ನಿ, ಮನೆಯ ಯಜಮಾನಿ. ಗೇಹಂ ಗೃಹಕೃತ್ಯಮಸ್ತೃತ್ಯಾ: | "मद्गेहिन्याः प्रिय इति सखे चेतसा कातरेण" ಮೇಘಂ ೨-೧೪ |

ಗೆಹೇಶ್ವೇಡಿನ್ ಗೇಹೇಶ್ವೇಡೀನ್ (ವಿಂ) ಹೇಡಿ. ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಶೌರ್ಯವನ್ನು ತೋರಿಸುವವನು, ಹೊರಗಡೆ ಅಂಜು ಬುರುಕ. ಗೇಹ ಎವ ಕ್ವೇಡತೆ - ಕ್ವಿಡ (ಸ್ನೇಹ) "णिनिः" (೩-೨-೭೮) | ನಿಪಾಂ (೨-೧-೪೮) |

ಗೆಹೇನದಿನ್ ಗೇಹೇನದೀನ್ (ವಿಂ) "गृहेनदिन्" ಪದವನ್ನು ನೋಡಿ.

ಗೆಹೇಶೂರ ಗೇಹೇಶೂರ (ವಿಂ) "गृहेनदिन्" ಪದವನ್ನು ನೋಡಿ.

ಗೆಹ್ಯ ಗೇಹ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಮನೆಯಲ್ಲಿರುವ, ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಗೇಹೆ ಭವ: | 2. ಮನೆಗೆ ಹಿತವಾದ. ಗೇಹಾಯ ಹಿತಮ್ "यत्" (೫-೧-೫) |

ಗೆ - ಶಬ್ದ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) | ಗಾಯತಿ | ಜಗೌ | ಗಾತಾ | ಗಾಸ್ಯತಿ | ಗಾಯತು | ಅಗಾಯತ್ | ಗಾಯೇತ್ | ಗೇಯಾತ್ | ಅಗಾಸೀತ್ | ಅಗಾಸ್ಯತ್ | ಶಬ್ದಮಾಡು, ಗಾನಮಾಡು, ಹಾಡು. "आकुमारकथोद्घातं शालिगोप्यो जगुर्यशः" ರಘುಂ ೪-೨೦ |

ಕರ್ಮಣಿ:—ಗೀಯತೆ | ಜಗೌ | ಗಾಯಿತಾ, ಗಾತಾ | ಗಾಯಿಷ್ಯತೆ, ಗಾಸ್ಯತೆ | ಗೀಯತಾಮ್ | ಅಗೀಯತ | ಗೀಯತ | ಗಾಯಿಷೀಷ್ಠ | ಅಗಾಯಿ | ಅಗಾಯಿಷ್ಯತ |

ಗಿಚಿ:—ಗಾಪಯತಿ, -ತೆ | ಗಾಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | "जयोदाहरणं बाह्वोर्गापयामास किन्नरान्" ರಘುಂ ೪-೭೮ | ಗಾಪಯಿತಾ | ಗಾಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೆ | ಗಾಪಯತು, -ತಾಮ್ | ಅಗಾಪಯತ್, -ತ | ಗಾಪಯೇತ್, -ತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ:—ಜಿಗಾಸತಿ | ಜಿಗಾಸಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಜಿಗಾಸಿತಾ | ಜಿಗಾಸಿಷ್ಯತಿ | ಜಿಗಾಸತು | ಅಜಿಗಾಸತ್ | ಜಿಗಾಸೇತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.



ಕೃತ್ಸು:—ಗಾತವ್ಯಮ್ | ಗಾನೀಯಮ್ | ಗೇಯಮ್ | ಗೀತಮ್ | ಗೀತವಾನ್ | ಗಾಯನ್, ಗಾಯಂತಿ | ಕರ್ಮಂ ಗೀಯಮಾನಃ | ಗಾತುಮ್ | ಗೀತಮ್ | ಗಾನಮ್ | ಗೀತ್ವಾ | ಪ್ರಗಾಯ |

ಪ್ಯಂತಾತ್ ಕೃತ್ಸು:—ಗಾಪಯಿತವ್ಯಮ್ | ಗಾಪನೀಯಮ್ | ಗಾಪ್ಯಮ್ | ಗಾಪಿತಃ | ಗಾಪಿತವಾನ್, ಗಾಪಿತವಂತಿ | ಗಾಪಯನ್, ಗಾಪಯಂತಿ | ಗಾಪಯಮಾನಃ | ಗಾಪಯಿತುಮ್ | ಗಾಪಿತಮ್ | ಗಾಪನಮ್ | ಗಾಪಯಿತ್ವಾ | ಪ್ರಗಾಪ್ಯ |

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಅನು + ಗೈ = ಅನುಗಾಯತಿ | ಅನುಜಗೌ | ಅನುಸರಿಸಿ ಶಬ್ದಮಾಡು, ಅನಂತರ ಶಬ್ದಮಾಡು. "ಅನುಜಗುರಥ ದಿವ್ಯ ದುಂದುಭಿಭವಾನಮಾಶಾಃ ಸುರಕುಸುಮನಿಪಾತೈರ್ಯೋಽನ್ವಿ ಲಕ್ಷ್ಮೀವಿತೇನೆ" ಕಿರಾಂ ೩-೬೦ |

(2) ಅಭಿ + ಗೈ = ಅಭಿಗಾಯತಿ | ಎದುರಿಗೆ ಹಾಡು. "ರಾಜಧಾನೀಷು ರಾಜಾಂ ಚ ಸಮಾಜೇಷ್ವಭ್ಯಗಾಯತಾಮ್" ರಾಮಾಂ |

(3) ಅವ + ಗೈ = ಅವಗೀತಮ್ | ನಿಂದಿಸು, ದೂಷಿಸು.

(4) उद् + गै = उद्गायति | ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಹಾಡು. "उद्गास्यतामिच्छति किनराणां तानप्रदायित्वमिवोप-गन्तुम्" ಕುಮಾಂ ೧-೮ |

(5) उप + गै = उपगायति | उपಗೀತಃ | 1. ಹತ್ತಿರ ದಲ್ಲಿ ಹಾಡು. "पिकोपगीतोऽपि शुकस्तुतोऽपि च" ನೈಷಂ ೧-೧೦೪ | 2. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಹಾಡು. "निवृत्ततर्ष-रूपगीयमानात्" ಭಾಗಂ |

(6) परि + गै = परिगायति | परिಗೀತಮ್ | ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಹಾಡು. "ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये" |

(7) प्र + गै = प्रगायति | ಪ್ರಗೀಯತೇ | 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹಾಡು. 2. ಪ್ರಶಂಸೆಮಾಡು, ಹೊಗಳು. "यावत् कीर्तिर्मनुष्यस्य पृथग्लोके प्रगीयते" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ |

(8) वि + गै = विगायति | ವಿಗೀತಃ | ನಿಂದಿಸು, ದೂಷಿಸು. "विगीयसे मन्मथदेहदाहिना" ನೈಷಂ ೧-೭೯ |

ಗೌರ ಗೈರ (ವಿಂ) 1. ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದ. ಗಿರೌ ಭವಃ "अण्" (೪-೩-೪೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | -ರೌ-ಠೀ. (ನಂ) 2. ಒಂದು ಉಪಧಾತು.

ಗೌರಿಕ ಗೈರಿಕ (ನಂ) 1. ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಉಪಧಾತು ಮುಂತಾದುದು. ಗಿರೌ ಭವಮ್ "ठक्" (ವಾಂ ೪-೩-೬೦) | 2. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. "गृहीतपादसञ्चारो गौरिकाद्रि-रिवाबभौ" ಯಾದಂ ೧೬-೧೦೪ |

ಗೌರಿಕಾಕ್ಷ ಗೈರಿಕಾಕ್ಷ (ಪುಂ) ನೀರು ಹಿಪ್ಪೆಮರ. ಗೌರಿಕ-ಮಿವಾಕ್ಷಿ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ "षच्" (೪-೪-೧೧೩) |

ಗೌರೇಯ ಗೈರೇಯ (ನಂ) 1. ಶಿಲಾಜಿಡು. ಗಿರೌ ಭವಮ್ "ढक्" (೪-೨-೯೭) | (ವಿಂ) 2. ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. "गौरेयमर्थ्यं गिरिजमश्मजं च शिलाजतु" ಅಮಂ |

ಗೌ ಗೋ (ಪುಂ) 1. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. ಗಚ್ಛತ್ಯನೇನ-ಗಮ್ಯ (ಗತೌ) "डो:" (೩ಂ ೨-೬೭) | "गवां च यानं पृष्ठेन सर्वथैव विगर्हितम्" ಮನುಂ ೪-೭೨ | 2. ರಶ್ಮಿ, ಕಿರಣ. "त्रयोदशद्वीपवतीं गोभिर्भसियसे महीम्" ಭಾಂ ವನಂ ೩-೩೩ | 3. ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧ. 4. ಸೂರ್ಯ. 5. ಚಂದ್ರ. 6. ಗೋಮೇಧಯಾಗ. 7. ವೃಷಭರಾಶಿ. 8. ಸ್ವರ್ಗ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 9. ವಾಕ್ಯ, ಮಾತು. "उवाच यक्षस्तमचोदितोऽपि गां न हीङ्गितज्ञोऽ-वसरेऽवसीदति" ಕಿರಾಂ ೪-೨೦ | 10. ಭೂಮಿ. "दुदोह गां स यज्ञाय सस्याय मधवा दिवम्" ರಘುಂ ೧-೨೬ | "पयोधरीभूतचतुःसमुद्रां जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम्" ರಘುಂ ೨-೩ | 11. ದಿಕ್ಕು. 12. ಧೇನು, ಹಸು, ಆಕಳು. (ಪುಸ್ತ್ರೀಂ) 13. ರಶ್ಮಿ, ಕಿರಣ. 14. ಕಣ್ಣು. 15. ಬಾಣ. 16. ಮೈಗೂದಲು. (ಸ್ತ್ರೀಂ ಬಂ ವಂ) 17. ನೀರು. "गौः क्रतौ वृषभे चन्द्रे वाग्भूदिग्धेनुषु स्त्रियाम् | द्वयोस्तु रश्मिदृग्वाणस्वर्गवज्राम्बुलोमसु" ನಾನಾರ್ಥರಂ | "गौः स्वर्गे च बलीवर्दे रश्मौ च कुलिशे पुमान्" ಮೇದಿಂ | 18. ಇಂದ್ರಿಯ.

ಗೋಕಂಠ ಗೋಕಂಠ (ಪುಂ) 1. ನೆಗ್ಗಿಲು ಗಿಡ. 2. ಹಸು ವಿನ ಹೆಜ್ಜೆಯ (ಗೋರಸಿನ) ಗುರುತು. 3. ಹಸುವಿನ ಕಾಲಿನ ಗೋರಸು. (ವಿಂ) 4. ಹಸುವಿನ ಕಾಲಿನಿಂದ ತುಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟು ಕೆಟ್ಟಿರುವ (ದಾರಿ). ಹಳ್ಳತಿಟ್ಟಾದ (ರಸ್ತೆ). "गोकण्टको गोक्षुरको वनशृङ्गाट इत्यपि" ಅಮಂ | "गोकण्टको गोक्षुरके गोक्षुरे स्थपुटीकृते" ಹೇಮಂ |

ಗೋಕರ್ಣ ಗೋಕರ್ಣ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಗೌನೆತ್ರ ಕರ್ಣಿ ಯಸ್ಯ | 2. ಹೇಸರಗತ್ತೆ, ಹೆಣ್ಣು ಕತ್ತೆಯಲ್ಲಿ ಗಂಡು ಕುದುರೆಗೆ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಂದು ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯ ಪ್ರಾಣಿ. ಗೌರಿವ ಕರ್ಣಾವಸ್ಯ | 3. ಹೆಬ್ಬರಳಿನಿಂದ ಅನಾಮಿಕೆಯ (ಉಂಗುರದ ಬೆರಳು) ವರೆಗಿನ ಅಳತೆ, ಒಂದು ಗೇಣು. 4. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. ಸಾರಗದ ಒಂದು ಭೇದ. 5. ಗಣದೇವತೆ. 6. ಗೋಕರ್ಣಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿರುವ ಪರಮೇಶ್ವರ, ಗೋಕರ್ಣೇಶ್ವರ. 7. ಕಾಶೀಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಶಿವಲಿಂಗ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋಕರ್ಣಿ ಗೋಕರ್ಣೀ.



8. ಕುರಟಗ ಗಿಡ. "ಗೋಕರ್ಣೋಷವತರೆ ಸರ್ಪೆ ಸಾರಜ್ಜೆ ಚ ಗಣಾಂತರೆ. ಅಙ್ಗುಠಾನಾಮಿಕೋನ್ಮಾನೆ ಗೋಕರ್ಣಿ ಮೃವಿಕೌಷಧಿ" ಮೇದಿಂ. (ವಿಂ) 9. ವಾದಿಪ್ರತಿವಾದಿಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಹಸುವಿನ ಕಿವಿಯಂತೆ ಜೋಲಾಡುತ್ತಿರುವ (ಸಾಕ್ಷಿ).

**ಗೋಕಾ ಗೋಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಿಕ್ಕ ಹಸು. ಸಣ್ಣ ಜಾತಿಯ ಹಸು.

**ಗೋಕಾಮ ಗೋಕಾಮ** (ವಿಂ) ಹಸುವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು.

**ಗೋಕಾಮುಖ ಗೋಕಾಮುಖ** (ಪುಂ) ಹಸುವಿನಂತೆ ಜೋಲಾಡುತ್ತಿರುವ ಮುಖವುಳ್ಳ ಒಂದು ಬೆಟ್ಟ.

**ಗೋಕೀಲ ಗೋಕೀಲ** (ಪುಂ) 1. ಮುಸಲ, ಒನಕೆ. 2. ಹಲ, ನೇಗಿಲು. "ಗೋಕೀಲೋ ಮುಸಲೇ ಹಲೇ" ಮೇದಿಂ.

**ಗೋಕುಲ ಗೋಕುಲ** (ನಂ) 1. ಗೋವುಗಳ ಸಮೂಹ, ದನಗಳ ಗುಂಪು. ಗವಾಂ ಕುಲಮ್. "ಗೋಕುಲಾಕುಲತೀರಾಃ ತಮಸಾಃ ವಿದೂರತಃ. ಅವಸತ್ ತತ್ರ ತಾಂ ರಾತ್ರಿ ರಾಮಃ ಪ್ರಕೃತಿಮಿಹಿ ಸಹ" ರಾಮಾಂ. 2. ದನಗಳ ಕೊಟ್ಟಿಗೆ. "ಗೋಕುಲೇ ಕನ್ದುಶಾಲಾಃ ತೈಲಯನ್ತ್ರೇಶ್ವಯನ್ತ್ರಯೋಃ. ಅಮಿಮಾಂಸ್ಯಾನಿ ಶೌಚಾನಿ ಸ್ತ್ರೀಷು ಬಾಲಾತುರೇಷು ಚ" ತಿಥ್ಯಾದಿತಂ. 3. ನಂದ ಗೋಪನ ವಾಸಸ್ಥಾನ. "ಕಾಲೇನಾಲ್ಪೇನ ರಾಜರ್ಷಿ ರಾಮಃ ಕೃಷ್ಣಾಶ್ಚ ಗೋಕುಲೇ. ಅಘೃಷ್ಠಜಾನುಮಿಹಿ ಪಕ್ಷಿಃ ವಿಚಕ್ರಮತು- ರಂಜಸಾ" ಭಾಗಂ ೧೦-೮-೨೬.

**ಗೋಕುಲಿಕ ಗೋಕುಲಿಕ** (ವಿಂ) 1. ವಿಕಾರವಾದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳವನು. ಗೋಃ ನೇತ್ರಸ್ಯ ಕುಲಃ ಸಂಸ್ಥಾನಮಸ್ಮಿನ್. 2. ಕೆಸರಿನಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದಿರುವ ಹಸುವನ್ನು ನೋಡಿ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲು ಯತ್ನಿಸದೆ ಉದಾಸೀನನಾಗಿರುವವನು. "ಸ್ಯಾದ್-ಗೋಕುಲಿಕೋ ಬಲಿರೇ ಪಕ್ಷುಸ್ಥಗವ್ಯುಪೇಕ್ಷಕೇ" ಮೇದಿಂ.

**ಗೋಕೃತ ಗೋಕೃತ** (ನಂ) ಗೋಮಯ, ದನದ ಸಗಣೆ. ಗವಾ ಕೃತಮ್.

**ಗೋಕುರಕ ಗೋಕುರಕ** (ಪುಂ) 1. ನೆಗ್ಗಿಲು ಗಿಡ. ಗೋಃ ಭೂಮಿಃ ಕುರ ಇವ. "ಗೋಕುರಕೋ ಗೋಕುರಕೋ ಬನಶೃಂಗಾಢ ಇತ್ಯಪಿ" ಅಮಂ. 2. ದನದ ಕಾಲಿನ ಗೊರಸು.

**ಗೋಗುಠಿ ಗೋಗುಠಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಕರುವನ್ನು ಮಾತ್ರ ಪ್ರಸವಿಸಿದ ಹಸು. ಗುಠಿಶ್ಚಾಸೌ ಗೌಶ್ಚ.

**ಗೋಗ್ರಂಥಿ ಗೋಗ್ರಂಥಿ** (ಪುಂ) 1. ಬೆರಣಿ. ಗೋಗ್ರಾಂತಿ ಗ್ರಂಥಿಃ. 2. ದನದ ಕೊಟ್ಟಿಗೆ. ಗೋಗ್ರಂಥಿರ್ಯತ್ರ. 3. ಬೆಂಡೆ ಗಿಡ. ಗೋಗ್ರಂಥಿರಿವ. "ಗೋಗ್ರಂಥಿರ್ನಾ ಕರೀಷೇ ಸ್ಯಾತ್ ಗೋಗ್ರಂಥಿಗೋಗ್ರಂಥಿ" ಮೇದಿಂ.

**ಗೋಗ್ನ ಗೋಗ್ನ** (ವಿಂ) 1. ಗೋವುಗಳನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವವನು. ಗಾಃ ಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗಲ್ಯೋಃ) "ಕಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೪).

2. ಅತಿಥಿ. ಗಾಂ ಹಂತಿ ತಸ್ಮೈ. ನಿಪಾಂ (೩-೪-೭೩). "ಉಪಾತಕಸಂಯುಕ್ತೋ ಗೋಗ್ನೋ ಮಾಸಂ ಯವಾನ್ ಪಿಬೇತ್" ಮನುಂ ೧೧-೧೦೮.

**ಗೋಗೃತ ಗೋಗೃತ** (ನಂ) 1. ಹಸುವಿನ ತುಪ್ಪ. ಗೋಗೃತಮ್. 2. ಮಳೆಯ ನೀರು. ಗೋಃ ಭೂಮಿಃ ಭೃತಮಿವ - ಸಸ್ಯ-ಪೋಷಕತ್ವಾತ್.

**ಗೋಚರ ಗೋಚರ** (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗತಕ್ಕ ರೂಪ ರಸ ಗಂಧ ಸ್ಪರ್ಶ ಮತ್ತು ಶಬ್ದಗಳೆಂಬ ವಿಷಯಗಳು. ಗಾವಃ ಇಂದ್ರಿಯಾಣಿ ಚರಂತೀಷು. ನಿಪಾಂ (೩-೩-೧೧೯). 2. ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಗೋಚರವಾಗತಕ್ಕ (ತಿಳಿಯುವ) ವಿಷಯ. "ಸದಸತ್ಸಂಶಯಗೋಚರೋದರಿ" ನೈಷಂ ೨-೪೦. 3. ಹುಲ್ಲುಗಾವಲು, ದನಗಳು ಹುಲ್ಲು ಮೇಯುವ ಸ್ಥಳ, ದನಗಳು ಮೇವಿಗಾಗಿ ತಿರುಗಾಡುವ ಅರಣ್ಯ ಪ್ರದೇಶ. ಗಾವಶ್ಚರಂತೀಷ್ಮಿನ್ "ಘಃ" (೩-೩-೧೧೯). "ಉಪಾರತಾಃ ಪಶ್ಚಿಮರಾತ್ರಿಗೋಚರಾದಪಾರಯಂತಃ ಪತಿಸ್ತು ಜವೇನ ಗಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೪-೧೦. 4. ಜನ್ಮರಾಶಿಯಿಂದ ಗ್ರಹಗಳು ಸಂಚರಿಸುವ ರಾಶಿ. 5. ವಾಸಸ್ಥಾನ. "ಅಕಿಂಚನಃ ಸನ್ ಪ್ರಭವಃ ಸ ಸಂಪದಾಂ ತ್ರಿಲೋಕನಾಥಃ ಪಿತೃಸಂಘಗೋಚರಃ" ಕುರ್ಮಾಂ ೪-೭೭. 6. ದೇಶ. "ಅಬ್ರವೀತ್ ಪ್ರಾಂಜಲಿಭೃತ್ವಾ ಗುಹೋ ಗಹನಗೋಚರಃ" ರಾಮಾಂ. (ವಿಂ) 7. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. 8. ಗಂತವ್ಯ ಪ್ರದೇಶ, ಹೋಗಬೇಕಾದ ಜಾಗ.

ಸೂರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹಗಳು ಜನ್ಮರಾಶಿಯಿಂದ ದ್ವಾದಶರಾಶಿ (ತನ್ವಾದಿಭಾವ)ಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವಾಗ ಕೊಡುವ (ಗೋಚಾರ) ಫಲ.

(1) ರವಿಚಾರಃ

| ಭಾವ                 | ಫಲ          |
|---------------------|-------------|
| (1) ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ       | ವ್ಯಾಧಿ.     |
| (2) ದ್ವಿತೀಯದಲ್ಲಿ    | ಭಯ.         |
| (3) ದುಶ್ಚಿತ್ತದಲ್ಲಿ  | ಅರ್ಥಲಾಭ.    |
| (4) ಹಿಂಸುಕದಲ್ಲಿ     | ಮಾನಕ್ಷಯ.    |
| (5) ಪಂಚಮದಲ್ಲಿ       | ದೈನ್ಯ.      |
| (6) ಷಷ್ಠದಲ್ಲಿ       | ದ್ರವ್ಯಲಾಭ.  |
| (7) ಸಪ್ತಮದಲ್ಲಿ      | ಲಾಭ.        |
| (8) ಅಷ್ಟಮದಲ್ಲಿ      | ಪೀಡೆ.       |
| (9) ಧರ್ಮಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ  | ಕಾಂತಿಕ್ಷಯ.  |
| (10) ಕರ್ಮಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ | ಕರ್ಮಸಿದ್ಧಿ. |
| (11) ಲಾಭದಲ್ಲಿ       | ಅರ್ಥಲಾಭ.    |
| (12) ವ್ಯಯದಲ್ಲಿ      | ಅರ್ಥಹಾನಿ.   |



## (2) ಚಂದ್ರಚಾರ :

| ಭಾವ              | ಫಲ                            |
|------------------|-------------------------------|
| (1) ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ    | ಅರ್ಥಲಾಭ.                      |
| (2) ದ್ವಿತೀಯದಲ್ಲಿ | ಅರ್ಥನಾಶ.                      |
| (3) ತೃತೀಯದಲ್ಲಿ   | ದ್ರವ್ಯಲಾಭ.                    |
| (4) ಚತುರ್ಥದಲ್ಲಿ  | ಬಂಧುವೈರ.                      |
| (5) ಪಂಚಮದಲ್ಲಿ    | ಕಾರ್ಯನಾಶ.                     |
| (6) ಷಷ್ಠದಲ್ಲಿ    | ಅರ್ಥಲಾಭ.                      |
| (7) ದ್ಯೂನದಲ್ಲಿ   | ಸ್ತ್ರೀಸೌಖ್ಯ ಮತ್ತು<br>ಅರ್ಥಲಾಭ. |
| (8) ಅಷ್ಟಮದಲ್ಲಿ   | ಜಾಡ್ಯ.                        |
| (9) ನವಮದಲ್ಲಿ     | ಕಲಹ.                          |
| (10) ದಶಮದಲ್ಲಿ    | ಸುಖ.                          |
| (11) ಲಾಭದಲ್ಲಿ    | ಧನಪ್ರಾಪ್ತಿ.                   |
| (12) ವ್ಯಯದಲ್ಲಿ   | ರೋಗ.                          |

## (3) ಕುಜಚಾರ :

|                  |            |
|------------------|------------|
| (1) ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ    | ಶತ್ರುಭಯ.   |
| (2) ಧನಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ | ಧನನಾಶ.     |
| (3) ತೃತೀಯದಲ್ಲಿ   | ಅರ್ಥಲಾಭ.   |
| (4) ಚತುರ್ಥದಲ್ಲಿ  | ಶತ್ರುಭಯ.   |
| (5) ಪಂಚಮದಲ್ಲಿ    | ಅರ್ಥನಾಶ.   |
| (6) ಷಷ್ಠದಲ್ಲಿ    | ವಿತ್ತಲಾಭ.  |
| (7) ಸಪ್ತಮದಲ್ಲಿ   | ರೋಗ.       |
| (8) ಅಷ್ಟಮದಲ್ಲಿ   | ಶತ್ರುಪೀಡೆ. |
| (9) ನವಮದಲ್ಲಿ     | ದೇಹಪೀಡೆ.   |
| (10) ದಶಮದಲ್ಲಿ    | ಭಯ.        |
| (11) ಲಾಭದಲ್ಲಿ    | ಲಾಭ.       |
| (12) ವ್ಯಯದಲ್ಲಿ   | ಶತ್ರುಭಯ.   |

## (4) ಬುಧಚಾರ :

|                  |                |
|------------------|----------------|
| (1) ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ    | ಬಂಧುವೈರ.       |
| (2) ಧನಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ | ಧನಲಾಭ.         |
| (3) ತೃತೀಯದಲ್ಲಿ   | ಶತ್ರುಭಯ.       |
| (4) ಚತುರ್ಥದಲ್ಲಿ  | ಅರ್ಥಲಾಭ.       |
| (5) ಪಂಚಮದಲ್ಲಿ    | ಕಷ್ಟ.          |
| (6) ಷಷ್ಠದಲ್ಲಿ    | ವಸ್ತುಪ್ರಾಪ್ತಿ. |
| (7) ಸಪ್ತಮದಲ್ಲಿ   | ಶರೀರಪೀಡೆ.      |
| (8) ಅಷ್ಟಮದಲ್ಲಿ   | ಧನವೃದ್ಧಿ.      |
| (9) ಧರ್ಮದಲ್ಲಿ    | ಶರೀರಪೀಡೆ.      |
| (10) ಕರ್ಮದಲ್ಲಿ   | ಅಪವಾದ.         |
| (11) ಲಾಭದಲ್ಲಿ    | ಅರ್ಥಲಾಭ.       |
| (12) ವ್ಯಯದಲ್ಲಿ   | ಅರ್ಥನಾಶ.       |

## (5) ಗುರುಚಾರ :

| ಭಾವ              | ಫಲ                |
|------------------|-------------------|
| (1) ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ    | ಭಯ.               |
| (2) ಧನಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ | ಅಪರಿಮಿತ<br>ಧನಲಾಭ. |
| (3) ತೃತೀಯದಲ್ಲಿ   | ದೇಹಾಯಾಸ.          |
| (4) ಚತುರ್ಥದಲ್ಲಿ  | ಅರ್ಥನಾಶ.          |
| (5) ಪಂಚಮದಲ್ಲಿ    | ಸುಖ.              |
| (6) ಷಷ್ಠದಲ್ಲಿ    | ರೋಗ.              |
| (7) ದ್ಯೂನದಲ್ಲಿ   | ಪೂಜಾ.             |
| (8) ಅಷ್ಟಮದಲ್ಲಿ   | ಧನನಾಶ.            |
| (9) ಧರ್ಮದಲ್ಲಿ    | ಧನವೃದ್ಧಿ.         |
| (10) ದಶಮದಲ್ಲಿ    | ಪ್ರೀತಿಹಾನಿ.       |
| (11) ಲಾಭದಲ್ಲಿ    | ಯಶೋಲಾಭ.           |
| (12) ವ್ಯಯದಲ್ಲಿ   | ದೇಹಪೀಡೆ.          |

## (6) ಶುಕ್ರಚಾರ :

|                    |             |
|--------------------|-------------|
| (1) ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ      | ಸೌಖ್ಯ.      |
| (2) ಧನಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ   | ಅರ್ಥಲಾಭ.    |
| (3) ದುಶ್ಚಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ | ಸುಖ.        |
| (4) ಚತುರ್ಥದಲ್ಲಿ    | ಧನಲಾಭ.      |
| (5) ಪಂಚಮದಲ್ಲಿ      | ಪುತ್ರಲಾಭ.   |
| (6) ಷಷ್ಠದಲ್ಲಿ      | ರತ್ನವೃದ್ಧಿ. |
| (7) ಸಪ್ತಮದಲ್ಲಿ     | ಶೋಕ.        |
| (8) ಅಷ್ಟಮದಲ್ಲಿ     | ಅರ್ಥಲಾಭ.    |
| (9) ಧರ್ಮದಲ್ಲಿ      | ವಸ್ತುಲಾಭ.   |
| (10) ದಶಮದಲ್ಲಿ      | ಸೌಖ್ಯಹಾನಿ.  |
| (11) ಲಾಭದಲ್ಲಿ      | ಅರ್ಥಲಾಭ.    |
| (12) ವ್ಯಯದಲ್ಲಿ     | ಚೋರಬಾಧೆ.    |

## (7) ಶನಿಚಾರ :

|                  |                |
|------------------|----------------|
| (1) ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ    | ವಿತ್ತನಾಶ.      |
| (2) ದ್ವಿತೀಯದಲ್ಲಿ | ಚಿತ್ತಕ್ಷೇಶ.    |
| (3) ತೃತೀಯದಲ್ಲಿ   | ದ್ರವ್ಯಲಾಭ.     |
| (4) ಚತುರ್ಥದಲ್ಲಿ  | ಶತ್ರುವೃದ್ಧಿ.   |
| (5) ಪಂಚಮದಲ್ಲಿ    | ಪುತ್ರಭೃತ್ಯನಾಶ. |
| (6) ಷಷ್ಠದಲ್ಲಿ    | ಅರ್ಥಲಾಭ.       |
| (7) ಸಪ್ತಮದಲ್ಲಿ   | ಭಯ, ಶತ್ರುಪೀಡೆ. |
| (8) ಅಷ್ಟಮದಲ್ಲಿ   | ದೇಹಪೀಡೆ.       |
| (9) ನವಮದಲ್ಲಿ     | ಧನನಾಶ.         |
| (10) ಕರ್ಮದಲ್ಲಿ   | ಮನಸ್ತಾಪ.       |
| (11) ಲಾಭದಲ್ಲಿ    | ಅರ್ಥಲಾಭ.       |
| (12) ವ್ಯಯದಲ್ಲಿ   | ಅನರ್ಥ.         |



(8, 9) ರಾಹು ಕೇತುಗಳು: ಜನ್ಮ ಮೊದಲಾದ ದ್ವಾದಶರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವಾಗ ಕ್ರಮವಾಗಿ:

(1) ಭಯ, (2) ಕಲಹ, (3) ಸೌಭಾಗ್ಯ, (4) ಮಾನಹಾನಿ, (5) ಚಿತ್ತಭ್ರಂಶ, (6) ಮಹಾಸೌಖ್ಯ, (7) ರಾಜಭಯ, (8) ಅರ್ಥನಾಶ, (9) ಸಂತಾಪ, (10) ಕಲಹ, (11) ಧನಲಾಭ ಮತ್ತು (12) ವಿನಾಶ ಈ ಫಲಗಳನ್ನು ಕೊಡುತ್ತಾರೆ. “ರಾಹುರ್ಜನ್ಮಗತೋ ಭಯಂ ಚ ಕಲಹಂ ಸೌಭಾಗ್ಯಮಾನಕ್ಷಯಂ ಚಿತ್ತಭ್ರಂಶಮಹಾಸುಖಂ ನೃಪಭಯಂ ಚಾರ್ಥಕ್ಷಯಂ ಯಚ್ಛತಿ | ಸಂತಾಪಂ ಕಲಹಂ ಚ ವಿದ್ವತ್ಪ್ರಸಕ್ತಂ ಶೀಘ್ರಂ ವಿನಾಶಂ ನೃಣಾಮ್ ಕೇತುಸ್ತತ್ಪ್ರಸಕ್ತಮೇವ ರಾಶಿಷು ವದೇತ್ ಶಂಸಂತಿ ಗರ್ಗಾದಯಃ |”

**ಗೊಚರ್ಮನ್ ಗೋಚರ್ಮನ್** (ನಂ) 1. ದನದ ಚರ್ಮ, ಹಸುವಿನ ತೊಗಟು. ಗೋ:ಚರ್ಮ. 2. ಭೂಮಿಯ ಒಂದು ಅಳತೆ, ಹತ್ತು ಮೊಳದ ಗಳುವಿನಿಂದ ಅಳೆಯುವ ಹದಿನೈದು ಚದರಗಳ ಅಳತೆ. “ದಶಹಸ್ತೇನ ವಂಶೇನ ದಶವಂಶಾನ್ ಸಮಂತತಃ | ಪಶ್ಚ ಚಾಮ್ಯಧಿಕಾನ್ ದಶಾದೇಶದ್ಗೋಚರ್ಮಂ ಚೋಚ್ಯತೇ” ವಸಿಷ್ಠಃ |

**ಗೊಚಾರಕ ಗೋಚಾರಕ** (ವಿಂ) ಗೋವುಗಳ ರಕ್ಷಕ, ದನಗಳನ್ನು ಮೇಯಿಸುವವನು. ಗಾ: ಚಾರಯತಿ — ಚರ (ಗತಿ-ಭಕ್ಷಣಯೋ:) + ಣಿಚ್ “ಞ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) |

**ಗೊಚಾರಣ ಗೋಚಾರಣ** (ನಂ) ದನಗಳನ್ನು ಮೇಯಿಸುವುದು. ಗವಾಂ ಚಾರಣಮ್ | “ಯದ್ವಚಿತಂ ಬ್ರಹ್ಮಭವಾದಿಭಿಃ ಸುರೈಃ ಶ್ರಿಯಾ ಚ ದೇವ್ಯಾ ಮುನಿಭಿಃ ಸಸಾತ್ವತೈಃ | ಗೋಚಾರಣಾಯಾ-ನುಚರೇಶ್ವರದ್ವನೇ ಯದ್ಗೋಪಿಕಾನಾಂ ಕುಚಕುಡ್ಕುಮಾಕ್ಷಿತಮ್” ಭಾಗಂ ೧೦-೩೮-೮ |

**ಗೊಚಾರಿನ್ ಗೋಚಾರಿನ್** (ವಿಂ) ಹಸುವಿನಂತೆ ಬಾಯಿಂದ ಆಹಾರವನ್ನು ಎತ್ತಿ ತಿಂದು ಜೀವಿಸುವ ಒಬ್ಬ ಯತಿ. ಗೌರಿವ ಚರತಿ — ಚರ (ಗತಿಭಕ್ಷಣಯೋ:) “ಗಿರಿನಿಃ” (೩-೨-೭೮) |

**ಗೊಜ ಗೋಜ** (ನಂ) 1. ಗೋರೋಚನ. (ವಿಂ) 2. ಹಸುವಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಗೋ: ಜಾತಃ | 3. ಭೂಮಿಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ.

**ಗೊಜರ ಗೋಜರ** (ಪುಂ) ಮುದಿ ಎತ್ತು. ಗೋಪು ಮಧ್ಯೆ ಜರ: ಜಿರ್ಣಃ |

**ಗೊಜಲ ಗೋಜಲ** (ನಂ) ಗೋಮೂತ್ರ, ಗಂಜಲ. ಗೊಜಲಮ್ ಗವಿ ಜಾತಂ ಜಲಂ ವಾ |

**ಗೊಜಾ ಗೋಜಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುರಭಿ, ಕಾಮಧೇನು.

**ಗೊಜಾಗರಿಕ ಗೋಜಾಗರಿಕ** (ನಂ) 1. ಮಂಗಳ. ಗವಿ ಸ್ವರ್ಗಂ ಜಾಗರ: ಅಪ್ರಮತ್ತತಯಾಸ್ತಸ್ಯ “ಠನ್” (೪-೨-೧೧೪) |

2. ಹೆಗ್ಗುಳ್ಳದ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 3. ಭಕ್ಷಕಾರ, ತಿಂಡಿಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. ಗೋಷು ಬ್ರಿಹದಾದಿಷು ಜಾಗರೋ-ಸ್ತಸ್ಯ | “ಸ್ಯಾದ್ಗೋಜಾಗರಿಕಂ ಭಕ್ಷಕಾರಕೇ ಮಜ್ಜಲೇಽಪಿ ಚ” ಹೇಮಂ |

**ಗೊಜಿಹ್ವಾ ಗೋಜಿಹ್ವಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆಂಡೆಗಿಡ. ಗೊಜಿಹ್ವೇವ |

**ಗೊಜಿ ಗೋಜಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆಂಡೆಗಿಡ. ಗೊಜಿಹ್ವೇವ | ಪೃಷಂ | “ಗೊಜಿ ಚ ಪಿಷ್ಟಾ ಸಹ ತಾಲಪತ್ಯಾ” ಸುಶ್ರುತಂ |

**ಗೊಡ್ವಿ ಗೋಡ್ವಿ** (ಪುಂ) 1. ನರಿನೇರಿಳೆ. 2. ಕಲ್ಲಂಗಡಿ ಕರಬೂಜ ಮೊದಲಾದ ಗಿಡ. (ನಂ) 3. ಕಲ್ಲಂಗಡಿ ಕರಬೂಜ ಮೊದಲಾದ ಹಣ್ಣು. 4. ನರಿನೇರಿಳೆಹಣ್ಣು.

**ಗೊಡ್ವಿ ಗೋಡ್ವಿ** (ಪುಂ) 1. ಕರಬೂಜ ಕಲ್ಲಂಗಡಿ ಮೊದಲಾದ ಗಿಡ. 2. ನರಿನೇರಿಳೆ. (ನಂ) 3. ಕಲ್ಲಂಗಡಿ ಕರಬೂಜ ಮೊದಲಾದ ಹಣ್ಣು. 4. ನರಿನೇರಿಳೆಹಣ್ಣು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಬಾ —ಬಾ. 5. ಹಾವುಮೆಕ್ಕೆಗಿಡ. ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕ:” | ಗೊಡ್ವಿಗಾ ಗೋಡ್ವಿಗಾ. ಹಾವುಮೆಕ್ಕೆಗಿಡ.

**ಗೊಣಿ ಗೋಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಧಾನ್ಯ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ತುಂಬಿಡುವ ಜೀಲ ಅಥವಾ ಪಾತ್ರೆ. ಗೊಣಿ ಆವರಣಂ ಚೇತ್ ಗೋಣಾನ್ಯಾ ಸಿಂ ಕೌಂ | “ಗೊಣಿಂ ಜನೇನ ಸ್ಮ ನಿಧಾತು-ಮುಧೃತಾಮನುಕ್ಷಣಂ ನೋಕ್ಷತರಃ ಪ್ರತೀಕ್ಷತಿ” ಮಾಘಂ ೧೨-೧೦ | 2. ಹರುಕುಬಟ್ಟೆ. 3. ನಾಲ್ಕು ದ್ರೋಣಗಳ ಅಳತೆ, ಎಂಟು ಕೊಳಗಗಳ ಅಳತೆ. 4. ಎರಡು ಮೊರಗಳ ಅಳತೆ. “ಶೂರ್ಮಿಣ್ಯಾಂ ಚ ಭವೇದ್ಗೋಣಿ ವಾಹೋ ಗೋಣಿ ಚ ಸಾ ಸ್ಮೃತಾ” ಭಾವಪ್ರಂ |

**ಗೊಣಿತರೀ ಗೋಣಿತರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣ್ಣ ಗೋಣೀಚೀಲ. ಹ್ವಾ ಗೋಣಿ “ಘರತ್” (೪-೩-೯೦) |

**ಗೊಂಡ ಗೋಂಡ** (ಪುಂ) 1. ನಿಮ್ಮಜಾತಿಯವನು. 2. ಪುಷ್ಪವಾದ ಹೊಕ್ಕಳು, ಮಾಂಸತುಂಬಿದ ಹೊಕ್ಕಳು. (ವಿಂ) 3. ಪುಷ್ಪವಾದ ಹೊಕ್ಕಳುಳ್ಳ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾಂಸತುಂಬಿ ಬೆಳೆದ ಹೊಕ್ಕಳುಳ್ಳ, ಉಬ್ಬಿದ ಹೊಕ್ಕಳುಳ್ಳ. “ಗೊಂಡಃ ಪಾಮರಜಾತೌ ಚ ವೃದ್ಧನಾಭೌ ಚ ತಥತಿ” ಮೇದಿಂ |

**ಗೊತಮ ಗೋತಮ** (ಪುಂ) 1. ಗೋತಮಮುನಿ, ಶ್ವೇತವರಾಹ ಕಲ್ಪದಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮನ ಒಬ್ಬ ಮಾನಸಪುತ್ರ. ಗೊತಮೋ ಧ್ವಸ್ತಂ ಯಸ್ಯ | “ಗೋದಮೋ ದಮತೋಽಧೂಮೋದಮಸ್ತೇ ಸಮದರ್ಶನಾತ್ | ವಿಧಿ ಮಾಂ ಗೋತಮಂ ಕೃತ್ಯೇ ಯಾತುಧಾನಿ ನಿಬೋಧ ಮಾಮ್” ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೪೨-೩೩ | ಈ ಮುಷಿಯು ಗೋತ್ರಪ್ರವರ್ತಕ ರಲ್ಲೊಬ್ಬರು. 2. ಬಹಳ ಸೋಮಾರಿತನವುಳ್ಳವನು, ಜಡ, ಅಲಸ. ಅತಿಶಯೇನ ಗೋ: ಜಡತ್ವಾತ್ ಅತಿಶಯೇನ “ತಮಪ್” (೪-೩-೪೪) |



ಗೊತ್ತಮಿ ಗೋತಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋತಮ ಋಷಿಯ ಪತ್ನಿ.  
ಗೊತ್ತಲಜ ಗೋತಲಜ (ಪುಸ್ತ್ರೀಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ವೃಷಭ,  
ಉತ್ತಮಜಾತಿಯ ಎತ್ತು, ಉತ್ತಮಜಾತಿಯ ಹಸು.  
ತಲ್ಲಜಶ್ರಾಸೌ ಗೌಶ್ರಾ.

ಗೊತ್ತೀರ್ಥ ಗೋತೀರ್ಥ (ನಂ) ದನದ ಕೊಟ್ಟಿಗೆ. ಗವಾ ಕೃತ  
ತೀರ್ಥಮ್. "ಬಲಿನಿವೇದ್ಯೋ ಗೊತ್ತೀರ್ಥೇ ರೇವತೇ ಪ್ರಯತಾತ್ಮನಾ"  
ಸುಶ್ರುತಂ.

ಗೊತ್ತ ಗೋತೃ (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಗಾ ಭೂಮಿ ತ್ರಾಯತೇ—  
ತೈಙ್ (ಪಾಲನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩). "ಗೊತ್ತೋದ್ಧಾರ-  
ಪ್ರವೃತ್ತೋಽಪಿ ಗೊತ್ತೋದ್ಧೇದ ಪುರಾಜ್ಞಕರೋ:" ಚಂದ್ರಾಂ. (ನಂ) 2.  
ಹೆಸರು. ಗುಙ್ (ಶಬ್ದ) "ಘ್ನನ್ (೩ಂ ೪-೧೫೯).  
"ಸ್ಮರಸಿ ಸ್ಮರ ಮೇಖಲಾಗುಣೈರಹಿತ ಗೊತ್ತಸ್ತಲಿತೇಷು ಬಂಧನಮ್"  
ಕುಮಾಂ ೪-೮. 3. ಸಂತತಿ, ಪೀಳಿಗೆ, ಗೋತೃಪ್ರವರ್ತಕ  
ಋಷಿಗಳಿಂದ ಮುಂದೆ ಬೆಳೆದುಬಂದ ವಂಶ. (1) ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ:,  
(2) ಜಮದಗ್ನಿ:, (3) ಭರದ್ವಾಜ:, (4) ಗೊತ್ತಮ:, (5) ಅತ್ರಿ:,  
(6) ವಸಿಷ್ಠ:, (7) ಕಶ್ಯಪ: ಮತ್ತು (8) ಅಗಸ್ತ್ಯ:  
ಈ ಎಂಟು ಋಷಿಗಳು ಗೋತೃಪ್ರವರ್ತಕರು. 4. ಆರಣ್ಯ,  
ಕಾಡು. 5. ಕ್ಷೇತ್ರ. 6. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. 7. ಸಂಭವ  
ನೀಯ ಜ್ಞಾನ, ಬಹುಶಃ ಒದಗಬಹುದಾದ ಸಂದರ್ಭಗಳ  
ತೀರ್ಮಾನ. 8. ಭತ್ತಿ, ಕೊಡೆ. 9. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ. 10. ಅಪತ್ಯ  
ವಾಗಿ ವಿವಕ್ಷಿತರಾದ ಒಂದು ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ  
ಪೌತ್ರ (ಪುತ್ರನ ಪುತ್ರ) ಮೊದಲಾದವರು. "ಅಪತ್ಯ  
ಪೌತ್ರಪ್ರಭೃತಿ ಗೊತ್ತಮ್" ಪಾಂ ಸೂಂ ೪-೧-೧೬೨. 11. ಮೇಘ.  
ಗಾ ಭೂಮಿ ವೃಷ್ಟಿ ತ್ರಾಯತೇ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತ್ರಾ -ತ್ಯಾಂ.  
12. ಭೂಮಿ. 13. ಹಸುಗಳ ಗುಂಪು, ಗೋವುಗಳ  
ಸಮೂಹ. "ಗೊತ್ತಂ ಕ್ಷೇತ್ರೇಽನ್ವಯೇ ಛತ್ರೇ ಸಮ್ಮಾವ್ಯಬೋಧವತ್ಸರ್ವನೋ:  
ವನೇ ನಾಮ್ನಿ ಚ ಗೊತ್ತೋದ್ರೌ ಗೊತ್ತಾ ಭುವಿ ಗವಾಂ ಗಣೇ"  
ಹೇಮಂ.

ಗೊತ್ತಕಾರಿನ್ ಗೋತೃಕಾರಿನ್ (ವಿಂ) ವಂಶವನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭ  
ಸಿದ ಮೂಲಪುರುಷ, ಕೊಟ್ಟಿ.

ಗೊತ್ತಕೀಲಾ ಗೋತೃಕೀಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೃಥಿವಿ, ಭೂಮಿ.  
ಗೊತ್ತ: ಪರ್ವತ: ಕೀಲ ಇವ ಯಸ್ಯಾ:.

ಗೊತ್ತಜ ಗೋತೃಜ (ವಿಂ) ಒಂದೇ ಗೋತೃದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ  
ದವನು. ಬಂಧು, ಜ್ಞಾತಿ. ಗೊತ್ತೇ ಸಮಾನಗೊತ್ತೇ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ  
(ಪ್ರಾಕೃಭವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೯೭).

ಗೊತ್ತಪಟ ಗೋತೃಪಟ (ಪುಂ) ವಂಶದ ಚರಿತ್ರೆಯನ್ನು ತಿಳಿ  
ಸುವ ಪಟ, ವಂಶಾವಳಿ.

ಗೊತ್ತಪ್ರವರ ಗೋತೃಪ್ರವರ (ಪುಂ) ವಂಶದ ಮೂಲಪುರುಷ.

ಗೊತ್ತಭಿದ್ ಗೋತೃಭಿದ್ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ಗೊತ್ತಂ ಪರ್ವತಂ ಮೇಘ  
ವಾ ಭಿನತ್ತಿ — ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ವಿವಿಪ್" (೩-೨-೬೧).  
"ರಘೋರವಷ್ಟಮಮಯೇನ ಪತ್ರಿಣಾ ಹೃದಿ ಸ್ಥಿತೋ ಗೊತ್ತಭಿದಪ್ಯ-  
ಮರ್ಷಣ:" ರಘುಂ ೩-೫೩.

ಗೊತ್ತ ಗೋತೃ (ನಂ) ಗೋವಿನಲ್ಲಿರುವ ಗುಣ, ಇತರ  
ಪ್ರಾಣಿಗಳಲ್ಲಿಲ್ಲದ ಹಸುವಿನಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರವಿರುವ ವಿಶೇಷ  
ಗುಣ. ಗೊತ್ತಿ: "ತ್ವ:" (೫-೧-೧೧೯). ಸಾಸ್ನಾದಿಮತ್ವಮ್.

ಗೊದ ಗೋದ (ಪುಂ) 1. ಮಿದುಳು, ತಲೆಯ ಬುರುಡೆಯೊಳಗೆ  
ಸುತ್ತುಸುತ್ತುಗಿ ಇರುವ ನರಗಳು, ಮಸ್ತಿಷ್ಕ. ಗಾ ನೇತ್ರಂ  
ದಾಯತಿ ಶೋಧಯತಿ — ದೈಪ್ (ಶೋಧನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩).  
ಮಸ್ತಿಷ್ಕವು ಕಣ್ಣಿಗೆ ಪ್ರಕಾಶವನ್ನು ಕೊಡುವುದರಿಂದ  
ಈ ಹೆಸರು. (ವಿಂ) 2. ಗೋವನ್ನು ಕೊಡುವವನು.  
ಗಾ ಧೇನುಂ ದದಾತಿ — ತು ದಾನ್ (ದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩).  
"ವಾಸೋದಶ್ಚಂದ್ರಸಾಲೋಕ್ಯಮಶ್ವಿಸಾಲೋಕ್ಯಮಶ್ವದ:" ಅನಬುದ್ಧ:  
ಶ್ರಿಯಂ ಪುಣ್ಯಂ ಗೋದೋ ಬ್ರಹ್ಮನಸ್ಯ ವಿಷ್ಣುಪಮ್" ಮನುಂ ೪-೨೩೧.  
3. ಭೂಮಿಯನ್ನು ಕೊಡುವವನು.

ಗೊದತ್ರ ಗೋದತ್ರ (ನಂ) ತಲೆಯ ಮಿದುಳನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವ  
ಕಿರೀಟ ರುಮಾಲು ಟೋಪಿ ಮೊದಲಾದುವು. ಗೋದ  
ತ್ರಾಯತೇ — ತೈಙ್ (ಪಾಲನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩).

ಗೋದ ಗೋದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೋದಾವರೀ ನದಿ. ಗಾ  
ಸ್ವರ್ಗಂ ದದಾತಿ ಸ್ನಾನೇನ — ತು ದಾನ್ (ದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩).  
2. ಶ್ರೀ ಗೋದಾದೇವಿ.

ಗೋದಾನ ಗೋದಾನ (ನಂ) 1. ಹದಿನಾರನೆಯ ವರ್ಷದಲ್ಲಿ  
ಮಾಡುವ ಕೇಶಖಂಡನಸಂಸ್ಕಾರ, ಕೇಶಾಂತಸಂಸ್ಕಾರ. ಗಾವ:  
ಕೇಶಾ: ದೀಯಂತೇ ಖಂಡಯಂತೇಽತ್ರ — ದೋ (ಅವಲಂಕರಣೆ) ಅಧಿಂ  
"ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭). "ಅಯಾಸ್ಯ ಗೋದಾನವಿಧೇರನಂತರಂ  
ವಿವಾಹದೀಕ್ಷಾಂ ನಿರವರ್ತಯದ್ಗುರು:" ರಘುಂ ೩-೩೩. 2. ಬಲ  
ಕಿವಿಯ ಸಮೂಪದ ತಲೆಯ ಭಾಗ. 3. ಹಸುವಿನ ದಾನ.

ಗೋದಾರಣ ಗೋದಾರಣ (ನಂ) 1. ನೇಗಿಲು. ಗಾ ಭೂಮಿ  
ದಾರಯತಿ—ದ್ (ವಿದಾರಣೆ) + ಗಿಚ್ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೩)  
2. ಗುದ್ದಲಿ, ನೆಲವನ್ನು ಅಗೆಯುವ ಒಂದು ಆಯುಧ.

ಗೋದಾವರಿ ಗೋದಾವರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ನದಿ. ಗಾ  
ಸ್ವರ್ಗಂ ದದಾತಿ ಸ್ನಾನೇನ — ತು ದಾನ್ (ದಾನೆ) "ವನಿಪ್"  
ರಶ್ಚಾಂತಾದೇಶ: . ಇದು ದಕ್ಷಿಣ ಭಾರತದಲ್ಲಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ  
ಒಂದು ಪುಣ್ಯನದಿ. "ಗಂಧೇ ಚ ಯಮುನೇ ಚೈವ ಗೋದಾವರಿ  
ಸರಸ್ವತಿ: . ನಮದೇ ಸಿಂಧು ಕಾವೇರಿ ಜಲೇಽಸ್ಮಿನ್ ಸನ್ನಿಧಿ  
ಕುರು" ಇತಿ. ಇದು ಪುಣ್ಯತೀರ್ಥಗಳನ್ನು ಆವಾಹನ  
ಮಾಡುವ ಮಂತ್ರ.



ಗೋದ್ರವ ಗೋದ್ರವ (ನಂ) ಹಸುವಿನ ಹಾಲು. ಗೋ: ದ್ರವಮ್ |  
ಗೋದ್ರವ ಗೋದ್ರವ (ವಿಂ) ಹಸುವಿನ ಹಾಲನ್ನು ಕರೆಯು  
ವವನು, ಗೋಲ್ಲ. ಗಾಂ ದೋಗಿ - ದ್ರವ (ಪ್ರಪೂರ್ಣ) "ಕ್ವಿಪ್" (3-2-61) | "ವರ್ಧಿಷ್ಣುಧಾರಾಧ್ವನಿ ರೋಹಿಣಿ: ಪಯಶ್ವಿರಂ  
ನಿದಧ್ಯೌ ದುಹತ: ಸ ಗೋದ್ರವ:" ಮಾಘಂ 12-40 |

ಗೋದೋಹ ಗೋದೋಹ (ಪುಂ) ಹಸುವಿನ ಹಾಲನ್ನು ಕರೆಯು  
ವುದು. ದುಹ (ಪ್ರಪೂರ್ಣ) ಭಾವೇ "ಛಜ್" (3-3-14) |  
ಗೋ: ದೋಹ: |

ಗೋದೋಹನ ಗೋದೋಹನ (ನಂ) 1. ಹಸುವಿನ ಹಾಲನ್ನು  
ಕರೆಯುವುದು. ಗೋದೋಹನಮ್ - ದುಹ (ಪ್ರಪೂರ್ಣ) ಭಾವೇ  
"ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) | 2. ಹಾಲು ಕರೆಯುವ ವೇಳೆ.  
ದುಹ ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ದೋಹನಿ  
-ದೋಹನೀ. ಹಾಲು ಕರೆಯುವ ಪಾತ್ರೆ. ಗೋದೋಹನೇತ್ಯ-  
ದುಹ ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) | "ಙೀಪ್" (4-1-14) |

ಗೋದ್ರವ ಗೋದ್ರವ (ಪುಂ) ಗೋಮೂತ್ರ.

ಗೋಧನ ಗೋಧನ (ನಂ) 1. ಗೋವುಗಳ ಗುಂಪು.  
2. ಗೋರೂಪವಾದ ಆಸ್ತಿ. ಗವಾಂ ಧನಮ್ | (ವಿಂ) 3.  
ಗೋರೂಪವಾದ ಆಸ್ತಿಯುಳ್ಳ, ಗೋರೂಪವಾದ ಧನ  
ವುಳ್ಳ, ಗೋರವ ಧನಂ ಯಸ್ಯ |

ಗೋಧರ ಗೋಧರ (ಪುಂ) ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಧರತಿ - ಧ್ವಜ್  
(ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (3-1-134) | ಗೋ: ಧರ: |

ಗೋಧರ್ಮ ಗೋಧರ್ಮ (ಪುಂ) ಪಶುಗಳ ಧರ್ಮ, ಮೈಥುನ  
ಮೊದಲಾದ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಮುಚ್ಚು ಮರೆಯಿಲ್ಲದೆ ಮತ್ತು  
ಸಂಕೋಚವಿಲ್ಲದೆ ಪಶುಗಳಂತೆ ನಡೆಸುವ ವ್ಯವಹಾರ.  
ಗೋರಿವ ಧರ್ಮ: |

ಗೋಧಾ ಗೋಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಧನುಸ್ಸಿನ ಹೆದೆಯ ಏಟು  
ತಗಲದಿರಲು ತೋಳಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಚರ್ಮದ ಪಟ್ಟಿ. ಗುಹ್ಯತೇ  
ಪರಿವೇಷಯತೇ ಬಾಹುರನಯಾ - ಗುಹ (ಪರಿವೇಷಯತೇ) "ಛಜ್"  
(3-3-121) | "ಗೋಧಾಶಿಲಿಷ್ಠಭುಜಾಶಾಖೇರಭೂದ್ವಿಮಾ  
ರಣಾಶೀ" ಮಾಘಂ 19-39 | 2. ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಹಲ್ಲಿ.  
ನೀರುಡ. "ಶ್ವಾವಿಧಂ ಶಲ್ಯಕಂ ಗೋಧಾಂ ಖಡ್ಗಕರ್ಮಶಾಸ್ತಯಾ |  
ಭಕ್ಷ್ಯಾನ್ ಪಶ್ಚನಖೇಷ್ವಾಹುರನುಷ್ಠಾಂಶ್ಚೈಕತೋದತ:" ಮನುಂ 4-14 |

ಗೋಧಾಪದೀ ಗೋಧಾಪದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಂಸಪಾದಿ ಗಿಡ.  
ಗೋಧಾಪದೀ ಇವ ಪಾದೋ ಮೂಲಮಸ್ಯಾ: "ಙೀಪ್" (4-4-139) |  
ಪಾದಸ್ಯ ಪದ್ಮಾವಶ್ಚ (4-4-130) |

ಗೋಧಿ ಗೋಧಿ (ಪುಂ) 1. ಲಲಾಟ, ಹಣೆ. ಗಾವೀ ನೇತ್ರೇ  
ಖೀಯಂತೇಸ್ಮಿನ್ ಅಧಿಂ "ಕ್ವಿ:" (3-3-93) | 2. ದೊಡ್ಡ

ಜಾತಿಯ ಹಲ್ಲಿ, ಉಡ. ಗುಹ (ಪರಿವೇಷಯತೇ) "ಇನ್"  
(3-4-119) |

ಗೋಧಿಕಾ ಗೋಧಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಹಲ್ಲಿ,  
ನೀರುಡ. ಗುಹ್ಯತೇ - ಗುಹ (ಪರಿವೇಷಯತೇ) "ಫಲ್"  
(3-1-133) |

ಗೋಧೂಮ ಗೋಧೂಮ (ಪುಂ) 1. ಗೋಧಿ. 2. ಹೇರಿಳೆ  
ಗಿಡ. ಗುಹ (ಪರಿವೇಷಯತೇ) "ಋಮ:" (3-4-2) |

ಗೋಧೂಮಕ ಗೋಧೂಮಕ (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಸರ್ಪ.  
ಗೋಧೂಮ ಇವ ಕಂ ಶಿರೋಸ್ಥಿ |

ಗೋಧೂಮಚೂರ್ಣ ಗೋಧೂಮಚೂರ್ಣ (ನಂ) ಗೋಧಿ  
ಹಿಟ್ಟು.

ಗೋಧೂಲಿ ಗೋಧೂಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋವುಗಳ ಕಾಲಿನಿಂದ  
ಧೂಳು ಮೇಲಕ್ಕೇಳುವ ವೇಳೆ, ಗೋಧೂಳಿ ಲಗ್ನ,  
ಗೋವುಗಳು ಹುಲ್ಲುಗಾವಲಿನಿಂದ ಮನೆಗೆ ಬರುವ ವೇಳೆ,  
ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲ. ಗವಾಂ ಕುರೋತ್ಥಿತೋ ಧೂಲಿರತ್ರ ಕಾಲೇ | "ಸಂಧ್ಯಾ-  
ತಪಾಹುನಿತಪಶ್ಚಿಮದಿಗ್ವಿಭಾಗೇ ವ್ಯೋಮ್ನಿ ಸ್ಫುರದ್ವಿರಲತಾರಕ-  
ಸನ್ನಿವೇಶೇ | ರುಡೇ ಗವಾಂ ಕುರಪುಟೋದಗಲಿತೇರಜೋಭಿಗೋಧೂಲಿರೇವ  
ಕಥಿತೋ ಭಗುಜೇನ ಯೋಗ:" |

ಗೋಧೇನು ಗೋಧೇನು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಾಲು ಕರೆಯುವ ಹಸು.  
ಧೇನುಶ್ರಾಸೀ ಗೋಶ್ರಾ | ಪರಿನಿಪಾತ: |

ಗೋಧೇರ ಗೋಧೇರ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಕ, ಕಾಪಾಡುವವನು. ಗುಹ  
(ಪರಿವೇಷಯತೇ) "ಏರಕ್" (3-1-61) |

ಗೋಧ್ರ ಗೋಧ್ರ (ಪುಂ) ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಗಾಂ ಧರತಿ - ಧ್ವಜ್  
(ಧಾರಣೆ) "ಕ್ವಿ:" (ವಾಂ 3-2-4) |

ಗೋನದ ಗೋನದ (ಪುಂ) 1. ಸಾರಸಪಕ್ಷಿ. ಗವಿ ಜಲೇ  
ನದತಿ - ನದ (ಶಬ್ದ) "ಅಚ್" (3-1-134) | (ನಂ) 2.  
ಕೊನ್ನಾರಿ, ತುಂಗಮುಸ್ತೆ. ಗವಾ ಜಲೇನ ನದತಿ |  
(ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 3. ಗೋನದದೇಶ. 4. ಗೋನದದ  
ದೇಶದ ಜನರು. ಗೋನದೋ ನಿವಾಸೋ ಯೇಷಾಂ "ಅಙ್"  
(4-3-90) | ಅಙೋ ಲುಪ್ (4-2-41) |

ಗೋನದೀಯ ಗೋನದೀಯ (ಪುಂ) ಪತಂಜಲಿಮುನಿ. ಗೋನದೇ  
ದೇಶೇ ಭವ: "ಛ:" (4-2-114) |

ಗೋನಸ ಗೋನಸ (ಪುಂ) ಮಂಡಲದ ಹಾವು. ಗೋರಿವ  
ನಾಸಿಕಾ ಯಸ್ಯ "ಅಚ್" (4-4-114) | ನಸಾದೇಶ: |

ಗೋನಾಸ ಗೋನಾಸ (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ರತ್ನ.

ಗೋನಾಥ ಗೋನಾಥ (ಪುಂ) 1. ವೃಷಭ. 2. ಜಮೀನು  
ದಾರ. 3. ಗೋಪ, ಗೋಲ್ಲ. ಗೋ: ವೃಷಭಸ್ಯ ಭೂಮಿ:  
ಧೇನೋಶ್ಚ ನಾಥ: |



ಗೊನಾಯ ಗೋನಾಯ (ಪುಂ) ಗೋಪಾಲಕ, ಗೊಲ್ಲ. ಗಾ: ನಯತಿ — ಣಿಡ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಅನ್” (೩-೨-೧) ।

ಗೊನಿಷ್ಯಂದ ಗೋನಿಷ್ಯಂ ದ (ಪುಂ) ಗೋಮೂತ್ರ. ಗೊನಿಷ್ಯಂದತೆ — ನಿ + ಸ್ಯಂದ್ (ಪ್ರಸ್ರವಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಗೊಪ ಗೋಪ (ಪುಂ) 1. ಗೊಲ್ಲ. ಗಾ: ಪಾತಿ—ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) “ಕ:” (೩-೨-೩) । “ಪ್ರಪೇದಿರೆ ಪೂರ್ವಯುಗಾನುಭೂತಿ ಗೊಪಾಸ್ತದಾ ಗೋಪ್ತಾರಿ ವಾಸುದೇವೆ” ಯಾದಂ ೪-೭೮ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬೩) । ಗೊಪಿ ಗೋಪೀ. ಗೊಪಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ । ಗೊಲ್ಲನ ಹೆಂಡತಿ. ಗೊಪಾ ಗೋಪಾ. ಗೊಲ್ಲರ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು. 2. ಗ್ರಾಮಾಧಿಕಾರಿ. 3. ಭೂಪಾಲ, ರಾಜ, ದೊರೆ. ಗಾಂ ಭೂಮಿ ಪಾತಿ—ಪಾ “ಕ:” । 4. ರಕ್ಷಕ, ಕಾಪಾಡುವವನು. 5. ಗೋಪಾಧ್ಯಕ್ಷ, ದನಗಳ ಕೊಟ್ಟಿಗೆಯ ಅಧಿಕಾರಿ. “ಗೊಪೋ ಗೊಪಾಲಕೇ ಗೋಪಾಧ್ಯಕ್ಷೇ ಪೃಥಿವೀಪತಾವಪಿ । ಗ್ರಾಮೋಘಾಧಿಕೃತೇ ಪುಂಸಿ ಶಾರಿವಾಹ್ಯಯೌಷಧೌ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” ಮೇದಿಂ ।

ಗೊಪಕ ಗೋಪಕ (ಪುಂ) 1. ಗೋಪಾಲಕ, ಗೊಲ್ಲ. 2. ಅನೇಕ ಗ್ರಾಮಗಳ ಅಧಿಕಾರಿ. ಗೊಪ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕ:” । (ವಿಂ) 3. ರಕ್ಷಕ, ಕಾಪಾಡುವವನು. ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೆ) “ಞ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) ।

ಗೊಪಕನ್ಯಾ ಗೋಪಕನ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೊಲ್ಲರ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಡತಿ, ಗೋಪಾಂಗನೆ. ಗೊಪಸ್ಯ ಕನ್ಯಾ । “ಗುರುಜಾ-ಪಿಂಡಸ್ಕುರಿತಚಿಕುರೋ ಗೊಪಕನ್ಯಾಭುಜಙ್ಗ:” ಗೊಪಾಲವಿಂ । 2. ಸೊಗದೆಬೇರು.

ಗೊಪತಿ ಗೋಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ಗೋ: ಭೂಮಿ: ಸ್ವರ್ಗಸ್ಯಾಪಿ ಪತಿ: । “ಸ್ವರ್ಗಭೂಮಿ:ಪತಿಸ್ತವಾತ್ ಗೊಪತಿ: ಸ್ಮೃತ:” ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: । “ಗೋಹಿತೋ ಗೊಪತಿಗೋಪ್ತಾ” ವಿಂ ಸಂ । 2. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 3. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. 4. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು, ಗೂಳಿ. ಗವಾಂ ಪಶುನಾಂ ಪತಿ: । “ಸ ಗೊಪತಿ ನಂದಿಭುಜಾವಲಂಬಿ ಶಾರ್ದೂಲಚರ್ಮಾಂತರಿತೋಽಪೃಥಮ್” ಕುಮಾಂ ೭-೩೭ । 5. ರಾಜ, ದೊರೆ. ಗೋ: ಭೂಮಿ: ಪತಿ: । 6. ಸೂರ್ಯ. ಗವಾಂ ಕಿರಣಾನಾಂ ಪತಿ: । 7. ಇಂದ್ರ. ಗೋ: ಸ್ವರ್ಗಸ್ಯ ಪತಿ: । “ಗೊಪತಿ: ಶಿವಪುಂಡ್ರಯೋ: । ನೃಪಭಾಸ್ಕರಯೋ: ಪುಂಸಿ” ಮೇದಿಂ । “ಗೊಪತಿ: ಶಾಕ್ಲೇರೇ ಷಂಡೇ ನೃಪತೀ ತ್ರಿದಶಾಧಿಪೇ । ಸಹಸ್ರಕಿರಣೇ ಚಾಪಿ” ಹೇಮಂ । 8. ವರುಣ. ಗೋ: ಜಲಸ್ಯ ಪತಿ: । 9. ನಪುಂಸಕ. “ಗೊಪತಿವೃಷಭೇ ರಾಜ್ಞಿ ಶಾಕ್ಲೇ ಷಂಡೇ ದಿವಾಕರೇ” ನಾನಾರ್ಥಂ ।

ಗೊಪದ ಗೋಪದ (ನಂ) ದನದ ಕಾಲು. ಗೋ: ಪದಮ್ । [“ಗೊಪದ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಗೊಪನ ಗೋಪನ (ನಂ) 1. ರಕ್ಷಿಸುವುದು, ಕಾಪಾಡುವುದು. ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೆ) ಭಾವೆ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) । “ಸೈನ್ಯೇನ ಮಹತಾ ಯುಕ್ತಂ ಭರದ್ವಾಜಸ್ಯ ಗೊಪನೇ” ಭಾಂ ಭೀಷಂ ೫೩-೩೭ । 2. ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡುವುದು, ಬಚ್ಚಿಡುವುದು. 3. (ಮಾಡಿದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು) ಹೊರಗೆಡಹದೆ ಇರುವುದು. ಗುಪ (ಗೊಪನೇ) “ಲ್ಯುಡ್” । 4. ಈರ್ಷ್ಯೆ, ಅಸೂಯೆ. 5. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. 6. ಗಾಬರಿ, ಕಳವಳ. 7. ದೀಪ್ತಿ, ಪ್ರಕಾಶ.

ಗೊಪನೀಯ ಗೋಪನೀಯ (ವಿಂ) 1. ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡಲ್ಪಡುವ. 2. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ರಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ. 4. ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡಬೇಕಾದ. ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೆ) ಗುಪ (ಗೊಪನೇ) ವಾ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೧೬) ।

ಗೊಪರಸ ಗೋಪರಸ (ಪುಂ) ಬಾಣಂತಿ ಬೋಳ, ಒಂದು ಸುವಾಸನಾ ದ್ರವ್ಯ.

ಗೊಪವಧ್ವ ಗೋಪವಧ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೋಪಾಂಗನೆ, ಗೊಲ್ಲರ ಹೆಂಗಸು. “ಕೃತಮನುಕೃತವತ್ಯ ಉನ್ಮದಾನ್ಧಾ: ಪ್ರಕೃತಿ-ಮಗಮನ್ ಕಿಲ ಯಸ್ಯ ಗೊಪವಧ್ವ:” ಭಾಗಂ ೧-೧-೪೦ । 2. ಸೊಗದೆಗಿಡ.

ಗೊಪವಧ್ವಿ ಗೋಪವಧ್ವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋಪಯುವತಿ. ಪ್ರಾಯದ ಗೊಲ್ಲರ ಹೆಂಗಸು. ವಧ್ವಿ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೨೦) । “ವಧ್ವಿಚಿರಂಶದ್ವಿ ಯೌವನವಾಚಿನೌ” ಸಿಂ ಕೌಂ । “ಗೊಪ-ವಧ್ವಿಡುಕೂಲಚೋರಾಯ” ಭಾಷಾಪಂ ।

ಗೊಪವನ ಗೋಪವನ (ನಂ) ಗೊಲ್ಲರಿಂದ ತುಂಬಿದ ವನ, ಗೊಲ್ಲರು ಅಧಿಕವಾಗಿರುವ ವನ. ಗೊಪಪ್ರಧಾನಂ ವನಮ್ ।

ಗೊಪವಲ್ಲಿ ಗೋಪವಲ್ಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುರಟಗೆ ಗಿಡ.

ಗೊಪಾಧ್ಯಕ್ಷ ಗೋಪಾಧ್ಯಕ್ಷ (ಪುಂ) ಗೊಲ್ಲರ ಯಜಮಾನ. ಗೊಪಾನಾಮಧ್ಯಕ್ಷ: । “ಗೊಪಾಧ್ಯಕ್ಷೋ ಭಯತ್ರಸ್ತೋ ರಥಮಾಸ್ಥಾಯ ಸತ್ವರ:” ಭಾಂ ವಿರಾಂ ।

ಗೊಪಾನಸಿ ಗೋಪಾನಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೆನೆಯ ಸೂರಿಗೆ ಅಧಾರವಾದ ಮರದ ಪಟ್ಟಿ. “ಗೊಪಾನಸೀಷು ಕ್ಷಣಮಾಸ್ಥಿತಾ-ನಾಮ್” ಮಾಘಂ ೩-೪೯ ।

ಗೊಪಾಯಕ ಗೋಪಾಯಕ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಕ, ಕಾಪಾಡುವವನು. ಗೊಪಾಯತಿ—ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಆಯ: “ಞ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) । “ಆಸೇದುಷಾಂ ಗೋಪಮಿದೋಽನುವೃತ್ಯಾ ಗೊಪಾಯಕಾನಾಂ ಭುವನತ್ರಯಸ್ಯ” ಕಿರಾಂ ೧೮-೧೮ ।

ಗೊಪಾಯನ ಗೋಪಾಯನ (ನಂ) 1. ರಕ್ಷಣೆ. 2. ಕಾಪಾಡುವುದು, ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡುವುದು. ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಆಯ: ಭಾವೆ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) । (ವಿಂ) 3. ರಕ್ಷಕ,



ಕಾಪಾಡುವವನು. ಗುಪ್ ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)।  
"ಗೋಪಾನಾಂ ಬಹುಸಾಹಸ್ರೈರ್ಬಲೈರ್ಗೋಪಾಯನೈವೃತಃ" ಭಾಂ ಭೀಷಮಂ।

ಗೋಪಾಯಿತ ಗೋಪಾಯಿತ (ವಿಂ) 1. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಕಾಪಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಆಯ: "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।  
2. ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡಲ್ಪಟ್ಟು.

ಗೋಪಾಯಿತು ಗೋಪಾಯಿತು (ವಿಂ) ರಕ್ಷಿಸುವವನು, ಕಾಪಾಡುವವನು. ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಆಯ: "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪)। -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

ಗೋಪಾಲ ಗೋಪಾಲ (ಪುಂ) 1. ಗೋಲ್ಲ, ದನಕಾಯುವವನು. ಗಾ: ಪಾಲಯತಿ - ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಅನ್" (೩-೨-೧)। 2. ರಾಜ, ದೊರೆ. ಗಾಂ ಭೂಮಿ ಪಾಲಯತಿ - ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಅನ್" (೩-೨-೧)। 3. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. "ಗಾಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ವಿಹೃಷ್ಟೋ ಹೃದಭವಂ ಸರ್ವಭೂಷಣ-ಭೂಷಣಮ್। ಗೋಪಾಲಮಬಲಾಸಙ್ಗಮುದಿತಂ ವೇಣುನಾದಿತಮ್" ಪದ್ಮಪುಂ। 4. ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಂದ ಶೂದ್ರಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು. "ಕ್ಷತ್ರಿಯಾತ್ ಶೂದ್ರಕನ್ಯಾयां ಸಮುತ್ಪನ್ನಸ್ತು ಯಃ ಸುತಃ। ಸ ಗೋಪಾಲ ಇತಿ ಜ್ಞೇಯೋ ಭೋಜ್ಯೋ ವಿಪ್ರೇನ ಸಂಶಯಃ"। "ಅಧಿಕಃ ಕುಲಮಿತ್ರಂ ಚ ಗೋಪಾಲೋ ದಾಸನಾಪಿತೌ" ಮನುಂ ೪-೨೪೩।

ಗೋಪಾಲಕ ಗೋಪಾಲಕ (ಪುಂ) 1. ಗೋಲ್ಲ, ದನವನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನು. ಗಾಂ ಪಾಲಯತಿ - ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಗೋಪಾಲ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"। 3. ರಾಜ, ದೊರೆ. ಗಾಂ ಭುವಂ ಪಾಲಯತಿ - ಪಾಲ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। 4. ಈಶ್ವರ, ಪರಶಿವ.

ಗೋಪಾಲಿ ಗೋಪಾಲಿ (ಪುಂ) ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.

ಗೋಪಾಲಿಕಾ ಗೋಪಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೋಲ್ಲನ ಹೆಂಡತಿ. ಗೋಪಾಲಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪)। ನ ಡೀಪ್। "ಪಾಲ-ಕಾಂತಾನ" (ವಾಂ ೪-೧-೪೮) ಇತಿ ನಿಷೇಧಾತ್। 2. ಸೊಗದೆ ಗಿಡ.

ಗೋಪಾಲಿ ಗೋಪಾಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋಪಾಲನ ಪತ್ನಿ, ಗೋಲ್ಲನ ಹೆಂಡತಿ. ಗೋಪಾಲಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ ಜಾತಿಂ ಡೀಪ್ (೪-೧-೬೩)।

ಗೋಪಾಷ್ಟಮಿ ಗೋಪಾಷ್ಟಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ತಿಕಮಾಸದ ಶುಕ್ಲಾಷ್ಟಮಿ. ಗೋಪಪ್ರಿಯಾ ಅಷ್ಟಮಿ। "ಶುಕ್ಲಾಷ್ಟಮಿ ಕಾರ್ತಿಕೇ ತು ಸ್ಮೃತಾ ಗೋಪಾಷ್ಟಮಿ ಬುಧಃ। ತದ್ಧಿನ್ವೇ ವಾಸುದೇವೋಽಭೂತ್ ಗೋಪಃ ಪೂರ್ವಂ ಸ ವರಸಪಃ। ತತ್ರ ಕುರ್ಯಾತ್ ಗವಾಂ ಪೂಜಾಂ ಗೋಗ್ರಾಸಂ ಗೋಪ್ರದಕ್ಷಿಣಮ್। ಗವಾನುಗಮನಂ ಕಾರ್ಯಂ ಸರ್ವಾನ್ ಕಾಮಾನಭೀಪ್ಸತಾ" ಕೂರ್ಮಪುಂ।

ಗೋಪಿಕಾ ಗೋಪಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಪಾಡುವವಳು. ಗೋಪ-ಯತಿ - ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಕೇದಾರಿಕಾಣಾಮಭಿತಃ ಸಮಾಕುಲಾಃ ಸಹಾಸಮಾಲೋಕಯತಿ ಸ್ಮ ಗೋಪಿಕಾಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೪೨। 2. ಗೋಲ್ಲರ ಹೆಂಗಸು. ಗೋಪಿ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"। "ನೇ ಖಲು ಗೋಪಿಕಾನಂದನೋ ಭವಾನಖಿಲದೇಹಿನಾಮಂತರಾತ್ಮದಕ್" ಭಾಗಂ ೧೦-೩೧-೪।

ಗೋಪಿಕಾಗೀತಾ ಗೋಪಿಕಾಗೀತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿರಹತಾಪ ವನ್ನು ತಾಳಲಾರದ ಗೋಪಾಂಗನೆಯರು ಮಾಡಿದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಸ್ತೋತ್ರ. ಭಾಗಂ ೧೦।

ಗೋಪಿತ್ತ ಗೋಪಿತ್ತ (ನಂ) ಗೋರೋಚನ.

ಗೋಪಿನ್ ಗೋಪಿನ್ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಿಸುವವನು, ಕಾಪಾಡುವವನು. ಗೋಪಾಯತಿ - ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪)। ಗೋಪಿನಿ ಗೋಪಿನೀ.

ಗೋಪಿ ಗೋಪೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಪಾಡುವವಳು, ಕಾಯುವವಳು. ಗೋಪಾಯತಿ - ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಅವ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಗೋರಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧)। "ಇಕ್ಷುಚ್ಛಾಯಾನಿಷಾದಿನ್ಯ-ಸ್ತಸ್ಯ ಗೋಪ್ತುಗುಣೋದಯಮ್। ಆಕುಮಾರಕಥೋದಾತಂ ಶಾಲಿಗೋಪ್ಯೋ ಜಗುಯಂಶಃ" ರಘುಂ ೪-೨। 2. ಗೋಲ್ಲಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು. ಗೋಪ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। ಶ್ರುತಿ ದೇವತೆಗಳು ಮತ್ತು ಯುಷಿಕನ್ಯೆಯರೇ ಬೃಂದಾವನದಲ್ಲಿ ಗೋಪಾಂಗನೆಯರಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದ್ದರು. "ಗೋಪ್ಯಸ್ತು ಶ್ರುತಯೋ ಜ್ಞೇಯಾಃ ಸ್ವಧಿಕಾ ಗೋಪಕನ್ಯಕಾಃ। ದೇವಕನ್ಯಾಶ್ಚ ರಾಜೇಂದ್ರ ನ ಮಾನುಷ್ಯಃ ಕಥಶ್ಚನ" ಪದ್ಮಪುಂ। 3. ಸೊಗದೆ ಗಿಡ.

ಗೋಪಿಗೀತಾ ಗೋಪೀಗೀತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋಪಾಂಗನೆಯರು ಮಾಡಿದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಸ್ತೋತ್ರ. "ಜಯತಿ ತೇಽಧಿಕಂ ಜನ್ಮನಾ ಬ್ರಜಃ ಶ್ರಯತ ಇಂದಿರಾ ಶಶ್ವದತ್ರ ಹಿ। ದಯಿತ ದೃಶ್ಯತಾಂ ದಿಕ್ಷು ತಾವಕಾಸ್ತ್ವಯಿ ಧೃತಾಸವಸ್ತ್ವಾಂ ವಿಚಿನ್ವತೇ" ಇತ್ಯಾದಿ. ಭಾಗಂ ೧೦-೩೧।

ಗೋಪಿವಲ್ಲಭ ಗೋಪೀವಲ್ಲಭ (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಗೋಪಿನಾಂ ವಲ್ಲಭಃ।

ಗೋಪುಚ್ಚ ಗೋಪುಚ್ಚ (ಪುಂ) 1. ಹಸುವಿನ ಬಾಲ. ಗೋ: ಪುಚ್ಚಮ್। (ಪುಂ) 2. ಹಸುವಿನಂತೆ ಬಾಲವುಳ್ಳ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕಪಿ, ಗೋಲಾಂಗೂಲ. ಗೋ: ಪುಚ್ಚಮಿವ ಪುಚ್ಚಂ ಯಸ್ಯ। (ನಂ) 3. ಮೂವತ್ತನಾಲ್ಕು ಎಳೆಗಳ ಹಾರ.

ಗೋಪುಡ ಗೋಪುಟ (ನಂ) ಪರಮೇಶ್ವರನ ವೈಷಭದ ಮಂಟಪ.

ಗೋಪುರ ಗೋಪುರ (ನಂ) 1. ಪುರದ್ವಾರ, ಪಟ್ಟಣದ ಹೆಬ್ಬಾಗಿಲು. ಗೋಪಾಯತಿ ನಗರಂ ರಕ್ಷತಿ - ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಉರಚ್"



ಬಾಹುಂ । 2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ದ್ವಾರ. “ಪ್ರತಿನಾದಪೂರಿತ-  
ವಿಗಂತರ: ಪತನ್ ಪುರಗೋಪುರಂ ಪ್ರತಿ ಸ ಸೈನ್ಯಸಾಗರ:” ಮಾಘಂ  
೧೩-೨೭ । 3. ಕೆಂಪು ಕೊನ್ನಾರಿ.

**ಗೋಪುರಕ ಗೋಪುರಕ** (ಪುಂ) “ಗೋಪುರ” ಪದದ ಅರ್ಥ.  
ಗೋಪುರ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕ:” ।

**ಗೋಪುರೀಷ ಗೋಪುರೀಷ** (ನಂ) ಗೋಮಯ, ಹಸುವಿನ  
ಸಗಣೆ. ಗೋ: ಪುರೀಷಮ್ ।

**ಗೋಪೇಂದ್ರ ಗೋಪೇಂದ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠ. ಗೋಪೇ ಇಂದ್ರ:  
ಶ್ರೇಷ್ಠ: । 2. ನಂದ. ಗೋಪಾನಾಮಿन्द्र: ।

**ಗೋಪೇಶ ಗೋಪೇಶ** (ಪುಂ) 1. ನಂದ. ಗೊಲ್ಲರ ರಾಜ.  
2. ಶಾಕ್ಯಮುನಿ. 3. ಶ್ರೇಷ್ಠ.

**ಗೋಪ್ತವ್ಯ ಗೋಪ್ತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಇಡಲ್ಪಡುವ,  
ಬಚ್ಚಿಡಲ್ಪಡುವ. ಗುಪ್ತ (ರಕ್ಷಣೆ) ಕರ್ಮಂ “ತವ್ಯ:”  
(೩-೧-೧೬) । 2. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ರಹಸ್ಯವಾಗಿದೆ  
ಬೇಕಾದ. 4. ರಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ.

**ಗೋಪ್ತುಕಾಮ ಗೋಪ್ತುಕಾಮ** (ವಿಂ) 1. ರಕ್ಷಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ  
ಯುಳ್ಳ. 2. ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಇಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ.  
ಗೋಪ್ತು ಕಾಮೋ ಯಸ್ಯ ।

**ಗೋಪ್ತು ಗೋಪ್ತು** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಗೋಪಾಯತಿ ರಕ್ಷತಿ—  
ಗುಪ್ತ (ರಕ್ಷಣೆ) “ತೃ” (೩-೧-೧೩೩) । ಅಸ್ಯ ಕರ್ಮಫಲ-  
ಚಕ್ರಸ್ಯ ರಕ್ಷಿತಾ । “ಯ: ಕರ್ಮಫಲಚಕ್ರಸ್ಯ ಗೋಪ್ತಾ ಹಿ  
ಪರಿಪಾಲನಾತ್” ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: । “ಗೋಹಿತೋ ಗೋಪತಿಗೋಪ್ತಾ”  
ವಿಂ ಸ೦ । (ವಿಂ) 2. ರಕ್ಷಕ, ಕಾಪಾಡುವವನು. ಗುಪ್ತ  
(ರಕ್ಷಣೆ) “ತೃ” (೩-೧-೧೩೩) । “ಪ್ರಪೇದಿರೆ ಪೂರ್ವಯುಗಾನು-  
ಭೂತಿ ಗೋಪಾಸ್ತದಾ ಗೋಪ್ತರಿ ವಾಸುದೇವೇ” ಯಾದಂ ೪-೭೮ ।  
3. ಮುಚ್ಚಿಡುವವನು, ರಹಸ್ಯವಾಗಿದುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ಡೀ” (೪-೧-೪) । ಗೋಪ್ತೃ ಗೋಪ್ತೃ.

**ಗೋಪ್ಯ ಗೋಪ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ದಾಸಿಯ ಮಗ, ಸೇವಕಿಯ  
ಮಗ. 2. ಸೇವಕ, ಆಳು. (ವಿಂ) 3. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ.  
4. ರಹಸ್ಯವಾಗಿದೆಡಲ್ಪಡುವ. ಗುಪ್ತ (ರಕ್ಷಣೆ) ಕರ್ಮಂ “ಯತ್”  
(೩-೧-೧೨೪) । 5. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. 6. ರಹಸ್ಯ  
ವಾಗಿದೆಡಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. “ಆಯುರ್ವಿತ್ತಂ ಗೃಹಚ್ಛಿಡ್ರಂ ಮನ್ತ್ರಮೈಶುನ-  
ಭೇಷಜಮ್ । ತಪೋದಾನಾಪಮಾನಂ ಚ ನವ ಗೋಪ್ಯಾನಿ ಯತನ:”  
ಕಾಶೀಕ್ಷಂ ।

**ಗೋಪ್ಯಕ ಗೋಪ್ಯಕ** (ಪುಂ) ಸೇವಕ, ಆಳು. ಗೋಪ್ಯ ಸ್ವಾರ್ಥ  
“ಕನ್” (೪-೪-೪) । ಗೋಪ್ಯ ಕಾಯತಿ—ಕೆ (ಶಬ್ದ) “ಕ:”  
(೩-೨-೩) ಖಾ ।

**ಗೋಪ್ರಕಾಂಡ ಗೋಪ್ರಕಾಂಡ** (ನಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಹಸು.  
ಪ್ರಕಾಂಡಂ ಚಾಸೌ ಗೋಪ್ರಕಾಂಡಃ । ನಿಯಮಸಮಾಸ: (೨-೧-೬೬) ।  
ಜಾತೇ: ಪೂರ್ವನಿಪಾತ: ।

**ಗೋಪ್ರಚಾರ ಗೋಪ್ರಚಾರ** (ಪುಂ) ದನಗಳು ಮೇಯುವ  
ಪ್ರದೇಶ, ಹುಲ್ಲುಗಾವಲು. ಗಾವ: ಪ್ರಚರಂತ್ಯತ್ರ — ಪ್ರ + ಚರ  
(ಗತಿಭಕ್ಷಣಯೋ: ) “ಘ” (೩-೩-೧೨೧) ।

**ಗೋಪ್ರತಾರ ಗೋಪ್ರತಾರ** (ಪುಂ) ಸರಯೂ ತೀರ್ಥ, ಸರಯೂ  
ತೀರದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ತೀರ್ಥ, ಸರಯೂ ನದಿಯ ತೀರ  
ದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಯಾತ್ರಾಸ್ಥಳ. ಗವಾಂ ಪ್ರತಾರ: ಪ್ರತರಣ-  
ತುಲ್ಯಸಮದೋಷ ಪ್ರ + ತ (ಲವನತರಣಯೋ: ) “ಘ”  
(೩-೩-೧೨೧) । ಶ್ರೀರಾಮನು ವೈಕುಂಠಕ್ಕೆ ತೆರಳುವ  
ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಅವನ ಅನುಯಾಯಿಗಳಾದ ಪಟ್ಟಣಿಗರು  
ಗುಂಪುಗುಂಪಾಗಿ ಸೇರಿದ್ದ ಪ್ರದೇಶವಿದು. ಪ್ರ + ತ “ಅ”  
(೩-೩-೪೭) । —ಪ್ರತರ: —ಪ್ರತರ: “ಯದ್ಗೋಪ್ರತರ-  
ಕಲ್ಪೋಽಮೃತ ಸಮದೇವತತ್ರ ಮಜ್ಜತಾಮ್” ರಘುಂ ೧೪-೧೦೧ ।

**ಗೋಪ್ರದಾನ ಗೋಪ್ರದಾನ** (ನಂ) ಗೋವಿನ ದಾನ. ಗೋ:  
ಪ್ರದಾನಮ್ ।

**ಗೋಪ್ರವೇಶ ಗೋಪ್ರವೇಶ** (ಪುಂ) ಕಾಡಿಗೆ ಮೇಯಲು  
ಹೋಗಿದ್ದ ಗೋವುಗಳು ಸಾಯಂಕಾಲ ಮನೆಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸು  
ವುದು. ಗವಾಂ ಪ್ರವೇಶ: ।

**ಗೋಪಣಾ ಗೋಪಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತುಟಿ ಗಲ್ಲ ಮೂಗುಗಳ  
ಗಾಯಕ್ಕೆ ಕಟ್ಟುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಪಟ್ಟಿ.  
“ವಿತಾನಗೋಪಣಾ: ಪञ್ಚಾಕ್ಷರೀ ಚೇತಿ ಚತುರ್ದಶಬಂಧವಿಶೇಷಾ:”  
ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೧೮-೧೭ ।

**ಗೋಬಲಿವರ್ದನಾಪ ಗೋಬಲಿವರ್ದನಾಪ** (ಪುಂ)  
ಸಾಮಾನ್ಯವಾಚಕ ಶಬ್ದದ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ವಿಶೇಷವಾಚಕ  
ಶಬ್ದವನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸಿದಾಗ ವಿಶೇಷವಾಚಕಶಬ್ದಕ್ಕೆ  
ವೈಯರ್ಥ್ಯ ಬರದಿರಲು ಹೇಳುವ ಒಂದು ನ್ಯಾಯ.  
ಇಂತಹ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಗೋಬಲಿವರ್ದನಾಪದಿಂದ  
ಪರಿಹಾರವನ್ನು ಹೇಳಬೇಕು. ಗಾಮಾನಯ ಬಲಿವರ್ದೆ ಚಾನಯ  
ಎಂಬಲ್ಲಿ ಗೋ ಮತ್ತು ಬಲಿವರ್ದೆ ಪದಗಳೆರಡೂ “ವೃಷಭ”  
ಎಂಬ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುವು. ಇಲ್ಲಿ ಸಾಮಾನ್ಯವಾದ  
ಗೋ ಪದದಿಂದಲೇ ವಿಶೇಷವಾದ ಬಲಿವರ್ದೆ ಪದದ ಅರ್ಥವೂ  
ಬರುವಾಗ ವಿಶೇಷವಾಚಕಪದಕ್ಕೆ ವೈಯರ್ಥ್ಯವು ಸಂಭವಿಸ  
ಬಹುದಾದುದರಿಂದ ಬಲಿವರ್ದೆ ಪದಕ್ಕೆ ಗೋ ಪದದ  
ಅರ್ಥಕ್ಕಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನವಾದ “ಬಲಿಷ್ಠವಾದ ವೃಷಭ”  
ಎಂಬ ಅರ್ಥವನ್ನು ಹೇಳಿ ವೈಯರ್ಥ್ಯಪರಿಹಾರವನ್ನು  
ಹೇಳಬೇಕು. ಇದೇ “ಗೋಬಲಿವರ್ದನಾಪ”.



ಗೊಮತ್ ಗೋಭೃತ್ (ಪುಂ) ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಗಾಂ  
ಬಿಭರ್ತಿ - ಡು ಭೃತ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ವಿವ್" (೩-೨-೭೬)।

ಗೋಮಕ್ಷಿಕಾ ಗೋಮಕ್ಷಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡುನೋಣ,  
ತೋಣಚಿ. ಗೋ: ಹಿಸನಾರ್ಥಾ ಮಕ್ಷಿಕಾ।

ಗೋಮರ್ಚಿಕಾ ಗೋಮರ್ಚಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ  
ಗೋವು, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಹಸು. ಮರ್ಚಿಕಾ ಚಾಸೌ ಗೌಶ್ಚ।  
ನಿತ್ಯಸಮಾಸ: (೨-೧-೬೬)। ಜಾತೇ: ಪೂರ್ವನಿಪಾತ:।

ಗೋಮಂಡಲ ಗೋಮಂಡಲ (ನಂ) 1. ಹಸುಗಳ ಸಮೂಹ,  
ದನಗಳ ಗುಂಪು. ಗವಾಂ ಮಂಡಲಮ್। 2. ಭೂಮಂಡಲ.  
ಗೋ: ಭೂಮೇ: ಮಂಡಲಮ್। 3. ಕಿರಣಗಳ ಸಮೂಹ. "ಮಗ್ನಸ್ಯ  
ತೋಯಾಪದಿ ದುಸ್ತರಾಢಾಂ ಗೋಮಂಡಲಸ್ಯೋದ್ಧರಣಂ ಚಕಾರ" ಮಾಘಂ  
೧೪-೮೬।

ಗೋಮತ್ ಗೋಮತ್ (ಪುಂ) 1. ಗೋವುಗಳ ಯಜಮಾನ,  
ದನಗಳ ಒಡೆಯ. ಗಾವ: ಸಂತ್ಯಸ್ಯ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪)।  
(ವಿಂ) 2. ಗೋಸಂಪತ್ತುಳ್ಳವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೬)। -ಮತೀ -ಮತೀ.

ಗೋಮತಲ್ಲಿಕಾ ಗೋಮತಲ್ಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ  
ಗೋವು, ಉತ್ತಮವಾದ ಹಸು. ಮತಲ್ಲಿಕಾ ಚಾಸೌ  
ಗೌಶ್ಚ। ನಿತ್ಯಸಮಾಸ: (೨-೧-೬೬)। ಜಾತೇ: ಪೂರ್ವನಿಪಾತ:।  
"ವರ್ಗಾದಿಗವಾಂ ಹುಕ್ರತಿಚಾರ್ ನಿರ್ಯತೀಮರಿರ್ಮಧೋರೇಕ್ಷತ ಗೋಮತಲ್ಲಿ-  
ಕಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೨-೪೧।

ಗೋಮತೀ ಗೋಮತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋಮತಿ ಎಂಬ ಒಂದು  
ನದಿ. ಗಾವ: ಸ್ತುತಿರೂಪಾ ವಾಚ: ಸಂತ್ಯಸ್ಯಾಮ್ "ಮತುಪ್"  
(೪-೨-೯೪)। "ಗೋಮತೀಂ ಭೂತಪಾಪಾಂ ಚ ಗಂಡಕೀಂ ಚ  
ಮಹಾನದೀಮ್" ಭಾಂ। ಈ ನದಿಯು ಸಮುದ್ರಕ್ಕೆ ಸೇರು  
ವುದರಿಂದ ಬಹಳ ಪಾವನವಾದುದು. "ಗಂಧಾ ಸರಸ್ವತೀ  
ಪುಣ್ಯಾ ಯಮುನಾ ಚ ಮಹಾನದೀ। ಗೋದಾವರೀ ಗೋಮತೀ ಚ ನದೀ  
ತಾಪೀ ಚ ನರ್ಮದಾ। ನದಿ: ಸಮುದ್ರಸಂಯೋಗಾತ್ ಸರ್ವಾ: ಪುಣ್ಯಾ:  
ಶುಭಾವಹಾ:"।

ಗೋಮತ್ ಗೋಮತ್ (ಪುಂ) ಹಾಲು ಕರೆಯುವ ಗೋಪಾಲಕ,  
ಗೊಲ್ಲ. ಗಾಂ ಮತ್ಯತಿ - ಮತ್ಯೆ (ವಿಲೋಡನೇ) "ಅಚ್"  
(೩-೧-೧೩೪)।

ಗೋಮಂತ ಗೋಮಂತ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಪರ್ವತ.  
"ಗೋಮಂತೋ ಪರ್ವತಶ್ರೇಷ್ಠೇ ಯೇನೈಷ ಪರಿಮೋಕ್ಷಿತ:" ಭಾಂ ಸಭಾಂ  
೨೪-೬। 2. ಭಾರತದ ಒಂದು ಪ್ರದೇಶ, ಈಗಿನ  
"ಗೋವಾ" ಪ್ರಾಂತ್ಯ.

ಗೋಮಂದ ಗೋಮಂದ (ಪುಂ) ಒಂದು ಪರ್ವತ,

ಗೋಮಯ ಗೋಮಯ (ಪುಂ) 1. ಹಸುವಿನ ಸಗಣೆ. ಗೋ:  
ಪುರೀಷಮ್-ಗೋ "ಮಯಡ್" (೪-೩-೧೪೪)। ಗೋಮಯವು  
ಬಹಳ ಪವಿತ್ರವಾದುದು. ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಗೋವುಗಳೆಲ್ಲವೂ  
ಸೇರಿ ತಮ್ಮಲ್ಲಿ ಶ್ರೇಷ್ಠತೆಯನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು  
ಅನೇಕ ವರ್ಷಗಳಕಾಲ ಬ್ರಹ್ಮನನ್ನು ಕುರಿತು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡಿ  
ದುವು. ಅದರಿಂದ ಮೆಚ್ಚಿ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷನಾದ ಬ್ರಹ್ಮನನ್ನು  
ಕುರಿತು ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲರಿಗಿಂತಲೂ ತಾವು ಶ್ರೇಷ್ಠರಾಗ  
ಬೇಕೆಂದೂ ತಮ್ಮ ಪುರೀಷ (ಗೋಮಯ) ಮತ್ತು ಮೂತ್ರ  
ಗಳಿಂದ ಎಲ್ಲರೂ ಪವಿತ್ರತೆಯನ್ನು ಪಡೆಯುವಂತಾಗ  
ಬೇಕೆಂದೂ ವರವನ್ನು ಕೇಳಲು ಬ್ರಹ್ಮನು "ಅಸ್ತು"  
ಎಂದನು. ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೧೪। ಗೋಮಯ ಮತ್ತು  
ಗೋಮೂತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಮಿಯ ಸಾನಿಧ್ಯವಿರುವುದು.  
"ಅವಶ್ಯಂ ಮಾನನಾ ಕಾರ್ಯಾ ತವಾಸ್ಮಾಭಿರ್ಯಶಸ್ವಿನಿ। ಶಕ್ತುನ್ಮುತ್ರೆ  
ನಿವಸ ತ್ವಂ ಪುಣ್ಯಮೇತದ್ವಿ ನ: ಶುಭೇ। ಶ್ರೀಶ್ವಾಚ-ದಿಷ್ಟಿಚಾ  
ಪ್ರಸಾದೋ ಯುಷ್ಮಾಭಿ: ಕೃತೋ ಮೇಽನುಪ್ರಹಾತಮಕ:। ಉವಂ ಭವತು ಭದ್ರಂ  
ವ: ಪೂಜಿತಾಸ್ಮಿ ಸುಖಪ್ರದಾ:" ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೨೮। "ಯಸ್ಯಾ-  
ಮಲಿನ್ದೇಷು ನ ಚಕ್ರೂರೇವ ಮುಘಾಙ್ಗನಾ ಗೋಮಯಗೋಮುಖಾನಿ"  
ಮಾಘಂ ೩-೪೮। (ನಂ) 2. ಬೆರಣಿ, ಒಣಗಿದ ಸಗಣೆ.  
"ಉಪಲಶಕಲಮೇತದ್ವೇದಕಂ ಗೋಮಯಾನಾಮ್" ಮುದ್ರಾಂ ೩-೧೪।  
(ವಿಂ) 3. ಗೋವುಗಳಿಂದ ತುಂಬಿದ, ಬಹಳ ಹಸುಗಳಿಂದ  
ಕೂಡಿದ.

ಗೋಮಯಚ್ಚತ್ರ ಗೋಮಯಚ್ಚತ್ರ (ನಂ) ನಾಯಿಕೂಡೆ.  
ಗೋಮಯೇ ಚತ್ರಮಿವ।

ಗೋಮಯಪ್ರಿಯ ಗೋಮಯಪ್ರಿಯ (ನಂ) ನಾಯಿಕೂಡೆ.  
ಗೋಮಯಂ ಪ್ರಿಯಮಸ್ಯ।

ಗೋಮದ ಗೋಮದ (ಪುಂ) ಸಾರಸಪಕ್ಷಿ. "ಸಾರಸಸ್ತು  
ಕಲಾಂಕುರ:। ಗೋಮದಾ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಗೋಮಾಂಸ ಗೋಮಾಂಸ (ನಂ) ಹಸುವಿನ ಮಾಂಸ. ಗೋಮಾಂಸಮ್।  
"ಅಗಮ್ಯಾಗಮನೇ ಶೈವ ಮದ್ಯಗೋಮಾಂಸಮಕ್ಷಣೇ। ಶುದ್ಧಶೈವಾನ್ದ್ರಾಯಣಂ  
ಕುರ್ಯಾತ್ ನದೀಂ ಗತ್ವಾ ಸಮುದ್ರಗಾಮ್"।

ಗೋಮಾತು ಗೋಮಾತು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋವುಗಳ ತಾಯಿಯಾದ  
ಸುರಭಿ, ಕಶ್ಯಪನ ಒಬ್ಬ ಹೆಂಡತಿ. ಗವಾಂ ಮಾತಾ।

ಗೋಮಾಯು ಗೋಮಾಯು (ಪುಂ) 1. ಜಂಬುಕ, ನರಿ. ಗಾಂ  
ವಿಕೃತಾಂ ವಾಚಂ ಮಿನೋತಿ - ಡು ಮಿನ್ (ಪ್ರಕ್ಷೇಪಣೇ) "ಉನ್"  
(೩ಂ ೧-೧)। "ಅನುಹಂಕುರತೇ ಧನಧ್ವನಿ ನ ಹಿ ಗೋಮಾಯು-  
ಹತಾನಿ ಕೇಸರೀ" ಮಾಘಂ ೧೬-೨೪। 2. ಒಬ್ಬ ಗಂಧರ್ವ.  
"ಬಹುಭಿ: ಸಹ ಗಂಧರ್ವೈ: ಪ್ರಾಗಾಯತ ಚ ತುಂಬುರ:। .....।  
ಗೋಮಾಯು: ಸೂರ್ಯವರ್ಚಾಶ್ಚ ಸೋಮವರ್ಚಾಶ್ಚ ಸಪ್ತಮ:" ಹರಿವಂಶಂ।



**ಗೊಮಿನ್ ಗೋಮಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ಜಂಬುಕ, ನರಿ. (ವಿಂ) 2. ಗೋವುಗಳ ಯಜಮಾನ, ದನಗಳ ಒಡೆಯ. 3. ಉಪಾಸಕ. "ಗೊಮಿ ಸೃಗಾಲೇ ಪುಸಿ ಸ್ಯಾತ್ರಿಫು ಗೊಮತ್ಯುಪಾಸಕೇ" ಮೇದಿಂ |

**ಗೊಮುಖ ಗೋಮುಖ (ಪುಂ)** 1. ನಕ್ಕ, ಮೊಸಳೆ. ಗೊಮುಖಮಿವ ಮುಖಮಸ್ಯ | 2. ಮಾಡಲೆಯ ಮಗ. 3. ಪರಿಶಿವನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ. (ನಂ) 4. ವಕ್ರವಾದ ಮತ್ತು ಹಳ್ಳಿಟ್ಟು ಗಳುಳ್ಳ ಮನೆ. 5. ಒಂದು ವಾದ್ಯ. "ಆಡಂಬರಾನ್ ಗೊಮುಖಾಂಶ್ರ ಡಿಞಿಡಮಾಂಶ್ರ ಮಹಾಸ್ವನಾನ್" ಭಾಂ ಶಲ್ಯಂ ೪೭-೫೮ | 6. ಲೇಪನ, ಬಳಿಯುವುದು. "ಯಸ್ಯಾ-ಮಲಿನ್ದೇಷು ನ ಚಕ್ರೇವ ಮುಘಾಙ್ಗನಾ ಗೊಮಯಗೊಮುಖಾನಿ" ಮಾಘಂ ೩-೪೮ | "ನಕ್ರೇ ನಾ ಲೇಪನೇ ಕ್ಲಿಬ ವಾಘೇ ನ ಸ್ತ್ರೀ ಚ ಗೊಮುಖಮ್" ನಾನಾರ್ಥಂ | "ಗೊಮುಖ ಕುಡಲಿಗಾರೇ ವಾಘಭಾಂಡೇ ಚ ಲೇಪನೇ | ಪುಸಿ ಮಾತಲಿಪುತ್ರ ಚ ಮಹಾದೇವ-ಗಣಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ | 7. ಕಳ್ಳನು ಗೋಡೆಯಲ್ಲಿ ಕೊರೆದ ಕನ್ನ. 8. ಜಪಮಾಲೆಯನ್ನು ಇಡುವ ಚೀಲ. "ಪ್ರಜಪೇ-ದ್ವಿಧಿನಾ ಗುಹ್ಯಂ ವರ್ಣಮಾಲಾಧಿಕಂ ಪ್ರಿಯೇ | ನಿಧಾಯ ಗೊಮುಖೇ ಮಾಲಾಂ ಗೊಪಯೇನ್ಮಾತೃಜಾರವತ್" | 9. ಯೋಗಾಸನದ ಒಂದು ಭೇದ. (ವಿಂ) 10. ಹಸುವಿನ ಮುಖದಂತೆ ಮುಖವುಳ್ಳ.

**ಗೊಮುಖಿ ಗೋಮುಖೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಗಂಗಾನದಿಯು ಹೊರಟುಬರುವ ಹಿಮಾಲಯದ ಒಂದು ಗುಹೆ. 2. ಗೋವಿನಂತೆ ಮುಖವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಗೊಮುಖಮಿವ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯಾಃ |

**ಗೊಮುತ್ರ ಗೋಮೂತ್ರ (ನಂ)** ಗೋವಿನ ಗಂಜಲ, ಹಸುವಿನ ಮೂತ್ರ. ಗೊಮುತ್ರಮ್ | ಗೋಮೂತ್ರವು ಬಹಳ ಪವಿತ್ರವಾದುದು. ["ಗೊಮಯ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಮದ್ಯಪಾನ ಮಾಡಿದವನಿಗೆ ಯಾವಜ್ಜೀವವೂ ಗೋಮೂತ್ರಪಾನವು ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತವಾಗಿ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. "ಗೊಮುತ್ರ-ಮಗ್ನಿವರ್ಣಂ ವಾ ಪಿಬೇದುದಕಮೇವ ವಾ | ಪಯೋ ಧೃತಂ ವಾಽಽಮರಣಾತ್ ಗೋಶಕೃದ್ರಸಮೇವ ವಾ" ಮನುಂ ೧೧-೧೧ | ಗೋವು ಸಕಲ ಪುಣ್ಯ ತೀರ್ಥಸ್ವರೂಪವೆಂದೂ ಅದರ ಮೂತ್ರವು ನರ್ಮದಾನದಿಯೆಂದೂ ಐತಿಹ್ಯವಿರುವುದು. "ಗೊಮಯಂ ಯಮುನಾ ಸಾಕ್ಷಾತ್ ಗೊಮುತ್ರಂ ತರ್ಮದಾ ಶುಭಾ | ಗಙ್ಗಾ ಕ್ಷೀರಂ ತು ಯಾಸಾಂ ವೈ ಕಿಂ ಪವಿತ್ರಮತಃಪರಮ್" |

**ಗೊಮುತ್ರಿಕಾ ಗೋಮೂತ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗೋಮೂತ್ರಿಕಾ ಬಂಧ, ಚಿತ್ರಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ, ಗೋವಿನ ಮೂತ್ರವು (ಗೋವು ಸಂಚರಿಸುವಾಗ) ನೆಲದ ಮೇಲೆ ಬೀಳುವ ಆಕಾರದಲ್ಲಿ ರಚಿಸುವ ಶ್ಲೋಕ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: ಶ್ಲೋಕದ ಪೂರ್ವಾರ್ಧವೂ, ಅದರ ವಿಷಮಾಕ್ಷರಗಳನ್ನು

ಉತ್ತರಾರ್ಧದ ಸಮಾಕ್ಷರಗಳೊಡನೆ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಸೇರಿಸಿದಾಗ ಆಗುವ ಶ್ಲೋಕಾರ್ಧವೂ ಹಾಗೆಯೇ ಉತ್ತರಾರ್ಧವೂ, ಅದರ ವಿಷಮಾಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಪೂರ್ವಾರ್ಧದ ಸಮಾಕ್ಷರಗಳೊಡನೆ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಸೇರಿಸಿದಾಗ ಆಗುವ ಶ್ಲೋಕಾರ್ಧವೂ ಏಕರೂಪವಾಗಿದ್ದರೆ "ಗೋಮೂತ್ರಿಕಾ ಬಂಧ"ವಾಗುವುದು. "ವರ್ಣಾನಾಮೇಕರೂಪತ್ವಂ ಯದೇಕಾಂತ-ರಮರ್ಥಯೋಃ | ಗೊಮುತ್ರಿಕೇತಿ ತತ್ಪ್ರಾಹುಃ ದೃಢಕರಂ ತದ್ವಿದೋ ವಿದುಃ" |

"ಪ್ರವೃತ್ತೇ ವಿಕಸದ್ಧಾನಂ ಸಾಧನೇಽಪ್ಯವಿಷಾದಿಮಿಃ |

ವವೃಷೇ ವಿಕಸದ್ಧಾನಂ ಯುಧಮಾಪ್ಯವಿಷಾದಿಮಿಃ" |

ಪ್ರವೃತ್ತೇ ವಿಕಸದ್ಧಾನಂ ಸಾಧನೇಽಪ್ಯವಿಷಾದಿಮಿಃ |

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

ವವೃಷೇ ವಿಕಸದ್ಧಾನಂ ಯುಧಮಾಪ್ಯವಿಷಾದಿಮಿಃ ||

**ಗೊಮೃಗ ಗೋಮೃಗ (ಪುಂ)** ದನದ ಆಕಾರದ ಒಂದು ಪ್ರಾಣಿ, ಗವಯವೆಂಬ ಪಶು. ಗವಾಕೃತಿಮೃಗಃ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಜಿಃ" (೪-೧-೬೩) | ಗೊಮೃಗಿ ಗೋಮೃಗೀ.

**ಗೋಮೇದ ಗೋಮೇದ (ಪುಂ)** 1. ಗೋಮೇದಕ ಮಣ, ಬಿಳುಪು ಮಾಸಲುಹಳದಿ ಕೆಂಪು ಮತ್ತು ನೀಲಿ ಬಣ್ಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ನಾಲ್ಕು ಜಾತಿಗಳುಳ್ಳ ಮಣ. ಗೌರ್ಜಲಮಿವ ಮೇದಯತಿ — ತ್ರಿ ಮಿಡಾ (ಸ್ನೇಹನಮೋಚನಯೋಃ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | ಇದು ನವರತ್ನಗಳಲ್ಲೊಂದು. (1) ರತ್ನಮ್, (2) ಗಾರುತಮಮ್, (3) ಪುಷ್ಪರಾಗಃ, (4) ಮಾಣಿಕ್ಯಮ್, (5) ಇಂದ್ರನೀಲಃ, (6) ಗೋಮೇದಃ, (7) ವೈಡೂರ್ಯಮ್, (8) ಮೌಕ್ತಿಕಮ್ ಮತ್ತು (9) ವಿದ್ರುಮಃ ಇವು ನವರತ್ನಗಳು. 2. ಗೋಮೇದವೆಂಬ ಒಂದು ದ್ವೀಪ. ಈ ದ್ವೀಪದ ರಾಜನಾದ ಗೋಪತಿಯು ಗೋಮೇಧವನ್ನು ಮಾಡಲು ಯತ್ನಿಸಿದಾಗ ಕುಪಿತನಾದ ಗೋತಮನ ಶಾಪದಿಂದ ನಾಶವಾದನು. ಅಲ್ಲಿದ್ದ ಗೋವುಗಳೆಲ್ಲವೂ ಋಷಿಯ ಕೋಪಾಗ್ನಿಯಿಂದ ದಗ್ಧವಾಗಲು ಅವುಗಳ ಮೇದಸ್ಸಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ಆ ಪ್ರದೇಶಕ್ಕೆ "ಗೋಮೇದ"ವೆಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು. "ಗೋಮೇದೇ ಗೋಪತಿರ್ನಾಮ ರಾಜಾಭೂದ್ಗೋಸವೋದತಃ | ಯಾಜ್ಯೋಽಭೂದ್ವಹ್ನಿಕಲ್ಪಾನಾಮೌತಶ್ಯಾನಾಂ ಮನೋಃ ಕುಲೇ | ಸ ತೇಷು ಹರಿಯಜ್ಞಾಯ ಪ್ರವೃತ್ತೇಷು ಗುಹ್ನು ಭಗ್ಮುನ್ | ವತ್ತೇ ತಂ ಗೋತಮಃ ಕೋಪಾದಶಪತ್ ಸೋಽಗಮತ್ ಕ್ಷಯಮ್ | ಯಜ್ಞವಾಟೇಽಸ್ಯ ತಾ ಗಾವೋ ದಧಾಃ ಕೋಪಾಗ್ನಿನಾ ಮುನೇಃ | ತನ್ಮೇದಸಾ ಮಹೀ ಛನ್ನಾ ಗೋಮೇದಃ ಸ ತತೋಽಭವತ್" | 3. ಪ್ಲಕ್ಷದ್ವೀಪದ ಕುಲಪರ್ವತಗಳೆಲ್ಲೊಂದು. ["ಕುಲಪರ್ವತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಗೋಮೇದಕ ಗೋಮೇದಕ (ಪುಂ)** 1. ನವರತ್ನಗಳಲ್ಲೊಂದು ಮಣ. ಗೋಮೇದ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ" | ["ಗೋಮೇದ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ಒಂದು ವಿಷ.



**ಗೋಮೇಧ ಗೋಮೇಧ** (ಪುಂ) ಪಶುಯಜ್ಞ. ಮೇಘ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಅಧಿಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧). ಇದರಿಂದ ಗೋವು ಗಳಿಗೆ ಗೋಲೋಕಪ್ರಾಪ್ತಿಯೂ ಯಜಮಾನನಿಗೆ ಸ್ವರ್ಗ ಲೋಕ ಪ್ರಾಪ್ತಿಯೂ ಆಗುವುದು. ಈ ಪಶುಯಜ್ಞವು ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ ನಿಷಿದ್ಧ. "ಅಶ್ವಾಲಂಬೋ ಗವಾಲಂಬಃ ಸನ್ಯಾಸಃ ಪಲಪೇತುಕಮ್ | ದೇವರಾಂಶ್ಚ ಸುತೋತ್ಪತ್ತಿಃ ಕಲೌ ಪಶ್ಚ ವಿವರ್ಜಯೇತ್" |

**ಗೋಯಜ್ಞ ಗೋಯಜ್ಞ** (ಪುಂ) 1. ಪಶುಯಜ್ಞ. ಗವಾ ಕೃತೌ ಯಜ್ಞಃ | ["ಗೋಮೇಧ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ಬೃಂದಾ ವನದ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಗೋಪಾಲಕರೊಡನೆ ನಡೆಸಿದ ಗೋವರ್ಧನಗಿರಿಪೂಜೆ ಮತ್ತು ಗೋವುಗಳ ಉತ್ಸವ. ಗೊಲ್ಲರೆಲ್ಲರೂ ಇಂದ್ರನ ಪೂಜೆಯನ್ನು ಮಾಡ ಲೆತ್ತಿಸಿದಾಗ ಅದನ್ನು ತಡೆದು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಗೋಯಜ್ಞ ವನ್ನು ಮಾಡಿಸಿದನು. "ಶಿವಾಯ ಗಾವಃ ಪೂಜ್ಯಂತಾಂ ಗಿರಿಯಜ್ಞಃ ಪ್ರವರ್ತಯತಾಂ | ಪೂಜ್ಯತಾಂ ತ್ರಿದಶೈಃ ಶಕ್ರೋ ಗಿರೀರಸ್ಮಾಭಿ- ರಿಜ್ಯತಾಂ | ಗೋಯಜ್ಞಂ ಕಾರಯಿಷ್ಯಾಮಿ ಬಲಾದೇವ ನ ಸಂಶಯಃ" |

**ಗೋಯಾನ ಗೋಯಾನ** (ನಂ) ಎತ್ತಿನಗಾಡಿ, ಎತ್ತುಗಳಿಂದ ಎಳೆಯಲ್ಪಡುವ ಗಾಡಿ. ಗವಾ ಕೃಷ್ಣಂ ಯಾನಮ್ | "ಮೈಥುನಂ ತು ಸಮಾಸೇವ್ಯ ಪುಂಸಿ ಯೋಷಿತಿ ವಾ ದ್ವಿಜಃ | ಗೋಯಾನೇಽಪ್ಸು ದಿವಾ ಚೈವ ಸವಾಸಾಃ ಸ್ನಾನಮಾಚರೇತ್" ಮನುಂ ೧೧-೧೭೪ | "ಗೋಯಾನೇನಾಗತಸ್ತುಛಃ ಪಾದಾಭ್ಯಾಂ ಗುಭಚೇಷ್ಟಿತಃ" ಸುಶ್ರುತಂ |

**ಗೋರಕ್ಷ ಗೋರಕ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಗೋಪಾಲಕ, ಗೊಲ್ಲ. ಗಾಃ ರಕ್ಷತಿ-ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) | 2. ಹೇರಿಳೆ ಗಿಡ. 3. ಹೆರಿಗೆ ಹಾಲೆಯೆಂಬ ಒಂದು ಮೂಲಿಕೆ. (ವಿಂ) 4. ದನವನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನು. (ನಂ) 5. ಗೋವುಗಳನ್ನು ಕಾಪಾಡುವುದು. ರಕ್ಷ ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮) | "ಕೃಷಿಗೋರಕ್ಷಮಾಸ್ಥಾಯ ಜೀವೇದೈಶ್ಯಸ್ಯ ಜೀವಿಕಾಮ್" ಮನುಂ ೧೦-೮೨ | "ಗೋರಕ್ಷೋ ನಾಗರಕ್ಷೇ ಸ್ಯಾದ್ಗವಾಂ ಚ ಪರಿರಕ್ಷಕೇ" ಮೇದಿಂ |

**ಗೋರಕ್ಷಕ ಗೋರಕ್ಷಕ** (ಪುಂ) 1. ದನಕಾಯುವವನು, ಗೊಲ್ಲ. ಗಾಃ ರಕ್ಷತಿ-ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಫ್ಲು" (೩-೧-೧೩೩) | (ವಿಂ) 2. ದನವನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನು. "ಗೋರಕ್ಷಕಾನ್ ವಾಣಿಜಕಾನ್ ತಥಾ ಕಾರುಕುಶೀಲವಾನ್ | ಪ್ರೇಷ್ಯಾನ್ ವಾರ್ಧುಷಿಕಾಂ- ಇವೈವ ವಿಪ್ರಾನ್ ಶೂದ್ರವದಾಚರೇತ್" ಮನುಂ ೮-೧೦೨ |

**ಗೋರಕ್ಷಜಮ್ಬ ಗೋರಕ್ಷಜಂಜೂ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೋಧೂಮ, ಗೋಧಿ. 2. ಬೋರೆಹಣ್ಣು, ಎಲೆಹಣ್ಣು.

**ಗೋರಕ್ಷಣ ಗೋರಕ್ಷಣ** (ನಂ) ಗೋವುಗಳನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವುದು, ದನಗಳನ್ನು ಕಾಪಾಡುವುದು. ಗವಾಂ ರಕ್ಷಣಮ್ |

**ಗೋರಕ್ಷ್ಯ ಗೋರಕ್ಷ್ಯ** (ನಂ) ಗೋವುಗಳನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವುದು, ಪಶುಪಾಲನೆ, ದನಗಳನ್ನು ಕಾಪಾಡುವುದು. "ವಿದ್ಯಾ ಶಿಲ್ಪಂ ಭೃತಿಃ ಸೇವಾ ಗೋರಕ್ಷ್ಯಂ ವಿಪಣಿಃ ಕೃಷಿಃ | ಧೃತಿರ್ಮೇಧ್ಯಂ ಕುಸೀದಂ ಚ ದಶ ಜೀವನಹೇತವಃ" ಮನುಂ ೧೦-೧೧೬ | ಇವಿಷ್ಟೂ ಅಪತ್ಯಾಲ ದಲ್ಲಿ ಜೀವನೋಪಾಯಗಳು.

**ಗೋರಡ್ಕು ಗೋರಂಕು** (ಪುಂ) 1. ನೀರುಹಕ್ಕಿ, ನೀರುಕೋಳಿ. 2. ಸ್ತುತಿಪಾಠಕ, ಹೊಗಳುಭಟ. 3. ಹೊಣೆಗಾರ, ಜಾಮೀನುದಾರ. "ಗೋರಡ್ಕುಃ ಸ್ಯಾತ್ ಪುಮಾನ್ ಪಕ್ಷಿಭೇದೇ ಲಗನಕವಂದಿನೋಃ" ಮೇದಿಂ | 4. ಬೆತ್ತಲೆಯಾಗಿರುವವನು. "ಗೋರಡ್ಕುಃ ಪಕ್ಷಿಜಾತೌ ಚ ಭವೇನ್ನಗನಕವಂದಿನೋಃ" ವಿಶ್ವಂ |

**ಗೋರಸ ಗೋರಸ** (ಪುಂ) 1. ಗೋಕ್ಷೀರ, ಹಸುವಿನ ಹಾಲು. ಗೋಃ ರಸಃ | 2. ಮೊಸರು. 3. ಮಜ್ಜೆಗೆ. ಅನ್ ಪರ್ಯುಷಿತಂ ಭೋಜ್ಯಂ ಸ್ನೇಹಾಕ್ತಂ ಚಿರಸಂಸ್ಥಿತಮ್ | ಅಸ್ನೇಹಾ ಅಪಿ ಗೋಭೂಮಯವಗೋರಸವಿಕ್ರಿಯಾಃ" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೧೬೯ | 4. ಮಾತಿನ ಸವಿ, ಮಾತಿನಲ್ಲಿರುವ ಮಾಧುರ್ಯ. ಗವಿ ರಸಃ | "ಕೋ ರಸೋ ಗೋರಸಂ ವಿನಾ" ತದ್ಭಂ |

**ಗೋರಸಜ ಗೋರಸಜ** (ನಂ) ತಕ್ಕ, ಮಜ್ಜೆಗೆ. ಗೋರಸಾತ್ ದಹ್ನೋ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಙಃ" (೩-೨-೯೮) |

**ಗೋರಾಜ ಗೋರಾಜ** (ಪುಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ವೃಷಭ, ಉತ್ತಮ ವಾದ ಹೋರಿ, ಗೂಳಿ. ಗವಾಂ ರಾಜಾ - "ಢ್" (೪-೪-೯೧) |

**ಗೋರಾಟಿಕಾ ಗೋರಾಟಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಾರಿಕಾಪಕ್ಕಿ. ಗೋರಿವ ರತಿ - ರಟ (ಪರಿಭಾಷಣ) "ಫ್ಲು" (೩-೧-೧೩೩) |

**ಗೋರುತ ಗೋರುತ** (ನಂ) 1. ದನಗಳ ಕೂಗು. 2. ಹಸುವಿನ ಕೂಗು ಕೇಳಿಸುವಷ್ಟು ದೂರ. ಗೋರುತಂ ಶ್ರವಣಗೋಚರತ್ವೇನ ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) |

**ಗೋರೂಪ ಗೋರೂಪ** (ನಂ) 1. ಹಸುವಿನ ಆಕಾರ. ಗೋಃ ರೂಪಮ್ | "ಪಯೋಧರೀಭೂತಚತುಃಸಮುದ್ರಾಂ ಜುಗೋಪ ಗೋರೂಪಧರಾ- ಮಿಬೋವೀಮ್" ರಘುಂ ೨-೩ | (ವಿಂ) 2. ಹಸುವಿನ ಆಕಾರ ವುಳ್ಳ ಮಹಾದೇವ. ಗೋಃ ರೂಪಮಿವ ರೂಪಂ ಯಸ್ಯ |

**ಗೋರೋಚ ಗೋರೋಚ** (ನಂ) ಹರಿದಳ, ಹಳದಿಯ ಬಣ್ಣ ವಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ಖನಿಜ. ಗವಾ ಕಿರಣೇನ ರೋಚತೇ - ರುಚ (ದೀಪ್ತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |

**ಗೋರೋಚನಾ ಗೋರೋಚನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಸುವಿನ ಹಿತ್ತರಸ ದಿಂದ ಉಂಟಾದ ಒಂದು ಗಂಧದ್ರವ್ಯ. ಗೋಮ್ಯೋ ಜಾತಾ ರೋಚನಾ | "ಕರ್ಣಿಪಿತೌ ಲೋಧ್ರಕಷಾಯರೂಕ್ಷೇ ಗೋರೋಚನಾಕ್ಷೇಪ- ನಿತಾಂತಗೌರೇ" ಕುಮಾಂ ೭-೧೭ |



**ಗೋಡೆ ಗೋಡೆ** (ನಂ) ಮಸ್ತಿಷ್ಕ, ಮೆದುಳು, ತಲೆಯೊಳ  
ಗಿರುವ ಸ್ನೇಹ. ಗುಣತೆ—ಗುರಿ (ಉಷ್ಣಮನೆ) “ದನ್”  
(ತಂ ೪-೯೮) ನಿಪಾಂ ।

**ಗೋಲ ಗೋಲ** (ಪುಂ) 1. ಗುಂಡಾಗಿರುವ ವಸ್ತು. ವರ್ತುಲ  
ವಾಗಿರುವ ಚೆಂಡು. 2. ಜಾರಪುರುಷನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ  
ವಿಧವೆಯ ಮಗ. 3. ಗೋಳಾಧ್ಯಾಯವೆಂಬ ಒಂದು  
ಜ್ಯೋತಿಷಗ್ರಂಥ. 4. ಮಂಗಾರಿ ಗಿಡ. 5. ಜ್ಯೋತಿ  
ಷೋಕ್ತವಾದ ಗ್ರಹಗಳ ಯೋಗ. ಅನೇಕ ಗ್ರಹಗಳು  
ಒಂದೇ ಕಡೆ ಸೇರಿದರೆ “ಗೋಲ” ಯೋಗವಾಗುವುದು.  
**ಅರು ಗ್ರಹಗಳು ಒಂದೇ ರಾಶಿಯಲ್ಲಿ ಸೇರಿದರೆ—**  
“ग्रहाणामेकस्मिन् यदि भवति षण्णां निवसतिस्तदा  
गोलो योगः प्रलयपदमिन्द्रोऽपि लभते । भवेल्लोको रक्षः  
परिहरति पुत्रं च जननी नृपाणां नाशः स्यात् ज्वलति  
वसुधा शुष्यति नदी” प्रश्नकौ० । **ಸಪ್ತಗ್ರಹಗಳು**  
**ಸೇರಿದರೆ—**“सप्तग्रहा यदैकस्था गोलयोगस्तदा भवेत् ।  
दुर्भिक्षं राष्ट्रपीडा च तस्मिन् काले नृपक्षयः” ।

**ಗೋಲಕ ಗೋಲಕ** (ಪುಂ) 1. ವಿಧವೆಯಲ್ಲಿ ಜಾರಪುರುಷ  
ನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಗ. 2. ಗುಂಡಾಣ, ಧಾನ್ಯಗಳನ್ನು  
ತುಂಬಿಡುವ ದೊಡ್ಡ ಮಣ್ಣಿನ ಪಾತ್ರೆ. 3. ಗುಡ, ಬೆಲ್ಲ.  
4. “ಗೋಲ” ಪದದ ಅರ್ಥ. “गोलको विधवापुत्रे  
जारात् स्यान्मणिके गुडे” मेदि० । 5. ಚೆಂಡು.  
6. ಗೋಲೋಕ.

**ಗೋಲಕ ಗೋಲಕ** (ನಂ) ಶುಭಾಶುಭಸೂಚನೆಯುಳ್ಳ  
ಗೋವುಗಳ ಲಕ್ಷಣ, ಗೋವುಗಳಲ್ಲಿರುವ ಶುಭದ ಮತ್ತು  
ಅಶುಭದ ಚಿಹ್ನೆ. **ಗೋವುಗಳಲ್ಲಿರುವ ಅಶುಭ**  
**ಲಕ್ಷಣಗಳು:** ಕಣ್ಣುಗಳಲ್ಲಿ ನೀರು ಸೋರುತ್ತಿರುವುದು,  
ಇಲಿಯಂತೆ ಕಿರುಗಣ್ಣುಗಳು, ಶಿಫಿಲವಾಗಿ ಆಡುತ್ತಿರುವ  
ಕೊಂಬುಗಳು, ಕತ್ತೆಯ ಬಣ್ಣ, ನಾಲ್ಕು ಏಳು ಮತ್ತು  
ಹತ್ತು ಹಲ್ಲುಗಳಿರುವುದು, ಜೋಲಾಡುತ್ತ ತಲೆ ಬಗ್ಗಿರು  
ವುದು, ಇಳಿಜಾರಿನ ಬೆನ್ನು, ದಪ್ಪನಾಗಿಯೂ ಮೋಟಾ  
ಗಿಯೂ ಇರುವ ಕತ್ತು, ಕಪ್ಪಗೂ ಅತಿ ಉದ್ದವಾಗಿಯೂ  
ಇರುವ ನಾಲಿಗೆ, ಯವಾಕಾರದ ಬಹಳ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ  
ಸೊಂಟ, ಒಡೆದು ಭಿನ್ನವಾಗಿರುವ ಕಾಲಿನ ಗೊರಸು  
ಇವೆಲ್ಲವೂ ಹಸುವಿನಲ್ಲಿರುವ ಅಶುಭ ಲಕ್ಷಣಗಳು. ಇತ್ಯಾದಿ.  
बृहत्सं ६१ अ० ।

**ಗೋಲ ಗೋಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೋದಾವರೀ ನದಿ. ಗಾಂ ಅತಿ-  
ಪೃಥುಲಾಂ ಪೃಥ್ವೀಂ ಲಾತಿ — ಲಾ (ಆದಾನೆ) “ಕ:” (೩-೨-೩) ।  
2. ಸಖಿ, ಗೆಳತಿ. 3. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 4. ಗುಂಡಾಣ,

ಧಾನ್ಯವನ್ನು ತುಂಬಿಡುವ ದೊಡ್ಡ ಮಣ್ಣಿನ ಪಾತ್ರೆ.  
5. ಮಕ್ಕಳ ಒಂದು ಆಟದ ಸಾಮಾನು, ಚೆಂಡು.  
6. ಮೆಣಶಿಲೆ. 7. ಪತ್ರಾಂಜನ. 8. ರಾಷ್ಟ್ರ. “गोला  
गोदावरीसख्यो: कुनटीदुर्गयो: स्त्रियाम् । पत्राञ्जने  
मण्डले चालिञ्जरे बालखेलने” मेदि० ।

**ಗೋಲಾಙ್ಗಲ ಗೋಲಾಂಗೋಲ** (ಪುಂ) ಹಸುವಿನ ಬಾಲದಂತೆ  
ಬಾಲವುಳ್ಳ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ವಾನರ. ಗೋ: ಲಾಙ್ಗಲಮಿವ  
ಲಾಙ್ಗಲಂ यस्य । ಈ ವಾನರಗಳು ಕಶ್ಯಪನ ಪತ್ನಿ  
ಕ್ರೋಧೆಯ ಮಗಳಾದ ಹರಿಯ ಸಂತತಿಯವು. “नव  
क्रोधवशा नारी: प्रजज्ञे क्रोधसम्भवा: । मृगी च मृगमन्दा  
च हरी भद्रमना अपि । ..... ।  
हर्याश्च हरयोऽपत्यं वानराश्च तरस्विन: । गोलाङ्गलांश्च  
भद्रं ते हर्या: पुत्रान् प्रचक्षते” भा० आदि० ६७ ।

**ಗೋಲಾಧ್ಯಾಯ ಗೋಲಾಧ್ಯಾಯ** (ಪುಂ) ಭಾಸ್ಕರಾಚಾರ್ಯರು  
ರಚಿಸಿದ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ.

**ಗೋಲಾಸ ಗೋಲಾಸ** (ಪುಂ) ನಾಯಿಕೊಡೆ. ಗಾಂ ಭೂಮಿ  
ಲಾಸಯತಿ—ಲಸ (ಶಿಲ್ಪಯೋಗ) + ಣಿಕ್ “ಅಣ್” (೩-೨-೧) ।

**ಗೋಲಿಡ ಗೋಲೀಡ** (ಪುಂ) ಮೊಕ್ಕಮರ.

**ಗೋಲೋಕ ಗೋಲೋಕ** (ಪುಂ) ಗೋಲೋಕ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ  
ನಿತ್ಯವಾಸಸ್ಥಾನ. ಗೋಮಿ: ಕಿರಣಿ: ब्रह्मज्ञानतेजोभि: लोकयते  
—ಲೋಕ (ದರ್ಶನೆ) “ಘಕ್” (೩-೩-೧೯) । ಗೋಲೋಕವು  
ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕಕ್ಕೂ ಮೇಲಿರುವುದು. ಇದು ಅನಾದಿ  
ಯಾದುದು ಮತ್ತು ನಿರಾಧಾರವಾದುದು; ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕಕ್ಕೆ  
ಮೇಲೆ ಐವತ್ತು ಕೋಟಿ ಯೋಜನಗಳ ದೂರದಲ್ಲಿದೆ.  
ಮೇಲುಗಡೆ ಆಧಾರವಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಇದು ರತ್ನಸಾರ  
ನಿರ್ಮಿತವಾದುದು. ಈ ಲೋಕವು ಏಳು ಬಾಗಿಲುಗಳು  
ಮತ್ತು ಏಳು ಕಂದಕಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ  
ಲಕ್ಷ ಪ್ರಾಕಾರಗಳಿರುವವು. ವಿರಜಾನದಿಯು ಇಲ್ಲಿ  
ಹರಿಯುತ್ತಿದೆ. ಒಂದು ನೂರು ಶಿಖರಗಳುಳ್ಳ ರತ್ನಶೈಲ  
ದಿಂದ ಇದು ಆವೃತವಾಗಿದೆ. ಇದರ ಒಂದು ಶಿಖರವು  
ಹತ್ತು ಸಾವಿರ ಯೋಜನಗಳ ಪರಿಮಾಣವುಳ್ಳದ್ದಾಗಿದೆ.  
ಈ ಶೈಲದ ಎತ್ತರ ಒಂದು ನೂರು ಕೋಟಿ ಯೋಜನ  
ಗಳು. ಇದಕ್ಕೆ ನೂರರಷ್ಟು ದೀರ್ಘ (ಉದ್ದ) ವಾಗಿರು  
ವುದು. ವಿಸ್ತೀರ್ಣವು ಹತ್ತು ಸಾವಿರ ಯೋಜನಗಳು.  
ಈ ಗೋಲೋಕದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಸಹಸ್ರ ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷಗಳೂ  
ಒಂದು ನೂರು ಪುಷ್ಪೋದ್ಯಾನಗಳೂ ಇರುವವು. ಮೂರು  
ಕೋಟಿ ರತ್ನಾಭರಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ಲಕ್ಷ  
ಗೋಪಾಂಗನೆಯರು ಇದನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವರು. ರತ್ನ



ದೀಪಗಳಿಂದಲೂ ರತ್ನಖಚಿತ ತಲ್ಪ (ಹಾಸಿಗೆ) ಗಳಿಂದಲೂ ಪರಿಶೋಭಿಸುತ್ತಿರುವುದು. ಗೋಲೋಕದ ಮನೆಗಳ ಸಂಖ್ಯೆಗಳನ್ನೂ ಅವುಗಳ ಸೊಬಗನ್ನೂ ಹೇಳಲೂ ಮತ್ತು ವರ್ಣಿಸಲೂ ಯಾವ ವಿದ್ವಾಂಸನಿಗೂ ಸಾಧ್ಯವಾಗದು.

“ನಿರಾಧಾರಶ್ಚ ವೈಕುಣ್ಠಃ ಬ್ರಹ್ಮಾಣ್ಡಾನಾಂ ಪರೋವರಃ । ತತ್ಪರಶ್ಚಾಪಿ ಗೋಲೋಕಃ ಪಂಚಾಶತ್ಕೋಟಿಯೋಜನಾತ್ । ಋರ್ವೇ ನಿರಾಶ್ರಯಶ್ಚಾಪಿ ರತ್ನಸಾರವಿನಿಮಿತಃ । ಸಪ್ತದ್ವಾರಃ ಸಪ್ತಸಾರಃ ಪರಿಖಾಸಪ್ತ-ಸಂಯುತಃ । ಲಕ್ಷಪ್ರಾಕಾರಯುಕ್ತಶ್ಚ ನದ್ಯಾ ವಿರಜಯಾ ಯುತಃ । ವೇಷ್ಟಿತೋ ರತ್ನಶೀಲೇನ ಶತಶೃಂಗೇಣ ಚಾರುಣಾ । ಯೋಜನಾಯುತಮಾನಂ ಚ ಯಸ್ಯೈಕಂ ಶೃಂಗಮುಜ್ಜ್ವಲಮ್ । ಶತಕೋಟಿಯೋಜನಂ ಚ ಶೈಲ ಉಚ್ಚಿತಃ ಏವ ಚ । ದೈರ್ಘ್ಯಂ ತಸ್ಯ ಶತಗುಣಂ ಪ್ರಸ್ಯೇ ಚ ಲಕ್ಷಯೋಜನಮ್ । ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷಸಹಸ್ರೇಣ ಪುಷ್ಪೋದ್ವಾನಶತೇನ ಚ । ತ್ರಿಕೋಟಿರತ್ನಾಭರಣೈ-ಗೋಪಿಲಕ್ಷೈಶ್ಚ ರಕ್ಷಿತಃ । ರತ್ನಪ್ರದೀಪಯುಕ್ತಶ್ಚ ರತ್ನತಲ್ಪ-ಸಮನ್ವಿತಃ । ಗೋಲೋಕಗೃಹಸಂಖ್ಯಾನಂ ವರ್ಣನಂ ವಾ ವಿಶಾರದಃ । ನ ಕೋಽಪಿ ವೇದ ವಿಧ್ವಾನ್ ವಾ ವೇದವಿಧ್ವಾನ್ ವ್ರಜೇಶ್ವರ ” ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ ।

**ಗೊಲೋಮಿ ಗೋಲೋಮಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಜೆ. ಗೋಲೋಮಿವ ಲೋಮ ದಲಾದಿಕಮಸ್ಯಾ: “ಅಚ್” (೪-೪-೭೫) । ಗೋರಾಂ “ಙೀಘ್” (೪-೧-೪೧) । 2. ಬಿಳಿಗರುಕೆ. ಗೋಲೋಮಸು ಜಾತಾ “ಅಙ್” (೪-೩-೨೫) । “ಙೀಘ್” (೪-೧-೧೫) । 3. ಮೇಡೆ, ಸೂಳೆ. ಗವಾ ವಾಚಾ ಲೋಮಯತಿ — ಲೋಮನ್ (ನಾಮಧಾಂ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ಙೀಘ್” (೪-೧-೪೧) । 4. ಜಟಾಮಾಂಸಿ. ಗೋಲೋಮನಾಮಿಯಮ್ “ಅಙ್” (೪-೩-೧೨೦) । “ಙೀಘ್” (೪-೧-೧೫) । “ಗೋಲೋಮಿ ಶ್ವೇತದ್ವರ್ವಾಸಿ ಸ್ಯಾದ್ವಚಾಭೂತಕೇಶಯೋಃ” ಮೇದಿಂ । “ಗೋಲೋಮಿ ಸ್ತ್ರೀ ವಾರನಾರ್ಯಾಮ್ ಷಡ್ಗ್ರಂಥಾಶ್ವೇತದ್ವರ್ವಯೋಃ” ನಾನಾರ್ಥರಂ ।

**ಗೋವತ್ಸ ಗೋವತ್ಸ** (ಪುಂ) ಹಸುವಿನ ಕರು. ಗೋವತ್ಸಃ ।

**ಗೋವತ್ಸಾದಿನ್ ಗೋವತ್ಸಾದಿನ್** (ಪುಂ) ವೃಕ, ತೋಳ. ಗೋವತ್ಸಮತ್ತಿ — ಅದ (ಭಕ್ಷಣ) “ಗಿಣಿತಿಃ” (೩-೨-೭೮) ।

**ಗೋವಧ ಗೋವಧ** (ಪುಂ) ಗೋಹತ್ಯೆ, ದನಗಳ ಕೊಲೆ.

**ಗೋವಂದನಿ ಗೋವಂದನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಿಯಂಗುವೃಕ್ಷ, ಪುಂಕಣಗಿಡ. ಗವಿ ಭೂಮಿ ವಂದ್ಯತೇ — ವದಿ (ಅಭಿವಾದನ-ಸ್ತುತಿಯೋಃ) ಕರ್ಮಂ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೩) । “ಙೀಘ್” (೪-೧-೧೫) ।

**ಗೋವರ ಗೋವರ** (ನಂ) ದನದ ಕೊಟ್ಟಿಗೆಯೊಳಗೆ ದನಗಳ ಕಾಲಿನಿಂದ ತುಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟು ಒಣಗಿದ ಸಗಣೆಯ ಪುಡಿ. “ಗೋಷ್ಠಾಂತಗೋಳುರಕ್ಷುಣ್ಣಶುಷ್ಕಚೂಣಿತಗೋಮಯಮ್ । ಗೋವರಂ ತತ್ಸಮಾ-ಖ್ಯಾತಂ ವರಿಷ್ಠಂ ರಸಸಾಧನೇ ” ಭಾವಪ್ರಂ ।

**ಗೋವರ್ಧನ ಗೋವರ್ಧನ** (ಪುಂ) 1. ಬೃಂದಾವನದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಪರ್ವತ, ಗೋವರ್ಧನಗಿರಿ. ಗೋ+ವೃಧ್ (ವೃದ್ಧಿ) + ಗಿಣಿ “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪) । ಗೋಲ್ಲರಲ್ಲರೂ ಇಂದ್ರ ಪೂಜೆಯನ್ನು ಮಾಡಲು ಯತ್ನಿಸಿದಾಗ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಅದನ್ನು ತಡೆದು ಗೋವರ್ಧನಗಿರಿಪೂಜೆಯನ್ನು ಮಾಡುವಂತೆ ಹೇಳಿದನು. ಗೋವರ್ಧನ ಪೂಜೆಗೂ ಅಣಿಮಾಡಿ ಕೊಂಡರು. ಆಗ ಅದರಿಂದ ಕುಪಿತನಾದ ಇಂದ್ರನು ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಕೊಚ್ಚಿಕೊಂಡುಹೋಗುವಂತೆ ಮಳೆಯನ್ನು ಸುರಿಸಿದನು. ಗೋಪಾಲಕರೆಲ್ಲರೂ ಪೇಚಾಡುತ್ತಿರಲು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಗೋವರ್ಧನಗಿರಿಯನ್ನು ಏಳು ದಿನಗಳಕಾಲ ತನ್ನ ಕರುಬೆರಳಿನಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿಹಿಡಿದು ಅದರ ಕೆಳಗೆ ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಮಳೆಯಿಂದ ರಕ್ಷಿಸಿ ಇಂದ್ರನ ಗರ್ವಭಂಗ ಮಾಡಿದನು. “ರಜಸಾ ಚೋದಿತಾ ಮೇಘಾ ವರ್ಷಂತ್ಯಮ್ಬುನಿ ಸರ್ವತಃ । ಪ್ರಜಾಸ್ತೇವ ಸಿದ್ಧಯಂತಿ ಮಹೇಂದ್ರಃ ಕಿಂ ಕರಿಷ್ಯತಿ । ನ ನಃಪುರೋ ಜನಪದಾ ನ ಗ್ರಾಮಾ ನ ಗೃಹಾ ವಯಮ್ । ನಿದ್ರಾಂ ವನೋಕಸಸ್ತಾತ ವನಶೈಲನಿವಾಸಿನಃ । ತಸ್ಮಾದ್ಗವಾಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾನಾ-ಮದ್ರೇಶ್ವಾರಭ್ಯತಾಂ ಮಖಃ । ಯ ಇಂದ್ರಯಾಗಸಂಭಾರಾಸ್ತೇರಯಂ ಸಾಧ್ಯತಾಂ ಮಖಃ । ಏತನ್ಮಮ ಮತಂ ತಾತ ಕ್ರಿಯತಾಂ ಯದಿ ರೋಚತೇ । ಅಯಂ ಗೋಬ್ರಾಹ್ಮಣಾದ್ರೀಣಾಂ ಮಹ್ಯಂ ಚ ದಯಿತೋ ಮಖಃ । ಕಾಲಾತ್ಮನಾ ಭಗವತಾ ಶಕ್ರದರ್ಪಂ ಜಿಘಾಂಸತಾ । ಪ್ರೋಕ್ತಂ ನಿಶಮ್ಯ ನಂದಾಘಾಃ ಸಾಧವಗೃಹ್ಣಂತ ತದ್ವಚಃ । ..... । ಇಂದ್ರಸ್ತದಾತ್ಮನಃ ಪೂಜಾಂ ವಿಜ್ಞಾಯ ವಿಹತಾಂ ನೃಪ । ಗೋಪೇಭ್ಯಃ ಕೃಷ್ಣನಾಥೇಭ್ಯೋ ನಂದಾದಿಭ್ಯಃಕುಪೋಪ ಸಃ । ಗಣಂ ಸಾಂವರ್ತಕಂ ನಾಮ ಮೇಧಾನಾಂ ಚಾಂತಕಾರಿಣಾಮ್ । ಇಂದ್ರಃ ಪ್ರಾಚೋದಯತ್ ಕ್ರುದ್ಧೋ ವಾಕ್ಯಂ ಚಾಹೇಶಮನ್ಯುತ । ..... । ಇತ್ಯಂ ಮಧವತಾಶಪ್ತಾ ಮೇಘಾ ನಿರ್ಮುಕ್ತಬಂಧನಾಃ । ನಂದಗೋಕುಲಮಾಸಾರೈಃ ಪಿಡಯಾಮಾಸು-ರೋಜಸಾ । ಅತ್ಯಾಸಾರಾತಿವಾತೇನ ಪಶವೋ ಜಾತವೇಪನಾಃ । ಗೋಪಾ ಗೋಪ್ಯಶ್ಚ ಶೀತಾರ್ತಾಃ ಗೋವಿಂದಂ ಶರಣಂ ಯಯುಃ । ಕೃಷ್ಣ ಕೃಷ್ಣ ಮಹಾಭಾಗ ತ್ವನ್ನಾಥಂ ಗೋಕುಲಂ ಪ್ರಭೋ । ತ್ರಾತುಮರ್ಹಸಿ ದೇವಾಃ ಕುಪಿತಾತ್ ಭಕ್ತವತ್ಸಲ । ಶಿಲಾವರ್ಷನಿಪಾತೇನ ಹನ್ಯಮಾನಮಚೇ-ತನಮ್ । ನಿರೀಕ್ಷ್ಯ ಭಗವಾನ್ ಮೇನೇ ಕುಪಿತೇಂದ್ರಕೃತಂ ಹರಿಃ । ..... । ತಸ್ಮಾನ್ಮಚ್ಛರಣಂ ಗೋಷ್ಠಂ ಮನ್ನಾಥಂ ಮತ್ಪರಿಗ್ರಹಮ್ । ಗೋಪಾಯೇ ಸ್ವಾತ್ಮಯೋಗೇನ ಸೌಜ್ಯಂ ಮೇ ವ್ರತ ಆಹಿತಃ । ಇತ್ಯುಕ್ತ್ವೈಕೇನ ಹಸ್ತೇನ ಕೃತ್ವಾ ಗೋವರ್ಧನಾಚಲಮ್ । ದಧಾರ ಲೀಲಯಾ ಕೃಷ್ಣಶ್ಚಕ್ರಾಕಮಿವ ಬಾಲಕಃ । ಅಥಾಹ ಭಗವಾನ್ ಗೋಪಾನ್ ಹೇಮ್ಬ ತಾತ ವ್ರಜೈಕಸಃ । ಯಥೋಪಜೌಷಂ ವಿಶತ ಗಿರಿಗರ್ತಂ ಸಗೋಧನಾಃ । ತಥಾ ನಿರ್ವಿವಿಶುರ್ಗತಂ ಕೃಷ್ಣಾಶ್ವಾಸಿತಮಾನಸಾಃ । ಕ್ಷುತೃಡ್ವಯಥಾಂ ಸುಖಾಪೇಕ್ಷಾಂ ಹಿತ್ವಾ ತೈವ್ರಜವಾಸಿಭಿಃ । ವೀಕ್ಷ್ಯಮಾಣೋ ದಧಾರ್ವದ್ರಿ ಸಪ್ತಾಹಂ ನಾಚಲತ್



ಪದಾತ್" भाग० १०-२४, २५। (न०) 2. ಪಶುಪಾಲನೆ  
ಯಿಂದ ಗೋವುಗಳನ್ನು ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವುದು. ಗವಾ  
ವರ್ಧನम्।

**ಗೋವರ್ಧನಧರ ಗೋವರ್ಧನಧರ** (ಪುಂ) ಗೋವರ್ಧನಗಿರಿ  
ಯನ್ನು ಕಿರುಬೆರಳಿನಿಂದ ಎತ್ತಿ ನಿಂತಿದ್ದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ-  
ಧರತಿ - ಧೃ (ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (३-१-१३४)।  
ಗೋವರ್ಧನಸ್ಯ ಧರಃ। ["ಗೋವರ್ಧನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]  
ಗೋವರ್ಧನಂ ಧಾರಯತಿ - ಧೃ (ಧಾರಣೆ) + ಣಿच् "ಣಿನಿಃ"  
(३-१-१३४)। -**ಚಾರಿನ್ - ಧಾರಿನ್**।

**ಗೋವಶಾ ಗೋವಶಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಂಜೆಯಾದ ಹಸು. ವಶಾ  
ವನ್ಯಾ ಚಾಸೌ ಗೌಶ್ಚ। ಪೂರ್ವನಿಪಾತಃ (२-१-६५)।

**ಗೋವಾಟ ಗೋವಾಟಿ** (ನಂ) ಗೋಷ್ಠಿ, ದನಗಳ ಕೊಟ್ಟಿಗೆ.  
ಗವಾಂ ವಾಟಮ್। "ಸಾರ್ಗಲದ್ವಾರಗೋವಾಟಂ ಮಧ್ಯೆ ಗೋಸ್ಥಾನಸಡ್ಕುಲಮ್"  
हरिवं०।

**ಗೋವಾಸ ಗೋವಾಸ** (ಪುಂ) ಗೋಷ್ಠಿ, ದನಗಳ ಕೊಟ್ಟಿಗೆ.  
वसन्त्यत्र-वस (निवासे) अधि० "घञ्" (३-३-१२१)।  
ಗವಾಂ ವಾಸಃ।

**ಗೋವಾಸನ ಗೋವಾಸನ** (ಪುಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಗಾಃ ವಾಸಯತಿ-  
वस (निवासे) + णिच् "ल्युः" (३-१-१३४)।  
"ಗೋವಾಸನಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಶ್ಚ ದಾಸನೀಯಾಶ್ಚ ಸರ್ವತಃ। ಪ್ರೀತ್ಯರ್ಥ  
ತೇ ಮಹಾರಾಜ ಧರ್ಮರಾಜೋ ಮಹಾತ್ಮನಃ" भा० सभा०।

**ಗೋವಿಕರ್ತ ಗೋವಿಕರ್ತ** (ಪುಂ) 1. ಹಸುವನ್ನು ಕೊಲ್ಲು  
ವವನು. ಗಾಂ ವಿಕೃಂತತಿ - वि + कृती (छेदने) "अण्"  
(३-२-१)। 2. ರೈತ, ಬೇಸಾಯಗಾರ.

**ಗೋವಿಕರ್ತು ಗೋವಿಕರ್ತು** (ಪುಂ) ಹಸುವನ್ನು ಕೊಲ್ಲು  
ವವನು. ಗಾಂ ವಿಕೃಂತತಿ - वि + कृती (छेदने) "तृच्"  
(३-१-१३३)।

**ಗೋವಿದಾಪತಿ ಗೋವಿದಾಪತಿ** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಗಾಃ  
वेदवाचः विन्दति-विद (ज्ञाने) "क्विप्" (३-२-६१)।  
ಗೋವಿದೋ ಜ್ಞಾನಿನಃ, ತेषಾಂ ಪತಿಃ ಜ್ಞಾನಯಶಾರಾಧ್ಯತಯಾ ಪಾತಾ।  
"ಗಾವೋ ವೇದಗಿರಃ ಪ್ರೋಕ್ತಾಃ ಗೋವಿದಸ್ತತ್ಸುಪಾಲನಾತ್। ಗೋವಿದಾಂ  
ಪತಿಃಪ್ರೀಷ್ಠಃ ವೇದವಿದ್ವತ್ಪ್ರದೋ ಮನುಃ" इति निरुक्तिः। "अनि-  
रुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदांपतिः" वि० सं०।

**ಗೋವಿನ್ದ ಗೋವಿನ್ದ** (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ, ವಿಷ್ಣು. ಗಾಃ  
उपनिषद्वाचः विन्दति, गां भुवं धेनुं स्वर्गं वेदं वा  
विन्दति - विद् (लाभे) "क्वः" (वा० ३-१-१३८)।  
ಗಾಃ ಸ್ತುತಿಗಿರಃ ವಿಂದತಿ ವಾ। "ಗವಾಂ ಸ್ತುತಿಗಿರಾಂ ವಿಂದೋ  
ಗೋವಿನ್ದಃ ಸ ಉದಾಹೃತಃ" इति निरुक्तिः। "अनिरुद्धः

सुरानन्दो गोविन्दो गोविदांपतिः" वि० सं०।  
ಗೋವರ್ಧನಗಿರಿಪೂಜೆಯಿಂದ ಗರ್ವಧಂಗಹೊಂದಿದ  
ಇಂದ್ರನು ಸುರಭಿಯೊಡನೆ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದು ತಾನು  
ಮಾಡಿದ ಅಪರಾಧಕ್ಕಾಗಿ ಕ್ಷಮೆಯನ್ನು ಬೇಡಿ ದೇವರ್ಷಿ  
ಗಳೊಡನೆ ಕೂಡಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನನ್ನು "ಗೋವಿನ್ದ"  
ನೆಂದು ಕರೆದು ಗೋವಿನ್ದಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ ಮಾಡಿದನು.  
"ಗೋವರ್ಧನೇ ಧೃತೇ ಶೈಲ ಆಸಾರಾದ್ ರಕ್ಷಿತೇ ವ್ರಜೇ। ಗೋಲೋಕಾ-  
ದಾವ್ರಜತ್ ಕೃಷ್ಣಂ ಸುರಭಿಃ ಶಕ್ರ ಏವ ಚ। ವಿವಿಕ್ತ ಉಪಸಂಗಮ್ಯ  
ವ್ರೀಡಿತಃ ಕೃತಹೇಲನಃ। ಪಸ್ಪಶ್ಯ ಪಾದಯೋರೇನ ಕಿರೋಟೇನಾರ್ಕವರ್ವಸಾ।  
ದೃಷ್ಟಶ್ರುತಾನುಭಾವೋಽಸ್ಯ ಕೃಷ್ಣಸ್ಯಾಮಿತತೇಜಸಃ। ನಷ್ಟತ್ರಿಲೋಕೇಶ-  
ಮದಃ ಇನ್ದ್ರ ಆಹ ಕೃತಾಽಜಲಿಃ। ಯೇ ಮದ್ವಿಧಾಜ್ಞಾ ಜಗದೀಶ-  
ಮಾನಿನಃ ತ್ವಾಂ ವೀಕ್ಷ್ಯ ಕಾಲೇಽಭಯಮಾಶು ತನ್ಮದಮ್। ಹಿತವಾಽಪ್ಯಮಾರ್ಗ  
ಪ್ರಭಜಂತ್ಯಪಸ್ಮಯಾ ಇಹಾ ಖಲಾನಾಮಪಿ ತೇಽನುಶಾಸನಮ್। ಸ ತ್ವಂ  
ಮಮೇಶ್ವಯಮದಪ್ಲುತಸ್ಯ ಕೃತಾಗಸಸ್ತೇಽವಿದುಷಃ ಪ್ರಭಾವಮ್। ಕ್ಷಂತು  
ಪ್ರಭೋಽಪ್ಯಾಹಂಸಿ ಮೂಢಚೇತಸೋ ಮೇವಂ ಪುನರ್ಭೂನ್ಮತಿರೀಶ ಮೇಽಸತೀ।  
ಸುರಭಿಃ-ಕೃಷ್ಣ ಕೃಷ್ಣ ಮಹಾಯೋಗಿನ್ ವಿಶ್ವಾತ್ಮನ್ ವಿಶ್ವಸಂಭವ।  
ಭವತಾ ಲೋಕನಾಥೇನ ಸನಾಥಾ ವಯಮಚ್ಯುತ। ತ್ವಂ ನಃ ಪರಮಕಂ  
ದೈವಂ ತ್ವಂ ನ ಇನ್ದ್ರೋ ಜಗತ್ಪತೇ। ಇನ್ದ್ರಂ ನಸ್ತ್ವಾಭಿಷೇಕ್ಷ್ಯಾಮೋ  
ಬ್ರಹ್ಮಣಾ ನೋದಿತಾ ವಯಮ್। ಅವತೀರ್ಣೋಽಸಿ ವಿಶ್ವಾತ್ಮನ್ ಭೂಮೇ-  
ಭಾರಾಪನುತ್ತಯೇ। ಏವಂ ಕೃಷ್ಣಮುಪಾಮನ್ಯ ಸುರಭಿಃ ಪಯಸಾತ್ಮನಃ।  
ಜಲೈರಾಕಾಶಗಂಧಾಽಯಾ ಏರಾವತಕರೋದೃತಃ। ಇನ್ದ್ರಃ ಸುರಾರ್ಷಿಭಿಃ  
ಸಾಕಂ ಗೋದಿತೋ ದೇವಮಾತೃಭಿಃ। ಅಮೃಷಿಶ್ಚ ತ ದಾಶಾಹಂ ಗೋವಿನ್ದ  
इति चाम्यघात्। इति गोगोकुलपति गोविन्दमभिषिच्य  
सः। अनुज्ञातो ययौ शक्रो वृतो देवादिभिर्दिवम्" भाग०  
१०-२७। 2. ಗೊಲ್ಲರ ಯಜಮಾನ. 3. ಬೃಹಸ್ಪತಿ,  
ಗುರು. "ಗೋವಿನ್ದೋ ವಾಸುದೇವೇ ಸ್ಯಾದ್ಗವಾಧ್ಯಕ್ಷೋ ಬೃಹಸ್ಪತೀ"  
मेदि०। 4. ಫಾಲ್ಗುನ ಮಾಸ, ನಾಲ್ಕನೆಯ ತಿಂಗಳು.  
ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷ ಮೊದಲುಗೊಂಡು ವರ್ಷಾರಂಭವಾಗು  
ವುದರಿಂದ ಫಾಲ್ಗುನ ಮಾಸವು ನಾಲ್ಕನೆಯದಾಯಿತು.  
ಕೇಶವಾದಿ ದ್ವಾದಶ (ಹನ್ನೆರಡು) ನಾಮಗಳೂ ಹನ್ನೆರಡು  
ತಿಂಗಳುಗಳ ಹೆಸರುಗಳು. "ಮೃಗಶಿರ್ಷಾಃ ಕೇಶವನಾರಾಯಣ-  
ಮಾಧವಾಃ ಸಗೋವಿನ್ದಾಃ। ವಿಷ್ಣುಮಧುಸೂದನಾಖ್ಯೌ ತ್ರಿವಿಕ್ರಮೋ  
ವಾಮನಶ್ಚೇವ। ಶ್ರೀಧರನಾಮಾ ತಸ್ಮಾತ್ ಸಹಸ್ರಲೋಕೇಶ್ಚ ಪಶ್ಯ-  
ನಾಭಶ್ಚ। ದಾಮೋದರ ಇತ್ಯೇತೇ ಮಾಸಾಃ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಯಥಾಸಂಖ್ಯಮ್"  
बृहत्सं०।

**ಗೋವಿನ್ದದ್ವಾದಶಿ ಗೋವಿನ್ದದ್ವಾದಶೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಫಾಲ್ಗುನ  
ಮಾಸದ ಶುಕ್ಲ ದ್ವಾದಶೀ. ಗೋವಿನ್ದಪ್ರಿಯಾ ದ್ವಾದಶಿ।

**ಗೋವಿಷ್ ಗೋವಿಷ್** (ನಂ) ಗೋಮಯ, ದನದ ಸಗಣೆ.  
गोः विट्।



ಗೋವಿಷಾಣ ಗೋವಿಷಾಣ (ನಂ) ದನದ ಕೊಂಬು. ಗೋವಿಷಾಣಮ್ |

ಗೋವಿಷಾಣಿಕ ಗೋವಿಷಾಣಿಕ (ಪುಂ) ಹಸುವಿನ ಕೊಂಬಿನಿಂದ ಮಾಡಿದ ವಾದ್ಯ. ಕಹಳೆ. ಗೋವಿಷಾಣ ಸಾಧನತಯಾ-ಸ್ತಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೪) |

ಗೋವಿಷಾ ಗೋವಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋಮಯ, ಹಸುವಿನ ಸಗಣೆ. ಗೋವಿಷಾ |

ಗೋವೃಂದ ಗೋವೃಂದ (ನಂ) ಗೋವುಗಳ ಸಮೂಹ. ಗವಾಂ ವೃಂದಮ್ |

ಗೋವೃಂದಾರಕ ಗೋವೃಂದಾರಕ (ಪುಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಗೋವು. ಉತ್ತಮವಾದ ಹಸು. ಗೋವೃಂದಾರಕ ಇವ |

ಗೋವೃಷ ಗೋವೃಷ (ಪುಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ವೃಷಭ, ಉತ್ತಮವಾದ ಹೋರಿ. ಗವಿ ವರ್ಷತಿ ರೇತಃ - ವೃಷು (ಸೇವನೆ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೪) |

ಗೋವೃಷಜ ಗೋವೃಷಜ (ಪುಂ) ಮಹಾದೇವ. ಪರಮೇಶ್ವರ. |

ಗೋವ್ಯಾಘ್ರ ಗೋವ್ಯಾಘ್ರ (ನಂ) ಹಸು ಮತ್ತು ಹುಲಿ. ಗೌಷ್ಠ ವ್ಯಾಘ್ರ ಅನಯೋಃ ಸಮಾಹಾರಃ | ಏಕವಕ್ಷಾವಃ (೨-೪-೯) |

ಗೋವ್ರಜ ಗೋವ್ರಜ (ಪುಂ) 1. ಗೋವುಗಳ ಸಮೂಹ. ಹಸುಗಳ ಗುಂಪು. ಗವಾಂ ವ್ರಜಃ | 2. ಗೋವುಗಳು ಸಂಚರಿಸುವ ಪ್ರದೇಶ. ಗಾವೋ ವ್ರಜಂತ್ಯತ್ರ - ವ್ರಜ (ಗತೌ) "ಘಃ" (೩-೩-೧೧೯) ನಿಪಾಂ | 3. ದೊಡ್ಡಿ, ಕರುಹಟ್ಟಿ, ದನಗಳ ಕೊಟ್ಟಿಗೆ. |

ಗೋವ್ರತ ಗೋವ್ರತ (ನಂ) 1. ಗೋಹತ್ಯೆ ಮಾಡಿದವನು ಗೋವುಗಳ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಒಂದು ವ್ರತ. ಗೋಹತ್ಯಾನಿಮಿತ್ತಂ ಗೋವು ವ್ರತಮ್ | 2. ಗೋವುಗಳ ಸೇವಾರೂಪವಾದ ವ್ರತ. |

ಗೋಶಕೃತ್ ಗೋಶಕೃತ್ (ನಂ) ಗೋಮಯ. ಹಸುವಿನ ಸಗಣೆ. ಗೋಃ ಶಕೃತ್ |

ಗೋಶಾಲ(ಲಾ) ಗೋಶಾಲ(ಲಾ) (ಸ್ತ್ರೀನಂ) 1. ಗೋಶಾಲೆ, ದನದ ಕೊಟ್ಟಿಗೆ. ಗವಾಂ ಶಾಲಾ, ವಾ ನಪುಂಸಕತ್ವಮ್ (೨-೪-೨೪) | (ವಿಂ) 2. ಗೋಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಗೋಶಾಲೆ ಜಾತಃ "ಅನ್" (೪-೩-೨೪) | ಅಣೋ ಲುಕ್ (೪-೩-೩೪) |

ಗೋಶೀರ್ಷ ಗೋಶೀರ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಮುಷಭ ಪರ್ವತ. ಗೋಃ ಶೀರ್ಷಮಿವ ಶೀರ್ಷಂ ಯಸ್ಯ | 2. ಚಂದನ ವೃಕ್ಷ, ಗಂಧದ ಮರ. 3. ಹಸುವಿನ ತಲೆಯ ಅಕಾರದ ಬಾಣ. (ನಂ) 4. ಹಸುವಿನ ತಲೆ. ಗೋಃ ಶೀರ್ಷಮ್ |

ಗೋಶೃಂಗ ಗೋಶೃಂಗ(ಪುಂ) 1. ಬಬ್ಬು ಮುಷಿ. ಗೋಃ ಶೃಂಗಮಿವ ಶೃಂಗಮಸ್ಯ | (ನಂ) 2. ಹಸುವಿನ ಕೊಂಬು. ಗೋಃ ಶೃಂಗಮ್ |

ಗೋಠ ಗೋಠ (ನಂ) 1. ಗೋವುಗಳ ಸ್ಥಾನ, ದನಗಳ ಕೊಟ್ಟಿಗೆ, ಕರುಹಟ್ಟಿ. ಗಾವಸ್ತಿಠಂತ್ಯತ್ರ-ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಕಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೪೮) | "ಗೋಠೇಷು ಗೋಠೀಕೃತ-ಮಂಡಲಾಸನಾನ್ ಸನಾದಮುತ್ಯಾಯ ಮುಹುಃ ಸವಲಾತಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೩೮ | 2. ಸಭೆ. |

ಗೋಠಪತಿ ಗೋಠಪತಿ (ಪುಂ) ದನಗಳ ಕೊಟ್ಟಿಗೆಯ ಯಜಮಾನ. ಗೋಠಸ್ಯ ಪತಿಃ |

ಗೋಠಶ್ವ ಗೋಠಶ್ವ (ಪುಂ) 1. ದನದ ಕೊಟ್ಟಿಗೆಯಲ್ಲಿರುವ ನಾಯಿ. ಗೋಠೇ ಶ್ವಾ | ನಿಪಾಂ (೪-೪-೭೭) | 2. ಮನೆ ಯಲ್ಲೇ ಕುಳಿತು ನಾಯಿಯಂತೆ ಪಕ್ಕದ ಮನೆಯವರನ್ನು ಹಿಂಸಿಸುತ್ತ ದ್ವೇಷಿಸುವವನು. "ಸ್ವಸ್ಥಾನಸ್ಥಃ ಪರಾನ್ ದ್ರೇಷ್ಠಿ ಯಃ ಸ ಗೋಠಶ್ವ ಉಚ್ಯತೇ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಗೋಠಾಗಾರ ಗೋಠಾಗಾರ (ನಂ) 1. ದನದ ಕೊಟ್ಟಿಗೆ ಯೊಳಗಿನ ಮನೆ. 2. ಸಭಾಭವನ, ಬಹಳ ಜನರು ಕೂಡುವ ವಿಶಾಲವಾದ ಮನೆ. ಗೋಠಸ್ಯ ಸಭಾಭವನಮ್ |

ಗೋಠಾಧ್ಯಕ್ಷ ಗೋಠಾಧ್ಯಕ್ಷ (ಪುಂ) ದನಗಳ ಕೊಟ್ಟಿಗೆಯ ಯಜಮಾನ, ದನಕಾಯುವವರ ಯಜಮಾನ. ಗೋಠಸ್ಯಾ-ಧ್ಯಕ್ಷಃ |

ಗೋಠಾಢಮಿ ಗೋಠಾಢಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಗೋಠಾಢಮಿ" ಪದದ ಅರ್ಥ. |

ಗೋಠಿ ಗೋಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಭೆ. ಗಾವೋ ವಾಚಃ ತಿಠಂತ್ಯತ್ರ-ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಕಿಃ" ಬಾಹುಂ |

ಗೋಠಿ ಗೋಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಭೆ. ಗಾವೋಜೇಕವಾಚ-ಸ್ತಿಠಂತ್ಯತ್ರ-ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಕಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೪೮) | 2. ಪರಸ್ಪರ ಮಾತುಕತೆ ನಡೆಯುವುದು, ಪರಸ್ಪರ ಮಾತನಾಡುವುದು, ಸಂಭಾಷಣೆ. "ಆಲಸ್ಯಂ ಮದಮೋಹಿ ಚ ಚಾಪಲಂ ಗೋಠಿರೇವ ಚ | ಸ್ತಬ್ಧತಾ ಚಾಭಿಮಾನಿತ್ವಂ ತಥಾ-ತ್ಯಾಗಿತವೇವ ಚ | ತ ಏತೇ ಸಪ್ತ ದೋಷಾಃ ಸ್ಯುಃ ಸದಾ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿನಾಂ ಮತಾಃ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೪೦-೪, ೪ | "ಗೋಠೇಷು ಗೋಠೀಕೃತಮಂಡಲಾಸನಾನ್ ಸನಾದಮುತ್ಯಾಯ ಮುಹುಃ ಸ ವಲಾತಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೩೮ | 3. ವಿಕಾಂಕವುಳ್ಳ ಒಂದು ಉಪರೂಪಕ. ಒಂಬತ್ತು ಅಥವಾ ಹತ್ತು ಪ್ರಾಕೃತ ಪುರುಷ ಪಾತ್ರಗಳೂ ಐದು ಅಥವಾ ಆರು ಸ್ತ್ರೀ ಪಾತ್ರಗಳೂ ಉಳ್ಳ ಗ್ರಾಮ್ಯ ವ್ಯವಹಾರಗಳಿಂದಲೂ ಕಾವ್ಯ ಮತ್ತು ಶೃಂಗಾರ ವಿಷಯಗಳಿಂದಲೂ ಕೂಡಿ ಗರ್ಭ ಮತ್ತು ವಿಮರ್ಶ ಸಂಧಿಗಳಿಲ್ಲದ ಉಪರೂಪಕ್ಕೆ "ಗೋಠಿ" ಎಂದು ಹೆಸರು. "ಪ್ರಾಕೃತೇನೈವಮಿ



ಪುಮಿರ್ದಶಭಿರ್ವಾಪ್ಯಲಂಕಿತಾ । ನೋದಾತ್ತವಚಸಾ ಗೊಣಿ ಕೆಶಿಕೀ-  
ವೃತ್ತಿಶಾಲಿನಿ । ಹೀನಾ ಗರ್ಭವಿಮರ್ಶಾಭ್ಯಾಂ ಪಂಚಷಡ್‌ಠೋಪಿ-  
ದನ್ವಿತಾ । ಕಾಮಶೃಂಗಾರಸಂಯುಕ್ತಾ ಸ್ಯಾದೇಕಾಕ್ಷವಿನಿರ್ಮಿತಾ ”  
ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೭೪, ೭೫ । 4. ಪೋಷ್ಯವರ್ಗ, ಕುಟುಂಬಕ್ಕೆ  
ಸೇರಿದವರು. “ವಿಷಂ ಗೊಣಿ ದರಿದ್ರಸ್ಯ ವೃದ್ಧಸ್ಯ ತರುಣಿ  
ವಿಷಮ್ ” । 5. ಸಮೂಹ. ಗುಂಪು.

**ಗೊಣಿಪತಿ ಗೋಷ್ಠೀಶಃ** (ಪುಂ) 1. ಸಭೆಯ ಅಧ್ಯಕ್ಷ.  
2. ಒಂದು ಕುಟುಂಬದ ಯಜಮಾನ. ಗೊಣಿಪತಿ: ಪತಿ: ।

**ಗೊಣಿಶಯ ಗೋಷ್ಠೀಶಯ** (ಪುಂ) ಗೋವೃತ್ತಕ್ಕಾಗಿ ದನಗಳ  
ಕೊಟ್ಟಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಮಲಗುವವನು. ಗೊಣಿ ಶೇತೆ - ಶೀಙ್  
(ಸ್ವಪ್ನೆ) “ಅಚ್” (೩-೨-೧೫) । ಅಲುಕ್ (೬-೩-೧೮) ।  
“ಪಂಚಗವ್ಯಂ ಪಿಬೇತ್ ಗೋಚ್ಛೋ ಮಾಸಮಾಸೀತ ಸಂಯತ: । ಗೊಣಿಶಯೋ  
ಗೋಜ್ಞುಗಾಮಿ ಗೋಪ್ರದಾನೇನ ಶುಘೃತಿ ” ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೨೬೩ ।

**ಗೊಣಪದ ಗೋಷ್ಠ್ಯದ** (ನಂ) 1. ಹಸುವು ಕಾಲೂರಿದ ಗುಳಿ,  
ಹಸುವಿನ ಹೆಜ್ಜೆಯ ಗುಳಿ. ಗೋ: ಪದಮ್ । 2. ಹಸುವಿನ  
ಹೆಜ್ಜೆಯ ಅಳತೆ, ಹಸುವು ಹೆಜ್ಜೆಯೂರಿದಷ್ಟು ಜಾಗದ  
ಅಳತೆ. “ಧರ್ಮಸ್ಯ ವಾಸಾ: ಪ್ರಥಿತಾ: ಪೃಥಿವ್ಯಾಂ ಸರಿತ್ಯತೌ  
ಗೊಣಪದಬ್ದವಂತಿ ” ಯಾದಂ ೧೮-೧೧೮ । 3. ಹಸುವು  
ಸಂಚರಿಸಿದ ಪ್ರದೇಶ. ಗೋ: ಪದ್ಯತೇಽಸ್ಮಿನ್ ದೇಶೇ ಸ ಗವಾ  
ಸೇವಿತೋ ದೇಶ: ಸುತ್ ಸಸ್ಯ ಷತ್ವಂ ಚ । ನಿಪಾಂ । 4. ಪ್ರಭಾಸ  
ಕ್ಷೇತ್ರದ ಒಂದು ತೀರ್ಥ.

**ಗೊಸಂಖ್ಯ ಗೋಸಂಖ್ಯ** (ಪುಂ) ಗೋಪಾಲಕ, ಗೊಲ್ಲ, ದನಕಾಯು  
ವವನು. ಗಾವ: ಸಂಖ್ಯೆ - ಸಮ್ + ಚಕ್ಷಿಙ್ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ)  
ಚಕ್ಷಿಙ್: “ಲ್ಯಾಜ್” (೨-೪-೫೪) । “ಕ:” (೩-೨-೨೭) ।

**ಗೊಸತ್ರ ಗೋಸತ್ರ** (ಪುಂ) ಗವಾಮಯನವೆಂಬ ಒಂದು ಯಾಗ.

**ಗೊಸದೃಶ ಗೋಸದೃಶ** (ಪುಂ) 1. ಹಸುವಿನಂತಿರುವ ಗವಯ  
ವೆಂಬ ಒಂದು ಪ್ರಾಣಿ. ಗೋ: ಸದೃಶ: । (ವಿಂ) 2. ಹಸುವಿಗೆ  
ಸಮಾನವಾದ.

**ಗೊಸಪ್ರದಾಯ ಗೋಸಂಪ್ರದಾಯ** (ಪುಂ) ಗೋವನ್ನು ದಾನ  
ಮಾಡುವವನು. ಗಾಂ ಸಂಪ್ರದದಾತಿ - ಸಮ್ + ಪ್ರ + ಡು ದಾತ್  
(ದಾನೇ) “ಅಙ್” (೩-೨-೧) । ಉಪಸರ್ಗಪೂರ್ವಕತ್ವಾತ್ ನ ಕ: ।

**ಗೊಸಂಭವ ಗೋಸಂಭವ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಿಳಿಯ ಗರುಕ.  
(ವಿಂ) 2. ಗೋವಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ.

**ಗೊಸರ್ಗ ಗೋಸರ್ಗ** (ಪುಂ) 1. ಹಸುವನ್ನು ಬಿಡುವುದು,  
ಹಸುವನ್ನು ಮೇವಿಗಾಗಿ ಬಿಟ್ಟು ಕಳುಹಿಸುವುದು. ಗೋ: ಸರ್ಗ: ।  
2. ಹಸುವನ್ನು ಮೇವಿಗಾಗಿ ಬಿಡುವಕಾಲ. ಗೋ: ಸೃಜ್ಯತೇಽತ್ರ  
ಕಾಲೇ - ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗೇ) “ಘಙ್” (೩-೩-೧೨೧) ।  
3. ಸೂರ್ಯನು ಕಿರಣಗಳನ್ನು ಬಿಡುವಕಾಲ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲ.

**ಗೊಸವ ಗೋಸವ** (ಪುಂ) ಪಶುಯಾಗ. ಗೋ: ಸೃಯತೇಽತ್ರ - ಷ್  
(ಪ್ರೇರಣೆ) “ಅಘ್” (೩-೩-೫೭) ।

**ಗೊಸಹಸ್ರ ಗೋಸಹಸ್ರ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ಸಾವಿರ ಗೋವು  
ಗಳು. ಗವಾಂ ಸಹಸ್ರಮ್ । 2. ಸಾವಿರ ಗೋವುಗಳನ್ನು  
ಕೊಡುವ ಒಂದು ಮಹಾದಾನ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸಹಸ್ರೀ  
-ಸಹಸ್ರೀ. 3. ಸೋಮ ಅಥವಾ ಮಂಗಳವಾರ ಸಹಿತ  
ವಾದ ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಮತ್ತು ಕಾರ್ತಿಕ ಮಾಸಗಳ ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ.  
ಗೊಸಹಸ್ರದಾನಫಲಂ ವಿಷ್ಣುತೇಽತ್ರ “ಅಚ್” (೫-೨-೧೨೭) ।  
ಗೌರಾಂ “ಡೀಷ್” (೪-೧-೪೧) । ಈ ಅಮಾವಾಸ್ಯೆಯ  
ದಿನ ಮಾಡುವ ಗಂಗಾಸ್ನಾನವು ಗೋಸಹಸ್ರದಾನದ  
ಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವುದು. “ಅಮಾವಾಸ್ಯಾಂ ಭವೇದ್ದಾರೋ यदि  
ಭೂಮಿಸುತಸ್ಯ ಚ । ಗೊಸಹಸ್ರಫಲಂ ದद्याತ್ ಸ್ನಾನಮಾತ್ರೇಣ  
ಜಾಹ್ನವಿ । ಸಿನಿಬಾಲಿ ಕುಹುರ್ವಾಪಿ यदि ಸೋಮದಿನೇ ಭವೇತ್ ।  
ಗೊಸಹಸ್ರಫಲಂ ದद्याತ್ ಸ್ನಾನಂ ಯನ್ಮೌನಿನಾ ಕೃತಮ್ ” ।

**ಗೊಸ್ತನ ಗೋಸ್ತನ** (ಪುಂ) 1. ನಾಲ್ಕು ಎಳೆಗಳ ಹಾರ.  
ಗೋ: ಸ್ತನ ಇವ ಗುಂಪೋ ಯಸ್ಯ । 2. ಗೋವಿನ ಸ್ತನ, -ಕೆಟ್ಟಲು.  
**ಗೊಸ್ತನಾ ಗೋಸ್ತನಾ, -ಸ್ತನೀ -ಸ್ತನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದ್ರಾಕ್ಷಾ  
ಫಲದ ಗೊಂಚಲು. ಗೋ: ಸ್ತನ ಇವ ಫಲಮಸ್ಯಾ: . ವಾ “ಡೀಷ್”  
(೪-೧-೫೪) ।

**ಗೊಸ್ಥಾನ ಗೋಸ್ಥಾನ** (ನಂ) ಗೋಷ್ಠ್ಯ ದನಗಳ ಕೊಟ್ಟಿಗೆ.  
ಗವಾಂ ಸ್ಥಾನಮ್ । ಸ್ವಾರ್ಥೇ “ಕ:” । -ಸ್ಥಾನಕಮ್ -ಸ್ಥಾನಕಮ್.

**ಗೊಸ್ವಾಮಿನ್ ಗೋಸ್ವಾಮಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಹಸುಗಳ  
ಯಜಮಾನ. ಗವಾಂ ಸ್ವಾಮಿ । 2. ಜಿತೇಂದ್ರಿಯ, ಇಂದ್ರಿಯ  
ಗಳನ್ನು ಜಯಿಸಿದವನು. 3. ಭೂಮಿಯ ಯಜಮಾನ.  
**ಗೊಹತ್ಯಾ ಗೋಹತ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋವಿನ ಹನನ, ಹಸುವಿನ  
ಕೊಲೆ. ಗೋ: ಹತ್ಯಾ ।

**ಗೊಹನ್ ಗೋಹನ್** (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. (ವಿಂ) 2. ಗೋವನ್ನು  
ಕೊಲ್ಲುವವನು.

**ಗೊಹರಿತಕಿ ಗೋಹರಿತಕೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಲ್ಲದ ಮರ.

**ಗೊಹಿತ ಗೋಹಿತ** (ಪುಂ) 1. ಬಿಲ್ಲದ ಮರ. ಗವಾಂ ಹಿತಂ  
ಯಸ್ಮಾತ್ । 2. ವಿಷ್ಣು. ಗೋ: ಸಂಸಾರಬಿಜಾವಾಪೇ ಕ್ಷೇತ್ರಿ-  
ಭೂತಾಯಾ: ಪ್ರಕೃತೇ: ಹಿತ: ತದಧಿಷ್ಠಾನೇನ ತಸ್ಯಾ: ಕಾರ್ಯಕಾರಕತಯಾ  
ವ್ಯವಸ್ಥಾಪಕ: । “ಸಂಸಾರಬಿಜಕ್ಷೇತ್ರಸ್ಯ ಪ್ರಕೃತೇ: ಸ್ಥಾಪಕಶ್ಚ  
ಯ: । ಸ ಗೋಹಿತ: ” ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: । “ಗೋಹಿತೋ ಗೋಪತಿ-  
ಗೌಪ್ತಾ ” ವಿಂ ಸಂ । 3. ಗೋವುಗಳ ಹಿತಚಿಂತಕ.

**ಗೌಂಜಿಕ ಗೌಂಜಿಕ** (ವಿಂ) ಸ್ವರ್ಣಕಾರ, ಅಕ್ಕಸಾಲೆ.  
ಗುಂಜಾಗ್ರಹಣಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ “ಠಕ್” (೪-೪-೬೧) । “ಕಲಾದಸ್ತು  
ಗೌಂಜಿಕ: । ನಾಡ್ವಿಧಮ: ಸ್ವರ್ಣಕಾರ: ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।



ಗೌಡ ಗೌಡ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಗೌಡದೇಶ. 2. ಗೌಡದೇಶದ ನಿವಾಸಿಗಳು. 3. ಗೌಡ ಬ್ರಾಹ್ಮಣರು. "ಸಾರಸ್ವತಾ: ಕಾನ್ಯಕುಜಾ: ಗೌಡಮೇಥಿಲಕೋಡ್ಲವಾ:। ಪञ्च गौडा इति ख्याता विन्ध्यस्योत्तरवासिनः"। (वि०) 4. ಬೆಲ್ಲದ ಏಕಾರ. ಬೆಲ್ಲದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ವಸ್ತು. ಗುಡಸ್ಯ ವಿಕಾರ: "अण्" (४-३-१३४)। "नानास्वादरसानां च खाण्डवानां तथैव च। भोजनानि सुपूर्णानि गौडानि च सहस्रशः" रामा०। (स्त्री०) -डी-डी 5. ಗೌಡೀರೀತಿ. ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ರಸಾದಿಗಳಿಗೆ ಉಪಕಾರಕ ವಾದ ಪದಗಳ ಸಂಘಟನೆ (ಜೋಡಣೆ) ಯೆಂದು ಒಂದು ಭೇದ, ಶೈಲಿ. ರೀತಿಯು ದೇಶಭೇದದಿಂದ ವೈದರ್ಭಿ ಗೌಡಿ ಪಾಶ್ಚಾಲಿ ಮತ್ತು ಲಾಟಿಕಾ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. "पदसंघटना रीतिरङ्गसंस्थाविशेषवत्। उपकर्त्री रसादीनां सा पुनः स्याच्चतुर्विधा। वंदर्भी चाथ गौडी च पाश्चाली लाटिका तथा" सा० द० १-१, २। [ವಿವರಕ್ಕೆ "ರೀತಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 6. ಒಂದು ವಿಧ ಮದ್ಯ.

ಗೌಡದೇಶ ಗೌಡದೇಶ (ಪುಂ) ಒಂದು ದೇಶ. "वङ्गदेशं समारभ्य भुवनेशान्तगं शिवे। गौडदेशः समाख्यातः सर्वविद्याविशारदः" स्कान्द०। ಈ ದೇಶವು ಬಂಗಾಳ ಪ್ರಾಂತದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವುದು. ವಂಗದಿಂದ ಒರಿಸ್ಸದ ಗಡಿಯವರೆಗೂ ಈ ದೇಶವು ವಿಸ್ತಾರಗೊಂಡಿರುವುದು.

ಗೌಡದೇಶೀಯ ಗೌಡದೇಶೀಯ (ವಿಂ) ಗೌಡದೇಶದಿಂದ ಬಂದಿರುವ. ಗೌಡದೇಶದಾದಾಗತ:

ಗೌಡಪಾದ ಗೌಡಪಾದ (ಪುಂ) ಉಪನಿಷತ್ತುಗಳ ಒಬ್ಬ ವ್ಯಾಖ್ಯಾಕಾರರು.

ಗೌಡಿಕ ಗೌಡಿಕ (ಪುಂ) 1. ಕಬ್ಬು. ಗುಡೆ ಸಾಧು: "ठक्" (४-४-१०३)। (वि०) 2. ಬೆಲ್ಲದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಗುಡಿನ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ठक्" (५-१-७९)।

ಗೌಣ ಗೌಣ (ಪುಂ) 1. ಗೌಣವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಹೊರಟಿರುವ ಶಬ್ದ, ವಾಚ್ಯಾರ್ಥದ ಸಾದೃಶ್ಯ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಹೊರಟಿರುವ ಶಬ್ದ. ಗುಣಾದಾಗತಾ ಗೌಣಿ - ಗೌण्या ವ್ಯಯಾಸಗತ: "अण्" (४-३-७४)। (वि०) 2. ಅಮುಖ್ಯ. "बहूनि मम नामानि कीर्तितानि महर्षिभिः। गौणानि तत्र नामानि कर्मजानि च कानिचित्" भा० शान्ति०। 3. ಅಪ್ರಧಾನಕರ್ಮ. ಗುಣ: अप्रधानमेव स्वार्थे "अण्" (५-४-३८)। ಗಾ ದೋಷಿ पयः ಎಂಬಲ್ಲಿ ಗೋವು ಅಪ್ರಧಾನಕರ್ಮ. "गौणे कर्मणि दुह्यादेः प्रधाने नीहकृष्वहाम्।

ಗೌಣಕಾಲ ಗೌಣಕಾಲ (ಪುಂ) ಮುಖ್ಯವಲ್ಲದ ಕಾಲ. ಮುಖ್ಯ ವಾದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯ ವಲ್ಲದ ಕಾಲ. ಗೌಣೋಽಮುಖ್ಯ: ಕಾಲ:।

ಗೌಣಿ ಗೌಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೌಣ ಲಕ್ಷಣ, ಸಾದೃಶ್ಯ ಮೂಲಕ ವಾದ ಲಕ್ಷಣ, ಶಕ್ಯಾರ್ಥದ ಸಾದೃಶ್ಯ ಮೂಲಕವಾದ ಲಕ್ಷಣ. ಗುಣಾದಾಗತಾ "अण्" (४-३-७४)। "डोप्" (४-१-१५)। "सादृश्येतरसंबन्धाः बुद्धास्ताः सकला अपि। सादृश्यात् मता गौण्यस्तेन षोडश भेदिताः" सा० द० २-९।

ಗೌತಮ ಗೌತಮ (ಪುಂ) 1. ಗೌತಮಮಹರ್ಷಿ. ಗೌತಮಸ್ಯಾ- ಪತ್ಯಮ್ "अण्" (४-१-११४)। ಈ ಮಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿ ಅಹಲ್ಯಾದೇವಿ. ಶತಾನಂದಯುಷಿಯು ಈ ಯುಷಿಯ ಮಗ. "गौतमस्याश्रमं श्रेष्ठं पूर्वमासीन्महात्मनः" रामा०। 2. ಶತಾನಂದಯುಷಿ. ಗೌತಮಯುಷಿಯ ಮಗ. 3. ವೈವಸ್ವತಮನ್ವಂತರದ ಸಪ್ತರ್ಷಿಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ ಯುಷಿ. "अत्रिर्वसिष्ठो भगवान् कश्यपश्च महान् ऋषिः। गौतमश्च भरद्वाजो विश्वामित्रस्तथैव च। तथैव पुत्रो भगवान्चीकस्य महात्मनः। सप्तमो जमदग्निश्च ऋषयः साम्प्रता दिवि" हरिवं०। 4. ಏಕತ, ದ್ವಿತ ಮತ್ತು ತ್ರಿತರೆಂಬ ಮೂವರು ಯುಷಿಗಳ ತಂದೆ. 5. ಕೌರವರ ಮತ್ತು ಪಾಂಡವರ ಅಜಾರ್ಯನಾದ ಕೃಪಾಚಾರ್ಯ, ಶಾರದ್ವತನ ಮಗ. "अवस्कनं शरस्तम्बे मिथुनं समपद्यत। कृपया तच्च जग्राह शन्तनुर्मृगयां गतः। कृपः स्मृतः स वै तस्मात् गौतमी च कृपी तथा। इति शारद्वताः प्रोक्ता एते ते गौतमाः स्मृताः" हरिवं०। 6. ಶಾಕ್ಯಮುನಿ, ಶಾಕ್ಯಸಿಂಹ, ಸರ್ವಾರ್ಥಸಿದ್ಧ. ಶಾಕ್ಯರಿಗೆ ಪೂಜ್ಯನಾದ ಬುದ್ಧದೇವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -मी -मा. 7. ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರ ಪತ್ನಿ ಕೃಪಿ. ಕೃಪಾಚಾರ್ಯರ ಸಹೋದರಿ, ಅಶ್ವತ್ಥಾಮನ ತಾಯಿ. "कृपः स्मृतः स वै तस्माद्गौतमी च कृपी मता। एते शारद्वताः प्रोक्ता एते ते गौतमाः स्मृताः" हरिवं०। 8. ಗೋರೋಚನ. 9. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 10. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸಿ. 11. ಗೋದಾವರೀ ನದಿ. 12. ಶಾಕ್ಯಮುನಿವಿರಚಿತವಾದ ವಿದ್ಯೆ. 13. ಗೋತಮ ವಿರಚಿತವಾದ ವಿದ್ಯೆ.

ಗೌತಮಸಂಭವಾ ಗೌತಮಸಂಭವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೌತಮ ಗಂಗೆಯಾದ ಗೋದಾವರೀ ನದಿ. ಗೌತಮಾಯ ತತ್ಪಾಲನಾಯ . सम्भवति - सम् + भू "अप्" (३-३-५७)।

ಗೌತಮೀಯ ಗೌತಮೀಯ (ವಿಂ) ಗೌತಮ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಗೌತಮಸ್ಯೇದಮ್ "छः" (४-२-११४)।



**ಗೌದಾನಿಕ ಗೌದಾನಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಗೋದಾನವ್ಯವಸ್ಥೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಗೌದಾನ ಕರ್ಮಸ್ಯ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಸ್ಯ "ಠಕ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೪)। 2. ಗೋದಾನದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ, ಗೋದಾನ ಸಂಬಂಧವಾದ. "ಉಪರಿಸಮಿಧಂ ಕೃತ್ವಾ ಗಾಮನಂ ಚ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೇಭ್ಯಃ ಪ್ರದಾಯ ಗೌದಾನಿಕಂ ಕರ್ಮ ಕುರ್ವೀತ" ಆಶ್ವಂ ಗುಂ।

**ಗೌಧಾರ ಗೌಧಾರ, ಗೌಧೇಯ ಗೌಧೇಯ, ಗೌಧೇರ ಗೌಧೇರ** (ಪುಂ) ಉಡದ ಮರಿ, ಸರ್ಪದಿಂದ ದೊಡ್ಡಜಾತಿಯ ಹಲ್ಲಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮರಿ. ಗೌಧಾಪಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಆರಕ್" (೪-೧-೧೩೦) "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೩) "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೯) ವಾ। "ತ್ರಯೋ ಗೌಧಾರಗೌಧೇಯಗೌಧೇರಾ ಗೌಧಿಕಾತ್ಮಜೇ" ಅಮಂ।

**ಗೌಧೂಮ ಗೌಧೂಮ** (ವಿಂ) ಗೋಧಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಗೋಧಿಯಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಗೌಧೂಮಸ್ಯ ವಿಕಾರಃ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೩೬)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಮಿ-ಮಾ.

**ಗೌಧೂಮಿನ ಗೌಧೂಮಿನಾ** (ನಂ) ಗೋಧಿಯು ಬೆಳೆಯುತ್ತಿರುವುದು. ಗೌಧೂಮಸ್ಯ ಭವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ "ಖಲ್" (೪-೨-೧)।

**ಗೌನರ್ಧ ಗೌನರ್ಧ** (ಪುಂ) 1. ಪತಂಜಲಿ ಮಹರ್ಷಿ. ಗೌನರ್ಧದೇಶ ಭವಃ "ಅಞ್" (೪-೩-೫೩)। ಪ್ರಾಚೀನ ಮತೇ ವೃದ್ಧತ್ವಮ್। ಇತರಮತೇ ಲೌಕಾದಿತ್ವೇಽಪಿ ನ ವೃದ್ಧತ್ವಮ್। ಅತಃ ನ "ಠ" ಪ್ರತ್ಯಯಃ। (ವಿಂ) 2. ಗೋನರ್ಧ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, -ಉಂಟಾದ.

**ಗೌಪಿಕ ಗೌಪಿಕ** (ಪುಂ) ಗೋಪಿಕೆಯ ಮಗ. ಗೌಪಿಕಾಪಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಅಞ್" (೪-೧-೧೧೨)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಕೀ-ಕೀ.

**ಗೌಪುಚ್ಛ ಗೌಪುಚ್ಛ** (ಪುಂ) ಗೋಪುಚ್ಛಸದೃಶವಾದ.

**ಗೌಪುಚ್ಛಕ ಗೌಪುಚ್ಛಕ** (ವಿಂ) 1. ಹಸುವಿನ ಬಾಲದಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಗೌಪುಚ್ಛೇನ ಕೃತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೩೭)। 2. ಹಸುವಿನ ಬಾಲದಿಂದ ದಾಟುವ. ಗೌಪುಚ್ಛೇನ ತರತಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೬)।

**ಗೌಪ್ತೇಯ ಗೌಪ್ತೇಯ** (ಪುಂ) ಗುಪ್ತಸ್ಥಿಯ ಮಗ. ಪೃಥ್ವಿ ಹೆಂಗಸಿನ ಮಗ. ಗುಪ್ತಾ ವೈಶ್ಯಸ್ತ್ರೀ - ತಸ್ಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೩)।

**ಗೌಮಯಿಕ ಗೌಮಯಿಕ** (ವಿಂ) ಗೋಮಯದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಗೌರ ಗೌರ** (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಗುಡ್ (ಗತೌ) "ರನ್" (ಠಂ ೨-೨೯) ನಿಪಾಂ। 2. ಬಿಳಿಯ ಸಾಸವೆ. 3. ಬಿಳಿಯ ಬಣ್ಣ. 4. ಹಳದಿಯ ಬಣ್ಣ. 5. ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣ. 6. ಒಂದು ತೂಕ, ಮೂರು ರಾಜಸಾಸವೆಗಳ ತೂಕ. ಕಟಕ ಮೊದಲಾದವುಗಳ ಸಂದಿಯಲ್ಲಿ ಬೀಳುವ ಸೂರ್ಯ ಕಿರಣದಲ್ಲಿ (ಬಿಸಿಲಿನಲ್ಲಿ) ಕಾಣುವ ಧೂಳು ತ್ರಸರೇಣು. ಎಳುಪು

ತ್ರಸರೇಣುಗಳು ಒಂದು ಲಕ್ಷ. ಮೂರು ಲಕ್ಷಗಳು ಒಂದು ರಾಜಸರ್ಪವೆ. ಮೂರು ರಾಜಸರ್ಪವೆಗಳು ಒಂದು ಗೌರ. "ಜಾಲಸೂರ್ಯಮರೀಚಿಸ್ಥಂ ತ್ರಸರೇಣು ರಜಃ ಸ್ಮೃತಮ್। ತೇಽಽಂತೌ ಲಿಖಾ ತು ತಾಸ್ತಿಸ್ತೌ ರಾಜಸರ್ಪಂ ಉಚ್ಯತೇ। ಗೌರಸ್ತು ತೇ ತ್ರಯಃ" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೩೬೨, ೬೩। (ನಂ) 7. ಪದ್ಮಕೇಸರ, ಕಮಲದ ಕುಸುಮ. 8. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 9. ಕುಂಕುಮ ಕೇಸರಿ. (ವಿಂ) 10. ಬಿಳುಪಾದ, ಬಿಳಿಯ ಬಣ್ಣದ. "ಕೇಲಾಸಗೌರಂ ವೃಷಮಾರುಕಾಃ ಪಾದಾರ್ಪಣಾನುಗ್ರಹಪೂತಪೃಥಮ್" ರಘುಂ ೨-೩೫। 11. ಹಳದಿಯ ಬಣ್ಣದ. "ಕರ್ಣಾಪಿತೌ ಲೋಧಕಪಾಯುಷ್ಕ ಗೋರೋಚನಾಕ್ಷೇಪನಿತಾಂತಗೌರೇ" ಕುಮಾಂ ೭-೧೭। 12. ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣದ. "ಕೀರ್ಣಃ ಪಿಷ್ಠಾತಕೋವಃ ಕೃತದಿವಸಮುಖೈಃ ಕುಡ್ಕುಮಕ್ಷೋದಗೌರೈಃ" ರತ್ನಾಂ ೧-೧೦। 13. ಶುದ್ಧವಾದ, ಸ್ವಚ್ಛವಾದ. "ಗೌರಃ ಸ್ವಯಂ ಗೌರಿಕ-ಸಂಭೃತಶ್ರೀಃ" ಯಾದಂ ೧೮-೨೩। "ಗೌರಃ ಶ್ವೇತೇಽಽಞ್ಣೇ ಪೀತೇ ವಿಸ್ತುಡ್ಧೇ ಚಾಭಿಧೇಯವತ್। ನಾ ಶ್ವೇತಸರ್ಪೇ ಚಂದ್ರೇ ನ ದ್ವಯೋಃ ಪದ್ಯಕೇಸರೇ" ಮೇದಿಂ।

**ಗೌರೀಯ ಗೌರೀಯ** (ನಂ) ಪಶುಪಾಲನೆ, ಗೋವುಗಳ ಸಂರಕ್ಷಣೆ. ಗೌರೀಯ ಭಾವಃ ಕರ್ಮ ವಾ "ಫಲ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ಕೃಷಿ-ಗೌರೀಯವಾಣಿಜ್ಯಂ ವೈಶ್ಯಂ ಕರ್ಮ ಸ್ವಭಾವಜಮ್" ಗೀತಾ ೧೮-೪೪।

**ಗೌರವ ಗೌರವ** (ನಂ) 1. ಭಾರ, ತೂಕ. ಗುರೋರ್ಭಾವಃ "ಅಞ್" (೪-೧-೧೨೨)। 2. ಗುರುತ್ವ, ಪೂಜ್ಯತೆ. "ತಥಾಪಿ ಯನ್ಮಯ್ಯಪಿ ತೇ ಗುರೀತ್ಯಸ್ತಿ ಗೌರವಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೭೧। 3. ಗಣ್ಯತೆ, ಮರ್ಯಾದೆ. 4. ಆದರ, ವಿಶ್ವಾಸ. "ಪ್ರಯೋಜನಾಪೇಕ್ಷಿತಯಾ ಪ್ರಭುಣಾಂ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಲಂ ಗೌರವಮಾಶ್ರಿತೇಷು" ಕುಮಾಂ ೩-೧। 5. ಗೌರವವನ್ನು ಸೂಚಿಸಲು ಎದುರು ಗೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಹಿರಿಯರು ಬಂದಾಗ ಎದ್ದು ನಿಂತು ಮರ್ಯಾದೆ ಮಾಡುವುದು. (ವಿಂ) 6. ಗುರುವಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಗುರೋರಿದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ಗೌರವಿತ ಗೌರವಿತ** (ವಿಂ) ಗೌರವಹೊಂದಿರುವ, ಮಾನ್ಯನಾದ, ಪೂಜ್ಯನಾದ. ಗೌರವಂ ಸಂಜ್ಞಾತಮಸ್ಯ "ಇತತ್" (೪-೨-೩೬)।

**ಗೌರಸರ್ಪ ಗೌರಸರ್ಪ** (ಪುಂ) ಬಿಳಿಯ ಸಾಸವೆ. ಗೌರಶ್ರಾಸೌ ಸರ್ಪಪಶ್ಚ।

**ಗೌರಾ ಗೌರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ವಚ್ಛವಾಗಿರುವ ಹೆಂಗಸು, ಶುಭ್ರವರ್ಣದ ಹೆಂಗಸು. ಗೌರ "ಠಾಪ್" (೪-೧-೪)।

**ಗೌರಾಜ್ಞ ಗೌರಾಜ್ಞ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಗೌರಂ ಸಿತಂ ಪೀತಂ ವಾಕ್ಯಮಸ್ಯ। "ಉಕ್ಲೋ ರಕ್ತಸ್ತಥಾ ಪೀತಃ ಇದಾನಿ ಕೃಷ್ಣತಾಂ ಗತಃ" ಭಾಗಂ ೧೦-೮-೧೩। 2. ಶ್ರೇಷ್ಠ. (ವಿಂ) 3.



ಪುಷ್ಪವಾದ ದೇಹವುಳ್ಳ, ಸ್ವಪ್ನವಾದ ಮೃಯುಳ್ಳ, ಗೌರಂ  
ವಿಶುದ್ಧಮಜ್ಜಂ ಯಸ್ಯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫೫) |

ಗೌರಾಶ್ವ ಗೌರಾಶ್ವ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ರಾಜ. ಗೌರಾಶ್ವಯೋ ಯಸ್ಯ |

"ಅಲಂಕಾರ: ಕಕ್ಷಸೇನಶ್ಚ ಗಯೋ ಗೌರಾಶ್ವ ಏವ ಚ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ |

ಗೌರಾಸ್ಯ ಗೌರಾಸ್ಯ (ಪುಂ) ಬಿಳಿಯ ಮುಖದ ಒಂದು ಜಾತಿಯ  
ಕಪಿ. ಗೌರಮಾಸ್ಯಮಸ್ಯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪) |

ಯೋಪಪತ್ತವಾನ್ ಡೀಪ್ |

ಗೌರಿಕ ಗೌರಿಕ (ಪುಂ) 1. ಬಿಳಿಯ ಸಾಸವ. ಗೌರವರ್ಣೋಸ್ತಸ್ಯ  
"ಠನ್" (೫-೨-೧೧೫) | (ವಿಂ) 2. ಬಿಳಿಯ ಬಣ್ಣದ.

"ಯವಾಹ್ನಗೌರಿಕೋನ್ಮಿಶ್ರೇ: ಪಾದಲೇಪ: ಪ್ರಶಸ್ಯತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ |

ಗೌರಿಲ ಗೌರಿಲ (ಪುಂ) 1. ಬಿಳಿಯ ಸಾಸವ. ಗೌರವರ್ಣೋ-  
ಸ್ತಸ್ಯ "ಇಲಕ್" ವಾಹುಂ | 2. ಕಬ್ಬಿಣದ ಪುಡಿ.

"ಗೌರಿಲಸ್ತು ಪುಮಾನ್ ಲೋಹವುಣ್ಣೋ ಸ್ಯಾತ್ ಗೌರಸರ್ಪೇ" ಮೇದಿಂ |

ಗೌರಿ ಗೌರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಾರ್ವತಿ, ಉಮಾದೇವಿ, ಗಿರಿಜೆ.

ಗೌರೋ ವರ್ಣೋಸ್ತಸ್ಯಾ: "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧) | "ಯೋಗಾನ್ತಿ-

ದಂಧದೇಹಾ ಸಾ ಪುನರ್ಜಾತಾ ಹಿಮಾಲಯೇ | ಶಾಹ್ನೆಂದುಕುಂದವಲಾ

ತತೋ ಗೌರೀತಿ ಸಾ ಸ್ಮೃತಾ" | "ಕಿಯಚ್ಚಿರಂ ಶ್ರಾಮ್ಯಸಿ ಗೌರಿ

ವಿಶ್ಯತೇ ಮಮಾಪಿ ಪೂರ್ವಾಶ್ರಮಸಂಚಿತಂ ತಪ: | ತದರ್ಥಭಾಗೇನ

ಲಭಸ್ವ ಕಾಡ್ಕಷಿತಂ ವರಂ ತಮಿಚ್ಛಾಮಿ ಚ ಸಾಧು ವೇದಿತುಮ್"

ಕುಮಾಂ ೫-೫೦ | 2. ಎಂಟು ವರ್ಷಗಳು ತುಂಬಿದ

ಕನ್ನೆ, ಋತುಮುತಿಯಾಗದಿರುವ ಕನ್ನೆ. "ಅಷ್ಟವರ್ಷಾ

ಭವೇದ್ಗೌರಿ ನವವರ್ಷಾ ತು ರೋಹಿಣಿ" | 3. ಗೋರೋಚನ.

4. ಹರಿದ್ರೆ, ಅರಸಿನ. 5. ಪ್ರಿಯಂಗುವೃಕ್ಷ, ಪ್ರೇಂಕಣಗಿಡ.

6. ಮರದರಸಿನ. 7. ಪೃಥಿವಿ, ಭೂಮಿ. 8. ಒಂದು

ನದಿ. 9. ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಪ್ರಸೇನಜತ್ತೇಂಬ ರಾಜನ

ಪತ್ನಿ, ಬಾಹುದಾ ನದಿ. "ಲೇಖೇ ಪ್ರಸೇನಜಿಹ್ವಾರ್ಯಾ ಗೌರೀ

ನಾಮ ಪತಿವ್ರತಾಮ್ | ಅಭಿಶಸ್ತಾ ತು ಸಾ ಭರ್ತಾ ನದಿ ವೈ

ಬಾಹುದಾಭವತ್" ಹರಿವಂ | 10. ವರುಣನ ಪತ್ನಿ.

11. ಮಂಜಿಷ್ಠ. 12. ಬಿಳಿಯ ಗರುಕೆ. 13. ಮಲ್ಲಿಗೆ

ಬಳ್ಳಿ. 14. ತುಲಸಿ ಗಿಡ. "ಗೌರಿ ತ್ವಸಂಜಾತರಜ:-

ಕನ್ಯಾಶಾಕ್ಲರಭಾರ್ಯಯೋ: | ರೋಚನೀರಜನೀಪಿಜ್ಞಾಪ್ರಿಯಜ್ಞವಸುಧಾಸು

ಚ | ಆಪಗಾಯಾ ವಿಶೇಷೇ ಚ ಯಾದಸಾಂಪತಿಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ |

15. ಹೊಂಬಣ್ಣದ ಹಂಗಸು. 16. ವಾಕ್ಕು, ಮಾತು.

ಗೌರಿಕಾಂತ ಗೌರಿಕಾಂತ, -ನಾಥ -ನಾಥ, -ಪತಿ -ಪತಿ

(ಪುಂ) ಗೌರಿಯ ಪತಿಯಾದ ಮಹಾದೇವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.

ಗೌರಿಯಾ: ಕಾಂತ: ನಾಥ: ಪತಿವಾ |

ಗೌರಿಗುಹ ಗೌರಿಗುರು (ಪುಂ) ಪಾರ್ವತಿಯ ತಂದೆಯಾದ

ಹಿಮವಂಶ. ಗೌರಿಯಾ: ಗುಹ: | "ಗಜ್ಞಾಪ್ರಪಾತಾಂತವಿರುಡಶಂಖಂ

ಗೌರಿಗುರೋಗ್ಧರಮಾವಿವೇಶ" ರಘುಂ ೨-೨೬ |

ಗೌರಿಜ ಗೌರಿಜ (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ. ಪಣ್ಮುಖ.

(ನಂ) 2. ಅಭೃಕ, ಕಾಗೆಬಂಗಾರ. ಗೌರಿಯಾ ರಜಸೋ ಜಾಯತೇ-

ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರಭವಿ) "ಡ:" (೩-೨-೧೮) |

ಗೌರಿತನಯ ಗೌರಿತನಯ, -ಪುತ್ರ -ಪುತ್ರ (ಪುಂ)

ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪಣ್ಮುಖ.

ಗೌರಿಶಿಖರ ಗೌರಿಶಿಖರ (ನಂ) ಪಾರ್ವತಿಯು ತಪಸ್ಸು

ಮಾಡಿದ ನಂತರ ಅವಳ ಹೆಸರಿನಿಂದ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ

ಹಿಮಾಲಯದ ಒಂದು ಶಿಖರ. ಪಾರ್ವತಿಯು ತಪಸ್ಸು

ಮಾಡಿದ ಹಿಮವತ್ಪರ್ವತದ ಒಂದು ಶಿಖರ. "ಪ್ರಜಾಸು

ಪಶ್ಚಾತ್ ಪ್ರಥಿತಂ ತದಾಖ್ಯಯಾ ಜಗಾಮ ಗೌರಿಶಿಖರಂ ಶಿಖಂಡಿಮತ್"

ಕುಮಾಂ ೫-೭ |

ಗೌರಿಸುತ ಗೌರಿಸುತ (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ. 2. ಎಂಟು

ನೆಯ ವರ್ಷದಲ್ಲಿ ಮದುವೆಯಾದವಳ ಮಗ. ಗೌರಿಯಾ: ಸುತ: |

ಗೌರುತಲ್ಪಿಕ ಗೌರುತಲ್ಪಿಕ (ಪುಂ) ಗುರುವಿನ ಪತ್ನಿಯಲ್ಲಿ

ಪ್ರವೇಶಿಸಿದವನು. ಗುರುಪತ್ನೀಗಮನ ಮಾಡಿದವನು.

ಗುರುತಲ್ಪಂ ಗುರುಪತ್ನೀಂ ಗಂಚ್ಛತಿ-ಗುರುತಲ್ಪ "ಠಕ್" (೪-೪-೧) |

ಗೌಲಕ್ಷಣಿಕ ಗೌಲಕ್ಷಣಿಕ (ವಿಂ) ಗೋವುಗಳ ಲಕ್ಷಣ

ವನ್ನು ಅರಿತವನು. ಗೋಲಕ್ಷಣಂ ವೇತ್ತಿ ತತ್ಪ್ರತಿಪಾದಕಂ ಗ್ರಂಥ-

ಮಥೀತೇ ವಾ "ಠಕ್" (ವಾಂ ೪-೨-೬೦) |

ಗೌಲೋಮನ ಗೌಲೋಮನ (ವಿಂ) ಹಸುವಿನ ಕೂದಲಿ

ನಂತಿರುವ. ಗೋಲೋಮೇವ "ಅನ್" (೫-೩-೧೦೭) |

ಗೌಲಿಮಿಕ ಗೌಲಿಮಿಕ (ಪುಂ) ಗುಲ್ಮಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ನಿಯುಕ್ತನಾದ

ವನು, ಸುಂಕದಕಟ್ಟಿಯಲ್ಲಿ ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ನಿಯುಕ್ತನಾದ

ಒಬ್ಬ ಸೈನಿಕ. ಗುಲ್ಮೇ ನಿಯುಕ್ತ: "ಠಕ್" (೪-೪-೬೯) | "ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ

ದ್ವಾರಾಣಿ ಚ ದ್ವಾ:ಸ್ಥಾ: ತಥಾ ಗುಲ್ಮಾನಿ ಗೌಲಿಮಿಕಾ:" ಭಾಂ |

ಗೌಶತಿಕ ಗೌಶತಿಕ (ವಿಂ) ನೂರು ಹಸುಗಳನ್ನು ಇಟ್ಟಿರುವ

ವವನು. ನೂರು ಹಸುಗಳ ಯಜಮಾನ. ಗೌಶತಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ

"ಠಕ್" (೫-೨-೧೧೮) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) |

-ಶತಿಕೀ -ಶತಿಕೀ.

ಗೌಣಿಣ ಗೌಣಿಣ (ನಂ) ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಕೊಟ್ಟಿಗಯಿದ್ದ

ಪ್ರದೇಶ. ಪೂರ್ವ ಭೂತಂ ಗೌಣಿಣಂ "ಖನ್" (೫-೨-೧೮) |

"ಪೂರ್ವಕುಲಾವನೀಪಸುರಸುರಭಿಗೌಣಿಣೀನೇ ದೇಶೋ" ಚಂ ಭಾಂ |

ಗೌಸಹಸ್ರಿಕ ಗೌಸಹಸ್ರಿಕ (ವಿಂ) ಸಾವಿರ ಹಸುಗಳನ್ನು

ಇಟ್ಟಿರುವವನು. ಸಾವಿರ ಹಸುಗಳ ಯಜಮಾನ. ಗೌಸಹಸ್ರ-

ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಠಕ್" (೫-೨-೧೧೮) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್"

(೪-೧-೧೫) | -ಸಹಸ್ರಿಕೀ -ಸಹಸ್ರಿಕೀ.

ಗ್ರಥನ ಗ್ರಥನ (ನಂ) 1. ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟುವುದು. ಒಟ್ಟಿಗೆ

ಜೋಡಿಸಿ ಕಟ್ಟುವುದು. ಗ್ರಥ (ಕೌಡಿಲ್ಯೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್"



(೩-೩-೧೧೪) 1. ಹೂವಿನ ಸರವನ್ನು ಕಟ್ಟುವುದು.  
3. ಗ್ರಂಥರಚನೆ.

ಪ್ರಥಮೀಯ ಗ್ರಂಥನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟಲ್ಪಡುವ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಿ ಪೋಷಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ರಚಿಸಲ್ಪಡುವ ಗ್ರಂಥ. ಗ್ರಂಥ (ಕೌಟಿಲ್ಯೇ ಸಂದರ್ಭೇ ಚ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) 1. "ತವ್ಯ:" 1. ಪ್ರಥಿತವ್ಯಮ್ ಗ್ರಂಥಿತವ್ಯಮ್.

ಪ್ರಥಿತ ಗ್ರಂಥಿತ (ವಿಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ ಹೂವಿನಮಾಲೆ ಮೊದಲಾದುದು. ಗ್ರಂಥ (ಕೌಟಿಲ್ಯೇ ಸಂದರ್ಭೇ ಚ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) "ಪರ್ಯಾಯಪ್ರಥಿತಾಕ್ಷಸೂತ್ರ-ವಲಯಪ್ರತ್ಯೇಕಬೀಜಗ್ರಹವ್ಯಗ್ರಾಘ್ರಾಙ್ಗುಲಯೋ ಹರಂತಿ" ಪ್ರಬಂಧಂ ೨-೪. 2. ರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಜೋಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಗ್ರಂಥ ಮೊದಲಾದುದು. "ವರ್ಣ: ಕತಿಪಯೇರೇವ ಪ್ರಥಿತಸ್ಯ ಸ್ವರೇರಿವ" ಮಾಧಂ ೨-೭೨.

ಪ್ರಥಿತವತ್ ಗ್ರಂಥಿತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟಿದವನು, ಹೂವಿನಮಾಲೆ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ತಯಾರಿಸಿದವನು. 2. ಗ್ರಂಥ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ರಚಿಸಿದವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" 1. -ವತ್ತಿ -ವತ್ತಿ.

ಪ್ರಥನ್ ಗ್ರಂಥನ್ (ವಿಂ) 1. ಮಾಲೆ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಕಟ್ಟುತ್ತಿರುವ, 2. ಗ್ರಂಥವನ್ನು ರಚಿಸುತ್ತಿರುವ. ಗ್ರಂಥ (ಸಂದರ್ಭೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) 1. ಪ್ರಥನೀ ಗ್ರಂಥನೀ.

ಗ್ರಂಥ - ಸಂದರ್ಭೇ (ಕೃಷಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) 1. ಗ್ರಂಥಾತಿ. ಜಗ್ರಂಥ. ಗ್ರಂಥಿತಾ. ಗ್ರಂಥಿಷ್ಯತಿ. ಗ್ರಂಥಾತು. ಅಗ್ರಂಥಾತ್. ಗ್ರಂಥೀಯಾತ್. ಗ್ರಂಥ್ಯಾತ್. ಅಗ್ರಂಥೀಯಾತ್. ಅಗ್ರಂಥಿಷ್ಯತ್. 1. ಗ್ರಂಥ ರಚಿಸು. 2. ಸರವನ್ನು ಪೋಷಿಸು, ಮಾಲೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟು. ಕರ್ಮಣಿ:-ಗ್ರಂಥ್ಯತೇ. ಗ್ರಂಥ್ಯತಾಮ್. ಅಗ್ರಂಥ್ಯತ. ಅಗ್ರಂಥ್ಯ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತು:-ಗ್ರಂಥಿತವ್ಯಮ್. ಗ್ರಂಥನೀಯಮ್. ಗ್ರಂಥ್ಯ: 1. ಗ್ರಂಥಿತ: 1. ಗ್ರಂಥಿತವತ್. ಗ್ರಂಥನ್, ಗ್ರಂಥನೀ. ಗ್ರಂಥಿತುಮ್. ಗ್ರಂಥಿತಮ್. ಗ್ರಂಥನಮ್. ಗ್ರಂಥಿತ್ವಾ, ಗ್ರಂಥಿತ್ವಾ. ಸಂಗ್ರಂಥ್ಯ, ಸಂಗ್ರಂಥ್ಯ.

ಗ್ರಂಥ ಗ್ರಂಥ (ಪುಂ) 1. ಪುಸ್ತಕ, ಸಂದರ್ಭ, ಪ್ರಬಂಧ, ಕೃತಿ, ಕವನ. ಗ್ರಂಥ (ಸಂದರ್ಭೇ) ಕರ್ಮಂ "ವತ್" (೩-೩-೧೧೪) 1. "ಗ್ರಂಥಗ್ರಂಥಿರಿಹ ಕವಚಿತ್ ಕವಚಿದಪಿ ನ್ಯಾಸಿ ಪ್ರಯತ್ನಾನಮಯಾ" ನೈಷಂ ೨೨-೧೪೨. 2. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸುವುದು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟುವುದು, ಹೂವು ಮತ್ತು ಮೊದಲಾದವುಗಳನ್ನು ಪೋಷಿಸಿ ಮಾಲೆಯನ್ನು ರಚಿಸುವುದು. ಗ್ರಂಥ ಭಾವೇ "ವತ್" (೩-೩-೧೧೪) 1. 3. ಮೂವತ್ತೆರಡು ಅಕ್ಷರಗಳ ಒಂದು ಶ್ಲೋಕ. 4. ಧನ, ಸಂಪತ್ತು, ಐಶ್ವರ್ಯ. "ಗ್ರಂಥೋ ಗ್ರಂಥನಾಥನಯೋ: ಸ್ಯಾಂಶ್ಚಾಸ್ತ್ರಾಕ್ಷರಸಂಖ್ಯಯೋ:" ಮೇದಿಂ.

ಗ್ರಂಥಕರಣ ಗ್ರಂಥಕರಣ (ನಂ) ಗ್ರಂಥರಚನೆ, ಪ್ರಬಂಧ ನಿರ್ಮಾಣ, ಪುಸ್ತಕ ಬರೆಯುವುದು. ಗ್ರಂಥಸ್ಯ ಕರಣಮ್.

ಗ್ರಂಥಕರ್ತೃ ಗ್ರಂಥಕರ್ತೃ (ಪುಂ) ಗ್ರಂಥವನ್ನು ರಚಿಸುವವನು, ಪುಸ್ತಕವನ್ನು ಬರೆಯುವವನು. ಗ್ರಂಥಸ್ಯ ಕರ್ತಾ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ಕರ್ತಾ -ಕರ್ತೃ.

ಗ್ರಂಥಕಾರ ಗ್ರಂಥಕಾರ (ಪುಂ) "ಗ್ರಂಥಕರ್ತೃ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಗ್ರಂಥಂ ಕರೋತಿ -ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣೇ) "ಅನ್" (೩-೨-೧೧) 1.

ಗ್ರಂಥಕುಟಿ ಗ್ರಂಥಕುಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು ಬರೆಯುವ ಸ್ಥಳ, ಪುಸ್ತಕ ಭಂಡಾರಾಗಾರ. ಗ್ರಂಥಸ್ಯ ಕುಟಿವ.

ಗ್ರಂಥನ ಗ್ರಂಥನ (ನಂ) 1. ಸೇರಿಸುವಿಕೆ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟುವಿಕೆ, -ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಿ ಮಾಲೆಯನ್ನು ರಚಿಸುವುದು. 2. ಗ್ರಂಥವನ್ನು ರಚಿಸುವುದು, ಪುಸ್ತಕವನ್ನು ಬರೆಯುವುದು. ಗ್ರಂಥ (ಸಂದರ್ಭೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) 1.

ಗ್ರಂಥವಿಸ್ತರ ಗ್ರಂಥವಿಸ್ತರ (ಪುಂ) 1. ಗ್ರಂಥವು ದೊಡ್ಡದಾಗಿರುವಿಕೆ. ಗ್ರಂಥಸ್ಯ ವಿಸ್ತರ: 1. "ಪ್ರಥಮಮುನಿಕಥಿತ-ಮವಿತಥಮವಲೋಕಯ ಗ್ರಂಥವಿಸ್ತರಸ್ಯಾರ್ಥಮ್" ಬೃಹತ್ಸಂ ೧-೨. 2. ಗ್ರಂಥಬಾಹುಳ್ಯ, ಗ್ರಂಥಗಳು (32 ಅಕ್ಷರಾತ್ಮಕ) ಅನೇಕವಾಗಿರುವಿಕೆ.

ಗ್ರಂಥಸಂಧಿ ಗ್ರಂಥಸಂಧಿ (ಪುಂ) 1. ಗ್ರಂಥಭಾಗ, ಕಾಂಡ, ಅಧ್ಯಾಯ, ಸರ್ಗ, ಪರ್ವ, ಉಲ್ಲಾಸ ಮುಂತಾದುವು. "ಪಟಲ: ಕಾಂಡಮಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್. ಸ್ಥಾನಂ ಪ್ರಕರಣಂ ಪರ್ವಾಕ್ಷಿಕಂ ಚ ಗ್ರಂಥಸಂಧಯ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಗ್ರಂಥಿ ಗ್ರಂಥಿ (ಪುಂ) 1. ಗಂಟು, ಡುಬ್ಬು, ಉಬ್ಬು. ಗ್ರಂಥಿ (ಕೌಟಿಲ್ಯೇ) "ಃ" (೩ಂ ೪-೧೩೯) 1. 2. ಗಂಟು, ಕಟ್ಟು ಬಿದಿರು ಮೊದಲಾದವುಗಳ ಎಲೆ ಹೊರಡುವ ಭಾಗ, ಪರ್ವ. 3. ಗಂಟು ಕಟ್ಟು, ಬಂಧನ. "ಗ್ರಂಥಿ-ಮುಧ್ರಯಯಿತು ಹೃದಯೇಶೋ ವಾಸಸ: ಸ್ಪೃಶತಿ ಮಾನವನಾಥಾ:" ಮಾಧಂ ೧೦-೬೩. 4. ಅವಯವಗಳ ಸಂಧಿ, (ಶರೀರದಲ್ಲಿರುವ) ಎಲುಬುಗಳ ಕೀಲು. 5. ಮರಗಳ ರೆಂಬೆ ಹೊರಡುವ ಜಾಗ. 6. ಗಂಟು, ವಸ್ತುಗಳನ್ನಿಟ್ಟು ಕಟ್ಟುವ ಬಟ್ಟೆಯ ಮೂಟೆ. 7. ಸಂಶಯ, ಅಜ್ಞಾನ, ಮಾಯಾ ಪಾಶ. "ನಿಶ್ಚಿತೇ ಹೃದಯಗ್ರಂಥಿ: ಕ್ಷಿಣಂತೇ ಸರ್ವಸಂಶಯಾ:" ಭಾಗಂ ೧-೨-೨೧. 8. ಕಾಟಿಲ್ಯ, ವಕ್ರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಡೋಕು. 9. ಗ್ರಂಥಿಪರ್ಣವೃಕ್ಷ, ಮಾಚಿಪತ್ರೆಯ ಗಿಡ. 10. ಭದ್ರ ಮುಸ್ತೆ.

ಗ್ರಂಥಿಕ ಗ್ರಂಥಿಕ (ಪುಂ) 1. ದೈವಜ್ಞ, ಕಾಲಗಳ ಸಂಧಿಯನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ಜೋಯಿಸ. 2. ವಿರಾಟನಗರದಲ್ಲಿ ಅಶ್ವಪಾಲನಾಗಿದ್ದ ನಕುಲ. (ನಂ)3. ಹಿಪ್ಪಲಿ. 4. ಮಾಚಿ



ಪತ್ರಿ. 5. ಗುಗುಳದ ಗಿಡ. 6. ಮುಳ್ಳು ಅಜ್ಜಿ ಗಿಡ.  
"ಗ್ರಂಥಿಕಂ ಪಿಪ್ಪಲಿಮೂಲೇ ಗ್ರಂಥಿಕಂ ಗುಗುಳದ್ರೋ. ಮಾದ್ರೇ ಚ  
ಕರೀರೇ ಚ ದೇವಜೇ ಚ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಮ್" ವಿಷ್ಣುಂ.

ಗ್ರಂಥಿಕ (ವಿಂ) ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಸೇರಿಸಿ  
ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟು. ಗ್ರಂಥಿಕೇ ಸಮ - ಗ್ರಂಥ (ಸಂದರ್ಭ) "ಕ್ತ:"  
(3-2-102).

ಗ್ರಂಥಿನ್ ಗ್ರಂಥಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಗ್ರಂಥದ ಅರ್ಥವನ್ನು ತಿಳಿ  
ದವನು. ಗ್ರಂಥ: ತದರ್ಥಂ ಜ್ಞೇತಯಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇತಿ:"  
(4-2-114). 2. ಗ್ರಂಥಗಳುಳ್ಳವನು, ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು  
ಹೊಂದಿರುವವನು. 3. ಗ್ರಂಥಕಾರ. ಗ್ರಂಥಕರ್ತೃ. ಲೇಖಕ.

ಗ್ರಂಥಿಪರ್ಣ ಗ್ರಂಥಿಪರ್ಣ (ವುಂ) ಮೂಡಿಸುತ್ತೆ. ಗ್ರಂಥಿ ಪರ್ಣಾನ್ಯಸ್ಯ.

ಗ್ರಂಥಿಭೇದ ಗ್ರಂಥಿಭೇದ (ವುಂ) ಬಿಟ್ಟು ಗಂಟನ್ನು ಬಿಟ್ಟು  
ಕಡಿಯುವ ಕಳ್ಳ. ಗ್ರಂಥಿ ವಸ್ತ್ರಾದಿಗ್ರಂಥಿ ಭಿನ್ನತಿ-ಭಿನ್ನಿರ್  
(ವಿದಾರಣೆ) "ಅನ್" (3-2-1). "ಅಙ್ಗುಲಿಗಂಥಿ-  
ಭೇದಸ್ಯ ಛೇದಯೇತ್ ಪ್ರಥಮೇ ಗ್ರಹೇ. ದ್ವಿತೀಯೇ ಹಸ್ತಚರಣೌ ತೃತೀಯೇ  
ವಧಮಹಂತಿ" ಮನುಂ 9-2-37.

ಗ್ರಂಥಿಮತ್ ಗ್ರಂಥಿಮತ್ (ವಿಂ) ಗಂಟುಹಾಕಿರುವ, ಗಂಟುಹೊಂದ  
ಕೂಡಿದ. ಗ್ರಂಥಿರಸ್ತಸ್ಯ "ಮತುಪ್" (4-2-94). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ತೀಪ್" (4-1-6). -ಮತೀ -ಮತೀ: "ಕಂಠಪ್ರಭಾಸಜ್ಞ-  
ವಿಶೇಷಣೀಲಾಂ ಕೃಷ್ಣತ್ವಂ ಗ್ರಂಥಿಮತೀಂ ದಧಾನಮ್" ಕುಮಾರಂ 3-46.

ಗ್ರಂಥಿಮೂಲ ಗ್ರಂಥಿಮೂಲ (ನಂ) 1. ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳು. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಮೂಲ -ಮೂಲಾ. 2. ಬಳ್ಳು ಗಂಟು. ಗ್ರಂಥಿಯುಕ್ತಂ ಮಲಂ  
ಗ್ರಂಥಿಮೂಲ.

ಗ್ರಂಥಿಲ ಗ್ರಂಥಿಲ (ವುಂ) 1. ಹಂಚಿಬಿಡುವ ಮರ. 2. ಮುಳ್ಳು  
ಅಜ್ಜಿ. ಗ್ರಂಥಿರಸ್ತಾಸ್ತಿ "ಲಬ್" (4-2-93). (ನಂ) 3.  
ಹಿಪ್ಪಲಿ. 4. ಪಸುಮಂ. 5. ಬಳ್ಳು ಗಂಟು. (ವಿಂ) 6.  
ಗಂಟುಗಳುಳ್ಳು, ಗಂಟುಹೊಂದ ಕೂಡಿದ.

ಗ್ರಂಥಿಹರ ಗ್ರಂಥಿಹರ (ವುಂ) ಅವಾತ್ಯ. ಸಚಿವ. ಗ್ರಂಥಿ  
ಹರತಿ -ಹರ (ಹರಣೆ) "ಅಚ್" (3-2-9). "ಮಂತ್ರಿ  
ಗ್ರಂಥಿಹರೋಽಗಾತ್ಯ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಗ್ರಂಥಿಕ ಗ್ರಂಥಿಕ (ನಂ) ಹಿಪ್ಪಲಿ.

ಗ್ರಸ್ತು - ಅದನೇ (ಭಾಂ ಆರಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ). ಗ್ರಸ್ತೇ.  
ಜಗ್ರಸೇ. ಗ್ರಸ್ತಾ. ಗ್ರಸ್ತೀಯತೇ. ಗ್ರಸ್ತಾಮ್. ಅಗ್ರಸ್ತಾ.  
ಗ್ರಸ್ತೇ. ಗ್ರಸ್ತೀಷಿ. ಅಗ್ರಸ್ತೀಷಿ. ಅಗ್ರಸ್ತೀಯತ. ಕಬಳಿಸು.  
ತನ್ನೂ, ನುಂಗು. "ಹಿಮಾಂಶುಮಾಶು ಗ್ರಸ್ತೇ ತನ್ನದಿಮ್ನ: ಸ್ಫುಟಂ  
ಫಲಮ್" ಮಾಧಂ 2-49.

ಕರ್ಮಣಿ:-ಗ್ರಸ್ತೀಯತೇ. ಗ್ರಸ್ತೀಯತಾಮ್. ಅಗ್ರಸ್ತೀಯತ. ಗ್ರಸ್ತೀಯತ.  
ಅಗ್ರಾಸಿ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗ್ರಸ್ತು:-ಗ್ರಸ್ತೀಯತೇ. ಗ್ರಸ್ತೀಯತಾಮ್. ಗ್ರಾಸ್ಯಮ್. ಗ್ರಸ್ತೀಯತೇ.  
ಗ್ರಸ್ತೀಯತಾಮ್. ಗ್ರಸ್ತೀಯತೇ. ಗ್ರಸ್ತೀಯತಾಮ್. ಗ್ರಸ್ತೀಯತೇ.  
ಗ್ರಸ್ತೀಯತಾಮ್. ಗ್ರಸ್ತೀಯತೇ. ಗ್ರಸ್ತೀಯತಾಮ್. ಗ್ರಸ್ತೀಯತೇ.

ಗ್ರಸ್ತು ಗ್ರಸ್ತು (ನಂ) 1. ತನ್ನವು, ಕಬಳಿಸುವುದು,  
ನುಂಗುವುದು. ಗ್ರಸ್ತು(ಅದನೇ)ಭಾವೇ "ಸ್ಯುತ್" (3-2-114).  
2. ಸೂರ್ಯ ಮತ್ತು ಚಂದ್ರಗ್ರಹಣ. ಗ್ರಸ್ತನವು (ಸೂರ್ಯ  
ಮತ್ತು ಚಂದ್ರ) ಗ್ರಹಣದ ಹತ್ತು ವಿಧಗಳಲ್ಲೊಂದು  
ಭೇದ. ಗ್ರಸ್ತನ ಗ್ರಹಣದಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನ ಅಥವಾ ಚಂದ್ರನ  
ಬಿಂಬವು ಮೂರನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗವೋ ನಾಲ್ಕನೆಯ  
ಒಂದು ಭಾಗವೋ ಅಥವಾ ಅರ್ಧ ಭಾಗವೋ ಮುಚ್ಚಲ್ಪಡು  
ವುದು. ಇಂತಹ ಗ್ರಹಣದಿಂದ ಒಳ್ಳೆಯ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಸ್ಥಿತಿ  
ಯಲ್ಲಿರುವ ರಾಜನಿಗೆ ಅರ್ಥಹಾನಿಯೂ ದೊಡ್ಡ ರಾಷ್ಟ್ರ  
ಗಳಿಗೆ ಪೀಡೆಯೂ ಸಂಭವಿಸುವುದು. "ಸತ್ಯಾಪಸಂಖ್ಯಲೇಹ-  
ಗ್ರಸ್ತನನಿರೋಧಾವಮದನಾರೋಹಾ:। ಆಗ್ರಾತಂ ಮಧ್ಯತಮಸ್ತಮೋನ್ಯ  
ಇತಿ ತೇ ದಶ ಗ್ರಾಸಾ:॥ ಗ್ರಸ್ತನಮಿತಿ ಯದಾ ತ್ರ್ಯಂಶ: ಪಾದೋ ವಾ  
ಗೃಹ್ಯತೇಷ್ಯವಾಪ್ಯಧಮ್। ಸ್ಥಿತನೃಪತಿವಿತ್ತಹಾನಿ: ಪಿಡಾ ವ  
ಸ್ಥಿತದೇಶಾನಾಮ್" ಬೃಹತ್ಸಂ 4-43, 46. 3. ಗ್ರಾಸ, ಕಬಳ.  
4. ದವಡೆ. "ಪ್ರಾಶಿಷ್ಠಮಾಸ್ಯೇ ಗ್ರಸ್ತನೇ ಗ್ರಾಸ್ತು ತೇ ಯಚ್ಚವರ್ಣಂ  
ತೇ ಭಗವನ್ನಗ್ನಿಹೋತ್ರಮ್" ಭಾಗಂ 3-13-36.

ಗ್ರಸ್ತನೀಯ ಗ್ರಸ್ತನೀಯ (ವಿಂ) ತನ್ನಲ್ಲದೇಕಾದ, ನುಂಗ  
ಲ್ಪಡುವ. ಗ್ರಸ್ತು (ಅದನೇ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96).  
"ತವ್ಯ:" ಗ್ರಸ್ತೀಯ: ಗ್ರಸ್ತೀಯ:

ಗ್ರಸ್ತಮಾನ ಗ್ರಸ್ತಮಾನ (ವಿಂ) ತನ್ನುತ್ತಿರುವ, ನುಂಗುತ್ತಿರುವ.  
ಗ್ರಸ್ತು (ಅದನೇ) "ಗ್ರಾಸಚ್" (3-2-124). "ಗ್ರಸ್ತಮಾನ-  
ಮಿವೀಜಾಂಸಿ ಸದಸಾ ಗೌರವೇರಿತಮ್। ನಾಮ ಯಸ್ಯಾಭಿನಂದಂತಿ  
ದ್ವಿವಿಂಶಿಪಿ ಸ ಪುಮಾನ್ ಪುಮಾನ್" ಕಿರಾಂ 11-33.

ಗ್ರಸ್ತೀಯ ಗ್ರಸ್ತೀಯ (ವಿಂ) ತನ್ನವ ಸ್ವಭಾವದ, ನುಂಗುವ  
ಸ್ವಭಾವದ. ಗ್ರಸ್ತು(ಅದನೇ)ತಾಂತ್ರಿಕೇ "ಇಣ್ಣುಚ್"। "ಭೂತಭರ್ತು  
ಚ ತಜ್ಞೇಯಂ ಗ್ರಸ್ತೀಯಂ ಪ್ರಭವಿಣ್ಣು ಚ" ಗೀತಾ 13-16.

ಗ್ರಸ್ತ ಗ್ರಸ್ತ (ವಿಂ) 1. ತನ್ನಲ್ಲಟ್ಟು, ನುಂಗಲ್ಪಟ್ಟು. ಗ್ರಸ್ತು  
(ಅದನೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). (ನಂ) 2. ಅಕ್ಷರ  
ಗಳನ್ನು ನುಂಗಿ ಅಡುವ ಮಾತು, ಅಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ  
ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮಾತು. "ಲೂಪ್ತವರ್ಣಪದಂ ಗ್ರಸ್ತಮ್" ಅಮಂ.

ಗ್ರಸ್ತಾಸ್ತ ಗ್ರಸ್ತಾಸ್ತ (ವುಂ) ಗ್ರಹಣವಾದ ನಂತರ ಪೂರ್ತಿ  
ಮೋಕ್ಷವಾಗುವುದರೊಳಗೆ ಅಸ್ತಹೊಂದಿದ ಸೂರ್ಯ  
ಅಥವಾ ಚಂದ್ರ.

ಗ್ರಸ್ತು ಗ್ರಸ್ತು (ವಿಂ) 1. ತನ್ನವವನು, ನುಂಗುವವನು.  
ಗ್ರಸ್ತು (ಅದನೇ) "ತುಚ್" (3-1-133). "ಗ್ರಸ್ತಾರಂ ಚೈವ  
ಚಂದ್ರಸ್ಯ ಸೂರ್ಯಸ್ಯ ಚ ಮಹಾಪ್ರಭಮ್" ಹರಿವಂ.



**ಪ್ರಸ್ತೋವ ಗ್ರಹೋದಯ** (ಪುಂ) ಗ್ರಹಣವಾದ ನಂತರ ಮೂರ್ತಿಕೆ ಮುಂಚೆ ಆಗುವ ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರರ ಉದಯ, ಗ್ರಹಣವಾಗಿರುವಾಗಲೇ ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರರು ಉದಯಿಸುವುದು. ಪ್ರಸ್ತಸ್ಯ ಸೂರ್ಯಸ್ಯ ಚಂದ್ರಸ್ಯ ವಾ ಉದಯಃ । “ಪ್ರಸ್ತಾಸ್ತೇ ತ್ರಿದಿನಂ ಪೂರ್ವಂ ಪಶ್ಚಾದ್ ಪ್ರಸ್ತೋದಯೇ ತಥಾ । ಖಂಡಗ್ರಾಸೇ ಚ ತ್ರಿದಿನಂ ನಿಃಶೇಷೇ ಸಪ್ತ ಸಪ್ತ ಚ ” ।

**ಪ್ರಸ್ಯ ಗ್ರಹ** (ವಿಂ) ತನ್ನಲ್ಲದುವ, ನುಂಗಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರಸು (ಅದನು) “ಯತ್” । “ಯಚ್ಚಕ್ಷಯಂ ಪ್ರಸಿತುಂ ಪ್ರಸ್ಯಂ ಪ್ರಸ್ತಂ ಪರಿಣಮೇವ ಯತ್” ಭಾಂ. ಉದ್ಯೋಗಂ ೩೪-೧೪ ।

**ಗ್ರಹ - ಉಪಾದಾನೇ** (ಕೃಪಾಂ. ಉಭಂ. ಸಕಂ. ಸೇಂ) । ಗೃಹ್ಣತಿ ಗೃಹ್ಣೀತಃ ಗೃಹ್ಣಂತಿ । ಗೃಹ್ಣೀತೇ ಗೃಹ್ಣಾತೇ ಗೃಹ್ಣತೇ । ಜಗ್ರಾಹ । ಜಗ್ರಹೇ । ಗ್ರಹೀತಾ । ಗ್ರಹೀಷ್ಯತಿ, -ತೇ । ಗೃಹ್ಣಾತು, ಗೃಹ್ಣೀತಾಮ್ । ಅಗೃಹ್ಣಾತ್, ಅಗೃಹ್ಣೀತ । ಗೃಹ್ಣೀಯಾತ್, ಗೃಹ್ಣೀತ । ಗೃಹ್ಣಾತ್, ಗ್ರಹಿಷೀಷ್ಠ । ಅಗ್ರಹೀತ್, ಅಗ್ರಹೀಷ್ಠ । ಅಗ್ರಹೀಷ್ಯತ್, ಅಗ್ರಹೀಷ್ಯತ । 1. ಹಿಡಿದುಕೊ. “ತಯೋರ್ಜಗೃಹ್ಣತುಃ ಪಾದಾನ್ ರಾಜಾ ರಾಜ್ಞಿ ಚ ಮಾಗಧಿ” ರಘುಂ ೧-೫೭ । 2. ತೆಗೆದುಕೊ. “ಪ್ರಜಾನಾಮೇವ ಭೂತೃಣ್ಯ ಸ ತಾಮ್ಯೋ ಬಲಿಮಗ್ರಹೀತ್” ರಘುಂ ೧-೨೮ । 3. ಸ್ವೀಕರಿಸು, ಅಂಗೀಕರಿಸು. “ಋತಿಮಗ್ರಹೀದ್ರಗ್ರಹಣೋ ಲಭವಃ ಪ್ರಕಟಿಭವಂತಿ ಮಲಿನಾಶ್ರಯತಃ” ಮಾಘಂ ೯-೨೩ । 4. ತಿಳಿದುಕೊ. “ಮಯಾಪಿ ಮೃತ್ಪಿಂಡಬುದ್ಧಿನಾ ತಥೈವ ಗೃಹೀತಮ್” ಶಾಕುಂ ೬ । 5. ಕಲಿತುಕೊ, ಗ್ರಹಿಸು. “ಕಾತ್ಸರ್ಯೇನ ಗೃಹ್ಣಾತಿ ಲಿಪಿಂ ನ ಯಾವತ್” ರಘುಂ ೧೮-೪೬ ।

**ಕರ್ಮಣಿಃ**:-ಗೃಹ್ಯತೇ । ಜಗ್ರಹೇ । ಗ್ರಾಹಿತಾ, ಗ್ರಹೀತಾ । ಗ್ರಾಹಿಷ್ಯತೇ, ಗ್ರಹೀಷ್ಯತೇ । ಗೃಹ್ಯತಾಮ್ । ಅಗೃಹ್ಯತ । ಗೃಹ್ಯತೇ । ಗ್ರಾಹಿಷೀಷ್ಠ, ಗ್ರಹಿಷೀಷ್ಠ । ಅಗ್ರಾಹಿ । ಅಗ್ರಾಹಿಷ್ಯತ ।

**ಗ್ರಾಹಿ**:-ಗ್ರಾಹಯತಿ, -ತೇ । ಗ್ರಾಹಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ । ಗ್ರಾಹಯಿತಾ, ಗ್ರಾಹಿತಾ । ಗ್ರಾಹಯಿಷ್ಯತೇ, ಗ್ರಾಹಿಷ್ಯತೇ । ಗ್ರಾಹಯತಾಮ್ । ಅಗ್ರಾಹಯತ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಗೃಹ್ಯತುಃ**:-ಗ್ರಹೀತವ್ಯಃ । ಗ್ರಹಣೀಯಃ । ಗ್ರಾಹ್ಯಃ । ಗೃಹೀತಃ । ಗೃಹೀತವಾನ್, -ವತೀ । ಗೃಹ್ಣನ್, ಗೃಹ್ಣಂತೀ । ಗೃಹ್ಣಾನ್, ಗ್ರಹೀತುಮ್ । ಗೃಹೀತಮ್ । ಗ್ರಹಣಮ್ । ಗೃಹೀತ್ವಾ । ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಯ ।

**ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:**

(1) ಅನು + ಗ್ರಹ = ಅನುಗೃಹ್ಣಾತಿ । ಅನುಗ್ರಹಃ । ಅನುಕೂಲ, ವುಂಟುಮಾಡು, ದಯೆತೋರು. “ಪ್ರಲಯೇಷ್ವಪಿ ದೀರ್ಘಾಯುಃ ಪ್ರತಿಮುಸ್ತವದನುಗ್ರಹಃ” ಯಾದಂ ೧-೫೭ ।

(2) ಅಭಿ + ಗ್ರಹ = ಅಭಿಗೃಹ್ಣಾತಿ । ಅಭಿಗೃಹ್ಯ । ಎದುರಿನಿಂದ ಹಿಡಿದುಕೊ. “ಅಮ್ಬಾಲಿಕಾಪಿ ಬಲವದಭಿಗೃಹ್ಯ ಚಂಡವರ್ಮಣಾ” ದಶಕುಂ ।

(3) ಅವ + ಗ್ರಹ = ಅವಗೃಹ್ಣಾತಿ । ಅವಗ್ರಹಃ । 1. ತಡೆ ಗಟ್ಟಿ, ಅಡ್ಡಿಮಾಡು. ಅತಂಕಪಡಿಸು. “ವೃಷ್ಟಿರ್ಭವತಿ ಸತ್ಯಾನಾಮವಗ್ರಹವಿಶೋಷಿಣಾಮ್” ರಘುಂ ೧-೬೨ । 2. ನಿಗ್ರಹಿಸು. ತಿಕ್ಕಿಸು. “ಮಂದೋಽಪಿ ನಾಮ ತ ಮಹಾನವಗೃಹ್ಯ ಸಾಧ್ಯಃ” ಮಾಘಂ ೫-೪೯ ।

(4) ಆ + ಗ್ರಹ = ಆಗ್ರಹಃ । ಎದುರಾಗಿ ಎಳೆದುಕೊ.

(5) ಉ + ಗ್ರಹ = ಉದಗೃಹ್ಣಾತಿ । ಉದಗ್ರಹೀತ್ । ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿಹಿಡಿದು. “ತಂ ಪ್ರಾಪ್ತಂ ಪ್ರಾಸಹಿಷ್ಠಾರಿಃ ಶಕ್ತಿಂ ಚೋಗ್ರಾಮುದಗ್ರಹೀತ್” ಮಹಿಂ ೧೫-೫೨ ।

(6) ನಿ + ಗ್ರಹ = ನಿಜಗ್ರಾಹ । ನಿಜಗ್ರಹಃ । 1. ಬಲಾತ್ಕಾರ ದಿಂದ ತಡೆದುನಿಲ್ಲಿಸು. “ನಿಜಗ್ರಾಹ ಮಹಾಬಾಹುಃ ಮಾರುತಾತ್ಮಜ-ಮಿನ್ದ್ರಜಿತ್” ರಾಮಾಂ । 2. ನಿಯಮಿಸು, ಅಡೆಯಲ್ಲಿಡು. “ಅನಿಗ್ರಹಾಚ್ಚೇಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ ನರಃ ಪತನಮುಚ್ಛತಿ” ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೨೧೯ ।

(7) ಪರಿ + ಗ್ರಹ = ಪರಿಗೃಹ್ಣಾತಿ । ಪರಿಗ್ರಹಃ । 1. ಸುತ್ತಲೂ ಹಿಡಿದುಕೊ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಹಿಡಿದುಕೊ. “ಬಾಹುನಾ ಪರಿಜಗ್ರಾಹ ದಕ್ಷಿಣೇನ ಶಿರೋಧರಾಮ್” ಭಾಂ. ಆದಿಂ । 2. ಸ್ವೀಕರಿಸು, ತೆಗೆದುಕೊ. “ಕಸ್ಯ ಗುಪ್ತಃ ಪರಿಗ್ರಹಃ” ।

(8) ಪ್ರತಿ + ಗ್ರಹ = ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಣಾತಿ । ಪ್ರತಿಜಗ್ರಾಹ । ಪ್ರತಿಗ್ರಹಃ । ತೆಗೆದುಕೊ, ಸ್ವೀಕರಿಸು. “ತಥೇತಿ ಪ್ರತಿಜಗ್ರಾಹ ಪ್ರೀತಿಮಾನ್ ಸಪರಿಗ್ರಹಃ” ರಘುಂ ೧-೯೨ ।

(9) ವಿ + ಗ್ರಹ = ವಿಗೃಹ್ಣಾತಿ । ವಿಗ್ರಹಃ । 1. ವಿರೋಧಿಸು, ದ್ವೇಷಿಸು. “ವಿಗೃಹ್ಯ ಚಕ್ರೇ ನಮುಚಿದ್ರಿಷಾ ಬಲಿಂ ಯ ಇತ್ಯಮಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯಮಹದಿವಂ ದಿವಃ” ಮಾಘಂ ೧-೫೧ । 2. ವೃತ್ತಿಯ ಅರ್ಥವನ್ನು ವಿವರಿಸು. “ವೃತ್ಯರ್ಥವಿವಿಧಕಂ ವಾಕ್ಯ ವಿಗ್ರಹಃ” ಸಿಂ. ಕೌಂ ।

(10) ಸಮ್ + ಗ್ರಹ = ಸಂಗೃಹ್ಣಾತಿ । ಸಂಗ್ರಹಃ । ಸಂಗ್ರಹಿಸು, ತೇವರಿಸು, ಕೂಡಿಸು. “ಸಂಗ್ರಹಃ ಸರ್ವ ಕರ್ತವ್ಯಃ ಸಂಗ್ರಹೀ ನಾವಸೀದತಿ” ।

**ಗ್ರಹ ಗುಹ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹ ಗಳು. ಗೃಹ್ಣಾತಿ-ಗ್ರಹ(ಉಪಾದಾನೇ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೪೩) । “ನಕ್ಷತ್ರತಾರಾಗ್ರಹಸಂಕುಲಾಪಿ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತೀ ಚಂದ್ರಮಸವ ರಾತ್ರಿಃ” ರಘುಂ ೬-೨೨ ।

**ನವಗ್ರಹಗಳು:**

(1) ರವಿಃ, (2) ಚಂದ್ರಃ, (3) ಕುಜಃ, (4) ಬುಧಃ, (5) ಗುರುಃ, (6) ಶುಕ್ರಃ, (7) ಶನಿಃ, (8) ರಾಹುಃ ಮತ್ಸ್ಯ, (9) ಕೇತುಃ । “ರವಿಶ್ವಂದ್ರೋ ಮಂಜುಲಶ್ಚ ಬುಧಶ್ಚಾಪಿ ಬೃಹಸ್ಪತಿಃ । ಶುಕ್ರಃ ಶನೇಶ್ವರೋ ರಾಹುಃ ಕೇತುಃಚೇತಿ ನವ ಗ್ರಹಾಃ” ।



ಸೂರ್ಯಾದಿ ಗ್ರಹಗಳಿಗೆ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಗೋತ್ರ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ವಿವರಣ ಪದಕ

| ಜನ್ಮಭೂಮಿ<br>ಮೊದಲಾದುವು | ರವಿಗೆ      | ಚಂದ್ರನಿಗೆ    | ಕುಜನಿಗೆ          | ಬುಧನಿಗೆ    | ಗುರುವಿಗೆ | ಶುಕ್ರನಿಗೆ | ಶನಿಗೆ     | ರಾಹುವಿಗೆ      | ಕೇತುವಿಗೆ    |
|-----------------------|------------|--------------|------------------|------------|----------|-----------|-----------|---------------|-------------|
| ಜನ್ಮಭೂಮಿ              | ಕಳಿಂಗ      | ಯಮುನಾ        | ಅವಂತಿ            | ಮಗಧ        | ಸೈಂಧವ    | ಭೋಜಕಟ     | ಸೌರಾಷ್ಟ್ರ | ವರ್ವರಕ        | ಅಂತರ್ವೇದಿ   |
| ಗೋತ್ರ                 | ಕಶ್ಯಪ      | ಅತ್ರಿ        | ಭರದ್ವಾಜ          | ಅತ್ರಿ      | ಅಂಗಿರಸ್  | ಭೃಗು      | ಕಶ್ಯಪ     | ಪೈಲೀನಸಿ       | ಜೈಮಿನಿ      |
| ರೂಪಾತ್ಮಕವರ್ಣ          | ರಕ್ತ       | ಶುಕ್ಲ        | ರಕ್ತ             | ಪೀತ        | ಪೀತ      | ಶುಕ್ಲ     | ಕೃಷ್ಣ     | ಕೃಷ್ಣ         | ಚಿತ್ರ       |
| ಮಂಡಲದಲ್ಲಿ ಸ್ಥಾನ       | ಮಧ್ಯ       | ಪೂರ್ವ ದಕ್ಷಿಣ | ದಕ್ಷಿಣ           | ಪೂರ್ವೋತ್ತರ | ಉತ್ತರ    | ಪೂರ್ವ     | ಪಶ್ಚಿಮ    | ದಕ್ಷಿಣ ಪಶ್ಚಿಮ | ಪಶ್ಚಿಮೋತ್ತರ |
| ಆಕಾರ                  | ವರ್ತುಲ     | ಅರ್ಧಚಂದ್ರ    | ತ್ರಿಕೋಣ          | ಧನುಸ್ಸು    | ಪದ್ಮ     | ಚತುಷ್ಕೋಣ  | ಸರ್ಪ      | ಮಕರ           | ಖಡ್ಗ        |
| ನಾಹನ                  | ಸಪ್ತಾಶ್ವರಥ | ದಶಾಶ್ವರಥ     | ಮೇಷ              | ಸಿಂಹ       | ಗಜ       | ಅಶ್ವ      | ಗೃಧ್ರ     | ಸಿಂಹ          | ಗೃಧ್ರ       |
| ಶುಕ್ಲ                 | ಗನ್ನೇರಿಕೆ  | ನೈದಿಲೆ       | ಜಪಾ<br>(ದಾಸಿವಾಳ) | ಸಂಪಿಗೆ     | ತಾವರೆ    | ಹಾಜಿ      | ಮಲ್ಲಿಗೆ   | ಮೊಲ್ಲೆ        | ಮಲ್ಲಿಗೆ     |
| ಫಲ                    | ದ್ರಾಕ್ಷಿ   | ಕಬ್ಬು        | ಪೂಗ              | ನಾಗರಂಗ     | ಜಂಬೀರ    | ಬೀಜಪೂರ    | ಜಾಜಿ      | ನಾರಿಕೇಳ       | ದಾಳಿಂಬೆ     |
| ವಸ್ತ್ರ                | ರಕ್ತ       | ಶುಕ್ಲ        | ರಕ್ತ             | ಪೀತ        | ಪೀತ      | ಶುಕ್ಲ     | ಕೃಷ್ಣ     | ಕೃಷ್ಣ         | ಚಿತ್ರ       |
| ಭಾಷೆ                  | ಗೋಧಿ       | ಬತ್ತ         | ತೊಗರಿ            | ಹೆಸರಂ      | ಕಡಲೆ     | ಅವರೆ      | ಎಳ್ಳು     | ಉದ್ದು         | ಹುರುಳಿ      |
| ರತ್ನ                  | ಮಾರಣಕೃ     | ಮುತ್ತು       | ಹವಳ              | ಪಚ್ಚೆ      | ಪುಷ್ಪರಾಗ | ವಜ್ರ      | ನೀಲ       | ಗೋಮೇದಕ        | ವೈಡೂರ್ಯ     |
| ಅಧಿಷ್ಠಾತ್ಯ ದೇವತೆ      | ಶಿವ        | ಉಮಾ          | ಸ್ಕಂದ            | ನಾರಾಯಣ     | ಬ್ರಹ್ಮ   | ಇಂದ್ರ     | ಯಮ        | ಕಾಲ           | ಚಿತ್ರಗುಪ್ತ  |



ಸೂರ್ಯಾದಿಗ್ರಹಗಳು ಈ ಕೆಳಗೆ ಆಯಾ ಗ್ರಹಗಳ  
ಎದುರಿಗೆ ಕಾಣಿಸಿರುವ ವಿಷಯಗಳಿಗೆ ಕಾರಕರು :

- (1) ರವಿ: ಪಿತೃ, ಆತ್ಮ, ಪ್ರಭಾವ ಮತ್ತು ಶಕ್ತಿ  
ಇವುಗಳಿಗೆ ಕಾರಕ.
- (2) ಚಂದ್ರ: ಮಾತೃ, ಮನಸ್ಸು, ಬುದ್ಧಿ ಮತ್ತು  
ಪ್ರಸಾದ ಇವುಗಳಿಗೆ ಕಾರಕ.
- (3) ಕುಜ: ಸಹೋದರ, ಭೃತ್ಯ ಮತ್ತು ಭೂಮಿಗಳಿಗೆ  
ಕಾರಕ.
- (4) ಬುಧ: ಪ್ರಜ್ಞೆ, ಕರ್ಮ ಮತ್ತು ವಿಜ್ಞಾನಗಳಿಗೆ  
ಕಾರಕ.
- (5) ಗುರು: ವೇದವೃಷ್ಟಿ, ಬುದ್ಧಿ, ಪುತ್ರ, ಅರ್ಥ  
ಮತ್ತು ಸಂಪತ್ತುಗಳಿಗೆ ಕಾರಕ.
- (6) ಶುಕ್ರ: ವಿವಾಹ, ಭಾಗ್ಯ, ಭೋಗ ಮತ್ತು  
ವಾಹನಗಳಿಗೆ ಕಾರಕ.
- (7) ಶನಿ: ಆಯುಷ್ಯ, ಜೀವನೋಪಾಯ ಮತ್ತು  
ಮರಣಗಳಿಗೆ ಕಾರಕ.
- (8) ರಾಹು: ಮಾತಾಮಹ, ಶಟಾಕ, ಆರಾಮ ಮತ್ತು  
ವಿಶ್ರಾಮ ಇವುಗಳಿಗೆ ಕಾರಕ.
- (9) ಕೇತು: ಪಿತಾಮಹ ಮತ್ತು ಮೋಕ್ಷಗಳಿಗೆ  
ಕಾರಕ.

ಸೂರ್ಯಾದಿ ಗ್ರಹಗಳಿಗೆ ಪರಸ್ಪರ ಸಮ ಶತ್ರು  
ಮಿತ್ರ ಗ್ರಹಗಳು :

|               | ಸಮ                    | ಶತ್ರು                | ಮಿತ್ರ             |
|---------------|-----------------------|----------------------|-------------------|
| (1) ಸೂರ್ಯನಿಗೆ | ಬುಧ                   | ಶುಕ್ರ, ಶನಿ           | ಚಂದ್ರ, ಕುಜ, ಗುರು  |
| (2) ಚಂದ್ರನಿಗೆ | ಕುಜ, ಗುರು, ಶುಕ್ರ, ಶನಿ | —                    | ರವಿ ಮತ್ತು ಬುಧ     |
| (3) ಕುಜನಿಗೆ   | ಶುಕ್ರ, ಶನಿ            | ಬುಧ                  | ರವಿ, ಚಂದ್ರ, ಗುರು. |
| (4) ಬುಧನಿಗೆ   | ಕುಜ, ಗುರು, ಶನಿ        | ಚಂದ್ರ                | ರವಿ, ಶುಕ್ರ        |
| (5) ಗುರುವಿಗೆ  | ಶನಿ                   | ಬುಧ, ಶುಕ್ರ           | ರವಿ, ಚಂದ್ರ, ಕುಜ   |
| (6) ಶುಕ್ರನಿಗೆ | ಕುಜ, ಗುರು             | ರವಿ, ಚಂದ್ರ           | ಬುಧ, ಶನಿ          |
| (7) ಶನಿಗೆ     | ಗುರು                  | ರವಿ, ಕುಜ, ಶುಕ್ರ, ಬುಧ | ಚಂದ್ರ             |

ಸೂರ್ಯಾದಿ ಗ್ರಹಗಳ ಕ್ಷೇತ್ರಗಳು :

| ಗ್ರಹಗಳು       | ಕ್ಷೇತ್ರಗಳು   |
|---------------|--------------|
| (1) ಸೂರ್ಯನಿಗೆ | ಸಿಂಹ         |
| (2) ಚಂದ್ರನಿಗೆ | ಕರ್ಕಾಟಕ      |
| (3) ಕುಜನಿಗೆ   | ಮೇಷ, ವೃಶ್ಚಿಕ |
| (4) ಬುಧನಿಗೆ   | ಮಿಥುನ, ಕನ್ಯಾ |
| (5) ಗುರುವಿಗೆ  | ಧನುಸ್ಸು, ಮೀನ |
| (6) ಶುಕ್ರನಿಗೆ | ವೃಷಭ, ತುಲಾ   |
| (7) ಶನಿಗೆ     | ಮಕರ, ಕುಂಭ    |

ಸೂರ್ಯಾದಿ ಗ್ರಹಗಳಿಗೆ ಉಚ್ಚ ನೀಚ ರಾಶಿಗಳು

| ಗ್ರಹಗಳು       | ಉಚ್ಚರಾಶಿ | ನೀಚರಾಶಿ |
|---------------|----------|---------|
| (1) ಸೂರ್ಯನಿಗೆ | ಮೇಷ      | ತುಲಾ    |
| (2) ಚಂದ್ರನಿಗೆ | ವೃಷಭ     | ವೃಶ್ಚಿಕ |
| (3) ಕುಜನಿಗೆ   | ಮಕರ      | ಕರ್ಕಾಟಕ |
| (4) ಬುಧನಿಗೆ   | ಕನ್ಯಾ    | ಮಿಥುನ   |
| (5) ಗುರುವಿಗೆ  | ಕರ್ಕಾಟಕ  | ಮಕರ     |
| (6) ಶುಕ್ರನಿಗೆ | ಮೀನ      | ಕನ್ಯಾ   |
| (7) ಶನಿಗೆ     | ತುಲಾ     | ಮೇಷ     |

ಸೂರ್ಯಾದಿ ಗ್ರಹಗಳು ಮೇಷಾದಿ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ  
ಸಂಚರಿಸುವ ಕಾಲ :

| ಗ್ರಹಗಳು             | ಕಾಲ                                       |
|---------------------|---|
| (1) ಸೂರ್ಯ           | ಒಂದು ತಿಂಗಳು                               |
| (2) ಚಂದ್ರ           | ಎರಡೂಕಾಲು ದಿನಗಳು<br>(54 ಗಂಟೆಗಳ ಕಾಲ)        |
| (3) ಕುಜ             | ಮೂರು ಪಕ್ಷಗಳು                              |
| (4) ಬುಧ             | ಹದಿನೆಂಟು ದಿನಗಳು                           |
| (5) ಗುರು            | ಒಂದು ವರ್ಷ                                 |
| (6) ಶುಕ್ರ           | ಇಪ್ಪತ್ತೆಂಟು ದಿನಗಳು                        |
| (7) ಶನಿ             | ಎರಡು ವರ್ಷ ಆರು ತಿಂಗಳು<br>(30 ತಿಂಗಳುಗಳ ಕಾಲ) |
| (8, 9) ರಾಹು ಕೇತುಗಳು | ಒಂದೂವರೆ ವರ್ಷ<br>(18 ತಿಂಗಳುಗಳ ಕಾಲ)         |

“ ರವಿರ್ಮಸಿಂ ನಿಶಾನಾಥಃ ಸಪಾದದಿವಸದ್ವಯಮ್ ।  
ಪಕ್ಷತ್ರಯಂ ಭೂಮಿಪುತ್ರಃ ಬುಧೋಽಷ್ಟಾದಶವಾಸರಾನ್ ।  
ವರ್ಷಮೇಕಂ ಸುರಾಚಾರ್ಯಾಃ ಪೂರ್ವಾಽಷ್ಟಾದಶದಿನಂ ಭಗುಃ ।  
ಶನಿಃ ಸಾರ್ಧದ್ವಯಂ ವರ್ಷಂ ಸ್ವರ್ಮಾನುಃ ಸಾರ್ಧವತ್ಸರಮ್ ” ॥

ಕ್ರೂರ ಮತ್ತು ಸೌಮ್ಯ ಗ್ರಹಗಳು :

ಸೂರ್ಯ, ಕುಜ, ಶನಿ, ರಾಹು ಮತ್ತು ಕೇತು ಇವರು  
ಕ್ರೂರ ಗ್ರಹಗಳು.



ಚಂದ್ರ, ಬುಧ, ಗುರು ಮತ್ತು ಶುಕ್ರ ಇವರು ಸೌಮ್ಯ ಗ್ರಹಗಳು.

**ಪುರುಷ ಸ್ತ್ರೀ ನಪುಂಸಕ ಗ್ರಹಗಳು:**

ಸೂರ್ಯ. ಕುಜ ಮತ್ತು ಗುರು ಪುರುಷಗ್ರಹಗಳು. ಚಂದ್ರ, ಶುಕ್ರ ಮತ್ತು ರಾಹು ಸ್ತ್ರೀ ಗ್ರಹಗಳು. ಬುಧ, ಶನಿ ಮತ್ತು ಕೇತು ನಪುಂಸಕ ಗ್ರಹಗಳು.

**ಗ್ರಹಗಳಿಗೆ ಸಾಮಾನ್ಯ ಮತ್ತು ವಿಶೇಷ ದೃಷ್ಟಿ:**

ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಎಲ್ಲಾ ಗ್ರಹಗಳೂ ತಾವಿರುವ ರಾಶಿಯಿಂದ ಸಪ್ತಮ (ಏಳನೆಯ) ರಾಶಿಯನ್ನು ಸಂಪೂರ್ಣ ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ನೋಡುವುವು.

ಕುಜನು ತಾನಿರುವ ರಾಶಿಯಿಂದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಮತ್ತು ಎಂಟನೆಯ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿರುವ ಗ್ರಹಗಳನ್ನು ತ್ರಿಪಾದ ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದಲೂ ಗುರುವು ತಾನಿರುವ ರಾಶಿಯಿಂದ ಐದನೆಯ ಮತ್ತು ಒಂಬತ್ತನೆಯ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿರುವ ಎಲ್ಲಾ ಗ್ರಹಗಳನ್ನು ಅರ್ಧ ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದಲೂ ಶನಿಯು ತಾನಿರುವ ರಾಶಿಯಿಂದ ಮೂರನೆಯ ಮತ್ತು ಹತ್ತನೆಯ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿರುವ ಎಲ್ಲಾ ಗ್ರಹಗಳನ್ನು ಪಾದದೃಷ್ಟಿಯಿಂದಲೂ ವಿಶೇಷವಾಗಿ ನೋಡುತ್ತಾರೆ. "ತದಶತಿಕೋಣಚತುರಶ್ರಸಪ್ತಗಾನವಲೋಕಯಂತಿ ಚರಣಾಭಿವೃದ್ಧಿಃ | ರವಿಜಾಮರೇಡಧರಧಿರಾಃ ಪರೇ ಚ ಯೇ ಕ್ರಮಶೋ ಭವಂತಿ ಸಕಲೇಕ್ಷಣಾಧಿಪಾಃ" ಮುಹೂಂ ೬೦ | 2. ಸ್ವೀಕರಿಸುವುದು, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಯೋ ಯಥಾ ನಿಕ್ಷಿಪೇದ್ವಸ್ತೇ ಯಮಥೈ ಯಸ್ಯ ಮಾನವಃ | ಸ ತಥೈವ ಗ್ರಹಿತವ್ಯೋ ಯಥಾ ದಾಯಸ್ತಥಾ ಗ್ರಹಃ" ಮನುಂ ೮-೧೮೦ | 3. ಹಿಡಿದು ಕೊಳ್ಳುವುದು. "ವಿಷ ಹೇ ಶತ ಪಲಾಯನಂ ಚಲಾನ್ಯಜ್ಜಸೇತಿ ಕುರುಃ ಕಚಗ್ರಹೈಃ" ರಘುಂ ೧೯-೩೧ | 4. ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರರ ಗ್ರಹಣ. "ಗ್ರಸ್ತೇ ಕ್ರಮಾನ್ವಿಮಿತ್ತಃ ಪುನಃಗ್ರಹೋ ಮಾಸಪಡ್ಕಪರಿವೃದ್ಧಿಃ | ಪವನೋಲ್ಕಾಪಾತರಜಃ ಕ್ಷಿತಿಕಂಪತಮೋಷಾನಿನಿಪಾತೈಃ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೪-೬೩ | 5. ಅನುಗ್ರಹ, ವಿಶ್ವಾಸ, ದಯೆ. 6. ರಣೋದ್ಯಮ. 7. ಪೂಜನಾದಿ ಬಾಲಗ್ರಹಗಳು. 8. ಸಿಂಹಕಾಪುತ್ರ, ರಾಹು. "ಸಂಖ್ಯಾಭ್ರಕಪಿಶಸ್ತಸ್ಯ ವಿರಾಧೋ ನಾಮ ರಾಕ್ಷಸಃ | ಅತಿಠ್ಠಮಾರ್ಗಮಾವೃತ್ಯ ರಾಮಸ್ಯೇಂದೋರಿವ ಗ್ರಹಃ" ರಘುಂ ೧೨-೨೮ | 9. ಒಂಬತ್ತು ಸಂಖ್ಯೆ. 10. ಚೌರ, ಕದಿಯುವುದು. "ಅಙ್ಗುಲೀಗ್ರ್ಯನ್ವಿಭೇದಸ್ಯ ಛೇದಯೇತ್ಪ್ರಥಮೇ ಗ್ರಹೇ" ಮನುಂ ೯-೨೭೭ | 11. ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ಅರಿವು. 12. ನಿರ್ಬಂಧ. "ಹಿಮಾಂಶುಬಂಶಸ್ಯ ಕರೀರಮೇವ ಮಾಂ ನಿಶಮ್ಯ ಕಿಂ ನಾಸಿ ಫಲೇಗ್ರಹಿಗ್ರಹಾ" ನೈಷಂ ೯-೧೨ | "ಗ್ರಹೋಽನುಗ್ರಹನಿರ್ಬಂಧಗ್ರಹಣೇಷು ರಣೋದ್ಯಮೇ | ಸೂರ್ಯಾದಿ ಪೂತನಾದಿ ಚ ಸೈಹಿಕೇಯೋಪರಾಗಯೋಃ" ಮೇದಿಂ |

**ಗ್ರಹಕಲ್ಪಿತ ಗ್ರಹಕಲ್ಪಿತ (ಪುಂ) ರಾಹು.** ಗ್ರಹಣ ಕಲ್ಪಿತ ಇವ |

**ಗ್ರಹಗಣಿತ ಗ್ರಹಗಣಿತ (ನಂ)** ಜ್ಯೋತಿಷಶಾಸ್ತ್ರದ ಒಂದು ಭಾಗ, ಖಗೋಳ ವಿಜ್ಞಾನ, ಗ್ರಹಗಳ ಗತಿಯನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ. ಸ್ಕಂಧತ್ರಯವು ಜ್ಯೋತಿಷಶಾಸ್ತ್ರದ ಒಂದು ಭಾಗ. "ಸ್ಕಂಧೇಽಸ್ಮಿನ್ ಗಣಿತೇನ ಯಾ ಗ್ರಹಗತಿಃ ತನ್ವಾಭಿಧಾನಸ್ತವಸೌ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೧-೯ |

**ಗ್ರಹಗತಿ ಗ್ರಹಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗ್ರಹಗಳ ಸಂಚಾರ. ಗ್ರಹಾಣಾ ಗತಿಃ |

**ಗ್ರಹಗೋಚರ ಗ್ರಹಗೋಚರ (ಪುಂ)** ಜನ್ಮರಾಶಿಯಿಂದ ಇತರ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಶುಭಾಶುಭ ಸೂಚಕವಾದ ಗ್ರಹಗಳ ಗತಿ. ["ಗೋಚರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಗ್ರಹಚಿಂತಕ ಗ್ರಹಚಿಂತಕ (ಪುಂ)** ಜ್ಯೋತಿಷಕ, ಜೋಯಿಸ. ಗ್ರಹಗಳ ಸ್ಥಿತಿಗತಿಗಳನ್ನು ಕುರಿತು ಯೋಚಿಸುವವನು. "ವಕ್ತವ್ಯಮಿಷ್ಟಂ ಜಗತೋಽಶುಭಂ ವಾ ಶಾಸ್ತ್ರೋಪದೇಶಾತ್ ಗ್ರಹಚಿಂತಕೇನ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೨೪-೪ |

**ಗ್ರಹಣ ಗ್ರಹಣ (ನಂ)** 1. ಸ್ವೀಕಾರ, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) | "ನ ಶೇಕುಗ್ರಹಣೇ ತಸ್ಯ ಧನುಷಸ್ತೋಲನೇಽಪಿ ವಾ" ರಾಮಾಂ | 2. ಉಪರಾಗ, ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರನ್ನು ರಾಹುವು ನುಂಗುವುದು. "ಯದೇಕಸ್ಮಿನ್ ಮಾಸೇ ಗ್ರಹಣಂ ರವಿಸೋಮಯೋಸ್ತದಾ ಕ್ಷಿತಿಪಾಃ | ಸ್ವಬಲಕ್ಷೋಭೈಃ ಸಂಖ್ಯಮಾಯಾನ್ಯತಿಸ್ತ್ರಕೋಪಶ್ಚ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೪-೨೬ | 3. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. "ಸ್ವತ ಏವ ಸತಾಂ ಪರಾರ್ಥತಾ ಗ್ರಹಣಾಣಾಂ ಹಿ ಯಥಾ ಯಥಾರ್ಥತಾ" ನೈಷಂ ೨-೬೧ | 4. ಇಂದ್ರಿಯ. 5. ಹಸ್ತ, ಕೈ. ಗ್ರಹ ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) | 6. ಹಿಡಿಯುವುದು, ಆಕ್ರಮಿಸುವುದು. "ನಿತ್ಯಮಾಸ್ಯಂ ಶುಚಿ ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಶಕುನಿಃ ಫಲಪಾತನೇ | ಪ್ರಸವೇ ಚ ಶುಚಿರ್ವತ್ಸಃ ಕ್ವಾ ಮೃಗಗ್ರಹಣೇ ಶುಚಿಃ" ಮನುಂ ೪-೧೩೦ | 7. ಕದಿಯುವುದು, ಶಿಕ್ಷಣ ಪಡೆಯುವುದು. "ಲಿಪೇರ್ಯಥಾವದ್ಗ್ರಹಣೇನ ವಾಙ್ಮಯಂ ನದೀಮುಖೇನೇವ ಸಮುದ್ರಮಾವಿಶತ್" ರಘುಂ ೩-೨೮ | 8. ಕೈದಿ, ಸೆರೆಯಾಳು. 9. ಆಕರ್ಷಣ, ಎಳೆತ. 10. ಆದರ. 11. ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳುವುದು. "ವಿಪ್ರೋಷ್ಯ ಪಾದಗ್ರಹಣಮನ್ವಹಚ್ಚಾಭಿವಾದನಮ್" ಮನುಂ ೨-೨೧೭ | 12. ಪಡೆಯುವುದು, ಹೊಂದುವುದು. 13. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. 14. ತಾಳುವುದು. ಕೈಗೊಳ್ಳುವುದು, ಪಡೆಯುವುದು. "ಅಜಃ ಶರೀರಗ್ರಹಣಾತ್ಸ ಜಾತ ಇತಿ ಕೀರ್ತಯತೇ" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೬೯ |

**ಗ್ರಹಣಕ ಗ್ರಹಣಕ (ನಂ)** ಸಮಾನಸ್ಥಾನ ಪ್ರಯತ್ನಗಳುಳ್ಳ ಸರ್ವಾರ್ಥಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಜೊತೆಗೆ ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಶಾಸ್ತ್ರ. ಗೃಹ್ಣಂತ್ಯಕಾರಾದಯಃ ಸ್ವಸರ್ವಣಾನ್ ಯೇನ ತದ್ಗ್ರಹಣಮ್ - ಗ್ರಹ



(ಉಪಾದಾನೇ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) । ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕಃ" । "ಅನ್ಯಥಾ ಗ್ರಹಣಕಶಾಸ್ತ್ರಬಲಾತ್ ದೀರ್ಘಾದಿನಾಮಿವ ಹಕಾರಾದಿನಾಮಪಿ ಅಕ್ಷವಂ ಸ್ಯಾತ್" ।

**ಗ್ರಹಣಿ (ಗಿ) ಗ್ರಹಣಿ (ಣೀ) (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಪಿತ್ತಧರೆಯೆಂಬ ಒಂದು ಕಲೆ. 2. ಪಿತ್ತಾಶಯದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ರೋಗ. ಗುಣ್ಣಾತಿ ರೋಗಿಣಿ ದೇಹಮ್ । ದೇಹದಲ್ಲಿರುವ ಸಪ್ತ ಕಲೆಗಳಲ್ಲಿ ಪಿತ್ತಧರೆಯೆಂಬುದು ಒಂದು ಕಲೆ. ಇದು ಪಿತ್ತಾಶಯ ಮತ್ತು ಆಮಾಶಯಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ "ಗ್ರಹಣಿ" ಎಂದು ಹೆಸರು. "ಷಷ್ಠಿ ಪಿತ್ತವರಾ ನಾಮ ಯಾ ಕಲಾ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾ । ಪಕ್ವಾಮಾಶಯಮಧ್ಯಸ್ಥಾ ಗ್ರಹಣಿ ಸಾ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ" ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರತಂ ೪೦-೧೬೯ । ಈ ಗ್ರಹಣಿಗೆ ಜಾತರಾಗ್ನಿಯು ಬಲವನ್ನು ಕೊಡುವುದು. ಜಾತರಾಗ್ನಿಯೂ ಗ್ರಹಣಿಯಿಂದ ಬಲಿಷ್ಠವಾಗುವುದು. ಈ ಅಗ್ನಿಯು ಕಡಿಮೆಯಾದರೆ ಗ್ರಹಣಿಯೂ ಕೆಟ್ಟು ಆಹಾರವು ಜೀರ್ಣವಾಗದೆ ಆಮವನ್ನೇ ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಿಡುವುದು. ಒಂದು ವೇಳೆ ಜೀರ್ಣವಾದರೂ ದುರ್ಗಂಧದಿಂದ ಕೂಡಿ ಪದೇ ಪದೇ ಭೇದಿಯಾಗುವುದು. ಇದೇ "ಗ್ರಹಣೀರೋಗ" ವಾಗುವುದು. "ಗ್ರಹಣ್ಯಾ ಬಲ-ಮಗ್ನಿಹಿ ಸ ಚಾಪಿ ಗ್ರಹಣಿಂ ಶ್ರಿತಃ । ತಸ್ಮಾತ್ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತೇ ವಹ್ನಿ ಗ್ರಹಣಿ ಸಂಪ್ರದುಷ್ಯತಿ ॥ ಏಕಶಃ ಸರ್ವಶಶ್ಚೇವ ದೋಷೇರರ್ಥ-ಮುಚ್ಛ್ರಿತಃ । ಸಾ ದುಷ್ಠಾ ಬಹುಶೋ ಭುಕ್ತಮಾಮೇವ ವಿಮುಷ್ಚತಿ ॥ ಪಕ್ವಂ ವಾ ಸರ್ಜಂ ಪೂತಿ ಮುಹುರ್ದಂ ಮುಹುರ್ದವಮ್ । ಗ್ರಹಣಿರೋಗಮಾಹುಸ್ತ-ಮಾಯುರ್ವೇದವಿದೋ ಜನಾಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರತಂ ೪೦-೧೭೦-೭೨ ।

**ಗ್ರಹಣಿಹರ ಗ್ರಹಣೀಹರ (ನಂ)** 1. ಲವಂಗ. ಗ್ರಹಣಿ ಹರತಿ—ಹ್ರ (ಹರಣಿ) "ಅಚ್" (೩-೨-೯) । (ವಿಂ) 2. ಗ್ರಹಣೀರೋಗವನ್ನು ವಾಸಿಮಾಡುವ ಔಷಧ.

**ಗ್ರಹವೃಷ್ಟಿ ಗ್ರಹದೃಷ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗ್ರಹಗಳು ತಾವಿರುವ ಸ್ಥಾನಗಳಿಂದ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಸ್ಥಾನಗಳನ್ನು ನೋಡುವುದು.

**ಗ್ರಹದೇವತಾ ಗ್ರಹದೇವತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸೂರ್ಯಾದಿ ಗ್ರಹಗಳಿಗೆ ಅಧಿಷ್ಠಾತ್ಯ ದೇವತೆ.

**ಗ್ರಹನಾಯಕ ಗ್ರಹನಾಯಕ (ಪುಂ)** 1. ಗ್ರಹಗಳ ಪತಿಯಾದ ಸೂರ್ಯ. 2. ಶನಿ. 3. ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 4. ಚಂದ್ರ.

**ಗ್ರಹನೇಮಿ ಗ್ರಹನೇಮಿ (ಪುಂ)** ಚಂದ್ರ. ಗ್ರಹಣಾಂ ನೇಮಿರಿವ ।

**ಗ್ರಹಪತಿ ಗ್ರಹಪತಿ (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಚಂದ್ರ. 3. ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 4. ಶನಿ. ಗ್ರಹಣಾಂ ಪತಿಃ । "ತಸ್ಯ ವಿಸ್ತೀರ್ಯತೇ ರಾಜ್ಯಂ ಜ್ಯೋಸ್ತಾ ಗ್ರಹಪತೀರಿವ" ಭಾಂ ।

**ಗ್ರಹಪುಷ್ಪ ಗ್ರಹಪುಷ್ಪ (ಪುಂ)** ಸೂರ್ಯ. ಗ್ರಹಾನ್ ಪುಷ್ಪಾತಿ — ಪುಷ್ಪ (ಪುಷ್ಪಿ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫) । "ಸೂರ್ಯೋಽಕಃ

ಕಿರಣೋ ಭಗೋ ಗ್ರಹಪುಷ್ಪಃ ಪೂಷಾ ಪತಂಜಃ ಸಗೋ ಮಾರ್ತೆಣ್ಣೋ ಯಮುನಾ-ಕೃತಾಂತಜನಕಃ ಪ್ರದ್ಯೋತನಸ್ತಾಪನಃ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ ।

**ಗ್ರಹಬಲ ಗ್ರಹಬಲ (ನಂ)** ಸೂರ್ಯಾದಿ ಗ್ರಹಗಳಿಗೆ ಸ್ವಕ್ಷೇತ್ರ ಸ್ವೋಚ್ಚಕ್ಷೇತ್ರ ಮಿತ್ರಕ್ಷೇತ್ರ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಬಲ. ಗ್ರಹಾಣಾಂ ಸ್ವೋಚ್ಚಕ್ಷೇತ್ರಾದಿ ಸ್ಥಿತಿಯಾ ಬಲಮ್ । "ಸ್ವೋಚ್ಚಕ್ಷೇತ್ರಸ್ವತ್ರಿಕೋನವಾಂಶಃ ಸ್ಥಾನಬಲಂ ಸ್ವಗ್ರಹೋಪಗತೇ ಚ । ದಿಕ್ಷು ಬುಧಾಙ್ಗಿರಸೌ ರವಿಭೌಮೌ ಸೂರ್ಯಸುತಃ ಸಿತಶೀತಕರೌ ಚ । ಉದಗಯನೇ ರವಿಶೀತಮಯೂಖೌ ವಕ್ರ-ಸಮಾಗಮಗಾಃ ಪರಿಶೋಭಾಃ" ಇತ್ಯಾದಿ. ಬೃಹತ್ಸಂ ।

**ಗ್ರಹಮೇತ್ರ ಗ್ರಹಮೇತ್ರ (ನಂ)** ದಂಪತಿಗಳ (ಪತಿಪತ್ನಿಯರ) ಜಾತಕಗಳಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರನಿರುವ ರಾಶಿಗಳ ಅಧಿಪತಿಗಳಿಗೆ ಇರಬೇಕಾದ ಪರಸ್ಪರ ಸ್ನೇಹ. ವಿವಾಹಕಾಲದಲ್ಲಿ ಈ ಅಂಶವನ್ನು ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ನೋಡಬೇಕು. ಈ ರಾಶ್ಯಧಿಪತಿಗಳಿಗೆ ಪರಸ್ಪರ ಮೈತ್ರಿಯಿಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ವಧೂವರರ (ದಂಪತಿಗಳ)ಲ್ಲಿ ಪರಸ್ಪರ ಪ್ರೇಮವುಂಟಾಗುವುದಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ಅಂತಹ ಜಾತಕಗಳಿಗೆ ಹೊಂದಿಕೆಯಿಲ್ಲವೆಂಬುದು ಅಭಿಪ್ರಾಯ. ಗ್ರಹಮೇತ್ರವು ವಿವಾಹಕ್ಕೆ ನೋಡಬೇಕಾದ ಹನ್ನೆರಡು ಕೊಟಗಳಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯವಾದ ಒಂದು ಕೊಟ. "ದಂಪತ್ಯೋರ್ಯದಿ ಜನ್ಮರಾಶ್ಯಧಿಪಯೋರೇಕಾಧಿಪತ್ಯೇ ಶುಭೋ ಮೇತ್ರೇ ವಾ ಸಮಯೋಸ್ಸಮಸ್ತವಹಿತಯೋರ್ವಗಸ್ತಯೋರ್ಮೃತ್ಯುಕೃತ್" ಕಾಲಾಂ ೧೧೫ ।

**ಗ್ರಹಯಜ್ಞ ಗ್ರಹಯಜ್ಞ (ಪುಂ)** ಗ್ರಹಗಳ ಶಾಂತಿಗಾಗಿ ಅವುಗಳನ್ನುದ್ದೇಶಿಸಿ ಮಾಡುವ ಪೂಜೆ. ಗ್ರಹಾಣಾಂ ತದ್ಗುಣೇನ ಯಜ್ಞಃ । ಐಶ್ವರ್ಯಪ್ರಾಪ್ತಿ. ಪೀಡಾನಿವೃತ್ತಿ, ವೃಷ್ಟಿ (ಮಳೆ) ಆಯುರ್ವೃದ್ಧಿ ಇವೇ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಗಾಗಿ ಗ್ರಹಯಜ್ಞವನ್ನು ಆಚರಿಸಬೇಕು. "ಶ್ರೀಕಾಮಃ ಶಾಂತಿಕಾಮೋ ವಾ ಗ್ರಹಯಜ್ಞಃ ಸಮಾಚರೇತ್ । ವೃಷ್ಟಿಪ್ರಾಪ್ತಿಕಾಮೋ ವಾ ತಥೈವಾಶ್ಚಿರಃಪಿ" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೨೯೫ । ಈ ಶಾಂತಿಯನ್ನು ಶುಭದಿನಗಳಲ್ಲಿ ನಡೆಸಬೇಕು. "ಶುಭಗ್ರಹಾರ್ಕವಾರೇಷು ಮೃದು-ಕ್ಷಿಪ್ರಧ್ರುವೇಷು ಚ । ಶುಭರಾಶಿವಿಲಗ್ನೇಷು ಶುಭಂ ಶಾಂತಿಕ-ಪೌಷ್ಟಿಕಮ್" । "ಗೋಚರೇ ವಾ ವಿಲಗ್ನೇ ವಾ ಯೇ ಗ್ರಹಾ ರಿಷ್ಠ-ಸೂಚಕಾಃ । ಪೂಜಯೇತ್ತಾನ್ ಪ್ರಯತ್ನೇನ ಪೂಜಿತಾಃ ಸ್ಯುಃ ಶುಭಾವಹಾಃ" ।

**ಗ್ರಹದಕ್ಷಿಣೆಯಾಗಿ ಕೊಡುವ ದಾನಃ**

| ಗ್ರಹ      | ದಕ್ಷಿಣ         |
|-----------|----------------|
| ಸೂರ್ಯನಿಗೆ | ಕಪಿಲವರ್ಣದ ಹಸು. |
| ಚಂದ್ರನಿಗೆ | ಶಂಖ.           |
| ಕುಜನಿಗೆ   | ಕೆಂಪು ಎತ್ತು.   |
| ಬುಧನಿಗೆ   | ಸುವರ್ಣ.        |
| ಗುರುವಿಗೆ  | ಹಳದಿಯ ವಸ್ತ್ರ.  |



| ಗ್ರಹ      | ದಕ್ಕಿ         |
|-----------|---------------|
| ಶುಕ್ರನಿಗೆ | ಬಿಳಿಯ ಕುದುರೆ. |
| ಶನಿಗೆ     | ಕಪ್ಪು ಹಸು.    |
| ರಾಹುವಿಗೆ  | ಕಬ್ಬಿಣದ ಆಯುಧ. |
| ಕೇತುವಿಗೆ  | ಹೋತ.          |

“ಸೂರ್ಯ ಕಪಿಲಾಂ ಧೇನುಂ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ದತ್ತಾತೇಂದ್ರವೇ । ರಕ್ತಂ  
ಧುರನ್ವರಂ ದತ್ತಾಶ್ವಮಾಯ ಚ ಕಕುಚಿನಮ್ । ಬುಧಾಯ ಜಾತರೂಪಂ ತು  
ಗುರವೇ ಪೀತವಾಸಿನೀ । ಇವೇತಾಶ್ವಂ ದೇವಗುರವೇ ಕೃಷ್ಣಾಕ್ಷಾಮಕಸೂನವೇ ।  
ಆಯಸಂ ರಾಹವೇ ದತ್ತಾತ್ ಕೇತುಮ್ಯಶ್ವಾಗಮುತ್ತಮಮ್ ” ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ ।

**ಗ್ರಹಯುಧ ಗ್ರಹಯುದ್ಧ** (ನಂ) ಮೇಲೆ ಮೇಲೆ ಇರುವ  
ಗ್ರಹಗಳ ಕಿರಣಸಂಪರ್ಕದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಗ್ರಹಗಳ  
ಯುದ್ಧ.

**ಗ್ರಹರಾಜ ಗ್ರಹರಾಜ** (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ.

**ಗ್ರಹವರ್ಷ ಗ್ರಹವರ್ಷ** (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯಾದಿ ಗ್ರಹಗಳು  
ಅಧಿಪತಿಯಾಗಿರುವ ಸಂವತ್ಸರಗಳು.

**ಗ್ರಹವಿಪ್ರ ಗ್ರಹವಿಪ್ರ** (ಪುಂ) ದೈವಜ್ಞ, ಜೋಯಿಸ.

**ಗ್ರಹಶಾಂತಿ ಗ್ರಹಶಾಂತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಶುಭಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿರುವ  
ಗ್ರಹಗಳ ಪ್ರಸಾದಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಶಾಂತಿ.

**ಗ್ರಹಾಧಾರ ಗ್ರಹಾಧಾರ** (ಪುಂ) ಧ್ರುವನಕ್ಷತ್ರ.

**ಗ್ರಹಾಧಿಪತಿ ಗ್ರಹಾಧಿಪತಿ** (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ.

**ಗ್ರಹಾಧೀಶ ಗ್ರಹಾಧೀಶ** (ಪುಂ) ನವಗ್ರಹಗಳಿಗೂ ಅಧಿಪತಿ  
ಯಾದ ಸೂರ್ಯ.

**ಗ್ರಹಾವಮರ್ಧನ ಗ್ರಹಾವಮರ್ಧನ** (ಪುಂ) 1. ರಾಹಂ. ಗ್ರಹೌ  
ಚಂದ್ರಸೂರ್ಯ ಅವಮರ್ಧನಾತಿ — ಅವ + ಮರ್ಧ (ಕ್ಷೋದೇ) “ಲ್ಯು:”  
(3-1-134) । (ನಂ) 2. ಗ್ರಹಗಳ ಯುದ್ಧ. ಭಾವೇ  
“ಲ್ಯುಡ್” (3-3-114) ।

**ಗ್ರಹಿಲ ಗ್ರಹಿಲ** (ವಿಂ) 1. ನಿರ್ಬಂಧಕ್ಕೆ ಒಳಪಟ್ಟ. ಗ್ರಹೋ-  
ಸ್ಥಾಸ್ತಿ “ಇಲ:” (4-2-60) । ನಿರ್ಬಂಧವು ಆಗ್ರಹ  
ದಿಂದಲೂ ಅನುರಾಗದಿಂದಲೂ ಉಂಟಾಗುವುದು. ಆಗ್ರಹ  
ಮೂಲವಾದ ನಿರ್ಬಂಧ: “ನ ನಿಶಾಸ್ತಿಸಿಲಯಾಪಿ ವಾಪಿಕಾ  
ಪ್ರಸಸಾದ ಗ್ರಹಿಲೇವ ಮಾನಿನಿ” ನೈಷಂ 2-33 । ಅನುರಾಗ  
ಮೂಲವಾದ ನಿರ್ಬಂಧ: “ಅಭಿಷಾದಿವಿಲಕ್ಷಣವ್ಯಾಪಾರ-  
ಮಾತ್ರಪ್ರಸಾಧನಗ್ರಹಿಲೇರಸ್ಮಾಭಿ: ರಸಾದಿನಾಂ ವ್ಯङ್ಗ್ಯತ್ವಮುಕ್ತಂ  
ಭವತಿ” ಸಾಂ 40 3 ।

**ಗ್ರಹೀತೃ ಗ್ರಹೀತೃ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ವೀಕರಿಸುವವನು, ತೆಗೆದು  
ಕೊಳ್ಳುವವನು. ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) “ತೃತ್” (3-1-133) ।  
2. ಸಾಲಪಡೆಯುವವನು, ಸಾಲ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು.  
“ಗ್ರಹೀತಾ ಯದಿ ನಷ್ಟ: ಸ್ಯಾತ್ ಕುಡುಮ್ಭಾರ್ಥೇ ಕೃತೌ ವ್ಯಯ: ।

ದಾತವ್ಯಂ ಬಾನ್ಧವೇಸ್ತತ್ ಸ್ಯಾತ್ಪ್ರವಿಭಕ್ತೇರಪಿ ಸ್ವತ:” ಮನುಂ  
6-166 । 3. ಗ್ರಹಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವನು, ಅರಿತುಕೊಳ್ಳು-  
ವವನು, ಶ್ರದ್ಧೆಯಿಂದ ಗಮನಿಸುವವನು. 4. ಕೊಳ್ಳು-  
ವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ತೀಪ್” (4-1-4) । **ಗ್ರಹೀತೃ ಗ್ರಹೀತೃ**.

**ಗ್ರಾಮ ಗ್ರಾಮ** (ಪುಂ) 1. ಹಳ್ಳಿ, ವ್ಯವಸಾಯಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ ಜಮೀನುಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಇರುವ ಜನರ ವಾಸಸ್ಥಾನ.  
ಪ್ರಸು (ಅದನೇ) “ಮನ್” ಆತ್ಮಂ ಚ (30 1-143) ।  
“ಗ್ರಾಮೇವಾತ್ಮವಿಸ್ತೃಷ್ಠೇಷು ಯುಪಚಿಹ್ನೇಷು ಯಜ್ವನಾಮ್” ರಘುಂ  
1-44 । 2. ಸಂಗೀತದ ಸ್ವರಗಳ ಸಮೂಹ. ಒಂದು  
ಕುಟುಂಬದವರು ಒಂದು ಕಡೆ ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವಂತೆ ಸ್ವರಗಳ  
ಸಮೂಹವು ಗ್ರಾಮವೆನಿಸುವುದು. “ಯಥಾ ಕುಡುಮ್ಬಿನ:  
ಸರ್ವೇಪ್ಯೇಕೀಭೂತಾ ಭಿವಂತಿ ಹಿ । ತಥಾ ಸ್ವರಾಣಾಂ ಸಂದೋಹೋ ಗ್ರಾಮ  
ಇತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ” । ಈ ಗ್ರಾಮವು ಷಡ್ವ ಗ್ರಾಮ, ಮಧ್ಯಮ  
ಗ್ರಾಮ ಮತ್ತು ಗಾಂಧಾರ ಗ್ರಾಮಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ.  
“ಷಡ್ವಗ್ರಾಮೋ ಭವೇದಾದೌ ಮಧ್ಯಮಗ್ರಾಮ ಏವ ಚ । ಗಾಂಧಾರ-  
ಗ್ರಾಮ ಇತ್ಯೇತದ್ಗ್ರಾಮತ್ರಯಮುದಾಹೃತಮ್” । “ಸ್ಫುಟಿಭವದ್ಗ್ರಾಮ-  
ವಿಶೇಷಮುಚ್ಛೇದನಾಮವೇಕ್ಷಮಾಣಂ ಮಹತೀಂ ಮುಹುರ್ಮುಹು:” ಮಾಘಂ 1-10 ।  
3. ಸಂಘ, ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. “ಬಲವಾನಿन्द्रಿಯಗ್ರಾಮೋ  
ವಿಧ್ವಾಂಸಮಪಿ ಕರ್ಷತಿ” । 4. ಗ್ರಾಮ್ಯಧರ್ಮ, ಮೃಧುನ.  
(ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 5. ಗ್ರಾಮವಾಸಿಗಳು, ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸ  
ಮಾಡುವವರು.

**ಗ್ರಾಮಕಂಠಕ ಗ್ರಾಮಕಂಠಕ** (ಪುಂ) ಗ್ರಾಮಕ್ಕೆ ಮುಳ್ಳಿ  
ನಂತೆ ತೊಂದರೆಕೊಡುವವನು, ಊರಿನವರನ್ನು ಹೀಡಿಸು-  
ವವನು.

**ಗ್ರಾಮಕಾಮ ಗ್ರಾಮಕಾಮ** (ವಿಂ) ಗ್ರಾಮವನ್ನು ತನ್ನದ  
ನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. ಗ್ರಾಮ ಕಾಮಯತೇ—  
ಕಮ್ (ಕಾಂತಿ) + ಣಿಡ್ “ಅಣ್” (3-2-1) ।

**ಗ್ರಾಮಕುಕ್ಕುಡ ಗ್ರಾಮಕುಕ್ಕುಟ** (ಪುಂ) ಹುಂಜ, ಮನೆಯಲ್ಲಿ  
ಸಾಕುವ ಕೋಳಿ. “ಛತ್ರಾಕಂ ವಿಡ್ವರಾಹಂ ಚ ಲಶುನಂ ಗ್ರಾಮ-  
ಕುಕ್ಕುಡಮ್ । ಪಲಾಣ್ಡಂ ಗೃಜ್ಜನಂ ಚೈವ ಮತ್ಯಾ ಜಗತ್ವಾ ಪತೇತ್  
ದ್ವಿಜ:” ಮನುಂ 4-19 ।

**ಗ್ರಾಮಕೂಟ ಗ್ರಾಮಕೂಟ** (ಪುಂ) ಹಳ್ಳಿಯ ಯಜಮಾನ.

**ಗ್ರಾಮಕೋಲ ಗ್ರಾಮಕೋಲ**, —ಕೊಡ —ಕೋಡ (ಪುಂ)  
ಊರು ಹಂದಿ, ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ಸಾಕುವ ಹಂದಿ. “ಸ ದೋಧಿಂ  
ಧೇನುಮುತ್ಸೃಜ್ಯ ಗ್ರಾಮಕೊಡಂ ದುಧುಷತಿ” ಕಾಶೀಖಂ ।

**ಗ್ರಾಮಗೃಹ ಗ್ರಾಮಗೃಹ** (ವಿಂ) ಗ್ರಾಮಕ್ಕೆ ಸೇರಿದಂತಿರುವ,  
ಗ್ರಾಮದಿಂದ ಹೊರಗಿರುವ. ಗ್ರಾಮಗೃಹಯಾ ಸೇನಾ — ಗ್ರಹ  
(ಉಪಾದಾನೇ) “ಕೃಪ್” (3-1-119) ।



**ಗ್ರಾಮಧಾತು ಗ್ರಾಮಧಾತು** (ಪುಂ) 1. ಹಳ್ಳಿಯನ್ನು ಲೂಟಿ ಮಾಡುವುದು, ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ಕೊಳ್ಳೆಹೊಡೆಯುವುದು. ಗ್ರಾಮಸ್ಯ ಧಾತು: "ಗ್ರಾಮಧಾತೇ ಹಿತಾಭಿಜ್ಞೇ ಪಥಿ ಮೇಷಾಭಿರ್ದಾನೇ" ಮನುಂ ೧-೨೭೪. 2. ಹಳ್ಳಿಯವರನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವುದು.

**ಗ್ರಾಮಧಾತುಕ ಗ್ರಾಮಧಾತುಕ** (ವಿಂ) ಹಳ್ಳಿಯನ್ನು ನಾಶ ಮಾಡುವ. ಗ್ರಾಮಸ್ಯ ಧಾತುಕ: "ಏಕಸ್ಥಾನೇ ಉನ್ ದೀಪ್ತ: ಸಪ್ತಾಹಾತ್ ಗ್ರಾಮಧಾತುಕ:" ಬೃಹತ್ಸಂ ೮೬-೬೪.

**ಗ್ರಾಮಧಾತುನ್ ಗ್ರಾಮಧಾತುನ್** (ವಿಂ) 1. ಹಳ್ಳಿಯವರನ್ನು ಕಾಪಾಡಲು ಪರುಗಳನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವವನು. ಗ್ರಾಮಾರ್ಥ ಗ್ರಾಮಜನಭಕ್ಷಣಾರ್ಥಂ ಹಂತಿ ಪಶುನ್ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:) "ಗಿಣಿ:" (೩-೧-೧೩೪). 2. ಹಳ್ಳಿಯನ್ನು ಲೂಟಿ ಮಾಡುವ. "ಗ್ರಾಮಧಾತು ಚ ಕೌಂತೇಯ ಮಾಸಸ್ಯ ಪರಿವಿಕ್ರಯಿ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ. 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ - ಧಾತುನಿ - ಧಾತುನಿ.

**ಗ್ರಾಮಧಾತುನ್ ಗ್ರಾಮಧಾತುನ್** (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ಗ್ರಾಮೇ ಧಾತುಸ್ತಸ್ಯ "ಐನಿ:" (೪-೨-೧೧೫).

**ಗ್ರಾಮಧಾರ್ಯ ಗ್ರಾಮಧಾರ್ಯ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗ್ರಾಮಧಾರ್ಯ, ಮೈಥುನ, ಸ್ತ್ರೀಸಂಭೋಗ. "ಸರ್ವಶೋ ವರ್ಜಯೇತ್ ಗ್ರಾಮ-ಧಾರ್ಯಮ್" ಆಶ್ವಂ ಶ್ರೀಂ ಸುಂ.

**ಗ್ರಾಮಜ ಗ್ರಾಮಜ** (ವಿಂ) 1. ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಗ್ರಾಮೇ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಧುರ್ಭವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೧೭). 2. ವ್ಯವಸಾಯಮಾಡಿದ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದ ಧಾನ್ಯ.

**ಗ್ರಾಮಜಾಲ ಗ್ರಾಮಜಾಲ** (ನಂ) ಹಳ್ಳಿಗಳ ಸಮೂಹ.

**ಗ್ರಾಮಜಾಲ ಗ್ರಾಮಜಾಲ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕ್ಷುದ್ರಗ್ರಾಮ. ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತ. ಹಳ್ಳಿ. "ಸ್ವರ್ಗಗ್ರಾಮಜಾಲವಿಲುಠನವೃಥೋಚ್ಛೂನೈ: ಕಿಮೇಭಿರ್ಭುಜೈ:" ಸಾಂ ದಂ.

**ಗ್ರಾಮಜಿ ಗ್ರಾಮಜಿ** (ಪುಂ) 1. ಪತಿ, ಗಂಡ. "ಗ್ರಾಮಜೇರಿವ ತೇಸ್ತಸ್ಯ ಸೇನಿಕೇರವರೋಧಿತಾ:" ಯಾದಂ ೨೨-೧೧೩. 2. ಯಜಮಾನ, ಮುಖ್ಯ. "ಗ್ರಾಮಜಿ: ಪತಿಮುಖ್ಯಯೋ:".

**ಗ್ರಾಮಜಿ ಗ್ರಾಮಜಿ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ನಿಯತಿಸಿದ್ಧಾಂತ ಗ್ರಾಮಂ ಸಮಾಜಂ ನಯತಿ - ಗಿಣಿ (ಪ್ರಾಪಣಿ) "ಕಿವಿಪ್" (೩-೨-೬೧). "ಗ್ರಾಮಂ ಸಮಾಜಂ ಸೂರಿಣಾಂ ನಯತಿ ಗ್ರಾಮಜಿಶ್ಚ ಯ:" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: "ಅಗ್ರಣಿಗ್ರಾಮಜಿ: ಶ್ರೀಮಾನ್" ವಿಂ ಸಂ. 2. ನಾಪಿತ. ಕ್ಷೌರಿಕ. 3. ಗ್ರಾಮಾಧಿಪತಿ. ಗ್ರಾಮದ ಯಜಮಾನ. ಹಳ್ಳಿಯವರನ್ನು ಅವರವರ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಸರಿಯಾಗಿ ನಡೆಸುವವನು. ಗ್ರಾಮಂ ಜನಸಮೂಹಂ ನಯತಿ ಪ್ರೇರಯತಿ - ಗಿಣಿ (ಪ್ರಾಪಣಿ) "ಕಿವಿಪ್" (೩-೨-೬೧). (ವಿಂ) 4. ಗುಂಪಿನ ಯಜಮಾನ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 5. ಮೇಶ. ಸೂಚಕ. ಗ್ರಾಮೇ ಗ್ರಾಮ್ಯಧರ್ಮೇಣ ನಯತಿ ಕಾಲಮ್. 6. ನೀರಿನಿಡ.

**ಗ್ರಾಮತಕ್ಷ ಗ್ರಾಮತಕ್ಷ** (ಪುಂ) ಗ್ರಾಮದ ಅಧೀನದಲ್ಲಿರುವ ಬಡಗಿ. ಗ್ರಾಮದವರಿಗಿಲ್ಲಾ ಸಮಾನನಾದ ಮರಗೆಲಸ ದವನು. ಗ್ರಾಮಸ್ಯ ತಕ್ಷಾ "ತಕ್ಷ" (೪-೪-೯೫). ಗ್ರಾಮ-ಧೀನೋ ಗ್ರಾಮತಕ್ಷ: ಕೌಡತಕ್ಷೋಜಧೀನಕ: "ಅಮಂ.

**ಗ್ರಾಮತಾ ಗ್ರಾಮತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗ್ರಾಮಗಳ ಸಮೂಹ. ಗ್ರಾಮಾಣಾಂ ಸಮೂಹ: "ತಲ್" (೪-೨-೪೩).

**ಗ್ರಾಮಧರ್ಮ ಗ್ರಾಮಧರ್ಮ** (ಪುಂ) ಗ್ರಾಮಧರ್ಮ, ಮೈಥುನ, ಸ್ತ್ರೀ ಸಂಭೋಗ. ಗ್ರಾಮೇ ಭವ: "ಅನ್" (೪-೩-೫೩). ಗ್ರಾಮೋ ಧರ್ಮ:

**ಗ್ರಾಮಪಾಲ ಗ್ರಾಮಪಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಗ್ರಾಮಾಧಿಪತಿ. 2. ಗ್ರಾಮರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿರುವ ಸೈನ್ಯ. ಗ್ರಾಮಂ ಪಾಲಯತಿ - ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣಿ) + ಗಿಣಿ "ಅನ್" (೩-೨-೧೧).

**ಗ್ರಾಮಪ್ರೇಷ್ಯ ಗ್ರಾಮಪ್ರೇಷ್ಯ** (ಪುಂ) ಗ್ರಾಮದ ಸೇವಕ. ಗ್ರಾಮಸ್ಯ ಪ್ರೇಷ್ಯ:

**ಗ್ರಾಮಭೂತ ಗ್ರಾಮಭೂತ** (ಪುಂ) ಗ್ರಾಮದ ಜನರಿಂದ ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನು. ಗ್ರಾಮೇಣ ಗ್ರಾಮಸ್ಥಜನೇನ ಭೂತ: ಪೋಷ್ಯ: "ಅಬ್ರಾಹ್ಮ-ಣಾಸ್ತು ಷಟ್ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಋಷಿಣಾ ತತ್ತ್ವವಾದಿನಾ. ಆದ್ಯೋ ರಾಜಭೂತಸ್ತೇಷಾಂ ದ್ವಿತೀಯ: ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಿ. ತೃತೀಯೋ ಬಹುಯಾಜ್ಯ: ಸ್ಯಾತ್ ಚತುರ್ಥೋ ಗ್ರಾಮಯಾಜಕ: ಪಶ್ಚಮಸ್ತು ಭೂತಸ್ತೇಷಾಂ ಗ್ರಾಮಸ್ಯ ನಗರಸ್ಯ ಚ. ಅನಾಗತಾಂ ತು ಯ ಪೂರ್ವಾ ಸಾದಿತಾಂ ಚೈವ ಪಶ್ಚಿಮಾಮ್. ನೋಪಾಸೀತ ದ್ವಿಜ: ಸಂಧ್ಯಾಂ ಸ ಷಠೋಬ್ರಾಹ್ಮಣ: ಸ್ಮೃತ:" ಶಾಂತಾಂ.

**ಗ್ರಾಮಮುಖ ಗ್ರಾಮಮುಖ** (ಪುಂ) ಹಟ್ಟಿ, ವ್ಯಾಪಾರಸ್ಥಳ, ಅಂಗಡಿ ಬೀದಿ. ಗ್ರಾಮೋ ಗ್ರಾಮಸ್ಥಜನೋ ಮುಖಮಿವಾಸ್ಯ. "ಹೃದ್ವಕ್ರಯಾರೋಹೌ ಜನ್ಯಂ ಗ್ರಾಮಮುಖಂ ಚ ತತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಗ್ರಾಮಮೃಗ ಗ್ರಾಮಮೃಗ** (ಪುಂ) ನಾಯಿ. ಗ್ರಾಮಸ್ಯ ಮೃಗ: ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಷ್" (೪-೧-೬೩). -ಮೃಗಿ - ಮೃಗೀ.

**ಗ್ರಾಮಯಾಜಕ ಗ್ರಾಮಯಾಜಕ** (ಪುಂ) ಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿರುವ ಎಲ್ಲ ವರ್ಗದವರಿಗೂ ಮತಸಂಬಂಧವಾದ ಪ್ರತಿಗಳನ್ನು ಮಾಡಿಸುವವನು, ಗ್ರಾಮ ಪುರೋಹಿತ. ಗ್ರಾಮಸ್ಯ ಯಾಜಕ: "ಗುರೋ ಚಾನೃತಕೇ ಪಾಪೇ ಕೃತಘ್ನೇ ಗ್ರಾಮಯಾಜಕೇ" ಭಾಂ ವನಂ ೨೦೩-೭.

**ಗ್ರಾಮಯಾಜಿನ್ ಗ್ರಾಮಯಾಜಿನ್** (ಪುಂ) ಗ್ರಾಮ ಪುರೋಹಿತ. ಗ್ರಾಮಾನ್ ಗ್ರಾಮಸ್ಯ ಜನಾನ್ ಯಾಜಯತಿ - ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾಯಾಮ್) + ಗಿಣಿ "ಗಿಣಿ:" (೩-೧-೧೩೪). "ನಾಶ್ರೋತ್ರಿಯತೇ ಯಜ್ಞೇ ಗ್ರಾಮಯಾಜಿಕ್ರತೇ ತಥಾ" ಮನುಂ ೪-೨೦೫.

**ಗ್ರಾಮಲಂಛನ ಗ್ರಾಮಲಂಛನ** (ನಂ) ಗ್ರಾಮವನ್ನು ಲೂಟಿ ಮಾಡುವುದು.



ಗ್ರಾಮ(ಮೆ)ವಾಸ ಗ್ರಾಮ(ಮೇ)ವಾಸ (ಪುಂ) ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವುದು. ಗ್ರಾಮೇ ವಾಸಃ. ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ವಾ ಅಲುಕ್ (೬-೩-೧೮)।

ಗ್ರಾಮ(ಮೆ)ವಾಸಿನ್ ಗ್ರಾಮ(ಮೇ)ವಾಸಿನ್ (ವಿಂ) ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ. ಗ್ರಾಮೇ ವಸತಿ - ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ಣಿತಿ:" (೩-೨-೭೮)। ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ವಾ ಅಲುಕ್ (೬-೩-೧೮)। "ಸಾರಸೈಕಶಕಾನ್ ಹಂಸಾನ್ ಸರ್ವಾಶ್ಚ ಗ್ರಾಮವಾಸಿನಃ" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೧೭೨। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ವಾಸಿನಿ -ವಾಸಿನೀ.

ಗ್ರಾಮವಿಶೇಷ ಗ್ರಾಮವಿಶೇಷ (ಪುಂ) ಸ್ವರಸಮೂಹಗಳ ಭೇದ. ಷಡ್ಜ ಮಧ್ಯಮ ಮತ್ತು ಗಾಂಧಾರ ರೂಪವಾದ ಸ್ವರ ಸಂಘಾತಗಳ (ಷಡ್ಜ ಗ್ರಾಮ, ಮಧ್ಯಮಗ್ರಾಮ ಮತ್ತು ಗಾಂಧಾರ ಗ್ರಾಮಗಳ) ಭೇದ. "ಸ್ಫುಟಿಭವದ್ಗ್ರಾಮವಿಶೇಷ-ಮೃಚ್ಛನಾಮವೇಕ್ಷಮಾಣಂ ಮಹತೀಂ ಮುಹುರ್ಮುಹುಃ" ಮಾಘಂ ೧-೧೦।

ಗ್ರಾಮವಿಶೇಷ ಗ್ರಾಮವಿಶೇಷ (ಪುಂ) ನಪುಂಸಕ. ಗ್ರಾಮೇ ಗ್ರಾಮ್ಯಧರ್ಮಂ ಷಙ್ಕಃ।

ಗ್ರಾಮಸ್ಥ ಗ್ರಾಮಸ್ಥ (ಪುಂ) ಹಳ್ಳಿಯವನು, ಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿರುವವನು. ಗ್ರಾಮೇ ತಿಷ್ಠತಿ - ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ:" (೩-೨-೪)।

ಗ್ರಾಮಹಾಸಕ ಗ್ರಾಮಹಾಸಕ (ಪುಂ) ಸಹೋದರಿಯ ಗಂಡ.

ಗ್ರಾಮಾಚಾರ ಗ್ರಾಮಾಚಾರ (ಪುಂ) ಹಳ್ಳಿಯ ಪದ್ಧತಿ, ಹಳ್ಳಿಯವರ ಸಂಪ್ರದಾಯ.

ಗ್ರಾಮಾಧಾನ ಗ್ರಾಮಾಧಾನ (ನಂ) ಬೇಟೆ.

ಗ್ರಾಮಾಂತ ಗ್ರಾಮಾಂತ(ನಂ)ಹಳ್ಳಿಯ ಸಮೀಪದ ಪ್ರದೇಶ. ಗ್ರಾಮಸ್ಯ ಅಂತಮ್। "ಕೃತವಾಪನೋ ನಿವಸೇತ್ ಗ್ರಾಮಾಂತೇ ಗೋವ್ರಜೇಽಪಿ ವಾ" ಮನುಂ ೧೧-೭೮।

ಗ್ರಾಮಾಂತೀಯ ಗ್ರಾಮಾಂತೀಯ (ವಿಂ) ಹಳ್ಳಿಯ ಸಮೀಪ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. ಗ್ರಾಮಾಂತೇ ಭವಮ್ "ಛ:"। "ಪಥಿ ಕ್ಷೇತ್ರೇ ಪರಿವೃತೇ ಗ್ರಾಮಾಂತೀಯೇಽಥವಾ ಪುನಃ" ಮನುಂ ೮-೨೪೦।

ಗ್ರಾಮಿಕ ಗ್ರಾಮಿಕ (ಪುಂ) ಗ್ರಾಮಾಧಿಪತಿ, ಹಳ್ಳಿಯ ಯಜಮಾನ. ಗ್ರಾಮೇ ಗ್ರಾಮರಕ್ಷಣೇ ನಿಯುಕ್ತಃ "ಠಕ್" (೪-೪-೬೯)। "ಯಾನಿ ರಾಜಪ್ರದೇಯಾನಿ ಪ್ರತ್ಯಹಂ ಗ್ರಾಮವಾಸಿಭಿಃ। ಅನ್ಯಪಾನೇನ್ಧನಾದೀನಿ ಗ್ರಾಮಿಕಸ್ತಾನ್ಯವಾಪ್ನುಯಾತ್" ಮನುಂ ೭-೧೧೮।

ಗ್ರಾಮಿನ್ ಗ್ರಾಮಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಗ್ರಾಮಾಧಿಪತಿ, ಹಳ್ಳಿಯ ಯಜಮಾನ. ಗ್ರಾಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ ಸ್ವಾಮಿತ್ವೇನ "ಙಿತಿ:" (೫-೨-೧೧೫)। 2. ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ. ಗ್ರಾಮೋಽಸ್ತಾಧಾರತ್ವೇನಾಸ್ಯ "ಙಿತಿ:"। 3. ಗ್ರಾಮ್ಯಧರ್ಮವುಳ್ಳವನು, ಸ್ತ್ರೀ ಸಂಭೋಗವುಳ್ಳವನು.

ಗ್ರಾಮೀಣ ಗ್ರಾಮೀಣ (ಪುಂ) 1. ನಾಯಕ. 2. ಮಂದಿ. 3. ಕಾಗೆ. ಗ್ರಾಮೇ ಭವಃ "ಖಬ್" (೪-೨-೯೪)। (ವಿಂ) 4. ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿರುವ. "ಗ್ರಾಮೀಣವಷ್ಟಮಲಕ್ಷಿತಾ ಜನೇಶ್ವರಂ ವೃತ್ತಿನಾಮುಪರಿ ವ್ಯಲೋಕಯನ್" ಮಾಘಂ ೧೨-೩೭। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 5. ನೀಲಿಗಡ.

ಗ್ರಾಮೇಯಕ ಗ್ರಾಮೇಯಕ (ವಿಂ) ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸ ಮಾಡುವ. ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿರುವ, -ಹುಟ್ಟಿದ. ಗ್ರಾಮೇ ಭವಃ ಜಾತೋ ವಾ "ಠಕಬ್" (೪-೨-೯೫)। "ಗ್ರಾಮೇಯಕಕುಲಾನಾಂ ಚ ಸಮಕ್ಷಂ ಸೌಮಿನ್ ಸಾಕ್ಷಿಣಃ। ಪ್ರವೃತ್ತಾಃ ಸೀಮಲಿಂಗಾನಿ ತಯೋಶ್ಚೈವ ವಿವಾದಿನೋಃ" ಮನುಂ ೮-೨೫೪।

ಗ್ರಾಮೇಶ ಗ್ರಾಮೇಶ (ಪುಂ) ಗ್ರಾಮಾಧ್ಯಕ್ಷ. ಗ್ರಾಮಾಧಿಪತಿ. ಹಳ್ಳಿಯ ಯಜಮಾನ. ಗ್ರಾಮಸ್ಯ ಔಶಃ। "ಯಂ ಕಶ್ಚಿತ್ ಪುರುಷಾಧರ್ಮಂ ಕತಿಪಯಗ್ರಾಮೇಶಮಲ್ಪಾರ್ಥದಂ ಸೇವಾಯೈ ಮೃಗಯಾಮಹೇ ನರಮಹೋ ಮೂಕಾ ವರಾಕಾ ವಯಮ್" ಮುಂ ಮಾಂ।

ಗ್ರಾಮ್ಯ ಗ್ರಾಮ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಕಾವ್ಯದೋಷ. ಇದು (1) ಶಬ್ದಗತ ಮತ್ತು (2) ಅರ್ಥಗತ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಉದಾ: (1) "ಕಟಿಸ್ತೇ ಹರತೇ ಮನಃ"। (2) "ಸ್ವಪಿಹಿ ತ್ವಂ ಸಮೀಪೇ ಮೇ ಸ್ವಪಿಮ್ಯೇವಾಧುನಾ ಪ್ರಿಯೇ" ಸಾಂ ದಂ। "ಗ್ರಾಮ್ಯಾ-ಪ್ರತೀತಸಂದಿಗ್ಧನೇಯಾರ್ಥನಿಹಿತಾರ್ಥತಾಃ" ಸಾಂ ದಂ ೭-೨। "ಅಪುರೂಪಕ್ರಮಗ್ರಾಮ್ಯವ್ಯಾಹೃತಾಃ ಸ್ಥಿತಿಗುಣಕೃತಾಃ" ಸಾಂ ದಂ ೭-೯। 2. ಮೈಥುನ. ಸ್ತ್ರೀ ಸಂಭೋಗ. "ವ್ಯವಾಯೋ ಗ್ರಾಮ್ಯಧರ್ಮೋ ಮೈಥುನಂ ನಿಧುನಂ ಧರ್ಮಮ್" ಅಮಂ। (ವಿಂ) 3. ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು, ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವವನು. ಗ್ರಾಮೇ ಭವಃ ಜಾತೋ ವಾ "ಯಃ" (೫-೨-೯೪)। "ಅಲ್ಪವ್ಯಯೇನ ಸುಂದರೀ ಗ್ರಾಮ್ಯಜನೋ ಮೃಷ್ಟಮಶನಾತಿ" ವೃಂ ೨೦। 4. ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಪ್ರಾಕೃತಜನ, ಮೂಢ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು. "ಗ್ರಾಮ್ಯಭಾವಮಪಹಾತುಮಿಚ್ಛವೋ ಯೋಗ-ಮಾರ್ಗಪತಿಸೇನಾ ಚೇತಸಾ" ಮಾಘಂ ೧೪-೬೪। (ನಂ) 5. ಅಶ್ಲೀಲವಾದ ಮಾತು, ಹಳ್ಳಿಯವರ ಮಾತು, ಅಸಭ್ಯವಾದ ಮಾತು. 6. ಸ್ವೀಕಾರ. 7. ಗ್ರಾಮ್ಯಧರ್ಮ, ಮೈಥುನ. ಗ್ರಾಮ್ಯಕರ್ಮಿ ಗ್ರಾಮ್ಯಕರ್ಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೂಷ್ಮಾಂಡ, ಕುಂಬಳ.

ಗ್ರಾಮ್ಯಕರ್ಮಿ ಗ್ರಾಮ್ಯಕರ್ಮಿ (ನಂ) ಪ್ರಾಕೃತ ಜನರ ವ್ಯವಹಾರ, ಹಳ್ಳಿಯ ಜನರ ಕಾರ್ಯ. ಕಾಮುಕ ವ್ಯಾಪಾರ. ಗ್ರಾಮ್ಯಸ್ಯ ಪ್ರಾಕೃತಸ್ಯ ಕರ್ಮ। "ಗ್ರಾಮ್ಯಕರ್ಮಣೈವ ವಿರ್ಮಿತ-ಕಾಲಾವಧಿಃ" ಭಾಗಂ ೫-೧೪-೩೧।

ಗ್ರಾಮ್ಯಕುಡ್ಮುಮ ಗ್ರಾಮ್ಯಕುಂಕುಮ (ನಂ) ಕುಸುಂಬ ಹೂವು.



**ಗ್ರಾಮ್ಯಧರ್ಮ ಗ್ರಾಮ್ಯಧರ್ಮ** (ಪುಂ) 1. ಹಳ್ಳಿಯ ಅನಾಗರಕ ಜನರ ಕಾರ್ಯ, ಕಾಮುಕ ವ್ಯಾಪಾರ, ಮೈಥುನ. ಗ್ರಾಮ್ಯಸ್ಯ ಪ್ರಾಕೃತಸ್ಯ ಧರ್ಮಃ. 2. ಹಳ್ಳಿಯ ಜನರ ಉದ್ಯೋಗ.

"ಪ್ರಮತ್ತೋ ಗ್ರಾಮ್ಯಧರ್ಮೇ ಮನ್ದಾತ್ಮಾ ಪಾಪನಿಶ್ರಯಃ. ಸಮ ಪುತ್ರಃ ಸುದುರ್ಬುದ್ಧಿಃ ಪೃಥಿವೀಂ ಪಾತಯಿಷ್ಯತಿ" ಮಾಂ ವನಂ ೪೬-೪.

**ಗ್ರಾಮ್ಯಧರ್ಮಿನ್ ಗ್ರಾಮ್ಯಧರ್ಮಿನ್** (ವಿಂ) ಕಾಮುಕ ವ್ಯಾಪಾರದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದ, ಮೈಥುನ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತ ನಾದ. ಗ್ರಾಮ್ಯಧರ್ಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫).

**ಗ್ರಾಮ್ಯಪಶು ಗ್ರಾಮ್ಯಪಶು** (ಪುಂ) ಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ಬೆಳೆಯುವ ಪ್ರಾಣಿಗಳು: (1) ದನ, (2) ಕುರಿ, (3) ಆಡು, (4) ಆಶ್ವ, (5) ಹೇಸರಗತ್ತೆ, (6) ಗರ್ವಭ ಮತ್ತು (7) ಮನುಷ್ಯ. ಇವು ಗ್ರಾಮ್ಯ ಪಶುಗಳು ಎಂದು ಪರಿಗಣಿಸಿ. (1) ಆಶ್ವ, (2) ಆಶ್ವತರ (ಹೇಸರಗತ್ತೆ), (3) ದನ, (4) ಗರ್ವಭ, (5) ಉಷ್ಣ (ಬುಟ್ಟಿ), (6) ಆಡು (ಮೇಕೆ), (7) ಕುರಿ ಮೊದಲಾದುವು ಗ್ರಾಮ್ಯ ಪಶುಗಳೆಂದು ಸುತ್ತುತ ಸಂಹಿತೆ.

**ಗ್ರಾಮ್ಯಮದ್ಗುರಿಕಾ ಗ್ರಾಮ್ಯಮದ್ಗುರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶೃಂಗಿಯೆಂಬ ಹೆಣ್ಣು ಮೀನು.

**ಗ್ರಾಮ್ಯಮೃಗ ಗ್ರಾಮ್ಯಮೃಗ** (ಪುಂ) ನಾಯಿ.

**ಗ್ರಾಮ್ಯವಲ್ಲಭಾ ಗ್ರಾಮ್ಯವಲ್ಲಭಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೇಶೆ, ಸೂಳೆ. 2. ಕುಂದುರುಷ್ಯವೆಂಬ ಗುದಿಗರ ಒಂದು ವಸ್ತು.

**ಗ್ರಾಮ್ಯವಾದಿನ್ ಗ್ರಾಮ್ಯವಾದಿನ್** (ವಿಂ) ಹಳ್ಳಿಗರ ಮಾತನಾಡುವವನು. ಗ್ರಾಮ್ಯಂ ಗ್ರಾಮ್ಯಶಬ್ದಂ ವದತಿ -- ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೭೮).

**ಗ್ರಾಮ್ಯಸೂಕರ ಗ್ರಾಮ್ಯಸೂಕರ** (ಪುಂ) ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಹಂದಿ, ಊರಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ಬೆಳೆದ ಹಂದಿ. ಗ್ರಾಮ್ಯ ಸೂಕರಃ.

**ಗ್ರಾಮ್ಯಾ ಗ್ರಾಮ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೀಲಿ ಗಿಡ. 2. ತುಲಸಿ ಗಿಡ. 3. ಅವರೆಗಿಡ.

**ಗ್ರಾಮ್ಯಾಶ್ವ ಗ್ರಾಮ್ಯಾಶ್ವ** (ಪುಂ) ಗರ್ವಭ, ಕತ್ತೆ. ಗ್ರಾಮ್ಯಾಶ್ವಃ. "ಸ್ಮರಸ್ಮರೈಶ್ಚಿರಮೇಹಿ ಗ್ರಾಮ್ಯಾಶ್ವೋ ರೇಣುಕುಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಅಜಾಂ "ಢಾಪ್" (೪-೧-೪). ಪೃಥಂ.

**ಗ್ರಾವನ್ ಗ್ರಾವನ್** (ಪುಂ) 1. ಕಲ್ಲು, ಬಂಡೆ. ಗೃಣಾತಿ -- ಗೃ (ಶಬ್ದ) "ವನಿಪ್" (೩-೨-೭೫). "ಜನಸ್ಥಾನೇ ಶೂನ್ಯೇ ವಿಕಲಕರ್ಣರಾರ್ಯಚರಿತೇರಪಿ ಗ್ರಾವಾ ರೋದಿತ್ಯಪಿ ದಲತಿ ವಜ್ರಸ್ಯ ಹೃದಯಮ್" ತಂ ರಾಂ ೧-೨೮. 2. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. "ಪೃಥಿವಿ ತಾವತ್ ತ್ರಿಕೋಣಾ ವಿಪಿನನದನದೋಗ್ರಾವರುಕ್ಷಂ ತದರ್ಥಮ್" ತದ್ಗಂ. 3. ಮೇಘ, ಮೋಡ. "ಗ್ರಾವಾ ಪ್ರಸ್ತರೇ ಜಲದೇ ಗಿರೋ" ವಿಶ್ವಂ. (ವಿಂ) 4. ದೃಢವಾದ, ಗಟ್ಟಿಯಾದ.

**ಗ್ರಾವರೋಹಕ ಗ್ರಾವರೋಹಕ** (ಪುಂ) ಅಶ್ವಗಂಧಾವೃಕ್ಷ. ಗ್ರಾವಣಿ ರೋಹಿತಿ -- ರೂ (ವಿಜಯನಾದಿ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩).

**ಗ್ರಾಸ ಗ್ರಾಸ** (ಪುಂ) 1. ಕುಳ, ತುತ್ತು. ಗ್ರಸ್ಯತೇ -- ಗ್ರಸು (ಅದನೇ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೯). "ಏಕೈಕಂ ಗ್ರಾಸಮಶನೀಯಾತ್ ಅಹಾಣಿ ಶ್ರೀಣಿ ಪೂರ್ವತ್" ಮನುಂ ೧೧-೨೧೩. 2. ನುಂಗುವುದು. 3. ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರರ ಗ್ರಹಣಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರರ ಬಿಂಬಗಳ ಛಾದನ. ಬಿಂಬಗಳನ್ನು ಮುಚ್ಚುವುದು. ಸೂರ್ಯಗ್ರಹಣದಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನು ಛಾದ್ಯ (ಮುಚ್ಚಲ್ಪಡುವವನು). ಸೂರ್ಯಬಿಂಬವನ್ನು ಮುಚ್ಚುವ (ಮರೆಸುವ) ಚಂದ್ರನು ಛಾದಕ. ಚಂದ್ರಗ್ರಹಣದಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರನು ಛಾದ್ಯ. ಚಂದ್ರಬಿಂಬವನ್ನು ಮುಚ್ಚುವುದು ಭೂಮಿಯ ಛಾಯೆ. ಅದು ಛಾದಕ. "ಛಾದಕೋ ಭಾಸ್ಕರ-ಸ್ಯೇಂದ್ರಃ ಸ್ಥೋ ಧನವದ್ಭವೇತ್. ಭೂಚಾಪಾಂ ಪ್ರಾಡಮುಖಭಂದ್ರೋ ವಿಶತ್ಯಸ್ಯ ಭವೇದಸೀ ಸುಂ ಸಿಂ ೪-೧. ಈ ರೀತಿ ಛಾದ್ಯ ಮತ್ತು ಛಾದಕರ ಸ್ವರ್ಥವೇ ಗ್ರಾಸವು. "ಯೋಗಾರ್ಥಾದಿಧಿಕೇ ನ ಸ್ಯಾತ್ವಿಕ್ಷೇಪೇ ಗ್ರಾಸಸಮ್ಮಭವಃ" ಸುಂ ಸಿಂ ೪-೧೧.

**ಗ್ರಾಸಶಲ್ಯ ಗ್ರಾಸಶಲ್ಯ** (ನಂ) ಕುಳದಲ್ಲಿರುವ ಕಸಕಡ್ಡಿ ಮೊದಲಾದುವು, ಅನ್ನದ ತುತ್ತಿನಲ್ಲಿರುವ ನುಂಗಲು ಅಡ್ಡಿ ಮಾಡುವ ಕಡ್ಡಿ ಮುಳ್ಳು ಮೊದಲಾದುವು. ಗ್ರಾಸೇ ಶಲ್ಯಮ್.

**ಗ್ರಾಸ್ಯ ಗ್ರಾಸ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ನುಂಗಲ್ಪಡುವ. 2. ನುಂಗಲು ಅರ್ಹವಾದ. 3. ನುಂಗಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಗ್ರಸು (ಅದನೇ) ಕರ್ಮದಿ "ಘತ್" (೩-೧-೧೨೪).

**ಗ್ರಾಹ ಗ್ರಾಹ** (ಪುಂ) 1. ಮೊಸಳೆ. ಗೃಹ್ಣಾತಿ -- ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) ಜಲಚರಾಯೇ "ಞಃ" (೩-೧-೧೪೩). "ಗ್ರಾಹಗ್ರಾಹೇ ಗಜೇಂದ್ರೇ ಕ್ವತಿ ಸರಭಸಂ ತಾರ್ಕಯಮಾಹುಹ್ಯ ಧಾವನ್" ಗಜೇಂದ್ರಮಂ. 2. ಭಾವನೆ, ಕಲ್ಪನೆ. 3. ಆಗ್ರಹ, ನಿರ್ಬಂಧ. ಗ್ರಹ ಭಾವೇ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮). "ಮೃತಗ್ರಾಹೇಣಾತ್ಮನೋ ಯತ್ ಪಿಡಯಾ ಕ್ರಿಯತೇ ತಪಃ. ಪರಸ್ಯೋತ್ಸಾದನಾರ್ಥಂ ವಾ ತತ್ತಾಮಸ-ಮುದಾಹುತಮ್" ಗೀತಾ ೧೭-೧೯. 4. ಸ್ವೀಕಾರ. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. 5. ಗ್ರಹಣ, ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳುವುದು. 6. ಕೈದಿ, ಸೆರೆಯಾಳು. (ವಿಂ) 7. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ, ಸ್ವೀಕರಿಸುವ. ಗ್ರಹ "ಅಞ್" (೩-೨-೧). ಉಪಪದಸಮಾಸ. "ರಿಕ್ವಿಗ್ರಾಹ ಕೃಣಂ ದಾಪ್ಯೋ ಯೋಷಿದ್ಗ್ರಾಹಸ್ತಥೈವ ಚ. ಪುತ್ರೋ-ನನ್ಯಾಶ್ರಿತದ್ರವ್ಯಃ ಪುತ್ರಹೀನಸ್ಯ ರಿಕ್ವಿಥನಃ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೫೧.

**ಗ್ರಾಹಕ ಗ್ರಾಹಕ** (ಪುಂ) 1. ಶೈಲಪಕ್ಷಿ. ಗಿಡಗದ ಹಕ್ಕಿ. ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೨೩೩). 2. ಎಡ



ವೈದ್ಯ. ಹಾವಾಡಿಗ. "ಗ್ರಾಹಕೋ ಧಾತವಿಹಗೇ ವ್ಯಾಲಾನಾಂ ಚ  
ಗ್ರಹೀತರಿ" ವಿಶ್ವಂ. (ವಿಂ) 3. ಸ್ವೀಕರಿಸುವವನು,  
ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) ಕರ್ತಂ "ಫ್ವಲ್"  
(3-1-133). 4. ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳುವವನು. "ಗ್ರಾಹಕೇ-  
ಗೃಹಯತೇ ಚೋರೋ ಲೋಪ್ರೇಣಾಥ ಪದೇನ ವಾ" ಯಾಜ್ಞಂ 2-266. 5. ಕೊಳ್ಳುವವನು, ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಪಡೆಯುವವನು. 6. ಬಂಧಿ  
ಸುವವನು. ಸೆರೆಹಿಡಿಯುವವನು. 7. ಜ್ಞಾಪಿಸುವ,  
ತಿಳಿಸುವ. ಗ್ರಹ + ಣಿಚ್ "ಫ್ವಲ್" (3-1-133).

ಗ್ರಾಹಯತ್ ಗ್ರಾಹಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಸ್ವೀಕರಿಸುವಂತೆ ಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 2. ತಿಳಿಯು  
ವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್"  
(3-1-124). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜೀಪ್" (4-1-6).  
-ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

ಗ್ರಾಹಯಿತವ್ಯ ಗ್ರಾಹಯಿತವ್ಯ (ವಿಂ) ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವಂತೆ  
ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ತವ್ಯ:"  
(3-1-96).

ಗ್ರಾಹಿತ ಗ್ರಾಹಿತ (ವಿಂ) 1. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವಂತೆ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ವೀಕರಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) +  
ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102). 2. ತಿಳಿಯುವಂತೆ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಗ್ರಾಹಿನ್ ಗ್ರಾಹಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಕಪಿತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಬೇಲದ ಮರ.  
ಗೃಹ್ಣಾತಿ - ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಗಿಹಿನ್:" (3-1-134).  
"ಅಥ ಕಪಿತ್ಥೇ ಸ್ಯುರ್ದಧಿತಗ್ರಾಹಿಮನ್ಮಥಾ:" ಅಮಂ.  
(ವಿಂ) 2. "ಗ್ರಾಹಕ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ವ್ಯಾಲಗ್ರಾಹಿ  
ಪಲ್ಲವಗ್ರಾಹಿ ಇತ್ಯಾದಿ. 3. ಮಲಬಂಧವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.  
"ಕಷಾಯಾನುರಸಂ ಗ್ರಾಹಿ ಸ್ನಿಗ್ಧಂ ಮೇಧಾವಲಾವಹಮ್" ಭಾವಪ್ರಂ.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗ್ರಾಹಿಣಿ ಗ್ರಾಹಿಣೀ. 4. ಪ್ರತಿಕೂಲಕಾದ  
ಹೆಂಗಸು. "ಮಾ ಸ್ಮ ಭೂಗ್ರಾಹಿಣಿ ಭೀರ ಗನ್ತುಮುತ್ಸಾಹಿಣಿ  
ಭವ" ಭट्टಿಂ 4-93.

ಗ್ರಾಹ್ಯ ಗ್ರಾಹ್ಯ (ವಿಂ) 1. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ,  
ಸ್ವೀಕರಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 2. ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ. 3. ಬಂಧಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. "ಅನ್ಯೇಽಪಿ ಶತ್ಕುಯಾ  
ಗ್ರಾಹ್ಯಾ: ಜಾತಿನಾಮಾದಿನಿಹವೇ:। ಧೃತಸ್ತೀಪಾನಸಕ್ತಾಶ್ಚ  
ಶುಕ್ಲಭಿನ್ನಮುಖಸ್ವರಾ:" ಯಾಜ್ಞಂ 2-266. 4. ಅಂಗೀಕರಿ  
ಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. "ಸ್ವಭಾವೇನೈವ ಯದ್ಬ್ರೂಯತದ್ಗ್ರಾಹ್ಯಂ  
ವ್ಯಾವಹಾರಿಕಮ್" ಮನುಂ 6-66. 5. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು  
ಶಕ್ಯವಾದ. ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಘ್ಯತ್" (3-1-124).  
6. ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಬಹುದು

ದಾದ. 7. ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 8. ಬಂಧಿ  
ಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 9. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಡುವ. 10. ಹಿಡಿದು  
ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಡುವ. 11. ಬಂಧಿಸಲ್ಪಡುವ. 12. ತಿಳಿಯ  
ಲ್ಪಡುವ. ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ, ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಂದ ಗ್ರಹಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. "ಯೋಜಾವತೀಂದ್ರಿಯಗ್ರಾಹ್ಯ: ಸೂಕ್ತಮೋಽವ್ಯಕ್ತ:  
ಸನಾತನ:" ಮನುಂ 1-9.

ಗ್ರೀವಾ ಗ್ರೀವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೊರಳು, ಹೆಕ್ಕತ್ತು. ಗಿರತ್ವನಯಾ-  
ಗ್ (ನಿಗರಣೇ) "ವನ್" (3-1-142). ನಿಪಾಂ.  
"ಗ್ರೀವಾಭಜ್ಞಾಭಿರಾಮಂ ಮುಹುರನುಪತತಿ ಸ್ಯಂದನೇ ಬದ್ಧದೃಷ್ಟಿ:  
ಗೌರ್ವಾಧೇನ ಪ್ರವಿಷ್ಟ: ಶರಪತನಭಯಾಙ್ಗಯಸಾ ಪೂರ್ವಕಾಯಮ್"  
ಶಾಕುಂ 1-9. "ಗ್ರೀವಾಂ ಚಾಸ್ಯ ತಥಾಕ್ರಾಕ್ಷೀತ್" ಭट्टಿಂ  
14-122.

ಗ್ರೀವಿನ್ ಗ್ರೀವಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಉದ್ದವಾದ ಕತ್ತುಳ್ಳ, ಬಂಟಿ. ದೀರ್ಘ  
ಗ್ರೀವಾಸ್ತಯಸ್ಯ "ಇನಿ:" (ವಿಂ) 2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಕತ್ತುಳ್ಳ.

ಗ್ರೀಷ್ಮ ಗ್ರೀಷ್ಮ (ಪುಂ) 1. ಗ್ರೀಷ್ಮಕಾಲ, ಬೇಸಿಗೆಕಾಲ, ಗ್ರೀಷ್ಮ  
ಯುತು. ಗ್ರಸು (ಅದನೇ) "ಮಕ್" ಇತ್ವಂ ಚ (3-1-146).  
"ವಿಹರ್ತುಮಿಚ್ಛಾ ವನಿತಾಸಖಸ್ಯ ತಸ್ಯಾಂಭಸಿ ಗ್ರೀಷ್ಮಸುಖೇ  
ವಮೂವ" ರಘುಂ 16-44. "ಅತ್ಯಾಸನ್ನತಯಾ ತೇನ ಗ್ರೀಷ್ಮೇ  
ತೀವ್ರಕರಾ ರವೇ:। ದೇವಭಾಗೇಽಸುರಾಣಾಂ ತು ಹೇಮಂತೇ ಮಂದತಾಽನ್ಯಥಾ"  
ಸುಂ ಸಿಂ 12-46. "ಗ್ರೀಷ್ಮೇ ತೀವ್ರಕರೋ ಭಾನುರ್ನ ಹೇಮಂತೇ  
ತಥಾವಿಧ:" ಸುಂ ಸಿಂ 12-6. ಗ್ರೀಷ್ಮಯುತುವಿನಲ್ಲಿ  
ಸೂರ್ಯನು: ಜಂಬೂದ್ವೀಪಕ್ಕೆ ಬಹಳ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ  
ಸಂಚರಿಸುವುದರಿಂದ ಸೂರ್ಯನ ಕಿರಣಗಳು ಬಹಳ ತೀಕ್ಷ್ಣ  
ವಾಗಿರುವುವು. 2. ಉಷ್ಣತೆ, ಕಾವು, ಶಾಖ.

ಗ್ರೀಷ್ಮಕಾಲ ಗ್ರೀಷ್ಮಕಾಲ (ಪುಂ) ಗ್ರೀಷ್ಮಯುತು, ಬೇಸಿಗೆಯ  
ಕಾಲ.

ಗ್ರೀಷ್ಮಜ ಗ್ರೀಷ್ಮಜ (ವಿಂ) 1. ಗ್ರೀಷ್ಮಯುತುವಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.  
ಗ್ರೀಷ್ಮೇ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಕುಭವಿ) "ಜ:" (3-2-99).  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ವೀರಜಾಡಿ ಗಿಡ. 3. ಲವಲೀಲತೆ.

ಗ್ರೀಷ್ಮಸಮಯ ಗ್ರೀಷ್ಮಸಮಯ (ಪುಂ) ಗ್ರೀಷ್ಮಯುತು,  
ಬೇಸಿಗೆಯ ಕಾಲ. "ಅಚಿರಪ್ರವೃತ್ತಮುಪಭೋಗಕ್ಷಮಂ ಗ್ರೀಷ್ಮಸಮಯ-  
ಮಧಿಕೃತ್ಯ ಗೀಯತಾಮ್" ಶಾಕುಂ 1.

ಗ್ರೇವ ಗ್ರೇವ (ನಂ) 1. ಕಂಠಾಭರಣ. (ವಿಂ) 2. ಕುತ್ತಿನಲ್ಲಿ  
ರುವ. ಕೊರಳಿನಲ್ಲಿರುವ. ಗ್ರೀವಾಯಾಂ ಭವ: "ಅಘ್"  
(4-3-49). 3. ಕೊರಳಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಸರಪಳಿ. "ನಾಸಸತ್  
ಕರಿಣಾಂ ಗ್ರೇವಂ ತ್ರಿಪದೀಚ್ಛೇದಿನಾಮಪಿ" ರಘುಂ 4-46.

ಗ್ರೇವಯ ಗ್ರೇವಯ (ನಂ) 1. ಕಂಠಾಭರಣ. ಗ್ರೀವಾಯಾಂ ಭವಮ್  
"ಘ್" (4-3-49). (ವಿಂ) 2. ಕುತ್ತಿಗೆಯಲ್ಲಿರುವ.



ಕತ್ತಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ. "ಸರಲಾಸಕ್ತಮಾತೃಪ್ರವೇಶಸ್ಫುರಿತ-  
ತ್ವಿಷಾ" ರಘುಂ ೪-೭೫.

ಪ್ರವೇಶಕ ಗ್ರೀಷ್ಮೇಯಕ (ನಂ) ಕಂಠಾಭರಣ. ಗ್ರೀಷ್ಮಾ ಭವಮ್  
"ಠಕ್" (೪-೨-೯೬). "ಅಸ್ಮಾಕಂ ಸಖಿ ವಾಸಸೀ ನ  
ಠಚಿರೇ ಪ್ರವೇಶಕಂ ನೋಜ್ವಲಮ್" ಸಾಂ ೬೦.

ಗ್ರೀಷ್ಮ ಗ್ರೀಷ್ಮ (ವಿಂ) 1. ಗ್ರೀಷ್ಮಯತು ಸಂಬಂಧವಾದ.  
ಗ್ರೀಷ್ಮಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦). 2. ಗ್ರೀಷ್ಮ  
ಯತುವಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಗ್ರೀಷ್ಮೇ ಭವಮ್ "ಅನ್"  
(೪-೧-೮೬). 3. ಗ್ರೀಷ್ಮಯತುವಿನಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಗ್ರೀಷ್ಮೇ ಉಪ್ತಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೪೬). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಠೀಪ್"  
(೪-೧-೧೫). ಗ್ರೀಷ್ಮಾ ಗ್ರೀಷ್ಮೀ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ವೀರ  
ಜಾಜಗಿದ.

ಗ್ರೀಷ್ಮಕ ಗ್ರೀಷ್ಮಕ (ವಿಂ) 1. ಗ್ರೀಷ್ಮಯತುವಿನಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಗ್ರೀಷ್ಮೇ ಉಪ್ತಮ್ "ವುನ್" (೪-೩-೪೬). 2. ಗ್ರೀಷ್ಮಯತು  
ವಿನಲ್ಲಿ ಕೊಡಬೇಕಾದ (ಸಾಲ). ಗ್ರೀಷ್ಮೇ ದೇಯಂ ಕೃಣಮ್  
"ವುನ್" (೪-೩-೪೯).

ಗ್ರೀಷ್ಮಿಕ ಗ್ರೀಷ್ಮಿಕ (ವಿಂ) 1. ಗ್ರೀಷ್ಮ ಧರ್ಮವನ್ನರಿತಿರುವ.  
2. ಗ್ರೀಷ್ಮ ಧರ್ಮವನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ಗ್ರಂಥವನ್ನು  
ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವ. ಗ್ರೀಷ್ಮಂ ಗ್ರೀಷ್ಮಧರ್ಮಂ ವೇದ ತತ್ಪ್ರತಿಪಾದಕಂ  
ಗ್ರಂಥಮಪೀತೇ ವಾ "ಠಕ್" (೪-೨-೬೩). 3. ಗ್ರೀಷ್ಮ  
ಯತುವಿನಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯುವ ಧಾನ್ಯ ಮೊದಲಾದುದು.  
"ಸೌಮ್ಯೋಸ್ತೋದಯಯೋ: ಪುರೋ ಭೃಗುಸುತಸ್ಯಾವಸ್ಥಿತಸ್ತೋಯಕುರೋಗಾನ್  
ಪಿತ್ತಜಕಾಮಲಾಂಶ್ಚ ಕುರುತೇ ಪುಣಾತಿ ಚ ಗ್ರೀಷ್ಮಿಕಾನ್" ಬೃಹತ್ಸಂ  
೯-೪೩.

ಗ್ಲಪನ ಗ್ಲಪನ (ನಂ) 1. ಒಣಗಿಸುವುದು. 2. ಬಾಡಿಸು  
ವುದು. 3. ಆಯಾಸಗೊಳಿಸುವುದು, ದಣಿಸುವುದು.  
ಗ್ಲೆ (ಹರ್ಷಕಯೇ) + ಗಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).  
"ತದ್ದೇಶದಲಾಭವಗ್ಲಪನರೂಪವಿಚಾರಣಕರಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ.  
(ವಿಂ) 4. ಒಣಗಿಸುವ. 5. ಬಾಡಿಸುವ. ಗ್ಲೆ + ಗಿಚ್  
ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪). 6. ಆಯಾಸಗೊಳಿಸುವ.

ಗ್ಲಪನೀಯ ಗ್ಲಪನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಒಣಗಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ಬಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ದಣಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಬಾಡಿ  
ಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 5. ಬಾಡಿಸಬೇಕಾದ. ಗ್ಲೆ (ಹರ್ಷಕಯೇ)  
+ ಗಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). "ತವ್ಯ:".  
ಗ್ಲಪಯಿತವ್ಯ: ಗ್ಲಪಯಿತವ್ಯ.

ಗ್ಲಪಯತ್ ಗ್ಲಪಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಒಣಗಿಸುತ್ತಿರುವ.  
2. ಬಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಆಯಾಸಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ.  
ಗ್ಲೆ (ಹರ್ಷಕಯೇ) + ಗಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್

"ಠೀಪ್" (೪-೧-೬). -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ. "ಮೃಣಾಲಿಕಾ-  
ಪೇಲವಮೇವಮಾದಿಭಿವ್ರಂತೆ: ಸ್ವಮಜ್ಜಂ ಗ್ಲಪಯಂತ್ಯಹನಿಷಮ್" ಕುಮಾಂ  
೫-೨೯.

ಗ್ಲಪಿತ ಗ್ಲಪಿತ (ನಂ) 1. ಬಾಡಿಸುವುದು. 2. ಒಣಗಿಸು  
ವುದು. 3. ಆಯಾಸಗೊಳಿಸುವುದು. ಗ್ಲೆ (ಹರ್ಷಕಯೇ) +  
ಗಿಚ್ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪). (ವಿಂ) 4. ಬಾಡಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಒಣಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಆಯಾಸಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಗ್ಲೆ + ಗಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). "ರವಿಕರ-  
ಗ್ಲಪಿತೇರಿವ ವಾರಿಭಿ:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೬೪.

ಗ್ಲಪಿತವತ್ ಗ್ಲಪಿತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಬಾಡಿಸಿದವನು.  
2. ಒಣಗಿಸಿದವನು. 3. ದಣಿಸಿದವನು. ಗ್ಲೆ (ಹರ್ಷಕಯೇ) +  
ಗಿಚ್ "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಠೀಪ್"  
(೫-೧-೬). -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

ಗ್ಲಸು - ಅದನೇ (ಮಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ). ಗ್ಲಸತೇ.  
ಜಗಲಸೇ. ಗ್ಲಸಿತಾ. ಇತ್ಯಾದಿ. ಗ್ಲಸು ಧಾತುವಿನ ರೂಪ  
ಗಲಂತೆ ಆಗುವುದು.

ಗ್ಲಸನ ಗ್ಲಸನ (ನಂ) ತಿನ್ನುವುದು. ಗ್ಲಸು (ಅದನೇ) ಭಾವೇ  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

ಗ್ಲಸ್ತ ಗ್ಲಸ್ತ (ವಿಂ) ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟ. ಭಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಗ್ಲಸು  
(ಅದನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).

ಗ್ಲಹ ಗ್ಲಹ (ಪುಂ) ಆಟದಲ್ಲಿ ಪಂದ್ಯವಾಗಿ ಇಡಲ್ಪಡುವ  
ವಸ್ತು. ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೮). ಲ್ವಂ  
ನಿಪಾತ್ಯತೇ (೩-೩-೭೦). "ತಾ: ಕಾಂತೆ: ಸಹ ಕರಪುಷ್ಕರೆ-  
ರಿತಾಮ್ಬವ್ಯಾತ್ಯುಕ್ತೋಮಭಿಸರಣಗ್ಲಹಾಮದೀವ್ಯನ್" ಮಾಘಂ ೮-೩೨.

ಗ್ಲಾನ ಗ್ಲಾನ (ನಂ) 1. ಒಣಗುವುದು. 2. ಬಾಡುವುದು,  
3. ದಣಿಯುವುದು. ಗ್ಲೆ (ಹರ್ಷಕಯೇ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:"  
(೩-೩-೧೧೪). 3. ಆಯಾಸ, ದಣಿವು, ಬಳಲಿಕೆ. "ಬುದ್ಧವಾ  
ಪುಂಪ್ರಕೃತಿ ಚ ಯಾನುಚರತಿ ಗ್ಲಾನೇತರೇಶ್ಚೇಷ್ಟಿತೆ:" ಬೃಹತ್ಸಂ  
೭೮-೧೨. 4. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. (ವಿಂ) 5. ರೋಗ  
ದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 6. ದಣಿದಿರುವ, ಆಯಾಸಗೊಂಡ.

ಗ್ಲಾನಿ ಗ್ಲಾನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಯಾಸ, ದಣಿವು, ಬಳಲಿಕೆ.  
"ಗ್ಲಾನಿಚ್ಛೇದಿ ಕ್ಷುತ್ರಬೋಧಾಯ ಪೀತ್ವಾ ರಕ್ತಾರಿಷ್ಠಂ ಶೋಷಿತಾ-  
ಜಿರ್ಣಶೇಷಮ್" ಮಾಘಂ ೧೮-೭೭. 2. ರೋಗಾದಿಗಳಿಂದ  
ಉಂಟಾದ ದೌರ್ಬಲ್ಯ, ಶರೀರದ ಕ್ಷೀಣತೆ. ಗ್ಲೆ (ಹರ್ಷಕಯೇ)  
"ನಿ:" (೩ಂ ೪-೫೧). 3. ಮನೋದೌರ್ಬಲ್ಯ, ಕೆಲಸ  
ದಲ್ಲಿ ಉತ್ಸಾಹವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಚಟುವಟಿಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
"ಸ್ವಕರ್ಮಮ್ಯೋ ನಿವರ್ತಂತೇ ಮನಶ್ಚ ಗ್ಲಾನಿಮುಚ್ಛತಿ" ಮನುಂ  
೧-೫೩. 4. ಒಂದು ವ್ಯಭಿಚಾರಿಭಾವ. "ರತ್ಯಾಯಾಸ-



ಮನಸ್ತಾಪಶ್ರುತಿಪಾಸಾದಿಸಂಭವಾ । ಗಲಾನಿರ್ನಿಷ್ರಾಣತಾಕಮ್ಪ-  
ಕಾರ್ಯಾನುತ್ಸಾಹತಾದಿಕೃತ್ ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೭೦ । “ಅಙ್ಗಗಲಾನಿ  
ಸುರತಜನಿತಾಂ ತನ್ತುಜಾಲಾವಲಮ್ಬಾಃ” ಮೇಘಂ ೨-೭ । 5. ಕ್ಷಯಂ,  
ನಾಶ, ಅಳಿಪು. “ಯದಾ ಯದಾ ಹಿ ಧರ್ಮಸ್ಯ ಗಲಾನಿರ್ಭವತಿ  
ಭಾರತ” ಗೀತಾ ೪-೭ ।

**ಗಲಾಪನ ಗ್ಲಾ ಪನ** (ನಂ) 1. ದಣಿಸುವುದು. ಆಯಾಸಗೊಳಿಸು  
ವುದು. ಗ್ಲೆ (ಹರ್ಷಕಷಯೇ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।  
2. ಒಣಗಿಸುವುದು. 3. ಬಾಡಿಸುವುದು. 4. ದುರ್ಬಲ  
ಗೊಳಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 5. ಆಯಾಸಗೊಳಿಸುವ. 6. ಒಣಗಿ  
ಸುವ. 7. ಬಾಡಿಸುವ. 8. ದುರ್ಬಲಗೊಳಿಸುವ. ಗ್ಲೆ +  
ಣಿಚ್ ಕರ್ತಂ “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಗಲಾಪನೀಯ ಗ್ಲಾ ಪನೀಯ** (ವಿಂ) “ಗಲಪನೀಯ” ಪದದ  
ಅರ್ಥ. ಗ್ಲೆ (ಹರ್ಷಕಷಯೇ) + ಣಿಚ್ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೧೬) ।  
“ತವ್ಯಃ” । ಗಲಾಪಯಿತವ್ಯಃ ಗ್ಲಾ ಪಯಿತವ್ಯಃ ।

**ಗಲಾಪಯತ್ ಗ್ಲಾ ಪಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಆಯಾಸಗೊಳಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. ಗ್ಲೆ (ಹರ್ಷಕಷಯೇ) + ಣಿಚ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) ।  
2. ಒಣಗಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಬಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ ।

**ಗಲಾಪಿತ ಗ್ಲಾ ಪಿತ** (ವಿಂ) “ಗಲಪಿತ” ಪದದ ಅರ್ಥ.  
ಗ್ಲೆ (ಹರ್ಷಕಷಯೇ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) ।

**ಗಲಾಪಿತವತ್ ಗ್ಲಾ ಪಿತವತ್** (ವಿಂ) “ಗಲಪಿತವತ್” ಪದದ  
ಅರ್ಥ. ಗ್ಲೆ (ಹರ್ಷಕಷಯೇ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತವತುಃ” (೩-೨-೧೦೨) ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ವಂತಿ -ವಂತೀ ।

**ಗಲಾಯತ್ ಗ್ಲಾ ಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಆಯಾಸಪಡುತ್ತಿರುವ.  
2. ಒಣಗುತ್ತಿರುವ. 3. ಬಾಡುತ್ತಿರುವ. ಗ್ಲೆ (ಹರ್ಷಕಷಯೇ)  
“ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) ।  
ಗಲಾಯಂತಿ ಗ್ಲಾ ಯಂತೀ ।

**ಗಲಾಸ್ತು ಗ್ಲಾ ಸ್ತು** (ವಿಂ) ರೋಗದಿಂದ ದುರ್ಬಲನಾದ,  
ರೋಗದಿಂದ ಕ್ಷೀಣನಾದ. ಗ್ಲೆ (ಹರ್ಷಕಷಯೇ) “ವಸ್ತುಃ”

(೩-೨-೧೩೯) । “ವಸನ್ ಮಾಲ್ಯವತಿ ಗಲಾಸ್ತುಃ ರಾಮೋ  
ಧೃಣ್ಣುರಧೃಣ್ಣುವತ್” ಭट्टಿಂ ೭-೪ ।

**ಗ್ಲೆ - ಹರ್ಷಕಷಯೇ** (ಮಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ) । ಗಲಾಯತಿ ।  
ಜಗಲಿ । ಗಲಾತಾ । ಗಲಾಸ್ಯತಿ । ಗಲಾಯತು । ಅಗಲಾಯತ್ ।  
ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಗ್ಲಾನಿಹೊಂದು, ಕಳೆಗೊಂದು. “ಜಗಲಿ  
ದಧ್ಯೌ ವಿತಸ್ತಾನ ಕ್ಷಣಂ ಪ್ರಾಣ ನ ವಿವ್ಯಥೇ” ಭट्टಿಂ ೧೪-೬೦ ।  
2. ದಣಿ, ಆಯಾಸಪಡು. 3. ದುರ್ಬಲನಾಗು. ಕಳೆ  
ಗೊಂದು. 4. ಬಾಡು. 5. ಒಣಗು.

**ಭಾವೇಃ** -ಗಲಾಯತೇ । ಜಗಲೇ । ಗಲಾಯಿತಾ, ಗಲಾತಾ ।  
ಗಲಾಯಿಷ್ಯತೇ, ಗಲಾಸ್ಯತೇ । ಗಲಾಯತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಣಿಚಿಃ** -ಗಲಪಯತಿ, -ತೇ, ಗಲಾಪಯತಿ, -ತೇ । ಗಲಪಯಾಂ  
ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ, ಗಲಾಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ । ಗಲಪಯಿತಾ, ಗಲಾಪಯಿತಾ । ಗಲಪಯಿಷ್ಯತಿ,  
-ತೇ । ಗಲಾಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ । ಗಲಪಯತು, -ತಾಮ್ । ಗಲಾಪಯತು,  
-ತಾಮ್ । ಅಗಲಪಯತ್, -ತ, ಅಗಲಾಪಯತ್, -ತ । ಇತ್ಯಾದಿ.  
“ಗಲಪಯತಿ ಯಥಾ ಶಶಾಂಕಂ ನ ತಥಾ ಹಿ ಕುಮುದ್ರತೀ ದಿವಸಃ”  
ಶಾಕುಂ ೩-೧೪ ।

**ಕೇವಲಾತ್ ಕೃತ್ಸುಃ** -ಗಲಾತವ್ಯಮ್ । ಗಲಾನೀಯಮ್ । ಗಲೇಯಮ್ ।  
ಗಲಾನಃ । ಗಲಾಯನ್, ಗಲಾಯಂತಿ । ಗಲಾತುಮ್ । ಗಲಾನಮ್ ।  
ಗಲಾತ್ವಾ । ಪ್ರಗಲಾಯ ।

**ಘ್ಯಂತಾತ್ ಕೃತ್ಸುಃ** -ಗಲಪಯಿತವ್ಯಮ್, ಗಲಾಪಯಿತವ್ಯಮ್ ।  
ಗಲಪನೀಯಮ್, ಗಲಾಪನೀಯಮ್ । ಗಲಪ್ಯಃ, ಗಲಾಪ್ಯಃ । ಗಲಪಿತಃ,  
ಗಲಪಿತವಾನ್, ಗಲಾಪಿತಃ, ಗಲಾಪಿತವಾನ್, ಗಲಪಿತವಂತಿ,  
ಗಲಾಪಿತವಂತಿ । ಗಲಪಯನ್, ಗಲಾಪಯನ್, ಗಲಪಯಂತಿ, ಗಲಾಪಯಂತಿ ।  
ಗಲಪಯಿತುಮ್, ಗಲಾಪಯಿತುಮ್ । ಗಲಪಿತಮ್, ಗಲಾಪಿತಮ್ । ಗಲಪನಮ್,  
ಗಲಾಪನಮ್ । ಗಲಪಯಿತ್ವಾ, ಗಲಾಪಯಿತ್ವಾ । ಪ್ರಗಲಪ್ಯ, ಪ್ರಗಲಾಪ್ಯ ।

**ಗಲೌ ಗ್ಲಾ** (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಗ್ಲೆ (ಹರ್ಷಕಷಯೇ) “ಡೀಃ”  
(೩ಂ ೨-೬೫) । 2. ಕರ್ಪೂರ. 3. ಧರಿತ್ರಿ, ಭೂಮಿ.  
“ಗಲೌರ್ಧರಣ್ಯಾ ನಿವಾಪತೌ” ಮೇದಿಂ ।

ಇತಿ “ಗ” ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್ ।



श्रीः

# शब्दार्थकौस्तुभः

(प्रायौगिक संस्कृत-कर्णाटक शब्दकोशः)

ಸಂಸ್ಕೃತ-ಕನ್ನಡ ತಬ್ಬಕೋಶ

ಸಂಪುಟ ೩

ಪದಗಳು : ಘ-ನಮಸ್ಕರ್ತೃ

ಸಾಹಿತ್ಯ ವಿದ್ವಾನ್

ಚಕ್ರವರ್ತಿ ಶ್ರೀನಿವಾಸ ಗೋಪಾಲಾಚಾರ್ಯ

ಬಾಪ್ಪೊ ಪ್ರಕಾಶನ

ಬೆಂಗಳೂರು ಪ್ರೆಸ್, ಬೆಂಗಳೂರು



॥ श्रीः ॥

श्रीमते हयग्रीवाय नमः ।

## शब्दार्थकौस्तुभः । (संस्कृत-कर्णाटक शब्दकोशः)

ಸಂಸ್ಕೃತ-ಕನ್ನಡ ಶಬ್ದ ಕೌಶಲ  
ತೃತೀಯ ಭಾಗ

लक्ष्मीं तनोतु व्यवधूय चित्ते वितर्कडोलां विविधार्थराशेः ।  
लक्ष्मीहयास्यः स्फुरिताक्षमालो लक्ष्मीलसद्वत्सतलः सदा नः ॥

नत्वा लक्ष्मीहयग्रीवौ शब्दव्युत्पत्तिसिद्धये ।  
शब्दार्थकौस्तुभस्यास्य तृतीयं भागमारभे ॥

घ

घ ङा ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ ಕರ್ವರ್ಗದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಮತ್ತು ಕಂಠದಲ್ಲಿ ಅಭ್ಯಂತರಸ್ಪೃಷ್ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಅಕ್ಷರ. “ಕಾದಯೋ ಮಾವಸಾನಾಃ ಸ್ಪರ್ಶಾಃ” । “ಸ್ಪೃಷ್ಟಂ ಪ್ರಯತನಂ ಸ್ಪರ್ಶಿನಾಮ್” ಸಿಂ ಕೌಂ ।

घ ङा (पुं०) 1. गं० 2. गलगल शब्द. घट(चेष्टायाम्) “डः” बाहु० । (स्त्री०) घा ङा. 3. गलगल शब्द ಮಾಡುವ ಅಭರಣ, ಗೆಜ್ಜೆಯ ಒಡ್ಡು. 4. ಬಿಟ್ಟು, ಹೊಡೆತ. “घो घर्घरे च घण्टायां काञ्चिका-घातयोरपि” मेदि० ।

घकार ङाकार (पुं०) ङवर्ण, ङा ಎಂಬ ಅಕ್ಷರ.

घट - चेष्टायाम् (स्वा० आत्म० अक० से०) । घटते । जघटे । घटिता । घटिष्यते । घटताम् । अघटत । घटेत । ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಕೆಲಸಮಾಡು, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾಗು. “घटेत सन्ध्यादिषु यो गुणेषु लक्ष्मीर्न तं मुञ्चति चञ्चलापि” भट्टि० १२-२६ । 2. ಸೇರು, ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿ. “अस्मिन् समाजे बहुषु भ्रमन्ती भैमी किलास्मासु घटिष्यतेऽसौ” नैष० १०-४७ ।

भावे :—घटयते । घटयताम् । अघटयत । घटयेत । अघाटि । ಉಳಿದುವು ಕರ್ತ೦ ರೂಪಗಳಂತಾಗುವುವು.

णिचि :—घटादयो मितः । “मितां ह्रस्वः” (६-४-९२) । घटयति, -ते । घटयां चकार, -चक्रे, -बभूव, -आस । घटयिता । घटयिष्यति, -ते । घटयतु, -ताम् । ಇತ್ಯಾದಿ.

कृत्तु :—घटितव्यम् । घटनीयम् । घाटयम् । घटितः । घटितवान् । घटमानः । घटितुम् । घटितम् । घटनम् । घटित्वा । प्रघटय ।

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು :

(1) उद् + घट = उद्घटते । उद्घटितम् । ಅಪರಣ ವನ್ನು ತೆಗೆ, ಮುಚ್ಚಿರುವನ್ನು ತೆಗೆ, ಬಿಟ್ಟು. “वर्गाविभौ देवमहीधराणां द्वारे पुरस्योद्घटितापिधाने” कुमा० ७-५३ ।

(2) प्र + घट = प्रघटते । प्रजघटे । ಪ್ರಾರಂಭಿಸು, ಉಪಕ್ರಮಿಸು. “ततः प्रजघटे युद्धं शस्त्राण्यासुः परस्परम्” भट्टि० १४-७७ ।



(3) ವಿ+ಘಟ=ವಿಜಘಟೆ | ವಿಘಟನಮ್ | ಬೇರೆಯಾಗು.  
“ತತೋ ವಿಜಘಟೇ ಶೈಲೇಽದ್ವೇಲಂ ಪುಪ್ಲುವೇಽಮ್ಬುಭಿಃ” ಭट्टಿಂ ೧೪-೬೬ |

ವಿ + ಘಟ + ಣಿच् = ವಿಘಟಯತಿ | ಬೇರ್ಪಡಿಸು, ಭೇದಿಸು. “ವಿಘ್ನುರಥದಂಡಕೋಽಸೌ ವಿಘಟಯತಿ ವಿಪಕ್ಷ-  
ವಾಹಿನಿವ್ಯುಹಮ್” ಗಣಂ ದಂ |

(4) ಸಮ್ + ಘಟ = ಸಂಘಟತೆ | ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರು.

ಘಟ - ಸಂಘಾತೆ (ಚುರಾಂ ತಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಘಟಯತಿ, -ತೆ |

ಘಟಯಾಂಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ, -ವಭೂವ, -ಆಸ | ಘಟಯಿತಾ |  
ಘಟಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೆ | ಘಟಯತು, -ತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಒಟ್ಟಿಗೆ  
ಸೇರಿಸು, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸು.

ಘಟ ಘಟಿ(ಪುಂ) 1. ಕೊಡ, ಬಿಂದಿಗೆ. ಘಟತೆ-ಘಟ(ಚಿಷ್ಟಾಯಾಮ್)

‘ಅಚ್’ (೩-೧-೧೩೪) | “ಪಯಸಾ ಪರಿಪೂರಿತೌ ಘಟೌ

ಪರಿಪೂಯನ್ ಪಥಿ ಪಾಕಶಾಸನಿಃ” ಚಂ ಭಾಂ | 2. ಮಂಜೆಗೆ

ಅಧಾರವಾದ ಸ್ತಂಭದ (ಕಂಬದ) ಒಂದು ಭಾಗ. “ಸ್ತಂಭಂ

ವಿಭಜ್ಯ ನವಧಾ ವಹನಂ ಭಾಗೋ ಘಟೋಽಸ್ಯ ಭಾಗೋಽನ್ಯಃ | ಪದ್ಯಂ

ತಥೋತ್ತರೋಽಂ ಕುರ್ಯಾದ್ಭಾಗೇನ ಭಾಗೇನ” ಬೃಹತ್ಸಂ ೪೩-೨೯ |

3. ಅನೆಯ ಕುಂಭಸ್ಥಳ. 4. (ಯೋಗಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ)

ಸಮಾಧಿಯ ಒಂದು ಭೇದ. “ಘಟಸ್ತ್ವಿಭವಶಿರಃಕೂಟೇ ಸಮಾಧಿ-

ಕುಮ್ಮಯೋಃ” ಹೇಮಂ | 5. ಇಪ್ಪತ್ತು ದ್ರೋಣಗಳ ಅಳತೆ.

[ಎರಡು ಕೋಟಿಗಳು - ಒಂದು ದ್ರೋಣ]. 6. ಕುಂಭ

ರಾಶಿ. “ಕುಮ್ಮೋ ಘಟೋ ಜಲಧರಃ ಹೃದ್ರೋಗ ಇತಿ ಕೀರ್ತಿತಃ” |

“ಸಿಂಹೇ ವಾ ಯದಿ ಗೋಘಟೇ ಗತನರಃ ಸರ್ವಾರ್ಥಸಿದ್ಧಿಃ ಲಭೇತ್”

ಸಮಯಪ್ರಂ | 7. ಕುಂಭಕವೆಂಬ ಪ್ರಾಣಿಯಾಮ.

ಘಟಕ ಘಟಕ (ವಿಂ) 1. ಸಣ್ಣ ಕೊಡ, ಚಿಕ್ಕ ಬಿಂದಿಗೆ.

ಘಟ ಅರ್ಥಾತ್ “ಕನ್” (೪-೩-೮೪) | “ಘಟಕೇರಿವ ಕರ್ಮಪಾಶ-

ನದ್ವೇಃ ಸ್ಥಿರಕಾಲಾತ್ಮಕಚಕ್ರಯನ್ತ್ರನಿಷ್ಠಃ” ಯಾದಂ ೧೪-೨೨ |

2. ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧವನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸುವವನು. ಘಟಯತಿ-ಘಟ

(ಚಿಷ್ಟಾಯಾಮ್) “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) | ವಿವಾಹಕ್ಕಾಗಿ

ವಧೂವರರನ್ನು ಹೊಂದಿಸಿಕೊಡುವುದು, ವ್ಯವಹಾರಗಳಲ್ಲಿ

ಮನುಷ್ಯರನ್ನು ಪರಸ್ಪರ ಹೊಂದಾಣಿಕೆಯ ಮಾತಿನಿಂದ

ಸೇರಿಸುವುದು, ಇತರರಿಗಾಗಿ ಶ್ರಮಪಟ್ಟು ಕಾರ್ಯಮಾಡಿ

ಕೊಡುವುದು, ಪರಸ್ಪರ ಅನುರೂಪವಾದ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು

ಸೇರಿಸುವುದು ಮುಂತಾದ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡುವವನು

ಘಟಕನು. “ಏತೇ ಸತ್ಪುರುಷಾಃ ಪರಾರ್ಥಘಟಕಾಃ ಸ್ವಾರ್ಥಾನ್

ಪರित್ಯಜ್ಯ ಯೇ” ಭರ್ತೃಂ ೨-೬೪ | 3. ತನ್ನೊಳಗೆ ಇನ್ನೊಂ

ದನ್ನು ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ.

ಘಟಕರ್ಪರ ಘಟಕರ್ಪರ (ಪುಂ) 1. ವಿಕ್ರಮಾದಿತ್ಯನ ಆಸ್ಥಾನ

ದಲ್ಲಿದ್ದ ನವಮಣಿಗಳಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ಕವಿ. “ಧನ್ವಂತರಿಕ್ಷಪಣಕಾ-

ಮರಸಿಂಹಶಾಙ್ಕುವೆಂತಾಲಭದ್ರಘಟಕರ್ಪರಕಾಲಿದಾಸಾಃ” ಜ್ಯೋತಿರ್ವಿಂ |

2. ಮಡಕೆಯ ಅರ್ಧಭಾಗ, ಕಪಾಲ.

ಘಟಕಾರ ಘಟಕಾರ (ಪುಂ) ಮಡಕೆಯನ್ನು ತಯಾರಿಸು

ವವನು, ಕುಂಬಾರ. ಘಟಂ ಕರೋತಿ-ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣೆ)

“ಅಣ್” (೩-೨-೧) |

ಘಟಕಾರಕ ಘಟಕಾರಕ (ಪುಂ) ಕುಂಬಾರ, ಮಡಕೆಯನ್ನು

ತಯಾರಿಸುವವನು. ಘಟಸ್ಯ ಕಾರಕಃ |

ಘಟಕೃತ್ ಘಟಕೃತ್ (ಪುಂ) ಕುಂಬಾರ, ಮಡಕೆಯನ್ನು

ತಯಾರಿಸುವವನು ಘಟಂ ಕರೋತಿ-ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣೆ)

“ಕಿವಿಪ್” (೩-೨-೨೬) |

ಘಟಗ್ರಹ ಘಟಗ್ರಹ (ಪುಂ) ಮಡಕೆಯನ್ನು ಹಿಡಿದುಕೊಂಡಿರು

ವವನು. ಘಟಂ ಗೃಹ್ಣಾತಿ-ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) ಅನುಕ್ರಮನಾರ್ಥ

“ಅಚ್” (ವಾಂ ೩-೨-೯) | ಅನುಕ್ರಮನಾರ್ಥ ತು “ಅಣ್”

(೩-೨-೧) | ಘಟಗ್ರಾಹಃ ಘಟಗ್ರಾಹಃ.

ಘಟಜ ಘಟಜ (ಪುಂ) ಘಟದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಅಗಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿ.

ಘಟಾತ್ ಜಾಯತೆ-ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) “ಙಃ” (೩-೨-೯೮) |

ಘಟದಾಸಿ ಘಟದಾಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಟ್ಟಣ, ನಾಯಿಕಾ

ನಾಯಿಕೆಯರನ್ನು ಕೂಡಿಸುವವನು. ಘಟಯತಿ ನಾಯಿಕಾ-

ನಾಯಕೌ ಪರಸ್ಪರಂ ಯೋಜಯತಿ-ಘಟ (ಚಿಷ್ಟಾಯಾಮ್) + ಣಿच्

“ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) | ಘಟಾ ದಾಸೀವ | “ಅಥ ಕುಡ್ವನಿ |

ಇಜ್ಯಾ ಸ್ಯಾದ್ರತತಾಲಿ ಚ ಘಟದಾಸೀ ಗಣೇಕಾ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಘಟನ ಘಟನ (ನಂ) 1. ಸೇರಿಸುವಿಕೆ, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸುವಿಕೆ,

ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧ ಕಲ್ಪಿಸುವಿಕೆ. ಘಟ (ಚಿಷ್ಟಾಯಾಮ್) + ಣಿच्

“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) | 2. ಕಾರ್ಯವು ಸಂಭವಿಸುವುದು.

ಘಟನಾ ಘಟನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೇರಿಸುವಿಕೆ, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸು

ವಿಕೆ. ಘಟ (ಸಂಘಾತೆ) + ಣಿच् “ಯುಚ್” (೩-೩-೧೦೭) |

2. ಅನೇಗಳ ಗುಂಪು. 3 ನಡತೆ, ಚರ್ಯೆ, ಇರುವ ರೀತಿ.

“ದೇವಜ್ಞೇನ ಶುಭಾಶುಭಂ ದಿಗುದಿತಸ್ಥಾನಾಹುತಾನಿಕ್ಷತಾ ವಾಚ್ಯಂ

ವಕ್ತೃನಿಜಾಪರಾಙ್ಗಘಟನಾಂ ಚಾಲೋಕ್ಯ ಕಾಲಂ ಧಿಯಾ” ಬೃಹತ್ಸಂ

೪೧-೧ | 4. ಪರಸ್ಪರ ಸೇರುವುದು, ಒಬ್ಬನನ್ನೊಬ್ಬನು

ಸಂಧಿಸುವುದು, ಪರಸ್ಪರ ಕೂಡುವುದು. “ದೌರ್ಭಾಗ್ಯಂ

ಭ್ರೂಯುಗೋತ್ಥಾಃ ಪ್ರಿಯಜನಘಟನಾಮಾಶು ದುಃಶೀಲತಾಂ ಚ” ಬೃಹತ್ಸಂ

೪೨-೨ | 5. (ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ) ಪದಗಳ ಜೋಡಣೆ. “ತಥಾ

ಸಮಾಸೋ ಬಹುಲೋ ಘಟನೌದ್ರವ್ಯಶಾಲಿನಿ” ಸಾಂ ದಂ ೮-೭ |

6. ರಾಶಿಹಾಕುವುದು, ಗುಪ್ತೆಹಾಕುವುದು. 7. ಕಾರ್ಯವು

ಸಂಭವಿಸುವುದು.

ಘಟಪರ್ಯಸನ ಘಟಪರ್ಯಸನ (ನಂ) ಪತಿತನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮ

ಣನು ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲು ಹಿಂಜರಿದರೆ ಸಮಾಜ



ದಿಂದ ಬಹಿಷ್ಕರಿಸಲು ಅವನು ಜೀವಿಸಿರುವಾಗಲೇ ಮಾಡುವ ಘಟಪ್ರಾಧ್ಯ.

**ಘಟಪ್ರಕ್ಷೇಪ ಘಟಿಸ್ಪಕ್ಷೇಪ** (ಪುಂ) ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ ನಡೆದ ಬಳಿಕ ಪುಣ್ಯತೀರ್ಥಸ್ನಾನಮಾಡಿ ಒಂದು ಬಂಧುಗಳ ಮುಂದೆ ಆ ತೀರ್ಥದಿಂದ ತುಂಬಿದ ಬಿಂದಿಗೆಯನ್ನು ಎಸೆಯುವುದು. ಘಟಸ್ಯ ಪ್ರಕ್ಷೇಪಃ |

**ಘಟಮಾನ ಘಟಮಾನ** (ವಿಂ) ಸಂಭವಿಸುತ್ತಿರುವ, ಆಗುತ್ತಿರುವ. ಘಟ (ಚೇಷ್ಟಾಯಾಮ್) "ಶಾನ್" (3-2-124) |

**ಘಟಸಮ್ಮವ ಘಟಿಸಂಭವ** (ಪುಂ) ಆಗುತ್ತಿರುವುದು. ಘಟಃ ಸಮ್ಮವೋಜ್ಯ |

**ಘಟಾ ಘಟಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗುಂಪು, ಸಮೂಹ. "ಯದಗಾರ-ಘಟಾಕುಟ್ಮಿಸವದಿನ್ದಪಲತುಂದಿಲಾಪಯಾ" ನೆಪಂ 2-69 | 2. ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಕಡೆ ಸೇರುವ ಆನೆಗಳ ಗುಂಪು. ಘಟ (ಸಂಭಾತೇ) "ಅಙ್" (3-3-104) | "ತದೀಯಮಾತಙ್ಗ-ಘಟಾವಿಘಟಿತಃ ಕಟಸ್ಯಲಪ್ರೋಷಿತದಾನವಾರಿಮಿಃ" ಮಾಘಂ 1-64 | 3. ಸಭೆ, ಜನರು ಒಟ್ಟುಸೇರುವುದು. 4. ಘಟನೆ, ಕಾರ್ಯವು ಸಂಭವಿಸುವುದು. 5. ಗೋಷ್ಠಿ, ಪರಸ್ಪರ ಮಾತುಕತೆ ನಡೆಸುವುದು, ಸಂಲಾಪ. "ಘಟಾ ಘಟನ-ಗೋಷ್ಠಿಮಘಟನಾಸು ಚ ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ | 6. ಆನೆಗಳನ್ನು ಅಲಂಕರಿಸುವುದು. "ಕಲ್ಪನಾ ಸಜ್ಜನಾ ಘಟಾ" ವೈಜಂ |

**ಘಟಿಕ ಘಟಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಘಟದಿಂದ ಹೊಳೆಯನ್ನು ದಾಟುವವನು, ಘಟದ ಆಸರೆಯಿಂದ ನದಿಯನ್ನು ದಾಟುವವನು. ಘಟೇನ ತರತಿ—ಘಟ "ಠನ್" (4-4-6) | 2. ಕಾಲವನ್ನು ತಿಳಿಸಲು ರಂಧ್ರಮಾಡಿರುವ ಘಟವನ್ನು ಬಾರಿಸುವವನು. ಘಟಿಂ ಕಾಯತಿ ವಾದಯತಿ — ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಕಃ" (3-2-8) |

**ಘಟಿಕಾ ಘಟಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಣ್ಣ ಮಡಕೆ, ಚಿಕ್ಕ ಗಡಿಗೆ. ಅಲ್ಪೋ ಘಟಃ "ಕನ್" (4-3-65) | "ಏಷ ಕ್ಷಿಡತಿ ಕ್ಷುಪಯನ್-ಘಟಿಕಾನ್ಯಾಯಪ್ರಸಕ್ತೋ ವಿಧಿಃ" ಮೃಚ್ಛಂ 10-49 | 2. ಕಾಲದ ಒಂದು ಪ್ರಮಾಣ, ಒಂದು ಕಾಲಮಾನ, ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು ನಿಮಿಷಗಳ ಕಾಲ. "ಚತುರ್ದಶಃ ಘಟಿಕಾಃ ಪ್ರಾತರರುಣೋದಯ ಉಚ್ಯತೇ | ಯತಿರ್ನಾಂ ಸ್ನಾನಕಾಲೋಽಯಂ ಗಜ್ಜಾಮ್ಭಸದೃಶಃ ಸ್ಮೃತಃ" | "ವ್ರತೋಪ-ವಾಸಸ್ನಾನಾದೌ ಘಟಿಕೇಕಾ ಯದಾ ಭವೇತ್ | ತದಯೇ ಸಾ ತಿಥಿ-ಗ್ರಾಹಿಣಿ ಶ್ರಾದ್ಧಾದಾವಸ್ತಗಾಮಿನಿ" ವಿಂ ಷಂ | 3. ಆನೆ ಯನ್ನು ಹಿಡಿಯುವ ಹಳ್ಳ, ಆನೆಯನ್ನು ಕಡೆವಲು ಮಾಡಿರುವ ಮುಚ್ಚಿದ ಗುಂಡಿ, —ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣದಂತೆ ಮೇಲೆ ಮುಚ್ಚಿರುವ ಹಳ್ಳ. 4. ಆನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ ಅಥವಾ ಸರಪಳಿ. "ವಾಯಿ ಕಾಲೇ ಚ ಘಟಿಕಾ" ನಾನಾರ್ಥಂ | 5. ನಿತಂಬಪ್ರದೇಶ.

**ಘಟಿಕಾಯನ್ತ್ರ ಘಟಿಕಾಯಂತ್ರ** (ನಂ) ಕಾಲಮಾನವನ್ನು ತೋರಿಸುವ ಯಂತ್ರ, ಗಡಿಯಾರ.

**ಘಟಿತ ಘಟಿತ** (ವಿಂ) 1. ಸಂಭವಿಸಿದ, ಉಂಟಾದ. ಘಟ (ಚೇಷ್ಟಾಯಾಮ್) ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ" (3-4-92) | 2. ರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. (ಚಿನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಕಟ್ಟಡದಲ್ಲಿ) ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ (ರತ್ನ ಮುಂತಾದುದು). 4. ಅನೇಕ ವಿಷಯಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಘಟ + ಣಿच् ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-2-102) |

**ಘಟಿತವತ್ ಘಟಿತವತ್** (ವಿಂ) 1. ಸೇರಿಸಿದವನು. 2. ಚಿನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಕಟ್ಟಡದಲ್ಲಿ ರತ್ನ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಇಟ್ಟವನು. ಘಟ (ಚೇಷ್ಟಾಯಾಮ್) "ಕ್ತವತ್ಃ" (3-2-102) |

**ಘಟಿನ್ ಘಟಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಕುಂಭರಾಶಿ. ಘಟಃ ತದಾಕಾರೋಽ-ಸ್ಯಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (4-2-114) | "ಮತ್ಸಯಿ ಘಟಿ ನೃಮಿಶುನಂ ಸಗದೇ ಸವೀಣಮ್" | (ವಿಂ) 2. ಘಟವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ, ಗಡಿಗೆಯನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಢಿಪ್" (4-1-4) | ಘಟಿನಿ ಘಟಿನಿ.

**ಘಟಿನ್ದಮ ಘಟಿನ್ದಮ** (ವಿಂ) ಬಾಯಿಯ ಗಾಳಿಯಿಂದ ಘಟವನ್ನು ಊದುವವನು, ರಂಧ್ರವಿರುವ ಘಟವನ್ನು ಊದಿ ಶಬ್ದಮಾಡುವವನು. ಘಟಿಂ ಧಮತಿ — ಧ್ಮಾ (ಶಬ್ದಾನಿಸಂಯೋಗಯೋಃ) "ಲಶ್" (3-2-30) | ಪೂರ್ವಸ್ಯ ಹ್ರಸ್ವಃ (6-3-66) |

**ಘಟಿನ್ದಯ ಘಟಿನ್ದಯ** (ವಿಂ) ಒಂದು ಗಡಿಗೆಯ ತುಂಬ ಕುಡಿಯುವವನು. ಘಟಿಂ ಧಯತಿ — ಧೇ (ಪಾನೇ) "ಲಶ್" (3-2-30) | ಹ್ರಸ್ವಃ (6-3-66) |

**ಘಟಿ ಘಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ಘಳಿಗೆ, ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು ನಿಮಿಷಗಳ ಕಾಲ. ಘಟಃ ಕಾಲಮಾನಜ್ಞಾಪಕಃ ಸರನ್ಧ್ರಃ ಕುಂಭೋಽ-ಸ್ಯಸ್ಯಾಮ್ "ಅಚ್" (4-2-126) | ಗೌರಾಂ "ಢಿಪ್" (4-1-41) | 2. ಸಣ್ಣ ಗಡಿಗೆ, ಚಿಕ್ಕ ಮಡಕೆ, ಸಣ್ಣ ಬಿಂದಿಗೆ. "(ತಾಮ್ರಘಟಿಂ ಗೃಹೀತ್ವಾ) — ಭಗವನ್, ಪಾದಶೌಚಂ ವಿಧೀಯತಾಮ್" ಪ್ರಬೋಧಂ 2 | 3. ಕಾಲವನ್ನು ಅಳೆಯಲು ಉಪಯೋಗಿಸುತ್ತಿದ್ದ ರಂಧ್ರಮಾಡಿದ ಮಡಕೆ.

**ಘಟಿಕಾರ ಘಟಿಕಾರ** (ಪುಂ) ಕುಲಾಲ, ಕುಂಬಾರ. ಘಟಿಂ ಕರೋತಿ — ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣೇ) "ಅಞ್" (3-2-1) |

**ಘಟಿಪ್ರಹ ಘಟಿಪ್ರಹ** (ಪುಂ) ನೀರಿನ ಬಿಂದಿಗೆಯನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ. ಘಟಿಂ ಗೃಹ್ಣಾತಿ — ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) ಅನುಕ್ರಮನಾರ್ಥಂ "ಅಚ್" (ವಾಂ 3-2-9) | ಅಕ್ರಮನಾರ್ಥಂ ತು "ಅಞ್" (3-2-1) | —ಗ್ರಾಹಃ —ಗ್ರಾಹಃ.



ಘಟೀಚೆಡಿ ಘಟೀಚೆಡಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರನ್ನು ಹೊತ್ತು ತರುವ ದಾಸಿ. "ಘಟೀಚೆಡಿ ನೊಮ್ಮಹುಪತಿವಧೂತಿ ದ್ರವದಾ" ಚಂ ಭಾಂ |  
ಘಟೀಜನ್ಮನ್ ಘಟೀಜನ್ಮನ್ (ಪುಂ) ಮಡಕೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯ. ಘಟಾಂ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ |

ಘಟೀಜಾನುಕ ಘಟೀಜಾನುಕ (ವಿಂ) ಘಟದಂತೆ ಮಂಡಿಯುಳ್ಳ. ಮಡಕೆಯಹಾಗಿರುವ ಮಂಡಿಯುಳ್ಳ. ಘಟೀವತ್ ಜಾನುನಿ ಯಸ್ಯ |

ಘಟೀದಾಸೀ ಘಟೀದಾಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರನ್ನು ಹೊತ್ತು ತರುವ ದಾಸಿ.

ಘಟೀಯನ್ತ್ರ ಘಟೀಯನ್ತ್ರ (ನಂ) 1. ಕಾಲವನ್ನು ಅಳೆಯಲು ನೀರಿನಿಂದ ತುಂಬಿದ ಒಂದು ಯಂತ್ರ. ಗಡಿಯಾರವು ಬರುವುದಕ್ಕೆ ಮುಂಚೆ ಕಾಲಜ್ಞಾನಕ್ಕಾಗಿ ರಂಧ್ರವುಳ್ಳ ಒಂದು ಮಡಕೆಯಲ್ಲಿ ನೀರುತುಂಬಿ ಅದು ಕೆಳಕ್ಕೆ ಸೋರಿದಂತೆಲ್ಲಾ ಕಾಲವನ್ನು ಅಳೆದು ತಿಳಿಯುತ್ತಿದ್ದರು. "ತೌಯನ್ತ್ರ-ಕಪಾಲಾಕ್ಷಮಯರನರವಾನರೇ: | ಸಮುಪ್ರೇಣುಗುಂಶ್ಚ ಸಮ್ಯಕ್ಕಾಲಂ ಪ್ರಸಾಧಯೇತ್" ಸುಂ ಸಿಂ | 2. ಏತ, ಬಾಷಿಯಿಂದ ತೋಟಕ್ಕೆ ನೀರನ್ನು ಹಾಯಿಸಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಯಂತ್ರ. "ಕಿ ಕನಿಷ್ಠಾ: ಕಿಮ್ ಜ್ಯಾಠಾ: ಘಟೀಯನ್ತ್ರಸ್ಯ ದುರ್ಜನಾ: " |

ಘಟೋತ್ಕಚ ಘಟೋತ್ಕಚ (ಪುಂ) ಭೀಮನಿಂದ ಹಿಡಿಯೆ ಯೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. "ಎವಂ ಭ್ರಾತೃನ್ ಸಪ್ತ ಮಾಸಾನ್ ಹಿಡಿಮ್ಬಾವಾಸಯದ್ವೇ | ಪಾಂಡವಾನ್ ಭೀಮಸೇನಾರ್ಥಂ ರಾಕ್ಷಸೀ ಕಾಮರೂಪಿಣಿ | ಸುಖಂ ಸ ವಿಹರನ್ ಭೀಮಸ್ತತ್ಕಾಲಂ ಪರ್ಯಣಾಮಯತ್ | ತತೋಜಲಭತ ಸಾ ಗರ್ಭಂ ರಾಕ್ಷಸೀ ಕಾಮರೂಪಿಣಿ | ಪ್ರಜ್ಞೇ ರಾಕ್ಷಸೀ ಪುತ್ರಂ ಭೀಮಸೇನಾನ್ಮಹಾಬಲಮ್ | ಅಮಾನುಷಂ ಮಾನುಷಜಂ ಭೀಮವೇಗಮರಿಂದಮಮ್ | ಪ್ರಣಮ್ಯ ವಿಕಚ: ಪಾದಾಬಗೃಹ್ಣಾತ್ ಸ ಪಿತುಸ್ತದಾ | ಮಾತುಶ್ಚ ಪರಮೇಶ್ವಾಸಸ್ತೀ ಚ ನಾಮಾಸ್ಯ ಚಕ್ರತು: | ಘಟೋಹಾಸ್ಯೋತ್ಕಚ ಇತಿ ಮಾತಾ ತಂ ಪ್ರತ್ಯಭಾಷತ | ಅಭವತ್ತೇನ ನಾಮಾಸ್ಯ ಘಟೋತ್ಕಚ ಇತಿ ಸ್ಮ ಹ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೬೯ |

ಘಟೋದರ ಘಟೋದರ (ಪುಂ) ಗಡಿಯಂತೆ ಹೊಟ್ಟೆಯುಳ್ಳ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. ಘಟ ಇವೋದರಮಸ್ಯ | "ಘಟೋದರೋ ಮಹಾಪಾರ್ಶ್ವ: ಪ್ರಥನು: ಪಿಠರಸ್ತಥಾ" ಹರಿವಂ |

ಘट्ट - चलने (म्वां आत्मं अकं सें) | घट्टते | जघट्टे | घट्टिता | घट्टिष्यते | घट्टताम् | अघट्टत | ಇತ್ಯಾದಿ. ಚಲಿಸು, ಅಲುಗಾಡು.

घट्ट - चलने (चुरां उभं सकं सें) | घट्टयति, -ते | घट्टयां चकार, -चक्रे, -बभूव, -आस | 1. ಉಜ್ಜು, ತಿಕ್ಕು. 2. ಅಲುಗಾಡಿಸು, ಕದಲಿಸು. 3. ನೂಕು, ತಳ್ಳು.

घट्ट षष्ठी (पुनं) 1. ಸ್ನಾನಘಟ್ಟ, ನದಿಯಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನಕ್ಕಾಗಿ ಇಳಿಯುವ ಜಾಗ. घट्टयतेऽत्र घट्ट (चलने) "घट्ट" (३-३-१२१) | "घट्टोऽवतारस्तीर्थोऽत्र" वैजं |

2. ಚಾಲನೆ, ಅಲುಗಾಡಿಸುವುದು. 3. ಸುಂಕದ ಕಟ್ಟೆ. घट्टजीवित् षष्ठीजीविन् (पुं) ನದಿಯ ಘಟ್ಟದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವವನು, ನದಿಗೆ ಇಳಿಯುವ ಸೋಪಾನದಲ್ಲಿ ವಾಸ ಮಾಡುವವನು, ಹೊಳೆಯನ್ನು ದಾಟಿಸಲು ಕೂಲಿಯನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ ಜಾಗದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವವನು, ಅಂಬಿಗ. घट्टं तारणशुल्कस्थानं नद्यवतरणस्थानं वा तत्र जीवति—जीव (प्राणधारणे) "जिनिः" (३-१-१३४) | ಇವನು ನದಿಯನ್ನು ದಾಟಿಸಿ ಬಂದ ಕೂಲಿಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವನು.

घट्टन षष्ठीन (नं) 1. ಕದಲಿಸುವುದು. 2. ತಳ್ಳುವುದು, ನೂಕುವುದು. म्वां घट्ट (चलने) + णिच् भावे "ल्युट्" (३-३-११५) | "सुप्तसर्पं इव दण्डघट्टनाद्रोषितोऽस्मि तव विक्रमश्रवात्" रघुं ११-७१ | 3. ಮೇಗವಾಗಿ ಬಂದು ತಾಗುವುದು, ಹೊಡೆಯುವುದು, ಬಡಿಯುವುದು. "बृहच्छिलानिष्ठुरकण्ठघट्टनाद्विकीर्णलोलानिकणं सुर-द्विषः" माघं १-५४ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ना -वा. 4. ಉಜ್ಜುವುದು, ತಿಕ್ಕುವುದು. चुरां घट्ट + णिच् "युच्" (वां ३-३-१०७) | 5. ವೃತ್ತಿ, ಜೀವನೋಪಾಯ, ಉದ್ಯೋಗ. 6. ಕದಲಿಸುವುದು, ತಳ್ಳುವುದು, ನೂಕುವುದು. "घट्टना चलनावृत्योः" हेमं |

घट्टयत् षष्ठीयत् (विं) ಕದಲಿಸುತ್ತಿರುವ.

घट्टित षष्ठीत (विं) 1. ಕದಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. घट्ट (चलने) + णिच् "क्तः" (३-२-१०२) | 2. ಅದುಮಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಹಾಕಿ ಒತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ತಿಕ್ಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಜ್ಜಲ್ಪಟ್ಟ.

घणु - दीप्तौ (तनां उभं अकं सें) | घणोति, घणुते | जघाण, जघणे | अघणीत्, अघाणीत्, अघणिष्ट | ಪ್ರಕಾಶಿಸು, ಹೊಳೆ.

घण्ट षष्ठी (विं) 1. ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ, ಹೊಳೆಯುವ. घणु (दीप्तौ) "क्तः" (३-४-७२) | (पुं) 2. ಉಪದಂಶ, ಉಪ್ಪಿಸಕಾಯಿ ಗೊಜ್ಜು ಮೊದಲಾದುವು.

घण्टा षष्ठी (स्त्रीं) 1. ಗಂಟೆ, ಕಂಜಿನಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಒಂದು ವಿಧ ವಾದ್ಯ. घटि (भाषार्थे) + णिच् "अच्" (३-१-१३४) | ಗಂಟೆಯು ಸರ್ವವಾದ್ಯಮಯವಾದುದು. ಉಳಿದ ಯಾವ ವಾದ್ಯಗಳಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಪೂಜಾಕಾಲದಲ್ಲಿ ಘಟಾನಾದ ಪೂರ್ವಕ ಸ್ವಪನಾದಿಗಳು ನಡೆಯು



ಬೇಕು. “ವಾದಿತ್ರಾಣಾಮಭಾವೇ ತು ಪೂಜಾಕಾಲೇ ಹಿ ಸರ್ವದಾ |  
ಘಟಾಶಬ್ದೋ ನರೈಃ ಕಾರ್ಯಃ ಸರ್ವವಾಚಮಯಿ ಯತಃ | ಸರ್ವವಾಚಮಯಿ  
ಘಟಾ ದೇವದೇವಸ್ಯ ವಲ್ಲಭಾ | ತಸ್ಮಾತ್ ಸರ್ವಪ್ರಯತ್ನೇನ ಘಟಾನಾದಂ  
ತು ಕಾರಯೇತ್ | ಮನ್ವಂತರಸಹಸ್ರಾಣಿ ಮನ್ವಂತರಶತಾನಿ ಚ |  
ಘಟಾನಾದೇನ ದೇವಶಃ ಪ್ರೀತೋ ಭವತಿ ಕೇಶವಃ” ಸ್ಕಾಂದಂ |

2. ಘಂಟಾಪಾಟಲಿವೃಕ್ಷ, ಮೊಕ್ಕಮರ.

ಘಟಾಕ ಘಂಟಾಕ (ಪುಂ) ಘಂಟಾಪಾಟಲಿವೃಕ್ಷ, ಮೊಕ್ಕ  
ಮರ. ಘಟೇವ ಕಾಯತಿ - ಕೈ (ಶಬ್ದೇ) “ಕಃ”  
(೩-೨-೪) |

ಘಟಾಕರ್ಣ ಘಂಟಾಕರ್ಣ (ಪುಂ) 1. ಸ್ಕಂದನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ.  
2. ಈಶ್ವರನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ. “ಘಟಾಕರ್ಣೋ ಗಣಃ  
ಶ್ರೀಮಾನ್ ಶಿವಸ್ಯಾತೀವ ವಲ್ಲಭಃ” ಶಿವಪುಂ | 3. ಶಿವಭಕ್ತ  
ನಾದ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ.

ಘಟಾತಾಡ ಘಂಟಾತಾಡ (ಪುಂ) ಗಂಟೆಯನ್ನು ಬಾರಿಸು  
ವವನು, ಗಂಟೆಯನ್ನು ಹೊಡೆದು ಜನರನ್ನು ಹೊಗಳು  
ವವನು. ಘಟಾ ತಾಡಯತಿ - ತಡ (ಆಘಾತೇ) + ಣಿच्  
“ಅಙ್” (೩-೨-೧) | “ನನ್ ಪ್ರಶಂಸತೀಜಸಂ ಯೋ ಘಟಾತಾಡೋಽ-  
ಕುಣೋದಯೇ” ಮನುಂ ೧೦-೩೩ |

ಘಟಾನಾದ ಘಂಟಾನಾದ (ಪುಂ) ಗಂಟೆಯ ಶಬ್ದ. ಘಟಾಯಾಃ  
ನಾದಃ | “ಘಟಾನಾದೋ ನಿಷ್ವನೋ ಡಿಙ್ಹಿಮಾನಾಮ್” ಮಾಘಂ  
| ೧೮-೧೦ |

ಘಟಾಪಥ ಘಂಟಾಪಥ (ಪುಂ) 1. ರಾಜಮಾರ್ಗ, ವಿಶಾಲ  
ವಾದ ಮಾರ್ಗ, ಗಂಟೆಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟಿರುವ ಅನೆಗಳು ಸಂಚರಿ  
ಸುವ ರಸ್ತೆ. ಘಟಾನಾಂ ಘಟಾಯುಕ್ತಹಸ್ತಯಾದಿನಾಂ ಪನ್ಥಾಃ “ಅಃ”  
(೪-೪-೨೪) | “ದಶಧನ್ವಂತರೋ ರಾಜಮಾರ್ಗೋ ಘಟಾಪಥಃ  
ಸ್ಮೃತಃ” ಇತಿ ಕೌಟಿಲ್ಯಃ | ಹತ್ತು ಧನುಸ್ಸುಗಳ ಉದ್ದದಷ್ಟು  
ಅಗಲವಾಗಿರುವ ರಸ್ತೆಯು ರಾಜಮಾರ್ಗ. 2. ಕಿರಾತಾ  
ಜುಫನೀಯಕ್ಕೆ ಮಲ್ಲಿನಾಥನು ಬರೆದಿರುವ ಒಂದು  
ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ.

ಘಟಾಪಾಟಲಿ ಘಂಟಾಪಾಟಲಿ (ಪುಂ) ಮೊಕ್ಕಮರ.

ಘಟಾರವ ಘಂಟಾರವ (ಪುಂ) ಗಂಟೆಯ ನಾದ, ಗಂಟೆಯ  
ಶಬ್ದ. ಘಟಾಯಾ ರವಃ | “ಘಟಾರವೇ ರೋದ್ರತರೇನಿರಂತರಮ್”  
ಕುಮಾರಂ ೧೪-೪೭ |

ಘಟಾರವಾ ಘಂಟಾರವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೆಣಬಿನ ಗಿಡ.

ಘಟಾಲಿ ಘಂಟಾಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಂಟೆಗಳ ಸಾಲು.  
2. ಕೋಶಾಂತಕೀ ಗಿಡ.

ಘಟಾವಾಹ ಘಂಟಾವಾಹ (ನಂ) ಗಂಟೆಯ ರೂಪವಾದ  
ವಾಹ್ಯ.

ಘಟಾಶಬ್ದ ಘಂಟಾಶಬ್ದ (ಪುಂ) 1. ಕಂಚು. ಘಟಾಯಾಃ  
ಶಬ್ದ ಇವ ಶಬ್ದೋಽಸ್ಯ | 2. ಗಂಟೆಯ ನಾದ.

ಘಟಿಕಾ ಘಂಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಕ್ಕುಗಂಟೆ, ಕಿರುಗಂಟೆ.  
ಕುದ್ರಾ ಘಟಾ “ಕನ್” (೪-೩-೮೪) |

ಘಟ ಘಂಟ (ಪುಂ) ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ.

ಘತನ ಘತನ (ವಿಂ) ಮಾರಕ, ಕೊಲ್ಲುವವನು. ಹನ (ಹಿಸಾ-  
ಗತ್ಯೋಃ) “ಯುನ್” ಆಯಂತಯೋಃ ಘತವತ್ವೇ ಚ (೩ಂ ೪-೪೨) |

ಘನ ಘನ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಹನ್ಯತೇ ವಾಯುನಾ - ಹನ  
(ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) “ಅಪ್” ಘನಶ್ಚಾದೇಶಃ (೩-೩-೭೭) |

“ತಪ್ತಾನಾಮುಪದಧಿರೇ ವಿಪಾಣಭಿನ್ನಾಃ ಪ್ರಹ್ಲಾದಂ ಸುರಕರಿಣಾಂ  
ಘನಾಃ ಕ್ಷರಂತಃ” ಕಿರಾಂ ೭-೧೩ | 2. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು.

3. ದಾಡ್ಲ, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ. “ಘನಾಃ ಕಠಿನಸಂಘಾತಮೇವ-  
ಕಾಠಿನ್ಯಮುದ್ಗರಾಃ” ವೇಜಂ | 4. ವಿಸ್ತಾರ, ವಿಸ್ತರಣ, ಬಡಾವಣೆ.

5. ಕೊನ್ನಾರಿಗಡ್ಡೆ. 6. ಕಬ್ಬಿಣದ ಗಡೆ.  
“ಘನುರಪಾಸ್ಯ ಸಬಾಣಧಿ ಶಂಕರಃ ಪ್ರತಿಜಘಾನ ಘನೇರಿವ  
ಮೃಷ್ಟಿಭಿಃ” ಕಿರಾಂ ೧೮-೧ | 7. ಕಫ, ಶ್ಲೇಷ್ಮ. 8. ದೇಹ.

ಶರೀರ, ಮೈ. 9. ಕಾಗೆಬಂಗಾರ, 10. ವೇದಪಠನದ  
ಒಂದು ಕ್ರಮ. 11. ಒಂದು ಸಂಖ್ಯೆಯನ್ನು ಅದೇ

ಸಂಖ್ಯೆಯಿಂದ ಮೂರಾವೃತ್ತಿ ಗುಣಿಸುವುದರಿಂದ ಬಂದ  
(ಅಬ್ಬ.) ಉದಾಃ: 3×3×3=27 ಇಲ್ಲಿ 27 ಘನ

ವಾಗುವುದು. 27ರ ಘನಮೂಲ 3. 4×4×4=64.  
ಇಲ್ಲಿ 64 ಘನವಾಗುವುದು. 64ರ ಘನಮೂಲ 4.

(ನಂ) 12. ಕಂಚಿನ ಗಂಟೆ ತಾಳ ಜಾಗಟೆ ಮೊದಲಾದ  
ವಾದ್ಯ. 13. ಮಧ್ಯಮ ನೃತ್ಯ, ವೇಗವೂ ನಿಧಾನವೂ

ಅಲ್ಲದ ಮಧ್ಯಮಕಾಲದ ನರ್ತನ. 14. ಲವಂಗಪಟ್ಟಿ.  
15. ಕಬ್ಬಿಣ. 16. ಚರ್ಮ, ತೊಗಟು. 17. ತವರ.

18. ಕತ್ತಲೆ, ಅಂಧಕಾರ. (ವಿಂ) 19. ಸಾಂದ್ರ  
ವಾದ, ನಿಬಿಡವಾದ, ದಟ್ಟವಾದ. “ಘನಾನಿ ಕಾಮಂ

ಕ್ರುಮುಮಾನಿ ವಿಭ್ರತಃ ಕರಪ್ರಚೇಯಾನ್ಯಪಹಾಯ ಶಾಖಿನಃ” ಕಿರಾಂ  
೮-೪ | 20. ಅತಿಶಯವಾದ, ಪೂರ್ಣವಾದ, ತುಂಬಿದ.

“ಘನರಸಭಾವಿತಧರ್ಮಬಿಂದುಭಾಜಾಮ್” ಯಾದಂ ೨೪-೭೪ |  
21. ದೃಢವಾದ, ಕಠಿನವಾದ, ಗಟ್ಟಿಯಾದ. “ಘನಪೌತ್ರ

ವಿದೀರ್ಣಶಾಲಮೂಲೋ ನಿಬಿಡಸ್ಕಂಧನಿಕಾಪರಗುಣವಪ್ರಃ” ಕಿರಾಂ  
೧೩-೩ | (ಕ್ರಿಂವಿಂ) 22. ನಿಬಿಡವಾಗಿ, ದಟ್ಟವಾಗಿ,

ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದಂತೆ. “ಘಟಯತಿ ಘನಂ ಕಂಠಾಶ್ಲೇಪೇ ರಸಾನ್  
ಪಯೋಧರೌ” ರತ್ನಾಂ ೩-೯ | “ಘನಂ ಸ್ಯಾತ್ ಕಾಂಸ್ಯತಾಲಾದಿ-

ವಾಚಮಭ್ಯಮನ್ಯತೀಯೋಃ | ನಾ ಮುಸ್ತಾಬ್ದೋಽಧದಾಢ್ಯೈಃ ವಿस्तಾರೇ  
ಶೋಹಮುದ್ಗರೇ | ತ್ರಿಘ್ನ ಸಾಂದ್ರೇ ದೃಢೇ ಚ” ಮೇವಿಂ | “ಲೋಹಂ  
ಕಾಲಾಯಸ್ತಂ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಪಿಪ್ಪಲಂ ಪಾರಶವಂ ಘನಮ್” ಅಭಿಂ ೩ |



ಧನಕಫ ಘನಕಫ (ಪುಂ) ಅಲಿಕ್ಕಲ್ಲು, ಮುಗಿಲ್ಲು. ಧನಸ್ಯ  
ಮೇಘಸ್ಯ ಕಫ ಇವ |

ಧನಕಾಲ ಘನಕಾಲ (ಪುಂ) ಮಳೆಗಾಲ, ವರ್ಷಕಾಲ,  
ವರ್ಷರ್ತು.

ಧನಗರ್ಜಿತ ಘನಗರ್ಜಿತ (ನಂ) ಮೇಘದ ಶಬ್ದ, ಗುಡುಗು.

ಧನಗೋಲಕ ಘನಗೋಲಕ (ಪುಂ) ಚಿನ್ನದೊಡನೆ ಬೆರೆ  
ತಿರುವ ಬೆಳ್ಳಿ.

ಧನತೋಲ ಘನತೋಲ (ಪುಂ) ಚಾತಕ ಪಕ್ಷಿ. ಧನಂ ಮೇಘಂ  
ತೋಲಯತಿ ಋಷಿ ನಯತಿ |

ಧನಧ್ವನಿ ಘನಧ್ವನಿ (ಪುಂ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಶಬ್ದ.  
2. ಮೇಘದ ಶಬ್ದ, ಗುಡುಗು. ಧನಸ್ಯ ಧ್ವನಿ: |  
“ಅನುಹಂಕುರತೇ ಧನಧ್ವನಿ ನ ಹಿ ಗೋಮಾಯುರತಾನಿ ಕೇಸರಿ”  
ಮಾಘಂ ೧೬-೨೫ |

ಧನನಾಭಿ ಘನನಾಭಿ (ಪುಂ) ಧೂಮ, ಹೊಗೆ. ಧನಸ್ಯ  
ಮೇಘಸ್ಯ ನಾಭಿರಿವ |

ಧನಪತ್ರ ಘನಪತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಸುಗ್ಗಮರ. 2. ಹುಣಿಸೆಮರ.  
3. ಕೊಮ್ಮೆಗಿಡ.

ಧನಪದವಿ ಘನಪದವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಂತರಿಕ್ಷ, ಆಕಾಶ.  
ಧನಾನಾಂ ಪದವಿ | “ಕ್ರಾಮದ್ವಿಘನಪದವಿಮನೇಕಸಂಖ್ಯೆ:” ಕಿರಾಂ  
೫-೩೪ |

ಧನಮೂಲ ಘನಮೂಲ (ನಂ) “ಧನ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಧನರಸ ಘನರಸ (ಪುಂ) 1. ನೀರು, ಜಲ. ಧನಸ್ಯ ಮೇಘಸ್ಯ  
ರಸ: | 2. ಕರ್ಪೂರ. 3. ಗಟ್ಟಿಯಾದ ರಸ, ಕಷಾಯ.  
4. ಮರದ ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಹಾಲು. 5. ಕುರಟಗೆ ಗಿಡ.  
6. ತೊಂಡೆಗಿಡ. “ಭವೇದ್ಧನರಸ: ಸಾಂದ್ರನಿಯಸಿ ಮೋರಡೆ-  
ಮ್ಬುನಿ | ಕರ್ಪುರೇ ಪಿಲುಪರ್ಣಿ ಚ ಸಮ್ಯಕ್ಸಿದ್ಧರಸೇಽಪಿ ಚ”  
ಮೇದಿಂ | (ವಿಂ) 7. ಗಟ್ಟಿಯಾದ ರಸವುಳ್ಳ.

ಧನವರ್ಮನ್ ಘನವರ್ಮನ್ (ನಂ) ಆಕಾಶ, ಅಂತರಿಕ್ಷ. ಧನಾನಾಂ  
ವರ್ಮನ್ | “ಧನವರ್ಮನ್ ಸಹಸ್ರಧೇವ ಕುರ್ವನ್” ಕಿರಾಂ ೫-೧೭ |

ಧನವಲ್ಲಿಕಾ ಘನವಲ್ಲಿಕಾ, -ವಲ್ಲಿ -ವಲ್ಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
1. ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು. ಧನಸ್ಯ ವಲ್ಲಿವ | 2. ಅಳಲೆ  
ಗಿಡ. ಧನಾ ನಿವಿಡಾ ವಲ್ಲಿ ಯಸ್ಯಾ: ವಾ “ಕಪ್”  
(೫-೪-೧೫೪) |

ಧನವಾತ ಘನವಾತ (ಪುಂ) ಒಂದು ನರಕ. ಧನ: ಸಾಂದ್ರೋ  
ವಾತೋ ಯತ್ರ |

ಧನವಾಹನ ಘನವಾಹನ (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.  
ಧನ ಇವ ಶುಭಂ ವಾಹನಮಸ್ಯ | 2. ಇಂದ್ರ. ಧನೋ ಮೇಘೋ  
ವಾಹನಮಸ್ಯ |

ಧನವೀಥಿ ಘನವೀಥಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಂತರಿಕ್ಷ, ಆಕಾಶ. ಧನಾನಾಂ  
ವೀಥಿ: | “ಧನವೀಥಿವೀಥಿಮವತೀರ್ಣವತ:” ಮಾಘಂ ೯-೩೨ |

ಧನಸಾರ ಘನಸಾರ (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಪೂರ. ಧನಸ್ಯ ಮುಸ್ತಕಸ್ಯ  
ಸಾರ: | “ಶರದ್ವಿಂದುಕುಂದಧನಸಾರನಿಹಾರಹಾರಂ” | 2. ಪಾದ  
ರಸ. ಧನೋ ನಿವಿಡ: ಸಾರೋಽತ್ರ | 3. ಜಲ, ನೀರು.

ಧನವ್ಯಪಾಯ ಘನವ್ಯಪಾಯ (ಪುಂ) ಶರತ್ಕಾಲ, ಮೋಡಗಳ  
ನಾಶದ ಸಮಯ. “ಧನವ್ಯಪಾಯೇನ ಗಭಸ್ತಿಮಾನಿವ”  
ರಘುಂ ೩-೩೭ |

ಧನಾ ಘನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡುದ್ದಿನ ಗಿಡ.

ಧನಾಗಮ ಘನಾಗಮ (ಪುಂ) 1. ವರ್ಷರ್ತು, ಮಳೆಗಾಲ.  
ಧನಾನಾಂ ಮೇಘಾನಾಮಾಗಮ: | ಆಗಮ್ಯತೇಽತ್ರ — ಆ + ಗಮ್ಲ  
(ಗತೌ) “ಅಪ್” (೩-೩-೫೮) | 2. ಮೇಘಗಳ  
ಆಗಮನ. ಧನಾನಾಮಾಗಮ: — ಆ + ಗಮ್ಲ ಭಾವೇ “ಅಪ್”  
(೩-೩-೫೮) |

ಧನಾಘನ ಘನಾಘನ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:)  
“ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) | ದ್ವಿತ್ವಮ್ ಅಮ್ಯಾಸಸ್ಯ ಆಕ್ ಚ  
(ವಾಂ ೩-೧-೧೩೪) | 2. ಮಳೆಯನ್ನು ಸುರಿಸುತ್ತಿರುವ  
ಮೋಡ. “ವಿಶ್ವಯ ವಿಶ್ರಾಂತವತೀಂ ತಪಾತ್ಯಯೇ ಧನಾಘನಶ್ಚಾತಕ-  
ಮಂಡಲಿಮಿವ” ನೇಷಂ ೯-೭ | 3. ಮದಿಸಿದ ಆನೆ.  
4. ಪರಸ್ಪರ ಹೊಡೆದಾಟ. (ವಿಂ) 5. ನಿರಂತರವಾಗಿ  
ಹೊಡೆದಾಡುತ್ತಿರುವ. “ಧನಾಘನೋ ವರ್ಷುಕಾಬ್ದೇ ಮತ್ತಧಾತುಕ-  
ಕುಂಜರೇ | ಶಕ್ರೇ ಚ” ಮೇದಿಂ |

ಧನಾತ್ಯಯ ಘನಾತ್ಯಯ (ಪುಂ) 1. ಮೋಡಗಳ ನಾಶದ  
ಸಮಯ, ಶರತ್ಕಾಲ. ಧನಾನಾಮತ್ಯಯೋಽತ್ರ | 2. ವರ್ಷರ್ತುವು  
ಕಳೆದುಹೋಗುವುದು, ಮಳೆಗಾಲವು ಮುಗಿಯುತ್ತಾ ಬರುವ  
ವಿಷಯ. ಧನಾನಾಮತ್ಯಯ: |

ಧನಾಮಯ ಘನಾಮಯ (ಪುಂ) ಖರ್ಜೂರದ ಗಿಡ. ಧನ  
ದೃಢ: ಆಮಯೋ ಯಸ್ಮಾತ್ |

ಧನಾಶ್ರಯ ಘನಾಶ್ರಯ (ಪುಂ) ಅಂತರಿಕ್ಷ, ಆಕಾಶ.

ಧನೀಕೃತ ಘನೀಕೃತ (ವಿಂ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
2. ದಟ್ಟವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಧನ + ಕೃತ್ “ಕ್ತ:”  
(೩-೨-೧೦೨) | “ಚ್ವಿ:” (೫-೪-೫೦) | ದೀರ್ಘ:  
(೭-೪-೨೬) |

ಧನೀಭೂತ ಘನೀಭೂತ (ವಿಂ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾದ. 2. ದಟ್ಟ  
ವಾದ, ನಿಬಿಡವಾದ. ಅಥವಾ ಧನಂ ಭೂತಮ್ — ಧನ + ಭೂ  
(ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) | “ಚ್ವಿ:”  
(೫-೪-೫೦) | ದೀರ್ಘ: (೭-೪-೨೬) |

ಧನೋಪಲ ಘನೋಪಲ (ಪುಂ) ಅಲಿಕ್ಕಲ್ಲು. ಧನಾನಾಮುಪಲ: |



ಘರ್ದ ಘರ್ದ (ಪುಂ) ಅರೆಯುವ ಕಲ್ಲು, ಬೀಸುವ ಕಲ್ಲು. ಧೃ (ಸೆಕೆ) "ವಿಚ್" | ಧರಂ ಸೆಕಮದ್ವೇ - ಅದ್ವ (ಅತಿಕ್ರಮೇ) "ಅಣ್" (೩-೨-೧) | "ಪ್ರತಿಹದ್ವಪಥೇ ಧರ್ದಜಾತ್ಯಥಿಕಾ-ಹ್ವಾನದಸಕ್ತುಸೌರಭಃ" ನೈಷಂ ೨-೭೫ |

ಘರ್ಧರ ಘರ್ಧರ (ಪುಂ) 1. ಮಮರ ಧ್ವನಿ, ಹರಿಯುವ ನೀರಿನ ಶಬ್ದ, -ಸದ್ದು. ಧರ್ಧನುಕರಣಶಬ್ದಂ ರಾತಿ-ರಾ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | "ಋಜ್ವಿರ್ದಧಾನೇರವತಲ್ಯ ಕನ್ವರಾಶ್ರಲಾವಚ್ಛಾಃ ಕಲಘರ್ಧರಾರವಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೧೮ | 2. ದ್ವಾರ, ಬಾಗಿಲು. 3. ಹಾಸ್ಯ, ಎನೋದ. "ಘರ್ಧರೋ ನಾ ಚಲದ್ವಾರಿಧ್ವಾನೋಲೂಕನದಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ | 4. ಒಂದು ನದಿ, ಒಂದು ಗಂಡು ಹೊಳೆ. 5. ಘೂಕ, ಗೂಬೆ. 6. ತುಪಾನಲ, ಹೊಟ್ಟೆನೋಳಗಿನ ಬೆಂಕಿ. 7. ಧ್ವನಿ, ಶಬ್ದ. (ವಿಂ) 8. ಮಮರ ಶಬ್ದದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಘರ್ಧರಧ್ವನಿಯುಳ್ಳ, ಕಿವಿಗೆ ಇಂಪಾಗಿಲ್ಲದ.

ಘರ್ಧರಾ ಘರ್ಧರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಿರುಗಂಟಿ, ಕಿರುಗಿಡ್ಡೆ. 2. ಒಂದು ವಿಧ ವೀಣೆ. -ರೀ -ರೀ. 3. ಘರ್ಧರ ಹೊಳೆಯೊಡನೆ ಸೇರಿದ ಗಂಗಾ ನದಿ. ಘರ್ಧರೋಸ್ತಸ್ಯಸ್ಯಾಮ್ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) | ಗೌರಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪೧) |

ಘರ್ಧರಿಕಾ ಘರ್ಧರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಿರುಗಂಟಿ. 2. ಒಂದು ಹೊಳೆ. 3. ಹುರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ ಧಾನ್ಯ. 4. ನಗಾರಿ ಮೊದಲಾದ ವಾದ್ಯಗಳನ್ನು ಬಾರಿಸುವ ಕೋಲು. "ಅಥ ಘರ್ಧರಿಕಾ ಕ್ಷುಧ್ರಘಟಾಪಾದಿತ್ರದಂಡಯೋಃ" ಮೇದಿಂ | 5. ಡವಣಿ ಯೆಂಬ ಒಂದು ವಿಧ ವಾದ್ಯ. "ಸ್ಮೃತಾ ಘರ್ಧರಿಕಾ ಕ್ಷುಧ್ರಘಟಿಕಾಭ್ರಷ್ಟಧಾನ್ಯಯೋಃ | ವಾಘ್ರಪ್ರಭೇದವಾದಿತ್ರದಂಡಯೋರಾಪ-ಗಾಂತರೇ" ವಿಶ್ವಂ |

ಘರ್ಧರಿತ ಘರ್ಧರಿತ (ನಂ) ವರಾಹದ ಶಬ್ದ, ಹಂದಿಯು ಗುರುಗುಟ್ಟುವ ಶಬ್ದ. ಧರ್ಧರಂ ಕರೋತಿ + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) | "ನಿಶಮ್ಯ ತೇ ಧರ್ಧರಿತಂ ಸ್ವಲೇದಕ್ಷಯಿಣ್ಣು ಮಾಯಾಮಯಸುಕರಸ್ಯ" ಭಾಗಂ ೩-೧೩-೨೫ |

ಘರ್ಮ ಘರ್ಮ (ಪುಂ) 1. ಗ್ರೀಷ್ಮತುಫ, ಬೇಸಿಗೆಯ ಕಾಲ. ಧರತಿ ಶರೀರಾತ್ - ಧೃ (ಸೆಕನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಮಕ್" (೩-೧-೧೪೬) | ಗುಣಶ್ಚ ನಿಪಾಂ | "ನಿಃಸ್ರಾಸಹಾರ್ಯಾಶುಕಮಾಜಗಾಮ ಧರ್ಮಃ ಪ್ರಿಯಾವೇಷಮಿವೋಪದೇಶ್ಚುಮ್" ರಘುಂ ೧೬-೪೩ | 2. ಮೈಬೆವರು, ಸ್ವೇದ, ಉಷ್ಣತೆ ಆಯಾಸ ರತಿಕ್ರೀಡೆ ಮುಂತಾದುವು ಗಳಿಂದ ಮೈಯಲ್ಲಿ ಸ್ರವಿಸುವ ನೀರು. "ಅಘರ್ಮಘರ್ಮದಿಕ-ಬಿಂದುಮೋತ್ತಿಕೇರಲಚ್ಚಕಾರಾಸ್ಯ ವಧೂರಹಸ್ಕರಃ" ಮಾಘಂ ೧-೫೭ | 3. ಉಷ್ಣತೆ, ಬಿಸಿ, ಕಾವು. "ಸ ವಮನ್ ರುಷಾಶ್ಚ ಧನಧರ್ಮ-ವಿಗಲದ್ವುಗುಣಮಂಡಲಃ" ಮಾಘಂ ೧೫-೪ | 4. ಬಿಸಿಲು.

5. ಬಿಸಿಲಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹಗಲು. "ಧರ್ಮಃ ಸ್ವಾಧಾತಪೇ ಗ್ರೀಷ್ಮೇಷ್ಯುಷ್ಮಸ್ವೇದಾಮ್ಸೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ | "ನಿರ್ದಾಘ ಋಷ್ಮಣಿ ಗ್ರೀಷ್ಮೇ ಸ್ವೇದೇ ಧರ್ಮಸ್ತು ತೇಷು ಚ | ಆತಪೇ ಚ ದಿನೇ" ವೇಜಂ |

ಧರ್ಮವಚಿಕಾ ಧರ್ಮವಚಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆವರಿನ ಗುಳ್ಳೆ, ಬೆವರಿನಿಂದ ಮೈಯಲ್ಲಿ ಏಳುವ ಗುಳ್ಳೆ. ಧರ್ಮಣ ವಚಿಕೇವ |

ಧರ್ಮತಪ್ತ ಧರ್ಮತಪ್ತ (ವಿಂ) ಬಿಸಿಲಿನಿಂದ ಕಾದಿರುವ.

ಧರ್ಮದೀಧಿತಿ ಧರ್ಮದೀಧಿತಿ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಧರ್ಮ ದೀಧಿತಯೋ ಯಸ್ಯ | "ಯಃ ಸಸೋಮ ಇವ ಧರ್ಮದೀಧಿತಿಃ ಸದ್ವಿಜಿಹ್ವ ಇವ ಚಂದನದ್ರುಮಃ" ರಘುಂ ೧೧-೬೪ |

ಧರ್ಮದ್ವುತಿ ಧರ್ಮದ್ವುತಿ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಧರ್ಮ ದ್ವುತಯೋ ಯಸ್ಯ | "ಧರ್ಮದ್ವುತೇರಿಹ ಮುಹುಃ ಪಟಲಾನಿ ಧಾಮ್ನಾಮಾದರ್ಶಮಂಡಲ-ನಿಭಾನಿ ಸಮುಲ್ಲಸಂತಿ" ಕಿರಾಂ ೫-೪೧ |

ಧರ್ಮಾಂತ ಧರ್ಮಾಂತ (ಪುಂ) ವರ್ಷತುಫ, ಮಳೆಗಾಲ. ಧರ್ಮಸ್ಯ ಋಷ್ಮಣೋ ಅಂತೋ ಯಸ್ಮಿನ್ | "ಧರ್ಮಾಂತಿ ತೋದೋಮಿಮಿಃ" ಹರಿವಂ | "ಧರ್ಮಾಂತಿಜಿಮೂತರವಾನುಕಾರಿ" ಯಾದಂ ೨೦-೨ |

ಧರ್ಮಾಂತಕಾಮುಕೀ ಧರ್ಮಾಂತಕಾಮುಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆಳ್ಳಕ್ಕಿ, ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹೆಣ್ಣು ಹಂಸ. ಧರ್ಮಾಂತಿ ಕಾಮುಕೀ |

ಧರ್ಮಾಂಶು ಧರ್ಮಾಂಶು (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಧರ್ಮ ಅಂಶವೋ ಯಸ್ಯ |

ಘರ್ಷ ಘರ್ಷ (ಪುಂ) 1. ತೀಡುವುದು, ತಿಕ್ಕುವುದು, ಉಜ್ಜು ವುದು. 2. ಅರೆಯುವುದು, ಪುಡಿಮಾಡುವುದು. ಧೃಷ್ಠ (ಸಂಘರ್ಷ) | ಭಾವೇ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮) |

ಘರ್ಷಕ ಘರ್ಷಕ (ವಿಂ) 1. ಅರೆಯುವವನು. 2. ಪುಡಿ ಮಾಡುವವನು. 3. ಉಜ್ಜುವವನು, ತಿಕ್ಕುವವನು. 4. ಪೀಡಿಸುವವನು, ಹಿಂಸಿಸುವವನು. ಧೃಷ್ಠ (ಸಂಘರ್ಷ) "ಘ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |

ಘರ್ಷಣ ಘರ್ಷಣ (ನಂ) 1. ತಿಕ್ಕಾಟ, ಬಡಿದಾಟ, ಹೊಡೆ ದಾಟ, ಜಗಳ. ಧೃಷ್ಠ (ಸಂಘರ್ಷ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಅರೆಯುವುದು, ಪುಡಿಮಾಡುವುದು. 3. ಹಿಂಸಿಸು ವುದು, ಪೀಡಿಸುವುದು. 4. ತಿಕ್ಕುವುದು, ಉಜ್ಜುವುದು. "ಔಷಾಮಾಸೇ ಮತ್ಸರೋತ್ಪಾತವಾತಾಶಿಲ್ಪ್ಯದ್ವಂತಕಮಾರುಹಾಂ ಧರ್ಷಣಾ-ತ್ಯಃ" ಮಾಘಂ ೧೮-೩೫ |

ಘರ್ಷಣೀ ಘರ್ಷಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರಿವ. ಧೃಷ್ಯತೇ - ಧೃಷ್ಠ (ಸಂಘರ್ಷ) ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩) : "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫) |

ಘರ್ಷಣೀಯ ಘರ್ಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಅರೆಯಲ್ಪಡುವ, 2. ಪುಡಿಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 3. ಉಜ್ಜಲ್ಪಡುವ, ತಿಕ್ಕಲ್ಪಡುವ. 4. ಪೀಡಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಡುವ. ಧೃಷ್ಠ (ಸಂಘರ್ಷ)



ಕರ್ಮಂ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬)। "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೧೬)।  
 ಛಾತವ್ಯಃ ಛಾತವ್ಯಃ 1. ಅರೆಯಬೇಕಾದ. 2. ಪುಡಿ  
 ಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ಉಜ್ಜಬೇಕಾದ.  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅರೆಯಲ್ಪಡುವ. 2. ಪುಡಿಮಾಡ  
 ಲ್ಪಡುವ. 3. ಉಜ್ಜಲ್ಪಡುವ, ತಿಕ್ಕಲ್ಪಡುವ. 4. ಹಿಂಸಿಸ  
 ಲ್ಪಡುವ. ಛಾತ (ಸಂಘರ್ಷ) "ಞತ್" (೩-೧-೧೨೪)।  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ವಿಂ) ಭಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ತಿನ್ನುತ್ತಿರುವ.  
 ಛಾತ (ಅದನೇ) "ಞತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ವಿಯಾಮ್  
 "ಛಿಪ್" (೪-೧-೬)। ಛಾತಂತಿ ಛಾತಂತಿ.  
 ಛಾತನ ಛಾತನ (ನಂ) ಭಕ್ಷಿಸುವುದು, ತಿನ್ನುವುದು.  
 ಛಾಸಿ ಛಾಸಿ (ಪುಂ) ಭಕ್ಷಿಸುವುದು, ತಿನ್ನುವುದು. ಛಾತ (ಅದನೇ)  
 "ಞನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭)।  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ವಿಂ) ಭಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟ. ಛಾತ (ಅದನೇ)  
 "ಞಃ" (೩-೨-೧೦೨)।  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ತಿನ್ನುವ ಸ್ವಭಾವವನ್ನು,  
 ತಿಂಡಿಪೋತ. 2. ನುಂಗುವವನು, ಗಪಗಪನೆ ತಿನ್ನುವವನು.  
 ಛಾತ (ಅದನೇ) "ಞಮ್" (೩-೨-೧೬೦)। 3. ನಾಶ  
 ಪಡಿಸುವವನು. "ಕಲ್ಪಾಂತಿ: ಪಾಂಡವಾನಾಂ ದ್ರುಪದಸುತಮ್-  
 ಛಾತಮರೋ ದ್ರೋಣಿರಸ್ಮಿ" ವೇಣಿಂ ೫-೩೭।  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ಪುಂ) 1. ದಿವಸ, ಹಗಲು. ಛಾತವ್ಯಾಂಕಾರಂ—  
 ಛಾತ (ಅದನೇ) "ಞಕ್" (೩ಂ ೨-೧೨)। (ವಿಂ) 2.  
 ಹಿಂಸಿಸುವವನು. "ಛಾತೋ ವಾಸರಾಹಸ್ಯಯೋಃ" ಹೇಮಂ।  
 ಛಾತವ್ಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಲಗಲ ಶಬ್ದಮಾಡುವ ಅಭರಣ,  
 ಒಡ್ಡಣ, ಡಾಬು. 2. ಪ್ರಹಾರ, ಏಟು.  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಕತ್ತಿನ ಹಿಂಭಾಗ, ಹೆಕ್ಕತ್ತು. ಛಾತಯತಿ—  
 ಛಾತ (ಸಂಘಾತೇ) + ಞಿಚ್ "ಞಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ನದಿಯ  
 ಸ್ನಾನದ ಘಟ್ಟ. 3. ಗೋವುಗಳು ಸಂಚರಿಸುವ ಪ್ರದೇಶ.  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕತ್ತಿನ ಹಿಂಭಾಗ, ಹೆಕ್ಕತ್ತು.  
 "ದೋಷಾಸ್ತು ದುಷ್ಟಸ್ತ್ರಯ ಉಪಮನ್ಯಾಂ ಸಂಪೀಡಯ ಛಾತಾಂ ಸುಜಾಃ  
 ಸತೀವ್ರಾಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಞಃ"। ಛಾತಿಕಾ ಛಾತಿಕಾ.  
 ಛಾತಿಕಾ ಛಾತಿಕಾ (ಪುಂ) 1. ರಾಜನನ್ನು  
 ಗಂಟೆಯನ್ನು ಹೊಡೆದು ಹೊಗಳುವವನು. ಛಾತವ್ಯಾಂಕಾರಂ  
 "ಞಕ್" (೪-೪-೮)। 2. ದೇವರ ಸನ್ನಿಧಿಯಲ್ಲಿ ಛಾತವ್ಯಾಂಕಾರಂ  
 ನಾದ ಮಾಡುವವನು. 3. ದತ್ತೂರಿ ಗಿಡ.  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಹಾರ, ಏಟು. ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ)  
 "ಞಚ್" (೩-೩-೧೮)। "ಅನಿಲಿಲಿತಜ್ಯಾಛಾತಾಃ"  
 ಶಾಕುಂ ೩-೧೦। 2. ಮಾರಣ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. "ಚರೇದ್ವತ-  
 ಮಹತ್ವಾಪಿ ಛಾತಾರ್ಥೇ ವೇದಸಮಾಗತಃ" ವಾಕ್ಯಂ ೩-೨೫೨।

3. ಬಾಣ. ಹನ ಕರಂ "ಞಚ್" (೩-೩-೧೨೧)। 4. ನಿಧನ  
 ತಾರ, ಜನ್ಮನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ 7, 16, 25 ನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು.  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ವಿಂ) ಕೊಲ್ಲುವವನು. ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ)  
 "ಞಚ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಅನುಮಂತಾ ವಿಶಾಸಿತಾ ನಿಹಂತಾ  
 ಛಾತವ್ಯಾಃ। ಸಂಕರ್ತಾ ಚೋಪಹರ್ತಾ ಚ ಛಾತವ್ಯಾಃ"  
 ಮನುಂ ೫-೫೧।  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ನಂ) 1. ಮಾರಣ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. ಹನ  
 (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) + ಸ್ವಾರ್ಥೇ ಞಿಚ್ ಭಾವೇ "ಞಚ್" (೩-೩-೧೧೫)।  
 2. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಪಶುವಧೆ. (ವಿಂ) 3. ಕೊಲ್ಲು  
 ವವನು, ಕೊಲೆಮಾಡುವವನು. ಛಾತಯತಿ—ಹನ + (ಸ್ವಾರ್ಥೇ)  
 ಞಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಞಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ಪುಂ) ಅಶುಭಸೂಚಕವಾದ ವಾರ.  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ನಂ) ಕೊಲ್ಲುವ ಜಾಗ, ವಧ್ಯ  
 ಭೂಮಿ.  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾರಣ, ಕೊಲ್ಲುವಿಕೆ. ಹನ (ಹಿಸಾ-  
 ಗತಯೋಃ) "ಞಚ್" (೩ಂ ೪-೧೨೪)।  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ವಿಂ) ಕೊಲ್ಲುವವನು, ಸಂಹರಿಸುವವನು.  
 ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) "ಞನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)।  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ಪುಂ) ಶೃಂಗಪಕ್ಷಿ, ಗಿಡಗದಹಕ್ಕಿ.  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕ್ರೂರ. 2. ಹಿಂಸಿಸುವವನು.  
 ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) "ಞಕಚ್" (೩-೨-೧೫೪)।  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ವಧ್ಯ, ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಡುವವನು.  
 2. ಕೊಲ್ಲಲು ಯೋಗ್ಯನಾದವನು. 3. ಕೊಲ್ಲಲು ಶಕ್ಯ  
 ನಾದವನು. ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) ಕರ್ಮದಿಂ "ಞಚ್"  
 (೩-೧-೧೨೪)।  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ಪುಂ) ಸೇಚನೆ, ಚಿಮುಕಿಸುವುದು. ಛಾತ (ಸೇಚನೇ)  
 ಭಾವೇ "ಞಚ್" (೩-೩-೧೮)।  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ವಿಂ) ಕಡಲೆಹಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಶುಷ್ಕದಿಂದ  
 ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಭಕ್ಷ್ಯ, ಮೈಸೂರು ಪಾಕ. ಛಾತೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್  
 "ಞಚ್" (೫-೧-೭೯)। "ತೃತೀಯಸ್ಯ ಛಾತಿಕಂ ದದಾತಿ  
 ಸ ದೃಷ್ಟವಾಹ ಛಿತ್ತೇವನರ್ಥಾ ಬಹುಲಿಭವಂತಿ" ಪಂಚತಂ।  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ಪುಂ) ಹಸು ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಅಹಾರವಾದ  
 ತೃಣ, ದನ ಮೊದಲಾದುವುಗಳು ಮೇಯುವ ಹುಲ್ಲು.  
 ಛಾತ (ಅದನೇ) "ಞಚ್" (೩-೩-೧೯)। "ಛಾತಮುಷ್ಠಿ  
 ಪರಗವೇ ದದಾತ್ ಸಂವತ್ಸರಂ ತು ಯಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೦೪-೧೨।  
 ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಭಕ್ಷ್ಯ, ತಿಂಡಿ. 2. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ.  
 ಛಾತ (ಅದನೇ) "ಞಚ್" (೩ಂ ೪-೧೨೯)। "ಛಾತವ್ಯಾಃ  
 ಸಂಘಾತವಿಶ್ವವಾಣಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।



ಧು ಘಂ (ಫಂ) 1. ಧ್ವನಿ, ಶಬ್ದ. ಧುಙ್ (ಶಬ್ದ) "ಙ್" ಬಾಹುಂ ।  
2. ದಾ ರೂಪವಾದ ಮತ್ತು ಧಾ ರೂಪವಾದ ಧಾತುಗಳ ಒಂದು ಸಂಜ್ಞೆ. "ದಾಘಾ ಧ್ವದಾಘ್" ಪಾಂ ಸೂಂ ೧-೧-೨೦ ।  
ಙ್ ದಾನ್ (ದಾನೇ) ದಾನ್ (ದಾನೇ) ಆತ್ಮಹೊಂದಿರುವ ದೊ (ಅವಸ್ಥಾಪನೆ) ದೇಙ್ (ರಕ್ಷಣೆ) ಇವು ದಾ ರೂಪದ ಧಾತುಗಳು. ಙ್ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) ಧೇಙ್ (ಪಾನೇ) ಇವು ಧಾ ರೂಪದ ಧಾತುಗಳು. ಈ ಧಾತುಗಳು "ಧು" ಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳವು. "ಸರ್ವಂ ವಿಷ್ಮತ್ಯ ದೇವಾತ್ಮಮೃತಿಮುಷಸಿ ಗತಾಂ ಧೋಷಯಂತಯೋ ಧುಸಂಜ್ಞಾಂ ಪ್ರಾಕ್ಸಂಸ್ಕಾರೇಣ ಸಂಪ್ರತ್ಯಪಿ ಧುವತಿ ಶಿರಃ ಪಟಿಕಾಪಾಠಜೇನ" ನೆಪಂ ೧೯-೬೧ ।

ಧುಟ - ಪರಿವರ್ತನೆ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಧುಟೇ ।  
ಜುಧುಟೇ । ಧುಟಿನಾ । ಅಧುಟತ್, ಅಧುಟಿಷ್ಠ । 1. ಬದಲಾಯಿಸು, ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದು. 2. ಹಿಂತಿರುಗು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಬಾ.

ಧುಟ - ಪ್ರತಿಘಾತೆ (ತುದಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಧುಟತಿ ।  
ಜುಧುಟ । ಅಧುಟೀತ್ । ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಹೊಡೆ. ಬದಲು ಏಟು ಹಾಕು, ಹಿಂತಿರುಗಿ ಹೊಡೆ. 2. ಪ್ರತಿಘಟಿಸು, ಎದುರಿಸು, ತಡೆಗಟ್ಟು.

ಧುಟ ಘಂಟೆ (ಫಂ) ಗುಲ್ಫ, ಕಾಲುಗಳ ಗಂಟು.

ಧುಟಕ ಘಂಟಿಕ (ಫಂ) ಗುಲ್ಫ, ಕಾಲುಗಳ ಗಂಟು. ಧುಟ (ಪರಿವರ್ತನೆ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

ಧುಟಿ (ಡಿ) ಘಂಟಿ (ಟೀ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗುಲ್ಫ, ಕಾಲುಗಳ ಗಂಟು. ಧುಟ (ಪರಿವರ್ತನೆ) "ಙ್" (ಃಂ ೪-೧೧೭) ।  
ವಾ "ಡಿಫ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫) ।

ಧುಟಿಕ ಘಂಟಿಕ (ಫಂಸ್ತ್ರೀಂ) ಗುಲ್ಫ, ಕಾಲುಗಳ ಗಂಟು. ಧುಟ ಅಸ್ತೀರ್ಥ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೫) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಧುಟಿಕಾ ಘಂಟಿಕಾ.

ಧುಣ - ಭ್ರಮಣೆ (ತುದಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) । ಧುಣತೇ ।  
ಜುಧುಣೇ । ಅಧುಣಿಷ್ಠ । ತಿರುಗು, ಸುತ್ತು.

ಧುಣ ಘಂಟಿ (ಫಂ) ಮರವನ್ನು ಕೊರೆಯುವ ಒಂದು ಹುಳು. ಧುಣತೇ - ಧುಣ (ಭ್ರಮಣೆ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫) । "ಧುಣಃ ಸ್ಯಾತ್ ಕಾಠವೇಷಕೇ" ರಲ್ಮಂ ।

ಧುಣಕ್ಷತ ಘಂಟಕ್ಷತ (ವಿಂ) ಘಂಟವೆಂಬ ಹುಳುವಿನಿಂದ ಕೊರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಶ್ರೀನಿರ್ಮಿತಪ್ರಾಪ್ತಧುಣಕ್ಷತೈಕವರ್ಣೋಪಮಾವಾಚ್ಯಮ್" ಮಾಘಂ ೩-೫೮ ।

ಧುಣವಲ್ಲಭಾ ಘಂಟವಲ್ಲಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅತಿಬಜೆ.

ಧುಣಾಕ್ಷರ ಘಂಟಾಕ್ಷರ (ನಂ) 1. ಘಂಟವೆಂಬ ಹುಳುವು ಕಾಗದದಲ್ಲಿ ಅಥವಾ ಮರದಲ್ಲಿ ಕೊರೆದ ಅಕ್ಷರಾಕಾರದ ಗರೆ. ಧುಣಕ್ಷರಮಕ್ಷರಮ್ । 2. ಘಂಟಾಕ್ಷರ ನ್ಯಾಯ. ಘಂಟವು

ಉದ್ದೇಶವಿಲ್ಲದೆ ಕೊರೆದು ಅಕ್ಷರವಾಗುವಂತೆ ಉದ್ದೇಶವಿಲ್ಲದೆ ಇಷ್ಟಾರ್ಥವು ಸಿದ್ಧಿಸುವಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯವನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸುವರು.

ಧುಣಿ ಘಂಟಿ (ಫಂ) ಭ್ರಮಣ, ತಿರುಗುವುದು. ಧುಣ (ಭ್ರಮಣೆ) "ಙ್" (ಃಂ ೪-೧೧೭) ।

ಧುಣ್ ಘಂಟಿ (ಫಂ) ಗುಲ್ಫ, ಕಾಲುಗಳ ಗಂಟು.

ಧುಣ್ ಘಂಟಿ (ಫಂ) ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಧುಣ (ಭ್ರಮಣೆ) "ಙ್" (ಃಂ ೧-೧೧೧) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡಿಫ್" (೪-೧-೬೩) ।  
ಧುಣ್ ಘಂಟಿ.

ಧುರ-ಭೀಮಾರ್ಥಶಬ್ದಯೋಃ (ತುದಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) । ಧುರತಿ ।  
ಜುಧುರ । ಅಧುರತ್ । ಅಧುರೀತ್ । ಅಧುರೀಷ್ಯತ್ । 1. ಭಯಂಕರ ಶಬ್ದಮಾಡು. 2. ಗುರುಗುಟ್ಟು. "ಅಧುರಸ್ತೇ ಮಾಧುರ-ಮನ್ಯೋತನ್ನಶ್ಚ ಶೋಣಿತಮ್" ಭಟ್ಟಿಂ ೧೭-೬೨ ।

ಧುರಣ ಘಂಟಿ (ನಂ) 1. ಭಯಂಕರ ಶಬ್ದ. 2. ಗುರುಗುಟ್ಟುವ ಶಬ್ದ.

ಧುರಿ ಘಂಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಂದಿಯ ಮೂತಿ. ಧುರ (ಭೀಮಾರ್ಥ-ಶಬ್ದಯೋಃ) "ಕಿಃ" ಬಾಹುಂ । ವಾ "ಡಿಫ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫) ।  
ಧುರಿ ಘಂಟಿ.

ಧುರ್ಧುರ ಘಂಟುರ (ಫಂ) 1. ಹಂದಿಯು ಗುರುಗುಟ್ಟುವ ಶಬ್ದ. 2. ನಾರುಹುಳು, ಜಿಗಣೆ. ಧುರ್ ಇತ್ಯವ್ಯಕ್ತಂ ಧುರತಿ - ಧುರ "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫) ।

ಧುರ್ಧುರಕ ಘಂಟುರಕ (ಫಂ) 1. ಗುರುಗುಟ್ಟುವ ಶಬ್ದ. 2. ಹಾವಿನ ವಿಷದ ಬಾಧೆ.

ಧುರ್ಧುರಿಕಾ ಘಂಟುರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಮಕವೆಂಬ ಕಾಸ (ಕೆಮ್ಮಲು) ರೋಗದ ಉಪದ್ರವ, ತಮಕಕಾಸದಿಂದ ಕಂಠದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಗುರಗುರ ಎಂಬ ಶಬ್ದ. "ತೃಡ್ವೇದ-ವಮಶುಕ್ರಾಃ ಕಂಠಧುರ್ಧುರಿಕಾನ್ವಿತಃ । ವಿಶೇಷಾದ್ದುಢಿಣೇ ತಾಮ್ಯೇ-ಚ್ಛಾಸಃ ಸ ತಮಕೋ ಮತಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರತಂ ೫೧-೮ ।

ಧುರ್ಧುರಿ ಘಂಟುರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾರುಹುಳು, ಜಿಗಣೆ.

ಧುರ್ಷಿರ್ - ಅವಿಶಬ್ದನೆ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಧುರ್ಷತಿ ।  
ಜುಧುರ್ಷಿ । ಧುರ್ಷಿತಾ । ಅಧುರ್ಷತ್ । ಅಧುರ್ಷೀತ್ । ಇತ್ಯಾದಿ. ಶಬ್ದಮಾಡು, ಕೂಗು.

ಧುರ್ಷಿರ್ - ವಿಶಬ್ದನೆ (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಧುರ್ಷಯತಿ, -ತೇ । ಅಜುಧುರ್ಷತ್, -ತ । ಇತ್ಯಾದಿ. ಅಂಗೀಕರಿಸು, ಒಪ್ಪಿಕೊ, ಪ್ರಚಾರಪಡಿಸು, ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ತಿಳಿಸು.

ಧುರ್ಷಿತ ಘಂಟಿ (ವಿಂ) 1. ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಪ್ರಚಾರಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಘೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಧುರ್ಷಿರ್ (ವಿಶಬ್ದನೆ) "ಕ್ಲಿಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।



कृत्सुः—घर्तव्यम् । घरणीयम् । घार्यम् । घृतम् ।  
घृतवान् । घरन्, घरन्ती । घरणम् । घर्तुम् । घृतम् ।  
घृत्वा । अभिघृत्य ।



1. ಛ - ಸೇವನೆ (ಛಾಃ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) | ಛರತಿ | ಜಛಾರ | ಛರತಿ | ಛರಿಸ್ಯತಿ | ಛರತು | ಅಛರತ್ | ಛರೇತ್ | ಛರಿಯಾತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕರ್ಮಣಿಃ—ಛರಿಯೇ | ಜಛೇ | ಛಾರಿತಾ, ಛರತಿ | ಛಾರಿಸ್ಯತೇ, ಛರಿಸ್ಯತೇ | ಛರಿಯತಾಂ | ಅಛರಿಯತ | ಛರಿಯೇತ | ಛಾರಿಸಿಷ್ಠ, ಛರಿಸಿಷ್ಠ | ಅಛಾರಿ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತುಃ—ಛಂದಿನ ಛಾತುವಿನ ಕೃದಂತ ರೂಪಗಳಂತಾಗುವವು.

ಛಣು-ದೀಪ್ತೌ (ತನಾಂ ಉಛಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) | ಛಣೌತಿ, ಛಣೌತಿ | ಛಣೌತೇ, ಛಣೌತೇ | ಜಛಣ | ಜಛಣೇ | ಛಣಿತಾ | ಛಣಿಸ್ಯತಿ, -ತೇ | ಛಣೌತು, ಛಣೌತು ; ಛಣೌತಾಂ, ಛಣೌತಾಂ | ಅಛಣೌತು | ಅಛಣೌತು | ಛಣೌತಾತ್ | ಛಣೌತು | ಇತ್ಯಾದಿ. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ ಹೊಳೆಯುವ.

ಛಣಾ ಛೃಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಯೆ, ಕರುಣೆ, ಕನಿಕರ. ಛ (ಸೇವನೆ) "ನಕ್" ಬಾಹುಂ | "ಮಂದಮಸ್ಯನ್ನಿಪುಲತಾಂ ಛಣಯಾ ಮುನಿರೇಷ ವಃ | ಪ್ರಣುದತ್ಯಾಗತಾವಜ್ಞಂ ಜಛನೇಷು ಪಶುನಿವ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೧೩ | 2. ಜುಗುಪ್ಸೆ, ಅಸಹ್ಯತೆ. "ಅಛಾರಿ ಪಛೇಷು ತದಙ್ಗಿಣಾ ಛಣಾ ಕವ ತಛಯಛಯಲವೋಽಪಿ ಪಲ್ಲವೇ" ನೇಷಂ ೧-೨೦ |

ಛಣಾಲು ಛೃಣಾಲು (ವಿಂ) ದಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಕರುಣೆಯುಳ್ಳ. ಛಣಾ "ಆಲುಕ್" ಬಾಹುಂ | "ನಿಷ್ಪಾದಿತಃ ಕಾತ್ಸರ್ಯೇನ ಭಗವದ್ವಿಛಣಾಲುಃ" ಭಾಗಂ ೪-೨೨-೪೩ |

ಛಣಾವತ್ ಛೃಣಾವತ್ (ವಿಂ) ಕರುಣೆಯುಳ್ಳ, ದಯೆಯುಳ್ಳ. ಛಣಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ವತೀ -ವತಿಃ.

ಛಣಾವಾಸ ಛೃಣಾವಾಸ (ಪುಂ) 1. ಕೂಷ್ಮಾಂಡ, ಕುಂಬುಳ. "ಕೂಷ್ಮಾಂಡಸ್ತು ಛಣಾವಾಸಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | (ವಿಂ) 2. ದಯೆಗೆ ಆಶ್ರಯವಾಗಿರುವವನು.

ಛಣಿ ಛೃಣಿ (ಪುಂ) 1. ಕರಣ, ಕದಿರು. ಛ (ಸೇವನೆ) "ನಿಃ" (ಉಂ ೩-೪೨) | "ಗಛಸ್ತಿಛಣಿಛೃಣಿಛೃಣಿಃ" ಅಮಂ | 2. ಜ್ವಾಲೆ, ಉರಿ. 3. ತರಂಗ, ಅಲೆ. 4. ಸೂರ್ಯ. (ನಂ) 5. ಜಲ, ನೀರು. 6. ಬೆಂಕಿ. (ವಿಂ) 7. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ. "ಅನ್ಯಾಛಿಷೋಛಣಿಃ" ನಾನಾರ್ಥಂ |

ಛಣಿನ್ ಛೃಣಿನ್ (ವಿಂ) ದಯೆಯುಳ್ಳವನು, ಕನಿಕರವುಳ್ಳವನು. ಛಣಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೬) |

ಛಣಿನಿಧಿ ಛೃಣಿನಿಧಿ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ.

ಛತ ಛೃತ (ನಂ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾದ ತುಪ್ಪ. 2. ಜಲ, ನೀರು. ಛ (ಸೇವನೆ) "ಕ್ತಃ" (ಉಂ ೩-೮೯) | (ವಿಂ) 3.

ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ. ಛ (ದೀಪ್ತೌ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | 4. ಸಿಂಪಡಿಸುವ, ಪೊರೆಡಿಸುವ. ಛ (ಸೇವನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | 5. ಸಿಂಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪೊರೆಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಛ (ಸೇವನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | ಛತಕೇಶ ಛೃತಕೇಶ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಛತೌ ದೀಪ್ತಃ ಕೇಶ ಇವ ಜ್ವಾಲಾ ಅಸ್ಯ |

ಛತದೀಧಿತಿ ಛೃತದೀಧಿತಿ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಛತೇನ ದೀಧಿತೀರಸ್ಯ | "ಛಾಗವಾಹನಸೃದಾಕುರ್ಬಹಿಃಃ ಸ್ವರ್ಣಸಪ್ತಛತ-ಮನ್ವದೀಧಿತಿಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಛತಪ ಛೃತಪ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ತುಪ್ಪವನ್ನೇ ಆಹಾರವಾಗಿ ಕುಡಿಯುವ ಒಂದು ಪಿತ್ತಗಣ. ಛತಂ ಪಿಬತಿ - ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | "ಛತಪಾಃ ಸೋಮಪಾ ಯವಾಃ ವೇಶ್ವಾನರ-ಮರೀಚಿಪಾಃ" ಭಾಂ |

ಛತಪೂರ ಛೃತಪೂರ (ಪುಂ) ತುಪ್ಪದಲ್ಲಿ ಪಕ್ವವಾದ ಗೋಧಿ ಹಿಟ್ಟಿನ ಒಂದು ಭಕ್ಷ್ಯ. ಸಕ್ಕರೆ ಬೆರೆಸಿದ ಗೋಧಿಹಿಟ್ಟನ್ನು ಹಾಲಿನಲ್ಲಿ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕಲೆಸಿ ತಟ್ಟೆಯ ಮೇಲೆ ಹರಡಿ ಬಿಲ್ಲೆ ಬಿಲ್ಲೆಯಾಗಿ ಕತ್ತರಿಸಿ ತುಪ್ಪದಲ್ಲಿ ಪಕ್ವಮಾಡಿದ ಭಕ್ಷ್ಯವು ಛೃತಪೂರವೆನಿಸುವುದು. "ಕ್ಷೀರೇಣ ಮದಿತಂ ಚೂರ್ಣಂ ಗೋಮಾನಾಂ ಸುಗಾಲಿತಮ್ | ವಿಸ್ತಾರ್ಯ ಸಪಿಪಾ ಪಾಚ್ಯಂ ಕಡಾಹೇಷ್ಯ ಸಿತಾನ್ವಿತಮ್ | ಛತಪೂರೋಽಪ್ಯಮುಹಿಷ್ಠಃ ಕರ್ಪೂರಮರಿಚಾನ್ವಿತಃ" |

ಛತಪ್ರತೀಕ ಛೃತಪ್ರತೀಕ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ.

ಛತಾಚಿ ಛೃತಾಚಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸು. ಛತ-ಮುದಕಂ ಕಾರಣತಯಾಛತಿ - ಅಞ್ಚು (ಗತೌ) "ಕಿವನ್" (೩-೨-೪೯) | "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪) | 2. ಸರಸ್ವತಿ. 3. ರಾತ್ರಿ.

ಛತಾನ್ತ ಛೃತಾನ್ತ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಛತಮಾಜ್ಯ-ಮಗ್ನಮಸ್ಯ | (ನಂ) 2. ತುಪ್ಪದಿಂದ ಕಲೆಸಿದ ಅನ್ನ. ಛತೇನ ಮಿಶ್ರಿತಮಗ್ನಮ್ | (ವಿಂ) 3. ತುಪ್ಪವನ್ನು ಆಹಾರವಾಗಿ ಕುಡಿಯುವವನು.

ಛತಾಚಿಃ ಛೃತಾಚಿಃ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಛತಮಚಿರೈಸ್ಯ |

ಛತಾಹುತಿ ಛೃತಾಹುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತುಪ್ಪದಿಂದ ಮಾಡುವ ಆಹುತಿ. ಛತೇನ ಆಹುತಿಃ |

ಛತಾಹ್ವ ಛೃತಾಹ್ವ (ಪುಂ) ತುಪ್ಪದಂತೆ ವಾಸನೆಯ ಹಾಲುಳ್ಳ ಸರಳ ವೃಕ್ಷ. ಸರಳ ದೇವದಾರು ಮರ.

ಛತಿನ ಛೃತಿನ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ ತುಪ್ಪವುಳ್ಳ. 2. ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ ನೀರುಳ್ಳ. ಛತಂ ಪ್ರಶಸ್ತಮಾಜ್ಯಮುದಕಂ ವಾ ಅಸ್ಯಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) | "ಪಯಸ್ವಿನೀಂ ಛತಿನೀ-ಮಸ್ಯುದಾರಾಮ್" ಭಾಂ ಅನುಂ |



ಛೇಲಿ ಛೇಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಛೇಲಿ. ಛೇಲಿ. ಇತಿ ಛೇಲಿ—  
ಇಲ (ಸ್ವನೇ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। ಗೌರಾಂ “ಛೇಲಿ”  
(೪-೧-೪೧)।

ಛೇಲಿ ಛೇಲಿ (ಪುಂ) ಛೇಲಿ ಸಮುದ್ರ, ತುಪ್ಪದ ಕಡಲು.  
ಛೇಲಿಮಾಜ್ಯಮಿವ ಸ್ವಾದು ಉದಕಂ ಯಸ್ಯ। ಉದಕಸ್ಯೋದಾदेशಃ।  
ಛೇಲಿ ಛೇಲಿ: ಛೇಲಿಃ.

ಛೇಲಿ ಛೇಲಿ (ಪುಂ) ಛೇಲಿಮಿಶ್ರಿತವಾದ ಅನ್ನ,  
ತುಪ್ಪಬೆರೆತ ಅನ್ನ. ಛೇಲಿ ಮಿಶ್ರ: ಛೇಲಿಃ।

ಛೇಲಿ - ಸಂಘರ್ಷ (ಭಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಛೇಲಿತಿ। ಛೇಲಿಃ।  
ಛೇಲಿತಿ। ಛೇಲಿಷ್ಯತಿ। ಛೇಲಿತು। ಛೇಲಿತ್। ಇತ್ಯಾದಿ.  
1. ಉಜ್ಜ್ವಲ, ತಿಕ್ಕು. 2. ಛೇಲಿ, ಹಿಂಸಿ. 3. ಅರಿ,  
ಪುಡಿಮಾಡು. 4. ಹೊಡೆದಾಡು, ಬಡಿದಾಡು.

ಕರ್ಮಣಿ:—ಛೇಲಿತಿ. ಛೇಲಿತಿ ಚಕ್ರೇ, -ಬಹುವೇ, -ಆಸೇ।  
ಛೇಲಿತಿ। ಛೇಲಿಷ್ಯತಿ. ಛೇಲಿಷ್ಯಂತಾಂ। ಛೇಲಿಷ್ಯಂತಃ। ಛೇಲಿಷ್ಯಂತಃ।  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಛೇಲಿ:—ಛೇಲಿತಿವ್ಯಮ್। ಛೇಲಿಣೀಯಮ್। ಛೇಲಿಷ್ಯಮ್। ಛೇಲಿಷ್ಯತಃ।  
ಛೇಲಿವಾನ್, ಛೇಲಿವತೀ। ಛೇಲಿನ್, ಛೇಲಿಂತೀ। ಛೇಲಿತಿಮ್। ಛೇಲಿಷ್ಯಮ್।  
ಛೇಲಿಷ್ಯಮ್। ಛೇಲಿವಾ, ಛೇಲಿವಾ। ಪ್ರಛೇಲಿಷ್ಯ.

ಛೇಲಿ ಛೇಲಿ (ವಿಂ) 1. ಅರಿಯಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಪುಡಿಮಾಡು  
ಲ್ಪಟ್ಟು. ಛೇಲಿ (ಸಂಘರ್ಷ) ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಿ:” (೩-೨-೧೦೨)।  
“ಛೇಲಿ ಮಲಯಜೋ ಗಂಧ: ಸರಲಶ್ಚ ನಮೇರುಣಾ। ಅಗುರಪ್ರಭೃತಿ-  
ಶ್ಚಾಪಿ ಯಸ್ಯ ಪಕ್ಷ: ಪ್ರದೀಯತೇ”। 3. ತಿಕ್ಕುಲ್ಪಟ್ಟು, ಉಜ್ಜ್ವಲ್ಪಟ್ಟು.  
4. ಛೇಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

ಛೇಲಿ ಛೇಲಿ (ಪುಂ) 1. ಸೂಕರ, ಹಂದಿ. ಛೇಲಿ (ಸಂಘರ್ಷ)  
“ಕ್ತಿ” (೩-೩-೧೭೪)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಸ್ಪರ್ಧೆ, ಹೋರಾಟ.  
3. ತಿಕ್ಕು. 4. ಹೊಡೆದಾಟ, ಜಗಳ. ಛೇಲಿ ಭಾವೇ  
“ಕ್ತಿ” (೩-೩-೧೭೪)। 5. ವಾರಾಹೇರಿಡ, ಹಂದಿಗಡೆ.  
“ವಿಷ್ವಕಸೇನಪ್ರಿಯಾ ಛೇಲಿವಾರಾಹೀ ಬದರೇತ್ಯಪಿ” ಅಮಂ।  
6. ವಿಷ್ಣುಕ್ರಾಂತಗಡ. “ಛೇಲಿ: ಸ್ತ್ರೀ ಛೇಲಿಷ್ಯಾಪಿವಿಷ್ಣು-  
ಕ್ರಾಂತಾಸು ನಾ ಕಿರೀ” ಮೇದಿಂ।

ಛೇಲಿ ಛೇಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನರಿ ಬಾಲದ ಹುಲ್ಲು.

ಛೇಲಿ ಛೇಲಿ (ಪುಂ) ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. ಛೇಲಿ (ಪರಿವರ್ತನೆ)  
“ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ “ಛೇಲಿ”  
(೪-೧-೬೩)। ಛೇಲಿ ಛೇಲಿಃ.

ಛೇಲಿ ಛೇಲಿ (ಪುಂ) ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. ಛೇಲಿ (ಪ್ರತಿಘಾತೆ)  
“ಛೇಲಿ” (೩-೧-೧೩೩)। ಪೂರ್ವಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕುದುರೆಗಳಿಗೆ  
ರೆಕ್ಕಿಗಳಿದ್ದವು. ಅವು ಅಂತರಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿದ್ದವು.  
ಛೇಲಿಃ ಛೇಲಿಃ ಇಂದ್ರನ ಆಜ್ಞೆಯಂತೆ ಅವುಗಳ ರೆಕ್ಕಿ

ಗಳನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿದುದರಿಂದ ಅಂದಿನಿಂದ ಭೂಮಿಯನ್ನು  
ಸೇರಿದುವು. “ಸಪಕ್ಷಾ ವಾಜಿನ: ಪೂರ್ವಂ ಸಂಜಾತಾ ವ್ಯೋಮಚಾರಿಣ:।  
ಗಂಧರ್ವೈರಾಥಾಕಾಮಂ ಗच्छಂತಿ ಚ ಸಮನ್ವಿತಾ:॥ ಇಂದ್ರಾ-  
ದೇಶಾತ್ ಶಾಲಿಹೌತಸ್ತೇಷಾಂ ಪಕ್ಷಮಯಾಚ್ಛಿನ್ತತಃ। ತತಃ ಪ್ರಭೃತಿ  
ನಿಷ್ಪಕ್ಷಾಸ್ತುರಜ್ಞಾ ಛೇಲಿಃ ಗತಾ:॥

ಅಶ್ವಗಳ ಮೈಮೇಲಿರುವ ಸುಳಿಗಳ ಕೆಲಸ:  
ಮೂಗಿನ ತುದಿ, ಹಣೆಯ ತುದಿ, ಶಂಖ (ಹಣೆಯ  
ಮೂಳೆ), ಕತ್ತು ಮತ್ತು ತಲೆಗಳಲ್ಲಿ ಸುಳಿಯಿದ್ದರೆ ಅದು  
ಶೇಷವಾದ ಕುದುರೆ.

ಹಣೆ, ಪುಷ್ಪಗಳು ಮತ್ತು ತಲೆಗಳಲ್ಲಿ ಸುಳಿಗಳಿರುವ  
ಕುದುರೆಯು ಶೇಷವಾದುದು.

ಬಲಕೆನ್ನೆಯಲ್ಲಿ ಸುಳಿಯಿರುವ ಕುದುರೆಯು ಯಜಮಾನನ  
ನಿಗೆ ಬಹಳ ಸೌಖ್ಯಕರವಾದುದು. ಕೆಲವು ಬುಡದಲ್ಲಿಯೂ  
ಸ್ತನಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿಯೂ ವಿಜಯವೆಂಬ ಸುಳಿಗಳಿರುವ  
ಕುದುರೆಯು ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಜಯವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದು.  
“ನಾಸಿಕಾಗ್ರೇ ಲಲಾಟಾಗ್ರೇ ಶಂಖೇ ಕಂಠೇ ಚ ಮಸ್ತಕೇ।  
ಆವರ್ತೋ ಜಾಯತೇ ಯೇಷಾಂ ತೇ ಧನ್ಯಾಸ್ತು ತುರಜ್ಞಮಾ:॥ ಲಲಾಟೇ  
ಯಸ್ಯ ಆವರ್ತೋ ದ್ವಿತೀಯಸ್ತು ಕುಕುಂದರೇ। ಮಸ್ತಕೇ ಚ ತೃತೀಯಸ್ತು  
ಸ ವಿಜೇಯೋ ಹ್ಯುತ್ತಮ:॥ ಗಂಧಾವರ್ತೋ ಭವೇದಸ್ಯ ವಾಜಿನೋ  
ದಕ್ಷಿಣಾಶ್ರಯ:। ಸ ಕರೋತಿ ಮಹಾಸೌಖ್ಯಂ ಸ್ವಾಮಿನ: ಶಿವ-  
ಸಂಜಿತ:॥ ಕರ್ಣಮೂಲೇ ಯದಾವರ್ತ: ಸ್ತನಮಧ್ಯೇ ತಥಾಪರ:।  
ವಿಜಯಾಖ್ಯಾವುಭೌ ತೌ ತು ಯುದ್ಧಕಾಲೇ ಜಯಪ್ರದೌ॥ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಅಶ್ವಗಳಲ್ಲಿರುವ ದೋಷಗಳು: ಮೈಯಲ್ಲಾ  
ಬಳುವಾಗಿದ್ದು ನಾಲ್ಕು ಕಾಲುಗಳೂ ಕಪ್ಪಾಗಿರುವ  
ಕುದುರೆಯು ತ್ಯಾಜ್ಯವು. “ಚತ್ವಾರೋಽಪ್ಯಸಿತಾ: ಪಾದಾ:  
ಸರ್ವಶ್ವೇತಸ್ಯ ವಾಜಿನ:। ಭವಂತಿ ಯಸ್ಯ ಸ ತ್ಯಾಜ್ಯೋ ಯಮದ್ಭೂತ:  
ಸುಧರತ:”॥

ನಾಲ್ಕು ಕಾಲುಗಳೂ ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಭಿನ್ನವರ್ಣದವು  
ಗಳಾಗಿದ್ದರೆ ಅಂತಹ ಅಶ್ವವು ಕುಲನಾಶವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದು.  
“ಚತ್ವಾರೋ ಯಸ್ಯ ವೈ ಪಾದಾ: ಪರಸ್ಪರವಿವರ್ಣಕಾ:।  
ಸ ತ್ಯಾಜ್ಯೋ ಮುಸಲೀ ನಾಮ್ನಾ ಮುನಿಭಿ: ಕುಲನಾಶನ:”॥

ಎಡ ಕೆನ್ನೆಯಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಸುಳಿಯಿರುವ ಚರ್ಮಣಿಯೆಂಬ  
ಕುದುರೆಯು ಯಜಮಾನನಿಗೆ ಕೇಡುಂಟುಮಾಡುವುದರಿಂದ  
ಅದು ಪರಿತ್ಯಾಜ್ಯವು. “एको वामकपोलस्थो यस्यावर्तः  
प्रदृश्यते। चर्वणी स ह्यस्त्याज्यः कुरुते स्वामिनाशनम्”।  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕುದುರೆಯ ಮೇಲೆ ವರ್ಷಾರ್ತವಿನಲ್ಲಿ ಪ್ರಯಾಣ ಮಾಡ  
ಕೂಡದು. “न प्राज्ञो बाह्येदश्वान् प्रावृत्काले कथंचन।  
मदीच्छेवमृतं तस्य बाहनं दशमासिकम्”।



ಸಾತ್ವಿಕ, ರಾಜಸ ಮತ್ತು ತಾಮಸಗಳೆಂದು ಕುಡುರೆ ಗಳಲ್ಲಿ ಮೂರು ಜಾತಿಗಳುಂಟು. "ಸಾತ್ವಿಕಾ ರಾಜಸಾ ಇವೇತಿ ತಾಮಸಾ ಇವೇತಿ ತೇ ಹಯಾಃ" ॥

ಶುದ್ಧವರ್ಣದ, ಬಹಳ ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆಯುವ, ಸ್ವಲ್ಪವೂ ಆಯಾಸವಾಗದಿರುವ, ಹೆಚ್ಚು ಆಹಾರವನ್ನು ತಿನ್ನುವ, ಕೋಪವಿಲ್ಲದ ಆದರೆ ಯುದ್ಧಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಕೋಪ ವನ್ನು ತೋರಿಸುವ ಕುಡುರೆಗಳು ಸಾತ್ವಿಕ ಗುಂಪಿಗೆ ಸೇರಿ ದುವು. "ಯೇ ಶುದ್ಧವರ್ಣಾ ಭೃಗವೇಗಯುಕ್ತಾ ಅಶ್ರಾಂತಿಭಾಜೌ ಬಹುಭೋಗಿನಶ್ಚ | ಅಕ್ರೋಧಶೀಲಾಃ ಸಮರೇತಿರಘಟಾಸ್ತೇ ಸಾತ್ವಿಕಾ ಭೂಪ ತುರಜ್ಜಮಾಃ ಸ್ಯುಃ" ॥

ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣದ, ಹೆಚ್ಚು ವೇಗವುಳ್ಳ, ಕೋಪಸ್ವಭಾವದ, ಚಾವಟಿಯ ಏಟನ್ನೂ ಸಹಿಸದ, ಬಲಿಷ್ಠವಾದ ಮತ್ತು ಉದ್ದದ ಮೈಯುಳ್ಳ ಕುಡುರೆಗಳು ರಾಜಸ ಗುಂಪಿಗೆ ಸೇರಿದುವು. "ಯೇ ರಕ್ತವರ್ಣಾ ಗುರುವೇಗರೋಃ ಕಠಾಭಿವಾತಂ ನ ಹಿ ಯೇ ಸಹಂತೇ | ಯೇಷಾಃ ಬಲಾಢಯಾಃ ಕ್ಷಲು ದೀರ್ಘದೇಹಾಃ ತೇ ರಾಜಸಾ ಭೂಪ ತುರಜ್ಜಮಾಃ ಸ್ಯುಃ" ॥

ಕಪ್ಪು ಬಣ್ಣದ, ಕಡಮೆ ವೇಗವುಳ್ಳ, ಸಾಮಾನ್ಯ ಕೋಪ ಸ್ವಭಾವದ, ಕೊಂಚ ಆಹಾರವನ್ನು ತಿನ್ನುವ, ಸಾಮಾನ್ಯ ಬಲವುಳ್ಳ ಮತ್ತು ಉತ್ತಮ ಗುಣಗಳಿಲ್ಲದ ಕುಡುರೆಗಳು ತಾಮಸ ಗುಂಪಿಗೆ ಸೇರಿದುವು. "ಯೇ ಕೃಷ್ಣವರ್ಣಾಸ್ತಿನುರೋಷವೇಗಾ ಅಲ್ಪಾಶಿನೋ ಲಕ್ಷಣಲಕ್ಷಿತಾಶ್ಚ | ಯೇ ದುರ್ಬಲಾಃ ಸರ್ವಗುಣೈ- ವಿಹೀನಾಸ್ತೇ ತಾಮಸಾ ಭೂಪ ತುರಜ್ಜಮಾಃ ಸ್ಯುಃ" ॥

**ಛೋಟಕಮುಖ ಘೋಟಕಮುಖ** (ಪುಂ) ಕುಡುರೆಯ ಮುಖ ದಂತೆ ಮುಖವುಳ್ಳ ಕೆಂಪುರುಷ. ಛೋಟಕಸ್ಯ ಮುಖಮಿವ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ |

**ಛೋಟಕಾರಿ ಘೋಟಕಾರಿ** (ಪುಂ) 1. ಕುಡುರೆಗೆ ಶತ್ರುವಾದ ಎಮ್ಮೆಕೋಣ. ಛೋಟಕಸ್ಯಾರಿಃ | 2. ಗನ್ನೇರಿಕೆ.

**ಛೋಣಾ ಘೋಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೂಗು. 2. ಕುಡುರೆಯ ಮೂಗು. 3. ಹಂದಿಯ ಮೂಗಿನ ಹೊಳ್ಳೆ. ಧುಣ (ಭ್ರಮಣ) "ಅಚ್" (3-1-134) | "ಛುರಛುರಾಯಮಾಣ- ಛೋರಛೋಣೇನ" ಕಾದಂ | "ಖಿತ್ವಾ ಛೋಣಾಮಾಯಸೇನಾಧಿವಕ್ಷಃ" ಮಾಘಂ 14-22 |

**ಛೋಣಿನ್ ಘೋಣಿನ್** (ಪುಂ) ವರಾಹ, ಹಂದಿ. ದೀರ್ಘ ಛೋಣಾ ಅಸ್ತಿಯಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (4-2-116) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (4-1-5) | ಛೋಣಿನಿ ಘೋಣಿನೀ. "ದಂಷ್ಟ್ರೀ ಛೋಣಿ ಸ್ತಬ್ಧ- ರೋಮಾ ಕ್ರೋಡೋ ಮುದಾರ ಇತ್ಯಪಿ" ಅಮಂ |

**ಛೋಟಾ ಘೋಟಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಡಕಮರ. 2. ಬೋರೆ ಗಡ, ಎಲೆಮರ. ಧುಣ (ಭ್ರಮಣ) "ಛಃ" ಬಾಹುಂ | "ಛೋಟಾ ತು ಬದರಿಪೂಗವೃಕ್ಷಯೋರಪಿ ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ |

**ಛೋನಸ ಘೋನಸ** (ಪುಂ) ಹೆಬ್ಬಾವು, ದಾಸರಹಾವು. ಛೋನಸ ಪೃಷಂ |

**ಛೋರ ಘೋರ** (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. "ಛೋರಾಯ ಛೋರೂಪಾಯ ಛೋರಛೋರತರಾಯ ಚ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ 290-101 | 2. ವಿಷ, ನಂಜು. (ವಿಂ) 3. ಭಯಂಕರವಾದ. ಹನ (ಹಿಸಾಗತಿಯೆ) "ಅಚ್" ಛುರಾದೇಶಶ್ಚ (30 4-64) | "ಶಿವಾಛೋರಸ್ವನಾಂ ಪಶ್ಚಾದ್ಬುಬುಧೇ ವಿಕೃತೇತಿ ತಾಮ್" ರಘುಂ 12-39 |

**ಛೋರಕ ಘೋರಕ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ಒಂದು ದೇಶ. "ಕಾಶ್ಮೀ- ರಾಶ್ಚ ಕುಮಾರಾಶ್ಚ ಗೋರಕಾ ಹಂಸಕಾಸ್ತಥಾ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ 36-49 |

**ಛೋರಛೋರತರ ಘೋರಘೋರತರ** (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಮಹಾ ದೇವ. "ಛೋರಾಯ ಛೋರೂಪಾಯ ಛೋರಛೋರತರಾಯ ಚ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ 290-101 |

**ಛೋರದರ್ಶನ ಘೋರದರ್ಶನ** (ಪುಂ) 1. ಉಲೂಕ, ಗೂಬೆ. ಛೋರಂ ದೃಶ್ಯತೇಷು - ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣ) ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-113) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (4-1-63) | (ವಿಂ) 2. ಭಯಂಕರವಾದ. "ವೀಕ್ಷಾಂಚಕ್ರೇ ಮಹಾಬಾಹುಸ್ತದ್ಧ ನ ಛೋರದರ್ಶನಮ್" ಭಾಂ |

**ಛೋರರಾಸನ ಘೋರರಾಸನ** (ಪುಂ) 1. ಜಂಬುಕ, ನರಿ. ಛೋರಂ ರಾಸನಂ ಶಬ್ದೋಽಸ್ಯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಛೀಪ್" (4-1-63) | (ವಿಂ) 2. ಭಯಂಕರ ಶಬ್ದದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

**ಛೋರರಾಸಿನ್ ಘೋರರಾಸಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಜಂಬುಕ, ನರಿ. ಛೋರಂ ರಸತಿ - ರಸ (ಶಬ್ದ) "ಞಿನಿಃ" (3-2-36) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (4-1-5) | -ರಾಸಿನಿ -ರಾಸಿನೀ. (ವಿಂ) 2. ಭಯಂಕರವಾಗಿ ಶಬ್ದಮಾಡುವ.

**ಛೋರೂಪ ಘೋರರೂಪ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾ ದೇವ. ಛೋರಂ ರೂಪಮಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಭಯಂಕರವಾದ ಆಕಾರವುಳ್ಳ. ಛೋರಂ ರೂಪಂ ಯಸ್ಯ | "ಉಚ್ಛ್ರೇಃ ಸ್ಥಾನಂ ಛೋರೂಪಂ ನಕ್ಷತ್ರಾಣಾಮಿವ ಗ್ರಹಮ್" ಮನುಂ 9-121 |

**ಛೋರವಾಸಿನ್ ಘೋರವಾಸಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಜಂಬುಕ, ನರಿ. ಛೋರಂ ವಾಸ್ಯತೇ - ವಾಶ್ (ಶಬ್ದ) "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಛೀಪ್" (4-1-63) | (ವಿಂ) 2. ಭಯಂಕರವಾಗಿ ಶಬ್ದಮಾಡುವ.

**ಛೋರವಾಸಿನ್ ಘೋರವಾಸಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಜಂಬುಕ, ನರಿ. ಛೋರಂ ವಾಸ್ಯತೇ - ವಾಶ್ (ಶಬ್ದ) "ಞಿನಿಃ" (3-2-36) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (4-1-5) | -ವಾಸಿನಿ -ವಾಸಿನೀ. (ವಿಂ) 2. ಭಯಂಕರವಾಗಿ ಶಬ್ದಮಾಡುವ.



ಛೋರಾ ಛೋರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಾತ್ರಿ. 2. ದೇವತಾಳೆವೃಕ್ಷ. ಛೋರಾರಾಛ ಛೋರಾರಾಛ (ಪುಂ) ಭಯಂಕರವಾದ ಶಬ್ದ. ಛೋರ ಆರಾಛ: |

ಛೋಲ ಛೋಲ (ಪುಂ) ನೀರು ಬೆರೆಸಿದ ಕಡೆದ ಮೊಸರು. "ಯತು ಸಸ್ತೇಹಮಜಲಂ ಮಥಿತಂ ಛೋಲಮುಚ್ಯತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೫-೮೫. "ಹಿಡ್ಗುಜೀರಯುತಂ ಛೋಲಂ ಸೇವಧೇನ ಚ ಸಂಯುತಮ್ | ಭವೇದತೀವ ವಾತಛನಮಶೋಷಾಸಾರಹತ್ ಪರಮ್ | ರುಚಿದಂ ಪುಷ್ಟಿದಂ ಬಲಯಂ ಬಸ್ತಿಶೂಲವಿನಾಶನಮ್ | ಮೂತ್ರಕುಕ್ಷೇ ತು ಸಗುಡಂ ಪಾಣ್ಡುರೋ ಸಚಿತ್ರಕಮ್" ಭಾವಪ್ರಂ |

ಛೋಷ ಛೋಷ (ಪುಂ) 1. ಗೋಪಾಲಕ, ಗೋಲ್ಲ. ಛೋಷತಿ-ಛುರ್ (ಅವಿಶಬ್ದನೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). 2. ಗೋಲ್ಲರ ಹಳ್ಳಿ. ಛೋಷಂತಿ ಗಾವೋಽತ್ರ-ಛುರ್ "ಛಚ್" (೩-೩-೧೨೧). "ಹೈಯಜ್ಜವೀನಮಾದಾಯ ಛೋಷವೃದ್ಧಾನುಪಸ್ಥಿತಾನ್" ರಘುಂ ೧-೪೫. 3. ಧ್ವನಿ, ಶಬ್ದ. "ರಥ್ಯಾಛೋಷಬೃಹಣೈರ್ವಾರಣಾನಾಮೇಕಯಂ ಗಚ್ಛನ್ ವಾಜಿನಾಂ ಹ್ಲೇಷಯಾ ಚ" ಮಾಛಂ ೧೮-೩. "ಸ್ವಛೋಷನಿಹ್ನಾದಿತ-ವಿಶ್ವಛೋಷಾಮ್" ಯಾದಂ ೪-೭. 4. ಮೇಘದ ಶಬ್ದ, ಗುಡುಗು. "ಸಂಗೀತಾಯ ಪ್ರಹತಮುರಜಾಃ ಸ್ನಿಗ್ಧಗಮ್ಭೀರಛೋಷಮ್" ಮೇಘಂ ೨-೧. 5. ಹಳ್ಳಿ, ಕೊಪ್ಪಲು, ಸಣ್ಣ ಗ್ರಾಮ. "ಗಜ್ಜಾಯಾ ಛೋಷಃ" | 6. ಕಂಚು. 7. ಶಬ್ದಗಳನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸುವ ಹನ್ನೊಂದು ವಿಧ ಬಾಹ್ಯ ಪ್ರಯತ್ನಗಳಲ್ಲೊಂದು. (1) ವಿವಾರಃ, (2) ಸಂವಾರಃ, (3) ಶ್ವಾಸಃ, (4) ನಾದಃ, (5) ಛೋಷಃ, (6) ಅಛೋಷಃ, (7) ಅಲ್ಪಪ್ರಾಣಃ, (8) ಮಹಾಪ್ರಾಣಃ, (9) ಉದಾತ್ತಃ, (10) ಅನುದಾತ್ತಃ ಮತ್ತು (11) ಸ್ವರಿತಃ ಇವು ಹನ್ನೊಂದು ವಿಧ ಬಾಹ್ಯ ಪ್ರಯತ್ನಗಳು. 8. ಮಂಶಕ, ಸೊಳ್ಳೆ. "ಅಯ ಮಶಕೋ ಛೋಷೋ ರಣರಣಶ್ಚ ಸಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | (ವಿಂ) 9. ಪ್ರಚಾರಪಡಿಸುವವನು, ಸಾರುವವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಛಾ-ಛಾ. 10. ಕಾಡುಸಬ್ಬಸಿಗೆ. "ಛೋಷಸ್ತು ಛೋಷಕೇ ಛ್ವಾನೇ ಗೋಪಾಲಾಮೀರಪಲ್ಲಿಷು | ಛೋಷಾ ತು ಶತಪುಷ್ಪಾಯಾಂ ಛೋಷಃ ಕಾಂಸ್ಯೇಽಬುದ್ಧವನೋ" ಮೇದಿಂ |

ಛೋಷಕ ಛೋಷಕ (ಪುಂ) 1. ಕಹಿಸೋರೆ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಚಾರಪಡಿಸುವವನು, ಸಾರುವವನು. ಛುರ್ (ಅವಿ-ಶಬ್ದನೇ) "ಛ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |

ಛೋಷಣ ಛೋಷಣ (ನಂ) 1. ಧ್ವನಿ, ಶಬ್ದ. ಛುರ್ (ಅವಿ-ಶಬ್ದನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" | 2. ಪ್ರಚಾರಪಡಿಸುವುದು, ಸಾರುವುದು. "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭) | ಛೋಷಣಾ ಛೋಷಣಾ. "ದಿಗ್ವಿ-ಜೃಂಭಿತಕಾಕುತ್ಸುಪಾಲಸ್ತಯಜಯಛೋಷಣಃ" ರಘುಂ ೧೨-೭೨ |

ಛೋಷತ್ ಛೋಷತ್ (ವಿಂ) ಸಾರುತ್ತಿರುವ, ಡಂಗುರ ಹೊಡೆಯುತ್ತಿರುವ.

ಛೋಷಯಿತ್ ಛೋಷಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) ಪ್ರಚಾರಪಡಿಸುವವನು, ಸಾರಿಸುವವನು, ಡಂಗುರ ಹೊಡಿಸುವವನು. ಛುರ್ (ಅವಿ-ಶಬ್ದನೇ) + ಣಿಚ್ "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | -ಯಿತ್ರಿ-ಯಿತ್ರಿಃ |

ಛೋಷಯಿನ್ ಛೋಷಯಿನ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. 2. ಕೋಗಿಲೆ. (ವಿಂ) 3. ಪ್ರಚಾರಪಡಿಸುವವನು, ಸಾರುವವನು. 4. ಸ್ತುತಿಪಾಠಕ, ಹೊಗಳು ಭಟ. "ಛೋಷಯಿನ್ಯಸ್ತು ವಿಪ್ರಕೋಕಿಲಯೋಃ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ |

ಛೋಷವತ್ ಛೋಷವತ್ (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಧ್ವನಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಛೋಷೋ ಛ್ವನಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೧೪) | 2. ಒಂದು ವಿಧ ಬಾಹ್ಯ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಕೂಡಿದ (ವರ್ಣ). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ವತೀ-ವತೀಃ |

ಛೋಷವತೀ ಛೋಷವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೀಣೆ.

ಛೋಷಿತ ಛೋಷಿತ (ನಂ) 1. ಧ್ವನಿ, ಶಬ್ದ. ಛುರ್ (ಅವಿ-ಶಬ್ದನೇ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) | (ವಿಂ) 2. ಛೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಾರಲ್ಪಟ್ಟ. ಛುರ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ದ್ವಿಷಣಜಲನಿವಿಶೋಷಣತೋಷಿತಶ್ಚ ಛಿಗಣಛೋಷಿತವಿಜಯ-ಛೋಷಣ" ರಘುಂ ಗಂ |

ಛಾ - ಗಂಧೋಪಾದಾನೇ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ) | ಜಿಛ್ರತಿ | ಜಛ್ರೋ ಜಛ್ರತುಃ ಜಛ್ರುಃ | ಛ್ರಾತಾ | ಛ್ರಾಸ್ಯತಿ | ಜಿಛ್ರತು | ಅಜಿಛ್ರತ್ | ಜಿಛ್ರೇತ್, ಛ್ರೇಯಾತ್ | ಅಛ್ರಾತ್, ಅಛ್ರಾಸೀತ್ |

ಕರ್ಮಣಿಃ:-ಛ್ರಾಯತೇ | ಜಛ್ರೇ | ಛ್ರಾತಾ, ಛ್ರಾಯಿತಾ | ಛ್ರಾಯಿಷ್ಯತೇ, ಛ್ರಾಸ್ಯತೇ | ಛ್ರಾಯತಾಮ್ | ಅಛ್ರಾಯತ್ | ಛ್ರಾಯೇತ್ | ಛ್ರಾಯಿಷೀಷ್ಠ, ಛ್ರಾಸೀಷ್ಠ | ಇತ್ಯಾದಿ |

ಣಿಚಿಃ:-ಛ್ರಾಪಯತಿ, -ತೇ | ಛ್ರಾಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ, ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಛ್ರಾಪಯಿತಾ | ಛ್ರಾಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ಛ್ರಾಪಯತು, -ತಾಮ್ | ಅಛ್ರಾಪಯತ್, -ತ್ | ಛ್ರಾಪಯೇತ್, -ತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ |

ಸನಿಃ:-ಜಿಛ್ರಾಸತಿ | ಜಿಛ್ರಾಸಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಜಿಛ್ರಾಸಿತಾ | ಜಿಛ್ರಾಸಿಷ್ಯತಿ | ಜಿಛ್ರಾಸತು | ಇತ್ಯಾದಿ |

ಕ್ರತುಃ:-ಛ್ರಾತವ್ಯಃ | ಛ್ರಾಣೀಯಃ | ಛ್ರೇಯಃ | ಛ್ರಾಣಃ, ಛ್ರಾತಃ | ಛ್ರಾಣವಾನ್, ಛ್ರಾತವಾನ್ | ಜಿಛ್ರನ್, ಜಿಛ್ರಂತೀ, ಛ್ರಾತುಮ್ | ಛ್ರಾಣಮ್, ಛ್ರಾತಮ್ | ಛ್ರಾತ್ವಾ | ಅಛ್ರಾಯ |

ಛ್ರಾಣ ಛ್ರಾಣ (ನಂ) 1. ಮೂಗು, ವಾಸನೆಯನ್ನು ಕಂಡು ಹಿಡಿಯುವ ಒಂದು ಇಂದ್ರಿಯ. ಛ್ರಾಯತೇಜಃ-ಛ್ರಾ (ಗಂಧೋಪಾದಾನೇ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | 2. ವಾಸನೆ



ನೋಡುವುದು, ಮೂಸಿನೋಡುವುದು. ಛಾ ಭಾವೇ  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। “ಗ್ರಾಣೇನ ಸೂಕರೋ ಹಂತಿ ಪಕ್ಷವಾತೇನ  
ಕುಕ್ಕುಟಃ” ಮನುಂ ೩-೨೪೧। (ವಿಂ) 3. ವಾಸನೆ ಹಿಡಿಯು  
ಲ್ಪಟ್ಟು, ಮೂಸಿನೋಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಛಾ ಕರಂ “ಕ್ತಃ”  
(೩-೨-೧೦೨)। ತಕಾರಸ್ಯ ವಾ ನತ್ವಮ್ (೮-೨-೫೬)।  
ಪಕ್ಷೇ ಗ್ರಾತಃ ಕ್ರಾತಃ.

ಗ್ರಾಣಜ ಕ್ರಾಣಜ (ನಂ) ಫ್ರಾಣೇಂದ್ರಿಯದಿಂದ ಉಂಟಾದ  
ಒಂದು ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ. ಇದು ಆರು ವಿಧ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು  
ಭೇದ. ಗ್ರಾಣೇ ಜಾಯತೇ - ಜನೀ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) “ಙಃ”  
(೩-೨-೧೦೨)। “ಗ್ರಾಣಜಾದಿಪ್ರಭೇದೇನ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಂ ಷಡ್ವಿಧಂ ಸ್ಮೃತಮ್”  
ಭಾಷಾಪಂ.

ಗ್ರಾಣತರ್ಪಣ ಕ್ರಾಣತರ್ಪಣ (ಪುಂ) ಸುವಾಸನೆ, ಸುಗಂಧ.  
ಗ್ರಾಣಂ ಗ್ರಾಣೇಂದ್ರಿಯಂ ತರ್ಪಯತಿ - ತೃಪ (ತೃಪ್ತೌ) + ಣಿಚ್  
“ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪)। “ಸುರಭಿಗ್ರಾಣತರ್ಪಣಃ” ಅಮಂ।  
ಗ್ರಾಣಶ್ರವಸ್ ಕ್ರಾಣಶ್ರವಸ್ (ಪುಂ) ಕಾರ್ತಿಕೇಯನ ಒಬ್ಬ  
ಸೈನಿಕ. ಗ್ರಾಣಮಿವ ಶ್ರವಃ ಕರ್ಣೋಽಸ್ಯ। “ಗ್ರಾಣಶ್ರವಾಃ  
ಪ್ರತಿಷ್ಕಂಧಃ ಕಾಶ್ಚನಾಕ್ಷೋ ಜಲಂಧರಃ” ಭಾಂ ಅನುಂ।

ಗ್ರಾಣೀಯ ಕ್ರಾಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ವಾಸನೆ ಹಿಡಿಯಲ್ಪಡುವ,  
ಅಘ್ರಾಣಿಸಲ್ಪಡುವ, ಮೂಸಿನೋಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಅಘ್ರಾ

ಣಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಅಘ್ರಾಣಿಸಬೇಕಾದ. ಛಾ  
(ಗಂಧೋಪಾದಾನೇ) ಕರ್ಮಾದೌ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೧೬)।  
“ತವ್ಯಃ”। ಗ್ರಾತವ್ಯಃ ಕ್ರಾತವ್ಯಃ.

ಗ್ರಾತ ಕ್ರಾತ (ನಂ) “ಗ್ರಾಣ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಗ್ರಾತವತ್ ಕ್ರಾತವತ್ (ವಿಂ) ವಾಸನೆ ಹಿಡಿದವನು, ಮೂಸಿ  
ನೋಡಿದವನು. ಛಾ (ಗಂಧೋಪಾದಾನೇ) “ಕ್ತವತುಃ”। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)। -ವತೀ -ವತೀ.

ಗ್ರಾತಿ ಕ್ರಾತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಫ್ರಾಣೇಂದ್ರಿಯ, ಮೂಗು.  
ಗ್ರಾಯತೇಜೇನ - ಛಾ (ಗಂಧೋಪಾದಾನೇ) ಕರಂ “ಕ್ತಿನ್”  
(೩-೩-೧೪)। 2. ವಾಸನೆ ಹಿಡಿಯುವುದು, ಮೂಸಿ  
ನೋಡುವುದು. ಛಾ ಭಾವೇ “ಕ್ತಿನ್”। “ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ರುಜಃ  
ಕೃತ್ವಾ ಗ್ರಾತಿರಗ್ರೇಯಮಥಯೋಃ” ಮನುಂ ೧೧-೬೭।

ಗ್ರಾತ್ ಕ್ರಾತ್ಯ (ವಿಂ) ವಾಸನೆ ಹಿಡಿಯುವವನು. ಛಾ  
(ಗಂಧೋಪಾದಾನೇ) “ತೃತ್” (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್”  
(೪-೧-೫)। ಗ್ರಾತ್ರೋ ಕ್ರಾತ್ಯೋ.

ಗ್ರೇಯ ಘ್ರೇಯ (ವಿಂ) 1. ಅಘ್ರಾಣ ಮಾಡಬೇಕಾದ.  
2. ಅಘ್ರಾಣ ಮಾಡಬಹುದಾದ. 3. ಅಘ್ರಾಣ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಡುವ. ಛಾ (ಗಂಧೋಪಾದಾನೇ) “ಯತ್” (೩-೧-೧೭)।

ಇತಿ “ಘ” ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್

ಙ

ಙ ಜಿ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ “ಕ” ವರ್ಗದ ಐದನೆಯ  
ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಂತರ ಸ್ಪೃಷ್ಟ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಕೂಡ ಮತ್ತು  
ನಾಸಿಕೆಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ (ಅನುನಾಸಿಕ) ವರ್ಣ. “ಕಾದಯೋ  
ಮಾವಸಾನಾಃ ಸ್ಪರ್ಶಾಃ”। “ಸ್ಪೃಷ್ಟಂ ಪ್ರಯತನಂ ಸ್ಪರ್ಶಿನಾಮ್”।

“ಅಕುಹವಿಸರ್ಜನೀಯಾನಾಂ ಕಂಠಃ”। “ಅಮಂಙನಾನಾಂ ನಾಸಿಕಾ  
ಚ” ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಙ ಜಿ (ಪುಂ) 1. ಭೈರವ, ಈಶ್ವರ. 2. ವಿಷಯ, ಇಂದ್ರಿ  
ಯಕ್ಕೆ ಗೋಚರವಾಗುವ ವಸ್ತು. 3. ಅಮೇಕ್ಷೆ, ಆಸೆ.

ಇತಿ “ಙ” ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್।



## ಚ

ಚ ಚ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ "ಚ" ವರ್ಗದ ಮೊದಲ ನೆಯ ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಂತರ ಸ್ಪೃಷ್ಟ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ತಾಲು (ದವಡೆ) ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಅಕ್ಷರ.

ಚ ಚ (ಫಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಚೀಯತೆ ಕಿರಣೈ: — ಚಿತ್ (ಚಯೇ) "ಚ:" (೩-೨-೧೦೧)। 2. ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ. ಚಿನೋತಿ ಅಜ್ಞಮ್। 3. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. 4. ಚರ್ವಣ, ಅಗಿಯುವುದು. 5. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ. ಚಿನೋತಿ ಪರಧನಮ್। "ಚಕ್ಷುಷೇಶೇ ಪುಮಾನುಕ್ತ: ಕಂಠೇ ಚಂದ್ರಚೋರಯೋ:" ಮೇದಿಂ। (ವಿಂ) 6. ನೀಚ, ಅಧಮ, ದುರ್ಜನ. (ಅವ್ಯಂ) ಅವ್ಯಯ "ಚ" ಕಾರವು ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವುದು: 7. ಪಾದಪೂರಣ. "ಅಶ್ವಂ ನೈವ ಗಜಂ ನೈವ ವ್ಯಾಘ್ರಂ ನೈವ ಚ ನೈವ ಚ"। 8. ಅವಧಾರಣ. "ತೇ ತು ಯಾವಸ್ತ ಎವಾಜೌ ತಾವಾಂಶ್ಚ ದದೃಶೇ ಸ ತೈ:" ರಘುಂ ೧೨-೪೫। 9. ಹೇತು, ಕಾರಣ. 10. ಸಮುಚ್ಚಯ; ಪರಸ್ಪರ ನಿರಪೇಕ್ಷವಾದಂವು ಗಳಿಗೆ ಏಕಕ್ರಿಯೆಯಲ್ಲಿ ಅನ್ವಯವು ಸಮುಚ್ಚಯ. "ಸಮುಚ್ಚಯಾನ್ವಾಚಯೇತರೇತರಯೋಗಸಮಾಹಾರಾಶ್ಚಾರ್ಥಾ:"। (1) ಪರಸ್ಪರ-ನಿರಪೇಕ್ಷಸ್ಯಾನೇಕಸ್ಯ ಏಕಸ್ಮಿನ್ ಅನ್ವಯ: ಸಮುಚ್ಚಯ:। "ईश्वरं गुरुं च भजस्व"। "तौ गुरुर्गुरुपत्नी च प्रीत्या प्रतिनन्दतु:" ರಘುಂ ೧-೫೭। 11. ಅನ್ವಾಚಯ, ಪ್ರಧಾನ ಕಾರ್ಯದೊಡನೆ ಅಪ್ರಧಾನ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಹೇಳುವುದು; ಎರಡು ಪದಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವುದಾದರೊಂದಕ್ಕೆ ಒಂದು ಕ್ರಿಯಾ ಪದದಲ್ಲಿ ಉದ್ದೇಶವಾದ ಅನ್ವಯವೂ ಮತ್ತೊಂದಕ್ಕೆ ಇನ್ನೊಂದು ಕ್ರಿಯೆಯಲ್ಲಿ ಅನುಷಂಗಿಕವಾದ (ಉದ್ದೇಶ ವಿಲ್ಲದ) ಅನ್ವಯವೂ ಇರುವುದು ಅನ್ವಾಚಯವಾಗುವುದು. (2) "अन्यतरस्यानुषङ्गिकत्वेनान्वय: अन्वाचय:"। "भिक्षामट गाञ्जानय" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಭಿಕ್ಷುಟನೆಯು ಪ್ರಧಾನ ವಾದುದು. ಅದರೊಡನೆ ಗವಾನಯನರೂಪವಾದ ಅಪ್ರಧಾನವಾದ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ "ಗೌ" ಪದಕ್ಕೆ ಅನಯನ ಕ್ರಿಯೆಯಲ್ಲಿ ಅನುಷಂಗಿಕವಾದ ಅನ್ವಯವನ್ನೂ ಹೇಳಿರು ವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ ಅನ್ವಾಚಯ. 12. ಇತರೇತರ ಯೋಗ; ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧದ ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿರುವ ಅನೇಕ ಪದಗಳಿಗೆ ಒಂದು ಕ್ರಿಯಾಪದದಲ್ಲಿ ಅನ್ವಯವು ಇರುವಲ್ಲಿ ಇತರೇತರ ಯೋಗವು. (3) "मिलितानामन्वये इतरेतरयोग:"। ಪರಸ್ಪರಾಪೇಕ್ಷಿತಾನಾಂ ಸಮುದಿತಾನಾಮೇಕಸ್ಮಿನ್ ಕ್ರಿಯಾಪದೇ ಅನ್ವಯ: यत्र तत्र इतरेतरयोग:। "हरिश्च हरश्च मुकुन्दश्च हरिहरमुकुन्दा:"। ಇಲ್ಲಿ ಪರಸ್ಪರ ಸಾಹಚರ್ಯವು "ಚ" ದ ಅರ್ಥ. 13. ಸಮಾಹಾರ, ಸಮೂಹ; ಪರಸ್ಪರ

ಒಟ್ಟುಗೂಡಿರುವುದು ಸಮೂಹ. ಸಂಜ್ಞಾ ಚ ಪರಿಭಾಷಾ ಚ ಅನಯೋ: समाहार: संज्ञापरिभाषम्। ಸಂಜ್ಞೆ ಮತ್ತು ಪರಿಭಾಷೆಗಳ ಸಮೂಹವೆಂದು ಅರ್ಥ. 14. ಪಕ್ಷಾಂತರ. 15. ವಿರೋಧ. "शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहु: कुत: फलमिहास्य" शाकुं ೧-೧೬। "चान्वाचये समाहारेऽप्यन्योन्यार्थे समुच्चये। पक्षान्तरे तथा पाद-पूरणेऽप्यवधारणे" मೇदिಂ।

**ಚಕ - ತೃಪ್ತೌ ಪ್ರತಿಧಾತೇ ಚ** (ಛಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸಂ)।

ಚಕತೆ। ಚಕೇ। ಚಕಿತಾ। ಚಕಿಷ್ಯತೆ। ಚಕತಾಮ್। ಅಚಕತೆ। ಚಕೇತೆ। ಚಕಿಷೀಷ್ಠೆ। ಅಚಕಿಷ್ಠೆ। ಅಚಕಿಷ್ಯತೆ। 1. ತೃಪ್ತಿಹೊಂದು. 2. ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸು, ತಡೆಗಟ್ಟು. ಚಕ ಧಾತುವನ್ನು ಘಟಾದಿಯಲ್ಲಿ ಪರಸ್ಪೃಷ್ಠ ಪದ ಧಾತುಗಳ ಮಧ್ಯೆ ತೃಪ್ತಿ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಅನುವಾದ ಮಾಡಿರುವುದ ರಿಂದ ಪರಸ್ಪೃಷ್ಠದಿಯಾಗಿಯೂ ಇದರ ಪ್ರಯೋಗವುಂಟು. ಚಕತಿ। ಚಕಾಕೆ। ಚಕಿತಾ। ಚಕಿಷ್ಯತಿ। ಚಕತು। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಭಾವೇ:—ಚಕಯತೆ। ಚಕಯತಾಮ್। ಅಚಕಯತೆ। ಚಕಯತೆ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಚಕಾಸು - ದೀಪ್ತೌ** (ಅದಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ)। ಚಕಾಸ್ತಿ

ಚಕಾಸ್ತ: ಚಕಾಸತಿ। ಚಕಾಸ್ತಿ ಚಕಾಸ್ಥ: ಚಕಾಸ್ಥ:। ಚಕಾಸ್ತಿ ಚಕಾಸ್ವ: ಚಕಾಸ್ಮ:। ಚಕಾಸಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಚಕಾಸಿತಾ। ಚಕಾಸಿಷ್ಯತಿ। ಚಕಾಸ್ತು। ಅಚಕಾತ್, ಅಚಕಾದ್ ಅಚಕಾಸ್ತಾಮ್ ಅಚಕಾಸು:। ಚಕಾಸ್ಯಾತ್ ಚಕಾಸ್ಯಾತಾಮ್ ಚಕಾಸ್ಯು:। ಚಕಾಸ್ಯಾತ್ ಚಕಾಸ್ಯಾಸ್ತಾಮ್। ಅಚಕಾಸೀತ್। ಅಚಕಾಸಿಷ್ಯತ್। ಪ್ರಕಾಶಿಸು, ಹೊಳೆ, ಶೋಭಿಸು.

ಭಾವೇ:—ಚಕಾಸ್ಯತೆ। ಚಕಾಸಾಂ ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವೆ, -ಆಸೆ। ಚಕಾಸಿತಾ। ಚಕಾಸಿಷ್ಯತೆ। ಚಕಾಸ್ಯತಾಮ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:—ಚಕಾಸಿತವ್ಯಮ್। ಚಕಾಸನೀಯಮ್। ಚಕಾಸ್ಯಮ್। ಚಕಾಸಿತ:। ಚಕಾಸಿತವಾನ್। ಚಕಾಸತ್ ಚಕಾಸತೌ ಚಕಾಸತ:। ಚಕಾಸತೀ। ಚಕಾಸಿತುಮ್। ಚಕಾಸಿತಮ್। ಚಕಾಸನಮ್। ಚಕಾಸಿತವಾ।

**ಚಕಾಸತ್ ಚಕಾಸತ್** (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ಶೋಭಿಸು ತ್ತಿರುವ. ಚಕಾಸು (ದೀಪ್ತೌ) "शतृ" (೩-೨-೧೨೪)। "चकासतं चारुचमूरुचर्मणा कुथेन नागेन्द्रमिवेन्द्रवाहनम्" माघಂ ೧-೮। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "डीप्" (೪-೧-೬)। ಚಕಾಸತೌ ಚಕಾಸತೇ.

**ಚಕಾಸನ ಚಕಾಸನ** (ನಂ) ಪ್ರಕಾಶಿಸುವಿಕೆ, ಹೊಳೆಯುವಿಕೆ. ಚಕಾಸು (ದೀಪ್ತೌ) "ल्युट्" (೩-೩-೧೧೫)।



ಚಕಾಸನೀಯ ಚಕಾಸನೀಯ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಿಸಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ. ಚಕಾಸ (ದೀಪ್ತೌ) "ಅನೀಯ" (೩-೧-೧೬)।

ಚಕಾಸಿತ ಚಕಾಸಿತ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಚಕಾಸ  
(ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಚಕಾಸಿತು ಚಕಾಸಿತು (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ.  
ಚಕಾಸ (ದೀಪ್ತೌ) "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। ಚಕಾಸಿತ್ರಿ ಚಕಾಸಿತ್ರಿ.

ಚಕಿತ ಚಕಿತ (ನಂ) 1. ಭಯ. ಚಕ (ತೃಪ್ತೌ ಪ್ರತಿಪಾತೇ ಚ)  
ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ನಡುಕ, ಕಂಪನೆ.  
3. ಹೆಂಗಸರ ಸಾತ್ವಿಕಾಂಕಾರಗಳಲ್ಲೊಂದು ಭೇದ.  
"ಕುತೋಪಿ ದಯಿತಸ್ಯಾಗ್ರೇ ಚಕಿತಂ ನಯಸಂಭ್ರಮಃ" ಸಾಂ ದಂ 1  
(ವಿಂ) 4. ಕಂಪಿಸುವ, ನಡುಗುವ. 5. ಅಂಜಿದ, ಹೆದರಿದ.  
ಭಯಗೊಂಡ. ಚಕ ಕರ್ತಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)।  
"ತಸ್ಯೋದಯೇ ಚತುರ್ಮುತಃ ಪೌಲಸ್ತ್ಯಚಕಿತೇಶ್ವರಾಃ" ರಘುಂ  
೧೦-೭೩। "ಮುಢ್ರಯಂತಿ ಚಕಿತಾನ್ ಸುರಸ್ತ್ರಿಯಃ" ಯಾದಂ  
೧೭-೧೭। (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 6. ಭಯದೊಡನೆ, ಭಯಸಹಿತ  
ವಾಗಿ. "ನ ಚ ನ ಪರಿಚಿತೋ ನ ಚಾಪ್ಯಗಮ್ಯಃ ಚಕಿತಮುಪಮಿ  
ತಥಾಪಿ ಪಾರ್ಶ್ವಮಸ್ಯ" ಮಾಲಂ ೧-೧೧।

ಚಕೋರ ಚಕೋರ (ಪುಂ) ಚಕೋರಪಕ್ಷಿ. ಚಕತಿ - ಚಕ  
(ತೃಪ್ತೌ) "ಆರನ್" (೩ಂ ೧-೬೪)। "ಇತಶ್ಚಕೋರಾಕ್ಷಿ  
ವಿಲೋಕಯೇತಿ" ರಘುಂ ೬-೫೯। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೫-೩-೭೫)।  
ಚಕೋರಕಃ ಚಕೋರಕಃ. ಚಕೋರಪಕ್ಷಿಯು ವಿಷಮಿಶ್ರಿತ  
ವಾದ ಆಹಾರವನ್ನು ನೋಡಿದಾಗ ಅದರ ಕಣ್ಣು ಕೆಂಪು  
ಗಾಗುವುದೆಂದು ಕವಿಸಮಯಸಿದ್ಧ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ  
"ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। ಚಕೋರಿ ಚಕೋರಿ.

ಚಕೋರದೃಶ್ ಚಕೋರದೃಶ್ (ವಿಂ) ಚಕೋರಪಕ್ಷಿಯ ಕಣ್ಣು  
ಗಳಂತೆ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ, ಮಂದರವಾದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ  
(ಹೆಂಗಸು). ಚಕೋರಸ್ಯೇವ ದೃಶೌ ಯಸ್ಯಾಃ। "ಮುಖಸರೋಜಕಂ  
ಮದಪಾಟಲಾಮನುಚಕಾರ ಚಕೋರದೃಶಾಂ ಯತಃ" ಮಾಘಂ ೬-೪೮।

ಚಕ್ರ ಚಕ್ರ (ಪುಂ) 1. ಚಕ್ರವಾಕಪಕ್ಷಿ. ಚಕ (ತೃಪ್ತೌ) "ರಕ್"  
(೩ಂ ೨-೧೩)। "ಕೋಕಶ್ಚಕ್ರಶ್ಚಕ್ರವಾಕೋ ರಥಾಜ್ಞಾಹ್ವಯನಾಮಕಃ"  
ಅಮಂ 1. (ನಂ) 2. ರಥದ ಚಕ್ರ, ಗಾಡಿಯ ಗಾಲಿ.  
ಕ್ರಿಯತೇ ಗತಿರನೇನ-ಓ ಕೃಬ್ (ಕರಣಂ) "ಕಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೫೮)।  
ದ್ವಿತ್ವಮ್ ನಿಪಾಂ 1. "ನೀರ್ವೇಗಚ್ಛತ್ಯುಪರಿ ಚ ದಶಾ ಚಕ್ರೋಮಿ-  
ಕ್ರಮೇಣ" ಮೇಘಂ ೨-೪೬। 3. ಸೃಷ್ಟಿ. "ಭೂತವಾನ್ ಚಕ್ರಮರಿ-  
ಚಕ್ರಮಯಚಕಿತಮಾಹವೇ ನಿಜಮ್" ಮಾಘಂ ೧೫-೨೬।  
4. ಸಮೂಹ, ಸಮುದಾಯ, ಗುಂಪು. "ವಯಸಾನಿವ  
ಚಕ್ರಮಕ್ರಿಯಾಕಮ್" ಮಾಘಂ ೨೦-೧೭। 5. ಮಂಡಲ, ಜಿಲ್ಲೆ.

ಗ್ರಾಮಗಳ ಗುಂಪು, ಒಂದು ಪ್ರಾಂತ್ಯ. 6. ಕುಲಾಲನ  
ಚಕ್ರ, ಕುಂಬಾರನ ಗಾಲಿ. "ಕಲಶೇ ನಿಜಹೇತುಃಪ್ರಾಣಃ  
ಕಿಮು ಚಕ್ರಭ್ರಮಿಕಾರಿತಾಗುಣಃ" ನೈಷಂ ೨-೩೨। 7. ದಿಕ್ಕು, ದಿಬ್ಬಂಡಲ.  
8. ವಿಷ್ಣುವಿನ ಚಕ್ರಾಯುಧ. "ಚಕ್ರೇಣ  
ರೇಜೇ ಯಮುನಾಜಲಿಖಃ ಸ್ಫುರನ್ಮಹಾವರ್ತ ಇವೈಕವಾಹುಃ" ಮಾಘಂ  
೩-೧೭। 9. ಅಧಿಪತ್ಯ, ಪ್ರಭುತ್ವ. 10. ಜಲಾವರ್ತ, ನೀರಿನ ಸಂಧಿ.  
11. ಮಂಡಲಾಕಾರವಾಗಿ ನಿಂತಿರುವ ಸೈನ್ಯ, ಚಕ್ರವ್ಯೂಹ. 12. ರಾಷ್ಟ್ರ. "ಅವಿಚಾಲಿತಚಾರು-  
ಚಕ್ರಯೋರನುರಾಗಾದುಪಗೃಹ್ಯಯೋಃ ಶ್ರಿಯಾ" ಮಾಘಂ ೧೬-೭೦।  
13. ತೈಲಯಂತ್ರ, ಎಣ್ಣೆಯ ಗಾಣ. "ದಶಸುನಾಸಮಂ ಚಕ್ರಂ  
ದಶಚಕ್ರಸಮೋ ಧ್ವಜಃ। ದಶವಜಸಮೋ ವೇಶೋ ದಶವೇಶಸಮೋ  
ನೃಪಃ" ಮನುಂ ೪-೮೫। 14. ಪರ್ವತ, ಗೋಲ, ಮಂಡಲ.  
"ಚಕ್ರಂ ಚಯೇ ಜಲಾವರ್ತೇ ರಥಾಜ್ಞೇ ರಾಷ್ಟ್ರಸೇನ್ಯಯೋಃ। ಧರ್ಮಸಾಧನ-  
ಭೇದೇಪಿ ಕಲಿಬೇ ಕೋಕೇ ತು ಪುಸ್ತಯಮ್" ನಾನಾರ್ಥರಂ 1। 15. ಚಕ್ರ  
ಬಂಧ, ಅಲಂಕಾರಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಒಂದು ಕಾವ್ಯಬಂಧ.  
16. ಜ್ಯೋತಿಷದಲ್ಲಿ ರಾಶಿ ಅಂಶ ಮುಂತಾದುವುಗಳ ಚಕ್ರ.  
17. ದಮ್ರರೋಗ. ಹುಳುಕಡ್ಡಿ. 18. ದಂಭ, ಕಪಟ.  
19. ಕಠೀರದೊಳಗಿರುವ ಪಟ್ಟಿ ಚಕ್ರಗಳು:

(1) ಮೂಲಾಧಾರಃ, (2) ಸ್ವಾಧಿಷ್ಠಾನಮ್, (3) ಮಣಿಪೂರಮ್,  
(4) ಅನಾಹತಮ್, (5) ವಿಶುದ್ಧಮ್ ಮತ್ತು (6) ಆಜ್ಞಾಹೃಯಮ್।  
ಇವು ಆರು ಚಕ್ರಗಳು. 20. ಮಂತ್ರಶಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಆರು ಚಕ್ರಗಳು: (1) ಕುಲಾಕುಲಚಕ್ರಮ್,  
(2) ರಾಶಿಚಕ್ರಮ್, (3) ನಕ್ಷತ್ರಚಕ್ರಮ್, (4) ಅಕಯಹಚಕ್ರಮ್,  
(5) ಅಕಡಮಚಕ್ರಮ್ ಮತ್ತು (6) ಕೃಣಿಧನಿಚಕ್ರಮ್।

(1) ಕುಲಾಕುಲಚಕ್ರದಲ್ಲಿ ಅ ಕಾರಾದಿ ಹ ಕಾರಾಂತ  
ಐವತ್ತು ವರ್ಣಗಳೂ ಪಂಚಭೂತಾತ್ಮಕಗಳೆಂದು ಹೇಳಿ  
ಪಂಚಭೂತಗಳಿಗೆ ಸೇರಿದ ವರ್ಣಗಳನ್ನು ಹೇಳಿದೆ.  
"ಕುಲಾಕುಲಸ್ಯ ಭೇದಂ ಹಿ ವಕ್ಷ್ಯಾಮಿ ಮನ್ವಿಣಾಮಿಹ। ವಾಯವ್ಯಗ್ನಿ-  
ಭೂಲಾಕಾಶಾಃ ಪಂಚಾಶ್ಚಲಿಪಯಃ ಕ್ರಮಾತ್। ಪಂಚಹಸ್ವಾಃ  
ಪಂಚದೀರ್ಘಾಃ ಬಿನ್ದಂತಾಃ ಸಂಧಿಸಂಭವಾಃ। ಕಾದಯಃ ಪಂಚಶಃ  
ಪ ಳ ಲ ಸ ಹಾಂತಾಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾಃ"।

ಅ ಆ ಏ ಕ ಚ ಟ ತ ಪ ಯ ಷಾಃ ಮಾರುತಾಃ।  
ಇ ಔ ಏ ಖ ಳ ಠ ಥ ಫ ರ ಕ್ಷಾಃ ಆಗ್ನೇಯಾಃ।  
ಉ ಊ ಒ ಗ ಜ ಙ ಡ ಡ ವ ಲಾಃ ಪಾರ್ಥಿವಾಃ।  
ಋ ೠ ಔ ಷ ಙ ಠ ಥ ಭ ವ ಸಾಃ ವಾರುಣಾಃ।  
ಲೃ ಲೃ ಂ ಙ ಙ ಙ ನ ಮ ಶ ಹಾಃ ನಾಭಸಾಃ।

"ಸಾಧಕಸ್ಯಾಕ್ಷರಂ ಪೂರ್ವಂ ಮನ್ತ್ರಸ್ಯಾಪಿ ತದಕ್ಷರಮ್। ಯದೇಕಭೂತ-  
ದೈವತ್ಯಂ ಜಾನೀಯಾತ್ ಸ್ವಕುಲಂ ಹಿ ತತ್" ಇತಿ ತನ್ತ್ರಸಾರಃ।



(2) ರಾಶಿಚಕ್ರದಲ್ಲಿ ಮೇಷಾದಿ ರಾಶಿಗಳಿಗೆ ಸೇರಿದ ವರ್ಣಗಳನ್ನು ಹೇಳಿದೆ :

|                     |            |
|---------------------|------------|
| ಅ ಆ ಇ ಔ             | ಮೇಷಃ ।     |
| ಉ ಊ ಋ               | ವೃಷಭಃ ।    |
| ೠ ಲೃ ಴              | ಮಿಥುನಮ್ ।  |
| ಎ ಏ                 | ಕರ್ಕಾಟಕಃ । |
| ಒ ಓ                 | ಸಿಂಹಃ ।    |
| ಅಂ ಅಃ ಶ ಷ ಸ ಹ ಲ ಖಾಃ | ಕನ್ಯಾ ।    |
| ಕವರ್ಗಃ              | ತುಲಾ ।     |
| ಚವರ್ಗಃ              | ವೃಶ್ಚಿಕಃ । |
| ಟವರ್ಗಃ              | ಧನುಃ ।     |
| ತವರ್ಗಃ              | ಮಕರಃ ।     |
| ಪವರ್ಗಃ              | ಕುಂಭಃ ।    |
| ಯ ರ ಲ ವಾಃ           | ಮೀನಃ ।     |

ತಮ್ಮ ರಾಶಿಗಳಿಗೆ ಅನುಕೂಲವಾದ ಮಂತ್ರಗಳನ್ನು ಆರಿಸಿ ಕೊಳ್ಳಬೇಕು. “ರಾಶಿನಾಂ ಶುದ್ಧತಾ ಜ್ಞೇಯಾ ತ್ಯಜೇತ್ ಶತ್ರುಂ ಮೃತಿ ವ್ಯಯಮ್ । ಸ್ವರಾಶೇರ್ಮನ್ವರಾಶ್ಯಂತಂ ಗಣನೀಯಂ ವಿವಕ್ಷಣೈಃ” । ಯದಾ ತು ಸ್ವರಾಶೇರಜ್ಞಾನಂ ತದಾ ಸಾಧಕಾನಾಮಾಶ್ವಕರಸಂಬಂಧಿನಂ ರಾಶಿಂ ಗೃಹೀತ್ವಾ ಗಣಯೇತ್ । ಇತಿ ಆಗಮಕಲ್ಪದ್ರುಮಃ ।

(3) ನಕ್ಷತ್ರಚಕ್ರದಲ್ಲಿ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಿಗೂ ಸೇರಿದ ವರ್ಣಗಳ ಮತ್ತು ದೇವ ಮನುಷ್ಯ ಮತ್ತು ರಾಕ್ಷಸ ಗಣಗಳಿಗೆ ಸೇರಿದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ವಿವರವನ್ನು ಕೊಟ್ಟಿದೆ. (1) ಅ ಆ ಅಶ್ವಿನಿ, ಎ ಮೃಗಶಿರ್ಷ, ಒ ಒ ಆಶ್ವಿನ್, ಕ ಪುಷ್ಯ, ಖ ಖ ಹಸ್ತ, ಙ ಸ್ವಾತಿ, ತ ಶ ಭ ಅಶ್ವಿನ್, ಮ ಶ್ರವಣ, ಅಂ ಅಃ ಲ ಖ ರೇವತಿ—ಇವು ದೇವಗಣ. (2) ಇ ಭರಣಿ, ಋ ಋ ಲೃ ಲೃ ರೋಹಿಣಿ, ಏ ಆದ್ರಾಪ, ಚ ಪೂರ್ವಫಲ್ಗುನಿ, ಛ ಜ ಉತ್ತರಫಲ್ಗುನಿ, ಬ ಪೂರ್ವಾಷಾಢ, ಭ ಉತ್ತರಾಷಾಢ, ವ ಶ ಪೂರ್ವಾಭಾದ್ರ, ಷ ಸ ಹ ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರ—ಇವು ಮಾನುಷಗಣ. (3) ಔ ಉತ್ತರಾಷಾಢ, ಖ ಗ ಆಶ್ಲೇಷ, ಖ ಙ ಮುಖ, ಟ ಟ ಚಿತ್ತ, ಠ ಠ ವಿಶಾಖ, ಡ ಡ ಜ್ಯೇಷ್ಠ, ನ ಪ ಫ ಮೂಲ, ಯ ರ ಧನಿಷ್ಠ, ಲ ಶತಭಿಷ್ಠ—ಇವು ರಾಕ್ಷಸಗಣ. ಶರೀರತನ್ಮಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಚಕ್ರಕ ಚಕ್ರಕ (ಪುಂ) 1. ಶಾರ್ಙ್ಗಕನ ವಾದ, ಚಕ್ರಮಿವ ಕಾಯತಿ—ಕೈ (ಶಬ್ದ) “ಕಃ” (3-2-3) । 2. ಮಂಡಲದ ಹಾವು. 3. ದದ್ರೂಣ, ಹುಳುಕಡ್ಡಿ. (ನಂ) 4. ಮನಸ್ಸತ್ತ.

ಚಕ್ರಕಾರಕ ಚಕ್ರಕಾರಕ (ನಂ) 1. ನಖ, ಉಗುರು. ಚಕ್ರ ತದಾಕಾರೇಖಾಂ ಕರೋತಿ—ಙ ಕೃ (ಕರಣ) “ಙ್ಕುಲ್”

(3-1-133) । 2. ಹುಲಿಯುಗುರು ಗಿಡ. “ವ್ಯಾಲಾಯುಧಂ ವ್ಯಾಧನಖಂ ಕರಜ್ಜಂ ಚಕ್ರಕಾರಕಮ್” ಅಮಂ ।

ಚಕ್ರಕುಲ್ಪಾ ಚಕ್ರಕುಲ್ಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನರಿಹೊನ್ನೆ ಗಿಡ. ಚಕ್ರಸ್ಯ ತದಾಕಾರಸ್ಯ ಕುಲ್ಪೇವ ।

ಚಕ್ರಗಜ ಚಕ್ರಗಜ (ಪುಂ) ಹುಳುಕಡ್ಡಿಯನ್ನು ವಾಸಿಮಾಡುವ ಚಕ್ರಮರ್ಧವೃಕ್ಷ.

ಚಕ್ರಗಣ್ಡು ಚಕ್ರಗಣ್ಡು (ಪುಂ) ಚಕ್ರಕಾರದ ದಿಂಬು. ಚಕ್ರಮಿವ ಗಣ್ಡುಃ ।

ಚಕ್ರಗತಿ ಚಕ್ರಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಿರುಗಣೆ, ಚಕ್ರದಂತೆ ತಿರುಗು ವುದು, ಪರ್ಯಾಯ, ಸರದಿ. ಚಕ್ರಮಿವ ಗತಿಃ ।

ಚಕ್ರಗದಾಧರ ಚಕ್ರಗದಾಧರ (ಪುಂ) ಮನಸ್ಸತ್ತಾತ್ಮಕ ವಾದ ಚಕ್ರವನ್ನೂ ಬುದ್ಧಿಶಕ್ತಾತ್ಮಕವಾದ ಗದೆಯನ್ನೂ ಧರಿಸಿರುವ ಪರಮಾತ್ಮ. “ಮನಸ್ತತ್ತ್ವಾತ್ಮಕಂ ಚಕ್ರಂ ಬುದ್ಧಿ-ತತ್ತ್ವಾತ್ಮಿಕಂ ಗದಾಮ್ । ಧಾರಯನ್ ಲೋಕರಕ್ಷಾರ್ಥಂ ಗುಪ್ತಶ್ಚಕ್ರಗದಾ-ಧರಃ” । ಚಕ್ರಗದೇ ತದ್ಗುಲಕ್ಷಯಾಣಿ ಚ ಪಂಚಶಕ್ತಿಮಯದಿವ್ಯಾಯು-ಧಾನಿ ಧರತಿ—ಧೃಜ್ (ಧಾರಣ) “ಅಚ್” (3-1-134) । “ಯಃ ಶಕ್ತಿಮದ್ವಿವ್ಯಹೇತಿಃ ಸ ಸ್ಯಾಚ್ಚಕ್ರಗದಾಧರಃ” ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ । “ಗುಹ್ಯೋ ಗಂಭೀರೋ ಗಹನೋ ಗುಪ್ತಶ್ಚಕ್ರಗದಾಧರಃ” ವಿಂ ಸಂ ।

ಚಕ್ರಗುಚ್ಛ ಚಕ್ರಗುಚ್ಛ (ಪುಂ) ಅಶೋಕವೃಕ್ಷ. ಚಕ್ರಮಿವ ಗುಚ್ಛೋಽಸ್ಯ ।

ಚಕ್ರಚರ ಚಕ್ರಚರ (ಪುಂ) 1. ಕಪಟೋಪಾಯದಿಂದ ಜೀವಿ ಸುವ ಗುರುಡಿಗಾರ, ಐಂದ್ರಜಾಲಿಕ, ಯಕ್ಷಿಣಿಗಾರ. ಚಕ್ರೇಣ ಕಪಟೋಪಾಯೇನ ಚರತಿ—ಚರ (ಗತಿಭಕ್ಷಣಯೋಃ) “ಅಚ್” (3-1-134) । 2. ಗುಂಪುಗುಂಪಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವ ಪ್ರಾಣಿಗಳು.

ಚಕ್ರಚಾರಿನ್ ಚಕ್ರಚಾರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಚಕ್ರದಿಂದ ಸಂಚರಿ ಸುವ ರಥ. ಚಕ್ರೇಣ ಚರತಿ—ಚರ (ಗತೌ) “ಗಿಣಿಃ” (3-2-64) । “ವಿಧಿರೇಕಕಚಕ್ರಚಾರಿಣಂ ಕಿಮು ನಿರ್ಮಿಸತಿ ಮಾನ್ಮಥಂ ರಥಮ್” ನೈಷಂ 2-36 । 2. ಮಂಡಲದೊಳಗೆ ಸಂಚರಿಸುವ, ಒಂದು ಪ್ರಾಂತದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. 3. ಒಂದು ವೃತ್ತದೊಳಗೆ ಸಂಚರಿಸುವ.

ಚಕ್ರಜೀವಕ ಚಕ್ರಜೀವಕ (ಪುಂ) ಕುಲಾಲ, ಕುಂಬಾರ. ಚಕ್ರೇಣ ಜೀವತಿ—ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣ) “ಙ್ಕುಲ್” (3-1-133) । “ಗಿಣಿಃ” (3-1-134) । —ಜೀವಿನ್ —ಜೀವಿನ್.

ಚಕ್ರತೀರ್ಥ ಚಕ್ರತೀರ್ಥ (ನಂ) ಪ್ರಭಾಸಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ತೀರ್ಥ. ಚಕ್ರೇಣ ಸುದರ್ಶನೇನ ತತ್ಕಾಲೇನ ಕೃತಂ



1. ತೀರ್ಥಮ್ | ದೇವಾಸುರರ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ವಿಷ್ಣುವು ದೈತ್ಯರನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ರಕ್ತಮಯವಾದ ತನ್ನ ಚಕ್ರವನ್ನು ಇಲ್ಲಿ ತೋಳೆದುಂದಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ “ಚಕ್ರತೀರ್ಥ”ವೆಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು. “ಪುರಾ ದೇವಾಸುರೇ ಯುದ್ಧೇ ಹತ್ವಾ ದೇಶಾನ್ ಜನಾರ್ದನಃ | ಚಕ್ರಂ ಪ್ರಕ್ಷಾಲಯಾಮಾಸ ತತ್ರ ವೈ ರಕ್ತರಂಜಿತಮ್ | ಅಷ್ಟಕೋಟಿ ಸ್ತು ತೀರ್ಥಾನಿ ತತ್ರಾನೀಯ ಸ್ವಯಂ ಹರಿಃ | ತೀರ್ಥೇ ಪ್ರಕ್ಷಾಲಯಾಮಾಸ ಶುದ್ಧಿ ಕೃತ್ವಾ ಸುದರ್ಶನೇ | ತೀರ್ಥಸ್ಯ ಚಕ್ರನಾಮಾಪಿ ಚಕ್ರತೀರ್ಥಮಿತಿ ಸ್ಮೃತಮ್” ಸ್ಕಾಂದಂ | “ಭಾಗೀರಥೀಪರಿಸರಾಲಂಕಾರಭೂತೇ ಚಕ್ರತೀರ್ಥೇ ಭೀಮಾಂಸಾನುಗತಯಾ ಮತ್ಯಾ ಕಥಂಚಿದ್ವಾರ್ಯಮಾಣಪ್ರಾಣೋ ವಿವೇಕಃ ಉಪನಿಷದ್ವೇಷಾಃ ಸಂಗಮಾರ್ಥ ತಪಸ್ಯತಿ” ಪ್ರಬೋಧಂ ೪ |

ಚಕ್ರತೆಲ ಚಕ್ರತೈಲ (ನಂ) ಚಕ್ರಮರ್ಧವೃಕ್ಷದ ಫಲದಿಂದ ತಯಾರಾದ ಒಂದು ತೈಲ. ಚಕ್ರಸ್ಯ ಚಕ್ರಮರ್ಧಫಲಸ್ಯ ತೈಲಮ್ | “ಕೃತ್ವಾ ಸೂಕ್ಷ್ಮೇಣ ನೇತ್ರೇಣ ಚಕ್ರತೈಲೇನ ತರ್ಪಯೇತ್” ಸುಶ್ರುತಂ |

ಚಕ್ರದಂಟು ಚಕ್ರದಂಷ್ಟ (ಪುಂ) ಸೂಕರ, ಹಂದಿ. ಚಕ್ರಮಿವ ದಂಟಾಸ್ಯ |

ಚಕ್ರದತ್ತ ಚಕ್ರದತ್ತ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಗ್ರಂಥಕಾರ, ಚರಕ ಸಂಹಿತೆಗೆ ಆಯುರ್ವೇದದೀಪಿಕೆಯೆಂಬ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನವನ್ನು ಬರೆದ ಒಬ್ಬ ಪಂಡಿತ. “ನರದತ್ತಗುರುದ್ವಿಷ್ಟಚರಕಾರ್ಥಾನುಗಾಮಿನಿ | ಕ್ರಿಯತೇ ಚಕ್ರದತ್ತೇನ ಟೀಕಾಯುರ್ವೇದದೀಪಿಕಾ” ಚರಕವ್ಯಾಖ್ಯಾ | ಇವನಿಗೆ ಚಕ್ರವಾಣಿದತ್ತನೆಂಬ ಹೆಸರೂ ಉಂಟು. (ನಂ) 2. ಚಕ್ರವಾಣಿದತ್ತನಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಒಂದು ವೈದ್ಯಗ್ರಂಥ.

ಚಕ್ರದೇವ ಚಕ್ರದೇವ (ಪುಂ) ಯದುಮಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. “ಅಷ್ಟಾದಶಸಹಸ್ರಾಣಿ ಭ್ರಾತೃಣಾಂ ಸಂತಿ ನಃ ಕುಲೇ | ಆಹುಕಸ್ಯ ಶತಂ ಪುತ್ರಾ ಏಕೈಕಸ್ತ್ರಿದಶಾವರಃ | ಚಾರುದೇಣಃ ಸಹ ಭ್ರಾತ್ರಾ ಚಕ್ರದೇವಶ್ಚ ಸಾತ್ಯಕಿಃ | ಅಹಂ ಚ ರೋಹಿಣೀಯಶ್ಚ” ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೧೪-೫೯-೬೦ |

ಚಕ್ರದ್ವಾರ ಚಕ್ರದ್ವಾರ (ಪುಂ) ಒಂದು ದರ್ವಜೆ. ಚಕ್ರಮಿವ ದ್ವಾರಮಸ್ಯ | “ದ್ರೋಣಶ್ಚ ಶತಶೃಂಗಶ್ಚ ಚಕ್ರದ್ವಾರಶ್ಚ ಪರ್ವತಃ” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೩೨೫-೧೮೪ |

ಚಕ್ರಧನುಸ್ ಚಕ್ರಧನುಸ್ (ಪುಂ) ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿ. ಈ ಮಹರ್ಷಿಯು ಸೂರ್ಯನಿಂದ ಜನಿಸಿದುದಾಗಿ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ, ಸಾಗರಪುತ್ರರು ಯಾಗಾಶ್ವವನ್ನು ಹುಡುಕಲು ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಈ ಮಹರ್ಷಿಯ ಕೋಪಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರರಾದರು. “ಅತ್ರ ಚಕ್ರಧನುರ್ನಾಮ ಸೂರ್ಯಜಾತೋ ಮಹಾನೃಷಿಃ | ವಿದುರ್ಯ ಕಪಿಲಂ ದೇವಂ ಯೇನಾರ್ತಾಃ ಸಗರಾತ್ಮಜಾಃ” ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೦೯-೧೮ |

ಚಕ್ರಧರ ಚಕ್ರಧರ (ಪುಂ) 1. ಚಕ್ರಾಯುಧವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ ವಿಷ್ಣು. ಧರತಿ - ಧೃ (ಧಾರಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) |

ಚಕ್ರಸ್ಯ ಧರಃ | “ವಿಗಾಹಿತುಂ ಶ್ರೀಮಹಿಮಾನುರೂಪಂ ಪ್ರಚಕ್ರಮೇ ಚಕ್ರಧರಪ್ರಭಾವಃ” ರಘುಂ ೧೬-೫೫ | 2. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. “ವಿಷ್ಣುಸರ್ಪಂ ಚಕ್ರಧರಂ” ನಾನಾರ್ಥರಂ |

ಚಕ್ರಧರ್ಮನ್ ಚಕ್ರಧರ್ಮನ್ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ. “ವಿಜ್ಞಾಪರಾವಿಶ್ವೇವ ಚಕ್ರಧರ್ಮಾ ಸಹಾನುಜಃ | ಉಪಾಚರತಿ ತತ್ರ ಸ್ಮ ಧನಾನಾಮೀಶ್ವರಂ ಪ್ರಭುಮ್” ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೧೦-೨೮ |

ಚಕ್ರಧಾರಣ ಚಕ್ರಧಾರಣ (ನಂ) 1. ಚಕ್ರವನ್ನು ಧರಿಸುವುದು, ಚಕ್ರಾಯುಧವನ್ನು ಹಿಡಿಯುವುದು. ಚಕ್ರಸ್ಯ ಧಾರಣಮ್ | 2. ಗಾಡಿಯ ಚಕ್ರವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವುದು. 3. ಗಾಡಿಯ ಚಕ್ರವನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವುದು. 4. ದೂರಿಪಟ್ಟಿ, ಚಕ್ರವನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವ ಕಬ್ಬಿಣದ ಪಟ್ಟಿ. ಚಕ್ರಂ ಧಾರ್ಯತೇಜೇನ |

ಚಕ್ರಧಾರಾ ಚಕ್ರಧಾರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಕ್ರದ ಅಗ್ರಭಾಗ, ಗಾಲಿಯ ಅಂಚು. ಚಕ್ರಸ್ಯ ಧಾರಾ |

ಚಕ್ರನಖ ಚಕ್ರನಖ (ಪುಂ) ವ್ಯಾಘ್ರನಖ, ಹುಲಿಯುಗುರು ಗಿಡ, ತೆಗಚ್ಚಿ ಗಿಡ.

ಚಕ್ರನದೀ ಚಕ್ರನದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಡಕಿ ನದಿ. ಚಕ್ರಪ್ರಧಾನಾ ನದೀ |

ಚಕ್ರನಾಮಿ ಚಕ್ರನಾಮಿ (ಪುಂ) ಚಕ್ರದ ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಗುಂಬ. ಚಕ್ರಸ್ಯ ನಾಮಿಃ | “ಯಾವತ್ಯಸ್ತು ಶಿರಾಃ ಕಾಯೇ ಸಂಭವಂತಿ ಶರೀರಿಣಾಮ್ | ನಾಮ್ಯಾಂ ಸರ್ವಾ ನಿಬದ್ಧಾಸ್ತಾಃ ಪ್ರತನ್ವಂತಿ ಸಮಂತತಃ | ನಾಮಿಸ್ಥಾಃ ಪ್ರಾಣಿನಾಂ ಪ್ರಾಣಾಃ ಪ್ರಾಣಾನಾಮಿ-ವ್ಯುಪಾಸ್ಥಿತಾಃ | ಸಿರಾಭಿರಾವೃತಾ ನಾಮಿಶ್ಚಕ್ರನಾಮಿರಿವಾರಕಃ” ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೭-೪, ೫ |

ಚಕ್ರನಾಮನ್ ಚಕ್ರನಾಮನ್ (ನಂ) 1. ಮುಟ್ಟಿಕದಾತು. 2. ಚಕ್ರವಾಕಪಕ್ಷಿ.

ಚಕ್ರನಾಯಕ ಚಕ್ರನಾಯಕ (ಪುಂ) 1. ಸೇನಾಪತಿ. 2. ಗುಂಪಿನ ಯಜಮಾನ. ಚಕ್ರಂ ಸೈನ್ಯಂ ಸಮೂಹಂ ವಾ ನಯತಿ-ಣಿವ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) |

ಚಕ್ರಪರಿವ್ಯಾಧ ಚಕ್ರಪರಿವ್ಯಾಧ (ಪುಂ) ಅರಗ್ವಧ ವೃಕ್ಷ. ಚಕ್ರಪರ್ಣಿ ಚಕ್ರಪರ್ಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನರಿಹೊನ್ನೆ ಗಿಡ. ಚಕ್ರಮಿವ ಪರ್ಣಮಸ್ಯಾಃ “ಡೀಫ್” (೪-೧-೬೪) |

ಚಕ್ರಪಾಣಿ ಚಕ್ರಪಾಣಿ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಚಕ್ರಂ ಪಾಣಾವಸ್ಯ | “ಚಕ್ರಪಾಣಿವಿಜಯಾಯ ಚಕ್ರಿಣಾತ್ ಭೀಮಘೋಷ-ದಲಿತಾಖಿಲಶ್ರುತಃ” ಯಾದಂ ೧೭-೫೩ |

ಚಕ್ರಪಾಣಿದತ್ತ ಚಕ್ರಪಾಣಿದತ್ತ (ಪುಂ) ಚಕ್ರದತ್ತವೆಂಬ ಒಂದು ವೈದ್ಯಗ್ರಂಥವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಪಂಡಿತ.

ಚಕ್ರಪಾದ ಚಕ್ರಪಾದ (ಪುಂ) ರಥ, ಗಾಡಿ, ಬಂಡಿ. ಚಕ್ರಂ ಪಾದ ಇವಾಸ್ಯ |



**ಚಕ್ರಪಾಲ ಚಕ್ರಪಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಸೇನಾಪತಿ, ಸೇನೆಯನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವವನು. ಚಕ್ರ ಪಾಲಯತಿ—ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿच् "ಅನ್" (೩-೨-೧)। 2. ಮಂಡಲಾಧಿಕಾರಿ, ಜಿಲ್ಲಾಧಿಕಾರಿ. ಚಕ್ರ ಗ್ರಾಮಸಮೂಹಂ ಪಾಲಯತಿ—ಪಾಲ+ಣಿच् "ಅನ್"।

**ಚಕ್ರಪಾಲನ ಚಕ್ರಪಾಲನ** (ನಂ) 1. ರಾಜ್ಯವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವುದು. 2. ಸೇನೆಯನ್ನು ಕಾಪಾಡುವುದು. ಚಕ್ರಸ್ಯ ಪಾಲನಮ್।

**ಚಕ್ರಪುಷ್ಕರಿಣಿ ಚಕ್ರಪುಷ್ಕರಿಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾರಾಣಸೀ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ದೊಡ್ಡ ಸರೋವರ. ಇದಕ್ಕೆ "ಮಣಿಕರ್ಣಿಕೆ" ಯೆಂಬ ಹೆಸರು.

**ಚಕ್ರಪಲ ಚಕ್ರಪಲ** (ನಂ) ಶುದ್ಧಿಯಲ್ಲಿ ಚಕ್ರಾಕಾರವಾಗಿರುವ ಒಂದು ಆಯುಧ. ಚಕ್ರಮಿವ ಪಲಮಗ್ರಂ ಯಸ್ಯ।

**ಚಕ್ರಭೃತ್ ಚಕ್ರಭೃತ್** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಚಕ್ರಂ ವಿಭಾತಿ—ಓ ಭೃತ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬)। (ವಿಂ) 2. ಚಕ್ರವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ.

**ಚಕ್ರಭೇದಿನಿ ಚಕ್ರಭೇದಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ಚಕ್ರವಾಹಪಕ್ಷಿ ದಂಪತಿಗಳನ್ನು ಬೇರ್ಪಡಿಸುವ) ರಾತ್ರಿ.

**ಚಕ್ರಭೋಗ ಚಕ್ರಭೋಗ** (ಪುಂ) ಗ್ರಹಗಳು ಒಂದು ರಾಶಿಯಿಂದ ಸಂಚರಿಸಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ಪುನಃ ಆ ರಾಶಿಗೆ ಒಂದು ಸೇರುವುದು, ಗ್ರಹಗಳು ಹನ್ನೆರಡು ರಾಶಿಗಳಲ್ಲೂ ಒಂದು ಸಲ ಸಂಚರಿಸುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ "ಪರಿವರ್ತಃ" ಎಂಬ ಸಂಜ್ಞೆ.

**ಚಕ್ರಭ್ರಮ ಚಕ್ರಭ್ರಮ** (ಪುಂ) 1. ಕತ್ತಿಗಳಿಗೆ ಸಾಣೆ ಹಿಡಿಯುವ ಚಕ್ರಾಕಾರದ ಯಂತ್ರ. ಚಕ್ರಮಿವ ಭ್ರಮತಿ—ಭ್ರಮ (ಚಲನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಆರೋಪ್ಯ ಚಕ್ರಭ್ರಮಮುಷ್ಣತೇಗಾಸ್ತ್ವಪ್ತೇವ ಯತನೋಲ್ಲಿಖಿತೋ ವಿಭಾತಿ" ರಘುಂ ೬-೩೨। 2. ಅರೆಯುವ ಕಲ್ಲು, ಬೀಸುವ ಕಲ್ಲು.

**ಚಕ್ರಮರ್ದ(ಕ) ಚಕ್ರಮರ್ದ(ಕ)** (ಪುಂ) ತಗಚ್ಚಿಗಿಡ. ಚಕ್ರಂ ಚಕ್ರಾಕಾರಂ ಹೃದ್ರೋಗಂ ಮರ್ದಯತಿ—ಮರ್ದ (ಕ್ಷೋಧೆ) "ಅನ್" (೩-೨-೧)। ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕನ್" (೪-೩-೭೪)। "ದ್ರೋಣ-ಶ್ಚಕ್ರಮರ್ದಕಃ" ಅಮಂ।

**ಚಕ್ರಮುಖ ಚಕ್ರಮುಖ** (ಪುಂ) ಸೂಕರ, ವರಾಹ, ಹಂದಿ. ಚಕ್ರಮಿವ ವರ್ತುಲಂ ಮುಖಮಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್"। -ಮುಖೀ. "ಚಕ್ರಮುಖಃ ಸೂಚಿರೋನಾ ವರಾಹಃ ಸ್ಥೂಲನಾಸಿಕಃ" ಹಾರಾಂ।

**ಚಕ್ರಮುಸಲ ಚಕ್ರಮುಸಲ** (ಪುಂ) ಚಕ್ರಾಯುಧ ಮತ್ತು ಮುಸಲಾಯುಧಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ಯುದ್ಧ. ಚಕ್ರಂ ಚಕ್ರಮುಸಲಶ್ಚ ಸಾಧನತಯಾಸ್ತೃತ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭)। "ತತ್ರ ಚಕ್ರಂ ಹಲಂ ಚೈವ ಗದಾಂ ಕೌಮೋದಕೀಂ ತಥಾ। ಸೀನಂದಂ ಮುಸಲಂ ಚೈವ ವೇಣವಾನ್ಯಾಯುಧಾನಿ ಚ। ದರ್ಶಯಿಷ್ಯಂತಿ ಸಂಗ್ರಾಮೇ

ಪಾಸ್ಯಂತಿ ಚ ಮಹೀಕ್ಷಿತಾಮ್। ಸುಖಿರಂ ಕಾಲಯುಕ್ತಾನಾಂ ವರ್ತುಮಿಃ ಕಾಲಸನ್ನಿಭಃ। ಸ ಚಕ್ರಮುಸಲೋ ನಾಮ ಸಂಗ್ರಾಮಃ ಕೃಷ್ಣ ವಿಶ್ರುತಃ" ಹರಿವಂ।

**ಚಕ್ರಯಾನ ಚಕ್ರಯಾನ** (ನಂ) ಚಕ್ರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ರಥ, ಗಾಡಿ ಬಂಡಿ ಮೊದಲಾದುವು. ಚಕ್ರಯುಕ್ತಂ ಯಾನಮ್। ಯಾತ್ರೈ ಉತ್ಸವ ಮೊದಲಾದ ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲಿ ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವ ರಥ, ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಉಪಯೋಗವಿಲ್ಲದ ರಥ. "ಅಸೌ ಪುಣ್ಯರಥಶ್ಚಕ್ರಯಾನಂ ನ ಸಮರಾಯ ಯತ್" ಅಮಂ।

**ಚಕ್ರರಕ್ಷ(ಕ) ಚಕ್ರರಕ್ಷ(ಕ)** (ಪುಂ) 1. ಸೇನೆಯನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವ ಸೇನಾಪತಿ. 2. ಮಂಡಲಾಧಿಪತಿ, ಜಿಲ್ಲೆಯ ಅಧಿಕಾರಿ. ಚಕ್ರಂ ಸೇನಾಂ ಮಂಡಲಂ ವಾ ರಕ್ಷತಿ—ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ವಾ। "ಚಕ್ರರಕ್ಷೌ ತು ಭೀಮಸ್ಯ ಮಾದ್ರಿಪುತ್ರೌ ಮಹಾಶ್ರುತೌ" ಭಾಂ ಭೀಷಮಂ ೧೯-೨೧।

**ಚಕ್ರರಥ ಚಕ್ರರಥ** (ಪುಂ) ವರಾಹ, ಹಂದಿ, ಸೂಕರ. ಚಕ್ರಮಿವ ವರ್ತುಲೋ ರಥೋಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। -ರಥೀ-ರಥೀ.

**ಚಕ್ರವತ್ ಚಕ್ರವತ್** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಪರ್ವತ, ಚಕ್ರಾಕಾರದ ಒಂದು ಬೆಟ್ಟ. "ತತ್ರೈವ ಚಕ್ರಮದೃಶಂ ಚಕ್ರವತ್ ಮಹಾಚಲಮ್। ಸಹಸ್ರಕೂಟಂ ವಿಪುಲಂ ಭಗವಾನ್ ಸನ್ಯವೇಶಯತ್" ಹರಿವಂ। 2. ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಚಕ್ರಂ ಚಕ್ರಾಯುಧಮಸ್ತೃತ್ಯ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪)। (ವಿಂ) 3. ಚಕ್ರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. 4. ಚಕ್ರಾಯುಧದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 5. ಚಕ್ರಾಕಾರದ ಗಾಣವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ (ಗಾಣಿಗ). "ಸುನಾಚಕ್ರಧ್ವಜವತಾಂ ವೇಶೇನೈವ ಚ ಜೀವತಾಮ್" ಮನುಂ ೪-೮೪।

**ಚಕ್ರವರ್ತಿನ ಚಕ್ರವರ್ತಿನ** (ಪುಂ) 1. ಸಾರ್ವಭೌಮ, ಸಮುದ್ರದ ಪರಿಗಿನ ಭೂಮಂಡಲದ ಅಧಿಪತಿ. ಚಕ್ರಂ ಭೂಮಂಡಲೇ ವರ್ತಿಸುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ—ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಣಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮)। "ಪುತ್ರಮೇವಂಗುಣೋಪೇತಂ ಚಕ್ರವರ್ತಿನಮಾಪ್ನುಹಿ" ಶಾಕುಂ ೧-೧೧। 2. ಚಕ್ರೋತ್ತಮ ಸೊಪ್ಪು.

**ಚಕ್ರವರ್ತಿನಿ ಚಕ್ರವರ್ತಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುಳ್ಳುಗಸೆ ಗಿಡ. ಚಕ್ರಮಿವ ವರ್ತಿಸುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯಾಃ—ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಣಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮)। 2. ಜಟಾಮಾಂಸಿ. 3. ಅರಗು.

**ಚಕ್ರವಾಕ ಚಕ್ರವಾಕ** (ಪುಂ) ಚಕ್ರವಾಹಪಕ್ಷಿ. ಚಕ್ರವಾಹೋ-ನೋಚ್ಯತೇ—ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) ಕರ್ಮಂ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೯)। "ಪರಸ್ಪರಾಕ್ರಂದಿನಿ ಚಕ್ರವಾಕಯೋಃ ಪುರೋ ವಿಯುಕ್ತೇ ಮಿಥುನೇ ಕೃಪಾವತೀ" ಕುಮಾಂ ೪-೨೬। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। -ವಾಕೀ--ವಾಕೀ. "ತಾಂ ಜಾನೀಯಾಃ ಪರಿಮಿತ-



ಕಥಾಂ ಜೀವಿತಂ ಮೇ ದ್ವಿತೀಯಂ ದೂರಭೂತೇ ಮಯಿ ಸಹಚರೇ ಚಕ್ರವಾಕೋ-  
ಮಿವೇಕಾಮ್" ಮೇಘಂ ೨-೨೦ ।

ಚಕ್ರವಾಡ ಚಕ್ರವಾಟ (ಪುಂ) 1. ಸೀಮೆ, ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ.  
2. ದೀಪದ ಕಂಬ. 3. ಕ್ರಿಯಾರೋಹ, ಕಾರ್ಯದ  
ಪ್ರಾರಂಭ. ಚಕ್ರಸ್ಯೇವ ವಾಡೋತ್ರಾ "ಚಕ್ರವಾಡ: ಕ್ರಿಯಾರೋಹೇ  
ಪರ್ಯಂತೇ ಚ ಶಿಖಾತರೌ" ಮೇದಿಂ ।

ಚಕ್ರವಾಡ (ಲ) ಚಕ್ರವಾಡ (ಲ) (ಪುಂ) 1. ಲೋಕಾರೋಹ  
ಪರ್ವತ, ಭೂಮಿಯನ್ನು ಸುತ್ತಿಕೊಂಡಿರುವ ಒಂದು ಬೆಟ್ಟ.  
ಚಕ್ರಂ ಭೂಮಂಡಲಂ ವಲತೇ-ವಲ (ವೇಷ್ಟನೆ) "ಅಣ್" (೩-೨-೧) ।  
ಡಲಯೋರಭೇದ: । (ನಂ) 2. ಮಂಡಲ, ವರ್ತುಲ. 3. ಮಂಡ  
ಲಾಕಾರದ ವಸ್ತುಗಳ ಸಮೂಹ. "ಪ್ರಕಟಿತದಿಕ್ಚಕ್ರ-  
ವಾಲಾಂತರಾಲಮ್" ಚಂ ಭಾಂ । 4. ಗುಂಪು, ಸಮೂಹ.  
"ಪ್ರಕಟಯತಿ ಕಿಮುಚ್ಚೇರಚಿಪಾಂ ಚಕ್ರವಾಲಮ್" ರತ್ನಾಂ ೪-೧೬ ।  
"ಚಕ್ರವಾಡಂ ಗಣಂ ಚಕ್ರವಾಡೋದ್ರೌ ಚಕ್ರವಾಲವತ್" ಹೇಮಂ ।

ಚಕ್ರವಾತ ಚಕ್ರವಾತ (ಪುಂ) ಸುಖಕರಗಾಳಿ, ಸುಖಗಾಳಿ. ಚಕ್ರ-  
ಮಿವ ವಾತ: । "ದೇವೋ ನಾಮ್ನಾ ತೃಣಾವರ್ತ: ಕಂಸಭೃತ್ಯ: ಪ್ರವೋದಿತ: ।  
ಚಕ್ರವಾತಸ್ವರೂಪೇಣ ಜಹಾರಾಸೀನಮರ್ಭಕಮ್" ಭಾಗಂ ೭-೧೮ ।

ಚಕ್ರವೃದ್ಧಿ ಚಕ್ರವೃದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಕ್ರಬಡ್ಡಿ, ಬಡ್ಡಿಯ  
ಮೇಲೆ ಹಾಕುವ ಬಡ್ಡಿ. ಚಕ್ರಮಿವ ವೃದ್ಧಿ: । "ಕಾಯಿಕಾ  
ಕಾಯಸಂಯುಕ್ತಾ ಮಾಸಗ್ರಾಹ್ಯಾ ಚ ಕಾಲಿಕಾ । ವೃದ್ಧೇವೃದ್ಧಿಶ್ಚಕ್ರವೃದ್ಧಿ:  
ಕಾರಿತಾ ಕೃಣಿಣಾ ಕೃತಾ" ಬೃಹಸ್ಪತಿ: । "ಚಕ್ರವೃದ್ಧಿ:  
ಕಾಲವೃದ್ಧಿ: ಕಾರಿತಾ ಕಾಯಿಕಾ ಚ ಯಾ" ಮನುಂ ೮-೧೫೩ ।  
2. ಗಾಡಿಯ ಬಾಡಿಗೆ. ಚಕ್ರಂ ಚಕ್ರವತ್ ಶಕಟಾದಿ, ತನ್ನಿಮಿತ್ತಾ  
ವೃದ್ಧಿ: । "ಚಕ್ರವೃದ್ಧಿ ಸಮಾರೂಢೋ ದೇಶಕಾಲವ್ಯವಸ್ಥಿತ: । ಅತಿ-  
ಕ್ರಾಮನ್ ದೇಶಕಾಲೌ ನ ತತ್ಫಲಮವಾಪ್ನುಯಾತ್" ಮನುಂ ೮-೧೬೬ ।

ಚಕ್ರವ್ಯೂಹ ಚಕ್ರವ್ಯೂಹ (ಪುಂ) ಚಕ್ರಾಕಾರದ ಸೇನಾ ನಿವೇಶ,  
ಚಕ್ರದಂತೆ ವರ್ತುಲವಾಗಿ ನಿಲ್ಲಿಸುವ ಸೇನೆಗಳ ಸಮೂಹ.  
ಚಕ್ರಮಿವ ವ್ಯೂಹ: । ಮಹಾಭಾರತದ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಅಭಿಮನ್ಯು  
ವಿನ ವಧೆಗಾಗಿ ನಿರ್ಮಿತವಾಗಿತ್ತು ಈ ಚಕ್ರವ್ಯೂಹ.  
"ಚಕ್ರ (ಪದ್ಮ) ವ್ಯೂಹೋ ಮಹಾರಾಜ ಹೃದಯಾಚಾರ್ಯಣಾಭಿಕಲ್ಪಿತ: "  
ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೩೪-೨ ।

ಚಕ್ರಸಂಜ್ಞ ಚಕ್ರಸಂಜ್ಞ (ಪುಂ) 1. ಚಕ್ರವಾಕಪಕ್ಷಿ. 2. ತವರ,  
ಕಲಾಯಿ. ಚಕ್ರಸ್ಯ ಸಂಜ್ಞಾ ಯಸ್ಯ ।

ಚಕ್ರಸಂಕಥ ಚಕ್ರಸಂಕಥ (ವಿಂ) ಚಕ್ರದಂತಿರುವ ತೊಡೆಯುಳ್ಳ  
ವನು. ಚಕ್ರಮಿವ ಸಂಕಥ ಯಸ್ಯ "ಷಕ್" (೪-೪-೧೧೩) ।

ಚಕ್ರಸಾಹಸ್ಯ ಚಕ್ರಸಾಹಸ್ಯ (ಪುಂ) ಚಕ್ರವಾಕಪಕ್ಷಿ. ಚಕ್ರೇಣ  
ಸಮಾನಾಮಾಹ್ವಾಂ ಯಾತಿ-ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩) ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಠಾಪ್" । -ಸಾಹಸ್ಯಾ -ಸಾಹಸ್ಯಯಾ.

ಚಕ್ರಹಸ್ತ ಚಕ್ರಹಸ್ತ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀವಿಷ್ಣು. ಚಕ್ರಂ ಹಸ್ತೇ  
ಯಸ್ಯ । (ವಿಂ) 2. ಚಕ್ರವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ.

ಚಕ್ರಾಜ್ಞ ಚಕ್ರಾಜ್ಞ (ಪುಂ) 1. ಹಂಸಪಕ್ಷಿ. ಚಕ್ರಮಿವಾಜ್ಞಮಸ್ಯ ।  
2. ಚಕ್ರವಾಕಪಕ್ಷಿ. 3. ರಥ. ಚಕ್ರಮಜ್ಞಮಸ್ಯ । "ಚಕ್ರಾಜ್ಞೋ  
ಮಾನಸಿಕಸಿ" ಮೇದಿಂ ।

ಚಕ್ರಾಜ್ಞಿ ಚಕ್ರಾಜ್ಞಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಹಂಸ. ಚಕ್ರ-  
ಮಿವಾಜ್ಞಮಸ್ಯಾ: । "ಚಕ್ರಾಜ್ಞಿಮದಪಶ್ಯತೋಹರವಲಚ್ಛಂಪಾ-  
ಸಮುನ್ಮೇಷಣಿ:" ಚಂ ಭಾಂ । 2. ಕಟುಕರೋಹಿಣಿ.  
3. ಮಂಜಪ್ಪ. "ಚಕ್ರಾಜ್ಞಿ ಕಟುರೋಹಿಣ್ಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ ।

ಚಕ್ರಾಟ ಚಕ್ರಾಟ (ಪುಂ) 1. ವಿಷವೈದ್ಯ, ಗಾರುಡಿಗಾರ.  
2. ಧೂರ್ಜ, ಕಪಟಿ, ಮೋಸಗಾರ. 3. ದೀನಾರವೆಂಬ  
ನಾಣ್ಯ. ಚಕ್ರಂ ಚಕ್ರಾಕಾರಮಟತಿ - ಅಟ (ಗತೌ) "ಅಣ್" (೩-೨-೧) ।  
"ಚಕ್ರಾಟೋ ವಿಷವೈದ್ಯೇಽಪಿ ಧೂತದೀನಾರಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ ।

ಚಕ್ರಾಧಿವಾಸಿನ್ ಚಕ್ರಾಧಿವಾಸಿನ್ (ಪುಂ) ನಾರಂಗ ವೃಕ್ಷ,  
ಹೇರಿಕೆ ಗಿಡ, "ನಾಗರಜ್ಜಕೇ । ಚಕ್ರಾಧಿವಾಸಿ ನಾಗರಜ್ಜ:"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಚಕ್ರಾಯುಧ ಚಕ್ರಾಯುಧ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀವಿಷ್ಣು. ಚಕ್ರಮಾಯುಧಂ  
ಯಸ್ಯ । "ಚಕ್ರಾಯುಧೇನ ಚಕ್ರೇಣ ಪಿಬತೋಽಮೃತಮೋಜಸಾ" ಭಾಂ  
ಆದಿಂ ೧೧-೭ । (ವಿಂ) 2. ಚಕ್ರಾಯುಧವನ್ನು ಹೊಂದಿ  
ರುವ.

ಚಕ್ರಾವರ್ತ ಚಕ್ರಾವರ್ತ (ಪುಂ) ಚಕ್ರದಂತೆ ಸುತ್ತುವುದು,  
ಚಕ್ರವು ತಿರುಗುತ್ತಿರುವಂತೆ ತಿರುಗುವುದು. ಚಕ್ರಸ್ಯೇವಾವರ್ತ: ।

ಚಕ್ರಾಹ್ವ ಚಕ್ರಾಹ್ವ (ಪುಂ) 1. ಚಕ್ರವಾಕಪಕ್ಷಿ. ಚಕ್ರಂ ಇತ್ಯಾಹ್ವಾ  
ಯಸ್ಯ । 2. ಚಕ್ರಮರ್ಧವೃಕ್ಷ.

ಚಕ್ರಿಕ ಚಕ್ರಿಕ (ವಿಂ) ಚಕ್ರಾಯುಧವುಳ್ಳವನು. ಚಕ್ರ-  
ಮಸ್ಯಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೪) ।

ಚಕ್ರಿನ್ ಚಕ್ರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀವಿಷ್ಣು, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಚಕ್ರಂ  
ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) । "ಸಮಾಸದತ್ಸಾದಿತ-  
ದೇವಸಂಪದ: ಪದಂ ಮಹೇಂದ್ರಾಲಯವಾಹ ಚಕ್ರಿಣ:" ಮಾಘಂ ೧-೧೧ ।  
"ಅರೋದ್ರ: ಕುಂಡಲಿ ಚಕ್ರಿ" ವಿಂ ಳಂ । 2. ಕುಲಾಲ,  
ಕುಂಬಾರ. 3. ಚಕ್ರವಾಕಪಕ್ಷಿ. 4. ಸರ್ಪ, ಹಾವು.  
5. ಸಾರ್ವಭೌಮ, ರಾಷ್ಟ್ರದ ಅಧಿಪತಿ. ಚಕ್ರಂ ರಾಷ್ಟ್ರಂ  
ಸ್ವತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) । "ಚಕ್ರಿ ಕೋಕೇ  
ಕುಲಾಲೇಽಹೌ ವೈಕುಣ್ಠೇ ಚಕ್ರವರ್ತಿನಿ" ಹೇಮಂ । 6. ಗಾಣಿಗ,  
ಗಾಣದಿಂದ ಎಣ್ಣೆ ತೆಗೆಯುವವನು. 7. ಪುರೋಹಿತ.  
"ಚಕ್ರಿಗೋ ವಿಷ್ಣುಭುಜಗಕುಲಾಲಗ್ರಾಮಯಾಜಿನ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।  
8. ಒಬ್ಬ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು. "ವೇಶ್ಯಾಂ ಗುರತಶ್ಚೋರಾತ್



(6) परि+चक्षिङ्=परिचष्टे । ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಹೇಳು. “ವೇದಪ್ರದಾನಾದಾಚಾರ್ಯ ಪಿತರಂ ಪರಿಚಕ್ಷತೇ” ಮನು. ೨-೧೭೧ ।



(7) ಪ್ರ + ಚಕ್ಷಿಙ್ = ಪ್ರಚಕ್ಷೆ | ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿ ಹೇಳು.  
“ತಂ ದೇವನಿರ್ಮಿತಂ ದೇಶಂ ಬ್ರಹ್ಮಾವರ್ತಂ ಪ್ರಚಕ್ಷತೇ” |

(8) ಪ್ರತಿ + ಚಕ್ಷಿಙ್ = ಪ್ರತಿಚಕ್ಷೆ | 1. ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಹೇಳು, ಬದಲು ಹೇಳು, ಉತ್ತರ ಹೇಳು. 2. ನೋಡು.  
“ಯದಾ ತು ಸರ್ವಭೂತೇಷು ದಾರುಣವಿಮಿವ ಸ್ಥಿತಮ್ | ಪ್ರತಿ-  
ಚಕ್ಷೀತ ಮಾಂ ಲೋಕೋ ಜಹದಾತ್ತಹರ್ಷೇವ ಕಷಮಲಮ್” ಭಾಗಂ  
೩-೯-೩೨ |

ಚಕ್ಷು:ಶ್ರವಸ್ ಚಕ್ಷು:ಶ್ರವಸ್ (ಪುಂ) ಸರ್ವ, ಹಾವು. ಚಕ್ಷುರೇವ  
ಶ್ರವೋಽಸ್ಯ ಚಕ್ಷುಷಾ ಶೃಣೋತಿ - ಶ್ರು (ಶ್ರವಣಂ) “ಅಸುನ್”  
(ಉಂ ೪-೧೮೮) ವಾ | “ತಮಾಶು ಚಕ್ಷು:ಶ್ರವಸಾಂ ಸಮೂಹಂ  
ಮನ್ತ್ರೇಣ ತಾಕ್ಷಯೋದಯಕಾರಣೇನ” ಕಿರಾಂ ೧೬-೪೨ |

ಚಕ್ಷುರಿಂದ್ರಿಯ ಚಕ್ಷುರಿಂದ್ರಿಯ (ನಂ) ಐದು ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಇಂದ್ರಿಯ, ನೇತ್ರೇಂದ್ರಿಯ.

ಚಕ್ಷುರ್ಗೋಚರ ಚಕ್ಷುರ್ಗೋಚರ (ವಿಂ) ಚಕ್ಷುರಿಂದ್ರಿಯಕ್ಕೆ  
ಗೋಚರವಾಗುವ, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸುವ. ಚಕ್ಷುಷೋ ಗೋಚರ: |

ಚಕ್ಷುನಿರೋಧ ಚಕ್ಷುನಿರೋಧ (ಪುಂ) ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಉಂಟಾಗುವ  
ತಡೆ, ನೋಟಕ್ಕೆ ಉಂಟಾಗುವ ಅಡಚಣೆ, ನೋಡಲು  
ಅಡ್ಡಿ. ಚಕ್ಷುಷೋ ನಿರೋಧ: | “ಚಕ್ಷುನಿರೋಧೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ”  
ಆಪಂ |

ಚಕ್ಷುರ್ಮಂತ್ರ ಚಕ್ಷುರ್ಮಂತ್ರ (ಪುಂ) ಕಣ್ಣು ಕಟ್ಟಿ ಮಾಯ  
ಮಾಡುವುದು, ಅಭಿಚಾರಕಾರ್ಯ, ಮಾಟ, ಶೂನ್ಯ.

ಚಕ್ಷುರ್ಮಲ ಚಕ್ಷುರ್ಮಲ (ನಂ) ಕಣ್ಣಿನ ಕೊಳೆ, ನೇತ್ರದ  
ಮಲ, ಕಣ್ಣಿನ ಗೀಜು.

ಚಕ್ಷುರ್ವರ್ಧನಿಕಾ ಚಕ್ಷುರ್ವರ್ಧನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಾಕದ್ವೀಪ  
ದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ನದಿ. “ಮಹಾನದಿ ಚ ಕೌರವ್ಯ ತಥಾ  
ಮಣಿಜಲಾ ನದಿ | ಚಕ್ಷುರ್ವರ್ಧನಿಕಾ ಚೈವ ನದಿ ಭರತಸತ್ತಮ”  
ಭಾಂ ಭೀಷಂ ೧೧-೩೩ |

ಚಕ್ಷುರ್ವಹನ ಚಕ್ಷುರ್ವಹನ (ನಂ) ಬಲಮುರಿ ಗಿಡ.

ಚಕ್ಷುರ್ವಿಷಯ ಚಕ್ಷುರ್ವಿಷಯ (ಪುಂ) 1. ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸುವ  
ರೂಪ, ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗುವದ್ರವ್ಯ. ಚಕ್ಷುಷೋ ವಿಷಯ: |  
“ಉದ್ಭೂತರೂಪಂ ನಯನಸ್ಯ ಗೋಚರೋ ದ್ರವ್ಯಾಣಿ ತದ್ವಂತಿ ಪೃಥಕ್ತ್ವ-  
ಸಂಖ್ಯೇ” ಭಾಷಾಪಂ | 2. ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸುವ ಪ್ರದೇಶ.  
“ಗುಂ ಸ್ತು ಚಕ್ಷುರ್ವಿಷಯೇ ನ ಯಥೇಷ್ಟಾಸನೋ ಭವೇತ್” ಮನುಂ ೨-೧೯೮ |  
3. ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗುವಿಕೆ, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸುವಿಕೆ.

ಚಕ್ಷುರ್ಹನ್ ಚಕ್ಷುರ್ಹನ್ (ವಿಂ) ಕಣ್ಣಿನಿಂದಲೇ ಕೊಲ್ಲುವ,  
ನೋಟದಿಂದಲೇ ಸಾಯಿಸುವ. ಚಕ್ಷುಷಾ ಹನ್ತಿ - ಹನ್  
(ಹಿಸಾಗತೃಯಾ:) “ಕ್ವಿಪ್” | “ತ್ವಾಂ ತು ಚಕ್ಷುರ್ಹನ್ ಪ್ರಾಪ್ಯ  
ದಾಧೋ ಧೋರಣ ಚಕ್ಷುಷಾ” ಭಾಂ ಭೀಷಂ ೧೨೦-೬೮ |

ಚಕ್ಷುಷಮತ್ ಚಕ್ಷುಷಮತ್ (ವಿಂ) ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ ನೇತ್ರವುಳ್ಳ,  
ಉತ್ತಮವಾದ ಕಣ್ಣುಳ್ಳ. ಪ್ರಶಸ್ತಂ ಚಕ್ಷುರಸ್ಯಸ್ಯ “ಮತುಪ್”  
(೪-೨-೯೪) | “ತದಾ ಚಕ್ಷುಷಮತಾಂ ಪ್ರೀತೀರಾಸೀತ್ಸಮರಸಾ  
ದ್ವಯಾ:” ರಘುಂ ೪-೧೮ |

ಚಕ್ಷುಷಮತಾ ಚಕ್ಷುಷಮತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತಮವಾದ ಕಣ್ಣು  
ಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವಿಕೆ. ಚಕ್ಷುಷಮತೋ ಭಾವ: “ತಲ್”  
(೪-೧-೧೧೯) | “ಚಕ್ಷುಷಮತಾ ತು ಶಾಸ್ತ್ರೇಣ ಸೂಕ್ಷಮಕಾರ್ಯ-  
ದರ್ಶಿನಾ” ರಘುಂ ೪-೧೩ | “ತ್ವ:” (೪-೧-೧೧೯) |  
ಚಕ್ಷುಷಮತ್ವಮ್ ಚಕ್ಷುಷಮತ್ವಮ್.

ಚಕ್ಷುಷ್ಯ ಚಕ್ಷುಷ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಕೇಶಕವೃಕ್ಷ, ಶಾಳೀಮರ.  
2. ನುಗ್ಗೆಮರ. 3. ಪುಂಡರೀಕವೃಕ್ಷ, ಮಾವಿನಮರ.  
(ನಂ) 4. ರಸಾಂಜನ. 5. ಸೌವೀರಾಂಜನ. (ವಿಂ) 6.  
ಸುಂದರವಾದ, ಅಂದವಾದ. 7. ಕಣ್ಣಿಗೆ ಹಿತವಾದ.  
ಚಕ್ಷುಷೇ ಹಿತಮ್ “ಯತ್” (೪-೧-೪) | 8. ಕಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ.  
ಚಕ್ಷುಷಿ ಭವ: “ಯತ್” (೪-೧-೬) | “ಚಕ್ಷುಷ್ಯ: ಖಲು  
ಮಹತಾಂ ಪರೇರಲಕ್ಷಣಾ:” ಮಾಘಂ ೮-೪೭ | “ಚಕ್ಷುಷ್ಯ: ಸುಭಗಂ  
ಪುಂಡರೀಕವೃಕ್ಷೇ ರಸಾಂಜನೇ | ಕೇತಕೇಽಕ್ಷಿಹಿತೇ ಚಾಪಿ ಚಕ್ಷುಷ್ಯಾ ತು  
ಕುಲತಿಕಾ” ಮೇದಿಂ | “ಪ್ರಿಯೇಽಕ್ಷಿಜೇ ತು ಚಕ್ಷುಷ್ಯ:” ವಿಶ್ವಂ |

ಚಕ್ಷುಷ್ಯಾ ಚಕ್ಷುಷ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸುಂದರಿ, 2. ಕುಳ  
ತಾಂಜನ.

ಚಕ್ಷುಸ್ ಚಕ್ಷುಸ್ (ನಂ) 1. ನೇತ್ರ, ಕಣ್ಣು. ಚಕ್ಷುತೇಜೇನ-  
ಚಕ್ಷಿಙ್ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಉಸಿ:” (ಉಂ ೨-೧೧೯) |  
“ಅಭಿಯಾತಿ ನ: ಸತೃಷ್ಠಿ ಏವ ಚಕ್ಷುಷೋ ಹರಿರೀತೀವಿವಿಧತ  
ನಿತಮ್ಬಿನೀಜನ:” ಮಾಘಂ ೧೩-೪೬ | 2. ತೇಜಸ್ಸು. ಕಾಂತಿ.

ಚಕ್ಷುರಾಗ ಚಕ್ಷುರಾಗ (ಪುಂ) 1. ದರ್ಶನಮಾತ್ರದಿಂದಲೇ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅನುರಾಗ, ನೋಡಿದ ಮಾತ್ರದಿಂದಲೇ  
ಹುಟ್ಟುವ ಪ್ರೀತಿ. ಚಕ್ಷುಷೋ ರಾಗ: ತದಾಕರ್ಷಕ: ಅನುರಾಗ: |  
“ಪುರಸ್ಚಕ್ಷುರಾಗಸ್ತದನು ಮನಸೋಽನ್ಯಪರತಾ ತನುಗ್ಲಾನಿರ್ಮಯಸ್ಯ  
ತ್ವಯಿ ಸಮಭವದ್ವತ್ರ ಚ ತವ” ಪಾಲತೀಂ ೬-೧೪ | 2. ಕಣ್ಣು  
ನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಕೆಂಪು. “ಚಕ್ಷುರಾಗ: ಕೋಕಿಲೇಷು ನ  
ಪರಕಲತ್ರೇಷು” ಕಾದಂ |

ಚಕ್ಷುರೋಗ ಚಕ್ಷುರೋಗ (ಪುಂ) ನೇತ್ರರೋಗ, ಕಣ್ಣಿನೋಳ  
ಗುಂಟಾಗುವ ಬೇನೆ. ಚಕ್ಷುಷೋ ರೋಗ: | ಜಿಸಿಲಿನಲ್ಲಿ ಅಲೆ  
ದಾಡಿ ದೇಹವು ಉಷ್ಣವಾಗಿರುವಾಗ ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಪ್ರದೇಶಿಸು  
ವುದು ದೂರದ ವಸ್ತುವನ್ನು ದಿಟ್ಟಿಸಿ ನೋಡುವುದು  
ನಿದ್ದೆ ಕೆಡುವುದು ಅತಿಯಾಗಿ ಅಳುವುದು ಕೋಪಿಸಿಕೊಳ್ಳು  
ವುದು ದುಃಖ ಕ್ಲೇಶ ಅಭಿಘಾತ ಅತಿಯಾದ ಸಂಭೋಗ  
ಈ ಕಾರಣಗಳಿಂದ ನೇತ್ರರೋಗಗಳು ಉಂಟಾಗುವುವು.



"ಉಣಾಭಿತಪ್ತಸ್ಯ ಜಲಪ್ರವೇಶಾತ್ ದೂರೇಕ್ಷಣಾತ್ ಸ್ವಪ್ನವಿಪರ್ಯ-  
ಯಾಚ್ಚ । ಪ್ರಸಕ್ತಸಂರೋದನಕೋಪಶೋಕಕಲೇಶಾಭಿಘಾತಾದತಿಮೈಶು-  
ನಾಚ್ಚ" ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರತಂ ೧-೨೬ ।

ಈ ನೇತ್ರರೋಗವು:

|                |    |    |     |
|----------------|----|----|-----|
| ವಾತದೋಷದಿಂದ     | .. | 10 | ವಿಧ |
| ಪಿತ್ತದೋಷದಿಂದ   | .. | 10 | "   |
| ಕಫದೋಷದಿಂದ      | .. | 13 | "   |
| ರಕ್ತದೋಷದಿಂದ    | .. | 16 | "   |
| ಸರ್ವದೋಷಗಳಿಂದ   | .. | 25 | "   |
| ಬಾಹ್ಯಕಾರಣಗಳಿಂದ | .. | 2  | "   |

ಈ ರೀತಿ ಎಪ್ಪತ್ತಾರು ವಿಧ. "ವಾತಾದೃಶ ತಥಾ ಪಿತ್ತಾತ್  
ಕಫಾಚ್ಚೇವ ತ್ರಯೋದಶ । ರಕ್ತಾತ್ ಷೋಡಶ ವಿಜ್ಞೇಯಾಃ ಸರ್ವಜಾಃ  
ಪಂಚವಿಂಶತಿಃ । ತಥಾ ಬಾಹ್ಯೌ ಪುನರ್ವೌ ಚ ರೋಗಾಃ ಷಡ್ಸಪ್ತತಿಃ  
ಸ್ಮೃತಾಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರತಂ ೧-೨೮, ೨೯ ।

ಚಕ್ಕುರ ಚಂಕುರ (ಪುಂ) 1. ರಥ, ಗಾಡಿ, ಬುಡಿ. ಚಕ್ಕು  
(ಸೌತ್ರೋ ಧಾತುಃ) "ಉರಕ್" (ಉಂ ೧-೩೮) । 2. ವೃಕ್ಷ,  
ಮರ. "ಚಕ್ಕುರಃ ಸ್ಯಾತ್ ರಥೇ ವೃಕ್ಷೇ" ಮೇದಿಂ । 3. ಗಾಡಿ,  
ಸಂಚಾರಸಾಧನವಾದ ಮೋಟಾರು, ಬೈಸಿಕಲ್ಲು ಮುಂತಾ  
ದುವು. "ಚಕ್ಕುರಂ ಧೋರಣಂ ಯಾನಮಾತ್ರೇ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಚಕ್ರಮ ಚಂಕ್ರಮ (ಪುಂ) 1. ಗಮನ, ನಡೆಗೆ. 2. ಓಡಾಟ,  
ತಿರುಗಾಟ. ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) + ಯಡ್ "ಘಜ್"  
(೩-೩-೧೮) । ಉಪಧಾವೃದ್ಧಿರ್ನ (೭-೩-೩೪) । "ಜಾನುಭಿಃ  
ಕರಸರೋಜಸಹಾಯೈಃ ಚಕ್ರಮಂ ಚಾಗದಕುರ್ವತ ಬಾಲಾಃ" ಚಂ ಭಾಂ  
೧-೭೪ । 3. ಭ್ರಮಣ, ಸುತ್ತುವುದು. "ವಿತತ್ಯ  
ವಾತ್ಯಾಮಯಚಕ್ರಚಕ್ರಮಾನ್" ನೈಷಂ ೧-೭೩ । ಕ್ರಮು + ಯಡ್  
"ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) । ಚಕ್ರಮಣಮ್ ಚಂಕ್ರಮಣಮ್ ।

ಚಕ್ರಮಣ ಚಂಕ್ರಮಣ (ವಿಂ) ನಡೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದ.  
ಕ್ರಮು (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) + ಯಡ್ "ಯುಕ್" (೩-೨-೧೫೦) ।

ಚಕ್ರ ಚಂಗ (ವಿಂ) 1. ಸುಂದರವಾದ, ಅಂದವಾದ.  
2. ದಕ್ಷನಾದ, ಸಮರ್ಥನಾದ, ಚತುರನಾದ. ಚೀಯತೇ -  
ಚಿಜ್ (ಚಿದನೆ) "ಙಃ" ಬಾಹುಂ । ಚಮ್ ಅಜ್ಞಮಸ್ಯ ।  
ಶಕಂ । "ಚಕ್ರಸ್ತು ಶೋಭನೇ ದಕ್ಷೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಚಕ್ರಲ ಚಂಗಲ (ನಂ) ಪಣ್ಯವಿಧಿ, ಅಂಗಡಿಯ ಬೀದಿ.  
"ನಿರ್ಮುಡಸ್ತು ಪಣ್ಯಾಜೀವಕಚಕ್ರಲೇ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಚಕ್ಕು ಚಂಚ (ಪುಂ) ಮಕ್ಕುರಿ, ಬುಟ್ಟಿ.

ಚಕ್ಕುತ್ ಚಂಚತ್ (ವಿಂ) ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ. ಚಕ್ಕು (ಗತೌ)  
"ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಚಕ್ಕುತ್ಸುಜಘ್ರಮಿತಚಂಡಗದಾಭಿ-  
ಘಾತಸಂಚ್ಛೇದಿತೋಹ್ಯುಗಲಸ್ಯ ಸುಯೋಧನಸ್ಯ" ವೇಣೀಂ ೧-೨೧ ।

ಚಕ್ಕುತ್ ಚಂಚತ್ (ವಿಂ) ಚಲಿಸುವಂತೆ ಕಾಣುವ, ಹಾರಾಡುವ  
ಮಂತೆ ತೋರುವ. ಚಕ್ಕುತ್ "ಕನ್" (ವಾಂ ೫-೪-೩) ।

ಚಕ್ಕುತ್ಪುಟ ಚಂಚತ್ಪುಟ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ತಾಳ. "ತಾಲೇ  
ಚಕ್ಕುತ್ಪುಟೇ ಜೇಯಂ ಗುರುದ್ವಂದ್ವಂ ಲಘುಪ್ಲುತಮ್" ಸಂ ದಾಂ ।

ಚಕ್ಕುರಿದ್ ಚಂಚರಿದ್ (ಪುಂ) ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಚರ  
(ಗತೌ) + ಯಡ್ - "ಗಿರಿಃ" (೩-೨-೭೮) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಜಿಪ್" (೪-೧-೫) । -ರಿದ್ - ರಿಠೇ.

ಚಕ್ಕುರೀಕ ಚಂಚರೀಕ (ಪುಂ) ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಚರ  
(ಗತೌ) "ಇಕನ್" ಧಾತೋದ್ವಿತ್ವಮ್ ತುಮ್ ಚ (ಉಂ ೪-೨೦) ।  
"ಇಂದಿನ್ದಿರಶ್ಚರೀಕೋ ಲೋಲಮ್ಬೋ ವಮ್ಬರಶ್ಚ ಸಃ" ಅಮಂ ।  
"ಅನ್ವಯಾತಾಮಿವ ಸುರತರೋಮಂಜರೀಂ ಚಕ್ಕುರೀಕೇಃ" ಹಂಸಂ  
೨-೧೮ ।

ಚಕ್ಕುರೀಕಾವಲಿ ಚಂಚರೀಕಾವಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೃತ್ತ  
ರತ್ನಾಕರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಹದಿಮೂರನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ  
ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: "ಯಮೋ ರೋ ವಿಖ್ಯಾತಾ  
ಚಕ್ಕುರೀಕಾವಲೀ ಗಃ" ವೃಂ ರಂ । ಯಗಣ ಮಗಣ ರಗಣ  
ದ್ವಯ ಮತ್ತು ಒಂದು ಗುರು. ಇದರ ಗಣವಿನ್ಯಾಸಃ  
ಯ ಮ ರ ರ ಗು  
100 000 010 010 0

ಚಕ್ಕುಲ ಚಂಚಲ (ಪುಂ) 1. ಕಾಮುಕ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ.  
2. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಚಕ್ಕುಲಂ ಗತಿ ಲಾತಿ-ಲಾ (ಆದಾನೇ)  
"ಕಃ" (೩-೨-೩) । "ಚಕ್ಕುಲಃ ಕಾಮುಕೇಽನಿಲೇ" ಮೇದಿಂ ।  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ-ಲಾ. 3. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. (ವಿಂ) 4. ಚಲಿಸುವ,  
ಸ್ಥಿರವಾಗಿಲ್ಲದ. ಚಕ್ಕು (ಗತೌ) "ಅಲಕ್" ಬಾಹುಂ ।  
"ಚಕ್ಕುಲಂ ಹಿ ಮನಃ ಕೃಷ್ಣ ಪ್ರಮಾಥಿ ಬಲವತ್ ದೃಢಮ್" ಗೀತಾ  
೬-೩೪ । 5. ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು. "ಚಕ್ಕುಲಾ ತು  
ತಡಿಲ್ಲಕ್ಷ್ಮಯೋಃ" ಮೇದಿಂ ।

ಚಕ್ಕು ಚಂಚಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜೊಂಡುಮಲ್ಲಿಸಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಿದ  
ಲ್ಪಟ್ಟ ಪುರುಷ, ತೃಣಪುರುಷ. "ಚಕ್ಕು ತೃಣಮಯಃ ಪುಮಾನ್-  
ಚಕ್ಕುಃ ಮನುಷ್ಯಶ್ಚಾ" ಸಿಂ ಕೌಂ । ಚಕ್ಕು "ಕನ್"  
(೫-೩-೯೬) । ಕನೋ ಲುಪ್ (೫-೩-೯೮) । "ನೃಣಾಂ ಯಂ  
ಸೇವಮಾನಾನಾಂ ಸಂಸಾರೋಽಪ್ಯಪವರ್ಗತಿ । ತಂ ಜಗತ್ಯಭಜನ್ಮರ್ತ್ಯ-  
ಶ್ಚಾ ಚಂದ್ರಕಲಾಧರಮ್" । 2. ಲಾಳದ ಗಿಡದಿಂದ  
ಮಾಡಿದ ಚಾಪೆ.

ಚಕ್ಕು ಚಂಚು (ಪುಂ) 1. ಎರಡೆವಟ್ಟು, ಹರಳು ಗಿಡ.  
2. ಚಿಟ್ಟುಹರಳು ಗಿಡ. "ಚಕ್ಕುಃ ಪಂಚಾಂಗುಲೇ ತ್ರೋಟಚಾಮ್"  
ಹೇಮಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಹಕ್ಕಿಗಳ ಕೊಕ್ಕು, ಹಕ್ಕಿಗಳ ಮೂತಿ.  
ಚಕ್ಕುತಿ - ಚಕ್ಕು (ಗತೌ) "ಃ" ಬಾಹುಂ । ವಾ "ಙ್" ।



ಚಂಚು: ಚಂಚೂಃ. "ಕರಯನ್ವಗದನ್ತುರಾಂತರೇ ವ್ಯಲಿಸ್ವತ್  
ಚಂಚುಪುಟೇನ ಪಕ್ಷತೀ" ನೆಪಂ ೨-೨. "ನುನುದೇ ತನುಕಷ್ಟ  
ಪಣ್ಣಿತ: ಪಟುಚಂಚುಪುಟಕೋಟಿಕುಟುನೇ:" ನೆಪಂ ೨-೪.

ಚಂಚುಮತ್ ಚಂಚುಮತ್ (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಚಂಚು  
ವಿಭಿತಿ — ಡು ಭೃ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ವಿವ್" (೩-೨-೬೧). "ಪಕ್ಷಿ ತು ನಾಜೀವರಣ: ಸ್ಯಾಚ್ಚಂಚುಮದೇ-  
ಕಜ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಚಂಚುಮತ್ ಚಂಚುಮತ್ (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಚಂಚು-  
ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತು" (೪-೨-೯೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). —ಮತೀ-ಮತೀ.

ಚಂಚುರ ಚಂಚುರ (ವಿಂ) ದಕ್ಷಿಣಾದ, ಸಮರ್ಥನಾದ,  
ಚಂಚುರನಾದ. ಚಂಚು (ಗತೌ) "ಉಚ್" (೩-೧-೪೧).

ಚಂಚುಲ ಚಂಚುಲ (ಪುಂ) ಮಿಶ್ರಮಿಶ್ರ ಮಹರ್ಷಿಯ ಒಬ್ಬ  
ಮಗ. "ಉದ್ಭವರಾಹಭಿಜ್ಞಾತಾಸ್ತಾರಕಾಯಣಚಂಚುಲಾ:"  
ಹರಿವಂ.

ಚಂಚುಸುಚಿ ಚಂಚುಸೂಚಿ (ಪುಂ) ಕಾರಂಡವ ಪಕ್ಷಿ. ಚಂಚು:  
ಸುಚಿರಿವ ಯಸ್ಯ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ವಾ "ಡೀಪ್".

ಚಟ — ಚೆದನೆ (ಚುರಾಂ ಉಂ ಸಕಂ ಸೇಂ). ಚಾಟಯತಿ, —ತೆ.  
ಅಚೀಚಟತ್, —ತೆ. ಭೇದಿಸು, ಒಡೆ, ಬೇರ್ಪಡಿಸು.

ಉಡ್ + ಚಟ = ಉಚಾಟಯತಿ. ಉಚಾಟನಮ್. ಉಚಾಟನೀಯ:

1. ಪ್ರೇರಿಸು, ನೂಕು, ತಳ್ಳು, ಒಡಿಸು. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ  
ಹಾರಿಸು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುವಂತೆ ಮಾಡು. "ಉಚಾಟನೀಯ:  
ಕರತಾಲಿಕಾನಾಂ ದಾನಾದಿದಾನೀ ಭವತೀಭಿರೇಷ:" ನೆಪಂ ೩-೭.

ಚಟಕ ಚಟಕ (ಪುಂ) 1. ಗುಬ್ಬಚ್ಚಿ. ಚಟತಿ ಚಿಂತಿ  
ಧಾನ್ಯಾದಿಕಮ್ — ಚಟ (ಚೆದನೆ) "ವಿವ್" (೩-೨-೩೩).  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಅಜಾದಿಂ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪). ಚಟಕಾ ಚಟಕಾ.  
ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:" ಚಟಕಕ: ಚಟಕಕ: (ನಂ) 2. ಹಿಪ್ಪಲಿ.

ಚಟಕಾ ಚಟಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಗುಬ್ಬಚ್ಚಿ. ಚಟಕಸ್ಯ  
ಸ್ತ್ರೀ-ಅಜಾದಿಂ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪). 2. ಗುಬ್ಬಚ್ಚಿಯ  
ಹೆಣ್ಣು ಮರಿ. ಚಟಕಾಯಾ ಅಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ — ಚಟಕಾ "ಏರಕ್"  
(೪-೧-೧೨೮). ತಸ್ಯ ಲುಕ್ (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೮). ಟಾಪೋ  
ಲುಕ್ (೧-೨-೪೯). "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪). ಸ್ವಾರ್ಥ  
ಚಟಕಕಾ ಚಟಕಕಾ, ಚಟಕಿಕಾ ಚಟಕಿಕಾ.

ಚಟಕಾಮುಖ ಚಟಕಾಮುಖ (ನಂ) ಗುಬ್ಬಚ್ಚಿಯ ಮುಖ  
ದಂತೆ ತುದಿಯುಳ್ಳ ಒಂದು ಅಸ್ತ. ಚಟಕಾಯಾ ಮುಖಮಿವ  
ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ.

ಚಟಕಾಶಿರಸ್ ಚಟಕಾಶಿರಸ್ (ಪುಂ) ಹಿಪ್ಪಲಿಯ ಬೇರು.  
ಚಟಕಾಯಾ ಶಿರ ಇವ. "ಸರ್ವೇ ಸಾಂತಾ ಅದಂತಾ: ಸ್ಯು:"

ಎಂಬ ವಚನದಂತೆ ಚಟಕಾಶಿರ: ಚಟಕಾಶಿರ: ಎಂದು  
ಅಕಾರಾಂತವೂ ಉಂಟು. "ಗ್ರಂಥಿಕಂ ಪಿಪ್ಪಲಿಮೂಲಂ ಚಟಕಾಶಿರ  
ಇತ್ಯಪಿ" ಅಮಂ. "ಶಿರೋ ನಾ ಪಿಪ್ಪಲಿಮೂಲೇ" ಇತಿ  
ರಮಸ:

ಚಟ ಚಟ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಿಯವಾದ ಮಾತು, ಚಾಟುವಾಕ್ಯ.  
ಚಟ (ಚೆದನೆ) "ಕ್ರು:" (೩-೧-೩೭). "ಛಾಯಾಂ ನಿಜಸ್ತೀ-  
ಚಟಲಾಲಸಾನಾಂ ಮದೇನ ಕಿಂಚಿಚ್ಚಟಲಾಲಸಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ  
೪-೬. 2. ಹೊಟ್ಟೆ. 3. ವ್ರತಗಳ ಒಂದು ವಿಧ  
ಆಸನ. "ಚಟಶ್ಚಾಡೌ ಪಿಚ್ಛಣೆ ಚ ವ್ರತಿನಾಮಾಸನೇ ಪುಮಾನ್"  
ಮೇದಿಂ.

ಚಟಕ ಚಟಕ (ಪುಂ) ದ್ರವವಸ್ತುವನ್ನು ಇಡುವ ಒಂದು  
ಮರದ ಪಾತ್ರೆ.

ಚಟಲ ಚಟಲ (ವಿಂ) 1. ಚಂಚಲವಾದ, ಸ್ಥಿರವಾಗಿಲ್ಲದ.  
ಚಟ (ಚೆದನೆ) "ಉಲಕ್" ಬಾಹುಂ. "ಆಯಸ್ತಮೇಷತ  
ಜನಶ್ಚಟಲಾಗ್ರಪಾದಂ ಗಂಜಂತಮುಚ್ಚಲಿತಚಾಮರಚಾರುಮಶ್ವಮ್"  
ಮಾಘಂ ೪-೬. 2. ಪ್ರಿಯವಾದ ಮಾತು, ಸಮಮಾತು,  
ಪ್ರಸಲಾಯಿಸುವ ಮಾತು. "ಪುರುಷಶ್ಚಟಲಾನಿ ಕಾಮಿನೀನಾಂ  
ಕುಸ್ತೇ ಯಾನಿ ರಹೌ ನ ತಾನಿ ಪಶ್ಚಾತ್" ಬೃಹತ್ಸಂ ೭೪-೧೬.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಲಾ-ಲಾ. 3. ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು.

ಚಟಲಾಲ ಚಟಲಾಲ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಿಯವಾದ  
ಮಾತುಗಳನ್ನಾಡುವ. ಚಟೌ ಉಲಾಲ: 2. ಚಂಚಲ  
ವಾದ, ಸ್ಥಿರವಾಗಿಲ್ಲದ. 3. ಸುಂದರವಾದ.

ಚಡಿ — ಕೋಪೆ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸೇಂ). ಚಂಡತೆ.  
ಚವಣೆ. ಅಚಣ್ಣಿಣಿ. ರೇಗು, ಸಿಟ್ಟುಮಾಡು, ಕೋಪಿಸಿಕೊ.

ಚಡಿ — ಕೋಪೆ (ಚುರಾಂ ಉಂ ಅಕಂ ಸೇಂ). ಚಂಡಯತಿ, —ತೆ.  
ಕೋಪಿಸಿಕೊ, ಸಿಟ್ಟುಮಾಡು.

ಚಣ — ದಾನೆ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ). ಚಣತಿ. ಚಣಾಣ.  
ಅಚಣಿತ್, ಅಚಣಿತ್. ಕೊಡು, ದಾನಮಾಡು.

ಚಣ ಚಣ (ಪುಂ) ಚಣಕ, ಕಡಲೆ. ಚಣ (ದಾನೆ) "ಘ" (೩-೩-೧೯).

ಚಣಕ ಚಣಕ (ಪುಂ) 1. ಕಡಲೆ. ಚಣತೇ — ಚಣ (ದಾನೆ)  
"ವ್ವುತ್" (೩-೨-೩೨). "ಕಾರ್ಪಸಿಮಾಘಚಣಕಾ: ಪುರಂದರ-  
ಹುತಾಶಮಕ್ತಾಶ್ಚ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೪-೧೪. 2. ಒಬ್ಬ ಮುಷಿ,  
ಚಾಣಕನ ತಂದೆ.

ಚಣಕರೋಟಿಕಾ ಚಣಕರೋಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಡಲೆ ಹಿಟ್ಟಿನ  
ಹೋಳೆ.

ಚಣಕಾತ್ಮಜ ಚಣಕಾತ್ಮಜ (ಪುಂ) ಚಣಕನ ಮಗ, ಚಾಣಕ್ಯ,  
ಕೌಟಿಲ್ಯ.



**ಚಂಡ ಚಂಡ (ಪುಂ)** 1. ಹುಣಿಸೆಮರ. 2. ಒಬ್ಬ ಯಮ ಕಿಂಕರ. 3. ಒಬ್ಬ ದೈತ್ಯ. ಚಡಿ (ಕೋಪಿ) "ಅಚ್" (3-1-134). "ಚಂಡತುಂಡಿ ಮಹಾಸುರೋ" ದೇವಿಮಾಂ. (ವಿಂ) 4. ಬಹಳ ಕೋಪವುಳ್ಳ. "ಅಶೈಕವನೋರಪರಾಧ-ಚಂಡಾದ್ಗುರೋ: ಕೃಶಾನುಪ್ರತಿಮಾದಿಭೇಷಿ" ರಘುಂ 2-49. 5. ಬಹಳ ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ, ಉಗ್ರವಾದ. "ದಹಂತಮಿವ ತೀಕ್ಷ್ಣಾಂಶು ಚಂಡವಾಯುಸಮೀರಿತಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ 32-232. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಂಡಾ ಚಂಡಾ. 6. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 7. ಕರಿಯ ಕಚೋರ. 8. ದುರ್ಗಾದೇವಿಯ ಅಷ್ಟಶಕ್ತಿಗಳಲ್ಲೊಂದು ಭೇದ. ["ಚಂಡನಾಯಿಕಾ" ನೋಡಿ.] 9. ಬಿಳಿಗರಿಕೆ. ಚಂಡಿ ಚಂಡಿ. 10. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 11. ಕೋಪ ಸ್ವಭಾವದ ಹೆಂಗಸು, ಸುಲಭವಾಗಿ ಕೋಪಗೊಳ್ಳುವ ಹೆಂಗಸು. 12. ಉದ್ದಾಲಕ ಮುಷಿಯ ಪತ್ನಿ. 13. ಹಿಂಸಿ ಸುವಹೆಂಗಸು. "ಚಂಡೋ ನಾ ತಿಂತಿಡೀವಕ್ಷೇ ಯಮಕಿಕರದೇತಯೋ: | ಚಂಡಿ ಕಾತ್ಯಾಯನೀದೇವ್ಯಾ ಹಿಸ್ತಿಕೋಪನಯೋಷಿತೋ: | ಚಂಡಾ ಧನಹರೀ ಶ್ವಪುಷ್ಯೋಸ್ತ್ರಿಪ್ವತಿಕೋಪನೇ | ತೀವ್ರೇಷಿ" ಮೇದಿಂ |

**ಚಂಡಕರ ಚಂಡಕರ, -ಕಿರಣ-ಕಿರಣ, -ಭಾನು-ಭಾನು (ಪುಂ)** ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ಕಿರಣಗಳುಳ್ಳ ಸೂರ್ಯ. ಚಂಡಾ-ಸ್ತೋಕ್ಷಾ: ಕರಾ: ಕಿರಣಾ: ಭಾನವೋ ವಾ ಅಸ್ಯ | "ಚಂಡಕರ-ಕಿರಣಮಂಡಲಬೋಧಿತಪುಂಡರೀಕವನರುಚಿಲುಟಾಕಲೋಚನ" ರಘುಂ ಗಂ |

**ಚಂಡಕೌಶಿಕ ಚಂಡಕೌಶಿಕ (ಪುಂ)** 1. ಒಬ್ಬ ಮುಷಿ. ಕಕ್ಷೀವಂತನ ಮಗ. ಈ ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿಯ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ಬೃಹದ್ರಥರಾಜನು ಜರಾಸಂಧನನ್ನು ಪಡೆದನು. (ನಂ) 2. ಚಂಡಕೌಶಿಕವೆಂಬ ಒಂದು ನಾಟಕ. ಚಂಡ: ಕೌಶಿಕೋ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ: ವರ್ಣ್ಯತ್ವೇನಾಸ್ತಯತ್ರ "ಅಚ್" (4-2-127) |

**ಚಂಡತಾ ಚಂಡತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಉಗ್ರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ತೀಕ್ಷ್ಣವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಚಂಡಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (4-1-119) | "ತ್ವ:" (4-1-119) | -ತ್ವಮ್ -ತ್ವಮ್.

**ಚಂಡತುಂಡಕ ಚಂಡತುಂಡಕ (ಪುಂ)** ಗರುಡನ ಮಗ. "ಸುವರ್ಣಚೂಡೋ ನಾಗಾಶೋ ದಾರುಣಶ್ಚಂಡತುಂಡಕ:" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ 101-9 |

**ಚಂಡನಾಯಿಕಾ ಚಂಡನಾಯಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದುರ್ಗಾದೇವಿಯ ಅಷ್ಟಶಕ್ತಿಗಳಲ್ಲೊಂದು ಭೇದ. "ಉಚ್ಚಚಂಡಾ ಪ್ರಚಂಡಾ ಚ ಚಂಡೋಗ್ರಾ ಚಂಡನಾಯಿಕಾ | ಚಂಡಾ ಚಂಡವತೀ ಚೈವ ಚಾಮುಂಡಾ ಚಂಡಿಕಾ ತಥಾ | ಆಭಿ: ಶಕ್ತಿಭಿರೃಷಾಭಿ: ಸತತಂ ಪರಿ-ವೇಷ್ಟಿತಾಂ | ಚಿಂತಯೇತ್ಸತತಂ ದುರ್ಗಾ ಧರ್ಮಕಾಮಾರ್ಥಮೋಕ್ಷದಾಮ್" ದೇವೀಪುಂ |

**ಚಂಡವತೀ ಚಂಡವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದುರ್ಗಾದೇವಿಯ ಅಷ್ಟಶಕ್ತಿಗಳಲ್ಲೊಂದು ಭೇದ. ["ಚಂಡನಾಯಿಕಾ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಚಂಡಶ್ಚಂಡತಾ ವಿಧತೇಷ್ಯಾಮ್ "ಮತುಪ್" (4-2-94) |

**ಚಂಡವರ್ಮನ್ ಚಂಡವರ್ಮನ್ (ಪುಂ)** ಒಬ್ಬ ರಾಜಕುಮಾರ. **ಚಂಡವೃತ್ತಿ ಚಂಡವೃತ್ತಿ (ವಿಂ)** ತನ್ನ ದಾರಿಯನ್ನೇ ಹಿಡಿಯುವುದರಲ್ಲಿ ಹಟವುಳ್ಳ, ಹಟಮಾರಿತನದ, ಪಟ್ಟುಬಿಡದ ತನ್ನ ಇಚ್ಛೆಯಂತೆ ನಡೆಯುವ.

**ಚಂಡವೃಷ್ಟಿ ಚಂಡವೃಷ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಭಯಂಕರವಾದ ಮಳೆ, ಸಿಡಿಲು ಗುಡುಗುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮಳೆ. ಚಂಡಾ ವೃಷ್ಟಿ: |

**ಚಂಡವೃಷ್ಟಿಪ್ರಯಾತ ಚಂಡವೃಷ್ಟಿಪ್ರಯಾತ (ಪುಂ)** ದಂಡಕದ ಒಂದು ಭೇದ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: ನೆಗಣದ್ವಯ ಅನಂತರ ಏಳು ರಗಣಗಳು. "ಯದಿಹ ನಯುಗಲಂ ತತ:ಸಪ್ತರೆಫಾ: ತದಾ ಚಂಡವೃಷ್ಟಿಪ್ರಯಾತೋ ಭವೇದ್ಛಡಕ:" ವೃಂ 20 | ಇದರ ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ನ ನ ರ ರ ರ ರ ರ ರ ರ  
||| ||| 010 010 010 010 010 010 010  
ಉದಾ: "ಜಲಧರರುಚಿರಾಂ ಭುಜ್ಜೇಂದ್ರಭೋಗಾಭಿವ್ಯಾಜಾದ್ಭುಜಾವಿಧ-ಶೂಲಾಯುಧಾಸ್ತ್ರಪ್ರಭಾಮ್" |

**ಚಂಡಾ ಚಂಡಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** "ಚಂಡ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ಚಂಡಾಂಶು ಚಂಡಾಂಶು (ಪುಂ)** ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ಕಿರಣಗಳುಳ್ಳ ಸೂರ್ಯ. ಚಂಡಾಸ್ತೋಕ್ಷಾ ಅಂಶವೋ ಯಸ್ಯ | "ಚಂಡಾಂಶೋ-ನಿಶಿ ಕಾ ಕಥಾ ರಘುಪತೇ ಚಂದ್ರೋಷ್ಯಮುಜ್ಜಮ್ಭತೇ" ಹನುಂ ನಾಂ |

**ಚಂಡಾತ ಚಂಡಾತ (ಪುಂ)** ಗನ್ನೇರಳೆ ಗಿಡ. ಚಂಡಮತತಿ - ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೇ) "ಅನ್" (3-2-1) |

**ಚಂಡಾತಕ ಚಂಡಾತಕ (ನಂ)** ಅರತೊಡೆಯವರೆಗಿನ ಹೆಂಗಸರ ಉಡುಗೆ, ಮಂಡಿಯ ಮೇಲಿನ ಒಳಲಂಗ. ಚಂಡಾಂ ಕೋಪನಾಂ ಸ್ತ್ರೀಯಮತತಿ - ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೇ) "ಫುಲ್" (3-1-133) |

**ಚಂಡಾಲ ಚಂಡಾಲ (ಪುಂ)** 1. ನಿಮ್ಮವರ್ಗದವನು, ಒಬ್ಬ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು, ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಶೂದ್ರನಿಗೆ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಚಂಡತೇ ಕುಪ್ಯತಿ-ಚಡಿ (ಕೋಪಿ) "ಆಲಬ್" (30 1-114) | "ಶೂದ್ರಾದಾಯೋಗವ: ಕ್ಷತಾ ಚಂಡಾಲಶ್ರಾಧಮೋ ಮತ: | ವೈಶ್ಯರಾಜನ್ಯವಿಪ್ರಾಸು ಜಾಯಂತೇ ವರ್ಣಸಂಕರಾ:" ಮನುಂ 10-12 | "ಗೃಹ್ಯತಾಮಜಿತಮಿದಂ ಭಾರ್ಯತನಯವಿಕ್ರಯಾತ್ | ಶೇಷಸ್ಯಾರ್ಥೇ ಕರಿಷ್ಯಾಮಿ ಚಂಡಾಲೇಷ್ಯಾತ್ಮವಿಕ್ರಯಮ್" ಚಂಡಕೌಂ | (ವಿಂ) 2. ಕ್ರೂರಕರ್ಮವುಳ್ಳವನು, ಭಯಂಕರವಾದ ಕಾರ್ಯವುಳ್ಳವನು. ಚಂಡಾನ್ ಕ್ರೂರಾನ್ ಶರಾನ್ ಆಲಾತಿ



ಆದತ್ತೆ । “ಚಂಡಾಲಸ್ತೇ ವಿಷಮವಿಶಿಷ್ಠಃ ಸ್ಪೃಶ್ಯತೇ ದೃಶ್ಯತೇ ನ”  
ನೈಷಂ ೯-೧೫೬ ।

ಚಂಡಾಲತಾ ಚಂಡಾಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಂಡಾಲತ್ವ, ಚಂಡಾಲನ  
ಶ್ಲಿಷ್ಠಿ, ಚಂಡಾಲನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಚಂಡಾಲಸ್ಯ ಭಾವ: “ತಲ್”  
(೪-೧-೧೧೯) । “ತವ:” (೪-೧-೧೧೯) । -ತ್ವಮ್-ತ್ವಮ್.  
ಚಂಡಾಲವಲ್ಲಕೀ ಚಂಡಾಲವಲ್ಲಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಂಡಾಲನ  
ವೀಣೆ. ಚಂಡಾಲಸ್ಯ ವಲ್ಲಕೀ ।

ಚಂಡಾಲಿಕಾ ಚಂಡಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಂಡಾಲನವೀಣೆ.  
2. ಒಂದು ಲತೆ. 3. ಪಾರ್ವತಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 4. ಕನ್ನರ  
ಹೆಂಗಸು. “ಚಂಡಾಲಿಕಾ ಕಿನ್ನರಾಯಾಮುಮಾಯಾಪ್ರೋಳಿಭಿರ್ದಿ”  
ಮೇದಿಂ ।

ಚಂಡಿ ಚಂಡಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾರ್ವತಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ. ಚಂಡಿ  
(ಕೋಪೆ) “ಇನ್” (೩ಂ ೪-೧೧೭) ।

ಚಂಡಿಕಾ ಚಂಡಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾರ್ವತಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ.  
ಚಂಡಿ ಸ್ವಾರ್ಥೆ “ಕ:” । ಚಂಡಿ (ಕೋಪೆ) “ಫ್ಲುಲ್”  
(೩-೧-೧೩೩) ವಾ ।

ಚಂಡಿಕಾಗೃಹ ಚಂಡಿಕಾಗೃಹ (ನಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿಯ  
ಗೃಹ.

ಚಂಡಿಕಾಲಯ ಚಂಡಿಕಾಲಯ (ಪುಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿಯ  
ಗೃಹ.

ಚಂಡಿಲ ಚಂಡಿಲ (ಪುಂ) 1. ಚಕ್ಕೋಲದ (ಸೊಪ್ಪಿನ) ಗಿಡ.  
2. ನಾಪಿತ, ನಾಯಿಂದ. ಚಂಡಿ (ಕೋಪೆ) “ಇಲ್” ಬಾಹುಂ ।

ಚಂಡಿ ಚಂಡೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ. ಚಂಡ  
ವಾ “ಡೀಫ್” (೪-೧-೪೫) । 2. ಕೋಪವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು.  
“ಸಾ ಕಿಲಾಶ್ವಾಸಿತಾ ಚಂಡಿ ಭರ್ತಾ ತತ್ಸಂಶ್ರುತೌ ವರೌ” ರಘುಂ  
೧೨-೫ । 3. ಉದ್ದಾಲಕನ ಪತ್ನಿ.

ಚಂಡಿಕುಸುಮ ಚಂಡೀಕುಸುಮ (ಪುಂ) ಕೆಂಪುಗನ್ನರಳೆ ಗಿಡ.  
ಚಂಡಿಪ್ರೋತಿಕರಂ ಕುಸುಮಂ ಯಸ್ಯ ।

ಚಂಡಿಪತಿ ಚಂಡೀಪತಿ, ಚಂಡಿಕಾಪತಿ ಚಂಡಿಕಾಪತಿ  
(ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ, ಶಂಕರ.

ಚಂಡೀಶ ಚಂಡೀಶ, -ईश्वर-ಈಶ್ವರ (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ,  
ಪರಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. ಚಂಡಿಶಾ ಇಶ: ಇಶ್ವರೋ ವಾ । “ಪುಷ್ಯ  
ಯಾಸ್ವಿತ್ರಭುವನಗುರೋರ್ಮಿ ಚಂಡೀಶ್ವರಸ್ಯ” ಮಂಥಂ ೧-೩೩ ।

ಚಂಡು ಚಂಡು (ಪುಂ) ಮೂಷಿಕ, ಇಲಿ. ಚಂಡಿ (ಕೋಪೆ)  
“ಓ:” ಬಾಹುಂ ।

ಚಂಡೇಶ್ವರ ಚಂಡೇಶ್ವರ (ಪುಂ) ಕೆಂಪು ದೇಹವುಳ್ಳ ಪರಮೇ  
ಶ್ವರನ ಒಂದು ರೂಪ. “ಚಂಡೇಶ್ವರಂ ರಕ್ತತನುಂ ತ್ರಿनेತ್ರಮ್”  
ತನ್ತ್ರಸಾಂ ।

ಚಂಡೋಗ್ರಶೂಲಪಾಣಿ ಚಂಡೋಗ್ರಶೂಲಪಾಣಿ (ಪುಂ)  
ಪರಮೇಶ್ವರನ ಒಂದು ಮೂರ್ತಿ. “ಚಂಡೋಗ್ರಶೂಲಪಾಣಿಶ್ಚ  
ಮನ್ತ್ರ: ಸರ್ವಾರ್ಥಸಾಧಕ:” ತನ್ತ್ರಸಾಂ ।

ಚತುರ್ ಚತುರ್ (ತ್ರಿಂ ಬಂ ಬಂ) 1. ನಾಲ್ಕು. 2. ನಾಲ್ಕು  
ರಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಚತೇ (ಯಾಚನೆ) “ಚರನ್” (೩ಂ ೫-೫೮) ।  
ಇದರ ಲಿಂಗತ್ರಯದ ರೂಪಗಳು: (ಪುಂ) ಚತ್ವಾರ:  
ಚತುರ: ಚತುರ್ಮಿ: ಚತುರ್ಮ್ಯ: ಚತುರ್ಮ್ಯ: ಚತುರ್ಮ್ಯಾಂ ಚತುರ್ಮ್ಯುಃ । “ಚತ್ವಾರೋ  
ವಯಮೃತ್ವಿಜ: ಸ ಭಗವಾನ್ ಕರ್ಮೋಪದೇಶಾ ಹರಿ:” ವೇಣೀಂ  
೧-೨೫ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚತಸ್ತ: ಚತಸ್ತ: ಚತಸ್ತುಮಿ: ಚತಸ್ತುಮ್ಯ:  
ಚತಸ್ತುಮ್ಯ: ಚತಸ್ತುಮ್ಯಾಂ ಚತಸ್ತುಮ್ಯುಃ । “ತಾಸಾಮಾಚಾಶ್ರತಸ್ತು  
ನಿಂದಿತೇಕಾದಶೀ ಚ ಯಾ” ಮನುಂ ೩-೪೭ । (ನಂ) ಚತ್ವಾರಿ  
ಚತ್ವಾರಿ ಉಳಿದುವು ಪಲ್ಲಿಂಗದ ರೂಪಗಳಂತಾಗುವವು.  
(ಅವ್ಯಂ) 3. ನಾಲ್ಕಾವೃತ್ತಿ, ನಾಲ್ಕು ಸಲ.

ಚತು:ಕೂಟ ಚತು:ಕೂಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶ್ರೀವಿದ್ಯೆಯ ಒಂದು  
ಮಂತ್ರ. “ಚತು:ಕೂಟಾ ಮಹಾವಿದ್ಯಾ ಶಕ್ತೀಣ ಪ್ರಪೂಜಿತಾ”  
ತನ್ತ್ರಸಾಂ ।

ಚತು:ಪಂಚ ಚತು:ಪಂಚ, ಚತುಷ್ಪಂಚ ಚತುಷ್ಪಂಚ (ವಿಂ)  
ನಾಲ್ಕು ಅಥವಾ ಐದು. ಚತ್ವಾರ: ಪಂಚ ವಾ ।  
“ಅಜಾನತಾಮಿವಾನ್ಯೋನ್ಯಂ ಚತು:ಪಂಚಾವಶೇಷಿತಾ:” ಭಾಗಂ  
೧-೧೫-೨೩ ।

ಚತು:ಪಂಚಾಶ ಚತು:ಪಂಚಾಶ, ಚತುಷ್ಪಂಚಾಶ ಚತು  
ಷ್ಪಂಚಾಶ (ವಿಂ) ಐವತ್ತನಾಲ್ಕನೆಯ. ಚತು:ಪಂ(ಷ್ಪ)-  
ಪಂಚಾಶತ್ “ಓಡ್” (೫-೨-೪೮) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಫ್”  
(೪-೧-೧೫) । -ಪಂಚಾಶಿ -ಪಂಚಾಶೀ.

ಚತು:ಪಂ(ಷ್ಪ) ಪಂಚಾಶತ್ ಚತು:ಪಂ(ಷ್ಪಂ) ಪಂಚಾಶತ್  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಐವತ್ತನಾಲ್ಕು. ಚತುರಧಿಕಾ ಪಂಚಾಶತ್ ।  
(ವಿಂ) 2. ಐವತ್ತನಾಲ್ಕರಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಐವತ್ತನಾಲ್ಕು  
ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ.

ಚತು:ಶಾಲ ಚತು:ಶಾಲ (ನಂ) ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಅಭಿಮುಖ  
ವಾಗಿರುವ ನಾಲ್ಕು ಮನೆಗಳು. ಚತುರ್ಮುಖಾಂ ಶಾಲಾಂ  
ಸಮಾಹಾರ: । “ಏಕಾಗ್ರಾಮೇ ಚತು:ಶಾಲೇ ದುರ್ಮಿಷೇ ರಾಷ್ಟ್ರವಿಪ್ಲವೇ ।  
ಪತಿನಾ ನಿಯಮಾನಾಯಾ: ಪುರ:ಶುಕ್ರೋ ನ ದುಷ್ಯತಿ” ಜ್ಯೋತಿಷಮ್ ।

ಚತು:ಷ್ಠಿ ಚತು:ಷ್ಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅರವತ್ತನಾಲ್ಕು.  
ಚತುರಧಿಕಾ ಷ್ಠಿ: । (ವಿಂ) 2. ಅರವತ್ತನಾಲ್ಕರಿಂದ  
ಕೂಡಿದ. ಚತು:ಷ್ಠಿ - ಪೂರ್ಣಂ “ಓಡ್” (೫-೨-೪೮) ।  
-ಷ್ಠಿ: -ಷ್ಠಿ: ಅರವತ್ತನಾಲ್ಕನೆಯ.

ಚತು:ಷ್ಠಿಕಲಾ ಚತು:ಷ್ಠಿಕಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರವತ್ತ  
ನಾಲ್ಕು ಕಲೆಗಳು. [“ಕಲಾ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]



**ಚತುಃಷ್ಠಿತಮ ಚತುಃಷ್ಠಿತಮ** (ವಿಂ) ಅರವತ್ತನಾಲ್ಕು ನೆಯ. ಚತುಃಷ್ಠಿ-ಪೂರ್ಣ "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮)। ಡಟ್: ವಾ "ತಮಟ್" (೪-೨-೪೬)। ಪಕ್ಷ - ಷಟ್: - ಸಪ್ತಃ.

**ಚತುಃಸಪ್ತತಿ ಚತುಃಸಪ್ತತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು. ಚತುರಧಿಕಾ ಸಪ್ತತಿಃ। (ವಿಂ) 2. ಎಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕುಳ್ಳ, ಎಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕರಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಚತುಃಸಪ್ತತಿ-ಪೂರ್ಣ "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮)। -ಸಪ್ತತಃ: -ಸಪ್ತತಃ.

**ಚತುಃಸಪ್ತತತಮ ಚತುಃಸಪ್ತತತಮ** (ವಿಂ) ಎಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು ನೆಯ. ಚತುಃಸಪ್ತತಿ - ಪೂರ್ಣ "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮)। ಡಟ್: ವಾ "ತಮಟ್" (೪-೨-೪೬)। ಪಕ್ಷ - ಸಪ್ತತಃ: -ಸಪ್ತತಃ.

**ಚತುರ ಚತುರ** (ಪುಂ) 1. ಗಜಶಾಲೆ, ಅನೆಯ ಕರವಟ್ಟಿಗೆ. 2. ಗುಂಡಾದ ತಲೆದಿಂಬು. 3. ನಾಯಕರಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. ಚತೇ (ಯಾಚನೇ) "ತರತ್" (ತಂ ೧-೩೮)। ಇವನ ಲಕ್ಷಣ: "ವಾಕ್ಚೇಷ್ಠಾವ್ಯಕ್ತಸಮಾಗಮಶ್ಚತುರಃ" ರಸಮಂ। ವ್ಯಂಗ್ಯವಾದ ಮಾತು ಮತ್ತು ಅಂಗಿಕವ್ಯಾಪಾರ ಇವುಗಳಿಂದ ಸಮಾಗಮವನ್ನು ಏರ್ಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವನು ಚತುರ ನಾಯಕನು. ಉದಾ: (1) "ತಮೋಜಾಲೇ ಹರಿದಂತ-ರಾಲೇ ಕಾಲೇ ನಿಶಾಯಾಸ್ತವ ನಿರ್ಗತಾಯಾ:। ತಡೆ ನದಿನಾಂ ನಿಕಟೇ ವನಾನಾಂ ಘಟೇ ಶಾತೋದರಿ ಕ: ಸಹಾಯ:?" (2) "ಕಾಂತೇ ಕನಕಜಮ್ಮೀರಂ ಕರೇ ಕಮಪಿ ಕುರ್ವತಿ। ಅಪಾರನಿಶ್ವಲೇ ಭಾನೌ ಬಿಂದುಮಿಂದುಮುಖೀ ದದೌ"। (ವಿಂ) 4. ನಿಪುಣ, ಜಾಣ. 5. ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ದಕ್ಷನಾದ, ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಥನಾದ. 6. ಚುರುಕಾಗಿರುವ, ಚಟುವಟಿಕೆಯುಳ್ಳ. 7. ಸುಂದರ ವಾದ. 8. ತಕ್ಕದಾದ, ಯೋಗ್ಯವಾದ. (ಅವ್ಯಂ) 9. ಚುರುಕಾಗಿ. 10. ಜಾಣತನದಿಂದ.

**ಚತುರಂಶಾ ಚತುರಂಶಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವರ್ಣವೃತ್ತದ ಒಂದು ಭೇದ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: ನಗಣ ಯಗಣ ನಗಣ ಯಗಣ. ಈ ಲಕ್ಷಣದ ವೃತ್ತಕ್ಕೆ ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರದಲ್ಲಿ "ಕುಸುಮವಿಚಿತ್ರಾ" ಎಂಬ ಹೆಸರು. "ನಯಸಹಿತೌ ನ್ಯೌ ಕುಸುಮವಿಚಿತ್ರಾ" ವೃಂ ೨೦। ಇದರ ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ನ ಯ ನ ಯ  
||| 100 ||| 100

**ಚತುರಂಗ ಚತುರಂಗ** (ನಂ) 1. ಅನೆ ಕುದುರೆ ರಥ ಮತ್ತು ಪದಾತಿ (ಕಾಲಾಳು) ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಸೈನ್ಯ. ಚತ್ವಾರಿ ಅಜ್ಞಾನಿ ಯಸ್ಯ। "ಪ್ರಯಾತೋಽಸ್ಮಿ ನರವ್ಯಾಘ್ರ ಬಲೇನ ಮಹತಾವೃತಃ। ಕಲ್ಪತೇನ ಚತುರಜ್ಞೇನ ಯತೇನ ಜಿತಕಾಶಿನಾ" ಭಾಂ ವನಂ ೨೦-೧೪। 2. ಚತುರಂಗವೆಂಬ ಒಂದು ಆಟ, ಕೆಂಪು ಹಸುರು ಹಳದಿ ಮತ್ತು ಕಪ್ಪು ಬಣ್ಣಗಳ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ

ಕಾಯಿಗಳನ್ನು ಸೇನೆಗಳಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸಿ ನಾಲ್ವರು ಆಡುವ ಒಂದು ವಿಧ ವಿನೋದದ ಆಟ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ತಿಥ್ಯಾದಿತತ್ತ್ವ" ಗ್ರಂಥದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಚತುರಜ್ಞಿನ್ ಚತುರಂಗಿನ್** (ವಿಂ) ಅನೆ ಕುದುರೆ ರಥ ಪದಾತಿರೂಪವಾದ ನಾಲ್ಕು ಅಂಗಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಚತ್ವಾರಿ ಅಜ್ಞಾನಿ ಭೂಮ್ನಾ ಸನ್ತ್ಯಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪)। "ಚಾಲಯನ್ ವಸುಧಾಂ ಚೇಮಾಂ ಬಲೇನ ಚತುರಜ್ಞಿಣಾ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೦೧-೨೪।

**ಚತುರಜ್ಞುಲ ಚತುರಂಗುಲ** (ಪುಂ) 1. ಕಟ್ಟಿಗೆ. ಚತುರಜ್ಞುಲಯಃ ಪ್ರಮಾಣಮಸ್ಯ ಪರ್ವಣಃ - ಅಜ್ಞುಲಿ - "ಅಚ್" (೪-೪-೮೬)। "ಆರಾವಧೇ ರಾಜವೃಕ್ಷಸಂಪಾಕಚತುರಜ್ಞುಲಾಃ" ಅಮಂ। (ವಿಂ) 2. ನಾಲ್ಕು ಅಂಗುಲಗಳ ಪ್ರಮಾಣವುಳ್ಳ, ನಾಲ್ಕು ಬೆರಳುಗಳ ಅಳತೆಯುಳ್ಳ. ಚತುರಜ್ಞುಲಯಃ - ಪ್ರಮಾಣಮಸ್ಯ। "ಚತುರಜ್ಞುಲಮಾತ್ರೋಽಪಿ ನಾವಕಾಶಃ ಸ ವಿಧತೇ" ರಾಮಾಂ।

**ಚತುರತಾ ಚತುರತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜಾಣನಾಗಿರುವಿಕೆ. 2. ಸಮರ್ಥನಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ಚುರುಕಾಗಿರುವಿಕೆ. ಚತುರಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)।

**ಚತುರಂತ ಚತುರಂತ** (ವಿಂ) ನಾಲ್ಕು ಸಮುದ್ರಗಳ ಮೇರೆ ಯುಳ್ಳ, ನಾಲ್ಕು ಕಡೆಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಸಮುದ್ರಗಳೇ ಎಲ್ಲೆ ಯಾಗಿ ಉಳ್ಳ. ಚತ್ವಾರಃ ಸಮುದ್ರಾಃ ಅಂತೋ ಯಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಚತುರಂತಾ ಚತುರಂತಾ. "ಭೂತ್ವಾ ಚಿರಾಯ ಚತುರಂತಮಹೀಸಪತ್ನೀ ದೌರ್ವ್ಯಗ್ನಿಮಪ್ರತಿರಥಂ ತನಯಂ ನಿವೇಶ್ಯ। ಭರ್ತೃ ತದಪಿತಕುಡುಂಬ-ಭರೇಣ ಸಾರ್ವಂ ಶಾಂತೇ ಕರಿಷ್ಯಸಿ ಪದಂ ಪುನರಾಶ್ರಮೇಽಸ್ಮಿನ್" ಶಾಕುಂ ೪-೧೯।

**ಚತುರಶೀತಿ ಚತುರಶೀತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎಂಬತ್ತನಾಲ್ಕು. ಚತುರಧಿಕಾ ಅಶೀತಿಃ। (ವಿಂ) 2. ಎಂಬತ್ತನಾಲ್ಕು ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ. ಪೂರ್ಣ "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮)। ಚತುರಶೀತಃ ಚತುರಶೀತಃ. ಎಂಬತ್ತನಾಲ್ಕುನೆಯ. ಡಟ್: ವಾ "ತಮಟ್" (೪-೨-೪೬)। ಚತುರಶೀತತಮಃ ಚತುರಶೀತತಮಃ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೧೪)। -ಅಶೀತೌ - ಅಶೀತೀ. -ಅಶೀತತಮೌ - ಅಶೀತತಮಾ.

**ಚತುರಸ್ರ ಚತುರಸ್ರ** (ವಿಂ) 1. ನಾಲ್ಕು ಕೋಣಗಳುಳ್ಳ, ನಾಲ್ಕು ಮೂಲೆಗಳುಳ್ಳ. ಚತುರಸ್ರಾಃ ಕೋಣಾ ಯಸ್ಯ। "ಮನುಷ್ಯವಾಹ್ಯಂ ಚತುರಸ್ರಯಾನಮಧ್ಯಾಸ್ಯ ಕನ್ಯಾ ಪರಿವಾರಶೋಭಿ" ರಘುಂ ೬-೧೦। 2. ನಾಲ್ಕು ಕಡೆಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಹೆಚ್ಚು ಕಡೆಯಲ್ಲಿಂದ ಒಂದೇ ಸಮನಾಗಿರುವ. "ಬಭೌವ ತಸ್ಯಾ-ಶ್ಚತುರಸ್ರಶೋಭಿ ವಪುರ್ವಿಭಕ್ತಂ ನವಯೌವನೇನ" ಕುಮಾಂ ೧-೩೨।



**ಚತುರಾತ್ಮನ್ ಚತುರಾತ್ಮನ್** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ಪರಮೇಶ್ವರ, ನಾರಾಯಣ. ಚತವಾರ: ವಾಸುಢೇವ-ಸಂಕರ್ಷಣ-ಪ್ರಚುಢ್ನಾನಿರುಢ್ನ ರೂಪಾ: ಆತ್ಢಾಢ್ನ: ಸ್ವರೂಪಾಣಿ ಅಸ್ಯ | “ವಾಸುಢೇವಾಢ್ನಿರೂಪತ್ವಾತ್ ಚತುರಾತ್ಢೇತಿ ಕಥ್ಯತೇ” ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: | “ಚತುರಾತ್ಢಾ ಚತುರ್ವ್ಯುಹ: ಚತುರ್ದಷ್ಟಶ್ಚತುರ್ಭುಜ:” ವಿಂ ಸಂ | ಚತವಾರೋ ಬುಢ್ನಾಢ್ನಾಢ್ನ: ಆತ್ಢಾಢ್ನಾನೋ ಯಸ್ಯ ವಾ |

**ಚತುರಾನನ ಚತುರಾನನ** (ಪುಂ) ಚತುರ್ಮುಖ, ಬ್ರಹ್ಮ. ಚತವಾರಿ ಆನನಾನಿ ಅಸ್ಯ | “ಇತರತಾಪಶತಾನಿ ಯಥೇಚ್ಛಯಾ ವಿತರ ತಾನಿ ಸಹೇ ಚತುರಾನನ | ಅರಸಿಕೇ ತು ರಹಸ್ಯನಿವೇಢ್ನನಂ ಶಿರಸಿ ಢಾಲಿಖ ಢಾಲಿಖ ಢಾಲಿಖ” ಁಢ್ನಂ |

**ಚತುರಾಶ್ರಢ್ನ ಚತುರಾಶ್ರಢ್ನ** (ನಂ) ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ, ಗಾರ್ಹಸ್ಥ್ಯ, ವಾನಪ್ರಸ್ಥ ಢತ್ತು ಸಂನ್ಯಾಸಗುಣೆಬ ನಾಲ್ಕು ಆಶ್ರಢ್ನಗುಣು. ಚತುರ್ಗಾಢ್ನಾಶ್ರಢ್ನಾಣಾಂ ಸಢಾಹಾರ: | “ಚತವಾರ ಆಶ್ರಢ್ನಾಶ್ಚೇವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ: | ಗಾರ್ಹಸ್ಥ್ಯಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಚರ್ಯಂ ಚ ವಾನಪ್ರಸ್ಥಂ ತು ಢಿಷ್ಕುಕಢ್ನ” | ಀ ನಾಲ್ಕು ವಿಢ್ನ ಆಶ್ರಢ್ನಗುಣೆಢ್ನ ವಿಪ್ರಢ್ನು ಢಶವಿಢ್ನ ಧರ್ಮಗುಣೆಢ್ನ ಅಚರಿಸಬೇಕು. “ಚತುರ್ಭಿರಪಿ ಚೇವೇತೇನಿತ್ಯಢಾಶ್ರಢ್ನಿಢಿಢ್ನಿಜೇ: | ಢಶಲಕ್ಷಣಕೋ ಧರ್ಮ: ಸೇವಿತವ್ಯ: ಪ್ರಯತ್ನತ:” ಢನುಂ ೬-೨೨ |

**ಚತುರೂಪಣ ಚತುರೂಪಣ** (ನಂ) ಹಿಪ್ಪಲಿ, ಹಿಪ್ಪಲಿ ಬೇರು, ಶುಂಠಿ ಢತ್ತು ಢುಣಿಸು. ಚತುರ್ಗಾಢ್ನೂಪಣಾಢ್ನಾ ಸಢಾಹಾರ: | “ಶ್ಯೂವಣಂ ಸಕುಣಾಢ್ನೂಲಂ ಕಥಿತಂ ಚತುರೂಪಣಢ್ನ | ವ್ಯೂಪಸ್ಯೇವ ಗುಣಾ: ಪ್ರೂಕ್ತಾ: ಅಢಿಕಾಶ್ಚತುರೂಪಣೇ” ಢಾವಪ್ರಂ |

**ಚತುರ್ಗುಣ ಚತುರ್ಗುಣ** (ಪುಂ) ನಾಲ್ಕರ ಒಢ್ನು ಗುಂಪು, ನಾಲ್ಕು ಢುಂಡಿಗುಳ ಅಥವಾ ನಾಲ್ಕು ವಸ್ತುಗುಳ ಗುಂಪು. ಚತುರ್ಗಾಢ್ನ ಗುಣ: |

**ಚತುರ್ಗತಿ ಚತುರ್ಗತಿ** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಚತುರ್ಗಾಢ್ನಾಶ್ರಢ್ನಧರ್ಮಿಣಾಢ್ನಾಶ್ರಢ್ನಿಣಾಂ ವಾ ಗತಿ-ರಾಶ್ರಯ: | ಁಪಾಸಕಾಢ್ನಿಢಿಯೂಗತಾರತಢ್ಯಕೃತಕ್ರಢಾಚ್ಛತಸೋ ಗತಯ: ಪ್ರಾಪ್ತಯೂಜಸ್ಮಿಢ್ನ ವಾ | “ಚತಸ್ರ: ಪ್ರಾಪ್ತಯೂ ಯಸ್ಮಿಢ್ನ ಢಕ್ತಾನಾಂ ಸ ಚತುರ್ಗತಿ:” ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: | “ಚತುರ್ಮೂರ್ತಿಶ್ಚತುರ್ಬಾಹು-ಶ್ಚತುರ್ವ್ಯುಹಶ್ಚತುರ್ಗತಿ:” ವಿಂ ಸಂ |

**ಚತುರ್ಗುಣ ಚತುರ್ಗುಣ** (ವಿಂ) ನಾಲ್ಕರಷ್ಟು ಅಢಿಕವಾಢ್ನ, ನಾಲ್ಕಡಿ ಹೆಚ್ಚುಗಿರುವ, ಚತವಾರೋ ಗುಣಾ ಯಸ್ಯ |

**ಚತುರ್ಜಾತಿಕ ಚತುರ್ಜಾತಿಕ** (ನಂ) ಁವಂಗಪಟ್ಟೆ (ಢಾಲ್ಕಿಢ್ನಿ) ಯಾಲ್ಕಿ ಜಾಪತ್ರೆ ಢತ್ತು ನಾಗಕೇಸರ (ನಾಗಸಂಢಿಗಿ) ಀ ನಾಲ್ಕರ ಗುಂಪು. ಚತುರ್ಗಾಢ್ನ ಜಾತಕಾನಾಂ ಸಢಾಹಾರ: | “ಶ್ರಿಕಡುಚತುರ್ಜಾತಿಕಕುಸ್ತುಢ್ನುಢಿಶ್ರಂ ಳಾಢೇತ್” ಸುಶ್ರುತಂ |

**ಚತುರ್ಣವತಿ ಚತುರ್ಣವತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತುಂಬುತ್ತನಾಲ್ಕು. ಚತುರ್ಭಿರಢಿಕಾ ನವತಿ: | (ವಿಂ) 2. ತುಂಬುತ್ತನಾಲ್ಕು ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ. ಚತುರ್ಭಿರಢಿಕಾ ನವತಿಯಸ್ಯ | ಚತುರ್ಣವತಿ ಪ್ರೂಣೇ “ಁಡ್” (೪-೨-೪೬) | (ವಿಂ) ಚತುರ್ಣವತ: ಚತುರ್ಣವತೀ. ತುಂಬುತ್ತನಾಲ್ಕುನೆಯ. ಁಟೋ ವಾ “ತಢಡ್” (೪-೨-೪೬) | ಚತುರ್ಣವತಿತಢ: ಚತುರ್ಣವತಿಕಢಾ: | ಸ್ತ್ರಿಯಾಢ್ನ “ಁಢಿಪ್” (೪-೨-೨೪) | ಚತುರ್ಣವತೀ ಚತುರ್ಣವತೀ. ಚತುರ್ಣವತಿತಢೀ ಚತುರ್ಣವತಿಕಢಿಢಾ.

**ಚತುರ್ಥ ಚತುರ್ಥ** (ವಿಂ) ನಾಲ್ಕನೆಯ. ಚತುರ್ಗಾಢ್ನ ಪ್ರೂಣ: “ಁಡ್” (೪-೨-೪೬) | “ಶ್ಯುಕ್” (೪-೨-೪೨) | “ಚತುರ್ಥೂಪಾಯ-ಸಾಧ್ಯೇ ತು ರಿಪೂ ಸಾಢ್ನತ್ವಢಪಕ್ರಿಯಾ” ಢಾಢಂ ೨-೪೪ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಢ್ನ “ಁಢಿಪ್” (೪-೨-೨೪) | ಚತುರ್ಥಿ ಚತುರ್ಥೀ.

**ಚತುರ್ಥಿ ಚತುರ್ಥೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚತುರ್ಥೀ ತಿಥಿ, ಪಕ್ಷಢ್ನ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಢಿನ. ಀ ತಿಥಿಯು ಚಂಢ್ರಢ್ನ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಕಲೆಯು ವೃಢ್ನಿಕ್ಷಯಗುಳಢ್ನು ಹುುಂಢುವ ಢಿವಸ. ಀ ಢಿವಸಢ್ನ ಚಂಢ್ರಢ್ನಢ್ನು ಢುೂಡಕೂಡಢೇಬ ವಚನವಿರು ವುಢು. “ಚತುರ್ಥ್ಯಾಢ್ನುಢಿತಶ್ಚಢ್ನರೋ ಢೇಕ್ಷಿತವ್ಯ: ಕಢಾಚನ” | 2. (ವ್ಯಾಕರಣಢಲ್ಲಿ) ನಾಲ್ಕನೆಯ ವಿಭಕ್ತಿ. “ಚತುರ್ಥಿ ಸಂಪ್ರಢಾನೇ” (೨-೨-೨೨) |

**ಚತುರ್ಥಕ ಚತುರ್ಥಕ** (ಪುಂ) ನಾಲ್ಕು ಢಿನಗುಳಗುೂಂಢಾವೃತ್ತಿ, ಒರುವ ಜ್ವರ, ನಾಲ್ಕನೆಯ ಜ್ವರ. “ಢಿನತ್ರಯಢತಿಕಢ್ಯ ಯ: ಸ್ಯಾತ್ ಸ ಹಿ ಚತುರ್ಥಕ:” |

**ಚತುರ್ದಂತ ಚತುರ್ದಂತ** (ಪುಂ) ಐರಾವತ, ಇಂಢ್ರಢ್ನ ಅಢೆ. ಚತವಾರೋ ಢಢ್ತಾ ಅಸ್ಯ | “ಀರಾವಣೂಁಶ್ರಢಾತಙ್ಗಶ್ಚತುರ್ದಂತೂಁಕಂಸೂಢರ:” ಅಢಿಂ ಚಿಂ | “ಚತುರ್ದಂತಗಜಾರೂಢೋ ವಜ್ರೀ ಕುಲಿಶಢುತ್ಕರ:” ವಿಂ ಧಂ |

**ಚತುರ್ದಶ ಚತುರ್ದಶ** (ವಿಂ) ಹಢಿನಾಲ್ಕುನೆಯ. ಚತುರ್ದಶಢ್ನ “ಁಡ್” (೪-೨-೪೬) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಢ್ನ “ಁಢಿಪ್” (೪-೨-೨೪) | -ಢಶೀ -ಢಶೀ.

**ಚತುರ್ದಶಢ್ನ ಚತುರ್ದಶಢ್ನ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ಹಢಿನಾಲ್ಕು. ಚತುರ್ಭಿರಢಿಕಾ ಢಶ | “ಸಪ್ತತಢ್ನುಜಢ್ನಾ ಚತುರ್ದಶ ಜಗಢ್ನಿ ಯಶ:ಪಟಶ್ಚ” ಢೇಷಂ ೨೨-೨೦೦ |

**ಚತುರ್ದಶಭುವನ ಚತುರ್ದಶಭುವನ** (ನಂ) ಭೂಲೂಕ ಢುೂಢಲಾಢ್ನ ಹಢಿನಾಲ್ಕು ಲೂಕಗುಳು. ಚತುರ್ದಶಾಢ್ನಾ ಢುವನಾಢ್ನಾ ಸಢಾಹಾರ: | ಪಾತ್ರಾಂ ನ “ಁಢಿಪ್” (ವಾಂ ೨-೪-೨೭) |

**ಹಢಿನಾಲ್ಕು ಲೂಕಗುಳು:** (1) ಢೂಲೂಕ: (2) ಢುವಲೂಕ: (3) ಸ್ವಲೂಕ: (4) ಢಹಲೂಕ: (5) ಜಢೂಲೂಕ: (6) ತಪೂಲೂಕ: (7) ಸತ್ಯಲೂಕ: ಇವು ಁಳು ಁೂಢ್ನುಢ್ನ



ಲೋಕಗಳು. (1) ಅತಲಮ್ (2) ವಿತಲಮ್ (3) ಸುತಲಮ್ (4) ತಲಾತಲಮ್ (5) ಮಹಾತಲಮ್ (6) ರಸಾತಲಮ್ (7) ಪಾತಾಲಮ್ ಇವು ಏಳು ಅಧೋಲೋಕಗಳು. ಈ ಹದಿನಾಲ್ಕು ಲೋಕಗಳೂ ವಿರಾಟ್ ಪ್ರರುಷನ ಅವಯವಗಳಾಗಿ ಕಲ್ಪಿತವಾಗಿವೆ.

“ಸ ಏವ ಪುರುಷಸ್ತಸ್ಮಾದೃಷ್ಣಂ ನಿರ್ಮಿತ್ರ ನಿರ್ಗತಃ | ಸಹಸ್ರೋ-  
ವೃಂದಿಬಾಹ್ವಶಃ ಸಹಸ್ರಾನನಶಿಖಿವಾನ್ | ಯಸ್ಯೇಹಾವಯವಲೋಕಾನ್  
ಕಲ್ಪಯಂತಿ ಮನೀಷಿಣಃ || ಕಡ್ಢಾದಿಭಿರಃ ಸಪ್ತ ಸಪ್ತೋರ್ವ  
ಬ್ರವಣಾದಿಭಿಃ | ಪುರುಷಸ್ಯ ಮುಖಂ ಬ್ರಹ್ಮ ಕ್ಷತ್ರಮೇತಸ್ಯ ಬಾಹವಃ |  
ಋವೋವೈಶ್ಯೋ ಭಗವತಃ ಪದ್ಮಾಂಶುರೋಽಸ್ಮಜಾಯತ” || ಇವುಗಳಲ್ಲಿ  
ಏಪ್ಪ ಉರ್ಧ್ವಲೋಕಗಳು ನಡುವಿಗೆ ಮೇಲುಭಾಗದಲ್ಲೂ  
ಏಪ್ಪ ಅಧೋಲೋಕಗಳು ನಡುವಿಗೆ ಕೆಳಭಾಗದಲ್ಲೂ  
ಕಲ್ಪಿತವಾಗಿವೆ. ಭೂರ್ಲೋಕ ಪಾದಗಳಲ್ಲಿ, ಭುವರ್ಲೋಕ  
(ನಾಭಿ) ಹೊಕ್ಕಲ್ಲಿ, ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ಸ್ವರ್ಲೋಕ, ಎದೆ  
ಯಲ್ಲಿ ಮಹರ್ಲೋಕ, ಕಂಠದಲ್ಲಿ ಜನೋಲೋಕ, ಸ್ತನ  
ಗಳೆರಡರಲ್ಲೂ ತಪೋಲೋಕ, ತಲೆಗಳಲ್ಲಿ ಸತ್ಯಲೋಕ,  
ಕಟಿಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಅತಲ, ತೊಡೆಗಳಲ್ಲಿ ವಿತಲ, ಮಂಡಿಗಳಲ್ಲಿ  
ಸುತಲ, ಮೊಣಕಾಲುಗಳಲ್ಲಿ ತಲಾತಲ, ಕಾಲುಗಳ ಗಂಟು  
ಗಳಲ್ಲಿ ಮಹಾತಲ, ಕಾಲುಗಳ ತುದಿಯಲ್ಲಿ ರಸಾತಲ,  
ಕಾಲುಗಳ ತಳದಲ್ಲಿ ಪಾತಾಲ ಈ ರೀತಿ ಹದಿನಾಲ್ಕು  
ಲೋಕಗಳೂ ಪರಮಾತ್ಮನ ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿವೆ.  
“ಭೂಲೋಕಃ ಕಲ್ಪಿತಃ ಪದ್ಮಾಂಶು ಭುವಲೋಕೋಽಸ್ಯ ನಾಭಿಃ |  
ಹೃದಾ ಸ್ವಲೋಕಃ ತುರಸಾ ಮಹಲೋಕೋ ಮಹಾತ್ಮನಃ | ಶ್ರೀವಾಯಾಂ  
ಜನಲೋಕಃ ತಪಾಲೋಕಃ ಸ್ತನದ್ವಯಾತ್ | ಮೂರ್ಧನಿಃ ಸತ್ಯಲೋಕಃ  
ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕಃ ಸನಾತನಃ || ತತ್ಕಡ್ಢಾಂ ಚಾತಲಂ ಕಲ್ಪತಂ ಕೂರ್ಮಾಂ  
ವಿತಲಂ ವಿಶ್ವಾಂ | ಜಾನುಮ್ಬಾಂ ಸುತಲಂ ಶುಕ್ಲಂ ಜಹ್ಣುಮ್ಬಾಂ ತು  
ತಲಾತಲಮ್ | ಮಹಾತಲಂ ತು ಗುಲ್ಫಮ್ಬಾಂ ಪ್ರಪದಾಮ್ಬಾಂ ರಸಾತಲಮ್ |  
ಪಾತಾಲಂ ಪಾದತಲತಃ ಇತಿ ಲೋಕಮಯಃ ಪುಮಾನ್” ಭಾಗಂ ೨-೪ |

ಈ ಚತುರ್ದಶಲೋಕಗಳೂ ಮನುಷ್ಯನ ಶರೀರದಲ್ಲಿ  
ಇರುವುವು. ಯೋಗಿಗಳಿಗೆ ಮಾತ್ರ ಗೋಚರವಾಗುವುದ  
ರಿಂದ ಇವು ತಮ್ಮ ಶರೀರದಲ್ಲಿರುವಂತೆ ಯೋಗಿಗಳು  
ಧ್ಯಾನಮಾಡಬೇಕೆಂದು ಯೋಗಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ.  
“ಬ್ರಹ್ಮಾಣ್ಡೇ ಸಂತಿ ಯೇ ಅಂಟಾಃ ಪಿಂಡಮಧ್ಯೇಽಪಿ ಸಂಸ್ಥಿತಾಃ |  
ತಲಂ ಪಾದಾಙ್ಗುಲತಲೇ ತಸ್ಯೋಪರಿ ತಲಾತಲಮ್ | ಮಹಾತಲಂ  
ಗುಲ್ಫಮಧ್ಯೇ ಗುಲ್ಫೋಪರಿ ರಸಾತಲಮ್ | ಸುತಲಂ ಜಹ್ಣುಯೋರ್ಮಧ್ಯೇ  
ವಿತಲಂ ಜಾನುಮಧ್ಯಗಮ್ | ಋವೋರ್ಮಧ್ಯೇ ತಲಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಸಪ್ತ  
ಪಾತಾಲಮೀರಿತಮ್ | ತಲಾತಲಂ ಚಾತಲಂ ಚ ಮಹಾತಲರಸಾತಲಮ್ |  
ಸಪ್ತ ಪಾತಾಲಮೇತತ್ ಸುತಲಂ ವಿತಲಂ ತಲಮ್ | ಇದಾನಿಂ ಪಿಂಡ-  
ಮಧ್ಯೇ ತು ಸಪ್ತಲೋಕಂ ಶೃಣು ಪ್ರಿಯೇ | ಮೂಲಧಾರೆ ತು ಭೂಲೋಕೋ  
ಲಿಂಗಾಗ್ರೇ ತು ಭುವಸ್ತತಃ | ಸ್ವಲೋಕೋ ಲಿಂಗಮೂಲೇ ತು ಮೇರುಮೂಲೇ

ಮಹಸ್ತಥಾ | ಮೇರುಚ್ಛಿದ್ರೇ ಜನಲೋಕೋ ಮೇರುನಾಡ್ಯಾಂ ತಪಸ್ತಥಾ |  
ಕಮಲೇ ಸತ್ಯಲೋಕಃ ಸ್ತು ಇತಿ ಲೋಕಾಃ ಪೃಥಕ್ ಪೃಥಕ್” |

ಹೀಗೆಯೇ ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಸಪ್ತದ್ವೀಪಗಳೂ ಸಪ್ತಸಮುದ್ರ  
ಗಳೂ ಅಷ್ಟಪರ್ವತಗಳೂ ಸಕಲನದಿಗಳೂ ಇರುವುವು.

**ಸಪ್ತ ದ್ವೀಪಗಳು:** “ಸಪ್ತದ್ವೀಪಾನಿ ಕಥ್ಯಂತೇಽಪುನಾ  
ತಾನಿ ಶೃಣು ಪ್ರಿಯೇ | ಜಂಬುದ್ವೀಪಃ ಸಪ್ತದ್ವೀಪಃ ಶಾಕದ್ವೀಪಃ  
ಮಧ್ಯಮೇ | ಶಾಲ್ಮದ್ವೀಪಃ ಶಿರೋಮಧ್ಯೇ ಮಾಂಸಮಧ್ಯೇ ಕುಶಸ್ತಥಾ |  
ತ್ವಚಿ ಕ್ರೌಂಚೋ ಲೋಮಮಧ್ಯೇ ಗೋಮೇದದ್ವೀಪಃ ಇರಿತಃ | ನಖಮಧ್ಯೇ  
ತಥಾ ಶ್ವೇತಃ ಸಪ್ತದ್ವೀಪಾ ವಸುಂಧರಾ” |

**ಸಪ್ತ ಸಮುದ್ರಗಳು:** “ಲವಣಃ ಸ್ವೇದಮಧ್ಯೇ ತು  
ಇಕ್ಷುರಕ್ತೇ ಮಧು ತ್ವಚಿ | ಸರ್ಪಿಮೇದೋವಸಾಮಧ್ಯೇ ದಧಿ ಕ್ಷೀರಂ  
ಲಲಾಟಕೇ | ವೀರ್ಮಧ್ಯೇಽಮೃತೋ ಜಲಃ ಪಾದೇ ಕೂರ್ಮಃ ಸ್ಥಿತೋ  
ಮಹಾನ್” |

**ನವದ್ವಾರಗಳಲ್ಲಿ ನವ ಖಂಡಗಳು:** “ಪಾರ್ವತೀ  
ಭಾರತಂ ಖಂಡಂ ಕಾಶ್ಮೀರಂ ತ್ರಿಕಮಂಡಲಂ | ದ್ವಿಜಖಂಡಮೇಕಪಾದಂ  
ಖಂಡಂ ವಕ್ರೇ ಸಮಂಡಲಮ್ | ಕೇವಲಗರ್ತಗಾಂಧಾರಂ ನವಖಂಡಮಿತಿ  
ಸ್ಥಿತಮ್” |

**ಅಷ್ಟ ಪರ್ವತಗಳು:** “ಮೇರುದಂಡೇ ಸುಮೇರುಸ್ತು ಪೀಠಮಧ್ಯೇ  
ಹಿಮಾಲಯಃ | ವಾಮಸ್ಕಂಧೇ ತಥಾ ದಕ್ಷೇ ಮಲಯೋ ಮಂದರಾಚಲಃ |  
ವಿಂಧ್ಯಸ್ತು ದಕ್ಷಿಣೇ ಕರ್ಣೇ ವಾಮೇ ಮನಾಕ ಇಶ್ವರಿ | ಲಲಾಟೇ  
ಮಧ್ಯದೇಶೇ ತು ಶ್ರೀಶೈಲಃ ಪರಮೇಶ್ವರಿ | ತಥಾ ಬ್ರಹ್ಮಕಪಾಲಸ್ಥಃ  
ಕೇಲಾಸಃ ಪರ್ವತೋ ಮಹಾನ್” |

**ನವನಾಡಿಗಳಲ್ಲಿ ನದಿಗಳು:** “ಶರೀರೇ ನವನಾಡೀಸ್ಥಾಃ  
ನರ್ಮದಾ ಚ ಮಹೇಶ್ವರಿ | ಇಡಾಯಾಂ ಯಮುನಾ ದೇವಿ ಪಿಙ್ಗಲಾಯಾಂ  
ಸರಸ್ವತೀ | ಸುಷುಮ್ನಾಯಾಂ ವಹೇದ್ಗಂಧಾ ಚಾನ್ಯಾನ್ಯಾಸು ಚ  
ನಾಡಿಭು | ಗಂಧಾ ಸರಸ್ವತೀ ಗೋದಾ ನರ್ಮದಾ ಯಮುನಾ ತಥಾ |  
ಕಾವೇರೀ ಚಂದ್ರಭಾಗಾ ಚ ವಿಸ್ತತಾ ಚ ಇರಾವತೀ” | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಚತುರ್ದಶರತ್ನ ಚತುರ್ದಶರತ್ನ (ನಂ ಬಂ ವಂ) ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ**  
ದೊರೆತ ಹದಿನಾಲ್ಕು ರತ್ನಗಳು. (1) ಲಕ್ಷ್ಮಿ, (2) ಕೌಸ್ತುಭ  
ಮಣಿ, (3) ಪಾರಿಜಾತವೃಕ್ಷ, (4) ಸುರೇ, (5) ಧನ್ವಂತರಿ,  
(6) ಚಂದ್ರ, (7) ಕಾಮಧೇನು, (8) ಐರಾವತ, (9) ರಂಭೆ  
ಮೊದಲಾದ ಅಪ್ಸರೆಯರು, (10) ಉಚ್ಚೈಃಶ್ರವಸ್ಸು,  
(11) ವಿಷ್ಣು, (12) ಶಂಖ, (13) ಅಮೃತ, (14) ಹರಿ  
ಧನುಸ್ಸು. ಇವು ಹದಿನಾಲ್ಕು ರತ್ನಗಳು.

**ಚತುರ್ದಶವಿಧಾ ಚತುರ್ದಶವಿದ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ ಬಂ ವಂ) ಹದಿ**  
ನಾಲ್ಕು ವಿದ್ಯೆಗಳು. ನಾಲ್ಕು ವೇದಗಳು ಅರು ವೇದಾಂಗ  
ಗಳು ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ ಪುರಾಣ ಮೀಮಾಂಸಾ ನ್ಯಾಯ (ತರ್ಕ)  
ಇವು ಚತುರ್ದಶ ವಿದ್ಯೆಗಳು. “ಅಜ್ಞಾನಿ ವೇದಾ-  
ಶ್ಚತ್ವಾರೋ ಮೀಮಾಂಸಾ ನ್ಯಾಯವಿಸ್ತರಃ | ಪುರಾಣಂ ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರಂ ಚ



चतुर्युगं चतुर्युगं (न०) १. कृत त्रेता द्वापर  
मत्तु कलिंगं नाल्पु युगगणु. चतुर्णां युगानां  
समाहारः। पात्रादित्वात् न डीप्। ४३,२०,०००  
मानुष वंशगणु अधवा १२,००० दैव वंशगणु







ಜ್ಞಾನಿ ಚ ಭರತವರ್ಮ" ಗೀತಾ ೭-೧೬. "ಪಾರುಷ್ಯಮನುತಂ ಚೈವ  
ಪೇಶುನ್ಯಂ ಚಾಪಿ ಸರ್ವಶಃ. ಅಸಮ್ಬಂಧಪ್ರಲಾಪಶ್ಚ ವಾಙ್ಮಯಂ  
ಸ್ಯಾನ್ವತುರ್ವಿಧಮ್" ಮನುಂ ೫-೬.

**ಚತುರ್ವೇದ ಚತುರ್ವೇದ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. ಚತುರೋ  
ವೇದಾಃ ಪ್ರತಿಪಾದಕಾ ಯಸ್ಯ. 2. ನಾಲ್ಕು ವೇದಗಳನ್ನು ತಿಳಿದ  
ವನು. ಚತುರೋ ವೇದಾನ್ ವೇ ಅಧೀತೇ ವಾ — ವಿದ "ಅನ್"  
(೪-೨-೫೯). ಅಣೋ ಲುಕ್ (೪-೧-೮೮).

**ಚತುರ್ವೇದವಿದ್ ಚತುರ್ವೇದವಿದ್** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ.  
ಚತುರೋ ವೇದಾನ್ ವೇದ — ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "ವಿವಿ" (೧-೨-೬೧).  
"ಚತುರಾತ್ಮಾ ಚತುರ್ಭಾವಃ ಚತುರ್ವೇದವಿದೇಕಪಾತ್" ವಿಂ ಸಂ.  
(ವಿಂ) 2. ನಾಲ್ಕು ವೇದಗಳನ್ನು ತಿಳಿದವನು.

**ಚತುರ್ವೈಹ ಚತುರ್ವೈಹ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಚತುರೋ  
ವೈಹಾ ಯಸ್ಯ. ವಾಸುದೇವಸಂಕರ್ಷಣಪ್ರದ್ಯುಮ್ನಾನಿದ್ಯು  
ರೂಪವಾದ ನಾಲ್ಕು ಮೂರ್ತಿಗಳುಳ್ಳವನಾದುದರಿಂದ  
ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು. "ಚತುರ್ಮುತಿಶ್ಚತುರ್ಬಾಹುಶ್ಚತು-  
ರ್ವೈಹಶ್ಚತುರ್ಗತಿಃ" ವಿಂ ಸಂ. 2. ಮೋಕ್ಷಶಾಸ್ತ್ರ. ಹೇಯಂ  
ಹಾನ ಹೇಯಂಹೇತು ಮತ್ತು ಹಾನೋಪಾಯಗಳೆಂಬ  
ನಾಲ್ಕು ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವುದರಿಂದ ಮೋಕ್ಷ  
ಶಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೆ ಈ ಹೆಸರು. (ನಂ) 3. ಆಯುರ್ವೇದಶಾಸ್ತ್ರ.  
ಚತುರೋ ವೈಹಾ ಯಸ್ಮಿನ್. ಆಯುರ್ವೇದವು ರೋಗ  
ಅರೋಗ್ಯ ರೋಗನಿದಾನ ಮತ್ತು ಭೈಷಜ್ಯಗಳೆಂಬ ನಾಲ್ಕು  
ಭಾಗಗಳುಳ್ಳದ್ದಾದುದರಿಂದ ಅದಕ್ಕೆ ಈ ಹೆಸರು.

**ಚತುರ್ಹಯಿನ ಚತುರ್ಹಯಿನ** (ವಿಂ) ನಾಲ್ಕು ವರ್ಷ  
ವಯಸ್ಸುಳ್ಳ (ಪ್ರಾಣ). ಚತುರೋ ಹಾಯನಾ ಯಸ್ಯ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಛಿಪ್" (೪-೧-೨೭). ಣತ್ವಮ್ (ವಾಂ ೪-೧-೨೭).  
-ಹಾಯಣಿ -ಹಾಯಣೀ. ವಯೋವಾಚಕಾದನ್ಯತ್ರ ಛಿಪ್ ಣತ್ವಂ ಚ  
ನ. ಚತುರ್ಹಯಿನಾ ಶಾಲಾ.

**ಚತುರ್ಹೋತ್ರ ಚತುರ್ಹೋತ್ರ** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಚತುರಾರಿ ಹೋತ್ರಾಣಿ  
ಯಸ್ಯ.

**ಚತುರ್ವತ್ವಾರಿಶ ಚತುರ್ವತ್ವಾರಿಶ** (ವಿಂ) ನಲವತ್ತನಾಲ್ಕು  
ನೆಯ. ಚತುರ್ವತ್ವಾರಿಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ "ಛಿಪ್" (೫-೨-೪೮).  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛಿಪ್" (೪-೧-೧೫). -ಚತ್ವಾರಿಶಿ  
-ಚತ್ವಾರಿಶೀ.

**ಚತುರ್ವತ್ವಾರಿಶತ್ ಚತುರ್ವತ್ವಾರಿಶತ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಲವತ್ತು  
ನಾಲ್ಕು. ಚತುರಧಿಕಾ ಚತ್ವಾರಿಶತ್.

**ಚತುಃಶೃಂಗ ಚತುಃಶೃಂಗ** (ಪುಂ) 1. ಕುಶದ್ವೀಪದ ಒಂದು  
ಪರ್ವತ. ಚತುರಾರಿ ಶೃಂಗಾಣ್ಯಸ್ಯ. "ಚಕ್ರಶ್ಚತುಃಶೃಂಗಃ ಕಪಿಲ-  
ಶ್ಚಿತ್ರಕೂಟಃ ದೇವಾನೀಕಃ ಋಷಿರೋಮಾ ದ್ರವಿಣ ಇತಿ" ಭಾಗಂ  
3-3

೫-೨೦-೧೫. 2. ಶಬ್ದಶಾಸ್ತ್ರ. ಶಬ್ದಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ನಾಮ  
ಆಖ್ಯಾತ ನಿಪಾತ ಮತ್ತು ಉಪಸರ್ಗರೂಪವಾದ ನಾಲ್ಕು  
ವಿಧ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಬೋಧಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.  
(ವಿಂ) 3. ನಾಲ್ಕು ಕೊಂಬುಗಳುಳ್ಳ.

**ಚತುಷ್ಕ ಚತುಷ್ಕ** (ನಂ) 1. ನಾಲ್ಕು. ಚತುರೋಽವಯವಾ ಯಸ್ಯ.  
"ದ್ವಿಚತುಷ್ಕಮಿದಂ ಪ್ರಭೂತಸಾರಂ ಪಠತಾಂ ದೇಹ್ನತನಾಯಕಪ್ರಣೀತಮ್"  
ಸುದರ್ಶಂ. 2. ನಾಲ್ಕು ಮೂಲಗಳುಳ್ಳ ಆವರಣವಿರುವ  
ಒಂದು ಅಂಗಳ. 3. ನಾಲ್ಕು ಕಂಬಗಳುಳ್ಳ ಮಂಟಪ.  
"ವೇದಭನಿರ್ವಿಷ್ಣುಮಥೋ ವಿವೇಶ ನಾರೀಮನಾಸೀವ ಚತುಷ್ಕಮಂತಃ"  
ರಘುಂ ೭-೧೭. 4. ನಾಲ್ಕುರ ಒಂದು ಗುಂಪು. "ಏತತ್  
ಕಠತಮಂ ವಿद्याತ್ ಚತುಷ್ಕಂ ಕಾಮಜೇ ಗಣೇ" ಮನುಂ ೭-೫೦.  
5. ನಾಲ್ಕು ರಸ್ತೆಗಳು ಕೂಡುವ ಒಂದು ಚೌಕ. "ಚತುಷ್ಪಥೇ  
ತು ಸಂಸ್ಥಾನಂ ಚತುಷ್ಕಮ್" ಅಭಿಂ ಚಿಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಕೀ -ಕೀ. 6. ಸೊಳ್ಳೆಯ ತೆರೆ. 7. ಪುಷ್ಕರಿಣಿ.  
ನಾಲ್ಕು ಮೂಲಗಳುಳ್ಳ ಸರೋವರ. "ಚತುಷ್ಕೀ ಮಶಕಹರ್ಯಾ  
ಪುಷ್ಕರಿಣ್ಯಂತರೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ.

**ಚತುಷ್ಕರ್ಣ ಚತುಷ್ಕರ್ಣ** (ವಿಂ) 1. ನಾಲ್ಕು ಕಿವಿಗಳುಳ್ಳ.  
2. ನಾಲ್ಕು ಕಿವಿಗಳಿಂದ ಕೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಇಬ್ಬರು ಮಾತ್ರ  
ಸೇರಿ ಮಾಡುವ ಸಮಾಲೋಚನೆ, —ಮಂತ್ರಾಲೋಚನೆ.  
"ಪದ್ಕರ್ಣೋ ಭಿಷ್ಯತೇ ಮನ್ತ್ರಃ ಚತುಷ್ಕರ್ಣಃ ಸ್ಥಿರೋ ಭವೇತ್"  
ಪञ್ಚತಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕರ್ಣಿ -ಕರ್ಣೀ. 3. ಸ್ಕಂದನ  
ಮಾತೃಗಣದಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬಳು.

**ಚತುಷ್ಕಲ ಚತುಷ್ಕಲ** (ಪುಂ) ಆರ್ಯಾದಿ ಮಾತ್ರಾ ವೃತ್ತ  
ಗಳಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕು ಮಾತ್ರಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಗಣ. "ಜ್ಞೇಯಾಃ  
ಸರ್ವಾದಿಮಧ್ಯಾಂತಗುರವೋಽತ್ರ ಚತುಷ್ಕಲಾಃ. ಗಣಾಶ್ಚತುರ್ಲಕ್ಷಪೇತಾಃ  
ಪञ್ಚಾರ್ಯಾದಿಷು ಸಂಸ್ಥಿತಾಃ" ವುಂ ೨೦.

**ಚತುಷ್ಕೋಣ ಚತುಷ್ಕೋಣ** (ಪುಂ) ನಾಲ್ಕು ಮೂಲಗಳುಳ್ಳ  
ಚೌಕವಾದ ಪ್ರದೇಶ. ಚತುರಾರಿ ಕೋಣಾ ಯತ್ರ.

**ಚತುಷ್ಠಯ ಚತುಷ್ಠಯ** (ನಂ) 1. ನಾಲ್ಕು ವಸ್ತುಗಳುಳ್ಳ  
ಒಂದು ಗುಂಪು, ನಾಲ್ಕುರ ಒಂದು ಸಮೂಹ. ಚತುರೋಽವಯವಾ  
ಯಸ್ಯ "ತಯಿ" (೫-೨-೪೨). 2. ನಾಲ್ಕು ಸಂಖ್ಯೆ.  
"ತಸ್ಮಾತ್ಪ್ರದೇಶಾನ್ವ ವಿತಾನವಂತಂ ಯುಕ್ತಂ ಮಣಿಸ್ತಮ್ಚತುಷ್ಠಯೇನ"  
ಕುಮಾಂ ೭-೧೨. 3. 1, 4, 7 ಮತ್ತು 10 ನೆಯ ರಾಶಿ  
ಗಳು, ಕೇಂದ್ರಸ್ಥಾನಗಳು. "ಕೇಂದ್ರಂ ಚತುಷ್ಠಯಂ ಜ್ಞೇಯಮ್".  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛಿಪ್" (೪-೧-೧೫). -ಯಿ -ಯಿ. "ಪ್ರವೃತ್ತಿ-  
ರಾಸೀಶ್ಚಂದ್ರಾನಾಂ ಚರಿತಾರ್ಥಾ ಚತುಷ್ಠಯಿ" ಕುಮಾಂ ೨-೧೭.

**ಚತುಷ್ಪಂಚಾಶತ್ ಚತುಷ್ಪಂಚಾಶತ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಐವತ್ತು  
ನಾಲ್ಕು. ಚತುರಧಿಕಾ ಪञ್ಚಾಶತ್. (ವಿಂ) 2. ಐವತ್ತನಾಲ್ಕು.



ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ, ಐವತ್ತನಾಲ್ಕರಿಂದ ಕೂಡಿರುವ. ತತಃ ಪೂರ್ಣಂ  
“ಛತ್” । ಚತುಷ್ಪತ್ವಾಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ “ಛತ್” (೪-೨-೪೮) ।  
ಚತುಷ್ಪತ್ವಾಶತಃ ಚತುಷ್ಪತ್ವಾಶತಃ. ಐವತ್ತನಾಲ್ಕನೆಯ.  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಛಿಪ್” (೪-೧-೧೫) । -ಪತ್ವಾಶತೀ-ಸಂಚಾರೀ.

ಚತುಷ್ಪಥ ಚತುಷ್ಪಥ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ ಗಾರ್ಹಸ್ಥ್ಯ  
ವಾನಪ್ರಸ್ಥ ಮತ್ತು ಸಂನ್ಯಾಸಗಳೆಂಬ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಆಶ್ರಮ  
ಗಳುಳ್ಳವನು. ಚತ್ವಾರಃ ಪಂಥಾನಃ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾದಯಃ ಆಶ್ರಮಾ  
ಯಸ್ಯ । 2. ನಾಲ್ಕು ರಸ್ತೆಗಳು ಸೇರುವ ಒಂದು ಚೌಕ.  
ಚತುರ್ಥಿ ಪಥಾ ಸಮಾಹಾರಃ “ಅಃ” (೪-೪-೭೪) ।

ಚತುಷ್ಪಥನಿಕೇತಾ ಚತುಷ್ಪಥನಿಕೇತಾ (ವಿಂ) ಸ್ಕಂದನ  
ಮಾತೃಗಣದಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬಳು. ಚತುಷ್ಪಥೇ ನಿಕೇತೋಽಸ್ಯಾಃ ।  
ನಾಲ್ಕು ರಸ್ತೆಗಳು ಸೇರುವ ಜಾಗದಲ್ಲಿ ಇವಳು ವಾಸಿಸು  
ವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ಚತುಷ್ಪಥರತಾ ಚತುಷ್ಪಥರತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ಕಂದನ ಮಾತೃ  
ಗಣದಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬಳು. ಚತುಷ್ಪಥೇ ರತಾ ।

ಚತುಷ್ಪದ ಚತುಷ್ಪದ (ವಿಂ) 1. ನಾಲ್ಕು ಕಾಲಗಳುಳ್ಳ  
ಪ್ರಾಣಿ. ಚತ್ವಾರಿ ಪದಾನಿ ಯಸ್ಯ । “ತರವಶ್ಚ ನಿರೂಪ-  
ಸೃಷ್ಟಾಙ್ಕುರಾ ನರಚತುಷ್ಪದಾ ಹೃಷಾಃ” ಬೃಹತ್ಸಂ ೨೧-೧೭ ।  
2. ಜ್ಯೋತಿಷೋಕ್ತವಾದ ಒಂದು ಕರಣ. “ಚತುಷ್ಪದಭವೋ  
ಮರ್ತ್ಯಃ ಸದಾಚಾರವಿವರ್ಜಿತಃ । ಸ್ವಲ್ಪವಿತ್ತಃ ಕ್ಷೀಣದೇಹಶ್ಚತುಷ್ಪದ-  
ಧನಾನ್ವಿತಃ” ।

ಚತುಷ್ಪಾದ್ ಚತುಷ್ಪಾದ್ (ವಿಂ) ನಾಲ್ಕು ಕಾಲಗಳುಳ್ಳ  
ಪ್ರಾಣಿ. ಚತ್ವಾರಃ ಪಾದಾಃ ಯಸ್ಯ । ಅನ್ತಯಲೋಪಃ (೪-೪-೧೪೦) ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ವಾ “ಛಿಪ್” (೪-೧-೮) । ಪಾದಃ ಪದ್ಮಾವಃ  
(೬-೪-೧೩೦) । ಚತುಷ್ಪದೀ ಚತುಷ್ಪದೀ.

ಚತುಷ್ಪಾದ್ ಚತುಷ್ಪಾದ್ (ವಿಂ) 1. ನಾಲ್ಕು ಕಾಲಗಳುಳ್ಳ  
ಪ್ರಾಣಿ. ಚತ್ವಾರಃ ಪಾದಾ ಯಸ್ಯ । ಸಮಾಸಾಂತವಿಧೇರಿನೀತ್ಯ-  
ತ್ವಾತ್ ಅನ್ತಯಲೋಪೋ ನ । 2. ನಾಲ್ಕು ಪಾದಗಳುಳ್ಳ (ಪದ್ಮ).  
“ಭಿನ್ನಚಿಹ್ನಚತುಷ್ಪಾದಂ ವಿಷಮಂ ಪರಿಕೀರ್ತಿಸಮ್” ಛಂದೋಮಂ ।

ಚತುಸ್ತ್ರಿಶ ಚತುಸ್ತ್ರಿಶ (ವಿಂ) ಮೂವತ್ತನಾಲ್ಕನೆಯ.  
ಚತುಸ್ತ್ರಿಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ “ಛತ್” (೪-೨-೪೮) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ಛಿಪ್” (೪-೧-೧೫) । -ತ್ರಿಶತಿ-ಶ್ತೀಂಚೀ.

ಚತುಸ್ತ್ರಿಶತ್ ಚತುಸ್ತ್ರಿಶತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೂವತ್ತನಾಲ್ಕು.  
ಚತುರಧಿಕಾ ತ್ರಿಶತ್ । (ವಿಂ) 2. ಮೂವತ್ತನಾಲ್ಕು  
ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ.

ಚತುಃಸನ ಚತುಃಸನ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ನಾಲ್ಕು “ಸನ” ವೆಂಬ  
ಶಬ್ದಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹೆಸರುಳ್ಳ ಬ್ರಹ್ಮನ ನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ  
ಪುತ್ರರು, ಸನಕ ಸನಂದನ ಸನತ್ಕುಮಾರ ಮತ್ತು ಸನತ್ಕುಜಾತ

ರೆಂಬ ಬ್ರಹ್ಮನ ನಾಲ್ಕು ಮಕ್ಕಳು. ಚತ್ವಾರಃ ಸನೇತಿ ಶಬ್ದಾ  
ನಾಮ್ನಿ ಯೇಷಾಮ್ ।

ಚತುರಾತ್ರ ಚತುರಾತ್ರ (ಪುಂ) 1. ನಾಲ್ಕು ರಾತ್ರಿಗಳಲ್ಲಿ  
ಮಾಡುವ ಯಾಗ. ಚತುರಾತ್ರಾಃ ರಾತ್ರಿಭಿಃ ನಿರ್ವೃತಃ ।  
(ನಂ) 2. ನಾಲ್ಕು ರಾತ್ರಿಗಳು. ಚತುರಾತ್ರಾಃ ರಾತ್ರಿಣಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ  
“ಅಚ್” (೪-೪-೮೭) । ಸಂಖ್ಯಾಪೂರ್ವಂ ರಾತ್ರಂ ಕಲೀಬಮ್ ಇತಿ  
ನಪುಂಸಕತ್ವಮ್ ।

ಚತ್ವರ ಚತ್ವರ (ನಂ) 1. ಸ್ಕಂಧಿಲ, ಹೋಮಕ್ಕಾಗಿ ಸಿದ್ಧ  
ಪಡಿಸಿದ ಸಮವಾದ ಭೂಭಾಗ. ಚತುರ್ಮುಖಃ - ಚತೇ  
(ಯಾಚನೇ) “ಛರಚ್” (೩೦ ೨-೧೨೨) । 2. ಮನೆಯ  
ಮುಂಭಾಗದ ಅಂಗಳ. ಚತುರ್ಮುಖಃ - ಚತೇ (ಯಾಚನೇ) “ಛರಚ್” ।  
“ಗೃಹಚಿಂತಾಂ ಗೃಹವಾಸ್ತುನಿ ಕಾರ್ಯಂತಾಂ ತ್ರಿಕಚತ್ವರಾಃ” ಹರಿವಂ ।  
3. ನಾಲ್ಕು ರಸ್ತೆಗಳು ಸೇರುವ ಜಾಗ. “ಅನುರಥ್ಯಾಸು  
ಸರ್ವಾಸು ಚತ್ವರೇಷು ಚ ಕೌರವ” ಭಾಂ ವನಂ ೧೫-೧೯ ।  
4. ಜನನಿಬಿಡವಾದ ಪ್ರದೇಶ, ಅನೇಕ ಮಂದಿ ವಾಸಿಸುವ  
ಜಾಗ. “ನ ಚತ್ವರೇ ನಿಶಿ ತಿಷ್ಠೇನ್ನಿಗೂಢಃ ನ ರಾಜಕಾಮ್ಯಾ  
ಯೋಷಿತಂ ಪ್ರಾರ್ಥಯೀತ” ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೩೬-೨೮ । “ಚತ್ವರಂ  
ಸ್ಯಾತ್ ಪಥಾಂ ಶ್ಲೇಷೇ ಸ್ಥಣ್ಡಿಲಾಜಿರಯೋರಪಿ” ಹೇಮಂ ।

ಚತ್ವರವಾಸಿನಿ ಚತ್ವರವಾಸಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ಕಂದನ ಮಾತೃ  
ವರ್ಗದಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬಳು. “ಋಕ್ಷಾಮ್ವಿಕಾ ನಿಮ್ಬುಟಿಕಾ ರಾಮಾ  
ಚತ್ವರವಾಸಿನಿ” ।

ಚತ್ವಾರಿಶತ್ ಚತ್ವಾರಿಶತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಲವತ್ತು.  
ಚತ್ವಾರಿ ದಶತಃ ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ । ನಿಪಾಂ (೪-೧-೫೯) ।  
(ವಿಂ) 2. ನಲವತ್ತು ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ. ಚತ್ವಾರಿಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ  
“ಛತ್” (೪-೨-೪೮) । ಚತ್ವಾರಿಶತಃ ಚತ್ವಾರಿಶತಃ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ಛಿಪ್” (೪-೧-೧೫) । ಚತ್ವಾರಿಶತೀ ಚತ್ವಾರಿಶತೀ. ಛತ್ವಾರಿ  
ವಾ “ತಮತ್” (೪-೨-೫೬) । ಚತ್ವಾರಿಶತಮಃ ಚತ್ವಾರಿಶತಮಃ  
ಶ್ತಮಃ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಛಿಪ್” (೪-೧-೧೫) । -ತಮೀ-ತಮೀಂ.

ಚತ್ವಾಲ ಚತ್ವಾಲ (ಪುಂ) 1. ಹೋಮದ ಕುಂಡ. 2. ದರ್ಭೆ.  
ಚತೇ (ಯಾಚನೇ) “ವಾಲಜ್” (ಬಾಹುಂ) । “ಚತ್ವಾಲೋ  
ಹೋಮಕುಂಡೇ ಸ್ಯಾತ್ ಪುನಿ ದರ್ಭೇಽಪಿ ದೃಶ್ಯತೇ” ಮೇದಿಂ ।

ಚದಿ - ಆಹ್ಲಾದೇ ದೀಪ್ತೌ ಚ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) ।  
ಚಂದತಿ ಅಚಂದೀತ್ । ಚಂದ । 1. ಸಂತೋಷಪಡು,  
2. ಪ್ರಕಾಶಿಸು.

ಚದಿರ ಚದಿರ (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಪೂರ. 2. ಚಂದ್ರ. 3. ಅನಿ.  
4. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ “ಛಿಪ್” (೪-೧-೬೧) ।

ಚದೇ - ಯಾಚನೇ (ಮ್ವಾಂ ತಮಂ ಧಿಕಂ ಸೇಂ) । ಚದತಿ, -ತೇ ।  
ಚದಾದ, ಚದೇ । ಅಚದೀತ್, ಅಚದಿಷ್ಠ । ಯಾಚಿಸು, ಬೇಡು.



ಚನ ಚನ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅಸಾಕಲ್ಯ, ಅಸಂಪೂರ್ಣ. "ಅಸಾ-  
ಕಲ್ಯೇ ತು ಚಿವ್ವನ" ಅಮಂ. 2. ವಿಸ್ಮಯ, ಅಶ್ಚರ್ಯ.  
"ಚನ ವಿಸ್ತಯೇಷಾಕಲ್ಯೇ" ಮೇದಿಂ.

ಚನಸ್ ಚನಸ್ (ನಂ) ಅನ್ಯ. ಚಾಯ್ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಅಸುನ್"  
ಹ್ರಸ್ವಶ್ಚ (ಉಂ ೪-೧೯೮) 1. ಚನೋ ಭಕ್ತಮ್ ಸಿಂ ಕೌಂ.

ಚಂದ ಚಂದ (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಪೂರ. 2. ಚಂದ್ರ. ಚದಿ  
(ಆಹ್ಲಾದೇ ದೀಪ್ತೀ ಚ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) 1.

ಚಂದನ ಚಂದನ (ಪುಂ) 1. ಗಂಧದ ಮರ. ಚಂದನತಿ -  
ಚದಿ (ಆಹ್ಲಾದೇ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) 1.

"ಭೌಗಿವೇಷನಮಾರ್ಗೇ ಚಂದನಾನಾಂ ಸಮರ್ಪಿತಮ್" ರಘುಂ ೪-೪೮.

2. ಒಬ್ಬ ವಾನರ. "ಚಂದನೋ ವಾನರಭಿದಿ ಶ್ರೀಖಂಡೇ"  
ಹೇಮಂ. "ಚಂದನೋಸ್ತೋ ಮಲಯಜೇ ಭದ್ರಕಾಲ್ಯಾ ನಪುಂಸಕಮ್"  
ಮೇದಿಂ. (ನಂ) 3. ರಕ್ತಚಂದನ, ಕೆಂಪು ದ ಚಂದನ.

ಚಂದನಗಿರಿ ಚಂದನಗಿರಿ (ಪುಂ) ಗಂಧದ ಮರಕ್ಕೆ ಉತ್ಪತ್ತಿ  
ಸ್ಥಾನವಾದ ಮಲಯಾಚಲ. ಚಂದನಸ್ಯೋತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನಂ ಗಿರಿ:

ಚಂದನಪುಷ್ಪ ಚಂದನಪುಷ್ಪ (ನಂ) ಲವಂಗ. ಚಂದನಮಿವ  
ಸುಗಂಧಿ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ.

ಚಂದನಶಾರಿಣಿ ಚಂದನಶಾರಿಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೋಗದೆ ಗಿಡ.

ಚಂದನರಸ ಚಂದನರಸ, ಚಂದನಸಾರ ಚಂದನಸಾರ (ಪುಂ)  
ಗಂಧದ ನೀರು, ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ತಯಾರಿಸಿ  
ಲ್ಪಟ್ಟ ಪನ್ನೀರು. ಚಂದನಸ್ಯ ರಸ: ಸಾರೋ ವಾ. "ವಿನ್ಯಸ್ತ-  
ಸ್ತವಯಿ ಸಾಂದ್ರಚಂದನರಸಸ್ಪರ್ಶೋ ನ ತಸ್ಯಾ: ಕರ:" ರತ್ನಾಂ ೩-೧.

ಚಂದನಾಚಲ ಚಂದನಾಚಲ -ಅಗ್ನಿ -ಅದ್ರಿ (ಪುಂ) ಮಲ  
ಯಾದ್ರಿ, ಮಲಯಪರ್ವತ.

ಚಂದನಾದಿ ಚಂದನಾದಿ (ಪುಂ) ಪಿತ್ತೋಪಶಮನ ಮಾಡುವ  
ಏಳು ದ್ರವ್ಯಗಳು. "ಚಂದನಂ ತಥಾಶೀರಂ ಕರ್ಪೂರಂ ಗಂಧ-  
ವಾಕುಚಿ. ಲಾಕರ್ಚುರಗೋ ಲಾ: ಸಪ್ತೇತೇ ಚಂದನಾದಯ:"

ಚಂದನೀಯಾ ಚಂದನೀಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋರೋಚನ.

ಚಂದನೋದಕ ಚಂದನೋದಕ (ನಂ) ಗಂಧದ ನೀರು, ನೀರಿ  
ನಲ್ಲಿ ಕದಲಲ್ಪಟ್ಟ ಗಂಧ. "ಚಂದನೋದಕಚಂದ್ರಾಂಶುಚಂದ್ರಕಾಂತಾ-  
ದಿಶಿತಲಾ:" ಕಾವ್ಯಾಂ ೨-೪೦.

ಚಂದಿರ ಚಂದಿರ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಚದಿ (ಆಹ್ಲಾದೇ) "ಕಿರಸ್"  
(ಉಂ ೧-೪೧) 1. 2. ಗಜ, ಅನೆ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಚಿಪ್"  
(೪-೧-೬೩) 1. "ಚಂದಿರೋ ಚಂದ್ರಹಸ್ತಿನಿ" ಸಿಂ ಕೌಂ.

ಚಂದಿಲ ಚಂದಿಲ (ಪುಂ) 1. ಚಕ್ರೋತದ ಸೊಪ್ಪು. 2. ಭರ್ಗ,  
ಶಿವ. 3. ನಾಪಿತ. ಮೇದಿಂ.

ಚಂದ್ರ ಚಂದ್ರ (ಪುಂ) 1. ಅತ್ರಿಯ ಮಂ. ಸೋಮ, ಕಲಾನಿಧಿ,  
ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಅಧಿಪತಿ. ಚದಿ (ಆಹ್ಲಾದೇ) + ಣಿಚ್ "ರಕ್"

(ಉಂ ೨-೧೩) 1. "ಯತೋ ಬೃಹತ್ಪಾರ್ವಣಚಂದ್ರಚಾರು ತಸ್ಯಾತಪತ್ರಂ  
ವಿಭರಾಂಬುವೇ" ಮಾಘಂ ೩-೨. ಚಂದ್ರನು ಗೌರವರ್ಣವುಳ್ಳ  
ವನು. "ರಕ್ತಶ್ಯಾಮೋ ಭಾಸ್ಕರೋ ಗೌರ ಇಂದುರ್ನಾತ್ಯುಚ್ಚಾಙ್ಗೋ  
ರಕ್ತಗೌರೋ ಮಹೀಜ:" 1. ಇವನು ವಾಯುದಿಕ್ಕಿನ ಅಧಿಪತಿ.

"ಸೂರ್ಯ: ಶುಕ್ರ: ಕ್ಷಮಾಪುತ್ರ: ಸೇಹಿಕೇಯ: ಶನಿ: ಶಶಿ: 1. ಸೌಮ್ಯ-  
ಸ್ಥಿವಶಮನ್ವೀ ಚ ಪ್ರಾಚ್ಯಾದಿವಿಗಧೀಶ್ವರಾ:" 1. ಚಂದ್ರನು  
ಸ್ಮಿಗ್ರಹ ಮತ್ತು ಸೌಮ್ಯಗ್ರಹ. ವೈಶ್ಯಜಾತಿಗೆ ಸೇರಿದವನು.

"ಕರಾ ಭಾನುತಮ:ಶನಿಶ್ವಜಕುಜಾಶ್ವಕಾರ್ಯಸೌಮ್ಯೇಂದವ: ಸೌಮ್ಯಾಸ್ತೇ  
ಪುಷ್ಪಾ: ಕುಜಾಕಮುರಖೋ ರಾಕ್ಷಿನ್ದುಶುಕ್ರಾ: ಸ್ಥಿವಯ: 1. ತಚ್ಚೇಷಾಸ್ತು  
ನಪುಂಸಕಾ ಗುರುಭಗ್ನಾ ವಿಪ್ರಾ ಕುಜಾಕಾಂ ನೃಪಾ ವೈಶ್ಯಾ ಚಂದ್ರಬುಧೌ  
ತವನ್ಯಕುಲಜಾ ಮನ್ವಸ್ತು ವರ್ಣೇಶ್ವರ:" ಮುಂ ಚಿಂ. 1. ಚಂದ್ರನಿಗೆ  
ಕರ್ಕಾಟಕ ರಾಶಿಯು ಕ್ಷೇತ್ರ. ವೃಷಭ ರಾಶಿಯು ಉಚ್ಚ.  
ವೃಶ್ಚಿಕ ರಾಶಿಯು ನೀಚ. ಸೂರ್ಯನೂ ಬುಧನೂ ಮಿತ್ರರು.  
ಉಳಿದವರು ಸಮರು. ಚಂದ್ರನು ಜನ್ಮರಾಶಿಯಿಂದ 1, 3,  
6, 7, 10 ಮತ್ತು 11ನೇ ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿರುವಾಗ ಶುಭಫಲ  
ವನ್ನು ಕೊಡುತ್ತಾನೆ. ಚಂದ್ರದಶೆಯ ಕಾಲ 10 ವರ್ಷಗಳು.

ತನ್ನ ಮತ್ತು ಇತರ ಗ್ರಹಗಳ ದಶೆಗಳಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರನ  
ಅಂತರ್ದಶಾ (ಭುಕ್ತಿ) ಮಾನ:

| ದಶೆ      | ವರ್ಷ | ಮಾಸಗಳು | ದಿನಗಳು |
|----------|------|--------|--------|
| ರವಿದಶೆ   | .. - | 6      | -      |
| ಚಂದ್ರದಶೆ | .. - | 10     | -      |
| ಕುಜದಶೆ   | .. - | 7      | -      |
| ರಾಹುದಶೆ  | .. 1 | 6      | -      |
| ಗುರುದಶೆ  | .. 1 | 4      | -      |
| ಶನಿದಶೆ   | .. 1 | 7      | -      |
| ಬುಧದಶೆ   | .. 1 | 5      | -      |
| ಕೇತುದಶೆ  | .. - | 7      | -      |
| ಶುಕ್ರದಶೆ | .. 1 | 8      | -      |

ಚಂದ್ರನುಹಾದಶೆಯಲ್ಲಿ ತನ್ನ (ಸ್ವ) ಮತ್ತು  
ಇತರ ಗ್ರಹಗಳ ಅಂತರ್ದಶಾ (ಭುಕ್ತಿ) ಮಾನ:

| ಭುಕ್ತಿ      | ವರ್ಷ | ಮಾಸಗಳು | ದಿನಗಳು |
|-------------|------|--------|--------|
| ಸ್ವಭುಕ್ತಿ   | .. - | 10     | -      |
| ಕುಜಭುಕ್ತಿ   | .. - | 7      | -      |
| ರಾಹುಭುಕ್ತಿ  | .. 1 | 6      | -      |
| ಗುರುಭುಕ್ತಿ  | .. 1 | 4      | -      |
| ಶನಿಭುಕ್ತಿ   | .. 1 | 7      | -      |
| ಬುಧಭುಕ್ತಿ   | .. 1 | 5      | -      |
| ಕೇತುಭುಕ್ತಿ  | .. - | 7      | -      |
| ಶುಕ್ರಭುಕ್ತಿ | .. 1 | 8      | -      |
| ರವಿಭುಕ್ತಿ   | .. - | 6      | -      |



ಚಂದ್ರನು ನವಗ್ರಹಗಳಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ. ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ಸೃಷ್ಟಿ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿಯಮಿತನಾಗಿದ್ದ ಅತ್ರಿಮಹರ್ಷಿಯು ತಪಸ್ಸುಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಆತನ ಕಣ್ಣಿನಿಂದ ದಿವ್ಯ ಜ್ಯೋತಿ ಯೊಂದು ಹೊರಟು ಹತ್ತು ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲೂ ಹರಡಿತು. ದಿಕ್ಕುಗಳು ಆದನ್ನು ಧರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗದೆ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಬಿಡಲಾಗಿ ಬ್ರಹ್ಮನು ಆದನ್ನು ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಿ ಒಬ್ಬ ಪುರುಷನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿ ಚಂದ್ರನೆಂದು ನಾಮಕರಣಮಾಡಿ ಗ್ರಹಗಳ ಮಂಡಲದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸಿದನು. ರಾಶಿಚಕ್ರದಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರನು ಎಲ್ಲಾ ಗ್ರಹಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಕೆಳಗೆ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಾನೆ. “ಮಂದಾಮರೇಜ್ಯಭೃತಸೂರ್ಯಶುಕ್ರೇಕ್ಷುಜೇಂದವಃ” ಸೂಂ ಸಿಂ ೧೨-೩೧. ಇವನು ದಕ್ಷಪುತ್ರಿಯರಾದ ಅಶ್ವಿನೀ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ಮಂದಿ ಕನ್ಯೆಯರನ್ನು ಮದುವೆಯಾದನು. ರೋಹಿಣಿಯನ್ನು ಮಾತ್ರ ಇವನು ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಪ್ರೀತಿಸುತ್ತಿದ್ದುದರಿಂದ ದಕ್ಷನು ಇವನಿಗೆ ಕ್ಷಯರೋಗ ಬರುವಂತೆ ಶಾಪವಿತ್ತನು. ಬಳಿಕ ತನ್ನ ಮಕ್ಕಳ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಂತೆ ತಿಂಗಳ ಒಂದು ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಕ್ರಮೇಣ ಕ್ಷಯಹೊಂದು ವಂತೆಯೂ ಇನ್ನೊಂದು ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಕ್ರಮೇಣ ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುವಂತೆಯೂ ವರವನ್ನು ಕೊಟ್ಟನು. “ಅಶ್ವಿನ್ಯಾद्याಸ್ತು ದಕ್ಷಸ್ಯ ಉಪಯೇಮೇ ಸುತಾ ವಿಧುಃ। ರೋಹಿಣ್ಯಾಮೇವ ಸತತಂ ಬದ್ಧಪ್ರೇಮಾ ರರಾಮ ಹ। ದೃಷ್ಟಾ ತದಿತರಾಸ್ತಾಶ್ಚ ತಪ್ತಾಃ ಪಿತರಮಬ್ರುವನ್। ಅಸ್ಮಾಕಂ ಕಾಮದಸ್ತಾತ ಜಾಮಾತಾ ತವ ರೋಹಿಣಿಮ್। ರಮಯತ್ಯೇವ ಸತತಂ ತೇನ ತಪ್ತಾ ವಯಂ ಪಿತಃ। ತಚ್ಛೃತ್ವಾ ಚಾಪ್ರಿಯಂ ದಕ್ಷಃ ಸೋಮಮಾಹು ಭಜಸ್ವ ಭೋಃ। ಪ್ರೇಮ್ಣಾ ಸಮೇನ ಸರ್ವಾಸ್ತ್ವಂ ದುಹಿತುರ್ಮಮ ಮಾನದ। ಜಗೃಹೇ ತದ್ವಚೋ ನೈವ ಸೋಮಃ ಸಪ್ರೇಮ ರೋಹಿಣಿಮ್। ತಥೈವ ರಮಯಾಮಾಸ ಶ್ರುತ್ವಾ ದಕ್ಷಶ್ಚುಕೋಪ ಹ। ಶಶಾಪ ತೇ ನ ಭವಿತಾ ಹೃದಯಪತ್ಯಂ ಮದ್ವಚೋಽತಿಗಃ। ಯಕ್ಷಮಣಾ ಚ ಪರಿಗ್ರಸ್ತೋ ಭವ ತ್ವಂ ಕ್ಷೀಣರೆತಕಃ। ಅಥ ಕ್ಷಯಮಿತೇ ತಸ್ಮಿನ್ ಸರ್ವಾಸ್ತಾಃ ಸಹಿತಾಃ ಸ್ತ್ರೀಯಃ। ಪಿತರಂ ಶರಣಂ ಪ್ರಾಪ್ತಾಃ ಕ್ಷೀಯತೇ ನಃ ಪತಿಃ ಪಿತಃ। ಉವಾಚ ದಕ್ಷಸ್ತಾಃ ಸರ್ವಾಃ ಶಾಪೋ ಮೇ ನಾನ್ಯಥಾ ಭವೇತ್। ಮಾಸಮಧ್ಯೇ ಪಕ್ಷಮೇಕಂ ವರ್ಧತಾಂ ಸ ಕ್ರಮೇಣ ವೈ। ಕ್ಷಯಂ ಕ್ರಮೇಣ ಪ್ರಾಪ್ನೋತು ಪಕ್ಷಮೇಕಂ ವ್ಯವಸ್ಥಯಾ। एवं ಶಾಪಂ ವರಶ್ಚೈವ ದದಾವಸ್ಮೈ ವ್ಯವಸ್ಥಯಾ। ತಥೈವ ರಾಜತೇ ವ್ಯೋಮ್ನಿ ಕ್ಷಯವೃದ್ಧಿ ದಧದ್ವಿಧುಃ” ಪಾಪುಂ। [ಚಂದ್ರನ ಕಲೆಗಳ ಕ್ಷಯಕ್ಕೆ ಬೇರೆ ಕಾರಣವನ್ನು “ಕಲಾಕ್ಷಯ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಅವಿಮುಕ್ತ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರನು ತನ್ನ ತಪಸ್ಸಿನಿಂದ ಪರಮೇಶ್ವರನನ್ನು ಮೆಚ್ಚಿಸಿ ಶಿವನ ತಲೆಯ ಮೇಲೆ ಸ್ಥಾನವನ್ನು ಪಡೆದನು. ಅಲ್ಲೇ ರಾಜಸೂಯ ಯಾಗ ಮಾಡಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣರನ್ನು ಸಂತೋಷಗೊಳಿಸಿ “ದ್ವಿಜರಾಜಃ” ಎಂಬ ಹೆಸರನ್ನು ಪಡೆದನು. “ತತ್ರೈವ ರಾಜಸೂಯಂ ಚ ಚಕ್ರೇ

ಚಂದ್ರೇವರಾಗತಃ। ತತ್ರೈವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೈಃ ಪ್ರೀತೈರೀತಿಯುಕ್ತೋಽಸೌ ಕಲಾನಿಧಿಃ। ಸೋಮೋಽಸ್ಮಾಕಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಣಾಂ ರಾಜಾ ತ್ರೈಲೋಕ್ಯದಕ್ಷಿಣಃ। ತತ್ರೈವ ದೇವದೇವಸ್ಯ ವಿಲೋಚನಪದಂ ಗತಃ। ಶಮ್ಭುನಾ ಪ್ರೀತಮನಸಾ ತ್ರೈಲೋಕ್ಯಾಹ್ಲಾದಹೇತವೇ। ತ್ವಂ ಮಮಾಪಿ ಪರಾ ಮೂರ್ತೀರೀತಿಯುಕ್ತಸ್ತ- ತಪೋಬಲಾತ್” ಕಾಶೀಖಂ। 2. ಪಚ್ಚ ಕರ್ಪೂರಂ. “ವಿಲೇಪ- ನಸ್ಯಾಧಿಕಚಂದ್ರಭಾಗತಾವಿಭಾವನಾಚ್ಚಾಪಲಲಾಪ ಪಾಂಡುತಾಮ್” ನೈಷಂ ೧-೫೧। 3. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 4. ಕಪಿಲೇಹಿಟ್ಟು ಎಂಬ ಒಂದು ಓಷಧಿ. 5. ನವಿಲುಗರಿಯ ಮೇಲಿರುವ ಕಣ್ಣು. 6. ಜಲ, ನೀರು. 7. ಚಂದ್ರಗುಪ್ತನೆಂಬ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. “ಕ್ರೂರಗ್ರಹಃ ಸಕೇತುಃ ಚಂದ್ರಮಸಂಪೂರ್ಣಮಂಡಲಮಿದಾನಿಮ್” ಮುद्रಾಂ ೧-೬। 8. ವಿಸರ್ಗದ ಚಿಹ್ನೆ. 9. ರತ್ನ. 10. ಚಂದ್ರ ದೇವತಾಕವಾದ ಮೃಗಶಿರ್ಷ ನಕ್ಷತ್ರ. (ವಿಂ) 11. ರಮ್ಯ ವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ. 12. ಅಹ್ಲಾದಕರವಾದ. ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವ. “ಚಂದ್ರೋಽಮ್ಬುಕಾಮ್ಯಯೋಃ। ಸ್ವರ್ಣಂ ಸುಧಾಂಶೋ ಕರ್ಪೂರೇ ಕಾಂಪಿಲ್ಯೇ ಮೇವಕೇಽಪಿ ಚ” ಹೇಮಂ।

**ಚಂದ್ರಕ ಚಂದ್ರಕ (ಪುಂ)** 1. ನವಿಲಿನ ಗರಿಯ ಮೇಲಿರುವ ಕಣ್ಣು. ಚಂದ್ರ ಇವ ಕಾಯತಿ—ಕೆ (ಶಬ್ದ) “ಕಃ”। “ಸಂಮೋದಸ್ತೇ ಪಥಿ ಪರಿಣಮೇಚ್ಚಂದ್ರಕೇಽಜ್ಜಿತಾನಾಂ ಮೇಧಾಪಾಯೇ ವಿಪಿನಶಿಖಿನಾಂ ವೀಕ್ಷ್ಯ ವಾಚ್ಯಮತ್ವಮ್” ಹಂಸಂ ೧-೧೦। 2. ನಖ, ಉಗುರು. ಚಂದ್ರ ಇವ “ಕನ್” (೫-೩-೯೭)। 3. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದ ತೈಲಬಿಂದುವಿನಂತೆ ಹರಡಿದ ಸ್ನೇಹ ವಸ್ತುವಿನ ಚಂದ್ರಾಕಾರವಾದ ಮಂಡಲ. “ಯಾಂ ಚಂದ್ರಕೈ- ರ್ಮದಜಲಸ್ಯ ಮಹಾನದೀನಾಂ ನೇತ್ರಶ್ರಿಯಂ ವಿಕಸತೋ ವಿಧಧುಗಂಜೇಂದ್ರಾಃ” ಮಾಧಂ ೫-೪೦। 4. ಬಿಳಿಯ ಮೆಣಸು. 5. ನುಗ್ಗೆ ಬೀಜ.

**ಚಂದ್ರಕಲಾ ಚಂದ್ರಕಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಚಂದ್ರಮಂಡಲದ ಹದಿನಾರ ನೆಯ ಒಂದಂ ಭಾಗ. ಚಂದ್ರಸ್ಯ ಕಲಾ। “ರಾಹೋಽನಂದ್ರಕಲಾ- ಮಿವಾನನಚರೀಂ ದೇವಾತ್ಸಮಾಸಾಹ ಮೇ” ಮಾಲತೀಂ ೫-೨೮।

**ಚಂದ್ರಕವತ್ ಚಂದ್ರಕವತ್ (ವಿಂ)** ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಚಂದ್ರಕಾಃ ಸಂತ್ಯಸ್ಯ “ಮತುಪ್” (೫-೨-೯೪)। “ಪ್ರಾದುದ್ಭವತ್ ಸಪದಿ ಚಂದ್ರಕವಾನ್ ದ್ರುಮಾಗ್ರಾತ್” ಮಾಧಂ ೫-೧೯।

**ಚಂದ್ರಕಾಂತ ಚಂದ್ರಕಾಂತ (ಪುಂ)** 1. ಚಂದ್ರಕಾಂತಶಿಲೆ, ಚಂದ್ರನ ಕಿರಣವು ಬಿದ್ದ ಕೂಡಲೆ ನೀರು ಜಿನುಗುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕಲ್ಲು. ಚಂದ್ರಃ ಕಾಂತೋಽಭಿಷ್ಠೋ ಯಸ್ಯ। “ಚಂದ್ರ- ಪಾದಜನಿತಪ್ರವೃತ್ತಿಭಿಶ್ಚಂದ್ರಕಾಂತಜಲಬಿಂದುಭಿರ್ಗಿರಿಃ” ಕುಮಾಂ ೮-೬೭। 2. ಬಿಳಿನೈದಿಲೆ. ಮೇದಿಂ।

**ಚಂದ್ರಕಾಂತಾ ಚಂದ್ರಕಾಂತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ರಾತ್ರಿ. ಚಂದ್ರಃ ಕಾಂತಃ ಪ್ರಿಯೋ ಯಸ್ಯಾಃ। 2. ಚಂದ್ರನ ಪತ್ನಿ. ಚಂದ್ರಸ್ಯ ಕಾಂತಾ। 3. ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಬೆಳದಿಂಗಳು.



ಚಂದ್ರಕಾಂತಿ ಚಂದ್ರಕಾಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಬೆಳದಿಂಗಳು. ಚಂದ್ರಸ್ಯ ಕಾಂತಿಃ | (ನಂ) 2. ಬೆಳ್ಳಿ. ಚಂದ್ರಸ್ಯೇವ ಕಾಂತಿರಸ್ಯ |

ಚಂದ್ರಕಿನ್ ಚಂದ್ರಕಿನ್ (ಪುಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಚಂದ್ರಕೋಸ್ತಯಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) | "ಗೋಪಾನಸೀಘ್ರ ಕ್ಷಣಮಾಸ್ಥಿತಾನಾಮಾಲಮ್ಬಿಮಿಶ್ರಚಂದ್ರಕಿಣಾಂ ಕಲಾಪಃ" ಮಾಘಂ ೩-೪೯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | ಚಂದ್ರಕಿನಿ ಚಂದ್ರಕಿನೀ.

ಚಂದ್ರಕೇತು ಚಂದ್ರಕೇತು (ಪುಂ) ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ಮಗ. "ಅಜ್ಞದಂ ಚಂದ್ರಕೇತುಂ ಚ ಲಕ್ಷ್ಮಣೋಽಪ್ಯಾತ್ಮಸಂಭವೋ" ರಘುಂ ೧೫-೯೦ |

ಚಂದ್ರಕ್ಷಯ ಚಂದ್ರಕ್ಷಯ (ಪುಂ) ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ. ಚಂದ್ರಸ್ಯ ಕ್ಷಯೋ ಯತ್ರ | "ಪಿತೃಯಜ್ಞಂ ತು ನಿರ್ವರ್ತಯ ವಿಶ್ವಾಶ್ಚಂದ್ರಕ್ಷಯೇಽಗ್ನಿಮಾನ್" ಮನುಂ ೩-೧೨೨ |

ಚಂದ್ರಗುಪ್ತ ಚಂದ್ರಗುಪ್ತ (ಪುಂ) ಪಾಟಲಿಪುತ್ರದ ರಾಜನಾದ ಮೌರ್ಯವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. ಚಾಣಕ್ಯನೆಂಬೊಬ್ಬ ದ್ವಿಜನು ಕ್ಷತ್ರಿಯರಿಗೆ ಕಂಟಕರಾಗಿದ್ದ ನಂದರನ್ನು ನಾಶಗೊಳಿಸಿ ಮೌರ್ಯಕುಲದ ಚಂದ್ರಗುಪ್ತನನ್ನು ದೊರೆಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದನು. "ನವನಂದಾನ್ ದ್ವಿಜಃ ಕಶ್ಚಿತ್ ಪ್ರಪನ್ನಾನುಘರೀಷ್ಯತಿ | ತೇಷಾಮಭಾವೇ ಜಗತೀಂ ಮೌರ್ಯಾ ಭೋಷ್ಯಂತಿ ವೈ ಕಲೌ || ಸ ಏವ ಚಂದ್ರಗುಪ್ತಂ ವೈ ದ್ವಿಜೋ ರಾಜ್ಯೇಽಭಿಷೇಕಯತಿ" ಭಾಗಂ ೧೨-೧-೧೨, ೧೩ | ಚಾಣಕ್ಯಃ—ಭೋ ರಾಜನ್ ಚಂದ್ರಗುಪ್ತ, ಕಿಂ ತೇ ಭೂಯಃ ಪ್ರಿಯಂ ಕರೋಮಿ | ಚಂದ್ರಗುಪ್ತಃ—ಕಿಮತಃ ಪರಂ ಪ್ರಿಯಮಸ್ತಿ? ರಾಕ್ಷಸೇನ ಸಮಂ ಮೇತ್ರೀ ರಾಜ್ಯೇ ಚಾರೋಪಿತಾ ವಯಮ್ | ನಂದಾಶ್ಚೋನ್ಮೂಲಿತಾಃ ಸರ್ವೇ ಕಿಂ ಕರ್ತವ್ಯಮತಃ ಪರಮ್" ಮುद्रಾಂ ೭-೧೭ |

ಚಂದ್ರಗೃಹ ಚಂದ್ರಗೃಹ (ನಂ) ಕರ್ಕಾಟಕ ರಾಶಿ.

ಚಂದ್ರಗೋಲ ಚಂದ್ರಗೋಲ (ಪುಂ) ಗೋಳಾಕಾರದ ಚಂದ್ರಮಂಡಲ.

ಚಂದ್ರಚಾರ ಚಂದ್ರಚಾರ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರನು ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವುದು. ಚಂದ್ರಸ್ಯ ಚಾರಃ |

ಚಂದ್ರಚೂಡ ಚಂದ್ರಚೂಡ, -ಚೂಡಾಮಣಿ -ಚೂಡಾಮಣಿ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. ಚಂದ್ರಃ ಚೂಡಾಯಾಂ ಯಸ್ಯ ಚಂದ್ರಃ ಚೂಡಾಮಣಿಭೂತೋ ಯಸ್ಯ ವಾ | "ಚಂದ್ರಚೂಡಾಮಣಿರ್ದೇವೋ ಯಾಮುಢ್ಢಹತಿ ಮೂರ್ಧನಿ | ಯಸ್ಯಾ ವಿಲೋಕನಂ ಪುಷ್ಪಂ ಶ್ರದ್ಧಧುಸ್ತಾಂ ಮುಢಾ ಹೃದಿ" ಕುಮಾಂ ೧೦-೪೯ |

ಚಂದ್ರಜ ಚಂದ್ರಜ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರನ ಮಗನಾದ ಬುಧಗ್ರಹ. ಚಂದ್ರಾಜ್ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಙಃ" (೩-೨-೯೮) | "ರೌದ್ರಾದಿನಿ ಮಧಾಂತಾನ್ಯುಪಾಶ್ರಿತೇ ಚಂದ್ರಜೇ ಪ್ರಜಾಪಿಙ್ಗಾ |

ಶಸ್ತ್ರನಿಪಾತಶ್ಚುರ್ರಯರೋಗಾನಾವೃಷ್ಟಿಸಂತಾಪೈಃ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೭-೩ | ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಪತ್ನಿಯಾದ ತಾರೆಯನ್ನು ಚಂದ್ರನು ಅಪಹರಿಸಿದ್ದಾಗ ಅವಳಲ್ಲಿ ಬುಧನು ಜನಿಸಿದನು. ಅದರಿಂದ ಬುಧನು ಚಂದ್ರನ ಮಗನಾದನು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಬೃಧ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಚಂದ್ರದಾರ ಚಂದ್ರದಾರ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ಚಂದ್ರನ ಪತ್ನಿಯರು, ಅಶ್ವಿನೀ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ಮಂದಿ ದಕ್ಷಕನ್ಯೆಯರು, ಚಂದ್ರಸ್ಯ ದಾರಾಃ | ಈ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ಕನ್ಯೆಯರೇ ಅಶ್ವಿನೀ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳು.

ಚಂದ್ರದೇವ ಚಂದ್ರದೇವ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಕುರುಸೇನೆಯಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ದಳಪತಿ. "ಸೌಶ್ರುತಿಶ್ಚಂದ್ರದೇವಶ್ಚ ಮಿತ್ರವರ್ಮಾ ಚ ಭಾರತ" ಭಾಂ ಕರ್ಣಂ ೧೮-೩ |

ಚಂದ್ರಧೃತಿ ಚಂದ್ರಧೃತಿ (ಪುಂ) 1. ಗಂಧದ ಕಟ್ಟಿಗೆ. ಚಂದ್ರಸ್ಯ ಧೃತಿರಿವ ಧೃತಿರಸ್ಯ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಚಂದ್ರನ ಪ್ರಕಾಶ, ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಬೆಳದಿಂಗಳು.

ಚಂದ್ರನಾಭ ಚಂದ್ರನಾಭ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ದಾನವ. "ಸೂರ್ಯನಾಭಶ್ಚ ವಿಕ್ರಾಂತಶ್ಚಂದ್ರನಾಭಶ್ಚ ಭಾರತ" ಹರಿವಂ |

ಚಂದ್ರನಾಮನ್ ಚಂದ್ರನಾಮನ್ (ಪುಂ) ಕರ್ಪೂರ. ಚಂದ್ರಸ್ಯ ನಾಮಾನ್ಯಸ್ಯ |

ಚಂದ್ರಪಾದ ಚಂದ್ರಪಾದ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರನ ಕಿರಣ, ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಬೆಳದಿಂಗಳು. ಚಂದ್ರಸ್ಯ ಪಾದಃ | "ಗಿರಿಶಮುಪಚಾರ ಪ್ರತ್ಯಹಂ ಸಾ ಸುಕೇಶಿ ನಿಯಮಿತಪರಿವೇದಾ ತಚ್ಚಿರಶ್ಚಂದ್ರಪಾದಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೬೦ |

ಚಂದ್ರಪುತ್ರ ಚಂದ್ರಪುತ್ರ, -ಸುತ -ಸುತ, -ಸುನ್ -ಸೂನು (ಪುಂ) ಚಂದ್ರನ ಮಗನಾದ ಬುಧಗ್ರಹ. ಚಂದ್ರಸ್ಯ ಪುತ್ರಃ ಸುತಃ ಸುನ್ವಾ |

ಚಂದ್ರಪ್ರಭಾ ಚಂದ್ರಪ್ರಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಲವು ವಿಧ ನೇತ್ರರೋಗಗಳನ್ನು ವಾಸಿಮಾಡುವ ಅಂಜನ. "ಅಂಜನಂ ಶ್ವೇತಮರಿಚಂ ಪಿಪ್ಪಲಿ ಮಧುಗುಡ್ಡಿಕಾ | ವಿಭೀತಕಸ್ಯ ಮಧ್ಯಂ ತು ಶಿಕ್ಷುನಾಭಿರ್ಮನಃಶಿಲಾ | ಏತಾನಿ ಸಮಭಾಗಾನಿ ಅಜಾಕ್ಷೀರೇಣ ಪೇಷಯೇತ್ | ಛಾಯಾಶುಷ್ಕಾಂ ಕೃತಾಂ ವರ್ತಿ ನೇತ್ರೇಷು ಚ ಪ್ರಯೋಜಯೇತ್ |" "ಅಬೃದಂ ಪಟಲಂ ಕಾಚಂ ತಿಮಿರಂ ರಕ್ತರಾಜಿಕಾಮ್ | ವರ್ತಿಶ್ಚಂದ್ರಪ್ರಭಾ ನಾಮ ಜಾತಾನ್ಯಮಪಿ ಶೋಷಯೇತ್ |"

ಚಂದ್ರಬಾಲಾ ಚಂದ್ರಬಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಯಾಲಕ್ಕಿ ಗಿಡ. 2. ಚಂದ್ರನ ಪತ್ನಿ. 3. ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಬೆಳದಿಂಗಳು. ಚಂದ್ರಸ್ಯ ಕರ್ಪೂರಸ್ಯ ಬಾಲೇವ |

ಚಂದ್ರಭಸ್ಮನ್ ಚಂದ್ರಭಸ್ಮನ್ (ನಂ) ಕರ್ಪೂರ. ಚಂದ್ರಸ್ಯೇವ ಭಸ್ಮ |



**ಚಂದ್ರಭಾಗ ಚಂದ್ರಭಾಗ(ಪುಂ) 1.** ಒಂದು ಪರ್ವತ. ಚಂದ್ರಸ್ಯ ಭಾಗೋಽತ್ರ । ಈ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮನು ದೇವತೆಗಳ ಮತ್ತು ಪಿತೃಗಳ ತೃಪ್ತಿಗಾಗಿ ತಿಥಿವೃದ್ಧಿಕ್ಷಯಾತ್ಮಕನಾದ ಚಂದ್ರನನ್ನು ಇಬ್ಬಾಗವಾಗಿ ಕಲ್ಪಿಸಿದನಾದುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಈ ಹೆಸರು ಬಂದಿತು. "ತಸ್ಮಿನ್ ಗಿರೀ ಪುರಾ ವೇಷಾಶ್ಚಂದ್ರಂ ಶುಭಂ ಸುಖಾನಿಧಿಮ್ । ವಿಮಜ್ಯ ಕಲ್ಪಯಾಮಾಸ ದೇವಾಂ ವ ಪಿತಾಮಹಃ । ಪಿತ್ರಂ ವ ತಥಾ ಯಸ್ಯ ತಿಥಿವೃದ್ಧಿಕ್ಷಯಾತ್ಮಕಮ್ । ಕಲ್ಪಯಾಮಾಸ ಜಗತೀ ಹಿತಾಯ ಕಮಲಾಸನಃ । ವಿಮಕ್ತಾಶ್ಚಂದ್ರಮಾ ಯಸ್ಮಾತ್ ತಸ್ಮಿನ್ ಪವಂತಸುಚಮೇ । ಅತಃ ದೇವಾಶ್ಚಂದ್ರಾಂ ವಾಮ್ನಾ ಚಕ್ರುಃ ಪುರಾ ಗಿರಿಸ್ಮಿ" ಕಾಲಿಕಾಪುಂ । (ಸ್ತೌಂ) 2. -ಮಾ -ಗಾ. ಒಂದು ನದಿ. ಚಂದ್ರಭಾಗಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯು ಒಂದು ನದಿಯು ಹುಟ್ಟಿತು. ದೇವತೆಗಳು ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಾತಿ ನಂತೆ ಚಂದ್ರನನ್ನು ಅದರಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನಮಾಡಿಸಿ ಪಾನಮಾಡಿದರು. ಚಂದ್ರನು ಸ್ನಾನಮಾಡಿದುದರಿಂದ ಆ ನದಿಯು ಅಮೃತಮಯವಾಗಿ ವೃದ್ಧಿಗೊಂಡು ಹರಿಯಿತು. ಆಗ ಆ ನದಿಯಿಂದ ಒಬ್ಬ ಕನ್ಯೆಯು ಎದ್ದುಬಂದಳು. ಬ್ರಹ್ಮನು ಅವಳಿಗೆ "ಚಂದ್ರಭಾಗಾ" ಎಂದು ಹೆಸರಿಟ್ಟನು. ಅವಳು ನದಿಯ ರೂಪದಿಂದ ಸಮುದ್ರವನ್ನು ಸೇರಿದಳು. "ತತ್ರ ಜಾತಾ ದೇವನದೀ ಸೀತಾಽಪ್ಯಾ ವಚನಾದ್ವಿಧೇಃ । ಸ್ನಾಪಯಿತ್ವಾ ಯದಾ ಚಂದ್ರಂ ಸೀತಾತೋಯೈರ್ಮನೋಹರೈಃ । ಚಂದ್ರಂ ಪಪುರ್ವಹವಾಕ್ಯಾ-ತ್ಸರ್ವೈ ತೇ ತ್ರಿವಿಧೀಕಸಃ । ತದಾ ಸೀತಾಜಲಂ ಚಂದ್ರಸ್ನಾನಯೋಗಾಚ್ಚ ಸಾಮೃತಮ್ । ಭೂತ್ವಾ ನಿಪತಿಸ್ತಂ ತಸ್ಮಿನ್ ಬೃಹಲೋಹಿತಸಂಜ್ಞಕೇ । ತದ್ವಿವೃದ್ಧಂ ತದಾ ತೋಯಂ ತಸ್ಮಿನ್ ಸರಸಿ ನಿರ್ಮಲಮ್ । ತದ್ಭಕ್ತಂ ಸ್ವಯಂ ಬ್ರಹ್ಮಾ ವಿವೃದ್ಧಂ ಸಾಧು ತಜ್ಜಲಮ್ । ತದ್ಭಕ್ತಿನಾಜ್ಜಲಾ-ತ್ತಸ್ಮಾದುದ್ವಿತೀಯತಾ ಕನ್ಯಾಕೋತ್ತಮಾ । ಚಂದ್ರಭಾಗೇತಿ ತನ್ನಾಮ ವಿಧಿ-ಶ್ಚಕ್ರೇ ಸ್ವಯಂ ತತಃ । ಭಾರ್ಯಾಯೆ ಸಾಗರಸ್ತಾಂ ತು ಜಗ್ರಾಹ ಬ್ರಹ್ಮಸಮ್ಮತೇ । ಸಾಗರೋಽಪಿ ತದಾ ಭಾರ್ಯಾ ಚಂದ್ರಭಾಗಾಂ ಮಹಾನದೀಮ್ । ತೇನ ತೋಯಪ್ರವಾಹೇಣ ನಿನಾಯ ಭವನಂ ಸ್ವಕಮ್ । एवं ತಸ್ಮಿನ್ ಸಮುತ್ಪನ್ನಾ ಚಂದ್ರಭಾಗಾಹ್ವಯಾ ನದೀ । ಚಂದ್ರಭಾಗೇ ಮಹಾಶೀಲೇ ಗುಣೈರ್ಗಂಜ್ಞಾಸಮಾ ಸದಾ" ।

**ಚಂದ್ರಭೂತಿ ಚಂದ್ರಭೂತಿ (ನಂ) ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ.** ಚಂದ್ರಸ್ಯೇವ ಭೂತಿಃ ಕಾಂತಿರಸ್ಯ ।

**ಚಂದ್ರಮಣಿ ಚಂದ್ರಮಣಿ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರಕಾಂತಮಣಿ.** ಚಂದ್ರ-ಪ್ರಿಯೋ ಮಣಿಃ ।

**ಚಂದ್ರಮಂಡಲ ಚಂದ್ರಮಂಡಲ (ನಂ) ಚಂದ್ರನ ಬಿಂಬ, ಗೋಲಾಕಾರವಾದ ಚಂದ್ರನ ಮೂರ್ತಿ.** ಚಂದ್ರಸ್ಯ ಮಂಡಲಮ್ । ಚಂದ್ರನ ಬಿಂಬವು ಜಲಮಯವಾದುದು. ಅದುದರಿಂದ ಅದಕ್ಕೆ ಸ್ವಯಂಪ್ರಕಾಶವಿಲ್ಲ. ಶುಕ್ಲ ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ದಿನೇ ದಿನೇ ಚಂದ್ರನು ಸೂರ್ಯನಿಂದ ದೂರಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದರಿಂದ

ಎದುರಿಗೆ ಕಾಣುವ ಚಂದ್ರಬಿಂಬದ ಮೇಲೆ ಸೂರ್ಯನ ಕಿರಣವು ಬಿದ್ದು ಬಿಂಬವು ಪ್ರಕಾಶವಾಗುವುದು. ಜಲಮಯವಾದ ಚಂದ್ರನ ಬಿಂಬದ ಮೇಲೆ ಸೂರ್ಯನ ಕಿರಣವು ಬೀಳುವುದರಿಂದ ಆ ಕಿರಣವು ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಪ್ರತಿಫಲಿತವಾಗುವುದು. ಇದೇ ಬೆಳದಿಂಗಳು. ಶುಕ್ಲ ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನ ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬರು ಬರುತ್ತ ಚಂದ್ರಬಿಂಬದಲ್ಲಿ ಪ್ರಕಾಶವು ಕಡಮೆಯಾಗುವುದು. ಅಮಾವಾಸ್ಯೆಯ ದಿನ ಬಿಂಬವು ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಜಲಮಯವಾಗಿ ಕಾಣುವುದು. "ತರಪಿ-ಕ್ರೀರಣಸಂಜ್ಞಾದೇಶ ಧೀಯುಷಪಿಂಡೋ ದಿನಕರದಿಶಿ ಚಂದ್ರಾಶ್ಚಂದ್ರಿಕಾ-ಭಿಶ್ಚಕಾಸ್ತಿ । ತದಿತರದಿಶಿ ಬಾಲಾಕುಂತಲಶ್ಯಾಮಲಶ್ರೀಘಂಟ ಇವ ನಿಜಮೂರ್ತಿಚ್ಛಾಯಯೇವಾತಪಸ್ಥಃ । ಸೂರ್ಯಾದಿಧ-ಸ್ಥಸ್ಯ ವಿಧಿ-ರಘಃಸ್ಥಮಧ್ಯಂ ನೃದೃಶ್ಯಂ ಸ್ವಕಲಾಸಿತಂ ಸ್ಯಾತ್ । ದರ್ಶಯ ಭಾರ್ಗವಾಂತಿ-ರಿಸ್ತಸ್ಯ ಶುಕ್ಲಂ ತತ್ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಾಂ ಪರಿವರ್ತನೇನ" ಸಿದ್ಧಾಂತಶಿಂ । "ಸಲಿಲಮಯೇ ಶಶಿನಿ ರವೇದೀಧಿತಯೋ ಮುಚ್ಛಿತಾಸ್ತಮೋ ನೇಶಮ್ । ಧಪಯಂತಿ ದರ್ಪಣೋದರನಿಹಿತಾ ಇವ ಮಂದಿರಸ್ಯಾಂತಃ । ತ್ಯಜತೋಽ-ಕಂತಲಂ ಶಶಿನಃ ಪಶ್ಚಾತ್ ಅವಲಂಬತೇ ಯಥಾ ಶೀತಲಮ್ । ದಿನಕರವಶಾತ್ತಥೇಂದ್ರೋಃ ಪ್ರಕಾಶತೇಽಧಃ ಪ್ರಭುತ್ಯುದಯಃ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೪-೨, ೩ ।

**ಚಂದ್ರಮಸ್ ಚಂದ್ರಮಸ್ (ಪುಂ) 1.** ಚಂದ್ರ. ಚಂದ್ರಂ ಕರ್ಪೂರ-ಮಾತಿ ಸಾದೃಶ್ಯೇನ ತುಲಯತಿ—ಚಂದ್ರ + ಮಾಙ್ (ಮಾನೇ) "ಅಸಿಃ" (ಉಂ ೪-೨೨೭) । "ಉಪಹಸಿತ ಇವಾಸೌ ಚಂದ್ರಮಾಃ ಕಾಮಿನೀ-ನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೩೦ । 2. ಕರ್ಪೂರ.

**ಚಂದ್ರಮಾ ಚಂದ್ರಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ನದಿ.** ಚಂದ್ರೇಣ ಖೇಯತೇ—ಮಾಙ್ (ಮಾನೇ) ಧ್ವಜಯೇ "ಕಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೪೮) । "ಕೌಶಿಕೀ ನಿಮ್ನಗಾಂ ಶೋಣಾಂ ಬಾಹುದಾಮಥ ಚಂದ್ರಮಾಮ್" ಮಾಂ ಭೀಷಂ ೯-೨೯ ।

**ಚಂದ್ರಮುಖಿ ಚಂದ್ರಮುಖೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಂದ್ರನಂತೆ ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವ ಮುಖವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು, ಸುಂದರಿ.** ಚಂದ್ರ ಇವ ಆಹ್ಲಾದಕರಂ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯಾಃ । "ತವಮೀದೃಶಿ ಶ್ರೇಯಸಿ ಸಮುಖೇಽಪಿ ತಂ ಪರಾಙ್ಮುಖೀ ಚಂದ್ರಮುಖಿ ನ್ಯವೀವೃತಃ" ನೈಷಂ ೯-೪೦ ।

**ಚಂದ್ರಮೌಲಿ ಚಂದ್ರಮೌಲಿ (ಪುಂ) ಪರಿಶಿವ, ಮಹಾದೇವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.** ಚಂದ್ರೋ ಮೌಲಾವಸ್ಯ । "ದೇವೋಽಪಿ ಗೌರ್ಯಾ ಸಹ ಚಂದ್ರಮೌಲಿಯದ್ವಚ್ಛಯಾ ಸ್ಫಾಟಿಕಶೈಲಶೃಂಗೇ" ಕುಮಾರಂ ೯-೪೬ ।

**ಚಂದ್ರರಸಾ ಚಂದ್ರರಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ನದಿ.** ಚಂದ್ರ ಇವ ರಸೋ ಜಲಮಸ್ಯಾಃ ।

**ಚಂದ್ರಲೇಖಾ ಚಂದ್ರಲೇಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1.** ಚಂದ್ರನ ಕಲೆ. "ಚಂದ್ರಗುತೇರುದಯಿನಿಮಿವ ಚಂದ್ರಲೇಖಾಮ್" ನೈಷಂ ೧೧-೮೧ । 2. ಚಂದ್ರನ ಮಂಡಲವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಸುತ್ತಿಗೆರೆ. ಚಂದ್ರಸ್ಯ



ಲೇಖಾ | 3. ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವ ಹದಿನೈದನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: "ಮೈ ಮೈ ಯಾಹಯಿ ಭವೇತಾಂ ಸಪ್ತಾಷ್ಟಮಿಶ್ಚಂದ್ರಲೇಖಾ" ವೃಂ ೨೦ | ಈ ವೃತ್ತದ ಗಣನಿನ್ಯಾಸ:

ಮ ರ ಮ ಯ ಯ  
೦೦೦ ೦೧೦ ೦೦೦ ೧೦೦ ೧೦೦

ಚಂದ್ರಲೋಕ ಚಂದ್ರಲೋಕ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರನ ಪ್ರಪಂಚ, ಗೋಳಾಕಾರದ ಚಂದ್ರನ ಮಂಡಲ. ಚಂದ್ರಸ್ಯ ಲೋಕ: |

ಚಂದ್ರಲೋಹಕ ಚಂದ್ರಲೋಹಕ (ನಂ) ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ. ಚಂದ್ರ ಇವ ಶುಭ್ರ ಲೋಹಕಮ್ |

ಚಂದ್ರಲೋಹ ಚಂದ್ರಲೋಹ, -ಲೋಹಕ -ಲೋಹಕ (ನಂ) ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ.

ಚಂದ್ರವಂಶ ಚಂದ್ರವಂಶ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರಕುಲ, ಚಂದ್ರನ ಸಂತತಿ. ಚಂದ್ರಸ್ಯ ವಂಶ: | ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಯಾದನಂತರ ಪ್ರಾರಂಭವಾದ ದೊಡ್ಡ ರಾಜವಂಶದಲ್ಲಿ ಇದು ಎರಡನೆಯದು. ಚಂದ್ರನು ಈ ವಂಶಕ್ಕೆ ಮೂಲಪುರುಷ. ಚಂದ್ರನ ಮಗ ಬುಧ. ಬುಧನಿಗೆ ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಇಕ್ಷ್ವಾಕುವಿನ ಮಗ ಛಾದ ಇಲೆಯಲ್ಲಿ ಪುರೂರವನು ಜನಿಸಿದನು. ಪುರೂರವನ ಮಗ ಆಯು. ಆಯುವಿನ ಮಗ ನಹುಷ. ನಹುಷನ ಮಗ ಯಯಾತಿ. ಯಯಾತಿಯ ಮಕ್ಕಳಾದ ಪೂರು ಮತ್ತು ಯದು ಇವರಿಬ್ಬರಿಂದ ಚಂದ್ರವಂಶವು ಎರಡಾಗಿ ಬೆಳೆಯಿತು. ಯದುವಂಶದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ ಬಲರಾಮರು ಅವತರಿಸಿದರು. ಪೂರುವಿನ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಭರತ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ತಂದೆ ದುಷ್ಯಂತನು ಜನಿಸಿದನು. ಭರತನ ವಂಶ ಬೆಳೆದು ಒಂದು ಮುಂದೆ ಕುರುರಾಜನು ಹುಟ್ಟಿದನು. ಇವನ ವಂಶದವರೇ ಕೌರವರು.

ಚಂದ್ರವರ್ಮನ್ ಚಂದ್ರವರ್ಮನ್ (ನಂ) ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರೋಕ್ತವಾದ ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: "ಚಂದ್ರವರ್ಮ ನಿಗದಂತಿ ರನಭಸೆ:" ವೃಂ ೨೦ | ರಗಣ ನಗಣ ಭಗಣ ಮತ್ತು ಸಗಣ. ಈ ವೃತ್ತದ ಗಣನಿನ್ಯಾಸ:

ರ ನ ಭ ಸ  
೦೧೦ ೧೧೧ ೦೧೧ ೧೧೦

ಚಂದ್ರವಲ್ಲರೀ ಚಂದ್ರವಲ್ಲರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೋಮಲತ. 2. ಕಾಡು ಇರುವಂತೆ ಗಿಡ.

ಚಂದ್ರವಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರವಲ್ಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೋಮಲತ. 2. ಕಾಡು ಇರುವಂತೆ ಗಿಡ.

ಚಂದ್ರವ್ರತ ಚಂದ್ರವ್ರತ (ನಂ) ಚಾಂದ್ರಾಯಣ ವ್ರತ. ಚಂದ್ರಸ್ಯ ಚಂದ್ರಲೋಕಸ್ಯ ಪ್ರಾಪ್ತये ವ್ರತಮ್ |

ಚಂದ್ರಶಾಲಾ ಚಂದ್ರಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಹಡಿ, ಮೇಲಿನ ಮನೆ, ಉಪ್ಪರಿಗೆ. ಚಂದ್ರ ಇವ ಶಾಲಾ | "ವಿದ್ಯದ್ಗತ: ಪುಷ್ಪಕಚಂದ್ರಶಾಲಾ: ಕ್ಷಣಂ ಪ್ರತಿಶ್ರುನ್ಮುಖರಾ: ಕರೋತಿ" ರಘುಂ ೧೩-೪೦ | 2. ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಬೆಳದಿಂಗಳು. ಚಂದ್ರ: ಶಾಲೇವ ಆಧಾರೋ ಯಸ್ಯಾ: | "ಚಂದ್ರಿಕಾ ಚಂದ್ರಶಾಲಾ ಸ್ಯಾತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:" | -ಶಾಲಿಕಾ -ಶಾಲಿಕಾ.

ಚಂದ್ರಶಿಲಾ ಚಂದ್ರಶಿಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಂದ್ರಕಾಂತಮಣಿ. ಚಂದ್ರಪ್ರಿಯಾ ಶಿಲಾ | "ಪ್ರಹ್ಲಾದಿತಾ ಚಂದ್ರಶಿಲೇವ ತುರ್ಣಿ ಕೋಭಾತ್ ಸವತ್ಸವೇದಜಲಾ ಬಭೂವ" ಭट्टಿಂ ೧೧-೧೫ |

ಚಂದ್ರಶುಕ್ಲ ಚಂದ್ರಶುಕ್ಲ (ಪುಂ) ಜಂಬೂದ್ವೀಪದ ಎಂಟು ಉಪದ್ವೀಪಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಜಂಬೂದ್ವೀಪಸ್ಯ ಚ ರಾಜಸ್ತುಪ-ದ್ವೀಪಾನಷ್ಟಿ ಹೈಕ ಉಪದಿಶಂತಿ ತದ್ವಥಾ ಸ್ವರ್ಣಪ್ರಸ್ಥ: ಚಂದ್ರಶುಕ್ಲ: ಆವತನ: ರಮಣಕ: ಮಂದರಹರಿಣ: ಪಾಶ್ಚಜನ್ಯ: ಸಿಂಹಲ: ಲಕ್ಷ್ಮೀತಿ" ಭಾಗಂ ೫-೧೯-೩೦ |

ಚಂದ್ರಶೇಖರ ಚಂದ್ರಶೇಖರ (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. ಚಂದ್ರ: ಶೇಖರೋ ಯಸ್ಯ | "ಇತಿ ಸ್ವಹಸ್ತೋ-ಲಿಖಿತಶ್ಚ ಮುಖ್ಯಾ ರಹಸ್ಯಪಾಲಮ್ಯತ ಚಂದ್ರಶೇಖರ:" ಕುಮಾಂ ೫-೫೮ | 2. ಒಂದು ಪರ್ವತ.

ಚಂದ್ರಸಂಜ್ಞ ಚಂದ್ರಸಂಜ್ಞ (ಪುಂ) ಪಚ್ಚಕರ್ಪೂರ್. ಚಂದ್ರಸ್ಯ ಸಂಜ್ಞಾ ಯಸ್ಯ |

ಚಂದ್ರಸಂಭವ ಚಂದ್ರಸಂಭವ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರನ ಮಗ ಬುಧ. ಚಂದ್ರ: ಸಂಭವೋತ್ಯಸ್ಯ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸಂಭವಾ -ಸಂಭವಾ. 2. ಸಣ್ಣ ಜಾತಿಯ ಯಾಲಕ್ಕಿ.

ಚಂದ್ರಸಾಲೋಕ್ಯ ಚಂದ್ರಸಾಲೋಕ್ಯ (ನಂ) ಚಂದ್ರಲೋಕವನ್ನು ಹೊಂದುವುದು, ಚಂದ್ರಲೋಕದಲ್ಲಿ ವಾಸ, ಚಂದ್ರನಿಗೆ ಸಮಾನವಾದ ಲೋಕದಲ್ಲಿ ವಾಸ. "ವಾಸೋದಶ್ಚಂದ್ರ-ಸಾಲೋಕ್ಯಮಶ್ವಿಸಾಲೋಕ್ಯಮಶ್ವದ: | ಅನಡ್ಛು: ಶ್ರಿಯಂ ಪುಷ್ಪಾಂ ಗೋದೋ ಬ್ರಹ್ಮನಸ್ಯ ವಿಷ್ಣುಪಮ್" ಮನುಂ ೪-೨೩೧ |

ಚಂದ್ರಸೇನ ಚಂದ್ರಸೇನ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರಸೇನರಾಜನ ಮಗ. "ಸಮುದ್ರಸೇನಪುತ್ರಶ್ಚ ಚಂದ್ರಸೇನ: ಪ್ರತಾಪವಾನ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೦೧-೧೧೧ |

ಚಂದ್ರಹನ್ ಚಂದ್ರಹನ್ (ಪುಂ) ರಾಹು. ಚಂದ್ರಂ ಹತವಾನ್ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತಿಯು:) "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೮೭) | "एकाक्ष-ಶ್ಚಂದ್ರಹಾ ರಾಹು: ಸಂಹಾರೋ ಮೃದುಲಸ್ವನ:" ಹರಿವಂ |

ಚಂದ್ರಹನು ಚಂದ್ರಹನು (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ದಾನವ.

ಚಂದ್ರಹನ್ತು ಚಂದ್ರಹನ್ತು (ಪುಂ) ರಾಹು.

ಚಂದ್ರಹಾಸ ಚಂದ್ರಹಾಸ (ಪುಂ) 1. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. ಚಂದ್ರಸ್ಯೇವ ಹಾಸ: ಪ್ರಭಾ ಯಸ್ಯ | 2. ರಾವಣನ ಕತ್ತಿ. "ಚಂದ್ರಹಾಸೋ



ದಶಗ್ರೀವಕರವಾಲೇಸಿಮಾತ್ರಕೆ" ಮೇದಿಂ । 3. ಒಬ್ಬ ರಾಜ ಕುಮಾರ, ಕೇರಳದೇಶದ ದೊರೆಯಾದ ಸುಧಾರ್ಮಿಕನ ಮಗ. [ಇವನು ಮೂಲಾನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ್ದರಿಂದಲೂ ಎಡಗಾಲಿನಲ್ಲಿ ಆರು ಬೆರಳುಗಳು ಇದ್ದುದರಿಂದಲೂ ಬಾಲ್ಯದಲ್ಲಿಯೇ ತಾಯಿ ತಂದೆಗಳನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡನು. ಇವನನ್ನು ಕುಂತಲದೇಶಕ್ಕೆ ಕರೆದುಕೊಂಡು ಹೋಗಿ ಸಾಕುತ್ತಿದ್ದ ದಾದಿಯೂ ಕಾಲವಾದ ಮೇಲೆ ಇವನು ಅನಾಥನಾದನು. ಈ ಬಾಲಕನು ಚಕ್ರವರ್ತಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವನೆಂದು ತಿಳಿದು ಕುಂತಲದೇಶದ ರಾಜ ನಾಗಬೇಕೆಂಬ ದುರುದ್ದೇಶದಿಂದ ಕೂಡಿದ್ದ ಆ ದೇಶದ ಮಂತ್ರಿಯಾದ ದುಷ್ಪಬುದ್ಧಿಯು ಇವನನ್ನು ಕಟುಕರಿದ ಕೊಲ್ಲಿಸಬೇಕೆಂದು ಯತ್ನಿಸಿದನು. ಕಟುಕರು ಕನಿಕರ ದಿಂದ ಸುಮ್ಮನಾದರು. ಬಳಿಕ ಇನ್ನೊಂದು ಸಮಯದಲ್ಲಿ ದೇಶಾಂತರದಲ್ಲಿ ಇವನನ್ನು ಸಂಧಿಸಿದ ಮಂತ್ರಿಯು ತನ್ನ ಮಗನಿಗೆ ರಹಸ್ಯಪತ್ರವೊಂದನ್ನು ಬರೆದು ಇವನಿಗೆ ವಿಷವನ್ನು ಕೊಡಬೇಕೆಂದು ತಿಳಿಸಿ ಇವನ ಮೂಲಕ ಕಳುಹಿಸಿದನು. ಆ ಪತ್ರವು ದುಷ್ಪಬುದ್ಧಿಯ ಮಗಳಾದ ವಿಷಯೆಯ ಕೈಗೆ ಸಿಕ್ಕಿತು. ಇವನನ್ನು ಕಂಡು ಮೋಹಿಸಿದ ಅವಳು ವಿಷವೆಂಬುದನ್ನು ವಿಷಯೆ ಎಂದು ತಿದ್ದಿದಳು. ಮಂತ್ರಿಯ ಮಗನು ಆ ಕಾಗದವನ್ನು ನೋಡಿ ಇವನನ್ನು ಗೌರವಿಸಿ ವಿಷಯೆಯನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಮದುವೆ ಮಾಡಿದನು. ರಾಜ್ಯಕ್ಕೆ ಹಿಂತಿರುಗಿದ ಮಂತ್ರಿಯು ಈ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿದು ಖಿನ್ನನಾಗಿ ಕಾಳಿಕಾದೇವಾಲಯದಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರಹಾಸನನ್ನು ಕೊಲ್ಲಿಸಬೇಕೆಂದು ಏರ್ಪಾಡು ಮಾಡಿದನು. ಪುತ್ರಸಂತಾನ ವಿಲ್ಲದ ಆ ದೇಶದ ರಾಜನು ಚಂದ್ರಹಾಸನೇ ತನ್ನ ರಾಜ್ಯಕ್ಕೆ ಮುಂದೆ ರಾಜನಾಗಬೇಕೆಂದೂ ತನ್ನ ಮಗಳನ್ನು ಅವನಿಗೆ ಕೊಡಬೇಕೆಂದೂ ನಿಶ್ಚಯಿಸಿ ಅರಮನೆಗೆ ಅವನನ್ನು ಬರ ಮಾಡಿ ಮಗಳಾದ ಚಂಪಕಮಾಲಿನಿಯನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಮದುವೆ ಮಾಡಿದನು. ಇತ್ತ ಚಂದ್ರಹಾಸನಿಗೆ ಬದಲಾಗಿ ಮಂತ್ರಿಯ ಮಗನು ಕಾಳಿಕಾದೇವಾಲಯದಲ್ಲಿ ಹತನಾದನು. ಇದರಿಂದ ದುಷ್ಪಬುದ್ಧಿಯು ಆತ್ಮಹತ್ಯೆ ಮಾಡಿ ಕೊಂಡನು. ಚಂದ್ರಹಾಸನು ಕಾಳಿಕೆಯನ್ನು ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಿ ಇಬ್ಬರನ್ನೂ ಬದುಕಿಸಿ ಕುಂತಲದೇಶದ ರಾಜನಾದನು.] (ನಂ) 4. ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಹಾಸಾ -ಹಾಸಾ. 5. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ.

ಚಂದ್ರಾ ಚಂದ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಬೆಳದಿಂಗಳು. ವದಿ (ಆಹ್ಲಾದೇ) "ರಕ್" (ತಂ ೨-೧೩). 2. ಯಾಲಕ್ಕಿ ಗಿಡ. 3. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. 4. ವಿತಾನ (ಮೇಲುಕಟ್ಟು) ದಿಂದ ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ ಹಜಾರ, -ತೊಟ್ಟಿ.

ಚಂದ್ರಾಂಶು ಚಂದ್ರಾಂಶು (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಚಂದ್ರಾಂಶುರಿವಾಂಶುಯಸ್ಯ । ಮನ್ತುಣಾಂ ಕಲಮಹರಾಹ್ಲಾದನತೇಜಸ್ವಿ-ತ್ವಾತ್ ಚಂದ್ರಾಂಶುಃ । "ಮನ್ತುಣಾಮೇವ ಚಂದ್ರಾಂಶುರಾಹ್ಲಾದಫಲದೋ ಮನುಃ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ । "ಋಷಿಃ ಸ್ಪಷ್ಟಾಕ್ಷರೋ ಮನ್ತ್ರಃ ಚಂದ್ರಾಂಶುಭಿಃ ಸ್ಕರಣೀಯಃ" ವಿಂ ಸಂ । 2. ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಚಂದ್ರನ ಕಿರಣ, ಬೆಳದಿಂಗಳು.

ಚಂದ್ರಾತಪ ಚಂದ್ರಾತಪ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಬೆಳದಿಂಗಳು. ಚಂದ್ರಾತಪಃ । 2. ವಿತಾನ, ಮೇಲುಕಟ್ಟು. ಚಂದ್ರಾತಪ ಇವ ।

ಚಂದ್ರಾತಮಜ ಚಂದ್ರಾತಮಜ (ಪುಂ) ಬುಧಗ್ರಹ. ಚಂದ್ರಾತಮಜಃ ।

ಚಂದ್ರಾನನ ಚಂದ್ರಾನನ (ವಿಂ) 1. ಚಂದ್ರನಂತೆ ಸಂತೋಷ ವುಂಟುಮಾಡುವ ಮುಖವುಳ್ಳ. ಚಂದ್ರ ಇವಾಹ್ಲಾದಕರಮಾನನಂ ಯಸ್ಯ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಆನನಾ -ಆನನಾ. 2. ಚಂದ್ರನಂತೆ ಮುಖವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. "ಚಂದ್ರಾನನಾಂ ಯಾದವವಂಶಚಂದ್ರಃ" ಯಾದಂ ೧೩-೧೯ ।

ಚಂದ್ರಾಪೀಠ ಚಂದ್ರಾಪೀಠ (ಪುಂ) 1. ಕಾಶ್ಮೀರದ ಒಬ್ಬ ರಾಜ. 2. ಕನ್ಯಾಕುಬ್ಜದ ಒಬ್ಬ ರಾಜ.

ಚಂದ್ರಾರಿ ಚಂದ್ರಾರಿ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರನಿಗೆ ಶತ್ರುವಾದ ರಾಹು. ಚಂದ್ರಾರಿಃ ।

ಚಂದ್ರಾರ್ಥ ಚಂದ್ರಾರ್ಥ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರನ ಒಂದು ಭಾಗ, ಚಂದ್ರ ಬಿಂಬದ ಒಂದು ಅಂಶ. ಚಂದ್ರಸ್ಯ ಅರ್ಥಃ । ಸಮಭಾಗ ವಾಚಕವಾದ ಅರ್ಥಶಬ್ದದೊಡನೆ ಸಮಾಸಮಾಡಿದಾಗ ಅರ್ಥ ಚಂದ್ರಸ್ಯ ಅರ್ಥಚಂದ್ರಃ ಎಂದಾಗುವುದು. (೨-೨-೨) ।

ಚಂದ್ರಾರ್ಥಮಾಲಿ ಚಂದ್ರಾರ್ಥಮಾಲಿ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. ಚಂದ್ರಾರ್ಥಃ, ಚಂದ್ರಾರ್ಥಯುಕ್ತೋ ಮಾಲೀಯಸ್ಯ । "ಪ್ರತ್ಯಗ್ವ್ಯಾತಿರ್ಜಯತಿ ಯಮಿನಃ ಸ್ಪಷ್ಟಲಾಲಾಟ-ನೇತ್ರವ್ಯಾಜವ್ಯಕ್ತಿಕೃತಮಿವ ಜಗದ್ವ್ಯಾಪಿ ಚಂದ್ರಾರ್ಥಮಾಲಿಃ" ಪ್ರಬಂಧಂ ೧-೨ ।

ಚಂದ್ರಾಲೋಕ ಚಂದ್ರಾಲೋಕ (ಪುಂ) ಜಯದೇವ ಕವಿಯು ರಚಿಸಿದ ಒಂದು ಅಲಂಕಾರ ಗ್ರಂಥ. ಇದರಲ್ಲಿ ಉಪಮಾ ಲಂಕಾರ ಮೊದಲು ಹೇತ್ವಲಂಕಾರದವರೆಗೆ ಒಂದು ನೂರು ಅರ್ಧಲಂಕಾರಗಳನ್ನು ಲಕ್ಷಣ ಮತ್ತು ಲಕ್ಷ್ಯಸಹಿತವಾಗಿ ರಚಿಸಿರುವನು. ಇದಲ್ಲದೆ ಇದರಲ್ಲಿ ಕಾವ್ಯಲಕ್ಷಣ ದೋಷ ನಿರೂಪಣ ಗುಣಪ್ರಕರಣ ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರಗಳ ಮತ್ತು ಅರ್ಧಲಂಕಾರಗಳ ಅನುಕ್ರಮಣಿಕೆ ಇವು ಐದು ಮಯೂಖಿ ಗಳಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿವೆ. ಈ ಚಂದ್ರಾಲೋಕಕ್ಕೆ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ರೂಪವಾಗಿ ಲಕ್ಷ್ಯಸಹಿತವಾದ ಕುವಲಯಾನಂದವೆಂಬ ಗ್ರಂಥವು ಶ್ರೀಮದಪ್ಪಯ ದೀಕ್ಷಿತರಿಂದ ರಚಿತವಾಗಿದೆ.



ಚಂದ್ರಾಕ್ಷಯ ಚಂದ್ರಾಕ್ಷಯ (ಪುಂ) ಪಚ್ಚಕರ್ಪೂರ.

ಚಂದ್ರಿಕ ಚಂದ್ರಿಕ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಚಂದ್ರಿ  
ಚಂದ್ರಯುಕ್ತಂ ಕಂ ಶಿರೋಸ್ತಯ |

ಚಂದ್ರಿಕಾ ಚಂದ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಂದ್ರನ ಪ್ರಕಾಶ,  
ಬೆಳದಿಂಗಳು. ಚಂದ್ರ: ಆಧಾರತ್ವೇನಾಸ್ತಯಸ್ಯಾ: "ಠನ್"  
(೪-೨-೧೧೫) | "ಅನ್ವಭುಕ್ತ ಸುರತಶ್ರಮಾಪಹ್ನಾ ಮೇಘಮುಕ್ತ-  
ವಿಶದಾಂ ಸ ಚಂದ್ರಿಕಾಮ್" ರಘುಂ ೧೯-೩೯ | 2. ದೊಡ್ಡ  
ಯಾಲಕ್ಕಿ ಗಿಡ. 3. ಚಂದ್ರಭಾಗಾನದಿ. 4. ಮಲ್ಲಿಗೆ ಗಿಡ.  
5. ಬಿಳಿ ಹೆಗ್ಗುಳ್ಳ. 6. ಮೆಂತ್ಯ. 7. ಬೆಳದಿಂಗಳಂತೆ  
ಅಹ್ಲಾದವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ ಹೆಗ್ಗಸು.

ಚಂದ್ರಿಕಾಪಾಯಿನ್ ಚಂದ್ರಿಕಾಪಾಯಿನ್ (ಪುಂ) ಚಕ್ರೋರಪಕ್ಷಿ.  
ಚಂದ್ರಿಕಾಂ ಪಿಬತಿ-ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೧-೧೩೪) |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೫) | -ಪಾಯಿನಿ -ಪಾಯಿನೀ.

ಚಂದ್ರಿನ್ ಚಂದ್ರಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಚಂದ್ರಯುಕ್ತವಾದ, ಚಂದ್ರ  
ನಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಚಂದ್ರೋಸ್ತಯಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) |  
2. ಸುವರ್ಣದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಚಂದ್ರಿಲ ಚಂದ್ರಿಲ (ಪುಂ) 1. ಭರ್ಗ, ಪರಮೇಶ್ವರ.  
2. ಚಕ್ರೋತದ ಸೊಪ್ಪು. 3. ನಾಪಿತ. "ಚಂದ್ರಿಲೋ ನಾಪಿತೇ  
ಖ್ಯಾತೋ ಹರವಾಸ್ತುಕಶಾಕಯೋ:" ವಿಶ್ವಂ |

ಚಂದ್ರೇಷಾ ಚಂದ್ರೇಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕನ್ನಡಿಯೆಲೆಲೆ. ಚಂದ್ರ:  
ಇಷ್ಟೋಸ್ತಯಾ: |

ಚಂದ್ರೋದಯ ಚಂದ್ರೋದಯ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರನ ಉದಯ,  
ಚಂದ್ರನು ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಚಂದ್ರಸ್ಯೋ-  
ದಯ: | "ಹರಸ್ತು ಕಿಂಚಿತ್ಪರಿಸ್ಥಿತಧರ್ಮ್ಯಚಂದ್ರೋದಯಾರಮ್ಭ ಇವಾಮ್ಬು-  
ರಾಶಿ:" ಕುಮಾಂ ೩-೬೭ |

ಚಂದ್ರೋಪಲ ಚಂದ್ರೋಪಲ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರಕಾಂತಶಿಲೆ. ಚಂದ್ರ-  
ಪ್ರಿಯ: ಉಪಲ: | ಚಂದ್ರಕಿರಣಸಂಪರ್ಕದಿಂದ ಈ ಶಿಲೆಯಲ್ಲಿ  
ನೀರು ಸೋರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ಚಪ - ಸಾನ್ತವನೇ (ಭ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಚಪತಿ | ಚಪಾಪ |  
ಅಚಪಿತ್, ಅಚಾಪಿತ್ | ಮೈಸವರಿ ಮಾತಾಡು, ಮುದ್ದಾಡು,  
ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಮಾತಾಡಿಸು.

ಚಪ-ಪರಿಕಲ್ಪನೇ (ಚುರಾಂ ಉಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಚಪಯತಿ, -ತೇ |  
ಅಚಿಚಪತ್, -ತ | ಕುಟ್ಟು, ಪುಡಿಮಾಡು, ಮರ್ದಿಸು, ಅರೆ.

ಚಪ ಚಪ (ಪುಂ) 1. ವಂಶ, ಬಿದಿರು. "ಚಪಶ್ಚ ತೇಷು ಪವನೋದ್ಭುತ-  
ಧ್ವನಿಷು ಕೀಚಕಾ:" ವೈಜಂ | 2. ಸಾಂತ್ವನ, ಸಮಾಧಾನ.  
ಚಪ (ಸಾನ್ತವನೇ) ಧನರ್ಥ "ಕ:" (ವಾಂ ೩-೩-೫೮) |

ಚಪಟ ಚಪಟೆ (ಪುಂ) ಎಲ್ಲಾ ಬೆರಳುಗಳನ್ನೂ ನೀಡಿದ ಅಂಗೈ,  
ಹೆಸು.

ಚಪಲ ಚಪಲ (ಪುಂ) 1. ಪಾದರಸ. ಚುಪ (ಮಂದಾಯಾಂ ಗತೌ)  
"ಕಲ:" ಉಪಾಯಾ ಅಕಾರಶ್ಚ (ಉಂ ೧-೧೦೮) | 2. ಮತ್ಸ್ಯ,  
ಮೀನು. 3. ಒಂದು ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ. 4. ಒಂದು  
ಜಾತಿಯ ಕಲ್ಲು. 5. ಕರಿ ಸಾಸುವೆ. 6. ವಾಯು, ಗಾಳಿ.  
7. ವಾನರ, ಕಪಿ. "ಚಪಲಶ್ಚೋರಕೇ ಮೀನೇ ಪಾರದೇ ಪ್ರಸ್ತರಾಂತರೇ"  
ಮೇದಿಂ | (ನಂ) 8. ಜಾಗ್ರತೆ, ಶೀಘ್ರತೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಲಾ-ಲಾ. 9. ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು. 10. ಲಕ್ಷ್ಮಿ.  
11. ಹಿಪ್ಪಲಿ. 12. ಅಸಭ್ಯ ಹೆಗ್ಗಸು, ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ.  
13. ನಾಲಿಗೆ. (ವಿಂ) 14. ಚಂಚಲವಾದ, ಸ್ಥಿರವಲ್ಲದ.  
15. ಸಂಚರಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಚಲಿಸುವ. 16. ನೀಚ,  
ದುರ್ಜನ, ಅಸಭ್ಯ. 17. ಅವಿಧೇಯ, ಹೇಳದಂತೆ ಕೇಳ  
ದವನು. 18. ಶೀಘ್ರವಾದ, ಚುರುಕಾದ. 19. ಪರ್ಯಾ  
ಲೋಚನೆಯಿಲ್ಲದ, ವಿವೇಚನೆಯಿಲ್ಲದ, ದುಡುಕಿನ.  
20. ಕ್ಷಣಿಕವಾದ. "ಚಪಲ: ಪಾರದೇ ಕೀಶೇ ಪುಮಾಸ್ತ್ರಿಪು  
ಚಪಲೇ | ದುರ್ವಿನಿತೇ ದ್ರುತೇ ನೇಚೇ ಚಪಲಾ ತದಿತಿ ಶ್ರಿಯಾಮ್"  
ನಾನಾರ್ಥಂ | "ಚಪಲಶ್ಚೋರಕೇ ಚಲೇ | ಕ್ಷಣಿಕೇ ಚಿಕ್ರೇ  
ಶೀಘ್ರೇ ಪಾರದೇ ಪ್ರಸ್ತರಾಂತರೇ | ಮೀನೇಽಪಿ ಚಪಲಾ ತು ಸ್ಯಾತ್ಪಿ-  
ಪಲ್ಯಾಂ ವಿವೃತಿ ಶ್ರಿಯಾಮ್ | ಪುಂಶ್ಚಲ್ಯಾಮಥ" ಹೇಮಂ | -ಲಮ್  
-ಲಮ್. (ಅವ್ಯಂ) 21. ಜಾಗ್ರತೆಯಾಗಿ, ಶೀಘ್ರವಾಗಿ.

ಚಪಲತಾ ಚಪಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಂಚಲವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಅಸ್ಥಿರ  
ವಾಗಿರುವುದು. ಚಪಲಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) |  
2. ಒಂದು ವ್ಯಭಿಚಾರಿಭಾವ. "ಚಪಲತಾಗ್ಲಾನಿಚಿಂತಾ-  
ವಿತರ್ಕಾ:" ಸಾಂ ೬೦ |

ಚಪಲಾಙ್ಗ ಚಪಲಾಂಗ (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಲಜಂತು,  
-ಜಲಚರಪ್ರಾಣಿ. ಚಪಲಮಙ್ಗಮಸ್ಯ | "ಶಿಶುಮಾರೋ ಜಲ-  
ಕಪಿಶ್ಚಪಲಾಙ್ಗೋಽಸಿಪುಂಶ್ಚಕ:" ಹಾರಾಂ |

ಚಪಲಾರ್ಯ ಚಪಲಾರ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾತ್ರಾಭಂದಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ  
ಆರ್ಯಾವೃತ್ತದ ಒಂದು ಭೇದ. ಆರ್ಯಾವೃತ್ತದ ಎರಡು  
ಅರ್ಧಗಳ ಲಕ್ಷಣ (30, 27 ಮಾತೃಗಳು) ವಿದ್ಯು ಎರಡು  
ಅರ್ಧಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಎರಡನೆಯ ಮತ್ತು ನಾಲ್ಕನೆಯ ಗಣ  
ಗಳು ಜಗಣವಾಗಿಯೂ ಆ ಎರಡು ಗಣಗಳೂ ಎರಡು  
ಗುರುವರ್ಣಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಇರುವುದಾದರೆ ಅದು  
"ಚಪಲಾರ್ಯಾ" ವೃತ್ತವಾಗುವುದು. "ಉಭಯಾರ್ಥಯೋಜಕಾರೋ  
ದ್ವಿತೀಯತುರ್ಯೋ ಗಮಧ್ಯಗೌ ಯಸ್ಯಾ: | ಚಪಲೇತಿ ನಾಮ ತಸ್ಯಾ:  
ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಂ ನಾಗರಾಜೇನ" ವೃಂ ೨೦ | ಇದರ ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ಜ ಜ

110 101 00 101 00 101 00 0  
ಉಭಯಾರ್ಥಯೋಜಕಾರೋ ದ್ವಿತೀಯತುರ್ಯೋ ಗಮಧ್ಯಗೌ ಯಸ್ಯಾ:



ಜ ಜ

110 101 00 101 00 100 1 ೪೦ ರಂ |  
ಚಲೇ ತಿನಾಮ ತಸ್ಯಾ: ಪ್ರಕೀರ್ತಿ ತನಾ ಗ ರಾಜೇ ನ ೪೦ ರಂ |

**ಚಲಾವಕತ್ರ ಚಪಲಾವಕ್ತ್ರ** (ನಂ) ಅನುಷ್ಠುಪ್ ಭಂದಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ  
ವಕ್ತ್ರವೃತ್ತದ ಒಂದು ಭೇದ. ಪ್ರಥಮ ಮತ್ತು ತೃತೀಯ  
ಪಾದಗಳಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಅಕ್ಷರಕ್ಕೆ ಮುಂದೆ ನಗಣವಿದ್ದರೆ  
“ಚಲಾವಕತ್ರಮ್” ಎಂಬ ವೃತ್ತವಾಗುವುದು. “ಚಲಾವಕತ್ರ-

|||

ಮಯುಜೋರ್ನಕಾರಕೇತಯೋರಾಶಿ:” ೪೦ ರಂ | “ಚಲಾವಕತ್ರಮಯುಜೋ:”  
ಎಂಬ ಪ್ರಥಮ ಪಾದದಲ್ಲಿ “ಕ್ರಮಯು” ಎಂಬ ನ ಗಣವು  
ನಾಲ್ಕನೆಯ ಅಕ್ಷರದ ಮುಂದಿನ ಗಣವಾಗಿರುವುದು.

**ಚಪೇಟ ಚಪೇಟಿ** (ಪುಂ) 1. ಎಲ್ಲಾ ಬೆರಳುಗಳನ್ನೂ ನೀಡಿರುವ  
ಹಸ್ತ. ಚಪತಿ—ಚಪ (ಸಾನ್ವನೇ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) |  
ಚಪಾಯ ಸಾನ್ವನಾಯ ಆಟತಿ—ಇಟ (ಗತೌ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೫) |  
“ಖಂಡಿಕೋಪಾಧ್ಯಾಯ: ಶಿಷ್ಯಾಯ ಚಪೇಟಾಂ ದದಾತಿ” ಎಂದು  
ಭಾಷ್ಯಪ್ರಯೋಗವಿರುವುದರಿಂದ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗವಾಗಿಯೂ  
ಪ್ರಯೋಗವುಂಟು. “ಪಾಣೌ ಚಪೇಟಪ್ರತಲಪ್ರಹಸ್ತಾ ವಿಸ್ತೃತಾ-  
ಙ್ಗುಲೌ” ಎಂದು ಆಮರದಲ್ಲಿ ಪುಲ್ಲಿಂಗವಾಗಿ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ.  
2. ಏಟು, ಹೊಡೆತ.

**ಚಪೇಟಾ ಚಪೇಟಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) “ಚಪೇಟ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ಸ್ವಾರ್ಥ  
“ಕ:” | ಚಪೇಟಿಕಾ ಚಪೇಟಿಕಾ.

**ಚಪೇಟಿ ಚಪೇಟೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭಾದ್ರಪದ ಶುಕ್ಲ ಪಕ್ಷ.

**ಚಮತ್ಕರಣ ಚಮತ್ಕರಣ** (ನಂ) ಅಪೂರ್ವವಸ್ತುವರ್ತನ  
ದಿಂದ ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಅನಂದವುಂಟಾಗುವಂತೆ ಅಶ್ಚರ್ಯ  
ಗೊಳಿಸುವುದು. ಚಮದಿತಿ ಕ್ರಿಯತೇ—ಛ ಕೃನ್ (ಕರಣೇ)  
ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) | “ಅತ ಎವ ಹಿ ರಸನಾ-  
ಸ್ವಾದನಚಮತ್ಕರಣಾದಯೋ ವಿಲಕ್ಷಣಾ ಎವ ವ್ಯಪದೇಶಾ ಇತಿ”  
ಸಾಂ ದಂ ೩ | ಭಾವೇ “ಘನ್” (೩-೩-೧೧೬) | -ಕಾರ: -ಕಾರಃ.  
“ಚಮತ್ಕಾರಶ್ಚ ಚಿತ್ತವಿಸ್ತಾರರೂಪೋ ವಿಷ್ಮಯಾಪರಪರ್ಯಾಯ:” ಸಾಂ  
ದಂ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೧೧೭) | -ಕೃತಿ: -ಕೃತಿಃ.

**ಚಮರ ಚಮರ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. 2. ಚಮರಿ  
ಮೃಗ. ಚಮು (ಅದನೇ) “ಅರ:” (೩ಂ ೩-೧೩೨) |  
ಈ ಮೃಗದ ಬಾಲದಿಂದಲೇ ಚಾಮರವನ್ನು ತಯಾರಿಸು  
ವುದು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ “ಡೀಫ್” (೪-೧-೬೩) |  
**ಚಮರ ಚಮರೀ**. “ತಂ ಕೇಶಪಾಶಂ ಪ್ರಸಮೀಕ್ಷ್ಯ ಕುರ್ಯುರ್ವಾಲಿಪ್ರಯತ್ನಂ  
ಶಿಥಿಲಂ ಚಮರೈ:” ಕುಮಾಂ ೧-೪೮ | 3. ಒಬ್ಬ ದೈತ್ಯ.  
(ನಂ) 4. ಚಾಮರ. “ಚಮರಶ್ಚಾಮರೇ ದೇತೇ ಚಮರೀ ತು  
ಮೃಗಾಂತರೇ” ಹೇಮಂ | “ಗೋಕರ್ಣಪೃಷ್ಠತೇಣಶ್ಯರೋಹಿತಾಶ್ಚಮರೋ  
ಋಗ:” ಅಮಂ |

**ಚಮರಿಕ ಚಮರಿಕ** (ಪುಂ) ಕೋವಿದಾರವೃಕ್ಷ, ಕೆಂಗಾಂಬಾಳ  
ಮರ. ಚಮರಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಠನ್” (೫-೨-೧೧೫) | “ಕೋವಿದಾರ-  
ಶ್ಚಮರಿಕ: ಕುದಾಲೋ ಯುಗಪತ್ರಕ:” ಅಮಂ |

**ಚಮರ ಚಮರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಚಮರಿಮೃಗ.  
2. ಮಂಜರಿ, ಗೊಂಬೆಲು. “ಚಮರಂ ಚಾಮರೇ ಸ್ತ್ರೀ ತು  
ಮಂಜರೀಮೃಗಭೇದಯೋ:” ಮೇದಿಂ |

**ಚಮಸ ಚಮಸ** (ಪುಂ) 1. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಸೋಮರಸವನ್ನು  
ಪಾನಮಾಡಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ಪಾತ್ರೆ. ಚಮನ್ಯ-  
ಸ್ಮಿನ್—ಚಮು (ಅದನೇ) “ಅಸಚ್” (೩ಂ ೩-೧೧೭) |  
2. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಸೌಚಿನ ಆಕಾರದ  
ಒಂದು ಮರದ ಪಾತ್ರೆ. “ಚಮಸಾನಾಂ ಗ್ರಹಾಣಾಂ ಚ ಶುದ್ಧಿ:  
ಪ್ರಕಾಲನೇನ ತು” ಮನುಂ ೫-೧೧೬ | 3. ಹಪ್ಪಳ. 4. ಲಾಡು.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಸೀ —ಸೀ. 5. ಉದ್ದಿನ ಹಿಟ್ಟು. “ಚುಣಂ  
ಯಕ್ಷುಷ್ಕಮಾಷಾಣಾಂ ಚಮಸೋ ಸಾಙ್ಗಿಭಿಷ್ಠೀಯತೇ” ಭಾವಪ್ರಂ |

**ಚಮು —ಅದನೇ** (ಸ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಚಮತಿ | ಚಾಮ |  
ಅಚಮಿತ್ | 1. ಹೀರಿಕುಡಿ, ನಾಲಗೆಯಿಂದ ಎಳೆದು ಕುಡಿ.  
ಆಚಾಮತಿ | ಆಚಾಂತ: | “ತರಂಗಾವಲಿನಿರ್ಮುಕ್ತೇಷ್ಮತ-  
ಸಾಗರಾಶ್ಚಮಸಿ ಮನಾಙ್ಗಮಗ್ನೋಽಪಿ ನಾಚಾಮತಿ” ಪ್ರಬೋಧಂ ೪-೬ |  
2. ತಿನ್ನು. “ಛವಜಾನುಢ್ದುಭುವುಸ್ತುಜ್ಞಾನ್ ಮಾಸಂ ಚಮುರ್ಜಗು: ಪಪು:”  
ಭट्टಿಂ ೧೪-೫೩ |

**ಚಮು ಚಮೂ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೇನೆ. ಚಮತಿ ಶತ್ರುನ್—ಚಮು  
(ಅದನೇ) “ಋ:” (೩ಂ ೧-೮೦) | “ತಥಾ ತಥಾ ಹೃಷಿತವಪು-  
ಮ್ದಾಕುಲಾ ದ್ವಿಷಾಂ ಚಮೂರಜನಿ ಜನಿವ ಚೇತಸಾ” ಮಾಘಂ  
೧೭-೪೩ | 2. 729 ಅನೆಗಳು, 2187 ಕುದುರೆಗಳು,  
729 ರಥಗಳು ಮತ್ತು 3645 ಕಾಲಾಳುಗಳು ಇವುಗಳಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ಒಂದು ಸೈನ್ಯದ ಗುಂಪು. [ಎವರಕ್ಕೆ “ಅನೀಕಿನಿ”  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] “ರಕ್ಷಾಹೇತೋರ್ನವಶಶಿಮೃತಾ ವಾಸವೀನಾಂ  
ಚಮೂನಾಮ್” ಮೇಘಂ ೧-೪೩ |

**ಚಮೂಚರ ಚಮೂಚರ** (ಪುಂ) ಸೈನಿಕ. ಚಮೂ ಚರತಿ—ಚರ  
(ಗತೌ) “ಠ:” (೩-೨-೧೧೬) | “ಆಸೇದಿರೇ ಲಾವಣ-  
ಸಂಧವೀನಾಂ ಚಮೂಚರೈ: ಕಚ್ಛಭುವಾಂ ಪ್ರದೇಶಾ:” ಮಾಘಂ ೩-೮೦ |

**ಚಮೂನಾಥ ಚಮೂನಾಥ** —ಪತಿ—ಪತಿ (ಪುಂ) ಸೇನಾಪತಿ,  
ಸೈನ್ಯಾಧ್ಯಕ್ಷ. ಚಮೂನಾಂ ನಾಥ: ಪತಿರ್ವಾ | “ರಾಮಾಜ್ಞಯಾ  
ಹರಿಚಮೂಪತಯಸ್ತದಾನೀಮ್” ರಘುಂ ೧೩-೭೪ |

**ಚಮೂ ಚಮೂರು** (ಪುಂ) ಮೃಗ, ಜಿಂಕೆ. ಚಮತಿ—ಚಮು  
(ಅದನೇ) “ಋ:” (೩ಂ ೪-೯೦) | उत्त्वम् | ಪೃಷಂ |  
“ಚಕಾಸತಂ ಚಾರುಚಮೂರ್ಮಣಾ ಕುಶೇನ ನಾಗೇಂದ್ರಮಿವೇಂದ್ರವಾಹನಮ್”  
ಮಾಘಂ ೧-೮ |



ಚಮ್ಪ ಚಂಪ (ಪುಂ) 1. ಕೆಂಗಾಂಚಾಳದ ಮರ, ಕೋವಿದಾರ ವೃಕ್ಷ. (ನಂ) 2. ಕೋವಿದಾರಪುಷ್ಪ.

ಚಮ್ಪಕ ಚಂಪಕ (ಪುಂ) 1. ಸಂಪಿಗೆಮರ. ಚಮ್ಪಯತಿ-ಚಪಿ (ಗತ್ಯಾಮ್) "ಕವುನ್" (ತಂ ೨-೩೨). 2. ಒಂದು ಹಾತಿಯ ಬಾಳೆಗಿಡ. (ನಂ) 3. ಸಂಪಿಗೆ ಹೂವು. "ಉನ್ನಿಪ್ರಪುಷ್ಪ-ಚಣಚಮ್ಪಕಪಿಙ್ಗಭಾಸ:" ಮಾಘಂ ೪-೩೧. 4. ಬಾಳೆಹಣ್ಣು. "ಚಮ್ಪಕಂ ವಾತಪಿತ್ತಘ್ನಂ ಗುಣವೀಯಂಕರಂ ತಥಾ" ಚಾವಪ್ರಂ.

ಚಮ್ಪಕಚತುರ್ದಶಿ ಚಂಪಕಚತುರ್ದಶಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದ್ವೀಷ್ಠ ಶಂಕ ಚತುರ್ದಶಿ.

ಚಮ್ಪಕಮಾಲಾ ಚಂಪಕಮಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಪಿಗೆ ಹೂವಿನ ಮಾಲೆ. ಚಮ್ಪಕಕುಸುಮನಿಮಿತಾ ಮಾಲಾ. 2. ಸಂಪಿಗೆ ಹೂವಿನ ಆಕಾರದ ಕಂಠಹಾರ. 3. ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರೋಕ್ತ ವಾದ ಹತ್ತನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: "ಚಮ್ಪಕಮಾಲಾ ಚೇದ್ಭೂಮಸಾಗ:" ವೃಂ ೨೦. ಭಗಣ ಮಂಗಣ ಸಗಣ ಮತ್ತು ಒಂದು ಗುರು. ಈ ವೃತ್ತದ ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ಮ ಮ ಸ ಗು  
೦ ೧ ೧ ೦ ೦ ೦ ೧ ೧ ೦ ೦

ಚಮ್ಪಕಮಾಲಿಕಾ ಚಂಪಕಮಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಪಿಗೆ ಹೂವಿನ ಮಾಲೆ. "ವಲವೇರಿಮುವಸ್ತವಾಧಿಕಣ್ಠಂ ವರಣಂ ಚಮ್ಪಕಮಾಲಿಕಾ ವಿತೇನೆ" ಚಂ ಭಾಂ ೨-೧೦೫.

ಚಮ್ಪಕಾರಣ್ಯ ಚಂಪಕಾರಣ್ಯ (ನಂ) ಸಂಪಿಗೆ ಮರಗಳು ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವ ಕಾಡು, ಬೆಳಗಿರಿರಂಗನ ಬೆಟ್ಟದ ಕಾಡು. ಚಮ್ಪಕಪ್ರಧಾನಮರಣ್ಯಮ್.

ಚಮ್ಪಕಾಲು ಚಂಪಕಾಲು (ಪುಂ) ಹಲಸಿನ ಮರ.

ಚಮ್ಪಕಾವತೀ ಚಂಪಕಾವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಂಪಾವುರಿ, ಅಂಗ ದೇಶದ ರಾಜಧಾನಿ, ಕರ್ಣನ ರಾಜಧಾನಿ, ಈಗಿನ ಭಾಗಲ್ಪುರ. ಚಮ್ಪಕ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪).

ಚಮ್ಪಾ ಚಂಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಂಗದೇಶಾಧಿಪತಿಯಾದ ಕರ್ಣನ ರಾಜಧಾನಿ, ಚಂಪಾನಗರ. 2. ಹಲಸಿನ ಹಣ್ಣಿನ ಒಂದು ಭಾಗ. 3. ಲೋಮಪಾದ ಋಷಿಯು ವಾಸಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಪಟ್ಟಣ. 4. ಮಾಲಿನೀನದಿ. "ಚಮ್ಪಾ ತು ಮಾಲಿನೀ. ಲೋಮಪಾದಕರ್ಣಯೋ: ಪು:" ಅಭಿಂ ಚಿಂ.

ಚಮ್ಪಾಧಿಪ ಚಂಪಾಧಿಪ (ಪುಂ) ಅಂಗದೇಶದ ದೊರೆಯಾದ ಕರ್ಣ. "ಕರ್ಣಶ್ರಮ್ಪಾಧಿಪೋಽಙ್ಗರಾಟ್" ಅಭಿಂ ಚಿಂ.

ಚಮ್ಪಾನಗರ ಚಂಪಾನಗರ (ನಂ), -ಪುರೀ-ಪುರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರ್ಣನ ರಾಜಧಾನಿ.

ಚಮ್ಪಾಲು ಚಂಪಾಲು (ಪುಂ) ಹಲಸಿನ ಮರ.

ಚಮ್ಪಾವತೀ ಚಂಪಾವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರ್ಣನ ರಾಜಧಾನಿ, ಚಂಪಾನಗರ.

ಚಮ್ಪು ಚಂಪು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗದ್ಯ ಮತ್ತು ಪದ್ಯಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕಾವ್ಯ, ಗದ್ಯ ಮತ್ತು ಪದ್ಯಗಳು ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವ ಒಂದು ಕಾವ್ಯದ ಭೇದ. "ಗದ್ಯಪದ್ಯಮಯಿ ಕಾಚಿಚ್ಚಮ್ಪುರಿಯಾಭಿಧೀಯತೆ" ಕಾವ್ಯಾಂ ೧-೩೧. ಇಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಚುರ್ಯಾರ್ಥದಲ್ಲಿ "ಮಯತ್" ಪ್ರತ್ಯಯವನ್ನು ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ ಕೆಲವೇ ಪದ್ಯಗಳಿರುವ ಕಾದಂಬರಿ, ದಶಕುಮಾರಚರಿತ ಮೊದಲಾದ ಗದ್ಯಕಾವ್ಯಗಳಿಗೆ ಚಂಪುವೆಂದು ವ್ಯವಹಾರವಿಲ್ಲ. ಗದ್ಯಪದ್ಯಗಳ ಪ್ರಾಚುರ್ಯವಿರುವುದಾದರೂ ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯಕ್ಕೆ ನಾಟಕವೆಂದು ಹೆಸರು. "ಮಿಶ್ರಾಣಿ ನಾಟಕಾದಿನಿ ತೇಷಾಮನ್ಯತ್ರ ವಿಸ್ತರ:" ಕಾವ್ಯಾಂ ೧-೩೧.

ಚಮ್ಪೇಶ ಚಂಪೇಶ (ಪುಂ) ಚಂಪಾವುರಿಯ ದೊರೆ ಕರ್ಣ. ಚಮ್ಪಾಯಾ ಇಶ:

ಚಯ - ಗತೀ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸಂ) | ಚಯತೆ | ಚೇ | ಅಚಯಿಷ್ಠ | ಹೊಂದು, ಪಡೆ, ಸೇರು.

ಚಯ ಚಯ (ಪುಂ) 1. ರಾಶಿ, ಗುಂಪು, ಸಮೂಹ. ಚಿನ್ (ಚಯೇ) "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬). "ಚಯಸ್ವಿಷಾಮಿತ್ಯವ-ಚಾರಿತಂ ಪುರಾ ತತ: ಶರೀರೀತಿ ವಿಭಾವಿತಾಕೃತಿಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೩. 2. ಪ್ರಾಕಾರ, ಸುತ್ತುಗೋಡೆ. "ಚಯಾನಿವಾದಿನಿವ ಶುಕ್ಲಶೃಂಗಾನ್ ಕವಚಿಪುರಾಣಿವ ಹಿರಣ್ಮಯಾನಿ" ಕಿರಾಂ ೧೬-೫೨. 3. ಪ್ರಾಕಾರದ ತಳಹದಿ, ಸುತ್ತುಗೋಡೆಯ ಅಸ್ತಿಭಾರ, ಅಡಿಪಾಯ. "ಚಯೋ ವಪ್ರೋಽಸ್ಯ ಪೀಠಭು:" ಅಭಿಂ ಚಿಂ. 4. ಕೋಟೆಯ ಗೋಡೆ. 5. ಕಂದಕದಿಂದ ತೆಗೆದ ಮಣ್ಣಿನ ರಾಶಿ. 6. ಹೂವು ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ತರುವುದು. "ಚಯ: ಸಮೂಹೇ ಪ್ರಾಕಾರೇ ಮೂಲವಧೇ ಚ ಸಂಗ್ರಹೇ" ನಾನಾರ್ಥಂ.

ಚಯಕ ಚಯಕ (ವಿಂ) ಕೂಡಿಹಾಕುವುದರಲ್ಲಿ ಜಾಣನಾದ ವನು. ಚಯೇ ಕೃಣಾ: "ಕನ್" (೪-೨-೬೪).

ಚಯನ ಚಯನ (ನಂ) 1. ಕೂಡಿಹಾಕುವುದು, ರಾಶಿಹಾಕುವುದು. 2. ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವುದು, ಅಧಿಕಗೊಳಿಸುವುದು. ಚಿನ್ (ಚಯೇ) ಖಾವೆ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). 3. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಸಂಸ್ಕಾರ. 4. ಯೂಪಸ್ತಂಭ.

ಚಯನೀಯ ಚಯನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಕೂಡಿಹಾಕಲ್ಪಡುವ, ರಾಶಿಹಾಕಲ್ಪಡುವ. 2. ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಡುವ. ಚಿನ್ (ಚಯೇ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬).

ಚರ - ಗತಿಭಕ್ಷಣಯೋ: (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸಂ) | ಚರತಿ | ಚಾರ | ಚರಿತಾ | ಚರಿಷ್ಯತಿ | ಚರತು | ಅಚರತ್ | ಚರೇತ್ |



ಚರಾತ್ | ಅಚರಾತ್ | ಅಚರಣ್ಯತ್ | ಈ ಧಾತುವು ಗತೃರ್ಥದಲ್ಲಿ ಅಕರ್ಮಕ. ಭಕ್ಷಣಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ಸಕರ್ಮಕ. 1. ನಡೆ, ಸಂಚರಿಸು. "ಸೇತುಪ್ರಾಲೇಯಶಲೈ ಚರತಿ ನರಪತೇ: ತಾವದೇತಸ್ಯ ಕೀರ್ತಿ:" ನೆಪಂ ೧೨-೪೭. "ದಿವಾ ಚರೇಯು: ಕಾರ್ಯಾಂ ಚಿಹ್ನಿತಾ ರಾಜಶಾಸನ:" ಮನುಂ ೧೦-೫೫. 2. ಭಕ್ಷಿಸು, ತಿನ್ನು. "ತಿಥಿವೃದ್ಧಾ ಚರೇತ್ ಪಿಂಡಾನ್ ಶುಕ್ಲೇ ಶಿಷ್ಯಪ್ತ-ಸಂಮಿತಾನ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೩೨೩. 3. ಅಭ್ಯಾಸಮಾಡು. 4. ಮಾಡು, ಅಚರಿಸು. "ಸಹೋಮೈ ಚರತಾಂ ಧರ್ಮಮಿತಿ ವಾಚಾನುಭಾಷ್ಯ ಚ" ಮನುಂ ೩-೩೦. 5. ಹರಡು, ವ್ಯಾಪಿಸು. "ವಾತೋದ್ರತಶ್ಚರತಿ ವಹ್ನಿರತಿಪ್ರವೃದ್ಧೋ ಗ್ರಾಮಾನ್ವನಾನಿ ನಗರಾಣಿ ಚ ಸಂದಿಧಕ್ಷು:" ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೧-೭. 6. ಮಾಡು. "ಸತ್ಕಾರಂ ಚರತಿ ಕ್ವಲೇ"

ಕರ್ಮಣಿ:—ಚರಂತೆ | ಚರೇ | ಚರಿತಾ | ಚರಣ್ಯತೆ | ಚರಂತಾಮ್ | ಅಚರಂತ | ಚರಂತೆ | ಚರಣಿಷ್ಠ | ಅಚಾರಿ | ಅಚರಣ್ಯತ |

ಣಿಚಿ:—ಚಾರಯತಿ, -ತೆ | ಚಾರಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಚಾರಯಿತಾ | ಚಾರಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೆ | ಚಾರಯತು, -ತಾಮ್ | ಅಚಾರಯತ್, -ತ | ಚಾರಯೇತ್, -ತ | ಇತ್ಯಾದಿ. "ಸಂಜಯಂತಿ ಹಿ ತೇ ನಾರೀರ್ನಿಗೃಹಾಶ್ಚಾರಯಂತಿ ಚ" ಮನುಂ ೮-೩೬೨. "ಯತ್ಪುಂಸ: ಪರದಾರೆಷು ತಚ್ಚವನಾಂ ಚಾರಯೇದ್ವರತಮ್" ಮನುಂ ೧೧-೧೭೬ |

ಕೃತ್ಸು:—ಚರಿತವ್ಯಮ್ | ಚರಣೀಯಮ್ | ಚರಯಮ್ | ಚರಿತ: | ಚರಿತವಾನ್ | ಚರನ್, ಚರಂತಿ | ಚರಿತುಮ್ | ಚರಿತಮ್ | ಚರಣಮ್ | ಚರಿತ್ವಾ | ಪ್ರಚರಯ |

ಘ್ಯಂತಾತ್ ಕೃತ್ಸು:—ಚಾರಯಿತವ್ಯ: | ಚಾರಣೀಯ: | ಚಾರಯ: | ಚಾರಿತ: | ಚಾರಿತವಾನ್ | ಚಾರಯನ್, ಚಾರಯಂತಿ | ಚಾರಯಮಾಣ: | ಚಾರಯಿತುಮ್ | ಚಾರಿತಮ್ | ಚಾರಣಮ್ | ಚಾರಯಿತ್ವಾ |

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಅತಿ+ಚರ = ಅತಿಚರತಿ | ಅತಿಚಾರ: | ಅತಿಕ್ರಮಿಸು, ಮೀರಿ ನಡೆ, ಕ್ರಮಮೀರಿ ನಡೆ. "ಪುತ್ರಾ: ಪಿತುನತ್ಯಚರನ್ ನಾರ್ಯಶ್ಚಾತ್ಯಚರನ್ ಪತೀನ್" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ | "ತತ್ರ ವಿರಾಧದನುಕಬಂಧಪ್ರಭೃತಯ: ಕೇಽಪ್ಯತಿಚರಂತೀತಿ ಶ್ರುತಮ್" ಮಂ ಖಂ ೨ |

(2) ವಿ+ಅತಿ+ಚರ = ವ್ಯತಿಚರತಿ | ವ್ಯತಿಚಾರ: | ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ನಡೆ. "त्वामहं न व्यतिचरे मनसापि कदाचन" ರಾಮಾಂ |

(3) ಅನು+ಚರ = ಅನುಚರತಿ | ಅನುಚರ: | 1. ಹಿಂಬಾ ಲಿಸಿ ನಡೆ, ಹಿಂದೆ ಹೋಗು. 2. ಅನಂತರ ಹೋಗು.

(4) ಅಪ+ಚರ = ಅಪಚರತಿ | ಅಪಚಾರ: | ತೊಂದರೆ ಪಡಿಸು, ಕೆಡುಕನ್ನುಂಟುಮಾಡು. "यो यस्तेषामपचरेत् तमाचक्षीत वै द्विज:" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ |

(5) ಅಭಿ+ಚರ = ಅಭಿಚರತಿ | 1. ಎದುರಾಗಿ ನಡೆ. 2. ಅತಿಕ್ರಮಿಸು, ಮೀರಿನಡೆ, ಅವಿಧೇಯತೆಯಿಂದ ನಡೆ. "पति या नाभिचरति मनोवादेहसंयुता" ಮನುಂ ೫-೧೬೫ | 3. ಇತರರನ್ನು ಒಡಿಸುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡು ಶೂನ್ಯ ಮಾಡು ಲಾದುವನ್ನು ಮಾಡು. "प्रति तमभिचर योऽस्मान् द्वेष्टि" | "वृष्ट्यायु:पुष्टिकामो वा तथैवाभिचरन्नपि" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೨೨೫ |

(6) ವಿ+ಅಭಿ+ಚರ = ವ್ಯಭಿಚರತಿ | ವ್ಯಭಿಚಾರ: | 1. ಹೆಚ್ಚು ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ನಡೆ, ನಿಯಮವನ್ನು ಉಲ್ಲಂಘಿಸು, ಕಟ್ಟಳೆಯನ್ನು ಮೀರು. "उन्नाणां व्यभिचरतीव सप्तसप्ते: पयस्यन्निव निचय: सहस्रसंख्याम्" ಕಿರಾಂ ೫-೩೪ | "अनुमितोऽपि च बाष्पनिरीक्षणाद्व्यभिचचार न तापकरो नल:" ನೆಪಂ ೪-೧೮ | 2. ಪತಿಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಪರಪುರುಷನನ್ನು ಸಂಗಮಿಸು.

(7) ಆ+ಚರ = ಆಚರತಿ | ಆಚಾರ: | 1. ಅಚರಿಸು, ಮಾಡು, ಅನುಷ್ಠಿಸು. "यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन:" ಗೀತಾ ೩-೨೧ | 2. ಮಾಡು, ಕರ್ತವ್ಯವನ್ನು ನೆರವೇರಿಸು. "प्रस्थितायां प्रतिष्ठेथा: स्थितायां स्थितिमाचरे:" ರಘುಂ ೧-೮೯ | 3. ನಡೆದುಕೊಂಡು, ವರ್ತಿಸು, ವ್ಯವಹರಿಸು. "प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत्" | 4. ಸರಿಯಾಗಿ ನಡೆದುಕೊಂಡು, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ನಡೆದುಕೊಂಡು. "प्रदक्षिणक्रियार्हायां तस्यां त्वं साधु नाचर:" ರಘುಂ ೧-೭೭ | 5. ಅಶ್ರಯಿಸು, ಅವಲಂಬಿಸು. "अगस्त्या-चरितामाशामनाशास्यजयो ययौ" ರಘುಂ ೪-೪೪ |

(8) ಅನು+ಆ+ಚರ = ಅನ್ವಾಚರತಿ | ಸದೃಶವಾಗಿ ಮಾಡು, ಸಮಾನವಾಗಿ ಮಾಡು. "को नु तत्कर्म राजर्षे-र्नाभिरेन्वाचरेत् पुमान्" ಭಾಗಂ ೫-೪-೬ |

(9) ಸಮ್+ಉ+ಆ+ಚರ = ಸಮುದಾಚರತಿ | ಸಮುದಾ-ಚಾರ: | 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾಡು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ನಡೆದುಕೊಂಡು, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ನಡೆದುಕೊಂಡು. 2. ನಯವಾಗಿ ಮಾಡು ಡಿಸು, ವಿಧೇಯತೆಯಿಂದ ಮಾಡುಡಿಸು. "बालानपि च गर्भस्थान् सान्त्वेन समुदाचरेत्" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೩೨-೩೨ |

(10) ಉಪ+ಆ+ಚರ = ಉಪಾಚರತಿ | ಉಪಾಪಿಸು, ಉಪಚರಿಸು, ಸೇವಿಸು. "उपाचरति तत्र स्म धनाना-मीश्वरं प्रभुम्" ಭಾಂ ಸಮಾಂ ೧೦-೨೯ |



ચરટ ઇંચ (પું) જાડાં સેનાસિન ઠાકુ. સ્ત્રિયામ્  
 " ડીપ્ " (૪-૧-૬૩) । ચરટી ઇંચર.



**ಚರಣ ಚರಣ** (ಪುಂ) 1. ಪಾದ, ಕಾಲು. ಚರಂತ್ಯನೇನ—ಚರ (ಗತೌ) ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)। “ಆಜ್ಞತು-ಸ್ತಚ್ಚರಣೌ ಪೃಥಿವ್ಯಾಂ ಸ್ಥಲಾರವಿಂದಶ್ರಿಯಮವ್ಯವಸ್ಥಾಮ್” ಕುಮಾಂ ೧-೩೩। 2. ಮೇದದ ಒಂದು ಭಾಗ, ಮೇದದ ಒಂದು ಶಾಖೆ. 3. ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರ ಕಿರಣ. 4. ಶ್ಲೋಕದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ, ಶ್ಲೋಕದ ಒಂದು ಪಾದ. 5. ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ, ಕಾಲುಭಾಗ. 6. ಆಧಾರ ಸ್ತಂಭ. (ನಂ) 7. ಸಂಚರಿಸುವುದು, ಚಲಿಸುವುದು. 8. ಆಚರಣೆ, ಅನುಷ್ಠಾನ. 9. ಭಕ್ಷಣ, ತಿನ್ನುವುದು. 10. ತಿರುಗಾಟ, ಅಲೆದಾಟ. ಚರ (ಗತೌ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

**ಚರಣಕ ಚರಣಕ** (ಪುಂ) ಸಣ್ಣ ಕಾಲು, ಚಿಕ್ಕ ಕಾಲು. ಅಲ್ಪ-ಶ್ರವಣ: “ಕನ್” (೪-೩-೮೫)। “ಚಪಲಚರಣಕಾಂಜ-ಪ್ರೇರಣೋತ್ತುಜ್ಜಿತಾಗ್ರಮ್” ಮಾಧಂ ೧೧-೩।

**ಚರಣಕಮಲ ಚರಣಕಮಲ** (ನಂ) ಕಮಲದಂತೆ ಸುಂದರವಾದ ಕಾಲು. ಚರಣ ಕಮಲಮಿವ।

**ಚರಣಕಿಸಲಯ ಚರಣಕಿಸಲಯ** (ನಂ) ಚಿಗುರಿನಂತೆ ಕೋಮಲವಾದ ಕಾಲು. ಚರಣ ಕಿಸಲಯಮಿವ।

**ಚರಣಗ್ರಂಥಿ ಚರಣಗ್ರಂಥಿ** (ಪುಂ) ಗುಲ್ಮ, ಕಾಲಿನ ಗಂಟು. ಚರಣಸ್ಯ ಗ್ರಂಥಿ:।

**ಚರಣನ್ಯಾಸ ಚರಣನ್ಯಾಸ** (ಪುಂ) ಅಡಿ ಇಡುವುದು, ಹೆಜ್ಜೆ ಹಾಕುವುದು. “ಸೇಂದ್ರೀಕ್ರಿಯತೇ ಜನೇನ ಚರಣನ್ಯಾಸೈ: ಪುರ: ಕುಟ್ಮಿಮ್” ರತ್ನಾಂ ೧-೧೧।

**ಚರಣಪವನ್ ಚರಣಪವನ್** (ನಂ) ಗುಲ್ಮ, ಕಾಲಿನ ಗಂಟು.

**ಚರಣಪಾತ ಚರಣಪಾತ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಲು ಇಡುವುದು, ಹೆಜ್ಜೆ ಹಾಕುವುದು. ಚರಣಸ್ಯ ಪಾತ:। 2. ಕಾಲಿನ ಮೇಲೆ ಬೀಳುವುದು, ನಮಸ್ಕರಿಸುವುದು. ಚರಣಯೋ: ಪಾತ:।

**ಚರಣಾಕ್ಷ ಚರಣಾಕ್ಷ** (ಪುಂ) ಅಕ್ಷಪಾದ, ಗೌತಮ.

**ಚರಣಾಯುಧ ಚರಣಾಯುಧ** (ಪುಂ) ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ. ಚರಣ ಆಯುಧಮಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬೩)। -ಆಯುಧಿ -ಆಯುಧೀ. “ಆಕರ್ಣ್ಯ ಸಂಪ್ರತಿ ಕ್ವಂ ಚರಣಾಯುಧಾನಾಮ್” ಸಾಂ ೧೦ ೩।

**ಚರಣಾರವಿಂದ ಚರಣಾರವಿಂದ** (ನಂ) ಕಮಲದಂತೆ ಕೋಮಲವಾದ ಮತ್ತು ಸುಂದರವಾದ ಕಾಲು. “ಖವಿನ್ವ-ತಾಸೌ ಮಕರಂದಲೋಲಾಂ ಮಂದಾಕಿನಿ ಯಚ್ಚರಣಾರವಿಂದೇ” ರೇಖಂ ೧೦-೯೦।

**ಚರಣಿ ಚರಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುವಾಸಿನಿ, ಸುಮಂಗಲಿ. ಚಿರಣಿ ಪೃ ೧೦।

**ಚರಣ್ಯ ಚರಣ್ಯ** (ವಿಂ) ಕಾಲಿಗೆ ಸಮಾನವಾದ, ಕಾಲಿನಂತಿರುವ. ಚರಣ ಇವ “ಯ:” (೪-೩-೧೦೩)।

**ಚರತ್ ಚರತ್** (ವಿಂ) 1. ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಓಡುತ್ತಿರುವ. ಚರತಿ—ಚರ (ಗತೌ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। “ನಿಹಿತಾಶ್ವೇ ಭಗನಾಶ್ಚ ಪಾಣಿಭೇನ ಯಶಸ್ವಿನಾ। ಚರತಾ ಬಲ-ಮಾಸ್ಥಾಯ ಪಾಕಾಸನಿನಾ ಮೃಧೇ” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೧೫೫-೩೪। 2. ಭಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ತಿನ್ನುತ್ತಿರುವ. ಚರ (ಭಕ್ಷಣೇ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। “ಮುಕ್ತಾಸ್ತುಣಾನಿ ಪರಿತ: ಕಟಕಂ ಚರಂತ-ಸ್ತುತಖಡ್ವಿತಾನತನಿಕಾವ್ಯತಿಷ್ಠಭಾಜ:” ಮಾಧಂ ೪-೬೧। 3. ಇರುವ, ವಲಿಸಿರುವ. “ಚರಚ್ಚರಂ ಶೈಶವಯೋವನೀಯ-ದೈರಾಜ್ಯಭಾಜಿ ತ್ವಯಿ ಖೇದಮೇತಿ” ನೈಪಂ ೮-೫೯। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬)। ಚರಂತಿ ಚರಂತೀ.

**ಚರಭ ಚರಭ** (ನಂ) ಚರಾಶಿಗಳು, ಮೇಷ ಕರ್ಕಾಟಕ ತುಲಾ ಮತ್ತು ಮಕರ ರಾಶಿಗಳು.

**ಚರಮ ಚರಮ** (ವಿಂ) 1. ಕೊನೆಯದಾದ. 2. ಅನಂತರ ಕಾಲದ. ಚರತಿ—ಚರ (ಗತೌ) “ಅಮಚ್” (೩ಂ ೪-೭೫)। (ಅವ್ಯಂ) 3. ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ. “ಚರಮಮಪಿ ಶಯಿತ್ವಾ ಪೂರ್ವಮೇವ ಪ್ರಬುದ್ಧಾ:” ಮಾಧಂ ೧೧-೧೩।

**ಚರಮಕಮಾಭುತ್ ಚರಮಕಮಾಭುತ್** (ಪುಂ) ಅಸ್ತಾಚಲ, ಪಶ್ಚಿಮದಿಕ್ಕಿನ ಪರ್ವತ. ಚರಮಶ್ವಾಸಿ ಕಮಾಭುತ್ಚ।

**ಚರಮತಸ್ ಚರಮತಸ್** (ಅವ್ಯಂ) ಕೊನೆಯದಾದ. ಚರಮ “ತಸಿ:” (೪-೩-೭)। “ಚರಮತಶ್ಚ ಶ್ರುಣಾದಿವ ದೇವಕೀ-ಪತಿರಮುಚ್ಯತ ಶೃಂಗಲತ: ಸ್ಥಿರಾತ್” ಯಾದಂ ೩-೧೧।

**ಚರಮವಯಸ್ ಚರಮವಯಸ್** (ನಂ) 1. ಜೀವಿತದ ಕೊನೆಯ ಕಾಲ, ಜೀವಮಾನದಲ್ಲಿ ಕೊನೆಯ ವಯಸ್ಸು. (ವಿಂ) 2. ಕೊನೆಯ ವಯಸ್ಸಿನ, ವೃದ್ಧ, ಮುದುಕ. “ಛೋ ರಾಜಾನ-ಶ್ಚರಮವಯಸಾಮಾಜಯಾ ಸಂಶ್ವರಧ್ವಂ ಕರ್ತವ್ಯೇಷು ಶ್ರವಣಸುಭಗಂ ಭೂಮಿದೇವಾ: ಪಠಂತು” ಮಾಲತೀಂ ೬-೨।

**ಚರಮ್ಯ ಚರಮ್ಯ** (ವಿಂ) ಚರುವಿಗೆ ಹಿತವಾದ, ಹವಿಸ್ಸಿಗೆ ಅನುಕೂಲವಾದ (ಅಕ್ಕಿ ಮೊದಲಾದುದು). ಚರವೇ ಹಿತಮ್ “ಯತ್” (೪-೧-೨)।

**ಚರಾಚರ ಚರಾಚರ** (ನಂ) 1. ಸ್ಥಾವರಜಂಗಮರೂಪವಾದ ಜಗತ್ತು. ಚರಂ ಚ ಅಚರಂ ಚ ಅನಯೋ: ಸಮಾಹಾರ:। “ಏವಂ ಸ ಜಾಗ್ರತ್ಸ್ವಪ್ನಾಮ್ಯಾಮಿವಂ ಸರ್ವಂ ಚರಾಚರಮ್” ಮನುಂ ೧-೫೭। (ವಿಂ) 2. ಚಲಿಸುವ, ಸಂಚರಿಸುವ. 3. ಸ್ಥಾವರ ಮತ್ತು ಜಂಗಮ. 4. ಚಂಚಲವಾದ ಮತ್ತು ಸ್ಥಿರವಾದ. “ಸರ್ವೇ ಜಾತಾಶ್ಚರಾಚರಾ:” ರಾಮಾಂ। “ಚರಾಚರಂ ಜಙ್ಗಮೇ ಸ್ಯಾ-ದಿಜ್ಞವಿಷ್ಣುಪಯೋರಪಿ” ಹೇಮಂ।



ಚರಿ ಚರಿ (ಪುಂ) ಪ್ರಾಣಿ, ಪಶು, ತೀರ್ಥಗುಂಟು. ಚರ (ಗತೌ) "ಇನ್" (೩-೪-೧೧೭)।

ಚರಿತ ಚರಿತ (ನಂ) 1. ಸಂಚಾರ, ಹೋಗುವುದು, ನಡೆಯುವುದು. ಚರ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ವರ್ತನೆ, ನಡವಳಿಕೆ, ನಡತೆ. "ಉದಾರಚರಿತಾನಾಂ ತು ವಸುಧೇವ ಕುಡುಸ್ವಕಮ್" ಹಿತೌಂ 1. 3. ಚರಿತ್ರೆ, ಜೀವನಚರಿತ್ರೆ. "ವಿಚಿನ್ಯ ಗೀತಕ್ಷಮಮರ್ಯಜಾತಂ ದಿವೋಕಸಸ್ವಚರಿತಂ ಲಿಖಂತಿ" ಶಾಕುಂ ೭-೫। 4. ಸ್ವಭಾವ. 5. ಅನುಷ್ಠಾನ, ಆಚರಣೆ. (ವಿಂ) 6. ಆಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 7. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ. 8. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ.

ಚರಿತವ್ಯ ಚರಿತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅನುಷ್ಠಿಸಬೇಕಾದ, ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ. ಚರ (ಗತೌ) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೯)। "ಚರಿತವ್ಯಮತೌ ನಿಯಂ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತಂ ವಿಶುದ್ಧಯೇ। ನಿಯಂಹಿ ಲಕ್ಷಣೈರ್ಯುಕ್ತಾ ಜಾಯಂತೇರ್ನಿಷ್ಕೃತೇನಸಃ" ಮನುಂ ೧೧-೫೩।

ಚರಿತಾರ್ಥ ಚರಿತಾರ್ಥ (ವಿಂ) 1. ಸಫಲವಾದ, ಸಾರ್ಥಕವಾದ, ಕೈಗೊಂಡಿದ ಕಾರ್ಯವುಳ್ಳ. ಚರಿತಃ ಪ್ರಾಪ್ತಃ ಅರ್ಥೋ ಯೇನ। "ತ್ವಾಮದ್ಯ ಲಕ್ಷ್ಯವಾಮೃತತೃಪ್ತಿಭಾಜಾಂ ಸ್ವದೇವಭೂಯಂ ಚರಿತಾರ್ಥಮಸ್ತು" ನೈಷಂ ೩-೧೦೧। 2. ಅರ್ಥಯುಕ್ತವಾದ, ಅರ್ಥಗರ್ಭಿತವಾದ, ಅನ್ವರ್ಥವಾದ. "ಪ್ರವೃತ್ತಿರಾಸಿ-ಕ್ಷಬ್ಧಾನಾಂ ಚರಿತಾರ್ಥಾ ಚತುಷ್ಟಯಿ" ಕುಮಾಂ ೨-೧೭। 3. ಉಚಿತವಾದ, ಯುಕ್ತವಾದ, ಸಂಗತವಾದ. "ತತ್ಪ್ರತ್ಯಯಾನ್ವ ಕುಸುಮಾಘುಬನ್ಧುರೇನಾಮಾಸ್ವಾಸಯತ್ ಸುಚರಿತಾರ್ಥಪದೇ-ವಂಚೋಭಿಃ" ಕುಮಾಂ ೪-೪೫।

ಚರಿತ್ರ ಚರಿತ್ರ (ನಂ) 1. ನಡತೆ, ವರ್ತನೆ, ನಡವಳಿಕೆ, ಆಚಾರ. "ಸ್ವಾಂ ಪ್ರಸೂತಿ ಚರಿತ್ರಂ ಚ ಕುಲಮಾತ್ಮಾನಮೇವ ಚ" ಮನುಂ ೯-೮। 2. ಆಚರಣೆ, ಅನುಷ್ಠಾನ. ಚರ (ಗತೌ) "ಇತ್ರಃ" (೩-೨-೧೮೪)। 3. ಜೀವನದ ವೃತ್ತಾಂತ, ಜೀವಮಾನದಲ್ಲಿ ನಡೆಸಿದ ಅಸಾಧಾರಣವಾದ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಸಾಹಿತ್ಯ. 4. ಶೀಲ, ಸ್ವಭಾವ. "ಮಯಾ ನಿಗಾಹ್ಯಂ ಜಗತಿ-ಪತಿನಾಂ ಗೌತ್ರಂ ಚರಿತ್ರಂ ಚ ವಿಚಿತ್ರಮೇಷಾಮ್" ನೈಷಂ ೧೦-೮೯।

ಚರಿಣು ಚರಿಣು (ವಿಂ) 1. ನಡೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಚರ (ಗತೌ) "ಇಣುಕ್" (೩-೨-೧೩೬)। "ಯದಾಣುಮಾತ್ರಿಕೋ ಭೂತ್ವಾ ಬೀಜಂ ಸ್ಥಾಸ್ತು ಚರಿಣು ಚ। ಸಮಾವಿಶತಿ ಸಂಸೃಷ್ಟ-ಸ್ತದಾ ಮೃತಿ ವಿಮುಚ್ಛತಿ" ಮನುಂ ೧-೫೬। 2. ಹರಡುವ ಸ್ವಭಾವದ. "ದಧಾನಮಾಶಾಸು ಚರಿಣು ದುರ್ಯಶಃ ಸ ಕೌತುಕೀ ತತ್ರ ವದಶಂ ಕೇತಕಮ್" ನೈಷಂ ೧-೭೮।

ಚರು ಚರು (ಪುಂ) 1. ಹೋಮಕ್ಕಾಗಿ ಪಾಕಮಾಡಿದ ಅನ್ನ, ಹವಿಸ್ಸು. ಚಯಂತೇ ಚರ್ಯಂತೇ — ಚರ (ಗತಿಭಕ್ಷಣಯೋಃ) "ಽಃ"

(೩ಂ ೧-೭)। 2. ಹೋಮದ ಅನ್ನ (ಹವಿಸ್ಸು)ವನ್ನು ಪಾಕಮಾಡುವ ಪಾತ್ರೆ. "ಚರುಣಾಂ ಲುಕ್ಸುವಾಣಾಂ ಚ ಶುದ್ಧಿ-ರಣ್ಣೇನ ವಾರಿಣಾ" ಮನುಂ ೫-೧೧೭। "ಚರುಃ ಪುಮಾನ್ ಹವ್ಯಾನ್-ಭಾಂಡಯೋಃ" ಮೇದಿಂ 1. 3. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಚರನ್ತ್ಯಾಪೋಷ-ಅಧಿಂ "ಽಃ"।

ಚರವೇಲಿನ್ ಚರುಚೇಲಿನ್ (ಪುಂ) ಪರಕಿವ, ಮಹಾದೇವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಚರವೇಲಿಮಿವಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫)।

ಚರಸ್ಯಾಲಿ ಚರುಸ್ಯಾಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚರುಪನ್ನು ಪಾಕ ಮಾಡುವ ಪಾತ್ರೆ.

ಚರ್ವ ಚರ್ವ (ಪುಂ) ಕುಬೇರನ ನವನಿಧಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಮುಕುಂದ-ಕುಂದನಿಲಾಶ್ಚ ಚರ್ವಶ್ಚೇತಿ ನಿಧೀನವ" ವೈಜಂ 1.

ಚರ್ವರಿಕ ಚರ್ವರಿಕ (ನಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಗೀತೆ. "ಭವತಿ ಮದನಿಕೇ ಭವತಿ ಚೂತಲತಿಕೇ ಮಾಮಪ್ಯೇತನ್ವಚರ್ವರಿಕಂ ಶಿಕ್ಷಯತಮ್" ರತ್ನಾಂ ೧।

ಚರ್ವರಿ ಚರ್ವರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಗೀತೆ. ಚರ್ಯಂತೇ — ಚರ್ವ (ಭಾಷಾಯಾಮ್) "ಅರನ್" ಬಾಹುಂ 1. ಗೌರಾಂ "ಡೌಃ" (೪-೧-೪೧)। "ಭೌ ವಯಸ್ಯ ಹತಾಶ ನ ಖಲ್ವೇಷಾ ಚರ್ವರಿ ದ್ವಿಪದೀಕ್ಷಣಂ ಖಲ್ವೇತತ್" ರತ್ನಾಂ ೧। 2. ಗುಂಗುರು ಕೂದಲು. 3. ಕೈ ಶಬ್ದ, ಚಪ್ಪಾಳೆಯ ಶಬ್ದ. 4. ಸಂತೋಷದ ಆಟ, ಹಬ್ಬದ ಆಟ. 5. ಜಂಬದ ಮಾತು. 6. ಮುಖಿಸ್ತುತಿ. 7. ನೃತ್ಯ ಮತ್ತು ಗೀತೆ. 8. ಯಾಚಕರ ಅದರದ ಮಾತು.

ಚರ್ವರಿಕ ಚರ್ವರಿಕ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾಕಾಳೇಶ್ವರ. 2. ಕೇಶಾಲಂಕಾರ. 3. ಒಂದು ವಿಧ ಶಾಕ, ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಸೊಪ್ಪು. ಚರ್ವ (ಪರಿಭಾಷಣಹಿಸಾತರ್ಜನೇಃ) "ಇಕನ್" (೩ಂ ೪-೨೦)। "ಚರ್ವರಿಕೋ ಮಹಾಕಾಲೇ ಕೇಶ-ವಿನ್ಯಾಸಶಾಕಯೋಃ" ಮೇದಿಂ 1.

ಚರ್ವಿ ಚರ್ವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಿಂತೆ. 2. ವಿಚಾರ, ವಿಮರ್ಶೆ, ಚರ್ಚೆ. ಚರ್ವ (ಅಧ್ಯಯನೇ) "ಅಙ್" (೩-೩-೧೦೫)। "ಕಾನುಜೇ ಮಮ ನಿಜೇ ದನುಜಾರಿ ಜಾಗ್ರತಿ ಸ್ವಶರಣೇ ರಣಚರ್ವಿ" ನೈಷಂ ೫-೩೮। 3. ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ. 4. ಗಂಧ ಮೊದಲಾದ ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯಗಳನ್ನು ಮೈಗೆ ಲೇಪನಮಾಡುವುದು. "ಮೃಗಮದಕೃತಚರ್ವಿ ಪಿತಕೌಶೇಯವಾಸಾಃ" ಛಂದೋಮಂ 1. "ಚರ್ವಿಚಂದನಪಾತಶ್ಚ ಶಸ್ತ್ರಪಾತಃ ಪ್ರವಾಸಿನಾಮ್" ಕಾವ್ಯಾಂ ೨-೧೦೪। 5. ವಾದ ವಿವಾದ, ವಿಚಾರ ಮಾಡುವುದು, ಜಿಜ್ಞಾಸೆಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಚರ್ಚೆ. 6. ಅಸಭ್ಯ ಹೆಂಗಸು, ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ, ಕುಲಿಚಿ. "ಬನ್ಧಕೀ ಪಾಸುಲಾ ಚರ್ವಿ" ವೈಜಂ 1.



**ಚರ್ಚಿ ಚರ್ಚಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಚಾರ, ವಿಮರ್ಶೆ, ಚರ್ಚೆ. ಚರ್ಚೆ (ಅಧ್ಯಯನ) ಭಾವೆ "ಇನ್" (೩೦ ೪-೧೧೭) ।

**ಚರ್ಚಿವ್ಯ ಚರ್ಚಿ** (ನಂ) ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯಗಳನ್ನು ಮೈಗೆ ಬಳಿಯುವುದು. "ಮಾರ್ಷಿಶ್ಚರ್ಚಿ ಚ ಚರ್ಚಿವ್ಯ ಸಮಾಲಂಭನ-ಮಿತೃಪಿ" ವೈಜಂ ।

**ಚರ್ಚಿತ ಚರ್ಚಿತ** (ವಿಂ) 1. ಚರ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಮರ್ಶೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಚರ್ಚೆ (ಅಧ್ಯಯನ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯದಿಂದ ಲೇಪನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪಯೋರಾ-ಶ್ಚಂದನಪಚ್ಚರ್ಚಿತಾಃ" ಋತುಸಂ 1 3. ಚಿಂತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಯೋಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. (ನಂ) 4. ಗಂಧದ ಲೇಪನ. ಚರ್ಚೆ ಭಾವೆ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೧೪) ।

**ಚರ್ಮ ಚರ್ಮ** (ಪುಂ) 1. ಹಪ್ಪಳ. ಚರ್ಮ (ಸಂದೀಪನೆ) + ಣಿಕ್ "ಅನ್" (೩೦ ೪-೮೧) । 2. ಬಿಚ್ಚಿದ ಹಸ್ತ, ಬೆರಳುಗಳನ್ನು ನೀಡಿದ ಹಸ್ತ, ಕರತಲ. (ವಿಂ) 3. ಸಮತಲವಾದ, ಚಪ್ಪಟೆಯಾದ. 4. ಅಗಲವಾದ. "ಚರ್ಮಃ ಸ್ಕಾರ-ವಿಪುಲೇ ಚರ್ಮೇ ಪರ್ಮೇಷಿ ಚ" ಮೇದಿಂ । "ನಿರ್ಮಿಸಿಃ ಕರ್ಣಃ ಪಾಪಮೃತ್ಯವಶ್ಚರ್ಮಃ ಸುಬ್ರಹ್ಮಭೋಗಾಃ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೬೮-೫೮ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಾ -ಟಾ. 5. ಭಾದ್ರಪದ ಶುಕ್ಲ ಪಕ್ಷ. -ರೀ -ಟೀ. 6. ಬಿಸ್ಕತ್ತು, ಹಿಟ್ಟಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಿ ಸುಟ್ಟ ರೊಟ್ಟಿ. ಗೌರಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧) । "ಪೋಲಿ ಪೂಲಿಚರ್ಮಿಣಿ ಚ ಸಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಚರ್ಮ ಚರ್ಮ** (ಪುಂ) ಸೌತೆಗಿಡ.

**ಚರ್ಮಿ ಚರ್ಮಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂತೋಷದ ಶಬ್ದ, ಉಲ್ಲಾಸದ ಶಬ್ದ. 2. ಗರ್ವದ ಮಾತು. 3. ಸೌತೆಕಾಯಿ.

**ಚರ್ಮಕ ಚರ್ಮಕ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಂಡಕಳ್ಳಿ. ಚರ್ಮ ಕಠಿ-ಕಠ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಚರ್ಮಕಾರ ಚರ್ಮಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ಮೋಚಿ, ಚರ್ಮದ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು, ಚಪ್ಪಲಿ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. ಚರ್ಮ ಚರ್ಮನಿರ್ಮಿತಂ ಪಾದುಕಾದಿ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) । 2. ಬೆಸ್ತನಿಗೆ ಶೂದ್ರ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು. "ವಿಪ್ರಾ ನಾವಿಕಮಸ್ವಘಾತಸ್ಮಿನ್ ಕ್ವಾಪಿ ಸ್ವಪಾಕವಾಕ್ । ಆಯೋಗವಾ-ಚ್ಚರ್ಮಕಾರಂ ರಾಜ್ಞಿ ವಾರ್ಮಿಕಸೂಚಕೌ" ವೈಜಂ । 3. ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಗೆ ವೈಶ್ಯ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಾಹಿಷ್ಯ ಮತ್ತು ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಹೆಂಗಸು ಇವರಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು. 4. ಧಿಗ್ವನ (ಬಡಗಿ, ಕಮ್ಮಾರ, ಅಕ್ಕಸಾಲೆ ಮತ್ತು ಕಂಚುಗಾರ)ನಿಂದ ಬೆಸ್ತರ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು. "ನಿಷಾದೀ ಧಿಗ್ವನಾಚ್ಚರ್ಮಕಾರಂ ಕಾರಾವರೋಪಿ

ಸಃ" ವೈಜಂ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧) । -ಕಾರಿ -ಕಾರೀ. ಚರ್ಮಕಾರನ ಹೆಂಡತಿ.

**ಚರ್ಮಕಾರಕ ಚರ್ಮಕಾರಕ** (ಪುಂ) ಮೋಚಿ, ಚರ್ಮದ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು, ಚಪ್ಪಲಿ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. ಚರ್ಮ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । ಕೃತ್ "ವಿಷ್" (೩-೨-೭೬) । -ಕೃತ್ -ಕೃತ್. "ಣಿತಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) । -ಕಾರಿನ್ -ಕಾರಿನ್.

**ಚರ್ಮಕಾರಿ ಚರ್ಮಕಾರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಂಡಕಳ್ಳಿ. "ಚರ್ಮಕಾರಃ ಪಾದುಕಾತಿ ಚರ್ಮಕಾರ್ಯೋಪಧಿಭಿಃ" ಹೇಮಂ ।

**ಚರ್ಮಕಾಲ ಚರ್ಮಕಾಲ** (ಪುಂ) ಮೈಮೇಲೆ ಏಳುವ ಮಾಂಸ ಗ್ರಂಥಿ, ಒಂದು ವಿಧ ಚರ್ಮರೋಗ.

**ಚರ್ಮಚಟಕ ಚರ್ಮಚಟಕ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಪಟದ ಹಕ್ಕಿ, ಬಾವಲಿ. ಚರ್ಮಣಾ ಚಟಕ ಇವ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ರಾಪ್" (೪-೧-೪) ।

**ಚರ್ಮಚಿತ್ರ ಚರ್ಮಚಿತ್ರ** (ನಂ) ಬಿಳಿಯ ಕುಪ್ಪರೋಗ. ಚರ್ಮ ಚಿತ್ರಯತಿ - ಚಿತ್ರ (ಚಿತ್ರೀಕರಣ) + ಣಿಕ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

**ಚರ್ಮಜ ಚರ್ಮಜ** (ನಂ) 1. ಕೂದಲು. ಚರ್ಮಣಿ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃಭಾವಿ) "ಜಃ" (೩-೨-೯೭) । 2. ರಕ್ತ.

**ಚರ್ಮಣ ಚರ್ಮಣ** (ವಿಂ) ಚರ್ಮದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಚರ್ಮಣಿ ಭವಃ "ಯತ್" (೫-೧-೬) ।

**ಚರ್ಮಣವತಿ ಚರ್ಮಣವತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚರ್ಮಣವತಿ ನದಿ. ಚರ್ಮನ್ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪) । ನಲೋಪಾಭಾವೋ ಣತ್ವಂ ಚ ನಿಪಾತ್ಯತೇ (೮-೨-೧೨) । ಈ ನದಿಯು ರಂತಿದೇವನ ಯಜ್ಞದಲ್ಲಿ ಅರ್ಪಣಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಯಜ್ಞ ಪಶುಗಳ ಚರ್ಮದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದುದು. "ಮಹಾನದಿ ಚರ್ಮರಾಶೇಹ್ವಲೇದಾತ್ಸಸೃಜೇ ಯತಃ । ತತಃಚರ್ಮಣವತೀತ್ಯೇವಂ ವಿಖ್ಯಾತಾ ಸಾ ಮಹಾನದಿ" ಭಾಂಶಾಂತಿಂ ೨೮-೧೨೩ ।

**ಚರ್ಮತರಣ ಚರ್ಮತರಣ** (ಪುಂ) ಚರ್ಮದ ಮೇಲಿನ ಸುಕ್ಕು, ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ನಿರಿಗೆ. ಚರ್ಮಣಿ ತರಣ ಇವ ।

**ಚರ್ಮತಲ ಚರ್ಮತಲ** (ನಂ) ಸಂಗಾತಿ, ಮೈಮೇಲಿನ ಕಪ್ಪು ಚುಕ್ಕಿ.

**ಚರ್ಮದಂಡ ಚರ್ಮದಂಡ** (ಪುಂ) ಚರ್ಮದ ಚಾವಟಿ, ಬಾರು ಗೋಲು. ಚರ್ಮಣಾ ಕೃತೋ ದಂಡಃ ।

**ಚರ್ಮದೂಷಿಕ ಚರ್ಮದೂಷಿಕ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಪ್ಪರೋಗ. ಚರ್ಮ ದೂಷಯತಿ - ದೂಷ (ವಿಕೃತ್ಯ) + ಣಿಕ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

**ಚರ್ಮದ್ರೂಮ ಚರ್ಮದ್ರೂಮ** (ಪುಂ) ಭೂರ್ಜವೃಕ್ಷ, ಭೂಜಪತ್ರೆ ಗಿಡ. ಚರ್ಮ ಚರ್ಮಕಾರವತ್ಕಲಂ ತತ್ಪ್ರಧಾನೋ ದ್ರೂಮಃ ।



ಚರ್ಮನ್ ಚರ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ತೋಗಲು. "ಕಾಣ್ಣರೋರವ-  
ಬಾಸ್ತಾನಿ ಚರ್ಮಾಣಿ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಣಃ" ಮನುಂ ೨-೪೧.  
2. ತ್ವಗಿಂದ್ರಿಯ. 3. ಗುರಾಣಿ. ಚರ್ಮತೇ - ಚರ (ಗತೌ)  
"ಮನಿನ್" (೩೦ ೪-೧೪೫). "ಪ್ರಾಪ್ಯಾಸಹ್ಯಾಂ ವೇದನಾ-  
ಮಸ್ತಧೈರಾದ್ಯಭ್ರಮ್ಯಚರ್ಮ ನಾನ್ಯಸ್ಯ ಪಾಣಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೮-೨೧.

ಚರ್ಮನಾಲಿಕಾ ಚರ್ಮನಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಾವಟಿ.

ಚರ್ಮಪಟಿಕಾ ಚರ್ಮಪಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗಲವಾದ ತೋಗ  
ಲಿನ ಪಟ್ಟಿ, ಅಟವಾಡುವಾಗ ಅಟದ ಕಾಯಿಗಳನ್ನು  
ಹೂಡುವ ಅಗಲವಾದ ಒಂದು ತೋಗಲಿನ ಪಟ್ಟಿ.

ಚರ್ಮಪಾಡುಕಾ ಚರ್ಮಪಾಡುಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚರ್ಮದಿಂದ  
ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಚಪ್ಪಲಿ. ಚರ್ಮಯಿ ಪಾಡುಕಾ.

ಚರ್ಮಪುಟ ಚರ್ಮಪುಟಿ (ಪುಂ) ತೋಗಲಿನ ಚೀಲ. ಚರ್ಮಯಂ  
ಪುಟಮತ್ರ. ವಾ "ಕಪ್" - ಪುಟಕಃ - ಪುಟಿಕಃ.

ಚರ್ಮಪ್ರಭೇದಿಕಾ ಚರ್ಮಪ್ರಭೇದಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚರ್ಮವನ್ನು  
ಕತ್ತರಿಸುವ ಆಯುಧ, ಮೋಚಿಯ ಉಳಿ. ಪ್ರಭಿನಕ್ತಿ-ಪ್ರ+  
ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೩-೧೦೯). "ಟಾಪ್"  
(೪-೧-೪). ಚರ್ಮಣಃ ಪ್ರಭೇದಿಕಾ.

ಚರ್ಮಪ್ರಸೇವಿಕಾ ಚರ್ಮಪ್ರಸೇವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆಂಕಿಗೆ ಗಾಳಿ  
ಯನ್ನೂಡುವ ಚರ್ಮದ ಚೀಲ, ತಿದಿ. ಚರ್ಮಣಾ ಪ್ರಸೀವ್ಯತೇ-  
ಪ್ರ+ಶಿವು (ತನ್ತುಸಂತಾನಿ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೩-೧೦೯).

ಚರ್ಮಮಯ ಚರ್ಮಮಯ (ವಿಂ) ಚರ್ಮದಿಂದ ತಯಾರಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಚರ್ಮಣಿ ವಿಕಾರಃ "ಮಯತ್" (೪-೩-೧೩೪).  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೧೫). -ಮಯಿ-ಮಯಾ.

ಚರ್ಮಮುಂಡಾ ಚರ್ಮಮುಂಡಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.  
2. ಸಪ್ತ ಮಾತೃಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬಳು.

ಚರ್ಮಯಶ್ಚಿ ಚರ್ಮಯಶ್ಚಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೋಗಲಿನ ಚಾವಟಿ.

ಚರ್ಮರು ಚರ್ಮರು (ಪುಂ) ಚರ್ಮಕಾರ, ಚಪ್ಪಲಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು  
ತಯಾರಿಸುವವನು. ಚರ್ಮ ರಾತಿ - ರಾ (ದಾನೆ)  
"ಕುಃ" (೩೦ ೧-೩೭). "ಚರ್ಮಃ ಕುರತಃ ಪಾಡುಕುತ್"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಚರ್ಮವತ್ ಚರ್ಮವತ್ (ವಿಂ) 1. ಚರ್ಮದಿಂದ ಕೂಡಿದ್ದು.  
ಚರ್ಮಾಸ್ತಿ - "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್"  
(೪-೧-೬). -ವತೀ - ವತಿಃ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಚರ್ಮದಂತೆ,  
ತೋಗಲಿನಂತೆ. ಚರ್ಮಣಾ ತುಲ್ಯಮ್ "ವತಿಃ" (೫-೧-೧೧೫).

ಚರ್ಮವಸನ ಚರ್ಮವಸನ (ಪುಂ) ಆನೆಯ ಚರ್ಮವನ್ನು  
ಧರಿಸಿರುವ ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಶಿವ. ಚರ್ಮ ವಸನಮಸ್ಯ.

ಚರ್ಮವೃಕ್ಷ ಚರ್ಮವೃಕ್ಷ (ಪುಂ) ಭೂರ್ಜವೃಕ್ಷ, ಭುಜಪತ್ರೆ  
ಗಿಡ. ಚರ್ಮ ಚರ್ಮತುಲ್ಯವುಳ್ಳಂತೆ ತತ್ಪ್ರಧಾನೋ ವೃಕ್ಷಃ.

ಚರ್ಮಸಂಭವಾ ಚರ್ಮಸಂಭವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಾಲಕ್ಕಿ. ಚರ್ಮಣಿ  
ಸಂಭವತಿ - ಸಮ್ + ಭೂ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಊಲಾ  
ತ್ವಚಿಸುಗನ್ಧಾ ಚ ಪುಟಿಕಾ ಚರ್ಮಸಂಭವಾ" ಹಾರಾಂ.

ಚರ್ಮಸಾರ ಚರ್ಮಸಾರ (ಪುಂ) ದೇಹದ ಅಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಕೆಂಪು  
ರಕ್ತದ ಕಣಗಳಿಲ್ಲದೆ ಇರುವ ನಿರ್ವರ್ಣವಾದ ದ್ರವ,  
ಸಿಡುಬು ಹಾಕಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಹಾಲು, ಪ್ರಾಣಿಗಳ  
ಶರೀರದ ನೀರಿನಂಥ ದ್ರವ. ಚರ್ಮಣಃ ಸಾರಃ.

ಚರ್ಮಾಭಸ್ ಚರ್ಮಾಭಸ್ (ನಂ) "ಚರ್ಮಸಾರ" ಪದದ  
ಅರ್ಥ. ಚರ್ಮಣೋಽಭಸ್.

ಚರ್ಮಾರ ಚರ್ಮಾರ (ಪುಂ) ಚರ್ಮಾರ, ಚರ್ಮದ ಕೆಲಸಮಾಡು  
ವವನು, ಚಪ್ಪಲಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು.  
ಚರ್ಮ ಶಿಲ್ಪಸಾಧನತಯಾ ಕ್ಷುಚ್ಛತಿ - ಕ್ಷು (ಗತೌ) "ಅಞ್"  
(೩-೨-೧).

ಚರ್ಮಾವಕರ್ತಿನ ಚರ್ಮಾವಕರ್ತಿನ (ಪುಂ) ಚರ್ಮಾರ,  
ಚರ್ಮವನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿ ಚಪ್ಪಲಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ತಯಾ  
ರಿಸುವವನು. ಚರ್ಮ ಅವಕರ್ತನತಿ - ಅವ + ಕೃತೌ (ಛೇದನೇ)  
"ಣಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮). "ಆಯುಃ ಸುವರ್ಣಕಾರಾಣಾಂ  
ಯಶ್ಚರ್ಮಾವಕರ್ತಿನಾಮ್" ಮನುಂ ೪-೧೨೮.

ಚರ್ಮಿಕ ಚರ್ಮಿಕ (ವಿಂ) ಗುರಾಣಿ ಹಿಡಿದಿರುವವನು.

ಚರ್ಮಿನ್ ಚರ್ಮಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಭೂರ್ಜವೃಕ್ಷ, ಭುಜಪತ್ರೆ  
ಗಿಡ. 2. ಬಾಳೆಗಿಡ. 3. ಈಶ್ವರನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ.  
(ವಿಂ) 4. ಚರ್ಮವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ, ಚರ್ಮದಿಂದ  
ಕೂಡಿದ. 5. ಗುರಾಣಿ ಹಿಡಿದಿರುವವನು. ಚರ್ಮಾಸ್ತಿ  
"ಛಿನಿಃ" (೫-೨-೧೧೬). "ಚರ್ಮಿ ಫಲಕಪಾಣಿ ಸ್ವಾಧ್ಭುಜೇ  
ಭೃಗ್ಗಿರಿದಾವಪಿ" ವಿಶ್ವಂ.

ಚರ್ಮ ಚರ್ಮ (ವಿಂ) 1. ಮಾದಬೇಕಾದ, ಅನುಷ್ಠಿಸಬೇಕಾದ,  
ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ. ಚರ (ಗತೌ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೦೦).  
"ಛತ್ರಿಶದಾಬ್ದಿಕಂ ಚರ್ಮ ಗುರೌ ಶ್ರೇವೇದಿಕಂ ವ್ರತಮ್" ಮನುಂ ೩-೧.  
2. ಆಚರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.

ಚರ್ಮ ಚರ್ಮ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸದಾಚಾರ, ಸದ್ವರ್ತನೆ, ಒಳ್ಳೆಯ  
ನಡತೆ. ಚರ (ಗತೌ) ಮಾತೇ "ಯತ್" (೩-೧-೧೦೦).  
"ಚರ್ಮ ತ್ವೀರ್ಯಾಪಥಸ್ಥಿತಿಃ" ಅಮಂ. 2. ಗತಿ, ಗಮನ,  
ಸಂಚಾರ. 3. ನಡತೆ, ವರ್ತನೆ, ನಡವಳಿಕೆ. "ಆಸಾಂ  
ಮಹರ್ಷಿಚರ್ಮಾಣಾಂ ತ್ಯಕ್ತವಾನ್ಯತಮಯಾ ತನುಮ್. ವೀತಶೋಕಮಯೋ  
ವಿಪ್ರೋ ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕೇ ಮಹೀಯತೇ" ಮನುಂ ೬-೩೨. 4. ಭೋಜನ,  
ಊಟಮಾಡುವುದು. 5. ವೃತ್ತಿ, ವ್ಯಾಪಾರ. "ಸಮೀಕ್ಷ್ಯ  
ಬಾಲಾ ತದನನ್ಯದೃಷ್ಟಿಶ್ರಯಾಮಿವಾಲಮ್ಬತ ಚಾತಕಾನಾಮ್" ಯಾದಂ  
೧೩-೧೬.



**ಚವ - ಅದನೆ** (ಛಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಚವಂತಿ । ಚವಂ ।  
ಚವಿತಾ । ಚವಿಷ್ಯತಿ । ಚವಂತು । ಅಚವತ್ । ಚವತ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.  
ಅಗಿದು ತಿನ್ನು.

**ಕರ್ಮಣಿ** :- ಚವ್ಯತೇ । ಚವೇ । ಚವಿತಾ । ಚವಿಷ್ಯತೇ ।  
ಚವ್ಯತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಣಿಚಿ** :- ಚವಯತಿ, -ತೇ । ಚವಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ । ಚವಯಿತಾ । ಚವಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ । ಚವಯತು,  
-ತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತ್ಸು** :- ಚವಿತವ್ಯಮ್ । ಚವಣೀಯಮ್ । ಚವ್ಯಮ್ । ಚವಿತಃ ।  
ಚವಿತವಾನ್ । ಚವನ್, ಚವಂತಿ । ಚವಿತುಮ್ । ಚವಿತಮ್ ।  
ಚವಣಮ್ । ಚವಿತವಾ । ಪ್ರಚವ್ಯ ।

**ಚವಣ ಚರ್ವಣ (ನಂ)** 1. ಅಗಿಯುವುದು, ನುಣ್ಣಗೆ ಅಗಿಯು  
ವುದು. ಚವ (ಅದನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।  
2. ಮೆಲುಕುಹಾಕುವುದು, ಜೀರ್ಣವಾಗದಿರುವ ಪದಾರ್ಥ  
ವನ್ನು ಮತ್ತೆ ಬಾಯಿಗೆ ತಂದುಕೊಂಡು ಅಗಿಯುವುದು.  
3. ಚಿಂತನೆಮಾಡುವುದು, ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲೇ ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ  
ಯೋಚನೆಮಾಡುವುದು. 4. ರುಚಿನೋಡುವುದು, ಆಸ್ವಾ  
ದನೆ ಮಾಡುವುದು. "ನಿಷ್ಪತ್ಯಾ ಚವಣಸ್ಯಾಸ್ಯ ನಿಷ್ಪತ್ತಿ-  
ರೂಪಚಾರತಃ" ಸಾಂ ೬೦ ೩-೨೭ । ಭಾವೇ "ಯುಕ್" ।  
ಚವಣಾ ಚರ್ವಣಾ. "ಪ್ರಮಾಣಂ ಚವಣೇವಾತ್ರ ಸ್ವಾಭಿನ್ನೇ ವಿದುಷಾಂ  
ಮತಮ್" ಸಾಂ ೬೦ ೩-೨೬ ।

**ಚವಣಾ ಚರ್ವಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ನೀಲಿನೋಣ. "ಚವಣಾ ಮಕ್ಷಿಕಾ  
ನೀಲಾ" ವೆಂಜಂ ।

**ಚವಣೀಯ ಚರ್ವಣೀಯ (ವಿಂ)** 1. ನುಣ್ಣಗೆ ಅಗಿಯಲು  
ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಹಲ್ಲಿನಿಂದ ಅಗಿಯಬಹುದಾದ. 2. ಆಸ್ವಾ  
ದಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಚಿಂತನೆ ಮಾಡಬಹುದಾದ.  
ಚವ (ಅದನೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) ।

**ಚವಾ ಚರ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹಲ್ಲಿನಿಂದ ನುಣ್ಣಗೆ ಅಗಿಯುವುದು.  
ಚವ (ಅದನೆ) "ಅಙ್" (೩-೩-೧೦೫) ।

**ಚವಿತ ಚರ್ವಿತ (ನಂ)** 1. ಅಗಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ನುಣ್ಣಗೆ ಅಗಿದು  
ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ರುಚಿನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಆಸ್ವಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಚವ (ಅದನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । 3. ವಿಚಾರಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಿಂತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಮರ್ಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಚವಿತಚವಣ ಚರ್ವಿತಚರ್ವಣ (ನಂ)** 1. ಅಗಿದಿದ್ದನ್ನೇ  
ಅಗಿಯುವುದು. 2. ವಿಚಾರಮಾಡಿದ್ದನ್ನೇ ಪುನಃ ವಿಚಾರ  
ಮಾಡುವುದು, ಅಪ್ರಯೋಜಕವಾದ ಪುನರುಕ್ತಿ. ಚವಿತಸ್ಯ  
ಚವಣಮ್ । "ಅದಾಂತಗೋಭಿವಿಶತಾಂ ತಮಿಷ್ಠಂ ಪುನಃಪುನಶ್ಚವಿತ-  
ಚವಣಾನಾಮ್" ಭಾಗಂ ೭-೫-೩೦ ।

**ಚರ್ವಣಿ ಚರ್ವಣಿ (ಪುಂ)** 1. ಜನ, ಮನುಷ್ಯ. ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ)  
"ಅನಿಃ" ಆದೇಶ್ಚ ಚಃ (೩೦ ೨-೧೦೪) । "ಅರ್ಯಂಣೋ  
ಮಾತೃಕಾ ಪತ್ನೀ ತಯೋಶ್ಚರ್ವಣಯಃ ಸುತಾಃ । ಯತ್ರ ವೈ ಮಾನುಷೀ  
ಜಾತಿರ್ಬ್ರಹ್ಮಣಾ ಚೋಪಕಲ್ಪಿತಾ" ಭಾಗಂ ೬-೬-೪೨ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಜೀಪ್" (ಗಂ ೫೦) । ಚರ್ವಣಿ ಚರ್ವಣೀ. 2. ಸ್ವೈರೀ,  
ವೈಭವೀ. "ಸ ಚರ್ವಣೀನಾಮುದಗಾಚ್ಛುಚೋ ಮೃಜನ್ ಪ್ರಿಯಃ  
ಪ್ರಿಯಾಯಾ ಇವ ದೀರ್ಘದರ್ಶನಃ" ಭಾಗಂ ೧೦-೨೯-೨ । 3. ವರಾಣಸ  
ಪತ್ನಿ, ಭೃಗುಮಹರ್ಷಿಯ ತಾಯಿ. "ಚರ್ವಣಿ ವರಣಸ್ಯಾ-  
ಸೀದಸ್ಯಾಂ ಜಾತೋ ಭೃಗುಃ ಪುನಃ" ಭಾಗಂ ೬-೧೮-೪ ।

**ಚರ್ವಣಿಭೃತ ಚರ್ವಣೀಧೃತ (ವಿಂ)** ಮನುಷ್ಯರನ್ನು  
ಪೋಷಿಸುವ.

**ಚರ್ವಣಿಭೃತಿ ಚರ್ವಣೀಧೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮನುಷ್ಯರ ಪೋಷಣೆ.  
ಇಲ್ಲಿ ಚರ್ವಣಿ ಪದವು ಮನುಷ್ಯಜಾತಿಪರವಾದುದರಿಂದ  
ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವುದು.

**ಚಲ - ಕಂಪನೆ** (ಛಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) । ಚಲತಿ ।  
ಚಲಾಲ್ । ಚಲಿತಾ । ಚಲಿಷ್ಯತಿ । ಚಲತು । ಅಚಲತ್ ।  
ಚಲೇತ್ । ಚಲ್ಯಾತ್ । ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಚಲಿಸು, ಅಲುಗಾಡು.  
2. ನಡುಗು. 3. ಮುಂದೆ ಸಾಗು, ಮುಂದೆ ನಡೆ.  
"ಕೃಷ್ಣೇನ ನಿಹತೇ ದೈತ್ಯೇ ಚಲಾಲ್ ಚ ವಸುಧರಾ" ಭಾಂ ಸಮಾಂ  
೭೦-೫೪ । "ಚಲತೀಕೇನ ಪಾದೇನ ತಿಷ್ಠತೀಕೇನ ಬುದ್ಧಿಮಾನ್"  
ಚಾಣಕ್ಯಃ ।

**ಕರ್ಮಣಿ** :- ಚಲತೀ । ಚಲೇ । ಚಲಿತಾ । ಚಲಿಷ್ಯತೇ ।  
ಚಲತಾಮ್ । ಅಚಲತ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಣಿಚಿ** :- ಚಲಯತಿ । ಚಲಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ ।  
ಚಲಯಿತಾ । ಚಲಯಿಷ್ಯತಿ । ಚಲಯತು । ಇತ್ಯಾದಿ. ನಿಗಾರಣ  
ಚಲನಾರ್ಥೇಭ್ಯಃ ಇತಿ (೧-೩-೮೭) ಸೂತ್ರೇಣ ಣ್ಯಂತಾತ್ಪರಸ್ಮೇ-  
ಪದಮೇವ । ಕಂಪನಾದನ್ಯತ್ರ ಶೀಲಂ ಚಾಲಯತಿ ಅನ್ಯಥಾ ಕರೋ-  
ತೀತ್ಯರ್ಥಃ । ಸೂತ್ರಂ ಚಾಲಯತಿ ಕ್ಷಿಪತೀತ್ಯರ್ಥಃ । ಪಕ್ಷೇ ಚಾಲಯತಿ,  
-ತೇ । ಚಾಲಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ ।

**ಕೃತ್ಸು** :- ಚಲಿತವ್ಯಮ್ । ಚಲನೀಯಮ್ । ಚಾಲ್ಯಮ್ । ಚಲಿತಃ ।  
ಚಲಿತವಾನ್ । ಚಲನ್, ಚಲಂತಿ । ಚಲಿತುಮ್ । ಚಲಿತಮ್ ।  
ಚಲನಮ್ । ಚಲಿತವಾ । ಪ್ರಚಲ್ಯ ।

**ಣ್ಯಂತಾತ್ ಕೃತ್ಸು** :- ಚಲಯಿತವ್ಯಃ । ಚಲನೀಯಃ । ಚಾಲ್ಯಃ ।  
ಚಲಿತಃ । ಚಲಿತವಾನ್ । ಚಲಯನ್, ಚಲಯಂತಿ । ಚಲಯಿತುಮ್ ।  
ಚಲಿತಮ್ । ಚಲನಮ್ । ಚಲಯಿತವಾ । ಪ್ರಚಲ್ಯ ।

ಕಂಪನಾದನ್ಯತ್ರ ಚಾಲಯಿತವ್ಯಃ । ಚಾಲನೀಯಃ । ಚಾಲ್ಯಃ ।  
ಚಾಲಿತಃ । ಚಾಲಿತವಾನ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.



ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) उच् + चल = उच्चलति । उच्चचाल । 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿಹೋಗುವುದು. "उच्चल-त्कलरवालिंकतवाद्‌वैजयन्तविजयार्जिता जगत्" ನೆಪಂ ೧೮-೨೨ । 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದು ಹೊರಡು. "स्थितः स्थिता-मुच्चलितः प्रयातां निषेदुषीमासनबन्धधीरः" ರಘುಂ ೨-೬ ।

(2) वि + चल = विचलति । विचचाल । विचलनम् । व्यचलत् । ದಾರಿ ಬಿಟ್ಟು ಸರಿ, ಅರುಗಾಗು, ಸರಕ್ಕನೆ ತರುಗು. "व्यचलन् विशङ्ककटीरकस्थलीशिखर-स्वलन्मुखरमेखलाकुलाः" ಮಾಘಂ ೧೩-೩೪ ।

चल ಚಲ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. चलति—चल (कम्पने) "अच्" (३-१-१३४) । ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಅಯುಧವನ್ನು ಹಿಡಿಯುವುದಿಲ್ಲವೆಂದು ಹಿಂದೆ ದುರ್ಯೋಧನನಿಗೆ ಹೇಳಿದ್ದನು. ಭೀಷ್ಮನು ಕೃಷ್ಣನಿಂದ ಅಯುಧವನ್ನು ಹಿಡಿಸುವುದಾಗಿ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡಿ ಅರ್ಜುನನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಹೊರಟು ಅವನನ್ನು ಸೋಲಿಸುವುದರಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಕೃಷ್ಣನು ಚಕ್ರಾಯುಧವನ್ನು ಧರಿಸಿ ಭೀಷ್ಮನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಹೋದನು. ಈ ರೀತಿ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ ಭಂಗವಾದುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಚಲನಾದನು. "सत्याद्यः पाण्डवाश्च हि चलतीति चलः स्मृतः" इति निरुक्तिः । "वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः" वि० सं० । "सोऽहं भीष्मं निहन्म्यद्य पाण्डवाथयि दंशितः । भारमेतं विनेष्यामि पाण्डवानां महात्मनाम् । अर्जुनो हि शरै-स्तीक्ष्णैः वध्यमानोऽपि संयुगे । कर्तव्यं नाभिजानाति रणे भीष्मस्य गौरवात् । तस्मादहं गृह्य च रथाङ्गमुग्रं प्राणं हरिष्यामि महाव्रतस्य । निहत्य भीष्मं सगणं तथाजी द्रोणं च शैनेय रथप्रवोरो । ततः सुतामं वसुदेवपुत्रः सूर्यप्रभं वज्रसमप्रभावम् । क्षुरान्तमुद्यम्य भुजेन चक्रं रथादवप्लुत्य विसृज्य बाहान् । तमात्तचक्रं प्रणदन्तमुच्चैः क्रुद्धं महेन्द्रावरजं समीक्ष्य । सर्वाणि भूतानि भृशं विनेदुः क्षयं कुरुणामिव चिन्तयित्वा" भा० भीष्म० ५९ । 2. ಪಾದರಸ. 3. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. "मरुद्बलिध्वजो मर्कसमीरोंजिनसखश्चलः" वंज० । (न०) 4. ತಂತ್ರ, ಉಪಾಯ, ಯುಕ್ತಿ, ಶತ್ರುವನ್ನು ಮೋಸಗೊಳಿಸಲು ಹೂಡುವ ಹಂಚಿಕೆ. "अम्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं स्खलितं चलम्" वंज० । 5. ರಾಳ, ಧೂಪ. "वृकधूपश्च तूणस्तु पिण्डकश्चपलश्चलः" वंज० ।

(वि०) 6. ಚಂಚಲವಾದ, ಸ್ಥಿರವಲ್ಲದ. "न खलु प्रेम चलं सुहृज्जने" कुमा० ४-२८ । 7. ನಡುಗುವ, ಅಲುಗಾಡುವ. "व्रजते दिवि यद्गृहावली चलचेलाञ्चल-दण्डताडनाः" नष० २-८० । 8. ಚಲಿಸುವ, ನಡೆಯುವ, ಮುಂದೆ ಸಾಗುವ. 9. ದುರ್ಜನ, ಕೆಟ್ಟವನು, ದುಷ್ಟ. "खलचञ्चलयोश्चलः" नानार्थर० ।

चलकेतु ಚಲಕೇತು (ಪುಂ) ಸಂಚರಿಸುವ ಒಂದು ಧೂಮಕೇತು. ಇದು ಪಶ್ಚಿಮದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಉದಯಿಸಿ ಒಂದು ಅಂಗುಲ ಎತ್ತರವುಳ್ಳದ್ದಾಗಿಯೂ ದಕ್ಷಿಣಾಗ್ರವುಳ್ಳದ್ದಾಗಿಯೂ ಇರುವುದು. ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಿಗೆ ಬರು ಬರುತ್ತಾ ಬಹಳ ದೀರ್ಘವಾಗುವುದು. ಈ ಗ್ರಹವು ಸಪ್ತರ್ಷಿಗಳು ಧ್ರುವ ಮತ್ತು ಅಭಿಜಿತ್ ನಕ್ಷತ್ರಗಳನ್ನು ಸ್ಪರ್ಶಮಾಡಿ ಕೊಂಡು ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಅರ್ಧದೂರ ಹೋಗಿ ಪುನಃ ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿಗೆ ತಿರುಗಿ ಅಲ್ಲಿ ಅಸ್ತವಾಗುವುದು. ಈ ಗ್ರಹವು ಕಾಣಿಸಿ ಕೊಂಡಾಗ ಪ್ರಯಾಗತೀರದಿಂದ ಹಿಡಿದು ಉಜ್ಜಯಿನಿ ಪಟ್ಟಣ ಮತ್ತು ಪುಷ್ಕರದ ಅರಣ್ಯಪ್ರದೇಶದವರೆಗಿನ ಜನ ರೆಲ್ಲರೂ ವಾಶವಾಗುವರು. ಉತ್ತರದಲ್ಲಿ ದೇವಕಾನದಿ ಮತ್ತು ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವ ಬಹು ಮಂದಿ ರೋಗ ಮತ್ತು ದುರ್ಭಿಕ್ಷಗಳಿಂದ ಖೇಡಿತರಾಗುವರು. ಈ ತೊಂದರೆಯು ಸುಮಾರು ಹತ್ತು ತಿಂಗಳಕಾಲ ಮುಂದು ವರೆಯುವುದು. "अपरस्यां चलकेतुः शिखया याम्याग्र-याङ्गुलोच्छ्रितया । गच्छेद्यथायथोदक् तथा तथा दैर्घ्यमायाति । सप्त मुनीन् संस्पृश्य ध्रुवमभिजितमेव च प्रतिनिवृत्तः । नभसोऽर्धमात्रमित्रा याम्येनास्तं समुप-याति । हन्यात्प्रयागकूलाद्यावदवन्ती च पुष्करारण्यम् । उदगपि च देविकामपि भूयिष्ठं मध्यदेशाख्यम् । अन्या-नपि च स देशान् क्वचित् क्वचिद्वन्ति रोगदुर्भिक्षैः । दश मासान् फलपाकोऽस्य कैश्चिदष्टादश प्रोक्तः" बृहत्सं० ११-३३-३६ ।

चलचञ्चु ಚಲಚಂಚು (ಪುಂ) ಚಲಿಸುವುದಕ್ಕೆ. चला चञ्चुरस्य । "ज्योत्स्नाप्रिये चलचञ्चुचकोरविपसूचकाः" अभि० वि० ।

चलचित्त ಚಲಚಿತ್ತ (ವಿಂ) 1. ಚಂಚಲವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. चलं चित्तं यस्य । "दुराराध्याश्रामी तुरगचलचित्ताः क्षितिभृजो वयं च स्थूलेच्छाः सुमहति कले बद्धमनसः" भर्तृ० ३-७७ । (न०) 2. ಚಂಚಲವಾದ ಮನಸ್ಸು. "पौश्रल्याच्चलचित्ताच्च नैस्नेह्याच्च स्वभावतः । रक्षिता यत्नतोऽपीह भर्तृष्वेता विकुर्वते" मनु० ९-१५ ।



ಚಲತ್ ಚಲತ್ (ವಿಂ) 1. ಚಂಚಲವಾದ, ಸ್ಥಿರವಾಗಿಲ್ಲದ.

“ನಿ:ಶೇಷಮಾಕ್ರಾಂತಮಹಿತಲೋ ಜಲೇಶ್ವಲನ್ ಸಮುದ್ರೋಪಿ ಸಮುಜ್ಜತಿ  
ಸ್ಥಿತಿಮ್” ಮಾಘಂ ೧೨-೩೬। 2. ಕಂಪಿಸುತ್ತಿರುವ,

ನಡುಗುತ್ತಿರುವ, ಅಲುಗಾಡುತ್ತಿರುವ. “ಸ್ಫುಟಂ ಚಲ-

ಚ್ಚಾಮರಯುಗ್ಮಚಿಹ್ನನೇರನಿಹ್ನವಾನಂ ನಿಜವಾಜಿರಾಜತಾಮ್” ನೈಷಂ

೧-೬೨। 3. ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಹೋಗುತ್ತಿರುವ.

“ಚಲನಲಂಕೃತ್ಯ ಮಹಾರಯಂ ಹಯಂ ಸ್ವವಾಹವಾಹೋಚಿತವೇಷಪೇಶಲ:”

ನೈಷಂ ೧-೬೬। ಚಲ (ಕಂಪನೆ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)।

ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬)। ಚಲಂತಿ ಚಲಂತೀ.

ಚಲತಾ ಚಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಂಚಲವಾಗಿರುವಿಕೆ.

2. ನಡುಗುವಿಕೆ. 3. ನಡೆಯುವಿಕೆ. ಚಲಸ್ಯ ಭಾವ:

“ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯)। “ತ್ವ:” (೪-೧-೧೧೯)।

ಚಲತ್ವಮ್ ಚಲತ್ವಮ್.

ಚಲದಲ ಚಲದಲ (ಪುಂ) ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿಮರ. ಚಲಾನಿ

ದಲಾನ್ಯಸ್ಯ। “ಬೋಧಿದ್ರೂಮಶ್ವಲದಲ: ಪಿಪ್ಪಲ: ಕುಂಜರಾಶನ:”

ಅಮಂ।

ಚಲನ ಚಲನ (ನಂ) 1. ಚಲಿಸುವುದು. 2. ನಡುಗುವುದು,

ಕಂಪಿಸುವುದು. 3. ನಡೆಯುವುದು, ಹೋಗುವುದು. ಚಲ

(ಕಂಪನೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೧-೧೧೫)। “ಚಲನೇವನಿ-

ಶ್ವಲತಿ ತಸ್ಯ ಕರಣನಿಯಮೇ ಸದಿಹ್ಮುಖಮ್” ಕಿರಾಂ ೧೨-೨೮।

4. ಪಾದ, ಕಾಲು. 5. ಯಂತ್ರ. “ಚಲನಂ ಪಾದಯನ್ತ್ರಯೋ:”

ವೈಜಂ। (ಪುಂ) 6. ಜಿಂಕೆ, ಚಿಗರಿ. (ವಿಂ) 7. ಚಲಿಸುವ.

8. ನಡುಗುವ. 9. ನಡೆಯುವ. ಚಲ ಕರ್ತಂ “ಯುಚ್”

(೩-೨-೧೪೮)।

ಚಲನಕ ಚಲನಕ (ನಂ) ನರ್ತಕಿಯರ ಒಳಲಂಗ, ತುಂಡು

ಲಂಗ. ಚಲನ ಸಂಜಾಯಾಂ “ಕನ್”।

ಚಲನಿಕಾ ಚಲನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರೇಷ್ಮೆಯ ಸೆರಗಿನ ಅಂಚು,

ರೇಷ್ಮೆ ದಾರದಿಂದ ಹೆಣೆದಿರುವ ಸೆರಗಿನ ಪಟ್ಟಿ.

ಚಲನೀ ಚಲನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ.

ಚಲನೀಯ ಚಲನೀಯ (ವಿಂ) ಅಲುಗಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ,

ಕದಲಿಸಲ್ಪಡುವ. ಚಲ (ಕಂಪನೆ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬)।

ಚಲಪತ್ರ ಚಲಪತ್ರ (ಪುಂ) ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿಮರ.

ಚಲಾನಿ ಪತ್ರಾಣಿ ಯಸ್ಯ। “ಅಜ್ಞೇನ ಕೇನಾಪಿ ವಿಜೇತುಮಸ್ಯಾ

ಗವೇಷ್ಯತೇ ಕಿಂ ಚಲಪತ್ರಪತ್ರಮ್” ನೈಷಂ ೭-೯೧।

ಚಲಾ ಚಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. ಚಲ (ಕಂಪನೆ) “ಅಚ್”

(೩-೧-೧೩೪)। “ಚಲಾ ಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾಂ ಪುಮಾನ್ ಕಂಪೇ” ಮೇದಿಂ।

2. ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು. “ಛೇರಾವತಂ ಚ ವಿಶ್ವತು ಚ ಚಲಾ

ಚಲಾ ಚಲಾ” ವೈಜಂ। 3. ಅಸಭ್ಯ ಹೆಂಗಸು, ಸ್ವೈರೀ,

ವೈಭಿಚಾರೀ. “ಬಂಧಕೀ ಪಾಸುಲಾ ಚರ್ವಾ ಚಲಾ ನಗ್ನಾ ತು  
ಕೊಡುವಿ” ವೈಜಂ।

ಚಲಾಚಲ ಚಲಾಚಲ (ಪುಂ) 1. ವಾಯುಸ, ಕಾಗೆ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್

ಜಾತಿಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬೩)। (ವಿಂ) 2. ಚಂಚಲ

ವಾದ, ಸ್ಥಿರವಲ್ಲದ. ಚಲ (ಕಂಪನೆ) “ಅಚ್” ದ್ವಿತ್ವಮ್

ಅಮ್ಯಾಸಸ್ಯ ಅಕ್ ಚ (ವಾಂ ೩-೧-೧೩೪)। “ಚಲಾಚಲ-

ಪ್ರಾಥತಯಾ ಮಹಿಭೃತೇ ಸ್ವವೇಗದರ್ಪಾನಿವ ವಕ್ತುಮುತ್ಸುಕಮ್” ನೈಷಂ

೧-೬೦। 3. ನಡುಗುವ, ಕಂಪಿಸುವ, ಅಲುಗಾಡುವ.

4. ಚಲಿಸುವ ಮತ್ತು ಚಲಿಸದಿರುವ.

ಚಲಿತ ಚಲಿತ (ನಂ) 1. ನಡುಕ, ಕಂಪನ. ಚಲ (ಕಂಪನೆ)

ಭಾವೇ “ಕ್ತ:” (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಸಂಚಾರ, ನಡೆಯು

ವುದು, ಹೋಗುವುದು. (ವಿಂ) 3. ನಡುಗಿದ, ಅಲು

ಗಾಡಿದ. 4. ಹೊರಟಿರುವ, ಮುಂದೆ ಹೋದ, ಮುಂದೆ

ಸಾಗಿದ. “ಅಪಶಕ್ತುಮ್ ಪರಿವರ್ತನೋಚಿತಾಶ್ವಲಿತಾ: ಪುರ:

ಪತಿಮುಪೇತುಮಾತ್ಮಜಾ:” ಮಾಘಂ ೪-೪೭। 5. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ,

ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ತಂ “ಕ್ತ:”

(೩-೪-೭೨) ಕರ್ಮಂ ವಾ (೩-೨-೧೦೨)।

ಚಲಿತವ್ಯ ಚಲಿತವ್ಯ (ವಿಂ) ಹೊರಡಬೇಕಾದ, ನಡೆಯು

ಬೇಕಾದ. ಚಲ (ಕಂಪನೆ) “ತವ್ಯ:” (೩-೧-೯೬)।

ಚವಗ್ ಚವಗ್ (ಪುಂ) ಚ ಛ ಜ ಙ ಞ ಈ ವರ್ಣಗಳ ಗುಂಪು.

ಈ ಐದು ವರ್ಣಗಳೂ ಒಂದೇ ಸ್ಥಾನ (ತಾಲು)ದಲ್ಲಿ

ಹುಟ್ಟುವುದರಿಂದ ಒಂದೇ ಗುಂಪಿಗೆ ಸೇರಿದುವು. ಇಚ್ಛುಶಾನಾಂ

ತಾಲು।

ಚವಿಕಾ ಚವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚವ್ಯವೆಂಬ ಒಂದು ಗಂದಿಗರ

ಚವ್ಯ ಚವ್ಯ (ನಂ) ವಸ್ತು. “ಚವ್ಯಂ ತು ಚವಿಕಾ”

ಅಮಂ।

ಚವ್ಯಜಾ ಚವ್ಯಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಜಹಿಪ್ಪಲಿ.

ಚವ್ಯಫಲ ಚವ್ಯಫಲ (ನಂ) ಗಜಹಿಪ್ಪಲಿ.

ಚಪ - ಭಕ್ಷಣ (ಭ್ವಾಂ ಉಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಚಪತಿ, -ತೇ।

ಚಪಾಃ। ಚಪಿತಾ। ತಿನ್ನು, ಊಟಮಾಡು.

ಚಪ - ಹಿಸಾಯಾಮ್ (ಭ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಚಪತಿ।

ಚಪಾಃ। ಚಪಿತಾ। ಹಿಂಸಿಸು, ಪೀಡಿಸು.

ಚಪಕ ಚಪಕ (ಪುಂ) 1. ಮದ್ಯವನ್ನು ಕುಡಿಯುವ ಪಾತ್ರೆ.

ಹೆಂಡವನ್ನು ಕುಡಿಯುವ ಪಾತ್ರೆ. ಚಪ್ಯತೇನೇನ-ಚಪ

(ಭಕ್ಷಣ) “ಕವುನ್” (೩ಂ ೨-೩೨)। “ಆದದೇ ಮಧು-

ವಿಲೋಪಲಾಶೇಶ್ವಲೇಶ್ವಕವೀಚಿಘ್ರ ಕಂಪ:” ಕಿರಾಂ ೯-೫೬।

(ನಂ) 2. ಮದ್ಯ. 3. ಜೇನುತುಪ್ಪ. “ಚಪಕೋಸ್ತೀ

ಸುರಾಪಾತ್ರೇ ಮಧುಮದ್ಯಪ್ರಭೇದಯೋ:” ಮೇದಿಂ।



ಕವಾಲ ಚವಾಲ (ಪುಂ) ಯಜ್ಞಪಶುಸ್ತಂಭದ ಮೇಲುಗಡೆ ಇರುವ ಬಳೆ, ಯೂಪಸ್ತಂಭದ ಮರದ ವಲಯ. ಕವ (ಭಕ್ಷಣ) "ಆಲ:" (ಉಂ ೪-೧೦೭)। "ಕವಾಲೋ ಯುಪಕಟಕ:" ಅಮಂ। "ಭೂಶಾಲತುಲಿತಾಙ್ಗುಲೀಯಕಮ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೫೨।

ಕಹ - ಪರಿಕಲ್ಕನೆ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ)। ಕಹತಿ। ಕವಾಹ। ಕಹಿತಾ। ಕಹಿಷ್ಯತಿ। ಕಹತು। ಇತ್ಯಾದಿ. ವಂಚಿಸು, ಮೋಸಮಾಡು.

ಕಹ - ಪರಿಕಲ್ಕನೆ (ಚುರಾಂ ಮಿತ್ ಉಮಂ ಸಕಂ ಸಂ)। ಕಹಯತಿ, -ತೆ। ಕಹಯಾಂ ಕಕಾರ, -ಕಕ್ರ, -ಕಭೂವ, -ಕಾಸ। ಕಹಯಿತಾ। ಇತ್ಯಾದಿ. ವಂಚಿಸು, ಮೋಸಮಾಡು.

ಕಾಕಕವಯ ಚಾಕಚಕ್ರ (ನಂ) 1. ತೇಜಸ್ಸು, ಕಾಂತಿ, ಹೊಳಪು. ಕಕ (ತೃಪ್ತೌ ಪ್ರತಿಪಾತೇ ಕ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಪ್ರಕಾರೇ ದ್ವಿತ್ವಮ್ ಕಕಕಕ:। ತಸ್ಯ ಭಾವ: "ಛಕ್" (೫-೧-೧೨೪)। 2. ಚುರುಕು, ಚಟುವಟಿಕೆ.

ಕಾಕ್ರ ಚಾಕ್ರ (ವಿಂ) ಚಕ್ರಸಂಬಂಧವಾದ. ಕಕ್ರಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

ಕಾಕ್ರವರ್ಮಣ ಚಾಕ್ರವರ್ಮಣ (ಪುಂ) ಚಕ್ರವರ್ಮಣ ಮಗ. ಕಕ್ರವರ್ಮಣೋಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೯೨)। ಈತನು ಒಬ್ಬ ದೊಡ್ಡ ವ್ಯಾಕರಣಪಂಡಿತ.

ಕಾಕ್ರಕ ಚಾಕ್ರಕ (ಪುಂ) 1. ಶೂದ್ರನಿಂದ ವೈಶ್ಯಹೆಗ್ಗನಿನಲ್ಲಿ ರಹಸ್ಯ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವನು. 2. ತೈಲ, ಎಣ್ಣೆ. "ಕಾಕ್ರಕಿಕೌ ತೈಲಪಾಣಿಕೌ" ವೈಜಂ। 3. ಕಾಲವನ್ನು ತಿಳಿಸುವವನು, ಕಾಲದ ಗಂಟೆಯನ್ನು ಬಾರಿಸುವವನು. 4. ಸ್ತುತಿಪಾಠಕ, ಹೊಗಳಿಕೆ, ಗುಂಪಿನಲ್ಲಿ ಸೇರಿ ಹೊಗಳುವವನು. ಕಕ್ರೇಣ ಸಮೂಹೇನ ಚರತಿ - "ಠಕ್" (೪-೪-೮)। 5. ಗಾಣೆಗ, ಎಣ್ಣೆ ತೆಗೆದು ಮಾರುವವನು. 6. ಕುಂಬಾರ, ಚಕ್ರದ ಸಾಹಾಯ್ಯದಿಂದ ಮಡಕೆ ಮಾಡುವವನು. ಕಕ್ರೇಣ ಚರತಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೮)। 7. ಗಾಡಿಯವನು. ಕಕ್ರೇಣ ಕಕ್ರಯುಕ್ತಶಕಟೇನ ಚರತಿ - "ಠಕ್" (೪-೪-೮)। "ಪಿಶುನಾನೃತಿನೋ-ಽವೇ ತಥಾ ಕಾಕ್ರಕವಂದಿನಾಮ್। ಏಷಾಮತ್ರಂ ನ ಭೋಕ್ತವ್ಯಂ ಸೋಮವಿಕ್ರಯಿಣಸ್ತಥಾ" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೧೬೫। 8. ಪ್ರಕಟಿಸುವವನು, ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸುವವನು. "ಕಾಕ್ರಕೋ ಘೋಷಯಾಮಾಸ ಪುರುಷೋ ಮೃಡಕುಂಡಲ:" ಹರಿವಂ।

ಕಾಕ್ರೇಯ ಚಾಕ್ರೇಯ (ವಿಂ) ಚಕ್ರದಿಂದ ಸಿದ್ಧವಾದ, ಚಕ್ರದಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಕಕ್ರೇಣ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಛಕ್" (೪-೨-೮೦)।

ಕಾಕ್ಷು ಚಾಕ್ಷುಷ (ವಿಂ) 1. ಕಣ್ಣಿನಿಂದ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ. ಕಕ್ಷುಷಾ ಗೃಹ್ಯತೇ - ಕಕ್ಷುಸ್ "ಅನ್" (೪-೨-೯೨)। 2. ಕಣ್ಣಿನ

ಸಂಬಂಧವಾದ. ಕಕ್ಷುಷ ಇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ದೇವಾನಾಮಿದಮಾಮನಂತಿ ಮುನಯ: ಕಾಂತಂ ಕೃತುಂ ಕಾಕ್ಷುಷಮ್" ಮಾಲಂ ೧-೪। 3. ಕಣ್ಣಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ, ನೋಟದಿಂದ ಉಂಟಾದ (ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ). ಕಕ್ಷುಷಾ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಅನ್" (೪-೨-೬೮)। (ಪುಂ) 4. ಚತುರ್ಥಶಮನುಗಳಲ್ಲಿ ಆರನೆಯವನಾದ ಚಾಕ್ಷುಷ ಮನು. ಕಕ್ಷುಷೋ ರಿಪುಜ್ಜಯಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" ೪-೧-೯೨।

ಕಾಕ್ಷ ಚಾಂಗ (ಪುಂ) 1. ಪುಲ್ಲಂಪುರಿಚಿಗಡ. (ನಂ) 2. ಹಲ್ಲಿನ ಸೌಂದರ್ಯ.

ಕಾಕ್ಷೇರಿ ಚಾಂಗೇರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಲ್ಲಂಪುರಿಚಿಗಡ. ಕಾಕ್ಷ-ಮೀರಯತಿ - ಇರ (ಗತೌ) "ಅನ್" (೩-೨-೧)। "ಕೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। "ಗ್ರಹಣ್ಯಶೋವಿಕಾರಣ್ಣಿ ಸಾಮ್ಲಾ ವಾತಕಫೇ ಹಿತಾ। ಉಷ್ಣಾ ಕಫಾಯಮಧುರಾ ಕಾಕ್ಷೇರಿ ಕಾಕ್ಷಿಣಿಪಿನಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬।

ಕಾಕ್ಷಲಿ ಚಾಕ್ಷಲಿ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಚಲಿಸುವ. 2. ಅಧಿಕ ವಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವ. 3. ಹೆಚ್ಚು ನಡುಗುವ. ಕಲ (ಕಂಪನೆ) + ಯಜ್ಞ "ಕಿಕಿನ್" ನಿಪಾಂ (ವಾಂ ೩-೨-೧೭೧)।

ಕಾಕ್ಷಲಿ ಚಾಕ್ಷಲಿ (ನಂ) ಚಂಚಲವಾಗಿರುವುದು, ಸ್ಥಿರ ವಾಗಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ಕಾಕ್ಷಲಸ್ಯ ಭಾವ: "ಛಕ್" (೫-೧-೧೨೪)।

ಕಾಟ ಚಾಟಿ (ಪುಂ) 1. ಮೋಸಗಾರ, ವಂಚಿಸುವವನು, ಮೊದಲು ವಿಶ್ವಾಸವನ್ನುಂಟುಮಾಡಿ ಬಳಿಕ ಮೋಸಗೊಳಿಸುವವನು. ಕಟತೇ ಭಿಛತೇ - ಕಟ (ಭೇದನೆ) "ಛಕ್" (೩-೩-೧೯)। "ಕಾಟತಸ್ಕರದ್ವೈತಮಹಾಸಾಹಸಿಕಾದಿಭಿ:" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೩೩೬। 2. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ.

ಕಾಟಕಾಯನ ಚಾಟಿಕಾಯನ (ಪುಂ) ಚಟಕನ ಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಕಟಕಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ - ಕಟಕ "ಫಕ್" (೪-೧-೯೯)।

ಕಾಟಕೇರ ಚಾಟಿಕೈರ (ಪುಂ) ಗುಬ್ಬುಚ್ಚಿಯ ಗಂಡು ಮರಿ. ಕಟಕಸ್ಯಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ - ಕಟಕಾಯಾ ಅಪತ್ಯಂ ವಾ - ಕಟಕ "ಫೇಕ್" (೪-೧-೧೨೮)।

ಕಾಡು ಚಾಟು (ಪುಂ) ಪ್ರಿಯವಚನ, ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವ ಮಾತು. ಕಟ (ಭೇದನೆ) "ಛಕ್" (ಉಂ ೧-೩)। "ಅಸ್ಮಾದೃಶಾಂ ಕಾಡುರಸಾಮೃತಾನಿ" ನೈಷಂ ೩-೧೬। "ಕಾಡು ಕಾಡುತಕ-ಸಂಭ್ರಮಮಾಸಾಂ ಕಾರ್ಮಣತ್ವಮಗಮನ್ ರಮಣೇಷು" ಮಾಘಂ ೧೦-೩೭। ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಕ:"। ಕಾಡುಕಮ್ ಚಾಟುಕಮ್. "ವಿಸ್ತರವ್ಯಕಾಡುಕ-ಶತಾನಿ ರತಾಂತರೇಷು" ಸಾಂ ದಂ।

ಕಾಡುಕಾರ ಚಾಟುಕಾರ (ವಿಂ) ಪ್ರಿಯವಚನವನ್ನು ಆಡುವವನು, ಸಂತೋಷಕರವಾದ ಮಾತುಗಳನ್ನು ಆಡುವವನು, ಕಾಡು ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣ) "ಅನ್" (೩-೨-೧)।



ಇಲ್ಲಿ ಮೇತುತಾಚ್ಚೀಲಾ ದೃಢಗಳಲ್ಲಿ "ಕ್ರ" ಧಾತುವಿಗೆ ಹೇಳಿದ "ಠ" ಪ್ರತ್ಯಯವು "ನ ಶಬ್ದಶಲೋಕ....." (೩-೨-೨೩)। ಇತ್ಯಾದಿ ಸೂತ್ರದಿಂದ ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟು "ಕರ್ಮಣ್ಯ" (೩-೨-೧) ಸೂತ್ರದಿಂದ "ಅನ್" ಪ್ರತ್ಯಯವು ಬರುವುದು. "ಪದಂ ಶತೇನಾಪ ಮಖೇಯದಿನ್ದ್ರಸ್ತಸ್ಮೈ ಸ ತೇ ಪಾಚನಚಾಡುಕಾರಃ" ನೈಷಂ ೬-೮೨। "ಚಾಡುಕಾರಮಪಿ ಪ್ರಾಣನಾಶಂ ರೋಷಾದಪಾಸ್ಯ ಯಾ" ಸಾಂ ೬೦। "ಗಿಣಿತಿಃ" (೩-೨-೭೮)। -ಕಾರಿನ್ -ಕಾರಿನ್.

ಚಾತುರವಚನ ಚಾಟುವಚನ (ನಂ) ಪ್ರಿಯನುಡಿ, ಸಂತೋಷ ಕರವಾದ ಮಾತು. "ವಿರಚಿತಚಾತುರವಚನರಚನೇನ ಚರಣರಚಿತ-ಪ್ರಣಿಪಾತಮ್" ಗೀತಗೋಂ ೧೧-೧।

ಚಾತುರವಚನ ಚಾಟುವಚನ (ಪುಂ) ವಿದೂಷಕ, ಹಾಸ್ಯಗಾರ, ನಕಲಿ, ರಾಜನ ನರ್ತಕ ಸಚಿವ.

ಚಾತುರವಚನ ಚಾಟುವಚನ (ನಂ) ನೂರಾರು ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತು ಗಳು. ಚಾತುರವಚನ ಶತಮ್। "ಗಜಪುಂಜವಸ್ತು ಧೀರಂ ವಿಲೋಕಯತಿ ಚಾತುರವಚನಶ್ಚ ಭುಜ್ಜತೇ" ಭರ್ತೃಂ ೧-೨೩।

ಚಾತುರವಚನ ಚಾಟುವಚನ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಿಯವಾದ ಮಾತು, ಸಂತೋಷಕರವಾದ ಮಾತು. 2. ಸೇವೆ, ಶುಶ್ರೂಷೆ.

ಚಾಣಕ ಚಾಣಕ (ಪುಂ ಏಂ ಏಂ) ಚಾಣಕನ ಶಿಷ್ಯರು. ಚಾಣಕ್ಯಸ್ಯ ಛಾತ್ರಾಃ "ಅನ್" (೪-೨-೧೧೧)।

ಚಾಣಕೀನ ಚಾಣಕೀನ (ನಂ) ಕಡಲೆಯು ಬೆಳೆಯುವ ಭೂಮಿ. ಚಾಣಕಸ್ಯ ಭವನಂ ಚಾಣಕೀನಮ್ "ಖನ್" (೪-೨-೧)।

ಚಾಣಕ್ಯ ಚಾಣಕ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಕೌಟಿಲ್ಯ, ಚಂದ್ರಗುಪ್ತನ ಮಂತ್ರಿ. ಚಾಣಕ್ಯಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಯನ್" (೪-೧-೧೦೪)। ನಂದವಂಶವನ್ನು ನಿರ್ಮೂಲಮಾಡಿ ಮೌರ್ಯಚಂದ್ರಗುಪ್ತನನ್ನು ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿ ದೊರೆಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದ ಮಹಾರಾಜ ನೀತಿಕುಶಲನಿವನು. "ಅಪಿ ನಾಮ ದುರಾತ್ಮನಃ ಚಾಣಕ್ಯಹತಕಾತ್ ಚಂದ್ರಗುಪ್ತೋ ಭಿಕ್ಷಿತ, ಅಥವಾ ಸಿದ್ಧಮೇವ ಸಮೀಹಿತಂ ಪಶ್ಯಾಮಿ" ಮುಕ್ತಾಂ ೨। 2. ಚಾಣಕ್ಯನ ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರ.

ಚಾಣೂರ ಚಾಣೂರ (ಪುಂ) ಕಂಸನ ಒಬ್ಬ ಸೇವಕ, ಕೃಷ್ಣ ನೊಡನೆ ಮಲ್ಲಯುದ್ಧಮಾಡಿ ಹತನಾದ ಒಬ್ಬ ಅಸುರ. "ಬಾಹ್ಲೋನಿಗೃಹ್ಯ ಚಾಣೂರಂ ಬಹುಶೋ ಭಾಮಯನ್ ಹರಿಃ। ಭುಪ್ತಂ ಪೌಂಧ್ರಯಾಮಾಸ ತರಸಾ ಕ್ಷೀಣಜೀವಿತಮ್" ಭಾಗಂ ೧೦-೪೪-೨೩।

ಚಾಣೂರಮರ್ದನ ಚಾಣೂರಮರ್ದನ -ಸುದನ -ಸೂದನ (ಪುಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠ. ಚಾಣೂರಂ ಮರ್ದಯತಿ ಸುದಯತಿ ವಾ -ಮೃದ (ಕ್ಷೋಧೆ) ಮೃದ (ಕ್ಷರಣೆ) ವಾ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)।

ಚಾಂಡ ಚಾಂಡ (ನಂ) ಹಿಂಸೆ, ತೊಂದರೆ, ಬಲಾತ್ಕಾರ. ಚಾಂಡಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಅನ್" (೪-೧-೧೩೦)।

ಚಾಂಡಾಲ ಚಾಂಡಾಲ (ಪುಂ) "ಚಾಂಡಾಲ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಚಾಂಡಾಲ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್"। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೬೩)। -ಲೀ-ಲೀ.

ಚಾಂಡಾಲಿಕ ಚಾಂಡಾಲಿಕ (ಪುಂ) ಚಾಂಡಾಲನ ಮಗ. ಚಾಂಡಾಲಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಇನ್" ಅಕಡಾದೇಶಶ್ಚ (ವಾಂ ೪-೧-೯೭)। ಚಾಂಡಾಲಿಕ ಚಾಂಡಾಲಿಕ (ವಿಂ) ಚಾಂಡಾಲನಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಚಾಂಡಾಲೇನ ಕೃತಮ್ "ವುಜ್" (೪-೩-೧೧೮)।

ಚಾಂಡಾಲಿಕಾ ಚಾಂಡಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಾಂಡಾಲನ ವೀಣೆ. ಚಾತಕ ಚಾತಕ (ಪುಂ) ಚಾತಕಪಕ್ಷಿ, ಮಳೆಗುಟುಕಿನ ಹಕ್ಕಿ. ಚತತಿ-ಚತೆ (ಯಾಚನೆ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಸಮೀಕ್ಷ್ಯ ಬಾಲಾ ತದನನ್ಯದೃಷ್ಟಿಶ್ರಯಾಮಿವಾಲಮ್ಬತ ಚಾತಕಾನಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೩-೧೬। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೬೩)। -ಕೀ-ಕೀ.

ಚಾತಕಾನಂದನ ಚಾತಕಾನಂದನ (ಪುಂ) ವರ್ಷಾರ್ಥ, ಮಳೆಗಾಲ. ಚಾತಕಮಾನಂದಯತಿ -ಚಾ + ದುನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) + ಗಿಣಿ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)।

ಚಾತನ ಚಾತನ (ನಂ) 1. ಪೀಡಿಸುವುದು, ಹಿಂಸಿಸುವುದು. 2. ಯಾಚಿಸುವುದು, ಬೇಡುವುದು. ಚತೆ (ಯಾಚನೆ) + ಗಿಣಿ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೩-೧೧೪)।

ಚಾತುರ ಚಾತುರ (ವಿಂ) 1. ಚತುರ, ಬುದ್ಧಿವಂತ, ಚಾಣ. ಚತುರ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್"। 2. ಪ್ರಿಯವಾದ ಮಾತನ್ನಾಡುವವನು. 3. ಅಡಳಿತ ಮಾಡುವವನು, ಆಳುವವನು, ಅಧಿಕಾರ ನಡೆಸುವವನು. 4. ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸುವ, ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಗೋಚರವಾದ. (ನಂ) 5. ನಾಲ್ಕು ಕುದುರೆಗಳಿಂದ ಎಳೆಯಲ್ಪಡುವ ಗಾಡಿ. ಚತುರ್ಭಿರುಹತೇ-ಚತುರ್ "ಅನ್" (೪-೨-೯೨)। "ಚಾತುರೋ ನೇತ್ರಗೋಚರೇ। ಚಾತುರಾರಿನಿಯನ್ತ್ರೋಶ್ಚ ತ್ರಿಪು" ಮೇದಿಂ।

ಚಾತುರಕ ಚಾತುರಕ (ಪುಂ) 1. ಗುಂಡಾದ ತಲೆದಿಂಬು. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಿಯವಾದ ಮಾತನ್ನಾಡುವವನು. 3. ನೇತ್ರಕ್ಕೆ ಗೋಚರವಾದ, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸುವ. 4. ಅಡಳಿತ ನಡೆಸುವ. "ಅಥ ಚಾತುರಕಶ್ಚಕ್ರಗಣ್ಡೋ ಪುಂಸ್ಯಭಿಧೇಯವತ್। ಗೋಚರೇ ಲೋಚನಸ್ಯಾಪಿ ಚಾತುರಕೇ ನಿಯನ್ತರಿ" ಮೇದಿಂ।

ಚಾತುರಕ್ಷ ಚಾತುರಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ನಾಲ್ಕು ಕಾಯಿಗಳಿಂದ ಅಡುವ ಪಗಡೆಯಾಟ. 2. ಗುಂಡಾದ ತಲೆದಿಂಬು.

ಚಾತುರರ್ಥಿಕ ಚಾತುರರ್ಥಿಕ (ಪುಂ) ನಾಲ್ಕು ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಎಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಪ್ರತ್ಯಯ. "ತದಸ್ಥಿಪ್ತಸ್ತೀತಿ ದೇಶೋ ತನ್ನಾಮ್ನಿ" (೪-೨-೬೭)। "ತೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್" (೪-೨-೬೮)। "ತಸ್ಯ ನಿವಾಸಃ" (೪-೨-೬೯)। ಮತ್ತು "ಅದೂರಭವಶ್ಚ" (೪-೨-೭೦)। ಈ ನಾಲ್ಕು ಸೂತ್ರಗಳಿಂದ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು



ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ವಿಹಿತವಾದ ಪ್ರತ್ಯಯ. ಚತ್ವಾರೋರ್ಯಾಃ  
ಪ್ರಯೋಜನಮ್ ಅಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯) ।

**ಚಾತುರಾಶ್ರಮಿಕ ಚಾತುರಾಶ್ರಮಿಕ** (ವಿಂ) ನಾಲ್ಕು ಅಶ್ರಮ  
ಗಳಲ್ಲಿ ವಿಹಿತವಾದ ಧರ್ಮ. ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ ಗಾರ್ಹಸ್ಥ್ಯ  
ವಾನಪ್ರಸ್ಥ ಮತ್ತು ಸಂನ್ಯಾಸರೂಪವಾದ ನಾಲ್ಕು ಅಶ್ರಮ  
ಗಳ ಧರ್ಮ. "ಚಾತುರ್ವಿಧ್ಯ ತಥಾ ವರ್ಣಾಶ್ರಮಿಕಾಶ್ರಮಿಕಾನ್  
ಪೃಥಕ್ । ಧರ್ಮಮೇಕಂ ಚತುರ್ವಿಧಂ ನಿಯಮಾಹುರ್ಮನೀಷಿಣಃ" ಭಾಂ  
ಆಶ್ವಂ ೩೬-೩೭ ।

**ಚಾತುರಾಶ್ರಮ್ಯ ಚಾತುರಾಶ್ರಮ್ಯ** (ನಂ) ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ  
ಗಾರ್ಹಸ್ಥ್ಯ ವಾನಪ್ರಸ್ಥ ಮತ್ತು ಸಂನ್ಯಾಸರೂಪವಾದ  
ನಾಲ್ಕು ಅಶ್ರಮಗಳು. ಚತ್ವಾರಃ ಆಶ್ರಮಾಃ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಽಪ್ಯಜ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪) । "ಚಾತುರಾಶ್ರಮ್ಯಧರ್ಮಾಶ್ಚ ವೇದವಾದಾಶ್ಚ  
ಪಾರ್ಥಿವಃ । ಬ್ರಾಹ್ಮಣೇನಾನುಗತವ್ಯಾ ನಾನ್ಯೋ ವಿಧಾತ್ಕದಾಚನ" ಭಾಂ  
ಶಾಂತಿಂ ೬೪-೯ ।

**ಚಾತುರೀಕ ಚಾತುರೀಕ** (ಪುಂ) ಸಾರಥಿ, ರಥವನ್ನು ನಡೆಸು  
ವವನು. ಚಾತುರೀಂ ವೇತ್ತಿ - "ಠಕ್" (೪-೨-೪೯) ।

**ಚಾತುರೀ ಚಾತುರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಾತುರ್ಯ, ನೈಪುಣ್ಯ, ಜಾಣ  
ತನ. ಚತುರಸ್ಯ ಭಾವಃ - ಚತುರ "ಽಪ್ಯಜ್" (೪-೧-೧೨೪) ।  
"ಜಿಃ" (೪-೧-೪೧) । ಯಲೋಃ (೬-೪-೧೪೦) ।  
"ದಿಗ್ಜ್ಞನಾಜ್ಞಾವರಣಂ ರಣಾಜ್ಞೇ ಯಶಃಪಟಂ ತದ್ಭೂತಚಾತುರೀತುರೀ"  
ನೇಷಂ ೧-೧೨ ।

**ಚಾತುರೀಕ ಚಾತುರೀಕ** (ವಿಂ) ಗಂಧದ ಬಟ್ಟೆಲು. "ಚಾತುರೀಕಂ  
ತ್ರಿಪು ಭವೇಚ್ಚಂದನದ್ರವಭಾಜನೇ" ವೈಜಂ ।

**ಚಾತುರ್ಜಾತಿಕ ಚಾತುರ್ಜಾತಿಕ** (ನಂ) ಲವಂಗಪಟ್ಟಿ  
(ದಾಲ್ಚಿನ್ನಿ) ಯಾಲಕ್ಕಿ ಜಾಪತ್ರಿ ಮತ್ತು ನಾಗಸಂಖಿ  
ಈ ನಾಲ್ಕು ಸುಗಂಧ ವಸ್ತುಗಳು. ಚತುರ್ಜಾತಿಕ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಞ್" (೪-೪-೩೮) । "ತ್ವಗೇಲಾಪತ್ರಕೇಸ್ತುಲ್ಯೇಸ್ತ್ರಿಸುಗಂಧಿ ತ್ರಿಜಾತಿಕಮ್ ।  
ನಾಗಕೇಸರಸಂಯುಕ್ತಂ ಚಾತುರ್ಜಾತಿಕಮುಚ್ಯತೇ" ಭಾವಪ್ರಂ ।

**ಚಾತುರ್ಯ ಚಾತುರ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ನಾಲ್ಕನೆಯದಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.  
ಚತುರ್ಯಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) । 2. ನಾಲ್ಕು  
ದಿವ್ಯಗಳಿಗೊಂದಾವ್ಯಕ್ತಿ ಬರುವ (ಜ್ವರ). "ಕೃಶಾನ್ತಾಂ  
ಜ್ವರಮುಕ್ತಾನ್ತಾಂ ಮಿಥ್ಯಾಹಾರವಿಹಾರಿಣಾಂ । ದೋಷಃ ಸ್ವಲ್ಪೋಽಪಿ  
ಸಂವೃದ್ಧೋ ದೇಹಿನಾಮನಿಲೇರಿತಃ । ಸತತಾನ್ಯೇದ್ಯುಷ್ಕಾಶ್ಯಾಶ್ಯಾಚಾತುರ್ಯಾನ್  
ಸಪ್ರಲೇಪಕಾನ್ । ಕಫಸ್ಥಾನವಿಭಾಗೇನ ಯಥಾಸಂಖ್ಯಂ ಕರೋತಿ ಹಿ"  
ಸುಶ್ರುತಂ ೩೯-೪೧, ೪೨ । "ವಾತಾಧಿಕತ್ವಾತ್  
ಪ್ರವದಂತಿ ತಜ್ಞಾಸ್ತುತೀಯಕಂ ಚಾಪಿ ಚತುರ್ಯಕಂ ಚ । ಆಪತ್ಯಕೇ  
ಮಧ್ಯಸಮುದ್ರೇ ಚ ಹೇತುಂ ಜ್ವರೇ ಪಿತ್ತಕೃತಂ ವದಂತಿ" ಸುಶ್ರುತಂ  
೩೯-೪೩ ।

**ಚಾತುರ್ದಶ ಚಾತುರ್ದಶ** (ವಿಂ) 1. ಚತುರ್ದಶಿಯಲ್ಲಿ ಇರುವ  
ಚತುರ್ದಶಾಂ ಭವಃ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೬) । (ನಂ) 2.  
ಚತುರ್ದಶಿಯಲ್ಲಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ರಾಕ್ಷಸ. ಚತುರ್ದಶಾಂ  
ದೃಶ್ಯತೇ "ಅಞ್" (೪-೨-೯೨) । ಚಾತುರ್ದಶಂ ರಕ್ಷಃ ಸಿಂ ಕೌಂ ।

**ಚಾತುರ್ದಶಿಕ ಚಾತುರ್ದಶಿಕ** (ಪುಂ) ಚತುರ್ದಶ ದಿವಸ  
(ಅನಧ್ಯಯನ ದಿನ)ದಲ್ಲಿ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು.  
ಚತುರ್ದಶಾಮಧೀತೇ - ಚತುರ್ದಶೀ "ಠಕ್" (೪-೪-೭೧) ।

**ಚಾತುರ್ಮಂದ್ರ ಚಾತುರ್ಮಂದ್ರ** (ನಂ) ಒಣಶುಂಠಿ ಅತಿಬಜೆ ಕೊನ್ನಾರಿ  
ಮತ್ತು ಅಮೃತಬಳ್ಳಿಗಳೆಂಬ ನಾಲ್ಕು ಔಷಧಮೂಲಿ  
ಗಳು. ಚತುರ್ಮಂದ್ರಮೇವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಞ್" ।

**ಚಾತುರ್ಮುಖಿಕ ಚಾತುರ್ಮುಖಿಕ** (ವಿಂ) ಪೃಥಿವಿ ಅಪ್ಪೆ,  
ತೇಜಸ್ಸು ಮತ್ತು ವಾಯುಗಳೆಂಬ ನಾಲ್ಕು ಭೂತಗಳಿಂದ  
ಉಂಟಾದ. ಚತುರ್ಮುಖಿತಃ ನಿವೃತ್ತಃ "ಠಕ್" (೪-೧-೭೯) ।

**ಚಾತುರ್ಮಾಸ ಚಾತುರ್ಮಾಸ** (ವಿಂ) ನಾಲ್ಕು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ  
ಉಂಟಾದ. ಚತುರ್ಮಾಸೇಷು ಭವಃ "ಅಞ್" (೪-೩-೪೧) ।

**ಚಾತುರ್ಮಾಸಿಕ ಚಾತುರ್ಮಾಸಿಕ** (ವಿಂ) ನಾಲ್ಕು ತಿಂಗಳು  
ಕಾಲ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಚತುರೋ ಮಾಸಾನ್  
ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೯೪) ।

**ಚಾತುರ್ಮಾಸ್ಯ ಚಾತುರ್ಮಾಸ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ನಾಲ್ಕು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ  
ನಡೆಯಬೇಕಾದ (ಯಜ್ಞ). ಚತುರ್ಮಾಸೇಷು ಭವಃ "ಽಪ್ಯಜ್"  
(ವಾಂ ೪-೧-೯೪) । "ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರದರ್ಶಪೂರ್ಣಮಾಸಚಾತುರ್ಮಾಸ್ಯ-  
ಪಶುಸೋಮಾನಾಮ್" ಭಾಗಂ ೪-೭-೪ । 2. ವರ್ಷಯುತುವಿನಲ್ಲಿ  
ಅಚರಿಸಬೇಕಾದ ಒಂದು ವ್ರತ. "ಆಷಾಢಶುಕ್ಲದ್ವಾದಶ್ಯಾಂ  
ಪೂರ್ಣಮಾಸ್ಯಾಮಥಾಪಿ ವಾ । ಚಾತುರ್ಮಾಸ್ಯವ್ರತಾರಮ್ಭಂ ಕುರ್ಯಾತ್  
ಕರ್ಕಟಸಂಕ್ರಮೇ । ಅಭಾವೇ ತು ತುಲಾಕೋಽಪಿ ಮನ್ತ್ರೇಣ ನಿಯಮಂ ವ್ರತೀ"  
ವರಾಹಪುಂ ।

**ಚಾತುರ್ಯ ಚಾತುರ್ಯ** (ನಂ) ಜಾಣತನ, ಬುದ್ಧಿವಂತಿಕೆ,  
ದಕ್ಷತೆ. ಚತುರಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಽಪ್ಯಜ್" (೪-೧-೧೨೪) ।  
"ಶ್ರುಚಾತುರ್ಯಾತ್ ಕುಚ್ಚಿತಾಕ್ಷಾಃ ಕಟಾಕ್ಷಾಃ ಸ್ನಿಗ್ಧಾ ವಾಚೋ  
ಲಜ್ಜಿತಾನ್ತಾಶ್ಚ ಹಾಸಾಃ" ಭರ್ತುಂ ೨-೩ ।

**ಚಾತುರ್ವರ್ಣ್ಯ ಚಾತುರ್ವರ್ಣ್ಯ** (ನಂ) 1. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಮೊದ  
ಲಾದ ನಾಲ್ಕು ವರ್ಣಗಳು. ಚತ್ವಾರೋ ವರ್ಣಾಃ ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಽಪ್ಯಜ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪) । "ಚಾತುರ್ವರ್ಣ್ಯಂ ಮಯಾ ಸೃಷ್ಟಂ  
ಗುಣಕರ್ಮವಿಭಾಗಶಃ" ಗೀತಾ ೪-೧೩ । 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾದಿ  
ನಾಲ್ಕು ವರ್ಣಗಳ ಧರ್ಮ. ಚತುರ್ವರ್ಣಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಽಪ್ಯಜ್"  
(೪-೧-೧೨೪) ।

**ಚಾತುರ್ವಿಧ್ಯ ಚಾತುರ್ವಿಧ್ಯ** (ನಂ) ನಾಲ್ಕು ವಿಧವಾಗಿರುವ  
ವುದು.



**ಚಾತುರ್ವೇದ ಚಾತುರ್ವೇದ್ಯ** (ಪುಂ) ನಾಲ್ಕು ವೇದಗಳನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು. ಚತುರೋ ವೇದಾನಧೀತೇ ಚತುರ್ವೇದಃ, ಸ ಏವ ಚಾತುರ್ವೇದಃ | ಚತುರ್ವೇದ ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ವ್ಯವ್" ಉಭಯಪದ-ವೃದ್ಧಿಶ್ಚ (ಗಂ ೪-೧-೧೨೪) |

**ಚಾತುರ್ಹೋತ್ರ ಚಾತುರ್ಹೋತ್ರೇತ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಅಧ್ವರ್ಯುಃ ಉದ್ಗಾತ್ಯ ಹೋತ್ರ ಮತ್ಯು ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ರೂಪವಾದ ನಾಲ್ವರಿಂದ ನಡೆಸಲ್ಪಡುವ ಕರ್ಮ. ಚತುರ್ಣಿ ಹೋತ್ರಾಣಿ ಕರ್ಮ "ಅವ್" (೪-೧-೧೨೯) | "ಚಾತುರ್ಹೋತ್ರ ಕರ್ಮ ಶುದ್ಧಂ ಪ್ರಜಾಣಾಂ ಬೋಧ್ಯ ವೇದಿಕಮ್ | ವ್ಯದಧಾಞ್ಜನಂತತ್ಯೇ ವೇದಮೇಕಂ ಚತುರ್ವಿಧಮ್" ಭಾಗಂ ೧-೪-೧೯ | (ನಂ) 2. ಅಧ್ವರ್ಯುಃ ಮೊದಲಾದ ನಾಲ್ಕು ಮಂದಿಗಳಿಂದ ನಡೆಸಲ್ಪಡುವ ಯಾಗ. "ಇಜೇ ಚ ಭಗವಂತಂ ಯಜ್ಞಕುರುಷ್ವಂ ಕೃತುಮಿಹಿತ್ವಾವಚೇ: ಶ್ರದ್ಧಯಾ..... ಚಾತುರ್ಹೋತ್ರವಿಧಿನಾ" ಭಾಗಂ ೪-೭-೪ |

**ಚಾತುರ್ಹೋತೃಕ ಚಾತುರ್ಹೋತೃಕ** (ಪುಂ) ಚತುರ್ಹೋತ್ರ ಮಂತ್ರಗಳ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಗ್ರಂಥ ಅಥವಾ ಆ ಮಂತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ರೂಪ. ಚತುರ್ಹೋತೃಣಾಂ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ: ತತ್ರ ಭವತಿ ವಾ - ಚತುರ್ಹೋತೃ "ಠಕ್" (೪-೩-೭೨) |

**ಚಾತ್ವಾಲ ಚಾತ್ವಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಉತ್ತರವೇದಿಯ ನಿರ್ಮಾಣಕ್ಕಾಗಿ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ತೋಡಿದ ಗುಳಿ, ಯಜ್ಞಕುಂಡ. 2. ದರ್ಭೆ, ಕುಶ. ಚತೇ (ಯಾಚನೇ) "ವಾಲವ್" ಬಾಹುಂ | "ಚಾತ್ವಾಲೋ ಯಜ್ಞಕುಂಡರ್ಮಯೋ: ಹೇಮಂ | "ಚಾತ್ವಾಲೋಽಸ್ತ್ರೀ ಮೃತ್ವನ:ಸ್ಯಾತ್" ವೇಜಂ |

**ಚಾಂದನಿಕ ಚಾಂದನಿಕ** (ವಿಂ) ಚಂದನದ ಲೇಪನದಿಂದ ಶೋಭಿಸುವ. ಚಂದನೇನ ಸಂಪಾದಿ "ಠಕ್" (೪-೧-೯೯) | "ವಪುಶ್ಚಾಂದನಿಕಂ ಯಸ್ಯ ಕಾರ್ಣವೇಷ್ಠನಿಕಂ ಮುಖಮ್" ಭಟ್ಟಿಂ ೪-೨೪ |

**ಚಾಂದ್ರ ಚಾಂದ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರಕಾಂತಮಣಿ. 2. ಶುಕ್ಲ ಪಕ್ಷ. (ನಂ) 3. ಚಾಂದ್ರಮಾನ, ಚಂದ್ರನ ಗತಿಯ ಮೇಲೆ ಎಣಿಸುವ ದಿನ ಮತ್ತು ಮಾಸಗಳು. "ಅಕಾಕ್ಷಿಣಿ:ಸೃತ: ಪ್ರಾಚೀನಿ ಯದ್ ಯಾತ್ಯಹರಹ: ಶಶಿ | ತತ್ತ್ವಾಂದ್ರಮಾನಮಂಶಸ್ತು ಜೇಯಾ ದ್ವಾದಶಭಿಃಸ್ಥಿತಿ:" ಸೂಂ ಸಿಂ ೧೪-೧೨ | 4. ಮೃಗಶಿರ್ಷ ನಕ್ಷತ್ರ. 5. ಹಸಿಶುಂಠಿ. 6. ಚಾಂದ್ರಾಯಣ ವ್ರತ. (ವಿಂ) 7. ಚಂದ್ರಸಂಬಂಧವಾದ. ಚಂದ್ರಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೪) | "ಚಾಂದ್ರೀಮಭಿನಮ: ಶ್ರಿಯಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೨ |

**ಚಾಂದ್ರಕ ಚಾಂದ್ರಕ** (ನಂ) ಶುಂಠಿ.

**ಚಾಂದ್ರಮಸ ಚಾಂದ್ರಮಸ** (ನಂ) 1. ಮೃಗಶಿರ್ಷ ನಕ್ಷತ್ರ. (ವಿಂ) 2. ಚಂದ್ರ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಚಂದ್ರಮಸ ಇದಮ್ "ಅನ್"

(೪-೩-೧೨೦) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೪) | -ಮಸಿ -ಮಸಿ. "ಚಂದ್ರಂ ಗತಾ ಪದ್ಮಗುಣಾನ್ ಭುಕ್ತೇ ಪದ್ಮಾಶ್ರಿತಾ ಚಾಂದ್ರಮಸೀಮಭಿಖ್ಯಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೪೩ |

**ಚಾಂದ್ರಮಸಾಯಿನಿ ಚಾಂದ್ರಮಸಾಯಿನಿ** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರನ ಮಗ ಬುಧ. ಚಂದ್ರಮಸೋಪತ್ಯಮ್ - ಚಂದ್ರಮಸ್ "ಫಿನ್" (೪-೧-೧೪೪) | ಆಯನ್ನಾदेश: (೭-೧-೨) |

**ಚಾಂದ್ರಮಾಸ ಚಾಂದ್ರಮಾಸ** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರನ ಗತಿಯನ್ನನುಸರಿಸಿ ಎಣಿಸುವ ಮಾಸ. ಚಾಂದ್ರೋ ಮಾಸ: |

**ಚಾಂದ್ರವ್ರತಿಕ ಚಾಂದ್ರವ್ರತಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಚಾಂದ್ರಾಯಣ ವ್ರತವನ್ನು ಆಚರಿಸುವವನು. ಚಾಂದ್ರಂ ವ್ರತಮಸ್ತಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೪) | 2. ಚಂದ್ರನಿಗೆ ಸಮಾನವಾಗಿ ವ್ರತವನ್ನು ಆಚರಿಸುವ ದೊರೆ.

**ಚಾಂದ್ರಾಯಣ ಚಾಂದ್ರಾಯಣ** (ನಂ) ಚಾಂದ್ರಾಯಣ ವ್ರತ, ಚಂದ್ರನ ವೃದ್ಧಿಕ್ಷಯಗಳನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಶುಕ್ಲ ಮತ್ತು ಕೃಷ್ಣ ಪಕ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ಒಂದು ವ್ರತ. ಶುಕ್ಲ ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಮಯೂರಾಂಡಪ್ರಮಾಣದ ಗ್ರಾಸವನ್ನು ಪ್ರತಿ ದಿನವೂ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯವರೆಗೆ ಒಂದೊಂದಾಗಿ ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತ ಕೃಷ್ಣ ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಅವನಾವಾಸವೆವರೆಗೂ ಪ್ರತಿದಿನ ಆಹಾರದಲ್ಲಿ ಒಂದೊಂದು ಗ್ರಾಸವನ್ನು ಶೂನ್ಯವಾಗುವವರೆಗೂ ಕಡಮೆ ಮಾಡುತ್ತ ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ವ್ರತವು ಚಾಂದ್ರಾಯಣ ವ್ರತ. "ತಿಥಿವೃದ್ಧಯಾ ಚರೇತ್ಪಿಣ್ಡಾನ್ ಶುಕ್ಲೇ ಶಿಷ್ಯುಣ್ಡಸಮ್ಮಿತಾನ್ | ಏಕೈಕಂ ಹ್ರಾಸಯೇತ್ ಕೃಣ್ಣಂ ಪಿಣ್ಡಂ ಚಾಂದ್ರಾಯಣಂ ಚರನ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೩೨೩ |

**ಚಾಂದ್ರೀ ಚಾಂದ್ರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಂದ್ರನ ಪತ್ನಿ. ಚಂದ್ರಸ್ಯೇಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | 2. ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಬೆಳದಿಂಗಳು. 3. ಚಂದ್ರಸಂಬಂಧವಾದ. "ಗುರುಕಾವ್ಯಾನುಗಾಂ ವಿಭ್ರ-ಚ್ಚಾಂದ್ರೀಮಭಿನಮ: ಶ್ರಿಯಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೨ |

**ಚಾಂದ್ರಾಯಣಿಕ ಚಾಂದ್ರಾಯಣಿಕ** (ವಿಂ) ಚಾಂದ್ರಾಯಣ ವ್ರತವನ್ನು ಆಚರಿಸುವವನು. ಚಾಂದ್ರಾಯಣಂ ವರ್ತಯತಿ - ಚಾಂದ್ರಾಯಣ "ಠನ್" (೪-೧-೭೨) |

**ಚಾಪ ಚಾಪ** (ಪುಂ) 1. ಧನುಸ್ಸು, ಬಿಲ್ಲು. ಚಪಸ್ಯ ವಂಶ-ವಿಶೇಷಸ್ಯ ವಿಕಾರ: "ಅನ್" (೪-೩-೧೩೪) | "ಚಿತ್ರಂ ಚಾಪೇರಪೇತಜ್ಯೇ: ಸ್ಫುರದ್ರಕ್ತಶತಹೃದಮ್" ಮಾಘಂ ೧೯-೭೯ | 2. ಧನೂರಾಶಿ, ಮೇಷ ಮೊದಲಾಗಿ ಒಂಭತ್ತನೆಯ ರಾಶಿ.

**ಚಾಪಯಣಿ ಚಾಪಯಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧನುಸ್ಸು, ಬಿಲ್ಲು. "ದೃಶೋಽಥ ಚ ತಸ್ಯ ಚಾಪಯಣಿಚಾಮ್" ಮಾಘಂ ೨೦-೨೮ |

**ಚಾಪಲ ಚಾಪಲ** (ನಂ) 1. ಚಪಲಕಾರ್ಯ, ಪ್ರಯೋಜನ ಕಂಡುಬರದಿದ್ದರೂ ಯೋಚನೆಮಾಡದೆ ಆಸೆಯಿಂದ



ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ, ದುಡುಕಿ ಮಾಡುವ ಕೆಲಸ. ಚಪಲಸ್ಯ ಕರ್ಮ "ಅಣ್" (೪-೧-೧೩೦)। "ಅಲಂ ನಲಂ ರೋದಮಮಿ ಕಿಲಾಭವನ್ ಗುಣಾ ವಿವೇಕಪ್ರಮುಖಾ ನ ಚಾಪಲಮ್" ನೆಪಂ ೧-೪೪।

2. ವೇಗ, ಶೀಘ್ರತೆ. "ಪುನಃ ಪುನಃ ಸೂತನಿಷಿದ್ಧಾಪಲಂ ಹರಂತ-ಮಶ್ವಂ ರಥರಶ್ವಿಮಸಂಯತಮ್" ರಘುಂ ೩-೪೨। 3. ಚಾಂಚಲ್ಯ, ಚಲನೆ. ಚಪಲಸ್ಯ ಭಾವ: "ಅಣ್" (೪-೧-೧೩೦)। "ಘ್ನ" (೪-೧-೧೨೪)। ಚಾಪಲ್ಯಮ್ ಚಾಪಲ್ಯಮ್.

ಚಾಪಿನ್ ಚಾಪಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಧನುಸ್ಸನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ ಯೋಧ, ಭಟ. 2. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. ಚಾಪೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। 3. ಧನೂರಾಶಿ.

ಚಾಮರ ಚಾಮರ (ನಂ) ಚಮರೀಮೃಗದ ಬಾಲದಿಂದ ತಯಾರಿಸಿದ ಚಾಮರ,—ಬಾಲದಿಂದ ಮಾಡಿದ ಬೀಸಣಿಗೆ, ಪಾಲವ್ಯಜನ. ಚಮರಾ: ವಿಕಾರ: "ಅಣ್" (೪-೩-೧೩೫)। "ತಂ ವೀಜಯಾಮ: ಸ್ಮರಕೇಲಿಕಾಲೇ ಪಕ್ಷೇನುಪಂ ಚಾಮರಬದ್ಧಸಸ್ಯೇ:" ನೆಪಂ ೩-೨೨।

ಚಾಮರಗ್ರಾಹ ಚಾಮರಗ್ರಾಹ (ವಿಂ) ಚಾಮರವನ್ನು ಹಿಡಿದು ಬೀಸುವವನು. ಚಾಮರಂ ಗೃಹ್ಣಾತಿ — ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಅಣ್" (೩-೨-೧)।

ಚಾಮರಗ್ರಾಹಿಕ ಚಾಮರಗ್ರಾಹಿಕ (ಪುಂ) ಚಾಮರವನ್ನು ಬೀಸುವವನ ಮಗ. ಚಾಮರಗ್ರಾಹಸ್ಯ ಅಪत्यಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೪೬)।

ಚಾಮರಗ್ರಾಹಿನ್ ಚಾಮರಗ್ರಾಹಿನ್ (ವಿಂ) ಚಾಮರವನ್ನು ಹಿಡಿದು ಬೀಸುವವನು. ಚಾಮರಂ ಗೃಹ್ಣಾತಿ—ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಞಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। —ಗ್ರಾಹಿಣಿ —ಗ್ರಾಹಿಣೀ. "ಅಗ್ರೇ ಗೀತಂ ಸರಸಕವಯ: ಪಾರ್ಶ್ವಯೋ-ರ್ದಕ್ಷಿಣಾತ್ಯಾ: ಪಶ್ಚಾತ್ತಲಿಲಾವಲಯರಣಿತಂ ಚಾಮರಗ್ರಾಹಿಣೀನಾಮ್" ಭರ್ತುಂ ೩-೬೬।

ಚಾಮರಪುಷ್ಪ ಚಾಮರಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಮಾವಿನಮರ. 2. ತಾಳೆಮರ. 3. ಕಾಶ, ಜಂಬುಹುಲ್ಲು. "ಆಮ್ರೇ ಚಾಮರಪುಷ್ಪ: ಸ್ಯಾತ್ ಕಾಶಕೇತಕಯೋರಪಿ" ವೈಜಂ 1. 4. ಅಡಕೆ ಮರ. "ಭವೇಚ್ಚಾಮರಪುಷ್ಪಸ್ತು ಪೂಗೇ ಕಾಶಾಮ್ರಕೇತಕೇ" ಮೇದಿಂ 1.

ಚಾಮರಿನ್ ಚಾಮರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. ಚಾಮರ-ಮಿವ ಕೇಶೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। (ವಿಂ) 2. ಚಾಮರವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ.

ಚಾಮೀಕರ ಚಾಮೀಕರ (ನಂ) 1. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ಚಮೀಕರೇ ಆಕರೇ ಭವಮ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೫೩)। "ಜಗತಿ-ರಿಹ ಸ್ಫುರಿತಚಾರುಚಾಮೀಕರಾ: ಸವಿತು: ಕ್ವಚಿತ್ ಕಪಿಶಯಂತಿ ಚಾಮೀ ಕರಾ:" ಮಾಧಂ ೪-೨೪। 2. ದತ್ತೂರಿಗಿಡ.

(ವಿಂ) 3. ಸ್ವರ್ಣಮಯವಾದ, ಚಿನ್ನದಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ. "ಸೇ ಸೇಲಗಾಮಿ ತಮುವಾಹ ವಾಹ: ಸಶಬ್ದಚಾಮೀಕರ-ಕಿಕಿಣಿಕ್ಕಿ:" ಕುಮಾಂ ೭-೪೯।

ಚಾಮೀಕರಕ್ಷಮಾಭುತ್ ಚಾಮೀಕರಕ್ಷಮಾಭುತ್ (ಪುಂ) ಸುಮೇರು ಪರ್ವತ.

ಚಾಮೀಕರೀಯ ಚಾಮೀಕರೀಯ (ವಿಂ) ಸುವರ್ಣದಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ, ಚಿನ್ನದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿರಂಜನಂ ಚಕ್ರಯೋತ್ತರೀಯೇಶ್ವಾಮೀಕರೀಯೇನಿಜವಲ್ಕಲೇಶ್ವ" ಕುಮಾಂ ೧೩-೨೧।

ಚಾಮುಂಡಾ ಚಾಮುಂಡಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಾರ್ವತಿ, ದುರ್ಗಾ ದೇವಿ. "ಯಸ್ಮಾಚ್ಚವೃಂದಂ ಚ ಮುಂಡಂ ಚ ಗೃಹೀತ್ವಾ ತ್ವಮುಪಾಗತಾ। ಚಾಮುಂಡೇತಿ ತತೋ ಲೋಕೇ ಷ್ಯಾತಾ ದೇವಿ ಭವಿಷ್ಯಸಿ" ದೇವೀಮಾಂ 1. 2. ಪಾರ್ವತಿಯ ಪರಿಚಾರಿಕೆಯಲ್ಲೊಬ್ಬಳು, ಸಪ್ತ ಮಾತೃಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬಳು. "ಕರ್ಣಮೋಟಿ ತು ಚಾಮುಂಡಾ ಚರ್ಮಮುಂಡಾ ತು ಚರ್ವಿಕಾ" ಅಮಂ 1.

ಚಾಮ್ಪಿಲಾ ಚಾಮ್ಪಿಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಂಪಾನದಿ, ಒಂದು ಹೊಳೆ. "ತಲೋದಾ ಚಾಮ್ಪಿಲಾ ಸಿಂಧು: ಶ್ರುಷಿಕುಲ್ಯಾ ವಹಾ ಚ ಸಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1.

ಚಾಮ್ಪೇಯ ಚಾಮ್ಪೇಯ (ಪುಂ) 1. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ಚಮ್ಪಾಯಾ ಅಪत्यಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೦)। 2. ಸುಪಿಗೆಮರ. 3. ನಾಗಸುಪಿಗೆಮರ. 4. ದತ್ತೂರಿಗಿಡ. 5. ಕೆಂಜಲ್ಕ, ಕೇಸರ, ಹೂವಿನ ಕುಸುಮ. "ಚಾಮ್ಪೇಯಶ್ಚಮ್ಪಕೇ ಸ್ವರ್ಣೇ ಕಿಂಜಲ್ಕೇ ನಾಗಕೇಸರೇ" ಮೇದಿಂ 1. 6. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮಹರ್ಷಿಯ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಅರಾಲಿನೀಚಿಕಶ್ಚೇವ ಚಾಮ್ಪೇ-ಯೋಜ್ಜಯಂತಿ ತಥಾ" ಭಾಂ ಅನುಂ ೭-೫೮। (ವಿಂ) 7. ಚಂಪಾನದಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

ಚಾಯ್ — ಪೂಜಾನಿಶಾಮನಯೋ: (ಭವಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಚಾಯತಿ, —ತೇ। ಚಾಯ, ಚಾಯೇ। ಚಾಯಿತಾ। ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಪೂಜಿಸು, ಆರಾಧಿಸು. 2. ನೋಡು. "ತಂ ಪವಂತೀಯಾ: ಪ್ರಮದಾಶ್ಚಚಾಯಿರೇ ವಿಕಾಸವಿಷ್ಕಾರಿತವಿಭ್ರಮೇಕ್ಷಣಾ:" ಮಾಧಂ ೧೨-೫೧।

ಚಾಯತ್ ಚಾಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ನೋಡುತ್ತಿರುವ. ಚಾಯ್ (ಪೂಜಾನಿಶಾಮನಯೋ:) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।

ಚಾಯನೀಯ ಚಾಯನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ನೋಡಲ್ಪಡುವ. ಚಾಯ್ (ಪೂಜಾನಿಶಾಮನಯೋ:) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। 3. ನೋಡಬೇಕಾದ. 4. ಪೂಜಿಸಬೇಕಾದ.

ಚಾಯಮಾನ ಚಾಯಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ನೋಡುತ್ತಿರುವ. ಚಾಯ್ (ಪೂಜಾನಿಶಾಮನಯೋ:) "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)।



ಚಾಯ ಚಾಯು (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸುವವನು. 2. ನೋಡುವವನು. ಚಾಯ (ಪೂಜಾನಿಶಾಮನಯೋ:) "ಉನ್" (ಉಂ ೧-೩)।

ಚಾರ ಚಾರ (ಪುಂ) 1. ಗೂಢಪುರುಷ, ಗುಪ್ತಚಾರ, ರಹಸ್ಯ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ನಿಯುಕ್ತನಾದವನು. ಚರತಿ-ಚರ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಚರ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮)। 2. ಪ್ರಿಯಾಳವ್ಯಕ್ತ, ಮೊರಟಿಗಿಡ. 3. ಕಾರಾಗಾರ, ಸೆರೆಮನೆ. 4. ಗತಿ, ನಡನೆ, ಸಂಚಾರ. "ಕ್ರೀಡಾಶೀಲೇ ಯದಿ ಚ ವಿಚರೇತ್ಪಾದಚಾರೇಣ ಗೌರೀ" ಮೇಘಂ ೧-೬೦। 5. ಬೇಡಿ, ಸಂಕೋಲೆ. "ಚಾರ: ಪ್ರಿಯಾಲವ್ಯಕೋ ಸ್ಯಾದ್ಗತೌ ಬನ್ಧಾಪಸಂಪಯೋ:" ಮೇದಿಂ। "ಚಾರ: ಕಾರಾಗುಪ್ತೌ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ। (ನಂ) 6. ಕೃತ್ರಿಮವಾದ ವಿಷ. "ಕೃತ್ರಿಮಂತು ವಿಷಂ ಚಾರಂ ಗರಪ್ಪೋಪವಿಷಂ ಚ ತತ್" ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ಚಾರಕ ಚಾರಕ (ಪುಂ) 1. ದನ ಕಾಯುವವನು, ಗೋಲ್ಕ, ಗೋಪಾಲಕ. ಚಾರಯತಿ - ಚರ (ಗತಿಭಕ್ಷಣಯೋ:) + ಣಿಚ್ "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಬಂಧನ, ಸಂಕೋಲೆ, 3. ಗತಿ, ಗಮನ, ಸಂಚಾರ. 4. ಮೊರಟಿಗಿಡ. ಚಾರ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"। 5. ಕಾರಾಗಾರ, ಸೆರೆಮನೆ. "ಚಾರಕ: ಪಾಲಕೇಶ್ವರಾದೇ: ಸ್ಯಾತ್ ಸಂಚಾರಕಬನ್ಧಯೋ:" ಮೇದಿಂ।

ಚಾರಕೀಣ ಚಾರಕೀಣ (ವಿಂ) ಸಂಚರಿಸುವವನಿಗೆ ಹಿತವಾದ. ಚರಕಾಯ ಹಿತಮ್ "ಖನ್" (೪-೧-೧೧)।

ಚಾರಕಕ್ಷುಸ್ ಚಾರಕಕ್ಷುಸ್ (ವಿಂ) ಗೂಢಚಾರನೇ ಕಣ್ಣಾಗಿ ಉಳ್ಳವನು. ಚಾರ: ಕಕ್ಷುರ್ಯಸ್ಯ। "ಕ್ರಿಯಾಸು ಯುಕ್ತೇನೈವ ಚಾರ-ಕಕ್ಷುಷೋ ನ ವಶನೀಯಾ: ಪ್ರಭವೋನ್ಮುಜೀವಿಭಿ:" ಕಿರಾಂ ೧-೪।

ಚಾರಚುಚು ಚಾರಚುಚು, -ಚಣ -ಚಣ (ವಿಂ) ಸಂಚಾರದಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಥನಾದ, ನಡೆಯುವುದರಲ್ಲಿ ದಕ್ಷನಾದ. ಚಾರೇಣ ವಿದ್ವ: "ಚುಚುಪ್" "ಚಣಪ್" ವಾ (೪-೨-೨೬)।

ಚಾರಟಿಕಾ ಚಾರಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀಲಿಗಿಡ.

ಚಾರಟಿ ಚಾರಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಶ್ಮೀರ ದೇಶದ ಬೆಟ್ಟದಾವರೆ. "ಚಾರಟಿ ಪದ್ಮಚಾರಿಣಿ" ಅಮಂ।

ಚಾರಣ ಚಾರಣ (ಪುಂ) 1. ಕೀರ್ತಿಯನ್ನೂ ಹರಡುವ ಸ್ತುತಿ ಪಾಠಕ. ಚಾರಯತಿ ಕೀರ್ತಿಮ್ - ಚರ + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। "ಗಂಧರ್ವಾಣಾಂ ತತೋ ಲೋಕ: ಪರತ: ಶಸ್ತ-ಯೋಜನಾತ್। ದೇವಾನಾಂ ಗಾಯನಾಸ್ತೇ ಚ ಚಾರಣಾ: ಸ್ತುತಿಪಾಠಕಾ:" ಪಾಶಪುಂ। 2. ಗೂಢಚಾರ, ಪರರಾಷ್ಟ್ರಗಳ ರಹಸ್ಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿದು ರಾಜನಿಗೆ ವರದಿ ಮಾಡುವ ಬೇಹುಕಾರ. "ಅಂತ-ಬಹಿಷ್ಚ ಭೂತಾನಾಂ ಪಶ್ಯನ್ ಕರ್ಮಾಣಿ ಚಾರಣೈ:। ಉದಾಸೀನ ಇವಾಧ್ಯಕ್ಷೋ ವಾಯುರಾಮೇವ ದೇಹಿನಾಮ್" ಭಾಗಂ ೪-೧೬-೧೨। 3. ದೇವಗಾಯಕ, ಗಂಧರ್ವ. - ಣಾ -ಣಾ. ಗಂಧರ್ವ ಹೆಂಗಸು. (ವಿಂ) 4. ಒಂದೇ ವೇದಶಾಖೆಗೆ ಸೇರಿದ.

ಚಾರಮಿಕ ಚಾರಮಿಕ (ಪುಂ) ಗ್ರಂಥಪೂರ್ತಿ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು, ಸಂಪೂರ್ಣ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು. ಚರಮಮಧೀತೆ "ಠಕ್" (೪-೨-೬೨)।

ಚಾರಿತ್ರ ಚಾರಿತ್ರ (ನಂ) 1. ಸ್ವಭಾವ, ಶೀಲ, ನಡತೆ. ಚರ (ಗತೌ) "ಣಿತ್ರನ್" (ಉಂ ೪-೧೭೧)। "ಕುಲಾಕ್ರೋಶಕರಂ ಲೋಕೇ ಧಿಕ್ ತೇ ಚಾರಿತ್ರಮೀದೃಶಮ್" ರಾಮಾಂ। 2. ವಂಶ ಕ್ರಮಾಗತವಾದ ಆಚಾರ, ಸಂಪ್ರದಾಯ. "ಚಾರಿತ್ರಂ ಯೇನ ನೋ ಲೋಕೇ ದೃಷಿತಂ ದೃಷಿತಾತ್ಮನಾ" ಹರಿವಂ। 3. ಚರಿತ್ರೆ, ವೃತ್ತಾಂತ. ಚರಿತ್ರಮೇವ - ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮)। (ಪುಂ) 4. ಮರುತ್ಪಂತರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

ಚಾರಿತ್ರಾ ಚಾರಿತ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುಣಿಸೆಮರ.

ಚಾರಿತ್ರೀ ಚಾರಿತ್ರೀ (ವಿಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆಯುಳ್ಳ, ಒಳ್ಳೆಯ ಸ್ವಭಾವದ. ಚಾರಿತ್ರಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)।

ಚಾರಿತ್ರ ಚಾರಿತ್ರ (ನಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆ, ಒಳ್ಳೆಯ ಸ್ವಭಾವ. ಚರಿತ್ರ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಞ್ವಲ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪)।

ಚಾರಿನ್ ಚಾರಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂಚರಿಸುವ, ನಡೆಯುವ. ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। "ಸಂಜ್ಞಮಾಯ ನಿಶಿ ಗುಹಚಾರಿಣಂ ಚಾರದೃತಿಕಥಿತಂ ಪುರೋಗತಾ:" ರಘುಂ ೧೯-೩೩। 2. ಮಾಡುವ, ಆಚರಿಸುವ. 3. ಪದಾತಿ, ಕಾಲಾಳು, ಪಾದಚಾರಿ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। ಚಾರಿಣಿ ಚಾರಿಣೀ.

ಚಾರಿ ಚಾರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೃತ್ಯದಲ್ಲಿ ಒಂದು ವಿಧ, ಶೃಂಗಾರ ಮೊದಲಾದ ರಸಗಳ ಭಾವೋದ್ದೀಪಕವಾದ ಒಂದು ವಿಧ ನೃತ್ಯ. "ನ ಹಿ ಚಾರೀ ವಿನಾ ನೃತ್ಯೇ ನೃತ್ಯಸ್ಯಾಜ್ಞಂ ಪ್ರವರ್ತತೇ। ಶೃಂಗಾರಾದಿರಸಾನಾಂತು ಭಾವೋದ್ದೀಪನಕಾರಿಕಾಮ್। ಮಾಧುರ್ಯೋದ್ಭವತಾ ನೃತ್ಯೇ ಚಾರಿ ಚಾರುಗತಿರ್ಮತಾ" ಸಂ ದಾಂ।

ಚಾರು ಚಾರು (ಪುಂ) 1. ಗುರು, ಬೃಹಸ್ಪತಿ. ಚರತಿ ಚಿತ್ತೇ - ಚರ (ಗತೌ) "ಞ್ವಲ್" (ಉಂ ೧-೩)। 2. ಕೃಷ್ಣನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಚಾರುಚಂದ್ರೋ ವಿಚಾರುಶ್ಚ ಚಾರುಶ್ಚ ದಶಮೋ ಹರೇ:" ಭಾಗಂ ೧೦-೬೧-೯। (ನಂ) 3. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. (ವಿಂ) 4. ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ, ರಮಣೀಯವಾದ. "ಚಕಾಸತಂ ಚಾರುಚಮೂರ್ಮಣಾ ಕುಶಲೇನ ನಾಗೇಂದ್ರಮಿವೇಂದ್ರವಾಹನಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೮। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ವಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೪)। ಚಾರ್ವಿ ಚಾರ್ವಿ. ಚಾರು: ಚಾರು: "ಪ್ರಾಶಂಸಿ ಸಂಸದ್ಗುಣಾಪಿ ಚಾರ್ವಿ ಚಾರ್ವಿಕತಾಸರ್ವವಿದ್ವಿಷಕೇಣ" ನೈಷಂ ೧೦-೫೮। (ಅವ್ಯಂ) 5. ಸುಂದರವಾಗಿ, ಮನೋಹರವಾಗಿ, ಅಂದವಾಗಿ.

ಚಾರುಗರ್ಭ ಚಾರುಗರ್ಭ, -ಗುಪ್ತ -ಗುಪ್ತ (ಪುಂ) ಕೃಷ್ಣನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.



ಚಾರಿತ್ರ ಚಾರುಚಿತ್ರ (ಪುಂ) ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.  
ಚಾರುತಾ ಚಾರುತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನೋಹರವಾಗಿರುವಿಕೆ,  
ಸುಂದರವಾಗಿರುವಿಕೆ. "ಚಾರುತಾ ವಪುರಭೂಷಯದಾಸಾಮ್" ಮಾಘಂ  
೧೦-೩೩.

ಚಾರುಧಾರಾ ಚಾರುಧಾರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಂದ್ರನ ಪತ್ನಿ. ಶಬ್ದೇ  
ದೇವಿ. ಚಾರ್ವಿ ಧಾರಾಸ್ಯಾಃ. "ಪುತನಾಪಾದ್ ಪ್ರಿಯಾತ್ವಸ್ಯ  
ಚಾರುಧಾರಾ ಶತಾವರೀ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಚಾರುನೇತ್ರ, -ಲೋಚನ -ಲೋಚನ (ಪುಂ)

1. ಜಿಂಕೆ, ಚಿಗರಿ. ಚಾರು ಮನೋಹರಂ ನೇತ್ರಮಸ್ಯ. "ಃಣಃ ಕುರಜ್ಜಮೋ  
ರಿಶ್ಯಃ ಸಾದೃಶ್ಯಶ್ಚಾರುಲೋಚನಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. (ವಿಂ) 2.  
ಸುಂದರವಾದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನೇತ್ರಾ -ನೇತ್ರಾ.
3. ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಪರಸ್ತು.

ಚಾರುಫಲಾ ಚಾರುಫಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದ್ರಾಕ್ಷಾಲತೆ.

ಚಾರುಬಾಹು ಚಾರುಬಾಹು, -ಭದ್ರ -ಭದ್ರ (ಪುಂ) ಕೃಷ್ಣನ  
ಒಬ್ಬ ಮಗ.

ಚಾರುಮತೀ ಚಾರುಮತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೃಷ್ಣನ ಒಬ್ಬ ಮಗಳು.

ಚಾರುಯಶಸ್ ಚಾರುಯಶಸ್ (ಪುಂ) ಕೃಷ್ಣನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

ಚಾರುವಕ್ತ್ರ ಚಾರುವಕ್ತ್ರ (ವಿಂ) ಸುಂದರವಾದ ಮುಖವುಳ್ಳ.  
ಚಾರು ವಕ್ತ್ರಂ ಯಸ್ಯ.

ಚಾರುಲೇಷ ಚಾರುಲೇಷ (ವಿಂ) ಸುಂದರವಾದ ಉಡುಪನ್ನು  
ಧರಿಸಿರುವ.

ಚಾರುಪ್ರತಾ ಚಾರುಪ್ರತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ತಿಂಗಳ ಕಾಲ  
ಉಪವಾಸಮಾಡುವ ಹೆಂಗಸು. ಚಾರು ವ್ರತಮಸ್ಯಾಃ. "ರಾಹ್ನಂ  
ಸಿದ್ಧಮಥಿ ಚಾರುಪ್ರತಾ ಮಾಸೋಪವಾಸಿನೀ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಚಾರುಶಿಲಾ ಚಾರುಶಿಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರತ್ನ, ಮಣಿ. "ರತ್ನಂ  
ಚಾರುಶಿಲಾ ಮಣಿಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಚಾರುಹಾಸಿನಿ ಚಾರುಹಾಸಿನಿ (ವಿಂ) ಸೊಗಸಾಗಿ ನಗುವ,  
ಮಧುರವಾಗಿ ನಗುವ. ಚಾರು ಹಸತಿ - ಹಸೆ (ಹಸನೆ)  
"ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೭೮). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಚಿಪ್" (೪-೧-೪).  
-ಹಾಸಿನಿ -ಹಾಸಿನೀ.

ಚಾರುಹಾಸಿನೀ ಚಾರುಹಾಸಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೃತ್ತರತ್ನಾ  
ಕರೋತ್ತವಾದ ವೈತಾಳೀಯಭಂಡಸ್ಥಿನ ಒಂದು ಭೇದ.  
ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: "ಅಯುಃಪವಾ ಚಾರುಹಾಸಿನೀ" ಕೃಂ ೨೦.  
ಪ್ರವೃತ್ತಕವೃತ್ತದ ವಿಷಮಪಾದಗಳ ಲಕ್ಷಣವು ನಾಲ್ಕು  
ಪಾದಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಇದ್ದರೆ "ಚಾರುಹಾಸಿನೀ" ವೃತ್ತವಾಗು  
ವುದು. ಅಂದರೆ ನಾಲ್ಕು ಪಾದಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಮೊದಲು  
ಆರು ಮಾತ್ರಗಳೂ ಅನಂತರ 'ರ' ಗಣ ಲಘು ಗುರುಗಳೂ  
ಇದ್ದು ಎರಡನೆಯ ಮಾತ್ರೆಯು ಮೂರನೆಯ ಮಾತ್ರೆಯು

ಯೊಡನೆ ಸೇರಿದ್ದು ಉಳಿದೆಲ್ಲ ಲಕ್ಷಣವೂ ವೈತಾಳೀಯ  
ದಂತಿರಬೇಕು. उदा.:

"ಕರಾಮ್ಬುಜೈರಕ್ಷಮಾಲಿಕಾಂ

ಶುಕಂ ಲಿಪಿ ಮುದ್ರಿಕಾಂ ಪರಾಮ್ |

ಪ್ರವಿಭ್ರತೀ ಬ್ರಹ್ಮವಲ್ಲಭಾ

ಭವೇತ್ಪುರಾಹಾರಹಾಸಿನೀ ||"

ಚಾರ್ವಿಕ ಚಾರ್ವಿಕ (ವಿಂ) ಮೊದಲ ಅವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ನಿಷ್ಣಾತ  
ನಾದವನು, ಮೊದಲವನ್ನು ಪುನಃ ಪುನಃ ಹೇಳಿ ಅಭ್ಯಾಸ  
ಮಾಡಿದವನು ಮತ್ತು ತಿಳಿದವನು. ಚಾರ್ವಿಕೀತಿ ವೇದ ವಾ  
"ಠಕ್" (೪-೨-೬೦).

ಚಾರ್ವಿಕ ಚಾರ್ವಿಕ (ನಂ) ಗಂಧ ಮೊದಲಾದವನ್ನು  
ಮೈಗೆ ಲೇಪನ ಮಾಡುವುದು. ಚಾರ್ವಿಕೇವ - ಸ್ವಾರ್ಥ "ಛಬ್"  
(ಬಾಂ ೪-೧-೧೨೪).

ಚಾರ್ವ ಚಾರ್ವ (ಪುಂ) ಚರ್ಮದಿಂದ ಹೊದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ರಥ.  
ಚರ್ಮಣಾ ಪರಿವೃತೋ ರಥಃ "ಅಞ್" (೪-೨-೧೦).

ಚಾರ್ವಣ ಚಾರ್ವಣ (ನಂ) ಚರ್ಮಗಳ ಸಮೂಹ, ತೊಗಲಿನ  
ರಾಶಿ. ಚರ್ಮಣಾ ಸಮೂಹಃ "ಅಞ್" (೪-೨-೩೮).

ಚಾರ್ವಿಕ ಚಾರ್ವಿಕ (ವಿಂ) ಚರ್ಮದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಚರ್ಮಣಾ ನಿವೃತ್ತಃ "ಠಕ್" (೪-೧-೭೯). "ಚರ್ಮಚಾರ್ವಿಕ-  
ಭಾಂಡೇಷು ಕಾಣಲೋಪಮಯೇಷು ಚ" ಮನುಂ ೮-೨೮೯.

ಚಾರ್ವಿಣ ಚಾರ್ವಿಣ (ನಂ) ಗುರಾಣಿ ಹಿಡಿದಿರುವವರ  
ಗುಂಪು. ಚರ್ಮಿಣಾ ಸಮೂಹಃ "ಅಞ್" (೪-೨-೩೭).

ಚಾರ್ವಾಕ ಚಾರ್ವಾಕ (ಪುಂ) 1. ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಅಪ್ಪ,  
ನಾಸ್ತಿಕಮತಪ್ರವರ್ತಕ, ದೇಹಾತ್ಮವಾದಮತಸ್ಥಾಪಕ.  
ಚಾರ್ವಾಕಃ ಲೋಕಸಂತತೋ ವಾಕೋ ವಾಕ್ಯಂ ಯಸ್ಯ | ಪೃಷಂ |  
2. ದುರ್ಯೋಧನನ ಒಬ್ಬ ಸ್ನೇಹಿತ, ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ.

ಚಾರ್ವಾಕವರ್ಣನ ಚಾರ್ವಾಕವರ್ಣನ (ನಂ) ನಾಸ್ತಿಕವಾದ  
ವನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ಚಾರ್ವಾಕ ಮತ. ಈ ದರ್ಶನವು  
ಉಳಿದೆಲ್ಲಾ ದರ್ಶನಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಮೊದಲಿನೆಯದು ಮತ್ತು  
ಎಲ್ಲಾ ದರ್ಶನಗಳಿಗೂ ವಿರುದ್ಧವಾದುದು. ಬೃಹಸ್ಪತ್ಯಾ  
ಜಾರ್ಯರು ಈ ದರ್ಶನಕ್ಕೆ ಸೂತ್ರಗಳನ್ನು ಬರೆದಿರು  
ತ್ತಾರೆ. ಈ ಸೂತ್ರಗಳಿಗೆ ಭಾಷ್ಯವನ್ನು ಬರೆದವರು  
ಚಾರ್ವಾಕರೆಂಬ ಒಬ್ಬ ವಿದ್ವಾಂಸರು. "ತದೇತದಸ್ಮದಭಿ-  
ಪ್ರಾಯಾನುಬಂಧಿನಾ ಬೃಹಸ್ಪತಿನಾ ಪ್ರಣೀಯ ಚಾರ್ವಾಕಾಯ ಸಮರ್ಪಿತಮ್"  
ಪ್ರಬಂಧಂ ೨. ಈ ದರ್ಶನವು ಲೋಕದಲ್ಲಿಲ್ಲಾ ಹರಡಿರು  
ವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಲೋಕಾಯತಮತವೆಂದು ಹೆಸರಾಗಿದೆ.  
ಈ ಮತದಲ್ಲಿ ದೇಹಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬೇರೆ ಆತ್ಮನಿಲ್ಲ. ಜನ್ಮಾಂತರ  
ವಿಲ್ಲ. ಪುಣ್ಯಪಾಪಗಳೆಂಬ ಅದೃಷ್ಟವೂ ಇಲ್ಲ. ಪರ



ಲೋಕವೂ ಪರಮಾತ್ಮನೂ ಇಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳುವುದರಿಂದ ಇದು ನಾಸ್ತಿಕಮತವೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ. ಈ ಮತದವರಿಗೆ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವೇ ಪ್ರಮಾಣ. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಲ್ಲದ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಇವರು ನಂಬುವುದಿಲ್ಲ. ಪುಣ್ಯ ಪಾಪಗಳಿಂದ ಸುಖ ದುಃಖಗಳುಂಟಾಗುವುದಿಲ್ಲ. ಸುಖ ದುಃಖಗಳಿಗೆ ಆಯಾ ವಸ್ತುಗಳ ಸ್ವಭಾವವೇ ಕಾರಣವೆಂದು ಇವರು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ.

**ಈ ಮತದ ಸಿದ್ಧಾಂತವಿದು:** ಸರ್ವಥಾ ಲೋಕಾಯತಮೇವ ಶಾಸ್ತ್ರಮ್ | ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಮೇವ ಪ್ರಮಾಣಮ್ | ಪೃಥಿವ್ಯಪ್ತೇಜೋವಾಯವ-  
ಸ್ತತ್ತ್ವಾನಿ | ಅರ್ಥಕಾಮೌ ಪುರುಷಾರ್ಥೌ | ಭೂತಾನ್ಯೇವ ಚೇತಯಂತೇ |  
ನಾಸ್ತಿ ಪರಲೋಕಃ | ಮೃತ್ಯುರೇವಾಪವರ್ಗಃ | ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿರುವ  
ವೃಥಿವಿ, ಅಪ್ಪು, ತೇಜಸ್ಸು ಮತ್ತು ವಾಯು ಈ ನಾಲ್ಕು  
ಮಾತ್ರ ತತ್ತ್ವಗಳು. ಇವುಗಳ ಪರಿಣಾಮದಿಂದಲೇ  
ಮನುಷ್ಯಾದಿಶರೀರಗಳು ಉತ್ಪನ್ನವಾಗುವುವು. ಇದೇ  
ಪ್ರಪಂಚ. ಅರ್ಥಕಾಮಗಳು ಎರಡು ಮಾತ್ರ ಪುರುಷಾರ್ಥ  
ಗಳು. ಮರಣವೇ ಮೋಕ್ಷ. ಮುಕ್ತಿಗೆ ಜ್ಞಾನವು ಕಾರಣ  
ವಲ್ಲ. ಸುಖವೇ ಸ್ವರ್ಗ. ದುಃಖವೇ ನರಕ ಎಂಬುದು  
ಇವರ ಮತ. "ಅಜ್ಞನಾಲಿಜ್ಞನಾಜ್ಞನುಸುಖಮೇವ ಪುಮರ್ಥತಾ |  
ಕಂಠಕಾದಿವ್ಯಥಾಜನ್ಯಂ ದುಃಖಂ ನಿರಯ ಉಚ್ಯತೇ | ಲೋಕಸಿದ್ಧೋ  
ಭವೇದ್ರಾಜಾ ಪರೇಶೋ ನಾಪರಃ ಸ್ಮೃತಃ | ದೇಹಸ್ಯ ನಾಶೋ ಮುಕ್ತಿಃ ಸ್ತು ನ  
ಜ್ಞಾನಾನ್ಮುಕ್ತಿರೀರ್ಷಯತೇ | ಅಥ ಚತ್ವಾರಿ ಭೂತಾನಿ ಭೂಮಿವಾರ್ಯ-  
ನಿಲಾನಲಾಃ | ಅಹಂ ಸ್ಥೂಲಃ ಕೃಶೋಽಸ್ಮೀತಿ ಸಾಮಾನಾಧಿಕರಣ್ಯತಃ |  
ದೇಹಃ ಸ್ಥೌಲ್ಯಾದಿಯೋಗಾನ್ವ ಸ ಎವಾತ್ಮಾ ನ ಚಾಪರಃ | ಮಮ  
ದೇಹೋಽಪಮಿತ್ಯುಕ್ತಿಃ ಸಂಭವೇದೌಪಚಾರಿಕೀ |" ಇವರು, ದುಃಖಕ್ಕೆ  
ಹೆದರಿ ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ ಸುಖವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸುವುದು ಮೂರ್ಖ  
ತನವೆನ್ನುವರು. "ತ್ಯಾಜ್ಯಂ ಸುಖಂ ವಿಷಯಸಂಗಮಜನ್ಮ ಪುಂಸಾಂ  
ದುಃಖೋಪಸೃಷ್ಟಿಮಿತಿ ಮೂಲವಿಚಾರಣೌಷಾ | ಬ್ರಿಹಿನ್ ಜಿಹಾಸತಿ  
ಸಿತೋತ್ತಮತಣ್ಡುಲಾಢ್ಯಾನ್ ಕೋ ನಾಮ ಭೋಸ್ತುಷಕಣೋಪಹಿತಾನ್  
ಹಿತಾರ್ಥಿ" ಸಂ ೨೦ ಸಂ | ಯಜ್ಞಯಾಗಗಳು ವೇದಗಳು  
ಸಂನ್ಯಾಸ ಮುಂತಾದುವು ಬುದ್ಧಿ ಮತ್ತು ಸಾಮರ್ಥ್ಯವಿಲ್ಲ  
ದವರಿಗೆ ಕೇವಲ ಜೀವನಸಾಧನಗಳೆಂದು ಈ ಮತದವರ  
ಅಭಿಪ್ರಾಯ. "ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರಂ ತ್ರಯೋ ವೇದಾಃ ತ್ರಿದಂಡಂ ಭಸ್ಮ-  
ಗುಣ್ಣಮ್ | ಪ್ರಜಾಪೌರೂಪಹೀನಾನಾಂ ಜೀವಿಕೇತಿ ಬೃಹಸ್ಪತಿಃ"  
ಪ್ರಬೋಧಂ ೨-೨೬ |

**ಶಾರ್ವಕಮತ ಚಾರ್ವಾಕಮತ (ನಂ) "ಶಾರ್ವಕದರ್ಶನ"**  
ಪದದ ಅರ್ಥ.

**ಶಾರ್ವಿ ಚಾರ್ವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸುಂದರಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು.  
2. ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಬೆಳದಿಂಗಳು, 3. ಬುದ್ಧಿ, "ಬುದ್ಧಿಃ ಪಂಡಾ  
ವಿದಾ ಶಾರ್ವಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 4. ಕುಬೇರನ ಪತ್ನಿ. "ಶಾರ್ವಿತು

ಶೋಭನಾಬುದ್ಧಯೋರ್ಯೋಸ್ತಾಧನದಭಾರ್ಯಯೋಃ" ಮೇದಿಂ 5. ದೀಪ್ತಿ,  
ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. ಚಾರ "ಚಿಪ್" (೪-೧-೪೪) |

**ಚಾಲ ಚಾಲ (ಪುಂ)** 1. ಮನೆಯ ಮೇಲಿನ ಆವರಣ,  
ಮನೆಯ ಹೊದಿಕೆ. ಚಲ (ಕಂಪನೆ) "ಞಃ" (೩-೧-೧೪೦) |  
2. ಚಲನ, ಹೊರಡುವುದು. ಚಲ ಭಾವೇ "ಘ" (೩-೩-೧೮) | 3. ಹೊರಡಿಸುವಿಕೆ. ಚಲ+ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |

**ಚಾಲಕ ಚಾಲಕ (ಪುಂ)** 1. ಮದಿಸಿದ ಆನೆ, ಅಂಕುಶಕ್ಕೂ  
ಅಡಗದ ಆನೆ. "ಗಂಭೀರವೇದಂಕುಶದುರ್ಧರಃ | ಚಾಲಕೌ ವ್ಯಾಲಕೌ"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 2. ನಡೆಸುವವನು, ಮುಂದೆ ಸಾಗಿಸುವವನು.  
ಚಲ (ಕಂಪನೆ) "ಞ್" (೩-೧-೧೩೩) |

**ಚಾಲನ ಚಾಲನ (ನಂ)** 1. ಹೊರಡಿಸುವುದು. 2. ಬೇರೆ  
ಕಡೆಗೆ ಒಯ್ಯುವುದು. 3. ಕದಲಿಸುವುದು, ಅಲುಗಾಡಿಸು  
ವುದು. ಚಲ (ಕಂಪನೆ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |  
4. ಅಲ್ಲಾಡಿಸುವುದು. "ಲಾಡ್ಗುಲಚಾಲನಮಘಶ್ರರಣಾವಧಾತಂ  
ಭೂಮಿ ನಿಪತ್ಯ ವದನೋದರದರ್ಶನಂ ಚ | ಕ್ವಾ ಪಿಂಡದಸ್ಯ ಕುರುತೇ  
ಗಜಪುಂಗವಸ್ತು ಧೀರಂ ವಿಲೋಕಯತಿ ಚಾತುಶತೇಶ್ಚ ಭುಜ್ಜೇ" ಭರ್ತುಂ  
೧-೨೩ | (ನಂ) 5. ಒಂದರಿ, ಜಲ್ಲಡೆ. ಚಲ + ಣಿಚ್  
ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) |

**ಚಾಲನಿ ಚಾಲನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಒಂದರಿ, ಜಲ್ಲಡೆ.  
ಚಾಲ್ಯತೇಜೇನ-ಚಲ (ಕಂಪನೆ) + ಣಿಚ್ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೭) |

**ಚಾಲನೀಯ ಚಾಲನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಒಂದರಿ ಆಡಲು  
ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಶುದ್ಧಿಮಾಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ, ಜಲ್ಲಡೆ  
ಹಿಡಿಯಬಹುದಾದ. ಚಲ (ಕಂಪನೆ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್"  
(೩-೧-೯೬) | 2. ಕದಲಿಸಲ್ಪಡುವ, ಕದಲಿಸಲು ಅರ್ಹ  
ವಾದ. 3. ಅಲುಗಾಡಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. "ತವ್ಯಃ" |  
ಚಾಲಯಿತವ್ಯಃ ಚಾಲಯಿತವ್ಯಃ.

**ಚಾಲಯತ್ ಚಾಲಯತ್ (ವಿಂ)** 1. ಹೊರಡಿಸುತ್ತಿರುವ.  
2. ಕದಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅಲುಗಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಚಲ (ಕಂಪನೆ)  
+ ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | 3. ಅಲ್ಲಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ.  
4. ಒಂದರಿ ಅಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಚಿಪ್" (೪-೧-೬) |  
-ಯಂತಿ -ಯಂತೀ. "ಇತಿ ಚಾಲಯತ್ಚಲಸಾನುವನಗಹನಜಾ-  
ನುಮಾಪತಿಃ" ಕಿರಾಂ ೧೨-೫೨ |

**ಚಾಲ್ಯ ಚಾಲ್ಯ (ವಿಂ)** "ಚಾಲನೀಯ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಚಲ  
(ಕಂಪನೆ) "ಞ್" (೩-೧-೧೨೪) | "ಕ್ಷಮಾ ವಾಮನೇನ  
ಜಗೃಹೇ ತ್ರಿಪದಚ್ಛಲೇನ ಯಾಚ್ಛಾಮೃತೇ ಪಥಿ ಚರನ್ ಪ್ರಭುಭಿರ್ನ  
ಚಾಲ್ಯಃ" ಭಾಗಂ ೨-೭-೧೭ |



ಚಾಪ ಚಾಪ (ಪುಂ) ಹಂಸಹಕ್ಕಿ. ಚಾಪಯತಿ—ಚಪ (ಚಪ್ಪಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಚಿಪ್" (೪-೧-೬೩)। ಚಾಪಿ ಚಾಪಿ.

ಚಿಕ ಚಿಕ (ಪುಂ) ಮೂಗಿಲಿ, ದುರ್ವಾಸನೆಯ ಇಲಿ. "ಸ್ಯಾಚ್ಚಿಕೋ ವೇಷಮನಕುಲಃ ಪುಂವೋ ಗಂಧಮುಷಿಕಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಚಿಕಿತ್ಸಾ ಚಿಕಿತ್ಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕತ್ತರಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಕರ್ತುಮಿಚ್ಛಾ—ಕೃತಿ (ಛೇದನೆ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨)।

ಚಿಕಿತ್ಸು ಚಿಕಿತ್ಸು (ವಿಂ) ಕತ್ತರಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು. ಕರ್ತುಮಿಚ್ಛುಃ—ಕೃತಿ (ಛೇದನೆ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮)। "ಪ್ರಭುರ್ಬುಭುರ್ಬುವನತ್ರಯಸ್ಯ ಯಃ ಶಿರೋಽತಿರಾಗಾದೃಶಮ್ ಚಿಕಿತ್ಸುಃ" ಮಾಧಂ ೧-೪೯।

ಚಿಕಿತ್ಸಕ ಚಿಕಿತ್ಸಕ (ಪುಂ) ವೈದ್ಯ. ಕಿತ (ರೋಗಾಪನಯನೆ) + ಸನ್ "ಫ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಪುಂ ಚಿಕಿತ್ಸಕಸ್ಯಾಪ್ತಂ ಪುಂಶ್ಚಲ್ಯಾಸ್ತ್ವನ್ನಮಿಂದ್ರಿಯಮ್" ಮನುಂ ೪-೨೨೦।

ಚಿಕಿತ್ಸಾ ಚಿಕಿತ್ಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವ್ಯಾಧಿಯ ಪ್ರತೀಕಾರ, ರೋಗವನ್ನು ವಾಸಿಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ. ಕಿತ (ರೋಗಾಪನಯನೆ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨)। "ಯಾ ಕ್ರಿಯಾ ವ್ಯಾಧಿಹರಣಿ ಸಾ ಚಿಕಿತ್ಸಾ ನಿಗದಿತೇ" ಭಾವಪ್ರಂ. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। ಚಿಕಿತ್ಸನಮ್ ಚಿಕಿತ್ಸನಮ್. ಚಿಕಿತ್ಸೆ ಮಾಡುವ ವೈದ್ಯನು ಮೊದಲು ವ್ಯಾಧಿಯ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿದು ಚಿಕಿತ್ಸೆಯನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಬೇಕು. "ರೋಗಮಾದೌ ಪರೀಕ್ಷೇತ ತತೋಽಂತರಮೌಷಧಮ್। ತತಃ ಕರ್ಮ ಭಿಷಕ್ ಪಶ್ಚಾತ್ ಜ್ಞಾನಪೂರ್ವ ಸಮಾಚರೇತ್"। ಔಷಧವನ್ನು ತಯಾರಿಸಲು ಮಾತ್ರ ತಿಳಿದು ವ್ಯಾಧಿಯ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿಯದೆ ಚಿಕಿತ್ಸೆ ಮಾಡುವವನು ಶಿಕ್ಷಾರ್ಹನಾಗುವನು. "ಭೇಷಜಂ ಕೇವಲಂ ಕರ್ತುಂ ಯೋ ಜಾನಾತಿ ನ ಚಾಮಯಮ್। ವೈದ್ಯಕಮ್ ಸ ಚೇತ್ ಕುರ್ಯಾದ್ವಿಧಮರ್ಹತಿ ರಾಜತಃ"। ರೋಗ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಮಾತ್ರ ತಿಳಿದು ಔಷಧ ಪರಿಚ್ಛಾನವಿಲ್ಲದ ವೈದ್ಯನನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸುವುದು ನಾವಿಕನಿಲ್ಲದ ಹಡಗನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿದಂತಾಗುವುದು. "ಯಸ್ತು ಕೇವಲರೋಗಜಃ ಭೇಷಜೇವವಿಚಕ್ಷಣಃ। ತಂ ವೈದ್ಯಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ರೋಗಿ ಸ್ಯಾತ್ ಯಥಾ ನೌನಾವಿಕಂ ವಿನಾ"। ವ್ಯಾಧಿಯ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿದ ಮತ್ತು ಚಿಕಿತ್ಸೆಯ ದೇಶಕಾಲ ಪರಿಚ್ಛಾನವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಔಷಧನಿರ್ಮಾಣದಲ್ಲಿ ನಿಪುಣನಾದ ವೈದ್ಯನ ಚಿಕಿತ್ಸೆಯು ಸಂಶಯವಿಲ್ಲದೆ ಸಿದ್ಧಿ ಹೊಂದುವುದು. "ಯಸ್ತು ರೋಗವಿಶೇಷಜಃ ಸರ್ವಭೇಷಜ್ಯಕೋವಿದಃ। ದೇಶಕಾಲವಿಭಾಗಜಃ ತಸ್ಯ ಸಿದ್ಧಿರ್ನ ಸಂಶಯಃ"। ಯಾವ ಚಿಕಿತ್ಸೆಯಿಂದ ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಧಾತುಗಳು ಸಮಸ್ಥಿತಿಗೆ ಬರುವುವೋ ಅದು ಸರಿಯಾದ ಚಿಕಿತ್ಸೆಯೆನಿಸುವುದು, "ಯಾಃ

ಕ್ರಿಯಾಭಿರ್ಜಾಯಂತೇ ಶರೀರೇ ಧಾತವಃ ಸಮಾಃ। ಸಾ ಚಿಕಿತ್ಸಾ ವಿಕಾರಾಣಾಂ ಕರ್ಮ ತದ್ವಿಷಜಾಂ ಮತಮ್"। ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗಿರುವ ವ್ಯಾಧಿಯನ್ನು ಶಮನಗೊಳಿಸಿ ಬೇರೆ ವ್ಯಾಧಿಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡದಿರುವುದೇ ಸರಿಯಾದ ಚಿಕಿತ್ಸೆ. ವ್ಯಾಧಿಯೊಂದನ್ನು ವಾಸಿಮಾಡಿ ಮತ್ತೊಂದು ವ್ಯಾಧಿಯನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ ಚಿಕಿತ್ಸೆಯು ಸರಿಯಾದುದಲ್ಲ. "ಯಾ ಹ್ಯುದೀರ್ಣಿ ಶಮಯತಿ ನಾನ್ಯಂ ವ್ಯಾಧಿಂ ಕರೋತಿ ಚ। ಸಾ ಕ್ರಿಯಾ ನ ತು ಯಾ ವ್ಯಾಧಿಂ ಹರತೀತ್ಯನ್ಯಮುದೀರಯೇತ್" ಭಾವಪ್ರಂ।

ಚಿಕಿತ್ಸಿತ ಚಿಕಿತ್ಸಿತ (ವಿಂ) 1. ರೋಗಕ್ಕೆ ಪ್ರತೀಕಾರ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ರೋಗ ವಾಸಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕಿತ (ರೋಗಾಪನಯನೆ) + ಸನ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। (ನಂ) 2. ವ್ಯಾಧಿಯ ಪ್ರತೀಕಾರ, ರೋಗವನ್ನು ವಾಸಿಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ. ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। "ಆದಾವಂತೇ ರಜಾಂ ಜ್ಞಾನೇ ಪ್ರಯತೇತ ಚಿಕಿತ್ಸಕಃ। ಭೇಷಜಾನಾಂ ವಿಧಾನೇನ ತತಃ ಕುರ್ಯಾಚ್ಚಿಕಿತ್ಸಿತಮ್" ಭಾವಪ್ರಂ।

ಚಿಕಿತ್ಸು ಚಿಕಿತ್ಸು (ವಿಂ) ವ್ಯಾಧಿಯ ಪ್ರತೀಕಾರ ಮಾಡುವವನು, ರೋಗ ವಾಸಿಮಾಡಲು ಔಷಧೋಪಚಾರ ಮಾಡುವವನು. ಕಿತ (ರೋಗಾಪನಯನೆ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮)। "ಸ್ಮಾರಂ ಜ್ವರಂ ಧೋರಮಪತ್ರಪಿಣ್ಣಾಃ ಸಿದ್ಧಾಗದಂಕಾರಚಯೇ ಚಿಕಿತ್ಸೌ" ನೈಷಂ ೩-೧೧೧।

ಚಿಕಿತ್ಸ್ಯ ಚಿಕಿತ್ಸ್ಯ (ವಿಂ) ಚಿಕಿತ್ಸೆ ಹೊಂದಲು ಅರ್ಹನಾದ (ರೋಗಿ), ಚಿಕಿತ್ಸೆ ಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ (ರೋಗಿ). "ಅನ್ಯೋಽಚಿಕಿತ್ಸ್ಯರೋಗಾಽಪಿ ಭರ್ತವ್ಯಾ ಸ್ಯುನಿರಂಶಕಾಃ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೪೦।

ಚಿಕಿತ್ಸಕ ಚಿಕಿತ್ಸಕ (ವಿಂ) (ಕಾರ್ಯವನ್ನು) ಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ.

ಚಿಕಿತ್ಸಾ ಚಿಕಿತ್ಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ಕಾರ್ಯವನ್ನು) ಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಕರ್ತುಮಿಚ್ಛಾ—ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣೆ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಚಿಕಿತ್ಸಿತ ಚಿಕಿತ್ಸಿತ (ನಂ) 1. ಉದ್ದೇಶ, ಮನೋಗತ, ಮಾಡಲು ಇಚ್ಛೆ. ಕರ್ತುಮಿಚ್ಛಾ—ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣೆ) + ಸನ್ ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। "ಯಾದೃಶೋಽಸ್ಯ ಭವೇದಾತ್ಮಾ ಯಾದೃಶಂ ಚ ಚಿಕಿತ್ಸಿತಮ್" ಮನುಂ ೪-೨೪೪। (ವಿಂ) 2. ಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ತುಮಿಚ್ಛುಃ—ಙ್ ಕೃತ್ + ಸನ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಚಿಕಿತ್ಸು ಚಿಕಿತ್ಸು (ವಿಂ) (ಕಾರ್ಯವನ್ನು) ಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಕರ್ತುಮಿಚ್ಛುಃ—ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣೆ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮)। "ತತೋ ಗಾಣ್ಡೀವನಿರ್ಮುಕ್ತಾ ನಿರಮಿತ್ರಂ ಚಿಕಿತ್ಸವಃ" ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೬೩-೩೦।



ಚಿಕ್ಕುರ ಚಿಕ್ಕುರ (ಪುಂ) 1. ಕೇಶವಾಶ, ತಲೆಯ ಕೂದಲು. ವಿ. ಇತ್ಯವ್ಯಕ್ತ ಕುರತಿ—ಕುರ (ಶಬ್ದ) “ಕ:” (೩-೨-೧೩೫). “ಇತಿ ಸ ಚಿಕ್ಕುರಾದಾರ್ಭಯನಾ ನಖಾವಧಿ ವರ್ಣಯನ್ ಹರಿಣರಮಣಿ-  
ನೆತ್ರಾಂ ಚಿತ್ರಾಮ್ಬುಧೌ ತರದಂತರ:” ನೈಷಂ ೭-೧೦೯. 2. ಶೈಲ, ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. 3. ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಸಾಕಿದ ಮುಂಗಸಿ. 4. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. 5. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಪಕ್ಷಿ. 6. ಒಂದು ವೃಕ್ಷ. (ವಿಂ) 7. ಚಂಚಲವಾದ. 8. ವಿಮರ್ಶೆಯಿಲ್ಲದೆ ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವ, ದುಡುಕುವ. “ಚಿಕ್ಕುರೋಽಹಿ ಗೃಹವಶ್ರೌ ಕೇಶೇ ಚಂಚಲಶೈಲಯೋಃ | ಪಕ್ಷಿವೃಕ್ಷಭಿದೋಶ್ವಾಪಿ” ಹೇಮಂ |

ಚಿಕ್ಕುರಪಕ್ಷ ಚಿಕ್ಕುರಪಕ್ಷ, -ಪಾಶ -ಪಾಶ, -ಪ್ರಕರ -ಪ್ರಕರ, -ಹಸ್ತ -ಹಸ್ತ (ಪುಂ) ಕೇಶವಾಶ, ತಲೆಯ ಕೂದಲಿನ ಸಮೂಹ. “ಪಾಶ: ಪಕ್ಷಶ್ಚ ಹಸ್ತಶ್ಚ ಕಲಾಪಾರ್ವಾ: ಕಚಾತ್ ಪರೇ” ಅಮಂ | “ಚಿಕ್ಕುರಪ್ರಕರಾ ಜಯಂತಿ ತೇ ವಿಂದುಷಿ ಮೃಧನಿ ಸಾ ವಿಭರ್ತಿ ಯಾನ್” ನೈಷಂ ೨-೨೦ |

ಚಿಕ್ಕುರ ಚಿಕ್ಕುರ (ಪುಂ) “ಚಿಕ್ಕುರ” ಪದದ ಅರ್ಥ.

ಚಿಕ್ಕುರ ಚಿಕ್ಕುರ (ಪುಂ) 1. ಅಡಕೆಮರ. (ನಂ) 2. ಅಡಕೆ. (ವಿಂ) 3. ನುಣುಪಾದ, ನಯವಾದ. ಚಿತ್ತಿ (ಸಂಜ್ಞಾನ) “ಕಣ:” ಧಾತು: ಕಣ (ತಂ ೪-೧೭೬) | ಬಾಹುಂ ಗುಣಾಭಾವ: | “ಚಿಕ್ಕುರಂ ಮಸೃಣಂ ಸ್ನಿಗ್ಧಮ್” ಅಮಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಣಾ -ಣಾ. ನುಣುಪಾದ ಕೂದಲುಳ್ಳ ಹಸು, ಶೇಷವಾದ ಅಕ್ಕಳ.

ಚಿಕ್ಕುರ ಚಿಕ್ಕುರ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಕ್ಕಮಿಸಲು ಆಸೆ, ಹಿಡಿಯಲು ಇಚ್ಛೆ. ಕ್ರಮಿತುಮಿಚ್ಛಾ ಕ್ರಮು (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ) + ಸನ್ “ಅ:” (೩-೨-೧೦೨) | “ಚಿಕ್ಕುರಸಯಾ ಕೃತ್ರಿಮಪತ್ರಿಪತ್ಕತೇ: ಕಪೋತ-  
ಪಾಲಿಷು ನಿಕೇತನಾನಾಮ್” ಮಾಧಂ ೩-೫೧ |

ಚಿಕ್ಕುರ ಚಿಕ್ಕುರ (ವಿಂ) ಅಕ್ಕಮಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಹಿಡಿಯಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ. ಕ್ರಮಿತುಮಿಚ್ಛು: - ಕ್ರಮು (ಪಾದ-  
ವಿಕ್ಷೇಪ) + ಸನ್ “ಅ:” (೩-೨-೧೦೨) |

ಚಿಕ್ಕುರ ಚಿಕ್ಕುರ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. “ಕ್ರೋಡಿತುಮಿಚ್ಛಾ—ಕ್ರೋಡ (ವಿಹಾರೇ) + ಸನ್ “ಅ:” (೩-೨-೧೦೨) | “ಕ್ರೋಡಾಯಾಮುಚ್ಯಮೋಽರ್ಭಸ್ಯ ಕಾಮಶ್ಚಿಕ್ರೋಡಿಸ್ತಾನತ:” ಭಾಗಂ ೩-೭-೩ |

ಚಿಕ್ಕುರ ಚಿಕ್ಕುರ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಕ್ರೋಡಿತುಮಿಚ್ಛು:—ಕ್ರೋಡ (ವಿಹಾರೇ) + ಸನ್ “ಅ:” (೩-೨-೧೦೨) |

ಚಿಕ್ಕುರ ಚಿಕ್ಕುರ (ಪುಂ) ಅಕ್ಕಮಿಸಲು, ಇಚ್ಛಿಸಲು. “ಅಥ ಚಿಕ್ಕುರ ಸ್ತಾಲಕೋ ರೋಮಶೀತಿ ಚ” ವೈಜಂ |

ಚಿಕ್ಕುರ ಚಿಕ್ಕುರ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಕ್ರೋಡಿತುಮಿಚ್ಛಾ—ಕ್ರೋಡ (ವಿಹಾರೇ) + ಸನ್ “ಅ:” (೩-೨-೧೦೨) |

ಚಿಕ್ಕುರ ಚಿಕ್ಕುರ (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಕ್ರೋಡಿತುಮಿಚ್ಛು:—ಕ್ರೋಡ (ವಿಹಾರೇ) + ಸನ್ “ಅ:” (೩-೨-೧೦೨) |

ಚಿಕ್ಕುರ ಚಿಕ್ಕುರ (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಕ್ರೋಡಿತುಮಿಚ್ಛು:—ಕ್ರೋಡ (ವಿಹಾರೇ) + ಸನ್ “ಅ:” (೩-೨-೧೦೨) |

ಚಿಕ್ಕುರ ಚಿಕ್ಕುರ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಕ್ರೋಡಿತುಮಿಚ್ಛು:—ಕ್ರೋಡ (ವಿಹಾರೇ) + ಸನ್ “ಅ:” (೩-೨-೧೦೨) |

ಚಿಕ್ಕುರ ಚಿಕ್ಕುರ (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಕ್ರೋಡಿತುಮಿಚ್ಛು:—ಕ್ರೋಡ (ವಿಹಾರೇ) + ಸನ್ “ಅ:” (೩-೨-೧೦೨) |

ಚಿಕ್ಕುರ ಚಿಕ್ಕುರ (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಕ್ರೋಡಿತುಮಿಚ್ಛು:—ಕ್ರೋಡ (ವಿಹಾರೇ) + ಸನ್ “ಅ:” (೩-೨-೧೦೨) |

ಚಿಕ್ಕುರ ಚಿಕ್ಕುರ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಕ್ರೋಡಿತುಮಿಚ್ಛು:—ಕ್ರೋಡ (ವಿಹಾರೇ) + ಸನ್ “ಅ:” (೩-೨-೧೦೨) |

ಚಿಕ್ಕುರ ಚಿಕ್ಕುರ (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಕ್ರೋಡಿತುಮಿಚ್ಛು:—ಕ್ರೋಡ (ವಿಹಾರೇ) + ಸನ್ “ಅ:” (೩-೨-೧೦೨) |

ಚಿಕ್ಕುರ ಚಿಕ್ಕುರ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಕ್ರೋಡಿತುಮಿಚ್ಛು:—ಕ್ರೋಡ (ವಿಹಾರೇ) + ಸನ್ “ಅ:” (೩-೨-೧೦೨) |

ಚಿಜ್-ಚಯನೆ (ಸ್ವಾಂ ತಂ ದ್ವಿಂ ಅನಿಂ) | ಚಿ ಿತಿ ಚಿನ್ತುತ: ಚಿನ್ವಂತಿ | ಚಿನ್ತುತೇ ಚಿನ್ವಂತಿ ಚಿನ್ವಂತಿ | ವಾ ಕೃತ್ವಮ್-  
ಚಿಕಾಯ ಚಿಕಯತು: ಚಿಕಯು: | ಪಕ್ಷೇ ಚಿಚಾಯ ಚಿಚಯತು: |  
ಚಿಕ್ಯೇ. ಚಿಕ್ಯೇ | ಚೇತಾ | ಚೇಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ಚಿನೋತು,  
ಚಿನುತಾಮ್ | ಅಚಿನೋತು, ಅಚಿನುತ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಸೇವಿಸಿದಂ,  
ಶೇಖರಿಸಿದಂ, ಸಂಗ್ರಹಿಸು.

ಕರ್ಮಣಿ:—ಚೀಯತೇ | ಚಿಕ್ಯೇ, ಚಿಕ್ಯೇ | ಚಾಯಿತಾ |  
ಚಾಯಿಷ್ಯತೇ, ಚೇಷ್ಯತೇ | ಚೀಯತಾಮ್ | ಅಚೀಯತ | ಚೀಯತ |  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ:—ಚಿಕೀಷತಿ, -ತೇ | ಚಿಚೀಷತಿ, -ತೇ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:—ಚೇತವ್ಯ: | ಚಯನೀಯ: | ಚೇಯ: | ನಿವಾಸೇ ಸಂಚಾಯ: |  
ಅಗನೌ ಉಪಚಾಯ:; ಪರಿಚಾಯ: | ಚಿತ: | ಚಿತವಾನ್ |  
ಚಿನ್ವನ್, ಚಿನ್ವಂತಿ | ಚಿನ್ವಾನ್ | ಚೇತುಮ್ | ಚಿತಮ್ | ಚಯನಮ್ |  
ಚಿತ್ವಾ | ವಿಚಿತ್ಯ |



ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಅಪ + ಚಿನ್ = ಅಪಚಿನೋತಿ। ಅಪಚಯ:। ಅಪ-ಚೀಯತೇ। ಕಡಮೆಯಾಗು.

(2) ಅವ + ಚಿನ್ = ಅವಚಿನೋತಿ। ಅವಚಯ:। ಕೆಳಗೆ ನಿಂತು ಕೀಳು. "ಫಲಾನ್ಯವಾಚಿನೋತ್"। "ಅವಚಿತಬಲಿಪುಷಾ ವೇದಿಸಮಾಗದಕ್ಷಾ ನಿಯಮವಿಧಿಜಲಾನಾಂ ಬಹಿಷಾಂ ಚೋಪನೆಶ್ರೀ" ಕುಮಾಂ ೧-೬೦।

(3) ಆ + ಚಿನ್ = ಆಚಿನುತೇ। 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸಂಗ್ರಹಿಸು. "ಯದಾಕ್ಷೇಶ್ವರಿತಾನ್ ಧ್ಯಾಯನ್ ಕರ್ಮಣ್ಯಾಚಿನುತೇಷಕತ್" ಭಾಗಂ ೪-೨೯-೭೮। 2. ವ್ಯಾಪಿಸು, ಹರಡು. "ವನಾಂತ-ಶಯ್ಯಾಕಠಿನೀಕೃತಾಕೃತೀ ಕಚಾಚಿತೌ ವಿಷ್ವಗಿವಾಗಜೌ ಗಜೌ" ಕಿರಾಂ ೧-೩೬।

(4) ಅನು + ಆ + ಚಿನ್ = ಅನ್ವಾಚಿನುತೇ। ಅನ್ವಾಚಯ:। ಪ್ರಧಾನಕಾರ್ಯದೊಡನೆ ಗೌಣಕಾರ್ಯವನ್ನು ಹೇಳು. "ಅನ್ಯತರಸ್ಯಾನುಪಜ್ಞಿಕತ್ವೇನ್ವಾಚಯ:"। ["ಚ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

(5) ಸಮ್ + ಆ + ಚಿನ್ = ಸಮಾಚಿನೋತಿ। ಸಮಾಚಿತ:। ಒಟ್ಟುಗೂಡು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರು. "ಯದಾ ತು ವಾಸಸಾಂ ರಾಶಿ: ಸಭಾಮಧ್ಯೇ ಸಮಾಚಿತ:" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೯೦-೪೩।

(6) उद् + ಚಿನ್ = उच्चिनोति। उच्चय:। ಮೇಲೆ ನಿಂದ ಕೀಳು. "उच्चिक्रियरे पुष्पफलं वनानि" भट्टिಂ ೩-೩೮।

(7) अभि + उद् + ಚಿನ್ = अभ्युच्चय:। ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದು, ಹೆಚ್ಚಾಗು.

(8) सम् + उद् + ಚಿನ್ = समुच्चिनोति। समुच्चय:। ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸು.

(9) उप + ಚಿನ್ = उपचिनोति। उपचय:। ಹೆಚ್ಚಾಗು, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದು, ಬೆಳೆ, ದೊಡ್ಡದಾಗು. "त्रयः परार्थे क्लिश्यन्ति साक्षिणः प्रतिभूः कुलम्। चत्वारस्तूपचीयन्ते विप्र आढयो वणिङ् नृपः" मनु ೮-೧೬೯।

(10) नि + ಚಿನ್ = निचय:। 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತುಂಬು, "रथः शरैर्मै निचित:"। 2. ಶೇಖರಿಸಿಡು.

(11) परि + ಚಿನ್ = परिचिनोति। परिचय:। ಪದೇ ಪದೇ ಪರಿಶೀಲಿಸು, ಅಭ್ಯಾಸಮಾಡು. "हेतुः परिचयस्थैर्यै वक्तुर्गुणनिकैव सा" माष ೨-೭೫।

(12) प्र + ಚಿನ್ = प्रचिनोति। प्रचय:। 1. ಬೆಳೆ ವಣಿಗೆ ಹೊಂದು, ವೃದ್ಧಿಯಾಗು, ಹೆಚ್ಚಾಗು. 2. ಸೇರಿಸು, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸು, ರಾಶಿಹಾಕು. "प्र" ಉಪಸರ್ಗವು

ಸೇರಿದಾಗ "ಚಿನ್" ಧಾತುವಿಗೆ ಕೈಯಿಂದ ಹಣ್ಣು ಹೂವು ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಕೀಳುವುದು ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ "घञ्" (೩-೩-೪೦) ಪ್ರತ್ಯಯವು ಬಂದು ಪುಷ್ಪಪ್ರಚಯ: ಎಂದಾಗುವುದು. ವೃಕ್ಷದ ಮೇಲಿರುವ ಹಣ್ಣು ಹೂವು ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಕೋಲಿನಿಂದ ಕೀಳುವುದು ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿಯೂ ಕಳ್ಳತನದಿಂದ ಕೀಳುವುದು ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿಯೂ यष्ट्या फलानां प्रचयं करोति चायैण पुष्पप्रचयं करोति ಎಂಬ ರೂಪವಾಗುವುದು.

चिञ्चा ಚಿಂಚಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹುಣಿಸೆಮರ. ಚಿಮಿತೃವ್ಯಕ್ತಂ ಶಬ್ದ ಚಿನೋತಿ — ಚಿನ್ (ಚಯನೇ) "डः" (೩-೨-೧೦೧)। 2. ಹುಣಿಸೆಹಣ್ಣು. ಚಿಂಚಾಯಾ: ಫಲಮ್ "अण्" (೪-೩-೧೬೪)। ಲುಪ್ (೪-೩-೧೬೭)।

चिञ्चाम्ल ಚಿಂಚಾಮ್ಲ (ಪುಂ) ಪುಲ್ಲಂಪುರಿಚಿ ಗಿಡ. ಚಿಂಚೇ-ವಾಮ್ಲ:।

चिञ्चासार ಚಿಂಚಾಸಾರ (ಪುಂ) ಪುಲ್ಲಂಪುರಿಚಿ ಗಿಡ; ಚಿಂಚಾಯಾ ಇವ ಸಾರೋಷ್ಯ।

चिट - परप्रेष्ये (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ)। ಚೆಟತಿ। ಚಿಚೆಟ। ಚೆಟಿತಾ। ಚೆಟಿಷ್ಯತಿ। ಚೆಟತು। ಅಚೆಟತ್। ಇತ್ಯಾದಿ. ಇತರರಿಗೆ ದೂತನಾಗು, ದಾಸನಾಗು, ಸೇವಕನಾಗು.

भावे:—चिटयते चिचिटे। चेटिता। चिटयताम्। ಇತ್ಯಾದಿ.

णिचि:—चेटयति, -ते। चेटयां चकार, -चक्रे, -बभूव, -आस। चेटयिता। चेटयिष्यति, -ते। चेटयतु, -ताम्। ಇತ್ಯಾದಿ.

कृत्तु:—चेटितव्यः। चेटनीयः। चेटयः। चिटितः। चिटितवान्। चेटन्, चेटन्ती। चेटितुम्। चिटितम्। चेटनम्। चेटित्वा। विचिटय।

चित् ಚಿತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜ್ಞಾನ, ಬುದ್ಧಿ. ಚಿತ್ತಿ (ಸಂಜ್ಞಾನೇ) "क्विप्" (ವಾಂ ೩-೩-೯೪)। 2. ಜೈತನ್ಯ. 3. ಆತ್ಮ, ಜೀವ. (ವಿಂ) 4. ಸೇರಿಸಿಡುವವನು. 5. ವೃದ್ಧಿ ಪಡಿಸುವವನು, ಬೆಳೆಸುವವನು.

चित् ಚಿತ್ (ವಿಂ) 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೆಳೆಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಚಿನ್ (ಚಯನೇ) "क्तः" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ರಾಶಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸೇರಿಸಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೂಡಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಆವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಸಂಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "तद्यथेह कर्मचितो लोकः क्षीयते एवममुत्र पुण्यचितो लोकः क्षीयते"।



चित्तहारिन् ಚಿತ್ತಕಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಮನೋಹರವಾದ,  
ಮನಸ್ಸನ್ನು ಆರಕ್ಷಿಸುವ, ಸುಂದರವಾದ. ಚಿತ್ತಂ ಹರತಿ—  
ಹೃ (ಹರಣೇ) “ಣಿನಿ:” (೩-೨-೭೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್”  
(೪-೧-೪)॥ —ಹಾರಿಣಿ—ಕಾರಿಣೀ.



ಚಿತ್ತಾಕರ್ಷಕ ಚಿತ್ರಕರ್ಷಕ (ವಿಂ) ಮನಸ್ಸನ್ನು ಎಳೆಯುವ. ಚಿತ್ತಮಾಕರ್ಷತಿ-ಆ+ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಫ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಚಿತ್ತಾಕರ್ಷಣ ಚಿತ್ರಕರ್ಷಣ (ನಂ) ಮನಸ್ಸನ್ನು ಎಳೆಯುವುದು. ಚಿತ್ತಸ್ಯಾಕರ್ಷಣಮ್।

ಚಿತ್ತಾನುವರ್ತನ ಚಿತ್ರಾನುವರ್ತನ (ನಂ) ಇತರರ ಮನಸ್ಸಿನಂತೆ ನಡೆಯುವುದು.

ಚಿತ್ತಾನುವರ್ತಿನ ಚಿತ್ರಾನುವರ್ತಿನ (ವಿಂ) ಇತರರ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯುವ, ಇತರರ ಅಪೇಕ್ಷೆಯಂತೆ ಕೆಲಸಮಾಡುವ. ಚಿತ್ತಮ್ ಅನುವರ್ತತೇ-ಅನು+ವೃತ್ತ (ವರ್ತನೆ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೫)। -ಅನುವರ್ತಿನಿ -ಅನುವರ್ತಿನೀ.

ಚಿತ್ತಾನುವೃತ್ತಿ ಚಿತ್ರಾನುವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇತರರ ಮನಸ್ಸಿನಂತೆ ನಡೆಯುವುದು, ಇತರರ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಕೆಲಸಮಾಡುವುದು. ಚಿತ್ತಸ್ಯ ಅನುವೃತ್ತಿಃ। "ಸವ್ಯಾಜೈಃ ಶಪಥೈಃ ಪ್ರಿಯೇಣ ವಚಸಾ ಚಿತ್ತಾನುವೃತ್ತ್ಯಾಧಿಕಂ ವೈಲಕ್ಷಣ್ಯೇಣ ಪರೇಣ ಪಾದಪತನೈವೈಕೈಃ ಸಖಿನಾಂ ಮುಹುಃ" ರತ್ನಾಂ ೪-೧।

ಚಿತ್ತಾಪಹಾರಕ ಚಿತ್ರಾಪಹಾರಕ, -ಅಪಹಾರಿನ್ -ಅಪಹಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಮನಸ್ಸನ್ನು ಅಪಹರಿಸುವ, ಮನಸ್ಸನ್ನು ಸೆಳೆಯುವ. ಚಿತ್ತ + ಅಪ + ಹೃ (ಹರಣೆ) "ಫ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮) ವಾ।

ಚಿತ್ತಾಭೋಗ ಚಿತ್ರಾಭೋಗ (ಪುಂ) ಮನಸ್ಸಿನ ಏಕಾಗ್ರತೆ, ಮನಸ್ಸು ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತವಾಗಿರುವುದು. ಚಿತ್ತಸ್ಯ ಆಭೋಗಃ ತದೇಕಪ್ರವಣತಾ। "ಚಿತ್ತಾಭೋಗೋ ಮನಸ್ಕಾರಃ" ಅಮಂ।

ಚಿತ್ತಾಪಿತ ಚಿತ್ರಾಪಿತ (ವಿಂ) ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಚಿತ್ತೇ ಅಪಿತಃ। "ವಿಭೇಮಿ ಚಿಂತಾಮಪಿ ಕರ್ತುಮಿಡೃಶಿಂ ಚಿರಾಯ ಚಿತ್ತಾಪಿತನೈಷಧೇಶ್ವರಾ" ನೈಷಂ ೯-೩೧।

ಚಿತ್ತಾಸಂಘ ಚಿತ್ರಾಸಂಘ (ಪುಂ) ಪ್ರೇಮ, ಪ್ರೀತಿ, ಅಕ್ಕರೆ.

ಚಿತ್ತಿ ಚಿತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಜ್ಞೆ, ಬುದ್ಧಿ. ಚಿತ್ತಿ (ಸಂಜ್ಞಾನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। 2. ಭಕ್ತಿ, ಶ್ರದ್ಧೆ. 3. ಉದ್ದೇಶ. 4. ಕೀರ್ತಿ, ಯಶಸ್ಸು.

ಚಿತ್ತೋನ್ನತಿ ಚಿತ್ತೋನ್ನತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಭಿಮಾನ, ಆತ್ಮಗೌರವ. 2. ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ. ಚಿತ್ತಸ್ಯ ಉನ್ನತಿಃ। "ದರ್ಪೋಽಭಿಮಾನೋ ಮಮತಾ ಮಾನಶ್ಚಿತ್ತೋನ್ನತಿಃ ಸಮಯಃ" ಅಭಿಂ ವಿಂ।

ಚಿತ್ಯ ಚಿತ್ಯ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ. ಬೆಂಕಿ. ಚೀಯತೇ-ಚಿ (ಚಯನೆ) "ಫ್ಯತ್" (೩-೧-೧೩೨)। ನಿಪಾಂ।

ಚಿತ್ರ-ಚಿತ್ರಿಕರಣೆ (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಚಿತ್ರಯತಿ, -ತೇ। ಅಚಿಚಿತ್ರತ್, -ತ।

ಚಿತ್ರ ಚಿತ್ರ (ನಂ) 1. ಅಲೆಖ್ಯ, ಡಟ, ನಕ್ಷೆ. ಚಿತ್ (ಚಯನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩ಂ ೪-೧೬೩)। "ಚಿತ್ರೇ ನಿವೇಶ್ಯ ಪರಿಕಲ್ಪಿತ-ಸತ್ವಯೋಗಾ ರೂಪೋನ್ವಯೇನ ಮನಸಾ ವಿಧಿನಾ ಕೃತಾ ನು" ಶಾಕುಂ ೨-೯। 2. ಆಶ್ಚರ್ಯ, ಅದ್ಭುತ. "ಚಿತ್ರಂ ದಿದರ್ಶಯಿಷುಣಾ ಜನಿತಸ್ಯ ಯಸ್ಯಾಮ್" ಚಂ ಭಾಂ। 3. ಚಿತ್ರವರ್ಣ. 4. ತಿಲಕ. 5. ಗಗನ, ಆಕಾಶ. "ಚಿತ್ರಂ ಸ್ಯಾದ್ಭೂತಾಲೇಖ್ಯತೀಲಕೇಷು ವಿಹಾಯಸಿ" ವಿಶ್ವಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ)-ತ್ರಾ-ತ್ಯಾ. 6. ಆಮಿಷವರ್ಣಗಿಡ, ಇಲಿಯಾಲದ ಗಿಡ. 7. ಬುಡುಮೆ ಗಿಡ. 8. ಸುಭದ್ರೆ, ಅರ್ಜುನನ ಪತ್ನಿ. 9. ಅಶ್ವಿನೀ ಮೊದಲಾಗಿ 14 ನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ, ಚಿತ್ರಾ ನಕ್ಷತ್ರ. "ಹಿಮನಿರ್ಮುಕ್ತಯೋಗೇ ಚಿತ್ರಾಚಂದ್ರಮಸೋರಿವ" ರಘುಂ ೧-೪೬। 10. ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸು. 11. ಒಂದು ಸರ್ಪ. 12. ದಂತೀವೃಕ್ಷ. "ಚಿತ್ರಾಕ್ಷುರ್ಣಿಗೋತುಂಬಾಸುಭದ್ರಾದಂತಿಕಾಸು ಚ। ಋಕ್ಷಾಪ್ಸರೋಽಹಿ-ಭೇದೇ ಕುಬೇರೇ ಚಾಭಿಧೇಯವತ್" ವಿಶ್ವಂ। (ವಿಂ) 13. ಆಶ್ಚರ್ಯಕರವಾದ. "ಚಿತ್ರಂ ಚರಿತ್ರಂ ಜಗತೀತಿ ತಸ್ಯ ನ ಶ್ಲಾಘಯಾಮಾಸ ನರೇಷು ಕೋ ವಾ" ಚಂ ಭಾಂ। 14. ಚಿತ್ರವರ್ಣದ, ನಾನಾವರ್ಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಕುರ್ವನ್ತಾನಾ-ಕುಸುಮರಜಸಾ ಯತ್ರ ಚಿತ್ರಂ ವಿತಾನಮ್" ಹಂಸಂ ೧-೪೧। (ಪುಂ) 15. ಎರಡವೃಕ್ಷ, ಹರಳುಗಿಡ. 16. ಅಶೋಕವೃಕ್ಷ.

ಚಿತ್ರಕ ಚಿತ್ರಕ (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಾಘ್ರ, ಹುಲಿ. 2. ಚಿರತೆ, ಕಿರುಬ. ಚಿತ್ರೇಣ ಕಾಯತಿ -ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೪)। 3. ಚಿತ್ರಗಾರ, ಚಿತ್ರಬರೆಯುವವನು. 4. ಹರಳುಗಿಡ. 5. ಬೇಟೆಗಾರ. 6. ಚಿತ್ರಮೂಲದ ಗಿಡ. (ನಂ) 7. ತಿಲಕ, ಹಣೆಯಲ್ಲಿಡುವ ಕುಂಕುಮದ ಬೊಟ್ಟು ಮೊದಲಾದುದು. "ಚಿತ್ರಕಂ ತಿಲಕೇ ನಾ ತು ವ್ಯಾಘ್ರೇ ವಹ್ನಿಚಾಪ್ಯಭೇಷಜೇ। ಉರಣ್ಡೆ" ನಾನಾರ್ಥರಂ।

ಚಿತ್ರಕಂಠ ಚಿತ್ರಕಂಠ (ಪುಂ) ಪಾರಾವತ, ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ. ಚಿತ್ರಃ ಕಂಠೋಽಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೬೩)। -ಕಂಠಿ -ಕಂಠೀ.

ಚಿತ್ರಕರ ಚಿತ್ರಕರ (ಪುಂ) ಚಿತ್ರಗಾರ, ಚಿತ್ರಗಳನ್ನು ಬರೆದು ಬಣ್ಣ ಹಾಕುವವನು. ಚಿತ್ರಂ ಕರೋತಿ -ಕೃತ್ "ಕಃ" (೩-೨-೨೧)।

ಚಿತ್ರಕರ್ಮನ್ ಚಿತ್ರಕರ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ಅದ್ಭುತವಾದ ಕಾರ್ಯ, ಆಶ್ಚರ್ಯಕರವಾದ ಕೆಲಸ. ಚಿತ್ರಂ ಕರ್ಮಂ। 2. ಚಿತ್ರದ ಕೆಲಸ, ಚಿತ್ರ ಬರೆಯುವುದು, ಶಿಲ್ಪ. "ಆಕಾಶೇ ರಚಿತಮಭಿತಿ ಚಿತ್ರಕರ್ಮ" ಮಾಧಂ ೪-೫೩।



(ವಿಂ) 3. ಅನೇಕವಿಧ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡುವವನು.

"ನೇತ್ರ ಪ್ರಿಯಸಂವಾಸಃ ಸುಹೃದಾಂ ಚಿತ್ರಕರ್ಮಣಾಮ್" ಭಾಗಂ ೧೦-೪-೨೪। 4. ಅದ್ಭುತವಾದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಿ

ತೋರಿಸುವ ಯಕ್ಷಿಣಿಯವನು, ಗಾರುಡಿಗ, ಐಂದ್ರಜಾಲಿಕೆ.

ಚಿತ್ರಕಾಯ ಚಿತ್ರಕಾಯ (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಾಪ್ತ, ಹುಲಿ.

2. ಚಿರತೆ, ಕಿರುಬ. ಚಿತ್ರ: ಕಾಯೋಸ್ಯ।

ಚಿತ್ರಕಾರ ಚಿತ್ರಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಚಿತ್ರವನ್ನು ಬರೆಯುವವನು,

ಚಿತ್ರದ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು, ಬಣ್ಣ ಹಾಕುವವನು. ಚಿತ್ರ

ಕರೋತಿ-ಕೃತ್ "ಅಣ್" (೩-೨-೧)। 2. ಒಬ್ಬ ಸಂಕೀರ್ಣ

ಜಾತಿಯವನು. "ಸ್ವಪತೇರಪಿ ಗಾಂಧೀಯಾಂ ಚಿತ್ರಕಾರೋ-

ಪ್ಯಜಾಯತ" ಪರಾಶರಃ। (ವಿಂ) 3. ಅಶ್ಚರ್ಯವನ್ನುಂಟು

ಮಾಡುವವನು.

ಚಿತ್ರಕುಂಡಲ ಚಿತ್ರಕುಂಡಲ (ಪುಂ) ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ

ಮಗ. "ಅಯೋವಾಹುರ್ಮಹಾಬಾಹುಶ್ಚಿತ್ರಾಕ್ಷಶ್ಚಿತ್ರಕುಂಡಲಃ" ಭಾಂ

ಆದಿಂ ೧೩೧-೬।

ಚಿತ್ರಕುಠ ಚಿತ್ರಕುಠ (ನಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಕುಷ್ಮರೋಗ.

ಚಿತ್ರಕೂಟ ಚಿತ್ರಕೂಟ (ಪುಂ) ಒಂದು ಪರ್ವತ, ಶ್ರೀರಾಮನು

ವನವಾಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಒಂದು ಬೆಟ್ಟ.

ಚಿತ್ರ ಕೂಟ ಶೃಂಗಮಸ್ಯ। ಈ ಪರ್ವತವು ಪ್ರಯಾಗಕ್ಷೇತ್ರಕ್ಕೆ

ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಭರದ್ವಾಜಮಹರ್ಷಿಯ ಅಶ್ರಮಕ್ಕೆ

ದಕ್ಷಿಣದಲ್ಲಿರುವುದು. ಭರದ್ವಾಜರು, ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು

ಹುಡುಕಿಕೊಂಡು ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಹೋಗಿದ್ದ ಭರತನಿಗೆ ಈ

ಪರ್ವತದ ಮಾರ್ಗದರ್ಶನ ಮಾಡಿದರು. "ಭರತಾಥ-

ತೃತೀಯೇಷು ಯೋಜನೇಷ್ವಜನೇ ವನೇ। ಚಿತ್ರಕೂಟೋ ಗಿರಿಸ್ತತ್ರ ರಮ್ಯ-

ನಿರ್ಜೀರಕಾನನಃ। उत्तरं पार्श्वमासाद्य तस्य मन्दाकिनी

नदी। पुष्पितद्रुमसंछन्ना रम्यपुष्पितकानना। अनन्तरं

तत्सरितश्चित्रकूटश्च पर्वतः। तयोः पर्णकुटी तात तत्र

तौ वसतो ध्रुवम्" ರಾಮಾಂ। "ಭರದ್ವಾಜಶಾಸನಪರಿಗೃಹಿತ-

ವಿಚಿತ್ರಚಿತ್ರಕೂಟಗಿರಿಕಟಕತಟರಮ್ಯಾವಸಥ" ರಘುಂ ಗಂ।

ಚಿತ್ರಕೃತ್ ಚಿತ್ರಕೃತ್ (ಪುಂ) "ಚಿತ್ರಕಾರ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

(ವಿಂ) ಅಶ್ಚರ್ಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.

ಚಿತ್ರಕೇತು ಚಿತ್ರಕೇತು (ಪುಂ) 1. ಗರುಡಂತನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

"ಸುಮುಖಶ್ಚಿತ್ರಕೇತುಶ್ಚ ಚಿತ್ರಬಹಸ್ತಥಾಜನಲಃ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ

೧೦೧-೧೨। 2. ಸ್ವಾಯಂಭುವ ಮನ್ವಂತರದಲ್ಲಿ ಊರ್ಜ್ವ

ಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ವಸಿಷ್ಠರ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಋಜಾಂ ಜಗ್ನಿರೇ

ಪುತ್ರಾಃ ವಸಿಷ್ಠಸ್ಯ ಪರಂತಪಃ। ಚಿತ್ರಕೇತುಪ್ರಧಾನಾಸ್ತೇ ಸಪ್ತ

ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಯೋಽಮಲಾಃ। ಚಿತ್ರಕೇತುಃ ಸುರೋಚಿಶ್ಚ ವಿರಜಾ ಮಿತ್ರ ಏವ

ಚ। उल्वणो वसुभृद्यानो द्युमान्शतयादयोऽपरे" ಭಾಗಂ

೪-೧-೪೦, ೪೧। 3. ಶೂರಸೇನ ದೇಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ.

"ಆಸೀದ್ರಾಜಾ ಸಾರ್ವಭೌಮಃ ಶೂರಸೇನೇಷು ವೈ ನೃಪಃ। ಚಿತ್ರಕೇತುರೀತಿ

ಸ್ಯಾತೋ ಯಸ್ಯಾಸೀತ್ ಕಾಮಧುಕ್ ಮಹೀ" ಭಾಗಂ ೬-೧೪-೧೦।

ಚಿತ್ರಗ ಚಿತ್ರಗ, -ಗತ-ಗತ (ವಿಂ) ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿರುವ, ಚಿತ್ರ

ದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. ಚಿತ್ರಂ ಗಚ್ಛತಿ -ಚಿತ್ರ+ಗಚ್ಛ

(ಗತೌ) "ಙ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)। ಚಿತ್ರಂ ಗತೌ ವಾ।

ಚಿತ್ರಗುಪ್ತ ಚಿತ್ರಗುಪ್ತ (ಪುಂ) 1. ಯಮಧರ್ಮರಾಯನ

ಒಬ್ಬ ಕಿಂಕರ. ಈತನು ಮನುಷ್ಯನು ಮಾಡುವ ಪಾಪಪುಣ್ಯ

ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಬರೆದಿಡಲು ಯಮನಿಂದ ನಿಯುಕ್ತನಾಗಿರು

ವನು. ಚಿತ್ರಗುಪ್ತನು ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ.

ಇವನು ಸೂರ್ಯನ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ಸರ್ವಜ್ಞನಾಗಿದ್ದನು.

ಈ ಕಾರಣದಿಂದ ಯಮಧರ್ಮರಾಯನು ಪ್ರಾಣಿಗಳ

ಶುಭಾಶುಭಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಬರೆಯುತ್ತಿರಬೇಕೆಂದು ನಿಯಮಿ

ಸಿದನು. "ನಾಮಾನ್ಯೇಷಾಂ ಲಿಖಾಮಿ ಧ್ರುವಮಹಮಧುನಾ ಚಿತ್ರಗುಪ್ತಃ

ಪ್ರಮಾಣ್ಢ್" ಮುದ್ರಾಂ ೧-೨೦। 2. ಯಮಧರ್ಮರಾಯ.

"ಚಿತ್ರಗುಪ್ತಸ್ತು ಪುಂಸಿ ಸ್ಯಾತ್ ಯಮೇ ತಸ್ಯ ಚ ಲೇಖಕೇ" ಮೇದಿಂ।

ಚಿತ್ರಗ್ರೀವ ಚಿತ್ರಗ್ರೀವ (ಪುಂ) ಪಂಚತಂತ್ರದಲ್ಲಿ ಬರುವ

ಒಂದು ಕಪೋತ ರಾಜ.

ಚಿತ್ರಜಲ್ಪ ಚಿತ್ರಜಲ್ಪ (ಪುಂ) ನಾನಾ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಆಡುವ

ಮಾತು.

ಚಿತ್ರಜ ಚಿತ್ರಜ್ಞ (ವಿಂ) 1. ಚಿತ್ರಕಾವ್ಯಗಳನ್ನು ಬರೆಯಲು

ಬಲ್ಲವನು. ಚಿತ್ರಂ ಚಿತ್ರಕಾವ್ಯಂ ಜಾನಾತಿ-ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೇ)

"ಕ:" (೩-೨-೩)।

ಚಿತ್ರತಂಡುಲಾ ಚಿತ್ರತಂಡುಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾಯುವಿಳಂಗೆ.

ಚಿತ್ರತಂಡುಲೋಽಸ್ಯಾಃ।

ಚಿತ್ರತುಲಿಕಾ ಚಿತ್ರತುಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಿತ್ರಬರೆಯುವ

ಕುಂಚ.

ಚಿತ್ರದಂಡಕ ಚಿತ್ರದಂಡಕ (ಪುಂ) 1. ಸೂರಣಗಡ್ಡೆ. ಚಿತ್ರೋ

ದಂಡಃ ಕಾಣಡೋಽಸ್ಯ। 2. ಹತ್ತಿ ಗಿಡ.

ಚಿತ್ರನೇತ್ರಾ ಚಿತ್ರನೇತ್ರಾ, -ಲೋಚನಾ-ಲೋಚನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)

ಶಾರಿಕಾಪಕ್ಷಿ. ಚಿತ್ರಂ ನೇತ್ರಂ ಯಸ್ಯಾಃ। ಚಿತ್ರಂ ಲೋಚನಂ ಯಸ್ಯಾ ವಾ।

ಚಿತ್ರನೃಪ ಚಿತ್ರನೃಪ (ವಿಂ) ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಿತ್ರ

ದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಚಿತ್ರೇ ನೃಪಃ। "ಚಿತ್ರನೃಪಃ ಇವ ಗತಾಃ

ಪ್ರಕಾಮಾಲೋಕನೀಯತಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೨-೨೪।

ಚಿತ್ರಪಕ್ಷ ಚಿತ್ರಪಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ತಿತ್ತಿರಿಪಕ್ಷಿ. 2. ಒಂದು

ಜಾತಿಯ ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ. ಚಿತ್ರೋ ಪಕ್ಷಾವಸ್ಯ।

ಚಿತ್ರಪಟ ಚಿತ್ರಪಟ (ಪುಂ) 1. ಚಿತ್ರ ಬರೆಯುವ ವಸ್ತ್ರ.

2. ವಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಬರೆದಿರುವ ಚಿತ್ರ. 3. ಬಣ್ಣ ಬಣ್ಣದ ವಸ್ತ್ರ.



ಚಿತ್ರಪತ್ರಕ ಚಿತ್ರಪತ್ರಕ (ಪುಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಚಿತ್ರ  
ಪತ್ರ ಪಕ್ಷೋಽಸ್ಯ ವಾ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೪೪)। "ವರ್ಷಮಿದ-  
ಶಿಸ್ತೀ ಕೇಕಿ ಶಿಷ್ಣು ಚಿತ್ರಪತ್ರಕಃ" ವೈಜಂ।

ಚಿತ್ರಪತ್ರಿಕಾ ಚಿತ್ರಪತ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಿತ್ರಪರ್ಣಿಗಿಡ,  
ನರಿಹೊನ್ನೆಗಿಡ. ಚಿತ್ರ ಪತ್ರ ಪರ್ಣಿಽಸ್ಯಾಃ ವಾ "ಕಪ್"  
(೪-೪-೧೪೪)।

ಚಿತ್ರಪಥಾ ಚಿತ್ರಪಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಭಾಸಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿರುವ  
ಒಂದು ನದಿ. "ತತೋ ಗಚ್ಛೇನ್ಮಹಾದೇವಿ ನದೀಂ ಚಿತ್ರಪಥಾಂ  
ಶುಭಾಮ್। ಬ್ರಹ್ಮಕುಂಡಸಮೀಪಸ್ಥಾಂ ಚಿತ್ರಾದಿತೃಸ್ಯ ಮಧ್ಯತಃ"  
ಸ್ಕಾಂದಂ।

ಚಿತ್ರಪದ ಚಿತ್ರಪದ (ವಿಂ) 1. ಆಶ್ಚರ್ಯಕರವಾದ ಪದ  
ಗಳುಳ್ಳ ವಾಕ್ಯ. ಚಿತ್ರಾಣಿ ಪದಾನಿ ಯತ್ರ। "ವಲ್ಗು ಚಿತ್ರಪದಂ  
ಶ್ಲಕ್ಷಣಂ ಯಾಜ್ಞಸೇನಿ ತ್ವಯಾ ವಚಃ" ಭಾಂ ವನಂ ೩೧-೧।  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪದಾ -ಪದಾ. 2. ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರೋಕ್ತವಾದ  
ಎಂಟನೆಯ ಭಂದಸ್ಥಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣಃ  
"ಭೌಗಿತಿ ಚಿತ್ರಪದಾ ಗಃ" ವೃಂ ೨೦। ಭಗಣದ್ವಯ  
ಮತ್ತು ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಗುರುದ್ವಯ ಪ್ರತಿಪಾದಗಳಲ್ಲಿಯೂ  
ಇರುವುದು "ಚಿತ್ರಪದಾ" ವೃತ್ತವಾಗುವುದು. ಇದರ  
ಗಣವಿನ್ಯಾಸಃ

ಭ ಭ ಗು ಗು  
೦|| ೦|| ೦ ೦

ಚಿತ್ರಪರ್ಣಿ ಚಿತ್ರಪರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನರಿಹೊನ್ನೆಗಿಡ.  
ಚಿತ್ರಾಣಿ ಪರ್ಣಿಽಸ್ಯಾಃ। "ಪೃಥಿವಿಪರ್ಣಿ ಪೃಥಿವಿಪರ್ಣಿ ಚಿತ್ರಪರ್ಣಿ-  
ಙ್ಗಿಪರ್ಣಿಕಾ" ಅಮಂ। 2. ನೀರು ಹಿಪ್ಪಲಿ. 3. ಮಂಜಿಷ್ಠ.

ಚಿತ್ರಪಿಚ್ಛ ಚಿತ್ರಪಿಚ್ಛ (ಪುಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು.

ಚಿತ್ರಪುಷ್ಪ ಚಿತ್ರಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) ಬಾಣ. ಚಿತ್ರಃ ಪುಷ್ಪೋಽಸ್ಯ।

ಚಿತ್ರಪುಷ್ಪ ಚಿತ್ರಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) ಚಟಕ, ಗುಬ್ಬಿಚ್ಛಿ. ಚಿತ್ರ  
ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ। "ಕಲವಿಜ್ಞಾಶ್ಚಿತ್ರಪುಷ್ಪೋ ಗೃಹ್ಣೀತೋ ವೃಷಾಯಣಃ"  
ಹಾರಾಂ।

ಚಿತ್ರಫಲ ಚಿತ್ರಫಲ (ಪುಂ) ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. ಚಿತ್ರಂ ಫಲಂ  
ಫಲಕಮಿವಾಕಾರೋಽಸ್ಯಸ್ಯ।

ಚಿತ್ರಫಲಕ ಚಿತ್ರಫಲಕ (ನಂ) ಚಿತ್ರವನ್ನು ಬರೆಯುವ  
ಹಲಗೆ.

ಚಿತ್ರಫಲಾ ಚಿತ್ರಫಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಇಂದ್ರ ವಾರುಣಿಗಿಡ,  
ಹಾವುಮೆಕ್ಕಿಗಿಡ. 2. ಹೆಗ್ಗುಳ್ಳದಿಗಿಡ. 3. ಬದನೆಯಿಗಿಡ.

ಚಿತ್ರಬಹ್ ಚಿತ್ರಬಹ್ (ಪುಂ) 1. ಮಯೂರ, ನವಿಲು.  
ಚಿತ್ರಾ ಬಹ್ ಯಸ್ಯ। 2. ಗರುಡಂತನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಸುಮುಖ-  
ಶ್ಚಿತ್ರಕೇತುಶ್ಚ ಚಿತ್ರಬಹ್ಸ್ತಥಾಜಲಃ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೦೧-೧೨।

ಚಿತ್ರಭಾನು ಚಿತ್ರಭಾನು (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಚಿತ್ರಾ  
ಭಾನವೋಽಸ್ಯ। "ಜ್ವಲತಃ ಶಮನಾಯ ಚಿತ್ರಭಾನೋಃ ಪ್ರಲಯಾ-  
ಪ್ಲಾವಮಿವಾಭಿದರ್ಶಯಂತಃ" ಮಾಧಂ ೨೦-೨೦। 2. ಸೂರ್ಯ.  
"ಚಿತ್ರಭಾನುಃ ಪುಮಾನ್ ವೈಶ್ವಾನರೇ ಚಾಹಸ್ಕರೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ।  
3. ಹರಕುಗಿಡ. 4. ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 5. ಪ್ರಭವ ಮೊದ  
ಲಾದ ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. 6. ಶಿವ,  
ಈಶ್ವರ. (ಪುಂ ಧಿವಂ) 7. ಅಶ್ವಿನೀ ದೇವತೆಗಳು.

ಚಿತ್ರಮಂಡಲ ಚಿತ್ರಮಂಡಲ (ಪುಂ) ಮಂಡಲದ ಹಾವು.

ಚಿತ್ರಮೃಗ ಚಿತ್ರಮೃಗ (ಪುಂ) ಚಿತ್ರವರ್ಣದ ಜಿಂಕೆ, ಹರಿಣ.  
ಚಿತ್ರವರ್ಣೋ ಮೃಗಃ।

ಚಿತ್ರಯತ್ ಚಿತ್ರಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಆಶ್ಚರ್ಯವುಂಟುಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ. 2. ಚಿತ್ರವರ್ಣವಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಚಿತ್ರ  
(ಚಿತ್ರೀಕರಣ)+ಞಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ವಿಚಿತ್ರಯಾ  
ಚಿತ್ರಯತೇವ ಭಿತ್ತಾಂ ಕ್ವಚ ರವೇ ಕೇತನರತ್ನಭಾಸಾ" ಕಿರಾಂ ೧೬-೩।

ಚಿತ್ರರಥ ಚಿತ್ರರಥ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಗಂಧರ್ವ. ಚಿತ್ರೋ  
ರಥೋಽಸ್ಯ। ಈ ಗಂಧರ್ವನು ಕಶ್ಯಪನ ಪತ್ನಿಯಾದ ಮುನಿ  
ಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. "ಭೀಮಶ್ಚಿತ್ರರಥಶ್ಚೈವ ವಿಖ್ಯಾತಃ  
ಸರ್ವವಿದ್ವಾಂಸಿ। ಇತ್ಯೇತೇ ದೇವಗಂಧರ್ವಾ ಮೌನೇಯಾಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾಃ"  
ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೬-೪೩। 2. ಸೂರ್ಯ. "ಅಥ ಚಿತ್ರರಥಃ  
ಸೂರ್ಯಗಂಧರ್ವಾಂತರಯೋಃ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ।

ಚಿತ್ರರಶ್ಮಿ ಚಿತ್ರರಶ್ಮಿ (ಪುಂ) ನಾನಾ ಬಣ್ಣಗಳ ಕಿರಣಗಳಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ಮರುದ್ಗುಣ. ಚಿತ್ರಾ ರಶ್ಮಯೋಽಸ್ಯ।

ಚಿತ್ರಲತಾ ಚಿತ್ರಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸು.

ಚಿತ್ರಲೇಖನಿ ಚಿತ್ರಲೇಖನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಿತ್ರವನ್ನು ಬರೆ  
ಯುವ ಕುಂಚ, ತೂಲಿಕೆ. ಚಿತ್ರಂ ಲಿಖ್ಯತೇಜಯಾ - ಲಿಖ  
(ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)।

ಚಿತ್ರಲೇಖಾ ಚಿತ್ರಲೇಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಾಣಾಸುರನ ಮಂತ್ರಿ  
ಯಾದ ಕುಂಭಾಂಡನ ಮಗಳು, ಬಾಣಾಸುರನ ಮಗ  
ಳಾದ ಉಷಾದೇವಿಯ ಸಖಿ. 2. ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸು.  
[ಚಿತ್ರಲೇಖಿಯು ಉಷಾದೇವಿಯ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಂತೆ  
ದೇವಗಂಧರ್ವ ಮೊದಲಾದ ಅನೇಕರ ಚಿತ್ರಗಳನ್ನು ಬರೆದು  
ತೋರಿಸಲು ಉಷೆಯು ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಮಗನಾದ  
ಅನಿರುದ್ಧನನ್ನು ಮೋಹಿಸಿ ಮದುವೆಯಾಗುವಳು.]

"ಬಾಣಸ್ಯ ಮನ್ತ್ರಿ ಕುಂಭಾಂಡಶ್ಚಿತ್ರಲೇಖಾ ಚ ತತ್ಸುತಾ। ಸಹ್ಯ-  
ಪೃಚ್ಛತ್ಸಖೀಮೃಷಾಂ ಕೌತುಹಲಸಮನ್ವಿತಾ। ವ್ಯಸನಂ ತೇಽಪಕರ್ಷಾಮಿ  
ತ್ರಿಲೋಕಯಾಂ ಯದಿ ಭಾವ್ಯತೇ। ತಮಾನೇಷ್ಯೇ ನರಂ ಯಸ್ತೇ ಮನೋಹರಾ  
ತಮಾದಿಶ। ಇತ್ಯುಕ್ತವಾ ದೇವಗಂಧರ್ವಸಿದ್ಧಚಾರಣಪನ್ನಗಾನ್। ದೈತ್ಯ-  
ವಿಧಾಧರಾನ್ ಯಕ್ಷಾನ್ ಮನುಜಾಂಶ್ಚ ಯಥಾಲಿಖತ್। ಮನುಜೇಷು ಚ



ಸಾ ವೃಣಿನ್ ಶರ್ಮಾನಕದುಂದುಭಿಮ್ | ವ್ಯಲಿಖದ್ರಾಮಕುಣೌ ಚ  
ಪ್ರದ್ಯುಮ್ನಂ ವೀಕ್ಷ್ಯ ಲಜ್ಜಿತಾ | ಅನಿರುದ್ಧಂ ವಿಲಿಖಿತಂ ವೀಕ್ಷ್ಯೋ-  
ಪಾಪಾಡ್‌ಮುಖಿ ಹ್ರಿಯಾ | ಸೋಪಾವಸಾವಿತಿ ಪ್ರಾಹ ಸಮಯಮಾನಾ  
ಮಹೀಪತೇ | ಚಿತ್ರಲೇಖಾ ತಮಾಜಾಯ ಪೌತ್ರಂ ಕೃಷ್ಣಸ್ಯ ಯೋಗಿನಿ |  
ಯಯಿ ವಿಹಾಯಸಾ ರಾಜನ್ ದ್ವಾರಕಾಂ ಕೃಷ್ಣಪಾಲಿತಾಮ್ | ತತ್ರ  
ಸುಪ್ತಂ ಸುಪರ್ಯಂಕ್ತೇ ಪ್ರಾಡ್ಯುಮ್ನಿ ಯೋಗಮಾಸ್ಥಿತಾ | ಗೃಹೀತ್ವಾ ಶೋಣಿತ-  
ಪುರಂ ಸಹ್ಯೈ ಪ್ರಿಯಮದರ್ಶಯತ್ | ಸಾ ಚ ತಂ ಸುಂದರವರಂ ವಿಲೋಕ್ಯ  
ಮುದಿತಾನನಾ | ದುಃಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯೇ ಸ್ವಗೃಹೇ ಪುಂಸಿ ರೇಮೆ ಪ್ರಾಡ್ಯುಮ್ನಿನಾ  
ಸಮಮ್" ಭಾಗಂ ೧೦-೬೨ |

**ಚಿತ್ರವತ್ ಚಿತ್ರವತ್** (ವಿಂ) ಚಿತ್ರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಚಿತ್ರಾಪ್ಯತ್ರ  
ಸಂತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪) | "ತಯೋರ್ಯಥಾಪ್ರಾರ್ಥಿತ-  
ಮಿಂದ್ರಿಯಾರ್ಥಿನಾಸಿದುಃ ಸದಸು ಚಿತ್ರವತ್ಸು" ರಘುಂ ೧೪-೨೫ |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ವತಿ -ವತಿ.

**ಚಿತ್ರವದಾಲ ಚಿತ್ರವದಾಲ** (ಪುಂ) ಸಾವಿರ ಕೋರೆಗಳುಳ್ಳ  
ಪಾಲಿನವೆಂಬ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮತ್ಸ್ಯ.

**ಚಿತ್ರವರ್ಮನ್ ಚಿತ್ರವರ್ಮನ್** (ಪುಂ) 1. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ  
ಮಗ. 2. ಕುಲೂತದೇಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. (ವಿಂ) 3.  
ಬಣ್ಣ ಬಣ್ಣದ ಕವಚವನ್ನು ತೊಟ್ಟಿರುವ. ಚಿತ್ರ ವರ್ಮಸ್ಯ |

**ಚಿತ್ರವಹ ಚಿತ್ರವಹಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ನದಿ. ಚಿತ್ರ ವಹತಿ-  
ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಕರೀಷಿಣಿಂ  
ಚಿತ್ರವಹಾಂ ಚಿತ್ರಸೇನಾಂ ಚ ನಿಮ್ನಗಾಮ್" ಭಾಂ |

**ಚಿತ್ರವಾಹನ ಚಿತ್ರವಾಹನ** (ಪುಂ) ಮಣಲೂರಪುರದ ಒಬ್ಬ  
ದೊರೆ, ಚಿತ್ರಾಂಗದೆಯ ತಂದೆ. "ಮಣಲೂರೇಶ್ವರಂ ರಾಜನ್  
ಧರ್ಮಜಂ ಚಿತ್ರವಾಹನಮ್ | ತಸ್ಯ ಚಿತ್ರಾಜ್ಞದಾ ನಾಮ ದುಹಿತಾ  
ಚಾರುದರ್ಶನಾ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೩೫-೧೭ |

**ಚಿತ್ರವಿದ್ಯಾ ಚಿತ್ರವಿದ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಿತ್ರಕಲೆ, ಚಿತ್ರ ಬರೆಯುವ  
ವಿದ್ಯೆ.

**ಚಿತ್ರವೀರ್ಯ ಚಿತ್ರವೀರ್ಯ** (ಪುಂ) ಕೆಂಪುಹರಳು ಗಿಡ.

**ಚಿತ್ರಶಾಲಾ ಚಿತ್ರಶಾಲಾ, -ಶಾಲಿಕಾ -ಶಾಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
ಚಿತ್ರವನ್ನು ಬರೆಯುವ ಮನೆ. ಚಿತ್ರನಿರ್ಮಾಣಾರ್ಥಿ ಶಾಲಾ |

**ಚಿತ್ರಶಿಖಂಡಜ ಚಿತ್ರಶಿಖಂಡಜ** (ಪುಂ) ಅಂಗಿರಸ್ಸಿನ ಮಗ  
ನಾದ ಬೃಹಸ್ಪತಿ. ಚಿತ್ರಶಿಖಂಡಿನೋ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ  
(ಪ್ರಾದುರ್ಮವಿ) "ಡ:" (೩-೧-೯೭) | "ಜೀವ ಆಜ್ಞಿರಸೋ  
ವಾಚಸ್ಪತಿಶ್ಚಿತ್ರಶಿಖಂಡಿಜ:" ಅಮಂ |

**ಚಿತ್ರಶಿಖಂಡಿನ್ ಚಿತ್ರಶಿಖಂಡಿನ್** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ಸಪ್ತ  
ಋಷಿಗಳು, ಮರೀಚಿ ಮೊದಲಾದ ಏಳು ಋಷಿಗಳು.  
"ಮರೀಚಿರಜ್ಞಿರಾ ಅತ್ರಿ: ಪುಲಸ್ತ್ಯ: ಪುಲಹ: ಕೃತು: | ವಸಿಷ್ಠಶ್ಚೇತಿ  
ಸಪ್ತೇತೇ ಜ್ಞೇಯಾಶ್ಚಿತ್ರಶಿಖಂಡಿನ್:" |

**ಚಿತ್ರಶೀರ್ಷಕ ಚಿತ್ರಶೀರ್ಷಕ** (ಪುಂ) ತಲೆಯ ಮೇಲೆ ಚುಕ್ಕೆ  
ಗಳಿರುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹುಳ. ಚಿತ್ರ ಶೀರ್ಷಮಸ್ಯ "ಕಪ್"  
(೪-೪-೧೫೪) |

**ಚಿತ್ರಸರ್ಪ ಚಿತ್ರಸರ್ಪ** (ಪುಂ) ಊಸರವಳ್ಳಿಯೆಂಬ ಹಾವು,  
ಮೈಯಲ್ಲಿ ಬೊಟ್ಟುಗಳಿರುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹಾವು.  
ಇದಕ್ಕೆ ಮಾಲುಧಾನವೆಂದು ಹೆಸರು.

**ಚಿತ್ರಸೇನ ಚಿತ್ರಸೇನ** (ಪುಂ) 1. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.  
2. ಒಬ್ಬ ಗಂಧರ್ವರಾಜ, ವಿಶ್ವಾವಸು ಗಂಧರ್ವನ ಮಗ.  
[ಪಾಂಡವರು ವಾಸಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ದುರ್ಯೋ-  
ಧನನು ಬಂದು ತನ್ನ ವೈಭವವನ್ನು ತೋರಿಸಿ ಅವರನ್ನು  
ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲು ಯತ್ನಿಸಿದಾಗ ಇಂದ್ರನ ಮಾತಿನಂತೆ  
ಈ ಗಂಧರ್ವನು ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದು ದುರ್ಯೋಧನನನ್ನು  
ಕೈಕಾಲು ಕಟ್ಟಿ ಕೊಂಡೊಯ್ಯುತ್ತಿರಲು ದುರ್ಯೋಧನನು  
ತನ್ನನ್ನು ಬಿಡಿಸಬೇಕೆಂದು ಧರ್ಮರಾಜನಲ್ಲಿ ಮೊರೆ  
ಯಿಟ್ಟನು. ಆಗ ಧರ್ಮರಾಜನು ಅರ್ಜುನನನ್ನು ಕಳುಹಿಸಿ  
ಇವನನ್ನು ಬಿಡಿಸಿದನು.] ಭಾಂ ವನಂ | 3. ನರಿಷ್ಯಂತನ  
ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಚಿತ್ರಸೇನೋ ನರಿಷ್ಯಂತಾದಕ್ಷಸ್ತಸ್ಯ ಸುತೋ-  
ಭವತ್" ಭಾಗಂ ೯-೨-೧೯ | 4. ಚತುರ್ದಶ ಮನುಗಳಲ್ಲಿ  
ಹದಿಮೂರನೆಯ ಮನುವಿನ ಮಗ. "ಮನುಸ್ತ್ರಯೋದಶೋ  
ಭಾವ್ಯೋ ದೇವಸಾರ್ವಣಿರಾತ್ಮವಾನ್ | ಚಿತ್ರಸೇನವಿಚಿತ್ರಾಘಾ ದೇವ-  
ಸಾರ್ವಣಿದೇಹಜಾ:" ಭಾಗಂ ೮-೧೩-೩೦ |

**ಚಿತ್ರಸ್ಥ ಚಿತ್ರಸ್ಥ** (ವಿಂ) ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿರುವ, ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ಬರೆಯ  
ಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ. ಚಿತ್ರೇ ತಿಷ್ಠತಿ - ಣಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ:"  
(೩-೨-೪) |

**ಚಿತ್ರಹಸ್ತ ಚಿತ್ರಹಸ್ತ** (ಪುಂ) ಯುದ್ಧಕಾಲದಲ್ಲಿ ತೋರ್ಪಡೆ  
ಸುವ ಕೈಚಳಕ, ಹಸ್ತಕೌಶಲ.

**ಚಿತ್ರಾ ಚಿತ್ರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೇಮಂತ ಋತುವಿನ ರಾತ್ರಿ.  
"ತಾಮಸೀ ಸಾತ್ವಿಕೀ ಚಿತ್ರಾ ಚಿತ್ರೋಪಘ್ನಾ ಚ ರಾಜಸೀ | ಖಂಡಿತಾ  
ಚೇತಿ ಶರೈಃ ಪ್ರಾವೃಡಾಘೃತುಃ ಕ್ರಮಾತ್" ವೇಜಂ | 2. ಇಲಿ  
ಯಾಲದ ಮರ, ಇಲಿಕಿವಿಯ ಗಿಡ. "ಚಿತ್ರೋಪಚಿತ್ರಾ-  
ನ್ಯಗ್ರೋಧಿ ರಣ್ಡಾ ಮೃಷಿಕಪರ್ಯಪಿ" ವೇಜಂ | 3. ಕರಿಯತಿಗಡೆ  
ಮರ. "ಕೃಷ್ಣಾಣಾಂ ರೋಚನೀ ಇಯಾ ಕಾಲಾ ಚಿತ್ರಾ ಸುಪ್ತ-  
ಪಿ" ವೇಜಂ | 4. ಬುಡುಮೆ ಗಿಡ. "ಚಿತ್ರಾ ಗವಾಕ್ಷಿ  
ಗೋತುಮ್ಬಾ" ಅಮಂ | 5. ಏಳು ತಂತಿಗಳುಳ್ಳ ವೀಣೆ.  
"ಅಥ ಸ್ಯಾಚ್ಚಿತ್ರಾ ಪರಿವಾದಿನಿ | ತನ್ಮಯಶ್ಚೇತ್ಸಪ್ತ"  
ವೇಜಂ | 6. ಚಿತ್ರಾನಕ್ಷತ್ರ. 7. ಸುಭದ್ರೆ, ಅರ್ಜುನನ  
ಪತ್ನಿ. "ಹಿಮನಿರ್ಮುಕ್ತಯೋರ್ಯೋ ಚಿತ್ರಾಚಂದ್ರಮಸೋರಿವ" ರಘುಂ  
೧-೪೬ |



ಚಿತ್ರಾಂಶುಕ ಚಿತ್ರಾಂಶುಕ (ನಂ) ಚಿತ್ರವರ್ಣದ ಬಟ್ಟೆ, ಚೀಟಿ ಬಟ್ಟೆ. ಚಿತ್ರಮಂಶುಕಮ್. "ಶತಮಲಖನು:ಶೇಷಚಿತ್ರಾಂಶುಕೇನ" ಹಂಸಂ ೧-೧೩.

ಚಿತ್ರಾಂಶು ಚಿತ್ರಾಂಗ (ಪುಂ) 1. ಚಿತ್ರವರ್ಣದ ಮೈಯುಳ್ಳ ವ್ಯಾಘ್ರ, ಹುಲಿ. 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಸರ್ಪ. 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. 4. ಹರಿತಾಳ, ಅರಿದಳ.

ಚಿತ್ರಾಂಗದ ಚಿತ್ರಾಂಗದ (ಪುಂ) 1. ಶಂತನುರಾಜನಿಗೆ ಸತ್ಯವತಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ಮಗ, ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯನ ಸಹೋದರ. [ಭೀಷ್ಮನು ತಂದೆಯಾದ ಶಂತನುರಾಜನ ಅಭಿಲಾಷೆಯನ್ನು ಸಫಲಗೊಳಿಸಲು ತಾನು ಯಾವಜ್ಜೀ ವರೂ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯೆಯನ್ನು ಕೈಗೊಂಡು ಸತ್ಯವತಿಯನ್ನು ತಂದು ಅವನಿಗೆ ಮದುವೆಮಾಡಿಸಿದನು. ಸತ್ಯವತಿಯಲ್ಲಿ ಚಿತ್ರಾಂಗದ ಮತ್ತು ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯರೆಂಬ ಇಬ್ಬರು ಪುತ್ರರು ಜನಿಸಿದರು.] 2. ಒಬ್ಬ ಗಂಧರ್ವ. 3. ಒಬ್ಬ ವಿದ್ಯಾಧರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವಾ-ದಾ. 4. ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸು. 5. ಅರ್ಜುನನು ತೀರ್ಥಯಾತ್ರಾಸಮಯದಲ್ಲಿ ಮದುವೆಯಾದ ಒಬ್ಬ ಹೆಂಗಸು, ಮಣಲೂರಪುರಾಧೀಶನ ಮಗಳು, ಬಭ್ರು ವಾಹನನ ತಾಯಿ. "ಅಭಿಗಮ್ಯ ಮಹಾಬಾಹುರಮ್ಯಾಗಚ್ಚ-ನ್ಮಹೀಪತಿಮ್. ಮಣಲೂರೇಶ್ವರಂ ರಾಜನ್ ಧರ್ಮಜಂ ಚಿತ್ರವಾಹನಮ್. ತಸ್ಯ ಚಿತ್ರಾಂಗದಾ ನಾಮ ದುಹಿತಾ ಚಾರುದರ್ಶಿನಾ. ತಾಂ ದರ್ಶಂ ಪುರೇ ತಸ್ಮಿನ್ ವಿಚರಂತಿ ಯದ್ವಚ್ಚಯಾ. ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಚ ತಾಂ ವರಾರೋಹಂ ಚಕರೇ ಚೈತ್ರವಾಹನೀಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೩೪-೧೮. "ತತ್ರ ಚಿತ್ರಾಂಗದಾ ತೇನ ವ್ಯಾಹಾ ರಾಜಕುಮಾರಿಕಾ" ಚಂ ಭಾಂ.

ಚಿತ್ರಾಟೀರ ಚಿತ್ರಾಟೀರ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. 2. ಘಂಟಾ ಕರ್ಣನಿಗೆ ಬಲಿಕೊಟ್ಟ ಆಡಿನ ರಕ್ತದಿಂದ ಬೊಟ್ಟನ್ನು ಇಟ್ಟಿರುವ ಹಣೆ. "ಚಿತ್ರಾಟೀರೋ ಘಟಾಕರ್ಣಬಲಿಚ್ಛಾಗಾಸ್ತಬಿನ್ದುಭಿಃ. ಅಕ್ಷಿತಭಾಲೇ ಚಂದ್ರೇ ಚ" ಹೇಮಂ.

ಚಿತ್ರಾಣುಕ ಚಿತ್ರಾಣುಕ (ಪುಂ) ಚಿತ್ರವರ್ಣದ ಕಪ್ಪೆ.

ಚಿತ್ರಾನ್ ಚಿತ್ರಾನ್ (ನಂ) ಚಿತ್ರಾನ್, ಹುಳಿಯನ್ನ, ಎಳ್ಳಿನ ಅನ್ನ, ನಿಂಬೆಹುಳಿಯನ್ನ ಮುಂತಾದುವು, ಸಂಬಾರಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಕಲೆಸಿದ ಅನ್ನ.

ಚಿತ್ರಾಪುಪ ಚಿತ್ರಾಪುಪ (ಪುಂ) ಸುಟ್ಟರೊಟ್ಟಿ. ಬಿಸ್ಕತ್ತು ಮುಂತಾದುದು.

ಚಿತ್ರಾಯಸ ಚಿತ್ರಾಯಸ (ನಂ) ಉಕ್ಕು.

ಚಿತ್ರಾಯುಧ ಚಿತ್ರಾಯುಧ (ಪುಂ) ದೃಢರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

ಚಿತ್ರಾರಂಭ ಚಿತ್ರಾರಂಭ (ಪುಂ) ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ಬರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ ಪುತ್ಥಳಿಕೆ. ಚಿತ್ರೇ ಆರಮ್ಯತೇ-ಆ+ರಭ (ರಾಭಸ್ಯೇ) ಕರ್ಮಂ "ಛಲ್" (೩-೩-೧೯).

ಚಿತ್ರಾಪಿತಾರಂಭ ಚಿತ್ರಾಪಿತಾರಂಭ (ವಿಂ) ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ಬರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ ಕಾರ್ಯನಿರತ ಪುರುಷ. ಚಿತ್ರಾಪಿತ: ಆರಂಭೋ ಯಸ್ಯ. "ಸಕ್ತಾಙ್ಗುಲಿ: ಸಾಯಕಪುಷ್ಪ ಏವ ಚಿತ್ರಾಪಿತಾರಂಭ ಇವಾವತಸ್ಥೇ" ರಘುಂ ೨-೩೧.

ಚಿತ್ರಾವನಿ ಚಿತ್ರಾವನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇದ ಪಠನದಿಂದ ಮುಖದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ವರ್ಚಸ್ಸು. "ಮುಖಶೋಭಾ ವೇದಶಾಲಿಮುಖೇ ಚಿತ್ರಾವನಿಶ್ಚ ಸಾ" ವೈಜಂ.

ಚಿತ್ರಾವಸು ಚಿತ್ರಾವಸು (ಪುಂ) ರಾತ್ರಿ. ಚಿತ್ರಾಣಿ ವಿವಿಧಾನಿ ಚಂದ್ರಾರ್ಕನಕ್ಷತ್ರಾಣಿ ವಸಂತಿ ಯಸ್ಯಾಮ್-ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ಽಃ" (೩-೧-೧೦).

ಚಿತ್ರಕ ಚಿತ್ರಕ (ಪುಂ) ಚಿತ್ರಮಾಸ. ಚಿತ್ರಾನಕ್ಷತ್ರಂ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಾ-ಮಸ್ಯಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೬).

ಚಿತ್ರಣಿ ಚಿತ್ರಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು, ಪದ್ಮಿನೀ ಮೊದಲಾದ ನಾಲ್ಕು ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸರ ಲ್ಲೊಬ್ಬಳು. ಪದ್ಮಿನೀ ಚಿತ್ರಣೀ ಶಂಖಿನೀ ಮತ್ತು ಹಸ್ತಿನೀ ಎಂಬ ಹೆಂಗಸರು ನಾಲ್ಕು ಬಗೆ. "ಪದ್ಮಿನೀ ಚಿತ್ರಣಿ ಚೈವ ಶಕ್ಷಿನಿ ಹಸ್ತಿನಿ ತಯಾ. ಶಶೋ ಮೃಗೋ ವೃಷೋಽವಶ್ಚ ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸೋ-ರ್ಜಾತೀಲಕ್ಷಣಮ್". ಶಶಜಾತಿಯ ಪುರುಷನಿಂದ ಪದ್ಮಿನೀ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸೂ ವೃಗಜಾತಿಯ ಪುರುಷನಿಂದ ಚಿತ್ರಣೀ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸೂ ವೃಷಭಜಾತಿಯ ಪುರುಷನಿಂದ ಶಂಖಿನೀ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸೂ ಅಶ್ವಜಾತಿಯ ಪುರುಷನಿಂದ ಹಸ್ತಿನೀ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸೂ ತೃಪ್ತಿಪಡುವಳು. "ಶಶಕೇ ಪದ್ಮಿನೀ ತುಷ್ಠಾ ಚಿತ್ರಣಿ ರಮತೇ ಮೃಗಮ್. ವೃಷಕೇ ಶಕ್ಷಿನಿ ತುಷ್ಠಾ ಹಸ್ತಿನಿ ರಮತೇ ಹಯಮ್". ಪದ್ಮಿನೀ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು ಪದ್ಮದ ವಾಸನೆಯುಳ್ಳವಳೂ ಚಿತ್ರಣಿಯು ವತ್ಸ್ಯದ ವಾಸನೆಯುಳ್ಳವಳೂ ಶಂಖಿನಿಯು ಕ್ಷಾರಗಂಧವುಳ್ಳವಳೂ ಹಸ್ತಿನಿಯು ಮದದ ಗಂಧವುಳ್ಳವಳೂ ಆಗಿರುವಳು. "ಪದ್ಮಿನೀ ಪದ್ಮಗಂಧಾ ಚ ಮೀನಗಂಧಾ ಚ ಚಿತ್ರಣಿ. ಶಕ್ಷಿನಿ ಖಾರಗಂಧಾ ಚ ಮದಗಂಧಾ ಚ ಹಸ್ತಿನಿ" ರತಿಮಂ.

ಚಿತ್ರತ ಚಿತ್ರತ (ವಿಂ) ಚಿತ್ರವರ್ಣವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಾನಾವಿಧ ಬಣ್ಣ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಚಿತ್ರಮಸ್ಯ ಸಂಜ್ಞಾತಮ್ "ಇತಚ್" (೪-೨-೩೬).

ಚಿತ್ರನ್ ಚಿತ್ರನ್ (ವಿಂ) 1. ಅಶ್ವರ್ಯವುಂಟುಮಾಡುವ. ಚಿತ್ರಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪). 2. ಚಿತ್ರದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ತೀಪ್" (೪-೧-೪). ಚಿತ್ರಣಿ ಚಿತ್ರಣಿ.

ಚಿತ್ರೀಕರಣ ಚಿತ್ರೀಕರಣ (ನಂ) ಬಣ್ಣ ಬಣ್ಣದ್ದಾಗಿ ಮಾಡುವುದು, ನಾನಾವಿಧ ಬಣ್ಣ ದ್ದನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವುದು.



**ಚಿತ್ರೀಕೃತ ಚಿತ್ರೀಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ನಾನಾವಿಧ ಬಣ್ಣದ್ದಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಒಂದು ಚಿತ್ರವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಭಾವ ಚಿತ್ರವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಂದು ಪ್ರತಿರೂಪವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸ್ಮೃತಿಕಾರಿಣಾ ತ್ವಯಾ ಮೇ ಪುನರಪಿ ಚಿತ್ರೀಕೃತಾ ಕಾಂತಾ" ಶಾಕುಂ ೬-೨೧.

**ಚಿತ್ರೇಶ ಚಿತ್ರೇಶ** (ಪುಂ) ಚಿತ್ರಾನ್ವಕ್ಷತ್ರಕ್ಕೆ ಪತಿಯಾದ ಚಂದ್ರ. ಚಿತ್ರಾಢಾ ಀಶಃ.

**ಚಿತ್ರೋಕ್ತಿ ಚಿತ್ರೋಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಕಾಶವಾಣಿ. 2. ವಿಚಿತ್ರವಾದ ಮಾತು, ಅಶ್ಚರ್ಯಕರವಾದ ಮಾತು. ಚಿತ್ರಾ ಁಕ್ತಿಃ. 3. ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾದ ಮಾತು. 4. ಪೈಖಿರಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಭಾಷಣ, ನಿರರ್ಗಳವಾದ ಭಾಷಣ.

**ಚಿತ್ರೋತ್ಪಲಾ ಚಿತ್ರೋತ್ಪಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನೇಕ ವಿಧವಾದ ಕಮಲಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ನದಿ. "ನದಿ ತತ್ರ ಮಹಾಪುರ್ಣಾ ವಿಷ್ಣುಪಾದವಿನಿಗಂತಾ. ಚಿತ್ರೋತ್ಪಲೇತಿ ವಿಖ್ಯಾತಾ ಸರ್ವಪಾಪಹರಾ ಶುಭಾ" ಪುರುಷೋತ್ತಮತತ್ವಮ್.

**ಚಿದಾಕಾಶ ಚಿದಾಕಾಶ** (ಪುಂ) ಶುದ್ಧಬ್ರಹ್ಮ, ಸರ್ವಾಧಾರವಾಗಿಯೂ ಆಕಾಶದಂತೆ ನಿರ್ಲಿಪ್ತವಾಗಿಯೂ ಇರುವ ಬ್ರಹ್ಮ. ಚಿತ್ ಆಕಾಶಮಿವ.

**ಚಿದಾತ್ಮನ್ ಚಿದಾತ್ಮನ್** (ಪುಂ) ಪರಬ್ರಹ್ಮ, ಚೈತನ್ಯ ಸ್ವರೂಪನಾದ ಪರಮಾತ್ಮ. ಚಿತ್ ಚೈತನ್ಯಮಾತ್ಮಾ ಯಸ್ಯ. "ಁತದ್ವಿಂ ಭಗವತೋಹ್ಯರೂಪಸ್ಯ ಚಿದಾತ್ಮನಃ. ಮಾಯಾಗುಣೈವಿರಚಿತಂ ಮಹದಾದಿ-ಭಿರಾತ್ಮನಿ" ಭಾಗಂ ೧-೩-೩೦.

**ಚಿದಾಭಾಸ ಚಿದಾಭಾಸ** (ಪುಂ) ಜೀವ. ಚಿತ್ಃ ಆಭಾಸಃ ಪ್ರತಿಬಿಂಬಃ.

**ಚಿದ್ರೂಪ ಚಿದ್ರೂಪ** (ಪುಂ) 1. ಜ್ಞಾನಸ್ವರೂಪನಾದ ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಬ್ರಹ್ಮ. ಚಿತ್ ಜ್ಞಾನಮೇವ ರೂಪಮಸ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಸಹೃದಯ, ಒಳ್ಳೆಯ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು. "ಚಿದ್ರೂಪಸ್ತು ಸುಮಾನಸಃ" ವೈಜಂ. 3. ಬುದ್ಧಿವಂತ, ಪ್ರತಿಭಾಶಾಲಿ.

**ಚಿಂತಕ ಚಿಂತಕ** (ವಿಂ) ಆಲೋಚಿಸುವವನು, ವಿಚಾರಮಾಡುವವನು. ಚಿತಿ (ಸ್ಮತ್ಯಾಮ್) "ಚ್ಚಲ್" (೩-೧-೧೩೩). "ನಗರೇ ನಗರೇ ಚೈಕಂ ಕುರ್ಯಾತಿಸರ್ವಾರ್ಥಚಿಂತಕಮ್" ಮನುಂ ೭-೧೨೧.

**ಚಿಂತನ ಚಿಂತನ** (ನಂ) 1. ಆಲೋಚನೆ, ಚಿಂತೆ. ಚಿತಿ (ಸ್ಮತ್ಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪). 2. ಆಶಿಸುವುದು, ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು. "ಪರದ್ರವ್ಯೇಷ್ವಭಿಧ್ಯಾನಂ ಮನಸಾನಿಷ್ಠಚಿಂತನಮ್" ಮನುಂ ೧೨-೪. 3. ಯೋಚನೆ, ವಿಚಾರ, ವಿಮರ್ಶೆ. ಚಿತಿ + ಣಿಚ್ "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭).

**ಚಿಂತನೀಯ ಚಿಂತನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಚಿಂತಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ಧ್ಯಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಚಿತಿ (ಸ್ಮತ್ಯಾಮ್) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬).

**ಚಿಂತಾ ಚಿಂತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕುತೂಹಲದಿಂದ ನೆನೆಯುವುದು, ತವಕದಿಂದ ಸ್ಮರಿಸುವುದು. ಚಿತಿ (ಸ್ಮತ್ಯಾಮ್) "ಚ್ಚಲ್" (೩-೩-೧೦೪). "ಚಿಂತಾಸಂತತಿತನ್ತುಜಾಲನಿಬಿಡ-ಸ್ಯುತೇವ ಲಗ್ನಾ ಪ್ರಿಯಾ" ಮಾಲತೀಂ ೪-೧೦. 2. ಮೂವತ್ತೆರಡು ವ್ಯಭಿಚಾರಿಭಾವಗಳಲ್ಲೊಂದು, ಇಷ್ಟವಾದ ವಸ್ತುವು ದೊರಕದೆ ಇರುವುದು ಅನಿಷ್ಟವು ಸಂಭವಿಸುವುದು ಇವುಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಧ್ಯಾನ. "ಧ್ಯಾನಂ ಚಿಂತಾ ಹಿತಾನಾಪ್ತೇಃ ಶೂನ್ಯತಾಶ್ವಾಸತಾಪಕೃತ್" ಸಾಂ ೬೦ ೩-೧೭೧. "ಚಿಂತಾದಿವೈರಪಿ ಶಕಲಿತಾ ಶರ್ವರೀ ನಾಪಯಾತಿ" ಹಂಸಂ ೨-೩೩. 3. ಧ್ಯಾನ, ಚಿಂತನೆ. "ಧರ್ಮಕ್ರಿಯಾತ್ಮಮಚಿಂತಾ ಚ ಸಾತ್ವಿಕಂ ಗುಣಲಕ್ಷಣಮ್" ಮನುಂ ೧೨-೨೪. 4. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ. "ತದೇಕಲಬ್ಧೇ ಹೃದಿ ಮೇಽಸ್ತಿ ಲಬ್ಧಂ ಚಿಂತಾ ನ ಚಿಂತಾಮಣಿಮಪ್ಯನರ್ಥಮ್" ನೈಷಂ ೩-೮೧.

**ಚಿಂತಾಕುಲ ಚಿಂತಾಕುಲ** (ವಿಂ) ಚಿಂತೆಯಿಂದ ಪೀಡಿತನಾದ, ಯೋಚನೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಚಿಂತಯಾ ಆಕುಲಃ.

**ಚಿಂತಾಪರ ಚಿಂತಾಪರ** (ವಿಂ) 1. ಯೋಚನೆಯಲ್ಲಿರುವ. 2. ಧ್ಯಾನಮಾಡುತ್ತಿರುವ.

**ಚಿಂತಾಮಣಿ ಚಿಂತಾಮಣಿ** (ಪುಂ) 1. ಚಿಂತಿಸಿದುದನ್ನು ಕೊಡುವ ಒಂದು ಮಣಿ. "ತದೇಕಲಬ್ಧೇ ಹೃದಿ ಮೇಽಸ್ತಿ ಲಬ್ಧಂ ಚಿಂತಾ ನ ಚಿಂತಾಮಣಿಮಪ್ಯನರ್ಥಮ್" ನೈಷಂ ೩-೮೧. "ಸಾಮರ್ಥ್ಯ-ಸಂಪಾದಿತವಾಞ್ಚಿತಾರ್ಥಶ್ಚಿಂತಾಮಣಿಃ ಸ್ಯಾನ್ಮ ಕಥಂ ಹನೂಮಾನ್" ಭಟ್ಟಿಂ ೧೦-೩೪. 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದುದನ್ನೆಲ್ಲಾ ಕೊಡುವ ಪರಮಾತ್ಮ. "ಆಯುರಾರೋಗ್ಯಮರ್ಥಂ ಚ ಭೋಗಾಂಶ್ಚಿವಾನುಷ್ಙ್ಗಿಕಾನ್. ದದಾತಿ ಧ್ಯಾಯತಾಂ ನಿಯಂ ಸರ್ವಕಾಮಪ್ರದೋ ಹರಿಃ". 3. ಪ್ರಯಾಣ ಹೊರಟುಬರಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಒಂದು ಶುಭಯೋಗ. "ಸಹಜಸ್ಥಾನಗೋ ಭೂಮೋ ಭಾಗ್ಯಸ್ಥಶ್ಚ ಬೃಹಸ್ಪತಿಃ. ಚಿಂತಾಮಣಿ-ಸಮಾಖ್ಯೋಽಯಂ ಯಾತುಃ ಸಂಕಲ್ಪಪೂರಕಃ".

**ಚಿಂತಾವೇಶಮ್ ಚಿಂತಾವೇಶಮ್** (ನಂ) ಮಂತ್ರಾಲೋಚನೆಯ ಗೃಹ, ಮಂತ್ರಾಲೋಚನೆಯ ಸಭಾಂಗಣ.

**ಚಿಂತಿತ ಚಿಂತಿತ** (ನಂ) 1. ಚಿಂತೆ, ಮನಸ್ಸಿನ ಯೋಚನೆ. ಚಿತಿ (ಸ್ಮತ್ಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪). "ನಿರ್ದಿಶೇತಿ ಗದಿತೇ ಜಯಾಧ್ವಜಾ ಪ್ರತ್ಯವೇಕ್ಷ್ಯ ಮಮ ಚಿಂತಿತಂ ವದ. ಆಶು ಸರ್ವಜನಮಧ್ಯಗಂ ತ್ವಯಾ ದೃಶ್ಯತಾಮಿತಿ ಚ ಬಂಧುಚೂರಜಾ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೪೧-೨೪. 2. ಅಭಿಲಾಷೆ, ಮನೋರಥ. "ಅಸ್ಯಾನುಕೂಲಯ ಮತಿ ಮತಿಮನ್ಮನೇನ ಸಖ್ಯಾ ಸುಖಂ ಸಮಭಿಯಾಸ್ಯಸಿ ಚಿಂತಿತಾನಿ"



ಕಿರಾಂ ೧೩-೨೧. 3. ನೆನಪು, ಸ್ಮರಣೆ. 4. ಪರ್ಯಾಯೋಚನೆ. (ವಿಂ) 5. ಯೋಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಿಂತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಸ್ಮರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನೆನೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ". "ಯಚ್ಚಿಂತಿತಂ ತದಿಹ ದೂರತರಂ ಪ್ರಯಾತಿ ಯಚ್ಚೇತಸಾ ನ ಗಣಿತಂ ತದಿಹಾಭ್ಯುಪೇತಿ" ಝಂ.

ಚಿಂತಿತೋಪನತ ಚಿಂತಿತೋಪನತ (ವಿಂ) ನೆನೆಯಲ್ಪಟ್ಟು ಕೂಡಲೇ ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ.

ಚಿಂತ್ಯ ಚಿಂತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಚಿಂತಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಧ್ಯಾನಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಸ್ಮರಿಸಲ್ಪಡುವ, ನೆನೆಯಲ್ಪಡುವ. ಚಿಂತಿ (ಸ್ಮತ್ಯಾಮ್) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪).

ಚಿಪಿಟ ಚಿಪಿಟ (ಪುಂ) 1. ಅವಲಕ್ಕಿ. "ಶಾಲಯಃ ಸತುಷಾ ಆದ್ರಾ ಭ್ರಷ್ಟಾ ಅಸ್ಫುಟಿತಾಸ್ತತಃ. ಕುಡ್ವಿತಾಃ ಚಿಪಿಟಾಃ ಪ್ರೋಕ್ತಾಸ್ತೇ ಸ್ಮೃತಾಃ ಪೃಥುಕಾ ಅಪಿ" ಭಾವಪ್ರಂ. 2. ಬಗ್ಗಿದ ಮೂಗು. ನಿ ನತಾ ನಾಸಿಕಾ "ಪಿಟಿ" (೪-೨-೩೩). ನೆ: ಚಿರಾದೇಶಶ್ಚ. (ವಿಂ) 3. ಬಗ್ಗಿದ ಮೂಗುಳ್ಳ. ನತಾ ನಾಸಿಕಾಸ್ಯ.

ಚಿಪಿಟಕ ಚಿಪಿಟಕ (ಪುಂ) ಅವಲಕ್ಕಿ. ಚಿಪಿಟ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್".

ಚಿಪುಟ ಚಿಪುಟ (ಪುಂ) "ಚಿಪಿಟ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಪೃಷಂ.

ಚಿಪ್ಪ ಚಿಪ್ಪ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ನಖರೋಗ. "ನಖಮಾಸ-ಮಧಿಷ್ಠಾಯ ವಾತಂ ಪಿತ್ತಂ ಚ ದೇಹಿನಾಮ್. ಕರೋತಿ ದಾಹಪಾಕೌ ಚ ತಂ ವ್ಯಾಧಿ ಚಿಪ್ಪಮಾದಿಶೇತ್".

ಚಿಪ್ಯ ಚಿಪ್ಯ (ಪುಂ) ಪುರೀಷ (ಮಲ) ದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಕೃಮಿ. ಅಯವಾಃ ವಿಯವಾಃ ಕಿಪ್ಯಾಃ ಚಿಪ್ಯಾಃ ಗಣ್ವಪದಾಃ ಕೂರವಃ ಮತ್ಸ್ಯ ದ್ವಿಮುಖಾಃ ಎಂದು ಪುರೀಷ ಜನ್ಯವಾದ ಕೃಮಿಗಳು ಏಳು ವಿಧ.

ಚಿಬುಕ ಚಿಬುಕ (ನಂ) ಗಲ್ಲು, ಶುಟಿಯ ಕೆಳಭಾಗ. ಚಿವ್ಯತೇ-ಚಿವ್ (ಆದಾನಸಂವರಣಯೋಃ) "ಕ್ತುಃ" (೩ಂ ೧-೩೭). ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್". "ತಾಲೂದರಂ ಬಸ್ತಿಶೀರ್ಷಂ ಚಿಬುಕಂ ಗಲಗುಂಡಿಕೇ" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೯೮.

ಚಿಮಿ ಚಿಮಿ (ಪುಂ) ಗಿಣಿ, ಶುಕಪಕ್ಷಿ. ಚಿನೋತಿ ಮನುಷ್ಯಜಾತಿವತ್ ವಾಕ್ಯಾನಿ.

ಚಿರ ಚಿರ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಬಹಳಕಾಲ, ದೀರ್ಘಕಾಲ. ಚಿರ (ಚಯನೇ) "ರಕ್" ಬಾಹುಂ. "ಚಿರಮುಜ್ಜಿತಾಪಿ ತನುರೋಜ್ಜದಸೌ ನ ಪಿತೃಪ್ರಸುಃ ಪ್ರಕೃತಿಮಾತ್ಮಭುವಃ" ಮಾಘಂ ೯-೧೪. (ವಿಂ) 2. ದೀರ್ಘಕಾಲದ, ಬಹಳಕಾಲದ. "ಚಿರರತಿಪರಿಸ್ಥೇಂದ್ರಪ್ರಾಪ್ತ-ನಿद्रಾಸುಖಾನಾಂ ಚರಮಮಪಿ ಶಯಿತ್ವಾ ಪೂರ್ವಮೇವ ಪ್ರಬುದ್ಧಾಃ" ಮಾಘಂ ೧೧-೧೩.

ಚಿರಕಾರಿನ್ ಚಿರಕಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಬಹಳಕಾಲ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು, ದೀರ್ಘಕಾಲ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು, ಬಹಳ ನಿಧಾನವಾಗಿ ಕಾರ್ಯಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಚಿರೇಣ ಕರೋತಿ-

ಕೃತ್ (ಕರಣೇ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೨೮). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೫). -ಕಾರಿಣಿ-ಕಾರಿಣೀ.

ಚಿರಕಾಲ ಚಿರಕಾಲ (ಪುಂ) ದೀರ್ಘಕಾಲ, ಬಹಳಕಾಲ.

ಚಿರಕ್ರಿಯ ಚಿರಕ್ರಿಯ (ವಿಂ) ಬಹಳಕಾಲ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು. ಬಹಳ ನಿಧಾನವಾಗಿ ಕಾರ್ಯಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಚಿರಾ ಕ್ರಿಯಾ ಯಸ್ಯ.

ಚಿರಜೀವಿಕಾ ಚಿರಜೀವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೀರ್ಘಕಾಲದ ವೃತ್ತಿ, ಬಹಳಕಾಲದ ಜೀವನೋಪಾಯ.

ಚಿರಜೀವಿನ್ ಚಿರಜೀವಿನ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ, ಚಿರಂ ಜೀವತಿ-ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೇ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪). "ಪದ್ಮಾಸನಸ್ಸುರಜ್ಯೇಷ್ಠಶ್ಚಿರಜೀವಿ ಸನಾತನಃ" ವೇಜಂ. 3. ವಾಯುಸ, ಕಾಗೆ. 4. ಶಾಲ್ಮಲಿ ವೃಕ್ಷ, ಬೂರಗದ ಮರ. 5. ಮಾರ್ಕಂಡೇಯ. 6. ಅಶ್ವತ್ಥಾಮ. 7. ಬಲಿ ಚಕ್ರವರ್ತಿ. 8. ವ್ಯಾಸ ಮಹರ್ಷಿ. 9. ಹನುಮಂತ, ಅಂಜನೇಯ. 10. ವಿಭೀಷಣ. 11. ಕೃಪಾಚಾರ್ಯ. 12. ಪರಶುರಾಮ. "ಅಶ್ವತ್ಥಾಮಾ ಬಲಿವ್ಯಾಸೋ ಹನುಮಾಂಶ್ಚ ವಿಭೀಷಣಃ. ಕೃಪಃ ಪರಶುರಾಮಶ್ಚ ಸಪ್ತೇತೇ ಚಿರಜೀವಿನ್". (ವಿಂ) 13. ಬಹಳಕಾಲ ಬದುಕುವ.

ಚಿರಜೀವಿನ್ ಚಿರಜೀವಿನ್ (ಪುಂ) "ಚಿರಜೀವಿನ್" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಪೃಷಂ.

ಚಿರಣಿ ಚಿರಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಹಳಕಾಲ ತಂದೆಯ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ ಸುವಾಸಿನಿ, ಸುಮಂಗಲಿ. ಚಿರೇಣ ಅಟತಿ ಪಿತೃಗೇಹಾತ್ ಭರ್ತೃಗೇಹಮ್-ಅಟ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). ಪೃಷಂ. "ಜಿಪ್" (೪-೧-೨೦). 2. ಯುವತಿ, ಪ್ರಾಯದ ಹೆಂಗಸು. "ಚಿರಣಿ ತು ಸುವಾಸಿನ್ಯಾಂ ಸ್ಯಾತ್ ದ್ವಿತೀಯವಯಃಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಹೇಮಂ.

ಚಿರತರ ಚಿರತರ (ಅವ್ಯಂ) ಬಹಳಕಾಲದವರೆಗೆ, ದೀರ್ಘಕಾಲದವರೆಗೆ. "ಅವಶ್ಯಂ ಯಾತಾರಶ್ಚಿರತರಮುಪಿತ್ವಾಪಿ ವಿಷಯಾ ವಿಯೋಗೋ ಕೋ ಭೇದಸ್ತಜತಿ ನ ಜನೋ ಯತ್ಸ್ವಯಮಮನ್" ಭರ್ತಂ ೩-೧೨.

ಚಿರತನ ಚಿರತನ (ವಿಂ) ಪ್ರಾಚೀನವಾದ, ಹಳೆಯದಾದ, ಪುರಾತನವಾದ. ಚಿರ "ತನಃ" (ವಾಂ ೪-೩-೨೩). "ಅಥ ಸ್ವಮಾದಾಯ ಭಯೇನ ಮನ್ಯನಾಚ್ಚಿರತನರತನಾಧಿಕಮುಚ್ಚಿತಂ ಚಿರಾತ್" ನೆಪಂ ೧-೧೦೭.

ಚಿರಂತನ ಚಿರಂತನ (ವಿಂ) ಪುರಾತನವಾದ, ಹಳೆಯದಾದ. ಚಿರ ಸ್ವಾರ್ಥ "ತಃ" ತುಡ್ ಚ (೪-೩-೨೩). ಚಿರಶಬ್ದಸ್ಯ ಮಾನ್ಯತ್ವಂ ನಿಪಾತ್ಯತೇ. "ಸ್ವಹಸ್ತದತ್ತೇ ಮುನಿಮಾಸನೇ ಮುನಿ-ಶ್ಚಿರಂತನಸ್ತಾವದಭಿವ್ಯವಿವಿಶತ್" ಮಾಘಂ ೧-೧೫.



ಚಿರಪಾಕಿನ್ ಚಿರಪಾಕಿನ್ (ಪುಂ) ಕಪಿತ್ಥ, ಬೇಲ. ಚಿರೇ-  
ಪಾಕೋಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) ।

ಚಿರಪುಷ್ಪ ಚಿರಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) ವಕುಳ ವೃಕ್ಷ, ಪವಳದ ಗಿಡ.

ಚಿರಬಿಲ್ವ ಚಿರಬಿಲ್ವ (ಪುಂ) ಕರಂಜ ವೃಕ್ಷ. ಹುಲಿಗಿಲಿ ಮರ.

ಚಿರಂ ಬಿಲತಿ - ಬಿಲ (ಭೇದನೆ) "ವ:" ಬಾಹುಂ । "ಚಿರ-  
ಬಿಲ್ವೋ ನಕ್ತಮಾಲ: ಕರಜಶ್ಚ ಕರಜ್ಜಕೇ" ಅಮಂ ।

ಚಿರಮ್ ಚಿರಮ್ (ಅವ್ಯಂ) "ಚಿರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಚಿರಮೇಹಿನ್ ಚಿರಮೇಹಿನ್ (ಪುಂ) ಗರ್ವಭ, ಬಹಳಕಾಲ  
ಮೂತ್ರಸಂಹಿತವು ಕೆಡುತ್ತೆ. ಚಿರಂ ಮೇಹತಿ - ಮಿಹ (ಸೆವನೆ)

"ಣಿನಿ:" (೩-೨-೭೮) । "ಗರ್ಮಸ್ತು ಚಿರಮೇಹಿ ಬಾಲಯೋ  
ರಾಸಭ: ಸ್ವರ:" ಅಭಿಂ ಚಿಂ ।

ಚಿರರಾತ್ರ ಚಿರರಾತ್ರ (ನಂ) ದೀರ್ಘಕಾಲ, ಬಹಳಕಾಲ.

ಚಿರಾ ರಾತ್ರಯ: । "ಚಿರರಾತ್ರೋಪಿತಾ: ಸ್ವೇಹ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ನಿವೇಶನೇ"  
ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೮೩-೪ ।

ಚಿರರಾತ್ರಾಯ ಚಿರರಾತ್ರಾಯ (ಅವ್ಯಂ) ದೀರ್ಘಕಾಲ,  
ಬಹಳಕಾಲ. ಚಿರರಾತ್ರಾನಯತೇ - ಅಯ (ಗತೌ) "ಅನ್"  
(೩-೨-೧) । "ಚಿರಾಯ ಚಿರರಾತ್ರಾಯ ಚಿರಸ್ಯಾಪ್ತಾ: ಚಿರಾರ್ಥಕಾ:"  
ಅಮಂ । "ಹವಿರ್ಯನ್ವಿರರಾತ್ರಾಯ ಯಜ್ಞಾನನ್ಯಾಯ ಕಲ್ಪತೇ"  
ಮನುಂ ೩-೨೬೬ ।

ಚಿರಲೋಕ ಚಿರಲೋಕ (ವಿಂ) 1. ಬಹಳಕಾಲವಿರುವ  
ಲೋಕದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ (ಪಿತೃಗಳು). ಚಿರ: ಚಿರಕಾಲ-  
ಸ್ಥಾಯಿ ಲೋಕೋ ಯೇಷಾಮ್ । "ಸ ಏಕ: ಪಿತೃಣಾಂ ಚಿರಲೋಕ-  
ಲೋಕಾನಾಮಾನಂದ:" ತೈಂ ತಂ । 2. ಚಿರವಾಗಿರುವ ಲೋಕ.  
ಚಿರಸ್ಥಾಯಿ ಲೋಕ: ।

ಚಿರಸುತಾ ಚಿರಸುತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಹಳಕಾಲದನಂತರ ಕರು  
ಹಾಕಿದ ಹಸು ಮೊದಲಾದುದು. ಚಿರಂ ಸುತಾ ।

ಚಿರಸ್ಥ ಚಿರಸ್ಥ (ಪುಂ) 1. ನಾಯಕ. "ಚಿರಸ್ಥೋ ನಾಯಕ:  
ಸ್ಮೃತ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । (ವಿಂ) 2. ಬಹಳಕಾಲವಿರುವ,  
ದೀರ್ಘಕಾಲದವರೆಗೂ ನಿಲ್ಲುವ. ಚಿರಂ ತಿಷ್ಠತಿ - ಷ್ಠಾ  
(ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಕ:" (೩-೨-೪) । "ಣಿನಿ:"  
(೩-೨-೭೮) । -ಸ್ಥಾಯಿನ್ - ಸ್ಥಾಯಿನ್. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡಿಪ್"  
(೪-೧-೫) । -ಸ್ಥಾಯಿನಿ - ಸ್ಥಾಯಿನಿ.

ಚಿರಸ್ಥಿತ ಚಿರಸ್ಥಿತ (ವಿಂ) ಬಹಳಕಾಲದಿರುವ. ಚಿರಾಯ  
ಸ್ಥಿತ: । "ಚಿರಸ್ಥಿತಮಪಿ ತ್ವಾಚಮಸ್ತೇಹಾಕ್ತಂ ದ್ವಿಜಾತಿಭಿ:"  
ಮನುಂ ೪-೨೫ ।

ಚಿರಸ್ಯ ಚಿರಸ್ಯ (ಅವ್ಯಂ) ಬಹಳಕಾಲ, ಬಹಳಕಾಲದಿಂದ.  
ಚಿರಮಸ್ಯತಿ - ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಪ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) । ಶಕಂ ।  
"ಚಿರಸ್ಯ ಮಿತ್ರವ್ಯಸನೀ ಸುದಮೋ ದಮಧೋಜ:" ಮಾಧಂ ೨-೬೦ ।

ಚಿರಾತ್ ಚಿರಾತ್ (ಪುಂ) 1. ಗರಂಜ. "ತಾಕ್ಷ್ಯ: ಶಿಲೋಕಾ:  
ಕಾಮಾಯುರಣಾವರಜಶ್ಚಿರಾತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । (ಅವ್ಯಂ) 2.  
ಬಹಳಕಾಲದಿಂದ, ಅನೇಕ ದಿನಗಳಿಂದ. ಚಿರಮತತಿ - ಅತ  
(ಸಾತತ್ಯಗಮನೆ) "ವಿವ್" (೩-೨-೭೬) । "ಚಿರಾದಪಿ  
ಬಲಾತ್ಕಾರೋ ಬಲಿನ: ಸಿದ್ಧಯೇರ್ಷಿಃ" ಮಾಧಂ ೨-೧೦೫ ।

ಚಿರಾಯ ಚಿರಾಯ (ಅವ್ಯಂ) ದೀರ್ಘಕಾಲದಿಂದ, ಬಹಳ  
ಕಾಲದಿಂದ. ಚಿರಮಯತೇ - ಅಯ (ಗತೌ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) ।  
"ಸುತಾ: ಕಮಾಹುಯ ಚಿರಾಯ ಚುಕ್ತುತೇ: ವಿಧಾಯ ಕಮ್ರಾಣಿ ಮುಖಾನಿ  
ಕಂ ಪ್ರತಿ" ನೆಪಂ ೧-೧೪೨ ।

ಚಿರಾಯಸ್ ಚಿರಾಯಸ್ (ವಿಂ) ದೀರ್ಘಾಯುಸ್ಸುಳ್ಳವನು,  
ಬಹಳಕಾಲ ಬದುಕಿರುವವನು. ಚಿರಮಾಯುಸ್ಯ । "ಲಬ್ಧ-  
ದೌಹದಾ ಚ ವೀರ್ಯವಂತಂ ಚಿರಾಯುಷಂ ಚ ಪುತ್ರಂ ಜನಯತಿ" ಸುಶ್ರುತಂ  
ಶಾರೀರಂ ೩-೧೮ ।

ಚಿರಿ ಚಿರಿ (ಪುಂ) 1. ಶುಕ, ಗಿಣಿ. "ಮೇಧಾವಿ ಚಿರಿ: ಕೀರ:  
ಫಲಾಶನ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 2. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. "ವಮಿರ್ಭುಜಿ:  
ಪಚಿ:ಸಾಚಿಶ್ಚಿರಿವಂಶತಿರಶ್ವತಿ:" ವೇಜಂ ।

ಚಿರಿಂಚಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯುವತಿ, ಪ್ರಾಯದ  
ಹೆಂಗಸು. 2. ಪ್ರೌಢೆಯಾದನಂತರವೂ ಹೆಚ್ಚು ಕಾಲ  
ತಂದೆಯ ಮನೆಯಲ್ಲೇ ವಾಸಮಾಡುವ ಸುವಾಸಿನಿ,  
ಸುಮಂಗಲಿ. ಚಿರೇಣಾಡತಿ ಪಿತೃಗೃಹಾತ್ ಭರ್ತೃಗೃಹಮ್ - ಅಡ  
(ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । ಪೃಥಂ । "ಡಿಪ್"  
(೪-೧-೨೦) ।

ಚಿರೇ ಚಿರೇ (ಅವ್ಯಂ) ಬಹಳಕಾಲದಿಂದ.

ಚಿರೇಣ ಚಿರೇಣ (ಅವ್ಯಂ) ಬಹಳಕಾಲದಿಂದ, ಅನೇಕ ದಿನ  
ಗಳಿಂದ. ಚಿರ "ಏನ್" ಬಾಹುಂ । "ಪುಣ್ಯಾನಿ ಸತ್ಯೇ  
ಪುಲಿನಾನಿ ಸಿಂಧೋಶ್ಚಿರೇಣ ದೃಷ್ಟಿ ಚರಿತಾರ್ಥಯಂತಿ" ಯಾದಂ  
೧೮-೧೧೧ ।

ಚಿರಿಂಚಿ ಚಿರಿಂಚಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೌತೆಗಿಡ.

ಚಿಲಿಚಿಮ ಚಿಲಿಚಿಮ (ಪುಂ) ಜಂಬುಮೀನು. ಚಿಲಿ ವಾಸಸಂ  
ಚಿನೋತಿ - ಚಿನ್ (ಚಯನೆ) "ಮಕ್" ಬಾಹುಂ । ಚಿಲಿಚಿಮ:,  
ಚಿಲಿಚಿಮ:, ಚಿಲಿಚಿಮಿ, ಚಿಲಿಚಿಮ:, ಚಿಲಿಚಿಮ:,  
ಚಿಲಿಮ:, ಚಿಲಿಚಿಮಿ: ಎಂಬ ರೂಪಗಳೂ ಉಂಟು.

ಚಿಲ್ಲ ಚಿಲ್ಲ (ಪುಂ) 1. ಮುಂಡು ಮುಳುಕುಹಕ್ಕಿ. ಚಿಲ್ಲತಿ -  
ಚಿಲ್ಲ (ಶೈಲಿಯೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । 2. ಸೋರು  
ಗಣ್ಣು, ಕೆಸರುಗಣ್ಣು. ಕಿಲ್ಲ "ಲ:" ಚಿಲ್ ಆದೇಶಶ್ಚ  
(ವಾಂ ೪-೨-೩೩) । ಚಕ್ಷುಸ್ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಕಿಲ್ಲ  
ಶಬ್ದಕ್ಕೆ "ಲ" ಪ್ರತ್ಯಯ ಮತ್ತೆ ಚುಲ್ ಚಿಲ್ ಪಿಲ್ ಎಂಬ  
ಆದೇಶಗಳೂ ಬಂದು ಚುಲ್: ಚಿಲ್: ಮತ್ತೆ ಪಿಲ್:



ಎಂದು ರೂಪಗಣಗುವುದು. (ವಿಂ) 3. ಸೋರುಗಣ್ಣು  
ನವನು. ಕೆಸರುಗಣ್ಣು ನವನು. "ಸ್ಯು: ಕಿಲಗಾಣ್ಣು ಚುಲ್-  
ಚಿಲ್ಲಪಿಲ್ಲಾ: ಕಿಲಗಾಣ್ಣು ಚಾಪ್ಯಮಿ" ಅಮಂ |

ಚಿಲ್ಲಕ ಚಿಲ್ಲಕ (ಪುಂ) 1. ಜೀರುಂಡೆ. ಚಿಲ್ಲ ಇವ ಕಾಯತಿ-  
ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕ:" (೩-೨-೩) | 2. "ಚಿಲ್ಲ" ಪದದ  
ಅರ್ಥ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:" |

ಚಿಲ್ಲಕಾ ಚಿಲ್ಲಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೀರುಂಡೆ ಸೊಪ್ಪು.

ಚಿಲ್ಲ ಚಿಲ್ಲ (ನಂ) 1. ಲಕ್ಷಣ, ಗುರುತು. ಚಹತೇಜೇನ-  
ಚಹ (ಪರಿಕಲ್ಪನೆ) "ನಕ್" ಇತ್ವಂ ಚ ವಾಹುಂ | "ಎತದ್-  
ಭುಜಾರಣಿಸಮುದ್ರವಿಕ್ರಮಾಗ್ನಿಚಿಲ್ಲಂ ಧನುಗುಣಕಿಣ: ಸ್ವಲ್ಪ  
ಧೂಮೇಷಾ" ನೈಷಂ ೧೧-೧೦೫ | 2. ಮುದ್ರೆ. 3. ಲಾಂಛನ,  
ಗುರುತು, ನಿಶಾನಿ. "ಸ ನ್ಯಸ್ತಚಿಲ್ಲಾಮಪಿ ರಾಜಲಕ್ಷ್ಮಿಂ  
ತೇಜೋವಿಶೇಷಾನುಮಿತಾಂ ದಧಾನ:" ರಘುಂ ೨-೭ | "ದೂರಸ್ಥಚಿಲ್ಲ-  
ವೇಧಾದುದಯೇಸ್ತಮಯೇಷಿ ವಾ ಸಹಸ್ರಾಂಶಿ:" ಬೃಹತ್ಸಂ ೩-೩ |  
4. ಕುರುಹು, ಸುಳಿವು. 5. ಪತಾಕೆ, ಧ್ವಜ. "ಚಿಲ್ಲಮಣ್ಣು  
ಪತಾಕಾಯಾಮ್" ನಾನಾಥರಂ |

ಚಿಲ್ಲಕಾರಿನ್ ಚಿಲ್ಲಕಾರಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಗುರುತುಹಾಕು  
ವವನು. 2. ಮುದ್ರೆಹಾಕುವವನು.

ಚಿಲ್ಲಯಿತವ್ಯ ಚಿಲ್ಲಯಿತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಮುದ್ರೆಹಾಕ  
ಲ್ಪಡುವ. 2. ಗುರುತುಮಾಡಲ್ಪಡುವ. "ಲಿಪ್ಪಂ ವಾ  
ಪ್ರತಿಮಾ ವಾ ದ್ರೂಮವತ್ ಸ್ಥಾಪ್ಯಾ ಯಾದಿಶಂ ಯಸ್ಮಾತ್ | ತಸ್ಮಾ-  
ಚ್ಚಿಲ್ಲಯಿತವ್ಯಾ ದಿಶೋ ದ್ರೂಮಸ್ಯೋರ್ಧ್ವಮಯವಾಧ:" ಬೃಹತ್ಸಂ ೫೯-೭ |

ಚಿಲ್ಲಿತ ಚಿಲ್ಲಿತ (ವಿಂ) 1. ಚಿಲ್ಲಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಗುರುತು  
ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಮುದ್ರೆಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಚಿಲ್ಲ (ಲಕ್ಷಣ)  
"ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ದಿವಾ ಚರೇಯು: ಕಾರ್ಯಾರ್ಥಿ ಚಿಲ್ಲಿತಾ  
ರಾಜಶಾಸನೇ:" ಮನುಂ ೧೦-೫೫ |

ಚಿಲ್ಲನ ಚಿಲ್ಲನ (ನಂ) 1. ಗುರುತುಮಾಡುವುದು.  
2. ಮುದ್ರೆಹಾಕುವುದು. 3. ಅಲಂಕಾರಾದಿಗಳಿಂದ ಶೃಂಗ  
ರಿಸುವುದು. "ಸ್ಕುಟಂ ಚಲಚಾಮರಯುಗಮಚಿಲ್ಲನೇರಿನಿಲ್ಲವಾನಂ  
ನಿಜವಾಜಿರಾಜತಾಮ್" ನೈಷಂ ೧-೬೨ |

ಚಿಲ್ಕಾರ ಚಿಲ್ಕಾರ (ಪುಂ) ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಕೂಗು, ಅನೆ  
ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಶಬ್ದ (ಚಿಲ್ಕಾರವು ಅನುಕರಣ ಶಬ್ದ).  
"ವೈನಾಯಕ್ಯಶ್ಚಿರಂ ವೋ ವದನವಿಧುತಯ: ಪಾಂತು ಚಿಲ್ಕಾರವತಯ:"  
ಮಾಲತೀಂ ೧-೨ |

ಚಿಲ್ಕುತ ಚಿಲ್ಕುತ (ನಂ) ಚಿಲ್ಕಾರ.

ಚೀನ ಚೀನ (ಪುಂ) 1. ಚೀನದೇಶ (ಚೀನಾ). (ಪುಂಒಂಒಂ)  
2. ಚೀನದೇಶದ ನಿವಾಸಿಗಳು ಅಥವಾ ಆ ದೇಶದ ರಾಜರು.  
"ಅಜಿನಾನಾಂ ಸಹಸ್ರಾಣಿ ಚೀನದೇಶೋದ್ಭವಾನಿ ಚ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ

೮೬-೧೦ | "ತಸ್ಯ ಚೀನೇ: ಕಿರಾತೇಶ್ಚ ಕಾಶ್ಚನೇರಿವ ಸಂವೃತಮ್"  
ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೯-೧೬ | 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ.  
4. ಸೂತ್ರ, ದಾರ. 5. ಪತಾಕೆ, ಧ್ವಜ. 6. ಧಾನ್ಯದ  
ಒಂದು ಭೇದ. 7. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. "ಚೀನೋ ವಸ್ತ್ರವೀಹಿಮೇದೇ"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 8. ಸೀಸ. 9. ಚೀನದೇಶದ ಕರ್ಪೂರ.  
"ಚೀನೋ ದೇಶಾಂಶುಕವೀಹಿಮೇದೇ ತಂತೌ ಮೃಗಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ |

ಚೀನವಜ್ಜ ಚೀನವಂ (ನಂ) ಸೀಸಲೋಹ.

ಚೀನಾ ಚೀನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯೋಗಪಟ್ಟ, ತಪಸ್ವಿಯು ತಪಸ್ಸಿಗೆ  
ಕೂಡುವಾಗ ಬೆನ್ನು ಮತ್ತು ಮಂಡಿಗಳ ಸುತ್ತಲೂ ಕಟ್ಟುವ  
ಬಟ್ಟೆ. "ಯೋಗಪಟ್ಟು ಚೀನಾ ಸ್ಯಾತ್" ವೈಜಂ |

ಚೀನಾಂಶುಕ ಚೀನಾಂಶುಕ (ನಂ) ಚೀನದೇಶದ ವಸ್ತ್ರ, ರೇಷ್ಮೆ  
ವಸ್ತ್ರ. "ಚೀನಾಂಶುಕೇ: ಕಲ್ಪಿತಕೇತುಮಾಲಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೩ |

ಚೀನಪಿಣ್ಡ ಚೀನಪಿಣ್ಡ (ನಂ) 1. ಸಿಂಧೂರ. 2. ಸೀಸ.

ಚೀನಾಕ ಚೀನಾಕ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಕರ್ಪೂರ. "ಚೀನಾಕ-  
ಸಂಜ್ಞ: ಕರ್ಪೂರ: ಕರ್ಪುಷಯಕರ: ಸ್ಮೃತ:" ಭಾವಪ್ರಂ |

ಚೀರ ಚೀರ (ನಂ) 1. ಚಿಂದಿಬಟ್ಟೆ, ಜೊರುಬಟ್ಟೆ. ಚಿನ್  
(ಚಯನೆ) "ಕ್ರನ್" ದೀರ್ಘಶ್ಚ (೩ಂ ೨-೨೬) | "ಚೀರಾಣಿ  
ಕಿಂ ಪಥಿ ನ ಸಂತಿ ದಿಶಂತಿ ಭಿಕ್ಷಾಮ್" ಭಾಗಂ ೨-೨-೫ |  
2. ಮರದ ತೊಗಟೆ. "ವಸೀತ ಚರ್ಮ ಚೀರಂ ವಾ ಸಾಯಂ ಸ್ನಾಯಾತ್  
ಪ್ರಗೇ ತಥಾ" ಮನುಂ ೬-೬ | 3. ಗೋಸ್ತನ, ನಾಲ್ಕು ಎಳೆ  
ಗಳ ಹಾರ. 4. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. 5. ಸೀಸ. 6. ಶಿಖೆ,  
ಜುಟ್ಟು. 7. ರೇಷ್ಮೆ ಗೆರೆ. 8. ನಾರುಬಟ್ಟೆ. "ತಂ ಕದಾಚಿತ್  
ತಪಸ್ಯಂತಮಾದ್ರೆಚೀರಜಟಾಧರಮ್" ಭಾಂ ವನಂ ೧೯೦-೬ |  
9. ಒಂದು ವಿಧ ಬರವಣಿಗೆ. "ಚೀರೀ ಚಿಲ್ಲಿಚಾಂ ನಪುಂಸಕಮ್ |  
ಗೋಸ್ತನೇ ವಸ್ತ್ರಭೇದೇ ಚ ರೇಖಾಲೇಖನಭೇದಯೋ:" ಮೇದಿಂ |

ಚೀರಕ ಚೀರಕ (ನಂ) "ಚೀರ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಚೀರ  
ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:" |

ಚೀರಿ ಚೀರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಣ್ಣುಮುಸುಕಿನ ಬಟ್ಟೆ, ಕಣ್ಣಿನ  
ಪರದೆ, ಕಣ್ಣಿನ ಮುಂದೆ ಬಿಡುವ ತೆರೆ.

ಚೀರಿಕಾ ಚೀರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೀರುಂಡೆ. "ಭೃಂಗಾರೀ ಚೀರಿಕಾ  
ಚೀರೀ ಚಿಲ್ಲಿಕಾ ಚ ಸಮಾ ಇಮಾ:" ಅಮಂ |

ಚೀರಿಣಿ ಚೀರಿಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. (ವೈವಸ್ವತ ಮನುವು  
ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ) ಬದರಿಕಾಶ್ರಮದ ಒಂದು ನದಿ.  
"ಚೀರಿಣಿತಿರಮಾಸಾಞ್ ಮತ್ಸ್ಯೋ ವಚನಮಬ್ರವೀತ್" ಭಾಂ ವನಂ  
೧೯೦-೬ | 2. ಸುವಾಸಿನಿ, ಸುಮಂಗಲಿ. "ಚೀರಿಣಿ ತು  
ಸುವಾಸಿನಿ" ವೈಜಂ |

ಚೀರಿಲಿಲ ಚೀರಿಲಿಲ (ಪುಂ) ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಮೀನು. "ಮಹಾ-  
ಮತ್ಸ್ಯಾಸ್ತು ಚೀರಿಲಿಲಿತಿಮಿಚ್ಛಿಲಗಿಲಾದಯ:" ಅಭಿಂ ಚಿಂ |



ಚಿರೀ ಚೀರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಚಿರೀಕಾ" ಪದದ ಅರ್ಥ.  
 ಚಿರೀವಾಕ ಚೀರೀವಾಕ (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹಂಳ.  
 ಚಿರೀಕಾ ಚೀರೀಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೀರುಂಡೆ. ಚಿತಿ ರೀತಿ-ಕ  
 (ಶಬ್ದ) "ಕ:" ಬಾಹುಂ.  
 ಚೀರ್ಣ ಚೀರ್ಣ (ವಿಂ) 1. ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಆಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
 ಅನುಷ್ಠಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಚರ (ಗತೌ) "ನಕ್" ಬಾಹುಂ.  
 ಪೃಷೋಂ. "ಚೀರ್ಣವ್ರತಾನಪಿ ಸತಃ ಕೃತಧನಸಹಿತಾನಿಮಾನ್"  
 ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೨೯೮. 2. ಪರಿಶೀಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಮರ್ಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
 ಚೀರ್ಣಪರ್ಣ ಚೀರ್ಣಪರ್ಣ (ಪುಂ) 1. ಖರ್ಜೂರದ ಮರ.  
 2. ಬೇವಿನ ಮರ. ಚೀರ್ಣ ಪರ್ಣಮಸ್ಯ. "ಚೀರ್ಣಪರ್ಣಸ್ತು  
 ನಿಮ್ಬೇಽಪಿ ಖರ್ಜೂರಿಭೂರಹೇ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ.  
 ಚಿಲಿಕಾ ಚೀಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೀರುಂಡೆ.  
 ಚಿವರ ಚೀವರ (ನಂ) 1. ಚಿಂದಿಬಟ್ಟೆ, ಚೂರುಬಟ್ಟೆ.  
 ಚಿವ್ (ಚಯೇ) "ಪ್ವರಕ್" (ಉಂ ೩-೧). ನಿಪಾಂ.  
 2. ಜೈನಮತ್ತು ಬೌದ್ಧ ಸಂನ್ಯಾಸಿಗಳ ಉಡುಪು. 3. ಭಿಕ್ಷು  
 ಗಳ ಬಟ್ಟೆ. "ಯದಿದಾನಿ ಚಿರಚಿವರಮಾತ್ರಪರಿಚ್ಛದಾಂ ಭಗವತೀ-  
 ಮೀದೃಶೋಪಾಯಾಸೇವಮಾತ್ಯಭೂರವಸುನಿಯೋಜಯತಿ" ಮಾಲತೀಂ ೧.  
 ಚಿವರಿನ್ ಚೀವರಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಭಿಕ್ಷು, ಸಂನ್ಯಾಸಿ.  
 2. ಬೌದ್ಧ ಭಿಕ್ಷು. ಚಿವರಮಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪).  
 "ಚಿವರೀ ಶ್ರಮಣೋ ಮಿಕ್ಷುರ್ವಲ್ಯಶ್ಚೈತ್ರ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.  
 ಚುಕಾರ ಚುಕಾರ (ಪುಂ) ಸಂಹನಾದ. ಚುಕ್ಕಂ ವ್ಯಥಾಮಾರಾತಿ-  
 ಆ+ರಾ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩). "ಚುಕಾರ: ಕ್ವೇಡಿತಂ  
 ಚ ತತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.  
 ಚುಕ್ ಚುಕ್ (ಪುಂ) 1. ಹುಳಿಹಬ್ಬೆಗಿಡ. 2. ಹುಳಿ,  
 ಅಮ್ಲರಸ. ಚಕ್ (ತೃಪ್ತೌ) "ರಕ್" ಉತ್ವಂ ಚ (ಉಂ ೨-೧೪).  
 (ನಂ) 3. ಹುಣಿಸೆಹಣ್ಣು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕ್ರಾ-ಕ್ರಾ, -ಕ್ರೀ-  
 -ಕ್ರೀ. 4. ಪುಲ್ಲಂಪುರಿಚಿ. "ಚುಕ್ ವೃಕ್ಷಾಮಲೇ ಚಾಙ್ಗೇಯಾ  
 ಸ್ತ್ರೀ ಪುಸ್ಯಮಲೇಷ್ವಲವೇತಸೇ" ಮೇದಿಂ.  
 ಚುಕ್ಕ ಚುಕ್ಕ (ನಂ) ಹುಳಿ, ಅಮ್ಲರಸ. ಚುಕ್ ಸ್ವಾರ್ಥ  
 "ಕನ್".  
 ಚುಕ್ಕಲ ಚುಕ್ಕಲ (ಪುಂ) 1. ಹುಣಿಸೆ ಮರ. (ನಂ) 2.  
 ಹುಣಿಸೆಹಣ್ಣು.  
 ಚುಕ್ಕವಾಸ್ತುಕ್ ಚುಕ್ಕವಾಸ್ತುಕ್ (ನಂ) ಪುಲ್ಲಂಪುರಿಚಿ.  
 ಚುಕ್ರಾ ಚುಕ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಲ್ಲಂಪುರಿಚಿ.  
 ಚುಕ್ರಾಮಲ ಚುಕ್ರಾಮಲ (ನಂ) 1. ಹುಣಿಸೆಹಣ್ಣು. 2. ಪುಲ್ಲಂ  
 ಪುರಿಚಿ. ಚುಕ್ರಮಿವಾಮಲಮ್.  
 ಚುಕ್ರಿಕಾ ಚುಕ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಲ್ಲಂಪುರಿಚಿ.

ಚುಕ್ರಿಮನ್ ಚುಕ್ರಿಮನ್ (ಪುಂ) ಹುಳಿ, ಅಮ್ಲರಸ. ಚುಕ್  
 "ಇಮನಿಕ್" (೪-೧-೧೨೩).  
 ಚುಕ್ರೀ ಚುಕ್ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಲ್ಲಂಪುರಿಚಿ. ಚುಕ್ರ ಗೌರಾಂ "ಜಿಷ್"  
 (೪-೧-೪೧). "ಚುಕ್ರೀ ತ್ವಮ್ಲತರಾ ಸ್ವಾದ್ರೀ ವಾತಧ್ನೀ ಕಫ-  
 ಪಿತ್ತಕೃತ್" ಭಾವಪ್ರಂ.  
 ಚುಕ್ಲ ಚುಕ್ಲ (ನಂ) ಹುಣಿಸೆಹಣ್ಣು.  
 ಚಕ್ಷಾ ಚುಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಂಸೆ, ಪೀಡೆ. ಚಪ (ಹಿಸಾಯಾಮ್)  
 "ಸ:" ಬಾಹುಂ. ಪೃಷೋಂ.  
 ಚುಚು(ಚು)ಕ ಚುಚು(ಚು)ಕ (ನಂ) 1. ಕುಚದ ಅಗ್ರ  
 ಭಾಗ, ಮೊಲೆಯ ತುದಿ. (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 2. ದಕ್ಷಿಣ  
 ದೇಶದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಪ್ರಾಂತ್ಯ. 3. ಆ ಪ್ರಾಂತ್ಯ ನಿವಾಸಿಗಳು.  
 "ಗುಹಾ: ಪುಲಿಂದಾ: ಶಬರಾಶ್ಚುಚುಕಾ ಮದ್ರಕೈ: ಸಹ" ಭಾಂ.  
 ಚುಚುಂದರೀ ಚುಚುಂದರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂಗಿಲಿ.  
 ಚುಚು ಚುಚು (ಪುಂ) ಮೂಗಿಲಿ. "ಗಂಧಾಸ್ತುರ್ಗಂಧನಕುಲ-  
 ಶ್ಚುಚು: ಪುಂಪು:" ಹಾರಾಂ.  
 ಚುಚುರ(ಲಿ) ಚುಚುರ(ಲಿ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುಣಿಸೆ ಬೀಜ  
 ದಿಂದ ಆಡುವ ಒಂದು ಜೂಜಾಟ. "ತಿನ್ತಲಿಕಾಸ್ಥಿಮಿ-  
 ಶ್ಚಿತಕ್ರೀಡಾಂ ಚುಚುಲಿರ್ಮೇವತ್" ಹಾರಾಂ.  
 ಚುಂಡಿನ್ ಚುಂಡಿನ್ (ಪುಂ) ಬಾವಿ ಅಥವಾ ಬಾವಿಯ  
 ಹತ್ತಿರದ ಜಲಾಶಯ. "ಅನ್ಧುರಧ್ವ: ಪ್ರಹಿ: ಕೂಪಶ್ಚುಂಡಿ  
 ಚೌಂಡಶ್ಚ ಚುತಕ:" ವೈಜಂ.  
 ಚುಂದೀ ಚುಂದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಟ್ಟಿನಿ, ತಲೆಹಿಡಿಕೆ. "ಕುಡ್ವಿನಿ  
 ಶಮ್ಭಲಿ ಚುಂದೀ ವಯಸ್ಯಾಲಿ ಸಖಿ ಸುಹೃತ್" ವೈಜಂ.  
 ಚುಪ ಚುಪ (ಪುಂ) 1. ಶಾಖ, ಬಿಸಿ, ಉಷ್ಣತೆ. "ಉಷ್ಣಂ  
 ಜ್ವಲ: ಖರ: ಕೂರೋ ಬಾಲಸ್ತಿಗ್ಗಮ: ಕೃಶಶ್ಚುಪ:" ವೈಜಂ.  
 2. ವಾತ, ಗಾಳಿ. 3. ಯುದ್ಧ. (ವಿಂ) 4. ಉಷ್ಣ  
 ವಾದ, ಬಿಸಿಯಾದ. "ಚುಪ: ಪವನಯುದ್ಧಯೋ:" ವಿಶ್ವಂ.  
 ಚುಪ್ಪ ಚುಪ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಋಷಿ. (ವಿಂ) 2. ಮೆಲ್ಲಗೆ  
 ಸಂಚರಿಸುವ. ಚುಪ (ಮಂದಾಯಾಂ ಗತೌ) "ಕಪ್".  
 ಚುಬಿ-ವಕ್ರಸಂಯೋಗ (ಶ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕ್ಂ ಸೇಂ). ಚುಂಬತಿ.  
 ಚುಚುಂಬ. ಚುಂಬಿತಾ. ಚುಂಬಿಷ್ಯತಿ. ಚುಂಬತು. ಅಚುಂಬತ್.  
 ಚುಂಬೇತ್. ಚುಂಬ್ಯಾತ್. ಇತ್ಯಾದಿ. ಚುಂಬನ ಮಾಡು,  
 ಮುತ್ತು ಕೊಡು.  
 ಕರ್ಮಣಿ:—ಚುಂಬ್ಯತೇ. ಚುಚುಂಬೇ. ಚುಂಬಿತಾ. ಚುಂಬಿಷ್ಯತೇ.  
 ಚುಂಬ್ಯತಾಮ್. ಅಚುಂಬ್ಯತ. ಚುಂಬ್ಯತ. ಇತ್ಯಾದಿ.  
 ಣಿಚಿ:—ಚುಂಬಯತಿ, -ತೇ. ಚುಂಬಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ,  
 -ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಚುಂಬಯಿತಾ. ಇತ್ಯಾದಿ.



ಸನಿ:-ಚುಚುಮ್ಬಿಷತಿ। ಚುಚುಮ್ಬಿಷಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, ಆಸ। ಚುಚುಮ್ಬಿಷಿತಾ। ಚುಚುಮ್ಬಿಷಿಷ್ಯತಿ। ಚುಚುಮ್ಬಿಷತು। ಅಚುಚುಮ್ಬಿಷತ್। ೧೨೩೦೦.

ಕೃತ್ಸು:-ಚುಮ್ಬಿತವ್ಯ:। ಚುಮ್ಬನೀಯ:। ಚುಮ್ಬ್ಯ:। ಚುಮ್ಬಿತ:। ಚುಮ್ಬಿತವಾನ್। ಚುಮ್ಬನ್, ಚುಮ್ಬಂತಿ। ಚುಮ್ಬಿತುಮ್। ಚುಮ್ಬಿತಮ್। ಚುಮ್ಬನಮ್। ಚುಮ್ಬಿತವಾ। ಪರಿಚುಮ್ಬ್ಯ। "ಚುಚುಮ್ಬಾಸ್ಯಮಸೌ ತಸ್ಯಾ ರಸಮಗ್ನ: ಶ್ರಿತಸ್ಮಿತಮ್" ನೆಪಂ ೨೦-೨೫।

ಚುಬುಕ ಚುಂಚುಕ (ನಂ) ಗ್ಲ, ಚುಂಚುಕ ಕೃಷ್ಣಾಗ. ಚಿಬುಕ ಪೃಷಂ। "ಪ್ರಗೃಹ್ಯ ಚುಬುಕೇಽಧ್ಯಾತ್ಮಮುದನೀನಮದಚ್ಯುತ:" ಭಾಗಂ ೧೦-೪೨-೭।

ಚುಬ್ರ ಚುಂಚು (ನಂ) ಮುಂಚು. ಚುಬಿ (ವಕ್ತ್ರಸಂಯೋಗ) "ರನ್" (೩೦ ೨-೨೯)।

ಚುಮುಚುಮಾಯನ ಚುಂಮುಚುಮಾಯನ (ನಂ) ಚುಂ, ನಮೆ, ಕೃಷ್ಣಯ ಕೃಷ್ಣಿ. "ಕಪಾಯ: ಏಕ ಏವಾತ್ಯರ್ಥಂ ಸೇವ್ಯಮಾನ: ಹೃತ್ಪಿಡಾಸ್ಯಶೋಬೋದರಾಧ್ವಾನವಾಕ್ಯಗ್ರಹಮನ್ಯಾಸ್ತಮ್ಭಗಾತ್ರಸ್ಕುರಣ-ಚುಮುಚುಮಾಯನಾಕುಚನಾಕ್ಷೇಪಣಪ್ರಭೃತೀನ್ ಜನಯತಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೨-೧೦।

ಚುಮ್ಬ ಚುಂಚು (ಪುಂ) ಚುಂಚು, ಮುಂಚುಮವನು. ಚುಬಿ (ವಕ್ತ್ರಸಂಯೋಗ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)।

ಚುಮ್ಬಕ ಚುಂಚುಕ (ಪುಂ) 1. ಅಯಸ್ಕಾಂತಮಣಿ. ಚುಮ್ಬತಿ ಲೋಹಮ್ - ಚುಬಿ (ವಕ್ತ್ರಸಂಯೋಗ) "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಚುಮ್ಬಕೋ ಲೇಖನ: ಶೀತೋ ಮೇದೋವಿಗರಾಪಹ:" ಭಾವಪ್ರಂ। "ಅಯ: ಸ್ವಭಾವಾದ್ವಿಚಲಂ ಬಲಾಚ್ಚಲತೀತನಂ ಚುಮ್ಬಕಸಂನಿಧಾ-ವಿವ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೬-೧೬। 2. ತಕ್ಕಡಿಯ ಮೇಲುಭಾಗ. (ವಿಂ) 3. ಚುಂಚುನ ಮೂಡತಕ್ಕವನು, ಮುಂಚುಮವನು. 4. ಕಾಮುಕ. 5. ಧೂತ, ಮಂಚಕ, ದಗಾಕೋರ. 6. ಅನೇಕ ಗ್ರಂಥಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಕೆಲವು ಭಾಗಗಳನ್ನು ಮಾತ್ರ ಓದಿರುವವನು. "ಚುಮ್ಬಕಶ್ಚುಮ್ಬನಪರೇ ಧೃತಿಯಿತ್ಯಂತಯೋರಪಿ। ಬಹುಗ್ರಂಥಕದೇಶಜ್ಞೇ ಧೃತಸ್ಯೋರ್ಧ್ವವಿಲಂಬನೇ" ಮೇದಿಂ।

ಚುಮ್ಬತ್ ಚುಂಚುತ (ವಿಂ) ಚುಂಚುಮುಂಚುಮವನು, ಮುಂಚುಮುಂಚುಮವನು. ಚುಬಿ (ವಕ್ತ್ರಸಂಯೋಗ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಬಿಂಬೋಷ್ಠಂ ಬಹು ಮನುತೇ ತುರಗ್ಗವಕ್ತ್ರಶ್ಚುಮ್ಬಂತಂ ಮುಖಮಿಹ ಕಿನರಂ ಪ್ರಿಯಾಯಾ:" ಮಾಘಂ ೪-೩೮। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಫ್" (೪-೧-೬)। ಚುಮ್ಬಂತಿ ಚುಂಚುಂಚಿ.

ಚುಮ್ಬನ ಚುಂಚುನ (ನಂ) ಚುಂಚುಮುಂಚುಮವನು, ಮುಂಚುಮುಂಚುಮವನು. ಚುಬಿ (ವಕ್ತ್ರಸಂಯೋಗ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಚುಮ್ಬನಾಯ ಕಲಿತಪ್ರಿಯಾಕುಚಂ ವೀರಸೇನಸುತವಕ್ತ್ರಮಂಡಲಮ್" ನೆಪಂ ೧೮-೧೦೫। ಚುಂಚುನ ಸ್ಥಾನಗಳು: "ಮುಖೇ ಸ್ತನೇ ಲಲಾಟೇ

ಚ ಕಂಠೇ ಚ ನೇತ್ರಯೋರಪಿ। ಜಘನೇ ಕರ್ಣಯೋಶ್ಚೈವ ಕಕ್ಷೋರುಭಗ-ಮೂರ್ಧಸು। ಚುಮ್ಬನಸ್ಥಾನಮಿತ್ಯುಕ್ತಂ ವಿಜ್ಞೇಯಂ ಕಾಮುಕೇರಿಹ"।

ಚುಮ್ಬಿತ ಚುಂಚಿಡ (ನಂ) 1. ಚುಂಚುನ, ಮುಂಚುಮವನು. ಚುಬಿ (ವಕ್ತ್ರಸಂಯೋಗ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। "ಆದೃತಾ ನಖಪದೈ: ಪರಿರಮ್ಭಾಶ್ಚುಮ್ಬಿತಾನಿ ಧನದಂತನಿಪಾತೈ:" ಕಿರಾಂ ೯-೪೯। (ವಿಂ) 2. ಮುಂಚುಮುಂಚುಮವನು, ಚುಬಿ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಚುಮ್ಬಿತಂ ನ ಮುಖಮಾಚರ್ಕುಷ್ಯತ್ ಪತ್ಯುರಂತರಮೃತಂ ವರ್ಷ ತತ್" ನೆಪಂ ೧೮-೭೦। 3. ಸ್ಪರ್ಶಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಮುಂಚುಮುಂಚುಮವನು. "ನವಾ ಲತಾ ಗಂಧವಹೇನ ಚುಮ್ಬಿತಾ ಕರಮ್ಬಿತಾಜ್ಞಿ" ನೆಪಂ ೨-೮೫।

ಚುಮ್ಬಿನ್ ಚುಂಚಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಮುಂಚುಮವನು. ಚುಬಿ (ವಕ್ತ್ರಸಂಯೋಗ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಸಂಚುಂಚಿ ಸಿದ, ಸಂಚುಂಚುಮವನು. "ಅಪಾಸ್ತಪಾಥೇಯಸುಧೋಪಯೋಗೇಸ್ವಚ್ಚುಮ್ಬಿ-ನೇವ ಸ್ವಮನೋರಥೇನ" ನೆಪಂ ೮-೮೭। 3. ಅಸ್ತಮವನು, ನಿರಂತರವಾದ. "ಧರಾತುರಾಸಾಹಿ ಮದರ್ಥಯಾಚ್ಛಾ ಕಾರ್ಯಾ ನ ಕಾರ್ಯಾಂತರಚುಮ್ಬಿಚಿತ್ತೇ" ನೆಪಂ ೩-೯೫। 4. ಮುಂಚುಮವನು, ಸ್ಪರ್ಶಮವನು. "ಸ್ತಮ್ಬ: ಕುಶಸ್ಯ ಭವಿತಾಮ್ಬರಚುಮ್ಬಿಚೂಡ-ಶ್ರಿತ್ರಾಯ ತತ್ರ ತವ ನೇತ್ರನಿಪೀಯಮಾನ:" ನೆಪಂ ೧೧-೫೯।

ಚುಮ್ರ ಚುಂಚು (ಪುಂ) 1. ನಾಶ. (ವಿಂ) 2. ದುಃಖಿಡ. "ಚುಮ್ರೋ ನಾಶೋ ವಿಷಣ್ಣೋ ಚ" ವೈಜಂ।

ಚುರ-ಸ್ತೇಯೆ (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಪಕ್ಷೇ ಸ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಚೋರಯತಿ, -ತೇ। ಚೋರಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭವ। ಚೋರಯಾಮಾಸ। ಚೋರಯಿತಾ। ಚೋರಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ। ಚೋರಯತು, -ತಾಮ್। ಅಚೋರಯತ್, -ತ। ಚೋರಯೇತ್, -ತ। ಚೋರಯಾತ್, ಚೋರಯಿಷೀಷ್ಠ। ಅಚೂಚುರತ್, -ತ। ಅಚೋರಯಿಷ್ಯತ್, -ತ। ಕಡಿ, ಕಳವುಮಾಡು, ಅಪಹರಿಸು. "ಶ್ರಿತೋದಯಾದ್ರೇರಭಿಸಾಯ-ಮುಂಚುಕೇರಚುರಚ್ಚಂದ್ರಮಸೌಭಿರಾಮತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೧೬।

ಕರ್ಮಣಿ:-ಚೋರಯತೇ। ಚೋರಯಾಂ ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸೇ। ಚೋರಿತಾ, ಚೋರಯಿತಾ। ಚೋರಿಯತೇ, ಚೋರಿಯಿಷ್ಯತೇ। ಚೋರಯತಾಮ್। ಅಚೋರಯತ। ಚೋರಯತ। ಚೋರಿಯಿಷೀಷ್ಠ, ಚೋರಿಯಿಷೀಷ್ಠ। ಅಚೋರಿ ಅಚೋರಿಯತಾಮ್, ಅಚೋರಿಯಿಷತಾಮ್। ಅಚೋರಿಯಿಷ್ಯತ, ಅಚೋರಿಯಿಷ್ಯತ।

ಸನಿ:-ಚುಚೋರಿಯಿಷತಿ, -ತೇ। ಚುಚೋರಿಯಿಷಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ೧೨೩೦೦.

ಕೃತ್ಸು:-ಚೋರಯಿತವ್ಯ:। ಚೋರಣೀಯ:। ಚೋರಯ:। ಚೋರಿತ:। ಚೋರಿತವಾನ್। ಚೋರಯನ್, ಚೋರಯಂತಿ। ಚೋರಯಿತುಮ್। ಚೋರಿತಮ್। ಚೋರಣಮ್। ಚೋರಯಿತ್ವಾ। ೧೨೩೦೦.



ಕುರ ಚೂರ (ವಿಂ) ಕಡಿಯುವವನು, ಅಪಹರಿಸುವವನು.

ಕುರ (ಸ್ತೇ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೪) ।

ಕುರಣ-ಸ್ತೇ (ಕಣ್ಡಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಕುರಣ್ಯತಿ ।  
ಅಕುರಣ್ಯತಿ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕುರಣ ಚೂರಣ (ನಂ) ಚೌರ್ಯ, ಕಳ್ಳತನ.

ಕುರಾ ಚೂರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚೌರ್ಯ, ಕಳ್ಳತನ.

ಕುಲ ಚೂಲ (ಪುಂ) ದ್ರವಪದಾರ್ಥವು ಕೈಯಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲುವಂತೆ  
ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಗುಳಿಯಾದ ಅಂಗೈ. "ಪ್ರಸುತೇ ತು ದ್ರವಾಧಾರೆ  
ಗಣ್ಡುಷಕುಲಕುಲಕುಲ:" ವೈಜಂ ।

ಕುಲ(ಲು)ಕ ಚೂಲ(ಲು)ಕ (ಪುಂ) 1. ಸೆರೆ, ದ್ರವ  
ಪದಾರ್ಥವು ಕೈಯಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲುವಂತೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಗುಳಿ  
ಯಾದ ಅಂಗೈ. ಕುಲ (ಸಮುಚ್ಚ್ರಾಯೇ) "ಉಕವ್" । "ಕುಲಕ-  
ಗತಸಮುದ್ರಾಸ್ವಾದನೇ ಕುಮ್ಭಯೋನೀರೀತರನೀರಸ್ತಾ ಮಕ್ಷಿಕೋತ್ಸಾರ-  
ರೀತ್ಯಾ" ಚಂ ರಾಂ । 2. ಗಟ್ಟಿಕೆಸರು. 3. ಸಣ್ಣಪಾತ್ರೆ.  
(ನಂ) 4. ಅಂಗೈಯಲ್ಲಿ ಉದ್ದಿನಕಾಳು ಮುಳುಗುವಷ್ಟು  
ನೀರು. "ಕುಲಕೋ ಧನಜಮ್ಬಾಲೇ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಕುಲುಕಿನ್ ಚೂಲುಕಿನ್ (ಪುಂ) ಕಡಲ ಹಂದಿ, ನೀರು  
ಹಂದಿ.

ಕುಲುಮ್ಪ ಚೂಲುಂಪ (ಪುಂ) 1. ಮಕ್ಕಳ ಲಾಲನೆ, ಬಾಲಕ  
ರನ್ನು ಮುದ್ದಾಡುವುದು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಲುಮ್ಪಾ ಚೂಲುಂಪಾ.  
2. ಆಡು, ಹೆಣ್ಣು ಮೇಕೆ. "ಕುಲುಮ್ಪಾ ಚಿತ್ರಲಾ ಹೃದ್ಯಾ  
ಪರ್ಣಿದಾ ಪಲಿಕಿನ್ಯಜಾ" ವೈಜಂ ।

ಕುಲ್ಲ ಚೂಲ್ಲ (ಪುಂ) "ಕಿಲ್ಲ" ಪದದ 2 ಮತ್ತು 3 ನೆಯ  
ಅರ್ಥ. ["ಕಿಲ್ಲ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಕುಲ್ಲಕಿ ಚೂಲ್ಲಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಡಲಹಂದಿ, ನೀರುಹಂದಿ.  
2. ಕಮಂಡಲು. 3. ಒಂದು ವಂಶ. "ಕುಲ್ಲಕಿ ಶಿಶು-  
ಮಾರೇಪಿ ಕುಣ್ಡಿಭೇದೇ ಕುಲಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಕುಲ್ಲಿ(ಲಿ) ಚೂಲ್ಲಿ(ಲೀ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಲೆ. ಕುಲ್ಲಯತೇಷ್ವ-  
ಕುಲ್ಲ (ಭಾವಕರಣೇ) "ಓನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭) ।

ಕುಂಕುತ ಚೂಂಕುತ (ನಂ) ಶಿಶುಗಳ ಮತ್ತು ಪಕ್ಷಿಗಳ ಶಬ್ದ.  
"ಸುತಾ: ಕಮಾಹುಯ ಚಿರಾಯ ಕುಂಕುತೇವಿಧಾಯ ಕಮ್ರಾಣಿ ಮುಖಾನಿ  
ಕಂ ಪ್ರತಿ" ನೈಷಂ ೧-೧೪೨ ।

ಕುಂಕು ಚೂಂಕು (ನಂ) 1. ಕುಚದ ಅಗ್ರಭಾಗ, ಮೊಲೆಯು  
ತುಡಿ. ಕುಂಕುತೇ-ಕುಂಕು (ವಾನೇ) "ಉಕ:" ಬಾಹುಂ । ಪೃಷ್ಠಂ ।  
"ಕುಂಕುಕಂ ತು ಕುಂಕುಕಂ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ । "ಸುಭಗಾ ಭವಂತ್ಯ-  
ನುಡ್ಧಕುಂಕುಕಾ ನಿರ್ಧನಾ ವಿಷಮದೀರ್ಘ:" ಬೃಹತ್ಸಂ ೬೮-೨೭ ।  
(ವಿಂ) 2. ಬಿಕ್ಕುತ್ತು ಮಾತನಾಡುವ, ಬಿಕ್ಕುಲ. ಪಾಪಯೋನಿ  
ಸಮಾಪನ್ನಾಶ್ರಣಾಲಾ ಮುಕುಂಕುಕಾ: ಭಾಂ ಆಶ್ವಂ ೩೭-೩೦ ।

ಕುಂಕು ಚೂಂಕು (ಪುಂ) ಕೂಪ, ಬಾವಿ. "ಅಯಾನ್ಯುರ್ವಿಕಿರ-  
ಕುಂಕುಕಾ ಸ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಕುಂಕು ಚೂಂಕು(ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶಿಖೆ, ಜುಟ್ಟು. ಕುಂಕು(ಸಮುಚ್ಚ್ರಾಯೇ)  
"ಅಙ್" (೩-೩-೧೦೪) । ದೀರ್ಘಶ್ಚ ನಿಪಾಂ । "ಕುಂಕುಪಿಡ-  
ಕಪಾಲಸಂಕುಲಗಲನ್ಮಂದಾಕಿನೀವಾರಯೋ ವಿಚ್ಛುತ್ರಾಪ್ರಾಯಲಲಾಟಲೋಚನ-  
ಶಿಖಿಜ್ವಾಲಾವಿಮಿಶ್ರತಿವಿಷ:" ಮಾಲತೀಂ ೧-೧ । 2. ನವಿಲಿನ  
ತಲೆಯ ಮೇಲಿನ ಜುಟ್ಟು. 3. ಶೃಂಗ, ಶಿಖರ. "ಕುಂಕು-  
ಗ್ರಚ್ಛುಮಿಮಿಹಿರೋದಯಶೀಲಶೀಲಸ್ತೇನಾ:" ನೈಷಂ ೧೧-೪೨ ।  
"ಅಸ್ತಾಕುಲಕುಂಕುಕಾವಲಮ್ಬಿನಿ ಭಗವತಿ ಕುಮುದಿನಿನಾಯಕೇ"  
ಹಿತೋಂ ೧ । 4. ಅಗ್ರ, ತುದಿ. 5. ಅಂಗದ, ತೋಳಿನ  
ಅಭರಣ, ವಂಕಿ. 6. ತಲೆ. "ಶಿಖಾ ಕುಂಕುಶಿರಸ್ಯಪಿ"  
ವೈಜಂ । 7. ಕೂಪ, ಬಾವಿ. 8. ವಲಭಿ, ಮನೆಯ  
ಭಾವನೆಯ ತುದಿ (ಸೂರಿ)ಗೆ ಆಧಾರವಾದ ಅಡ್ಡಪಟ್ಟಿ.  
"ಕುಂಕುಶಿಖಾಗ್ರಯೋ: । ಬಾಹುಭೂವಲಮ್ಯೋಶ್ಚ" ಹೇಮಂ ।  
"ಅಯಾನ್ಯುರ್ವಿಕಿರಕುಂಕುಕಾ ಸ:" ಕುಂಕುಲಾಟಿ ಚ ಕುಂಕು"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಕುಂಕುಕರ್ಮನ್ ಚೂಂಕುಕರ್ಮನ್ (ನಂ) ಚೂಲ, ಮಕ್ಕಳಿಗೆ  
ಜುಟ್ಟು ಬಿಡಿಸುವುದು. ಇದು ಹದಿನಾರು ವಿಧ ಸಂಸ್ಕಾರ  
ಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಮೂರು ಐದು ಅಥವಾ ಏಳನೆಯ  
ವರ್ಷದಲ್ಲಿ ಚೂಂಕುಕರ್ಮವನ್ನು ನಡೆಸಬೇಕು. "ತೃತೀಯೇ  
ಪಂಚಮೇಂದೇ ವಾ ಸ್ವಕುಲಾಚಾರತೋ ಹಿತಮ್ । ಚೂಲಂ ಶಿಶುನಾಂ  
ಯತ್ನೇನ ಸ್ವಗೃಹ್ಯೋಕ್ತವಿಧಾನತ: । ಆಧಾನತೋ ಜನ್ಮತೋ ವಾ  
ಸಪ್ತಮಾಂದೇಷಿ ಕಾರಯೇತ್" ಇತಿ ವಸಿಷ್ಠ: । ಚೂಂಕು  
ಕರ್ಮಕ್ಕೆ ಪ್ರಶಸ್ತನಾದ ತಿಥಿನಾರಾದಿಗಳು:

ಪ್ರಶಸ್ತ ತಿಥಿಗಳು : ಪ್ರತಿಪತ್ (ಪಾಡ್ಯ) ಚತುರ್ಥಿ  
ಪಕ್ಷಿ ಅಷ್ಟಮಿ ನವಮಿ ದ್ವಾದಶಿ ಪರ್ವತಿಥಿಗಳು ಇವು  
ಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಉಳಿದ ದ್ವಿತೀಯೆ ತೃತೀಯೆ ಪಂಚಮಿ  
ಸಪ್ತಮಿ ದಶಮಿ ಏಕಾದಶಿ ತ್ರಯೋದಶಿ ತಿಥಿಗಳು. "ದ್ವಾದಶೀಂ  
ಚಾಷ್ಟಮೀಂ ರಿಕ್ತಾಂ ಷಣ್ಣೀಂ ಪ್ರತಿಪದಂ ತಥಾ । ಹಿತವಾ ಶೇಷಾಸು  
ತಿಥಿಷು ಕುರೀಕರ್ಮ ಶುಭಾವಹಮ್" । "ಪಂಚಮಿ ಸಪ್ತಮಿ ಚೈವ  
ದಶಮ್ಯೇಕಾದಶಿ ತಥಾ । ತ್ರಯೋದಶಿ ತೃತೀಯಾ ಚ ಕುರೀಕರ್ಮ-  
ಶುಭಾವಹಾ" ವಸಿಷ್ಠ: ।

ಪ್ರಶಸ್ತ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು : ಅಶ್ವಿನಿ ರೋಹಿಣಿ ಮೃಗ  
ಶೀರ್ಷ ಪುನರ್ವಸು ಪುಷ್ಯ ಉತ್ತರಾಷ್ಣಾ ನಿ ಹಸ್ತ ಚಿತ್ತ  
ಸ್ವಾತಿ ಅನೂರಾಧ ಉತ್ತರಾಷಾಢ ಶ್ರವಣ ಧನಿಷ್ಠ ಉತ್ತರಾ  
ಭಾದ್ರ ಮತ್ತು ರೇವತಿ.

ಪ್ರಶಸ್ತ ವಾರಗಳು : ಸೋಮ ಬುಧ ಗುರು ಮತ್ತು  
ಶುಕ್ರವಾರ.



**ಪ್ರಶಸ್ತ ಲಗ್ನಗಳು :** ವೃಷಭ ಮಿಥುನ ಕರ್ಕಾಟಕ ಕನ್ಯಾ ಧನಸ್ಸು ಮತ್ತು ಮಿಥುನ. "ಮಧ್ಯೇಷ್ವರವಾಯುಮಿತ್ರ-ವರ್ಣಬ್ರಹ್ಮಾಭಿಧೇಶ್ವರತಮೇ ಚಿತ್ರಾಂತ್ಯೇಂದುಪುನರ್ವಸುಧಯಕರಶ್ರೋಣದ್ವಯಾಘೇ ದಿವಾ । ಬಾಲಸ್ಯ ತ್ರಿತಯೇಷ್ಯ ಪಶ್ಚಮಸಮೇ ಮಾಸಾದಿರಿಕ್ಷಾಷ್ಟಮಿ-ಪರ್ವಾನ್ಯಾಸು ಶುಭಾಂಶವಾರಭವನೇ ಚೌಲಂ ವಿಶುದ್ಧೇಷ್ಟಮೇ" ಕಾಲಾಂ ೨೨ । ಮತ್ತು ಲಗ್ನಕ್ಕೆ ಅಷ್ಟಮ ಸ್ಥಾನವು ಶುದ್ಧ (ಗ್ರಹ ವರ್ಜಿತ) ವಾಗಿರಬೇಕು.

**ಚೂಡಾಮಣಿ ಚೂಡಾಮಣಿ (ಪುಂ)** 1. ಜಡೆಬಿಲ್ಲೆ, ತಲೆಯಲ್ಲಿ ಧರಿಸುವ ರತ್ನಾಭರಣ. ಚೂಡಾಂ ಸ್ಥಿತೋ ಮಣಿಃ । "ಚೂಡಾಮಣಿಭಿರ್ದೃಷ್ಟಪಾದಪೀಠಂ ಮಹೀಕ್ಷಿತಾಮ್" ರಘುಂ ೧೭-೨೮ । 2. ಗುಲಗಂಜಿ. ಚೂಡಾಂ ಮಣಿರಿವ । "ಚೂಡಾಮಣಿಃ ಶಿರೋರತೇ ಕಾಲಚಿತ್ತಾಕಲೇ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ । 3. ಸೂರ್ಯಗ್ರಹಣವು ಭಾನುವಾರದಲ್ಲೂ ಚಂದ್ರಗ್ರಹಣವು ಸೋಮವಾರದಲ್ಲೂ ಬರುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ಯೋಗ. "ಸೂರ್ಯಗ್ರಹಃ ಸೂರ್ಯವಾರೆ ಸೋಮೇ ಸೋಮಗ್ರಹಸ್ತಥಾ । ಚೂಡಾಮಣಿರಯಂ ಯೋಗಃ ತತ್ರಾನಂತಂ ಫಲಂ ಮತಮ್ । ಅನ್ಯಸ್ಮಾದ್ಗ್ರಹಣಾತ್ ಕೋಟಿಗುಣಮತ್ರಫಲಂ ಲಭೇತ್" ।

**ಚೂಡಾಮಲ ಚೂಡಾಮಲ (ನಂ)** 1. ಹುಣಿಸೆಹಣ್ಣು. 2. ಪುಲ್ಲಂ ಪುರಿಚೆ.

**ಚೂಡಾರತ್ನ ಚೂಡಾರತ್ನ (ನಂ)** ಚೂಡಾಮಣಿ, ತಲೆಯಲ್ಲಿ ಧರಿಸುವ ರತ್ನಾಭರಣ.

**ಚೂಡಾಲ ಚೂಡಾಲ (ವಿಂ)** 1. ಶಿಖೆಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟಿರುವ, ಜುಟ್ಟು ಬಿಟ್ಟಿರುವ. ಚೂಡಾಸ್ತಸ್ಯ "ಲಕ್" (೪-೨-೧೬) । (ನಂ) 2. ತಲೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)-ಲಾ-ಲಾ 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕೊನ್ನಾರಿ ಗೆಡ್ಡೆ. "ಚೂಡಾಲಾ ತುಂಚಟಾಂ ಸ್ತ್ರೀ ಚೂಡಾವತಿ ಚ ವಾಚ್ಯವತ್" ಮೇದಿಂ ।

**ಚೂಡಾವತ್ ಚೂಡಾವತ್ (ವಿಂ)** ಶಿಖೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಜುಟ್ಟು ಬಿಟ್ಟಿರುವ. ಚೂಡಾಸ್ತಾಸ್ತಿ ವಾ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೩೬) । ಪಕ್ಷೆ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೬) । ಚೂಡಿನ್ ಚೂಡಿಸ್. ಪಕ್ಷೆ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೬) । ಚೂಡಿಕ: ಚೂಡಿಕೆ.

**ಚೂಡಾವಲಂಬಿನ್ ಚೂಡಾವಲಂಬಿನ್ (ವಿಂ)** ಶಿಖರವನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿರುವ, ತುದಿಯನ್ನು ಮುಟ್ಟಿರುವ. ಚೂಡಾಮವಲಂಬತೇ-ಅವ+ಲಬಿ (ಅವಸಂಸೇ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) । "ಅಸ್ತಾಚಲಚೂಡಾವಲಂಬಿನಿ ಭಗವತಿ ಕುಮುದಿನಿನಾಯಕೇ" ಹಿತೋಂ ೧ ।

**ಚೂಡಿಕ ಚೂಡಿಕ (ವಿಂ)** "ಚೂಡಾವತ್" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ಚೂಡಿನ್ ಚೂಡಿಸ್ (ವಿಂ)** "ಚೂಡಾವತ್" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ಚೂತ ಚೂತ (ಪುಂ)** 1. ಮಾವಿನ ಮರ. ಚೂಯತೇ ಸ್ಮ - ಚೂಷ (ಪಾನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । ಪೃಷೋಂ । "ಚೂತಮಾಲಿ-

ರಲಿನಾಮತಿರಾಗಾದಕ್ಷಮಿಷ್ಟ ಮಧುವಾಸರಸಾರಮ್" ಮಾಘಂ ೬-೬೮ ।

2. ಗುಂದದ್ವಾರ, ಅಸನದ್ವಾರ.

**ಚೂತಕ ಚೂತಕ (ಪುಂ)** 1. ಮಾವಿನಮರ. ಚೂತ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ್ತಃ" । 2. ಸಣ್ಣ ಬಾವಿ. "ಚೂತಕಃ ಕೃಪ ಆಮ್ರೇ ಚ" ಹೇಮಂ ।

**ಚೂತಕುಸುಮ ಚೂತಕುಸುಮ (ನಂ)** ಮಾವಿನಹೂವು.

**ಚೂತಾಡ್ಕುರ ಚೂತಾಡ್ಕುರ (ಪುಂ)** ಮಾವಿನಚಿಗುರು.

ಚೂತಸ್ಯಾಡ್ಕುರಃ । "ಚೂತಾಡ್ಕುರಾಸ್ವಾದಕಪಾಯಕಠಃ ಪುಂಸ್ಕೋಕಿಲೋ ಯನ್ಮಧುರಂ ಚುಕುಜ್" ಕುಮಾಂ ೩-೩೨ ।

**ಚೂರ್ಣ-ಪ್ರೇರಣೆ (ಚುರಾಂ ಚುರಾಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)** । ಚೂರ್ಣಯತಿ, -ತೇ । ಅಚುಚೂರ್ಣತ್, -ತ । ಅರೆ, ಪುಡಿಮಾಡು, ಹಿಟ್ಟುಮಾಡು.

**ಚೂರ್ಣ ಚೂರ್ಣ (ನಂ)** 1. ಸುಣ್ಣ, ಸುಟ್ಟುಸುಣ್ಣ. ಚೂರ್ಣ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಘಬ್" (೩-೩-೧೯) । "ಯುಕ್ತೇನ ಚೂರ್ಣಂ ಕರೋತಿ ರಾಗಂ ರಾಗಕ್ಷಯಂ ಪೂರ್ಣಫಲಾತಿರಿಕ್ಷಮ್ । ಚೂರ್ಣಾಧಿಕಂ ವಕ್ತ್ರವಿಗಂಧಕಾರಿ ಪತ್ರಾಧಿಕಂ ಸಾಧುಕರೋತಿ ಗಂಧಮ್" ಬೃಹತ್ಸಂ । 2. ಧೂಳಿ. (ನಂ) 3. ಧಾನ್ಯದ ಹಸಿಹಿಟ್ಟು. 4. ವಾಸನೆಯಪುಡಿ. "ಅಲಕೇಷು ಚಮುರೇಣುಶ್ಚೂರ್ಣಪ್ರತಿನಿಧೀಕೃತಃ" ರಘುಂ ೪-೫೪ । 5. ಗದ್ದೆ ಕಾವ್ಯದ ಒಂದು ಭೇದ; ಲಲಿತ ವಾಗಿಯೂ ವ್ಯಸ್ತವಾಗಿಯೂ ಇರುವ ಮೃದುಪದಗಳಿಂದ ರಚಿತವಾದುದು ಚೂರ್ಣ ಕಾವ್ಯವು. "ಅನಾವಿದ್ವಲಲಿತಪದಂ ಚೂರ್ಣಮ್" ಕಾವ್ಯಾಂ ಸುಂ ೧-೩-೨೪ । "ಅಭ್ಯಾಸೋ ಹಿ ಕರ್ಮಣಾಂ ಕೌಶಲಮಾವಹತಿ । ನ ಹಿ ಸಕೃನ್ನಿಪಾತಮಾತ್ರೇಣೋದಬಿಂದುರಪಿ ಗ್ರಾವಣಿ ನಿಮ್ನಸಾಮಾದಧಾತಿ" । 6. ಯಮಕಾಲಂಕಾರಕ್ಕೆ ಉತ್ಕರ್ಷವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ವರ್ಣ (ಅಕ್ಷರ) ಭಂಗದ ಒಂದು ಭೇದ. "ಶೃಂಗಾರಾ ಪರಿವರ್ತಕಶ್ಚೂರ್ಣಮಿತಿಭಿಜ್ಞಮಾಗ್" ಕಾವ್ಯಾಂ ಸುಂ ೪-೧-೪ । "ಪಿಂಡಾಕ್ಷರಭೇದೇ ಸ್ವರೂಪಲೋಪ-ಶ್ಚೂರ್ಣಮ್" ೪-೧-೭ । ಸಂಯುಕ್ತಾಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಒಡೆದು ಬೇರೆ ಮಾಡುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಪದಗಳ ಸ್ವರೂಪ ಲೋಪವು ಚೂರ್ಣವೆನಿಸುವುದು. "ದ್ವರಸಮುಕ್ತಶುಕ್ತಿ-ಮಿನಾಂ ಕಾಂತಃ" ಎಂಬಲ್ಲಿ....ಸಮುಕ್ತಶುಕ್ತಿ ತಿಮಿನಾಂ ಎಂದು ಪದಚ್ಛೇದ ಮಾಡುವುದರಿಂದ "ಕ್ತಿ" ಎಂಬ ಸಂಯುಕ್ತಾಕ್ಷರದ ಸ್ವರೂಪಲೋಪವಾಗಿ ಇಲ್ಲಿ ಚೂರ್ಣ ರೂಪವಾದ ಭಂಗವಾಯಿತು.

**ಚೂರ್ಣಕ ಚೂರ್ಣಕ (ನಂ)** 1. ಕುಟ್ಟುವುದು, ಅರೆಯುವುದು, ಪುಡಿಮಾಡುವುದು. 2. ವಾಸನೆಯಪುಡಿ. 3. ಗದ್ದೆ ಕಾವ್ಯದ ಒಂದು ಭೇದ, ಲಲಿತ ಪದವಿನ್ಯಾಸ ವ್ಯಸ್ತಪದಗಳು ಇವುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ವಾಕ್ಯವು. ಚೂರ್ಣ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ್ತಃ" । "ಅಕಠೋರಾಕ್ಷರಂ ಸ್ವಲ್ಪಸಮಾಸಂ ಚೂರ್ಣಕಂ ವಿಧುಃ" (ಪುಂ) ಹುರಿಹಿಟ್ಟು. "ಸಕ್ತುಶ್ಚೂರ್ಣಕಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।



**ಚೂರ್ಣಕಾರ ಚೂರ್ಣಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ಅರೆಯುವವನು, ಪುಡಿ ಮಾಡುವವನು. ಚೂರ್ಣ ಕರೋತಿ-ಡುಕ್ಕು (ಕರಣಂ) "ಅನ್" (೩-೨-೧)। 2. ಸುಣ್ಣವನ್ನು ಸುಡುವವನು, ಒಬ್ಬ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು.

**ಚೂರ್ಣಕುಂತಲ ಚೂರ್ಣಕುಂತಲ** (ಪುಂ) ಮುಂಗುರುಳು, ತಲೆಯ ಮುಂಭಾಗದ ತುಂಡುಕೂದಲು, ಗುಂಗುರು ಕೂದಲು. ಚೂರ್ಣಸ್ಯ ಕುಡ್‌ಕುಮಾದಿಕೋದಸ್ಯ ಕುಂತಲಃ।

**ಚೂರ್ಣಕೇಶ ಚೂರ್ಣಕೇಶ** (ಪುಂ) ಮುಂಗುರುಳು, ಗುಂಗುರು ಕೂದಲು.

**ಚೂರ್ಣಖಂಡ ಚೂರ್ಣಖಂಡ** (ಪುಂ) ನುಣುಪಾದ ಗುಂಡು ಕಲ್ಲು, ನೀರು ಹರಿದು ನಯವಾದ ಕಲ್ಲು. ಚರ್ಣಾರ್ಥಿ ಖಂಡಃ।

**ಚೂರ್ಣನ ಚೂರ್ಣನ** (ನಂ) ಅರೆಯುವುದು, ಕುಟ್ಟುವುದು. ಪುಡಿಮಾಡುವುದು. ಚೂರ್ಣ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ಚೂರ್ಣಪಾರದ ಚೂರ್ಣಪಾರದ** (ಪುಂ) ರಸಗಂಧಕ, ಸಿಂದೂರ.

**ಚೂರ್ಣಪೇಷಮ್ ಚೂರ್ಣಪೇಷಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಪುಡಿಯಾಗುವಂತೆ ಅರೆದು.

**ಚೂರ್ಣಯೋಗ ಚೂರ್ಣಯೋಗ** (ಪುಂ) ವಾಸನೆಕಟ್ಟಿದ ಪುಡಿ, ಸುವಾಸನೆಯ ಪುಡಿ.

**ಚೂರ್ಣಶಸ್ ಚೂರ್ಣಶಸ್** (ಅವ್ಯಂ) ಪುಡಿ ಪುಡಿಯಾಗಿ, ಧೂಳು ಧೂಳಾಗಿ. ಚೂರ್ಣ "ಶಸ್" (೪-೪-೪೩)।

**ಚೂರ್ಣಿ ಚೂರ್ಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ನೂರು ಕವಡೆಗಳು. ಚರ (ಗತೌ) "ನಿಃ" (೩ಂ ೪-೫೨)। ನಿಪಾಂ। ಚೂರ್ಣಿಃ ಕಪರ್ದಕಶತಮ್ ಸಿಂ ಕೌಂ। 2. ಪತಂಜಲಿಯ ಮಹಾ ಭಾಷ್ಯ. 3. ಪುಡಿಮಾಡುವುದು, ಕುಟ್ಟುವುದು.

**ಚೂರ್ಣಿಕಾ ಚೂರ್ಣಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುರಿಹಿಟ್ಟು, ಹುರಿದು ಪುಡಿಮಾಡಿದ ಧಾನ್ಯ.

**ಚೂರ್ಣಿತ ಚೂರ್ಣಿತ** (ವಿಂ) ಪುಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೂರಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಚೂರ್ಣ (ಪ್ರೇರಣೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

"ಸ್ಥಿತಾಃ ಕ್ಷಣಂ ಪಕ್ಷಮಸು ತಾಡಿತಾಧರಾಃ ಪಯೋಧರೋತ್ಪನ್ನಿನಿಪಾತ-ಚೂರ್ಣಿತಾಃ" ಕುಮಾಂ ೪-೨೪।

**ಚೂರ್ಣಿದಾಸಿ ಚೂರ್ಣಿದಾಸೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಡಿಮಾಡಲು ನಿಯುಕ್ತಳಾದ ಹೆಂಗಸು. ಚೂರ್ಣಿ ಚೂರ್ಣನೆ ನಿಯುಕ್ತಾ ದಾಸಿ।

**ಚೂರ್ಣಿನ್ ಚೂರ್ಣಿನ್** (ವಿಂ) ಹಿಟ್ಟಿನೊಡನೆ ಬೆರೆತ ವಸ್ತುವಿನ ಅಥವಾ ಹಿಟ್ಟಿನಿಂದ ತಯಾರಾದ ರೊಟ್ಟಿ ಮುಂತಾದುದು. ಚೂರ್ಣಃ ಸಂಸೃಷ್ಟಃ "ಛನಿಃ" (೪-೪-೨೩)। "ಚೂರ್ಣಃ ಸಂಸೃಷ್ಟಾಃ ಚೂರ್ಣಿನೋಽಪ್ಪಾಃ" ಸಿಂ ಕೌಂ।

**ಚೂರ್ಣೀಕೃತ ಚೂರ್ಣೀಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ಪುಡಿಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಅರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಚೂರ್ಣಿ ಚೂರ್ಣ ಕೃತಮ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಚೂರ್ತಿ ಚೂರ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಡೆಯುವುದು, ಸಂಚರಿಸುವುದು. ಚರ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। ಅತಃ ಉತ್ವಮ್ (೭-೪-೮೯)। ದೀರ್ಘಃ (೮-೨-೭೭)।

**ಚೂಲ ಚೂಲ** (ಪುಂ) ಕೇಶ, ಕೂದಲು.

**ಚೂಲಕ ಚೂಲಕ** (ಪುಂ) ಕೇಶ, ಕೂದಲು. ಚೂಲ ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕನ್"।

**ಚೂಲಾ ಚೂಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಹಡಿಯ ಮೇಲಿನ ಮನೆ, ಮೇಲಿನ ಮಹಡಿ, ಚಂದ್ರಶಾಲೆ. 2. ಜುಟ್ಟು, ಶಿಖೆ.

**ಚೂಲಿಕ ಚೂಲಿಕ** (ನಂ) ತುಪ್ಪದಲ್ಲಿ ಹುರಿದ ಗೋಧಿಹಿಟ್ಟಿನ ರೊಟ್ಟಿ.

**ಚೂಲಿಕಾ ಚೂಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನೆಯ ಕಿವಿಯ ಬುಡ. 2. ಕೋಳಿಯ (ಹುಂಜದ) ತಲೆಯ ಶಿಖೆ. ಚೂಲ (ಸಮುಚ್ಚ್ರಾಯೆ) "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಪೃಷಂ। "ಕುಕ್ತುಡಸ್ತ್ವಜು-ತನೂಹಾಡ್‌ಗುಲಿಸ್ತಾಽವಕ್ತನಖಚೂಲಿಕಃ ಸಿತಃ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೬೩-೧। 3. ತೆರೆಯೊಳಗಿನಿಂದ ನಾಟಕದ ಮುಂದಿನ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸುವುದು. ಇದು ನಾಟಕೀಯ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ವಿಷ್ಣುಂಭ ಮೊದಲಾದ ಐದು ಅರ್ಥೋಪಕ್ಷೇಪಕಗಳಲ್ಲೊಂದು ವಿಧ. "ಅರ್ಥೋಪಕ್ಷೇಪಕಾಃ ಪञ्च ವಿष्कम्भಕಪ್ರವೇಶಕೌ। ಚೂಲಿಕಾಽವತಾರೋಽಪ್ಯ ಸ್ಯಾದ್‌ಙ್ಕ-ಮುಖಮಿತ್ಯಪಿ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೫೪। "ಅಂತರ್ಯವನಿಕಾಸಂಸ್ಥೆಃ ಚೂಲಿಕಾರ್ಥಸ್ಯ ಸೂಚನಾ" ೬-೫೮। "ಭೋ ಭೋ ವೈಮಾನಿಕಾಃ ಪ್ರವರ್ತಂತಾಂ ರಙ್ಗಮಙ್ಗಲಾನಿ" ಇತ್ಯಾದಿ। ಅತ್ರ "ರಾಮೇಣ ಪರಶುರಾಮೋ ಜಿತಃ" ಇತಿ ನೇಪಥ್ಯೇ ಪಾತ್ರೈಃ ಸೂಚಿತಮ್।

**ಚೂಷ-ಪಾನೆ** (ಘಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸಂ)। ಚೂಷತಿ। ಚುಚೂಷ। ಚೂಷಿತಾ। ಚೂಷಿಷ್ಯತಿ। ಚೂಷತು। ಅಚೂಷತ್। ಇತ್ಯಾದಿ. ಬಾಯೊಳಕ್ಕೆ ಎಳೆದುಕೊಂಡು, ಹೀರು.

**ಕರ್ಮಣಿಃ**:-ಚೂಷ್ಯತೇ। ಚೂಷಯಾಂ ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವೇ, -ಆಸೇ। ಚೂಷಿತಾ। ಚೂಷಿಷ್ಯತೇ। ಚೂಷ್ಯತಾಮ್। ಅಚೂಷ್ಯತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಣಿಚಿಃ**:-ಚೂಷಯತಿ, -ತೇ। ಚೂಷಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಚೂಷಯಿತಾ। ಚೂಷಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ। ಚೂಷಯತು, -ತಾಮ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತ್ಸುಃ**:-ಚೂಷಿತವ್ಯಮ್। ಚೂಷಣೀಯಮ್। ಚೂಷ್ಯಮ್। ಚೂಷಿತಃ। ಚೂಷಿತವಾನ್। ಚೂಷಿತಮ್। ಚೂಷಿತುಮ್। ಚೂಷಣಮ್। ಚೂಷಿತ್ವಾ। ಪ್ರಚೂಷ್ಯ।

**ಚೂಷಣ ಚೂಷಣ** (ನಂ) ಬಾಯೊಳಕ್ಕೆ ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಹೀರುವುದು. ಚೂಷ (ಪಾನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।



ಚೃಷಣೀಯ ಚೂಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಹೀರಲ್ಪಡುವ.

2. ಹೀರಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಹೀರಬಹುದಾದ. ಚೃಷ (ಪಾನೇ) ಕರ್ಮದಿ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। ತವ್ಯ:।  
ಚೃಷಿತವ್ಯ: ಚೂಷಿತವ್ಯ:..

ಚೃಷಾ ಚೂಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತೋಗಲಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಆನೆಯ ನಡುಕಟ್ಟು. ಚೃಷ್ಯತೇ ಪೃಷ್ಠಮಾಸೇನ - ಚೃಷ (ಪಾನೇ) ಧಜಯೆ "ಕ:" (ವಾಂ ೩-೩-೫೮)। 2. ಹೀರುವುದು. ಚೃಷ ಭಾವೇ "ಅಙ್" (೩-೩-೧೦೪)। 3. ಸ್ತನ್ಯಪಾನ ಮಾಡುವುದು. 4. ನಡುಕಟ್ಟು, ಡಾಬು, ಒಡ್ಡಾಣ.

ಚೃಷಿತ ಚೂಷಿತ (ವಿಂ) ಹೀರಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಾಯೊಳಕ್ಕೆ ಎಳೆದು ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಚೃಷ (ಪಾನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಚೃಷ್ಯ ಚೂಷ್ಯ (ವಿಂ) ನಾಲಗೆಯಿಂದ ಬಾಯೊಳಕ್ಕೆ ಎಳೆದು ಕೊಂಡು ಕುಡಿಯಲ್ಪಡುವ ಒಂದು ವಿಧ ಆಹಾರ. ಚೃಷ (ಪಾನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)।

ಚೇಕಿತಾನ ಚೇಕಿತಾನ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾದೇವ, ಪರಶಿವ. "ಋದ್ರಮೀಶಾನಮೃಷಮಂ ಹರಂ ಶಮ್ಭುಂ ಕಪದಿನಮ್। ಚೇಕಿತಾನಂ ಪರಾಂ ಯೋನಿಂ ತಿಷ್ಠತೋ ಗಂಧತಶ್ಚ ಹ" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೨೦೨-೬೬। 2. ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. "ಘೃಷ್ಣಧುಮ್ನನಃಕೇಕಿತಾನ: ಕಾಶೀರಾಜಶ್ಚ ವೀರ್ಯವಾನ್" ಗೀತಾ ೧-೫। (ವಿಂ) 3. ಜ್ಞಾನಿ, ಬುದ್ಧಿ ಶಾಲಿ. ಕಿತ (ನಿವಾಸರೋಗಾಪನಯನಾದಿ) ಯಜ್ಞಲೋಕ ತಾಂತ್ರಿಕೀಯ "ಚಾನಶ್" (೩-೨-೧೨೯)।

ಚೇಡ ಚೇಟಿ (ಪುಂ) ದಾಸ, ಸೇವಕ, ಆಳು. ಚಿಡ (ಪರಪ್ರೇಷ್ಯ) "ಅವ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಶೃಂಗಾರಸ್ಯ ಸಹಾಯಾ ವಿಡೇಡ-ವಿಡುಷಕಾಘಾ: ಸ್ಯು:" ಸಾಂ ದಂ ೩-೪೦। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್"।  
ಚೇಟಿ ಚೇಟೀ. ದಾಸಿ, ಸೇವಕ.

ಚೇಡಕ ಚೇಟಿಕ (ಪುಂ) 1. ದಾಸ, ಸೇವಕ, ಆಳು. ಚಿಡ (ಪರಪ್ರೇಷ್ಯ) "ವುನ್" (೩ಂ ೫-೩೫)। 2. ಉಪಪತಿ, ಮಿಂಡ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಚೇಡಿಕಾ ಚೇಟಿಕಾ. 3. ದಾಸಿ, ಸೇವಕ.

ಚೇಟಾ ಚೇಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಾಸಿ, ಸೇವಕ. "ದಾಸೀ ತು ಚೇಡಿಕಾ ಚೇಟಾ ವಡವಾ ಕುಮ್ಭಧಾರಿಕಾ" ವೈಜಂ।

ಚೇಟಿ ಚೇಟೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಾಸಿ, ಸೇವಕ. "ತಾಮ್ಬೂಲಾಕ್ತಂ ದಶನಮಸಕೃತ್ ದರ್ಶಯಂತೀಹ ಚೇಟಿ" ಸಾಂ ದಂ।

ಚೇತ್ ಚೇಡ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಆದರೆ, ಆಗುವುದಾದರೆ, ಇರುವುದಾದರೆ. ಚಿತಿ (ಸಂಜ್ಞಾನೇ) "ವಿಚ್" (೩-೨-೭೫)। "ಉಚ್ಛೇಗತಿರ್ಜಗತಿ ಸಿದ್ಧಯತಿ ಧರ್ಮತಃಚೇತ್" ಚಂ ರಾಂ। 2. ಪಕ್ಷಾಂತರದಲ್ಲಿ, ಹಾಗಲ್ಲದಿದ್ದರೆ. 3. ಸಂದೇಹವಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಸಂದೇಹವಿರುವಂತೆ ಹೇಳುವುದು.

ಚೇತಕ ಚೇತಕ (ವಿಂ) ಚೈತನ್ಯವುಂಟುಮಾಡುವ ಇಂದ್ರಿಯ ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು, ಗ್ರಹಣಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ ಇಂದ್ರಿಯವುಳ್ಳವನು.

ಚೇತಕಿ ಚೇತಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಳಲೆಗಿಡ. ಚೇತಯತಿ-ಚಿತಿ (ಸಂಜ್ಞಾನೇ) + ಣಿಚ್ "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಗೌರಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧)। ಇಂದ್ರನು ಅಮೃತಪಾನ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದ ಅಮೃತಬಿಂದುವು ಅಳಲೆಗಿಡವಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿ ಬೆಳೆಯಿತು. "ಪಪಾತ ಬಿಂದುರ್ದಿನ್ಯಾಂ ಶಕ್ರಸ್ಯ ಪಿಬತೋಽಮೃತಮ್। ತತೋ ದಿವ್ಯಾ ಸಮುತ್ಪನ್ನಾ ಸಪ್ತಜಾತಿ-ಹೇರೀತಕೀ" ಭಾವಪ್ರಂ। 2. ಅಳಲೆಕಾಯಿ.

ಚೇತನ ಚೇತನ (ಪುಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಮಾತ್ಮ. 2. ಜೀವ. ಚೇತತಿ ಜಾನಾತಿ - ಚಿತಿ (ಸಂಜ್ಞಾನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। 3. ಮನುಷ್ಯ, ಚೈತನ್ಯವುಳ್ಳವನು. 4. ಪ್ರಾಣಿ. ಚೇತಯತೇ - ಚಿತ (ಸಂಚೇತನೇ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। (ವಿಂ) 5. ಪ್ರಾಣದಿಂದ ಕೂಡಿರುವ. "ಇತ್ಯೌತ್ಸುಕ್ಯಾದಪರಿಗಣಯನ್ ಗುಹ್ಯಕಸ್ತಂ ಯಾಚೇ ಕಾಮಾರ್ತಾ ಹಿ ಪ್ರಕೃತಿಕೃಪಣಾಃಚೇತನಾಚೇತನೇಷು" ಮೇಘಂ ೧-೫।

ಚೇತನಕಿ ಚೇತನಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಳಲೆಗಿಡ. ಚೇತನಂ ಕರೋತಿ ಬುದ್ಧಿನ್ದ್ರಿಯಾದಿಸ್ಫುರಣಂ ವರ್ಧಯತಿ।

ಚೇತನಾ ಚೇತನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬುದ್ಧಿ. ಚೇತಯತೇ - ಚಿತಿ (ಸಂಜ್ಞಾನೇ) + ಣಿಚ್ "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭)। "ಪಶ್ಚಿಮಾ-ದ್ವಾಮಿನೀಯಾಮಾತ್ಪ್ರಸಾದಮಿವ ಚೇತನಾ" ರಘುಂ ೧೭-೧। 2. ಜ್ಞಾನ, ಪ್ರಜ್ಞೆ. "ಲಙ್ಕಾ ಭೂಯಃಚೇತನಾಮಾಹವಾಯ" ಮಾಘಂ ೧೮-೬೪। 3. ಚೈತನ್ಯ. "ಯತ್ಸುರ್ವಮುಕುಟಾಂ-ಶುಭಿರಾಸೀಚೇತನಾವಿರಹಿತೈರಪಿ ಪೀತಮ್" ಮಾಘಂ ೧೦-೬।

ಚೇತವ್ಯ ಚೇತವ್ಯ (ವಿಂ) ಗುಂಪುಕೂಡಿಸಲ್ಪಡುವ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಒಂದೇ ಕಡೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವ. ಚಿಮ್ (ಚಯನೇ) ಕರ್ಮಂ "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬)। "ತಾಂಃಚೇತವ್ಯಾನ್ ಕ್ಷಿತೌ ಶ್ರಿತ್ವಾ ವಾನರಸ್ತೋರಣಂ ಯುತಾನ್। ಜಘಾನಾಽಽಭ್ಯು ಪರಿಧಂ ವಿಜಿಘೃಷ್ಣುನ್ ಸಮಾಗತಾನ್" ಮೃದ್ವಿಂ ೯-೧೩। "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। ಚಯನೀಯ: ಚಯನೀಯ:.

ಚೇತಸ್ ಚೇತಸ್ (ನಂ) 1. ಹೃದಯ, ಚಿತ್ತ, ಮನಸ್ಸು. ಚಿತಿ (ಸಂಜ್ಞಾನೇ) "ಅಸುನ್" (೩ಂ ೪-೧೮೯)। "ಋಜಂತಿ ಚೇತ: ಪ್ರಸಭಂ ಮಮಾಧಯ:" ಕಿರಾಂ ೧-೩೭। "ಗಂಧತಿ ಪುರ: ಶರೀರಂ ಧಾವತಿ ಪಶ್ಚಾದಸಂಸ್ತುತಂ ಚೇತ:" ಶಾಕುಂ ೧-೩೦। "ನ ಕ್ಷಮಂ ಭವತಿ ತತ್ತ್ವವಿಚಾರೇ ಮತ್ಸರೇಣ ಹೃತಸಂವೃತಿ ಚೇತ:" ಮಾಘಂ ೧೦-೩೫। 2. ಜ್ಞಾನ, ಪ್ರಜ್ಞೆ. 3. ಚೈತನ್ಯ.

ಚೇತೋಜನ್ಮನ್ ಚೇತೋಜನ್ಮನ್ (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮ ದೇವ. ಚೇತಸಿ ಜನ್ಮಾಽಸ್ಯ। "ಚೇತೋಜನ್ಮಶರಪ್ರಸೂನಮಧುಮಿ-



ವ್ಯಾಮಿಶ್ರತಾಮಾಶ್ರಯತ್" ನೆಪಂ ೩-೧೩೦। ಇದೇ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಚೆತೋಭವಃ ಚೇತೋಭವಃ. "ಚಕಾಸ್ತಿ ಚೆತೋಭವ-ಪಾವಕಸ್ಯ" ನೆಪಂ ೮-೭೬। ಚೆತೋಭೂಃ ಚೇತೋಭೂಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಚೆತೋಮತ್ ಚೇತೋಮತ್ (ವಿಂ) 1. ಚೈತನ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 2. ಜ್ಞಾನದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಪ್ರಜ್ಞೆಯಿರುವ. 3. ಒಳ್ಳೆಯ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ಪ್ರಶಸ್ತ ಚೆತೋಸ್ತಸ್ಯ "ಮತುಃ" (೪-೨-೧೪)।

ಚೇದಿ ಚೇದಿ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಚೇದಿದೇಶ. "ಹಂದ್ರಪ್ರಸ್ಯ-ಗಮಸ್ತಾವತ್ ಕಾರಿ ಮಾ ಸಂತು ಚೇದಯಃ। ಆಸ್ತಮಾಕದಂತಿ-ಸಾನಿಧ್ಯಾದ್ರಾಮನಿಭೂತಭೂಹಃ" ಮಾಘಂ ೨-೬೩। 2. ಚೇದಿ ದೇಶದ ದೊರೆಗಳು. ಚೇದಿನಾಂ ರಾಜಾನಃ - ಚೇದಿ "ಅಘ್" (೪-೧-೧೬೮)। ಅಘೋ ಲುಕ್ (೨-೪-೬೨)। ಉಪರಿಚರ-ವಸುಃ, ಸುಬಾಹುಃ, ಧೃಷತ್ಕೇತುಃ, ದಮಧೋಷಃ, ಶಿಶುಪಾಲಃ ಇತ್ಯಾದಿ ಚೇದಿರಾಜರು.

ಚೇದಿನಗರ ಚೇದಿನಗರ (ನಂ) ಚೇದಿದೇಶದ ರಾಜಧಾನಿ, ಶುಕ್ತಿಮತಿ.

ಚೇದಿಪ ಚೇದಿಪ (ಪುಂ) ಚೇದಿದೇಶದ ದೊರೆ. ಚೇದಿನ್ ಪಾತಿ - ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)। "ಚಂಡಮಾಸ್ತ-ಮಿವ ಪ್ರದೀಪವತ್ ಚೇದಿಪಸ್ಯ ನಿರವಾಹಿಲೋಚನಮ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೮೫।

ಚೇದಿಪತಿ ಚೇದಿಪತಿ (ಪುಂ) ಚೇದಿದೇಶದ ದೊರೆ, ಉಪರಿ ಚರವಸು. ಚೇದಿನಾಂ ಪತಿಃ। "ಮಾನಮಸಹತ ನ ಚೇದಿಪತಿಃ ಪರವೃದ್ಧಿಮತ್ಸರಿ ಮನೋ ಹಿ ಮಾನಿನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೫-೧।

ಚೇದಿಪುರೀ ಚೇದಿಪುರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚೇದಿದೇಶದ ರಾಜಧಾನಿ.

ಚೇದಿರಾಜ್ ಚೇದಿರಾಜ್ (ಪುಂ) ಚೇದಿದೇಶದ ದೊರೆ. "ಮಾ ವೇದಿ ಯದಸಾವೇಕೋ ಜೇತವ್ಯಃ ಚೇದಿರಾಜಿತಿ" ಮಾಘಂ ೨-೯೬।

ಚೇದಿರಾಜ ಚೇದಿರಾಜ (ಪುಂ) ಚೇದಿದೇಶದ ದೊರೆ, ಶಿಶುಪಾಲ. "ದಮಧೋಷಃ ಚೇದಿರಾಜಃ ಶ್ರುತಶ್ರವಸಮಗ್ರಹೀತ್" ಭಾಗಂ ೯-೨೪-೩೯।

ಚೇಯ ಚೇಯ (ವಿಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವ, ರಾಶಿ ಹಾಕಲ್ಪಡುವ. 2. ಗುಂಪು ಕೂಡಿಸಬೇಕಾದ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಬೇಕಾದ. ಚಿನ್ (ಚಯನೆ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೭)।

ಚೇಲ ಚೇಲ (ಪುಂ) 1. ಸೇವಕ, ಅಳು. ಭಾರ್ಯಾಚೇಲಃ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣ-ಚೇಲಃ ಜಾತಿಚೇಲಃ ಇತ್ಯಾದಿ. (ನಂ) 2. ವಸ್ತ್ರ, ಒಟ್ಟು. ಚಿಲ (ವಸನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಘನ್" (೩-೩-೧೯)। "ಫೇನಾನಾಮುರಸಿ-ಹೇಷು ಹಾರಲೀಲಾ ಚೇಲಶ್ರೀರ್ಜನತಲೇಷು ಶೈವಲಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೮-೫೯। 3. ನವಿಲುಗಂಧಿಯ ಕಣ್ಣು. (ವಿಂ) 4. ಅಧಮ,

ನೀಚ, ನಿಂದ್ಯ. "ಚೇಲೋಧಮೇ ತ್ರಿಪು। ನಪುಂಸಕಾಂತು ವಸನೆ" ಮೇದಿಂ। 5. ಅಸಹನೆಯ, ಸಹನೆಯಿಲ್ಲದ, ತಾಳ್ಮೆಯಿಲ್ಲದ. 6. ಅಪೇಕ್ಷಣೀಯವಾದ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 7. ನಿಂದಿತವಾದ, ಗರ್ಹವಾದ, ದೂಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಚೇಲಂ ವಾಸೋಷಮಂ ಕಾಮ್ಯಂ ಗರ್ಹಿತಂ ಬಹಿಃಪದ್ಮಕಃ" ವೈಜಂ।

ಚೇಲಕನೋಪಮ್ ಚೇಲಕನೋಪಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ವಸ್ತ್ರವನ್ನು ಒದ್ದೆಮಾಡುವಂತೆ (ಮಳೆಯಾಯಿತು), ವಸ್ತ್ರವು ಶಬ್ದವಾಗುವಂತೆ (ಮಳೆಯಾಯಿತು). ಚೇಲ+ಕನುಯಿ (ಶಬ್ದದ ಉದ್ದನೆ) "ಘಮುಲ್" (೩-೪-೩೩)।

ಚೇಲಗಜ್ಞಾ ಚೇಲಗಂಠಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋಕರ್ಣ ಕ್ಷೇತ್ರದ ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ನದಿ. "ಗೋಕರ್ಣಸ್ಯೋಪರಿಷ್ಠಾತ್ ಭ್ರಂಸಿತಃ ಸ ಮಹಾಸುರಃ। ಪಪಾತ ಚೇಲಗಜ್ಞಾಯಾಃ ಪುಲಿನೇ ಸಹ ಕನ್ಯಯಾ" ಹರಿವಂ।

ಚೇಲನಿರ್ಣೇಷಕ ಚೇಲನಿರ್ಣೇಷಕ (ಪುಂ) ವಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಒಗೆದು ಶುದ್ಧಿಮಾಡುವ ಅಗಸ. ಚೇಲಸ್ಯ ನಿರ್ಣೇಷಕಃ।

ಚೇಲಾಶಕ ಚೇಲಾಶಕ (ಪುಂ) ಒಟ್ಟಿಯಲ್ಲಿರುವ ಹೇನನ್ನು ತಿನ್ನುವ ಒಂದು ಕ್ರಿಮಿ. ಚೇಲಂ ವಸ್ತ್ರಂ ತತ್ಸಂಬಂಧಿನಿ ಯುಕ್ತಾ-ಮಶನಾತಿ - ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಘ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಚೇಲಾಶಕಶ್ಚ ಭವತಿ ಶೂದ್ರೋ ಧರ್ಮಾತ್ ಸ್ವಕಾನ್ವಿತಃ" ಮನುಂ ೧೨-೭೨।

ಚೇಲಿಕಾ ಚೇಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಟ್ಟಿವಸ್ತ್ರ, ರೇಷ್ಮೆವಸ್ತ್ರ. 2. ರವಿಕೆ, ಕುಪ್ಪಸ. "ಸೇಯಂ ಕೃಷ್ಣಸ್ಯ ವನಿತಾ ಪೀತಶಾಟೀ-ಪರಿಚ್ಛದಾ। ರಕ್ತಚೇಲಿಕಯಾ ಕ್ಷತ್ರಾ ಶಾತಕುಂಭನಿಭಸ್ತನಿ" ಪದ್ಮಪುಂ।

ಚೇಷ್ಟ-ಚೇಷ್ಟಾಯಾಮ್ (ಭಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸೇಂ)। ಚೇಷ್ಟತೇ। ಚಿಚೇಷ್ಟೆ। ಚೇಷ್ಟಿತಾ। ಚೇಷ್ಟಿಷ್ಯತೇ। ಚೇಷ್ಟತಾಮ್। ಅಚೇಷ್ಟತ। ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಕಾರ್ಯಮಾಡು, ಕೆಲಸಮಾಡು. 2. ಯತ್ನಿಸು. ಪ್ರಯಾಸಪಡು. 3. ಕಾರ್ಯತತ್ಪರನಾಗು. "ಅಚೇಷ್ಟತಾ-ಷ್ಠಾಪದಭೂಮಿರೇಣುಃ ಪಾದಾಹತೋ ಯತ್ಸದೃಶಂ ಗರಿಮ್ಣಃ" ಮಾಘಂ ೩-೨೮।

ಭಾವೇಃ - ಚೇಷ್ಟಯತೇ। ಚಿಚೇಷ್ಟೆ। ಚೇಷ್ಟಿತಾ। ಚೇಷ್ಟಿಷ್ಯತೇ। ಚೇಷ್ಟಯತಾಮ್। ಅಚೇಷ್ಟಯತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಘಿಚಿಃ - ಚೇಷ್ಟಯತಿ, -ತೇ। ಚೇಷ್ಟಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಚೇಷ್ಟಯಿತಾ। ಚೇಷ್ಟಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ। ಚೇಷ್ಟಯತು, -ತಾಮ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕ್ರತುಃ - ಚೇಷ್ಟಿತವ್ಯಮ್। ಚೇಷ್ಟನೀಯಮ್। ಚೇಷ್ಟಯಮ್। ಚೇಷ್ಟಿತಃ। ಚೇಷ್ಟಿತವಾನ್। ಚೇಷ್ಟಮಾನಃ। ಚೇಷ್ಟಿತುಮ್। ಚೇಷ್ಟಿತಮ್। ಚೇಷ್ಟನಮ್। ಚೇಷ್ಟಿತವಾ।



ಚಿಹ್ನೆ ಚಿಹ್ನೆ (ಪುಂ) 1. ಸುರತದ ಒಂದು ಭೇದ, ಒಂದು ವಿಧ ಸಂಭೋಗ. ಚಿಹ್ನೆ (ಚಿಹ್ನಾಯಾಮ್) "ಫುಲ್" (3-1-133). (ವಿಂ) 2. ಕೆಲಸಮಾಡುವ, ಕಾರ್ಯ ನಿರತನಾದ.

ಚಿಹ್ನೆ ಚಿಹ್ನೆ (ನಂ) ಚಿಹ್ನೆ, ಶರೀರದ ವ್ಯಾಪಾರ, ಶರೀರ ವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ ಮಾಡುವ ಕೆಲಸ. ಚಿಹ್ನೆ (ಚಿಹ್ನಾಯಾಮ್) "ಫುಲ್" (3-3-114). "ಖಂ ಸನಿವೇಶಯೇತ್ ಲೇಖು ಚಿಹ್ನೆಸ್ಪರ್ಶನೇನಿಲಮ್" ಮನುಂ 12-120.

ಚಿಹ್ನೆ ಚಿಹ್ನೆ ಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಕೆಲಸಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಚಿಹ್ನೆ (ಚಿಹ್ನಾಯಾಮ್) "ಶಾನಿ" (3-2-124). 2. ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವ.

ಚಿಹ್ನೆ ಚಿಹ್ನೆ (ವಿಂ) ಕೆಲಸಮಾಡಬೇಕಾದ, ಯತ್ನಿಸಬೇಕಾದ. ಚಿಹ್ನೆ (ಚಿಹ್ನಾಯಾಮ್) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96). "ತವ್ಯ:" ಚಿಹ್ನೆ ಚಿಹ್ನೆ.

ಚಿಹ್ನೆ ಚಿಹ್ನೆ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶರೀರ ವ್ಯಾಪಾರ, ಶರೀರದಿಂದ ಮಾಡುವ ಕೆಲಸ. ಚಿಹ್ನೆ (ಚಿಹ್ನಾಯಾಮ್) "ಅಙ್" (3-3-104). "ಆತ್ಮಜನ್ಯಾ ಭವೇದಿಚ್ಛಾ ಇಚ್ಛಾಜನ್ಯಾ ಭವೇತ್ ಕೃತಿ: | ಕೃತಿಜನ್ಯಾ ಭವೇದಿಚ್ಛಾ ಚಿಹ್ನೆಜನ್ಯಾ ಭವೇತ್ ಕ್ರಿಯಾ" | "ನುನಂ ತಥಾ ನೇಷ ಯಥಾಸ್ಯ ವೇಷ: ಪ್ರಚ್ಛನ್ನಮಪ್ಯುಹ್ಯತೇ ಹಿ ಚಿಹ್ನೆ" ಕಿರಾಂ 16-19. 2. ಸಂಜ್ಞೆ, ಕಣ್ಣು ಕೈ ಬಾಯಿ ಇವುಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ಸನ್ನೆ. 3. ಪ್ರಯತ್ನ. 4. ಚಲನೆ, ಸಂಚಾರ.

ಚಿಹ್ನೆ ಚಿಹ್ನೆ (ಪುಂ) ಪ್ರಳಯ, ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶ. ಚಿಹ್ನೆ ಚಿಹ್ನೆ.

ಚಿಹ್ನೆ ಚಿಹ್ನೆ (ನಂ) ರವಿ ಚಂದ್ರ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹಗಳಿಗೆ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವಾಗ ಉಂಟಾಗುವ ಬಲ. ರವಿಚಂದ್ರರು ಉತ್ತರಾಯಣದಲ್ಲಿ ಮಕರ ಮೊದಲಾದ ಆರು ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವಾಗ ಬಲಶಾಲಿಗಳು (ಬಲಿಷ್ಠರು). ಕುಜ ಮೊದಲಾದ ಉಳಿದ ಗ್ರಹಗಳು ವಕ್ರಗತಿಯಲ್ಲಿರುವಾಗ ಬಲಿಷ್ಠರು. ಹಾಗೆಯೇ ಈ ಗ್ರಹಗಳು ಚಂದ್ರನೊಡನೆ ಸೇರಿದಾಗ ಬಲಿಷ್ಠರಾಗಿಯೂ ರವಿಯೊಡನೆ ಸೇರಿದಾಗ ಅಸ್ತರಾಗಿಯೂ ಆಗುವರು. ಉಳಿದ ಗ್ರಹಗಳು ಪರಸ್ಪರ ಸೇರಿದಾಗ ಅವುಗಳಿಗೆ ಯುದ್ಧವು ಸಂಭವಿಸುವುದು. "ಉದಯನೇ ರವಿಶಿತಮಯಲೌ ವಕ್ರಸಮಾಗಮಗಾ: ಪರಿಶೇಷಾ: | ವಿಪುಲಕರಾ ಯುಧಿ ಚೋತ್ತರಸಂಖ್ಯಾಚಿಹ್ನೆತವೀರ್ಯಯುತಾ: ಪರಿಕಲ್ಪಯಾ: | ಬೃಹಜ್ಜಾಂ | "ದಿವಸಕರೇಣಾಸ್ತಮಯ: ಸಮಾಗಮ: ಶೀತರಶ್ಮಿಸಹಿತಾನಾಮ್ | ಕುಸುತಾದಿನಾಂ ಯುಧಂ ನಿಗದಿತೇನ್ಯೋನ್ಯಯುಕ್ತಾನಾಮ್" ಇತಿ ವಿಷ್ಣುಚಂದ್ರ: |

ಚಿಹ್ನೆ ಚಿಹ್ನೆ (ನಂ) 1. ಕಾಯಿಕವ್ಯಾಪಾರ, ಶರೀರದಿಂದ ಮಾಡುವ ಕೆಲಸ. ಚಿಹ್ನೆ (ಚಿಹ್ನಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114). "ಸೂಕ್ಷಮಂ ಪರಾಶಯಾಭಿಜ್ಞೇತರಸಾಕೂತಚಿಹ್ನೆತಮ್ | ಮಯಿ ಪಶ್ಯತಿ ಸಾ ಕೇಶಿ: ಸೀಮಂತಮಣಿಮಾವೃಣೋತ್" ಚಂದ್ರಾಂ |

"ಕಪಿಲಪಾಟಲಾದೇಶಿ ಬಭೂವ ರಘುಚಿಹ್ನೆತಮ್" ರಘುಂ 4-68. 2. ಗತಿ, ಸಂಚಾರ, ಗಮನ. (ವಿಂ) 3. ಚಲಿಸಿದ, ಸಂಚರಿಸಿದ, ಮುಂದೆಸಾಗಿದ. ಚಿಹ್ನೆ ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (3-4-92). 4. ಕೆಲಸಮಾಡಿದ, ಶರೀರ ವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ ಕಾರ್ಯಮಾಡಿದ. 5. ಯತ್ನಿಸಿದ. 6. ಯತ್ನಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಚಿಹ್ನೆ+ಫಿಕ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102). 7. ಕದಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಚಿಹ್ನೆ ಚಿಹ್ನೆ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮನ ಒಂದು ಅವತಾರ. ಬ್ರಹ್ಮನು ಕಲಿಯುಗದ ಧರ್ಮಗಳನ್ನು ಕೇಳಿ ಜಗತ್ತಿನ ಹಿತಕ್ಕಾಗಿ ಧರ್ಮವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವುದು ಹೇಗೆ, ಭಕ್ತಿ ಮಾರ್ಗವು ಉಳಿಯುವುದಾದರೂ ಹೇಗೆಂದು ಕೇಳಲು ಪರಮಾತ್ಮನು ತಾನು ನವದ್ವೀಪದಲ್ಲಿ ಶಚೀಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವುದಾಗಿಯೂ ಕೃಷ್ಣಾವತಾರಕಾಲದಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಸಂಗಡಿಗರಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದವರೆಲ್ಲರೂ ಈಗಲೂ ಹುಟ್ಟುವ ರಿಂದೂ ಆಗ ಧರ್ಮಸಂರಕ್ಷಣೆಯಾಗುವದೆಂದೂ ಹೇಳುವನು. ಈ ಅವತಾರದಲ್ಲಿ ಕೃಷ್ಣ ಚಿಹ್ನೆ ಗೌರಾಂಗ ಗೌರಚಂದ್ರ ಶಚೀಸುತ ಪ್ರಭು ಗೌರ ಇತ್ಯಾದಿ ಹೆಸರುಗಳಿಂದ ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾಗಿದ್ದನು. "ಶ್ರುತ್ವಾ ತು ಕಲಿಘರ್ಮಸ್ತಾನು ಬ್ರಹ್ಮಾ ಲೋಕಪಿತಾಮಹ: | ಸರ್ವಲೋಕಹಿತಾರ್ಥಾಯ ಪ್ರೋವಾಚ ಮಧುಸೂದನಮ್ | ಭವಿಷ್ಯತಿ ಕಲೌ ಕೇನೋಪಾಯೇನ ಧರ್ಮಪಾಲನಮ್ | ಮುಕ್ತಿಮಾರ್ಗ-ಸ್ಥಿತಿ: ಕಸ್ಮಾತ್ತದ್ವದಸ್ಯ ಜಗದ್ಗುರೋ | ಶ್ರೀ ಭಗವಾನುವಾಚ— ಅವತೀರ್ಣೋ ಭವಿಷ್ಯಾಮಿ ಕಲೌ ನಿಜಗಣೈ: ಸಹ | ಶಚೀಗರ್ಭೇ ನವದ್ವೀಪೇ ಸ್ವಧುನಿಪರಿವಾರಿತೇ | ಅಪ್ರಕಾಶ್ಯಮಿದಂ ಗುಹ್ಯಂ ನ ಪ್ರಕಾಶ್ಯಂ ಬಹಿರ್ಮುಖೇ | ಕೃಷ್ಣಾವತಾರಕಾಲೇ ಯಾ: ಸ್ತ್ರೀಯೋ ಯೇ ಪುರುಷಾ: ಪ್ರಿಯಾ: | ಕಲೌ ತೇವತರಿಷ್ಯಂತಿ ಶ್ರೀದಾಮಸುಖಲಾದಯ: | ಧರ್ಮಸಂಸ್ಥಾಪನಾರ್ಥಾಯ ವಿಹರಿಷ್ಯಾಮಿ ತೇರಹಮ್ | ಕಾಲೇ ನಷ್ಟಂ ಮುಕ್ತಿಪಥಂ ಸ್ಥಾಪಯಿಷ್ಯಾಮ್ಯಹಂ ಪುನ: | ಕೃಷ್ಣಚಿಹ್ನೆತಮಗೌರಾಙ್ಗ: ಗೌರಚಂದ್ರೋ ಗೌರಹರಿ: | ಶಚೀಸುತ: ಪ್ರಭುಗೌರ: ನಾಮಾನಿ ಮುಕ್ತಿದಾನಿ ಮೇ | ಗಚ್ಛಂತು ಭುವಿ ತೇ ಪುತ್ರಾ: ಜಾಯಂತಾಂ ಮುಕ್ತಿ-ರೂಪಿಣ: | ಇತ್ಯಾದಿ. ಅನಂತಸಂ ಶ್ರೀಚಿಹ್ನೆತಮಜನ್ಮಖಂಡ: | (ನಂ) 2. ಅತ್ಯಧರ್ಮವಾದ ಜ್ಞಾನ. ಚಿಹ್ನೆತಮ ಭಾವ: "ಚಿಹ್ನೆ" (4-1-124). 3. ಜ್ಞಾನ, ಪ್ರಜ್ಞೆ, ಆರಿವು. 4. ಸ್ವರೂಪಜ್ಞಾನ. 5. ಪ್ರಕೃತಿ. 6. ಜ್ಞಾನದಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. "ಶರೀರಸ್ಯ ನ ಚಿಹ್ನೆತಮ ಮೃತೇಷು ವ್ಯಾಭಿಚಾರತ:" ಭಾಷಾಪಂ |



ಚೆತ್ತ ಚೈತ್ರ (ವಿಂ) 1. ಚಿತ್ತಸಂಬಂಧವಾದ, ಮನಸ್ಸಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಚಿತ್ತಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। (ನಂ) 2. ನೆನಪು, ಸ್ಮರಣೆ.

ಚೆತ್ತ ಚೈತ್ರ (ಪುಂ) 1. ದೇವಾಲಯ. 2. ಬುದ್ಧದೇವ. 3. ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ. 4. ಗ್ರಾಮ (ಹಳ್ಳಿ)ಗಳಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದಿರುವ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ ದೊಡ್ಡ ಮರ. 5. ಉದ್ಯಾನವನದ ವೃಕ್ಷ. ಉದ್ದೇಶಪೂರ್ವಕ ಬೆಳೆಸಿದ ಮರ. 6. ರಸ್ತೆಯ ಸಾಲು ಮರ. "ನಿಡಾರಮ್‌ಗೃಹಬಲಿಭುಜಾಮಾಕುಲಗ್ರಾಮಚೆತ್ತಾಃ" ಮೇಘಂ ೧-೨೩। (ನಂ) 7. ಯಜ್ಞಶಾಲೆ. 8. ಪವಿತ್ರಸ್ಥಳ.

ಚೆತ್ತಕ ಚೈತ್ರಕ (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿಮರ. 2. ಗಿರಿವೃಜವನ್ನು ಸುತ್ತಿಕೊಂಡಿರುವ ಐದು ಪರ್ವತಗಳ ಲೊಂದು.

ಚೆತ್ತಗೃಹ ಚೈತ್ರಗೃಹ (ನಂ) ನಾಲ್ಕು ರಸ್ತೆಗಳು ಕೂಡುವ ಚೌಕದಲ್ಲಿ ಸಾಲುವರದ ಹತ್ತಿರವಿರುವ ಮನೆ.

ಚೆತ್ತತರು ಚೈತ್ರತರು (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿಮರ. 2. ಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದಿರುವ ದೊಡ್ಡ ವೃಕ್ಷ. एवं ಚೆತ್ತದ್ರು: ಚೈತ್ರದ್ರು:, -ದ್ರುಮಃ: -ದ್ರುಮಃ, -ವೃಕ್ಷಃ: -ವೃಕ್ಷಃ: ಇತ್ಯಾದಿ.

ಚೆತ್ತಮುಖ ಚೈತ್ರಮುಖ (ಪುಂ) ಕಮಂಡಲು.

ಚೆತ್ತವಿಹಾರ ಚೈತ್ರವಿಹಾರ (ಪುಂ) ಜನಗೃಹ.

ಚೆತ್ತ ಚೈತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಚೈತ್ರಮಾಸ, ಚಿತ್ರಾನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯುಳ್ಳ ಮಾಸ. ಚಿತ್ರಯಾ ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಸ್ಮಿನ್ "ಅನ್" (೪-೨-೨೩)। "ಕಾಲ್ಗುನಂ ವಾಚ ಚೆತ್ತಂ ವಾ ಮಾಸೌ ಪ್ರತಿ ಯಥಾಬಲಮ್" ಮನುಂ ೭-೧೮೨। 2. ಬೌದ್ಧ ಭಿಕ್ಷುಕ. 3. ಬುಧನ ಪತ್ನಿ ಚಿತ್ರೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ಮಗ. ಚಿತ್ರಾಂ ಜಾತಃ "ಅನ್" (೪-೩-೨೫)। 4. ಸಪ್ತ ಕುಲಪರ್ವತಗಳಲ್ಲೊಂದು. (ನಂ) 5. ಪೃಥನ ಸೋರಿ, ಸಮಾಧಿ. (ವಿಂ) 6. ಚಿತ್ರಾನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಚಿತ್ರಾಂ ಜಾತಃ "ಅನ್" (೪-೩-೫೩)।

ಚೆತ್ತಭಾನವ ಚೈತ್ರಭಾನವ (ವಿಂ) ಅಗ್ನಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಚಿತ್ರಭಾನೋರಿದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

ಚೆತ್ತಮುಖ ಚೈತ್ರಮುಖ (ಪುಂ) ಚೈತ್ರಮಾಸದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಒಂದು ವಸಂತೋತ್ಸವ.

ಚೆತ್ತರಥ ಚೈತ್ರರಥ (ನಂ) ಕುಬೇರನ ಉದ್ಯಾನವನ. ಚಿತ್ರರಥೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಅನ್" (೪-೨-೬೮)। "एको ययौ चैत्ररथ-प्रदेशान् सौराज्यरम्यानपरो विदर्भान्" ರಘುಂ ೫-೬೦।

ಚೆತ್ತರಥಿ ಚೈತ್ರರಥಿ (ಪುಂ) ಚಿತ್ರರಥಗಂಧರ್ವನ ಮಗ ಶಶಬಿಂದು. ಚಿತ್ರರಥಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಇನ್" (೪-೧-೯೫)।

ಚೆತ್ತರಥ ಚೈತ್ರರಥ (ನಂ) ಚೈತ್ರರಥವೆಂಬ ಕುಬೇರನ ಒಂದು ಉದ್ಯಾನವನ. ಚೆತ್ತರಥ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಏನ್" (ವಾಂ ೫-೧-೧೨೪)।

ಚೆತ್ತವಾಹನಿ ಚೈತ್ರವಾಹನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಿತ್ರವಾಹನನ ಮಗಳಾದ ಚಿತ್ರಾಂಗದೆ.

ಚೆತ್ತಾಯಣ ಚೈತ್ರಾಯಣ (ಪುಂ) 1. ಚಿತ್ರನ ಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಚಿತ್ರಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಮ್ "ಫಕ್" (೪-೧-೯೯)। (ವಿಂ) 2. ಚಿತ್ರನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಿತ್ರನಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ. "ಫಕ್" (೪-೨-೮೦)।

ಚೆತ್ತಾವಲಿ ಚೈತ್ರಾವಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚೈತ್ರಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ.

ಚೆತ್ತಿಕ ಚೈತ್ರೀಕ (ಪುಂ) ಚಿತ್ರಾನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯುಳ್ಳ ಮಾಸ, ಚೈತ್ರಮಾಸ. ಚಿತ್ರಯಾ ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಸ್ಮಿನ್, ವಾ "ಠಕ್" (೪-೨-೨೩)। ಪಕ್ಷೆ "ಅನ್"। ಚೆತ್ತ: ಚೈತ್ರಃ.

ಚೆತ್ತಿನ್ ಚೈತ್ತಿನ್ (ಪುಂ) ಚೈತ್ರಮಾಸ. ಚೆತ್ತಿ (ಪೌರ್ಣಮಾಸಿ) ಅಸ್ತಿಸ್ಮಿನ್ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೬)।

ಚೆತ್ತಿ ಚೈತ್ತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಿತ್ರಾನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ, ಚೈತ್ರಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ಚಿತ್ರಯಾ (ಚಿತ್ರಾನಕ್ಷತ್ರೇಣ) ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸಿ - ಚಿತ್ರಾ "ಅನ್" (೪-೨-೩)। "ಚಿಪ್" (೪-೧-೧೫)। "चैत्र्यां हि पौर्णमास्यां तु तव दीक्षा भविष्यति" ಭಾಂ ಆಶ್ವಂ ೭೨-೪।

ಚೆತ್ತಿಕ ಚೈತ್ತಿಕ (ವಿಂ) ಚೇದಿದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. ಚೇದಿದೇಶೋ ಭವಃ "ಠಕ್" (೪-೨-೧೧೬)। "ಚಿಠಃ" (೪-೨-೧೧೬) ಚ। ಠಚಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಚಿಪ್" ಚೆತ್ತಿಕಿ ಚೈತ್ತಿಕೀ. ಚಿಠ ಪ್ರತ್ಯಯೇ "ಠಾಪ್"। ಚೆತ್ತಿಕಾ ಚೈತ್ತಿಕಾ.

ಚೆತ್ತ ಚೈತ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಶಿಶುಪಾಲ, ಚೇದಿದೇಶದ ದೊರೆ. ಚೇದಿನಾಂ ರಾಜಾ "ಅನ್" (೪-೧-೧೬೮)। "त्वया विप्रकृतश्चैद्यो रुक्मिणीं हरता हरे" ಮಾಘಂ ೨-೩೮। (ಪುಂ ಷಂ ಷಂ) 2. ಚೇದಿದೇಶ, ವಿಂಧ್ಯ ಪರ್ವತದ ಸಮೀಪದ ಒಂದು ದೇಶ. "चैद्यास्ते चेदयश्च ते" ವೇಜಂ।

ಚೆಲ ಚೈಲ (ನಂ) 1. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. ಚೆಲ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೫-೪-೩೮)। (ವಿಂ) 2. ವಸ್ತ್ರಸಂಬಂಧವಾದ. ಚೆಲಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। "चैलाशकश्च भवति शूद्रो धर्मात् स्वकाच्युतः" ಮನುಂ ೧೨-೭೨।

ಚೆಲಘಾವ ಚೈಲಘಾವ (ಪುಂ) ಬಟ್ಟೆ ಒಗೆಯುವವನು, ರಜಕ, ಅಗಸ. ಚೆಲಂ ವಸ್ತ್ರಂ ಘಾವತಿ - ಘಾವು (ಗತಿಶುದ್ಧಯಃ)। "ಅನ್" (೩-೨-೧)। "चैलघावसुराजीवसहोपपति-वेशमनाम्" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೧೬೪।



ಚೆಲಾಶಕ ಚೈಲಾಶಕ (ಪುಂ) ಬಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಸೇರುವ ಹೇನು, ಕೂರೆ. ಚೆಲಮನಾತಿ-ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಚೋಷ ಚೋಷ (ಪುಂ) 1. ಸಂಗೀತ. (ವಿಂ) 2. ಮನೋಹರವಾದ, ಸುಂದರವಾದ. "ಚೋಷೋ ಗೀತಮನೋಜಯಃ" ವೇಜಂ. 3. ದಕ್ಷನಾದ, ಸಮರ್ಥನಾದ.

ಚೊಚ ಚೊಚ (ನಂ) 1. ಚರ್ಮ. 2. ಮರದ ತೊಗಟೆ. 3. ಲವಂಗಪಟ್ಟಿ, ದಾಲ್ಚಿನ್ನಿ. 4. ತೆಂಗಿನಕಾಯಿ. "ಕರ್ಕಿಣಿ ಕೊದ್ರವಕದಲಿಕ್ಷುರ್ವಾಕಿಲಕಂದಪತ್ರವೋವಾನಿ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೪೧-೪। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ"। ಚೊಚಕ: ಚೊಚಕಃ. "ದಯಾಚ್ಚಾತ್ರ ಪಿಪ್ಪಲಿಮೂಲತಂಡುಲೀಯಕವರಾಜ್ಜಚೊಚಕೇತ್ಯಾದಿ" ಸುಶ್ರುತಂ।

ಚೊಟ ಚೊಟ (ಪುಂ) ಶೃಶ್ರು, ಮೀಸೆ, ಗಡ್ಡ, ದಾಡಿ. "ಸಮಶ್ರುತು ವ್ಯಂಜನಂ ಚೊಟಃ" ವೇಜಂ।

ಚೊಟಲಿಕ್ಷುಕ ಚೊಟಲಿಕ್ಷುಕ (ಪುಂ) ನಲವತ್ತಾರು ಅಂಗುಲ ಪ್ರಮಾಣವ ಬಾಣ. "ಕ್ಷಿಪ್ರಾವಿಶತ್ಯಿಕ್ಷುಗುಲಿಃ ಸ್ಯಾನ್ನಿಚೊಟೇ ದ್ವಯಿಕ್ಷುಗುಲೋತ್ತರಃ। ಸ್ಯುಚೊಟಲಿಕ್ಷುಕಸ್ತಾಲಃ" ವೇಜಂ।

ಚೊಟಿ ಚೊಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾವಡೆ, ತುಂಡುಲಂಗ, ಹೆಂಗಸರ ಒಳಲಂಗ.

ಚೊಡ ಚೊಡ (ಪುಂ) ರವಿಕೆ, ಕುಪ್ಪಸ. ಚುಲ (ಸಮುಚ್ಚ್ರಾಯೇ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೩-೪೬)। ಲಡಯೋರಭೇದಃ।

ಚೊದ ಚೊದ (ಪುಂ) 1. ಕುದುರೆ ಮತ್ತು ಮುಂತಾದುವುಗಳನ್ನು ಮುಂದಕ್ಕೆ ಓಡಿಸಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಬಾರು ಗೋಲು, ಚಾವಟಿ. ಚೊದಯತಿ-ಚುದ (ಸಂಚೋದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। (ವಿಂ) 2. ಪ್ರೇರಿಸುವವನು, ಉತ್ತೇಜನಗೊಳಿಸುವವನು, ಹುರಿದುಂಬಿಸುವವನು.

ಚೊದಕ ಚೊದಕ (ಪುಂ) 1. ವಿಧಿವಾಕ್ಯ, ಈ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಬೇಕೆಂಬ ಆಜ್ಞಾಪಚನ, ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವಂತೆ ಪ್ರೇರಿಸುವ ವಾಕ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರವರ್ತಿಸುವಂತೆ ಪ್ರೇರಿಸುವ, ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವಂತೆ ಬಲವಂತ ಪಡಿಸುವ. ಚುದ (ಸಂಚೋದನೆ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಚೊದನ ಚೊದನ (ನಂ) 1. ಪ್ರೇರಣೆ, ಹುರಿದುಂಬಿಸುವುದು. 2. ವಿಧಿ, ಆಜ್ಞೆ. "ಪ್ರಥಮೇಂದ್ರೇ ತೃತೀಯೇ ವಾ ಕರ್ತವ್ಯಂ ಶ್ರುತಿ-ಚೋದನಾತ್" ಮನುಂ ೨-೩೪। (ವಿಂ) 3. ಪ್ರೇರಿಸುವ, ಹುರಿದುಂಬಿಸುವ. 4. ವಿಧಿಸುವ, ಆಜ್ಞೆಮಾಡುವ. ಚುದ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)।

ಚೊದನಾ ಚೊದನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉಪದೇಶ, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗುವಂತೆ ಮಾಡುವ ಮಾತು, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರವರ್ತಿ

ಸುವಂತೆ ಮಾಡುವ ವಾಕ್ಯ. ಚುದ (ಸಂಚೋದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭)। 2. ಪ್ರೇರಣೆ. "ಚೋದನಾಲಕ್ಷಣೋಽರ್ಥೋ ಧರ್ಮಃ"। 3. ವಿಧಿ, ಆಜ್ಞೆ, ಆದೇಶ. "ಜ್ಞಾನಂ ಜ್ಞೇಯಂ ಪರಿಜ್ಞಾತಾ ತ್ರಿವಿಧಾ ಕರ್ಮಚೋದನಾ" ಗೀತಾ ೧೮-೧೮। 4. ಪ್ರವರ್ತಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು.

ಚೊದನಾಗುಡ ಚೊದನಾಗುಡ (ಪುಂ) ಕಂದುಕ, ಚೆಂಡು. ಚೊದನಯಾ ನೊದನಯಾ ಗುಡಯತೇ - ಗುಡ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೪)।

ಚೊದನೀಯ ಚೊದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹುರಿದುಂಬಿಸಲ್ಪಡುವ, ಉತ್ತೇಜನಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಡುವ, ಮುಂದಕ್ಕೆ ನೂಕಲ್ಪಡುವ. 3. ಸೂಚಿಸಲ್ಪಡುವ. ಚುದ (ಸಂಚೋದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬)। "ತವ್ಯಃ"। ಚೊದಯಿತವ್ಯಃ ಚೊದಯಿತವ್ಯಃ.

ಚೊದಯತ್ ಚೊದಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೇರಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹೊರಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಸೂಚಿಸುತ್ತಿರುವ. ಚುದ (ಸಂಚೋದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತೀ.

ಚೊದಯಿತ್ ಚೊದಯಿತ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೇರಿಸುವ. 2. ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹೊರಡಿಸುವ, ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗುವಂತೆ ಮಾಡುವ. 3. ವಿಧಿಸುವ, ಆಜ್ಞಾಪಿಸುವ. 4. ಸೂಚಿಸುವ. ಚುದ (ಸಂಚೋದನೆ) + ಣಿಚ್ "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಸಮೀರಣಶ್ಚೊದಯಿತಾ ಭವೇತಿ ವ್ಯಾಧಿಶ್ಯತೇ ಕೇನ ಹುತಾಶನಸ್ಯ" ಕುಮಾಂ ೩-೨೧। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪)। -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

ಚೊದಿತ ಚೊದಿತ (ನಂ) 1. ಆಜ್ಞೆ, ವಿಧಿ, ಆದೇಶ. ಚುದ (ಸಂಚೋದನೆ) ಛಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। "ಚೊದಿತೇನ ನಿಯತೋಪಿ ಹೃತಾತ್ಮಾ" ಯಾದಂ ೨೧-೨೦। (ವಿಂ) 2. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಚುದ (ಸಂಚೋದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಅರ್ಥದಾನಮನು ಚೊದಿತೋ ವಚಃ ಸಮ್ಯಗಮ್ಯಧಿತ ಶಾಂತನೋಃ ಸುತಃ" ಮಾಘಂ ೧೪-೪೩। 3. ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನೂಕಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ವಿಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಆಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಸೂಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಚೊದ್ಯ ಚೊದ್ಯ (ನಂ) 1. ಅದ್ಭುತ, ಅಶ್ಚರ್ಯ. ಚುದ (ಸಂಚೋದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಯತ್" (೩-೧-೧೦)। "ದಿವಸಾತ್ಯಯೇ ತದಪಿ ಮುಕ್ತಮಹೋ ಚಪಲಾಜನಂ ಪ್ರತಿ ನ ಚೊದ್ಯಮದಃ" ಮಾಘಂ ೧-೧೬। 2. ಕಷ್ಟತರವಾಗಿ ಪ್ರಶ್ನಿಸುವುದು, ಪೂರ್ವಪಕ್ಷ



ಹೇಳುವುದು. "ನನ್ವಯಂ ಪ್ರಕೃತಿಭಾಗೋಽಯಂ ಪ್ರತಿಯಭಾಗ ಇತಿ ಪ್ರಕೃತಿಪ್ರತಿಯಭಿಭಾಗಃ ಕಥಮವಗಮ್ಯತ ಇತಿ ಚೇತ್ ಪಿತೃಪಾತೃಜಲ-ಜಲಾನಾಮೇತಚ್ಚೌಘಂ ಚಮತ್ಕಾರಂ ನ ಭವತಿ" ಸಂ ೧೦ ಸಂ ೧.

3. ಅಕ್ಷೇಪಣೆ. "ತಥಾ ಚೇದ್ವಪ್ರವೃತ್ತಿಪಲಾಶಶಾತನಾದಿವತ್ಸ-ಮಾಸೋ ಭವಿಷ್ಯತಿ. ಅಥವಾ ಶೇಷಲಕ್ಷಣೇಯಂ ಷಷ್ಠಿ. ತತ್ರ ಕಿಮಪಿ ಚೌಘಂ ನಾವತರತಿ" ಸಂ ೧೦ ಸಂ ೧. (ವಿಂ) 4. ಪ್ರೇರಣೆಗೆ ಅರ್ಹ, ಚಿತಾವಣೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದವನು.

**ಚೊಪನ ಚೋಪನ** (ನಂ) 1. ಮಂದಗತಿ, ನಿಧಾನವಾಗಿ ನಡೆಯುವುದು. ಚುಪ (ಮಂದಾಯಾಂ ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). 2. ಮೌನ, ಮಾತನಾಡದಿರುವುದು. (ವಿಂ) 3. ನಿಧಾನವಾಗಿ ನಡೆಯುವ, ಮಂದಗಮನವುಳ್ಳ. ಚುಪ "ಯುಕ್" (೩-೨-೧೪೮).

**ಚೊರ ಚೋರ** (ಪುಂ) 1. ಕಳ್ಳ, ತಸ್ಕರ. ಚುರ (ಸ್ತೇಯೇ) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಚೊರಾಕ್ರಾಂತಂ ತದನು ವಿಪಿನಂ ಚೊಲಪಾಂಡ್ಯಾಂತರಸ್ಥಂ ಜಿಲ್ಲಿನಾದಶ್ರವಣಪರಂ ಶೀಘ್ರಮೇವ ವ್ಯತಿರ್ಯಾಃ" ಹಂಸಂ ೧-೪೭. 2. ಒಂದು ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ. 3. ಇತರರ ಗ್ರಂಥಗಳಿಂದ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಕದ್ದುಬರೆದು ತನ್ನದೆಂದು ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳುವ ಕಾವ್ಯ ಚೋರ. 4. ಚೋರಪಂಚಾಶಿಕೆಯೆಂಬ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಕವಿ.

**ಚೊರಕ ಚೋರಕ** (ಪುಂ) 1. ಗ್ರಂಥಪರ್ವ, ಮಾಪಿಪತ್ರೆ. 2. ಕಳ್ಳ, ತಸ್ಕರ.

**ಚೊರಕರ್ಮ ಚೋರಕರ್ಮ** (ನಂ) ಕಳ್ಳತನ, ಚೋರಕರ್ಮ.

**ಚೊರಪುಣಿ ಚೋರಪುಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಡಿಯಾಲದ ಗಿಡ, ಹಕ್ಕುರಕೆ ಗಿಡ. "ಶಕ್ಷಿಣಿ ಚೊರಪುಣಿ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ ೧.

**ಚೊರಸ್ನಾಯು ಚೋರಸ್ನಾಯು** (ಪುಂ) ಕಾಗೆ ತೊಂಡೆಗಿಡ.

**ಚೊರಾ ಚೋರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಡಿಯಾಲದ ಗಿಡ.

**ಚೊರಿಕಾ ಚೋರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಳ್ಳತನ. ಚೊರಸ್ಯ ಕರ್ಮ "ಕು" (೪-೧-೧೩೩). ಪೃಷಂ ೧.

**ಚೊರಿತ ಚೋರಿತ** (ನಂ) 1. ಕಳ್ಳತನ. (ವಿಂ) 2. ಕಡಿಯಾಲ್ಪಟ್ಟ. "ಚೊರಿತಾನಿ ನಿಹಿತಾನಿ ವಾ ತ್ವಯಾ" ಯಾದಂ ೧೭-೧೯.

**ಚೊಲ ಚೋಲ** (ಪುಂ) 1. ರವಿಕೆ, ಕುಪ್ಪಸ. ಚುಲ (ಸಮುಚ್ಚ್ರಾಯೇ) ಕರ್ಮಂ "ಘ" (೩-೩-೧೯). 2. ಗಂಡಸರ ಮೇಲಂಗಿ, ನಿಲುಮಂಗಿ, ಉದ್ದದ ಅಂಗಿ. (ಪುಂ ನಂ) 3. ಮೇಲು ಚಾವಣಿ. "ಚೊಲೋಸ್ತ್ರೀ ಪಟಲಂ ಛದಿಃ" ವೈಜಂ ೧. (ಪುಂ ಬಂವಂ)

4. ಚೋಳ ದೇಶ, ದಕ್ಷಿಣ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಪ್ರಾಂತ್ಯ.

5. ಚೋಳದೇಶದ ನಿವಾಸಿಗಳು. "ಕರ್ಣಾಟಮಹಾಶಿವಚಿತ್ರಕಟ-ಸಿಂಹಕೋಲಗಿರಿಚೊಲಾಃ. ಕೌಶದ್ವೀಪಜಟಾಧರಕಾವೇಯೋ

ರಿಷ್ಯಮೂಕಶ್ಚ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೪-೧೩. 6. ಚೋಳ ದೇಶದ ದೊರೆಗಳು. "ಚೊಲಕೇರಲಪಾಂಡ್ಯಾಣಾಂ ಪಶ್ಯನ್ನನುಗತಿ ಪ್ರಭುಃ" ಯಾದಂ ೨೨-೧೦೯. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಿ-ಲೀ. 7. ರವಿಕೆ, ಕುಪ್ಪಸ. 8. ಚೋಳದೇಶದ ಹೆಂಗಸು.

**ಚೊಲಕ ಚೋಲಕ** (ಪುಂ) 1. ವಲ್ಕಲ, ಮರದ ತೊಗಟೆ. ಚೊಲ ಇವ ಕಾಯತಿ-ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩). 2. ಮೈಗಾಪು, ಹೆಂಗಸರ ತೋಳಿಲ್ಲದ ಕುಪ್ಪಸ. 3. ಚೋಲ, ಗಂಡಸರ ನಿಲುಮಂಗಿ, ಉದ್ದದ ಅಂಗಿ, ಕವಚ.

**ಚೊಲಕಿನ್ ಚೋಲಕಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಕಿತ್ತಲೆಗಿಡ ನಾಗರಂಗ ವೃಕ್ಷ ಹೆರಿಳೆ ಚಕ್ಕೋತ ಮುಂತಾದುವು. 2. ಮಣಿಬಂಧ, ಮಣಿಕಟ್ಟು. 3. ಬಿದಿರಿನ ಮೊಳಕೆ, ಬಿದಿರಿನ ಚಿಗುರು. 4. ಕವಚವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ ಯೋಧ, ರಾವುತ. "ಚೊಲಕೀ ತು ಕರೀರೇ ಸ್ಯಾನ್ತಾರಜ್ಞೇ ಕಿಂಕುಪರ್ವಣಿ" ಮೇದಿಂ ೧.

**ಚೊಲಂಡುಕ ಚೋಲಂಡುಕ** (ಪುಂ) ಉಪ್ಪಿಷ, ರುಮಾಲು. "ಚೊಲಂಡುಕಃ ಶಿರೋವೇಷ್ಠಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ೧.

**ಚೊಲನ ಚೋಲನ** (ಪುಂ) 1. ನಾಗರಂಗ ವೃಕ್ಷ, ಕಿತ್ತಲೆಗಿಡ ಹೆರಿಳೆ ಚಕ್ಕೋತ ಮುಂತಾದುವು. 2. ಬಿದಿರಿನ ಮೊಳಕೆ. 3. ಮಣಿಬಂಧ, ಮಣಿಕಟ್ಟು.

**ಚೊಷ ಚೋಷ** (ಪುಂ) 1. ದ್ರವವಸ್ತುವನ್ನು ನಾಲಗೆಯಿಂದ ಬಾಯೊಳಕ್ಕೆ ಎಳೆದುಕೊಂಡು ಹೀರುವುದು. ಚೂಷ (ಪಾನೇ) "ಘ" (೩-೩-೧೮). ಪೃಷಂ ೧. 2. ಸಂತಾಪ, ಹತ್ತಿರದ ಬೆಂಕಿಯಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ತಾಪದಂತೆ ಮೈಯೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಉರಿಸುವ ತಾಪ. "ಹೃಕ್ಷಲಪಿಡನಯುತಂ ಪವನೇನ ಪಿತ್ತಾತ್ಕುಡ್-ದಾಹಚೋಷಬಹುಲಂ ಸಕಪ್ರವೇಕಮ್" ಭಾವಪ್ರಂ ೧. (ವಿಂ) 3. ತಾಪಗೊಳಿಸುವ.

**ಚೊಷಣ ಚೋಷಣ** (ನಂ) ಹೀರುವುದು, ನಾಲಗೆಯಿಂದ ಎಳೆದುಕೊಂಡು ಕುಡಿಯುವುದು.

**ಚೊಷ್ಯ ಚೋಷ್ಯ** (ನಂ) ಹೀರಲ್ಪಡುವ ವಸ್ತು, ನಾಲಗೆಯಿಂದ ಎಳೆದುಕೊಂಡು ಕುಡಿಯಲ್ಪಡುವ ಒಂದು ಬಗೆ ಆಹಾರ ವಸ್ತು. ಚೂಷ (ಪಾನೇ) "ಘ" (೩-೧-೧೨೪). ಪೃಷಂ ೧.

**ಚೊಸ್ಕ ಚೋಸ್ಕ** (ಪುಂ) ಸಿಂಧು ದೇಶದ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಕುದುರೆ. "ಚೊಸ್ಕಸ್ತು ಸಿಂಧುವಾರೋ ಹ್ಯೋತ್ತಮಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ೧.

**ಚೌಡ ಚೌಡ** (ನಂ) 1. ಚೂಡಾಕರ್ಮ, ಜುಟ್ಟು ಬಿಡಿಸುವುದು. ಚೂಡಾ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಅಘ" (ವಾಂ ೪-೧-೧೧೦). ಚೋಡಶ ಸಂಸ್ಕಾರಗಳಲ್ಲಿ ಇದೂ ಒಂದು. "ಗಾರ್ಭೋಮೈಜಾತಿಕರ್ಮಚೌಡ-ಮೌಜ್ಜಿನಿಬಂಧನಃ" ಮನುಂ ೨-೨೭. 2. ಶಿಖೆ, ಜುಟ್ಟು. ಚೂಡಾ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಘ" (೪-೪-೩೮). ಲಡಯೋರಭೇದಾತ್ ಚೌಲಮ್ ಚೌಲಮ್.



ಚೌತಪಲ್ಲವಿ ಚೌತಪಲ್ಲವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾವಿನ ಚಗುರಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಚೌತಪಲ್ಲವಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। "ಕೃಣೋತ್ತರಾಸಙ್ಗಠವಂ ವಿಧವಚ್ಚೌತ-ಪಲ್ಲವೀಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೧೯।

ಚೌರ ಚೌರ (ಪುಂ) ಚೂರ, ಕಳ್ಳ. ಚುರ (ಸ್ತೇಯೇ) + ಣಿಚ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨)। ಚುರಾ ಶೀಲಮಸ್ಯ "ಞಃ" (೪-೪-೬೨)। "ಚೌರೇಹಿತಂ ಜಲೇನೋದಮಗ್ನಿನಾ ದಗ್ಧಮೇವ ವಾ" ಮನುಂ ೮-೧೮೯।

ಚೌರಪುಷ್ಪೌಷಧಿ ಚೌರಪುಷ್ಪೌಷಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಡಿಯಾಲದ ಮರ.

ಚೌರೈ ಚೌರೈ (ನಂ) ಕಳ್ಳವು. ಕಳ್ಳತನ. ಚೌರಸ್ಯ ಕರ್ಮ ಭಾವೋ ವಾ "ಏತ್" (೫-೧-೧೨೪)। "ಸರ್ವಃ ಸಾಕ್ಷೀ ಸಂಗ್ರಹಣೇ ಚೌರೈರಾಪ್ಯಸಾಹಸೇ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೭೨।

ಚೌರೈರತ ಚೌರೈರತ (ನಂ) ಕಳ್ಳತನದಿಂದ ನಡೆಯುವ ಸಂಭೋಗ, ಯಾರಿಗೂ ತಿಳಿಯದಂತೆ ನಡೆಯುವ ಪರಸ್ಪರ ಸಮಾಗಮ.

ಚೌರೈವಿಧಾ ಚೌರೈವಿಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚೌರೈಕಲೆ, ಕಳ್ಳತನವನ್ನು ಕಲಿಸುವ ವಿಧ.

ಚೌರೈವೃತ್ತಿ ಚೌರೈವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಳ್ಳತನದಿಂದ ನಡೆಯುವ ಜೀವನ, ಕದ್ದು ಮಾಡುವ ಜೀವನ. (ವಿಂ) 2. ಕಳ್ಳತನದಿಂದ ಜೀವಿಸುವ. ಚೌರೈಣ ವೃತ್ತಿಃ ಜೀವನಮ್ ಯಸ್ಯ।

ಚೌಲ ಚೌಲ (ನಂ) "ಚೌಡ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ಚೌಲಕರ್ಮನ್ ಚೌಲಕರ್ಮನ್ (ನಂ) ಚೂಡಾಕರ್ಮ, ಜುಟ್ಟು ಬಿಡಿಸುವುದು.

ಚೌಹಾಣ ಚೌಹಾಣ (ಪುಂ) ಹದಿನಾರನೆಯ ಶತಮಾನದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ.

ಚೌಹಾರ ಚೌಹಾರ (ಪುಂ) ಸಬ್ಬಸಿಗೆ ಸೊಪ್ಪು.

ಚ್ಯವನ ಚ್ಯವನ (ಪುಂ) 1. ಕೋಪದಿಂದ ತಾಯಿಯ ಗರ್ಭದಿಂದ ಹೊರಬಿದ್ದು ಬಂದ ಒಬ್ಬ ಯುಷಿ. ತಾಯಿಯ ಗರ್ಭದಿಂದ ತಾನಾಗಿ ಬಿದ್ದು ಬಂದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ಚ್ಯುಟ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)। ಭೃಗುಮಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿಯಾದ ಪುಲೋಮೆಯು ಗರ್ಭವತಿಯಾಗಿದ್ದಳು. ಒಂದು ದಿನ ಮಹರ್ಷಿಯು ಸ್ನಾನಕ್ಕಾಗಿ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಪುಲೋಮನೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನೊಬ್ಬನು ಅಶ್ರಮದೊಳಕ್ಕೆ ನುಗ್ಗಿ ಪುಲೋಮೆಯನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿಕೊಂಡು ಓಡಿಹೋಗುತ್ತಿರಲು ಗರ್ಭದೊಳಗಿದ್ದ ಶಿಶುವು ಕೋಪದಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಿದ್ದು ಬಂದಿತು. ಆಗ ಆ ರಾಕ್ಷಸನು ಸುಟ್ಟು ಭಸ್ಮವಾದನು. ಗರ್ಭದಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಿದ್ದು ಬಂದುದರಿಂದ

"ಚ್ಯವನ" ನೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಆ ಮಗುವು ನೊಡನೆ ಪುಲೋಮೆಯು ಬಳಿಕ ಅಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಬಂದು ಸೇರಿದಳು. [ಇನ್ನೂ ವಿವರಕ್ಕೆ "ಸುಕನ್ಯಾ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. "ಭೃಗೋಃ ಸುದಯಿತಾ ಭಾರ್ಯಾ ಪುಲೋಮೇತ್ಯಭಿವಿಶ್ರುತಾ। ತಸ್ಯಾಂ ಸಮಭವದ್ಗರ್ಭೌ ಭೃಗುವೀರ್ಯಸಮುದ್ಭವಃ॥ ಅಭಿಷೇಕಾಯ ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತೇ ಭೃಗೌ ಧರ್ಮಭೃತಾಂ ವರೇ। ಆಶ್ರಮಂ ತಸ್ಯ ರಕ್ಷಾಂಽಪುಲೋಮಾಽಭ್ಯಾಜಗಾಮ ಹ"॥ "ಅಗ್ನೇರಥ ವಚಃ ಶ್ರುತ್ವಾ ತದ್ರಕ್ಷಃ ಪ್ರಜಹಾರ ತಾಮ್। ಬ್ರಹ್ಮಾನ್ ವರಾಹರೂಪೇಣ ಮನೋಮಾಸ್ತರಂಹಸಾ। ತತಃ ಸ ಗರ್ಭೌ ನಿವಸನ್ ಕುಕ್ಷೌ ಭೃಗುಕುಲೋದ್ಭವಃ। ರೋಷಾನ್ಮಾತುಃ ಚ್ಯುತಃ ಕುಕ್ಷೇಃ ಚ್ಯವನಸ್ತೇನ ಸೌಭವತ್। ತಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಮಾತುರ್ದರಾತ್ ಚ್ಯುತಮಾದಿತ್ಯವರ್ವಸಮ್। ತದ್ರಕ್ಷೋ ಭಸ್ಮಸಾಙ್ಗತಂ ಪಪಾತ ಪರಿಮುಚ್ಯ ತಾಮ್। ಸಾ ತಮಾದಾಯ ಸುಶ್ರೋಣಿ ಸಸಾರ ಭೃಗುನಂದನಮ್। ಚ್ಯವನಂ ಭಾರ್ಗವಂ ಪುತ್ರಂ ಪುಲೋಮಾ ದುಃಖಮುಚ್ಚಿತಾ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬। (ನಂ) 2. ಸೋರುವುದು, ಸ್ತುವಿಸುವುದು. 3. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳುವುದು, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಜಾರುವುದು. ಚ್ಯುಟ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। (ವಿಂ) 4. ಸೋರುವ, ಸ್ತುವಿಸುವ. ಚ್ಯುಟ್ ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)।

ಚ್ಯವನಪ್ರಾಶ ಚ್ಯವನಪ್ರಾಶ (ಪುಂ) ಶರೀರಕ್ಕೆ ಪುಷ್ಟಿಯನ್ನು ಕೊಡುವ ಒಂದು ಲೇಹ್ಯ, ಒಂದು ರಸಾಯನ. ಚ್ಯವನೇನ ಪ್ರಾಶಯತೇ-ಪ್ರ+ಅಶ (ಭೋಜನೇ) "ಏತ್" (೩-೩-೧೧೫)। ಈ ರಸಾಯನಸೇವನೆಯಿಂದ ಕೆಮ್ಮಲು ಶ್ವಾಸಗಳು ವಾಸಿಯಾಗುವುವು. ರಕ್ತಬಲವು ಕಡಮೆಯಾದ ವೃದ್ಧರಿಗೂ ಬಾಲಕರಿಗೂ ಪುಷ್ಟಿಯುಂಟಾಗುವುದು. ಸ್ವರಕ್ಷಯ, ಎದೆನೋವು, ಮೂತ್ರದ ಬಿಳುಪು ಇವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು. ಬುದಿ ಶಕ್ತಿ ಸ್ಮೃತಿಶಕ್ತಿ ದೇಹಕಾಂತಿ ಇಂದ್ರಿಯ ಬಲ ಅಗ್ನಿವೃದ್ಧಿ ಮುಂತಾದುವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದು. ಇದರ ಸೇವನೆಯಿಂದ ಮೃದುಕನಾಗಿದ್ದ ಚ್ಯವನ ಯುಷಿಯು ಪ್ರಾಯದವನಾದನು. "इत्ययं च्यवनप्राशः परमुक्तो रसायनः। कासरवासहरश्चैव विशेषेणोपदिश्यते। क्षीण-क्षतानां वृद्धानां बालानाञ्चाङ्गवर्धनम्। स्वरक्षयमुरोरोगं हृद्रोगं वातशोणितम्। पिपासां मूत्रशुक्लस्थान् दोषांश्चैवापकर्षति। अस्य प्रयोगाच्च्यवनः सुवृद्धोऽभूत् पुनर्युवा। मेधां स्मृतिं कान्तिमनामयत्वं वपुःप्रकर्षं बलमिन्द्रियाणाम्। स्त्रीषु प्रहर्षं परमग्निवृद्धिं वर्णप्रसादं पवनानुलोम्यम्। रसायनस्यास्य नरः प्रयोगात्लभेत जीर्णोऽपि कुटीप्रवेशात्। जराकृतं पूर्वमेवाप्य रूपं बिभर्ति रूपं नवयौवनानाम्" चक्रದಂ।

ಚ್ಯವಾನ ಚ್ಯವಾನ (ಪುಂ) ಚ್ಯವನ ಮಹರ್ಷಿಃ ಚ್ಯವನ ಪುಷಿಂ।



ಚ್ಯಾವನ ಚ್ಯಾವನ (ನಂ) 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವುದು, ಕೆಡುವುದು. ಚ್ಯುಡ್ (ಗತೌ) + ಗಿಚ್ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)।

ಚ್ಯಾವಯತ್ ಚ್ಯಾವಯತ್ (ವಿಂ) ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಜಾರಿ ಬೀಳುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಚ್ಯುಡ್ (ಗತೌ) + ಗಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ಚಿತ್ತಿ -ಯಿತ್ತಿ.

ಚ್ಯಾವಿತ ಚ್ಯಾವಿತ (ವಿಂ) ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಕೆಡವಲ್ಪಟ್ಟು. ಚ್ಯುಡ್ (ಗತೌ) + ಗಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

ಚ್ಯುಡ್-ಗತೌ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ)। ಚ್ಯವತೇ। ಚ್ಯುತೇ। ಚ್ಯೋತಾ। ಚ್ಯೋಷ್ಯತೇ। ಚ್ಯವತಾಮ್। ಅಚ್ಯವತಃ। ಇತ್ಯಾದಿ. ಕೈಯಿಂದ ಜಾರಿಬೀಳು, ಕಳಚಿಕೊ.

ಭಾವೇ:-ಚ್ಯುತೇ। ಚ್ಯುತೇ। ಚ್ಯಾವಿತಾ, ಚ್ಯೋತಾ। ಚ್ಯಾವಿಷ್ಯತೇ, ಚ್ಯೋಷ್ಯತೇ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗಿಚಿ:-ಚ್ಯಾವಯತಿ। ಚ್ಯಾವಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಚ್ಯಾವಯಿತಾ। ಚ್ಯಾವಯಿಷ್ಯತಿ। ಚ್ಯಾವಯತು। ಅಚ್ಯಾವಯತ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:-ಚ್ಯೋತವ್ಯಮ್। ಚ್ಯವನೀಯಮ್। ಚ್ಯುತಃ। ಚ್ಯುತವಾನ್। ಚ್ಯವನ್, ಚ್ಯವಂತಿ। ಚ್ಯೋತುಮ್। ಚ್ಯುತಮ್। ಚ್ಯವನಮ್। ಚ್ಯುತ್ವಾ। ಪ್ರಚ್ಯುತ್ಯ।

ಚ್ಯುತ್ ಚ್ಯುತ್ (ವಿಂ) ಜಾರುವ, ಕಳಚಿ ಬೀಳುವ. ಚ್ಯುಡ್ (ಗತೌ) "ಕ್ವಿಪ್" (3-2-96)।

ಚ್ಯುತ ಚ್ಯುತ (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಜಾರಿದ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬಿದ್ದ, ಕಳಚಿ ಕೊಂಡ. ಚ್ಯುಡ್ (ಗತೌ) ಕರ್ತಂ "ಕ್ತಃ" (3-4-92)। "ಚ್ಯುತೇ ಸ ತಸ್ಮಿನ್ನಿಷ್ಠೌ ಶರಾರ್ಥಾಽದ್ವಿತ್ಯಾರ್ಥಸಾರೆ ಸಹಸೇವ ಬನ್ಧೌ" ಕಿರಾಂ 19-39। 2. ಭ್ರಷ್ಟನಾದ, ಅಧಿಕಾರದಿಂದ ಹೊರಬಿದ್ದ. "ಹೃತಭಾರ್ಯೆ ಚ್ಯುತೇ ರಾಜ್ಯಾತ್ ರಾಮೇ ಪರ್ಯುತ್ಸುಕೇ ಭೃಶಮ್" ಭಟಿಂ 9-92। 3. ನಾಶವಾದ, ಅಳಿದುಹೋದ. "ಸ ಚೇತ್ ಸ್ವಯಂ ಕರ್ಮಸು ಧರ್ಮಚಾರಿಣಾಂ ತ್ವಮನ್ತರಾಯೋ ಭವಸಿ ಚ್ಯುತೋ ವಿಧಿಃ" ರಘುಂ 3-45। 4. ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಟ. "ಸಂಪ್ರಹಾರಸಮುದ್ಭೂತೇ ರಕ್ತೇ: ಕೋಣೇರಕುಚ್ಯುತೇ:" ಭಟಿಂ 9-91। 5. ಚಲಿಸಿದ, ಕದಲಿದ.

ಚ್ಯುತದತ್ತಾಕ್ಷರಾ ಚ್ಯುತದತ್ತಾಕ್ಷರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾವ್ಯದ ಒಂದು ಭೇದ, "ಪ್ರಹೇಳಿಕಾ" ಎಂಬ ಒಂದು ವಿಧ ಕಾವ್ಯ, ಅಕ್ಷರವನ್ನು ತೆಗೆದುಹಾಕುವುದು ಬೇರೆ ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಸೇರಿಸುವುದು ಅಕ್ಷರವನ್ನು ತೆಗೆದುಹಾಕಿ ಅದರ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಅರ್ಥಾಂತರವನ್ನು ಕೊಡುವಂತೆ ಬೇರೆ ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಹಾಕುವುದು ಇತ್ಯಾದಿ ವೈಚಿತ್ರ್ಯಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕಾವ್ಯ. ಚ್ಯುತಾಕ್ಷರಾ ದತ್ತಾಕ್ಷರಾ ಚ್ಯುತದತ್ತಾಕ್ಷರಾ। ಉದಾ: "ಕೂಜಂತಿ ಕೋಕಿಲಾಃ ಸಾಲೇ ಯೌವನೇ ಫುಲಮಮ್ಬುಜಮ್। ಕಿಂ ಕರೋತು

ಕುರಂಗಾಕ್ಷಿ ವದನೇನ ನಿಪಿಡಿತಾ"। "ರಸಾಲೇ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಸಾಲೇ ಎಂದು ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ "ರ" ಅಕ್ಷರವು ಚ್ಯುತವಾಯಿತು. "ವನೇ" ಪದಕ್ಕೆ "ಯೌ" ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಸೇರಿಸಿ "ಯೌವನೇ" ಎಂದು ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ ದತ್ತಾಕ್ಷರವಾಯಿತು. "ವದನೇನ" ಎಂಬಲ್ಲಿ "ವ" ಅಕ್ಷರವನ್ನು ತೆಗೆದುಹಾಕಿ "ಮ" ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಹಾಕಿರುವುದರಿಂದ ಚ್ಯುತದತ್ತಾಕ್ಷರವಾಯಿತು. ಇಂತಹ ಕಾವ್ಯವು ರಸೋತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಪ್ರತಿಬಂಧಕವಾದುದರಿಂದ ಪ್ರಹೇಳಿಕೆಯು ಉಪಾದೇಯವಲ್ಲವೆಂದು ಸಾಹಿತ್ಯದರ್ಪಣಕಾರರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. "ರಸಸ್ಯ ಪರಿಪನ್ಥಿತವಾಗ್ನಾಲಕ್ಷಾರಃ ಪ್ರಹೇಲಿಕಾ। ಉಕ್ತಿವೈಚಿತ್ರ್ಯಮಾತ್ರಂ ಸಾ ಚ್ಯುತದತ್ತಾಕ್ಷರಾದಿಕಾ" ಸಾಂ ದಂ 10-14। ಅದರ ಕ್ರೋಡಾ ಗೋಷ್ಠಿ ಮತ್ತು ವಿಸೋದಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಜನನಿಬಿಡವಾದ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಮಾತನಾಡಬೇಕಾದ ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲೂ ಇತರರಿಗೆ ಅರ್ಥವಾಗದಂತೆ ಚಮತ್ಕಾರವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಇಂತಹ ಕಾವ್ಯಗಳಿಗೆ ಪ್ರಯೋಜನವುಂಟೆಂದು ದಂಡಿಯ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. "ಕೃಷ್ಣ-ಗೋಷ್ಠಿವಿನೋದೇಶು ತಜ್ಞೇರಾಕೀರ್ಣಮನ್ವರಣೇ। ಪರವ್ಯಾಮೋಹೇನಾಪಿ ಸೋಪಯೋಗಾಃ ಪ್ರಹೇಲಿಕಾಃ" ಕಾವ್ಯಾಂ 3-99।

ಚ್ಯುತಪಥಕ ಚ್ಯುತಪಥಕ (ವಿಂ) ದಾರಿತಪ್ಪಿದವನು, ದಾರಿ ಬಿಟ್ಟು ನಡೆಯುವವನು. ಚ್ಯುತಃ ಪನ್ಥಾಃ ಯಸ್ಯ, ವಾ "ಕಪ್" (4-4-144)।

ಚ್ಯುತಸಂಸ್ಕಾರ ಚ್ಯುತಸಂಸ್ಕಾರ (ವಿಂ) 1. ಸಂಸ್ಕಾರವಿಲ್ಲದವನು, ಜಾತಕರಣ ನಾಮಕರಣ ಮೊದಲಾದ ಸಂಸ್ಕಾರ ಕಾರ್ಯವಿಲ್ಲದವನು. 2. ವ್ಯಾಕರಣದ ನಿಯಮವಿಲ್ಲದ, ವ್ಯಾಕರಣದ ನಿಯಮವನ್ನು ಮೀರಿರುವ. ಚ್ಯುತಃ ಸಂಸ್ಕಾರಃ ಯಸ್ಯ।

ಚ್ಯುತಸಂಸ್ಕೃತಿ ಚ್ಯುತಸಂಸ್ಕೃತಿ (ವಿಂ) "ಚ್ಯುತಸಂಸ್ಕಾರ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ಚ್ಯುತಾಕ್ಷರ ಚ್ಯುತಾಕ್ಷರ (ವಿಂ) ಅಕ್ಷರವನ್ನು ತೆಗೆದುಹಾಕುವುದರಿಂದ ಬೇರೆ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಪದ ಮೊದಲಾದುದು. "ಕೂಜಂತಿ ಕೋಕಿಲಾಃ ಸಾಲೇ ಯೌವನೇ ಫುಲಮಮ್ಬುಜಮ್। ಕಿಂ ಕರೋತು ಕುರಂಗಾಕ್ಷಿ ವದನೇನ ನಿಪಿಡಿತಾ" ಇಲ್ಲಿ ರಸಾಲೇ ಪದದ ರೇಫವು ಚ್ಯುತವಾಗಿರುವುದು. ಈ ರೀತಿಯಾದ ಪ್ರಯೋಗಗಳು ವೈಚಿತ್ರ್ಯ ಮಾತ್ರಪ್ರಯೋಜಕವಾಗಿ ರಸವಿರೋಧಿಯಾಗುವುದರಿಂದ ಪ್ರಹೇಳಿಕಾಪ್ರಭೇದವಾದ ಚ್ಯುತದತ್ತಾಕ್ಷರಾದಿಗಳು ಅಲಂಕಾರವಾಗುವುದಿಲ್ಲ. "ರಸಸ್ಯ ಪರಿಪನ್ಥಿತವಾಗ್ನಾಲಕ್ಷಾರಃ ಪ್ರಹೇಲಿಕಾ। ಉಕ್ತಿವೈಚಿತ್ರ್ಯಮಾತ್ರಂ ಸಾ ಚ್ಯುತದತ್ತಾಕ್ಷರಾದಿಕಾ" ಸಾಂ ದಂ 10-14।



**ಚ್ಯುತಾಧಿಕಾರ ಚ್ಯುತಾಧಿಕಾರ** (ವಿಂ) ಅಧಿಕಾರದಿಂದ ತೆಗೆದುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟವನು. ಚ್ಯುತ: ಅಧಿಕಾರೋ यस್ಯ ।

**ಚ್ಯುತಾತ್ಮನ್ ಚ್ಯುತಾತ್ಮನ್** (ವಿಂ) ಕೆಟ್ಟ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳವನು, ಶೀಲವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡವನು. ಚ್ಯುತ: ಆತ್ಮಾ यस್ಯ ।

**ಚ್ಯುತಿ ಚ್ಯುತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭ್ರಂಶ, ನಾಶ. ಚ್ಯುತ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। "ಕ್ಯುರ್ಯಿ ಹರಸ್ಯಾಪಿ ಪಿನಾಕಪಾಣೇ-ರ್ಧೈಚ್ಯುತಿ ಕೈ ಮಮ ಧನ್ವಿನೋಽನ್ಯೇ" ಕುಮಾಂ ೩-೧೦ । 2. ಸ್ರವಿಸುವುದು, ಸೋರುವುದು. 3. ಕಳಚಿಬೀಳುವುದು, ಜಾರುವುದು. 4. ಗುದದ್ವಾರ, ಅಸನದ್ವಾರ.

**ಚ್ಯುತಿರ್-ಆಸೇಚನೆ** (ಘಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಚ್ಯೋತತಿ । ಚ್ಯುತ । ಚ್ಯೋತಿತಾ । ಚ್ಯೋತಿಷ್ಯತಿ । ಚ್ಯೋತತು । ಅಚ್ಯೋತತ್ । ಚ್ಯೋತೇತ್ । ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ತೊಟ್ಟಿಕ್ಕು, ಜಿನುಗು, ಸ್ರವಿಸು. 2. ಒದ್ದೆಮಾಡು.

**ಕರ್ಮಣಿ** :-ಚ್ಯುತೃಯೇ । ಚ್ಯುತೃಯೇ । ಚ್ಯೋತಿತಾ । ಚ್ಯೋತಿಷ್ಯತೇ । ಚ್ಯುತೃಯಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಣಿಚಿ** :-ಚ್ಯೋತಯತಿ, -ತೇ । ಚ್ಯೋತಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ । ಚ್ಯೋತಯಿತಾ । ಚ್ಯೋತಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ । ಚ್ಯೋತಯತು, -ತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತು** :-ಚ್ಯೋತಿತವ್ಯ: । ಚ್ಯೋತನೀಯ: । ಚ್ಯೋತೃ: । ಚ್ಯುತಿತ: । ಚ್ಯುತಿತವಾನ್ । ಪ್ರಚ್ಯುತಿತ: , ಪ್ರಚ್ಯೋತಿತ: । ಪ್ರಚ್ಯುತಿತವಾನ್ , ಪ್ರಚ್ಯೋತಿತವಾನ್ । ಚ್ಯೋತನ್ , ಚ್ಯೋತಂತಿ । ಚ್ಯೋತಿತುಮ್ । ಚ್ಯುತಿತಮ್ । ಚ್ಯೋತನಮ್ । ಚ್ಯೋತಿತ್ವಾ । ಪ್ರಚ್ಯುತೃಯಾ ।

**ಚ್ಯುತಿತ ಚ್ಯುತಿತ** (ವಿಂ) 1. ಜಿನುಗಿದ, ಸ್ರವಿಸಿದ, ತೊಟ್ಟಿಕ್ಕಿ ಹರಿದ. ಚ್ಯುತಿರ್ (ಆಸೇಚನೆ) ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೧) । 2. ಒದ್ದೆಯಾಗಿ ಮಾಡಿದ, ತೇವಮಾಡಿದ. 3. ತೊಟ್ಟಿಕ್ಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಜಿನುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಒದ್ದೆಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಚ್ಯುತಿರ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) ।

**ಚ್ಯುತಿತವತ್ ಚ್ಯುತಿತವತ್** (ವಿಂ) 1. ಜಿನುಗಿಸಿದವನು, ಸ್ರವಿಸಿದವನು. 2. ಒದ್ದೆಯಾಗಿ ಮಾಡಿದವನು. ಚ್ಯುತಿರ್ (ಆಸೇಚನೆ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ವತೀ -ವತೀ.

**ಚ್ಯುಪ ಚ್ಯುಪ** (ಪುಂ) 1. ಮುಖ, ಬಾಯಿ. ಚ್ಯವಂತೇ ಭಾಷಂತೇಜೇನ - ಚ್ಯುಪ್ (ಗತೌ) "ಪ:" (೩-೨-೨೪) । ಚ್ಯುಪೋ ವಕ್ತ್ರಮ್ ಸಿಂ ಕೌಂ । 2. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 3. ಸೇತುವೆ, "ಚ್ಯುಪೋ ಪವನಸಂಕ್ರಮೋ" ವೈಜಂ ।

**ಚ್ಯೋತತ್ ಚ್ಯೋತತ್** (ವಿಂ) 1. ಜಿನುಗುತ್ತಿರುವ, ಸ್ರವಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಒದ್ದೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ತೇವಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಚ್ಯುತಿರ್ (ಆಸೇಚನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) । ಚ್ಯೋತಂತಿ ಚ್ಯೋತಂತೀ.

**ಚ್ಯೋತನ ಚ್ಯೋತನ** (ನಂ) 1. ಜಿನುಗುವುದು, ಸ್ರವಿಸುವುದು, ತೊಟ್ಟಿಕ್ಕುವುದು. 2. ಒದ್ದೆಮಾಡುವುದು, ತೇವಮಾಡುವುದು. ಚ್ಯುತಿರ್ (ಆಸೇಚನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) ।

**ಚ್ಯೋತನೀಯ ಚ್ಯೋತನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ರವಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಬೇಕಾದ, ಸೋರುವಂತೆ ಮಾಡಬೇಕಾದ. 2. ಸ್ರವಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಚ್ಯುತಿರ್ (ಆಸೇಚನೆ) + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮದಿ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । 3. ಸೋರುವಂತೆ ಮಾಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 4. ಸೋರುವಂತೆ ಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. 5. ಒದ್ದೆಮಾಡಲ್ಪಡುವ. "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) । ಚ್ಯೋತಯಿತವ್ಯ: ಚ್ಯೋತಯಿತವ್ಯ:.

**ಚ್ಯೋತಿತವ್ಯ ಚ್ಯೋತಿತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ರವಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 2. ಸ್ರವಿಸಬಹುದಾದ. 3. ಆದ್ರ್ವವಾಗಿ ಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ಒದ್ದೆಮಾಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಚ್ಯುತಿರ್ (ಆಸೇಚನೆ) ಅರ್ಹಾದಿ "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) ।

**ಚ್ಯೋತ ಚ್ಯೋತ** (ವಿಂ) 1. ಒದ್ದೆಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಜಿನುಗುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಚ್ಯುತಿರ್ (ಆಸೇಚನೆ) "ಞತ್" (೩-೧-೧೨೪) ।

**ಚ್ಯೋತ ಚ್ಯೋತ** (ನಂ) 1. ಬಲ, ಶಕ್ತಿ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. 2. ಯಾಜಮಾನ್ಯ. ಚ್ಯುಪ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೪-೧೦೪) । (ವಿಂ) 3. ಮೊಟ್ಟೆಯಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಪಕ್ಷಿ, ಸರ್ಪ ಮೊದಲಾದುವು. 4. ಪುಣ್ಯವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡವನು. 5. ಹೋಗುವವನು, ನಡೆಯುವವನು.

इति "च" कारादिपदार्थनिरूपणम् ।



ಛ

ಛ ಛ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ ಚರ್ವಗದ ಎರಡನೆಯ ಮತ್ತು ತಾಲು (ದವಡೆ) ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಅಭ್ಯಂತರಸ್ಪೃಷ್ಟ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಒಂದು ಮಹಾಪ್ರಾಣಾಕ್ಷರ. "ಕಾದಯೋ ಮಾವಸಾನಾಃ ಸ್ಪರ್ಶಾಃ" | "ಇಚ್ಛುಯಶಾನಾಂ ತಾಲು" ಸಿಂ ಕೌಂ |

ಛ ಛ (ಪುಂ) 1. ಛಕಾರ. 2. ಛೇದನ, ಕತ್ತರಿಸುವಿಕೆ. ಛೋ (ಛೇದನೆ) "ಕಃ" (ವಾಂ 3-3-46) | 3. ಖಂಡ, ತುಂಡು, ಭಾಗ. 4. ಮುಚ್ಚುವುದು. 5. ನಾಯಕಮಣಿ, ಹಾರದ ಮಧ್ಯದ ಮಣಿ. "ತರಲೇ ಛಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ" ಹಾರಾಂ | (ನಂ) 6. ಗೃಹ, ಮನೆ. 7. ಆಚ್ಛಾದನ, ಹೊದಿಕೆ. 8. ಸಂವತ್ಸರ. 9. ಇಚ್ಛೆ. (ವಿಂ) 10. ನಿರ್ಮಲವಾದ, ಸ್ವಚ್ಛವಾದ. 11. ಚಂಚಲವಾದ, ಸ್ಥಿರವಲ್ಲದ. 12. ನಿತ್ಯವಾದ, ಶಾಶ್ವತವಾದ. 13. ಮಲಿನವಾದ. 14. ಭೇದಿಸುವ, ಬೇರ್ಪಡಿಸುವ, ಒಡೆಯುವ. "ಸ್ಯಾಲಿಪ್ಸಾ-ಚ್ಛಾದನಾಂದೇಷು ಛ ಕಲಿಬೇ ಸಂವೃತೌ ಪುಮಾನ್ | ತ್ರಿವ್ಯಯಂ ನಿರ್ಮಲೇ ನಿಯಮಲಿಢೇ ಭೇದೇಕೇಪಿ ಚ" ನಾನಾಶರಂ |

ಛಗ ಛಗ (ಪುಂ) ಮೇಕೆ. ಛ ರೋಮಭಿಃ ಛಾದನಂ ಗಚ್ಛತಿ ಯಜ್ಞಾದೌ ಛೇದನಂ ಗಚ್ಛತಿ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ ವಾ - ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಛಃ" (ವಾಂ 3-2-46) | "ಛಾಸ್ತು ಛಗಲಕ್ಷಣಾಗೋ ಲಮ್ಬಕರ್ಣಸ್ತಭಃ ಪಶುಃ" ವೇಜಂ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಛಿಪ್" (4-1-63) | ಛಗಿ ಛಗೀ.

ಛಗಣ ಛಗಣ (ಪುಂ) ಕರೀಷ, ಬೆರಣಿ, ಒಣಗಿದ ಸಗಣ. ಛಾಯ ವಹ್ನೇಃ ಛಾದನಾಯ ಗಣ್ಯತೇ - ಗಣ (ಸಂಖ್ಯಾನೇ) + ಗಿಂಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಅಚ್" (3-3-46) | "ಗೋಗ್ರಂಥಿಃ ಶುಷ್ಕಗೋಮಯಮ್ | ಕರೀಷಃ ಛಗಣಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಛಗಲ ಛಗಲ (ಪುಂ) 1. ಮೇಕೆ. ಛಾಯತೇ ಛಿವತೇ ದೇವೋಪಹಾರಾಯ - ಛೋ (ಛೇದನೆ) "ಕಲಃ" ಗುಗ್ಲಸ್ವಶ್ಚ (ತಂ 1-110) | 2. ಒಬ್ಬ ಮುಷಿ. (ನಂ) 3. ನೀಲಬಣ್ಣದ ಬಟ್ಟೆ, ನೀಲ ವಸ್ತ್ರ. ಛೋ (ಛೇದನೆ) "ಕಲಃ" ಗುಗ್ಲಸ್ವಶ್ಚ (ತಂ 1-110) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ಅನಂತನ ಗೊಂಡೆ ಸೊಪ್ಪು. "ಛಗಲಂ ನೀಲವಸ್ತ್ರೇ ನಾ ಛಾಗೇ ಸ್ತ್ರೀ ವೃದ್ಧದಾರಕೇ" ಮೇದಿಂ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಛಿಪ್" (4-1-63) | ಛಗಲಿ ಛಗಲೀ.

ಛಗಲಕ ಛಗಲಕ (ಪುಂ) ಅಡು, ಅಜ, ಮೇಕೆ. ಛಗಲ ಸ್ವಾಯೆ "ಕನ್" | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಛಿಪ್" (4-1-63) | ಛಗಲಕಿ ಛಗಲಕೀ.

ಛಗಲಾಙ್ಗಿ (ಸ್ತ್ರೀ) ಛಗಲಾಂಙ್ಗಿ (ತ್ರಿಂ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನಂತನ ಗೊಂಡೆ ಸೊಪ್ಪು. ಛಗಲಸ್ಯೇವ ಅಙ್ಗಿಃ ಅನ್ತ್ರಂ ವಾ ಯಸ್ಯಾಃ |

ಛಟಾ ಛಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. ಛೋ (ಛೇದನೆ) "ಅಟನ್" (ತಂ 4-41) | "ಸಟಾಞ್ಛಟಾಭಿನ್ನಧನೇನ ಬಿಭ್ರತಾ ನೃಸಿಹ ಸೇಹೀಮತನುಂ ತನಂ ತ್ವಯಾ" ಮಾಘಂ 1-46 | 2. ದೀಪ್ತಿ, ಪ್ರಕಾಶ.

ಛಟಾಫಲ ಛಟಾಫಲ (ಪುಂ) ಅಡಕೆಮರ. ಛಟೇವ ಪರಸ್ಪರಾ-ಸಂಸೃಷ್ಟಾನಿ ಫಲಾನ್ಯಸ್ಯ | "ರಾಜತಾಲಃ ಛಟಾಫಲಃ | ಕರಮದೃ-ಸ್ತಂತುಸಾರೋ ಗುವಾಕೋ ಕೋಟ ಇತ್ಯಪಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಛಟಾಭಾ ಛಟಾಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು. ಛಟಯಾ ಕಾಂತ್ಯಾ ಭಾತಿ - ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕಃ" (3-2-3) |

ಛತ್ರ ಛತ್ರ (ಪುಂ) 1. ನಾಯಿಕೋಡೆ. (ನಂ) 2. ಅತಪತ್ರ, ಛತ್ರ, ಕೊಡೆ. ಛಾದಯತನೇನ - ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ) "ಛ್ಠನ್" (ತಂ 4-146) | "ಅದೇಯಮಾಸೀತ್ ತ್ರಯಮೇವ ಭೂಪತೇಃ ಶಶಿಪ್ರಭಂ ಛತ್ರಮುಖೇ ಚ ಚಾಮರೇ" ರಘುಂ 3-16 | ಛತ್ರಿಯು ಮಳೆ ಬಿಸಿಲುಗಳ ತಡೆಗಾಗಿ ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳುವ ಒಂದು ಕೊಡೆ. ಈ ಕೊಡೆಯೇ ರಾಜಲಕ್ಷಣವಾದರೆ ಅದಕ್ಕೆ ಶ್ವೇತಚ್ಛತ್ರ ವೆಂದು ಹೆಸರು. ರಾಜಲಕ್ಷಣವಾದ ಛತ್ರಿಯು ಶ್ವೇತ ವಸ್ತ್ರದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಡುವುದು. "ಆತಪತ್ರಂ ಚ ರಾಜಸ್ತು ರಾಜಲಕ್ಷಮ ಸಿತಂ ತು ತತ್" | 3. ಗುರುವಿನ ದೋಷವನ್ನು ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡುವುದು. 4. ಅವರಣ. 5. ಮುಡಿವಾಳ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತ್ರಾ -ತ್ರಾ. ನಾಯಿಕೋಡೆ. 6. ಧನಿಯ, ಕೊತ್ತುಂಬರಿ. 7. ಸಬ್ಬಸಿಗೆ. "ಛತ್ರಂ ಸ್ಯಾದಾತಪತ್ರಾಣಿ ಛತ್ರಾ ಮಧುರೀಕೌಷಥೌ | ಧಾನ್ಯಾಕೇ ಚ ಶಿಲೀಂಧ್ರೇ ಚ" ಹೇಮಂ |

ಛತ್ರಕ ಛತ್ರಕ (ಪುಂ) 1. ಛತ್ರಿಯಾಕಾರದ ಜೇನುಗೊಡು. 2. ಶಿವದೇವಾಲಯ. 3. ನಾಯಿಕೋಡೆ. 4. ಕೂಷ್ಮಾಂಡ, ಕುಂಬಳ. 5. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. "ಕಾಲಿಂಗಯಾಂ ಛತ್ರಕಃ ಸೋಮಃ ಕರ್ಕಾಶಿರ್ಯನವಾಸಕಃ | ಕೂಷ್ಮಾಂಡಕಃ ಪುಷ್ಪಫಲಃ ಪೀತಪುಷ್ಪೋ ನೃಪಾತ್ಮಜಃ" ವೇಜಂ |

ಛತ್ರಗ್ರಾಹಿನ್ ಛತ್ರಗ್ರಾಹಿನ್ (ಪುಂ) ಛತ್ರಿಯನ್ನು ಹಿಡಿಯುವವನು. ಛತ್ರಂ ಗೃಹ್ಣಾತಿ - ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಗಿಹಿಃ" (3-1-134) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛಿಪ್" (4-1-63) | -ಗ್ರಾಹಿಣಿ ಗ್ರಾಹಿಣೀ.

ಛತ್ರಧಾನ್ಯ ಛತ್ರಧಾನ್ಯ (ನಂ) ಕೊತ್ತುಂಬರಿ.

ಛತ್ರಧ(ಧಾ)ರ ಛತ್ರಧ(ಧಾ)ರ (ಪುಂ) 1. ಕೊಡೆಯನ್ನು ಹಿಡಿಯುವವನು. ಛತ್ರಸ್ಯ ಧರಃ | ಛತ್ರಂ ಧಾರಯತಿ ವಾ | ಧೃ (ಧಾರಣೆ) "ಅನ್" (3-2-1) | (ವಿಂ) 2. ಛತ್ರಿಯನ್ನು ಹಿಡಿದುಕೊಂಡಿರುವ. "ಗಿಹಿಃ" (3-1-134) | -ಧಾರಿನ್ -ಧಾರಿಣ್.



**ಛತ್ರಪತ್ರ ಭತ್ತಪತ್ರ (ಪುಂ)** ಭುಜಪತ್ರ ಗಿಡ. ಛತ್ರಮಿವ ಪತ್ರಮಸ್ಯ |

**ಛತ್ರಭಜ್ಞ ಭತ್ತಭಂಗೆ (ಪುಂ)** 1. ರಾಜ್ಯದ ನಾಶ, ರಾಜಲಕ್ಷಣ ವಾದ ಭತ್ತಿಯ ಒಡೆಯನ ನಾಶ. ಛತ್ರಸ್ಯ ನಾಶೋ ಯತ್ರ | 2. ಭತ್ತಿಯಂತೆ ರಕ್ಷಕನಾದ ಪತಿಯ ನಾಶದಿಂದ ಉಂಟಾದ ವೈಧವ್ಯ. ಛತ್ರಸ್ಯೇವ ರಕ್ಷಿತುಃ ಪತ್ನಿಃ ನಾಶೋ ಯತ್ರ | 3. ಅಸ್ವಾ ತಂತ್ರ, ಪರಾಶ್ರಯ.

**ಛತ್ರಾ ಭತ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** "ಛತ್ರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ಛತ್ರಾಕ ಭತ್ತಾಕ (ನಂ)** 1. ನಾಯಿಕೋಡೆ. "ಛತ್ರಾಕಂ ವಿಡ್ವರಾಹಂ ಚ ಲಶುನಂ ಗ್ರಾಮಕುಕ್ಕುಟಮ್" ಮನುಂ ೪-೨೯ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕೀ-ಕೀ. 2. ಸರ್ಪಾಕ್ಷಿ, ಈಶ್ವರೀ ಹಂಟು. "ನಾಕುಲಿ ಸುವಹಾ ರಾಸನಾ ಛತ್ರಾಕೀ ಸರ್ವಲೋಚನಾ" ವೈಜಂ |

**ಛತ್ರೀಕ ಭತ್ತೀಕ (ವಿಂ)** 1. ಭತ್ತಿಯನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ. ಛತ್ರಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೫) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ-ಕಾ. 2. ನಾಯಿಕೋಡೆ. ಛತ್ರಂ ತದಾಕಾರಂ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯಸ್ಯ "ಠನ್" |

**ಛತ್ರೀನ್ ಭತ್ತೀನ್ (ಪುಂ)** 1. ನಾಪಿತ, ನಾಯಿಂದ. (ವಿಂ) 2. ಭತ್ತಿಹಿಡಿದಿರುವ. ಛತ್ರಮಸ್ಯಸ್ಯ "ಛಿನ್" (೪-೨-೧೧೫) | "ಛತ್ರೀಣೋ ಯಾಂತಿ" |

**ಛತ್ರೀರ ಭತ್ತೀರ (ಪುಂ)** 1. ಮನೆ. 2. ಪೊದೆ, ನಿಕುಂಜ. ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ) "ಛತ್ರೀ" (೩-೩-೧) | "ಛತ್ರೀರೋ ಗೃಹಕುಂಜಯೋಃ" ಸಿಂ ಕೌಂ |

**ಛದ ಭದ (ಪುಂ)** 1. ಪರ್ಣ, ಎಲೆ. ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ) "ಛದಃ" (೩-೩-೧೧೮) | "ಕುಸುಮಸುರಭಯೋ ನಾತಿಹೀರೇ ಷ್ಯಾಮಾಯಮಾನವನ-ಛದಃಚಾಪಾತರವೋ ನಗರಪರ್ಯಂತೋದಾನಭೂಮಯಃ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೪ | 2. ಹಕ್ಕಿಯ ಗರಿ, ಪಕ್ಷಿಯ ರೆಕ್ಕೆ. "ಛದೇ ಸದೇವ ಛದವಿಮಸ್ಯ ವಿಭ್ರತಾಂ ನ ಕೇಕಿನಾಂ ಸರ್ಪವಿಷಂ ವಿಸರ್ಪತಿ" ನೆಪಂ ೧೬-೩೦ | 3. ತಮಾಲವೃಕ್ಷ, ಹೊಂಗೆಮರ. 4. ಮಾಚಿಪತ್ರ. "ಛದಃ ಪಲಾಶೋ ಗುಹತಿ ಗ್ರಂಥಿಪರ್ಣತಮಾಲಯೋಃ" ಮೇದಿಂ |

**ಛದನ ಭದನ (ನಂ)** 1. ಪರ್ಣ, ಎಲೆ. ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ) ಕರಂ "ಛದನ್" (೩-೩-೧೧೮) | 2. ಹಕ್ಕಿಯ ಗರಿ. "ವಿಮಲಸ್ಫಾಟಿಕಾಭಾನಿ ಪಾಣ್ಡುರಛದನೈರ್ದಿವ್ಯಃ" ಭಾಂ ವನಂ ೧೫೯-೭೧ | 3. ಪಿಪ್ಪಲ, ಮುಚ್ಚಿದುವುದು. ಛದ ಭಾವೇ "ಛದನ್" (೩-೩-೧೧೮) | 4. ಲವಂಗಪತ್ರ, ದಾಲ್ಚಿನ್ನಿ.

**ಛದಪತ್ರ ಭದಪತ್ರ (ಪುಂ)** ಭುಜಪತ್ರಿಯ ಮರ. ಛದಾರ್ಥ ಪತ್ರಮಸ್ಯ |

**ಛದಿ ಭದಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮನೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಹೊದಿಕೆ, ಮೇಲ್ಮಾವಣೆ. ಛಾದಯತಿ - ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ) "ಛದಿಃ" (೩-೩-೧೦೮) | "ಪಟಲಂ ಛದಿಃ" ಎಂದು ಪಟಲ ಪದದ

ಸಾಹಚರ್ಯದಿಂದ ಛದಿಃ ಎಂದು ಸಕಾರಾಂತ ನಪುಂಸಕ ಲಿಂಗವಾಗಿ ಅಮರ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. "ಛದಿಃ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಎಂಬ ಲಿಂಗಾನುಶಾಸನಸೂತ್ರದಿಂದ ಇಕಾರಾಂತ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗವೇ ಸಾಧುವಾದುದು.

**ಛದಿಃ ಭದಿಃ (ನಂ)** ಮನೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಮೇಲ್ಮಾವಣೆ. ಲಿಂಗಾನುಶಾಸನಸೂತ್ರದಂತೆ ಇಕಾರಾಂತ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗ ವಾದರೂ ಸಕಾರಾಂತ ನಪುಂಸಕಲಿಂಗ ಪ್ರಯೋಗವು ವಿಶೇಷ ವಾಗಿ ವೇದದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಕಂಡುಬರುವುದು. ಛದಿಃ: ಛದಿಷ್ಮತ್, ಛದಿಃಸಮಿತಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಛದಗತಿ ಭದಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಳ್ಳತನದಿಂದ ನಡೆಯುವುದು, ಒಳಸಂಚಿನಿಂದ ಗುಪ್ತವಾಗಿ ಹೋಗುವುದು.

**ಛದತಾಪಸ ಭದತಾಪಸ (ಪುಂ)** ಕಪಟಸಂನ್ಯಾಸಿ, ಇತರ ರನ್ನು ಮೋಸಗೊಳಿಸಲು ತಾಪಸಪೇಷವನ್ನು ತಾಳಿದ ವನು. ಛದನಾ ಕಪಟೇನ ತಾಪಸಃ | "ಬೈಡಾಲವ್ರತಿಕಃ ಸರ್ವಾಭಿ-ಸಂಧಿ ಛದತಾಪಸಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಛದನ್ ಭದನ್ (ನಂ)** 1. ಕಪಟ, ಮೋಸ. ಛಾದತೇ ಸ್ವರೂಪಮನೇನ-ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ) "ಮನಿನ್" (೩-೨-೭೫) | "ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಛದವಿಹೃಷ್ಣಂ ಮಾಂ ಸುತೋ ವಿಜ್ಞಾಯ ಜಮ್ಭಮಿತ್" ಕುಮಾಂ ೧೦-೮ | 2. ವ್ಯಾಜ, ನೆಪ. "ತಂ ಕರ್ಣಮೂಲಮಾಗತ್ಯ ರಾಮೇ ಶ್ರೀನೃಪಸ್ಯತಾಮಿತಿ | ಕೇಕೇಯೀಶಚ್ಛೇವಾಹ ಪಲಿತಃ ಛದನಾ ಜರಾ" ರಘುಂ ೧೨-೨ | 3. ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಮುಚ್ಚುವುದು, ಬೇರೆ ರೂಪದಿಂದ ಹೇಳುವುದು. "ಜಗಾದ ವದನಃ ಛದಪದಪರ್ಯಂತ-ಪಾತಿನಃ | ನಯನ್ಮಧುಲಿಹಃ ಶ್ವೇತಮುದಗ್ರದಶನಾಂಶುಭಿಃ" ಮಾಘಂ ೨-೨೧ | 4. ಮೇಲ್ಮಾವಣೆ. 5. ಮೂರ್ಖತನ. 6. ಗೃಹ, ಮನೆ. 7. ಹನನ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. "ಛದ ಶಾಠ್ಯೇಽಪದೇಶೋ ಧಾತಿಕರ್ಮಣಿ" ಹೇಮಂ | "ಛದ ಸದ್ವನಿ ಕೇತವೇ" ವೈಜಂ |

**ಛದವೇಷ ಭದವೇಷ (ಪುಂ)** ಮೋಸದ ವೇಷ, ವಂಚನೆ ಮಾಡಲು ಹಾಕಿದ ವೇಷ.

**ಛದವೇಷಿನ್ ಭದವೇಷಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಕಪಟದ ವೇಷ ಹಾಕಿದ, ಮೋಸದ ವೇಷವನ್ನು ತಾಳಿದ. "ಸಂತಿ ಹೃಸಾಧವೋ ಲೋಕೇ ದುರ್ಮತಾಃ ಛದವೇಷಿಣಃ" ಭಾಗಂ ೭-೫-೨೭ | 2. ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ.

**ಛದಿಕಾ ಭದಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಪ್ಪುತಬಳ್ಳಿ.

**ಛದಿನ್ ಭದಿನ್ (ವಿಂ)** ಕಪಟ, ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ.

**ಛದ್ವರ ಭದ್ವರ (ಪುಂ)** 1. ಹಲ್ಲು, ದಂತ. 2. ನಿಕುಂಜ, ಪೊದೆ.

**ಛದ ಭಂದ (ಪುಂ)** 1. ಅಭಿಲಾಷೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಇಚ್ಛೆ. ಛದಿ (ಸಂವರಣ) "ಛದ್" (೩-೩-೧೮) | "ದೇವಾ ಕಾಲಂ ಚ



ಯೋಜಯಾತ್ ಲಾಭಂ ಕುರ್ಯಾನ್ವ ಯೋಜಯಾತ್ । ತತ್ರ ಸ್ಯಾತ್ಸಾಮಿನ-  
ಫಲೋದಯಃ ಕೃತೇಽಧಿಕೇ ” ಯಾಜ್ಞಂ । 2. ಅಭಿಪ್ರಾಯ,  
ಅಶಯ. “ಉದಾನುವೃತ್ತಿಃ ಸಾಧ್ಯಾಃ ಸುಹೃದೋ ವಿಮನೀಕೃತಾಃ”  
ಮಾಘಂ ೨-೧೦೫ । 3. ವಶವಾಗಿರುವುದು, ಅಸ್ವತಂತ್ರತೆ,  
ಅಧೀನತೆ.

**ಉದಕ ಛಂದಃ** (ಪುಂ) ವಾಸುದೇವ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ, ಸಕಲ  
ರಕ್ಷಕ. ಉದಯತಿ ಸಂವೃಣೋತಿ ರಕ್ಷತಿ—ಛದಿ (ಸಂವರಣ)  
“ಞ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) । “ವಾಸುಧೇವ ಸರ್ವಃ ಉದಕ ಹರಿಹಯ  
ಹರಿಮೇಧ ಮಹಾಯಜ್ಞಭಾಗಹರ ವರಪ್ರದ ಸುಖಪ್ರದ” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ  
೩೪೬ ।

**ಉದನ ಛಂದಃ** (ವಿಂ) ಮನೋಹರವಾದ, ಸುಂದರವಾದ.

**ಉದಃಶಾಸ್ತ್ರ ಛಂದಃಶಾಸ್ತ್ರ** (ನಂ) ವೃತ್ತನಿಯಮಗಳನ್ನು  
ಹೇಳುವ ಒಂದು ಶಾಸ್ತ್ರ. ಮಾತ್ರಾವೃತ್ತ ವರ್ಣವೃತ್ತಗಳ  
ಸ್ವರೂಪ ಮತ್ತು ಲಕ್ಷಣಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಒಂದು ಶಾಸ್ತ್ರ.  
ಛಂದೋಮಂಜರಿ, ಛಂದೋವಿಚಿತಿ, ವೃತ್ತಮುಕ್ತಾವಳಿ,  
ವೃತ್ತಮೌಕ್ತಿಕ, ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರ ಮುಂತಾದುವು ಛಂದಃ  
ಶಾಸ್ತ್ರಗ್ರಂಥಗಳು. ಪಿಂಗಲಚಾರ್ಯ ವರ್ಧಮಾನ  
ನಾಗಸೇನ ಕಾಶ್ಯಪ ಮುಂತಾದವರು ಛಂದಃಶಾಸ್ತ್ರ ಕರ್ತೃ  
ಗಳು. “ಪಿಂಗಲಾದಿಭಿರಾಚಾರ್ಯೈರುಕ್ತಂ ಲೌಕಿಕಂ ದ್ವಿಧಾ ।  
ಮಾತ್ರಾವರ್ಣವಿಭೇದೇನ ಉದಸ್ತದಿಹ ಕಥ್ಯತೇ” ವೃಂ ೨೦ ।

**ಉದಸ್ ಛಂದಃ** (ನಂ) 1. ವೇದ. ಚದಿ (ಆಹ್ವಾದನೇ)  
“ಅಸುನ್” ಆದೇಃ ಛಕಾರಾದೇಶಃ (ಉಂ ೪-೨೧೯) । “ಶ್ರೋತ್ರಿಯ-  
ಫಲೋದಯಃ” ಪಾಂ ಸುಂ ೫-೨-೮೪ । “ಆಸೀನ್ಮಹಿ-  
ಕ್ಷಿತಾಮಾಃ ಪ್ರಣವಃ ಉದಸಾಮಿವ” ರಘುಂ ೧-೧೧ । 2. ಇಚ್ಛೆ,  
ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ. “ಉದಸೋ ನಿಮಿತೇ” ಪಾಂ ಸುಂ  
೪-೪-೯೩ । ಉದಸಾ ನಿಮಿತಮ್ ಉದಸ್ಯಮ್ । ಇಚ್ಛಯಾ  
ಕೃತಮಿತ್ಯರ್ಥಃ । 3. ಸ್ವೈರಾಚಾರ, ಸ್ವಚ್ಛಂದವರ್ತನೆ.  
4. ಕಪಟ, ಮೋಸ. 5. ವೃತ್ತನಿಯಮಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ  
ಪದ್ಯ. “ಉದಃ ಪದ್ಯೇ ಚ ವೇದೇ ಚ ಸ್ವೇರಾಚಾರಾಮಿಲಾಃ”  
ಮೇದಿಂ । ಛಂದಸ್ಸು ವೈದಿಕ ಮತ್ತು ಲೌಕಿಕಗಳೆಂದು ಎರಡು  
ವಿಧ. ವೈದಿಕ ಛಂದಸ್ಸುಗಳನ್ನು ಕಾಶ್ಯಾಪನರು ಸರ್ವಾನುಕ್ರ  
ಮಿಕೆಯಲ್ಲಿ ವಿವರಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಲೌಕಿಕ ಛಂದಸ್ಸುಗಳು ವೃತ್ತ  
ರತ್ನಾಕರ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಂಥಗಳಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿವೆ. ಈ  
ಲೌಕಿಕ ಛಂದಸ್ಸು ಮಾತ್ರಾವೃತ್ತ ವರ್ಣವೃತ್ತಗಳೆಂದು  
ಎರಡು ವಿಧ. “ಪಿಂಗಲಾದಿಭಿರಾಚಾರ್ಯೈರುಕ್ತಂ ಲೌಕಿಕಂ  
ದ್ವಿಧಾ । ಮಾತ್ರಾವರ್ಣವಿಭೇದೇನ ಉದಸ್ತದಿಹ ಕಥ್ಯತೇ” ವೃಂ ೨೦ ।  
ಛಂದೋಬದ್ಧವಾದ ಪದ್ಯಗಳು ನಾಲ್ಕು ಪಾದಗಳಿಂದ  
ಕೂಡಿರುತ್ತವೆ. ಈ ಪದ್ಯವು ವೃತ್ತ ಮತ್ತು ಜಾತಿಗಳೆಂದು

ಎರಡು ವಿಧ. ಅಕ್ಷರಾತ್ಮಕವಾದ ಗಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರು  
ವುದು ವೃತ್ತ. ಮಾತ್ರಾಪ್ರಧಾನವಾದ ಗಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರು  
ವುದು ಜಾತಿ. “ಪದ್ಯಂ ಚತುಷ್ಪದೀ ತದ್ವಚ್ಚ ವೃತ್ತಂ ಜಾತಿರिति  
ದ್ವಿಧಾ । ವೃತ್ತಮಕ್ಷರಸಂಖ್ಯಾತಂ ಜಾತಿಮಾತ್ರಾಕೃತಾ ಮೇವತ್” ।  
**ಗಣಗಳು** ; “ಮ್ಯರಸ್ತಜನ್ಮಗೌಲಂತೀರೆಭಿರ್ದಶಾಭಿರಕ್ಷರಃ” ।  
ಮ ಗಣ ಯ ಗಣ ರ ಗಣ ಸ ಗಣ ತ ಗಣ ಜ ಗಣ ಭ ಗಣ  
ನ ಗಣ ಈ ಎಂಟು ಗಣಗಳು ಗುರು ಮತ್ತು ಲಘು  
ಈ ಹತ್ತು ಅಕ್ಷರಗಳಿಂದ ಸಕಲ ವಾಚ್ಯಯವೂ ತುಂಬಿರು  
ವುದು. “ಸಮಸ್ತಂ ವಾಡ್ಮಯಂ ವ್ಯಾಪ್ತಂ ತ್ರೈಲೋಕ್ಯಮಿವ ವಿಷ್ಣುನಾ”  
ವೃಂ ೨೦ । **ಛಂದಸ್ಸು** ; ಒಂದು ಅಕ್ಷರದ ಪಾದದಿಂದ  
ಹಿಡಿದು ಇಪ್ಪತ್ತಾರು ಅಕ್ಷರಗಳ ಪಾದದವರೆಗೂ ಉಕ್ತಾ  
ಅತ್ಯುಕ್ತಾ ಮಧ್ಯಾ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ಸುಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ಮೊದಲಾದ  
ಇಪ್ಪತ್ತಾರು ಛಂದಸ್ಸುಗಳಿರುವುವು. ಅದಕ್ಕೆ ಮೇಲೆ  
ಚಂಡವೃತ್ತಿಪ್ರಯಾತ ವೆಂಬ ದಂಡದಲ್ಲಿ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ಅಕ್ಷರ  
ಗಳಿರುವುವು. ಅದಕ್ಕೆ ಮುಂದೆ ಪ್ರತಿ ಪಾದಕ್ಕೂ ಒಂದೊಂದು  
ರ ಗಣವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತ ಬಂದರೆ ಅಂಃ ಅಂಃವಃ ವ್ಯಾಲಃ  
ಜಿಮೂತಃ ಲೀಲಾಕರಃ ಉದಾಮಃ ಶಙ್ಖಃ ಮೊದಲಾದ ಹೆಸರಿನ  
ದಂಡಗಳಿಗಾಗುವುವು. ಆರಮ್ಯಕಾಕ್ಷರಾತ್ಪಾದಾದೇಕೈಕಾಕ್ಷರ-  
ವರ್ಣಿತಃ । ಪೃಷ್ಠಃ ಛಂದೋ ಭವೇತ್ಪಾದೇವತ್ವಾನ್ವಿಶತಿ ಗತಮ್ । ತದ್ಭವಂ  
ಚಂಡವೃತ್ತಾದಿದಂಡಕಾಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾಃ । ಪ್ರತಿಚರಣವಿವೃಡ್ಧ-  
ರೇಫಾಃ ಸ್ಯುರಣಿರ್ಣವ್ಯಾಲಜಿಮೂತಲೀಲಾಕರೋದಾಮಶಂಖಾದಯಃ” । ಈ  
ಲಕ್ಷಣಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಅತಿಕ್ರಮವಾದುವು ಗಾಢಾ ಎನಿಸುವುವು.  
ಈ ಗಾಢಗಳಲ್ಲಿ 3, 4, 6 ಪಾದಗಳಿರುವುವು. “ಶೇಷ  
ಗಾಢಾಃ ತ್ರಿಭಿಃ ಷಡ್ಭಿಃ ಸ್ವರಣೈಶ್ಚೋಪಲಕ್ಷಿತಾಃ” ವೃಂ ೨೦ ।  
ಈ ಛಂದಃಶಾಸ್ತ್ರವು ವೇದದ ಅರೂ ಅಂಗಗಳಲ್ಲೊಂದು.  
“ಉದಃ ಪಾದೋ ತು ವೇದಸ್ಯ ಹಸ್ತೋ ಕಲ್ಪೋಽಪಿ ಪಠ್ಯತೇ ।  
ಜ್ಯೋತಿಷಾಮಯನಂ ಚಕ್ಷುಃ ನಿರೂಪಿತಂ ಶ್ರೋತ್ರಮುಚ್ಯತೇ ।  
ಶಿಕ್ಷಾ  
ಪ್ರಾಣಂ ತು ವೇದಸ್ಯ ಮುಖಂ ವ್ಯಾಕರಣಂ ಸ್ಮೃತಮ್” ಶಿಕ್ಷಾ ।  
6. ಸಾಮವೇದ.

**ಉದಸ್ತುಭ ಛಂದಸ್ತುಭ** (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯನ ಸಾರಥಿಯಾದ  
ಅರಣ. ಉದಸಾ ಸ್ತುಮ್ನಾತಿ ಸೂರ್ಯಮ್—ಸ್ತುಭು (ರೋಧನೆ)  
“ವಿವ್” (೩-೨-೭೬) ।

**ಉದಸ್ಯ ಛಂದಃ** (ಪುಂ) 1. ವೇದದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಗ್ರಂಥ.  
(ವಿಂ) 2. ವೇದದಲ್ಲಿರುವ. ಉದಸಾ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನೋ ಗ್ರಂಥಃ  
ತತ್ರ ಭವೋ ವಾ । “ಯತ್” (೪-೩-೭೧) । 3. ಇಚ್ಛೆಯಿಂದ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದಸಾ ನಿಮಿತಮ್ “ಯತ್” (೪-೪-೯೩) ।  
4. ಮಂತ್ರಗಳ ಸಂಬಂಧವಾದ. 5. ಛಂದೋಬದ್ಧವಾದ,  
ಪದ್ಯಾತ್ಮಕವಾದ.



ಅನಿವಿತ ಛಂದಿತ (ವಿಂ) ತೃಪ್ತಿಹೊಂದಿದ, ಪರಿಶೋಷ ಹೊಂದಿದ.

ಅನಿವಿತ ಛಂದೋಗ (ಪುಂ) ಸಾಮವೇದವನ್ನು ಗಾನಮಾಡುವವನು. ಅನಿವಿತ: ಸಾಮವೇದಂ ಗಾಯತಿ-ಗಂ (ಶಬ್ದ) "ಕ:" (೩-೨-೩). "ಯತ್ನೇನ ಭೋಜಯೇತ್ ಶ್ರಾದ್ಧೇ ಬಹುಚಂ ವೇದಪಾರಗಮ್ | ಶಾಖಾಂತಗಮಯಾಧ್ಯಯಂ ಅನಿವಿತಂ ತು ಸಮಾಪ್ತಿಕಮ್" ಮನುಂ ೩-೧೪೫ |

ಅನಿವಿತವಿವಿತಿ ಛಂದೋವಿಚಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಾಯತ್ರಿ ಮೊದಲಾದ ಛಂದಸ್ಸುಗಳ ಸಮುದಾಯ. ಅನಿವಿತಾಂ ಗಾಯ-ತ್ರಿಾದಿನಾಂ ವಿವಿತಿ: | 2. ಛಂದಃಶಾಸ್ತ್ರ. ಅನಿವಿತಾಂ ಉಕ್ತಾದಿನಾಂ ವಿವಿತಿರ್ಯತ್ರ | "ಅನಿವಿತವಿವಿತಿ ಸಕಲಸ್ತತ್ರಪಂಚೋ ನಿರ್ದ-ಶಿತ:" ಕಾವ್ಯಾಂ |

ಅನಿವಿತ ಛಂದಸ್ (ನಂ) 1. ಏಕಾಂತ, ರಹಸ್ಯ. ಅನಿವಿತೇ ಸಮ-ಅದ (ಅಪವಾರಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | (ವಿಂ) 2. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅನಿವಿತವಿವಿತಿ ಸ್ಪಷ್ಟವೇಷು ಯತ್ರ ಸ್ವಚ್ಛಾನಿ ನಾರೀಕುಚಮಂಡಲೇಷು" ಮಾಘಂ ೩-೫೬ | (ಅವ್ಯಂ) 4. ರಹಸ್ಯವಾಗಿ. "ಆದದೀತ ನ ಶೂದ್ರೋಪಿ ಶುಲ್ಕಂ ದುಹಿತರಂ ದದತ್ | ಶುಲ್ಕಂ ಹಿ ಗೃಹ್ಣನ್ ಕುರುತೇ ಅನಿವಿತ ದುಹಿತವಿಕ್ರಯಮ್" ಮನುಂ ೧-೧೮ |

ಅನಿವಿತ-ಅದನೇ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಅನಿವಿತ | ಅನಿವಿತಾ | ಅನಿವಿತ, ತಿನ್ನು.

ಅನಿವಿತ ಛಂದಸ್ (ಪುಂ) ತಾಯಿ ತಂದೆ ಮೊದಲಾದ ಬಂಧುಗಳಿಲ್ಲದವನು. ಅನಿವಿತ (ಅದನೇ) "ಅನಿವಿತ" (ಉಂ ೧-೧೨೬) |

ಅನಿವಿತ-ವಮನೇ (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಅನಿವಿತ, -ತೇ | ಅನಿವಿತ, -ತ | ವಾಂತಿಮಾಡು.

ಅನಿವಿತ ಛಂದಸ್ (ಪುಂ) ವಮನ, ವಾಂತಿ. ಅನಿವಿತ (ವಮನೇ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಛ" (೩-೩-೧೮) |

ಅನಿವಿತ ಛಂದಸ್ (ನಂ) 1. ವಮನ, ವಾಂತಿ. ಅನಿವಿತ (ವಮನೇ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | (ವಿಂ) 2. ವಾಂತಿ ಮಾಡುವವನು. ಅನಿವಿತ ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) |

ಅನಿವಿತ ಛಂದಸ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಮನ, ವಾಂತಿ. ಅನಿವಿತ (ವಮನೇ) + ಣಿಚ್ "ಛ" (ಉಂ ೪-೧೧೭) |

ಅನಿವಿತ ಛಂದಸ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಮನ, ವಾಂತಿ. ಅನಿವಿತ (ವಮನೇ) + ಣಿಚ್ "ಛ" (೩-೧-೧೩೩) | 2. ವಿಷ್ಣು ಕೃಂತಿ ಗಿಡ.

ಅನಿವಿತ ಛಂದಸ್ (ವಿಂ) ವಾಂತಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನಿವಿತ (ವಮನೇ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |

ಅನಿವಿತ ಛಂದಸ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಮನ, ವಾಂತಿ. ಅನಿವಿತ (ವಮನೇ) + ಣಿಚ್ "ಛ" (ಉಂ ೨-೧೦೮) | 2. ಕಕ್ಕಲು ರೋಗ. ಅನಿವಿತ ಕರ್ತಂ "ಛ" | 3. ಗೃಹ, ಮನೆ. ಅನಿವಿತ ಕರ್ಮಂ "ಛ" | 4. ವಾಕರಿಕೆ.

ಅನಿವಿತ ಛಂದಸ್ (ನಂ) 1. ವಾಜ, ನೆಪ, ನಿಮಿತ್ತ. ಅನಿವಿತ (ಅದನೇ) "ಕ್ತ:" (ಉಂ ೧-೧೦೬) | "ಯಸ್ಯ ಅನಿವಿತಸ್ಯಾಗಜಾಂ ಅನಿವಿತೇನ ಯಾತ್ರಾಸು ಯಾತ್ರಿವ ಪುರೋ ಮಹೇಂದ್ರ:" ರಘುಂ ೬-೫೪ | 2. ಮರೆಮಾಡುವುದು, ನಿಜಾಂಶವನ್ನು ಮುಚ್ಚಿಡುವುದು. 3. ಶಾಸ್ತ್ರ, ಮೂರ್ಖತನ. 4. ಕಪಟ, ಮೋಸ, ವಂಚನೆ. "ಶಿರಸಿ ಸಮ ಜಿಹ್ವಾತಿ ಸುರಾರಿಬಂಧನೇ ಅನಿವಿತವಮನಂ ವಿನಯ-ವಮನಂ ತದಾ" ಮಾಘಂ ೧೩-೧೨ | 5. (ನಾಟ್ಯಮಂಡಲ) ವಾದಿಯು ಹೇಳಿದ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಬೇರೆ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸಿ ಪ್ರತಿವಾದಿಯು ಹೇಳುವ ದೂಷಣ. "ವಿಧಾತೌರ್ಯ-ವಿಕಲ್ಪೋಪಪತ್ಯಾ ಅನಿವಿತಮ್" | ಅನಿವಿತವು (1) ವಾಕ್ಅನಿವಿತಮ್, (2) ಸಾಮಾನ್ಯಅನಿವಿತಮ್ ಮತ್ತು (3) ಉಪಚಾರಅನಿವಿತಮ್ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. 6. ದಶರೂಪಕಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ವಿಂಧಿಯ ಒಂದು ಅಂಗ. "ಅನಿವಿತಾಸ್ತ್ರಯೋದಶಾಕ್ಷಾಣಿ ನಿರ್ದಿಶಂತಿ ಮನೀಷಿಣಃ | ಉದಾಹರಣಾಕಾಲಗತೇ ಪ್ರಪಂಚಸ್ತ್ರಿಗತಂ ಅನಿವಿತಮ್" ಸಾಂ ೬೦ ೬-೨೫೫ | ಪ್ರಿಯವಾಚಿವಂತೇ ತೋರುವ ಅಪ್ರಿಯವಾಕ್ಯಗಳಿಂದ ಮೋಸಗೊಳಿಸುವುದು "ಅನಿವಿತ" ವಾಗುವುದು. "ಪ್ರಿಯಾಭೇರಪ್ರಿಯವಾಕ್ಯೈಃ ವಿನಿಮಿಷ್ಯ ಅನಿವಿತನಾ-ಅನಿವಿತಮ್" ಸಾಂ ೬೦ ೬-೨೫೮ | "ಕೃಷ್ಣಾಕೇಶೋತ್ತರೀಯ-ವ್ಯಪನಯನಮಹತ್ಪಾಂಡವಾ ಯಸ್ಯ ದಾಸಾಃ ಕ್ವಾಸ್ತೇ ದುರ್ಯೋಧನೋಽಸೌ ಕಥಯತ ನ ಕುಪಾ ದ್ರಷ್ಟುಮಭ್ಯಾಗತೌ ಸ್ವ:" ವೇಣೀಂ ೫-೨೬ | 7. ಯುದ್ಧಮರ್ಯಾದೆಯನ್ನೂ ಮೀರಿ ನಡೆಯುವುದು. "ಪ್ರಸಂಭಂ ತು ಬಲಾತ್ಕಾರೋ ಹತೋಽಥ ಸ್ವಲಿತಂ ಅನಿವಿತಮ್" ಅಮಂ |

ಅನಿವಿತ ಛಂದಸ್ (ನಂ) 1. ವಂಚಿಸುವುದು, ಮೋಸಗೊಳಿಸುವುದು. ಅನಿವಿತ ತತ್ಕರೋತಿ ಣಿಚಿ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಾ -ನಾ. ಭಾವೇ "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭) | 2. ಮೋಸ, ಕಪಟ, ವಂಚನೆ. "ಅನಿವಿತಪತಿ ಅನಿವಿತಪರೋಽ-ಪರಾಮವಾಪ್ಯ ಶಿಲ್ಪ ಇವೇಪ ಭೂಮಿಕಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೬೯ |

ಅನಿವಿತ ಛಂದಸ್ (ವಿಂ) ವಂಚಿಸುತ್ತಿರುವ, ಮೋಸಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ಅನಿವಿತ + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಅನಿವಿತನ್ ಪ್ರಜಾಸ್ತವಮನುತೇನ ಕಪಟಪದ್ಮೇಂದ್ರಜಾಲಿಕ:" ಮಾಘಂ ೧೫-೨೫ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛಿಪ್" (೪-೧-೬) | -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

ಅನಿವಿತ ಛಂದಸ್ (ನಂ) ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. "ಶಮಿಷ್ಠಾಃ ಕೃತಿ ಚತುಷ್ಪದೀ ಅನಿವಿತಂ ದುಃಪ್ರಯೋಜ್ಯಮುದಾಹರಂತಿ" ಮಾಲಂ ೧ |



**ಛಲಿತ ಛಲಿತ** (ನಂ) 1. ಮಂಚನೆ, ಮೋಸ. ಛಲ ನಾಮಧಾಂ  
ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114)। (ವಿಂ) 2. ಮಂಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಮೋಸಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

**ಛಲಿನ್ ಛಲಿನ್** (ವಿಂ) ಮಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. ಛಲ "ಛಿನಿ:"  
(4-2-114)।

**ಛಲ್ಲಿ ಛಲ್ಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲತೆ, ಬಳ್ಳಿ. 2. ತೋಗಟೆ.  
3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹೂವು. 4. ಸಂತತಿ, ಸಂತಾನ.

"ಛಲ್ಲಿ ವೀರಧಿ ಸಂತಾನೇ ವಲ್ಕಲೇ ಕುಸುಮಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ।

**ಛವಿ ಛವಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಂತಿ, ಹೊಳಪು, ಶೋಭೆ. ಛವಿತಿ—  
ಛಿ (ಛೇದನೆ) "ಕ್ವಿನ್" (3ಂ 4-46)। ನಿಪಾಂ।

"ಸಿತೋ ಯದಾತ್ರೇಷ ತದಾನ್ಯದೇಶೋ ಚಕಾಸ್ತಿ ರಜ್ಯಂಚವಿರಜ್ಜಿ-  
ಹಾನ:" ನೈಷಂ 22-43। 2. ಸೂರ್ಯನ ಪ್ರಭೆ, ಕಿರಣ.

"ವಿರಲಾತಪಂಚವಿರನುಣವಪು: ಪರಿತೋ ವಿಪಾಂಡು ದಧದಭ್ರಶಿರ:"  
ಮಾಘಂ 9-31। 3. ಚರ್ಮ. 4. ಮೈ ಚರ್ಮದ ಬಣ್ಣ.

"ತನುಂಛವಿ: ಶೋಣಿತಮಾಂಸಸಾರೋ ಹಂತಾ ದ್ವಿಷಾಂ ಸಾಹಸಸಿದ್ಧ-  
ಕಾರ್ಯ:" ಬೃಹತ್ಸಂ 69-28।

**ಛಾ ಛಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊದಿಸುವುದು, ಮುಚ್ಚುವುದು. "ಛಾ  
ಛಾದನೇ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಖ್ಯಾತಾ ನಿರ್ಮಲೇಷ್ಯವದಿಷ್ಯತೇ" ಮೇದಿಂ।

**ಛಾಗ ಛಾಗ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಕೆ, ಹೋತ. ಛಾಯತೇ—ಛಿ  
(ಛೇದನೆ) "ಗನ್" (3ಂ 1-124)। "ಷಮಾಸಾಂಛಾಗ-

ಮಾಂಸೇನ ಪಾರ್ಶ್ವೇನ ಚ ಸಪ್ತ ತ್ರೈ" ಮನುಂ 3-269। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
ಜಾತಿಂ "ಜಿಷ್" (4-1-63)। ಛಾಗೀ ಛಾಗೀ. ಅಡು.

(ನಂ) 2. ಅಡಿನ ಹಾಲು. 3. ಪುರೋಡಾಶ. (ವಿಂ) 4.  
ಅಡಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ.

**ಛಾಗಣ ಛಾಗಣ** (ಪುಂ) ಕರೀಷಾಗ್ನಿ, ಬೆರಣಿಯ ಬೆಂಕಿ. ಛಯಾ  
ಛಾದನೇನ ಗಣ್ಯತೇ—ಗಣ (ಸಂಖ್ಯಾನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಘನ್"

(3-3-19)। "ಛಾಗಣಸ್ತು ಕರೀಷಾಗ್ನಿ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಛಾಗಭೋಜಿನ್ ಛಾಗಭೋಜಿನ್** (ಪುಂ) ವೃಕ, ತೋಳ.  
ಛಾಗಂ ಭುಂಕ್ತೇ—ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಭ್ಯವಹಾರಯೋ:) "ಞಿನಿ:"

(3-2-96)।

**ಛಾಗರಥ ಛಾಗರಥ -ವಾಹನ -ವಾಹನ** (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ.  
ಛಾಗೋ ರಥೋಽಸ್ಯ ಛಾಗೋ ವಾಹನಮಸ್ಯ ವಾ।

**ಛಾಗಲ ಛಾಗಲ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಕೆ, ಹೋತ. ಛಾಗಲ ಸ್ವಾರ್ಥೆ  
"ಅಞ್" (4-4-38)। 2. ಅತ್ರಿಮಹರ್ಷಿಯ ಕುಟುಂಬಕ್ಕೆ

ಸೇರಿದವನು, ಅತ್ರಿಮಹರ್ಷಿಯ ಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ  
ವನು, ಅತ್ರೇಯ ಗೋತ್ರದವನು. ಛಾಗಲಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಮ್:

"ಅಞ್" (4-1-92)।

**ಛಾಗಲಕ ಛಾಗಲಕ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ವಿನಾನು.

**ಛಾಗಲಿ ಛಾಗಲಿ** (ಪುಂ) ಅತ್ರಿಮಹರ್ಷಿಯ ಮಗ.

**ಛಾತ ಛಾತ** (ವಿಂ) 1. ದುರ್ಬಲ, ಮಾಂಸಪುಷ್ಟಿಯಿಲ್ಲದ,  
ಕೃಶವಾದ. ಛವಿತಿ—ಛಿ (ಛೇದನೆ) "ಕ್ತ:" (3-4-92)।

2. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಛಿ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102)।  
(ನಂ) 3. ಕತ್ತರಿಸುವುದು.

**ಛಾತವ್ಯ ಛಾತವ್ಯ** (ವಿಂ) ಕತ್ತರಿಸಬೇಕಾದ, ತುಂಡುಮಾಡ  
ಬೇಕಾದ.

**ಛಾತ್ರ ಛಾತ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಶಿಷ್ಯ, ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ. ಛತ್ರಂ ಗುರೋ:  
ವೈಗುण्याಂಛಾದನಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ "ಞ:" (4-4-62)। "ಭೂಮುಜಾ

ದಾನಶೌಣ್ಡೇನ ಪತ್ರಿಕೇ ಸ್ಥಣ್ಡಿಲೇ ಕೃತ:। ಛಾತ್ರಾಣಾಮಾರ್ಯದೇಶ್ಯಾನಾಂ  
ತೇನ ವಿಧ್ಯಾರ್ಥಿನಾಂ ಮಠ:"। 2. ಜೇನುತುಪ್ಪ. 3. ಕಪಟ

ಮೇಷದಿಂದ ವ್ಯವಹರಿಸುವ ಒಬ್ಬ ಗೂಢಚಾರ. "ಛಾತ್ರ-  
ಕಾಪಟಿಕಶ್ವರೇ" ವೈಜಂ।

**ಛಾತ್ರಗಂಡ ಛಾತ್ರಗಂಡ** (ಪುಂ) ಶ್ಲೋಕಗಳ ಆದಿಭಾಗಗಳನ್ನು  
ಮಾತ್ರ ತಿಳಿದಿರುವ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ, ಮಂದಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ

ಶಿಷ್ಯ. ಛಾತ್ರೋ ಗಂಡ ಇವ। "ಛಾತ್ರಗಂಡ: ಪದಾಘವಿತ್"  
ಹಾರಾಂ।

**ಛಾತ್ರತಾ ಛಾತ್ರತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಿಷ್ಯನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಛಾತ್ರಸ್ಯ  
ಭಾವ: "ತಲ್" (4-1-119)। "ತ್ವ:"। ಛಾತ್ರತ್ವಮ್

ಛಾತ್ರತ್ವಮ್.

**ಛಾತ್ರವ್ಯಂಸಕ ಛಾತ್ರವ್ಯಂಸಕ** (ಪುಂ) ಧೂರ್ಜನಾಗಿರುವ  
ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ, ಅಸಭ್ಯ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ. ಛಾತ್ರೋ ವ್ಯಂಸಕ: ಧೃತ:।

ಮಯೂರಂ।

**ಛಾದ ಛಾದ** (ಪುಂ) ಮನೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಮೇಲಿನ  
ಹೊದಿಕೆ, ಮೇಲುಚಾವಣಿ. ಛಾದಯತಿ—ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ)

+ ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (3-1-134)। "ಛ" ಪ್ರತ್ಯಯವು  
ಪರವಾದಾಗ "ಛಾದೇಷ್ಛದ್ಯುಪಸರ್ಗಸ್ಯ" ಪಾಂ ಸೂಂ 6-4-96

ಸೂತ್ರದಿಂದ ಹ್ರಸ್ವ ಒಂದು ದಂತಛದ ಇತ್ಯಾದಿ ರೂಪ  
ವಾಗುವುದು.

**ಛಾದಕ ಛಾದಕ** (ವಿಂ) 1. ಮುಚ್ಚುವ, ಹೊದಿಸುವ.  
2. ಮರೆಮಾಡುವ. ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ) "ಞ್ವಲ್"

(3-1-133)। "ಛಾದಕೋ ಭಾಸ್ಕರಸ್ಯೇಂದ್ರರಥ:ಸ್ಥೋ ಧನವ-  
ಙ್ಗವೇತ್" ಸೂಂ ಸಿಂ 4-9।

**ಛಾದನ ಛಾದನ** (ಪುಂ) 1. ನೀಲಿ ಗೋರಂಟಿ ಮರ. ಛದ  
(ಅಪವಾರಣೆ) "ಲ್ಯು:" (3-1-134)। (ನಂ) 2.

ಹೊದಿಕೆ, ಮುಚ್ಚಳ. ಛಾದನೇನೇನ—ಛದ ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್"  
(3-3-119)। 3. ಹೊದಿಸುವುದು, ಮುಚ್ಚುವುದು.

ಛದ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)। 4. ಪತ್ರ, ಎಲೆ.



5. ಮರೆಮಾಡುವುದು, ಅವರಿಸುವುದು. "ತಾಡಯೇದಿ  
ಚ ಯೋಗತಾಸ್ಕಾಮಾವುಗೋತಿ ವಪುಷಾ ಯದಾಪಿ ವಾ | ತಾಡನೆ  
ಭಯಮುಶಂತಿ ದಾಣಂ ಅದನೆ ನೃಪವೋಽಜ್ಞನಾಕೃತಃ" ಬೃಹತ್ಸಂ  
೨೪-೩೪ | 6. ವಿಮರ್ಶಸಂಧಿಯ ಒಂದು ಅಂಗ. ಕಾರ್ಯ  
ಸಾಧನೆಗಾಗಿ ಅಪಮಾನವನ್ನು ಸಹಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು "ಅದನ"  
ವೆನಿಸುವುದು. "ತದಾಹುಶ್ಚಾದನಂ ಪುನಃ | ಕಾರ್ಯಾರ್ಥಮಪಮಾನಾದೇಃ  
ಸಹನಂ ಖಲು ಯದ್ಭವೇತ್" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೦೭ | ಅರ್ಜುನಃ-ಆಯಂ,  
"ಅಪ್ರಿಯಾಣಿ ಕರೋತ್ವೇಷ ವಾಚಾ ಶಕ್ತೋ ನ ಕರ್ಮಣಾ | ಹತ-  
ಭ್ರಾತೃಶತೋ ದುಃಖಿ ಪ್ರಲಾಪೇರಸ್ಯ ಕಾ ವ್ಯಥಾ" ವೇಣೀಂ ೫-೩೧ |  
(ವಿಂ) 7. ಮುಚ್ಚುವ. 8. ಮರೆಮಾಡುವ, ಅವರಿಸುವ.  
"ನಿವೇಶಯಾಮಾಸಿಥ ಹೇಲಯೋದೃತಂ ಫಣಾಭೃತಾಂ ಅದನಮೇಕಮೋಕಸಃ"  
ಮಾಘಂ ೧-೩೪ |

ಅದಯತ್ ಛಾದಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಮುಚ್ಚುತ್ತಿರುವ, ಅಚ್ಚಾದಿಸುತ್ತಿರುವ.  
ಅದ (ಅಪವಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಶರಧಾರಾಸಹಸ್ರೇಣ ಅದಯನ್ ನರಕೋ  
ದಿಶಃ" ಯಾದಂ ೧೬-೮೧ | 2. ಅವರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಮರೆ  
ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಯಂತೀ.  
-ಯಂತೀ.

ಅದಿತ ಛಾದಿತ (ವಿಂ) 1. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಚ್ಚಾದಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಅದ (ಅಪವಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |  
"ನಿಚಿತಂ ತು ಹಂಸಪಕ್ಷೈಃ ಕೃಕವಾಕುಮಯರಸಾರಸಾನಾಂ ವಾ |  
ದೌಕಲ್ಯೇನ ನವೇನ ತು ಸಮಂತತಶ್ಚಾದಿತಂ ಶುಕ್ಲಮ್" ಬೃಹತ್ಸಂ  
೭೩-೧ | 2. ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಅವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಅದಿಷೇಯ ಛಾದಿಷೇಯ (ನಂ) ಮನೆಗೆ ಹೊದಿಸಲು  
ಯೋಗ್ಯವಾದ ಹುಲ್ಲು. ಅದಿಷೇ ಹಿತಮ್ "ಠ್" (೫-೧-೧೩) |

ಅಧಿಕ ಛಾದಿಕ (ವಿಂ) ಕಪಟದಿಂದ ವ್ಯವಹರಿಸುವವನು,  
ಮೋಸದಿಂದ ನಡೆಯುವವನು. ಅಧನಾ ಚರತಿ "ಠಕ್"  
(೪-೪-೮) | "ಧರ್ಮಧ್ವಜಿ ಸದಾ ಲುಘಶ್ಚಾಧಿಕೋ ಲೋಕ-  
ದಃಖಕಃ" ಮನುಂ ೪-೧೯೫ |

ಅಘ ಛಾದ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಡುವ. 2. ಮರೆಮಾಡ  
ಲ್ಪಡುವ, ಅವರಿಸಲ್ಪಡುವ. ಅದ (ಅಪವಾರಣೆ) + ಣಿಚ್  
"ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) | "ತಾತ್ಕಾಲಿಕೇಂದ್ರವಿಕ್ಷೇಪಂ ಅಘ-  
ಚ್ಚಾದಕಮಾನಯೋಃ" ಸೂಂ ಸಿಂ ೪-೧೦ |

ಅನೀಯ ಛಾನೀಯ (ವಿಂ) ಕತ್ತರಿಸಬೇಕಾದ.

ಅಂದಸ ಛಾಂದಸ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೋತ್ರಿಯ, ವೇದಾಧ್ಯಯನ  
ಸಂಪನ್ನ. ಅಂದೋಽಧೀತೇ ವೇತ್ತಿ ವಾ "ಅನ್" (೪-೨-೫೯) |  
2. ವೇದದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಗ್ರಂಥ. (ವಿಂ) 3. ವೇದದಲ್ಲಿರುವ.  
ಅಂದಸಾಂ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನೋ ಗ್ರಂಥಃ ತತ್ರ ಭವೋ ವಾ "ಅನ್" (೪-೩-೭೧) |

4. ವೇದಸಂಬಂಧವಾದ. ಅಂದಸಃ ಇದಮ್ "ಅನ್"  
(೪-೩-೧೨೦) |

ಅಂದೋಗ್ಯ ಛಾಂದೋಗ್ಯ (ನಂ) 1. ಛಾಂದೋಗರ ಆಮ್ನಾಯಂ,  
ಛಾಂದೋಗ್ಯೋಪನಿಷತ್ತು, ಸಾಮವೇದದ ಉಪನಿಷತ್ತು.  
2. ಸಾಮವೇದಿಗಳ ಧರ್ಮ. 3. ಸಾಮವೇದಿಗಳ  
ಸಮೂಹ. ಅಂದೋಗಾನಾಮ್ ಆಮ್ನಾಯಃ ಧರ್ಮಃ ಸಮೂಹೋ ವಾ  
"ಞ್ಯಃ" (೪-೩-೧೨೯, ೪-೨-೪೬) |

ಅಯಾ ಛಾಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೆರಳು. ಅಯಿ (ಅದನೆ) "ಯಃ"  
(೩ಂ ೪-೧೦೯) | "ಜಲಾಭಿಲಾಷಿ ಜಲಮಾದದಾನಾಂ ಅಯೇವ  
ತಾಂ ಭೂಪತಿರನ್ವಗಾಂಚತ್" ರಘುಂ ೨-೬ | "ಮಹತಾಂ ಖಲು  
ವಿಪ್ರರ್ಷೇ ಉತ್ತಮಶ್ಲೋಕಪಾದಯೋಃ | ಅಯಾನಿವೃತಚಿತ್ತಾನಾಂ ನ  
ಕುಟುಂಬೇ ಸ್ಪೃಹಾಮತಿಃ" ಭಾಗಂ ೫-೧-೩ | 2. ಕಾಂತಿ. "ಅಯಾ-  
ವಿಧಾಯಿಭಿರನುಜ್ಜಿತಭೂತಿಶೋಭಃ" ಮಾಘಂ ೫-೨೧ | 3. ಪ್ರತಿ  
ಬಿಂಬ. "ಅದೃಶ್ಯತಾದರ್ಶತಲಾಮಲೇಷು ಅಯೇವ ಯಾ ಸ್ವರ್ಜಲ-  
ಧೇರ್ಜಲೇಷು" ಮಾಘಂ ೩-೩೫ | "ಅಯಾಮಯಃ ಪ್ರೇಕ್ಷಿ ಕಯಾಪಿ  
ಹಾರೆ ನಿಜೇ ಸ ಗಚ್ಛನ್ನಥ ನೇಕ್ಷಯಾಣಃ" ನೈಷಂ ೬-೩೦ |  
ತತ್ಪುರುಷ ಸಮಾಸಾಂತ್ಯದ ಅಯಾ ಪದವು ನಪುಂಸಕಲಿಂಗ  
ವಾಗುವುದು. (ಪಾಂ ಸೂಂ ೨-೪-೨೨) | ಇಕ್ಷುಣಾಂ ಅಯಾ ಇಕ್ಷು-  
ಚ್ಚಾಯಮ್ | "ತಚ್ಚಾಯಸೌಂದರ್ಯನಿಪೀತಧೇರ್ಯಃ" | "ಜಾಗತಿ  
ತಚ್ಚಾಯದೃಶಾಂ ಪುರಾ ಯಃ" | "ತಾಸಾಂ ನಲಚ್ಚಾಯಪಿವಾಪಿ ದೃಷ್ಟಿಃ"  
ನೈಷಂ ೬-೩೧, ೩೩, ೩೪ | 4. ಮುಖವರ್ಣ, ಮುಖ  
ಕಾಂತಿ. 5. ಪಜ್ಜಿ, ಸಾಲು. 6. ಹೋಲಿಕೆ, ಸಾದೃಶ್ಯ.  
7. ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ, ಶನಿದೇವನ ತಾಯಿ. ಸೂರ್ಯನ  
ಹಿರಿಯ ಪತ್ನಿಯಾದ ಸಂಜ್ಞೆಯು ಸೂರ್ಯನ ತಾಪವನ್ನು  
ಸಹಿಸಲಾರದೆ ತನ್ನ ಶರೀರದಿಂದ ಒಬ್ಬ ತರುಣಿಯನ್ನು  
ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ಛಾಯೆಯೆಂದು ಹೆಸರಿಟ್ಟು ತನ್ನ ಪತಿಯೊಡನೆ  
ಸಂಸಾರ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವಂತೆ ಹೇಳಿ ಹೊರಟುಹೋದಳು.  
ಸೂರ್ಯನಿಂದ ಛಾಯಾದೇವಿಯು ಸಾವರ್ಣಮನು ಮತ್ತು  
ಶನೈಶ್ವರ ಎಂಬ ಇಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪಡೆದಳು.  
"ದ್ವಿತೀಯಾಂ ತು ಸಂಜ್ಞಾಂ ಸಂಜ್ಞೇಯಮಿತಿ ಚಿಂತಯನ್ | ಆದಿತ್ಯೋ  
ಜನಯಾಮಾಸ ಪುತ್ರಮಾತ್ಮಸಮಂ ತದಾ | ಪೂರ್ವಜಸ್ಯ ಮನೋಸ್ತಾತ  
ಸದೃಶೋಯಮಿತಿ ಪ್ರಭುಃ | ಮನುರೇವಾಭವನ್ನಾಮ್ನಾ ಸಾವರ್ಣ ಇತಿ  
ಚೋಚ್ಯತೇ | ದ್ವಿತೀಯೋ ಯಃ ಸುತಸ್ತಸ್ಯಾಃ ಸ ವಿಜ್ಞೇಯಃ ಶನೈಶ್ವರಃ"  
ಹರಿವಂ | 8. ಉತ್ಕೃಷ್ಟ, ಲಂಚ. 9. ಪಾಲನ.  
10. ವರ್ಣ, ಬಣ್ಣ. "ಪಾಣ್ಡುಚ್ಚಾಯಾ ತದ್ಗೃಹತರಃಶಿಖಿ-  
ರ್ಜಿಂಘರ್ಣಃ" ಮೇಘಂ ೧-೨೯ | 11. ಸೌಂದರ್ಯ, ಶೋಭೆ.  
"ಕ್ಷಾಮಚ್ಚಾಯಂ ಭವವಮಧುನಾ ಮದ್ವಿಯೋಗೇನ ನೂನಮ್" ಮೇಘಂ ೨-೧೭ |  
12. ತಮಸ್ಸು, ಅಂಧಕಾರ, ಕತ್ತಲೆ. "ಅಯಾ ಪಙ್ಕ್ತೀ  
ಪ್ರತಿಮಾಯಾಮರ್ಕಯೋಷಿತನಾತಪೇ | ಉತ್ಕೋಚೇ ಪಾಲನೇ ಕಾಂತೀ



शोभायां च तमस्यपि" हेम० । 13. प्रकृत भाष्ये  
संस्कृतं रूपा. 14. अल्, स्तल्, कौञ्च. "तृषितोऽ-  
स्मि भोस्तृषितोऽस्मि । संभावयतु कश्चित्सलिलच्छाया  
संप्रदानेन माम्" वेणी० ६ । 15. काठ्यायनि, दुर्गा  
देवि.

छायाकर भाष्याकर (पुं०) नैरञ्चन्नु लुण्ठुमाडु  
पवन्नु, भृश्रियन्नु बिडियुववन्नु. छायां करोति—  
डु कृञ् (करणे) "टः" (३-२-२०) ।

छायाग्रह भाष्याग्रह (पुं०) 1. राहु. 2. कैतु.  
3. कन्द. छायां प्रतिबिम्बं गृह्णाति—ग्रह (उपादाने)  
"अप्" (३-३-५८) ।

छायाङ्क भाष्याङ्क (पुं०) चन्द्र. छाया सूर्यस्य  
प्रतिबिम्बः अङ्कोऽस्य । सूर्योत्तराण प्रतीबिम्बदिन्दले  
चन्द्रनिगे प्रकाशवु बरुवुदु.

छायातनय भाष्यातनय, -पुत्र -पुत्र, -सुत  
-सुत, -सूनु-सूनु (पुं०) शनैश्चर, शनैर्देव.  
छायायाः तनयः पुत्रः सुतः सूनुर्वा ।

छायातर भाष्यातर (पुं०) मध्याह्नात् पूर्वपक्षा  
मध्याह्नात् पश्चिमपक्षा (यामागला) बूड  
दली नैरञ्चरुव मर. छायाप्रधानस्तरः । "पूर्वाह्णे च  
पराह्णे च तलं यस्य न मुञ्चति । अत्यन्तशीतला छाया  
स च्छायातरुच्यते" । "स्निग्धच्छायातरुषु वसति  
रामगिर्याश्रमेषु" मेघ० १-१ ।

छायापथ भाष्यापथ (पुं०) ज्योतिश्चक्रमध्यदली  
दक्षिणोत्तरवाद बन्दु अकाशमार्ग. छायायुक्तः  
पन्थाः "टच्" (५-४-७४) । "छायापथेनेव  
शरत्प्रसन्नम्" रघु० १३-२ ।

छायापुरुष भाष्यापुरुष (पुं०) गुरोपदेशकम  
दली अङ्गसबलदिन्द नोदबहदवाद पुरुषाकृति  
युक्त्वं वस्त्व. छायायां दृश्यः पुरुषः ।

छायामय भाष्यामय (वि०) प्रतीबिम्ब रूपावाद.  
"छायामयः प्रैक्षि कयापि हारे" नैष० ६-३० ।

छायायन्त्र भाष्यायन्त्र (न०) सूर्योच्चाय  
यिन्द कालवन्नु अङ्गियुव यन्त्र, कालवन्नु  
अङ्गियुलु साधकवाद यन्त्र. छायाया कालज्ञान-  
साधकं यन्त्रम् । "शङ्कुयष्टिधनुश्चक्रैश्छायायन्त्रैरने-  
कधा । गुरुपदेशाद्विज्ञेयं कालज्ञानमतन्द्रितैः" सू० सि०  
१३-२० ।

छायाल भाष्याल (वि०) मूर्च्छवन्नु कौडुव,  
मुक्त्वादयक. छायां मोक्षं लाति—ला (दाने)  
"कः" (३-२-३) । "अत्र स्थितं शान्तिजुषां मुनीनां  
छायालकृष्णाजिनपल्लवेन" याद० १८-५७ । अत्र  
छायेति मुक्तिरध्यवसीयते संसारश्रमहरत्वात् इति  
श्रीमदप्यदीक्षितव्याख्यानम् ।

छि णि (पुं०) निन्द, बृगङ्ग. छो (छेदने) "किः"  
बाहु० ।

छित णित (वि०) कर्तुमिच्छ. छो (छेदने) "क्तः"  
(३-२-१०२) ।

छितवत् णितवत् (वि०) कर्तुमिच्छवन्नु.

छित्ति णित्ति (स्त्री०) कर्तुमिच्छवदु. छिदिर् (द्विधीकरणे)  
"क्तिन्" (३-३-९४) ।

छित्तर णित्तर (वि०) 1. वृषि, हग, शत्रु. 2. धूर्त,  
कपटि, वञ्चक, मूर्खगार. 3. कर्तुमिच्छव वस्त्व.  
छिदिर् (द्विधीकरणे) "वरच्" (उ० ३-१) । "छित्तरं  
छेदनद्रव्ये छित्वरो धूर्तवैरिणोः" विश्व० ।

छिद् णिद् (वि०) (समासात्) कर्तुमिच्छव.

छिदा णिदा (स्त्री०) छेदन, कर्तुमिच्छवदु. छिदिर्  
(द्विधीकरणे) "अङ्" (३-३-१०४) ।

छिदि णिदि (स्त्री०) 1. पश्चिम, कौडलि. 2. वज्रा,  
युद्ध. छिदिर् (द्विधीकरणे) "इन्" (उ० ४-११७) ।

छिदिर्-द्विधीकरणे (रुधा० उभ० सक० अनि०) । छिनत्ति  
छिन्तः छिन्दन्ति । छिनत्ति छिन्त्यः छिन्त्य । छिनत्ति  
छिन्दः छिन्त्यः । छिन्ते छिन्दाते छिन्दते । छिन्ते छिन्दाथे  
छिन्वे । छिन्दे छिन्दहे छिन्दाहे । चिच्छेद । चिच्छिदे ।  
छेत्ता । छेत्स्यति, -ते । छिनत्तु, छिन्ताम् । अच्छिनत्,  
अच्छिन्त । १३००.

कर्मणिः—छिद्यते । चिच्छिदे । छिद्यताम् । अच्छिद्यत ।  
१३००.

कृतुः—छेत्तव्यम् । छेदनीयम् । छेद्यम् । छिन्नः ।  
छिन्नवान् । छिन्दन्, छिन्दन्ती । छिन्दानः । छेत्तुम् ।  
छिन्नम् । छेदनम् । छित्त्वा । उच्छिद्य ।

छिदिर् णिदिर् (पुं०) 1. अस्, कर्त्ति. 2. अग्नि, बंकि.  
3. रज्जु, हग. 4. पश्चिम, कौडलि. छिदिर्  
(द्विधीकरणे) "किरच्" (उ० १-५१) । "छिदिर्ः  
पावके रज्जौ करवाले परश्वधे" मेदि० ।



**ಚಿತ್ರ ಛಿದ್ರ** (ವಿಂ) 1. ಕಿತ್ತುಹೋಗುವ ಸ್ವಭಾವದ, ತಾನಾಗಿ ಕಿತ್ತುಹೋಗುವ. **ಚಿದ್ರಿ** (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ಕುರಚ್" (3-2-162). "ಪಯೋರೋತ್ಸರ್ಪಿಣಿ ಶೀರ್ಯಮಾಣಃ ಸಂಲಕ್ಷಯತೇ ನ ಚಿದುರೋಽಪಿ ಹಾರಃ" ರಘುಂ 16-62. 2. ಶತ್ರು. 3. ಧೂರ್ತ, ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. 4. ಛೇದಕ, ಕತ್ತರಿಸುವ. "ಪ್ರಿಯತಮಾಯ ವಪುರ್ಗುಹಮತ್ಸರಚ್ಚಿದುರಯಾದುರಯಾಚಿತ-ಮಜ್ಜನಾಃ" ಮಾಘಂ 6-6. 1.

**ಚಿದ್ರ - ಕರ್ಣಭೇದನೆ** (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಚಿದ್ರಯತಿ, -ತೇ | ರಂಧ್ರಮಾಡು, ತೂತುಕೊರೆ.

**ಚಿದ್ರ ಛಿದ್ರ** (ನಂ) 1. ರಂಧ್ರ, ವಿವರ, ಬಿಲ್. **ಚಿದ್ರಿ** (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ರಕ್" (3-2-162). 2. ವ್ಯವಸಾಯಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ ಭೂಮಿ. "ಭೂಮಿಛಿದ್ರಂ ಕೃಷ್ಯಯೋಗ್ಯಾ ಪ್ರಹತಂ ನಾಲಮುತ್ಥಿತಮ್" ವೇಜಂ. 3. ಜಾತಕಕುಂಡಲಿಯಲ್ಲಿ ಲಗ್ನದಿಂದ ಎಂಟನೆಯ ಸ್ಥಾನ. "ಧರ್ಮಕರ್ಮಾಧಿ-ನೇತಾರೋ ರಂಧ್ರ (ಚಿದ್ರ) ಲಾಭಾಧಿಪೌ ಯದಿ | ತಯೋಃ ಸಂಬಂಧ-ಮಾತ್ರೇಣ ನ ಯೋಗಂ ಲಭತೇ ನರಃ" ಗೋಚಾರದಂ. 4. ದೋಷ, ಕಳಂಕ, ಅಪರಾಧ. 5. "ಒಂಬತ್ತು" ಸಂಖ್ಯೆ. ದೇಹದಲ್ಲಿ ನವದ್ವಾರಗಳಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. 6. ದೋಷ, ನ್ಯೂನತೆ, ಕುಂದು, ದೌರ್ಬಲ್ಯ. "ನಾಸ್ಯ ಚಿದ್ರಂ ಪರೋ ವಿಶ್ವಾಽಪಿ ಚಿದ್ರಂ ಪರಸ್ಯ ತು | ಗುಹೇತ್ಕೂರ್ಮ ಇವಾಜ್ಞಾನಿ ರಕ್ಷ-ದ್ವಿವರಮಾತ್ಮನಃ" ಮನುಂ 9-105. "ಚಿದ್ರಂ ರಂಧ್ರಾಪರಾಧಯೋಃ" ವೇಜಂ. (ವಿಂ) 7. ರಂಧ್ರವುಳ್ಳ, ವಿವರವಿರುವ. **ಚಿದ್ರ-ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ** "ಅಚ್" (4-2-129). "ಸುಖಂ ದುಃಖಂ ಮಲಂ ಚಿದ್ರಂ ಕಿಲಾಸಂ ಸಿಂಧುಮರ್ಮರೌ | ರಭಸಃ ಪಲಿತಂ ಶಿವತ್ರಮೇತೇಽಪಿ ತ್ರಿಪು-ರ್ಧಮಿಣಿ" ವೇಜಂ. 1.

**ಚಿದ್ರಕರ್ಣ ಛಿದ್ರಕರ್ಣ** (ವಿಂ) ತೂತುಕಿವಿಯುಳ್ಳ. **ಚಿದ್ರಃ** ಕರ್ಣೋ ಯಸ್ಯ |

**ಚಿದ್ರದರ್ಶಿನ್ ಛಿದ್ರದರ್ಶಿನ್** (ವಿಂ) ದೋಷವನ್ನು (ದೌರ್ಬಲ್ಯವನ್ನು) ನೋಡುವ ಮತ್ತು ತಪ್ಪನ್ನೇ ಹುಡುಕುವ ಶತ್ರು. **ಚಿದ್ರಂ ಪಶ್ಯತಿ** - ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣ) "ಣಿತಿಃ" (3-2-36). 1.

**ಚಿದ್ರವೇದೇಹಿ ಛಿದ್ರವೇದೇಹಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಜಹಿಪ್ಪಲಿ. **ಚಿದ್ರ-ಪ್ರಧಾನಾ ವೇದೇಹಿ** |

**ಚಿದ್ರಾನ್ವೇಷಿನ್ ಛಿದ್ರಾನ್ವೇಷಿನ್** (ವಿಂ) ಶತ್ರು, ಹಗೆ.

**ಚಿದ್ರಿತ ಛಿದ್ರಿತ** (ವಿಂ) 1. ರಂಧ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತೂತು ಕೊರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. **ಚಿದ್ರ** (ಕರ್ಣಭೇದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102). 2. ತೂತಾಗಿರುವ, ರಂಧ್ರಸಹಿತವಾದ. **ಚಿದ್ರಮಸ್ಯ ಸಂಜಾತಮ್** "ಇತಚ್" (4-2-36). 1.

**ಚಿದ್ರಿನ್ ಛಿದ್ರಿನ್** (ವಿಂ) ರಂಧ್ರವುಳ್ಳ, ವಜ್ಜುಕೊರೆದಿರುವ.

**ಚಿದ್ರ ಛಿದ್ರ** (ವಿಂ) 1. ವೈರಿ, ಹಗೆ. 2. ಧೂರ್ತ, ಕಪಟ, ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. 3. ಕತ್ತರಿಸುವ ವಸ್ತು, ಛೇದಿಸುವ ಸಾಧನ.

**ಚಿದ್ರತ್ ಛಿದ್ರತ್** (ವಿಂ) ಕತ್ತರಿಸುತ್ತಿರುವ, ತುಂಡುಮಾಡುತ್ತಿರುವ. **ಚಿದ್ರಿ** (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ಶತ್ರು" (3-2-124). **ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್** "ಜಿಪ್" (4-1-6). **ಚಿದ್ರಂತಿ ಛಿದ್ರಂತಿ**.

**ಚಿದ್ರ ಛಿದ್ರ** (ವಿಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತುಂಡುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. **ಚಿದ್ರಿ** (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102). "ನೇರಂತಯಂಚ್ಚಿದ್ರದೇಹಾಂತರಾಲಂ ದುರ್ಮತಸ್ಯ ಜ್ವಾಲಿನಾ ವಾಶಿತೇನ" ಮಾಘಂ 16-96. 2. ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರತ್ಯೇಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕಚ್ಚಿತ್ತೋಭಯವಿಭ್ರಂಶಿಚ್ಚಿತ್ತಾಭ್ರಮಿವ ನಶ್ಯತಿ" ಗೀತಾ 6-36. 3. ಒಡೆದು ಹೊರಕ್ಕೆ ತೆಗೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಹರೋಧರಾಮಂ ಶೃಜ್ಞಿವ ಟಕ್ಷುಚ್ಚಿತ್ತಮನಃಶಿಲಃ" ರಘುಂ 12-60. 4. ನಷ್ಟವಾಗುವ, ನಾಶಹೊಂದುವ. "ಧನಂ ಪಟಯಿತುಂ ತಂ ನಿಃಸ್ನೇಹಂ ಯಃ ಏವ ನಿವರ್ತನೇ ಪ್ರಭವತಿ ಗವಾಂ ಕಿಂ ನಶ್ಚಿತ್ತಂ ಸ ಏವ ಧನಂಜಯಃ" ಅಮರಂ 32. "ಕ್ತವತುಃ" (3-2-102). **ಚಿದ್ರವಾನ್ ಛಿದ್ರವಾನ್**. ಕತ್ತರಿಸಿದವನು, ತುಂಡುಮಾಡಿದವನು.

**ಚಿದ್ರಕ ಛಿದ್ರಕ** (ವಿಂ) ಸ್ವಲ್ಪಮಾತ್ರ ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. **ಚಿದ್ರ** "ಕನ್" (4-4-4). 1.

**ಚಿದ್ರಕರ್ಣ ಛಿದ್ರಕರ್ಣ** (ವಿಂ) ಕತ್ತರಿಸಿದ ಕಿವಿಯುಳ್ಳ, ತುಂಡು ಕಿವಿಯುಳ್ಳ. **ಚಿದ್ರಃ** ಕರ್ಣೋ ಯಸ್ಯ | ಲಕ್ಷಣವಾಚಕ ಪದಕ್ಕೆ 6-3-114 ಸೂತ್ರದಿಂದ ಬರಬೇಕಾದ ದೀರ್ಘವು ವಿಠಾಡಿ ಯಲ್ಲಿ ಸೇರಿರುವ ಈ ಚಿದ್ರ ಪದಕ್ಕೆ ಬರುವುದಿಲ್ಲ.

**ಚಿದ್ರಕೇಶ ಛಿದ್ರಕೇಶ** (ವಿಂ) ಕತ್ತರಿಸಿದ ಕೂದಲುಳ್ಳ. **ಚಿದ್ರಾಃಕೇಶಾಃ** ಯಸ್ಯ |

**ಚಿದ್ರವತ್ ಛಿದ್ರವತ್** (ವಿಂ) ಕತ್ತರಿಸಿದವನು, ಚೂರುಮಾಡಿದವನು. **ಚಿದ್ರಿ** (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ಕ್ತವತುಃ" (3-2-102). 1.

**ಚಿದ್ರದ್ವೇಷ ಛಿದ್ರದ್ವೇಷ** (ವಿಂ) ಸಂಶಯ ನಿವಾರಣೆಯಾದವನು, ಹೀಗೆಯೇ ಹಾಗೆಯೇ ಎಂಬ ಸಂದೇಹವಿಲ್ಲದವನು. **ಚಿದ್ರಂ ದ್ವೇಷಂ ಸಂದೇಹೋ** ಯಸ್ಯ |

**ಚಿದ್ರನಾಸ ಛಿದ್ರನಾಸ** (ವಿಂ) ಎರಡಾಗಿ ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮೂಗುಳ್ಳವನು. **ಚಿದ್ರಾ ನಾಸಾ** ಯಸ್ಯ |

**ಚಿದ್ರನಾಸ್ಯ ಛಿದ್ರನಾಸ್ಯ** (ವಿಂ) ಕಿತ್ತುಹೋದ ಲಗಾಮು ಅಥವಾ ಮೂಗುದಾರವುಳ್ಳ ಕುದುರೆ ಮತ್ತು ಮೊದಲಾದುವು. **ನಾಸಾಯಾಂ ಭವಮ್** - ನಾಸಾ "ಯತ್" (4-1-6). "ಚಿದ್ರನಾಸ್ಯೇ ಭಗ್ನಯುಗಂ ತಿರ್ಯಕ್ ಪ್ರತಿಮುಕ್ತಾಗತೇ | ಅಕ್ಷಭಜ್ಞೇ ಚ ಯಾನಸ್ಯ ಚಕ್ರಭಜ್ಞೇ ತಥೈವ ಚ" ಮನುಂ 6-291. 1.



ಚಿತ್ರಮಸ್ತಾ ಛಿನ್ಮಮಸ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಶಮಹಾವಿದ್ಯೆಗಳಲ್ಲಿ ಸೇರಿರುವ ದೇವಿಯ ಒಂದು ರೂಪ. "ಭೇರವಿ ಚಿತ್ರಮಸ್ತಾ ಚ ವಿद्या ಭೂಮಾವತೀ ತಥಾ" ತನ್ತ್ರಸಾಂ ।

ಚಿತ್ರಮೂಲ ಛಿನ್ಮಮೂಲ (ವಿಂ) ಬುಡಸಹಿತ ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಚಿತ್ರಂ ಮೂಲಂ ಯಸ್ಯ । "ಸ ಚಿತ್ರಮೂಲಃ ಕ್ಷತಜೇನ ರೇಣುಃ" ರಘುಂ ೭-೪೩ ।

ಚಿತ್ರರೂಪಾ ಛಿನ್ಮ ರೂಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. 2. ಕೇತಕೀ ಗಿಡ, ತಾಳೆಮರ. ಚಿತ್ರಾ ಸತೀ ರೋಹಿಣಿ-ರೂಪ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫) । "ವತ್ಸಾದನೀ ಚಿತ್ರರೂಪಾ ಗುಡ್ಡಾಚಿ ತನ್ತ್ರಿಕಾಽಸ್ಮತಾ" ಅಮಂ ।

ಚಿತ್ರಶ್ವಾಸ ಛಿನ್ಮ ಶ್ವಾಸ (ಪುಂ) 1. ತಡೆದು ತಡೆದು ಬರುವ ಶ್ವಾಸ, ತಡೆದು ಉಸಿರಾಡುವುದು, ಕ್ರಮವಾಗಿಲ್ಲದ ಉಸಿರಾಟ. ಚಿತ್ರಃ ಶ್ವಾಸಃ । (ವಿಂ) 2. ತಡೆದು ಉಸಿರಾಡುವ. ಚಿತ್ರಃ ಶ್ವಾಸೋ ಯಸ್ಯ ।

ಚಿತ್ರಾ ಛಿನ್ಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. 2. ಸ್ವೈರೀಣಿ ವೈಭಿಚಾರಿಣಿ. "ಚಿತ್ರಾ ಸ್ಯಾದಮೃತೇವರೀ" ಹೇಮಂ ।

ಚಿತ್ರೋದ್ಭವಾ ಛಿನ್ಮೋದ್ಭವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ.

ಛುಛುಂದರ ಛುಛುಂದರ (ಪುಂ) ಮೂಗಿಲಿ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛಿಪ್" -ರೀ-ರೀ. ಪೃಷೋಂ । ಛುಛುಂದರಿಃ ಛುಛುಂದರೀಃ. "ಛುಛುಂದರಿಃ ಶುಭಾನ್ ಗಂಧಾನ್ ಪತ್ರಶಾಕಂ ತು ಬರ್ಹಿಣಃ" ಮನುಂ ೧೨-೬೫ ।

ಛುಟ - ಛೇದನೆ (ತುಡಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಛುಟತಿ । ಚುಛುಟ । ಛುಟಿತಾ । ಅಚ್ಛುಟೀತ್ ।

ಛುಟ - ಛೇದನೆ (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಛುಟಯತಿ, -ತೇ । ಅಚ್ಛುಟಯತ್, -ತ । ಕತ್ತರಿಸು, ತುಂಡುಮಾಡು.

ಛುಡ್ರ ಛುಡ್ರ (ನಂ) 1. ಪ್ರತೀಕಾರ. 2. ರಶ್ಮಿ, ಕಿರಣ. ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ) "ರಕ್" ಬಾಹುಂ । ಪೃಷೋಂ ।

ಛುಪ - ಸ್ಪರ್ಶ (ತುಡಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) । ಛುಪತಿ । ಚುಛುಪ । ಸ್ಪರ್ಶಮಾಡು, ಮುಟ್ಟು.

ಛುಪ ಛುಪ (ಪುಂ) 1. ಸ್ಪರ್ಶ, ಮುಟ್ಟುವುದು. ಛುಪ (ಸ್ಪರ್ಶ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫) । 2. ಚಿಕ್ಕ ರೆಂಬೆಗಳುಳ್ಳ ಮರ. "ಛುಪಃಕ್ಷುಪಸ್ಪರ್ಶನಯೋಃ" ಮೇದಿಂ ।

ಛುರ - ಛೇದನೆ (ತುಡಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಛುರತಿ । ಚುಛುರ । ಅಚ್ಛುರೀತ್ । 1. ಕತ್ತರಿಸು, ತುಂಡುಮಾಡು. 2. ಕಚ್ಚು ಮಾಡು, ಕೊರೆ, ಕೆತ್ತು. 3. ಕೊರೆದು ಪ್ರತಿರೂಪಮಾಡು.

ಛುರಣ ಛುರಣ (ನಂ) ಹರಡುವುದು, ಹರವುವುದು.

ಛುರಾ ಛುರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುಣ್ಣ. ಛುರ (ಛೇದನೆ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫) ।

ಛುರಿಕಾ ಛುರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಾಕು, ಚೂರಿ. ಛುರ (ಛೇದನೆ) "ಕ್ವುನ್" (೩ಂ ೨-೩೫) । "ಸ್ಯಾಚ್ಛಸ್ತ್ರೀ ಚಾಸಿಪುತ್ರೀ ಚ ಛುರಿಕಾ ಚಾಸಿಧೇನುಕಾ" ಅಮಂ ।

ಛುರಿತ ಛುರಿತ (ವಿಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಲೇಪನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಛುರ (ಛೇದನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । 3. ಬೆರಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಸೇರಿಸಿ ಮಿಶ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪರಸ್ಪರೇಣ ಚ್ಛುರಿತಾಮಲಚ್ಛವೀ ತದೇಕ-ವರ್ಣಾವಿವ ತೌ ಬಭೂವತುಃ" ಮಾಘಂ ೧-೨೨ ।

ಛುರೀ ಛುರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಾಕು, ಸಣ್ಣ ಕತ್ತಿ. 2. ಕಠಾರಿ, ಬಾಕು. ಛುರ (ಛೇದನೆ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫) । "ಛಿಪ್" (೪-೧-೪೧) ।

ಛುರಿಕಾ ಛುರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಾಕು, ಸಣ್ಣ ಕತ್ತಿ. 2. ಹಸು ವಿನ ಮೂಗಿನ ಹೊಳ್ಳೆ. "ಗೌಷು ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸಂಸ್ಥಾಸು ಛುರಿಕಾ-ಯಾಶ್ಚ ಭೇದನೇ । ಪಶುನಾಂ ಹರಣೇ ಚೈವ ಸದ್ಯಃ ಕಾರ್ಯೋಽರ್ಥಪಾದಿಕಃ" ಮನುಂ ೮-೩೨೫ ।

ಛುರೀ ಛುರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಾಕು, ಸಣ್ಣ ಕತ್ತಿ. ಛುರಿತ-ಛುರ (ಛೇದನೆ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫) । "ಛಿಪ್" (೪-೧-೪೧) ।

ಛುಡಿರ್ - ದೀಪ್ತಿವೇದನಯೋಃ (ರೂಪಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ದೀಪ್ತೌ ಅಕಂ ಸೇಂ) । ಛುಡಿತಿ, ಛುಡೀತಿ । ಚ್ಛುಡಿ, ಚ್ಛುಡೀ । ಛುಡಿತಿ । ಛುಡಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ, ಛುಡೀಷ್ಯತಿ, -ತೇ । ಛುಡಿತ್, ಛುಡಿತ್ಯಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿಃ 1. ಪ್ರಕಾಶಿಸು, ಹೊಳೆ. 2. ಅಟವಾಡು.

ಕರ್ಮಣಿಃ - ಛುಡೀತೇ । ಛುಡೀತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಛುಡೀ - ಸಂದೀಪನೇ (ವಾ ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಛುಡೀಯತಿ, -ತೇ । ಪಕ್ಷೇ ಛುಡೀತಿ । ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಉರಿಸು, ಜ್ವಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡು. 2. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸು.

ಛೇಕ ಛೇಕ (ಪುಂ) 1. ಮನೆಯನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿರುವ ಮೃಗ ಪಕ್ಷಿ ಮುಂತಾದುವು. ಛಾಯತೇ-ಛೋ (ಛೇದನೆ) "ಛೇಕನ್" ಬಾಹುಂ । (ವಿಂ) 2. ಜಾಣ, ಬುದ್ಧಿವಂತ, ನಾಗರ, ನಗರ ವಾಸಿ, ರಸಿಕ. "ಛೇಕೋ ಗೃಹಾಶ್ರಿತಮೃಗಪಕ್ಷಿಣೋನಗರೇ ತ್ರಿಭುಃ" ಮೇದಿಂ ।

ಛೇಕಾನುಪ್ರಾಸ ಛೇಕಾನುಪ್ರಾಸ (ಪುಂ) ಅನುಪ್ರಾಸಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ, ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರದ ಭೇದವಾದ ಐದು ವಿಧ ಅನುಪ್ರಾಸಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ವಿಧ. ಅನೇಕ ವ್ಯಂಜನ ವರ್ಣಗಳಿಗೆ ಸಕ್ಕದಾವೃತ್ತಿಯಿರುವಲ್ಲಿ "ಛೇಕಾನುಪ್ರಾಸ" ವೆಂಬ ಅಲಂಕಾರವಾಗುವುದು. ವಿದಗ್ಧನಾದವನು ಇದನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಈ ಹೆಸರು. "ಛೇಕೋ ವ್ಯಂಜನಸಂಘಸ್ಯ ಸಕೃತ್ಸಾಮ್ಯಮನೇಕಧಾ" ಸಾಂ ದಂ ೧೦-೩ । ಉದಾಃ "ಆದಾಯ ವಕ್ತುಲಗಂಧಾನಧೀಕುರ್ವನ್ ಪದಪದೇ ಭ್ರಮರಾನ್ ।



ಅಯಮೇತಿ ಮಂದಮಂದಂ ಕಾವೇರಿವಾರಿಪಾವನ: ಪವನ:" ಇಲ್ಲಿ ಗಂಧಾನುಭವಿ ಎಂದು ಸಂಯುಕ್ತಾಕ್ಷರಗಳಿಗೂ ಕಾವೇರಿವಾರಿ ಎಂದು ಅಸಂಯುಕ್ತಾಕ್ಷರಗಳಿಗೂ ಪಾವನ:ಪವನ: ಎಂದೂ ಅನೇಕ ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಿಗೆ ಒಂದೊಂದು ಸಲ ಅವ್ಯಕ್ತಿ ಯಿರುವುದರಿಂದ ಭೇಕಾನುಪ್ರಾಸವಾಯಿತು.

**ಛೇಕಾಪಹ್ನುತಿ ಭೇಕಾಪಹ್ನುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ, ಅದು ವಿಧ "ಅಪಹ್ನುತಿ" ಅಲಂಕಾರಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. ಅಡಿದ ಮಾತಿನ ಅಭಿಪ್ರಾಯವು ಇನ್ನೊಬ್ಬ ನಿಗೆ ತಿಳಿಯದೆ ಸಂದೇಹವು ತೋರಿ ನಿಜವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೇಳಿದಾಗ ಸ್ವಾಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ಮುಚ್ಚಿಟ್ಟು ಬೇರೆ ರೀತಿಯ ಉತ್ತರವನ್ನು ಕೊಡುವುದು "ಛೇಕಾಪಹ್ನುತಿ" ಯಾಗುವುದು. "ಛೇಕಾಪಹ್ನುತೀರನೃಪಃ ಶಙ್ಕಾತಸ್ತಥ್ಯನಿಹ್ನವೇ | ಪ್ರಜಲ್ಪನ್ ಮತ್ಪದೇ ಲಗನ: ಕಾಂತ: ಕಿಂ ನ ಹಿ ನುಪುರ:" ಚಂದ್ರಾಂ | ಇಲ್ಲಿ ಪ್ರಜಲ್ಪನ್ ಮತ್ಪದೇ ಲಗನ: ಎಂಬುದು ಮಾತು. ಅದರ ಅಭಿಪ್ರಾಯವು ತಿಳಿಯದೆ ಕಾಂತ: ಕಿಮ್ ಎಂಬುದು ಪ್ರಶ್ನೆ. ನ ಹಿ ನುಪುರ: ಎಂದು ಅನ್ಯಥಾ ಉತ್ತರ. ಅದುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ "ಭೇಕಾಪಹ್ನುತಿ" ಅಲಂಕಾರ.

**ಛೇಕೋಕ್ತಿ ಭೇಕೋಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಅರ್ಥಾಂತರದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಲೋಕೋಕ್ತಿಯು ಭೇಕೋಕ್ತಿ. ಲೋಕಾಭಿರಾಮವಾಗಿ ಹೇಳುವ ಮಾತು ಅರ್ಥಾಂತರಗರ್ಭಿತವಾಗಿರುವಲ್ಲಿ "ಛೇಕೋಕ್ತಿ" ಅಲಂಕಾರವಾಗುವುದು. "ಛೇಕೋಕ್ತೀರ್ಯತ್ರ ಲೋಕೋಕ್ತಿ: ಸ್ಯಾದರ್ಶಾಂತಿರಗಮಿತಾ". ಉದಾ: "ಭುಜಙ್ಗ ಉವ ಜಾನೀತೇ ಭುಜಙ್ಗಚರಣಂ ಸಖೇ". ಇಲ್ಲಿ ಸರ್ಪಗಳಿಗೆ ಇರುವ ಕಾಲು ಸರ್ಪಕ್ಕೇ ಗೊತ್ತು ಎಂದು ಹೇಳುವ ಮಾತಿನಲ್ಲಿ ವಿಟನ ವಿಷಯ ವಿಟನಿಗೇ ಗೊತ್ತು ಎಂಬ ಅರ್ಥ ಗರ್ಭಿತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ "ಭೇಕೋಕ್ತಿ" ಅಲಂಕಾರ.

**ಛೇತವ್ಯ ಭೇತವ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಕತ್ತರಿಸಬೇಕಾದ, ತುಂಡುಮಾಡಬೇಕಾದ. ಛಿದ್ರಿ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ತವ್ಯ:" (3-1-96). 2. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಡುವ.

**ಛೇತ್ ಭೇತ್ (ವಿಂ)** 1. ಕತ್ತರಿಸುವವನು. 2. ಮರ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ತುಂಡುಮಾಡುವವನು. ಛಿದ್ರಿ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ತತ್" (3-1-133). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ತೀಪ್" (4-1-5). ಛೇತ್ರಿ ಭೇತ್ರಿ.

**ಛೇದ ಭೇದ (ಪುಂ)** 1. ಕತ್ತರಿಸುವುದು, ತುಂಡುಮಾಡುವುದು. ಛಿದ್ರಿ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) ಭಾವ "ಛೇ" (3-3-18). "ಛೇದೋ ದಂಶಸ್ಯ ದಾಹೋ ವಾ" ಮಾಲಂ 4-4. 2. ತುಂಡು, ಚೂರು. "ಆಕೇಲಾಸಾದ್ವಿಸಕಿಸಲಯಛೇದಪಾಥೇಯವಂತ:" ಮೇಘಂ

1-11. 3. ಪ್ರಹಾರ, ಏಟು. "ದ್ವಿಧಿಧಿಶಸನಛೇದ-ನಿರಸ್ತೋಽಪ್ಯುಗೋಽಪರ:" ಮಾಘಂ 19-43. (ವಿಂ) 4. ಕತ್ತರಿಸುವ, ತುಂಡುಮಾಡುವ. ಛಿದ್ರಿ ಕರ್ತಂ "ಅಚ್" (3-1-134). 5. ಭೇದಕ, ಭಾಗಿಸುವ. "ಛೇದಂ ಗುಣಂ ಗುಣಂ ಛೇದಮ್" ಲೀಲಾಂ |

**ಛೇದಕ ಭೇದಕ (ಪುಂ)** 1. ಭಾಜಕ, ಭಾಗಿಸಲು ಭಿನ್ನರಾಶಿಯ ಅಡ್ಡಗೆರೆಯ ಕೆಳಗಿನ ಅಂಕ. ಛಿದ್ರಿ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ಛಲ್" (3-1-133). (ವಿಂ) 2. ಕತ್ತರಿಸುವ, ತುಂಡುಮಾಡುವ.

**ಛೇದನ ಭೇದನ (ನಂ)** 1. ಕತ್ತರಿಸುವುದು, ತುಂಡುಮಾಡುವುದು. "ಛಿದ್ರಿ" (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) ಭಾವ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-115). "ಕರಪಾದದತೋ ಭಜ್ಜೇ ಛೇದನೇ ಕರ್ಣನಾಸಯೋ: | ಮಧ್ಯೋ ದಂಟೋ ವ್ರಣೋಽದ್ದೇದೇ ಮೃತಕಲ್ಪಹತೇ ತಥಾ" ಯಾಜ್ಞಂ 2-2-19. 2. ಕತ್ತರಿಸುವ ಸಾಧನ, ಶಸ್ತ್ರ. ಛಿದ್ರಿ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-115). (ವಿಂ) 3. ಕತ್ತರಿಸುವ, ಚೂರುಮಾಡುವ. ಛಿದ್ರಿ ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (3-1-134).

**ಛೇದನೀಯ ಭೇದನೀಯ (ಪುಂ)** 1. ಕಡಕವೃಕ್ಷ, ಚಲ್ಲದ ಗಿಡ. ಛೇದನಾಯ ಸಲಿಲಕಾಲ್ಮುಷ್ಯಾಪನಯನಾಯ ಹಿತ: "ಛ:" (4-1-5). (ವಿಂ) 2. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಕತ್ತರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 4. ಕತ್ತರಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಛಿದ್ರಿ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96).

**ಛೇದಯತ್ ಭೇದಯತ್ (ವಿಂ)** ಕತ್ತರಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಕತ್ತರಿಸುವ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಛಿದ್ರಿ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ತೀಪ್" (4-1-5). -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

**ಛೇದಯಿತವ್ಯ ಭೇದಯಿತವ್ಯ (ವಿಂ)** ತುಂಡುಮಾಡಿಸಬೇಕಾದ. ಛಿದ್ರಿ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) + ಣಿಚ್ "ತವ್ಯ:" (3-1-96).

**ಛೇದಿ ಭೇದಿ (ಪುಂ)** 1. ಬಡಗಿ, ಮರಗೆಲಸದವನು. ಛಿದ್ರಿ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ಛನ್" (3-1-115). (ವಿಂ) 2. ಕತ್ತರಿಸುವವನು, ತುಂಡುಮಾಡುವವನು, ಚೂರುಮಾಡುವವನು.

**ಛೇದಿತವತ್ ಭೇದಿತವತ್ (ವಿಂ)** ಕತ್ತರಿಸಿದವನು, ತುಂಡುಮಾಡಿದವನು. ಛಿದ್ರಿ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತವತು:" (3-2-102). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ತೀಪ್" (4-1-5). -ವಂತಿ -ವಂತೀ.

**ಛೇದಿನ್ ಭೇದಿನ್ (ವಿಂ)** ಕತ್ತರಿಸುವ, ತುಂಡುಮಾಡುವ. ಛಿನತಿ-ಛಿದ್ರಿ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ಞಿನಿ:" (3-1-134)







ದಲಿ) ಹುಟ್ಟಿದ, ಉತ್ಪತ್ತಿಹೊಂದಿದ. ಪ್ರಾವೃಷಿಜ: ಶರದಿಜ: ಕಾಲೇಜ: ದಿವಿಜ: ಲಲಾಟಜ:, ಮನಸಿಜ: ಮನೋಜ: ಸರಸಿಜಮ್ ಸರೋಜಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಜಕಾರ ಜಕಾರ (ಪುಂ) "ಜ" ಪರ್ಣ.

ಜಕುಟ ಜಕುಟ (ಪುಂ) 1. ಮಲಯಪರ್ವತ. 2. ನಾಯ. (ನಂ) 3. ಬದನೆ ಹೂವು. ಜಂ ಜಾತಂ ಸತ್ ಕುಟತಿ ವಕ್ರೀಭವತಿ - ಕುಟ (ಕೌಟಿಲ್ಯ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫). "ಜಕುಟಂ ವಾರ್ತಿಕಪುಷ್ಪೇ ಜಕುಟೋ ಮಲಯೇ ಶುನಿ" ಮೇದಿಂ.

ಜಕ್ಷ - ಭಕ್ಷಹಸನಯೋ: (ಅದಾಂ ಪರಂ ಭಕ್ಷಣೇ ಸಕಂ ಹಸನೇ ಅಕಂ ಸಂ). ಜಕ್ಷಿತಿ ಜಕ್ಷಿತ: ಜಕ್ಷತಿ. ಜಜಕ್ಷ ಜಜಕ್ಷತು: ಜಜಕ್ಷು: ಜಕ್ಷಿತಾ. ಜಕ್ಷಿಷ್ಯತಿ. ಜಕ್ಷಿತು. ಅಜಕ್ಷಿತ್, ಅಜಕ್ಷತ್. ಜಕ್ಷಾತ್. ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಭಕ್ಷಿಸು, ತಿನ್ನು. 2. ನಗು. "ಭ್ರಮುರ್ವಲ್ಗುರ್ನುತುರ್ಜಜಕ್ಷುರ್ಜಗು: ಸಮುತ್ಪುಲುವಿರೇ ನಿಷೇದು:" ಭಟಿಂ ೧೩-೨೮.

ಕರ್ಮಣಿ: - ಜಕ್ಷಯತೇ. ಜಜಕ್ಷೇ. ಜಕ್ಷಿತಾ. ಜಕ್ಷಿಷ್ಯತೇ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತು: - ಜಕ್ಷಿತವ್ಯಮ್. ಜಕ್ಷಣೀಯಮ್. ಜಕ್ಷಯಮ್. ಜಕ್ಷಿತ: ಜಕ್ಷಿತವಾನ್. ಜಕ್ಷತ್, ಜಕ್ಷತೀ. ಜಕ್ಷಿತುಮ್. ಜಕ್ಷಿತಮ್. ಜಕ್ಷಣಮ್. ಜಕ್ಷಿತ್ವಾ. ಅನುಜಕ್ಷಯ.

ಜಕ್ಷಣ ಜಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಭಕ್ಷಣ, ತಿನ್ನುವುದು. 2. ನಗುವುದು. ಜಕ್ಷ (ಭಕ್ಷಹಸನಯೋ:) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

ಜಕ್ಷಣೀಯ ಜಕ್ಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಭಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ, ತಿನ್ನಲ್ಪಡುವ. 2. ತಿನ್ನಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ತಿನ್ನಬೇಕಾದ. ಜಕ್ಷ (ಭಕ್ಷಣೇ) ಕರ್ಮದೊ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). "ತವ್ಯ:" ಜಕ್ಷಿತವ್ಯ: ಜಕ್ಷಿತವ್ಯ:

ಜಕ್ಷತ್ ಜಕ್ಷತ್ (ವಿಂ) 1. ಭಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ತಿನ್ನುತ್ತಿರುವ. 2. ನಗುತ್ತಿರುವ. ಜಕ್ಷ (ಭಕ್ಷಹಸನಯೋ:) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬).

ಜಕ್ಷಿ ಜಕ್ಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭಕ್ಷಣ, ತಿನ್ನುವುದು. 2. ನಗುವುದು.

ಜಕ್ಷಿತ ಜಕ್ಷಿತ (ನಂ) 1. ಭಕ್ಷಣ, ತಿನ್ನುವುದು. 2. ನಗುವುದು. ಜಕ್ಷ (ಭಕ್ಷಹಸನಯೋ:) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪). (ವಿಂ) 3. ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟ. ಜಕ್ಷ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).

ಜಕ್ಷಿತವತ್ ಜಕ್ಷಿತವತ್ (ವಿಂ) ಭಕ್ಷಿಸಿದವನು, ಉಣ್ಣಿದವನು. ಜಕ್ಷ (ಭಕ್ಷಣೇ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬). -ವತೀ -ವತೀ.

ಜಕ್ಷಿತು ಜಕ್ಷಿತು (ವಿಂ) 1. ಭಕ್ಷಿಸುವ, ತಿನ್ನುವ. 2. ನಗುವ. ಜಕ್ಷ (ಭಕ್ಷಹಸನಯೋ:) "ತೃತ್" (೩-೧-೧೩೩). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೫). -ತೀ -ತೀ.

ಜಕ್ಷಯ ಜಕ್ಷಯ (ವಿಂ) ತಿನ್ನಲ್ಪಡುವ. ಜಕ್ಷ (ಭಕ್ಷಣೇ) ಕರ್ಮಂ "ಪ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪).

ಜಗಚ್ಚಕ್ಷುಸ್ ಜಗಚ್ಚಕ್ಷುಸ್ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಜಗತಾಂ ಚಕ್ಷುರಿವ.

ಜಗತ್ ಜಗತ್ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. (ನಂ) 2. ಜಗತ್ತು. ಪ್ರಪಂಚ, ಲೋಕ. ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ವಿವಪ್" (ವಾಂ ೩-೨-೧೭೮). "ನಿಧತ್ಸೇ ಹುತಮರ್ಕಾಯ ಸ ಪರ್ಜನ್ಯೋಽಭಿವರ್ಷತಿ. ತತೋಽಪ್ತಾನಿ ಪ್ರಜಾಸ್ತೇಮ್ಯಸ್ತೇನಾಸಿ ಜಗತ: ಪಿತಾ" ಕುಮಾಂ ೧೦-೨೦. "ಜಗಜ್ಜಯಂ ತೇನ ಚ ಕೋಶಮಕ್ಷಯಂ ಪ್ರಣೀತವಾನ್ ಶೈಶವಶೇಷವಾನಯಮ್" ನೆಪಂ ೧-೧೯. 3. ಸಂಚರಿಸುವ, ಚಲಿಸುವ.

ಜಗತೀ ಜಗತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭೂಮಿ. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಅತಿ:" ಜಗಾದೇಶಶ್ಚ (ತಂ ೨-೮೪) ನಿಪಾಂ. 1. ಶತ್-ವದ್ಭಾವಾತ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬). "ದುರೋದರಚ್ಛಜಿತಾಂ ಸಮೀಹತೇ ನಯೇನ ಜೇತುಂ ಜಗತೀಂ ಸುಯೋಧನ:" ಕಿರಾಂ ೧-೭. 2. ಲೋಕ, ಪ್ರಪಂಚ. 3. ಜನ. 4. ಹನ್ನೆರಡು ಅಕ್ಷರಗಳಿಳ್ಳ ಛಂದಸ್ಸು. "ಜಗತೀ ಭುವನೇ ಕ್ಷಮಾಯಾಂ ಕ್ಷುದೋಭೇದೇ ಜನೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ.

ಜಗತೀಜಾನಿ ಜಗತೀಜಾನಿ (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯೇ ಪತ್ನಿಯಾಗಿ ಉಳ್ಳ ರಾಜ. ಜಗತೀ ಜಾನಿರಯ.

ಜಗತೀತಲ ಜಗತೀತಲ (ನಂ) ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ, ಭೂಮಿಯ ಮೇಲ್ಮೈ. ಜಗತ್ಯಾಸ್ತಲಮ್.

ಜಗತೀಧರ ಜಗತೀಧರ (ಪುಂ) ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಧರತಿ - ಭುಜ್ (ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಜಲಧರಾವಲಿರಪ್ರತಿಪಾಲಿತಸ್ವಮಯಾ ಸಮಯಾಜ್ಜಗತೀಧರಮ್" ಮಾಧಂ ೬-೨೫.

ಜಗತೀಪತಿ ಜಗತೀಪತಿ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಜಗತ್ಯಾ: ಪತಿ: "ಇತಿ ಹ ವಾವ ಸ ಜಗತೀಪತಿರೀಶ್ವರೇಚ್ಛಯಾಧಿನಿವೇಶಿತಕರ್ಮಾಧಿಕಾರ:" ಭಾಗಂ ೫-೧-೨೩.

ಜಗತೀಪಾಲ ಜಗತೀಪಾಲ (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯನ್ನು ಕಾಪಾಡುವ ದೊರೆ, ರಾಜ. ಜಗತ್ಯಾ: ಪಾಲ:

ಜಗತೀಭುಜ್ ಜಗತೀಭುಜ್ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಜಗತೀಂ ಭುನಕ್ತಿ - ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನೆ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬). "ದದೃಶೇ ಜಗತೀಭುಜಾ ಮುನಿ: ಸ ವಪುಷ್ಮಾನಿವ ಪುಣ್ಯಸಂಚಯ:" ಕಿರಾಂ ೨-೫೬.

ಜಗತೀರಹ್ ಜಗತೀರಹ್ (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವವರ, ವ್ಯಕ್ತ. ಜಗತ್ಯಾಂ ರೋಹತಿ - ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡುಭವಿ ಚ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬). "ಪವನೇರಿತಾಕುಲ-



ವಿಜಿಹ್ಯಾಶಿಖಾ ಜಗತೀಹೋವಚಕರು: ಕುಸುಮೈ: ಕಿರಾಂ ೬-೨।

“ಕ:” (೩-೧-೧೩೫)। -ಹಹ: -ರೂಹ:

ಜಗತ್ಕರ್ತೃ ಜಗತ್ಕರ್ತೃ (ಪುಂ) 1. ಜಗತ್ತನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸುವ ಪರಮಾತ್ಮ. 2. ಚತುರ್ಮುಖ ಬ್ರಹ್ಮ. ಜಗತ: ಕರ್ತಾ।

ಜಗತ್ಕಾರಣ ಜಗತ್ಕಾರಣ (ನಂ) ಪ್ರಪಂಚದ ಮೂಲ ಕಾರಣ. ಜಗತ: ಕರಾಕರಸ್ಯ ಕಾರಣಮ್।

ಜಗತ್ಕಷಯ ಜಗತ್ಕಕ್ಷಯ (ಪುಂ) ಪ್ರಳಯ, ಪ್ರಪಂಚದ ನಾಶ. ಜಗತ: ಕಷಯ:।

ಜಗತ್ತ್ರಯ ಜಗತ್ತ್ರಯ (ನಂ) ಸ್ವರ್ಗ ಮಧ್ಯ (ಭೂ) ಪಾತಾಳ ಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಲೋಕಗಳು. ಜಗತಾಂ ತ್ರಯಮ್। “ಶಾಧಿ ಶಾಸಕ ಜಗತ್ತ್ರಯಸ್ಯ ಮಾಮ್” ಮಾಘಂ ೧೪-೧೧।

ಜಗತ್ಪತಿ ಜಗತ್ಪತಿ (ಪುಂ) ಪರಮಾತ್ಮ, ಸರ್ವೇಶ್ವರ. ಜಗತಾಂ ಪತಿ:। “ಯದಾ ಚ ತಸ್ಯಾಧಿಗಮೇ ಜಗತ್ಪತೇ:” ಕುಮಾಂ ೫-೫೯।

ಜಗತ್ಪವಿತ್ರ ಜಗತ್ಪವಿತ್ರ (ವಿಂ) ಜಗತ್ತೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಪಾವನ ಗೊಳಿಸುವ. ಜಗತ್ ಪುನಾತಿ - ಪೂಜ್ (ಪವನೇ) “ಇತ್ರ:” (೩-೨-೧೮೬)। “ಜಗತ್ಪವಿತ್ರೇರಪಿ ತಂ ನ ಪಾದೇ: ಸ್ಪ್ರಷ್ಟುಂ ಜಗತ್ಪೂಜ್ಯಮಯುಜ್ಯತಾರ್ಕ:” ಮಾಘಂ ೩-೨।

ಜಗತ್ಪೂಜ್ಯ ಜಗತ್ಪೂಜ್ಯ (ವಿಂ) ಲೋಕಗಳಿಗಿಲ್ಲಾ ಪೂಜ್ಯ ನಾದ. ಜಗತಾಂ ಪೂಜ್ಯ:। “ಜಗತ್ಪೂಜ್ಯಮಯುಜ್ಯತಾರ್ಕ:” ಮಾಘಂ ೩-೨।

ಜಗತ್ಪ್ರಭು ಜಗತ್ಪ್ರಭು (ಪುಂ) ಮೂರು ಲೋಕಗಳಿಗೂ ಸ್ವಾಮಿ ಯಾದ ಪರಮಾತ್ಮ. ಜಗತಾಂ ಪ್ರಭು:। “ಜಗತ್ಪ್ರಭೋರಪ್ರಸಹಿಷ್ಣು ವೆಣವಂ ನ ಚಕ್ರಮಸ್ಯಾಕ್ರಮತಾಧಿಕನ್ಧರಮ್” ಮಾಘಂ ೧-೫೪।

ಜಗತ್ಪ್ರಾಣ ಜಗತ್ಪ್ರಾಣ (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಜಗತಾಂ ಭುವನಸ್ಥಜೀವಾನಾಂ ಪ್ರಾಣ: ಜೀವನಮ್। “ಜಗತ್ಪ್ರಾಣ ಪ್ರಾಣಾ-ನಪಹರಸಿ ಕಿಂ ತೇ ವ್ಯವಸಿತಮ್” ಸಾಂ ೬೦।

ಜಗತ್ಸಾಕ್ಷಿನ್ ಜಗತ್ಸಾಕ್ಷಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಪರ ಮಾತ್ಮ. ಜಗತ: ಸಾಕ್ಷಿ।

ಜಗದ್ಗಡಕ ಜಗದ್ಗಡಕ (ನಂ) ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡ, ಜಗತ್ತಿಗೆ ಆಶ್ರಯವಾದ ಕೋಶ. ಜಗತ: ಅಂಡಕಮ್। “ಋಚೇ ವೀರಿಶ್ವಿ-ನಖಭಿನ್ನಬೃಹಜ್ಜಗದ್ಗಡಕೈತರಕ್ಷಂಡಮಿವ” ಮಾಘಂ ೯-೯।

ಜಗದಮ್ಬಾ ಜಗದಂಬಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾರ್ವತಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ. ಜಗತ: ಅಂಬಾ। ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕ:”। -ಅಂಬಿಕಾ -ಅಂಬಿಕಾ.

ಜಗದಂತ ಜಗದಂತ (ಪುಂ) 1. ಜಗತ್ತಿನ ಕೊನೆ, ಪ್ರಳಯ. ಜಗತೋತ್ತ:। 2. ಜಗತ್ತನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವವನು. ಜಗತ್ ಅಂತಯತಿ-“ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ಜಗದ್ವಿನಿರಯೋನಿ-ಸ್ತ್ವಂ ಜಗದಂತೋ ನಿರಂತಕ:” ಕುಮಾಂ ೨-೯।

ಜಗದಂತಕ ಜಗದಂತಕ (ವಿಂ) ಜಗತ್ತನ್ನು ನಾಶಗೊಳಿಸುವವನು. ಜಗತಾಮಂತಕ:।

ಜಗದಂತಕಾಲ ಜಗದಂತಕಾಲ (ಪುಂ) ಕಲ್ಪದ ಕೊನೆಯ ಕಾಲ. “ಜಗದಂತಕಾಲಸಮವೇತವಿಷದವಿಷಮೇರಿತಾರವಮ್” ಮಾಘಂ ೧೫-೭೩।

ಜಗದಾತ್ಮಕ ಜಗದಾತ್ಮಕ (ವಿಂ) ಜಗತ್ತಿನ ಸ್ವರೂಪವಾದ. ಜಗತ್ ಆತ್ಮಾ ಯಸ್ಯ। “ಕಪ್” (೫-೪-೧೫೪)।

ಜಗದಾದಿ ಜಗದಾದಿ (ಪುಂ) ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಗೂ ಮೊದಲು ಇದ್ದ ಪರಮಾತ್ಮ. ಜಗತಾಮಾದಿ:। “ಜಗದಾದಿರನಾದಿಸ್ತ್ವಂ ಜಗದೀಶೋ ನಿರೀಶ್ವರ:” ಕುಮಾಂ ೨-೯।

ಜಗದಾದಿಜ ಜಗದಾದಿಜ (ಪುಂ) ಹಿರಣ್ಯಗರ್ಭರೂಪದಿಂದ ಜಗತ್ಸೃಷ್ಟಿಗೆ ಮೊದಲು ಅವಿಭಾವಹೊಂದಿದ ಪರ ಮಾತ್ಮ. ಜಗತಾಮಾದಿ ಹಿರಣ್ಯಗರ್ಭರೂಪೇಣ ಜಾಯತೇ-ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) “ಓ:” (೩-೨-೧೭೭)। “ಸೌಮಿಧ್ಯಾಯ ಶರೀರಾತ್ ಸ್ವಾತಿಸಸೃಕ್ಷುರ್ವಿವಿಧಾ: ಪ್ರಜಾ:। ಅಪ ಏವ ಸಸರ್ಜಾದೌ ತಾಸು ಬೀಜ-ಮವಾಸೃಜತ್ || ತದಂಡಮಭವದ್ವೈಮಂ ಸಹಸ್ರಾಂಶುಸಮಪ್ರಭಮ್। ತಸ್ಮಿನ್ ಜಜ್ಞೇ ಸ್ವಯಂ ಬ್ರಹ್ಮಾ ಸರ್ವಲೋಕಪಿತಾಮಹ:” ಮನುಂ ೧-೮, ೯। “ಜಗತಾಮಾದಿಭೂತಾಸು ಮूर्ತಿಶ್ವನ್ಯತಮತ್ವತ:। ಜಾತತ್ವಾದಿಷ್ಟು-ರೂಪೇಣ ಪ್ರೋಚ್ಯತೇ ಜಗದಾದಿಜ:” ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ್ತಿ:। “ಭ್ರಾಜಿಷ್ಟು-ಭೋಜನಂ ಭೋಕ್ತಾ ಸಹಿಷ್ಟುರ್ಜಗದಾದಿಜ:” ವಿಂ ಸಂ।

ಜಗದಾಧಾರ ಜಗದಾಧಾರ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಜಗತಾಮಾಧಾರ:। 2. ಕಾಲ. ಜಗತಾಮಾಶ್ರಯಭೂತತ್ವಾತ್। “ಜನ್ಯಾನಾಂ ಜನಕ: ಕಾಲೋ ಜಗತಾಮಾಶ್ರಯೋ ಮತ:” ಭಾಷಾಪಂ।

ಜಗದಾಯು(ಸ್) ಜಗದಾಯು(ಸ್) (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಜಗತಾಮಾಯು: ಆಯು:ಸಾಧನತ್ವಾತ್। ಪೃಷೋಂ ವಾ ಸಲೋಪ:। “ಅಹಂ ಕೇಸರಿಣ: ಕ್ಷೇತ್ರೇ ವಾಯುನಾ ಜಗದಾಯುಷಾ” ಭಾಂ ವನಂ ೧೪೯-೨೭।

ಜಗದೀಶ ಜಗದೀಶ (ಪುಂ) ಜಗತ್ತಿಗೆ ಒಡೆಯನಾದ ಪರ ಮಾತ್ಮ. ಜಗತಾಮೀಶ:। “ಜಗದಾದಿರನಾದಿಸ್ತ್ವಂ ಜಗದೀಶೋ ನಿರೀಶ್ವರ:” ಕುಮಾಂ ೨-೯।

ಜಗದೀಶಿತ್ ಜಗದೀಶಿತ್ಯ (ಪುಂ) ಜಗತ್ತಿಗೆ ಒಡೆಯನಾದ ಪರಮಾತ್ಮ. ಜಗತಾಮೀಶಿತಾ।

ಜಗದೀಶ್ವರ ಜಗದೀಶ್ವರ (ಪುಂ) ಜಗತ್ತಿಗೆ ಒಡೆಯನಾದ ಪರಮಾತ್ಮ. ಜಗತಾಮೀಶ್ವರ:। “ಗಮ್ಯೋಜಸೌ ಜಗದೀಶ್ವರೋ ಜಲನಿಧಿವಾರಾಂ ಪ್ರವಾಹೇರಿವ” ಪ್ರಬೋಧಂ ೫-೯।

ಜಗದೇಕನಾಥ ಜಗದೇಕನಾಥ (ಪುಂ) ಜಗತ್ತಿಗೆ ಏಕಮಾತ್ರ ನಾದ ದೊರೆ, ಒಬ್ಬನೇ ಆಗಿರುವ ರಾಜ, ಸಾರ್ವಭೌಮ.



ಜಗತಃ ಏಕೋ ನಾಥಃ | “ಏನೋನಿವೃತ್ತೇಂದ್ರಿಯವೃತ್ತಿರೇನಂ ಜಗಾದ  
ಭೂಯೋ ಜಗದೇಕನಾಥಃ” ರಘುಂ ೫-೨೩ |

ಜಗದ್ಗುರು ಜಗದ್ಗುರು (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಬ್ರಹ್ಮ.  
ಜಗತಾಂ ಗುರುಃ | “ಮೇನೇ ಪರಾರ್ಥಮಾತ್ಮಾನಂ ಗುಹ್ಯತ್ವೇನ ಜಗದ್ಗುರೋಃ”  
ರಘುಂ ೧೦-೬೪ | 2. ವಿಷ್ಣು. “ವಿಪದಃ ಸಂತು ನಃ ಶಶ್ವತ್  
ತತ್ರ ತತ್ರ ಜಗದ್ಗುರೋಃ | ಭವತೋ ದರ್ಶನಂ ಯತ್ಸ್ಯಾದಪುನರ್ಭವ-  
ದರ್ಶನಮ್” ಭಾಗಂ ೧-೮-೨೫ | 3. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ,  
“ಅಥ ತೇ ಮುನಯಃ ಸರ್ವೇ ಮಾನಯಿತ್ವಾ ಜಗದ್ಗುರೂಮ್” ಕುಮಾಂ  
೬-೧೫ | 4. ಚತುರ್ಮುಖಬ್ರಹ್ಮ. “ತಸ್ಮೇ ನಮೋ  
ಭಗವತೇ ವಾಸುದೇವಾಯ ಧೀಮಹಿ | ಯನ್ಮಾಯಯಾ ದುರ್ಜಯಯಾ ಮಾಂ  
ಬ್ರುವಂತಿ ಜಗದ್ಗುರೂಮ್” ಭಾಗಂ ೨-೫-೧೨ | 5. ನಾರದಮುನಿ,  
6. ಜಗತ್ತಿನ ಉಪದೇಶಕ, ಜಗದಾಚಾರ್ಯ.

ಜಗದ್ಬ್ರಹ್ಮ ಜಗದ್ಬ್ರಹ್ಮ (ವಿಂ) ಜಗತ್ತನ್ನು ಖಂಡಿಸು  
ವವಸ್ತು. ಜಗದ್ಬ್ರಹ್ಮ ದ್ರವ್ಯಾತಿ-ಬ್ರಹ್ಮ (ಜಿಹಾಂಸಾಯಾಮ್)  
“ವಿವಪ್” (೩-೨-೬೧) | “ನಿಜೋಜಸೋಜ್ಜಾಸಯಿತುಂ ಜಗದ್ಬ್ರಹ್ಮಾ  
ಮುಪಾಜಹೀಥಾ ನ ಮಹೀತಲಂ ಯದಿ” ಮಾಘಂ ೧-೩೭ |

ಜಗದ್ವಾತು ಜಗದ್ವಾತು (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ಪರಮೇಶ್ವರ, ಜಗ  
ತ್ತನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸುವ ಬ್ರಹ್ಮ. ಜಗತಾಂ ವಾತಾ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ಜಿಪ್” (೪-೧-೬) | -ವಾತಾ-ಧಾತೃಃ. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

ಜಗದ್ವಲ ಜಗದ್ವಲ (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಜಗತಾಂ ಬಲಂ  
ಯಸ್ಮಾತ್ | “ವಾತಸ್ತು ನಮಃಪ್ರಾಣೋ ಜಗದ್ವಲಃ ಭೌಗಿಕಾಂತಃ  
ಕಂಪಲಶ್ಮಾ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಜಗದ್ವಯೋನಿ ಜಗದ್ವಯೋನಿ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಮೇಶ್ವರ.  
ಪರಬ್ರಹ್ಮ. ಜಗತಾಂ ಚರಾಚರಾಣಾಂ ಯೋನಿಃ ಉತ್ಪತ್ತಿರ್ವಿಧಾನಮ್ |  
2. ಪರಶಿವ, ಈಶ್ವರ. “ಜಗದ್ವಯೋನಿರಯೋನಿರ್ವತ್ವಂ ಜಗದಂತೋ  
ನಿರಂತಕಃ” ಕುಮಾಂ ೨-೯ |

ಜಗದ್ವಂದ್ಯ ಜಗದ್ವಂದ್ಯ (ವಿಂ) ಜಗತ್ತಿನಿಂದ ನಮಸ್ಕರಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ, ಪ್ರಪಂಚವೇ ನಮಸ್ಕರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ.

ಜಗದ್ವಹಾ ಜಗದ್ವಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಗತ್ತೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಹೊತ್ತಿ  
ರುವ ಭೂಮಿ. ಜಗಂತಿ ವಹತಿ-ವಹ (ಪ್ರಾಪಣಂ) “ಅಚ್”  
(೩-೧-೧೩೪) |

ಜಗನ್ನಾಥ ಜಗನ್ನಾಥ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಬ್ರಹ್ಮ.  
ಜಗತಾಂ ನಾಥಃ | 2. ಪರಶಿವ, ಈಶ್ವರ. 3. ರಸಗಂಗಾಧರ  
ವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಜಗನ್ನಾಥ ಪಂಡಿತ. “ಜಗನ್ನಾಥಸ್ಯಾಯ  
ಸುರಧುನಿ ಸಮುದ್ಧಾರಸಮಯಃ” ಗಜಲಾಲಂ | (ನಂ) 4. ಜಗನ್ನಾಥ  
ಕ್ಷೇತ್ರ.

ಜಗನ್ನಿವಾಸ ಜಗನ್ನಿವಾಸ (ಪುಂ) ಜಗತ್ತಿಗೆಲ್ಲಾ ವಾಸಸ್ಥಾನ  
ನಾದ ವಿಷ್ಣು, ಕೃಷ್ಣ. ಜಗತಾಂ ನಿವಾಸಃ | “ಶ್ರಿಯಃ

ಪತಿಃ ಶ್ರೀಮತಿ ಶಾಸಿತುಂ ಜಗಜ್ಜಗನ್ನಿವಾಸೋ ವಸುದೇವಸಘನಿ”  
ಮಾಘಂ ೧-೧ | ಪ್ರಳಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸಕಲಜಗತ್ತೂ  
ಪರಮಾತ್ಮನ ಉದರದಲ್ಲಿರುವುದು. “ದಿಶೋ ನ ಜಾನೇ  
ನ ಲಭೇ ಚ ಶರ್ಮಂ ಪ್ರಸೀದ ದೇವೇಶ ಜಗನ್ನಿವಾಸ” ಗೀತಾ  
೧೧-೨೫ |

ಜಗನ್ನೇತ್ರ ಜಗನ್ನೇತ್ರ (ನಂ ದ್ವಿವಂ) ಸೂರ್ಯ ಮತ್ತು ಚಂದ್ರ.  
ಜಗತಾಂ ನೇತ್ರೇ | “ಭಗವಂತೋ ಜಗನ್ನೇತ್ರೇ ಸೂರ್ಯಾಚಂದ್ರಮಸಾವಪಿ”  
ಕಾವ್ಯಾಂ ೨-೧೭೨ |

ಜಗನ್ಮಾತು ಜಗನ್ಮಾತು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. 2. ಪಾರ್ವತಿ.  
ಜಗತಾಂ ಮಾತಾ |

ಜಗನ್ಮೋಹಿನಿ ಜಗನ್ಮೋಹಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಗತ್ತನ್ನು ಮೋಹ  
ಗೊಳಿಸುವ ಮಹಾಮಾಯೆ. ಜಗಂತಿ ಮೋಹಯತಿ-ಮುಹ  
(ವೇಚಿತ್ಯೇ) + ಣಿಕ್ “ಣಿನಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) | “ಜಿಪ್”  
(೪-೧-೫) | “ವೇದಾತ್ಮಾ ವಿಹಗೇಶ್ವರೋ ಯವನಿಕಾ ಮಾಯಾ  
ಜಗನ್ಮೋಹಿನಿ” ಚತುಃಶ್ಲೋಕಿ |

ಜಗರ ಜಗರ (ಪುಂ) ಯುದ್ಧಕವಚ. ಜಾಗತಿ-ಜಾಗೃ  
(ನಿದ್ರಾಕ್ಷಯೇ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) | ಪೃಷೋಂ |

ಜಗಲ ಜಗಲ (ಪುಂ) 1. ಮಂಗಾರಿ ಗಿಡ. 2. ಮೇದಕ,  
ಮದ್ಯವನ್ನು ತಯಾರಿಸಲು ಬೇಕಾದ ನಾನಾ ಪದಾರ್ಥಗಳು,  
ಮದ್ಯದ ಸಂಬಾರಗಳು. ಗಲ್ಯತೇ-ಗಲ (ಅದನೇ) ಯಜ್ಞಲ್ಕು  
“ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) | 3. ಪಿಷ್ಟಮದ್ಯ. (ವಿಂ) 4.  
ವಂಚಕ, ಕಪಟ, ಧೂರ್ತ. “ಜಗಲೋ ಮದನದ್ರುಮೇ | ಮೇದಕೇ  
ಪಿಷ್ಟಮದ್ಯೇ ಚ ಪುನಿ ಧೂತಂಭಿಧೇಯವತ್” ಮೇದಿಂ |

ಜಗಥ ಜಗಥ (ನಂ) 1. ಭೋಜನ, ಊಟ. ಅದ (ಭಕ್ಷಣಂ)  
ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪) | (ವಿಂ) 2. ಭಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ತಿನೆಲ್ಪಟ್ಟ. ಅದ ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) | ಅಭಯತ್ರ  
ಅದೋ “ಜಗಥಃ” ಆದೇಶಃ (೨-೪-೩೬) | “ಪಕ್ಷಿಜಗಥಂ  
ಗವಾಘ್ರಾತಮವಧೂತಮವಕ್ಷುತಮ್” ಮನುಂ ೫-೧೨೫ |

ಜಗಥಿ ಜಗಥಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೋಜನ, ಊಟ. ಅದ (ಭಕ್ಷಣಂ)  
ಭಾವೇ “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) | “ಜಗಥಿ” ಆದೇಶಃ  
(೨-೪-೩೬) | “ಅದತ್ವಾ ತು ಯ ಏತೇಮ್ಯಃ ಪೂರ್ವಂ ಭುಂಕ್ತೇ  
ವಿವಕ್ಷಣಃ | ಸ ಭುಂಜಾನೋ ನ ಜಾನಾತಿ ಶ್ವಗೃಧ್ರೇರ್ಜಗಥಿ-  
ಮಾತಮನಃ” ಮನುಂ ೩-೧೧೫ |

ಜಗಮಿ ಜಗಮಿ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ)  
“ಕ್ತಿನ್” (೩-೨-೧೭೧) | (ವಿಂ) 2. ಸಂಚರಿಸುವ,  
ನಡೆಯುವ, ಮುಂದೆಸಾಗುವ.

ಜಗಮಿವಸ್ ಜಗಮಿವಸ್ (ವಿಂ) ಹೊಂದಿರುವ, ಸೇರಿರುವ,  
ತಲುಪಿರುವ. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ವವಸ್” (೩-೨-೧೦೭) |



“ವಕ್ತುಂ ಮಾರ್ಗ ಕಿಲ ವಸುಮತೀ ಜಗಮುಷಸ್ತತ್ಪದಾಜ್ಞಾತ್ ಮಂಜೀರಸ್ಯ  
ತ್ವದುಪಮಸ್ತೇ: ದಕ್ಷಿಣಸ್ಯಾಸ್ಯ ತುಲ್ಯಮ್” ಹಂಸಂ ೨-೨೦।

ಜಘನ ಜಘನ (ನಂ) 1. ಹೆಂಗಸರ ಸೊಂಟದ ಮುಂಭಾಗ.  
ಹನ್ಯತೇ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತಿಯೊ:) “ಅಚ್” ಧಾತೌದ್ವಿತ್ವಂ ಚ  
(ಉಂ ೫-೩೨)। “ಆತ್ಮನೇವ ರುಧೇ ಕೃತಿವೇವ ಸ್ವೇದಸಂಜ್ಞಿ  
ವಸನಂ ಜಘನೇನ” ಮಾಘಂ ೧೦-೪೫। 2. ಕಟಿಪ್ರದೇಶ,  
ಒರೆ. “ನ ಹಿ ನ ವಿದಿತವದಮೇತದೀಯಸ್ತನಜಘನೋದ್ವಹೇ  
ತವಾಪಿ ಚೇತ:” ಮಾಘಂ ೭-೧೨। “ಗಲ್ದುದುಕುಲೇಜಘನೇ-  
ರಿವಾದಧೇ” ಕಿರಾಂ ೪-೧೨।

ಜಘನಕೂಪಕ ಜಘನಕೂಪಕ (ಪುಂ ದ್ವಿವಂ) ಹೆಂಗಸರ ಒರೆ  
ಗಳ ಮೇಲಿರುವ ಗುಳಿಗಳು.

ಜಘನಚಪಲಾ ಜಘನಚಪಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆರ್ಯಾವೃತ್ತದ  
ಒಂದು ಭೇದ. ಪೂರ್ವಾರ್ಧದಲ್ಲಿ ಪಕ್ಕಾರ್ಯಾಲಕ್ಷಣವೂ  
ಉತ್ತರಾರ್ಧದಲ್ಲಿ ಚಪಲಾರ್ಯಾಲಕ್ಷಣವೂ ಇರುವಲ್ಲಿ  
“ಜಘನಚಪಲಾ” ವೃತ್ತವಾಗುವುದು. “ಪ್ರಾಕ್ಪ್ರತಿಪಾದಿತಮರ್ಥ  
ಪ್ರಥಮೇ ಪ್ರಯಮೇತರೇ ತು ಚಪಲಾಯಾ:। ಲಕ್ಷಮ ಶ್ರಯೇತ ಸೌಕ್ತಾ  
ವಿಶುದ್ಧಯೋರ್ಭಿಜಘನಚಪಲಾ” ವೃಂ ೨೦।

ಜಘನಫಲ ಜಘನಫಲ (ಪುಂ) ಹುಸಿನಮರ. “ಪನಸೇ  
ಕಂಠಕಿಫಲೋ ಪಯೋಂಡೋ ಜಘನಫಲ:” ವೈಜಂ।

ಜಘನೇಫಲಾ ಜಘನೇಫಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಲ್ಪತ್ತಿಗಿಡ, ಬ್ರಹ್ಮ  
ಮಂಡಿ. ಜಘನ ಇವ ಮಧ್ಯಭಾಗೇ ಫಲಮಸ್ಯಾ:। “ಕಾಕೋ-  
ದುಂಬರಿಕಾ ಫಲ್ಗುರ್ಮಲಪೂರ್ವಜಘನೇಫಲಾ” ಅಮಂ।

ಜಘನ್ಯ ಜಘನ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಕೊನೆಯ ವರ್ಣದವನು.  
2. ಪೃಷ್ಠಭಾಗ, ಹಿಂಭಾಗ. “ತತೋ ಜಘನ್ಯಂ ಸಹಿತೆ:  
ಸಮನ್ವಿಭಿ: ಪುರಸ್ಥಾನೇಶ್ಚ ತಥೈವ ಸೈನಿಕೆ:” ರಾಮಾಂ।  
3. ರಾಜನ ಅನುಚರರಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ. “ಪಂಚಾಪರೇ ವಾಮನಕೋ  
ಜಘನ್ಯ: ಕುಂಜೋಪರೋ ಮಂಡಲಕೋಽಪಿ ಸಾಚೀ” ಬೃಹತ್ಸಂ  
೬೯-೩೧। (ನಂ) 4. ಶಿಶು, ಲಿಂಗ. (ವಿಂ) 5. ಅಧಮ,  
ನೀಚ, ಕೆಳಮಟ್ಟದ. ಜಘನಮಿವ “ಯ:” (೫-೩-೧೦೩)।  
“ಜಘನ್ಯಂ ಸೇವಮಾನಾಂ ತು ಸಂಯತಾಂ ವಾಸಯೇತ್ ಗೃಹೇ” ಮನುಂ  
೮-೩೬೫। 6. ಕೊನೆಯದಾದ. “ಜಘನ್ಯಂ ಮೇಹನೇ ಕಲಿಬಂ  
ಚರಮೇ ಗೃಹಿತೇನೈವತ್” ಮೇದಿಂ। 7. ನಿಂದ್ಯ, ಗರ್ಹಿತ.  
“ಜಘನ್ಯಂ ತು ಕುಪ್ಯಂ ಸ್ಯಾದಸಾರಂ ಲಘು ಫಲ್ಗು ಚ” ವೈಜಂ।

ಜಘನ್ಯಗುಣ ಜಘನ್ಯಗುಣ (ಪುಂ) ಗುಣತ್ರಯದಲ್ಲಿ ಕೊನೆಯ  
ದಾದ ತಮೋಗುಣ. ಜಘನ್ಯಶ್ವಾಸೋ ಗುಣಶ್ಚ। “ಜಘನ್ಯ-  
ಗುಣವೃತ್ತಿತ್ಯಾ ಅಧೋ ಗಚ್ಛಂತಿ ತಾಮಸಾ:” ಗೀತಾ ೧೪-೧೮।

ಜಘನ್ಯಜ ಜಘನ್ಯಜ (ಪುಂ) 1. ಕೊನೆಯ ವರ್ಣದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ-  
ದವನು. 2. ಕಿರಿಯ ಸಹೋದರ, ತಮ್ಮ. ಜಘನ್ಯೇ

ಜಾಯನೇ-ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭಾವಿ) “ಜ:” (೩-೩-೧೨)। “ಜಘನ್ಯಜೇ  
ಸ್ಯು: ಋಣಿಷ್ಠಯವೀಯೋಽವರಜಾನುಜಾ:” ಅಮಂ। (ವಿಂ) 3.  
ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. “ಜಘನ್ಯಜ: ಕನೀಯಸಿ। ವೃಷಲೇ ಚ”  
ಮೇದಿಂ।

ಜಘನ್ಯಭ ಜಘನ್ಯಭ (ನಂ) ಅರಿದ್ರೆ ಅಶ್ಲೇಷೆ ಸ್ವಾತಿ ಜ್ಯೇಷ್ಠೆ  
ಭರಣಿ ಶತಭಿಷೆ ಈ ಆರು ನಕ್ಷತ್ರಗಳು. ಆದ್ರಾಶಿಲೇಷಾ ತಥಾ  
ಸ್ವಾತಿಜ್ಯೇಷಾ ಚ ಭರಣಿ ತಥಾ। ಶತತಾರಾ ಜಘನ್ಯಾನಿ  
ತಾರಾಸು ಕಥಿತಾನಿ ವೆ”।

ಜಘನ್ಯಭಾವ ಜಘನ್ಯಭಾವ (ಪುಂ) ಕಡಮೆದರ್ಜೆ, ಕೆಳಮಟ್ಟ.  
ಜಘನ ಜಘ್ನಿ (ಪುಂ) ಅಸ್ತ, ಆಯುಧ. ಹನ (ಹಿಸಾಗತಿಯೊ:)  
“ಕಿನ್” (೩-೨-೧೭೧)। ದ್ವಿತ್ವಂ ಚ।

ಜಘ್ನು ಜಘ್ನು (ವಿಂ) ಘಾತುಕ, ಕೊಲ್ಲುವವನು. ಹನ  
(ಹಿಸಾಗತಿಯೊ:) “ಕು:” (ಉಂ ೧-೨೨)।

ಜಙ್ಗಮ ಜಂಗಮ (ವಿಂ) ಸಂಚರಿಸುವ, ತಿರುಗಾಡುವ.  
ಗಮ್ಲ (ಗತೀ) + ಯಜ್ “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ಮಾನ್ಯ:  
ಸ ಮೇ ಸ್ಥಾವರಜಙ್ಗಮಾನಾಂ ಸರ್ಗಸ್ಥಿತಿಪ್ರತ್ಯವಹಾರಹೇತು:” ರಘುಂ  
೨-೪೪।

ಜಙ್ಗಮಕುಟಿ ಜಂಗಮಕುಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭತ್ತಿ, ಕೊಡೆ. ಜಙ್ಗಮಾ  
ಕುಟಿವೆ। “ಕಾವಾರಿಜಙ್ಗಮಕುಟಿ ಭ್ರಮಕುಟಿ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಜಙ್ಗಮಗುಲಮ ಜಂಗಮಗುಲಮ (ಪುಂ) ಪದಾತಿಗಳ ಸಮೂಹ.  
ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಇರುವ ಕಾಲಾಳುಗಳ ಗುಂಪು. ಜಙ್ಗಮಾನಾಂ  
ಗುಲಮ:। “ಎವಂವಿಧಾನ್ವುಪೋ ದೇಶಾನ್ಗುಲಮೈ: ಸ್ಥಾವರಜಙ್ಗಮೈ:।  
ತಸ್ಕರಪ್ರತಿಷೇಧಾರ್ಥಂ ಚಾರೇಶ್ವಾಪ್ಯನುಚಾರಯೇತ್” ಮನುಂ ೯-೨೬೬।

ಜಙ್ಗಮೇತರ ಜಂಗಮೇತರ (ವಿಂ) ಸ್ಥಿರವಾದ, ಚಲಿಸ  
ದಿರುವ. ಜಙ್ಗಮಾದಿತರ:।

ಜಙ್ಗಲ ಜಂಗಲ (ವಿಂ) 1. ನಿರ್ಜನಪ್ರದೇಶ. (ನಂ) 2.  
ಅರಣ್ಯ, ಕಾಡು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ -ಲಾ. 3. ವ್ಯಾಂಸ.  
“ಜಙ್ಗಲಂ ನಿಜಂನೇ ದೇಶೇ ತ್ರಿಲಿಂಗಾಂ ಪಿಶಿತೇ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” ಮೇದಿಂ।

ಜಙ್ಗಲ ಜಂಗಲ (ಪುಂ) 1. ಜಮೀನಿಗೆ ನೀರು ಕಟ್ಟಲು  
ಅವರ ಅಂಚಿನಲ್ಲಿ ಮಾಡಿರುವ ಅಳಿವೆ ಮತ್ತು ಅವರ ಮೇಲೆ  
ಸಂಚರಿಸಲು ಮಾಡಿರುವ ದಾರಿ, ಜಲದಾರಿ. 2. ಅಣೆ  
ಕಟ್ಟು. ನೀರು ತಡೆಯಲು ಕಟ್ಟುವ ಕಟ್ಟೆ.

ಜಙ್ಗಿತ ಜಂಗಿತ (ಪುಂ) ಜಾತಿಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟಿರುವವನು.  
“ಹೀನವರ್ಣಾಸ್ತು ಜಙ್ಗಿತಾ:” ವೈಜಂ।

ಜಙ್ಗಾ ಜಂಘಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೊಣಕಾಲು, ಕಣಕಾಲು. ಜನಿ  
(ಪ್ರಾದುರ್ಭಾವಿ) “ಅಚ್” ಜಙ್ಗಾದೇಶಶ್ಚ (ಉಂ ೫-೩೧)  
“ಆಕ್ರಮ್ಯೇಕಾಮಗ್ರಪಾದೇನ ಜಙ್ಗಾಮನ್ಯಾಮುಕ್ತವೇರಾದದಾನ: ಕರೇಣ”  
ಮಾಘಂ ೧೮-೫೧।



ಜಜ್ಞಾಕರ ಜಂಘಾಕರ (ಪುಂ) 1. ಓಡುವವನು, ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆಯುವವನು. ಜಜ್ಞಾ ತತ್ಸಾಧ್ಯಗತಿ ಕರೋತಿ - ಡು ಕ್ಕು (ಕರಣ) "ಠ:" (3-2-21)। 2. ಸಂಚಾರ ರೂಪದ ತೆರಿಗೆ, ದಾರಿ ನಡೆದು ತೀರಿಸಲ್ಪಡುವ ತೆರಿಗೆ.

ಜಜ್ಞಾಕರೀಕ ಜಂಘಾಕರೀಕ (ವಿಂ) ಓಡುವ ಉದ್ಯೋಗ ದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು, ದಾರಿ ನಡೆಯುವುದರಿಂದ ಬಂದ ಕೂಲಿಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಜಜ್ಞಾಕರೋತ್ಯಾಸ್ತಿ "ಠ್" (4-2-114)।

ಜಜ್ಞಾತ್ರಾಣ ಜಂಘಾತ್ರಾಣ (ನಂ) ಮೊಣಕಾಲಿನ ಕವಚ, ಕಾಲುಜೀಲ. ಜಜ್ಞಾ ತ್ರಾಯತೇನ - ತ್ರೈ (ಪಾಲನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-113)।

ಜಜ್ಞಾಬಲ ಜಂಘಾಬಲ (ನಂ) ಮೊಣಕಾಲಿನ ಬಲ, ಕಣ ಕಾಲಿನ ಶಕ್ತಿ, ಜಜ್ಞಾಬಲ ಬಲಮ್।

ಜಜ್ಞಾಮಾತ್ರ ಜಂಘಾಮಾತ್ರ (ವಿಂ) ಮೊಣಕಾಲಿನ ಪ್ರಮಾಣದ, ಮೊಣಕಾಲಿನಷ್ಟು ಅಳತೆಯುಳ್ಳ. ಜಜ್ಞಾ ಪ್ರಮಾಣಮಸ್ಯ "ಮಾತ್ರ" (4-2-36)।

ಜಜ್ಞಾಲ ಜಂಘಾಲ (ವಿಂ) 1. ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆಯುವವನು, ಓಡುವವನು. 2. ಓಡುವ ಉದ್ಯೋಗದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಅತಿಶಯಿತಾ ಜಜ್ಞಾಸ್ತಸ್ಯ "ಲ್" (4-2-99)।

ಜಜ್ಞಿಲ ಜಂಘಿಲ (ವಿಂ) "ಜಜ್ಞಾಲ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಅತಿಶಯಿತಾ ಜಜ್ಞಾಸ್ತಸ್ಯ "ಫಲ್" (4-2-100)।

ಜಜ ಜಜ (ಪುಂ) ಯೋಧ, ಸೈನಿಕ. ಜಜತಿ - ಜಜ (ಯುದ್ಧ) "ಅ" (3-1-134)। "ಜಜೌಜೌಜಾಜಿಜಿಜ್ಜಾಜಿ" ಮಾಘಂ 19-3।

ಜಜಿ ಜಜಿ (ವಿಂ) 1. ಅಂಕುರಿಸುವ. 2. ತಿಳಿದಿರುವ.

ಜಜ್ಜ ಜಂಜ (ಪುಂ) 1. ಯೋಧ, ಸೈನಿಕ. ಜಜಿ (ಯುದ್ಧ) "ಅ" (3-1-134)। 2. ಯುದ್ಧ. ಜಜಿ ಭಾವೇ "ಘ" (3-3-12)।

ಜಜ್ಜನ ಜಂಜನ (ವಿಂ) ಪುನರ್ಜನ್ಮವುಳ್ಳ, ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಹುಟ್ಟುವ. ಜನೌ (ಪ್ರಾಕೃತವೇ) ಯಜ್ಞಲ್ಕು "ಅ" (3-1-134)। ಪೃಷ್ಠಂ।

ಜಜ್ಜಪೂಕ ಜಂಜಪೂಕ (ಪುಂ) ತಪಸ್ವಿ, ಮಂತ್ರಗಳನ್ನು ಜಪಿಸುವವನು. ಜಪ (ವ್ಯಕ್ತಿಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಯಜ್ಞ "ಋಕ:" (3-2-166)। ನುಗಾಗಮ: (9-4-66)। "ಜಜ್ಜಪೂಕ-ಮಹಿಸ್ತಯ ಜಘಾನ" ಯಾದಂ 21-40।

ಜಟಾ ಜಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಿಯಮದಲ್ಲಿರುವವರ ಸಿಕ್ಕುಕಟ್ಟಿ ಹೆಣೆದುಕೊಂಡಿರುವ ತಲೆಕೂದಲು, ಜಡೆ. ಜಟ (ಸಂಭಾತೆ) "ಅ" (3-1-134)। "ದಧಾನಮಘೋರುಹೇಕಸರಣ್ಣಿಜಟಾ:

ಶರಚ್ಚಂದ್ರಮರೀಚಿರೋಚಿಷಮ್" ಮಾಘಂ 1-4। 2. ಬೇರುಗಳ ಸಮೂಹ, ಗೊಂಚಲಾಗಿರುವ ಬೇರು. 3. ಜಟಾಮಾಂಸಿ. 4. ಬೇರು. 5. ಶಾಖೆ, ರೆಂಬೆ. 6. ಶತಾವರಿ ಗಿಡ. 7. ವೇದಪಾಠದ ಒಂದು ಕ್ರಮ. -ಠೀ -ಟೀ. 8. ಪ್ಲಕ್ಷ ವೃಕ್ಷ, ಜುಲಿಗಿಡ. "ಜಟಾ ಲಗನಕವೇ ಮೂಲೇ ಮಾಂಸಾಂ ಪಲಕ್ಷೇ ಪುನರ್ಜಟಿ" ಮೇದಿಂ।

ಜಟಾಜೂಟ ಜಟಾಜೂಟಿ (ಪುಂ) ಹೆಣೆದು ಅಂಟಿಸಿದ ತಲೆಯ ಕೂದಲು, ಜಟೆಗಳ ಸಮೂಹ. ಜಟಾನಾಂ ಜೂಟ:। "ಜಟಾ-ಜೂಟಾಪಿಠಂ ಭುಜಗಪತಿಭೋಗೋಪಮಭುಜಂ ದದರ್ಶ ಶ್ರೀಮಂತಂ ವಿಪಿನ-ಭುವಿ ಸೀತಾಸಹಚರಮ್" ಚಂ ರಾಂ।

ಜಟಾಜ್ವಾಲ ಜಟಾಜ್ವಾಲ (ಪುಂ) ದೀಪ. ಜಟೇವ ಜ್ವಾಲಾಸ್ತಸ್ಯ। "ಜಟಾಜ್ವಾಲೋ ದಶಾಕರ್ಷಿ ಕಥಿತೋ ಬಹುದೃಶ್ವಭಿ:" ಹಾರಾಂ।

ಜಟಾಟಿ ಜಟಾಟಿಂಕ (ಪುಂ) ಪರಿಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. ಜಟಾ ಟಿಕ್ಕು ಇವಾಸ್ಯ। "ಕಂಠಮದರೇವತಜಟಾಟಿಕ್ಕಾವ್ಯಯಾ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಜಟಾಟೀರ ಜಟಾಟೀರ (ಪುಂ) ಪರಿಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. ಜಟಾಮತಿ - ಅಟ (ಗತೌ) "ಫೀರ್ನ್" ಬಾಹುಂ।

ಜಟಾಧರ ಜಟಾಧರ (ಪುಂ) 1. ಪರಿಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. ಜಟಾನಾಂ ಧರ:। 2. ತಪಸ್ವಿ, ಮುನಿ. 3. ದಕ್ಷಿಣ ಭಾರತದ ಒಂದು ದೇಶ. "ಕೌಶ್ವದ್ವೀಪಜಟಾಧರಕಾವೇರ್ಯೋ ರಿಷ್ಯಮುಕ್ತಶ್ಚ" ಬೃಹಸಂ 14-13। (ವಿಂ) 4. ಜಟೆಗಳನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ. "ವಿಹಾಯ ಲಕ್ಷ್ಮೀಪತೀಲಕ್ಷ್ಮಮ ಕಾರ್ಮುಕಂ ಜಟಾಧರ: ಸನ್ ಜುಹುಧಿಹ ಪಾವಕಮ್" ಕಿರಾಂ 1-44।

ಜಟಾಧಾರಿನ್ ಜಟಾಧಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಜಟೆಗಳನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ. ಜಟಾ: ಧರತಿ-ಧೃನ್ (ಧಾರಣೆ) "ಞಿಞಿ:" (3-1-134)। "ನಷ್ಟಶೌಚಾ ಮೂಢಧಿಯೋ ಜಟಾಭಸ್ಮಾಸ್ಥಿ-ಧಾರಿಣ:" ಭಾಗಂ 4-2-29। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಫ್" (4-1-4)। -ಧಾರಿಣಿ -ಧಾರಿಣೀ.

ಜಟಾಮಂಡಲ ಜಟಾಮಂಡಲ (ನಂ) ಜಟೆಗಳ ಸಮೂಹ. ಜಟಾನಾಂ ಮಂಡಲಮ್। "ಅಸಂಖ್ಯಾಪಿ ಶಕ್ತುಂತನಿಡಿನಿಚಿತಂ ವಿಭ್ರಜ್ಜಟಾಮಂಡಲಮ್" ಶಾಕುಂ 9-11।

ಜಟಾಮಾಂಸೀ ಜಟಾಮಾಂಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುಗಂಧಮುಸ್ಟಿ.

ಜಟಾಯು(ಸ್) ಜಟಾಯು(ಸ್) (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಪಕ್ಷಿರಾಜ, ವಿನತೆಯ ಮಗನಾದ ಅರುಣನಿಗೆ ಶೈಲಿನಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿವ ಒಬ್ಬ ಮಗ, ಸಂಪಾತಿಯ ತಮ್ಮ. [ಸಂಪಾತಿಯೂ ಜಟಾಯುವೂ ತಮ್ಮ ವೇಗವನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಅಂತರಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಹಾರಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಸೂರ್ಯನ ತಾಪವನ್ನು ಸಹಿಸಲಾರದೆ ಜಟಾಯುವು ದಂಡಕಾರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದನು,



ಬಳಿಕ ಚೇತರಿಸಿಕೊಂಡು ಅಲ್ಲೇ ಒಂದು ಗುಹೆಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿದ್ದನು. ಅಗಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿಯ ಆಶ್ರಮದಿಂದ ಪಂಚವಟಿಗೆ ಸೀತಾಲಕ್ಷ್ಮಣರೊಡನೆ ಬರುತ್ತಿದ್ದ ಶ್ರೀರಾಮನಿಗೆ ಜಟಾಯುವು ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡು ತಾನು ದಶರಥನ ಮಿತ್ರನೆಂದು ತನ್ನ ಪರಿಚಯ ಮಾಡಿಕೊಟ್ಟನು. ದಂಡಕಾರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಖರದೂಷಣಾದಿಗಳನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದ ಕಾರಣ ಕುಷಿತನಾದ ರಾವಣನು ಸೀತೆಯಿಂದ ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು ಆಗಲಿಸಿ ಸೀತಾಪಹರಣಮಾಡಿ ಕೊಂಡೊಯ್ಯುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಸೀತೆಯನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಲು ರಾವಣನೊಡನೆ ಹೋರಾಡಿ ಪ್ರಾಣ ತೆತ್ತನು. ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಾಣದೆ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರು ಅವಳನ್ನು ಹುಡುಕುತ್ತಾ ಒಂದಾಗ ಜಟಾಯುವಿನಿಂದ ಈ ವೃತ್ತಾಂತವನ್ನು ತಿಳಿದರು. ಶ್ರೀರಾಮನು ಅವನಿಗೆ ಸಂಸ್ಕಾರಗಳನ್ನು ಮಾಡಿ ಸದ್ಗತಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿಸಿದನು.] “ಪರಿಶ್ರಾಂತಸ್ಯ ಮೇ ಪಕ್ಷಿ ಛಿತ್ವಾ ಖಜ್ಜೇನ ರಾವಣಃ | ಸೀತಾಮಾಧಾಯ ವೇದೇಹೀಮುತ್ಪಪಾತ ವಿಹಾಯಸಮ್” ರಾಮಾಂ | “ಸ್ವಯಮಪಿ ಶರಭಙ್ಗಸ್ತೀಕೃತಾಂ ಭಙ್ಗಹೀನಾಂ ಸಪದಿ ಗತಿಮವಾಪ್ತಃ | ಸಂಹತಾಯುರ್ಜಟಾಯುಃ | ನಯನಸಲಿಲಮಿಶ್ರಂ ರಾಮಹಸ್ತೇನ ದತ್ತಂ ದಶರಥದ್ವರವಾಪಂ ಪ್ರಾಪ ನೈವಾಪಮಃ” ಚಂ ರಾಂ |

**ಜಟಾಲ ಜಟಾಲ (ಫಂ)** 1. ವಟವೃಕ್ಷ, ಆಲದಮರ. ಜಟಾ: ಸನ್ಯಸ್ಯ “ಲಕ್” (4-2-16) | 2. ಗುಗ್ಗುಳ, ಧೂಪದ ಪುಡಿ. (ವಿಂ) 3. ಜಟಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ-ಲಾ. 4. ಜಟಾಮಾಂಸಿ, ಸುಗಂಧಮುಷ್ಟೆ.

**ಜಟಾವತ್ ಜಟಾವತ್ (ವಿಂ)** 1. ಜಟಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಜಟಿಗಳನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ. ಜಟಾ ಅಸ್ಯ ಸಂತಿ “ಮತುಪ್” (4-2-18) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಜಿಪ್” (4-1-6) | -ವತಿ -ವತಿ. 2. ಜಟಾಮಾಂಸಿ, ಸುಗಂಧಮುಷ್ಟೆ.

**ಜಟಾಸುರ ಜಟಾಸುರ (ಫಂ)** ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. ಜಟಾಯುಕ್ತೋಸುರಃ | [ಇವನು ಬ್ರಾಹ್ಮಣವೇಷವನ್ನು ತಾಳಿ ಧರ್ಮರಾಜನ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ಕಾಲ ಧರ್ಮವಿಚಾರವಾಗಿ ಚರ್ಚೆ ಮಾಡುತ್ತ ಅವರಿಗೆ ನಂಬಿಕೆ ಹುಟ್ಟಿಸಿ ಅಲ್ಲೇ ವಾಸಮಾಡುತ್ತಿದ್ದನು. ಭೀಮಸೇನನು ಇಲ್ಲದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಪಾಂಡವರನ್ನು ಕೊಂದು ದ್ರೌಪದಿಯನ್ನು ಅಪಹರಿಸಲು ಮಾಡಿದ ಇವನ ಸಂಚನ್ನು ತಿಳಿಯದೆ ಯುಧಿಷ್ಠಿರನು ಇವನನ್ನು ಉಪಚರಿಸುತ್ತಲೇ ಇದ್ದನು. ಕೊನೆಗೆ ಅರ್ಜುನ ಮತ್ತು ಭೀಮಸೇನ ಇಬ್ಬರೂ ಇಲ್ಲದಿದ್ದಾಗ ಇವನು ದ್ರೌಪದಿ ಧರ್ಮರಾಜ ನಕುಲ ಸಹದೇವರನ್ನು ಹೊತ್ತುಕೊಂಡು ಹೊರಟೇಬಿಟ್ಟನು. ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಹಣ್ಣುಗಳನ್ನು ತರಲು ಹೊರಟಿದ್ದ ಭೀಮಸೇನನು ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಈ ಅಸುರನನ್ನು

ಕೊಂದು ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಬಿಡಿಸಿಕೊಂಡು ಬಂದನು.] ವನಂ 141

**ಜಟಿ ಜಟಿ (ಫಂ)** 1. ವಟವೃಕ್ಷ, ಆಲದಮರ. ಜಟ (ಸಂಭಾತೆ) “ಇನ್” (3-4-116) | 2. ಜಟಿ, ಹೆಣೆದು ಅಂಟು ಹಾಕಿದ ತಲೆಯ ಕೂದಲು. 3. ಸಮೂಹ, ರಾಶಿ, ಗುಂಪು.

**ಜಟಿನ್ ಜಟಿನ್ (ಫಂ)** 1. ತಪಸ್ವಿ, ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುವವನು, ಮುನಿ. ಜಟಾ ಅಸ್ಯ ಸಂತಿ “ಇನಿಃ” (4-2-116) | 2. ಪ್ಲಕ್ಷವೃಕ್ಷ, ಜುಲೀಂಗಿಡ. (ವಿಂ) 3. ಜಟಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಜಟಿಗಳನ್ನು ಧರಿಸಿದ. “ಸುರಾಪಾನಾಪನುತ್ಯರ್ಥಂ ವಾಲವಾಸಾ ಜಟಿ ಧವಜಿ” ಮನುಂ 11-92 |

**ಜಟಿಲ ಜಟಿಲ (ಫಂ)** 1. ಸಿಂಹ. ಜಟಾ ಅಸ್ಯ ಸಂತಿ “ಇಲಕ್” (4-2-100) | 2. ತಪಸ್ವಿ, ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುವವನು, ಮುನಿ. 3. ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ. “ಜಟಿಲಂ ಚಾನಧೀಯಾನ್ ದುರ್ಬಲಂ ಕಿತವಂ ತಥಾ” ಮನುಂ 3-141 | 4. ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಹೋತ (ಮೇಕೆ) ಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಕುಟಿಲ: ಕುಟಕ: ಜಟಿಲ: ಮತ್ತು ವಾಮನ: ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಹೋತಗಳು ಲಕ್ಷ್ಮೀಪುತ್ರರೆಂದು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. “ಕುಟಕ: ಕುಟಿಲಃಚೈವ ಜಟಿಲೋ ವಾಮನಸ್ತಥಾ | ತೇ ಚತ್ವಾರ: ಶ್ರಿಯ: ಪುತ್ರಾ: ನಾಲಕ್ಷ್ಮೀಕೇ ವಸಂತಿ ಹಿ” ಬೃಹತ್ಸಂ 64-9 | ಇಂತಹ ಮೇಕೆಗಳು ದರಿದ್ರನ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವುದಿಲ್ಲ. (ವಿಂ) 5. ಜಟಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. “ಜಟಿಲಾನ್ ಕೃತ್ತಿವಸನಾನ್ ನಿಯಮಂ ತೀವ್ರಮಾಸ್ಥಿತಾನ್” ಯಾದಂ 16-40 | 6. ಕೂದಲುಗಳಿಂದ ತುಂಬಿದ. “ಮುಂಡಾರ್ಥಮುಂಡಾಜ್ಜಟಿಲಾನ್ ಅಶುಚಿನ್ ಜಟಿಲಾನನಾನ್ | ಮ್ಲೇಚ್ಛಾನಶಾತಯಃಸರ್ವಾನ್ಸಮೇತಾನಸ್ತ್ರತೇಜಸಾ” ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ 93-46 | 7. ತಿರುಚೆಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಿ ಹೊಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. “ಅಭೀಕ್ಷಣಾವಗಾಹಕಪಿಶಾನ್ ಜಟಿಲಾನ್ ಕುಟಿಲಾಲ್ಕಾನ್ | ಆತ್ಮಾನಂ ಚೋಗ್ರತಪಸಾ ಬಿಭ್ರತೀ ಚೀರಿಣಂ ಕೃಶಮ್” ಭಾಗಂ 3-33-14 | 8. ಬಹಳ ತೊಡಕಾಗಿರುವ, ಬಗೆಹರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ-ಲಾ. 9. ಜಟಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹೆಂಗಸು. 10. ಹಿಪ್ಪಲಿ. 11. ಬಜೆ. 12. ಜಟಾಮಾಂಸಿ, ಸುಗಂಧಮುಷ್ಟೆ. “ತಪಸ್ವಿನೀ-ಜಟಾಮಾಂಸಿ ಜಟಿಲಾ” ಅಮಂ | 13. ಒಂದು ಗೆಡ್ಡೆಯೊಳಗೆ ಅನೇಕ ಮೋತೆಗಳುಳ್ಳ ಕೊನ್ನಾರಿ. “ಜಟಿಲಾ ಪಿಪ್ಪಲಿಮಾಂಸ್ಯೋರ್ಜಟಾಯುಕ್ತೇ ಚ ವಾಚ್ಯವತ್” ಮೇದಿಂ |

**ಜಟಿಲೀಕೃತ ಜಟಿಲೀಕೃತ (ವಿಂ)** ತೊಡಕಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಗೆಹರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಜಟಲ ಜಟಲ (ಫಂ)** ಮೈಮೇಲಿನ ಹುಟ್ಟು ಮಚ್ಚೆ, ಸಂಗಾತಿ, ಮತ್ತಿ, ಜಟ (ಸಂಭಾತೆ) “ಲಕ್” ಬಾಹ್ಯಂ | ಪೃಷಂ ಟಸ್ಯ



ಓ ವಾ। ಜಠುಲಃ ಜಡುಲಃ. "ಜಠು(ಠು)ಲಃ ಕಾಲಕಃ ಪಿಪ್ಪಲಃ" ಅಮಂ।

ಜಠರ ಜಠರ (ಪುಂ) 1. ಕುಕ್ಷಿ, ಹೊಟ್ಟೆ. ಜಾಯತೇಜಃ ಜನ್ತುಗಂಭಿಂ ವಾ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಅರಃ" ಠಾದೇಶಶ್ಚ (ಠಂ ೪-೩೮)। "ಜಠರಂ ಕೌ ನ ವಿಭತಿ ಕೇವಲಮ್" ಪञ्ಚತಂ। (ಪುಂ) 2. ವೃದ್ಧ, ಮುದುಕ. 3. ಒಂದು ದೇಶ. "ಜಠರಾಃ ಕುಕುರಾಃ ಕೇವ ಸುದರ್ಶನಾಶ್ಚ ಭಾರತ" ಭಾಂ ಭಿಷಂ ೯-೪೨। (ವಿಂ) 4. ಕರ್ಕಶವಾದ, ಕಠಿನವಾದ. "ಜಠರಃ ಕುಕ್ಷಿವೃದ್ಧಯಃ। ಕಠಿನೇ ಚ" ಹೇಮಂ। "ಆಸ್ತೇಸ್ಯಾ ಜಠರೇ ವೀರ್ಮವಿವಿಹೃಯ ಸುರದ್ವಿಃ" ಭಾಗಂ ೭-೭-೯।

ಜಠರಗದ ಜಠರಗದ (ಪುಂ) ಉದರವ್ಯಾಧಿ, ಹೊಟ್ಟೆಯಬೇನೆ. ಜಠರಜ್ವಲನ ಜಠರಜ್ವಲನ (ಪುಂ) ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಅಹಾರವನ್ನು ಜೀರ್ಣಮಾಡುವ ಅಗ್ನಿ.

ಜಠರನುಡ್ ಜಠರನುಡ್ (ಪುಂ) ಉದರವನ್ನು ಕೆರಳಿಸಿ ಉದರ ಬೇನೆಯನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ ಕಕ್ಕಿ ಗಿಡ. ಜಠರ ನುದತಿ-ಣುದ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬)।

ಜಠರಾಗ್ನಿ ಜಠರಾಗ್ನಿ (ಪುಂ) ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಅಹಾರವನ್ನು ಜೀರ್ಣಮಾಡುವ ಅಗ್ನಿ. ಜಠರಸ್ಥಿತೋಗ್ನಿಃ। "ಅಗ್ನರಸೌ ಜಠರಾಗ್ನಿನಾ ಪಚ್ಯಮಾನೋ ರಕ್ತತಾಂ ಪ್ರತಿಪಛತೇ"। ಜಠರಾಗ್ನಿಯು ವಾಯುವಿನಿಂದ ಪ್ರಜ್ವಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಅನ್ನವನ್ನು ಪಚನಮಾಡುವುದು. ವಾಯುವು ಅನ್ನದ ಮಧ್ಯವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ರಸಭಾಗವನ್ನೂ ಮಲಭಾಗವನ್ನೂ ಬೇರ್ಪಡಿಸುವುದಲ್ಲದೆ ಜಠರಾಗ್ನಿಯ ಮೇಲುಭಾಗದಲ್ಲಿ ಜಲಾಂಶವನ್ನು ಇರಿಸಿ ಅನ್ನವನ್ನು ಅದರ ಮೇಲುಗಡೆ ಇರಿಸುವುದು. ಜಲಾಂಶದ ಕೆಳಗಡೆ ತಾನು (ವಾಯುವು) ಇದ್ದುಕೊಂಡು ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಬಲಪಡಿಸುವುದು. ಈ ರೀತಿ ವಾಯುವಿನಿಂದ ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಅಗ್ನಿಯು ಜಲವನ್ನು ಬಿಸಿ ಮಾಡುವುದರಿಂದ ಅನ್ನವು ಸುಖವಾಗಿ ಪಚನವಾಗುವುದು. ಆಗ ಅನ್ನರಸವೂ ಮಲಭಾಗವೂ ಬೇರೆಬೇರೆಯಾಗುವುದು. ಈ ಅನ್ನರಸವು ನಾಡಿಗೆಗಳಲ್ಲಿ ತುಂಬಿಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಆಯುಷ್ಯಂ ಭುಕ್ತಮಾಹಾರಂ ಸ ವಾಯುಃ ಕುರುತೇ ದ್ವಿಧಾ। ಸಂಪ್ರವಿಶ್ಯಾನಾಮಧ್ಯಂ ತು ಪೃಥಕ್ ಕಿಡ್ ಪೃಥಕ್ ಮಲಮ್। ಅಗ್ನೇರೂರ್ವಂ ಜಲಂ ಸ್ಥಾಪ್ಯ ತದಗ್ನಂ ಚ ಜಲೋಪರಿ। ಜಲಸ್ಯಾಧಃ ಸ್ವಯಂ ಪ್ರಾಣಃ ಸ್ಥಿತವಾಗ್ನಿಂ ಧಮತೇ ಶನೇಃ। ವಾಯುನಾಽಽಧ್ಮಾಯಮಾನೋಗ್ನಿರತ್ಯುಷ್ಣಂ ಕುರುತೇ ಜಲಮ್। ಅಗ್ನಂ ತದ್ಗುಣತೋಯೇನ ಸಮಂತಾತ್ ಪಚ್ಯತೇ ಪುನಃ। ದ್ವಿಧಾ ಭವತಿ ತತ್ ಪಕ್ವಂ ಪೃಥಕ್ ಕಿಡ್ ಪೃಥಕ್ ಮಲಮ್। ರಸೇನ ತೇನ ತಾ ನಾಡಯಃ ಸಂಪೂರ್ಯಂತೇ ಕ್ರಮೇಣ ಚ। ಪ್ರತರ್ಪಯಂತಿ ಸಂಪೂರ್ಣಾಸ್ತಾಶ್ಚ ದೇಹಂ ಸಮಂತತಃ" ಇತಿ ಯೋಗಂ।

ಜಠರಾಮಯ ಜಠರಾಮಯ (ಪುಂ) ಉದರರೋಗ, ಹೊಟ್ಟೆಯ ಬೇನೆ.

ಜಡ ಜಡ (ಪುಂ) 1. ಹಿಮಗಾಲ, ಚಳಿಗಾಲ. ಜಲತಿ-ಜಲ (ಧಾತನೆ) "ಅವ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಲಡಯೋರಭೇದಃ। (ನಂ) 2. ಸೀಸಲೋಹ. 3. ಜಲ, ನೀರು. "ನೀಚಪ್ರವಣತಾ ಲಕ್ಷಿಮ ಜಡಜಾಯಾಸ್ತವೋಚಿತಾ" ಚಂದ್ರಾಂ। (ವಿಂ) 4. ಮೂರ್ಖ, ವಿವೇಕವಿಲ್ಲದವನು. 5. ಮಂದಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. "ಜಡಾನಪ್ಯನುಲೋಮಾರ್ಥಾನ್ ಪ್ರವಾಚಃ ಕೃತಿಗಿರಃ" ಮಾಘಂ ೨-೨೫। 6. ಸ್ತಬ್ಧವಾದ, ನಿಶ್ಚಲವಾದ, ಕೆಲಸಮಾಡದಿರುವ, ಚಟುವಟಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. "ಕಣಠಃ ಸ್ತಮ್ಭಿತ-ಬಾಣವೃತ್ತಿಕಲ್ಪಶ್ಚಿಂತಾಜಡಂ ದರ್ಶನಮ್" ಶಾಕ್ರುಂ ೪-೫। 7. ಶೀತಲವಾದ, ತಣ್ಣಗಿರುವ. "ಪರಾಮೃಶನ್ ಹರ್ಷಜಡೇನ ಪಾಣಿನಾ ತದೀಯಮ್ ಕುಲಿಶಗ್ರಣಾಙ್ಕಿತಮ್" ರಘುಂ ೩-೬೮। 8. ಮೂಗ, ಮಾತಾಡುವ ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದವನು. 9. ಪೆದ್ದ, ದಡ್ಡ, ಮಂಕ. "ನಾಪೃಠಃ ಕಸ್ಯಚಿದ್ಬ್ರೂಯಾನ್ಮಾನ್ಯಾಯೇನ ಪೃಚ್ಛತಃ। ಜಾನನ್ನಪಿ ಹಿ ಮೇಧಾವಿ ಜಡವಲೋಕ ಆಚರೇತ್" ಮನುಂ ೨-೧೧೦। 10. ಜೀವವಿಲ್ಲದ, ಅಜೀತನ, ಜೀವಿ ವರ್ಗಕ್ಕೆ ಸೇರದಿರುವ, 11. ಕಾವಿಲ್ಲದ, ಕೊರೆಯುವಷ್ಟು ಶೀತವಾದ, ಮಂಜುಕವಿದಿರುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಙಾ -ಙಾ. 12. ನಸುಗುನ್ನಿ ಗಿಡ. "ಜಡೋ ಮೂರ್ಛೆ ಹಿಮಾಗ್ರಾತೇ ಜಡಾ ಸ್ಯಾನ್ಮೂಕಶಿಮ್ಬಿಕಾ" ಹೇಮಂ।

ಜಡಕ್ರಿಯ ಜಡಕ್ರಿಯ (ವಿಂ) ನಿಧಾನವಾಗಿ ಕೆಲಸಮಾಡುವ, ಮಂದಪ್ರಕೃತಿಯವನಾದ. ಜಡಸ್ಯೇವ ಕ್ರಿಯಾ ಯಸ್ಯ।

ಜಡತಾ ಜಡತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಟುವಟಿಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಜಡಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। 2. ಶೀತವಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ದಡ್ಡನಾಗಿರುವಿಕೆ. 4. ಮೂಗನಾಗಿರುವಿಕೆ. 5. ಜಲರೂಪವಾಗಿರುವಿಕೆ. "ತ್ವಃ" (೪-೧-೧೧೯)। ಜಡತ್ವಮ್ ಜಡತ್ವಮ್. "ಕಿಂ ನ ದರ್ಶಿತಮನೇನೋದ್ಗಚ್ಛತಾ ಜಡತ್ವಮ್" ರತ್ನಾಂ ೩।

ಜಡಧೀ ಜಡಧೀ (ವಿಂ) 1. ಅವಿವೇಕಿ. 2. ಮಂದಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. ಜಡಾ ಧೀರಸ್ಯ।

ಜಡಪ್ರಕೃತಿ ಜಡಪ್ರಕೃತಿ (ವಿಂ) ನಿಧಾನವಾಗಿ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು, ಚಟುವಟಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು. ಜಡಾ ಪ್ರಕೃತೀರಸ್ಯ।

ಜಡಭರತ ಜಡಭರತ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಯುಷಿ. [ಈ ಯುಷಿಯು ಪೂರ್ವಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಭರತನೆಂಬ ಹೆಸರಿನಿಂದ ಯುಷಭದೇವ ರಾಜನ ಮಗನಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದ್ದನು. ಇವನು ತಂದೆಯ ನಂತರ ಕೆಲವುಕಾಲ ರಾಜ್ಯವನ್ನಾಳುತ್ತಿದ್ದು ತಾನು ಆಳುತ್ತಿದ್ದ ಅಜನಾಭ ದೇಶವನ್ನು ತನ್ನ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಹಂಚಿಕೊಟ್ಟು



ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ತಪಸ್ಸಿಗೆ ಹೋದನು. ಈತನ ಹೆಸರಿನಿಂದಲೇ ಈ ವರ್ಷಕ್ಕೆ “ಭಾರತವರ್ಷ” ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಒಂದು ದಿನ ಇವನು ನದಿಯಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಗರ್ಭಧರಿಸಿದ್ದ ಜಿಂಕೆಯೊಂದಕ್ಕೆ ಸಿಂಹನಾದಶ್ರವಣದಿಂದ ಗರ್ಭಪತನವಾಗಿ ಅದು ಆ ಕೂಡಲೆ ಮೃತಿಹೊಂದಿತು. ಭರತನು ಆ ಜಿಂಕೆಯ ಮರಿಯನ್ನು ತಂದು ಬಹಳ ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಸಾಕುತ್ತಿದ್ದನು. ಅದರಲ್ಲಿ ಇವನಿಗೆ ಮಮತೆಯು ಬೆಳೆಯುತ್ತ ಬಂದು ತನ್ನ ದೇಹತ್ಯಾಗದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಅದನ್ನೇ ಸ್ಮರಿಸುತ್ತ ಇದ್ದುದರಿಂದ ಮುಂದಿನ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಜಿಂಕೆಯಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದನು. ಅದಕ್ಕೆ ಮುಂದಿನ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಭರತನು ಅಂಗಿರಸನೆಂಬ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಮಗನಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿ ಪರಮವೇದಾಂತಿಯಾಗಿ ಹುಚ್ಚನಂತೆ ಅಲೆಯುತ್ತಿದ್ದನು. ಇದರಿಂದ ಇವನಿಗೆ “ಜಡಭರತ” ನೆಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು. ರಹೂಗಣನೆಂಬ ರಾಜನೊಬ್ಬನು ವೇದಾಂತರಹಸ್ಯವನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿಯಲ್ಲಿಗೆ ಪಲ್ಲಕ್ಕಿಯಲ್ಲಿ ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಬೋಯಿಗಳು ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಇವನನ್ನು ಹಿಡಿದು ಪಲ್ಲಕ್ಕಿಯನ್ನು ಹೊರಿಸಿದರು. ಜಡಭರತನು ಹಳ್ಳ ತಿಟ್ಟುಗಳನ್ನೂ ಕಲ್ಲು ಮುಳ್ಳುಗಳನ್ನೂ ಲಕ್ಷ್ಯಮಾಡದೆ ನಡೆಯುತ್ತಿದ್ದುದರಿಂದ ಆಯಾಸಗೊಂಡ ರಾಜನು ಬಹಳ ವಾಗಿ ಬಯ್ಯುತ್ತಿದ್ದರೂ ಇವನು ಕೋಪಿಸಿಕೊಳ್ಳದೆ “ಈ ಬೈಗಳೆಲ್ಲಾ ಈ ಶರೀರಕ್ಕಲ್ಲದೆ ಆತ್ಮನಿಗಲ್ಲ” ಎಂದು ಹೇಳಲು ಈತನು ಮಹಾ ವೇದಾಂತಿಯೆಂದು ತಿಳಿದ ರಹೂಗಣನು ಪಲ್ಲಕ್ಕಿಯಿಂದ ಇಳಿದು ಈತನಿಗೆ ನಮಸ್ಕರಿಸಿ ತನ್ನ ಅಪರಾಧಕ್ಕಾಗಿ ಕ್ಷಮೆ ಕೇಳಿದನು].

ಭಾಗಂ ೪.

**ಜಡಾ ಜಡಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಸುಗುನ್ನಿ ಗಿಡ. ಜಡಂ ಕರೋತಿ-ಜಡ + ಣಿಕ್ “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪).

**ಜಡಿಮನ್ ಜಡಿಮನ್** (ಪುಂ) 1. ಜಾಡ್ಯ, ಮಂಕುತನ, ಜಡತೆ, ಯಾವ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲೂ ಆಸಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ಜಡಸ್ಯ ಭಾವ: “ಇಮನಿಕ್” (೪-೧-೧೨೩). “ಇಷ್ಟಾನಿಷ್ಠಾ-ಪರಿಜ್ಞಾನಂ ಯತ್ರ ಪ್ರಶ್ನೇಷ್ವನುತ್ತರಮ್ | ದರ್ಶನಶ್ರವಣಾಭಾವೋ ಜಡಿಮಾ ಸೋಽಭಿಧೀಯತೇ” | 2. ಶೈತ್ಯ, ಚಳಿ. “ದೇಶೋ ದೇಶೋ ಜಡಿಮ-ಕುರಜ್ಞಾಸ್ತೇಜೋಽಭಿಲೇಖನಕರಾಃ | ಧಾವಂ ಧಾವಂ ಪ್ರಹರತಿ ರಾಜಾಂ ಧಾರಾಗ್ರಹಂ ಶರಣಮವಾಪು:” ಚಂ ಭಾಂ |

**ಜಡೀಕೃತ ಜಡೀಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ತಬ್ಧವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಶ್ಚಲವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಲಿಸದಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಜಡ: ಜಡ: ಕೃತ: - ಜಡ+ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) “ಚಿವ:” (೪-೪-೪೦). “ಕ್ಲ:” (೩-೨-೧೦೨). ಇತ್ (೪-೪-೩೨).

“ಜಡೀಕೃತಸ್ಯಾಶ್ವಕವೀಕ್ಷಣೇನ ವಜ್ರಂ ಮುಮುಕ್ಷುಃಶಿವ ವಜ್ರಪಾಣಿ:” ರಘುಂ ೨-೪೨ | 2. ಕೆವುಡಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. “ಜಡೀಕೃತ-ಶ್ರವಣಪಥೇ ದಿವ್ಯಕಸಾಂ ಚಮರವೇ ವಿಶತಿ ಸುರಾದ್ರಿಕಂದರಾ:” ಮಾಘಂ ೧೭-೩೩ |

**ಜತು ಜತು** (ನಂ) 1. ಅರಗು. 2. ಕೆಂಪುಬಣ್ಣ. ಜನೋ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) “ತ:” ತಕರಾದೇಶಶ್ರ (೩ಂ ೧-೧೮) |

**ಜತುಕ ಜತುಕ** (ನಂ) 1. ಹಿಂಗು. 2. ಅರಗು. ಜತಿವ “ಕನ್” (೪-೩-೧೬). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ-ಕಾ. 3. ಬಾವಲಿ, ಕಪಟದ ಹಕ್ಕಿ. “ಜತುಕಂ ಹಿಡ್ಗುಲಾಕ್ಷಯೋ: | ಜತುಕಾ ಚ ಚರ್ಮಚಟಿಕಾ” ಹೇಮಂ | 4. ಮುಳ್ಳುಗಸೆ ಗಿಡ.

**ಜತುಕಾರಿ ಜತುಕಾರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಳ್ಳುಗಸೆ ಗಿಡ. ಜತುವತ್ ಸಂಶ್ಲೇಷಂ ಕರೋತಿ -ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) “ಅಣ್” (೩-೨-೧) | ಗೋರಾಂ “ಜಿಫ್” (೪-೧-೪೧) |

**ಜತುಕೃತ್ ಜತುಕೃತ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಳ್ಳುಗಸೆ ಗಿಡ. ಜತುವತ್ ಸಂಶ್ಲೇಷಂ ಕರೋತಿ-ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) “ಕಿವಪ್” (೩-೨-೭೬) |

**ಜತುಕೃಣಾ ಜತುಕೃಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಳ್ಳುಗಸೆ ಗಿಡ. ಜತಿವ ಕೃಣಾ |

**ಜತುಗೃಹ ಜತುಗೃಹ** (ನಂ) ಅರಗಿನ ಮನೆ, ಅರಗಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮನೆ. [ದುರ್ಯೋಧನನು ಪಾಂಡವರನ್ನು ಕೊಲ್ಲಿಸಬೇಕೆಂದು ವಾರಣಾಸದಲ್ಲಿ ಅರಗಿನ ಮನೆಯನ್ನು ತಯಾರಿಸಿ ಅಲ್ಲಿ ಸಕಲ ಭೋಗವಸ್ತುಗಳನ್ನೂ ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಿ ಪಾಂಡವರು ಮಲಗಿದ್ದಾಗ ಮನೆಗೆ ಬೆಂಕಿಯನ್ನಿಡಬೇಕೆಂದು ಯೋಚಿಸಿದ್ದನು. ವಿದುರನಿಂದ ಈ ರಹಸ್ಯವನ್ನು ತಿಳಿದ ಭೀಮಸೇನನು ಸುರಂಗಮಾರ್ಗದಿಂದ ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಹೊತ್ತು ಸಾಗಿಸಿ ರಕ್ಷಿಸಿದನು. ಪಾಂಡವರೆಲ್ಲರೂ ಈ ಅಪಾಯದಿಂದ ಪಾರಾದರು.]

**ಜತುರಸ ಜತುರಸ** (ಪುಂ) ಅರಗಿನ ರಸ.

**ಜತುಕಾ ಜತುಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಾವಲಿ, ಕಪಟದ ಹಕ್ಕಿ. 2. ಮುಳ್ಳುಗಸೆ ಗಿಡ. ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) “ಝಕ:” (೩ಂ ೪-೪೧) | ಪೃಥಂ |

**ಜತ್ರ ಜತ್ರ** (ನಂ) ಕೊರಳಿನ ಎಲುಬು, ಹೆಗಲು ಮತ್ತು ಎದೆ ಇವುಗಳ ಮಧ್ಯದ ಎಲುಬು. ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) “ಹ:” ನಕಾರಸ್ಯ ತಕಾರ: (೩ಂ ೪-೧೦೨) | ನಿಪಾಂ |

**ಜನ ಜನ** (ಪುಂ) 1. ಮನುಷ್ಯ. ಜಾಯತೇ-ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) | “ನ ಯಾವದೇತಾವುದಪಸ್ಯದ್ವಿತಿತೌ ಜನ-ಸ್ತುಪಾರಾಜನಪರ್ವತಾವಿವ” ಮಾಘಂ ೧-೧೪ | 2. ಜನೋ ಲೋಕ, ಮಹಾಲೋಕದ ಮೇಲಿನ ಲೋಕ. “ಮೂಲಾಧಾರೆ ತು ಮೂಲೋಕೋ ಲಿಂಗಾಘ್ರೇ ತು ಭುವಸ್ತಥಾ | ಸ್ವಲೋಕೋ ಲಿಂಗಮೂಲೇ



ತು ಮೇಘಮುಲೇ ಮಹಸ್ತಥಾ । ಮೇಘಚ್ಛಿದ್ರೇ ಜನೋಲೋಕೋ ಮೇಘನಾಡಯಾ  
ತಪಸ್ತಥಾ । ಕಮಲೇ ಸತ್ಯಲೋಕಸ್ತು ಇತಿ ಲೋಕಾಃ ಪೃಥಕ್ ಪೃಥಕ್" ।  
3. ಸ್ತ್ರೀ ಅಥವಾ ಪುರುಷ ವ್ಯಕ್ತಿ. "ನೆತಾ ಜನಸ್ತವ ಸಮೀಪ-  
ಮುಪೇಷ್ಯತೀತಿ" ಶಾಕುಂ ೬-೧೨ । "ಜನೋಽಯಮುಚ್ಚೇ: ಪದಲಕ್ಷ್ಮನೋ-  
ತ್ಸುಕ:" ಕುಮಾಂ ೫-೬೪ । 4. ಜನರ ಗುಂಪು. ಏಕವಚನ  
ಮತ್ತು ಬಹುವಚನಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗವುಂಟು. ಏಕವಚನ  
ದಲ್ಲಿ: "ವಿಶ್ರಾಂತವಿಗ್ರಹಕಥೋ ರತಿಮಾನ್ ಜನಸ್ಯ ಚಿತ್ತೇ  
ವಸನ್" ರತ್ನಾಂ ೧-೮ । ಬಹುವಚನದಲ್ಲಿ: "ಕಿಮೇತದಿ-  
ತ್ಯಾಕುಲಮೀಕ್ಷಿತಂ ಜನೈ:" ಮಾಘಂ ೧-೨ । 5. ಜನನ, ಜನ್ಮ,  
ಉತ್ಪತ್ತಿ. ಜನಿ ಭಾವೇ "ಜನ್" (೩-೩-೧೮) ।

**ಜನಕ ಜನಕ** (ಪುಂ) 1. ತಂದೆ. ಜನಯತಿ-ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ)  
"ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । "ಜನಕ ಇವ ಶಿಶುತ್ವೇ ಸುಪ್ರಿಯ-  
ಸ್ಯೈಕಸುನೋರವಿನಯಮಪಿ ಸೇಹೇ ಪಾಂಡವಸ್ಯ ಸ್ಮರಾರಿ:" ಕಿರಾಂ  
೧೭-೬೪ । 2. ವಿದೇಹಾಧಿಪತಿ, ಜನಕಮಹಾರಾಜ.  
"ಜಗ್ರಾಹ ಜನಕಾತ್ಮಸೀತಾಂ ತಾತಾದೇಶೇನ ರಾಘವ:" ಚಂ ರಾಂ ।  
[ಇಕ್ಷ್ವಾಕುರಾಜನ ಮಗನಾದ ನಿಮಿಯು ವಸಿಷ್ಠರನ್ನು  
ಬಿಟ್ಟು ಗೌತಮ ಮಹರ್ಷಿಯ ಮೂಲಕ ಯಾಗ ನಡೆಸಿ  
ದುಂದರಿಯಿಂದಲೂ ಯಾಗದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ನಿದ್ರಿಸುತ್ತಿದ್ದುದ್ದ  
ರಿಂದಲೂ ಅವನಿಗೆ ವಸಿಷ್ಠರು ವಿದೇಹನಾಗುವಂತೆ ಶಾಪ  
ವಿತ್ತರು. ರಾಜ್ಯವು ಅರಾಜಕವಾಗಲು ಋಷಿಗಳು ರಾಜನ  
ಬಲತೋಳನ್ನು ಅರಣ್ಯದಿಂದ ಕಡೆದರು. ಆ ಮಢನ  
ದಿಂದ ಜನಿಸಿದ ಪುರುಷನಿಗೆ ಮಿಥಿ, ಜನಕ ಮತ್ತು ವಿದೇಹ  
ನೆಂಬ ಹೆಸರಿಟ್ಟು ಅವನನ್ನೇ ರಾಜನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದರು.  
ಮುಂದೆ ಆ ರಾಜನ ವಂಶದವರೆಲ್ಲರಿಗೂ ಮೈಥಿಲ, ಜನಕ,  
ವೈದೇಹ ಎಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು]. (ವಿಂ) 3. ಉತ್ಪತ್ತಿ  
ಮಾಡುವ, ಉಂಟುಮಾಡುವ. "ಜನ್ಯಾನಾಂ ಜನಕ: ಕಾಲೋ  
ಜಗತಾಮಾಶ್ರಯೋ ಮತ:" ಭಾಷಾಪಂ ।

**ಜನಕಜಾ ಜನಕಜಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜನಕಮಹಾರಾಜನ ಮಗಳು,  
ಸೀತಾದೇವಿ. ಜನಕಾಜ್ಜಾಯತೇ-ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಜ:"  
(೩-೨-೯೮) ।

**ಜನಕತನಯಾ ಜನಕತನಯಾ**, -ಸುತಾ-ಸುತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
ಜನಕಮಹಾರಾಜನ ಮಗಳು, ಸೀತಾದೇವಿ. ಜನಕಸ್ಯ  
ತನಯಾ ಸುತಾ ವಾ । एवं ಜನಕನಂದಿನಿ ಜನಕನಂದಿನೀ,  
ಜನಕಪುತ್ರೀ ಜನಕಪುತ್ರೀ ಇತ್ಯಾದಿ. "ಯಕ್ಷಶ್ವಕ್ರೇ ಜನಕತನಯಾ-  
ಸ್ನಾನಪುಷ್ಪೋದಕೇಷು" ಮೇಘಂ ೧-೧ ।

**ಜನಕಾತ್ಮಜಾ ಜನಕಾತ್ಮಜಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜನಕಮಹಾರಾಜನ  
ಮಗಳು, ಸೀತಾದೇವಿ, ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನ ಪತ್ನಿ. ಜನಕ-  
ಸ್ಯಾತ್ಮಜಾ ।

**ಜನಜ್ಞಮ ಜನಂಗಳಮ** (ಪುಂ) ಜ್ಞಾತೃ. ಜನೇಭ್ಯೋ ಗಚ್ಛತಿ  
ಅರ್ಥಾಮಿಕಾನ್ ಜನಾನ್ ಗಚ್ಛತಿ ವಾ-ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಖಚ್"  
(೩-೨-೪೭) । ಮುಗಮ: (೬-೩-೬೭) । "ಅವಧಿಜ್ಜನಜ್ಞಮ  
ಇವೇಷ ಯದಿ ಹತವೃಷೋ ವೃಷಂ ನನು" ಮಾಘಂ ೧೫-೩೫ ।

**ಜನಚಕ್ಷುಸ್ ಜನಚಕ್ಷುಸ್** (ನಂ) ಸೂರ್ಯ, ಜನಾನಾಂ  
ಚಕ್ಷುರಿವ । एवं ಲೋಕಚಕ್ಷು: ಲೋಕಚಕ್ಷು: "ಲೋಕಚಕ್ಷು-  
ದಿವಾಕರ:" ರಾಮಾಂ ।

**ಜನಜನ್ಮಾದಿ ಜನಜನ್ಮಾದಿ** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ,  
ಜನಸ್ಯ ಜನ್ಮನ: ಆದಿ: । "ಜನನೋ ಜನಜನ್ಮಾದಿ:" ವಿಂ ಸಂ ।

**ಜನತಾ ಜನತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜನರ ಗುಂಪು. ಜನಾನಾಂ ಸಮೂಹ:  
"ತಲ್" (೪-೨-೪೩) । "ಉಪಾಧಿತಾ ವಿದಧತಾ ಭವತೀ:  
ಸುರಸಂಭವಾನಸುಮುಖೀ ಜನತಾ" ಕಿರಾಂ ೬-೪೨ ।

**ಜನದೇವ ಜನದೇವ** (ಪುಂ) ದೇವ, ದೇವತೆ. ಜನಾನಾಂ ದೇವ  
ಇವ । "ವಚಸ್ತವೇತಜ್ಜನದೇವ ಸುನೃತಂ ಕುಲೋಚಿತಂ ಧರ್ಮಯುತ  
ಯಶಸ್ಕರಮ್" ಭಾಗಂ ೮-೧೯-೨ ।

**ಜನನ ಜನನ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಜನಯತಿ  
ಜೀವಾನ್-ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ)+ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) ।  
"ಜನನೋ ಜನಜನ್ಮಾದಿ:" ವಿಂ ಸಂ । (ನಂ) 2. ಹುಟ್ಟು  
ವುದು, ಜನ್ಮಪಡೆಯುವುದು. ಜನಿ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೫) । "ಪುನರಪಿ ಜನನಂ ಪುನರಪಿ ಮರಣಂ ಪುನರಪಿ  
ಜನನಿಜಠರೇ ಶಯನಮ್" ಭಜಗೋಂ । "ಅಭಜದೇವ ನಿಶಾ  
ದಿವಸಶ್ರಿಯಂ ಜನನಭಾಜಿನಿ ದೇವದಿವಾಕರೇ" ಯಾದಂ ೩-೧ ।  
3. ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡುವುದು, ಸೃಷ್ಟಿಸುವುದು. ಜನಿ+ಣಿಚ್  
ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" । "ಅನ್ಯೋನ್ಯಶೋಭಾಜನನಾಡಭೂವ ಪರಸ್ಪರಂ  
ಭೂಷಣಭೂಷ್ಯಭಾವ:" ಕುಮಾಂ ೧-೪೨ । 4. ವಂಶ. ಜನಿ  
ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" । (ವಿಂ) 5. ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡುವ, ಸೃಷ್ಟಿ  
ಸುವ. 6. ಪ್ರಸವಿಸುವ. ಜನಿ ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜನನಿ ಜನನೀ. "ಏಕಾದಶೇ ಸ್ತ್ರೀಜನನಿ ಸದ್ವಸ್ತವ-  
ಪ್ರಿಯವಾದಿನಿ" ಮನುಂ ೯-೮೧ ।

**ಜನನಾಥ ಜನನಾಥ** (ಪುಂ) ಜನರ ಒಡೆಯ, ರಾಜ, ದೊರೆ.  
ಜನಾನಾಂ ನಾಥ: । "ಜನನಾಥ ತವಾನುಜನ್ಮನಾಮ್" ಕಿರಾಂ  
೨-೧೭ ।

**ಜನನಾಶೌಚ ಜನನಾಶೌಚ** (ನಂ) ಸೂತಕ, ಜ್ಞಾತಿಗಳಿಗೆ  
ಪುತ್ರೋತ್ಪತ್ತಿವಾದಾಗ ಸಂಭವಿಸುವ ಪುರುಡು. ಜನನ-  
ನಿಮಿತ್ತಮಾಶೌಚಮ್ ।

**ಜನನಾಂತರ ಜನನಾಂತರ** (ನಂ) ಬೇರೆ ಜನ್ಮ, ಹಿಂದಿನ  
ಅಥವಾ ಮುಂದಿನ ಜನ್ಮ. ಅನ್ಯಜ್ಜನನಮ್ । "ಭಾವ-  
ಸ್ಥಿರಾಣಿ ಜನನಾಂತರಸೌಹೃದಾನಿ" ಶಾಕುಂ ೫-೨ ।



**ಜನನಿರ್ವಾಹ ಜನನಿರ್ವಾಹ** (ಪುಂ) ಲೋಕಾಪವಾದ, ಜನರ ನಂದೆ. ಜನಾನಾಂ ನಿರ್ವಾಹಿ: "ಅಪಯಾನ್ಯಚಿರಾನ್ಮಹಿಭುಜಾಂ ಜನನಿರ್ವಾಹಭಯಾದಿವ ಶ್ರಿಯ:" ಕಿರಾಂ ೨-೧೦।

**ಜನನಿ ಜನನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಾಯಿ. ಜನಯತಿ-ಜನಿ (ಪ್ರಾದು-ಭಾವಿ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩)। "ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೫)। "ಪ್ರಚಾರಿತ: ಪ್ರಸ್ತುತಯಾ ಜನನಯಾ ಪದೇ ಪದೇ ವಿಶ್ರಮಮಾಚಕಾಡ್ಲೇ" ಧಾದಂ ೪-೨೪। 2. ದಯೆ, ಕರುಣೆ, ಕನಿಕರ. "ಜನನಿ ತು ದಯಾಮಾತ್ರೋಜನನಂ ವಂಶಜನ್ಮನೋ:" ಮೇದಿಂ। 3. ಉತ್ಪಾದನ ಮಾಡುವ ಹೆಂಗಸು, ಸೃಷ್ಟಿಸುವ ಹೆಂಗಸು, ಲೋಕಕ್ಕೆ ತಾಯಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು, ಲೋಕಮಾತೆ. "ವದಾಮಸ್ತೇ ಕಿ ವಾ ಜನನಿ ವಯಮುಚ್ಚೇಜ್ಜಿಧಿಯ:"। 4. ಬಾವಲಿ, ಕಪಟದ ಹಕ್ಕಿ. 5. ಜಟಾಮಾಂಸಿ.

**ಜನನೀಯ ಜನನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಉತ್ಪಾದಿಸಲ್ಪಡುವ, ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಡುವ, ಉಂಟುಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಸೃಷ್ಟಿ ಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಜನಿ(ಪ್ರಾದುಭಾವಿ)ಕರ್ಮಾದೌ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬)।

**ಜನಪದ ಜನಪದ** (ಪುಂ) 1. ದೇಶ, ಜನರು ವಾಸಿಸುವ ಸ್ಥಳ. ಜನಾ: ಪದಂತೇತ್ರ-ಪದ (ಗತೌ) "ಘ:" (೩-೩-೧೧೮)। ಜನಸ್ಯ ಲೋಕಸ್ಯ ಪದಂ ಆಶ್ರಯಸ್ಥಾನಂ ಯತ್ರ। ಜನ: ಪದಂ ವಸ್ತು ಯತ್ರೇತಿ ವಾ। "ಸೋತೋವೇಗಾದಥ ಜನಪದಂ ಸೌಮ್ಯ ಸೋಮಂತಯಂತಿ ಪ್ರತ್ಯಾದೇಶೋ ವಿಬುಧಸರಿತ: ಸ್ಯಂದತೇ ಸಹೃದಕನ್ಯಾ" ಹಂಸಂ ೧-೪೨। "ತ್ಯಜೇದೇಕಂ ಕುಲಸ್ಯಾರ್ಥೇ ಗ್ರಾಮಸ್ಯಾರ್ಥೇ ಕುಲಂ ತ್ಯಜೇತ್। ಗ್ರಾಮಂ ಜನಪದಸ್ಯಾರ್ಥೇ ಆತ್ಮಾರ್ಥೇ ಪೃಥಿವೀಂ ತ್ಯಜೇತ್" ಚಾಣಕ್ಯಂ। 2. ರಾಜ್ಯ. 3. ಗ್ರಾಮಗಳ ಸಮೂಹ. "ಪುಷ್ಯಾವಾಸೈ: ಪುರಜನಪದೇರ್ಮಂಡಿತಾನ್ ಪಾಂಡಿಚದೇಶಾನ್" ಹಂಸಂ ೧-೫೦।

**ಜನಪದಿನ್ ಜನಪದಿನ್** (ಪುಂ) ರಾಜ್ಯದ ಒಡೆಯ, ರಾಜ, ದೊರೆ. ಜನಪದಾ: ಸನ್ಯಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫)। "ಜನಪದಿನಾಂ ಜನಪದವತ್ ಸರ್ವಂ ಜನಪದೇನ ಸಮಾನಶಬ್ದಾನಾಂ ಬಹುವಚನೇ" ಪಾಂ ಸೂಂ ೪-೩-೧೦೦।

**ಜನಪ್ರವಾದ ಜನಪ್ರವಾದ** (ಪುಂ) 1. ಲೋಕಾಪವಾದ, ಜನರ ನಂದೆ. 2. ಲೋಕವಾದ, ಜನರು ಅಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಮಾತು. ಜನಾನಾಂ ಪ್ರವಾದ:

**ಜನಪ್ರಿಯ ಜನಪ್ರಿಯ** (ಪುಂ) 1. ಧಾನ್ಯಾಕ, ಧನಿಯ, ಕೊತ್ತುಂಬರಿಬೀಜ. 2. ನುಗ್ಗೆಮರ. (ವಿಂ) 3. ಜನರಿಗೆ ಪ್ರಿಯನಾದ, ಜನರ ಪ್ರೀತಿಗೆ ಪಾತ್ರನಾದ. ಜನಾನಾಂ ಪ್ರಿಯ:। "ಉಪಾಸಸಾದೋಪಜನಂ ಜನಪ್ರಿಯ: ಪ್ರಿಯಾಮಿವಾಸಾದಿತಯೌವನಾಂ ಭುವಮ್" ಕಿರಾಂ ೪-೧।

**ಜನಮೇಜಯ ಜನಮೇಜಯ** (ಪುಂ) 1. ಅರ್ಜುನನ ಮಗನಾದ ಅಭಿಮನ್ಯುವಿನ ಮೊಮ್ಮಗ, ಅಭಿಮನ್ಯುವಿನ ಮಗನಾದ ಪರೀಕ್ಷಿತ್ತಿನ ಮಗ, ಚಂದ್ರವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. ಜನ-ಮೇಜಯತಿ-ಏಜ್ (ಕಂಪನೆ) + ಣಿಕ್ "ಖಸ್" (೩-೨-೨೮)। ಮುರಗಮ: (೬-೩-೬೭)। [ಈ ರಾಜನು ತನ್ನ ತಂದೆಯ ಮರಣಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ಸರ್ಪದ ಮೇಲಿನ ಕೋಪದಿಂದ ಸರ್ಪಗಳ ಕುಲವನ್ನೇ ನಾಶಪಡಿಸುವ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ಸರ್ಪ ಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡಿದನು.] "ಏತಸ್ಮಿನ್ನೇವ ಕಾಲೇ ತು ಸ ರಾಜಾ ಜನಮೇಜಯ:। ಉವಾಚ ಮನ್ವಿಣ: ಸರ್ವಾನಿದಂ ವಾಕ್ಯ-ಮರಿಂದಮ:" .....। "ಏವಮುಕ್ತ್ವಾ ತತ: ಶ್ರೀಮಾನ್ ಮನ್ವಿಣಿಮಿಶ್ರಾನ್ಮುಮೋದಿತ:। ಆಹುರೋಹ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾಂ ಸ ಸರ್ಪಸತ್ರಾಯ ಪಾರ್ಥಿವ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೫೦, ೫೧। 2. ಕುರುರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ತತ: ಸಂವರಣಾತ್ಸೋರಿ ತಪತೀ ಸುಷುಪ್ತೇ ಕುರ್ಮ್। ರಾಜತ್ವೇ ತಂ ಪ್ರಜಾ: ಸರ್ವಾ ಧರ್ಮಜಃ ಇತಿ ವಕ್ಷಿರೇ॥ ಅಶ್ವವಂತಮ-ಮಿಷ್ಯಂತಂ ತಥಾ ಚೈತ್ರರಥಂ ಮುನಿಮ್। ಜನಮೇಜಯಂ ಚ ವಿಖ್ಯಾತಂ ಪುತ್ರಾಶ್ಚಾಸ್ಯಾನುಶುಶ್ರುಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೦೧। 3. ಪುರುಷನ ಮಗ, ಚಂದ್ರವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. "ಪೂರೋಭಾರ್ಯಾ ಕೌಸಲ್ಯಾ ಬಭೂವ। ತಸ್ಯಾಮಸ್ಯ ಜನಮೇಜಯೋ ಜಜ್ಞೇ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೩-೮। 4. ಪಾಂಡವರ ಪಕ್ಷದ ಒಬ್ಬ ರಾಜ.

**ಜನಯತ್ ಜನಯತ್** (ವಿಂ) ಉಂಟುಮಾಡುವ, ಉತ್ಪತ್ತಿ ಮಾಡುವ. ಜನಿ(ಪ್ರಾದುಭಾವಿ)+ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ವಿಭರ್ತಿ ಜನಯತ್ರಯಂ ಮುದಮಪಾಮಪಾಯಧವಲಾ ಬಲಾಹಕತತೀ:" ಮಾಘಂ ೪-೫೪। "ವಿಪ್ರಿಯಾಣಿ ಜನಯತ್ರನುನೇಯ:" ಕಿರಾಂ ೯-೩೯। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

**ಜನಯತಿ ಜನಯತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ಪಾದನ, ಸೃಷ್ಟಿ.

**ಜನಯಿತವ್ಯ ಜನಯಿತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಡುವ, ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಜನಿ (ಪ್ರಾದುಭಾವಿ) + ಣಿಕ್ "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೬)। "ಬಾಡಮ್, ಸಾ ಖಲು ವಿವೇಕೋಪ-ನಿಷ್ಠೇವ್ಯಾಂ ಪ್ರಬೋಧಚಂದ್ರೇಣ ಆತ್ಮಾ ಸಮಂ ಜನಯಿತವ್ಯಾ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೧। 2. ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡಬೇಕಾದ, ಸೃಷ್ಟಿಸಬೇಕಾದ.

**ಜನಯಿತ್ ಜನಯಿತ್** (ಪುಂ) 1. ತಂದೆ. ಜನಿ (ಪ್ರಾದುಭಾವಿ) + ಣಿಕ್ "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಗೋತ್ರರಿಕಯೇ ಜನಯಿತ್: ನ ಹರೇಹತ್ರಿಮ: ಕ್ವಚಿತ್" ಮನುಂ ೯-೧೪೨। (ವಿಂ) 2. ಸೃಷ್ಟಿಸುವವನು, ಉಂಟುಮಾಡುವವನು, ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡುವವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿಃ. 3. ತಾಯಿ. ಜನಯಿತ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೫)। "ಜನಯಿತ್ರಿಮಲಂಚಕ್ರೇ ಯ: ಪ್ರಶ್ರಯ ಇವ ಶ್ರಿಯಮ್" ರಘುಂ ೧೦-೭೦।

**ಜನವಾದ ಜನವಾದ** (ಪುಂ) "ಜನಪ್ರವಾದ" ಪದದ ಅರ್ಥ.



ಜನಶ್ರುತ ಜನಶ್ರುತ (ವಿಂ) ಲೋಕವಿಖ್ಯಾತ, ಲೋಕ ಪ್ರಸಿದ್ಧ.

ಜನಶ್ರುತಿ ಜನಶ್ರುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಮಾಚಾರ, ಜನರು ಆಡಿ ಕೊಳ್ಳುವಮಾತು, ಲೋಕಪ್ರವಾದ. "ಜನೇಭ್ಯಃ ಶ್ರುತೇ-ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। "ಕಿವದಂತಿ ಜನಶ್ರುತಿಃ" ಅಮಂ।

ಜನಸ್ ಜನಸ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ ದ್ವಿವಂ) 1. ದ್ಯಾವಾಪೃಥಿವಿಗಳು, ಆಕಾಶ ಮತ್ತು ಭೂಮಿ. (ನಂ) 2. ಜನೋಲೋಕ, ಭೂಲೋಕ ದಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಐದನೆಯ ಲೋಕ.

ಜನಸ್ಥಾನ ಜನಸ್ಥಾನ (ನಂ) ದಂಡಕಾರಣ್ಯಪ್ರದೇಶ. [ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಈ ಪ್ರದೇಶವು ಇಕ್ವಾಕು ಪುತ್ರನಾದ ದಂಡ ನೆಂಬ ರಾಜನ ರಾಜಧಾನಿಯಾಗಿದ್ದಿತು. ಒಂದು ದಿನ ದಂಡನು ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರ ಮಗಳನ್ನು ಬಲಾತ್ಕರಿಸಲು ಆದರಿಂದ ಕುಪಿತರಾದ ವಸಿಷ್ಠರು ದಂಡನ ರಾಜ್ಯವು ಏಳು ದಿನಗಳೊಳಗಾಗಿ ಭಸ್ಮೀಭೂತವಾಗಲೆಂದೂ ರಾಜನು ಸೇನೆ ಮತ್ತು ಪರಿವಾರಗಳೊಡನೆ ನಾಶವಾಗಲೆಂದೂ ಶಪಿಸಿ ಆ ದೇಶದ ಜನರೆಲ್ಲರನ್ನೂ ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೋಗಬೇಕೆಂದು ಹೇಳಿದರು. ಏಳು ರಾತ್ರಿಗಳೊಳಗಾಗಿ ಎಲ್ಲವೂ ಸುಟ್ಟು ಭಸ್ಮವಾಯಿತು. ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನು ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ದ್ವಾಗ ಅಲ್ಲಿ ತಪಸ್ವಿಗಳು ಆಶ್ರಮಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟಿಕೊಂಡು ವಾಸಮಾಡುತ್ತಿದ್ದರು. ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಜನರು ವಾಸಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಈ ಅರಣ್ಯಪ್ರದೇಶಕ್ಕೆ "ಜನಸ್ಥಾನ" ವೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು.]

ಜನಾಚಾರ ಜನಾಚಾರ (ಪುಂ) ಜನರ ನಡತೆ, ಸಂಪ್ರದಾಯ, ಪದ್ಧತಿ.

ಜನಾತಿಗ ಜನಾತಿಗ (ವಿಂ) ಲೋಕಾತೀತವಾದ, ಅಮಾನುಷ ವಾದ, ಮನುಷ್ಯರನ್ನು ಮೀರಿದ. ಜನಮತಿಗಚ್ಛತಿ - ಅತಿ+ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಡಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)। "ಪ್ರಸಾದಲಕ್ಷ್ಮಿ ದಧತಂ ಸಮಗ್ರಾಂ ವಪುಃಪ್ರಕರ್ಷಣ ಜನಾತಿಗೇನ" ಕಿರಾಂ ೩-೨।

ಜನಾಧಿನಾಥ ಜನಾಧಿನಾಥ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ, ಜನರ ಒಡೆಯ. ಜನಾನಾಮಧಿನಾಥಃ। "ಪಶ್ಯನ್ ಕೃತಾರ್ಥೇರಪಿ ಬಲವೀಜನೋ ಜನಾಧಿನಾಥಂ ನ ಯಯಿ ವितृಣ್ಣತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೨-೩೯। एवं ಜನಾಧಿಪಃ ಜನಾಧಿಪಃ, -ಅಧಿಪತಿಃ -ಅಧಿಪತಿಃ, ಇತ್ಯಾದಿ.

ಜನಾಂತ ಜನಾಂತ (ಪುಂ) 1. ಜನರ ಸಮೀಪ. ಜನಾನಾಮಂತಃ। "ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಮನ್ತ್ರಣಂ ಯತ್ಸ್ಯಾತ್ತಜ್ಜನಾಂತೇ ಜನಾಂತಿಕಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೩೯। 2. ಪ್ರದೇಶ, ಸ್ಥಾನ, ಜಾಗ. 3. ಜನರ

ಪ್ರಾಣಗಳನ್ನು ಎಳೆಯುವ ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. "ಯಜ್ಞಾಶ್ಚ ಲೋಕಾನವತಾಜ್ಜನಾಂತಾದ್ ಬಲೋ ಗಣಾತ್ ಕ್ರೋಧವಶಾದಹೀಂದ್ರಃ" ಭಾಗಂ ೬-೮-೧೮।

ಜನಾಂತಿಕ ಜನಾಂತಿಕ (ನಂ) 1. ಜನರ ಸಮೀಪ. ಜನಾನಾಮಂತಿಕಮ್। 2. ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು, ಕೈಯಿಂದ ಮುಖವನ್ನು ಒಂದು ಕಡೆ ಮರೆಸಿ ಕೊಂಡು ಜನರಿಗೆ ತಿಳಿಯದಂತೆ ಪರಸ್ಪರ ಮಾತನಾಡುವುದು, ರಹಸ್ಯ ಸಂಭಾಷಣೆ. "ತ್ರಿಪತಾಕಾಕರೇಣಾನ್ಯಾನಪ-ವಾರ್ಯಾಂತರಾ ಕಥಾಮ್। ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಮನ್ತ್ರಣಂ ಯತ್ಸ್ಯಾತ್ತಜ್ಜನಾಂತೇ ಜನಾಂತಿಕಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೩೯।

ಜನಾಪವಾದ ಜನಾಪವಾದ (ಪುಂ) ಲೋಕಾಪವಾದ, ಜನರು ಸುಳ್ಳುಪ್ರಚಾರಮಾಡಿ ಹೇಳುವುದು.

ಜನಾರ್ದನ ಜನಾರ್ದನ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ, ವಿಷ್ಣು, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಜನೇರಙಂತೇ ಯಾಚ್ಯತೇ - ಅದಂ (ಗತೌ ಯಾಚನೇ ಚ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೩)। ಜನಾನ್ ರಕ್ಷಾಪ್ರತಿಪಕ್ಷಾನ್ ಅದಯತಿ ಅನೇಕ್ಷಂ ಪಿಡಯತಿ ಇತಿ ವಾ-ಅದಂ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)। "ಭಕ್ತವಿದ್ವೇಷಿಣಾಂ ತುರ್ಣಮರ್ದನಾದ್ವಿ ಜನಾರ್ದನಃ" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ। "ಸರ್ವಗಃ ಸರ್ವವಿದ್ ಭಾನುರ್ವಿಷ್ವಕಸೇನೋ ಜನಾರ್ದನಃ" ವಿಂ ಸಂ। "ಆಸತ್ತಿ-ಮಾಸಾಃ ಜನಾರ್ದನಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೩-೬೧। (ವಿಂ) 2. ಜನರನ್ನು ಪೀಡಿಸುವ.

ಜನಾಶನ ಜನಾಶನ (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ತೋಳ. ಜನಾನ್ ಅಶನಾತಿ - ಅಶ (ಭೋಜನೇ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)। (ನಂ) 2. ಮನುಷ್ಯರನ್ನು ತಿನ್ನುವುದು. ಅಶ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 3. ಮನುಷ್ಯರನ್ನು ತಿನ್ನುವ. ಅಶ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)।

ಜನಾಶ್ರಯ ಜನಾಶ್ರಯ (ಪುಂ) ಮಂಟಪ, ಚಾವಡಿ. ಜನಾನಾಮಾಶ್ರಯಃ। "ಮण्डपोऽस्त्री ಜನಾಶ್ರಯಃ" ಅಮಂ।

ಜನಿ ಜನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟು. ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಇನ್" (ತಂ ೪-೧೨೯)। 2. ತಾಯಿ. 3. ಹೆಂಗಸು.

ಜನಿಕಾ ಜನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಸೃಷ್ಟಿ. 2. ಹೆಂಗಸು, ಜನ್ಮಕೊಡುವ ಮಾತೆ. 3. ಸೊಸೆ.

ಜನಿತ ಜನಿತ (ವಿಂ) ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಜಿಗಾಯ ಜಮ್ಬೂಜನಿತಶ್ರಿಯಃ ಶ್ರಿಯಂ ಸುಮೇಶ್ವರಸ್ಯ ತದಾ ತದಾಸನಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೧೯।

ಜನಿತವತ್ ಜನಿತವತ್ (ವಿಂ) ಉಂಟುಮಾಡಿದ, ಸೃಷ್ಟಿ ಸಿದ್ಧ. ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨)।



ಜನಿತ್ ಜನಿತ್ಯ (ಪುಂ) ತಂದೆ. ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) ಅಂತರ್ಮಾವಿ-  
ತಪ್ಯರ್ಥ: "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩). "ಅರ್ಥಾರ್ಥಿ ಜೀವ-  
ಲೋಕೋಽಯಂ ಇಮಶಾನಮಪಿ ಸೇವತೇ. ಜನಿತಾರಮಪಿ ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ  
ನಿಃಸ್ವಂ ಗच्छತಿ ದೂರತಃ" ಪञ್ಚತಂ. "ಜನಿತಾ ಚೋಪನೆತಾ  
ಚ ಯಶ್ಚ ವಿಧಾಂ ಪ್ರಯच्छತಿ. ಅನ್ನದಾತಾ ಭಯತ್ರಾತಾ ಪञ್ಚತೇ  
ಪಿತರಃ ಸ್ಮೃತಾಃ."

ಜನಿತ್ರಿ ಜನಿತ್ರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಾಯಿ. ಜನಿತ್ "ಜಿಪ್"  
(೪-೧-೫). "ಧಾತ್ರಿ ಸ್ಥಾತ್ರಿ ಜನಿತ್ರಿ ಪ್ರಕೃತಿಮವಿಕೃತಿ  
ವಿಶ್ವಶಕ್ತಿ ವಿಧಾತ್ರಿ ವಿಷ್ಣೋವಿಶ್ವಾತ್ಮನಸ್ತಾಂ ವಿಪುಲಗುಣಮಯಿ  
ಪ್ರಾಣನಾಥಾಂ ಪ್ರಣಾಮಿ". "ಜನ್ತುರ್ಯಥಾ: ಸಮಭವತ್ ಜನಿತ್ಯಾ-  
ಮೇವ ಪಾರ್ಥಿವ" ಭಾಂ ವನಂ ೧೨೮.

ಜನಿತ್ವ ಜನಿತ್ವ (ಪುಂ) 1. ಜನಕ, ತಂದೆ, ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ)  
"ಇತ್ವನ್" (೩ಂ ೪-೧೦೪). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತ್ವಾ -ತ್ವಾ.

2. ಜನನ, ತಾಯಿ. "ಜನಿತ್ವೌ ಮಾತಾಪಿತರೌ" ಸಿಂ ಕೌಂ.  
ಜನಿಮತ್ ಜನಿಮತ್ (ವಿಂ) ಪ್ರಾಣ, ಜನ್ಮವುಳ್ಳ. ಜನಿರ-  
ಸ್ಯಾಸ್ತಿ—"ಮನುಪ್" (೫-೨-೯೪).

ಜನಿಮನ್ ಜನಿಮನ್ (ಪುಂ) ಹುಟ್ಟು, ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಜನ್ಮ.  
ಜನ (ಜನನ) "ಇಮನಿನ್" (೩ಂ ೪-೧೪೮).

ಜನಿ - ಪ್ರಾಡುಭವಿ (ದಿವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸೇಂ). ಜಾಯತೇ.  
ಜಜ್ಞೇ. ಜನಿತಾ. ಜನಿಷ್ಯತೇ. ಜಾಯತಾಮ್. ಅಜಾಯತ.  
ಜಾಯತ. ಜನಿಷೀಷ್ಠ. ಅಜನಿ. ಅಜನಿಷ್ಯತ. ಹುಟ್ಟು,  
ಜನ್ಮಪಡೆ, ಉತ್ಪತ್ತಿಹೊಂದು.

ಭಾವೇ:—ಕರ್ತರಿವತ್ ರೂಪಾಣಿ.

ಣಿವಿ:—ಜನಯತಿ, -ತೇ. ಜನಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಜನಯಿತಾ. ಜನಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ.  
ಜನಯತು, -ತಾಮ್. ಅಜನಯತ್, -ತ. ಜನಯೇತ್, -ತ. ಜನ್ಯಾತ್,  
ಜನಯಿಷೀಷ್ಠ. ಅಜೀಜನತ್, -ತ. ಅಜನಯಿಷ್ಯತ್, -ತ.

ಪ್ಯಂತಾತ್ ಕರ್ಮಣಿ:—ಜನ್ಯತೇ. ಜನಯಾಂ ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ,  
-ಆಸೇ. ಜಾನಿತಾ, ಜನಿತಾ, ಜನಯಿತಾ. ಜಾನಿಷ್ಯತೇ,  
ಜನಿಷ್ಯತೇ, ಜನಯಿಷ್ಯತೇ. ಜನ್ಯತಾಮ್. ಅಜನ್ಯತ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೇವಲಾತ್ ಕೃತ್ಸು:—ಜನಿತವ್ಯಮ್. ಜನನೀಯಮ್. ಜನ್ಯಮನೇನ.  
ಜಾಯತ ಇತಿ ಜನ್ಯ:, ಕರ್ತಂ ಪ್ಯದಂತೋ ನಿಪಾತಿತಃ. ಜಾತಃ.  
ಜಾತವಾನ್. ಜಾಯಮಾನಃ. ಜನಿತುಮ್. ಜಾತಮ್. ಜನನಮ್.  
ಜನಿತವಾ. ಪ್ರಜನ್ಯ.

ಜನಿ ಜನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ತುಷ್, ಸೊಸೆ. ಜಾಯತೇ ಸಂತತಿ-  
ರಸ್ಯಾಮ್ ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೨೯).  
"ತಥಾ ತಥಾ ಹೃಷಿತವಪುರ್ಮದಾಕುಲಾ ದ್ವಿಷಾಂ ಚಮೂರಜನಿ ಜನಿವ  
ಚೇತಸಾ" ಮಾಘಂ ೧೭-೪೩. 2. ತಾಯಿ. 3. ಪತ್ನಿ.

ಹೆಂಡತಿ. 4. ಹೆಂಗಸು. 5. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟು. ಜನಿ  
ಸ್ತುಭಾವನಿತಯೋಃ" ಹೇಮಂ. 6. ವಧುವರರು, ದಂಪತಿ  
ಗಳು. "ಜನಿವರಸ್ತೀಪತ್ಯೋಶ್ಚ" ವೈಜಂ.

ಜನು ಜನು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜನ್ಮ, ಹುಟ್ಟು, ಉತ್ಪತ್ತಿ.

ಜನುಸ್ ಜನುಸ್ (ನಂ) ಜನ್ಮ, ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟು. ಜನ್ಯತೇ—  
ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಉಸಿ:" (೩ಂ ೨-೧೧೫). "ಜನುರ್ಜನನ-  
ಜನ್ಮಾನಿ ಜನಿಸ್ತುಪತ್ತಿರ್ದ್ರವಃ" ಅಮಂ.

ಜನ ಜನ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜನ್ಮ, ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟು. ಜನು "ಕಡ್"  
(ವಾಂ ೪-೧-೬೬).

ಜನೇಂದ್ರ ಜನೇಂದ್ರ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಜನಾನಾಮಿन्द्रಃ.

ಜನೇಶ ಜನೇಶ, -ईश्वर-ಈಶ್ವರ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ.  
ಜನಾನಾಮಿಶಃ: ईश्वरो वा.

ಜನೇಷ್ಠ ಜನೇಷ್ಠ (ವಿಂ) ಜನರಿಗೆ ಸಮ್ಮತವಾದ, ಜನರಿಗೆ  
ಬೇಕಾದ, ಜನರಿಂದ ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಜನೇಷ್ಠಾ ಜನೇಷ್ಠಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅರಿಶಿನ. 2. ಜಾಜ್ಜಿಡ.  
3. ಮುಳ್ಳುಗಸೆ ಗಿಡ.

ಜನೋದಾಹರಣ ಜನೋದಾಹರಣ (ನಂ) ಯಶಸ್ಸು, ಕೀರ್ತಿ.  
ಜನೇರ್ದಾಹ್ರಿಯತೇ ಉದ್ + ಆಹ್ + ಹ್ರ (ಹರಣೇ) ಕರ್ಮಂ  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩).

ಜನೋಲೋಕ ಜನೋಲೋಕ (ಪುಂ) "ಜನ" ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.

ಜನ್ತು ಜಂತು (ಪುಂ) 1. (ಹುಟ್ಟುವ ಸ್ವಭಾವದ) ಪ್ರಾಣಿ.  
ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ತು:" (೩ಂ ೧-೭೨).

"ಏಕಃ ಪ್ರಜಾಯತೇ ಜನ್ತುಃ ಏಕ ಏವ ಪ್ರಲೀಯತೇ. ಏಕೋಽನುಭುಂಕ್ತೇ  
ಸುಕೃತಮೇಕ ಏವ ಚ ದುಷ್ಕೃತಮ್" ಮನುಂ ೪-೨೪೦. "ಅಮರ್ಷ-  
ಶೂನ್ಯೇನ ಜನಸ್ಯ ಜನ್ತುನಾ ನ ಜಾತಹಾರ್ದೇನ ಚ ವಿಧಿಷಾದರಃ"

ಕಿರಾಂ ೧-೩೩. 2. ಮನುಷ್ಯ, ಪುರುಷ. "ವಿಭಿತಿ  
ಸರ್ವಭೂತಾನಿ ವೇದಶಾಸ್ತ್ರಂ ಸನಾತನಮ್. ತಸ್ಮಾದೇತತ್ ಪರಂ ಮನ್ಯೇ  
ಯಜ್ಜಂತೋರಸ್ಯ ಸಾಧನಮ್" ಮನುಂ ೧೨-೯೯. 3. ಜೀವ.

"ಏತೇಷಾಮೇವ ಜನ್ತುನಾಂ ಭಾರ್ತವಿಮುಪಯಾಂತಿ ತಾಃ" ಮನುಂ ೧೨-೬೯.

4. ಇರುವೆ ಮೊದಲಾದ ಸಣ್ಣ ಪ್ರಾಣಿ. "ಸಂರಕ್ಷಣಾರ್ಥ  
ಜನ್ತುನಾಂ ರಾತ್ರಾವಹನಿ ವಾ ಸದಾ. ಶರೀರಸ್ಯಾತ್ಯಯೇ ಚೈವ ಸಮೀಕ್ಷಯ  
ವಸುಧಾಂ ಚರೇತ್" ಮನುಂ ೬-೬೮. 5. ಸೋಮಕನಂಬ

ಒಬ್ಬ ರಾಜನ ಮಗ. [ಸೋಮಕನಂಬ ರಾಜನೊಬ್ಬನಿಗೆ  
ನೂರು ಮಂದಿ ಪತ್ನಿಯರಿದ್ದರೂ ಬಹಳ ಕಾಲದವರೆಗೂ  
ಸಂತಾನವಿರಲಿಲ್ಲ. ಮುದಿತನದಲ್ಲಿ ಜಂತುವೆಂಬ ಓರ್ವ  
ಪುತ್ರನು ಜನಿಸಿದನು. ಆ ಏಕಮಾತ್ರ ಪುತ್ರನಲ್ಲಿ ನೂರು  
ಮಂದಿಯೂ ಬಹಳ ಪ್ರೀತಿಯಿಂದಿದ್ದರು. ಒಂದು ದಿನ



ಆ ಮಗುವನ್ನು ಒಂದು ಇರುವೆಯು ಕಚ್ಚಿತು. ಮಗುವು ಬಹಳ ಚುಡುಕಿದೆಯಿತು. ಅದರ ವೇದನೆಯನ್ನು ನೋಡಿದ ರಾಜನು ಬಹಳ ವ್ಯಥೆಪಟ್ಟು "ಎಕಪುತ್ರನಿರುವುದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಇಲ್ಲದಿರುವುದೇ ಒಳ್ಳೆಯದು. ನೂರುಮಂದಿ ಪತ್ನಿಯ ರಲ್ಲೂ ಮಕ್ಕಳಾಗಬೇಕಾದರೆ ಏನು ಉಪಾಯ" ಎಂದು ಪುರೋಹಿತನನ್ನು ಕೇಳಿದನು. "ಈ ಜಂತು ಕುಮಾರ ನನ್ನು ಹವಿಸ್ಸನ್ನಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸಿ ಯಾಗಮಾಡಿ ಆ ವಪೆಯ ಹೊಗೆಯನ್ನು ಎಲ್ಲಾ ಪತ್ನಿಯರೂ ಕುಡಿದರೆ ಎಲ್ಲರಲ್ಲೂ ಮಕ್ಕಳು ಹುಟ್ಟುವರು" ಎಂದು ಪುರೋಹಿತನು ಹೇಳಿದನು. ರಾಜನು ಹಾಗೆಯೇ ಮಾಡಿದನು. ನೂರು ಮಂದಿ ಪತ್ನಿಯರಲ್ಲೂ ಪುತ್ರರು ಜನಿಸಿದರು. ಜಂತುವೂ ಅದೇ ತಾಯಿಯ ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಪುನಃ ಜನಿಸಿದನು. "ಜನ್ತುಜ್ಯೇಷ್ಠಃ ಸಮಭವಜ್ಜನಿತ್ಯಾಮೇವ ಪಾರ್ಥಿವ" ಭಾಂ. ವನಂ ೧೨೮.

ಜನ್ತುಕಮ್ಬ ಜಂತುಕಂಬು (ಪುಂ) ಕೃಮಿಕಂಬು, ಬಸವನ ಹುಳುವಿನ ಚಿಪ್ಪು. ಜನ್ತು: ಕಮ್ಬುರಿವ.

ಜನ್ತುಕಾ ಜಂತುಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರಗು.

ಜನ್ತುಘನ ಜಂತುಘ್ನ (ಪುಂ) 1. ಮಾದಳದ ಗಿಡ. (ನಂ) 2. ವಾಯುವಿಳಂಗ. ಜನ್ತುನ್ ಹಂತಿ-ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:) "ಹಕ್" (೩-೨-೪೩). ವಾಯುವಿಳಂಗವು ಕೃಮಿನಾಶಕವಾದುದು. 3. ಹಿಂಗು. (ವಿಂ) 4. ಕೃಮಿಗಳನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ.

ಜನ್ತುನಾಶನ ಜಂತುನಾಶನ (ನಂ) ಹಿಂಗು. ಜನ್ತುನ್ ನಾಶಯತಿ-ಗಶ (ಅದಶನೆ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪).

ಜನ್ತುಫಲ ಜಂತುಫಲ (ಪುಂ) ಉದುಂಬರವೃಕ್ಷ, ಅತ್ತಿಮರ. ಜನ್ತವ: ಫಲೇಷ್ಯ. "ಉದುಂಬರೋ ಜನ್ತುಫಲ:" ಅಮಂ.

ಜನ್ತುಮತ್ ಜಂತುಮತ್ (ವಿಂ) ಕೃಮಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಜನ್ತವ: ಸಂತ್ಯಸ್ಮಿನ್ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪).

ಜನ್ತುಮತೀ ಜಂತುಮತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೂಮಿ. ಜನ್ತವ: ಸಂತ್ಯಸ್ಯಾಮ್ ಬಾಹುಲ್ಯೇನ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪). "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬).

ಜನ್ತುಲಾ ಜಂತುಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಶತ್ಯಣ, ಜಂಬುಹುಲ್ಲು. ಜನ್ತುನ್ ಕೃಮಿನ್ ಲಾತಿ-ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩). "ಕಾಶೋಷವಾಲ: ಕಾಕೇಕ್ಷುರ್ವನಹಾಸಶ್ಚ ಜನ್ತುಲಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಜನ್ಮಕಾಲ ಜನ್ಮಕಾಲ (ಪುಂ) ಹುಟ್ಟಿದ ವೇಳೆ, ಹುಟ್ಟಿದ ಊರು.

ಜನ್ಮಕೀಲ ಜನ್ಮಕೀಲ (ನಂ) ವಿಷ್ಣು. ಜನ್ಮನ: ಕೀಲ ಇವ. "ನರಕಜಿದ್ವತಧಾಮಾ ಕೇಶವೋ ಜನ್ಮಕೀಲ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಜನ್ಮಕೃತಲಿ ಜನ್ಮಕುಂಡಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುಟ್ಟಿದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಗ್ರಹಗಳ ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ರಾಶಿಚಕ್ರ.

ಜನ್ಮಕೃತ್ ಜನ್ಮಕೃತ್ (ಪುಂ) ಹುಟ್ಟಿಗೆ ಕಾರಣನಾದ ತಂದೆ. ಜನ್ಮ ಕರೋತಿ-ಙ್ ಕೃ (ಕರಣಂ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೪೬). "त्वमेकः सर्वभूतानां जन्मकृद् वृत्तिदः पिता। अथापि नः प्रजानां ते शुश्रूषा केन वा भवेत्" ಭಾಗಂ ೩-೧೩-೪. ಜನ್ಮಕ್ಷೇತ್ರ ಜನ್ಮಕ್ಷೇತ್ರ (ನಂ) ಹುಟ್ಟಿದ ಸ್ಥಳ, ಹುಟ್ಟಿದ ಊರು.

ಜನ್ಮಜ್ಯೇಷ್ಠ ಜನ್ಮಜ್ಯೇಷ್ಠ (ಪುಂ) ಹಿರಿಯ, ಹುಟ್ಟಿನಿಂದ ದೊಡ್ಡವನು. ಜನ್ಮನಾ ಜ್ಯೇಷ್ಠಃ.

ಜನ್ಮತಸ್ ಜನ್ಮತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಹುಟ್ಟಿನಿಂದ, ಹುಟ್ಟಿದ ಕಾಲದಿಂದ. ಜನ್ಮನ್ ತೃತೀಯಾರ್ಥ "ತಸಿ:" (ವಾಂ ೪-೪-೪೪). "विप्राणां ज्ञानतो ज्यैष्ठ्यं क्षत्रियाणां तु वीर्यतः। वैश्यानां धान्यधनतः शूद्राणामेव जन्मतः" ಮನುಂ ೨-೧೪೪. 2. ಹುಟ್ಟಿದ ಮೊದಲುಗೊಂಡು. "एवमाश्रमविरुद्ध-वृत्तिना संयमः किमिति जन्मतस्त्वया" ಶಾಕುಂ ೭-೧೮.

ಜನ್ಮತಾರಾ ಜನ್ಮತಾರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜನ್ಮನಕ್ಷತ್ರ, ಹುಟ್ಟಿದ ನಕ್ಷತ್ರ.

ಜನ್ಮತಿಥಿ ಜನ್ಮತಿಥಿ (ಪುಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುಟ್ಟಿದ ದಿವಸ.

ಜನ್ಮದ ಜನ್ಮದ (ಪುಂ) ಜನ್ಮವನ್ನು ಕೊಟ್ಟ ತಂದೆ. ಜನ್ಮ ದದಾತಿ-ಙ್ ದಾ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩).

ಜನ್ಮದಾತೃ ಜನ್ಮದಾತೃ (ಪುಂ) "ಜನ್ಮದ" ಪದದ ಅರ್ಥ, ಜನ್ಮ ದದಾತಿ - ಙ್ ದಾ (ದಾನೇ) "ತೃಪ್" (೩-೧-೧೩೩). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ದಾತೃ -ದಾತೃ. ತಾಯಿ.

ಜನ್ಮದಿನ ಜನ್ಮದಿನ (ನಂ) ಹುಟ್ಟಿದ ದಿನ, ಹುಟ್ಟಿದ ತಿಥಿ. ಜನ್ಮನೋ ದಿನಮ್.

ಜನ್ಮನ್ ಜನ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ಜನನ, ಹುಟ್ಟುವುದು, ಶರೀರ ತ್ಯಾಗಕಾಲ ಮೊದಲುಗೊಂಡು ಪುನಃ ಸುಖಾನುಭವ ಪಡೆಯುವ ಪೂರ್ವಕ್ಷಣದವರೆಗಿನ ಅವಸ್ಥೆ. ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತಭಿವಿ) ಭಾವೇ "ಮನಿನ್" (ಛಂ ೪-೧೪೪). "जन्म यस्य पुरोर्वशे युक्तरूपमिदं तव। पुत्रमेवंगुणोपेतं चक्रवर्तिन-माप्नुहि" ಶಾಕುಂ ೧-೧೧. 2. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಸೃಷ್ಟಿ. "आकरे पद्मरागाणां जन्म काचमणः कुतः" 3. ಜೀವಮಾನ, ಜೀವಿತಕಾಲ. "बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन। तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप" ಗೀತಾ ೪-೫. 4. ಜನ್ಮನಕ್ಷತ್ರ, ಹುಟ್ಟಿದ ನಕ್ಷತ್ರ. 5. 10 ಮತ್ತು 19ನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ. 6. ಜನ್ಮರಾಶಿ. 7. ಜನ್ಮಊರು.



ಜನ್ಮನಾಮನ್ ಜನ್ಮನಾಮನ್ (ನಂ) ಹುಟ್ಟಿದ ಹನ್ನೊಂದನೆಯ ದಿನದನಂತರ ಇಡುವ ಹೆಸರು.

ಜನ್ಮಪ ಜನ್ಮಪ (ಪುಂ) 1. ಜನ್ಮ ಲಗ್ನಾಧಿಪತಿ. 2. ಜನ್ಮ ರಾಶ್ಯಧಿಪತಿ. ಜನ್ಮ ಜನ್ಮಲಗ್ನಂ ಜನ್ಮರಾಶಿ ವಾ ಪಾತಿ—ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) “ಕ.” (೩-೨-೩)। एवं ಜನ್ಮಪತಿ: ಜನ್ಮಪತಿ: ಜನ್ಮಪತ್ರಿಕಾ ಜನ್ಮಪತ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಾತಕ. ಹುಟ್ಟಿದ ವೇಳೆ ಮತ್ತು ಆ ವೇಳೆಯಲ್ಲಿ ಗ್ರಹಗಳ ಸ್ಥಿತಿಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಪತ್ರಿಕೆ.

ಜನ್ಮಪ್ರಭೃತಿ ಜನ್ಮಪ್ರಭೃತಿ (ಅವ್ಯಂ) ಹುಟ್ಟಿದ ಮೊದಲು ಗೊಂಡು, ಹುಟ್ಟಿದಂದಿನಿಂದ.

ಜನ್ಮಭ ಜನ್ಮಭ (ನಂ) 1. ಜನ್ಮನಕ್ಷತ್ರ. 2. ಜನ್ಮಲಗ್ನ. 3. ಜನ್ಮರಾಶಿ.

ಜನ್ಮಭೂ ಜನ್ಮಭೂ, -ಭೂಮಿ -ಭೂಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುಟ್ಟಿದ ಊರು, ಜನ್ಮಸ್ಥಳ. “ಜನನಿ ಜನ್ಮಭೂಮಿಃ ಸ್ವರ್ಗಾದಪಿ ಗರೀಯಸಿ” ಉಕ್ತಂ.

ಜನ್ಮಮಾಸ ಜನ್ಮಮಾಸ (ಪುಂ) ಹುಟ್ಟಿದ ತಿಂಗಳು. ಜನ್ಮನೋ ಮಾಸ: ಜನ್ಮಮಾಸದಲ್ಲಿ ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಪುತ್ರ ಮತ್ತು ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಪುತ್ರಿ ಇವರಿಗೆ ವಿವಾಹವು ನಡೆದ್ದು. “ಜನ್ಮಮಾಸೇ ನ ಜನ್ಮಕ್ಷೇ ನ ಜನ್ಮದಿವಸೇಽಪಿ ವಾ | ಆದ್ಯಗರ್ಭಸುತಸ್ಯಾಪಿ ದುಹಿತುರ್ವಾ ಕರಗ್ರಹ:” | ದ್ವಿತೀಯಾದಿ ಪುತ್ರ ಪುತ್ರಿಯರಿಗೆ ಜನ್ಮ ಮಾಸದಲ್ಲಿ ವಿವಾಹವು ಶುಭಪ್ರದವಾದುದು. “ಜನ್ಮಕ್ಷೇ ಜನ್ಮಮಾಸೇ ವಾ ತಾರಾಯಾಮಥ ಜನ್ಮನಿ | ಜನ್ಮಲಗ್ನೇ ಭವೇದ್ವಾ ಪುತ್ರಾಥವಾ ಪತಿವಲ್ಲಭಾ” |

ಜನ್ಮರಾಶಿ ಜನ್ಮರಾಶಿ (ಪುಂ) ಜನನಕಾಲದಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರನಿರುವ ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ ರಾಶಿ.

ಜನ್ಮಕ್ಷ ಜನ್ಮಕ್ಷ (ನಂ) ಹುಟ್ಟಿದ ನಕ್ಷತ್ರ.

ಜನ್ಮಲಗ್ನ ಜನ್ಮಲಗ್ನ (ನಂ) ಜನನಕಾಲದ ಲಗ್ನ.

ಜನ್ಮವತ್ ಜನ್ಮವತ್ (ವಿಂ) ಜನ್ಮವುಳ್ಳ, ಹುಟ್ಟುವ, ಜನ್ಮ ವನ್ನು ತಾಳುವ (ಜೀವ). ಜನ್ಮಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ — “ಮತು” (೪-೨-೯೪)। “ಚಿವಿಷತಾಂ ಜನ್ಮವತಾಮಲಧಿವಿ ಯಶೋವತಂಸಾ-ಮುಖ್ಯತ್ರ ಭೂತಿ” ಕಿರಾಂ ೩-೧೧ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಛಿಪ್” (೪-೧-೬) | -ವತಿ -ವತಿ.

ಜನ್ಮವರ್ಮನ್ ಜನ್ಮವರ್ಮನ್ (ನಂ) ಹುಟ್ಟುವ ಮಾರ್ಗ, ಗರ್ಭದಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ಬರುವ ಮಾರ್ಗ, ಯೋನಿ. “ಭಗ್ ಗುಹ್ಯಂ ವರಾಜ್ಞಂ ಚ ಕಲತ್ರಂ ಜನ್ಮವರ್ಮ ಚ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಜನ್ಮಶಯ್ಯಾ ಜನ್ಮಶಯ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಸವಕ್ಕಾಗಿ ಹಾಕಿದ ಹಾಸಿಗೆ, ಹುಟ್ಟಿದ ಶಿಶುವನ್ನು ಮಲಗಿಸಲು ಹಾಕಿದ ಹಾಸಿಗೆ. ಜನ್ಮಾರ್ಥ ಶಯ್ಯಾ | “ಸ ದದಶಿ ಮಾತುರಾಂ

ಶರತ್ಪಗತಂ ಪ್ರಭೋ | ಜನ್ಮಶಯ್ಯಾಗತಂ ವೀರಂ ಕಾರ್ತಿಕೇಯಮಿವ ಪ್ರಭು” ಭಾಂ |

ಜನ್ಮಸಾಫಲ್ಯ ಜನ್ಮಸಾಫಲ್ಯ (ನಂ) ಜೀವನದ ಸಾರ್ಥಕತೆ.

ಜನ್ಮಾಂತರ ಜನ್ಮಾಂತರ(ನಂ) ಬೇರೆಜನ್ಮ, ಹಿಂದಿನ ಅಥವಾ ಮುಂದಿನ ಜನ್ಮ. ಅನ್ಯತ್ ಜನ್ಮ | “ತ್ವತ್ಪಾದಕಮಲಾದನ್ಯತ್ರ ಮೇ ಜನ್ಮಾಂತರೇಽಪಿ | ನಿಮಿತ್ತಂ ಕುಶಲಸ್ಯಾಸ್ತಿ ಯೇನ ಗಚ್ಛಾಮಿ ಸದ್ಗತಿ” | “ಮನೋ ಹಿ ಜನ್ಮಾಂತರಸಂಕ್ಲಿಪ್ತಮ್” ರಘುಂ ೭-೧೪ | “ಜನ್ಮಾಂತರಕೃತಂ ಪಾಪಂ ವ್ಯಾಧಿರೂಪೇಣ ನಶ್ಯತಿ” |

ಜನ್ಮಾಂತರೀಣ ಜನ್ಮಾಂತರೀಣ (ವಿಂ) ಬೇರೆ ಜನ್ಮದ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಹಿಂದಿನ ಜನ್ಮದ ಸಂಬಂಧವಾದ. “ಜನ್ಮಾ-ಂತರೀಣರಮಣಸ್ಯಾಜ್ಞಸಂಕ್ಲಿಪ್ತಮುಕ್ತುಕಾ | ಸಲಜ್ಜಾ ಚಾಂತಿಕೇ ಸಖ್ಯಾ: ಪಾತು ನ: ಪಾರ್ವತೀ ಸದಾ” |

ಜನ್ಮಾಂತರೀಯ ಜನ್ಮಾಂತರೀಯ (ವಿಂ) ಬೇರೆ ಜನ್ಮದ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಹಿಂದಿನ ಜನ್ಮದ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಮತ್ತೊಂದು ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಜನ್ಮಾಂತರೇ ಭವ: “ಛ:” (೪-೨-೧೩೮) |

ಜನ್ಮಾಷ್ಟಮಿ ಜನ್ಮಾಷ್ಟಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಜನ್ಮಾಷ್ಟಮಿ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಆವತರಿಸಿದ ಶ್ರಾವಣ (ಸಿಂಹ) ಕೃಷ್ಣಾಷ್ಟಮಿ.

ಜನ್ಮಾಸ್ಪದ ಜನ್ಮಾಸ್ಪದ (ನಂ) ಜನ್ಮಕ್ಷೇತ್ರ, ಜನ್ಮಸ್ಥಳ, ಹುಟ್ಟಿದ ಊರು.

ಜನ್ಮಿನ್ ಜನ್ಮಿನ್ (ವಿಂ) ಪ್ರಾಣಿಮಾತ್ರ, ಜೀವ. ಜನ್ಮಾ-ಸ್ಯಸ್ಯ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೬) | “ಅಂತಕ: ಪರ್ಯವಸ್ಥಾತಾ ಜನ್ಮಿನ: ಸಂತತಾಪದ: | ಇತಿ ತ್ಯಾಜ್ಯೇ ಭವೇ ಭವ್ಯೋ ಮುಕ್ತಾ-ವುತ್ಪಿಷ್ಠತೇ ಜನ:” ಕಿರಾಂ ೧೧-೧೩ |

ಜನ್ಯ ಜನ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಜನಕ, ತಂದೆ. ಜಾಯತೇ ಜನಯತಿ ವಾ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುರ್ಭವಿ) + “ಣಿಚ್” ಕರ್ಮಂ “ಯತ್” (೩-೪-೬೮) | 2. ಹೊಸದಾಗಿ ಮದುವೆಯಾದ ವಧುವಿನ ನೆಂಟರು ಮತ್ತು ಸೇವಕರು. ಜನಿ ವಧು ನಯತಿ ವಹತಿ ವಾ “ಯತ್” (೪-೪-೮೨) | 3. ಮದು ವಳೆಗೆ (ವರ)ನ ಬಂಧು ಮತ್ತು ಸ್ನೇಹಿತ. “ಜನ್ಯಾ: ಸ್ತಿಗ್ಧಾ ವರಸ್ಯ ಯೇ” ಅಮಂ | “ಜ್ಞಾತಿಭೃತ್ಯಾ ನವೋಡಾಪಾ ಜನ್ಯಾ: ಸ್ತಿಗ್ಧಾ ವರಸ್ಯ ಚ” ವೈಜಂ | 4. ದೇಹ, ಶರೀರ. “ನಿವೃತ್ತಸರ್ವೇಂದ್ರಿಯವೃತ್ತಿವಿಭ್ರಮಸ್ತುಷ್ಠಾವ ಜನ್ಯಂ ವಿಸೃಜನ್ ಜನಾರ್ದನಮ್” ಭಾಗಂ ೧-೯-೩೧ | (ನಂ) 5. ಲೋಕಾಪ ವಾದ, ಜನಾನಾಂ ಜಲ್ಪ: “ಯತ್” (೪-೪-೯೭) | 6. ಯುದ್ಧ, ಕದನ, ಜನಿ “ಯಕ್” (೩ಂ ೪-೧೧೧) | “ಚಾರುಣಾ ರಮತೇ ಜನ್ಯೇ ಕೋಽಭಿತೋ ರಸಿತಾಶಿನಿ” ಕಿರಾಂ ೧೪-೨೩ |



“ತತ್ರ ಜನ್ಯಂ ರಘೋರಂ ಪರ್ವತೀಯಗಂಧರಭೃತ್” ರಘುಂ ೪-೭೭ ।  
7. ಜನನ, ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟು. 8. ಸಂತೆ, ವ್ಯಾಪಾರ ಸ್ಥಳ. (ವಿಂ) 9. ಜನರಿಗೆ ಹಿತವಾದ. ಜನಾಯ ಹಿತಮ್ “ಯತ್” (೪-೧-೪) । 10. ಉತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಒಳಪಟ್ಟು, ಹುಟ್ಟುವ. ಜನ್ಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ “ಯತ್” (ವಾಂ ೩-೧-೯೭) । “ಜನ್ಯಾನಾಂ ಜನಕಃ ಕಾಲಃ” ಭಾಷಾಪಂ । 11. ಕುಲಸಂಬಂಧವಾದ, ವಂಶಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನ್ಯಾ -ನ್ಯಾ. 12. ತಾಯಿಯ ಗೆಳತಿ. 13. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. “ಜನ್ಯೋ ಜಾಮಾತೃವತ್ಸಲೇ । ಜನಕೇ ಜನನೀಯೇ ಚ ನವೋದಾನುಚರಾದಿಕೇ । ಜನ್ಯಂ ಕೌಲೀನೇ ಯುಧ್ಯದ್ರೇ ಜನ್ಯಾ ಮಾತೃಸಖೀಮದೋಃ” ಹೇಮಂ । “ಜನ್ಯಂ ಹೃದ್ರೇ ಪರೀವಾದೇ ಸಂಗ್ರಾಮೇ ಚ ನಪುಂಸಕಮ್ । ಜನ್ಯಾ ಮಾತೃವಯಸ್ಯಾಯಾಂ ಜನ್ಯಃ ಸ್ಯಾಜ್ಜನಕೇ ಪುಮಾನ್” ಮೇದಿಂ ।

ಜನ್ಯು ಜನ್ಯು (ಪುಂ) 1. ಪಾಣಿ, ಜಂತು. ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) “ಯುಚ್” (೩ಂ ೩-೨೦) । 2. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 3. ಜನನ, ಉತ್ಪತ್ತಿ. 4. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. “ಜನ್ಯುಃ ಸ್ಯಾತ್ ಪುಂಸಿ ಪ್ರಾಣ್ಯಗ್ನಿಧಾತೃಪು” ಮೇದಿಂ ।

ಜಪ - ಮಾನಸೇ, ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ (ಶ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) ।  
ಜಪತಿ । ಜಪಾಪ । ಜಪಿತಾ । ಜಪಿಷ್ಯತಿ । ಜಪತು ।  
ಅಜಪತ್ । ಜಪೇತ್ । ಜಪ್ಯಾತ್ । ಅಜಾಪಿತ್, ಅಜಪಿತ್ ।  
ಅಜಪಿಷ್ಯತ್ । ಜಪಿಸು, ಮಂತ್ರವನ್ನು (ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ) ಆವೃತ್ತಿಮಾಡು, ಮಂತ್ರವನ್ನು ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಉಚ್ಚರಿಸು.  
ಕರ್ಮಣಿ :- ಜಪ್ಯತೇ । ಜಪೇ । ಜಪಿತಾ । ಜಪಿಷ್ಯತೇ ।  
ಜಪ್ಯತಾಮ್ । ಅಜಪ್ಯತ । ಅಪ್ಯೇತ । ಜಪಿಷಿಷ್ಠ । ಅಜಾಪಿ ।  
ಅಜಪಿಷ್ಯತ ।

ಣಿಚಿ :- ಜಾಪಯತಿ, -ತೇ । ಜಾಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ । ಜಾಪಯಿತಾ । ಜಾಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ ।  
ಜಾಪಯತು, -ತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ :- ಜಿಜಪಿಷತಿ । ಜಿಜಪಿಷಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ । ಜಿಜಪಿಷಿತಾ । ಜಿಜಪಿಷಿಷ್ಯತಿ । ಜಿಜಪಿಷತು ।  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತು :- ಜಪಿತವ್ಯಃ । ಜಪನೀಯಃ । ಜಪ್ಯಃ । ಜಪಿತಃ ।  
ಜಪಿತವಾನ್ । ಜಪನ್, ಜಪಂತಿ । ಜಪಿತುಮ್ । ಜಪಿತಮ್ ।  
ಜಪನಮ್ । ಜಪಿತ್ವಾ । ಅಪಜಪ್ಯ ।

ಜಪ ಜಪ (ಪುಂ) 1. ಮಂತ್ರವನ್ನು ಆವೃತ್ತಿಮಾಡುವುದು, ಮಂತ್ರವನ್ನು ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಉಚ್ಚರಿಸುವುದು. ಜಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ “ಅಪ್” (೩-೩-೬೧) ।  
“ಜಪಹೋಮೇರಪೇತೇನೋ ಯಾಜನಾಧ್ಯಾಪನೇಃ ಕೃತಮ್ । ಪ್ರತಿಗ್ರಹನಿಮಿತ್ತಂ

ತು ತ್ಯಾಗೇನ ತಪಸೇವ ಚ” ಮನುಂ ೧೦-೧೧೧ । “ಸಮಾಚರಾ-  
ಚಾರಮುಪಾತ್ತಶಸ್ತ್ರೋ ಜಪೋಪವಾಸಾಭಿಷವೈಮುನೀನಾಮ್” ಕಿರಾಂ  
೩-೨೮ । (ವಿಂ) 2. ಮಂತ್ರವನ್ನು ಜಪಿಸುವ, ಮಂತ್ರ  
ವನ್ನು ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಉಚ್ಚರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಕರ್ಮಂ “ಅಪ್”  
(೩-೧-೧೩೪) ।

ಜಪತ್ ಜಪತ್ (ವಿಂ) ಜಪಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಮನದಿಂದ  
ಮಂತ್ರವನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಜಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ)  
“ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । “ಜಪತಃ ಸದಾ ಜಪಮುಪಾಂಶು  
ವದನಮಭಿತೋ ವಿಸಾರಿಭಿಃ” ಕಿರಾಂ ೧೨-೮ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ಙೀಪ್” (೪-೧-೬) । ಜಪಂತಿ ಜಪಂತೀ.

ಜಪನ ಜಪನ (ನಂ) ಜಪಮಾಡುವುದು, ತಗ್ಗು ದನಿಯಲ್ಲಿ  
ಮಂತ್ರವನ್ನು ಆವೃತ್ತಿಮಾಡುವುದು. ಜಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ  
ವಾಚಿ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) । “ಸನ್ಯಾಸ ಏವ  
ವೇದಾಂತೇ ವರ್ತಂತೇ ಜಪನಂ ಪ್ರತಿ” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೧೯೪-೭ ।

ಜಪನೀಯ ಜಪನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಜಪಮಾಡಲ್ಪಡುವ.  
2. ಜಪಮಾಡಬೇಕಾದ, ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಜಪಿಸಬೇಕಾದ.  
3. ಜಪಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಜಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ)  
ಕರ್ಮಾದಿ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । “ತವ್ಯಃ” ।  
ಜಪಿತವ್ಯಃ ಜಪಿತವ್ಯಃ.

ಜಪಮಾಲಾ ಜಪಮಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರುದ್ರಾಕ್ಷಿಯ ಸರ, ಜಪ  
ಸರ, ತುಲಸೀಮಣಿಯ ಸರ.

ಜಪಯಜ್ಞ ಜಪಯಜ್ಞ (ಪುಂ) ಜಪರೂಪವಾದ ಯಾಗ. ಜಪ  
ಏವ ಯಜ್ಞಃ । ಜಪಯಜ್ಞವು ವಾಚಿಕಃ ಉಪಾಂಶುಃ ಮತ್ತು  
ಮಾನಸಃ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ.

(1) ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಉಚ್ಚರಿಸಿ ಮೆಲ್ಲಗೂ  
ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿಯೂ ಮಂತ್ರಗಳನ್ನು ಜಪಿಸುವುದು ವಾಚಿಕ  
ಜಪಯಜ್ಞ. “ಯದ್ವಚನೀಚೋಚ್ಚರಿತಃ ಶಬ್ದಃ ಸ್ಪಷ್ಟಪದಾಕ್ಷರಃ ।  
ಮನ್ತ್ರಮುಚ್ಚಾರಯನ್ ವಾಚಾ ಜಪಯಜ್ಞಃ ಸ ವಾಚಿಕಃ” ।

(2) ತುಟಿಗಳು ಅಲುಗಾಡುವಷ್ಟು ಮಾತ್ರ ಮೆಲ್ಲಗೆ  
ಇತರರಿಗೆ ಕೇಳಿಸುವಂತೆ ಜಪಿಸುವುದು ಉಪಾಂಶು  
ಜಪಯಜ್ಞ. “ಶನೈರ್ಮುಚ್ಚಾರಯನ್ ಮನ್ತ್ರಂ ಕಿಂಚಿದೋಷಿ ಪ್ರಚಾಲ-  
ಯೇತ್ । ಕಿಂಚಿತ್ ಶ್ರವಣಯೋಗ್ಯಸ್ತು ಸ ಉಪಾಂಶುಜಪಃ ಸ್ಮೃತಃ” ।

(3) ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಮಂತ್ರಾರ್ಥಗಳನ್ನು ಮನನ  
ಮಾಡುತ್ತಾ ಇತರರಿಗೆ ಕೇಳಿಸದಂತೆ ಜಪಿಸುವುದು ಮಾನಸ  
ಜಪಯಜ್ಞ. “ಧಿಯಾ ಪದಾಕ್ಷರಶ್ರೇಣ್ಯಾ ಅವರ್ಣಮಪದಾಕ್ಷರಮ್ ।  
ಮನ್ತ್ರಾರ್ಥಚಿಂತನಾಭ್ಯಾಂ ತು ತದುವತ್ ಮಾನಸಂ ಸ್ಮೃತಮ್” ।  
“ಸಾಲಂಬನಮಿತಿ ಜ್ಞೇಯಂ ಜಪಯಜ್ಞಾತ್ಮಕಂ ಶುಭಮ್” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ  
೧೯೪-೧೦ । “ವಿಧಿಯಜ್ಞಾಜಪಯಜ್ಞೋ ವಿಶಿಷ್ಟೋ ದಶಭಿ-



ಗುಣೈಃ । ತಪಾಃಶುಃ ಸ್ವಾಚ್ಛತಗುಣಃ ಸಾಹಸೋ ಮಾನಸಃ ಸ್ಮೃತಃ”  
ಮನುಂ ೨-೮೫ ।

**ಜಪಸ್ಥಾನ ಜಪಸ್ಥಾನ (ನಂ)** ಜಪಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ಸ್ಥಳ ;  
ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ, ನದೀತೀರ, ಗುಹೆ, ಪರ್ವತಶಿಖರ, ನದಿಗಳ  
ಸಂಗಮಸ್ಥಳ, ಪವಿತ್ರವಾದ ಸರಸ್ಸು, ದೇವಾಲಯ,  
ಸಮುದ್ರತೀರ, ಉದ್ಯಾನವನ, ಸ್ವಗೃಹ, ಬಿಲ್ವಮೂಲ.  
ಇವು ಜಪಯೋಗ್ಯ ಸ್ಥಳಗಳು.

**ಜಪಾ ಜಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ದಾಸಿವಾಳದ ಗಿಡ. 2. ದಾಸಿ  
ವಾಳದ ಹೂವು. “ಸಾನ್ಧ್ಯಂ ತೇಜಃ ಪ್ರತಿನವಜಪಾಪುಷ್ಪರಕ್ತಂ  
ದಧಾನ್” ಮೇಘಂ ೧-೪೦ ।

**ಜಪಿತ ಜಪಿತ (ನಂ)** 1. ಜಪಮಾಡುವುದು. ಜಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ  
ವಾಚಿ) ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪) । (ವಿಂ) 2. ಜಪಿಸಿ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ತಗ್ಗು ದನಿಯಲ್ಲಿ ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಜಪ ಕರ್ಮಂ  
“ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । “ಪರಮಂ ಗೃಹ್ಯತಾಂ ತಸ್ಯ ಫಲಂ  
ಯಜ್ಜಪಿತಂ ಮಯಾ” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೧೯೭-೪೪ ।

**ಜಪಿತವತ್ ಜಪಿತವತ್ (ವಿಂ)** ಜಪಿಸಿದವನು, ಮಂತ್ರ  
ವನ್ನು ತಗ್ಗು ದನಿಯಲ್ಲಿ ಉಚ್ಚರಿಸಿದವನು. ಜಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ  
ವಾಚಿ) “ಕ್ತವತುಃ” (೩-೨-೧೦೨) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀಪ್”  
(೪-೧-೬) । -ವತೀ -ವತೀ.

**ಜಪ್ಯ ಜಪ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಜಪಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ  
ಜಪಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಜಪಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಜಪ್ಯತೇ—  
ಜಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಕರ್ಮಾದಿ “ಯತ್” (೩-೧-೯೮) ।  
“ಜಪ್ಯಮಾವರ್ತಯಸ್ತುಷ್ಣಿಂ ನ ಸ ತಾಂ ಕಿಂಚಿದಬ್ರವೀತ್” ಭಾಂ  
ಶಾಂತಿಂ ೧೯೭-೭ । 4. ಜಪ, ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಮಂತ್ರೋ  
ಚ್ಚಾರಣ ಮಾಡುವುದು, ಜಪ ಭಾವೇ “ಯತ್” (೩-೧-೯೮) ।  
“ಜಪ್ಯೇನೈವ ಹಿ ಸಂಸಿದ್ಧೇತ್ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ನಾತ್ರ ಸಂಶಯಃ” ಮನುಂ  
೨-೮೭ ।

**ಜಮತ್ ಜಮತ್ (ವಿಂ)** ತಿನ್ನುತ್ತಿರುವ, ಭಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ.  
ಜಮು (ಅದನೇ) “ಶತ್” (೩-೧-೧೨೪) ।

**ಜಮದಗ್ನಿ ಜಮದಗ್ನಿ (ಪುಂ)** ಭೃಗುವಂಶದ ಒಬ್ಬ ಯುಷಿ,  
ಪರಶುರಾಮನ ತಂದೆ. ಜಮನ್ ಅಗ್ನಿರಿವ । [ಈ ಯುಷಿಯು  
ತಂದೆ ಶುಚೀಕಯುಷಿ. ಗಾಧಿರಾಜನ ಮಗಳಾದ  
ಸತ್ಯವತಿಯು ತಾಯಿ. ರೇಣುಕೆಯೆಂಬುವಳು ಪತ್ನಿ.  
ರುಮಣ್ಣಂತ, ಸುಷೇಣ, ವಸು, ವಿಶ್ವಾವಸು ಮತ್ತು  
ಪರಶುರಾಮ ಎಂಬುವರು ಈ ಯುಷಿಯ ಐದು ಮಂದಿ  
ಮಕ್ಕಳು. ಪತ್ನಿಯಾದ ರೇಣುಕೆಯು ಒಂದು ದಿನ ನದಿಗೆ  
ಸ್ನಾನಕ್ಕಾಗಿ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಅಲ್ಲಿ ಜಲಕ್ರೀಡೆಯಾಡುತ್ತಿದ್ದ  
ಚಿತ್ರರಥಗಂಧರ್ವನನ್ನು ಕಂಡು ಮೋಹಪರವಶಳಾದುದ

ರಿಂದ ಮನೆಗೆ ಬರಲು ತಡವಾಯಿತು. ಅದರಿಂದ  
ಸಂಶಯಗೊಂಡ ಜಮದಗ್ನಿಯು ಅವಳ ಕತ್ತನ್ನು ಕತ್ತರಿಸು  
ವಂತೆ ತನ್ನ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಹೇಳಲು ನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳು  
ಅದಕ್ಕೆ ಹಿಂಜರಿದರು. ಪರಶುರಾಮನು ತಂದೆಯ ಮಾತನ್ನು  
ಪಾಲಿಸಿದನು. ಅದರಿಂದ ಪ್ರಸನ್ನನಾದ ತಂದೆಯು ವರ  
ವನ್ನು ಬೇಡುವಂತೆ ತಿಳಿಸಲು ಪರಶುರಾಮನು ತನ್ನ  
ತಾಯಿಯನ್ನು ಬದುಕಿಸಬೇಕೆಂದೂ ಇನ್ನು ಮುಂದೆ ಇಂತಹ  
ಕೋಪವನ್ನು ಬಿಡಬೇಕೆಂದೂ ತಂದೆಯನ್ನು ಕೇಳಿಕೊಂಡನು.  
ಜಮದಗ್ನಿಯು ಅದಕ್ಕೆ ಒಪ್ಪಿ ರೇಣುಕೆಯನ್ನು ಬದುಕಿಸಿ  
ದನು.] ಭಾಂ ವನಂ ೧೧೬ ।

**ಜಮನ ಜಮನ (ನಂ)** ಭಕ್ಷಣ, ತಿನ್ನುವುದು. ಜಮು (ಅದನೇ)  
ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) ।

**ಜಮ್ಪತೀ ಜಂಪತೀ (ಪುಂ ದ್ವಿವಂ)** ದಂಪತಿಗಳು, ಪತಿಪತ್ನಿ  
ಯರು, ಗಂಡ ಮತ್ತು ಹೆಂಡತಿ. ಜಾಯಾ ಚ ಪತಿಶ್ಚ—  
ಜಾಯಾಯಾ ಜಮ್ ಭಾವೋ ನಿಪಾತ್ಯತೇ (೨-೨-೩೧) ।

**ಜಂಬಾಲ ಜಂಬಾಲ (ಪುಂ)** 1. ಶೈವಾಲ, ಪಾಚಿ. 2. ಪಂಕ,  
ಕೆಸರು. ಜಮತಿ—ಜಮು (ಅದನೇ) “ಬಾಲನ್” ಬಾಹುಂ ।  
“ಜಂಬಾಲಃ ಶೈವಲೇ ಪಕ್ಷೇ” ಮೇದಿಂ । 3. ತಾಳೆಮರ.

**ಜಂಬಾಲಿನಿ ಜಂಬಾಲಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ನದಿ. ಹೊಳೆ.  
ಜಂಬಾಲೋಽಸ್ಯಾಮಸ್ತಿ “ಛಿನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪) । “ಙೀಪ್”  
(೪-೧-೫) ।

**ಜಂಬೀರ ಜಂಬೀರ (ಪುಂ)** 1. ನಿಂಬೆಗಿಡ. 2. ಮರುಗ.  
3. ಗಗ್ಗರಗಿಡ. ಜಮ್ಯತೇ—ಜಮು (ಅದನೇ) “ಛೀನ್”  
(೩ಂ ೪-೩೫) । ನಿಪಾಂ ।

**ಜಮ್ಬು(ಮ್) ಜಂಬು(ಬೂ) (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ನೇರಿಕೆಮರ.  
ಜಮು (ಅದನೇ) “ಕುಃ” (೩ಂ ೧-೯೩) । ಬುಕ್ ಬಾಹುಂ  
ಹ್ರಸ್ವಶ್ಚ ನಿಪಾಂ । ಜನಿ (ಪ್ರಾದುಭವಿ) “ಕುಃ” ಬುಕ್ ಬಾ ।  
2. ಜಂಬೂದ್ವೀಪ. (ನಂ) 3. ನೇರಿಕೆಹಣ್ಣು. ಜಮ್ಬಾಃ  
ಫಲಮ್ “ಅಖ್” (೪-೩-೧೩೯) । ತಸ್ಯ ಲುಕ್ (೪-೩-೧೬೩) ।  
ಪಕ್ಷೇ ಲುಪ್ (೪-೩-೧೬೬) । “ಜಮ್ಬುಚೂತರಸಜಗಿಧರಜಿಜತೈಃ  
ಸ್ನಿಗ್ಧಕಣಿಠ ಕಲಕಣಿಠನಿಃಸ್ವನೈಃ” ಯಾದಂ ೧೭-೧೬ ।

**ಜಮ್ಬು(ಮ್)ಕ ಜಂಬು(ಬೂ) ಕ (ಪುಂ)** 1. ಸ್ತಗಾಲ, ನರಿ.  
ಜಮತಿ ಮಾಸಮತಿ—ಜಮು (ಅದನೇ) “ಕುಃ” (೩ಂ ೧-೩೭) ।  
ನಿಪಾಂ । ಪೃಷಂ । “ಗೃಧ್ರಾಃ ಕಡ್ಢಾ ಬಕಾಃ ಕ್ಷೇನಾ  
ವಾಯಸಾ ಜಮ್ಬುಕಾಸ್ತಥಾ” ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೧೭-೧೩ । 2. ನೇರಿಕೆ  
ಮರ. ಜನಿ (ಪ್ರಾದುಭವಿ) “ಕುಃ” ಬುಕ್ ಬಾಹುಂ ಹ್ರಸ್ವಃ ।  
ಸ್ವಾರ್ಥೇ “ಕಃ” । 3. ಹೆಮ್ಮರ, ತಿಗಡುಮರ. 4. ವರುಣ.  
(ವಿಂ) 5. ನೀಚ, ಅಧಮ. “ಜಮ್ಬುಕಃ ಫೇರವೇ ನೀಚೇ



ಪಶ್ಚಿಮಾಶಾಪತಾವಪಿ " ಮೇದಿಂ । "ಜಮ್ಬುಕೋ ವರುಣೇ ಫೇರೈ" ಹೇಮಂ ।

**ಜಮ್ಬು(ಮ್)ದ್ವೀಪ ಜಂಬು(ಬೂ)ದ್ವೀಪ (ಪುಂ) ಜಂಬೂ** ವೃಕ್ಷಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ದ್ವೀಪ. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿರುವ ಸಪ್ತ (ಏಳು) ದ್ವೀಪಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಜಮ್ಬು (ಮ್) ವೃಕ್ಷ-ಯುಕ್ತ ದ್ವೀಪ: । **ಸಪ್ತದ್ವೀಪಗಳು:** (1) ಜಮ್ಬು (ಮ್) ದ್ವೀಪ:, (2) ಲಕ್ಷದ್ವೀಪ:, (3) ಶಾಲಮಲಿದ್ವೀಪ:, (4) ಕುಶದ್ವೀಪ:, (5) ಕೌಶದ್ವೀಪ:, (6) ಶಾಕದ್ವೀಪ: ಮತ್ತು (7) ಪುಷ್ಕರದ್ವೀಪ: । ಈ ಏಳು ದ್ವೀಪಗಳೂ ಏಳು ಸಮುದ್ರಗಳಿಂದ ಸುತ್ತುವರಿಯಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. ಜಂಬೂದ್ವೀಪವು ಈ ಎಲ್ಲಾ ದ್ವೀಪಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವುದು. ಮೇರುಪರ್ವತವು ಜಂಬೂದ್ವೀಪದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವುದು. "ಏತೇ ದ್ವೀಪಾ: ಸಮುದ್ರೇಸ್ತು ಸಪ್ತ ಸಪ್ತಭಿರಾವೃತಾ: । ಲವಣೇಷುಸುರಾಸಿಪಿರ್ದಿಧಿಧುಧಜಲೈ: ಸಮಮ್ । ಜಮ್ಬು(ಮ್)ದ್ವೀಪ: ಸಮಸ್ತಾನಾಮೇತೇಷಾಂ ಮಧ್ಯಸಂಸ್ಥಿತ: । ತಸ್ಯಾಪಿ ಮೇರುಮೃತ್ಯು ಮಧ್ಯೇ ಕನಕಪರ್ವತ: " ವಿಷ್ಣುಪುಂ ।

**ಜಮ್ಬು(ಮ್)ನದೀ ಜಂಬು(ಬೂ)ನದೀ(ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಜಂಬೂ ಫಲದ ರಸದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿ ಹರಿಯುವ ನದಿ. ಜಮ್ಬುಫಲ-ರಸಜಾತಾ ನದಿ । "ಮಹಾಗಜಪ್ರಮಾಣಾನಿ ಜಮ್ಬವಾಸ್ತಸ್ಯಾ: ಫಲಾನಿ ವೈ । ಪತಂತಿ ಭೂತ: ಪೃಥೇ ಶೀಯಮಾಣಾನಿ ಸರ್ವತ: । ರಸೇನ ತೇಷಾಂ ಪ್ರಖ್ಯಾತಾ ತತ್ರ ಜಮ್ಬುನದೀತಿ ವೈ । ಸರಿತ್ ಪ್ರವರ್ತತೇ ಸಾ ಚ ಪೀಯತೇ ತನ್ನಿವಾಸಿಭಿ: " ವಿಷ್ಣುಪುಂ । 2. ಬ್ರಹ್ಮ ಲೋಕದಿಂದ ಹೊರಟ ಸಪ್ತ ನದಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಬ್ರಹ್ಮ-ಲೋಕಾದಪಕ್ರಾಂತಾ ಸಪ್ತಥಾ ಪ್ರತಿಪದ್ಯತೇ । (1) ವಸ್ತೋಕಸಾರಾ, (2) ನಲಿನೀ (3) ಪಾವನೀ ಚ ಸರಸ್ವತೀ । (4) ಜಮ್ಬುನದೀ ಚ (5) ಸೀತಾ ಚ (6) ಗಂಧಾ (7) ಸಿಂಧುಶ್ಚ ಸಪ್ತಮೀ " ಭಾಂ ಭೀಷಂ ೬-೪೯ ।

**ಜಮ್ಬುಮಾಲಿನ್ ಜಂಬುಮಾಲಿನ್ (ಪುಂ)** ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. **ಜಮ್ಬುಲ ಜಂಬೂಲ (ಪುಂ)** 1. ನೇರಿಕೆಮರ. 2. ತಾಳೆಮರ. ಜಮ್ಬು ಜಮ್ಬುಫಲ ಲಾತಿ-ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩) । "ಜಮ್ಬುಲಸ್ತು ಪುಮಾನ್ ಜಮ್ಬುವಿಠಪೇ ಕಕಚಚ್ಛದೇ" ಮೇದಿಂ । 3. ವಧೂವರರ ಕಡೆಯವರಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ ಹಾಸ್ಯದ ಮಾತು.

**ಜಮ್ಬ ಜಂಭ (ಪುಂ)** 1. ಜಂಬೀರ, ನಿಂಬೆಗಿಡ. ಜಮ್ಬಯತ್ಯ-ಮಲತ್ವಾತ್-ಜಮ್ಬಿ (ಗಾತ್ರವಿನಾಮೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । ನುಮ್ (೭-೧-೬೧) । 2. ದಂತ, ಹಲ್ಲು. ಜಮ್ಬಿ ಕರಂ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೨೧) । 3. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ, ಮಹಿಷಾ ಸುರನ ತಂದೆ. [ಈ ರಾಕ್ಷಸನು ಇಂದ್ರನಿಂದ ಸೋತು ಹೋದುದರಿಂದ ಪರಮೇಶ್ವರನನ್ನು ಕುರಿತು ತಪಸ್ಸು

ಮಾಡಿ ಮೂರು ಲೋಕಗಳನ್ನು ಜಯಿಸುವ ಮಗನನ್ನು ಪಡೆಯುವ ಪರವನ್ನು ಕೇಳಿದನು. ಆದರೆ ಮನೆಗೆ ಬರುವ ಮೊದಲೇ ನಾರದಮಹರ್ಷಿಯ ಮಾತಿನಂತೆ ಇಂದ್ರನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಹತನಾದನು.] 4. ಅಂಶ, ಭಾಗ. ಜಮ್ಬಿ ಕರಂ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೨೧) । 5. ಬತ್ತಳಿಕೆ, ಬಾಣಗಳ ಚೀಲ. ಜಮ್ಬಿ ಕರಂ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೨೧) । 6. ಕೆನ್ನೆಯ ಮೇಲುಭಾಗ. 7. ಭಕ್ಷ್ಯ, ತಿಂಡಿ. 8. ಭಕ್ಷಣ, ತಿನ್ನುವುದು, ನುಂಗುವುದು. "ಜಮ್ಬ: ಸ್ಯಾದಾನವಾಂತರೇ । ದಂತಭೋಜನಯೋರಂಶೋ ಹನೌ ಜಮ್ಬೀರತುಣಯೋ: " ಹೇಮಂ । 9. ರಾವಣನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ. 10. ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವಿನ ಪತ್ನಿ ಕಯಾಧುವಿನ ತಂದೆ. "ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪೋರ್ಮಾರ್ಗಾ ಕಯಾಧುರ್ಮಿ ದಾನವೀ । ಜಮ್ಬಸ್ಯ ತನಯಾ ದತ್ತಾ ಸುಪುತ್ರೇ ಚತುರ: ಸುತಾನ್ " ಭಾಗಂ ೬-೧೮-೧೨ । 11. ಜ್ಯಂಭೆ, ಅಕಳಕೆ.

**ಜಮ್ಬಕ ಜಂಭಕ (ವಿಂ)** ಭಕ್ಷಿಸುವವನು, ತಿನ್ನುವವನು. ಜಮ್ಬಿ (ಗಾತ್ರವಿನಾಮೆ) "ಘಜ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

**ಜಮ್ಬಕಾ ಜಂಭಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಕಳಕೆ.

**ಜಮ್ಬದ್ವಿಷ್ ಜಂಭದ್ವಿಷ್ (ಪುಂ)** ಜಂಭನೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನ ವೈರಿ, ಇಂದ್ರ. ಜಮ್ಬಂ ದ್ವೇಷಿ-ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ) "ವಿವಪ" (೩-೨-೬೧) ।

**ಜಮ್ಬಭೇದಿನ್ ಜಂಭಭೇದಿನ್ (ಪುಂ)** ಜಂಭನೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸ ನನ್ನು ಸೀಳಿದ ಇಂದ್ರ. ಜಮ್ಬಂ ಭಿನತ್ತಿ-ಭಿದಿರ್ (ವಿವಾರಣೆ) "ಞಿತಿ:" (೩-೧-೧೩೪) । "ಜಮ್ಬಭೇದಿಜಲದಪ್ರಸೂತಿಭಿ:" ಯಾದಂ ೧೭-೫೫ ।

**ಜಮ್ಬಲ ಜಂಭಲ (ಪುಂ)** ನಿಂಬೆಗಿಡ.

**ಜಮ್ಬಾ ಜಂಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಕಳಕೆ.

**ಜಮ್ಬಾರಿ ಜಂಭಾರಿ (ಪುಂ)** 1. ಜಂಭನೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನ ವೈರಿ, ಇಂದ್ರ. ಜಮ್ಬಸ್ಯಾರಿ: 2. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 3. ವಜ್ರಯುಧ. "ವಜ್ರಾಶನಿಭಿದುರ್ಮದ್ರೋ ಜಮ್ಬಾರಿಸ್ತ್ರಿವಿಧಶಾಯುಧಮ್ " ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಜಮ್ಬಿನ್ ಜಂಭಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ನಿಂಬೆಗಿಡ. (ವಿಂ) 2. ಅಕಳಕೆ.

**ಜಮ್ಬೀರ ಜಂಭೀರ (ಪುಂ)** 1. ನಿಂಬೆಗಿಡ. ಜಮ್ಬಿ (ಗಾತ್ರವಿನಾಮೆ) "ಫೀರ್" (೩ಂ ೪-೩೫) । 2. ಮರುಗ.

**ಜಯ ಜಯ (ಪುಂ)** 1. ಗೆಲ್ಲುವುದು, ಜಯಿಸುವುದು, ಪರಪಕ್ಷ ವನ್ನು ಸೋಲಿಸಿ ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ ಪಡೆಯುವುದು. ಜಿ (ಜಯೇ) ಭಾವೇ "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬) । "ಜಯಾಯ ಸೇನಾನ್ಯಮುಶಂತಿ ದೇವಾ:" ಕುಮಾಂ ೩-೧೫ । "ಜಯಮಿಚ್ಛತಿ ತಸ್ಯ ಜಾತಶಕ್ತೋ ಮನಸೀಮ್ ಮಹುರಾದದೇ ವೀತಕಮ್ " ಕಿರಾಂ ೧೩-೨ । 2. ಅತ್ಯು



ಸಂಯಮ, ಇಂದ್ರಿಯ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ವಶೀಕರಣ.

3. ವಿರಾಟನಗರದಲ್ಲಿ ಪಾಂಡವರು ಅಜ್ಞಾತವಾಸದಲ್ಲಿ ದ್ವಾಪರ ಧರ್ಮರಾಜನ ಹೆಸರು. ಪಾಂಡವರು ಐವರೂ (1) ಜಯ (2) ಜಯಂತ (3) ವಿಜಯ (4) ಜಯತ್ಸೇನ ಮತ್ತು (5) ಜಯದ್ವಲರೆಂದು ಗುಪ್ತನಾಮಧೇಯಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿದ್ದರು. 4. ಎಲ್ಲರಿಗಿಂತಲೂ ಮೇಲ್ಮೆಯನ್ನು ಪಡೆಯುವುದು. 5. ಇಂದ್ರನ ಮಗ ಜಯಂತ. 6. ಅರ್ಜುನ.

“ಯದಿ ನೋತ್ತಿಷ್ಠತಿ ಜಯಃ ಪಿತಾ ಮೇ ನರಸತ್ತಮಃ | ಅಸ್ಮಿನ್ನೇವ ರಣೋದ್ದೇಶೋ ಶೋಭಯಿಷ್ಯ ಕಲೇಬರಮ್” ಭಾಂ. ಆಶ್ವಂ. ೮೦-೩೬ |

7. ವಿಷ್ಣುವಿನ ದ್ವಾರಪಾಲಕರಲ್ಲೊಬ್ಬ. [ಜಯ-ವಿಜಯ ರೆಂಬುವರು ವೈಕುಂಠದ ದ್ವಾರಪಾಲಕರು. ಇವರು ಮಹಾ ವಿಷ್ಣುವಿನ ದರ್ಶನಕ್ಕಾಗಿ ಬಂದ ಸನಕಾದಿಮಹರ್ಷಿಗಳನ್ನು ಬಾಗಿಲಲ್ಲಿ ತಡೆದುದರಿಂದ ಅವರ ಶಾಪಕ್ಕೆ ಗುರಿಯಾದರು. ಅದರಿಂದ ಭೂಲೋಕದಲ್ಲಿ ಮೂರು ಜನ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ರಾಕ್ಷಸರಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದರು. ಮೊದಲನೆಯ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಹಿರಣ್ಯಾಕ್ಷ-ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುಗಳಾಗಿ ಎರಡನೆಯ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ರಾವಣ-ಕುಂಭಕರ್ಣರಾಗಿ ಮೂರನೆಯ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಶಿಶುಪಾಲ-ದಂತವಕ್ತ್ರರಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿ ಪರಮಾತ್ಮನಿಂದಲೇ ಹತರಾಗಿ ಶಾಪವಿಮುಕ್ತರಾದರು.] 8. ವಿಷ್ಣು. ಆಶ್ರಿತಃ ಜೀಯತೇ ವಿಧೇಯೀಕ್ರಿಯತೇ - ಜಿ (ಜಯ) ಕರ್ಮಂ “ಅವ್” (೩-೩-೫೬) | “ಆಶ್ರಿತೇರ್ಜೀಯತೇ ಯಸ್ಮಾದ್ವಿಧೇಯೀಕ್ರಿಯತೇ ಜಯಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | “ಆಜ್ಞಾಪ್ಯೋಹಂ ತಪಸ್ವಿನಾಮ್” | “ತತೋ ನಾರಾಯಣೋ ವಿಷ್ಣುಃ ನಿಯುಕ್ತಃ ಸುರಸತ್ತಮಃ” ರಾಮಾಂ | “ವಿನಯೋ ಜಯಃ ಸತ್ಯಸಂಧೋ ದಾಸಾರ್ಹಃ ಸಾತ್ವತಾಂಪತಿಃ” ವಿಂ. ಸಂ | 9. ಪ್ರಭವ ಮೊದಲಾದ ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಇಪ್ಪತ್ತೆಂಟನೆಯದು. 10. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮಹರ್ಷಿಯ ಒಬ್ಬ ಮಗ. “ಮಧುಚ್ಛಂದೋ ಜಯಶ್ಚೈವ ದೇವಲಶ್ಚ ತಥಾಷ್ಟಕಃ | ಕಚ್ಛಪೋ ಹರಿತಶ್ಚೈವ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಸ್ಯ ತೇ ಸುತಾಃ” ಹರಿವಂ | 11. ಸೃಂಜಯನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. 12. ಐಲನಿಗೆ ಊರ್ವಶಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ಮಗ. “ಔಲಸ್ಯ ಚೌರ್ವಶಿ-ಗರ್ಭಾತ್ ಷಡಾಸನ್ನಾತ್ಮಜಾ ನೃಪ | ಆಯುಃ ಶ್ರುತಾಯುಃ ಸತ್ಯಾ-ಯುರಯೋಽಪಿ ವಿಜಯೋ ಜಯಃ” ಭಾಗಂ ೯-೧೫-೧ | 13. ಭಾರತ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಂಥಗಳ ಹೆಸರು. “ಅಷ್ಟಾದಶ ಪುರಾಣಾನಿ ರಾಮಸ್ಯ ಚರಿತಂ ತಥಾ | ವಿಷ್ಣುಧರ್ಮಾದಿಶಾಸ್ತ್ರಾಣಿ ಶಿವಧರ್ಮಾಶ್ಚ ಭಾರತ | ಕಾಣ್ಣಾಖ್ಯಂ ಪಂಚಮೋ ವೇದೋ ಯನ್ಮಹಾಭಾರತಂ ಸ್ಮೃತಮ್ | ಜಯೇತಿ ನಾಮ ಏತೇಷಾಂ ಪ್ರವದಂತಿ ಮನೀಷಿಣಃ” ಭವಿಷ್ಯಪುಂ | “ನಾರಾಯಣಂ ನಮಸ್ಕೃತ್ಯ ನರಂ ಚೈವ ನರೋತ್ತಮಮ್ | ದೇವೀಂ ಸರಸ್ವತೀಂ ಚೈವ ತತೋ ಜಯಮುದೀರಯೇತ್” ಎಂದು ಮಹಾಭಾರತದ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಪರ್ವದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲೂ ಪಠಿತವಾಗಿರುವುದು.

14. ಕೃಷ್ಣನಿಗೆ ಭದ್ರೆಯೆಂಬ ಮಹಿಷಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಮಗ. “ಸಙ್ಗ್ರಾಮಜಿತ್ ಬೃಹತ್ಸೇನಃ ಶೂರಃ ಪ್ರಹರಣೋ-ರಿಜಿತ್ | ಜಯಃ ಸುಮದ್ರೋ ಭದ್ರಾಯಾ ವಾಮ ಆಯುಶ್ಚ ಸತ್ಯಕಃ” ಭಾಗಂ ೧೦-೬೧-೧೭ | 15. ಇಂದ್ರ. “ಆಸ್ಥಿಪಾಂಡಲ ಉಗ್ರಧನ್ವಾ ಮೇಷಾಣೋಽಪರಸಾಂ ಪತಿಃ | ಸದಿರೋ ಮಾಹಿರೋ ದಾಲ್ಮಿಃ ಶಯೀರ್ಚಿವಿಯುನೋ ಜಯಃ” ವೇಜಂ | 16. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

**ಜಯಕೋಲಾಹಲ ಜಯಕೋಲಾಹಲ (ಪುಂ)** 1. ಜಯದ ಶಬ್ದ. ಜಯಸ್ಯ ಕೋಲಾಹಲಃ | 2. ಪಗಡೆಯಾಟದ ಒಂದು ಭೇದ. ಯಜಸ್ಯ ಕೋಲಾಹಲೋ ಯಸ್ಮಿನ್ |

**ಜಯಘೋಷ ಜಯಘೋಷ (ಪುಂ)** ಜಯದ ಶಬ್ದ.

**ಜಯಘೋಷಣ ಜಯಘೋಷಣ (ನಂ)** ಜಯದ ಶಬ್ದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಘೋಷಣಾ -ಘೋಷಣಾ. ಜಯಸ್ಯ ಘೋಷಣಂ ಘೋಷಣಾ ವಾ | “ದಿಗ್ವಿಜೃಂಭಿತಕಾಕುತ್ಸ್ಥಪೌಲಸ್ತ್ಯಜಯಘೋಷಣಃ” ರಘುಂ ೧೨-೭೨ |

**ಜಯಹಕ್ಕಾ ಜಯಹಕ್ಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಜಯವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ನಗಾರಿ, ಜಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಭೇರಿಯೆಂಬ ಒಂದು ವಾದ್ಯ.

**ಜಯತ್ ಜಯತ್ (ವಿಂ)** ಜಯಿಸುತ್ತಿರುವ, ಗೆಲ್ಲುತ್ತಿರುವ. ಜಿ (ಜಯ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಜಿಪ್” (೪-೧-೬) | ಜಯಂತಿ ಜಯಂತೀ. “ಜಗದ್ವಿಶ್ವಕರ್ಮಮಿಮಾಃ ಸ್ಮರಸ್ಯ ಪ್ರಭಾವನೀಕೇ ತನವೇ ಜಯಂತಿಃ | ಇತ್ಯಸ್ಯ ತೇನ ಕದಲಿ-ಮಂಧುಶ್ರೀಃ ಪ್ರಭಾವನೀ ಕೇತನವೇಜಯಂತಿಃ” ಮಾಧಂ ೬-೬೯ |

**ಜಯತ್ಸೇನ ಜಯತ್ಸೇನ (ಪುಂ)** 1. ವಿರಾಟನಗರದಲ್ಲಿ ಅಜ್ಞಾತ ವಾಸದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ನಕುಲನ ಗುಪ್ತವಾದ ಹೆಸರು. [“ಜಯ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ಜಯಿಸುವ ಸೈನ್ಯವುಳ್ಳ ರಾಜ. ಜಯಂತಿ ಸೇನಾಸ್ಯ | 3. ಮಗಧ ದೇಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ.

**ಜಯದತ್ತ ಜಯದತ್ತ (ಪುಂ)** 1. ಇಂದ್ರನ ಮಗ ಜಯಂತ. 2. ಅಶ್ವವೈದ್ಯಕವೆಂಬ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಬರೆದ ಒಬ್ಬ ಪಂಡಿತ.

**ಜಯದುರ್ಗಾ ಜಯದುರ್ಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದುರ್ಗಾದೇವಿಯ ಒಂದು ಮೂರ್ತಿ, ಪಾರ್ವತಿಯ ಒಂದು ರೂಪ.

**ಜಯದೇವ ಜಯದೇವ (ಪುಂ)** ಗೀತಗೋವಿಂದ ಕಾವ್ಯವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಕವಿ. ಜಯದೇವ ಕವಿಯು ಗೀತಗೋವಿಂದ ವಲ್ಲದೆ “ಪ್ರಸನ್ನ ರಾಘವ” ವೆಂಬ ನಾಟಕ ಮತ್ತು “ಚಂದ್ರಾಲೋಕ” ವೆಂಬ ಅಲಂಕಾರ ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುತ್ತಾನೆ. ಈ ಕವಿಯ ತಾಯಿ ರಾಧಾದೇವಿ. ತಂದೆ ಭೋಜದೇವ. “ಶ್ರೀ ಭೋಜದೇವಪ್ರಭವಸ್ಯ ರಾಧಾದೇವೀಸುತ-ಶ್ರೀಜಯದೇವಕಸ್ಯ | ಪರಾಶರಾದಿಪ್ರಿಯವರ್ಗಕಂಠೇ ಶ್ರೀಗೀತಗೋವಿಂದ-ಕವಿತವಮಸ್ತು” ಗೀತಗೋಂ ೧೨-೫ | ಗಾನವಿದ್ಯೆಯಲ್ಲಿರುವ



ಪ್ರಾವೀಣ್ಯವೂ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಲ್ಲಿಡಬೇಕಾದ ಧ್ಯಾನವೂ ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿರಬೇಕಾದ ಶೃಂಗಾರರಸವೂ ಸದಾ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ ಪರಾಯಣನಾದ ಜಯದೇವಕವಿಯು "ಗೀತಗೋವಿಂದ" ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ತುಂಬಿ ತುಳುಕಾಡುತ್ತಿರುವುದನ್ನು ರಸಿಕರು ಪರಿಶೀಲಿಸಿ ಅಸ್ವಾದಿಸಬಹುದು. "ಯದ್ಗಾಂಧರ್ವಕಲಾಸು ಕೌಶಲಮನುಷ್ಯಾನಂ ಚ ಯದ್ವೇಣವಂ ಯಚ್ಛೃಂಗಾರವಿವೇಕತತ್ವರಚನಾ ಕಾವ್ಯೇಷು ಲೀಲಾಯಿತಮ್ | ತತ್ಸರ್ವಂ ಜಯದೇವಪಂಡಿತಕವಿಃ ಕೃಷ್ಣ-ಕತಾನಾತ್ಮನಃ ಸಾನಂದಾಃ ಪರಿಶೋಧಯಂತು ಸುಧಿಯಃ ಶ್ರೀಗೀತ-ಗೋವಿಂದತಃ" ಗೀತಗೋಂ ೧೨-೩ | ಈ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ 12 ಸರ್ಗಗಳಿವೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಶೃಂಗಾರಲೀಲಾವಿನೋದಗಳು ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. "ಶ್ರೀವಾಸುದೇವರತಿಕೇಲಿಕಥಾಸಮೇತ-ಮೇತಂ ಕರೋತಿ ಜಯದೇವಕವಿಃ ಪ್ರಬಂಧಮ್" ಗೀತಗೋಂ ೧-೨ |

**ಜಯಹಲ ಜಯದ್ವಲ (ಪುಂ)** ವಿರಾಟನಗರದಲ್ಲಿ ಅಜ್ಞಾತವಾಸದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಪಾಂಡುಪುತ್ರನಾದ ಸಹದೇವನ ಹೆಸರು. ["ಜಯ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಜಯದ್ರಥ ಜಯದ್ರಥ (ಪುಂ)** 1. ಪುರುವಂಶದ ಬೃಹನ್ನನ ಸ್ವೇಜ ಒಬ್ಬ ರಾಜನ ಮಗ. 2. ಸಿಂಧು ದೇಶದ ದೊರೆಯಾದ ವೃದ್ಧಕ್ಷತ್ರನ ಮಗ. [ಇವನು ಸೌವೀರ ದೇಶದ ದೊರೆ. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಮಗಳಾದ ದುಃಶಲೆಯು ಈತನ ಹೆಂಡತಿ. ಜಯದ್ರಥನು ಕೌರವರ ಪಕ್ಷ ಸೇರಿ ಪಾಂಡವರನ್ನು ವಿರೋಧಿಸುತ್ತಿದ್ದನು. ಒಂದು ಸಲ ಕಾಮ್ಯಕವನದಲ್ಲಿ ಇವನು ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದಾಗ ದ್ರೌಪದಿಯನ್ನು ಕಂಡು ಮೋಹಿಸಿ ಪಾಂಡವರು ಬೇಟೆಗಾಗಿ ಹೋಗಿರುವುದನ್ನು ತಿಳಿದು ಅವಳನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿಕೊಂಡು ಹೊರಟನು. ಬೇಟೆಯಿಂದ ಬಂದ ಭೀಮಸೇನನು ಈ ವಿಷಯ ತಿಳಿದು ಜಯದ್ರಥನನ್ನು ಹಿಡಿದು ದ್ರೌಪದಿಯನ್ನು ಬಿಡಿಸಿಕೊಂಡು ಅವನನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲು ಹೋದನು. ಧರ್ಮರಾಜನು ತಂಗಿಯಾದ ದುಃಶಲೆಯನ್ನು ದುಃಖಪಡಿಸಬಾರದೆಂದು ಹೇಳಿ ತಡೆದನು. ಭೀಮನು ಜಯದ್ರಥನಿಗೆ ಪಂಚಶಿಖೆಗಳನ್ನು ಮಾಡಿ ಅವಮಾನಪಡಿಸಿ ಕಳುಹಿಸಿದನು. ಬಳಿಕ ಚಕ್ರವ್ಯೂಹದಲ್ಲಿ ಅಭಿಮನ್ಯುವಿನ ಸಾವಿಗೆ ಇವನು ಪ್ರಧಾನಕಾರಣನಾದನೆಂದು ತಿಳಿದು ಅರ್ಜುನನು ಇವನ ತಲೆಯನ್ನು ಕಡಿದು ಕೊಂದುಹಾಕಿದನು.]

**ಜಯಧ್ವಜ ಜಯಧ್ವಜ (ಪುಂ)** 1. ಜಯಪತಾಕೆ, ಜಯವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಬಾವುಟ. 2. ಕಾರ್ತವೀರ್ಯಾರ್ಜುನನ ಮಗ. "ಶೂರಸೇನಶ್ಚ ಶೂರಶ್ಚ ಧೃಣೋಕ್ತಃ ಕೃಷ್ಣಾ ಏವ ಚ | ಜಯಧ್ವಜಶ್ಚ ನಾಮ್ನಾಸೀದಾವಂತ್ಯೋ ನೃಪತಿರ್ಮಹಾನ್ | ಕಾರ್ತವೀರ್ಯಸ್ಯ ತನಯಾ ವೀರ್ಯವಂತೋ ಮಹಾಬಲಾಃ" ಹರಿವಂ |

**ಜಯನ ಜಯನ (ನಂ)** 1. ಜಯ, ಗೆಲುವು. ಜಿ (ಜಯ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಅನೆ ಕುದುರೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಬೆನ್ನಿನ ಮೇಲೆ ಹಾಸುವ ಕವುದಿ ಜೇನು ಮೊದಲಾದುವು. "ಸಕಲ್ಪನಂ ದ್ವಿರದಗಣಂ ವರುಣಿನ-ಸ್ತುರಜ್ಞಿಣೋ ಜಯನಯುಜಶ್ಚ ವಾಜಿನಃ" ಮಾಘಂ ೧೭-೨೩ |

**ಜಯನಿ ಜಯನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಇಂದ್ರನ ಮಗಳು.

**ಜಯಂತ ಜಯಂತ (ಪುಂ)** 1. ಇಂದ್ರನ ಮಗ. ಜಿ (ಜಯ) "ಜಿ" (೩ಂ ೩-೧೨೮) | ಜಯಂತಃ ಶಕ್ರಪುತ್ರಃ ಸಿಂ ಕೌಂ | "ಉಮಾವೃಷಾಕ್ಷೌ ಶರಜನ್ಮನಾ ಯಥಾ ಯಥಾ ಜಯಂತೇನ ಶಚಿ-ಪುರಂದರೌ" ರಘುಂ ೩-೨೩ | 2. ಶಂಕರ, ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಿಶಿವ. "ಜಯಂತಃ ಶಕ್ತರೇಽಪಿ ಸ್ಯಾಜ್ಜಯಂತಃ ಪಾಕಶಾಸನೌ" ವಿಶ್ವಂ | 3. ಚಂದ್ರ. "ಅಮೃತಾಂಶುಃ ಕಲಾನಿಧಿಃ | ಜಯಂತ-ಸ್ತಪಸಃ ಕ್ಲೇದಃ" ವೇಜಂ | 4. ಧರ್ಮಪುರುಷನ ಒಬ್ಬ ಮಗ, ಧರ್ಮಪತ್ನಿಯಾದ ಮರುತ್ಪತ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಮಸ್ತ್ವಾಂಶ್ಚ ಜಯಂತಶ್ಚ ಮಹತ್ವತ್ಯಾಂ ಬಭೂವುಃ" ಭಾಗಂ ೬-೬-೮ | 5. ವಿಷ್ಣು. "ಆಸ್ತಿಕ್ಯವಾದಿನಾಂ ಜೇತಾ ಜಯಂತಃ ಇತಿ ಕಥ್ಯತೇ" ಇತಿ ನಿರಕ್ತಿಃ | "ಅಕೌ ವಾಜಸನಿಃ ಶೃಂಗೀ ಜಯಂತಸ್ಸರ್ವವಿಜ್ಞಯಿ" ವಿಂ ಸಂ | 6. ವಿರಾಟ ನಗರದಲ್ಲಿ ಅಜ್ಞಾತವಾಸದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಭೀಮಸೇನನ ಗುಪ್ತವಾದ ಹೆಸರು. ["ಜಯ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಜಯಂತಿ ಜಯಂತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಧ್ವಜ, ಪತಾಕೆ, ಬಾವುಟ. 2. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 3. ಜಯಂತನ ತಂಗಿ, ಇಂದ್ರನ ಮಗಳು. 4. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ ಜಯಂತಿ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಅವತರಿಸಿದ ಸಿಂಹಮಾಸದ ಕೃಷ್ಣಾಷ್ಟಮಿಯ ರಾತ್ರಿ. "ಅಭಿಜಿತ್ನಾಮ ನಕ್ಷತ್ರಂ ಜಯಂತಿ ನಾಮ ಶರ್ಮಿರಿ | ಮುಹೂರ್ತೋ ವಿಜಯೋ ನಾಮ ಯತ್ರ ಜಾತೋ ಜನಾರ್ದನಃ" ಹರಿವಂ | "ಜಯಂ ಪುಣ್ಯಂ ಚ ತನುತೇ ಜಯಂತಿ ತೇನ ತಾಂ ವಿದುಃ" | 5. ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷ ಶುಕ್ಲ ಸಪ್ತಮಿ. "ನಂದಾ ಮಾರ್ಗಶೀರೇ ಶುಕ್ಲಾ ಸಪ್ತಮ್ಯಾನಂದದಾಯಿನಿ | ಜಯಂತಿ ನಾಮ ಸಾ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಪುಣ್ಯಾ ಪಾಪಹರಾ ಸ್ಮೃತಾ" | 6. ತಕ್ಕಿಲೆಗಿಡ.

**ಜಯಪತಾಕಾ ಜಯಪತಾಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಜಯಧ್ವಜ, ಜಯವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಬಾವುಟ.

**ಜಯಪತ್ರ ಜಯಪತ್ರ (ನಂ)** 1. ಜಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಪತ್ರ, ಜಯದ ದಾಖಲೆ ಪತ್ರ, ತೀರ್ಪುಗಾರರು ಜಯದ ತೀರ್ಪನ್ನು ಬರೆದುಕೊಟ್ಟ ಕಾಗದ. ಜಯಸೂಚಕಂ ಪತ್ರಮ್ | 2. ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗದ ಕುದುರೆಯ ಹಣೆಯ ಮೇಲೆ ಬರೆದು ಕಟ್ಟಿರುವ ಚೀಟಿ.



ಜಯಪಾಲ ಜಯಪಾಲ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ. 2. ವಿಷ್ಣು. 3. ರಾಜ, ದೊರೆ. ಜಯಂ ಪಾಲಯತಿ-ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಕ್ "ಅನ್" (೩-೨-೧) ।

ಜಯಪುರ ಜಯಪುರ (ನಂ) 1. ಆಳ್ವಾರ್ ಸಂಸ್ಥಾನವನ್ನೊಳಗೊಂಡ ಜಯಪುರ ಸಂಸ್ಥಾನ ; ಮಹಾಭಾರತ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಇದು ಮತ್ಸ್ಯದೇಶವೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿತ್ತು. ಇದರ ರಾಜ ಧಾನಿಯು ಆಗ ಪಾಂಡವರು ಅಷ್ಟಾತವಾಸದಲ್ಲಿ ದ್ವಿರಾಟ ನಗರ. ಈಗ ಇದು "ಬೈರಾಟ" ವೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ.

ಜಯಪ್ರಸ್ಥಾನ ಜಯಪ್ರಸ್ಥಾನ (ನಂ) ವಿಜಯಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಪ್ರಯಾಣ, ಜಯಗಳೆಕ್ಕಾಗಿ ಹೊರಟುಬರುವುದು.

ಜಯಪ್ರಿಯ ಜಯಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) ವಿರಾಟರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಸಹೋದರ. "ಶ್ರುತಧ್ವಜೋ ಬಲಾನಿಕೋ ಜಯಾನಿಕೋ ಜಯಪ್ರಿಯಃ । ಚಂದ್ರೋದಯಃ ಕಾಮರೂಪೋ ವಿರಾಡಭ್ರಾತರಃ ಶುಭಾಃ" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೧೪೯ ।

ಜಯಭೇರಿ ಜಯಭೇರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಯಸೂಚಕವಾದ ನಾಗರಿ.

ಜಯಮಂಗಳ ಜಯಮಂಗಳ (ಪುಂ) ರಾಜನು ಸವಾರಿ ಮಾಡುವ ಆನೆ. ಜಯೇನ ಮಂಗಳಂ ಯಸ್ಮಾತ್ ।

ಜಯಮಂಗಳರಸ ಜಯಮಂಗಳರಸ (ಪುಂ) ಸಕಲವಿಧ ಜ್ವರಗಳನ್ನು ವಾಸಿಮಾಡುವ ಆಯುರ್ವೇದೋಕ್ತವಾದ ಒಂದು ಔಷಧ. ಜಯೇನ ರೋಗಜಯೇನ ಮಂಗಳಂ ಯಸ್ಮಾತ್ ತಾದೃಶೋ ರಸಃ । "ಜೀರ್ಣಜ್ವರಂ ಮಹಾಧೋರಂ ಚಿರಕಾಲಸಮುದ್ಭವಮ್ । ಜ್ವರಮಷ್ಟವಿಧಂ ಹಂತಿ ಸಾವ್ಯಾಸಾಧ್ಯಮಥಾಪಿ ವಾ । ಪೃಥ್ವೀಶೋಷಂ ವಿವಿಧಾನ್ ಸಮಸ್ತಾನ್ ವಿಷಮಜ್ವರಾನ್ । ಮೇದೋಗತಂ ಮಾಂಸಗತಮಸ್ಥಿಮಜ್ವರಗತಂ ತಥಾ । ಅಂತರ್ಗತಂ ಮಹಾಧೋರಂ ವಹ್ನಿರಥಂ ಚ ವಿಶೇಷತಃ । ನಾನಾ-ದೋಷೋದ್ಭವಂ ಚೈವ ಜ್ವರಂ ಶುಕ್ರಗತಂ ತಥಾ । ನಿಖಿಲಂ ಜ್ವರನಾಮಾನಂ ಹಂತಿ ಶ್ರೀಶಿವಶಾಸನಾತ್ । ಜಯಮಂಗಳನಾಮಾಯಂ ರಸಃ ಶ್ರೀಶಿವ-ನಿರ್ಮಿತಃ । ಬಲಪುಷ್ಪಿಕರಶ್ಚೈವ ಸರ್ವರೋಗನಿಬರ್ಹಣಃ" ಭೈಷಜ್ಯರಂ ।

ಜಯಯಜ್ಞ ಜಯಯಜ್ಞ (ಪುಂ) ವಿಜಯನಿಮಿತ್ತವಾದ ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗ.

ಜಯಲಕ್ಷ್ಮಿ ಜಯಲಕ್ಷ್ಮೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಜಯಲಕ್ಷ್ಮಿ, ಜಯದ ಅಧಿದೇವತೆ. "ಕಯಮಪಿ ಜಯಲಕ್ಷ್ಮಿರ್ಮಿತಿರ್ಮಿತಿ ವಿಹಾತು ವಿಷಮನಯನಸೇನಾಪಕ್ಷಪಾತಂ ವಿಘೇಹೇ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೬೪ ।

ಜಯಲೇಖ ಜಯಲೇಖ (ಪುಂ) "ಜಯಪತ್ರ" ದ ಅರ್ಥ.

ಜಯವತ್ ಜಯವತ್ (ವಿಂ) ಜಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ವಿಜಯವನ್ನು ಗಳಿಸಿದ. ಜಯೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪) ।

ಜಯವಾಹಿನಿ ಜಯವಾಹಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶಬೀದೇವಿ, ಇಂದ್ರನ ಪತ್ನಿ. 2. ವಿಜಯಗಳಿಸಿದ ಸೇನೆ. ಜಯಯುಕ್ತಾ ವಾಹಿನಿ ।

ಜಯಶಬ್ದ ಜಯಶಬ್ದ (ಪುಂ) ಜಯವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಶಬ್ದವು.

ಜಯಶಬ್ದ ಜಯಶಬ್ದ (ಪುಂ) ಜಯವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಶಬ್ದ. "ಕ್ಷತ್ರಂ ಕ್ಷಿತೌ ಕ್ಷಪಿತಮ್ ರಿಬಲಾರಿಪಕ್ಷ-ಮುಕ್ತುಷ್ಠನೇಕಜಯಶಬ್ದವಿರಾವಿತಾಶಮ್" ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೯-೧೭ ।

ಜಯಶೀಲ ಜಯಶೀಲ (ವಿಂ) ವಿಜಯವನ್ನು ಗಳಿಸಿದ.

ಜಯಶೃಂಗ ಜಯಶೃಂಗ (ನಂ) ಜಯವನ್ನು ಸೂಚಿಸಲು ಉಪಯುಕ್ತವಾದ ಕೊಂಬು.

ಜಯಶ್ರೀ ಜಯಶ್ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಯಲಕ್ಷ್ಮಿ, ವಿಜಯದ ಅಧಿದೇವತೆ, ಜಯಸಂಪತ್ತು. "ಜಯಶ್ರಿಯಂ ಪಾರ್ಥ ಪೃಥುಕರೋತು ತೇ" ಕಿರಾಂ ೪-೨೧ । "ಸಂಮಂಜಲಸ್ನಾತ ಇವ ಪ್ರತಿಪೇದೇ ಜಯಶ್ರಿಯಮ್" ರಘುಂ ೪-೪೧ ।

ಜಯಸೇನ ಜಯಸೇನ (ಪುಂ) 1. ಮಗಧದೇಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. ಜಯಯುಕ್ತಾ ಸೇನಾಸ್ಯ । 2. ಅಹೀನದೊರೆಯ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಸಹದೇವಸ್ತತೋಹೀನೋ ಜಯಸೇನಸ್ತು ತತ್ಸುತಃ" ಭಾಗಂ ೯-೧೭-೧೭ । 3. ವಿದೂರಧನ ಪುತ್ರನಾದ ಸಾರ್ವಭೌಮ ರಾಜನ ಮಗ. "ತತೋ ವಿದೂರಥಸ್ತಸ್ಮಾತ್ ಸಾರ್ವಭೌಮ-ಸ್ತತೋಭವತ್ । ಜಯಸೇನಸ್ತತ್ತನಯಃ" ಭಾಗಂ ೯-೨೨-೧೦ ।

ಜಯಸ್ತಂಭ ಜಯಸ್ತಂಭ (ಪುಂ) ಜಯವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಕಂಬ, ವಿಜಯವನ್ನು ಗಳಿಸಿದ ರಾಜನು ತಾನು ಜಯಿಸಿದ ಜ್ಞಾಪಕಾರ್ಥ ತನ್ನ ಹೆಸರನ್ನು ಬರೆದು ನೆಟ್ಟ ಕಂಬ. ಜಯಸೂಚಕಃ ಸ್ತಂಭಃ । "ವಜ್ರಾನ್ತುತ್ಥಾಯ ತರಸಾ ನೇತಾ ನೌಸಾಧನೋದತಾನ್ । ನಿಚ್ಛಾನ್ ಜಯಸ್ತಂಭಾನ್ ಗಜಾಸ್ತೋತ್ತ-ರೇಫು ಸಃ" ರಘುಂ ೪-೩೬ । "ಮತ್ತೇಭರದನೋತ್ಕೀರ್ಣವ್ಯಕ್ತವಿಕ್ರಮ-ಲಕ್ಷಣಮ್ । ತ್ರಿಕೂಟಮೇವ ತತ್ರೋಚ್ಚೈರ್ಜಯಸ್ತಂಭಂ ಚಕಾರ ಸಃ" ರಘುಂ ೪-೪೯ ।

ಜಯಾ ಜಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಕ್ಕಿಲಿಗಿಡ. 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ನೆಲ್ಲಿಗಿಡ. 3. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. "ಜಯಃ ಕಲ್ಯಾಣವಚನಃ ಆಕಾರೋ ದಾತೃವಾಚಕಃ । ಜಯಂ ದದಾತಿ ಸಾ ನಿಯಂ ಸಾ ಜಯಾ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾ" ಬೃಹವೇಂ । "ಜಯಾ ತ್ವಂ ವಿಜಯಾ ಚೈವ ಸಂಗ್ರಾಮೇ ಚ ಜಯಪ್ರದಾ । ಮಮಾಪಿ ವಿಜಯಂ ದೇಹಿ ವರದಾ ತ್ವಂ ಚ ಸಾಂಪ್ರತಮ್" ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೮-೧೭ । 4. ಪಕ್ಷದ 3, 8 ಮತ್ತು 13 ನೆಯ ತಿಥಿಗಳು, ತದಿಗೆ, ಅಷ್ಟಮಿ ಮತ್ತು ತ್ರಯೋದಶೀ ತಿಥಿಗಳು. "ನಂದಾ ಭದ್ರಾ ಜಯಾ ರಿಕ್ತಾ ಪೂರ್ಣಾ ಚ ಪ್ರತಿಪತ್ಕ್ರ-ಮಾತ್" । ಪಾಡ್ಯ (ಪ್ರತಿಪತ್) ಮೊದಲುಗೊಂಡಂ (1) ನಂದಾ (ಪಾಡ್ಯ) (2) ಭದ್ರಾ (ಬಿದಿಗೆ) (3) ಜಯಾ (ತದಿಗೆ) (4) ರಿಕ್ತಾ (ಚತುರ್ಥಿ) ಮತ್ತು (5) ಪೂರ್ಣಾ (ಪಂಚಮಿ) ಎಂದು ತಿಥಿಗಳಿಗೆ ಐದು ಸಂಜ್ಞೆಗಳು. ಇದೇ ರೀತಿ ಪುನಃ



ಎರಡು ಪರ್ಯಾಯಗಳಲ್ಲಿ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಉಳಿದ ತಿಥಿಗಳನ್ನು ಎಣಿಸಬೇಕು. 5. ಗರಿಕೆಹುಲ್ಲು.

**ಜಯಾಜಯ ಜಯಾಜಯ** (ಪುಂ ಧ್ವಿಂ) ಜಯ ಮತ್ತು ಅಪಜಯ, ಗೆಲುವು ಮತ್ತು ಸೋಲು. ಜಯಶ್ರ ಅಜಯಶ್ರ | "ಸುಖದುಃಖೇ ಸಮೇ ಕೃತ್ವಾ ಲಾಭಾಲಾಭೌ ಜಯಾಜಯೌ" ಗೀತಾ ೨-೩೮ |

**ಜಯಾನಿಕ ಜಯಾನೀಕ** (ಪುಂ) 1. ದ್ರುಪದರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. ಇವನು ಅಶ್ವತ್ಥಾಮನಿಂದ ಹತನಾದನು. "ಪುನಃ ಶತ್ರುಂಜಯಂ ನಾಮ ದ್ರುಪದಸ್ಯಾತ್ಮಜಂ ರಣೇ | ಬಲಾನಿಕಂ ಜಯಾನಿಕಂ ಜಯಾಶ್ವಂ ಚಾಭಿಜಘ್ನಿವಾನ್" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೧೫೭-೧೮೧ | 2. ವಿರಾಟರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಸಹೋದರ. "ಬಲಾನಿಕೋ ಜಯಾನಿಕೋ ಜಯಾಶ್ವೋ ರಥವಾಹನಃ | ಚಂದ್ರೋದಯಃ ಸಮರಥಃ ವಿರಾಟಭ್ರಾತರಃ ಶುಭಾಃ" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೧೫೯-೪೧ |

**ಜಯಾವಹ ಜಯಾವಹ** (ವಿಂ) ಜಯವನ್ನು ಒಡೆದುಕೊಂಡವ, ವಿಜಯವನ್ನು ತಂದುಕೊಡುವ. ಜಯಸ್ಯಾವಹಃ—ಆ + वह (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |

**ಜಯಾಶಿಸ್ ಜಯಾಶಿಸ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜಯವಾಚನ, ಜಯ ಘೋಷ. 2. ವಿಜಯವನ್ನು ಆಶಂಸೆಮಾಡುವ ಶಬ್ದ, ಜಯವಾಗಬೇಕೆಂಬ ಪ್ರಾರ್ಥನೆ. "ತಸ್ಮೈ ಜಯಾಶೀಃ ಸಸೃಜೆ ಪುರಸ್ತಾತ್ ಸಪ್ತರ್ಷಿಭಿಃ ಸ್ತಾನು ಸ್ಮಿತಪೂರ್ವಮಾಹ" ಕುಮಾರಂ ೭-೪೭ |

**ಜಯಾಶವ ಜಯಾಶ್ವ** (ಪುಂ) 1. ದ್ರುಪದರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. 2. ವಿರಾಟರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಸಹೋದರ. ["ಜಯಾನಿಕ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಜಯಿನ್ ಜಯಿನ್** (ವಿಂ) ಜಯಶೀಲ, ವಿಜಯವನ್ನು ಪಡೆದ. ಜಯೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) | "ಉಪಹಿತ-ಪರಮಪ್ರಭಾವಧಾಮನಾಂ ನ ಹಿ ಜಯಿನಾಂ ತಪಸಾಮಲಙ್ಘ್ಯಮಸ್ತಿ" ಕಿರಾಂ ೧೦-೬ | "ನಿಜಗೃಹೇ ಜಯಿನಂ ತಿಸೃಣಾಂ ಪುರಾಂ" ಕಿರಾಂ ೧೮-೧೨ |

**ಜಯಿಣ್ ಜಯಿಷ್ಠ** (ವಿಂ) ಜಯಶೀಲ. ಜಿ (ಜಯೇ) "ಇಣ್" ಬಾಹುಂ |

**ಜಯೇಷಿನ್ ಜಯೇಷಿನ್** (ವಿಂ) ಜಯವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಜಯಮಿಚ್ಛತಿ—ಇಷು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೭೮) | "ಬಭೃವ ಯುಧಂ ತುಮುಲಂ ಜಯೇಷಿಣೋರಧೋಮುಖೈರ್ದುಃಖಮುಖೈಶ್ಚ ಪತ್ರಿಭಿಃ" ರಘುಂ ೩-೫೭ |

**ಜಯೋದಾಹರಣ ಜಯೋದಾಹರಣ** (ನಂ) 1. ಜಯವನ್ನು ಪ್ರಚಾರಪಡಿಸುವ ಗೀತೆ. ಜಯಃ ಉದಾಹರಣೀತ್ಯು—ಉದ್ + ಆಹ್ + ಹ್ರನ್ (ಹರಣೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭) | ಜಯೋದಾಹರಣಂ ಬಾಹ್ಯೋಗಾಪಿಯಾಮಾಸ ಕಿಂಕರಾನ್" ರಘುಂ ೪-೭೮ |

2. ಕೀರ್ತಿ, ಯಶಸ್ಸು. "ಯಶೋ ಜಯೋದಾಹರಣಂ ಸಾಧುವಾದೋ ಗುಣಾವಲಿ" ವೈಜಂ |

**ಜಯ ಜಯ** (ವಿಂ) ಜಯಿಸಲು ಶಕ್ತನಾದ. ಜೇತುಂ ಶಕ್ಯಃ—ಜಿ (ಜಯೇ) "ಯತ್" (೩-೧-೯೭) | ನಿಪಾಂ (೬-೧-೮೧) | **ಜರ ಜರ** (ಪುಂ) 1. ಮುಪ್ಪು, ಮುದಿತನ. 2. ವಿನಾಶನ. ಜೃಃ (ವಯೋಹಾನಿ) "ಅಙ್" (೩-೩-೧೦೪) | (ವಿಂ) 3. ಮುದಿಯಾದ.

**ಜರಠ ಜರಠ** (ಪುಂ) 1. ಮುಪ್ಪು, ಮುದಿತನ. (ವಿಂ) 2. ಕಠಿನವಾದ, ಒರಟಾದ. ಜೃಃ (ವಯೋಹಾನಿ) "ಅಠಕ್" ಬಾಹುಂ | "ಅಯಮತಿಜರಠಾಃ ಪ್ರಕಾಮಗುರ್ವೀರಲಘುವಿಲಂಬಿ-ಪಯೋಧರೋಪಹೃದಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೨೯ | 3. ಜೀರ್ಣವಾದ, ಮುದಿಯಾದ. 4. ಪರಿಣತವಾದ, ಬಲಿತಿರುವ. "ಜರಠ-ಕಮಲಕಂದಕೋದಗೋರೈರ್ಮಯಸ್ತೈಃ" ಮಾಘಂ ೧೧-೧೪ |

**ಜರಣ ಜರಣ** (ನಂ) 1. ಜೀರಿಗೆ. 2. ಕಠಿಜೀರಿಗೆ. 3. ಸೌವರ್ಚಲ ಲವಣ, ಸದ್ಯಕ್ಷಾರ. 4. ಹಿಂಗು. ಜೃಃ (ವಯೋಹಾನಿ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) | "ಜರಣಂ ಜೀರಣ-ಜಾಜಿಹಿಡ್ಗುಸೌವರ್ಚಲೇಷ್ವಪಿ" ವಿಶ್ವಂ | (ವಿಂ) 5. ಜೀರ್ಣವಾದ, ಮುದಿಯಾದ. 6. ಜೀರ್ಣವಾದ, ಪಚನವಾದ.

**ಜರಣಾ ಜರಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುಪ್ಪು, ಮುದಿತನ. 2. ಸ್ತುತಿ, ಹೊಗಳಿಕೆ.

**ಜರತ್ ಜರತ್** (ಪುಂ) 1. ಮುದುಕ. ಜೃಃ (ವಯೋಹಾನಿ) "ಅತನ್" (೩-೨-೧೦೪) | "ತ್ವದೀಕ್ಷಣಾತ್ಪ್ರಾಪ್ತಫಲೋಽಸ್ಮಿ ಸಾಂಪ್ರತಂ ಜರನ್ ಪುನರ್ಯೌವನಮಾಪ್ತವಾನಿವ" ಯಾದಂ ೧೪-೩೨ | (ವಿಂ) 2. ಜೀರ್ಣವಾದ, ಪಚನವಾದ, ಅರಗಿದ. 3. ಜೀರ್ಣವಾದ, ಮುದಿಯಾದ. "ಜನೋ ಜರನ್ಮಹಿಷ-ವಿಷಾಣಧೂಸರಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೭-೪೧ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | **ಜರತೀ ಜರತೀ**. "ಜರತೀಮಪಿ ಬಿಭ್ರಾಣ-ಸ್ತನುಮಪ್ರಾಕೃತಾಕೃತಿಃ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೭ |

**ಜರತಿಕಾ ಜರತಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುದುಕಿ.

**ಜರತೀ ಜರತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುದುಕಿ. **ಜರತಕಾರ ಜರತಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಮುಷಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ವಾಸುಕಿಯ ತಂಗಿಯಾದ ಮನಸಾದೇವಿ. [ಜರತಕಾರ ಮುಷಿಯು ಮದುವೆಯಾಗದೆ ಯಾವಾಗಲೂ ಬ್ರಹ್ಮ ಚರ್ಯೆಯಲ್ಲೇ ಇರುವುದನ್ನು ಕಂಡ ಆತನ ಪಿತ್ಯಗಳು ಸದ್ಗತಿಗೆ ಮಾರ್ಗವಿಲ್ಲದೆ ಬಹಳ ದುಃಖಿತಪ್ಪರಾಗಿದ್ದರು. ಆಗ ಈ ಮುಷಿಯು ತನ್ನ ಹೆಸರಿನ ಕನ್ಯೆಯೇ ತನ್ನ ಪತ್ನಿಯಾಗಬೇಕೆಂದೂ ಆಗ ಮದುವೆಯಾಗುವನೆಂದೂ ಹೇಳಿ ಪಿತ್ಯಗಳನ್ನು ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸಿದನು, ಈ ವಿಷಯವನ್ನು



ತಿಳಿದ ವಾಸುಕಿಯು ತನ್ನ ತಂಗಿಯಾದ ಜರತ್ಕಾರ (ಮನಸಾ ದೇವಿ) ವನ್ನು ಋಷಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು ಮದುವೆಮಾಡಿದನು. ಒಂದು ದಿನ ಋಷಿಯು ತನ್ನ ಪತ್ನಿಯ ತೊಡೆಯ ಮೇಲೆ ಮಲಗಿ ನಿದ್ರಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಸೂರ್ಯಾಸ್ತಮಯವಾಯಿತು. ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲ ಮಾರುವುದೆಂಬ ಭಯದಿಂದ ಪತಿಯನ್ನು ಎಬ್ಬಿಸಿದಳು. ತನಗೆ ನಿದ್ರಾಭಂಗವಾಯಿತೆಂದು ಅವಳಲ್ಲಿ ಕೋಪಗೊಂಡು ಅವಳನ್ನು ಪರಿತ್ಯಜಿಸಿ ಆಕೆಯು ಗರ್ಭಿಣಿ ಯಾಗಿರುವುದಾಗಿಯೂ ಜನಿಸುವ ಮಗನೇ ಮುಂದೆ ರಕ್ಷಕ ನಾಗುವನೆಂದೂ ಹೇಳಿ ಹೊರಟುಹೋದನು. ಈತನೇ ಅಸ್ತಿಕ ಋಷಿ.]

**ಜರತ್ಕಾರಪ್ರಿಯಾ ಜರತ್ಕಾರುಪ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನಸಾ ದೇವಿ.**

**ಜರದ್ಗವ ಜರದ್ಗವ (ಪುಂ) 1.** ಮುದಿ ಎತ್ತು, ವೃದ್ಧ ವೃಷಭ. ಜರಂಶ್ರಮಿ ಗೌಶ್ವ "ಠ್" (೪-೪-೯೨). "ಅಕೃತ್ವಾ ಪೌಷಂ ಯಾ ಶ್ರೀ: ಕಿ ತಯಾಪಿ ಸುಖೋಯಯಾ | ಜರದ್ಗವ: ಸಮಶನಾತಿ ದೈವಾದುಪಗತಂ ತೃಣಮ್" ಪಂಚತಂ. 2. ಒಂದು ಹದ್ದು, ಗೃಧ್ರ. "ಅಜ್ಞಾತಕುಲಶೀಲಸ್ಯ ವಾಸೋ ದೇಯೋ ನ ಕಸ್ಯಚಿತ್ | ಮಾರ್ಜಿಸ್ಯ ಹಿ ದೋಷೇಣ ಹತೋ ವೃದ್ಧೋ ಜರದ್ಗವ: " ಹಿತೋ. 3. ಕ್ಷೀಣವಾಗುತ್ತಿರುವ ವೃಷಭರೂಪವಾದ ಧರ್ಮ. "ನೇತಸ್ಯೇಹ ಯಾಸ್ಮಾಕಂ ಶಶ್ವಚ್ಚಾಶ್ವಂ ಜರದ್ಗವ. | ಅಲಸ: ಕ್ಷುತ್ಪರೋ ಮುಖೇನ ಪಿವಾನ್ ಶುನಾ ಸಹ" ಭಾಂ ಅನುಂ. |

**ಜರಂತ ಜರಂತ (ಪುಂ) ಮಹಿಷ, ಎಮ್ಮೆ. ಜೃ (ವಯೋಹಾನಿ) "ಜೃ" (೩ಂ ೩-೧೨೬). ಇಸ್ಯ ಅಂತಾದೇಶ: (೩-೨-೩).**

**ಜರಾ ಜರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1.** ಮುಪ್ಪು, ಮುದಿತನ. ಜೀಯತೇನಯಾ -ಜೃ (ವಯೋಹಾನಿ) "ಅಜ್" (೩-೩-೧೦೪). "ಜರಾ- ನಿರ್ದೋಷಿ ಜವೇನ ಜಾಂಬವಾನ್" ಯಾದಂ ೧೪-೭. 2. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸಿ, ಜರಾಸಂಧನ ಉಪಮಾತೆ. ["ಜರಾಸಂಧ" ಪದ ದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 3. ಮುಪ್ಪಿನ ಕಾರಣ, ಮುದಿತನದ ಹೇತು. "ಯಾ ಹೃಷ್ಮನಸಾ ನಿಯಂ ಸ್ಥಾನಮಾನವಿಚಕ್ಷಣಾ | ಭರ್ತು: ಪ್ರೀತಿಕರೀ ನಿಯಂ ಸಾ ಭಾರ್ಯಾ ಹೀತರಾ ಜರಾ" | 4. ವೃತ್ತವಿನ ಮಗಳು. ಈ ಜರಗೆ ವ್ಯಾಧಿಗಳೆಲ್ಲವೂ ಒಡಕುಂಟಿದ್ದುವು. ಜರೆಯು ಸಹೋದರರಾದ ರೋಗ ಗಳೊಡನೆ ಜಗತ್ತೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಸುತ್ತುತ್ತಿರುವಳು. ಆಚಾರ ವ್ಯವಹಾರ ವಿಹೀನರಾದವರನ್ನು ಬಹಳ ಸಂತೋಷದಿಂದ ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುವಳು. ಒಣಗಿದ ಮಾಂಸವನ್ನೂ ವೃದ್ಧ ಹೆಂಗ ಸನ್ನೂ ಎಳೆಯ ಬಿಸಿಲನ್ನೂ ಎಳೆಯ ಮೊಸರನ್ನೂ ಸೇವಿಸು ವವರನ್ನು ಜರೆಯು ಸಹೋದರರೊಡಗೂಡಿ ಒಂದು ಸೇರುವಳು. "ಶುಕ್ಲಮಾಸಂ ಸ್ತ್ರೀಯಂ ವೃದ್ಧಾಂ ಬಾಲಾಕಂ ತರಣಂ ದಧಿ |

ಸೇವಂತಂ ಜರಾ ಯಾತಿ ಪ್ರಹೃಷ್ಠಾ ಭ್ರಾತೃಭಿ: ಸಹ" | ರಾತ್ರಿ ವೇಳೆಯಲ್ಲಿ ಗಟ್ಟಿ ಮೊಸರನ್ನೂ ಋತುಮತಿ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ ಯರನ್ನೂ ಸೇವಿಸುವವರು ಜರಗೆ ಬಹಳ ಪ್ರೀತಿಪಾತ್ರರು. "ರಾತ್ರಿ ಯೇ ದಧಿ ಸೇವಂತೇ ಪುಂಶ್ಚಲೀಂ ಚ ರಜಸ್ವಲಾಮ್ | ತಾನುಪೇತಿ ಜರಾ ಹೃಷ್ಠಾ ಭ್ರಾತೃಭಿ: ಸಹ ಸುಂದರಿ" | ಜರೆಯ ಪ್ರತಿ ಕಾರೋಪಾಯವನ್ನು ತಿಳಿದವರಿಗೆ ಜರೆಯು ಮತ್ತು ವ್ಯಾಧಿ ಗಳ ಬಾಧೆಯಿರುವುದಿಲ್ಲ. "ಏತೇ ಶೋಷಾಪೀತಾರಂ ನ ಗಚ್ಛಂತಿ ಚ ಸಂಯತಮ್ | ಪಲಾಯಂತೇ ಚ ತಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ವೇನತೇಯ- ಮಿವೋರಗಾ:" | ಜರೆಯ ಪ್ರತಿಕಾರೋಪಾಯಗಳೆಲ್ಲವು: ಕಣ್ಣುಗಳನ್ನು ನೀರಿನಿಂದ ಚೆನ್ನಾಗಿ ತೊಳೆಯುವುದು, ವ್ಯಾಯಾಮ, ಕಾಲಿನ ಅಡಿಗಳಿಗೆ ತೈಲ ಹಚ್ಚುವುದು, ಕಿವಿಗಳ ರಂಧ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಎಣ್ಣೆಯನ್ನು ತುಂಬುವುದು, ತಲೆಗೆ ಎಣ್ಣೆ ಯನ್ನು ಹಚ್ಚುವುದು ಇವುಗಳಿಂದ ಮುಪ್ಪು ಮತ್ತು ವ್ಯಾಧಿಗಳು ಹತ್ತಿರ ಸೇರುವುದಿಲ್ಲ. ವಸಂತಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸುಚಾರ, ವಕ್ಷಿಸೇವನೆ, ಬಾಲಸ್ತ್ರೀ (ತರುಣಿ) ಯ ಸೇವನೆ, ಕೊಳಗಳ ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನ, ಚಂದನದ ಲೇಪನ, ಬೇಸಿಗೆ ಯಲ್ಲಿ ಶುದ್ಧಗಾಳಿಯ ಸೇವನೆ, ವರ್ಷಾರ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ಉಷ್ಣೋದಕಸ್ನಾನ, ವರ್ಷೋದಕದ ವರ್ಜನ, ಸಕಾಲ ದಲ್ಲಿ ಆಹಾರ ಸೇವನೆ, ಶರದ್ಋತುಗಳಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಸಂಚರಿಸ ದಿರುವಿಕೆ, ಕೊಳಗಳ ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನ, ಹೇಮಂತಋತುವಿನಲ್ಲಿ ಕೊಳದ ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನ, ವಕ್ಷಿಸೇವನೆ ಹೊಸದಾದ ಮತ್ತು ಬಿಸಿಯಾದ ಅನ್ನದ ಊಟ, ಶಿಶಿರಋತುವಿನಲ್ಲಿ ಬೆಚ್ಚನೆಯ ಬಟ್ಟೆ, ವಕ್ಷಿಸೇವನೆ, ಹೊಸದಾದ ಬಿಸಿ ಅನ್ನದ ಊಟ, ಉಷ್ಣೋದಕ ಸ್ನಾನ, ಸದ್ಯಃ ದೊರೆತ ಮಾಂಸ, ಬಿಸಿ ಅನ್ನ, ಶರಣಸ್ತ್ರೀ, ಹಾಲು, ತುಪ್ಪ, ಹಸಿವಾದಾಗ ಊಟ, ನಿತ್ಯವೂ ತಾಂಬೂಲಸೇವನೆ ಇವು ಜರೆಯ ಪ್ರತಿಕಾರೋಪಾಯಗಳು. "ಮೃತ್ಯುಕನ್ಯಾ ಸುತಾಶ್ಚೈವ ಜರಾ ತಸ್ಯಾಶ್ಚ ಕನ್ಯಕಾ | ಜರಾ ಚ ಭ್ರಾತೃಭಿ: ಸಾರ್ಥಂ ಶಶ್ವತ್ ಭ್ರಮತಿ ಭೂತಲಮ್ | ಚಕ್ಷುರ್ಜಲಂ ಚ ವ್ಯಾಯಾಮ: ಪಾದಾಘಸ್ತೇಲ- ಸೇವನಮ್ | ಕರ್ಣಯೋರ್ಮುಧಿನಿ ತೇಲಂ ಚ ಜರಾವ್ಯಾಧಿವಿನಾಶನಮ್ | ವಸಂತೇ ಭ್ರಮಣಂ ವಹ್ನಿಸೇವಾಂ ಸ್ವಲ್ಪಾಂ ಕರೋತಿ ಯ: | ಬಾಲಾಂ ಚ ಸೇವತೇ ಕಾಲೇ ಜರಾ ತಂ ನೋಪಗಚ್ಛತಿ | ಸ್ನಾತಶೀತೋದಕ- ಸ್ನಾಯಿ ಸೇವತೇ ಚಂದನದ್ರವಮ್ | ನೋಪಯಾತಿ ಜರಾ ತಂ ಚ ನಿರ್ದಾಘೇ- ಽನಿಲಸೇವಿನಮ್ | ಪ್ರಾಕೃಷ್ಣ್ಯೋದಕಸ್ನಾಯಿ ಧನತೋಯಂ ನ ಸೇವತೇ | ಸಮಯೇ ಚ ಸಮಾಹಾರಿ ಜರಾ ತಂ ನೋಪಗಚ್ಛತಿ | ಶರದ್ರೀದ್ರಂ ನ ಗೃಹ್ಣಾತಿ ಭ್ರಮಣಂ ತತ್ರ ವರ್ಜಯೇತ್ | ಸ್ನಾತಸ್ನಾಯಿ ಸಮಾಹಾರಿ ಜರಾ ತಂ ನೋಪಗಚ್ಛತಿ | ಸ್ನಾತಸ್ನಾಯಿ ಚ ಹೇಮಂತೇ ಕಾಲೇ ವಹ್ನಿ ನಿಷೇವತೇ | ಭುಕ್ತೇ ನವಾಶ್ವಮುಷ್ಣಂ ಚ ಜರಾ ತಂ ನೋಪಗಚ್ಛತಿ | ಶಿಶಿರೇಂಶ್ಚುಕ್ವಹ್ನಿ ಚ ನವೋಷ್ಣಾಶ್ಚಂ ಚ ಸೇವತೇ | ಯ



ಎವೋಣೋದಕಸ್ನಾಯಿ ಜರಾ ತಂ ನೋಪಗच्छति । ಸದ್ಯೋಮಾಸಂ  
ನವಾಘಂ ಚ ಬಾಲಾ ಸ್ವೀ ಕೀರಭೋಜನಮ್ । ಧೃತಂ ಚ ಸೇವತೇ ಯೋ ಹಿ  
ಜರಾ ತಂ ನೋಪಗच्छತಿ । ಭುಕ್ತೇ ಸದಗ್ಧಂ ಕ್ಷುತ್ಕಾಲೇ ತೃಣಾಢಾಂ  
ಪೀಯತೇ ಜಲಮ್ । ನಿದ್ರಾಂ ಭುಕ್ತೇ ಚ ತಾಮ್ಬೂಲಂ ಜರಾ ತಂ  
ನೋಪಗच्छತಿ " ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ ।

**ಜರಾತುರ ಜರಾತುರ** (ವಿಂ) 1. ವಯಸ್ಸಿನಿಂದ ಕುಗ್ಗಿ ಹೋಗಿ  
ರುವ, ಮುಪ್ಪಿನಿಂದ ಉಡುಗಿಹೋದ, ಮುದಿತನದಿಂದ  
ಸತ್ತ್ವಗುಂದಿದ. ಜರಯಾ ಆತುರಃ । 2. ಜೀರ್ಣವಾದ,  
ಮುದಿಯಾದ.

**ಜರಾನ್ವಿತ ಜರಾನ್ವಿತ** (ವಿಂ) ಮುಪ್ಪಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ.  
ಜರಯಾ ಅನ್ವಿತಃ ।

**ಜರಾಪುಷ್ಪ ಜರಾಪುಷ್ಪ** (ಪುಂ) ಜರೆಯೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸಿಯಿಂದ  
ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಜರಾಸಂಧಃ. ಜರಯಾ ಪುಷ್ಪಃ ।

**ಜರಾಭಿಭೂತ ಜರಾಭಿಭೂತ** (ವಿಂ) ಮುಪ್ಪಿನಿಂದ ಉಡುಗಿ  
ಹೋದ, ಮುದಿತನದಿಂದ ಸತ್ತ್ವಗುಂದಿದ. ಜರಯಾ ಅಭಿಭೂತಃ ।

**ಜರಾಭೀತ ಜರಾಭೀತ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ.  
(ವಿಂ) 2. ಮುದಿತನದಿಂದ ಹೆದರಿದ. ಜರಯಾ ಭೀತಃ ।

**ಜರಾಭೀರು ಜರಾಭೀರು** (ಪುಂ) 1. ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮ.  
(ವಿಂ) 2. ಮುಪ್ಪಿನಿಂದ ಹೆದರುವ. ಜರಯಾ ಭೀರುಃ ।

**ಜರಾಯು ಜರಾಯು** (ಪುಂ) 1. ಗರ್ಭಾಶಯ, ಗರ್ಭಕೋಶ.  
ಜರಾಮೇತಿ - ಇನ್ (ಗತೌ) "ಋನ್" (ಽಽಂ ೧-೪) ।  
2. ಗರ್ಭದ ಹೊರಚರ್ಮ, ಗರ್ಭಕ್ಕೆ ಸುತ್ತಿಕೊಂಡಿರುವ  
ಚರ್ಮದ ಹೊದಿಕೆ. "ಜರಾಯುಣಾ ಮುಖೇ ಚಕ್ಷುಃ ಕಣ್ಣೇ ಚ  
ಕರ್ಣವೇಷ್ಠಿತೇ । ವಾಯೋಮಾರ್ಗನಿರೋಧಾच्च ನ ಗರ್ಭಸ್ಥಃ ಪ್ರರೋದತಿ"  
ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೨-೪೪ । 3. ಜಟಾಯುಪಕ್ಷಿ. 4. ಹಾವಿನ  
ಸೋಲೆ.

**ಜರಾಯುಜ ಜರಾಯುಜ** (ವಿಂ) ಗರ್ಭಾಶಯದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ  
ಮನುಷ್ಯ ಪಶುಗಳು ಮೊದಲಾದುವು. ಸ್ವೇದಜಃ ಅಘಜಃ  
ಮತ್ತು ಜರಾಯುಜಃ ಎಂದು ಮೂರು ಜಾತಿಯ ಪ್ರಾಣಿ  
ಗಳಿರುವುವು. (1) ಶಾಖದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಹುಳು ನೋಣ  
ಮುಂತಾದುವು ಸ್ವೇದಜಗಳು. (2) ಮೊಟ್ಟೆಯೊಡೆದು  
ಹುಟ್ಟುವ ಹಕ್ಕಿ ಹಾವು ಮೊದಲಾದುವು ಅಘಜಗಳು.  
(3) ಗರ್ಭಾಶಯದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಮನುಷ್ಯ ಮತ್ತು ಪಶು  
ಗಳು ಜರಾಯುಜಗಳು. ಇವಲ್ಲದೆ ಭೂಮಿಯನ್ನು  
ಭೇದಿಸಿಕೊಂಡು ಹುಟ್ಟುವ ಸಸ್ಯಗಳು ಉದ್ಭಿಜ್ಜಗಳು.  
"ನೃಗವಾಘಾ ಜರಾಯುಜಾಃ । ಸ್ವೇದಜಾಃ ಕೃಮಿದಂಶಾಘಾಃ ಪಕ್ಷಿ-  
ಸರ್ಪಾದಿಯೋಽಘಜಾಃ । ಽದ್ವಿದಸ್ತಃ ಕುಲ್ಮಾಘಾಃ ಽದ್ವಿದುಽದ್ವಿಜ್ಜ-  
ಮುಽದ್ವಿದಮ್" ಅಮಂ ।

**ಜರಾಸಂಧ ಜರಾಸಂಧ** (ಪುಂ) ಬೃಹದ್ರಥನ ಮಗನಾದ ಒಬ್ಬ  
ರಾಕ್ಷಸ. ಜರಯಾ ರಾಕ್ಷಸ್ಯಾ ಸಂಧಾ ಶರೀರಯೋಜನಮಸ್ಯ ।  
[ಬೃಹದ್ರಥ ರಾಜನಿಗೆ ಬಹಳ ಕಾಲದವರೆಗೂ ಸಂತಾನವಿರ  
ಲಿಲ್ಲ. ಒಂದು ದಿನ ಒಂದು ಮಾವಿನ ಮರದ ಕೆಳಗೆ  
ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಚಂಡಕೌಶಿಕ ಋಷಿಯಲ್ಲಿಗೆ ಒಂದು  
ಸಂತಾನಕ್ಕಾಗಿ ಬೇಡಿದನು. ಋಷಿಯು ಒಂದು ಮಾವಿನ  
ಹೆಣ್ಣನ್ನು ಮಂತ್ರಿಸಿ ಅದನ್ನು ರಾಣಿಗೆ ಕೊಡುವಂತೆ ತಿಳಿಸಿ  
ದನು. ರಾಜನು ಅದನ್ನು ಎರಡು ಭಾಗಮಾಡಿ ಇಬ್ಬರು  
ಪತ್ನಿಯರಿಗೂ ಕೊಟ್ಟನು. ಅವರಿಬ್ಬರೂ ಗರ್ಭವನ್ನು  
ಧರಿಸಿ-ಮಗುವಿನ ಎರಡು ಸೀಳುಗಳನ್ನು ಹೆತ್ತರು. ಅದ  
ರಿಂದ ಬೇಸರಗೊಂಡ ಅವರು ಅವನ್ನು ಬಿಸಾಡುವಂತೆ  
ದಾದಿಗೆ ಹೇಳಿದರು. ದಾದಿಯು ಕಸದ ಗುಂಡಿಯಲ್ಲಿ  
ಬಿಸಾಡಿದಳು. ಆಗ ಆಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ತಿರುಗುತ್ತಿದ್ದ ಜರೆಯೆಂಬ  
ರಾಕ್ಷಸಿಯೊಬ್ಬಳು ಆ ಸೀಳುಗಳನ್ನು ತೆಗೆದು ಜೋಡಿಸಿ  
ದಳು. ಅದು ಒಂದು ಶಿಶುವಾಯಿತು. ಅವಳು ಆ ಶಿಶು  
ವನ್ನು ರಾಜನಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿದಳು. ಜರೆಯು ಆ ಸೀಳು  
ಗಳನ್ನು ಜೋಡಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಶಿಶುವಿಗೆ "ಜರಾಸಂಧ"  
ನೆಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು. ಜರಾಸಂಧನು ಪ್ರಾಪ್ತವಯಸ್ಸಿನಾಗಿ  
ರಾಜ್ಯಕ್ಕೆ ಒಡೆಯನಾದನು. ಅನೇಕ ರಾಜರನ್ನು ಜಯಿಸಿ  
ಬಂಧನದಲ್ಲಿರಿಸಿದನು. ಗಿರಿವ್ರಜವು ಇವನ ರಾಜಧಾನಿ.  
ರಾಜರೆಲ್ಲರೂ ಸೇರಿ ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಿಗೆ ಹೇಳಿ  
ಕಳುಹಿಸಿ ತಮ್ಮನ್ನು ಕಾಪಾಡಬೇಕೆಂದು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲು  
ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಭೀಮಸೇನನಿಂದ ಜರಾಸಂಧನನ್ನು ಕೊಲ್ಲಿಸಿ  
ರಾಜರನ್ನು ಸೆರೆಯಿಂದ ಬಿಡಿಸಿದನು.] ಭಾಂ ಸಭಾಂ ।

**ಜರಾಸಂಧಜಿತ್ ಜರಾಸಂಧಜಿತ್** (ಪುಂ) ಜರಾಸಂಧನನ್ನು  
ಜಯಿಸಿದ ಭೀಮಸೇನ. ಜರಾಸಂಧಂ ಜಿತವಾನ್-ಜಿ (ಜಯೇ)  
"ಕಿವಿಪ್" (೩-೨-೬೧) ।

**ಜರಿತ ಜರಿತ** (ವಿಂ) ಮುದಿಯಾದ, ಮುದಿತನಹೊಂದಿದ.  
ಜರಾಸ್ಯ ಸಂಜಾತಾ "ಇತಿತ್" (೪-೨-೩೬) ।

**ಜರಿನ್ ಜರಿನ್** (ವಿಂ) ಮುದಿತನ ಹೊಂದಿದ, ವೃದ್ಧನಾದ.  
ಜರಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇತಿಃ" (೩-೨-೧೧೬) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಕೀಪ್" (೪-೧-೪) । ಜರಿಣಿ ಜರಿಣೀ.

**ಜರುಥ ಜರುಥ** (ನಂ) ಮಾಂಸ. ಜೃ (ವಯೋಹಾನಿ) "ಅಯನ್" (ಽಽಂ  
೨-೬) । "ಶ್ಲೇಷಾಬಲಾಶೋ ಮಾಸಂ ತು ಜರುಥಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಜರ್ಜನ ಜರ್ಜನ** (ನಂ) ಬೆದರಿಕೆ, ಹೆದರಿಸುವುದು. ಜರ್ಜ  
(ಭತ್ಸನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) ।

**ಜರ್ಜರ ಜರ್ಜರ** (ಪುಂ) 1. ವೃದ್ಧ, ಮುದುಕ. 2. ಶೈವಾಲ,  
ಪಾಚಿ. 3. ಇಂದ್ರನ ಧ್ವಜ. (ವಿಂ) 4. ಜೀರ್ಣವಾದ,



ಮುದಿಯಾದ, ಶಕ್ತಿಗುಂದಿದ, ಶಿಥಿಲವಾದ. "ಜರ್ಜರ: ಶೈವಲೇ  
ಶಕ್ರವಜೇ ತ್ರಿಷು ಜರಾತುರೇ" ಮೇದಿಂ. 5. ಒಡೆದುಹೋದ,  
ಚೂರು ಚೂರಾದ. "ಕೃತ್ವಾ ಪುಂತ್ಪಾತಮುಚ್ಚೈರ್ಮಗ್ನುಯೋ ಮೃಗ್ನಿ  
ಪ್ರಾಣಾಂ ಜರ್ಜರಾ ನಿರ್ಜರೌಘಾ:" ಮಾಘಂ ೪-೨೩.

**ಜರ್ಜರಿತ ಜರ್ಜರಿತ** (ವಿಂ) 1. ಜೀರ್ಣವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಶಕ್ತಿಗುಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕೃಣ್ಣೋ ಜರ್ಜರಿತಾಙ್ಗಸ್ಯ ಕುಂಜರ-  
ಸ್ಯಾರ್ತೇತಸ:" ಹರಿವಂ. 2. ಚೂರು ಚೂರಾಗಿ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಜರ್ಜರಂ ಕರೋತಿ-ಜರ್ಜರ+ಣಿಕ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:"  
(೩-೨-೧೦೨). 3. ಅರಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಜೀರ್ಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಜರ್ಜರಿಕ ಜರ್ಜರಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಚೂರುಚೂರಾಗಿರುವ,  
ಒಡೆದುಹೋಗಿರುವ. 2. ಬಹಳ ತೂತಾಗಿರುವ, ಬಹಳ  
ರಂಧ್ರಗಳುಳ್ಳ. 3. ಜೀರ್ಣವಾದ, ಮುದಿಯಾದ. ಜೃ  
(ವಯೋಹನಿ) "ಇಕನ್" ಧಾತೌದ್ವಿತ್ವಂ ಋಚಾಮ್ಯಾಸಸ್ಯ |  
ನಿಪಾಂ (೩ಂ ೪-೨೦). "ಜರ್ಜರಿಕಂ ಬಹುಚ್ಚಿದ್ರೇ ಜರಾತುರೇಽಪಿ  
ವಾಚ್ಯವತ್" ಮೇದಿಂ.

**ಜರ್ಣ ಜರ್ಣ** (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. 2. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಜೃ  
(ವಯೋಹನಿ) "ನ:" (೩ಂ ೩-೧೦). "ಜರ್ಣಾನ್ದ್ರೇ ಚ  
ವೃಕ್ಷೇ ಚ" ಮೇದಿಂ. (ವಿಂ) 3. ಜೀರ್ಣವಾದ. "ಜರ್ಣಂ  
ಜಿರ್ಣದ್ರುಮೇನ್ದುಃ" ಹೇಮಂ.

**ಜರ್ತಲ ಜರ್ತಲ** (ಪುಂ) ಕಾಡು ಎಳ್ಳು.

**ಜರ್ತು ಜರ್ತು** (ಪುಂ) 1. ಗಜ, ಆನೆ. 2. ಯೋನಿ. ಜನ  
(ಜನನೇ) "ತು:" ರಶ್ಮ (೩ಂ ೪-೪೬). "ಜರ್ತುರ್ಹಂತಿ  
ಯೋನಿಶ್ಚ" ಸಿಂ ಕೌಂ.

**ಜಲ-ಅಪವಾರಣೆ** (ಚುರಾಂ ೩ಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಜಾಲಯತಿ, -ತೇ |  
ಅಜಿಜಲತ್, -ತ | ಅವರಿಸು, ಮುಚ್ಚು, ಮರೆಮಾಡು.

**ಜಲ-ಧಾತನೆ** (ಭ್ವಾಂ ೪ಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಜಲತಿ | ಜಜಾಲ |  
ಜಲಿತಾ | ಅಜಾಲಿತ್ | ತೀಕ್ಷ್ಣವಾಗಿರು, ಹರಿತವಾಗಿರು,  
ಚೂಪಾಗಿರು.

**ಜಲ ಜಲ** (ನಂ) 1. ನೀರು. ಜಲತಿ - ಜಲ "ಅಚ್"  
(೩-೧-೧೩೪). "ಜಲಾಮಿಲಾಷಿ ಜಲಮಾದದಾನಾಂ ಛಾಯೇವ  
ತಾಂ ಭೂಪತಿರನ್ವಗಾಂಚತ್" ರಘುಂ ೨-೬. "ತಸ್ಯಾಪತನ್ಮುಗ್ನಿ  
ಜಲಾನಿ ಜಿಣ್ಣಿ:" ರಘುಂ ೧೪-೮. ಪ್ರಾಣಿಗಳಿಗೆ ನೀರೇ  
ಪ್ರಾಣವಾದುದರಿಂದ ಅವು (ಪ್ರಾಣಿ)ಗಳ ಜೀವನಕ್ಕೆ ಕಾರಣ  
ವಾದ ನೀರು ಯಾವಾಗಲೂ ಬಹಳ ಅವಶ್ಯವಾದುದು.  
ಅನ್ನವಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಕೆಲವು ಕಾಲ ಬದುಕಿರಬಹುದು.  
ನೀರಿಲ್ಲದೆ ಯಾವ ಪ್ರಾಣಿಯೂ ಬದುಕಿರಲಾರದು. ಆದುದ  
ರಿಂದ ರೋಗಿಯೂ ನೀರನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದರೆ ಅವಶ್ಯವಾಗಿ  
ಕೊಡಬೇಕು. "ಪಾನೀಯಂ ಪ್ರಾಣಿನಾಂ ಪ್ರಾಣಾಸ್ತದಾಯತಂ ಹಿ

ಜೀವನಮ್ | ತಸ್ಮಾತ್ಸರ್ವಾಸ್ವವಸ್ಥಾಸು ನ ಕ್ವಚಿದ್ ವಾರಿ  
ವಾರ್ಯತೇ | ಅಗ್ನೇನಾಪಿ ವಿನಾ ಜಂತು: ಪ್ರಾಣಾನ್ ಧಾರಯತೇ ಚಿರಮ್ |  
ತೋಯಾಭಾವೇ ಪಿಪಾಸಾರ್ತ: ಕ್ಷಣಾತ್ಪ್ರಾಣೈವಿಮುಚ್ಯತೇ | ತೃಷಿತೋ  
ಮೋಹಮಾಯಾತಿ ಮೋಹಾತ್ ಪ್ರಾಣಾನ್ ವಿಮುಚ್ಯತಿ | ತಸ್ಮಾಜ್ಜಲ-  
ಮವಶ್ಯಂ ಹಿ ದಾತವ್ಯಂ ಭೇಷಜೈ: ಸಮಮ್" | 2. ಮುಡಿವಾಳ  
ವೆಂಬ ಒಂದು ಗಂಧದ್ರವ್ಯ. 3. ಪೂರ್ವಾಪಾಡು ನಕ್ಷತ್ರ.  
(ಈ ನಕ್ಷತ್ರವು ಜಲದೇವತಾಕವಾದುದು.) 4. (ಜ್ಯೋತಿಷ  
ದಲ್ಲಿ) ಲಗ್ನದಿಂದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಸ್ಥಾನ. 5. ಹಸುವಿನ  
ಗರ್ಭ. (ವಿಂ) 6. ಜಡ, ಮಂದ, ಮಂಕ, ದಡ್ಡ,  
ಪೆದ್ದ. "ಅನೇಡಮೂಕಸ್ತು ಜಡೋ ಜಲೋ ಮೂಕ:" ವೈಜಂ. "ದಾನಂ  
ದದತ್ಯಪಿ ಜಲಂ: ಸಹಸಾಧಿರೂಢೇ ಕೋ ವಿಶ್ರಮಾನಗತಿರಾಸಿತು-  
ಮುತ್ಸಹೇತ" ಮಾಘಂ ೪-೩೭. "ಜಲಂ ಗೋಕಲಲೇ ನೇರೇ  
ಹೀಬೇರೇಽಪ್ಯನ್ಯವಜ್ಜಡೇ" ಮೇದಿಂ.

**ಜಲಕಂಠಕ ಜಲಕಂಠಕ** (ಪುಂ) 1. ನಕ್ಷತ್ರ, ಮೊಸಳೆ. ಜಲ  
ಕಂಠಕ ಇವ | "ಜಲಶುಕರಜಲಜಿಹ್ವೌ ಜಲಕಂಠಕವಾರ್ಭಟೌ |  
ತಥಾ ನಕ್ರೇ" ಹಾರಾಂ. 2. ನೀರು ನೆಗ್ಗಿಲುಗಿಡ. "ಕ್ಷೀರ  
ಬೀಜ: ಕ್ಷೀರಶುಕಲ: ತರ್ಪಣೋ ಜಲಕಂಠಕ:" ವೈಜಂ.

**ಜಲಕಪಿ ಜಲಕಪಿ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಲಚರ ಪ್ರಾಣಿ.

**ಜಲಕಪೋತ ಜಲಕಪೋತ** (ಪುಂ) ನೀರು ಪಾರಿವಾಳ.  
ಜಲಜಾತ: ಕಪೋತ: |

**ಜಲಕರ ಜಲಕರ** (ಪುಂ) ನೀರಿನ ಕಂದಾಯ, ನೀರಿಗಾಗಿ  
ಕೊಡುವ ತೆರಿಗೆ.

**ಜಲಕರಜ್ಜು ಜಲಕರಂಜ** (ಪುಂ) 1. ತೆಂಗಿನಕಾಯಿ, 2. ಮೇಘ.  
ಮೋಡ. ಜಲಸ್ಯ ಕರಜ್ಜು ಇವ | 3. ಪೆದ್ದು, ಕಮಲ.  
4. ಶಂಖ. 5. ತರಂಗ, ಅಲೆ. "ಅಥೋ ಜಲಕರಜ್ಜು:  
ಸ್ಯಾನ್ಪಾರಿಕೇಲಫಲೇಽಮ್ಬುಜೇ | ಶಙ್ಖೇ ಜಲಲತಾಯಾಂ ಚ ವಾರಿವಾಹೇ  
ಚ ಕೀರ್ತಿತ:" ಮೇದಿಂ.

**ಜಲಕಲ್ಕ ಜಲಕಲ್ಕ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಸರು, ಪಂಕ. ಜಲೇ ಕಲ್ಕ  
ಇವ | "ಜಂಬಾಲೋ ಜಲಕಲ್ಕ: ಸ್ಯಾದಾರಣಿ: ಕುಲಹೃಡಕ:"  
ಹಾರಾಂ. 2. ಶೈವಾಲ, ಪಾಚಿ.

**ಜಲಕಾಕ ಜಲಕಾಕ** (ಪುಂ) ನೀರುಕಾಗೆ, ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿ  
ಮಾಡುವ ತೆನ್ನುವ ಕಾಗೆ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೬೩). -ಕಾಕಿ -ಕಾಕೀ.

**ಜಲಕಾಕ್ಷ ಜಲಕಾಕ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಗಜ, ಆನೆ. ಜಲಂ  
ಕಾಕ್ಷತಿ - ಕಾಕ್ಷಿ (ಕಾಕ್ಷಾಯಾಮ್) "ಅಣ್" (೩-೨-೧).  
"ಹಸ್ತೀಮಹಾಮೃಗ: ಪಿಲು: ಸಿಂಧುರೋ ದೀರ್ಘಮಾಸ್ತ: | ರಾಜೀವೋ  
ಜಲಕಾಕ್ಷಶ್ಚ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. (ವಿಂ) 2, ನೀರನ್ನು  
ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ,



ಜಲಕಾಕ್ಷಿನ್ ಜಲಕಾಂಕ್ಷಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಗಜ, ಆನೆ. ಜಲಂ ಕಾಕ್ಷತಿ - ಕಾಕ್ಷಿ (ಕಾಕ್ಷಾಯಾಮ್) "ಗಿಣಿ:" (3-2-36)। "ಮಹಾಮೃಗ: ಪುಷ್ಕರದೀರ್ಘಮಾಸ್ತೌ ವಿಲೋಮ-ಜಿಹ್ವಾ ಜಲಕಾಕ್ಷಿಸಿಂಧುರೌ" ಹಾರಾಂ। (ವಿಂ) 2. ನೀರನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-5)। -ಕಾಕ್ಷಿಣಿ -ಕಾಂಕ್ಷಿಣೀ.

ಜಲಕಾಂತಾರ ಜಲಕಾಂತಾರ (ಪುಂ) ವರುಣ. ಜಲಮೇವ ಕಾಂತಾರೋ ದುರ್ಗಮ: ಪನ್ಯಾ: ಯಸ್ಯ।

ಜಲಕಿರಾಡ ಜಲಕಿರಾಟ (ಪುಂ) ಉದ್ದವಾದ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು.

ಜಲಕುಕ್ಕುಟ ಜಲಕುಕ್ಕುಟ (ಪುಂ) ನೀರುಕೋಳಿ. ಜಲೇ ಕುಕ್ಕುಟ ಇವ। "ಭೃಗುರಾಜೇಸ್ತಥಾ ಹಂಸೇರ್ದಾತ್ಯಹೇಜಲಕುಕ್ಕುಟೇ:" ಭಾಂ ವನಂ 106-9।

ಜಲಕುಂತಲ ಜಲಕುಂತಲ (ಪುಂ) ಶೈವಾಲ, ಪಾಚಿ. ಜಲಸ್ಯ ಕುಂತಲ ಇವ।

ಜಲಕೃಪಿ ಜಲಕೃಪೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಾವಿ. 2. ಸರಸ್ಸು, ಕೊಳ. 3. ನೀರಿನ ಸುಳಿ. ಜಲೇನ ಕೃಪಿವ। "ಜಲಕೃಪಿ ಕೃಪಣೇ ಪುಷ್ಕರಿಣ್ಯಾಂ ಚ ಯೋಧಿತಿ" ಮೇದಿಂ।

ಜಲಕೂರ್ಮ ಜಲಕೂರ್ಮ (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಲಚರ ಪ್ರಾಣಿ, ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು.

ಜಲಕೇಶ ಜಲಕೇಶ (ಪುಂ) ಶೈವಾಲ, ಪಾಚಿ. ಜಲಸ್ಯ ಕೇಶ ಇವ।

ಜಲಕೇಲಿ ಜಲಕೇಲಿ (ಪುಂ ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಲಕ್ರೀಡೆ.

ಜಲಕ್ರಿಯಾ ಜಲಕ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ, ತರ್ಪಣ ಮೊದಲಾದುದು.

ಜಲಕ್ರೀಡಾ ಜಲಕ್ರೀಡಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಆಡುವ ಆಟ, ನೀರಿನಲ್ಲಿ ನಿಂತು ಪರಸ್ಪರ ನೀರನ್ನು ಎರಚುತ್ತಾ ಆಡುವ ಆಟ. ಜಲೇನ ಕ್ರೀಡಾ। "ಜಲಕ್ರೀಡಾಸಮಾಸಕ್ತಗೋಪಿವಸ್ತ್ರಾಪ-ಹಾರಕ:"। "ತತಸ್ತೇ ಸಹಿತಾ: ಸರ್ವೇ ಜಲಕ್ರೀಡಾಮಕುರ್ವತ" ಭಾಂ ಆದಿಂ 136-19।

ಜಲಖಗ ಜಲಖಗ (ಪುಂ) ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಪಕ್ಷಿ. "ಹೃದಿನಿವಿಲಾಸಿನಿನಾಂ ಜಲಖಗನಖ-ವಿಕ್ಷತೇಷು ರಮ್ಯೇಷು" ಬೃಹತ್ಸಂ 46-6।

ಜಲಗುಲ್ಮ ಜಲಗುಲ್ಮ (ಪುಂ) 1. ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ. ಜಲಸ್ಯ ಗುಲ್ಮ ಇವ। 2. ನೀರಿನ ಸುಳಿ. 3. ಚತುರಶ್ರವುಳ್ಳ ಸರಸ್ಸು, ನಾಲ್ಕು ಮೂಲೆಗಳುಳ್ಳ ಕೊಳ. "ಜಲಗುಲ್ಮಾ ಜಲಾವರ್ತೆ ಕಚ್ಛಪೇ ಜಲಚತವರೇ" ಮೇದಿಂ।

ಜಲಚತವರ ಜಲಚತವರ (ನಂ) ಚೌಕವಾದ ಸರಸ್ಸು, ನಾಲ್ಕು ಮೂಲೆಗಳುಳ್ಳ ಕೊಳ. ಜಲೇನ ಚತವರಮ್।

ಜಲ(ಲೇ)ಚರ ಜಲ(ಲೇ)ಚರ (ಪುಂ) 1. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿ ಸುವ ಪ್ರಾಣಿ, ಮೊಸಳೆ ಮೀನು ನೀರುಕೋಳಿ ಮುಂತಾ ದುವು. ಜಲೇ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತಿಭಕ್ಷಣಯೋ:) "ಟ:" (3-2-16)। ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಬಹುಲಮಲುಕ್ (6-3-14)। (ವಿಂ) 2. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-5)। -ಚರೀ -ಚರೀ. "ಗಿಣಿ:" (3-2-36)। -ಚಾರಿನ್ -ಚಾರಿನ್. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-5)। -ಚಾರಿಣಿ -ಚಾರಿಣೀ. "ಸರಾಸಿ ಚ ಮನೋಜ್ಞಾನಿ ಸಮಂತಾತ್ ಜಲಚಾರಿಭಿ:" ಭಾಂ ವನಂ।

ಜಲಜ ಜಲಜ (ಪುಂ) 1. ಜೆಂದ್ರ. 2. ಶೈವಾಲ, ಪಾಚಿ. 3. ನೀರು ಹಲಸಿನಮರ. 4. ಮೀನು. ಜಲೇ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುರ್ಭವಿ) "ಡ:" (3-1-99)। (ನಂ) 5. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ. "ಠಿವಿರಪಲ್ಲವಪುಷ್ಪಲತಾಗೃಹೈರಪಲಸಜ್ಜಲಜೈ-ಜಲರಾಶಿಭಿ:" ಕಿರಾಂ 5-19। 6. ಶಂಖ. "ಜಲ-ಜಾಸಿಗದಾಶಾರ್ಙ್ಗಚಕ್ರಲಾಂಛಿತಮೂರ್ತಿಭಿ:" ರಘುಂ 10-60। 7. ಲವಣ, ಉಪ್ಪು. (ವಿಂ) 8. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ.

ಜಲಜನ್ತು ಜಲಜನ್ತು (ಪುಂ) ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಪ್ರಾಣಿ, ಮೀನು ಮೊಸಳೆ ಮುಂತಾದುವು. ಜಲೇ ಜಾತೋ ಜನ್ತು:।

ಜಲಜನ್ತುಕಾ ಜಲಜನ್ತುಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿಗಣೆ.

ಜಲಜನ್ಮನ್ ಜಲಜನ್ಮನ್ (ನಂ) ಪದ್ಮ, ಕಮಲ. ಜಲೇ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ। "ನಿಲಯ: ಶ್ರಿಯ: ಸತತಮೇತದಿತಿ ಪ್ರಥಿತಂ ಯದೇವ ಜಲಜನ್ಮ ತಯಾ" ಮಾಘಂ 9-16।

ಜಲಜಂಬುಕಾ ಜಲಜಂಬುಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ನೇರಿಳೆ ಗಿಡ.

ಜಲಜಾಜೀವ ಜಲಜಾಜೀವ (ಪುಂ) ಜಲಚರಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನು ಹಿಡಿದು ಅದರಿಂದ ಜೀವಿಸುವ ಬೆಸ್ತರವನು. ಜಲಜಂ ಮತ್ಸ್ಯಾದಿ ತಸ್ಯ ವಧೇನಾಜೀವತಿ - ಆ + ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಕ:" (3-1-135)।

ಜಲಜಾತ ಜಲಜಾತ (ನಂ) 1. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ. (ವಿಂ) 2. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

ಜಲಜಿಹ್ವ ಜಲಜಿಹ್ವ (ಪುಂ) ನಕ್ರ, ಮೊಸಳೆ. ಜಲಾ ಜಡಾ ಜಿಹ್ವಾ ಯಸ್ಯ। "ಜಲಶೂಕರಜಲಜಿಹ್ವಾ ಜಲಕಂಠಕವಾರ್ಮತೌ ತಥಾ ನಕ್ರೇ" ಹಾರಾಂ।

ಜಲಜೀವಿನ್ ಜಲಜೀವಿನ್ (ಪುಂ) ಬೆಸ್ತರವನು, ಮೀನು ಹಿಡಿಯುವವನು. ಜಲೇನ ತಜ್ಜಾತಮತ್ಸ್ಯಾದಿನಾ ಜೀವತಿ - ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಗಿಣಿ:" (3-2-36)। "ಸೂತ್ರ-



ಜಾಲೇಯಾ ಮತ್ಸ್ಯಾನ್ ಬಧ್ನಂತಿ ಜಲಜೀವಿನ್:" ಭಾಂ  
ಶಾಂತಿಂ।

ಜಲಡಿಂಭ ಜಲಡಿಂಭ (ಪುಂ) ಕಪ್ಪೆಚಿಪ್ಪು. "ಶಮ್ಬುಕೋ  
ಜಲಡಿಂಭಃ ಸ್ಯಾದ್ದುಶ್ವರಃ ಪಕ್ಷಿಮಂಡುಕಃ" ಹಾರಾಂ।

ಜಲತರಂಗ ಜಲತರಂಗ(ಪುಂ) 1. ನೀರಿನ ಅಲೆ. 2. ಒಂದು  
ವಿಧ ವಾದ್ಯ, ಬಟ್ಟಲುಗಳಲ್ಲಿ ನೀರು ತುಂಬಿ ಸಪ್ತಸ್ವರ  
ಗಳೂ ಬರುವಂತೆ ಬಾರಿಸುವ ಒಂದು ವಾದ್ಯ.

ಜಲತಾ ಜಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೀರಿಗಿರುವಿಕೆ. ಜಲಸ್ಯ ಭಾವಃ  
"ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। 2. ಶಿಥಿಲವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಸಡಿಲ  
ವಾಗಿರುವುದು.

ಜಲತಾಡನ ಜಲತಾಡನ (ನಂ) ನೀರನ್ನು ಹೊಡೆಯುವುದಂ.  
ಇದು ಅಪ್ರಯೋಜಕವಾದ ಉದ್ಯೋಗ. ನೀರನ್ನು ಹೊಡೆ  
ಯುವುದರಿಂದ ಯಾವ ಪ್ರಯೋಜನವೂ ಇಲ್ಲದಿರುವಂತೆ  
ಅಪ್ರಯೋಜಕ ಉದ್ಯೋಗ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಇದು  
ಲಾಕ್ಷಣಿಕ ಪ್ರಯೋಗ.

ಜಲತಾಲ ಜಲತಾಲ (ಪುಂ) ಇಲ್ಲಿಶವೆಂಬ ಒಂದು ಜಾತಿಯ  
ಮೀನು.

ಜಲತ್ರಾ ಜಲತ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭತ್ತಿ, ಕೊಡೆ. ಜಲಾತ್ ತ್ರಾಯತೇ-  
ತ್ರೈತ್ (ಪಾಲನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)।

ಜಲತ್ರಾಸ ಜಲತ್ರಾಸ (ಪುಂ) "ಜಲಭಯ" ವೆಂಬ ಒಂದು  
ರೋಗ, ನಾಯಿಹುಚ್ಚು, ನಾಯಿ ಕಡಿತದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ  
ನೀರನ್ನು ಕಂಡು ಅಂಜುವ ಒಂದು ರೋಗ. "ಯೇನ ಚಾಪಿ  
ಭವೇದ್ಭಟಃ ತಸ್ಯ ಚೇಷ್ಟಾಂ ಕುತಂ ನರಃ। ಬಹುಶಃ ಪ್ರತಿಕುರ್ವಣಿಃ  
ಕ್ರಿಯಾಹೀನೋ ವಿನಶ್ಯತಿ। ದಂಷ್ಟ್ರಿಣಾ ಯೇನ ದೃಷ್ಟಶ್ಚ ತದ್ಭುಂ ಯದಿ  
ಪಶ್ಯತಿ। ಅಪ್ಸು ವಾ ಯದಿ ವಾದರ್ಶೋರಿಷ್ಠಂ ತಸ್ಯ ವಿನಿರ್ದಿಶೇತ್।  
ತ್ರಸ್ಯತ್ಯಕಸ್ಮಾದ್ವಿಂಶಿಕ್ಷಣಂ ಶ್ರುತ್ವಾ ದೃಷ್ಟ್ವಾಪಿ ವಾ ಜಲಮ್।  
ಜಲತ್ರಾಸಸ್ತು ವಿಧಾತಂ ರಿಷ್ಠಂ ತದಪಿ ಕೀರ್ತಿತಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ  
ಕಲ್ಪಂ ೭।

ಜಲದ ಜಲದ(ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಜಲಂ ದದಾತಿ-ಡು  
ದಾನ್ (ದಾನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)। "ಅನತಿಚಿರೋ-  
ಜ್ಜಿತಸ್ಯ ಜಲದೇನ ಚಿರಸ್ಥಿತಬಹುಬುದ್ಧಸ್ಯ ಪಯಸೋಜುಕ್ರತಿಮ್"  
ಮಾಘಂ ೪-೪೧। 2. ಕರ್ಪೂರ. 3. ಕೊನ್ನಾರಿ. (ವಿಂ) 4.  
ನೀರನ್ನು ಕೊಡುವ.

ಜಲದಕಾಲ ಜಲದಕಾಲ (ಪುಂ) ವರ್ಷಾಕಾಲ, ವರ್ಷಾರ್ಥ,  
ಮಳೆಗಾಲ. ಜಲದಾನಾಂ ಕಾಲಃ। "ಜಲದಕಾಲಮಬೋಧಕೃತಂ  
ದಿಶಾಮಪರಥಾಪ ರಥಾವಯವಾಯುಧಃ" ಮಾಘಂ ೬-೪೧।

ಜಲದಕ್ಷಯ ಜಲದಕ್ಷಯ(ಪುಂ)ಶರದ್ಭುತ. ಜಲದಾನಾಂ ಕ್ಷಯೋಽಃ।  
"ಸರ್ವಾಣಿ ತನ್ಮತಾಂ ಯಾಂತಿ ಜಲಾನಿ ಜಲದಕ್ಷಯೇ" ಹರಿವಂಶಂ।

ಜಲದರ್ಬುರ ಜಲದರ್ಬುರ (ಪುಂ) ನೀರಿನಲ್ಲಿ ವಾದಿಸುವ ಒಂದು  
ವಿಧ ವಾದ್ಯ. ಜಲಂ ದರ್ಬುರ ಇವ। "ಅವಾದಯಂತಾ ಜಲದರ್ಬುರಾಂಶ್ಚ  
ವಾದಾನುರೂಪಂ ಜಗುರೇವ ಹೃಷಾಃ" ಹರಿವಂಶಂ।

ಜಲದಾಗಮ ಜಲದಾಗಮ (ಪುಂ) ವರ್ಷಾಕಾಲ, ಮಳೆಗಾಲ.

ಜಲದುರ್ಗ ಜಲದುರ್ಗ (ನಂ) ನೀರಿನಿಂದ ಸುತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ ಕೋಟೆ,  
ನೀರಿನ ಕಂದಕದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕೋಟೆ. ಜಲಾವೃತಂ ದುರ್ಗಮ್।

ಜಲದೇವ ಜಲದೇವ (ಪುಂ) ಜಲದೇವತಾಕವಾದ ಪೂರ್ವಾ  
ಷಾಢಾನಕ್ಷತ್ರ. ಜಲಂ ದೇವಃ ಅಧಿಷ್ಠಾತ್ರಿ ದೇವತಾಸ್ಯ।  
"ಇಷ್ಟಾನಂದಕಲತ್ರೋ ಮಾನಿ ದೃಢಸೌಹೃದಶ್ಚ ಜಲದೇವೇ" ಬೃಹತ್ಸಂ  
೧೦೧-೧೧೧।

ಜಲದೇವತಾ ಜಲದೇವತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರಿಗೆ ಅಧಿಷ್ಠಾನವಾದ  
ದೇವತೆ.

ಜಲದ್ರೋಣಿ ಜಲದ್ರೋಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾನೆ, ತೊಟ್ಟು  
(ಬಕಟ್ಟು).

ಜಲಧರ ಜಲಧರ(ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಧರತಿ-ಭೂ  
(ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಜಲಸ್ಯ ಧರಃ।  
"ಜಲಧರಾವಲಿರಪ್ರತಿಪಾಲಿತಸ್ವಸಮಯಾ ಸಮಯಾಜ್ಜಗತಿಧರಮ್"  
ಮಾಘಂ ೬-೨೫। 2. ಮುಸ್ತಕ, ಕೊನ್ನಾರಿ. 3. ಸಮುದ್ರ.  
(ವಿಂ) 4. ನೀರನ್ನು ಹೊರುವವನು.

ಜಲಧರಮಾಲಾ ಜಲಧರಮಾಲಾ(ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೇಘಪಜ್ಜಿ,  
ಮೋಡಗಳ ಸಾಲು. ಜಲಧರಾಣಾಂ ಮಾಲಾ। 2. ಹನ್ನೆರಡ  
ನೆಯ ಭಂದಸ್ಥಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ, ಮಗಣ ಭಗಣ ಸಗಣ  
ಮತ್ತು ಮಗಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ  
ಲಕ್ಷಣಃ "ಅಂಧ್ಯಷ್ಟಾಭಿರ್ಜಲಧರಮಾಲಾ ಸ್ಥಿ ಸ್ಥಿ"  
ವೃಂ ೨೦। ಈ ವೃತ್ತದ ಗಣನಿನ್ಯಾಸಃ:

ಮ    ಭ    ಸ    ಮ  
೦೦೦   ೦೧೧   ೧೧೦   ೦೦೦

ಜಲಧಾರ ಜಲಧಾರ (ಪುಂ) 1. ಶಾಕದ್ವೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು  
ಪರ್ವತ. ಜಲಂ ಧಾರಯತಿ-ಧೃ (ಧಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಅಣ್"  
(೩-೨-೧)। (ವಿಂ) 2. ನೀರನ್ನು ಹೊರುವವನು.

ಜಲಧಾರಣ ಜಲಧಾರಣ (ನಂ) ನೀರನ್ನು ಹೊರುವುದು.

ಜಲಧಾರಾ ಜಲಧಾರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರಿನ ಧಾರೆ, ಎಡೆಬಿಡದ  
ನೀರಿನ ಪ್ರವಾಹ.

ಜಲಧಿ ಜಲಧಿ (ಪುಂ) 1. ಸಾಗರ, ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು.  
ಜಲಾನಿ ಧೀಯಂತೇಽನ್-ಡು+ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) ಅಧಿಂ  
"ಕಿಃ" (೩-೩-೯೩)। "ವ್ಯಕ್ತಂ ಬಲಿಯಾನ್ ಯದಿ ಹೇತು-  
ರಾಗಮಾದಪೂರಯತ್ ಸಾ ಜಲಧಿ ನ ಜಾಹ್ನವೀ" ಮಾಘಂ ೧೨-೬೯।  
2. ನಾಲ್ಕು ಸಂಖ್ಯೆ. 3. ಕೊಳ, ಕೆರೆ ಮುಂತಾದುವು.



**ಜಲಧಿಕನ್ಯಾ ಜಲಧಿಕನ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸಮುದ್ರನ ಮಗಳು, ಲಕ್ಷ್ಮಿ. ಜಲಧಿ: ಕನ್ಯಾ |

**ಜಲಧಿಗಾ ಜಲಧಿಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸಮುದ್ರವನ್ನು ಸೇರುವ ನದಿ, ಹೊಳೆ. ಜಲಧಿ ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಙ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) | ಎಲ್ಲಾ ನದಿಗಳೂ ತಾವು ನೇರವಾಗಿ ಅಥವಾ ಇತರ ದೊಡ್ಡ ನದಿಗಳೊಡನೆ ಸೇರಿ ಸಮುದ್ರವನ್ನು ಸೇರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ಜಲಧಿಜ ಜಲಧಿಜ (ಪುಂ)** 1. ಚಂದ್ರ. ಜಲಧೌ ಜಾಯತೇ-ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಙ:" (೩-೨-೯೭) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜಾ -ಜಾ. 2. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. (ವಿಂ) 3. ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

**ಜಲಧಿತನಯಾ ಜಲಧಿತನಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಲಕ್ಷ್ಮಿ, ಸಮುದ್ರ ರಾಜನ ಮಗಳು. ಜಲಧೇಸ್ತನಯಾ | "ದಿವ್ಯಂ ತೇಜೋ ಜಲಧಿತನಯಾಸ್ತೇಹನಿತಾನುಷಕ್ತಮ್" ಹಂಸಂ ೧-೩೯ | एवं ಜಲಧಿತನು(ನ್)ಜಾ, -ಪುತ್ರಿ, -ಸುತಾ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಜಲನಕುಲ ಜಲನಕುಲ (ಪುಂ)** ನೀರುಹಂದಿ, ಉದ್ರವೆಂಬ ಒಂದು ಜಲಚರ ಪ್ರಾಣಿ. ಜಲೇ ನಕುಲ ಇವ |

**ಜಲನಿಧಿ ಜಲನಿಧಿ (ಪುಂ)** 1. ಸಮುದ್ರ, ಸಾಗರ, ಕಡಲು. ಜಲಾನಿ ನಿಧಿಯಂತೇ - ನಿ + ಙು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಕಿ:" (೩-೩-೯೩) | "ಶ್ರೀಸನ್ನಿಧಾನರಮಣೀಯತರೋಽಪ್ಪ ಉಚ್ಚೇಋಚ್ಛೇ:ಶ್ರವಾ ಜಲನಿಧೇರಿವ ಜಾತಮಾತ್ರ:" ಮಾಘಂ ೪-೪೭ | 2. ನಾಲ್ಕು ಸಂಖ್ಯೆ. 3. ಕೊಳ, ಕೆರೆ ಮುಂತಾದುವು.

**ಜಲನಿರ್ಗಮ ಜಲನಿರ್ಗಮ (ಪುಂ)** 1. ಜಲಮಾರ್ಗ, ನೀರು ಹರಿಯುವ ಕಾಲುವೆ. 2. ಕೆರೆಯ ತೊಲು, ಕೆರೆಯಿಂದ ಜಮೀನುಗಳಿಗೆ ನೀರು ಹಾಯಿಸಲು ಮಾಡಿರುವ ದಾರಿ. ಜಲಾನಾಂ ನಿರ್ಗಮ: |

**ಜಲನೀಲಿ ಜಲನೀಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಶೈವಾಲ, ಪಾಚಿ. ಜಲಂ ನೀಲಯತಿ-ನೀಲ + ತತ್ಕರೋತಿಂ ಣಿಕ್ "ಅನ್" (೩-೨-೧) | "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೪) | "ಜಲನೀಲಿ ತು ಶೈವಾಲ:" ಅಮಂ | ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:" | -ನೀಲಿಕಾ -ನೀಲಿಕಾ.

**ಜಲಂಧರ ಜಲಂಧರ (ಪುಂ)** 1. ಒಬ್ಬ ಅಸುರ. [ಬೃಹ ಸ್ಪತಿಯೂ ಇಂದ್ರನೂ ಒಂದು ಸಲ ಪರಮೇಶ್ವರನ ದರ್ಶನ ಕ್ಕಾಗಿ ಹೊರಟರು. ಪರಮೇಶ್ವರನು ಇಂದ್ರನ ಗರ್ವ ಭಂಗಕ್ಕಾಗಿ ಅವಧೂತ ವೇಷವನ್ನು ತಾಳಿ ದಾರಿಗೆ ಅಡ್ಡಲಾಗಿ ನಿಂತನು. ಇಂದ್ರನು "ಪರಮೇಶ್ವರನು ಎಲ್ಲಿರುವನು" ಎಂದು ಕೇಳಿದನು. ಪರಿಶವನು ಉತ್ತರಕೊಡಲಿಲ್ಲ. ಇಂದ್ರನು ಅವಧೂತನನ್ನೂ ಕೊಲ್ಲಲು ವಜ್ರಾಯುಧವನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿದನು. ಎತ್ತಿದ ಕೈ ಹಾಗೆಯೇ

ನಿಂತಿತು. ಪರಮೇಶ್ವರನ ಫಾಲನೇತ್ರದಿಂದ ಇಂದ್ರನನ್ನು ಸುಡಲು ಅಗ್ನಿಯು ಹೊರಟಿತು. ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಪ್ರಾರ್ಥನೆ ಯಂತೆ ಈಶ್ವರನು ಆ ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಬಿಸಾಡಿದನು. ಅದು ಒಂದು ರಾಕ್ಷಸಶಿಶುವಾಗಿ ಜಲಂಧರನೆಂಬ ಹೆಸರನ್ನು ಪಡೆಯಿತು. ಇವನೇ ಜಲಂಧರಾಸುರ.

ನಾರದ ಮಹರ್ಷಿಯು ಒಮ್ಮೆ ಜಲಂಧರನಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದು ಪಾರ್ವತಿಯಂತಹ ಪತ್ನಿಯಿಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ನಿನ್ನ ಸೌಂದರ್ಯ ಮತ್ತು ಐಶ್ವರ್ಯಗಳಿಗೇನು ಪ್ರಯೋಜನವೆಂದು ಉಬ್ಬಿಸಿದರು. ಕೂಡಲೇ ಪಾರ್ವತಿಯನ್ನು ತಂದು ತನಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಬೇಕೆಂದು ಪರಮೇಶ್ವರನಿಗೆ ಹೇಳಿಕಳುಹಿಸಿದನು. ಇದರಿಂದ ಕೋಪಗೊಂಡ ಪರಿಶವನಿಂದ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಜಲಂಧರನು ಹತನಾದನು.]

**ಜಲಪಕ್ಷಿನ್ ಜಲಪಕ್ಷಿನ್ (ಪುಂ)** ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ ಹಕ್ಕಿ.

**ಜಲಪತಿ ಜಲಪತಿ (ಪುಂ)** 1. ವರುಣ, ನೀರಿನ ಒಡೆಯ. ಜಲಾನಾಂ ಪತಿ: | [ವರುಣನು ಕಾಶಿಯಲ್ಲಿ ಲಿಂಗಪ್ರತಿಷ್ಠೆ ಮಾಡಿ ಐದು ಸಾವಿರ ವರ್ಷಕಾಲ ಪರಮೇಶ್ವರನನ್ನು ಕುರಿತು ಘೋರವಾದ ತಪಸ್ಸು ಮಾಡಿದನು. ಇವನ ತಪಸ್ಸಿಗೆ ಮೆಚ್ಚಿದ ಪರಿಶವನು ಇವನ ಕೋರಿಕೆಯಂತೆ ಸಕಲ ನದಿಗಳು ಕೆರೆ ಕೊಳಗಳು ಬಾವಿಗಳು ಸಮುದ್ರದ ರತ್ನಗಳು ಜಲಜಂತುಗಳು ಮತ್ತು ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕು ಇವುಗಳಿಗೆಲ್ಲಾ ಅಧಿಪತಿಯಾಗಿರುವಂತೆ ವರವನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದನು. ಇದರಿಂದ ವರುಣನು ಜಲಪತಿಯಾದನು.]

"ಯದಿ ನಾಥ ಪ್ರಸನ್ನೋಸಿ ಭಕ್ತಾನಾಮನುಕ್ರಮನ | ಸರ್ವಸಾಮಾಧಿಪತ್ಯಂ ಮೇ ದೇಹ್ಯಪಾಂ ಯಾದಸಾಮಪಿ | ಇತಿ ಶ್ರುತ್ವಾ ಮಹೇಶಾನ: ಸರ್ವಚಿಂತಿತದ: ಪ್ರಭು: | ಅಮ್ಯವಿಷತ್ ತತಸ್ತಂ ಚ ವಾರುಣಂ ಪರಮೇ ಪದೇ | ರತ್ನಾನಾಮಧಿಜಾತಾನಾಮಂದಾನಾಂ ಸರಿತಾಮಪಿ | ಸರಸಾಂ ಪಲ್ವಲಾನಾಂ ಚ ವಾಪ್ಯಮ್ಬುಸೋತಸಾಮಪಿ | ಜಲಾಶಯಾನಾಂ ಸರ್ವೇಷಾಂ ಪ್ರತೀಚ್ಯಾಶ್ಚೈವ ವೈ ದಿಶ: | ಅಧೀಶ್ವರ: ಪಾಶಪಾಣಿರ್ಭವ ಸರ್ವಾಮರಪ್ರಿಯ:" ಕಾಶೀಖಂ | 2. ಸಮುದ್ರ. 3. ಪೂರ್ವ ಪಾಠಾ ನಕ್ಷತ್ರ. ಜಲಂ ಪತಿರಸ್ಯ | ಈ ನಕ್ಷತ್ರವು ಜಲಾಧಿ ದೇವತಾಕವಾದುದು.

**ಜಲಪಥ ಜಲಪಥ (ಪುಂ)** 1. ಜಲಮಾರ್ಗ. ಜಲಮೇವ ಪನ್ಥಾ: "ಅ:" (೪-೪-೭೪) | "ಇಂದ್ರಾಕ್ಷಿಣಿನಿಯಮಿತಗದೋದ್ರೇಕವೃತ್ತಿ-ಯಮೋಽಭೂತ್ ಯಾದೋನಾಥ: ಶಿವಜಲಪಥ: ಕರ್ಮಣಿ ನೌಚರಾಣಾಮ್" ರಘುಂ ೧೭-೮೧ | 2. ಕಾಲುವೆ. 3. ನಲ್ಲಿ, ಕೊಳಾಯಿ. 4. ಚರಂಡಿ ಮುಂತಾದುವು. ಜಲಸ್ಯ ಪನ್ಥಾ: |

**ಜಲಪದ್ಧತಿ ಜಲಪದ್ಧತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** "ಜಲಪಥ" ನೋಡಿ.



ಜಲಪಾತ್ರ ಜಲಪಾತ್ರ (ನಂ) ನೀರಿನ ಪಾತ್ರೆ.

ಜಲಪಾನ ಜಲಪಾನ (ವಂ) ನೀರು ಕುಡಿಯುವುದು.

ಜಲಪಾಯಿನ್ ಜಲಪಾಯಿನ್ (ವಿಂ) ನೀರನ್ನು ಕುಡಿಯುವ.

ಜಲಂ ಪಿಬತಿ—ಪಾ (ಪಾನೇ) “ಣಿತಿ:” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಜಲಪಾಲಿಕಾ ಜಲಪಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು.

“ಆಕಾಲಿಕೀ ಶತಾವರ್ತಾ ಜಲದಾ ಜಲಪಾಲಿಕಾ” ವೈಜಂ ।

ಜಲಪಿತ್ತ ಜಲಪಿತ್ತ (ನಂ) ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಜಲಸ್ಯ ಪಿತ್ತಮಿವ ।

ಜಲಪಿಪ್ಪಲಿ ಜಲಪಿಪ್ಪಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರುಹಿಪ್ಪಲಿ.

ಜಲಜಾತಾ ಪಿಪ್ಪಲಿ ।

ಜಲಪಿಪ್ಪಿಕ ಜಲಪಿಪ್ಪಿಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ದೊಡ್ಡ ಮೀನು.

ಜಲಪೂರ ಜಲಪೂರ (ಪುಂ) ನೀರಿನ ಪ್ರವಾಹ. ಜಲಸ್ಯ ಪೂರ: ।

“ಬೃಂದಾವನವಿಪಿನೇ ಪರಿಸರಪರಿಗತಯಮುನಾಜಲಪೂರೇ ವಿಹರತಿ” ಗೀತಗೋಂ ।

ಜಲಪೃಥಜಾ ಜಲಪೃಷ್ಠಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶೈವಾಲ, ಪಾಚಿ.

ಜಲಸ್ಯ ಪೃಥೇ ಜಾಯತೇ ಜನೀ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) “ಙ:” (೩-೨-೯೮) ।

ಜಲಪ್ರಪಾ ಜಲಪ್ರಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರವಟ್ಟಿಗೆ. ಯಾತ್ರಿಕರಿಗೆ ಕುಡಿಯುವ ನೀರನ್ನು ಕೊಡುವ ಮನೆ. ಜಲದಾನಾರ್ಥ ಪ್ರಪಾ ।

ಜಲಪ್ರಪಾತ ಜಲಪ್ರಪಾತ (ಪುಂ) ಜಲಪಾತ, ನೀರು ಧುಮುಕುವುದು. ಜಲಸ್ಯ ಪ್ರಪಾತ: ।

ಜಲಪ್ರಲಯ ಜಲಪ್ರಲಯ (ಪುಂ) ನೀರಿನಿಂದಾಗುವ ನಾಶ.

ಜಲಪ್ರಾಂತ ಜಲಪ್ರಾಂತ (ಪುಂ) ನೀರಿನ ಸಮೀಪ ಪ್ರದೇಶ.

ಜಲಪ್ರಾಯ ಜಲಪ್ರಾಯ (ನಂ) ನೀರಿನಿಂದ ತುಂಬಿದ ಪ್ರದೇಶ. ಜಲಂ ಪ್ರಾಯಂ ಯತ್ರ ।

ಜಲಪ್ರಿಯ ಜಲಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) 1. ಮೀನು, ಮತ್ಸ್ಯ. 2. ಚಾತಕ ಪಕ್ಷಿ. 3. ವರಾಹ, ಹಂದಿ. “ವರಾಹ: ಸುಕರೋ ಘೋಣಿ ವಕ್ರದಂಷ್ಟೋ ಜಲಪ್ರಿಯ:” ವೈಜಂ । (ವಿಂ) 4. ಜಲವು ಪ್ರಿಯ ವಾಗಿ ಉಳ್ಳ. ಜಲಂ ಪ್ರಿಯಂ ಯಸ್ಯ ।

ಜಲಬಂಧ ಜಲಬಂಧ (ಪುಂ) ಅಣೆಕಟ್ಟು, ನೀರನ್ನು ತಡೆಯುವ ಸೇತುವೆ. ಜಲಂ ಬಂಧನೇನ — ಬಂಧ (ಬಂಧನೇ) “ಘ” (೩-೩-೧೨೧) । —ಬಂಧಕ: —ಬಂಧಕಃ. ಜಲಂ ಬಂಧನಾತಿ—ಬಂಧ “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) ।

ಜಲಬಂಧು ಜಲಬಂಧು (ಪುಂ) ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. ಜಲಂ ಬಂಧುರಸ್ಯ ।

ಜಲವಿಡಾಲ ಜಲವಿಡಾಲ (ಪುಂ) ನೀರು ಬೆಕ್ಕು.

ಜಲವಿಂದು ಜಲವಿಂದು (ಪುಂ) ನೀರಿನ ತೊಟ್ಟು.

ಜಲವಿಂಬ ಜಲವಿಂಬ (ಪುಂ) ಬುದ್ಬುದ, ನೀರಿನಗುಳ್ಳೆ, ನೊರೆ. ಜಲಸ್ಯ ವಿಂಬಮ್ । “ಜಮ್ಬವಜ್ಜಲವಿಂಬವಜ್ಜಲ-ಜವಜ್ಜಮ್ಬಾಲವಜ್ಜಾಲವತ್” ತದ್ಧಂ ।

ಜಲವಿಲ್ವ ಜಲವಿಲ್ವ (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಕಟ, ಏಡಿ, ನಳ್ಳಿ. 2. ಕೊರ್ಮ, ಆಮೆ. 3. ನಾಲ್ಕು ಮೂಲೆಗಳುಳ್ಳ ಚೌಕ ವಾದ ಕೊಳ.

ಜಲಬುದ್ಬದ ಜಲಬುದ್ಬದ (ನಂ) ನೀರಿನ ನೊರೆ, ನೀರಿನ ಮೇಲಿನ ಗುಳ್ಳೆ.

ಜಲಬ್ರಾಹ್ಮಿ ಜಲಬ್ರಾಹ್ಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ನೀರು) ಹೊನಗೊನ್ನೆ ಸೊಪ್ಪು. ಜಲೇ ಬ್ರಾಹ್ಮಿವ । “ಮತ್ಸ್ಯಾಕ್ಷಿ ಹಿಲಮೋಚಿಕಾ । ಜಲಬ್ರಾಹ್ಮಿ ಚ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಜಲಭೂ ಜಲಭೂ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಜಲಂ ಭವತ್ಯಸ್ಮಾತ್—ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “ವಿವ್” (೩-೨-೧೭೯) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಜಲಾಶಯ, ಸರಸ್ಸು, ಕೊಳ. ಜಲಸ್ಯ ಭೂ: । (ವಿಂ) 3. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ನೀರಿನಲ್ಲಿರುವ.

ಜಲಭೃತ್ ಜಲಭೃತ್ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಜಲಂ ವಿಭರ್ತಿ—ಙ್ ಭೃತ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ: “ವಿವ್” (೩-೨-೭೬) । 2. ಕರ್ಪೂರ. (ವಿಂ) 3. ನೀರನ್ನು ತುಂಬಿಡುವ ಹೂಜಿ, ಬಿದಿಗೆ ಮೊದಲಾದುವು.

ಜಲಮಕ್ಷಿಕಾ ಜಲಮಕ್ಷಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಹುಳ. ಜಲಜಾತಾ ಮಕ್ಷಿಕಾ ।

ಜಲಮದ್ಗು ಜಲಮದ್ಗು (ಪುಂ) ಜಾಲಗಾರಹಕ್ಕಿ, ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಲಚರ ಪಕ್ಷಿ. ಜಲೇ ಮದ್ಗುರಿವ ।

ಜಲಮಧುಕ ಜಲಮಧುಕ (ಪುಂ) ಹಿಪ್ಪೆಮರ, ನೀರಿನ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಒಂದು ವೃಕ್ಷ.

ಜಲಮಯ ಜಲಮಯ (ವಿಂ) ನೀರಿನಿಂದ ತುಂಬಿದ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ನೀರಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಜಲರೂಪವಾದ. ಜಲ “ಮಯ” (೪-೪-೨೧) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀ” (೪-೧-೧೫) । —ಮಯಿ —ಮಯಿ. “ಸಾ ವಾ ಶಮ್ಭೋಸ್ತದೀಯಾ ವಾ ಮೃತಿ-ಜಲಮಯಿ ಮಮ” ಕುಮಾಂ ೨-೬೦ ।

ಜಲಮಾರ್ಗ ಜಲಮಾರ್ಗ (ಪುಂ) 1. ಕೊಳಾಯಿ, ನಲ್ಲಿ. ಜಲಸ್ಯ ಮಾರ್ಗ: । 2. ಕಾಲುವೆ. 3. ಚರಂಡಿ. 4. ನೀರಿನ ದಾರಿ, ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಹೋಗುವ ದಾರಿ. ಜಲಮೇವ ಮಾರ್ಗ: ।

ಜಲಮಾರ್ಜಾರ್ ಜಲಮಾರ್ಜಾರ್ (ಪುಂ) ನೀರುಬೆಕ್ಕು.

ಜಲಮುಚ್ ಜಲಮುಚ್ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಜಲಾನಿ ಮುಚ್ಛತಿ—ಮುಚ್ಛ (ಮೋಕ್ಷಣೇ) “ವಿವ್” (೩-೨-೭೬) ।



“ಶಕ್ತಾಸ್ಪೃಷ್ಠಾ ಇವ ಜಲಮುಚಸ್ತ್ವಾದೃಶಾ ಜಾಲಮಾರ್ಗಿ:” ಮೇಘಂ ೨-೬। 2. ಕರ್ಪೂರ. (ವಿಂ) 3. ನೀರನ್ನು ಬಿಡುವ, ನೀರು ಸುರಿಸುವ. “ತೀಕ್ಷಣಂ ತಪತ್ಯದಿತೀಜ: ಶಿಶಿರೇಽಪಿ ಕಾಲೇ ನಾತ್ಯಮ್ಬುದಾ ಜಲಮುಚೋಚಲಸನ್ನಿಕಾಶಾ:” ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೯-೨।

**ಜಲಮೃತಿ ಜಲಮೂರ್ತಿ** (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಈಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. ಜಲಂ ಮೃತೀರಸ್ಯ।

**ಜಲಮೃತಿಕಾ ಜಲಮೂರ್ತಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಲಿಕ್ಕಲ್ಲು, ಮಂಜಿನ ಗಡ್ಡೆ, ಉಷ್ಣವಾಯುಗಳ ಸಂಯೋಗದಿಂದ ಘನೀಭೂತ ವಾದ (ಗಟ್ಟಿಯಾದ) ನೀರು.

**ಜಲಮೋದ ಜಲಮೋದ** (ಪುಂ) ಉಶೀರ, ಲಾಮಂಜದ ಬೇರು. ಜಲಯೋಗೇನ ಮೋದಯತಿ - ಮುದ (ಹಠ) + ಣಿಚ್ “ಅಞ್” (೩-೨-೧)।

**ಜಲಯನ್ತ್ರ ಜಲಯಂತ್ರ** (ನಂ) 1. ನೀರು ಚಿಮ್ಮುವ ಯಂತ್ರ, ಧಾರಾಯಂತ್ರ, ನೀರು ತುಂತುರು ತುಂತುರಾಗಿ ಬೀಳುವಂತೆ ಮಾಡಿರುವ ಯಂತ್ರ. 2. ಏತ, ಬಾವಿಯಿಂದ ನೀರನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವ ಯಂತ್ರ. ಜಲೋತ್ಥೋಪಣಾಯಂತ್ರಮ್। 3. ಕಾಲವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಘಟೀಯಂತ್ರ.

**ಜಲಯನ್ತ್ರಗೃಹ ಜಲಯಂತ್ರಗೃಹ** (ನಂ) ಸುತ್ತಲೂ ನೀರಿನಿಂದ ಆವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮನೆ, ಬೇಸಿಗೆಗಾಗಿ ನೀರಿನ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮನೆ.

**ಜಲಯಾತ್ರಾ ಜಲಯಾತ್ರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶುಭಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ನೀರನ್ನು ತರಲು ಹೊರಡುವುದು. ಯಾವ ಶುಭಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿಯೂ ಜಲಯಾತ್ರ ನಡೆಯದಿದ್ದರೆ ಅದು ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದಾಗುವುದು. ತಟಾಗಾದಿಪ್ರತಿಷ್ಠೆ, ದೇವಾಲಯ ಪ್ರತಿಷ್ಠೆ, ಹೋಮ, ವ್ರತೋತ್ಸರ್ಜನ ಯಜ್ಞಯಾಗಗಳು ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಜಲಯಾತ್ರೆಯನ್ನು ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕು. “ಶಾಂತಿಕಂ ಪೌಷ್ಟಿಕಂ ವಾಪಿ ಜಲಯಾತ್ರಾಂ ವಿನಾ ಬುಧ:। ಕುಸ್ತೇ ಯದಿ ವಾ ಮೋಹಾತ್ಕರ್ಮ ತಸ್ಯ ಚ ನಿರ್ಫಲಮ್”। “ಜಲಯಾತ್ರಾಂ ಪುರಾ ಕೃತ್ವಾ ಶ್ರೇಷ್ಠಂ ಕರ್ಮ ಸಮಾಚರೇತ್”। 2. ಜಲದ ಮೇಲೆ ಮಾಡುವ ಪ್ರಯಾಣ.

**ಜಲಯಾನ ಜಲಯಾನ** (ನಂ) ಹಡಗು, ದೋಣಿ. ಜಲೇ ಯಾಂತಿ ಗಚ್ಛಂತಿ ಅನೇನ-ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)।

**ಜಲರತ್ನ ಜಲರಂಜ** (ಪುಂ) ಬಕಪಕ್ಷಿ.

**ಜಲರತ್ನ ಜಲರಂಕು** (ಪುಂ) ಹದ್ದು.

**ಜಲರಂಜ ಜಲರಂಜ** (ಪುಂ) ಬಕಪಕ್ಷಿ.

**ಜಲರಸ ಜಲರಸ** (ಪುಂ) ಲವಣ, ಉಪ್ಪು. ಜಲಪ್ರಧಾನೋ ರಸೋಽಸ್ಯ।

**ಜಲರಾಕ್ಷಸಿ ಜಲರಾಕ್ಷಸೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರಿನಲ್ಲಿರುವ ಸಿಂಹಿಕೆಯೆಂಬ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸಿ. [ಲವಣಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿದ್ದ ಈ ರಾಕ್ಷಸಿಯು ಮೇಲೆ ಹೋಗುವವರ ನೆರಳನ್ನು ಹಿಡಿದಳೆಂದು ಪೀಡಿಸುತ್ತಿದ್ದಳು. ಸೀತಾನ್ವೇಷಣಕ್ಕಾಗಿ ಹೊರಟ ಅಂಜನೇಯನು ಸಮುದ್ರವನ್ನು ದಾಟುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಅವನ ಭಾಯೆಯನ್ನು ಆಕರ್ಷಿಸಿ ಮುಂದೆ ಹೋಗದಂತೆ ತಡೆದು ಅವನನ್ನು ನುಂಗಲು ಹೋದಾಗ ಬೃಹದಾಕಾರವನ್ನು ತಾಳುತ್ತಿದ್ದ ಅವನ ಆಕಾರಕ್ಕಿಂತಲೂ ಅಗಲವಾಗಿ ಇವಳೂ ಬಾಯನ್ನು ತೆರೆಯುತ್ತಿರಲು ಕೂಡಲೇ ಅಂಜನೇಯನು ಸೂಕ್ಷ್ಮರೂಪದಿಂದ ರಾಕ್ಷಸಿಯ ಬಾಯಲ್ಲಿ ನುಗ್ಗಿ ಅವಳ ಮರ್ಮಗಳನ್ನು ನಖಗಳಿಂದ ಕತ್ತರಿಸಿ ಸಂಹರಿಸಿದನು.] ರಾಮಾಂ।

**ಜಲರಾಶಿ ಜಲರಾಶಿ** (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಜಲಾನಾಂ ರಾಶಿರತ್ರ। “ಸಮಕ್ರಮ: ಸಮವಿಷಮೇಷ್ವಯ ಕ್ಷಣಾತ್ ಕ್ಷಮಾತಲಂ ಬಲಜಲರಾಶಿರಾನಶೇ” ಮಾಘಂ ೧೭-೪೬। 2. ನೀರಿನ ರಾಶಿ. “ಛಿರಪಲ್ಲವಪುಷ್ಪಲತಾಗೃಹೈರಪಲಸಂಜಲಜೈರ್ಜಲರಾಶಿಭಿ:” ಕಿರಾಂ ೪-೧೯।

**ಜಲರೂಪ ಜಲರೂಪ** (ಪುಂ) 1. ನೀರಿನ ಸುಳಿ. 2. ಸಣ್ಣ ತುಂತುರು. 3. ಸರ್ಪ. ಹಾವು. “ಜಲರೂಪೋ ಜಲಾವತಂ ಪಯೋರಣಿ ಭುಜಂಗಮೇ” ಮೇದಿಂ।

**ಜಲರೂಪ ಜಲರೂಪ** (ನಂ) 1. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ, ತಾವರೆ ಹೂವು. ಜಲೇ ರೋಹತಿ-ರೂಪ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾದುರ್ಮವಿ ಚ) “ವಿವಪ್” (೩-೨-೭೬)। (ವಿಂ) 2. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. -ರೂಪ -ರೂಪಮ್. ರೂಪ “ಕ:” (೩-೧-೧೩೪)।

**ಜಲರೂಪ ಜಲರೂಪ** (ಪುಂ) 1. ಮಕರ, ಮೊಸಳೆ. ಜಲಸ್ಯ ರೂಪಮಿವ ರೂಪಂ ಯಸ್ಯ। “ಜಲರೂಪಸ್ತು ಮಕರೋ ಮರೋಲಿರಸಿ-ದಂಟಕ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 2. ನೀರಿನ ರೂಪ.

**ಜಲಲತಾ ಜಲಲತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತರಂಗ, ಅಲೆ, ನೀರಿನ ಬಳ್ಳಿ. ಜಲಸ್ಯ ಲತೇವ। “ವೀಚಿ ಜಲಲತಾ ಶ್ರುಣ್ಧಿ:” ಹಾರಾಂ।

**ಜಲಲೇಖಾ ಜಲಲೇಖಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರಿನ ಮೇಲೆ ಎಳೆದ ಗೆರೆ.

**ಜಲವತ್ ಜಲವತ್** (ವಿಂ) ನೀರಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ, ನೀರಿನಿಂದ ತುಂಬಿದ.

**ಜಲವರಣ ಜಲವರಂಟಿ** (ಪುಂ) ನೀರಿನಿಂದ ತುಂಬಿದ ಗುಳ್ಳೆ, ಮೊಡವೆ. ಜಲಪ್ರಧಾನೋ ವರಣ:।

**ಜಲವತ್ಕಲ ಜಲವಲ್ಕಲ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕಡಲು ಹಕ್ಕಿ, ನೀರು ಕಾಗೆ. ಜಲಸ್ಯ ವತ್ಕಲ ಇವ।

**ಜಲವಾನೀರ ಜಲವಾನೀರ** (ಪುಂ) ಅಂಬುವೇತಸ, ನೀರು ಹಬ್ಬಿಗಿಡ. ಜಲಜಾತೋ ವಾನೀರ:।



ಜಲವಾಯಸ ಜಲವಾಯಸ (ಪುಂ) ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿ  
ಮೀನು ಹಿಡಿದು ತಿನ್ನುವ ಹಕ್ಕಿ, ಜಾಲಗಾರ ಹಕ್ಕಿ. ಜಲ  
ವಾಯಸ ಇವ ।

ಜಲವಾಸ ಜಲವಾಸ (ಪುಂ) 1. ಉಶೀರ, ಲಾಮಂಚ. ಜಲ  
ವಾಸ್ಯತೇ ಸುರಭೀಕ್ರಿಯತೇಜೇನ - ವಾಸ (ಉಪಸೇವಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್  
“ಘ:” (3-3-114) । 2. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡು  
ವುದು.

ಜಲವಾಸಿನ್ ಜಲವಾಸಿನ್ (ವಿಂ) ನೀರಿನಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವ.

ಜಲವಾಹ ಜಲವಾಹ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಜಲ  
ವಹತಿ - ವಹ (ಪ್ರಾಪಣಿ) “ಅಞ್” (3-2-1) । “ಜಲ-  
ವಾಹಾವಲಯ: ಶಿರೋರಹ್ಮಯ:” ಮಾಘಂ 20-66 । 2. ನೀರನ್ನು  
ಹೊರುವ.

ಜಲವಾಹಕ ಜಲವಾಹಕ (ವಿಂ) ನೀರು ಹೊರುವ.

ಜಲವೃಶ್ಚಿಕ ಜಲವೃಶ್ಚಿಕ (ಪುಂ) ಮತ್ಸ್ಯ, ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ  
ವಾಸಿಸುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು.

ಜಲವೇತಸ ಜಲವೇತಸ (ಪುಂ) ಅಂಬುವೇತಸ, ನೀರುಹಬ್ಬೆ  
ಗಿಡ.

ಜಲವ್ಯಥ ಜಲವ್ಯಥ (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು.  
“ಕಣ್ಣುತೋ ಜಲವ್ಯಥ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಜಲವ್ಯಾಲ ಜಲವ್ಯಾಲ (ಪುಂ) 1. ನೀರುಹಾವು. 2. ಸಮುದ್ರ  
ದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಕ್ರೂರ ಪ್ರಾಣಿ. ಜಲಸ್ಯೋ ವ್ಯಾಲ: ।

ಜಲ(ಲೇ)ಶಯ ಜಲ(ಲೇ)ಶಯ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಜಲ  
ಶೇತೇ - ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) “ಅಚ್” (3-2-14) । ಸಪ್ತಮ್ಯಾ  
ವಾ “ಅರುಕ್” (6-3-14) ।

ಜಲಶಯನ ಜಲಶಯನ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಜಲಂ ಶಯನಮಸ್ಯ ।

ಜಲಶಾಯಿನ್ ಜಲಶಾಯಿನ್ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಜಲೇ ಶೇತೇ-  
ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) “ಞಿ:” (3-1-134) ।

ಜಲಶುಕ್ತಿ ಜಲಶುಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಪ್ಪೆಚಿಪ್ಪು. ಜಲಸ್ಯ  
ಶುಕ್ತಿರಿವ ।

ಜಲಶೂಕ ಜಲಶೂಕ (ನಂ) ಶೈವಾಲ, ಪಾಚಿ. ಜಲಸ್ಯ  
ಶೂಕಮಗ್ರಮಿವ ।

ಜಲಶೂಕರ ಜಲಶೂಕರ (ಪುಂ) ಮೊದಲೆ. ಜಲಸ್ಯ ಶೂಕರ  
ಇವ ।

ಜಲಸಮುದ್ರ ಜಲಸಮುದ್ರ (ಪುಂ) ಸಪ್ತ ಸಮುದ್ರಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು. ಜಲಮಯ: ಸಮುದ್ರ: । “ಜಮ್ಬೂದ್ವೀಪ” ನೋಡಿ.

ಜಲಸರ್ಪಿಣಿ ಜಲಸರ್ಪಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿಗಣೆ. ಜಲೇ ಸರ್ಪತಿ  
-ಸೃಲ್ (ಗತೌ) “ಞಿ:” (3-2-62) ।

ಜಲಸೂಚಿ ಜಲಸೂಚಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜಿಗಣೆ. 2. ನೀರು  
ಜಿಕ್ಕು. 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. 4. ಕಾಗೆ.  
5. ಹದ್ದು. 6. ಕಡಲ ಹಂದಿ. “ಜಲಸೂಚಿ: ಶಿಶುಮಾರೆ  
ತ್ರೋಡಿಮತ್ಸ್ಯೇ ಜಲೋಕಸಿ । ಕಣ್ಣುಶ್ಚಾಪ್ಯೋಷಾಪಿ” ಹೇಮಂ ।

ಜಲಸೇಕ ಜಲಸೇಕ (ಪುಂ) ನೀರು ಚೆಮ್ಮುಕಿಸುವುದು.

ಜಲಸ್ತಮ್ಭ ಜಲಸ್ತಂಭ (ಪುಂ) ನೀರನ್ನು ತಡೆಯುವುದು.  
ಸ್ತಂಭು (ರೋಧನೇ) ಭಾವೇ “ಘ” (3-3-14) ।

ಜಲಸ್ತಮ್ಭನ ಜಲಸ್ತಂಭನ (ನಂ) 1. ನೀರನ್ನು ತಡೆಯು  
ವುದು. ಜಲಸ್ಯ ಸ್ತಮ್ಭನಮ್ - ಸ್ತಂಭು (ರೋಧನೇ) ಭಾವೇ  
“ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114) । (ವಿಂ) 2. ನೀರನ್ನು ತಡೆ  
ಯುವ ಮಂತ್ರ ಮೊದಲಾದುದು. ಜಲಂ ಸ್ತಮ್ಯತೇಜೇನ-  
ಸ್ತಂಭು ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-116) ।

ಜಲಸ್ಯ ಜಲಸ್ಯ (ವಿಂ) ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಇರುವ. ಜಲೇ ತಿಷ್ಠತಿ  
ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) “ಕ:” (3-2-8) ।

ಜಲಸ್ಥಾನ ಜಲಸ್ಥಾನ (ನಂ) ಸರೋವರ, ಕೊಳ,  
ಜಲಾಶಯ.

ಜಲಹ ಜಲಹ (ನಂ) ನೀರು ಚೆಮ್ಮುವ ಯಂತ್ರಗೃಹ,  
ನೀರು ತುಂತುರು ತುಂತುರಾಗಿ ಬೀಳುವ ಸ್ನಾನಗೃಹ.

ಜಲಹಸ್ತಿನ್ ಜಲಹಸ್ತಿನ್ (ಪುಂ) ನೀರು ಅನೆ.

ಜಲಹರಣ ಜಲಹರಣ (ನಂ) ನೀರನ್ನು ಒಯ್ಯುವುದು.

ಜಲಹಾರಿನ್ ಜಲಹಾರಿನ್ (ವಿಂ) ನೀರನ್ನು ಹೊರುವವನು.  
ಜಲಂ ಹರತಿ - ಹ್ರ (ಹರಣಿ) “ಞಿ:” (3-1-134) ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಜಿಪ್” (4-1-4) । -ಹಾರಿಣಿ-ಹಾರಿಣೀ.

ಜಲಹಾಸ ಜಲಹಾಸ (ಪುಂ) 1. ಫೇನ, ನೊರೆ. 2. ಸಮುದ್ರದ  
ನೊರೆ. ಜಲಸ್ಯ ಹಾಸ ಇವ । “ಸಮುದ್ರಕಫಹಿಂಜೀರಜಲಹಾಸಸ್ತು  
ಫೇನಕೇ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಜಲಹೋಮ ಜಲಹೋಮ (ಪುಂ) ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಹಾಕಲ್ಪಡುವ  
ವೈಶ್ವದೇವಾದಿ ಹುತಶೇಷ. ಜಲೇ ಕ್ಷಿಪ್ತ: ಹೋಮ: ।

ಜಲಹ್ಲವ ಜಲಹ್ಲವ (ಪುಂ) ನೀರಿನ ಮಡು, ನೀರು ತುಂಬಿ  
ರುವ ಹಳ್ಳ.

ಜಲಾಕರ ಜಲಾಕರ (ಪುಂ) ನೀರಿಗೆ ಆಧಾರವಾದ ಚಿಲುಮೆ.

ಜಲಾಕಾ ಜಲಾಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿಗಣೆ. ಜಲೇ ಆಕಾಯತಿ -  
ಆ+ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) “ಕ:” (3-1-136) ।

ಜಲಾಕಾಶ ಜಲಾಕಾಶ (ಪುಂ) ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿಸಿರುವ  
ಆಕಾಶ. ಜಲೇ ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿತ: ಆಕಾಶ: ।

ಜಲಾಕ್ಷಿ ಜಲಾಕ್ಷೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರು ಹಿಪ್ಪಲಿ. ಜಲಮಧನೋತಿ  
ವ್ಯಾಪ್ನೋತಿ - ಅಕ್ಷು (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) “ಅಞ್” (3-2-1) ।



ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಶಯ (ಪುಂ) ನೀರುಬಿಟ್ಟು. "ಉದ್ವಸ್ತು ಜಲ-  
ಮಾರ್ಜರಜಲಾಶಯನುಕುಲವಾ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಜಲಾಗಮ ಜಲಾಗಮ (ಪುಂ) ವೃಷ್ಟಿ, ಮಳೆ. "ತಪತಿ  
ಪ್ರಾವೃಷಿ ನಿತರಾಮ್ಯರ್ಣಜಲಾಗಮೋ ದಿವಸ:" ರತ್ನಾಂ ೩-೧೦ ।

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಂಜಲ (ನಂ) 1. ಶೈವಾಲ, ಪಾಚಿ.  
2. ತಾನಾಗಿ ನೀರು ಹೊರಟು ಹರಿಯುವುದು. "ಜಲಾಶಯಂ  
ಸ್ವತೋ ವಾರಿನಿಗಮೇ ಶಿವಲೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ ।

ಜಲಾಂಜಲಿ ಜಲಾಂಜಲಿ (ಪುಂ) 1. ನೀರಿನಿಂದ ತುಂಬಿದ  
ಬೊಗಸೆ. ಜಲಪೂರ್ಣಾಂಜಲಿ: । 2. ಹಿಡ್ಡುಗಳಿಗೆ ಕೊಡುವ  
ತರ್ಪಣದ ನೀರು. "ಕುಪುತ್ರಮಾಸಾಘ ಕುತೋ ಜಲಾಂಜಲಿ:" ।

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಶಯ (ಪುಂ) 1. ರಣಹದ್ದು. ಜಲೇ ಅದತಿ-  
ಅದ (ಗತೌ) "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ  
"ಜಿಪ್" (೪-೧-೬೩) । (ನಂ) 2. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸು  
ವುದು. ಜಲೇ ಅದನಮ್ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಅದನಿ -ಅಭಿನೀ.  
3. ಜಿಗಣೆ. "ಜಲಾಶಯೋ ಲೋಹಪುಷ್ಪೇ ಜಲೈಕಾಃ ಜಲಾಶಯಿ"   
ಮೇದಿಂ ।

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಶಯ (ವಿಂ) ನೀರಿನಿಂದ ತುಂಬಿರುವ, ಯಾವಾ  
ಗಲೂ ನೀರು ನಿಂತಿರುವ. ಜಲೇಶಯ: ।

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಂಜಲಿ (ಪುಂ) ನಕ್ಷರಾಜ, ಒಂದು ದೊಡ್ಡ  
ಜಲಾಶಯ ಪ್ರಾಣಿ, ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಮೊಸಳೆ. "ಗ್ರಾಹಿ  
ಜಲಕಿರಾಶಯ ನಕ್ಷರಾಜೋ ಜಲಾಶಯ:" ಹಾರಾಂ ।

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಂಜಲಿ (ಪುಂ) ಮೊಟ್ಟೆಯೊಡೆದು ಹೊರಕ್ಕೆ  
ಬಂದ ಮೀನು, ಶಿಗಡಿ. ಜಲೇ ಅಂಡ ಇವ ಕಾಯತಿ - ಕೆ  
(ಶಬ್ದೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩) । "ಪೊತಾಧಾನಂ ತು ಸ್ಯಾಜ್ಜ-  
ಲಾಂಜಲಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಶಯ (ವಿಂ) 1. ಜಲಮಯವಾದ, ನೀರಿ  
ನಿಂದ ತುಂಬಿರುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಆತ್ಮಿಕಾ -ಅಶ್ವಿಕಾ.  
2. ಜಿಗಣೆ.

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಶಯ (ಪುಂ) ಶರತ್ಕಾಲ. ಜಲಸ್ಯಾಶಯಯೋ  
ಯತ್ರ ।

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಶಯ (ಪುಂ) ತಟಾಕ, ಕೆರೆ. ಜಲಾನಾಮಾಶಯ: ।  
"ತಥಾತ್ಮಿಕೋ ಹ್ಯನೇಕಶ್ಚ ಜಲಾಶಯೇಷ್ವಿವಾಂಶುಮಾನ್" ಯಾಜ್ಞಂ  
೩-೧೪೪ ।

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಶಯ (ಪುಂ) 1. ನೀರಿಗೆ ಅಧಿ  
ಪ್ತನ ದೇವತೆ, ವರುಣ. ಜಲಸ್ಯ ಅಧಿದೇವತಮ್ । (ನಂ) 2.  
ಜಲದೇವತಾಕವಾದ ಪೂರ್ವಾಪಾರ್ಥ ನಕ್ಷತ್ರ. ಜಲಮಧಿ-  
ದೇವತಮಸ್ಯ ।

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಶಯ, -ಅಧಿಪತಿ: -ಅಧಿಪತಿ: (ಪುಂ)  
1, ವರುಣ. ಜಲಸ್ಯಾಧಿಪ: ಅಧಿಪತಿರ್ವಾ । "ನಾಶಕನೋ-  
ದಗ್ರತ: ಸ್ಥಾತುಂ ವಿಪ್ರಚಿತ್ತೇಜಲಾಧಿಪ:" ಹರಿವಂ ।

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಶಯ (ಪುಂ) ನೀರಿನ ಯಜಮಾನ,  
ವರುಣ.

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಂಜಲಿ (ಪುಂ) 1. ಸಪ್ತಸಮುದ್ರಗಳಲ್ಲಿ  
ಒಂದಾದ ಜಲಸಮುದ್ರ. ಜಲಮೇವಾಂತೋ ಯಸ್ಯ "ಕಪ್"  
(೪-೪-೧೪೪) । (1) ಲವಣ:, (2) ಇಕ್ಷು:, (3) ಸುರಾ,  
(4) ಸರ್ಪಿಸ್, (5) ದಧಿ, (6) ದುಧಿಮ್ ಮತ್ಸ್ಯ (7) ಜಲಮ್  
ಇವು ಸಪ್ತಸಮುದ್ರಗಳು. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಜಲಸಮುದ್ರವೇ  
ಕೊನೆಯದಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಲವಣೇಕ್ಷುಸುರಾ-  
ಸರ್ಪಿದಧಿದುಧಿಜಲಾಂತಕಾ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 2. ಸತ್ಯಭಾಮೆ  
ಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲೊಬ್ಬ.

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಂಜಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೂಪ, ಬಾವಿ.  
"ಪ್ರಹೀರ್ಯಜಲಾಂಜಲಿ" ಹಾರಾಂ ।

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಯುಕ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿಗಣೆ. ಜಲಮಾಯುರಸ್ಯಾ:  
"ಕಪ್" (೪-೪-೧೪೪) । ಪೃಷ್ಠಂ ।

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಂಜಲಿ (ಪುಂ) ಸಿಹಿನೀರಿನ ಸಮುದ್ರ.

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಶಯ (ವಿಂ) ನೀರನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ,  
ಬಾಯಾರಿಕೆಯುಳ್ಳ. ಜಲಮರ್ಶಯತೇ-ಅಥ (ಉಪಯಾಚ್ಛಾಯಾಮ್)  
"ಗಿಣಿ:" (೩-೧-೧೩೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೪) ।  
-ಅಧಿನಿ -ಅಭಿನೀ.

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಶಯ (ನಂ) 1. ಒದ್ದೆ ಬಟ್ಟೆ. ಜಲೇನ ಆದ್ರಮ್ ।  
(ವಿಂ) 2. ನೀರಿನಿಂದ ಒದ್ದೆಯಾದ. "ಪುಷ್ಪಾಸಾರೇ: ಸ್ನಪಯತು  
ಭವಾನ್ ವ್ಯೋಮಗಜ್ಜಾಲಾಶಯ:" ಮೇಘಂ ೧-೪೩ । (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಶ್ವಾ -ದ್ರಾಫ. 3. ನೀರು ಬಿಡುಗಡೆಗೊಂಡು ಬೀಸಣಿಗೆ.  
"ಸಚಂದನಾಮ್ಭ:ಕಣಕೋಮಲೇಸ್ತಥಾ ವಪುರ್ಜಲಾಶಯವನನಂ ನಿವೃದ್ಧಿ"  
ಮಾಘಂ ೧-೬೪ ।

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಶಯ (ನಂ) ತಾವರೆ ಗಡ್ಡೆ. ಜಲಸ್ಯಾಲೂರಿವ  
ಕಾಯತಿ - ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩) ।

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಶಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿಗಣೆ.

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಶಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿಗಣೆ.

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಶಯ (ಪುಂ) ನೀರಿನ ಸುಳಿ. ಜಲಸ್ಯ  
ಆವರ್ತ: ।

ಜಲಾಶಯ ಜಲಾಶಯ (ಪುಂ) 1. ಕೆರೆ, ತಟಾಕ. 2. ಕೊಳ.  
3. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಜಲಮ್ ಆಶೇತೇ-ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ)  
"ಘ:" (೩-೩-೧೧೮) । 4. ನೀರಿನ ಮಡು, ನೀರು



ತುಂಬಿರುವ ಹಳ್ಳ. "ಕುಶೇಶಯೇತ್ರ ಜಲಾಶಯೋಷಿತಾ ಮದಾ  
ರಮಂತೆ ಕಲಮಾ ವಿಕಸ್ವರೈಃ" ಮಾಘಂ ೪-೩೩. 5. ಬಾವಿ.  
(ನಂ) 6. ಉಶೀರ, ಲಾಮಂಚ. "ಜಲಾಶಯೋ ಜಲಾಧಾರೆ  
ಸ್ಯಾದುಶೀರೇ ತಪುಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ.

ಜಲಾಶ್ರಯ ಜಲಾಶ್ರಯ (ಪುಂ) 1. ಕೆರೆ. 2. ಕೊಳ.  
3. ನೀರನ್ನು ಶೇಖರಿಸಿ ಇಡುವ ಸ್ಥಳ. 4. ಜೊಂಡು  
ಹುಲ್ಲು. 5. ಬಾವಿ.

ಜಲಾಶ್ರ ಜಲಾಶ್ರ (ಪುಂ) ನೀರುಕುದುರೆ.

ಜಲಾಣಿಲಿ ಜಲಾಣಿಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸರೋವರ, ಪುಷ್ಕರಿಣಿ.  
ಜಲೇನಾಣಿಲಿ. "ಜಲಕುಪಿ ಜಲಾಣಿಲಿ ತಲಕಂ ಪುಷ್ಕರಿಣ್ಯಪಿ"  
ಹಾರಾಂ.

ಜಲಾಸುಕಾ ಜಲಾಸುಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿಗಣೆ.

ಜಲಾಹ್ವಯ ಜಲಾಹ್ವಯ (ಪುಂ) ಪದ್ಮ, ಕಮಲ.

ಜಲ(ಲ)ಕಾ ಜಲ(ಲಾ)ಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿಗಣೆ.

ಜಲೇಚರ ಜಲೇಚರ (ಪುಂ) "ಜಲಚರ" ನೋಡಿ.

ಜಲೇಜ ಜಲೇಜ (ನಂ) "ಜಲಜ" ನೋಡಿ. "ಝಾಸೀನಿ  
ಜಲೇಜಾನಿ ದುನ್ವನ್ಯದಯಿತಂ ಜನಮ್" ಭದ್ರಿಂ ೬-೭೪.

ಜಲೇಂದ್ರ ಜಲೇಂದ್ರ (ಪುಂ) 1. ನೀರಿನ ಅಧಿಪತಿ, ವರುಣ.  
ಜಲಾನಾಮಿन्द्र: 2. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು.

ಜಲೇಂದ್ರನ ಜಲೇಂದ್ರನ (ಪುಂ) ಬಡಬಾಗಿ. ಜಲಾನ್ಯೇವೇಂದ್ರನಾನಿ  
ಯಸ್ಯ.

ಜಲೇಭ ಜಲೇಭ (ಪುಂ) ನೀರು ಆನೆ. ಜಲಜಾತ: ಇಭ: 1.  
"ಪ್ರಸ್ಫುರತ್ತಿಮಿಜಲೇಭಜಿಹ್ವಗ: ಕ್ಷಿಪ್ತರತ್ತನಿಕರೋ ಮಹೋದಧಿ:"  
ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೨-೪. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩).  
ಜಲೇಭಿ ಜಲೇಭೀ.

ಜಲೇಲಾ ಜಲೇಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ಕಂದನನ್ನು ಸಲಹಿದ ಸಪ್ತ  
ಮಾತೃಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬಳು.

ಜಲೇಶ ಜಲೇಶ (ಪುಂ) "ಜಲೇಂದ್ರ" ನೋಡಿ. "ಕಾಲಂ ಗತಿ  
ತೇಽಖಿಲದೇವತಾತ್ಮನೋ ದಿಶಾಶ್ಚ ಕರ್ಣಿ ರಸನಂ ಜಲೇಶಮ್" ಭಾಗಂ  
೮-೭-೨೬.

ಜಲೇಶಯ ಜಲೇಶಯ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಜಲೇ ಶೇತೆ —  
ಶಿಡ್ (ಸ್ವಪ್ನ) ಅಧಿಂ "ಅಚ್" (೩-೨-೧೫). ಅಲುಕ್  
ಸಪ್ತಮ್ಯಾ: (೬-೩-೧೮). "ಸಪ್ತಸಾಮೋಪಗೀತಂ ತ್ವಾಂ ಸಪ್ತಾರ್ಣವ-  
ಜಲೇಶಯಮ್. ಸಪ್ತಾರ್ಣವಮುಖಮಾಚಲ್ಯು: ಸಪ್ತಲೋಕೈಕಸಂಶ್ರಯಮ್"  
ರಘುಂ ೧೦-೨೧. 2. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಟಾಪ್".  
ಯೋಪಧತ್ವಾತ್ ನ ಡೀಪ್. (ವಿಂ) 3. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮಲಗಿ  
ರುವ, ಜಲದಲ್ಲಿರುವ. "ಯಸ್ಯ ಬೃಹಿತಶಬ್ದೇನ ಕರ್ಮೋಽಪ್ಯಂತರ್ಜಲೇ-  
ಶಯ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೯-೨೯.

ಜಲೇಶ್ವರ ಜಲೇಶ್ವರ (ಪುಂ) 1. ವರುಣ. ಜಲಾನಾಮೀಶ್ವರ: 1.  
2. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. "ಯಮಕುಬೇರಜಲೇಶ್ವರವಜ್ರಿಣಾಂ  
ಸಮಧುರಂ ಮಧುರಶ್ಚಿತವಿಕರಮಮ್" ರಘುಂ ೯-೨೪.

ಜಲೋಚ್ಚ್ವಾಸ ಜಲೋಚ್ಚ್ವಾಸ (ಪುಂ) 1. ಕೋಡಿ, ಕೆರೆ  
ಯಿಂದ ಹೆಚ್ಚು ನೀರು ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೋಗಲು ಮಾಡಿರುವ  
ದಾರಿ. ಜಲಾನ್ಯುಚ್ಚ್ವಾಸನ್ತೇಭಿ: — ಉದ್ + ಅಸ (ಪ್ರಾಣೇ)  
"ಘಬ್" (೩-೩-೧೨೧). 2. ಹೆಚ್ಚು ನೀರು ಕೆರೆಯಿಂದ  
ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು. ಭಾವೇ "ಘಬ್" (೩-೩-೧೮).

ಜಲೋದರ ಜಲೋದರ (ನಂ) ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ನೀರು ತುಂಬು  
ವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ರೋಗ. ಜಲಪ್ರಧಾನಮುದರಂ  
ಯಸ್ಮಾತ್.

ಜಲೋದ್ರತಗತಿ ಜಲೋದ್ರತಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೃತ್ತರತ್ನಾ  
ಕರೋತ್ತವಾದ ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ಭಂದಸ್ಥನ ಒಂದು ವೃತ್ತ.  
ಜಲೇನೋದ್ರತಾ ಗತಿರಸ್ಯ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: "ರಸೇಜಸಜಸಾ  
ಜಲೋದ್ರತಗತಿ:" ವೃಂ ೨೦. ಜಗಣ ಸಗಣ ಜಗಣ  
ಸಗಣಗಳು ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಪಾದದಲ್ಲಿಯೂ ಇರಬೇಕು.  
ಈ ವೃತ್ತದ ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ಜ ಸ ಜ ಸ  
101 110 101 110

ಜಲೋಕಸ್ ಜಲೋಕಸ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಜಿಗಣೆ. ಜಲಮೋಕೋ  
ಯಾಸಾಮ್. "ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಭೂಮಿ ಜಲೋಕಸ:" ಅಮಂ.  
(ವಿಂ) 2. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ.

ಜಲೋಕಸ ಜಲೋಕಸ (ಪುಂ) ಜಿಗಣೆ. ಜಲಮೋಕ: ಸ್ಥಾನ-  
ಮಸ್ತಸ್ಯ "ಅಚ್" (೫-೨-೧೨೭).

ಜಲೋಕಾ ಜಲೋಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿಗಣೆ. ಜಲಮೋಕ: (ಅದಂತ:)  
ಯಸ್ಯಾ:

ಜಲ್ಪ-ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ (ಭಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಜಲ್ಪತಿ |  
ಜಜಲ್ಪ | ಜಲ್ಪಿತಾ | ಜಲ್ಪಿಷ್ಯತಿ | ಜಲ್ಪತು | ಇತ್ಯಾದಿ.  
1. ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಮಾತನಾಡು, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಉಚ್ಚಾರಣೆ  
ಯಿಲ್ಲದೆ ಮಾತನಾಡು. 2. ಹರಟು, ವಟಗುಟ್ಟು.  
3. ಮಾತಾಡು, ಸಂಭಾಷಣೆಮಾಡು. 4. ಹೇಳು.

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಅನು+ಜಲ್ಪ = ಅನುಜಲ್ಪತಿ | ಒಬ್ಬ ಮಾತಾಡಿದ  
ಮೇಲೆ ಮಾತಾಡು, ಅನುಸರಿಸಿ ಮಾತಾಡು. "ಕವಚಿ-  
ದ್ವಸನ್ತ್ಯಾಂ ಹಸತಿ ಜಲ್ಪನ್ತ್ಯಾಮನುಜಲ್ಪತಿ" ಭಾಗಂ ೪-೨೫-೫೮.

(2) ಅಭಿ+ಜಲ್ಪ = ಅಭಿಜಲ್ಪತಿ | ಪರಸ್ಪರ ಎಂದು  
ರಾಗಿ ಮಾತಾಡು. "ಅನ್ಯೋನ್ಯಮಭಿಜಲ್ಪತ:" ರಾಮಾಂ.



(3) ಪ್ರತಿ + ಜಲ್ಪ = ಪ್ರತಿಜಲ್ಪತಿ । ಎದುರು ಮಾತಾಡು, ಬದಲು ಹೇಳು, ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಹೇಳು. "ಭಾರತ ಪ್ರತಿಜಲ್ಪಂತಿ ಸದಾ ತುತ್ತಮಪೂರ್ವಾಃ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ।

ಜಲ್ಪ ಜಲ್ಪ (ಪುಂ) ಮಾತು, ಉಕ್ತಿ. ಜಲ್ಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ "ಘ್" (3-3-14) । "ಇತಿ ಪ್ರಿಯಾಂ ಬಲುವಿಚಿತ್ರಜಲ್ಪಃ ಸ ಸಾನ್ವಯಿತ್ವಾಚ್ಯುತಮಿತ್ರಸೂತಃ" ಭಾಗಂ 1-9-19 ।

ಜಲ್ಪಕ ಜಲ್ಪಕ (ವಿಂ) ಹರಟುವವನು, ಅಸಂಬದ್ಧವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವವನು. ಜಲ್ಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಪ್ಲು" (3-1-133) । "ಮೌನಾನ್ಮುಕಃ ಪ್ರವಚನಪटुರ್ವಾಚಿಕೋ ಜಲ್ಪಕೋ ವಾ ಧೃಷ್ಟಃ ಪಾಶ್ವೇ ಭವತಿ ಚ ವಸನ್ ದೂರತೋಽಪ್ಯಪ್ರಗಲ್ಭಃ" ಮತಂ 1-49 ।

ಜಲ್ಪತ್ ಜಲ್ಪತ್ (ವಿಂ) ಮಾತಾಡುತ್ತಿರುವ, ಹೇಳುತ್ತಿರುವ. ಜಲ್ಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಶತ್" (3-2-124) । "ಕಿಮಪಿ ಕಿಮಪಿ ಮಂದಂ ಮಂದಮಾಸಕ್ತಿಯೋಗಾದವಿರಲಿತಕಪಾಲಂ ಜಲ್ಪತೋರಕ್ರಮೇಣ" ತಂ ರಾಂ 1-29 । "ತತ್ಪ್ರಯೋಜಕ-ಕರ್ತೃತ್ವಮುಪೇತಿ ಮಮ ಜಲ್ಪತಃ" ಮಾಘಂ 2-91 । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (4-1-6) । ಜಲ್ಪಂತೋ ಜಲ್ಪಂಕೀಃ ।

ಜಲ್ಪನ ಜಲ್ಪನ (ನಂ) 1. ಭಾಷಣ, ಮಾತು. ಜಲ್ಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । "ಅನಿಮಿತ್ತಭಿಜ್ಞಚಲನಸ್ವೇದಾಶ್ರುನಿಪಾತಜಲ್ಪನಾಛಾನಿ" ಬೃಹತ್ಸಂ 46-6 । (ವಿಂ) 2. ಮಾತಾಡುವ. ಜಲ್ಪ "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134) ।

ಜಲ್ಪಾಕ ಜಲ್ಪಾಕ (ಪುಂ) 1. ಹರಟುವವನು, ಅಸಂಬದ್ಧವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವವನು. ಜಲ್ಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಪಾಕನ್" (3-2-144) । 2. ಮಾತಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಪಿತ್ವಾತ್ "ಙೀಪ್" (4-1-41) । ಜಲ್ಪಾಕೋ ಜಲ್ಪಾಕೀಃ । "ಜಲ್ಪಾಕೀಭಿಃ ಸಹಾಸೀನಃ ಸ್ತ್ರೀಭಿಃ ಪ್ರಜಬಿನಾ ತ್ವಯಾ" ಭಟಂ 9-19 ।

ಜಲ್ಪಿತ ಜಲ್ಪಿತ (ನಂ) 1. ಮಾತು. ಜಲ್ಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-3-114) । (ವಿಂ) 2. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಜಲ್ಪ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-2-102) ।

ಜಲ್ಪಿನ್ ಜಲ್ಪಿನ್ (ವಿಂ) ಮಾತಾಡುತ್ತಿರುವ, ಹೇಳುತ್ತಿರುವ. ಜಲ್ಪತಿ - ಜಲ್ಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಣಿನ್" (3-1-134) ।

ಜಲ್ಪಯ ಜಲ್ಪಯ (ವಿಂ) 1. ಹರಟಿಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ಹೇಳಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಜಲ್ಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಪ್ಯತ್" (3-1-124) ।

ಜವ ಜವ (ಪುಂ) 1. ವೇಗ. ಜು (ಸೌತ್ರಧಾತುಃ) "ಅಪ್" (3-3-49) । "ಉಪಾರತ್ತಾಃ ಪಶ್ಚಿಮರಾತ್ರಿಗೋಚರಾದಪಾರಯಂತಃ ಪತಿಸು ಜವೇನ ಗಾಮ್" ಕಿರಾಂ 4-10 । (ವಿಂ) 2. ವೇಗವುಳ್ಳ. ಜವೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಪ್" (4-2-129) । "ಏತಸ್ಮಿನ್ನಧಿಕಪಯಃಶ್ರಿಯಂ ವಹಂತ್ಯಃ ಸಂಕ್ಷೋಭಂ ಪವನಭುವಾ ಜವೇನ ನೇತಾಃ" ಮಾಘಂ 4-49 ।

ಜವನ ಜವನ (ವಿಂ) 1. ವೇಗದ ನಡೆಗೆಯುಳ್ಳ. ಜು (ಸೌತ್ರಧಾತುಃ) "ಯುಕ್" (3-2-140) । "ವಿಶಿಖಾಂತರಾ-ಪ್ಯತಿಪಪಾತ ಸಪದಿ ಜವನಃ ಸ ವಾಜಿಭಿಃ" ಮಾಘಂ 14-90 । (ನಂ) 2. ವೇಗ. ಜು (ಸೌತ್ರಧಾತುಃ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । (ಪುಂ) 3. ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆ ಯುವ ಕುದುರೆ. "ಜವನಂ ತು ಸ್ಯದೇ ವೇಗಿಹಯೇ ನಾ ವೇಗಿನಿ ತ್ರಿಘ್" ಮೇದಿಂ ।

ಜವನಿಕಾ ಜವನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀ) ತೆರೆ, ಪರದೆ. ಜವನ್ಯಸ್ಯಾಮ್ - ಜು "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಕನ್" । "ಙೀಪ್" (4-1-14) । "ಸಮೀರಶಿಶಿರಃ ಶಿರಃಸು ವಸತಾಂ ಸತಾಂ ಜವನಿಕಾ ನಿಕಾಮಸುಖಿನಾಮ್" ಮಾಘಂ 4-44 ।

ಜವನಿಮನ್ ಜವನಿಮನ್ (ಪುಂ) ವೇಗ. ಜವನಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಇಮನಿಕ್" (4-1-123) ।

ಜವನೀ ಜವನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತೆರೆ, ಪರದೆ. 2. ಯವನ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು.

ಜವಸ ಜವಸ (ನಂ) ಹುಲ್ಲು. ಜಯತೇ ಭಕ್ಷಾರ್ಥಂ ಪ್ರಾಪ್ಯತೇ - ಜು "ಅಸಕ್" ಬಾಹುಂ ।

ಜವಾ ಜವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಾಸಿವಾಳದ ಹೂವು.

ಜವಿನ್ ಜವಿನ್ (ಪುಂ) 1. ವೇಗವಾಗಿ ಓಡುವ ಜಿಂಕೆ. (ವಿಂ) 2. ವೇಗವುಳ್ಳ, ವೇಗದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಜವೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಙಿನಿಃ" (4-2-114) । "ಜವಿಮಾಸ್ತಾಽಜ್ಞಿಪರಸ್ಪರೋಪಮ-ಶ್ಚಿಬಿರೇಶುಕೈತುಬಸನಾಃ ಪತ್ತಾಕಿನಃ" ಮಾಘಂ 13-4 । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (4-1-4) । ಜವಿನೀ ಜವಿನೀಃ ।

ಜಸು ಜಸು (ಪುಂ) ಗುಣ, ಮೇಲ್ಮೈಯ ಮಟ್ಟ, ದರ್ಜೆ. "ಗುಣೇ ಜಸುಃ" ವೈಜಂ ।

ಜಸುರಿ ಜಸುರಿ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 2. ಶನಿ. "ಜಸುರಿಃ ಪಾವಕೇ ಶನೌ" ವೈಜಂ ।

ಜಹತ್ ಜಹತ್ (ವಿಂ) ತ್ಯಜಿಸುತ್ತಿರುವ, ಬಿಡುತ್ತಿರುವ. ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) "ಶತ್" (3-2-124) । "ಪಪಾತ ಪೂರ್ವಾ ಜಹತೋ ವಿಜಿಹತಾಂ ವೃಷೋಪಭುಕ್ತಾಂತಿಕಸಸ್ಯಸಂಪದಃ" ಕಿರಾಂ 4-16 । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (4-1-6) ।



ಜಹತ್ವಾರ್ಥ ಜಹತ್ವಾರ್ಥ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಹತ್ವಾರ್ಥ ಲಕ್ಷಣ. ಲಕ್ಷಣ ಲಕ್ಷಣ. ಜಹತ್ ಸ್ವಾರ್ಥ ಯಾಮ್. ಪದಗಳು ಸ್ವಾರ್ಥ (ಶಕ್ತ್ಯಾರ್ಥ) ಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಅನ್ಯಾರ್ಥಗಳನ್ನು ಬೋಧಿಸುವುದು “ಜಹತ್ವಾರ್ಥ” ವಾಗುವುದು. “ಆಯುರ್ಯತಮ್” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಆಯು: ಪದವು ಸ್ವಾರ್ಥವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಆಯು: ಸಾಧನಮ್ ಎಂಬ ಅರ್ಥವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವುದರಿಂದ “ಜಹತ್ವಾರ್ಥ” ಎಂಬ ಲಕ್ಷಣ.

ಜಹದಜಹಲ್ಲಕ್ಷಣಾ ಜಹದಜಹಲ್ಲಕ್ಷಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾಚ್ಯಾರ್ಥದ ಏಕದೇಶ (ಸ್ವಲ್ಪಭಾಗ)ವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಏಕದೇಶಾರ್ಥಕ್ಕೆ ಮಾತ್ರ ಅನ್ವಯವಿರುವ ಒಂದು ವಿಧ ಲಕ್ಷಣ. ಜಹ್ಚ್ವ ಅಜಹ್ಚ್ವ ಸ್ವಾರ್ಥ ಯಾಮ್. “ಸೌಖ್ಯಂ ದೇವದತ್ತ:” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಆಗಿನಕಾಲದ ಮತ್ತು ಈಗಿನಕಾಲದ ಎಂಬ ಅರ್ಥವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಕೇವಲ ದೇವದತ್ತ ರೂಪವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಮಾತ್ರ ಬೋಧಿಸುವುದರಿಂದ ವಾಚ್ಯಾರ್ಥದ ಏಕದೇಶವನ್ನು ಮಾತ್ರ ಹೇಳಿದಂತಾಯಿತು. ಅದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ “ಜಹದಜಹಲ್ಲಕ್ಷಣಾ”.

ಜಹಲ್ಲಕ್ಷಣಾ ಜಹಲ್ಲಕ್ಷಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಹತ್ವಾರ್ಥ ಲಕ್ಷಣ. “ಜಹತ್ವಾರ್ಥ” ನೋಡಿ.

ಜಹ್ವ ಜಹ್ವ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ರಾಜರ್ಷಿ, ಚಂದ್ರವಂಶದ ಅಜಮಾಧ ರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. ಈತನ ತಾಯಿ ಕೇಶಿನಿ. [ಈ ರಾಜನು ಕುಶಿಕವಂಶದ ಮೂಲಪುರುಷ. ಭಗೀರಥನು ದೇವಲೋಕದಿಂದ ಗಂಗೆಯನ್ನು ಕರೆತರುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಈ ರಾಜನ ಯಜ್ಞ ಶಾಲೆಯೊಳಗೆ ಗಂಗೆಯು ನುಗ್ಗಿ ಎಲ್ಲವನ್ನು ಕೊಚ್ಚಿ ಕೊಂಡು ಹೋಗಲು ಕುಪಿತನಾದ ರಾಜನು ಗಂಗೆಯನ್ನು ಪಾನಮಾಡಿಬಿಟ್ಟನು. ಅದರಿಂದ ಖಿನ್ನನಾದ ಭಗೀರಥನು ರಾಜನನ್ನು ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಲಾಗಿ ಸಂತೋಷಗೊಂಡ ಜಹ್ವರಾಜನು ಗಂಗೆಯನ್ನು ತನ್ನ ಕಿವಿಯಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಿಟ್ಟನು. ಈ ಕಾರಣದಿಂದ ಗಂಗೆಗೆ ಜಾಹ್ನವಿ, ಜಹ್ನುಕನ್ಯಾ, ಜಹ್ನುತನಯಾ ಇತ್ಯಾದಿ ಹೆಸರಾದುವು.] 2. ವಿಷ್ಣು. ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೆ) “ನು:” ಧಾತೋ: ದ್ವಿತ್ವಂ ಅಮ್ಯಾಸಸ್ಯ ಹ್ರಸ್ವ: ಕೃತ್ವಂ ಚ (ಉಂ ೩-೩೬). “ಅಭಕ್ತೇಷ್ವಾತ್ಮಮಾಹಾತ್ಮ್ಯನಿಹ್ನುತೇಜ್ಜಹ್ನುರೂಚ್ಯತೇ” ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ:। “ಸತ್ಕರ್ತಾ ಸತ್ಕೃತ: ಸಾಧುಜ್ಞಾನಾರಾಯಣೋ ನರ:” ವಿಂ ಸಂ 1.

ಜಹ್ನುಕನ್ಯಾ ಜಹ್ನುಕನ್ಯಾ, -ತನಯಾ -ತನಯಾ, -ಸುತಾ -ಸುತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗಾನದಿ. ಜಹ್ನು: ಕನ್ಯಾ ತನಯಾ ಸುತಾ ವಾ। “ವಿವಿಕ್ತೇಽಸ್ಮಿನ್ನಗೇ ಭುಯ: ಪ್ಲಾವಿತೇ ಜಹ್ನು-ಕನ್ಯಯಾ” ಕಿರಾಂ ೧೧-೩೬।

ಜಹ್ನುಸಪ್ತಮಿ ಜಹ್ನುಸಪ್ತಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೈಶಾಖ ಶುದ್ಧ ಸಪ್ತಮಿ. ಜಹ್ನುರಾಜನು ಗಂಗಾನದಿಯನ್ನು ಪಾನಮಾಡಿ ಪುನಃ ಕಿವಿಯಿಂದ ಬಿಟ್ಟು ದಿವಸವಿದು. ಈ ಸಪ್ತಮಿಯು ಗಂಗಾಪೂಜೆಗೆ ಪ್ರಶಸ್ತವಾದುದು. “ವೈಶಾಖಶುದ್ಧಸಪ್ತಮ್ಯಾಂ ಜಹ್ನುನಾ ಮುನಿನಾ ಪುರಾ। ಕ್ರೋಧಾತ್ ಪೀತಾ ಪುನಸ್ತಯಕ್ತಾ ಕರ್ಣರಂಧ್ರಾತ್ ದಕ್ಷಿಣಾತ್। ತಸ್ಯಾಂ ಸಮರ್ವಯೇದೇವೀಂ ಗಜ್ಞಾಂ ಭುವನಮೇಖಲಾಮ್। ಸ್ನಾತ್ವಾ ಸಮ್ಯಗ್ವಿಧಾನೇನ ಸ ಧನ್ಯ: ಸುಕೃತೀ ನರ:” ವರಾಹಪುಂ 1.

ಜಾ ಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಾಯಿ. 2. ಮೈದುನನ ಹೆಂಡತಿ. ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತಮವಿ) “ಜ:” ಬಾಹುಂ 1. 3. ದೇವತೆಗಳ ಸೇನೆ. 4. ಯೋನಿ. 5. ಸಮುದ್ರದ ತೀರಪ್ರದೇಶ. “ಜಾ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ದೇವವಾಹಿನ್ಯಾಂ ಯೋನಿಸಾಗರವೇಲಯೋ:” ನಾನಾರ್ಥಂ 1.

ಜಾಗತ ಜಾಗತ (ವಿಂ) 1. ಜಗತ್ತಿನಿಂದ ಸ್ಥಿತಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಜಗತ್ತಿನಿಂದ ಸ್ಥಿತಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ರಚಿತವಾದ. 2. ಪೃಥ್ವೀಸಂಬಂಧವಾದ, ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿರುವ. ಜಗತ್ಯಾಂ ಭವ: “ಅನ್” (೪-೩-೫೩)।

ಜಾಗರ ಜಾಗರ (ಪುಂ) 1. ಜಾಗರಣೆ, ನಿದ್ರೆಯಿಲ್ಲದೆ ಎಚ್ಚರ ದಿಂದಿರುವುದು. ಜಾಗ್ (ನಿದ್ರಾಕ್ಷಯೇ) ಭಾವೇ “ಜಗ್” (೩-೩-೧೮)। “ಆರೂರೋಹ ಕುಮುದಾಕರೋಪಮಾಂ ರಾತ್ರಿಜಾಗರಪರೋ ದಿವಾಶಯ:” ರಘುಂ ೧೯-೩೪। 2. ಯುದ್ಧಕವಚ, ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ತೊಡುವ ಅಂಗಿ, “ಉರಶ್ಚದ: ಕಚ್ಚುಟಕೋ ಜಾಗರ: ಕವಚೋಽಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” ಅಮಂ 1.

ಜಾಗರಕ ಜಾಗರಕ (ವಿಂ) ನಿದ್ರೆಯಿಲ್ಲದೆ, ಎಚ್ಚರದಿಂದಿರುವ, ಜಾಗ್ (ನಿದ್ರಾಕ್ಷಯೇ) “ಜಗಲ್” (೩-೩-೧೩೩)।

ಜಾಗರಣ ಜಾಗರಣ (ನಂ) 1. ಎಚ್ಚರ, ನಿದ್ರೆಯಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ಜಾಗ್ (ನಿದ್ರಾಕ್ಷಯೇ) ಭಾವೇ “ಜಗತ್” (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸುವುದು. ಜಾಗ್ + ಣಿಕ್ “ಜಗತ್”।

ಜಾಗರಣೀಯ ಜಾಗರಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಎಚ್ಚರದಿಂದ ಇರಬೇಕಾದ. 2. ಎಚ್ಚರದಿಂದ ಇರಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ಜಾಗ್ (ನಿದ್ರಾಕ್ಷಯೇ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೩-೧೬)। 3. ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸಬೇಕಾದ. 4. ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ಜಾಗ್ + ಣಿಕ್ “ಅನೀಯರ್”। ಜಾಗ್ “ತವ್ಯ:” (೩-೩-೧೬)। ಜಾಗರಣೀಯ: ಜಾಗರಣೀಯ. ಜಾಗ್ + ಣಿಕ್ “ತವ್ಯ:”। ಜಾಗರಣೀಯ: ಜಾಗರಣೀಯ.

ಜಾಗರಯತ್ ಜಾಗರಯತ್ (ವಿಂ) ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ, ಎಚ್ಚರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಜಾಗ್ (ನಿದ್ರಾಕ್ಷಯೇ) + ಣಿಕ್ “ಜಗತ್” (೩-೩-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಜಿಪ್” (೪-೩-೬)। -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ. “ಜಾನಕ್” (೩-೩-೧೨೪)। ಜಾಗರಯಮಾಣ: ಜಾಗರಯಮಾಣ.



**ಜಾಗರಿಸಿ ಜಾಗರಿತ (ನಂ)** 1. ಎಚ್ಚರಗೊಳ್ಳುವುದು. ಜಾಗೃ (ನಿದ್ರಾಕ್ಷಯೇ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) 2. ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸುವುದು. ಜಾಗೃ+ಣಿच् "ಕ್ತ:" (ವಿಂ) 3. ಎಚ್ಚರಗೊಂಡ. ಜಾಗೃ (ನಿದ್ರಾಕ್ಷಯೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) 4. ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಜಾಗೃ + ಣಿच् "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) 1.

**ಜಾಗರಿಸವತ್ ಜಾಗರಿತವತ್ (ವಿಂ)** 1. ಎಚ್ಚರಗೊಂಡ, ನಿದ್ರೆಯಿಂದ ಎದ್ದಿರುವ. ಜಾಗೃ (ನಿದ್ರಾಕ್ಷಯೇ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨) 2. ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸಿದ, ನಿದ್ರೆಯಿಂದ ಎಬ್ಬಿಸಿದ. ಜಾಗೃ+ಣಿच् "ಕ್ತವತು:" 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) 1. ಜಾಗರಿಸವತೀ ಜಾಗರಿತವತೀ.

**ಜಾಗರಾ ಜಾಗರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಎಚ್ಚರ, ನಿದ್ರೆಯಿಲ್ಲದಿರುವುದು, ಜಾಗರಣೆ. ಜಾಗೃ ವಾ "ಅ:" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೧) 1. ಪಕ್ಷೇ "ಶ:" 1. "ಯಕ್" (೩-೧-೬೭) 1. ಜಾಗರ್ಮಾ ಜಾಗರ್ಮಾ. **ಜಾಗರಿಸ್ ಜಾಗರಿತ್ಯ (ವಿಂ)** ನಿದ್ರೆಯಿಲ್ಲದ, ಎಚ್ಚರದಿಂದಿರುವ. ಜಾಗೃ (ನಿದ್ರಾಕ್ಷಯೇ) "ತನ್" (೩-೨-೧೩೫) 1. "ಜ್ಞಾನಾಮ್ಯಾಸಾಜ್ಜಾಗರಿಸಾ ಜಿಜ್ಞಾಸಾರ್ಥಮನಂತರಮ್" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೨೧೮-೩ 1.

**ಜಾಗರಿನ್ ಜಾಗರಿನ್ (ವಿಂ)** ಎಚ್ಚರವುಳ್ಳ, ನಿದ್ರೆಯಿಲ್ಲದ. ಜಗರೋಸ್ಥಾಸ್ತಿ "ಛಿನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) 1.

**ಜಾಗರೂಕ ಜಾಗರೂಕ (ವಿಂ)** ಎಚ್ಚರದಿಂದಿರುವ ಸ್ವಭಾವದ, ನಿದ್ರೆಯಿಲ್ಲದ. ಜಾಗೃ (ನಿದ್ರಾಕ್ಷಯೇ) "ಅಕ:" (೩-೨-೧೬೫) 1. "ಭುವನತ್ರಯಕಾರ್ಯಜಾಗರೂಕ: ಸ ಪರಂ ತತ್ರ ಪರ: ಪುಮಾನಜಾಗ:" ಮಾಘಂ ೨೦-೩೬ 1.

**ಜಾಗತಿ ಜಾಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಜಾಗರಣೆ, ಎಚ್ಚರ, ನಿದ್ರೆಯಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ಜಾಗೃ (ನಿದ್ರಾಕ್ಷಯೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) 1. ಗುಣ: (೭-೩-೮೫) 1.

**ಜಾಗರ್ಮಾ ಜಾಗರ್ಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** "ಜಾಗರಾ" ನೋಡಿ.

**ಜಾಗುಡ ಜಾಗುಡ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ)** 1. ಜಾಗುಡದೇಶ. 2. ಜಾಗುಡದೇಶದ ಜನರು. "ಅವನಿ ಜಾಗುಡಕುಡ್ಡುಮಾಭಿ ತಾಮ್ರ:" ಮಾಘಂ ೨೦-೩ 1. (ನಂ) 3. ಕುಂಕುಮಂಕೇಸರಿ. (ವಿಂ) 4. ಜಾಗುಡದೇಶದಲ್ಲಿ ಇರುವ.

**ಜಾಗೃ - ನಿದ್ರಾಕ್ಷಯೇ (ಅದಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ)** 1. ಜಾಗತಿ ಜಾಗೃತ: ಜಾಗೃತಿ. ಜಾಗೃಷಿ ಜಾಗೃಥ: ಜಾಗೃಥ. ಜಾಗೃಮಿ ಜಾಗೃವ: ಜಾಗೃಮ: 1. ಜಾಗರಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸೆ. 1. ಜಜಾಗಾರ ಜಜಾಗರತು: ಜಜಾಗರಹ: 1. ಜಾಗರಿತಾ 1. ಜಾಗರಿಸ್ಯತಿ 1. ಜಾಗೃತು } ಜಾಗೃತಾಮ್ ಜಾಗೃತು 1. ಜಾಗೃತಾತ್ }

ಜಾಗೃಹಿ 1. ಜಾಗರಾಣಿ 1. ಅಜಾಗ: 1. ಜಾಗೃಯಾತ್ 1. ಜಾಗೃಯಾತ್ 1. ಅಜಾಗರೀತ್ 1. ಅಜಾಗರಿಸ್ಯತ್ 1. ಎಚ್ಚರಹೊಂದು, ನಿದ್ರೆಯಿಂದ ಎಳು.

**ಭಾವೇ:-**ಜಾಗೃಯತೇ 1. ಜಾಗರಾಂಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವೇ, -ಆಸೇ, ಜಜಾಗರೇ 1. ಜಾಗಾರಿಸಾ, ಜಾಗರಿಸಾ 1. ಜಾಗಾರಿಸ್ಯತೇ, ಜಾಗರಿಸ್ಯತೇ 1. ಜಾಗೃಯತಾಮ್ 1. ಅಜಾಗೃಯತ 1. ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಣಿಚಿ:-**ಜಾಗೃಯತಿ, -ತೇ 1. ಜಾಗರಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ, -ಆಸೆ 1. ಜಾಗರಯಿತಾ 1. ಜಾಗರಯಿಸ್ಯತಿ, -ತೇ 1. ಜಾಗರಯತು, -ತಾಮ್ 1. ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಘಂತಾತ್ ಕರ್ಮಣಿ:-**ಜಾಗೃಯತೇ 1. ಜಾಗರಯಾಂಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವೇ, -ಆಸೇ 1. ಜಾಗರಯಿತಾ, ಜಾಗರಿಸಾ 1. ಜಾಗರಯಿಸ್ಯತೇ, ಜಾಗರಿಸ್ಯತೇ 1. ಜಾಗೃಯತಾಮ್ 1. ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತ್ಸು:-**ಜಾಗರಿಸವ್ಯಮ್ 1. ಜಾಗರಣೀಯಮ್ 1. ಜಾಗೃಯಮ್ 1. ಜಾಗರಿಸ: 1. ಜಾಗರಿಸವಾನ್ 1. ಜಾಗೃತ್, ಜಾಗೃತೀ 1. ಜಾಗರಿಸತುಮ್ 1. ಜಾಗರಿಸಮ್ 1. ಜಾಗರಣಮ್ 1. ಜಾಗರಿಸ್ವಾ 1. ಪ್ರಜಾಗೃಯ 1.

**ಘಂತಾತ್ ಕೃತ್ಸು:-**ಜಾಗರಿಸವ್ಯ: 1. ಜಾಗರಣೀಯ: 1. ಜಾಗೃಯ: 1. ಜಾಗರಿಸ: 1. ಜಾಗರಿಸವಾನ್ 1. ಜಾಗರಯನ್, ಜಾಗರಯಂತೀ, ಜಾಗರಯಮಾಣ: 1. ಜಾಗರಿಸತುಮ್ 1. ಜಾಗರಿಸಮ್ 1. ಜಾಗರಣಮ್ 1. ಜಾಗರಿಸ್ವಾ 1. ಪ್ರಜಾಗೃಯ 1.

**ಜಾಗೃವಿ ಜಾಗೃವಿ (ಪುಂ)** 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ಜಾಗೃ (ನಿದ್ರಾಕ್ಷಯೇ) "ವಿನ್" (೩ಂ ೪-೫೪) 1. ರಾಜನು ತನ್ನ ಕರ್ತವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಜಾಗರೂಕನಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. 2. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. (ವಿಂ) 3. ಜಾಗರಣೆಯ ಸ್ವಭಾವದ, ನಿದ್ರೆಯಿಲ್ಲದ.

**ಜಾಗೃತ ಜಾಗೃತ (ವಿಂ)** ಎಚ್ಚರಗೊಂಡ. ಜಾಗೃ (ನಿದ್ರಾಕ್ಷಯೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) 1.

**ಜಾಗೃತ್ ಜಾಗೃತ್ (ವಿಂ)** 1. ಎಚ್ಚರದಿಂದಿರುವ, ನಿದ್ರೆಯಿಲ್ಲದಿರುವ. ಜಾಗೃ (ನಿದ್ರಾಕ್ಷಯೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) 1. "ಕ್ಷಯಿತಾಪದಿ ಜಾಗೃತೋಪಿ ನಿಯಂ ನನು ತತ್ರೇವ ಹಿ ತೇಷವ-ನ್ನಿಷಣ್ಣಾ:" ಮಾಘಂ ೨೦-೩೪ 1. 2. ಎಚ್ಚರದಿಂದಿರುವ, ಜಾಗರೂಕತೆಯಿಂದಿರುವ, ಎಡೆಬಿಡದೆ ಗಮನಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) 1. ಜಾಗೃತೀ ಜಾಗೃತೀ. "ಅಯಂ ದಿಶಿರೋ ಭವಿತೇತಿ ವೈದಿಷೀ ಲಿಪಿ ಲಲಾಡೇರ್ಥಜನಸ್ಯ ಜಾಗೃತೀಮ್" ನೈಷಂ ೧-೧೫ 1.

**ಜಾಗೃಯಾ ಜಾಗೃಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಎಚ್ಚರ, ನಿದ್ರೆಯಿಲ್ಲದಿರುವುದು, ಜಾಗರಣೆ.

**ಜಾಧನಿ ಜಾಧನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ತೊಡೆ. ಜಾಧನಸ್ಯ ಸಮೀಪಮ್ "ಅಣ್" (೪-೨-೭೦) 1. "ಶುಭಾರ್ತಶ್ಚಾತ್ಮಮಮ್ಯಾಗಾತ್ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ: ಶ್ವಜಾಧನೀಮ್" ಮನುಂ ೧೦-೧೦೮ 1. 2. ಪುಟ್ಟ, ಚಾಲ್.



**ಜಾಙ್ಗಲ ಜಾಂಗಲ** (ಪುಂ) 1. ತಿತ್ತಿರಿಪಕ್ಕಿ, ಕಪಿಂಜಲಿಪಕ್ಕಿ, ಗೌಜಗಹಕ್ಕಿ. 2. ಅರಣ್ಯದ ಮೃಗಗಳ ಮಾಂಸ. 3. ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ನೀರು. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 4. ಜಾಂಗಲ ದೇಶ. ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶದ ಒಂದು ಪ್ರಾಂತ. (ವಿಂ) 5. ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಕಾಡಿನಲ್ಲಿರುವ. ಜಙ್ಗಲೇ ಭವ: "ಅಙ್" (೪-೩-೪೩)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲೀ-ಲೀ. 6. ನಸುಗುನ್ನಿಗಿಡ.

**ಜಾಙ್ಗಲಪಾಠಿಕ ಜಾಂಗಲಪಥಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಅರಣ್ಯ ಮಾರ್ಗದಿಂದ ತರಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಅರಣ್ಯಮಾರ್ಗದಿಂದ ಹೋಗುವ. ಜಙ್ಗಲಪಥೇನ ಆಹುತಂ ತೇನ ಗಂಚತಿ ವಾ "ಠಕ್" (ವಾಂ ೪-೧-೭೭)।

**ಜಾಙ್ಗಲ ಜಾಂಗುಲ** (ನಂ) ವಿಷ.

**ಜಾಙ್ಗಲಿ ಜಾಂಗುಲಿ** (ಪುಂ) ವಿಷವೈದ್ಯ.

**ಜಾಙ್ಗಲಿಕ ಜಾಂಗುಲಿಕ** (ಪುಂ) ವಿಷವೈದ್ಯ. ಜಾಙ್ಗಲಾ ದೀವ್ಯತಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೨)।

**ಜಾಙ್ಗಲಿ ಜಾಂಗುಲೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಷವಿದ್ಯೆ. ಜಾಙ್ಗಲಸ್ಯ ವಿಷಸ್ಯೇಯಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಜಿಫ್" (೪-೧-೧೪)। "ಜಾಙ್ಗಲಿ ವಿಷವಿಧಾಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ।

**ಜಾಙ್ಗಿ ಜಾಂಘಿ** (ವಿಂ) 1. ಮೊಳಕಾಲಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಜಙ್ಘಾಯಾಂ ಭವ: "ಙ್" (೪-೧-೯೬)। 2. ಮೊಳಕಾಲಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ.

**ಜಾಙ್ಗಿಕ ಜಾಂಘಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಉಪ್ಪು, ಒಂಟಿ. (ವಿಂ) 2. ಓಡುವವನು, ಓಡಿನಡೆದು ಜೀವಿಸುವವನು. ಓಡಾಡುವ ಉದ್ಯೋಗವುಳ್ಳವನು. ಜಙ್ಘಾಮ್ಯಾಂ ಜೀವತಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೨)।

**ಜಾಜಲ ಜಾಜಲ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ಜಾಜಲಿಯ ಶಿಷ್ಯರು. ಜಾಜಲೇಶ್ವರಾಃ।

**ಜಾಜಲಿ ಜಾಜಲಿ** (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಮುಷಿ.

**ಜಾಜಿನ್ ಜಾಜಿನ್** (ಪುಂ) ಯೋಧ, ಭಟ, ಸೈನಿಕ. ಜಜತಿ-ಜಜ (ಯುಧೇ) "ಜಿನಿ:" (೩-೨-೭೮)। "ಜಜಿಜಾಜಿ-ಜಿಜಿಜಾಜಿ ತಂ ತತೋಽತಿತತಾಽತಿತುತ್" ಮಾಘಂ ೧೯-೩।

**ಜಾಜ್ವಲ್ಯಮಾನ ಜಾಜ್ವಲ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಅತಿಶಯವಾಗಿ ಹೊಳೆಯುವ. ಜ್ವಲ (ದೀಪ್ತೌ) + ಯಜ್ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಜಾಜ್ವಲ್ಯಮಾನಾ ಜಗತ: ಶಾಂತಯೇ ಸಮುಪೇಯುಷಿ" ಮಾಘಂ ೨-೩।

**ಜಾಠರ ಜಾಠರ** (ಪುಂ) 1. ಹೊಟ್ಟೆಯೊಳಗಿನ ಅಗ್ನಿ, ಜಾಠರಾಗ್ನಿ. ಜಠರೇ ಭವ: "ಅಙ್" (೪-೩-೪೩)। 2. ಶಿಶು, ಮಗು. "ಭವಿಷ್ಯತಸ್ತವಾಭದ್ರಾವಭದ್ರೇ ಜಾಠರಾಭಮೌ" ಭಾಗಂ

೩-೧೪-೩೮। (ವಿಂ) 3. ಜಠರಸಂಬಂಧವಾದ. ಜಠರ-ಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦)। 4. ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿರುವ.

**ಜಾಠರಾಗ್ನಿ ಜಾಠರಾಗ್ನಿ** (ಪುಂ) ಹೊಟ್ಟೆಯೊಳಗಿನ ಅಗ್ನಿ, ಅಹಾರವನ್ನು ಜೀರ್ಣಮಾಡುವ ಒಂದು ಶಕ್ತಿ.

**ಜಾಠ್ಯ ಜಾಠರ್ಯ** (ವಿಂ) ಹೊಟ್ಟೆಯೊಳಗಿನ ರೋಗ, ಹೊಟ್ಟೆಯೊಳಗೆ ಬಾಧಿಸುವ ವ್ಯಾಧಿ. ಜಠರೇ ಭವ: "ಜ್ಯ:"।

**ಜಾಠಾರ ಜಾಠಾರ** (ಪುಂ) ಜಡನ ಮಗ. ಜಡಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಆರಕ್" (೪-೧-೧೩೦)।

**ಜಾಡ್ಯ ಜಾಡ್ಯ** (ನಂ) 1. ಶೈತ್ಯ, ಚಳಿ, ಕುಳಿರು. ಜಡಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಙ್" (೪-೧-೧೨)। 2. ಮೂರ್ಖತನ, ದಡ್ಡತನ. "ವಿಖ್ಯಾತಾ: ಕವಯೋ ವಸಂತಿ ವಿಷಯೇ ಯಸ್ಯ ಪ್ರಭೋನಿಧನಾ:। ತಜ್ಜಾಡ್ಯಂ ವಸುಧಾಧಿಪಸ್ಯ" ಭರ್ತಂ ೧-೧೧। 3. ಜಡತೆ, ಸೋಮಾರಿತನ, ಕೆಲಸಮಾಡದಿರುವುದು, ಮೈಗಲ್ಲತನ. "ಆಲಸ್ಯಂ ಶ್ರಮಗರ್ಭಾಜಿಜಾಡ್ಯಮ್ ಜಮ್ಭಾಸಿತಾದಿಕೃತ್" ಸಾಂ ೩-೧೪೪। 4. ರಸನೇಂದ್ರಿಯದ ಶಕ್ತಿಯು ಕಡಮೆಯಾಗಿರುವುದು, ನಾಲಗೆಯಲ್ಲಿ ರುಚಿತೋರದಿರುವುದು. "ಮುಖವೇರಸ್ಯದೋಗಂಧ್ಯಶೋಫಜಾಡ್ಯಹರಂ ಸುಖಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ೪-೨೪-೧೪। 5. ಮಂಕು, ಬುದ್ಧಿಮಾಂದ್ಯ, ಪೆದ್ದು. "ಜಾಡ್ಯಂ ಧಿಯೋ ಹರತಿ ಸಿಂಧವಿತಿ ವಾಚಿ ಸತ್ಯಮ್" ಭರ್ತಂ ೧-೧೧।

**ಜಾಡಚಾರಿ ಜಾಡ್ಯಾರಿ** (ಪುಂ) ನಿಂಬೆಗಿಡ.

**ಜಾತ ಜಾತ** (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. (ಸಾಧೂನ್ಯವಾಗಿ ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಯೋಗ). "ಅಯಿ ಜಾತ ಕಥಯಿತವ್ಯಂ ಕಥಯ" ತಂ ರಾಂ ೪। (ನಂ) 2. ಜನ್ಮ, ಉತ್ಪತ್ತಿ. ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರಭಿ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। 3. ರಾಶಿ, ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. "ತಮಧ್ವರೇ ವಿಶ್ವಜಿತಿ ಕ್ಷಿತಿಶಂ ನಿ:ಶೇಷವಿಶ್ರಾಣಿತಕೋಶಜಾತಮ್" ರಘುಂ ೪-೧। (ವಿಂ) 4. ಉತ್ಪನ್ನ, ಹುಟ್ಟಿದ, ಜನ್ಮಪಡೆದ. "ಜಾತಾ ನಿಖಿಲವೇದಾನಾಮುತ್ತಮಾಙ್ಗೋಪಧಾನತ:। ತ್ವತ್ಪಾದಕಮಲಾದೇಶಾ ತ್ವದೇಕಾಧಿನಿಧಾರಣಾ" ಯಾದಂ ೧-೭೯। "ಕೋಶ್ಯ: ಪುತ್ರೇಣ ಜಾತೇನ ಯೋ ನ ವಿಧಾನ್ ನ ಧಾರ್ಮಿಕ:। ಕಾಣೇನ ಚಕ್ಷುಷಾ ಕಿಂನಾ ಚಕ್ಷು:ಪಿಡೇವ ಕೇವಲಮ್" ಹಿತಂ ೧-೧೨। 5. ಉಂಟಾದ, ಹುಟ್ಟಿದ. "ಜಾತಪ್ರೀತಿಯಾ ಮಧುರೇಣಾನುವನಾಂತಂ ಕಾಮೇ ಕಾಂತೇ ಸಾರಸಿಕಾಕಾಕುರತೇನ" ಮಾಘಂ ೬-೭೬। 6. ವ್ಯಕ್ತವಾದ, ಪ್ರಕಟವಾದ.

**ಜಾತಕ ಜಾತಕ** (ಪುಂ) 1. ಸದ್ಯ: ಹುಟ್ಟಿದ ಶಿಶು. 2. ಭಿಕ್ಷು, ತಾಪಸ. (ನಂ) 3. ಜಾತಕ, ಜನ್ಮಪತ್ರಿಕೆ, ಜನ್ಮಕಾಲದ ತಿಥಿ ವಾರ ನಕ್ಷತ್ರ ಲಗ್ನ ಮೊದಲಾದ ವಿವರಗಳನ್ನೂ



ತಿಳಿಸುವ ಪತ್ರಿಕೆ. 4. ಶಿಶುವಿನ ಜನ್ಮಕಾಲದ ನಕ್ಷತ್ರ  
ಲಗ್ನ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಶುಭಾಶುಭ ಫಲಗಳನ್ನು  
ತಿಳಿಸುವ ಗ್ರಂಥ. ಬೃಹಜ್ಜಾತಕ, ಜಾತಕ ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಜಾತಕ  
ಫಲ ಚಿಂತಾಮಣಿ, ಜಾತಕ ಕೌಮುದಿ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಂಥ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಈ ಫಲಗಳು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. ಜಾತಂ ಜನನಮ್, ತದಧಿ  
ಕೃತ್ಯ ಕೃತೋ ಘ್ನಃ: "ಅನ್" (೪-೩-೮೭). ಸಂಜ್ಞಾಃ  
"ಕನ್" (ವಿಂ) 5. ಹುಟ್ಟಿದ, ಜನ್ಮವೆತ್ತಿದ. "ಉಭೌ  
ತೌ ನಾಹಂತೌ ಭಾಗಂ ಜಾರಜಾತಕಕಾಮಜೌ" ಮನ್ವಂ ೯-೧೪೩.

ಜಾತಕಚಕ್ರ ಜಾತಕಚಕ್ರ (ನಂ) ಹುಟ್ಟಿದ ಶಿಶುವಿನ ಶುಭಾ  
ಶುಭ ಫಲಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಒಂದು ಚಕ್ರ. ಜನನಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ಸೂರ್ಯನಿರುವ ನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ 27 ನಕ್ಷತ್ರ  
ಗಳನ್ನು ತಲೆಯಿಂದ ಪಾದದವರೆಗೂ ಭಾಗಿಸಿದರೆ ಆಯಾ  
ಅಂಗಗಳ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಫಲವು ಈ ಕೆಳಗೆ ಕಂಡಂತೆ ಹೇಳ  
ಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. "ಯಸ್ಮಿನ್ ಕೃಷ್ಣೇ ಸ್ಥಿತೋ ಭಾನುಃ ತದಾದಿ ತ್ರಿಣಿ  
ಮಸ್ತಕೇ. ಮುಖೇ ತ್ರಿಣಿ ತಥಾ ದ್ವೇ ಭೇ ಸ್ಕಂಧಯೋರಭಯೋರಭೇ. ದ್ವೇ ಹಸ್ತಯೋಃ ಪಂಚ ಹೃದಿ ನಾಭಾವೇಕಂ ತಥಾ ಗುಡೇ. ತಥಾ  
ಜಾನುಯುಗೇ ದ್ವೇ ದ್ವೇ ಪಾದಯೋರ್ಜಲಧಿ ನ್ಯಸೇತ್. ಚರಣಕ್ಷೇಪು ಯೋ  
ಜಾತಃ ಸೋಽಲ್ಪಾಯುರ್ಭವತಿ ಪ್ರಿಯೇ. ಜಾನುನೋಭ್ರಮಣಾಶಕ್ತೋ  
ಗುಹ್ಯೇ ಸ್ವಾತ್ಪಾರದಾರಿಕಃ. ನಾಭೌ ಸ್ವಲ್ಪಧನೋ ದೇವಿ ಹೃದಯೇ  
ಸ್ಯಾನ್ಮಹಾಧನಃ. ಪಾಣ್ಯೋರ್ಜಾತೋ ಭವೇನ್ಚೌರೋ ಭುಜಯೋರ್ದುಃಖ-  
ಭಾಜನಮ್. ಸ್ಕಂಧಯೋರ್ಭೌಗಭೌಗೀ ಚ ಮುಖೇ ಧರ್ಮರತೋ ಧನೀ. ಮूर्ಧ್ನಿ ರಾಜಾ ಭವೇದೇವಿ ಬಾಲಾನಾಂ ಜನ್ಮತೋ ವದೇತ್" ಇತಿ  
ಯುದ್ಧಜಯಾರ್ಣವಃ.

| ನಕ್ಷತ್ರಗಳಿರುವ<br>ಅಂಗಗಳು | ನಕ್ಷತ್ರಗಳ<br>ಸಂಖ್ಯೆ | ಫಲ                            |
|-------------------------|---------------------|-------------------------------|
| ತಲೆ                     | 3                   | ರಾಜನಾಗುವನು                    |
| ಮುಖ                     | 3                   | ಧರ್ಮಿಷ್ಠ ಮತ್ತು<br>ಧನಿಕನಾಗುವನು |
| ಹೆಗಲುಗಳು                | 2                   | ಸುಖಿಯಾಗುವನು                   |
| ತೋಳುಗಳು                 | 2                   | ದುಃಖಿಯಾಗುವನು                  |
| ಕೈಗಳು                   | 2                   | ಜೋರನಾಗುವನು.                   |
| ಹೃದಯ                    | 5                   | ಮಹಾಧನಿಕನಾಗುವನು                |
| ಹೊಕ್ಕಳು                 | 1                   | ಅಲ್ಪಧನವುಳ್ಳವನು                |
| ಗುದ                     | 1                   | ಪರಸ್ತ್ರೀರತನಾಗುವನು             |
| ಮಂಡಿಗಳು                 | 4                   | ತಿರುಗಾಡಲು ಅಶಕ್ತ<br>ನಾಗುವನು    |
| ಕಾಲುಗಳು                 | 4                   | ಅಲ್ಪಾಯು                       |

ಆಯಾ ಅಂಗಗಳ ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವರ  
ಆಯುಃಪ್ರಮಾಣ :

|          |         |         |
|----------|---------|---------|
| ತಲೆ      | 100     | ವರ್ಷಗಳು |
| ಮುಖ      | 100     | "       |
| ಹೆಗಲುಗಳು | 90      | "       |
| ಹೃದಯ     | 85      | "       |
| ಕೈಗಳು    | 70      | "       |
| ತೋಳುಗಳು  | 66      | "       |
| ಗುದ      | 66      | "       |
| ತೊಡೆಗಳು  | 50      | "       |
| ಕಾಲುಗಳು  | ಅಲ್ಪಾಯು |         |

"ಮುಖೇ ಶಿಖೆ ಶತಂ ವರ್ಷಂ ನವತಿಃ ಸ್ಕಂಧಯೋರಭಯೋಃ. ಪಂಚಾ-  
ಶೀತಿಃ ಹೃದಿ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಹಸ್ತಯೋಃ ಸಪ್ತತಿಃ ಕ್ರಮಾತ್. ಬಾಹ್ಯೋಃ  
ಷಟ್ಷಟ್ವರ್ಷಾಣಿ ಗುಹ್ಯೇ ಷಟ್ಷಟ್ವರ್ಷಾಣಿ ಕ್ರಮಾತ್. ಪಂಚಾಶತ್  
ಜಿಹ್ವಯೋಃ ಪಾದೇ ನಿರ್ಧನಶ್ರಾಲ್ಪಜೀವನಃ" ಇತಿ ಸ್ವರೋದಯಃ.

ಜಾತಕರ್ಮನ್ ಜಾತಕರ್ಮನ್ (ವಿಂ) ಶಿಶುವು ಜನಿಸಿದ  
ಕೂಡಲೆ ತಂದೆಯು ಶಿಶುವಿಗೆ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಒಂದು  
ಸಂಸ್ಕಾರ, ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ನಡೆಯಬೇಕಾದ ಮೋಡಶ  
(ಹದಿನಾರು) ಸಂಸ್ಕಾರಗಳಲ್ಲೊಂದು. ["ಕರ್ಮನ್" ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ]. ಜಾತೇ ಕರ್ಮವ್ಯಂ ಕರ್ಮ. "ಜನ್ಮನೋಜನ್ಮನಾರಂ ಕಾರ್ಯಂ  
ಜಾತಕರ್ಮಂ ಯಥಾವಿಧಿ. ದೇವಾದತೀತಃ ಕಾಲಃ ಕೇತುಃ ಅತೀತೇ  
ಸೂತಕೇ ಭವೇತ್". "ಸ ಜಾತಕರ್ಮಣ್ಯಖಿಲೇ ತಪಸ್ವಿನಾ  
ತಪೋವನಾದೇತ್ಯ ಪುರೋಧಸಾ ಕೃತೇ" ರಘುಂ ೩-೧೮.

ಜಾತನಷ್ಟ ಜಾತನಷ್ಟ (ವಿಂ) ಹುಟ್ಟಿ ಎನಿಸಿಕೊಂಡಿದ,  
ಹುಟ್ಟಿದ ಕೂಡಲೆ ನಾಶಹೊಂದಿದ.

ಜಾತಮಾತ್ರ ಜಾತಮಾತ್ರ (ವಿಂ) ಅಗತಾನೇ ಹುಟ್ಟಿದ,  
ಸದ್ಯಃ ಜನಿಸಿದ. ಜಾತ ಏವ ಜಾತಮಾತ್ರಃ. "ಶ್ರೀಸಂನಿಧಾನ-  
ರಮಣೀಯತರೋಽಶ್ವಃ ಉಚ್ಚೇರಣ್ವೇಶ್ವರಾ ಜಲನಿಧೇರಿವ ಜಾತಮಾತ್ರಃ"  
ಮಾಧಂ ೪-೪೭.

ಜಾತರೂಪ ಜಾತರೂಪ (ನಂ) 1. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ಪ್ರಶಸ್ತಂ  
ಜಾತಮ್-ಪ್ರಶಂಸಾಃ "ರೂಪಮ್" (೪-೩-೬೬). "ಜಾತರೂಪೇಣ  
ಕಲ್ಯಾಣಿ ಮಣಿಃ ಸಂಯೋಗಮರ್ಹತಿ" ಮಾಲಂ ೪-೧೮.  
2. ದತ್ತೂರಿಗಿಡ. (ವಿಂ) 3. ರಮಣೀಯವಾದ, ಸುಂದರ  
ವಾದ. 4. ಸುವರ್ಣಮಯವಾದ, ಚಿನ್ನದಿಂದ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ.

ಜಾತವೇದಸ್ ಜಾತವೇದಸ್ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಜಾತಂ  
ಸಂಜ್ಞಾಜಾತಂ ವಿದದತಿ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ-ವಿದಲ್ (ಲಾಭೇ) "ಅಸುನ್"  
(ತಂ ೪-೧೮೯). "ಜ್ವಲತಸ್ತವ ಜಾತವೇದಸಃ ಸತತಂ ವೈರಿ-



ಕೃತಸ್ಯ ಚೇತಸಿ" ಕಿರಾಂ ೨-೨೪. 2. ಪರಮೇಶ್ವರ.  
ಜಾತಾನಿ ಸರ್ವಾಣಿ ಕಾರಣತ್ವೇನ ವಿನಂದಂತಿ ಯಮ್.  
ಜಾತವೇಪಥ ಜಾತವೇಪಥಂ (ವಿಂ) ನಡುಕುಟ್ಟಿದ, ನಡುಗು  
ತ್ತಿರುವ. ಜಾತೋ ವೇಪಥಯಸ್ಯ.  
ಜಾತಶ್ರಮ ಜಾತಶ್ರಮಂ (ವಿಂ) ಬಳಲಿದ, ಆಯಾಸಗೊಂಡ,  
ಜಾತ: ಶ್ರಮೋ ಯಸ್ಯ.  
ಜಾತಸ್ಪೃಹ ಜಾತಸ್ಪೃಹಂ (ವಿಂ) ಆಸೆಯುಂಟಾಗಿರುವ, ಆಸೆ  
ಹುಟ್ಟಿರುವ. ಜಾತಾ ಸ್ಪೃಹಾ ಯಸ್ಯ.  
ಜಾತಹಾರಿಣಿ ಜಾತಹಾರಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುಟ್ಟಿದ ಕೂಡಲೆ  
ಶಿಶುಗಳನ್ನು ಅಪಹರಿಸುವ ರಾಕ್ಷಸಿ.  
ಜಾತಹಾರ್ಡ್ ಜಾತಹಾರ್ದಂ (ವಿಂ) ಪ್ರೀತಿಯುಂಟಾಗಿರುವ,  
ವಿಶ್ವಾಸಹುಟ್ಟಿದ. ಜಾತಂ ಹಾರ್ದಂ ಯಸ್ಯ. "ಅಮರ್ಷಶೂನ್ಯೇನ  
ಜನಸ್ಯ ಜನ್ತುನಾ ನ ಜಾತಹಾರ್ದೇನ ಚ ವಿದ್ವಿಷಾದರ:" ಕಿರಾಂ  
೧-೩೩.  
ಜಾತಾಪತ್ಯಾ ಜಾತಾಪತ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಹೆತ್ತ  
ಹೆಂಗಸು. ಜಾತಾನಿ ಅಪತ್ಯಾನಿ ಯಸ್ಯಾ:  
ಜಾತಾಭಿಷಂಜ ಜಾತಾಭಿಷಂಜಂ (ವಿಂ) ಅವಮಾನಗೊಂಡ,  
ಪರಾಭವವನ್ನು ಹೊಂದಿದ. ಜಾತ: ಅಭಿಷಂಜ: ಯಸ್ಯ.  
"ಜಾತಾಭಿಷಂಜೋ ನೃಪತಿರ್ನಿಷಂಜಾದುದ್ಭುತಮೇಷತ್ ಪ್ರಸಮೋದ್ಭುತಾರಿ:"  
ರಘುಂ ೨-೩೦.  
ಜಾತಾಮರ್ಷ ಜಾತಾಮರ್ಷಂ (ವಿಂ) ಕುಪಿತನಾದ, ಕೋಪ  
ಗೊಂಡ. ಜಾತೋಽಮರ್ಷೋ ಯಸ್ಯ.  
ಜಾತಾಸ್ಯ ಜಾತಾಸ್ಯಂ (ವಿಂ) ಶ್ರದ್ಧೆಯುಂಟಾಗಿರುವ, ಕಾರ್ಯ  
ದಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವಾಸವುಳ್ಳ. ಜಾತಾ ಆಸ್ಯಾ ಯಸ್ಯ.  
ಜಾತಿ ಜಾತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜನ್ಮ, ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟುವುದು.  
ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತವಿ) ಅಧಿಂ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪).  
"ವೇದಾಮ್ಯಾಸೇನ ಸತತಂ ಶೌಚೇನ ತಪಸೇವ ಚ | ಅದ್ರೋಹೇಣ ಚ  
ಭೂತಾನಾಂ ಜಾತಿಂ ಸ್ಮರತಿ ಪೌರ್ವಿಕೀಮ್" ಮನುಂ ೪-೧೪೮.  
ಅನವರತವೇದಾಭ್ಯಾಸ ಶೌಚ ತಪಸ್ಸು ಅಹಿಂಸೆ ಇವು  
ಗಳಿಂದ ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ಪೂರ್ವಜನ್ಮಗಳ ಸ್ಮರಣೆಯುಂಟಾಗುವುದು.  
ಹೀಗೆ ಪೂರ್ವಜನ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಅನುಭವಿಸಿದ ಗರ್ಭ  
ವಾಸ ಜನನ ಮರಣ ಮೊದಲಾದ ಸಂಕಷ್ಟಗಳ ಸ್ಮರಣೆ  
ಯುಂಟಾಗಿ ಸಂಸಾರದಲ್ಲಿ ಪೈರಾಗ್ನಿ ಹುಟ್ಟಿ ಯಾವಾಗಲೂ  
ವೇದಾಭ್ಯಾಸನಿರತನಾಗಿ ಬ್ರಹ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಹೊಂದಿ ಶಾಶ್ವತ  
ವಾದ ಪರಮಾನಂದರೂಪವಾದ ಮೋಕ್ಷಸಾಮ್ರಾಜ್ಯ  
ವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವನು. "ಪೌರ್ವಿಕೀಂ ಸಂಸ್ಮರನ್ ಜಾತಿಂ  
ಬ್ರಹ್ಮವಾಚ್ಯಸ್ಯತೇ ಪುನಃ | ಬ್ರಹ್ಮಾಮ್ಯಾಸೇನ ಚಾಜಲಮನಂತಂ  
ಸುಖಮಶ್ನುತೇ" ಮನುಂ ೪-೧೪೯. 2. ಸಾಮಾನ್ಯ, ಸಮಾ

ನಾಕಾರವಾದ ಬುದ್ಧಿ (ಜ್ಞಾನ) ಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ  
ವ್ಯಕ್ತಿಗತವಾದ ಒಂದು ಧರ್ಮ. ಸಮಾನಪ್ರಸವಾತ್ಮಿಕಾ  
ಜಾತಿ: ಇತಿ ಗೌತಮ: | ಸಮಾನ: ಸಮಾನಾಕಾರಕ: ಪ್ರಸವೋ  
ಬುದ್ಧಿಜನನಮಾತ್ಮಾ ಸ್ವರೂಪಂ ಯಸ್ಯಾ: | 3. ಮನುಷ್ಯತ್ವ  
ಗೋತ್ವ ಮೊದಲಾದ ಜಾತಿ.

ವೈಯಾಕರಣಿಕ ಜಾತಿಲಕ್ಷಣ:

(1) "ಆಕೃತಿಬ್ರಹ್ಮಣಾ ಜಾತಿ:" ಅನುಗತಸಂಸ್ಥಾನವ್ಯಕ್ತಚೇ-  
ತಯಃ | ಗೃಹ್ಯತೇಜೇನೇತಿ ಗ್ರಹಣಮ್ | ಆಕೃತಿ: ಗ್ರಹಣಂ ಯಸ್ಯಾ: |  
ಮನುಷ್ಯ ಗೋವು ಘಟ ಮೊದಲಾದ ಆಯಾವ್ಯಕ್ತಿಗಳಲ್ಲಿ  
ಏಕರೂಪವಾದ ಆಯಾ ಆಕಾರಗಳು ತೋರಿಬರುವುದರಿಂದ  
ಮನುಷ್ಯತ್ವ ಗೋತ್ವ ಘಟತ್ವಾದಿಗಳು ಜಾತಿಗಳು.

(2) "ಲಿಂಗಾಣಾಂ ಚ ನ ಸರ್ವಭಾಕ್ | ಸಕೃದಾತ್ಮಾ-  
ನಿರ್ಗ್ರಾಹ್ಯಾ" | ಅಸರ್ವಲಿಂಗತ್ವೇ ಸತಿ ಏಕಸ್ಯಾಂ ವ್ಯಕ್ತೌ  
ಕಥನಾತ್ ವ್ಯಕ್ತಚಿಂತರೇ ಕಥನಂ ವಿನಾಪಿ ಜಾತಿ: ಸುಗ್ರಹಾ  
ಇತ್ಯರ್ಥ: | ಬ್ರಾಹ್ಮಣತ್ವ ಕ್ಷತ್ರಿಯತ್ವಾದಿ ಜಾತಿಗಳು ಆಕಾರ  
ದಿಂದ ತಿಳಿಯಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ಇದು ಎರಡನೆಯ  
ಜಾತಿಲಕ್ಷಣ. ಲಿಂಗತ್ರಯದಲ್ಲಿಯೂ ಪ್ರಯೋಗ  
ವಿಲ್ಲದ ಒಬ್ಬ ವ್ಯಕ್ತಿಯನ್ನು ಒಂದು ಸಲ ಹೇಳಿದ ಮಾತ್ರ  
ದಿಂದಲೇ ಅಂತಹ ಎಲ್ಲಾ ವ್ಯಕ್ತಿಗಳೂ ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯ  
ಲ್ಪಡುವವರಾದುದರಿಂದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣತ್ವ ಕ್ಷತ್ರಿಯತ್ವ ಮೊದಲಾದವು  
ಜಾತಿಗಳು.

(3) "ಗೌತ್ರಂ ಚ ಚರಣೈ: ಸಹ" | ಅಪತ್ಯಪ್ರತ್ಯಯಾಂತ:  
ಶಾಖಾಧೇತೃವಾಚೀ ಚ ಜಾತಿಕಯಃ ಲಬ್ಧೇ ಇತ್ಯರ್ಥ: | ಸಮಾನ  
ವಾದ ಆಕಾರದಿಂದ ತಿಳಿಯಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ ಮತ್ತು  
ಲಿಂಗತ್ರಯದಲ್ಲಿಯೂ ಪ್ರಯೋಗವಿರುವ ಅಪತ್ಯಪ್ರತ್ಯ  
ಯಾಂತವಾದ ಮತ್ತು ಶಾಖಾಧೇತೃವಾಚಕವಾದ ಶಬ್ದ  
ಗಳೂ ಜಾತಿಗಳು. ಈ ಮೇಲಿನ ಮೂರು ಲಕ್ಷಣಗಳಿರುವ  
ಶಬ್ದಗಳಿಗೆ ಜಾತಿಪ್ರಾಯುಕ್ತವಾದ ಕಾರ್ಯವು ಬರುವುದು.

ತದಾ: ಕ್ರಮವಾಗಿ ಮೊದಲನೆಯ ಲಕ್ಷಣಕ್ಕೆ ತದಿ |  
ಎರಡನೆಯ ಲಕ್ಷಣಕ್ಕೆ ವೃಷಲಿ | ಮೂರನೆಯ ಲಕ್ಷಣಕ್ಕೆ  
ಔಪಗವಿ | ಕಠಿ |

ಜಾತಿಕೋಶ ಜಾತಿಕೋಶಂ (ನಂ) 1. ಜಾ (ಯಿ)ಕಾಯಿ. ಜಾತಿ:  
ಕೌಶಮಿವ | ಇದು ಸಂಬಾರಕ್ಕೂ ಔಷಧಕ್ಕೂ ಉಪ  
ಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವುದು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕೌಶಿ -ಕೋಶೀ.  
2. ಜಾ (ಯಿ) ಪತ್ರಿ.

ಜಾತಿವಿವರ ಜಾತಿವಿವರಂ (ಪುಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾದಿ ಜಾತಿಗಳಿಗೆ  
ವಿಹಿತವಾದ ಧರ್ಮ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ವಿವರ" ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ].



**ಜಾತಿವ್ಯಂಸ ಜಾತಿಧ್ಯಂಸ** (ಪುಂ) ಜಾತಿಯ ನಾಶ, ಜಾತಿಯು ಅಳಿದುಹೋಗುವುದು.

**ಜಾತಿಪರಿವೃತ್ತಿ ಜಾತಿಪರಿವೃತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಾತಿಯ ಬದಲಾವಣೆ, ಮತಾಂತರಹೊಂದುವುದು. ಜಾತೇ: ಪರಿವೃತ್ತಿ: |

**ಜಾತಿಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಜಾತಿಬ್ರಾಹ್ಮಣ** (ಪುಂ) ಜನ್ಮಮಾತ್ರದಿಂದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಾಗಿರುವವನು, ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡದಿರುವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಜಾತೀ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ: | ಬ್ರಾಹ್ಮಣಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ತಪಸ್ಸು ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಜನ್ಮ ಈ ಮೂರೂ ಇಲ್ಲದವನು ಜಾತಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನು. "ತಪ: ಶ್ರುತಂ ಚ ಯೋನಿಶ್ಚ ತ್ರಯಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ್ಯಕಾರಣಮ್ | ತಪ:ಶ್ರುತಾಭ್ಯಾಂ ಯೋ ಹೀನ: ಜಾತಿ-ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಏವ ಸ: |

**ಜಾತಿಭ್ರಂಶ ಜಾತಿಭ್ರಂಶ** (ಪುಂ) ಜಾತಿಯನಾಶ, ಜಾತಿಯು ಅಳಿಯುವುದು. ಜಾತೇ: ಭ್ರಂಶ: | "ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ರುಜ: ಕೃತ್ವಾ ಘಾತಿರಧೇಯಮವಯೋ: | ಜೇಹ್ಯಾಂ ಚ ಮೇಘುನಂ ಪುನಿ ಜಾತಿಭ್ರಂಶಕರಂ ಸ್ಮೃತಮ್" ಮನುಂ ೧೧-೬೭ |

**ಜಾತಿಭ್ರಷ್ಟ ಜಾತಿಭ್ರಷ್ಟ** (ವಿಂ) ಜಾತಿಯಿಂದ ಚ್ಯುತನಾದವನು, ಜಾತಿಯನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದವನು. ಜಾತೀ ಭ್ರಷ್ಟ: |

**ಜಾತಿಮತ್ ಜಾತಿಮತ್** (ವಿಂ) ಉತ್ತಮಜನ್ಮವುಳ್ಳ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಪ್ರಶಸ್ತಾ ಜಾತಿಯಸ್ಯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಮತೀ -ಮತೀ.

**ಜಾತಿಮಹ ಜಾತಿಮಹ** (ಪುಂ) ಜನ್ಮದಿನೋತ್ಸವ, ಹುಟ್ಟಿದ ಹಬ್ಬ.

**ಜಾತಿಮಾತ್ರ ಜಾತಿಮಾತ್ರ** (ನಂ) ಹುಟ್ಟು ಮಾತ್ರ, ವಿದ್ಯೆಯಿಲ್ಲದ ಜನ್ಮಮಾತ್ರ, ಜಾತಿಯ ಸಂಪ್ರದಾಯವಿಲ್ಲದ ಜನ್ಮ. ಜಾತಿರೇವ | "ಜಾತಿಮಾತ್ರೇಣ ಕಿಂ ಕಶ್ಚಿದನ್ಯತೇ ಪೂಜ್ಯತೇ ಕ್ವಚಿತ್" ಹಿತೋ ೧-೪೮ |

**ಜಾತೀಲಕ್ಷಣ ಜಾತೀಲಕ್ಷಣ** (ನಂ) ಜಾತಿಯ ಗುರುತು.

**ಜಾತಿವಾಚಕ ಜಾತಿವಾಚಕ** (ವಿಂ) ಜಾತಿಯನ್ನು ಹೇಳುವ ಶಬ್ದ. ಜಾತಿರೂಪತೇಜೇನ - ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |

**ಜಾತಿವೈರ ಜಾತಿವೈರ** (ನಂ) ಸಹಜವಾದ ದ್ವೇಷ, ಹುಟ್ಟು ವೈರ. ಜಾತೀ ವೈರಮ್ |

**ಜಾತಿವೈಲಕ್ಷಣ್ಯ ಜಾತಿವೈಲಕ್ಷಣ್ಯ** (ನಂ) ಜಾತಿಯಲ್ಲಿ ಸಮಾನತೆಯಿಲ್ಲದಿರುವುದು, ಜಾತಿಯ ಸಂಪ್ರದಾಯದಲ್ಲಿ ಏಕತೆಯಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ಜಾತೇ: ವೈಲಕ್ಷಣ್ಯಮ್ ವಿಸಂವಾದ: |

**ಜಾತಿಶಬ್ದ ಜಾತಿಶಬ್ದ** (ಪುಂ) ಜಾತಿಯನ್ನು ಹೇಳುವ ಶಬ್ದ.

**ಜಾತಿಸಾರ ಜಾತಿಸಾರ** (ಪುಂ) ಜಾ (ಯಿ) ಕಾಯಿ.

**ಜಾತಿस्ಮರ ಜಾತಿಸ್ಮರ** (ವಿಂ) ಜನ್ಮಾಂತರ ಸ್ಮರಣೆಯುಳ್ಳ, ಪೂರ್ವಜನ್ಮವನ್ನು ಸ್ಮರಿಸುವ. ಜಾತಿ ಪೂರ್ವಜನ್ಮವೃತ್ತಾಂತಂ ಸ್ಮರತಿ - ಸ್ಮ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಶುಭೇನ ಕರ್ಮಣಾ ತೇನ ಜಾತಾ ಜಾತಿಸ್ಮರಾ ಮೃಗಾ: | ತ್ರಾಸಾನು-ತ್ಪಾದ ಸಂವಿಗ್ನಾ ರಮ್ಯೇ ಕಾಲಜ್ವರೇ ಗಿರೋ" ಹರಿವಂ |

**ಜಾತೀ ಜಾತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜಾಜಿಗಿಡ. ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಕ್ತಿವ್" (೩-೩-೧೭೪) | ವಾ "ಜಿಪ್" (ಗಂ ೪-೨-೪೫) | 2. ಜಾಜಿಹೂವು. "ಪುಣೇ ಜಾತೀಪ್ರಭುತಯ: ಸ್ವಲಿಂಗಾ: ಅಮಂ |

**ಜಾತೀಕೋಶ ಜಾತೀಕೋಶ** (ಪುಂ) -ಫಲ -ಫಲ (ನಂ) ಜಾ (ಯಿ) ಕಾಯಿ. "ಜಾತೀಫಲಾಗುರುವಾಪಿಪ್ಪಲ್ಯಶ್ಚಂದನಂ ಚ ಭಗೋ: " ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೬-೩೦ |

**ಜಾತೀಯ ಜಾತೀಯ** (ವಿಂ) ಜಾತಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಯಾವುದಾದರೊಂದು ಪಂಗಡದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಜಾತೀ ಭವ: "ಜ:" (೪-೪-೯) | ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಇದು ಸಮಾಸಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ ಬರುವುದು. ಸಜಾತೀಯ:, ವಿಜಾತೀಯ:, ಬ್ರಾಹ್ಮಣ-ಜಾತೀಯ:, ಮಹಾಜಾತೀಯ: ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಜಾತೀಯಕ ಜಾತೀಯಕ** (ವಿಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ, ಒಂದು ವಿಧದ, ಒಂದು ಬಗೆಯ.

**ಜಾತು ಜಾತು** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಒಂದುವೇಳೆ, ಯಾವುದಾದರೊಂದು ಸಮಯದಲ್ಲಿ. ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ತುನ್" ಬಾಹುಂ | ಪೃಷೋಂ | "ನ ಜಾತು ವೇನಾಯಕಮೇಕಮುಢ್ಢತಂ ವಿಭಾಣ-ಮನ್ವಾಪಿ ಪುನ: ಪ್ರರೋಹತಿ" ಮಾಘಂ ೧-೬೦ | "ಗೌರವಾಘದಪಿ ಜಾತು ಮನ್ವಿತ್ರಾಣಾಂ ದರ್ಶನಂ ಪ್ರಕೃತಿಕಾಡ್ವಕ್ಷಿತಂ ದದೌ" ರಘುಂ ೧೯-೭ | 2. ಯಾವಾಗಲೂ, ಯಾವ ಸಮಯದಲ್ಲೂ. "ತತ್ರಾನಿಶಂ ನಿಷಣ್ಣಾಸ್ತೇ ಜಾನಂತೇ ಜಾತು ನ ಶ್ರಮಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೭೭ | 3. ಗರ್ಹಣ, ನಿಂದೆ, ಬೈಗಳು. "ಜಾತು ತತ್ರಮವಾನ್ ವೃಷಲಂ ಯಾಜಯತಿ" |

**ಜಾತುಕ ಜಾತುಕ** (ಪುಂ) 1. ಹಿಂಗಿನಮರ, ಹಿಂಗನ್ನು ತೆಗೆಯುವ ಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಹಿಂಗು.

**ಜಾತುಧಾನ ಜಾತುಧಾನ** (ಪುಂ) ರಾಕ್ಷಸ. "ಯಾತುಧಾನ" ಪದದ ರೂಪಾಂತರ. ಉತ್ತರದೇಶದವರ ಉಚ್ಚಾರಣೆ.

**ಜಾತುಷ ಜಾತುಷ** (ವಿಂ) ಅರಗಿನಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಜತುನೋ ವಿಕಾರ: "ಅಙ್" ಷುಗಾಗಮಶ್ಚ (೪-೩-೧೩೮) |

**ಜಾತೇಷಿ ಜಾತೇಷಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಿಶುವು ಹುಟ್ಟಿದ ಕೂಡಲೆ ಮಾಡುವ ಒಂದು ಯಾಗ. ಜಾತೇ ಪುತ್ರಜನನೇ ಇಷ್ಟಿ: |

**ಜಾತೋಷ ಜಾತೋಷ** (ಪುಂ) ಪ್ರಾಯದ ಎತ್ತು (ಹೋರಿ), ಜಾತ: ಪ್ರಾಪ್ತದಮ್ಯಾವಸ್ಥಾ: ಉಕ್ತಾ "ಠವ್" (೪-೪-೭೭) |



**ಜಾತ್ಯ ಜಾತ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ಜಾತಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಸತ್ಕುಲಪ್ರಸೂತ. 2. ಶ್ರೇಷ್ಠ, ಉತ್ತಮ. ಜಾತೌ ಭವ: "ಯತ್" (೪-೩-೪೪)। "ಕರ್ಮೋದಾರಂ ಕೀರ್ತಯೇ ಕರ್ತುಕಾಮಾನ್ ಕಿ ವಾ ಜಾತ್ಯಾ: ಸ್ವಾಮಿನೋ ಹೇಪಯಂತಿ" ಮಾಘಂ ೧೮-೨೩। "ಜಾತ್ಯಸ್ತೇನಾಭಿಜಾತೇನ ಶೂರ: ಶೌರ್ಯವತಾ ಕುಶ:" ರಘುಂ ೧೭-೪।

**ಜಾತ್ಯನ್ಧ ಜಾತ್ಯಂಧ** (ಪುಂ) ಹುಟ್ಟುಕುರುಡ. ಜಾತೌ ಜನನ-ಕಾಲ ಏವ ಅನ್ಧ:। "ಅನಂಶೌ ಕಲಿಬಪತಿತೌ ಜಾತ್ಯನ್ಧವಧಿರೌ ತಥಾ" ಮನುಂ ೯-೨೦೧।

**ಜಾನ ಜಾನ** (ಪುಂ) 1. ಜನ್ಮ, ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟು. ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮)। (ನಂ) 2. ಜನರ ಸಮೂಹ. ಜನಾನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಅಞ್" (೪-೨-೩೭)। "ಆಜಾನಪಾವನಕ್ಷಿರಾಂ ವೃಷಾನ್ದವಿಧಾಯಿನಿಮ್। ಶ್ರುತಿಪ್ರಣಯಿನಿಂ ಸೌಜ್ಯಮಾಪಗಾಮಾಪ ಗಾಮಿವ" ಚಂ ರಾಂ। (ವಿಂ) 3. ಜನರ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಜನಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ಜಾನಕ ಜಾನಕ** (ವಿಂ) 1. ತಂದೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಜನಕಸ್ಯ ಪಿತು: ಇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)। 2. ಜನಕ ಮಹಾರಾಜನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಜನಕಸ್ಯ ತನ್ನಾಮರಾಜ: ಇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕೀ-ಕೀ. 3. ಸಿ ತಾದೇವಿ, ಶ್ರೀರಾಮನ ಪತ್ನಿ, ಜನಕಮಹಾರಾಜನ ಪತ್ನಿ. ಜನಕಸ್ಯಾಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ "ಅಞ್" (೪-೧-೯೨)। "ಛೀಪ್" (೪-೧-೧೪)।

**ಜಾನಕಿನಾಥ ಜಾನಕೀನಾಥ, -ಪತಿ -ಪತಿ, -ಪ್ರಿಯ -ಪ್ರಿಯ, -ವಲ್ಲಭ -ವಲ್ಲಭ** (ಪುಂ) ಸೀತಾದೇವಿಯ ಪತಿ, ಜಾನಕಿಯ ಇನಿಯ. ಜಾನಕಯಾ: ನಾಥ: ಪತಿ: ಪ್ರಿಯ: ವಲ್ಲಭೋ ವಾ।

**ಜಾನಕೀಪರಿಣಯ ಜಾನಕೀಪರಿಣಯ** (ಪುಂ) ಸೀತಾ ಕಲ್ಯಾಣದ ಒಂದು ನಾಟಕ.

**ಜಾನತ್ ಜಾನತ್** (ವಿಂ) ತಿಳಿಯುವ, ಅರಿಯುವ. ಜಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬)। ಜಾನತೌ ಜಾನತೀ. "ನಿಜಮಿತಿ ರತಿಬಂಧೋ-ಜಾನಿತಿಮುತ್ತರೀಯಂ ಪರಿಹಸತಿ ಸಖಿ ಸ್ತ್ರೀಮಾದದಾನಾಂ ದಿನಾದೌ" ಮಾಘಂ ೧೧-೪೨।

**ಜಾನಪದ ಜಾನಪದ** (ಪುಂ) 1. ದೇಶದ ನಿವಾಸಿ, ದೇಶದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವವನು, ದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ಬೆಳೆದವನು. ಜನಪದೇ ಭವ: "ಅಞ್" (೪-೧-೮೬)। "ದೇಯಂ ಚೌರಹೃತಂ ದ್ವಯಂ ರಾಜಾ ಜಾನಪದಾಯ ತು। ಅದದದ್ವಿ ಸಮಾಪ್ನೋತಿ ಕಿಲ್ಬಿಷಂ ಯಸ್ಯ ತಸ್ಯ ತತ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೩೬। 2. ಜನ, ಮನುಷ್ಯ. ಜಾನೇನ ಉತ್ಪತ್ತಯಾ ಪದ್ಯತೇ - ಪದ (ಗತೀ)

"ಅಞ್"। 3. ದೇಶ. ಜನಪದ ಏವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಞ್"। "ಭವೇಜ್ಜನಪದೋ ಜಾನಪದೋಽಪಿ ಜನದೇಶಯೋ:" ಮೇದಿಂ। 4. ಕರ, ತೆರಿಗೆ. (ವಿಂ) 5. ದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. 6. ದೇಶಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. "ಜಾತಿಜಾನಪದಾನ್ ಧರ್ಮಾನ್ ಶ್ರೇಣಿಧರ್ಮಾಶ್ಚ ಧರ್ಮವಿತ್" ಮನುಂ ೮-೪೧। 7. ದೇಶದಿಂದ ಬಂದಿರುವ. ಜನಪದೇಮ್ಯ: ಆಗತ: "ಅಞ್" (೪-೩-೭೪)। "ನಿವಾರ-ಪಾಕಾದಿ ಕಡ್ಙ್ಗರೀಯೇರಾಮೃಶ್ಯತೇ ಜಾನಪದೇನ ಕಂಚಿತ್" ರಘುಂ ೪-೯। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪದಿ-ಪದೀ. 8. ದೇಶದವೃತ್ತಿ, ದೇಶದ ಜೀವನ. ಜನಪದೇ ಭವಾ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೪೨)। "ಜಾನಪದಿ ವೃತ್ತಿಶ್ಚೇತ್" ಸಿಂ ಕೌಂ। 9. ಶರದ್ವೃಂದ ಯುಷಿಯ ತಪೋಭಂಗಕ್ಕಾಗಿ ಇಂದ್ರನಿಂದ ಕಳುಹಲ್ಪಟ್ಟ ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಸರಸಿ.

**ಜಾನಪದಿಕ ಜಾನಪದಿಕ** (ವಿಂ) ಜನಪದಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ದೇಶಸಂಬಂಧವಾದ.

**ಜಾನವಾದಿಕ ಜಾನವಾದಿಕ** (ವಿಂ) ಜನರ ಮಾತನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅರಿತಿರುವ, ಲೋಕವಾದವನ್ನು ತಿಳಿದು ಹೇಳಲು ಜಾಣನಾದ. ಜನವಾದೇ ಸಾಧು: "ಠಕ್" (೪-೪-೧೦೨)।

**ಜಾನಿ ಜಾನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪತ್ನಿ. ಜಾಯಾ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಬಹುವ್ರೀಹಿ ಸಮಾಸಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ "ನಿತ್" (೪-೪-೧೩೪) ಆದೇಶ ಬಂದು ಈ ರೂಪವಾಗುವುದು. "ಅನನ್ಯಜಾನೇ: ಸೇವಾಸೀದಸ್ಮಾ-ಜ್ಜಾಯಾ ಹಿರಣ್ಮಯಿ" ರಘುಂ ೧೪-೬೧।

**ಜಾನು ಜಾನು** (ನಂ) ಮಂಡಿ, ತೊಡೆ ಮತ್ತು ಮೊಳಕಾಲುಗಳ ಸಂಧಿ. ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಞ್" (೩ಂ ೧-೩)। "ಪ್ರೀತ್ಯಾ ನಿಯುಕ್ತಾನ್ ಲಿಹತೀ ಸ್ತನನ್ಧಯಾನ್ ನಿಗೃಹ್ಯ ಪಾರಿಮುಖೇನ ಜಾನುನೋ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೪೦।

**ಜಾನುಕ ಜಾನುಕ** (ನಂ) 1. ಮಂಡಿ. ಜಾನು ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೪-೪-೨೯)। "ಜಾನುಕಪಿಚ್ಛೇ ಚತುರಜ್ಞಲೇ ಚ ಪಾದೌ ಚ ತತ್ಕುಲ್ಯೌ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೪೮-೧೭। (ವಿಂ) 2. ಮಂಡಿಯೂರಿ ನಿಂತಿರುವವನು, ಮಂಡಿಗಳ ಮೇಲೆ ಭಾರಬಿಟ್ಟು ನಿಂತಿರುವವನು. "ಜಾನುಮ್ಯಾಂ ಜಾನುಕಸ್ತಿಷ್ಠನ್ ಅಷ್ಟಗ್ರಾಸೋ ಮುನಿವ್ರತೀ" ವೈಜಂ।

**ಜಾನುಜಙ್ಗ ಜಾನುಜಙ್ಗ** (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ರಾಜ.

**ಜಾನುದಙ್ಗ ಜಾನುದಙ್ಗ** (ವಿಂ) ಮಂಡಿಯ ಪ್ರಮಾಣದ, ಮಂಡಿಯವರೆಗಿನ ಅಳತೆಯುಳ್ಳ. ಜಾನು ಪ್ರಮಾಣಮಸ್ಯ "ದಙ್ಗ" (೪-೨-೩೭)।

**ಜಾನುದ್ವಯಸ ಜಾನುದ್ವಯಸ** (ವಿಂ) "ಜಾನುದಙ್ಗ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಜಾನು ಪ್ರಮಾಣಮಸ್ಯ "ದ್ವಯಸ" (೪-೨-೩೭)। "ಮಾತ್ರ" (೪-೨-೩೭)। -ಮಾತ್ರಮ್ -ಮಾತ್ರಮ್.



**ಜಾನುಪ್ರಹಿತಿಕ ಜಾನುಪ್ರಹಿತಿಕ** (ವಿಂ) ಮಂಡಿಯ ಹೊಡೆತದಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಜಾನುಪ್ರಹಿತೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೯)।

**ಜಾನುವಿಜಾನು ಜಾನುವಿಜಾನು** (ನಂ) ಖಡ್ಗಯುದ್ಧದ ಒಂದು ಭೇದ. ಖಡ್ಗಯುದ್ಧವು ಮೂವತ್ತೆರಡು ಬಗೆ. [ವಿವರಕ್ಕೆ ಹರಿವಂಶದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].

**ಜಾಬಾಲ ಜಾಬಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಸತ್ಯಕಾಮನೆಂಬ ಒಬ್ಬ ಋಷಿ. ಜಾಬಾಲಾಢಾ ಅಯಮ್ "ಅಢ್" (೪-೩-೧೨೦)। 2. ಕುರುಬ, ಕುರಿಸಾಕೆ ಜೀವಿಸುವವನು. ಜವಮಲತಿ-ಅಲ (ಭೂಷಣಾದಿ) "ಅಢ್" (೩-೨-೧)। ವಬಯರಭೇದ: ಜಬಾಲೋಜ: ತಸ್ಯಾಯಮ್। "ಜಾಬಾಲ: ಸ್ಯಾದಜಾಜಿವ:" ಅಮಂ।

**ಜಾಬಾಲಿ ಜಾಬಾಲಿ** (ಪುಂ) ಜಾಬಾಲಿ ಋಷಿ. ಜಾಬಾಲಸ್ಯಾಪತ್ಯಂ "ಇಕ್" (೪-೧-೯೫)। [ಈ ಋಷಿಯು ದಶರಥ ಮಹಾರಾಜನ ಆಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಎಂಟು ಮಂದಿ ಪ್ರಧಾನ ಋತ್ವಿಜ್ಞಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. ಭರತನು ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು ಪುನಃ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಕರೆತರುವ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ಚಿತ್ರಕೂಟಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಅನೇಕ ವಿಧವಾಗಿ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದರೂ ಶ್ರೀರಾಮನು ಹದಿನಾಲ್ಕು ವರ್ಷಗಳಕಾಲ ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿದ್ದು ಪಿತೃವಾಕ್ಯ ಪರಿಪಾಲನ ಮಾಡಿದ ಹೊರತು ಊರಿಗೆ ಹಿಂತಿರುಗುವುದಿಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳಿದಾಗ ಈ ಜಾಬಾಲಿ ಋಷಿಯೂ ದೃಢವಾದ ಅಭಿನಿವೇಶದಿಂದ ನಾನಾ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು ಹಿಂತಿರುಗಿಸಲು ಯತ್ನಿಸಿ ವಿಫಲನಾದನು.]

**ಜಾಮದಗ್ನಿ ಜಾಮದಗ್ನಿ** (ಪುಂ) ಜಮದಗ್ನಿ ಋಷಿಯ ಮಗ, ಪರಶುರಾಮ. ಜಮದಾನೇರಪತ್ಯಮ್ "ಯಕ್" (೪-೧-೧೦೫)। "ತ್ರಿ:ಸಾತಕೃತ್ವೋ ಜಗತಿಪತಿನಾಂ ಹಂತಾ ಗುಹ್ಯಸ್ಯ ಸ ಜಾಮದಗ್ನಿ:" ಕಿರಾಂ ೩-೧೮। [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಪರಶುರಾಮ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].

**ಜಾಮಾತೃ ಜಾಮಾತೃ** (ಪುಂ) ಅಳಿಯ, ಮಗಳ ಗಂಡ. ಜಾಯಾ ಮಿಮೀತೇ-ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ತೃಕ್" (೩೦ ೨-೯೫)। ನಿಪಾಂ। "ಅವಾಪ್ಯ ಜಾಮಾತರಮಾದಿಪೂರ್ಣಂ ಜಗತ್ಪ್ರತೀಕ್ಷ್ಯತ್ವಮವಾಪ ಜಾಮ್ಬವಾನ್" ಯಾದಂ ೧೪-೬೦।

**ಜಾಮಿ ಜಾಮಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭಗಿನಿ, ತಂಗಿ, ಸಹೋದರಿ. ಜಮು (ಅದನೇ) "ಇಢ್" ಬಾಹುಂ। "ಜಾಮಿಹರಣಜನಿತಾ-ನುಶಯ: ಸಮುದಾಚಾರ ನಿಜ ಏವ ಠಕ್ಮಿಣ:" ಮಾಘಂ ೧೫-೫೩। 2. ಮಾನವತಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು, ಗೌರವದ ಹೆಂಗಸು. "ಜಾಮಿ: ಸ್ವಸೃಕುಲಸ್ತ್ರಿಯೋ:" ಅಮಂ। 3. ಮಗಳಂ. 4. ಸಮೀಪ ಬಂಧುವಾದ ಹೆಂಗಸು. 5. ಸೊಸೆ. 6. ಪತ್ನಿ. "ಜಾಮಯೋ ಯತ್ರ ಶೋಚಂತಿ. ವಿನಶ್ಯಂತ್ಯಾಶು ತತ್ಕುಲಮ್।

ನ ಶೋಚಂತಿ ತು ಯತ್ರೈತಾ ವರ್ಧತೇ ತದ್ವಿ ಸರ್ವದಾ" ಮನುಂ ೩-೫೭। ಜಾಮಯ: ಭಗಿನಿಪತ್ನೀದುಹಿತಸ್ತುಷಾಢಾ: ಇತಿ ಕುಲ್ಮಕಮದ್ವ:।

**ಜಾಮಿತ್ರ ಜಾಮಿತ್ರ** (ನಂ) ಲಗ್ನದಿಂದ ಏಳನೆಯ ಸ್ಥಾನ. "ಸಪ್ತಮಂ ದ್ವನಮಸ್ತಂ ಚ ದ್ವತಂ ಚ ಮದನ: ಸ್ಮರ:। ಕಾಮೋ ವಿವಾಹೋ ಜಾಮಿತ್ರಂ ಭಾರ್ಯೇತಿ ವಿನಿರ್ದಶಿತಮ್" ಮುಹೂಂ ದಿಂ।

**ಜಾಮಿತ್ರಗುಣ ಜಾಮಿತ್ರಗುಣ** (ಪುಂ) ಲಗ್ನದಿಂದ ಸಪ್ತಮ ಸ್ಥಾನದ ಶುದ್ಧಿ, ಸಪ್ತಮದಲ್ಲಿ ಯಾವ ಗ್ರಹವೂ ಇಲ್ಲದಿರುವುದು. "ವಿವಾಹೇ ಸ್ಯು: ಸರ್ವೇ ಮದನಸದನೇ ನೈವ ಶುಭದಾ:"। "ಅಥೌಷಧಿನಾಮಧಿಪಸ್ಯ ವೃದ್ಧೌ ತಿಥೌ ಚ ಜಾಮಿತ್ರಗುಣಾನ್ವಿತಾಯಾಮ್" ಕುರ್ಮಾಂ ೭-೧।

**ಜಾಮೇಯ ಜಾಮೇಯ** (ಪುಂ) ಸೋದರಳಿಯ, ಸಹೋದರಿಯ ಮಗ. ಜಾಮಿ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೦)।

**ಜಾಮ್ಬವ ಜಾಂಬವ** (ನಂ) ಜಂಬೂಫಲ, ನೇರಿಕೆಹಣ್ಣು. ಜಮ್ಬಾ: ಫಲಮ್ "ಅಢ್" (೪-೩-೧೬೫)।

**ಜಾಮ್ಬವತ್ ಜಾಂಬವತ್** (ಪುಂ) ಜಾಂಬವಂತ, ಋಕ್ಷರಾಜ, ಕರಡಿಗಳರಾಜ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವತೀ -ವತೀ. ಜಾಂಬವಂತನ ಮಗಳಾದ ಜಾಂಬವತಿ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಪತ್ನಿ. ನ ಜಾಮ್ಬವಂತ ಸಮರೇ ಕಂಪಯೇದರಿವಾಹಿನಿ" ರಾಮಾಂ। "ತಮಪೂರ್ವ ನರಂ ದೃಷ್ಟಾ ಧಾತ್ರೀ ಚುಕ್ರೋಶ ಭೀತವತ್। ತಚ್ಚಕ್ಷುತ್ವಾಮ್ಯದ್ರವತ್ ಕ್ರುದ್ಧೋ ಜಾಮ್ಬವಾನ್ ಬಲಿನಾಂ ವರ:"। "ಇತ್ಯುಕ್ತ: ಸ್ವಾಂ ದುಹಿತರಂ ಕನ್ಯಾಂ ಜಾಮ್ಬವತೀಂ ಮುದಾ। ಅರ್ಹಣಾರ್ಥಂ ಸ ಮಣಿನಾ ಕೃಣಾಯೋಪಜಹಾರ ಹ" ಭಾಗಂ ೧೦-೫೬-೨೧, ೩೨। "ಜರಾನಿರುದ್ಧೋಽಪಿ ಜವೇನ ಜಾಮ್ಬವಾನ್" ಯಾದಂ ೧೪-೭। "ಜಿತಾಹಿತೋ ಜಾಮ್ಬವತೀ-ನಿಷೇವಿತ:" ಯಾದಂ ೧೪-೬೬।

**ಜಾಮ್ಬನದ ಜಾಂಬೂನದ** (ಪುಂ) 1. ದತ್ತೂರಿಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ಜಾಮ್ಬನದಾಂ ಭವಮ್ "ಅಢ್" (೪-೩-೫೩)। 3. ಸ್ವರ್ಣಭರಣ, ಚಿನ್ನದ ಒಡವೆ. "ದಧಿಙ್ಗುರಭಿತಸ್ತದಿ ವಿಕಚವಾರಿಜಾಮ್ಬ ನದೇವಿನೋದಿತದಿನಕಲಮಾ: ಕೃತಠಕ್ಶಚ್ರ ಜಾಮ್ಬನದೇ:" ಮಾಘಂ ೪-೬೬।

**ಜಾಯಾ ಜಾಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪತ್ನಿ, ಹೆಂಡತಿ. ಜಾಯತೇಽಸ್ಯಾಮ್ -ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಮವಿ) "ಯಕ್" (೩೦-೪-೧೧೦)। ಪತ್ನಿಯ ಗರ್ಭವನ್ನು ಪತಿಯು ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಅವಳಲ್ಲಿ ತಾನು ಪುತ್ರ ರೂಪದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಪತಿರ್ಭಾರ್ಯಾಂ ಸಂಪ್ರವಿಶ್ಯ ಗರ್ಭಂ ಭೃತ್ವೇಹ ಜಾಯತೇ। ಜಾಯಾಽಸ್ತದ್ವಿ ಜಾಯಾತ್ವಂ ಯದಸ್ಯಾಂ ಜಾಯತೇ ಪುನ:" ಮನುಂ ೯-೮। "ಅಥ ಪ್ರಜಾನಾಮಧಿಪ: ಪ್ರಭಾತೇ ಜಾಯಾಪ್ರತಿಗ್ರಾಹಿತಗಂಧಮಾಲಯಾಮ್" ರಘುಂ ೨-೧। 2. ಕಳತ್ರಸ್ಥಾನ, ಲಗ್ನದಿಂದ ಏಳನೆಯ ಸ್ಥಾನ.



**ಜಾಯಾಜ್ಞ ಜಾಯಾಘ್ನ (ಪುಂ)** 1. ಪತ್ನಿಯ ಮರಣಸೂಚಕ ವಾದ ಲಕ್ಷಣವುಳ್ಳ ಪುರುಷ. ಜಾಯಾಂ ಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) "ಡಕ್" (೩-೨-೪೨) | ಜಾಯಾಘ್ನೋ ನಾ | 2. ಮೈಯಲ್ಲಿ ಕಾಣುವ ಹುಟ್ಟುಮಚ್ಚೆ, ಸಂಗಾತಿ. (ವಿಂ) 3. ಹೆಂಡತಿಯನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವ.

**ಜಾಯಾಜೀವ ಜಾಯಾಜೀವ (ಪುಂ)** ಪತ್ನಿಯ ಸಂಪಾದನೆಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವ ನಟ, ಹೆಂಡತಿಯ ವೃತ್ತಿಯನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿರುವ ನಟ. ಜಾಯಯಾ ತನ್ನತನವೃತ್ತಯಾ ಜೀವತಿ-ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣ) "ಕ." (೩-೧-೧೩೪) | ಪತ್ನಿಯ ಸಂಗೀತ ನರ್ತನ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಬಂದ ಸಂಪಾದನೆಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ಜಾಯಾನುಜೀವಿನ್ ಜಾಯಾನುಜೀವಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ನಟ. 2. ಬಕಪಕ್ಷಿ. ಜಾಯಯಾ ಅನುಜೀವತಿ-ಅನು+ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣ) "ಣಿತಿ:" (೩-೧-೧೩೪) | "ಜಾಯಾನುಜೀವಿ ಪುಂಸಿ ಸ್ಯಾನ್ನತೇ ಚ ಬಕಪಕ್ಷಿಣಿ" ಮೇದಿಂ | 3. ದರಿದ್ರ, ಬಡವ.

**ಜಾಯಾಪತಿ ಜಾಯಾಪತಿ (ಪುಂ ಡ್ವಿಂ ವಂ)** ದಂಪತಿಗಳು, ಪತಿ ಪತ್ನಿಯರು, ಗಂಡ ಹೆಂಡತಿಯರು. ಜಾಯಾ ಚ ಪತಿಶ್ಚ | "ಉಮೌ ವಿರೋಧಕ್ರಿಯಯಾ ವಿಭಿನ್ನೌ ಜಾಯಾಪತೌ ಸಾನುಶಯಾವಿವಾಸ್ತಾಮ್" ರಘುಂ ೧೬-೪೫ |

**ಜಾಯು ಜಾಯು (ಪುಂ)** ಔಷಧ. ಜಯತಿ ರೋಗಾನ್-ಜಿ (ಜಯೇ) "ಽಽಽ" (೩ಂ ೧-೧) |

**ಜಾರ ಜಾರ (ಪುಂ)** 1. ಉಪಪತಿ, ಮಿಂಡ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿ. ಜರಯತಿ ನಾಶಯತಿ ಕುಲಮ್-ಜೃ (ವಯೋಹಾನೌ) + ಣಿಚ್ "ಘಜ್" (ವಾಂ ೩-೩-೨೦) | "ಉಮೌ ತೌ ನಾಹಂತೌ ಭಾಗಂ ಜಾರಜಾತಕಕಾಮಜೌ" ಮನುಂ ೯-೧೪೩ | (ನಂ) 2. ಕೆಂದಾವರೆ. "ಅಥ ಲೋಹಿತೇ | ಅಸ್ಮಿನ್ ಕೋಕನದಂ ಜಾರಮ್" ವೇಜಂ |

**ಜಾರಕ ಜಾರಕ (ವಿಂ)** ಜೀರ್ಣಮಾಡುವ, ಮುಪ್ಪನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ.

**ಜಾರಜ ಜಾರಜ (ಪುಂ)** ಉಪಪತಿಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಜಾರಾತ್ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಮವಿ) "ಡ:" (೩-೨-೯೮) |

**ಜಾರಜನ್ಮನ್ ಜಾರಜನ್ಮನ್ (ಪುಂ)** ಉಪಪತಿಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಜಾರಾತ್ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ |

**ಜಾರಜಾತ ಜಾರಜಾತ (ಪುಂ)** ಉಪಪತಿಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಜಾರಾತ್ ಜಾತ: |

**ಜಾರಜಾತಕ ಜಾರಜಾತಕ (ಪುಂ)** ಉಪಪತಿಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವನು. "ಉಮೌ ತೌ ನಾಹಂತೌ ಭಾಗಂ ಜಾರಜಾತಕಕಾಮಜೌ" ಮನುಂ ೯-೧೪೩ |

**ಜಾರಜಯೋಗ ಜಾರಜಯೋಗ (ಪುಂ)** ಉಪಪತಿಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವನೆಂದು ತಿಳಿಸುವ ಗ್ರಹಗಳ ಯೋಗ. ಜಾರಜಸ್ಯ ಸೂಚಕೋ ಯೋಗ: | "ನ ಲಗ್ನಮಿಂದುಶ್ಚ ಗುಹ್ನಿರೋಕ್ಷತೇ ನ ವಾ ಶಶಾಂಕ್ ರವಿಣಾ ಸಮಾಯುತಮ್ | ಸ ಪಾಪಕೋಷ್ಠೇಣ ಯುತೋಷ್ಯವಾ ಶಶಿ ಪರೇಣ ಜಾತಂ ಪ್ರವದಂತಿ ನಿಶ್ಚಯಾತ್" |

**ಜಾರಣ ಜಾರಣ (ನಂ)** 1. ಜೀರ್ಣಮಾಡುವ ವಸ್ತು, ಆರಣಿಸುವ ಪದಾರ್ಥ. (ವಿಂ) 2. ಶೈಥಿಲ್ಯವೃಂಟುಮಾಡುವ, ಮುಪ್ಪನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ. ಜೀಯತೇಜೇನ-ಜೃ (ವಯೋಹಾನೌ) + ಣಿಚ್ ಕರಣ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | ಜೃ+ಣಿಚ್ ಕರಣಂ "ಲ್ಯು:" ವಾ (೩-೧-೧೩೪) | 3. ಸಂಬಾರ.

**ಜಾರತಿನೇಯ ಜಾರತಿನೇಯ (ಪುಂ)** 1. ಮುದುಕಿಯ ಮಗ. ಜರತಯಾ: ಅಪತ್ಯಮ್ "ಡಕ್" (೪-೧-೧೨೦) | "ಇನ್ಡ್" (೪-೧-೧೨೬) | 2. ಜರತಿಯೆಂಬುವವನ ಮಗ. ಜರತಿನೋಽಪತ್ಯಮ್ "ಡಕ್" (೪-೧-೧೨೩) |

**ಜಾರಭರ ಜಾರಭರ (ವಿಂ)** ಜಾರನನ್ನು ಪೋಷಿಸುವವನು, ವ್ಯಭಿಚಾರಿಯನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನು. ಜಾರಂ ವಿಭರತಿ - ಹು ಭುಜ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |

**ಜಾರಿಣಿ ಜಾರಿಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಉಪಪತ್ನಿ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ, ಹಾದರಗಿತ್ತಿ. ಜಾರೋಽಸ್ಯಾ ಅಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) | "ಹೀಪ್" (೪-೧-೪) |

**ಜಾರಿತ ಜಾರಿತ (ವಿಂ)** 1. ಶೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಪುಟಕಾಕಿ ಭಸ್ಮಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ (ಔಷಧ).

**ಜಾರು ಜಾರು (ಪುಂ)** ಗರ್ಭಾಶಯ, ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಗರ್ಭವು ನಿಲ್ಲುವ ಸ್ಥಳ. ಜೃ (ವಯೋಹಾನೌ) "ಽಽಽ" (೩ಂ ೧-೧) |

**ಜಾರುಧಿ ಜಾರುಧಿ (ಪುಂ)** ಒಂದು ಪರ್ವತ. "..... ನಿಷಧಶಿನಿವಾಸಕಪಿಲಶಙ್ಖವೈದ್ಯಜಾರುಧಿಹಂಸರ್ಪಮನಾಗಕಾಲ-ಞ್ಜರನಾರದಾದಯೋ ವಿಶತಿಗಿರಯೋ ಮೇರೋ: ಕರ್ಣಿಕಾಯಾ ಇವ ಕೇಸರಭೂತಾ ಮೂಲದೇಶೋ ಪರಿತಃ ಉಪಕಲ್ಪತಾ:" ಭಾಗಂ ೪-೧೬-೨೬ |

**ಜಾಲ ಜಾಲ (ಪುಂ)** 1. ನೀಪವೃಕ್ಷ. (ನಂ) 2. ನೂಲಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮೀಸಿನ ಬಲೆ. ಜಾಲ (ಪಾತನೇ) "ಣ:" (೩-೧-೧೪೦) | "ಅಹಂ ಜಾಲೋದ್ಗಾಲಾದಿಭಿರ್ಮತ್ಸ್ಯ-ಬಂಧನೋಪಾಯೈ: ಕುಡುಂಬಭರಣಂ ಕರಾಮಿ" ಶಾಕುಂ ೬ | 3. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. "ಸ್ಫುರತುಪಾರಾಂಶುಮರೀಚಿಜಾಲೈ-ವಿನಿಹ್ನುತಾ: ಸ್ಫಾಟಿಕಸೌಧಪಚ್ಛೀ:" ಮಾಘಂ ೩-೪೩ | 4. ಗವಾಕ್ಷ, ಕಿಟಕಿ. "ಜಾಲಾಂತರಪ್ರೇಷಿತದೃಷ್ಟಿರನ್ಯಾ ಪ್ರಸ್ಥಾನ-ಮಿಶ್ರಾಂ ನ ಬಬಂಧ ನಿವೀಮ್" ರಘುಂ ೭-೯ | 5. ದಂಭ, ಕಪಟ, ಮೋಸ. 6. ಯಕ್ಷಿಣಿ, ಇಂದ್ರಜಾಲ. 7. ಜಾಲರಿ, ಕಬ್ಬಿಣದ ಅಥವಾ ಯಾವುದೇ ಲೋಹದ ಕಂಬ



ಗಳದ ಹೆಣೆದ ಬರೆ. 8. ಮೊಗ್ಗು. 9. ಬೀಜಕೋಶ, ಬೀಜಾಶಯ. "ಜಾಲ ಗವಾಕ್ಷ ಜಾನಾಯೇ ಕ್ಷಾರಕೇ ದಮ್ಭ-ವಂದಯೋಃ | ಜಾಲೋ ನೀಪದ್ರುಮೇ" ಮೇದಿಂ | 10. ಜೇಡರ ಹುಳು. 11. ಹಕ್ಕಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನೂ ಹಿಡಿಯುವ ಬರೆ. 12. ಹಕ್ಕಿಗಳ ಕಾಲು ಬೆರಳುಗಳ ನಡುವೆ ಇರುವ ಚರ್ಮದ ಪೊರೆ. 13. ಕಣ್ಣಿನ ಒಂದು ರೋಗ, ಕಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಪೊರೆ ಬೆಳೆಯುವುದು.

**ಜಾಲಕ ಜಾಲಕ** (ಪುಂ) 1. ಕರಿ ಎಳ್ಳು. "ಜಾಲಕಶ್ಚೂಲಿಕ-ಸ್ತಿಕಲಃ" ವೈಜಂ | (ನಂ) 2. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು, ರಾಶಿ. ಜಾಲ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ" | "ತಸ್ಯ ಕರ್ಕಶವಿಹಾರಸಂಬಂಧ-ಸ್ವೇದಮಾನನವಿಲಗ್ನಜಾಲಕಮ್" ರಘುಂ ೧-೬೮ | 3. ಬೀಜಾಶಯ, ಬೀಜಕೋಶ. 4. ಮೊಗ್ಗು. "ರಘಾನಾನಾಂ ನವ-ಜಲಕಣೈರ್ಯುತಿಕಾಜಾಲಕಾನಿ" ಮೇಘಂ ೧-೨೬ | 5. ಬಿದಿರು ಕಬ್ಬಿಣದ ಸಲಾಕೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಗವಾಕ್ಷ, ಕಿಟಕಿ. "ಅವಲಮ್ಬ್ಯ ಜಾಲಕಮುಕ್ತೋಪಗತಾನುದತಿಷ್ಠ-ದಿನ್ದುಕಿರಣಾನ್ಮದನಃ" ಮಾಘಂ ೧-೩೯ | 6. ದಂಭ, ಮೋಸ, ಕಪಟ. 7. ಒಂದು ವಿಧ ಶಿರೋಭೂಷಣ. "ಸದೃಶ-ಕಾಂತಿರಲಕ್ಷಯತ ಮಂಜರೀ ತಿಲಕಜಾಲಕಜಾಲಕಮೌತ್ತಿಕೇಃ" ರಘುಂ ೧-೪೪ | 8. ಉಣ್ಣೆ, ಕುರಿಯ ತುಪ್ಪಟ. 9. ಗೂಡು. (ಸ್ತ್ರೀನಂ) 10. ನುಗ್ಗೆ ಕಾಯಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಾಲಿಕಾ ಜಾಲಿಕಾ. 11. ಹಕ್ಕಿಗಳನ್ನು ಹಿಡಿಯುವ ಬರೆ. 12. ಮುಖಪರದೆ, ಬುರುಕಿ, ಅವಗುಂಠನ. 13. ವಿಧವೆ, ಪತಿಯಿಲ್ಲದವಳು. 14. ಜಿಗಣೆ. 15. ಒಂದು ವಿಧ ಬಟ್ಟೆ. 16. ಕಬ್ಬಿಣದ ತಂತಿಯಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಯೋಧರ ಕವಚ. "ವಕ್ಷಚ್ಛದಃ ಸನ್ನಾಹಕಂಕಟೌ | ತತ್ಸೂತ್ರಕಂ ಸೂತ್ರಮಯಂ ಜಾಲಿಕಾ ಸ್ಯಾದಯೋಮಯಿ" ವೈಜಂ | 17. ಗಿರಿಸಾರ, ಲೋಹ, ಕಬ್ಬಿಣ. "ಜಾಲಕಂ ಕೋರಕೇ ದಮ್ಭೇ ಕುಲಾಯಾನಾಯೋರಪಿ | ನ ಪುನಿ ಮೋಚಕಫಲೇ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ತು ವಸನಾಂತರೇ | ಗಿರಿಸಾರೆ ಜಲಿಕಾಯಾಮಪಿ ಸ್ವಾಧಿವಾಸ್ವಿಭಾಮ್" ಮೇದಿಂ |

**ಜಾಲಕರ್ಮನ್ ಜಾಲಕರ್ಮನ್** (ನಂ) ಬಲೆಯ ಉದ್ಯೋಗ, ಮೀನು ಹಿಡಿಯುವುದು. "ಅಮ್ಯಾಯುಷ್ವ ತಂ ದೇಶಂ ನಿಶ್ಚಿತಾ ಜಾಲಕರ್ಮಣಿ" ಭಾಂ ಅನುಂ |

**ಜಾಲಕಾರಕ ಜಾಲಕಾರಕ** (ಪುಂ) 1. ಬಲೆಯನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. (ವಿಂ) 2. ಮೋಸಗಾರ, ಕಪಟಿ, ಮಂಜೆ.

**ಜಾಲಕಿನ್ ಜಾಲಕಿನ್** (ಪುಂ) ಕುರಿ, ಟಿಗರು. ಜಾಲಕಮಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪) |

**ಜಾಲಕಿನಿ ಜಾಲಕಿನಿ**. ಹೆಣ್ಣು ಕುರಿ. "ಮೇಘಿ ಸ್ಯಾಜ್ಜಾಲಕಿ-ನ್ಯವಿಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಜಾಲಕೀರ್ಯ ಜಾಲಕೀರ್ಯ** (ನಂ) ವಿಷದ ಹಾಲುಳ್ಳ ವೃಕ್ಷ. ಜಾಲೆ ಜಾಲಕೇ ಕ್ಷೀರಂ ತತ್ರ ಸಾಧು "ಯತ್" (೪-೪-೯೮) |

**ಜಾಲಗದಮ ಜಾಲಗದಮ** (ಪುಂ) ಮುಖದಲ್ಲಿ ಚರ್ಮದ ಮೇಲೇಳುವ ಸಣ್ಣ ಗುಳ್ಳೆ, ಮೊಡವೆ.

**ಜಾಲಗೋಗಿಕಾ ಜಾಲಗೋಗಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೊಸರು ಕಡೆಯುವ ಪಾತ್ರೆ. "ಕಣ್ಣಾಲಾ ಜಾಲಗೋಗಿಕಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಜಾಲಗ್ಧರ ಜಾಲಗ್ಧರ** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ದೈತ್ಯ, ಒಬ್ಬ ಅಸುರ. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ತ್ರಿಗರ್ತದೇಶ. 3. ತ್ರಿಗರ್ತದೇಶದ ನಿವಾಸಿಗಳು. "ಜಾಲಗ್ಧರಾಸ್ತ್ರಿಗರ್ತಾಃ ಸ್ಯುಃ" ವೈಜಂ |

**ಜಾಲಪಾದ ಜಾಲಪಾದ** (ಪುಂ) ಹಂಸಪಕ್ಷಿ. ಜಾಲಮಿವ ಪಾದಾವಸ್ಥಾ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" ಪಾದಸ್ಯ ಲೋಪಶ್ಚ (೪-೪-೧೩೯) | ನಿಪಾಂ | ಪಾದಃ ಪತ್ (೬-೪-೧೩೦) | ಆದೇಶಃ | ಜಾಲಪದೋ ಜಾಲಪದೀ |

**ಜಾಲಪ್ರಾಯಾ ಜಾಲಪ್ರಾಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲೋಹಮಯವಾದ ಯುದ್ಧ ಕವಚ. ಜಾಲಸ್ಯ ಪ್ರಾಯೋ ಬಾಹುಲ್ಯಂ ಯಸ್ಯಾಮ್ |

**ಜಾಲಮಾಲಾ ಜಾಲಮಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬರೆ.

**ಜಾಲಾಕ್ಷ ಜಾಲಾಕ್ಷ** (ಪುಂ) ಗವಾಕ್ಷ, ಕಿಟಕಿ, ಮಧ್ಯಮಧ್ಯ ಕೂಡಿಗಳುಳ್ಳ ಅಡ್ಡ ಪಟ್ಟಿಗಳ ಚೌಕಟ್ಟು. ಜಾಲಮಿವಾಕ್ಷಿ ಯಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೪-೭೬) | "ಹೇಮಜಾಲಾಕ್ಷನಿರ್ಗಂಚ್ಛ-ದ್ವೇನಾಗುಸ್ತುನ್ಧಿನಾ" ಭಾಗಂ ೮-೧೪-೧೯ |

**ಜಾಲಿಕ ಜಾಲಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಬೆಸ್ತ, ಮೀನು ಹಿಡಿಯುವವನು. 2. ಬೇಡರವನು. ಜಾಲೇನ ಚರತಿ—"ಠನ್" (೪-೪-೧೦) | 3. ಜೇಡರಹುಳು. (ವಿಂ) 4. ಬಲೆಯ ಆಧಾರದಿಂದ ಜೀವಿಸುವ. ಜಾಲೇನ ಜೀವತಿ—"ಠಕ್" (೪-೪-೧೨) | 5. ಮೋಸಗಾರ. 6. ಮಾಂತ್ರಿಕ, ಮಾಟಗಾರ.

**ಜಾಲಿಕಾ ಜಾಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಜಾಲಕ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ಜಾಲಿನ್ ಜಾಲಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಬಲೆಯನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ, ಬಲೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. 2. ಗವಾಕ್ಷವುಳ್ಳ, ಕಿಟಕಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. 3. ಮೋಸಗಾರ, ಕಪಟಿ. ಜಾಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) |

**ಜಾಲಿನಿ ಜಾಲಿನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಿತ್ರಶಾಲೆ, ಚಿತ್ರಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ ಶಾಲೆ. 2. ಕರಬೂಜದ ಹಣ್ಣು. 3. ಕಲ್ಲಂಗಡಿಯ ಹಣ್ಣು ಮೊದಲಾದುವು. "ಚಿತ್ರಶಾಲಾ ತು ಜಾಲಿನಿ" ವೈಜಂ | 4. ಜಟಿ, ಬೊಂತೆ ಕಟ್ಟಿದ ಕೂದಲು. "ಜಾಲಿನಿ ಗಝಾಜಟಾ" ವೈಜಂ | 5. ಹಿಪ್ಪಲಿ. "ಜಾಲಿನಿ ತಪ್ಪುಲಾ ತನ್ವಿ" ವೈಜಂ |



ಜಾಲಿ ಜಾಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಡವಲಗಿಡ. ಜಲತಿ-ಜಲ (ಧಾನ್ಯ) "ಜ:" (೩-೧-೧೪೦)। "ಜ್ಯೋತ್ಸನಿ ಪಟಾಲಿಕಾ ಜಾಲಿ" ಅಮಂ. 2. ಮೊಗ್ಗು.

ಜಾಲ್ಮ ಜಾಲ್ಮ (ವಿಂ) 1. ಪಾಮರ, ನೀಚ, ತುಚ್ಛ. 2. ಕ್ರೂರ, ದಯೆಯಿಲ್ಲದವನು. 3. ವಿಚಾರಮಾಡದೆ ಕಾರ್ಯಮಾಡುವವನು, ಯೋಚಿಸಿ ನೋಡದೆ ಕಾರ್ಯ ಮಾಡತಕ್ಕವನು. ಜಾಲಯತಿ-ಜಲ (ಅಪವಾರಣ) "ಮ:" ಬಾಹುಂ. "ತ್ವಯಿ ಪೂಜನಂ ಜಗತಿ ಜಾಲ್ಮ ಕೃತಮಿದಮಪಾಕೃತೇ ಗುಣೈ:" ಮಾಘಂ ೧೪-೩೩. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:". ಜಾಲ್ಮಕ: ಜಾಲ್ಮಕಃ.

ಜಾಲ್ಯ ಜಾಲ್ಯ (ವಿಂ) ಬಲೆಗೆ ಬೀಳಬಹುದಾದ, ಬಲೆಯಲ್ಲಿ ಹಿಡಿಯಬಹುದಾದ. ಜಲ (ಘಾತನೆ) "ಞತ್" (೩-೧-೧೨೪)।

ಜಾಹಕ ಜಾಹಕ (ಪುಂ) 1. ಜಿಗಣೆ. 2. ಮುಚ್ಚ. 3. ಮೂಟಕ, ಇಲಿ.

ಜಾಹ್ಲವಿ ಜಾಹ್ಲವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗಾನದಿ, ಜಹ್ನುವಿನ ಮಗಳು. ಜಹ್ನೋರಪತ್ಯಮ್ "ಅಞ್" (೪-೧-೯೨)। "ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೪)। ["ಜಹ್ನು" "ಗಜ್ಞಾ" ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ವ್ಯಕ್ತಂ ಬಲಿಯಾನ್ ಯದಿ ಹೇತುರಾಗಮಾದಪೂರಯತ್ ಸಾ ಜಲಧಿ ನ ಜಾಹ್ಲವಿ" ಮಾಘಂ ೧೨-೬೯।

ಜಾಹ್ಲವೀಯ ಜಾಹ್ಲವೀಯ (ವಿಂ) ಜಾಹ್ಲವೀಯ ಸಂಬಂಧ ವಾದ. ಜಾಹ್ಲವ್ಯಾ: ಇದಮ್ "ಛ:" (೪-೨-೧೧೪)।

ಜಿ-ಅಭಿಭವೇ (ಭ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ)। ಜಯತಿ ಶತ್ರುನ್.

ಜಿ-ಜಯೇ (ಭ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ)। ಜಯತಿ ಜಯತಃ ಜಯಂತಿ. ಜಿಗಾಯ ಜಿಗಯತು: ಜಿಗಯು:। ಜೇತಾ ಜೇತಾರೀ ಜೇತಾರ:। ಜೇಷ್ಯತಿ. ಜಯತು. ಅಜಯತ್. ಜಯೇತ್. ಜೀಯಾತ್. ಅಜೇಷೀತ್. ಅಜೇಷ್ಯತ್. ಜಯಿಸು, ಉತ್ಕೃಷ್ಟ ಹೊಂದು, ಮೇಲ್ಮೆಯನ್ನು ಹೊಂದು. "ಜಯತ್ಯಾಶ್ರಿತಸಂತ್ರಾಸಧ್ವಾಂತ-ವಿಧ್ವಂಸನೋದಯ:। ಪ್ರಭಾವಾನ್ ಸೀತಯಾ ದೇವ್ಯಾ ಪರಮವ್ಯೋಮ-ಭಾಸ್ಕರ:" ರಘುಂ ೧೦।

ಭಾವೇ :-ಜಯತೇ। ಜಿಗಯೇ। ಜಾಯಿತಾ, ಜೇತಾ। ಜಾಯಿಷ್ಯತೇ, ಜೇಷ್ಯತೇ। ಜಯಿತಾಮ್। ಅಜಯತ। ಜಯೇತ। ಜಾಯಿಷೀಷ್ಠ, ಜೇಷೀಷ್ಠ। ಅಜಾಯಿ। ಅಜಾಯಿಷ್ಯತ, ಅಜೇಷ್ಯತ।

ಗಿಚಿ :-ಜಾಪಯತಿ, -ತೇ। ಜಾಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಜಾಪಯಿತಾ। ಜಾಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ। ಜಾಪಯತು, -ತಾಮ್। ಅಜಾಪಯತ್, -ತ। ಜಾಪಯೇತ್, -ತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಘ್ಯಂತಾತ್ ಕರ್ಮಣಿ :-ಜಾಪಯತೇ। ಜಾಪಯಾಂ ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸೇ। ಜಾಪಯಿತಾ, ಜಾಪಿತಾ। ಜಾಪಯಿಷ್ಯತೇ, ಜಾಪಿಷ್ಯತೇ। ಜಾಪಯತಾಮ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ :-ಜಿಗಿಷತಿ। ಜಿಗಿಷಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಜಿಗಿಷಿತಾ। ಜಿಗಿಷಿಷ್ಯತಿ। ಜಿಗಿಷತು। ಅಜಿಗಿಷತ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

ವಿ ಮತ್ಸು, ಪರಾ ಪೂರ್ವಕ ಜಿ ಧಾತುವು ಆತ್ಮನೇಷದಿ ಯಾಗುವುದು. ವಿಜಯತೇ। ಪರಾಜಯತೇ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು :-ಜೇತವ್ಯಮ್। ಜಯನೀಯಮ್। ಜೇತುಂ ಶಕ್ಯಮ್ ಜಯಮ್। ಜೇತುಂ ಯೋಗ್ಯಂ ಜಯಮ್। ಭಾವೇ ಕ್ತ: -ಜಿತಮನೇನ। ಕರ್ತಾರಿ ಕ್ತ: ಪ್ರಜಿತ:। ಜಿತವಾನ್। ಜಯನ್, ಜಯಂತಿ। ವಿಜಯಮಾನ:। ಜೇತುಮ್। ಜಿತಮ್। ಜಯನಮ್। ಜಿತ್ವಾ। ವಿಜಿತಯ।

ಘ್ಯಂತಾತ್ ಕೃತ್ಸು :-ಜಾಪಯಿತವ್ಯ:। ಜಾಪನೀಯ:। ಜಾಪಯ:। ಜಾಪಿತ:। ಜಾಪಿತವಾನ್। ಜಾಪಯನ್। ಜಾಪಯಮಾನ:। ಜಾಪಯಿತುಮ್। ಜಾಪಿತಮ್। ಜಾಪನಮ್। ಜಾಪಯಿತ್ವಾ। ವಿಜಾಪಯ।

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಅಧಿ + ಜಿ = ಅಧಿಜಯತಿ। ಅಧಿಕವಾದ ಜಯ ವನ್ನು ಹೊಂದು. "ಸಪತ್ನಾಂಶ್ರಾಧಿಜಯಾಸ್ಮ ಸಂಶ್ರಾಮೇ ಚ ಮುಖೀಮಹಿ" ಭट्टಿಂ ೧೯-೨।

(2) ಅನು + ಜಿ = ಅನುಜಯತಿ। 1. ಅನುರೂಪ ವಾಗಿ ಜಯಿಸು. 2. ಅನಂತರ ಜಯಿಸು.

(3) ಅಪ + ಜಿ = ಅಪಜಯತಿ। ಅಪಜಯ:। ಅಪಜಯ ಹೊಂದು, ಸೋಲು.

(4) ಅವ + ಜಿ = ಅವಜಯತಿ। ಜಯಿಸು, ಜಯ ವನ್ನು ಹೊಂದು. "ಅಸ್ತ್ರಂ ಹರಾದಾಪ್ತವತಾ ದುರಾಪಂ ಯೇನೇಂದ್ರ-ಲೋಕಾವಜಯಾಯ ದೃಪ್ತ:" ರಘುಂ ೬-೬೨।

(5) ಪರಾ + ಜಿ = ಪರಾಜಯತೇ। ಪರಾಜಯ:। 1. ಪರಾ ಜಯಗೊಳಿಸು, ಸೋಲಿಸು. "ತಂ ಪರಾಜಯಮಾನೋಽಸಾವುನ್ಮತ್ಯಾ ಪವನಾತ್ಮಜಮ್" ಭट्टಿಂ ೮-೯। 2. ಅಸಹ್ಯಪಡು, ಜಾಗುವು ಹೊಂದು, "ತಾಂ ಪರಾಜಯಮಾನಾಂ ಸ ಪ್ರೀತೇ ರಕ್ಷಾಂ ದಶಾನನಾತ್" ಭट्टಿಂ ೮-೭೧।

(6) ವಿ + ಜಿ = ವಿಜಯತೇ। ವಿಜಯ:। ಅಧಿಕವಾದ ಜಯವನ್ನು ಹೊಂದು. "ವಿಜಿತಯ ಯ: ಪ್ರಾಜ್ಯಮಯಂಚ್ಛದುತ್ತರಾನ್ ಕುರುನಕುಪ್ಯಂ ವಸು ವಾಸವೋಪಮ:" ಕಿರಾಂ ೧-೩೪।

ಜಿಗತ್ನು ಜಿಗತ್ನು (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾಣವಾಯು. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಕಲ್ತು:" ಸನ್ವತ್ (೩೦ ೩-೩೧)। (ವಿಂ) 2. ಜಾಗ್ರತೆ ಯಾಗಿ ಹೋಗುವ, ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆಯುವ.



ಜಿಗಮಿಷತ್ ಜಿಗಮಿಷತ್ (ವಿಂ) ಹೊರಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ಹೊರಡಲು ಅಸೆಪಡುತ್ತಿರುವ. ಗಮ್ಲ (ಗತೌ)  
+ ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬)। ಜಿಗಿಷಂತಿ ಜಿಗೀಷಂತೀ.

ಜಿಗಮಿಷಾ ಜಿಗಮಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊರಡಲು ಅಸೆ.  
ಗಂತುಮಿಚ್ಛಾ-ಗಮ್ಲ (ಗತೌ)+ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨)।  
ಜಿಗಮಿಷು ಜಿಗಮಿಷು (ವಿಂ) ಹೊರಡಲು ಅಸೆಯುಳ್ಳ.  
ಗಂತುಮಿಚ್ಛು:-ಗಮ್ಲ (ಗತೌ)+ಸನ್ "ಃ:" (೩-೨-೧೬೮)।  
"ವಿಪುಲಾಬಲಸ್ಥಲಘನೇನ ಜಿಗಮಿಷುಭಿರಜ್ಞತಾ: ಪ್ರಿಯೆ:"  
ಮಾಘಂ ೧೫-೮೪।

ಜಿಗಿಷತ್ ಜಿಗೀಷತ್ (ವಿಂ) ಜಯಿಸಲು ಇಚ್ಛಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಜಯಗಳಿಸಲು ಅಸೆಪಡುತ್ತಿರುವ. ಜೇತುಮಿಚ್ಛನ್ - ಜಿ  
(ಜಯೇ)+ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಅಜಿತಸ್ಯ  
ಜಿಗಿಷತೋ ಮಯಾಸ್ತೌ ವಿಜಯಾರಂಭಮಹೋತ್ಸವೋ ವಿಧೇಯ:"  
ಯಾದಂ ೧೫-೯।

ಜಿಗಿಷಾ ಜಿಗೀಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜಯಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಜಯ  
ಗಳಿಸಲು ಅಸೆ. ಜೇತುಮಿಚ್ಛಾ-ಜಿ (ಜಯೇ)+ಸನ್ "ಅ:"  
(೩-೩-೧೦೨)। "ಅಶೇಷಯಜ್ಞಾಗ್ರಹರಂ ಸಮಾಗತಂ ಜಿಗಿಷಯಾನ್ತು-  
ವ್ರತಯಾ ಸ ದೀಕ್ಷಿತ:" ಯಾದಂ ೧೪-೧೪। 2. ಉತ್ಕರ್ಷ,  
ಹೆಚ್ಚು ಗಾಂಧೀ, ಒರಿಮೆ. 3. ವ್ಯವಸಾಯ, ಉದ್ಯಮ, ವೃತ್ತಿ.  
"ಜಿಗಿಷಾ ಜೇತುಮಿಚ್ಛಾयां व्यवसायप्रकर्षयो:" ಮೇದಿಂ।

ಜಿಗಿಷು ಜಿಗೀಷು (ವಿಂ) ಜಯಿಸಲು ಇಚ್ಛೆಯುಳ್ಳ, ಜಯ  
ಗಳಿಸಲು ಅಸೆಯುಳ್ಳ. ಜೇತುಮಿಚ್ಛು:-ಜಿ (ಜಯೇ)+ಸನ್  
"ಃ:" (೩-೨-೧೬೮)। "ಜಿಗಿಷುರೇಕೋ ದಿನಕೃದಾದಿತೀವಿವ  
ಕಲ್ಪತೇ" ಮಾಘಂ ೨-೮೧।

ಜಿಘತ್ಸತ್ ಜಿಘತ್ಸತ್ (ವಿಂ) ತಿನ್ನಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಊಟಮಾಡಲು ಅಸೆಪಡುತ್ತಿರುವ. ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ)+  
ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಪರಿಸ್ಪುರ್ಸ್ತೋಲಶಿಕ್ಷಾ-  
ಗ್ರಜಿಹ್ವಂ ಜಗಜ್ಜಿಘತ್ಸಂತಮಿವಾಂತವಹ್ನಿಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೨೦।

ಜಿಘತ್ಸನ ಜಿಘತ್ಸನ (ನಂ) ತಿನ್ನಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು.

ಜಿಘತ್ಸಾ ಜಿಘತ್ಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಿನ್ನಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಊಟ  
ಮಾಡಲು ಅಸೆ. ಅತ್ತಮಿಚ್ಛಾ-ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ)+ಸನ್  
"ಅ:" (೩-೩-೧೦೨)। "ವಿಗತಸಸ್ಯಜಿಘತ್ಸಮಘದೃಯತ್"  
ಮಾಘಂ ೬-೪೯। 2. ಹಸಿವು.

ಜಿಘತ್ಸಿತ ಜಿಘತ್ಸಿತ (ವಿಂ) ತಿನ್ನಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಅತ್ತಮಿಷ್ಠಮ್-ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ)+ಸನ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಜಿಘತ್ಸು ಜಿಘತ್ಸು (ವಿಂ) 1. ತಿನ್ನಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ,  
ಊಟಮಾಡಲು ಅಸೆಯುಳ್ಳ, ಹಸಿದಿರುವ. ಅತ್ತಮಿಚ್ಛು:-

ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ)+ಸನ್ "ಃ:" (೩-೨-೧೬೮)। ಅದೋ  
ಘಸ್ಲ (೨-೪-೩೭)। 2. ಹಸಿವುಳ್ಳವನು.

ಜಿಘಾಂಸಕ ಜಿಘಾಂಸಕ (ವಿಂ) ಕೊಲ್ಲಲು ಇಚ್ಛೆಯುಳ್ಳ  
ವನು.

ಜಿಘಾಂಸತ್ ಜಿಘಾಂಸತ್ (ವಿಂ) ಕೊಲ್ಲಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. ಹಂತುಮಿಚ್ಛನ್-ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:)+ಸನ್  
"ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬)।  
ಜಿಘಾಂಸಂತಿ ಜಿಘಾಂಸಂತೀ.

ಜಿಘಾಂಸನ ಜಿಘಾಂಸನ (ನಂ) ಕೊಲ್ಲಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು.  
ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:)+ಸನ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಜಿಘಾಂಸಾ ಜಿಘಾಂಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೊಲ್ಲಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ.  
ಹಂತುಮಿಚ್ಛಾ-ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:)+ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨)।  
"ಜಿಘಾಂಸಯಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ನರಕಂ ಪ್ರತಿಪದ್ಯತೇ" ಮನುಂ  
೧೧-೨೦೬। 2. ದ್ವೇಷ, ಖೇಡಿಸುವ ಇಚ್ಛೆ, ಸೇಡು  
ತೀರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಅಸೆ.

ಜಿಘಾಂಸಿತ ಜಿಘಾಂಸಿತ (ವಿಂ) ಕೊಲ್ಲಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಸಂಹರಿಸಲು ಇಷ್ಟನಾದ. ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:)+ಸನ್  
"ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಜಿಘಾಂಸಿತೇ ದೇವ ದಶಾನನೇ ತ್ವಯಾ  
ಹತಾರಿಸಂಕ್ಷೇಪೇರಿಯುಧಪೇವೃತ:" ಯಾದಂ ೧೪-೩೧।

ಜಿಘಾಂಸು ಜಿಘಾಂಸು (ಪುಂ) 1. ಹಗೆ, ವೈರಿ, ಶತ್ರು. "ದ್ವೇಷಣ:  
ಪ್ರತ್ಯನೀಕೋ ದ್ವಿತ್ ಜಿಘಾಂಸುಹಿಸನೋ ರಿಪು:" ವೈಜಂ। (ವಿಂ) 2.  
ಕೊಲ್ಲಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. ಹಂತುಮಿಚ್ಛು:-ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:)  
+ಸನ್ "ಃ:" (೩-೨-೧೬೮)। "ದತ್ತಾವಧಾನಂ ಮಧುಲೇಹಿಗಿತೌ  
ಪ್ರಶಾಂತವೇಷಂ ಹರಿಣಂ ಜಿಘಾಂಸು:" ಭट्टಿಂ ೨-೭।

ಜಿಘೃಷತ್ ಜಿಘೃಷತ್ (ವಿಂ) ಹಿಡಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಅಸೆಪಡುತ್ತಿರುವ. ಗ್ರಹೀತು-  
ಮಿಚ್ಛನ್-ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ)+ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
"ಶರಾರ್ಥಮೇಷ್ಯತೀಥ ಲಪ್ಸ್ಯತೇ ನತಿ ಸಿರೋಮಣಿ ದೃಷ್ಟಿವಿಷಾಂಜಿ-  
ಘೃಷತ:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೨೫। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬)।  
ಜಿಘೃಷಂತಿ ಜಿಘೃಷಂತೀ.

ಜಿಘೃಷಾ ಜಿಘೃಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ,  
ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಅಸೆ. ಗ್ರಹೀತುಮಿಚ್ಛಾ-ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ)  
+ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨)। "ಅನುಭವನವದೋಲಮೃತತ್ಸವಂ  
ಪದುರಪಿ ಪ್ರಿಯಕಂಠಜಿಘೃಷಯಾ" ರಘುಂ ೯-೪೬। 2. ತಿಳಿದು  
ಕೊಳ್ಳುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ.

ಜಿಘೃಷು ಜಿಘೃಷು (ವಿಂ) 1. ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ  
ಯುಳ್ಳ, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಅಸೆಯುಳ್ಳ. ಗ್ರಹೀತುಮಿಚ್ಛು:-  
ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ)+ಸನ್ "ಃ:" (೩-೨-೧೬೮)। "ಉಚ್ಛ-



ಶ್ವಾಸ ಪ್ರಸ್ಥಿತಾ ತಂ ಜಿಘ್ರಕುರ್ವ್ಯಥಾಕೃತಾ ನಾಕನಾರಿ ಮುಂಚ್ಛ" ಮಾಘಂ ೧೮-೪೮. 2. ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. "ತಮಃ ಪ್ರಾಜ್ಯಶರಃ ಶರಂ ಜಿಘ್ರಕುಃ" ಕಿರಾಂ ೧೩-೩೨.

ಜಿಘ್ರ ಜಿಘ್ರ (ವಿಂ) 1. ವಾಸನೆ ನೋಡುವವನು, ಮೂಸಿ ನೋಡುವವನು. ಜಿಘ್ರತಿ-ಛಾ (ಗಂಧೋಪಾದಾನೇ) "ಶಃ" (೩-೧-೧೩೭). ಜಿಘ್ರಾದೇಶಃ (೭-೩-೭೮). 2. ಅಭಿ ಪ್ರಾಯವನ್ನು ಉಹಿಸುವವನು, ಮನೋಗತವನ್ನು ತಿಳಿಯುವವನು. "ಸ್ವಾಮಿ ನಿಃಶ್ವಸಿತೇಽಪ್ಯಸೂಯತಿ ಮನೋಜಿಘ್ರಃ ಸಪತ್ನೀಜನಃ" ಸಾಂ ೧೦ ೩.

ಜಿಘ್ರತ್ ಜಿಘ್ರತ್ (ವಿಂ) ವಾಸನೆ ನೋಡುತ್ತಿರುವ, ಮೂಸಿನೋಡುತ್ತಿರುವ. ಛಾ (ಗಂಧೋಪಾದಾನೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಸ್ಪೃಶನ್ನಪಿ ಗಜೋ ಹಂತಿ ಜಿಘ್ರನ್ನಪಿ ಮುಜ್ಞಮಃ" ಹಿತೋಂ ೩-೧೪. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). ಜಿಘ್ರಂತಿ ಜಿಘ್ರಂತೀ.

ಜಿಘ್ರಾಸತ್ ಜಿಘ್ರಾಸತ್ (ವಿಂ) ವಾಸನೆನೋಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಮೂಸಿನೋಡಲು ಅಸೆಪಡುತ್ತಿರುವ. ಛಾ (ಗಂಧೋಪಾದಾನೇ) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). ಜಿಘ್ರಾಸಂತಿ ಜಿಘ್ರಾಸಂತೀ.

ಜಿಘ್ರಾಸನ್ ಜಿಘ್ರಾಸನ್ (ನಂ) ವಾಸನೆ ನೋಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು, ಮೂಸಿನೋಡಲು ಅಸೆಪಡುವುದು. ಛಾ (ಗಂಧೋಪಾದಾನೇ) + ಸನ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪).

ಜಿಘ್ರಾಸಿತ ಜಿಘ್ರಾಸಿತ (ವಿಂ) ವಾಸನೆ ನೋಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಛಾ (ಗಂಧೋಪಾದಾನೇ) + ಸನ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨).

ಜಿಘ್ರಾಸಿತವತ್ ಜಿಘ್ರಾಸಿತವತ್ (ವಿಂ) ವಾಸನೆನೋಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದವನು. ಛಾ (ಗಂಧೋಪಾದಾನೇ) + ಸನ್ "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨).

ಜಿಙ್ಗಿ ಜಿಂಗೆ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂಜಪ್ಪ. ಜಿಙ್ಗತಿ - ಜಿಗಿ (ಗತೋ) "ಅವ್" (೩-೧-೧೩೪). ಗೋರಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧). "ಮಜ್ಜಿಣಾ ವಿಕಸಾ ಜಿಙ್ಗಿ ಸಮಜ್ಞಾ ಕಾಲಮೇಶಿಕಾ" ಅಮಂ.

ಜಿಜಿವಿಷಣ ಜಿಜಿವಿಷಣ (ನಂ) ಬದುಕಬೇಕೆಂದು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು, ಬದುಕಲು ಅಸೆಪಡುವುದು. ಜೀವ (ಪ್ರಾಣ-ಧಾರಣೆ) + ಸನ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪).

ಜಿಜಿವಿಷತ್ ಜಿಜಿವಿಷತ್ (ವಿಂ) ಬದುಕಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಬದುಕಿರಲು ಅಸೆಪಡುತ್ತಿರುವ. ಜೀವ (ಪ್ರಾಣ-ಧಾರಣೆ) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). ಜಿಜಿವಿಷಂತಿ ಜಿಜಿವಿಷಂತೀ.

ಜಿಜಿವಿಷಾ ಜಿಜಿವಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬದುಕಿರಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ, ಜೀವಿಸಿರಲು ಅಸೆ. ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨).

ಜಿಜಿವಿಷಿತ ಜಿಜಿವಿಷಿತ (ವಿಂ) ಬದುಕಿರಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದವನು, ಜೀವಿಸಿರಲು ಅಸೆಪಟ್ಟವನು. ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) + ಸನ್ ಕರ್ತಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨). "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨). ಜಿಜಿವಿಷಿತವಾನ್ ಜಿಜಿವಿಷಿತವಾನ್. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). -ವತೀ -ವತೀ.

ಜಿಜಿವಿಷು ಜಿಜಿವಿಷು (ವಿಂ) ಬದುಕಿರಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಜೀವಿಸಿರಲು ಅಸೆಪಡುವ. ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮). "ಸರ್ವೇ ನಿವೃತ್ತಾಃ ಕೃಪಣಸ್ಯ ಜಂತೋಜಿಜಿವಿಷೋರ್ಜಿವಜಲಾರ್ಪಣಾನ್ಮೇ" ಭಾಗಂ ೯-೨೧-೧೩.

ಜಿಜ್ಞಾಸಕ ಜಿಜ್ಞಾಸಕ (ವಿಂ) ತಿಳಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಅಸೆಪಡುವ. ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) + ಸನ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩).

ಜಿಜ್ಞಾಸನ್ ಜಿಜ್ಞಾಸನ್ (ನಂ) ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಅಸೆಪಡುವುದು. ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) + ಸನ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪).

ಜಿಜ್ಞಾಸನೀಯ ಜಿಜ್ಞಾಸನೀಯ (ವಿಂ) ತಿಳಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಬಹುದಾದ, ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಅಸೆಪಡಬಹುದಾದ. ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) + ಸನ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬). ಜಿಜ್ಞಾಸಿತವ್ಯಃ ಜಿಜ್ಞಾಸಿತವ್ಯಃ.

ಜಿಜ್ಞಾಸಮಾನ್ ಜಿಜ್ಞಾಸಮಾನ್ (ವಿಂ) ತಿಳಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಜ್ಞಾತುಮಿಚ್ಛನ್-ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) + ಸನ್ "ಶಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಅನ್ಯೇಶ್ವರಾತ್ಮಾನುಚರಸ್ಯ ಭಾವಂ ಜಿಜ್ಞಾಸಮಾನಾ ಮುನಿಹೋಮಧೇನುಃ" ರಘುಂ ೨-೨೬.

ಜಿಜ್ಞಾಸಾ ಜಿಜ್ಞಾಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಿಳಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ, ತಿಳಿದು ಕೊಳ್ಳಲು ಅಸೆ. ಜ್ಞಾತುಮಿಚ್ಛಾ-ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨).

ಜಿಜ್ಞಾಸಿತ ಜಿಜ್ಞಾಸಿತ (ವಿಂ) ತಿಳಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಅಸೆಪಟ್ಟ. ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) + ಸನ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ಜಿಜ್ಞಾಸಿತಮಧೀತಂ ಚ ಯತ್ತದ್ಬ್ರಹ್ಮ ಸನಾತನಮ್. ಅಥಾಪಿ ಶೋಚಸ್ಯಾತ್ಮಾನಮಕೃತಾರ್ಥ ಇವ ಪ್ರಭೋ" ಭಾಗಂ ೧-೪-೪.

ಜಿಜ್ಞಾಸು ಜಿಜ್ಞಾಸು (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು, ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಅಸೆಯುವುದು. ಜ್ಞಾತುಮಿಚ್ಛುಃ - ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮). "ಏತಾವದೇವ ಜಿಜ್ಞಾಸ್ಯಂ ತತ್ತ್ವಜಿಜ್ಞಾಸುನಾಽಽಮನಃ" ಭಾಗಂ ೨-೯-೩೪. 2. ಮೋಕ್ಷವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು, ಆತ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು



ಹೊಂದಲು ಇಚ್ಛಿಸುವವನು. "ಚತುರ್ವಿಧಾ ಭಜಂತೇ ಮಾ ಜನಾಃ ಸುಕೃತಿನೋಽರ್ಜುನ | ಆತೌ ಜಿಜ್ಞಾಸುರರ್ಥಾರ್ಥಿ ಜ್ಞಾನಿ ಚ ಭರತರ್ಷಭ" ಗೀತಾ ೭-೧೬ |

ಜಿಜ್ಞಾಸ್ಯ ಜಿಜ್ಞಾಸ್ಯ (ವಿಂ) ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಇಚ್ಛಿಸಲ್ಪಡುವ. ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) + ಸನ್ "ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) | "ಏತಾವದೇವ ಜಿಜ್ಞಾಸ್ಯ ತತ್ವಜಿಜ್ಞಾಸುನಾಽಽರಮನಃ" ಭಾಗಂ ೨-೯-೩೫ |

ಜಿತ್ ಜಿತ್ (ವಿಂ) ಜಯಿಸುವವನು, ಜಯವನ್ನು ಪಡೆಯುವವನು. ಜಯತಿ - ಜಿ (ಜಯೇ) "ವಿವ್" (೩-೨-೭೬) |

ಜಿತ ಜಿತ (ನಂ) 1. ಜಯ, ಗೆಲುವು. ಜಿ(ಜಯೇ)ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) | (ವಿಂ) 2. ಜಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗೆಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ. ಜಿ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಅಂತರ್ಮುಪಯಯುರೂಪಲಾವಲಿಘು ಪ್ರಾಢುಃಪ್ಯಾತ್ಕ ಇವ ಜಿತಃ ಪುರಃ ಪರೇಣ" ಮಾಘಂ ೮-೧೨ |

ಜಿತಕಾಶಿನ್ ಜಿತಕಾಶಿನ್ (ವಿಂ) ಜಯಶೀಲ, ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಜಯಹೊಂದಿದ. ಜಿತೇನ ಜಯೇನ ಕಾಶತೇ ಪ್ರಕಾಶತೇ - ಕಾಶ (ದೀಪ್ತ) "ಞಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) |

ಜಿತಕೋಪ ಜಿತಕೋಪ, -ಕೋಪ -ಕ್ರೋಧ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. "ಮನೋಹರೋ ಜಿತಕ್ರೋಧೋ ವೀರಬಾಹುರ್ವಿದಾರಣಃ" ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ಕೋಪವನ್ನು ಜಯಿಸಿದವನು, ಕೋಪವಿಲ್ಲದವನು. ಜಿತಃ ಕೋಪಃ ಕ್ರೋಧೋ ವಾ ಯೇನ | "ವರ್ತತ ಯಾಮ್ಯಯಾ ವೃತ್ತಯಾ ಜಿತಕ್ರೋಧೋ ಜಿತೇಂದ್ರಿಯಃ" ಮನುಂ ೮-೧೭೩ |

ಜಿತಮನಸ್ ಜಿತಮನಸ್ (ವಿಂ) ಮನಸ್ಸನ್ನು ಜಯಿಸಿದವನು, ಜಿತಂ ಮನೋ ಯೇನ |

ಜಿತರಿಪು ಜಿತರಿಪು, -ಶತ್ರು -ಶತ್ರು (ಪುಂ) 1 ಬುದ್ಧದೇವ. (ವಿಂ) 2. ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಜಯಿಸಿದವನು. ಜಿತಃ ರಿಪುಃ ಶತ್ರುರ್ವಾ ಯೇನ |

ಜಿತಲೋಕ ಜಿತಲೋಕ (ಪುಂ) 1. ಯಜ್ಞಯಾಗಾದಿಗಳಿಂದ ಸ್ವರ್ಗಾದಿಲೋಕಗಳನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿದವನು. ಜಿತಃ ಸಂಪಾದಿತಃ ಕರ್ಮಾದಿನಾ ಲೋಕಃ ಸ್ವರ್ಗಾದಿಃ ಯೇನ | (ವಿಂ) 2. ಲೋಕವನ್ನು ಜಯಿಸಿದವನು, ಜನರನ್ನು ವಶಪಡಿಸಿಕೊಂಡವನು. ಜಿತೋ ಲೋಕೋ ಯೇನ |

ಜಿತವತ್ ಜಿತವತ್ (ವಿಂ) ಜಯಿಸಿದವನು, ಜಯವನ್ನು ಹೊಂದಿದವನು. ಜಿ (ಜಯೇ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಅವನಿಮೇಕರಥೇನ ವರುಣಿನಾ ಜಿತವತಃ ಕಿಲ ತಸ್ಯ ಧನುಃಶ್ಚ" ರಘುಂ ೯-೧೧ |

ಜಿತಾಕ್ಷ ಜಿತಾಕ್ಷ (ವಿಂ) ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ಜಯಿಸಿದವನು, ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ವಶಪಡಿಸಿಕೊಂಡವನು. ಜಿತಾನಿ ಅಕ್ಷಾನಿ ಯೇನ |

ಜಿತಾಕ್ಷರ ಜಿತಾಕ್ಷರ (ವಿಂ) ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ವಶಪಡಿಸಿಕೊಂಡಿರುವವನು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಓದಲೂ ಬರೆಯಲೂ ಅಭ್ಯಾಸವುಳ್ಳವನು. ಜಿತಾನಿ ಸ್ವಾಯತ್ತೀಕೃತಾನಿ ಅಕ್ಷರಾಣಿ ಯೇನ |

ಜಿತಾತ್ಮನ್ ಜಿತಾತ್ಮನ್ (ವಿಂ) ಆತ್ಮಸಂಯಮವುಳ್ಳ, ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ಜಯಿಸಿದ. ಜಿತಃ ಆತ್ಮಾ ಯೇನ | "ಅತಸ್ತು ವಿಪರೀತಸ್ಯ ನೃಪತೇರಜಿತಾತ್ಮನಃ" ಮನುಂ ೭-೩೪ |

ಜಿತಾಮಿತ್ರ ಜಿತಾಮಿತ್ರ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಜಿತಾ ಅಮಿತ್ರಾ ಏತದ್ರಹಸ್ಯಾವಬೋಧವಿರೋಧಿಭೂತಾಃ ಅಹಂಕಾರಮಮಕಾರಕಾಮಕ್ರೋಧಾದಯಃ ಅನೇನ | "ಏತದ್ರಹಸ್ಯವಿಜ್ಞಾನವಿರೋಧಿಮಮತಾದಯಃ | ಜಿತಾಸ್ತೇಷಾಮನೇನೇತಿ ಜಿತಾಮಿತ್ರೋಽಽವರ್ಣಕಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | "ಅಜೋ ಮಹಾರ್ಹಃ ಸ್ವಾಭಾವ್ಯೋ ಜಿತಾಮಿತ್ರಃ ಪ್ರಮೋದನಃ" ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಜಯಿಸಿದವನು. ಜಿತಾ ಅಮಿತ್ರಾಃ ಯೇನ |

ಜಿತಾರಿ ಜಿತಾರಿ (ಪುಂ) 1. ಬುದ್ಧದೇವ. ಜಿತಾ ಅರಯೋ ಯೇನ | "ಮೇತ್ರೀಬಲಾಸಮಜಿತಾರಿಸಮಂತಭದ್ರಾಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 2. ಅವಿಕ್ಷಿಂಪನಮಗ. (ವಿಂ) 3. ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಜಯಿಸಿದವನು. 4. ಕಾಮಕ್ರೋಧಾದಿ ಅರಿಷಡ್ವರ್ಗವನ್ನು ಜಯಿಸಿದವನು.

ಜಿತಾಽಽಮಿ ಜಿತಾಽಽಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಶ್ವಯುಜ ಕೃಷ್ಣಾಽಽಮಿ, ಜೇಮೂತವಾಹನನನ್ನು ಪೂಜಿಸುವ ಅಷ್ಟಮಿ. "ಇಥೇ ಮಾಸ್ಯಸಿತೇ ಪಕ್ಷೇ ಅಽಽಮಿ ಯಾ ತಿಥಿರ್ಭವೇತ್ | ಪುತ್ರಸೌಭಾಗ್ಯದಾ ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಖ್ಯಾತಾ ಸಾ ಜೀವಪುತ್ರಿಕಾ | ಶಾಲಿವಾಹನರಾಜಸ್ಯ ಪುತ್ರೋ ಜಿಮೂತವಾಹನಃ | ತಸ್ಯಾಂ ಪೂಜ್ಯಃ ಸ ನಾರೀಭಿಃ ಪುತ್ರಸೌಭಾಗ್ಯಲಿಪ್ತಯಾ | ಪ್ರದೋಷಸಮಯೇ ಸ್ತ್ರೀಭಿಃ ಪೂಜ್ಯೋ ಜಿಮೂತವಾಹನಃ | ಪುಷ್ಕರಿಣಿಂ ವಿಧಾಯಾಥ ಪ್ರಾಜ್ಞೇನ ಚತುರಸ್ರಿಕಾಮ್" |

ಜಿತೇಂದ್ರಿಯ ಜಿತೇಂದ್ರಿಯ (ಪುಂ) 1. ಯಾವಕಾರಣದಿಂದಲೂ ಸಂತೋಷ ದುಃಖಗಳಿಲ್ಲದ ತಪಸ್ವಿ, ಸಕಲ ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಗೂ ಭೋಗ್ಯವಾದ ವಸ್ತುಗಳ ಭೋಗದಿಂದಲೂ ಯಾವನು ಹಿಗ್ಗುವುದಿಲ್ಲವೋ ಮತ್ತು ಕುಗ್ಗುವುದಿಲ್ಲವೋ ಅಂತಹ ಧೀರಪುರುಷ. "ಶ್ರುತ್ವಾ ಸ್ಫುಟ್ವಾಥ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಚ ಭುಕ್ತ್ವಾ ಧ್ರಾತ್ವಾ ಚ ಯೋ ನರಃ | ನ ಹೃಷ್ಯತಿ ಮಲಾಯತಿ ವಾ ಸ ವಿಜ್ಞೇಯೋ ಜಿತೇಂದ್ರಿಯಃ" ಮನುಂ ೨-೯೮ | (ವಿಂ) 2. ಇಂದ್ರಿಯವಿಗ್ರಹವುಳ್ಳ, ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ಜಯಿಸಿದ. ಜಿತಾನಿ ವಶೀಕೃತಾನಿ ಇಂದ್ರಿಯಾಣಿ ಯೇನ |

ಜಿತುಮ ಜಿತುಮ (ಪುಂ) ಮಿಥುನರಾಶಿ, ಮೇಷಾದಿ ಮೂರನೆಯ ರಾಶಿ.

ಜಿತಿಯಾ ಜಿತಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹರವೆ, ಉತ್ತಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹೆಂಟಿಗಳನ್ನು ಒಡೆದು ಭೂಮಿಯನ್ನು ಸಮಮಾಡುವ ಒಂದು ವಿಧ ದೊಡ್ಡ ನೇಗಿಲು.



ಜಿತ್ವನ್ ಜಿತ್ವನ್ (ವಿಂ) ಜಯಶಾಲಿ, ಜಯವನ್ನು ಗಳಿಸಿದವನು. ಜಿ (ಜಯೇ) "ಕವನಿ" (೩-೪-೧೧೩) ।

ಜಿತ್ವರ ಜಿತ್ವರ (ವಿಂ) ಜಯಶಾಲಿ, ಜಯವನ್ನು ಗಳಿಸಿದವನು. ಜಿ (ಜಯೇ) "ಕವರ" (೩-೨-೧೬೩) ।

"ಕರದೀಕೃತಭೂಪಾಲೋ ಭ್ರಾತೃಭಿರ್ಜಿತ್ವರೇದಿಶಾಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೯ ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೫) । ಜಿತ್ವರೀ ಜಿತ್ವರೀ.

ಜಿತ್ವರೀ ಜಿತ್ವರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಶೀನಗರ, ವಾರಣಾಸಿ.  
"ಜಿತ್ವರೀ ತು ತಪಸ್ಥಳಿ । ವಾರಣಾಸಿ ತೀರ್ಥರಾಜಿ"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಜಿನ ಜಿನ (ಪುಂ) 1. ಬುದ್ಧದೇವ. 2. ಜೈನಮತ ಪ್ರವರ್ತಕ ಜಿನದೇವ, ಅರ್ಹಂತ. ಜಯತಿ-ಜಿ (ಜಯೇ) "ನಕ್" (೩-೩-೨) । ಜೈನ ಸಿದ್ಧಾಂತವನ್ನು ಪ್ರಚಾರಮಾಡಿದವರು ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು ತೀರ್ಥಂಕರರು. ಇವರಲ್ಲಿ ಮಹಾವೀರ ವರ್ಧಮಾನಜಿನೇಶ್ವರರು ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕನೆಯವರು. ಈ ತೀರ್ಥಂಕರರು ಮಹಾವೀರರಾಗಿ ಸಂನ್ಯಾಸಾಶ್ರಮದಲ್ಲಿದ್ದು ಶುಕ್ಲಧ್ಯಾನದಿಂದ ರಾಗದ್ವೇಷಾದಿಗಳನ್ನೂ ಕರ್ಮಗಳನ್ನೂ ಜಯಿಸಿದವರೆಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಇವರಿಗೆ "ಜಿನರು" ಎಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಯುಂಟಾಯಿತು. 3. ವಿಷ್ಣು. "ಜಿನೋಹ್ವದ್ವಿ-ವಿಷ್ಣು" ಹೇಮಂ । "ಕೃತಧೋರಾಜಿನಶ್ರಕ್ ಭುವಃ ಸರ್ವಿರಾ ಜಿನಃ" ಮಾಘಂ ೧೯-೧೧೨ । (ವಿಂ) 4. ಜಯಶಾಲಿ, ಜಯವನ್ನು ಗಳಿಸಿದವನು. "ಜಿನೋಹ್ವತಿ ಚ ಬುದ್ಧೇ ಚ ಪುಸಿ ಸ್ಯಾಜಿತ್ವರೇ ತ್ರಿಪು" ಮೇದಿಂ ।

ಜಿನದೇವ ಜಿನದೇವ (ಪುಂ) ಅರ್ಹಂತ, ಜೈನಮತ ಪ್ರಚಾರಕ.

ಜಿನಸಂನ್ಯಾಸ ಜಿನಸಂನ್ಯಾಸ (ನಂ) ಜೈತ್ಯ, ಜೈನದೇವಾಲಯ, ಜೈನಾಶ್ರಮ, ವಿಹಾರ.

ಜಿನೇಂದ್ರ ಜಿನೇಂದ್ರ (ಪುಂ) 1. ಬುದ್ಧದೇವ. ಜಿನಾನಾಮಿನ್ದ್ರಃ ।  
2. ಜೈನಸಂನ್ಯಾಸಿ.

ಜಿನೇಶ್ವರ ಜಿನೇಶ್ವರ (ಪುಂ) 1. ಬುದ್ಧದೇವ. 2. ಜೈನ ಸಂನ್ಯಾಸಿ.

ಜಿಮು-ಅದನೇ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಜೇಮತಿ । ಜೇಮಿತಾ ।  
ಅಜೇಮಿತ್ । ತಿನ್ನು, ಉಟಮಾಡು, ಭಕ್ಷಿಸು.

ಜಿಣ್ಣು ಜಿಣ್ಣು (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಜಿ (ಜಯೇ) "ಕಸ್ತುಃ" (೩-೨-೧೩೯) । "ವಿಷ್ಣುವಿಕ್ರಮಣಾಹೇವೋ ಜಯನಾಜಿಣ್ಣು-ಕುಚ್ಯತೇ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೬೯-೧೩ । 2. ಅರ್ಜುನ.  
"ಭುಜ್ಞಪಾಶಾನ್ ಭುಜವೀರೈಶಾಲಿ ಪ್ರಬಂಧನಾಯ ಪ್ರಜಿಘಾಯ ಜಿಣ್ಣುಃ" ಕಿರಾಂ ೧೬-೩೬ । ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಯಾರ ಕೈಗೂ ಸಿಕ್ಕದೆ ಯಾರಿಂದಲೂ ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡದೆ ಇರುವುದರಿಂದಲೂ ಇಂದ್ರನ ಮಗನಾದುದರಿಂದಲೂ "ಜಿಣ್ಣು"

ವೆಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು. "ಅಹಂ ದುರಾಪೋ ದುರ್ಧರೋ ದಮನಃ ಪಾಕಶಾಸನಿಃ । ತೇನ ದೇವಮನುಷ್ಯೇಷು ಜಿಣ್ಣುರ್ನಾಮಾಸಿಮಿ ವಿಶ್ರುತಃ" ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೪೦ । 3. ಇಂದ್ರ. 4. ಸೂರ್ಯ. 5. ಅಪ್ಪ ವಸುಗಳು. (ವಿಂ) 6. ಜಯಶಾಲಿ, ಜಯವನ್ನು ಗಳಿಸಿದವನು. "ಇತಿ ಜಿತ್ವಾ ದಿಶೋ ಜಿಣ್ಣುರ್ಯವರ್ತತ ರಥೋದ್ರತಮ್" ರಘುಂ ೪-೮೫ । "ಜಿಣ್ಣುಃ ಶಕ್ರೋರ್ಜುನೇ ವಿಷ್ಣೌ ಜಿತ್ವರೇಷ್ಕ ವಸುಷ್ವಪಿ" ಹೇಮಂ ।

ಜಿಹಾನ ಜಿಹಾನ (ವಿಂ) ಮುಂದಕ್ಕೆ ವೇಗವಾಗಿ ಹೋಗುತ್ತಿರುವ. ಆ ಹಾಡ್ (ಗತೌ) "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

ಜಿಹಾಸತ್ ಜಿಹಾಸತ್ (ವಿಂ) ತ್ಯಜಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಬಿಡಲು ಆಸೆಪಡುತ್ತಿರುವ. ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೨-೬) ।  
ಜಿಹಾಸಂತಿ ಜಿಹಾಸಂತಿ.

ಜಿಹಾಸನ ಜಿಹಾಸನ (ನಂ) ತ್ಯಜಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು, ಬಿಡಲು ಆಸೆಪಡುವುದು. ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) + ಸನ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

ಜಿಹಾಸನೀಯ ಜಿಹಾಸನೀಯ (ವಿಂ) ತ್ಯಜಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) + ಸನ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । "ನವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬) । ಜಿಹಾಸಿತವ್ಯಃ ಜಿಹಾಸಿತವ್ಯಃ.

ಜಿಹಾಸಮಾನ ಜಿಹಾಸಮಾನ (ವಿಂ) ವೇಗವಾಗಿ ಹೋಗಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಆ ಹಾಡ್ (ಗತೌ) + ಸನ್ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

ಜಿಹಾಸಾ ಜಿಹಾಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತ್ಯಜಿಸುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಬಿಡುವ ಆಸೆ. ಹಾತುಮಿಚ್ಛಾ-ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨) ।

ಜಿಹಾಸಿತ ಜಿಹಾಸಿತ (ವಿಂ) ತ್ಯಜಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) + ಸನ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।

ಜಿಹಾಸಿತವತ್ ಜಿಹಾಸಿತವತ್ (ವಿಂ) ತ್ಯಜಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದವನು. ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) + ಸನ್ "ಕ್ತವತ್" (೩-೨-೧೦೨) ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) । -ವತ್ಯಿ-ನಂತೇ.

ಜಿಹಾಸು ಜಿಹಾಸು (ವಿಂ) ತ್ಯಜಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುಳ್ಳು, ಬಿಡಲು ಆಸೆಯುಳ್ಳು. ಹಾತುಮಿಚ್ಛುಃ-ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) + ಸನ್ "ತಃ" (೩-೨-೧೬೮) ।

ಜಿಹಾಸ್ಯ ಜಿಹಾಸ್ಯ (ವಿಂ) ತ್ಯಜಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) + ಸನ್ "ಷ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) ।

ಜಿಹೀರ್ಷತ್ ಜಿಹೀರ್ಷತ್ (ವಿಂ) 1. ಒಯ್ಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಹ್ವ (ಹರಣೇ) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) ।



2. ಅಪಹರಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಕದಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಹ್ವಾ" (೪-೧-೬) | ಜಿಹ್ವಾಂತಿ ಜಿಹ್ವಾಂತೀ.

ಜಿಹ್ವಾಂ ಜಿಹ್ವಾಂ (ನಂ) 1. ಒಯ್ಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು. ಹ್ರ (ಹರಣೆ) + ಸನ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಅಪಹರಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು, ಕದಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು. 3. ಹೋಗಲಾಡಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು.

ಜಿಹ್ವಾಂ ಜಿಹ್ವಾಂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಯ್ಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು. ಹ್ರ (ಹರಣೆ) + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨) | 2. ಹೋಗಲಾಡಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು. "ತಥಾಂ ಚಾವತಾರಸ್ತೇ ಭುವೋ ಭಾರಜಿಹ್ವಾಂ" ಭಾಗಂ ೧-೭-೨೫ | 3. ಅಪಹರಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು.

ಜಿಹ್ವಾಂ ಜಿಹ್ವಾಂ (ವಿಂ) 1. ಒಯ್ಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು. 2. ಹೋಗಲಾಡಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು. 3. ಅಪಹರಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು.

ಜಿಹ್ವಾಂ ಜಿಹ್ವಾಂ (ವಿಂ) 1. ಒಯ್ಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು. ಹ್ರ (ಹರಣೆ) + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಅಪಹರಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು. 3. ಹೋಗಲಾಡಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು.

ಜಿಹ್ವಾಂ ಜಿಹ್ವಾಂ (ವಿಂ) 1. ಒಯ್ಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು. 2. ಅಪಹರಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು. 3. ಹೋಗಲಾಡಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು. ಹ್ರ (ಹರಣೆ) + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೧೫) |

ಜಿಹ್ವಾಂ ಜಿಹ್ವಾಂ (ನಂ) 1. ಕಪಟ, ಮಂಚನೆ, ಮೋಸ. ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೆ) "ಮನ್" ಸನ್ವತ್ ಆಲೋಪಶ್ಚ (೩ಂ ೧-೧೩೮) | "ತದಾಶು ಕರ್ತುಂ ತ್ವಯಿ ಜಿಹ್ವಾಮುಖತೇ ವಿಧೀಯತಾಂ ತತ್ರ ವಿಧೇಯಮುತರಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೨೫ | (ವಿಂ) 2. ಕುಟಲವಾದ, ವಕ್ರವಾದ, ಡೊಂಕಾದ. 3. ಅಲಸನಾದ, ಸೋಮಾರಿಯಾದ. 4. ಮಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. "ತಥಾಪಿ ಜಿಹ್ವಾ: ಸ ಭವಜ್ಜಿಗಿಷಯಾ ತನೋತಿ ಶುಭ್ರಂ ಗುಣಸಂಪದಾ ಯಶ:" ಕಿರಾಂ ೧-೮ | 5. ಅಪ್ರಸನ್ನ, ಕಳೆಗುಂದಿದ, ಪ್ರಕಾಶವಿಲ್ಲದ. "ವಿಧಿಸಮಯನಿಯೋಗಾದೀಪ್ತಿಸಂಹಾರಜಿಹ್ವಾಂ ಶಿಥಿಲವಸುಮಗಾಢೇ ಮಗನಮಾಪತ್ಯಯೋಷಿ" ಕಿರಾಂ ೧-೪೬ | 6. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ.

ಜಿಹ್ವಾಂ ಜಿಹ್ವಾಂ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಜಿಹ್ವಾಂ ಗಚ್ಛತಿ-ಗಮ್ಲ (ಗತೀ) "ಙ:" (೩-೩-೧೦೧) | (ವಿಂ) 2. ಅಲಸ, ಮಂದ, ಸೋಮಾರಿ. 3. ಕುಟಲವಾದ ವ್ಯಾಪಾರವುಳ್ಳ, ಕಪಟವ್ಯವಹಾರವುಳ್ಳ. "ನಿಸರ್ಗತಮಸಸ್ತಸ್ಯ ಜಿಹ್ವಾಗಸ್ಯಾಜ್ಞಮುತಮಮ್" ಯಾದಂ ೧೬-೧೦೬ | 4. ಸಾವಕಾಶವಾಗಿ ನಡೆಯುವ.

ಜಿಹ್ವಾಮೇಹನ ಜಿಹ್ವಾಮೇಹನ (ಪುಂ) ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. ಜಿಹ್ವಾಶಿನ್ ಜಿಹ್ವಾಶಿನ್ (ವಿಂ) ನಿಧಾನವಾಗಿ ಉಂಟು ಮಾಡುವ. ಜಿಹ್ವಾಮೇಹನ-ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಗಿಹಿ:" (೩-೩-೧೮೮) |

ಜಿಹ್ವಾಂ ಜಿಹ್ವಾಂ (ವಿಂ) ವಕ್ರವಾಗಿರುವ, ಬಗ್ಗಿರುವ, ಕುಟಲವಾಗಿರುವ.

ಜಿಹ್ವಾಂ ಜಿಹ್ವಾಂ (ವಿಂ) ಡೊಂಕಾಗಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ವಕ್ರವಾಗಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಜಿಹ್ವಾಂ ಜಿಹ್ವಾಂ (ವಿಂ) ಹೊಟ್ಟೆಬಾಕ, ಜಿಹ್ವಾಚಾಪಲ್ಯ, ವಿವೇಚನಾ. ಜಿಹ್ವಾವ್ಯಾಪಾರಂ ಲಾತಿ - ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೩-೩) | "ಶ್ರಾದ್ಧಂ ಕೃತ್ವಾ ಪರಶ್ರಾದ್ಧೇ ಭುಂಜತೇ ಯೇ ಚ ಜಿಹ್ವಾಃ | ಪತಂತಿ ನರಕೇ ಘೋರೇ ಲುಪ್ತಪಿಂಡೋದಕ-ಕ್ರಿಯಾ:" |

ಜಿಹ್ವಾಂ ಜಿಹ್ವಾಂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಾಲಗೆ. ಲಿಹನ್ಯನಯಾ-ಲಿಹ (ಆಸ್ವಾದನೆ) "ವನ್" ಲಕಾರಸ್ಯ ಜಕಾರಶ್ಚ ನಿಪಾಂ (೩ಂ ೧-೧೫೨) | "ಭಿನ್ನಾಕೃತಿಂ ಜ್ಯಾಂ ದದೃಶುಃ ಸ್ಫುರಂತೀಂ ಕೃದಸ್ಯ ಜಿಹ್ವಾಮಿವ ತಕ್ಷಕಸ್ಯ" ಕಿರಾಂ ೧೭-೨೪ | 2. ಅಗ್ನಿಯ ಜ್ವಾಲೆ, ಬೆಂಕಿಯ ಉರಿ. 3. ವಾಕ್ಕು, ಮಾತು. "ಜಿಹ್ವಾ ತು ವಾಚಿ ಜ್ವಾಲಾರಸಜಯೋ:" ಹೇಮಂ |

ಜಿಹ್ವಾಂ ಜಿಹ್ವಾಂ (ನಂ) ನಾಲಗೆಯ ತುದಿ. ಜಿಹ್ವಾಯಾ ಅಗ್ರಮ್ | "ಮಧು ತಿಷ್ಠತಿ ಜಿಹ್ವಾಗ್ರೇ ಹೃದಿ ಹಾಲಾಹಲಂ ವಿಷಮ್" ಹಿತೋಂ |

ಜಿಹ್ವಾಂ ಜಿಹ್ವಾಂ (ನಂ) "ಜಿಹ್ವಾಲೋಯ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಜಿಹ್ವಾಯಾಶ್ರಾಪಲ್ಯಮ್ |

ಜಿಹ್ವಾಂ ಜಿಹ್ವಾಂ (ಪುಂ) ನಾಲಗೆಯಿಂದ ಮಾತ್ರ ಮಂತ್ರ ವನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸಿ ಮಾಡುವ ಜಪ, ಶಬ್ದವು ಹೊರಗೆ ಕೇಳಿಸದಂತೆ ಮಂತ್ರೋಚ್ಚಾರಣೆ ಮಾಡಿ ಜಪಿಸುವುದು. ಜಿಹ್ವಾಯಾ ಜಪಃ | "ಜಿಹ್ವಾಂ ಜಪಃ ಸ ವಿಜ್ಞೇಯೋ ಕೇವಲಂ ಜಿಹ್ವಾಯಾ ಬುಧಿ:" ತನ್ತ್ರಸಾಂ | "ಉಚ್ಚೇಜಂ ಪಾದ್ವಿಶಿಷ್ಟಃ ಸ್ಯಾದ್ವಿಶಿಷ್ಟಶಿಖರಗುಣಃ | ಜಿಹ್ವಾಂ ಜಪಃ ಶತಗುಣಃ ಸಾಹಸ್ರೋ ಮಾನಸಃ ಸ್ಮೃತಃ" ತನ್ತ್ರಸಾಂ |

ಜಿಹ್ವಾಂ ಜಿಹ್ವಾಂ (ನಂ) ನಾಲಗೆಯ ಮೇಲ್ಮೈ, ನಾಲಗೆಯ ಹೊರಮೈ. ಜಿಹ್ವಾಯಾಸ್ತಲಮ್ |

ಜಿಹ್ವಾಂ ಜಿಹ್ವಾಂ (ನಂ) ನಾಲಗೆಯನ್ನು ಉಜ್ಜುವ (ತಿಕ್ಕುವ) ಸಾಧನ. ಜಿಹ್ವಾ ನಿಲಿಖ್ಯತೇನಯಾ-ನಿರ್+ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |

ಜಿಹ್ವಾಂ ಜಿಹ್ವಾಂ (ಪುಂ) ನಾಲಗೆಯಿಂದ ಕುಡಿಯುವ 1. ನಾಯಿ. 2. ಹುಲಿ. 3. ಬೆಕ್ಕು, ಮಾರ್ಬಾರ. 4. ಕರಡಿ. ಜಿಹ್ವಾಯಾ ಪಿಬತಿ - ಪಾ (ಪಾನೆ) "ಕ:"



(೩-೨-೪) | "ಜಿಹ್ವಾಪಸ್ತು ಶುನಿ ವ್ಯಾಘ್ರೇ ದ್ವಿಪಿಬಿಡಾಲಯೋಃ"  
ಹೇಮಂ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಜಿಃ" (೪-೧-೪೧) |  
ಜಿಹ್ವಾಮಲ ಜಿಹ್ವಾಮಲ(ನಂ) ನಾಲಗೆಯ ಕೊಳೆ. ಜಿಹ್ವಾಯಾ  
ಮಲಮ್ |

ಜಿಹ್ವಾಮಲ ಜಿಹ್ವಾಮಲ (ನಂ) ನಾಲಗೆಯ ಬುಡ.

ಜಿಹ್ವಾಮಲೀಯ ಜಿಹ್ವಾಮಲೀಯ (ವಿಂ) ನಾಲಗೆಯ  
ಬುಡದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ (ಕರ್ವರ್ಗ) ವರ್ಣ. ಜಿಹ್ವಾಮಲೇ ಭವಃ  
"ಞಃ" (೪-೩-೬೨) | "ಜಿಹ್ವಾಮಲೀಯಸ್ಯ ಜಿಹ್ವಾಮಲಮ್"  
ಸಿಂ ಕೌಂ | "ಜಿಹ್ವಾಮಲೇ ತು ಕುಃ ಪ್ರೋಕ್ತೋ ದಂತ್ಯೋಽಥ ವಃ  
ಸ್ಮೃತೌ ಬುಧಃ" ಪಾಂ ಸಿಂ | ಕರ್ವರ್ಗದ ವರ್ಣವು ಪರವಾದರೆ  
ವರ್ವರ್ಗ(ಃ)ಕ್ಕೆ ಬರುವ ವರ್ಣ. ಕಂಕರೋತಿ | ಕಂಕನತಿ |

ಜಿಹ್ವಾರದ ಜಿಹ್ವಾರದ (ಪುಂ) ಪಕ್ಕಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಜಿಹ್ವಾ ರದ  
ಇವ ಯಸ್ಯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಜಿಃ" (೪-೧-೬೩) |

ಜಿಹ್ವಾಲೋಯ ಜಿಹ್ವಾಲೋಯ(ನಂ) ಜಿಹ್ವಾಚಾಪಲ್ಯ, ಹೊಟ್ಟೆ  
ಬಾಕತನ, ಜಿಹ್ವಾಯಾ ಲೋಯಮ್ | "ಜಿಹ್ವಾಲೋಯಪ್ರಸಕ್ತಾನಾಂ  
ಜಲಮಧ್ಯನಿವಾಸಿನಾಮ್" ಪञ्ಚತಂ ೨-೩ |

ಜಿಹ್ವಾಸ್ವಾದ ಜಿಹ್ವಾಸ್ವಾದ (ಪುಂ) ನಾಲಗೆಯಿಂದ ರುಚಿ  
ನೋಡುವುದು, ನಾಲಗೆಯಿಂದ ಸವಿಯುವುದು. ಜಿಹ್ವಾಯಾ  
ಆಸ್ವಾದಃ |

ಜಿಹ್ವಾಸ್ವಾದನ ಜಿಹ್ವಾಸ್ವಾದನ (ನಂ) ನಾಲಗೆಯಿಂದ ನೆಕ್ಕಿ  
ರುಚಿನೋಡುವುದು, ನಾಲಗೆಯಿಂದ ಸವಿಯುವುದು.  
ಜಿಹ್ವಾಯಾ ಆಸ್ವಾದನಮ್ |

ಜಿನ್ ಜಿನ್ (ನಂ) 1. ಜರ್ವದ ಜಿನ್. (ವಿಂ) 2. ವೃದ್ಧ,  
ಮುದುಕ. ಜ್ಯಾ (ವಯೋಹಾನಿ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) |  
ಸಂಪ್ರಸಾರಣಮ್ (೬-೧-೧೬) |

ಜಿಮೂತ ಜಿಮೂತ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಜಿವನ್  
ಜಲಂ ಮೂತಂ ಬದ್ಧಮನೇನ-ಮೂಙ್ (ಬಂಧನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |  
"ಇಚ್ಛೋತನ್ಮದಾಮ್ಭಃಕಣಕೇನ ಕೇನಚಿಜ್ಜನಸ್ಯ ಜಿಮೂತಕದಂಬ-  
ಕದ್ವುತಾ" ಮಾಘಂ ೧೨-೪೮ | 2. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. 3. ಸೇವಕ, ಆಳು. 4. ಇಂದ್ರ. 5. ದೇವತಾಳೆ ಮರ.  
"ಜಿಮೂತೋದ್ರೋ ಭೃತಿಕರೇ ದೇವತಾಡೇ ಪಯೋಧರೇ" ಮೇದಿಂ |  
6. ವೃತ್ತರತ್ನಕರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ದಂಡಕದ ಒಂದು  
ಭೇದ. "ಪ್ರತಿಚರಣವಿವೃದ್ಧೇಫಾಃ ಸ್ಯುರಣಿಂವಿವ್ಯಾಲಜಿಮೂತ-  
ಲಿಲಾಕರೋದಾಮಶಹ್ವಾದಯಃ" ವೃಂ ೨೦ | 7. ಕೊನ್ನಾರಿಯು  
ಒಂದು ಭೇದ. 8. ಒಬ್ಬ ಮುಷಿ.

ಜಿಮೂತಕ ಜಿಮೂತಕ (ಪುಂ) ದೇವತಾಳೆ ಮರ. ಜಿಮೂತ  
ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕಃ" | "ಜಿಮೂತಕೈಃಕೋಶವತೀಫಲೈಶ್ಚ ದಂತೀಂದ್ರ-  
ವಂತೀವಿವೃತಾಸು ಚೈವ" ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೧೮-೨೦ |

ಜಿಮೂತಕೂಟ ಜಿಮೂತಕೂಟ (ಪುಂ) ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ.  
ಜಿಮೂತಕೇತು ಜಿಮೂತಕೇತು (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ವಿದ್ಯಾರ್ಥರ  
ರಾಜ, ಜಿಮೂತವಾಹನನ ತಂದೆ.

ಜಿಮೂತಮೂಲ ಜಿಮೂತಮೂಲ(ನಂ) ಕಜ್ಜೀರ. ಜಿಮೂತಸ್ಯ  
ಮೂಲಮಿವ ಮೂಲಮಸ್ಯ |

ಜಿಮೂತವಾಹನ ಜಿಮೂತವಾಹನ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ.  
ಜಿಮೂತೋ ಮೇಘೋ ವಾಹನಮಸ್ಯ | 2. ಜಿಮೂತಕೇತುವಿನ  
ಮಗ, ಒಬ್ಬ ವಿದ್ಯಾರ್ಥರಾಜಕುಮಾರ. "ಅಥ ತಸ್ಯಾ-  
ಚಿರಾದೇವ ರಾಜಃ ಸ್ಮನುರಜಾಯತ | ಜಿಮೂತವಾಹನಂ ತಂ ಚ ನಾಮ್ನಾ  
ಸ ವಿದಧೇ ಪಿತಾ" ಕಥಾಸಂ |

ಜಿರ ಜಿರ (ಪುಂ) 1. ಜಿರಿಗೆ 2. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. ಜ್ಯಾ  
(ವಯೋಹಾನಿ) "ರಕ್" (೩ಂ ೨-೨೪) | (ವಿಂ) 3.  
ವೇಗವಾದ, ಚುರುಕಾದ. ಸಂಜ್ಞಾಯಾಂ "ಕನ್" (೪-೩-೭೪) |

ಜಿರಕಃ ಜಿರಕಃ.

ಜಿರಣ ಜಿರಣ (ಪುಂ) ಜಿರಿಗೆ. ಜರಯತಿ-ಜ್ (ವಯೋಹಾನಿ)  
+ಗಿನ್ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) | ಪೃಷಂ |

ಜಿರ್ಣ ಜಿರ್ಣ (ವಿಂ) 1. ಜಿರ್ಣ, ಮುದುಕ, ವೃದ್ಧ.  
ಜಿರ್ಯಂತಿ ಸಮ - ಜಃ (ವಯೋಹಾನಿ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) |  
"ಜಿರ್ಣೋ ಜಿರ್ಣೋ ಜರತ್ನಪಿ" ಅಮಂ | 2. ಪುರಾತನವಾದ,  
ಹಳೆಯದಾದ. "ವಾಸಾಂಸಿ ಜಿರ್ಣಾನಿ ಯಥಾ ವಿಹಾಯ ನವಾನಿ  
ಗೃಹ್ಣಂತಿ ನರೋಽಪರಾಣಿ" ಗೀತಾ ೨-೨೨ | 3. ಜಠರಾಗ್ನಿಯಿಂದ  
ಅರಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಜಠರಾಗ್ನಿಯಿಂದ ಪಕ್ವವಾದ. "ಜಿರ್ಣೋಽಞ್ಞ  
ವರ್ಧತೇ ವಾಯುರ್ವಿದಗ್ಧೇ ಪಿತ್ತಮೇವ ತು | ಭುಕ್ತಮಾತ್ರೇ ಕಫಶ್ಚಾಪಿ  
ತಸ್ಮಾದ್ಭುಕ್ತೇರಿತಂ ಕಫಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬-೪೮೪ |  
(ನಂ) 4. ಸಾಂಬ್ರಾಣಿ. 5. ಮುಪ್ಪು, ಮುದಿತನ.

ಜಿರ್ಣಿಜ್ವರ ಜಿರ್ಣಿಜ್ವರ (ಪುಂ) ಹಳೆಯ ಜ್ವರ, ಬಿಡಲಾರದ  
ಜ್ವರ, ಹನ್ನೆರಡು ದಿನಗಳಿಗೂ ಮೇಲ್ಪಟ್ಟ ಜ್ವರ, ಬಹಳ  
ಕಾಲದಿಂದಲೂ ಎಳೆಯುತ್ತಿರುವ ದೀರ್ಘಜ್ವರ. ಜಿರ್ಣಿಜ್ವರಸೌ  
ಜ್ವರಶ್ಚ | "ಯೋ ದ್ವಾದಶಮ್ಯೋ ದಿವಸೇಽಸ್ಯ ಋತ್ವಂ ದೋಷತ್ರಯೇಽಸ್ಯೋ  
ದ್ವಿಗುಣೇಽಸ್ಯ ಋತ್ವಮ್ | ನೃಣಾಂ ತನೌ ತಿಷ್ಠತಿ ಮಂದವೇಗೋ  
ಭಿಷಗ್ಭಿರಸ್ತು ಜ್ವರ ಏವ ಜಿರ್ಣಃ" ಭಾವಪ್ರಂ | "ಶಠಿ  
ತಮಾಲಕೀಭಾರ್ಗಿ ಮೇದಾಮಲಕಪೌಷ್ಕರೈಃ | ಕ್ಷೀರದ್ವಿಗುಣಸಂಯುಕ್ತಂ  
ಜಿರ್ಣಿಜ್ವರಮಪೋಹತಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರತಂ ೩೯-೨೨೪ |

ಜಿರ್ಣಿಜ್ವರಿನ್ ಜಿರ್ಣಿಜ್ವರಿನ್ (ವಿಂ) ಹಳೆಯ ಜ್ವರದಿಂದ  
ಕೂಡಿದ, ಬಹಳಕಾಲದಿಂದಲೂ ಪೀಡಿಸುತ್ತಿರುವ ಜ್ವರ  
ವುಳ್ಳ. ಜಿರ್ಣಿಜ್ವರೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) |  
"ಜಿರ್ಣಿಜ್ವರೀ ನರಃ ಕುರ್ಯಾನ್ನೋಪವಾಸಂ ಕದಾಚನ | ಲಙ್ಘನಾತ್ಸ  
ಭವೇತ್ ಕ್ಷೀಣೋ ಜ್ವರಸ್ತು ಸ್ಯಾದ್ವಲಿ ಯತಃ" ಭಾವಪ್ರಂ |



(5) उप + जीव = उपजीवति । उपजीवनम् । अत्र  
 यिसि जीविसु, २५५५ अत्रयपडेदु जीवसमूहः  
 "शेषास्तमुपजीवेयुः यथैव पितरं तथा" मनु० ९-१०५ ।



ಜಿವ ಜೀವ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾಣ. ಜಿವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಅಹಸ್ತಾನಿ ಸಹಸ್ತಾನಾಮಪದಾನಿ ಚತುಷ್ಪದಾಮ್ | ಫಲಗ್ನಿ ತತ್ರ ಮಹತಾಂ ಜಿವೋ ಜಿವಸ್ಯ ಜಿವನಮ್" ಭಾಗಂ ೧-೧೩-೪೬ | 2. ಬೃಹಸ್ಪತಿ, ದೇವತೆಗಳ ಗುರು. ಜಿವಯತಿ - ಜಿವ + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಅಸ್ಮಾಲಿಲಿಜ್ಜಾರ್ಚನಾಶ್ರಿತಂ ಜಿವಮೂರ್ತಿಸಿ ಮೇ ಯತಃ | ಅತೋ ಜಿವ ಇತಿ ಖ್ಯಾತಿಂ ತ್ರಿಘ್ನ ಲೋಕೇಷು ಯಾಸ್ತಸಿ" ಕಾಶೀಖಂ | 3. ವಿಷ್ಣು. ಭಾಗವತಾನಾತ್ಮನಾಶಾತ್ ವ್ಯಾವರ್ತ್ಯ ಸ್ವಪರಿಚಯಯಾ ಜಿವಯತಿ - ಜಿವ + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). "ತಾನಾತ್ಮನಾಶಾದ್ವ್ಯಾವರ್ತ್ಯ ಸತ್ವಾನ್ಯಶ್ಚ ಸ್ವಸೇವಯಾ | ತಜ್ಜಿವಯತಿ ಜಿವಃ ಸಃ ಭಕ್ತಕಲೇಶಾಸಹೋ ಮನುಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | "ಆನಂದಮೂರ್ತಿರಭಗವಾನ್ ಹರಿಸ್ತೈಲೋಕ್ಯಪೂಜಿತಃ | ದ್ರಷ್ಟುಂ ನ ಸಹತೇ ದೇವಿ ಕಿಲಿಷ್ಠಾನ್ ಸ್ವಪರಿಚಾರಕಾನ್" | "ಜಿವೋ ವಿನಯಿತಾ ಸಾಕ್ಷಿ" ವಿಂ ಸಂ | 4. ಕ್ಷೇತ್ರಜ್ಞ, ಜೀವಾತ್ಮ. [ನಾನಾ ದರ್ಶನಕಾರರು ಹೇಳಿರುವ ಜೀವಾತ್ಮಸ್ವರೂಪದ ವಿವರವನ್ನು "ಆತ್ಮನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. ಎಲ್ಲಾ ದರ್ಶನಕಾರರೂ ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುವ ಜೀವಾತ್ಮರು ಜನ್ಮ ಜರಾಮರಣರೂಪವಾದ ಕ್ಲೇಶಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸಲೇ ಬೇಕು. ಜೀವನು ತನ್ನ ಕರ್ಮಾನುಸಾರ ತೀರ್ಥ ಮನುಷ್ಯಾದಿ ದೇಹವನ್ನು ಪಡೆಯಲು ಆಹಾರಾದಿಗಳ ಮೂಲಕ ಪುರುಷನ ರೇತಸ್ಸನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿ ಸ್ತ್ರೀಯರ ಗರ್ಭವನ್ನು ಸೇರುವನು. ರೇತಸ್ಸು ಹತ್ತು ದಿನಗಳ ಬಳಿಕ ಅಂಡಾಕಾರವಾಗುವುದು. ಈ ರೂಪವನ್ನು ತಾಳಿದ ಜೀವನಿಗೆ ಒಂದು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ತಲೆಯೂ ಎರಡು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಶರೀರವೂ ಕರಚರಣಮೊದಲಾದ ಅವಯವಗಳೂ ಉಂಟಾಗುವವು. ಮೂರು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ನಖ ಕೂದಲು ಅಸ್ಥಿ (ಎಲುಬು) ಚರ್ಮ ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷ ಚಿಹ್ನೆಗಳು ಹುಟ್ಟುವವು. ನಾಲ್ಕು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ರಕ್ತ ಮಾಂಸ ಮೊದಲಾದ ಸಪ್ತಧಾತುಗಳೂ ಐದನೆಯ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಹಸಿವೂ ಬಾಯಾರಿಕೆಯೂ ಉಂಟಾಗುವವು. ಆರನೆಯ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಗರ್ಭಾಶಯದಿಂದ ಆವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ತಾಯಿಯ ಹೊಟ್ಟೆಯ ಬಲಭಾಗದಲ್ಲಿ ಚಲಿಸಲು ಆರಂಭಿಸುವುದು. ತಾಯಿ ತಿಂದ ಆಹಾರದಿಂದಲೇ ಬೆಳೆಯುತ್ತ ಮಲಮೂತ್ರಾಶಯಗಳಲ್ಲಿ ಹೊರಳಾಡುತ್ತ ಅಲ್ಲಿರುವ ಕ್ರಿಮಿಕೀಟಾದಿಗಳ ಬಾಧೆಗಳನ್ನು ತಡೆಯಲಾರದೆ ಪದೇ ಪದೇ ಪ್ರಜ್ಞಾಹೀನನಾಗುವನು. ತಾಯಿ ತಿನ್ನುವ ಹುಳಿ ಕಹಿ ಕಾರದ ಆಹಾರಗಳಿಂದ ಅವಯವಗಳಲ್ಲಿ ಬಾಧೆಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತ ತಾಯಿಯ ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಬೆನ್ನು ಕತ್ತುಗಳನ್ನು ಬಗ್ಗಿಸಿಕೊಂಡು ಅತ್ತಿತ್ತ ಚಲಿಸಲು ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದೆ ಪೇಚಾಡುವನು. ಈ ಅವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಅನುಭವಿಸು

ತ್ತಿರುವ ಜೀವನಿಗೆ ಹಿಂದಿನ ನೂರಾರು ಜನ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ತಾನು ಮಾಡಿದ ಪುಣ್ಯಪಾಪಗಳ ಸ್ಮರಣೆಯುಂಟಾಗಿ ಅದರಿಂದ ಪರಿತಪಿಸುವನು. ಏಳನೆಯ ತಿಂಗಳಿಂದ ಸರಿಯಾದ ಜ್ಞಾನ ವುಂಟಾದರೂ ಪ್ರಸೂತಿವಾಯುವಿನಿಂದ ಒಂದು ಕಡೆ ನಿಲ್ಲದೆ ಹೊರಳಾಡುತ್ತಿರುವನು. ಹತ್ತನೆಯ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಸೂತಿ ವಾಯುವಿನಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ನೂಕಲ್ಪಟ್ಟು ಜನ್ಮವನ್ನು ತಾಳುವನು. ಭೂಸ್ವರ್ಣವಾದ ಕೂಡಲೆ ಮಾಯೆಯಿಂದ ಪೂರ್ವ ಜನ್ಮಸ್ಮರಣೆಯು ನಾಶವಾಗಿ ಕಿರುಚಿಕೊಳ್ಳುವನು. ಶಿಶುವಾಗಿರುವಾಗ ಅವನ ಅವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹೇಳತೀರದು. ಹಸಿವನ್ನು ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳಲು ಬಾಯಿಲ್ಲ. ನವೆಯಾದರೆ ಕೆರೆದು ಕೊಳ್ಳಲು ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲ. ಹೇಸಿಗೆಯ ಹಾಸಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಮಲಗಿ ಕೊಂಡು ಸೊಳ್ಳೆ ತಿಗಣೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಕಡಿತದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಬಾಧೆಯನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತ ಒದ್ದಾಡುತ್ತಿರುವನು. ಈ ರೀತಿ ಮೂಕಪ್ರಾಣಿಯಂತೆ ಶೈಶವವನ್ನು ಕಳೆದು ಮುಂದೆ ಬಾಲ್ಯ ಯೌವನ ಮುಂತಾದ ಅವಸ್ಥೆಗಳಲ್ಲಿ ಇವನ ಪ್ರಾಪಂಚಿಕ ವ್ಯವಹಾರಗಳು ನಡೆಯಬೇಕು. ವಿವೇಕದಿಂದ ನಡೆದುಕೊಂಡರೆ ಶುಭಫಲ. ಅವಿವೇಕಿಯಾಗಿ ಅಜ್ಞಾನದಿಂದ ವ್ಯವಹರಿಸಿದರೆ ಅದರ ಫಲವನ್ನು ಮುಂದೆ ಜನ್ಮಜನ್ಮಾಂತರಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಅನುಭವಿಸಬೇಕಾಗುವುದು.] ಭಾಗಂ ೩-೩೧ | 5. ಕರ್ಣ. 6. ಪ್ರಾಣಧಾರಣ, ಬದುಕಿರುವುದು, ಜೀವಿಸಿರುವುದು. ಜಿವ ಭಾವೆ "ಏಚ್" (೩-೩-೧೮) | 7. ಪ್ರಾಣವಾಯು. 8. ವೃತ್ತಿ, ಜೀವಿಕೆ, ಜೀವನೋಪಾಯ. 9. ಸೀಹಾಲೆ ಗಿಡ. 10. ಪುಷ್ಯನಕ್ಷತ್ರ. 11. (ಜೈನಮತದಲ್ಲಿ) ಜೀವಾಸ್ತಿಕಾಯ. (ವಿಂ) 12. ಜೀವದಿಂದ ಕೂಡಿರುವ, ಜೀವಸಹಿತವಾದ. "ಕರ್ಷಂತೋ ಲಾಙ್ಗಲೈಃ ಪುಂಸೋ ಧ್ವಂತಿ ಭೂಮಿಶಯಾನ್ ಬಹುನ್ | ಜೀವಾನನ್ಯಾಶ್ಚ ಸುಬಹುನ್ ತತ್ರ ಕಿಂ ಪ್ರತಿಭಾತಿ ತೇ || ಧಾನ್ಯಬೀಜಾನಿ ಯಾನ್ಯಾಹುರ್ಬ್ರಿಹದಾದಿನಿ ದ್ವಿಜೋತ್ತಮ | ಸರ್ವಾಣ್ಯೇತಾನಿ ಜೀವಾನಿ ತತ್ರ ಕಿಂ ಪ್ರತಿಭಾತಿ ತೇ || ಜೀವಾ ಹಿ ಬಹವೋ ಬ್ರಹ್ಮಾನ್ ವೃಕ್ಷೇಷು ಚ ಫಲೇಷು ಚ || ತದಕೇ ಬಹವಶ್ಚಾಪಿ ತತ್ರ ಕಿಂ ಪ್ರತಿಭಾತಿ ತೇ" ಭಾಂ ವನಂ ೨೧೨ | ಜೀವನ ಪ್ರಮಾಣ: ಒಂದು ಕೂದಲಿನ ತುದಿಯನ್ನು ನೂರು ಭಾಗ ಮಾಡಿ ಅದರ ಒಂದು ಭಾಗವನ್ನು ಮತ್ತೆ ನೂರು ಭಾಗ ಮಾಡಿದರೆ ಆ ನೂರನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗವು ಜೀವನ ಪ್ರಮಾಣ. "ವಾಲಾಗ್ರಶತಭಾಗಸ್ಯ ಶತಘಾ ಕಲ್ಪಿತಸ್ಯ ಚ | ಭಾಗೋ ಜಿವಃ ಸ ವಿಜ್ಞೇಯಃ ಸ ಚಾನನ್ಯಾಯ ಕಲ್ಪತೇ" ಇತಿ ಶ್ರುತಿಃ |

ಜಿವಕ ಜೀವಕ (ಪುಂ) 1. ಹೊನ್ನೆಮರ. ಜಿವಯತಿ-ಜಿವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ)+ಣಿಚ್ "ಏಚ್" (೩-೧-೧೩೩) | "ಸರ್ಜಕಃ



ಸನವನ್ಮುಕಪುಷ್ಪಪ್ರಿಯಕಜೀವಕಾ:” ಅಮಂ । 2. ಪ್ರಾಣ. 3. ಸೇವಕ, ಇತರರ ಅಶ್ರಯದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. 4. ಭಿಕ್ಷುಕ, ಯಾಚಕ. 5. ಕ್ಷುಪಣಕ, ಬೌದ್ಧಸಂನ್ಯಾಸಿ. 6. ಹಾವಾಡಿಗ. 7. ಹಕ್ಕುಸಿಳ್ಳಿಗಿಡ. “ಕುಂವೇಶಿರೋ ಮಧುರಕ: ಶೃಂಗಹಸ್ವಾಜ್ಜೀವಕಾ:” ಅಮಂ । (ವಿಂ) 8. ಬಹುಕಾಲ ಬದುಕುವವನು. 9. ಬಡ್ಡಿಯ ಹಣದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. 10. ಜೀವನವನ್ನು ಕೊಡುವವನು. 11. ಶ್ರೇಷ್ಠ ವಾದ. “ಜೀವಕ: ಪ್ರವರೇ ಜಂತೌ ಶ್ರಮಣೇ ವೃದ್ಧಿಜೀವಿನಿ” ವೈಜಂ । “ಜೀವಕ: ಪಿತಸಾಲೇ ಸ್ಯಾತ್ ಕ್ಷಪಣೇ ವೃದ್ಧಿಜೀವಿನಿ । ಸೇವಿನಿ ಪ್ರಾಣಕೇಷ್ಯಾಹಿತುಣ್ಡಿಕೇ ಪಾದಪಾಂತರೇ” ವಿಶ್ವಂ । 12. ಜೀವಿಸಿರುವವನು, ಬದುಕಿರುವವನು, ಜೀವನ ನಡೆಸುವವನು.

**ಜೀವಕೋಶ ಜೀವಕೋಶ** (ಪುಂ) ಜೀವಾತ್ಮನಿಗೆ ಅವರಣೆ ವಾಗಿರುವ ಒಂದು ಕೋಶ. “ದಹ್ಯವೀರ್ಯ ಹೃದಯಂ ಜೀವಕೋಶಂ ಪಂಚಾತ್ಮಕಂ ಯೋನಿಮಿವೋತ್ಥಿತೋಗ್ನಿ:” ಭಾಗಂ ೪-೨೨-೨೬ ।

**ಜೀವಗ್ರಾಹಮ್ ಜೀವಗ್ರಾಹಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಜೀವಸಹಿತ ಹಿಡಿದು. ಜೀವಂತ ಗೃಹೀತ್ವಾ — ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) “ಗಮುಲ್” (೩-೪-೩೬) । “ಜೀವಗ್ರಾಹಂ ಗ್ರಾಹ್ಯಾಮಾಸುರನ್ಯೇ ಯೋಗೇನಾರ್ಥ: ಕಸ್ಯ ನ ಸ್ಯಾಜ್ಜನೇನ” ಮಾಘಂ ೧೮-೬೬ ।

**ಜೀವಜೀವ ಜೀವಜೀವ** (ಪುಂ) ಚಕೋರಪಕ್ಷಿ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ “ಜಿಷ್” (೪-೧-೬೩) । —ಜಿವಿ —ಜೀವಿ.

**ಜೀವಜೀವಕ ಜೀವಜೀವಕ** (ಪುಂ) ಚಕೋರಪಕ್ಷಿ, ಜೀವಜೀವ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕ:” । “ಹೃತ್ವಾ ರಕ್ತಾನಿ ವಾಸಾಂಸಿ ಜಾಯತೇ ಜೀವಜೀವಕ:” ಮನುಂ ೧೨-೬೬ ।

**ಜೀವಜ್ಜೀವ ಜೀವಂಜೀವ** (ಪುಂ) 1. ಚಕೋರಪಕ್ಷಿ. 2. ಒಂದು ಮರ. ಜೀವಂ ಜೀವಯತಿ — ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) “ಖಚ್” ಬಾಹುಂ (೩-೩-೧೧೩) । “ಜೀವಜ್ಜೀವಶ್ಚಕೋರೇ ಸ್ಯಾತ್ ದ್ರುಮಭೇದೇಽಪಿ ಪುಂಸ್ಯಯಮ್” ಮೇದಿಂ ।

**ಜೀವತ್ ಜೀವತ್** (ವಿಂ) ಬದುಕಿರುವ, ಪ್ರಾಣವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । “ಜೀವನ್ ಪುನ: ಶಶ್ವದುಪಪ್ಲವೇಮ್ಯ: ಪ್ರಜಾ: ಪ್ರಜಾನಾಥ ಪಿತೇವ ಪಾಸಿ” ರಘುಂ ೨-೪೮ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಜಿಷ್” (೪-೧-೬೩) । ಜೀವಂತಿ ಜೀವಂತೀ. “ಜೀವಂತಿ ಮಾಂ ಯಥಾ ರಾಮ: ಸಂಭಾವಯತಿ ಕೀರ್ತಿಮಾನ್ । ತತ್ತಥಾ ಹನುಮನ್ ವಾಚ್ಯಂ ವಾಚಾ ಧರ್ಮಮವಾಪ್ನುಹಿ” ರಾಮಾಂ ।

**ಜೀವತೋಕಾ ಜೀವತೋಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬದುಕಿರುವ ಮಕ್ಕಳು, ಹೆಂಗಸು. ಜೀವತ್ ತೋಕ ಯಸ್ಯಾ: ।

**ಜೀವತ್ಪತಿ ಜೀವತ್ಪತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬದುಕಿರುವ ಗಂಡನುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು, ಸುಮಂಗಲಿ. ಜೀವನ್ ಪತಿ: ಯಸ್ಯಾ: । “ಕಪ್” (೪-೪-೧೪೪) । —ಪತಿಕಾ —ಪತಿಕಾ.

**ಜೀವತ್ಪಿತೃಕ ಜೀವತ್ಪಿತೃಕ** (ಪುಂ) ಬದುಕಿರುವ ತಂದೆಯುಳ್ಳ ಮಗ. ಜೀವನ್ ಪಿತಾ ಯಸ್ಯ । “ಕಪ್” (೪-೪-೧೪೪) ।

**ಜೀವತ್ ಜೀವತ್** (ಪುಂ) 1. ಜೀವ, ಪ್ರಾಣ. ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) “ಅಥ:” (೩ಂ ೩-೧೧೩) । 2. ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ. 3. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. 4. ಮೇಘ, ಮೋಡ. (ವಿಂ) 5. ದೀರ್ಘಾಯುಷ್ಮಂತ, ದೀರ್ಘಕಾಲ ಬದುಕಿರುವವನು. 6. ಧಾರ್ಮಿಕ, ಸದಾಚಾರಸಂಪನ್ನ.

**ಜೀವದ ಜೀವದ** (ಪುಂ) 1. ವೈದ್ಯ, ಚಿಕಿತ್ಸಕ. ಜೀವಂ ದದಾತಿ — ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) “ಕ:” (೩-೨-೩) । 2. ಶತ್ರು. ಜೀವಂ ಧತಿ ಖಂಡಯತಿ — ದೋ (ಅವಖಂಡನೆ) “ಕ:” (೩-೨-೩) । (ವಿಂ) 3. ಜೀವನವನ್ನು ಕೊಡುವವನು.

**ಜೀವದಾತ್ ಜೀವದಾತ್** (ವಿಂ) 1. ಜೀವನವನ್ನು ಕೊಡುವವನು, ಪ್ರಾಣವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವವನು. ಜೀವಸ್ಯ ದಾತಾ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಜಿಷ್” (೪-೧-೬೩) । 2. ಜೀವನವನ್ನು ಕೊಡುವವನು. —ದಾತ್ರಿ —ದಾತ್ರಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಜೀವಂತಿ ವೈಕ್ಷ, ಸಿಹಿಹಾಲಿಗಿಡ. 4. ಮಾಚಿಪತ್ರಿ.

**ಜೀವದಾನ ಜೀವದಾನ** (ನಂ) 1. ಜೀವನವನ್ನು ಕೊಡುವುದು, ಪ್ರಾಣವನ್ನು ಕೊಡುವುದು. ಜೀವಸ್ಯ ದಾನಮ್ । 2. ಜೀವಿಕೆಯನ್ನು ಕೊಡುವುದು.

**ಜೀವಧನ ಜೀವಧನ** (ನಂ) ಹಸು ಮೊದಲಾದ ಜೀವರೂಪವಾದ ಸಂಪತ್ತು. ಜೀವ ಏವ ಧನಮ್ । “ಗವಾದಿಕಂ ಜೀವಧನಮ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಜೀವಧಾನಿ ಜೀವಧಾನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೃಥಿವಿ, ಭೂಮಿ. ಜೀವಾ: ಧೀಯಂತೇಽಸ್ಯಾಮ್ — ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೩) । “ಜಿಷ್” (೪-೧-೬೩) । “ದದರ್ಶ ಗಾಂ ತತ್ರ ಸುಷುಪ್ತುರಗ್ರೇ ಥಾಂ ಜೀವಧಾನಿಂ ಸ್ವಯಮಭ್ಯವತ್” ಭಾಗಂ ೩-೧೩-೩೦ ।

**ಜೀವನ ಜೀವನ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರ. ಜೀವಯತಿ — ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪) । ಸ್ವಹಸ್ತೇನ ಹನನಾತ್ ಗ್ರಾಹಮಪಿ ಗಂಧರ್ವತ್ವೇನ ಜೀವಯನ್ ಜೀವನ: । “ಸ್ವಹಸ್ತೇನ ಹತಂ ಗ್ರಾಹಂ ಗಂಧರ್ವತ್ವೇನ ಜೀವಯನ್ । ಪೂರ್ವಶಾಪಂ ನಿರಸ್ಯಾಥ ಯಸ್ತಿಷ್ಠತಿ ಸ ಜೀವನ:” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । “ವೀರಹಾ ರಕ್ಷಣ: ಸಂತೋ ಜೀವನ: ಪರ್ಯವಸ್ಥಿತ:” ವಿಂ ಸಂ । 2. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 3. ಪುತ್ರ, ಮಗ. (ನಂ) 4.



ಸದ್ಯೋಘೃತ, ಹೊಸತುಪ್ಪ. 5. ಮಜ್ಜೆ, ದೇಹಸಾರ. 6. ಜೀವಿಕೆ, ಜೀವನೋಪಾಯ, ವೃತ್ತಿ, ಕಸಬು. ಜೀವನಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದ ಉಪಾಯಗಳು: (1) ವಿದ್ಯೆ, (2) ಶಿಲ್ಪ, (3) ಕೂಲಿ, (4) ಸೇವೆ, (5) ಪಶುಪಾಲನೆ, (6) ವಾಣಿಜ್ಯ, (7) ವ್ಯವಸಾಯ, (8) ಸಂತೋಷ (ಧೈರ್ಯ), (9) ಭಿಕ್ಷೆ ಮತ್ತು (10) ಬಡ್ಡಿಗಾಗಿ ಧನವನ್ನು ಕೊಡುವ ವ್ಯವಹಾರ ಇವು ಹತ್ತು ಜೀವನಕ್ಕೆ ಉಪಾಯಗಳು. "ವಿद्या शिल्पं भृतिः सेवा गोरक्ष्यं विपणिः कृषिः। धृतिर्भक्ष्यं कुसीदं च दश जीवनहेतवः" ಮನುಂ ೧೦-೧೧೬. 7. ಜಲ, ನೀರು. ಜೀವ್ಯತೇನ-ಜೀವಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭). "उपचितजीवनधाराः सत्यभोजो निरस्तसन्तापाः" चं० रा०। "तडित्वन्तो महामेघाश्चण्डश्चसनवेपिताः। प्रीणनं जीवनं ह्यस्य मुमुक्षुः करुणा इव" भाग० १०-२०-६। 8. ಅನ್ನ. "जीवनान्नाशनान्धांसि" वैज०। 9. ಜೀವನ, ಬದುಕು, ಬಾಳುಮೆ. ಜೀವ ಭಾವೆ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). (ವಿಂ) 10. ಜೀವನವನ್ನು ಕೊಡುವ, ಜೀವನೋಪಾಯವನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸುವ.

ಜೀವನಕ ಜೀವನಕ (ನಂ) ಆಹಾರ, ಅನ್ನ. ಜೀವನ ಸಂಜ್ಞಾ "ಕನ್"।

ಜೀವನಾ ಜೀವನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೇದೆಯೆಂಬ ಒಂದು ಔಷಧದ ಲತೆ. ಜೀವಯತಿ-ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯು" (೩-೧-೧೩೪)।

ಜೀವನಾಘಾತ ಜೀವನಾಘಾತ (ಪುಂ) ಜೀವನವನ್ನು ನಾಶಗೊಳಿಸುವ ವಿಷ, ಪ್ರಾಣಹೀನವಾದ ನಂಜು. ಜೀವನಸ್ಯಾಘಾತೋ ಯಸ್ಮಾತ್।

ಜೀವನಾವಾಸ ಜೀವನಾವಾಸ (ಪುಂ) 1. ವರುಣ. ಜೀವನ ಜಲಮಾವಾಸೋಽಸ್ಯ। 2. ಶರೀರ, ದೇಹ. ಜೀವನಸ್ಯಾವಾಸಃ।

ಜೀವನೀ ಜೀವನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಿಹಿಹಾಲೆಗಿಡ. ಜೀವ್ಯತೇನ-ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। "डीप्" (೪-೧-೧೫)। "जीवन्ती जीवनी जीवा" अम०।

ಜೀವನೀಯ ಜೀವನೀಯ (ನಂ) 1. ಜಲ, ನೀರು. ಜೀವ್ಯತೇನ-ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) ಕರಂ ಬಾಹುಂ "ಅನೀಯರ್"। "कृपीटं काण्डमस्त्री स्यात् जीवनीयं कुशं विषम्" अम०। 2. ಕ್ಷೀರ, ಹಾಲು. "ऊधस्य जीवनीयं च धारोष्णं त्वमृतं पयः" वैज०। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -या-यौ. 3. ಸಿಹಿಹಾಲೆಗಿಡ. (ವಿಂ) 4. ಬದುಕಿಸಲ್ಪಡುವ, ಜೀವನ ನಡೆಸಲ್ಪಡುವ. ಜೀವ ಕರ್ಮಂ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬)

ಜೀವನೋಪಾಯ ಜೀವನೋಪಾಯ (ನಂ) ಬದುಕಿಸುವ ಔಷಧ.

ಜೀವಂತ ಜೀವಂತ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾಣ. 2. ಔಷಧ. (ವಿಂ) 3. ಜೀವಿಸಿರುವ, ಬದುಕಿರುವ. ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಜಕ್" (೩-೩-೧೨೭)।

ಜೀವಂತಿಕಾ ಜೀವಂತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬದುಕಿಗಿಡ, ಮರದ ಮೇಲೆ ಬೆಳೆಯುವ ಬಳ್ಳಿ. 2. ಅಮೃತ ಬಳ್ಳಿ. ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಜಕ್" (೩-೩-೧೨೭)। "डीप्" (೪-೧-೬೧)। "कन्" (೫-೩-೭೫)।

ಜೀವಂತೀ ಜೀವಂತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಿಹಿಹಾಲೆಗಿಡ. ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಜತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "डीप्" (೪-೧-೬)। 2. ಶಮಿಪುಷ್ಪ, ಬನ್ನಿಮರ. 3. ಬದುಕಿಗಿಡ, ಮರದ ಮೇಲೆ ಬೆಳೆಯುವ ಬಳ್ಳಿ. 4. ಅಮೃತ ಬಳ್ಳಿ. "जीवन्ती शमीवन्दयोः। जीवन्त्यां च गुडूच्यां च" हेम०। 5. ಅಳಲೆಗಿಡ.

ಜೀವನ್ಮುಕ್ತ ಜೀವನ್ಮುಕ್ತ (ವಿಂ) ವಿರಕ್ತ, ಜೀವಿಸಿರುವಾಗಲೇ ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನಪಡೆದು ಸಂಸಾರದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಹೊಂದಿ ದವನು. ಜೀವಶ್ಚೇವ ಮುಕ್ತಃ। ಜೀವನಿಗೆ ಬ್ರಹ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವಾದರೂ ಪ್ರಾರಬ್ಧಕರ್ಮವು ಮುಗಿಯುವವರೆಗೆ ದೇಹ ಪಾತವಾಗದೆ ಹಾಗೆಯೇ ಇರುವನು. ಆಗ ರಾಗದ್ವೇಷಾದಿ ಗಳಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಪ್ರಾರಬ್ಧಕರ್ಮಬಲದಿಂದ ಇವನ ವ್ಯವಹಾರವೆಲ್ಲವೂ ನಡೆಯುವುವು. "उत्पन्नात्मावबोधस्य ह्यद्वेष्टत्वादयो गुणाः। अयत्नतो भवन्त्यस्य न तु साधनरूपिणः"।

ಜೀವನ್ಮುಕ್ತಿ ಜೀವನ್ಮುಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬದುಕಿರುವಾಗಲೇ ಆತ್ಮಜ್ಞಾನ ಪಡೆದು ಸಂಸಾರಬಂಧನದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಹೊಂದುವುದು. ಜೀವತೋ ಮುಕ್ತಿಃ।

ಜೀವನ್ಮೃತ ಜೀವನ್ಮೃತ (ವಿಂ) ಬದುಕಿದ್ದರೂ ಮೃತನ ಸಮಾನನು, ಬದುಕಿದ್ದು ತನ್ನ ಕರ್ತವ್ಯವನ್ನು ನೆರವೇರಿಸದೆ ಕೇವಲ ತನ್ನ ಹೊಟ್ಟೆಪಾಡು ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುವವನು. ಜೀವಶ್ಚೇವ ಮೃತಃ ಮೃತತುಲ್ಯಃ। "जीवन्तो मृतकाश्चान्ये य आत्मममरयो नराः"।

ಜೀವಪತಿ ಜೀವಪತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುಮಂಗಲಿ, ಜೀವಿಸಿರುವ ಪತಿಯುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಜೀವಃ ಜೀವನ್ ಪತಿಯಸ್ಯಾಃ। "एतच्चरित्वा विधिवद्व्रतं विधोरभीप्सितार्थं लभते पुमानिह। स्त्रीत्वेतदास्थाय लभेत सौभगं श्रियं प्रजां जीवपतिं यशो गृहम्" भाग० ६-१९-२५। वा "कप्" (೫-೪-೧೫೪)। -ಪತಿಕಾ -ಪತಿಕಾ.



**ಜಿವಪತ್ನಿ ಜೀವಪತ್ನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುಮಂಗಲಿ, ಬದುಕಿರುವ ಪತ್ನಿಯುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಜೀವ: ಜೀವನ್ ಪತಿಯಸ್ಯಾ: ವಾ "ನ:" (೪-೧-೩೪) | "ಛೀಪ್" (೪-೧-೪) | ಪಕ್ಷೆ ಜಿವಪತಿ: ಜೀವಪತಿ: "ವಾಚಂ ವಿಸೃಜೇತ್ ಜಿವಪತ್ನೀಂ ಪ್ರಜಾಂ ವಿನೋದೇತಿ" ಆಶ್ವಂ ಗುಂ |

**ಜಿವಪುತ್ರ ಜೀವಪುತ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಬದುಕಿರುವ ಮಗನುಳ್ಳ ತಂದೆ. ಜೀವ: ಜೀವನ್ ಪುತ್ರೋ ಯಸ್ಯ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಬದುಕಿರುವ ಮಗನುಳ್ಳ ತಾಯಿ. ಜೀವ: ಪುತ್ರೋ ಯಸ್ಯಾ: |

**ಜಿವಪುತ್ರಕ ಜೀವಪುತ್ರಕ** (ಪುಂ) ಮಗನಂತೆ ಬದುಕಿಸುವ ಒಂದು ವೃಕ್ಷ, ಇಂಗುದೀ ವೃಕ್ಷ. ಜೀವಯತಿ-ಜೀವ (ಪ್ರಾಣ-ಧಾರಣೆ) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) | ಜೀವ: ಪುತ್ರ ಇವ ಹೃಣೇತುತ್ವಾತ್ | ಇವಾರ್ಥ "ಕ್" (೪-೩-೯೭) |

**ಜಿವಪ್ರಿಯಾ ಜೀವಪ್ರಿಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಳಲಿಗಿಡ. (ವಿಂ) 2. ಬದುಕಿರುವ ಪತ್ನಿಯುಳ್ಳ ಪುರುಷ (ಗಂಡ).

**ಜಿವಭದ್ರಾ ಜೀವಭದ್ರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಿಹಿಹಾಲಿಗಿಡ.

**ಜಿವಮಂದಿರ ಜೀವಮಂದಿರ** (ನಂ) ಶರೀರ, ದೇಹ. ಜೀವಸ್ಯ ಮಂದಿರಮ್ |

**ಜಿವಮಾತೃಕಾ ಜೀವಮಾತೃಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಮಾರಿ ಮೊದಲಾದ ಏಳು ಸ್ತ್ರೀ ದೇವತೆಗಳು. "ಕುಮಾರಿ ಧನದಾ ನಂದಾ ವಿಮಲಾ ಮಙ್ಗಲಾ ಬಲಾ | ಪದ್ಮಾ ಚೇತಿ ಚ ವಿಖ್ಯಾತಾ: ಸಪ್ತತಾ ಜಿವಮಾತೃಕಾ:" ವಿಧಾನಪಾರಿಜಾತ: |

**ಜಿವಯೋನಿ ಜೀವಯೋನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೀವಸಂಹಿತವಾದ ಪ್ರಾಣ. ಬದುಕಿರುವ ಪ್ರಾಣ. ಜಿವಾ ಜೀವನವತೀ ಯೋನಿ: | "ತೀರ್ಯಙ್ಮನುಷ್ಯವಿಬುಧಾದಿಷು ಜಿವಯೋನಿಷು" ಭಾಗಂ ೩-೯-೧೯ |

**ಜಿವರಕ್ತ ಜೀವರಕ್ತ** (ನಂ) ಹೆಂಗಸರ ರಕ್ತಮ್. ಜಿವೋ-ತ್ಪಾದಕಂ ರಕ್ತಮ್ | ಹೆಂಗಸರ ರಕ್ತಮ್ನ ಪೃಥಿವಿ, ಅಪ್ಪು, ತೇಜಸ್ಸು, ವಾಯು ಮತ್ತು ಆಕಾಶ ರೂಪವಾದ ಪಂಚ ಭೂತಾತ್ಮಕವಾದುದು. "ಆತೆವಂ ಶೋಣಿತಂ ತ್ವಾಗ್ನೇಯಮಗ್ನಿ-ಪ್ರೋಮೀಯತ್ವಾತ್ ಗರ್ಭಸ್ಯ | ಪಾಶ್ಚಾತ್ಯಾಶ್ಚೈವ ಜಿವರಕ್ತಮಾಹು-ರಾಚಾರ್ಯಾ: | ವಿಸ್ತತಾ ದ್ರವತಾ ರಾಗ: ಸ್ಪಂದನಂ ಲಘುತಾ ತಥಾ | ಭೂಮ್ಯಾದೀನಾಂ ಗುಣಾಹೇತೇ ದೃಶ್ಯಂತೇ ಚಾತ್ರ ಶೋಣಿತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೧೪-೭, ೮, ೯ |

**ಜಿವಲೋಕ ಜೀವಲೋಕ** (ಪುಂ) 1. ಸಂಸಾರ. ಜಿವಾನಾಂ ಜಿವಾತ್ಮನಾಂ ಲೋಕ: ಭೋಗಸಾಧನಮ್ | "ಮಾತಾ ಪಿತಾ ಗುರುಜನ: ಸ್ವಜನೋ ಮಮೇತಿ ಮಾಯೋಪಮೇ ಜಗತಿ ಕಸ್ಯ ಭವೇತ್ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ | ಏಕೋ ಯತೋ ವ್ರಜತಿ ಕರ್ಮಪುರ: ಸರೋಽಯಂ ವಿಶ್ರಾಮವೃಕ್ಷಸದೃಶ: ಖಲು ಜಿವಲೋಕ:" | "ಮಮೇವಾಂಶೋ ಜಿವಲೋಕೇ ಜಿವಮೂತ: ಸನಾತನ:" ಗೀತಾ ೧೫-೭ | 2. ಜೀವರೂಪದ ಜನ. ಜಿವಶ್ರಾಸೌ

ಲೋಕಶ್ಚ | "ಸುವೃಷ್ಟಿಯೋಗಾದಿವ ಜಿವಲೋಕ: ಸಸ್ರೇನ ಸಂಪತ್ತಿ-ಫಲೋನ್ಮುಖೇನ" ರಘುಂ ೧೮-೨ | 3. ಭೂಮಿ, ಮನುಷ್ಯ ಲೋಕ. "ಮರ್ತ್ಯಲೋಕೋ ಜಿವಲೋಕ:" ವೈಜಂ |

**ಜಿವವೃತ್ತಿ ಜೀವವೃತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಶುಪಾಲನೆ, ಗೋವು ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಪೋಷಣೆ. ಜಿವ ಎವ ವೃತ್ತಿ: | 2. ಜೀವದಲ್ಲಿರುವ ಗುಣ. ಜಿವೇ ವೃತ್ತಿರಸ್ಯ |

**ಜಿವಸಂಕ್ರಮಣ ಜೀವಸಂಕ್ರಮಣ** (ನಂ) 1. ಜನ್ಮಾಂತರ, ಜೀವವು ಬೇರೆ ಜನ್ಮಹೊಂದುವುದು, ಜೀವವು ಪಾರ್ಥಿವ ಶರೀರಕ್ಕೆ ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು. ಜಿವಸ್ಯ ಪಾರ್ಥಿವಾಧಿಶರೀರೇ ಸಂಕ್ರಮಣಮ್ | 2. ಪರಕಾಯಪ್ರವೇಶ, ಯಾವುದಾದರೊಂದು ಕಾರ್ಯಸಾಧನೆಗಾಗಿ ಜೀವವು ಒಂದು ಶರೀರದಿಂದ ಮತ್ತೊಂದು ಶರೀರದೊಳಕ್ಕೆ ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು.

**ಜಿವಸಾಕ್ಷಿನ್ ಜೀವಸಾಕ್ಷಿನ್** (ವಿಂ) ಆತ್ಮಸಾಕ್ಷಿಯಾಗಿರುವ. ಜಿವಂ ಎವ ಸಾಕ್ಷೀ ಯಸ್ಯ |

**ಜಿವಸಾಧನ ಜೀವಸಾಧನ** (ನಂ) ಧಾನ್ಯ. ಜಿವಸ್ಯ ಜಿವನಸ್ಯ ಸಾಧನಮ್ | ಧಾನ್ಯವು ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಜೀವನಕ್ಕೆ ಮುಖ್ಯ ಕಾರಣವಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ಜಿವಸು ಜೀವಸು** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬದುಕಿರುವ ಮಕ್ಕಳ ತಾಯಿ, ಬದುಕಿರುವ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪ್ರಸವಿಸುವ ಹೆಂಗಸು. ಜಿವಂ ಜಿವಂತಂ ಸುತೇ-ಷುಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭವಿಮೋಚನೆ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧) "ಜಿವಸುರ್ವೀರಸುರ್ಭದ್ರೇ ಬಹುಸೌಖ್ಯಗುಣಾನ್ವಿತಾ | ಸುಭಗಾ ಭೋಗಸಂಪನ್ನಾ ಯಜ್ಞಪತ್ನೀ ಪತಿವ್ರತಾ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೧೬ |

**ಜಿವಸ್ಥಾನ ಜೀವಸ್ಥಾನ** (ನಂ) ಹೃದಯ, ಮರ್ಮಸ್ಥಾನ. ಜಿವಸ್ಯ ಸ್ಥಾನಮ್ |

**ಜಿವಹಿಸಾ ಜೀವಹಿಸಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಾಣಿಹಿಸೆ, ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನು ಹಿಡಿಸುವುದು.

**ಜಿವಾ ಜೀವಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಧನುಸ್ಸಿನ ಗುಣ, ಬಿಲ್ಲಿನ ಹೆದೆ, ಬಿಲ್ಲಿಗೆ ಬಿಗಿದುಕಟ್ಟುವ ತೊಗಲಿನ ಹಗ್ಗ. ಜಿವಯತಿ-ಜಿವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ಸಿಹಿಹಾಲಿಗಿಡ. 3. ಬಜೆ. 4. ಭೂಮಿ. 5. ಅಭರಣಗಳ ಶಬ್ದ. "ಜಿವಾ ಜಿವಂತಿಕಾ ಮೌರ್ವೀ ವಚಾ ಶಿಜ್ಜಿತ-ಭೂಮಿಷು" ಮೇದಿಂ | 6. ವೃತ್ತಿ, ಜೀವನೋಪಾಯ. "ಜಿವಾ ತು ವಚಾಂ ಧನುಷೋ ಗುಣೇ | ಶಿಜ್ಜಿತೇ ಕ್ಷಿತಿಜಿವಂತ್ಯೋರ್ವೃತ್ತೌ" ಹೇಮಂ | 7. ಜೀವನ, ಬದುಕು. ಜಿವ ಭಾವೇ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೩) |

**ಜಿವಾತು ಜೀವಾತು** (ಪುಂ) 1. ಬದುಕಿಸುವ ಔಷಧ, ಜೀವನದ ಔಷಧ, ಜೀವವನ್ನು ಕೊಡುವ ಔಷಧ. "ಅವಧಿ ದರ್ಶನೀ-ಯಾನಾಮಾಕಲ್ಪಮನುಷ್ಯಂ ದಿವ: | ಜಿವಾತು ದೇವಸೇನ್ಯಾನಾಂ ದರ್ಪಭಜ್ಞಂ



ವಿರುಧತಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೬-೧೮. 2. ಜೀವನಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ಅನ್ಯ. ಜೀವಯತಿ - ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಆತು:" (೩೦-೧-೭೯). ಜೀವತ್ಯನೇನ - ಜೀವ ಕರಂ "ಆತು:" 3. ಜೀವಧಾರಣೆ, ಬದುಕುವುದು, ಜೀವಿಸುವುದು. ಜೀವ ಭಾವೇ "ಆತು:" "ರೆ ಹಸ್ತ ದಕ್ಷಿಣ ಮೃತಸ್ಯ ಶಿಶೋದ್ವಿಜಸ್ಯ ಜೀವಾತವೇ ವಿಸೃಜ ಶೂದ್ರಮನೌ ಕೃಪಾಣಮ್" ೩೦ ರಾಂ ೨-೧೦.

**ಜಿವಾತ್ಮನ್ ಜೀವಾತ್ಮನ್** (ಪುಂ) ಜೀವ, ಆತ್ಮ, ಪ್ರಾಣ. ಜೀವಸ್ಯ ಜೀವನಸ್ಯ ಆತ್ಮಾ ಅಧಿಷ್ಠಾತಾ. ಜೀವಶ್ವಾಸೌ ಆತ್ಮಾ ಚ. "ಜಿವಾತ್ಮನ್ ಪಶ್ಯ ಭದ್ರಂ ತೇ ಮಾತರಂ ಪಿತರಂ ಚ ತೇ. ಸುಹೃದೌ ಬಾಂಧವಾಸ್ತಪ್ತಾಃ ಶುಚಾ ತ್ವತ್ಕೃತಯಾ ಭೃಶಮ್" ಭಾಗಂ ೬-೧೬-೨.

**ಜಿವಾಧಾರ ಜೀವಾಧಾರ** (ಪುಂ) ಜೀವಾತ್ಮನಿಗೆ ಆಧಾರವಾದ ಹೃದಯ. ಜೀವಸ್ಯ ಜಿವಾತ್ಮನಃ ಆಧಾರಃ. "ಹೃದಯಂ ತಸ್ಮಾತ್ ಹೃದಯಮ್" ಛಾಂದೋಗ್ಯಂ.

**ಜಿವಾಂತಕ ಜೀವಾಂತಕ** (ಪುಂ) 1. ಬೇಟೆಗಾರ, ಜೀವನಕ್ಕಾಗಿ ಹಕ್ಕಿಗಳನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವವನು, ವ್ಯಾಧಿ. ಜೀವಮಂತಯತಿ - ಅಂತ + ಣಿಚ್ "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩). "ಜಿವಾಂತಕಃ ಶಾಕುನಿಕಃ" ಅಮಂ. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನು ಹಿಂಸಿಸುವವನು.

**ಜಿವಾಸ್ತಿಕಾಯ ಜೀವಾಸ್ತಿಕಾಯ** (ಪುಂ) ಜೈನಮತದವರು ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುವ ಜೀವದ್ರವ್ಯ. ಜ್ಞಾನಸ್ವರೂಪವಾದ ಈ ಜೀವದ್ರವ್ಯವು ಬಹುಪ್ರದೇಶ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯುಳ್ಳದ್ದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಅಸ್ತಿಕಾಯವೆಂದು ಹೆಸರು.

**ಜಿವಿಕಾ ಜೀವಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೃತ್ತಿ, ಕಸಬು, ಜೀವನೋಪಾಯ. ಜಿವ್ಯತೇಜನಯಾ - ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩). ಸಂಜಾಯಾಮ್ "ಕನ್" (೪-೩-೭೪).

**ಜಿವಿತ ಜೀವಿತ** (ನಂ) 1. ಜೀವನ, ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ. ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪). "ದ್ವಾರಿ ಚಕ್ಷುರಧಿಪಾಣಿ ಕಪಿಲೌ ಜಿವಿತಂ ತ್ವಯಿ ಕುತಃ ಕಲಹೋಽಸ್ಯಾಃ" ಕಿರಾಂ ೯-೪೩. 2. ಜೀವ, ಪ್ರಾಣ. "ಜಿವಿತಂ ಧಾರಯಿಷ್ಯಾಮಿ ಮಾಸಂ ದಶರಥಾತ್ಮಜ. ಋರ್ವ ಮಾಸಾನ್ ಜಿವೇಯಂ ಸತ್ಯೇನಾಹಂ ಬ್ರವೀಮಿ ತೇ" (ವಿಂ) 3. ಜೀವಿಸಿರುವ, ಬದುಕಿರುವ. ಜೀವ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨). "ಪ್ರಾಜ್ಞಮತ್ವಾ ಸತ್ಯಮಸ್ಯಾನ್ತಂ ಜಿವಿತಾಸ್ಮಿತಿ ಲಜ್ಜಿತಾ" ರಘುಂ ೧೨-೭೫.

**ಜಿವಿತಕಾಲ ಜೀವಿತಕಾಲ** (ಪುಂ) ಆಯುಸ್ಸು, ಬದುಕಿರುವ ಕಾಲ. ಜಿವಿತಸ್ಯ ಕಾಲಃ.

**ಜಿವಿತನಾಥ ಜೀವಿತನಾಥ** (ಪುಂ) ಪ್ರಾಣನಾಥ, ಪತಿ, ಗಂಡ. ಜಿವಿತಸ್ಯ ನಾಥಃ. "ಅಯಿ ಜಿವಿತನಾಥ ಜಿವಿಸೌತ್ಯಭಿಧಾಯೋತ್ಥಿತಯಾ ತಯಾ ಪುರಃ" ಕುಮಾಂ ೪-೩.

**ಜಿವಿತವ್ಯ ಜೀವಿತವ್ಯ** (ವಿಂ) ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಜೀವಿಸಿರಬೇಕಾದ. ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). "ಪ್ರವೃತ್ತಿಃ ಕುತ್ರ ಕರ್ಯವ್ಯಾ ಜಿವಿತವ್ಯಂ ಕಥಂ ನು ವಾ" ಹಿತೋಂ ೧-೨೪.

**ಜಿವಿತವ್ಯಯ ಜೀವಿತವ್ಯಯ** (ಪುಂ) ಜೀವಮಾನವನ್ನು ಪೋಷಿಸುವುದಾದುದು, ಆಯುಸ್ಸನ್ನು ವ್ಯರ್ಥಗೊಳಿಸುವುದು, ಆಯುಸ್ಸನ್ನು ವ್ಯರ್ಥವಾಗಿ ಕಳೆಯುವುದು.

**ಜಿವಿತಸಂಶಯ ಜೀವಿತಸಂಶಯ** (ಪುಂ) ಬದುಕುವುದರಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಸಂದೇಹ, ಬದುಕುವುದರಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಗಂಡಾಂತರ, ಜೀವಕ್ಕೆ ಒದಗುವ ಅಪಾಯ, ಪ್ರಾಣಾಪಾಯ. "ಯತ್ರಾಯುಧೇ ಧ್ರುವಂ ಮೃತ್ಯುರ್ಯುಧೇ ಜಿವಿತಸಂಶಯಃ" ಹಿತೋಂ ೨-೧೭೦.

**ಜಿವಿತಸಮ ಜೀವಿತಸಮ** (ವಿಂ) ಪ್ರಾಣಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದ. "ಸಮಾನಾಃ ಸ್ವರ್ಯಾತಾಃ ಸಪದಿ ಸುಹೃದೌ ಜಿವಿತಸಮಾಃ" ಭರ್ತಂ ೩-೯.

**ಜಿವಿತಹಾರಿನ್ ಜೀವಿತಹಾರಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಾಣವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ, ಜೀವವನ್ನು ಕಳೆಯುವ. 2. ಬದುಕನ್ನು ಹಾಳುಮಾಡುವ, ಜೀವನವನ್ನು ನಾಶಗೊಳಿಸುವ, ಬದುಕಿಗೆ ಧಕ್ಕೆಯುಂಟುಮಾಡುವ. ಜಿವಿತಂ ಪ್ರಾಣಂ ಜಿವನಂ ವಾ ಹರತಿ - ಹೃನ್ (ಹರಣೆ) "ಣಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪).

**ಜಿವಿತಾತ್ಯಯ ಜೀವಿತಾತ್ಯಯ** (ಪುಂ) ಜೀವಕ್ಕೆ ಒದಗುವ ಗಂಡಾಂತರ, ಪ್ರಾಣಾಪಾಯ. ಜಿವಿತಸ್ಯಾತ್ಯಯಃ. "ಜಿವಿತಾತ್ಯಯಮಾಪನ್ನೋ ಯೋಽನ್ಯಮತಿ ಯತಸ್ತತಃ. ಆಕಾಶಮಿವ ಪಕ್ಷ್ಮೇನ ನ ಸ ಪಾಪೇನ ಲಿಪ್ಯತೇ" ಮನುಂ ೧೦-೧೦೪.

**ಜಿವಿತಾಶ ಜೀವಿತಾಶ** (ವಿಂ) ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಆಸೆಯುಳ್ಳ, ಬದುಕುವುದರಲ್ಲಿ ಆಸೆಯುಳ್ಳ. ಜಿವಿತೇ ಆಶಾ ಯಸ್ಯ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಆಶಾ -ಆಶಾ. ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಆಸೆ, ಬದುಕಿನಲ್ಲಿ ಆಸೆ. ಜಿವಿತೇ ಆಶಾ. "ಜಿವಿತಾಶಾ ಬಲವತೀ ಧನಾಶಾ ದುರ್ಬಲಾ ಮಮ. ಗಚ್ಛ ವಾ ತಿಷ್ಠ ವಾ ಕಾಂತ ಸ್ವಾವಸ್ಥಾ ತು ನಿವೇದಿತಾ" ಕಾವ್ಯಾಂ ೨-೧೩೯.

**ಜಿವಿತೇಶ ಜೀವಿತೇಶ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾಣನಾಥ, ಪತಿ, ಗಂಡ. ಜಿವಿತಸ್ಯ ಪ್ರಾಣಸ್ಯ ಇಶಃ. "ವಿಪುಲತರನಿತಮ್ಬಾಭೋಗರಹೇ ರಮಣ್ಯಾಃ ಶಯಿತುಮನಧಿಗಚ್ಛಜ್ಜಿವಿತೇಶೋಽವಕಾಶಮ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೫. 2. ಜೀವಗಳ ಒಡೆಯನಾದ ಯಮ. "ಜಿವಿತೇಶ-ವಸತಿ ಜಗಾಮ ಸಾ" ರಘುಂ ೧೧-೨೦. 3. ಸೂರ್ಯ.



4. ಚಂದ್ರ. ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರು ದೇಹದೊಳಗೆ ಇಡಾ ಮತ್ತು ಪಿತ್ತಲಾ ನಾಡುಗಳಲ್ಲಿದ್ದು ಕೊಂಡು ಪ್ರಾಣವಾಯು ಸಂಚಾರಕ್ಕೆ ಕಾರಣರಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಇಡಾಂ ಸಂಚರೇಚ್ಚಂದ್ರಃ ಪಿತ್ತಲಾಂ ದಿವಾಕರಃ" 5. ಜೀವಾತು, ಜೀವನೋಪಾಯ.

**ಜಿವಿನ್ ಜೀವಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾಣಿ, ಜೀವಸಹಿತವಾದ ಜಂತು. ಜಿವೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) 1. "ಜಿವಿನಾಂ ದಾರುಣೋ ರೋಗಃ ಕರ್ಮಭೋಗಃ ಶುಭಾಶುಭಃ 1. ಭಕ್ತೋ ವೈದ್ಯಸ್ತಂ ನಿಹಂತಿ ಹರಿಃ ಭಕ್ತಿರಸಾಯನಮ್" 1. (ವಿಂ) 2. ಜೀವಿಸಿರುವ, ಬದುಕಿರುವ. ಜಿವತಿ-ಜಿವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಞಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) 1. "ಭೂತಾನಾಂ ಪ್ರಾಣಿನಃ ಶ್ರೇಷ್ಠಾಃ ಪ್ರಾಣಿನಾಂ ಬುದ್ಧಿಜಿವಿನಃ 1. ಬುದ್ಧಿಮತ್ಸು ನರಾಃ ಶ್ರೇಷ್ಠಾಃ ನರೇಷು ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಃ ಸ್ಮೃತಾಃ" ಮನುಂ ೧-೯೬ 1. 3. ಜೀವನೋಪಾಯವುಳ್ಳ.

**ಜಿವೋತ್ಸರ್ಗ ಜೀವೋತ್ಸರ್ಗ** (ಪುಂ) ಜೀವತ್ಯಾಗ, ಜೀವ ಬಿಡುವುದು. ಜಿವಸ್ಯ ಉತ್ಸರ್ಗಃ 1.

**ಜಿವೋಪಾಧಿ ಜೀವೋಪಾಧಿ** (ಪುಂ) ಜೀವನ ಪರಿಸ್ಥಿತಿ, ಜೀವನ ಅವಸ್ಥೆ. ಜಿವಸ್ಯ ಉಪಾಧಿಃ 1. ಜೀವನಿಗೆ ಸ್ವಪ್ನ ಸುಷುಪ್ತಿ ಮತ್ತು ಜಾಗರಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಅವಸ್ಥೆಗಳುಂಟು. ಈ ಮೂರೂ ಜೀವನಿಗೆ ಉಪಾಧಿಗಳು.

**ಜಿವ್ಯ ಜೀವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಜೀವಿಸಲು ಶಕ್ತವಾದ, ಜೀವಿಸಬಹುದಾದ. ಜಿವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) 1. 2. ಜೀವನಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದ ಉಪಾಯ. ಜಿವಾಯ ಹಿತಮ್ 1.

**ಜಿವ್ಯಾ ಜೀವ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜೀವನೋಪಾಯ. 2. ಅಳಲೆಗಿಡ. 3. ಸಿಹಿಹಾಲೆಗಿಡ. ಜಿವಾಯ ಹಿತಾ "ಯತ್" (೪-೧-೫) 1.

**ಜು-ಗತೌ ವೇಗೇ ಚ** (ಅಯಂ ಸೌತ್ರಧಾತುಃ ಗತೌ ಆತ್ಮಂ ವೇಗೇ ಪರಂ) 1. ಜವತೆ 1. ಜುಜುವೆ 1. ಅಜೋಷ್ಠ 1. 1. ನಡೆ, ಹೋಗು. 2. ಮೇಗವಾಗಿ ಹೋಗು.

**ಜುಗಿ - ವರ್ಜನೆ** (ಭವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) 1. ಜುಜ್ಜತಿ 1. ಜುಜುಜ್ಜ 1. ವರ್ಜಿಸು, ತ್ಯಜಿಸು.

**ಜುಗುಪ್ಸನ ಜುಗುಪ್ಸನ** (ನಂ) 1. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. ಗುಪ (ನಿಂದಾಯಾಮ್) + ಸನ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) 1. (ವಿಂ) 2. ದೂಷಣಶೀಲ, ನಿಂದಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಗುಪ + ಸನ್ "ಯುಕ್" (೩-೨-೧೪೯) 1.

**ಜುಗುಪ್ಸನೀಯ ಜುಗುಪ್ಸನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ನಿಂದೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದ. 2. ನಿಂದಿಸಲ್ಪಡುವ, ದೂಷಿಸಲ್ಪಡುವ. ಗುಪ (ನಿಂದಾಯಾಮ್) + ಸನ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) 1. 3. ಅಸಹ್ಯಪಡಬಹುದಾದ.

**ಜುಗುಪ್ಸಾ ಜುಗುಪ್ಸಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. ಗುಪ (ನಿಂದಾಯಾಮ್) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨) 1. 2. ಅಸಹ್ಯ, ಹೇಸಿಗೆ. ಜುಗುಪ್ಸೆಯು ಬೀಭತ್ಸರಸದ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ. ಶಾಂತರಸಕ್ಕೆ ವ್ಯಭಿಚಾರಿಭಾವವಾಗುವುದು. "ಜುಗುಪ್ಸಾ-ಸ್ಥಾಯಿಭಾವಸ್ತು ಬಿಭತ್ಸಃ ಕಥ್ಯತೇ ರಸಃ 1. "ಶಾಂತೇ ಜುಗುಪ್ಸಾ ಕಥಿತಾ ವ್ಯಭಿಚಾರಿತಯಾ ಪುನಃ" ಸಾಂ ದಂ 1.

**ಜುಗುಪ್ಸಿತ ಜುಗುಪ್ಸಿತ** (ನಂ) 1. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. 2. ಅಸಹ್ಯ, ಹೇಸಿಗೆ, (ವಿಂ) 3. ಅಸಹ್ಯಗೊಂಡ, 4. ನಿಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಜುಜ್ಜ ಜುಂಜ** (ಪುಂ) ಅನಂತನಗೊಂಡೆ ಸೊಪ್ಪು. ಜುಗಿ (ವರ್ಜನೆ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) 1. "ಸ್ಯಾದ್ವಕ್ಷಗಂಧಾ ಛಗಲಾನ್ಯಾವೇಗಿ ವೃದ್ಧದಾರಕಃ" ಅಮಂ 1. "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) 1. ಜುಜ್ಜಕಃ ಜುಂಜಕಃ.

**ಜುಜ್ಜಾ ಜುಂಜಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನಂತನಗೊಂಡೆ ಸೊಪ್ಪು. ಜುಗಿ (ವರ್ಜನೆ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) 1.

**ಜುಷಿ - ಪ್ರೀತಿಪ್ರವರ್ತನಯೋಃ** (ತುಡಾಂ ಆತ್ಮಂ ಹರ್ಷೇ ಅಕಂ ಸೇವಾಯಾಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) 1. ಜುಷತೆ 1. ಜುಜುಷೆ 1. ಜೋಷಿತಾ 1. ಜೋಷಿಷ್ಯತೆ 1. ಜುಷತಾಮ್ 1. ಅಜುಷತ 1. ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಸಂತೋಷಪಡು, ತೃಪ್ತಿಹೊಂದು, ಪ್ರೀತಿಸು, 2. ಸೇವಿಸು, ಆರಾಧಿಸು. 3. ಅನುಭವಿಸು, ಈಡಾಗು, ಒಳಗಾಗು. "ಪಶ್ಯನ್ ಜನಂ ಪತಿಸಂ ವೇತರಣ್ಯಾಂ ಸ್ವಕರ್ಮಜಾನ್ ಪರಿತಾಪಾಂಜುಷಾಣಮ್" ಭಾಗಂ ೨-೨-೭ 1. 4. ಹೊಂದು, ಪಡೆ, ಸೇರು. "ಉಷ್ಣಿಷಂ ಮುಮುಚೇ ಚಾರು ರಥಂ ಚ ಜುಜುಷೇ ಶುಭಮ್" ಭಟ್ಟಿಂ ೧೪-೯೫ 1.

**ಕರ್ಮಣಿಃ** -ಜುಷ್ಯತೆ 1. ಜುಜುಷೆ 1. ಜುಷ್ಯತಾಮ್ 1. ಅಜುಷ್ಯತ 1. ಜುಷ್ಯತ 1. ಅಜೋಷಿ 1.

**ಜಿಚಿಃ** -ಜೋಷಯತಿ, -ತೆ 1. ಜೋಷಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ 1. ಜೋಷಯಿತಾ 1. ಜೋಷಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೆ 1. ಜೋಷಯತು, -ತಾಮ್ 1. ಅಜೋಷಯತ್, -ತ 1. ಜೋಷಯೇತ್, -ತ 1. ಇತ್ಯಾದಿ. "ಜೋಷಯೇತ್ ಸರ್ವಕರ್ಮಾಣಿ ವಿಧ್ವಾನ್ ಯುಕ್ತಃ ಸಮಾಚರನ್" ಗೀತಾ ೩-೨೬ 1.

**ಕೃತ್ಸುಃ** -ಜೋಷಿತವ್ಯಮ್ 1. ಜೋಷಣೀಯಮ್ 1. ಜುಷ್ಯಃ 1. ಜುಷ್ಠಃ 1. ಜುಷ್ಠವಾನ್ 1. ಜುಷಮಾಣಃ 1. ಜುಷ್ಠಮ್ 1. ಜೋಷಣಮ್ 1. ಜೋಷಿತವಾ, ಜುಷಿತವಾ 1. ಉಪಜುಷ್ಯ 1.

**ಜುಷ್ ಜುಷ್** (ವಿಂ) 1. ಇಷ್ಟಪಡುವ, ಪ್ರೀತಿಸುವ. 2. ಅನುಭವಿಸುವ. ಜುಷಿ (ಪ್ರೀತೌ ಸೇವನೇ ಚ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬) 1. (ಉಪಪದವಿರುವಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ). "ವರ್ಮದಯಃ ಕಿಮಗುಣೇನ ಚ ಕಾಡ್ವಕ್ಷಿತೇನ ಸಾರಂಜುಷಾಂ ಚರಣಯೋರಪಗಾಯತಾಂ ನಃ" ಭಾಗಂ ೭-೬-೨೫ 1. 3. ಸೇರುವ, ಹೊಂದುವ, ಮುಟ್ಟುವ.



"ವಕ್ಷ:ಸ್ಥಲಸ್ಪರ್ಶಣಮಹೇಂದ್ರವಾಹದಂತೈವಿಡಮ್ಬಿತಕಕುಜುಷ ಉಹಾಸಮ್" ಭಾಗಂ ೨-೭-೨೫. 4. ಸೇವಿಸು.

ಜುಷ್ಠ ಜುಷ್ಠ (ನಂ) 1. ಉಳಕೆ, ಶೇಷ, ಉಟಮಾಡಿ ಉಳದ ಅನ್ನ. ಜುಷಿ (ಪ್ರೀತಿಪ್ರವರ್ತನಯೋ:) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). (ವಿಂ) 2. ಸೇವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಶ್ರಿಯಾ ಜುಷ್ಠ ದಿವ್ಯ: ಸಪರಹರವೇರನ್ವಿತಂ ಪುಷ್ಪವರ್ಷ:" ಮಾಘಂ ೨೦-೭೯. "ಪುಷ್ಯೋ ಮಹಾಬ್ರಹ್ಮಸಮೂಹಜುಷ್ಠ:" ಭದ್ರಂ ೧-೪. 3. ಪ್ರೀತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಕೂಡಿ ಕೊಂಡಿರುವ, "ಜುಷ್ಠಂ ವಿಚಿತ್ರವೇತಾನೇಮಹಾಹೇಮತೋರಣ:" ಭಾಗಂ ೩-೧೯. 5. ಸಂತೋಷಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಜುಹುರಾಣ ಜುಹುರಾಣ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಹುಣ್ಣಿ (ಕೌಡಲೇ) + ಸನ್ "ಅಸಾನವ್" (೩-೨-೧೧). ಸನೋ ಲುಕ್ ಛಲೋಪಶ್ಚ. (ವಿಂ) 2. ಕುಟಿಲವಾಗಿಮಾಡುವ, ವಕ್ರವಾಗಿಮಾಡುವ.

ಜುಹುವಾಣ ಜುಹುವಾಣ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ. 2. ಅಧ್ಯಯಮ, ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಯಜುರ್ವೇದಪಠನಮಾಡುವವನು. 3. ಚಂದ್ರ. "ಜುಹುವಾಣೋಽಪಿ ಚಾಪ್ಯಾಪಿ ಸ್ಯಾಜ್ಜಾತವೇದಸಿ" ಮೇದಿಂ. 1.

ಜುಹು ಜುಹು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಅಜ್ಯಾಹುತಿಗಾಗಿ ಪಲಾಶ (ಮುತ್ತಗದ) ಮರದಿಂದ ಮಾಡಿದ ಅರ್ಧಚಂದ್ರಾಕಾರದ ಸವುಟು. ಜುಹೋತನಯಾ-ಹು (ದಾನಾದನಯೋ:) "ವಿವಪ್" ದ್ವಿತ್ವಂ ದೀರ್ಘಶ್ಚ (ವಾಂ ೩-೨-೧೦೮). 2. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕು. ಜುಹೋತನಯಾ ದಿಶಿ-ಹು ಅಧಿಂ "ವಿವಪ್".

ಜುಹುವತ್ ಜುಹುವತ್ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ.

ಜುಹುಷತ್ ಜುಹುಷತ್ (ವಿಂ) ಹೋಮಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಹು (ದಾನಾದನಯೋ:) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬). -ಏಂತಿ -ಷಂತಿ.

ಜುಹುಷಾ ಜುಹುಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೋಮಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿ. ಹೋಮಮಾಡಲು-ಹು (ದಾನಾದನಯೋ:) + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೨-೧೦೨).

ಜುಹುಷು ಜುಹುಷು (ವಿಂ) ಹೋಮಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವನು. ಹೋಮಮಾಡಲು-ಹು (ದಾನಾದನಯೋ:) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೦೮).

ಜುಹುತ್ ಜುಹುತ್ (ವಿಂ) ಹೋಮಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಹು (ದಾನಾದನಯೋ:) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬). ಜುಹುತೀ ಜುಹುತೀ.

ಜುಹುತ್ಯ ಜುಹುತ್ಯ (ಪುಂ) ಹೋಮದ ಅಗ್ನಿ, ಅಜ್ಯಾಹುತಿಯನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವ ಅಗ್ನಿ. ಜುಹುತ್ಯಮಿವಾಸ್ಯ.

ಜು ಜು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸರಸ್ವತಿ. 2. ಅಪಾಶ. 3. ವೇಗ. 4. ಪಿಶಾಚಿ, ರಾಕ್ಷಸ. 5. ಗಮನ, ನಡೆಗೆ, 6. ವೇಗದ

ನಡೆಗೆ. ಜು (ಗತೀ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೫೮). "ಜುಸ್ವರಾಗಮನೇ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಸಾಮಾನ್ಯಗಮನೇ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್. ಜುರಾಕಾಶ-ಸರಸ್ವತೀ ಪಿಶಾಚ್ಯಾಂ ಜವನೇ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ. (ವಿಂ) 7. ವೇಗವಾದ, ಶೀಘ್ರವಾದ.

ಜುಟ ಜುಟ (ಪುಂ) 1. ಗಂಟುಹಾಕಿದ ಜಟಿಗಳ ಸಮೂಹ. 2. ಜಟಿ. "ಭೂತೇಶಸ್ಯ ಭುಜಙ್ಗವಲ್ಲಿವಲಯಸ್ತದ್ಭಜುಟಾ ಜಟಾ:" ಮಾಲತೀಂ ೧-೧. "ಜಟಾಜುಟಾಪಿಙ್ ಭುಜಗಪತಿಭೋಗೋಪಮ-ಭುಜಮ್" ಚಂ ರಾಂ. 1. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್". ಜುಟಕ: ಜುಟಕ:

ಜುತ ಜುತ (ವಿಂ) 1. ಎಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಗತವಾದ, ಕಳೆದುಹೋದ. 3. ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಜುತಿ ಜುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೇಗ. ಜು (ಗತೀ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೨-೧೦). ದೀರ್ಘಶ್ಚ ನಿಪಾಂ. 2. ನಡೆ, ಚಲನೆ, ಮುಂದೆ ಸಾಗುವುದು. "ಜುತಿಮಿಚ್ಛಯ ಚೇತ್ಸೂರ್ಯಮ್" ಭದ್ರಂ ೭-೬೯.

ಜುರ ಜುರ (ಪುಂ) ಹಿಂಸೆ, ಒಡೆ. ಜುರಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಘಜ್" (೩-೨-೧೮). "ರೇಜಾರಿಜುರಜೋರ್ಜಿರ್ಜಿ" ಮಾಘಂ ೧೯-೧೦೨.

ಜುರ್ತಿ ಜುರ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜ್ವರ. ಜ್ವರ (ರೋಗ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೨-೧೪). "ಠ್" (೩-೪-೨೦).

ಜುಮ್ಭಿ - ಗಾತ್ರವಿನಾಮೇ (ಭ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸೇಂ). ಜುಮ್ಭತೇ. ಜುಮ್ಭೇ. ಜುಮ್ಭಿತಾ. ಜುಮ್ಭಿಷ್ಯತೇ. ಜುಮ್ಭಿತಾಮ್. ಅಜುಮ್ಭಿಷ್ಠ. ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ವಿಕಾಸಹೊಂದು, ಅರಳು. 2. ಬಾಯಿ ತೆಗೆದುಕೊಂಡಿರು, ಅಕಳಿಸು. 3. ವ್ಯಾಪಿಸು, ಹರಡು. 4. ವಿಸ್ತಾರವಾಗು, ದೊಡ್ಡದಾಗು. "ಆತ್ಮಾನ-ಮಾಧಾಯ ಮಘಜಂಜುಮ್ಭೇ" ಕುಮಾರಂ ೩-೨೪. "ಕುಪತೀಂ ಜುಮ್ಭಮಾಣಾಂ ವಾ ನ ಚಾಸೀನಾಂ ಯಥಾಸುಖಮ್" ಮನುಂ ೪-೪೩.

ಜುಮ್ಭ ಜುಂಭ (ಪುಂ) 1. ಅಕಳಕೆ. ಜುಮ್ಭಿ (ಗಾತ್ರವಿನಾಮೇ) ಭಾವೇ "ಘಜ್" (೩-೨-೧೮). "ಪೀತ್ವೈಕಮನಿಲೋಚ್ಛಾಸ-ಮುಢೇಢನ್ ವಿವೃತಾನನ: ಯಂ ಮುಚ್ಛತಿ ಸನೇತ್ರಾಸಂ ಸ ಜುಮ್ಭ ಹತಿ ಸಂಜಿತ:" ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೪-೫೦. 2. ವಿಕಾಸ, ಅರಳುವುದು.

ಜುಮ್ಭಕ ಜುಂಭಕ (ಪುಂ) 1. ಕೃಶಾಶ್ವಮುನಿಯ ಮಗ. (ನಂ) 2. ಜುಂಭಕಾಸ್ತ್ರ. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮುನಿಯು ಶ್ರೀರಾಮನಿಗೆ ಉಪದೇಶಿಸಿ ಕೊಟ್ಟ ಒಂದು ಅಸ್ತ್ರ. ಜುಮ್ಭಯತಿ-ಜುಮ್ಭಿ (ಗಾತ್ರವಿನಾಮೇ) "ಘಜ್" (೩-೨-೧೩೩). "ಮುನಿಭೃಶಾಸ್ವೋಪ-ಜ್ಞಾನಿ ತಾಟಕಾಮಾಥಿವೇ ದದೌ. ಅಸ್ತ್ರಾಣಿ ಜುಮ್ಭಕಾದಿನಿ ಜುಮ್ಭಶಾಸನಶಾಸನಾತ್" ಚಂ ರಾಂ. (ವಿಂ) 3. ಅಕಳಿಸುವವನು.



**ಜೃಂಭಣ ಜ್ಯಂಭಣ (ನಂ)** 1. ಏಕಾಸಹೊಂದುವುದು, ಅರಳುವುದು. 2. ಆಕಳಕೆ, ಮೈಮುರಿಯುತ್ತ ಬಾಯಿತೆಗೆದು ಗಾಳಿಯನ್ನು ಎಳೆದುಕೊಂಡು ಮತ್ತೆ ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಿಡುವುದು. ಜೃಮಿ (ಗಾತ್ರವಿನಾಮೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 3. ಬೆಳೆಯುವುದು, ದೊಡ್ಡದಾಗುವುದು. 4. ಜ್ಯಂಭಕಾಸ್ತು. (ವಿಂ) 5. ಆಕಳಿಸುವ. 6. ಅಂಗಗಳನ್ನು ನೀಡಿ ಮೈ ಮುರಿಯುವ.

**ಜೃಂಭಣ ಜ್ಯಂಭಣ (ವಿಂ)** 1. ಬೆಳೆಯುತ್ತಿರುವ, ದೊಡ್ಡದಾಗುತ್ತಿರುವ. ಜೃಂಭಣ - ಜೃಮಿ (ಗಾತ್ರವಿನಾಮೆ) "ಶಾನಕ್" (3-2-124)। "ತಸ್ಯ ದೇವಪುತ್ರನಾವಿಧುತಯೇ ಜೃಂಭಣವಪುಷೋ ಮಹೋಜಸಃ" ಯಾದಂ 19-49। 2. ವಿಸ್ತಾರವಾಗುತ್ತಿರುವ, ಹರಡುತ್ತಿರುವ.

**ಜೃಂಭಾ ಜ್ಯಂಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಆಕಳಕೆ, ಮೈಮುರಿಯುತ್ತ ಬಾಯಿ ತೆಗೆದು ಗಾಳಿಯನ್ನು ಎಳೆದುಕೊಂಡು ಮತ್ತೆ ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಿಡುವುದು. ಜೃಮಿ (ಗಾತ್ರವಿನಾಮೆ) ಭಾವೇ "ಅಃ" (3-3-103)।

**ಜೃಂಭಿಕಾ ಜ್ಯಂಭಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಆಕಳಕೆ. ಜೃಂಭಾ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (4-4-4)। ಅತ ಇತ್ವಮ್। ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ವೃತ್ತಾಸುರನು ಇಂದ್ರನನ್ನು ನುಂಗಿಬಿಟ್ಟನು. ಅವನ ರಕ್ಷಣೆ ಗಾಗಿ ದೇವತೆಗಳು ಜ್ಯಂಭಿಕೆಯೆಂಬ ಶಕ್ತಿಯೊಂದನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದರು. ಇಂದ್ರನಿಂದ ವೃತ್ತಾಸುರನ ದೇಹವು ಬೆಳೆದು ಅವನ ಬಾಯಿಯು ವಿಸ್ತಾರಗೊಂಡಿತು. ಇಂದ್ರನು ಆಗ ಬಾಯಿಂದ ಹೊರಬಂದು ಬದುಕಿದನು. ಅಂದಿನಿಂದ ಜ್ಯಂಭಿಕೆಯು ಜನರ ಪ್ರಾಣವಾಯುವಿನೊಡನೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿತು. ಈಗ ಪ್ರಾಣಗಳು ಆಯಾಸಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಮೈಮುರಿಯುತ್ತ ಬಾಯಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಿಡುವ ಗಾಳಿಯೇ ಆಕಳಕೆ. ಅದೇ ಜ್ಯಂಭಿಕೆ. "ತತೋ ಜಗ್ರಾಹ ದೇವೇಂದ್ರಂ ವೃತ್ತೋ ವೀರಃ ಶತಕ್ರುತುಮ್। ಅಪಾವೃತ್ಯಾಕ್ಷಿಪದ್ವಕ್ತ್ರೇ ಶಕ್ರಂ ಕೋಪಸಮನ್ವಿತಃ। ಘಸ್ತೇ ವೃತ್ತೇಣ ಶಕ್ರೇ ತು ಸಂಭ್ರಾಂತಾಸ್ತ್ರಿದಿವೌಕಸಃ। ಅಸೃಜಂತೇ ಮಹಾಸತ್ವಾ ಜೃಂಭಿಕಾಂ ವೃತ್ತನಾಂಶಿನಿಮ್। ವಿಜೃಂಭಣಸ್ಯ ತತೋ ವೃತ್ತಸ್ಯಾಸ್ಯಾದಪಾವೃತಾತ್। ಸ್ವಾನ್ಯಜ್ಞಾನ್ಯಭಿ-ಸಂಕ್ಷಿಪ್ಯ ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತೋ ಬಲನಾಶನಃ। ತತಃ ಪ್ರಭೃತಿ ಲೋಕಸ್ಯ ಜೃಂಭಿಕಾ ಪ್ರಾಣಸಂಶ್ರಿತಾ। ಜಹೃಷುಃ ಸುರಾಃ ಸರ್ವೇ ಶಕ್ರಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ವಿನಿಃಸೃತಮ್" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ 9-60-63।

**ಜೃಂಭಣಿ ಜ್ಯಂಭಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ರಾಶಿ. ಜೃಮಿ (ಗಾತ್ರವಿನಾಮೆ) "ಣಿನಿಃ" (3-1-134)। "ಜಿಫ್" (4-1-4)।

**ಜೃಂಭತ ಜ್ಯಂಭತ (ನಂ)** 1. ಆಕಳಕೆ. ಜೃಮಿ (ಗಾತ್ರವಿನಾಮೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-3-114)। 2. ಏಕಾಸಹೊಂದುವುದು,

ಅರಳುವುದು. 3. ಒಡೆಯುವುದು, ಸ್ಪೋಟಿಸುವುದು, ಸಿಡಿಯುವುದು. 4. ಬೆಳೆಯುವುದು, ದೊಡ್ಡದಾಗುವುದು. (ವಿಂ) 5. ಬೆಳೆದಿರುವ, ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿರುವ. 6. ಅರಳಿರುವ. 7. ಸಿಡಿದಿರುವ. ಜೃಮಿ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-4-32)। 8. ಬಾಯಿ ತೆರೆಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 9. ಅರಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 10. ವಿಸ್ತಾರಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 11. ಬೆಳೆಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಜೃಮಿ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

**ಜೃಂಭಿನ್ ಜ್ಯಂಭಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಆಕಳಿಸುವ. 2. ಅರಳುವ. ಜೃಮಿ (ಗಾತ್ರವಿನಾಮೆ) "ಣಿನಿಃ" (3-1-134)।

**ಜ - ವಯೋಹಾನೌ (ಕ್ರಿಯಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ)** 1. ಜೃಣಾತಿ।  
 ಜಜಾರ ಜಜರತುಃ } ಜಜರುಃ } ಇತ್ಯಾದಿ.  
 ಜೇರುಃ } ಜೇರುಃ }

**ಜ - ವಯೋಹಾನೌ (ವಾಚುರಾಂ ಉಭಯಂ ಅಕಂ ಸಂ)** 1. ಜಾರಯತಿ, -ತೇ। ಣಿಜಭಾವೇ ಜರತಿ। ಜಜಾರ ಜಜರತುಃ ಜೇರುಃ, ಜಜರುಃ ಜೇರುಃ। ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಜೃ - ವಯೋಹಾನೌ (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ)** 1. ಜೀಯಂತಿ।  
 ಜಜಾರ ಜಜರತುಃ ಜೇರುಃ, ಜಜರುಃ ಜೇರುಃ। ಜರಿತಾ ಜರಿತಾ।  
 ಜರಿಷ್ಯತಿ ಜರಿಷ್ಯತಿ। ಜೀಯಂತುಃ। ಅಜೀಯಂತುಃ। ಜೀಯಂತುಃ।  
 ಇತ್ಯಾದಿ.

ಭಾವೇ:-ಜೀಯಂತೇ। ಜೇರುಃ। ಜಾರಿತಾ, ಜರಿತಾ, ಜರಿತಾ।  
 ಜಾರಿಷ್ಯತೇ, ಜರಿಷ್ಯತೇ, ಜರಿಷ್ಯತೇ। ಜೀಯಂತಾಂ। ಅಜೀಯಂತಾಂ।  
 ಇತ್ಯಾದಿ. ಮುರಿಯಾಗು, ಮುದುಕನಾಗು, ವಯಸ್ಸನ್ನು ಕಳೆ, ಜೀವಿತಕಾಲವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊ.

**ಕೃತುಃ:-**ಜರಿತವ್ಯಮ್, ಜರಿತವ್ಯಮ್। ಜರಣೀಯಮ್।  
 ಜಾರ್ಯಮ್। ಅಜಯಂ ಸಂಗತಮಿತಿ ಕರ್ತೃರಿದಂತೋ ನಿಪಾತಿಸ್ತಃ।  
 ಜೀರ್ಣಃ। ಜೀರ್ಣವಾನ್। ಜೀಯನ್, ಜೀಯಂತಿ। ಜರನ್, ಜರತಿ।  
 ಜರಿತುಮ್, ಜರಿತುಮ್। ಜೀರ್ಣಮ್। ಜರಣಮ್। ಜರಿತ್ವಾ, ಜರಿತ್ವಾ। ನಿಜೀಯಂ।

**ಜೇಜ್ಜಿಟ ಜೇಜ್ಜಿಟ (ಪುಂ)** ಗರ್ಭಿಣಿಯರ ದೊಡ್ಡದ, ಬಸಿರು ಹೊಂಸರ ಬಯಕೆ. "ಜೇಜ್ಜಿಟೋ ದೊಹದಃ ಸ್ಮೃತಃ" ಹಾರಾಂ।

**ಜೇತವ್ಯ ಜೇತವ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಜಯಿಸಬೇಕಾದ. 2. ಜಯಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. 3. ಜಯಿಸಬಹುದಾದ. ಜಿ (ಜಯೇ) "ತವ್ಯಃ" (3-1-96)। "ಮಾ ವೇದಿ ಯದಸಾವೇಕೋ ಜೇತವ್ಯಃ ಇವೇದಿರಾಡ್ವಿತಿ" ಮಾಘಂ 2-96।

**ಜೇತೃ ಜೇತೃ (ಪುಂ)** 1. ವಿಜೃಂಭಣ. ಜಯತಿ ಸ್ವಾಭಿಪ್ರಾಯೇಷ್ವ-ವಸ್ಥಾಪಯತಿ। "ಸ್ವಾಭಿಪ್ರಾಯೇ ಸ್ಥಾಪಯಿತಾ ಜೇತಾ ಸ್ಯಾದ್ವಿಧಿ-ಶಂಕರೌ" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ। "ಅನಘೋ ವಿಜಯೋ ಜೇತಾ ವಿಶ್ವಯೋನಿಃ ಪುನರ್ವಸುಃ" ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 2. ಜಯಿಸುವ,



ಜಯಶೀಲ. ಜಿ (ಜಯ) "ತನ್" (೩-೨-೧೩೪) ।  
 "त्वयि प्रतिद्विदिनि कस्य किं बलं क एव जेता न  
 भवेत्त्वयेक्षितः" यादಂ ೧೪-೩೯ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೀಪ್"  
 (೪-೧-೪) । ಜೆತ್ತಿ ಜೇತ್ರಿ.

ಜೆನಾಕ ಜೇಂತಾಕ (ನಂ) ಸ್ವೇದೋತ್ಪಾದನಕ್ಕಾಗಿ ಏರ್ಪಟ್ಟಿ-  
 ರುವ ಶಾಖಾವಾಗಿರುವ ಕೋಡೆ, ಮೈಯಲ್ಲಿ ಚೆನ್ನಾಗಿ  
 ಬೆವರು ಬರಲು ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಬಹಳ ಉಷ್ಣವಾದ ಕೋಣೆ.  
 [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಚರಕಸಂಹಿತೆ" ಯಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].

ಜೆಮನ ಜೇಮನ (ನಂ) ಆಹಾರ, ಭೋಜನ. ಜಿಮ್ (ಅದನೆ)  
 "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) । "ಜೆಮನ ಲೆಪ ಆಹಾರ:" ಅಮಂ ।

ಜೇಯ ಜೇಯ (ವಿಂ) ಜಯಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಜಯಿಸಲು  
 ಅರ್ಹನಾದ. ಜೇತು ಯೋಗ್ಯ: - ಜಿ (ಜಯ) "ಯತ್"  
 (೩-೧-೯೭) । "विगृह्य शत्रून् कौन्तेय जेयः क्षितिपति-  
 स्तदा" भा० आश्रम० ೭-೭ ।

ಜೆಷ - ಗತೌ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೆಂ) । ಜೆಷತೆ । ಜಿಜೆಷೆ ।  
 ಜೆಷಿತಾ । ಜೆಷಿಷ್ಯತೆ । ಜೆಷಿತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ. ಹೋದು,  
 ಹೋಗಿಸೇರು, ತಲುಪು.

ಜೆಹ - ಪ್ರಯತ್ನೆ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸೆಂ) । ಜೆಹತೆ ।  
 ಜಿಜೆಹೆ । ಜೆಹಿತಾ । ಜೆಹಿಷ್ಯತೆ । ಜೆಹಿತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಜೆತ್ರ ಜೈತ್ರ (ಫುಂ) 1. ಪಾದರಸ. (ವಿಂ) 2. ಜಯಶೀಲ,  
 ಗೆಲ್ಲುವಸ್ವಭಾವದ. ಜೇತು ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಙ್" (೪-೪-೩೮) ।  
 "लोकं विधात्रा विहितस्य गोप्तुं क्षत्रस्य मुष्णन् वसु  
 जैत्रमोजः" किरा० ೩-೪೧ । "वार्षिकं सञ्जहारन्द्रो  
 धनुजत्रं रघुर्दधौ" रघु० ೪-೧೬ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೀಪ್"  
 (೪-೧-೧೪) । ಜೆತ್ತಿ ಜೈತ್ರಿ. "जगज्जिगीषोर्मदनस्य  
 जैत्री पताकयेवाद्भुतकेतुयष्टिः" याद० ೧೩-೪೯ ।

ಜೆತ್ರರಥ ಜೈತ್ರರಥ (ವಿಂ) ಜಯಶೀಲ, ಗೆಲ್ಲುವವನು.  
 ಜೆತ್ರೋ ರಥೋ ಯಸ್ಯ ।

ಜೆನ ಜೈನ (ಫುಂ) 1. ಜಿನದೇವ, ಜಿನಮುನಿ. ಜಿನ ಎವ-  
 ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಙ್" (೪-೪-೩೮) । (ವಿಂ) 2. ಜಿನ  
 ಸಂಬಂಧವಾದ. ಜಿನಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦) ।  
 3. ಜಿನಮತಾನುಯಾಯಿ. ಜಿನೋ ದೇವತಾಸ್ಯ "ಅಙ್"  
 (೪-೨-೨೪) ।

ಜೆನದರ್ಶನ ಜೈನದರ್ಶನ (ನಂ) ತತ್ತ್ವಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಹೊರಟಿ-  
 ರುವ ಭಾರತೀಯ ದರ್ಶನಗಳಲ್ಲಿ ಜೈನತತ್ತ್ವವಿಚಾರ  
 ಮಾಡುವ ಒಂದು ದರ್ಶನ. ಪ್ರವಚನ ಶಾಸ್ತ್ರಪ್ರವರ್ತಕ  
 ರಾದ ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು ತೀರ್ಥಂಕರರು ಈ ಸಿದ್ಧಾಂತದ  
 ಪ್ರಣೇತರು. ಈ ತೀರ್ಥಂಕರರಲ್ಲಿ ಮಹಾವೀರ ವರ್ಧಮಾನ

ಜಿನೇಶ್ವರರು ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕನೆಯವರು. ಇವರೆಲ್ಲರೂ  
 ಅರ್ಹಂತರಾಗಿ ಮುಕ್ತರಾದವರು. ಈ ತೀರ್ಥಂಕರರು  
 ಪೂರ್ವಾಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಬಹಳ ವಿರಕ್ತರಾಗಿದ್ದು ಪರಮಹಂಸ  
 ನಿರ್ಗ್ರಂಥ ದೀಕ್ಷೆಯನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಶುಕ್ಲಧ್ಯಾನದಿಂದ  
 ರಾಗದ್ವೇಷಾದಿಗಳನ್ನು ಜಯಿಸಿದವರೆಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ  
 ಇವರಿಗೆ "ಜಿನ" ರೆಂದೂ ಇವರಿಂದ ಉಪದಿಷ್ಟವಾದ  
 ಈ ಮತಕ್ಕೆ "ಜೈನಮತ" ವೆಂದೂ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಯುಂಟಾ  
 ಯಿತು. "अहिंसा परमो धर्मः" ಎಂದು ಪ್ರಾಣಿಸಾಮಾನ್ಯ  
 ದಲ್ಲೂ ಆತ್ಮಪೀಡೆಯು ಕೂಡದೆಂದೂ ಅಹಿಂಸಾಧರ್ಮ  
 ವನ್ನು ಪ್ರಚಾರಪಡಿಸಿದುದರಿಂದ ಇವರಲ್ಲಿ ಜನಾನುರಾಗವು  
 ವೃದ್ಧಿಗೊಂಡು ಈ ಮತವು ಪ್ರಬಲವಾಯಿತು.

ದ್ರವ್ಯ: ಈ ಸಿದ್ಧಾಂತದಲ್ಲಿ ಉತ್ಪತ್ತಿ ವಿನಾಶ ಸ್ಥಿರತ್ವ  
 ಈ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ ಉತ್ಪಾದವ್ಯಯಧ್ರವ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ  
 ಸತ್ತೇ ದ್ರವ್ಯ. "सत् द्रव्यलक्षणम्" तत्त्वा० सू० ೪-೨೯ ।  
 "उत्पादव्ययधौव्ययुक्तं सत्" तत्त्वा० सू० । ದ್ರವ್ಯವು  
 ಜೀವ ಅಜೀವ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಅಜೀವ ದ್ರವ್ಯವು  
 ಧರ್ಮ ಅಧರ್ಮ ಆಕಾಶ ಕಾಲ ಮತ್ತು ಪುದ್ಗಲ ಎಂದು  
 ಐದು ವಿಧ. ಇವುಗಳೊಡನೆ ಜೀವದ್ರವ್ಯವೂ ಸೇರಿ ದ್ರವ್ಯವು  
 ಒಟ್ಟು ಆರು ವಿಧ. "अजीवकायाः धर्माधर्माकाश  
 पुद्गलाः" । "द्रव्याणि" । "जीवाश्च" तत्त्वा० सू०  
 ೪-೧, ೨, ೩ । ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಕಾಲದ್ರವ್ಯಹೊರತಾಗಿ ಉಳಿ  
 ದೆಲ್ಲಾ ದ್ರವ್ಯಗಳೂ ಬಹುಪ್ರದೇಶವ್ಯಾಪ್ತಿಯುಳ್ಳವಾದುದರಿಂದ  
 ಇವಕ್ಕೆ "ಅಸ್ತಿಕಾಯ" ವೆಂದು ವ್ಯವಹಾರವಿರು  
 ಪ್ಪದು.

ಈ ಆರು ದ್ರವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಜೀವದ್ರವ್ಯವು ಜ್ಞಾನಸ್ವರೂಪ  
 ವಾದ್ದರಿಂದ ಚೇತನದ್ರವ್ಯವಾಯಿತು. ಉಳಿದುವು ಅಚೇತನ  
 ದ್ರವ್ಯಗಳು. ಜೀವಪುದ್ಗಲಗಳು ಕ್ರಿಯಾಶ್ರಯದ್ರವ್ಯಗಳು.  
 ಜೀವದ್ರವ್ಯವು ಕರ್ತೃ ಮತ್ತು ಭೋಕ್ತೃದ್ರವ್ಯವು. ಪುದ್ಗಲ  
 ಪರಮಾಣುಗಳು ಶುಭಾಶುಭಯೋಗಗಳ ಮೂಲಕ ಜೀವ  
 ನೊಡನೆ ಬೆರೆತು ಸುಖದುಃಖಗಳನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುತ್ತವೆ.  
 ಜೀವನು ಶುಭಾಶುಭಯೋಗಗಳ ಮೂಲಕ ಪುಣ್ಯ ಪಾಪ  
 ಪುದ್ಗಲಗಳನ್ನು ಎಳೆದುಕೊಂಡು ಬೆರೆಯುತ್ತಾನೆ. ಅದೇ  
 ಬಂಧ. "सकषाकवाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गला-  
 नादत्ते, स बन्धः" तत्त्वा० सू० ೮-೨ । ರಾಗದ್ವೇಷಾದಿ  
 ಗಳು ಕರ್ಮಬಂಧಹೇತುಗಳು. "मिथ्यादर्शनाविरति-  
 प्रमादकषाययोगा बन्धहेतवः" तत्त्वा० सू० ೮-೧ ।

ತತ್ತ್ವ: ಜೈನದರ್ಶನದಲ್ಲಿ ಜೀವ ಅಜೀವ ಆಸ್ರವ  
 ಬಂಧ ಸಂವರ ನಿರ್ಜರೆ ಮತ್ತು ಮೋಕ್ಷಗಳೆಂದು ತತ್ತ್ವ  
 ಗಳು ಏಳು. ಜ್ಞಾನಸ್ವರೂಪವಾದ ಚೇತನದ್ರವ್ಯವೇ



ಜೀವ. ಜೈತನ್ಯರಹಿತವಾದ ದ್ರವ್ಯವು ಅಜೀವ. ಕರ್ಮ ಬಂಧನದ ಆಗಮನದ್ವಾರವು ಆಸ್ರವ. ಆತ್ಮಪ್ರದೇಶ ಗಳೊಡನೆ ಕರ್ಮಪ್ರದೇಶಗಳ ಸಂಬಂಧವು ಬಂಧ. ಆಸ್ರವ ನಿರೋಧವು ಸಂವರ. ಆತ್ಮಪ್ರದೇಶದಿಂದ ಸಂಚಿತಕರ್ಮಗಳ ನಿರ್ಗಮನವು ನಿರ್ಜರೆ. ಆತ್ಮಪ್ರದೇಶದಿಂದ ಸಮಸ್ತ ಕರ್ಮಗಳ ಬಿಡುಗಡೆಯೇ ಮೋಕ್ಷ.

**ಜೀವ:** ಜೀವಗಳು ಸಂಸಾರಿ ಮತ್ತು ಮುಕ್ತ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಕರ್ಮಸಹಿತವಾದುವು ಸಂಸಾರಿ ಜೀವಗಳು. ಕರ್ಮರಹಿತವಾದುವು ಮುಕ್ತಜೀವಗಳು. "ಸಂಸಾರಿಣಿ ಮುಕ್ತಾಶ್ಚ" ತತ್ವಾಂ ಸ್ತಂ ೨-೧೦. ಸಂಸಾರಿಜೀವಗಳು ತ್ರಸ ಸಾವರಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಪೃಥ್ವೀಕಾಯಿಕ, ಜಲಕಾಯಿಕ, ಅಗ್ನಿಕಾಯಿಕ, ವಾಯುಕಾಯಿಕ ಮತ್ತು ವನಸ್ಪತಿ ಕಾಯಿಕಗಳು ಸ್ಥಾವರ ಜೀವಗಳು. ದ್ವೀಂದ್ರಿಯ ತ್ರೀಂದ್ರಿಯ ಚತುರ್ದ್ರಿಯ ಮತ್ತು ಪಂಚೇಂದ್ರಿಯ ಜೀವಗಳು ತ್ರಸಜೀವಗಳು. "ಸಂಸಾರಿಣಿ: ತ್ರಸಸ್ಥಾವರಾ:"। "ಪೃಥಿವ್ಯಪ್ತೇಜೋವಾಯುನಸ್ಪತಯ: ಸ್ಥಾವರಾ:"। "ದ್ವೀಂದ್ರಿಯಾ ದಯ:ತಸಾ:" ತತ್ವಾಂ ಸ್ತಂ ೨-೧೨, ೧೩, ೧೪. ಪ್ರತಿ ಯೊಂದು ಜೀವನಿಗೂ ಕರ್ಮಬಂಧವು ಘಾತಿಕರ್ಮ ಚತುಷ್ಟಯ ಅಘಾತಿಕರ್ಮಚತುಷ್ಟಯಗಳೆಂದು ಎಂಟು ವಿಧ.

**ಘಾತಿಕರ್ಮಗಳು:** (1) ಜ್ಞಾನಾವರಣೀಯ, (2) ದರ್ಶನಾವರಣೀಯ, (3) ಮೋಹನೀಯ ಮತ್ತು (4) ಅಂತರಾಯ.

**ಅಘಾತಿಕರ್ಮಗಳು:** (1) ಆಯುಷ್ಯ, (2) ನಾಮ, (3) ಗೋತ್ರ ಮತ್ತು (4) ವೇದನೀಯ.

ಘಾತಿಕರ್ಮಗಳು ನಾಶವಾದನಂತರ ಅರ್ಹಂತರಾಗುವರು. ಸರ್ವಜ್ಞರಾಗುವರು. ಇವರೇ ಕೇವಲಜ್ಞಾನಿಗಳು. ಜೀವನ್ಮುಕ್ತರು. ಆಯುಷ್ಯದ ಕೊನೆಯ ಅವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ನಾಮಗೋತ್ರಾದಿಗಳನ್ನು ಶುಕ್ಲಧ್ಯಾನದಿಂದ ನಾಶ ಮಾಡಿ ಸಿದ್ಧಪರಮೇಷ್ಠಿಗಳಾಗುವರು. ಈ ಮತದಲ್ಲಿ ಅರ್ಹಂತ ಸಿದ್ಧ ಅಚಾರ್ಯ ಉಪಾಧ್ಯಾಯ ಮತ್ತು ಸಾಧುಗಳೆಂದು ಪಂಚಪರಮೇಷ್ಠಿಗಳು ಪ್ರಸಿದ್ಧರು. ಈ ಪರಮೇಷ್ಠಿಗಳಲ್ಲಿ ಅರ್ಹತ್ ಪರಮೇಷ್ಠಿಯು ನಿರವಧಿಕ ಜ್ಞಾನವೀರ್ಯಗಳಿಂದ ಪರಿಶುದ್ಧ ಔದಾರಿಕ ದೇಹವನ್ನು ಪರಿಗ್ರಹಿಸಿ ಲೋಕಾಕಾಶದಲ್ಲಿ ಲೋಕಾನುಗ್ರಹಕ್ಕಾಗಿ ಉಪದೇಶಮಾಡುತ್ತಿರುವರು. ಅರ್ಹಂತರಾಗಿ ಸಿದ್ಧರಾದವರಲ್ಲಿ ಇಷ್ಟತ್ತನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಮಾತ್ರ ತೀರ್ಥಂಕರರಾಗುವರು.

**ಮೋಕ್ಷೋಪಾಯ:** ಸಮ್ಯಗ್ದರ್ಶನ ಸಮ್ಯಕ್‌ಜ್ಞಾನ ಮತ್ತು ಸಮ್ಯಕ್ಚಾರಿತ್ರವೆಂಬ ರತ್ನತ್ರಯವು ಮೋಕ್ಷಸಾಧನ.

ಜಿನೋಪದಿಷ್ಟವಾದ ದೇವ ಗುರು ಶಾಸ್ತ್ರ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಲ್ಲಿ ಶ್ರದ್ಧೆಯು ಸಮ್ಯಗ್ದರ್ಶನ.

ಜಿನೋಕ್ತತತ್ತ್ವಗಳ ಯಥಾವತ್ತಾದ ಜ್ಞಾನವು ಸಮ್ಯಕ್‌ಜ್ಞಾನ.

ಮೇಲೆ ಹೇಳಿದ ಶ್ರದ್ಧೆಯುಳ್ಳ ಪುರುಷನ ರಾಗದ್ವೇಷ ರಹಿತವಾದ ವರ್ತನೆಯು ಸಮ್ಯಕ್‌ಚಾರಿತ್ರ. "ಸಮ್ಯ-ದರ್ಶನಜ್ಞಾನಚಾರಿತ್ರಾಣಿ ಮೋಕ್ಷಮಾರ್ಗ:" ತತ್ವಾಂ ಸ್ತಂ ೧-೧. 1

**ಮೋಕ್ಷ:** ಬಂಧಹೇತುವಾದ ಆಸ್ರವಯೋಗದ್ವಾರದ ನಿರೋಧವೇ ಸಂವರ. ತಪಸ್ಸು ಮೊದಲಾದ ಕಾಯಕ್ಲೇಶಗಳಿಂದ ಸಂಚಿತಕರ್ಮಗಳನ್ನು ತಡೆಯುವುದು ನಿರ್ಜರೆ. ಈ ನಿರೋಧನಿರ್ಜರೆಗಳಿಂದ ಆತ್ಮತಿಕ ಕರ್ಮಕ್ಷಯವಾದರೆ ಜೀವನು ಬಂಧದಿಂದ ಮುಕ್ತನಾಗುವನು. ಇದೇ ಮೋಕ್ಷ. ಈ ರೀತಿ ಬಂಧವಿಮುಕ್ತನಾದ ಜೀವನು ಮಣ್ಣಿನಿಂದ ಮೆತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ ಸೋರೆಕಾಯಿ ನೀರಿನ ತಳದಲ್ಲಿದ್ದು ಕ್ರಮವಾಗಿ ಮಣ್ಣು ಕರಗಿಹೋದರೆ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಬರುವಂತೆ ಉರ್ಧ್ವಗತಿಯಿಂದ ತುತ್ತತುದಿಗೆ ಹೋಗಿ ಯಾವ ತ್ಯಾಲವೂ ಸ್ವಾಭಾವಿಕಸುಖಾನುಭವದಲ್ಲಿರುವನು. "ಆಸ್ರವೋ ಭವಹೇತು: ಸ್ಯಾತ್ ಸಂವರೋ ಮೋಕ್ಷಕಾರಣಮ್। ಇತೀಯಮಾರ್ಹಂತೀ ದೃಷ್ಟಿ: ಅನ್ಯದಸ್ಯಾ: ಪ್ರಪಂಚನಮ್" 11 "ಶಿವಮಠಜಮಕ್ಷಯ-ಮವ್ಯಾಬಾಧಂ ವಿಶೋಕಭಯಶಙ್ಕಮ್। ಕಾಠಾಗತಸುಖವಿಧ್ಯಾವಿಭವಂ ವಿಮಲಂ ಭಜಂತಿ ದರ್ಶನಶರಣಾ:" 1

**ಜೈನಾಯತನ ಜೈನಾಯತನ, -ಆಶ್ರಮ-ಆಶ್ರಮ (೪೦)**

ಜೈನಸಂನ್ಯಾಸಿಗಳ ಮಠ, ಜೈನಭಿಕ್ಷುಗಳ ವಾಸಸ್ಥಳ.

**ಜೈಮಿನಿ ಜೈಮಿನಿ (೪೦)** ಒಬ್ಬ ಮುನಿ, ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯ

ಒಬ್ಬ ಶಿಷ್ಯ. ವೇದವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಈ ಋಷಿಯು ಸಾಮವೇದವನ್ನು ಗ್ರಹಿಸಿದರು. "ಕುರ್ಮಗಾಂಶ್ಚ ಜನಾನ್ ವೀಕ್ಷ್ಯ ಮುನಿರಿದಿವ್ಯೇನ ಚಕ್ಷುಷಾ। ಸರ್ವವರ್ಣಾಶ್ರಮಾಣಾಂ ಯದ್ವೈದ್ಯೋ ಹಿತ-ಮಮೋಘಕೃತ್। ಚಾತುರ್ಹೌತ್ರಂ ಕರ್ಮ ಶುಭಂ ಪ್ರಜಾಣಾಂ ವೀಕ್ಷ್ಯ ವೈದಿಕಮ್। ವ್ಯದಧಾತ್ ಯಜ್ಞಸಂತತಯೇ ವೇದಮೇಕಂ ಚತುರ್ವಿಧಮ್। ಋಗ್ಯಜು:-ಸಾಮಾಧರ್ವಾಹ್ಯಾ ವೇದಾಶ್ಚತವಾರ ಉದ್ಭವತಾ:। ಇತಿಹಾಸಪುರಾಣಂ ಚ ಪಂಚಮೋ ವೇದ ಉಚ್ಯತೇ। ತತ್ರಾರ್ವೇದಧರ: ಪೆಂಲ: ಸಾಮಗೋ ಜೈಮಿನಿ: ಕವಿ:" ಭಾಗಂ ೧-೪. ಈ ಋಷಿಯು ಕರ್ಮ ಕಾಂಡವೆಂಬ ಧರ್ಮಮೀಮಾಂಸೆಯನ್ನು ರಚಿಸಿರುವರು.

**ಜೈಮಿನೀಯ ಜೈಮಿನೀಯ (೪೦)** 1. ಜೈಮಿನಿಮುನಿಯ

ಅನುಯಾಯಿ. (ವಿಂ) 2. ಜೈಮಿನಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ.

3. ಜೈಮಿನಿಯಿಂದ ರಚಿತವಾದ (ಧರ್ಮಮೀಮಾಂಸಾ).



ಜೆಮಿನಿಯನ್ಯಾಯಮಾಲಾ ಜೈಮಿನೀಯನ್ಯಾಯಮಾಲಾ  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೈಮಿನಿಯಿಂದ ವಿರಚಿತವಾದ ಒಂದು  
ಮಾಮಾಂಸಾಶಾಸ್ತ್ರ ಗ್ರಂಥ. "ಜೆಮಿನಿಯನ್ಯಾಯಮಾಲಾಶ್ಲೋಕಃ  
ಸಂಗೃಹ್ಯತೇ ಸ್ಫುಟಮ್" ಮಾಧವಾಚಾರ್ಯಃ |

ಜೆಮುತ ಜೈಮೂತ (ವಿಂ) 1. ಮೇಘಸಂಬಂಧವಾದ.  
2. ಪರ್ವತಸಂಬಂಧವಾದ. 3. ಇಂದ್ರನ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
4. ಜೀಮೂತಯುಷಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. 5. ಕೊನ್ನಾರಿ  
ಗಡ್ಡೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಜಿಮುತಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್"  
(೪-೩-೧೨೦) |

ಜೆಯತ ಜೈಯಟ (ಪುಂ) ಪಾತಂಜಲಮಹಾಭಾಷ್ಯದ  
ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕಾರರಾದ ಕೈಯಟರ ತಂದೆ.

ಜೇವ ಜೈವ (ವಿಂ) 1. ಜೀವಾತ್ಮ ಸಂಬಂಧವಾದ. 2. ಬೃಹ  
ಸ್ಪತಿ ಸಂಬಂಧವಾದ (ಗುರುವಿನ ಕ್ಷೇತ್ರ) (1) ಧನೂರಾಶಿ  
ಮತ್ತು ಮೀನರಾಶಿ. (2) ಗುರುವಾರ. (3) ಪುಷ್ಯನಕ್ಷತ್ರ.  
(ಬೃಹಸ್ಪತಿದೇವತಾಕವಾದುದು). ಜಿವಸ್ಯಾಯಮ್ ಇದಂ ವಾ  
"ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) |

ಜೆವಾತೃಕ ಜೈವಾತ್ಮಕ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಜಿವ (ಪ್ರಾಣ-  
ಧಾರಣೆ) "ಆತೃಕನ್" ವೃದ್ಧಿಶ್ಚ (೩೦ ೧-೮೦) | 2. ಪುತ್ರ,  
ಮಗ. 3. ಜೀವಧ. 4. ಕೃಷಿವಲ, ರೈತ, ಬೇಸಾಯ  
ಗಾರ. 5. ಕರ್ಪೂರ. 6. ಚಿಕ್ಕತ್ತಕ, ವೈದ್ಯ. "ಜೆವಾತೃಕ-  
ಶ್ಚಂದ್ರಭಿಷಗಾಯುಷ್ಮತ್ಸು ಕೃಷಿವಲೇ" ವೇಜಂ | (ವಿಂ) 7.  
ದೀರ್ಘಾಯುಷ್ಯಂತ. 8. ಕೃತವಾಗಿರುವ, ತಳ್ಳಿಗಿರುವ.  
"ಜೆವಾತೃಕಃ ಕೃಶೇ ಚಂದ್ರೇ ಭಿಷಜಾಯುಷ್ಮತೋರಪಿ" ವಿಶ್ವಂ |

ಜೆವಿ ಜೈವಿ (ವಿಂ) ಜೀವನಿಗೆ ಸಮಾಪದಲ್ಲಿರುವ. ಜಿವಸ್ಯಾ-  
ದ್ವರಭವಃ "ಇಞ್" (೪-೨-೮೦) |

ಜೆವೇಯ ಜೈವೇಯ (ಪುಂ) 1. ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಮಗ. ಜಿವಸ್ಯ  
ಗುರೋಪತ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೩) | (ವಿಂ) 2.  
ಹೆದೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಬಿಲ್ಲಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ತೊಗಲಿನ ಹಗ್ಗದ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. ಜಿವಾಯಾ ಇದಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೦) |

ಜೆಹ್ಯಚ ಜೈಹ್ಯ (ನಂ) ಕುಟಿಲವಾಗಿರುವಿಕೆ, ವಕ್ರವಾಗಿರುವಿಕೆ.  
ಕಪಟ. ಜಿಹ್ಯಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಘ್ಯಞ್" (೪-೧-೧೨೪) |  
"ಜೆಹ್ಯಚಂ ಚ ಮೇಘುನಂ ಪುನಿ ಜಾತಿಶ್ರಂಶಕರಂ ಸ್ಮೃತಮ್" ಮನುಂ  
೧೧-೬೭ |

ಜೊಙ್ಗ ಜೋಂಗ (ನಂ) ಅಗುರು, ಒಂದು ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯ.  
ಜುಙ್ಗಚತೇ - ಜುಗಿ (ವರ್ಜನೆ) "ಅಞ್" | ಪೃಷಂ |

ಜೊಙ್ಗಕ ಜೋಂಗಕ (ನಂ) ಅಗುರು, ಒಂದು ಸುಗಂಧ  
ದ್ರವ್ಯ. ಜುಗಿ (ವರ್ಜನೆ) "ಞ್ವನ್" (೩೦ ೨-೩೨) |  
"ವಂಶಕಾಗುರಾಜಾಹ್ಲೋಹಂ ಕೃಮಿಜಜೊಙ್ಗಕಮ್" ಅಮಂ |

ಜೊಙ್ಗಕ ಜೋಂಗಕ (ಪುಂ) ಗರ್ಭಿಣಿಯರ ದೌಹೃದ,  
ಬಸಿರು ಹೆಂಗಸರ ಬಯಕೆ.

ಜೊಡಿಙ್ಗ ಜೋಟಿಂಗ (ಪುಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾ  
ದೇವ, ಪರಶಿವ. 2. ಉಗ್ರವಾದ ತಪಸ್ಸುಮಾಡುವ  
ಯತಿ. "ಕಂಠಕಾಲಜಯಂತಗುಹ್ಯಗುರವೋ ಜೊಡಿಙ್ಗಗೋಪಾಲಕೌ"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | "ಜೊಡಿಙ್ಗಸ್ತು ಮಹಾವ್ರತೀ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಜೊಡ ಜೋಡ (ನಂ) ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಅಡಕೆ. "ಕಛಾಯೋ  
ರಾಗವಾನ್ ಪೂಗಃ ಫಲೇ ಪರ್ಕಟಮಸ್ಯ ತತ್ | ಪಕ್ವಂ ಜೊಡಮ್" ವೇಜಂ |

ಜೊಷ ಜೋಷ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರೀತಿ. 2. ಸೇವನೆ. ಜುಳಿ  
(ಪ್ರೀತಿಸೇವನಯೋಃ) "ಞ್" (೩-೩-೧೮) | (ನಂ) 3. ಸುಖ.

ಜೊಷಣ ಜೋಷಣ (ನಂ) 1. ಪ್ರೀತಿಸುವುದು. 2. ಸೇವನೆ.  
ಜುಳಿ (ಪ್ರೀತಿಸೇವನಯೋಃ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) |  
"ತಜ್ಜೊಷಣಾದಾಶ್ಚಪರ್ವಗವರ್ತಮನಿ ಶ್ರದ್ಧಾ ರತಿಭಕ್ತಿರನುಕ್ರ-  
ಮಿಷ್ಯತಿ" ಭಾಗಂ ೩-೨೫-೨೫ | ಜುಳಿ+ಞಿಞ್ "ಯುಞ್"  
(೩-೩-೧೦೭) | -ಣಾ -ಣಾ.

ಜೊಷಮ್ ಜೋಷಮ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಮನವಾಗಿ, ಮಾತ  
ನಾಡದೆ, ಶಬ್ದವಿಲ್ಲದೆ. ಜುಳಿ (ಪರಿತರ್ಕಣೆ) "ಅಮ್" ಬಾಹುಂ |  
"ತತ್ಕಿಮಿತಿ ಜೊಷಮಾಸ್ಯತೇ" ಶಾಕುಂ ೫ | "ಇತಿ  
ಜೊಷಮವಸ್ಥಿತಂ ದ್ವಿಷಃ ಪ್ರಣಿಂಧಿ ಗಾಮಭಿಧಾಯ ಸಾತ್ಯಕಿಃ"  
ಮಾಧಂ ೧೬-೧೬ | 2. ತನ್ನ ಇಷ್ಟದಂತೆ. 3. ಪ್ರಶಂಸೆ,  
ಹೊಗಳಿಕೆ. 4. ಸುಖ. 5. ಲಂಛನ. "ಜೊಷಮ್ ಸುಖೇ  
ಪ್ರಶಂಸಾಯಾಂ ತುಣಿಂ ಲಕ್ಷಣಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ |

ಜೊಷಾ ಜೋಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಂಗಸು, ಮಹಿಳೆ.

ಜ ಜ್ಞ (ಪುಂ) 1. ಬುದ್ಧಿಗ್ರಹ. 2. ಪಂಡಿತ. ಜಾನಾತಿ-ಜ್ಞಾ  
(ಅವಬೋಧನೆ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫) | "ಯುಗೋ ಸೂರ್ಯಜಶುಕ್ರಾಣಾಂ  
ಸಚತುಷ್ಕರದಾರ್ಣವಾಃ" ಸೂಂ ಸಿಂ ೧-೨೯ | 3. ಜೀವಾತ್ಮ.  
4. ಕುಜಗ್ರಹ. 5. ಬ್ರಹ್ಮ. (ವಿಂ) 6. ತಿಳಿದವನು,  
ಬಲ್ಲವನು. "ಜ್ಞೋ ಬ್ರಹ್ಮವುಧವಿದ್ವತ್ಸು ಸ್ಯಾತ್" ಮೇದಿಂ |  
"ಆತ್ಮಾನಿ ಜ್ಞಾತಾರಿ ಜಃ ಸ್ಯಾತ್" ವೇಜಂ | "ಆದೇಶಂ  
ದೇಶಕಾಲಜಃ" ರಘುಂ ೧-೯೨ | ಸರ್ವಜಃ ನಿಮಿತ್ತಜಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಜಕ ಜ್ಞಕ (ವಿಂ) ಸ್ವಲ್ಪ ತಿಳಿದವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಕಾ ಜ್ಞಕಾ,  
ಜಿಕಾ ಜ್ಞಕಾ. ಅತಃ ವಾ ಇತ್ (೭-೩-೪೭) |

ಜಪಿತ ಜ್ಞಪಿತ (ವಿಂ) ಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಜಪ್ಯತೇ-  
ಜಪ (ಜ್ಞಾನೆ ಜ್ಞಾಪನೆ ಚ) + ಞಿಞ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

ಜಪ್ತ ಜ್ಞಪ್ತ (ವಿಂ) ಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಭೋಧಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಜಪ್ಯತೇ - ಜಪ (ಜ್ಞಾನೆ ಜ್ಞಾಪನೆ ಚ) + ಞಿಞ್ "ಕ್ತಃ"  
(೩-೨-೧೦೨) | "ವಾ ದಾಂತೇತ್ಯಾದಿನಾ" (೭-೨-೨೯) |  
ವಾ ಇಡಭಾವೋ ನಿಪಾತ್ಯತೇ |



ಜ್ಞಪ್ತಿ ಜ್ಞಾಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬುದ್ಧಿ. 2. ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ಜ್ಞಾನ. ಜಪ (ಜ್ಞಾನ) ಭಾವೆ "ಕ್ತಿನ್" (3-3-98). "ತಸ್ಯ ಜಿಜ್ಞಾಸಯಾ ತೇ ವೈ ಭೃಗುಂ ಬ್ರಹ್ಮಸುತಂ ನೃಪಃ | ತಜ್ಞಃ ಪ್ರೇಷಯಾಮಾಸುಃ ಸೋಮ್ಯಗಾತ್ ಬ್ರಹ್ಮಣಃ ಸಭಾಮ್" ಭಾಗಂ 10-69-2. "ಜ್ಞಪ್ತಿಃ ಪಂಡೋಪಲಬ್ಧಿस्तು ಸಂವಿತ್ತಿರನುಭೂತಿಃ | ಅವಗತ್ಯನುಭೂತೀ ಚಿಜ್ಞಪ್ತಿರ್ಜ್ಞಾನಂ ಚ ಬೋಧನಮ್" ವೈಜಂ.

ಜ್ಞಾ - ಅವಬೋಧನೆ (ಕ್ರದಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) | ಜಾನಾತಿ ಜಾನೀತಃ ಜಾನಂತಿ | ಜಜ್ಞೌ ಜಜ್ಞತುಃ ಜಜ್ಞಃ | ಜ್ಞಾತಾ | ಜ್ಞಾಸ್ಯತಿ | ಜ್ಞಾನಾತು | ಜ್ಞಾನೀಹಿ | ಜ್ಞಾನಾನಿ | ಅಜಾನಾತ್ ಅಜಾನೀತಾಮ್ ಅಜಾನನ್ | ಜ್ಞಾನೀಯಾತ್ | ಜ್ಞಾಯಾತ್, ಜ್ಞೇಯಾತ್ | ಅಜ್ಞಾಸೀತ್ | ಅಜ್ಞಾಸ್ಯತ್ | 1. ತಿಳಿ, ಅರಿತುಕೊ. "ಯೇ ನಾಮ ಕೇಚಿದಿಹ ನಃ ಪ್ರಥಯಂತ್ಯವಜ್ಞಾಂ ಜಾನಂತಿ ತೇ ಕಿಮಪಿ ತಾನ್ ಪ್ರತಿ ನೈಷ ಯತಃ" ಮಾಲತೀಂ 1-6. 2. ಗ್ರಹಿಸು, ಮನವರಿಕೆಮಾಡಿಕೊ, ಅರ್ಥಮಾಡಿಕೊ. 3. ವಿಚಾರ ಮಾಡು, ವಿಮರ್ಶಿಸು. "ವಿಭಾಷೋಪಪದೇನ ಪ್ರತೀಯಮಾನೇ" (1-3-99) ಸೂತ್ರದಿಂದ ವಿಹಲ್ವವಾಗಿ ಅತ್ಯಂತಪದಿಯಾಗುವುದು. ಜಾನೀತೇ ಜಾನಾತೇ ಜನತೇ | ಜಜ್ಞೇ ಜಜ್ಞಾತೇ ಜಜ್ಞಿರೇ | ಜ್ಞಾತಾ | ಜ್ಞಾಸ್ಯತೇ | ಜ್ಞಾನೀತಾಮ್ ಜ್ಞಾನಾತಾಮ್ ಜನತಾಮ್ | ಅಜಾನೀತ | ಜಾನೀತ | ಜ್ಞಾಸೀಷ್ಠ | ಅಜ್ಞಾಸ್ತ | ಅಜ್ಞಾಸ್ಯತ | "ಜಾನೀತೇ ನಿತರಾಮಸೌ ಗುರುಕುಲವಿಲಾಸೋ ಮುರಾರಿಃ ಕವಿಃ" ಅನರ್ಥಂ |

ಕರ್ಮಣಿ :- ಜ್ಞಾಯತೇ | ಜಜ್ಞೇ | ಜ್ಞಾಯಿತಾ, ಜ್ಞಾತಾ | ಜ್ಞಾಯಿಷ್ಯತೇ, ಜ್ಞಾಸ್ಯತೇ | ಜ್ಞಾಯತಾಮ್ | ಅಜ್ಞಾಯತ | ಜ್ಞಾಯೇತ | ಜ್ಞಾಯಿಷೀಷ್ಠ, ಜ್ಞಾಸೀಷ್ಠ | ಅಜ್ಞಾಯಿ | ಅಜ್ಞಾಯಿಷ್ಯತ, ಅಜ್ಞಾಸ್ಯತ |

ಣಿವಿ :- ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಇಂತ ಜ್ಞಾ ಧಾತುವು ಮಿತ್ ಸಂಜ್ಞೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿ ಹ್ರಸ್ವವು ಬರುವುದು. "ಮಿತಾಂ ಹ್ರಸ್ವಃ" (6-4-92) | (1) ಮಾರಣಮ್ ಕೊಲ್ಲುವುದು. (2) ತೋಷಣಮ್ ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವುದು ಮತ್ತು (3) ನಿಶಾಮನಮ್ ನೋಡುವುದು. ಮಾರಣತೋಷಣನಿಶಾಮನೇಷು ಜ್ಞಾ (ಭಾಂ 611) | ನಿಶಾಮನವಂದರ ಚಾಕ್ಷುಷಜ್ಞಾನವೆಂದು ಮೂಢವರೂ ಜ್ಞಾಪನಮಾತ್ರವೆಂದು ಇತರರೂ ಅರ್ಥಮಾಡುವರು. ....ನಿಶಾನೇಷು ಎಂಬ ಪಾಠಾಂತರದಲ್ಲಿ ನಿಶಾನಂ ತೀಕ್ಷ್ಣೀಕರಣಮ್ (ಹರಿತಗೊಳಿಸುವುದು) ಎಂದು ಅರ್ಥ. ಈ ಎಲ್ಲಾ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲೂ ಜ್ಞಾ ಧಾತುವು ಮಿತ್ ಸಂಜ್ಞೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿ ಹ್ರಸ್ವವಾಗುವುದು. ಜಪಯತಿ, -ತೇ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ :- ಜಿಜ್ಞಾಸತೇ | "ಜ್ಞಾಶ್ರುಸ್ಮದೃಶಾ ಸನಃ" (1-3-53) | ಸೂತ್ರದಿಂದ ಅತ್ಯಂತಪದ ಬರುವುದು. ಅನು ಪೂರ್ವಕ

ಸತ್ತಂತ ಜ್ಞಾ ಧಾತುವಿಗೆ ಅತ್ಯಂತಪದ ಬರುವುದಿಲ್ಲ. "ನಾನೋಜ್ಞಃ" (1-3-56) | "ಪುತ್ರಮನುಜಿಜ್ಞಾಸತಿ |

ಅಪಲಾಪರೂಪಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ಜ್ಞಾ ಧಾತುವು ಅತ್ಯಂತಪದಿಯಾಗುವುದು (1-3-88) "ಶತಮಪಜಾನೀತೇ" |

ಅಕರ್ಮಕ ಜ್ಞಾ ಧಾತುವು ಅತ್ಯಂತಪದಿಯಾಗುವುದು. (1-3-85) "ಸರ್ಪಿಷೋ ಜಾನೀತೇ" | ಸಮ್ ಮತ್ತು ಪ್ರತಿ ಪೂರ್ವಕ ಜ್ಞಾ ಧಾತುವು ಅಧ್ಯಾನಭಿನ್ನಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ಅತ್ಯಂತಪದಿಯಾಗುವುದು (1-3-86) | "ಶತಂ ಸಂಜಾನೀತೇ" | ಅವೇಶತೇ ಇತ್ಯರ್ಥಃ | उत्कण्ठापूर्वकं स्मरणम् आध्यानम् | ಈ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಜ್ಞಾ ಧಾತುವು ಸಮ್ ಪೂರ್ವಕವಾಗಿದ್ದರೂ ಪರಸ್ಮಿ ಪದಿಯಾಗಿಯೇ ಇರುವುದು. "ಮಾತರಂ ಮಾತುರ್ವಾ ಸಂಜಾನಾತಿ" | ಮಾತರಮಾಧ್ಯಾಯತೀತ್ಯರ್ಥಃ |

ಕೃತು :- ಜ್ಞಾತವ್ಯಃ | ಜ್ಞಾನೀಯಃ | ಜ್ಞೇಯಃ | ಜ್ಞಾತಃ | ಜ್ಞಾತವಾನ್ | ಜಾನನ್, ಜಾನತೀ | ಜಾನಾನಃ | ಜ್ಞಾತುಮ್ | ಜ್ಞಾತಮ್ | ಜ್ಞಾನಮ್ | ಜ್ಞಾತವಾ | ವಿಜ್ಞಾಯ |

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು :

(1) ಅನು + ಜ್ಞಾ = ಅನುಜಾನಾತಿ | ಅನು.ಮತಿಸು, ಅಪ್ಪಣೆ ಕೊಡು. "ಅನುಜಾನೀಹಿ ಹನ್ಯಂತಾಂ ಮಯೇತಾಃ ಕ್ಷುಧ್ರಮಾನಸಾಃ" ಭट्टಿಂ 20-2 |

(2) ಅಪ + ಜ್ಞಾ = ಅಪಜಾನೀತೇ | ಅಪಜಾನಾನಃ | ಮರೆ ಮಾಡು, ಬಿಟ್ಟುಡು, ಮರಸು. "ಆತ್ಮಾನಮಪಜಾನಾನಃ ಶಶಮಾತ್ರೋಜಯದ್ವಿನಮ್" ಭट्टಿಂ 6-26 |

(3) ಅಭಿ + ಜ್ಞಾ = ಅಭಿಜಾನಾತಿ | ಅಭಿಜ್ಞಾನಮ್ | 1. ಗುರುತಿನಿಂದ ತಿಳಿ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕಂಡುಹಿಡಿದು, ಗುರುತಿಸಿದ ಜ್ಞಾಪಿಸಿಕೊ. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದುಕೊ, ಅನುಭವದಿಂದ ಜ್ಞಾಪಿಸಿಕೊ. "ಅಭಿಜ್ಞಾಃ ಕ್ಷೇಪಪಾತಾನಾಂ ಕ್ರಿಯಂತೇ ನಂದನದ್ರುಮಾಃ" ಕುಮಾಂ 2-41 |

(4) ಪ್ರತಿ + ಅಭಿ + ಜ್ಞಾ = ಪ್ರತ್ಯಭಿಜಾನಾತಿ | ಪ್ರತ್ಯಭಿಜ್ಞಾ | ಹಿಂದಿನ ಅನುಭವದಿಂದ ಸ್ಮರಿಸು, ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ನೋಡಿದ್ದ ವಸ್ತುವನ್ನು ನೋಡಿ ಅದೇ ಎಂದು ತಿಳಿ. "ಸ ಏವಾಯಂ ಧರಃ ಯೋ ಮಯಾ ಪೂರ್ವಮುಪಲಬ್ಧಃ" ಎಂಬ ಪೂರ್ವಾನುಭವದ ಸಂಸ್ಕಾರದಿಂದ ಉಂಟಾದ ಜ್ಞಾನವು "ಪ್ರತ್ಯಭಿಜ್ಞಾ" ಎನಿಸುವುದು. "ತಂ ತ್ವಂ ಪ್ರತ್ಯಭಿಜಾನೀಹಿ ಸ್ವಪ್ನೇ ಯಂ ದೃಷ್ಟವತ್ಯಸಿ" ಹರಿವಂ |

(5) ಅವ + ಜ್ಞಾ = ಅವಜಾನಾತಿ | ತಿರಸ್ಕರಿಸು, ಅನಾದರದಿಂದ ನೋಡು. "ಅವಜಾನಾಸಿ ಮಾಂ ಯಸ್ಮಾದತಸ್ತೇ ನ ಭವಿಷ್ಯತಿ | ಮತ್ಪ್ರಸೂತಿಮನಾರಾಧ್ಯ ಪ್ರಜೇತಿ ತ್ವಾಂ ಶಶಾಪ ಸಾ" ರಘುಂ 1-99 |



(6) ಆ+ಜ್ಞಾ = ಆಜ್ಞಾಪಯತಿ | ಆಜ್ಞಾಪನಮ್ | ಅಜ್ಞೆ ಮಾಡು, ಅಪ್ಪಣೆಮಾಡು. "ಆಜ್ಞಾಪಯ ಜ್ಞಾತವಿಶೇಷ ಪುಂಸಾಂ ಲೋಕೇಷು ಯತ್ತೇ ಕರಣೀಯಮಸ್ತಿ" ಕುಮಾಂ ೩-೩ | ಈ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಇದು ಲಿಂಗವಾಗುವುದು.

(7) ಉಪ+ಜ್ಞಾ = ಉಪಜಾನಾತಿ | ಉಪಜ್ಞಾ | ಮೊದಲು ತಿಳಿ, ಪ್ರಥಮತಃ ತಿಳಿ. "ಉಪಜ್ಞಾ ಜ್ಞಾನಮಾಶ್ರಯ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ |

(8) ಪರಿ+ಜ್ಞಾ = ಪರಿಜಾನಾತಿ | ಪರಿಜ್ಞಾನಮ್ | ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿ, ಸರಿಯಾಗಿ ತಿಳಿ. "ಅನುಬಂಧಂ ಪರಿಜ್ಞಾಯ ದೇಶಕಾಲೌ ಚ ತತ್ವತಃ" ಮನುಂ ೮-೧೨೬ |

(9) ಪ್ರ+ಜ್ಞಾ = ಪ್ರಜಾನಾತಿ | ಪ್ರಜ್ಞಾ | ಉತ್ತಮವಾಗಿ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳು, ಉತ್ತಮರೀತಿಯಲ್ಲಿ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳು. "ಯಃ ಸರ್ವತ್ರಾನುಭಿವೇಶ್ವರಃ ತತ್ತಪ್ರಾಪ್ಯ ಶುಭಾಶುಭಮ್ | ನಾಭಿನಂದತಿ ನ ದ್ವೇಷಿತಿ ತಸ್ಯ ಪ್ರಜ್ಞಾ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಾ" ಗೀತಾ ೨-೪೭ |

(10) ಪ್ರತಿ + ಜ್ಞಾ = ಪ್ರತಿಜಾನೀತೇ | ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ | 1. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡು, ಶಪಥಮಾಡು. "ಪ್ರತಿಜ್ಞೇ ವಧಂ ಚಾಪಿ ಸರ್ವಕ್ಷತ್ರಸ್ಯ ಭಾರತ" ಭಾಂ ವನಂ ೧೧೮-೬ | 2. ಕರ್ತವ್ಯವನ್ನು ನಿರ್ದೇಶಿಸು, ಮಾಡಬೇಕೆಂದಿರುವ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ತೋರಿಸಿ ಹೇಳು. ಸ್ವಕರ್ತವ್ಯತ್ವೇನ ನಿರ್ದೇಶಃ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ | "ಸಾಧ್ಯನಿರ್ದೇಶಃ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ" ಗೌತಮಸೂಂ |

(11) ವಿ+ಜ್ಞಾ = ವಿಜಾನಾತಿ | ವಿಜ್ಞಾನಮ್ | ವಿಜ್ಞಾಯ | 1. ವಿಶೇಷ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳು. "ಕಥಮೇತದ್ವಿಜಾನೀಯಾಂ ತ್ವಮಾದೌ ಪ್ರೋಕ್ತವಾನಿತಿ" ಗೀತಾ ೪-೪ | 2. ಶಿಲ್ಪಶಾಸ್ತ್ರಗಳ ಜ್ಞಾನ. "ಮೋಕ್ಷೋ ಧೀರ್ಜ್ಞಾನಮನ್ಯತ್ರ ವಿಜ್ಞಾನಂ ಶಿಲ್ಪ-ಶಾಸ್ತ್ರಯೋಃ" ಅಮಂ |

(12) ಸಮ್ + ಜ್ಞಾ = ಸಂಜಾನೀತೇ | ಸಂಜಾನಾನಃ | 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿ. "ಸಂಜಾನಾನಾನ್ ಪರಿಹರನ್ ರಾವಣಾ-ನುಚರಾನ್ ಬಹುನ್" ಭಟ್ಟಂ ೮-೨೭ | 2. ಚೈತನ್ಯ, ಜ್ಞಾನ. 3. ಕೈ ಕಣ್ಣು ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ವಿಷಯವನ್ನು ಸೂಚಿಸು. "ಸಂಜ್ಞಾ ಸ್ಯಾಚ್ಚೇತನಾ ನಾಮ ಹಸ್ತಾದೈಶ್ಚಾರ್ಯಸೂಚನಾ" ಅಮಂ |

ಜ್ಞಾತ ಜ್ಞಾತ (ನಂ) 1. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೨೪) | (ವಿಂ) 2. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟು, ಅರಿಯಲ್ಪಟ್ಟು. ಜ್ಞಾ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಜ್ಞಾತೋ ನು ಕಿಂ ಸ ಖಲು ಬಂಧನವಿಪ್ರಯುಕ್ತಃ" ಮೃಚ್ಛಂ ೯-೯ | "ಜ್ಞಾತಸಾರೋಽಪಿ ಖಲ್ವೇಕಃ ಸಂದಿಗ್ಧೇ ಕಾರ್ಯವಸ್ತುನಿ" ಮಾಘಂ ೨-೧೨ | ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಕನ್" (೪-೪-೪) | ಜ್ಞಾತಕಃ ಜ್ಞಾತಕಃ |

ಜ್ಞಾತನಂದನ ಜ್ಞಾತನಂದನ (ಪುಂ) ಮಹಾವೀರ ವರ್ಧಮಾನ ಜಿನೇಶ್ವರರು, ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕನೆಯ ಅರ್ಧಶತಕರು. ಜ್ಞಾತೇನ

ಜ್ಞಾನೇನ ನಂದತಿ - ಟುನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) |

ಜ್ಞಾತವತ್ ಜ್ಞಾತವತ್ (ವಿಂ) ತಿಳಿದವನು, ಅರಿತವನು. ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ವತೀ -ವತೀ |

ಜ್ಞಾತವ್ಯ ಜ್ಞಾತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ತಿಳಿಯಬೇಕಾದ. 2. ವಿಮರ್ಶಿಸಬೇಕಾದ. 3. ವಿಚಾರಮಾಡಿ ತಿಳಿಯಬೇಕಾದ. ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬) |

ಜ್ಞಾತಸಾರ ಜ್ಞಾತಸಾರ (ವಿಂ) ತತ್ತ್ವಾರ್ಥಗಳನ್ನು ತಿಳಿದವನು. ಜ್ಞಾತಃ ಸಾರೋ ಯೇನ | "ಜ್ಞಾತಸಾರೋಽಪಿ ಖಲ್ವೇಕಃ ಸಂದಿಗ್ಧೇ ಕಾರ್ಯವಸ್ತುನಿ" ಮಾಘಂ ೨-೧೨ |

ಜ್ಞಾತಸಿದ್ಧಾಂತ ಜ್ಞಾತಸಿದ್ಧಾಂತ (ವಿಂ) ಸಿದ್ಧಾಂತವನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ನಿಷ್ಕೃಷ್ಟಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು, ತತ್ತ್ವಾರ್ಥವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. ಜ್ಞಾತಃ ಸಿದ್ಧಾಂತಃ ಯೇನ |

ಜ್ಞಾತಿ ಜ್ಞಾತಿ (ಪುಂ) 1. ತಂದೆ. 2. ತಂದೆಯ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ದಾಯಾದರು. ಜ್ಞಾನಾತಿ ಛಿದ್ರಂ ಕುಲಸ್ಥಿತಿಂ ವಾ ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಿಃ" (೩-೩-೧೭೪) | ಜ್ಞಾಯತೇ ಅನೇನ ವಾ ಜ್ಞಾ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಿಃ" (೩-೩-೧೭೪) | ತಂದೆಯ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಚಿಕ್ಕಪ್ಪ ದೊಡ್ಡಪ್ಪ ಅವರ ಮಕ್ಕಳು ಮೊಮ್ಮಕ್ಕಳು ಮೊದಲಾದವರು ಜ್ಞಾತಿಗಳಾಗುವರು. ಸಪ್ತಪುರುಷಪರ್ಯಂತ ಸಂಬಂಧರು. ಅಲ್ಲಿಂದ ಮುಂದೆ ಸಪ್ತಪುರುಷಪರ್ಯಂತ ಸಮಾನೋದಕರು. ಅಲ್ಲಿಂದ ಮುಂದೆ ಸಗೋತ್ರರು. "ಸಪಿಂಡತಾ ತು ಪುರುಷೇ ಸಪ್ತಮೇ ವಿನಿವರ್ತತೇ | ಸಮಾನೋದಕಭಾವಸ್ತು ನಿವರ್ತತಾ-ಚತುರ್ದಶಾತ್ | ಜನ್ಮನಾಮ್ನೋಃ ಸ್ಮರತೇರೇಕೇ ತತ್ಪರಂ ಗೌತ್ರಮುಚ್ಯತೇ" | "ಜ್ಞಾತಿಮ್ಯೋ ದ್ರವಿಣಂ ದತ್ವಾ ಕನ್ಯಾಯೈ ಚೈವ ಶಕ್ತಿತಃ | ಕನ್ಯಾ-ಪ್ರದಾನಂ ಸ್ವಾಚ್ಛಂದಾತ್ ಆಸುರೋ ಧರ್ಮಃ ಉಚ್ಯತೇ" ಮನುಂ ೩-೩೧ | "ಜ್ಞಾತಿಸಮ್ಬಂಧಿಭಿಃ ಸ್ವೇತೇ ತ್ಯಕ್ತವ್ಯಾಃ ಕೃತಲಕ್ಷಣಾಃ | ನಿರ್ದಯಾ ನಿರ್ಮಮಸ್ಕಾರಾಃ ತನ್ಮನೋರನುಶಾಸನಮ್" ಮನುಂ ೯-೨೩೯ | 3. ಬಂಧು, ಸಂಬಂಧಿ, ಸಂಬಂಧಿ. "ಸ್ಯುಜ್ಞಾತಯಃ ಸಗೌತ್ರಾಶ್ಚ ಸಪಿಂಡಾಸ್ತು ಸನಾಭಯಃ | ಸ್ವಜನೋ ಬಾಂಧವೋ ಬಂಧುಃ" ವೈಜಂ | "ಸಗೌತ್ರಬಾಂಧವಜ್ಞಾತಿಬಂಧುಸ್ವಸ್ವಜನಾಃ ಸಮಾಃ" ಅಮಂ | "ಜ್ಞಾತೀನ್ ವಿಡಾನ್ ಸ್ವಭುಜವಿಕ್ರಮಲಬ್ಧವರ್ಣಾನ್ ರಾಜಾಪಮಾನಕುಪಿತಾಂಶ್ಚ ನರೇಂದ್ರಮುಖ್ಯಾನ್ | ಉತ್ತೇಜಯಾಮಿ ಸುಹೃದಃ ಪರಿಮೋಕ್ಷಣಾಯ ಯೌಗಂಧರಾಯಣ ಇವೋದಯನಸ್ಯ ರಾಜಃ" ಮೃಚ್ಛಂ ೪-೨೬ |

ಜ್ಞಾತಿಸ್ವ ಜ್ಞಾತಿಸ್ವ (ನಂ) ಬಂಧುತ್ವ, ಸಂಬಂಧ, ರಕ್ತ ಸಂಬಂಧ. ಜ್ಞಾತೇರ್ಭಾವಃ "ತ್ವಃ" (೪-೧-೧೧೯) | "ಏತಾ-



ಸ್ತಿಸ್ತು ಭಾರ್ಯೇ ನೋಪಯಚ್ಛೇತು ಬುದ್ಧಿಮಾನ್ | ಜ್ಞಾತೃತ್ವೇನಾ-  
ನುಪೇಯಾಸ್ತಾಃ ಪತತಿಹ್ಯುಪಯತ್ರಃ" ಮನುಂ ೧೧-೧೭೨ |

**ಜ್ಞಾತಿದಾಸಿ ಜ್ಞಾತಿವಾಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮನೆಯಲ್ಲಿರುವ  
ಸೇವಕಿ, ಹೆಣ್ಣು ಆಳು, ಮನೆಯ ಕೆಲಸಮಾಡುವ ಹೆಂಗಸು.  
2. ಮಗಳ ಶುಶ್ರೂಷೆಗಾಗಿ ತಾಯಿಯು ಕಳುಹಿಸಿಕೊಡುವ  
ಸೇವಕಿ. "ಜ್ಞಾತಿದಾಸಿ ಯತೋ ಜಾತಾ" ರಾಮಾಂ |

**ಜ್ಞಾತಿಪ್ರಾಯ ಜ್ಞಾತಿಪ್ರಾಯ (ವಿಂ)** ಜ್ಞಾತಿಗಳನ್ನು  
ಹೊಂದುವ, ಬಂಧುಗಳಿಗೆ ಹೋಗಿ ಸೇರುವ. ಜ್ಞಾತೀನ್  
ಪ್ರತಿ - ಪ್ರ + ಇನ್ (ಗತೌ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) |  
"ಪ್ರಕ್ಷಾಲ್ಯ ಹಸ್ತಾಂವಾಚಮ್ಯ ಜ್ಞಾತಿಪ್ರಾಯಂ ಪ್ರಕಲ್ಪಯೇತ್" ಮನುಂ  
೩-೨೬೪ |

**ಜ್ಞಾತಿಭಾವ ಜ್ಞಾತಿಭಾವ (ಪುಂ)** ಬಂಧುತ್ವ, ನಂಟತನ.  
ಜ್ಞಾತೀಭಾವಿಃ | "ಸರ್ವಸ್ವಂ ಗ್ರಸತೇ ಬಂಧುರಾಕ್ರಮ್ಯ ಜ್ಞಾತಿಭಾವತಃ"  
ಹಿತೋಂ ೨-೪-೮ |

**ಜ್ಞಾತೃ ಜ್ಞಾತೃ (ವಿಂ)** 1. ತಿಳಿದವನು, ಜ್ಞಾನಿ, ತಿಳಿದವಳಿಗೆ  
ಯುಳ್ಳವನು. ಜ್ಞಾನಾತಿ - ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ತನ್"  
(೩-೨-೧೩೪) | 2. ಪರಿಚಯವುಳ್ಳವನು, ಗುರುತಿನವನು.  
3. ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ವಿಷಯವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ  
ಅರಿತಿರುವವನು, ಸಾಕ್ಷಿ. "ಜ್ಞಾತಾರಃ ಸಂತಿ ಮೇತ್ಯುಕ್ತ್ವಾ  
ದಿಶೇತ್ಯುಕ್ತೋ ದಿಶೇನ್ನ ಯಃ" ಮನುಂ ೮-೪೭ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ತೀಪ್"  
(೪-೧-೪) | ಜ್ಞಾತೃ ಜ್ಞಾತೃ |

**ಜ್ಞಾತೃತ್ವ ಜ್ಞಾತೃತ್ವ (ನಂ)** ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದಿರುವಿಕೆ. ಜ್ಞಾತೃಭಾವಿಃ  
"ತ್ವಃ" (೪-೧-೧೧೯) |

**ಜ್ಞಾತೇಯ ಜ್ಞಾತೇಯ (ನಂ)** ಜ್ಞಾತಿತ್ವ, ಬಂಧುತ್ವ, ನಂಟತನ.  
ಜ್ಞಾತೇಭಾವಿಃ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೭) |

**ಜ್ಞಾನ ಜ್ಞಾನ (ನಂ)** 1. ತಿಳಿದವಳಿಗೆ. ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) ಭಾವೇ  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | "ಜ್ಞಾನೇ ಮೌನಂ ಕ್ಷಮಾ ಶಕ್ತೌ ತ್ಯಾಗೋ  
ಶ್ಲಾಘಾವಿಪರ್ಯಯಃ" ಋಗ್ವಂ ೧-೨೨ | 2. ಮೋಕ್ಷ ವಿಷಯಕ  
ವಾದ ಬುದ್ಧಿ. 3. ಪರಮಾತ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ  
ಜ್ಞಾನ. ಜ್ಞಾನೇತೇನಾತ್ಮಾ-ಜ್ಞಾ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |  
ಈ ಜ್ಞಾನವು ಆತ್ಮಜ್ಞಾನಸಾಧನ. **ಆತ್ಮಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ  
ಸಾಧನವಾದ ಗುಣಗಳು:**

**ಅಮಾನಿತ್ವಮ್**-ಹಿರಿಯರನ್ನು ತಿರಸ್ಕಾರದಿಂದ ಕಾಣುವ  
ಅಭಿಮಾನ (ಗರ್ವ) ವಿಲ್ಲದಿರುವ ಮನೋಭಾವ.

**ಅದಮಿತ್ವಮ್**-ಕೀರ್ತಿಗಳೆಸಲು ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ  
ರೂಪವಾದ ದಂಭ (ಅಪಾಧಭೂತಿತನ) ವಿಲ್ಲದಿರುವುದು.

**ಅಹಿಂಸಾ**-ತ್ರಿಕರಣ (ವಾಕ್ಯ, ಮನಸ್ಸು ಮತ್ತು ಶರೀರ)  
ಗಳಿಂದ ಇತರರನ್ನು ಹಿಂಸಿಸದಿರುವುದು.

**ಜ್ಞಾನಿ**-ಇತರರು ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಿದ್ದರೂ ಅವರಿಗೆ ಪ್ರತೀ  
ಕಾರಮಾಡುವ ಮನಸ್ಸಿಲ್ಲದಿರುವುದು.

**ಜ್ಞಾನಮ್**-ತ್ರಿಕರಣಗಳಿಂದಲೂ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಕೌಟಿಲ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವುದು.

**ಜ್ಞಾನಾರ್ಥೋಪಾಸನಮ್**-ಆತ್ಮಜ್ಞಾನವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ  
ಆಚಾರ್ಯರ ಸೇವೆಯಲ್ಲಿ ನಿರತನಾಗಿರುವುದು.

**ಜ್ಞಾನಮ್**-ಲೋಭ ಅಸೃತ (ಸುಳ್ಳು) ನಿಷಿದ್ಧಾಹಾರ  
ಸೇವನಾರೂಪವಾದ ಅಶುಚಿಯಿಲ್ಲದಿರುವುದು.

**ಜ್ಞಾನಮ್**-ಶಾಸ್ತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ನಂಬಿಕೆ  
ಮತ್ತು ಇತರರ ಉಪದೇಶದಿಂದ ಮನಸ್ಸು ಚಂಚಲವಾಗ  
ದಿರುವುದು.

**ಜ್ಞಾನವಿನಿಗ್ರಹಃ**-ಆತ್ಮಸ್ವರೂಪಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದ  
ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಹೋಗದಂತೆ ಮನಸ್ಸನ್ನು ತಡೆಯುವುದು.

**ಜ್ಞಾನಿಯಾಂಕು ಬೇರಾಗಮ್**-ಆತ್ಮವೈತಿಕ್ಯವಾದ ವಿಷಯ  
ಗಳಲ್ಲಿ ದೋಷಬುದ್ಧಿಯಿಂದ ವಿರಕ್ತಿಹೊಂದುವುದು.

**ಜ್ಞಾನಹಿಂಸಾರಃ**-ಆತ್ಮನಿಗಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದ ದೇಹದಲ್ಲಿ  
ಅಭಿಮಾನವನ್ನು ತೊರೆಯುವುದು, ಆತ್ಮಸಂಬಂಧವಲ್ಲದ  
ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ಮಮಕಾರವನ್ನು ಬಿಡುವುದು.

**ಜನ್ಮಮೃತ್ಯುಜರಾವ್ಯಾಧಿಃ ಪರೋಪಾನ್ಯಾಶನಮ್**-ಹುಟ್ಟು ಸಾವು  
ಮುಪ್ಪು ವ್ಯಾಧಿಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ದುಃಖರೂಪವಾದ  
ದೋಷಗಳು ಈ ಶರೀರಕ್ಕೆ ಸಹಜಗಳಿಂದೂ ಅವು ಅಪರಿ  
ಹಾರ್ಯಗಳಿಂದೂ ತಿಳಿಯುವುದು.

**ಜ್ಞಾನಮ್**-ಆತ್ಮವೈತಿಕ್ಯವಾದ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಆಸೆ  
ಯನ್ನು ತೊರೆದು ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿಯಿಡದೆ ಅವುಗಳ  
ಸಂಬಂಧವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸುವುದು.

**ಪುತ್ರವಾರಗೃಹಾದಿಷು ಅನಭಿವಿಜ್ಞಃ**-ಪುತ್ರರು ಪತ್ನಿ ಮನೆ  
ಮುಂತಾದವುಗಳಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರೀತಿಯನ್ನು ತೊರೆಯು  
ವುದು ಮತ್ತು ಅವರ ಸಂಬಂಧವನ್ನು ಬಿಡುವುದು.

**ಇಷ್ಟಾನಿಷ್ಠೋಪಪತ್ತಿಷು ಸಮಚಿತ್ತತ್ವಮ್**-ಇಷ್ಟವಾದ ವಸ್ತುವು  
ಪ್ರಾಪ್ತವಾದಾಗ ಹರ್ಷದಿಂದ ಉಬ್ಬುವುದು ಅನಿಷ್ಟ  
ಒದಗಿದಾಗ ದುಃಖಪಡುವುದು ಈ ರೀತಿಯಾದ ಚಿತ್ತ  
ವಿಕಾರವಿಲ್ಲದೆ ಇರುವುದು.

**ಅನನ್ಯಯೋಗೇನ ಅವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ ಭಕ್ತಿಃ**-ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲಿ  
ಅನನ್ಯಚಿತ್ತನಾಗಿ ಸ್ಥಿರವಾದ ಭಕ್ತಿಯಿಡುವುದು.

**ವಿವಿಕ್ತದೇಶಸೇವಿತ್ವಮ್**-ನಿರ್ಜನವಾದ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ  
ವಿಕಾಂತವಾಗಿ ವಾಸಮಾಡುವುದು.

**ಅರತಿಜನಸಂಸದಿ**-ಪಾಮರ ಜನರ ಗುಂಪಿನಲ್ಲಿ ಸೇರಲೂ  
ಬೇಕಾಗಿಲ್ಲದಿರುವುದು.



ಅಧ್ಯಾತ್ಮಜ್ಞಾನನಿತ್ಯತ್ವಮ್—ಅನವರತವೂ ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನದಲ್ಲೇ ನಿರತನಾಗಿರುವುದು.

ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನಾರ್ಥಚಿಂತನಮ್ — ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನದ ಫಲವಾದ ಮೋಕ್ಷದ ಚಿಂತನೆಯಲ್ಲಿ ನಿರತನಾಗಿರುವುದು. ಈ ಮೇಲೆ ಹೇಳಿದ ಎಲ್ಲಾ ಗುಣಗಳೂ ಸಮುದಿತವಾಗಿ ಆತ್ಮಜ್ಞಾನ ಸಾಧನವಾಗುವುದರಿಂದ ಇದೇ ಜ್ಞಾನವು. ಇದಕ್ಕೆ ವ್ಯತಿರಿಕ್ತವಾದುದೆಲ್ಲವೂ ಅಜ್ಞಾನವೆಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕು. “ಏತಜ್ಞಾನಮಿತಿ ಪ್ರೋಕ್ತಮಜ್ಞಾನಂ ಯದತೋಜ್ಯತಾ” ಗೀತಾ ೧೩-೧೧. 3. ಕರ್ತವ್ಯಕಾರ್ಯವಿಷಯವಾದ ಜ್ಞಾನ, ಅನುಷ್ಠಾನ ಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯದ ವಿಷಯವಾದ ತಿಳಿವಳಿಕೆ. “ಜ್ಞಾನಂ ಜಯಂ ಪರಿಜ್ಞಾತಾ ತ್ರಿವಿಧಾ ಕರ್ಮಚೋದನಾ | ಕರಣಂ ಕರ್ಮ ಕರ್ತೇತಿ ತ್ರಿವಿಧಃ ಕರ್ಮಸಂಘ್ರಹಃ” ಗೀತಾ ೧೮-೧೮. ಈ ಜ್ಞಾನವು ಸಾತ್ತ್ವಿಕ, ರಾಜಸ ಮತ್ತು ತಾಮಸಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. “ಜ್ಞಾನಂ ಕರ್ಮ ಚ ಕರ್ತಾ ಚ ತ್ರಿಧೇವ ಗುಣಭೇದತಃ | ಪ್ರೋಚ್ಯತೇ ಗುಣಸಂಘ್ರಾಣೇ ಯಥಾವತ್ ಶೃಣು ತಾನ್ಯಪಿ” ಗೀತಾ ೧೮-೧೯.

(1) ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ ಗೃಹಸ್ಥ ಮೊದಲಾದ ರೂಪದಿಂದ ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿರುವ ಕರ್ಮಾಧಿಕಾರಿಗಳಾದ ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬರಲ್ಲೂ ಇರುವ ಆತ್ಮನು ಜ್ಞಾನೈಕಾಕಾರನೆಂದೂ ಅವಿನಾಶಿಯೆಂದೂ ವಿಕಾರರಹಿತನೆಂದೂ ಫಲಾದಿ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದವನೆಂದೂ ತಿಳಿದು ಎಲ್ಲಾ ಆತ್ಮವಸ್ತುಗಳನ್ನೂ ಒಂದೇ ರೀತಿ ನೋಡುವುದು “ಸಾತ್ತ್ವಿಕ” ಜ್ಞಾನವು.

(2) ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ ಮೊದಲಾದ ರೂಪದಿಂದ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಕರ್ಮಾಧಿಕಾರಿಗಳಲ್ಲಿರುವ ಎಲ್ಲಾ ಆತ್ಮವಸ್ತುಗಳೂ ಬೇರೆ ಬೇರೆಯೆಂದು ತಿಳಿಯುವುದು “ರಾಜಸ” ಜ್ಞಾನವು.

(3) ಯಾವುದೊಂದು ಜ್ಞಾನವು ಸಮಗ್ರ ಫಲವನ್ನು ಕೊಡದಿರುವ ಯಾವುದೋ ಒಂದು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಂಪೂರ್ಣಫಲಪ್ರದವೆಂಬ ಬುದ್ಧಿಯಿಂದ ಆಸಕ್ತವಾಗಿರುವುದೋ ಅಂತಹ ಮಿಥ್ಯಾಭೂತ ಅರ್ಥವಿಷಯಕವಾದ ಮತ್ತು ಅಲ್ಪಫಲವಿಷಯಕವಾದುದರಿಂದ ತುಚ್ಛವಾದ ಜ್ಞಾನವು “ತಾಮಸ” ಜ್ಞಾನವು. “ಸರ್ವಭೂತೇಷು ಯೇನಕಂ ಭಾವಮವ್ಯಯಮೀಕ್ಷತೇ | ಅವಿಭಕ್ತಂ ವಿಭಕ್ತೇಷು ತಜ್ಞಾನಂ ವಿದ್ಧಿ ಸಾತ್ವಿಕಮ್ || ಪೃಥಕ್ತ್ವೇನ ತು ಯಜ್ಞಾನಂ ನಾನಾಭಾವಾನ್ ಪೃಥಗ್ವಿಧಾನ್ | ವೇತ್ತಿ ಸರ್ವೇಷು ಭೂತೇಷು ತಜ್ಞಾನಂ ವಿದ್ಧಿ ರಾಜಸಮ್ || ಯತ್ನು ಕೃತ್ಸನವದೇಕಸ್ಮಿನ್ ಕಾರ್ಯೇ ಸಕ್ತಮಹೇತುಕಮ್ | ಅತತ್ತ್ವಾರ್ಥವದಲ್ಪಂ ಚ ತತ್ತಾಮಸಮುದಾಹೃತಮ್” ಗೀತಾ ೧೮-೨೦, ೨೧, ೨೨. 4. ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿನಿರೋಧರೂಪವಾದ ಯೋಗ. “ಏಕತ್ವಂ ಬುದ್ಧಿಮನಸೋರಿಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ ಚ ಸರ್ವಶಃ |

ಆತ್ಮನೋ ವ್ಯಾಪಿನಸ್ತಾತ ಜ್ಞಾನಮೇತದನುತ್ತಮಮ್” ಮೋಕ್ಷಧರ್ಮಃ | 5. (ಅದ್ವೈತ ಮತದಲ್ಲಿ) “ಅಹಂ ಬ್ರಹ್ಮ” ಎಂಬ ಉಪಾಸನೆ. “ಬ್ರಹ್ಮೇವಾಹಂ ಸಮಃ ಶಾಂತಃ ಸಚ್ಚಿದಾನಂದಲಕ್ಷಣಃ | ನಾಹಂ ದೇಹೋಹಸದ್ರೂಪೋ ಜ್ಞಾನಮಿತ್ಯುಚ್ಯತೇ ಬುದ್ಧಿಃ” | 6. ಜೀವ ಈಶ್ವರ ಜಗತ್ತು ಈ ರೀತಿಯಾದ ಭ್ರಾಂತಿಗೆ ಅಧಿಷ್ಠಾನವಾದ ಸ್ವಯಂಪ್ರಕಾಶವಾದ ಚೈತನ್ಯ. 7. ಸಾಂಗವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮತ್ತು ಅದರ ಅರ್ಥದ ಜ್ಞಾನ. 8. ಮೇದ. 9. ಶಾಸ್ತ್ರ. 10. ಇಂದ್ರಿಯ. ಜಾಯತೇಜೇನ ಜ್ಞಾ ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” |

ಜ್ಞಾನಕಾಂಡ ಜ್ಞಾನಕಾಂಡ (ನಂ) ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಮೇದಭಾಗ, ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನದಿಂದ ಮೋಕ್ಷವೆಂದು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ಮೇದದ ಉತ್ತರಭಾಗ (ಉಪನಿಷತ್ತುಗಳು).

ಜ್ಞಾನಗಮ್ಯ ಜ್ಞಾನಗಮ್ಯ (ಪುಂ) ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಜ್ಞಾನೇನ ಪರಯಾ ವಿಷಯಾ ಗಮ್ಯಃ ವೇದಃ | “ಪರಯಾ ವಿಷಯಾ ವೇದೋ ಜ್ಞಾನಗಮ್ಯ ಇತಿ ಸ್ಮೃತಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | ಜ್ಞಾನದಿಂದಲೇ ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವರೂಪವು ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. “ಉತ್ತರೋ ಗೋಪತಿಗೋಪ್ತಾ ಜ್ಞಾನಗಮ್ಯಃ ಪುರಾತನಃ” ವಿಂ ಸಂ |

ಜ್ಞಾನಚಕ್ಷುಸ್ ಜ್ಞಾನಚಕ್ಷುಸ್ (ನಂ) 1. ಜ್ಞಾನರೂಪವಾದ ನೇತ್ರ. 2. ಶಾಸ್ತ್ರರೂಪವಾದ ಕಣ್ಣು. ಜ್ಞಾನರೂಪಂ ಚಕ್ಷುಃ | “ಸರ್ವಂ ತು ಸಮವೇಕ್ಷಯೇದಂ ನಿಖಿಲಂ ಜ್ಞಾನಚಕ್ಷುಷಾ” ಮನುಂ ೨-೮ | (ವಿಂ) 3. ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳೇ ನೇತ್ರದಂತಿರುವ. ಜ್ಞಾನಂ ಜ್ಞಾನಸಾಧನಂ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಚಕ್ಷುರಿವ ಯಸ್ಯ |

ಜ್ಞಾನತಸ್ ಜ್ಞಾನತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಜ್ಞಾನದಿಂದ. ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಂದ. ಜ್ಞಾನ “ತಸಿಃ” (ವಾಂ ೪-೪-೪೪) | “ದ್ರವ್ಯಾಣಿ ಹಿಸ್ಯಾಶ್ಚೋ ಯಸ್ಯ ಜ್ಞಾನತೋಜ್ಞಾನತೋಽಪಿ ವಾ” ಮನುಂ ೮-೨೮೮ |

ಜ್ಞಾನದ ಜ್ಞಾನದ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಗುರು, ಆಚಾರ್ಯ, ಉಪದೇಶಕ. ಜ್ಞಾನಂ ದದಾತಿ — ತು ದಾತ್ (ದಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೩) | (ವಿಂ) 2. ಉಪದೇಶಮಾಡುವ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.

ಜ್ಞಾನದಗ್ಧವೇಹ ಜ್ಞಾನದಗ್ಧದೇಹ (ಪುಂ) ಭಿಕ್ಷು, ಸಂನ್ಯಾಸಿ, ಯತಿ. ಜ್ಞಾನೇನ ದಗ್ಧೋ ದೇಹೋಽಸ್ಯ | ಯತಿಗಳು ಬದುಕಿರುವಾಗಲೇ ಅವರ ದೇಹವು ಜ್ಞಾನದಿಂದ ದಗ್ಧವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಮತ್ತೆ ಆ ದೇಹಕ್ಕೆ ದಹನಕ್ರಿಯೆಯು ನಡೆಯಬೇಕಾಗಿಲ್ಲ. “ಸರ್ವಸಂಸ್ಥಾನಿವೃತ್ತಸ್ಯ ಧ್ಯಾನಯೋಗರತಸ್ಯ ಚ | ನ ತಸ್ಯ ದಹನಂ ಕಾರ್ಯಂ ನೈವ ಪಿಂಡೋದಕಕ್ರಿಯಾ | ನಿರದಧ್ಯಾತ್ಪ್ರಣವೇನೈವ ಬಿಲೇ ಭಿಕ್ಷೋಃ ಕಲೇಬರಮ್ | ಪ್ರೋಕ್ಷಣಂ ಕ್ಷನನಂಚಾಪಿ ಸರ್ವಂ ತೇನೈವ ಕಾರಯೇತ್” ಇತಿ ಶೌನಕಃ |



**ಜ್ಞಾನದರ್ಪಣ ಜ್ಞಾನದರ್ಪಣ** (ಪುಂ) ಜ್ಞಾನವೇ ಕನ್ನಡಿಯಾಗಿ ಉಳ್ಳ ಮಂಜುಷೋಷ. ಜ್ಞಾನ ದರ್ಪಣ ಇವ. "ಮಂಜು-ಶ್ರೀಜ್ಞಾನದರ್ಪಣ: | ಮಂಜುಭದ್ರೋ ಮಂಜುಧೋಷ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಜ್ಞಾನದಾತೃ ಜ್ಞಾನದಾತೃ** (ವಿಂ) ಗುರು, ಆಚಾರ್ಯ, ಜ್ಞಾನವನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸುವವನು. ಜ್ಞಾನಸ್ಯ ದಾತಾ | "ಪಿತುರ್ದಶಗುಣಾ ಮಾತಾ ಗೌರವೇಣೇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಮ್ | ಮಾತು: ಶತಗುಣ: ಪೂಜ್ಯೋ ಜ್ಞಾನದಾತಾ ಗುರು: ಪ್ರಭೋ" ತನ್ತ್ರಸಾಂ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪) | -ವಾತ್ಸೀ-ದಾತ್ರಿಃ.

**ಜ್ಞಾನನಿಷ್ಠ ಜ್ಞಾನನಿಷ್ಠ** (ವಿಂ) ಜ್ಞಾನಸಂಪಾದನೆಯಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದ. ಜ್ಞಾನೇ ನಿಷ್ಠಾ ಯಸ್ಯ | "ಜ್ಞಾನನಿಷ್ಠಾ ದ್ವಿಜಾ: ಕೇचित್ತಪೋನಿಷ್ಠಾಸ್ತಥಾಪರೇ" ಮನುಂ ೩-೧೨೪ |

**ಜ್ಞಾನಮಯ ಜ್ಞಾನಮಯ** (ಪುಂ) ಜ್ಞಾನಸ್ವರೂಪನಾದ ಪರಮಾತ್ಮ. ಪರಬ್ರಹ್ಮ. ಜ್ಞಾನ "ಮಯತ್" (೪-೪-೨೧) |

**ಜ್ಞಾನಮುದ್ರಾ ಜ್ಞಾನಮುದ್ರಾ** (ಸ್ರೀಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಮುದ್ರೆ, ತರ್ಜನಿ ಮತ್ತು ಅಂಗುಷ್ಠಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಹೃದಯದ ಮೇಲಿಟ್ಟು ಎಡಗೈಯನ್ನು ಎಡತೊಡೆಯ ತುದಿ (ಮಂಡಿ) ಯಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವ ಶ್ರೀರಾಮನಿಗೆ ಪ್ರಿಯವಾದ ಒಂದು ಮುದ್ರೆ. "ತರ್ಜನ್ಯಕ್ಷುಣ್ಣಕೌ ಸಕ್ತಾವಗ್ರತೋ ವಿನ್ಯಸೇದ್ಹದಿ | ವಾಮಹಸ್ತಾಮ್ಬುಜಂ ವಾಮಜಾನುಮೂರ್ಧನಿ ವಿನ್ಯಸೇತ್ | ಜ್ಞಾನಮುದ್ರಾ ಭವೇದೇವಾ ರಾಮಚಂದ್ರಸ್ಯ ಪ್ರೇಮಸಿ" ತನ್ತ್ರಸಾಂ |

**ಜ್ಞಾನಯಜ್ಞ ಜ್ಞಾನಯಜ್ಞ** (ಪುಂ) 1. ಜ್ಞಾನವೆಂಬ ಯಜ್ಞ, ಜ್ಞಾನರೂಪವಾದ ಭಗವದುಪಾಸನೆ. ಜ್ಞಾನಮೇವ ಯಜ್ಞ: | 2. ವೇದಾರ್ಥಜ್ಞಾನದ ಅಭ್ಯಾಸ. "ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯಜ್ಞಾನಯಜ್ಞಾಶ್ರಯತಯ: ಸಂಶಿತವ್ರತಾ:" ಗೀತಾ ೪-೨೮ | "ಮಹಾಪಾಪವತಾಂ ನೃಣಾಂ ಜ್ಞಾನಯಜ್ಞೋ ನ ರೋಚತೇ | ಪ್ರತ್ಯುತ ಜ್ಞಾನಯಜ್ಞೇ ತು ಪ್ರದ್ವೇಷೋ ಜಾಯತೇ ಸ್ವತ:" |

**ಜ್ಞಾನಯೋಗ ಜ್ಞಾನಯೋಗ** (ಪುಂ) ಪರಬ್ರಹ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದ ಭಕ್ತಿಗೆ ಉಪಾಯವಾದ ಆತ್ಮಚಿಂತನೆ, ಕರ್ಮಯೋಗದಿಂದ ಚಿತ್ತನೈರ್ಮಲ್ಯಹೊಂದಿ ಶೇಷಿಯಾದ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ತಾನು ಶೇಷಭೂತನೆಂದು ತಿಳಿದು ಮಾಡುವ ಪ್ರಕೃತಿವಿಯುಕ್ತನಾದ ಪರಮಾತ್ಮನ ಚಿಂತನೆ, ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನವನ್ನು ಹೊಂದುವ ಉಪಾಯ. ಯುಜ್ಯತೇ ಬ್ರಹ್ಮಣಾಜ್ಞೇನ - ಯುಜಿರ್(ಯೋಗ)ಕರಂ "ವಜ್ರ" (೩-೩-೧೨೧) | ಜ್ಞಾನಮೇವ ಯೋಗ: ತಪಾಯ: | "ಜ್ಞಾನಯೋಗೇನ ಸಾಂಖ್ಯಾನಾಂ ಕರ್ಮಯೋಗೇನ ಯೋಗಿನಾಮ್" ಗೀತಾ ೩-೩ | ಮೋಕ್ಷಾಭಿಲಾಷೆಯುಂಟಾದ ಮಾತ್ರಕ್ಕೆ ಜ್ಞಾನಯೋಗಕ್ಕೆ ಅಧಿಕಾರಿಯಾಗುವುದಿಲ್ಲ. ಅನೇಕ ಜನ್ಮಗಳ ಸುಕೃತದಿಂದ ಕರ್ಮಕ್ಷಯವಾಗಿ ಫಲಾಭಿಸಂಧಿರಹಿತವಾದ ಕರ್ಮಯೋಗದಿಂದ ಜ್ಞಾನಯೋಗವು ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗುವುದು.

**ಜ್ಞಾನವತ್ ಜ್ಞಾನವತ್** (ವಿಂ) 1. ಬುದ್ಧಿವಂತ. ಜ್ಞಾನ-ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪) | 2. ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು, ಪರಬ್ರಹ್ಮನೇ ಪರಮಪ್ರಾಪ್ಯನೆಂದು ತಿಳಿದಿರುವವನು. "ಬಹುನಾಂ ಜನ್ಮನಾಮಂತೇ ಜ್ಞಾನವಾನ್ ಮಾಂ ಪ್ರಪದಂತೇ" ಗೀತಾ ೭-೧೯ |

**ಜ್ಞಾನವೃದ್ಧ ಜ್ಞಾನವೃದ್ಧ** (ವಿಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ಜ್ಞಾನವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿರುವವನು, ಜ್ಞಾನದಿಂದ ಹಿರಿಯನಾಗಿರುವವನು. ಜ್ಞಾನೇನ ವೃದ್ಧ: |

**ಜ್ಞಾನಶ್ರೇಷ್ಠ ಜ್ಞಾನಶ್ರೇಷ್ಠ** (ವಿಂ) ಉತ್ತಮ ಜ್ಞಾನವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿರುವವನು, ಜ್ಞಾನಸಂಪಾದನೆಯಿಂದ ಶ್ರೇಷ್ಠನಾಗಿರುವವನು. ಜ್ಞಾನೇನ ಶ್ರೇಷ್ಠ: |

**ಜ್ಞಾನಸಾಗರ ಜ್ಞಾನಸಾಗರ** (ವಿಂ) ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಸಮುದ್ರದಂತಿರುವವನು, ಜ್ಞಾನನಿಧಿ, ಸಂಪೂರ್ಣಜ್ಞಾನವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿರುವವನು. ಜ್ಞಾನಸ್ಯ ಸಾಗರ ಇವ |

**ಜ್ಞಾನಸಾಧನ ಜ್ಞಾನಸಾಧನ** (ನಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದ ಶ್ರವಣ ಮನನ ನಿರ್ದಿಧ್ಯಾಸನ ಮೊದಲಾದುವು. 2. ಆತ್ಮಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದ ಅಮಾನಿತ್ವ ಮೊದಲಾದ ಗುಣಗಳು. ["ಜ್ಞಾನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 3. ಇಂದ್ರಿಯ. ಜ್ಞಾನಸ್ಯ ಸಾಧನಮ್ |

**ಜ್ಞಾನಾಕರ ಜ್ಞಾನಾಕರ** (ವಿಂ) ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಗಣಯಂತಿರುವವನು, ತುಂಬಿದ ಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು. ಜ್ಞಾನಸ್ಯ ಆಕರ: |

**ಜ್ಞಾನಾತ್ಮನ್ ಜ್ಞಾನಾತ್ಮನ್** (ಪುಂ) 1. ಜ್ಞಾನಸ್ವರೂಪನಾದ ಪರಮಾತ್ಮ. 2. ಜೀವ. (ವಿಂ) 3. ಬುದ್ಧಿವಂತ.

**ಜ್ಞಾನಾಪೋಹ ಜ್ಞಾನಾಪೋಹ** (ಪುಂ) ವಿಸ್ಮೃತಿ, ಮರವು, ಮರೆತಿರುವುದು. ಜ್ಞಾನಸ್ಯಾಪೋಹ: |

**ಜ್ಞಾನಾಭ್ಯಾಸ ಜ್ಞಾನಾಭ್ಯಾಸ** (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನ ಸಾಧನವಾದ ಶ್ರವಣ ಮನನ ನಿರ್ದಿಧ್ಯಾಸನ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಅಭ್ಯಾಸ (ಅವೃತ್ತಿ). ಜ್ಞಾನಸ್ಯ ತತ್ಸಾಧನಸ್ಯಾಭ್ಯಾಸ: | "ತತ್ತ್ವಿಚ್ಛಂತನಂ ತತ್ಕಥನಮನ್ಯೋನ್ಯಂ ತತ್ಪ್ರಬೋಧನಮ್ | ಏತದೇಕಪರತ್ವಂ ಚ ಜ್ಞಾನಾಭ್ಯಾಸಂ ವಿದುರ್ಬುಧಾ:" |

**ಜ್ಞಾನಿನ್ ಜ್ಞಾನಿನ್** (ವಿಂ) 1. ದೈವಜ್ಞ, ಜೋಯಿಸ. 2. ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು, ಬ್ರಹ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವುಳ್ಳವನು, ಪರಮಾತ್ಮನೇ ಪರಮಪ್ರಾಪ್ಯನೆಂದು ತಿಳಿದಿರುವವನು, ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ತಾನು ಶೇಷನೆಂದು ತಿಳಿದಿರುವವನು. ಜ್ಞಾನಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) | "ಚತುರ್ವಿಧಾ ಭಜಂತೇ ಮಾಂ ಜನಾ: ಸುಕೃತಿನೋಽರ್ಜುನ | ಆತೋ ಜಿಜ್ಞಾಸುರರ್ಥೀರ್ಥಿ ಜ್ಞಾನಿ ಚ ಭರತರ್ಷಭ" ಗೀತಾ ೭-೧೬ | 3. ಅರ್ಥಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು, ಅಧ್ಯಯನಮಾಡಿದ ಗ್ರಂಥಗಳ ಅರ್ಥವನ್ನು



ತಿಳಿದವನು. "ಅಜ್ಞೇಮ್ಯೋ ಗ್ರಂಥಿನಃ ಶ್ರೇಷ್ಠಾಃ ಗ್ರಂಥಿಭ್ಯೋ ಧಾರಿಣಿಃ  
ವರಾಃ। ಧಾರಿಣಿಃ ಜ್ಞಾನಿನಃ ಶ್ರೇಷ್ಠಾಃ ಜ್ಞಾನಿಭ್ಯೋ ವ್ಯವಸಾಯಿನಃ"  
ಮನುಂ ೧೨-೧೦೩। 4. ಬುದ್ಧಿವಂತ, ತಿಳಿದವನು,  
ಬಲ್ಲವನು.

**ಜಾನೀಯ ಜ್ಞಾನೀಯ** (ವಿಂ) ತಿಳಿಯಬೇಕಾದ, ಅರಿಯ  
ಬೇಕಾದ. ಜಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬)।

**ಜಾನೇಂದ್ರಿಯ ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯ** (ನಂ) ಜ್ಞಾನಸಾಧನವಾದ  
ಇಂದ್ರಿಯ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯನ್ನಂಟುಮಾಡುವ ಇಂದ್ರಿಯ.  
ಜಾಯತೇಜೇನ-ಜಾ(ಅವಬೋಧನೆ)ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)।  
ಜ್ಞಾನಸಾಧನಮಿಂದ್ರಿಯಮ್। [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಇಂದ್ರಿಯ" ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ].

**ಜಾಪಕ ಜ್ಞಾಪಕ** (ಪುಂ) 1. ಓಕ್ಷಕ, ಗುರು, ಉಪಾಧ್ಯಾಯ,  
ಉಪದೇಶಕ. (ವಿಂ) 2. ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವ, ತಿಳಿಯುವಂತೆ  
ಮಾಡುವ. ಜಾ (ಅವಬೋಧನೆ) + ಣಿच् "ಞ್ಬಲ್"  
(೩-೧-೧೩೩)।

**ಜಾಪನ ಜ್ಞಾಪನ** (ನಂ) 1. ಜ್ಞಾಪಿಸುವುದು, ತಿಳಿಯಪಡಿಸು  
ವುದು. 2. ಉಪದೇಶಿಸುವುದು, ಬೋಧಿಸುವುದು. ಜಾ  
(ಅವಬೋಧನೆ) + ಣಿच् ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ಜಾಪನೀಯ ಜ್ಞಾಪನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಸಬೇಕಾದ.  
2. ಬೋಧಿಸಬೇಕಾದ, ಉಪದೇಶಿಸಬೇಕಾದ. ಜಾ (ಅವ-  
ಬೋಧನೆ) + ಣಿच् "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬)। "ತವ್ಯಃ"  
(೩-೧-೧೬)। ಜಾಪಯಿತವ್ಯಃ ಜ್ಞಾಪಯಿತವ್ಯಃ.

**ಜಾಪಿತ ಜ್ಞಾಪಿತ** (ವಿಂ) ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಜಾ (ಅವಬೋಧನೆ) +  
ಣಿच् "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಜಾಪ್ಯ ಜ್ಞಾಪ್ಯ** (ವಿಂ) ತಿಳಿಸಲ್ಪಡುವ. ಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಡುವ.  
ಜಾ (ಅವಬೋಧನೆ)। "ನಾಯಂ ಜಾಪ್ಯಃ ಸ್ವಸತ್ತಾಃ ಪ್ರತೀತ್ಯ-  
ವ್ಯಭಿಚಾರತಃ" ಸಾಂ ೬೦ ೩-೨೦।

**ಜಾಯಮಾನ ಜ್ಞಾಯಮಾನ** (ವಿಂ) ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ,  
ಅರಿಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಜಾ (ಅವಬೋಧನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನच्"  
(೩-೨-೧೨೪)। "ಅನುಮಾಯಾಂ ಜಾಯಮಾನಂ ಲಿಙ್ಗಂ ತು ಕರಣಂ  
ನ ಹಿ" ಭಾಷಾಪಂ ೬೭।

**ಜಾಪ್ಸಾ ಜ್ಞಾಪ್ಸಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ,  
ಅರಿತುಕೊಳ್ಳಲು ಆಸೆ. ಜಾತುಮಿಚ್ಛಾ - ಜಪ (ಜ್ಞಾನ) +  
ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨)।

**ಜಾಪ್ಸಮಾನ ಜ್ಞಾಪ್ಸಮಾನ** (ವಿಂ) ತಿಳಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. ಜಪ (ಜಾಪನೆ) + ಸನ್ ಕರ್ಮಂ "ಶಾನच्"  
(೩-೨-೧೨೪)। "ಇಲಾಘತ್ಸುತ್ಸಾಶಾಪಾಂ ಜಾಪ್ಸಮಾನಃ"  
ಪಾಂ ಸುಂ ೧-೪-೩೪।

**ಜೇಯ ಜ್ಞೇಯ** (ನಂ) 1. ಪರಬ್ರಹ್ಮ. ಜಾತುಂ ಯೋಗ್ಯಮ್-ಜಾ  
(ಅವಬೋಧನೆ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೭)। "ಜ್ಞಾನಂ ಜೇಯಂ  
ಜ್ಞಾನಗಮ್ಯಂ ಹೃದಿ ಸರ್ವಸ್ಯ ವಿಠಿತಮ್" ಗೀತಾ ೧೩-೧೭।  
ಪರಮಾತ್ಮನು ಅಮಾನಿತ್ವ ಮೊದಲಾದ ಜ್ಞಾನಸಾಧನ  
ವಾದ ಗುಣಗಳಿಂದ ಹೊಂದಲು ಯೋಗ್ಯನಾದುದರಿಂದ  
ಜ್ಞಾನಗಮ್ಯನು. ಜ್ಞಾನಸ್ವರೂಪನಾಗಿ ತಿಳಿಯಬೇಕಾದುದ  
ರಿಂದ ಜ್ಞೇಯನು. (ವಿಂ) 2. ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ, ಅರಿಯ  
ಲ್ಪಡುವ. ಜಾ (ಅವಬೋಧನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಯತ್"। "ಜೇಯಃ ಸ  
ನಿತ್ಯಸಂನ್ಯಾಸೀ ಯೋ ನ ದೃಷ್ಟಿಃ ನ ಕಾಡ್ಕೃತಿಃ। ನಿರ್ದ್ರೋ ಹಿ  
ಮಹಾಬಾಹೋ ಸುಖಂ ಬನ್ಧಾತ್ಪ್ರಮುಚ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೫-೩। "ಸ್ವಾತ್ಮಾಘೋ  
ಭಕ್ತಿತಯೇ ಜೇಯಶ್ಚ ಮಹಾರ್ಣವೋಽತ್ರ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೪-೧೯।

**ಜ್ಯಾ - ವಯೋಹಾನೌ** (ಕೃತ್ಯಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ)। ಜಿನಾತಿ  
ಜಿನೀತಃ ಜಿನಂತಿ। ಜಿಜ್ಯೌ ಜಿಜ್ಯತುಃ ಜಿಜ್ಯುಃ। ಜ್ಯಾತಾ।  
ಜ್ಯಾಸ್ಯತಿ। ಜಿನಾತುಃ। ಅಜಿನಾತ್। ಜಿನೀಯಾತ್। ಇತ್ಯಾದಿ.  
ಮುದುಕನಾಗು, ಇಳಿವಯಸ್ಸಿನವನಾಗು, ಶಕ್ತಿಹೀನನಾದವ  
ನಾಗು.

**ಜ್ಯಾ ಜ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೌರ್ವಿ, ಬಿಲ್ಲಿನ ಅಂಜು, ಧನುಸ್ಸಿನ  
ಗುಣ. ಜ್ಯಾ (ವಯೋಹಾನೌ) "ಙಃ" (೩-೨-೧೦೧)।  
"ಮಿತ್ರಾಕೃತಿ ಜ್ಯಾ ದೃಶುಃ ಸ್ಫುರಂತಿ ಕ್ಷುಡ್ರಸ್ಯ ಜಿಹ್ವಾಮಿವ  
ತಕ್ಷಕಸ್ಯ" ಕಿರಾಂ ೧೭-೨೪। 2. ಮಾತೆ, ತಾಯಿ.  
3. ಭೂಮಿ. "ಜ್ಯಾ ಮಾತರಿ ವಸುಧಾಃ ಮೌರ್ವಾಮ್" ಮೇದಿಂ।  
4. ವೃತ್ತವನ್ನು ಭಾಗಿಸುವ ಸರಳರೇಖೆ, ಗೋಳದೊಳಗಿ  
ರುವ ಧನುರಾಕಾರವಾದ ಕ್ಷೇತ್ರದ ಮಧ್ಯದಿಂದ ಎರಡೂ  
ಕಡೆಗೂ ಹೊರಟಿರುವ ಒಂದು ರೇಖೆ.

**ಜ್ಯಾಘಾತವಾರಣ ಜ್ಯಾಘಾತವಾರಣ** (ನಂ) ಬಿಲ್ಲಿಗೆ ಕಟ್ಟಿ  
ರುವ ತೊಗಲಿನ ಹಗ್ಗವು ಕೊರೆಯದಂತೆ ಕೈಗೆ ಕಟ್ಟಿ  
ಕೊಳ್ಳುವ ತೊಗಲಿನ ಪಟ್ಟಿ. ಜ್ಯಾಯಾ ಆಘಾತಂ ವಾರಯತಿ-  
ವೃತ್ (ವರಣ) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)।

**ಜ್ಯಾನ ಜ್ಯಾನ** (ನಂ) ಶಕ್ತಿ ಹೊಂದುವುದು. ಜ್ಯಾ (ವಯೋಹಾನೌ)  
ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ಜ್ಯಾನಿ ಜ್ಯಾನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುಪ್ಪು, ಮುದಿತನ, ಶಿಥಿಲ  
ವಾಗುವಿಕೆ. ಜ್ಯಾ (ವಯೋಹಾನೌ) "ನಿಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೧೫)।  
2. ಹಾನಿ, ನಾಶ. "ದಾನಜ್ಯಾನಿವಿಷಾದಮೂಕಮಧುಪವ್ಯಾಸಙ್ಗ-  
ದಿನಾನನಃ" ಮಾಲತೀಂ ೯-೩೩। 3. ನದಿ, ಹೊಳೆ.  
"ಜ್ಯಾನಿರ್ಜೀರ್ಣಂ ಚ ಹಾನಿಂ ಚ ತದಿನ್ಯಾಮಪಿ ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ।

**ಜ್ಯಾಯಸ್ ಜ್ಯಾಯಸ್** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠ  
ವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ. 2. ವೃದ್ಧ, ಮುದುಕ. ಅತಿಶಯೇನ  
ಪ್ರಶಸ್ಯಃ ವೃದ್ಧೋ ವಾ-ಪ್ರಶಸ್ಯ ವೃದ್ಧ "ಇಯಸ್ತು" (೫-೩-೫೭)।



“ಜ್ಯ:” (೪-೩-೬೧, ೬೨) । ಆಕಾರ: (೬-೪-೧೬೦) ।  
 “ಜ್ಯಾಯೋ ವೀರ್ಯಮುಪಾಶ್ರಿತೃ ನ ಚಕ್ರಮೇ ಕಪಿಧ್ವಜ:” ಕಿರಾಂ  
 ೧೫-೪೪ । “ಯಸ್ಮಿನ್ನಭ್ಯಾಸಿ ಸತ್ಯಸಂಧೇ ಸಂಧಿಧ್ರುವ:”  
 ಸಂನಮತಾಮರೀಣಾಮ್ ” ರಘುಂ ೧೮-೩೪ । 3. ಹಿರಿಯವನು,  
 ದೊಡ್ಡವನು. 4. ಹಿರಿದಾದ, ದೊಡ್ಡದಾದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
 “ಡೀಪ್” (೪-೧-೫) । ಜ್ಯಾಯಸಿ ಜ್ಯಾಯಸಿ, “ಜ್ಯಾಯಸಿ  
 ಚೇತರ್ಮಣಸ್ತೇ ಮಾತಾ ಬುದ್ಧಿರ್ಜನಾರ್ದನ । ತತ್ಕಿ ಕರ್ಮಣಿ ಧೋರೇ ಮಾ  
 ನಿಯೋಜಯಸಿ ಕೇಶವ ” ಗೀತಾ ೩-೧ ।

ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಜ್ಯೇಷ್ಠ (ಪುಂ) 1. ಹಿರಿಯ ಸಹೋದರ, ಹಿರಿಯಣ್ಣ.  
 “ಯೋ ಜ್ಯೇಷ್ಠೋ ಜ್ಯೇಷ್ಠವೃತ್ತಿ: ಸ್ಯಾತ್ ಮಾತೇವ ಸ ಪಿತೇವ ಸ:”  
 ಮನುಂ ೯-೧೧೦ । 2. ಜ್ಯೇಷ್ಠಮಾಸ. ಜ್ಯೇಷ್ಠಾನಕ್ಷತ್ರೇಣ  
 ಜ್ಯೇಷ್ಠಾನಕ್ಷತ್ರಯುಕ್ತಚಂದ್ರಮಸಾ ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ “ಅನ್”  
 (೪-೨-೩) । ಜ್ಯೇಷ್ಠಿ ಸಾಽಸ್ಮಿನ್ನಸ್ತಿ ಜ್ಯೇಷ್ಠೋ ಮಾಸ: ।  
 “ಅನ್” (೪-೨-೨೧) । ಸಂಜ್ಞಾಪೂರ್ವಕವಿಧೇರನಿತ್ಯತ್ವಾತ್  
 ವೃದ್ಧಭಾವೇ ಜ್ಯೇಷ್ಠೋ ಮಾಸ: । 3. ಪರಮಾತ್ಮ. ಸ್ವಾತ್ಮನಾ  
 ಸುರಿಸಿಂಹ ಸದಾನುಭವೇಽಪಿ ಅದೃಷ್ಟಪಾರಮಹಾವಿಭೂತಿಯಾ ಅತಿಶ-  
 ಯೇನ ಪ್ರಶಸ್ಯ: ಸರ್ವೇಭ್ಯ: ಪೂರ್ವಭಾವಿತಯಾ ಅತಿಶಯೇನ ವೃದ್ಧ ಇತಿ  
 ವಾ । “ಇಶಾನ: ಪ್ರಾಣದ: ಪ್ರಾಣೋ ಜ್ಯೇಷ್ಠ: ಶ್ರೇಷ್ಠ: ಪ್ರಜಾಪತಿ:”  
 ವಿಂ ಸಂ । 4. ಹಂಸಪಕ್ಷಿ. “ಹಂಸೋ ಮರಾಲೋ ನೇಲಾಕ್ಷ-  
 ಷ್ಚಕ್ರಪಕ್ಷ: ಸಿತಚ್ಚದ: । ಸುತಿ: ಸಂಕುಚಿತ: ಶಂಕುಜ್ಯೇಷ್ಠ:” ವೈಜಂ ।  
 (ನಂ) 5. ಪಂಚಲೋಹ. “ರತ್ನಂ ವಜ್ರಂ ತ್ರಪು ಕೋಮ್ಯಂ  
 ಮೃದ್ವಜ್ಜಂ ನಾಗಜೀವನಮ್ । ಪರಾಸಂ ಸಿಂಹಲಂ ಜ್ಯೇಷ್ಠಮ್” ವೈಜಂ ।  
 6. ಕ್ಷೀರ, ಹಾಲು. “ಗವ್ಯಂ ಜ್ಯೇಷ್ಠಂ ಮಧು ಕ್ಷೀರಮ್” ವೈಜಂ ।  
 (ವಿಂ) 7. ಬಹಳ ಮುದುಕನಾದ, ಅತಿ ವೃದ್ಧನಾದ.  
 ಅತಿಶಯೇನ ವೃದ್ಧ: “ಇಷ್ಠನ್” (೪-೩-೫೫) । ಜ್ಯಾದೇಶ:  
 (೪-೩-೬೨) । 8. ಎಲ್ಲರಿಗಿಂತಲೂ ಹಿರಿಯವನಾದ. “ಜ್ಯೇಷ್ಠೇನ  
 ಜಾತಮಾತ್ರೇಣ ಪುತ್ರೀಭವತಿ ಮಾನವ:” ಮನುಂ ೯-೧೦೬ ।  
 9. ಬಹಳ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ. ಅತಿಶಯೇನ  
 ಪ್ರಶಸ್ಯ: “ಇಷ್ಠನ್” । ಜ್ಯಾದೇಶಶ್ಚ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಷ್ಠಾ-ಷ್ಠಾಂ ।  
 10. ಜ್ಯೇಷ್ಠಾನಕ್ಷತ್ರ, ಅಶ್ವಿನಿ ಮೊದಲಾಗಿ ಹದಿನೆಂಟು  
 ನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ. 11. ಗೌಳಿ, ಹಲ್ಲಿ. “ಜ್ಯೇಷ್ಠ: ಶ್ರೇಷ್ಠಾತಿವೃದ್ಧ  
 ಚ ತ್ರಿಪು ಮಾಸಾಂತರೇ ಪುಮಾನ್ । ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ತು ಗೃಹಗೋಧಾಹ್ಯಜನ್ತು-  
 ನಕ್ಷತ್ರಭೇದಯೋ:” ಮೇದಿಂ । “ಜ್ಯೇಷ್ಠ: ಸ್ಯಾದಗ್ರಜೇ ಶ್ರೇಷ್ಠ  
 ಮಾಸಭೇದಾತಿವೃದ್ಧಯೋ: । ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಃ ಗೃಹಗೋಧಾಯಾಮ್” ಹೇಮಂ ।  
 12. ಹಿರಿಯ ಸಹೋದರಿ. 13. ಹಿರಿಯ ಹೆಂಡತಿ.  
 14. ಹಿರಿಯ ಮಗಳು. 15. ಮಧ್ಯದ ಬೆರಳು.  
 16. ಅಲಕ್ಷ್ಮಿ, ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ಜ್ಯೇಷ್ಠಾದೇವಿ, “ಅಲಕ್ಷ್ಮ್ಯ-  
 ಪ್ರಜಯೋರ್ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ಗೃಹಗೋಲ್ಯುಕ್ತಭೇದಯೋ:” ವೈಜಂ । -ಷ್ಠಿ-ಷ್ಠೀ.

ಜ್ಯೇಷ್ಠನಿ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಶಾಖಾನಕ್ಷತ್ರ, ಅಶ್ವಿನಿ  
 ಮೊದಲಾಗಿ ಹದಿನಾರನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ. ವಿಶಾಖಾ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ  
 ಹುಟ್ಟಿದ ಕನ್ಯೆಯು ಜ್ಯೇಷ್ಠಸಹೋದರನಿಲ್ಲದವನನ್ನು  
 ಮದುವೆಯಾಗಬೇಕು. ಈ ನಕ್ಷತ್ರವು ಪತಿಯ ಜ್ಯೇಷ್ಠ  
 ಸಹೋದರನಿಗೆ ಬಾಧಕವಾದುದು. ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಹಂತಿ-ಹನ  
 (ಹಿಸಾಗತಿಯೆ) “ಡಕ್” (೩-೨-೫೩) । ಡೀಪ್ (೪-೧-೧೫) ।  
 ಜ್ಯೇಷ್ಠತಮ ಜ್ಯೇಷ್ಠತಮ (ವಿಂ) 1. ಎಲ್ಲರಿಗಿಂತಲೂ ಹಿರಿ  
 ಯವನಾದ, ಎಲ್ಲರಿಗಿಂತಲೂ ದೊಡ್ಡವನಾದ. 2. ಎಲ್ಲರಿ  
 ಗಿಂತಲೂ ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ. ಅತಿಶಯೇನ ಜ್ಯೇಷ್ಠ: “ತಮಪ್”  
 (೪-೩-೫೫) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೫) । -ತಮೀ  
 -ತಮಿಾ. “ತರಪ್” (೪-೩-೫೭) । -ತರ: -ತರಃ ।  
 ಜ್ಯೇಷ್ಠತಸ್ ಜ್ಯೇಷ್ಠತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಹಿರಿಯವನಿಂದ. ಜ್ಯೇಷ್ಠ  
 “ತಸಿ:” (ವಾಂ ೫-೪-೪೪) ।  
 ಜ್ಯೇಷ್ಠತಾ ಜ್ಯೇಷ್ಠತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿರಿಯವನಾಗಿರುವುದು,  
 ಹಿರಿಯತನ. ಜ್ಯೇಷ್ಠಸ್ಯ ಭಾವ: “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯) । “ಯಯೋ-  
 ಶ್ಚೈವ ಗರ್ಭೇ ಜನ್ಮತೋ ಜ್ಯೇಷ್ಠತಾ ಸ್ಮೃತಾ” ಮನುಂ ೯-೧೨೬ ।  
 ಜ್ಯೇಷ್ಠತಾತ ಜ್ಯೇಷ್ಠತಾತ (ಪುಂ) ತಂದೆಯ ಅಣ್ಣ, ಪಿತೃವ್ಯ,  
 ದೊಡ್ಡಪ್ಪ. ತಾತಸ್ಯ ಜ್ಯೇಷ್ಠ: ಪರಿನಿಪಾತ: (೨-೨-೩೧) ।  
 ಜ್ಯೇಷ್ಠವರ್ಣ ಜ್ಯೇಷ್ಠವರ್ಣ (ಪುಂ) ವಿಪ್ರ, ಮೊದಲನೆಯ  
 ವರ್ಣದವನು. ವರ್ಣಾನಾಂ ಜ್ಯೇಷ್ಠ: । ಪರಿನಿಪಾತ: (೨-೨-೩೧) ।  
 ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) “ಜ್ಯೇಷ್ಠ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.  
 ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಮೂಲೀಯ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಮೂಲೀಯ (ಪುಂ) ಜ್ಯೇಷ್ಠ  
 ಮಾಸ. ಜ್ಯೇಷ್ಠಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ದಿನ ಜ್ಯೇಷ್ಠ  
 ಅಥವಾ ಮೂಲನಕ್ಷತ್ರಯೋಗವಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.  
 ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಂಜು ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಂಜು (ನಂ) ಅಕ್ಕಿ ತೊಳೆದ ನೀರು.  
 ಇದರಲ್ಲಿ ಉತ್ತಮಗುಣವಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ಜ್ಯೇಷ್ಠ  
 ಶ್ರೇಷ್ಠಮ್ಜು ।  
 ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಶ್ರಮ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಶ್ರಮ (ಪುಂ) 1. ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮ. ಜ್ಯೇಷ್ಠ  
 ಆಶ್ರಮ: । (ವಿಂ) 2. ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮವುಳ್ಳವನು. ಜ್ಯೇಷ್ಠ  
 ಆಶ್ರಮೋ ಯಸ್ಯ । ಉಳಿದ ಮೂರು ಆಶ್ರಮಗಳವರನ್ನೂ  
 ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮದವರು ಪೋಷಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.  
 “ಯಸ್ಮಾತ್ ತ್ರಯೋಽಪ್ಯಾಶ್ರಮಿಣೋ ಜ್ಞಾನೇನಾಸ್ತೇನ ಚಾನ್ವಹಮ್ । ಗೃಹಸ್ಥ-  
 ನೈವ ಧಾರ್ಯಂತೇ ತಸ್ಮಾಜ್ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಶ್ರಮೋ ಗೃಹೀ” ಮನುಂ ೩-೭೮ ।  
 ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಜ್ಯೇಷ್ಠ (ಪುಂ) ಜ್ಯೇಷ್ಠಮಾಸ. ಜ್ಯೇಷ್ಠಿ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಸ್ಮಿನ್  
 “ಅನ್” (೪-೨-೨೧) ।  
 ಜ್ಯೇಷ್ಠನೇಯ ಜ್ಯೇಷ್ಠನೇಯ (ಪುಂ) ಹಿರಿಯ ಹೆಂಡತಿಯ  
 ಮಗ, ಜ್ಯೇಷ್ಠಪತಿಯ ಪುತ್ರ. ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಯಾ ಅಪत्यಮ್ “ಡಕ್”  
 (೪-೧-೧೨೦) । “ಇನಡ್” (೪-೧-೧೨೬) ಚ । “ಕೃತೇ



ಕಾನಿಠಿಠೇಯಸ್ಯ ಜ್ಯೇಷ್ಠೇಯಂ ವಿವಾಸಿತಮ್ " ಭೃಂ ೪-೮೪ |  
 ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ " ಡಿಪ್ " (೪-೧-೧೫) | -ನೇಯಿ -ನೇಯಿ.  
**ಜ್ಯೇಷ್ಠಿ ಜ್ಯೋಷ್ಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಅಥವಾ ಮೂಲ  
 ನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ಜ್ಯೇಷ್ಠಾನಕ್ಷತ್ರೇಣ ಮೂಲ-  
 ನಕ್ಷತ್ರೇಣ ವಾ ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸಿ " ಅಞ್ " (೪-೨-೩) |  
 2. ಹೃ. ಗೌ. ಜ್ಯೇಷ್ಠಿ ಸ್ವಾರ್ಥ " ಅಞ್ " (೪-೪-೩೮) |  
 " ಡಿಪ್ " (೪-೧-೧೫) |  
**ಜ್ಯೇಷ್ಠಚ ಜ್ಯೋಷ್ಠ್ಯ (ನಂ)** 1. ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ. 2. ಹಿರಿಯವ  
 ನಾಗಿರುವಿಕೆ, ಹಿರಿಯತನ. ಜ್ಯೇಷ್ಠಸ್ಯ ಭಾವ: " ಷ್ಯಜ್ " (೪-೧-೧೨೪) | "ನ ಮಾತೃತೋ ಜ್ಯೇಷ್ಠಮಸ್ತಿ ಜನ್ಮತೋ  
 ಜ್ಯೇಷ್ಠಮುಚ್ಯತೇ" ಮನುಂ ೧-೧೨೫ | "ವಿಪ್ರಾಣಾಂ ಜ್ಞಾನತೋ  
 ಜ್ಯೇಷ್ಠಯಃ ಕ್ಷತ್ರಿಯಾಣಾಂ ತು ವೀರ್ಯತಃ | ವೇಶ್ಯಾನಾಂ ಧಾನ್ಯಧನತಃ  
 ಶೂದ್ರಾಣಾಮೇವ ಜನ್ಮತಃ" ಮನುಂ ೨-೧೫೫ |  
**ಜ್ಯೋತಿರಾತ್ಮನ್ ಜ್ಯೋತಿರಾತ್ಮನ್ (ಪುಂ)** ಜ್ಯೋತಿಷ್ವರೂಪ  
 ನಾದ ಸೂರ್ಯ. ಜ್ಯೋತಿರಾತ್ಮಾಸ್ಯ |  
**ಜ್ಯೋತಿರಾದಿತ್ಯ ಜ್ಯೋತಿರಾದಿತ್ಯ (ಪುಂ)** ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ.  
 ಜ್ಯೋತಿಷಿ ಸಾವಿತ್ರೇ ಮಂಡಲೇ ಆದಿತ್ಯಃ | "ಆದಿತ್ಯೋ  
 ಜ್ಯೋತಿರಾದಿತ್ಯಃ ಸಹಿಷ್ಣುಗತಿಸತ್ತಮಃ" ವಿಂ ಸಂ |  
**ಜ್ಯೋತಿರಿಕ್ಷಣ ಜ್ಯೋತಿರಿಕ್ಷಣ (ಪುಂ)** ಮಿಂಚುಹುಳ,  
 ಮಿಂಚುಹುಳ. ಜ್ಯೋತಿರಿವ ಇಕ್ಷತಿ-ಇಗಿ (ಗತೌ)  
 "ಯುಕ್" (೩-೨-೧೪೮) | "ಜ್ಯೋತಿರಿಕ್ಷಣವತ್ಸಯ ಛುಮಣೇರಿವ  
 ಸನ್ನಿಧಿ" ಯಾದಂ ೧೬-೩೪ |  
**ಜ್ಯೋತಿರ್ಗಣ ಜ್ಯೋತಿರ್ಗಣ (ಪುಂ)** ಗ್ರಹ ನಕ್ಷತ್ರ ಮೊದ  
 ಲಾದುವುಗಳ ಗುಂಪು.  
**ಜ್ಯೋತಿರ್ಗಣೇಶ್ವರ ಜ್ಯೋತಿರ್ಗಣೇಶ್ವರ (ಪುಂ)** ಪರಮಾತ್ಮ,  
 ವಿಷ್ಣು. ಜ್ಯೋತಿರ್ಗಣಾನಾಮೀಶ್ವರಃ | "ತಮೇವ ಭಾಂತಮನುಭಾತಿ  
 ಸರ್ವಂ ತಸ್ಯ ಭಾಸಾ ಸರ್ವಮಿದಂ ವಿಭಾತಿ" ಶ್ರುತಿಃ | ಜ್ಯೋತಿಃ-  
 ಶಬ್ದೋ ಹಿ ಸದಾ ದ್ಯೋತಮಾನಸೂರಿಪರಿಕರವಾಚಕಃ | ತेषಾಂ  
 ನಿದ್ಯಸೂರಿಗಣಾನಾಮೀಶ್ವರಃ ಇತಿ ವಾ | "ನಿದ್ಯಸೂರಿಗಣಾನಾಂ  
 ಯ ಇಶೋ ಜ್ಯೋತಿರ್ಗಣೇಶ್ವರಃ" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ | "ಸ್ವಕ್ಷಃ  
 ಸ್ವಜ್ಞಃ ಶತಾನಂದೋ ನಂದಿಜ್ಯೋತಿರ್ಗಣೇಶ್ವರಃ" ವಿಂ ಸಂ |  
**ಜ್ಯೋತಿರ್ಗ್ರಂಥ ಜ್ಯೋತಿರ್ಗ್ರಂಥ (ಪುಂ)** ಜ್ಯೋತಿಷ ಗ್ರಂಥ,  
 ಗ್ರಹ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಜಲನವಲನಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಗ್ರಂಥ.  
 ಜ್ಯೋತಿಷಾಂ ಗ್ರಹನಕ್ಷತ್ರಾದೀನಾಂ ಗತಿಸಾಧನಂ ಗ್ರಂಥಃ |  
**ಜ್ಯೋತಿರ್ಮಯ ಜ್ಯೋತಿರ್ಮಯ (ವಿಂ)** ಜ್ಯೋತಿಷ್ವರೂಪ  
 ರಾದ, ಜ್ಯೋತಿಷ್ವರಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಜ್ಯೋತಿಸ್ ಪ್ರಾಚುರ್ಯ  
 "ಮಯ" (೪-೪-೨೧) | "ಋಷಿಜ್ಯೋತಿರ್ಮಯಾನ್ ಸಪ್ತ  
 ಸಸ್ಮಾರ್ ಸ್ಮರಶಾಸನಃ" ಕುಮಾಂ ೬-೩ |

**ಜ್ಯೋತಿವಿದ್ ಜ್ಯೋತಿವಿದ್ (ಪುಂ)** ಜ್ಯೋತಿಷಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು  
 ತಿಳಿದವನು, ಜೋಯಿಸ. ಜ್ಯೋತಿಷಾಂ ಗ್ರಹನಕ್ಷತ್ರಾಣಾಂ ಗತ್ಯಾ-  
 ದಿಕಂ ವೇತ್ತಿ - ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "ವಿವಿ" (೩-೨-೬೧) |  
 "ದೃಷ್ಟಾ ಜ್ಯೋತಿವಿದೋ ವೇದಾನ್ ದದಾತ್ ಗಾಂ ಕಾಶ್ವನಂ ಮಹೀಮ್"  
 ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೩೩೩ |  
**ಜ್ಯೋತಿವಿದ್ಯಾ ಜ್ಯೋತಿವಿದ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಜ್ಯೋತಿಷಶಾಸ್ತ್ರ.  
 ಜ್ಯೋತಿಷಾಂ ಸೂರ್ಯಾದಿಗ್ರಹಾಣಾಂ ಗತ್ಯಾದಿಜ್ಞಾನಸಾಧನಂ ವಿद्या |  
**ಜ್ಯೋತಿಹಸ್ತಾ ಜ್ಯೋತಿಹಸ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದುರ್ಗಾದೇವಿ.  
 "ಹಸ್ತಂ ಶರೀರಮಿತ್ಯಾಹುಃ ಹಸ್ತಂ ಚ ಗಗನಂ ತಥಾ | ಜ್ಯೋತಿಶ್ಚ  
 ಗ್ರಹನಕ್ಷತ್ರಂ ಜ್ಯೋತಿಹಸ್ತಾ ತತಃ ಸ್ಮೃತಾ" ದೇವೀಪುಂ |  
**ಜ್ಯೋತಿಶ್ಚಕ್ರ ಜ್ಯೋತಿಶ್ಚಕ್ರ (ನಂ)** ಅಶ್ವಿನಿ ಮೊದಲಾದ  
 ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ವರ್ತುಲಾಕಾರದ  
 ರಾಶಿಚಕ್ರ. ಜ್ಯೋತಿಃಪಿಃ ನಕ್ಷತ್ರಃ ಘಟಿತಂ ಚಕ್ರಮ್ |  
**ಜ್ಯೋತಿಃಶಾಸ್ತ್ರ ಜ್ಯೋತಿಃಶಾಸ್ತ್ರ (ನಂ)** ಸೂರ್ಯ ಮೊದ  
 ಲಾದ ಗ್ರಹಗಳ ಜಲನವಲನಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ,  
 ಕಾಲಜ್ಞಾನವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಒಂದು ಶಾಸ್ತ್ರ, ಆರು  
 ವೇದಾಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಶಾಸ್ತ್ರ. ಜ್ಯೋತಿಷಾಂ ಸೂರ್ಯಾದೀನಾಂ  
 ಗತ್ಯಾದಿಬೋಧಕಂ ಶಾಸ್ತ್ರಮ್ | ವೇದಗಳು ಯಜ್ಞಯಾಗಾದಿ  
 ಗಳ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಹೇಳುವುವು. ಯಜ್ಞಯಾಗಾದಿಗಳು  
 ತಿಥಿ ನಕ್ಷತ್ರ ಮೊದಲಾದ ಕಾಲವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಆಚರಿಸ  
 ಲ್ಪಡುವುವು. ಅಂತಹ ಕಾಲಜ್ಞಾನವು ಜ್ಯೋತಿಃಶಾಸ್ತ್ರ  
 ದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದರಿಂದ ಜ್ಯೋತಿಷವು ವೇದಾಂಗ  
 ವಾಯಿತು. "ವೇದಾಸ್ತಾವಚ್ಚಕ್ರಕರ್ಮಪ್ರವೃತ್ತಾ ಯಜ್ಞಾಃ ಪ್ರೋಕ್ತಾಸ್ತೇ  
 ತು ಕಾಲಾಶ್ರಯೇಣ | ಶಾಸ್ತ್ರಾದಸ್ಮಾತ್ಕಾಲಬೋಧೋ ಯತಃ ಸ್ಯಾದ್ವೇದಾ-  
 ಜ್ಞತ್ವಂ ಜ್ಯೋತಿಷಸ್ಯೋಕ್ತಮಸ್ಮಾತ್" ಸಿದ್ಧಾಂತಶಿಂ | ಈ  
 ಜ್ಯೋತಿಃಶಾಸ್ತ್ರವು ವೇದಗಳಿಗೆ ನೇತ್ರಪ್ರಾಯವಾದುದು.  
 "ಜ್ಯೋತಿಷಾಮಯನಂ ಚಕ್ಷುಃ" ಪಾಂ ಶಿಂ |  
**ಜ್ಯೋತಿಷ ಜ್ಯೋತಿಷ (ನಂ)** ಜ್ಯೋತಿಃಶಾಸ್ತ್ರ. ಜ್ಯೋತಿಃ  
 ಸೂರ್ಯಾದಿಗ್ರಹಾಣಾಂ ಗತ್ಯಾದಿಕಂ ಪ್ರತಿಪಾಢಿತಯಾಸ್ತಸ್ಯ "ಅಚ್"  
 (೪-೨-೧೨೭) | ಜ್ಯೋತಿರ್ನಕ್ಷತ್ರಾಢಿಚ್ಚಿಹೃತ್ಯ ಕೃತೋ ಗ್ರಂಥಃ  
 "ಅಞ್" (೪-೩-೮೭) ವಾ |  
**ಜ್ಯೋತಿಷಿಕ ಜ್ಯೋತಿಷಿಕ (ಪುಂ)** ಜ್ಯೋತಿಃಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು  
 ತಿಳಿದವನು ಅಥವಾ ಓದುವವನು, ದೈವಜ್ಞ, ಜೋಯಿಸ.  
 ಜ್ಯೋತಿರಧೀತೇ ವೇದ ವಾ "ಠಕ್" (೪-೨-೬೦) | ಸಂಜ್ಞಾಪೂರ್ವಕ-  
 ವಿಧೇರನಿದ್ಯತ್ವಾತ್ ನ ವೃದ್ಧಿಃ |  
**ಜ್ಯೋತಿಷಿನ್ ಜ್ಯೋತಿಷಿನ್ (ಪುಂ)** ಜ್ಯೋತಿಃಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು  
 ತಿಳಿದವನು, ದೈವಜ್ಞ, ಜೋಯಿಸ. ಜ್ಯೋತಿಷಿ ಜೇಯತ್ವೇ-  
 ನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) |



ಜ್ಯೋತಿಷ್ಕ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಚಿತ್ರಮೂಲದ ಗಿಡ. 2. ಮಂತ್ರ. 3. ನಲ್ಲಿಗಿಡದ ಒಂದು ಭೇದ. (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 4. ನಕ್ಷತ್ರಗಳು. 5. ಸೂರ್ಯಾದಿ ಗ್ರಹಗಳು. (ನಂ) 6. ಮೇರುಪರ್ವತದ ಒಂದು ಶಿಖರ. ಜ್ಯೋತಿರಿವ ಜ್ಯೋತಿಷಾ ವಾ ಕಾಯತಿ—ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕ:" (3-2-3)।

ಜ್ಯೋತಿಷ್ಕಣ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಯಣ (ಪುಂ) ಬೆಂಕಿಯ ಕಿಡಿ. ಜ್ಯೋತಿಷ: ವಹ್ನಿ: ಕಣ:। "ಜ್ಯೋತಿಷ್ಕಣಾಹತಸ್ಮಶ್ಚು ಕಾಠನಾಲಾದಪಾತಯತ್" ರಘುಂ 14-42।

ಜ್ಯೋತಿಷ್ಕರ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಯರ (ಪುಂ) ಜ್ಯೋತಿಷ್ಯನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ ಸೂರ್ಯ. ಜ್ಯೋತಿ: ಕರೋತಿ—ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣ) ತಾಚ್ಚಿಲ್ಯ "ಠ:" (3-2-20)। "ಅಸ್ಯನ್ನರಣ್ಕರಾನ್ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾನ್ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಕರಸಮದ್ವುತಿ:" ಮೃದ್ವಿಂ 9-64।

ಜ್ಯೋತಿಷ್ಕಲ್ಪ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಯಲ್ಪ (ವಿಂ) ಬೆಂಕಿಗೆ ಸಮಾನವಾದ. "ವನುಷಾಶಮತ: ಸಂಖ್ಯೆ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಕಲ್ಪೋಕ್ತೇಶ್ವರ:" ಮೃದ್ವಿಂ 9-60।

ಜ್ಯೋತಿಷ್ಕುರ್ವತ್ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಯುರ್ವತ್ (ವಿಂ) ಬೆಂಕಿಯನ್ನು ಉರಿಯಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಜ್ಯೋತಿಷ್ಕುರ್ವನ್ನಿವೇಕೋಽಸಾವಾಡೀತ್ಸಂಖ್ಯೆ ಪರಾರ್ಥವತ್" ಮೃದ್ವಿಂ 9-64।

ಜ್ಯೋತಿಷ್ಠಮ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಯಮ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಕಾಶವಾಗಿರುವ, ಹೆಚ್ಚು ಬೆಳಕನ್ನು ಚೆಲ್ಲುವ. ಅತಿಶಯೇನ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಮಾನ್ ಜ್ಯೋತಿಸ್ "ತಮಪ್" (4-2-44)। "ಸುಷಾಂನಿ ಸರ್ವತೇಜಸ್ಸು ತನ್ವಿ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಠಮಾಂ ಶುಭಾಮ್" ಮೃದ್ವಿಂ 9-64।

ಜ್ಯೋತಿಷ್ಠೋಮ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಯೋಮ (ಪುಂ) ಸ್ವರ್ಗಕಾಮನೆಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಯೋಮವೆಂಬ ಒಂದು ಯಾಗ. ಹದಿನಾರು ಜನ ಮುತ್ಸಿಕ್ಕುಗಳಿಂದ ನಡೆಸಲ್ಪಡುವ ಒಂದು ಯಜ್ಞ. ಜ್ಯೋತಿಷಿ ತ್ರಿವೃದಾದಯ: ಸ್ತೋಮಾ ಯಸ್ಯ। "ಬಹುಧಾ ನಿ:ಸೃತ: ಕಾಯಾಜ್ಜ್ಯೋತಿಷ್ಠೋಮ: ಕ್ರುತುರ್ಯಥಾ" ಭಾಂ ವನಂ 221-30। "ಜ್ಯೋತಿಷ್ಠೋಮೇನ ಸ್ವರ್ಗಕಾಮೋ ಯಜೇತ"।

ಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತ್ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಯತ್ (ಪುಂ) 1. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. 2. ಪುಟ್ಟದ್ದೀಪದ ಒಂದು ಪರ್ವತ. ಜ್ಯೋತಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (4-2-94)। (ವಿಂ) 3. ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾಗಿರುವ, ಕಾಂತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (4-1-6)। -ತೀ -ತಿ. "ನಕ್ಷತ್ರತಾರಾಗ್ರಹಸಂಕುಲಾಪಿ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತೋ ಚಂದ್ರಮಸೇವ ರಾತ್ರಿ:" ರಘುಂ 6-22।

ಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತೀ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಯತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಾತ್ರಿ. ಜ್ಯೋತಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ—"ಮತುಪ್" (4-2-94)। "ಜಿಪ್" (4-1-6)। 2. ಯೋಗಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ ಸತ್ತ್ವಪ್ರಚುರವಾದ ಒಂದು ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿ ಭೇದ. "ವಿಶೋಕಾ ವಾ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತೀ" ಪಾಂ ಯಂ ಸ್ತಂ। 3. ಜ್ಯೋತಿಷ್ಯತೀಲತೆ, ಕಂಗೊಂಗಿ ಗಿಡ,

ಜ್ಯೋತಿಸ್ ಜ್ಯೋತಿಷ್ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ದೊತೆ — ದೃತ (ದೀಪ್ತ) "ಇಸಿನ್" ಆದೇಶ ಜ: (3-2-110)। 2. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. "ಜ್ಯೋತಿರಗ್ನೌ ದಿವಾಕರೇ" ಮೇದಿಂ। (ನಂ) 3. ಬೆಳಕು, ಪ್ರಕಾಶ. "ಉದಯದಹಿಮರೋಚಿರ್ಜ್ಯೋತಿಷಾಕ್ರಾಂತಮಂತರ್ಮವುನ ಇವ ತಥೈವಾಪೂರ್ಣಮದ್ವಾಪಿ ಭಾತಿ" ಮಾಧಂ 22-41। 4. ದೃಷ್ಟಿ, ಕಣ್ಣು. 5. ನಕ್ಷತ್ರ. "ಮುಕ್ತಾ ವಿತಾನೇನ ಬಲಾಹಕಾನಾಂ ಜ್ಯೋತಿಷಿ ರಮ್ಯಾ ಇವ ದಿಗ್ವಿಭಾಗಾ:" ಕಿರಾಂ 16-34। 6. ಜ್ವಾಲೆ, ಉರಿ. 7. ಸಂಪತ್ತು, ಐಶ್ವರ್ಯ. 8. ಪುತ್ರ, ಮಗ. 9. ಜೀವಾತ್ಮ. 10. ಅಧ್ವರ, ಯಾಗ. "ಜ್ಯೋತಿಸ್ತಾರಾಗ್ನಿಭಾಜ್ವಾಲಾದೃಕ್ಪುತ್ರಾರ್ಥಾಧ್ವರಾತ್ಮಸು" ವೈಜಂ। 11. ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹ. "ಅಮಂ ಪ್ರಿಯೇ ನೂನಮತಂದ್ರಿತಾನಿ ಜ್ಯೋತಿಷಿ ಭಕ್ತಯಾ ಪರಿಯಾನ್ಯಜಸಮ್" ಯಾದಂ 16-41। 12. ಕಾಂತಿ, ತೇಜಸ್ಸು. "ಉತ್ಕಿಷ್ಠೈಕಂ ಜ್ಯೋತಿರೇಕಂ ಜಗಾಮ" ಶಾಕುಂ 4-30। 13. ಪರಂಜ್ಯೋತಿ, ಸ್ವಯಂಪ್ರಕಾಶನಾದ ಪರಬ್ರಹ್ಮ. "ಯೋಜ್ತ:ಸುಖೋಜ್ತರಾರಾಮಸ್ತಥಾನ್ತರ್ಜ್ಯೋತಿರೇವ ಯ:" ಗೀತಾ 4-24। "ಸ ಹಿ ದೇವ: ಪರಂ ಜ್ಯೋತಿಸ್ತಮ:ಪಾರೆ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಮ್" ಕುಮಾಂ 2-46। 14. ಎಷ್ಟು. "ವಿಹಾಯಸಗತಿರ್ಜ್ಯೋತಿ: ಸುಕುಚಿಹುತಭುಗ್ವಿಭು:" ವಿಂ ಸಂ।

ಜ್ಯೋತೀರಥ ಜ್ಯೋತಿರಥ (ಪುಂ) ಧ್ರುವ ನಕ್ಷತ್ರ. ಜ್ಯೋತಿಷಾಂ ಸೂರ್ಯಾದಿನಾಂ ಆಧಾರತಯಾ ರಥ ಇವ। "ಕೇತುರ್ಜ್ಯೋತೀರಥಸ್ತು ಸ್ಯಾತ್ ಗ್ರಹಾಧಾರೋ ಭುವಶ್ಚ ಸ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಜ್ಯೋತ್ಸನಾ ಜ್ಯೋತ್ಸನ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಬೆಳದಿಂಗಳು. ಜ್ಯೋತಿರಸ್ಯಸ್ಯಾಮ್ "ನ:" ಉಪಧಾಲೋಪಶ್ಚ (4-2-114)। ನಿಪಾಂ। "ಜ್ಯೋತ್ಸನೈವ ಕೃಸ್ತನಾ ಸುರಸಿಂಧುವನ್ಧು:" ನೈಷಂ 22-36। "ಜ್ಯೋತ್ಸನಾಪಯ:ಕುಮಾರತವಾಸ್ತುಪಸ್ತುಚ್ಚಾಯಾಛಲ-ಚ್ಚಿದ್ರವರಾ ಧರಾಯಾಮ್" ನೈಷಂ 22-30। 2. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 3. ಬೆಳದಿಂಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ರಾತ್ರಿ. "ಜ್ಯೋತ್ಸನಾ ಚಂದ್ರಾತಪೇಷಿ ಸ್ಯಾತ್ ಜ್ಯೋತ್ಸನಾಯುಕ್ತನಿಶಿ ಸ್ಮೃತಾ" ಮೇದಿಂ।

ಜ್ಯೋತ್ಸನಾಕಾಲಿ ಜ್ಯೋತ್ಸನ್ಯಾ ಕಾಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಂದ್ರನ ಮಗಳು, ವರುಣನ ಮಗನಾದ ಪುಷ್ಕರನ ಪತ್ನಿ. 'ಏಷೋಸ್ಯ ಪುತ್ರೋಽಭಿಮತ: ಪುಷ್ಕರ: ಪುಷ್ಕರೇಕ್ಷಣ:। ರೂಪವಾನ್ ದರ್ಶನೀಯಶ್ಚ ಸೋಮಪುತ್ರಾ ವೃತ: ಪತಿ:। ಜ್ಯೋತ್ಸನಾಕಾಲೀತಿ ಯಾಮಾಹು: ದ್ವಿತೀಯಾಂ ರೂಪತ: ಶ್ರಿಯಮ್" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ 96-12, 13।

ಜ್ಯೋತ್ಸನಾಪ್ರಿಯ ಜ್ಯೋತ್ಸನ್ಯಾ ಪ್ರಿಯಾ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರೇರಪತ್ನಿ.

ಜ್ಯೋತ್ಸನಾವತ್ ಜ್ಯೋತ್ಸನ್ಯಾವತ್ (ವಿಂ) ಬೆಳದಿಂಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಜ್ಯೋತ್ಸನಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (4-2-94)। "ತಮಿಸ್ರಪಕ್ಷೇಽಪಿ ಸಹ ಪ್ರಿಯಾಭಿರ್ಜ್ಯೋತ್ಸನಾವತೋ ನಿವಿಶತಿ ಪ್ರದೋಶಾನ್" ರಘುಂ 6-34।



ಜ್ಯೋತಿಸ್ನಾವೃಕ್ಷ ಜ್ಯೋತಿಸ್ನಾವೃಕ್ಷ (ಪುಂ) ದೀಪದ ಕಂಬ.

"ಶಿಖಾತರ್ದಿಪಿವೃಕ್ಷೋ ಜ್ಯೋತಿಸ್ನಾವೃಕ್ಷೋಽಥ ಲೋಕಕ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಜ್ಯೋತಿಸ್ನಾವೃಕ್ಷ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಂದ್ರಿಕೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ರಾತ್ರಿ. 2. ಪಡವಲ ಗಿಡ. "ಜ್ಯೋತಿಸ್ನಾವೃಕ್ಷಾಂ ಪಟಾಲಿಕಾಂ ಸ್ಯಾಜ್ಯೋತಿಸ್ನಾವೃಕ್ಷಾನಿಶಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ.

ಜ್ಯೋತಿಷಿಕ ಜ್ಯೋತಿಷಿಕ (ಪುಂ) 1. ದೈವಜ್ಞ, ಜೋಯಿಸ. (ವಿಂ) 2. ಜ್ಯೋತಿಷವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವ ಅಥವಾ ಅದನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ. ಜ್ಯೋತಿಷಮಥೀತೇ ವೇದ ವಾ "ಠಕ್" (೪-೨-೬೦) 1.

ಜ್ಯೋತಿಸ್ನ ಜ್ಯೋತಿಸ್ನ (ಪುಂ) 1. ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷ, ಚಂದ್ರಿಕೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ತಿಂಗಳ ಮೊದಲ ಅರ್ಧಭಾಗ. ಜ್ಯೋತಿಸ್ನಾ ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅನ್" (ವಾಂ ೪-೨-೧೦೩) 1. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತ್ಸನಿ -ತ್ಸೀ. 2. ಚಂದ್ರಿಕೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ರಾತ್ರಿ. "ಜ್ಯೋತಿಸ್ನಿನ್ ಚೇತ್-ತ್ಸತಿಮಾ ಇಮಾ ವಾ ಕಥಂ ಕಥಂ ತಾನಿ ಚ ವಾಮನಾನಿ" ನೈಷಂ ೨೨-೪೪ 1.

ಜ್ಯೋತಿಸ್ನಿಕಾ ಜ್ಯೋತಿಸ್ನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಂದ್ರಿಕೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ರಾತ್ರಿ.

ಜ್ವರ ಜ್ವರ (ಪುಂ) ಜ್ವರ, ಉಷ್ಣರೋಗ. ಜ್ವರತಿ-ಜ್ವರ (ರೋಗ) "ಅನ್" (೩-೧-೧೩೪) 1. "ಮನಸಸ್ತದ್ವಾಸ್ಥಿತೇ ಜ್ವರೇ ಪುನರಕ್ಲಿಬತಯಾ ಪ್ರಕಾಶಯತಾಮ್" ರಘುಂ ೮-೮೪ 1.

ಜ್ವರದ ಉತ್ಪತ್ತಿ: ಎಲ್ಲಾ ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನೂ ತಲ್ಲಣಗೊಳಿಸುವ ಮತ್ತು ಎಲ್ಲಾ ರೋಗಗಳಿಗೂ ರಾಜನಾದ ಈ ಜ್ವರವು ದಕ್ಷನ ಯಾಗವನ್ನು ಧ್ವಂಸಮಾಡಿದ ರುದ್ರನ ಕೋಪಾಗ್ನಿಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದುದು. ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ಇದು ಬಂದಾಗ ಜ್ವರವೆನಿಸುವುದು. ಇತರ ತೀರ್ಥಕ್ಕೆ ಪ್ರಾಣಿಗಳಲ್ಲಿ (ಗಜ ಅಶ್ವ ಮೊದಲಾದವುಗಳಲ್ಲಿ) ಪಾಕಲ ಅಭಿತಾಪ ಖೋರಕ ಭ್ರಮರಕ ಮುಂತಾದ ಹೆಸರಿನಿಂದ ಕರೆಯಲ್ಪಡುವುದು. "ತೇಷಾಂ ತದ್ವಚನಂ ಶ್ರುತ್ವಾ ಪ್ರಾಣವೀದ್ವಿಷಜಾಂ ವರ: 1. ಜ್ವರಮಾದೌ ಪ್ರವಕ್ಷ್ಯಾಮಿ ಸ ರೋಗಾನೀಕರಾತ್ ಸ್ಮೃತ: 1. ರುದ್ರಕೋಪಾಗ್ನಿಸಂಭೂತ: ಸರ್ವಭೂತಪ್ರತಾಪನ: 1. ತೈಸ್ತೈರ್ನಾಮ-ಭಿರನ್ಯೇಷಾಂ ಸತ್ವಾನಾಂ ಪರಿಕೀರ್ತಯತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ ೩೯-೮, ೯ 1.

ಜ್ವರದ ಸ್ವರೂಪ: ಬೆವರದಿರುವುದು ತಾಪದಬೇನೆ ಮೈಕೈಕಾಲುಗಳು ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳುವುದು ಮೊದಲಾದ ಏಕಾರಗಳು ದೇಹದಲ್ಲಿ ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವುದು ಜ್ವರದ ಲಕ್ಷಣ. "ಸ್ವೇದಾವರೋಧ: ಸಂತಾಪ: ಸರ್ವಾಙ್ಗಗ್ರಹಣಂ ತಥಾ 1. ವಿಕಾರಾ ಯುಗಪದ್ವಾಸ್ಮಿನ್ ಜ್ವರ: ಸ ಪರಿಕೀರ್ತಿತ: 1" ಸುಶ್ರುತಂ ೩೯-೧೩ 1.

ರುದ್ರನು ತನ್ನ ಕೋಪಾಗ್ನಿಯಿಂದ ಸೃಷ್ಟಿಸಿದ ಜ್ವರದಿಂದ ಕೃಷ್ಣನ ಹೊರತು ಉಳಿದೆಲ್ಲ ಯಾದವರೂ ಪೀಡಿತರಾಗಲು ಆಗ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ರುದ್ರನ ಜ್ವರವನ್ನು ತಡೆಯಲು ವೈಷ್ಣವ ಜ್ವರವನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದನು. "ಕಾಲಾಗ್ನಿಃ ಕೋಪೇನ ಚಿಕ್ಷೇಪ ಜ್ವರಮುಲ್ಬಣಮ್ 1. ಬಭೂರ್ಯಾದಿವಾ: ಸರ್ವೇ ಜ್ವರಾಕ್ರಾಂತಾ ಹರಿ ವಿನಾ 1. ತಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಭಗವಾನ್ ಕೃಷ್ಣ: ಸಸರ್ಜ ವೈಷ್ಣವಂ ಜ್ವರಮ್ 1. ತಂ ಚಿಕ್ಷೇಪ ಜ್ವರಂ ಹಂತುಂ ಮಾಹೇಶಂ ರಣಮೂರ್ಧನಿ" ಬ್ರಹ್ಮವಂ 1.

ಜ್ವರದ ಭೇದಗಳು: ಜ್ವರವು ವಾತಜ, ಪಿತ್ತಜ, ಕಫಜಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ಈ ಮೂರರಿಂದಲೂ ಒಂದು ವಿಧ. ಈ ಮೂರರ (ವಾತ ಪಿತ್ತ ಮತ್ತು ಕಫಗಳ) ದ್ವಂದ್ವದಿಂದ ಮೂರು ವಿಧ. ಮತ್ತು ಆಗಂತು ಈ ರೀತಿ ಅನೇಕ ಕಾರಣಗಳಿಂದ ಜ್ವರವು ಎಂಟು ವಿಧ. "ದೋಷ: ಪೃಥಕ್ ಸಮಸ್ತಶ್ಚ ದ್ವಂದ್ವರಾಗಂತುರೇವ ಚ 1. ಅನೇಕಕಾರಣೋತ್ಪನ್ನ: ಸ್ಮೃತಸ್ತ್ವಣ್ವಿಧೋ ಜ್ವರ: 1" ಸುಶ್ರುತಂ ೩೯-೧೪ 1.

ವಾತ ಪಿತ್ತ ಕಫಗಳೆಂಬ ದೋಷಗಳು ಆಯಾ ಋತುಗಳಲ್ಲಿ ಕಲಹ ಕೋಪ ದಿವಾಸ್ವಾಪ ಅಪಘಾಹಾರಸೇವನೆ ಮೊದಲಾದ ಕಾರಣಗಳಿಂದ ಪ್ರಕೋಪಹೊಂದುವುವು. ಈ ಮೇಲಿನ ಕಾರಣಗಳಿಂದ ಕೆಟ್ಟ ತ್ರಿದೋಷಗಳು ಆಮಾ ಶಯವನ್ನು ಸೇರಿ ಧಾತುಗಳ ಡಿಷ್ಟ ಸಹಿತವಾಗಿ ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ರಸದೊಡನೆ ಬೆರೆತು ಜಾಠರಾಗ್ನಿಯನ್ನು ಮಂದಗೊಳಿಸಿ ಶರೀರವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ವ್ಯಾಪಿಸಿ ಜ್ವರವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದು. "ದೋಷಾ: ಪ್ರಕೃಪಿತಾ: ಸ್ವೇಷು ಕಾಲೇಷು ಸ್ವೈ: ಪ್ರಕೋಪನೈ: 1. ವ್ಯಾಪ್ಯ ದೇಹಮಶೇಷೇಣ ಜ್ವರಮಾಪಾದಯಂತಿ ಹಿ 1. ದೃಷ್ಟಾ: ಸ್ವಹೇತುಭಿರ್ದೋಷಾ: ಪ್ರಾಪ್ಯಾಮಾಶಯಮೂಷ್ಮಣಾ 1. ಸಹಿತಾ ರಸಮಾಗತ್ಯ ರಸಸ್ವೇದಪ್ರವಾಹಿಣಾಮ್ 1. ಸ್ನೋತಸಾಂ ಮಾರ್ಗಮಾವೃತ್ಯ ಮಂದೀಕೃತ್ಯ ಹೃತಾಶನಮ್ 1. ನಿರಸ್ಯ ಬಹಿರ್ಗಮಾಣಂ ಪಕ್ತಿಸ್ಥಾನಾಂಚ ಕೇವಲಮ್ 1. ಶರೀರಂ ಸಮಭಿವ್ಯಾಪ್ಯ ಸ್ವಕಾಲೇಷು ಜ್ವರಾಗಮಮ್ 1. ಜನಯಂತ್ಯಥ ವೃದ್ಧಿಂ ವಾ ಸ್ವವರ್ಣಂ ಚ ತ್ವಗಾದಿಷು" ಸುಶ್ರುತಂ ೩೯-೧೫-೧೯ 1.

ಜ್ವರದ ಪೂರ್ವರೂಪ: ಆಯಾಸ! ಯಾವುದರಿಂದಲೂ ಶರೀರಕ್ಕೆ ಸೌಖ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವುದು ಮುಖದಲ್ಲಿ ಒಂದು ವಿಧ ವೈವರ್ಣ್ಯ ಕಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ನೀರು ತುಂಬಿಕೊಳ್ಳುವುದು ತಂಗಾಳಿ ಮತ್ತು ಬಿಸಿಲುಗಳಲ್ಲಿ ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದಿರುವುದು ಆಕಳಿಕೆ ಮೈಮುರಿತ ಮೈ ಭಾರವಾಗಿರುವುದು ರೋಮಾಂಚ ಕತ್ತಲೆಯಲ್ಲಿರಬೇಕೆಂದು ಅಪೇಕ್ಷೆ ಸಂತೋಷವಿಲ್ಲದಿರುವುದು ನೆಗಡಿ ವಾತಾಧಿಕ್ಯದಿಂದ ಆಕಳಿಕೆ ಪಿತ್ತಾಧಿಕ್ಯದಿಂದ ಕಣ್ಣುಗಳಲ್ಲಿ ಉರಿತ ಕಫಾಧಿಕ್ಯದಿಂದ ಆಹಾರದ್ವೇಷ ಮೊದಲಾದವು ಜ್ವರಕ್ಕೆ ಮೊದಲು ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುವು.



“ಶ್ರಮೋಽರತಿವಿವರ್ಣತ್ವಂ ವೈರಸ್ಯಂ ನಯನಪ್ಲವಃ । ಇಚ್ಛಾಛೇಷೋ ಮುಹುಶ್ರಾಪಿ ಶೀತವಾತಾತಪಾದಿಃ ॥ ಜೃಂಭಾಙ್ಗಮದೋ ಗುರುತಾ ರೋಮಹರ್ಷೋಽರಿಚಿಃ ಸ್ತಮಃ । ಅಪ್ರಹರ್ಷಶ್ಚ ಶೀತಂ ಚ ಭವತ್ಯುತ್ಪತ್ಯತಿ ಜ್ವರೇ ॥ ಸಾಮಾನ್ಯತೋ, ವಿಶೇಷಾತ್ ಜೃಂಭಾತ್ಯರ್ಥ ಸಮೀರಣಾತ್ । ಪಿತ್ತಾನ್ರಯನಯೋರ್ದಾಹಃ ಕಫಾನ್ನಾತ್ರಾಭಿನಂದನಮ್” ಸುಶ್ರುತಂ ३೯-೨೪-೨೭ ।

**ವಾತಜ್ವರದ ಲಕ್ಷಣ:** ನಡುಕ ಗಂಟಲು ತುಟಿ ಒಣಗುವುದು ನಿದ್ರಾಭಾವ ಸೀನುವುದು ಗಾತ್ರಸ್ತಂಭ ದೇಹದಲ್ಲಿ ಉಷ್ಣತೆ ತಲೆನೋವು ಎದೆನೋವು ಮಲಮೂತ್ರ ಗಳಲ್ಲಿ ವೈವರ್ಣ್ಯ ಮಲಬದ್ಧತೆ ಆಕಳಿಕೆ ಹೊಟ್ಟೆಯುಬ್ಬರ ಮುಂತಾದುವು ವಾತಜ್ವರದ ಲಕ್ಷಣ. “ವೇಪರ್ಯುರ್ವಿಷಮೋ ವೇಗಃ ಕಂಠೀಠಪರಿಶೋಷಣಮ್ । ನಿद्रಾನಾಶಃ ಕ್ಷವಃ ಸ್ತಮ್ಭೋ ಗಾತ್ರಾಣಾಂ ರೋಕ್ಷ್ಯಮೇವ ಚ । ಶಿರೋಹೃದ್ಗಾತ್ರಾಣ್ಯವಕತ್ರವೈರಸ್ಯಂ ಬದ್ಧವಿಡ್ಕತಾ । ಜೃಂಭಾಙ್ಗಮಾನಂ ತಥಾ ಶೂಲಂ ಭವತ್ಯನಿಲಜೇ ಜ್ವರೇ” ಸುಶ್ರುತಂ ३೯-೨೯-೩೦ ।

**ಪಿತ್ತಜ್ವರದ ಲಕ್ಷಣ:** ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ಜ್ವರದ ವೇಗ, ಅತಿಸಾರ, ಅಲ್ಪನಿದ್ರೆ, ವಾಂತಿ, ಜ್ವರದವೇಗದಿಂದ ಗಂಟಲು ತುಟಿ ಮೂಗು ಮುಖಗಳು ಬಿಸಿಯಾಗಿ ಕುದಿಯುವುದು, ಬೆವರು, ಪ್ರಲಾಪ, ಮುಖದಲ್ಲಿ ಸಿಡುಕು, ಬಾಯಾರಿಕೆ ಮುಂತಾದುವು ಪಿತ್ತಜ್ವರದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಅನುಭವ ಗಳು. “ವೇಗಸ್ತೀಕ್ಷ್ಣೋಽತಿಸಾರಶ್ಚ ನಿद्रಾಲಪತ್ವಂ ತಥಾ ವಮಿಃ । ಕಂಠೀಠಮುಖನಾಸಾನಾಂ ಪಾಕಃ ಸ್ವೇದಶ್ಚ ಜಾಯತೇ । ಪ್ರಲಾಪಃ ಕಟುತಾ ವಕ್ತ್ರೇ ಮೂರ್ಛಾ ದಾಹೋ ಮದಸ್ತೃಷಾ । ಪೀತವಿಷ್ಮೂತ್ರ-ನೇತ್ರತ್ವಂ ಪೆಂತಿಕೇ ಭ್ರಮ ಏವ ಚ” ಸುಶ್ರುತಂ ३೯-೩೧-೩೨ ।

**ಕಫಜ್ವರದ ಲಕ್ಷಣ:** ದೇಹವು ಭಾರವಾಗಿರುವುದು, ಶ್ಲೇಷ್ಮವನ್ನು ಕಾರುವುದು, ರೋಮಾಂಚ, ಅತಿನಿದ್ರೆ, ಉಸಿರು ತಡೆಯುವುದು, ಜೊಲ್ಲುಸುರಿಯುವುದು, ಮೈ ನೋವು, ವಾಂತಿ, ಮೈಯಲ್ಲಿ ಸಾಮಾನ್ಯವಾದ ಉಷ್ಣತೆ, ಬಾಯಿ ಸಿಹಿಯಾಗುವುದು, ಅರುಚಿ ಕೆಮ್ಮಲು ಮುಂತಾದುವು ಕಫಜ್ವರದ ಲಕ್ಷಣ. “ಗೌರವಂ ಶೀತಮುತ್ಪಲೇಶಃ ರೋಮಹರ್ಷೋಽತಿನಿದ್ರತಾ । ಸ್ನೋತೋರೋಧೋಽಗಲ್ಪತ್ವಂ ಪ್ರಸೇಕೋ ಮಧುರಾ-ಸ್ಯತಾ । ನಾಲ್ಪುಣ್ಯಗಾತ್ರತಾ ಛದಿರಙ್ಗಸಾದೋಽವಿಪಾಕತಾ । ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಯೋಽರಿಚಿಃ ಕಾಸಃ ಕಫಜೇಽಕ್ಷಣೋಽಶ್ಚ ಶುಕ್ಲತಾ” ಸುಶ್ರುತಂ ३೯-೩೩, ೩೪ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಹೀಗೆ ದ್ವಿದೋಷಾದಿಜ್ವರ ಸನ್ನಿವಾತಜ್ವರ ಮುಂತಾದುವುಗಳಿಗೆ ಸುಕ್ರುತ ಉತ್ತರತಂತ್ರ 39 ನೆಯ ಅಧ್ಯಾಯ ನೋಡಿ.

ಈ ಜ್ವರವು ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ಮಾತ್ರವಲ್ಲದೆ ಸ್ವಾಪರ ಜಂಗಮಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಜೇರೆಜೇರೆ ರೂಪದಿಂದಿದ್ದು ಅವನ್ನು ಪೀಡಿಸುವುದು. ಸಸ್ಯವೃಕ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ಕೀಟರೂಪದಿಂದ ಸೇರಿ ಅವುಗಳ ಎಲೆಗಳನ್ನು ತಿನ್ನುವುದು. ಫಲಗಳನ್ನು ನೀಸಾರ ವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವುದು.

ತಾವರೆ ಬಳ್ಳಿಗಳನ್ನು ಹಿಮದರೂಪದಿಂದ ಪೀಡಿಸುವುದು. ನವಿಲುಗಳ ಶಿಖೆಗಳನ್ನು ಉದುರಿಸುವುದು. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಉಷರ (ಕರಳು) ರೂಪದಿಂದ ಸೇರಿ ಸತ್ತ್ವವಿಲ್ಲದ್ದನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ಪರ್ವತಗಳಲ್ಲಿ ಗೈರಿಕಾದಿ ಧಾತುರೂಪ ದಿಂದಿರುವುದು. ಇತ್ಯಾದಿ. “ವೃಕ್ಷೇಷು ಕೀಟರೂಪೇಣ ತಥಾ ಸಂಕೋಚಪತ್ರಕಃ । ಪಾಂಡುಪತ್ರಶ್ಚ ವಿಖ್ಯಾತಃ ಫಲೇಷ್ವಾತುರ್ಯಮೇವ ಚ । ಪಶ್ಚಿಮೀಷು ಹಿಮೋ ಭೂತ್ವಾ ಪೃಥಿವ್ಯಾಮಪಿ ಚೋಷರಃ । ಗೈರಿಕಃ ಪರ್ವತೇಷ್ವೇವ ಮತ್ಪ್ರಸಾದಾದ್ಭವಿಷ್ಯತಿ” ಹರಿವಂ ।

ಜ್ವರದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಲಂಘನ ಮಾಡಬೇಕು. ಜ್ವರದ ಮಧ್ಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ಅದು ಜೀರ್ಣವಾಗಲು ಔಷಧ ಸೇವನೆ ಯಾಗಬೇಕು. ಜ್ವರವು ನಿಂತಮೇಲೆ ಒಳಹೊಟ್ಟೆಯು ಶುದ್ಧವಾಗಲು ವಿರೇಚನಮಾಡಿಸಬೇಕು. “ಜ್ವರಾದೀ ಲಕ್ಷಣಂ ಕುರ್ಯಾತ್ ಜ್ವರಮಧ್ಯೇ ತು ಪಾಚನಮ್ । ಜ್ವರಾಂತೇ ರೇಚನಂ ಕುರ್ಯಾತ್ ಕೋಶಶುದ್ಧಯೇ ಯಥಾವಲಮ್” ।

ವಾತಜ್ವರ ಮತ್ತು ಕಫಜ್ವರದಲ್ಲಿ ಬಾಯಾರಿದರೆ ಸುಖೋಷ್ಣವಾದ ಬಿಸಿನೀರನ್ನು ಕೊಡಬಹುದು. ಅದು ಅಗ್ನಿದೀಪನವಾಗುವುದು ಮತ್ತು ಕಫವನ್ನು ನಾಶಮಾಡುವುದು. “ವಾತಶ್ಲೇಷಮಜ್ವರಾರ್ತಾಯ ಹಿತಮುಣಾಮ್ಬು ತೃಪ್ಯತೇ । ದೀಪನಂ ಸ್ಯಾತ್ ಕಫಕ್ಷೇದಿ ವಾತಪಿತ್ತಾನುಲೋಮನಮ್” ।

ನಿಧಾನವಾಗಿ ಕುದಿಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ನೋರೆಯಿಲ್ಲದ ಸ್ವಚ್ಛವಾದ ಮತ್ತು ಅರ್ಧಭಾಗ ಇಂಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಉಷ್ಣೋದಕವನ್ನು ಜ್ವರದವರಿಗೆ ಕೊಡಬೇಕು. “ಕವಚ್ಯಮಾನಂ ತು ನಿವೇಗಂ ನಿರ್ಘನೇನ ನಿರ್ಮಲಂ ತಥಾ । ಅರ್ಧಾವಿಶಿಷ್ಟಂ ಯತ್ತೋಯಂ ತದ್ಗುಣೋದಕ-ಮುಚ್ಯತೇ” ।

ಹಗಲು ಕಾಯಿಸಿದ ಬಿಸಿನೀರು ರಾತ್ರಿ ಗುರುವಾಗುವುದು, ರಾತ್ರಿ ಕಾಯಿಸಿದ ನೀರು ಹಗಲು ಗುರುವಾಗುವುದು. ಅಂತಹ ನೀರು ಅಗ್ನಿಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಕುಂದಿಸುವುದು. ಮತ್ತು ವಾತಪಿತ್ತಕಫಗಳನ್ನು ವೃದ್ಧಿಗೊಳಿಸುವುದು. “ದಿವಾ ಶತಂ ಪಯೋ ರಾತ್ರೀ ಗುರುತಾಮಧಿಗಚ್ಛತಿ । ರಾತ್ರೀ ಶತಂ ದಿವಾ ಪೀತಂ ಗುರುತಮಧಿಗಚ್ಛತಿ । ತತ್ಪುರ್ಯುಷಿತಂ ವಹ್ನಿಗುಣಭ್ರಷ್ಟಂ ತ್ರಿದೋಷಕೃತ್” ।

ಜ್ವರವು ಬಿಟ್ಟನಂತರ ಬಹಳ ಕೃಶನಾಗಿರುವವನಿಗೆ ಅಪಘಾಹಾರ ಸೇವನೆ ಸ್ನೇಹ್ಯಾಹಾರಗಳಿಂದ (ಜ್ವರವು)



ಮರುಕಳಿಸಿ ವಾತರೋಷದಿಂದ ವೃದ್ಧಿಗೊಂಡು ಅಮಾಶಯ ಹೃದಯ ಕಂಠ ಮುಂತಾದುವುಗಳಲ್ಲಿ ಸೇರಿ ಮೂರನೆಯ ಮತ್ತು ನಾಲ್ಕನೆಯ ಜ್ವರ ಮುಂತಾದುವುಗಳಿಗೆ ಅವಕಾಶ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. “ಕೃಶಾಣಾಂ ಜ್ವರಮುಕ್ತಾಣಾಂ ಮಿಥ್ಯಾ-ಹಾರವಿಹಾರಿಣಾಮ್ | ದೋಷಃ ಸ್ವಲ್ಪೋಽಪಿ ಸಂವೃದ್ಧಃ ದೇಹಿನಾಮನಿ-ಲೇರಿತಃ | ಸತತಾನ್ಯೇಷು ಷ್ಕತ್ಯಾಹ್ಯಚಾತುರ್ಥಾನ್ ಸಪ್ರಲೇಪಕಾನ್ | ಕಫಸ್ಥಾನವಿಭಾಗೇನ ಯಥಾಸಂಖ್ಯಂ ಕರೋತಿ ಹಿ | ಅಹೋರಾತ್ರಾ-ದಹೋರಾತ್ರಾತ್ ಸ್ಥಾನಾತ್ ಸ್ಥಾನಂ ಪ್ರಪದ್ಯತೇ | ತತಃಶ್ರಾಮಾಶಯಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ದೋಷಃ ಕುರ್ಯಾಜ್ಜ್ವರಂ ನೃಣಾಮ್” ಸುಶ್ರುತಂ ೩೯-೫೧, ೫೨, ೫೩ |

ಪಿಪ್ಪಲಾ ದಿಕಷಾಯವು ಕಫಜ್ವರಕ್ಕೆ ಔಷಧ. “ಪಿಪ್ಪಲ್ಯಾದಿಕಷಾಯಂ ತು ಕಫಜೇ ಪರಿಪಾಚನಮ್” |

ಕಿರಾತಕಿಕ್ತಾದಿ ಕಷಾಯವು ವಾತಪಿತ್ತಜ್ವರಕ್ಕೆ ಔಷಧ. “ಕಿರಾತತಿಕಾಮಮೃತಾಂ ದ್ರಾಕ್ಷಾಮಾಮಲಕೀಂ ಶರೀರಮ್ | ನಿಷ್ಕವಾತ್ಯ ಸಗುಡಂ ಕ್ವಾಥಂ ವಾತಪಿತ್ತಜ್ವರೇ ಪಿಬೇತ್” |

ತಲೆಯು ಹಗುರವಾಗಿರುವುದು, ಬೆವರುವುದು, ಮುಖವು ಬಿಳುಪಿರುವುದು, ಕೆಮ್ಮಲು, ಅನ್ನದ ಅಪೇಕ್ಷೆ ಇವು ಜ್ವರಬಿಟ್ಟಿರುವವನ ಲಕ್ಷಣ. “ಲಘುತ್ವಂ ಶಿರಸಃ ಸ್ವೇದಃ ಮುಖಮಾಪಾಂಡು ಪಾಕಿ ಚ | ಧವಶುಶ್ರಾನ್ನಕಾಙ್ಕ್ಷಾ ಚ ಜ್ವರ-ಮುಕ್ತಸ್ಯ ಲಕ್ಷಣಮ್” ಸುಶ್ರುತಂ ೩೯-೩೨೨ |

ಜ್ವರಣ ಜ್ವರಘ್ನ (ಪುಂ) 1. ಜ್ವರೋಷದ ಸೋಪ್ಪು. 2. ಅಮೃತ ಬಳ್ಳಿ. (ವಿಂ) 3. ಜ್ವರವನ್ನು ನಾಶಮಾಡುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಘ್ನಿ-ಘ್ನೀ. 4. ಮಂಜಿಷ್ಠ. ಜ್ವರಂ ಹಂತಿ-ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) “ಠಕ್” (೩-೨-೫೩) |

ಜ್ವರಿತ ಜ್ವರಿತ (ವಿಂ) ಜ್ವರಬಂದಿರುವ, ಜ್ವರದಿಂದ ಪೀಡಿತ ನಾದ. ಜ್ವರೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ “ಇತಕ್” (೫-೨-೩೬) |

ಜ್ವರಿನ್ ಜ್ವರಿನ್ (ವಿಂ) ಜ್ವರವುಳ್ಳ, ಜ್ವರದಿಂದ ಕೂಡಿರುವವನು. ಜ್ವರೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿಃ” (೫-೨-೧೧೫) |

ಜ್ವಲ - ದೀಪ್ತೌ (ಭಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ) | ಜ್ವಲತಿ | ಜಜ್ವಾಲ | ಜ್ವಲಿತಾ | ಜ್ವಲಿಷ್ಯತಿ | ಜ್ವಲತು | ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಪ್ರಕಾಶಿಸು. 2. ಉರಿ. 3. ಸುಡು. “ಜಜ್ವಾಲ ಲೋಕಸ್ಥಿತಯೇ ಸ ರಾಜಾ” ಭट्टಿಂ | “ಜ್ವಲತು ಗಗನೇ ರಾತ್ರೀ ರಾತ್ರಾವಲಕ್ಷಣಕಲಃ ಶಶೀ ದಹತು ಮದನಃ ಕಿಂ ವಾ ಮೃತ್ಯೋಃ ಪರೇಣ ವಿಧಾಸ್ಯತಃ” ಮಾಲತೀಂ ೨-೨ |

ಭಾವಃ:-ಜ್ವಲಯತೇ | ಜಜ್ವಲೇ | ಜ್ವಲಿತಾ | ಜ್ವಲಿಷ್ಯತೇ | ಜ್ವಲಯತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ:- ಜ್ವಲಯತಿ, -ತೇ | ಜ್ವಾಲಯತಿ, -ತೇ | ಜ್ವ (ಜ್ವಾ) ಲಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ |

ಜ್ವಲಯಿತಾ, ಜ್ವಾಲಯಿತಾ | ಜ್ವ(ಜ್ವಾ)ಲಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ಜ್ವ(ಜ್ವಾ)ಲಯತು, -ತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:-ಜ್ವಲಿತವ್ಯಮ್ | ಜ್ವಲನೀಯಮ್ | ಜ್ವಾಲಯಮ್ | ಜ್ವಲಿತಃ | ಜ್ವಲಿತವಾನ್ | ಜ್ವಲನ್, -ಂತಿ | ಜ್ವಲಿತುಮ್ | ಜ್ವಲಿತಮ್ | ಜ್ವಲನಮ್ | ಜ್ವಲಿತವಾ |

ಜ್ವಲ ಜ್ವಲ (ಪುಂ) 1. ದೀಪ್ತ, ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. 2. ಅಗ್ನಿಯ ಜ್ವಲೆ. ಬೆಂಕಿಯ ಉರಿ. ಜ್ವಲ (ದೀಪ್ತೌ) “ಅನ್” (೩-೧-೧೩೪) | (ವಿಂ) 3. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ. 4. ಉರಿಯುವ.

ಜ್ವಲಕಾ ಜ್ವಲಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಯ ಜ್ವಾಲೆ, ಬೆಂಕಿಯ ಉರಿ.

ಜ್ವಲತ್ ಜ್ವಲತ್ (ವಿಂ) 1. ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ. ಜ್ವಲ (ದೀಪ್ತೌ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) | “ಅಥಾಜಿನಾಷಾಢಧರಃ ಪ್ರಗಲ್ಭವಾಗ್ಜ್ವಲನ್ನಿವ ಬ್ರಹ್ಮಮಯೇನ ತೇಜಸಾ” ಕುಮಾಂ ೫-೩೦ | 2. ಉರಿಯುತ್ತಿರುವ. “ಜ್ವಲತಸ್ತವ ಜಾತವೇದಸಃ ಸತತಂ ವೈರಿಕೃತಸ್ಯ ಚೇತಸಿ” ಕಿರಾಂ ೨-೨೪ | “ಜ್ವಲದಗ್ನಿಮುಖೈರ್ಬಾಣೈರ್ನಿರ್ಧೈರಿತರೇತರಮ್” ಕುಮಾಂ ೧೬-೧೧ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬) | -ಂತಿ-೨೨೯.

ಜ್ವಲನ ಜ್ವಲನ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 2. ಚಿತ್ರಮೂಲದ ಗಿಡ. ಜ್ವಲತಿ -ಜ್ವಲ (ದೀಪ್ತೌ) “ಯುಕ್” (೩-೨-೧೫೦) | “ಜ್ವಲನಂ ತ್ವಿಷಃ ಕಥಮಿವೇತರಥಾ ಸುಲಭೋಽಜ್ಯಜನ್ಮನಿ ಸ ಏವ ಪತಿಃ” ಮಾಘಂ ೯-೧೩ | “ಬೀಜಪ್ರರೋಹಜನನೀಂ ಜ್ವಲನಃ ಕರೋತಿ” ರಘುಂ ೯-೮೦ | (ನಂ) 3. ಹೊಳೆಯುವುದು. 4. ಉರಿಯುವುದು. ಜ್ವಲ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) | (ವಿಂ) 5. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ. 6. ಉರಿಯುವ.

ಜ್ವಲನಾಶಮನ್ ಜ್ವಲನಾಶಮನ್ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯಕಾಂತ ಶಿಲೆ.

ಜ್ವಲನೀಯ ಜ್ವಲನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಉರಿಯಿಸಲು ಯೋಗ್ಯ ವಾದ. 2. ಉರಿಯಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಉರಿಯಿಸಲ್ಪಡುವ. ಜ್ವಲ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿಕ್ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) | “ತವ್ಯಃ” | ಜ್ವಲಿತವ್ಯಃ ಜ್ವಲಿತವ್ಯಃ.

ಜ್ವಲಯತ್ ಜ್ವಲಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ಜ್ವಲ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿಕ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) | “ಗ್ರಹವಿಮಾನಗಣಾನಭಿತೋ ದಿವಂ ಜ್ವಲಯತೌಷಧಿಜೇನ ಕೃಶಾನ್ಯುನಾ” ಕಿರಾಂ ೫-೧೪ | 2. ಉರಿಯಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬) | -ಯಂತಿ-೨೦೦೩೯.

ಜ್ವಲಿತ ಜ್ವಲಿತ (ನಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. ಜ್ವಲ (ದೀಪ್ತೌ) ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪) | “ಜ್ವಲಿತೇನ ಗುಹಾಗತಂ



ತಮಸ್ತುಹಿನಾದ್ರೇವ ನಕ್ತಮೋಷಧಿ:" ರಘುಂ ೮-೪೪ | 2. ಜ್ವಾಲೆ, ಉರಿ. "ಮೂಹುತಂ ಜ್ವಲಿತಂ ಶ್ರೇಯೋ ನ ಚ ಭೂಮಾಯಿತಂ ಚಿರಮ್" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೩೩-೧೪ | (ವಿಂ) 3. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟು. ಜ್ವಲ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ಜ್ವಲಿತಾ- ನ್ಯಗುಣೈರ್ಗುರ್ವಿ ಸ್ಥಿತಾ ತೇಜಸಿ ಮಾನಿತಾ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೨೧ | 4. ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟು. 5. ಉರಿಯುತ್ತಿರುವ. ಜ್ವಲ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | "ಜ್ವಲಿತಂ ನ ಹಿರಣ್ಯರೆತಸಂ ಚಯ- ಮಾಸ್ಕಂದತಿ ಭಸ್ಮನಾಂ ಚಯ:" ಕಿರಾಂ ೨-೨೦ | "ಜ್ವಲಿತಂ ದಗ್ಧ ಉಜ್ಜವಲೇ" ಮೇದಿಂ |

ಜ್ವಾಲ ಜ್ವಾಲ (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬೆಂಕಿಯ ಉರಿ, ಅಗ್ನಿಯ ಶಿಖೆ. (ಪುಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶ. ಬೆಳಕು. ಜ್ವಲ (ದೀಪ್ತ) "ಞ:" (೩-೧-೧೪೦) | (ವಿಂ) 3. ಉರಿಯುವ. 4. ಹೊಳೆಯುವ, ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ.

ಜ್ವಾಲಾ ಜ್ವಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಯ ಶಿಖೆ, ಬೆಂಕಿಯ ಉರಿ. ಜ್ವಲ (ದೀಪ್ತ) "ಞ:" (೩-೧-೧೪೦) | "ಢಾಪ್" (೪-೧-೪) | "ಅಮೃತತೋಷಸಸ್ತ್ರಾಣಿ ಜ್ವಾಲಾಮಾಲಾಕುಲೈರ್ಮುಖೈ:" ವಿಷ್ಣುಪುಂ |

ಜ್ವಾಲಾಖರಗದ ಜ್ವಾಲಾಖರಗದ (ಪುಂ) ಒಂದು ರೋಗ, ಮುಖದ ಮೇಲೆ ಏಳುವ ಗುಳ್ಳೆ, ಮೊಡವೆ.

ಜ್ವಾಲಾಜಿಹ್ವ ಜ್ವಾಲಾಜಿಹ್ವ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಜ್ವಾಲಾ ಶಿಖೆವ ಜಿಹ್ವಾ ಯಸ್ಯ | 2. ಚಿತ್ರಮೂಲದ ಗಿಡ. 3. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ.

ಜ್ವಾಲಾಮಾಲಿನಿ ಜ್ವಾಲಾಮಾಲಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವಿಯ ಮೂರ್ತಿಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. ಜ್ವಾಲಾನಾಂ ಮಾಲಾಸ್ತಯಸ್ಯಾ: "ಛಿನಿ:" (೪-೨-೧೧೬) | "ಢೀಪ್" (೪-೧-೪) |

ಜ್ವಾಲಾಮುಖ ಜ್ವಾಲಾಮುಖ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. 2. ಕೊಳ್ಳಿದವ್ವ, ಬಾಯಿಂದ ಬೆಂಕಿಯನ್ನು ಉಗುಳುವ ಒಂದು ಪಿಶಾಚಿ. ಜ್ವಾಲಾ ಮುಖೇ ಯಸ್ಯ | ["ಉಲ್ಕಾಮುಖ" ನೋಡಿ.]

ಜ್ವಾಲಾಮುಖಿ ಜ್ವಾಲಾಮುಖೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿಯ ಮೂರ್ತಿಯೆಂದು ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ ಜ್ವಾಲೆಯು ಹೊರ ಡುವ ಒಂದು ಸ್ಥಳ, ಪಂಜಾಬಿನ ಉತ್ತರಪೂರ್ವದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಪರ್ವತಪ್ರದೇಶ. ಈ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಭೂಮಿಯಿಂದ ಬೆಂಕಿಯ ಜ್ವಾಲೆಯು ಹೊರಡುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ಇದೇರಿತೆ ಇತರ ಕೆಲವು ಪರ್ವತಗಳು. 2. ಒಂದು ಮಂತ್ರ.

ಜ್ವಾಲಾವಕ್ತ್ರ ಜ್ವಾಲಾವಕ್ತ್ರ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಮಹೇಶ್ವರ.

ಜ್ವಾಲಿನ್ ಜ್ವಾಲಿನ್ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಮಹೇಶ್ವರ.

ಜ್ವಾಲೇಶ್ವರ ಜ್ವಾಲೇಶ್ವರ (ಪುಂ) ಒಂದು ತೀರ್ಥ.

ಇತಿ "ಜ" ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್ |

ಇ

ಇ ರೂ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ "ಚ" ವರ್ಗದ ನಾಲ್ಕು ನೆಯ ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಂತರ ಸ್ಪೃಷ್ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ತಾಲು ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಅಕ್ಷರ. "ಕಾದಯೋ ಮಾವಸಾನಾ: ಸ್ಪರ್ಶಾ:" | "ಸ್ಪೃಷ್ಠಂ ಪ್ರಯತನಂ ಸ್ಪರ್ಶಾನಾಮ್" ಸಿಂ ಕೌಂ | ಸಂವಾರ ನಾದ ಘೋಷ ಮತ್ತು ಮಹಾಪ್ರಾಣ ಇವು ಇದರ ಬಾಹ್ಯಪ್ರಯತ್ನಗಳು.

ಇ ರೂ (ಪುಂ) 1. ಕಿರುಗಂಟೆಯ ಶಬ್ದ. 2. ಬಿರುಗಾಳಿ. 3. ಮಳೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಗಾಳಿ. 4. ಕಳೆದುಹೋದ ವಸ್ತು. 5. ಬೃಹಸ್ಪತಿ, ದೇವಗುರು. 6. ಅಸುರರ ದೊರೆ. 7. ರೂಣ ರೂಣ ಶಬ್ದ. 8. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. 9. ಹಂಸಪಕ್ಷಿ. 10. ಪ್ರತಾಪ, ಪರಾಕ್ರಮ. 11. ಭ್ರಮಣ, ತಿರುಗಾಟ. 12. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ. 13. ಮದ. 14. ಪರಶಿವ,

ಪರಮೇಶ್ವರ. "ಇಶಬ್ದಸ್ತು ಪುಮಾನ್ ಧಾತಾರಿ ಹಂಸಕೇ | ಪ್ರತಾಪೇ ಭ್ರಮಣೇ ನಷ್ಟೇ ಚೋರೇ ಛತ್ವಾನ್ವಿನಿಲೇ ಮದೇ" ನಾನಾರ್ಥರಂ | "ಛೋ ಛಿಷ್ಟಿಶೇ ಸುರಗುರೋ ದೈತ್ಯರಾಜೇ ಧವನಾವಪಿ" ಮೇದಿಂ |

ಇಕಾರ ರೂಕಾರ (ಪುಂ) "ರೂ" ವರ್ಣ, ರೂವೆಂಬ ಅಕ್ಷರ. ಇ "ಕಾರ:" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮) |

ಇಗತಿ ರೂಗತಿ (ಅವ್ಯಂ) ಜಾಗೃತೆಯಾಗಿ.

ಇಚ್ಛಾರ ರೂಂಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾದ ಶಬ್ದ, ಭ್ರಮರದ ಧ್ವನಿ. ಇಮಿತ್ಯವ್ಯಕ್ತಶಬ್ದಸ್ಯ ಕಾರ: | "ಇಚ್ಛಾರೋನ್ಮುಖರಾ ವಿಲಾಸವಿಪಿನೋಪಾಂತಾ ವಸಂತೋದಯ:" ಪ್ರಬೋಧಂ ೪-೧೩ |

ಇಚ್ಛಾರಿಣಿ ರೂಂಕಾರಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗಾನದಿ.

ಇಚ್ಛುತಿ ರೂಂಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾದ ಶಬ್ದ, ಅಸ್ಪಷ್ಟ ವಾದ ಧ್ವನಿ.



**ಜ್ಞಾ ರೂಂರೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮಳೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಗಾಳಿ. 2. ಬಿರುಗಾಳಿ. 3. ಧ್ವನಿ, ಶಬ್ದ. 4. ಮಳೆ ಹನಿ ಬೀಳುವುದು. 5. ನಷ್ಟವಾದ ವಸ್ತು. "ಜ್ಞಾ ಧ್ವನಿವಿಶೇಷಪಿ ಜ್ಞಾಽಽಣುಜಲವರ್ಷಣೇ | ಜ್ಞಾ ವಾತೇ ತಾರವಾಯಿ ನಷ್ಟೇಪಿ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾ" ವಿಶ್ವಂ |

**ಜ್ಞಾನಿಲ ರೂಂರೂ ನಿ ಲ (ಪುಂ)** 1. ಬಿರುಗಾಳಿ. 2. ಮಳೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಗಾಳಿ. ಜ್ಞಾನಾಯುಕ್ತೋನಿಲಃ |  
**ಎವಂ -ಸಾಸ್ತ:** -ಮಾರುತಃ, -ವಾತಃ -ನಾತಃ, -ವಾಯುಃ -ನಾಯಾಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಜಟ-ಸಂಘಾತೇ (ಛಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ)** | ಜಟತಿ | ಜಟಾಟ | ಜಟಿತಾ | ಜಟಿಷ್ಯತಿ | ಜಟತು | ಇತ್ಯಾದಿ. ಸೇರಿಸು, ಬೆರಸು, ಮಿಶ್ರಮಾಡು.

**ಕರ್ಮಣಿ:** -ಜಟಯತೇ | ಜಟೇ | ಜಟಿತಾ | ಜಟಿಷ್ಯತೇ | ಜಟಯತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಣಿವಿ:** -ಜಾಟಯತಿ -ತೇ | ಜಾಟಯಾ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಜಾಟಯಿತಾ | ಜಾಟಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ಜಾಟಯತು, -ತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತ್ಯು:** -ಜಟಿತವ್ಯಮ್ | ಜಟನೀಯಮ್ | ಜಟಿತಃ | ಜಟಿತವಾನ್, -ವತೀ | ಜಟಿತುಮ್ | ಜಟಿತಮ್ | ಜಟನಮ್ |

**ಜಟಾ ರೂಂರೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ನೆಲನೆಲ್ಲಿಗಿಡ. ಜಟತಿ - ಜಟ (ಸಂಘಾತೇ) "ಅವ್" (೩-೧-೧೩೪) |

**ಜಟಿತಿ ರೂಂರೂ (ಅವ್ಯಂ)** ಜಾಗ್ರತೆಯಾಗಿ, ಶೀಘ್ರವಾಗಿ. ಜಟ (ಸಂಘಾತೇ) "ವಿವಪ್" (ವಾಂ ೩-೩-೯೪) | ಜಟಮೇತಿ-ಇನ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿವ್" (೩-೨-೭೫) | "ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ ಗೇಹಂ ಜಟಿತಿ ಯಮುನಾಮಂಜುಕುಂಜಂ ಜಗಾಮ" ಪದಾಕ್ಷಂ | "ಆನೀಯ ಜಟಿತಿ ಘಟಯತಿ ವಿಧಿರಭಿಮತಮಭಿಮುಖೀಭೂತಃ" ರತ್ನಾಂ ೧-೬ |

**ಜಣಜಣಾ ರೂಂರೂರೂ (ಅವ್ಯಂ)** ಕಿರುಗಂಟಿಯು ಶಬ್ದ, ರೂಂರೂರೂ ಶಬ್ದ.

**ಜಣಜಣಾಯಿತ ರೂಂರೂರೂಯಿತ (ವಿಂ)** ರೂಂರೂರೂ ಶಬ್ದವನ್ನು ಮಾಡುವ. "ವಣತಕನಕಕಿಂಕಿಣಿಜಣಜಣಾಯಿತಸ್ಯಂದನೇ" ಉಂ ರಾಂ ೫-೫ |

**ಜಣತಕಾರ ರೂಂರೂರೂ (ಪುಂ)** ಕೈಬಳೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಶಬ್ದ. ಜಣದೀತ್ಯವ್ಯಕ್ತಶಬ್ದಸ್ಯ ಕಾರಃ- ಡು ಕೃತ್ "ಘ್" (೩-೩-೧೮) | "ನೀಲೇಂದಿವರದಾಮದೀರ್ಘತರಯಾ ದೃಷ್ಟಾ ಧಯಂತಿ ಮನೋ ದೋಲಾಂದೋಲನಲೋಕಾಕ್ಷಣಜಣತಕಾರೋತ್ತರಂ ಸರ್ಪತಿ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೨-೩೪ |

**ಜಮು - ಅದನೇ (ಛಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸಂ)** | ಜಮತಿ | ಜಮಾಮ | ಜಮಿತಾ | ಜಮಿಷ್ಯತಿ | ಜಮತು | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಜಮ್ಪ ರೂಂರೂ (ಪುಂ)** ಹಾರುವುದು, ನೆಗೆಯುವುದು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಮ್ಪಾ ರೂಂರೂ. "ಪುಂಚಾಸ್ಕೊಡಲತಸಮುದ್ರವಿವರೇ: ಪಾತಾಲಜಮ್ಪಾಶ್ಚ ತಾಃ" ಮಂ ವೀಂ ೫-೬೩ |

**ಜಮ್ಪಾಕ ರೂಂರೂಕ (ಪುಂ)** ವಾನರ, ಕಪಿ. ಜಮ್ಪೇನ ಆಕಾಯತಿ-ಆ+ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) |

**ಜಮ್ಪಾಶಿನ್ ರೂಂರೂಶಿನ್ (ಪುಂ)** ಕುಕ್ಕುಟಪಕ್ಷಿ, ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಹಾರಿ ಮೀನು ಹಿಡಿದು ತಿನ್ನುವ ಹಕ್ಕಿ. ಜಮ್ಪೇನ ಜಲೇ ಸ್ವೇಚ್ಛಯಾ ಪತನೇನ ಅಶನಾತಿ-ಅಶ (ಭೋಜನೇ) "ಣಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | ಜಮ್ಪಾಶಿನಿ ರೂಂರೂಶಿನೀ.

**ಜಮ್ಪಿನ್ ರೂಂರೂಪಿನ್ (ಪುಂ)** ವಾನರ, ಕಪಿ. ಜಮ್ಪ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫) |

**ಜರ ರೂಂರೂ (ಪುಂ)** 1. ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಪ್ರವಾಹ. 2. ಚಿಲುಮೆಯಿಂದ ನೀರು ಹರಿಯುವುದು. ಜೃಷ್ (ವಯೋ-ಹಾನಿ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಅಡ್" (೩-೩-೧೦೪) | ಜರಾ ರೂಂರೂ. "ಇಃ" (ಉಂ ೪-೨೩೧) | ವಾ "ಡೀಪ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫) | ಜರಿಃ ರೂಂರೂ, ಜರೀ ರೂಂರೂ. "ವಿಪುಲಪುಲಿನಾಃ ಕಲ್ಲೋಲಿನ್ಯೋ ನಿತಾಂತಪತಜ್ಜರೀಮಸೃಣಿತ-ಶಿಲಾಃ ಶಿಲಾಃ ಸಾಂದ್ರದ್ರುಮಾ ವನಭೂಮಯಃ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೪-೧೨ |

**ಜರ್ಜರ ರೂಂರೂರೂ (ಪುಂ)** 1. ರೂಂರೂಯೆಯೆಂಬ ಒಂದು ವಾದ್ಯ. 2. ತಮಟೆ. 3. ನದಿ, ಒಂದು ಗಂಡು ಹೊಳೆ. 4. ಕಲಿಯುಗ. ಜರ್ಜರ (ಶಬ್ದೇ) "ಅರಃ" (ಉಂ ೩-೧೩೧) | "ಜರ್ಜರಃ ಸ್ಯಾತ್ ಕಲಿಯುಗೇ ವಾಘಭಾಂಡೇ ನದಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ | "ನದಪ್ರಭೇದೇ ವಾಘೇ ಚ ಜರ್ಜರಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 5. ಬೆಟ್ಟದ ಕೋಲು. "ಕಂಚುಕೋಣಿಷಿಣಸ್ತತ್ರ ವೇತ್ರಜರ್ಜರಪಾಣಯಃ" ಭಾಂ ಭೀಷಂ ೧೭-೩೪ | (ಸ್ತ್ರೀಂ)-ರಾ -ರೂ. 6. ಮೇಡೆ. "ವೇಶ್ಯಾ ಶೂಲಾ ವಾರವಾಣಿಜರ್ಜರಾಪಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | -ರೀ -ರೀ. 7. ಒಂದು ವಿಧ ವಾದ್ಯ, ಡಮರುಕ.

**ಜರ್ಜರಕ ರೂಂರೂರೂಕ (ಪುಂ)** 1. ಕಲಿಯುಗ. ಜರ್ಜರ ಸಂಜ್ಞಾयां "ಕನ್" | "ಕಲಿಜರ್ಜರಕಃ ಕರ್ಮಯುಗಂ ಪಾಪಂ ತು ಪಾತಕಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಿಕಾ -ರಿಕಾ. 2. ಒಂದು ವಿಧ ವಾದ್ಯ.

**ಜರ್ಜರಾವತಿ ರೂಂರೂರೂವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗಂಗಾನದಿ.

**ಜರ್ಜರಿನ್ ರೂಂರೂರೂಶಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಜರ್ಜರೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫) | (ವಿಂ) 2. ಡಮರುಕದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

**ಜರ್ಜರೀ ರೂಂರೂರೂಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** "ಜರ್ಜರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ಜರ್ಜರೀಕ ರೂಂರೂರೂಶೀಕ (ನಂ)** ಶಂಕರ, ದೇಹ. ಜೃಷ್ (ವಯೋಹಾನಿ) "ಇಕನ್" (ಉಂ ೪-೨೦) |



**ಶಲಜಾಲಾ ರೂಲಜ್ಜಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅನೆಯ ಕಿವಿಯ ಹೊಡೆತ.

**ಶಲಾ ರೂಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಕನ್ನೆ, ಮಗಲು, ಹುಡುಗಿ.

2. ಬಿಸಿಲಿನ ಅಲೆ. "ಶಲಾ ಸ್ಯಾಧಾತಪಸ್ಯೋಮಿ ದುಹಿತಯಪಿ ಚ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ.

**ಶಲಿ ರೂಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಡಕೆ.

**ಶಲ್ಲ ರೂಲ್ಲ (ಪುಂ)** ಪ್ರಾತ್ಯ (ಸಂಸ್ಕಾರಹೀನ)ನಾದ ಕ್ಷತ್ರಿಯನ ಮಗ. "ಶಲ್ಲೋ ಮಲ್ಲಶ್ಚ ರಾಜನ್ಯಾದ್ವಾತ್ಯಾನ್ರಿಚ್ಚಿವಿರೇವ ಚ" ಮನುಂ ೧೦-೨೨.

**ಶಲ್ಲಕ ರೂಲ್ಲಕ (ನಂ)** ಕಂಚಿನ ಕೈತಾಳ.

**ಶಲ್ಲಕಣ್ಣ ರೂಲ್ಲಕಂಠ (ಪುಂ)** ಪಾರಾವತ, ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ.

**ಶಲ್ಲರಾ ರೂಲ್ಲರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ರೂಯಿಯೆಂಬ ಒಂದು ವಾದ್ಯ. 2. ಕೈತಾಳ. 3. ಗುಂಗುರು ಕೂದಲು. 4. ಭಕ್ತಿಯ ಅಂಚಿನಲ್ಲಿ ಕೆಳಗೆ ಜೋಲಾಡುತ್ತಿರುವ ಜಾಲರಿ. 5. ಕೇಶ, ತಲೆಯ ಕೂದಲು.

**ಶಲ್ಲರೀ ರೂಲ್ಲರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಕೈತಾಳ, ಒಂದು ವಿಧ ವಾದ್ಯ. 2. ಭಕ್ತಿಯ ಅಂಚಿನಲ್ಲಿ ಕೆಳಗೆ ಜೋಲಾಡುತ್ತಿರುವ ಜಾಲರಿ. 3. ಮುಂಗುರುಳು, ಗುಂಗುರು ಕೂದಲು. 4. ಕೇಶ, ತಲೆಯ ಕೂದಲು. "ಛತ್ರಾಂತಲಮ್ಬಿವಸ್ತ್ರೇಽಪಿ ಶಲ್ಲರೀ ಕೇಶವಾಚಯೋಃ" ವೇಜಂ. 5. ರೂಯಿಯೆಂಬ ಒಂದು ವಿಧ ವಾದ್ಯ.

**ಶಲ್ಲಿಕಾ ರೂಲ್ಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮೈಗೆ ವಾಸನೆಯ ಪ್ರದಿಯನ್ನು ಉಜ್ಜುವ ಒಂದು ವಸ್ತ್ರ. 2. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. 3. ಕಾಂತಿ, ತೇಜಸ್ಸು.

**ಶಲ್ಲೋಲ ರೂಲ್ಲೋಲ (ಪುಂ)** ಚರಕವನ್ನು ತಿರುಗಿಸುವ ಯಂತ್ರ, ರಾಟೆಯನ್ನು ಆಡಿಸುವ ಒಂದು ಯಂತ್ರ (ಕೈಹಿಡಿ). "ಶಲ್ಲೋಲಸ್ತಕುಲಾಸಕಃ" ಹಾರಾಂ.

**ಶಲ - ಹಿಸಾಯಾಮ್ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)** | ಶಲಪತಿ | ಜಲಾಪ | ಶಲಪಿತಾ | ಅಶಲಪಿತ್, ಅಶಲಾಪಿತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಹಿಂಸಿಸು, ಹೀಡಿಸು.

**ಶಲ ರೂಷ (ಪುಂ)** 1. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. ಶಲಪತಿ - ಶಲ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಇತ್ಯುಕ್ತಃ ಸೌಜಯನ್ಮತ್ಸ್ಯಂ ತತ್ರತತ್ರವಿಧಾಸಿನಿ | ಜಲಾಶಯೇ ಸಮಿತಂ ತಂ ಸಮುದ್ರೇ ಪ್ರಾಕ್ಷಿಪಜ್ಜಲಮ್" ಭಾಗಂ ೮-೨೪-೨೩. 2. ತಾಪ, ಬಿಸಿಲಿನ ರೂಳ. 3. ಮಕರ, ದೀರ್ಘಾಕಾರದ ಮೀನು, ಒಂದು ಜಲಜಂತು. "ಶಲಾಣಾಂ ಮಕರಶ್ಚಾಸ್ಮಿ" ಗೀತಾ. 4. ಮಕರ ರಾಶಿ. "ಕಾರ್ಮಕಂ ತು ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ ಶಲಂ ಸಂಕ್ರಮತೇ

ರವಿಃ" | (ನಂ) 5. ಮೀನರಾಶಿ. 6. ಅರಣ್ಯ, ಕಾಡು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಶಾ -ಶಾ. 7. ಬೋಳೆಗಡಲೆ ಅಥವಾ ಹೀರೆ ಗಿಡ. "ಶಲಾ ನಾಗಬಲಾಃ ಸ್ತ್ರೀ ತಾಪಮತ್ಸ್ಯಾಡವೀಶು ಚ" ಮೇದಿಂ.

**ಶಲಕೇತನ ರೂಷಕೇತನ (ಪುಂ)** ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ. ಶಲಃ ಕೇತನಂ ಯಸ್ಯ | "ಕಿಂ ಪದ್ಮಸ್ಯ ರುಚಿ ನ ಹಂತಿ ನಯನಾನಂದಂ ವಿಧತ್ತೇ ನ ಕಿಂ ವೃದ್ಧಿ ವಾ ಶಲಕೇತನಸ್ಯ ಕುರುತೇ ನಾಲೋಕಮಾತ್ರೇಣ ಕಿಮ್" ರತ್ನಾಂ ೩-೧೩.

**ಶಲಕೇತು ರೂಷಕೇತು (ಪುಂ)** ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ. ಶಲಃ ಕೇತುಃ ಯಸ್ಯ |

**ಶಲಾಚ್ಛ ರೂಷಾಂಕ (ಪುಂ)** ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ. ಶಲಾಚ್ಛೋ ಯಸ್ಯ |

**ಶಲಾಶನ ರೂಷಾಶನ (ಪುಂ)** ಕಡಲ ಹಂದಿ, ತಿಮಿಂಗಿಲ ಜಾತಿಯ ಒಂದು ಪ್ರಾಣಿ. ಶಲಮಶನಾತಿ - ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) | "ಜಲಶೂಕರಮಾಯಾದಶಲಾಶನ-ಹೃದ್ರಹಾಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಶಲೋದರೀ ರೂಷೋದರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸತ್ಯವತಿ, ಮತ್ಸ್ಯ ಗಂಧೆ, ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯ ತಾಯಿ. ಶಲಸ್ಯ ಉದರಂ ಜನ್ಮಸ್ಥಾನತಯಾಸ್ತಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) | [ಉಪರಿಚರ ನೆಂಬ ರಾಜನೊಬ್ಬನು ಬೇಟೆಗಾಗಿ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಪತ್ನಿಯ ಸ್ಮರಣೆಯುಂಟಾಗಿ ಕಾಮಪೀಡಿತನಾದನು. ಆಗ ಅವನಿಗೆ ವೀರ್ಯಸ್ಥೂಲನವಾಯಿತು. ಆ ವೀರ್ಯವನ್ನು ತನ್ನ ಪತ್ನಿಗೆ ತಲುಪಿಸಲು ಒಂದು ಪಕ್ಷಿಯನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದನು. ಪಕ್ಷಿಯು ಅದನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಅದು ಜಾರಿ ಯಮುನೆಯಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದು ಹೋಯಿತು. ಬ್ರಹ್ಮನ ಶಾಪದಿಂದ ಮತ್ಸ್ಯರೂಪ ತಾಳಿ ಯಮುನೆಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಅದ್ವಿಕೆಯೆಂಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸು ಆ ವೀರ್ಯವನ್ನು ನುಂಗಿದಳು. ಅವಳ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಈ ಮತ್ಸ್ಯಗಂಧೆಯು ಜನಿಸಿದಳು.] ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೪ |

**ಶಾಚ್ಚಾರಿನ್ ರೂಾಂಕಾರಿನ್ (ವಿಂ)** ರೂಾಂ ಎಂಬ ಶಬ್ದವುಳ್ಳ. ಶಾಚಾರೋಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) | "ಶಾಚ್ಚಾರೀ ಶಕರಾಲಃ ಪಥಿಷು ವಿಡಪಿನಾಂ ಸ್ಕಂಧಕಾಪಃ ಸಭೂಮಃ" ವೇಣಿಂ ೨-೧೧ |

**ಶಾಟ ರೂಾಟಿ (ಪುಂ)** 1. ಪೊದರು. ಶಾಟ (ಸಂಭಾತೆ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ವನ, ಅರಣ್ಯ, ಕಾಡು. 3. ಗಾಯ ಹುಣ್ಣು ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಉಜ್ಜಿ ತೊಳೆಯುವುದು. "ಶಾಟೋ ನಿಕುಂಜೇ ಕಾಂತಾರೆ ವ್ರಣಾದಿನಾಂ ಚ ಮಾರ್ಜನೇ" ಮೇದಿಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಶಾ -ಟಾ. 4. ನೆಲನಲ್ಲಿ ಗಿಡ. 5. ಕಾಡುಮಲ್ಲಿಗೆ ಗಿಡ.



ಜಾಟಲ ರೂಪಾಟಲ (ಪುಂ) ಮೊಕ್ಕಮರ.

ಜಾಟಿಕಾ ರೂಪಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೆಲನೆಲ್ಲಿ ಗಿಡ.

ಜಾಮಕ ರೂಪಾಟಿಕಾ (ನಂ) ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಬೆಂದಿರುವ ಇಟ್ಟಿಗೆ.  
ಜಮು (ಅದನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಫಲ್" (೩-೩-೧೧೩) ।

ಜಾಮರ ರೂಪಾಟಿಕಾ (ಪುಂ) ಚರಕದ ಕದಿರು ಮತ್ತು ಸೂಜಿ  
ಮುಟ್ಟುಗಳನ್ನು ಮೊನ್ನೆಮು ಮೊನ್ನೆಮು ಉಪಯೋಗಿಸುವ  
ಸಣ್ಣ ಸಾಣೆಕಲ್ಲು, ಮಸೆಗಲ್ಲು.

ಜಿಜ್ಞಿಷಿ ರೂಪಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಂಜು, ದೀವಟಿಗೆ.

ಜಿಣಿಕಾ ರೂಪಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಕ್ಕಳಕೆ, ಶ್ವಾಸಕೋಶದ  
ದ್ವಾರವು ಥಟ್ಟನೆ ಮುಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ  
ಶಬ್ದ. "ಜಿಣಿಕಾ ವಾತಸಂಚಾರೋ ಹಿಕ್ಕಾ ಹೇಕಾ ಚ  
ಹಿಕ್ಕಿಕಾ" ವೇಜಂ ।

ಜಿಣ್ಣಿ ರೂಪಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕರಿಯ ಹೂವಿನ ಗೋರಂಟಿ.  
2. ಮುಳ್ಳುಗೋರಂಟಿ. 3. ಹಳದಿ ಹೂವಿನ ಮುಳ್ಳು  
ಗೋರಂಟಿ. ಜಿಮ್ ಇತಿ ರತತಿ-ರತ(ಪರಿಭಾಷಣೆ) । "ಅಚ್"  
(೩-೧-೧೩೪) । ಪೃಷಂ । ಗೌರಾಂ "ಕಿಷ್" (೪-೧-೪೧) ।

ಜಿಣ್ಣಿಶ ರೂಪಾಟಿಕಾ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಮಹಾದೇವ.  
"ಜಿಣ್ಣಿಶವನ್ದಾ ಜಿಜ್ಞಾಸಕಾರಿಣಿ ಜಿಜ್ಞಾಸವತಿ" ।

ಜಿರಿ ರೂಪಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೇರುಂಡೆಹುಳ, ಒಂದು ಜಾತಿಯ  
ಮಿಡತೆ ಹುಳ.

ಜಿರಿಕಾ ರೂಪಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೇರುಂಡೆಹುಳ, ಒಂದು  
ಜಾತಿಯ ಮಿಡತೆ ಹುಳ.

ಜಿಲ್ಲಿಕಾ ರೂಪಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜೇರುಂಡೆ ಹುಳ, ಒಂದು  
ಜಾತಿಯ ಮಿಡತೆ. 2. ಬಿಸಿಲಿನ ಪ್ರಕಾಶ, ಬಿಸಿಲಿನ ಬೆಳಕು.

3. ದೀಪದ ಬತ್ತಿ. 4. ಮೈಗೆ ಪುಡಿಯನ್ನು ಹಚ್ಚುವ ವಸ್ತ್ರ.  
"ಜಿಲ್ಲಿಕೋದ್ದತನಪಟೇ ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ದೋತೇ ಚ ಜಿಲ್ಲಿಕಾ । ಆತಪಸ್ಯ  
ಹುಚಿ" ಮೇದಿಂ । 5. ಕಣ್ಣಿನ ಹುಬ್ಬು. "ಲಲಾಟಮಲಿಕಂ  
ಗೋಧಿ: ಸ್ತ್ರೀ ತತ್ಪ್ರಾಂತೌ ತು ಶಬ್ದಕೌ । ಭ್ರೂಜಿಲ್ಲಿಕಾ" ವೇಜಂ ।

ಜಿಲ್ಲಿ ರೂಪಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜೇರುಂಡೆ ಹುಳ, ಒಂದು  
ಜಾತಿಯ ಮಿಡತೆ ಹುಳ. 2. ಬಿಸಿಲಿನ ಪ್ರಕಾಶ, ಬಿಸಿಲಿನ  
ಬೆಳಕು. 3. ದೀಪದ ಬತ್ತಿ. 4. ಮೈಗೆ ಪುಡಿಯನ್ನು  
ಹಚ್ಚುವ ವಸ್ತ್ರ. "ಜಿಲ್ಲಿ ಚೀರ್ಯಾತಪರೋವರ್ತಿಯಾಂ ದ್ವರ್ತನಾಂ  
ಶುಕೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಜಿಲ್ಲಿಕ ರೂಪಾಟಿಕಾ (ಪುಂ) ಜೇರುಂಡೆ ಹುಳ.

ಜಿಲ್ಲಿಕಣ್ಣ ರೂಪಾಟಿಕಾ (ಪುಂ) ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಸಾಕಿದ  
ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ. "ಪ್ರಸಾದಕುಕ್ಕುಟೋ ಜಿಲ್ಲಿಕಣ್ಣೋ ಗೃಹ  
ಕಪೋತಕ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಜಿರಿಕಾ ರೂಪಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೇರುಂಡೆ ಹುಳ.

ಜಿರಿಕಾ ರೂಪಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೇರುಂಡೆ ಹುಳ, ಒಂದು  
ಜಾತಿಯ ಮಿಡತೆ.

ಜಿಣ್ಣಿ ರೂಪಾಟಿಕಾ (ಪುಂ) ನಿಕುಂಡ, ಪೊದರು.

ಜಿಣ್ಣಿ ರೂಪಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಡಕೆ. 2. ಕಠಿನ ಶಬ್ದ,  
ಅಪಶಬ್ದ, ದುರದೃಷ್ಟವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಶಬ್ದ. "ಜಿಣ್ಣಿ:  
ಕಠಿನಪೂಗಯೋ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಜಿಣ್ಣಿ ರೂಪಾಟಿಕಾ (ಪುಂ) ಅಡಕೆ ಮರ.

ಜಿಣ್ಣಿ ರೂಪಾಟಿಕಾ (ವಿಂ) ಹಾಡುವಾಗ ಸಿಟ್ಟು ಮೋರೆ  
ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವವನು.

ಜಿಣ್ಣಿ ರೂಪಾಟಿಕಾ (ಪುಂ) ಒಂದು ಸಣ್ಣ ಬೀಲ.

ಇತಿ "ಜ" ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್ ।

ಜ

ಜ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ "ಚ" ಮೊದಲಾದ ಐದನೆಯ  
ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಂತರ ಸ್ವರಗಳ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ತಾಳು ಮತ್ತು  
ನಾಸಿಕೆ(ಮೂಗು)ಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಅಕ್ಷರ. "ಜಮಡಗನಾನಾಂ  
ನಾಸಿಕಾ ಚ" ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ಜ ಇ (ಪುಂ) 1. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. 2. ಶುಕ್ರಗ್ರಹ. 3. ಹಾಡು  
ವವನು, ಸಂಗೀತಗಾರ. 4. ಫರ್ಫರ ಶಬ್ದ. ಕಿರುಗಂಟಿಯ

ಧ್ವನಿ. 5. ಸಂಪ್ರದಾಯ ಬಾಹಿರನಾದವನು, ವಾಮ  
ಪಂಥ ಹಿಡಿದವನು. "ಜ: ಪುಮಾನ್ ಸ್ಯಾದ್ವಲಿವದೇ ಶುಕ್ರೇ ವಾಮ-  
ಮತಾವಪಿ" ಮೇದಿಂ । "ಜಕಾರೋ ಗಾಯನೇ ಪ್ರೋಕ್ತೋ ಜಕಾರೋ  
ವರ್ಧರಧ್ವನಿ" ಏಕಾಂ ।

ಜಕಾರ ಇಕಾರ (ಪುಂ) "ಜ" ಎಂಬ ಅಕ್ಷರ. ಜ "ಕಾರ:"  
(ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮) ।

ಇತಿ "ಜ" ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್ ।



ಠ

ಠ ಟ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ "ಠ" ಮರ್ಗದ ಮೊದಲ ನೆಯ ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಂತರಸ್ಪೃಷ್ಠಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಮೂರ್ಧನ್ಯಾದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಅಕ್ಷರ. "ಕಾದಯೋ ಮಾವಸಾನಾಃ ಸ್ಪರ್ಶಾಃ" "ಋತುರಣಾಂ ಮೂರ್ಧಾ" ಸಿಂ ಕೊಂ ।

ಠ ಟ (ಪುಂ) 1. ಧ್ವನಿ, ಶಬ್ದ. 2. ವಾಮನ, ಕುಳ್ಳ, ಗಿಡ್ಡ. 3. ಒಂದು ಪಾದ, ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. "ಠ: ಪುಮಾನ್ ವಾಮನೇ ಪಾದೇ ನಿ:ಸ್ವನೇಽಪಿ ಕ್ವಚಿನ್ಮತ:" ಮೇದಿಂ । 4. ವಾಯುಸ, ಕಣ. 5. ಧೂಮ, ಹೊಗೆ. 6. ಚಾಪ, ಧನುಸ್ಸು. 7. ಸೂರ್ಯನ ಕಿರಣ. 8. ಕವಾಟ, ಬಾಗಿಲು. 9. ಪುತ್ರ, ಮಗ. 10. ಸುಳಿ. (ನಂ) 11. ಒಳಗೆ ತಿರುಳಿಲ್ಲದ ತೆಂಗಿನಕಾಯಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಠಾ ಟಾ. 12. ಶಪಥ, ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. 13. ಭೂಮಿ. 14. ಅವೃತ್ತಿ. "ಠ: ಪುಮಾನ್ ಕರತೇ ಭೂಮೇ ಚಾಪೇರ್ಜಕಿರಣಂ ಧವನಿ । ಕವಾಟಾವತಯೋ-ಸ್ತುನಿ ಭೂಮಾವತಯೋಸ್ತು ಠಾ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ನಾನಾರ್ಥಂ ।

ಠಕಾರ ಟಿಕಾರ (ಪುಂ) "ಟ" ಎಂಬ ಅಕ್ಷರ. ಠ "ಕಾರ:" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮) ।

ಠಕಕ ಟಿಕಕ (ಪುಂ) ಒಂದು ದೇಶ. ಇದು ವಿಪಾಶ ಮತ್ತು ಸಿಂಧು ನದಿಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವುದು.

ಠಕಕದೇಶೀಯ ಟಿಕಕದೇಶೀಯ (ಪುಂ) ಚಕ್ರೋತ್ತಮ ಸೊಪ್ಪು. "ವಾಸ್ತುಕಠಕದೇಶೀಯ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಠಗರ ಟಿಗರ (ಪುಂ) 1. ಬಿಳಿಗಾರ, ಚಿನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿಗಳನ್ನು ಶುದ್ಧ ಮಾಡುವ ಉಪ್ಪು, ಟಂಕಣಕ್ಷಾರ. 2. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಶೃಂಗಾರ ಭಾವದಿಂದ ಉಂಟಾದ ವಿಲಾಸಕ್ಕೆ ವಿಷಯವಾದುದು. (ವಿಂ) 3. ಮಾಲುಗಣ್ಣಿನವನು, ಮೆದ್ದೆದೃಷ್ಟಿಯುಳ್ಳವನು, ಒರೆನೋಟವಳ್ಳವನು. "ಠಗರಠಕುಣ್ಣಸಾರೆ ಹೇಲಾವಿಭ್ರಮ-ಗೋಚರೇ । ನಾನ್ಯವತ್ ಕೇಕರಾಶೋ ಸ್ಯಾತ್" ಮೇದಿಂ ।

ಠಕ್ಕ ಟಿಂಕ (ಪುಂ) 1. ಕಲ್ಲುಳ, ಕಲ್ಲನ್ನು ಒಡೆಯುವ ಕಲ್ಲು ಕುಟ್ಟಿಗನ ಉಳಿ. ಠಕ್ಕಯತಿ - ಠಕಿ (ಕವಚ) + ಷಿವ್ "ಅವ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ಕುರೋ ರಾಮಂ ಕೃಷ್ಣೀವ ಠಕ್ಕ-ಚ್ಚಿತ್ತಮನ:ಶಿಲ:" ರಘುಂ ೧೨-೮೦ । 2. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. 3. ಕೋಪ. 4. ಕೋಶ, ಕತ್ತಿಯ ಒರೆ. (ಪುಂ) 5. ಗುದ್ದಲಿ, ನೆಲವನ್ನು ಅಗೆಯಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ಆಯುಧ. 6. ಕೈಕೊಡಲಿ. 7. ಕಪಿತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಬೇಲದ ಮರ. 8. ಚಿನ್ನವನ್ನು ಶುದ್ಧ ಮಾಡುವ ಒಂದು ಧಾತು, ಟಂಕಣ. 9. ದರ್ಪ, ಕೊಬ್ಬು, ಗರ್ವ. 10. ನಾಲ್ಕು ಮಾಷಗಳಿಗೆ ಸಮವಾದ ತೂಕ. (ಒಂದು ಮಾಷಕ್ಕೆ 5

ಗುಲಗಂಜಿಗಳ ತೂಕ.) 11. ಬೆಟ್ಟದ ಇಳಿಜಾರು ಪ್ರದೇಶ. "ಹಿಮಾದ್ರಿಠಕ್ಕಾದಿವ ಭಾಂತಿ ಯಸ್ಯಾಂ ಗಜ್ಜಾಮ್ಬುಪಾತಪ್ರತಿಮಾ ಗೃಹೇಮ್ಯ:" ಭट्टಿಂ ೧-೮ । 12. ಮುದ್ರಿಸಿದ ಬೆಳ್ಳಿ ನಾಣ್ಯ, ಮುದ್ರೆಹೊಡೆದ ನಾಣ್ಯ. (ನಂ) 13. ಬೇಲದಹಣ್ಣು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಠಕ್ಕಾ ಟಿಂಕಾ. 14. ಮೊಳಕಾಲು. "ಠಕ್ಕೋ ನೀಲಕಪಿತಥೇ ಚ ಕ್ಷನಿತ್ರೇ ಠಕ್ಕನೇಽಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ । ಜಹ್ಣಾಪಾಂ ಸ್ತ್ರೀ ಪುಮಾನ್ ಕೋಪೇ ಕೋಶಾಸಿಗ್ರಾವದಾರಣೇ" ಮೇದಿಂ । "ಠಕ್ಕೋ ಪ್ರಮಾಣಗರ್ವಿ ಚ" ವೈಜಂ ।

ಠಕ್ಕಕ ಟಿಂಕಕ (ಪುಂ) ಮುದ್ರಿಸಿದ ಬೆಳ್ಳಿ ನಾಣ್ಯ, ಮುದ್ರೆ ಹೊಡೆದ ನಾಣ್ಯ.

ಠಕ್ಕಕಪತಿ ಟಿಂಕಕಪತಿ (ಪುಂ) ಟಂಕಸಾಲೆಯ ಅಧ್ಯಕ್ಷ, ನಾಣ್ಯಗಳನ್ನು ಮುದ್ರಿಸುವ ಶಾಲೆಯ ಅಧಿಕಾರಿ.

ಠಕ್ಕಕಶಾಲಾ ಟಿಂಕಕಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾಣ್ಯಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ ಮನೆ (ಕಾರ್ಖಾನೆ), ಟಂಕಸಾಲೆ.

ಠಕ್ಕಟೀಕ ಟಿಂಕಟೀಕ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಠಕ್ಕ ಇವ ಟೀಕತೆ - ಟೀಕ (ಗತೌ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೪) । "ಮಿಹಿರಾಣಿ ಜಗದ್ವಿನಿಠಕ್ಕಟೀಕೋಽಜವಾಹನ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಠಕ್ಕನ ಟಿಂಕನ (ಪುಂ) 1. ಬಿಳಿಗಾರ, ಚಿನ್ನವನ್ನು ಶುದ್ಧ ಮಾಡುವ ಒಂದು ಕ್ಷಾರ. 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕುದುರೆ. "ಠಕ್ಕನಖರನಖರಖಂಡಿತಹರಿತಾಲಪಾಂಶುಲೇನ" ಕಾದಂ ।

ಠಕ್ಕಯತಿ ಟಿಂಕಪತಿ (ಪುಂ) ಟಂಕಸಾಲೆಯ ಅಧ್ಯಕ್ಷ.

ಠಕ್ಕವತ್ ಟಿಂಕವತ್ (ಪುಂ) ಪವ=ತ, ಬೆಟ್ಟ. ಠಕ್ಕೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪) । "ಠಕ್ಕವಂತಂ ಶಿಖರಣಿಂ ವಂದೇ ಪ್ರಸವಣಂ ಗಿರಿಮ್" ರಾಮಾಂ ।

ಠಕ್ಕಶಾಲಾ ಟಿಂಕಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾಣ್ಯಗಳನ್ನು ಮುದ್ರಿಸುವ (ತಯಾರಿಸುವ) ಮನೆ, ಟಂಕಸಾಲೆ.

ಠಕ್ಕಾ ಟಿಂಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೊಳಕಾಲು.

ಠಕ್ಕಾರ ಟಿಂಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಧನುಸ್ಸಿನ ಶಬ್ದ. ಠಮಿತ್ಯವ್ಯಕ್ತ-ಶಬ್ದಸ್ಯ ಕಾರ: । 2. ಅಶ್ವರ್ಯ. 3. ಕರುಚಾಟ, ಚಿರಾಟ. "ಸೃಗಾಲೋಲಕಠಕ್ಕಾರೈ: ಪ್ರಣೇದುರಶಿವಂ ಶಿವಾ:" ಭಾಗಂ ೩-೧೭-೯ । 4. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ, ಪ್ರಖ್ಯಾತಿ. "ಠಕ್ಕಾರೋ ವಿಸ್ಮಯೇ ಪುಸಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧೌ ಶಿಶ್ಜಿನಿಧವನಿ" ಮೇದಿಂ ।

ಠಕ್ಕಾರಿನ್ ಟಿಂಕಾರಿನ್ (ಪುಂ) ಶಬ್ದದಿಂದಕೂಡಿದ. ಠಕ್ಕಾರೋಽ-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಹನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) ।

ಠಕ್ಕ ಟಿಂಕ (ಪುಂ) 1. ಸನಿಕೆ, ಗುದ್ದಲಿ, ನೆಲವನ್ನು ಅಗೆಯುವ ಒಂದು ಆಯುಧ. ಠಕ್ಕ: ಪೃಷಂ । 2. ಖಡ್ಗ,



ಕತ್ತಿ. 3. ಮೊಳಕಾಲು. "ತಜ್ಞೋಽಸ್ಮಿ ಸ್ಯಾತ್ ಸನಿತ್ರಕೇ |  
ಖಜ್ಜಭೇದೇ ಚ ಜಜ್ಞಾಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ |

ತಜ್ಞಣ ಟಿಂಗಣ (ಪುಂ) ಟಿಂಕಣ.

ತಜ್ಞಿನಿ ಟಿಂಗಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀ) ಅಗುರುಶುಂಠಿ.

ತಜ್ಞಿನಿ ಟಿಟ್ಟಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀ) ಗೌಳಿ, ಹಲ್ಲಿ.

ತಜ್ಞರೀ ಟಿಟ್ಟರೀ (ಸ್ತ್ರೀ) 1. ಮಿಥ್ಯೆ, ಸುಳ್ಳು. 2. ಪಟಹ  
ವಾದ್ಯ, ತಮಟೆ. 3. ಪರಿಹಾಸ್ಯ, ಕುಚೋದ್ಯ, ತಮಾಷೆ,  
ಲೇವಡಿ. 4. ಕರಿಬಾಳೆ. "ತಜ್ಞರೀ ಸ್ಯಾನ್ಮೃಷಾವಾದೇ ಲಮ್ಪಾ-  
ಪಟಹವಾದ್ಯಯೋಃ" ಮೇದಿಂ |

ತಜ್ಞರ ಟಿಟ್ಟುರ (ಪುಂ) ನಗಾರಿಯ ಶಬ್ದ.

ತಾ ಟಾ (ಸ್ತ್ರೀ) "ತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ತಾಜ್ಞ ಟಾಂಕ (ನಂ) ಟಿಂಕಣಲದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ  
ಮದ್ಯ. "ಮಾಧ್ವಿಕಂ ತಾಜ್ಞಮಾರ್ತ್ವಿಕಮೇಯಂ ನಾಲಿಕೇರಜಮ್ |  
ಸಾಮಾನ್ಯಾನಿ ದ್ವಿಜಾತೀನಾಂ ಮಧ್ಯಾನ್ಯೇಕಾದಶೈವ ಚ | ದ್ವಾದಶಂ ತು  
ಸುರಾಮಘಂ ಸರ್ವೇಷಾಮಧಮಂ ಸ್ಮೃತಮ್" ಇತಿ ಪುಲಸ್ತಯಃ |

ತಾರ ಟಾರ (ಪುಂ) ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. ತಾಂ ಭೂಮಿಮುಚ್ಛತಿ—ಋ  
(ಗತೌ) "ಅಞ್" (೩-೨-೧) |

ತಿಟ್ಟಿಭ ಟಿಟ್ಟಿಭ (ಪುಂ) ಟಿಟ್ಟಿಭವೆಂಬ ಒಂದು ಜಾತಿಯ  
ಪಕ್ಷಿ. ತಿಟ್ಟಿತಿ ಅವ್ಯಕ್ತಂ ಭಣತಿ—ಭಣ (ಶಬ್ದೇ) "ಙಃ"

(೩-೨-೧೦೧) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಙೀಷ್" (೪-೧-೬೩) |

-ಭೀ-ಭೀ. "ಪ್ರಸವಾನಂತರಂ ಪ್ರಾಣಯಾತ್ರಾರ್ಥಂ ಗತಾಯಾಃ ತಿಟ್ಟಿಮ್ಯಾಃ  
ಸಮುದ್ರೋ ವೇಲಾವ್ಯಾಜೇನಾಣ್ಡಾನ್ಯಪಜಹಾರ" ಪञ्ಚತಂ ೧ | ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಕಃ" | -ಭಕಃ-ಭಕಃ.

ತಿಟ್ಟಣ ಟಿಟ್ಟಣ (ನಂ) ಟೀಕೆ, ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ, ಶಬ್ದಾರ್ಥ  
ವಿವರಣೆ. ತಿಪ (ಕ್ಷೇಪೇ) "ವಿವ್" (೩-೨-೬೧) | ತಿಪಾ  
ಪಣ್ಯತೇ—ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರೇ ಸ್ತುತೌ ಚ) ಏತರ್ಥ "ಕಃ"  
(ವಾಂ ೩-೩-೪೮) | ಗೌರಾಂ "ಙೀಷ್" (೪-೧-೪೧) |  
-ಣಿ-ಣೀ.

ತೀಕಾ ಟೀಕಾ (ಸ್ತ್ರೀ) ಕ್ಲಿಷ್ಟಪದಗಳ ಅರ್ಥವಿವರಣೆ  
ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ. ತೀಕ (ಗತೌ) ಕರಂ "ಏಕ್" (೩-೩-೧೨೧) |  
ವ್ಯಾಖ್ಯಾನವೂ ಕ್ಲಿಷ್ಟವಾಗಿರುವಲ್ಲಿ ಅದರ ಅರ್ಥ  
ವಿವರಣೆಯು ಟೀಕೆಯೆನಿಸುವುದು.

ತುಟ್ಟುಕ ಟುಂಟುಕ (ಪುಂ) 1. ಹೆಮ್ಮರ, ತಿಗಡುಮರ.  
(ವಿಂ) 2. ಕ್ರೂರ, ದಯೆಯಿಲ್ಲದ. 3. ಅಲ್ಪ, ನೀಚ,  
ಕೆಳಮಟ್ಟದ. "ತುಟ್ಟುಕಃ ಶೋಣಕಾಲ್ಪಯೋಃ" ಮೇದಿಂ |

ತೇರಕ ಟೇರಕ (ವಿಂ) ಓರೆಗಣ್ಣಿನವನು.

ತೊಟ ಟೋಟಿ (ವಿಂ) 1. ಹೀನವಾದ, ನೀಚವಾದ, ತುಚ್ಛ  
ವಾದ. 2. ಅಲ್ಪ, ಸ್ವಲ್ಪ.

ಇತಿ "ತ" ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್ |

ಠ

ಠ ಠ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ "ತ" ವರ್ಗದ ಎರಡನೆಯ  
ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಂತರಸ್ಪೃಷ್ಠ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಮೂರ್ಧಸ್ಥಾನ  
ದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಅಕ್ಷರ. "ಕಾದಯೋ ಮಾವಸಾನಾಃ ಸ್ಪರ್ಶಾಃ"  
"ಋತುರಣಾಣಾಂ ಮೂರ್ಷಾ" ಸಿಂ ಕೌಂ |

ಠ ಠ (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ, ಶಂಕರ. 2. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ.  
(ನಂ) 3. ಚಂದ್ರಮಂಡಲ. 4. ಧ್ವನಿ, ಶಬ್ದ. 5. ಉಬ.  
6. ತಡೆಯುವುದು. 7. ಸಾಹಸ. "ಠಃ ಶಕ್ತೋ ಬೃಹದ್ರಾಣಿ  
ಠ ಕ್ಲಿವಿ ಚಂದ್ರಮಂಡಲೇ | ಸ್ತಂಭನೇ ಸಾಹಸೇ ಚಾಪಿ ತ್ರಿಘ್ನ

ಶೂನ್ಯೇ ಶತೇ ದೃಢೇ" ನಾನಾರ್ಥಂ | (ವಿಂ) 8. ಶೂನ್ಯವಾದ.  
9. ಮೂರ್ಖನಾದ. 10. ದೃಢವಾದ. 11. ಜನತೆಗೆ  
ಗೋಚರವಾದ. 12. ಜನರ ಸಮೂಹ.

ಠಕಾರ ಠಕಾರ (ಪುಂ) "ಠ" ಎಂಬ ಅಕ್ಷರ.

ಠಕ್ಕುರ ಠಕ್ಕುರ (ಪುಂ) 1. ದೇವರ ವಿಗ್ರಹ. 2. ಹೆಸರಿನ  
ಜೊತೆಗೆ ಸೇರಿಸುವ ಒಂದು ಪದ, ವ್ಯಕ್ತಿಯ ಮೇಲ್ಮೈಯನ್ನು  
ಸೂಚಿಸುವ ಒಂದು ಉಪಪದ. 3. ದೇವತೆ.

ಇತಿ "ಠ" ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್ |



ಢ

ಢ ಢ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ "ಢ" ವರ್ಗದ ಮೂರನೆಯ ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಂತರಸ್ವರಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಮೂರ್ಧನ್ಯಾನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಅಕ್ಷರ. "ಕಾದಯೋ ಮಾವಸಾನಾಃ ಸ್ಪರ್ಶಾಃ" "ಋತುರಣಾಣಾಂ ಮೂರ್ಧಾ" ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ಢ ಢ (ಪುಂ) 1. ಓವ, ಈಶ್ವರ, ಶಂಕರ. 2. ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ. 3. ಬಡಬಾಗಿ. 4. ಭಯ. "ಢಕಾರಃ ಶಕ್ತುರೇ ತ್ರಾಸೇ ಧ್ವನೌ ಭೀಮೇ ನಿರೂಚ್ಯತೇ" ಏಕಾಂ । 5. ದೇಶ. 6. ಹಾಸ, ನಗು. 7. ಕ್ಷಯ, ನಾಶ. 8. ಶಂಖಧ್ವನಿ. 9. ರೌದ್ರರಸ. (ನಂ) 10. ಢಮರುವಾದ್ಯ, ಬುಡುಬುಡಿಕೆ. 11. ದುರ್ಗ. 12. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. 13. ನಗಾರಿ. 14. ಆಂದೋಳನ, ತೂಗಾಡುವುದು, ಜೋಲಾಡುವುದು. (ವಿಂ) 15. ಗಾಯಕ, ಹಾಡುವವನು. 16. ಒಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಢಾ ಢಾ. 17. ಲಜ್ಜೆ, ನಾಚಿಕೆ. 18. ವಾಕ್ಯ, ಮಾತು. 19. ಡಾಕಿನಿ. "ಢಃ ಪುಮಾನ್ ವಿಷಯೇ ಶಂಭೌ ಹಾಸೇ ತ್ರಾಸೇ ಕ್ಷಯೇ ಧ್ವನೌ । ಶಕ್ತುಧ್ವನೌ ರೌದ್ರರಸೇ ಕ್ರಿಡಾವಾಚೋಸ್ತು ಢಾ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ । ಢ ಕಲಿಬೇ ಡಾಮರೇ ದುರ್ಗಂ ಪಟೇ ಢಮರಕೇಽಪಿ ಚ । ಆಂದೋಲನೇ ಚ ತ್ರಿಪು ತು ಢಶಬ್ದೋ ಗಾಯನೇ ಜಢೇ" ನಾನಾರ್ಥಂ । "ಢಃ ಪುಮಾನ್ ಬಾಡಬಾಗ್ನೌ ಸ್ಯಾಡ್ಭಾಕಿನ್ಯಾಂ ಸ್ತ್ರೀ ನಿಗದ್ಯತೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಢಕಾರ ಢಕಾರ (ಪುಂ) "ಢ" ಎಂಬ ಅಕ್ಷರ. ಢ "ಕಾರಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮) ।

ಢಕಕನ ಢಕಕನ (ನಂ) ತರಗಲೆ ಬಟ್ಟೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಮರ್ಮರ ಶಬ್ದ.

ಢಕ್ಕ ಢಂಕ (ಪುಂ) ಬೀಜದ ಹೋರಿ, ಗರ್ಭವುಂಟುಮಾಡುವ ವೃಷಭ. "ವೃಷಸ್ತು ಗೋಪತಿಃ ಶ್ರೀಮಾನ್ ಢಕ್ಕ ಇತರ ಇಶ್ವರಃ" ವೈಜಂ ।

ಢಮ ಢಮ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು.

ಢಮತ್ ಢಮತ್ (ವಿಂ) ಢಮ ಎಂದು ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ.

ಢಮರ ಢಮರ (ನಂ) 1. ಭಯದಿಂದ ಓಡಿಹೋಗುವುದು. "ಶೃಗಾಲಿಕಾ ಚ ಡಿಂಬಂ ಚ ಢಮರಂ ವಿದ್ರವೋಽಪಿ ಚ" ಹಾರಾಂ । 2. ಮುನ್ನೂಚನೆ, ಮುನ್ನೆಚ್ಚರಿಕೆ, ಶಕುನ. 3. ಉಪಪ್ಲವ, ಉಪದ್ರವ.

ಢಮರ ಢಮರು (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ವಿಧ ವಾದ್ಯ, ಬುಡು ಬುಡಿಕೆ. "ವಾಘಪ್ರಭೇದಾ ಢಮರಮಡ್ಛುಡಿಢಿಢಮಜ್ಜರಾಃ" ವೈಜಂ । ಢಮಿತಿ ಶಬ್ದಂ ಧರ್ಯತಿ-ಋ (ಗತೌ) "ಕುಃ" (ಉಂ ೧-೩೭) । "ಸಾರ್ಥ ಢಮಡ್ಛುಡಾಕೃತಿಹೃತಭೂತವರ್ಗೇಣ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೩-೧೫ । 2. ಚಮತ್ಕಾರ. "ಢಮರಸ್ತು ಚಮತ್ಕಾರಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಢಮರಕ ಢಮರುಕ (ನಂ) ಬುಡುಬುಡಿಕೆ. ಢಮರ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ" । "ಸೂತ್ರಕೋಣ ಢಮರಕಮ್" ಹಾರಾಂ ।

ಢಮರ ಢಂಬರ (ಪುಂ) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. 2. ಅಡಂಬರ, ಅಟ್ಟಹಾಸ. "ಅಜಾಯುಡ್ಧೇ ಋಷಿಶ್ರಾದ್ಧೇ ಪ್ರಭಾತೇ ಮೇವಢಮರಃ" ಚಾಣಕ್ಯಃ । 3. ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ. "ಹೇರಮ್ಬಮಮ್ಬುಹಢಮರ-ಚೌರೈನಿಘ್ನಂ ವಿಘ್ನಾದಿಭೇದಶತಧಾರಧುರನ್ವರಂ ನಃ" ವಂ ಭಾಂ । 4. ಸೌಂದರ್ಯ, ಸೊಬಗು.

ಢಮ ಢಂಭ (ಪುಂ) ಇತರರನ್ನು ಮೆಚ್ಚಿಸಲು ಧರ್ಮಾಚರಣೆಯುಳ್ಳವನು, ಕೀರ್ತಿಯನ್ನು ಗಳಿಸಲು ಕಾರ್ಯಮಾಡುವವನು.

ಢಯನ ಢಯನ (ನಂ) 1. ಹಕ್ಕಿಗಳ ಹಾರಾಟ, ಹಕ್ಕಿಗಳು ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವುದು. ಡಿಙ್ (ವಿಹಾಯಸಾ ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಪಲ್ಲಕ್ಕಿ, ಮನುಷ್ಯರು ಹೊರುವ ಒಂದು ವಾಹನ. ಡಿಙ್ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) ।

ಢಯನೀಯ ಢಯನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಹಾರಬೇಕಾದ, ಆಕಾಶ ಮಾರ್ಗದಿಂದ ಸಂಚರಿಸಬೇಕಾದ. ಡಿಙ್ (ವಿಹಾಯಸಾ ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । 2. ಹಾರಲು ಶಕ್ತವಾದ. 3. ಹಾರಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬) । ಡಯಿತವ್ಯಮ್ ಢಯಿತವ್ಯಮ್.

ಢಯಮಾನ ಢಯಮಾನ (ವಿಂ) ಹಾರಾಡುತ್ತಿರುವ, ಆಕಾಶ ಮಾರ್ಗದಿಂದ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಡಿಙ್ (ವಿಹಾಯಸಾ ಗತೌ) "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

ಢಯಿತ ಢಯಿತ (ನಂ) 1. ಹಾರಾಟ, ಆಕಾಶಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಸಂಚಾರ. ಡಿಙ್ (ವಿಹಾಯಸಾ ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) । (ವಿಂ) 2. ಆಕಾಶಮಾರ್ಗದಿಂದ ಸಂಚರಿಸಿದ. ಡಿಙ್ ಕರಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) ।

ಢಲ್ಲಕ ಢಲ್ಲಕ (ನಂ) ಬಿದಿರಿನ ಪಾತ್ರೆ.

ಢವಿತ್ಯ ಢವಿತ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಮರದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮೃಗ, ಮರದ ಜಿಂಕೆ. "ಢವಿತ್ಯಃ ಕಾಷ್ಠಮಯೋ ಹಸ್ತೀ ಢವಿತ್ಯ-ಸ್ತನ್ಮಯೋ ಮೃಗಃ" । 2. ಒಂದು ಸಂಜ್ಞಾ ಶಬ್ದ. ಢವಿತ್ಯಃ, ಢವಿತ್ಯಃ ಇತ್ಯಾದಿ ಅವ್ಯಯವು ಶಬ್ದ. ಒಬ್ಬ ವ್ಯಕ್ತಿಯನ್ನು ಹೇಳುವ ಸಂಕೇತ ಶಬ್ದವಿದು. "ದ್ರವ್ಯಶಬ್ದಾ ಏಕವ್ಯಕ್ತಿ-ವಾಚಿನೋ ಹರಿಹರಢವಿತ್ಯಢವಿತ್ಯಾದಯಃ" ಸಾಂ ದಂ ।

ಢಹು ಢಹು (ಪುಂ) ಗಜನಿಂಬಿ ಗಿಡ. ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) "ಕುಃ" (ಉಂ ೧-೩೭) । ನಿಪಾಂ । "ಲಕುಚೋ ಲಿಕುಚೋ ಢಹುಃ" ಅಮಂ ।



**ಶಾಕಿನಿ ಡಾಕಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ತೋಭೂತ, ಹೆಣ್ಣುದೆವ್ವ.

2. ದೇವಿಯ ಅನುಚರಿಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬಳು.

**ಶಾಕ್ಷಾರ ಡಾಂಕಾರ** (ಪುಂ) ಡಾಮ್ ಎಂಬ ಶಬ್ದ.

**ಶಾಕ್ಷುತಿ ಡಾಂಕೃತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಡಾಮ್ ಎಂಬ ಶಬ್ದ. "ಸಾರ್ವ  
ಡಮಡುಮಡಾಂಕೃತಿಹೂತಭೂತವರ್ಗಣ" ಪ್ರಬಂಧಂ ೩-೧೫.

**ಶಾಮರ ಡಾನುರ** (ಪುಂ) 1. ಕಾದಾಟ, ದೊಂಬಿಯ ಜಗಳ,  
ಅಶಾಂತಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಕಲಹ. 2. ಜಗಳದ  
ಗಲಿಬಲಿ, ಗೊಂದಲ, ಗಲಭೆ. 3. ಅಶ್ವರ್ಯಕರವಾದ  
ನೋಟ. (ವಿಂ) 4. ಭಯಂಕರವಾದ. "ಪರ್ಯಾಪ್ತಂ ಮಯಿ  
ರಮಣೀಯಡಾಮರತ್ನಂ ಸಂಧ್ಯತೇ ಗಗನತಲಪ್ರಯಾಣವೇಗಃ" ಮಾಲತೀಂ  
೫-೩. 5. ಸುಂದರವಾದ, ಸೊಗಸಾದ. "ರತಿಗಲಿತೇ  
ಲಲಿತೇ ಕುಸುಮಾನಿ ಶಿಖಂಡಿಶಿಖಂಡಕಡಾಮರೇ" ಗೀತಗೋ,  
೨೨-೬.

**ಶಾಮರವ ಡಾನುರನ** (ವಿಂ) ಡಮರುವಾದ್ಯಸಂಬಂಧವಾದ,  
ಬುಡುಬುಡಿಕೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ (ಶಬ್ದ). ಡಮರೋರಾಗತಃ  
"ಅಣ್" (೪-೩-೭೬).

**ಶಾಯನ ಡಾಯನ** (ನಂ) ಹಾರಾಡಿಸುವುದು, ಆಕಾಶಮಾರ್ಗ  
ದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ಡಿಡ್ (ವಿಹಾಯಸಾ  
ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫).

**ಶಾಯನೀಯ ಡಾಯನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಹಾರಾಡುವಂತೆ  
ಮಾಡಬೇಕಾದ. 2. ಹಾರಾಡುವಂತೆ ಮಾಡಲು ಶಕ್ತ  
ವಾದ. 3. ಹಾರಾಡುವಂತೆ ಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.  
ಡಿಡ್ (ವಿಹಾಯಸಾ ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬).  
"ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬). ಶಾಯಯಿತವ್ಯಃ ಡಾಯಯಿತವ್ಯಃ.

**ಶಾಯಯತ್ ಡಾಯಯತ್** (ವಿಂ) ಹಾರಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ.  
ಡಿಡ್ (ವಿಹಾಯಸಾ ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪).  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). -ಯಂತಿ-ಯಂತೀ.  
"ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪). ಶಾಯಯಮಾನಃ ಡಾಯಯ  
ಮಾನಃ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪). -ಮಾನಾ  
-ಮಾನಾ.

**ಶಾಯಿತ ಡಾಯಿತ** (ನಂ) 1. ಹಾರಾಡಿಸುವುದು. ಡಿಡ್  
(ವಿಹಾಯಸಾ ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫).  
(ವಿಂ) 2. ಹಾರಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಆಕಾಶಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿ  
ಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಡಿಡ್ + ಣಿಕ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ"  
(೩-೨-೧೦೨).

**ಶಾಯಿತವತ್ ಡಾಯಿತವತ್** (ವಿಂ) ಆಕಾಶಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ  
ಹಾರುವಂತೆ ಮಾಡಿದವನು. ಡಿಡ್ (ವಿಹಾಯಸಾ ಗತೌ) +  
ಣಿಕ್ "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨).

**ಶಾಯಿತ ಡಾಯಿತ** (ವಿಂ) ಹಾರಾಡಿಸುವವನು. ಡಿಡ್  
(ವಿಹಾಯಸಾ ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩).  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫). -ಶ್ರೀ-ಶ್ರೀ.

**ಶಾಹಲ ಡಾಹಲ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಬೇದಿದೇಶ. 2. ಬೇದಿ  
ದೇಶದ ಜನರು, ಜೈದ್ಯರು.

**ಶಿಕ್ಷಾರ ಡಿಂಗರ** (ಪುಂ) 1. ಸೇವಕ, ಆಳು. 2. ವಂಚಕ.  
ಮೋಸಗಾರ.

**ಶಿಕ್ಷಿಕ ಡಿಂಡಿಕ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಇಲಿ.

**ಶಿಕ್ಷಿಮ ಡಿಂಡಿಮ** (ಪುಂ) ಧಿಮಕಿಯೆಂಬ ಒಂದು ವಾದ್ಯ.  
ಡಿಮ್ ಡಿಮ್ ಇತಿ ಶಬ್ದಂ ಮಿನೋತಿ - ಡು ಮಿಮ್ (ಪ್ರಕ್ಷೇಪಣಂ)  
"ಡಃ" (೩-೨-೧೦೧). "ಇತಿ ಘೋಷಯತೀವ ಶಿಕ್ಷಿಮಃ"  
ಹಿತೋಂ.

**ಶಿಕ್ಷಿರ ಡಿಂಡೀರ** (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರದ ನೋರೆ. "ಶಿಕ್ಷಿಡ್"  
ಇತಿ ಶಬ್ದಮೀರಯತಿ-ಇರ (ಗತೌ ಕಮ್ಯನೇ ಚ) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್"  
(೩-೧-೧೩೪). "ಶಿಕ್ಷಿರೋಽಪ್ಪಿಕಃ ಫೇನಃ" ಅಮಂ.

**ಶಿತ್ಥ ಡಿತ್ಥ** (ಪುಂ) 1. ಮರದ ಅನೆ, ಮರದಿಂದ ತಯಾರಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ ಗಜ. "ಶಿತ್ಥಃ ಕಾಠಮಯೋ ಹಸ್ತೀ ಡಿವಿತ್ಥಸ್ತನ್ಮಯೋ  
ಮೃಗಃ" 2. ಒಂದು ಸಂಜ್ಞಾ ಶಬ್ದ. ["ಡಿವಿತ್ಥ" ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.]

**ಡಿಮ ಡಿಮ** (ಪುಂ) ನಾಟಕ ಮೊದಲಾದ ಹತ್ತು ರೂಪಕಗಳಲ್ಲಿ  
ಒಂದು, ಒಂದು ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯ. ಡಿಮ ರೂಪಕದಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕು  
ಅಂಕಗಳು ಮಾತ್ರವಿರುವವು. ವಿಷ್ಣುಂಭ ಮತ್ತು ಪ್ರವೇಶಕ  
ಗಳಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಮಾಯೆ, ಇಂದ್ರಜಾಲ, ಯುದ್ಧ ಇತ್ಯಾದಿ  
ವ್ಯಾಪಾರಗಳಿಂದಲೂ ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರ ಗ್ರಹಣ ವೃತ್ತಾಂತ  
ಗಳಿಂದಲೂ ಕೂಡಿರುವುದು. ಡಿಮದಲ್ಲಿ ರೌದ್ರರಸವು  
ಮುಖ್ಯವಾಗಿಯೂ ಉಳಿದ ರಸಗಳು ಅಂಗಗಳಾಗಿಯೂ  
ಇರುವವು. ದೇವ ಗಂಧರ್ವ ಯಕ್ಷ ರಾಕ್ಷಸರೂ ಭೂತ  
ಪಿಶಾಚಗಳೂ ಇದರಲ್ಲಿ ನಾಯಕರು. "ಮಾಘೇಂದ್ರಜಾಲಸಂಗ್ರಾಮ-  
ಕ್ರೋಧೋದ್ಭ್ರಾಂತಾದಿವೇಷಿತಃ. ಉಪರಾಗಂಶ್ಚ ಭೂಮಿಷ್ಠೋ ಡಿಮಃ  
ಖ್ಯಾತೇತಿವೃತ್ತಕಃ. ಅಜ್ಞಿ ರೋದ್ರರಸಸ್ತತ್ರ ಸರ್ವೇಽಜ್ಞಾನಿ ರಸಾಃ  
ಪುನಃ. ಚತ್ವಾರೋಽಜ್ಞಾ ಮತಾ ನೇಹ ವಿಷ್ಕಮ್ಭಕಪ್ರವೇಶಕೌ.  
ನಾಯಕಾ ದೇವಗನ್ಧರ್ವಯಕ್ಷರಕ್ಷೋಮಹೋರಗಾಃ. ಭೂತಪ್ರೇತಪಿಶಾಚಾಃ  
ಛೋಡಶಾತ್ಯಂತಮುಢತಾಃ" ಸಾಂ ದಂ ೬. ಇದರಲ್ಲಿ ಅನೇಕ  
ನಾಯಕರಿರುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ "ಡಿಮಃ" ಎಂದು ಹೆಸರು.

**ಡಿಮ್ ಡಿಂಬ** (ಪುಂ) 1. ಭಯದ ಶಬ್ದ. 2. ಭಯ.  
3. ಅಂಡ, ಮೊಟ್ಟೆ, ತತ್ತಿ. 4. ವಿಪ್ಲವ, ದಂಗೆ, ಲಾಟಿ.  
5. ಪುಪ್ಪುಸ, ಶ್ವಾಸಕೋಶ. 6. ಭ್ರೂಣ, ಗರ್ಭ, ಹುಟ್ಟು  
ವುದಕ್ಕೆ ಮೊದಲಿನ ಅವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿರುವ (ಗರ್ಭದಲ್ಲಿರುವ)



ಶಿಶು. 7. ಹೊಟ್ಟೆಯ ಎಡಭಾಗದಲ್ಲಿ ಅನ್ನಕೋಶದ ಹಿಂದಿರುವ ಮೂಂಸಗ್ರಂಥಿ. 8. ದೇಹ, ಶರೀರ. "ಸ್ವಾದುಕಾರಂ ಕಾಲಕ್ಷಣೋಪದಂಶಂ ಕ್ರೋಷಾ ಡಿಂಬಂ ವ್ಯವಣದ್ವಯಸ್ವನಚ್ಚ" ಮಾಘಂ ೧೮-೭೭. 9. ಗರ್ಭಾಶಯ, ಗರ್ಭಕೋಶ ಬಸುರಿನ ಜೀಲ. "ಡಿಂಬೋ ಭಯಧನಾವಣೆ ಪುಂಫುಸಪ್ಲಿಹವಿಪ್ಲವೇ" ಮೇದಿಂ. 10. ಹರಳು ಗಿಡ. "ಡಿಂಬ ಉಣ್ಣಭಯಯೋವಿಪ್ಲವೇ ಪ್ಲಿಹಿ ಪುಂಫುಸೇ" ಹೇಮಂ.

**ಡಿಂಬಯುಧ ಡಿಂಬಯುಧ** (ನಂ) ದಂಗೆ, ಲೂಟಿ, ದೇಶೋಪದ್ರವ.

**ಡಿಂಬಾಹವ ಡಿಂಬಾಹವ** (ಪುಂ) ದಂಗೆ, ಲೂಟಿ, ದೇಶೋಪದ್ರವ. "ಡಿಂಬಾಹವಹತಾನಾಂ ಚ ವಿಶ್ರುತಾ ಪಾರ್ಥಿವೇನ ಚ" ಮನುಂ ೪-೯೪.

**ಡಿಂಬಿಕಾ ಡಿಂಬಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬುದ್ಬುದ, ನೀರುಗುಳ್ಳೆ, ನೀರಿನಲ್ಲಿರುವ ಗಾಳಿಗುಳ್ಳೆ. 2. ಹೆಮ್ಮರ, ತಿಗಡುಮರ. 3. ಕಾಮುಕ ಹೆಂಗಸು. "ಡಿಂಬಿಕಾ ಜಲಬಿಂಬೇ ಸ್ಯಾತ್ ಶೋಣಕೇ ಕಾಮುಕಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ.

**ಡಿಂಬ ಡಿಂಬ** (ಪುಂ) 1. ಶಿಶು, ಸಣ್ಣ ಮಗು, ಸದ್ಯ: ಹುಟ್ಟಿದ ಮಗು. 2. ಮರಿ, ತಿಯರ್ಕ್ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಶಿಶು. "ಜೃಮ್ಮಸ್ವ ರೇ ಡಿಂಬ ದಂತಾಸ್ತೇ ಗಣಯಿಷ್ಯಾಮಿ" ಶಾಕುಂ ೭. 3. ಮೊಳಕೆ, ಸಣ್ಣ ಚಿಗುರು. "ಪಲಾಲಜಾಲೈ: ಪಿಹಿತ: ಸ್ವಯಂ ಹಿ ಪ್ರಕಾಶಮಾಸಾದಯತೀಕ್ಷುಡಿಂಬ:" ನೈಷಂ ೮-೨. (ವಿಂ) 4. ಮೂರ್ಖ, ಅಜ್ಞ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು.

**ಡಿಂಬಕ ಡಿಂಬಕ** (ಪುಂ) 1. ಶಿಶು, ಸಣ್ಣ ಮಗು. 2. ತಿಯರ್ಕ್ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಮರಿ. ಡಿಂಬ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:".

**ಡಿಂಬಾ ಡಿಂಬಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಿಶು, ಸಣ್ಣ ಮಗು.

**ಡೀಡ್-ವಿಹಾಯಸಾ ಗತೌ** (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) ಡಯತೆ.

ಡಿಡಚೆ. ಡಯಿತಾ. ಡಯಿಷ್ಯತೆ. ಡಯಿತಾಮ್. ಅಡಯತ.

ಇತ್ಯಾದಿ. ಹಾರಾಡು, ಆಕಾಶಮಾರ್ಗದಿಂದ ಸಂಚರಿಸು.

ಭಾವೆ:—ಡೀಯತೆ. ಡಿಡಚೆ. ಡಯಿತಾ, ಡಾಯಿತಾ.

ಡಯಿಷ್ಯತೆ, ಡಾಯಿಷ್ಯತೆ. ಡೀಯಿತಾಮ್. ಅಡೀಯತ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗಿವಿ:—ಡಾಯಯತಿ, -ತೆ. ಡಾಯಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ,

-ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕರ್ಮಣಿ:—ಡಾಯಯತೆ. ಡಾಯಯಾಂ ಚಕ್ರೆ, -ಬಭೂವೆ, -ಆಸೆ.

ಕೃತ್ಸು:—ಡಯಿತವ್ಯಮ್. ಡಯನೀಯಮ್. ಡೇಯಮ್. ಡಯಿತ:

ಡಯಿತಂ ತೇನ. ಡಯಿತಂ ತಸ್ಯ. ಡಯಮಾನ: ಡಯಿತುಮ್.

ಡಯನಮ್. ಡಯಿತವಾ. ಡುಡಿಯ.

**ಡೀನ ಡೀನ** (ನಂ) 1. ಹಕ್ಕಿಗಳ ಹಾರಾಟದ ಒಂದು ಭೇದ, ಹಕ್ಕಿಗಳು ಆಕಾಶಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವುದು. ಡೀಡ್ (ವಿಹಾಯಸಾ ಗತೌ) ಭಾವೆ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪). (ವಿಂ)

2. ಅಂತರಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಹಾರಾಡಿದ, ಆಕಾಶಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸಿದ. ಡೀಡ್ ಕರ್ಮ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨).

**ಡೀನಡೀನಕ ಡೀನಡೀನಕ** (ನಂ) ಹಕ್ಕಿಗಳ ಹಾರಾಟದ ಒಂದು ಭೇದ.

**ಡೀನವಿಡೀನಕ ಡೀನವಿಡೀನಕ** (ನಂ) ಹಕ್ಕಿಗಳ ಹಾರಾಟದ ಒಂದು ಭೇದ.

**ಡುಣ್ಣು ಡುಂಡು** (ಪುಂ) ಎರಡು ತಲೆಯ ಹಾವು. ಡುಣ್ಣು ಪೃಷ್ಠಂ ಅನ್ಯಲೋಪ: "ನಾಗಮೃತ್ ಡುಣ್ಣು: ಸ್ತ್ರೀ ಸ್ಯಾತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಡುಣ್ಣು ಡುಂಡುಭ** (ಪುಂ) ಎರಡು ತಲೆಯ ಹಾವು. ಡುಣ್ಣು ಇತ್ಯನುಕರಣಶಬ್ದೇನ ಭಾತಿ — ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) "ಡ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಷ್" (೪-೧-೪೧). —ಭಿ —ಫೀ.

**ಡುಣ್ಣುರ ಡುಂಡುರ** (ಪುಂ) ಮಹಡಿಮೇಲಿರುವ ಮಲಗುವ ಮನೆ. "ಅಯೋ ಮಶ್ವ ಉದ್ಧಾತೌ ಡುಣ್ಣುರೋಪಿ ಚ" ವೈಜಂ.

**ಡುಣ್ಣುಲ ಡುಂಡುಲ** (ಪುಂ) ಸಣ್ಣ ಜಾತಿಯ ಗೂಬೆ. ಡುಣ್ಣು ಇತಿ ಶಬ್ದಂ ಲಾತಿ — ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩).

**ಡುಲಿ ಡುಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ಆಮೆ.

**ಡೋಂಬ ಡೋಂಬ** (ಪುಂ) ದೊಂಬರವನು, ದೊಂಬರಾಟದವನು. "ಷಷ್ಠೇ ತು ಭಯಂ ಜೇಯಂ ಗಂಧರ್ವಿಣಾಂ ಸಡೋಂಬಾನಾಮ್" ಬೃಹತ್ಸಂ ೮೭-೩೩.

**ಡೋರ ಡೋರ** (ನಂ) 1. ಕೈ ಮತ್ತು ತೋಳುಗಳಲ್ಲಿ ಕಟ್ಟುವ ಒಂದು ದಾರ. "ಕೋನಂತ ಇತ್ಯುದೀರ್ಯಾಥಿ ಧೃತ್ವಾ ತತ್ಕರ-ಪಲ್ಲವಮ್. ಹಸ್ತಾದಾಕೃಷ್ಯ ತಡ್ಧೋರಂ ಕ್ಷಿಪ್ತವಾನ್ ಪಾವಕೋಪರಿ" ಭವಿಷ್ಯಂ. 2. ಗಂಟು ಮೂಟೆ ಕಟ್ಟುವ ದಾರ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:". ಡೋರಕಮ್ ಡೋರಕಮ್.

**ಡೋಲಾ ಡೋಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಯ್ಯಾಲೆ. "ಡೋಲಾ ಪ್ರೇಕ್ಷೋಲಿಕಾ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಅಮಂ.

**ಬೋಲಾಯಮಾನ ಡೋಲಾಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ತೂಗಾಡುತ್ತಿರುವ, ಉಯ್ಯಾಲೆಯಂತೆ ಆಡುತ್ತಿರುವ. ಡೋಲಾ + ಕೃಡ್ (೩-೧-೧೧). "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಬೋಲಾಯಮಾನಂ ಗೋವಿಂದಂ ಮಶ್ವಸ್ಥಂ ಮಧುಸೂದನಮ್. ರಥಸ್ಥಂ ಕೇಶವಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಪುನರ್ಜನ್ಮ ನ ವಿಶ್ಯತೆ". 2. ಉಯ್ಯಾಲೆಯಂತೆ ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ಒಂದು ಸ್ತಿಮಿತದಲ್ಲಿಲ್ಲದ.

ಇತಿ "ಡ" ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್.



## ತ

ತ ಢ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ "ತ" ವರ್ಗದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಂತರಸ್ಪೃಷ್ಟ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಮೂರ್ಧಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ (ಮಹಾಪ್ರಾಣ) ಅಕ್ಷರ. "ಕಾದಯೋ ಮಾವಸಾನಾಃ ಸ್ಪರ್ಶಾಃ" "ಸ್ಪೃಷ್ಟಂ ಪ್ರಯತನಂ ಸ್ಪರ್ಶಿನಾಮ್" "ಋತುರಪಾಣಾಂ ಮೂರ್ಘಾ" ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ತ ಢ (ಪುಂ) 1. ಢಕ್ಕೆ. 2. ಒಂದು ವಿಧ ಅನುಕರಣ ಧ್ವನಿ. 3. ನಾಯಿ. 4. ನಾಯಿಯ ಬಾಲ. "ತೋ ಢಕಾಘಾಂ ಪುಮಾನುಕ್ತಃ ಷುನಿ ತಸ್ಯ ಚ ಲಾಙ್ಗಲೇ" ಮೇದಿಂ । 5. ಪಿಶಾಚ. 6. ಭಯ. 7. ಕಾಲ, ಸಮಯ. 8. ರಾಗ, ಅನುರಾಗ, ಪ್ರೇಮ. 9. ಪಥಿಕ. (ನಂ) 10. ಜ್ಞಾನ. 11. ವಾದ್ಯ. (ವಿಂ) 12. ನಿರ್ಗುಣ. 13. ಗೂಢವಾದ. 14. ಸ್ವಾಮ್ಯವಾದ. "ತಃ ಪಿಶಾಚೇ ಭಯೇ ಕಾಲೇ ರಾಗೇ ಪಾನ್ಯೇ ಧ್ವನೌ ಚ ನಾ । ಢಕಾಘಾಂ ತು ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಕಲಿಬೇ ಜಾನೇ ತುರ್ಯಮುಖೇಽಪಿ ಢಮ್" ನಾನಾರ್ಥರಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಢಾ ಢಾ. 15. ಢಕ್ಕೆ.

ಢಕಾರ ಢಕಾರ (ಪುಂ) "ಢ" ಎಂಬ ಅಕ್ಷರ. ತ "ಕಾರಃ" (ವಾ ೩-೩-೧೦೮) ।

ಢಕಕ ಢಕ್ಕೆ (ಪುಂ) ಒಂದು ದೇಶ.

ಢಕಕನ ಢಕ್ಕೆನ (ನಂ) ಬಾಗಿಲನ್ನು ಮುಚ್ಚುವುದು.

ಢಕಕಾ ಢಕ್ಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಢಕ್ಕೆ, ಬುಡುಬುಡಿಕೆ. ಢಕ್ ಇತಿ ಕಾಯತಿ-ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) । "ನೃತ್ತಾವಸಾನೇ

ನಟರಾಜರಾಜೋ ನನಾದ ಢಕಾಂ ನವಪಶ್ಚವಾರಮ್ । ತುತುಕಾಮಃ ಸನಕಾದಿಸಿದ್ಧಿವೇದತದ್ವಿಮಶೇ ಶಿವಸೂತ್ರಜಾಲಮ್" ।

ಢಾಮರಾ ಢಾಮರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ಹಂಸಪಕ್ಷಿ.

ಢಾಲ ಢಾಲ (ನಂ) ಗುರಾಣಿ, ಚರ್ಮದ ಹಲಗೆ.

ಢಾಲಿನ್ ಢಾಲಿನ್ (ಪುಂ) ಗುರಾಣಿಯನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ ಯೋಧ. ಢಾಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಙನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) ।

ಢುಢನ ಢುಂಢನ (ನಂ) ಅನ್ವೇಷಣ, ಹುಡುಕುವುದು. ಢುಢಿ (ಅನ್ವೇಷಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) ।

ಢುಢಿ ಢುಂಢಿ (ಪುಂ) ಕಾಶೀಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿರುವ ಗಣಪತಿ.

ಢುಲಿ ಢುಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ಆಮೆ.

ಢೂಲ ಢೂಲ (ಪುಂ) ಢೂಲು. "ಢಕಾ ಢೂಲಪ್ರಿಯಾ ನಿಯಾ ಢೂಲವಾಚಪ್ರಮೋದಿನಿ । ಢೂಲರೂಪಾ ಢೂಲಧರಾ ಢೂಲಾಶದ-ಸ್ವರೂಪಿಣಿ" ಇತಿ ರುದ್ರಜಾಮಲಮ್ ।

ಢೂಕ-ಗತೌ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಢೂಕತೇ । ಢೂಕೇ । ಅಢೂಕಿಷ್ಠ । ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಹೋಗು. "ತಂ ವಿಪ್ರದರ್ಶ ಕೃತವಾತಯತಾ ಯಾನ್ತಂ ವನೇ ರಾತ್ರಿಚರೀ ಢೂಕೇ" ಮೃದ್ವಿಂ ೨-೨೩ ।

ಢೂಕನ ಢೂಕನ (ನಂ) 1. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು. ಢೂಕ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) । 2. ಕಾಣಿಕೆ. 3. ದಾನ.

ಇತಿ "ತ" ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್ ।

## ೧

೧ ಣ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ "ತ" ವರ್ಗದ ಐದನೆಯ ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಂತರಸ್ಪೃಷ್ಟ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಮೂರ್ಧಸ್ಥಾನ ಮತ್ತು ನಾಸಿಕೆಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ (ಅನುನಾಸಿಕ) ಅಕ್ಷರ. "ಋತುರಪಾಣಾಂ ಮೂರ್ಘಾ" "ಜಮಙ್ಗನಾನಾಂ ನಾಸಿಕಾ ಚ" ಸಿಂ ಕೌಂ ।

೧ ಣ (ಪುಂ) 1. ಜ್ಞಾನ. 2. ಭೂಷಣ, ಒಡವೆ. 3. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. 4. ದಾನ, ಪಾರಿತೋಷಿಕ. 5. ಪಾನಶಾಲೆ, ಅರವಟ್ಟಿಗೆ. "೧ಃ ಪುಮಾನ್ ಬಿಂದುದೇವ ಸ್ಯಾತ್ ಭೂಷಣ ಗುಣವಜಿತೇ । ಪಾನೀಯನಿಲಯೇಽಪಿತಿ ಕೇಚಿ-

ದ್ದುರ್ವಿಪಶ್ರಿತಃ" ಮೇದಿಂ । 6. ನಿರ್ಣಯ, ನಿಶ್ಚಯ. 7. ಜಾರ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿ. 8. ಧ್ವನಿ. 9. ಕಂಟಕ, ಮುಳ್ಳು. (ನಂ) 10. ಕಮಲದದಳ. (ವಿಂ) 11. ಹೊಟ್ಟಿಲ್ಲದ ಪದಾರ್ಥ. 12. ಗುಣಹೀನ. 13. ಭೈರವ, ಭಯಂಕರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ೧ಾ ಣಾ. 14. ರಾತ್ರಿ. 15. ಶಯ್ಯ, ಹಾಸಿಗೆ. 16. ಧೇನು, ಹಸು. 17. ಮೂಗು. 18. ಕೃಪೆ, ದಯೆ. "೧ಶಬ್ದಸ್ತು ಪುಮಾನ್ ಜಾರೆ ಭೇರವೇ ಕಣ್ಡಕೇ ಧ್ವನೌ । ೧ಾ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ರಜನೀ ಶಯ್ಯಾಧೇನುನಾಸಾಕೃಪಾಸು ಚ । ೧ಂ ಸರೋಜದಲೇ ಜಾನೇ ತ್ರಿಘ್ನ ನಿಸ್ತುಷವಸ್ತುನಿ" ನಾನಾರ್ಥರಂ ।











(2) ಅವ + ಣಹ = ಅವನಹ್ಯತಿ | ಅವನಹ್ | ಸುತೃಲೂ ಬಂಧಿಸು, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಕಟ್ಟು. "ವರ್ಮವಿನ್ದ ದುರ್ಗಂಧಿ ಪೂರ್ಣ ಮೃತಪುರೀಷಯೋ:" ಮನುಂ ೬-೭೬ |

(3) ಉದ + ಣಹ = ಉದನಹ್ಯತಿ | ಉದನಹ್ | ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿಕಟ್ಟು. "ಅಸ್ಥಿವಯವೋಽಸ್ಥಿಮಧ್ಯಮನುಪ್ರವಿಶ್ಯ ಮಜ್ಜಾನ-ಮುನಹ್ಯತಿ" ಸುಶ್ರುತಂ |

(4) ಸಮ್ + ಉದ + ಣಹ = ಸಮುನಹ್ಯತಿ | ಸಮುನಹ್ | 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿಕಟ್ಟು. "ವರ್ಮೀಕವತ್ ಸಮುನಹ್-ಮಂತ-ಕುರ್ವಂತಿ ವಿವ್ರಧಿಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ | 2. ಪಂಡಿತನೆಂದು ತಿಳಿದುಕೊಂಡು ಗರ್ವಪಡು. "ಅಶ್ರುತಶ್ಚ ಸಮುನಹ್ ದರಿದ್ರಶ್ಚ ಮಹಾಮನಾ:" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೩೩-೩೮ | "ಅರ್ಥ ಮಹಾಂತ-ಮಾಸಾಃ ವಿವ್ರಧಿಮಶ್ಚಯೇವ ವಾ | ವಿವ್ರಧಿಮಶ್ಚಯೇವ ಯಃ ಸ ಪಂಡಿತ ಉಚ್ಯತೇ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೩೩-೩೭ |

(5) ಉಪ + ಣಹ = ಉಪನಹ್ಯತಿ | ಉಪನಹ್ | ಮೇಲಾಗಡೆ ಕಟ್ಟು. "ವಿಸ್ತಾವಯೇತ್ ಸ್ವಿನ್ನಮತನ್ವಿತಶ್ಚ ಶುದ್ಧಂ ವ್ರಣಂ ಚಾಪ್ಯುಪನಾಹಯೇತ್" ಸುಶ್ರುತಂ |

(6) ಪರಿ + ಣಹ = ಪರಿಣಹ್ಯತಿ | ಪರಿಣಹ್ | 1. ಸುತೃಲೂ ಕಟ್ಟು. "ನ ತಾಂ ವಧೋ ಪರಿಣಹೇತ್ ಶತವರ್ಮಾ ಮಹಾತನುಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೩೦-೨೩ | 2. ಎಸಾರ, ವೈಠಲ್ಯ. "ಯುವಾ ಯುಗವ್ಯಾಯತಬಾಹುರಸಲಃ ಕಪಾಟವಕ್ಷಾಃ ಪರಿಣಹಕನ್ವರ:" ರಘುಂ ೩-೩೪ |

(7) ಸಮ್ + ಣಹ = ಸನ್ನಹ್ಯತಿ | ಸನ್ನಹ್ | 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬಂಧಿಸು, ಸರಿಯಾಗಿ ಕಟ್ಟು. "ಶಲ್ಯದ್ವಕೂಲಂ ಕವರೀಂ ಚ ವಿಚ್ಯುತಾಂ ಸನ್ನಹ್ಯತೀಂ ವಾಮಕರೇಣ ವಲ್ಗುನಾ" ಭಾಗಂ ೮-೧೨-೨೧ | 2. ಕವಡೆ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಧರಿಸು. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ವ್ಯಾಪಿಸು, ಹರಡು. "ಕುಸುಮಮಿವ ಲೋಭನೀಯಂ ಧೌವನಮಜ್ಜೇಷು ಸನ್ನಹಮ್" ಶಾಕುಂ ೧-೨೧ | 4. ಸಿದ್ಧವಾಗಿರುವ.

ಗಿಜಿರ್ - ಶೌಚಪೋಷಣಯೋ: (ಜುಹೋಂ ಉಋಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) | ನೇನೇಕ್ತಿ ನೇನಿಕ್ತಃ ನೇನಿಜತಿ | ನೇನಿಕ್ತೇ ನೇನಿಜಾತೇ ನೇನಿಜತೇ | ನಿನೇಜ ನಿನಿಜತು: ನಿನಿಜು: | ನಿನಿಜೇ ನಿನಿಜಾತೇ ನಿನಿಜೀರೇ | ನೇಕ್ತಾ | ನೇಕ್ಯತಿ, -ತೇ | ನೇನೇಕ್ತು, ನೇನಿಕ್ತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಶುಚಿಮಾಡು, ಶುದ್ಧಮಾಡು. "ಶಾಲ್ಮಲೀಫಲಕೇ ಶಲಕ್ಷಣೇ ನೇನಿಜ್ಯಾನ್ವೇಜಕಃ ಶನೇ:" ಮನುಂ ೮-೩೯೬ | 2. ಪೋಷಿಸು.

ಕರ್ಮಣಿ: -ನಿಜ್ಯತೇ | ನಿಜ್ಯತಾಮ್ | ಅನಿಜ್ಯತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು: -ನೇಕ್ತವ್ಯಮ್ | ನೇಜನೀಯಮ್ | ನೇಜ್ಯಮ್ | ನಿಕ್ತಃ | ನಿಕ್ತವಾನ್ | ನೇನಿಜತ್, ನೇನಿಜತೀ | ನೇನಿಜಾನ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ನಿರ್ + ಗಿಜಿರ್ = ನಿರ್ನೇಕ್ತಿ | ನಿರ್ನಿಕ್ತಃ | ಚೆನ್ನಾಗಿ ತೊಳೆ, ನಿಶೇಷವಾಗಿ ತೊಳೆ, ಶುದ್ಧಮಾಡು. "ನಿರ್ನಿಕ್ತಂ ಶೋಧಿತಂ ಮೃಷ್ಟಂ ನಿಶೋಧ್ಯಮನವಸ್ಕರಮ್" ಅಮಂ | "ತೋ-ನಿರ್ನಿಕ್ತಪಾಣಯ:" ರಘುಂ ೧೭-೨೨ |

ಗಿಡಿ - ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ನಿಂದತಿ, ಪ್ರಣಿಂದತಿ | ನಿನಿಂದ | ನಿಂದಿತಾ | ನಿಂದಿಷ್ಯತಿ | ನಿಂದತು | ಅನಿಂದತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. ನಿಂದಿಸು, ದೂಷಿಸು, ದೂರು, ತಿಳಿಸು. "ನಿನಿಂದ ರೂಪಂ ಹೃದಯೇನ ಪಾರ್ವತೀ ಪ್ರಿಯೇಷು ಸೌಭಾಗ್ಯ-ಫಲಾ ಹಿ ಚಾರತಾ" ಕುಮಾಂ ೪-೧ |

ಕರ್ಮಣಿ: -ನಿನ್ದತೇ | ನಿನ್ದೀ | ನಿನ್ದಿತಾ | ನಿನ್ದಿಷ್ಯತೇ | ನಿನ್ದಿತಾಮ್ | ಅನಿನ್ದತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗಿಡಿ: -ನಿನ್ದಯತಿ, -ತೇ | ನಿನ್ದಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ |

ಸನಿ: -ನಿನಿಂದಿಷತಿ | ನಿನಿಂದಿಷಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು: -ನಿನ್ದಿತವ್ಯಃ | ನಿನ್ದನೀಯಃ | ನಿನ್ದ: | ನಿನ್ದಿತಃ | ನಿನ್ದಿತವಾನ್ | ನಿನ್ದನ್, ನಿನ್ದಂತೀ | ನಿನ್ದಿತುಮ್ | ನಿನ್ದಿತಮ್ | ನಿನ್ದನಮ್ | ನಿನ್ದಿತಾ | ವಿನಿನ್ದ |

ಗೌ - ಪ್ರಾಪಣೆ (ಮ್ವಾಂ ಉಋಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ನಯತಿ, -ತೇ | ನಿನಾಯ ನಿನ್ಯತು: ನಿನ್ಯು: | ನಿನ್ಯೇ ನಿನ್ಯಾತೇ | ನೇತಾ | ನೇಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ನಯತು, -ತಾಮ್ | ಅನಯತ್, -ತ | ನಯೇತ್, -ತ | ನೇಯಾತ್, ನೇಷಿಷ್ಠ | ಅನೇಷಿತ್, ಅನೇಷ್ಠ | ಅನೇಷ್ಯತ್, -ತ | 1. ಒಯ್ಯಿ, ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಹೋಗು, ಕರೆದುಕೊಂಡು ಹೋಗು. "ನಿನಾಯ ಪೃತನಾಂ ಪ್ರಾಚೀಂ ಗಜ್ಜಾಮಿವ ಭಗೀರಥ:" ಯಾದಂ ೨೨-೬೪ | 2. ಹೊಂದಿಸು, ಸೇರಿಸು, ತಲುಪಿಸು. "ಶಿಲೋಂಚಯಂ ಚಾರುಶಿಲೋಂಚಯಂ ತಮೇಷು ಕ್ಷಣಾನ್ವೇಷ್ಯತಿ ಗುಹ್ಯ-ಕಸ್ತ್ವಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೨೯ | 3. ಒಳಪಡಿಸು, ಈಡು ಮಾಡು, ಗುರಿಮಾಡು. "ನಯತಿ ದ್ರುತಮುದ್ರಿತಶ್ಚಿತಃ ಪ್ರಸಂಭಂ ಭಜ್ಜಮಭಜ್ಜಗುರೋದಯ:" ಮಾಘಂ ೧೩-೭೨ | 4. ಹೊಂದಿಸು, ಸೇರಿಸು, ಅಳವಡಿಸು. "ನಯನ್ ಮಘುಲಿಹಃ ಶ್ವೇತಮುದ್ರ-ದಶನಾಂಶುಮಿ:" ಮಾಘಂ ೨-೨೧ | 5. ಕಾಲಕಳೆ, ಕಾಲತಳ್ಳು. "ಸಂವಿಷ್ಠಃ ಕುಶಶಯನೇ ನಿಶಾಂ ನಿನಾಯ" ರಘುಂ ೧-೯೪ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಕ್ರಿಯಾಫಲವು ಪರಗಾಮಿಯಾಗಿದ್ದರೂ ಗೌ ಧಾತುವು ಸಂವಾನನ ಉತ್ಪಂಜನ (ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವುದು), ಅಚಾರ್ಯ ಕರಣ (ಅಚಾರ್ಯನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು), ಜ್ಞಾನ, ಭೃತಿ, ವಿಗಣನ (ಸಾಲ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಹಿಂತಿರುಗಿಸುವುದು), ಮತ್ತು ವ್ಯಯ ಈ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಅತ್ಯನೇಪದಿಯಾಗುವುದು.



- ಸಮಾನನೆ— ಶಾಸ್ತ್ರೇ ನಯತೇ । ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿನ ಸಿದ್ಧಾಂತವನ್ನು ಶಿಷ್ಯರಿಗೆ ಸೇರಿಸುತ್ತಾನೆ.
- ಉತ್ಸಂಜನೆ— ದಂಡಮುನಯತೇ । ದಂಡವನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುತ್ತಾನೆ.
- ಆಚಾರ್ಯಕರಣೆ— ಮಾಣವಕಮುನಯತೇ । ಮಾಣವಕನನ್ನು (ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸಕ್ಕಾಗಿ) ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ ತನ್ನ ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಕರೆದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ.
- ಜಾನೆ— ತತ್ವಂ ನಯತೇ । ತತ್ವವನ್ನು ನಿಶ್ಚಯಿಸುತ್ತಾನೆ.
- ಭೃತೀ— ಕರ್ಮಕಾರಾನುಪನಯತೇ । ಕೂಲಿಯವನಿಗೆ ಭೃತಿ(ಕೂಲಿ)ಯನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ತನ್ನಲ್ಲಿಗೆ ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ.
- ವಿಗಣನೆ— ಕರಂ ವಿನಯತೇ । ಇಲ್ಲಿ ವಿ ಪೂರ್ವಕ ಗೋ ಧಾತುವಿಗೆ ಪರಿಶೋಧನೆಯು ಅರ್ಥ. ರಾಜನಿಗೆ ಕೊಡಬೇಕಾದ ತೆರಿಗೆಯನ್ನು ಕೊಡಲು ಲೆಕ್ಕಾಚಾರ ಮಾಡುತ್ತಾನೆ.
- ವ್ಯಯೆ— ಶತಂ ವಿನಯತೇ । ಧರ್ಮಾರ್ಥವಾಗಿ ನೂರು ರೂಪಾಯಿಗಳನ್ನು ಖರ್ಚುಮಾಡುತ್ತಾನೆ. ಇಲ್ಲಿ ವಿ ಪೂರ್ವಕ ಗೋ ಧಾತುವು ಖರ್ಚು ಎಂಬ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುದು.

ಕರ್ಮಣಿ :—ನಿಯತೇ । ನಿನ್ಯೇ । ನಾಯಿತಾ, ನೇತಾ । ನಾಯಿಷ್ಯತೇ, ನೇಷ್ಯತೇ । ನಿಯತಾಮ್ । ಅನಿಯತ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ :—ನಿನಿಷತಿ, -ತೇ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು :—ನೇತವ್ಯಃ । ನಯನೀಯಃ । ನೇಯಃ । ನೇತಃ । ನೇತವಾನ್ । ನಯನ್, ನಯಂತೀ । ನಯಮಾನಃ । ನೇತುಮ್ । ನೇತುಮ್ । ನಯನಮ್ । ನೇತವಾ । ಪ್ರಣೀಯ । “ನಯನ್ ಮಧುಲಿಹಃ ಕ್ವೇತ್ಯ-ಮುದಗ್ರದಶನಾಂಶುಭಿಃ” ಮಾಘಂ ೨-೨೧ ।

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು :

- (1) ಅನು+ಗೋ = ಅನುನಯತಿ । ಅನುನಯಃ । 1. ಇಷ್ಟ ಪೂರ್ತಿಗಾಗಿ ಸೌಜನ್ಯದಿಂದ ಮಾತಾಡು, ಸಮಾಧಾನದಿಂದ ಮಾತಾಡು. “ಭವತೋಽನುನಯಾಮ್ಯೇವ ಪೂರಾಜ್ಯೇಽಭಿಷಿಚ್ಯತಾಮ್” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೭೧-೩೫ । 2. ಪ್ರಾರ್ಥಿಸು, ಯಾಚಿಸು. “ಅನುನಯಮಗೃಹೀತ್ವಾ ವ್ಯಾಜಸುಪ್ತಾ ಪರಾಶಿ” ಮಾಘಂ ೧೧-೯ । 3. ಮನಸ್ಸನ್ನು ಒಲಿಸು, ಕೋಪವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸು. “ಕಥಂ ನ ಶಕ್ಯೋಽನುನಯೋ ಮಹರ್ಷಿಃ” ರಘುಂ ೨-೫೪ ।

- (2) ಅಪ + ಗೋ = ಅಪನಯತಿ । ಅಪನಯನಮ್ । 1. ಅಪಹರಿಸು, ಕದ್ದು ಕೊಂಡೊಯ್ಯು. “ಗೋಚರಂ ಗತಯೋ ಭ್ರಾತೃರಪನೀತಾ ತ್ವಯಾಧಮ” ರಾಮಾಂ । 2. ಬೇರೆಕಡೆಗೆ ಸಾಗಿಸು. “ಯತ್ರ ಸಂಸೃತಕಾಃ ಪಾರ್ಥಮಪನಿನ್ಯೂರಣಾಜಿರಾತ್” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧-೨೫೭ । 3. ಪರಿಹರಿಸು, ಹೋಗಲಾಡಿಸು. “ನಾತಿಶ್ರಮಾಪನಯನಾಯ ನ ಚ ಶ್ರಮಾಯ” ಶಾಕುಂ ೫-೬ ।

- (3) ಅಭಿ + ಗೋ = ಅಭಿನಯತಿ । ಅಭಿನಯಃ । ಅಭಿನೀತಃ । 1. ಶರೀರವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ತಿಳಿಸು. “ಅಭಿನಯಾನ್ ಪರಿಚೇತುಮಿವೋದೃತಾ ಮಲಯ-ಮಾರುತಕಂಪಿತಪಲ್ಲವಾ” ರಘುಂ ೧-೩೩ । 2. ಅನುಕರಿಸು, ಒಬ್ಬನು ಮಾಡಿದಂತೆ ಮಾಡು. “ಭವೇದಭಿನಯೋಽವಸ್ಥಾನು-ಕಾರಃ” ಸಾಂ ದಂ । 3. ಎದುರಾಗಿ ಕೊಂಡೊಯ್ಯು.

- (4) ಆ+ಗೋ = ಆನಯತಿ । ಆನಯನಮ್ । ತೆಗೆದು ಕೊಂಡು ಬಾ, ಕರೆದುಕೊಂಡು ಬಾ. “ಕೇನಾಪ್ಯುತ್ಕಿಷ್ಪತೇವ ಪಶ್ಯ ಭುವನಂ ಮತ್ಪಾಶ್ವಮಾನೀಯತೇ” ಶಾಕುಂ ೭-೮ ।

- (5) ಪ್ರತಿ+ಆ+ಗೋ = ಪ್ರತಾನಯತಿ । ಪ್ರತಾನಯನಮ್ । ಒಂತಿರುಗಿಸಿ ಕರೆದುಕೊಂಡು ಬಾ. “ಪ್ರತಾನೇಷ್ಯತಿ ಶತ್ರುಮ್ಯೋ ವಂದೀಮಿವ ಜಯಶ್ರಿಯಮ್” ಕುಮಾಂ ೨-೫೨ ।

- (6) ಉ + ಗೋ = ಉನಯತೇ । ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತು. “ದಂಡಮುನಯತೇ” ।

- (7) ಉ + ಗೋ = ಉನಯತಿ, -ತೇ । ಉನಯನಮ್ । 1. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಕರೆದುಕೊಂಡು ಬಾ. “ಮಹತ್ಯಾ ಸೇನಯಾ ರಾಜಾ ದಮಯಂತೀಮುಪಾನಯತ್” ಭಾಂ ವನಂ ೭೭-೧ । 2. ವೇದಾಭ್ಯಾಸಕ್ಕಾಗಿ ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಕರೆದುಕೊ. “ಉಪನೀಯ ದದದೇದಾನಾ-ಚಾರ್ಯಃ ಸಃ ಉದಾಹೃತಃ” ।

- (8) ನಿ+ಗೋ = ನಿನಯತಿ । ದಾನಮಾಡು, ಕೊಡು. “ಚರಿತವ್ರತ ಆಯಾತೇ ನಿನಯೇರನ್ನವಂ ಘಟಮ್” ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೨೯೫ ।

- (9) ನಿರ್+ಗೋ = ನಿರ್ಣೀಯತೇ । ನಿರ್ಣಯಃ । ನಿಶ್ಚಯಿಸು, ನಿರ್ಣಯಮಾಡು. “ದೇವಃ ಪತಿವಿದುಷಿ ನೇಷಠ ರಾಜಗತ್ಯಾ ನಿರ್ಣೀಯತೇ ನ ಕಿಮು ನ ವ್ರಿಯತೇ ಭವತ್ಯಾ” ನೇಷಂ ೧೩-೩೪ ।

- (10) ಪರಿ+ಗೋ = ಪರಿಣಯತಿ । ಪರಿಣಯಃ । ಪರಿಣೀತಃ । 1. ವಿವಾಹವಾಗು, ಮದುವೆಯಾಗು. “ಪರಿಣೇಷ್ಯತಿ ಪಾರ್ವತೀ ಯದಾ ತಪಸಾ ತತ್ಪ್ರವಣೀಕೃತೋ ಹರಃ” ಕುಮಾಂ ೪-೪೨ । 2. ಪ್ರದಕ್ಷಿಣೆಮಾಡು. “ತೌ ದಂಪತೀ ತ್ರಿಃ ಪರಿಣೀಯ ವಹ್ನಿಮನ್ಯೋನ್ಯಸಂಸ್ಪರ್ಶನಿಮಿಲಿತಾಕ್ಷೌ” ಕುಮಾಂ ೭-೮೦ ।



(11) ಪ್ರ+ಉ = ಪ್ರಣಯತಿ | ಪ್ರಣಿನಾಯ | ಪ್ರಣೀತಮ್ |  
1. ಮಾಡು, ರಚಿಸು. "ಉತ್ತರಂ ರಾಮಚರಿತಂ ತತ್ಪ್ರಣೀತಂ  
ಪ್ರಯುಜ್ಯತೇ" ಉಂ ರಾಂ ೧-೩ | 2. ಬಾಣವನ್ನು ಎಸೆ,  
ಪ್ರಯೋಗಿಸು. "ತೇನ ಸಮ್ಯಕ್ ಪ್ರಣೀತಾನಿ ಶರಜಾಲಾನಿ  
ಮಾರಿಷ" ಭಾಂ ಮೀಷಂ ೮೬-೬ |

(12) ಪ್ರತಿ+ಉ = ಪ್ರತಿನಯತಿ | ಪ್ರತಿನೀತಃ | ಪ್ರತಿನಃ  
ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯಿ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕರೆದುಕೊಂಡು ಬಾ.

(13) ವಿ + ಉ = ವಿನಯತಿ, -ತೇ | ವಿನೇಷ್ಯತಿ |  
1. ನಿವಾರಿಸು, ತಪ್ಪಿಸು. "ಕ್ರೋಧಂ ವಿನಯತೇ" | ಕೋಪ-  
ಮಪಗಮಯತಿ ಇತ್ಯರ್ಥಃ | 2. ಋಷಿಮಾಡು, ವಿನಿಯೋಗಿಸು.  
"ಶತಂ ವಿನಯತೇ" | ಧರ್ಮಾರ್ಥ ವಿನಿಯುಕ್ತೇ ಇತ್ಯರ್ಥಃ |  
3. ಹೊರದೂಡು, ಹೊರಕ್ಕೆ ಎಳೆ, ತೆಗೆದುಹಾಕು.  
"ಉತ್ತರೀಯವಿನಯಾತ್ಮಪಮಾಣಾ ಸುಧತೀ ಕಿಲ ತದೀಕ್ಷಣಮಾರ್ಗಮ್"  
ಮಾಘಂ ೧೦-೪೨ | 4. ಶಿಕ್ಷಿಸು, ದಂಡಿಸು. "ರಕ್ಷಾಪದೇಶಾ-  
ನ್ಮುನಿಹೊಮಧೇನೋರ್ವನ್ಯಾನ್ ವಿನೇಷ್ಯನ್ನಿವ ದುಷ್ಟಸತ್ತವಾನ್" ರಘುಂ  
೨-೮ | 5. ಋಣ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ತೀರಿಸು.  
"ಕರಂ ವಿನಯತೇ" | ರಾಜೇ ದೇಯಂ ಕರಂ ಪರಿಶೋಧಯತಿ  
ಇತ್ಯರ್ಥಃ |

(14) ಸಮ್+ಉ = ಸಂನಯತಿ | ಸೇರಿಸು, ಒಟ್ಟು  
ಗೂಡಿಸು. "ಪರೇ ಭಗವತಿ ಬ್ರಹ್ಮಾಪ್ಯಾತ್ಮಾನಂ ಸಂನಯನ್ ಜಹೌ"  
ಭಾಗಂ ೬-೧೦-೧೧ |

ಉ - ಸ್ತುತೌ (ಅದಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ನೌತಿ | ನುನಾವ |  
ನವಿತಾ | ನವಿಷ್ಯತಿ | ನೌತು | ಅನೌತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಸ್ತೋತ್ರ  
ಮಾಡು, ಹೊಗಳು. "ದ್ವಿಧಾ ಪ್ರಯುಕ್ತೇನ ಚ ವಾಙ್ಮಯೇನ  
ಸರಸ್ವತೀ ತನ್ನಿಥುನಂ ನುನಾವ" ಕುಮಾಂ ೭-೯೦ |

ಕರ್ಮಣಿ :—ನುಯತೇ | ನುನುತೇ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಉದ - ಪ್ರೇರಣೆ (ತುಡಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) | ನುದತಿ, -ತೇ |  
ನುನೋದ, ನುನೋದೇ | ನೋತ್ತಾ | ನೋತ್ಸಯತಿ, -ತೇ | ನುದತು, -ತಾಮ್ |  
ಅನುದತು, -ತ | ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಪ್ರೇರಿಸು, ತಳ್ಳು, ನೂಕು,  
ದಬ್ಬು. "ಮಂದಂ ಮಂದಂ ನುದತಿ ಪವನಶ್ಚಾನುಕೂಲೋ ಯಥಾ ತ್ವಾಮ್"

ಮೇಘಂ ೧-೯ | 2. ನಿವಾರಿಸು, ಹೊರಗೊಳಿಸು. "ಪ್ರಸಹ್ಯ  
ತೇಜೋಭಿರಸಂಖ್ಯತಾಂ ಗತೇರದಸ್ತ್ವಯಾ ನುತ್ತಮನುತ್ತಮಂ ತಮಃ" ಮಾಘಂ  
೧-೨೭ | 3. ಹೊಡೆದೋಡಿಸು. "ನುನೋದೇ ತನುಕಣ್ಡು  
ಪಣ್ಡಿತಃ ಪಟುಚ್ಚಪುಟಕೋಟಿಕುಟುನಃ" ನೈಷಂ ೨-೪ |

ಕರ್ಮಣಿ :—ನುಯತೇ | ನುನೋದೇ | ನುಯತಾಮ್ | ಅನುಯತ |  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ :—ನೋದಯತಿ, -ತೇ | ನೋದಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ | ನೋದಯಿತಾ | ನೋದಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ |  
ನೋದಯತು, -ತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು :—ನೋದಯಾಮ್ | ನೋದನೀಯಮ್ | ನೋದಮ್ | ನುನಃ,  
ನುತ್ತಃ | ನುನವಾನ್, ನುತ್ತವಾನ್ | ನುನನ್, -ಂತೀ -ಂತಿ |  
ನುನಮಾನಃ | ನೋದತುಮ್ | ನುನಮ್, ನುತ್ತಮ್ | ನೋದನಮ್ | ನುತ್ವಾ |  
ಪ್ರಣುಯ |

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು :

(1) ಅಪ+ಉದ = ಅಪನುದತಿ | ಅಪನೋದನಮ್ | ನಿವಾ  
ರಿಸು, ಹೊರಗೊಳಿಸು. "ಏನಸಾಂ ಸ್ಥೂಲಸೂಕ್ಷ್ಮಾಣಾಂ ಚಿಕೀರ್ಷ-  
ನಪನೋದನಮ್" ಮನುಂ ೧೧-೨೫೨ |

(2) ಪ್ರ+ಉದ = ಪ್ರಣುದತಿ | ಪ್ರಣುಯ | ದಬ್ಬು, ಓಡಿಸು,  
ತಳ್ಳು. "ದಯಿತಾವಲೋಕವಿಕಸನ್ನಯನಪ್ರಸರಪ್ರಣುನಮಿವ ವಾರಿ-  
ಹಮ್" ಮಾಘಂ ೯-೭೧ |

(3) ವಿ+ಉದ = ವಿನೋದಯತಿ | ವಿನೋದಃ | 1. ನಿವಾರಿಸು,  
ಹೊರಗೊಳಿಸು. "ದಧಿಪ್ಪಿರಭಿತಸ್ತದೌ ವಿಕಚವಾರಿಜಾಮ್ಬು  
ನದೇವಿನೋದಿತದಿನಕಲಮಾಃ ಕೃತರುಚಶ್ಚ ಜಾಮ್ಬೂನದೇಃ" ಮಾಘಂ  
೪-೬೬ | 2. ಸಂತೋಷಪಡಿಸು, ಮನಸ್ಸನ್ನು ಉಲ್ಲಾಸ  
ಗೊಳಿಸು. "ಕವ ನು ಖಲು ಸಂಸ್ಥಿತೇ ಕರ್ಮಣಿ ಸದಸ್ಯೇರನುಜಾತಃ  
ಶ್ರಮಕಲಾಂತಮಾತ್ಮಾನಂ ವಿನೋದಯಾಮಿ" ಶಾಕುಂ ೩ | 3. ದುಃಖ  
ವನ್ನು ಹೊರಗೊಳಿಸು, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ನೆಮ್ಮದಿಯನ್ನುಂಟು  
ಮಾಡು. "ವಿನೋದಯಿಷ್ಯಂತಿ ನವಾಭಿಷ್ಠಾಮುದಾರವಾಚೋ  
ಮುನಿಕನ್ಯಕಾಸ್ತ್ವಾಮ್" ರಘುಂ ೧೪-೭೭ |

ಇತಿ "ಉ" ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್ |



## ತ

ತ ತ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ "ತ" ವರ್ಗದ ಮೊದಲ ನೆಯ ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಂತರಸ್ಪೃಷ್ಟ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ದಂತ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಅಕ್ಷರ. "ಕಾದಯೋ ಮಾವಸಾನಾಃ ಸ್ಪರ್ಶಾಃ" "ಸ್ಪೃಷ್ಟಂ ಪ್ರಯತನಂ ಸ್ಪರ್ಶಿನಾಮ್" "ಲೃತುಲಸಾನಾಂ ದಂತಾಃ" ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ತ ತ (ಪುಂ) 1. ಅಮೃತ. 2. ಪುಚ್ಛ, ಬಾಲ. 3. ಮ್ಲೇಚ್ಛ. 4. ಕ್ರೋಡ, ಭುಜಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ. ಎದೆ. 5. ಬೋರ, ಕಳ್ಳ. 6. ನಿಶ್ಚಯ, ನಿರ್ಣಯ. 7. ಸಂಭೋಗ. 8. ಕೋಪ. 9. ಧಾತುವಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 10. ತರಣ, ದಾಟುವುದು. 11. ಪುಣ್ಯ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಾ ತಾ. 12. ಕರುಣೆ, ದಯೆ. "ತಶ್ಚೋರಾಮೃತಪುಚ್ಛೇಷು ಕೋಡೇ ಮ್ಲೇಚ್ಛೇ ಚ ಕುತ್ರಚಿತ್ । ಅಪುಮಾಂಸ್ತರಣೇ ಪುಣ್ಯೇ ಕಥಿತಃ ಶಬ್ದವೇದಿಮಿ. " ಮೇದಿಂ । "ತಶಬ್ದಃ ಪುಂಸಿ ಸಂಭೋಗೇ ನಿಶ್ಚಯೇ ಕೋಪಪುಚ್ಛಯೋಃ । ಧಾತುವಾದವಿಧೌ ಚೋರೇ ಕರುಣಾಂ ತು ತಾ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ನಾನಾರ್ಥರಂ ।

ತಂಸು ತಂಸು (ಪುಂ) ಚಂದ್ರವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಮತಿನಾರ ನೆಂಬ ರಾಜನ ಮಗ. "ಮತಿನಾರಸುತಾ ರಾಜಂಶ್ಚತ್ವಾರೋಽ- ಮಿತವಿಕ್ರಮಾಃ । ತಂಸುರ್ಮಹಾನತಿರಥೋ ದ್ರುಹ್ಯುಶ್ಚಾಪ್ರತಿಮದ್ವುತಿಃ । ತೇಷಾಂ ತಂಸುರ್ಮಹಾವೀರೈಃ ಪೌರವಂಶಮುಢ್ಢಹನ್ । ಆಜಹಾರ ಯಶೋ ದೀಪ್ತಂ ಜಿಗಾಯ ಚ ವಸುಂಧರಾಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೮೮-೧೩-೧೪ ।

ತಕ - ಹಸನೆ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೆಂ) । ತಕತಿ । ತತಾಕ । ಅತಕೀತ್, ಅತಾಕೀತ್ । ನಗು, ವಿನೋದಹೊಂದು.

ತಕಾರ ತಕಾರ (ಪುಂ) "ತ" ಎಂಬ ಅಕ್ಷರ. ತ "ಕಾರಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮) ।

ತಕಿ - ಕೃಚ್ಛಜೀವನೆ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೆಂ) । ತಕತಿ । ತತಕ । ಅತಕೀತ್ । ಬಹಳ ಕಷ್ಟದಿಂದ ಜೀವಿಸು.

ತಕಿಲ ತಕಿಲ (ಪುಂ) 1. ಔಷಧ. (ವಿಂ) 2. ಧೂರ್ತ, ವಂಚಕ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ-ಲಾ. 3. ಆಪಾಧೀ ಬೇರು, ಒಂದು ಮೂಲಿಕೆ.

ತಕ್ಕೋಲಕ ತಕ್ಕೋಲಕ (ನಂ) ತಕ್ಕೋಲ ವೃಕ್ಷದ ಪರಿಮಳ ದ್ರವ್ಯ.

ತಕ್ರ ತಕ್ರ (ನಂ) ಕಡೆದು ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ ನೀರು ಬೆರೆಸಿದ ಮೊಸರು. ತಕ್ರು (ಗತೀ) "ರಕ್" (ತಂ ೨-೧೩) । ಕ್ರುತ್ವಮ್ (೩-೩-೫೩) । "ತಕ್ರಂ ಹ್ಯುದಶ್ಚಿನ್ಮಥಿತಂ ಪಾದಾಮ್ಬ- ಧಾಮ್ಬು ನಿರ್ಜಲಮ್" ಅಮಂ । "ದಧ್ನಃ ಕ್ಷೀರಸ್ಯ ತಕ್ರಸ್ಯ ಪಾನೀಯಸ್ಯ ತುಣಸ್ಯ ಚ" ಮನುಂ ೮-೩೨೬ ।

ತಕ್ರಕುಚಿಕಾ ತಕ್ರಕೂರ್ಚಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಫನೀಭೂತವಾದ ಮೊಸರು, ಗೆರಣೆ ಕಟ್ಟಿದ ಮೊಸರು.

ತಕ್ರಪಿಂಡ ತಕ್ರಪಿಂಡ (ಪುಂ) ಗಟ್ಟಿ ಮೊಸರು, ನೀರಿನ ಭಾಗ ಎಲ್ಲದ ಮೊಸರು. "ದಧ್ನಾ ತಕ್ರೇಣ ವಾ ದುಷ್ಠಂ ದುಗ್ಧಂ ಬದ್ಧಂ ಸುವಾಸಸಾ । ದ್ರವಭಾಗೇನ ಹೀನಂ ಯತ್ ತಕ್ರಪಿಂಡಃ ಸ ಉಚ್ಯತೇ" ।

ತಕ್ರವಾಸನ ತಕ್ರವಾಸನ (ಪುಂ) ಹೆರಿಳೆಗಿಡ.

ತಕ್ರಸಾರ ತಕ್ರಸಾರ (ಪುಂ) ನವನೀತ, ಬೆಣ್ಣೆ.

ತಕ್ರಾಟ ತಕ್ರಾಟ (ಪುಂ) ಮಂಥನದಂಡ, ಕಡೆಗೋಲು. ತಕ್ರಾರ್ಥ ತಕ್ರೋತ್ಪಾದನಾರ್ಥಮತಿ - ಅಟ (ಗತೀ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।

ತಕ್ಷ - ತ್ವಚನೆ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೆಂ) । ತಕ್ಷತಿ । ತತಕ್ಷ । ಅತಕ್ಷೀತ್ । (ಮರವನ್ನು) ಕೊಯ್ತಿ. -ಕೆತ್ತು.

ತಕ್ಷ ತಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀರಾಮನ ತಮ್ಮನಾದ ಭರತನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ತಕ್ಷಃ ಪುಷ್ಕಲ ಇತ್ಯಾಸ್ತಾಂ ಭರತಸ್ಯ ಮಹೀಪತೇ" ಭಾಗಂ ೯-೧೧-೧೨ । 2. ತಕ್ಷನ ರಾಜಧಾನಿ. ತಕ್ಷ ಮತ್ತು ಪುಷ್ಕಲರು ಭರತನ ಇಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳು. ತಕ್ಷನ ರಾಜ ಧಾನಿಯು ತಕ್ಷಶಿಲೆ. ಪುಷ್ಕಲಾವತಿಯು ಪುಷ್ಕಲನ ರಾಜ ಧಾನಿ. "ಸ ತಕ್ಷಪುಷ್ಕಲೌ ಪುತ್ರೌ ರಾಜಧಾನ್ಯೋಸ್ತದಾಹ್ಯಯೋಃ । ಅಭಿವಿಚ್ಯಾಭಿವೇಕಾಹ್ನಿ ರಾಮಾಂತಿಕಮಗಾತ್ಪುನಃ" ರಘುಂ ೧೫-೮೯ । 3. ತಳುವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು, ಕೆತ್ತುವುದು. ತಕ್ಷ (ತನುಕರಣ) ಭಾವೆ "ಖತ್" (೩-೩-೧೮) ।

ತಕ್ಷಕ ತಕ್ಷಕ (ಪುಂ) 1. ಬಡಗಿ, ಮರಗೆಲಸದವನು. 2. ದೇವಶಿಲ್ಪಿ, ವಿಶ್ವಕರ್ಮ. 3. ಒಂದು ವೃಕ್ಷ. 4. ಕಶ್ಯಪ ಮುನಿಯ ಪತ್ನಿಯರಲ್ಲೊಬ್ಬಳಾದ ಕದ್ರುವಿನಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಸರ್ಪರಾಜ, ವಾಸುಕಿಯ ತಮ್ಮ. [ಶಮೀಕಯುಷಿಯ ಪುತ್ರನಾದ ಶೃಂಗಿಯ ಶಾಪದಿಂದ ಪರಿಕ್ಷಿತನು ಸರ್ಪದಿಂದ ಕಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟು ಮೃತಿಹೊಂದುವನೆಂದು ತಿಳಿದು ವಿಷಹರ ವಿದ್ಯೆಯಿಂದ ಅವನ ಪ್ರಾಣವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಲು ಹೊರಟಿದ್ದ ಕಶ್ಯಪನನ್ನು ತಕ್ಷಕನು ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ತಡೆದು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಿ ಬಿಟ್ಟನು. ಪರಿಕ್ಷಿತನ ಸಂದರ್ಶನಕ್ಕಾಗಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ವೇಷ ದಿಂದ ಬಂದ ಸರ್ಪಗಳು ತಂದಿದ್ದ ಹಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ತಕ್ಷಕನು ಸೇರಿ ಕೊಂಡು ಪರಿಕ್ಷಿತನು ಅದನ್ನು ತಿನ್ನುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಅವನನ್ನು ಕಚ್ಚಿ ಕೊಂದನು. ಈ ಅಪರಾಧಕ್ಕಾಗಿ ಪರಿಕ್ಷಿತನ ಮಗನಾದ ಜನಮೇಜಯನು ಸರ್ಪಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡಿದನು. ಆಗ ತಕ್ಷಕನು ಇಂದ್ರನನ್ನು ಮರೆಹೊಕ್ಕನು. ಯುತಿಕ್ಕುಗಳು ಇಂದ್ರನೊಡನೆ ಸರ್ಪಗಳೆಲ್ಲವೂ ಅಹುತಿಯಾಗಲಿ ಎಂದೂ



ಮಂತ್ರವನ್ನು ಹೇಳುತ್ತಿರುವಾಗ ತಕ್ಷಕನ ಸೋದರಳಿಯ ನಾದ ಆಸ್ತಿಕನು ಜನಮೇಜಯನಿಂದ ಸರ್ಪಗಳಿಗೆ ಅಭಯ ಪ್ರದಾನ ಮಾಡಿಸಿದನು.] "ಶೇಷಃ ಪ್ರಥಮತೋ ಜಾತೋ ವಾಸುಕಿ-  
ಸ್ತದನಂತರಮ್ | ಏರಾವತಸ್ತಕ್ಷಕಶ್ಚ ಕರ್ಕೊಟಕಧನಂಜಯೋ"  
ಭಾಂ ಆದಿಂ ೩೪-೪ | "ತಕ್ಷಕಶ್ರೋಣಿಸೂತ್ರೇಣ ದೃಢಬದ್ಧೇನ  
ಬಂಧುರಮ್" ಯಾದಂ ೧೬-೪೯ |

**ತಕ್ಷಕೀಯ ತಕ್ಷಕೀಯಂ** (ವಿಂ) ಬಡಗಿಯು ಇರುವ ಪ್ರದೇಶ.  
ತಕ್ಷನ್ "ಛ:" (೪-೨-೯೧) | ಕುಕ್ ಚ | ನಲೋಪ: (ಗಂ ೮೧) |  
**ತಕ್ಷಣ ತಕ್ಷಣಂ** (ನಂ) ಮರವನ್ನು ಕೆತ್ತುವುದು ಕೆತ್ತರಿಸು  
ವುದು ಮುಂತಾದ ಕೆಲಸ. ತಕ್ಷು (ತನೂಕರಣ) ಭಾವೆ  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | "ಪ್ರೋಕ್ಷಣಂ ಸಂಹತಾನಾಂ ಚ  
ದಾರವಾಣಾಂ ಚ ತಕ್ಷಣಮ್" ಮನುಂ ೪-೧೧೪ |

**ತಕ್ಷಣಿ ತಕ್ಷಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರವನ್ನು ಕೆತ್ತುವ ಒಂದು  
ಆಯುಧ, ಬಾಚಿ. ತಕ್ಷಯತೇಜಯಾ - ತಕ್ಷು (ತನೂಕರಣ)  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೪) |

**ತಕ್ಷಣೀಯ ತಕ್ಷಣೀಯಂ** (ವಿಂ) 1. ಕೆತ್ತಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.  
2. ಕೆತ್ತಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ಕೆತ್ತಲ್ಪಡುವ. ತಕ್ಷು (ತನೂಕರಣ)  
ಅರ್ಹಾದಿ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | 4. ಕೆತ್ತಬೇಕಾದ.

**ತಕ್ಷತ್ ತಕ್ಷತ್** (ವಿಂ) 1. ಕೆತ್ತುತ್ತಿರುವ. 2. ಕೆತ್ತರಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. ತಕ್ಷು (ತನೂಕರಣ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) | ತಕ್ಷಂತಿ ತಕ್ಷಂತೀ.

**ತಕ್ಷನ್ ತಕ್ಷನ್** (ಪುಂ) ಬಡಗಿ ಮರಗೆಲಸದವನು. ತಕ್ಷಣೋತಿ-  
ತಕ್ಷು (ತನೂಕರಣ) "ಕನಿನ್" (೩ಂ ೧-೧೪೬) | "ಆಪ್ತೇನ  
ತಕ್ಷಣಾ ಭಿಷಜೇವ ತಕ್ಷಣಂ ಪ್ರಚಕ್ರಮೇ ಲಕ್ಷ್ಮಣಪೂರ್ವಕಃ ಕ್ರಮಃ"  
ಮಾಘಂ ೧೨-೨೪ |

**ತಕ್ಷಶಿಲಾ ತಕ್ಷಶಿಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶ್ರೀರಾಮನ ತಮ್ಮ ಭರತನ  
ಮಗನಾದ ತಕ್ಷನ ರಾಜಧಾನಿ. ಇದು ಪಂಜಾಬು ರಾಜ್ಯದ  
ರಾವಲ್ಪಿಂಡಿ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಒಂದು ಪಟ್ಟಣ. ಇಲ್ಲಿ ಉತ್ತರ  
ಭಾರತದ ಒಂದು ದೊಡ್ಡ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯವಿದ್ದಿತು.  
ಈ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯದಲ್ಲಿ ಕ್ರಿ.ಶ. 1ನೆಯ ಶತಮಾನದಲ್ಲಿ  
ಪಾಣಿನಿ ಮಹರ್ಷಿಯೂ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಭಿಷಗ್‌ವರೇಣ್ಯನಾದ  
ಜೀವಕನೂ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸಮಾಡಿದರು. ಜೀವಕನು ಆತ್ರೇಯ  
ನಲ್ಲಿ ವೈದ್ಯವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿತನು. ಇಲ್ಲಿ ಸಾವಿರಾರು  
ಮಂದಿ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳು ಅನೇಕ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ  
ಮಾಡಿ ವಿಖ್ಯಾತ ವಿದ್ವಾಂಸರಾಗಿದ್ದರೆಂದು ಚರಿತ್ರೆಯಿಂದ  
ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ.

**ತಕ್ಷಿತವ್ಯ ತಕ್ಷಿತವ್ಯಂ** (ವಿಂ) ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಕೆತ್ತಬೇಕಾದ, ತಕ್ಷು  
(ತನೂಕರಣ) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬) | ೪ ಪಕ್ಷ ತಕ್ಷವ್ಯಃ ತಕ್ಷವ್ಯಃ.

**ತಕ್ಷಿತು ತಕ್ಷುತ್ಯ** (ವಿಂ) ಮರಗೆಲಸಮಾಡುವವನು, ಮರ  
ವನ್ನು ಕೆತ್ತುವವನು. ತಕ್ಷು (ತನೂಕರಣ) "ತೃತ್" (೩-೧-೧೩೩) |

**ತಕ್ಷು - ತನೂಕರಣ** (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ವೇಂ) | ತಕ್ಷಣೋತಿ  
ತಕ್ಷಣುತಃ ತಕ್ಷಣುವಂತಿ | ವಾ ಇನುಃ | ತಕ್ಷತಿ ತಕ್ಷತಃ ತಕ್ಷಂತಿ |  
ತತಕ್ಷ ತತಕ್ಷತುಃ | ತಕ್ಷಿತಾ, ತಕ್ಷಾ | ತಕ್ಷಿಷ್ಯತಿ, ತಕ್ಷಯತಿ |  
ತಕ್ಷಣೋತು ತಕ್ಷಣುತಾತ್ ತಕ್ಷಣುತಾಮ್ ತಕ್ಷಣುವಂತು | ತಕ್ಷತು ತಕ್ಷತಾತ್  
ತಕ್ಷತಾಮ್ ತಕ್ಷಂತು | ಅತಕ್ಷಣೋತ್, ಅತಕ್ಷತ್ | ತಕ್ಷಣುಯಾತ್,  
ತಕ್ಷೇತ್ | ತಕ್ಷಯಾತ್ | ಅತಾಕ್ಷೀತ್, ಅತಕ್ಷೀತ್ | ಅತಕ್ಷಿಷ್ಯತ್,  
ಅತಕ್ಷಯತ್ | (ಮರವನ್ನು) ಕೆತ್ತಿ ಸಣ್ಣದಾಗಿಮಾಡು, ಕೆತ್ತಿ  
ತೆಳುವಾಗಿಮಾಡು.

**ಕರ್ಮಣಿಃ** - ತಕ್ಷಯತೇ | ತತಕ್ಷೇ | ತಕ್ಷಿತಾ, ತಕ್ಷಾ |  
ತಕ್ಷಿಷ್ಯತೇ, ತಕ್ಷಯತೇ | ತಕ್ಷಯತಾಮ್ | ಅತಕ್ಷಯತ | ತಕ್ಷಯತ |  
ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಣಿಚಿಃ** - ತಕ್ಷಯತಿ, -ತೇ | ತಕ್ಷಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ | ತಕ್ಷಯಿತಾ | ತಕ್ಷಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ |  
ತಕ್ಷಯತು, -ತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಸನಿಃ** - ತಿತಕ್ಷಿಷತಿ, ತಿತಕ್ಷತಿ | ತಿತಕ್ಷಿಷಾಂ ಚಕಾರ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ | ತಿತಕ್ಷಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ |

**ಕ್ರಿಸ್ತುಃ** - ತಕ್ಷಿತವ್ಯಃ, ತಕ್ಷವ್ಯಃ | ತಕ್ಷಣೀಯಃ | ತಕ್ಷಯಃ |  
ತಕ್ಷಃ | ತಕ್ಷವಾನ್ | ತಕ್ಷಣುವನ್ ತಕ್ಷಣುವತೀ | ತಕ್ಷನ್, ತಕ್ಷಂತೀ |  
ತಕ್ಷಿತುಮ್, ತಕ್ಷುಮ್ | ತಕ್ಷಮ್ | ತಕ್ಷಣಮ್ | ತಕ್ಷಿತ್ವಾ, ತಕ್ಷಾ |  
ನಿಷ್ಟತಕ್ಷಯಃ |

**ತಗಣ ತಗಣಂ** (ಪುಂ) (ಭಂದಃಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಅಂತ್ಯಲಘುವುಳ್ಳ  
ವರ್ಣತ್ರಯಾತ್ಮಕವಾದ ಒಂದು ಗಣ. "ಆದಿಮಘ್ಯಾವಸಾ-  
ನೇಷು ಯರತಾ ಯಂತಿ ಲಾಘವಮ್" ಶ್ರುತಬೋಂ |

**ತಗರ ತಗರಂ** (ಪುಂ) 1. ನಂದ್ಯಾವರ್ತವೃಕ್ಷ, ನಂದೀಬಟ್ಟಲು  
ಗಿಡ. "ನಂದ್ಯಾವರ್ತೇ ತು ತಗರಸ್ತಾರಾವತನಭೋಗಣಿ" ವೈಜಂ |  
2. ಮದನವೃಕ್ಷ, ಮಂಗಾರಿ ಗಿಡ.

**ತಕ್ಷು ತಂಕಂ** (ಪುಂ) 1. ಕಷ್ಟದ ಜೀವನ. ತಕಿ (ಕುಚ್ಛಜೀವನೇ)  
ಭಾವೆ "ಘ್" (೩-೩-೧೮) | 2. ಕಲ್ಲುಳಿ, ಟಕ್ಷು ಪುಷಂ |  
3. ಪ್ರಿಯನ ವಿರಹತಾಪ. (ಪುನಂ) 4. ಭಯ. 5. ಹೊದೆ  
ಯುವ ವಸ್ತ್ರ, ಉತ್ತರೀಯ. "ತಕ್ಷೋಽಸ್ತೀ ಭಿಮಿಯಾ"  
ವೈಜಂ |

**ತಕ್ಷುನ ತಂಕನಂ** (ನಂ) ಕಷ್ಟದ ಜೀವನ. ತಕಿ (ಕುಚ್ಛಜೀವನೇ)  
ಭಾವೆ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |

**ತಚ್ಛಿಲ ತಚ್ಛೀಲ** (ವಿಂ) ಅದೇ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ, ಅದೇ  
ಸ್ವಭಾವಕ್ಕೆ ಹೊಂದಿಕೊಂಡಿರುವ. ತತ್ ಶೀಲಂ ಯಸ್ಯ |



ಯಾವ ಫಲವನ್ನೂ ಅಪೇಕ್ಷಿಸದೆ ಒಂದೇ ಸ್ವಭಾವದಿಂದ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು ತಪ್ಪೇಲನು. "ಆಕವೇಸ್ತಚ್ಚಿಲ-ತದ್ವರ್ಮತಸಾಧುಕಾರಿಣಿ" ಪಾಂ ಸಂ ೩-೨-೧೩೪।

ತಜ್ಜ ತಜ್ಜ (ವಿಂ) ಅವರಿಂದ ಉಂಟಾದ, ಅವಳಿಂದ ಉಂಟಾದ, ಅದರಿಂದ ಉಂಟಾದ. ತತೋ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ತಃ" (೩-೨-೧೮)।

ತಜ್ಜಲಾನ್ ತಜ್ಜಲಾನ್ (ವಿಂ) ಅದರಿಂದ ಉಂಟಾದ ಅದರಲ್ಲೇ ಲೀನವಾದ ಮತ್ತು ಅದರಿಂದಲೇ ಬದುಕಿ ಉಸಿ ರಾಡುತ್ತಿರುವ. ತತೋ ಜಾಯತೇ-ಜನಿ "ತಃ" (೩-೨-೧೮)। ತಸ್ಮಿನ್ ಲೀಯತೇ-ಲಿಂಙ್ (ಸಂಶ್ಲೇಷಣೆ) "ತಃ" (೩-೨-೧೯)। ತೇನ ಅನಿತಿ ಜೀವತಿ - ಅನ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ವಿಚ್" (೩-೨-೨೫)। ಧ್ವಾತ್ ಪೂರ್ವ ವಿಚ್ಛಿಂಶಮಾನಸ್ಯ ತಚ್ಚಂದಸ್ಯ ಪ್ರತ್ಯೇಕ ಸಂಬಂಧಃ। "ಸರ್ವಂ ಕ್ವಲ್ವಿದಂ ಬ್ರಹ್ಮ ತಜ್ಜಲಾನಿತಿ ಶಾಂತಿ ಉಪಾಸಿತ" ಛಾಂದೋಗ್ಯಂ।

ತಜ್ಜ ತಜ್ಜ (ವಿಂ) 1. ಅದನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವವನು, ಅ ವಿಷಯವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅರಿತಿರುವವನು. ತತ್ ಜಾನಾತಿ-ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)। 2. ಪರಬ್ರಹ್ಮನ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವವನು.

ತಡ ತಟಿ (ವಿಂ) 1. ತೀರ, ದಡ, ನದಿ ತೊರೆ ಮೊದಲಾದುವು ಗಳ ಪಾರ್ಶ್ವಗಳ ಉನ್ನತ ಪ್ರದೇಶ. ತಡ (ಉಚ್ಛ್ರಾಯೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ತಡ: ತಡಿ ತಡಮ್। "ಕಸ್ಯಾರ್ಥ-ಧರ್ಮಾ ವದ ಪಿಡಯಾಮಿ ಸಿಂಧೋಸ್ತದಾವೋಧ ಇವ ಪ್ರವೃದ್ಧಃ" ಕುಮಾಂ ೩-೬। 2. ಪ್ರಪಾತ, ಬೆಟ್ಟದ ಜರಿ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡಿಪ್" (೪-೧-೬೩)। ತಡಿ ತಟಿ. "ಉಚ್ಚಾ ರಣ-ತ್ಯಕ್ಷಿಗಣಾಸ್ತದೀಸ್ತಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೧೮। (ಪುಂ) 3. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. (ನಂ) 4. ಎತ್ತರವಾದ ಸ್ಥಳ. "ಅಶ್ಲೇಷಿ ಸ್ತನತದಯೋರ್ನವಾಂಶುಕೇನ" ಮಾಘಂ ೮-೬೨। (ವಿಂ) 5. ಕ್ಷೇತ್ರ. 6. ಉನ್ನತವಾದ, ಎತ್ತರವಾದ. "ತಡಂ ನಪುಂಸಕಂ ಕ್ಷೇತ್ರೇ ಪ್ರತೀರೇ ತು ತಡಿ ತ್ರಿಪು" ಮೇದಿಂ।

ತಡಮ್ ತಟಿಭೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೀರಭೂಮಿ, ದಡ. ತಡಸ್ಯ ಭೂಃ। "ಆಸೀನಾ ತಡಭುವಿ ಸಸ್ಮಿತೇನ ಭರ್ತೃ ರಮೋರೂರವತರಿಸು ಸರಸ್ಯನಿಚ್ಛುಃ" ಮಾಘಂ ೮-೧೯।

ತಡಸ್ಥ ತಟಿಸ್ಥ (ನಂ) 1. ಒಂದು ವಿಶೇಷ ಲಕ್ಷಣ, ವಸ್ತು, ವಿನ ಸ್ವಭಾವಕ್ಕಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನವಾದ ಇತರ ವ್ಯಾವರ್ತಕ ವಾದ ಮತ್ತು ಅ ವಸ್ತುವಿಗೆ ಮಾತ್ರ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಗುಣ. "ಗಂಧವತ್ತ್ವಂ ಪೃಥಿವ್ಯಾ ಲಕ್ಷಣಮ್" ಇಲ್ಲಿ ಇದಂ ತಟಿಸ್ಥ ಲಕ್ಷಣ. (ವಿಂ) 2. ದಡದಲ್ಲಿರುವ, ತೀರದಲ್ಲಿರುವ. ತಡೆ ತಿಠತಿ-ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕಃ" (೩-೨-೪)। "ಸಮೀರಸಜ್ಜಾದಿವ

ನೀರಭಜ್ಞಾ ಮಯಾ ತಡಸ್ಥಸ್ತವಮುಪದ್ರುತೋಽಸಿ," ನೆಪಂ ೩-೫೫। 3. ಉದಾಸೀನನಾದ, ಅಧಿಕ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಕೈಹಾಕದಿರುವ. "ತಡಸ್ಥಃ ಸ್ವಾನರ್ಥಾನ್ ಧಟಯತಿ ಚ ಮೀನಂ ಚ ಭಜತೇ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೭।

ತಡಾಕ ತಟಾಕ (ಪುಂ) ಸರಸ್ಸು, ಕೊಳ, ಕಮಲಗಳು ಬೆಳೆ ದಿರುವ ಜಲಾಶಯ. ತಡಮಕತಿ - ಅಕ (ಕುಡಲಾಂ ಗತೀ) "ಅಞ್" (೩-೨-೧)।

ತಡಾಘಾತ ತಟಾಘಾತ (ಪುಂ) ಆನೆ ಎತ್ತು ಮೊದಲಾದುವು ಗಳ ವಪ್ರಕ್ರೀಡೆ, ತೀರಪ್ರದೇಶವನ್ನು ಕೊಂಬುಗಳಿಂದ ಅಗೆದು ಆಟವಾಡುವುದು. ತಡೆ ಆಘಾತಃ। "ಅಮ್ಯಸ್ಯಂತಿ ತಡಾಘಾತಾನ್ ನಿಜಿತೇರಾವತಾ ಗಜಾಃ" ಕುಮಾಂ ೨-೫೦।

ತಡಿಣಿ ತಟಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನದಿ, ಹೊಳೆ. ತಡಮಸ್ಯಸ್ಯಾಃ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫)। "ಡಿಪ್" (೪-೧-೫)। "ಕದಾ ವಾರಾಣಸ್ಯಾಮರತಡಿಣಿರೋಧಸಿ ವಸನ್" ಭರ್ತುಂ ೩-೮೭।

ತಡಾಕ ತಡಾಕ (ಪುಂ) 1. ಸರಸ್ಸು, ಕೊಳ. ತಡ (ಆಘಾತೆ) "ಆಕಃ" (೩ಂ ೪-೧೫)। ನಿಪಾಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ -ಕಾ. 2. ದೀಪ್ತಿ, ಪ್ರಕಾಶ.

ತಡಾಗ ತಡಾಗ (ಪುಂ) 1. ಸರಸ್ಸು, ಕೊಳ, ಜಲಾಶಯ. 2. ಕೆರೆ. 3. ಮೃಗಗಳನ್ನು ಹಿಡಿಯುವ ಬಲೆ. 4. ಐದು ನೂರು ಧನುಸ್ಸಿನ ಅಳತೆಯುಳ್ಳ ಜಲಾಶಯ. (ಒಂದು ಧನುಸ್ಸು 24 ಅಂಗುಲ ಅಳತೆಯದು). "ಚತುರ್ವಿಂಶಾಂಗುಲೋ ಹಸ್ತೋ ಧನುಸ್ತಚ್ಚತುರ್ದಶತರ್ಮಃ। ಶತಧನ್ವಂತರಂ ಚೈವ ತಾವತ್ ಪುಷ್ಕರಿಣಿ ಶುಭಾ। ಏತತ್ಪಶ್ಚಗುಣಃ ಪ್ರೋಕ್ತಸ್ತಡಾಗ ಇತಿ ನಿರ್ಣಯಃ"। "ತಡಾಗೋಽಸ್ತ್ರೀ ಜಲಾಧಾರವಿಶೇಷೇ ಯನ್ತ್ರಕೂಟಕೇ" ಮೇದಿಂ।

ತಡಿ ತಡಿ (ಪುಂ) 1. ಏಟು, ಹೊಡೆತ. ತಡ (ಆಘಾತೆ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭)। (ವಿಂ) 2. ಹೊಡೆಯುವ.

ತಡಿತು ತಡಿತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು. ತಡ (ಆಘಾತೆ) + ಣಿಚ್ "ಇತಿಃ" (೩ಂ ೧-೧೮)। "ಕೃತೋಪವೀತಂ ಹಿಮಶುಭ್ರಮುಚ್ಚಕೇರ್ಧನಂ ಧನಾಂತೇ ತಡಿತಾಂ ಗಣೇರಿವ" ಮಾಘಂ ೧-೭।

ತಡಿತ್ಪ್ರಭಾ ತಡಿತ್ಪ್ರಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ಕಂದನ ಮಾತೃಗಳ ಲ್ಲೊಬ್ಬಳು.

ತಡಿತ್ವತ್ ತಡಿತ್ವತ್ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ತಡಿತ್ವ ವಿಚ್ಛೇದಸ್ಯ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೧೪)। "ಗಿರೇಸ್ತಡಿತ್ವಾನಿವ ತಾವದುಚ್ಚಕೇರ್ಜವೇನ ಪಿಠಾದುದತಿಠದಚ್ಛುತಃ" ಮಾಘಂ ೧-೧೨। (ವಿಂ) 2. ಮಿಂಚಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಅಯಶ್ಚ ಗಗನಾತ್ಕೋಽಪಿ ತಪ್ತಚಾಮೀಕರಾಙ್ಗದಃ। ಅಧಿರೋಹತಿ ಶೈಲಾಗ್ರಂ ತಡಿತ್ವಾನಿವ ತೋದಃ" ವಿಕ್ರಂ ೧-೧೫। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡಿಪ್" (೪-೧-೬)।



ತಡಿತವತೀ ತಡಿತ್ಯುತೀ. "ಸಮುದಿತಂ ನಿವೇನ ತಡಿತವತೀಂ  
ಲಘಯತಾ ಶರದಮ್ಬುದಸಂಹಿತಮ್" ಕಿರಾಂ ೪-೪।

ತಡಿಗರ್ಭ ತಡಿಗರ್ಭ (ಪುಂ) ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಮಿಂಚಿನಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ಮೇಘ. ತಡಿತ್ ಗರ್ಭ ಯಸ್ಯ।

ತಡಿವಾಸಸ್ ತಡಿವಾಸಸ್ (ವಿಂ) ಮಿಂಚಿನಂತಿರುವ ವಸ್ತು  
ವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ. ತಡಿವಿವ ವಾಸೋ ಯಸ್ಯ। "ಅಪೀಚ್ಯ-  
ದರ್ಶನಂ ಷ್ಯಾಮ್ ತಡಿವಾಸಸಮಚ್ಯುತಮ್" ಭಾಗಂ ೧-೧೨-೮।

ತಡಿನ್ಮಯ ತಡಿನ್ಮಯ (ವಿಂ) ಮಿಂಚಿನ ಸ್ವರೂಪದ. ತಡಿತ್  
"ಮಯತ್" (೪-೪-೨೧)। "ವ್ಯಲೋಕಯನ್ಮುನಿಷಿತಂ ಸ್ತಡಿನ್ಮಯ-  
ಮಹಾತಪ.ಸಾಕ್ಷ್ಯ ಇವ ಸ್ಥಿತಾಃ ಕ್ಷಪಾಃ" ಕುಮಾಂ ೪-೨೪।

ತಂಡಕ ತಂಡಕ (ಪುಂ) 1. ನೊರೆ. 2. ಕೆಂಪುತದ ಹಕ್ಕಿ,  
ಕಾಡಿಗೆ ಸೊಗಸಿನ ಹಕ್ಕಿ. 3. ಸಮಾಸ ಭೂಯಿಷ್ಯವಾದ  
ವಾಕ್ಯ. 4. ಮನೆಗೆ ಆಧಾರವಾದ ಕಂಬ. 5. ತರುಸ್ಕಂಧ,  
ಮರದ ಬುಡದಿಂದ ರೆಂಬೆಯವರೆಗಿನ ಭಾಗ, ಬೇರಿನಿಂದ  
ಕೊಂಬೆಯವರೆಗೆ ಇರುವ ಮಧ್ಯದ ದೂಲ. 6. ಮಾಯಾವಿ.  
"ತಂಡಕಃ ಸ್ವಜ್ಜನೇ ಫೇನೇ ಸಮಾಸಪ್ರಾಯವಾಚಿ ಚ। ಗೃಹದಾರ-  
ತರುಸ್ಕಂಧಮಾಯಾಬಹುಲಕೇಷ್ವಪಿ" ಮೇದಿಂ।

ತಂಡು ತಂಡು (ಪುಂ) ನಂದಿಕೇಶ್ವರ. "ಭೃಗ್ನಿಭೃಗ್ನಿರಿತಸ್ತಂಡು-  
ನಂದಿನೌ ನಂದಿಕೇಶ್ವರೇ" ಅಮಂ।

ತಂಡುರೀಣ ತಂಡುರೀಣ (ಪುಂ) 1. ಕೀಟ, ಹುಳಿ. 2. ಅಕ್ಕಿ  
ತೊಳೆದ ನೀರು. (ವಿಂ) 3. ಬರ್ಬರ, ಪರದೇಶದವನು.  
"ತಂಡುರೀಣಃ ಕಿರೀಟಾತ್ರೇ ಬರ್ಬರೇ ತಂಡುಲೋದಕೇ" ಮೇದಿಂ।

ತಂಡುಲ ತಂಡುಲ (ಪುಂ) 1. ಹೊಟ್ಟೆಲ್ಲದ ಧಾನ್ಯ, ಅಕ್ಕಿ.  
ತಡಿ (ಆಘಾತ) "ಉಲಕ್" ನುಮ್ ಚ (೩ಂ ೪-೧೦೭)।  
ನಿಪಾಂ। "ಶಸ್ಯಂ ಕ್ಷೇತ್ರಗತಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಸತುಫಂ ಧಾನ್ಯಮುಚ್ಯತೇ।  
ನಿಸ್ತುಪಸ್ತಂಡುಲಃ ಪ್ರೋಕ್ತಃ ಸ್ವಿಗ್ನಮಗ್ನಮುದಾಹೃತಮ್"। 2. ವಾಯಿ  
ವಿಳಂಗ. "ತಂಡುಲಃ ಸ್ಯಾತ್ ವಿಡ್ಜ್ಞೇ ಚ ಧಾನ್ಯಾದಿನಿಕರೇ  
ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ।

ತಂಡುಲಾ ತಂಡುಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಪ್ಪಲಿ.

ತಂಡುಲಾಂಬು ತಂಡುಲಾಂಬು (ನಂ) ಅಕ್ಕಿತೊಳೆದ ನೀರು.

ತಂಡುಲೀಯ ತಂಡುಲೀಯ (ಪುಂ) 1. ಚಿಲುಕೇರೆ. 2. ವಾಯಿ  
ವಿಳಂಗ. ತಂಡುಲಾಯ ಹಿತಃ "ಛಃ" (೪-೧-೪)। ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಕಃ"। ತಂಡುಲೀಯಕಃ ತಂಡುಲೀಯಕಃ.

ತಂಡುಲು ತಂಡುಲು (ಪುಂ) ವಾಯಿವಿಳಂಗ.

ತಂಡುಲೋಘ ತಂಡುಲೋಘ (ಪುಂ) 1. ಅಕ್ಕಿಯ ರಾಶಿ. 2. ಹೆಚ್ಚು  
ಮುಳ್ಳು ಜಾತಿಯ ಬಿದಿರು ಮೆಳೆ.

ತತ ತತ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 2. ತಂದೆ. 3. ಮಗ.  
ತನ್ಯತೇಜ್ವಯೋಽಸ್ಮಾತ್ — ತನು (ವಿಸ್ತಾರೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ"

(೩-೨-೧೦೨)। (ನಂ) 4. ಎಣೆ ಮೊದಲಾದ ತಂತಿಯ  
ವಾದ್ಯ. 5. ಎಸ್ತಾರ. ತನು ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)।  
"ಅಥ ತತಂ ವ್ಯಾಪ್ತೇ ವಿಸ್ತೃತೇ ಚ ತ್ರಿಲಿಂಗಕಮ್। ಕಲಿವಂ  
ವೀಣಾದಿವಾಚೇ ಸ್ಯಾತ್ ಪುಲಿಂಗಸ್ತು ಸಮೀರಣೇ" ಮೇದಿಂ।  
(ವಿಂ) 6 ಎಸ್ತಾರವಾದ, ದೊಡ್ಡದಾದ. "ತೇ ವೀರಾ  
ಬದ್ಧನಿಸ್ತ್ರಿಶಾಸ್ತತಾಯುಧಕಲಾಪಿನಃ" ಭಾಂ.ವಿರಾಂ ೬-೬।  
"ವನಂ ತತಾನೇಕತಮಾಲತಾಲಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೩೯। 7. ಎಸ್ತಾರ  
ವಾದ, ಅವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ತನು ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।  
"ಯಸ್ಯಾಂತಸ್ಥಾನಿ ಭೂತಾನಿ ಯೇನ ಸರ್ವಮಿದಂ ತತಮ್" ಗೀತಾ  
೮-೨೨।

ತತಪತ್ರಿ ತತಪತ್ರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಳೆಗಿಡ. ತತಂ ಪತ್ರಂ ಯಸ್ಯಾಃ  
ಜಾತಿಂ "ಕೀಞ್" (೪-೧-೬೩)।

ತತಮ ತತಮ (ವಿಂ) ಬಹುಜನರಲ್ಲಿ ಅವನೊಬ್ಬ. ತेषಾಂ  
ಮಧ್ಯೆ ಸ ಏಕತಮಃ — ತದ್ "ತತಮಚ್" (೪-೩-೯೩)।

ತತರ ತತರ (ವಿಂ) ಅವರಿಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಅವನೊಬ್ಬ. ತಯೋರ್ಮಧ್ಯೆ  
ಸ ಏಕತರಃ — ತದ್ "ತತರಚ್" (೪-೩-೯೨)।

ತತಸ್ ತತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅಲ್ಲಿಂದ, ಆ ಪ್ರದೇಶದಿಂದ.  
ತತ್ "ತಸಿಲ್" (೪-೩-೭)। "ಯತೋ ಯತೋ ಯಾದವಸೈನ್ಯ-  
ಮಾಸೀತ್ ತತಸ್ತತೋ ದೈತ್ಯಚಮೂರಪಾಯಾತ್" ಯಾದಂ ೨೦-೪೯।  
2. ಅವನಿಂದ, ಅವಳಿಂದ, ಅದರಿಂದ. "ನ ಚ ನಿಮ್ನಾದಿವ  
ಸಲಿಲಂ ನಿವರ್ತತೇ ತತೋ ಹೃದಯಮ್" ಶಾಕುಂ ೩-೨।  
3. ಆ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ, ಆ ಜಾಗದಲ್ಲಿ. 4. ಅವನಲ್ಲಿ, ಅವಳಲ್ಲಿ,  
ಅದರಲ್ಲಿ. "ನ ವಿಶ್ಯಮಾನೇಷ್ವರೈಷು ನಾರ್ಯಾಮಿಪಿ ಯತಸ್ತತಃ"  
ಮನುಂ ೪-೧೫। 5. ಅನಂತರ, ಬಳಿಕ, ಅಮೇಲೆ. "ತತಃ  
ಸಸಂಮದಾಸ್ತತ್ರ ನಿರೇಕ್ಷಂತ ಪತತ್ರಿಣಃ" ಭಟ್ಟಿಂ ೭-೫೯।  
6. ಆ ಕಾರಣದಿಂದ. "ಹೀನಾಃ ಸತ್ವೇನ ಸೂಕ್ಷ್ಮೇಣ ತತೋ  
ವೈಕಾರಿಕಾಃ ಸ್ಮೃತಾಃ" ಭಾಂ.ಶಾಂತಿಂ ೩೫೮-೭೮।  
7. ಅದರ. "ಅಮೋಚ್ಯಮಶ್ವಂ ಯದಿ ಮನ್ಯಸೇ ಪ್ರಭೋ ತತಃ  
ಸಮಾಪ್ತೇ ವಿಧಿನೇವ ಕರ್ಮಣಿ" ರಘುಂ ೩-೬೫। 8. ಅದ  
ಕಿಂತಲೂ. "ಯಂ ಲಕ್ಷವಾ ಚಾಪರಂ ಲಾಭಂ ಮನ್ಯತೇ ನಾಧಿಕಂ  
ತತಃ" ಗೀತಾ ೬-೨೨।

ತತಸ್ತತ್ಯ ತತಸ್ತತ್ಯ (ವಿಂ) ಅದರಿಂದ ಬಂದ, ಅವನಿಂದ ಬಂದ,  
ಅವಳಿಂದ ಬಂದ. ತತಃ ಆಗತಃ "ತ್ಯಪ್" (೪-೨-೧೦೪)।  
"ನಿಶಮ್ಯ ಸಿದ್ಧಿ ದ್ವಿಷತಾಮಪಾಕೃತೀಸ್ತತಸ್ತತಸ್ತತ್ಯಾ ವಿನಿಯನ್ತು-  
ಮಕ್ಷಮಾ" ಕಿರಾಂ ೧-೨೭।

ತತಿ ತತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೆಚ್ಚು, ಸಾಲು. ತನು (ವಿಸ್ತಾರೆ)  
"ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ವಿಭರ್ತಿ ಜನಯತ್ರಯಂ ಮುದಮಪಾಮಪಾಯ-  
ವಲಾ ವಲಾಹಕತತೀಃ" ಮಾಘಂ ೪-೫೪। 2. ಸಮೂಹ,



ಗುಂಞ. "ರಾಜೀವರಾಜೀವಶಲೋಲಭೃಂ ಮುಣಂತಮುಣಂ ತತಿ-  
ಭಿತ್ತರೂಣಾಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೯।

ತತ್ಕರ ತತ್ಕರ (ವಿಂ) ಆ ಕೆಲಸವನ್ನು ಮಾಡುವವನು. ತತ್  
ಕರೋತಿ—ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಅಚ್" (ವಾಂ ೪-೨-೨೧)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಠಾಪ್" (೪-೧-೪)। -ರಾ-ಠಾ.

ತತ್ಕರ್ಮಕಾರಿನ್ ತತ್ಕರ್ಮಕಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಅದೇ ಕಾರ್ಯ  
ವನ್ನು ಮಾಡುವ. ತತ್ಕರ್ಮ ಕರೋತಿ—ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ)  
"ಗಿಣಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। "ತಾನ್ವಿದಿತ್ವಾ ಸುಚರಿತಗೃಹೈ-  
ಸ್ತತ್ಕರ್ಮಕಾರಿಭಿ:" ಮನುಂ ೯-೨೬೧।

ತತ್ಕಾಲ ತತ್ಕಾಲ (ಪುಂ) 1. ವರ್ತಮಾನಕಾಲ, ನಡೆಯು  
ತ್ತಿರುವಕಾಲ. ಸ ಚಾಸೌ ಕಾಲಶ್ಚ। "ತತ್ಕಾಲಸ್ತು ತದಾತ್ವಂ  
ಸ್ಯಾದುತ್ತರ: ಕಾಲ ಆಯತಿ:" ಅಮಂ 1. 2. ಆ ಕಾಲ,  
ಆ ಸಮಯ. (ವಿಂ) 3. ಆ ಕಾಲದ, ಆ ಸಮಯದ.  
(ಅವ್ಯಂ) 4. ಆ ಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಅದೇ ಸಮಯದಲ್ಲಿ.

ತತ್ಕಾಲಧಿ ತತ್ಕಾಲಧೀ (ವಿಂ) ಆ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಹೊಳೆಯುವ  
ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ, ಸಮಯೋಚಿತವಾಗಿ ಹೊಳೆಯುವ ಬುದ್ಧಿ  
ಯುಳ್ಳ. ತಸ್ಮಿನ್ ಯಥೋಚಿತ ಕಾಲೇ ಧೀರಸ್ಯ।

ತತ್ಕಾಲೀನ ತತ್ಕಾಲೀನ (ವಿಂ) ಆ ಕಾಲದ, ಆ ಕಾಲದಲ್ಲಿದ್ದ,  
ಸಮಕಾಲದ. ತತ್ಕಾಲ "ಽಖ್" (೪-೩-೧೧)। "ಕಾಲಾ-  
ಕೃನ್" (೪-೩-೧೧) ಸೂತ್ರದಲ್ಲಿ ಕಾಲಾತ್ ಎಂದು ಯೋಗ  
ವಿಭಾಗಮಾಡಿ "ಯುಷ್ಮದಸ್ಮದೋ:...." (೪-೩-೧) ಸೂತ್ರ  
ದಿಂದ "ಽಖ್" ನ್ನು ಅನುವೃತ್ತಿಮಾಡಿ ತಂದು ಕಾಲ ಶಬ್ದದ  
ಮುಂದೆ ವಿಧಿಸಿದರೆ "ಕಾಲೀನ" ಪದವು ನಿಷ್ಪನ್ನವಾಗು  
ವುದು. ಇದರಿಂದ ಪ್ರಾಕಕಾಲೀನ:, उत्तरकालीन:, अर्वा-  
कालीन:, समकालीन:, तत्कालीन: ಇತ್ಯಾದಿ ಪ್ರಯೋಗ  
ಗಳು ಉಪಪನ್ನವಾಗುವುವು ಎಂದು ಕೆಲವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.  
"ಸಮಾಸಪ್ರತ್ಯಯವಿಧೌ ಪ್ರತಿಷೇಧೋ ವಕ್ತव्य:" (ವಾಂ ೧-೧-೭೨)  
ವಾರ್ತಿಕದಿಂದ ತದಂತವಿಧಿಪರಿಭಾಷೆಗೆ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ  
ಕಾಲಾಂತ ಶಬ್ದದ ಮುಂದೆ "ಽಖ್" ಪ್ರತ್ಯಯವು ಬರುವುದಿಲ್ಲವೆಂದೂ  
"ಽ" ಪ್ರತ್ಯಯ ಬರುವುದೇ ಸಾಧುವೆಂದೂ ಮತ್ತೆ ಕೆಲವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. ವಾಸ್ತವ  
ವಾಗಿ "ತದ್ವಿತಾ:" (೪-೧-೭೬) ಸೂತ್ರದ ಬಹುವಚನ  
ದಿಂದ ಅನುಕ್ತ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿ ತದ್ವಿತ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು ಬರುವು  
ವೆಂದೂ ಪ್ರಕೃತ "ಕಾಲಾಂತ" ಶಬ್ದದ ಮುಂದೆ "ಽ" ಪ್ರತ್ಯಯ  
ಬರುವುದೆಂದೂ ತಿಳಿಯಬೇಕು. ವೈಯಾಕರಣರು, ಈ ವಿಷಯವು  
ಭಾಷ್ಯದಲ್ಲಿ ಅನುಕ್ತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಪ್ರಯೋಗವು  
ಅಪ್ರಾಮಾಣಿಕವೆಂದೂ ಅಪಭ್ರಂಶವೆಂದೂ ಅಭಿಪ್ರಾಯಪಡುವರು.  
"ಕಥಂ ತಹಿ ಶಾರ್ವರಸ್ಯ ತಮಸೌ

ನಿಷಿದ್ಧಯೇ" ಸಮಾನಕಾಲೀನಮ್ ಪ್ರಾಕಕಾಲೀನಮಿತ್ಯಾದಿ ಚ।  
"ಅಪಭ್ರಂಶಾ ಎವೇತೇ ಇತಿ ಪ್ರಾಮಾಣಿಕಾ:" ಸಿಂ ಕೌಂ 1. "ಬ್ರಹ್ಮಾನ್  
ಕಾಲಾಂತರಕೃತಂ ತತ್ಕಾಲೀನಂ ಕಥಂ ಭವೇತ್। ಯತ್ ಕೌಮಾರೇ  
ಹರಿಕೃತಂ ಜಗು: ಪೌಗಂಡಕೇಽಭಂಕಾ:" ಭಾಗಂ ೧೦-೧೨-೪೧।

ತತ್ಕುಲೀನ ತತ್ಕುಲೀನ (ವಿಂ) ಆ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು.  
ತತ್ಕುಲಸ್ಯ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಽಖ್:" (೪-೧-೧೩೯)।

ತತ್ಕ್ರಿಯ ತತ್ಕ್ರಿಯ (ವಿಂ) ವೇತನವಿಲ್ಲದೆ ಆ ಕೆಲಸವನ್ನು  
ಮಾಡುವವನು. ಸಾ ಕ್ರಿಯಾ ಯಸ್ಯ।

ತತ್ಕ್ಷಣ ತತ್ಕ್ಷಣ (ಪುಂ) ಅದೇ ಸಮಯ, ಅದೇ ಕಾಲ.  
ಸ ಚಾಸೌ ಕ್ಷಣಶ್ಚ। "ವಿವಕ್ಷಿತಾಮರ್ಥವಿದಸ್ತತ್ಕ್ಷಣಪ್ರತಿ-  
ಸಂಹತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೧೫।

ತತ್ವ ತತ್ತ್ವ (ನಂ) 1. ವಸ್ತುವಿನ ಸ್ವಭಾವ, ಯಾಥಾರ್ಥ್ಯ,  
ಅನುಗತವಾದ ಅರ್ಥ. ತಸ್ಯ ಭಾವ:—ತದ್ "ತ್ವ:"  
(೫-೧-೧೧೯)। "ಕರೌ ವ್ಯಾಧುನ್ವಯಾ: ಪಿಬಸಿ ರತಿ-  
ಸರ್ವಸ್ವಮಧರಂ ವಯಂ ತತ್ತ್ವಾನ್ವೇಷಾನ್ಮಧುಕರ ಹತಾಸ್ತ್ವಂ ಖಲು ಕೃತೌ"  
ಶಾಕುಂ ೧-೨೦। 2. ಬ್ರಹ್ಮ, ಆರೋಪಿತವಲ್ಲದ ಸ್ವರೂಪ  
ವುಳ್ಳ ಪರಬ್ರಹ್ಮ. ಪರಮಾತ್ಮ, "ವದಂತಿ ತತ್ತ್ವವಿದಸ್ತತ್ತ್ವಂ  
ಯಜ್ಞಾನಮದ್ವಯಮ್। ಬ್ರಹ್ಮೇತಿ ಪರಮಾತ್ಮೇತಿ ಭಗವಾನಿತಿ ಶಬ್ದಾಂತೇ"  
ಭಾಗಂ ೧೦-೨-೧೧। 3. ಚಿತ್ ಮತ್ತು ಅಚಿತ್ತುಗಳ  
ವ್ಯಾಪ್ತಿ ಮತ್ತು ಪ್ರಯೋಜನಗಳಿಂದ ಜಗತ್ತಿನ ಸರ್ವ  
ಸಾರಭೂತನಾದ ಪರಮಾತ್ಮ. "ಸಾರಾಂಶಭೂತೌ ಜಗತೌ ಯೋಷ್ಠೌ  
ತತ್ತ್ವಮಿತಿ ಸ್ಮೃತ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ:। "ತತ್ತ್ವಂ ತತ್ತ್ವವಿದೇ-  
ಕಾತ್ಮಾ ಜನ್ಮಮೃತ್ಯುಜರಾತಿಗ:" ವಿಂ ಸಂ 1. 4. ವಸ್ತುವಿನ  
ಆರೋಪಿತವಲ್ಲದ ಸ್ವರೂಪ. "ಸನ್ಯಾಸಸ್ಯ ಮಹಾಬಾಹೌ  
ತತ್ತ್ವಮಿಚ್ಛಾಮಿ ವೇದಿತುಮ್। ತ್ಯಾಗಸ್ಯ ಚ ಹೃಷೀಕೇಶ ಪೃಥಕ್ಕೇಶಿ-  
ನಿಷ್ಠದನ" ಗೀತಾ ೧೮-೧।

ನಾನಾದರ್ಶನಕಾರರು ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುವ  
ಪ್ರಕೃತಿ ಮೊದಲಾದ ತತ್ತ್ವಗಳು:

ಚಾರ್ವಾಕದರ್ಶನ: ಪೃಥಿವಿ ಅಪ್ಪು (ಜಲ)  
ತೇಜಸ್ಸು ಮತ್ತು ವಾಯುಗಳೆಂಬ ನಾಲ್ಕು ತತ್ತ್ವಗಳು  
ಮಾತ್ರವೆಂದು ಚಾರ್ವಾಕರು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. "ಅತ್ರ ಚತ್ವಾರಿ  
ಭೂತಾನಿ ಭೂಮಿವಾಯುನಲಾನಿಲಾ:। ಚತುರ್ಮಯ: ಖಲು ಭೂತೇಭ್ಯ:  
ಚೇತನ್ಯಮುಪಜಾಯತೇ" ಸಂ ೬೦ ಸಂ 1.

ಬೌದ್ಧದರ್ಶನ: ಸತ್ ಅಸತ್ ಉಭಯ ಅನು  
ಭಯಾತ್ಮಕ ಚತುಷ್ಕೋಟಿಮೂರ್ತವಾದ ಶೂನ್ಯವೇ  
ತತ್ತ್ವವೆಂದು ಬೌದ್ಧರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

ಜೈನದರ್ಶನ: ಜೀವ ಅಜೀವ ಆಸ್ರವ ಬಂಧ  
ಸಂವರ ನಿರ್ಜರ ಮತ್ತು ಮೋಕ್ಷಗಳೆಂಬ ಏಳು ತತ್ತ್ವ  
ಗಳೆಂದು ಜೈನ ದರ್ಶನಕಾರರು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ.



**ಸಾಂಖ್ಯದರ್ಶನ:** ಜೀವಾತ್ಮ ಪ್ರಕೃತಿ ಮಹತ್ ಅಹಂಕಾರ ಪಂಚ(5)ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯಗಳು ಪಂಚ(5) ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಗಳು, ಪಂಚ(5)ತನ್ಮಾತ್ರಗಳು, ಪೃಥಿವ್ಯಾದಿ ಪಂಚ(5)ಭೂತಗಳು ಮತ್ತು ಮನಸ್ಸು ಸೇರಿ ಒಟ್ಟು ತತ್ತ್ವಗಳು ಇಪ್ಪತ್ತೈದು (25) ಎಂದು ನಿರೀಶ್ವರ ಸಾಂಖ್ಯರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

**ಯೋಗದರ್ಶನ:** ಪಾತಂಜಲಯೋಗದರ್ಶನ (ಸೇಶ್ವರ ಸಾಂಖ್ಯದರ್ಶನ)ಕಾರರು "ತತ್ತ್ವವು ಚೇತನ ಅಚೇತನಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಚೇತನತತ್ತ್ವವು ಪುರುಷ ಈಶ್ವರನೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಈ ಪುರುಷ ಮತ್ತು ಈಶ್ವರನೊಡನೆ ಪ್ರಕೃತಿ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು (24) ತತ್ತ್ವಗಳೂ ಸೇರಿ ಒಟ್ಟು ತತ್ತ್ವಗಳು ಇಪ್ಪತ್ತಾರು (26)" ಎಂದು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಯೋಗಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಶ್ರೌತಸ್ಮಾರ್ತಕರ್ಮಗಳಿಂದ ಈಶ್ವರಪ್ರೀತಿಯನ್ನೂ ಅನುಗ್ರಹವನ್ನೂ ಸಂಪಾದಿಸಬೇಕೆಂದು ಉಕ್ತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಈಶ್ವರ ಭಕ್ತಿಗೆ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯವುಂಟು. ಸಾಂಖ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರದಿಂದ ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನ ಯೋಗಶಾಸ್ತ್ರದಿಂದ ಭಕ್ತಿಪೂರ್ವಕ ಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನ ಇವುಗಳಿಂದ ಮೋಕ್ಷಸಂಪಾದನೆ. ಈ ಅಭಿಪ್ರಾಯದಿಂದ ಸಾಂಖ್ಯಯೋಗಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ವ್ಯವಹಾರವಿರುವುದೆಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕು.

**ದ್ವೈತದರ್ಶನ:** ಈ ದರ್ಶನಕಾರರು ಸ್ವತಂತ್ರ ಮತ್ತು ಅಸ್ವತಂತ್ರಗಳೆಂಬ ಎರಡು ತತ್ತ್ವಗಳನ್ನು ಆಂಗೀಕರಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. "ಸ್ವತನ್ತ್ರಮಸ್ವತನ್ತ್ರಂ ಚ ದ್ವಿವಿಧಂ ತತ್ವಮಿಷ್ಯತೇ | ಸ್ವತನ್ತ್ರೋ ಭಗವಾನ್ ವಿಷ್ಣುಃ ಭಾವಾಭಾವೀ ದ್ವಿಧೇತರತ್" ತತ್ವಸಂ. | ಪರಮಾತ್ಮನಾದ ವಿಷ್ಣುವು ಸ್ವತಂತ್ರತತ್ತ್ವ. ಅಸ್ವತಂತ್ರ ತತ್ತ್ವವು ಭಾವ ಅಭಾವಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ.

**1. ಭಾವತತ್ತ್ವ:** ಇದು ಚೇತನ ಅಚೇತನಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ.

(1) ಚೇತನತತ್ತ್ವವು ದುಃಖಾಸ್ಪೃಷ್ಟ ದುಃಖಸ್ಪೃಷ್ಟಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಲಕ್ಷ್ಮಿಯು ದುಃಖಾಸ್ಪೃಷ್ಟಚೇತನ. ದೇವತೆಗಳು ಋಷಿಗಳು ಪಿತೃಗಳು ನೃಪರು ಮನುಷ್ಯರು ದುಃಖಸ್ಪೃಷ್ಟ ಅಚೇತನರು. ಇವರಲ್ಲಿ ನಿತ್ಯಸಂಸಾರಿಗಳೂ ತಮೋಯೋಗ್ಯರೂ ಮುಕ್ತಿಗೆ ಅಯೋಗ್ಯರು.

(2) ಅಚೇತನ ತತ್ತ್ವವು ನಿತ್ಯ ನಿತ್ಯಾನಿತ್ಯ ಮತ್ತು ಅನಿತ್ಯಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ವೇದಗಳು ನಿತ್ಯ. ಪುರಾಣಗಳು ಕಾಲ ಮತ್ತು ಪ್ರಕೃತಿ ಇವು ನಿತ್ಯಾನಿತ್ಯ. ಅನಿತ್ಯವು ಅಸಂಸೃಷ್ಟ ಸಂಸೃಷ್ಟಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಅಸಂಸೃಷ್ಟವು ಮಹತ್ ಅಹಂಕಾರ ಬುದ್ಧಿ ಮನಸ್ಸು ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯಗಳು (5) ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಗಳು (5) ತನ್ಮಾತ್ರಗಳು (5)

ಪೃಥಿವ್ಯಾದಿ ಭೂತಗಳು (5) ಎಂದು ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು (24) ವಿಧ. ಸಂಸೃಷ್ಟವು (1) ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡ (2) ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡಗತ ಸಮಸ್ತ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. "ಸಸೃಷ್ಟಮಣಃ ತದ್ಗಂ ಚ ಸಮಸ್ತಂ ಸಂಪ್ರಕೀರ್ತಿಸಮ್" ತತ್ವಸಂ. |

**2. ಅಭಾವತತ್ತ್ವ:** (1) ಪ್ರಾಗಭಾವ (2) ಪ್ರದ್ವಂಸಾಭಾವ (3) ಅತ್ಯಂತಾಭಾವಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. "ಪ್ರಾಕ್ಪ್ರಭ್ವಂಸಸದಾತ್ವೇನ ತ್ರಿವಿಧೋಭಾವ ಇಷ್ಯತೇ" ತತ್ವಸಂ. | ಎಂದು ದ್ವೈತಸಿದ್ಧಾಂತ.

**ಅದ್ವೈತದರ್ಶನ:** ಚಿತ್ಸ್ವರೂಪವಾದ ಬ್ರಹ್ಮವೊಂದೇ ಪರಮಾರ್ಥತತ್ತ್ವವೆಂದೂ ಮತ್ತೆಲ್ಲವೂ ಮಾಯೆಯಿಂದ ಕಲ್ಪಿತವೆಂದೂ ಅದ್ವೈತ ದರ್ಶನಕಾರರ ಸಿದ್ಧಾಂತ. "ಅಶೇಷವಿಶೇಷಪ್ರತ್ಯಯೀಕಂ ಚಿನ್ಮಾತ್ರಂ ಬ್ರಹ್ಮೈಕಮೇವ ತತ್ವಮಿತಿ ಬ್ರಹ್ಮವಾದಿನೋ ವೇದಾಂತಿನಃ" ಸಂ. ದಂ. ಸಂ. | "ಸರ್ವಂ ಖಲ್ವಿದಂ ಬ್ರಹ್ಮ" | "ಬ್ರಹ್ಮೇವೇದಂ ಸರ್ವಮ್" | "ನೆಹ ನಾನಾಸ್ತಿ" ಇತ್ಯಾದಿ ಶ್ರುತಿಗಳಿಂದ ತತ್ತ್ವವೊಂದೇ ಎಂದು ಇವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. "ಆಪ್ರಲಯಂ ಯತಿಷ್ಠತಿ ಸರ್ವೇಷಾಂ ಭೋಗದಾಯಿ ಭೂತಾನಾಮ್ | ತತ್ತತ್ವಮಿಹ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ನ ಘಟಾದಿ ತತ್ವಮತಃ" ತತ್ವಸಂಗ್ರಂ. | "ವೇದಾಂತಾ ಬಹುತರ್ಕಕಂಕಶಮತಿಗ್ರಸ್ತಾಃ | ಪರಂ ಮಾಯಯಾ ಭಾಟಾಃ ಕರ್ಮಫಲಾಕ್ರುಲಾ ಹತಧಿಯೋ ಹೃತೇ ಹಿ ವೈಶೇಷಿಕಾಃ | ಅಯೇ ಭೇದರತಾ ವಿವಾದಕಲಹಾಸ್ತೇ ತತ್ವತೋ ವಚ್ಚಿತಾಸ್ತಸ್ಮಾತ್ ಸಿದ್ಧಮತಂ ಸ್ವಭಾವಕಸೃತಂ ಧೀರಃ | ಪರಂ ಸಂಶ್ರಯೇತ್" |

**ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತದರ್ಶನ:** ಸಮಸ್ತಚಿದಚಿದ್ವಿಶಿಷ್ಟನಾದ ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣನೇ ಪರಮತತ್ತ್ವವೆಂದು ಇವರ ಸಿದ್ಧಾಂತ. "ತತ್ವಂ ಜಿಜ್ಞಾಸಮಾನಾನಾಂ ಹೇತುಭಿಃ ಸರ್ವತೋಮುಖೈಃ | ತತ್ವಮೇಕೋ ಮಹಾಯೋಗಿ ಹರಿರ್ನಾರಾಯಣಃ | ಪರಃ" ಇತಿ ವ್ಯಾಸಃ | "ತತ್ವಂ ನಾರಾಯಣಃ | ಪರಃ" ಶ್ರುತಿಃ | ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾದಿ ಪ್ರಮಾಣಗಳಿಂದಲೂ ಇತರ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳಿಂದಲೂ ತತ್ತ್ವವು ಅನೇಕವೆಂದು ಸ್ಪಷ್ಟಪಡುವುದಾದರೂ ಸಕಲ ತತ್ತ್ವಗಳೂ ವಸ್ತುಗಳೂ ಈಶ್ವರನಲ್ಲಿ ಅಡಗಿರುವುದರಿಂದ ಏಕತತ್ತ್ವವಾದಕ್ಕೂ ಅನೇಕತತ್ತ್ವವಾದಕ್ಕೂ ಪ್ರಾಮಾಣ್ಯವನ್ನು ಕೊಟ್ಟಂತಾಯಿತು. ಅನೇಕತತ್ತ್ವವಾದಿಗಳ ಮತದಂತೆ ತತ್ತ್ವವಿಭಾಗವು ಈ ರೀತಿಯಲ್ಲಿರುವುದು:

ಮೊದಲು ಚಿತ್ ಅಚಿತ್ ಈಶ್ವರ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ಲೋಕದಲ್ಲಿ ವಸ್ತುಗಳು ಚೇತನ ಅಚೇತನ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಜ್ಞಾನವಿರುವುದು ಚೇತನ. ಅದೇ ಜೀವಾತ್ಮ. ಜೀವಾತ್ಮನನ್ನುಳಿದು ಎಲ್ಲಾ ವಸ್ತುಗಳೂ ಅಚೇತನ ಗುಂಪಿಗೆ ಸೇರಿದವು. ಈ ಜಡವಸ್ತುಗಳು ಒಂದೇ ಮೂಲಪ್ರಕೃತಿಯಿಂದ ಬಂದಿವೆ. ಅವುಗಳ ವಿಭಾಗವು ಈ ರೀತಿಯಿರುವುದು: ಮೂಲಪ್ರಕೃತಿ ಮಹತ್ ಅಹಂಕಾರ



ಪಂಚ ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯಗಳು (5) ಪಂಚ ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಗಳು (5) ಮನಸ್ಸು ಪಂಚ ತನ್ಮಾತ್ರಗಳು (5) ಪೃಥಿವ್ಯಾದಿ ಪಂಚ ಭೂತಗಳು (5). ಈ ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು ತತ್ವಗಳೊಡನೆ ಜೀವಾತ್ಮ ಮತ್ತು ಈಶ್ವರ ತತ್ವಗಳು ಸೇರಿ ಒಟ್ಟು (26) ಇಪ್ಪತ್ತಾರು ತತ್ವಗಳಾಗುವವು ಎಂದು ಇವರ ಸಿದ್ಧಾಂತ. "ईश्वरश्चिदचिच्चेति पदार्थ-त्रितयं हरिः। ईश्वरश्चिदिति प्रोक्तो जीवो दृश्य-मचित्पुनः"। चिदचिदीश्वरभेदेन भोक्तृभोग्यनियामक-भेदेन च व्यवस्थिताः त्रयः पदार्था इति रामानुज-सिद्धान्तः। "वासुदेवः परं ब्रह्म कल्याणगुणसंयुतः। भुवनानामुपादानं कर्ता जीवनियामकः"।

**ವೀರಶೈವ ದರ್ಶನ - ಶಕ್ತಿವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತ:**  
ಪ್ರವೃತ್ತಿಯು ಕ್ರಿಯಾಶಕ್ತಿಯ ಮೂಲಕ ಮತ್ತು ಮಾಯಾ ಶಕ್ತಿಯ ಸಾಹಾಯ್ಯದಿಂದ ಪುರುಷ ಮತ್ತು ಪ್ರಕೃತಿ ಉತ್ಪನ್ನವಾಗುವವು. ಪುರುಷನು ಚೈತನ್ಯರೂಪನು. ಪ್ರಕೃತಿಯು ಜಡರೂಪವು. ಸತ್ತ್ವರಜಸ್ತಮೋಗುಣಾತ್ಮಕವಾದ ಪ್ರಕೃತಿಯಿಂದ ಮಹತ್ ಅಹಂಕಾರ ಮನಸ್ಸು ಪಂಚ ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯಗಳು (5) ಪಂಚ ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಗಳು (5) ಪಂಚ ತನ್ಮಾತ್ರಗಳು (5) ಪಂಚ ಮಹಾಭೂತಗಳು (5) ಈ ರೀತಿ ಇಪ್ಪತ್ತಮೂರು ತತ್ವಗಳು ಉತ್ಪನ್ನವಾಗುವವು. ಈ ಒಟ್ಟು 25 ತತ್ವಗಳ ಪರಸ್ಪರ ಸಂಯೋಗದಿಂದ ವಿವಿಧವಾದ ಸೃಷ್ಟಿಯೂ ಅನೇಕ ವಸ್ತುಗಳೂ ಉಂಟಾಗುವವು. ಈ ಇಪ್ಪತ್ತೈದು ತತ್ವಗಳೊಡನೆ ಶಿವ ಶಕ್ತಿ ಸಾದಾಖ್ಯ ಈಶ್ವರ ಸದ್ವಿದ್ಯೆ ಮಾಯೆ ಕಾಲ ಸಿಯತಿ ಕಲಾ ವಿದ್ಯೆ ರಾಗ ಈ ಹನ್ನೊಂದು (11) ತತ್ವಗಳನ್ನೂ ಸೇರಿಸಿದರೆ ಒಟ್ಟು ಮೂವತ್ತಾರು (31) ತತ್ವಗಳಾಗುವವು ಎಂದು ಈ ದರ್ಶನಕಾರರು ಹೇಳುವರು. 5. ಸತ್ತ್ವ ರಜಸ್ಸು ಮತ್ತು ತಮಸ್ಸೆಂಬ ಮೂರು ತತ್ವಗಳು. 6. ಸ್ವಭಾವ. 7. ವಿಲಂಬಿತ ನೃತ್ಯ, ನೃತ್ಯದ ಪ್ರಾರಂಭದ ಅವಸ್ಥೆ. "तत्त्वं स्वरूपे परमात्मनि। स्याद् विलम्बित-नृत्ये च" ಮೇದಿಂ. "विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात्" ಅಮಂ. 8. ಚೇತಸ್ಸು, ಮನಸ್ಸು.

**ತತ್ವಜ್ಞ ತತ್ತ್ವಜ್ಞ (ವಿಂ)** 1. ನಿಜವಾದ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ಯಥಾರ್ಥವನ್ನು ಅರಿತವನು. 2. ವಸ್ತುವಿನ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. ತತ್ವಂ ಜಾನಾತಿ-ಜ್ಞಾ (ಅವ-ಬೋಧನೆ) "क." (३-२-३). "वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो यत्रतत्राश्रमे वसन्। इहैव लोके तिष्ठन् सः ब्रह्मभूयाय कल्पते" ಮನುಂ १२-१०२. 3. ವಸ್ತುವಿನ ಸ್ವಭಾವ

ವನ್ನು ಅರಿತವನು. 4. ಪರಬ್ರಹ್ಮನ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿದವನು.

**ತತ್ವಜ್ಞಾನ ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನ (ನಂ)** 1. ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನ, ಪರಮಾತ್ಮನ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವುದು. 2. ಯಥಾರ್ಥ ಜ್ಞಾನ. 3. ಆರೋಪಿತವಲ್ಲದ ವಸ್ತುವಿನ ಸ್ವಭಾವದ ಅರಿವು. 4. ವಸ್ತುವಿನ ನಿಜಸ್ವರೂಪದ ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ನಿಜವಾಗಿ ಇರುವ ಘಟ ಮೊದಲಾದ ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ "सत्" ಎಂಬ ಜ್ಞಾನವೂ, ಇಲ್ಲದಿರುವ ಶಶಶೃಂಗ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಲ್ಲಿ "असत्" ಎಂಬ ಜ್ಞಾನವೂ ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನವಾಗುವುದು. ಪರಮಾತ್ಮವಿಷಯಕವಾದ ಈ ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನವು ನಿಶ್ಶೇಯಸ ಸಾಧನವಾಗುವುದು. ಇದನ್ನು ಇತರ ವಸ್ತುವೈತ್ಯ ಪೂರ್ವಕವಾದ ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನವೆಂದು ಅದ್ವೈತಿಗಳೂ ಭಗವದ್ವಿಷಯಕವಾದ ಅಪರೋಕ್ಷಜ್ಞಾನವೆಂದು ದ್ವೈತಿಗಳೂ ಹೇಳುವರು.

**ತತ್ವಜ್ಞಾನಿನ್ ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು. 2. ಯಥಾರ್ಥವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. 3. ವಸ್ತುವಿನ ನಿಜಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಅರಿತವನು. 4. ಸ್ವಭಾವವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. ತತ್ವಜ್ಞಾನಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "इनिः" (५-२-११५).

**ತತ್ವತಸ್ ತತ್ತ್ವತಸ್ (ಅವ್ಯಂ)** ನಿಜವಾಗಿ, ಯಥಾರ್ಥವಾಗಿ. ತತ್ವ "तसिः" (वा० ५-४-४४).

**ತತ್ವತ್ರಯ ತತ್ತ್ವತ್ರಯ (ನಂ)** ಚಿತ್ ಅಚಿತ್ ಮತ್ತು ಈಶ್ವರ ಎಂಬ ಮೂರು ತತ್ವಗಳು.

**ತತ್ವದೃಶ್ ತತ್ತ್ವದೃಶ್ (ವಿಂ)** 1. ವಸ್ತುಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ತಿಳಿಯುವವನು. 2. ಬ್ರಹ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವುಳ್ಳವನು.

**ತತ್ವಮುಕ್ತಾಕಲಾಪ ತತ್ತ್ವಮುಕ್ತಾ ಕಲಾಪ (ಫಂ)** ಶ್ರೀನಿಗಮಾಂತ ಮಹಾದೇಶಿಕರವರಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಒಂದು ವೇದಾಂತ ಗ್ರಂಥ.

**ತತ್ವವಿದ್ ತತ್ತ್ವವಿದ್ (ಫಂ)** 1. ಪರಮಾತ್ಮ. ತತ್ವಮಾತ್ಮನೋ ವೇತ್ತಿ-ವಿದ (ಜ್ಞಾನಿ) "विष्" (३-२-६१). "वेत्ति यः स्वात्मनस्तत्त्वं तत्त्ववित् स च कथ्यते" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ. "स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम"। "तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः" ವಿಂ ಸಂ. 1. (ವಿಂ) 2. ವಸ್ತುವಿನ ನಿಜಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. "तत्त्ववित् महाबाहो गुणकर्मविभागयोः" ಗೀತಾ ३-२८. 3. ಸ್ವಭಾವವನ್ನು ಅರಿತವನು. 4. ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿದವನು.

**ತತ್ವಶುದ್ಧಿ ತತ್ತ್ವಶುದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ತತ್ತ್ವವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಅನ್ಯಥಾ ಜ್ಞಾನವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸಿ ಯಥಾರ್ಥ ಜ್ಞಾನವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದು.



ತತ್ಪತ್ರಿ ತತ್ಪತ್ರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಂಸ ಮರದ ಎಲೆ. "ತತ್ಪತ್ರಿ  
ಕಾರವಿ ಪೃಥ್ವಿ" ಅಮಂ ।

ತತ್ಪರ ತತ್ಪರ (ಪುಂ) 1. ಕಣ್ಣಿನ ರೆಪ್ಪೆಯಾದುವ ಕಾಲದ  
ಮೂವತ್ತನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. "ಅಕ್ಷಣೋನಿಮೇಷಸ್ಯ ಸ್ವರಾಮ  
(೩೦) ಭಾಗ: ಸ ತತ್ಪರ:" ಸಿದ್ಧಾಂತಶಿಂ । 2. ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ  
ಆಸಕ್ತನಾದ, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಶ್ರದ್ಧೆಯುಳ್ಳ. ತತ್ ಪರಮುತ್ತಮಂ  
ಯಸ್ಯ । "ಅವ್ಯಾಹತ: ಸ್ವರಗತಶ್ಚ ತಸ್ಯಾ: ಸಮ್ರಾಡ್ ಸಮಾ-  
ರಾಧನತತ್ಪರೋಽಭೃತ್" ರಘುಂ ೨-೪ ।

ತತ್ಪರತಾ ತತ್ಪರತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿ. ಕಾರ್ಯ  
ದಲ್ಲಿ ಶ್ರದ್ಧೆ. ತತ್ಪರಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) ।  
"ತ್ವ:" (೪-೧-೧೧೯) । -ಪರತ್ವಮ್ -ಪರತ್ವಮ್.

ತತ್ಪರಾಯಣ ತತ್ಪರಾಯಣ (ವಿಂ) ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿ  
ನಾದ, ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಶ್ರದ್ಧೆಯುಳ್ಳ. ತದೇವ ಪರಮಯನಂ ಯಸ್ಯ ।

ತತ್ಪುರುಷ ತತ್ಪುರುಷ (ಪುಂ) ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಸಮಾಸಗಳಲ್ಲಿ  
ಒಂದು ಭೇದ. ಅವ್ಯಯಿಭಾವ: ತತ್ಪುರುಷ: ಬಹುವ್ರಿಹಿ: ಮತ್ತು  
ದ್ವಂದ್ವ: ಎಂದು ಸಮಾಸವು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ತತ್ಪುರುಷ  
ಸಮಾಸವು ಉತ್ತರಪದಾರ್ಥಪ್ರಧಾನವಾದುದು. ಆದರೆ  
ಅರ್ಥ ಪಿಪ್ಪಲಾ: ಅರ್ಥಪಿಪ್ಪಲಿ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಉತ್ತರಪದಾರ್ಥಕ್ಕೆ  
ಪ್ರಾಧಾನ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಇದು ಪ್ರಾಯಿಕ.

ತತ್ಪುರುಷ ಸಮಾಸವು ಪೂರ್ವಪದದ ಏಳು ವಿಭಕ್ತಿ  
ಗಳಿಂದ ಏಳು ವಿಧ ಮತ್ತು ನೌತ್ವ ತತ್ಪುರುಷವೂ ಸೇರಿ  
ಎಂಟು ವಿಧ:

- |                     |   |                                  |
|---------------------|---|----------------------------------|
| (1) ಪ್ರಥಮಾತತ್ಪುರುಷ: | = | ಮಹತೀ ನವಮೀ<br>ಮಹಾನವಮೀ ।           |
| (2) ದ್ವಿತೀಯಾ        | " | = ಕೃಷ್ಣಂ ಶ್ರಿತ:<br>ಕೃಷ್ಣಶ್ರಿತ: । |
| (3) ತೃತೀಯಾ          | " | = ಧಾನ್ಯೇನ ಅರ್ಥ:<br>ಧಾನ್ಯಾರ್ಥ: ।  |
| (4) ಚತುರ್ಥಿ         | " | = ಯುಪಾಯ ದಾರು<br>ಯುಪದಾರು ।        |
| (5) ಪಂಚಮೀ           | " | = ಚೋರಾತ್ ಭಯಮ್<br>ಚೋರಭಯಮ್ ।       |
| (6) ಷಷ್ಠಿ           | " | = ರಾಜ: ಪುರುಷ:<br>ರಾಜಪುರುಷ: ।     |
| (7) ಸಪ್ತಮೀ          | " | = ಸ್ಥಾಲ್ಯಾಂ ಪವಕ:<br>ಸ್ಥಾಲಿಪವಕ: । |
| (8) ನನ್             | " | = ನ ಅಶ್ವ:<br>ಅನಶ್ವ: ।            |

ಕರ್ಮಧಾರಯ ಮತ್ತು ದ್ವಿಗು ಸಮಾಸಗಳೂ  
ತತ್ಪುರುಷಕ್ಕೆ ಸೇರಿದುವು. ಕರ್ಮಧಾರಯಸಮಾಸವು  
ಎಂಟು ವಿಧ:

- |                            |   |  |
|----------------------------|---|--|
| (1) ವಿಶೇಷಣಪೂರ್ವಪದಕರ್ಮಧಾರಯ: | = | ನೀಲಂ ಚ ತತ್ ಉತ್ಪಲಂ ಚ<br>ನೀಲೋತ್ಪಲಮ್ ।  |
| (2) ವಿಶೇಷ್ಯಪೂರ್ವಪದ         | " | = ವೈಯಾಕರಣಶ್ಚಾಸೌ<br>ಸ್ವಸೂಚಿಶ್ಚ<br>ವೈಯಾಕರಣಸ್ವಸೂಚಿ: ।   |
| (3) ವಿಶೇಷಣೋಭಯಪದ            | " | = ಸ್ನಾತಶ್ಚಾಸೌ ಅನುಲಿಪ್ತಶ್ಚ<br>ಸ್ನಾತಾನುಲಿಪ್ತ: ।  |
| (4) ಉಪಮಾನಪೂರ್ವಪದ           | " | = ಧನ ಇವ ಶ್ಯಾಮ:<br>ಧನಶ್ಯಾಮ: ।   |
| (5) ಉಪಮಾನೋತ್ತರಪದ           | " | = ಪುರುಷೋ ವ್ಯಾಘ್ರ ಇವ<br>ಪುರುಷವ್ಯಾಘ್ರ: ।   |
| (6) ಸಂಭಾವನಾಪೂರ್ವಪದ         | " | = ವಿನ್ಯ ಇತಿ ಪವಂತ:<br>ವಿನ್ಯಪವಂತ: ।  |
| (7) ಅವಧಾರಣಾಪೂರ್ವಪದ         | " | = ವಿಜ್ಞೇವ ಧನಮ್<br>ವಿಜ್ಞಾಧನಮ್ ।   |
| (8) ಮಧ್ಯಮಪದಲೋಪಿ            | " | = ಶಾಕಪ್ರಿಯ: ಪಾರ್ಥಿವ:<br>ಶಾಕಪಾರ್ಥಿವ: ।<br>ಎಂಬಲ್ಲಿ ಮಧ್ಯಮ ಪದ<br>ವಾದ "ಪ್ರಿಯ" ಪದಕ್ಕೆ<br>ಲೋಪ ಬಂದಿರುವುದು. |

ದ್ವಿಗು ಸಮಾಸವು ಮೂರು ವಿಧ:

- |                       |   |  |
|-----------------------|---|--|
| (1) ತದ್ವಿತಾರ್ಥದ್ವಿಗು: | = | ಪಂಚಸು ಕಪಾಲೇಷು<br>ಸಂಸ್ಕೃತ: ಪುರೋಡಾಶ:<br>ಪಂಚಕಪಾಲ: । |
| (2) ಉತ್ತರಪದದ್ವಿಗು:    | = | ಪಂಚ ಗಾವೋ ಧನಂ ಯಸ್ಯ<br>ಪಂಚಗವಧನ: ।                  |
| (3) ಸಮಾಹಾರದ್ವಿಗು:     | = | ತ್ರಯಾಣಾಂ ಭುವನಾಣಾಂ<br>ಸಮಾಹಾರ:<br>ತ್ರಿಭುವನಮ್ ।     |

ಇವಲ್ಲದೆ "ಕುಗತಿಪ್ರಾದಯ:" (೨-೨-೧೮) ಸೂತ್ರದಿಂದ  
ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ "ಕ್ರು" ಎಂಬ ಅವ್ಯಯದೊಡನೆ ಮಾಡುವ  
ಸಮಾಸ ಗತಿಸಮಾಸ ಪ್ರಾದಿಸಮಾಸ ಮತ್ತು ಉಪಪದ  
ಸಮಾಸಗಳೂ ತತ್ಪುರುಷಕ್ಕೆ ಸೇರಿದುವು. ಕುತಿಸಿತ: ಪುರುಷ:



ಕುಪುರಃ, ಪಯೋಧರೀಭೂತಃ, ಅತೀಂದ್ರಿಯಮ್, ಕುम्ಭಕಾರಃ ಇವು ಕ್ರಮವಾಗಿ ಉದಾಹರಣೆಗಳು. “ದ್ವಂದ್ವೋ ದ್ವಿಗುರಪಿ ಚಾಹ್ ಸತತಂ ಮದ್ಗೃಹೇಷ್ಯಯಿಭಾವಃ | ತತ್ಪುರಃ ಕರ್ಮಧಾರಯ ಯೇನ ಸ್ಯಾಂ ಸದಾ ಬಹುಗ್ರೀಹಿಃ” ಉದ್ಘಂ |

**ತತ್ಪೂರ್ವ ತತ್ಪೂರ್ವ** (ವಿಂ) 1. ಅದೇ ಮೊದಲಿನದಾದ, ಅದೇ ಪ್ರಥಮವಾದ. ಸ ಏವ ಪೂರ್ವಃ | “ಪ್ರತ್ಯಬ್ರವೀಚ್ಛೇನಮಿಷು-ಪ್ರಯೋಗೇ ತತ್ಪೂರ್ವಭಕ್ತೇ ವಿತಥಪ್ರಯತ್ನಃ” ರಘುಂ ೨-೪೨ | (ಅವ್ಯಂ) 2. ಅದೇ ಮೊದಲಾಗಿ, ಅದೇ ಪ್ರಥಮವಾಗಿ. ತದೇವ ಪೂರ್ವ ಯಸ್ಮಿನ್ ಕರ್ಮಣಿ | “ಸವಿಸ್ಮಯಂ ರೂಪಯತೋ ನಮಶ್ಚರಾನ್ ವಿವೇಶ ತತ್ಪೂರ್ವಮಿವೇಕ್ಷಣಾದರಃ” ಕಿರಾಂ ೮-೨೬ |

**ತತ್ಪ್ರಕಾರ ತತ್ಪ್ರಕಾರ** (ವಿಂ) ಆ ರೀತಿಯದಾದ, ಆ ಪ್ರಕಾರ ವಾದ.

**ತತ್ಪ್ರಥಮ ತತ್ಪ್ರಥಮ** (ವಿಂ) 1. ಅದೇ ಮೊದಲಿನದಾದ. ತದೇವ ಪ್ರಥಮಮ್ | “ಕರೇಣ ಶಮ್ಮೋರ್ವಲಯೀಕೃತಾಹಿನಾ ಸಹಿಷ್ಯತೇ ತತ್ಪ್ರಥಮಾವಲಂಬನಮ್” ಕುಮಾಂ ೫-೬೬ | (ಅವ್ಯಂ) 2. ಅದೇ ಮೊದಲಿನದಾಗಿ. ತದೇವ ಪ್ರಥಮಂ ಯಸ್ಮಿನ್ ಕರ್ಮಣಿ | “ಕಥಂಚಿದಾಪಃ ಸುರಸುಂದರೋಜನೈಃ ಸಮೀತಿಭಿಃ ತತ್ಪ್ರಥಮಂ ಪ್ರಪೇದಿರೇ” ಕಿರಾಂ ೮-೩೦ |

**ತತ್ರ ತತ್ರ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅಲ್ಲಿ, ಆ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ. ತದ್ “ತ್ರಲ್” (೫-೩-೧೦) | “ತತ್ರ ಕಾರ್ಮುಕಭೃತಂ ಮಹಾಭುಜಃ ಪಶ್ಯತಿ ಸ್ಮ ಸಹಸಾ ವನೇಶರಮ್” ಕಿರಾಂ ೧೩-೩೫ | 2. ಅದರಲ್ಲಿ. “ತತ್ರ ನಿಯತವಿಹಿತೋಪಹೃತಿಷು ಪ್ರೋಷಿತೇಷು ಪತಿಷು ದ್ಯುಯೋಷಿತಾಮ್” ಮಾಘಂ ೧೪-೩೦ | 3. ಆ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ, ಅವನ ವಿಷಯ ದಲ್ಲಿ, ಅವಳ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ. “ಪೃಥುಧಾಮಿನಿ ತತ್ರ ಪರಿಬೋಧಿ ಚ ಮಾ ಭವತೀಭಿರನ್ಯಮುನಿವದ್ವಿಕೃತಿಃ” ಕಿರಾಂ ೬-೪೫ | 4. ಅಲ್ಲಿಗೆ, ಆ ಪ್ರದೇಶಕ್ಕೆ. “ತತ್ತತ್ರೇವ ಗತ್ವಾ ತಯೋಃ ಸ್ವಬುದ್ಧಿಪ್ರಭಾವೇಣ ಮೇತ್ರೀಭೇದಂ ಕರೋಮಿ” ಪञ्ಚತಂ ೧ |

**ತತ್ರತತ್ರ ತತ್ರತತ್ರ** (ಅವ್ಯಂ) ಅಲ್ಲಿಲ್ಲಿ, ಆಯಾ ಜಾಗದಲ್ಲಿ. “ಯತ್ರಯತ್ರ ರಘುನಾಥಕೀರ್ತನಂ ತತ್ರತತ್ರ ಕೃತಮಸ್ತಕಾಂಜಲಿಮ್” |

**ತತ್ರತ್ಯ ತತ್ರತ್ಯ** (ವಿಂ) ಅಲ್ಲಿರುವ. ತತ್ರ ಭವಃ “ತ್ಯಪ್” (೪-೨-೧೦೪) | “ತರೀಷು ತತ್ರತ್ಯಮಫಲಗು ಭಾಂಡಂ ಸಾಂಯಾತ್ರಿಕಾ-ನಾವಪತೋಽಮ್ಯನಂದತ್” ಮಾಘಂ ೩-೭೬ |

**ತತ್ರಭವತ್ ತತ್ರಭವತ್** (ವಿಂ) ಪೂಜ್ಯನಾದ, ಗೌರವಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ. ತದ್ ಪ್ರಥಮಾರ್ಥ “ತ್ರಲ್” (೫-೩-೧೪) | “ಆದಿಷ್ಟೋಽಸ್ಮಿ ತತ್ರಭವತಾ ಕಾಶ್ಯಪೇನ” ಶಾಕುಂ ೪ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬) | -ಭವತೀ-ಭವತೀ. “ಶ್ರುತಂ ಭವತಾ? ತತ್ರಭವತೀ, ಚಿತ್ರೇ ಯಥಾ ದೃಷ್ಟಸ್ತಥಾ ನ ದೃಷ್ಟೋ ಭವಾನಿತಿ ಮನ್ತ್ರಯತಿ” ಮಾಲಂ ೪ |

**ತತ್ರಸ್ಥ ತತ್ರಸ್ಥ** (ವಿಂ) ಅಲ್ಲಿರುವ, ಅಲ್ಲಿ ನಿಂತಿರುವ. ತತ್ರ ತಿಷ್ಠತಿ - ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) “ಕಃ” (೩-೨-೪) | “ತತ್ರಸ್ಥಃ ಸ ತದಾ ಗಂಧಂ ಪಾನಭಕ್ಷ್ಯಾನ್ನಸಂಭವಮ್” |

**ತಥಾ ತಥಾ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಆ ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ, ಆ ರೀತಿಯಾಗಿ. ತದ್ ಪ್ರಕಾರೇ “ತಾಲ್” (೫-೩-೨೩) | “ಸ್ವಯಂ ಚ ದುಃಖೋದಸುತಾಂ ಸುಧಾಸಖೀಂ ತಥಾ ಸ ರೇಮೇ ಸದೃಶೀಮವಾಪ್ಯ ತಾಮ್” ಯಾದಂ ೧೪-೭೧ | 2. ಸತ್ಯ, ನಿಷ್ಠ. “ಯದಾತ್ಯ ರಾಜನ್ಯಕುಮಾರ ತತ್ತಥಾ ಯಶಸ್ತು ರಕ್ಷ್ಯಂ ಪರತೋ ಯಶೋಧನಃ” ರಘುಂ ೩-೪೮ | 3. ಅಂತೆಯೇ, ಹಾಗೆಯೇ. (ಇಲ್ಲಿ ಸಮಾಚ್ಛಯಾರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುದು.) “ಶ್ರುತಸ್ಯ ಯಾಯಾದಯಮಂತಮರ್ಭಕಸ್ತಥಾ ಪರೇಷಾಂ ಯುಧಿ ಚೇತಿ ಪಾರ್ಥಿವಃ” ರಘುಂ ೩-೨೧ | 4. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಹಾಗೆಯೇ ಆಗಲಿ. “ತಥೇತಿ ಶೇಷಾಮಿವ ಭರ್ತುರಾಜಾಮಾಡಾಯ ಮೂರ್ಘಾ ಮದನಃ ಪ್ರತಸ್ಥೇ” ಕುಮಾಂ ೩-೨೨ | 5. ಪ್ರತಿವಚನ, ಕೇಳಿಕೆಗೆ ಉತ್ತರ ಕೊಡುವುದು. 6. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಸಾಮ್ಯ. “ಯಥಾ ನದೀನದಾಃ ಸರ್ವೇ ಸಾಗರೇ ಯಾಂತಿ ಸಂಸ್ಥಿತಮ್ | ತಥೇವಾ-ಶ್ರಮಿಣಃ ಸರ್ವೇ ಗೃಹಸ್ಥೇ ಯಾಂತಿ ಸಂಸ್ಥಿತಮ್” ಮನುಂ ೬-೯೦ | “ತಥಾ ಸಮುಚ್ಚಯೇ ಸಾಮ್ಯೇ ಪರಮಾರ್ಥಾಭ್ಯನುಜ್ಞಯೋಃ” ವೈಜಂ | “ತಥಾಮ್ಯುಪಗಮೇ ಪೃಷ್ಟಪ್ರತಿವಾಕ್ಯೇ ಸಮುಚ್ಚಯೇ | ಸದೃಶಂ ನಿಶ್ಚಯೇಽಪಿ ಸ್ಯಾತ್” ಮೇದಿಂ |

**ತಥಾಕಾರಮ್ ತಥಾಕಾರಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಹಾಗೆಯೇ ಮಾಡಿ, ಹೇಳಿದಂತೆ ಮಾಡಿ. ತಥಾ - ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣಂ) “ಣಮುಲ್” (೩-೪-೨೮) | “ತಥಾಕಾರಮಹಂ ಭೋಕ್ಯೇ” ಸಿಂ ಕೌಂ | ಇದು ಅಸೂಯೆಯಿಂದ ಹೇಳುವ ಪ್ರತಿವಚನ.

**ತಥಾಗತ ತಥಾಗತ** (ಪುಂ) 1. ಬುದ್ಧಿ ದೇವ. ತಥಾ ಸತ್ಯಂ ಗತಂ ಜ್ಞಾನಂ ಯಸ್ಯ | “ಕಾಲೇ ಮಿತಂ ತಥ್ಯಮುದರ್ಕಪಥ್ಯಂ ತಥಾಗತಸ್ಯೇವ ಜನಃ ಸಚೇತಾಃ” ಮಾಘಂ ೨೦-೮೧ | (ವಿಂ) 2. ಆ ರೀತಿ ಯಾಗಿರುವ, ಆ ಪ್ರಕಾರವಾಗಿರುವ. “ನಲಂ ದೃಷ್ಟಾ ತಥಾ-ಗತಮ್” ಭಾಂ ವನಂ | “ತಥಾಗತಾಯಾಂ ಪರಿಹಾಸಪೂರ್ವಂ ಸಖ್ಯಾಂ ಸಖೀ ವೇತ್ರಭೃದಾವಭಾಷೇ” ರಘುಂ ೬-೮೨ |

**ತಥಾಚ ತಥಾಚ** (ಅವ್ಯಂ) ಹಾಗೆಯೇ, ಅದರಂತೆಯೇ. “ನಿರೀಂದ್ರಿಯಾ ಹ್ಯಮನ್ತ್ರಾಶ್ಚ ಸ್ತ್ರಿಯೋಽನೃತಮಿತಿ ಸ್ಥಿತಿಃ | ತಥಾ ಚ ಶ್ರುತಯೋ ಬಹ್ವದೋ ನಿಗೀತಾ ನಿಗಮೇಷ್ವಪಿ” ಮನುಂ ೯-೧೯ | ಇಲ್ಲಿ ತಥಾ ಚ ಎಂದೂ ಪೂರ್ವೋಕ್ತವಾದುದನ್ನು ದೃಢೀಕರಿಸುವುದು.

**ತಥಾತ್ವ ತಥಾತ್ವ** (ನಂ) ಹಾಗಾಗಿರುವುದು, ಹಾಗೆ ಇರುವುದು. ತಥಾ ಭಾವೇ “ತ್ವಃ” (೫-೧-೧೧೯) | “ಶರೀರಸ್ಯ ನ ಚೈತನ್ಯಂ ಮೃತೇಷು ವ್ಯಭಿಚಾರತಃ | ತಥಾತ್ವಂ ಚೇದಿಂದ್ರಿಯಾಣಾಮುಪ-ಧಾತೇ ಕಥಂ ಸ್ಮೃತಿಃ” ಭಾಷಾಪಂ ೪೮ |



ತಥಾಪಿ ತಥಾಹಿ (ಅವ್ಯಂ) ಹಾಗಾದರೂ, ಆ ರೀತಿಯಾದರೂ. ತಥಾ ಚ ಅಪಿ ಚ। “ತಥಾಪಿ ಯನ್ಮಯಪಿ ತೇ ಗುರು-  
ರೀತ್ಯಸ್ತಿ ಗೌರವಮ್। ತತ್ಪ್ರಯೋಜಕಕರ್ತೃತ್ವಮುಪೇತಿ ಮಮ ಜಲ್ಪತ.”  
ಮಾಘಂ ೨-೭೧।

ತಥಾಭೂತ ತಥಾಭೂತ (ವಿಂ) ಆ ರೀತಿಯಾದ, ಆ ಪ್ರಕಾರ  
ವಾದ. ತಥಾ+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) ಕರ್ತಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨)।  
“ತಥಾಭೂತಾಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ನೃಪಸದಸಿ ಪಾಶ್ಚಾಲಂತನಯಾಂ ವನೇ ವ್ಯಾಘ್ರಃ  
ಸಾರ್ಥ ಸುಚಿರಮುಷಿತಂ ವಲ್ಕಲಧರಃ” ವೇಣೀಂ ೧-೧೧।

ತಥಾವಿಧ ತಥಾವಿಧ (ವಿಂ) ಆ ತೆರನಾದ, ಆ ವಿಧವಾದ.  
ತಥಾ ವಿಧಾ ಯಸ್ಯ। “ಪ್ರವಿಶ್ಯ ಹಿ ಧ್ವನಂತಿ ಶತಾಸ್ತಥಾವಿಧಾ-  
ನಸಂವೃತಾಙ್ಗಾನ್ನಿಶಿತಾ ಇವೇಷವಃ” ಕಿರಾಂ ೧-೩೦।

ತಥಾಹಿ ತಥಾಹಿ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಹಾಗೆಯೇ ಸರಿ, ಅದು  
ಪ್ರಸಿದ್ಧವೇ ಸರಿ. 2. ನಿದರ್ಶನ. 3. ಹೇಳಿದ ವಿಷಯದ  
ಸಮರ್ಥನೆ. ತಥಾ ಚ ಹಿ ಚ। “ತಂ ವೇದಾ ವಿದಧೇ ನೂನಂ  
ಮಹಾಭೂತಸಮಾಧಿನಾ। ತಥಾ ಹಿ ಸರ್ವೇ ತಸ್ಯಾಸನ್ ಪರಾರ್ಥಕಫಲಾ  
ಗುಣಾಃ” ರಘುಂ ೧-೩೦।

ತಥೈವ ತಥೈವ (ಅವ್ಯಂ) ಹಾಗೆಯೇ, ಅದರಂತೆಯೇ. “ಯಥಾ  
ನದೀನದಾಃ ಸರ್ವೇ ಸಾಗರೇ ಯಾಂತಿ ಸಂಸ್ಥಿತಮ್। ತಥೈವಾಶ್ರಮಿಣಃ  
ಸರ್ವೇ ಗೃಹಸ್ಥೇ ಯಾಂತಿ ಸಂಸ್ಥಿತಮ್” ಮನುಂ ೬-೯೦।

ತಥ್ಯ ತಥ್ಯ (ನಂ) 1. ಸತ್ಯ, ನಿಜ. ತಥಾ ಸತ್ಯೇ ಸಾಧು “ಯತ್”  
(೪-೪-೯೮)। “ಅನನ್ಯಭಾಜಂ ಪತಿಮಾಪ್ನುಹೀತಿ ಸಾ ತಥ್ಯ-  
ಮೇವಾಭಿಹಿತಾ ಭವೇನ” ಕುಮಾಂ ೩-೬೩। (ವಿಂ) 2. ನಿಜ  
ವಾದ, ಯಥಾರ್ಥವಾದ. “ತಥ್ಯಾಮುತಥ್ಯಾನುಜವಜ್ಜಗಾದಾಘ್ರೇ  
ಗದಾಗ್ರಜಮ್” ಮಾಘಂ ೨-೬೯। (ಅವ್ಯಂ) 3. ಸತ್ಯವಾಗಿ,  
ನಿಜವಾಗಿ. “ಅನನ್ಯಭಾಜಂ ಪತಿಮಾಪ್ನುಹೀತಿ ಸಾ ತಥ್ಯಮೇವಾ-  
ಭಿಹಿತಾ ಭವೇನ” ಕುಮಾಂ ೩-೬೩।

ತದ್ ತದ್ (ವಿಂ) 1. ಪರೋಕ್ಷದಲ್ಲಿರುವ ಅವನು, ಅವಳು,  
ಅದು. ತನು (ವಿಸ್ತಾರೇ) “ಅದಿಃ” (೩ಂ ೧-೧೨೯)।  
“ಇದಮಸ್ತು ಸಂನಿಕ್ರೂಷ್ಣಂ ಸಮೀಪತರವತಿಚೈತದೋ ರೂಪಮ್। ಅದಮಸ್ತು  
ವಿಪ್ರಕ್ರೂಷ್ಣಂ ತದಿತಿ ಪರೋಕ್ಷೇ ವಿಜಾನೀಯಾತ್”। ಇದೊಂದು  
ಸರ್ವನಾಮ ಶಬ್ದ. ಅದುದರಿಂದ ಲಿಂಗತ್ರಯದಲ್ಲಿಯೂ  
ಇದರ ಪ್ರಯೋಗವುಂಟು. (ಪುಂ) ಸಃ ತೌ ತೇ। ತಂ ತೌ  
ತಾನ್। “ಸ ಸತ್ಪರಿಣುಭವನಾಂತರೇಷು ಯಾಂ ಯದ್ವಿಚಾರಾಶಿ-  
ಶ್ರಯದಾಶ್ರಯಃ ಶ್ರಿಯಃ” ಮಾಘಂ ೧-೪೬। (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಾ ತೇ  
ತಾಃ। ತಾಂ ತೇ ತಾಃ। “ಸಾ ರಾಮಣೀಯಕನಿಧೇರಧಿವೇದತಾ  
ವಾ ಸೌಂದರ್ಯಸಾರಸಮುದಾಯನಿಕೇತನಂ ವಾ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೪।  
(ನಂ) ತತ್ ತೇ ತಾನಿ। 2. ಪೂರ್ವೋಕ್ತವಾದ, ಹಿಂದೆ  
ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಂದೆ ಪ್ರಸ್ತುತವಾದ. “ಸೋಽಹಮಾಜನ್ಮಶುದ್ಧಾನಾ-

ಮಾಫಲೋದಯಕರ್ಮಣಾಮ್” ರಘುಂ ೧-೫। “ತೌ ಗುರುಗುರುಪತ್ನೀ  
ಚ ಪ್ರೀತ್ಯಾ ಪ್ರತಿನಂದತುಃ” ರಘುಂ ೧-೫೭। “ತೇ ಚಾಕಾಶ-  
ಮಸಿಷ್ಯಾಮಮುತ್ಪತ್ಯ ಪರಮರ್ಷಯಃ” ಕುಮಾಂ ೬-೩೬। “ಸಾ  
ರಾಜಹಂಸೇರಿವ ಸಂನತಾಙ್ಗೀ ಗತೇಷು ಲೀಲಾಶ್ಚಿತವಿಕ್ರಮೇಷು” ಕುಮಾಂ  
೧-೩೪। “ತದಲಕ್ಷ್ಯರತ್ನಮಯಕುಡ್ಯಮಾದರಾತ್ ಅಭಿಧಾತರೀತ  
ಇತ ಇತ್ಯಯೋ ನೃಪೇ” ಮಾಘಂ ೧೩-೬೨। 3. ಬುದ್ಧಿಗೆ  
ಗೋಚರವಾದ, ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಸನ್ನಿಹಿತವಾದ. ಇದು ಹಿಂದೆ  
ಅನುಭವಿಸಿದ ವಿಷಯದ ಸಂಸ್ಕಾರವಿಶೇಷದಿಂದ ಉಂಟಾ  
ಗುವ ಸ್ಮರಣೆ. “ಅಥ ಸ ಲಲಿತಯೋಷಿಃಭೂಲತಾಚಾರುಶೃಂಗ್ಗ  
ರತಿವಲಯಪದಾಕ್ಷೇ ಚಾಪಮಾಸಜ್ಯ ಕಂಠೇ” ಕುಮಾಂ ೨-೬೪।  
“ಸಾ ರಮ್ಯಾ ನಗರೀ ಮಹಾನ್ ಸ ನೃಪತಿಃ ಸಾಮಂತಚಕ್ರಂ ಚ  
ತತ್ಪಾಶ್ವೇ ತಸ್ಯ ಚ ಸಾ ವಿದಗಧಪರಿಷತ್ತಾಶ್ಚಂದ್ರಬಿಂಬಾನನಾಃ”  
ಭರ್ತುಂ ೩-೪೧। 4. ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ, ಪ್ರಖ್ಯಾತವಾದ.  
“ಕಲಾ ಚ ಸಾ ಕಾಂತಿಮತೀ ಕಲಾವತಃ ತ್ವಮಸ್ಯ ಲೋಕಸ್ಯ ಚ  
ನೆತ್ರಕೌಮುದೀ” ಕುಮಾಂ ೫-೭೧। (ನಂ) 5. ಬ್ರಹ್ಮ,  
ಪರಮಾತ್ಮ. “ಔಂ ತತ್ಸದಿತು ನಿರ್ದೇಶೋ ಬ್ರಹ್ಮಣಸ್ತ್ರಿವಿಧಃ  
ಸ್ಮೃತಃ” ಗೀತಾ ೧೭-೨೩। 6. ಈ ಶಬ್ದವು “ಯದ್”  
ಶಬ್ದದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಪೂರ್ಣಗೊಳಿಸುವುದು. “ಯಾಂ ಯಾಂ  
ಪ್ರಿಯಃ ಪ್ರೇಕ್ಷತ ಕಾತರಾಕ್ಷೀ ಸಾ ಸಾ ಹ್ಲಿಯಾ ನಮ್ರಮುಖೀ ಬಭೂವ”  
ಮಾಘಂ ೩-೧೬। (ಅವ್ಯಂ) 7. ಹೇತು, ಕಾರಣ, ಅದಿಂದ  
ರಿಂದ, ಆ ಕಾರಣದಿಂದ. “ತದಯಂ ಸಮುಪೇತಿ ಭೂಪತಿಃ ಪಯಸಾಂ  
ಪೂರ ಇವಾನಿವಾರಿತಃ” ಮಾಘಂ ೧೬-೫೩। 8. ಆಗ. “ಅಥ  
ತತ್ರ ಸಮರ್ಥತೇವ ತನ್ಮತ್ರಂ ತದಸೌ ವೀರವರೇಣ್ಯ ಏಕಲವ್ಯಃ” ಯಾದಂ  
೧೫-೪೮। “ಜಯಾಸೀ ಚೇತ್ ಕರ್ಮಣಸ್ತೇ ಮತಾ ಬುದ್ಧಿಜನಾರ್ದನ।  
ತತ್ ಕಿಂ ಕರ್ಮಣಿ ಧೋರೇ ಮಾಂ ನಿಯೋಜಯಸಿ ಕೇಶವ” ಗೀತಾ  
೩-೧। 9. ಅದರ, ಆ ರೀತಿಯಾದರೆ, ಹಾಗಾದರೆ.  
“ಯದಿ ಪ್ರಸಾದೀಕುಸ್ತೇ ಸುಧಾಂಶೋರೇಷಾ ಸಹಸ್ರಾಂಶಮಪಿ ಸ್ಮಿತಸ್ಯ।  
ತತ್ಕೌಮುದಿನಾಂ ಕುಸ್ತೇ ತಮೇವ ನಿಮಿಚ್ಛಯ ದೇವಃ ಸಫಲಂ ಸ ಜನ್ಮ”  
ನೈಷಂ ೭-೪೩।

ತದನಂತರ ತದನಂತರ (ವಿಂ) 1. ಅದಕ್ಕೆ ಮುಂದಿನ, ಅದಕ್ಕೆ  
ಸಮೀಪದ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಅಮೇಲೆ, ಅದಾದಮೇಲೆ.

ತದನು ತದನು (ಅವ್ಯಂ) ಅನಂತರ, ಅಮೇಲೆ, ಅದಾದಮೇಲೆ.  
“ಗಂಧೋದಗ್ರಂ ತದನು ವವೃಷುಃ ಪುಷ್ಪಮಾಶ್ರಯಮೇವಾಃ” ರಘುಂ ೧೬-೮೭।

ತದನ್ಯ ತದನ್ಯ (ವಿಂ) ಅವನಿಗಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದ, ಅದ  
ಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದ. ತಸ್ಮಾದನ್ಯಃ।

ತದರ್ಥ ತದರ್ಥ (ಪುಂ) 1. ಅದರ ಅರ್ಥ. ತಸ್ಯ ಅರ್ಥಃ।  
2. ಅದರ ಪ್ರಯೋಜನ. (ವಿಂ) 3. ಅದೇ ಉದ್ದೇಶ್ಯ  
ವಾಗಿ ಉಳ್ಳ. 4. ಅದೇ ಪ್ರಯೋಜನವಾಗಿ ಉಳ್ಳ.



5. ಅದೇ ಅರ್ಥವಾಗಿ ಉಕ್ತ. ಸ: ಅರ್ಥ: यस्य । (ಅವ್ಯಂ)

6. ಅದಕ್ಕಾಗಿ, ಅದಕ್ಕೋಸ್ಕರ.

**ತದರ್ಥಯ ತದರ್ಥೀಯ** (ವಿಂ) ಅದಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ, ಅದೇ ಉದ್ದೇಶ್ಯದಿಂದ ಮಾಡುವ. "यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते । कर्म चैव तदर्थाय सदित्येवाभिधीयते" ಗೀತಾ ೧೭-೨೭ ।

**ತದರ್ಥಿಕ ತದರ್ಥಿಕ** (ವಿಂ) ಅದರಲ್ಲಿ ಅರ್ಥದಷ್ಟು. "तदर्धिकं पादिकं वा ग्रहणान्तिकमेव वा" ಮನುಂ ೩-೧ ।

**ತದರ್ಪಣ ತದರ್ಪಣ** (ನಂ) ತನ್ನಲ್ಲಿ ಇಟ್ಟಿದ್ದ ದ್ರವ್ಯವನ್ನು ಇಟ್ಟವನಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸುವುದು. ತಸ್ಯ ಸ್ವಸ್ಮಿನ್ ನಿಕ್ಷಿಪ್ತಸ್ಯ ಅರ್ಪಣಮ್ ।

**ತದವಧಿ ತದವಧಿ** (ಅವ್ಯಂ) ಅಲ್ಲಿಯವರೆಗೆ, ಆ ಕಾಲದ ವರೆಗೆ.

**ತದವಧಿಕ ತದವಧಿಕ** (ವಿಂ) ಅದೇ ಗಡುವಾಗಿ ಉಕ್ತ, ಅದೇ ವಾಯಿದೆಯಾಗಿ ಉಕ್ತ. ಸ: अवधि: यस्य "कप्" (೪-೪-೧೪೪) ।

**ತದವಸ್ಥ ತದವಸ್ಥ** (ವಿಂ) ಅದೇ ಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರುವ, ಪೂರ್ವದ ಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿಯೇ ಇರುವ, ಹಿಂದಿನ ನೆಲೆಯಲ್ಲೇ ಇರುವ. ಸಾ पूर्वा अवस्था यस्य । "वशासौ गतो हुतवहः तदवस्थ-मेतदन्तःपुरं कथमवन्तिनृपात्मजेयम्" ರತ್ನಾಂ ೪-೧೯ ।

**ತದಾ ತದಾ** (ಅವ್ಯಂ) ಆಗ, ಆ ಕಾಲದಲ್ಲಿ. ತಸ್ಮಿನ್ ಕಾಲೇ — ತತ್ "दा" (೪-೩-೧೪) । "जिगाय जम्बूजनिताश्रियः श्रियं सुमेरुशृङ्गस्य तदा तदासनम्" ಮಾಘಂ ೧-೧೯ ।

**ತದಾತ್ವ ತದಾತ್ವ** (ನಂ) ಆಗಿನ ಕಾಲ, ತತ್ಕಾಲ, ವರ್ತಮಾನ ಕಾಲ. ತದಾ इत्यस्य भावः "त्वः" (೪-೧-೧೧೯) । "तदात्वे नूतनं सर्वमायत्यां तु पुरातनम्" ।

**ತದಾನಿಮ್ ತದಾನೀಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಆಗ, ಆ ಸಮಯದಲ್ಲಿ. ತದ್ "दानीम्" (೪-೩-೧೯) । "अतिराघवरावणं तदानीमभवद्द्वैरथमाकुलेन्दुसूर्यम्" ಯಾದಂ ೧೪-೧೨೧ ।

**ತದಾನಿಂತನ ತದಾನೀಂತನ** (ವಿಂ) ಆಗಿನ ಕಾಲದ, ಆ ಸಮಯದ. ತದಾನಿ ಭವ: "टयुल्" तुट् च (೪-೩-೨೩) । "कार्यवशादायोध्यकस्तदानीन्तनश्च संवृत्तः" ಉಂ ರಾಂ ೧ ।

**ತದಾಪ್ರಭೃತಿ ತದಾಪ್ರಭೃತಿ** (ಅವ್ಯಂ) ಅದು ಮೊದಲು ಗೊಂಡು, ಆ ಕಾಲದಿಂದ. ತದಾ ततः प्रभृति आरभ्य । "तदाप्रभृत्युन्मदना पितुर्गृहे ललाटिकाचन्दनधूसरालका" ಕುಮಾಂ ೪-೪೪ ।

**ತದೀಯ ತದೀಯ** (ವಿಂ) ಅವನ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಅವಳ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಅದರ ಸಂಬಂಧವಾದ. ತಸ್ಯ ತಸ್ಯಾ ವಾ

इदम् "छः" (೪-೨-೧೧೪) । "तदीयमातङ्गघटा-विघट्टनैः कटस्थलप्रोषितदानवारिभिः" ಮಾಘಂ ೧-೬೪ ।

**ತದ್ಗತ ತದ್ಗತ** (ವಿಂ) 1. ಅವನಲ್ಲಿರುವ, ಅವಳಲ್ಲಿರುವ, ಅದರಲ್ಲಿರುವ. तत्र गतः । 2. ಅವನಲ್ಲಿ ಅವಳಲ್ಲಿ ಅಥವಾ ಅದರಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತವಾದ.

**ತದ್ಗುಣ ತದ್ಗುಣ** (ವಿಂ) 1. ಅವನ ಅವಳ ಅಥವಾ ಅದರ ಗುಣ. तस्य तस्या वा गुणः । 2. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ತನ್ನ ಗುಣವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿ ಮತ್ತೊಂದರ ಗುಣವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವುದು ತದ್ಗುಣಾಲಂಕಾರ. "तद्गुणः स्वगुणत्यागादन्यदीयगुणग्रहः" ಚಂದ್ರಾಂ । उदा: "पद्मरागायते नासामौक्तिकं तेष्वरत्निषा" । ಇಲ್ಲಿ, ನಾಸಾಮೌಕ್ತಿಕ (ಬುಲಾಟಿನ ಮುತ್ತು) ದಲ್ಲಿ ಅಧರದ ಕೆಂಪು ಕಾಂತಿಯು ಪ್ರತಿಫಲಿಸಿರುವಕಾರಣ ಮೌಕ್ತಿಕದ (ಸ್ವ)ಗುಣ ವಾದ ಧಾವಳ್ಯವು ಹೋಗಿ ಅದು ಅಧರದ ಆರುಣ್ಯ (ಗುಣ) ವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವುದಾಗಿ ವರ್ಣಿತವಾಗಿರುವುದ ರಿಂದ ತದ್ಗುಣಾಲಂಕಾರ. (ವಿಂ) 3. ಅದಕ್ಕೆ ಸಮಾನ ವಾದ ಗುಣವುಳ್ಳ. तस्य गुण इव गुणो यस्य ।

**ತದ್ಗುಣಸಂವಿಜ್ಞಾನ ತದ್ಗುಣಸಂವಿಜ್ಞಾನ** (ವಿಂ) ಬಹುವ್ರೀಹಿ ಸಮಾಸದ ಒಂದು ಭೇದ. ಬಹುವ್ರೀಹಿಸಮಾಸದಲ್ಲಿ ಗುಣೇ ಭೂತವಾದ ವಿಶೇಷಣವು ವಿಶೇಷ್ಯಕ್ಕೆ ಅಧೀನವಾಗಿರುವಂತೆ ಬೋಧಿಸುವುದು. "तत्र बहुव्रीही गुणस्य गुणीभूतस्य विशेषणस्य विशेष्यपारतन्त्र्येण संविज्ञानं यत्र । "लम्ब-कणमानय" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಗುಣೇಭೂತವಾದ ಕರ್ಣಕ್ಕೂ ಅನಯನದಲ್ಲಿ ವಿಶೇಷ್ಯ ಪಾರತಂತ್ರ್ಯದಿಂದ ಅನ್ವಯಬೋಧ ವಿರುವುದರಿಂದ ತದ್ಗುಣಸಂವಿಜ್ಞಾನ ಬಹುವ್ರೀಹಿಯಾ ಯಿತು.

**ತದ್ವಿನ ತದ್ವಿನ** (ನಂ) 1. ಆ ದಿವಸ. तत् दिनम् । (ಅವ್ಯಂ) —ನಮ್ —ನಮ್. 2. ಪ್ರತಿದಿನವೂ. ಪ್ರತಿದಿನದಲ್ಲಿಯೂ. 3. ದಿನದ ಮಧ್ಯ. "तद्दिनं दिनमध्ये स्यात् तथैव प्रतिवासरे" ಮೇದಿಂ ।

**ತದ್ವನ ತದ್ವನ** (ನಂ) 1. ಆ ಧನ, ಆ ಹಣ. (ವಿಂ) 2. ಕೃಪಣ, ಲೋಭಿ. तदेव धनं यस्य ।

**ತದ್ವರ್ಮನ್ ತದ್ವರ್ಮನ್** (ವಿಂ) ಅದೇ ಧರ್ಮವುಳ್ಳ, ಅಂಕವ ಧರ್ಮವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. ಸ: धर्मः यस्य "अनिच्" (೪-೪-೧೨೪) ।

**ತದ್ವಿತ ತದ್ವಿತ** (ನಂ) 1. ಅವನಿಗೆ ಹಿತ, ಅವನಿಗೆ ಕಲ್ಯಾಣ. तस्मै हितम् । "स्वधिष्ण्यमास्थाय विमृश्य तद्वितं तपस्युपादिष्ट इवादधे मनः" ಭಾಗಂ ೨-೯-೭ । (ವಿಂ)



(3) आ + तनु = आतनोति । आतनुते । आतन्वानः ।  
 ಬಹಳ ದೀರ್ಘವಾಗಿ ಮಾಡು, ಬಹಳ ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿ  
 ಮಾಡು. “आतन्वानं भुजगशयने कामपि क्षौमगौरे  
 निद्रामुद्रां निखिलजगतीरक्षणे जागरूकाम्” चं० ख० ।



(4) ತನ್ + ತನು = ತತ್ತಾನಃ । ಎತ್ತರವಾಗು, ಉಬ್ಬಿರು.  
"ಪ್ರಾವಲಿಪ್ರಸಾಧನೋತ್ತಾನವಕ್ಷಃಸ್ಥಲಂ" ಮಾಲತೀಂ ೭ ।

(5) ಪ್ರ + ತನು = ಪ್ರತಾಯತೆ । ಚೆನ್ನಾಗಿ ಎತ್ತರವಾಗು,  
ಚೆನ್ನಾಗಿ ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದು. "ತದ್ದುರೀಕೃತ್ಯ ಕೃತಿಭಿರ್ವಾಚಸ್ಪತ್ಯಂ  
ಪ್ರತಾಯತೆ" ಮಾಘಂ ೨-೩೦ ।

(6) ಸಮ್ + ತನು = ಸಂತನೋತಿ । ಸಂತತಃ । ಸಂತಾನಃ ।  
ಸಂತತಿಃ । ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳವಣಿಗೆ ಹೊಂದು, ಹೆಚ್ಚು ಎತ್ತರ  
ವಾಗು, ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ ಬೆಳೆ. "ಸಂತತಾ ಶುಶುಭೆ ಭೂಮಿಃ"  
ರಾಮಾಂ ।

ತದ್ವತ್ ತದ್ವತ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅವನಂತೆ, ಅವನಿಗೆ ಸಮಾನ  
ವಾಗಿ. ತೇನ ತುಲ್ಯಮ್ "ವತಿಃ" (೪-೧-೧೧೫) । ಮಾಡುವ  
ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಾದೃಶ್ಯವಿದ್ದರೆ ಈ "ವತಿ" ಪ್ರತ್ಯಯವು  
ಬರುವುದು. "ತೇನ ತುಲ್ಯಂ ಕ್ರಿಯಾ ಚೇದ್ವತಿಃ" ಎಂಬಲ್ಲಿ  
ತುಲ್ಯ ಪದವು ಕ್ರಿಯಾ ಪದಕ್ಕೆ ವಿಶೇಷಣವಾಗಿರುವುದು.  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣೇನ ತುಲ್ಯಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣವತ್ ಅಧೀತೆ । ಇಲ್ಲಿ ಅಧ್ಯಯನ  
ಕ್ರಿಯೆಯಲ್ಲಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಅಧ್ಯಯನ ಸಾದೃಶ್ಯವು ಉಕ್ತ  
ವಾಗಿರುವುದು. 2. ಅಲ್ಲಿಯಂತೆ. ತತ್ರೇವ - ತದ್ "ವತಿಃ"  
(೪-೧-೧೧೬) । ಮಧುರಾಯಾಮಿವ ಮಧುರಾವತ್ । 3. ಅವನಂತೆ.  
ತಸ್ಯೇವ - ತದ್ "ವತಿಃ" (೪-೧-೧೧೬) । ಚೈತ್ರಸ್ಯೇವ ಚೈತ್ರವತ್ ।  
ಇಲ್ಲಿ ಸಪ್ತಮಿ ಮತ್ತು ಷಷ್ಠ್ಯರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ "ವತಿ" ಪ್ರತ್ಯಯವು  
ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. (ವಿಂ) 4. ಅದರೊಡನೆ  
ಕೂಡಿದ, ಅದರ ಸಹಿತವಾದ. ತದಸ್ಯಾಸ್ತಿ - "ಮತುಪ್"  
(೪-೨-೯೪) ।

ತದ್ವಿಧ ತದ್ವಿಧ (ವಿಂ) 1. ಆ ರೀತಿಯಾದ, ಆ ಪ್ರಕಾರವಾದ.  
ಸಾ ವಿಧಾ ಪ್ರಕಾರೋ यस್ಯ । "ಧರ್ಮಾರ್ಥೋ ಯತ್ರ ನ ಸ್ಯಾತಾಂ ಶುಶ್ರೂಷಾ  
ವಾಪಿ ತದ್ವಿಧಾ" ಮನುಂ ೨-೧೧೨ । 2. ಅದರಂತಿರುವ,  
ಅವನಂತಿರುವ, ಅವಳಂತಿರುವ. ತಸ್ಯ ತಸ್ಯಾ ವಾ ವಿಧೇವ  
ವಿಧಾ ಯಸ್ಯ । "ಭಕ್ತಯೋಪಪನ್ನೇಷು ಹಿ ತದ್ವಿಧಾನಾಂ ಪ್ರಸಾದ-  
ಚಿಹ್ನಾನಿ ಪುರಃಫಲಾನಿ" ರಘುಂ ೨-೨೨ ।

ತದ್ವಿಧ ತದ್ವಿಧಯ (ವಿಂ) ಅದಕ್ಕೇ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ವಿಷಯ  
ವುಳ್ಳ, ತೆ: ವಿಷಯಃ ಅವಿನಾಭಾವಃ ಯಸ್ಯ । ಷಿಙ್ (ಬನ್ವನೆ)  
"ಅಙ್" (೩-೩-೫೬) । ವಿಶಿಷ್ಟ ಬನ್ಧಃ ಅವಿನಾಭಾವ  
ಇತ್ಯರ್ಥಃ । "ಛಂದೋಬ್ರಾಹ್ಮಣಾನಿ ಚ ತದ್ವಿಧಯಾಣಿ" ಪಾಂ ಸುಂ  
೪-೨-೬೬ ।

ತನಯ ತನಯ (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. ತನೋತಿ ವಿಸ್ತಾರಯತಿ  
ಕುಲಮ್ - ತನು (ವಿಸ್ತಾರೇ) "ಕಯನ್" (೩ಂ ೪-೯೯) ।  
"ಮೃತ್ವಾ ವಿರಾಯ ಚತುರಂತಮಹೀಸಪತ್ನೀ ದೌರ್ವ್ಯಂತಿಮಪ್ರತಿರಥಂ  
ತನಯಂ ನಿವೇಶ್ಯ" ಶಾಕುಂ ೪-೧೯ । 2. ಅಗ್ನಿದಿಂದ ಎಂಟು

ನೆಯ ಸ್ಥಾನ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಯಾ -ಯಾ. ಪುತ್ರ, ಮಗಳು.  
"ರಥವಾಯ ತನಯಾಮಯೋನಿಸಾಂ ರುಪಿಣಿಂ ಶ್ರಿಯಮಿವ ನ್ಯವೇದಯತ್"  
ರಘುಂ ೧೧-೪೭ ।

ತನಿಕಾ ತನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಜ್ಜು, ಹಗ್ಗ. ತನ್ಯತೆ ಬದ್ಧತೆಜನಯಾ  
"ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭) । ಸಂಜ್ಞಾಯಾಂ "ಕನ್" । "ಮುಕ್ತಾ-  
ಸ್ತೃಣಾನಿ ಪರಿತಃ ಕಟಕಂ ಚರಂತಃ ತ್ರುಟ್ಯದ್ವಿತಾನತನಿಕಾ  
ವ್ಯತಿಷ್ಠಜ್ಞಭಾಜಃ" ಮಾಘಂ ೫-೬೧ ।

ತನಿಮನ್ ತನಿಮನ್ (ಪುಂ) ಕಾರ್ತೃ, ಕೃತೃ. ತನೋಭವಿಃ  
"ಇಮನಿಙ್" (೫-೧-೧೨೨) । "ತನಿಮ್ನಾ ಶೋಭಂತೆ ಗಲಿತ-  
ವಿಭವಾಶ್ರಾಥಿಷು ನೃಪಾಃ" ಕುವಂ ।

ತನಿಠ ತನಿಠ (ವಿಂ) ಬಹುಮಂದಿಗಳಲ್ಲಿ ತೆಳುವಾದ  
ಒಬ್ಬನು. ಅಯಮೇಷಾಮತಿಸಯೇನ ತನುಃ "ಇಠನ್" (೫-೩-೫೫) ।

ತನೀಯಸ್ ತನೀಯಸ್ (ವಿಂ) ಎರಡರಲ್ಲಿ ಸಣ್ಣದಾದ ಒಂದು,  
ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ತೆಳುವಾದ ಒಬ್ಬ. ಅಯಮನಯೋರತಿಸಯೇನ  
ತನುಃ "ಇಯಸುನ್" (೫-೩-೫೭) । "ನಾಸಾವಿರೋಕಪವನೋ-  
ಲ್ಲಸಿತಂ ತನೀಯೋ ರೋಮಾಂಶ್ಚತಾಮಿವ ಜಗಾಮ ರಜಃ ಪೃಥಿವ್ಯಾಃ"  
ಮಾಘಂ ೫-೫೪ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) ।  
-ಯಸೋ -ಯಸೀ.

ತನು ತನು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶರೀರ, ದೇಹ, ಮೈ. ತನೋತಿ - ತನು  
(ವಿಸ್ತಾರೇ) "ತಃ" (೩ಂ ೧-೭) । "ತನೋ ಮಮುಸ್ತತ್ರ ನ  
ಕೆಂಠಭದ್ರಿಷಸ್ತಪೋಧನಾಭ್ಯಾಗಮಸಂಭವಾ ಮುದಃ" ಮಾಘಂ ೧-೨೩ ।  
2. ಚರ್ಮ, ತೊಗಟು. (ವಿಂ) 3. ಅಲ್ಪವಾದ, ಚಿಕ್ಕ  
ದಾದ, ಸಣ್ಣದಾದ. 4. ವಿರಳವಾದ. 5. ಕೃಶವಾದ,  
ತೆಳ್ಳಗಿರುವ. "ತನುಃ ಕಾಯೇ ತ್ವಚಿ ಸ್ತ್ರೀ ಸ್ಯಾತ್ ತ್ರಿಫಲಪೇ  
ವಿರಲೇ ಕೃಶೇ" ಮೇದಿಂ । "ತನುರಭಿಲಷಿತಂ ಕಲಮಚ್ಛಲೇನ  
ವ್ಯವೃಣುತ ವೆಲ್ಲಿತಬಾಹುಬಲ್ಲರೀಕಾ" ಮಾಘಂ ೭-೭೨ । "ತನು-  
ಲೋಮಕೇಶದಶನಾಂ ಮೃದ್ವಜ್ಜಿಮೃದ್ವೇತಕನ್ಯಾಮ್" ಮನುಂ ೩-೧೦ ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ವಾ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪೪) । ತನ್ವೀ ತನ್ವೀ,  
ತನುಃ ತನುಃ.

ತನುಕೂಬರ ತನುಕೂಬರ (ನಂ) ಗಾಡಿಯ ಮೂಕೆಯ ಕಂಬ.  
ತನುಕೋರ ತನುಕೋರ (ಪುಂ) ಅಮುಟೆಮರ. ತನು ಅಲ್ಪಂ  
ಕೋರಮಸ್ಯ ।

ತನುಚ್ಛದ ತನುಚ್ಛದ (ಪುಂ) ಕವಚ, ಅಂಗಿ. ತನುಃ ಚಾಚತೇಜೇನ  
- ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ) "ಛಃ" (೩-೩-೧೧೮) । "ಗ್ರಥಿತ-  
ಮೌಲಿರಸೌ ವನಮಾಲಯಾ ತರೂಪಲಾಶಸವರ್ಣತನುಚ್ಛದಃ" ರಘುಂ  
೯-೫೧ ।

ತನುಚ್ಛಾಯಾ ತನುಚ್ಛಾಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ವಲ್ಪ ನೆರಳು.  
ತನ್ವೀ ಛಾಯಾ । 2. ದೇಹಕ್ಕಿಂತ. ತನೋಃ ಛಾಯಾ । (ಪುಂ)



-ಛಾಯ-ಭಾಯ. 3. ಭಾರಂಗಿ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 4. ಸ್ವಲ್ಪ ನೆರಳುಳ್ಳ. 5. ಸ್ವಲ್ಪ ಕಾಂತಿಯುಳ್ಳ. ತನ್ವಿ ಅಲ್ಪಾ ಛಾಯಾ यस್ಯ ।

ತನುಜ ತನುಜ (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. ತನೋಜಯತೇ-ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಙ:" (3-2-98) । "एवं स्वतनुज आत्मन्यनुरागावेशितचित्तः" भाग० ५-१-६ । 2. ಲಗ್ನ ದಿಂದ ಐದನೆಯ ಸ್ಥಾನ. (ವಿಂ) 3. ದೇಹದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ತನಿ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ "ಙ:" (3-2-98) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜಾ-ಜಾ. 4. ಪುತ್ರಿ, ಮಗಳು.

ತನುಜನ್ಮನ್ ತನುಜನ್ಮನ್ (ಪುಂ) ಪುತ್ರ, ಮಗ. ತನೋಜನ್ಮ यस್ಯ ।

ತನುತರ ತನುತರ (ವಿಂ) "ತನೀಯಸ್" ಪದದ ಅರ್ಥ. अनयोरतिशयेनायं तनुः "तरप्" (५-३-५७) । "तनुतर- विशिखविताडनविघटितविशारारुशारु०" रघु० ग० ।

ತನುತಾ ತನುತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೆಳ್ಳಗಿರುವಿಕೆ, ಕೃಶವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿರುವಿಕೆ. ತನೋರ್ಭವಿ: "तल्" (५-१-११९) । "त्वः" । -त्वम्-ತ್ವಮ್.

ತನುತ್ಯಜ್ ತನುತ್ಯಜ್ (ವಿಂ) ಶರೀರತ್ಯಾಗಮಾಡುವ, ದೇಹ ವನ್ನು ಬಿಟ್ಟುಹೋಗುವ. ತನುಂ ತ್ಯಜತಿ - ತ್ಯಜ (ಹಾನಿ) "क्विप्" (३-२-७६) । "वार्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्" रघु० १-८ ।

ತನುತ್ರ ತನುತ್ರ (ನಂ) ಕವಚ, ಅಂಗಿ. ತನುಂ ತ್ರಾಯತೇ - ತ್ರೈಙ್ (ಪಾಲನೆ) "कः" (३-२-३) ।

ತನುತ್ರವತ್ ತನುತ್ರವತ್ (ವಿಂ) ಕವಚವನ್ನು ತೊಟ್ಟಿರುವ. ತನುತ್ರಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "मनुप्" (५-२-९४) ।

ತನುತ್ರಾಣ ತನುತ್ರಾಣ (ನಂ) ಕವಚ, ಅಂಗಿ. ತನುಂ ತ್ರಾಯತೇಜೇನ - ತ್ರೈಙ್ (ಪಾಲನೆ) "ल्युट्" (३-३-११७) ।

ತನುತ್ರಿನ್ ತನುತ್ರಿನ್ (ವಿಂ) ಕವಚವನ್ನು ತೊಟ್ಟಿರುವ. ತನುತ್ರಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ - ತನುತ್ರ "इनिः" (५-१-११५) । "अक्षितारासु विव्याध द्विषतः स तनुत्रिणः" माघ० १९-९९ ।

ತನುತ್ವಚ್ ತನುತ್ವಚ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಿರುಸೆಲ್ಲಿಗಿಡ. ತನು: ಸೂಕ್ಷ್ಮಾ ತ್ವಕ್ ಯಸ್ಯಾ: । (ವಿಂ) 2. ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ತೊಗಟೆಯುಳ್ಳ. 3. ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ಚರ್ಮವುಳ್ಳ. ತನು: ತ್ವಕ್ ಯಸ್ಯ ।

ತನುದಾನ ತನುದಾನ (ನಂ) ದೇಹವನ್ನು ಒಪ್ಪಿಸುವುದು, ಶರೀರವನ್ನು ಒಪ್ಪಿನ ಅಧೀನವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ತನೋ- ದಾನಿಮ್ ಅರ್ಪಣಮ್ ।

ತನುಭವ ತನುಭವ (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. ತನೋರ್ಭವತಿ-ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "अच्" (३-१-१३४) । "कार्तिकेऽश्वयुजि वा यदि मासे दृश्यते तनुभवः शिशिरांशोः" बृहत्सं० ७-१८ । (ವಿಂ) 2. ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಭವಾ-ಭವಾ. ಪುತ್ರಿ, ಮಗಳು.

ತನುಭಸ್ತ್ರಾ ತನುಭಸ್ತ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾಚಿಕೆ, ಮೂಗು. ತನೋ- ಭಸ್ತ್ರೇವ ।

ತನುಭೃತ್ ತನುಭೃತ್ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾಣಿ, ಶರೀರವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಜೀವ. (ವಿಂ) 2. ದೇಹವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ. ತನುಂ ವಿಭೃತಿ-ಙ್ ಭೃತ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) "क्विप्" (३-२-७६) । "छाया फलं तनुभृतां शुभमादधाति" बृहत्सं० ६८-९१ ।

ತನುಮಧ್ಯಾ ತನುಮಧ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೃತವಾದ ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶ (ಸೊಂಟ) ವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ತನು: ಸೂಕ್ಷಮಂ ಮಧ್ಯಂ ಯಸ್ಯಾ: । 2. ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರೋಕ್ತವಾದ ಆರನೆಯ (ಗಾಯತ್ರೀ) ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: ಪ್ರತಿ ಪಾದದಲ್ಲಿಯೂ ತ ಗಣ ಮತ್ತು ಯ ಗಣಗಳಿರಬೇಕು. "त्यौ स्तः तनुमध्या" वृ० २० । ಈ ವೃತ್ತದ ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ತ ಯ  
००। १०० ।

ತನುರಸ ತನುರಸ (ಪುಂ) ಸ್ವೇದ, ಬೆವರು. ತನೋ: ರಸ ಇವ । "स्वेदः सिप्रस्तनुरसः" हारा० ।

ತನು(ನ್)ರಹ್ ತನು(ನ್)ರಹ್ (ನಂ) ಮೈಕೊದಲು, ರೋಮ. ತನೋ ರೋಹತಿ-ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "क्विप्" (३-२-७६) ।

ತನು(ನ್)ರಹ್ ತನು(ನ್)ರಹ್ (ನಂ) 1. ರೋಮ, ಮೈಕೊದಲು. ತನೋ ರೋಹತಿ-ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "कः" (३-१-१३५) । "यद्वहुर्बहिरवाप्य विकासं व्यानशे तनुरुहाण्यपि हर्षः" माघ० १०-५० । 2. ಗರಿ, ರೆಕ್ಕೆ. "तनुरुहाणि पुरो विजितध्वनेर्धवलपक्षविहङ्गम- कूजितैः" माघ० ६-४५ ।

ತನುವಾತ ತನುವಾತ (ಪುಂ) ಒಂದು ನರಕ.

ತನುವಾರ ತನುವಾರ (ಪುಂ) ಕವಚ, ಅಂಗಿ. ತನುಂ ಶರೀರಂ ವೃಣೋತಿ - ವೃಜ್ (ವರಣ) "अण्" (३-२-१) ।

ತನುಸ್ ತನುಸ್ (ನಂ) 1. ವಿಸ್ತಾರವಾಗುವುದು, ಹರಡುವುದು. 2. ದೇಹ, ಶರೀರ. ತನು (ವಿಸ್ತಾರೆ) "उसिः" (उ० २-११७) । "तनुषी तनुविस्तृती" वैज० ।



ತನುಹದ ತನುಹದ (ಪುಂ) ಗುಡ, ಅಪಾನದ್ವಾರ, ಮಲ  
ದ್ವಾರ. "ಪಾಯುಸ್ತನುಹದೋ ಮಾರ್ಗಃ" ।

ತನು ತನೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶರೀರ, ದೇಹ. ತನೋತಿ ಕರ್ಮ—ತನು  
(ವಿಸ್ತಾರೇ) "ಒಙ್" (ಬಾಂ ೪-೧-೬೬) । "ಆನನೈವಿಚಕಸೇ  
ಹೃಷಿತಾಭಿವೃದ್ಧಭಾನಭಿ ತನುಭಿರಭಾವಿ" ಮಾಘಂ ೧೦-೩೬ ।  
2. ಅಕಳು, ಹಸು. 3. ಬ್ರಹ್ಮ. ತನೋತಿ ವಿಸ್ತಾರಯತಿ  
ಸೃಷ್ಟಿಮ್ ।

ತನುಕರಣ ತನೂಕರಣ (ನಂ) ಸಣ್ಣದಾಗಿ ಮಾಡುವುದು,  
ತೆಳುವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು, ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು,  
ಶಿಲುವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು.

ತನುಕೃತ ತನೂಕೃತ (ವಿಂ) ಕೃತವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಣ್ಣ  
ದಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಶಿಲುವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೂಕ್ಷ್ಮ  
ವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ತನುಜ ತನೂಜ (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. ತನೋಜಯಿಷೇ—ಜನಿ  
(ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಙ್" (೩-೨-೯೮) । "ಅಭೂದಭೂಮಿಃ ಪ್ರತಿಪಕ್ಷ-  
ಜನ್ಮನಾಂ ಭಿರ್ಯಾ ತನುಜಸ್ತಪನದ್ವಿತಿರ್ದಿತೇಃ" ಮಾಘಂ ೧-೪೨ ।  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಜಾ—ಜಾ. ಮಗಳು. "ಆರಾಧಯಾಮಾಸ ಸಖಿ-  
ಸಮೇತಾಂ ಸಮಾದಿದೇಶ ಪ್ರಯತಾಂ ತನುಜಾಮ್" ಕುಮಾರಂ ೧-೫೮ ।  
ಎವಂ ತನುಜಾತಃ ತನೂಜಾತಃ, ತನುಜನ್ಮನ್ ತನೂಜನ್ಮನ್.  
ಇತ್ಯಾದಿ. (ವಿಂ) 2. ಶರೀರದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ. 3. ಶರೀರ  
ದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

ತನುನ ತನೂನ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ತನ್ವಾ ಶರೀರೇಣ  
ಒನಃ । (ವಿಂ) 2. ಕೃತವಾಗಿರುವ, ಇಳಿದುಹೋದ  
ಮೈಯುಳ್ಳ.

ತನುನಪ ತನೂನಪ (ನಂ) ಫುತ, ತುಪ್ಪ. ಕೃತವಾಗಿರು  
ವವನಿಗೆ ಪುಷ್ಟಿಯುಂಟುಮಾಡುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ತನುನಪಾತ್ ತನೂನಪಾತ್ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ತನು ನ  
ಪಾತಯತಿ ಜಾಠರರೂಪೇಣ ಶರೀರಂ ಧಾರಯತಿ — ಪಲ್ಕ (ಗತೀ) +  
ಣಿಕ್ "ಶತ್" ನಿಪಾಂ (೬-೩-೭೫) । ತನ್ವಾ ಒನ ಕೃಶಂ ಪಾತಿ ।  
ತನುನಪಂ ಧೃತಾದಿ ಅತ್ತಿ—ಅದ(ಭಕ್ಷಣೇ) "ವಿಡ್" (೩-೨-೬೮) ।  
ಇತಿ ವಾ । "ಬಭಾರ ಬಾಘೈರ್ದಿಗುಣೀಕೃತಂ ತನುಸ್ತನುನಪಾದ್ಭೂಮ-  
ವಿತಾನಮಾಧಿಜೈಃ" ಮಾಘಂ ೧-೬೨ । 2. ಪ್ರಜಾಪತಿಯ  
ಪುತ್ರ, ಬ್ರಹ್ಮನ ಮೊಮ್ಮಗ. ತನೋತಿ ವಿಸ್ತಾರಯತಿ ಸೃಷ್ಟಿಮ್  
ಇತಿ ತನುಃ ಬ್ರಹ್ಮಾ, ತಸ್ಯ ನಪಾತ್ ಪೌತ್ರಃ । 3. ಗೋಪುತ,  
ಹಸುವಿನ ತುಪ್ಪ. ತನೋತಿ ವಿಸ್ತಾರಯತಿ ಭೋಗಾನ್ ಇತಿ  
ತನುಃ ಗೌಃ, ತಸ್ಯಾಃ ನಪಾತ್ ಪೌತ್ರಮ್ ಧೃತಮ್ । ಹಸುವಿನಿಂದ  
ಹಾಲೂ ಹಾಲಿನಿಂದ ತುಪ್ಪವೂ ಆಗುವುದರಿಂದ ತುಪ್ಪವು  
ಹಸುವಿಗೆ ಪುತ್ರವಾಯಿತು.

ತನುರಹ ತನೂರುಹ (ನಂ) 1. ರೋಮ, ಮೈಕೂದಲು.  
ತನೋ ರೋಹತಿ—ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೋ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫) ।  
"ಋಚಿರಚಿತ್ರತನುರಹಶಾಲಿಭಿವಿಚಲಿತಃ ಪರಿತಃ ಪ್ರಿಯಕವ್ರಜೈಃ"  
ಮಾಘಂ ೪-೩೨ । 2. ರೆಕ್ಕೆ, ಗಿರಿ. "ತನುರಹಂತು ಲೋಮಿ  
ಸ್ಯಾತ್ ಪತತ್ರೇ ಚ ನಪುಂಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ । "ಕುಕುಡಸ್ತವೃಜು-  
ತನುರಹಾಙ್ಗುಲಿಸ್ತಾಮ್ರವಕ್ತ್ರನಖಚೂಲಿಕಃ ಸಿತಃ" ಬೃಹತ್ಸಂ  
೬೩-೧ । (ಪುಂ) 3. ಪುತ್ರ, ಮಗ. "ತನುರಹಸ್ತು ಪುತ್ರೇ  
ಗಠತಿ ಲೋಮಿ ಚ" ಹೇಮಂ ।

ತನ್ತು ತಂತು (ಪುಂ) 1. ಸೂತ್ರ, ದಾರ. ತನು (ವಿಸ್ತಾರೇ)  
"ತುನ್" (೩ಂ ೧-೬೯) । 2. ಜೇಡನ ಬಲೆಯ ಎಳೆ.  
"ತಿರಸ್ಕಿಪಂತೇ ಕೃಮಿತನ್ತುಜಾಲೈವಿಚ್ಛಿನ್ನಭೂಮಪ್ರಸರಾ ಗವಾಕ್ಷಾಃ"  
ರಘುಂ ೧೬-೨೦ । 3. ನಾರು, ಎಳೆ, ನವಿರಾದ ದಾರ  
ದಂತಿರುವ ವಸ್ತು. "ವಿಸತನ್ತುಗುಣಸ್ಯ ಕಾರಿತಂ ಧನುಃ  
ಪೇಲವಪುಷ್ಪಪತ್ರಿಣಃ" ಕುಮಾರಂ ೪-೨೯ । 4. ಎಡೆಬಿಡದೆ  
ಇರುವುದು. ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿರುವುದು.

ತನ್ತುಕ ತಂತುಕ (ಪುಂ) 1. ಸೂತ್ರ, ದಾರ. "ವಿಚ್ಛಿನ್ನೇ  
ನಿತರಾಮನಙ್ಗಕಲಹಕೀಡಾನ್ವುಡತ್ತನ್ತುಕಮ್" ಭರ್ತಂ ೧-೯೪ ।  
2. ಗ್ರಾಹ, ಮೊಸಳೆ. "ಗ್ರಾಹಸ್ತನ್ತ್ರಸ್ತನ್ತುನಾಗಸ್ತನ್ದ್ರಶ್ರಾಮೋಘ-  
ತನ್ತುಕೋ" ವಂಜಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಕೀ—ಕೀ. 3. ನಾಡಿ,  
ಧಮನಿ, ನರ.

ತನ್ತುಕಾಠ ತಂತುಕಾಠ (ನಂ) ನೇಯ್ಗೆ ಕಾರನ ಕುಂಚ,  
ನೇಯ್ಗೆಯವನು ದಾರವನ್ನು ಶುದ್ಧಮಾಡಲು ಉಪ  
ಯೋಗಿಸುವ ದಂಡ. ತನ್ತುಯುಕ್ತಂ ಕಾಠಮ್ ।

ತನ್ತುಕೂಟ ತಂತುಕೂಟ (ಪುಂ) ರೇಷ್ಮೆಹುಳ, ರೇಷ್ಮೆದಾರ  
ಶ್ಯಾಗಿ ಸಾಕುವ ಹುಳ.

ತನ್ತುನಾಭ ತಂತುನಾಭ (ಪುಂ) ಜೇಡನ ಹುಳ. ತನ್ತುನಾಭಿ  
ಯಸ್ಯ ।

ತನ್ತುನಿರ್ಯಾಸ ತಂತುನಿರ್ಯಾಸ (ಪುಂ) ತಾಳವೃಕ್ಷ, ಪನೆಮರ.  
ತನ್ತುವತ್ ನಿರ್ಯಾಸೋಽಸ್ಯ ।

ತನ್ತುಪವನ್ ತಂತುಪವನ್ (ನಂ) ಉಪಾಕರ್ಮ, ಶ್ರಾವಣ  
ಮಾಸದ ಪೂರ್ಣಿಮೆ, ಯಜ್ಞೋಪವೀತವನ್ನು ದಾನ  
ಮಾಡುವ ಒಂದು ಹಬ್ಬ. ತನ್ತೋಃ ಪಶೋಪವೀತಸ್ಯ ದಾನರೂಪಂ  
ಪವನ್ ಯತ್ರ । "ಸಂಪ್ರಾಪ್ತೇ ಶ್ರಾವಣಸ್ಯಾಂತೇ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಾಂ ದಿನೋದಯೇ ।  
ಸ್ನಾನಂ ಕುರ್ವೀತ ಮತಿಮಾನ್ ಶ್ರುತಿस्ಮೃತಿವಿಧಾನತಃ । ಉಪಾಕರ್ಮಾ-  
ದಿಕಂ ಪ್ರೋಕ್ತಮ್ ಕೃಷಿಣಾಂ ಚೈವ ತರ್ಪಣಮ್ । ಶೂದ್ರಾಣಾಂ ಮನ್ತ್ರರಹಿತಂ  
ಸ್ನಾನಂ ದಾನಂ ಚ ಶಸ್ಯತೇ । ಉಪಾಕರ್ಮಣಿ ಕರ್ತವ್ಯಮೃಷಿಣಾಂ ಚೈವ  
ಪೂಜನಮ್ । ತತೋಽಪರಾಹ್ಲಸಮಯೇ ರಕ್ಷಾಪೊಟಲಿಕಾಂ ಶುಭಾಮ್ ।  
ಕಾರಯೇದಕ್ಷತೈಃ ಶಸ್ತೈಃ ಸಿದ್ಧಾರ್ಥೇಹೈರಭಿಷಿತೈಃ" ನಿರ್ಣಯಸಿಂ ।



ತನ್ತು ತಂತು (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪಪ, ಸಾಸುವೆ. 2. ವತ್ಸ, ಕರು.

ತನ್ತುವರ್ಧನ ತಂತುವರ್ಧನ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು, ಪರಮಾತ್ಮ. ತನ್ತು ಸಂಸಾರತನ್ತು ವರ್ಧಯತಿ ಸಂತನೋತಿ-ವೃಥ (ವೃಥಾ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (3-1-134). "ಅಂಶುಭಿಃ ಪಾಪಕಿಮಿಸ್ತನ್ತು ಸಂಸಾರನಾಮಕಮ್ | ಯಸ್ತನೋತಿತಿ ಸದಾ ತನ್ತುವರ್ಧನ ಇರಿತಃ" ಇತಿ ನಿರ್ವೃತ್ತಿಃ | "ಶುಭಾಕ್ಷೋ ಲೋಕಸಾರಜ್ಞಃ ಸುತನ್ತುಸ್ತನ್ತು-ವರ್ಧನಃ" ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ಸಂತತಿಯನ್ನು ವೃದ್ಧಿ ಗೊಳಿಸುವ. 3. ಸಂತತಿಯನ್ನು ವಿಚ್ಛಿತ್ತಿಗೊಳಿಸುವ. ತನ್ತು ವರ್ಧಯತಿ ಚಿನತಿ-ವರ್ಧ (ಚೇದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (3-1-134). 4. ದಾರವನ್ನು ಕತ್ತರಿಸುವ.

ತನ್ತುವಾನ ತಂತುವಾನ (ನಂ) ನೇಯಿಗೆ, ನೇಯುವುದು.

ತನ್ತುವಾಪ ತಂತುವಾಪ (ಪುಂ) 1. ಕುಮಿಂದ, ನೇಯಿಗೆ ಯವನು, ಮಗ್ಗದವನು. ತನ್ತುನ್ ವಪತಿ-ಙ್ ವಪ್ (ವಿಜಸಂತಾನೇ) "ಅಙ್" (3-2-1). 2. ಜೇಡನ ಹುಳ.

ತನ್ತುವಾಯ ತಂತುವಾಯ (ಪುಂ) 1. ಕುಮಿಂದ, ನೇಯಿಗೆ ಯವನು. ತನ್ತುನ್ ವಯತಿ-ವೇಜ್ (ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) "ಅಙ್" (3-2-1). "ತನ್ತುವಾಯೋ ದಶಪಲಂ ದद्याದೇಕಪಲಾಧಿಕಮ್ | ಅತೋಜ್ಯಥಾ ವರ್ತಮಾನೋ ದಾಪ್ಯೋ ದ್ವಾದಶಕಂ ದಮಮ್" ಮನುಂ 6-397. 2. ಜೇಡನ ಹುಳ.

ತನ್ತುವಾಯದಂತ ತಂತುವಾಯದಂತ (ಪುಂ) ನೇಯಿಗೆಯವನು (ನೇಯುವಾಗ) ದಾರದ ಸಿಕ್ಕನ್ನು ಬಿಡಿಸಿ ನೇಯುವ ತಾಕು ಹಲಗೆ. ತನ್ತೋರ್ವಾಸ್ಯ ದಂತಃ |

ತನ್ತುಶಾಲಾ ತಂತುಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಗ್ಗದ ಮನೆ.

ತನ್ತುಸಂತತ ತಂತುಸಂತತ (ನಂ) 1. ನೇದ ಬಟ್ಟೆ. 2. ಹೊಲಿಯಲ್ಪಟ್ಟ ವಸ್ತು. ತನ್ತುಭಿಃ ಸಂತತಮ್ | "ಋತಂ ಸ್ತುತಮುತಂ ಚೇತಿ ತ್ರಿತಯಂ ತನ್ತುಸಂತತೇ" ಅಮಂ |

ತನ್ತುಸಂತತಿ ತಂತುಸಂತತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೇಯಿಗೆ, ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ನೇಯುವುದು.

ತನ್ತುಸಂತಾನ ತಂತುಸಂತಾನ (ಪುಂ) ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ನೇಯುವುದು.

ತನ್ತುಸಾರ ತಂತುಸಾರ (ಪುಂ) ಅಡಕೆ ಮರ. ತನ್ತವ ಇವ ಸಾರೋ ಮಜ್ಜಾ ಯಸ್ಯ |

ತನ್ತ್ರ ತಂತ್ರ (ನಂ) 1. ಸಿದ್ಧಾಂತ. ತನೋತಿ ತನ್ಯತೇ ವಾ-ತನ್ (ವಿಸ್ತಾರೇ) ಕರ್ತಾದೌ "ಛ್ರನ್" (3-4-146). 2. ಶಾಸ್ತ್ರ. "ಅವೈರಜಮತನ್ತ್ರಜಂ ಬಾಲವೇಷ್ಠಾಸಮನ್ವಿತಮ್" ದೇವೀಭಾಂ | 3. ಕುಟುಂಬ ಭರಣದ ಕಾರ್ಯ. ತನ್ರಿ (ಕುಟುಂಬಧಾರಣೆ) "ಛ್ರನ್" (3-3-146). "ಸರ್ವಾನುಪಾಯಾನಥ ಸಂಪ್ರಧಾರ್ಯ

ಸಮುದ್ರೇತ್ ಸ್ವಸ್ಯ ಕುಲಸ್ಯ ತನ್ತ್ರಮ್" ಭಾಂ ಅನುಂ 63-6 |

4. ಪ್ರಧಾನವಾದ ವಿಷಯ. 5. ತಂತುವಾನ, ನೇಯಿಗೆ.

6. ಎರಡು ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಒಂದೇ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ

ಸಾಧಿಸುವಿಕೆ. 7. ರಾಷ್ಟ್ರ. 8. ಹೇತು, ಕಾರಣ. 9. ಸ್ವರಾಷ್ಟ್ರ

ಜೀತೆ, ತನ್ನ ರಾಷ್ಟ್ರದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ರಾಜನು ಮಾಡುವ

ಆಲೋಚನೆ. "ತನ್ತ್ರಂ ಸ್ವರಾಷ್ಟ್ರಚಿಂತಾಯಾಮಾವಾಪಃ ಪರಿಚಿಂತನೇ"

ವೇಜಂ | "ತನ್ತ್ರಾವಾಪವಿದಾ ಯೋಗೇರ್ಮಂಡಲಾನ್ಯಧಿತಿಷ್ಠತಾ"

ಮಾಘಂ 2-22 | 10. ಸೈನ್ಯ. 11. ಯಕ್ಷಿಣ, ಇಂದ್ರಜಾಲ.

12. ಶಪಥ, ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. 13. ಗೃಹ, ವನೆ. 14. ಔಷಧ.

15. ಪರಿಸ್ಥಾನ, ಪರಿವಾರ. 16. ಧನ, ಸಂಪತ್ತು. 17. ಇತಿ

ಕರ್ತವ್ಯತೆ, ಹೀಗೆಯೇ ಮಾಡಬೇಕೆನ್ನುವುದು. 18. ತಂತು.

19. ಮಗ್ಗ, ನೇಯಿಗೆಯ ಸಾಧನ. "ಎವಂ ಸ್ತುವನ್ನಪಿ

ನಾಗಾನ್ಯದಾ ತೇ ಕುಣ್ಡಲೇ ನಾಲಭತದಾಽಪ್ಯಶ್ಯತ್ ಸ್ತ್ರಿಯೌ ತನ್ತ್ರೇ

ಅಧಿರೋಪ್ಯ ಸುವೇಮೇ ಪಟಂ ವಯನ್ತೌ" ಭಾಂ ಆದಿಂ 3-144 |

20. ತಂತುವಾಯ, ನೇಯಿಗೆಯವನು. "ತನ್ತ್ರಂ ಕುಟುಂಬಕೃತ್ಯೇ

ಸ್ಯಾತ್ ಸಿದ್ಧಾಂತೇ ಚೌಷಧೋತ್ತಮೇ | ಪ್ರಧಾನೇ ತನ್ತುವಾಯೇ ಚ" ಮೇದಿಂ |

21. ವ್ಯವಹಾರ. "ಶ್ರುತ್ವಾ ತ್ವಂ ಪ್ರತಿಪದ್ಯಸ್ವ ಪ್ರಾಜ್ಞಃ ಸಹ

ಪುರೋಹಿತೈಃ | ಆಪದ್ವರ್ಮಾಂಕುಶಲೈಲೋಕತನ್ತ್ರಮವೇಕ್ಷ್ಯ ಚ"

ಭಾಂ ವನಂ | 22. ಕುಲ, ವಂಶ. 23. ಗ್ರಂಥಭಾಗ,

ಅಧ್ಯಾಯ, ಸರ್ಗ ಮೊದಲಾದುದು. 24. ಉಪಾಯ.

25. ಸಂತೋಷ. 26. ರಾಶಿ, ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು.

27. ಅಂತ್ರ, ಕರುಳು. 28. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ನಡೆಸುವ

ಪ್ರಯೋಗ. "ತನ್ತ್ರಂ ಸ್ವರಾಷ್ಟ್ರವ್ಯಾಪಾರೇ ತನ್ತುವಾನೇ ಪರಿಚ್ಛದೇ |

ಶಾಸ್ತ್ರೋಪಧಾನ್ತ್ರಮುಖ್ಯೇಷು ಪ್ರಯೋಗೇಷ್ವರಕರ್ಮಣಾಮ್ | ಏಕಸ್ಯೈವೋ-

ಭಯಾರ್ಥತ್ವೇ ಕುಟುಂಬವ್ಯಾಪ್ತಾವಪಿ" ವೇಜಂ |

ತನ್ತ್ರಕ ತಂತ್ರಕ (ನಂ) ನೂತನ ವಸ್ತು, ಹೊಸದಾಗಿ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಟ್ಟೆ, ಉಪಯೋಗಿಸದಿರುವ ಒಗೆಯದಿರುವ ಮತ್ತು ಪರಿಯದಿರುವ ಬಟ್ಟೆ. ತನ್ತ್ರಾದಚಿರಾಪಹೃತಮ್ "ಕನ್" (4-2-70) |

ತನ್ತ್ರಕಾರ ತಂತ್ರಕಾರ (ಪುಂ) ಅರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರಕಾರ, ಅರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ರಚಿಸಿದವನು. "ತೇನ ಹ್ಯವಿತಥಂ ತನ್ತ್ರಕಾರವಚನಮ್" ಮಾಲಂ 1 |

ತನ್ತ್ರಕಾಠ ತಂತ್ರಕಾಠ (ನಂ) ಮಗ್ಗದ ದಾರವನ್ನು ಶುದ್ಧಮಾಡಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ದಂಡ. ತನ್ತ್ರಸ್ಯ ಕಾಠಮ್ |

ತನ್ತ್ರತಾ ತಂತ್ರತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನೇಕ ಪ್ರಯೋಜನಗಳ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ಮಾಡುವ ಒಂದು ಪ್ರಯತ್ನ. ತನ್ತ್ರಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (4-1-119) |



ತನ್ಮಾತ್ರ ತಂತ್ರವಾಸ (ಪುಂ) 1. ಕುಮಿದ, ನೇಯಿಗೆ ಯವನು. 2. ಜೇಡನ ಹುಳ.

ತನ್ಮಾತ್ರ ತಂತ್ರವಾಯ (ಪುಂ) 1. ನೇಯಿಗೆಯವನು. 2. ಜೇಡನ ಹುಳ. ತನ್ಮ ತನ್ತು ವಯತಿ-ವೇ (ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) ।

ತನ್ಮಾ ತಂತ್ರ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತೂಕಡಿಕೆ. 2. ಸೋಮಾರಿತನ. 3. ಆಯಾಸ, ಬಳಲಿಕೆ, ದಣವು.

ತನ್ಮಿ ತಂತ್ರ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಂತ್ರಿ. 2. ಸೋಮಾರಿತನ.

ತನ್ಮಿಕಾ ತಂತ್ರಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. ತನ್ಮಯತೆ ಆಯು: "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

ತನ್ಮಿತ ತಂತ್ರತ (ವಿಂ) 1. ಆಲಸ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಸೋಮಾರಿತನವುಳ್ಳ. ತನ್ಮಾ ಜಾತಾಸ್ಯ "ಇತತ್" (೪-೨-೩೬) । 2. ಆಯಾಸವುಳ್ಳ.

ತನ್ಮಿನ್ ತಂತ್ರನ್ (ವಿಂ) 1. ತಂತ್ರಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. 2. ದಾರದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಉಪಾಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 4. ತೂಕಡಿಕೆಯುಳ್ಳ.

ತನ್ಮಿ ತಂತ್ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೀಣೆ ಮೊದಲಾದ ವಾದ್ಯಗಳ ತಂತ್ರಿ. 2. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. 3. ನಾಡಿ, ರಕ್ತನಾಳ. ತನ್ಮಿ (ಕುಡುಂಬಧಾರಣೆ) "ಃ" (ತಂ ೩-೧೫೮) । 4. ವೀಣೆ. "ಪಾದಬದ್ಧೋಷರಸಮಸ್ತನ್ಮಿಲಯಸಮನ್ವಿತ: । ಶೋಕಾರ್ತಸ್ಯ ಪ್ರವೃತ್ತಿ ಮೇ ಇಲೋಕೋ ಭವತು ನಾನ್ಯಥಾ" ರಾಮಾಂ ।

ತನ್ಮಾ ತಂದ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಯಾಸ, ಬಳಲಿಕೆ, ದಣವು. ತದ್ ದ್ರಾತಿ - ದ್ರಾ (ಕುಡುಂಬಧಾರಣೆ) ತದೋ ನಾನ್ತತ್ವಂ ನಿಪಾಂ (೩-೨-೧೫೮) । 2. ಆಯಾಸದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ತೂಕಡಿಕೆ, ಬಳಲಿಕೆಯಿಂದ ಬರುವ ನಿದ್ರೆ. 3. ಸೋಮಾರಿ ತನ. "ವಿಷಯೇಂದ್ರಿಯಸಂರೋಧಸ್ತನ್ಮಾಲಸ್ಯವಿವರ್ಜನಮ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೧೫೮ ।

ತನ್ಮಾಲ್ಯ ತಂದ್ರಾಲ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸೋಮಾರಿ, ಆಲಸ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು. 2. ಆಯಾಸದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು, ಬಳಲಿ ದವನು. ತನ್ಮಾ "ಆಲ್ಯ" (೩-೨-೧೫೮) । 3. ನಿದ್ರೆಯ ಸ್ವಭಾವದವನು, ತೂಕಡಿಕೆಯುಳ್ಳವನು.

ತನ್ಮಿ ತಂದ್ರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತೂಕಡಿಕೆ, ನಿದ್ರೆ. 2. ಆಯಾಸ, ಬಳಲಿಕೆ. 3. ಸೋಮಾರಿತನ, ಆಲಸ್ಯ. ತದ್ + ದ್ರಾ (ಕುಡುಂಬಧಾರಣೆ) ನಿಪಾಂ (೩-೨-೧೫೮) । ತನ್ಮಾ + ತತ್ಕರೋತಿ "ಣಿಕ್" (ಗಂ ೨೦೪) । "ಃ" (ತಂ ೪-೧೩೯) । ವಾ "ಡಿಃ" (ಗಂ ೪-೧೪೫) । ತನ್ಮಿ ತಂದ್ರೀ. "ವಿಭಜ್ಯ ನಕ್ತದಿವಮಸ್ತನ್ಮಿಲಯಾ ವಿನಯತೇ ತೇನ ನಯೇನ ಪೌರೂಷಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೯ ।

ತನ್ಮಿತ ತಂದ್ರಿತ (ವಿಂ) "ತನ್ಮಿತ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ತನ್ಮಾ ಜಾತಾಸ್ಯ "ಇತತ್" (೪-೨-೩೬) । "ಅತನ್ಮಿತಾ ಸಾ ಸ್ವಯಮೇವ ವೃಕ್ಷಕಾನ್ ಪಟಸ್ತನಪ್ರಸವಣೈರ್ವರ್ಧಯತ್" ಕುಮಾಂ ೪-೧೪ ।

ತನ್ಮಿನ್ ತಂದ್ರಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಸೋಮಾರಿ, ಮೈಗಳ್ಳಿ. ತನ್ಮಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೬) । 2. ಆಲಸ್ಯ ದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಬಳಲಿದ. 3. ತೂಕಡಿಕೆಯುಳ್ಳ.

ತನ್ಮಯ ತನ್ಮಯ (ವಿಂ) ತತ್ತ್ವಸ್ವರೂಪವುಳ್ಳ. ತದ್ "ಮಯ್" (೪-೩-೧೪೩) । "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) । ತನ್ಮಯತಾ ತನ್ಮಯತಾ. "ತವ:" (೪-೧-೧೧೯) । ತನ್ಮಯತ್ವಮ್ ತನ್ಮಯತ್ವಮ್. ತಾದಾತ್ಮ್ಯ, ಅದರ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಾಳುವಿಕೆ. "ಪಾದನ್ಯಾಸೋ ಲಯಮುಪಗತಸ್ತನ್ಮಯತ್ವಂ ರಸೇಷು" ಮಾಲಂ ೨-೮ ।

ತನ್ಮಾತ್ರ ತನ್ಮಾತ್ರ (ನಂ) 1. ಅದು ಮಾತ್ರ. ಸಾ ಮಾತ್ರಾ ಯಸ್ಯ । 2. ಪಂಚಭೂತಗಳ ಅವ್ಯವಹಿತ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಸ್ಥೆ ಯೊಡನೆ ಕೂಡಿದ ದ್ರವ್ಯ, ಉತ್ಕಟಾವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹೊಂದದ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ರೂಪಾದಿಗುಣಗಳಿಗೆ ಆಶ್ರಯ ವಾದ ದ್ರವ್ಯ; ದಧಿರೂಪವಾಗಿ ಪರಿಣಮಿಸುವುದಕ್ಕೆ ಆರಂಭಿಸಿರುವ ಕ್ಷೀರಕ್ಕೆ ಕ್ಷೀರತ್ವಾವಸ್ಥೆ ದಧಿತ್ವಾವಸ್ಥೆ ಈ ಎರಡು ಅವಸ್ಥೆಗಳ ಮಧ್ಯಕಾಲದ ಅವಸ್ಥೆ (ಕ್ಷೀರತ್ವಾ ವಸ್ಥೆಯ ಅವಸಾನ ದಧಿತ್ವಾವಸ್ಥೆಯ ಆರಂಭ ಈ ಅವಸ್ಥೆ) ಯಂತೆ ತಾಮಸಾಹಂಕಾರಕ್ಕೆ ಅಹಂಕಾರತ್ವಾವಸ್ಥೆ ಭೂತ ತ್ವಾವಸ್ಥೆ ಇವುಗಳ ಮಧ್ಯಕಾಲದ ಅವಸ್ಥೆಯು ತನ್ಮಾತ್ರೆಯೆನಿಸುವುದು. ಅದರ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಅಂತಹ ಅವಸ್ಥೆ ಯೊಡನೆ ಕೂಡಿದ ದ್ರವ್ಯವೂ ತನ್ಮಾತ್ರೆಯೆನಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಅಂತಹ ದ್ರವ್ಯವೇ ಪಂಚಭೂತಗಳಿಗೆ ಉಪಾದಾನಕಾರಣ ವಾಗಿರುವುದು. ಈ ತನ್ಮಾತ್ರಗಳು ರೂಪ, ರಸ, ಗಂಧ, ಸ್ಪರ್ಶ ಮತ್ತು ಶಬ್ದಗಳೆಂದು ಐದು ಬಗೆ.

(1) ಉತ್ಕಟಾವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹೊಂದದ ರೂಪಗುಣ ವುಳ್ಳ ಮತ್ತು ರಸಶೂನ್ಯವಾದ ದ್ರವ್ಯವು ರೂಪತನ್ಮಾತ್ರೈ.

(2) ಉತ್ಕಟಾವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹೊಂದದ ರಸಗುಣವುಳ್ಳ ಮತ್ತು ಗಂಧಶೂನ್ಯವಾದ ದ್ರವ್ಯವು ರಸತನ್ಮಾತ್ರೈ.

(3) ಉತ್ಕಟಾವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹೊಂದದ ಗಂಧಗುಣ ವುಳ್ಳ ದ್ರವ್ಯವು ಗಂಧತನ್ಮಾತ್ರೈ.

(4) ಉತ್ಕಟಾವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹೊಂದದ ಸ್ಪರ್ಶಗುಣವುಳ್ಳ ರೂಪಶೂನ್ಯವಾದ ದ್ರವ್ಯವು ಸ್ಪರ್ಶತನ್ಮಾತ್ರೈ.

(5) ಉತ್ಕಟಾವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹೊಂದದ ಶಬ್ದಗುಣವುಳ್ಳ ಸ್ಪರ್ಶಶೂನ್ಯವಾದ ದ್ರವ್ಯವು ಶಬ್ದತನ್ಮಾತ್ರೈ.



ಪಂಚ ಭೂತಗಳಿಗೂ ಉಪಾದಾನ ಕಾರಣ  
ವಾದ ದ್ರವ್ಯಗಳು:

ಗಂಧತನ್ಮಾತ್ರೆಯು ಪೃಥಿವಿಗೆ ಉಪಾದಾನ ಕಾರಣ  
ರಸತನ್ಮಾತ್ರೆಯು ಜಲಕ್ಕೆ "  
ರೂಪತನ್ಮಾತ್ರೆಯು ಆಗ್ನಿಗೆ "  
ಸ್ಪರ್ಶತನ್ಮಾತ್ರೆಯು ವಾಯುವಿಗೆ "  
ಶಬ್ದತನ್ಮಾತ್ರೆಯು ಆಕಾಶಕ್ಕೆ "

ಸಾಂಖ್ಯರ ಮತ: ಪಂಚತನ್ಮಾತ್ರಗಳೂ ತಾಮಸಾ  
ಹಂಕಾರದಿಂದಲೇ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಿ ಹುಟ್ಟುವುವು. ಶಬ್ದ  
ತನ್ಮಾತ್ರೆಯು ಇತರ ಸಾಹಾಯ್ಯವಿಲ್ಲದೆ ಆಕಾಶವನ್ನು  
ಉಂಟುಮಾಡುವುದು. ಸ್ಪರ್ಶ ಮೊದಲಾದ ಉಳಿದ ನಾಲ್ಕು  
ತನ್ಮಾತ್ರಗಳೂ ಪೂರ್ವ ಪೂರ್ವ ತನ್ಮಾತ್ರಗಳ ಸಾಹಾಯ್ಯ  
ಪಡೆದು ಮುಂದು ಮುಂದಿನ ವಾಯು ಮೊದಲಾದ ಭೂತ  
ಗಳನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸುವುವು ಎಂದು ಸಾಂಖ್ಯರು ಅಭಿಪ್ರಾಯ  
ಪಡುವರು. ಆದರೆ ಇದು ಶ್ರೀ ಪಾಂಚರಾತ್ರದಿ ವಚನ  
ಗಳಿಗೆ ವಿರೋಧವಾಗಿರುವುದು. "ಶಬ್ದತನ್ಮಾತ್ರಮಭವತ್ತಚ್ಚಾ-  
ಕಾಶಮಜೀಜನತ್ | ಸ್ಪರ್ಶಮಾತ್ರಂ ತಥಾಕಾಶಾತ್ತಸ್ಮಾದ್ವಾಯುರಜಾಯತ |  
ರೂಪಮಾತ್ರಮಭದ್ವಾಯೋಸ್ತಸ್ಮಾದಗ್ನಿರಜಾಯತ | ರಸಮಾತ್ರಂ ತು ಜ್ಞೇಷ್ಠ-  
ಗ್ನೇಸ್ತಸ್ಮಾದಾಪಃ ಪ್ರಜಜ್ಞಿರೇ | ಗಂಧತನ್ಮಾತ್ರಮದ್ವ್ಯುಚೋಽಪಿ ಗಂಧ-  
ಮಾತ್ರಾತ್ತಥಾ ಮಹಿ" ಪಾಂಚರಾಂ |

ತನ್ವತ್ ತನ್ವತ್ (ವಿಂ) 1. ವಿಸ್ತರಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಹೆಚ್ಚಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. ತನು (ವಿಸ್ತಾರ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |  
3. ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. "ಮಾನಭಜ್ಞಪಡುನಾ ಸುರತೇಚ್ಛಾಂ ತನ್ವತಾ  
ಗ್ರಥಯತಾ ದೃಶಿ ರಾಗಮ್" ಮಾಧಂ ೧೦-೨೫ | 4. ಬೆಳೆಸು  
ತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೩-೨-೧೨೪) | -ತಾಂ-೩೬.

ತನ್ವೀ ತನ್ವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೃಶವಾದ ದೇಹವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು,  
ತೆಳ್ಳನೆಯ ಹೆಂಗಸು. ತನು ವಾ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೪೪) |  
ಪಕ್ಷ ತನು: ತನುಃ. "ಅಪ್ರಭೂತಮತನೀಯಸಿ ತನ್ವೀ ಕಾಶ್ವಿಧಾಮ್ನಿ  
ಪಿಹಿತೈಕತರೋ" ಮಾಧಂ ೧೦-೮೩ |

ತಪ - ಸಂತಾಪೇ (ಭವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ/ಅಕಂ ಅನಿಂ) | ತಪತಿ  
ತಪತಃ ತುಪಂತಿ | ತತಾಪ | ತಪ್ತಾ | ತಪ್ಸ್ಯತಿ | ತಪತು |  
ಅತಪತ್ | ತಪೇತ್ | ತಪ್ಯಾತ್ | ಅತಾಪ್ಸೀತ್ | ಅತಪ್ಸ್ಯತ್ |  
ಸಕಂ-1. ತಾಪವುಂಟುಮಾಡು, ಸಂತಾಪವುಂಟುಮಾಡು,  
ಹೆಚ್ಚು ಕಾವುಂಟುಮಾಡು, ತಡೆಯಲಾಗದಷ್ಟು ಬಿಸಿ  
ಯುಂಟುಮಾಡು, ಸುಡು. "ತಪತಿ ತನುಗಾತ್ರಿ ಮದನಸ್ತ್ವಾ-  
ಮನಿಶಂ ಮಾಂ ಪುನರ್ದಹ್ಯೇವ" ಶಾಕುಂ ೩-೧೪ | "ಯದತಾಪ್ಸಿ-  
ಚ್ಛನೈರ್ಭಾನುರ್ಯತ್ರಾಪಾಸೀನ್ಮಿತಂ ಮಹತ್" ಭಟ್ಟಂ ೧-೨ |  
2. ನಿಯಮದಿಂದ ದೇಹವನ್ನು ದಂಡಿಸು, ನಿಯಮದಿಂದ

ವೃತ್ತವನ್ನು ಆಚರಿಸು, ಪರಮಾತ್ಮನ ಧ್ಯಾನವನ್ನು ಮಾಡು,  
ತಪಸ್ಸನ್ನು ಆಚರಿಸು. "ಅಗಣಿತತನುತಾಪಸ್ತಪ್ತಾ ತಪಾಸಿ  
ಭಗೀರಥಃ" ಉಂ ರಾಂ ೧-೨೩ | 3. ನೋಯಿಸು, ವೇದನೆ  
ಯುಂಟುಮಾಡು. "ಯಾಸ್ಯನ್ ಸುತಸ್ತಪ್ಸ್ಯತಿ ಮಾಂ ಸಮನ್ಯುಮ್"  
ಭಟ್ಟಂ ೧-೨೩ | ಅಕಂ-4. ಪ್ರಕಾಶಿಸು. "ಮಯುಕ್ತೇಶ್ವರಶ್ಚಾಂತಂ  
ತಪತಿ ಯದಿ ದೇವೋ ದಿನಕರಃ" ಉಂ ರಾಂ ೬-೧೪ |

ಕರ್ಮಣಿ:—ತಪ್ಯತೇ | ತಪೇ | ತಪ್ತಾ | ತಪ್ಸ್ಯತೇ | ತಪ್ಯತಾಮ್ |  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಭಾವೇ:—(ಅನುತಾಪಾರ್ಥದಲ್ಲಿ) ಅನುತಪ್ಯತೇ | ಅನುತಪ್ಯತೇ  
ಪಾಪೇನ ಪುನಃ | ತಪ್ಯತೇ | ತಪ್ಯತೇ ತಪಸ್ತಾಪಸಃ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ:—ತಾಪಯತಿ, -ತೇ | ತಾಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ | ತಾಪಯಿತಾ | ತಾಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ |  
ತಾಪಯತು, -ತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:—ತಪ್ತವ್ಯಮ್ | ತಪನೀಯಮ್ | ತಪ್ಯಮ್ | ತಪ್ತಃ |  
ತಪ್ತವಾನ್, -ವತಿ | ತಪನ್, -ಂತಿ | ತಪ್ತಮ್ | ತಪನಮ್ |  
ತಪ್ತುಮ್ | ತಪ್ತಾ | ಪ್ರತಪ್ಯ |

ಪ್ರಯತ್ನಾತ್ ಕೃತ್ಸು:—ತಾಪಯಿತವ್ಯಃ | ತಾಪನೀಯಃ | ತಾಪ್ಯಃ |  
ತಾಪಿತಃ | ತಾಪಿತವಾನ್, -ವತಿ | ತಾಪಯನ್, -ಂತಿ |  
ತಾಪಯಮಾನಃ | ತಾಪಯಿತುಮ್ | ತಾಪಿತಮ್ | ತಾಪನಮ್ |  
ತಾಪಯಿತ್ವಾ | ಪ್ರತಾಪ್ಯ | "ರಕ್ಷೋಭಿस्ताಪಿತಾಸ್ತೇಽಪಿ ಸಿದ್ಧಿ  
ಧ್ಯಾಯಂತಿ ತೇಽಧುನಾ" ಭಟ್ಟಂ ೮-೧೩ |

ತಪ - ಔಶ್ವರ್ಯೇ (ವಾ ದಿವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) | ತಪ್ಯತೇ |  
ತಪೇ | ತಪ್ತಾ | ತಪ್ಸ್ಯತೇ | ತಪ್ಯತಾಮ್ | ಅತಪ್ಯತ | ಇತ್ಯಾದಿ.  
ತಪಸ್ಸುಮಾಡು, ದೇಹವನ್ನು ನಿಯಮದಿಂದ ದಂಡಿಸಿ  
ಧ್ಯಾನಮಾಡು. "ಶಮ್ಬೂಕೋ ನಾಮ ವೃಷಲಃ ಪೃಥಿವ್ಯಾಂ ತಪ್ಯತೇ  
ತಪಃ" ಉಂ ರಾಂ ೨-೮ | ಪಕ್ಷೇ ಭವಾಂ | ತಪತಿ | ತತಾಪ |  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ತಪ - ದಾಹೇ (ವಾಂ ಕುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) | ತಾಪಯತಿ,  
-ತೇ | ಅತೀತಪತ್, -ತ | ಪಕ್ಷೇ ಭವಾಂ | ತಪತಿ | ತತಾಪ |  
ತಪ್ತಾ | ತಪ್ಸ್ಯತಿ | ತಪತು | ಇತ್ಯಾದಿ. ದಹಿಸು, ಸುಡು.  
ಅಕರ್ಮಕ ತಪ ಧಾತುವು ಉತ್ ಮತ್ತು ವಿ ಉಪಸರ್ಗ  
ಯೋಗದಿಂದ ಆತ್ಮನೇಪದಿಯಾಗುವುದು. "ಉದ್ವಿಭ್ಯಾಂ  
ತಪಃ" (೧-೩-೨೭) | ಉತ್ಪತೇ | ವಿತಪತೇ | ದೀಪ್ಯತೇ  
ಇತ್ಯರ್ಥಃ | "ರವಿವಿತಪತೇಽತ್ಯರ್ಥಮಾಶ್ವಸ್ಯ ಮಯಿ ಗಮ್ಯತಾಮ್" |  
"ತೀವ್ರಮುತ್ಪಮಾನೋಽಯಮಶಕ್ಯಃ ಸೋಡುಮಾತಪಃ" ಭಟ್ಟಂ ೮-೧೪,  
೧೫ |

ತಪ ತಪ (ಪುಂ) 1. ಗ್ರೀಷ್ಮಾರ್ತು, ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಮತ್ತು ಅಷಾಢ  
ಮಾಸಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಋತು. ತಪತಿ-ತಪ (ಸಂತಾಪೇ)



“ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ತಪೇನ ವರ್ಷಾ: ಶರದಾ ಹಿಮಾಗಮೋ  
ವಸಂತಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾ ಶಿಶಿರ: ಸಮೇತ್ಯ ಚ” ಮಾಘಂ ೧-೬೬।  
2. ಸೂರ್ಯ. (ಕರ್ಮಪದವು ಉಪಪದವಾದಾಗ) (ವಿಂ)  
3. ತಾಪವುಂಟುಮಾಡುವ. ದ್ವಿಪಂತಂ ತಾಪಯತಿ - ತಪ +  
ಣಿಚ್ “ಖಚ್” (೩-೨-೩೯)। ಹ್ರಸ್ವ: (೬-೪-೯೪)।  
ದ್ವಿಪಂತಪ:।

ತಪ:ಕಲೇಶಸಹ ತಪಃಕ್ಷೇಶಸಹ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹ  
ವುಳ್ಳ ತಪಸ್ವಿ, ಜಿತೇಂದ್ರಿಯನಾದ ಮುನಿ, ತಪಸ್ಸಿನ ಕಷ್ಟ  
ವನ್ನು ಸಹಿಸುವ ಮುನಿ. ತಪಸ: ಕಲೇಶ: ತಂ ಸಹತೇ-ಫಹ  
(ಮರ್ಷಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)।

ತಪತ್ ತಪತ್ (ವಿಂ) ತಪಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸುಡುತ್ತಿರುವ.  
ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। “ಪಶ್ಯಾಮಿ  
ತ್ವಾಂ ದೀಪ್ತಹೃತಾಶವಕ್ತ್ರಂ ಸ್ವತೇಜಸಾ ವಿಶ್ವಮಿದಂ ತಪಂತಮ್”  
ಗೀತಾ ೧೧-೧೯। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)।  
-ಂತಿ -೨೬.

ತಪತೀ ತಪತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಪತೀನದಿ. 2. ಸೂರ್ಯನ  
ವ.ಗಳು, ಸಂವರಣರಾಜನ ಪತ್ನಿ, ಕುರುರಾಜನ ತಾಯಿ.  
“ಸಂವರಣಸ್ತು ವೈವಸ್ವತೀ ತಪತೀ ನಾಮೋಪಯೇಮೆ। ತಸ್ಯಾಮಸ್ಯ  
ಜಜ್ಞೇ ಕುರು:” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೩-೪೧। 3. ಛಾಯಾದೇವಿ,  
ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ, ಶನಿದೇವನ ತಾಯಿ. “ಛಾಯಾ ಸ್ಯಾತ್ತಪತೀ  
ಮಂದಜನನಿ ಭೂಮಯಿ ವರೀ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ತಪನ ತಪನ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ತಪತಿ-ತಪ (ಸಂತಾಪೇ)  
“ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪)। “ಪಶ್ಚಮ: ಪಶ್ಚತಪಸಸ್ತಪನೋ  
ಜಾತವೇದಸಾಮ್” ಮಾಘಂ ೨-೪೧। 2. ಒಂದು ನರಕ.  
“ಸಂಜ್ಞೀವನಂ ಮಹಾವೀಚಿ ತಪನಂ ಸಂಪ್ರತಾಪನಮ್” ಮನುಂ ೪-೮೯।  
3. ಅಗ್ನಿ ಮಹರ್ಷಿ. “ಅಗ್ನಿ: ಕಲಶೀಪುತ್ರಸ್ತಪನ:  
ಪಿತೃಸಾಗರ:” ವೇಜಂ। 4. ಗ್ರೀಷ್ಮರ್ಷಿ, ಬೇಸಗೆ ಕಾಲ.  
“ತಪನೋ ಭಾಸ್ಕರೇ ಗ್ರೀಷ್ಮೇ” ವೇಜಂ। 5. ಸೂರ್ಯಕಾಂತ  
ಶಿಲೆ. 6. ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 7. ಗೇರುಮರ. 8. ಕಿರುನೆಲ್ಲಿ  
ಗಿಡ. 9. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. “ಯಜ್ಞವಾಹಾಯ ದಾಂತಾಯ  
ತಪ್ಯಾಯ ತಪನಾಯ ಚ” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೨೯೦-೧೦೭।  
10. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಯೌವನ ಕಾಲದ ಇಪ್ಪತ್ತೆಂಟು ವಿಧ  
ಅಲಂಕಾರಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. “ವಿಹೃತಂ ತಪನಂ ಮೌಘ್ಯಂ ವಿಕೋಪಶ್ಚ  
ಕುತುಹಲಮ್” ಸಾಂ ದಂ ೩-೯೨। (ನಂ) 11. ತಾಪ,  
ಬಿಸಿ, ಕಾವು. ತಪ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫)।  
12. ಯಾತನೆ, ನೋವು. (ವಿಂ) 13. ದಹಿಸುವ, ಸುಡುವ.  
14. ತಾಪವುಂಟುಮಾಡುವ. 15. ನೋವುಂಟುಮಾಡುವ.  
16. ಶಾಖವುಂಟುಮಾಡುವ.

ತಪನತನಯ ತಪನತನಯ (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಣ. 2. ಸುಗ್ರೀವ.  
3. ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. 4. ಶನಿದೇವ, ಶನೈಶ್ವರ.  
ತಪನಸ್ಯ ತನಯ:। एवं -ಸುತ:-ಸುತಃ, -ಸುತು:-ಸುತುಃ.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತನಯಾ -ತನಯಾ. 5. ಯಮುನಾ ನದಿ.  
6. ಗೋದಾವರೀ ನದಿ.

ತಪನಾತ್ಮಜ ತಪನಾತ್ಮಜ (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಣ. 2. ಯಮಧರ್ಮ  
ರಾಯ. 3. ಸುಗ್ರೀವ. 4. ಶನಿದೇವ, ಶನೈಶ್ವರ. ತಪನ-  
ಸ್ಯಾತ್ಮಜ:। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಆತ್ಮಜಾ -ಆತ್ಮಜಾ. 5. ಯಮುನಾ  
ನದಿ. 6. ಗೋದಾವರೀ ನದಿ.

ತಪನೀ ತಪನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋದಾವರೀ ನದಿ.

ತಪನೀಯ ತಪನೀಯ (ನಂ) 1. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ತಪ್ಯತೇನ  
-ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೩-೧೧೩)। “ತಸ್ಮಾದಧ:  
ಕಿಂಚಿದಿವಾವತೀರ್ಣವಿಸಂಸ್ಪೃಶಂತಿ ತಪನೀಯಪೀಠಮ್” ರಘುಂ  
೧೮-೪೧। 2. ದತ್ತೂರಿಗಿಡ. (ವಿಂ) 3. ಶಾಖವಾಗಿ  
ಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಕಾಯಿಸಲ್ಪಡುವ, ಬಿಸಿಮಾಡಲ್ಪಡುವ,  
4. ಕಾಯಿಸಬೇಕಾದ, ಬಿಸಿಮಾಡಬೇಕಾದ. ತಪ ಕರ್ಮದಿ  
“ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬)।

ತಪನೀಯಕ ತಪನೀಯಕ (ನಂ) ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ.

ತಪನೇಷ್ಠ ತಪನೇಷ್ಠ (ನಂ) ತಾಪುಲೋಹ. ಇದು ಸೂರ್ಯ  
ನಿಗೆ ಪ್ರಿಯವಾದ ಲೋಹ.

ತಪಸ್ ತಪಸ್ (ಪುಂ) 1. ಮಾಘಮಾಸ. ತಪನ್ಯಸ್ಮಿನ್-ತಪ  
(ಸಂತಾಪೇ) “ಅಸುನ್” (೩ಂ ೪-೧೮೯)। “ತಪಸಿ ಮಂದ-  
ಗಭಸ್ತಿರಭೀಷುಮಾನ್ ಹಿ ಮಹಾಹಿಮಹಾನಿಕರೋಭವತ್” ಮಾಘಂ  
೬-೬೩। 2. ಶಿಶಿರಮುತು. 3. ಅಗ್ನಿ. “ಪಶ್ಚಮ: ಪಶ್ಚತಪಸ್  
ಸ್ತಪನೋ ಜಾತವೇದಸಾಮ್” ಮಾಘಂ ೨-೪೧। 4. ಗ್ರೀಷ್ಮ  
ಮುತು, ಬೇಸಗೆ ಕಾಲ. 5. ತಪೋಲೋಕ, ಜನೋ  
ಲೋಕಕ್ಕೆ ಮೇಲಿನ ಲೋಕ, ಸಪ್ತ ಉದ್ಧರ್ವಲೋಕಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು ಲೋಕ. “ಗ್ರೀವಾಂ ಜನಲೋಕಶ್ಚ ತಪೋಲೋಕ:  
ಸ್ತನದ್ವಯಾತ್” ಭಾಗಂ ೨-೪-೩೯। 6. ಯಮಧರ್ಮರಾಯ.  
“ವಿನಾಪ್ಯಸ್ಮದಲಂಬುಣ್ಣುರಿಜ್ಯಾಯೈ ತಪಸ: ಸುತ:” ಮಾಘಂ ೨-೯।  
7. ಜಾತಕದಲ್ಲಿ ಲಗ್ನದಿಂದ ಒಂಭತ್ತನೆಯ ಸ್ಥಾನ, ಧರ್ಮ  
ಸ್ಥಾನ. (ನಂ) 8. ತಪಸ್ಸು, ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು ಕುರಿತ  
ಧ್ಯಾನ. “ನಿಶಮ್ಯಚೇನಾಂ ತಪಸೇ ಕೃತೋದಮಾಂ ಸುತಾಂ ಗಿರೀಶಪ್ರತಿ-  
ಸಕ್ತಮಾನಸಾಮ್” ಕುಮಾಂ ೪-೩। 9. ವಾನಪ್ರಸ್ಥಾಶ್ರಮದ  
ಅಸಾಧಾರಣವಾದ ಧರ್ಮ. ಋಷಿಗಳು ಶರೀರವಾಙ್ಮನೋ  
ನಿಯಮಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ ಫಲಮೂಲಾಶನರಾಗಿ ತಪಸ್ಸು  
ನ್ನಾಚರಿಸಿ ಚರಾಚರಾತ್ಮಕವಾದ ಮೂರು ಲೋಕಗಳನ್ನೂ  
ಇವ್ವಲ್ಲಿಯೇ ನೋಡಲು ಶಕ್ತರಾಗುವರು. “ಶ್ರುತಯ:



ಸಂಯತಾತ್ಮಾನಃ ಫಲಮೂಲಾನಿಲಾಶನಾಃ | ತಪಸೈವ ಪ್ರಪಶ್ಯಂತಿ  
ತ್ರಲೋಕಯಂ ಸವರಾಚರಮ್" ಮನುಂ ೧೧-೨೩೬ | ಈ ತಪಸ್ಸು  
ಶಾರೀರ ವಾಙ್ಮಯ ಮತ್ತು ಮಾನಸಗಳೆಂದು ಮೂರು  
ವಿಧ.

(1) ದೇವತೆಗಳು ಬ್ರಾಹ್ಮಣರು ಗುರುಗಳು ಜ್ಞಾನಿಗಳು  
ಇವರ ಪೂಜೆ, ಶಿಷ್ಯ, ಪ್ರಾಮಾಣಿಕತೆ, ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯೆ, ಅಹಿಂಸೆ  
ಇವೆಲ್ಲವೂ "ಶಾರೀರ ತಪಸ್ಸು". "ದೇವದ್ವಿಜಗುರು-  
ಪ್ರಾಜ್ಞಪೂಜನಂ ಶೌಚಮಾರ್ಜವಮ್ | ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಮಹಿಸಾ ಚ ಶಾರೀರಂ  
ತಪಃ ಉಚ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೧೭-೧೪ |

(2) ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಉದ್ವೇಗವಲ್ಲದ, ಸತ್ಯವಾಗಿ ಪ್ರಿಯ  
ವಾಗಿ ಮೃದು ಹಿತವಾಗಿ ಆಡುವ ಮಾತು, ವೇದಾಭ್ಯಾಸ,  
ಜಪ ಇವೆಲ್ಲವೂ "ವಾಙ್ಮಯ ತಪಸ್ಸು". "ಅನುದ್ರೇಗಕರಂ  
ವಾಕ್ಯಂ ಸತ್ಯಂ ಪ್ರಿಯಹಿತಂ ಚ ಯತ್ | ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯಾಭ್ಯಾಸನಂ ಚೈವ  
ವಾಙ್ಮಯಂ ತಪಃ ಉಚ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೧೭-೧೫ |

(3) ಮನಃಪ್ರಸಾದ, ಕ್ರೋಧಾದಿಗಳಿಗೆ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದೆ  
ಮನಸ್ಸು ಸೌಮ್ಯವಾಗಿರುವುದು, ಮೌನ, ಮನೋನಿಗ್ರಹ,  
ಭಾವಶುದ್ಧಿ (ಆತ್ಮವೈರಿತ್ವವಾದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಯೋಚನೆ  
ಯಿಲ್ಲದಿರುವುದು) ಇವೆಲ್ಲವೂ "ಮಾನಸ ತಪಸ್ಸು".  
"ಮನಃಪ್ರಸಾದಃ ಸೌಮ್ಯವಂ ಮೌನಮಾತ್ಮವಿನಿಗ್ರಹಃ | ಭಾವಸಂಶುದ್ಧಿ-  
ರೀತೀತತ್ತ್ವಂ ಮಾನಸಮುಚ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೧೭-೧೬ | ಈ ಮೂರು  
ವಿಧವಾದ ತಪಸ್ಸು ಸಾತ್ತ್ವಿಕ ರಾಜಸ ಮತ್ತು ತಾಮಸ  
ಗಳೆಂದು ಮತ್ತೆ ಮೂರು ವಿಧ.

(1) ಪರಮಪುರುಷನ ಆರಾಧನೆಯೆಂದು ತಿಳಿದು  
ಫಲಾಭಿಸಂಧಿಯಿಲ್ಲದೆ ಪರಮಶ್ರದ್ಧೆಯಿಂದ ಆಚರಿಸುವ  
ತಪಸ್ಸು "ಸಾತ್ತ್ವಿಕ". "ಶ್ರದ್ಧಯಾ ಪರಯಾ ತಪ್ತಂ  
ತಪಸ್ತತ್ತ್ವಿವಿಧಂ ನರಃ | ಅಫಲಾಕಾಂಕ್ಷಿಭಿರ್ಯುಕ್ತಃ ಸಾತ್ತ್ವಿಕಂ  
ಪರಿಚಕ್ಷತೇ" ಗೀತಾ ೧೭-೧೭ |

(2) ಸತ್ಕಾರ (ಆದರ), ವಾಕ್ಪ್ರಶಂಸೆ (ಹೊಗಳಿಕೆ),  
ನಮಸ್ಕಾರ (ಗೌರವ) ಇವುಗಳನ್ನು ಇತರರಿಂದ ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ  
ದಂಭದಿಂದ ಮಾಡುವ ತಪಸ್ಸು "ರಾಜಸ". ಇಂತಹ  
ತಪಸ್ಸಿನಿಂದ ಲಭ್ಯವಾಗುವ ಸ್ವರ್ಗಾದಿಗಳು ಅಸ್ಥಿರ ಮತ್ತು  
ಕ್ಷೀಣವಾಗುವುದರಿಂದ ಅಧ್ರುವ. "ಸತ್ಕಾರಮಾನಪಜಾರ್ಥಂ  
ತಪೋ ದಂಭೇನ ಚೈವ ಯತ್ | ಕ್ರಿಯತೇ ತದಿಹ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ರಾಜಸಂ  
ಚಲಮಧ್ರುವಮ್" ಗೀತಾ ೧೭-೧೮ |

(3) ಅವಿವೇಕದಿಂದ ತನ್ನ ಶಕ್ತಿ ಸಾಮರ್ಥ್ಯಗಳನ್ನು  
ಲೆಕ್ಕಿಸದೆ ತನಗೇ ತೊಂದರೆಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ ಮತ್ತು  
ಇತರರ ನಾಶಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ತಪಸ್ಸು "ತಾಮಸ".  
"ಮೂಢಗ್ರಾಹಣಾತ್ಮನೋ ಯತ್ಪಿಡಯಾ ಕ್ರಿಯತೇ ತಪಃ | ಪರಸ್ಯೋ-  
ತ್ಸಾದನಾರ್ಥಂ ವಾ ತತ್ತಾಮಸಮುದಾಹೃತಮ್" ಗೀತಾ ೧೭-೧೯ |

10. ಚಾಂದ್ರಾಯಣ ವ್ರತ. 11. ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತ ರೀತಿ  
ಯಲ್ಲಿ ದೇಹವನ್ನು ದಂಡಿಸುವುದು, ಕ್ಷುತ್ತು ತೃಷ್ಣ ಶೀತ  
ಉಷ್ಣ ಇವುಗಳನ್ನು ಸಹಿಸುವುದು. 12. ಚಿತ್ತಶುದ್ಧಿಗಾಗಿ  
ವ್ರತೋಪವಾಸಾದಿಗಳ ಅನುಷ್ಠಾನ. 13. ಮೌನವ್ರತ.  
"ತಪಃ ಕೃಚ್ಛಾದಿಕರ್ಮಣಿ | ಧರ್ಮೇ ಲೋಕಪ್ರಭೇದೇ ಚ ತಪಾಃ ಶಿಶಿರ-  
ಮಾಘಯೋಃ" ಹೇಮಂ | "ತಪೋ ಲೋಕಾಂತರೇಽಪಿ ಚ | ಚಾಂದ್ರಾಯಣಾದೌ  
ಧರ್ಮೇ ಚ ಪುಮಾನ್ ಶಿಶಿರಮಾಘಯೋಃ" ಮೇದಿಂ |

ತಪಸ ತಪಸ್ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಚಂದ್ರ. 3. ಪಕ್ಷಿ.  
ತಪ (ಸಂತಾಪ) "ಅಸತ್" (೩-೨-೧೦೭) | "ತಪಸಃ  
ಪಕ್ಷಿ ಚಂದ್ರಶ್ಚ" ಸಿಂ ಕೌಂ | "ಉಡುಪಃ ಪರ್ವಧಿಃ ಕಲೇದುಃ  
ಜಯಂತಸ್ತಪಸೋ ಹರಿಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ತಪಸ್ತಪ ತಪಸ್ತಪ್ತ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ತಪಃ ತಪತಿ - ತಪ್ಪು  
(ತನ್ಮುಕ್ತರಣಂ) "ಅಪ್" (೩-೨-೧) | ಉರ್ವಶಿ ಮೊದ  
ಲಾದ ವೇಶ್ಯೆಯರನ್ನು ಕಳುಹಿಸಿ ತಪಸ್ವಿಗಳ ತಪಸ್ಸನ್ನು  
ಕಡಿಸುವುದರಿಂದ ಇಂದ್ರನಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು.

ತಪಸ್ತಪ್ತ ತಪಸ್ತಂಕ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. "ಪ್ರಾಚೀಪತಿಸ್ತಪ-  
ಸ್ತಪ್ತಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ತಪಸ್ಯ ತಪಸ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಫಾಲ್ಗುನಮಾಸ. ತಪಸಿ ಸಾಧುಃ  
"ಯತ್" (೪-೪-೯೮) | 2. ತಪಶ್ಚರಣೆ. "ಅಥಾಸ್ಯ  
ಬುದ್ಧಿರಭವತ್ತಪಸ್ಯೇ ಭರತರ್ಷಭ" ಭಾಂ ಅನುಂ | 3. ಅರ್ಜುನ.  
ಅರ್ಜುನನಿಗೆ ಫಾಲ್ಗುನನೆಂದು ಹೆಸರಿರುವುದರಿಂದ ಈ  
ಹೆಸರು. 3. ತಾಮಸಮನುವಿನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. (ವಿಂ) 4.  
ತಪಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ತಪಸಿ ಭವಃ "ಯತ್" (೪-೩-೫೩) |  
(ನಂ) 5. ಕುಂದಪುಷ್ಪ, ಮೊಲ್ಲೆಹೂವು.

ತಪಸ್ಯತ್ ತಪಸ್ಯತ್ (ವಿಂ) ತಪಸ್ಸನ್ನು ಆಚರಿಸುತ್ತಿರುವ.  
ತಪಃ ಚರತಿ - ತಪಸ್ "ಕಯತ್" (೩-೧-೧೫) | "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಂತಿ  
-೨೧. "ನಾಯಾಸ್ಯಸಿ ತಪಸ್ಯಂತಿ ಗುರುನ್ ಸಮ್ಯಗತುತುಃ"  
ಭೃಂ ೬-೬೯ |

ತಪಸ್ಯಾ ತಪಸ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಪಶ್ಚರಣೆ, ತಪಶ್ಚರ್ಯೆ.

ತಪಸ್ವಿನ್ ತಪಸ್ವಿನ್ (ಪುಂ) 1. ತಾಪಸ, ಋಷಿ, ಮುನಿ.  
ತಪೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ - ತಪಸ್ "ವಿನಿಃ" (೫-೨-೧೦೨) | "ತಪಃ  
ಶರೀರಃ ಕಠಿನೇರ್ಪಾಜಿತಂ ತಪಸ್ವಿನಾಂ ದೂರಮಥಶ್ಚಕಾರ" ಕುಮಾಂ  
೫-೨೯ | 2. ಶಿಶಿರಮುತು, ಚಳಿಗಾಲ. 3. ಚಂದ್ರ.  
(ವಿಂ) 4. ಶೋಚ್ಯ, ದಯನೀಯ, ದಯೆ ತೋರಿಸಲು  
ಅರ್ಹನಾದ. 5. ದೀನ, ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. 6. ಚಾಂದ್ರಾಯ  
ಣಾದಿ ವ್ರತವನ್ನಾಚರಿಸುವ. 7. ಒಳ್ಳೆಯ ತಪಸ್ಸನ್ನಾಚರಿ  
ಸುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | -ಂತಿ -೨೧.



(ಸ್ತ್ರೀಂ) 8. ಜಟಾಮಾಂಸಿ. 9. ಪರಿವ್ರಾಜಿಕೆ, ಸಂನ್ಯಾಸಿನಿ. 10. ಕಟುಕರೋಹಿಣಿ. "ತಪಸ್ವಿನಿ ಪುನರ್ಮಾಸಿ ಕಟುರೋಹಿಣಿ-ಕಾಪಿ ಚ" ಹೇಮಂ. "ತಪಸ್ವಿ ಶಿಶಿರೇ ಶೋಚ್ಯೇ ಚಂದ್ರೇ ಮಾಸಿ ತಪಸ್ವಿನಿ" ವೇಜಂ.

**ತಪಾತ್ಯಯ ತಪಾತ್ಯಯ** (ಪುಂ) 1. ವರ್ಷಯುತು. ತಪಸ್ಯ ಗ್ರೀಷ್ಮಸ್ಯ ಅತ್ಯಯೋಜ್ವಲಾನಂ ಯತ್ರ. "ತಪಾತ್ಯಯೇ ಪುಷ್ಪಧರೇರಪೇತಂ ಮಹಾವನಂ ರಾಷ್ಟ್ರಪತಿರ್ದರ್ಶ" ಭಾಂ ವನಂ ೨೪-೧೭. 2. ಗ್ರೀಷ್ಮಯುತುವಿನ ಕೊನೆಯುಕಾಲ. "ತಪಾತ್ಯಯೇ ವಾರಿಭಿರಕ್ಷಿತಾ ನವೈರ್ಭವಾ ಸಹೋಷ್ಮಾಣಮಮೃತ್ವದ್ವೇಗಮ್" ಕುಮಾಂ ೫-೨೩.

**ತಪಾಂತ ತಪಾಂತ** (ಪುಂ) 1. ಗ್ರೀಷ್ಮಯುತುವಿನ ಕೊನೆಯುಕಾಲ. 2. ವರ್ಷಯುತು. ತಪಸ್ಯಾಂತೋ ಯತ್ರ. "ವರ್ಷಶರವರ್ಷಾಣಿ ತಪಾಂತೇ ಜಲದೋ ಯಥಾ" ಭಾಂ ಭೀಷಂ ೫೪-೨೩.

**ತಪಿಷ್ಣು ತಪಿಷ್ಣು** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) "ಇಷ್ಣುಚ್" (೩-೨-೧೩೮). (ವಿಂ) 2. ತಾಪವುಂಟು ಮಾಡುವ, ಸುಡುವ ಸ್ವಭಾವದ. "ಮಹತಾ ತಪಸಾ ದೇವಸ್ತಪಿಷ್ಣುಃ ಸೇವಿತೋ ಮಯಾ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೩೨೩-೩.

**ತಪೋಧನ ತಪೋಧನ** (ಪುಂ) 1. ತಪಸ್ವಿ, ಮುನಿ. ತಪೋಧನಂ ಯಸ್ಯ. "ತನೌ ಮಮುಸ್ತತ್ರ ನ ಕೇಡಭದ್ರಿಷಸ್ತಪೋಧನಾಭ್ಯಾಗಮಸಂಭವಾ ಮುದಃ" ಮಾಘಂ ೧-೨೩. (ನಂ) 2. ತಪೋರೂಪವಾದ ಧನ. ತಪ ಏವ ಧನಮ್. (ವಿಂ) 3. ತಪಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದ. 4. ತಪಸ್ಸಿನಿಂದ ಲಭಿಸುವ ಸ್ವರ್ಗ ಮೊದಲಾದುದು. ತಪೋಧನಂ ಮೂಲಂ ಯಸ್ಯ.

**ತಪೋಧೃತಿ ತಪೋಧೃತಿ** (ಪುಂ) 1. ತಪಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದ ಮುನಿ, ತಪಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಉತ್ಸಾಹವುಳ್ಳ ಋಷಿ. 2. ನಾಲಕೆಯು ಮನ್ವಂತರದ ಸಪ್ತಋಷಿಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ ಋಷಿ. "ಭಾರ್ಗವಃ ಸಪ್ತಮಸ್ತೇಷಾಂ ವಿಕೀಪಸ್ತು ತಪೋಧೃತಿಃ" ಹರಿವಂ.

**ತಪೋನಿಧಿ ತಪೋನಿಧಿ** (ಪುಂ) ತಪಸ್ವಿ, ಮುನಿ, ಋಷಿ. ತಪೋನಿಧೀಯತೇಽಸ್ಮಿನ್ - ನಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣೆ) "ಕಿಃ" (೩-೩-೯೩). ತಪೋನಿಧಿರೀವ ಯಸ್ಯ ವಾ. "ವಿಧೇಃ ಸಾಯಂತನಸ್ಯಾಂತೇ ಸ ದರ್ಶ ತಪೋನಿಧಿಮ್" ರಘುಂ ೧-೫೬.

**ತಪೋನಿಷ್ಠ ತಪೋನಿಷ್ಠ** (ವಿಂ) ತಪಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳ. ತಪಸಿ ನಿಷ್ಠಾ ಯಸ್ಯ. "ಜ್ಞಾನನಿಷ್ಠಾ ದ್ವಿಜಾಃ ಕೇचित್ತಪೋನಿಷ್ಠಾಸ್ತಥಾಪರೇ" ಮನುಂ ೩-೧೩೪.

**ತಪೋಬಲ ತಪೋಬಲ** (ನಂ) ತಪಃಶಕ್ತಿ, ತಪಸ್ಸಿನಿಂದ ಲಭಿಸಿದ ಬಲ. ತಪಸೋ ಬಲಮ್.

**ತಪೋಭೃತ್ ತಪೋಭೃತ್** (ಪುಂ) 1. ತಪಸ್ವಿ, ಮುನಿ, ಋಷಿ. ತಪಃ ವಿಭರ್ತಿ-ಡು ಭೃನ್ (ಧಾರಣೆ) "ವಿವ್" (೩-೨-೭೬). (ವಿಂ) 2. ತಪಸ್ಸನ್ನು ಅಭ್ಯಾಸಮಾಡುತ್ತಿರುವ.

**ತಪೋಮಯ ತಪೋಮಯ** (ವಿಂ) ತಪಸ್ಸಿನ ಸ್ವರೂಪವಾದ, ತಪಃಪ್ರಚುರವಾದ. ತಪಸಃ ಪ್ರಚುರಃ - ತಪಸ್ "ಮಯ್" (೫-೪-೨೧).

**ತಪೋಮತಿ ತಪೋಮೂರ್ತಿ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. 2. ತಪಸ್ವಿ.

**ತಪೋಮೂಲ ತಪೋಮೂಲ** (ವಿಂ) ತಪಸ್ಸೇ ಕಾರಣವಾಗಿ ಉಳ್ಳ, ತಪಸ್ಸಿನಿಂದ ಉದ್ಭವವಾದ. ತಪೋ ಮೂಲಂ ಯಸ್ಯ. "ತಪೋಮೂಲಮಿದಂ ಸರ್ವಂ ದೈವಮಾನುಷಕಂ ಸುಖಮ್" ಮನುಂ ೧೧-೨೩೪.

**ತಪೋಯಜ್ಞ ತಪೋಯಜ್ಞ** (ವಿಂ) ತಪೋರೂಪವಾದ ಯಜ್ಞವುಳ್ಳ, ಕೃಚ್ಛ್ರಚಾಂದ್ರಾಯಣ ಉಪವಾಸ ಮೊದಲಾದ ತಪಸ್ಸೆಂಬ ಯಜ್ಞದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳ. ತಪಃ ಶಾಸ್ತ್ರೀಯೋ ಭೋಗಸಂಕ್ಷೋಚಃ, ಸ ಏವ ಯಜ್ಞೋ ಯಸ್ಯ. "ದ್ರವ್ಯಯಜ್ಞಾಸ್ತಪೋಯಜ್ಞಾ ಯೋಗಯಜ್ಞಾಸ್ತಥಾಪರೇ" ಗೀತಾ ೪-೨೮.

**ತಪೋಯುಕ್ತ ತಪೋಯುಕ್ತ**, -ರತ -ರತ (ವಿಂ) ತಪಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದ, ತಪಸ್ಸನ್ನು ಆಚರಿಸುತ್ತಿರುವ.

**ತಪೋಲೋಕ ತಪೋಲೋಕ** (ಪುಂ) ಸಪ್ತ ಊರ್ಧ್ವಲೋಕಗಳಲ್ಲೊಂದು, ಜನೋಲೋಕದ ಮೇಲಿರುವ ಒಂದು ಲೋಕ. ತಪೋನಾಮ ಲೋಕಃ. ಈ ಲೋಕವು ಭೂಮಿಯಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆ ನಾಲ್ಕು ಕೋಟಿ ಯೋಜನದಲ್ಲಿರುವುದು. "ಚತುರ್ಕೋಟಿ-ಪ್ರಮಾಣಂ ತು ತಪೋಲೋಕೋಽಸ್ತಿ ಭೂತಲಾತ್" ಕಾಶೀಖಂ.

**ತಪೋವಟ ತಪೋವಟ** (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮಾವರ್ತದೇಶ. ಈ ದೇಶವು ಮಂಧ್ಯಭಾರತದಲ್ಲಿರುವುದು. "ಬ್ರಹ್ಮಾವರ್ತಸ್ತಪೋವಟಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ತಪೋವನ ತಪೋವನ** (ನಂ) ಮುನಿಗಳು ತಪಸ್ಸನ್ನು ಮಾಡುವ ಅರಣ್ಯ. ತಪಸೋ ವನಮ್. "ನವೋಡ್ಜಾಮ್ಯಂತರ-ಸಂಭೂತಾನಲಂ ತಪೋವನಂ ತಚ್ಚ ಬಭೂವ ಪಾವನಮ್" ಕುಮಾಂ ೫-೧೭.

**ತಪ್ತ ತಪ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಕೋಪಿಲೋಲ್ಲಸಿತ-ವಹ್ನಿಭಿರಹ್ನಿ ತಪ್ತಾಸ್ತೀವ್ರಂ ಮಹಾವ್ರತಮಿವಾತ್ರ ಚರಂತಿ ವಪ್ರಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೫೮. 2. ಕಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕರಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ಸ ತಪ್ತಕಾಂತಸ್ವರ ಭಾಸ್ವರಾಮ್ಬರಃ ಕಠೋರತಾರಾಧಿಪಲಾಂಛನಚ್ಛವಿಃ" ಮಾಘಂ ೧-೨೦. 3. ದುಃಖಿತ, ಸಂಕಟಕ್ಕೊಳಗಾದ.

**ತಪ್ತಕುಂಭ ತಪ್ತಕುಂಭ** (ಪುಂ) ಒಂದು ನೆರಕ. ತಪ್ತಃ ಕುಂಭೋ ಯತ್ರ. ಪಾಪಮಾಡಿದವರನ್ನು ಇಲ್ಲಿ ತೈಲಕುಂಭದಲ್ಲಿ ಇರಿಸಿ ಬೇಯಿಸುವರು.

**ತಪ್ತಕುಚ್ಛ ತಪ್ತಕುಚ್ಛ** (ನಂ) ಒಂದು ವೃತ. ಈ ವೃತವನ್ನು ಆಚರಿಸುವವನು ಮೂರು ದಿವಸ ಉಪ್ಪೊದಕ



ಮೂರು ದಿವಸ ಕಾಯಿಸಿದ ಹಾಲು ಮೂರು ದಿವಸ ಕಾಯಿಸಿದ ತುಪ್ಪ ಮೂರು ದಿವಸ ಬಿಸಿಗಾಳಿ (ಕಾಯಿಸಿದ ಹಾಲಿನ ಹಬೆ) ಇವುಗಳನ್ನು ಕುಡಿಯಬೇಕು. ಮತ್ತು ಪ್ರತಿ ದಿನವೂ ಒಂದು ಸಲ ಸ್ನಾನಮಾಡಬೇಕು. "ತಪ್ತಕುಚ್ಛಂ ಚರನ್ ವಿಪ್ರಃ ಜಲಕ್ಷೀರವೃತ್ತಾನಿಲಾನ್ | ಪ್ರತಿಶ್ಯಹಂ ಪಿಬೇದ್ಭುಷಾನ್ ಸಕೃತ್ಸನಾಪಿ ಸಮಾಹಿತಃ" ಮನುಂ ೧೧-೨೧೪ |

**ತಪ್ತಪಾಪಾಣಕುಂಡ ತಪ್ತಪಾಷಾಣಕುಂಡ (ಪುಂ)** ಒಂದು ನರಕ. ಈ ನರಕದಲ್ಲಿ ಕಲ್ಲುಗಳನ್ನು ಕೆಂಪಗೆ ಕಾಯಿಸಿ ತುಂಬಿರುವರು. ಪಾಪಮಾಡಿದವರನ್ನು ಇದರ ಮೇಲೆ ಮಲಗಿಸಿ ಶಿಕ್ಷಿಸುವರು.

**ತಪ್ತಮುಕ್ತಾ ತಪ್ತಮುದ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ತಪ್ತಾಂಕನ, ವೈಷ್ಣವರು ದೇಹದ ಮೇಲೆ ಧರಿಸುವ ಶಂಖ ಚಕ್ರಗಳ ಲಾಂಛನ, ತಪ್ತವಾದ ಲೋಹಮಯ ಭಗವದಾಯುಧಗಳ ಚಿಹ್ನೆ. ಇದು ವೈಷ್ಣವರಿಗೆ ಆಗಬೇಕಾದ ಪಂಚ ಸಂಸ್ಕಾರಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಲೋಹದಿಂದ ಶಂಖಚಕ್ರಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸಿ ತಪ್ತವಾದ ಅವುಗಳಿಂದ ದೇಹದಲ್ಲಿ ಅಂಕನಮಾಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು. "ಶಕ್ವಚಕ್ರಾಕ್ಷುನ ಕುರ್ಯಾದ್ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ಬಾಹುಮೂಲಯೋಃ | ಹುತಾಗ್ನಿನೇವ ಸಂತಾಪ್ಯ ಸರ್ವಪಾಪಾಪನುತಯೇ" ಪಾಶ್ವಪುಂ | ತಪ್ತ ಶಂಖ ಚಕ್ರಾಂಕನದಿಂದ ಮೋಕ್ಷಪ್ರಾಪ್ತಿಯಾಗುವುದು. "ಅಗ್ನಿತಪ್ತಂ ಪವಿತ್ರಂ ಚ ಧೃತ್ವಾ ವೇ ಬಾಹುಮೂಲಯೋಃ | ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ ಯಮಪುರಂ ಘೋರಂ ಯಾತಿ ವಿಷ್ಣೋಃ ಪರಂ ಪದಮ್ || ಅಗ್ನಿತಪ್ತೇನ ಚಕ್ರೇಣ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ಬಾಹುಮೂಲಯೋಃ | ಅಕ್ಷಯಿತ್ವಾ ಜಪನ್ಮನ್ತ್ರಂ ಸಂಸಾರಾನ್ಮೋಕ್ಷ-ಭಾಗಮವೇತ್" || ಚಕ್ರಾಂಕನವಿಲ್ಲದವನು ಮಾಡುವ ವಿಷ್ಣು ಪೂಜೆಯು ವಿಫಲವಾಗುವುದು. "ಚಕ್ರಚಿಹ್ನವಿಹೀನಸ್ತು ಯಃ ಪೂಜಯತಿ ಕೇಶವಮ್ | ತತ್ಸರ್ವಂ ವಿಫಲಂ ಯಾತಿ ಪೂಜಾಮನ್ತ್ರ-ಜಪಾದಿಕಮ್" | **ಮುದ್ರಾಧಾರಣದ ಫಲಃ** "ಹೋಮಾಗ್ನಿ-ತಪ್ತಚಕ್ರಂ ತು ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ವಿಧಾನತಃ | ಶ್ರೀತಸ್ಮಾರ್ತಾದಿಸಿದ್ಧಿರ್ಯಥೆ ಜ್ಞಾನಸಿದ್ಧಿರ್ಯಥೆ ವಿಶೇಷತಃ || ಹರೇಃ ಪೂಜಾಧಿಕಾರಾರ್ಥಂ ಚಕ್ರಂ ಧಾರ್ಯ ವಿಧಾನತಃ | ವೇಣವತ್ವಸ್ಯ ಸಿದ್ಧಿರ್ಯಥೆ ಜ್ಞಾನಸಿದ್ಧಿರ್ಯಥೆ ವಿಶೇಷತಃ" ವಿಧಿನಾ ವೇಣವಂ ಚಕ್ರಂ ಧಾರ್ಯ ತು ಶ್ರುತಿಚೋದನಾತ್ | ದಕ್ಷಿಣೇ ತು ಭುಜೇ ವಿಪ್ರೋ ಬಿಭೃಯಾಡೈ ಸುದರ್ಶನಮ್ | ಸಖ್ಯೇ ತು ಶಕ್ವಂ ಬಿಭೃಯಾದಿತಿ ಬ್ರಹ್ಮವಿದೋ ವಿದುಃ || एवं ಮಹೋಪನಿಷದಿ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಚಕ್ರಾದಿಧಾರಣಮ್" ಪಾಶ್ವಪುಂ |

**ತಪ್ತರಹಸ ತಪ್ತರಹಸ (ನಂ)** ಕುಡಿಯುವ ರಹಸ್ಯವಾದ ಪ್ರದೇಶ, ಬಿಸಿಯಾದ (ಕಾವೇರಿ) ರಹಸ್ಯವಾದ ಜಾಗ. ತಪ್ತ ರಹಃ - ರಹಸ್ "ಅಚ್" (೪-೪-೮೧) |

**ತಪ್ತರೂಪ ತಪ್ತರೂಪ (ನಂ)** ಕಾಯಿಸಿದ ಬೆಳ್ಳಿ, ಪುಟಹಾಕಿ ಶುದ್ಧಮಾಡಿದ ಬೆಳ್ಳಿ. ತಪ್ತಂ ರೂಪಮ್ ರಜತಮ್ |

**ತಪ್ತಲೋಹ ತಪ್ತಲೋಹ (ಪುಂ)** ಒಂದು ನರಕ. ತಪ್ತಾ ಲೋಹಾ ಯತ್ರ |

**ತಪ್ತವಾಲುಕ ತಪ್ತವಾಲುಕ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ನರಕ. ತಪ್ತಾ ವಾಲುಕಾ ಯತ್ರ | "ಕುತುಬ್ಧಪರೀತೋಽದವಾನಲಾನಿಲೈಃ ಸಂತಪ್ಯ-ಮಾನಃ ಪಥಿ ತಪ್ತವಾಲುಕೇ" ಭಾಗಂ ೩-೩೦-೨೨ | (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ಕಾದ ಮರಳು, ಬಿಸಿಯಾದ ಮರಳು. (ವಿಂ) 3. ಬಿಸಿ ಮರಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಬಿಸಿ ಮರಳಿನಿಂದ ತುಂಬಿದ.

**ತಪ್ತಶೂಮಿ ತಪ್ತಶೂಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕೆಂಡದಂತೆ ಕಾಯಿಸಿದ ಲೋಹದ ಪ್ರತಿಮೆಯುಳ್ಳ ಒಂದು ನರಕ. ತಪ್ತಾ ಶೂಮಿಃ ಲೋಹಪ್ರತಿಮಾ ಯತ್ರ | ಈ ನರಕದಲ್ಲಿ ಅಗಮ್ಯವಾದ ಹೆಂಗಸನ್ನು ಕಾಮಿಸುವ ಪುರುಷನನ್ನೂ ಅಗಮ್ಯವಾದ ಪುರುಷನನ್ನೂ ಕಾಮಿಸುವ ಹೆಂಗಸನ್ನೂ ಕೆಂಪಗೆ ಕಾಯಿಸಿದ ಲೋಹ ಪ್ರತಿಮೆಯೊಡನೆ ಆಲಿಂಗನ ಮಾಡಿಸುವರು. "ಯಸ್ವಿವಹ ವಾ ಅಗಮ್ಯಾಂ ಸ್ತ್ರೀಯಮಗಮ್ಯಂ ವಾ ಪುರುಷಂ ಯೋಷಿದಭಿಗಚ್ಛತಿ ತಾವಮುತ್ರ ಕಶಯಾ ತಾಡಯಂತಃ ತಿಗ್ಮಯಾ ಶೂಮ್ಯಾ ಲೋಹಮಯಾ ಪುರುಷಮಾಲಿಂಜಯಂತಿ ಸ್ತ್ರೀಯಂ ಚ ಪುರುಷರೂಪಯಾ ಶೂಮ್ಯಾ" ಭಾಗಂ ೪-೨೬-೨೦ |

**ತಪ್ತಸುರಾಕುಂಡ ತಪ್ತಸುರಾಕುಂಡ (ಪುಂ)** ಕುಡಿಯಿಸಿದ ಮದ್ಯದಿಂದ ತುಂಬಿದ ಒಂದು ಹಳ್ಳಿ, ಒಂದು ನರಕ.

**ತಪ್ಯಮಾನ ತಪ್ಯಮಾನ (ವಿಂ)** ಓಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ವಿದಿತಂ ತಪ್ಯಮಾನಂ ಚ ತೇನ ಮೇ ಭುವನತ್ರಯಮ್" ರಘುಂ ೧೦-೩೯ |

**ತಮ ತಮ (ಪುಂ)** 1. ರಾಹು. 2. ತಮಾಲವೃಕ್ಷ, ಹೊಂಗೆ ಮರ. 3. ತಮೋಗುಣ. (ನಂ) 4. ಅಂಧಕಾರ. ತಾಮ್ರತಯನೇನ - ತಮು (ಗ್ಲಾನಿ) "ಘಃ" (೩-೩-೧೧೮) | 5. ಪಾದಾಗ್ರ, ಕಾಲಿನ ತುದಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಮಾ -ಮಾ. 6. ರಾತ್ರಿ. -ಮಿ -ಮಿ. ರಾತ್ರಿ. "ದದೃಶೋಪಿ ಮಾಸ್ಕರ-ಹ್ವಾಙ್ಹಿ ನ ಯಃ ಸ ತಮಿಂ ತಮೋಭಿರಭಿಗಮ್ಯ ತತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೯-೨೩ |

**ತಮಕ ತಮಕ (ಪುಂ)** ಶ್ವಾಸರೋಗ, ಉಬ್ಬಿಸ, ದಮ್ಮು. ತಾಮ್ರತಯತ್ರ - ತಮು (ಗ್ಲಾನಿ) "ವುನ್" ಬಾಹುಂ |

**ತಮತ ತಮತ (ವಿಂ)** ಅಸೆಪಡುವ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ತಮು (ಕಾಡ್ಕಾಯಾಮ್) "ಅತಚ್" (೩ಂ ೩-೧೧೦) | ತಮತ-ಸ್ತೃಣಾಪರಃ ಸಿಂ ಕಿಂ |

**ತಮಸ್ ತಮಸ್ (ನಂ)** 1. ತಮೋಗುಣ, ಅಜ್ಞಾನ, ತಾಮ್ರತಯನೇನ - ತಮು (ಗ್ಲಾನಿ) "ಅಸುನ್" (೩ಂ ೪-೧೮೯) | "ಸತ್ವಂ ಜ್ಞಾನಂ ತಮೋಜ್ಞಾನಂ ರಾಗದ್ವೇಷೋ ರಜಃ ಸ್ಮೃತಮ್" ಮನುಂ



೧೨-೨೬ | "ಅದಸ್ತ್ವಯಾನುತ್ತಮನುತ್ತಮಂ ತಮಃ" ಮಾಘಂ ೧-೨೭ | [ವಿವರಕ್ಕೆ "ತಮೋಗುಣ" ನೋಡಿ.] "ಸ ಹಿ ದೇವಃ ಪರಂ ಜ್ಯೋತಿಃ ತಮಃಪಾರೆ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಮ್" ಕುಮಾರಂ ೨-೪೮ | "ಆದಿತ್ಯವರ್ಣಂ ತಮಸಃ ಪರಸ್ತಾತ್" ಪುಂ ಸ್ತಂ ೧ | ೨. ಅಂಧಕಾರ, ಕತ್ತಲೆ. "ದದೃಶೋಽಪಿ ಭಾಸ್ಕರರೂಪಾನ್ಮಹಿ ನ ಯಃ ಸ ತಮೀ ತಮೋಭಿರಭಿಗಮ್ಯ ತತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೨೩ | ೩. ಮುಬ್ಬು, ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರರ ಗ್ರಹಣಕಾಲದಲ್ಲಿ ಅವರ ಬಿಂಬದ ಮೇಲೆ ಕವಿದಿರುವ ಕಪ್ಪು ಭಾಯೆ, ರಾಹು. "ಸವ್ಯಗತೇ ತಮಸಿ ಜಗಜ್ಜಲಪ್ಲುತಂ ಭವತಿ ಮುದಿತಮಭಯಂ ಚ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೪-೪೪ | ೪. ಅವಿದ್ಯೆ, ಅಜ್ಞಾನ. ೫. ಪಾಪ. "ತಮೋ ರಾಹೌ ಗುಣೇ ಪಾಪೇ ಧ್ವಾಂತೇ" ಹೇಮಂ |

**ತಮಸ ತಮಸ** (ಪುಂ) ೧. ಬಾವಿ, ಕೂಪ. ತಾಮ್ರವ್ಯಸ್ಥಿಮನ್ - ತಮು (ಗಲಾನಿ) "ಅಸಚ್" (ಉಂ ೩-೧೧೭) | ೨. ಅಂಧಕಾರ, ಕತ್ತಲೆ. ತಮಸೋಽಂಧಕಾರಃ ಸಿಂ ಕೌಂ | (ನಂ) ೩. ನಗರ, ಪಟ್ಟಣ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸಾ -ಸಾ. ಒಂದು ನದಿ. "ಪುಷ್ಯಾಮವಾಪ ತಮಸಾಂ ತಮಸಾಂ ನಿಹನ್ತ್ರಿಮ್" ಚಂ ರಾಂ | "ತತಸ್ತು ತಮಸಾತಿರಂ ರಮ್ಯಮಾಶ್ರಿತಯ ರಾಘವಃ" ರಾಮಾಂ |

**ತಮಸ್ಕಾಂಡ ತಮಸ್ಕಾಂಡ** (ಪುಂ) ಅಂಧಕಾರದ ಸಮೂಹ, ಹರಡಿರುವ ಕತ್ತಲೆ. ತಮಸಃ ಕಾಂಡಃ | "ಋತೇ ರವೇ ಕಾಲಯಿತುಂ ಕ್ಷಮೇತ ಕಃ ಕ್ಷಪಾತಮಸ್ಕಾಂಡಮಲಿಮಸಂ ನಭಃ" ಮಾಘಂ ೧-೩೮ |

**ತಮಸ್ತತಿ ತಮಸ್ತತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಂಧಕಾರದ ಸಮೂಹ.

**ತಮಸ್ವತ್ ತಮಸ್ವತ್** (ವಿಂ) ಕತ್ತಲೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ತಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮನುಪ್" (೪-೨-೯೪) |

**ತಮಸ್ವತೀ ತಮಸ್ವತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ೧. ರಾತ್ರಿ. ತಮಸ್ವತ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) | ೨. ಹರಿದ್ರೆ, ಅರಿಶಿನ.

**ತಮಸ್ವಿನ್ ತಮಸ್ವಿನ್** (ವಿಂ) ತಮಸ್ವಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಅಂಧಕಾರ ಸಹಿತವಾದ. ತಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ವಿನಿಃ" (೪-೨-೧೨೧) |

**ತಮಸ್ವಿನಿ ತಮಸ್ವಿನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾತ್ರಿ. ತಮೋಽಸ್ಯಾ ಅಸ್ತಿ "ವಿನಿಃ" (೪-೨-೧೨೧) | "ಜಿರ್" (೪-೧-೪) |

**ತಮಾಚ ತಮಾಲ** (ಪುಂ) ೧. ಹೊಂಗೆಮರ. ತಮು (ಗಲಾನಿ) "ಕಾಲನ್" (ಉಂ ೧-೧೧೪) | "ದ್ವಾರಾದಯಶ್ಚಕ್ರನಿಭಸ್ಯ ತನ್ವೀ ತಮಾಲತಾಲಿವನರಾಜಿನಿಲಾ" ರಘುಂ ೧೩-೧೪ | ೨. ತಿಲಕ. ತಿಲಕವು ಹೊಂಗೆಯೆಲೆಯಂತಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ೩. ಬಿಡ್ಡು, ಕತ್ತಿ. ೪. ವರುಣವೃಕ್ಷ, ವಲಸೆ ಗಿಡ. "ತಮಾಲಸ್ತಲಕೇ ಖಡ್ಗೇ ತಾಪಿಷ್ಠೇ ವರುಣದ್ರುಮೇ" ಮೇದಿಂ | ೫. ಬಿದಿರಿನ ತೊಗಟೆ. ೬. ಕರಿಯ ಕಗ್ಗಲಿಮರ.

**ತಮಾಲಕ ತಮಾಲಕ** (ನಂ) ಸ್ಥೂಲಪದ್ಮ, ಬಿಟ್ಟದಾವರೆ.

**ತಮಾಲಪತ್ರ ತಮಾಲಪತ್ರ** (ನಂ) ೧. ತಿಲಕ, ಹಣೆಯ ಬೊಟ್ಟು. ತಮಾಲಸ್ಯೇವಾಕಾರೋಽಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) | ೨. ಹೊಂಗೆಯ ಎಲೆ. ೩. ಹೊಂಗೆಯ ಮರ. "ತಮಾಲಪತ್ರಂ ತಾಪಿಷ್ಠೇ ತಿಲಕೇ ಪತ್ರಕೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ |

**ತಮಾಲಿಕಾ ತಮಾಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ೧. ಒಂದು ದೇಶ. ೨. ಭೂಮ್ಯಾಮಲಕ ವೃಕ್ಷ.

**ತಮಾಲಿನಿ ತಮಾಲಿನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊಂಗೆಮರಗಳು ಬೆಳೆದಿರುವ ಪ್ರದೇಶ. ತಮಾಲಾಃ ಸನ್ಯತ್ರ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೩೪) | "ಜಿಪ್" (೪-೧-೪) |

**ತಮಾಲಿ ತಮಾಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವರುಣವೃಕ್ಷ, ವಲಸೆ ಗಿಡ. **ತಮಿ(ಮಿ) ತಮಿ(ಮಿ)** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾತ್ರಿ. ತಮು (ಗಲಾನಿ) "ಇನ್" (ಉಂ ೪-೧೧೭) | ವಾ "ಜಿಪ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೪) | "ದದೃಶೋಽಪಿ ಭಾಸ್ಕರರೂಪಾನ್ಮಹಿ ನ ಯಃ ಸ ತಮೀ ತಮೋಭಿರಭಿಗಮ್ಯ ತತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೨೩ |

**ತಮಿಸ್ತ ತಮಿಸ್ತ** (ನಂ) ೧. ತಿಮಿರ, ಅಂಧಕಾರ, ಕತ್ತಲೆ. ತಮಿಸ್ತಾ ರಾತ್ರೀಶ್ರಯತ್ವೇನಾಸ್ಯಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) | "ಅನಭಿಜ್ಞಾಸ್ತಮಿಸ್ತಾಣಾಂ ದುರ್ದಿನ್ಯೇವಭಿಸಾರಿಕಾಃ" ಕುಮಾರಂ ೬-೪೩ | ೨. ಕತ್ತಲೆಯಿಂದ ಕವಿದಿರುವ ನರಕ. "ಅಮಙ್ಗಲಾನಾಂ ಚ ತಮಿಸ್ತಮುಲ್ಬಣಂ ವಿಪರ್ಯಯಃ ಕೇನ ತದೇವ ಕಸ್ಯಚಿತ್" ಭಾಗಂ ೪-೬-೪೪ | ೩. ಕೂಪ, ಕ್ರೋಧ. (ಪುಂ) ೪. ಕೃಷ್ಣ ಪಕ್ಷ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸಾ -ಸಾ. ೫. ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷದ ರಾತ್ರಿ. ೬. ಕತ್ತಲೆಯ ಸಮೂಹ. ತಮಸಃ ಉಪಾಧಾಯಾ ಇತ್ವಮ್ ರಶ್ಮಿ ನಿಪಾಂ (೪-೨-೧೧೪) | "ಸೂರ್ಯೇ ತಪತ್ಯಾವರಣಾಯ ದೃಷ್ಟಿಃ ಕಲ್ಪೇತ ಲೋಕಸ್ಯ ಕಥಂ ತಮಿಸ್ತಾ" ರಘುಂ ೪-೧೩ | "ತಮಿಸ್ತಂ ತಮಿರೇ ಕೋಪೇ ಸ್ತ್ರೀ ತು ತಮಸ್ತತೀ" ಮೇದಿಂ |

**ತಮಿಸ್ತಪಕ್ಷ ತಮಿಸ್ತಪಕ್ಷ** (ಪುಂ) ಕತ್ತಲೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷ. ತಮಿಸ್ತಾಽಸ್ಯಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) | ತಾದೃಶಃ ಪಕ್ಷಃ | "ಚತುರ್ದಶಿಂ ಪಂಚದಶಿಂ ತಥಾಷ್ಟಮಿಂ ತಮಿಸ್ತಪಕ್ಷಸ್ಯ ತಿಥಿ ಭಗೋಃ ಸುತಃ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೧-೩೬ |

**ತಮಿ ತಮಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ತಮಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ತಮೋಗುಣ ತಮೋಗುಣ** (ಪುಂ) ಸತ್ತ್ವ ರಜಸ್ಸು ತಮಸ್ಸು ಗಳೆಂಬ ಪ್ರಕೃತಿಯ ಮೂರು ಗುಣಗಳೆಲ್ಲವೂ. "ಸತ್ತ್ವಂ ರಜಸ್ತಮ ಇತಿ ಪ್ರಕೃತೇರ್ಗುಣಾಸ್ತೇರ್ಯುಕ್ತಃ ಪರಃ ಪುರುಷ ಏಕ ಇಹಾಸ್ಯ ಧತ್ತೇ | ಸ್ಥಿತಿಯಾದಯೇ ಹರಿವಿರಿಶ್ವಿಹರೆತಿ ಸಂಜ್ಞಾಃ ಶ್ರೇಯಾಸಿ ತತ್ರ ಖಲು ಸತ್ತ್ವತನೋನೃಣಾಂ ಸ್ಯುಃ" ಭಾಗಂ ೧-೨-೨೩ | ಪ್ರಕೃತಿ ಸಂಬಂಧವಾದ ಈ ತಮೋಗುಣವು ಪ್ರಾಣಸಾಮಾನ್ಯದಲ್ಲಿಯೂ ಮೋಹ ಅಜ್ಞಾನ ಕಾರ್ಪಣ್ಯ ಭ್ರಮೆ ಸ್ವಪ್ನ ಭಯ ಲೋಭ ದುಃಖ ವಿಸ್ಮೃತಿ ನಾಸ್ತಿಕತೆ ದ್ವೇಷ ಕ್ರೋಧ



ಕಪಟ ವಿಷಯಾಭಿಲಾಷೆ ಅಹಂಕಾರ ಅಸಹನೆ ಅಶ್ರದ್ಧೆ ಮುಂತಾದ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದು. "ಏತೇಷಾಂ ಗುಣತತ್ವಾನಿ ವಕ್ಷ್ಯಂತೇ ತತ್ವಹೇತುभिः । समासव्यासयुक्तानि तत्त्वतस्तानि बोधत । समोहोज्ञानमत्यागः कर्मणाम-विनिर्णयः । स्वप्नः स्तम्भो भयं लोभः शोकः सुकृत-दूषणम् । अस्मृतिश्चाविप्राकश्च नास्ति कथं भिन्नवृत्तिता । अमैत्री विकृतो भावो ह्यश्रद्धा मदभावना । सर्व एते गुणा वृत्तास्तामसाः परिकीर्तिताः । अत्यागश्चातिमानश्च मोहो मन्युस्तथाऽक्षमा । मत्सरश्चैव भूतेषु तामसं वृत्तमिष्यते" भा० आश्व० ३७ । ತಮೋಗುಣದ ನಿರೋಧವಾದರೆ ರಜೋಗುಣವು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೋಡಗು ವುದು. ರಜೋಗುಣವು ನಿರೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟಾಗ ಸತ್ತ್ವ ಗುಣದ ಕಾರ್ಯವು ನಡೆಯುವುದು, "ನಿಯಮ್ಯತೇ ತಮೋ ಯತ್ರ ರಜಸ್ತತ್ರ ಪ್ರವರ್ತತೇ । ನಿಯಮ್ಯತೇ ರಜೋ ಯತ್ರ ಸತ್ತ್ವಂ ತತ್ರ ಪ್ರವರ್ತತೇ" ।

**ತಮೋಗುಣಿನ್ ತಮೋಗುಣಿನ್** (ವಿಂ) ತಮೋಗುಣದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಅಜ್ಞಾನ ಕಾಮ ಕ್ರೋಧ ಆಸೂಯೆ ಅಹಂಕಾರ ಇತ್ಯಾದಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ.

**ತಮೋಘ್ನ ತಮೋಘ್ನ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಚಂದ್ರ. 3. ವಿಷ್ಣು. 4. ಪರಶಿವ. 5. ಅಗ್ನಿ. 6. ಜ್ಞಾನ. ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ತಮಃ ಅಂಧಕಾರಂ ಮೋಹಜ್ಞಾನಂ ವಾ ಹಂತಿ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) "ಕಃ" (ವಾಂ ३-२-५) । 7. ಬುದ್ಧ. "ತಮೋಘ್ನಃ ಸೂರ್ಯವಹ್ನೀಂದ್ರಬುದ್ಧಶಕ್ವರವಿಷ್ಣುಃ" ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ) 8. ಅಂಧಕಾರವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ.

**ತಮೋಜ್ಯೋತಿಃ ತಮೋಜ್ಯೋತಿಃ** (ಪುಂ) ಖದ್ಯೋತ, ಮಿಂಚಿನಹುಳ, ಮಿಣುಕುಹುಳ. ತಮಸಿ ಜ್ಯೋತಿರಸ್ಯ ।

**ತಮೋನುತ್ ತಮೋನುತ್** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಚಂದ್ರ. 3. ಅಗ್ನಿ. 4. ದೀಪ. ತಮೋ ನುದತಿ — ಣುದ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ವಿವ್" (३-२-७६) । "ತಮೋನುತ್ ದಕ್ಷಸುತಾ ಇವಾಬಭುಃ" ರಘುಂ ३-३३ । (ವಿಂ) 5. ಕತ್ತಲೆಯನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. 6. ಅಜ್ಞಾನವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ. "ತಮೋನುದೋಗ್ನಿ-ಚಂದ್ರಾರ್ಕಾಃ" ವಿಷ್ಣುಂ ।

**ತಮೋನುತ್ ತಮೋನುತ್** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ಪರಶಿವ. 3. ಸೂರ್ಯ. 4. ಚಂದ್ರ. 5. ದೀಪ. ತಮೋ ನುದತಿ — ಣುದ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಕಃ" (३-१-१३५) । (ವಿಂ) 6. ಕತ್ತಲೆಯನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. 7. ಅಜ್ಞಾನವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ. "ಮಹಾಭೂತಾದಿ ವೃತ್ತಿಜಾಃ ಪ್ರಾದುರಾಸೀತ್ತಮೋ-ನುದಃ" ಮನುಂ १-६ ।

**ತಮೋಽಹ ತಮೋಽಹ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಚಂದ್ರ. 3. ಅಗ್ನಿ. 4. ಜ್ಞಾನ. 5. ದೀಪ. ತಮೋಽಹಂತಿ — ಅಪ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) "ಹಃ" (३-२-५०) । (ವಿಂ) 6. ಕತ್ತಲೆಯನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. 7. ಅಜ್ಞಾನವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. "ಆಗಮಾದಿವ ತಮೋಽಹಾದಿತಃ ಸಂಭವಂತಿ ಮತಯೋ ಭವಚ್ಛಿದಃ" ಕಿರಾಂ ५-२२ ।

**ತಮೋಭಿದ್ ತಮೋಭಿದ್** (ಪುಂ) 1. ಖದ್ಯೋತ, ಮಿಂಚಿನ ಹುಳ. ತಮೋ ಭಿನತ್ತಿ — ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ವಿವ್" (३-२-६१) । (ವಿಂ) 2. ತಮಸ್ಸನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ.

**ತಮೋಮಣಿ ತಮೋಮಣಿ** (ಪುಂ) 1. ಗೋಮೇದಕ ಮಣಿ. 2. ಖದ್ಯೋತ, ಮಿಂಚಿನ ಹುಳ. ತಮಸಿ ಮಣಿರಿವ ।

**ತಮೋಮಯ ತಮೋಮಯ** (ಪುಂ) 1. ರಾಹು. ತಮಃ ಪ್ರಚುರಮ್ ತಮಸ್ "ಮಯತ್" (५-४-२१) । "ಕಥಯಂತ್ಯಮೂರ್ಮಪರೇ ತಮೋಮಯಂ ಸೈಹಿಕೇಯಾಹುಯಮ್" ಬೃಹತ್ಸಂ ५-३ । (ವಿಂ) 2. ಅಂಧಕಾರಮಯವಾದ, ಕತ್ತಲೆಯಿಂದ ತುಂಬಿದ. "ವಿಸಸರ್ಜಾತ್ಮನಃ ಕಾಯಂ ನಾಭಿನಂದಂತಮೋಮಯಮ್" ಭಾಗಂ ३-२०-१९ । 3. ಅಜ್ಞಾನಸ್ವರೂಪದ.

**ತಮೋವಿಕಾರ ತಮೋವಿಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ರೋಗ. 2. ತೂಕಡಿಕೆ. 3. ಸೋಮಾರಿತನ. ತಮಸೋ ವಿಕಾರಃ ।

**ತಮೋಹರ ತಮೋಹರ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಚಂದ್ರ. 3. ಅಗ್ನಿ. 4. ದೀಪ. ತಮೋ ಹರತಿ — ಹ್ರಬ್ (ಹರಣೆ) "ಅಚ್" (३-२-९) । (ವಿಂ) 5. ಅಂಧಕಾರವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. 6. ಅಜ್ಞಾನವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ.

**ತರ ತರ** (ಪುಂ) 1. ದಾಟುವುದು, ನೀರನ್ನು ದಾಟಿ ಮುಂದೆ ಸಾಗುವುದು. ತೃ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) ಭಾವೇ "ಅಪ್" (३-३-५) । "ಪಣಂ ಯಾನಂ ತರೇ ದಾಪ್ಯಂ ಪೀಠೋಽರ್ಥಪಣಂ ತರೇ । ಪಾದಂ ಪಶುಶ್ಚ ಯೋಷಿಃ ಪಾದಾರ್ಥಂ ರಿಕ್ತಕಃ ಪುಮಾನ್" ಮನುಂ ८-४०४ । 2. ದಾಟಿದ ಬಾಡಿಗೆ, ನದಿಯನ್ನು ದಾಟಿದ ಕೂಲಿ. ತೃ ಕರಂ "ಅಪ್" । "ದೀರ್ಘಾವಿನಿ ಯಥಾದೇಶಂ ಯಥಾಕಾಲಂ ತರೋ ಭವೇತ್" ಮನುಂ ८-४०६ । 3. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ತೃ ಕರಂ "ಅಚ್" (३-१-१३४) । 4. ದೋಣಿ, ಹರಿಗೋಲು. 5. ರಸ್ತೆ, ಮಾರ್ಗ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಿಃ -ರಿಃ, -ರೀ -ರೀ. ತೃ "ಃ" (८-४-१३८) । ವಾ "ಹೀಪ್" (ಗಂ ४-१-४५) । 6. ಹಡಗು. "ತರೀಷು ತತ್ರತ್ಯಮಫಲ್ಗು ಭಾಣಂ ಸಾಂಯಾತ್ರಿಕಾನಾವಪತೋಽಭ್ಯನಂದತ್" ಮಾಧಂ ३-७६ । 7. ಬಟ್ಟೆಯ ಅಂಚು. 8. ಬಟ್ಟೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ನಿಡುವ ಪಟ್ಟಿಗೆ. "ತರಿದೇಶಾಃ ನಾವಿ ಸ್ಯಾಢ್ವಸ್ತ್ರಾದೀನಾಂ ಚ ಪೇಡಕೇ" ನಾನಾರ್ಥರಂ ।



ತರಣು ತರಣು (ಪುಂ) ಶಿವಂಗಿ, ಕಿರುಬ. ತರಂ ಮಾಗೆ ಕ್ಷಿಣೋತಿ—  
ಕ್ಷಿಣು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಹು:” (ವಾಂ ೩-೨-೧೮೦) ।

ತರಣ್ಣ ತರಂಗೆ (ಪುಂ) 1. ಅಲೆ, ತರಂ. ತರತಿ—ತ  
(ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) “ಅಙ್ಗಚ್” (ಽಂ ೧-೧೧೭) । “ಉತ್ತೇ  
ತರಲತರಣ್ಣಲಿಲಾನಿಷ್ಣಾತೇರಥ ಸರಸ: ಪ್ರಿಯಾಸಮೂಹೈ:” ಮಾಘಂ  
೮-೬೩ । 2. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ.

ತರಣ್ಣಮಾಲಿನ್ ತರಂಗೆಮಾಲಿನ್ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ. ತರಣ್ಣಾ:  
ಮಾಲೇವ, ಸಾ ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೬) । ಪ್ರಂ ರಾಂ ।

ತರಣ್ಣಿಣಿ ತರಂಗೆಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನದಿ, ಹೊಳೆ. ತರಣ್ಣಾ ಅಸ್ಯಾಂ  
ಸಂತಿ—ತರಣ್ಣ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೩೪) । “ಸಿನ್ದೂರಿ-  
ತಾನೇಕಪಕಕ್ಷಣಾಕ್ಷಿತಾ ತರಣ್ಣಿಣಿ ವೇಣಿರಿವಾಯತಾ ಭುವ:”  
ಮಾಘಂ ೧೨-೭೪ ।

ತರಣ್ಣಿತ ತರಂಗೆತ (ವಿಂ) 1. ಅಲೆಗಳಂಟಾಗಿರುವ,  
ಅಲೆಗಳೆದ್ದಿರುವ. ತರಣ್ಣಾ: ಸಂಜ್ಞಾತಾ ಅಸ್ಯ “ಇತಚ್”  
(೪-೨-೩೬) । 2. ಚಂಚಲವಾದ. “ಸಾಗರಪ್ರತಿಮೆಂ ಘೋರಂ  
ವಾಹನೋಮಿತರಣ್ಣಿತಮ್” ಭಾಂ ಭಿಷ್ಠಂ ೮೭-೪ ।

ತರಣ ತರಣ (ಪುಂ) 1. ದೋಣೆ, ಹರಿಗೋಲು. ತರಣ್ಯನೇನ—ತ  
(ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) ಕರಂ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭) ।  
2. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ. ತು ಕರ್ಮಂ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೩) ।  
(ನಂ) 3. ನೀರನ್ನು ದಾಟುವುದು, ನದಿಯನ್ನು ದಾಟಿ  
ಹೋಗುವುದು. ತು ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪) ।  
“ಕ್ಷಣಮಪಿ ಸಂಜ್ಞನಸಂಜ್ಞತೀರೇಕಾ ಭವತಿ ಭವಾಣವತರಣೇ ನೌಕಾ”  
ಹರಿವಂ । 4. ದೋಣೆಯ ಹುಟ್ಟು. ತು ಕರ್ಮಂ “ಲ್ಯುಡ್” ।  
5. ತೇಲಾಡುವುದು.

ತರಣಿ ತರಣಿ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ತರಣ್ಯನೇನ ಸಂಸಾರಮ್—ತ  
(ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) “ಅನಿ:” (ಽಂ ೨-೧೦೨) । “ಇತ್ಯುಕ್ತ್ವಾ  
ತರಣಿ: ಕುಂತಿಂ ತನ್ಮನಸ್ಕಾಂ ಸುಲಜ್ಜಿತಾಮ್” ದೇವಿಭಾಂ ।  
2. ಎಕ್ಕದಗಿಡ. 3. ಕಿರಣ. 4. ತಾಮ್ರ. 5. ಸಾಗರ,  
ಸಮುದ್ರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾ “ಡೀಪ್” (ಗಂ ೪-೧-೪೪) ।  
ತರಣಿ ತರಣಿ. 6. ಸಣ್ಣ ಗೋರಂಟಿಗಿಡ. 7. ನದಿ,  
ಹೊಳೆ. 8. ಹಡಗು. 9. ದೋಣೆ. “ತರಣಿ: ಸ್ತ್ರೀ  
ನಾವಿ ನದಾಂ ಕುಮಾರ್ಯಾಽಪಿ ಷಧಾವಪಿ । ನಾತ್ವಯಂ ಸಾಗರೇ ಭಾನೌ”  
ನಾನಾರ್ಥರಂ । (ವಿಂ) 10. ಜಾಗ್ರತೆಯಾಗಿ ನಡೆಯುವ.

ತರಣಿತನಯ ತರಣಿತನಯ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯನ ಮಗ  
1. ಕರ್ಣ. 2. ಸುಗ್ರೀವ. 3. ಶನೈಶ್ಚರ. 4. ಯಮ.  
5. ಮನು. 6. ಸಾವರ್ಣ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ತನಯಾ —ತನಯಾ.  
7. ಯಮುನಾನದಿ. एवं —ಸುತ: —ಸುತಃ, —ಸುತು: —ಸುತುಃ.  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ತರಣಿಪೋತ ತರಣಿಪೋತ (ಪುಂ) ಮರದ ದೋಣೆ. ತರಣಿ:  
ಪೋತ ಇವ ।

ತರಣಿರಲ್ಪ ತರಣಿರಲ್ಪ (ನಂ) ಮೂಣಕ್ಕ.

ತರಣಿ ತರಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಡಗು. ತರಣ್ಯನೇನ—ತ  
(ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭) । “ಡೀಪ್”  
(೪-೧-೧೪) । 2. ಸಣ್ಣ ಗೋರಂಟಿಗಿಡ. 3. ಬೆಟ್ಟದಾವರೆ.

ತರಣ್ಣ ತರಂಣ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ದೇಶ. (ಪುಂ) 2.  
ತೆಪ್ಪ, ಸೋರೆಬುರುಡೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಆಧಾರದಿಂದ  
ತೇಲಾಡುವ ಬೊಂಬುಗಳಿಂದ ಮಾಡಿದ ತೇಲುವೆ. ತ  
(ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) “ಅಙ್ಗಚ್” ಬಾಹುಂ । 3. ಮೀನು  
ಹಿಡಿಯುವ ಗಾಳದ ದಾರಕ್ಕೆ ಸಿಕ್ಕಿಸಿರುವ ಬೆಂಡು.  
4. ಹಡಗು. “ತರಣ್ಣೋ ಬಡಿಸಿ ಸೂತ್ರಬದ್ಧಕಾಷಾಡಿಕೇ ಪ್ಲವೇ ।  
ನೌಕಾಯಾಮಪಿ ನ ಸ್ತ್ರೀ ಸ್ಯಾತ್” ಮೇದಿಂ । 5. ಹಡಗನ್ನು  
ನಡೆಸುವ ಗಡೆ, ಹಡಗನ್ನು ನಡೆಸುವ ಹುಟ್ಟು. 6. ಮೀನಿನ  
ಬಲೆ. 7. ಸೂತ್ರ, ದಾರ. 8. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. (ವಿಂ) 9.  
ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ ವಸ್ತು. “ತರಣ್ಣೋ ಬಡಿಸಿ ಸೂತ್ರೇ ಬದ್ಧವಸ್ತುನಿ  
ವಾಸಸಿ” ನಾನಾರ್ಥರಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಣ್ಣಿ —ಣ್ಣಿ.  
10. ದೋಣೆ. 11. ತೆಪ್ಪ.

ತರಣ್ಣಕ ತರಂಣಕ (ನಂ) 1. ಒಂದು ಪುಣ್ಯತೀರ್ಥ. ತರಣ್ಣ  
ಸಂಜ್ಞಾया “ಕನ್” । “ತತೋ ಗಂಚ್ಛತ ರಾಜೇಂದ್ರ ದ್ವಾರಪಾಲಂ  
ತರಣ್ಣಕಮ್ । ತಚ್ಚ ತೀರ್ಥಂ ಸರಸ್ವತಯಾಂ ಯಕ್ಷೇಂದ್ರಸ್ಯ ಮಹಾತಮನ:”  
ಭಾಂ ವನಂ ೮೧-೪೨ । 2. ಮೀನಿನ ಬಲೆಯ ದಾರದ  
ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಕಟ್ಟುವ ಬೆಂಡು.

ತರತ್ ತರತ್ (ವಿಂ) 1. ತೇಲಾಡುತ್ತಿರುವ. 2. ದಾಟು  
ತ್ತಿರುವ. ತು (ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) ।  
“ಆಕೃಷ್ಟಪ್ರತನುವುರ್ಲತೇಸ್ತರಣ್ಣಿಸ್ತಸ್ಯಾಃ ಭಸ್ತದಥ ಸರೋ ಮಹಾಣಂ-  
ವಸ್ಯ” ಮಾಘಂ ೮-೨೪ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) ।  
—ಂತಿ —ಂತಿ.

ತರನ್ತ ತರಂತ್ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಸಾಗರ. 2. ತೆಪ್ಪ.  
3. ಭೇಕ, ಕಪ್ಪೆ. 4. ರಾಕ್ಷಸ. ತು (ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:)  
“ಶಚ್” (ಽಂ ೩-೧೨೮) । ಸ ಚ ಪಿತ್ । ಪಿತ್ವಾತ್  
“ಡೀಪ್” (೪-೧-೪೧) । —ಂತಿ —ಂತಿ. 5. ಹಡಗು.  
“ತರನ್ತೋ ದಾರದ: ಪೇರು: ಮಹಾಪ್ರಾಚೀರಮದ್ವಯೋ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ತರಪಣ್ಯ ತರಪಣ್ಯ (ನಂ) ನದಿಯನ್ನು ದಾಟಿಸಲು ಅಂಬಿಗ  
ನಿಗೆ ಕೊಡುವ ಕೂಲಿ, ದೋಣಿಯ ಬಾಡಿಗೆ. ತರಸ್ಯ  
ಪಣ್ಯಮ್ ಶುಲ್ಕಮ್ । “ಆತರಸ್ತರಪಣ್ಯಂ ಸ್ಯಾತ್” ಅಮಂ ।

ತರಲ ತರಲ (ಪುಂ) 1. ಹಾರದ ಮಧ್ಯಮಣಿ. ತು (ಪ್ಲವನ-  
ತರಣಯೋ:) “ಕಲ:” (ಽಂ ೧-೧೦೪) । “ಪ್ರವಾಲಮುಕ್ತಾ-



ಸ್ತರಲಾಶ್ಚ ಹಾರಾ: " ಭಾಂ ಕರ್ಣಂ 1. ಹಾರ. 3. ತಲ, ಸಮಪ್ರದೇಶದ ಮೇಲ್ಮೈ. 4. ಕಬ್ಬಿಣ. (ವಿಂ) 5. ಚಂಚಲವಾದ, ನಡುಗುವ, ಕಂಪಿಸುವ. "ತಾರಾಪತಿ-ಸ್ತರಲವಿದ್ಯದಿವಾಭವಂದಮ್" ರಘುಂ ೧೩-೭೬. 6. ಚಪಲ ಚಿತ್ತನಾದ. "ವೈರಾಪಿತಾರಸ್ತರಲಾ: ಸ್ವಯಂ ಮತ್ಸರಣಿ: ಪರೇ" ಮಾಘಂ ೨-೧೧೫. 7. ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ. "ವ್ಯಾಧಾನು-ಸಾರ್ಯಮಾಣತರಲತಾರಾಮೃಗಾ" ಕಾದಂ. 8. ಕಾಮುಕ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ. 9. ವಿಸ್ತಾರವಾದ. 10. ದ್ರವೀಭೂತವಾದ. 11. ಟೊಳ್ಳಾಗಿರುವ, ಒಳಗೆ ಶೂನ್ಯವಾಗಿರುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ-ಉ. 12. ಗಂಜಿ. 13. ಮದ್ಯ. 14. ಮೋಹಕ. "ತರಲಂ ಚಂಚಲೇ ಪಿಡ್ಗೇ ಭಾಸ್ವರೇಽಪಿ ತ್ರಿಲಿಙ್ಗಕಮ್. ಹಾರ-ಮಧ್ಯಮಣಿ ಪುಸಿ ಯವಾಗುಸುರಯೋ: ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ. "ಲೋಹೇ ಹಾರಮಣಿ ಪುಸಿ ಯವಾಗ್ವಾಂ ತರಲಾ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ತರಲನಯನ ತರಲನಯನ, -ಲೋಚನ-ಲೋಚನ (ನಂ)

1. ಚಂಚಲವಾದ ಕಣ್ಣು. ತರಲಂ ನಯನಂ ಲೋಚನಂ ವಾ. (ವಿಂ) 2. ಚಂಚಲವಾದ ನೇತ್ರವುಳ್ಳ. ತರಲೇ ನಯನೇ ಲೋಚನೇ ವಾ ಯಸ್ಯ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಯನಾ-ನಯನಾ, -ಲೋಚನಾ-ಲೋಚನಾ. ಚಂಚಲವಾದ ನೇತ್ರವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ತರಲೇ ನಯನೇ ಲೋಚನೇ ವಾ ಯಸ್ಯಾ:.

ತರಲಿತ ತರಲಿತ (ವಿಂ) 1. ತೂಗಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ತರಲ + ತತ್ಕರೋತಿ ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). 2. ನಡುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಂಪನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರೇಕ್ಷೋಲಿತಸ್ತರಲಿತ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ತರವಾರಿ ತರವಾರಿ (ಪುಂ) ಖಿಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. ತರಂ ಶತ್ರುಣಾಂ ಗತಿಂ ವಾರಯತಿ - ವೃತ್ (ವರಣ) + ಣಿಚ್ "ಇನ್" (ಉಂ ೪-೧೧೭). "ಶ್ರುಷಿ: ಸ್ತರವಾರಿ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ತರಸ್ ತರಸ್ (ನಂ) 1. ಬಲ, ಶಕ್ತಿ. "ತಿಷ್ಠತು ಪ್ರಥಮಮೇವ-ಮಪ್ಯಹಂ ತುಲ್ಯಬಾಹುತರಸಾ ಜಿತಸ್ತ್ವಯಾ" ರಘುಂ ೧೧-೭೭. 2. ವೇಗ. ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) "ಅಸುನ್" (ಉಂ ೪-೧೮೮). 3. ವಾನರ, ಕಪಿ. 4. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. "ತರೋ ಬಲೇ ಚ ವೇಗೇ ಚ" ಮೇದಿಂ. 5. ತೀರ, ದಡ.

ತರಸ ತರಸ (ನಂ) 1. ಮಾಂಸ. ತರೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭). "ಪಿಶಿತಂ ತರಸಂ ಮಾंसಮ್" ಅಮಂ. (ವಿಂ) 2. ವೇಗವಾದ, ವೇಗದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ತರಸ್ಥಾನ ತರಸ್ಥಾನ (ನಂ) 1. ದೋಣಿಯ ನಿಲ್ದಾಣ. 2. ಹಡಗು ಬಂದು ನಿಲ್ಲುವ ಜಾಗ, ಬಂದರು.

ತರಸ್ವತ್ ತರಸ್ವತ್ (ವಿಂ) 1. ವೇಗದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ತರೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪). 2. ರೋಗಿ,

ವ್ಯಾಧಿಗ್ರಸ್ತ. 3. ಒಡುತ್ತ ಸಮಾಚಾರವನ್ನು ಒಯ್ಯುವವನು, ಹರಿಕಾರ.

ತರಸ್ವಿನ್ ತರಸ್ವಿನ್ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 2. ಗಂಜಿ. (ವಿಂ) 3. ವೇಗವುಳ್ಳ, ವೇಗಶಾಲಿಯಾದ. 4. ಪರಾಕ್ರಮಿ, ಶೂರ, ಬಲಶಾಲಿ. ತರೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ವಿನಿ:" (೪-೨-೧೨೧). "ಮಯಸ್ಯ ಪೂರ್ವತರಸ್ತರಸ್ವಿನಾ" ಮಾಘಂ ೧-೪೩. "ನಿಜಿ-ತೇಷು ತರಸಾ ತರಸ್ವಿನಾಂ ಶತ್ರುಷು ಪ್ರಣತಿರೇವ ಕೀರ್ತಯೇ" ರಘುಂ ೧೧-೮೯. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪). ತರಸ್ವಿನಿ ತರಸ್ವಿನಿ. "ನಿಶುಂಭಶುಂಭಯೋರ್ದೇವಿ ಭದ್ರಕಾಲಿ ತರಸ್ವಿನಿ" ಭಾಗಂ ೮-೧೦-೩೧.

ತರಾನ್ವು ತರಾನ್ವು (ಪುಂ) ಹಡಗು. "ಹೊಡಸ್ತರಾನ್ವುರ್ವಹನಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ತರಾಲು ತರಾಲು (ಪುಂ) ಹಡಗು. "ತರಾಲುಶ್ಚಾಹಿಪುತ್ರಕ:" ಹಾರಾಂ.

ತರಿ(ರೀ) ತರಿ(ರೀ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಡಗು. ತ್ (ಪ್ಲವನ-ತರಣಯೋ:) "ಃ" (ಉಂ ೪-೧೩೮). ವಾ "ಙೀಪ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫). "ಜಿರ್ಣತರಿ: ಸರಿದತಿವ ಗಭೀರನೀರಾ" ಉದ್ಧಂ. "ತರೀಷು ತತ್ರತ್ಯಮಫಲ್ಗು ಭಾಂಡಂ ಸಾಂಯಾತ್ರಿಕಾನಾ-ವಪತೋಽಸ್ಮಿನಂದತ್" ಮಾಘಂ ೩-೭೬. 2. ಬಟ್ಟೆಗಳನ್ನೊಡುವ ಬಟ್ಟೆಗೆ. 3. ಬಟ್ಟೆಯ ಅಂಚು.

ತರಿಕ ತರಿಕ (ಪುಂ) 1. ತೆಪ್ಪ, ಹರಿಗೋಲು. ತರ: ತರಣಂ ಕಾರ್ಯತಯಾಽಸ್ತ್ಯಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೫). 2. ತೆಪ್ಪದ ಕೂಲಿಯನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು, ನದಿ ದಾಟಿಸಿದ ಕೂಲಿಯನ್ನು ಪಡೆಯುವವನು. ತರೇ ತರಪಣ್ಯಗ್ರಹಣೇಽಧಿಕೃತ: "ತರಿಕ: ಸ್ಥಲಜಂ ಶುಲ್ಕಂ ಗೃಹ್ಣನ್ ದಾಪ್ಯ: ಪಣಾನ್ ದಶ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೨೬೩. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಹಡಗು.

ತರಿಣಿ ತರಿಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಡಗು. 2. ದೋಣಿ. ತರ: ತರಣಂ ಕಾರ್ಯತಯಾಽಸ್ತ್ಯಸ್ಯಾ: "ಃ" (೪-೨-೧೧೫).

ತರಿತ್ರ ತರಿತ್ರ (ನಂ) ನೌಕೆ, ಹಡಗು. ತರತ್ಯನೇನ - ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) "ಷ್ಟನ್" (ಉಂ ೪-೧೫೮).

ತರೀಥ ತರೀಥ (ಪುಂ) ದೋಣಿಯನ್ನು ನಡೆಸುವ ಹುಟ್ಟುಗೋಲು. ತರೇ: ರಥ ಇವ.

ತರೀ ತರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. "ತರಿ" ಪದದ ಅರ್ಥ. 2. ಧೂಮ, ಹೊಗೆ. ತರಿ "ಙೀಪ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫).

ತರೀಷ ತರೀಷ (ಪುಂ) 1. ಸ್ವರ್ಗ. 2. ಸುಂದರವಾದ ಆಕಾರ. 3. ತೆಪ್ಪ, ಹರಿಗೋಲು. 4. ವ್ಯವಸಾಯ, ಉದ್ಯೋಗ, ಕಸಬು. 5. ಸಮರ್ಥನಾದ ಪುರುಷ. 6. ಸಮುದ್ರ. 7. ಒಣಗಿದ ಗೋಮಯ. ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) "ಃ" (ಉಂ ೪-೧೩೮).



(ತಂ ೪-೨೬)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಖಿ-೩೬. 7. ಇಂದ್ರನ ಮಂಗಳಂ. "ತರೀಃ ಶೋಭನಾಕಾರೇ ಭೇದಃ ವಿವಿಧವ್ಯವಸಾಯಯೋಃ। ತರೀಃ ಶಕ್ತಕನ್ಯಾಪುಂಸಿ ಸ್ವರ್ಗೋ" ಮೇದಿಂ।

ತರು ತರು (ಪುಂ) ಪೃಕ್ಷ, ಮರ. ತರನ್ಯತೇನ ನರಕಮಾರೋಪಕಾಃ-ತ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) "ತಃ" (ತಂ ೧-೭)। "ಚಲತ್ಪಲಾ-ಶಾಂತರಗೋಚರಾಸ್ತರೋಸ್ತುಪಾರಮೂರ್ತೇರಿವ ನಕ್ತಮಂಶವಃ" ಮಾಘಂ ೧-೨೧। "ಋತ್" (ವಾಂ ೪-೧-೬೬)। ತರುಃ ತರೂಃ. "ಮಂದಾಯಮಾನಗಮನೋ ಹರಿತಾಯತ್ತರಂ ಕಪಿಃ" ಮೃತ್ರಿಂ ೮-೬೫।

ತರುಜೀವನ ತರುಜೀವನ (ನಂ) ಮರದ ಬೇರು. ತರುಃ ಜೀವತೇಜೇನ-ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)।

ತರುಣ ತರುಣ (ಪುಂ) 1. ಹರಳುಗಿಡ. 2. ದಪ್ಪಜಾತಿಯ ಜೀರಿಗೆ. 3. ಉತ್ತರಣೆ ಹೂವು. (ವಿಂ) 4. ಪ್ರಾಯ ದವಸು. ತ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) "ಉನ್" (ತಂ ೩-೧೫೪)। "ಕುಚಕಲಶಕಿಶೋರಕೌ ಕಥಂಚಿತ್ತರಲಯಾ ತರುಣೇನ ಪಸ್ಪಶಾತೇ" ಮಾಘಂ ೭-೭೩। 5. ಹೊಸದಾದ, ಆಗತಾನೆ ಹುಟ್ಟಿದ, ಎಳೆಯದಾದ. "ತರುಣಂ ಸರ್ಪಪಶಾಕಂ ನವೋದನಂ ಪಿಚ್ಛಿಲಾನಿ ಚ ದಧಿನಿ"। "ತರುಣಃ ಕುಂಜಪುಷ್ಪೇ ಸ್ಯಾದೇರಣ್ಡೇ ಭೂನಿ ನೂತನೇ" ಹೇಮಂ।

ತರುಣತಾ ತರುಣತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಾಯ, ತಾರುಣ್ಯ. ತರುಣಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। "ತವಃ"। -೨೪ಮ್ -೨೫ಮ್.

ತರುಣಜ್ವರ ತರುಣಜ್ವರ (ಪುಂ) ಹೊಸ ಜ್ವರ, ಎಳು ದಿನಗಳೊಳಗಿನ ಜ್ವರ. ತರುಣಶ್ವಾಸೀ ಜ್ವರಶ್ಚ। "ಆಸಪ್ತರಾತ್ರಂ ತರುಣಂ ಜ್ವರಮಾಹುರ್ಮನೀಷಿಣಃ" ಚಕ್ರದಂ।

ತರುಣದಧಿ ತರುಣದಧಿ (ನಂ) ಎಳೆಯ ಮೊಸರು, ಸದ್ಯ ಹೆಪ್ಪುಗಟ್ಟಿದ ಹಾಲು, ಎಳೆಗರಣೆಯ ಮೊಸರು. "ಶುಷ್ಕಂ ಮಾಸಂ ಸ್ತ್ರಿಯೋ ವೃದ್ಧಾಃ ಬಾಲಾಕಸ್ತರುಣಂ ದಧಿಃ। ಪ್ರಭಾತೇ ಮೈಥುನಂ ನಿद्रಾ ಸಃ ಪ್ರಾಣಹರಾಣಿ ಪಟ್" ಚಾಣಕ್ಯಃ।

ತರುಣಿಮನ್ ತರುಣಿಮನ್ (ಪುಂ) ತಾರುಣ್ಯ, ಪ್ರಾಯ. ತರುಣಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಇಮನಿಚ್" (೪-೧-೧೨೨)। "ಬತೇನ್ದ್ರ-ವದನಾತನೋ ತರುಣಿಮೋದಗಮೋ ಮೋದತೇ" ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ।

ತರುಣಿ ತರುಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯುವತಿ, ಪ್ರಾಯದ ಹೆಂಗಸು. ತರುಣ "ಙೀಪ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೫)। "ಪ್ರಾಣೇಶಾನಮಿ ವಿಧುರ್ವಿಭೂತಹಸ್ತಾಃ ಸೀತಕಾರಂ ಸಮುಚಿತಮುತರಂ ತರುಣ್ಯಃ" ಮಾಘಂ ೮-೧೩। 2. ಜಾಪಾಳದ ಗಿಡ.

ತರುತಲ ತರುತಲ (ನಂ) ಮರದ ಬುಡ, ಮರದ ಕೆಳಭಾಗ. ತರೋಸ್ತಲಮ್। "ನೋಚ್ಚೇಯದಾ ತರುತಲೇಷು ಸಮುಸ್ತದಾನಿಮಾಧೋ-ರಣೇರಮಿಹಿತಾಃ ಪೃಥುಮೂಲಶಾಖಾಃ" ಮಾಘಂ ೫-೪೪।

ತರುತಲ ತರುತಲ (ಪುಂ) ಮುಳ್ಳು. ತರೋಃ ನಲ ಇವ। "ಕಂಠಕಸಂಜ್ಞಾಸ್ತರುತಲಶಿತಾಗ್ರದಲಸೂಚಿರಾಂಕಿಲದ್ರುಮರಾಃ" ಹಾರಾಂ।

ತರುಭುಜ ತರುಭುಜ (ಪುಂ) ಬದನೆಗೆ ಗಿಡ. ತರುಂ ಮುಕ್ತೇ-ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) "ಕಿವಿಪ್" (೩-೨-೭೬)। ಇದು ತಾನು ಆಶ್ರಯಿಸಿದ ಮರದ ರಸವನ್ನು ಹೀರುವುದ ರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಈ ಹೆಸರು.

ತರುಮೂಲ ತರುಮೂಲ (ನಂ) ಮರದ ಬೇರು.

ತರುಮೃಗ ತರುಮೃಗ (ಪುಂ) ವಾನರ, ಕಪಿ.

ತರುರಾಜ ತರುರಾಜ (ಪುಂ) ತಾಳವೃಕ್ಷ, ತಾಳೆ ಜಾತಿಯ ಒಂದು ಮರ. ತರುಣಾಂ ರಾಜಾ।

ತರುಹಾ ತರುಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬದನೆಗೆ ಗಿಡ.

ತರುಹಿಣಿ ತರುಹಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬದನೆಗೆ ಗಿಡ.

ತರುಸಾರ ತರುಸಾರ (ನಂ) ಕರ್ಪೂರ. "ಸಿತಾಭ್ರಂ ತರುಸಾರಂ ಚ ವೇರಕಂ ರಸಕೇಸರಮ್" ಹಾರಾಂ।

ತರುಟ ತರುಟ (ಪುಂ) ಕನ್ನಡಿಯ ಗಡ್ಡೆ.

ತರ್ಕ ತರ್ಕ (ಪುಂ) 1. ಆಕಾಂಕ್ಷೆ. ತರ್ಕಯತೇ ಆಕಾಂಕ್ಷಯತೇ-ತರ್ಕ (ಭಾಷಾಂ) "ಘ್" (೩-೩-೧೯)। ಆಕಾಂಕ್ಷೆಯು ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಸರಿಯಾದ ಅರ್ಥವಾಗದಿರುವಲ್ಲಿ ಶಾಬ್ದಬೋಧಕ್ಕೆ ಸಹಕಾರಿ ಯಾಗುವುದು. ಒಂದು ಪದದ ಅರ್ಥವನ್ನು ತಿಳಿಯಲು ಅದರ ಅನ್ವಯಕ್ಕೆ ಅವಶ್ಯವಾದ ಪದದ ಅಪೇಕ್ಷೆಯು ಆಕಾಂಕ್ಷೆ. ಅಥವಾ ಒಂದು ಪದಕ್ಕೆ ಯಾವ ಪದದ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದೆ ಅರ್ಥವೇ ಆಗುವುದಿಲ್ಲವೋ ಆ ಪದದ ಅಪೇಕ್ಷೆಯು ಆಕಾಂಕ್ಷೆ. ಇದೇ ತರ್ಕ. "ಘಟಮಾನಯ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಕಾರಕ ಮತ್ತು ಕ್ರಿಯಾಪದಗಳಿಗೆ ಪರಸ್ಪರ ಆಕಾಂಕ್ಷೆಯಿರುವುದು. ಕೇವಲ ಘಟಮ್ ಎಂದು ಹೇಳಿದರೆ ಆನಯ ಎಂದರ್ಥವೇ? ಪಶ್ಯ ಎಂದರ್ಥವೇ? ಎಂಬ ಜಿಜ್ಞಾಸೆಯುಂಟಾಗುವುದು. "ಘಟಮಾನಯ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಘಟಕರ್ಮಕಮಾನಯನಮ್ ಎಂದು ಅನ್ವಯ ಬೋಧವಾಗುವುದು. ಇದೇ ಕಾರಕಕ್ಕೂ ಕ್ರಿಯಾಪದಕ್ಕೂ ಇರುವ ಪರಸ್ಪರ ಆಕಾಂಕ್ಷೆ. 2. ಕಲ್ಪನೆ, ಊಹೆ, ಭಾವನೆ. ತರ್ಕ ಭಾವೆ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। ತತ್ತ್ವಾರ್ಥವು ತಿಳಿಯದಿರುವಾಗ ಕಾರಣೋಪನ್ಯಾಸಪೂರ್ವಕ ತತ್ತ್ವವನ್ನು ತಿಳಿಯುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಊಹೆಯು ತರ್ಕವಾಗುವುದು. "ಅವಿಜ್ಞಾತ-ತತ್ವಾರ್ಥ ಕಾರಣೋಪಪತ್ತಿಃ ತತ್ವಜ್ಞಾನಾರ್ಥಮುಹಸ್ತಕಃ" ಗೌತಮಸೂಂ ೧-೧-೪೦। "ನಾಸ್ತಯಗತಿರ್ಮನೋರಥಾನಾಮ್, ಸಖೇ ಪ್ರಸನ್ನಸ್ತೇ ತರ್ಕಃ" ವಿಕ್ರಂ ೨। 3. ತರ್ಕಶಾಸ್ತ್ರ, ಹೇತುಪೂರ್ವಕ ವಿಚಾರಮಾಡುವ ನ್ಯಾಯಶಾಸ್ತ್ರ, ಅನ್ವೀಕ್ಷಣೀ ವಿದ್ಯೆ



“ವ್ಯಾಪ್ಯಾರೋಪಣ ವ್ಯಾಪಕಾರೋಪಸ್ತಕಃ” । ತರ್ಕಯಂತೆ ಪ್ರತಿಪಾದ್ಯಂತೆ ಪದಾರ್ಥಃ ಇತಿ ತರ್ಕಃ । “ಪ್ರಾಯಸ್ತಕಮಧೀತೇ ತನುತೇ ಕುತುಕಾ-  
ನ್ನಿಬಂಧಮಪ್ಯತ್ರ” ದೀಧಿಂ । “ಗದಾಧರವಿನಿಮಿತಾವಿಷಮ-  
ದುರ್ಗತಕರ್ತವಿ” ಗದಾಂ । “ತರ್ಕೇ ವಾ ಭೃಶಕರ್ಕಶೇ ಮಮ ಸಮಂ  
ಲೀಲಾಯತೇ ಭಾರತೀ” ಪ್ರಂ ರಾಂ । “ಯತ್ಕಾವ್ಯಂ ಮಧುವರ್ಷಿ  
ರ್ವರ್ಷಿತಪರಾಸ್ತಕೈಃ” ಯಸ್ಯೋಕ್ತಯಃ” ನೆಪಂ ೨೨-೧೪೩ ।  
4. ಕಣ್ಣಾದಮುನಿಪ್ರಣೀತವಾದ ವೈಶೇಷಿಕದರ್ಶನ. 5. ಅನು  
ಮಾನ. “ತರ್ಕಪ್ರತಿಷ್ಠಾನಾದಪಿ, ಅನ್ಯಥಾನುಮೇಯಮಿತಿ  
ಚೇದೇವಮಪ್ಯನಿರ್ಮೋಕ್ಷಪ್ರಸಜ್ಞಃ” ಖಂ ಸುಂ ೨-೧-೧೧, ೧೨ ।  
6. ಅಗಮಕ್ಕೆ ವಿರೋಧವಲ್ಲದ ವಿಮಾನಾಂಸಾದಿ ನ್ಯಾಯ.  
“ನೇಷಾ ತರ್ಕೇಣ ಮತಿರಪನೇಯಾ” ಕಠಂ । “ಆರ್ಷಂ ಧರ್ಮೋಪದೇಶಂ  
ಚ ವೇದಶಾಸ್ತ್ರಾವಿರೋಧಿನಾ । ಯಸ್ತರ್ಕೇಣಾನುಸಂಧತೇ ಸ ಧರ್ಮಂ  
ವೇದ ನೇತರಃ” ಮನುಂ ೧೨-೧೦೬ । “ಧರ್ಮೇ ಪ್ರಮೀಯಮಾಣೇ  
ಹಿ ವೇದೇನ ಕರಣಾತ್ಮನಾ । ಇತಿಕರ್ತವ್ಯತಾಭಾಗಂ ಮೀಮಾಂಸಾ  
ಪೂರಯಿಷ್ಯತಿ” । 7. ವಿಮಾನಾಂಸ.

ತರ್ಕಕ ತರ್ಕಕ (ಪುಂ) 1. ತರ್ಕಕ, ನೈಯಾಯಿಕ. ತರ್ಕ  
(ಭಾಷಾರ್ಥ) “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) । (ವಿಂ) 2.  
ಊಹಿಸುವವನು. 3. ಯಾಚಕ. “ಕಾಮೈಃ ಸಂತರ್ಪಯಾಮಾಸ  
ಕೃಪಣಾಸ್ತರ್ಕಕಾನಪಿ” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೪೪-೬ ।

ತರ್ಕಣ ತರ್ಕಣ (ನಂ) ಊಹಿಸುವುದು. ವಾಸ್ತವವಾದ  
ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಯಲು ಸರಿಯಾದ ಕಾರಣಗಳಿಂದ  
ಮಾಡುವ ಊಹೆ. ತರ್ಕ (ಭಾಷಾರ್ಥ) + ಣಿच् “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೪) । “ಪರಕ್ರಿಯಾತ್ಮದೋಷಾಃ ಶಕ್ತಾನರ್ಥಸ್ಯ  
ತರ್ಕಣಮ್” ಸಂ ದಾಂ ೩-೧೬೧ ।

ತರ್ಕವಿद्या ತರ್ಕವಿದ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನ್ವೀಕ್ಷಣೀ ವಿದ್ಯೆ, ತರ್ಕ  
ಶಾಸ್ತ್ರ, ವಿಮರ್ಶಮಾಡುವ ಶಾಸ್ತ್ರ, ಪ್ರಮಾಣ ಕೊಡುವ  
ಶಾಸ್ತ್ರ, ಪ್ರಮಾಣ ಪ್ರಮೇಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ.

ತರ್ಕಸಂಗ್ರಹ ತರ್ಕಸಂಗ್ರಹ (ಪುಂ) ನ್ಯಾಯದರ್ಶನದಲ್ಲಿ ದ್ರವ್ಯ  
ಮೊದಲಾದ ಸಪ್ತ ಪದಾರ್ಥಗಳ ವಿವೇಚನೆಗಾಗಿ ರಚಿತವಾದ  
ಒಂದು ಗ್ರಂಥ, ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾದಿ ಪ್ರಮಾಣಗಳಿಂದ ಪದಾರ್ಥ  
ಗಳ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಒಂದು ತರ್ಕಗ್ರಂಥ.  
“ದ್ರವ್ಯಗುಣಕರ್ಮಸಾಮಾನ್ಯವಿಶೇಷಸಮವಾಯಾಭಾವಾಃ ಸಂತ ಪದಾರ್ಥಃ”  
ತಂ ಸಂ ।

ತರ್ಕಾರಿ ತರ್ಕಾರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಳ್ಳಲಿಗಿಡ. ತರ್ಕಮಿರ್ಯತಿ-ಋ  
(ಗತೌ) “ಅಣ್” (೩-೨-೧) ।

ತರ್ಕಿತ ತರ್ಕಿತ (ವಿಂ) 1. ಊಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಶಂಕಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ವಿಮರ್ಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ತರ್ಕ (ಭಾಷಾರ್ಥ) + ಣಿच्  
“ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । (ನಂ) 4. ಊಹೆ.

ತರ್ಕಿನ್ ತರ್ಕಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂಶಯಪಡುವವನು.  
2. ಊಹಿಸುವವನು. 3. ವಿಮರ್ಶಿಸುವವನು. ತರ್ಕಯತಿ-  
ತರ್ಕ (ಭಾಷಾರ್ಥ) + ಣಿच् “ಣಿಞಃ” (೩-೧-೧೩೪) ।  
“ತೈವಿದ್ಯೋ ಹೇತುಕಸ್ತರ್ಕೋ ನೈವತೋ ಧರ್ಮಪಾಠಕಃ । ತ್ರಯಶ್ಚಾಶ್ರಮಿಣಃ  
ಪೂರ್ವೇ ಪರಿಷತ್ ಸ್ಯಾದ್ವಿಶಾವರಾ” ಮನುಂ ೧೨-೧೧೧ ।

ತರ್ಕು ತರ್ಕು (ಪುಂ) ಕದಿರು, ಚರಕದಲ್ಲಿ ತಿರುಚುವ ಜುತ್ತು  
ನೂಲನ್ನು ಸುತ್ತುವ ಕದಿರಣಿಗೆ. ಕೃತಿ (ಛೇದನೆ) “ಊಃ”  
(ಊಂ ೧-೧೬) । ನಿಪಾಂ । “ಕಪಾಲನಾಲಿಕಾ ತರ್ಕುಃ”  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ತರ್ಕುಪಾಠಿ ತರ್ಕುಪಾಠೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕದಿರು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿರುಗಲು  
ಅನುಕೂಲಿಸುವಂತೆ ಅದರ ತಳದಲ್ಲಿ ಕಟ್ಟುವ ಭಾರವಾದ  
ಮಣ್ಣಿನ ಗುಂಡು.

ತರ್ಕುಪಿಂಡ ತರ್ಕುಪಿಂಡ, -ಪಿಠ -ಪೀಠ (ಪುಂ) -ಪಿಠಿ  
-ಪೀಠೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) “ತರ್ಕುಪಾಠಿ” ಪದದ ಅರ್ಥ. “ವತ್ಸುಲಾ  
ತರ್ಕುಪಿಠಿ ಸ್ಯಾತ್” ಹಾರಾಂ ।

ತರ್ಕುಲಾಸಕ ತರ್ಕುಲಾಸಕ (ಪುಂ) ನೂಲುವ ಕದಿರನ್ನು  
ತಿರುಗಿಸುವ ಯಂತ್ರ, ಚರಕ. ತರ್ಕು ಲಾಸಯತಿ -ಲಸ  
(ಶ್ಲೇಷಣಕ್ರೀಡನಯೋಃ) + ಣಿच् “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೪) ।  
“ಕ್ಷಲ್ಲೋಲಸ್ತರ್ಕುಲಾಸಕಃ” ಹಾರಾಂ ।

ತರ್ಕುಶಾಣ ತರ್ಕುಶಾಣ (ಪುಂ) ಕದಿರನ್ನು ಚೂಪಾಗಿಮಾಡುವ  
ಸಾಣೆಕಲ್ಲು.

ತರ್ಕು ತರ್ಕು (ಪುಂ) “ತರಕ್ಶು” ಪದದ ಅರ್ಥ. ತರಕ್ಶು ಪುಷ್ಪಂ ।  
ತರ್ಜ - ಭರ್ತಸೇನೆ (ಭವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ತರ್ಜತಿ । ತತರ್ಜ ।  
ತರ್ಜಿತಾ । ತರ್ಜಿಷ್ಯತಿ । ತರ್ಜತು । ಅತರ್ಜತು । ಇತ್ಯಾದಿ.  
ಹೆದರಿಸು, ಭಯಪಡಿಸು, ಬೆದರಿಸು. “ರಣೇ ಚಿಕ್ಕಿಡ  
ಧೂಮ್ರಾಕ್ಷಸ್ತಂ ತತರ್ಜಾನಿಲಾತ್ಮಜಃ” ಮದ್ರಿಂ ೧೪-೮೦ ।

ಕರ್ಮಣಿಃ:-ತರ್ಜಯಂತೆ । ತತರ್ಜೆ । ತರ್ಜಿತಾ । ತರ್ಜಿಷ್ಯಂತೆ ।  
ತರ್ಜಯಂತಾಂ । ಅತರ್ಜಯಂತ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ:-ತರ್ಜಯತಿ, -ತೇ । ತರ್ಜಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ । ತರ್ಜಯಿತಾ । ತರ್ಜಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ ।  
ತರ್ಜಯತು, -ತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:-ತರ್ಜಿತವ್ಯಮ್ । ತರ್ಜನೀಯಮ್ । ತರ್ಜಯಮ್ । ತರ್ಜಿತಃ ।  
ತರ್ಜಿತವಾನ್, -ವತೀ । ತರ್ಜನ್, -ಂತೀ । ತರ್ಜಿತುಮ್ । ತರ್ಜಿತಮ್ ।  
ತರ್ಜನಮ್ । ತರ್ಜಿತವಾ । ಪ್ರತರ್ಜಯೆ ।

ತರ್ಜ - ತರ್ಜನೆ (ಚುರಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ತರ್ಜಯಂತೆ ।  
ಅತರ್ಜಯಂತ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ತರ್ಜಕ ತರ್ಜಕ (ವಿಂ) ಹೆದರಿಸುವವನು, ಬೆದರಿಸುವವನು.  
ತರ್ಜ (ಭರ್ತಸೇನೆ) “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೪) ।



ತರ್ಜನ ತರ್ಜನ (ನಂ) 1. ಹೆದರಿಸುವುದು, ಬೆದರಿಸುವುದು.

ತರ್ಜ (ಭರ್ತನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಧೃತತುಷಾರ-  
ಕಣಸ್ಯ ನಭಸ್ವತಸ್ತಲತಾಜ್ಜಲಿತರ್ಜನವಿಭ್ರಮಾಃ" ಮಾಘಂ  
೬-೬೦। 2. ಅಕ್ಷೇಷಣೆ. 3. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. "ಭ್ರೂದಿಭಿಃ  
ಸಕಂಪೋಷಲೆಲಿತಾಜ್ಜಲಿತರ್ಜನೇ" ಕುಮಾರಂ ೬-೪೫।

ತರ್ಜನಾ ತರ್ಜನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆದರಿಸುವುದು, ಬೆದರಿಸು  
ವುದು. ತರ್ಜ (ಭರ್ತನೆ) + ಣಿಕ್ "ಯುಕ್" (೩-೩-೧೦೭)।  
"ನಿರ್ಧೃತವೀತಮಪಿ ಬಾಲಕಮುಲ್ಲಲಂತಂ ಯಂತಾ ಕ್ರಮೇಣ ಪರಿ-  
ಸಾನ್ವನತರ್ಜನಾಭಿಃ" ಮಾಘಂ ೫-೪೭। 2. ಅಕ್ಷೇಷಣೆ.  
3. ದೂಷಣೆ, ನಿಂದೆ, ಬೈಗಳು.

ತರ್ಜನೀ ತರ್ಜನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆದರಿಸುವ ಬೆರಳು, ಹೆಬ್ಬೆರಳಿನ  
ಸಮೀಪದ ಬೆರಳು. ತರ್ಜಯೇಜಯಾ-ತರ್ಜ (ಭರ್ತನೆ) + ಣಿಕ್  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)।

ತರ್ಜನೀಯ ತರ್ಜನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಹೆದರಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ಹೆದರಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಹೆದರಿಸಲು ಶಕ್ತನಾದ. ತರ್ಜ  
(ಭರ್ತನೆ) ಕರ್ಮದೊ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬)। "ತವ್ಯಃ"  
ತರ್ಜಯಿತವ್ಯಃ ತರ್ಜಯಿತವ್ಯಃ.

ತರ್ಜಯತ್ ತರ್ಜಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಹೆದರಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಬೆದರಿಸುತ್ತಿರುವ. ತರ್ಜ (ಭರ್ತನೆ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। 2. ಅಕ್ಷೇಷಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ನಿಂದಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ-ಯಂತೀ.  
"ಸೀತಾಂ ಸಂತರ್ಜಯಂತೀಸ್ತಾ ರಾಕ್ಷಸೀರಣೋತ್ ಕಪಿಃ" ರಾಮಾಂ।

ತರ್ಜಾ ತರ್ಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆದರಿಸುವುದು, ಬೆದರಿಸುವುದು.  
ತರ್ಜ (ಭರ್ತನೆ) "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩)।

ತರ್ಜಿತ ತರ್ಜಿತ (ವಿಂ) 1. ಹೆದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೆದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ತರ್ಜ (ಭರ್ತನೆ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಕಾತರೋಽಸಿ  
ಯದಿ ಬೋಧಗತಾಚಿಷಾ ತರ್ಜಿತಃ ಪರಶುಚಾರಯಾ ಮಮ" ರಘುಂ  
೧೧-೭೮। 2. ಅಕ್ಷೇಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ದೂಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ನಿಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. (ನಂ) 4. ಹೆದರಿಕೆ. 5. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ.  
6. ಅಕ್ಷೇಷಣೆ.

ತರ್ಣ ತರ್ಣ (ಪುಂ) 1. ಕರು, ವತ್ಸ. ತೃಣೋತಿ-ತೃಣು (ಅದನೆ)  
"ಅವ್" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಸದ್ಯಃ ಹುಟ್ಟಿದ ಕರು.

ತರ್ಣಕ ತರ್ಣಕ (ಪುಂ) "ತರ್ಣ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ತೃಣು (ಅದನೆ)  
"ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಅಮ್ಯಾಜತೋಽಮ್ಯಾಗತತೃಣತರ್ಣಕಾ-  
ಗ್ನಿರ್ಯಾಣಹಸ್ತಸ್ಯ ಪುರೋ ದುಘೃತಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೪೧।

ತರ್ಣಿ ತರ್ಣಿ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ತರತ್ಯಾಕಾಶಮಾಗ್-ತ  
(ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) "ನಿಃ" ಬಾಹುಂ। 2. ತೆಪ್ಪ, ಹರಿ  
ಗೋಳು.

ತರ್ತರೀಕ ತರ್ತರೀಕ (ನಂ) 1. ಹಡಗು. 2. ದೋಣಿ.  
ತೃ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) ಕರಂ "ಈಕ್" (೩ಂ ೪-೨೦)।  
(ವಿಂ) 3. ದಾಟಿಸುವವನು, ದಡವನ್ನು ಮುಟ್ಟಿಸುವವನು.  
ತೃ ಕರಂ "ಈಕ್"।

ತರ್ತವ್ಯ ತರ್ತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ದಾಟಲ್ಪಡುವ. 2. ದಾಟ  
ಬೇಕಾದ. ತೃ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೧೬)।

ತರ್ದ - ಹಿಸಾಯಾಮ್ (ಸ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ತರ್ದತಿ।  
ತತರ್ದ। ತರ್ದಿತಾ। ಇತ್ಯಾದಿ. ಹಿಂಸಿಸು, ಹೀಡಿಸು. "ಸುಗ್ರೀವಃ  
ಪ್ರಥಮಂ ನೇಮೇ ಬಹುನ್ ರಾಮಸ್ತತರ್ದಂ ಚ" ಭದ್ರಂ ೧೪-೩೩।

ತರ್ದ್ ತರ್ದ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರದ ಸೊಟು, ಮರದ ಸೊಟ್ಟುಗ.  
ತರ್ದ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕಃ" ಬಾಹುಂ।

ತರ್ಪಣ ತರ್ಪಣ (ನಂ) 1. ತೃಪ್ತಿ. ತೃಪ (ಪ್ರೀಣನೆ) ಭಾವೇ  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವುದು.  
ತೃಪ + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಯೋ ವೈ ಸ್ವಸೃಣಾಂ  
ಪಿತೃವಹದಾತಿ ವರಾನ್ ವದಾನ್ಯೋ ವರತೃಪ್ಣೇನ" ಭಾಗಂ ೩-೧-೨೭।  
3. ಪಿತೃಯಜ್ಞ, ಗೃಹಸ್ಥನು ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಮಾಡಬೇಕಾದ  
ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞಗಳಲ್ಲೊಂದು. 4. ದೇವಯಜ್ಞ.  
5. ಮುಷಿಯಜ್ಞ. ದೇವರ್ಷಿಪಿತೃತರ್ಪಣವು ಗೃಹಸ್ಥನಿಗೆ  
ಪ್ರತಿ ದಿನದ ಕರ್ತವ್ಯಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ನಿತ್ಯಂ ನೈಮಿತ್ತಿಕಂ  
ಕಾಮ್ಯಂ ತ್ರಿವಿಧಂ ಸ್ನಾನಮಿಷ್ಯತೇ। ತರ್ಪಣಂತು ಭವೇತ್ತಸ್ಯ ಅಜ್ಞತವೇನ  
ವ್ಯವಸ್ಥಿತಮ್"। 6. ಪರ್ವಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಪಿತೃಗಳ ಪ್ರೀತ್ಯರ್ಥ  
ಮಾಡುವ ಜಲತರ್ಪಣ. (ವಿಂ) 7. ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸುವ.  
ತೃಪ ಕರಂ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)।

ತರ್ಪಣೀಯ ತರ್ಪಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ಸಂತೋಷಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸಬೇಕಾದ.  
4. ಸಂತೋಷಪಡಿಸಬೇಕಾದ. ತೃಪ (ಪ್ರೀಣನೆ) "ಅನೀಯರ್"  
(೩-೧-೧೬)। "ತವ್ಯಃ"। ತರ್ಪಯಿತವ್ಯಃ ತರ್ಪಯಿತವ್ಯಃ.

ತರ್ಪಣ ತರ್ಪಣ (ಪುಂ) ಹಸು ಮತ್ತು ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಕತ್ತಿಗೆ  
ಕಟ್ಟುವ ಗಂಟೆ.

ತರ್ಬಟ ತರ್ಬಟ (ಪುಂ) 1. ಸಂವತ್ಸರ. 2. ಚಕ್ರಮರ್ಧವೃಕ್ಷ,  
ತಗಚಿಗಿಡ.

ತರ್ಮನ್ ತರ್ಮನ್ (ನಂ) ಯೂಪದ ಅಗ್ರಭಾಗ, ಯಜ್ಞ ಪಶು  
ವನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಕಂಬದ ತುದಿ. ತರತಿ - ತೃ (ಪ್ಲವನ-  
ತರಣಯೋಃ) "ಮನಿನ್" (೩-೨-೭೫)।

ತರ್ಪ ತರ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಇಚ್ಛೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ. 2. ಪಿಪಾಸೆ,  
ಬಾಯಾರಿಕೆ. ತ್ರಿ ತೃಪಾ (ಪಿಪಾಸಾಯಾಮ್) "ಫವ್" (೩-೩-೧೮)।  
"ತರ್ಪೋ ಲಿಪ್ಸಾಪಿಪಾಸಯೋಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। "ಲವಣಾರ್ಣವ-  
ಪಾನೇನ ತರ್ಪೋತ್ಕರ್ಷಮಿವೋದ್ರಹನ್" ರಾಜತಂ। 3. ಸಮುದ್ರ.



ತಲಯುಧ ತಲಯುಧ (ನಂ) ಕೈಯಿಂದ ಅಪ್ಪಳಿಸಿ ಮಾಡುವ  
ಯುಧ, ಕೈಯಿಂದ ಹೊಡೆದು ಮಾಡುವ ಕಾಳಗ. ತಲೆನ  
ಕರತಲಾಘಾತೇನ ಯುಧಮ್ |



ತಲಲೋಕ ತಲಲೋಕ (ಪುಂ) ಪಾತಾಲಲೋಕ. ತಲಸ್ಥಿ  
ಭೂಮೇಸ್ತಲಸ್ಥಿ ಲೋಕಃ। "ಸ್ವಲೋಕಪಾಲಾಃ ಸ್ವಗಲೋಕಪಾಲಾಃ  
ನೃಲೋಕಪಾಲಾಸ್ತಲಲೋಕಪಾಲಾಃ" ಭಾಗಂ ೨-೬-೪೨।

ತಲವಾರಣ ತಲವಾರಣ (ನಂ) ಕೈಗಳನ್ನು ಹೆದೆಯ ಏಟಿ  
ನಿಂದ ರಕ್ಷಿಸಲು ಕೈಗೆ ಹಾಕಿಕೊಳ್ಳುವ ತೊಗಲಿನ ಜೇಲ.  
ತಲೇ ವಾರಯತಿ - ವೃಜ್ (ವರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ"  
(೩-೧-೧೩೪)। "ಜಯಾರವಕ್ಷೇಡಿತನಾದಮುಚ್ಚಿತಃ ಶರಾ-  
ಸನಜ್ಯಾತಲವಾರಣಧ್ವನಿಃ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೨೯।

ತಲಸಾರಕ ತಲಸಾರಕ (ನಂ) ಕುದುರೆಯ ಕತ್ತಿನ ಕೆಳಗೆ  
ಕಟ್ಟುವ ಚರ್ಮದ ಪಟ್ಟಿ, ಮುಖಕ್ಕೂ ಎದೆಗೂ ಮಧ್ಯೆ  
ಕಟ್ಟುವ ತೊಗಲಿನ ಪಟ್ಟಿ. ತಲೇ ಸರತಿ - ಸೃ (ಗತೌ)  
"ಫ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ವಕ್ತ್ರಪट्टे तु तलिका  
तलसारकम्" ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ತಲಸ್ಥ ತಲಸ್ಥ (ವಿಂ) ಅಧೋಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ, ಕೆಳಭಾಗ  
ದಲ್ಲಿರುವ. ತಲೇ ತಿಷ್ಠತಿ - ಷ್ಠಾ (ಗತಿनिवृत्तौ) "ಕಃ"  
(೩-೨-೪)।

ತಲಹೃದಯ ತಲಹೃದಯ (ನಂ) ಅಂಗಾಲಿನ ಮಧ್ಯಭಾಗ.  
ತಲಸ್ಯ ಹೃದಯಮಿವ। "ತಲಹೃದಯಂ तु तलं मध्ये पादतलस्य  
तत्" ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ತಲಾಚಿ ತಲಾಚಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಾಪೆ, ಮಂದಲಿಗೆ. ತಲಮ್  
ಅಚ್ಛತಿ - ಅಚ್ಚು (ಗತೌ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೫೯)।  
"ಙೀಪ್" (೪-೧-೫)। "ತಲಾಚಿ ತಲಪट्टिका" ಹಾರಾಂ।

ತಲಾತಲ ತಲಾತಲ (ನಂ) ಸಪ್ತ (ಎಳು) ಅಧೋಲೋಕ  
ಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಚತುರ್ದಶಭುವನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ತಲಿಕಾ ತಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ತಲಸಾರಕ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ತಲಿತ ತಲಿತ (ನಂ) ಬೇಯಿಸಿ ಕರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ ಮಾಂಸ.  
"ಶುದ್ಧಮಾಂಸವಿಧಾನೇನ ಮಾಂಸಂ ಸಮ್ಯಕ್ ಪ್ರಸಾಧಿತಮ್। ಪುನಸ್ತದಾಜ್ಯೇ  
ಸಂಭೃಷ್ಟಂ ತಲಿತಂ ಪ್ರೋಚ್ಯತೇ ಬುಧಃ" ಭಾವಪ್ರಂ।

ತಲಿನ ತಲಿನ (ನಂ) 1. ಹಾಸಿಗೆ, ಶಯ್ಯ. ತಲ (ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ-  
ಯಾಮ್) "ಇನನ್" (೩-೨-೫೩)। (ವಿಂ) 2. ಕೃಶವಾದ,  
ದುರ್ಬಲವಾದ. 3. ಸ್ವಚ್ಛವಾದ, ನಿರ್ಮಲವಾದ. 4. ಚಿಕ್ಕ  
ದಾದ, ಸಣ್ಣದಾದ, ಸ್ವಲ್ಪವಾದ. 5. ವಿರಳವಾದ. "ತಲಿನಂ  
ವಿರಲೇ ಸ್ತೋಕೇ ಸ್ವಚ್ಛೇಽಪಿ ವಾಚ್ಯಲಿङ्ಗಕಮ್" ಮೇದಿಂ। "ಕ್ಷಾಮಃ  
ಕ್ಷೀಣಸ್ತನುಃ ಕ್ಷಾತಸ್ತಲಿನಾಃ ಮಾಂಸಪೇಲವಾಃ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ತಲಿಮ ತಲಿಮ (ನಂ) 1. ಜಗುಲಿ. 2. ಶಯ್ಯ, ಹಾಸಿಗೆ.  
3. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. 4. ವಿಶಾಸ, ಬಟ್ಟೆಯಿಂದ ಮಾಡಿದ  
ಚಾಪೆ. ತಲ (ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಯಾಮ್) "ಇಮನ್" ಬಾಹುಂ।  
"ತಲಿಮಂ ಕುಟ್ಮಿಮೇ ತಲ್ಪೇ ಚಂದ್ರಹಾಸೇ ವಿತಾನಕೇ" ಮೇದಿಂ।

ತಲುನ ತಲುನ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ತ್ (ಪ್ಲವನ-  
ತರಣಯೋಃ) "ಉನನ್" ರೇಫಸ್ಯ ಲಕಾರೋ ವಾ ಸ್ಯಾತ್ (೩ಂ  
೩-೫೪)। 2. ತರುಣ, ಪ್ರಾಯದವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಙೀಪ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೫)। ತಲುನಿ ತಲುನೀ. "ತಲುನಃ  
ಪವನೇ ಯುನಿ ಯುವತ್ಯಾಂ ತಲುನಿ ಸ್ಮೃತಾ" ಮೇದಿಂ।

ತಲೇಕ್ಷಣ ತಲೇಕ್ಷಣ (ಪುಂ) ವರಾಹ, ಹಂದಿ. ತಲೇ ಇಕ್ಷಣ-  
ಮಸ್ಯ। ಹಂದಿಯು ಕೆಳದೃಷ್ಟಿಯುಳ್ಳ ಪ್ರಾಣಿ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಙೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। ತಲೇಕ್ಷಣಿ ತಲೇಕ್ಷಣೀ.

ತಲೋದರಿ ತಲೋದರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೃಶವಾದ ಉದರವುಳ್ಳ  
ವಳು, ತೆಳುವಾದ ಹೊಟ್ಟೆಯುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ತಲಂ ಲಙ್ಗ-  
ಮುಷ್ಠಿರಿವ ಉದರಂ ಯಸ್ಯಾಃ। "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫೫)।  
"ತಲೋದರೀಂ ತಾಲಫಲಸ್ತನೀಂ ತಾಂ ತಾಮ್ರಾಧರಾಂ ಚಾರುನವೋತ್ಪಲಾ-  
ಕ್ಷೀಮ್" ಯಾದಂ ೧೩-೧೭।

ತಲೋದಾ ತಲೋದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನದಿ, ಹೊಳೆ. ತಲೇ ಉದಕಂ  
ಯಸ್ಯಾಃ। ಉದಕಸ್ಯ ಉದಾದೇಶಃ। "ಸಮುದ್ರಗಾ ನಿಕ್ಷೇರಿಣಿ  
ತಲೋದಾ ಜಂಬಾಲಿನಿ ಶೈವಾಲಿನಿ ತರಙ್ಗಿಣಿ" ಹಾರಾಂ।

ತಲಕ ತಲಕ (ನಂ) ಅರಣ್ಯ, ಕಾಡು. "ವಾಕ್ಸಂ ವನಂ ತಲಂ  
ತಲಕಂ ಗುಹೀನಂ ಸಮಜಂ ತ್ರಸಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ತಲ್ಪ ತಲ್ಪ (ಪುನಂ) 1. ಶಯ್ಯ, ಹಾಸಿಗೆ. ತಲ್ಪತೇಽಸ್ಮಿನ್-  
ತಲ (ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಯಾಮ್) "ಪಃ" (೩ಂ ೩-೨೮)। ನಿಪಾಂ।  
"ಇತಿ ವಿರಚಿತವಾಗ್ನಿವೇಂದ್ರಿಪುತ್ರೈಃ ಕುಮಾರಃ ಸಪದಿ ವಿಗತ-  
ನಿद्रಸ್ತಲ್ಪಮುಜ್ಞಾಂಚಕಾರ" ರಘುಂ ೫-೭೫। 2. ಮಹಡಿ,  
ಮೇಲಿನ ಅಂತ್ಯಸ್ತು, ಉಪ್ಪುಲಿಗೆ. "ಯತ್ರಾತಪೇ ದಾತುಮಿವಾಚಿ-  
ತಲ್ಪಂ ವಿस्तಾರಯಾಮಾಸ ತರಙ್ಗಹಸ್ತೈಃ" ಮಾಘಂ ೩-೩೯।  
3. ಹೆಂಡತಿ, ಪತ್ನಿ. "ಗುರುತಲ್ಪವ್ರತಂ ಕುರ್ಯಾದ್ರಿತಃ ಸಿಕ್ತವಾ  
ಸ್ವಯೋನಿಷು। ಸಖ್ಯುಃ ಪುತ್ರಸ್ಯ ಚ ಸ್ತ್ರೀಷು ಕುಮಾರೀಭವಂತ್ಯಜಾಸು  
ಚ" ಮನುಂ ೧೧-೧೭೦। "ತಲ್ಪಮಡ್ಲೇ ಕಲತ್ರೇ ಚ ಶಯನೀಯೇ  
ಚ ನ ದ್ವಯೋಃ" ಮೇದಿಂ।

ತಲ್ಪಕ ತಲ್ಪಕ (ಪುಂ) ಹಾಸಿಗೆಯನ್ನು ಹಾಸಿ ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವ  
ಸೇವಕ.

ತಲ್ಪಕೀಡ ತಲ್ಪಕೀಟಿ (ಪುಂ) ಹಾಸಿಗೆಯ ಹುಳ, ತಿಗಣೆ.  
ತಲ್ಪೇ ಜಾತಃ ಕೀಡಃ।

ತಲ್ಪನ ತಲ್ಪನ (ನಂ) 1. ಅನೆಯ ಬೆನ್ನು. 2. ಅನೆಯ  
ಬೆನ್ನಿನ ಮೂಂಸಖಂಡ.

ತಲ್ಪಲ ತಲ್ಪಲ (ನಂ) ಅನೆಯ ಬೆನ್ನಿನ ಎಲುಬು. ತಲ್ಪಂ  
ತದಾಕಾರಂ ಲಾತಿ - ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)।  
"ಸಾಂದ್ರತವಕಾಸ್ತಲ್ಪಲಾಃ ಶಿಲಿಷ್ಠಕಕ್ಷಾಃ ಆಜ್ಞೀಂ ಶೋಭಾಮಾನ್-  
ವಂತಶ್ಚತುರ್ಥಿಮ್" ಮಾಘಂ ೧೮-೬।



ತಲ್ಲ ತಲ್ಲ (ಪುಂ) 1. ಜಲಾಶಯ, ಕೆರೆ. "ತಲ್ಲಸ್ತು ಜಲಾ-  
ಧಾರಾಂತರೇ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ. (ನಂ) 2. ಬಿಲ. 3. ಅಲ  
ವಾಲ, ಗಿಡದ ಪಾತಿ.

ತಲ್ಲಜ ತಲ್ಲಜ (ವಿಂ) ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ.  
ಸಮಾಸದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಜಾತಿವಾಚಕ ಶಬ್ದದೊಡನೆ ಇದರ  
ಪ್ರಯೋಗ. ಗೋತಲ್ಲಜ: | ಇಲ್ಲಿ ಗೋ ಶಬ್ದವು ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗ  
ವಾದರೂ ತಲ್ಲಜ ಶಬ್ದವು ನಿಯತ ಲಿಂಗವಾದುದರಿಂದ  
ಪುಲ್ಲಿಂಗದಲ್ಲಿ ನಿರ್ದೇಶವಿರುವುದು.

ತಲ್ಲಿಕಾ ತಲ್ಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೀಗದಕ್ಕಿ. ತಸ್ಮಿನ್ ಲೀಯತೇ -  
ಲಿಡ್ (ಶ್ಲೇಷಣೆ) "ಡ:" | ಸಂಜ್ಞಾಂ "ಕನ್" |

ತಲ್ಲೀ ತಲ್ಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತರುಣಿ, ಯುವತಿ. "ತಲ್ಲೀ  
ತರ್ಣ್ಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ. |

ತವಕ್ಷೀರ ತವಕ್ಷೀರ (ನಂ) ತವಕ್ಷೀರವೆಂಬ ಒಂದು  
ಔಷಧ.

ತವರ್ಗ ತವರ್ಗ (ಪುಂ) ತ ಥ ದ ಧ ನ ಎಂಬ ಅಕ್ಷರಗಳ  
ಗುಂಪು. ಈ ಎಲ್ಲಾ ಅಕ್ಷರಗಳೂ ಒಂದೇ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟು  
ವುದರಿಂದ ಒಂದೇ ಗುಂಪಿಗೆ ಸೇರಿರುವು. "ಲಠುಲಸಾನಾಂ  
ದಂತಾ:" ಸಿಂ ಕೌಂ |

ತವರ್ಗೀಯ ತವರ್ಗೀಯ (ವಿಂ) ತವರ್ಗಸಂಬಂಧವಾದ  
(ಅಕ್ಷರ).

ತವಿಪುಲಾ ತವಿಪುಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರೋಕ್ತವಾದ  
ವಿಪುಲಾವೃತ್ತದ ಒಂದು ಭೇದ. ನಾಲ್ಕು ಪಾದಗಳಲ್ಲಿಯೂ  
ಮೊದಲನೆಯ ನಾಲ್ಕು ವರ್ಣಗಳ ಸುತರ ತ ಗಣವಿದ್ದಲ್ಲಿ  
"ತವಿಪುಲಾ" ವೃತ್ತವಾಗುವುದು. "ತೋಷ್ಠೇಸ್ತತ್ಪೂರ್ವಾನ್ಯಾ  
ಭವೇತ್" ವುಂ ರಂ |

ತವಿಷ ತವಿಷ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. 2. ಸ್ವರ್ಗ.  
ತವ (ಸೌತ್ರೋ ಧಾತು:) "ಡಿಷ್" (ತಂ ೧-೪೮) | (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಷೀ-೫೬. 3. ನದಿ, ಹೊಳೆ. 4. ದೇವಕನ್ಯೆ. 5. ಭೂಮಿ.  
ಸಿಂ ಕೌಂ |

ತವಿಷ್ಠ ತವಿಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಕೆತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ ಸಿಲುವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
ತಕ್ಷ (ತನುಕರಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಸೀಳಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಎರಡಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ತವಿಷ್ಠ ತವಿಷ್ಠ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆತ್ತುವುದು, ಬಾಚಿಯಿಂದ ಕೆತ್ತಿ ಮರ  
ವನ್ನು ಸಿಲುವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ತಕ್ಷ (ತನುಕರಣ)  
"ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) |

ತವಿಷ್ಠ ತವಿಷ್ಠ (ಪುಂ) 1. ಬಡಗಿ, ಮರಗೆಲಸದವನು. ತಕ್ಷ  
(ತನುಕರಣ) "ತೃ" (೩-೧-೧೩೩) | 2. ವಿಶ್ವಕರ್ಮ,  
ದೇವಶಿಲ್ಪಿ. 3. ದ್ವಾದಶಾದಿತ್ಯರಲ್ಲೊಬ್ಬ.

ತಸಿ - ಅಲಕ್ಷ್ಮೀ (ವಾ ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ತಸ್ಯತಿ,  
-ತೇ | ತಸತಿ | ತತಸ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ತಸು - ಉಪಕ್ಷಯ (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ತಸ್ಯತಿ |  
ತತಾಸ | ತಸಿತಾ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ತಸ್ಕರ ತಸ್ಕರ (ಪುಂ) 1. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ. ತತ್ ಕರೋತಿ-ಡು  
ಕು (ಕರಣ) "ಅಚ್" (ವಾಂ ೩-೨-೨೧) | ಸುಡಾಗಮ:  
ತಲೋಪಶ್ಚ (ಗಂ ೬-೧-೧೪೭) | "ಮಾ ಸಚ್ಚರ ಮನ:ಪಾನ್ಯ  
ತವಾಸ್ತೇ ಸ್ಮರತಸ್ಕರ:" ಭರ್ತುಂ ೨-೪೪ | 2. ಸ್ವಲ್ಪಾ  
ಎಂಬ ಗಂಧದ್ರವ್ಯ. 3. ಮದನವೃಕ್ಷ, ಮುಂಗಾರಿ ಗಿಡ.

ತಸ್ಕರತಾ ತಸ್ಕರತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚೌರ್ಯ, ಕಳ್ಳತನ. ತಸ್ಕರಸ್ಯ  
ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) | "ನ ಕಿಲಾನುಯಯುಸ್ತಸ್ಯ  
ರಾಜಾನೋ ರಕ್ಷಿತುರ್ಯಶ: | ವ್ಯಾವೃತ್ತಾ ಯತ್ಪರಸ್ವೇಮ್ಯೋ ಶ್ರುತೌ  
ತಸ್ಕರತಾ ಯಥಾ" ರಘುಂ ೧-೨೭ | "ತ್ವ:" (೪-೧-೧೧೯) |  
ತಸ್ಕರತ್ವಮ್ ತಸ್ಕರತ್ವಮ್.

ತಸ್ಕರಸ್ನಾಯು ತಸ್ಕರಸ್ನಾಯು (ಪುಂ) ಕಾಗೆತೊಂಡೆ ಗಿಡ.

ತಸ್ಥಿವಸ್ ತಸ್ಥಿವಸ್ (ವಿಂ) ಇರುವ, ನಿಂತಿರುವ. ಷಾ  
(ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ವಸು:" (೩-೨-೧೦೭) | "ತಂ ತಸ್ಥಿ-  
ವಾಸಂ ನಗರೋಪಕಂಠೇ ತದಾಗಮಾರುಢಗುರಪ್ರಹರ್ಷ:" ರಘುಂ ೪-೬೧ |

ತಸ್ಥು ತಸ್ಥು (ವಿಂ) ಸ್ಥಿರವಾದ, ನಿಶ್ಚಲವಾದ. ಷಾ  
(ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ್ತು:" ಬಾಹುಂ ದ್ವಿತ್ವಂ ಚ | "ದೇಹಸ್ತು  
ಸರ್ವಸಂಭಾತೋ ಜಗತ್ ತಸ್ಥುರೀತಿ ದ್ವಿಧಾ" ಭಾಗಂ ೭-೭-೨೩ |

ತಾಕ್ಷಣ್ಯ ತಾಕ್ಷಣ್ಯ (ಪುಂ) ಬಡಗಿಯ ಮಗ, ಮರಗೆಲಸ  
ದವನ ಮಗ. ತಕ್ಷಣೋಪತ್ಯಮ್ "ಣ್ಯ:" (೪-೧-೧೪೨) |

ತಾಕ್ಷಣ ತಾಕ್ಷಣ್ಯ (ಪುಂ) ಬಡಗಿಯ ಮಗ, ಮರಗೆಲಸದವನ  
ಮಗ. ತಕ್ಷಣೋಪತ್ಯಮ್ "ಅಣ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೪೩) |  
ಅನೋಲ್ಲೋಪ: (೬-೪-೧೩೪) |

ತಾಕ್ಷಣೀಲಿಕ ತಾಕ್ಷಣೀಲಿಕ (ಪುಂ) ತಾಕ್ಷಣೀಲಿಕದಲ್ಲಿ ವಿಹಿತ  
ವಾದ ಪ್ರತ್ಯಯ. ತಕ್ಷಣೀಲ "ತಕ್" |

ತಾಕ್ಷಣೀಲ್ಯ ತಾಕ್ಷಣೀಲ್ಯ (ನಂ) 1. ಅವನ ಸ್ವಭಾವ.  
2. ಆ ಸ್ವಭಾವ. ತಕ್ಷಣೀಲಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಣ್" (೪-೧-೧೨೪) |

ತಾಡಕಾ ತಾಟಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಾಟಕಾಸುರಿ, ಸುಕೇತುವೆಂಬ  
ಯಕ್ಷನ ಮಗಳು, ಮಾರೀಚನ ತಾಯಿ, ಸುಂದನ ಪತ್ನಿ.  
[ಯಕ್ಷರಾಜನ ಮಗಳಾದ ತಾಟಕೆಯು ಮಾರೀಚ ಮತ್ತು  
ಸುಬಾಹುಗಳೆಂಬ ಮಕ್ಕಳೊಡನೆ ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡು  
ತ್ತಿದ್ದಳು. ಒಮ್ಮೆ ಇವಳು ಕಾಮಪೀಡಿತಳಾಗಿ ಮನೋ  
ಹರವಾಗಿ ಹಾಡುತ್ತಾ ಸುಚರಿಸುತ್ತಿದ್ದುದನ್ನು ಕಂಡ  
ಅಗಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿಯು "ನೀನು ಕಾಮುಕರಿಗೆ ಭಯಂಕರ



ವಾದ ರೂಪವನ್ನು ತಾಳು, ನಿನ್ನ ಮಕ್ಕಳಿಬ್ಬರೂ ರಾಕ್ಷಸ ರಾಗಲಿ" ಎಂದು ಇವಳನ್ನು ಶಪಿಸಿದರು. ಅಂದಿನಿಂದ ಇವಳು ಅಲ್ಲಿದ್ದ ಯುಷಿಗಳನ್ನೂ ಆ ದೇಶದ ಜನರನ್ನೂ ಪೀಡಿಸುತ್ತಾ ಯಜ್ಞಯಾಗಾದಿಗಳಿಗೆ ವಿಘ್ನವುಂಟುಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಳು. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಮಹರ್ಷಿಯು ಶ್ರೀರಾಮ ಲಕ್ಷ್ಮಣರನ್ನು ಸಿದ್ಧಾಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಕರೆದುಕೊಂಡು ಬರುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಈ ವೃತ್ತಾಂತವನ್ನು ಅವರಿಗೆ ತಿಳಿಸಿ ಶ್ರೀರಾಮನಿಂದ ತಾಟಕೆಯನ್ನು ಕೊಲ್ಲಿಸಿದನು.]

**ತಾಡಕಾರಿ ತಾಟಕಾರಿ (ಪುಂ) ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರ.** ತಾಡಕಾಞ್ ಅರಿ: |

**ತಾಡಕೇಯ ತಾಟಕೇಯ (ಪುಂ) ತಾಟಕೇಯ ಮಗ—**  
1. ಸುಬಾಹು. 2. ಮಾರಿಚ. ತಾಡಕಾಞ್ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಡಕ್" (೪-೧-೧೨೦). "ಮಾರಿಚ: ಸುಂದಪುತ್ರಶ್ಚ ತಾಡಕಾಞ್ ಅಪತ್ಯಮ್" ಹರಿವಂ. "ತನುತರವಿಶಿಷ್ಟವಿತಾಡನವಿಘಟಿತ-ವಿಶರಾಞ್ ಸಾರಾತಾಡಕಾತಾಡಕೇಯ" ರಘುಂ ಗಂ. |

**ತಾಡಕು ತಾಟಕಂ (ಪುಂ) 1.** ಒಲೆ, ಕರ್ಣಾಭರಣ. ತಾಡಕೇ—ತಡ (ಆಘಾತೇ) "ಘ" (೩-೩-೧೯). ತಾಡಕು: ಚಿಹ್ನೆ ಯಸ್ಯ. | ಶಕಂ. "ತಾಡಕು ತರಲಮಣಿಪ್ರಭಾತರಜ್ಞೇ ತನ್ವಜ್ಞಾ ಮುಖಮಭಿತಸ್ತದಾ ವ್ಯಭಾತಾಮ್" ಚಂ ಭಾಂ ೨. | 2. ಲೋಲಾಕು.

**ತಾಡಸ್ಥ ತಾಟಸ್ಥ (ನಂ) 1.** ಉದಾಸೀನತೆ, ಉಪೇಕ್ಷೆ. ತಡಸ್ಥಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಽ" (೪-೧-೧೨೪). 2. ಸಾಮಾನ್ಯ, ಹತ್ತಿರ.

**ತಾಡ ತಾಡ (ಪುಂ) 1.** ಏಟು, ಹೊಡೆತ. ತಡ (ಆಘಾತೇ) + ಣಿಕ್ "ಅ" (೩-೩-೪೬). 2. ಕೂಡುವುದು, ಸೇರಿಸುವುದು. 3. ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ. ತಡ ಕರ್ಮಂ "ಘ" (೩-೩-೧೯). 4. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. 5. ಒಂದು ಹಿಡಿಯಲ್ಲಿ ಹಿಡಿಯಬಹುದಾದ ಹುಲ್ಲು ಮೊದಲಾದುದು. "ತಾಡೋದ್ರಿ ತಾಡನೇ ಘೋ ಮುಠಿಮೇಯತೃಣಾದಿಷು" ಹೇಮಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಙೀ-೩೯. 6. ತಾಳವೃಕ್ಷ, ಪನೆಮರ. "ತಾಡ-ಸ್ತಾಡನಘೋಷಯೋ: | ಮುಠಿಮೇಯತೃಣಾದೌ ಚ ತಾಡೀ ತಾಲೀದಲದ್ರುಮೇ" ವಿಶ್ವಂ. |

**ತಾಡಕ ತಾಡಕ (ವಿಂ) ಹೊಡೆಯುವವನು.** ತಾಡಯತಿ-ತಡ (ಆಘಾತೇ) + ಣಿಕ್ "ಫ್ಲು" (೩-೧-೧೩೩). |

**ತಾಡಕ ತಾಡಕ (ಪುಂ) 1.** ತಾಳವನ್ನು ಹೊಡೆಯುವವನು. 2. ಜಟ್ಟಿ, ಮಲ್ಲ. ತಾಲಂ ಹಂತಿ ತಾಡನ ತಾಡನೇ ಹಂತಿ ವಾ-ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:) "ಡಕ್" (೩-೨-೪೪). | ಟಿಲೋಪ: ಧ್ವಂ ಚ ನಿಪಾತ್ಯತೇ. |

**ತಾಡಕ ತಾಡಕ (ವಿಂ) ಹೊಡೆಯುವವನು, ಏಟು ಕೊಡುವವನು.** ತಾಡನ ಹಂತಿ-ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:) "ಅ" ಬಾಹುಂ. |

**ತಾಡನ ತಾಡನ (ನಂ) 1.** ಏಟು, ಹೊಡೆತ. ತಡ (ಆಘಾತೇ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪). "ಲಾಲನೇ ಬಹವೋ ದೋಷಸ್ತಾಡನೇ ಬಹವೋ ಗುಣಾ:" ಚಾಣಕ್ಯ: | 2. ಸ್ಪರ್ಶ. (ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರ) ಭಾಗಶಃ ಗ್ರಹಣ. "ತಾಡನೇ ಭಯಮುಶಂತಿ ದಾರುಣಂ ಛಾದನೇ ನೃಪವಧೋಽಜ್ಞನಾಕೃತ:" ಬೃಹತ್ಸಂ. | 3. ದೀಕ್ಷೆಯ ಅಂಗವಾದ ಒಂದು ಮಂತ್ರಸಂಸ್ಕಾರ. "ಮನ್ತ್ರವರ್ಣಾನ್ ಸಮಾಲಿಖ್ಯ ತಾಡಯೇಚ್ಚಂದನಾಮಭಸಾ | ಪ್ರತ್ಯೇಕಂ ವಾಯುನಾ ಮನ್ತ್ರೋ ತಾಡನಂ ತದುದಾಹೃತಮ್" | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನೀ-೩೯. 4. ಕುದುರೆ ಎತ್ತು ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಹೊಡೆಯುವ ಚಾವಟಿ. ತಾಡಯತೇನಯಾ-ತಡ (ಆಘಾತೇ) + ಣಿಕ್ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭). "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೪). | (ವಿಂ) 5. ಹೊಡೆಯುವ. "ಗಿರೋ ವ: ಸಾಧುಶೋಚ್ಯಾನಾಂ ಗೃಹ್ಣೀಮೋ ಮಮತಾಡನಾ:" ಭಾಗಂ ೮-೧೧-೯. |

**ತಾಡನೀಯ ತಾಡನೀಯ (ವಿಂ) 1.** ಹೊಡೆಯಲ್ಪಡುವ. 2. ಹೊಡೆಯಬೇಕಾದ. 3. ಹೊಡೆಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ತಡ (ಆಘಾತೇ) + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). | "ತವ್ಯ:" ತಾಡಯಿತವ್ಯ: ತಾಡಯಿತವ್ಯ:.

**ತಾಡಪತ್ರ ತಾಡಪತ್ರ (ನಂ) ಒಲೆ, ಕರ್ಣಾಭರಣ, ಹೆಂಗಸರ ಕಿವಿಯ ಒಡವೆ.** ತಾಲಸ್ಯ ಪತ್ರಮಿವ. | ಲಸ್ಯ ಡ: |

**ತಾಡಯತ್ ತಾಡಯತ್ (ವಿಂ) ಹೊಡೆಯುತ್ತಿರುವ.** ತಡ (ಆಘಾತೇ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). | -ಯಂತಿ-ಯಂಕೇ.

**ತಾಡಯಿತ್ ತಾಡಯಿತ್ (ವಿಂ) ಏಟುಕೊಡುವ, ಹೊಡೆಯುವ.** ತಡ (ಆಘಾತೇ) + ಣಿಕ್ "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩). | "ಮೃತಾಙ್ಗಲಗ್ನವಿಕ್ರೇತುಗುರೋಸ್ತಾಡಯಿತುಸ್ತಥಾ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೩೦ ೩. | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪). | -ಯಿತ್ರಿ-ಯಿತ್ರಿ.

**ತಾಡಾಗ ತಾಡಾಗ (ವಿಂ) ತಡಾಗಸಂಬಂಧವಾದ, ಕಿರಿಯಲ್ಲಿರುವ.** ತಡಾಗಸ್ಯೇದಮ್ "ಅ" (೪-೩-೧೨೦). | "ಹೇಮಂತೇ ಸಾರಸಂ ತಾಡಾಗಂ ವಾ ಸೇವೇತ" | "ತಾಡಾಗಂ ವಾತುಲಂ ಸ್ವಾಡು ಕಠಾಞ್ ಕಡುಪಾಕಿ ಚ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೪-೮, ೩೧. |

**ತಾಡಿ ತಾಡಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪನೆಮರ, ತಾಳವೃಕ್ಷ.**

**ತಾಡಕ ತಾಡಕ (ವಿಂ) 1.** ಹೊಡೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ತಡ (ಆಘಾತೇ) + ಣಿಕ್ ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪). | 2. ಬಾರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. "ಅಪ್ಯನ್ಯಪುಷ್ಪಾ ಪ್ರತಿಕೂಲಶಬ್ದಾ ಶ್ರುತುರ್ವಿತನ್ವೀರಿವ ತಾಡಕಮಾನಾ" ಕುಮಾರಂ ೧-೪೪. |



ತಾಂಡ ತಾಂಡ (ನಂ) ನೃತ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ.

ತಾಂಡವ ತಾಂಡವ (ನಂ) 1. ನೃತ್ಯ, ಭರತನಾಟ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಕುಣಿತ. ತಾಂಡುನಾ ಪ್ರೋಕ್ತಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೦೧)। 2. ಈಶ್ವರನ ಉಗ್ರವಾದ ನರ್ತನ. ಪುರುಷರ ನೃತ್ಯವು ತಾಂಡವವೆನಿಸುವುದು. ಸ್ತ್ರೀಯರ ನೃತ್ಯಕ್ಕೆ ಲಾಸ್ಯವೆಂದು ಹೆಸರು. ನೃತ್ಯವು ಈ ರೀತಿ ಎರಡು ವಿಧ. "ಗಂಧೋಡ್ವಿನಾಲಿಮಾಲಾಮುಖರೀತಕುಮಸ್ತಾಂಡವೇ ಶೂಲ-ಪಾಣಿ:" ಮಾಲತೀಂ ೧-೨। 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹುಲ್ಲು. "ತಾಂಡವೋಽಸ್ಮಿ ತೃಣಾಂತರೇ। ಭವೇದುದತ್ತನೃತ್ಯೇ ಚ" ಮೇದಿಂ।

ತಾಂಡವತಾಲಿಕ ತಾಂಡವತಾಲಿಕ (ಪುಂ) ನಂದೀಶ್ವರ.

ತಾಂಡವಪ್ರಿಯ ತಾಂಡವಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ತಾಂಡವಂ ಪ್ರಿಯಮಸ್ಯ। (ವಿಂ) 2. ನೃತ್ಯವೇ ಪ್ರಿಯವಾಗಿ ಉಳ್ಳವನು, ಕುಣಿತದಲ್ಲಿ ಇಷ್ಟವುಳ್ಳವನು.

ತಾಂಡವಿಕಾ ತಾಂಡವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೃತ್ಯವನ್ನು ಕಲಿಸುವ ಹೆಂಗಸು.

ತಾಂಡವಿತ ತಾಂಡವಿತ (ವಿಂ) ಕುಣಿಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ತಾಂಡವ+ ತತ್ಕರೋತಿ "ಣಿವ್" ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

"ದ್ವಾರೋಪಾಂತನಿಖಾತಾತಿಪ್ರಾಂಶುಶಂಕಾತಾಂಡವಿತಧೌತಸಿತ-ಸೂಕ್ಸಮಾಂಬರಸಹಸ್ರಮ್" ಪ್ರಬೋಧಂ ೨।

ತಾಂಡವ ತಾಂಡವ (ಪುಂ) ತಂಡಮುನಿಯ ಮಗ. ತಾಂಡವಾ-ಪತ್ಯಮ್ "ಯಜ್" (೪-೧-೧೦೫)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೧೬)। ಯಲೋಪ:। ತಾಂಡಿ ತಾಂಡೀ.

ತಾಂಡವಬ್ರಾಹ್ಮಣ ತಾಂಡವಬ್ರಾಹ್ಮಣ (ನಂ) ಸಾಮವೇದದ ಒಂದು ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಸಾಮವೇದದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಗಳಲ್ಲಿ ಇದು ಮುಖ್ಯವಾದುದು. ಇದರಲ್ಲಿ ಇಪ್ಪತ್ತೈದು ಅಧ್ಯಾಯ ಗಳಿರುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಪಂಚವಿಂಶಬ್ರಾಹ್ಮಣವೆಂದು ಹೆಸರು. ಯಜ್ಞಾಸುಷಾ ನ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಉದ್ಗಾತೃವಿನ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ವಿವರವಾಗಿ ಈ ಬ್ರಾಹ್ಮಣವು ತಿಳಿಸುತ್ತದೆ. ಒಂದು ದಿನದ ಯಾಗ ಮೊದಲುಗೊಂಡು ಒಂದು ಸಾವಿರ ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ನಡೆಯಬಹುದಾದ ಯಾಗಗಳ ಸ್ವರೂಪಗಳು ಈ ಬ್ರಾಹ್ಮಣದಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಪಾದಿತವಾಗಿವೆ.

ತಾತ ತಾತ (ಪುಂ) 1. ತಂದೆ, ಜನಕ. ತನೋತಿ—ತನು (ವಿಸ್ತಾರೆ) "ಕ್ತ:" ದೀರ್ಘಶ್ಚ (೩ಂ ೩-೧೦)। "ರಾಜಾ-ರಾಘನಂ ಖಲು ತಾತಸ್ಯ ಗುಣಂ ನ ಪುನರ್ಮಾಲತೀ" ಮಾಲತೀಂ ೨। 2. ಪೂಜ್ಯ, ಗೌರವಾರ್ಹ. (ಹಿರಿಯರಲ್ಲಿ ಈ ಪ್ರಯೋಗ) "ತಸ್ಮಾನ್ಮುಚ್ಯೇ ಯಥಾ ತಾತ ಸಂವಿಧಾತು ತ್ವಮಹಸಿ" ರಘುಂ ೧-೭೨। 3. ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಅಥವಾ ದಯೆಯಿಂದ ಕಿರಿಯ ರಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ಪದ. "ತದಿಹ ಸುವದಾನಾಂ

ತಾತ ಮತ್ತ: ಪರಸ್ಮಾತ್ಪರಿಚಯಕರಣಾಃ ಸರ್ವಥಾ ಮಾ ವಿರಂಸಿ:" ಮಾಲತೀಂ ೬-೧೬। 4. ದಯೆ, ಕರುಣೆ. "ತಾತೋ ದಯಾಂ ಪಿತರಿ" ನಾನಾರ್ಥರಂ।

ತಾತಗು ತಾತಗು (ಪುಂ) 1. ಪಿತೃವ್ಯ, ಚಿಕ್ಕಪ್ಪ, ತಂದೆಯ ಕಿರಿಯ ಸಹೋದರ. ತಾತಸ್ಯೇವ ಗೌರ್ವಾಚಿಕಶಬ್ದೋ ಯಸ್ಯ। (ವಿಂ) 2. ತಂದೆಗೆ ಹಿತವಾದ, ತಂದೆಗೆ ಸಮ್ಮತವಾದ. "ತಾತಗು: ಕ್ಷುಧ್ರತಾತೇ ನಾ ಜನಕಸ್ಯ ಹಿತೇ ತ್ರಿಪು" ಮೇದಿಂ।

ತಾತನ ತಾತನ (ಪುಂ) ಕಾಡಿಗೆ ಸೊಗಸಿನ ಹಕ್ಕಿ, ಕೆಂಬೂತದ ಹಕ್ಕಿ, ದಾಸರಿ ಹಕ್ಕಿ. "ಕಾಕಣ್ಣದಿ: ಸ್ವಜ್ಜಲೇಖಸ್ತಾತನೋ ಮುನಿಪುತ್ರಕ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೩೩)। ತಾತನಿ ತಾತನೀ.

ತಾತಲ ತಾತಲ (ಪುಂ) 1. ಸುತ್ತಿಗೆ, ಚಮ್ಮಟಿಗೆ. ತಾಪಂ ಲಾತಿ—ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। ಪೃಷಂ। 2. ಪಾಕ, ಅಡಿಗೆ ಮಾಡುವುದು. 3. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. 4. ಬಿಸಿ, ಶಾಖ. 5. ಮನೋವೇಗ. "ತಾತಲೋ ಹಜಿ ಪಾಕೇ ಚ ಲೋಹಕೂಡೆ ಮನೋಜವೇ" ಮೇದಿಂ। 6. ಕಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಬಿಸಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ತಾತಲೋ ಲೋಹಕೂಡೆ ನಾ ತ್ರಿಪು ತಪ್ತೇ ಮನೋಜವೇ" ವೈಜಂ।

ತಾತ್ಕಾಲಿಕ ತಾತ್ಕಾಲಿಕ (ವಿಂ) ತತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿರುವ, ಆ ಸಮಯದಲ್ಲಿರುವ, ಆ ಕಾಲಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ತಸ್ಮಿನ್ ಕಾಲೇ ಭವ: "ಠ್" "ವಿಠ:" ವಾ (೪-೨-೧೧೬)। "ಖರೋಽಪ್ರಾಪ್ತಾನ್ಹಸ್ತಶ್ಚನೌವೃಕ್ಷೇರಿಣಿರೋಹಣೇ। ಸತ್ತತ್ತ್ವಿಶದನ-ಧ್ಯಾಯಾನೇತಾಸ್ತಾತ್ಕಾಲಿಕಾನ್ವಿದು:" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೧೫೧। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಠವಿ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। ತಾತ್ಕಾಲಿಕೀ ತಾತ್ಕಾಲಿಕೀ. ವಿಠಿ "ಠಾಪ್" (೪-೧-೪)। ತಾತ್ಕಾಲಿಕಾ ತಾತ್ಕಾಲಿಕಾ.

ತಾತ್ವಿಕ ತಾತ್ವಿಕ (ವಿಂ) ನಿಜವಾದ, ಸತ್ಯವಾದ, ಯಥಾರ್ಥವಾದ. ತತ್ವೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠ್" (೫-೧-೭೯)।

ತಾತ್ಪರ್ಯ ತಾತ್ಪರ್ಯ (ನಂ) 1. ಅಭಿಪ್ರಾಯ, ಆಶಯ. ತತ್ಪರಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಪ್ಯಜ್" (೫-೧-೧೨೪)। 2. ಹೇಳುವವನ ಇಚ್ಛೆ, ಮಾತನಾಡುವವನ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. "ಯತ್ಪದೇನ ವಿನಾ ಯಸ್ಯಾನನುಭಾವಕತಾ ಭವೇತ್। ಆಕಾಡ್ಕ್ಷಾ, ವಕ್ತುರಿಚ್ಛಾ ತು ತಾತ್ಪರ್ಯಂ ಪರಿಕೀರ್ತಿಸತಮ್" ಭಾಷಾಪಂ ೮೪। ಭೋಜನ ಸಮಯದಲ್ಲಿ "ಸೇವ್ಯಮಾನಯ" ಎಂದು ಹೇಳುವವನಿಗೆ ಲವಣದಲ್ಲಿ ಇಚ್ಛೆಯೆಂದೂ ಪ್ರಯಾಣಸಮಯದಲ್ಲಿ ಈ ವಾಕ್ಯವನ್ನು ಹೇಳುವವನಿಗೆ ಕುದುರೆಯಲ್ಲಿ ತಾತ್ಪರ್ಯ ವೆಂದೂ ತಿಳಿಯಬೇಕು. 3. ಉದ್ದೇಶ, ಗುರಿ, ಮನೋಗತ.

ತಾದರ್ಥ ತಾದರ್ಥ (ನಂ) 1. ಅದೇ ಉದ್ದೇಶವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಅದೇ ಗುರಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ. ತಸ್ಮೈ ಇದಮ್ ತದರ್ಥಮ್, ತದರ್ಥ



“ಛ್ಯನ್” (೪-೧-೧೨೪) 1. ಅದೇ ಅರ್ಥವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಸಮಾನವಾದ ಅರ್ಥವಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ಅದೇ ಪ್ರಯೋಜನವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಸ ಏವಾರ್ಥ: ಪ್ರಯೋಜನಸ್ಯ ತತ್ವಮ್ |

**ತಾದವಸ್ಥ್ಯ ತಾದವಸ್ಥ್ಯ** (ನಂ) ಅದೇ ಅವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿರುವಿಕೆ, ಅದೇ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರುವಿಕೆ. ಸಾ ಅವಸ್ಥಾ ಯಸ್ಯ ಸ: ತದವಸ್ಥ: — ತದವಸ್ಥಸ್ಯ ಭಾವ: “ಛ್ಯನ್” (೪-೧-೧೨೪) | “ಪದಾಂತರಾಣಾಂ ಪರಿವರ್ತನೇಽಪಿ ತಸ್ಯ ತಾದವಸ್ಥ್ಯಾದೇವ ಇತಿ ಪದದೋಷ ಏವ” ಸಾಂ ೬೦ ೭ |

**ತಾದಾತ್ಮ್ಯ ತಾದಾತ್ಮ್ಯ** (ನಂ) 1. ಅರ್ಥದ. ಅದೇ ಆಗಿರುವಿಕೆ. ಸ: ಆತ್ಮಾ ಯಸ್ಯ ತದಾತ್ಮಾ—ತದಾತ್ಮನೋ ಭಾವ: “ಛ್ಯನ್” (೪-೧-೧೨೪) | “ಅನ್ಯಧರ್ಮಸಂಬಂಧನಿಮಿತ್ತೇನ ಅನ್ಯಸ್ಯ ಅನ್ಯತಾದಾತ್ಮ್ಯಸಂಭಾವನಮುಪೇಕ್ಷಾ” ಕುವಂ | 2. ಅದೇ ಸ್ವಭಾವ, ಅದೇ ಶೀಲ.

**ತಾದೃಶ ತಾದೃಶ್ಯ** (ವಿಂ) ಅದರಂತೆ ಕಾಣುವ, ಅದರಂತೆ ರುವ, ಆ ವಿಧವಾಗಿರುವ. ತದಿವ ದೃಶ್ಯತೆ — ತದ್ + ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) “ವಸ:” (ವಾಂ ೩-೨-೪೭) | ಆಕಾರ: (೬-೩-೯೧) |

**ತಾದೃಶ್ ತಾದೃಶ್** (ವಿಂ) ಆ ತೆರನಾದ, ಆ ವಿಧವಾದ, ಅಂತಹ. ಸ ಇವ ಪಶ್ಯತಿ — ತದ್ + ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) “ಕಿವನ್” (೩-೨-೬೦) | “ತಾದೃಗುಣಾ ಸಾ ಭವತಿ ಸಮುದ್ರೇವ ನಿಮ್ನಗಾ” ಮನುಂ ೯-೨೨ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಜಿಪ್” (೪-೧-೪) | ತಾದೃಶಿ ತಾದೃಶೀ. “ತಾದೃಶಿ ತದ್ವಿಶಿಷ್ಟಾ ವಾ ಬುದ್ಧಿ ರಕ್ಷೇಗೃಹೇಷು ಚ” ರಾಮಾಂ |

**ತಾದೃಶ ತಾದೃಶ್ಯ** (ವಿಂ) ಆ ತೆರನಾದ, ಆ ವಿಧವಾದ, ಅಂತಹ. ಸ ಇವ ಪಶ್ಯತಿ — ತದ್ + ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) “ಕನ್” (೩-೨-೬೦) | “ಅವಾಪ್ಯತೇ ವಾ ಕಥಮನ್ಯಯಾ ದ್ವಯಂ ತಥಾವಿಧಂ ಪ್ರೇಮ ಪತಿಶ್ಚ ತಾದೃಶ:” ಕುಮಾಂ ೪-೨ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಜಿಪ್” (೪-೧-೪) | ತಾದೃಶಿ ತಾದೃಶೀ. “ತಾದೃಶಿ ಭಾವನಾ ಯತ್ರ ಸಿದ್ಧಿರ್ಭವತಿ ತಾದೃಶಿ” |

**ತಾದ್ವ್ಯ ತಾದ್ವ್ಯ** (ನಂ) ಅದರ ರೂಪದಂತಿರುವ ರೂಪ, ಸಮಾನ ಧರ್ಮ. ತಸ್ಯ ರೂಪಮಿವ ರೂಪಂ ಯಸ್ಯ ಸ: ತದ್ವ್ಯ: ತಸ್ಯ ಭಾವ: “ಛ್ಯನ್” (೪-೧-೧೨೪) | ಅದರ ಧರ್ಮದ ಆರೋಪವನ್ನು ಮಾಡಲು ಅದರ ರೂಪದ ಸಾಮ್ಯವು ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. ಅದರ ಧರ್ಮವನ್ನು ಇದರಲ್ಲಿ ಹೇಳುವುದು ಅದು ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಇದರಲ್ಲಿ ಹೇಳುವುದು ಕ್ಕಾಗಿ. “ವಕ್ತೃಂದೌ ತವ ಸತ್ಯಯಂ ಯದಪರ: ಶೀತಾಂಶುರಜ್ಜೃಂಭತೇ” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರನ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಿನ್ನ ಮುಖವೂ ಮಾಡುವುದು ಎಂದು ಹೇಳಲು ವಕ್ತೃದಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರನ

ಧರ್ಮವು ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. “ಅತ್ರಾಪರ: ಶೀತಾಂಶುರೀತೀನೇನ ವಕ್ತೃಂದೌ: ಪ್ರಸಿದ್ಧಚಂದ್ರಾದ್ವೇದಮಾವಿಷ್ಕೃತ್ಯ ತಸ್ಯ ಪ್ರಸಿದ್ಧ-ಚಂದ್ರಕಾರ್ಯಕಾರಿತ್ವಮಾತ್ರಪ್ರತಿಪಾದನೇನ ತಾದ್ವ್ಯರೂಪಕಮ್” ಕುವಂ |

**ತಾನ ತಾನ** (ಪುಂ) 1. ಸೊತ್ತ, ದಾರ, ನಾರು, ತಂತು, ಎಳೆ. ತನು (ವಿಸ್ತಾರೇ) “ಛನ್” (೩-೩-೧೨೧) | “ಮೂರ್ಗುಡ್ವಚಿ-ತಾನೇರ್ವಾ ಸೀವ್ಯೇದ್ವೇಲತಿಕಂ ಶನೇ:” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೨೪-೨೧ | 2. ಮೇಣುವಾದ್ಯದಿಂದ ನುಡಿಸಲ್ಪಡುವ ಅಂಶಸ್ವರ, ಗಾಯಕನ ಸ್ವರವನ್ನು ವಿಸ್ತಾರಗೊಳಿಸುವ ಒಂದು ಸ್ವರ. “ಗಾತಾ ಯಂ ಯಂ ಸ್ವರಂ ಗಚ್ಛತಂ ತಂ ವಂಶೇನ ತಾನಯೇತ್” | “ವಿಸ್ತಾರ್ಯಂತೇ ಪ್ರಯೋಗಾ ಯೇ ಮೂರ್ಚನಾ ಶೇಷಸಂಶ್ರಯಾ: | ತಾನಾಸ್ತೇಽಪ್ಯನಪಚಾಶತ್ ಸಪ್ತಸ್ವರಸಮುದ್ಭವಾ: | ತೇಭ್ಯ ಏವ ಭವಂತ್ಯನ್ಯೇ ಕೂಟತಾನಾ: ಪೃಥಕ್ ಪೃಥಕ್ | ತೇ ಸ್ಯು: ಪಂಚಸಹಸ್ರಾಣಿ ತ್ರಯಸ್ತ್ರಿ-ಶತ್ ಶತಾನಿ ಚ” ಸಂ ೬೦ | “ತಾನಸ್ತ್ವಂಶಸ್ವರೋ ಮತ:” ಅಭಿಂ ಗುಂ | “ಉದ್ಗಾಸ್ಯತಾಮಿಚ್ಛತಿ ಕಿನರಾಣಾಂ ತಾನ-ಪ್ರದಾಯಿತ್ವಮಿವೋಪಗಂತುಮ್” ಕುಮಾಂ ೧-೮ |

**ತಾನವ ತಾನವ** (ನಂ) ತೆಳುಪು, ಕೃತವಾಗಿರುವಿಕೆ. ತನೋರ್ಭಾವ: “ಅನ್” (೪-೧-೧೩೧) | “ಅಜ್ಞಾನಾಮತೀತಾನವಂ ಕುತ ಇದಂ ಕಸ್ಮಾದಕಸ್ಮಾದಿದಂ ಮುಖೇ ಪಾಣ್ಡುಕಪೋಲಮಾನನಮಿತಿ ಪ್ರಾಣೇಶ್ವರೇ ಪೃಚ್ಛತಿ” ಅಮರಂ ೪೦ |

**ತಾನೂರ ತಾನೂರ** (ಪುಂ) ನೀರಿನ ಸುಳಿ, ಅವರ್ತ. “ಅಯಾಂಭಸಾಂ ಭ್ರಮ: | ತಾನೂರೋ ವಾಯುಗುಲ್ಮಶ್ಚ ಕಣಲಾಭ: ಕಲಂಕುರ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ತಾನ್ತ ತಾನ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಸೊರಗಿರುವ, ಬಾಡೀಹೋಗಿರುವ. ತಮು (ಕಾಡ್ವಕ್ಷಾಯಾಮ್) “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨) | “ಮೃದುಲತಾನ್ತ-ಲತಾನ್ತಮಲೋಕಯತ್ಸ ಸುರಭಿ ಸುರಭಿ ಸುಮನೋಹರೇ:” ಮಾಘಂ ೬-೨ | 2. ಚಟುವಟಿಕೆಯಿಲ್ಲದ, ಆಯಾಸದಿಂದ ಬಲಹೀನವಾದ. “ರತಿರಭಸವಿಲಾಸಾಭ್ಯಾಸತಾನ್ತಂ ನ ಯಾವನ್ನಯನ-ಯುಗಮಮೀಲತಾವದೇವಾಹತೋಽಸೌ” ಮಾಘಂ ೧೧-೨ | 3. ದಣಿ ದಿರುವ, ಆಯಾಸಗೊಂಡ.

**ತಾನ್ತವ ತಾನ್ತವ** (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ತು, ಮಗ. “ರೇ ಶಮ್ಭು-ತಾನ್ತವ ಶಿಶೋ ಬತ ಮುಚ್ಚ ಮುಚ್ಚ ದೋರ್ದಮತ್ರ ವಿರಮ ತ್ರಿದಿವೇಂದ್ರ-ಕಾರ್ಯಾತ್” ಕುಮಾಂ ೧೭-೧೩ | (ನಂ) 2. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. ತಂತೋವಿಕಾರ: “ಅನ್” (೪-೩-೧೩೯) | “ಮಣಿಮುಕ್ತಾ-ಪ್ರವಾಲಾನಾಂ ಲೋಹಾನಾಂ ತಾನ್ತವಸ್ಯ ಚ” ಮನುಂ ೯-೩೨೯ | (ವಿಂ) 3. ನೂಲಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ದಾರದಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. “ಚರ್ಮಜೇ: ತಾನ್ತವೇ: ಪಾಶೇರ್ಬದ್ಧವಾ ಪತಿತ-ಮರ್ಮಕಾ:” ಭಾಗಂ ೧೦-೬೪-೪ |



**ತಾನ್ತುರ್ವಾಚಿ ತಾಂತುರ್ವಾಯಿ** (ಪುಂ) ನೇಯಿಗೇಯವನ ಮಗ.  
ತಾನ್ತುರ್ವಾಚಸ್ಯ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಇನ್" (೪-೧-೧೫೩) । ತದೀಚಾಂ  
ಮತೇ ।

**ತಾನ್ತುರ್ವಾಚ್ಯ ತಾಂತುರ್ವಾಯ್ಯ** (ಪುಂ) ನೇಯಿಗೇಯವನ ಮಗ.  
ತಾನ್ತುರ್ವಾಚಸ್ಯ ಅಪತ್ಯಮ್-ತಾನ್ತುರ್ವಾಚ "ಏಃ" (೪-೧-೧೫೨) ।  
ಅನ್ಯೇಷಾಂ ಮತೇ ।

**ತಾನ್ತ್ರಿಕ ತಾಂತ್ರಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಸಿದ್ಧಾಂತವನ್ನು ಬಲ್ಲವನು,  
ತತ್ತ್ವವನ್ನು ಅರಿತವನು. 2. ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಓದಿದವನು,  
ಶಾಸ್ತ್ರಾಭ್ಯಾಸಮಾಡಿದವನು. ತನ್ಮಗಧೀತೇ ವೇದ ವಾ "ಠಕ್"  
(೪-೨-೬೦) । 3. ತಂತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ. 4. ಶಾಸ್ತ್ರ  
ಸಂಬಂಧವಾದ.

**ತಾಪ ತಾಪ** (ಪುಂ) 1. ಸಂತಾಪ, ಕಾವಿನಿಂದಾಗುವ ಬೇನೆ.  
ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) + ಣಿच् "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।  
"ಸಮಸ್ತಾಪಃ ಕಾಮಂ ಮನಸಿಜನಿಧಾಪ್ರಸರಯೋನಂ ತು ಗ್ರೀಷ್ಮಸ್ಯೈವಂ  
ಸುಭಗಮಪರಾಧಂ ಯುವತಿಷು" ಶಾಕುಂ ೩-೬ । 2. ಕಷ್ಟ.  
3. ಬಿಸುಪು, ಕಾವು. "ಸೌಧಾನ್ಯತ್ಯರ್ಥತಾಪಾದ್ವಲಭಿಪರಿಚಯ-  
ದ್ವೇಷಿಪಾರಾವತಾನಿ" ಮಾಲಂ ೨-೧೨ । "ತಾಪಃ ಸಂತಾಪ-  
ಕೃಚ್ಛಯೋಃ" ಮೇದಿಂ ।

**ತಾಪಕ ತಾಪಕ** (ಪುಂ) 1. ಜ್ವರ. ತಾಪಯತಿ - ತಪ  
(ಸಂತಾಪೇ) + ಣಿच् "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । (ವಿಂ) 2.  
ತಾಪವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. 3. ಕಷ್ಟವನ್ನು ಕೊಡುವ,  
ನೋಯಿಸುವ.

**ತಾಪತ್ರಯ ತಾಪತ್ರಯ** (ನಂ) ಅಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ, ಅಧಿದೈವಿಕ  
ಮತ್ತು ಅಧಿಭೌತಿಕರೂಪವಾದ ಮೂರು ತಾಪಗಳು.  
(ದುಃಖಗಳು) ತಾಪಾನಾಂ ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕಾದೀನಾಂ ತ್ರಯಮ್ ।  
"ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕಾದಿ ಮೇತ್ರೇಯ ಜ್ಞಾತ್ವಾ ತಾಪತ್ರಯಂ ಬುಧಃ । ಉತ್ಪನ್ನ-  
ಜ್ಞಾನವೇರಾಗಮಃ ಪ್ರಾಪ್ನೋತ್ಯಾತ್ಯಂತಿಕಂ ಫಲಮ್" ವಿಷ್ಣುಪುಂ ।  
[ವಿವರಕ್ಕೆ "ಆಧಿದೈವಿಕ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].

**ತಾಪದ ತಾಪದ** (ವಿಂ) ಕಷ್ಟವನ್ನು ಕೊಡುವ, ನೋವ  
ನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ತಾಪಂ ದದಾತಿ - ಡ್ ದಾನ್ (ದಾನೇ)  
"ಕಃ" (೩-೨-೩) । "ಹನ್ಯಾದಾಶು ಕಲಿಙ್ಗದೇಶನೃಪತಿ  
ಸಾಮಾನ್ಯಭೃತ್ಯಂ ತಮೋ ದೃಷ್ಟಂ ಕ್ಷತ್ರಿಯತಾಪದಂ ಜನಯತಿ ಕ್ಷೇಮಂ  
ಸುಭಿಕ್ಷಾನ್ವಿತಮ್" ಬೃಹತ್ಸಂ ೫-೬೯ ।

**ತಾಪನ ತಾಪನ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ತಾಪಯತಿ - ತಪ  
(ಸಂತಾಪೇ) + ಣಿच् ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) ।  
2. ಮನ್ಮಥನ ಒಂದು ಬಾಣ. 3. ಸೂರ್ಯಕಾಂತ ಮಣಿ.  
4. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. (ನಂ) 5. ತಾಪವನ್ನು  
ಉಂಟುಮಾಡುವುದು, ಕಷ್ಟವನ್ನು ಕೊಡುವುದು. ತಪ +

ಣಿच् ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) । (ವಿಂ) 6. ಕಷ್ಟ  
ವನ್ನು ಕೊಡುವ, ತಾಪವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ, ದಹಿ  
ಸುವ. "ತತೋಽಂಬರಾನ್ವಿಚಿಂತಿತಮಾತ್ರಮಾಗತಂ ಮಹಾಪ್ರಭಂ ಚಕ್ರ-  
ಮಮಿತ್ರತಾಪನಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೯-೨೩ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) । ತಾಪನೀ ತಾಪನೀ. "ಅತಿಪಾತಿಸ-  
ಕಾಲಸಾಧನಾ ಸ್ವಶರೀರೇಂದ್ರಿಯವರ್ಗತಾಪನೀ" ಕಿರಾಂ ೨-೪೨ ।

**ತಾಪನೀಯ ತಾಪನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ವರ್ಣಮಯವಾದ,  
ಚಿನ್ನದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ತಪನೀಯಸ್ಯ ವಿಕಾರಃ "ಅಣ್"  
(೪-೩-೧೩೪) । "ತಪನೀಯೇ ತಥಾ ಘಂಟೇ ಕಕ್ಷೋಪರಿ-  
ವಿಲಂಬಿತೇ" ಹರಿವಂ । 2. ಒಂದು ನಿಷ್ಕ, ಚಿನ್ನದ ಒಂದು  
ವಿಧ ನಾಣ್ಯದ ಪರಿಮಾಣ. ತಪನೀಯ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೫೩) ।  
3. ಉಪನಿಷತ್ತುಗಳು. ನೃಸಿಂಹ-ಗೋಪಾಲ-ರಾಮತಾಪನೀಯೋಪ-  
ನಿಷದಃ ।

**ತಾಪಯತ್ ತಾಪಯತ್** (ವಿಂ) 1. ತಾಪವನ್ನುಂಟುಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ, ದಹಿಸುತ್ತಿರುವ. ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) + ಣಿच् "ಶತ್"  
(೩-೨-೧೨೪) । 2. ಕಷ್ಟವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುತ್ತಿರುವ.  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

**ತಾಪಯಿತೃ ತಾಪಯಿತೃ** (ವಿಂ) 1. ತಾಪವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.  
2. ಕಷ್ಟವನ್ನು ಕೊಡುವ. ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) + ಣಿच्  
"ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) ।  
-ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

**ತಾಪಸ ತಾಪಸ** (ವಿಂ) 1. ತಪಸ್ವಿ, ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುವವನು,  
ಮೌನದಿಂದ ಧ್ಯಾನಮಾಡುವವನು. ತಪೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ-ತಪಸ್  
"ಅಣ್" (೫-೨-೧೦೩) । "ತಾಪಸಾ ಯತಯೋ ವಿಪ್ರಾ ಯೇ ಚ  
ವೈಮಾನಿಕಾ ಗಣಾಃ । ನಕ್ಷತ್ರಾಣಿ ಚ ದೈತ್ಯಾಶ್ಚ ಪ್ರಥಮಾ ಸಾತ್ವಿಕೀ  
ಗತಿಃ" ಮನುಂ ೧೨-೪೮ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) ।  
ತಾಪಸೀ ತಾಪಸೀ. 2. ತಪಸ್ಸನ್ನು ಅಚರಿಸುವ ಸ್ವಭಾವ  
ದವನು. ಋಷಿಶ್ವರಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ "ಃ" (೪-೪-೬೨) ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪) । ತಾಪಸಾ ತಾಪಸಾ.

**ತಾಪಸತಃ ತಾಪಸತಃ** (ಪುಂ) ಇಂಗುದೀವೃಕ್ಷ, ಗಾರಗಿಡ.  
ತಾಪಸಾನಾಂ ಹಿತಃ ತಃ । -ಹುಮಃ-ದುಃಖಃ, -ವೃಕ್ಷಃ-ವೃಕ್ಷಃ.

**ತಾಪಸಪ್ರಿಯ ತಾಪಸಪ್ರಿಯ** (ಪುಂ) 1. ಮೊರಟಗಿಡ,  
ಪ್ರಿಯಾಲವೃಕ್ಷ. 2. ಇಂಗುದೀವೃಕ್ಷ, ಗಾರಗಿಡ.

**ತಾಪಸ್ಯ ತಾಪಸ್ಯ** (ನಂ) ತಾಪಸನ ಧರ್ಮ. "ಸ್ವೀಧರ್ಮಯೋಗಂ  
ತಾಪಸ್ಯಂ ಮೋಕ್ಷಂ ಸಂನ್ಯಾಸಮೇವ ಚ । ರಾಜಾಶ್ಚ ಧರ್ಮಮಖಿಲಂ ಕಾರ್ಯಾಣಾಂ  
ಚ ವಿನಿರ್ಣಯಃ" ಮನುಂ ೧-೧೧೪ ।

**ತಾಪಹರ ತಾಪಹರ** (ವಿಂ) 1. ತಾಪವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸು  
ವವನು. ತಾಪಂ ಹರತಿ-ಹೃ (ಹರಣೇ) "ಅಚ್" (೩-೨-೯) ।



2. ಕಷ್ಟವನ್ನು ನಿವಾರಿಸುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪) । -ಹರಾ-ಹರಾ.

**ತಾಪಿಚ್ಛ ತಾಪಿಚ್ಛ (ಪುಂ)** 1. ಹೊಂಗೆಮರ, ತಮಾಲವೃಕ್ಷ. ತಾಪಿನಂ ಚಾದಯತಿ-ಚದ್ರ (ಅಪವಾರಣೆ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) । ಪೃಷೋಂ । (ನಂ) 2. ಹೊಂಗೆಹೂವು. ತಾಪಿಚ್ಛಸ್ಯ ಪುಷ್ಪಮ್ ವಿಕಾರಪ್ರತಿಯಸ್ಯ "ಲುಪ್" (ವಾಂ ೪-೩-೧೬೬) । "ಪ್ರಫುಲ್ಲ-ತಾಪಿಚ್ಛನಿಭೇರಭಿಫುಃ ಶುಭೇಶ್ಚ ಸಪ್ತಚ್ಛದಪಾಂಸುಪಾಂಡುಃ" ಮಾಘಂ ೧-೨೨ । "ವ್ಯೋಮ್ನಸ್ತಾಪಿಚ್ಛಗುಚ್ಛಾವಲಿಭಿರಿವ ತಮೋವಲ್ಲರೀಭಿರಿವ್ಯಂತೇ" ಮಾಲತೀಂ ೪-೬ ।

**ತಾಪಿತ ತಾಪಿತ (ವಿಂ)** 1. ಬಿಸಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ತಪ (ಸಂತಾಪೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । "ಗೋಮೃಣ ಸಾವಿತಕಾರ ಣಾಂ ಪಡ್ಕೃತ್ವೋತ್ತಸ್ತಾಪಿತೋ ಭಿವತೇಷ್ಮಾ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೪-೧೧೫ । 2. ತೊಂದರೆಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನೋವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಷ್ಟಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಾತಿ ತಪ್ಯತಿ ಮೇ ಚಿತ್ತಂ ಸುಚಿರಂ ತಾಪತಾಪಿತಮ್" ಭಾಗಂ ೮-೪-೧೩ ।

**ತಾಪಿನ್ ತಾಪಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ತಾಪವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. 2. ಕಷ್ಟವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ತಪ (ಸಂತಾಪೆ) + ಣಿಚ್ "ಣಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) । 3. ತಾಪವುಳ್ಳ. 4. ಕಷ್ಟವುಳ್ಳ. ತಾಪೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪) । ತಾಪಿನೀ ತಾಪಿನೀ.

**ತಾಪೀ ತಾಪೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಯಮುನಾನದಿ. 2. ತಪತೀ ನದಿ. "ಗೋದಾವರೀ ನಿವಿನ್ಧ್ಯಾ ಪಯೋಣಿ ತಾಪೀ ರೇವಾ ಮುರಸಾ ನರ್ಮದಾಂ" ಭಾಗಂ ೪-೧೯-೧೮ ।

**ತಾಮ ತಾಮ (ಪುಂ)** 1. ಗ್ಲಾನಿ, ಬಾಡುವಿಕೆ. ತಮ (ಕಾಡ್ಕಾ-ಯಾಮ್) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮) । 2. ದೋಷ. 3. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಇಚ್ಛೆ. ತಾಮ್ಯತೀನೇನ-ತಮು ಕರಂ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೨೧) । (ವಿಂ) 4. ಬಾಡಿಸುವ, ಬಾಡಲು ಕಾರಣವಾದ. 5. ಭಯಂಕರವಾದ.

**ತಾಮರ ತಾಮರ (ನಂ)** 1. ಜಲ, ನೀರು. ತಾಮಂ ಗ್ಲಾನಿ ರವತೇ-ಝ (ಗತಿರೇಷಣಯೋಃ) "ಙಃ" ಬಾಹುಂ । 2. ಫೃತ, ತುಪ್ಪ. "ತಾಮರಂ ಧೃತಮರ್ಣಶ್ಚ" ಇತಿ ಕೋಶಃ ।

**ತಾಮರಸ ತಾಮರಸ (ಪುಂ)** 1. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ, ತಾವರೆ ಹೂವು. ತಾಮರೇ ಷಸ್ತಿ-ಷಸ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಙಃ" (೩-೨-೧೦೧) । "ತಾಮರತಸ್ತಾಮರಸಾಂತರಾಭಾಮನುಪರಾಜಸ್ಯ ಗುಣೈರನುನಾಮ್" ರಘುಂ ೬-೩೭ । 2. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 3. ತಾಮ್ರಲೋಹ. "ಅಥ ತಾಮರಸಂ ಪಪ್ತೇ ತಾಮ್ರಕಾಂಚನಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ । 4. ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರೋಕ್ತವಾದ ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ.

**ಇದರ ಲಕ್ಷಣ:** ಪ್ರತಿ ಪಾದದಲ್ಲಿಯೂ ನ ಗಣ ಜ ಗಣದ್ವಯ ಮತ್ತು ಯ ಗಣಗಳಿರಬೇಕು. "ಇಹ ವದ ತಾಮರಸಂ ನಜಜಾಯಃ" ವೃಂ ೨೦ ।

**ಇದರ ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:**

ನ ಜ ಜ ಯ  
||| |OI |OI |OO |

5. ದತ್ತಾಂಜಿಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಸೀ-ರಸೀ. 6. ಕಮಲ ಲತೆ, ತಾವರೆಯ ಬಳ್ಳಿ. "ಯಥಾ ಗಜಸ್ತಾಮರಸೀ ಮದೋತಕಃ" ಭಾಂ ।

**ತಾಮಲಕೀ ತಾಮಲಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಭೂಮ್ಯಾಮಲಕ, ನೆಲನೆಲ್ಲಿ ಗಿಡ. ತನುಶ್ರಾಸಾವಾಮಲಕೀ ಚ । ಪೃಷೋಂ ।

**ತಾಮಸ ತಾಮಸ (ಪುಂ)** 1. ಚತುರ್ಥ (14) ಮನುಗಳಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಮನು. "ಸತ್ವಾ ದೇವಗಣಾಶ್ಚೇವ ತಾಮಸಸ್ಯಾಂತರೇ ಮನೋಃ । ಪುತ್ರಾಶ್ಚೇವ ಪ್ರವಕ್ಷ್ಯಾಮಿ ತಾಮಸಸ್ಯ ಮನೋನೃಪ" ಹರಿವಂ । 2. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. 3. ಉಲೂಕ, ಗೂಬೆ. (ವಿಂ) 4. ತಮೋಗುಣದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 5. ಕತ್ತಲೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ತಮೋಽಸ್ಯಸ್ಯ "ಅನ್" (ವಾಂ ೪-೨-೧೦೩) । "ವ್ಯತಿಕರ ಇವ ಭೀಮಸ್ತಾಮಸೋ ವೈದ್ಯುತಶ್ಚ ಕ್ಷಣಮುಪಹೃತಚಕ್ಷು-ವೃತ್ತಿಃ ಸ್ವಯ ಶಾಂತಃ" ಮಾಲತೀಂ ೯-೪೪ ।

**ತಾಮಸಿಕ ತಾಮಸಿಕ (ವಿಂ)** ತಮೋಗುಣದಿಂದ ಉಂಟಾದ. ತಮಸಾ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠಜ್" (೪-೧-೭೯) ।

**ತಾಮಸೀ ತಾಮಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಕಗ್ಗತ್ತಲೆಯುಳ್ಳ ರಾತ್ರಿ. ತಮಾಸಿ ಭೂಮ್ನಾ ಸಂತ್ಯಸ್ಯಾಂ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮) । "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) । 2. ತಮೋಗುಣದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹೆಂಗಸು. 3. ಮಹಾಕಾಳಿ. 4. ಜಟಾಮಾಸಿ. "ನಿಶಾ ದುರ್ಗಾ ಚ ತಾಮಸೀ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ತಾಮಿಸ್ರ ತಾಮಿಸ್ರ (ಪುಂ)** 1. ತಾಮಿಸ್ರವೆಂಬ ಒಂದು ನರಕ. ತಾಮಿಸ್ರಾ ತಮಸ್ತತಿರಸ್ತಸ್ಯ "ಅನ್" (ವಾಂ ೪-೨-೧೦೩) । "ಸ ಪರ್ಯೇಣ ಯಾತೀಮಾನ್ ನರಕಾನೇಕವಿಂಶತಿಮ್ । ತಾಮಿಸ್ರಮನ್ಧ-ತಾಮಿಸ್ರಂ ಮಹಾರೋರವರೋರವೋ" ಇತ್ಯಾದಿ. ಮನುಂ ೪-೮೮ । 2. ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷ, ತಿಂಗಳಿನ ಎರಡನೆಯ ಅರ್ಧ ಭಾಗ. ತಾಮಿಸ್ರಾಃ ತಮೋಯುಕ್ತರಾತ್ರಯಃ ಅಸ್ಯ ಸಂತಿ "ಅನ್" (ವಾಂ ೪-೨-೧೦೩) ।

**ತಾಂಬೂಲ ತಾಂಬೂಲ (ನಂ)** 1. ಅಡಕೆ. ತಾಮ್ಯತಿ-ತಮು (ಕಾಡ್ಕಾಯಾಮ್) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೧೭೮) । ಬೋಲತಿ-ಬುಲ (ಮಜ್ಜನೆ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫) । ತಾಮ್ ಚಾಸೀ ಬೋಲಶ್ಚ । ಪೃಷೋಂ । 2. ಅಡಕೆ ಸುಣ್ಣಗಳೊಡನೆ ಅಗಿಯಲ್ಪಟ್ಟ ವೀಳ್ಯದೆಲೆ. "ಆಬದ್ಧನೇತ್ರಾಂಜನಪಚ್ಛಲೇಶಸ್ತಾಂಬೂಲರಾಗಂ ಬಹುಲಂ ದಧಾನಃ" ಭट्टಿಂ ೧೧-೨೩ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲೀ-ಲೀ.



3. ವೀಳ್ಯದಲೆಯ ಬಳ್ಳಿ. 4. ವೀಳ್ಯದಲೆ. "ತಾಂಬೂಲಿ  
ನಾಗವಲ್ಯಾಂ ಸ್ತ್ರೀ ಕ್ರಮುಕೇ ತು ನಪುಂಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ.  
"ತಾಂಬೂಲಿನಾಂ ದಲೇಸ್ತತ್ರ ರಚಿತಾಪಾನಭೂಮಯಃ" ರಘುಂ ೪-೪೨.  
ತಾಂಬೂಲಚರ್ವಣಕ್ರಮಃ ಮೊದಲು ವೀಳ್ಯದಲೆ  
ಯನ್ನೂ ಬಳಕೆ ಅಡಕೆಯನ್ನೂ ಹಾಕಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು.  
ಮೊದಲು ಅಡಕೆಯನ್ನು ಹಾಕಿಕೊಳ್ಳುವವನು ಪರಮ  
ದರಿದ್ರನಾಗುತ್ತಾನೆ. "ಅನಿಧಾಯ ಮುಖೇ ಪರ್ಣ ಪೂಗ್ ಸ್ವಾದಯತೇ  
ನರಃ | ಮತಿಭ್ರಂಶೋ ದರಿದ್ರಃ ಸ್ಯಾತ್ ಅಂತೇ ನ ಸ್ಮರತೇ ಹರಿಮ್" |  
ತಾಂಬೂಲದಲ್ಲಿರುವ 13 ಗುಣಗಳು: "ತಾಂಬೂಲಂ  
ಕಡುತಿಕ್ತಮುಷ್ಣಮಧುರಂ ಕ್ಷಾರಂ ಕಠಾಯಾನ್ವಿತಂ ವಾತಘ್ನಂ ಕೃಮಿನಾಶನಂ  
ಕಫಹರಂ ದುರ್ಗಂಧನಿರ್ನಾಶನಮ್ | ಕ್ವತ್ರಸ್ಯಾಭರಣಂ ವಿಶುದ್ಧೀಕರಣಂ  
ಕಾಮಾಗ್ನಿಸಂದೀಪನಂ ತಾಂಬೂಲಸ್ಯ ಸಖೇ ತ್ರಯೋದಶ ಗುಣಾಃ ಸ್ವರ್ಗೋಽಪಿ  
ತೇ ದುರ್ಲಭಾಃ" |

ತಾಂಬೂಲಕರಡ್ಡ ತಾಂಬೂಲಕರಂಕ (ಪುಂ) ತಾಂಬೂಲ  
ವನ್ನಿಡುವ ಪೆಟ್ಟಿಗೆ. ತಾಂಬೂಲಸ್ಯ ಕರಡ್ಡಃ |

ತಾಂಬೂಲಚರ್ವಣ ತಾಂಬೂಲಚರ್ವಣ (ನಂ) ತಾಂಬೂಲ  
ವನ್ನು ಅಗಿಯುವುದು.

ತಾಂಬೂಲದ ತಾಂಬೂಲದ (ವಿಂ) ಯಜಮಾನನಿಗೆ ತಾಂಬೂಲ  
ವನ್ನು ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಿಕೊಡುವ ಸೇವಕ. ತಾಂಬೂಲಂ ದದಾತಿ—ಡು  
ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) |

ತಾಂಬೂಲಪತ್ರ ತಾಂಬೂಲಪತ್ರ (ನಂ) ವೀಳ್ಯದಲೆ.

ತಾಂಬೂಲಪೆಟಿಕಾ ತಾಂಬೂಲಪೆಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಾಂಬೂಲ  
ವನ್ನಿಡುವ ಪೆಟ್ಟಿಗೆ.

ತಾಂಬೂಲವಲ್ಲಿ ತಾಂಬೂಲವಲ್ಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೀಳ್ಯದಲೆಯ  
ಬಳ್ಳಿ.

ತಾಂಬೂಲವೀಟಿಕಾ ತಾಂಬೂಲವೀಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಳಗೆ  
ಅಡಕೆಪುಡಿಯಿಟ್ಟು ಸುತ್ತಿದ ವೀಳ್ಯದಲೆ.

ತಾಂಬೂಲಾಕ್ತ ತಾಂಬೂಲಾಕ್ತ (ವಿಂ) ತಾಂಬೂಲದ  
ರಸದಿಂದ ಲೇಪನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ತಾಂಬೂಲೇನ ತಾಂಬೂಲರಸೇನ  
ಅಕ್ತಃ | "ಕವಚಿತಾಂಬೂಲಾಕ್ತಃ ಕವಚಿದಗರೂಪಙ್ಕಾಙ್ಕಮಲಿನಃ"  
ಸಾಂ ದಂ |

ತಾಂಬೂಲಿಕ ತಾಂಬೂಲಿಕ (ವಿಂ) 1. ತಾಂಬೂಲದ  
ವ್ಯಾಪಾರಿ, ತಾಂಬೂಲವನ್ನು ಸಜ್ಜುಗೊಳಿಸಿ ಮಾರುವವನು.  
ತಾಂಬೂಲಂ ಪಣ್ಯಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೫೧) | 2. ತಾಂಬೂಲ  
ವನ್ನು ಸಜ್ಜುಗೊಳಿಸುವವನು. ತಾಂಬೂಲಂ ತದ್ರಚನಂ ಶಿಲ್ಪಮಸ್ಯ  
"ಠಕ್" (೪-೪-೫೫) |

ತಾಂಬೂಲಿನ್ ತಾಂಬೂಲಿನ್ (ವಿಂ) ತಾಂಬೂಲವನ್ನು ಮಾರು  
ವವನು. ತಾಂಬೂಲಂ ಪಣ್ಯತಯಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫) |

ತಾಮ್ಯತ್ ತಾಮ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಆಯಾಸಗೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಬಳಲು  
ತ್ತಿರುವ. ತಮ್ (ಕಾಡ್ಕಾಯಾಮ್) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |  
"ತಾಮ್ಯತ್ಸ್ತಮ್ಬೇರಮಯ್ಯವಮಯುತಾಮ್ಯನ್ಮಹಾಮಹೀಧರನಿತಮ್ಬೇ"  
ಹರ್ಷಂ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | ತಾಮ್ಯಂತಿ  
ತಾಮ್ಯಂತೀ.

ತಾಮ್ರ ತಾಮ್ರ (ನಂ) 1. ತಾಮ್ರಲೋಹ. ತಾಮ್ರತಿ—ತಮ್  
(ಕಾಡ್ಕಾಯಾಮ್) "ರಕ್" ದೀರ್ಘಶ್ಚ (೩ಂ ೨-೧೬) |  
2. ಒಂದು ವಿಧ ಕುಷ್ಮಲೋಗ. 3. ರಕ್ತವರ್ಣ, ಕೆಂಪು  
ಬಣ್ಣ. (ವಿಂ) 4. ಕೆಂಪುಬಣ್ಣದ. "ತತೋನ್ಯುಕುರ್ಯಾದ್ವಿಶದಸ್ಯ  
ತಸ್ಯ ತಾಮ್ರೋಷ್ಠಪರ್ಯಸ್ತರೂಪಃ ಸ್ಮಿತಸ್ಯ" ಕುರ್ಮಾಂ ೧-೪೪ |  
5. ತಾಮ್ರಲೋಹದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಪಾತ್ರೆ).  
"ಸುವರ್ಣರೂಪಪಾತ್ರೇಷು ತಾಮ್ರಕಾಂಸ್ಯಾಪಸೇಷು ಚ | ಗೃಹ್ಣಿನ್ ಭಿಕ್ಷಾಂ  
ನ ಧರ್ಮೋಽಸ್ತಿ ಗೃಹೀತ್ವಾ ನರಕಂ ವ್ರಜೇತ್" | ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಕನ್"  
(೫-೪-೫) | ತಾಮ್ರಕಮ್ ತಾಮ್ರಕಮ್. "ಅಥ ತಾಮ್ರಕಮ್ |  
ಶುಲ್ಬಂ ಘ್ನೇಚ್ಛಮುಖಂ ದ್ವ್ಯಷ್ಟವರಿಷ್ಟೋದುಂಬರಾಣಿ ಚ" ಅಮಂ |  
"ತಾಮ್ರಂ ಶುಲ್ಬೇಽರ್ಣೋಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ | ತಾಮ್ರವು  
ಕಾರ್ತಿಕೇಯನ ಶುಕ್ರದಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನವಾಯಿತು. "ಶುಕ್ರಂ  
ಯತ್ ಕಾರ್ತಿಕೇಯಸ್ಯ ಪತಿಸ್ತಂ ಧರಣೀತಲೇ | ತಸ್ಮಾತ್ತಾಮ್ರಂ ಸಮುತ್ಪನ್ನ-  
ಮಿದಮಾಹುಃ ಪುರಾವಿದಃ" ಭಾವಪ್ರಂ |

ತಾಮ್ರಕ(ಪ)ಣಿ ತಾಮ್ರಕ(ಪ)ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಂಜನ  
ವೆಂಬ ಪಶ್ಚಿಮದಿಗ್ಗಡದ ಪತ್ರಿ. ತಾಮ್ರಾ ಕರ್ಣಿ ಯಸ್ಯಾಃ |

ತಾಮ್ರಕಾರ ತಾಮ್ರಕಾರ (ಪುಂ) ತಾಮ್ರದ ಕೆಲಸಗಾರ,  
ಕೆಂಚುಗಾರ, ತಾಮ್ರಕುಟ್ಟಿಗೆ. ತಾಮ್ರಂ ತಾಮ್ರಪಾತ್ರಂ ಕರೋತಿ—ಡು  
ಕುಳ್ (ಕರಣೇ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) | ಇವನು ಒಬ್ಬ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿ  
ಯವನು. ಆಯೋಗವನಿಗೆ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿ  
ದವನು. "ಆಯೋಗವೇನ ವಿಪ್ರಾಃ ಜಾತಾಸ್ತಾಮ್ರೋಪಜೀವಿನಃ" |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩) | -ಕಾರಿ—ಕಾರೀ.

ತಾಮ್ರಕುಡ್ಡ ತಾಮ್ರಕುಟ್ಟಿ (ಪುಂ) ಕೆಂಚುಗಾರ, ತಾಮ್ರದ ಕೆಲಸ  
ಮಾಡುವವನು. ತಾಮ್ರಂ ಕುಡ್ಡಯತಿ—ಕುಡ್ಡ (ಛೇದನೇ) "ಅನ್"  
(೩-೨-೧) | "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | -ಕುಡ್ಡಕಃ  
ಕುಟ್ಟಿಕಃ. "ಶೌಲ್ಬಿಕಸ್ತಾಮ್ರಕುಡ್ಡಕಃ" ಅಮಂ |

ತಾಮ್ರಕಮಿ ತಾಮ್ರಕಮಿ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರಗೋಪಕೇಟ, ಮಳೆ  
ಗಾಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹುಳ. "ತಾಮ್ರಕಮಿ-  
ರಿಂದ್ರಗೋಪಃ" ಹಾರಾಂ |

ತಾಮ್ರಗಮ್ ತಾಮ್ರಗರ್ಭ (ನಂ) ಮೈಲುತುತ್ತ. ತಾಮ್ರ  
ಗಮ್ ಇವ ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನಮಸ್ಯ |

ತಾಮ್ರಚಕ್ರ ತಾಮ್ರಚಕ್ರ (ಪುಂ) ಕೆಂಪುಕಣ್ಣುಳ್ಳ  
ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ.



**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರಚೂಡ** (ಪುಂ) 1. ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ. ತಾಮ್ರಾ ಚೂಡಾ ಯಸ್ಯ | "ಭೀತಾ ಉನ್ತಿ ಕುಕ್ಕುಕುವಿತಿ ತಾಮ್ರಚೂಡಾಸ್ತೃಕ್ವಾ ಉತಾನಿ ಭಯದಾನ್ಯಪರಾಣಿ ರಾತ್ರೀ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೮೮-೩೪ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೬೩) | -ಕೂಡಿ-ಚೂಡಿ. ಹೆಣ್ಣುಕೋಳಿ. 2. ಮಾಚಿಪತ್ರ ಗಿಡ. ತಾಮ್ರಾಚೂಡಾ: ಶಿಖಾ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 3. ಕೆಂಪು ಶಿಖೆಯುಳ್ಳ.

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರಕುಂಡ** (ಪುಂ) ವಾನರ, ಕಪಿ.

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರಪುಜ** (ಪುಂ) ಕಾಂಸ್ಯ, ಕಂಚು. ತಾಮ್ರ-ಪುಷ್ಪಾಂ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭಾವಿ) "ಫಃ" (೩-೨-೯೮) | [ತಾಮ್ರ ಮತ್ತು ತವರದಿಂದ ಕಂಚು ತಯಾರಾಗುವುದು.]

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರದು** (ಪುಂ) ಚಂದನವೃಕ್ಷ, ಗಂಧದ ಮರ.

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರದ್ವೀಪ** (ಪುಂ) ಸಿಂಹದ್ವೀಪ, ಈಗಿನ ಸಿಲೋನ್ ದ್ವೀಪ.

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರಪಟ್ಟ** (ನಂ) ತಾಮ್ರದ ರೇಕು, ಶಾಸನ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಬರೆಯುವ ತಾಮ್ರದ ತಗಡು. ತಾಮ್ರ-ನಿರ್ಮಿತಂ ಪट्टಮ್ | "ದತ್ತಾಢ್ಮಿ ನಿಬಂಧಂ ವಾ ಕೃತ್ವಾ ಲೇಖ್ಯಂ ಚ ಕಾರಯೇತ್ | ಆಗಾಮಿಭದ್ರನುಪತಿಪರಿಜ್ಞಾನಾಯ ಪಾರ್ಥಿವಃ | ಪट्टೇ ವಾ ತಾಮ್ರಪट्टೇ ವಾ ಸ್ವಮುದ್ರೋಪರಿಚಿಹ್ನಿತಮ್ | ಅಭಿ-ಲೇಖ್ಯಾತ್ಮನೋ ವಂಶಾನಾತ್ಮಾನಂ ಚ ಮಹೀಪತಿಃ | ಪ್ರತಿಗ್ರಹಪರೀಮಾಣಂ ದಾನಚ್ಛೇದೋಪವರ್ಣನಮ್ | ಸ್ವಹಸ್ತಕಾಲಸಂಪನ್ನಂ ಶಾಸನಂ ಕಾರಯೇತ್ ಸ್ಥಿರಮ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೩೧೮, ೨೦ |

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರಪರ್ಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಕ್ಷಿಣ ದೇಶದ ಒಂದು ನದಿ. "ತಾಂತ್ರಿಕಪರ್ಣಿಸಮೇತಸ್ಯ ಮುಕ್ತಾಸಾರಂ ಮಹೋದಧಿಃ" ರಘುಂ ೪-೫೦ |

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರಪಲ್ಲವ** (ಪುಂ) 1. ಅಶೋಕವೃಕ್ಷ. ತಾಮ್ರಾ: ಪಲ್ಲವಾ ಯಸ್ಯ | 2. ಕೆಂಪು ಚಿಗುರುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ವೃಕ್ಷ. (ಪುಂ) 3. ಕೆಂಪುಚಿಗುರು.

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರಪಾಕಿನ್** (ಪುಂ) ಬಸುರಿಮರ. ತಾಮ್ರ: ಪಾಕಃ ಫಲಪುಷ್ಪಾದಿಃ ಅಸ್ತೃತ್ಯಸ್ಯ "ಫಃ" (೪-೨-೧೧೫) |

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರಪಾತ್ರ** (ನಂ) ತಾಮ್ರಲೋಹದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಪಾತ್ರೆ. ತಾಮ್ರಸ್ಯ ವಿಕಾರಃ "ಅಣ್" | ತಾಮ್ರಂ ಚ ತತ್ ಪಾತ್ರಂ ಚ | ತಾಮ್ರಪಾತ್ರಯಲ್ಲಿ ಭೋಜನ ವನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಡದು. ಹಾಗೆಯೇ ಭಿಕ್ಷುಪಾತ್ರೆ, ಒಡೆದ ಕಂಚು, ಪಲಾಶ ಮತ್ತು ಪದ್ಮಪತ್ರ ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಊಟ ಮಾಡುವವನು ಚಾಂದ್ರಾಯಣ ವ್ರತವನ್ನು ಆಚರಿಸಬೇಕು.

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರಪುಷ್ಪ** (ಪುಂ) 1. ನಾಗಸಂಖಿಯ ಮರ. (ನಂ) 2. ಕೆಂಪುಹೂವು. (ವಿಂ) 3. ಕೆಂಪುಹೂವಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ.

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರಪಲಕ** (ನಂ) ತಾಮ್ರದ ತಗಡು.

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರಮೂಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೀಟಕಸಂಧಿ.

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರವಲ್ಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಂಜಿಷ್ಠ, ಮಾದವನ ಬೇರು. 2. ಕೆಂಪುಬಳ್ಳಿ.

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರಲಿಪ್ತ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ದೇಶ. 2. ಆ ದೇಶದ ದೊರೆ. "ತಾಂತ್ರಿಕಲಿಪ್ತಂ ಚ ರಾಜಾನಂ ಕರ್ವತಾಧಿ-ಪತಿ ತಥಾ" ಭಾಂ ಸಮಾಂ ೩೧-೨೫ | 3. ಆ ದೇಶದ ಜನರು. ತಾಂತ್ರಿಕಲಿಪ್ತೋಽಭಿಜನೋಽಸ್ಯ ತಸ್ಯ ರಾಜಾ ವಾ |

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರಶಿಖ** (ಪುಂ) 1. ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ. ತಾಮ್ರಾ ಶಿಖಾ ಚೂಡಾಸ್ಯ | "ಫಃ" (೪-೨-೧೧೬) | -ಶಿಖಿನ್ -ಶಿಖಿನ್. (ವಿಂ) 2. ಕೆಂಪು ಶಿಖೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ.

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರಸಾರ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಂಪು ಗಂಧದ ಮರ. ತಾಮ್ರೋ ರಕ್ತಃ ಸಾರೋಽಸ್ಯ | 2. ಕೆಂಪು ರಸ. (ವಿಂ) 3. ಕೆಂಪು ರಸವುಳ್ಳ (ಮರ).

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರಸಾರಕ** (ಪುಂ) 1. ಬಿಳಿಯ ಕಗ್ಗಲಿಮರ. ತಾಮ್ರೋ ರಕ್ತಃ ಸಾರೋಽಸ್ಯ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೫೪) | 2. ಕೆಂಪು ಗಂಧದ ಮರ. -ಸಾರಿಕಃ -ಸಾರಿಕಃ. ತಾಮ್ರೋ ರಕ್ತಃ ಸಾರೋಽ-ಸ್ತೃತ್ಯಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೫) |

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಕ್ಷಿಣ ಕನ್ಯೆಯರಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬಳು, ಕಶ್ಯಪನ ಪತ್ನಿ, ಪಕ್ಷಿಗಳ ತಾಯಿ. ಶುಕ್ಲೇ ಶೈಲೇ ಭಾಸೀ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರೀ ಮತ್ತು ಕಾಕೇ ಎಂಬ ಐವರು ಇವಳ ಪುತ್ರಿಯರು. ಈ ಐವರಿಂದಲೇ ಮುಂದೆ ಎಲ್ಲಾ ಪಕ್ಷಿ ಜಾತಿಗಳೂ ಬೆಳೆದುವು. ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೭ | 2. ಗರ್ಭದ ಹೊದಿಕೆಯಾಗಿರುವ ಏಳು ಚರ್ಮಗಳಲ್ಲೊಂದು. (1) ಅವಭಾಸಿನಿ (2) ಲೋಹಿತಾ (3) ಶ್ವೇತಾ (4) ತಾಮ್ರಾ (5) ವೇದಿನಿ (6) ರೋಹಿಣಿ ಮತ್ತು (7) ಮಾಂಸಧರಾ ಇವು 7 ಗರ್ಭದ ಅವರಣಚರ್ಮಗಳು. ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೪-೪ | 3. ಮಂಜಿಷ್ಠ, ಮಾದವನ ಬೇರು.

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರಾಕ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಕೋಗಿಲೆ. ತಾಮ್ರೇ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯ "ಫಃ" (೪-೪-೧೧೩) | "ತಾಮ್ರಾಕ್ಷಃ ಕಾಕಪುಟಃ ಕುಹ್ಮುಖಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಪಿತ್ವಾತ್ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೪೧) | -ಕೂಡಿ-ಕೂಡಿ. (ವಿಂ) 2. ಕೆಂಪು ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ.

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರಾರ್ಥ** (ಪುಂ) ಕಾಂಸ್ಯ, ಕಂಚು. ತಾಮ್ರಸ್ಯಾಽ-ರ್ಥೋಽಭೇದೋ ಯಸ್ಯ | "ಕಸೇ ತು ಕಾಂಸ್ಯಕಂಸಾಸ್ಥಿತಾಂ ತಾಮ್ರಾರ್ಥಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ತಾಂತ್ರಿಕ ತಾಮ್ರಾಶಮನ್** (ಪುಂ) ಕೆಂಪುಕಲ್ಲು, ಪದ್ಮರಂಗ. ತಾಮ್ರಃ ಅಶಮಾ | "ನಿಸರ್ಗರಕ್ತೈರ್ವಲಯಾವನದ್ವತಾಮ್ರಾಶಮರಶಿಮ-ಚ್ಚುರಿತೈರ್ನಿಖಾಘ್ರೈಃ" ಮಾಘಂ ೩-೭ |



**ತಾತ್ಪರಿಕ ತಾಮ್ರಕ (ಪುಂ)** 1. ಕಂಚುಗಾರ. ತಾಮ್ರಂ ತಾಮ್ರ-  
ಪಾತ್ರನಿರ್ಮಾಣಂ ಶಿಲ್ಪಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೫೫) । 2. ಒಬ್ಬ  
ಬೆರಕೆಜಾತಿಯವನು. ಅಯೋಗವನಿಗೆ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ತ್ರೀ  
ಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩) । -ಕೀ-ಕೀ. (ವಿಂ) 3. ತಾಮ್ರಸಂಬಂಧ  
ವಾದ, ತಾಮ್ರದ ವಿಕಾರ. "ಕಾರ್ಪಿಕೇ ತಾತ್ಪರಿಕೇ ಪಣಃ"  
ಅಮಂ ।

**ತಾಮ್ರೀ ತಾಮ್ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಒಂದು ವಿಧ ವಾದ್ಯ. ತಾಮ್ರಸ್ಯ  
ವಿಕಾರಃ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೫೪) । "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) ।  
"ತಾಮ್ರೀ ಸ್ಯಾನ್ಮಾನರಂಧ್ರಾ ವಿಕಾಲಿಕಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ತಾಯನ ತಾಯನ (ನಂ)** 1. ವಿಸ್ತಾರಹೊಂದುವುದು, ಹರಡು  
ವುದು, ಬೆಳೆಯುವುದು. ತಾಯ್ (ಸಂತಾನಪಾಲನಯೋಃ) ಭಾವೇ  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಪಾಲಿಸುವುದು, ಕಾಪಾಡು  
ವುದು.

**ತಾಯಿತ ತಾಯಿತ (ವಿಂ)** 1. ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟು, ವ್ಯಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟು,  
ವಿಸ್ತಾರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ತಾಯ್  
(ಸಂತಾನಪಾಲನಯೋಃ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।  
2. ಪಾಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಕಾಪಾಡಲ್ಪಟ್ಟು.

**ತಾಯಿನ್ ತಾಯಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವ. ಬೆಳೆ  
ಯುವ, ವಿಸ್ತಾರಹೊಂದುವ. 2. ಕಾಪಾಡುವವನು,  
ಪಾಲಿಸುವವನು. ತಾಯ್ (ಸಂತಾನಪಾಲನಯೋಃ) "ಣಿನಿಃ"  
(೩-೧-೧೩೪) ।

**ತಾಯ್ - ಸಂತಾನಪಾಲನಯೋಃ** (ಘಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) ।  
ತಾಯತೇ । ತತಾಯೇ । ತಾಯಿತಾ । ತಾಯಿಷ್ಯತೇ । ತಾಯತಾಮ್ ।  
ಅತಾಯತ । ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಹರಡು, ಎಡೆಬಿಡದೆ ವ್ಯಾಪಿಸು,  
ವಿಸ್ತಾರಹೊಂದು, ಬೆಳೆ, ವೃದ್ಧಿಹೊಂದು. 2. ಪಾಲಿಸು,  
ಕಾಪಾಡು.

**ತಾರ ತಾರ (ಪುಂ)** 1. ಪ್ರಣವ, ಒಂಕಾರ. ತಾರಯತಿ ಜಾಪಕಾನ್  
ಸಂಸಾರಾತ್ - ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್"  
(೩-೧-೧೩೪) । "ಔಚ್ಚಾರಃ ಪ್ರಣವಸ್ತಾರಃ" ವೇಜಂ ।  
2. ಎಷ್ಟು. ತಾರಯತಿ ಸಂಸಾರಭಯಾತ್ ಭಕ್ತಾನ್ । "ತಾರಃ  
ಸಂಸಾರಭಯತೋ ನಿಯಂ ತಾರಯತೀತಿ ಸಃ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ್ತಃ ।  
"ಅಶೋಕಸ್ತಾರಣಸ್ತಾರಃ ಶೂರಃ ಶೌರಿರ್ಜನೇಶ್ವರಃ" ವಿಂ ಸಂ ।  
3. ಪರಿಶವ, ಮಹಾದೇವ. 4. ಒಬ್ಬ ವಾನರ. 5. ಶುದ್ಧ  
ವಾದ ಮತ್ತು. 6. ಮುತ್ತುನ್ನು ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು.  
"ತಾರೋ ವಾನರಭಿನ್ಮುಕ್ತಾವಿಶುದ್ಧಯೋಃ ಶುದ್ಧಮೀತಿಕೇ ನಾ"  
ಮೇದಿಂ । 7. ಉಚ್ಚಶಬ್ದ, ಎತ್ತರದ ಧ್ವನಿ. "ನಾದಸ್ತಾವ-  
ದ್ವಿಕಲಕುರರೀಕುಜಿತಸ್ನಿಗ್ಧತಾರಃ" ಮಾಲತೀಂ ೫-೨೦ ।

8. ದಾಟುವುದು. ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) "ಘಚ್"  
(೩-೩-೧೮) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) 9. ನಕ್ಷತ್ರ. "ತಾರಾ ರದಾನ್  
ವದನಸ್ಯ ಚಂದ್ರಂ ರುಚಾ ಕಚಾನ್ ಚ ನಭೋ ಜಯಂತೀಮ್" ನೈಷಂ  
೧೦-೧೦೭ । 10. ಕಣ್ಣುಗುಡ್ಡು, ಕಣ್ಣಿನ ಪಾಪೆ, ಕನೀಸಿಕೆ.  
"ಮತ್ತಯೇವ ಭೂಣಿತಮಂದತಾರಯಾ" ಕಾದಂ । (ನಂ) 11.  
ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ. "ನಕ್ಷತ್ರೇಷ್ವಿಮಧ್ಯೇ ಚ ನ ನಾ ರುಪ್ಯೇ ನಪುಂಸಕಮ್"  
ಮೇದಿಂ । ಶಾಶ್ವತ ಮತ್ತು ವಿಶ್ವಕೋಶಗಳಲ್ಲಿ ನಕ್ಷತ್ರ ಮತ್ತು  
ಕಣ್ಣುಗುಡ್ಡು ಎಂಬ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗವಾಗಿ ಉಕ್ತ  
ವಾಗಿದೆ. "ನಕ್ಷತ್ರೇ ನೇತ್ರಮಧ್ಯೇ ಚ ತಾರಾ" ಶಾಶ್ವಂ ।  
"ಶ್ರುಕ್ಷಾಕ್ಷಿಮಧ್ಯಯೋಸ್ತಾರಾ" ವಿಶ್ವಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಾ-ರಾ.  
12. ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಪತ್ನಿ. 13. ವಾಲಿಯ ಪತ್ನಿ.  
14. ಬುದ್ಧದೇವತೆ. 15. ಸಾಂಖ್ಯರು ಹೇಳುವ ಎಂಟು  
ಸಿದ್ಧಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. (ವಿಂ) 16. ಎತ್ತಿದಸ್ವರದ, ದೊಡ್ಡ  
ಧ್ವನಿಯ. 17. ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ, ಹೊಳೆಯುವ.  
"ರಸಿ ನಿಹಿತಸ್ತಾರೋ ಹಾರಃ ಕೃತಾ ಜಘನೇ ಘನೇ" ಅಮರಂ  
೩೧ । 18. ನಿರ್ಮಲವಾದ, ಸ್ವಚ್ಛವಾದ. 19. ಉತ್ತಮ  
ವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ.

**ತಾರಕ ತಾರಕ (ಪುಂ)** 1. ತಾರಕಾಸುರ, ವಜ್ರಾಂಗನೆಂಬ  
ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸನ ಮಗ. [ತಾರಕಾಸುರನಿಗೆ ತಾರಾಕ್ಷ,  
ಕಮಲಾಕ್ಷ ವಿದ್ಯುನ್ಮಾಲಿಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಮಂದಿ ಪುತ್ರುಳು.  
ಇವರು ಅನೇಕ ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ತಪಸ್ಸುಮಾಡಿ ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ  
ವರಗಳನ್ನು ಪಡೆದು ಸ್ವರ್ಣನಗರ ರಜತನಗರ ಅಯೋನಗರ  
ಗಳನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿಕೊಂಡುದರಿಂದ ಇವರಿಗೆ ತ್ರಿಪುರರೆಂದು  
ಹೆಸರಾಯಿತು. ತಾರಕಾಸುರನು ಉಗ್ರವಾದ ತಪಸ್ಸುಮಾಡಿ  
ಅಂದಿನವರೆಗೆ ಅವತರಿಸಿದ್ದ ಯಾವ ದೇವತೆಗಳಿಂದಲೂ  
ತನಗೆ ಮರಣವುಂಟಾಗದಿರಲೆಂಬ ವರವನ್ನು ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ  
ಪಡೆದು ಲೋಕಗಳನ್ನೆಲ್ಲಾ ಪೀಡಿಸುತ್ತಿದ್ದನು. ಆಗ  
ಕಾರ್ತಿಕೇಯನು ಅವತರಿಸಿ ಇವನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಮಾಡಿ  
ಸಂಹರಿಸಿದನು. ವಿವರಕ್ಕೆ "ಕಾರ್ತಿಕೇಯ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]  
"ತಸ್ಮಿನ್ ವಿಪ್ರಕೃತಾಃ ಕಾಲೇ ತಾರಕೇಣ ದಿವೌಕಸಃ" ಕುಮಾಂ  
೨-೧ । 2. ದೋಣಿ. 3. ತೆಪ್ಪು, ಹರಿಗೋಲು.  
4. ಹಡಗು. ತಾರಯತಿ - ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) + ಣಿಚ್  
"ಞ್ಚಲ್" (೩-೧-೩೩) । 5. ನಾವಿಕ, ಹಡಗು ನಡೆಸು  
ವವನು. 6. ದಾಟುವ ಉಪಾಯ. "ಕೇಚಿದಾಗಮಜಾಲೇನ  
ಕೇಚಿನ್ನಿಗಮಸಂಕುಲಃ । ಕೇಚಿತ್ತರ್ಕಣ ಮುಹ್ಯಂತಿ ನೈವ ಜಾನಂತಿ  
ತಾರಕಮ್" ಹೃಂ । 7. ಪರಿಶವ, ಮಹಾದೇವ. "ಗಂ-  
ಮಾಂಸಸೃಗಾಲಾಯ ತಾರಕಾಯ ತರಾಯ ಚ । ನಮೋ ಯಜಾಯ ಯಜಿನೇ  
ಹುತಾಯ ಪ್ರಹುತಾಯ ಚ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೨೯೦-೧೦೬ ।  
(ನಂ) 8. ನೇತ್ರ, ಕಣ್ಣು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ -ಕಾ.



9. ನಕ್ಷತ್ರ. 10. ಕಣ್ಣಿನ ಪಾಪೆ. (ವಿಂ) 11. ಕಾಪಾಡುವವನು, ರಕ್ಷಿಸುವವನು. "ತಾರಕೋ ದೈತ್ಯಭಿತ್ಕರ್ಣಧಾರಯೋನಿ ದ್ವಯೋದೃಶಿ. ಕನೀನಿಕಾಯಾಮೃತೇ ಚ ನ ಪುಮಾಸ್ತಾತರಿಸ್ತ್ರಿಪು" ಮೇದಿಂ. "ಕಥಯನ್ನಿ ಭವವಾನ್ ಇಹಾಂತಕಾಲೇ ಭವಭಯಕಾತರ-ತಾರಕಂ ಪ್ರಬೋಧಮ್" ಪ್ರಬೋಧಂ ೨-೧೩. 12. ದಾಟಿಸುವವನು. 13. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರುಮಾಡುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪). ತಾರಿಕಾ ತಾರಿಕಾ.

ತಾರಕಜಿತ್ ತಾರಕಜಿತ್ (ಪುಂ) ಪಣ್ಣುಖ, ಕಾರ್ತಿಕೇಯಂ. ತಾರಕಂ ಜಯನ್ನಿ - ಜಿ (ಜಯೇ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೬೧). -ರಿಪು: -ರಿಪುಃ, -ಸುದನ: -ಸೂದನಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

ತಾರಕಾಕ್ಷ ತಾರಕಾಕ್ಷ (ಪುಂ) ತಾರಕಾಸುರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. ಇವನಿಗೆ "ತಾರಾಕ್ಷ" ನೆಂದೂ ಹೆಸರುಂಟು.

ತಾರಕಬ್ರಹ್ಮ ತಾರಕಬ್ರಹ್ಮ (ನಂ) ಆರು ಅಕ್ಷರಗಳುಳ್ಳ ಶ್ರೀರಾಮಮಂತ್ರ. ತಾರಕಂ ಚ ತತ್ ಬ್ರಹ್ಮ ಚ. "ಷಡಕ್ಷರಂ ಮಹಾಮಂತ್ರಂ ತಾರಕಬ್ರಹ್ಮಂ ಉಚ್ಯತೇ. ರಾಮಾಯ ನಮ ಇತ್ಯೇತತ್ಪ್ರಣವಾದಿ ಷಡಕ್ಷರಮ್".

ತಾರಕಾರಿ ತಾರಕಾರಿ (ಪುಂ) ಪಣ್ಣುಖ, ಕಾರ್ತಿಕೇಯಂ. ತಾರಕಸ್ಯಾರಿ:.

ತಾರಕಿತ ತಾರಕಿತ (ವಿಂ) ನಕ್ಷತ್ರವಾಗಿ ಆಗಿರುವ, ನಕ್ಷತ್ರಗಳಂಟಾಗಿರುವ. ತಾರಕಾ ಅಸ್ಯ ಸಂಜಾತಾ: "ಇತಚ್" (೪-೨-೩೬). "ಕ್ಷೀರಸಾಗರತರಙ್ಗಕ್ಷೀಕರಾಸಾರತಾರಕಿತ-ಚಾರುಮೂರ್ತಯೇ" ಮುಂ ಮಾಂ.

ತಾರಕಿನ್ ತಾರಕಿನ್ (ವಿಂ) ನಕ್ಷತ್ರಗಳುಳ್ಳ, ನಕ್ಷತ್ರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ತಾರಕಾ: ಸಂತ್ಯಜ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೬). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೪). -ಕಿಣಿ -ಕಿಣೀ. ರಾತ್ರಿ.

ತಾರಣ ತಾರಣ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ತಾರಯತಿ ಗರ್ಭಜನ್ಮ-ಜರಾಮರಣಸಂಸಾರಸಾಗರಮಹಾಭಯಾತ್ ಆಧಿಭೌತಿಕೇಭ್ಯ: ವೈರಿ-ಚೋರವ್ಯಾಧ್ಯಾದಿಭಯೇಭ್ಯೋ ವಾ-ತು (ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:)+ ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪). "ಯಸ್ತಾರಣಸ್ತಾರಯತಿ ವೈರಿ-ವ್ಯಾಧ್ಯಾದಿಭಿವಿವಿಃ" ಇವಿ ನಿಶ್ಚಿತ: "ಮೂಕೋಸ್ತಾರಣ-ಸ್ತಾರ:" ವಿಂ ಸಂ. 2. ಪ್ರಭವ ಮೊದಲಾದ ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಹದಿನೆಂಟನೆಯದು. 3. ತೆಪ್ಪು, ಹರಿ ಗೋಲು. ತಾರಯತೀನ - ತು (ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:)+ ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭). (ನಂ) 4. ದಾಟಿಸುವುದು. ತು+ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫). 5. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರುಮಾಡುವುದು. "ತತ್ರ ಚೋತ್ಪತ್ಸ್ಯತೇ ಜನ್ತು: ಭವತಾಂ ತಾರಣಾಯ ವೈ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೩-೩೩. "ತಾರಣಾಯ ತು ದು:ಖಸ್ಯ ಪ್ರಸ್ಥಾನಾಯ ಭವಾಯ ಚ" ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೬-೩.

(ವಿಂ) 6. ದಾಟಿಸುವವನು. 7. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರುಮಾಡುವವನು. ತು+ಣಿಚ್ ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಣಿ -ಣಿ. ಹಡಗು. "ಪಾದಾಲಿನ್ದೀ ತರಣಾ ನೌಸ್ತರಣಿಸ್ತಾರಣಿಸ್ತರೀ:" ಹಾರಾಂ.

ತಾರಣಿ ತಾರಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಶ್ಯಪರ ಪತ್ನಿ, ಯಾಜ ಮತ್ತು ಉಪಯಾಜ ಮುಷಿಗಳ ತಾಯಿ.

ತಾರಣೇಯ ತಾರಣೇಯ (ಪುಂ) ತಾರಣೇಯ ಮಗ. ತಾರಣ್ಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಹಕ್" (೪-೧-೧೨೦). "ಯಾಜೋಪಯಾಜೌ ಬ್ರಹ್ಮಣಿ ಶಾಮ್ಯಂತೌ ಪರಮೇಷ್ಠಿನೌ. ಸಂಹಿತಾಧ್ಯಯನೇ ಯುಕ್ತೌ ಗೌತ್ರತತ್ತ್ವಾಪಿ ಕಾಶ್ಯಪೌ. ತಾರಣೇಯೌ ಯುಕ್ತರೂಪೌ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾ-ವೃಷಿಸತ್ತಮೌ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೪೯.

ತಾರತಮ್ಯ ತಾರತಮ್ಯ (ನಂ) ತರತಮಭಾವ, ಹೆಚ್ಚುಕಡಮೆ, ವ್ಯತ್ಯಾಸ. ತರತಮಯೋರ್ಭಾವ: "ವ್ಯತ್" (೪-೧-೧೨೪). "ತಾರತಮ್ಯಯೋಗಯುಕ್ತಾಂಶ್ಚ ಭಾವಾನತಿರೂಕ್ಷಾನತಿಸ್ತಿಗ್ಧಾನತ್ಯುಣಾ-ನತಿಶೀತಾನಿತ್ಯೇವಮಾದಿನ್ ವಿವರ್ಜಯೇತ್" ಸುಶ್ರುತಂ. "ನಿಧನಂ ನಿಧನಮೇತಯೋರ್ದಯೋಸ್ತಾರತಮ್ಯವಿಧಿಮುಕ್ತಚೇತಸಾಮ್. ಬೋಧನಾಯ ವಿಧಿನಾ ವಿನಿರ್ಮಿತಾ ರೇಫ್ ಎವ ಜಯವೈಜಯಂತಿಕಾ" ತದ್ಭಂ.

ತಾರಪುಷ್ಪ ತಾರಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಮೊಲ್ಲೆಗಿಡ. 2. ಜಾಜಿ ಗಿಡ. ತಾರಂ ರಜತಮಿವ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ.

ತಾರಲ ತಾರಲ (ವಿಂ) 1. ಚಂಚಲವಾದ, ಸ್ಥಿರವಾಗಲ್ಲದ. ತಾರಲ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಣ್" (೪-೪-೩೮). 2. ಎಟ, ಕಾಮುಕ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ.

ತಾರವ ತಾರವ (ವಿಂ) ತರುಸಂಬಂಧವಾದ, ವೃಕ್ಷಸಂಬಂಧವಾದ. ತರಾರಿದಮ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೨೦).

ತಾರವಾಯು ತಾರವಾಯು (ಪುಂ) ಬಹಳ ಶಬ್ದದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಗಾಳಿ. ತಾರಶ್ವಾಸೌ ವಾಯುಶ್ಚ.

ತಾರಹಾರ ತಾರಹಾರ (ಪುಂ) ದೊಡ್ಡ ಮುತ್ತುಗಳಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಹಾರ. ತಾರನಿರ್ಮಿತೌ ಹಾರ:

ತಾರಾ ತಾರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಶಮಹಾವಿದ್ಯೆಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡನೆಯದು. ತಾರಯತಿ ಸಂಸಾರಾಣಿವಾತ್ ಭಕ್ತಾನ್ - ತು (ಪ್ಲವನ-ತರಣಯೋ:)+ ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). 2. ನಕ್ಷತ್ರ. 3. ಅಶ್ವಿನೀ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳು. "ನಕ್ಷತ್ರಮುಕ್ತಂ ಭಂ ತಾರಾ" ಇವು ನಕ್ಷತ್ರಸಾಮಾನ್ಯ ವಾಚಕಗಳು. "ದಾಕ್ಷಾಯಣ್ಯೋಽಶ್ವಿನೀತ್ಯಾದಿ ತಾರಾ:" ಇಲ್ಲಿ "ತಾರಾ" ಪದವು ಅಶ್ವಿನೀ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರವಾಚಕ. ಅಶ್ವಿನೀ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಲಿಂಗಗಳು: ಹಸ್ತಸ್ವಾತಿಶ್ರವಣಾ ಅಕಲಿಬೇ. ಇವು ಪುಂಸ್ವೀ



ಲಿಂಗಗಳು. ಮೃಗಶಿರೋ ನ ಪುಸಿ ಸ್ಯಾತ್ | ಇದು ಸ್ತ್ರೀ  
ನಪುಂಸಕ. ಪುಸಿ ಪುನರ್ವಸುಪುಷ್ಯೌ | ಇವು ಪುಲ್ಲಿಂಗಗಳು.  
ಮೂಲ ತ್ವಸ್ತ್ರೀ | ಮೂಲ ನಕ್ಷತ್ರವು (ಪುಂ) ಪುನಃಪುಂಸಕ  
ಲಿಂಗವು. ಸ್ತ್ರೀಯಃ ಶೇಷಾಃ | ಉಳಿದೆಲ್ಲ ನಕ್ಷತ್ರಗಳೂ ಸ್ತ್ರೀ  
ಲಿಂಗಗಳು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ನಕ್ಷತ್ರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]  
4. ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಪತ್ನಿ. 5. ವಾಲಿಯ ಪತ್ನಿ. 6. ಬುದ್ಧ  
ದೇವತೆ. 7. ಮುತ್ತು. "ದ್ವೈರಿವ ಕ್ಷಿತಿಮೃತಾಂ ದ್ವಿರದೇ-  
ಹದಾರತಾರಾವಲಿವಿರಚನೈರ್ವ್ಯಕೃಚ್ಛಿವಾಸಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೨೧ |  
8. ಕಣ್ಣಿನ ಪಾಪೆ, ಕನೀನಿಕೆ. "ಲಲಿತನಯನತಾರಾಃ ಕ್ಷಾಮ-  
ವಕ್ತೇನ್ದುಬಿಮ್ಬಾ ರಜನಯ ಇವ ನಿರ್ದಾಕಲಾಂತನಿಲೋತ್ಪಲಾಕ್ಷಯಃ"   
ಮಾಘಂ ೧೧-೨೦ |

**ತಾರಾಕೂಟ ತಾರಾಕೂಟ** (ನಂ) ವಿವಾಹಕ್ಕಾಗಿ ವಧೂವರರ  
ನಕ್ಷತ್ರಗಳಿಗೆ ಹೊಂದಿಕೆ ನೋಡುವ ಕೂಟಗಳಲ್ಲೊಂದು.  
ಕೆಲವರು ಎಂಟು ಕೂಟಗಳನ್ನೂ ಇನ್ನು ಕೆಲವರು ಹತ್ತು  
ಕೂಟಗಳನ್ನೂ ಮತ್ತೆ ಕೆಲವರು ಹನ್ನೆರಡು ಕೂಟಗಳನ್ನೂ  
ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. "ವರ್ಣೋ ವಶ್ಯಂ ತಥಾ ತಾರಾ ಯೋನಿಃ  
ಗ್ರಹಮೇತ್ರಕಮ್ | ಗಣಮೇತ್ರಂ ಭಕೂಟಂ ಚ ನಾಡೀ ಚೇತೇ ಗುಣಾಧಿಕಾಃ"   
ಮುಂ ಚಿಂ |

**ತಾರಾಕ್ಷ ತಾರಾಕ್ಷ** (ಪುಂ) ತಾರಕಾಸೂರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.  
"ತಾರಕ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ತಾರಾಧಿಪ ತಾರಾಧಿಪ** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ, ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ರಾಜ.  
ತಾರಾಣಾಮಧಿಪಃ | "ಸ ತಪ್ತಕಾರ್ತಸ್ವರಭಾಸ್ವರಾಮ್ಬರಃ ಕಠೋ-  
ತಾರಾಧಿಪಲಾಂಛನಂಚಿವಿಃ" ಮಾಘಂ ೧-೨೦ | -ಅಧಿಪತಿಃ  
-ಅಧಿಪತಿಃ.

**ತಾರಾನಾಥ ತಾರಾನಾಥ**, -ಪತಿ - ಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ.  
2. ವಾಲಿ. 3. ಬೃಹಸ್ಪತಿ. ತಾರಾಣಾಂ ತಾರಾಯಾ ವಾ ನಾಥಃ  
ಪತಿರ್ವಾ |

**ತಾರಾಪಥ ತಾರಾಪಥ** (ಪುಂ) ಗಗನ, ಆಕಾಶ, ನಕ್ಷತ್ರಗಳ  
ಮಾರ್ಗ. ತಾರಾಣಾಂ ಪಥಾಃ "ಅಃ" (೪-೪-೭೪) |

**ತಾರಾಪಿಡ ತಾರಾಪಿಡ** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ತಾರಾಣಾಮಾಪಿಡಃ  
ಭೂಷಣಮಿವ |

**ತಾರಾಪ್ರಮಾಣ ತಾರಾಪ್ರಮಾಣ** (ನಂ) ಅಶ್ವಿನೀ ಮೊದಲಾದ  
ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರ ಮಂಡಲಗಳಲ್ಲಿರುವ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಸಂಖ್ಯೆ.  
ಅಶ್ವಿನಿಯಿಂದ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ಗಣಿಸಿದಾಗ ಸಂಖ್ಯೆ: ೨, ೩, ೦,  
5, 3, 1, 5, 3, 6, 5, 8, 15, 5, 1, 1, 5, 4,  
3, 11, 2, 8, 3, 5, 100, 15, 8 ಮತ್ತು 32.  
"ಶಿಕ್ಷಿಗುಣ ರಸೇಂದ್ರಿಯಾನಲಶಶಿವಿಷಯಗುಣತುಪ್ತವಸುಪಕ್ಷಾಃ |  
ವಿಷಯಕಚಂದ್ರಭೂತಾರ್ಣವಾಗ್ನಿರ್ದ್ರಾಶ್ವಿವಸುದಹನಾಃ | ಭೂತಶತಪಕ್ಷ-

ವಸವೋ ದ್ವಾತ್ರಿಶಂಚೇತಿ ತಾರಕಾಮಾನಮ್ | ಕ್ರಮಶೋಽಶ್ವಿನ್ಯಾದೀನಾಂ  
ಕಾಲಸ್ತಾರಾಪ್ರಮಾಣೇನ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೮-೧, ೨ |

**ತಾರಾಭೂಷಾ ತಾರಾಭೂಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾತ್ರಿ. ತಾರಾ ಭೂಷಾ  
ಭೂಷಣಂ ಯಸ್ಯಾಃ |

**ತಾರಾಭ್ರ ತಾರಾಭ್ರ** (ಪುಂ) ಕರ್ಪೂರ. ತಾರೋ ನಿರ್ಮಲಃ  
ಅಭ್ರ ಇವ |

**ತಾರಾಮಂಡಲ ತಾರಾಮಂಡಲ** (ನಂ) ನಕ್ಷತ್ರಮಂಡಲ.  
ತಾರಾಣಾಂ ಮಂಡಲಮ್ |

**ತಾರಾಮೃಗ ತಾರಾಮೃಗ** (ಪುಂ) ಮೃಗಶಿರಃ ನಕ್ಷತ್ರ.  
ತಾರಾರೂಪೋ ಮೃಗಃ | "ಅನ್ವಧಾವನ್ ಮೃಗಂ ರಾಮೋ ರುದ್ರಸ್ತಾರಾಮೃಗಂ  
ಯಥಾ" ಭಾಂ ವನಂ ೨೭೯-೧೧ |

**ತಾರಾವತೀ ತಾರಾವತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುತ್ಸ್ಥರಾಜನ ಪತ್ನಿ  
ಯಾದ ಮನೋನೃಧಿನಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ದುರ್ಗಾದೇವಿ,  
ಪರಶಿವನ ಅವತಾರವಾದ ಚಂದ್ರಶೇಖರನ ಪತ್ನಿ.

**ತಾರಿಕ ತಾರಿಕ** (ನಂ) ನದಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ದಾಟಿಸುವ  
ಕೂಲಿ. "ಗಭಿಣಿ ತು ದ್ವಿಮಾಸಾದಿಷ್ಟತಥಾ ಪ್ರವ್ರಜಿತೋ ಮುನಿಃ |  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾ ಲಿಙ್ಗಿನ್ಶೇವ ನ ದಾಪ್ಯಸ್ತಾರಿಕಂ ತರೇ" ಮನುಂ  
೮-೪೦೭ |

**ತಾರಿತ ತಾರಿತ** (ವಿಂ) 1. ದಾಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಕಷ್ಟದಿಂದ  
ಪಾರುಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ತ್ (ಫಲನ-  
ತರಣಯೋಃ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

**ತಾರಿನ್ ತಾರಿನ್** (ವಿಂ) 1. ದಾಟಿಸುವವನು. 2. ರಕ್ಷಿಸು  
ವವನು, ಕಾಪಾಡುವವನು. 3. ತೊಂದರೆಯಿಂದ ಪಾರು  
ಮಾಡುವವನು, ಕಷ್ಟದಿಂದ ತಪ್ಪಿಸುವವನು. ತಾರಯತಿ-ತ್  
(ಫಲನತರಣಯೋಃ) + ಣಿಕ್ "ಣಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪) | ತಾರಿಣಿ ತಾರಿಣೀ.

**ತಾರುಣ್ಯ ತಾರುಣ್ಯ** (ನಂ) ಪ್ರಾಯ, ಯೌವನ. ತರುಣಸ್ಯ  
ಭಾವಃ "ಛ್ಯವ್" (೪-೧-೧೨೪) | "ಸ್ಮರಾನ್ವಾ ಗಾಢತಾರುಣ್ಯಾಃ  
ಸಮಸ್ತರತಿಕೋವಿದಾಃ" ಸಾಂ ದಂ |

**ತಾರೆಯ ತಾರೆಯ** (ಪುಂ) 1. ವಾಲಿಯ ಮಗ ಅಂಗದ.  
2. ಚಂದ್ರನ ಮಗ ಬುದ್ಧ. ಇವನು ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಪತ್ನಿ  
ಯಾದ ತಾರೆಯಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರನಿಂದ ಜನಿಸಿದವನು. ತಾರಾಯಾ  
ಅಪತ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೦) |

**ತಾರ್ಕಿಕ ತಾರ್ಕಿಕ** (ವಿಂ) 1. ತರ್ಕಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ತಿಳಿದು  
ವನು. 2. ತರ್ಕಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು.  
ತರ್ಕಂ ತರ್ಕಶಾಸ್ತ್ರಂ ವೇತ್ತಿ ಅಧೀಕ್ಷೇ ವಾ "ಠಕ್" (೪-೨-೬೦) |

**ತಾರ್ಕ್ಯ ತಾರ್ಕ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಕಶ್ಯಪನ ಮಗ ಗರುಡ,  
ಪಕ್ಷಿಗಳ ರಾಜ. 2. ಗರುಡನ ಅಣ್ಣ. ತಕ್ಷಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಮ್



"ಯ" (೪-೧-೧೦೪)। "ತಸ್ತೇನ ತಾತ್ಪರ್ಯಾತ್ ಕಿಲ ಕಾಲಿಯೇನ ಮಣಿ ವಿಸೃಷ್ಟಂ ಯಮುನಿಕಸಾ ಯಃ" ರಘುಂ ೬-೪೯। 3. ಒಬ್ಬ ಮಹರ್ಷಿ. [ಮಂಧುಮಾರನೆಂಬ ರಾಜ ನೊಬ್ಬನು ಬೇಟೆಗಾಗಿ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಅಜಾಗರೂಕತೆಯಿಂದ ಈ ಯುಷಿಯ ಮಗನನ್ನು ಕೊಂದನು. ಬಳಿಕ ತನ್ನ ಅಪರಾಧವನ್ನು ತಿಳಿಸಲು ಯುಷಿಯ ಬಳಿಗೆ ಬಂದಾಗ ಯುಷಿಯು ಕೋಪಿಸಿಕೊಳ್ಳದೆ ತನ್ನ ಅಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಸಾವಿನ ಹೆಸರೇ ಇಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳಿ ತನ್ನ ಮಗನನ್ನು ಕರೆಯಲು ಮೃತನಾಗಿದ್ದ ಯುಷಿಮಾರನು ಕೂಡಲೆ ಎದ್ದು ಬಂದನು. ಇಂತಹ ಮಹಿಮೆಯನ್ನು ಹೇಗೆ ಸಂಪಾದಿಸಿದರೆಂದು ರಾಜನು ಯುಷಿಯನ್ನು ಕೇಳಲು ಸದ್ವರ್ತನವೇ ಎಲ್ಲಕ್ಕೂ ಕಾರಣವೆಂದು ಯುಷಿಯು ಉತ್ತರಿಸಿದನು.] ಭಾಂ ವನಂ ೧೮೭। 4. ಮತ್ತಿಮರ. 5. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. 6. ರಥ, ತೇರು. 7. ಪಕ್ಷಿ. 8. ಗಾಡಿ. 9. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. 10. ಒಂದು ಪರ್ವತ. (ನಂ) 11. ರಸಾಂಜನ. "ತಾತ್ಪರ್ಯಃ ಸ್ಯಾದಶ್ವಕರ್ಣಾಶ್ವವಕ್ಷೋ ರಥತುರಗ್ಗಯೋಃ। ತಾತ್ಪರ್ಯಂ ರಸಾಂಜನೇ ತಾತ್ಪರ್ಯೋ ಗರುಡೇ ಗರುಡಾಂಜನೇ" ವಿಶ್ವಂ।

**ತಾತ್ಪರ್ಯಧ್ವಜ ತಾತ್ಪರ್ಯಧ್ವಜ** (ಪುಂ) ಗರುಡವಾಹನನಾದ ವಿಷ್ಣು. ತಾತ್ಪರ್ಯ ಧ್ವಜಶ್ಚಿಹ್ನಮಸ್ಯ।

**ತಾತ್ಪರ್ಯನಾಯಕ ತಾತ್ಪರ್ಯನಾಯಕ** (ಪುಂ) ಗರುಡ, ಪಕ್ಷಿಗಳ ರಾಜ. ತಾತ್ಪರ್ಯಾಣಾಂ ನಾಯಕಃ।

**ತಾತ್ಪರ್ಯಶಿಲ ತಾತ್ಪರ್ಯಶಿಲ** (ನಂ) ರಸಾಂಜನ. ತಾತ್ಪರ್ಯಶಿಲೇ ಭವಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೪೩)। "ಲೌಹಂ ಚೂರ್ಣಂ ಮಾಗಧಿಂ ತಾತ್ಪರ್ಯಶಿಲಂ ತುಲ್ಯಾಃ ಕಾರ್ಯಾಃ ಕೃತ್ವಾ ಕರ್ಣಾಸ್ತಿಸ್ತಿಸ್ತಾಶ್ಚ" ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೯-೨೪।

**ತಾರ್ಣ ತಾರ್ಣ** (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. (ವಿಂ) 2. ತೃಣ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಹುಲ್ಲಿನಿಂದ ತಯಾರಾದ. ತೃಣಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। 3. ಹುಲ್ಲು ಮಾರುವ ಸ್ಥಳ ದಿಂದ ಬಂದ ತೆರಿಗೆ. ತೃಣಾತ್ ತೃಣವಿಕ್ರಯಸ್ಥಾನಾತ್ ಆಗತಃ "ಅನ್" (೪-೩-೭೬)।

**ತಾರ್ಣಕರ್ಣ ತಾರ್ಣಕರ್ಣ** (ಪುಂ) ತೃಣಕರ್ಣ ಮಹರ್ಷಿಯ ಮಗ. ತೃಣಕರ್ಣಸ್ಯಪಃ ಅಪತ್ಯಂ "ಅನ್" (೪-೧-೧೧೨)।

**ತಾರ್ಣೀಯಿಕ ತಾರ್ಣೀಯಿಕ** (ವಿಂ) ಮೂರನೆಯ. ತೃತೀಯ-ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಀಕಕ್" (ವಾಂ ೪-೩-೪೮)। "ಅಯಮಾಸ್ತೇ ವಿನಾ ಶಮ್ಭುಸ್ತಾರ್ಣೀಯಿಕಂ ವಿಲೋಚನಮ್" ಚಂದ್ರಾಂ। "ತಾರ್ಣೀಯಿಕಂ ಪುರಾರೇಸ್ತದವತು ಮದನಪ್ಲೋಷಣಂ ಲೋಚನಂ ವಃ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೪।

**ತಾರ್ಯ ತಾರ್ಯ** (ನಂ) 1. ನದಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ದಾಟಿಸಲು ಕೊಡುವ ಕೂಲಿ. "ಭಾಂಡಪೂರ್ಣಾನಿ ಯಾನಾನಿ ತಾರ್ಯ

ದಾಪ್ಯಾನಿ ಸಾರತಃ। ರಿಕ್ತಭಾಂಡಾನಿ ಯತ್ಕಿಂಚಿತ್ ಪುಮಾಂಸ-ಶ್ರಾಪರಿಚ್ಛದಾಃ" ಮನುಂ ೮-೪೦೪। (ವಿಂ) 2. ದಾಟಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ದಾಟಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 4. ದಾಟಲಿಡುವ. ತ್ (ಪಲವನತರಣಯೋಃ) "ಪ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)। "ನಾವ್ಯಂ ತ್ರಿಲಿಙ್ಗಂ ನೌತಾರ್ಯಂ" ಅಮಂ। 5. ಜಯಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. "ಯದ್ವಾನ್ವದಃ ಕುರುಕುಲಾವಿಮನಂತಪಾರಮೇಕೋ ರಥೇನ ತತರೇಹ್ಮತಾರ್ಯಸತ್ವಮ್" ಭಾಗಂ ೧-೧೪-೧೪।

**ತಾಲ ತಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಕರತಲ, ಹಸ್ತ, ಅಂಗೈ. ತಾಡಯತೇ - ತಡ (ಆಧಾತೇ) ಕರ್ಮಂ "ಘನ್" (೩-೩-೧೯)। ತಸ್ಯ ಲಃ। 2. ತಾಲವೃಕ್ಷ, ಪನೆಮರ. "ಏಕತಾಲ ಇವೋತ್ಪಾತಪವನ-ಪ್ರೇರಿತೋ ಗಿರಿಃ" ರಘುಂ ೧೪-೨೩। 3. ನೀಡಿದ ಅಂಗುಷ್ಠ ಮತ್ತು ಮಧ್ಯಮ ಬೆರಳುಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ಒಂದು ಅಳತೆ, ಗೇಣು. 4. ಸಂಗೀತದಲ್ಲಿ ಕಾಲವನ್ನು ಅಳೆಯುವುದು, ಸಂಗೀತದ ಕಾಲದ ಪ್ರಮಾಣ, ಹಾಡಬೇಕಾದ ಕಾಲ ವಿಲಂಬಿತ ದ್ರುತ ಮತ್ತು ಮಧ್ಯಕಾಲಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಸಂಗೀತ ಕಾಲಕ್ರಿಯೆಗಳ ಒಂದು ಅಳತೆ. ತಲ (ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಯಾಮ್) "ಘನ್" (೩-೩-೧೮)। ಸ್ವರವನ್ನು ಇಷ್ಟುಕಾಲ ಹಾಡಬೇಕು ಇಷ್ಟುಕಾಲ ವಿಳಂಬಿತ ಇಷ್ಟುಕಾಲ ದ್ರುತ ಇಷ್ಟುಕಾಲ ಮಧ್ಯ ಎಂದು ತಿಳಿಸಲು ಹಸ್ತಗಳ ಬೆರಳುಗಳನ್ನು ಮಡಿಸುವುದು ಮತ್ತು ಮುಂದಕ್ಕೆ ನೀಡುವುದು ಮುಂತಾದ ಅಭಿನಯಗಳಿಂದ ಈ ರೀತಿ ಹಾಡಬೇಕು ಈ ರೀತಿ ನರ್ತನ ಮಾಡಬೇಕು ಎಂದು ಹಾಡುವ ಮತ್ತು ನರ್ತನಗಳ ಕ್ರಿಯೆ ಮತ್ತು ಅವುಗಳ ಕಾಲಗಳ ಅಳತೆಯು "ತಾಲ" ಎನಿಸುವುದು. ಇದಮಿತ್ಯಕಾಲಂ ಗೇಯಮಿತಿ ಕಾಲೇನ ಅಕ್ಷುಲ್ಯಾ-ಚಾಕ್ರಚನಪ್ರಸಾರಣಾದಿಕ್ರಿಯಾಮಾನಂ ತಾಲಃ। ಪಾರ್ವತೀ ಪರಮೇಶ್ವರರ ನೃತ್ಯದಿಂದ ತಾಲವು ಉಂಟಾಯಿತು. ಪರಮೇಶ್ವರನ ನೃತ್ಯಕ್ಕೆ "ತಾಂಡವ" ಎಂದೂ ಪಾರ್ವತಿಯ ನೃತ್ಯಕ್ಕೆ "ಲಾಸ್ಯ" ಎಂದೂ ಸಂಜ್ಞೆಯಿರುವುದರಿಂದ ಅವೆರಡರ ಮೊದಲನೆಯ (ತಾ, ಲ) ಅಕ್ಷರಗಳಿಂದ ತಾಲವು ಹುಟ್ಟಿತು.

**ತಾಳದ ಪ್ರಭೇದಗಳು:** (1) ಧ್ರುವ (2) ಮಠ್ಯ (3) ರೂಪಕ (4) ಝಂಪ (5) ತ್ರಿಪುಟ (6) ಅಟತಾಳ ಮತ್ತು (7) ಏಕತಾಳ ಎಂದು ತಾಳವು ಏಳು ವಿಧ. "ಧ್ರುವೋ ಮಠ್ಯೋ ರೂಪಕಶ್ಚ ಝಂಪಾ ತ್ರಿಪುಟ ಏವ ಚ। ಅಟತಾಲೇಕ-ತಾಲಶ್ಚ ಸಪ್ತತಾಲಾಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾಃ" ಸಂ ವಿಚಾರಂ।

**ತಾಳಜಾತಿಗಳು:** (1) ತ್ರಿಶ್ರ (2) ಚತುರಶ್ರ (3) ಖಂಡ (4) ವಿಶ್ರ ಮತ್ತು (5) ಸಂಕೀರ್ಣಗಳೆಂದು ತಾಳಜಾತಿಗಳು ಐದು.



**ತಾಳಾಂಗಗಳು:** (1) ಲಘು (2) ದ್ರುತ (3) ಅನು ದ್ರುತ (4) ಗುರು (5) ಪ್ಲುತ ಮತ್ತು (6) ಕಾಕಪಾದ ಗಳೆಂದು ತಾಳಾಂಗಗಳು ಆರು.

ಈ ಆರು ಅಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ಮೂರು (ಲಘು ದ್ರುತ ಅನುದ್ರುತ) ಮುಖ್ಯವಾದುವು. ಲಘುವನ್ನು 1 ಚಿಹ್ನೆಯು ಗುರುತಿಸುವುದು. ಅನುದ್ರುತದ ಕಾಲ ಪ್ರಮಾಣ ಒಂದು. ದ್ರುತದ ಕಾಲಪ್ರಮಾಣ ಎರಡು. ಅವುಗಳನ್ನು ಕ್ರಮವಾಗಿ ೦ ೦ ಚಿಹ್ನೆಗಳಿಂದ ಗುರುತಿಸು ತಾರೆ. ಲಘುವಿನಲ್ಲಿ 5 ಬಗೆಗಳಿರುವುವು. ಅವು 3, 4, 5, 7, 9 ಕಾಲಪ್ರಮಾಣಗಳುಳ್ಳವು.

**ಸಪ್ತ ತಾಳಗಳ ಅಂಗಲಕ್ಷಣ:**

**ಧ್ರುವತಾಳ**.....10||

“ಲಘು ಚ ದ್ರುತದ್ವಿಲಘು ಚ ಧ್ರುವತಾಲಾಙ್ಗಮೇವ ಚ” |

**ಮಠ್ಯತಾಳ**.....10|

“ಲಘುದ್ರುತಲಘುಶ್ಚೈವ ಮಠ್ಯತಾಲೇ ಇತಿ ಸ್ಮೃತಃ |

**ರೂಪಕತಾಳ** .....0 |

“ದ್ರುತಮೇಕಂ ಲಘುರೇಕೋ ರೂಪಕಸ್ಯ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ” |

**ಝಂಪತಾಳ**.....100

“ಲಘುಚಾನುದ್ರುತಂ ಚೈವ ದ್ರುತೋ ಘಂಪೇತಿ ಕೀರ್ತಿತಃ” |

**ತ್ರಿಪುಟತಾಳ**.....100

“ಲಘುದ್ರುತದ್ರುತಶ್ಚೈವ ತ್ರಿಪುಟತಾಲಾಙ್ಗಮೇವ ಚ” |

**ಅಟತಾಳ**.....1100

“ಲಘುದ್ವಂದ್ವಂ ದ್ರುತದ್ವಂದ್ವಂ ಅಟತಾಲಾಙ್ಗಮೇವ ಚ” |

**ಏಕತಾಳ** .....1

“ಏಕತಾಲೇ ಲಘುಃ ಸ್ಮೃತಃ” | ಸಂ ವಿವಾದಂ |

ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಧ್ರುವ ವಂಶ

ರೂಪಕ ಏಕತಾಳಗಳು .. ಚತುರಶ್ರಜಾತಿಗೂ

ಝಂಪತಾಳವು .. ಮಿಶ್ರ ..

ತ್ರಿಪುಟತಾಳವು .. ತ್ರಿಶ್ರ ..

ಅಟತಾಳವು .. ಖಂಡ ..

ಸೇರುವುವೆಂದು ಪರಿಗಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ.

ಈ ತಾಳಗಳನ್ನು ಕಲಿಯಲು ಅಲಂಕಾರಗಳು ರಚಿತ ವಾಗಿವೆ. ಅವುಗಳನ್ನು ಮೂರು ಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಅಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿದಲ್ಲಿ ತಾಳಜ್ಞಾನವು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಏರ್ಪಡುವುದು. ಪ್ರಥಮ ದ್ವಿತೀಯ ತೃತೀಯವೆಂದು ಕಾಲಗಳು ಮೂರು. ನಾಲ್ಕನೆಯ ಕಾಲದಲ್ಲೂ ಹಾಡುವುದುಂಟು.

ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಒಂದು ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸುವ ಕಾಲವು ಪ್ರಥಮ. ಪ್ರಥಮ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಅಥವಾ ಎರಡು ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಹಾಡಿದರೆ ದ್ವಿತೀಯಾದಿ ಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ

ಕ್ರಮವಾಗಿ (ಪ್ರಥಮಕಾಲದ ಅಕ್ಷರೆಯಲ್ಲೇ) ಎರಡು ಅಥವಾ ನಾಲ್ಕು, ನಾಲ್ಕು ಅಥವಾ ಎಂಟು, ಎಂಟು ಅಥವಾ ಹದಿನಾರು ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಹಾಡಬೇಕು. ಮೇಲೆ ಹೇಳಿದ ಎಲ್ಲಾ ತಾಳಗಳೂ ಸೇರಿ ಒಟ್ಟು 175 ತಾಳಗಳಾಗುವುವು. 5. ಚಪ್ಪಾಳೆ, ಅಂಗೈಗಳನ್ನು ತಟ್ಟುವುದು, ಹಸ್ತಗಳನ್ನು ಪರಸ್ಪರ ಹೊಡೆದು ಶಬ್ದಮಾಡುವುದು. “ಕರಕಿಸ-ಲಯತಾಲೈರ್ಮುಖಯಾ ನರ್ತ್ಯಮಾನಂ ಸುತಮಿವ ಮನಸಾ ತ್ವಾಂ ವತ್ಸಲೇನ ಸ್ಮರಾಮಿ” ತಂ ರಾಂ 3-19. 6. ಕಂಚಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಿದ ಸಂಗೀತಗಾರರ ಒಂದು (ತಾಳ) ವಾದ್ಯ. 7. ಖಡ್ಗದ ಮುಷ್ಟಿ, ಕತ್ತಿಯ ಹಿಡಿ. (ನಂ) 8. ಹರಿದಳ, ಹಳದಿ ಬಣ್ಣದ ಒಂದು ಖನಿಜ. 9. ತಾಳಫಲ, ತಾಟನಂಗು. 10. ಧನುಸ್ಸು, 48 ಅಂಗುಲ ಉದ್ದವುಳ್ಳ ಬಿಲ್ಲು. “ದ್ವಿದ್ವಾ-ವಿಶತ್ಯಙ್ಗುಲಿಃ ಸ್ಯಾನ್ನಿಚೋಡೇ ದ್ವಚಙ್ಗುಲೋತ್ತರಃ | ಸ್ಯುಶ್ವೇಟ-ಲಿಙ್ಗಕಸ್ತಾಲಃ” ವೇಜಂ | “ತಾಲಃ ಕಾಲಕ್ರಿಯಾಮಾನೇ ಕರಾ-ಸ್ಥಾಲೇ ದ್ರುಮಾಂತರೇ | ಸ್ಯಾದ್ವಿಸ್ತುತಾಮ್ಯಾಮಙ್ಗುಲಮಧ್ಯಮಾಮ್ಯಾಂ ಮಿತಾವಪಿ | ತಸರೋ ಕರತಲೇ ಚಾಪಿ ತಾಲಂ ಚ ಹರಿತಾಲಕೇ” ನಾನಾರ್ಥಂ | 11. ಮನೆಯ ಚಾವಣಿ. 12. ಕಂಪನ, ನಡುಕ. “ತಾಲಂ ತು ಹರಿತಾಲಕೇ | ವಾಚಭಾಂಡೇ ಚ ಕಾಸ್ಯಸ್ಯ ತಾಲಶ್ಚದಿವಿ ಕಂಪನೇ” ವಿಶ್ವಂ | 13. ಮದ್ಯ, ಪನೆಮರದ ಹೆಂಡ. ತಾಲಸ್ಯೇದಮ್ “ಅಣ್” (4-3-120) |

**ತಾಲಕ ತಾಲಕ** (ನಂ) 1. ತಾಪಾಳು, ಅಗಲಿ, ಕೇಲು, ಕೊಂಡಿ.

2. ಹರಿದಳ, ಒಂದು ಹಳದಿಬಣ್ಣದ ಖನಿಜ. 3. ತೊಗರಿ.

4. ಅಳಿಲು. “ಚಿಕ್ರೋಡಸ್ತಾಲಕೋ ರೋಮಶೀತಿ ಚ” ವೇಜಂ |

(ಪುಂ) 5. ತಾಳವೃಕ್ಷ, ಪನೆಮರ.

**ತಾಲಕಂದ ತಾಲಕಂದ** (ಪುಂ) ನಲತಾಳ. ತಾಲಸ್ಯೇವ ಕಂದಮಸ್ಯ |

**ತಾಲಕೀ ತಾಲಕೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪನೆಮರದ ಮದ್ಯ.

**ತಾಲಕೇತು ತಾಲಕೇತು** (ಪುಂ) 1. ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯರು.

ತಾಲಃ ಕೇತುರಸ್ಯ | “ತಾಸಾಂ ಪ್ರಮುಖತೋ ಭೀಷ್ಮಸ್ತಾಲಕೇತು-ರ್ವಿರೋಚತ” ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ 140-41. 2. ಬಲರಾಮ.

**ತಾಲಕೀರ ತಾಲಕೀರ** (ನಂ) ಪನೆಮರದ ಮದ್ಯ.

**ತಾಲಗರ್ಭ ತಾಲಗರ್ಭ** (ಪುಂ) ಪನೆಮರದ ಮದ್ಯ.

**ತಾಲಜ್ಞ ತಾಲಂಕ** (ಪುಂ) ತಾಟಂಕ, ಓಲೆ, ಹೆಂಗಸರ ಕರ್ಣಾ ಭರಣ.

**ತಾಲಜಙ್ಗ ತಾಲಜಂಘ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ದೇಶ. (ಪುಂ

ಬಂ ಬಂ) 2. ಆ ದೇಶದ ದೊರೆಗಳು. 3. ಆ ದೇಶದ ಜನರು.

“ಸ ಹೇಹಯಾನ್ ಸಮುತ್ಸಾಘ ತಾಲಜಙ್ಗಾಶ್ಚ ಭಾರತ” ಭಾಂ ಬನಂ |



ತಾಲಧ್ವಜ ತಾಲಧ್ವಜ (ಪುಂ) 1. ಬಲರಾಮ. 2. ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯ. ತಾಲ: ಧ್ವಜೋಽಸ್ಯ |

ತಾಲಪತ್ರ ತಾಲಪತ್ರ (ನಂ) 1. ಹೆಂಗಸರ ಕಿವಿಯ ಅಭರಣ. ತಾಲಸ್ಯ ಪತ್ರಮಿವ | 2. ಒಲೆಗರಿ, ಬರೆಯಲು ಪೂರ್ವಕಾಲದಲ್ಲಿ ಉಪಯೋಗಿಸುತ್ತಿದ್ದ ತಾಳೆಗರಿ. "ತಾಲಪತ್ರಂ ತು ತಾಡಕ್ಕೆ ರಣಾಯಾಂ ತಾಲಪತ್ರಪಿ" ಮೇದಿಂ |

ತಾಲಪತ್ರಿಕಾ ತಾಲಪತ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೆಲತಾಳೆ. ತಾಲಸ್ಯ ಪತ್ರಮಿವ ಪತ್ರಮಸ್ಯಾ: "ತಾಲಪತ್ರಿಕಾ" (೪-೧-೬೪) | ಸಂಜಾಯಾಂ "ಕನ್" |

ತಾಲಪತ್ರಿ ತಾಲಪತ್ರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಲಿಯಾಲದ ಗಿಡ. ಇಲಿ ಕಿವಿಯ ಗಿಡ. "ತಾಲಪತ್ರಂ ತು ತಾಡಕ್ಕೆ ರಣಾಯಾಂ ತಾಲಪತ್ರಪಿ" ಮೇದಿಂ |

ತಾಲಪರ್ಣ ತಾಲಪರ್ಣ (ಸ್ತ್ರೀನಂ) 1. ಮುರೆಯೆಂಬ ಗಂದಿಗರ ಸರಕು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ತಾಲಪರ್ಣ" (೪-೧-೬೪) | -ಪರ್ಣಿ -ಪರ್ಣೀ. 2. ಸಬ್ಬಸಿಗೆ. "ತಾಲಪರ್ಣಿ ತು ದೇವ್ಯಾ ಗಂಧಕುಟಿ ಮುರಾ" ಅಮಂ |

ತಾಲಪುಷ್ಪಕ ತಾಲಪುಷ್ಪಕ (ನಂ) 1. ಬಿಳಿ ನೈದಿಲೆ ಗಡ್ಡೆ. ತಾಲ: ಕ್ಷಣಮುಷ್ಠಿರೀವ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ | "ಕಪ್" (೪-೪-೧೫೪) | 2. ತಾಲವೃಕ್ಷದ ಹೂವು.

ತಾಲಫಲ ತಾಲಫಲ (ನಂ) ಪನೆಕಾಯಿ, ತಾಟನಂಗು. ತಾಲಸ್ಯ ಫಲಮ್ |

ತಾಲಬದ್ಧ ತಾಲಬದ್ಧ (ವಿಂ) ತಾಳದ ಗತಿಗೆ ಅನುಗುಣವಾದ, ತಾಳದ ನಿಯಮಕ್ಕೆ ಒಳಪಟ್ಟಿರುವ.

ತಾಲಮೂಲಿಕಾ ತಾಲಮೂಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಇಲಿಯಾಲದ ಗಿಡ, ಇಲಿ ಕಿವಿಯ ಗಿಡ. 2. ನೆಲತಾಳೆ.

ತಾಲಯನ್ತ್ರ ತಾಲಯನ್ತ್ರ (ನಂ) 1. ಬೀಗ. 2. ಬೀಗದ ಕೈ. 3. ಶಸ್ತ್ರ ಚಿಕಿತ್ಸೆಗಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ಆಯುಧ.

ತಾಲವನ ತಾಲವನ (ನಂ) ತಾಲವೃಕ್ಷಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ತೋಪು, ಪನೆಮರಗಳ ಕಾಡು.

ತಾಲವೃತ್ತ ತಾಲವೃತ್ತ (ನಂ) ಬೀಸಣಿಗೆ. ತಾಲೇ ಕರತಲೇ ವೃತ್ತಂ ಬಂಧನಮಸ್ಯ | "ತಾಲವೃತ್ತೇನ ಕಿಂ ಕಾರ್ಯಂ ಲಬ್ಧೇ ಮಲಯ-ಮಾರುತೇ" ಉಕ್ತಂ | "ನ ವಾತಿ ವಾಯುಸ್ತತ್ಪಾಶ್ವೇ ತಾಲ-ವೃತ್ತಾನಿಲಾಧಿಕಮ್" ಕುಮಾಂ ೨-೩೫ | ಸಂಜಾಯಾಂ "ಕನ್" (೪-೩-೭೫) | -ವೃತ್ತಕಮ್ -ವೃತ್ತಕಮ್ |

ತಾಲವ್ಯ ತಾಲವ್ಯ (ವಿಂ) ತಾಲುವಿನಲ್ಲಿ ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ವರ್ಣ, ದವಡೆಯಲ್ಲಿ ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ಅಕ್ಷರ. ತಾಲುನಿ ಭವ: "ಯತ್" (೪-೩-೫೫) |

ತಾಲಾಚ್ಚ ತಾಲಾಚ್ಚ (ಪುಂ) ಬಲರಾಮ. ತಾಲ: ತಾಲ ಚಿಹ್ನಿತೋಽಚ್ಚೋ ಧ್ವಜೋಽಸ್ಯ |

ತಾಲಾವಚರ ತಾಲಾವಚರ (ಪುಂ) ನಟ, ತಾಲವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಕುಣಿಯುವವನು. ತಾಲೇನಾವಚರತಿ - ಅವ + ಚರ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಸರ್ವವೇಶಿ ನಟಾರಮ್ಭ-ಸ್ತಾಲಾವಚರೋ ನಟ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ತಾಲಿ(ಲಿ) ತಾಲಿ(ಲಿ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭೂಮ್ಯಾಮಲಕ, ನೆಲನೆಲ್ಲಿ ಗಿಡ. 2. ತೋಗರಿ ಗಿಡ. 3. ಇಲಿಯಾಲದ ಗಿಡ. 4. ತಾಲೀಶಪತ್ರಯ ಗಿಡ.

ತಾಲಿಕ ತಾಲಿಕ (ಪುಂ) 1. ಅಂಗೈಹೊಡೆತ, ಹಸ್ತದಿಂದ ಕೊಡುವ ಏಟು. ತಾಲೇನ ಕರತಲೇನ ನಿವೃತ್ತ: "ಕಬ್" (೪-೧-೭೯) | "ಉಚ್ಚಾಟನೀಯ: ಕರತಾಲಿಕಾನಾಂ ದಾನಾದಿ-ದಾನಿ ಭವತೀಭಿರೇಶ:" ನೈಷಂ ೩-೭ | 2. ಹಸ್ತಪತ್ರಗಳ ಕಟ್ಟು. ಹಸ್ತಲಿಖಿತ ಪ್ರತಿಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟಿಡುವ ಒಂದು ಚೀಲ. ತಾಲಿ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೪-೩-೭೫) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ -ಕಾ. 3. ನೆಲತಾಳೆ. 4. ಮಂಜಿಷ್ಠ, ಮಾದವನ ಬೇರು.

ತಾಲಿತ ತಾಲಿತ (ನಂ) 1. ಒಂದು ವಾದ್ಯ ಭಾಂಡ. 2. ದಾರ. 3. ಬಣ್ಣ ಹಾಕಿದ ಬಟ್ಟೆ, ಬಣ್ಣದಲ್ಲಿ ಅದ್ದಿದ ಬಟ್ಟೆ.

ತಾಲಿನ್ ತಾಲಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ತಲ ಋಷಿಯಿಂದ ಉಕ್ತವಾದುದನ್ನು ಅಧ್ಯಯನಮಾಡುವವರು. ತಾಲೇನ ಕೃಷಿಣಾ ಪ್ರೋಕ್ತಮಧೀತಿ "ಗಿಣಿ:" (೪-೩-೧೦೬) |

ತಾಲಿ ತಾಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಾಲವೃಕ್ಷ, ಪನೆಮರ. .. ತಲ (ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಯಾಮ್) + ಗಿಣಿ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಪ್ರಾಪ ತಾಲಿವನಶ್ಯಾಮಮುಪಕಂಠಂ ಮಹೋದಧಿ:" ರಘುಂ ೪-೩೪ | 2. ನೆಲನೆಲ್ಲಿಗಿಡ. "ಜಟಾಮಲಾಂಜ್ಜಟಾ ತಾಲಿ ಶಿವಾ ತಾಮಲಕೀತಿ ಚ" ಅಮಂ | 3. ನೆಲತಾಳೆ. 4. ತಾಲವೃಕ್ಷದ ಮದ್ಯ. 5. ಬೀಗದ ಕೈ. 6. ಅವರೆ.

ತಾಲಿಪತ್ರ ತಾಲಿಪತ್ರ (ನಂ) ತಾಲೀಶಪತ್ರ.

ತಾಲಿಶ ತಾಲಿಶ (ಪುಂ) ತಾಲೀಶಪತ್ರ ಗಿಡ.

ತಾಲಿಶಪತ್ರ ತಾಲಿಶಪತ್ರ (ನಂ) ತಾಲೀಶಪತ್ರ.

ತಾಲು ತಾಲು (ನಂ) ದವಡೆ, ಬಾಯೊಳಗೆ ನಾಲಗೆಗೆ ಆಶ್ರಯವಾದ ಒಂದು ಸ್ಥಾನ. ತರಂತಯನೇನ ವರ್ಣಿ: -ತ (ಪ್ಲವನ-ತರಣಯೋ:) "ತುಣ್" ರೇಫಸ್ಯ ಲಕಾರಶ್ಚ (ಉಂ ೧-೫) | "ಮುಖತಸ್ತಾಲು ನಿಮಿತ್ತಂ ಜಿಹ್ವಾ ತತ್ರೋಪಜಾಯತೇ | ತತೋ ನಾನಾರಸೋ ಜಜ್ಞೇ ಜಿಹ್ವಯಾ ಸೋಽಧಿಗಮ್ಯತೇ" ಭಾಗಂ ೧೦-೧೮ |

ತಾಲುಜಿಹ್ವ ತಾಲುಜಿಹ್ವ (ಪುಂ) ಮೊಸಳೆ. ತಾಲ್ವೇವ ಜಿಹ್ವಾ ಯಸ್ಯ | ಮೊಸಳೆಗೆ ನಾಲಗೆಯೊಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ದವಡೆ



ಯಿಂದಲೇ ರಸವನ್ನು ಹೀರುವ ಕಾರಣ ಈ ಹೆಸರು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಢಾಪ್" (೪-೧-೪)। -ಜಿಹ್ವಾ -ಜಿಹ್ವಾ. ಹೆಣ್ಣು ಮೊಸಳೆ.

**ತಾಲುಪಾಕ ತಾಲುಪಾಕ** (ಪುಂ) ದವಡೆಗೆ ಬರುವ ಒಂದು ರೋಗ, ಪಿತ್ತಾಧಿಕ್ಯದಿಂದ ದವಡೆಯಲ್ಲಿ ಮಾಂಸಗ್ರಂಥಿಯು ಬೆಳೆದು ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ವ್ರಣ. **ದವಡೆಯ ರೋಗಗಳು:** (1) ಗಲಗುಣಿಕಾ (2) ತುಂಡಕೇರಿ (3) ಅಧುಃ (4) ಅಬುದ: (5) ಮಾಸಸಜ್ಜಾತ: (6) ತಾಲು-ಪುಪ್ಪುಟ: (7) ತಾಲುಶೋಷ: ಮತ್ತು (8) ತಾಲುಪಾಕ:। ಪಿತ್ತದಿಂದ ಮಾಂಸಗ್ರಂಥಿಯು ಬೆಳೆದು ತೀವ್ರವಾಗಿ ಉಂಟಾದುದು "ತಾಲುಪಾಕ". "ಪಾಕಮರ್ಯಥಾರ್ಥಂ ತಾಲ್ಯನೇನ ತಾಲುಪಾಕಂ ವದಂತಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ನಿಧಾನಂ ೧೬-೪೫।

**ತಾಲುಪುಪ್ಪುಟ ತಾಲುಪುಪ್ಪುಟ** (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ದವಡೆಯ ರೋಗ, ಕಫಾಧಿಕ್ಯದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ದವಡೆಯ ಉಂಟ.

**ತಾಲುಶೋಷ ತಾಲುಶೋಷ** (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ದವಡೆಯ ರೋಗ. ದವಡೆಯು ಒಣಗುವುದು, ದವಡೆಯು ಬಿರಿಯುವುದು ಪಿತ್ತವಾತದಿಂದ ಶ್ವಾಸ ಇವು "ತಾಲುಶೋಷ"ದ ಲಕ್ಷಣಗಳು.

**ತಾಲೂರ ತಾಲೂರ** (ಪುಂ) ನೀರಿನ ಸುಳಿ.

**ತಾವಕ ತಾವಕ** (ವಿಂ) ನಿನ್ನದಾದ, ನಿನ್ನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ತವ ಇದಮ್-ಯುಷ್ಮದ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೨೦)। ತವಕಾದೇಶ: (೪-೩-೩)। "ಮನೀಷಿತಾ: ಸಂತಿ ಗೃಹೇಷು ದೇವತಾಸ್ತಪ: ಕ್ವ ವತ್ಸೇ ಕ್ವ ಚ ತಾವಕಂ ವಪು:" ಕುಮಾಂ ೫-೪। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಢಿಪ್" (೪-೧-೧೫)। ತಾವಕೀ ತಾವಕೀ. "ಇಮಾಮಹಂ ವೇದ ನ ತಾವಕೀ ಧಿಯಂ ವಿಚಿತ್ರರೂಪಾ: ಖಲು ಚಿತ್ತವೃತ್ತಯ:" ಕಿರಾಂ ೧-೩೭।

**ತಾವಕೀನ ತಾವಕೀನ** (ವಿಂ) ನಿನ್ನದಾದ, ನಿನ್ನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ತವ ಇದಮ್-ಯುಷ್ಮದ್ "ಖನ್" (೪-೩-೧)। ತವಕಾದೇಶ: (೪-೩-೩)। "ತಥಾಪಿ ನಿಘ್ನಂ ನೃಪ ತಾವಕೀನೇ: ಪ್ರಹ್ಲಿಕೃತಂ ಮೇ ಹೃದಯಂ ಗುಣೋಪೇ:" ಕಿರಾಂ ೩-೧೨।

**ತಾವತ್ ತಾವತ್** (ವಿಂ) 1. ಅಷ್ಟು ಪರಿಮಾಣವುಳ್ಳ, ಅಷ್ಟು ಅಳತೆಯುಳ್ಳ, ಅಷ್ಟು ಗಾತ್ರವುಳ್ಳ. ತತ್ ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ-ತದ್ "ವತುಪ್" (೫-೨-೩೯)। ಆಕಾರೋನ್ತಾದೇಶ: (೬-೩-೧೧)। "ಯಾವಾನರ್ಥಂ ತದಪಾನೇ ಸರ್ವತ: ಸಂಪ್ಲೂತೋದಕೇ। ತಾವಾನ್ ಸರ್ವೇಷು ವೇದೇಷು ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ವಿಜ್ಞಾನತ:" ಗೀತಾ ೨-೪೬। "ಪುರೇ ತಾವಂತಮೇವಾಸ್ಯ ತನೋತಿ ರವಿರಾತಪಮ್" ಕುಮಾಂ ೨-೩೩। 2. ಅಷ್ಟು ದೊಡ್ಡದಾದ, ಅಷ್ಟು ಹಿರಿದಾದ. 3. ಅಷ್ಟು ಅಧಿಕವಾದ, ಅಷ್ಟು ಹೆಚ್ಚಾದ. 4. ಸ್ವಲ್ಪವಾದ, ಅಲ್ಪ

ವಾದ. "ಅಸಮಾಪಿತಕೃತ್ಯಸಂಪದಾಂ ಹತವೇಗಂ ವಿನಯೇನ ತಾವತಾ। ಪ್ರಮವನ್ತ್ಯಭಿಮಾನಶಾಲಿನಾಂ ಮದಮುತ್ತಮಭಯಿತು ವಿಭೂತಯ:" ಕಿರಾಂ ೨-೪೮। (ಅವ್ಯಂ) 5. ಅಷ್ಟು ದೊಡ್ಡದಾಗಿ, ಅಷ್ಟು ಹಿರಿದಾಗಿ. 6. ಅಷ್ಟು ಅಧಿಕವಾಗಿ, ಅಷ್ಟು ಹೆಚ್ಚಾಗಿ. 7. ಅಷ್ಟು ದೂರವಾಗಿ. 8. ಅಷ್ಟರಲ್ಲಿ, ಅಕಾಲಕ್ಕೆ ಮುಂಚೆಯೇ. "ಯಾವದ್ವಚಗಾಹಂತ ನ ದಂತಿನಾಂ ವದಾಸ್ತು-ರಕ್ಷಮೆಸ್ತಾವದುದೀರಿತಂ ಕುರೇ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೫೮। 9. ಅಲ್ಲಿಯ ವರೆಗೂ, ಅಕಾಲದವರೆಗೂ. "ತಾವದಾಶ್ರೀಯತೇ ಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾ ತಾವದಸ್ಯ ಸ್ಥಿರಂ ಯಶ:" ಪುರುಷಸ್ತಾವದೇವಾಸೌ ಯಾವನ್ಮಾನಾನ್ ಹೀಯತೇ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೬೧। 10. ಅಲ್ಲಿಯವರೆಗೂ, ಆ ಪ್ರದೇಶದವರೆಗೂ, ಅಷ್ಟು ದೂರದವರೆಗೂ. "ತಾವದ್ವತಿ-ಭೃತಾಡೋಪಾ ಪಾದಯೋಸ್ತೇನ ಸಂಹಿತಾ। ನ ವೇದಪಾಠಿಕಣ್ಠೇಭ್ಯೋ ಯಾವದಶ್ರಾವಿ ಸಂಹಿತಾ" ನೈಷಂ ೧೭-೧೬೫। 11. ಆಗ, ಆ ಸಮಯದಲ್ಲಿ. "ಮರ್ತಾಪಿ ತಾವತ್ಕೃತ್ಯಕೇಶಿಕಾನಾಮನುಷ್ಠಿತಾ-ನಂತರಜಾವಿವಾಹ:" ರಘುಂ ೭-೩೨। 12. ಅವಧಾರಣ, ನಿಶ್ಚಯ. "ಇಂದ್ರಪ್ರಸ್ಥಗಮಸ್ತಾವತ್ಕಾರಿ ಮಾ ಸಂತು ವೇದಯ:। ಆಸ್ಮಾಕದಂತಿಸಾಂನಿಧ್ಯಾದ್ರಾಮನೀಮೃತಮೂಹ:" ಮಾಘಂ ೨-೬೩। "ತಪಸ್ವಿವೇಷಕ್ರಿಯಯಾಪಿ ತಾವದ: ಪ್ರೇಕ್ಷಣೀಯ: ಸುತರಾಂ ಬಭೂವ" ರಘುಂ ೧೪-೯। 13. ಪರಿಮಾಣ, ಅಳತೆ, ಮಾನ. "ತ್ವಮೇವ ತಾವತ್ಪರಿಚಿಂತಯ ಸ್ವಯಂ ಕದಾಚಿದೇತೇ ಯದಿ ಯೋಗಮಹಂತ:" ಕುಮಾಂ ೫-೬೭। ತಾವನ್ಮಾತ್ರಮಿತ್ಯರ್ಥ:। 14. ಮೊದಲು, ಒಂದು ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ. "ಮಾರ್ಗಂ ತಾವತ್ಕೃಣು ಕಥಯತ-ಸ್ವತ್ಪ್ರಯಾಣಾನುರೂಪಮ್" ಮೇಘಂ ೧-೧೩। 15. ಸಾಕಲ್ಯ, ಕಾತ್ಯಲ್ಯ, ಎಲ್ಲವೂ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ. "ತಾವತ್ಪ್ರಕೀರ್ಣಾಮಿ-ತವೋಪಚಾರಮಿन्द्रಾಯುಧಯೋತಿಸತೋರಣಾಕ್ಷಮ್" ರಘುಂ ೭-೪। 16. ಅವಧಿ, ಎಲ್ಲ, ಗಡಿ. 17. ಸಂಭ್ರಮ, ಆಶ್ಚರ್ಯ. 18. ಅಧಿಕಾರ. "ತಾವದ್ವಾವದಿವಾವಧೌ। ಕಾತ್ಸರ್ಯೋಪಧಾರಣೇ ಮಾನೇ" ಹೇಮಂ। "ತಾವನ್ಮಾನೇಪಧಾರಣೇ। ಸಂಭ್ರಮೇ ಚ ಪರಿಚ್ಛೇದೇ ತಥಾ ಕಾತ್ಸರ್ಯಾಧಿಕಾರಯೋ:" ಮೇದಿಂ।

**ತಾವತಿಕ ತಾವತಿಕ** (ವಿಂ) ಅಷ್ಟು ಪರಿಮಾಣದಿಂದ ತೆಗೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಷ್ಟೇ ಬೆಲೆಗೆ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ತಾವತಾ ಕ್ರೀತ: - ತಾವತ್ "ಕನ್" (೫-೧-೨೨)। ವಾ ಇಡಾಗಮ: (೫-೧-೨೩)। ಇಡಭಾವೇ ತಾವತ್ಕ: ತಾವತ್ಕು:।

**ತಾವದ್ವಯಸ ತಾವದ್ವಯಸ** (ವಿಂ) ಅಷ್ಟು ಪ್ರಮಾಣವುಳ್ಳ, ಅಷ್ಟು ಹಿರಿದಾದ. ತಾವತ್ ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ದ್ವಯಸಕ್" (ವಾಂ ೫-೨-೩೭)। ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಮಾತ್ರಕ್" (೫-೨-೩೭)। ತಾವನ್ಮಾತ್ರಮ್ ತಾವನ್ಮಾತ್ರಮ್.

**ತಾವದ್ವರ್ಷ ತಾವದ್ವರ್ಷ** (ವಿಂ) ಅಷ್ಟು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸುಳ್ಳ, ತಾವಂತೋ ವರ್ಷಾ ಯಸ್ಯ।



ತಾವಿಷ ತಾವಿಷ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. 2. ಸ್ವರ್ಗ. ತವ (ಸೋತ್ರೋ ಧಾತು:) "ದಿಷ್ವ" (ಓಂ ೧-೪೮) | ಸ ಚ ವಾ ಣಿತ್ | "ತವಿಷತಾವಿಷಾವಿಷೋ ಸ್ವರ್ಗೋ ಚ" ಸಿಂ ಕೌಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವಿ-೩೬. 3. ನದಿ, ಹೊಳೆ. 4. ದೇವಕನ್ಯೆ. 5. ಭೂಮಿ. ಸಿಂ ಕೌಂ |

ತಾಸ್ಕರ್ಯ ತಾಸ್ಕರ್ಯ (ನಂ) ಕೃತ್ಯ. ತಸ್ಕರಸ್ಯ ಭಾವ: "ಛಜ್" (೪-೧-೧೨೪) |

ತಿಕ್ತ - ಗತೌ (ಮ್.ಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ತೇಕತೇ | ತೀತೇಕೇ | ತೇಕಿತಾ | ತೇಕಿತಾಮ್ | ತೇಕೀಕೃತ | 1. ಹೋಗು. 2. ಹೋದುದು, ತಲುವು, ಸೇರು.

ತಿಕ್ತ ತಿಕ್ತ (ಪುಂ) 1. ಕಹಿರಸ, ಆರು ವಿಧ ಭೋಜ್ಯರಸಗಳ ಲೋಂದು. ತೇಜಯತಿ - ತಿಜ (ನಿಶಾನೇ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | ತಿಕ್ತರಸವು ಗಂಟಲಲ್ಲಿ ಶಾಖವನ್ನು ಉಂಟು ಮಾಡುವುದು. ಮುಖದಲ್ಲಿ ಸ್ವಚ್ಛತೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದು, ಆಹಾರದಲ್ಲಿ ರುಚಿಯನ್ನು ಹುಟ್ಟಿಸುವುದು, ಮತ್ತು ಅಹ್ಲಾದಗೊಳಿಸುವುದು. "ಯೋ ಗಲೇ ಚೋಷಮುತ್ಪಾದಯತಿ ಮುಖವೇಶಾಙ್ಗಂ ಜನಯತಿ ಭಕ್ತರೇವ ಚಾಪಾದಯತಿ ಹೃಷಂ ಚ ಸ ತಿಕ್ತ:" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪-೨-೯ | 2. ಸುಗಂಧ, ಒಳ್ಳೆಯ ವಾಸನೆ. "ತಿಕ್ತೋ ರಸಸುಗಂಧಯೋ:" ಮೇದಿಂ | 3. ಬೆಟ್ಟಮಲ್ಲಿಗೆ ಗಿಡ. 4. ವರುಣವೃಕ್ಷ, ವಲಸೆಗಿಡ. (ನಂ) 5. ಪರ್ಪಟಕ, ಪರ್ಪಟವೃಕ್ಷ. 6. ಕಹಿ ಸವತೆಕಾಯಿ. "ತಿಕ್ತೋ ರಾಜ-ಪಟೋಽಪಿ ಭೀಷ್ವಿವರ್ವೀಕಕಂಠೀ" ವೈಜಂ | 7. ಗುಗ್ಗುಳ, ದೇವಧೂಪ. "ಶ್ರೀಮಾನ್ ಸ್ನಿಗ್ಧ: ಸರ್ವಸಹಶ್ಲೇಷ್ಮಿ ತಿಕ್ತ: ಕಡುಲೆಫು:" ವೈಜಂ | (ವಿಂ) 8. ಕಹಿಯಾದ, ತಿಕ್ತರಸವುಳ್ಳ. 9. ಸುಗಂಧವುಳ್ಳ, ಸುವಾಸನೆಯುಳ್ಳ. "ನಾಡಾತು-ಮನ್ಯಕರಿಮುಕ್ತಮದಾಮ್ಬುತಿವತಂ ಧೃತಾಡ್ಕುಶೇನ ನ ವಿಹಾತುಮಪಿಚ್ಛ-ತಾಮ್ಬ:" ಮಾಘಂ ೪-೩೩ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕ್ತಾ -ಕ್ತಾ. ಕಟುಕ ರೋಹಿಣಿ. "ತಿಕ್ತಸ್ತು ಸುರಭಿ ರಸೇ | ತಿಕ್ತಾ ತು ಕಡುರೋಹಿಣ್ಯಾಂ ತಿವತಂ ಪರ್ಪಟಕೌಷಧೇ" ಹೇಮಂ |

ತಿಕ್ತಕ ತಿಕ್ತಕ (ಪುಂ) 1. ಪಡವಲಗಿಡ. ತಿಕ್ತ ಸಂಜಾಯಾಂ "ಕನ್" (೪-೩-೭೪) | 2. ಖದಿರವೃಕ್ಷ, ಕಗ್ಗಲಿಮರ. 3. ಕಹಿರಸ. 4. ಇಂಗುರೀವೃಕ್ಷ. (ವಿಂ) 5. ಕಹಿಯಾದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪) | ತಿಕ್ತಿಕಾ ತಿಕ್ತಿಕಾ. 6. ಕಹಿಸೋರೆಗಿಡ.

ತಿಕ್ತಿಕಾ ತಿಕ್ತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಹಿಸೋರೆಗಿಡ. ತಿಕ್ತೀನ ರಸೇನ ಕಾಯತಿ - ಕೇ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩) |

ತಿಕ್ತತಂಡುಲಾ ತಿಕ್ತತಂಡುಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಿಪಲಿ, ಹಿಪ್ಪಲಿ.

ತಿಕ್ತತುಂಬಿ ತಿಕ್ತತುಂಬಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಹಿಸೋರೆಗಿಡ.

ತಿಕ್ತತುಂಬಿ ತಿಕ್ತತುಂಬಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಹಿಸೋರೆಗಿಡ.

ತಿಕ್ತಬುಧಾ ತಿಕ್ತಬುಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಘಂಟಾಮಣಿ ಸೊಪ್ಪು, ಕಂಕೋಷ್ಠ.

ತಿಕ್ತಧಾತು ತಿಕ್ತಧಾತು (ಪುಂ) ಪಿತ್ತರಸ.

ತಿಕ್ತಪರ್ವನ್ ತಿಕ್ತಪರ್ವನ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೇರಸೋಪ್ಪು. 2. ಅಮೃತವೃಕ್ಷ. 3. ಅತಿಮಧುರ. ತಿಕ್ತಂ ಪರ್ವಂ ಪ್ರತ್ಯಿ-ಯಸ್ಯಾ: | "ತಿಕ್ತಪರ್ವಾ ಹಿಲಮೋವೀಗುಡ್ಡವೀಯಷ್ಟಿಷ್ಠಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ |

ತಿಕ್ತಪುಷ್ಪಾ ತಿಕ್ತಪುಷ್ಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಗುರು ಶುಂಠಿ. ತಿಕ್ತಾನಿ ಪುಷ್ಪಾಣ್ಯಸ್ಯಾ: | (ನಂ) 2. ಸುವಾಸನೆಯ ಪುಷ್ಪ. (ವಿಂ) 3. ಸುವಾಸನೆಯ ಪುಷ್ಪವುಳ್ಳ ಗಿಡ.

ತಿಕ್ತಫಲ ತಿಕ್ತಫಲ (ಪುಂ) 1. ಕತಕವೃಕ್ಷ, ಚಿಲ್ಲದ ಗಿಡ, ಅಂಟವಾಳದ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 2. ಕಹಿಯಾದ ಹಣ್ಣು ಕಾಯಿ ಗಳುಳ್ಳ ವೃಕ್ಷ. (ನಂ) 3. ಕಹಿಯಾದ ಹಣ್ಣು ಮತ್ತು ಕಾಯಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ -ಲಾ. ಬದನೆ ಗಿಡ.

ತಿಕ್ತಬೀಜಾ ತಿಕ್ತಬೀಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಹಿಸೋರೆಗಿಡ.

ತಿಕ್ತಮರಿಚ ತಿಕ್ತಮರಿಚ (ಪುಂ) ಕತಕವೃಕ್ಷ, ಅಂಟವಾಳದ ಗಿಡ, ಚಿಲ್ಲದ ಗಿಡ.

ತಿಕ್ತರೋಹಿಣಿ ತಿಕ್ತರೋಹಿಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಟುಕರೋಹಿಣಿ.

ತಿಕ್ತವಲ್ಲಿ ತಿಕ್ತವಲ್ಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುರುಟಗೆ ಗಿಡ.

ತಿಕ್ತಶಾಕ ತಿಕ್ತಶಾಕ (ಪುಂ) ವರುಣವೃಕ್ಷ, ವಲಸೆಗಿಡ.

ತಿಕ್ತಸಾರ ತಿಕ್ತಸಾರ (ಪುಂ) 1. ಕಗ್ಗಲಿ ಮರ. (ನಂ) 2. ಕಹಿಯಾದ ರಸ. (ವಿಂ) 3. ಕಹಿಯಾದ ರಸವುಳ್ಳ (ಮರ).

ತಿಕ್ತಾ ತಿಕ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಟುಕರೋಹಿಣಿ. 2. ಅಗುರು ಶುಂಠಿ.

ತಿಕ್ತಿಕಾ ತಿಕ್ತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಹಿಸೋರೆಗಿಡ.

ತಿಗ್ಮ ತಿಗ್ಮ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ತೇಜಯತಿ - ತಿಜ (ನಿಶಾನೇ) "ಮಕ್" (ಓಂ ೧-೪೩) | ಅನ್ಯಸ್ಯ ಕೃತ್ವಂ ಚ | (ವಿಂ) 2. ಉಷ್ಣವಾದ, ಬಿಸಿಯಾದ. 3. ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ, ನಿಶಿತವಾದ, ಹರಿತವಾದ, ಚೂಪವಾದ. 4. ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ, ಖಾರವಾದ. "ತಿಗ್ಮಸ್ತೀಕ್ಷ್ಣೋಷ್ಣಭಾಸ್ಕರಾ:" ವೈಜಂ | 5. ಕ್ರೂರವಾದ, ಉಗ್ರವಾದ.

ತಿಗ್ಮಕರ ತಿಗ್ಮಕರ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ತಿಗ್ಮಾ: ಕರಾ: ಕಿರಣಾ: ಯಸ್ಯ | 2. ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ಕಿರಣ. 3. ದುಬಾರಿ ತೆರಿಗೆಯನ್ನು ವಿಧಿಸುವ ದೊರೆ. ತಿಗ್ಮ: ಕರ: ರಾಜಗ್ರಾಹ್ಯೋ ಯಸ್ಯ |

ತಿಗ್ಮಕಿರಣ ತಿಗ್ಮಕಿರಣ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ತಿಗ್ಮಾ: ಕಿರಣಾ: ಯಸ್ಯ | 2. ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ಕಿರಣ. -ವಿವಿಧಿ:



-ದೀಪಿಕೆ: -ರಸಿಮ: -ರಸಿಮ: "ಅಭಿತಿಗ್ಮರಸಿಮ ಚಿರ-  
ಮಾವಿರಮಾದವಧಾನಸಿಗ್ಮಮನಿಮೇಷತಯಾ" ಮಾಘಂ ೯-೧೧।

ತಿಗ್ಮತಾ ತಿಗ್ಮತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೀಕ್ಷ್ಣತ, ಉಗ್ರವಾಗಿರುವಿಕೆ,  
ಕ್ರೋಯ್. ತಿಗ್ಮಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)।

"ಸಮವೃತ್ತಿರಪೇತಿ ಮಾರ್ದವಂ ಸಮಯೇ ಯಶ್ಚ ತನೋತಿ ತಿಗ್ಮತಾಮ್"  
ಕಿರಾಂ ೨-೩೮।

ತಿಗ್ಮಚುತಿ ತಿಗ್ಮಚುತಿ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ತಿಗ್ಮಾ ಚುತಯೋಷ್ಯ।

"ಸ ದಿವಂ ಸಮಚಿಕ್ಷದಚ್ಚರೋಃ ಕೃತತಿಗ್ಮಚುತಿಮಂಡಲಾ-  
ಪಲಾಪೆ:" ಮಾಘಂ ೨೦-೨೮।

ತಿಗ್ಮಭಾಸ್ ತಿಗ್ಮಭಾಸ್ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ತಿಗ್ಮಾ ಭಾಸ್:  
ಅಸ್ಯ। "ಉಪರಾಗವತೇವ ತಿಗ್ಮಭಾಸಾ ವಪುರೋದ್ಭವರಮಂಡಲಾ-  
ಮುಹೇ" ಮಾಘಂ ೨೦-೪೫।

ತಿಗ್ಮಮನ್ಯು ತಿಗ್ಮಮನ್ಯು (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ರುದ್ರ. (ವಿಂ) 2.  
ಉಗ್ರವಾದ ಕೋಪವುಳ್ಳ.

ತಿಗ್ಮಮಯುಕ್ತ ತಿಗ್ಮಮಯುಕ್ತ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ತಿಗ್ಮಾ  
ಮಯುಕ್ತಾ ಅಸ್ಯ।

ತಿಗ್ಮರಚಿ ತಿಗ್ಮರಚಿ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ತಿಗ್ಮಾ ರಚಯೋಷ್ಯ।  
-ರೋಚಿಸ್ -ರೋಚಿಸ್.

ತಿಗ್ಮಹೇತಿ ತಿಗ್ಮಹೇತಿ (ಪುಂ) ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ಆಯುಧವುಳ್ಳ  
ಅಗ್ನಿ. ತಿಗ್ಮಾ ಹೇತಯೋಷ್ಯ।

ತಿಗ್ಮಾಂಶು ತಿಗ್ಮಾಂಶು (ಪುಂ) 1. ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ಕಿರಣಗಳುಳ್ಳ  
ಸೂರ್ಯ. ತಿಗ್ಮಾ ಅಂಶವೋಷ್ಯ। "ತಿಗ್ಮಾಂಶುರಸಿಮಚ್ಚುರಿತಾ-  
ನ್ಯದ್ವಾರಾತ್ ಪ್ರಾಶ್ವಿ ಪ್ರಮಾತೇ ಸಲಿಲಾನ್ಯಪಶ್ಯತ್" ಮೃದ್ವಿಂ ೨-೧೨।  
2. ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ಕಿರಣ. (ವಿಂ) 3. ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ಕಿರಣ  
ಗಳುಳ್ಳ.

ತಿತತ ತಿತತ (ಪುಂ) ಜರಡಿ, ಜಲ್ಲಡಿ, ಒಂದರಿ. ತನು  
(ವಿಸ್ತಾರೆ) "ತತ:" (೩೦ ೪-೪೨)। ಸ ಚ ಸನ್ವತ್।

ತಿತಿಕಷ್ಮಣ ತಿತಿಕ್ಷ್ಮಣ (ವಿಂ) ಸಹಿಸುವ, ಸಹಿಸಿ  
ಕೊಳ್ಳುವ. ತಿಜ (ನಿಶಾನೆ) + ಸನ್ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
"ಲಂಘಾಸ್ಪದೋಜಮೀತಿ ವಿವಾದಮೀರೋ: ತಿತಿಕ್ಷ್ಮಣಸ್ಯ ಪರೇಣ  
ನಿಂದಾಮ್" ಮಾಲಂ ೧-೧೭।

ತಿತಿಕಾ ತಿತಿಕ್ಷ್ಮ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಹನೆ, ಸೈರಣೆ, ತಾಳ್ಮೆ. ತಿಜ  
(ನಿಶಾನೆ) + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨)। "ಅನಪಾಯಿ  
ನಿವಹಂ ದ್ವಿಷಾಂ ನ ತಿತಿಕ್ಷಾಸಮಮಸ್ತಿ ಸಾಧನಮ್" ಕಿರಾಂ  
೨-೪೩। ತೀತೀಕ್ಷ್ಮ-ಸಂಖ್ಯದುಃಖಾದಿ ದ್ವಂದ್ವಸಹಿಷ್ಣು  
ತೆಯು ತಿತಿಕ್ಷ್ಮಯೆನಿಸುವುದು. "ಸಹನಂ ಸರ್ವದ್ವಿಜಾನಾಮಪ್ರತೀಕಾರ-  
ಪೂರ್ವಕಮ್। ಚಿಂತಾವಿಲಾಪರಹಿತಂ ಸಾ ತಿತಿಕ್ಷಾ ನಿಗಚತೇ"  
ವಿವೇಕಚೂಂ।

ತಿತಿಕ್ಷು ತಿತಿಕ್ಷು (ವಿಂ) ಸಹನೆಯುಳ್ಳ, ಸೈರಣೆಯುಳ್ಳ, ತಾಳ್ಮೆ  
ಯುಳ್ಳ. ತಿಜ (ನಿಶಾನೆ) + ಸನ್ "ತ:" (೩-೨-೧೬೮)।  
"ಅಕ್ರೋಧನ: ಕ್ರೋಧನೇಮ್ಯೋ ವಿಶಿಷ್ಟ: ತಥಾ ತಿತಿಕ್ಷುರತಿತಿಕ್ಷೋ-  
ವಿಶಿಷ್ಟ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೮೧-೧೪।

ತಿತಿಮ ತಿತಿಮ (ಪುಂ) ಪಾಪಾಸಕಳ್ಳಿಯ ಮೇಲೆ ಬೆಳೆಯಿಸಿ  
ಕೆಂಪುಬಣ್ಣವನ್ನು ತಯಾರಿಸಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು  
ಜಾತಿಯ ಹುಳ.

ತಿತಿರ ತಿತಿರ (ಪುಂ) ತಿತಿರಿ ಪಕ್ಷಿ, ಕವುಜಗ ಹಕ್ಕಿ. ತಿತಿ  
ಇತಿ ರೋತಿ ಶಬ್ದಂ ಕರೋತಿ - ಹ (ಶಬ್ದ) "ತ:"  
ಬಾಹುಂ।

ತಿತಿರ ತಿತಿರ (ಪುಂ) 1. ತಿತಿರಿಪಕ್ಷಿ, ಕವುಜಗ ಹಕ್ಕಿ.  
ತಿತಿರೀತಿ ಶಬ್ದಂ ರಾತಿ - ರಾ (ದಾನ) "ಕಿ:" ಬಾಹುಂ।  
2. ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕ್ಯಮುಷಿಯಿಂದ ವಮನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ  
ಯಜುರ್ವೇದಗಳನ್ನು ತಿತಿರಿಪಕ್ಷಿರೂಪದಿಂದ ಗ್ರಹಿಸಿದ  
ಮುನಿಗಳು. [ವೈಶಂಪಾಯನಮುಷಿಯಿಂದ ವೇದಾಧ್ಯ-  
ಯನ ಮಾಡಿದ ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕ್ಯಮುಷಿಯು ಒಮ್ಮೆ ಗುರು  
ಶಾಪಕ್ಕೊಳಗಾಗಿ ಯಜುರ್ವೇದವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ವಾಂತಿಮಾಡ  
ಲಾಗಿ ಅಲ್ಲಿದ್ದ ಇತರ ಮುನಿಗಳು ತಿತಿರಿಪಕ್ಷಿ ರೂಪದಿಂದ  
ಆ ವೇದಗಳನ್ನು ಗ್ರಹಿಸಿದರು. ಇವರಿಂದ ಹೊರಟ  
ಯಜುರ್ವೇದಕ್ಕೆ "ತೈತ್ತಿರೀಯ"ವೆಂದು ಹೆಸರಾ-  
ಯಿತು. "ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕ್ಯಶ್ಚ ತಚ್ಚಿಷ್ಯ ಆಹಾಹೋ ಭಗವನ್ ಕಿಯತ್।  
ಚರಿತೇನಾಲ್ಪಸಾರಾಣಾಂ ಚರಿಷ್ಯೇಹಂ ಸುದುಶ್ವರಮ್। ಇತ್ಯುಕ್ತೋ  
ಗುರುರಪ್ಯಾಹ ಕುಪಿತೋ ಯಾಹ್ನಲಂ ತ್ವಯಾ। ವಿಪ್ರಾವಮನ್ತ್ರಾ ಶಿಷ್ಯೇಣ  
ಮದಧೀತಂ ತ್ಯಜಾಶ್ವಿತಿ। ದೇವರಾತಸುತ: ಸೋಽಪಿ ಛದಿತ್ವಾ  
ಯಜುಷಾಂ ಗಣಮ್। ತತೋ ಗತೋಽಥ ಮುನಯೋ ದದೃಶುಸ್ತಾನ್  
ಯಜುರ್ಗಣಾನ್। ಯಜುಷಿ ತಿತಿರಾ ಭೂತ್ವಾ ತಲ್ಲೋಲುಪತಯಾಽಽದದು:।  
ತೈತ್ತಿರೀಯಾ ಇತಿ ಯಜು:ಶಾಸ್ತ್ರಾ ಆಸನ್ ಸುಪೇಶಲಾ:" ಭಾಗಂ  
೧೨-೬।

ತಿಥಿ ತಿಥಿ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 2. ಕಾಮ. ತಿಜ  
(ನಿಶಾನೆ) "ಥಕ್" ಜಲೋಪಶ್ಚ ನಿಪಾಂ (೩೦ ೨-೧೨)।  
ತಿಥಿಯಜಲ: ಕಾಮಶ್ಚ ಸಿಂ ಕೌಂ। 3. ಕಾಲ, ಸಮಯ.  
"ಕಾಲಸ್ತ್ವಪಙ್ಕಜಹಕೋ ಭಸಂತೋ ಭಸದಿತ್ಯಪಿ। ಪಿಥ:  
ಪಿಥುಸ್ತಿಥಿಶ್ಚಾಯ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ತಿಥಿ ತಿಥಿ (ಪುಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಂದ್ರನ ಕಲೆಗಳ ವೃದ್ಧಿ ಹ್ರಾಸ ರೂಪ  
ವ್ಯಾಪಾರವುಳ್ಳ ಪಾಡ್ಯ ಮೊದಲಾದ (ತಿಥಿ) ದಿವಸ. ಅತ  
(ಸಾತತ್ಯಗಮನೆ) "ಇಥಿನ್" (೩೦ ೪-೨)। ಅಕಾರಲೋಪ:  
ಪೃಷೋಂ। "ತನ್ಯತೇ ಕಲಯಾ ಯಸ್ಮಾತ್ತಸ್ಮಾತ್ತಾಸ್ತಿಥಯ: ಸ್ಮೃತಾ:"।  
ಕಲಯಾ ತನ್ಯತೇ ಇತಿ ತಿಥಿ: ಇತಿ ವಾ। ತನೋತಿ ವಿಸ್ತಾರ-



ಯತಿ ವರ್ಧಮಾನಾಂ ಕ್ಷಿಯಮಾಣಾಂ ವಾ ಚಂದ್ರಕಲಾಮೇಕಾ ಯಃ ಕಾಲಃ  
ಸಾ ತಿಥಿಃ ಇತಿ ವಾ । ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ ಮೊದಲುಗೊಂಡು  
ಹುಣ್ಣು ಮೆಯವರೆಗಿನ ಹದಿನಾರು ಚಂದ್ರನ ಕಲೆಗಳು ತಿಥಿ  
ಗಳು. "ಅಮಾದಿಪೌರ್ಣಿಮಾಸ್ಯಂತಾ ಯಾ ಏವ ಶಶಿನಃ ಕಲಾಃ ।  
ತಿಥಯಸ್ತಾಃ ಸಮಾಖ್ಯಾತಾಃ ಷೋಡಶೈವ ವರಾನನೇ" ಸ್ಕಾಂದಂ ।  
ಪಾಡ್ಯ ಮೊದಲುಗೊಂಡು ಹುಣ್ಣು ಮೆಯವರೆಗಿನ ತಿಥಿಗಳು  
ಹದಿನೈದು. ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ ಸೇರಿ ಹದಿನಾರಾಗುವುವು.  
ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರ ಸನ್ನಿಹರ್ಷವು ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ. ವಿಪ್ರಕರ್ಷವು  
ಹುಣ್ಣುಮೆ. "ಯಃ ಪರೋ ವಿಪ್ರಕರ್ಷಃ ಸೂರ್ಯಾಚಂದ್ರಮಸೌಃ ಸಾ  
ಪೌರ್ಣಿಮಾಸೀ । ಯಃ ಪರಃ ಸನ್ನಿಹರ್ಷಃ ಸಾಽಮಾವಾಸ್ಯಾ" ಇತಿ  
ಗೊಮಿಲಃ । ಅಗ್ನಿ ಮೊದಲಾದ ದೇವತೆಗಳು ಒಂದೊಂದು  
ಕಲೆಯನ್ನು ಪಾನಮಾಡುವುದರಿಂದ ಹದಿನೈದು ದಿನಗಳು  
ಕೃಷ್ಣ ಪಕ್ಷವೆಂದೂ ಪುನಃ ಅಗ್ನಿ ಮೊದಲಾದ ದೇವತೆಗಳಿಂದ  
ಹದಿನೈದು ದಿನಗಳು ಕ್ರಮವಾಗಿ ಆ ಕಲೆಗಳು ಹೊರಬಿದ್ದು  
ಚಂದ್ರಬಿಂಬವನ್ನು ಪೂರ್ಣಗೊಳಿಸುವುದರಿಂದ ಅದಕ್ಕೆ  
ಶುಕ್ಲ ಪಕ್ಷವೆಂದೂ ಹೆಸರು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಕಲಾಕ್ಷಯ"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ತಿಥಿಕೃತ್ಯ ತಿಥಿಕೃತ್ಯ (ನಂ)** ಆಯಾ ತಿಥಿಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡ  
ಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯ. ತಿಥಿಷು ಕೃತ್ಯಮ್ । ಶುಭ ತಿಥಿಗಳಲ್ಲಿ  
ಮಾಡಬಹುದಾದ ಕಾರ್ಯಗಳು: "ದ್ವಿತೀಯಾಂ  
ತೃತೀಯಾಂ ಪञ्ಚಮ್ಯಾಂ ಸಪ್ತಮೀತಿಥೌ । ಉಕ್ತಾನಿ ಯಾನಿ ಸಿದ್ಧಯಂತಿ  
ದಶಮ್ಯಾಂ ತಾನಿ ಸರ್ವದಾ । ವ್ರತೋಪವಾಸಾಃ ಸ್ವಿಲಕ್ಷ್ಮಣಕೃತ್ಯಂ ಸುರೋತ್ಸ-  
ವಾದ್ಯಾಃ ಸ್ವಿಲವಾಸ್ತುಕರ್ಮ । ಸಂಗ್ರಾಮಯೋಗ್ಯಾಃ ಸ್ವಿಲವಾಸ್ತುಕರ್ಮ ವಿಶ್ವೇ  
ತಿಥೌ ಸಿದ್ಧಯಂತಿ ಶಿಲ್ಪಕರ್ಮ । ಪೃಥಿವ್ಯಾಂ ಯಾನಿ ಕರ್ಮಾಣಿ  
ಧರ್ಮಪುಷ್ಟಿಃ ಶುಭಾನಿ ಚ । ಚರಸ್ಥಿರಾಣಿ ದ್ವಾದಶ್ಯಾಂ ಯಾತ್ರಾಂ  
ನವಗೃಹಂ ವಿನಾ" । ಇತ್ಯಾದಿ. ನಿಷಿದ್ಧ ತಿಥಿಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡ  
ಬಾರದ ಕಾರ್ಯಗಳು: "ನೋದಾಹರಾತ್ರೋಪನಯಪ್ರತಿಷ್ಠಾ  
ಸೀಮಂತಚೌಲಾಃ ಸ್ವಿಲವಾಸ್ತುಕರ್ಮ । ಗೃಹಪ್ರವೇಶಾಃ ಸ್ವಿಲಮಙ್ಗಲಾಃ  
ಕಾರ್ಯಾ ಹಿ ಮಾಸಾಃ ತಿಥೌ ಕದಾಚಿತ್" । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ತಿಥಿಕ್ಷಯ ತಿಥಿಕ್ಷಯ (ಪುಂ)** 1. ಚಂದ್ರನ ಕಲೆಗಳು ಕಡಮೆ  
ಯಾಗುವ ದಿವಸ, ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ. ತಿಥಿನಾಂ ತಿಥ್ಯುಪ-  
ಲಕ್ಷಿತಚಂದ್ರಕಲಾನಾಂ ಕ್ಷಯೋ ಯತ್ರ । 2. ಅವಮ, ತಿಥಿಗಳು  
ಕ್ಷಯವಾಗಿ ಮೂರು ತಿಥಿಗಳು ಸೇರುವ ಒಂದು ದಿವಸ.  
ಅವಮದಿವಸಗಳಲ್ಲಿ ಮಂಗಲಕಾರ್ಯಗಳು ನಿಷಿದ್ಧ.  
"ಅಧಿಮಾಸೇ ದಿನಪಾತೇ ಧನುಷಿ ರವೌ ಭಾನುಲಕ್ಷಿತೇ ಮಾಸಿ ।  
ಚಕ್ರಿಣಿ ಸುಪ್ತೇ ಕುರ್ಯಾನ್ತೋ ಮಾಙ್ಗಲ್ಯಂ ವಿವಾಹಃ" ।

**ತಿಥಿಪತಿ ತಿಥಿಪತಿ (ಪುಂ)** ಪಾಡ್ಯ ಮೊದಲಾದ ತಿಥಿಗಳ  
ಅಧಿಪತಿ, ತಿಥಿಗಳ ಅಧಿದೇವತೆ.

| ತಿಥಿ     | ದೇವತೆ             |
|----------|-------------------|
| ಪಾಡ್ಯ    | .. ಅಗ್ನಿ          |
| ಬಿದಿಗೆ   | .. ಬ್ರಹ್ಮ         |
| ತದಿಗೆ    | .. ಗೌರಿ           |
| ಚೌತಿ     | .. ಗಣಪತಿ          |
| ಪಂಚಮಿ    | .. ಸರ್ವ           |
| ಷಷ್ಠಿ    | .. ಗುಹ            |
| ಸಪ್ತಮಿ   | .. ರವಿ            |
| ಅಷ್ಟಮಿ   | .. ಶಿವ            |
| ನವಮಿ     | .. ದುರ್ಗಾ         |
| ದಶಮಿ     | .. ಯಮ             |
| ಏಕಾದಶಿ   | .. ವಿಶ್ವೇದೇವತೆಗಳು |
| ದ್ವಾದಶಿ  | .. ವಿಷ್ಣು         |
| ತ್ರಯೋದಶಿ | .. ಕಾಮ            |
| ಚತುರ್ದಶಿ | .. ಈಶ್ವರ          |
| ಪೂರ್ಣಿಮೆ | .. ಚಂದ್ರ          |

"ತಿಶಿಶಾವಹ್ನಿಕೌ ಗೌರಿ ಗಣೇಶೋಽಹಿರ್ಗುಹೋ ರವಿಃ । ಶಿವೋ  
ದುರ್ಗಾಂತಿಕೋ ವಿಶ್ವೇ ಹರಿಃ ಕಾಮಃ ಶಿವಃ ಶಶಿಃ" ಮುಂ ಚಿಂ ।

**ತಿಥಿಪ್ರಣಿ ತಿಥಿಪ್ರಣಿ (ಪುಂ)** ಚಂದ್ರ. ತಿಥಿ ಪ್ರಣಯತಿ—  
ಪ್ರ+ಣಿಞ್ (ಪ್ರಾಪಣಿ) "ವಿಪ್" ।

**ತಿಥಿಶ ತಿಥಿಶ (ಪುಂ)** ನೆಮ್ಮಿಗಿಡ. ಅತಿಶಯೇನ ನೇಶತಿ—  
ಣಿಶ (ಸಮಾಧಿ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫) । ಪೃಷಂ ।

**ತಿಥಿಶ ತಿಥಿಶ (ಪುಂ)** ಹುಣಿಸೆ ಮರ.

**ತಿಥಿಶಿ ತಿಥಿಶಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹುಣಿಸೆಮರ.

**ತಿಥಿಶಿಕ ತಿಥಿಶಿಕ (ನಂ)** 1. ಹುಣಿಸೆಹಣ್ಣು. ತಿಥಿ  
(ಆದ್ರಿಭಾವೇ) "ಕೌಕನ್" (೩ಂ ೪-೨೫) । ನಿಪಾಂ ।  
"ತಿಥಿಶಿಕಂ ಚ ತುಕ್ತಂ ಚ ವೃಕ್ಷಾಮಲಮ್" ಅಮಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಶಿಕಾ-ಶಿಕಾ. 2. ಹುಣಿಸೆಮರ. "ತಿಥಿಶಿ ತ್ವಮ್ಲಿಕಾ  
ಚಿತ್ತಾ ತಿಥಿಶಿಕಾ ಕಪಿಪ್ರಿಯಾ" ಇತಿ ಕೋಶಃ । "ಅಮಲಾ  
ಚ ವಿಚಿಕಾ ಚಿತ್ತಾ ತಿಥಿಶಿಕಾ ಚ ತಿಥಿಶಿ"  
ಭಾವಪ್ರಂ ।

**ತಿಥಿಶಿಶಿ ತಿಥಿಶಿಶಿ (ನಂ)** ಹುಣಿಸೆಬೀಜದ ಅಟ,  
ಹುಣಿಸೆ ಪಿಚ್ಚಿಯಿಂದ ಅಡುವ ಅಟ.

**ತಿಥಿಶಿಕ ತಿಥಿಶಿಕ (ಪುಂ)** 1. ಹುಣಿಸೆ ಮರ. (ನಂ)  
2. ಹುಣಿಸೆ ಹಣ್ಣು.

**ತಿಥಿಶಿ ತಿಥಿಶಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹುಣಿಸೆ ಮರ. "ತಿಥಿಶಿಕೋಽ-  
ಮ್ಲಿಕಾ ಚಿತ್ತಾ ಶುಕ್ತಿನಾರಿ ಕಪಿಪ್ರಿಯಾ । ತಿಥಿಶಿ ಚ"  
ವೆಂಜಂ ।



ತಿಸ್ತುಣಿಕ ತಿಂತ್ಯಣೀಕ (ನಂ) 1. ಹುಣಿಸೆಹಣ್ಣು.

2. ಹುಳಿ, ಅಮ್ಮರಸ. "ತಿಸ್ತುಣಿಕೆ ತು ವಕ್ಷಾಮ್ಲಂ ಚುಕ್ರಂ ಶುಕ್ರೋ ರುಚಿಃ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ವೇಜಂ.

ತಿಸ್ತುಣಿ ತಿಂತ್ಯಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುಣಿಸೆ ಮರ.

ತಿಸ್ತುಣಿಡಿಕ ತಿಂತ್ಯಣೀಕ (ನಂ) 1. ಹುಣಿಸೆಹಣ್ಣು.

2. ಹುಳಿ, ಅಮ್ಮರಸ. "ತಿಸ್ತುಣಿಡಿಕಂ ತು ವಕ್ಷಾಮ್ಲೇ ಚಿಷ್ಣ-ಯಾಮ್ಲವೇತಸೇ" ವೇಜಂ.

ತಿಸ್ತು ತಿಂದು (ಪುಂ) ತುಂಬುಗಿಡ, ತುಂಬುಗಿಡ. ತಿಮ ಆದ್ರಿಭಾವೇ "ಕುಃ" (ತಂ 1-37). ನಿಪಾಂ.

ತಿಸ್ತುಕ ತಿಂದುಕ (ಪುಂ) 1. ತುಂಬುಗಿಡ, ತುಂಬುಗಿಡ. ತಿಸ್ತು ಸಂಜಾಯಾ "ಕನ್" (4-3-34). 2. ಕರ್ಷವೆಂಬ ಒಂದು ಅಳತೆ.

ತಿಮಿ ತಿಮಿ (ಪುಂ) 1. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. ತಾಮ್ಯಸ್ತಿ-ತಮ್ (ಕಾಡ್ಕಾಯಾಮ್) "ಓನ್" (ತಂ 4-121). ಇಕಾರಾದೇಶಶ್ಚ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ವಾ "ಓಪ್" (ಗಂ 4-1-44). ತಿಮಿ ತಿಮಿ. "ಅಮಿ ಶಿರೋಮಿಸ್ತಿಮಯಃ ಸರಸ್ವೀರ್ದುರ್ವಂ ವಿಸ್ತನ್ವಂತಿ ಜಲ-ಪ್ರವಾಹಾನ್" ರಘುಂ 13-10. "ಅಸ್ತಿ ಮತ್ಸ್ಯಸ್ತಿಮಿರ್ನಾಮ ತಥಾ ಚಾಸ್ತಿ ತಿಮಿಙ್ಗಲಃ. ತಿಮಿಙ್ಗಲಮಿಲೋಪ್ಯಸ್ತಿ ತದ್ಗಿಲೋಪ್ಯಸ್ತಿ ರಾಘವಃ" ರಾಮಾಂ. 2. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲ. "ಪಾಥೋಧಿಸಿನ್ಧುಮಕರಾಲಯವಾರಿರಾಶಿಗಜ್ಞಾಧರೆನ್ದು-ಜನಕಾಸ್ತಿಮಿರ್ನಾಮಾಲಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ತಿಮಿಙ್ಗಲ ತಿಮಿಂಗಿಲ (ಪುಂ) ದೊಡ್ಡ ಮೀನು, ತಿಮಿ ಮೀನನ್ನು ತಿನ್ನುವ ಮೀನು. ತಿಮಿ ಗಿಲತಿ-ಗ್ (ನಿಗರಣಂ) "ಕಃ" (ವಾಂ 3-2-4). ಸ್ಯ ಲಃ (6-2-21). ಮುಗಮಃ (ವಾಂ 6-3-30). "ಅಸ್ತಿ ಮತ್ಸ್ಯಸ್ತಿಮಿರ್ನಾಮ ತಥಾ ಚಾಸ್ತಿ ತಿಮಿಙ್ಗಲಃ" ರಾಮಾಂ.

ತಿಮಿಙ್ಗಲಗಿಲ ತಿಮಿಂಗಿಲಗಿಲ (ಪುಂ) ತಿಮಿಂಗಿಲವನ್ನೂ ನುಂಗುವ ದೊಡ್ಡ ಮೀನು. ತಿಮಿಙ್ಗಲಂ ಗಿಲತಿ-ಗ್ (ನಿಗರಣಂ) "ಕಃ" (ವಾಂ 3-2-4). ಸ್ಯ ಲಃ (6-2-21). "ಅಸ್ತಿ ಮತ್ಸ್ಯಸ್ತಿಮಿರ್ನಾಮ ತಥಾ ಚಾಸ್ತಿ ತಿಮಿಙ್ಗಲಃ. ತಿಮಿಙ್ಗಲಗಿಲೋಪ್ಯಸ್ತಿ ತದ್ಗಿಲೋಪ್ಯಸ್ತಿ ರಾಘವಃ" ರಾಮಾಂ.

ತಿಮಿತ ತಿಮಿತ (ವಿಂ) 1. ಒದ್ದೆಯಾದ, ತೇವವಾದ. 2. ನಿಶ್ಚಲವಾದ, ಚಲಿಸದಿರುವ, ಸ್ಥಿರವಾದ. ತಿಮಿ (ಆದ್ರಿಭಾವೇ) "ಕ್ತಃ" (3-4-32).

ತಿಮಿರ ತಿಮಿರ (ನಂ) 1. ಅಂಧಕಾರ, ಕಡ್ಡು. ತಿಮಿ (ಆದ್ರಿಭಾವೇ) "ಕಿರಚ್" (ತಂ 1-41). "ಲಕ್ಷಯಾ ವಿಮಲವಿದ್ವಮಭಾಸಾ ಸಂತತಂ ತಿಮಿರಮಿನ್ದುರ್ದಾಸೇ" ಕಿರಾಂ 19-22. 2. ಒಂದು ವಿಧ ಸೇತುರೋಹಿಣಿ.

ತಿಮಿರನುಡ್ ತಿಮಿರನುಡ್ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ತಿಮಿರಂ ನುದತಿ-ಣುಡ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ವಿವಪ್" (3-2-36). "ತಿಮಿರನುಡೋ ಮಂಡಲಂ ಯದಿ ಸ ಲೇಹಃ" ಬೃಹತ್ಸಂ 4-44. (ವಿಂ) 2. ಕಡ್ಡುಲೆಯನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ.

ತಿಮಿರರಿಪು ತಿಮಿರರಿಪು (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ತಿಮಿರಸ್ಯ ರಿಪುಃ.

ತಿಮಿರಾರಿ ತಿಮಿರಾರಿ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ತಿಮಿರಸ್ಯ ಅರಿಃ. "ತಿಮಿರಾರಿಸ್ತಮೋ ಹಂತಿ ಪ್ರಾತಃಸ್ವವಧಮೀರವಃ. ವಯಂ ಕಾಕಾ ವಯಂ ಕಾಕಾ ಇತಿ ಜಲ್ಪಂತಿ ವಾಯಸಾಃ" ತದ್ಗುಂ.

ತಿಮಿರಿ ತಿಮಿರಿ (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು.

ತಿಮ್ಯತ್ ತಿಮ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಒದ್ದೆಯಾಗುತ್ತಿರುವ, ತೇವವಾಗುತ್ತಿರುವ. ತಿಮಿ (ಆದ್ರಿಭಾವೇ) "ಶತ್" (3-2-124). "ತಾಮ್ಯತ್ಸ್ತಮ್ಬೇರಮಯುಧವಮಧುತಿಮ್ಯನ್ಮಹಾಮಹೀಧರನಿತಮ್ಬೇ" ಹರ್ಷಂ 2.

ತಿರಸ್ವೀನ ತಿರಸ್ವೀನ (ವಿಂ) 1. ಅಡ್ಡವಾಗಿರುವ. ತಿರೈ-ಗೆವ-ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಸ್ವಃ" (4-4-6). "ಗತಂ ತಿರಸ್ವೀನ-ಮನುಸ್ಸಾರಥಃ ಪ್ರಸಿದ್ಧಮುರ್ಧ್ವಜ್ವಲನಂ ಹವಿರ್ಭುಜಃ" ಮಾಘಂ 1-2. 2. ಒರೆಯಾದ, ವಕ್ರವಾದ. "ಆಹೇಕ್ಷಮಾಣಃ ಪಾಪೇನ ತಿರಸ್ವೀನೇನ ಚಕ್ಷುಷಾ" ಭಾಗಂ 3-64.

ತಿರಸ್ ತಿರಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅಡ್ಡವಾಗಿ. 2. ಸೊಟ್ಟಾಗಿ, ಅಂಕುಡೊಂಕಾಗಿ. 3. ಮರೆಯಾಗಿ. ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) "ಅಸುನ್" (ತಂ 4-166). 4. ಅಂಫರ್ಧಾನ, ಮರೆಯಾಗುವುದು. 5. ರಹಸ್ಯವಾಗಿ, ಗುಟ್ಟಾಗಿ. 6. ತಿರಸ್ಕಾರ. "ತಿರೋಜ್ಞರ್ಥಾ ತಿರೈಗರ್ಥೇ" ಅಮಂ.

ತಿರಸ್ಕರ ತಿರಸ್ಕರ (ವಿಂ) ಮುಚ್ಚುವ, ಮರೆಮಾಡುವ. ತಿರಃ ಕರೋತಿ-ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣಂ) "ಕಃ" (3-2-20). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಓಪ್" (4-1-14). -ಕರಿ-ಕರಿ. "ಅಹೋ ಕತ ಸ್ವಯಂಸ್ತಿಸ್ತಿರಸ್ಕರೀ ಕುಶಸ್ಥಲಿ ಪುಣ್ಯಯಶಸ್ಕರೀ ಭುವಃ" ಭಾಗಂ 1-10-27.

ತಿರಸ್ಕರಿಣಿ ತಿರಸ್ಕರಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೆರೆ, ಪರೆ. ತಿರ-ಸ್ಕರೋತಿ-ತಿರಸ್ + ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣಂ) "ಣಿನಿಃ" (3-1-134). "ಓಪ್" (4-1-4). "ದರೀಗೃಹದ್ವಾರ-ವಿಲಮ್ಬಿವಿಮ್ಬಸ್ತಿರಸ್ಕರಿಣ್ಯೋ ಜಲದಾ ಭವಂತಿ" ಕುಮಾಂ 1-14.

ತಿರಸ್ಕರಿನ್ ತಿರಸ್ಕರಿನ್ (ವಿಂ) ಮುಚ್ಚುವ, ಮರೆಮಾಡುವ. ತಿರಸ್ಕರೋತಿ-ತಿರಸ್ + ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣಂ) "ಣಿನಿಃ" (3-1-134). ಸಂಜ್ಞಾಪೂರ್ವಕವಿಧೇರನಿತ್ಯತ್ವಾತ್ ನ ವೃದ್ಧಿಃ. "ಸೌಜ್ಯಾಸಾಧತ ತದ್ವೇಷಮ ತಿರಸ್ಕರಿಣಮನ್ತರಾ" ರಾಮಾಂ.



**ತಿರಸ್ಕಾರ ತಿರಸ್ಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ಅನಾದರ, ಅವಮಾನ, ಅವಮರ್ಯಾದೆ. ತಿರಸ್ಕರಯತೆ - ಓ ಕೃನ್ (ಕರಣ) ಭಾವೆ "ಘನ್" (3-3-18). (ವಿಂ) 2. ಮರೆಮಾಡುವ, ಮುಚ್ಚುವ. (ಕಂಚುಕ ಮೊದಲಾದುದು). ತಿರಸ್ಕರಯತೆ-ನೆನ - ತಿರಸ್ + ಓ ಕೃನ್ (ಕರಣ) ಕರಂ "ಘನ್" (3-3-121). "ಮುನೇವಭೂವಾಗಣಿತೇಷುರಾಶೇರ್ಲಿಹಿಸ್ತಿರಸ್ಕಾರ ಇವಾತ್ಮಮನ್ಯು:" ಕಿರಾಂ 19-49.

**ತಿರಸ್ಕಾರಿನ್ ತಿರಸ್ಕಾರಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಮುಚ್ಚುವ, ಮರೆ ಮಾಡುವ. ತಿರಸ್ಕರಯತಿ - ತಿರಸ್ + ಕೃನ್ "ಗಿನ್:" (3-1-134). 2. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸುವ, ಅವಮಾನ ಪಡಿಸುವ. "ದೇವಿ ತ್ವನ್ಮುಖಪಕ್ಷಜೇನ ಶಶಿನ: ಶೋಭಾ-ತಿರಸ್ಕಾರಿಣಾ" ರತ್ನಾಂ 1-25. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (4-1-4). -ಕಾರಿಣಿ - ಕಾರಿಣೀ. ಪರದೆ, ತೆರೆ.

**ತಿರಸ್ಕೃತ ತಿರಸ್ಕೃತ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅವಮರ್ಯಾದೆವಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ತಿರಸ್ + ಓ ಕೃನ್ (ಕರಣ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ತಿರಸ್ಕೃತಸ್ತಸ್ಯ ಜನಾಭಿ-ಭಾವಿನಾ ಮುಹುರ್ಮಹಿಮ್ನಾ ಮಹಸಾಂ ಮಹೀಯಸಾಮ್" ಮಾಘಂ 1-62. 2. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಚ್ಚಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ತಿರಸ್ಕೃತಿ ತಿರಸ್ಕೃತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅವಮಾನ, ಅನಾದರ. ತಿರಸ್ + ಕೃನ್ "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94).

**ತಿರಸ್ಕಿಯಾ ತಿರಸ್ಕಿಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅವಮಾನ, ಅನಾದರ. 2. ತಾತ್ಸಾರ, ಉಪೇಕ್ಷೆ. ತಿರಸ್ + ಕೃನ್ "ಶ:" (3-3-100). "ಹರೇ ಹಿರಣ್ಯಾಕ್ಷಪುರ:ಸರಾಸುರವಿಪದಿಷ: ಪ್ರತ್ಯುತ ಸಾ ತಿರಸ್ಕಿಯಾ" ಮಾಘಂ 1-39. 3. ಅಚ್ಚಾದನ, ಮುಚ್ಚುವುದು, ಮರೆಮಾಡುವುದು.

**ತಿರೀಡ ತಿರೀಟ** (ಪುಂ) 1. ಲೋಧ್ಯಗಿಡ. ತೀಯೆ ಮಲಮನೆನ - ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) "ಕೀಡನ್" (3-4-185). "ತಿರೀಡಸ್ತಿತ್ವಮಾರ್ಜನೋ" ಅಮಂ. 2. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ತಿರೀಡಂ ಸುವರ್ಣಮ್ ಸಿಂ ಕೌಂ.

**ತಿರೀಡಕ ತಿರೀಟಕ** (ಪುಂ) ಲೋಧ್ಯ.

**ತಿರೀಡಿಕಾ ತಿರೀಟಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬದರೀಫಲ, ಬೋರೆ ಹಣ್ಣು, ಎಲೆಚಹಣ್ಣು. "ಬದರ್ಯಾ ಕುವಲಿ ಕೋಲಿ: ಕೂಲಿ ಕೂರಾ ತಿರೀಡಿಕಾ" ವೇಜಂ.

**ತಿರೋಧಾ ತಿರೋಧಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಂತರ್ಧಾನ, ಮರೆಯಾಗುವುದು. ತಿರಸ್ + ಓ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಅಙ್" (3-3-106).

**ತಿರೋಧಾನ ತಿರೋಧಾನ** (ನಂ) 1. ಅಂತರ್ಧಾನವಾಗುವುದು, ಮರೆಯಾಗುವುದು. ತಿರಸ್ + ಓ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:)

"ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). "ಸಿದ್ಧಾನ್ ವಿಧಾಪರಾಂಶೇವ ತಿರೋಧಾನೇನ ಸೌಜ್ವಜತ್" ಭಾಗಂ 3-20-44. 2. ಮುಚ್ಚುವುದು, ಮರೆಮಾಡುವುದು.

**ತಿರೋಭಾವ ತಿರೋಭಾವ** (ಪುಂ) ಮರೆಯಾಗುವುದು. ತಿರಸ್ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಘನ್" (3-3-18).

**ತಿರೋಹಿತ ತಿರೋಹಿತ** (ವಿಂ) 1. ಮರೆಯಾದ, ಅಂತರ್ಧಾನ ಹೊಂದಿದ. ತಿರಸ್ + ಓ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಕ್ತ:" (3-4-92). "ತಿರೋಹಿತಾತ್ಮಾ ಶಿಶುಪಾಲಸಂಜಯಾ ಪ್ರತಿಯತೆ ಸಂಪ್ರತಿ ಸೌಜ್ವಜಸ: ಪರೇ:" ಮಾಘಂ 1-69. 2. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ತಿರಸ್ + ಓ ಧಾನ್ ಕರಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102). 3. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಗೋಪ್ಯವಾಗಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಚ್ಚಿಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ತಿರೋಹಿತತಾ ತಿರೋಹಿತತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರೆಯಾಗುವುದು, ಅಂತರ್ಧಾನ ಹೊಂದಿರುವುದು. ತಿರಸ್ + ಓ ಧಾನ್ (ಧಾರಣ-ಪೋಷಣಯೋ:) "ಕ್ತ:". ತಿರೋಹಿತಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (4-1-119). -ಹಿತತ್ವಮ್ - ಹಿತತ್ವಮ್. "ತ್ವ:" (4-1-119).

**ತೀರ್ಯಕ್ ತೀರ್ಯಕ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅಡವಾಗಿ. 2. ವಕ್ರವಾಗಿ, ಸೊಟ್ಟಾಗಿ. "ತೀರ್ಯಗೃಹ್ಣಿ ಶರೀರೇ ಚ ಪಾತಯಿತ್ವಾ ಶಿರೋಧರಾಮ್" ರಾಮಾಂ.

**ತೀರ್ಯಕ್ಕಾರಮ್ ತೀರ್ಯಕ್ಕಾರಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಪೂರ್ತಿಯಾಗಿಸುವುದು. ತೀರ್ಯಕ್ + ಓ ಕೃನ್ (ಕರಣ) "ಣಮುಲ್" (3-4-60).

**ತೀರ್ಯಕ್ಕ್ಷಿಪ್ತ ತೀರ್ಯಕ್ಕ್ಷಿಪ್ತ** (ವಿಂ) ಒರೆಯಾಗಿದಲ್ಪಟ್ಟ, ವಕ್ರವಾಗಿದಲ್ಪಟ್ಟ. ತೀರ್ಯಕ್ ವಕ್ರಂ ಕ್ಷಿಪ್ತಮ್. ಅಸ್ಥಿಭಂಗದ ಅರು ವಿಧ ಸಂಧಿಮುಕ್ತಗಳಲ್ಲೊಂದು. ತೀರ್ಯಕ್ಕ್ಷಿಪ್ತಮ್ ವಿವರ್ತಿಸ್ತಮ್ ಅವಕ್ಷಿಪ್ತಮ್ ಅತಿಕ್ಷಿಪ್ತಮ್ ಮತ್ತು ತೀರ್ಯಕ್ಕ್ಷಿಪ್ತಮ್ ಎಂದು ಸಂಧಿಮುಕ್ತವು ಅರು ವಿಧ. ಒಂದು ಎಲುಬು ತನ್ನ ಸ್ಥಾನವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಒಂದು ಪಾರ್ಶ್ವಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ನಿಲ್ಲುವುದು "ತೀರ್ಯಕ್ಕ್ಷಿಪ್ತ" ಎನಿಸುವುದು. "ತೀರ್ಯಕ್ಕ್ಷಿಪ್ತೇ ತು ಏಕಾಸ್ಥಿಪಾರ್ಶ್ವಾಪಿಗಮನಮತ್ಯಥ ವೇದನಾ ಚ" ಸುಶ್ರುತಂ ನಿರ್ದಾನಂ 14-4.

**ತೀರ್ಯಕ್ತ್ವ ತೀರ್ಯಕ್ತ್ವ** (ನಂ) ತೀರ್ಯಕ್ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಸ್ವಭಾವ, ಪಶುವಕ್ಷಿಗಳ ಸ್ವಭಾವ. ತೀರ್ಯಕ್ ಭಾವ: "ತ್ವ:" (4-1-119). "ತೀರ್ಯಕ್ತ್ವಂ ತಾಮಸಾ ನಿಯಮಿತೇವಾ ತ್ರಿವಿಧಾ ಗತಿ:" ಮನುಂ 12-40.

**ತೀರ್ಯಕ್ಪಾತ ತೀರ್ಯಕ್ಪಾತ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಅಡ್ಡವಾಗಿ ಬರುವುದು. ತೀರ್ಯಕ್ ವಕ್ರಂ ಪಾತ:



ತಿಯಕ್ಪಾತಿನ್ ತಿಯಕ್ ಪಾತಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಅಡ್ಡವಾಗಿ ಬರುವ. ತಿಯಕ್ ಪತತಿ - ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಗಿತಿ:" (೩-೨-೬೮) 2. ವಕ್ರವಾಗಿ ಬೇಳುವ, ಓರೆ ಯಾಗಿರುವ. "ಯನಿ ರಾಗತರಲೇರಪಿ ತಿಯಕ್ಪಾತಿಭಿ: ಶ್ರುತಿಗುಣೇನ ಯುತಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೧೦-೪೦ |

ತಿಯಕ್ಸೋತಸ್ ತಿಯಕ್ ಸೋತಸ್ (ಪುಂ) ತಿಯಕ್ ಪ್ರಾಣ, ತಿಯಕ್ ಜಂತು, ಪಶು. ತಿಯಕ್ ಸೋತ: ಆಹಾರ-ಸಂಚಾರೋ यस್ಯ | ಪಶುಗಳು ತಿಂದ ಆಹಾರವು ಉದರದಲ್ಲಿ ವಕ್ರಗತಿಯಿಂದ ಸಂಚರಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ತಿಯಗ್ಗತಿ ತಿಯಗ್ಗತಿ (ನಂ) 1. ತಿಯಕ್ ಪ್ರಾಣ, ಪಶು ಪಕ್ಷಿಗಳು. ತಿಯಕ್ ಕುಡಲಿ ಗತಂ ಗಮನಂ यस್ಯ | (ವಿಂ) 2. ವಕ್ರವಾಗಿ ನಡೆಯುವ.

ತಿಯಗ್ಗತಿ ತಿಯಗ್ಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಕ್ರವಾಗಿ ನಡೆಯುವುದು.

ತಿಯಗ್ಗಮನ ತಿಯಗ್ಗಮನ (ನಂ) ವಕ್ರವಾಗಿ ಹೋಗುವುದು, ಡೂಂಕಾಗಿ ನಡೆಯುವುದು, ಸೊಟ್ಟಾಗಿ ಹೋಗುವುದು.

ತಿಯಗ್ಜಾತಿ ತಿಯಗ್ ಜಾತಿ (ಪುಂ) 1. ಪಶು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಪಶುಪಕ್ಷಿಗಳ ಜಾತಿ. (ವಿಂ) 3. ಪಶುಪಕ್ಷಿಗಳ ಜಾತಿಗೆ ಸೇರಿದ.

ತಿಯಗ್ಜಿನ್ ತಿಯಗ್ ಜಿನ್ (ನಂ) ವಕ್ರವಾಗಿ ಹಾರಾಡುವುದು. ಇದು ಪಕ್ಷಿಗಳ ಹಾರಾಟಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ.

ತಿಯಗ್ಯೋನಿ ತಿಯಗ್ಯೋನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಶುಪಕ್ಷಿಗಳ ಜಾತಿ. ತಿರಶ್ಚಾ ಯೋನಿ: | "ಸ ಲಿಙ್ಗಿನಾಂ ಹರತ್ಯೇನಸ್ತಿಯಗ್ಯೋನೌ ಚ ಜಾಯತೇ" ಮನುಂ ೪-೨೦೦ | (ವಿಂ) 2. ತಿಯಕ್ ಜಾತಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

ತಿಯಗ್ನಾಸ ತಿಯಗ್ ನಾಸ (ವಿಂ) ಸೊಟ್ಟಾದ ಮೂಗುಳ್ಳವನು, ವಕ್ರವಾದ ಮೂಗುಳ್ಳವನು. ತಿಯಕ್ ನಾಸಾ ಯಸ್ಯ | "ಅನಾಸಾ ಅತಿನಾಸಾಶ್ಚ ತಿಯಗ್ನಾಸಾ ವಿನಾಸಿಕಾ:" ರಾಮಾಂ |

ತಿಯಗ್ಚ ತಿಯಗ್ ಚ (ಪುಂ) 1. ತಿಯಕ್ ಪ್ರಾಣ, ಪಶು ಪಕ್ಷಿಗಳು. ತಿರ: ಅಶ್ವತಿ-ಅಶ್ವ (ಗತೌ) "ವಿವನ್" (೩-೨-೫೯) | ತಿಯದಿಶ: (೬-೩-೯೪) | "ಲಜ್ಜಾ ತಿರಶ್ಚಾಂ ಯದಿ ಚೇತಸಿ ಸ್ಯಾದಸಂಶಯಂ ಪರ್ವತರಾಜಪುತ್ರಾ:" ಕುಮಾಂ ೧-೪೮ | (ವಿಂ) 2. ವಕ್ರವಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವ, ಅಡ್ಡವಾಗಿ ನಡೆಯುವ. -ಕ್ -ಕ್. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಅಡ್ಡವಾಗಿ. "ತಿಯಗ್ವರ್ಷಮಥಸ್ತಾಚ್ಚ ವ್ಯಾಪಕೋ ಮಹಿಮಾ ಹರೇ:" ಕುಮಾಂ ೬-೭೧ |

ತಲ - ಗತೌ (ಮಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ತಲತಿ | ತಲಿತಲ | ತಲಿತಾ | ಅತಲಿತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಹೋಗು, ನಡೆ.

ತಲ - ಸ್ನೇಹನೆ (ತುಡಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ತಲತಿ | ಅತಲಿತ್ |

ತಲ - ಸ್ನೇಹ (ಚುರಾಂ ತುಡಾಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ತಲಯತಿ, -ತೇ | ಅತಲಿತಲತ್, -ತ | ಎಣ್ಣೆಯೊತ್ತು, ಎಣ್ಣೆ ಹಚ್ಚು.

ತಲ ತಲ (ಪುಂ) 1. ಎಳ್ಳಿನ ಗಿಡ. ತಲ (ಸ್ನೇಹನೆ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫) | 2. ಎಳ್ಳು, ತಲ. ತಲವನ್ನು ಶನಿಗ್ರಹದ ಪ್ರೀತ್ಯರ್ಥ ದಾನಮಾಡುವರು. ತಲ ದಾನವು ಸಕಲ ಪಾಪಗಳನ್ನೂ ಪರಿಹರಿಸಿ ಶುಭಫಲವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದು. "ಕಲ್ಯಾಣಮುತ್ಥಾಯ ಯೋ ವಿಪ್ರ: ಸ್ನಾತ: ಶುಕ್ಲೇನ ಬಾಸಸಾ | ತಲಪ್ರಾಶ್ನಂ ಪ್ರಯಚ್ಛನ್ ವೈ ಸರ್ವಪಾಪೈ: ಪ್ರಮುಚ್ಯತೇ" ಭಾಂ | ತಲವನ್ನು ದಾನಮಾಡುವವನಿಗೆ ಒಳ್ಳೆಯದಾದರೂ ಅದನ್ನು ಪ್ರತಿಗ್ರಹಿಸುವುದು ನಿಷಿದ್ಧ. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣ: ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಣೀಯಾತ್ ವೃತ್ಯರ್ಥಂ ಸಾಧುತಸ್ತಥಾ | ಅವ್ಯಶ್ಯಮಪಿ ಮಾತೃಜ್ಞತಲಿಲೋಹಾಂಶ್ಚ ವರ್ಜಯೇತ್" ಬ್ರಹ್ಮಪುಂ | 3. ಎಳ್ಳಿನಷ್ಟು ಸಣ್ಣದು, ಚಿಕ್ಕದು, ಅಲ್ಪ. "ತಲಂ ತಲಂ ಸಮಾಧಾಯ ರತ್ನಾನಾಂ ಯದ್ವಿನಿರ್ಮಿತಾ | ತಲೋತ್ತಮೇತಿ ತತ್ಸತ್ಯಾ ನಾಮ ಚಕ್ರೇ ಪಿತಾಮಹ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೩೧-೨೦ | 4. ದೇಹದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಎಳ್ಳಿನ ಆಕಾರದ ಕಪ್ಪು ಮಚ್ಚೆ, ಸಂಗಾತಿ, ಹುಟ್ಟು ಮಚ್ಚೆ.

ತಲಕ ತಲಕ (ಪುಂ) 1. ತಲಕದ ವೃಕ್ಷ. ತಲತಿ - ತಲ (ಸ್ನೇಹನೆ) "ವುನ್" (೩ಂ ೨-೩೨) | 2. ದೇಹದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಎಳ್ಳಿನ ಆಕಾರದ ಕಪ್ಪು ಮಚ್ಚೆ, ಸಂಗಾತಿ, ಹುಟ್ಟುಮಚ್ಚೆ. ತಲ ಇವ "ಕನ್" (೫-೩-೯೬) | "ಇತಿ ಪಿಡಕವಿಭಾಗ: ಪ್ರೋಕ್ತ ಆಮುರ್ಧತೋಷ್ಯಂ ವ್ರಣತಲಕವಿಭಾಗೋಽಪ್ಯೇವಮೇವ ಪ್ರಕಲ್ಪ್ಯ:" ಬೃಹತ್ಸಂ ೫೨-೧೦ | 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕುದುರೆ. 4. ಒಂದು ರೋಗ. "ತಲಕಂ ಚಿತ್ರಕೇ ಪ್ರಾಹುಲಲಾಮೇ ತಲಕಾಲಕೇ | ರೋಗವಿದ್ವಮಭೇದೇ ಲೋಮಿ ಸೌವರ್ವಲೇಷಿ ಚ" ವಿಶ್ವಂ | (ಪುನಂ) 5. ಹಣೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಮೇಲೆ ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವ ಕಸೂರಿ ಚಂದನ ಕುಂಕುಮ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಗುರುತು (ಪುಂಡ್ರ). "ಲಗ್ನದ್ವಿರೇಕಾಞ್ಜನಭಕ್ತಿಚಿತ್ರಂ ಮುಖೇ ಮಧುಶ್ರೀಸ್ತಲಕಂ ಪ್ರಕಾಶ್ಯ" ಕುಮಾಂ ೩-೩೦ | ಶೈವದೀಕ್ಷೆಯನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದವರು ತಿಯಕ್ ಪುಂಡ್ರವನ್ನೂ ವೈಷ್ಣವದೀಕ್ಷೆಯನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದವರು ಉರ್ಧ್ವಪುಂಡ್ರವನ್ನೂ ಧರಿಸಬೇಕು. "ಶಿವಾಗಮೇ ದೀಕ್ಷಿತೇಸ್ತು ಧಾರ್ಯ ತಿಯಕ್ ತ್ರಿಪುಂಡ್ರಕಮ್ | ವಿಷ್ಣಾಗಮೇ ದೀಕ್ಷಿತೇಸ್ತು ಕರ್ಷಪುಂಡ್ರಂ ವಿಧಾರಯೇತ್" ಸೂತಪುಂ | ಮೊದಲು ಲಲಾಟ (ಹಣೆ) ದಲ್ಲಿ ಉರ್ಧ್ವಪುಂಡ್ರವನ್ನು ಧರಿಸಬೇಕು.



ಅನಂತರ ಉಳಿದ ಅಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಧರಿಸಬೇಕು. "ಋವೃಷ್ಣಂ  
ಲಲಾಟೇ ತು ಸರ್ವೇಷಾಂ ಪ್ರಥಮಂ ಸ್ಮೃತಮ್ | ಲಲಾಟಾದಿಕ್ರಮೇಣೈವ  
ಧಾರಣಂ ತು ವಿಧೀಯತೇ" | 6. ಭೂಷಣ, ಅಲಂಕಾರ.  
(ಸಮಾಸಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ) ಶ್ರೇಷ್ಠ ಉತ್ತಮ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ  
ಇದರ ಪ್ರಯೋಗ. "ವಿಶೇಷಕೋ ವಾ ವಿಶಿಷೋಪ ಯಸ್ಯಾಃ  
ಶ್ರಿಯಂ ತ್ರಿಲೋಕೀತಲಕಃ ಸ ಏವ" ಮಾಘಂ ೩-೬೩ |  
(ನಂ) 7. ಮೂತ್ರಕೋಶ, ಹೊಟ್ಟೆ ಯೋಳಗಿನ ಜಲಾಶಯ.  
8. ಕಪ್ಪು ಸೌವರ್ಣಲಲವಣ. 9. ರೋಮ, ಮೈ  
ಕೂದಲು.

ತಲಕಣ ತಲಕಣ (ಪುಂ) ಎಳ್ಳಿನ ಕಾಳು.

ತಲಕಲ್ಕ ತಲಕಲ್ಕ (ಪುಂ) ಎಳ್ಳಿನ ಹಿಂಡಿ. ತಲಸ್ಯ  
ಕಲ್ಕಃ | "ತಲಕಲ್ಕಃ ಸಮಧುಕೋ ಧೃತಾಕ್ತೋ ಕ್ಷಣರೋಪಣಃ"  
ಸುಶ್ರುತಂ |

ತಲಕಾ ತಲಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಹಾರ. ತಿಲಂ  
ತಿಲಪುಷ್ಪಮಿವ ಕಾಯತಿ - ಕೆ (ಶಾಬ್ದೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) |

ತಲಕಾಲಕ ತಲಕಾಲಕ (ಪುಂ) 1. ದೇಹದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ  
ಎಳ್ಳಿನ ಆಕಾರದ ಕಪ್ಪು ಮಚ್ಚೆ, ಸಂಗಾತಿ, ಹುಟ್ಟುಮಚ್ಚೆ.  
ತಿಲ ಇವ ಕಾಲಕಃ | 2. ಒಂದು ರೋಗ, ವಾತಪಿತ್ತಕಫ  
ಗಳ ಅಧಿಕೃದಿಂದ ದೇಹದಲ್ಲಿ ತಲದ ಆಕಾರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ  
ಕಪ್ಪು ಚುಕ್ಕಿಗಳು. ಇದು ಚರ್ಮದ ಮೇಲೆ ಉಬ್ಬರದ  
ಸಮವಾಗಿರುವುದು ಮತ್ತು ಇದರಿಂದ ನೋವಿರುವುದಿಲ್ಲ.  
"ಕೃಣ್ಣಾನಿ ತಿಲಮಾತ್ರಾಣಿ ನೇರಜಾನಿ ಸಮಾನಿ ಚ | ವಾತಪಿತ್ತ-  
ಕಫೋದ್ರೇಕಾತ್ ತಾನ್ ವಿಧಾತ್ ತಿಲಕಾಲಕಾನ್" |

ತಲಕಿಡ್ಡ ತಲಕಿಟ್ಟ (ನಂ) ಎಳ್ಳಿನ ಹಿಂಡಿ. ತಲಸ್ಯ ಕಿಡ್ಡಮ್ |

ತಲಕಿನ್ ತಲಕಿನ್ (ವಿಂ) ಹಣೆಯ ಮೇಲೆ ತಲಕವನ್ನು  
ಧರಿಸಿರುವವನು ತಲಕಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) |

ತಲತಂಡುಲಕ ತಲತಂಡುಲಕ (ಪುಂ) 1. ಅಲಿಂಗನ, ಅಪ್ಪಿ  
ಕೊಳ್ಳುವುದು. ತಲಸ್ಯ ತಂಡುಲ ಇವ ಕಾಯತಿ - ಕೆ  
"ಕಃ" | ಒಬ್ಬರನ್ನೊಬ್ಬರು ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುವುದು ಎಳ್ಳು  
ಮತ್ತು ಅಕ್ಕಿಯ ಬೆರಕೆಯಂತೆ ಇರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.  
2. ಹೊಟ್ಟು ತೆಗೆದ (ಬಿಳಿಯ) ಎಳ್ಳು, ಉಜ್ಜಿ ಸಿಪ್ಪೆ  
ತೆಗೆದ ಎಳ್ಳು.

ತಲತುಂದ ತಲತುಂದ (ಪುಂ) ಗಾಣಗರವನು, ಎಳ್ಳನ್ನು  
ಹಿಂಡಿ ಎಣ್ಣೆ ತೆಗೆಯುವವನು. ತಿಲಂ ತುದತಿ-ತುದ (ವ್ಯಯೇ)  
"ತುಶ್" (ವಾಂ ೩-೨-೨೮) | ಮುಗಾಗಮಃ (೬-೩-೬೬) |

ತಲತೆಲ ತಲತೆಲ (ನಂ) ಎಳ್ಳಿನ ಎಣ್ಣೆ.

ತಲಘೆನು ತಲಘೆನು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಾನಕ್ಕಾಗಿ ಎಳ್ಳಿನಿಂದ  
ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಹಸು. ತಿಲನಿಮಿತಾ ಘೆನುಃ |

ತಲಪಣ ತಲಪಣ (ಪುಂ) 1. ದೇವದಾರು ಮರ, ಸಕಳ  
ಪ್ರಕ್ಷ. (ನಂ) 2. ಎಳ್ಳಿನ ಎಲೆ. 3. ಗಂಧ.

ತಲಪಣಿ ತಲಪಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೆಂಪು ಗಂಧದ ಮರ.  
2. ಗುಗ್ಗುಳ, ಘಂಟ. 3. ಒಂದು ನದಿ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ" |  
-ಪಣಿಕಾ - ಪರ್ಣಕಾ. ಕೆಂಪು ಚಂದನ.

ತಲಪಿಜ್ಜ ತಲಪಿಜ್ಜ (ಪುಂ) ಜಳ್ಳು ಎಳ್ಳು, ತಿರುಳಿಲ್ಲದ  
ಎಳ್ಳು. ನಿರ್ಫಲಃ ತಿಲಃ - ತಿಲ "ಪಿಜ್ಜಃ" (ವಾಂ  
೪-೨-೩೬) |

ತಲಪೇಜ ತಲಪೇಜ (ಪುಂ) ಜಳ್ಳು ಎಳ್ಳು, ತಿರುಳಿಲ್ಲದ ಎಳ್ಳು.  
ನಿರ್ಫಲಸ್ತಿಲಃ - ತಿಲ "ಪೇಜಃ" (ವಾಂ ೪-೨-೩೬) |

ತಲಶಸ್ ತಲಶಸ್ (ಅಖ್ಯಂ) ಎಳ್ಳಿನಷ್ಟು ಚಿಕ್ಕದಾಗಿ; ಎಳ್ಳು  
ನಷ್ಟು ಸಣ್ಣ ಸಣ್ಣದಾಗಿ. ತಿಲಂ ತಿಲಂ (ಕೃತ್ವಾ) "ಶಸ್"  
(೪-೪-೪೩) | "ತಿಲಶಸ್ತದ್ರವ್ಯಂ ಚಕ್ರೇ ಸಾಂಧ್ಯಾಧವಪತಾಕಿಮಂ"  
ಹರಿವಂ |

ತಲಸ್ನೆಹ ತಲಸ್ನೆಹ (ಪುಂ) ಎಳ್ಳಿನ ಎಣ್ಣೆ.

ತಲಾಸ್ತ ತಲಾಸ್ತ (ನಂ) ಎಳ್ಳಿನ ಚಿತ್ರಾಸ್ತ. ತಿಲಮಿಶ್ರಿತ-  
ಮಗ್ಗಮ್ |

ತಲಿತ್ತಿ ತಲಿತ್ತಿ (ಪುಂ) ಅಜಗರವೆಂಬ ಒಂದು ದೊಡ್ಡ  
ಸರ್ಪ, ಹೆಬ್ಬಾವು, ದಾಸರ ಹಾವು.

ತಲೋತ್ತಮಾ ತಲೋತ್ತಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಪರಸ್ತು,  
ಒಬ್ಬ ಸುರಾಂಗನೆ. ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಸುಂದೋಪಸುಂದರಂಜ  
ಇಬ್ಬರು ರಾಕ್ಷಸರು ಯಾರಿಂದಲೂ ತಮ್ಮ ಸಂಹಾರವಾಗ  
ಕೊಡದೆಂದು ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ವರವನ್ನು ಪಡೆದು ಲೋಕವನ್ನು  
ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಿದ್ದರು. ಅಷರ ಪಥೆಗಾಗಿ ಬ್ರಹ್ಮನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದ  
ಬಹಳ ಸುಂದರಿಯಾದ ತಲೋತ್ತಮೆಯೆಂಬ ಸುರಾಂಗನೆ  
ಯನ್ನು ಮೋಹಿಸಿ ಇಬ್ಬರೂ ಪರಸ್ಪರ ಹೊಡೆದಾಡಿ ಹತ  
ರಾದರು. ಇವಳಿಗೆ ಈ ಹೆಸರನ್ನಿಡಲು ಕಾರಣ. "ತಿಲಂ ತಿಲಂ  
ಸಮಾಧಾಯ ರಲಾನಾಂ ಯದಿನಿಮಿತಾ | ತಲೋತ್ತಮೇತಿ ತತ್ತಸ್ಯಾ  
ನಾಮ ಚಕ್ರೇ ಪಿತಾಮಹಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೩೧-೨೦ |

ತಲೋದಕ ತಲೋದಕ (ನಂ) ಎಳ್ಳಿನ ನೀರು, ಪಿತ್ತಗಳಿಗೆ  
ಕೊಡುವ ತಿಲಮಿಶ್ರಿತವಾದ ನೀರು. ತಿಲಮಿಶ್ರಿತಮುದಕಮ್ |  
"ಬಲಿಂ ಭಿಕ್ಷಾಂ ತಥಾರ್ಥಂ ಚ ಪಿತೃಣಾಂ ಚ ತಲೋದಕಮ್"  
ಭಾಂ |

ತಲೈ ತಲೈ (ನಂ) ಎಳ್ಳು ಬೆಳೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ  
ಭೂಮಿ, ಎಳ್ಳಿನ ವ್ಯವಸಾಯಕ್ಕೆ ತಕ್ಕ ಭೂಮಿ. ತಿಲಾನಾಂ  
ಭವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ - ತಿಲ "ಯತ್" (೪-೨-೪) |

ತಲೈ ತಲೈ (ಪುಂ) ಲೋಧದ ಗಿಡ. ತಿಲ (ಸ್ನೆಹೇ) "ವನ್"  
(೩ಂ ೪-೧೪) |



**ತಿಪ್ಪಣ್ಣ ತಿಪ್ಪಣ್ಣ** (ಅವ್ಯಂ) ಹಾಲನ್ನು ಕರೆಯುವ ಕಾಲ. ಸಾಯಂ ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲ, ಗೋವುಗಳು ಸಾಯಂಕಾಲ ಮನೆಗೆ ಬಂದ ಸುಮಾರು ಒಂದು ಗಂಟೆಯನಂತರದ ಕಾಲ. ತಿಪ್ಪಣ್ಣಿ ಗಾವೋ ಯಸ್ಮಿನ್ ಕಾಲೇ ಸ ತಿಪ್ಪಣ್ಣ ದೋಹನಕಾಲಃ | ಅವ್ಯಯಿಭಾವಃ (೨-೧-೧೭) | “ಆ ತಿಪ್ಪಣ್ಣಂ ಜಪನ್ ಸಂಖ್ಯಾಂ ಪ್ರಕ್ರಾಂತಾಮಾಯತೀಗವಮ್” ಭಟಿಂ ೪-೧೪ |

**ತಿಪ್ಪಣ್ಣ ತಿಪ್ಪಣ್ಣ** (ಪುಂ) 1. ಪುಷ್ಪನಕ್ಷತ್ರ. ತುಷ್ಯಂತ್ಯಸ್ಮಿನ್—ತುಷ (ತುಷ್ಠಿ) “ಕಪ್” ಉಪಧಾಯಾ ಇತ್ವಂ ಚ ನಿಪಾಂ (೬-೪-೧೪೯) | “ತಿಪ್ಪಣ್ಣಃ ಪುಷ್ಪೇ ಕಲಿಯುಗೇ” ಅಮಂ | “ಆಹುಯ ರಾಮಂ ವಿನಯಾಭಿರಾಮಮಾವಿಪ್ರಮೋದಃ ಪ್ರಭುರೇವಮುಚೇ | ತವೋತ್ತಮಾಂಜ್ಞೇ ಮುಕ್ತುಂ ವಿಧಾತುಮಹ್ನಾಯ ತಿಪ್ಪಣ್ಣೇ ದಿವಸೇ ಯತಿಪ್ಪಣ್ಣೇ” ಚಂ ರಾಂ | 2. ಕಲಿಯುಗ. 3. ಪುಷ್ಪಮಾಸ. (ವಿಂ) 4. ಪುಷ್ಪನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ತಿಪ್ಪಣ್ಣೇ ಜಾತಃ “ಅಣ್” (೪-೩-೧೬) | ಅಣೋ ಲುಕ್ (೪-೩-೩೪) | 5. ಮಂಗಳವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ.

**ತಿಪ್ಪಣ್ಣಪುಷ್ಪಾ ತಿಪ್ಪಣ್ಣಪುಷ್ಪಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೆಲ್ಲಿಗಿಡ. ತಿಪ್ಪಣ್ಣ ಮಂಜುಲಯ ಪುಷ್ಪ ಯಸ್ಯಾಃ |

**ತಿಪ್ಪಣ್ಣಫಲಾ ತಿಪ್ಪಣ್ಣಫಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೆಲ್ಲಿಗಿಡ. ತಿಪ್ಪಣ್ಣ ಮಂಜುಲಯ ಫಲಮಸ್ಯಾಃ | ನೆಲ್ಲಿಕಾಯಿ ಶುಭವದ. ಅದರಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಮಿಯು ವಾಸಿಸುವಳು. “ನಿತ್ಯಮಾಮಲಕೇ ಲಕ್ಷ್ಮೀಃ ನಿತ್ಯಂ ಹರಿತಗೋಮಯೇ | ನಿತ್ಯಂ ಶಾಸ್ತ್ರೇ ಚ ಪಥೇ ಚ ನಿತ್ಯಂ ಶುಕ್ಲೇ ಚ ವಾಸಸಿ” |

**ತಿಪ್ಪಣ್ಣಾ ತಿಪ್ಪಣ್ಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೆಲ್ಲಿಗಿಡ. ತಿಪ್ಪಣ್ಣ ಮಂಜುಲಯಮಸ್ತಸ್ಯಾಃ ಹೇತುವೇನ “ಅಚ್” (೪-೨-೧೨೭) | “ತಿಪ್ಪಣ್ಣೋ ನಕ್ಷತ್ರಮೇದೇ ಸ್ಯಾತ್ಕಲೌ ಧಾನ್ಯಾಂ ಚ ಯೋಷಿತಿ” ಮೇದಿಂ |

**ತಿಪ್ಪಣ್ಣ ತಿಪ್ಪಣ್ಣ** (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಾಧಿ, ರೋಗ. 2. ಧಾನ್ಯ. 3. ಧನುಸ್ಸು. 4. ಸದ್ಭಾವ. ಸಾಧುಸ್ವಭಾವ.

**ತಿಪ್ಪಣ್ಣ ತಿಪ್ಪಣ್ಣ** (ಪುಂ) 1. ಯವಕ್ಷಾರ, ಸೋರುಪ್ಪು, ಪೆಟ್ಟುಪ್ಪು. 2. ಶ್ವೇತಕುಶ, ಬಿಳಿಯ ದರ್ಭೆ. ತಿಪ್ಪಣ್ಣ (ನಿಶಾನೇ) “ಕಸ್ತನಃ” (೩ಂ ೩-೧೮) | ದೀರ್ಘ | 3. ಮೊಕ್ಕ ಮರ. (ನಂ) 4. ಸಾಮುದ್ರಲವಣ, ಸಮುದ್ರದ ಉಪ್ಪು. 5. ಕಬ್ಬಿಣ. 6. ಉಪ್ಪುತೆ, ಬಿಸುಪ್ಪು. 7. ಅತ್ಯಂತ. 8. ವಿಷ. 9. ಸಂಗ್ರಾಮ, ಯುದ್ಧ, ಕದನ. 10. ಶಸ್ತ್ರ, ಆಯುಧ. (ವಿಂ) 11. ಬಿಸಿಯಾದ, ಕಾವುಳ್ಳ, ಬಹಳ ಚುರುಕಾದ. 12. ಹರಿತವಾದ, ಚೂಪಾಗಿರುವ. “ಸ್ಪೃಶಂತಿ ಶರವತ್ಪೀಕ್ಷಣಾಃ ಸ್ತೋಕಮಂತವಿಶಂತಿ ಚ” ಮಾಧಂ ೨-೭೮ | 13. ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ, ಚುರುಕಾದ. “ತಿಪ್ಪಣ್ಣಾ ನಾರುತುದಾ ಬುದ್ಧಿಃ ಕರ್ಮ ಶಾಂತಂ ಪ್ರತಾಪವತ್” ಮಾಧಂ ೨-೧೦೯ | 14. ಕ್ರೂರ, ದಯೆಯಿಲ್ಲದವನು. “ತಿಪ್ಪಣ್ಣೇವ ಮುದುಷ್ಠ

ಸ್ಯಾತ್ ಕಾರ್ಯ ವೀಕ್ಷ್ಯ ಮಹೀಪತಿಃ | ತಿಪ್ಪಣ್ಣೇವ ಮುದುಷ್ಠೇವ ರಾಜಾ ಭವತಿ ಸಮತಃ” ಮನುಂ ೭-೧೪೦ | 15. ಬಹಳ ಕಠಿಣ ವಾದ. “ತಿಪ್ಪಣ್ಣೋಪಾಯಪ್ರಾಪ್ತಿಗಮ್ಯೋಽಪಿ ಯೋಽಯಃ ತಸ್ಯಾಪ್ಯಾದೌ ಸಂಶಯಃ ಸಾಧುಯುಕ್ತಃ” ಪಂಚತಂ ೩-೨೪೪ | 16. ಜೀವವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು, ಅತ್ಯಂತ. ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವವನು. “ತಿಪ್ಪಣ್ಣಂ ಸಾಮುದ್ರಲವಣೇ ವಿಷಲೋಹಾಜಿಮುಷ್ಕಕೇ | ವಲಿಬಂ ಯವಾಗ್ರಜೇ ಪುನಿ ತಿಗ್ಮಾತ್ಮತ್ಯಾಗಿನೋಸ್ತ್ರಿಪು” ಮೇದಿಂ | 17. ಬಹಳ ವೇಗವಾದ, ಶೀಘ್ರಪರಿಣಾಮವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.

**ತಿಪ್ಪಣ್ಣಕಂಡಕ ತಿಪ್ಪಣ್ಣಕಂಡಕ** (ಪುಂ) 1. ದತ್ತೂರಿಗಿಡ. 2. ಬಿದಿರು. ತಿಪ್ಪಣ್ಣಃ ಕಂಡಕೋಽಸ್ಯ | 3. ಇಂಗುದೀವೃಕ್ಷ, ಗಾರೆಗಿಡ. 4. ಚೂಪಾದ ಮುಳ್ಳು. ತಿಪ್ಪಣ್ಣಃ ಕಂಡಕಃ | (ವಿಂ) 5. ಚೂಪಾದ ಮುಳ್ಳುಗಳುಳ್ಳ. ತಿಪ್ಪಣ್ಣಾಃ ಕಂಡಕಾಃ | ಯಸ್ಯ |

**ತಿಪ್ಪಣ್ಣಕಂದ ತಿಪ್ಪಣ್ಣಕಂದ** (ಪುಂ) ಕರುಳ್ಳು. ತಿಪ್ಪಣ್ಣಃ ಕಂದೋ ಮೂಲಮಸ್ಯ |

**ತಿಪ್ಪಣ್ಣಕರ ತಿಪ್ಪಣ್ಣಕರ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ತಿಪ್ಪಣ್ಣಾಃ ಕರಾಃ ಅಸ್ಯ | ಹೀಗೆಯೇ ತಿಪ್ಪಣ್ಣಕಿರಣಃ, ತಿಪ್ಪಣ್ಣದೀಪಿತಿಃ, ತಿಪ್ಪಣ್ಣಾಂಶುಃ ಇತ್ಯಾದಿ. 2. ತಿಪ್ಪಣ್ಣವಾದ ಕರಣ.

**ತಿಪ್ಪಣ್ಣಕರ್ಮ ತಿಪ್ಪಣ್ಣಕರ್ಮ** (ಪುಂ) 1. ಖಡ್ಗ. ಕತ್ತಿ. ತಿಪ್ಪಣ್ಣಂ ಕರ್ಮ ಯಸ್ಯ | (ನಂ) 2. ಜಾಣತನದ ಕೆಲಸ, ಚುರುಕಾದ ಕೆಲಸ. ತಿಪ್ಪಣ್ಣಂ ಕರ್ಮ | (ವಿಂ) 3. ಕಾರ್ಯ ಪರನಾದ, ಉತ್ಸಾಹಶಾಲಿ, ಜಾಣತನದಿಂದ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು.

**ತಿಪ್ಪಣ್ಣಕಲ್ಕ ತಿಪ್ಪಣ್ಣಕಲ್ಕ** (ಪುಂ) ಕೊತ್ತುಂಬರಿ ಬೀಜ. ತಿಪ್ಪಣ್ಣಃ ಕಲ್ಕೋಽಸ್ಯ |

**ತಿಪ್ಪಣ್ಣಕಾಂತಾ ತಿಪ್ಪಣ್ಣಕಾಂತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಂಡಿಕೆಯ ಒಂದು ರೂಪ.

**ತಿಪ್ಪಣ್ಣಗಂಧ ತಿಪ್ಪಣ್ಣಗಂಧ** (ಪುಂ) 1. ನಾಗಮರ. ತಿಪ್ಪಣ್ಣೋ ಗಂಧೋಽಸ್ಯ | ವಾ “ಕಪ್” (೪-೪-೧೪೪) | —ಗಂಧಕಃ: “ಶೋಭಾಂಜನೇ ಶಿಷ್ಣುತಿಪ್ಪಣ್ಣಗಂಧಕಾಕ್ಷೀವಮೋಚಕಾಃ” ಅಮಂ |

**ತಿಪ್ಪಣ್ಣಗಂಧಾ ತಿಪ್ಪಣ್ಣಗಂಧಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಜೆ. 2. ಕರಿ ಜೀರಿಗೆ. ತಿಪ್ಪಣ್ಣೋ ಗಂಧೋ ಯಸ್ಯಾಃ | “ತಿಪ್ಪಣ್ಣಗಂಧಾ ವಚಾ-ರಾಜಿಕಯೋಃ ಶೋಭಾಂಜನೇ ಪುಮಾನ್” ಮೇದಿಂ |

**ತಿಪ್ಪಣ್ಣತಂಡುಲಾ ತಿಪ್ಪಣ್ಣತಂಡುಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಪ್ಪಲಿ. ತಿಪ್ಪಣ್ಣಾಃ ತಂಡುಲಾಃ ಯಸ್ಯಾಃ |

**ತಿಪ್ಪಣ್ಣತೆಲ ತಿಪ್ಪಣ್ಣತೆಲ** (ನಂ) 1. ಕಳ್ಳಹಾಲು. 2. ಮತ್ತೆ ಮರದ ಹಾಲು. 3. ಮದ್ಯ.



ತೀರ್ಥವೆಂಬ ತೀರ್ಥದಂಷ್ಟ (ಪುಂ) ವ್ಯಾಪ್ತಿ. ಹುಲಿ. ತೀರ್ಥಾ  
ದಂಷ್ಟಾಸ್ಯ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ "ತೀರ್ಥ" (೪-೧-೬೩)।

-ಬೆಂಟಿ - ದಂಷ್ಟ.

ತೀರ್ಥವಾರ ತೀರ್ಥದಾರ (ಪುಂ) ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. ತೀರ್ಥಾ  
ವಾರಾಸ್ಯ.

ತೀರ್ಥಪುಷ್ಪ ತೀರ್ಥಪುಷ್ಪ (ನಂ) 1. ಲವಂಗ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಪುಷ್ಪಾ - ಪುಷ್ಪ. 2. ಕೇತಕಿಗಿಡ, ತಾಳೆಮರ. 3. ಲವಂಗದ  
ಗಿಡ.

ತೀರ್ಥಫಲ ತೀರ್ಥಫಲ (ಪುಂ) 1. ಕೊತ್ತುಂಬರಿ ಬೀಜ.  
2. ಸೂಸುವ ಗಿಡ. ತೀರ್ಥ ಫಲಂ ಯಸ್ಯ.

ತೀರ್ಥಮೂಲ ತೀರ್ಥಮೂಲ (ಪುಂ) 1. ನಾಗೆ ಮರ. ತೀರ್ಥ  
ಮೂಲಮಸ್ಯ. (ನಂ) 2. ತೀರ್ಥಗುಣದ ಬೇರು. (ವಿಂ) 3.  
ತೀರ್ಥಗುಣದ ಬೇರುಳ್ಳ.

ತೀರ್ಥರಹಿಮ ತೀರ್ಥರಹಿಮ (ಪುಂ) 1. ತೀರ್ಥವಾದ ಕಿರಣ  
ಗಳುಳ್ಳ ಸೂರ್ಯ. ತೀರ್ಥಾ ರಹಿಮಯೋಸ್ಯ. (ವಿಂ)  
2. ಉಷ್ಣವಾದ ಕಿರಣಗಳುಳ್ಳ.

ತೀರ್ಥಾ ತೀರ್ಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಜೆ. 2. ಗಂಗೋತ್ರಿ ಗಿಡ.  
3. ನಸುಗುಣಿ ಗಿಡ.

ತೀರ್ಥ ತೀರ್ಥ (ಪುಂ) 1. ವಂಗ, ತಗರ. "ತೀರ್ಥಂ ತದೇ ತ್ರಿಪದಿ ತೀರ್ಥಂ"  
ವಿಶ್ವಂ. (ನಂ) 2. ನದಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ದಡ,  
ದಂಡ, ಕರ, ತಟ. ತೀರ್ಥಯತಿ - ತೀರ್ಥ (ಕರ್ಮಸಮಾಪ್ತೌ)  
"ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ವಿಭಿಜ್ಯಮಾನಾ ವಿಸಸಾರ  
ಸಾರಸಾನುದಸ್ಯ ತೀರ್ಥೇಷು ತರಣ್ಣಸಂಹತಿಃ" ಕಿರಾಂ ೮-೩೧।

ತೀರ್ಥಿತ ತೀರ್ಥಿತ (ವಿಂ) ಮುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪೂರ್ಣಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. "ತೀರ್ಥಿತಂ ಚಾನುಶಿಷ್ಟಂ ಚ ಯತ್ರ ಕವಚನ ಯದ್ಭವೇತ್"  
ಮನುಂ ೯-೨೩೩।

ತೀರ್ಥ ತೀರ್ಥ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.

ತೀರ್ಥ ತೀರ್ಥ (ವಿಂ) 1. ದಾಟಲ್ಪಟ್ಟ. "ತು (ಪ್ಲವನ-  
ತರಣಯೋಃ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ತೀರ್ಥಂ ಭೀಷ್ಮಮಹೋದಧಿ  
ಕಥಮಪಿ ದ್ರೋಣಾನಲೇ ನಿವೃತೇ" ವೇಣೀಂ ೬-೧। 2. ನೀರಿನಲ್ಲಿ  
ಇಳಿದು ಸ್ನಾನಮಾಡಿದ. 3. ಅಪಜಯ ಹೊಂದಿದ. ತು  
ಕ್ತಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ತೀರ್ಥಃ ಕಿಮರ್ಣೋನಿಧಿರೇವ  
ನೇಷ ಸುರಕ್ಷಿತೋಭೂದಿಹ ಯತ್ಪ್ರವೇಶಃ" ನೇಷಂ ೮-೨೩।

ತೀರ್ಥ ತೀರ್ಥ (ನಂ) 1. ಶಾಸ್ತ್ರ. 2. ಯಾಗ, ಯಜ್ಞ.  
3. ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ, ಯಾತ್ರಾಸ್ಥಳ. 4. ಉಪಾಯ, ಯುಕ್ತಿ.  
ತು (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) "ಯಕ್" (೩-೨-೭)। "ವಾಸುದೇವನ  
ತೀರ್ಥೇನ ತಾತ ಗಂಧರ್ವ ಸಂಶಮಮ್" ಭಾಂ ತದ್ರೂಪಂ ೧೨೫-೨೬।  
5. ಪುಣ್ಯ ತೀರ್ಥ, ಪುಣ್ಯ ಕ್ಷೇತ್ರಗಳ ತೀರ್ಥ. (ನದಿ ಸರಸ್ಸು

ಮೊದಲಾದುವು). "ನದೀದೇವನಿಖಾತೇಷು ತಡಾಗೇಷು ಸರಸ್ಸು  
ಚ। ಸ್ನಾನಂ ಸಮಾಚರೇದ್ವಿತ್ಯಂ ಗರ್ತಪ್ರಸವಣೇಷು ಚ। ನಿಪಾನಾದುದ್ಭುತಂ  
ಪುಣ್ಯಂ ತತಃ ಪ್ರಸವಣಾದಿಕಮ್। ತತೋಪಿ ಸಾರಸಂ ಪುಣ್ಯಂ ತತೋ  
ನಾಡ್ಯಮುಚ್ಯತೇ। ತೀರ್ಥತೀರ್ಥಂ ತತಃ ಪುಣ್ಯಂ ಗಂಧರ್ವತೀರ್ಥಂ ತತೋ-  
ಧಿಕಮ್" ಅಗ್ನಿಪುಂ. 6. ನದಿ ಕೆರೆ ಕೊಳ ಮೊದಲಾದುವು  
ಗಳಲ್ಲಿ ನೀರಿಗೆ ಇಳಿಯುವುದು, ಜಲಾವತರಣ. "ವಿಷಮೋಽಪಿ  
ವಿಗಾಹ್ಯತೇ ನಯಃ ಕೃತತೀರ್ಥಃ ಪಯಸಾಮಿವಾಶಯಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೩।  
7. ಋಷಿಗಳು ಸ್ನಾನಮಾಡಿದ ನದಿ ಸರಸ್ಸು ಮೊದಲಾ  
ದುದು. "ಅಕರ್ಮಮಿದಂ ತೀರ್ಥಂ ಭರದ್ವಾಜ ನಿಶಾಮಯ।  
ರಮಣೀಯಂ ಪ್ರಸನ್ನಾಂಬು ಸನ್ಮನುಷ್ಯಮನೋ ಯಥಾ" ರಾಮಾಂ।  
8. ದಾನವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಯೋಗ್ಯನಾದವನು,  
ಸತ್ವಾತ್ಮ. "ದ್ವಾರಾದೇವ ಪರೀಕ್ಷಿತಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ವೇದಪಾರಗಮ್। ತೀರ್ಥ  
ತದ್ವ್ಯಕ್ತವ್ಯಾಕಾಂ ಪ್ರದಾನೇ ಸೋಽತಿಥಿಃ ಸ್ಮೃತಃ" ಮನುಂ ೩-೧೩೦।  
9. ಉಪಾಧ್ಯಾಯ, ಗುರು, ಶಿಕ್ಷಕ. "ಶಿಕ್ಷಿತೋಹಸಿ  
ಸಾರಥ್ಯೇ ತೀರ್ಥತಃ ಪುರುಷಶ್ಚ" ಭಾಂ। "ಮಯಾ ಸುತೀರ್ಥಾದಿಭಿನಯ-  
ವಿಜ್ಞಾ ಶಿಕ್ಷಿತಾ" ಮಾಲಂ ೧। 10. ರಾಜನ ಮಂತ್ರಾ  
ಲೋಚನೆಯ ಸ್ಥಳ ಮೊದಲಾದ ಅಷ್ಟಾದಶ ಸ್ಥಾನಗಳು.  
11. ಸಚಿವ, ಮಂತ್ರಿ. 12. ಯೋನಿ, ಸ್ತ್ರೀಯರ  
ಗುಹ್ಯಾಂಗ. 13. ಹೆಂಗಸರ ರಜಸ್ಸು, ಸ್ತ್ರೀಯರ ಮುಟ್ಟು.  
14. ಯತಿಗಳ ಹೆಸರಿನೊಡನೆ ಸೇರಿಸುವ ಒಂದು ಪುಜ್ಯ  
ವಾಚಕ ಪದ. ಆನಂದತೀರ್ಥಃ ವಿಶ್ವೇಶತೀರ್ಥಃ ವಿಜ್ಞಾನಾನ್ಯತೀರ್ಥಃ  
ಇತ್ಯಾದಿ. 15. ಜಲ, ನೀರು. "ಜಲಾವತಾರೋ ಗುಹ್ಯಯುಚ್ಯತೇ-  
ಶಾಸ್ತ್ರಾದಿ ಯಜ್ಞೋ ಮುನಿಜುಷ್ಠತೀರ್ಥಮ್। ಮನ್ತ್ರಾದಯೋಽಷ್ಟಾದಶ ಪುಣ್ಯ-  
ಭೂಮಿಃ ಪಾತ್ರಂ ಜಲಂ ಸ್ತ್ರೀಕುಸುಮಂ ಚ ತೀರ್ಥಮ್" ನಾನಾರ್ಥರಂ।  
16. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 17. ನದಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಸ್ನಾನ  
ಫಲ, ನೀರಿಗೆ ಇಳಿಯುವ ದಾರಿ. 18. ಯೋಗ.  
ತೀರ್ಥವು ಸ್ಥಾವರ ಜಂಗಮ ಮತ್ತು ಮಾನವಗಳೆಂದು  
ಮೂರು ವಿಧ.

ಸ್ಥಾವರ ತೀರ್ಥಃ ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ ಪುಣ್ಯನದಿಗಳು  
ಇತ್ಯಾದಿ. "ಪ್ರಥಮಂ ಪುಷ್ಕರಂ ತೀರ್ಥಂ ನೈಮಿಷಾರಣ್ಯಮೇವ ಚ। ಪ್ರಯಾಗಂ  
ಚ ಪ್ರವಕ್ಷ್ಯಾಮಿ ಭರ್ಮಿಣ್ಯಂ ದ್ವಿಜೋತ್ತಮಾಃ। ಧೇನುಕಾ ಚಂಪಕಾರಣ್ಯಂ  
ಸೇನವಾರಣ್ಯಮೇವ ಚ" ಇತ್ಯಾದಿ.

ಜಂಗಮ ತೀರ್ಥಃ ಬ್ರಾಹ್ಮಣರು. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾ ಜಜ್ಞಮ್  
ತೀರ್ಥಂ ನಿರ್ಮಲಂ ಸಾರ್ವಕಾಮಿಕಮ್। ಯೇಷಾಂ ವಾಕ್ಯೋದಕೇನೈವ ಶುದ್ಧಯಂತಿ  
ಮಲಿನಾ ಜನಾಃ"।

ಮಾನಸ ತೀರ್ಥಃ ಸತ್ಯ, ಮನಃಶುದ್ಧಿ, ಇಂದ್ರಿಯ  
ನಿಗ್ರಹ ಇತ್ಯಾದಿ. "ಸತ್ಯಂ ತೀರ್ಥಂ ಕ್ಷಮಾ ತೀರ್ಥಂ ತೀರ್ಥಮಿन्द्रಿಯ-  
ನಿಗ್ರಹಃ। ಸರ್ವಭೂತದಯಾ ತೀರ್ಥಂ ಸರ್ವವಾರ್ತವಮೇವ ಚ। ದಾನಂ ತೀರ್ಥಂ  
ದಮಸ್ತೀರ್ಥಂ ಸಂತೋಷಸ್ತೀರ್ಥಮುಚ್ಯತೇ। ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಂ ಪರಂ ತೀರ್ಥಂ ತೀರ್ಥಂ



ಚ ಪ್ರಿಯವಾದಿತಾ । ಜ್ಞಾನಂ ತೀರ್ಥಂ ಭೃತಿಸ್ತೀರ್ಥಂ ಪುಣ್ಯಂ ತೀರ್ಥಮುದಾ-  
ಹತಮ್" ಇತ್ಯಾದಿ. ಬ್ರಹ್ಮಪುಂ । "ಯಸ್ಯ ಹಸ್ತೌ ಚ ಪಾದೌ ಚ  
ಮನಃಶ್ಚೈವ ಸುಸಂಯತಮ್ । ವಿಜ್ಞಾ ತಪಃಶ್ಚ ತೀರ್ಥಂ ಚ ಸ ತೀರ್ಥಫಲ-  
ಮನ್ವತೇ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೨-೧೪ ।

**ತೀರ್ಥಕರ ತೀರ್ಥಕರಂ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. ಸ್ಮರಣಕೀರ್ತನಾದಿನಾ  
ಸರ್ವಪಾವನಾನಿ ತೀರ್ಥಾನಿ ಗಜ್ಞಾದಿಶ್ರುತಿಜುಷ್ಠಾನಿ ಜಲಾನಿ  
ಕರೋತಿ, ತೀರ್ಥಾನಿ ಶ್ರುತಿತ್ಯಾದಿಶಾಸ್ತ್ರಾಣಿ ಕರೋತಿ,  
ತೀರ್ಥಾನಿ ಸ್ವಾವತಾರರೂಪಾಣಿ ಅವತಾರಸೋಪಾನಾನಿ ಕರೋತಿ ಇತಿ  
ವಾ ತೀರ್ಥ + ಕೃ ಕೃ (ಕರಣಂ) "ಕೃ:" (೩-೨-೨೦) ।  
ಗಂಗಾನದಿ ಮೊದಲಾದ ಅನೇಕ ತೀರ್ಥಗಳಿಗೆ ಕಾರಣನಾದುದರಿಂದಲೂ  
ಹಯಗ್ರೀವಾವತಾರವೆತ್ತಿ ಮಧುಕೈಟಭರನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ಶ್ರುತಿಸ್ಮೃತಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳನ್ನು ಚತುರ್ಮುಖ  
ಪಾದಗಳಿಗೆ ಉಪದೇಶಿಸಿದುದರಿಂದಲೂ ಅತ್ಯಪ್ರವೇಶ  
ಸೌಲಭ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಅನೇಕ ಅವತಾರ ರೂಪವಾದ ಸೋಪಾನ  
ಗಳನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿದುದರಿಂದಲೂ ವಿಷ್ಣುವು ತೀರ್ಥಕರನು.

"ಗಜ್ಞಾದಿತಿರ್ಥೇತುತ್ವಾತ್ ಶ್ರುತಿತ್ಯಾದಿಃ ಪ್ರವರ್ತನಾತ್ । ಆತ್ಮ-  
ಪ್ರವೇಶಸೋಪಾನಕೃತ್ವಾತ್ ತೀರ್ಥಕರಃ ಸ್ಮೃತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ ।

"ಮನೋಜವಸ್ತೀರ್ಥಕರಃ ವಸುರೇತಾ ವಸುಪ್ರದಃ" ವಿಂ ಸಂ ।

2. ಜಿನದೇವ, ಜೈನಮತಪ್ರವರ್ತಕರು ಮತ್ತು ಈ  
ಸಿದ್ಧಾಂತದ ಪ್ರಣೇತರು. ಪ್ರವಚನ ಶಾಸ್ತ್ರ ಪ್ರವರ್ತಕರಾದ  
ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು ತೀರ್ಥಂಕರರು ಈ ಸಿದ್ಧಾಂತದ ಪ್ರಣೇತರು.  
ಇವರಲ್ಲಿ ಮಹಾವೀರ ವರ್ಧಮಾನ ಜಿನೇಶ್ವರರು ಇಪ್ಪತ್ತು  
ನಾಲ್ಕನೆಯವರು. (ವಿಂ) 3. ಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಬರೆದವರು.

ಕರೋತಿ - ಕೃ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । ತೀರ್ಥಸ್ಯ ಕರಃ ।

**ತೀರ್ಥಕಾಕ ತೀರ್ಥಕಾಕಂ (ಪುಂ)** ಅತ್ಯಾಸೆಯುಳ್ಳ ಮನುಷ್ಯ,  
ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಕಾಗೆಗಳು ಹಾರಾಡುವಂತೆ ಹೊಟ್ಟೆಗಾಗಿ  
ಅಲೆದಾಡುವ ಮನುಷ್ಯ, ಹೊಟ್ಟೆಬಾಕ. ತೀರ್ಥ ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರಾದಿ-  
ಸ್ಥಳೇ ಕಾಕ ಇವ ।

**ತೀರ್ಥಕೃತ್ ತೀರ್ಥಕೃತ್ (ಪುಂ)** 1. ಜಿನದೇವ. (ವಿಂ) 2.  
ಶಾಸ್ತ್ರಪ್ರವರ್ತಕ. ತೀರ್ಥ ಕರೋತಿ - ಕೃ ಕೃ (ಕರಣಂ)  
"ಕಿವಪ್" (೩-೨-೬೧) ।

**ತೀರ್ಥಕ್ಷರ ತೀರ್ಥಂಕರಂ (ಪುಂ)** 1. ಜಿನದೇವ, ಜಿನೇಶ್ವರ.  
2. ಶಾಸ್ತ್ರಕಾರ, ಶಾಸ್ತ್ರಪ್ರವರ್ತಕ. ಕರೋತಿ - ಕೃ ಕೃ (ಕರಣಂ)  
"ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । ತೀರ್ಥಸ್ಯ ಕರಃ । ಮುಂ ?

"ಶಾಂಭುಃ ಸ್ವಯಂಭೂರ್ಭಗವಾನ್ ಜಗತ್ಪ್ರಮುಸ್ತೀರ್ಥಕ್ಷರಸ್ತೀರ್ಥಕ್ಷರೋ  
ಜಿತೇಶ್ವರಃ" ಅಭಿಂ ವಿಂ । "ತೀರ್ಥಕರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ತೀರ್ಥಯಾತ್ರಾ ತೀರ್ಥಯಾತ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರಗಳಿಗೆ  
ಮಾಡುವ ಪ್ರಯಾಣ. ತೀರ್ಥ ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರಮುಖ್ಯ ಯಾತ್ರಾ ।

**ತೀರ್ಥರಾಜ ತೀರ್ಥರಾಜ (ಪುಂ)** ಪ್ರಯಾಣಕ್ಷೇತ್ರ. ತೀರ್ಥಿನಾ  
ರಾಜಾ - "ಟವ್" (೪-೪-೯೧) ।

**ತೀರ್ಥರಾಜಿ (ಜಿ)** ತೀರ್ಥರಾಜಿ (ಜಿ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಶಿ,  
ವಾರಾಣಸಿ. ತೀರ್ಥಿನಾ ರಾಜಿರತ್ನ । ವಾ "ಜಿಪ್" ।  
"ವಾರಾಣಸಿ ತೀರ್ಥರಾಜಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ತೀರ್ಥವಾಕ್ ತೀರ್ಥವಾಕ್ (ಪುಂ)** ತಲೆಯೆಕ್ಕೂದಲು. ತೀರ್ಥಸೇವ  
ವಾಕೋ ವಚನಮಸ್ಯ । ಉತ್ತಮಾಂಗ (ತಲೆ) ದಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ  
ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದುದೆಂದು ಇದು ಪ್ರಶಂಸನೀಯ.

**ತೀರ್ಥಶೌಚ ತೀರ್ಥಶೌಚ (ನಂ)** ಸ್ನಾನಘಟ್ಟ ಮೊದಲಾದುವು  
ಗಳನ್ನು ಪರಿಷ್ಕರಿಸುವುದು. ಸೇತುವೆಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವುದು  
ಸ್ನಾನಘಟ್ಟಗಳನ್ನು (ನೀರಿಗೆ ಇಳಿಯುವ ಸೋಪಾನಗಳನ್ನು)  
ಅಚ್ಚು ಕಟ್ಟು ಮಾಡಿಸುವುದು ಇತ್ಯಾದಿ ಬಹಳ ಶ್ರೇಯಸ್ಕರ.  
"ಸೇತುವರ್ಚರತಾ ಯೇ ಚ ತೀರ್ಥಶೌಚರತಾಶ್ಚ ಯೇ । ತಡಾಗಕ್ಕುಪ-  
ಕರ್ತಾರೋ ಮುಚ್ಯಂತೇ ತೇ ತೃಣಾಭಯಾತ್" ಆದಿತ್ಯಪುಂ ।

**ತೀರ್ಥಸೇವಿನ್ ತೀರ್ಥಸೇವಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ಬಕಪಕ್ಷಿ. (ವಿಂ)  
2. ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವವನು. ತೀರ್ಥ ಜಲಪ್ರಾಂತ  
ಸೇವತೇ ಮತ್ಸ್ಯಗ್ರಹಣಾರ್ಥ ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರಂ ಸೇವತೇ ವಾ - ಷೇವ (ಸೇವಾಯಾಮ್)  
"ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೭೮) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಹೆ.ಪ್" (೪-೧-೪) ।  
-ಸೇವಿನಿ - ಸೇವಿನೀ.

**ತೀವರ ತೀವರಂ (ಪುಂ)** 1. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. 2. ವ್ಯಾಧಿ,  
ಬೇಡರವನು, ಮೃಗಗಳ ಬೇಟೆಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು.  
ತೀವ (ಸ್ಥೂಲೇ) "ಪರವ್" (೩ಂ ೩-೧) । ನಿಪಾಂ ।  
3. ಒಬ್ಬ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು. ರಾಜಪುತ್ರ ಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ  
ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವನು. "ಸಹಃ ಕ್ಷತ್ರಿಯವೀರ್ಯಂ  
ರಾಜಪುತ್ರಸ್ಯ ಯೋಷಿತಿ । ಬಭೂವ ತೀವರಶ್ಚೈವ ಪತಿಸ್ತೌ ಜಾರ-  
ದೋಪತಃ" । (ಸ್ತ್ರೀಂ) - ರೀ - ರೀ, ಬೇಡರ ಹೆಂಗಸು.

**ತೀವ್ರ ತೀವ್ರಂ (ವಿಂ)** 1. ಬಹಳವಾದ, ಅತ್ಯಂತವಾದ,  
ಹೆಚ್ಚಾದ, ಮಿತಿಮೀರಿದ. ತೀವ್ರ (ಸ್ಥೂಲೇ) "ರಕ್"  
ಬಾಹುಂ । "ತೀವ್ರಾಭಿಷಂಜಗ್ರಭವೇಣ ಭೃತಿ ಮೋಹೇನ ಸಂಸ್ತಮ್ಭಯತೇ-  
ಂದ್ರಿಯಾಣಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೭೩ । 2. ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ, ಬಹಳ  
ಚುರುಕಾದ. "ಅನುಭವತಿ ಹಿ ಮೂರ್ಛಾ ಪಾದಪಸ್ತೋತ್ರಮುಷ್ಣಮ್"  
ಶಾಕುಂ ೪-೭ । 3. ಬಹಳ ಚೂಪಾದ, ಬಹಳ ಹರಿತವಾದ.  
"ತಯೈವ ತೀವ್ರೋ ಹೃದಿ ಶೋಕಶಾಙ್ಕಃ" ೩ಂ ರಾಂ ೩-೩೪ ।  
4. ಕಟುವಾದ, ಕಾರವಾದ. 5. ಬಹಳ ಉಗ್ರವಾದ,  
ಬಹಳ ಕಷ್ಟವಾದ. "ತೀವ್ರಂ ಮಹಾವ್ರತಮಿವಾತ್ರ ಚರಂತಿ ವಪ್ರಾಃ"  
ಮಾಘಂ ೪-೪೮ । 6. ಬಹಳ ಬಿಸಿಯಾದ, 7. ಬಹಳ  
ಬಿರುಸಾದ, ಬಹಳ ವೇಗವಾದ. "ತೀವ್ರಮತ್ಯುಣ್ಣಕಟುಕ-  
ನಿತಾಂತೋಷವ್ಯವನ್ಮತಮ್" ವಿಷ್ಣುಂ । 8. ಬಲವಾದ. (ಪುಂ)



9. ಚೂಪು, ಮೊನಚು. 10. ಕಾರ. 11. ಲೋಹ, ಕಪ್ಪಿಣ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವಾ -ವ್ಯಾ. 12. ಕರಿ ಸಾಸುವೆ. 13. ಕಟುಕರೋಹಿಣಿ. 14. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಗರಿಕೆ ಹುಲ್ಲು. (ಅವ್ಯಂ) 15. ಬಹಳ ವೇಗವಾಗಿ. 16. ಬಹಳ ಖಾರವಾಗಿ. 17. ಬಹಳ ಚೂಪಾಗಿ. 18. ಬಹಳವಾಗಿ. "ತೀವ್ರಾ ತು ಕರುಹಿಷ್ಯಾ ರಾಜಿಕಾಮಣ್ಡವ್ಯೋ. | ತ್ರಿಪ್ವಲ್ಯುಣೇ ನಿತಾಂತೇ ಚ ಕಠಿ" ಮೇದಿಂ. "ತೀವ್ರಂ ಕಠು ನಿತಾಂತಂ ಚ" "ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ತೀವ್ರಕಂಠ ತೀವ್ರಕಂಠ** (ಪುಂ) ಸೂರಣಗಡ್ಡೆ. ತೀವ್ರ: ಕಂಠೋ ಯಸ್ಮಾತ್ | ಇದನ್ನು ತಿಂವಾಗ ಗುಟ್ಟಲಲ್ಲಿ ತೊಂದರೆಯಾಗುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ತೀವ್ರಕಂಠ ತೀವ್ರಕಂಠ** (ಪುಂ) ಸೂರಣಗಡ್ಡೆ.

**ತೀವ್ರಗಂಧ ತೀವ್ರಗಂಧ** (ವಿಂ) ಉಗ್ರವಾದ ವಾಸನೆಯುಳ್ಳ.

**ತೀವ್ರಗಂಧ ತೀವ್ರಗಂಧ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಜವಾನ, ಓಮ, ವಾದಕ್ಕಿ. 2. ಜೀರಿಗೆ. 3. ಬಜೆ.

**ತೀವ್ರವೇದನಾ ತೀವ್ರವೇದನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಾತನೆ, ಅತಿಯಾದ ನೋವು, ಘೋರವಾದ ಹಿಂಸೆ. ತೀವ್ರಾ ಚಾಸೀ ವೇದನಾ ಚ |

**ತು ತು** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಶ್ಲೋಕದ ಪಾದಪೂರ್ತಿಗಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ಪದ (ಇದಕ್ಕೆ ಅರ್ಥವಿಲ್ಲ). ತುದ (ವ್ಯಖನೆ) "ಛು:" (ವಾಂ 3-2-180). "ತು ಹಿ ಚ ಸಮಹವೇ ಪಾದಪೂರ್ಣಂ" ಅಮಂ. "ಅವಗುರ್ಯ ತ್ವಂದಶತಂ ಸಹಸ್ರಮಭಿಹತ್ಯ ಚ | ಜಿಘಾಂಸಯಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ನರಕಂ ಪ್ರತಿಪದ್ಯತೇ" ಮನುಂ 11-206. "ತು" ಪದವು ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವುದು. 2. ಭೇದ. (ಅದರ ಎನ್ನುವ ಅರ್ಥ) "ಮೃದಘಟವತ್ ಸುಖಮೇದೋ ದುಃಸಂಧಾನಶ್ಚ ದುರ್ಜನೋ ಭವತಿ | ಸುಜನರತು ಕನಕಘಟವದ್ದುಭೇದಶ್ಚಾಶು ಸಂವೇಯ:" ಹಿತೋ 1-3-92. 3. ಅವಧಾರಣ, ನಿಶ್ಚಯ. 4. ಸಮುಚ್ಚಯ. "ಉಪ್ಪಯಾನಂ ಸಮಾಹುಯಾ ಕರಯಾನಂ ತು ಕಾಮತ:" ಮನುಂ 11-201. 5. ಪಕ್ಷಾಂತರ. "ಆಚಾರಾದಿವ್ಯುತೋ ವಿಪ್ರೋ ನ ವೇದಫಲಮಶ್ನುತೇ | ಆಚಾರೇಣ ತು ಸಂಯುಕ್ತ: ಸಂಪೂರ್ಣಫಲಭಾಗಭವೇತ್" ಮನುಂ 1-109. 6. ನಿಯೋಗ, ಅಪ್ಪಣೆ. 7. ಪ್ರಶಂಸೆ, ಹೊಗಳಿಕೆ. 8. ನಿಗ್ರಹ, ಅಡಗಿಸುವಿಕೆ, ಹತೋಟಿಯಲ್ಲಿಡುವುದು. "ತು ಪಾದಪೂರ್ಣಂ ಭೇದೇ ಸಮುಚ್ಚಯೇವಭಾರಣಂ | ಪಕ್ಷಾಂತರೇ ನಿಯೋಗೇ ಚ ಪ್ರಶಂಸಾಯಾಂ ವಿನಿಗ್ರಹೇ" ಮೇದಿಂ |

**ತುಗಾ ತುಗಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತವಕ್ಷೀರ.

**ತುಗಾಕ್ಷೀರೀ ತುಗಾಕ್ಷೀರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತವಕ್ಷೀರ. ತುಗೇವ ಕ್ಷೀರೀ |

**ತುಗ ತುಗ** (ಪುಂ) ಅಶ್ವಿನೀದೇವತೆಗಳ ಶಿಷ್ಯನಾದ ಒಬ್ಬ ರಾಜಮ.

**ತುಙ್ಗ ತುಂಗ** (ಪುಂ) 1. ಪುನ್ನಾಗವೃಕ್ಷ, ಸುರಗಿಮರ, ಸುರ ಹೊನ್ನೆ ಮರ. ತುಙ್ಗಯತೇ - ತುಜಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಛಮ್" (3-3-18). 2. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. 3. ಬುಧಗ್ರಹ. 4. ಶಿವ. 5. ತೆಗಿನಮರ. 6. ಸಿಂಹಾಸನ. "ನಿಪಾತ್ಯ ತುಙ್ಗಾದ್ರಿಪುಷ್ಪಯನಾಥಂ ಹೃತಂ ವ್ಯಕರ್ಷತ್ ವ್ಯಸುಮೋಜಸೋರ್ಭಾಮ್" ಭಾಗಂ 3-3-1. 7. ಗ್ರಹಗಳ ಉಚ್ಚರಾಶಿ. (ನಂ) 8. ಹೂವಿನ ಕುಸುಮ, ಕಿಂಜಲ್ಕ, ಕೇಸರ. (ವಿಂ) 9. ಉನ್ನತ ವಾದ, ಎತ್ತರವಾದ. "ದುಃಖೇನ ಭೋಜಯಿತುಮಾಶಯಿತಾ ಶಶಾಕ ತುಙ್ಗಾಶ್ಚಕಾಯಮನಮಂತಮನಾದರೇಣ" ಮಾಘಂ 4-41. 10. ಪ್ರಧಾನವಾದ, ಪ್ರಮುಖವಾದ.

**ತುಙ್ಗಕ ತುಂಗಕ** (ಪುಂ) 1. ಪುನ್ನಾಗವೃಕ್ಷ, ಸುರಗಿಮರ. ತುಙ್ಗ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:" | (ನಂ) 2. ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರವಾದ ಒಂದು ಅರಣ್ಯ. "ತುಙ್ಗಕಾರಣ್ಯಮಾಸಾಞ್ಚ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರೀ ಜಿತೇಂದ್ರಿಯ: | ವೇದಾನಧ್ಯಾಪಯತ್ತತ್ರ ಶ್ರುತಿ: ಸಾರಸ್ವತ ಪುರಾ" ಮಾಂ ವನಂ 84-86 |

**ತುಙ್ಗಬೀಜ ತುಂಗಬೀಜ** (ನಂ) ಪಾದರಸ. ತುಙ್ಗಸ್ಯ ಶಿವಸ್ಯ ಬೀಜಮ್ |

**ತುಙ್ಗಭ ತುಂಗಭ** (ನಂ) ಸೂರ್ಯಾದಿ ಗ್ರಹಗಳ ಉಚ್ಚರಾಶಿ.

**ತುಙ್ಗಭದ್ರ ತುಂಗಭದ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಮದವೇರಿದ ಅನೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಭದ್ರಾ -ಭದ್ರಾ. 2. ತುಂಗಭದ್ರಾನದಿ, ಕೃಷ್ಣಾ ನದಿಗೆ ಸೇರುವ ಒಂದು ಮಹಾನದಿ. "ಕಾವೇರೀ ವೇಣೀ ಪಯಸ್ವಿನೀ ಶರ್ಕರಾವತೀ ತುಙ್ಗಭದ್ರಾ ಕೃಷ್ಣಾ ವೇಣ್ಯಾ ಭೀಮರಣಿ ಗೋದಾವರೀ" ಇತ್ಯಾದಿ ಭಾಗಂ 4-19-18. "ತುಙ್ಗಭದ್ರೋ ಮದೋಕ್ತಃ | ತುಙ್ಗಭದ್ರಾ ನದೀಭೇದೇ" ಹೇಮಂ |

**ತುಙ್ಗಾ ತುಂಗಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತವಕ್ಷೀರ. 2. ಶಮೀವೃಕ್ಷ, ಬನ್ನಿಮರ. 3. ತುಂಗಾನದಿ.

**ತುಙ್ಗಿನ್ ತುಂಗಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ ಉಚ್ಚರಾಶಿಯಲ್ಲಿರುವ ಗ್ರಹ. ತುಙ್ಗ ಮೇಷಾದಿಕಂ ಉಚ್ಚವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಛನಿ:" (4-2-114). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಿ -ನೀ. 2. ಮಹಾಶತಾವರೀ ಗಿಡ.

**ತುಙ್ಗೀ ತುಂಗೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಾರಂಬೇಳೆ ಗಿಡ. ತುಙ್ಗ ಗೌರಾಂ "ಛಿಷ್" (4-1-41). 2. ಅರಶಿನ. "ಬರಬರಾ ಕಬರೀ ತುಙ್ಗೀ ಕರಪುಷ್ಪಾಜಗನ್ವಿಕಾ" ಅಮಂ. "ತುಙ್ಗೀ ನಿಶಾ-ಬರಬರಯೋ:" ಮೇದಿಂ. 3. ರಾತ್ರಿ. "ಛಯಾ ಯಾಮ್ಯಾ ದೋಷಾ ತುಙ್ಗೀ ಭೌತೀ ಶತಾಕ್ಷೀ ಚ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ತುಙ್ಗೀಪತಿ ತುಂಗೀಪತಿ** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ತುಙ್ಗಾ: ರಾತ್ರಿ: ಪತಿ:







**ತುನ್ವಿನ್ ತುಂದಿನ್** (ವಿಂ) ದೊಡ್ಡ ಹೊಟ್ಟೆಯುಳ್ಳವನು.

ಅತಿಶಯಿತಂ ತುಂದಮಸ್ಯಸ್ಯ "ಛಿನ್" (೪-೨-೧೧೫)।

ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛಿಪ್" (೪-೧-೫)। -ನಿ-೨೬.

**ತುನ್ವಿಮ (ಲ) ತುಂದಿಭ (ಲ)** (ವಿಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಹೊಟ್ಟೆಯುಳ್ಳವನು. ತುಂದಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ-ತುನ್ವಿ "ಮ್" (೪-೨-೧೩೯)।

ತುನ್ವಿ "ಛಿಲ್" (೪-೨-೧೧೭) ವಾ। "ತುಂದಿಲಸ್ತುನ್ವಿಮ-ಸ್ತುಂದಿ ಬೃಹತ್ಕುಕ್ಷಿಃ ಪಿಚಿಞ್ಞಿಲಃ" ಅಮಂ। 2. ತುಂಬಿದ ಹೊಟ್ಟೆಯುಳ್ಳ.

"ಯದಗಾರಘಟಾಡ್ಕುಡ್ಕಿಮಸ್ರವದಿನ್ದ-ಪಲತುಂದಿಲಾಪಯಾ" ನೆಪಂ ೨-೮೯।

**ತುನ್ವಿಲಿತ ತುಂದಿಲಿತ** (ವಿಂ) ತುಂದಿಲನಾಗಿರುವ, ತುಂಬಿದ ಹೊಟ್ಟೆಯುಳ್ಳವನಾಗಿರುವ. ತುನ್ವಿಲ "ಛಿಲ್" (೪-೨-೩೬)।

**ತುನ್ವ ತುನ್ವ** (ಪುಂ) 1. ನಂದಿಮರ. (ವಿಂ) 2. ನೋಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗಾಯಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಒಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಂದರೆ ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮನನೋಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ತುನ್ವತೆ - ತುನ್ವ (ವ್ಯಥನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 4. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ತುನ್ವವಾಯ ತುನ್ವವಾಯ** (ಪುಂ) ಹೊಲಿಗೆ ಕೆಲಸದವನು, ದರ್ಜಿ, ಬಟ್ಟೆಗಳನ್ನು ಹೊಲೆದು ಜೀವಿಸುವವನು. ತುನ್ವ ಛಿನ್ ವಯತಿ - ವೇನ್ (ತನ್ತುಸಂತಾನೆ) "ಅನ್" (೩-೨-೧)।

"ತನ್ತುವಾಯಃ ಕುವಿನ್ದಃ ಸ್ಯಾತ್ತುನ್ವವಾಯಸ್ತು ಸೌವಿಕಃ ಅಮಂ।

"ಶೈಲತುನ್ವವಾಯಾನ್ ಕೃತಘನಸ್ಯಾನ್ಮಮೇವ ಚ" ಮನುಂ ೪-೨೧೪।

**ತುನ್ವಸೇವನಿ ತುನ್ವಸೇವನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೂಜಿ. ತುನ್ವ ಛಿನ್ ಸೀವ್ಯತೇನೆ - ಪಿವು (ತನ್ತುಸಂತಾನೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ಛಿಪ್" (೪-೧-೧೫)।

**ತುಮುಲ ತುಮುಲ** (ಪುಂ) 1. ತಾರೆಗಿಡ. (ನಂ) 2. ದೊಂಬಿಯ ಕಾಳಗ, ಗದ್ದಲದ ಯುದ್ಧ, ಗಲಿಬಿಲಿಯ ಕದನ, ಗದ್ದಲ. ತೌತಿ - ತು (ಸೌತ್ರಧಾತುಃ) "ಮುಲ್" ಬಾಹುಂ। "ತುಮುಲಃ ಕಲಿವೃಕ್ಷೇ ನಾ ಕಲಿಬಂ ತು ರಣಸಂಕುಲೇ" ಮೇದಿಂ। (ವಿಂ) 3. ಗಾಬರಿಗೊಂಡ, ಕಳವಳಗೊಂಡ, ಗಲಿಬಿಲಿಯಾದ. "ರಾಮಾ-ಪರಿಶ್ರಾಣವಿಹಸ್ತಯೋಃ ಸೇನಾನಿವೇಶಂ ತುಮುಲಂ ಚಕಾರ" ರಘುಂ ೫-೪೯। 4. ಉಗ್ರವಾದ, ಘೋರವಾದ. "ಬಭೂವ ಯುಧಂ ತುಮುಲಂ ಜಯೇಷಿಣೋರಧೋಮುಖೇಃ ಪತ್ರಿಮಿಃ" ರಘುಂ ೩-೫೭।

**ತುಮ್ಬಿ ತುಂಬೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉದ್ದದ ಸೋರೆಕಾಯಿ. ತುಮ್ಬತಿ ಛಿವಿಮ್ - ತುಮ್ಬಿ (ಅದನೆ) "ಅವ್" (೩-೧-೧೩೪) "ಛಿಪ್" (೪-೧-೪೧)।

**ತುಮ್ಬಿಕಾ ತುಂಬುಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗುಂಡು ಸೋರೆಕಾಯಿ. "ವೃತ್ತತುಮ್ಬಾ ತು ತುಮ್ಬಿಕಾ" ವೈಜಂ।

**ತುಮ್ಬುರಿ ತುಂಬುರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೊತ್ತುಂಬರಿ. 2. ಹೆಣ್ಣು ನಾಯಿ. "ತುಮ್ಬುರಿ ಕುಕುರಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್। ಧನ್ಯಾಕೇಽಪಿ" ಮೇದಿಂ।

**ತುಮ್ಬುರ ತುಂಬುರು** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ದೇವ ಗಂಧರ್ವ. 2. ಈಗಿನ ಅವಸರ್ಪಿಣೀಕಾಲದ 5ನೆಯ ಅರ್ಧಾಂತರ ಅನುಚರ.

**ತುರ ತುರ** (ಪುಂ) 1. ವೇಗ. ತುರ (ತುರಣೆ) "ಕಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೫೮)। (ವಿಂ) 2. ವೇಗವಾದ.

**ತುರಗ ತುರಗ** (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. ತುರ (ತುರಣೆ) "ಕಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೫೮)। ತುರಣ ತುರಯಾ ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಛಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)। "ಧ್ರುವಂ ಗುಣ್ ಮಾರ್ಗಃ ಕರೋದ್ಧಾನುಲ್ಲಕ್ಷ್ಯ ಗಮ್ತು ತುರಗಾಸ್ತಶಿಃ" ಮಾಧಂ ೩-೨೯। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಛಿಪ್" (೪-೧-೬೩)। -ಗಿ-ಗೀ. 2. ಚಿತ್ತ, ಮನಸ್ಸು. (ವಿಂ) 3. ವೇಗವಾಗಿ ಹೋಗುವವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೌರಾಂ "ಛಿಪ್" (೪-೧-೪೧)। -ಗಿ-ಗೀ. 4. ಅಶ್ವಗಂಧಿಗಿಡ. "ತುರಗಿ ಚಾಶ್ರಗನ್ಧಾಃ ತುರಗಾಶ್ರಿತವಾಜಿನಃ" ಮೇದಿಂ।

**ತುರಗಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ ತುರಗಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ** (ನಂ) ಕುದುರೆಯಂತೆ ಆಚರಿಸುವ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ ವ್ರತ, ಹೆಂಗಸರ ಸಹವಾಸವು ದೊರೆಯದೆ ಇರುವುದರಿಂದ ಅವರ ಸಹವಾಸವನ್ನು ಬಿಡುವ ನಿರ್ಬಂಧದ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ. ತುರಗಸ್ಯೇವ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಮ್।

**ತುರಗಮುಖ ತುರಗಮುಖ** (ಪುಂ) 1. ಹಯಗ್ರೀವ. 2. ಕಿಂಪುರುಷ. ತುರಗಸ್ಯೇವ ಮುಖಮಸ್ಯ।

**ತುರಗವದನ ತುರಗವದನ** (ಪುಂ) 1. ಹಯಗ್ರೀವಾವತಾರ ವೆತ್ತಿದ ವಿಷ್ಣು. ತುರಗಸ್ಯೇವ ವದನಮಸ್ಯ। 2. ಕುದುರೆಯಂತೆ ಮುಖವುಳ್ಳ ಕಿಂಪುರುಷ. ವಿಮಂ ತುರಗಾನನಃ ತುರಗಾಸ್ಯಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ತುರಗಿನ್ ತುರಗಿನ್** (ವಿಂ) ಕುದುರೆಯೇ ವಾಹನವಾಗಿ ಉಳ್ಳವನು. ತುರಗೋ ವಾಹನತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಛಿನ್" (೪-೨-೧೧೫)।

**ತುರಗಿ ತುರಗೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಕುದುರೆ. ತುರಗ ಜಾತಿಂ "ಛಿಪ್" (೪-೧-೬೩)। 2. ಅಶ್ವಗಂಧಿಗಿಡ. "ತುರಗಿ-ತ್ವಶ್ರಗನ್ಧಾಯಾಮ್" ಹೇಮಂ।

**ತುರಗ್ಗ ತುರಗ್ಗ** (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. ತುರಣ ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಛಃ" (೩-೨-೪೮)। ಮುಮಾಗಮಃ (೬-೩-೬೭)। ವಾ ಡಿತ್। ಪಕ್ಷೇ ಟಿಲೋಪಃ। "ಸಯತನ-ಸುತಾಯತರಸಿಮಭುಗನಿವಾಗ್ರಸಂಸಕ್ತಯುಗೈಸ್ತುರಗ್ಗಃ" ಮಾಧಂ ೩-೬೮। 2. ಚಿತ್ತ, ಮನಸ್ಸು. (ವಿಂ) 3. ವೇಗವಾಗಿ ಹೋಗುವವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಗ್ಗಿ-ಗ್ಗೀ. 4. ಅಶ್ವಗಂಧಿಗಿಡ. 5. ಹೆಣ್ಣು ಕುದುರೆ.



**ತುರಗ್ಗಮ ತುರಂಗಮ** (ಪುಂ) ಕುದುರೆ. ತುರೇಣ ವೇಗೇನ  
ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಖವ್" (೩-೨-೪೭)। ಮುಮಾಗಮಃ  
(೬-೩-೬೭)। "ಅವೇಹಿ ಮಾಂ ಪ್ರೀತಮೃತೇ ತುರಗ್ಗಮಾತ್ ಕಿಮಿಚ್ಛ-  
ಸೀತಿ ಸ್ಫುಟಮಾಹ ವಾಸವಃ" ಋಷಿಂ ೩-೬೩। "ಆಮೂಲಾ-  
ದುಪನದಿ ಸೇಕತೇಷು ಲೇಭೇ ಸಾಮಗ್ರೀಂ ಕುರಪದವೀ ತುರಗ್ಗಮಾಣಾಮ್"  
ಕಿರಾಂ ೭-೨೧। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಙೀಷ್" (೪-೧-೬೩)।  
-ತುರಗ್ಗಮೋ-ತುರಂಗಮಾ.

**ತುರಗ್ಗಮುಖ ತುರಂಗಮುಖ** (ಪುಂ) ಕುದುರೆಯಂತೆ ಮುಖ  
ವುಳ್ಳ.

**ತುರಗ್ಗವದನ ತುರಂಗವದನ** (ಪುಂ) 1. ಹಯಗ್ರೀವಾವತಾರ  
ವೆತ್ತಿದ ವಿಷ್ಣು. ತುರಗ್ಗಸ್ಯೇವ ವದನಮ್ ಅಸ್ಯ। 2. ಕುದುರೆ  
ಯಂತೆ ಮುಖವುಳ್ಳ ಕೆಂಪುರುಷ. ಏವಂ ತುರಗ್ಗವದನಃ  
ತುರಗ್ಗಾಸ್ಯಃ ಇತ್ಯಾದಿ. "ಬಿಂಬೋಷ್ಠ ಬಹುಮನುತೇ ತುರಗ್ಗವದನಃ"  
ಮಾಧಂ ೪-೩೮।

**ತುರಗ್ಗಸಾದಿನ್ ತುರಂಗಸಾದಿನ್** (ವಿಂ) ಕುದುರೆಯ  
ಸವಾರ.

**ತುರಗ್ಗಿನ್ ತುರಂಗಿನ್** (ವಿಂ) ಕುದುರೆಯೇ ವಾಹನವಾಗಿ  
ಉಳ್ಳವನು, ಕುದುರೆಯ ಸವಾರ. ತುರಗ್ಗೋ ವಾಹನತ್ವೇನಾ-  
ಸ್ಯಸ್ಯ "ಙಿನ್" (೪-೨-೧೧೪)। "ತುರಗ್ಗೀ ತುರಗಾರುಹಂ  
ಪ್ರಾಸೇನಾಹತ್ಯ ವಕ್ಷಾಸಿ" ಕುಮಾಂ ೧೩-೪೧। "ತುರಗ್ಗಿಭಿರ್ಯತ್ರ  
ನಿರ್ದವಾಹನೈಃ" ಮಾಧಂ ೩-೩೦।

**ತುರಗ್ಗೀ ತುರಂಗೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಕುದುರೆ. ತುರಗ್ಗ  
ಜಾತಿಂ "ಙೀಷ್" (೪-೧-೬೩)। 2. ಅಶ್ವಗಂಧಿ ನಿದ.  
ತುರಗ್ಗಸ್ತದ್ಗಂಧೋಸ್ತಸ್ಯಾಃ "ಅವ್" (೪-೨-೧೨೭)।

**ತುರಸ್ ತುರಸ್** (ನಂ) ತ್ವರೆ, ವೇಗ. ತುರ (ತುರಣೇ) "ಅಸುನ್"  
(೩ಂ ೪-೧೮೮)।

**ತುರಾಯಣ ತುರಾಯಣ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ  
ಅಸಕ್ತಿಯಿಂದ ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆಯುವುದು, ಕಾರ್ಯಾಸಕ್ತಿ  
ಯಿಂದ ವೇಗವಾಗಿ ಹೋಗುವವನ ನಡೆಗೆ. ತುರಸ್ಯಾಯನಮ್।  
2. ಒಂದು ಯಜ್ಞ.

**ತುರಾಸಾಹ್ ತುರಾಸಾಹ್** (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ, ದೇವತೆಗಳ ಒಡೆಯ.  
ತುರಂ ವೇಗವಂತಂ ಸಾಹಯತಿ ಅಭಿಮವತಿ—ಷಹ (ಮರ್ಷಣೇ) + ಣಿಚ್  
"ವಿವ್" (೩-೨-೭೬)। ಷತ್ವಮ್ (೮-೩-೪೬)। ಪೂರ್ವಪದ-  
ದೀರ್ಘಃ (೬-೩-೧೩೭)। ತುರಾಸಾಹ್ ಇತಿ ಪ್ರಥಮಾವಿಮವತೀ  
ರೂಪಮ್। "ತುರಾಸಾಹ್ ಪುರೋಚಾಯ ಧಾಮ ಸ್ವಾಯಮ್ಭುವಂ ಯುಃ"  
ಕುಮಾಂ ೨-೧।

**ತುರಿ ತುರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೇಯಿಗೆಯವನ ಮಗ್ಗದ ಕೋಲು,  
ದಾರದ ಎಳೆಗಳುಳ್ಳ ಮಗ್ಗದ ಕೋಲು, ಮಗ್ಗದಲ್ಲಿರುವ

ಹಾಸುಹೊಕ್ಕು ದಾರಗಳ ಸುಕ್ಕುಗಳನ್ನು ಸರಿಪಡಿಸಿ ಪ್ರತೀಕ  
ಗೊಳಿಸುವ ಒಂದು ತಂತುಮಯ ದಂಡ. ತುರ (ತುರಣೇ)  
"ಙನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭)। ವಾ "ಙೀಷ್" (೧ಂ ೪-೧-೪೪)।  
ತುರಿ ತುರಿ.

**ತುರೀಯ ತುರೀಯ** (ವಿಂ) 1. ನಾಲ್ಕನೆಯ. ಚತುರ್ಥಿ ಪೂರ್ಣಃ—  
ಚತುರ್ "ಙ್" ಆದಿಕ್ಷರಲೋಪಃ (ವಾಂ ೪-೨-೪೧)।  
ಇಯಾದೇಶಃ (೭-೧-೨)। "ತುರೀಯೋ ಹ್ಯೇವ ಮೇಧ್ಯಾನಿರಾಮ್ನಾಯಃ  
ಪಂಚಮೋಽಪಿ ವಾ" ಮಂ ವೀಂ ೧-೧೦। (ನಂ) 2. ನಾಲ್ಕ  
ನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ.

**ತುರಗ್ಗ ತುರುಷ್ಠ** (ಪುಂ) 1. ತುರುಕಿ ದೇಶದ ಲೋಬಾಸ,  
ಒಂದು ವಾಸನಾದ್ರವ್ಯ. 2. ತುರುಕಿ ದೇಶ. 3. ತುರುಕಿ  
ದೇಶದವನು, ಮ್ಲೇಚ್ಛಜಾತಿಯವನು, "ತುರಗ್ಗಃ ಸಿಂಹಕೇ  
ಮ್ಲೇಚ್ಛಜಾತೌ ದೇಶಾಂತರೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ।

**ತುಯ ತುಯ** (ನಂ) 1. ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ.  
(ವಿಂ) 2. ನಾಲ್ಕನೆಯ. ಚತುರ್ಥಿ ಪೂರ್ಣಃ—ಚತುರ್ "ಯತ್"  
(ವಾಂ ೪-೨-೪೧)। ಆದಿಕ್ಷರಲೋಪಃ। "ಏಕ ಏವೇಶ್ವರ-  
ಸ್ತುಯಃ ಭಗವಾನ್ ಸ್ವಾಶ್ರಯಃ ಪರಃ" ಭಾಗಂ ೬-೪-೧೨।

**ತುರ್ವಸು ತುರ್ವಸು** (ಪುಂ) 1. ದೇವಯಾನಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ  
ಯಯಾತಿಯ ಒಬ್ಬ ಮಗ, ಯದುವಿನ ಸಹೋದರ.  
[ತುರ್ವಸುವು ತಂದೆಯಾದ ಯಯಾತಿಯ ಅಪೇಕ್ಷೆಯಂತೆ  
ತನ್ನ ಯೌವನವನ್ನು ಅವನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು ಜರೆಯನ್ನು ತಾನು  
ಹೊಂದಲು ತಿರಸ್ಕರಿಸಿದುದರಿಂದ ರಾಜ್ಯದ ಅಧಿಕಾರವನ್ನು  
ಕಳೆದುಕೊಳ್ಳುವ ಶಾಪಕ್ಕೆ ಗುರಿಯಾದನು.]

**ತುಲ-ತುಲಾನೇ** (ವಾ ಚುರಾಂ ತಮಂ ಪಕ್ಷೇ ಸ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)।  
ತುಲಯತಿ, -ತೇ। ತಾಲತಿ। ತುಲಯಾಂ ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ,  
-ಆಸ। ತುಲಾಲ। ತುಲಿತಾ। ತುಲಯತು, -ತಾಮ್।  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ತಲ್ + ತುಲ = ತುಲಯತಿ। ತುಲನಮ್। ಮೇಲಕ್ಕೆ  
ಎತ್ತಿ ತೂಗು.

**ತುಲನ ತುಲನ** (ನಂ) 1. ತಕ್ಕಡಿಯಲ್ಲಿ ತೂಗುವುದು, ತೂಕ  
ಮಾಡುವುದು. ತುಲ (ತುಲಾನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪)।  
"ಸುಪ್ತಾಸುಪ್ತಮನುಷ್ಯವೀರ್ಯತುಲನೇ ಶ್ವಾ ಸಂಪನ್ನಂ ಪನ್ನಗಃ" ಮೃಚ್ಛಂ  
೩-೨೦। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಿಸು  
ವುದು. "ತುಲನಂ ಚಾದಿರಾಜಸ್ಯ ಸಮುದ್ರಸ್ಯ ಚ ತಾರಣಮ್। ಪ್ರಹಂ  
ಚಾನಿಲಸ್ಯೇವ ಚಾರದತ್ತಸ್ಯ ದ್ವಾರಣಮ್" ಮೃಚ್ಛಂ ೯-೨೦।  
3. ಹೋಲಿಸುವುದು, ಹೋಲಿಕೆಕೊಡುವುದು. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ನಾ -ನಾ. 1. ತೂಗುವುದು, 2. ಹೋಲಿಸುವುದು.  
"ತುಲನೇ ತಸ್ಯಾಸ್ತುಲನಾ ಮೃದೋಸ್ತತ್" ನೈಷಂ ೧೪-೪೭।



**ತುಲನೀಯ ತುಲನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ತಕ್ಕಡಿಯಲ್ಲಿ ತೂಗಲ್ಪಡುವ. 2. ತೂಗಲು ಅರ್ಹವಾದ. 3. ತೂಗಬೇಕಾದ. ತುಲ (ತುಲಾನೇ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96). 4. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಡುವ. 5. ಎತ್ತಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 6. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಬೇಕಾದ. 7. ಹೋಲಿಸಲ್ಪಡುವ. 8. ಹೋಲಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. "ತಯಃ" (3-1-96).  
**ತುಲಿತವ್ಯಃ ತುಲಿತವ್ಯಃ.**

**ತುಲಯತ್ ತುಲಯತ್ (ವಿಂ)** 1. ತಕ್ಕಡಿಯಲ್ಲಿ ತೂಗುತ್ತಿರುವ. ತುಲ (ತುಲಾನೇ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124). "ಸಮೇಷಮದೇಯದಾಪಣೇ ತುಲಯನ್ ಸೌರಭಲೋಮನಿಶ್ಚಲಮ್" ನೈಷಂ 2-92. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುತ್ತಿರುವ. 3. ಹೋಲಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜೀಪ್" (4-1-6). -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

**ತುಲಯಿತ್ ತುಲಯಿತ್ (ವಿಂ)** 1. ತಕ್ಕಡಿಯಲ್ಲಿ ತೂಗುವವನು. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವವನು. 3. ಹೋಲಿಸುವವನು. ತುಲ (ತುಲಾನೇ) + ಣಿಚ್ "ತೃಚ್" (3-1-133). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜೀಪ್" (4-1-6). -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

**ತುಲಸೀ ತುಲಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ತುಲಸೀ ಗಿಡ. ತುಲಾ ಸಾಧ್ಯಸ್ಯ ಸ್ಯತಿ - ಷಿ (ಅಂತಕರ್ಮಣಿ) "ಕಃ" (3-2-3). ಶಕಂ. ಗೌರಾಂ "ಜೀಪ್" (4-1-41). ಇದು ಅಮೃತಮಥನ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಸಮುದ್ರದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದುದು. ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಇದಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದುದು ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಈ ಹೆಸರು. "ಯಸ್ಯಾ ದೇವ್ಯಾಸ್ತುಲಾ ನಾಸ್ತಿ ವಿಶ್ವೇಷು ಸಕಲೇಷು ಚ | ತುಲಸೀ ತೇನ ವಿಖ್ಯಾತಾ | ತುಲಸೀಯ ಮಹಿಮೆ: "ದರ್ಶನಂ ನರ್ಮದಾಯಾಸ್ತು ಗಜ್ಜಾಸ್ನಾನಂ ತಥೈವ ಚ | ತುಲಸೀವನಸಂಸರ್ಗಂ ತ್ರಯಮೇತತ್ ಸ್ಮೃತಮ್ ||" ತುಲಸೀಗಿಡವನ್ನು ನೆಡುವುದು ಸಾಕುವುದು ಅದಕ್ಕೆ ನೀರೆಯುವುದು ಅದರ ದರ್ಶನ ಸ್ಪರ್ಶನ ಇವುಗಳಿಂದ ಶಾರೀರ ವಾಚಿಕ ಮತ್ತು ಮಾನಸಿಕವಾದ ಎಲ್ಲಾ ಪಾಪಗಳೂ ಪರಿಹಾರವಾಗುವುವು. "ರೋಪಣಾತ್ ಪಾಲನಾತ್ ಸೇಕಾತ್ ದರ್ಶನಾತ್ ಸ್ಪರ್ಶನಾ-ಭೃಣಾಮ್ | ತುಲಸೀ ದಹತೇ ಪಾಪಂ ವಾಙ್ಮನಃಕಾಯಸಂಚಿತಮ್" | ಕಾರ್ತಿಕಮಾಸದಲ್ಲಿ ತುಲಸೀದಳಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ಹರಿಪೂಜೆ ಅದರ ದರ್ಶನ ಸ್ಪರ್ಶನ ಧ್ಯಾನ ನಮಸ್ಕಾರ ಅರ್ಚನೆ ಅದನ್ನು ನೆಡುವುದು ನೀರೆಯುವುದು ಈ ಎಂಟು ವಿಧವಾದ ತುಲಸೀಯ ಸೇವೆಯಿಂದ ಯುಗಯುಗಾಂತರ ಪಾಪಗಳೂ ನಾಶವಾಗುವುವು. "ಸಂಪ್ರಾಪ್ತಂ ಕಾರ್ತಿಕಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ನಿಯಮೇನ ಜನಾರ್ದನಃ | ಪೂಜನೀಯೋ ಮಹದ್ವಿಷ್ಣು ಕೊಮಲೇಸ್ತುಲಸೀದಲಃ | ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಸ್ಪೃಷ್ಟ್ವಾ ತಥಾ ಧ್ಯಾಯಾ ಕಾರ್ತಿಕೇನ ಮಿತಾಚಿತಾ | ರೋಪಿತಾ ಸೇವಿತಾ ನಿಯಮಂ ಪಾಪಂ ಹಂತಿ ಯುಗಾಂತಮ್ ||" ತುಲಸೀದಳದಲ್ಲಿ ಪುಷ್ಕರ

ಮೊದಲಾದ ಕ್ಷೇತ್ರಗಳು ಗಂಗೆ ಮೊದಲಾದ ನದಿಗಳು ವಾಸುದೇವ ಮೊದಲಾದ ದೇವತೆಗಳು ಎಲ್ಲರ ಸಾನ್ನಿಧ್ಯವೂ ಇರುವುದು. "ಪುಷ್ಕರಾಶಾನಿ ತೀರ್ಥಾನಿ ಗಜ್ಜಾಶಾಃ ಸರಿತಸ್ತಥಾ | ವಾಸುದೇವಾದಯೋ ದೇವಾಃ ವಸಂತಿ ತುಲಸೀದಲೇ" || ಇತ್ಯಾದಿ. ಗಣಪತಿಗೆ ತುಲಸಿಯಿಂದ ಪೂಜೆಯು ನಿಷಿದ್ಧ. "ಪುಷ್ಪಾಣಾಂ ಸಾರಭೂತಾ ತ್ವಂ ಭವಿಷ್ಯಸಿ ಮನೋರಮೇ | ಕಲಾಂಶೇನ ಮಹಾಭಾಗೇ ಸ್ವಯಂ ನಾರಾಯಣಪ್ರಿಯಾ | ಪ್ರಿಯಾ ತ್ವಂ ಸರ್ವದೇವಾನಾಂ ಕೃಷ್ಣಸ್ಯ ಚ ವಿಶೇಷತಃ | ಪೂಜಾ ವಿಮುಕ್ತಿದಾ ನೃಣಾಂ ಮಮ ತ್ಯಾಜ್ಯಾ ಚ ಸರ್ವದಾ" | ಬ್ರಹ್ಮವೈವರ್ತೇ ಗಣೇಶಖಂಡೇ ಗಣೇಶವಚನಮ್ | ಅಕ್ಷತೆಯಿಂದ ಎಷ್ಟು ಪೂಜೆಯೂ ತುಲಸಿಯಿಂದ ಗಣಪತಿ ಪೂಜೆಯೂ ಗರಿಕೆಯಿಂದ ದುರ್ಗಾದೇವಿಯ ಪೂಜೆಯೂ ದತ್ತೂರಿ ಹೂವಿನಿಂದ ಸೂರ್ಯನ ಪೂಜೆಯೂ ನಿಷಿದ್ಧ. "ಅಕ್ಷತೇನಾಚೀ-ದ್ವಿಷ್ಣುಂ ನ ತುಲಸ್ಯಾ ವಿನಾಯಕಮ್ | ನ ದ್ವಂದ್ವಾ ಯಜೇದ್ದುರ್ಗಾಂ ಧುಸ್ತುರೇಣ ನ ಭಾಸ್ಕರಮ್" | ತುಲಸೀ ಗಿಡಕ್ಕೆ ಹಾಲನ್ನು ಎರೆಯುವವರ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಮಿಯು ಯಾವತ್ತೂ ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವಳು. "ಕದಾಚಿತ್ ತುಲಸೀಂ ದುಃಖಃ ಸೇವಯೇತ್ ಯೋ ನರೋತ್ತಮಃ | ತಸ್ಯ ವೇಷಮನಿ ವಿಪ್ರಃ ಲಕ್ಷ್ಮೀರ್ಭವತಿ ನಿಶ್ಚಲಾ" |

**ತುಲಾ ತುಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ತಕ್ಕಡಿ, ತ್ರಾಸು. ತುಲ (ತುಲಾನೇ) "ಅಙ್" (3-3-104). "ಅಶ್ವಮೇಧಸಹಸ್ರಾಣಿ ಸತ್ಯಂ ಚ ತುಲಯಾ ಧೃತಮ್ | ಅಶ್ವಮೇಧಸಹಸ್ರಾದಿ ಸತ್ಯಮೇವಾತಿರೀಚ್ಯತೇ" | ಹಿತಂ 4-131. 2. ತಕ್ಕಡಿಯಲ್ಲಿ ತೂಗುವುದು, ತೂಕಮಾಡುವುದು. 3. ಸಾಮ್ಯ, ಸಾದೃಶ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ. "ಚಿರೋಜ್ಜಿತಾಲತಕಪಾಟಲೇನ ತೇ ತುಲಾಂ ಯದಾರೋಹತಿ ದಂತ-ವಾಸಸಾ" | ಕುಮಾರಂ 4-34. 4. ಅಳತೆ. ತೂಕ, ಪ್ರಮಾಣ. 5. 100 ಪಲಗಳ ತೂಕ. (ಚಿನ್ನದ ತೂಕ) ಐದು (5) ಗುಲಗಂಜಿಗಳ ತೂಕ ... 1 ಅದ್ಯಮಾಪಕ 16 ಅದ್ಯಮಾಪಕಗಳು ... 1 ಕರ್ಷ 4 ಕರ್ಷಗಳು ... 1 ಪಲ 100 ಪಲಗಳು ... 1 ತುಲಾ 20 ತುಲೆಗಳು ... 1 ಭಾರ

6. ತುಲಾರಾಶಿ. "ಜಯತಿ ತುಲಾಮಧಿರೂಢೋ ಭಾಸ್ವಾನಪಿ ಜಲದಪಟಲಮನಿ" | ಪಂಚತಂ 4-34. 7. ಭಾಂಡ, ಬಿಂದಿಗೆ, ಕೊಡ. "ತುಲಾಂ ಲೋಹಸಹಸ್ರಸ್ಯ ಯತ್ರ ಖಾದಂತಿ ಮೃಷಿಕಾಃ | ರಾಜಸ್ತತ್ರ ಹರೇಚ್ಛಯೇನೋ ಬಾಲಕಂ ನಾತ್ರ ಸಂಶಯಃ" | ಪಂಚಂ 1-449. 8. ಮನೆಯ ಜೀವಣಿಗೆ ಹಾಕುವ ತೊಲೆ. "ಸ್ತಂಭಸಮಂ ಬಾಹುಲ್ಯಂ ಭಾರತುಲಾನಾಮುಪಯುರ್ಯಸಾಮ್" | ಬೃಹತ್ಸಂ 43-30. 9. ಗೃಹದ್ವಾರದ ಮಧ್ಯಭಾಗ. "ತುಲಾ ಸಾಮ್ಯೇ ಸ್ತಂಭಪೀಠೇ" | ವೈಜಂ. "ತುಲಾ ಸಾಧ್ಯಮಾನಯೋಃ | ಗೃಹಾಣಾಂ ದಾರುಬಂಧಾಯ ಪೀಠಿಕಾಯಾಮಪೀಞ್ಯತೇ | ರಾಶೌ ಪಲಶತೇ



ಭಾಂಡೆ" ಮೇದಿಂ । "ತುಲಾ ರಾಶಿ ಪಲಶತೆ ಸಾಮ್ಯೇಜ್ಯುನ್ಮಾನ-  
ಸಾಧನೆ । ಗೃಹದ್ವಾರಾಂತರೇ ಭಾಂಡೆ" ನಾನಾರ್ಥಂ ।

**ತುಲಾಕೂಟ ತುಲಾಕೂಟ (ನಂ)** 1. ತೂಕದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ  
ಮೋಸ, ಸರಿಯಾದ ತೂಕಕ್ಕಿಂತಲೂ ಕಡಮೆ ತೂಗುವುದು.  
ತುಲಾಃ ಕೂಟಮ್ । (ವಿಂ) 2. ತೂಕದಲ್ಲಿ ಮೋಸಮಾಡು  
ವವನು. "ಮಾನಕೂಟಂ ತುಲಾಕೂಟಂ ಕಂಠಮೋಠಂ ನಿಪಿಡಯ"  
ಕಾಶೀಖಂ ।

**ತುಲಾಕೂಟಿ(ಡಿ) ತುಲಾಕೂಟಿ (ಟೀ) (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1.  
ತಕ್ಕಡಿಯ ತುದಿ. ತುಲಾಃ ಕೂಟಿಃ । 2. ನೂಪುರ, ಕಾಲಿನ  
ಅಭರಣ, ಕಾಲಿನ ತೊಡುಗೆ. ತುಲಾ ಕೂಟಯತಿ - ಕೂಟ  
(ಪರಿತಾಪೇ) "ಇನ್" (ಉಂ ೪-೧೧೭) । ವಾ "ಕೀಘ್"  
(ಗಂ ೪-೧-೪೫) । -ಡಿ-ಟೀ. "ಲೋಲಾಚಲತ್ಸ್ತ್ರೀಚ್ಚ ಗಾ-  
ಘೋತ್ಪಲಸ್ಥಲತುಲಾಕೂಟಿನಿನಾದಕೋಮಲಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೪೪ ।

**ತುಲಾಕೂಟ ತುಲಾಕೂಟ (ಪುಂ)** ತೂಗುವ ತಕ್ಕಡಿ, ಮುಂದೆ  
ಪೈರಿಸ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಅಥವಾ ನಾಶ ಇವುಗಳನ್ನು ತಿಳಿಯಲು  
ಬೀಜವನ್ನು ತೂಕಮಾಡುವ ತ್ರಾಸು. ತುಲಾ ಕೂಟ ಇವ ।  
ಅಪಾಧಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ದಿನ ಈ ತಕ್ಕಡಿಯಲ್ಲಿ  
ಮಂತ್ರಪೂರ್ವಕ ಬೀಜವನ್ನು ತೂಕಮಾಡಿಟ್ಟು ಮಾರನೆಯ  
ದಿನ ಅದು ಅಧಿಕವಾದರೆ ಮುಂದೆ ಅದರ ಪೈರು ಚೆನ್ನಾಗಿ  
ಬೆಳೆಯುವುದೆಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕು. "ಆಷಾಢ್ಯಾಂ ಸಮ-  
ತುಲಿತಾಧಿವಾಸಿತಾನಾಮನ್ಯೇಶ್ವರೈರಧಿಕತಾಮುಪೇತಿ ಬೀಜಮ್ ।  
ತದ್ವೃದ್ಧಿರ್ಭವತಿ ನ ಜಾಯತೇ ಯದ್ವಾನ್ ಮನ್ತ್ರೋಽಸ್ಮಿನ್ ಭವತಿ  
ತುಲಾಭಿಮನ್ತ್ರಣಾಯ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೨೬-೧ ।

**ತುಲಾದಾನ ತುಲಾದಾನ (ನಂ)** ಮನುಷ್ಯನ ದೇಹವು ತೂಗು  
ವಷ್ಟು ಚೆನ್ನ ಅಥವಾ ಬೆಳ್ಳಿಯ ದಾನ. ತುಲಾ ದೇಹಮಾನೇನ  
ದಾನಮ್ ।

**ತುಲಾಘಟ ತುಲಾಘಟ (ಪುಂ)** ತಕ್ಕಡಿ, ತ್ರಾಸು. ತುಲಾಃ ಘಟಃ ।

**ತುಲಾಘರ ತುಲಾಘರ (ಪುಂ)** 1. ಪರ್ತಕ, ವ್ಯಾಪಾರಿ.  
ತುಲಾಃ ಮಾನದಂಡಸ್ಯ ಘರಃ । 2. ತುಲಾರಾಶಿ. "ತುಲಾ-  
ಘರಸ್ತುಲಾರಾಶಿ ಭವೇದ್ವಾಣಿಜಕೇಽಪಿ ಚ" ವಿಶ್ವಂ । (ವಿಂ)  
3. ತಕ್ಕಡಿಯನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವವನು.

**ತುಲಾಧಾರ ತುಲಾಧಾರ (ಪುಂ)** 1. ಪರ್ತಕ, ವ್ಯಾಪಾರಿ.  
2. ತಕ್ಕಡಿಯ ದಾರ ಅಥವಾ ಸರಪಳಿ. 3. ತಕ್ಕಡಿಯ  
ದಂಡಿಗೆ, -ಅಡ್ಡಕಂಬಿ. ತುಲಾಂ ಧಾರಯತಿ - ಧೃ (ಧಾರಣೆ) +  
ಣಿಚ್ "ಅಘ್" (೩-೨-೧) । 4. ತುಲಾರಾಶಿ.

**ತುಲಾಪುರುಷ ತುಲಾಪುರುಷ (ಪುಂ)** ಮನುಷ್ಯನ ದೇಹವು  
ತೂಗುವಷ್ಟು ಚೆನ್ನದ ಅಥವಾ ಬೆಳ್ಳಿಯ ದಾನ. ಹದಿನಾರು  
ಎಧ ದಾನಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಧಾನವಾದುದು ಈ ದಾನ.

**ತುಲಾಪ್ರಗ್ರಹ ತುಲಾಪ್ರಗ್ರಹ (ಪುಂ)** ತಕ್ಕಡಿಯ ದಾರ. ಪ್ರ+ಗ್ರಹ  
(ಉಪಾದಾನೇ) "ಅಘ್" (೩-೩-೫೮) । ವಾ "ಘಘ್"  
(೩-೩-೫೨) । -ಪ್ರಗ್ರಾಹಃ -ಪ್ರಗ್ರಾಹಃ.

**ತುಲಾಬೀಜ ತುಲಾಬೀಜ (ನಂ)** ಗುಲಗಂಜಿ. ತುಲಾಃ ಬೀಜಂ  
ಮೂಲಮ್ । ಚೆನ್ನವನ್ನು ಗುಲಗಂಜಿಯಿಂದ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ತೂಗು  
ವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ["ತುಲಾ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ತುಲಾಭಾರ ತುಲಾಭಾರ (ಪುಂ)** "ತುಲಾಪುರುಷ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

**ತುಲಾಮಾನ ತುಲಾಮಾನ (ನಂ)** ತಕ್ಕಡಿಯ ಅಡ್ಡಕೋಲು,  
-ಅಡ್ಡಕಂಬಿ. ಮೀಯತೇಜನೇನ - ಮಾ (ಮಾನೇ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್"  
(೩-೩-೧೧೭) । ತುಲಾಃ ಮಾನಮ್ ।

**ತುಲಾಯಷ್ಟಿ ತುಲಾಯಷ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ತಕ್ಕಡಿಯ ಅಡ್ಡಕೋಲು.

**ತುಲಾಸೂತ್ರ ತುಲಾಸೂತ್ರ (ನಂ)** ತಕ್ಕಡಿಯ ದಾರ. ತುಲಾಃ  
ಸೂತ್ರಮ್ ।

**ತುಲಿಕಾ ತುಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಾಡಿಗೆಯೊಳಗಿನ ಹಕ್ಕಿ, ಕೆಂಬೂ  
ತದ ಹಕ್ಕಿ. "ಹಾಪುತ್ರಿಕಾ ಸಂಜ್ಞಾನಿಕಾ ತುಲಿಕಾ ಸ್ಫೋಟಿಕೇ  
ಸಮೇ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ತುಲಿತ ತುಲಿತ (ವಿಂ)** 1. ಹೊಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಲಿಕೆ  
ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. ತುಲ (ಉನ್ಮಾನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।  
"ಸ್ತನೌ ಮಾಸಗ್ರನ್ಥಿ ಕನಕಕಲಶಾವಿತ್ಯುಪಮಿತೌ ಮುಖಂ ಶಲೇಷ್ಮಾ-  
ಗಾರಂ ತದಪಿ ಚ ಶಶಾಂಜ್ಞೇನ ತುಲಿತಮ್" ಭರ್ತುಂ ೩-೧೬ ।  
2. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ತವ  
ಧನ್ಯತೇಯಮಪಿ ಸರ್ವನೃಪತುಲಿತೋಽಪಿ ಯತ್ಕ್ಷಣಮ್" ಮಾಘಂ  
೧೫-೩೦ । 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕಲಾಂತ-  
ಕರತಲಧೃತಾಚಲಕಃ ಪೃಥಿವೀತಲೇ ತುಲಿತಭೂಮಿಽದೃಶ್ಯಸೇ" ಮಾಘಂ  
೧೫-೩೦ । 4. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ, ಎತ್ತಿ ಅಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
"ಪೌಲಸ್ತ್ಯತುಲಿತಸ್ಯಾದ್ರೇರಾದಧಾನ ಇವ ಹ್ಲಿಯಮ್" ರಘುಂ ೪-೮೦ ।  
5. ಸಮಾನವಾದ. "ದ್ವಯಾನುರೋಽಂ ತುಲಿತಂ ದಶೌ ಸಾ"  
ನೇಷಂ ೧೪-೨೦ । 6. ತೂಗಲ್ಪಟ್ಟ, ತಕ್ಕಡಿಯಲ್ಲಿ ತೂಕ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 7. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
"ಯೇಷ್ಯಿನ್ದ್ರಪಾಣಿತುಲಿತಾಯುಧಲೂನಪಕ್ಷಾಃ" ಮಾಘಂ ೫-೩೧ ।

**ತುಲ್ಯ ತುಲ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಸದೃಶವಾದ, ಸಮಾನವಾದ, ಒಂದೇ  
ತೆರನಾದ. ತುಲಾಃ ಸಮಿತಃ "ಯತ್" (೪-೪-೧೧) ।  
"ತುಲ್ಯರೂಪಮಸಿತೋತ್ಪಲಮಕ್ಷಣಃ ಕರ್ಣಗಂ ನಿರೂಪಕಾರಿ ವಿದಿತವಾ"  
ಕಿರಾಂ ೧-೬೧ । 2. ಅದೇ ಆಗಿರುವ, ಒಂದೇ ಆಗಿರುವ,  
ಏಕರೂಪವಾದ.

**ತುಲ್ಯಕಕ್ಷ ತುಲ್ಯಕಕ್ಷ (ವಿಂ)** ಸಮಾನವಾದ, ಅದೇತೆರನಾದ.  
ತುಲಾ ಕಕ್ಷಾ ಯಸ್ಯ । "ಯದಿ ತತ್ತುಲ್ಯಕಕ್ಷೋಽತ್ರ ಭವಾನ್ ಭುರಿ  
ನ ಯುಜ್ಯತೇ" ವೇಣೀಂ ೩-೨೬ ।



**ತುಲ್ಯಕುಲ್ಯ ತುಲ್ಯಕುಲ್ಯ** (ವಿಂ) ಸಮಾನಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಒಂದೇ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ತುಲ್ಯ ಕುಲೇ ಭವ: "ಯತ್" (೪-೩-೪೩) ।

**ತುಲ್ಯತಾ ತುಲ್ಯತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಮಾನತೆ, ಸಮಾನವಾಗಿರು ವುದು. ತುಲ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) । "ತ್ವ:" (೪-೧-೧೧೯) । -ತ್ವಮ್-ತ್ವಮ್. "ತುಲ್ಯತ್ವೇ ವಪುಷಾ ಮುಖಾದಿವಯವೈ: ವರ್ಣಕ್ರಮ: ಕೀದೃಶ:" ಪ್ರಬೋಧಂ ೨-೧೮ ।

**ತುಲ್ಯನಾಮನ್ ತುಲ್ಯನಾಮನ್** (ವಿಂ) ಸಮಾನವಾದ ಹೆಸ ರುಳ್ಳ, ಒಂದೇ ಹೆಸರುಳ್ಳ, ಅದೇ ಹೆಸರುಳ್ಳ. ತುಲ್ಯ ನಾಮ ಯಸ್ಯ ।

**ತುಲ್ಯನಿನ್ದಾಸ್ತುತಿ ತುಲ್ಯನಿನ್ದಾಸ್ತುತಿ** (ವಿಂ) ನಿಂದೆ ಮತ್ತು ಹೊಗಳಿಕೆ ಎರಡನ್ನೂ ಸಮಾನವಾಗಿ ಎಣಿಸುವವನು, ನಿಂದೆ ಯನ್ನೂ ಹೊಗಳಿಕೆಯನ್ನೂ ಗಣನೆಗೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ತುಲ್ಯೇ ನಿನ್ದಾಸ್ತುತಿ ಯಸ್ಯ । "ತುಲ್ಯನಿನ್ದಾಸ್ತುತಿರ್ಮಾನಿ ಸಂತುಷ್ಟೋ ಯೇನ ಕೇನಚಿತ್" ಗೀತಾ ೧೨-೧೯ ।

**ತುಲ್ಯಪಾನ ತುಲ್ಯಪಾನ** (ನಂ) ಸಹಪಾನ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕುಳಿತು ಕುಡಿತ. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿ ಮದ್ಯ ಕುಡಿಯುವುದು.

**ತುಲ್ಯಮೂಲ್ಯ ತುಲ್ಯಮೂಲ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಸಮಾನವಾದ ಬೆಲೆ. (ವಿಂ) 2. ಸಮಾನವಾದ ಬೆಲೆಯುಳ್ಳ. ತುಲ್ಯ ಮೂಲ್ಯ ಯಸ್ಯ ।

**ತುಲ್ಯಯೋಗಿತಾ ತುಲ್ಯಯೋಗಿತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಅರ್ಥಾ ಲಂಕಾರ, ವರ್ಣ್ಯ (ಪ್ರಕೃತ) ಅಥವಾ ಅವರ್ಣ್ಯ (ಅಪ್ರಕೃತ) ವಸ್ತುಗಳಿಗೆ ಏಕಧರ್ಮಾನ್ವಯ ಹೇಳುವುದು "ತುಲ್ಯ ಯೋಗಿತಾ" ಅಲಂಕಾರವಾಗುವುದು. "ಸಂಕುಚಂತಿ ಸರೋಜಾನಿ ಸ್ವೇರಿಣಿವದನಾನಿ ಚ" ಎಂಬಲ್ಲಿ (ಚಂದ್ರೋ ದಯಾ ಸಮಯದಲ್ಲಿ) ಕಮಲಗಳೂ, ಸ್ವೇಚ್ಛಾವಿಹಾರಕ್ಕೆ ತೊಂದರೆಯಾದುದರಿಂದ ಸ್ವೇರಿಣೀಮುಖಗಳೂ ಸಂಕೋಚ ಹೊಂದುತ್ತವೆ ಎಂದು ಪ್ರಕೃತವಾದ ಕಮಲ ಮತ್ತು ಸ್ವೇರಿಣೀಮುಖ ಎರಡರಲ್ಲೂ ಸಂಕೋಚಕ್ರಿಯಾ ರೂಪವಾದ ಒಂದೇ ಧರ್ಮದ ಅನ್ವಯವು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. ಇದು ಕೇವಲ ಪ್ರಕೃತಗೋಚರಾ ತುಲ್ಯಯೋಗಿತಾ. "ತ್ವದ್ಭಗವಾನ್ ದೃಷ್ಟೇ ಕಸ್ಯ ವಿಸ್ತೇ ನ ಜಾಸತೇ । ಮಾಲತಿ-ಶಶಭುಲೇಖಾಕದಲಿನಾಂ ಕಠೋರತಾ" । ಇಲ್ಲಿ ದೇಹ ಸೌಂದರ್ಯ ವರ್ಣನೆಯು ಪ್ರಕೃತ. ಅಪ್ರಕೃತವಾದ ಮಾಲತೀ ಮೊದ ಲಾದ ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ತಿರಸ್ಕಾರ ರೂಪವಾದ ಏಕಧರ್ಮಾನ್ವ ಯವು ಉಕ್ತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಅಪ್ರಕೃತಗೋಚರಾ ತುಲ್ಯಯೋಗಿತಾ. ಹೀಗೆಯೇ ಶತ್ರುಮಿತ್ರರಲ್ಲಿ ಸಮಾನ ವಾದ ನಡವಳಿಕೆಯೂ ಮತ್ತು ಉತ್ತಮ ವಸ್ತುಗಳೊಡನೆ ಸಮಾನತೆಯ ವರ್ಣನೆಯೂ ತುಲ್ಯಯೋಗಿತಾ ಭೇದಗಳು.

"ಹಿತಾಹಿತೇ ವೃತ್ತಿತೌಲ್ಯಮಪರಾ ತುಲ್ಯಯೋಗಿತಾ । ಪ್ರದೀಯತೇ ಪರಾಭೂತಿಮಿತ್ರಶಾಸ್ತ್ರವಯೋಸ್ತ್ವಯಾ" । "ಗುಣೋತ್ಕೃಷ್ಟೈ: ಸಮೀಕೃತ್ಯ ವಚೋಜ್ಯಾ ತುಲ್ಯಯೋಗಿತಾ । ಲೋಕಪಾಲೋ ಯಮ: ಪಾಶೀ ಶ್ರೀದ: ಶಕ್ನೋ ಭವಾನಪಿ" ।

**ತುಲ್ಯರೂಪ ತುಲ್ಯರೂಪ** (ವಿಂ) ಸಮಾನವಾದ ರೂಪವುಳ್ಳ, ಸದೃಶವಾದ. ತುಲ್ಯ ರೂಪ ಯಸ್ಯ । "ತುಲ್ಯರೂಪವಯೋವೃತ್ತಾಂ ತುಲ್ಯಾಭಿಜನಲಕ್ಷಣಾಮ್ । ರಾಘವೋಽಹಂತಿ ವಂದೇಹೀಮ್" ರಾಮಾಂ ।

**ತುಲ್ಯಲಕ್ಷಮನ್ ತುಲ್ಯಲಕ್ಷಮನ್** (ವಿಂ) ಸಮಾನವಾದ ಲಕ್ಷಣ ವುಳ್ಳ. ತುಲ್ಯ ಲಕ್ಷಮ ಯಸ್ಯ । "ಮೀಲಿತಂ ವಸ್ತುನೋ ಗುಪ್ತಿ: ಕೇನಚಿತ್ತುಲ್ಯಲಕ್ಷಮಣಾ" ಸಾಂ ೬೦ ೧೦-೮೯ ।

**ತುಲ್ಯಾಕೃತಿ ತುಲ್ಯಾಕೃತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಮಾನರೂಪ. (ವಿಂ) 2. ಸಮಾನರೂಪವುಳ್ಳ. ತುಲ್ಯಾ ಆಕೃತಿ: ತುಲ್ಯಾ ಆಕೃತಿ: ಯಸ್ಯ ವಾ ।

**ತುಲ್ಯಾರ್ಥ ತುಲ್ಯಾರ್ಥ** (ಪುಂ) 1. ಸಮಾನವಾದ ಅರ್ಥ, ಒಂದೇ ಅರ್ಥ. ತುಲ್ಯಾರ್ಥ: । (ವಿಂ) 2. ಸಮಾನವಾದ ಅರ್ಥವುಳ್ಳ. 3. ಸಮಾನವಾದ ಐಶ್ವರ್ಯವುಳ್ಳ.

**ತುಲ್ಯಾವಸ್ಥ ತುಲ್ಯಾವಸ್ಥ** (ವಿಂ) ಸಮಾನವಾದ ಪರಿಸ್ಥಿತಿ ಯುಳ್ಳ. ತುಲ್ಯಾ ಸಮಾನಾ ಅವಸ್ಥಾ ಸ್ಥಿತಿ: ಯಸ್ಯ । "ಕುಮ್ಮಕರ್ಣ: ಕಪಿನ್ದ್ರೇಣ ತುಲ್ಯಾವಸ್ಥ: ಸ್ವಸು: ಕೃತ:" ರಘುಂ ೧೨-೮೦ ।

**ತುಲರ ತುಲರ** (ಪುಂ) 1. ಒಗಚು, ಒಗರು ರಸ, ಕಷಾಯ ರಸ. ತು (ಸೌತ್ರಘಾತು:) ತವೀತಿ ಹಿನಸ್ತಿ ರೋಗಾನ್ "ಫಲರಚ್" (೩೦ ೩-೧) । (ವಿಂ) 2. ಕಷಾಯರಸವುಳ್ಳ. ಕಷಾಯೋ-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) ।

**ತುಲರಿಕಾ ತುಲರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೋಗರಿಗಿಡ. ತುಲರೋಸ್ತಯಸ್ಯಾ: "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೪) ।

**ತುಲರಿ ತುಲರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತೋಗರಿಗಿಡ. ತುಲರ ಗೌರಾಂ "ಢಿಫ್" (೪-೧-೪೧) । 2. ತೋಗಿ.

**ತುಲ - ತುಲಿ** (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ) । ತುಲಯತಿ । ತುಲಿಷ । ತುಲಿಷಾ । ತುಲಯತಿ । ತುಲಯತು । ಅತುಲಯತ್ । ತುಲಯೇತ್ । ತುಲಯಾತ್ । ಅತುಲಯತ್ । ಅತುಲಯತ್ । ಸಂತೋಷಪಡು, ಅನಂದ ಹೊಂದು. "ತುಲಿಷ ಪಶ್ಯನ್ ಕಲಮಸ್ಯ ಸೌಖ್ಯಿಕಂ ಸವಾರಿಜೇ ವಾರಿಣಿ ರಾಮಣೀಯಕಮ್" ಕಿರಾಂ ೪-೪ ।

ಭಾವೇ:-ತುಲಯತೇ । ತುಲಿಷೇ । ತುಲಿಷಾ । ತುಲಯತಾಮ್ । ಅತುಲಯತ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ವಿಚಿ:-ತುಲಯತಿ, -ತೇ । ತುಲಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಚಮುವ, -ಆಸ । ತುಲಯಿತಾ । ತುಲಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ । ತುಲಯತು, -ತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.



ಸನಿ:—ತುತುಕತಿ । ತುತುಕಾ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ ।  
ತುತುಕಿತಾ । ತುತುಕಿಷ್ಯತಿ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:—ತುಘ್ಯಮ್ । ತುಘ್ಣೀಯಮ್ । ತುಘ್ಯಮ್ । ತುಘ್ನ: ।  
ತುಘ್ನವಾನ್ । ತುಘ್ಯನ್, -ಂತಿ । ತುಘ್ನಮ್ । ತುಘ್ನಮ್ । ತುಘ್ಣಮ್ ।  
ತುಘ್ನವಾ ।

ತುಘ ತುಘ (ಪುಂ) 1. ತಾರಂಗಿಡ. ತುಘ (ತುಘ್ನಿ) "ಕ:"  
(೩-೧-೧೩೫) । 2. ಧಾನ್ಯದ ಮೇಲಿನ ಹೊಟ್ಟು.  
"ಧ್ರುವಮಪ್ರಶಮಾಯ ರೋಷವಹ್ನೇಸ್ತುಘವಿಕ್ಷೇಪಮಘತ್ತ ರತ್ನಚೂರ್ಣ:"  
ಯಾದಂ ೧೫-೧೦೩ । "ತುಘೇಣಾಪಿ ಪರಿತ್ಯಕ್ತಾ ನ ಪ್ರರೋಹಂತಿ  
ತಪ್ತುಲಾ:" ಹಿತಂ ।

ತುಘಖಂಡನ ತುಘಖಂಡನ (ನಂ) ಹೊಟ್ಟನ್ನು ಕುಟ್ಟಿ ಪುಡಿ  
ಮಾಡುವುದು. ತುಘಸ್ಯ ಖಂಡನಮ್ । ಹೊಟ್ಟನ್ನು ಪುಡಿ  
ಮಾಡುವುದರಿಂದ ಯಾವ ಪ್ರಯೋಜನವೂ ಇಲ್ಲದಿರುವುದ  
ರಿಂದ ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ ಕಾರ್ಯವೆಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ  
ಈ ಪ್ರಯೋಗ. "ಅವಿಚಾರಯತೋ ಯುಕ್ತಿಕಥನಂ ತುಘಖಂಡನಮ್"  
ಹಿತಂ ೪-೪-೧೨ ।

ತುಘಗ್ರಹ ತುಘಗ್ರಹ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ತುಘೇಣ ಗೃಹ್ಯತೇ—  
ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೮) ।

ತುಘಧಾನ್ಯ ತುಘಧಾನ್ಯ (ನಂ) ಹೊಟ್ಟಿನಿಂದಕೂಡಿದ ಧಾನ್ಯ.  
ತುಘಸಹಿತಂ ಧಾನ್ಯಮ್ ।

ತುಘಾಗ್ನಿ ತುಘಾಗ್ನಿ (ಪುಂ) ಹೊಟ್ಟಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ  
ತುಘಾನಲ ತುಘಾನಲ (ಬೆಂಕಿ. ತುಘಸ್ಯಾಗ್ನಿ: ಅನಲೋ ವಾ ।

ತುಘಾಂಬು ತುಘಾಂಬು (ನಂ) ಹೊಟ್ಟಿನ ಗಂಜಿ, ಹೊಟ್ಟು  
ಸಹಿತವಾದ ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಬೇಯಿಸಿದ ಗಂಜಿ.

ತುಘಾರ ತುಘಾರ (ಪುಂ) 1. ಹಿಮ, ಮಂಜು. ತುಘ (ತುಘ್ನಿ)  
"ಆರನ್" (೩-೩-೧೩೯) । "ಪದಂ ತುಘಾರಸ್ತುತಿ-  
ಧೌತರವತಂ ಯಸ್ಮಿನ್ನದೃಷ್ಟವಾಪಿ ಹತದ್ವಿಪಾನಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೬ ।  
2. ಶೀತಲ, ಹಿಮದ ತುಂತುರು, ಹಿಮದಕಣ. "ತುಘಾರಸ್ತು  
ಶೀತಲೇ ಶೀಕರೇ ಹಿಮೇ" ಮೇದಿಂ । "ಸಮಾನಕಾಂತಿನಿ  
ತುಘಾರಮೂಷಣೈ: ಸರೋಹರೇಸ್ಕುಟಪತ್ರಪತ್ರಿಮಿ:" ಕಿರಾಂ  
೮-೨೫ । (ವಿಂ) 3. ಶೀತಲವಾದ, ತಣ್ಣಗಿರುವ, ಶೈತ್ಯ  
ಗೊಂಡವುಳ್ಳ.

ತುಘಾರಕರ-ಕಿರಣ ತುಘಾರಕರ-ಕಿರಣ (ಪುಂ) 1. ಶೀತಲ  
ವಾದ ಕಿರಣವುಳ್ಳ ಚಂದ್ರ. ತುಘಾರಾ: ಶೀತಲಾ: ಕರಾ:  
ಕಿರಣಾ ವಾ ಅಸ್ಯ । "ಕಲಯಾ ತುಘಾರಕಿರಣಸ್ಯ ಪುರ: ಪರಿಮಂದ-  
ಭಿನ್ನತಿಮಿರೋಜತಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೨೭ ।

ತುಘಾರಗಿರಿ ತುಘಾರಗಿರಿ (ಪುಂ) ಹಿಮಾಚಲ, ಹಿಮವ  
ತ್ಪರ್ವತ.

ತುಘಾರಾಚಲ ತುಘಾರಾಚಲ, -ಅದ್ವಿ-ಅದ್ವಿ (ಪುಂ) ಹಿಮಾ  
ಚಲ, ಹಿಮವತ್ಪರ್ವತ. "ಆಲಿಙ್ಗಯಂತೇ ಗುಣವತಿ ಮಯಾ ತೇ  
ತುಘಾರಾದಿವಾತಾ:" ಮೇಘಂ ೨-೪೪ ।

ತುಘಿತ ತುಘಿತ (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) ಗಣದೇವತೆಗಳು. ಇವರು  
ಹನ್ನೆರಡು ಮಂದಿ. ಮನ್ವಂತರಭೇದದಿಂದ ಇವರ ಹೆಸರು  
ಗಳು ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿವೆ. "ಚಾಕ್ಷುಷಸ್ಯಾಂತರೇ ಪೂರ್ವಮಾಸನ್  
ಯೇ ತುಘಿತಾ: ಸುರಾ: । ವೈವಸ್ವತೇಽಂತರೇ ತೇ ವೈ ಆದಿತ್ಯಾ ದ್ವಾದಶ  
ಸ್ಮೃತಾ:" ಹರಿವಂ । ಸ್ವಾರೋಚಿಷದಲ್ಲಿ ಈ ಹನ್ನೆರಡು  
ಮಂದಿ ಆದಿತ್ಯರೇ ಗಣದೇವತೆಗಳೆವರ. "ಪ್ರಾಣಾಪಾನಾ-  
ಬುದಾನಶ್ಚ ಸಮಾನೋ ವ್ಯಾನ ಏವ ಚ । ಚಕ್ಷು: ಶ್ರೋತ್ರಸಾಧ್ರಾಣ-  
ಸ್ಪರ್ಶಾ ಬುದ್ಧಿಮನಸ್ತಥಾ । ದ್ವಾದಶೇತೇ ತು ತುಘಿತಾ: ದೇವಾ:  
ಸ್ವಾರೋಚಿಷೇಽಂತರೇ" । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತಾ-ತಾ. 2. ವೇದ  
ಶಿರಸ್ಸಿನ ಪತ್ನಿ.

ತುಘೋದಕ ತುಘೋದಕ (ನಂ) "ತುಘಾಂಬು" ನೋಡಿ.  
ತುಘಮಿಶ್ರಮುದಕಮ್ । "ಸಿದ್ಧಜಲಂ ಚ ಗೃಹಾಃ ಸಮವಂತಿಸೋಮಂ  
ತುಘೋದಕಂ ಶುಕ್ತಮ್" ಹಾರಾಂ ।

ತುಘ ತುಘ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ತುಘ (ತುಘ್ನಿ) "ಕ್ತ:"  
(೩-೪-೭೨) । ಅಧಿಕೃತಾಧಿಕಾರಾತ್ ಪರತ್ವಾದಪಿ ಅತಿಶಯೇನ  
ಸಮಸ್ತಮನುಷ್ಯಾಧಿಕಾರಯೋಗಾತ್ ದಾಶರಥಿತ್ವಜಗತ್ಪಾಲನಯೋ-  
ಲಾಭಾತ್ ಪ್ರೀತ: । "ಲಾಭಾಃ ದಾಶರಥಿತ್ವಸ್ಯ ಜಗತ: ಪಾಲನಸ್ಯ  
ಚ । ಮನುಷ್ಯತ್ವೇಽಪಿ ಯ: ಪ್ರೀತ: ಸ ತುಘ ಇತಿ ಕಥ್ಯತೇ" ಇತಿ  
ನಿಶ್ಚಿತ: । "ಪರದ್ವಿ: ಪರಮಸ್ಪಷ್ಟ: ತುಘ: ಪುಘ: ಶುಭೇಕ್ಷಣ:"  
ವಿಂ ಸಂ । (ನಂ) 2. ಸಂತೋಷ, ತೃಪ್ತಿ. (ವಿಂ) 3.  
ಸಂತೋಷಗೊಂಡ, ತೃಪ್ತಿಹೊಂದಿದ.

ತುಘವತ್ ತುಘವತ್ (ವಿಂ) ಸಂತೋಷಗೊಂಡವನು, ತೃಪ್ತಿ  
ಹೊಂದಿದವನು.

ತುಘಿ ತುಘಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂತೋಷ, ತೃಪ್ತಿ. ತುಘ (ತುಘ್ನಿ)  
"ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) । 2. ಸಾಂಖ್ಯಮತದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿ  
ರುವ ಅಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ ಮತ್ತು ಬಾಹ್ಯತುಘಿ, ಅಲಂಬುದ್ಧಿ,  
ಭೋಗದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ವೈರಾಗ್ಯ, ಇತರ ಪದಾರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ  
ತುಚ್ಛತ್ವಬುದ್ಧಿ. ಈ ತುಘಿಯು ಒಂಬತ್ತು ವಿಧ.  
(1) ಪ್ರಕೃತಿ: (2) ಉಪಾದಾನಮ್, (3) ಕಾಲ:, (4) ಭಾಗ್ಯಮ್  
ಇವು ನಾಲ್ಕು ಅಧ್ಯಾತ್ಮಿಕತುಘಿಗಳು. (5) ಅರ್ಜನದೋಷ-  
ದರ್ಶನಜನ್ಯವಿಷಯೋಪರಮಜನ್ಯಾ, (6) ರಕ್ಷಣದೋಷದರ್ಶನವಿಷಯೋ-  
ಪರಮಜನ್ಯಾ, (7) ಕ್ಷಯದೋಷದರ್ಶನಜನ್ಯವಿಷಯೋಪರಮಜನ್ಯಾ,  
(8) ಭೋಗದೋಷದರ್ಶನಜನ್ಯವಿಷಯೋಪರಮಜನ್ಯಾ ಮತ್ತು (9)  
ಹಿಸಾದೋಷದರ್ಶನಜನ್ಯವಿಷಯೋಪರಮಜನ್ಯಾ ಇವು ಐದು ಬಾಹ್ಯ  
ತುಘಿಗಳು. "ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕವಶತಃ ಪ್ರಕೃತ್ಯುಪಾದಾನಕಾಲ-



ಭಾಗ್ಯಾಸ್ತಾಃ । ಬಾಹ್ಯಾಃ ವಿಷಯೋಪರಮಾತ್ಮನಃ ಚ ನವ ತುಷ್ಠಯೋಃ  
ಭಿಮತಾಃ" ಸಾಂ ಕಾಂ ೪೦ ।

**ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ ತುಷ್ಠಿಗಳು :**

(1) ಗುರುವಿನ ಉಪದೇಶದಿಂದ ಅವಿವೇಕವು ಹೋಗಿ  
ಶಿಷ್ಯನ ಪ್ರಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ತುಷ್ಠಿಯುಂಟಾಗುವುದು ಪ್ರಕೃತಿ  
ತುಷ್ಠಿ.

(2) ಈ ಪ್ರಕೃತಿಯಿಂದಲೂ ಆ ವಿವೇಕ ಖ್ಯಾತಿ  
ಯುಂಟಾಗುವುದಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ಪ್ರವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಮಾತ್ರ  
ಅದು ಬರುವುದರಿಂದ ಪ್ರವೃತ್ತಿಯನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಬೇಕೆಂಬ  
ಉಪದೇಶವು ಉಪಾದಾನ ತುಷ್ಠಿ.

(3) ಪ್ರವೃತ್ತಿಯಿಂದಲೂ ಈ ತುಷ್ಠಿಯುಂಟಾಗು  
ವುದಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದಲೂ, ಅದು ಕಾಲಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಪರಿಪಾಕ  
ವಾಗುವುದರಿಂದಲೂ ಆ ಕಾಲವನ್ನು ಪ್ರತಿಕ್ಷಿಸಬೇಕೆಂಬ  
ಉಪದೇಶವು ಕಾಲತುಷ್ಠಿ.

(4) ಕಾಲದಿಂದಲೂ ಉಪಾದಾನದಿಂದಲೂ ವಿವೇಕ  
ಖ್ಯಾತಿಯುಂಟಾಗುವುದಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದಲೂ ಅದಕ್ಕೆ  
ಭಾಗ್ಯವೇ ಕಾರಣವಾದುದರಿಂದಲೂ ಅದರ ಉಪದೇಶವು  
ಭಾಗ್ಯತುಷ್ಠಿ.

**ಬಾಹ್ಯತುಷ್ಠಿಗಳು :**

(5) ಅರ್ಜುನ (ಸಂಪಾದನ) ದಲ್ಲಿ ಕಂಡುಬರುವ  
ದುರೀಶ್ವರಸೇವೆ ಮೊದಲಾದ ದೋಷಗಳನ್ನು ನೋಡಿ  
ಉಂಟಾಗುವ ವೈರಾಗ್ಯದಿಂದ ಆಗುವ ತುಷ್ಠಿ.

(6) ಸಂಪಾದಿಸಿದ ಹಣವನ್ನು ರಾಜರು ಕಳ್ಳರು ಅಗ್ನಿ  
ಜಲ ಇವುಗಳಿಂದ ರಕ್ಷಿಸುವ ಕಷ್ಟದ ಅನುಭವದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ವೈರಾಗ್ಯಜನ್ಯವಾದ ತುಷ್ಠಿ.

(7) ಮಹಾಪ್ರಯಾಸದಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಿದ ದ್ರವ್ಯವು  
ಉಪಭೋಗದಿಂದ ವ್ಯಯವಾಗುವುದೆಂಬ ಚಿಂತೆಯಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ವೈರಾಗ್ಯಜನ್ಯವಾದ ತುಷ್ಠಿ.

(8) ವಿಷಯೋಪಭೋಗದಿಂದ ಕಾಮವು ಮತ್ತಷ್ಟೂ  
ಅಧಿಕವಾಗುವುದರಿಂದಲೂ ಅಂತಹ ವಿಷಯಗಳ ಅಭಾವವು  
ಮತ್ತಷ್ಟೂ ದುಃಖಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗುವುದೆಂಬ ಆಲೋಚನೆ  
ಯಿಂದಲೂ ಉಂಟಾಗುವ ವೈರಾಗ್ಯಜನ್ಯವಾದ ತುಷ್ಠಿ.

(9) ಮನುಷ್ಯನ ವಿಷಯೋಪಭೋಗದ ಅಸೆಯಿಂದ  
ಇತರರಿಗೆ ಅನೇಕ ವಿಧವಾದ ಹಿಂಸೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡ  
ಬೇಕೆನ್ನುವುದೆಂಬ ಆಲೋಚನೆಯಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ  
ವೈರಾಗ್ಯಜನ್ಯವಾದ ತುಷ್ಠಿ. ಈ ರೀತಿ ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ ತುಷ್ಠಿ  
ಗಳು ನಾಲ್ಕು ಮತ್ತು ಬಾಹ್ಯತುಷ್ಠಿಗಳು ಐದು. ಒಟ್ಟು  
ಒಂಬತ್ತು (9) ತುಷ್ಠಿಗಳು. 3. ಸ್ವಾಯಂಭುವ ಮನ್ವಂತರ

ದಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಾನಸಪುತ್ರರಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬನಾದ ಧರ್ಮ  
ಪುರುಷನ ಪತ್ನಿ. ದಕ್ಷನ ಹದಿಮೂರು ಮಂದಿ ಕನ್ಯೆಯರಲ್ಲಿ  
ಒಬ್ಬಳು.

**ತುಷ್ಠಿಮತ್ ತುಷ್ಠಿಮತ್** (ಪುಂ) 1. ಉಗ್ರಸೇನನ ಒಬ್ಬ ಮಗ,  
ಕಂಸನ ಒಬ್ಬ ಸಹೋದರ. "ಕಂಸಃಸುನಾಮಾಃ ನ್ಯಗ್ರೋಃ  
ಕಂಠಃಶತ್ರುಃಸುಹಸ್ತತಾ । ರಾಷ್ಟ್ರಪಾಲೋಽಪಿ ಸೃಷ್ಟಿಶ್ಚ ತುಷ್ಠಿಮಾನುಷ  
ಸೇನಜಾಃ" भाग० ९-२४-२४ । (ವಿಂ) 2. ಸಂತೋಷ  
ತೃಪ್ತಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದವನು. ತುಷ್ಠಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ - ತುಷ್ಠಿ  
"ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛಿಪ್" (೪-೧-೬) ।  
-ಮತೀ -ಮತೀ.

**ತುಷ್ಠತ್ ತುಷ್ಠತ್** (ವಿಂ) ಸಂತೋಷಪಡುತ್ತಿರುವ. ತುಷ  
(ತುಷ್ಠಿ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛಿಪ್"  
(೪-೧-೬) । -ಮತೀ -ಮತೀ.

**ತುಹಿನ ತುಹಿನ** (ನಂ) 1. ಹಿಮ, ಮಂಜು. ತುಹಿರ್ (ಅದೇನೆ)  
"ಹನನ್" (೩ಂ ೨-೪೨) । "ಕಿ ಚಂದನೇಃ ಸಕರ್ಪುರೇಃ  
ತುಹಿನೇಃ ಕಿ ಚ ಶೀತಲೇಃ । ಸರ್ವೇ ತೇ ಮಿತ್ರಗಾತ್ರಸ್ಯ ಕಲಾ  
ನಾಹಂತಿ ಷೋಡಶೀಮ್" पञ्चत० २-६१ । 2. ಚಂದ್ರಿಕೆ,  
ಬೆಳದಿಂಗಳು. 3. ಕರ್ಪೂರ, (ವಿಂ) 4. ಶೀತಲವಾದ,  
ಶೈತ್ಯಗುಣವುಳ್ಳ.

**ತುಹಿನಕರ, -ಕಿರಣ, -ದೀಪ್ತಿ, -ಛುತಿ, -ಭಾನು, -ರಶ್ಮಿ**  
**ತುಹಿನಕರ, -ಕರಣ, -ದೀಪ್ತಿ, -ದ್ಯುತಿ, -ಭಾನು,**  
**-ರಶ್ಮಿ** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ತುಹಿನಾಃ ಕರಾಃ ಕಿರಣಾಃ ದೀಪ್ತಯಃ  
ಛುತಯಃ ಭಾನವಃ ರಶ್ಮಯೋ ವಾಽಸ್ಯ । "ಮೃದ್ಧಿಃ ಸ್ವಲತುಹಿನ-  
ದೀಪ್ತಿಕೋಟಿಮೇನಮ್" माघ० ४-१९ । "प्रथमप्रबुद्धनदराज-  
सुतावदनेन्दुनेव तुहिनद्युतिना" माघ० ९-३० । "तुहिन-  
किरणवंशस्थूलमुक्ताफलानाम्" चं० भा० । "तुहिन-  
भानुदिवाकरलोचनम्" याद० ३-२८ ।

**ತುಹಿನಗಿರಿ ತುಹಿನಗಿರಿ** (ಪುಂ) ಹಿಮಾಚಲ, ಹಿಮವ  
ತ್ಪರ್ವತ.

**ತುಹಿನಾಚಲ -ಅಗ್ನಿ ತುಹಿನಾಚಲ -ಅದ್ರಿ** (ಪುಂ) ಹಿಮಾ  
ಚಲ, ಹಿಮವತ್ಪರ್ವತ.

**ತುಣ ತುಣ** (ಪುಂ) 1. ಬತ್ತಳಕೆ, ಬಾಣದ ಚೀಲ. ತುಣಯತೇ-  
ತುಣ (ಪೂರಣ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । "स  
दक्षिणं तूणमुखेन वामं व्यापारयन् हस्तमलक्ष्यताञ्जी"  
रघु० ७-५७ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಣಿ -ಣೀ. 2. ನೀಲಿಗಡ.  
"तूणी नील्यां निषङ्गे ना" मेदि० ।

**ತುಣವರ ತುಣಧರ** (ಪುಂ) ಬತ್ತಳಕೆಯನ್ನು ಧರಿಸಿರು  
ವವನು. ತುಣಸ್ಯ ಧರಃ ।



ತುಣುಕ ತುಣುಕಾರ (ಪುಂ) ಬತ್ತಳೆಯನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ.

ತುಣುಕ ಧಾರಯತಿ - ಧ (ಧಾರಣೆ) "ಅನ್" (೩-೨-೧)।

ತುಣುಕ ತುಣುಕ (ವಿಂ) ಬತ್ತಳೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು. ತುಣುಕಾಸ್ತಾಸ್ತಿ "ಮತುಃ" (೪-೨-೧೪)। "ಸಾಯುಕಾ ಬದ್ಧನಿಸ್ತ್ರಾಸ್ತುಣುಕಂತಃ" ಮಾಂ ಬನಂ।

ತುಣುಕ ತುಣುಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬತ್ತಳೆ, ಬಾಣದ ಚೀಲ.

ತುಣುಕ ತುಣುಕ (ವಿಂ) ಬತ್ತಳೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು. ತುಣುಕಾಸ್ತಾಸ್ತಿ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೪)।

ತುಣುಕ ತುಣುಕ (ಪುಂ) 1. ನಂದಿಮರ. (ವಿಂ) 2. ಬತ್ತಳೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು. ತುಣುಕ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)।

ತುಣುಕ ತುಣುಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬತ್ತಳೆ, ಬಾಣದ ಚೀಲ. ತುಣುಕೇ ಪುಣ್ಯತೆ - ತುಣುಕ (ಪುಣ್ಯತೆ) "ಋನ್" (೩-೩-೧೧೪)। ಗೌರಾಂ "ಘಿಃ" (೪-೧-೪೧)। ತುಣುಕಮುಖೋದ್ಭವಶರಣೇ ವಿಶಿಷ್ಟಪದ್ಧತಿ" ರಘುಂ ೧-೪೬। 2. ನೀಲಿಗಡ.

ತುಣುಕ ತುಣುಕ (ಪುಂ) ನಂದಿಮರ.

ತುಣುಕ ತುಣುಕ (ಪುಂ) ಬತ್ತಳೆ, ಬಾಣದ ಚೀಲ. ತುಣುಕ (ಪುಣ್ಯತೆ) "ಋನ್"। ಬಾಹುಂ। "ತುಣುಕರಪದ್ಧತಿಪರಿಣಾಮ-ಮುಜಾಂತರಾಲಮಾಕರ್ಣಲಮ್ಬಿಶಿಖಿಬಹುಕಲಾಪಧಾರಿ" ಮಾಲಂ ೪-೧೦।

ತುಣುಕ ತುಣುಕ (ಪುಂ) ಹೂವರಚಿಮರ. ತುಣುಕ (ವ್ಯಯನೇ) ಧವಳೆ "ಕ:"। ಪುಂಂ।

ತುಣುಕ ತುಣುಕ (ಪುಂ) 1. ಗಡ್ಡೆ ಮೀಸಗಳು ಹುಟ್ಟಿದಿರುವವನು. 2. ಕೊಂಬುಗಳು ಹುಟ್ಟಿದಿರುವ ಗೋವು.

ತುಣುಕ ತುಣುಕ (ನಂ) 1. ವೇಗ, ತ್ವರೆ. ವಿದ್ವರಾ (ಸಮಭ್ರಮೇ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ವೇಗವಾದ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ವೇಗವಾಗಿ, ಜಾಗೃತಿಯಾಗಿ, ಶೀಘ್ರವಾಗಿ. "ತುಣುಕ ಪ್ರಣೇತ್ರಾ ಕೃತನಾದಮುನ್ವಕೈಃ ಪ್ರಣೋದಿತಂ ವೇಸರಯುಗ್ಮಮಘನಿ" ಮಾಘಂ ೧೨-೧೧।

ತುಣುಕ ತುಣುಕ (ಪುಂ) 1. ಮನಸ್ಸು. 2. ಶ್ಲೋಕ. 3. ವೇಗ, ತ್ವರೆ.

ತುಣುಕ ತುಣುಕ (ನಂ) ಒಂದು ಮಂಗಳ ವಾದ್ಯ. ತುಣುಕೇ-ತುಣುಕ (ಗತೀವರಣಹಿಸನಯೋಃ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೭)। "ಆವಜಿತಾ-ಷ್ಟಾಪದಕುಮ್ಭತಯೈಃ ಸತುಣುಕೇನಾಂ ಸುಖಯಾಂಬಭುವುಃ" ಕುಮಾಂ ೭-೧೦।

ತುಣುಕ ತುಣುಕ (ನಂ) 1. ಹತ್ತಿ, ಅರಳೆ. ತುಣುಕ (ನಿಷ್ಕರ್ಷೆ) "ಋನ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ಲಗ್ನಸ್ಥೋ ಭಾಗವೋ ಜೀವೋ ಯದಿ ವಾ ಚಂದ್ರನಂದನಃ। ನಾಶಯತ್ಯಖಿಲಾನ್ ದೋಷಾನ್ ತುಣುಕಸಂಭವಿವಾ-ನಲಃ" ಮುಹೂರ್ತದರ್ಶನೇ ವಿವಾಹಪ್ರಕರಣೇ। (ಪುಂ) 2. ಹೂವರಿಚಿ

ಮರ. (ಪುಂ) 3. ಅಕಾಶ, ಅಂತರಿಕ್ಷ. "ತುಣುಕ ಸ್ಯಾದ್ಬಹ-ದಾರಣಿ। ನಾಕಾಶೇಷ್ಯ ಪಿಶೌ ನ ಸ್ತ್ರೀ" ಮೇದಿಂ।

ತುಣುಕ ತುಣುಕ (ನಂ) ಹತ್ತಿ, ಅರಳೆ. ತುಣುಕ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"।

ತುಣುಕಾರ್ಮಿಕ ತುಣುಕಾರ್ಮಿಕ (ನಂ) ಹತ್ತಿಯನ್ನು ಬಿಡಿಸಿ ಶುದ್ಧಮಾಡುವ ಬಿಲ್ಲು. ತುಣುಕ ಸ್ಕೂಟನಾರ್ಯ ಕಾರ್ಮಿಕಂ।

ತುಣುಕಾಲಿ ತುಣುಕಾಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹತ್ತಿಯ ಪಿಂಜಿ, ಹತ್ತಿ ಯನ್ನು ಬಿಡಿಸಿ ನೂಲಲು ಅನುಕೂಲವಾಗುವಂತೆ ಮಾಡಿದ ಪಿಂಜಿ. ತುಣುಕನಿಮಿತಾ ನಾಲಿ। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"। -ನಾಲಿಕಾ -ನಾಲಿಕಾ.

ತುಣುಕಪಿಚು ತುಣುಕಪಿಚು (ಪುಂ) ಹತ್ತಿಯ ಗಿಡ.

ತುಣುಕಪಿಚಿ ತುಣುಕಪಿಚಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕದಿರು, ಕದಿರಣೆಗೆ. ನೂಲುವ ಯಂತ್ರದಲ್ಲಿ ದಾರವನ್ನು ಸುತ್ತುವ ಉರುಳುವ ಕಂಬ.

ತುಣುಕವಕ್ಷ ತುಣುಕವಕ್ಷ (ಪುಂ) ಹತ್ತಿಯ ಗಿಡ.

ತುಣುಕಶರ್ಕರಾ ತುಣುಕಶರ್ಕರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹತ್ತಿಯ ಬೀಜ.

ತುಣುಕ(ಲಿ) ತುಣುಕ(ಲಿ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಿತ್ರವನ್ನು ಬರೆಯುವ ವರ್ತಿಕೆ, ಕುಂಚ. ತುಣುಕ (ನಿಷ್ಕರ್ಷೆ) "ಋನ್" (೩-೪-೧೧೭)। ವಾ "ಘಿಃ" (೪-೧-೪೫)।

ತುಣುಕ ತುಣುಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಿತ್ರವನ್ನು ಬರೆಯುವ ವರ್ತಿಕೆ, ಚಿತ್ರಗಾರನ ಕುಂಚ. ತುಣುಕ (ನಿಷ್ಕರ್ಷೆ) "ಋನ್" (೩-೨-೩೨)। "ತುಣುಕಲಿತಂ ತುಣುಕಯೇವ ವಿಶ್ವಂ ಸೂರ್ಯಾಶುಭಿ-ಭಿನ್ನಮಿವಾರವಿನ್ದಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೩೨। 2. ಹಾಸಿಗೆ, ಸುಪ್ಪತ್ತಿಗೆ. ತುಣುಕಮಸ್ತಯಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೪)। ಟಾಪಿ ಅತ ಇತ್ವಮ್ (೭-೩-೪೪)। "ತುಣುಕ ಕಥಿತಾ ಲೇಖ್ಯ-ಕೃತ್ವಿಕಾತುಣುಕಯಯೋಃ" ವಿಶ್ವಂ। 3. ದೀಪದ ಬತ್ತಿ. 4. ನೀಲಿಗಡ. 5. ಚಿನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿಗಳನ್ನು ಕರಗಿಸಿ ಹೊಯ್ಯುವ ಮೂಷಿ.

ತುಣುಕಿನಿ ತುಣುಕಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೂವರಿಚಿ ಮರ. 2. ಭೂರಗದ ಮರ. ತುಣುಕಸ್ತಯಸ್ಯಾಃ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)। "ಘಿಃ" (೪-೧-೪)।

ತುಣುಕ ತುಣುಕ (ಪುಂ) 1. ಸರಿಯಾದ ವಯಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಗಡ್ಡೆ ಮೀಸ ಹುಟ್ಟಿದಿರುವ ಪುರುಷ. 2. ಸರಿಯಾದ ವಯಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಕೊಂಬು ಹುಟ್ಟಿದಿರುವ ಎತ್ತು. 3. ಕಷಾಯರಸ, ಒಗರುರಸ. 4. ಪುರುಷಲಕ್ಷಣವಿಲ್ಲದ ಮನುಷ್ಯ, ನಪುಂಸಕ, ಷಂಡ. (ವಿಂ) 5. ಕಷಾಯರಸವುಳ್ಳ.

ತುಣುಕ ತುಣುಕ (ಪುಂ) ನಪುಂಸಕ, ಷಂಡ.

ತುಣುಕ ತುಣುಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೋಗರಿಗಡ.



ತೃಣಿಶೀಲ ತೂಷ್ಣೀಂಶೀಲ (ವಿಂ) ಮೌನಿ, ಮೌನವನ್ನು  
ಆಶ್ರಯಿಸಿರುವವನು, ಮಾತನಾಡದೆ ಸುಮ್ಮನಿರುವ  
ಸ್ವಭಾವದವನು. ತೃಣಿಮ್ ಶೀಲಂ ಯಸ್ಯ |

ತೃಣಿಕ ತೂಷ್ಣೀಕ (ವಿಂ) ಮೌನಸ್ವಭಾವದವನು, ಮಾತ  
ನಾಡದೆ ಸುಮ್ಮನಿರುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ತೃಣಿಮ್ "ಕ:"  
(ವಾಂ ೪-೩-೭೧) | ಮಕಾರಸ್ಯ ಲೋಪಃ | "ತೃಣಿ-  
ಶೀಲಸ್ತು ತೃಣಿಕೋ ನಮೋಽವಾಸಾ ದಿಗಂಬರ:" ಅಮಂ |

ತೃಣಿಕಾಮ್ ತೂಷ್ಣೀಕಾಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಮೌನವಾಗಿ, ನಿಶ್ಯಬ್ದ  
ವಾಗಿ, ಮಾತನಾಡದೆ. ತೃಣಿ "ಕಾ" ಆಗಮ: (ವಾಂ  
೪-೩-೭೧) |

ತೃಣಿಮ್ ತೂಷ್ಣೀಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಮೌನವಾಗಿ, ನಿಶ್ಯಬ್ದವಾಗಿ,  
ಮಾತನಾಡದೆ. ತುಷ (ತುಷ್ಟಿ) "ನಿಮ್" | ಬಾಹುಂ |  
"ಯತ್ಕಿಂಚಿದ್ವಶವರ್ಷಾಣಿ ಸನ್ನಿಧಿ ಪ್ರೇಕ್ಷತೇ ಧನಿ | ಭುಜ್ಯಮಾನಂ  
ಪರೇಸ್ತೃಣಿಂ ನ ಸ ತಲ್ಲಾಭುಮಹಂತಿ" ಮನುಂ ೮-೧೪೭ |

ತೃಣಿಮ್ಭಾವ ತೂಷ್ಣೀಂಭಾವ (ಪುಂ) ಮೌನದಿಂದಿರುವಿಕೆ,  
ಮಾತನಾಡದೆ ಸುಮ್ಮನಿರುವಿಕೆ. ತೃಣಿಮ್ + ಭೂ (ಸತ್ತಾ-  
ಯಾಮ್) "ಭವ್" (೩-೩-೨೪) |

ತೃಣಿಮ್ಭಾವಮ್ ತೂಷ್ಣೀಂಭಾವಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಮೌನವಾಗಿ,  
ಮಾತನಾಡದೆ ನಿಶ್ಯಬ್ದವಾಗಿ. ತೃಣಿಮ್ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್)  
"ಣಮುಲ್" (೩-೪-೬೩) | "ಕ್ತವಾ" ತಸ್ಯ ಲ್ಯಪ್ | ತೃಣಿಮ್ಭವ  
ತೂಷ್ಣೀಂಭವಯಃ |

ತೃಣಿಮ್ಭೂತ ತೂಷ್ಣೀಂಭೂತ (ವಿಂ) ಮೌನವಾಗಿರುವ,  
ಮಾತನಾಡದಿರುವ. ತೃಣಿಮ್ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:"  
(೩-೪-೭೨) |

ತೃಸ್ತ ತೂಸ್ತ (ನಂ) 1. ಧೂಳು. 2. ಪಾಪ. 3. ಜಟಿ  
ತುಸ (ಶಬ್ದೇ) "ತನ್" ದೀರ್ಘಃ | ಬಾಹುಂ |

ತೃಣ ತೃಣ (ನಂ) ಹುಲ್ಲು. ತೃಣ್ಯತೇ - ತೃಣ್ಯ (ಅದನೇ) "ಭವ್"  
(೩-೩-೧೯) | "ನಿದರ್ಶನಮಸಾರಾಣಾಂ ಲಘುಬಂಧುತೃಣಂ ನರ:"  
ಮಾಘಂ ೨-೪೦ | "ತೃಣೇನ ವಾತ್ಯೇವ ತಯಾನುಗಮ್ಯತೇ" ನೈಷಂ  
೧-೧೨೦ |

ತೃಣಕರ್ಣ ತೃಣಕರ್ಣ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಮುಖ.

ತೃಣಕುಟಿ ತೃಣಕುಟೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುಲ್ಲಿನ ಮನೆ, ಹುಲ್ಲು  
ಹೊದಿಸಿರುವ ಮನೆ. ತೃಣೇರಾಚ್ಛಾದಿತಾ ಕುಟಿ | "ಕಾಯಮಾನಂ  
ತೃಣಕುಟಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ತೃಣಕುಟೀರ ತೃಣಕುಟೀರ (ನಂ) ಹುಲ್ಲಿನ ಗುಡಿಸಲು,  
ಹುಲ್ಲುಹೊದಿಸಿರುವ ಸಣ್ಣ ಮನೆ.

ತೃಣಕೇತು ತೃಣಕೇತು (ಪುಂ) 1. ತಾಳವೃಕ್ಷ, ಪನಮರ, ತಾಟ  
ಮರ. 2. ಬಿದಿರು ಮೆಳೆ.

ತೃಣಚರ ತೃಣಚರ (ಪುಂ) 1. ಗೋಮೇದಕ ಮಣ. (ವಿಂ)  
2. ಹುಲ್ಲಿನ ಮೇಲೆ ಸಂಚರಿಸುವ. ತೃಣೇ ಚರತಿ - ಚರ  
(ಗತಿಭಕ್ಷಣಯೋ:) "ಛ:" (೩-೨-೧೬) |

ತೃಣಜಮ್ಬನ್ ತೃಣಜಂಭನ್ (ವಿಂ) 1. ಹುಲ್ಲನ್ನು ತಿನ್ನುವ.  
ತೃಣಂ ಜಮ್ಬೋ ಭಕ್ಷಯಸ್ಯ | 2. ತೃಣದಂತೆ ಹಲ್ಲುಗಳುಳ್ಳ.  
ತೃಣಮಿವ ಜಮ್ಬೋ ದಂತೋ ಯಸ್ಯ | "ಜಮ್ಬೋ ದೈತ್ಯವಿಶೇಷೇ ನಾ  
ದಂತೇ ಜಮ್ಬೀರಭಕ್ಷಯೋ:" ಮೇದಿಂ |

ತೃಣಜಲಕಾ, -ಜಲೋಕಾ ತೃಣಜಲೂಕಾ, -ಜಲೂಕಾ  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿಗಣೆ. ತೃಣಾಕಾರಾ ಜಲಕಾ ಜಲೋಕಾ ವಾ |

ತೃಣಜಲೂಕಾನ್ಯಾಯ ತೃಣಜಲೂಕಾನ್ಯಾಯ (ಪುಂ) ಜಿಗಣೆ  
ಹುಳವು ಮುಂದಿನ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಶರೀರದ ಮುಂಭಾಗ  
ವನ್ನು ಊರಿದ ನಂತರ ಹಿಂದಿನ ಕಾಲುಗಳನ್ನು ತೆಗೆಯು  
ವಂತೆ ಜೀವನು ಬೇರೆ ಶರೀರವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿದ ನಂತರ  
ಪೂರ್ವ ಶರೀರವನ್ನು ಬಿಡುವ ಒಂದು ನ್ಯಾಯ. ಜೀವನ  
ವ್ಯವಹಾರವು ಈ ರೀತಿಯಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ತೃಣಜಾತಿ ತೃಣಜಾತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಸ್ಯಜಾತಿ, ವನಸ್ಪತಿವರ್ಗ.

ತೃಣಜ್ಯೋತಿಸ್ ತೃಣಜ್ಯೋತಿಸ್ (ನಂ) ಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತೀಲತ,  
ಕಂಗೊಂಗಿಡ.

ತೃಣತಾ ತೃಣತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಧನುಸ್ಸು, ಬಿಲ್ಲು. ತೃಣಮಿವ  
ತಾಯತೇ-ತಾಯ್ (ಸಂತಾನಪಾಲನಯೋ:) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬) |  
2. ತೃಣಭಾವ, ತೃಣವಾಗಿರುವಿಕೆ. ತೃಣಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್"  
(೪-೧-೧೧೯) | "ತೃಣತಾ ಧನುಷಿ ತೃಣತ್ವೇ" ಮೇದಿಂ |  
"ತ್ವ:" (೪-೧-೧೧೯) | ತೃಣತ್ವಮ್ ತೃಣತ್ವಮ್.

ತೃಣದ್ರುಮ, -ವೃಕ್ಷ ತೃಣದ್ರುಮ, -ವೃಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ತೆಂಗಿನ  
ಮರ. 2. ಖರ್ಜೂರದ ಮರ. 3. ತಾಳವೃಕ್ಷ, ಪನಮರ.  
4. ಅಡಕೆಮರ. 5. ಈಜಲಮರ. 6. ಕಿರುತಾಳ.  
7. ಕೇತಕವೃಕ್ಷ, ತಾಳೆಗಿಡ. "ಹಿಂತಾಲಸಹಿತಾಸ್ತ್ರಯಃ |  
ಖರ್ಜೂರ: ಕೇತಕೀ ತಾಲೀ ಖರ್ಜೂರೀ ಚ ತೃಣದ್ರುಮಾ:" ಅಮಂ |

ತೃಣಧಾನ್ಯ ತೃಣಧಾನ್ಯ (ನಂ) ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ತಾನಾಗಿ ಬೆಳೆದ  
ಧಾನ್ಯ, ವ್ಯವಸಾಯವೇ ಇಲ್ಲದೆ ಬೆಳೆದ ಧಾನ್ಯ, ಶಾಮೆ,  
ನವಣೆ ಮುಂತಾದುವು. ತೃಣಮಿವ ಧಾನ್ಯಮ್ ಅಕೃಷ್ಠೇ  
ಉತ್ಪನ್ನತ್ವಾತ್ |

ತೃಣಧ್ವಜ ತೃಣಧ್ವಜ (ಪುಂ) 1. ತಾಳವೃಕ್ಷ, ಪನಮರ.  
2. ಬಿದಿರುಮೆಳೆ.

ತೃಣನಿಮ್ಬ ತೃಣನಿಂಬ (ಪುಂ) ಭೂನಿಂಬವೃಕ್ಷ, ನೆಲಬೇವು.  
ತೃಣಾಕಾರೋ ನಿಮ್ಬಃ |

ತೃಣಪೀಡ ತೃಣಪೀಡ (ನಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಯುದ್ಧ, ಕೈಕೈ  
ಯುದ್ಧ, ಮುಷ್ಟಿ ಕಾಳಗ. ತೃಣಸ್ಯೇವ ಪೀಡಾ ಯತ್ರ |



ತೃಣಪುಷ್ಪ ತೃಣಪುರುಷ (ಪುಂ) 1. ಹುಲ್ಲುಕುಂಬಿದ ಮನುಷ್ಯನ ಅಕೃತಿ. 2. ತೃಣಪ್ರಾಯನಾದ ಮನುಷ್ಯ. ಸತ್ತ್ವವಿಲ್ಲದವನು.

ತೃಣವಿಂದು ತೃಣವಿಂದು (ಪುಂ) ಒಬ್ಬಯುಷಿ. ಕಾಮಕವನದಲ್ಲಿ ಪಾಂಡವರು ಒಮ್ಮೆ ಬೇಟೆಗೆ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ದ್ರೌಪದಿಯನ್ನು ಈ ಯುಷಿಯ ಅನುಮತಿಪಡೆದು ಅಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಬಿಟ್ಟಿದ್ದರು. "ತತಸ್ತೇ ಯೋಗಪದ್ಧೇನ ಯು: ಸರ್ವೇ ಚತುರ್ದಿಶಮ್ | ಮೃಗಯಾಂ ಪುಷ್ಪವ್ಯಾಧಾ: ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾರ್ಥೇ ಪರಂತಪಾ: | ದ್ರೌಪದೀಮಾಶ್ರಮೇ-  
ನ್ಯಸ್ಯ ತೃಣವಿಂದೋರನುಜಯಾ" ಭಾಂವನಂ ೨೬೪-೪, ೫ |

ತೃಣಮತ್ಕುಣ ತೃಣಮತ್ಕುಣ (ಪುಂ) ಹೊಣೆಗಾರ, ಜಾಮೀನು ದಾರ. "ಲಗನಕಸ್ತೃಣಮತ್ಕುಣ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ತೃಣಮಯ ತೃಣಮಯ (ವಿಂ) ಹುಲ್ಲಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಿದ. ತೃಣಸ್ಯ ವಿಕಾರ: "ಮಯಡ್" (೪-೩-೧೪೪) | "ಕುರ್ಯಾತ್ ತೃಣಮಯಂ ಚಾಪಂ ಶಯೀತ ಮೃಗಶಾಯಿಕಾಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೪೩-೨೩ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೪) | ತೃಣಮಯೋ ತೃಣಮಯಿ.

ತೃಣರಾಜ ತೃಣರಾಜ (ಪುಂ) 1. ತಾಳವೃಕ್ಷ, ಪನೆಮರ. ತೃಣಾನಾಂ ರಾಜಾ "ರತ್" (೪-೪-೧೧) | 2. ತೆಂಗಿನಮರ. 3. ಕಬ್ಬು. 4. ಈಚಲಮರ. 5. ಬಿದಿರುಮಳೆ.

ತೃಣವತ್ ತೃಣವತ್ (ಅವ್ಯಂ) ಹುಲ್ಲಿನ ಕಡ್ಡಿಯಂತೆ, ಹುಲ್ಲಿಗೆ ಸಮಾನವಾಗಿ. ತೃಣೇನ ತುಲ್ಯಮ್ "ವತಿ:" (೪-೧-೧೧೪) | "ತ್ವಮೇವ ಭೂತ್ವಾ ತೃಣವಜ್ಜಯಾಮಿ ತಮ್" ನೆಪಂ ೧-೧೪೭ |

ತೃಣಶೂನ್ಯ ತೃಣಶೂನ್ಯ (ನಂ) 1. ಮಲ್ಲಿಗೆ ಗಿಡ. 2. ತಾಳ ಗಿಡ. ತೃಣಮಿವ ಶೂನ್ಯಂ ಫಲರಹಿತಮ್ | "ತೃಣಶೂನ್ಯಂ ಮಲ್ಲಿಕಾರ್ಜುನಾಂ ತಥಾ ಸ್ಯಾತ್ಕೇತಕೀಫಲೇ" ಮೇದಿಂ |

ತೃಣಸಾರ ತೃಣಸಾರ (ವಿಂ) 1. ತೃಣದಂತೆ ಸಾರವಿಲ್ಲದ. ಸತ್ತ್ವವಿಲ್ಲದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸಾರಾ -ಸಾರಾ. 2. ಕದಳಿ ವೃಕ್ಷ. ಬಾಳೆಗಿಡ.

ತೃಣಸಿಂಹ ತೃಣಸಿಂಹ (ಪುಂ) ಪರಶು, ಕೊಡಲಿ. ತೃಣೇ ಸಿಂಹ ಇವ |

ತೃಣಾಘ್ನಿ ತೃಣಾಘ್ನಿ (ಪುಂ) ಹುಲ್ಲಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ ಬೆಂಕಿ. ಹುಲ್ಲಿಗೆ ಹಿಡಿದ ಬೆಂಕಿ. ತೃಣಜಾತೋಘ್ನಿ: | "ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ತ್ವನ-  
ಧೀಯಾನಸ್ತೃಣಾಘ್ನಿರಿವ ಶಾಮ್ಯತಿ" ಮನುಂ ೩-೧೬೮ |

ತೃಣಾಜ್ಜನ ತೃಣಾಜ್ಜನ (ಪುಂ) ಹೆಂಟೆಗೊಡ್ಡ, ಒಡೆಕೇತ. ಕೃಕಲಾಸ. "ಹೇದಾರ: ಕಕಚಪಾತ್ ಕೃಕಲಾಸಸ್ತೃಣಾಜ್ಜನ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ತೃಣಾಟವಿ ತೃಣಾಟವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುಲ್ಲಿನ ಕಾಡು, ಹುಲ್ಲು ಗಾವಲು. ತೃಣಪ್ರಚುರಾ ಅಟವಿ |

ತೃಣಾರಣಿಯಾಯ ತೃಣಾರಣಿಯಾಯ (ಪುಂ) ತೃಣವೂ ಅರಣಿಯೂ ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದರಲ್ಲಿ ಇತರಾ ಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದೆ ಹೇಗೆ ಕಾರಣವಾಗಿರುವವೋ ಹಾಗೆ ಸ್ವತಂತ್ರವಾದ ಕಾರಣತ್ವವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಒಂದು ನ್ಯಾಯ.

ತೃಣಾವರ್ತ ತೃಣಾವರ್ತ (ಪುಂ) 1. ಸುಂಟರಗಾಳಿ, ಸುಳಿಗಾಳಿ, ಚಕ್ರವಾತ. ತೃಣಮಾವರ್ತಯತಿ - ಆ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಣಿच् "ಅನ್" (೩-೨-೧) | 2. ತೃಣಾವರ್ತನೆಂಬ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ, ಒಬ್ಬ ಕಂಸನ ಅನುಚರ. [ಈತನು ಕಂಸನ ಪ್ರಚೋದನೆಯಿಂದ ಬಲರಾಮಕೃಷ್ಣರನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲು ಬಿರುಗಾಳಿಯ ರೂಪದಿಂದ ಬಂದು ಅವರಿಬ್ಬರನ್ನೂ ಎತ್ತಿ ಕೊಂಡು ಹೋಗುತ್ತಿರುವಾಗ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು "ಗರಿಮಾ" ಸಿದ್ಧಿಯಿಂದ ತನ್ನ ದೇಹವನ್ನು ಭಾರವಾಗಿ ಮಾಡಿ ರಾಕ್ಷಸನ ಕತ್ತಿನ ಮೇಲೆ ಬಲವಾಗಿ ಪ್ರಹರಿಸಿದನು. ಆ ಕೂಡಲೇ ರಾಕ್ಷಸನು ಮೃತನಾದನು.] ಭಾಗಂ ೧೦-೭ |

ತೃಣೀಕೃತ ತೃಣೀಕೃತ (ವಿಂ) ತೃಣವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಹುಲ್ಲಿನ ಕಡ್ಡಿಯಂತೆ ತೃಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ತೃಣೀಕೃತಂ ರತ್ನ-  
ನಿಕಾಯಮುಚ್ಚಕೇ:" ನೆಪಂ ೧೪-೨ |

ತೃಣೇಂದ್ರ ತೃಣೇಂದ್ರ (ಪುಂ) ತಾಳವೃಕ್ಷ, ಪನೆಮರ.

ತೃಣೋದ್ಭವ ತೃಣೋದ್ಭವ (ಪುಂ) ತೃಣಧಾನ್ಯ, ನೀವಾರಧಾನ್ಯ. ತೃಣೋಲ್ಕಾ ತೃಣೋಲ್ಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹುಲ್ಲಿನ ದೀವಟಿಗೆ, ಹುಲ್ಲಿನ ಪಂಜು. 2. ಹುಲ್ಲಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ ಬೆಂಕಿ, ಹುಲ್ಲಿನ ಉರಿ. ತೃಣಜಾತಾ ಲ್ಕಾ | "ನಹಿ ತಾಪಯಿತುಂ ಶಕ್ಯಂ ಸಾಗರಾಘ್ನಸ್ತೃಣೋಲ್ಕಯಾ" ಹಿತೋಂ ೧-೩-೮೬ |

ತೃಣೋಕ್ತ ತೃಣೋಕ್ತ (ನಂ) ಹುಲ್ಲಿನ ಮನೆ, ಹುಲ್ಲಿನಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಮನೆ. ತೃಣನಿರ್ಮಿತಮೋಕ: |

ತೃಣ್ಯಾ ತೃಣ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುಲ್ಲಿನ ಸಮೂಹ. ಹುಲ್ಲಿನ ರಾಶಿ. ತೃಣಾನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಯ:" (೪-೨-೪೯) |

ತೃತೀಯ ತೃತೀಯ (ವಿಂ) 1. ಮೂರನೆಯ. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಪೂರ್ಣ:-  
ತ್ರಿ "ತೃತೀಯ:" ಸಂಪ್ರಸಾರಣಂ ಚ (೪-೨-೪೪) | "ಸ್ಫುರನ್ನದ್ವಿಚಿ:  
ಸಹಸಾ ತೃತೀಯಾದಕ್ಷಣ: ಕೃಶಾನ್ತು: ಕಿಲ ನಿಷ್ಪಪಾತ" ಕುಮಾಂ ೩-೭೧ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ತೃತೀಯಾ ತೃತೀಯಾ. 2. ತೃತೀಯಾ ತಿಥಿ, ತದಿಗೆ, ಪ್ರತಿಪಕ್ಷದ ಮೂರನೆಯ ದಿನ. 3. ತೃತೀಯಾ ವಿಭಕ್ತಿ. 4. ಮೂರನೆಯ ತಾರೆ, ಜನ್ಮನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ 3, 12 ಮತ್ತು 21 ನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು.

ತೃತೀಯಪ್ರಕೃತಿ ತೃತೀಯಪ್ರಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಂಡ, ನಪುಂಸಕ.

ತೃತೀಯಾಕೃತ ತೃತೀಯಾಕೃತ (ನಂ) ಮೂರು ಸಲ ಉಳಿ ಲ್ಪಟ್ಟ ಭೂಮಿ. ತೃತೀಯಂ ಕೃತಮ್ "ಡಾಚ್" (೪-೪-೪೮) | "ತ್ರಿಗುಣಾಕೃತಂ ತೃತೀಯಾಕೃತಂ ತ್ರಿಹಲ್ಯಮ್" ಅಮಂ |



ತೃಣಾ ತೃಷ್ಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೀರಡಿಕೆ, ಬಾಯಾರಿಕೆ, ಪಿಪಾಸೆ, ದಾಹ. ತ್ರಿ ತೃಷಾ (ಪಿಪಾಸಾಯಾಮ್) "ನ:" (ಉಂ ೩-೧೨)।  
 "ತೋರಾಶಿಸಮ್ಭವಾಪಿ ತೃಣಾಮುತ್ಪಾದಯತಿ" ಕಾದಂ।  
 2. ಅತ್ಯಾಸ, ಲೋಭ. "ತೃಣಾಂ ಚೇಹ ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ ಕೌ ದರಿದ್ರ: ಕ-ಇಶ್ವರ:। ತಸ್ಯಾಶ್ಚೇತ್ಸರೋ ದತ್ತ: ದಾಸ್ಯಂ ಚ ಶಿರಸಿ ಸ್ಥಿತಮ್" ಹಿತಂ। 3. ಆಸೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ.  
 "ಧಿಗಸ್ತು ತೃಣಾತರಲಂ ಭವನ್ಮನ: ಸಮೀಕ್ಷ್ಯ ಪಕ್ಷಾನ್ಮಮ ಹೇಮಜನ್ಮನ:" ನೈಷಂ ೧-೧೩೦। 4. ಯಾವಾಗಲೂ ಬಾಯಾರಿರುವ ಮತ್ತು ಯಾವಾಗಲೂ ನೀರನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ ಒಂದು ವಿಧ ರೋಗ. ಭಯ ಆಯಾಸ ಅಥವಾ ಬಲಕ್ಷಯ ಇವುಗಳಿಂದ ವಾತಸಹಿತವಾದ ಪಿತ್ತವು ಉದ್ರೇಕಗೊಂಡು ಉದ್ವಿಗ್ನಮುಖವಾಗಿ ದವಡೆಗಳಲ್ಲಿ ಸೇರಿಕೊಂಡು ಪಿಪಾಸಾ (ನೀರಡಿಕೆ) ರೋಗವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದು.  
 "ಭಯಶ್ರಮಾಭ್ಯಾಂ ಬಲಸಂಕ್ಷಯಾದ್ವಾ ಕ್ಷುಬ್ಧಂ ಚಿತ್ತಂ ಪಿತ್ತವಿವರ್ಧನೇಶ್ಚ। ಪಿತ್ತಂ ಸರ್ವಾತಂ ಕುಪಿತಂ ನರಾಣಾಂ ತಾಲ್ಪಪ್ರಪಂಚಂ ಜನಯೇತ್ ಪಿಪಾಸಾಮ್"



(7) वि+तृ = वितरति । वितरणम् । वितर्णः ।  
 ಕೊಡು, ಹಂಪು. “ವಿತರತಿ ಗುರುಃ ಪ್ರಾಜ್ಞಃ ಯಥೈವ  
 ತಥಾ ಜಙ್ಘೆ ನ ತು ಖಲ್ವು ತಯೋಜ್ಞಾನಿ ಶಕ್ತಿ ಕರೋತ್ಯಪಹನ್ತಿ ವಾ”  
 ಉ. ರಾ. ೨-೪।



(8) सम् + त् = सन्तरति । सन्तारः । ಚನ್ನಾಗಿ ದಾಟು, ಸರಿಯಾಗಿ ದಾಟು.

ते ते (अव्य०) ನಿನ್ನಿಂದ. "ते इति स्यात् त्वयेत्यर्थे" त्रिकाण्ड० ।

तेजन तेजस (पुं०) 1. ಮಂಶ, ಬಿದಿರು. तेजयति—तिज (निशाने) + णिच् "ल्युः" (३-१-१३४) । "शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः" अम० । (न०) 2. ಹರಿತ ವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು, ಜೊಪಾಗಿ ಮಾಡುವುದು, ಮೊನ ಚಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. तिज + णिच् भावे "ल्युट्" (३-३-११५) । 3. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುವುದು, ಹೊಳಪು ಕೊಡುವುದು.

तेजनक तेजसक (पुं०) ಕಾಗೆಬಿದಿರು. तेजन संज्ञायां "कन्" ।

तेजनी तेजनी (स्त्री०) 1. ಕುರಟಗಿಗಿಡ. 2. ಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತೀ ಲತೆ. तेजन गौरा० "डीप्" (४-१-४१) । 3. ತೃಣ, ಹುಲ್ಲು.

तेजस् तेजस (न०) 1. ದೀಪ್ತಿ, ಪ್ರಕಾಶ. तिज (निशाने) "असुन्" (उ० ४-१८८) । "दिनान्ते निहितं तेजः सवित्रेव हुताशनः" रघु० ४-१ । 2. ರೇತಸ್ಸು, ವೀರ್ಯ. "दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः" शाकु० ४-३ । 3. ಪರಾಕ್ರಮ, ಬಲ, ಶಕ್ತಿ. "एषोऽहमेहि मामेव तेजस्तेजसि शाम्यतु" उ० रा० ५-७ । 4. ದೇಹದ ಕಾಂತಿ, ಆರೋಗ್ಯದಿಂದ ಮುಖದಲ್ಲಿ ತೋರುವ ವರ್ಚಸ್ಸು, ಸೌಂದರ್ಯ, ಹೊಳಪು. "सुजन्मनस्तस्य निजेन तेजसा" रघु० ३-१५ । 5. ಪಿತ್ತ. 6. ದೇಹಕ್ಕೆ ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಕೊಡುವ ಪಿತ್ತದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. "रागपक्त्यो-जस्तेजोमेघोष्मकृत् पित्तं पञ्चधा प्रविभक्तमग्निर्कर्मणाऽ-नुग्रहं करोति" सुश्रुत० सूत्र० १५-३ । 7. ಪ್ರಭಾವ. 8. ನವನೀತ, ಹೊಸದಾದ ಬೆಣ್ಣೆ. 9. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. "तेजस्विदरेतसोर्बले । नवनीते प्रभावेजनौ" हेम० । 10. ಜೊಪು, ಮೊನಚು. 11. ಕತ್ತಿಯ ಹರಿತವಾದ ಅಲಗು. 12. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 13. ಮಜ್ಜೆ, ದೇಹಸಾರ. 14. ಇತರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ತಿರಸ್ಕಾರ ಅಕ್ಷೇಪಣೆ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಸಹಿಸದಿರುವ ನಾಯಕನ ಒಂದು ಗುಣ. "अधिक्षेपापमानादेः प्रयुक्तस्य परेण यत् । प्राणात्ययेऽप्यसहनं तत्तेजः समुदाहृतम्" सा० द० ३-५४ । 15. ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯ, ಧೈರ್ಯ, ದಿಟ್ಟತನ. 16. ಇತರರನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. 17. ಬಹಳ ಗೌರವಾನ್ವಿತ

ವ್ಯಕ್ತಿ, ಶೌರ್ಯ ಔದಾರ್ಯ ಧೈರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಗುಣ ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಶ್ರೇಷ್ಠವ್ಯಕ್ತಿ. "महतस्तेजसो बीजं बालोऽयं प्रतिभाति मे" शाकु० ७-१५ । 18. ಕುದುರೆಯ ವೇಗ. 19. ಪಂಚಮಹಾಭೂತಗಳಲ್ಲಿ ಉಷ್ಣಸ್ವರ್ಣ ಗುಣವುಳ್ಳ ಮೂರನೆಯ ಮಹಾಭೂತ. "उष्णस्पर्शवत्तेजः" त० सं० । 20. ಆತ್ಮಬಲ, ಆತ್ಮಶಕ್ತಿ.

तेजस्कर तेजस्कुर (वि०) ತೇಜಸ್ಸನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. तेजः करोति — कृ कृ (करणे) "टः" (३-२-२०) । स्त्रियाम् "डीप्" (४-१-१५) । -करो -करी.

तेजस्काम तेजस्काम (वि०) 1. ತೇಜಸ್ಸನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ವರ್ಚಸ್ಸನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಆತ್ಮಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. तेजः कामयते — कम् (कान्ती) + णिङ् "अण्" (३-२-१) । "नाञ्जयन्तीं स्वके नेत्रे न चाम्यक्ताम-नावृताम् । न पश्येत् प्रसवन्तीं च तेजस्कामो द्विजोत्तमः" मनु० ४-४४ । 2. ಗೌರವವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ.

तेजस्काय तेजस्कಾಯ (वि०) ಬಹಳ ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ ದೇಹವುಳ್ಳ, ಲಾವಣ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮೈಯುಳ್ಳ. तेजः काये यस्य ।

तेजस्तिमिर तेजस्तिमिर (न० द्विव०) ಬೆಳಕು ಮತ್ತು ಕತ್ತಲೆ. तेजश्च तिमिरं च । "सामानाधिकरण्यं हि तेजस्तिमिरयोः कुतः" माघ० २-६२ ।

तेजस्वत् तेजಸ್ವತ್ (वि०) 1. ಹರಿತವಾದ ಅಲಗುಳ್ಳ. 2. ಉಜ್ಜ್ವಲವಾದ, ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ. तेजः अस्यास्ति "मतुप्" (५-२-९४) । स्त्रियाम् "डीप्" (४-१-६) । -स्वतो -ಸ್ವತೀ.

तेजस्विन् तेजಸ್ವಿನ್ (वि०) 1. ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ, ಕಾಂತಿಯುಕ್ತವಾದ. तेजः अस्यास्ति—तेजस् "विनिः" (५-२-१२१) । "तेजस्विमध्ये तेजस्वी दवीयानपि गण्यते" माघ० २-५१ । 2. ಗಣ್ಯನಾದ, ಗೌರವಾನ್ವಿತನಾದ. 3. ತೀವ್ರವಾದ, ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ, ಬಿರುಸಾದ. "बहुभुक्परदाररतस्तेजस्वी कृत्तिकासु विख्यातः" बृहत्सं० १०१-२ । स्त्रियाम् "डीप्" (४-१-५) ।

तेजस्विनी तेजಸ್ವಿನೀ (स्त्री०) ಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತೀ ಲತೆ, ಕಂಗೊಂಗಿ ಗಿಡ.

तेजित तेजित (वि०) ಹರಿತಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. तिज (निशाने) + णिच् "क्तः" (३-२-१०२) ।

तेजिष्ठ तेजिष्ठ (वि०) 1. ಬಹಳ ತೇಜಸ್ಸಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. अतिशयेन तेजस्वी तेजस् "इष्ठन्" (५-३-५५) ।



2. ಬಹಳ ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ. 3. ಬಹಳ ಹರಿತವಾದ. ಬಹಳ ಮೊನಚಾದ.

**ತೆಜೋಯಸ್ ತೇಜೋಯಸ್** (ವಿಂ) ತೇಜಸ್ವಿತ್ವವಾದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ, ಬಹಳ ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿಯಾದ. ಅತಿಶಯೇನ ತೇಜಸ್ವಿ "ಇಯಸ್" (೪-೩-೪೭)। "ತೆಜೋಯಸಾ ನ ದೋಷಾಯ ವಹ್ನಿಃ ಸರ್ವಭುಜೋ ಯಥಾ" ಭಾಗಂ ೧೦-೨೩-೩೦।

**ತೆಜೋಭಿಃ ತೇಜೋಭಿಃ** (ಪುಂ) ಅವಮಾನಗೊಳಿಸುವುದು, ಅವಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ಕಾಣುವುದು.

**ತೆಜೋಮಯ ತೇಜೋಮಯ** (ವಿಂ) ತೇಜಸ್ವರೂಪವಾದ, ಪ್ರಕಾಶಮಯವಾದ, ಧಳಧಳಿಸುವ, ಉಜ್ಜ್ವಲವಾದ, ಹೊಳೆಯುವ. ತೇಜಸ್ ಪ್ರಾಪ್ತುಯೇ "ಮಯತ್" (೪-೪-೨೧)। "ತಸ್ಯ ತೆಜೋಮಯಾ ಲೋಕಾ ಭವಂತಿ ಬ್ರಹ್ಮವಾದಿನಃ" ಮನುಂ ೬-೩೯।

**ತೆಜೋಮತಿ ತೇಜೋಮತಿ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ತೇಜಃ ತೇಜಸ್ವಿ ಮತಿಯುಳ್ಳ. (ವಿಂ) 2. ತೇಜಸ್ವರೂಪವಾದ, ಪ್ರಕಾಶವಾದ. "ಸ ಗಚ್ಛತಿ ಪರಂ ಸ್ಥಾನಂ ತೆಜೋಮತಿ-ಪಥಜುನಾ" ಮನುಂ ೩-೯೩।

**ತೆಜೋವತ್ ತೇಜೋವತ್** (ವಿಂ) ತೇಜಸ್ಸಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ. ತೆಜೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ತೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ವತ್ತಿ-ವತ್ತಿ. "ವಿಷಮಂ ಕೃಷ್ಣಶ್ವೇತಂ ಲಘು ಕೌಬೇರಂ ಪ್ರಮಾಣತೆಜೋವತ್" ಬೃಹತ್ಸಂ ೮೧-೬।

**ತೆಜೋವತ್ ತೇಜೋವತ್** (ನಂ) ಪರಾಕ್ರಮಕ್ಕೆ ತಕ್ಕ ವ್ಯಾಪಾರ, ಶಕ್ತಿಗೆ ತಕ್ಕ ಕಾರ್ಯ. ತೇಜಃ ಪರಾಕ್ರಮಸ್ಯಾನ್ವಿತಂ ವೃತ್ತಮ್। "ಇಂದ್ರಸ್ಯಾರ್ಕಸ್ಯ ವಾಯೋಶ್ಚ ಯಮಸ್ಯ ವರುಣಸ್ಯ ಚ। ಚಂದ್ರಸ್ಯಾಗ್ನೇಃ ಪೃಥಿವ್ಯಾಶ್ಚ ತೆಜೋವತ್ ನೃಪಶ್ಚರೇತ್" ಮನುಂ ೯-೩೦೩।

**ತೇನ ತೇನ** (ಪುಂ) 1. "ತೇನ" ಎಂಬ ಶಬ್ದ. ಸಂಗೀತದ ಒಂದು ಅಂಗ. ತೇ ಇತಿ ನ ಇತಿ ಶಬ್ದೀ ಯತ್ರ। "ತೇ ನೇತಿ ಶಬ್ದಸ್ತೇನ ಸ್ಯಾನ್ಮಜ್ಜಲಾನಾಂ ಪ್ರದರ್ಶಕಃ। ತೇನೋಚ್ಯತೇ ಗೌರೀ ನಶಬ್ದೋಚ್ಯತೇ ಹರಃ। ತೇನ ಮಾಜ್ಜಲಿಕಶ್ರಾಯಂ ಶಬ್ದಸ್ತೇನ ಇತಿ ಸ್ಮೃತಃ" ಸಂ ದಾಂ। (ಅವ್ಯಂ) 2. ಆ ಕಾರಣ ದಿಂದ. ತದ್ "ಏನಃ" ಬಾಹುಂ।

**ತೇಮ ತೇಮ** (ಪುಂ) ತೇವವಾಗಿರುವುದು, ಒದ್ದೆಯಾಗಿರುವುದು. ತಿಮ (ಆದ್ರಿಭಾವೇ) "ಫಲ್" (೩-೩-೧೮)। "ತೇಮಸ್ತೇಮೌ ಸಮುಂದನೇ" ಅಮಂ।

**ತೇಮನ ತೇಮನ** (ನಂ) 1. ಒದ್ದೆಯಾಗಿಮಾಡುವುದು, ತೇವವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ತಿಮ (ಆದ್ರಿಭಾವೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಮಜ್ಜಿಗೆ ಪೇಡ್. "ಸ್ಯಾತ್ತೇಮನಂತು ನಿಷ್ಠಾನಮ್" ಅಮಂ।

**ತೇವಕ ತೇವಕ** (ವಿಂ) ಆಟವಾಡುವವನು. ತೇವ (ದೇವನೇ) ಕರ್ತಂ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ತೇವನ ತೇವನ** (ನಂ) 1. ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ. ತೇವ (ದೇವನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಆಟದ ಮೈದಾನ. 3. ಕ್ರೀಡಾವನ. ತೇವಂತೇ-ತೇವ (ದೇವನೇ) ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।

**ತೇಷ್ಯ ತೇಷ್ಯ** (ನಂ) 1. ತೇಷ್ಯತೆ, ಹರಿತವಾಗಿರುವುದು, ಮೊನಚಾಗಿರುವುದು. ತೇಷ್ಯಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಫಲ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ಶೌರ್ಯಮಾಶುಕ್ರಿಯಾ ಶಸ್ತ್ರತೇಷ್ಯಮಸ್ವೇದವೇಪಥು। ಅಸಮೋಹಶ್ಚ ವೈಶ್ಯಸ್ಯ ಶಸ್ತ್ರಕರ್ಮಣಿ ಶಸ್ಯತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪-೧೦। 2. ತೇವ್ರವಾಗಿರುವುದು, ಬಿರುಸಾಗಿರುವುದು. 3. ಔಷಧ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಖಾರ. 4. ಕಠಿಣವಾಗಿರುವುದು, ಕ್ರೂರವಾಗಿರುವುದು, ಉಗ್ರವಾಗಿರುವುದು. "ನಾಸ್ತಿವ್ಯಂ ವೇದನಿಂದಾಂ ಚ ದೇವತಾನಾಂ ಚ ಕುತ್ಸನಮ್। ದ್ವೇಷ ದರ್ಮಂ ಚ ಮಾನಂ ಚ ಕ್ರೋಧಂ ತೇಷ್ಯಂ ಚ ವರ್ಜಯೇತ್" ಮನುಂ ೪-೧೬೩।

**ತೇಜಸ ತೇಜಸ** (ನಂ) 1. ತುಪ್ಪ. ತೇಜಸೋ ನವನೀತಸ್ಯ ವಿಕಾರಃ "ಅನ್" (೪-೩-೧೩೪)। 2. ಲೋಹ. ತೇಜಸೋ ವಿಕಾರಃ "ಅನ್" (೪-೩-೧೩೪)। (ವಿಂ) 3. ಕಾಂತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ. 4. ಲೋಹದಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ. ಲೋಹಮಯವಾದ. 5. ರಜೋಗುಣದಿಂದ ಉಂಟಾದ. "ವೈಕಾರಃ ಸಾತ್ವಿಕೋ ನಾಮ ತೇಜಸೋ ರಾಜಸಃ ಸ್ಮೃತಃ। ಭೂತಾದಿಸ್ತಾಮಸಸ್ತೇಽಪಿ ಪೃಥಕ್ ತತ್ತ್ವಾನ್ಯವಾಸೃಜತ್"।

**ತೇಜಸಾವರ್ತನಿ ತೇಜಸಾವರ್ತನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂಸೆ, ಚಿನ್ನ, ಮೆತ್ತ, ಬೆಳ್ಳಿಯನ್ನು ಕರಗಿಸಿಹಾಕುವ ಕೋವೆ. ತೇಜಸಂ ಸುರ್ವರ್ಣಾದಿಃ ಆವರ್ತಯತೇಽಸ್ಯಾಮ್-ಆ+ವೃತು (ವರ್ತನೆ)+ ಣಿच् ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ತೇಜಸಾವರ್ತನಿ ಮೂಷಾ" ಅಮಂ।

**ತೇತಿಕ ತೇತಿಕ** (ವಿಂ) ಸಹನೆಯ ಸ್ವಭಾವದ, ಕ್ಷಮಾಗುಣವುಳ್ಳ. ತೇತಿಕಾ ಶೀಲಮಸ್ಯ "ಅನ್" (೪-೪-೬೨)।

**ತೇತಲ ತೇತಲ** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. 2. ಗಂಡಕಮ್ಮಗ, ಗೇಂಡಾಮಗ. (ನಂ) 3. ಪಂಚ ಅಂಗಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ಕರಣದ ಒಂದು ಭೇದ, ನಾಲ್ಕನೆಯ ಕರಣ. "ತೇತಲೋ ಗಣ್ಡಕೇ ಪುಸಿ ಕಲಿಬಂ ತು ಕರಣಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ।

**ತೇತ್ತಿರ ತೇತ್ತಿರ** (ಪುಂ) 1. ಗಂಡಕಮ್ಮಗ, ಗೇಂಡಾಮಗ. (ಪುಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ತಿತ್ತಿರಿಪಕ್ಷಿ, ಕೌಜಿಗ ಹಕ್ಕಿ. (ನಂ) 3. ತಿತ್ತಿರಿ ಪಕ್ಷಿಗಳ ಸಮೂಹ, ಕೌಜಿಗ ಹಕ್ಕಿಗಳ ಗುಂಪು. ತೇತ್ತಿರಿಣಾಂ ಸಮೂಹಃ "ಅನ್" (೪-೨-೩೭)।



**ತೆತ್ತಿರಿ ತೈತ್ತಿರಿ (ಪುಂ)** 1. ಒಬ್ಬ ಋಷಿ, ವೈಶಂಪಾಯನ ಋಷಿಯ ಅಣ್ಣ. 2. ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಕಪೋತರೋಮನ ಮಗ.

**ತೆತ್ತಿರಿಯ ತೈತ್ತಿರೀಯ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ)** ತಿತ್ತಿರಿ ಋಷಿಯಿಂದ ಪ್ರೋಕ್ತವಾದ ಯಜುಃಶಾಖೆಯನ್ನು ಅಧ್ಯಯನಮಾಡುವ ಆ ಋಷಿಯ ಶಿಷ್ಯರು, ಯಜುರ್ವೇದವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವರು. ತಿತ್ತಿರಿಣಾ ಪ್ರೋಕ್ತಮಧೀಯತೆ — ತಿತ್ತಿರಿ "ಞ್" (೪-೩-೧೦೨)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ"। -ಯಕಾಃ -ಯಕಾಃ. ತೈತ್ತಿರೀಯ ಶಾಖೆಯು ದಕ್ಷಿಣ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ವ್ಯಾಪಕವಾಗಿದೆ. ಈ ಶಾಖೆಯಲ್ಲಿ ಸंहಿತಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಮ್ ಆರಣ್ಯಕಮ್ ಉಪನಿಷದಃ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಭಾಗಗಳಿರುವವು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಕೃಣ್ಯಜುರ್ವೇದ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ತೆತ್ತಿರಿಯಬ್ರಾಹ್ಮಣ ತೈತ್ತಿರೀಯಬ್ರಾಹ್ಮಣ (ನಂ)** ಕೃಷ್ಣ ಯಜುರ್ವೇದದ ಒಂದು ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಈ ಬ್ರಾಹ್ಮಣದಲ್ಲಿ ಮೂರು ಅಷ್ಟಕಗಳಿವೆ. ಮೊದಲನೆಯ ಅಷ್ಟಕದಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಾಧಾನ, ಗವಾಮಯನ, ವಾಜಪೇಯ, ಸೋಮ, ನಕ್ಷತ್ರೇಷ್ಟಿ ಮತ್ತು ರಾಜಸೂಯಗಳ ವರ್ಣನೆಯಿದೆ. ಎರಡನೆಯ ಅಷ್ಟಕದಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರ, ಉಪಹೋಮ, ಸೌತ್ರಾಮಣಿ, ಬೃಹಸ್ಪತಿಸವ ಮುಂತಾದ ಅನೇಕ ಸವಗಳ ವರ್ಣನೆಯಿರುವುದು. ಮೂರನೆಯ ಅಷ್ಟಕದಲ್ಲಿ ನಕ್ಷತ್ರೇಷ್ಟಿಯ ವರ್ಣನೆಯು ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿರುವುದು.

**ತೆತ್ತಿರೀಕ ತೈತ್ತಿರೀಕ (ವಿಂ)** ಹುಣಿಸೆಹಣ್ಣಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ವ್ಯಂಜನ-ಗೊಜ್ಜು ಹುಳಿ ಮೊದಲಾದವು. ತಿತ್ತಿರೀಕೇನ ಸಂಸ್ಕೃತಮ್—ತಿತ್ತಿರೀಕ "ಅನ್" (೪-೪-೪)।

**ತೆತ್ತಿರಿ ತೈಮಿರ (ಪುಂ)** ಒಂದು ವಿಧ ನೇತ್ರರೋಗ. ತಿತ್ತಿರಿ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್"।

**ತೆತ್ತಿರಿ ತೈರ್ಥ (ವಿಂ)** 1. ತೀರ್ಥ ಸಂಬಂಧವಾದ. ತಿತ್ತಿರೀಯದ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। 2. ತೀರ್ಥ (ಕ್ಷೇತ್ರ)ದಿಂದ ಬಂದಿರುವ. ತಿತ್ತಿರೀಯದ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೬)।

**ತೆತ್ತಿರಿ ತೈರ್ಥಕ (ವಿಂ)** ತೀರ್ಥ ದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. ತಿತ್ತಿರಿ ದೇಶ ಭವಃ "ಕು" (೪-೨-೧೨೭)।

**ತೆತ್ತಿರಿ ತೈರ್ಥಕ (ಪುಂ)** 1. ಗೌರವಾನ್ವಿತನಾದ ಮನುಷ್ಯ, ಬಹಳ ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮನುಷ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಇತರರ ಸಿದ್ಧಾಂತವನ್ನು ಗೌರವಿಸುವ, ಭಿನ್ನಮತಕ್ಕೆ ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವ. ತಿತ್ತಿರಿ ಸಿದ್ಧಾಂತಾಂತಿ ನಿಯಮಹಂತಿ "ಠಕ್" (೪-೧-೬೪)। 3. ಸಿದ್ಧಾಂತವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ.

**ತೆತ್ತಿರಿ ತೈರ್ಥಗೋಷ (ವಿಂ)** 1. ಪಶುಜಾತಿ ಸಂಬಂಧವಾದ. ತಿತ್ತಿರಿಗೋಷದ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

2. ಪಶುಜಾತಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ತಿತ್ತಿರಿಗೋಷ ಭವಃ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೩)। "ಜಡಮುಕಾಂಧಬಧಿರಾನ್ ತೆತ್ತಿರಿಗೋಷಾನ್ ವಯೋತಿಗಾನ್" ಮನುಂ ೭-೧೪೯।

**ತೆಲ ತೈಲ (ನಂ)** 1. ಎಳ್ಳು ಹರಳು ಸಾಸುವ ಮೊದಲಾದವುಗಳಿಂದ ತೆಗೆದ ಎಣ್ಣೆ. ತಿಲಸ್ಯ ತತ್ಸದೃಶಸ್ಯ ವಾ ವಿಕಾರಃ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೪)। "ತಿಲಾದಿಸ್ತಿಗ್ಧವಸ್ತುನಾಂ ಸ್ನೇಹಸ್ತೆಲಮುದಾಹೃತಮ್" ಭಾವಪ್ರಂ. (ವಿಂ) 2. ಎಳ್ಳಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ತಿಲಸ್ಯದ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ತೆಲಕಲ್ಕ ತೈಲಕಲ್ಕ (ಪುಂ)** ಎಳ್ಳಿನ ಹಿಂಡಿ, ಎಣ್ಣೆಯನ್ನು ತೆಗೆದ ಮೇಲೆ ಉಳಿಯುವ ಎಳ್ಳಿನ ಮಲ.

**ತೆಲಕಾರ ತೈಲಕಾರ (ಪುಂ)** ಗಾಣದಿಂದ ತೈಲವನ್ನು ತೆಗೆಯುವ ಒಬ್ಬ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು, ಗಾಣಗ. ತೆಲಂ ಕರೋತಿ—ತು ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಅನ್" (೩-೨-೧)। ಕುಂಬಾರನಿಂದ ಕೊಟಕ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು ಗಾಣಗ. ಕಲ್ಲುಹುಟ್ಟಿಗಿನಿಂದ ಕುಂಬಾರ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು ಕೊಟಕ.

**ತೆಲಕಿಡ್ಡ ತೈಲಕಿಟ್ಟ (ನಂ)** ಎಳ್ಳಿನ ಮಲ, ಎಳ್ಳಿನ ಹಿಂಡಿ. ತೆಲಸ್ಯ ಕಿಡ್ಡಮ್।

**ತೆಲಕ್ಕ ತೈಲಂ (ಪುಂ)** 1. ತೈಲಂ ದೇಶ, ತೆಲಂಗಾಣ ಸೀಮೆ. ಇದು ಕೃಷ್ಣಾ ಗೋದಾವರೀ ನದಿಗಳ ನಡುವಣ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿರುವುದು. [Vide The Geographical Dictionary of Ancient and Mediaeval India by Nandu Lal.] (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ತೆಲಂಗಾಣ ಸೀಮೆಯ ಜನರು.

**ತೆಲಚೋರಿಕಾ ತೈಲಚೋರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಜಿರಳೆ. 2. ಆತೆ ಹುಳೆ. ತೆಲಂ ಚೋರಯತಿ—ಚುರ (ಸ್ತೇಯ) + ಣಿಕ್ "ಞ್" (೩-೧-೧೨೩)।

**ತೆಲದ್ರೋಣಿ ತೈಲದ್ರೋಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಎಣ್ಣೆಯಿಂದ ತುಂಬಿದ ಮರದ ತೊಟ್ಟಿ. ತೆಲಪೂರ್ಣಾ ದ್ರೋಣಿ।

**ತೆಲಧಾನ್ಯ ತೈಲಧಾನ್ಯ (ನಂ)** ಎಣ್ಣೆಯನ್ನು ತೆಗೆಯಬಹುದಾದ ಎಳ್ಳು ಕಡಲೆಕಾಯಿ ಹರಳು ಸಾಸುವ ಮೊದಲಾದ ಧಾನ್ಯ. ತೆಲೋಪಯೋಗಿ ಧಾನ್ಯಮ್।

**ತೆಲಪ ತೈಲಪ (ಪುಂ)** 1. ಎಣ್ಣೆಯನ್ನು ಕುಡಿಯುವವನು. ತೆಲಂ ಪಿಬತಿ—ಪಾ (ಪಾನ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪಾ -ಪಾ. 2. ಜಿರಳೆ. 3. ಆತೆಹುಳೆ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ"। -ಪಕಃ -ಪಕಃ. "ಮಾಸಿಂ ಗೃಧ್ರೋ ವಪಾಂ ಮದ್ಗುಃ ತೆಲಂ ತೆಲಪಕಃ ಸ್ವಗಃ" ಮನುಂ ೧೨-೬೩।



ತೆಲಪರ್ಣಿ ತೈಲಪರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಂದನ, ಗಂಧ. ತಿಲಪರ್ಣಿ ಪರ್ವತೆ ಭವ: "ಅಣ್" (೪-೩-೫೩)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। 2. ಹಾಲುಮಡ್ಡಿ. 3. ಲೋಬಾನ. "ತೆಲಪರ್ಣಿ ಮಲಯಜೆ ಶ್ರೀವಾಸೇ ಸಿಹ್ಲಕೇಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ।

ತೆಲಪಾಯಿಕಾ ತೈಲಪಾಯಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜರಳೆ. 2. ಆತೆ ಹುಳ. ತೆಲ ಪಿಖತಿ-ಪಾ (ಪಾನೆ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ತೆಲಪಾಯಿನ್ ತೈಲಪಾಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಜರಳೆ. 2. ಆತೆ ಹುಳ. ತೆಲ ಪಿಖತಿ-ಪಾ (ಪಾನೆ) "ಗಿನಿ:" (೩-೨-೭೮)।

ತೆಲಪಿಜ್ಜ ತೈಲಪಿಜ್ಜ (ಪುಂ) ಜಳಿ ಎಳ್ಳು.

ತೆಲಪಿತ್ತ ತೈಲಪಿತ್ತ (ಪುಂ) ಎಣ್ಣೆಯನ್ನು ಕುದಿದವನು. ಪಿತ್ತ ತೆಲ ಯೆನ. ಪರಿನಿಂ (೨-೨-೩೭)।

ತೆಲಪಿಪಿಲಿಕಾ ತೈಲಪಿಪಿಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಂಪು ಇರುವೆ, ಎಣ್ಣೆ ಬಣ್ಣದ ಇರುವೆ.

ತೆಲಫಲ ತೈಲಫಲ (ಪುಂ) ಇಂಗುದೀವೃಕ್ಷ, ಗಾರೆ ಗಿಡ. ತೆಲ ಫಲೆ ಯಸ್ಯ।

ತೆಲಮಾಲಿ ತೈಲಮಾಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೀಪದ ಬತ್ತಿ.

ತೆಲಯನ್ತ್ರ ತೈಲಯನ್ತ್ರ (ನಂ) ಎಣ್ಣೆಯನ್ನು ತೆಗೆಯುವ ಯಂತ್ರ, ಗಾಣ. ತೆಲಮರ್ದನಾರ್ಥ ಯನ್ತ್ರಮ್। "ಮೇರೂರ್ಮುನಿ ಕೃತೋ ಮಾನಸೋತ್ತರೇ ಕೃತೇತರಭಾಗೋ ಯತ್ರ ಪ್ರೊತಂ ರವಿರಯಚಕ್ರಂ ತೆಲಯನ್ತ್ರಚಕ್ರವತ್ ಭ್ರಮನ್ ಮಾನಸೋತ್ತರಗಿರೌ ಪರಿಭ್ರಮತಿ" ಭಾಗಂ ೫-೨೧-೧೩।

ತೆಲಿಕ ತೈಲಿಕ (ವಿಂ) 1. ಎಣ್ಣೆಯನ್ನು ಮಾರುವವನು. ತೆಲ ಪಣ್ಯ ಯಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೫೧)। "ಸಮುದ್ರಯಾಪಿ ಬಂದಿ ಚ ತೆಲಿಕ: ಕೂಟಕಾರಕ:" ಮನ್ವಂ ೩-೧೫೮। 2. ಗಾಣ ದಿಂದ ಎಣ್ಣೆಯನ್ನು ತೆಗೆಯುವವನು. ತೆಲ ಶಿಲ್ಪ ಯಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೫೧)। "ಖಲಮಲಿನನೀಚತೆಲಿಕವಿಹೀನ-ಸತ್ವೋಪಹತಪುಸ್ತವಾ:" ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೬-೩೨।

ತೆಲಿನ್ ತೈಲಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಗಾಣದಿಂದ ಎಣ್ಣೆಯನ್ನು ತೆಗೆ ಯುವ ಗಾಣಗ. ತೆಲ ನಿಷ್ಪಾದ್ಯತ್ವೇನಾಸ್ತಯಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫)। 2. ಎಣ್ಣೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. ತೆಲ-ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:"। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। ತೆಲಿನಿ ತೈಲಿನಿ. 3. ದೀಪದ ಬತ್ತಿ.

ತೆಲಿನ ತೈಲಿನ (ನಂ) ಎಳ್ಳು ಬೆಳೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಭೂಮಿ. ತಿಲಾನಾಂ ಭವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್-ವಾ "ಕ್ಷತ್" (೫-೨-೪)। ಪಕ್ಷೆ "ಯತ್" ತಿಲ್ಯಮ್।

ತೆಲಿ ತೈಲಿ (ಪುಂ) ಪುಷ್ಕಮಾಸ. ತಿಷ್ಯೇಣ ನಕ್ಷತ್ರೇಣ ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸಿ "ಅಣ್" (೪-೨-೩)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। ತೆಲಿ। ಸಾಙ್ಗಿಸ್ಮಿನ್ ಮಾಸೇ "ಅಣ್" (೫-೨-೨೧)।

ತೆಲಿ ತೈಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಷ್ಕಮಾಸದ ಹುಣ್ಣುಮೆ. ತಿಷ್ಯೇಣ ನಕ್ಷತ್ರೇಣ ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸಿ "ಅಣ್" (೪-೨-೩)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)।

ತೊಕ ತೊಕ (ನಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ, ಮಗಳು. ತೊತಿ-ತು (ಸೌತ್ರೋ ಧಾತು:-ಗತೌ) "ಕ:" ಬಾಹುಂ। "ತೋಕೇನ ಜೀವಹರಣಂ ಯದ್ಬಲಿಕಾಯಾಸ್ತ್ರೈಮಾಸಿಕಸ್ಯ ಚ ಪದಾ ಶಕಟೋಪವೃತ್ತ:" ಭಾಗಂ ೨-೭-೨೭। 2. ತಿಯರ್ಕ್ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಮರಿ, ಶಿಶು.

ತೊಕ ತೊಕ (ಪುಂ) 1. ಹಸುರು ಬಣ್ಣ. 2. ಎಳೆಯ (ಹಸುರು ಬಣ್ಣದ) ಯವಧಾನ್ಯ. ತಕ (ಹಸನೆ) "ಮ:" ಬಾಹುಂ। ಪೃಷಂ। (ನಂ) 3. ಕರ್ಣಮಲ, ಕಿವಿಯ ಗುಗ್ಗಿ. "ತೊಕಮ್ ಕರ್ಣಮಲೇ ಪುಸಿ ಹರಿಧ್ವಣಿ ಹರಿಧವೇ" ಮೇದಿಂ। 4. ಹೊಸ ಚಿಗುರು.

ತೊಕಮನ್ ತೊಕಮನ್ (ನಂ) ಪುತ್ರ, ಮಗ, ಮಗಳು. ತಕ (ಹಸನೆ) "ಮನಿನ್" (೩ಂ ೪-೧೪೪)।

ತೊಡ ತೊಡ (ಪುಂ) 1. ಬಿಳಿಯ ಸಾಸವೆ. "ಶಠ: ಸಿದ್ಧಾರ್ಥತೊಡಕೌ। ಪತ್ನಿಕಾ ತ್ರಿಷ್ಠುಭಾ ಚಾಸ್ಮಿನ್ ಗೌರೇ" ವೈಜಂ। 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ವಿಷಕ್ರಮಿ. "ಚಿಪಿಟಪಿಚ್ಚಿಡಕ-ಕಷಾಯವಾಸಿಕಸರ್ಪಕ ತೊಡಕವರ್ಚ:ಕೀಟಕೋಣ್ಡಿನ್ಯಕಾ: ಶಕ್ರು-ನ್ಮೂತ್ರವಿಷಾ:" ಸುಶ್ರುತಂ ಕಲ್ಪಂ ೩-೫। (ನಂ) 3. ವೃತ್ತ ರತ್ನ ಕರೋತ್ತವಾದ ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ಭಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: ಪ್ರತಿ ಪಾದದಲ್ಲಿಯೂ ನಾಲ್ಕು "ಸ" ಗಣಗಳಿರಬೇಕು. "ಇಹ ತೊಡಕಮಮ್ಬುಧಿಸಿ: ಕಥಿತಮ್" ವೃಂ ೨ಂ। ಇದರ ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ಸ ಸ ಸ ಸ  
||೦ ||೦ ||೦ ||೦

ತೊಡ ತೊಡ (ನಂ) 1. ಭೇದಿಸುವುದು, ಒಡೆಯುವುದು, ಸೀಳುವುದು. 2. ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ಹೀಡಿಸುವುದು. ತುಡ (ತೊಡನೆ) ಭಾವೆ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ತೊಡ ತೊಡ (ನಂ) 1. ಕುದುರೆ ಮತ್ತು ಮೊದಲಾದುವು ಗಳನ್ನು ಚುರುಕುಮಾಡುವ ಮೊಸಳಾದ ತಿವಿಗೋಲು, ಚುಚ್ಚುಗೋಲು. 2. ಗಾಡಿಯ ಕುದುರೆ ಮತ್ತು ಮೊದಲಾದುವುಗಳನ್ನು ಹೊಡೆಯುವ ಕೋಲು. ತುಡತೇನೇನ-ತುಡ (ವ್ಯಥನೆ) ಕರಂ "ಛಡ್" (೩-೨-೧೮೨)। 3. ಆನೆ ಯನ್ನು ಶಿಕ್ಷಿಸುವ ತಿವಿಗೋಲು, ಅಂಕುಶ.

ತೊಡ ತೊಡ (ಪುಂ) 1. ನೋವು, ಯಾತನೆ. ತುಡ (ವ್ಯಥನೆ) ಭಾವೆ "ಛಡ್" (೩-೩-೧೮)। "ಹೀನದಾಧೇ ತೊಡಕಣ್ಡಜಾಡ್ಯಾನಿ ವ್ಯಾಧಿವೃದ್ಧಿಶ್ಚ" ಸುಶ್ರುತಂ। 2. ಗಾಡಿಯ ಎತ್ತು ಕುದುರೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳನ್ನು ಹೊಡೆದು ಮುಂದಕ್ಕೆ ನಡೆಸುವುದು.



(ವಿಂ) 3. ಎತ್ತು ಕುದುರೆಗಳನ್ನು ಹೊಡೆದು ನಡೆಯುವಂತೆ ಮಾಡುವ, - ಹೊಡೆದು ಅವು ಓಡುವಂತೆ ಮಾಡುವ.

ತುದ ಕರ್ತಂ "ಅಚ್" (3-1-134) ।

ತೊದನ ತೋದನ (ನಂ) 1. ವ್ಯಥೆ, ನೋವು, ವೇದನೆ. ತುದ (ವ್ಯಥನೆ) ಭಾವೆ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । "ತೊದನ-ಮೆದನತಾಡನಚ್ಚೆದನಾಯಾಮನಮನ್ಯನವಿಕೋಪಣವುಮುಚುಮಾಯನಂ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸ್ತಂ 22-11 । 2. ಕೋಲು, ಗಾಡಿಯ ಎತ್ತು ಕುದುರೆಗಳನ್ನು ಓಡಿಸಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ತಿವಿಗೋಲು. ತುದ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । "ಪ್ರಾಜನಂ ತೊದನಂ ತೋತ್ರಮ್" ಅಮಂ । (ವಿಂ) 3. ಹೊಡೆಯುವ, ನೋಯಿಸುವ. ತುದ ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (3-1-134) । 4. ವೇದನೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. "ಕಪಾಯಂ ಮಧುರಂ ರುಕ್ಷಂ ತೊದನಂ ಕಫವಾತಜಿತ್" ಸುಶ್ರುತಂ ।

ತೊಮರ ತೋಮರ (ಪುಂ) ಈಟಿ, ತುದಿಯಲ್ಲಿ ಮೊನಚಾಗಿರುವ ಒಂದು ಆಯುಧ. ತು (ಸೌತ್ರೋ ಧಾತು:-ಗತೌ) "ವಿಚ್" (3-2-44) । ಖಿಯತೆ-ಮೃಙ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೇ) ಅಂತರ್ಮಾವಿತ್-ಪ್ರಯತ್ನ: "ಅಚ್" (3-1-134) । ತೋಗಂತಾ ಖಿಯತೇನ "ಛ:" (3-3-114) । "ಶರ್ವಲಾ ತೊಮರೋಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಅಮಂ ।

ತೊಮರಗ್ರಹ ತೋಮರಗ್ರಹ (ಪುಂ) ಈಟಿಯನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ ಯೋಧ. ಗೃಹ್ಣಾತಿ - ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಅಚ್" (3-1-134) । ತೊಮರಸ್ಯ ಗ್ರಹ: ।

ತೊಮರಧರ ತೋಮರಧರ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಧರತಿ-ಧೃ (ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (3-1-134) । ತೊಮರಸ್ಯ ಧರ: ।

ತೊಯ ತೋಯ (ನಂ) 1. ಜಲ, ನೀರು. ತೌತಿ - ತು (ಸೌತ್ರೋ ಧಾತು:-ಆವರಣೆ) "ಯ:" (3-4-111) । "ಶ್ರೋಣಿಭಿ-ಗುರುಭಿರತೂರ್ಣಮುತ್ಪತ್ತಂತ್ಯಸ್ತೋಯೇಷು ದ್ರುತತರಮಜ್ಜನಾ ನಿಪೇತು:" ಮಾಘಂ 6-31 । 2. ಪೂರ್ವಾಪಾರಾಧಾ ನಕ್ಷತ್ರ. ಇದು ಜಲದೇವತಾಕವಾದ ನಕ್ಷತ್ರ. 3. ಲಗ್ನದಿಂದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಸ್ಥಾನ.

ತೊಯಕಾಮ ತೋಯಕಾಮ (ಪುಂ) 1. ಜಲವೇತನ, ನೀರು ಹಬ್ಬಿಗಿಡ. ತೊಯ ಕಾಮಯತೆ - ಕಮು (ಕಾಂತೌ) "ಅಣ್" (3-2-1) । (ವಿಂ) 2. ನೀರನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ.

ತೊಯಕುಚ್ಚ ತೋಯಕುಚ್ಚ (ನಂ) ಕೇವಲ ನೀರನ್ನು ಒಂದು ತಿಂಗಳು ಕಾಲ ಕುಡಿದು ಮಾಡುವ ಒಂದು ವ್ರತ. "ಫಲಮಸೀನ ಕಥಿತ: ಫಲಕುಚ್ಚೋ ಮನಿಷಿಭಿ: । ಪತ್ರಮೆತ: ಪತ್ರಕುಚ್ಚ: ಪುರ್ಣಸ್ತಕುಚ್ಚ ಉಚ್ಯತೆ । ಮೂಲಕುಚ್ಚ: ಸ್ಮೃತೌ ಮೂಲಸ್ತೊಯಕುಚ್ಚೋ ಜಲೇನ ತು" ಇತಿ ಮಾರ್ಕಂಡೇಯ: ।

ತೊಯಜ ತೋಯಜ (ನಂ) ಪದ್ಮ, ಕಮಲ, ತಾವರೆಹೂವು.

ತೊಯೆ ಜಾಯತೆ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುಮವಿ) "ಜ:" (3-2-99) ।

ತೊಯಜಾಕ್ಷಿ ತೋಯಜಾಕ್ಷೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಮಲದಂತೆ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ತೊಯಜೆ ಇವ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯಾ: । "ಷಕ್" (4-4-113) । "ಜಿಞ್" (4-1-41) ।

ತೊಯಡಿಮ ತೋಯಡಿಂಭ (ಪುಂ) ಆಲಿಕಲ್ಲು, ವಾಯು ಮಂಡಲದಲ್ಲಿ ನೀರಿನ ಆವಿಯು ಗಡ್ಡೆ ಕಟ್ಟಿ ಮಳೆಯೊಡನೆ ಬೀಳುವ ಮುಗಿಲ್ಲಲ್ಲು. ತೊಯಸ್ಯ ಡಿಮ್ಭ ಇವ । "ಪಯೋಧನೋ ಮೇಧಕಫೋ ಧನೋಪಲೋ ಮೇಧಾಸ್ಥಿವಿಜೋದಕತೊಯಡಿಮ್ಭಾ:" ಹಾರಾಂ ।

ತೊಯದ ತೋಯದ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ತೊಯ ದದಾತಿ - ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕ:" (3-2-3) । "ತೇಜಸಸ್ಯ ಧನುಷ: ಪ್ರವೃತ್ತಯೇ ತೊಯದಾನಿವ ಸಹಸ್ರಲೋಚನ:" ರಘುಂ 11-43 । 2. ಮುಸ್ತಕ, ಕೊನ್ನಾರಿಗೆಡ್ಡೆ. (ನಂ) 3. ಫುತ, ತುಪ್ಪ. "ತೊಯದೋ ಮುಸ್ತಕೇ ಮೇಧೇ ಪುಮಾನಾಜ್ಯೇ ನಪುಂಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ) 4. ನೀರನ್ನು ಕೊಡುವವನು, ಜಲದಾನ ಮಾಡುವವನು. ಜಲದಾನದ ಮಹಿಮೆಯು ಬಹಳ ಹಿರಿದಾದುದು.

ತೊಯಧರ ತೋಯಧರ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಧರತಿ - ಧೃ (ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (3-1-134) । ತೊಯಸ್ಯ ಧರ: । 2. ಮುಸ್ತಕ, ಕೊನ್ನಾರಿಗೆಡ್ಡೆ.

ತೊಯಧಾರ ತೋಯಧಾರ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ತೊಯಾನಾಂ ಧಾರಾ ಯತ್ರ । 2. ಮುಸ್ತಕ, ಕೊನ್ನಾರಿಗೆಡ್ಡೆ. 3. ಮಳೆ ಸುರಿಸುವುದು, ವರ್ಷಾಣ. ತೊಯಸ್ಯ ಧಾರ: - ಧೃ (ಧಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (3-3-46) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಧಾರಾ -ಧಾರಾ. 4. ಜಲಧಾರೆ, ನೀರು ಏಕಾಕಾರವಾಗಿ ಸುರಿಯುವುದು. "ಶರಾನ್ ವ್ಯಸೃಜತಾಂ ಶೀಘ್ರಂ ತೊಯಧಾರಾ ಧನಾ ಇವ" ಭಾಂ ವಿರಾಂ ।

ತೊಯಧಿ ತೋಯಧಿ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ತೊಯಾನಿ ಧೀಯಂತೇಸ್ಮಿನ್ - ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಕಿ:" (3-3-92) । 2. ನಾಲ್ಕು ಸಂಖ್ಯೆ.

ತೊಯಧಿಪ್ರಿಯ ತೋಯಧಿಪ್ರಿಯ (ನಂ) ಲವಂಗ.

ತೊಯನಿಧಿ ತೋಯನಿಧಿ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ತೊಯಾನಿ ನಿಧೀಯಂತೇಸ್ಮಿನ್ - ನಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಕಿ:" (3-3-92) । "ಪೂರ್ವಪರೌ ತೊಯನಿಧಿೌ ಬಗಾಹ್ಯ ಸ್ಥಿತ: ಪೃಥಿವ್ಯಾ ಇವ ಮಾನದಂಡ:" ಕುಮಾಂ 1-1 । 2. ನಾಲ್ಕು ಸಂಖ್ಯೆ.

ತೊಯನಿವಿ ತೋಯನೀವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಮುದ್ರದ ನೀರೇ ನೀವಿ (ಹೆಂಗಸರ ಸೀರೆಯ ನಡುಕಟ್ಟು)ಯಾಗಿ ಉಳ್ಳ



ಭೂಮಿ. ತೋಯಂ ಸಮುದ್ರಸಲಿಲಂ ನೀವೀವ ಯಸ್ಯಾ: । "ತೋಯನಿವ್ಯಾ: ಪತಿ ಭೂಮೇರಮ್ಯಪಿಶ್ವದಗಜಾಹ್ವಯೇ" भाग० १-१५-३८ ।

ತೋಪಿಪ್ಪಲಿ ತೋಯಸಿಪ್ಪಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರುಹಿಪ್ಪಲಿ. ತೋಪಿ ಪಿಪ್ಪಲಿವ ।

ತೋಪುಷ್ಪಿ ತೋಯಪುಷ್ಪಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತುಡ್ಡೂರಿ ಹೂವಿನ ಗಿಡ. ತೋಯನ ಬಹುಜಲಸೇವನೇನ ಪುಷ್ಪಾಪ್ಯಸ್ಯಾ: ।

ತೋಪ್ರಸಾದನ ತೋಯಪ್ರಸಾದನ (ಪುಂ) 1. ಚೆಲ್ಲದಗಿಡ, ಕಡಕವೃಕ್ಷ. ತೋಯ ಪ್ರಸಾದಯತಿ—ಪ್ರ+ಪದಲ್ (ವಿಶರಣಾದಿ)+ ಣಿಕ್ "ಲ್ಯು:" (३-१-१३४) । (ನಂ) 2. ಚೆಲ್ಲದ ಬೀಜ.

ತೋಮುಕ್ ತೋಯಮುಕ್ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ತೋಯ ಮುಚ್ಚತಿ—ಮುಚ್ಚಲ್ (ಮೋಕ್ಷಣ) "ಕ್ವಿಪ್" (३-२-७६) । 2. ಕೊನ್ನೂರಿಗಡ್ಡೆ.

ತೋಯನ್ತ್ರ ತೋಯಯಂತ್ರ (ನಂ) 1. ಕಾಲವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಘಟೀಯಂತ್ರ. 2. ಜಲಯಂತ್ರ, ಕೃತಕವಾದ ನೀರಿನ ಬುಗ್ಗೆ, ಕಾಂಡೆ.

ತೋರಾಶಿ ತೋಯರಾಶಿ (ಪುಂ) 1. ತಟಾಕ, ಕೆರೆ. 2. ಸಮುದ್ರ. ತೋಯಾಂ ರಾಶಿಯಂತ್ರ. 3. ನೀರಿನ ಸಮೂಹ. ತೋಯಾಂ ರಾಶಿ: । "ತೋರಾಶಿಸಂಭವಾಪಿ ತೃಣಾಮುತ್ಪಾದಯತಿ" ಕಾದಂ ।

ತೋಯಶೂಕ ತೋಯಶೂಕ (ಪುಂ) ಶೈವಾಲ, ಪಾಚಿ. ತೋಯಸ್ಯ ಶೂಕ ಇವ ।

ತೋಯಸೂಚಕ ತೋಯಸೂಚಕ (ಪುಂ) 1. ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. ತೋಯ ತೋಯವರ್ಷ ಸೂಚಯತಿ—ಸೂಚ (ಪೇಶುನ್ಯೇ) "ಫ್ವಲ್" (३-१-१३३) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಜಿಷ್" । 2. ಮಳೆಯನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಒಂದು ಯೋಗ.

ತೋಯಾತ್ಮನ್ ತೋಯಾತ್ಮನ್ (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಮಾತ್ಮ. ತೋಯಾತ್ಮಾ ಸ್ವರೂಪ ಯಸ್ಯ । "ಯಸ್ಯ ಕೇಶೇಷು ಜಿಮೃತಾ: ನದಿ: ಸರ್ವಾಙ್ಗಸಂಧಿಷು । ಕುಕ್ಷೌ ಸಮುದ್ರಾಶ್ಚತ್ವಾರಸ್ತಸ್ಮೈ ತೋಯಾತ್ಮನೇ ನಮ: " ।

ತೋಯಾಧಾರ ತೋಯಾಧಾರ (ಪುಂ) ಜಲಾಶಯ, ಬಾವಿ, ಕೆರೆ, ಕೊಳ. ತೋಯಾನಾಮಾಧಾರ: । "ತೋಯಾಧಾರಪಥಾಶ್ಚ ವಲ್ಕಲ-ಶಿಖಾನಿಪ್ಯಂದರೇಖಾಙ್ಕಿತಾ: " शाकु० १-१४ ।

ತೋಯಾಧಿಪತಿ ತೋಯಾಧಿಪತಿ (ಪುಂ) ವರುಣ.

ತೋಯಾಶಯ ತೋಯಾಶಯ (ಪುಂ) ಜಲಾಶಯ, ಕೆರೆ, ಕೊಳ. ತೋಯಾನಾಮಾಶಯ: ।

ತೋಯೇಶ ತೋಯೇಶ (ಪುಂ) ವರುಣ.

ತೋಯೋತ್ಸರ್ಗ ತೋಯೋತ್ಸರ್ಗ 1. ನೀರನ್ನು ಬಿಡುವುದು, ಕೆರೆ ಕಾಲುವೆಗಳಿಂದ ಜಮೀನುಗಳಿಗೆ ನೀರು ಬಿಟ್ಟುಕೊಡುವುದು. 2. ಮಳೆಯನ್ನು ಸುರಿಸುವುದು, ಮೋಡದಿಂದ ನೀರು ಬೀಳುವುದು. ತೋಯಾನಾಮುತ್ಸರ್ಗ: । "ತೋಯೋತ್ಸರ್ಗ-ಸ್ತನಿತಮುಖರೋ ಮಾ ಸಮ ಭವಿಷ್ಯತೀವಾಸ್ತಾ: " मेघ० १-३७ ।

ತೋರಣ ತೋರಣ (ಪುಂ) 1. ಹೊರಬಾಗಿಲು, ತೋರಣದ ಬಾಗಿಲು. ತುರನ್ತ್ಯತ್ರ—ತುರ (ತುರಣಹಿಸನಯೋ:) ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (३-३-११७) । "इत्थं रथाश्वेभनिषादिनां प्रगे गणो नृपाणामथ तोरणादहि: " माघ० १२-१ । 2. ತೋರಣ, ಹೊರಬಾಗಿಲಲ್ಲಿ ಅಲಂಕಾರಕ್ಕಾಗಿ ಕಟ್ಟುವ ಮಾವಿನಲೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಮಾಡಿದ ತೆಳುಮಾಲೆ. "भासो-ज्वलत्काञ्चनतोरणानां स्थानान्तरं स्वर्गं इवावभासे" कुमा० ७-३ । "अस्तम्भां तोरणस्रजम्" रघु० १-४१ । (ನಂ) 3. ಕುತ್ತಿಗೆ, ಕತ್ತು. "कन्धरा तोरणं कण्ठी" हारा० ।

ತೋರಣಸ್ತಂಭ ತೋರಣಸ್ತಂಭ (ಪುಂ) ಹೊರಬಾಗಿಲಲ್ಲಿ ತೋರಣವನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಕಂಬ.

ತೋಲ ತೋಲ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಕರ್ಷ, 16 ಮಾಷಗಳ ತೂಕ. 2. ತೂಕಮಾಡುವುದು. ತುಲ (ಉನ್ಮಾನೇ) ಕರ್ಮಂ ಭಾವೇ ವಾ "ಘನ್" (३-३-१९, १८) ।

ತೋಲಕ ತೋಲಕ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವವನು. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ತೂಗುವವನು. ತುಲ (ಉನ್ಮಾನೇ) "ಫ್ವಲ್" (३-१-१३३) । 3. ಒಂದು ಕರ್ಷ. ತೋಲ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ್ವನ್" ।

ತೋಲನ ತೋಲನ (ನಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವುದು. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ತೂಗುವುದು. ತುಲ (ಉನ್ಮಾನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (३-३-११५) । "किंच वस्त्रविक्रयादौ तर्जनी-तोलनेन दशसंख्यादिवत् सूचनबुद्धिवेद्योऽपि अयं न भवति" सा० ६० ५ ।

ತೋಲ್ಯ ತೋಲ್ಯ (ವಿಂ) ತೂಗಲು ಅರ್ಹವಾದ. ತುಲ (ಉನ್ಮಾನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಫ್ಯತ್" (३-१-१२४) ।

ತೋಷ ತೋಷ (ಪುಂ) 1. ಸಂತೋಷ. 2. ತೃಪ್ತಿ. ತುಷ (ತುಷ್ಟಿ) ಭಾವೇ "ಘನ್" (३-३-१८) । "तोषोऽद्यैव च सीताया: परश्चेतसि कल्पस्यति" भट्टि० ९-४५ । 3. ಸ್ವಾಯಂಭುವಮನ್ವಂತರದ ತುಷಿತರೆಂಬ ಗಣದೇವತೆಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. "तोष: प्रतोष: सन्तोषो भद्र: शान्ति-रिडस्पति: । इध्म: कविर्विभु: स्वह्म: सुदेवो रोचनो द्विषट् । तुषिता नाम ते देवा आसन् स्वायम्भुवान्तरे" भाग० ४-१-७ ।

ತೋಷಕ ತೋಷಕ (ವಿಂ) ಸಂತೋಷವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ತುಷ (ತುಷ್ಟಿ) "ಫ್ವಲ್" (३-१-१३४) ।



ತೋಷಣ ತೋಷಣ(ನಂ) 1. ಸಂತೋಷ. ತುಷ (ತುಷ್ಟಿ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಸಂತೋಷವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದು. ತುಷ + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। (ವಿಂ) 3. ಸಂತೋಷವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ತುಷ ಕರಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। 4. ಸಂತೋಷವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ ವಸ್ತು. ತುಷ ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಣಿ -ಣೀ.

ತೋಷಣೀಯ ತೋಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಸಂತೋಷ ಪಡಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. 4. ಸಂತೋಷಪಡಿಸಬೇಕಾದ. ತುಷ (ತುಷ್ಟಿ) + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಾದಿ "ಅನೀಯ್" (೩-೧-೧೬)। "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೬)। -ಯಿತವ್ಯ: -ಯಿತವ್ಯಃ.

ತೋಷಯತ್ ತೋಷಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ತುಷ (ತುಷ್ಟಿ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

ತೋಷಯಿತ್ ತೋಷಯಿತ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಗೊಳಿಸುವವನು. 2. ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸುವವನು. ತುಷ (ತುಷ್ಟಿ) + ಣಿಚ್ "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಪರತೋಷಯಿತಾ ನ ಕಶ್ಚನ ಸ್ವಗತೋ ಯಸ್ಯ ಗುಣೋಸ್ತಿ ದೇಹಿನ:" ಮಾಘಂ ೧೬-೨೮। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿಃ.

ತೋಷಿತ ತೋಷಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ತುಷ (ತುಷ್ಟಿ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ದ್ವಿಷಣಜಲನಿಧಿಶೋಷಣತೋಷಿತಋಷಿಗಣ-ಘೋಷಿತವಿಜಯಘೋಷಣ" ರಘುಂ ಗಂ।

ತೋಷಿನ್ ತೋಷಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷವುಳ್ಳ. 2. ತೃಪ್ತಿ ಹೊಂದಿರುವ. ತೋಷ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫)। 3. ಸಂತೋಷಪಡುವ. 4. ತೃಪ್ತಿಹೊಂದುವ. ತುಷ್ಯತಿ-ತುಷ (ತುಷ್ಟಿ) "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। "ಅಥಾನುರೂಪಾ-ಭಿನಿವೇಶತೋಷಿಣಾ" ಕುಮಾರಂ ೫-೭। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಣಿ -ಣೀ.

ತೋಷ್ಯ ತೋಷ್ಯ (ವಿಂ) "ತೋಷಯಿತವ್ಯ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ತೌಷಿಕ ತೌಷಿಕ (ಪುಂ) ಧನೂರಾಶಿ, ಮೇಷ ಮೊದಲಾಗಿ ಒಂಬತ್ತನೆಯ ರಾಶಿ.

ತೌಷ್ಠ್ಯ ತೌಷ್ಠ್ಯ (ನಂ) ತುಚ್ಛವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಅಯೋಗ್ಯತೆ, ಕೀಳುತನ. ತುಚ್ಛಸ್ಯ ಭಾವ: "ಘ್ನ" (೫-೧-೧೨೪)।

ತೌತಾತಿಕ ತೌತಾತಿಕ (ನಂ) ತುತಾತ (ಹುಮಾರಿಲ) ಭಟ್ಟ ರಿಂದ ಕೃತವಾದ ಶಾಸ್ತ್ರ. ತುತಾತ (ಕುಮಾರಿಲ) ಭಟ್ಟನ

ನಿವೃತ್ತಮ್ - ತುತಾತ "ಠಕ್" (೫-೧-೭೯)। "ನೇವಾಶ್ರಾವಿ ಗುರೋಮತಂ ನ ವಿದಿತಂ ತೌತಾತಿಕಂ (ಕುಮಾರಿಲ) ದರ್ಶನಮ್" ಪ್ರಬಂಧಂ ೨-೩।

ತೌತಿಕ ತೌತಿಕ (ನಂ) 1. ಮುತ್ತು. 2. ಮುತ್ತಿನ ಚಿಪ್ಪು. ತೌದಾದಿಕ ತೌದಾದಿಕ (ವಿಂ) ತುದಾದಿ ಧಾತುಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.

ತೌರ್ಯ ತೌರ್ಯ (ನಂ) ಮುರಜದ್ವನಿ, ಮದ್ದಳೆಯ ಶಬ್ದ. ತೌರ್ಯ ಮುರಜಾದಿ ಭವಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೫೩)।

ತೌರ್ಯತ್ರಿಕ ತೌರ್ಯತ್ರಿಕ (ನಂ) ನೃತ್ಯ ಸಂಗೀತ ವಾದ್ಯ ಈ ಮೂರರ ಮೇಳ. ತೌರ್ಯೋಪಲಕ್ಷಿತಂ ತ್ರಿಕಮ್। "ತೌರ್ಯತ್ರಿಕಂ ನೃತ್ಯಗೀತವಾದ್ಯಮ್" ಅಮಂ। "ಮೃಗಯಾಕ್ಷೋ ದಿವಾಸ್ವಪ್ನ: ಪರಿವಾದ: ಸ್ತ್ರಿಯೋ ಮದ:। ತೌರ್ಯತ್ರಿಕಂ ವೃಥಾಠ್ಯಾ ಚ ಕಾಮಜೋ ದಶಕೋ ಗುಣ:" ಮನುಂ ೭-೪೭। "ವನೇಷಿಪಿ ತೌರ್ಯತ್ರಿಕ-ಮಾರರಾಧ ತಮ್" ನೆಪಂ ೧-೧೦೨।

ತೌಲ ತೌಲ (ನಂ) 1. ತ್ರಾಸು, ತಕ್ಕಡಿ. 2. ಒಂದು ತೊಲದ ತೂಕ. 3. ತುಲಾರಾಶಿ, ಮೇಷ ಮೊದಲಾಗಿ ಏಳನೆಯ ರಾಶಿ. ತುಲಾ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಞ್"।

ತೌಲಿಕ ತೌಲಿಕ (ಪುಂ) ಚಿತ್ರಗಾರ, ಚಿತ್ರಗಳನ್ನು ಬರೆದು ಜೀವಿಸುವವನು. ತುಲಯಾ ಜೀವತಿ - ತುಲಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೨)।

ತೌಲಿಕಿಕ ತೌಲಿಕಿಕ (ಪುಂ) ಚಿತ್ರಗಾರ, ಚಿತ್ರಗಳನ್ನು ಬರೆದು ಜೀವಿಸುವವನು. ತುಲಿಕಯಾ ಜೀವತಿ - ತುಲಿಕಾ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೨)।

ತೌಲಿನ್ ತೌಲಿನ್ (ಪುಂ) ತುಲಾರಾಶಿ, ಮೇಷ ಮೊದಲಾಗಿ ಏಳನೆಯ ರಾಶಿ. ತುಲೇವ ತೌಲಮ್ - ತತ್ ವಿಧತೇಷ್ಯ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೬)। "ತೌಲಿನಿ ಚಿತ್ರಾಂತ್ಯಾರ್ಥ ಸ್ವಾತಿ: ಪಾದತ್ರಯ ವಿಶಾಖಾಯಾ:" ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೦೨-೪।

ತೌಲ್ಯ ತೌಲ್ಯ (ನಂ) 1. ಸಮಾನತೆ. 2. ತೂಕ.

ತೌವರಕ ತೌವರಕ (ಪುಂ) 1. ತೋಗರಿ. ತುವರೀ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಞ್" (೫-೪-೩೮)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"। "ಆಯುಷ್ಕರಂ ತೌವರಕಂ ಕಪಾಯ ಕಠುಪಾಕಿ ಚ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬-೧೯೬। (ವಿಂ) 2. ತೋಗರಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ತುವರಿಯ ಇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"।

ತೌಷಾರ ತೌಷಾರ (ವಿಂ) ಹಿಮಸಂಬಂಧವಾದ, ಹಿಮದಿಂದ ಉಂಟಾದ. ತುಷಾರಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)।

ತೃಕ್ತ ತೃಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ತೃಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ತೃಜ (ಹಾನಿ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ತೃಕ್ತಗೇಹಗಮನಾಯ ನಿಷ್ಪತನ್ ಪುಷ್ಪಕೇತುರಿಹ ಧುಷ್ಯತೇ ಧ್ರುವಮ್" ಯಾದಂ ೧೭-೧೬।



2. ಬಿಡಲು ಯತ್ನಿಸಿದ, ತ್ಯಜಿಸಲು ಉದ್ಯುಕ್ತನಾದ.

“ಅನ್ಯೇ ಚ ಬಹವಃ ಶೂರಾಃ ಮದರ್ಥೇ ತ್ಯಕ್ತಜೀವಿತಾಃ”

ಗೀತಾ ೧-೯.

ತ್ಯಕ್ತಲಜ್ಜ ತ್ಯಕ್ತಲಜ್ಜ (ವಿಂ) ಲಜ್ಜೆಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟಿರುವ, ನಾಚಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. ತ್ಯಕ್ತಾ ಲಜ್ಜಾ ಯೇನ. “ಯೇ ತ್ವಿಹ ವೈ ವೃಷಲೀಪತಯೋ ನಷ್ಟಶೌಚಾಚಾರನಿಯಮಾಸ್ತ್ಯಕ್ತಲಜ್ಜಾಃ ಪಶುಚರ್ಯಾ ಚರಂತಿ” ಭಾಗಂ ೪-೨೬-೨೩.

ತ್ಯಕ್ತವತ್ ತ್ಯಕ್ತವತ್ (ವಿಂ) ಪರಿತ್ಯಜಿಸಿರುವ, ಬಿಟ್ಟಿರುವ, ತೊರೆದಿರುವ. ತ್ಯಜ (ಹಾನಿ) “ಕ್ತವತುಃ” (೩-೨-೧೦೨).

ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬). -ವತ್ -ವತ್.

ತ್ಯಕ್ತವ್ಯ ತ್ಯಕ್ತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಬಿಡಲ್ಪಡುವ, ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಡುವ.

2. ಬಿಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಬಿಡಬೇಕಾದ. ತ್ಯಜ (ಹಾನಿ) “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬).

ತ್ಯಕ್ತುಕಾಮ ತ್ಯಕ್ತುಕಾಮ (ವಿಂ) ತ್ಯಜಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, ಬಿಡಲು ಇಚ್ಛೆಯುಳ್ಳ. ತ್ಯಕ್ತು ಕಾಮೋ ಯಸ್ಯ.

ತ್ಯಕ್ತು ತ್ಯಕ್ತು (ವಿಂ) 1. ಬಿಡುವ, ಪರಿತ್ಯಜಿಸುವ.

2. ತೊರೆದುಬಿಡುವ, ವಿಸರ್ಜಿಸುವ. ತ್ಯಜ (ಹಾನಿ)

“ತು” (೩-೧-೧೩೩). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪).

-ವತ್ -ವತ್.

ತ್ಯಜ - ಹಾನಿ (ಮಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ). ತ್ಯಜತಿ.

ತತ್ಯಾಜ. ತ್ಯಕ್ತಾ. ತ್ಯಜಿಷ್ಯತಿ. ತ್ಯಜತು. ಅತ್ಯಜತ್.

ತ್ಯಜೇತ್. ತ್ಯಜ್ಯಾತ್. ಅತ್ಯಾಕ್ಷೀತ್. ಅತ್ಯಕ್ಷತ್. 1. ತ್ಯಜಿಸು,

ಬಿಡು, ಬಿಟ್ಟುಹೋಗು, ಬಿಟ್ಟು ಹೋರಡು. “ತಸ್ಮಿನ್

ಕಾಲೇ ನಯನಸಲಿಲಂ ಯೋಷಿತಾಂ ಖಂಡಿತಾನಾಂ ಶಾಂತಿ ನೇಯಂ

ಪ್ರಣಯಿಭಿರತೋ ವರ್ಮ ಭಾನೋಸ್ತ್ಯಜಾಶು” ಮೇಘಂ ೧-೩೯.

2. ತ್ಯಜಿಸು, ತೊರೆ, ವಿಸರ್ಜಿಸು. “ಔಷ್ಣ್ಯಂ ತ್ಯಜೇನ್ಮಧ್ಯ-

ಗತೋರ್ಷಪ ಭಾನುಃ ಶೇತಯಂ ನಿಶಾಯಾಮಥವಾ ಹಿಮಾಂಶುಃ” ಭट्टಿಂ

೧೨-೬೪. 3. ಪರಿತ್ಯಜಿಸು, ತೊರೆದುಬಿಡು. “ಜರಾಶೋಕ-

ಸಮಾವಿಷ್ಟಂ ರೋಗಾಯತನಮಾತುರಮ್. ರಜಸ್ವಲಮನಿತಯಂ ಚ ಭೂತಾ-

ವಾಸಮಿಮಂ ತ್ಯಜೇತ್” ಮನುಂ ೬-೭೭. “ತದೇವಾ ಭವತಃ ಕಾಂತಾ

ತ್ಯಜ ವೇನಾಂ ಗೃಹಾಣ ವಾ” ಶಾಕುಂ ೪-೨೬. 4. ತ್ಯಜಿಸು,

ಬಿಟ್ಟುಬಿಡು, ಸಂಬಂಧವನ್ನು ಕಡಿದುಹಾಕು. “ಯಶ್ಚೇತಾನ್

ಪ್ರಾಪ್ನುಯಾತ್ಸರ್ವಾನ್ ಯಶ್ಚೇತಾನ್ ಕೇವಲಾಸ್ತ್ಯಜೇತ್” ಮನುಂ ೨-೯೪.

ಕರ್ಮಣಿಃ-ತ್ಯಜ್ಯತೇ. ತತ್ಯಜೇ. ತ್ಯಕ್ತಾ. ತ್ಯಕ್ಸ್ಯತೇ.

ತ್ಯಜ್ಯತಾಮ್. ಅತ್ಯಜ್ಯತ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿಃ-ತ್ಯಾಜಯತಿ, -ತೇ. ತ್ಯಾಜಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ,

-ಬಭೂವ, -ಆಸ. ತ್ಯಾಜಯಿತಾ. ತ್ಯಾಜಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ.

ತ್ಯಾಜಯತು, -ತಾಮ್. ಅತ್ಯಾಜಯತ್, -ತ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿಃ-ತಿದ್ಯಕ್ಷತಿ. ತಿದ್ಯಕ್ಷಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ.

ತಿದ್ಯಕ್ಷಿತಾ. ತಿದ್ಯಕ್ಷತು. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕ್ರತುಃ-ತ್ಯಕ್ತವ್ಯಃ. ತ್ಯಜನೀಯಃ. ತ್ಯಾಜ್ಯಃ. ತ್ಯಕ್ತಃ.

ತ್ಯಕ್ತವಾನ್. ತ್ಯಜನ್, -ಂತಿ. ತ್ಯಕ್ತುಮ್. ತ್ಯಕ್ತಮ್.

ತ್ಯಜನಮ್. ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ. ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ. “ತ್ಯಾಜ್ಯಂ ದೋಷವದಿತೈಕೇ

ಕರ್ಮ ಪ್ರಾಹುರ್ಮನೀಷಿಣಃ” ಗೀತಾ ೧೮-೩.

ತ್ಯಜತ್ ತ್ಯಜತ್ (ವಿಂ) ಬಿಡುತ್ತಿರುವ. ತ್ಯಜ (ಹಾನಿ)

“ಶತು” (೩-೨-೧೨೪). “ಕಲಿಸಂಧಿಮಾಮ್ರಾತಂ ತ್ಯಜಂತಃ

ಕರ್ಮಕರ್ತುರಮ್” ಯಾದಂ ೨೨-೩೮.

ತ್ಯಜನೀಯ ತ್ಯಜನೀಯ (ವಿಂ) “ತ್ಯಕ್ತವ್ಯ” ಪದದ ಅರ್ಥ.

ತ್ಯಜ (ಹಾನಿ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬).

ತ್ಯದ್ ತ್ಯದ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ. ತ್ಯಜ (ಹಾನಿ)

“ಅದಿಃ” (೩-೧-೧೨೯). ಇದು ಸರ್ವನಾಮಶಬ್ದ.

ಇದರ ಲಿಂಗತ್ರಯದ ರೂಪಗಳು: (ಪುಂ) ಸ್ಯಃ ತಯೋ ತ್ಯೇ.

ತ್ಯಂ ತಯೋ ತ್ಯಾನ್. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ಯಾ ತ್ಯೇ ತ್ಯಾಃ. ತ್ಯಾಂ ತ್ಯೇ ತ್ಯಾಃ.

(ನಂ) ತ್ಯದ್ ತ್ಯೇ ತ್ಯಾನಿ. 2. ಪರೋಕ್ಷದಲ್ಲಿರುವ ಅವನು,

ಅವಳು, ಅದು. (ನಂ) 3. ವಾಯು. 4. ಆಕಾಶ.

“ಸತ್ಯವ್ರತಂ ಸತ್ಯಪರಂ ತ್ರಿಸತ್ಯಂ ಸತ್ಯಸ್ಯ ಯೋನಿ ನಿಹಿತಶ್ಚ ಸತ್ಯೇ.

ಸತ್ಯಸ್ಯ ಸತ್ಯಮೃತಸತ್ಯನೇತ್ರಂ ಸತ್ಯಾತ್ಮಕಂ ತ್ವಾಂ ಶರಣಂ ಪ್ರಪನ್ನಾಃ”

ಭಾಗಂ ೧೦-೨-೨೬. ಸತ್ಯಸ್ಯ ಯೋನಿಮ್ - ಸಂಕ್ಷೇಪದಿಂದ

ಪೃಥಿವ್ಯಪ್ತೇಜಾಸಿ ತ್ಯಚ್ಛಬ್ದೇನ ವಾಕ್ಯಾಕಾಶೋ ಏವ ಸಂಕ್ಷೇಪದಿಂದ

ಸತ್ಯಂ ಭೂತಪಂಚಕಮ್. “ತತ್ಸತ್ಯಮಿತ್ಯಾಚಕ್ಷತೇ” ಇತಿ ಶ್ರುತಿಃ.

ತಸ್ಯ ಭೂತಪಂಚಕಸ್ಯ ಯೋನಿ ಕಾರಣಮ್ ಇತ್ಯರ್ಥಃ. ಪುಂಸ್ಯಾತ್

ಗೃಹಗೃಹ ಕಾರಣನಾದುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಸತ್ಯಯೋನಿ

ಯಾದನು. ನಿಹಿತಶ್ಚ ಸತ್ಯೇ. ತಸ್ಮಿನ್ನೇವ ಭೂತಪಂಚಕೇ

ಅಂತರ್ಯಾಮಿತಯಾ ಸ್ಥಿತಮ್. ಇತ್ಯಾದಿ.

ತ್ಯದಾದಿ ತ್ಯದಾದಿ (ಪುಂ) ತ್ಯದಾದಿಗಣಸೂತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತ

ವಾದ ಶಬ್ದಗಳು. ತ್ಯದ್, ತದ್, ಯದ್, ಏತದ್, ಇದಮ್, ಅದಸ್,

ಏಕ, ದ್ವಿ, ಯುಷ್ಮದ್, ಅಸ್ಮದ್, ಭವತು, ಕಿಮ್ ಇವು ತ್ಯದಾದಿ

ಶಬ್ದಗಳು.

ತ್ಯಾಗ ತ್ಯಾಗ (ಪುಂ) 1. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ, ತನ್ನದಲ್ಲವೆಂದು

ಹೇಳಿ ಇತರಿಗೆ ದಾನಮಾಡುವುದು. ತ್ಯಜ (ಹಾನಿ)

ಭಾವೇ “ಘಜ್” (೩-೩-೧೮). ಇದು ಇನ್ನು ಮುಂದೆ

ನನ್ನದಲ್ಲ ಎಂದು ಹೇಳಿ ದಾನಮಾಡುವುದು ತ್ಯಾಗವೆನಿಸು

ವುದು. ದಾನಮಾಡುವಾಗ “ತುಮ್ಯಮಹಂ ಸಂಪ್ರದೇ ನ ಮಮ”

ಎಂದು ಹೇಳಿ ಕೊಡಬೇಕು. “ತ್ಯಾಗಾಯ ಸಂಭೂತಾರ್ಥಿನಾಂ

ಸತ್ಯಾಯ ಮಿತಭಾಷಿಣಾಮ್” ರಘುಂ ೧-೭. 2. ವರ್ಜಿಸು

ವುದು, ತೊರೆದುಬಿಡುವುದು. ಯಾವ ವಸ್ತುವನ್ನು ತ್ಯಾಗ



ಮಾಡಿದರೂ ತಾಯಿ ತಂದೆ ಪತ್ನಿ ಮತ್ತು ಮಗ ಇವರನ್ನು ಎಂದಿಗೂ ತ್ಯಾಗಮಾಡಕೂಡದು. “ನ ಮಾತಾ ನ ಪಿತಾ ನ ಸ್ತ್ರೀ ನ ಪುತ್ರಸ್ತ್ಯಾಗಮಹೇತಿ” ಮನು ೮-೩೮೯. 3. ಫಲವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸುವುದು, ಫಲಸಂಬಂಧವನ್ನು ಬಿಡುವುದು. “ಸರ್ವಕರ್ಮಫಲತ್ಯಾಗಂ ಪ್ರಾಹುಸ್ತ್ಯಾಗಂ ವಿವಕ್ಷಣಾ:” ಗೀತಾ ೧೮-೨. ಈ ತ್ಯಾಗವು ಮೂರು ವಿಧ: “ತ್ಯಾಗೋ ಹಿ ಪುರುಷವ್ಯಾಘ್ರ ತ್ರಿವಿಧಃ ಸಂಪ್ರಕೀರ್ತಿತ:” ಗೀತಾ ೨೮-೪. (1) ಕರ್ಮಜನ್ಯವಾದ ಸ್ವರ್ಗಾದಿ ಫಲದ ತ್ಯಾಗ. (2) ಕರ್ಮದಲ್ಲಿ ಮಮತೆಯ ತ್ಯಾಗ ಮತ್ತು (3) ಈಶ್ವರನಲ್ಲಿ ಕರ್ತೃತ್ವಾನುಸಂಧಾನಪೂರ್ವಕ ತನ್ನಲ್ಲಿ ಕರ್ತೃತ್ವ ವಿಷಯದ ತ್ಯಾಗ ಎಂದು ಶ್ರೀ ರಾಮಾನುಜ ಭಾಷ್ಯ.

ತಾಮಸ ರಾಜಸ ಸಾತ್ವಿಕಗಳೆಂದು ತ್ಯಾಗವು ಮೂರು ವಿಧವೆಂದು ಶ್ರೀ ಶಂಕರ ಭಾಷ್ಯ.

ನಿಯತವಾದ (ನಿತ್ಯ) ಕರ್ಮದ ತ್ಯಾಗವು ಕೂಡದು. ಯಜ್ಞ ದಾನ ತಪೋರೂಪವಾದ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಎಂದಿಗೂ ಬಿಡಕೂಡದು. ಅದನ್ನು ಅಜ್ಞಾನದಿಂದ ಬಿಡುವುದು “ತಾಮಸ” ತ್ಯಾಗವಾಗುವುದು.

ದೇಹಾಯಾಸ ಭಯದಿಂದ ಕಷ್ಟವೆಂದರಿತು ಕರ್ಮವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸುವುದು “ರಾಜಸ” ತ್ಯಾಗವಾಗುವುದು.

ಫಲಾಭಿಸಂಧಿಯಿಲ್ಲದೆ ಅವಶ್ಯಕತೆವ್ಯವೆಂದರಿತು ಕರ್ಮವನ್ನು ಆಚರಿಸುವುದು “ಸಾತ್ವಿಕ” ತ್ಯಾಗವು. “ನಿಯತಸ್ಯ ತು ಸನ್ಯಾಸಃ ಕರ್ಮಣೋ ನೊಪಪದ್ಯತೇ. ಮೋಹಾತ್ತಸ್ಯ ಪರಿತ್ಯಾಗಃ ತಾಮಸಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ || ದುಃಖಮಿತ್ಯೇವ ಯತ್ಕರ್ಮ ಕಾಯಕಲೇಶಭಯಾತ್ಯಜೇತ್ | ಸ ಕೃತ್ವಾ ರಾಜಸಂ ತ್ಯಾಗಂ ನೈವ ತ್ಯಾಗಫಲಂ ಲಭೇತ್ || ಕಾರ್ಯಮಿತ್ಯೇವ ಯತ್ಕರ್ಮ ನಿಯತಂ ಕ್ರಿಯತೇರ್ಜುನ | ಸಂಜ್ಞಂ ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ ಫಲಂ ಚೈವ ಸ ತ್ಯಾಗಃ ಸಾತ್ವಿಕೋ ಮತಃ” ಗೀತಾ ೧೮-೭, ೮, ೯.

ತ್ಯಾಗಿತಾ ತ್ಯಾಗಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಾನಮಾಡುವಿಕೆ. ತ್ಯಾಗಿನೋ ಭಾವ: “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯). “ತ್ವ:” | -ತ್ವಮ್ -ತ್ವಮ್.

ತ್ಯಾಗಿನ್ ತ್ಯಾಗಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಕೊಡುವವನು, ದಾನಮಾಡುವವನು. ತ್ಯಜ (ಹಾನಿ) “ವಿನ್ಯು” (೩-೨-೧೪೨). “ತ್ಯಾಗಿನ್ ಶುರೇ ವಿಧುಷಿ ಚ ಸಂಸರ್ಗೇಚಿರ್ಜನೋ ಗುಣಿ ಭವತಿ” ಪञ्ಚತಂ ೩-೨೪೩. 2. ಬಿಡುವವನು, ವರ್ಜಿಸುವವನು, ತೊರೆದುಬಿಡುವವನು. “ಯಸ್ತು ಕರ್ಮಫಲತ್ಯಾಗಿ ಸ ತ್ಯಾಗಿ-ತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ” ಗೀತಾ ೧೮-೧೧. 3. ಯಾಗಾದಿ ಕರ್ಮ ಫಲವನ್ನು ಬಿಡುವವನು, ಕರ್ಮಫಲದ ಸಂಬಂಧವನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವವನು. “ನ ದ್ವೇಷತು ಕುಶಲಂ ಕರ್ಮ ಕುಶಲೇ ನಾನುಷಜ್ಯತೇ | ತ್ಯಾಗಿ ಸತ್ವಸಮಾವಿಷ್ಟೋ ಮೇಧಾವಿ ಚಿಕ್ಷುಸ್ಸಂಶಯಃ”

ಗೀತಾ ೧೮-೧೦. 4. ಶೂರ, ಪರಾಕ್ರಮಿ. “ತ್ಯಾಗಿ ದಾತರಿ ಶುರೇ” ಮೇದಿಂ.

ತ್ಯಾಜನ ತ್ಯಾಜನ (ನಂ) ಬಿಡಿಸುವಿಕೆ, ವರ್ಜಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ತ್ಯಜ (ಹಾನಿ) + ಣಿच् “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫). “ಗುಣದೋಷವಿಧಾನೇನ ಸಂಜ್ಞಾನಾಂ ತ್ಯಾಜನೇಚ್ಚಯಾ” ಭಾಗಂ ೧೧-೨೦-೨೬.

ತ್ಯಾಜಿತ ತ್ಯಾಜಿತ (ವಿಂ) 1. ಬಿಡುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತ್ಯಜಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ತ್ಯಜ (ಹಾನಿ) + ಣಿच् ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨). “ತ್ಯಾಜಿತಃ ಫಲಮುತ್ಪಾದಿ: ಭಗವೇಶ್ಚ ಬಹುಭಾ ನೃಪ:” ರಘುಂ ೪-೩೩. 2. ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಇಲ್ಲದಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. “ಭೂಮೋಷಣಾ ತ್ಯಾಜಿತಮಾರ್ಜಭಾವಂ ಕೇಶಾಂತಮಂತಃ ಕುಸುಮಂ ತದೀಯಮ್” ಕುಮಾರಂ ೭-೧೪. 3. ಹೊರಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ತ್ಯಾಜ್ಯ ತ್ಯಾಜ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಬಿಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ವರ್ಜಿಸಲು ತಕ್ಕದಾದ. 2. ಬಿಡಲ್ಪಡುವ, ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಡುವ. ತ್ಯಜ (ಹಾನಿ) “ಞ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪). “ತ್ಯಾಜ್ಯಂ ದೋಷಾದಿತ್ಯೇಕೇ ಕರ್ಮಂ ಪ್ರಾಹುರ್ಮನಿಷಿಣಃ” ಗೀತಾ ೧೮-೩. 3. ಕೊಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ದಾನಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ತ್ಯಜಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ, ತೊರೆದುಬಿಡಲು ಅರ್ಹನಾದ. “ಅಧಿವಿವಿಕ್ಷಾ ತು ಯಾ ನಾರೀ ನಿಗಂಚ್ಛೇದ್ವಿಷಿತಾ ಗೃಹಾತ್ | ಸಾ ಸದ್ವ: ಸನಿರೋದ್ವಯಾ ತ್ಯಾಜ್ಯಾ ವಾ ಕುಲಸನ್ನಿಧೌ” ಮನುಂ ೯-೮೩.

ತ್ಯಾದ ತ್ಯಾದ (ಪುಂ) ಅವನ ಮಗ. ತ್ಯಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ — ತ್ಯದ್ “ಅನ್” (೪-೧-೯೨). ವಾ “ಫಿಜ್” (ವಾಂ ೪-೧-೧೫೬). ತ್ಯಾದಾಯಿನಿ: ತ್ಯಾದಾಯಿನಿ.

ತ್ರಪಾ ತ್ರಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಜ್ಜೆ, ನಾಚಿಕೆ. ತ್ರಪು (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ “ಅಜ್” (೩-೩-೧೦೪). “ಹತೇಽಪಿ ಭಾರೆ ಮಹತ್ಸತ್ರಪಾ-ಭರಾದುವಾಹ ದುಃಖೇನ ಭೃಶಾಂತಂ ಶಿರಃ” ಮಾಘಂ ೧-೫೭. “ನೃಪಂ ವರ್ಷವರೇಮನುಷ್ಯಗಣನಾಭಾವಾದಪಾಸ್ಯ ತ್ರಪಾಮ್” ರತ್ನಾಂ ೨-೩. 2. ಕುಲಟೆ, ಸ್ವೈರಿಣಿ, ವೃಭಿಚಾರಿಣಿ. ತ್ರಪತೇಜನಯಾ— ತ್ರಪು ಕರಣಂ “ಅಜ್” | “ತ್ರಪಾ ಲಜ್ಜಾಕುಲಟಯೋ:” ಮೇದಿಂ. 3. ಕುಲ, ವಂಶ. 4. ಕೀರ್ತಿ, ಯಶಸ್ಸು. (ವಿಂ) 5. ನಾಚಿಕೆಯುಳ್ಳವನು. ತ್ರಪಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಅಚ್” (೪-೨-೧೨೭).

ತ್ರಪಾಕ ತ್ರಪಾಕ (ಪುಂ) ಮೇಚ್ಚುಜಾತಿಯವನು. ತ್ರಪು (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್) “ಆಕ:” ಬಾಹುಂ.

ತ್ರಪಾಕರ ತ್ರಪಾಕರ (ವಿಂ) ಲಜ್ಜೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ತ್ರಪಾಯಾ: ಕರ: | “ತ್ರಪಾಕರಸ್ತಥಾಪ್ಯೇಶ ಯತಿಷ್ಯೇ” ಭದ್ರಿಂ ೪-೨೯.



ತ್ರಪಾಕೃತ್ ತ್ರಪಾಕೃತ್ (ವಿಂ) ಲಜ್ಜೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ನಾಚಿಕೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. "ಇತಿ ತ್ರಪಾಕೃದ್ವಚನಂ ನ ಕಿ ನಃ" ನೆಪಂ ೮-೧೦೩.

ತ್ರಪಾವತ್ ತ್ರಪಾವತ್ (ವಿಂ) ಲಜ್ಜೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ನಾಚಿಕೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ತ್ರಪಾಸ್ತಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪). "ಆಲಿಂಗಿತಾಃ ಸಹಸಾ ತ್ರಪಾಂಸ್ತ್ರಾಸಾಃಭಿಲಾಷಾನ್ಯುಗತೌ ರತಾದೌ" ಭೃಂ ೧೧-೧೩. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬). -ವತೀ -ವತಿ. "ವಾಗ್ಧೇವತಾಃ ವದಂತೇಬಿಂಬಂ ತ್ರಪಾವತೀ ಸಾಕೃತ ಸಾಮಿದೃಶಮ್" ನೆಪಂ ೧೪-೩೦.

ತ್ರಪು ತ್ರಪು (ನಂ) 1. ಸೀಸಲೋಹ. ತ್ರಪು (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್) "ತಃ" (೩೦ ೧-೧೦). 2. ತಗರ. "ತ್ರಪು ಪಿಂಚಡಮ್. ರಜ್ಜವಜ್ಜೆ" ಅಮಂ. "ತ್ರಪು ಸೋಸಕರಜ್ಜಯೋಃ" ನಾನಾರ್ಥರಂ.

ತ್ರಪುಡೀ ತ್ರಪುಡೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣ್ಣಜಾತಿಯ ಯಾಲಕ್ಕಿ.

ತ್ರಪ್ಸ್ಯ ತ್ರಪ್ಸ್ಯ (ನಂ) ತಕ್ಕ, ಮಜ್ಜೆಗೆ.

ತ್ರಯ ತ್ರಯ (ನಂ) 1. ಮೂರು, ಮುಮ್ಮಡಿ, ಮೂರರ ಸಮುದಾಯ, ಮೂರರ ಗುಂಪು. ತ್ರಯೋವಯವಾ ಅಸ್ಯ "ಅಯವ್" (೪-೨-೪೩). "ಮುನಿತ್ರಯಂ ನಮಸ್ಕೃತ್ಯ ತದ್ವಕ್ತೀಃ ಪರಿಭಾಷ್ಯ ಚ" ಸಿಂ ಕೌಂ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೫). ತ್ರಯಿ ತ್ರಯಿ. 2. ಯುಗ್ಮಜುಃಸಾಮಗಂಠ ಮೂರು ವೇದಗಳ ಸಮುದಾಯ. "ಇತಿ ವೇದಾಸ್ತ್ರಯಸ್ತ್ರಯಿ" ಅಮಂ. "ತ್ರಯಿ ವಿಗ್ರಹವತ್ಯೇವ ಸಮಮಧ್ಯಾತ್ಮವಿವಿಧಾ" ಮಾಲಂ ೧-೧೪. 3. ಮೂರರ ಸಮುದಾಯ. "ವ್ಯದೋತಿಷ್ಠ ಸಭಾವೇದಾಮಸೌ ನರಶಿಕ್ಷಿತ್ರಯಿ" ಮಾಘಂ ೨-೩. 4. ಪುರುಂದ್ರಿ, ಗೃಹಿಣಿ, ಪತಿಪುತ್ರಾದಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹೆಗಸು. 5. ಸುಮತಿ, ಒಳ್ಳೆಯ ಬುದ್ಧಿ. "ತ್ರಯಿ ತ್ರಿವೇದಾ ತ್ರಿತಯೇ ಪುರಂದ್ರಾಃ ಸುಮತಾವಪಿ" ವಿಶ್ವಂ.

ತ್ರಯಃಪಂಚಾಶತ್ ತ್ರಯಃಪಂಚಾಶತ್ (ವಿಂ) ಐವತ್ತಮೂರನೆಯ. ತ್ರಯಃಪಂಚಾಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೫). -ಪಂಚಾಶತಿ -ಪಂಚಾಶತಿ.

ತ್ರಯಃಪಂಚಾಶತ್ ತ್ರಯಃಪಂಚಾಶತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಐವತ್ತಮೂರು. ತ್ರಯಃಪಂಚಾಶತ್ ಅಧಿಕಾ ಪಂಚಾಶತ್ ವಾ-ತ್ರಿಶಬ್ದಸ್ಯ ತ್ರಯಸ್ ಆದೇಶಃ (೬-೩-೪೮).

ತ್ರಯಃಪಂಚಾಶತ್ತಮ ತ್ರಯಃಪಂಚಾಶತ್ತಮ (ವಿಂ) ಐವತ್ತಮೂರನೆಯ. ತ್ರಯಃಪಂಚಾಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ ಡಟೋ ವಾ "ತಮಟ್" (೪-೨-೫೬). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೫). -ತಮಿ -ತಮಿ.

ತ್ರಯಶ್ಚತ್ವಾರಿಶತ್ ತ್ರಯಶ್ಚತ್ವಾರಿಶತ್ (ವಿಂ) ನಲವತ್ತಮೂರನೆಯ. ತ್ರಯಶ್ಚತ್ವಾರಿಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮).

ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೫). -ಚತ್ವಾರಿಶತಿ -ಚತ್ವಾರಿಶತಿ.

ತ್ರಯಶ್ಚತ್ವಾರಿಶತ್ ತ್ರಯಶ್ಚತ್ವಾರಿಶತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಲವತ್ತಮೂರು. ತ್ರಯಶ್ಚತ್ವಾರಿಶತ್ ಅಧಿಕಾ ಚತ್ವಾರಿಶತ್ ವಾ-ತ್ರಿಶಬ್ದಸ್ಯ ತ್ರಯಸ್ ಆದೇಶಃ (೬-೩-೪೮).

ತ್ರಯಶ್ಚತ್ವಾರಿಶತ್ತಮ ತ್ರಯಶ್ಚತ್ವಾರಿಶತ್ತಮ (ವಿಂ) ನಲವತ್ತಮೂರನೆಯ. ತ್ರಯಶ್ಚತ್ವಾರಿಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ ಡಟೋ ವಾ "ತಮಟ್" (೪-೨-೫೬). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೫). -ತಮಿ -ತಮಿ.

ತ್ರಯಸ್ತ್ರಿಶತ್ ತ್ರಯಸ್ತ್ರಿಶತ್ (ವಿಂ) ಮೂವತ್ತಮೂರನೆಯ. ತ್ರಯಸ್ತ್ರಿಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೫). -ತ್ರಿಶತಿ -ತ್ರಿಶತಿ.

ತ್ರಯಸ್ತ್ರಿಶತ್ ತ್ರಯಸ್ತ್ರಿಶತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂವತ್ತಮೂರು. ತ್ರಯಶ್ಚತ್ವಾರಿಶತ್ ಅಧಿಕಾ ತ್ರಿಶತ್ ವಾ-ತ್ರಿಶಬ್ದಸ್ಯ ತ್ರಯಸ್ ಆದೇಶಃ (೬-೩-೪೮).

ತ್ರಯಸ್ತ್ರಿಶತ್ತಮ ತ್ರಯಸ್ತ್ರಿಶತ್ತಮ (ವಿಂ) ಮೂವತ್ತಮೂರನೆಯ. ತ್ರಯಸ್ತ್ರಿಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ ಡಟೋ ವಾ "ತಮಟ್" (೪-೨-೫೬). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೫). -ತಮಿ -ತಮಿ.

ತ್ರಯಸ್ತ್ರಿಶತ್ಪತಿ ತ್ರಯಸ್ತ್ರಿಶತ್ಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. ತ್ರಯಸ್ತ್ರಿಶತೋ ದೇವಾನಾಂ ಪತಿಃ. 2. ಪ್ರಜಾಪತಿ, ಬ್ರಹ್ಮ. ಅಷ್ಟವಸುಗಳು (8) ಏಕಾದಶರುದ್ರರು (11) ದ್ವಾದಶಾದಿತ್ಯರು (12) ಇಂದ್ರ ಮತ್ತು ಬ್ರಹ್ಮ ಇವರು 33 ದೇವತೆಗಳು. ಇವರ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಇಂದ್ರ ಮತ್ತು ಬ್ರಹ್ಮ ಇವರು ಶ್ರೇಷ್ಠರಾದುದರಿಂದ ಎಲ್ಲಾ ದೇವತೆಗಳಿಗೂ ಇವರು ಪತಿಗಳಾದರು. "ಕತಮೇ ತೇ ತ್ರಯಸ್ತ್ರಿಶಾದಿತೃಣೌ ವಸವಃ ಏಕಾದಶ ರುದ್ರಾಃ ದ್ವಾದಶಾದಿತೃಣಾಸ್ತು ಏಕತ್ರಿಶತ್ ಇಂದ್ರಶ್ಚೈವ ಪ್ರಜಾಪತಿಶ್ಚ ತ್ರಯಸ್ತ್ರಿಶಾವಿತಿ" ಶತಪಥಂ.

ತ್ರಯೀತನು ತ್ರಯೀತನು (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ತ್ರಯೀ ವೇದಾಃ ತನುರಸ್ಯ.

ತ್ರಯೀಧರ್ಮ ತ್ರಯೀಧರ್ಮ (ಪುಂ) ವೇದವಿಹಿತವಾದ ಧರ್ಮ, ವೈದಿಕ ಧರ್ಮ. ತ್ರಯೀ ವೇದತ್ರಯೇಣ ವಿಹಿತೋ ಧರ್ಮಃ. "ಎವಂ ತ್ರಯೀಧರ್ಮಮನುಪ್ರಪನ್ನಾ ಗತಾಗತಂ ಕಾಮಕಾಮಾ ಲಬಂತೇ" ಗೀತಾ ೯-೨೧.

ತ್ರಯೀಮಯ ತ್ರಯೀಮಯ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಸೂರ್ಯನ ರಥ. "ಎವಂ ಮುಹೂರ್ತೇನ ತ್ರಯಸ್ತ್ರಿಶತ್ಲಕ್ಷಯೋಜನಾನ್ಯಷ್ಟಶತಾಧಿಕಾನಿ ಸೌರೋ ರಥಸ್ತ್ರಯೀಮಯೋಽಸೌ ಚತಸೃಃ ಪರಿವರ್ತತೇ ಪುರೀಃ" ಭಾಗಂ ೪-೨೧-೧೨.







ಕೃತು:-ತಸಿತವ್ಯಮ್ | ತಸನೀಯಮ್ | ತಾಸ್ಯಮ್ | ತಸ್ತ: |  
ತಸ್ತವಾನ್, -ವತೀ | ತಸ್ಯನ್, -ಂತೀ; ತಸನ್, -ಂತೀ |  
ತಸಿತುಮ್ | ತಸ್ತಮ್ | ತಸನಮ್ | ತಸಿತವಾ | ಸಂತ್ರಸ್ಯ |

ಪ್ಯಂತಾತ್ ಕೃತು:-ತಾಸಯಿತವ್ಯ: | ತಾಸನೀಯ: | ತಾಸ್ಯ: |  
ತಾಸಿತ: | ತಾಸಿತವಾನ್, -ವತೀ | ತಾಸಯನ್, -ಂತೀ |  
ತಾಸಯಮಾನ್: | ತಾಸಯಿತುಮ್ | ತಾಸಿತಮ್ | ತಾಸನಮ್ |  
ತಾಸಯಿತವಾ | ಸಂತ್ರಾಸ್ಯ |

ಸಮ್ + ತಸೀ = ಸಂತ್ರಸ್ಯತಿ | ಸಂತ್ರಾಸ: | ಹೆಚ್ಚು ಭಯ  
ಪಡೆ, ಬಹಳ ಹೆದರು. "ವಿಚಕಾರ ತತೋ ರಾಮ: ಶರಾನ್  
ಸಂತಪ್ಸುರ್ದಿಷ:" ಭೃಂ ೧೪-೩೯ |

ತಸ್ತ ತ್ವಂ (ವಿಂ) 1. ಕಳವಳಗೊಂಡ, ಗಾಬರಿಗೊಂಡ. ತಸೀ  
(ಉದ್ದೇಶ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | "ತಸ್ತ: ಸಮಸ್ತಜನಹಾಸ-  
ಕರ: ಕರಣೋಸ್ತಾವತ್ಸರ: ಪ್ರಸರಮುಲ್ಲಲಯಾಂಚಕಾರ" ಮಾಘಂ  
೪-೭ | "ತಸ್ತೈಕಹಾಯನಕುರಜ್ಜವಿಲೋದೃಷ್ಟಿ:" ಮಾಲತೀಂ ೪-೮ |  
2. ಹೆದರಿದ, ಭಯಗೊಂಡ. "ಜುಗೋಪಾತ್ಮಾನಮತಸ್ತೋ ಭಜೆ  
ಧರ್ಮಮನಾತುರ:" ರಘುಂ ೧-೨೧ |

ತಸ್ತವತ್ ತ್ವಂವತ್ (ವಿಂ) ಭಯಗೊಂಡ, ಹೆದರಿದ.  
ತಸೀ (ಉದ್ದೇಶ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ವತೀ -ವತೀ |

ತಸ್ತು ತ್ವಂ (ವಿಂ) ಭೀರು, ಭಯದ ಸ್ವಭಾವದ, ಅಂಜು  
ಪುರಕ. ತಸೀ (ಉದ್ದೇಶ) "ಕ್ತು:" (೩-೨-೧೪೦) |  
"ಅಭಾನುಕೂಲಶ್ರವಣಪ್ರತೀತಾಮತಸ್ತುಭಿರ್ಯುಕ್ತಧುರಂ ತುರಜ್ಜೈ:" ರಘುಂ  
೧೪-೪೭ |

ತಸ್ಯತ್ ತ್ವಂವತ್ (ವಿಂ) ಹೆದರುತ್ತಿರುವ, ಭಯಪಡು  
ತ್ತಿರುವ. ತಸೀ (ಉದ್ದೇಶ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |  
"ತಸ್ಯನ್ ವೇರಾಯಮಾಣೇಭ್ಯ: ಶೂನ್ಯಮನ್ವವಸದ್ವನಮ್" ಭೃಂ  
೪-೭೫ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಂತೀ -ಂತೀ |  
"ತಸ್ಯಂತೀಂ ತಾಂ ಸಮಾಧಾಯ ಯಾತೋ ರಾತ್ರಿವರಾಜಲಯಮ್" ಭೃಂ  
೪-೯೫ |

ತಾಣ ತ್ವಂ (ನಂ) 1. ರಕ್ಷಣ, ಕಾಪಾಡುವುದು. ತ್ರೈಡ್  
(ಪಾಲನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | ತ್ರೈಡ್ ಭಾವೇ  
"ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) ವಾ | ತಕಾರಸ್ಯ ನಕಾರ: (೮-೨-೫೬) |  
"ಆರ್ತತ್ರಾಣಾಯ ವ: ಶಸ್ತ್ರಂ ನ ಪ್ರಹರ್ತುಮನಾಗಸಿ" ಶಾಕುಂ ೧-೧೦ |  
2. ಕವಚ, ಅಂಗಿ. ತ್ರೈಡ್ ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭) |  
"ದಂಶಿತಾ ವಿವಿಧೇಸ್ತ್ರಾಣೇವಿಚಿತ್ರಾಯುಧಪಾಣಯ:" ಭಾಂ ವನಂ  
೧೬೮-೧೪ | (ವಿಂ) 3. ರಕ್ಷಕ, ಕಾಪಾಡುವವನು. ತ್ರೈಡ್  
ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) | "ತ್ವಂ ಪ್ರಭಾಸ್ವಮಭಿಪ್ರೇತಂ  
ತ್ವಂ ನಸ್ತ್ರಾಣಮನುತ್ತಮಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೩-೧೮ |

4. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಾಪಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ತ್ರೈಡ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:"  
(೩-೨-೧೦೨) | ತಸ್ಯ ವಾ ನಕಾರ: (೮-೨-೫೬) |

ತಾತವತ್ ತ್ವಂವತ್ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಿಸಿದವನು, ಕಾಪಾಡಿದವನು.  
ತ್ರೈಡ್ (ಪಾಲನೆ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ವತೀ -ವತೀ |

ತಾತ ತ್ವಂ (ನಂ) 1. ರಕ್ಷಣ, ಕಾಪಾಡುವುದು. ತ್ರೈಡ್  
(ಪಾಲನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) | (ವಿಂ) 2.  
ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಾಪಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ತ್ರೈಡ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:"  
(೩-೨-೧೦೨) | "ದುರ್ದೇಶೇವಸ್ತು ಮಮತ್ವಗ್ರಾಹಿ: | ಸರ್ವಥಾ  
ತಾತೋಽಸ್ಮಿ ಭವತ್ಯಾ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೫ |

ತಾತವ್ಯ ತ್ವಂವತ್ (ವಿಂ) 1. ಕಾಪಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಕಾಪಾ  
ಡಲು ಅರ್ಹನಾದ. 3. ಕಾಪಾಡಬೇಕಾದ. ತ್ರೈಡ್ (ಪಾಲನೆ)  
"ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) | "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) |  
ತಾಣೀಯಮ್ ತ್ವಂವತ್ಯಮ್ |

ತಾತ್ ತ್ವಂ (ವಿಂ) ಕಾಪಾಡುವವನು, ರಕ್ಷಿಸುವವನು.  
ತ್ರೈಡ್ (ಪಾಲನೆ) "ತತ್" (೩-೧-೧೩೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | -ತೀ -ತೀ |

ತಾಪುಷ ತ್ವಂವತ್ (ವಿಂ) 1. ತಗರದ ಪಾತ್ರೆ, ತಗರದಿಂದ  
ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಪಾತ್ರೆ. ತಾಪುಷೋ ವಿಕಾರ: "ಅಪ್" ಪುಗಾ-  
ಗಮಶ್ಚ (೪-೩-೧೩೮) | 2. ಸೀಸದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ  
(ಪಾತ್ರೆ).

ತಾಯಂತೀ ತ್ವಂಯಂತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರಾವರಿ ಬಳ್ಳಿ. ತ್ರೈಡ್  
(ಪಾಲನೆ) "ವಿವಪ್" (ವಾಂ ೩-೩-೧೪) | ತಾ ಅಯತಿ-ಇ  
(ಗತೀ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) |

ತಾಯಮಾಣ ತ್ವಂಯಮಾಣ (ವಿಂ) 1. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ,  
ಕಾಪಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ತ್ರೈಡ್ (ಪಾಲನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಪ್"  
(೩-೨-೧೨೪) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಮಾಣಾ -ಮಾಣಾ. 2. ನೀರಾವರಿ  
ಬಳ್ಳಿ. "ಕರವೀರಸುಮನ:ಶಾಸ್ತ್ರಪುಷ್ಪಪಾಮಾರ್ಗತ್ರಾಯಮಾಣಾಶೋಕ-  
ರೋಹಿಣಿವೈಜಯಂತೀಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತೀಪ್ರಭೃತೀನಿ ಸಮಾಸೇನ ತಿಕ್ತೋ  
ವರ್ಗ:" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೨-೧೧ |

ತಾಯೋದಶ ತ್ವಂಯೋದಶ (ವಿಂ) ತ್ರಯೋದಶಿಯಲ್ಲಿ  
ಉಂಟಾದ, ತ್ರಯೋದಶೀಸಂಬಂಧವಾದ. ತಾಯೋದಶಿ "ಅಪ್"  
(೪-೩-೧೬) |

ತಾಸ ತ್ವಂ (ಪುಂ) 1. ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ. ತಸೀ (ಉದ್ದೇಶ)  
"ಧಪ್" (೩-೩-೧೮) | "ಅಂತ: ಕಂಚುಕಿಕಂಚುಕಸ್ಯ  
ವಿಶತಿ ತಾಸಾದಯಂ ವಾಮನ:" ರತ್ನಾಂ ೨-೩ | 2. ರತ್ನದಲ್ಲಿ  
ರುವ ಬಡಕು ಬಿರುಕು ಮುಂತಾದ ದೋಷ. "ತಾಸೋ  
ಭಯೇ ಮಣೋದೇಶಿ" ಮೇದಿಂ |



**ಶಾಸಕರ ತ್ರಾಸಕರ** (ವಿಂ) ಭಯಪಡಿಸುವುದು. ಹೆದರಿಸುವ. ಶಾಸಂ ಕರೋತಿ—ಓ ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ಟ:” (೩-೨-೨೦)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೫)। -ಕರೀ -ಕರೀ. “ಸ್ಥಿತಾಂ ಕ್ಷಿತೌ ಶಾಂತಶಿಕ್ಷಾಪ್ರತಾನಾಂ ತಾರಾಮಿವ ಶಾಸಕರೀಂ ಜನಸ್ಯ” ಭೃಂ ೧೨-೩।

**ಶಾಸಕೃತ್ ತ್ರಾಸಕೃತ್** (ವಿಂ) ಭಯಪಡಿಸುವುದು. ಹೆದರಿಸುವ. ಶಾಸಂ ಕರೋತಿ—ಓ ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬)। “ಸೌಮ್ಯ: ಷಡ್ದಿವತುರ್ದಶಾಷ್ಟಮಗತ: ಸರ್ವೇಷ್ಯು-ಪಾಂತೇ ಶುಭಾ: ಶುಕ್ರ: ಸಪ್ತಮಷಡ್ದಶಕ್ಷಸಹಿತ: ಶಾರ್ದೂಲವತ್ ಶಾಸಕೃತ್” ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೦೪-೪।

**ಶಾಸನ ತ್ರಾಸನ** (ನಂ) 1. ಭಯಪಡಿಸುವಿಕೆ, ಹೆದರಿಸುವುದು. ತ್ರಸಿ (ಉದ್ದೇಶ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫)। (ವಿಂ) 2. ಭಯಪಡಿಸುವ, ಹೆದರಿಸುವ. ತ್ರಸಿ + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪)।

**ಶಾಸನೀಯ ತ್ರಾಸನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಹೆದರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಹೆದರಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. 3. ಹೆದರಿಸಲು ಶಕ್ತನಾದ. ತ್ರಸಿ (ಉದ್ದೇಶ) + ಣಿಚ್ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬)। “ತವ್ಯ:” (೩-೧-೯೬)। -ಯಿತವ್ಯ: -ಯಿತವ್ಯ:.

**ಶಾಸಯತ್ ತ್ರಾಸಯತ್** (ವಿಂ) ಹೆದರಿಸುತ್ತಿರುವ. ತ್ರಸಿ (ಉದ್ದೇಶ) + ಣಿಚ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

**ಶಾಸಯಮಾನ್ ತ್ರಾಸಯಮಾನ್** (ವಿಂ) ಹೆದರಿಸುತ್ತಿರುವ. ತ್ರಸಿ (ಉದ್ದೇಶ) + ಣಿಚ್ “ಶಾನ್” (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಟಾಪ್” (೪-೧-೪)। -ಮಾನ್ -ಮಾನ್.

**ಶಾಸಿತ ತ್ರಾಸಿತ** (ನಂ) 1. ಭಯಪಡಿಸುವುದು. ತ್ರಸಿ (ಉದ್ದೇಶ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ “ಕ್ತ:” (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಹೆದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಭಯಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ತ್ರಸಿ + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)।

**ಶಾಸಿತವತ್ ತ್ರಾಸಿತವತ್** (ವಿಂ) ಭಯಪಡಿಸಿದವನು, ಹೆದರಿಸಿದವನು. ತ್ರಸಿ (ಉದ್ದೇಶ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತವತ್” (೩-೨-೧೦೨)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)।

**ತ್ರಿ ತ್ರಿ** (ತ್ರಿಂ ಬಂ ವಂ) ಮೂರು. ಇದು ನಿತ್ಯಬಹುವಚನಾಂತ ಶಬ್ದ. ಇದರ ಲಿಂಗತ್ರಯದ ರೂಪಗಳು: (ಪುಂ) ತ್ರಯ: ತ್ರಿನ್ ತ್ರಿಭಿ: ತ್ರಿಮ್ಯ: ತ್ರಿಮ್ಯ: ತ್ರಯಾಣಾಮ್ ತ್ರಿಭು। “ಹಿರಣ್ಯಗರ್ಭಾದೃಷಯೋ ಬಭೂವು: ವಸಿಷ್ಠಭಗವತ್ಪ್ರಸನ್ನಾ ಯೇ” ಮಂ ವೀಂ ೩-೭। “ಉದ್ಧಾತ: ಪ್ರಣವೋ ಯಾಸಾಂ ನ್ಯಾಯೇಸ್ತ್ರಿಭಿರು-ದೀರಣಮ್” ಕುಮಾಂ ೨-೧೨। (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಿಸ್ರ: ತಿಸ್ರ: ತಿಸ್ಸುಭಿ: ತಿಸ್ಸುಮ್ಯ: ತಿಸ್ಸುಮ್ಯ: ತಿಸ್ಸುಣಾಮ್ ತಿಸ್ಸುಪ್। “ಷಡ್ಗುಣಾ:

ಶಕ್ತಯಸ್ತಿಸ್ರ: ಸಿದ್ಧಯಶ್ಚೋದಯಾಸ್ತ್ರಯ:” ಮಾಧಂ ೨-೨೬। (ನಂ) ತ್ರಿಣಿ ತ್ರಿಣಿ ತ್ರಿಭಿ: ತ್ರಿಮ್ಯ: ತ್ರಿಮ್ಯ: ತ್ರಯಾಣಾಮ್ ತ್ರಿಭು। “ತ್ರಿಣಿ ವರ್ಷಾಣ್ಯುದೀಕ್ಷೇತ ಕುಮಾರ್ಯತುಮತೀ ಸತೀ। ಉರ್ವ್ವಂ ತು ಕಾಲಾದೇತಸ್ಮಾದ್ವಿಂದೇತ ಸದೃಶಂ ಪತಿಮ್” ಮನುಂ ೯-೯೦।

**ತ್ರಿಶ ತ್ರಿಂಶ** (ವಿಂ) ಮೂವತ್ತನೆಯ, ತ್ರಿಶತ: ಪೂರ್ಣ: “ಡಟ್” (೫-೨-೪೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೫)। ತ್ರಿಶೋ ತ್ರಿಂಶೇ.

**ತ್ರಿಶಕ ತ್ರಿಂಶಕ** (ವಿಂ) ಮೂವತ್ತರಿಂದ ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೂವತ್ತು ವಸ್ತುಗಳಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ತ್ರಿಶತಾ ಕ್ರೀತ: “ಓವುನ್” (೫-೧-೨೪)।

**ತ್ರಿಶತ್ ತ್ರಿಂಶತ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂವತ್ತು. ತ್ರಯೋ ದಶತ: ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ “ಶತ್” ಪ್ರಕೃತೇ: ತ್ರಿನ್ ಭಾವಶ್ಚ ನಿಪಾಂ (೫-೧-೫೯)। “ತ್ರಿಶದ್ವರ್ಷೋ ವಹೇತ್ ಕನ್ಯಾಂ ಹೃದ್ಯಾಂ ದ್ವಾದಶ-ವಾರ್ಷಿಕೀಮ್” ಮನುಂ ೯-೯೪।

**ತ್ರಿಶತಿ ತ್ರಿಂಶತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂವತ್ತು. ತ್ರಿಶತ್ ಪೃಷೋಂ। “ಪಶ್ಚಕಂ ಮಂಡಲಂ ಜಯ್ಯಂ ತ್ರಿಶತ್ಯಾಂ ಚ ಮನೀಷಿಭಿ:” ಕಾಮಂದಂ।

**ತ್ರಿಶತ್ಕ ತ್ರಿಂಶತ್ಕ** (ವಿಂ) ಮೂವತ್ತರ ಅಳತೆಯುಳ್ಳ. ತ್ರಿಶತ್ ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ “ಕನ್” (೫-೧-೨೪)।

**ತ್ರಿಶತ್ತಮ ತ್ರಿಂಶತ್ತಮ** (ವಿಂ) ಮೂವತ್ತನೆಯ. ತ್ರಿಶತ: ಪೂರ್ಣ: “ತಮಡ್” (೫-೨-೫೬)। “ತ್ರಿಶತ್ತಮಮಹರ್ಯಾತಂ ಮತ್ವಾ ಪ್ರತ್ಯಾಗಮಾವಧಿಮ್” ಭೃಂ ೭-೮೯। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೫)। -ತಮಿ -ತಮಿ.

**ತ್ರಿಶತ್ಪತ್ರ ತ್ರಿಂಶತ್ಪತ್ರ** (ನಂ) ಕುಮುದ, ಬಿಳಿಕಮಲ. ತ್ರಿಶತ್ ಪತ್ರಾಣಿ ದಲಾನಿ ಪ್ರತಿಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ।

**ತ್ರಿಶಾಂಶ ತ್ರಿಂಶಾಂಶ** (ಪುಂ) ರಾಶಿಯ ಮೂವತ್ತನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. ತ್ರಿಶ: ತ್ರಿಶತ್ಪೂರ್ಣ: ಅಂಶ:।

**ತ್ರಿಕ ತ್ರಿಕ** (ನಂ) 1. ಮೂರು ಸಂಖ್ಯೆ. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಸಂಖ್ಯೆ: “ಕನ್” (೫-೧-೫೮)। 2. ಮೂರರ ಗುಂಪು, ಮೂರರ ರಾಶಿ. “ದಂಡಸ್ಯ ಪಾತನಶ್ಚೈವ ವಾಕ್ಪಾರುಷ್ಯಾರ್ಥದೃಷಣಂ। ಕ್ರೋಧಜೇಷ್ಠಿ ಗಣೇ ವಿಧಾತ್ ಕಷ್ಟಮೇತತ್ ತ್ರಿಕಂ ಸದಾ” ಮನುಂ ೭-೫೧। 3. ತ್ರಿಕಟು, ಶುಂಠಿ ಹಿಪ್ಪಲಿ ಮತ್ತು ಮೆಣಸು. 4. ತ್ರಿಫಲಾ, ಅಳಲೆಕಾಯಿ ನೆಲ್ಲಿಕಾಯಿ ಮತ್ತು ತಾರೆಕಾಯಿ. 5. ತ್ರಿಮದ, ವಾಯುವಿಳಂಗ, ಕೊನ್ನಾರಿ ಮತ್ತು ಚಿತ್ರ ಮೂಲ. 6. ಮೂರು ರಸ್ತೆಗಳು ಸೇರುವ ಸ್ಥಳ. 7. ಕಟಿಪ್ರದೇಶ, ಬೆನ್ನೆಲುಬಿನ ಕೆಳಭಾಗ. “ನಸ್ಯಾಗೃಹೀ-ತೋಪಿ ಧ್ರುವನ್ ವಿಷಾಣಯೋರ್ಯುಗಂ ಸಸೃತ್ಕಾರವಿವರ್ತಿತತ್ರಿಕ:” ಮಾಧಂ ೧೨-೧೦। (ವಿಂ) 8. ಮೂರನೆಯ ಸಲ ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗುವ, ಮೂರನೆಯ ಸಲ ಸಂಭವಿಸುವ. ತೃತೀಯೇನ ರೂಪೇನ



ಗ್ರಹಣಂ यस್ಯ "ಕನ್" ಪೂರ್ಣಪ್ರತ್ಯಯಸ್ಯ ವಾ ಲುಕ್‌ಃ | ಪಕ್ಷೇ  
ತೃತೀಯಕಮ್ ತೃತೀಯಕಮ್. 9. ಶೇಕಡೆ ಮೂರರಂತೆ  
ಬಡ್ಡಿ ಅಥವಾ ಲಾಭವುಳ್ಳ. ತ್ರಯಃ ಅಧಿಕಾಃ ಲಾಭೋ ವೃದ್ಧಿರ್ವಾ  
ಯತ್ರ ಶತಾದೌ | "ದ್ವಿಕಂ ತ್ರಿಕಂ ಚತುಷ್ಕಂ ಚ ಪಂಚಕಂ ಚ ಶತಂ  
ಸಮಮ್ | ಮಾಸಸ್ಯ ವೃದ್ಧಿಃ ಗೃಹ್ಣೀಯಾತ್ ವರ್ಣಾನಾಮನುಪೂರ್ವಶಃ" |  
ಮನ್ ೮-೧೪೨ | 10. ಮೂರರಷ್ಟು, ಮುಮ್ಮಡಿಯಾದ.

ತ್ರಿಕುಡ್ ತ್ರಿಕುಡ್ (ಪುಂ) 1. ತ್ರಿಕೂಟಪರ್ವತ, ಮೂರು  
ಶಿಖರಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಪರ್ವತ. ತ್ರಿಣಿ ಕಕುದಾನಿ  
ಶೃಂಗಾಣ್ಯಸ್ಯ ಅಕಾರಲೋಪಃ | ನಿಪಾಂ (೪-೪-೧೪೭) |  
"ತ್ರಿಕೂಟತ್ರಿಕುಡ್‌ಸಮೌ" ಅಮಂ | 2. ವಿಷ್ಣು. "ತಥೈವಾಹಂ  
ತ್ರಿಕುಡೋ ವಾರಾಹಂ ರೂಪಮಾಸ್ಥಿತಃ | ತ್ರಿಕುಡ್ ತೇನ ವಿಸ್ತಾರಾಃ  
ಶರೀರಸ್ಯ ಪ್ರಮಾಪಣಾತ್" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೩೪೨-೨೮ |  
3. ಹತ್ತು ರಾತ್ರಿಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡಬಹುದಾದ ಯಾಗ.

ತ್ರಿಕುಡ್ ತ್ರಿಕುಡ್ (ವಿಂ) ಮೂರು ಶಿಖರಗಳುಳ್ಳ.  
ತ್ರಿಕುಡ್‌ದ್ವಾ (ವ್ಯಾ) ಮನ್ ತ್ರಿಕುಡ್‌ದ್ವಾ (ಬ್ಧಾ) ಮನ್ (ನಂ)  
ವಿಷ್ಣು. ತ್ರಿಕುಡ್ (ಪ್) ತ್ರಯವಯವಂ ತ್ರಿಪಾದಿಭೂತಲಕ್ಷಣಂ ಧಾಮ  
ಸ್ಥಾನಂ ಯಸ್ಯ | "ತ್ರಿಪಾದಿಭೂತಿಸ್ತ್ರಿಕುಡ್ ಸೇವ ಸ್ಥಾನಂ  
ವಿಶೇಷತಃ | ಯಸ್ಯ ಸ ತ್ರಿಕುಡ್‌ದ್ವಾಮ ಯದ್ವಾ ತ್ರಿಯುಗಧರ್ಮವಾನ್"  
ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | "ಪ್ರಭೂತಿಸ್ತ್ರಿಕುಡ್‌(ಬ್) ಧಾಮ ಪವಿತ್ರಂ  
ಮಹಾಲಂ ಪರಮ್" ವಿಂ ಸಂ |

ತ್ರಿಕುಡ್ ತ್ರಿಕುಡ್ (ಪುಂ) ನೆಗ್ಗಿಲು ಗಿಡ. ತ್ರಿನ್ ವಾತಾದಿರೋಷಾನ್  
ಕಟತಿ ಆವೃಣೋತಿ-ಕಟಿ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |  
ತ್ರಿಕುಡ್ (ಕ) ತ್ರಿಕುಡ್ (ಕ) (ನಂ) ಶುಂಠಿ, ಹಿಪ್ಪಲಿ ಮತ್ತು  
ಮೆಣಸು. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಕಡುರಸಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ | ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಕಃ" |  
"ತ್ರಿಕುಡ್‌ಕಮಜಮೋದಾ ಸೇನ್ಧವಂ ಜೀರಕೇ ದ್ವೇ ಸಮಧರಣಧೃತಾನಾ-  
ಮಷ್ಟಮೋ ಹಿಡ್‌ಗುಭಾಗಃ | ಪ್ರಥಮಕಬಲಭುಕ್ತಂ ಸರ್ಪಿಷಾ ಯುಕ್ತಮೇತತ್  
ಜನಯತಿ ಜಠರಾಗ್ನಿ ವಾತಪಿತ್ತಂ ನಿಹಂತಿ" |

ತ್ರಿಕುಡ್ ತ್ರಿಕುಡ್ (ಪುಂ) 1. ನೆಗ್ಗಿಲು ಗಿಡ. 2. ಕಳ್ಳಿ ಗಿಡ.  
ತ್ರಯಃ ಕುಟಾಃ ಕುಟಕಾ ಅಸ್ಯ | 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು.  
ತ್ರಿಕುಡ್‌ಕ ತ್ರಿಕುಡ್‌ಕ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು.  
"ಲಘುಗರ್ಗಸ್ತ್ರಿಕುಡ್‌ಕಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 2. ನೆಗ್ಗಿಲು ಗಿಡ.  
(ವಿಂ) 3. ಮೂರು ಮುಳ್ಳುಗಳುಳ್ಳ. ತ್ರಯಃ ಕುಟಕಾ  
ಅಸ್ಯ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕೌ-ಕೇ. 4. ಮೂರು ಮುಳ್ಳುಗಳು.  
ತ್ರಯಾಣಾಂ ಕುಟಕಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ |

ತ್ರಿಕರ್ಮನ್ ತ್ರಿಕರ್ಮನ್ (ಪುಂ) ಯಜನ ದಾನ ಅಧ್ಯಯನ  
ಗಳೆಂಬ ಮೂರು ವ್ಯಾಪಾರಗಳುಳ್ಳ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. [ಬ್ರಾಹ್ಮಣ  
ನಿಗೆ ಯಜನ-ಯಾಜನ ಅಧ್ಯಯನ-ಅಧ್ಯಾಪನ ದಾನ-  
ಪ್ರತಿಗ್ರಹಗಳೆಂಬ ಆರು ಕರ್ಮಗಳು ಉಕ್ತವಾಗಿದ್ದರೂ

ಜೀವಿಕೆಗಾಗಿರುವ ಯಾಜನ ಅಧ್ಯಾಪನ ಮತ್ತು ಪ್ರತಿಗ್ರಹ  
ಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಉಳಿದ ಮೂರು ಕರ್ಮಗಳನ್ನಾಚರಿಸು  
ವವನು ತ್ರಿಕರ್ಮನು.] "ತೃವಿಧೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ವಿಧ್ವಾನ್ ನ  
ಚಾಪ್ಯಯನಜೀವಕಃ | ತ್ರಿಕರ್ಮಾ ತ್ರಿಪರಿಕ್ರಾಂತೋ ಮೇತ್ರ ಏಷ ಸ್ಮೃತೋ  
ದ್ವಿಜಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೪೧-೬೬ |

ತ್ರಿಕಾಶ್ವ ತ್ರಿಕಾಶ್ವ (ನಂ) ವಾತದೋಷದಿಂದ ಉಂಟಾ  
ಗುವ ಪಿರೆಯ ನೋವು (ಸೆಳೆತ). "ಸ್ಥಿಗಾಸ್ಥನೋಃ ಪೃಷ್ಠ-  
ವಂಶಾಸ್ಥನೋಃ ಯಃ ಸಂಧಿಃ ತತ್ತ್ರಿಕಮ್ ಸ್ಮೃತಮ್ | ತತ್ರ ವಾತೇನ  
ಯಾ ಪಿಡಾ ತ್ರಿಕಾಶ್ವಂ ಪ್ರಚಕ್ಷತೇ" |

ತ್ರಿಕಾ ತ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾವಿಯಿಂದ ನೀರು ಸೇದಲು ರಾಟೆ  
ಯನ್ನು ತೂಗುಹಾಕುವ ಮರದ ಮುಕ್ಕಾಲಿ. ತ್ರಿಧಾ  
ಕಾಯತಿ - ಕೇ (ಶಬ್ದೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) |

ತ್ರಿಕಾಂಡ ತ್ರಿಕಾಂಡ (ಪುಂ) 1. ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನ,  
ಅಮರಸಿಂಹವಿರಚಿತವಾದ ಒಂದು ಕೋಶ (ನಿಘಂಟು).  
ಇದರಲ್ಲಿ ಸ್ವರ್ಗವರ್ಗದಿಂದ ವಾರಿವರ್ಗದವರೆಗೆ ಪ್ರಥಮ  
ಕಾಂಡ. ಭೂವರ್ಗದಿಂದ ಶೂದ್ರವರ್ಗದವರೆಗೆ ದ್ವಿತೀಯ  
ಕಾಂಡ. ವಿಶೇಷನಿಷ್ಠೆವರ್ಗದಿಂದ ಲಿಂಗಾದಿಸಂಗ್ರಹವರ್ಗದ  
ವರೆಗೆ ತೃತೀಯಕಾಂಡ. ಈ ರೀತಿ ಮೂರು ಕಾಂಡ  
ಗಳಿರುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ "ತ್ರಿಕಾಂಡ" ವೆಂದು ಹೆಸರು.  
2. ನಿರುಕ್ತ. ಇದರಲ್ಲಿ ನೈಘಂಟುಕ ನೈಗಮ ಮತ್ತು  
ದೈವತಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಕಾಂಡಗಳಿರುವವು. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಕಾಂಡಿ-ಕಾಂಡೀ. 3. ಮೂರು ಕಾಂಡಗಳು. ತ್ರಯಾಣಾಂ  
ಕಾಂಡಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ - "ತೃಪ್" (೪-೧-೨೧) | 4. ಮೂರು  
ಕಾಂಡಗಳ ಪ್ರಮಾಣವುಳ್ಳ ವಸ್ತು, ನಲವತ್ತೆಂಟು ಅಂತ್ರಿ  
(ಗುದ್ದು ಮೊಳೆ)ಗಳ ಉದ್ದದ ಪ್ರಮಾಣವುಳ್ಳ ವಸ್ತು.  
ತ್ರಿಣಿ ಕಾಂಡಾನಿ ಪ್ರಮಾಣಮಸ್ಯಾಃ "ತೃಪ್" (೪-೧-೨೧) |  
ತ್ರಿಕಾಂಡಿ ರಜ್ಜುಃ |

ತ್ರಿಕಾಲ ತ್ರಿಕಾಲ (ನಂ) 1. ಭೂತ-ಭವಿಷ್ಯತ್-ವರ್ತಮಾನ  
ಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಕಾಲಗಳು. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಕಾಲಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ |  
2. ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಮಧ್ಯಾಹ್ನ ಮತ್ತು ಸಾಯಂಕಾಲಗಳೆಂಬ  
ಮೂರು ಕಾಲಗಳು. (ವಿಂ) 3. ಮೂರುಕಾಲಗಳಲ್ಲಿಯೂ  
ಇರುವ. ತ್ರಯಃ ಕಾಲಾ ಅಸ್ಯ | (ಅವ್ಯಂ) 3. ಮೂರು  
ಕಾಲಗಳಲ್ಲಿಯೂ.

ತ್ರಿಕಾಲಜ ತ್ರಿಕಾಲಜ್ಞ (ವಿಂ) ಕಾಲತ್ರಯದ ಜ್ಞಾನವುಳ್ಳ  
ವನು, ಭೂತ-ಭವಿಷ್ಯತ್-ವರ್ತಮಾನಕಾಲಗಳ ಅರಿವುಳ್ಳ  
ವನು. ತ್ರಿಕಾಲಂ ಕಾಲತ್ರಯವರ್ತಿಪದಾರ್ಥಾನ್ ಜಾನಾತಿ - ಜ್ಞಾ  
(ಅವಬೋಧನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | "ಯದ್ವಂ ಯಥಾ ಯದ  
ವಾ ಭವಿಷ್ಯಮಾದಿಸ್ಯತೇ ತ್ರಿಕಾಲಜ್ಞಃ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೭-೧ |



ತ್ರಿಕಾಲದರ್ಶಿನ್ ತ್ರಿಕಾಲದರ್ಶಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಮುಖ, ಮುನಿ.

(ವಿಂ) 2. ಮೂರುಕಾಲಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಇರುವುದನ್ನು ನೋಡುವವನು, ತ್ರಿಕಾಲಜ್ಞ ನವುಳ್ಳವನು. ತ್ರಿಕಾಲ ತದ್ವತಿ ವಸ್ತು ಪश्यತಿ-ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) "ಗಿರಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)।

ತ್ರಿಕೂಟ ತ್ರಿಕೂಟ (ಪುಂ) ತ್ರಿಕೂಟಪರ್ವತ. ತ್ರಿಣಿ ಕೂಟಾನಿ ಶಿಖರಾಣಿ ಅಸ್ಯ।

ತ್ರಿಕೂಟವತ್ ತ್ರಿಕೂಟವತ್ (ಪುಂ) ತ್ರಿಕೂಟಪರ್ವತ. ತ್ರಿಣಿ ಕೂಟಾನಿ ಸಂತ್ಯಸ್ಯ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೨೭)। "ಹಿಮವಾನ್ ಪಾರಿಯಾತ್ರಾ ಸಹ್ಯೋ ವಿನ್ಯಾಸ್ತ್ರಿಕೂಟವಾನ್" ಭಾಂ. ಆಶ್ವಂ ೪೩-೪।

ತ್ರಿಕೂರ್ವಕ ತ್ರಿಕೂರ್ವಕ (ನಂ) ಮೂರು ಅಲಗುಗಳುಳ್ಳ ಒಂದುವಿಧ ಕತ್ತಿ. "ವಿಶೇಷಣ ಬಾಲವೃದ್ಧಕುಮಾರಭೀಷ್ಮನಾರೀಣಾಂ ರಾಜಾಂ ರಾಜಪುತ್ರಾಣಾಂ ಚ ತ್ರಿಕೂರ್ವಕೇನ ವಿಸ್ತಾವಯೇತ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೮-೪।

ತ್ರಿಕೋಣ ತ್ರಿಕೋಣ (ನಂ) 1. ತ್ರಿಕೋಣ, ಮುಮೂಲೆ, ತ್ರಿಭುಜ. 2. ಲಗ್ನದಿಂದ ಐದು ಮತ್ತು ಒಂಬತ್ತನೆಯ ಸ್ಥಾನ. (ವಿಂ) 3. ಮೂರು ಮೂಲೆಗಳುಳ್ಳ ವಸ್ತು, ಮುಮೂಲೆಯ ಕ್ಷೇತ್ರ. ತ್ರಯ: ಕೋಣಾ ಯಸ್ಯ।

ತ್ರಿಕೋಣಮಿತಿ ತ್ರಿಕೋಣಮಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತ್ರಿಭುಜಗಳ ಅಕೃತಿಯ ಅಳತೆಯನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಗಣಿತದ ಒಂದು ಭಾಗ, ತ್ರಿಭುಜಕ್ಷೇತ್ರದ ಅಳತೆಯನ್ನು ಹೇಳುವ ಗಣಿತ, ತ್ರಿಕೋಣದ ಕೋಣಗಳ ಮತ್ತು ಬಾಹುಗಳ ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಗಣಿತದ ಭಾಗ.

ತ್ರಿಕ್ಷಾರ ತ್ರಿಕ್ಷಾರ (ನಂ) ಸರ್ವಕಾಕ್ಷಾರ ಯವಕ್ಷಾರ ಮತ್ತು ಟಂಕಣಕ್ಷಾರಗಳು, ಸದಕ್ಷಾರ ಯವಕ್ಷಾರ ಮತ್ತು ಬಿಳಿಗಾರ ಗಳು. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಕ್ಷಾರಾಣಾಂ ಸಮಾಹಾರ:। [ಸೋಡಾಕಾರ್ಬೋರೇ ನೇಟ್ ಖನಿಜ ಪೆಟ್ರೋಲ್ಯುಮ್ ಮತ್ತು ಬಿಳಿಗಾರಗಳು ತ್ರಿಕ್ಷಾರ ಗಳು.]

ತ್ರಿಖ ತ್ರಿಖ (ನಂ) ಸೌತೆಕಾಯಿ. ತ್ರಿಖಾ ಸಮಾಕಾಶೋವಕಾಶೋಽ- ಸ್ಮಿನ್ ಫಲೇ।

ತ್ರಿಗಂಜ ತ್ರಿಗಂಜ (ಅವ್ಯಂ) ಒಂದು ತೀರ್ಥ. ತಿಸ್ತೊ ಗಂಜಾ ನದೌ ಯತ್ರ। ಅವ್ಯಯಿಂ (೨-೧-೨೦)। "ಸಪ್ತಗಂಜೇ ತ್ರಿಗಂಜೇ ಚ ಇಂದ್ರಮಾರ್ಗೇ ಚ ತರ್ಪಯನ್। ಸುಖಾಂ ಚೈವ ಲಭೇದ್ಭೂತುಂ ಯೋ ನರೋ ಜಾಯತೇ ಪುನ:" ಭಾಂ. ಅನುಂ ೬೪-೧೬।

ತ್ರಿಗುಣ ತ್ರಿಗುಣ (ಪುಂ) ತ್ರಿವರ್ಗ, ಧರ್ಮ ಅರ್ಥ ಮತ್ತು ಕಾಮ ಇವುಗಳ ಸಮುದಾಯ. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಧರ್ಮಾರ್ಥಕಾಮಾಣಾಂ ಗುಣ:। "ಗುಣಾನುರಾಗಾದಿವ ಸಖ್ಯಮೀಯಿವಾನ್ ಬಾಧತೇಽಸ್ಯ ತ್ರಿಗುಣ: ಪರಸ್ಪರಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೧೧।

ತ್ರಿಗತ ತ್ರಿಗತ(ನಂ) ಶಬ್ದ ಸಾಮ್ಯದಿಂದ ವಾಕ್ಯಕ್ಕೆ ಅನೇಕಾರ್ಥ ಗಳನ್ನು ಹೇಳುವುದು. ಇದು ನಟನಟಿ ಮತ್ತು ಪ್ರತಿನಟಿ ಇವರು ಮೂವರ ಸಲ್ಲಾಪವೆಂದು ಕೆಲವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

"ಶ್ರುತಿಸಾಮ್ಯಾದನೇಕಾರ್ಥಯೋಜನಂ ತ್ರಿಗತಂ ತ್ವಿಹ। ನಡಾದಿ ತ್ರಿತಯಾಲಾಪ: ಪೂರ್ವಜ್ಞೇ ತದಿಷ್ಟಯೇ" ದಶಕಂ। "ಸರ್ವಕ್ಷಿತಿಭೃತಾಂ ನಾಥ, ದೃಷ್ಟಾ ಸರ್ವಾಜ್ಞಸುಂದರೀ। ರಾಮಾ ರಮ್ಯೇ ವನಾಂತೇಽಸ್ಮಿನ್ ಮಯಾ ವಿರಹಿತಾ ತ್ವಯಾ" ವಿಕ್ರಂ ೪-೪೧।

ತ್ರಿಗಂಭೀರ ತ್ರಿಗಂಭೀರ (ಪುಂ) ಸ್ವರ ಸತ್ತ್ವ ಮತ್ತು ನಾಭಿ (ಹೊಕ್ಕುಳು)ಗಳಲ್ಲಿ ಗಾಂಭೀರ್ಯವುಳ್ಳವನು. ಇದೊಂದು ಪುರುಷನ ಶುಭಲಕ್ಷಣ. ಆಳವಾದ ಗುಳಿಯಿರುವುದು ನಾಭಿಯ ಗಾಂಭೀರ್ಯ. ಮನಸ್ಸನ್ನು ಆಕರ್ಷಿಸುವ ಮಾಧುರ್ಯ ಮುಂತಾದುವು ಸ್ವರದ ಗಾಂಭೀರ್ಯ. ಧೈರ್ಯವು ಕ್ರೋಧ ಹರ್ಷ ಭಯ ಶೋಕ ಮುಂತಾದುವು ಗಳಿಂದ ವಿಕಾರಹೊಂದದಿರುವುದು ಸತ್ತ್ವದ ಗಾಂಭೀರ್ಯ. ಈ ಮೂರರಲ್ಲಿಯೂ ಗಾಂಭೀರ್ಯವುಳ್ಳವನು ಮಹಾ ಪುರುಷಲಕ್ಷಣದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು. "ತ್ರಿಪು ವಿಪುಲೋ ಗಂಭೀರಸ್ತ್ರಿವೇವ ಷಡ್ಭೂತಶ್ಚತುರ್ಹಸ್ವ:। ಸಪ್ತಸು ರಕ್ತೋ ರಾಜಾ ಪಂಚಸು ದೀರ್ಘಶ್ಚ ಸೂಕ್ತಮಶ್ಚ। ನಾಭಿ ಸ್ವರ: ಸತ್ತ್ವಮಿತಿ ಪ್ರಶಸ್ತಂ ಗಂಭೀರಮೇತತ್ ತ್ರಿತಯಂ ನರಾಣಾಮ್" ಬೃಹತ್ಸಂ ೬೮-೮೪, ೮೫। "ಸ್ವರ: ಸತ್ತ್ವಂ ಚ ನಾಭಿಶ್ಚ ಗಂಭೀರ: ಶಸ್ಯತೇ ಬುದ್ಧಿ:"।

ತ್ರಿಗರ್ತ ತ್ರಿಗರ್ತ (ಪುಂ) 1. ತ್ರಿಗರ್ತದೇಶ, ಬಾಹ್ಯೀಕ ದೇಶಕ್ಕೆ ನಿರ್ಯುತಿದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ವಿಪಾಶಾ ನದಿಯ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ದೇಶ. ಈಗಿನ ಲಾಹೋರು ಜಿಲ್ಲೆಯ ಜಲಂಧರ ಪಟ್ಟಣ. ತ್ರಿಗರ್ತಾಧಿಪತಿಯಾದ ಜಲಂಧರಾಸುರನ ಹೆಸರಿ ನಿಂದ ಈ ಪಟ್ಟಣಕ್ಕೂ ಈ ಹೆಸರು ಬಂದಿರುವುದು. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ತ್ರಿಗರ್ತ ದೇಶದ ದೊರೆ. 3. ತ್ರಿಗರ್ತ ದೇಶದ ಜನರು. "ಜಾಲಂಧರಾ: ತ್ರಿಗರ್ತಾ: ಸ್ಯು:" ಅಭಿಂ. ಚಿಂ।

ತ್ರಿಗುಣ ತ್ರಿಗುಣ (ನಂ) 1. ಸತ್ತ್ವ ರಜಸ್ಸು ಮತ್ತು ತಮಸ್ಸು ಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಗುಣಗಳು. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಗುಣಾಣಾಂ ಸಮಾಹಾರ:। 2. ಮೂರರಷ್ಟು, ಮುಮ್ಮಡಿ. "ಸಪ್ತ ವ್ಯತೀಯು: ತ್ರಿಗುಣಾನಿ ತಸ್ಯ ದಿನಾನಿ ದಿನೋದರಣೋಚಿತಸ್ಯ" ರಘುಂ ೨-೨೪। 3. ಸಾಂಖ್ಯಮತೋಕ್ತವಾದ ಗುಣತ್ರಯಾತ್ಮಕವಾದ ಪ್ರಧಾನ. ತ್ರಯೋ ಗುಣಾ: ಸುಖದು:ಖಮೋಹಾ ಅಸ್ಯ। (ವಿಂ) 4. ಸತ್ತ್ವರಜಸ್ಸುಮೋಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಮಹಾಂತಮೇವ ಚಾತ್ಮಾನಂ ಸರ್ವಾಣಿ ತ್ರಿಗುಣಾನಿ ಚ। ವಿಷಯಾಣಾಂ ಗ್ರಹಿತೃಣಿ ಶನೈ: ಪಂಚೇಂದ್ರಿಯಾಣಿ ಚ" ಮನುಂ ೧-೧೪। 5. ಮೂರ ರಷ್ಟಾದ, ಮೂರರಿಂದ ಗುಣಸಲ್ಲುಟ್ಟ. "ಸಪ್ತ ವ್ಯತೀಯು: ತ್ರಿಗುಣಾನಿ ತಸ್ಯ ದಿನಾನಿ ದಿನೋದರಣೋಚಿತಸ್ಯ" ರಘುಂ



೨-೨೫। 6. ಮೂರು ಎಳೆಗಳುಳ್ಳ, ಮೂರು ದಾರಗಳುಳ್ಳ. "ಪ್ರತಿಕ್ಷಣಂ ಸಾ ಕೃತರೋಮವಿಕ್ರಿಯಾಂ ವ್ರತಾಯ ಮೌಞ್ಞಿಂ ತ್ರಿಗುಣಾಂ ಬಹಾರ ಯಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೧೦।

ತ್ರಿಗುಣಾಕೃತ ತ್ರಿಗುಣಾಕೃತ (ವಿಂ) ಮೂರು ಸಲ ಉಳಲಟ್ಟು ಭೂಮಿ. ತ್ರಿಗುಣ ಕೃತಮ್ "ಡಾಕ್" (೪-೪-೪೯)।  
"ತ್ರಿಗುಣಾಕೃತಂ ತೃತೀಯಾಕೃತಂ ತ್ರಿಹಲ್ಯಮ್" ಅಮಂ।

ತ್ರಿಗುಣಾತ್ಮಕ ತ್ರಿಗುಣಾತ್ಮಕ (ವಿಂ) ಸತ್ತ್ವರಜಸ್ಸಮೋ ಗುಣಸ್ವರೂಪದ (ಅಜ್ಞಾನ). ತ್ರಯೋ ಗುಣಾಃ ಸತ್ವರಜಸ್ತಮೋ-ರೂಪಾಃ ಆತ್ಮಾನಃ ಅಸ್ಯ।

ತ್ರಿಗುಣಿತ ತ್ರಿಗುಣಿತ (ವಿಂ) ಮೂರರಿಂದ ಗುಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಮ್ಮಡಿಯಾದ. ತ್ರಿಭಿರ್ಗುಣಿತಃ।

ತ್ರಿಗುಣೀಕೃತ ತ್ರಿಗುಣೀಕೃತ (ಪುಂ) ಮೂರರಷ್ಟು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಮ್ಮಡಿಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ತ್ರಿವಕ್ರ ತ್ರಿವಕ್ರ (ಪುಂ) ಅಶ್ವಿನೀದೇವತೆಗಳ ರಥ. "ಅರ್ವಾಙ್ ತ್ರಿವಕ್ರೋ ಮಧುವಾಹನೋ ರಥೋ ಜೀವಾಶ್ವೋ ಅಶ್ವಿನೋರ್ಯಾತು ಸೃಷ್ಟುತಃ" ಇಂದ್ರಂ।

ತ್ರಿವಕ್ಷಸ್ ತ್ರಿವಕ್ಷಸ್ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. 2. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ತ್ರಿಣಿ ಚಕ್ಷುಷಿ ಯಸ್ಯ। "ತ್ರಿವಕ್ಷುಃ ಶಮ್ಭು-ರೇಕಸ್ತ್ವಂ ವಿಭುದಾಮೋದರೋಽಪಿ ಚ" ಮಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೪೨-೭।

ತ್ರಿವತುರ ತ್ರಿವತುರ (ವಿಂ) ಮೂರು ಅಥವಾ ನಾಲ್ಕು. ತ್ರಯೋ ವಾ ಚತ್ವಾರೋ ವಾ, ಅಜಂತೋ ನಿಪಾಂ (ವಾಂ ೪-೪-೭೭)।  
"ಸದ್ವಿಃ ಪುರೀಪರಿಸರೇಽಪಿ ಶಿರೀಷಮೃದ್ವಿ ಸೀತಾ ಜವಾತ್ ತ್ರಿವತು-ರಾಣಿ ಪದಾನಿ ಗತ್ವಾ" ಸಾಂ ದಂ।

ತ್ರಿವತ್ವಾರಿಂಶ ತ್ರಿವತ್ವಾರಿಂಶ (ವಿಂ) ನಲವತ್ತಮೂರನೆಯ. ತ್ರಿವತ್ವಾರಿಂಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೪)। -ವತ್ವಾರಿಂಶಿ-ಚತ್ವಾರಿಂಶಿ.

ತ್ರಿವತ್ವಾರಿಂಶತ್ ತ್ರಿವತ್ವಾರಿಂಶತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಲವತ್ತು ಮೂರು. ತ್ರ್ಯಧಿಕಾ ವತ್ವಾರಿಂಶತ್।

ತ್ರಿವತ್ವಾರಿಂಶತ್ತಮ ತ್ರಿವತ್ವಾರಿಂಶತ್ತಮ (ವಿಂ) ನಲವತ್ತು ಮೂರನೆಯ. ತ್ರಿವತ್ವಾರಿಂಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ, ಡಟ್ ವಾ ತಮಟ್ (೪-೨-೪೯)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೪)। -ತಮಿ-ತಮಿ.

ತ್ರಿವಿಂಶತ್ ತ್ರಿವಿಂಶತ್ (ನಂ) ಸ್ವರ್ಗ ಮಧ್ಯ ಮತ್ತು ಪಾತಾಳ ಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಲೋಕಗಳು. "ನಾಥೇ ನಃ ಪುರುಷೋತ್ತಮೇ ತ್ರಿವಿಂಶತಾಮೇಕಾಧಿಪೇ ಚೇತಸಾ" ಮುಂ ಮಾಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವಿಂಶತಿ-ವಿಂಶತಿ.

ತ್ರಿವಿಂಶತ್ ತ್ರಿವಿಂಶತ್ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. [ಈತನಿಗೆ ಸಂಸಾರ ಬಹಳ ದೊಡ್ಡದು. ಮುಂದಿನಲ್ಲಿ ಸಂಸಾರ ನಿರ್ವಹಣೆಗೆ

ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದೆ ಪತ್ನಿಯ ನಿರ್ಬಂಧದಿಂದ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಬಂದು ವನವಾಸಕ್ಕೆ ಹೊರಟಿದ್ದ ಶ್ರೀರಾಮನಿಂದ ಬೇಕಾದಷ್ಟು ಹಣವನ್ನೂ ಗೋವುಗಳನ್ನೂ ಸ್ವೀಕರಿಸಿ ತಂದನು.]

ತ್ರಿವಿಂಶತ್ ತ್ರಿವಿಂಶತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸಿ. [ರಾವಣನು ಸೀತೆಯನ್ನು ಅವಹರಿಸಿಕೊಂಡು ಹೋಗಿ ಅಶೋಕವನದಲ್ಲಿಟ್ಟು ಅವಳ ಕಾವಲಿಗಾಗಿ ಅನೇಕ ರಾಕ್ಷಸ ಸ್ತ್ರೀಯರನ್ನು ಇಟ್ಟಿದ್ದನು. ಅವರಲ್ಲಿ ಈ ತ್ರಿವಿಂಶತಿಯೂ ಒಬ್ಬಳು. ರಾಕ್ಷಸಿಯ ರೆಲ್ಲರೂ ಸೀತೆಯ ಮನನೋಯುವಂತೆ ಮಾತನಾಡುತ್ತ ರಾವಣನಿಗೆ ವಶವಾಗಬೇಕೆಂದು ಹೇಳುತ್ತಿರಲು ತ್ರಿವಿಂಶತಿಯು, ಶ್ರೀರಾಮನು ರಾವಣನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ಸೀತೆಯೊಡನೆ ಸೇರಿ ವಿರಾಜಿಸುತ್ತಿದ್ದುದಾಗಿ ತಾನು ಕನಸನ್ನು ಕಂಡುದಾಗಿ ತಿಳಿಸಿ ಇನ್ನು ಮುಂದೆ ಸೀತೆಯನ್ನು ಯಾವರೀತಿಯಲ್ಲಿಯೂ ಹೆದರಿಸಿ ನೋಯಿಸಕೂಡದೆಂದು ಹೇಳಿದಳು.] "ಸೀತಾಂ ತಾಭಿರನಾರ್ಯಾಭಿಃ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಸಂತುಜಿತಾಂ ತದಾ। ರಾಕ್ಷಸೀ ತ್ರಿವಿಂಶತ್ ವೃದ್ಧಾ ಶಯಾನಾ ವಾಕ್ಯಮಬ್ರವೀತ್" ರಾಮಾಂ।

ತ್ರಿವಿಂಶತ್ ತ್ರಿವಿಂಶತ್ (ನಂ) ಜಾಪತ್ರೆ ಯಾಲಕ್ಕಿ ದಾಲ್ಚಿನ್ನಿ (ಲವಂಗಪಟ್ಟಿ) ಇವುಗಳ ಸಮುದಾಯ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ"।  
-ಜಾತಕಮ್ -ಜಾತಕಮ್.

ತ್ರಿವಿಂಶತ್ ತ್ರಿವಿಂಶತ್ (ನಂ) ತೃಣ, ಹುಲ್ಲು.

ತ್ರಿವಿಂಶತ್ ತ್ರಿವಿಂಶತ್ (ವಿಂ) 1. ಮೂರು ಜಾಗದಲ್ಲಿ ಬಗ್ಗಿರುವ (ಬಿಲ್ಲು). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವಿಂಶತಿ-ವಿಂಶತಿ. 2. ಬಿಲ್ಲು, ಧನುಸ್ಸು. ತ್ರಿವಿಂಶತ್ ಸ್ಥಾನೇಷು ನತಾ। ಮಧ್ಯಭಾಗದಲ್ಲಿಯೂ ಎರಡು ತುದಿಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಬಗ್ಗಿರುವುದರಿಂದ ಬಿಲ್ಲಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು. "ಸ್ವಗುಣೈರಾಫಲಪ್ರಾಪ್ತೇರಾಕೃಷ್ಯ ಗಣಿಕಾ ಇವ। ಕಾಮುಕಾನಿವ ನಾಲಿಕಾನ್ ತ್ರಿವಿಂಶತಾಃ ಸಹಸಾಮುಚನ್" ಮಾಘಂ ೧೯-೬೧।  
3. ತೃಣತ್ವ, ತೃಣಭಾವ. ತ್ರಿವಿಂಶತ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)।

ತ್ರಿವಿಂಶತ್ ತ್ರಿವಿಂಶತ್ (ಪುಂ) ಸ್ವರ್ಗಲೋಕ. ತೃತೀಯೋ ನಾಕಃ।  
"ತಾವತ್ ತ್ರಿವಿಂಶತ್ ನಹುಷಃ ಶಶಾಸ ವಿಜ್ಞಾತಪೋಯೋಗಬಲಾನುಭಾವಃ" ಭಾಗಂ ೬-೧೩-೧೬।

ತ್ರಿವಿಂಶತ್ ತ್ರಿವಿಂಶತ್ (ಪುಂ) ಗೌತಮ ಋಷಿಯ ಒಬ್ಬ ಮಗ. ಏಕತದ್ವಿತ್ವರೇಬುವರು ಈತನ ಸಹೋದರರು. [ಈ ಮೂವರೂ ಒಂದು ಯಾಗಶಾಲೆಗೆ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ತ್ರಿತನು ತನ್ನ ಪಾಂಡಿತ್ಯ ಪ್ರದರ್ಶನದಿಂದ ವಿಶೇಷ ದ್ರವ್ಯವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿದನು. ಮೂರು ಮಂದಿಯೂ ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಬರುತ್ತಿದ್ದಾಗ ತ್ರಿತನು ಕಾಲುಜಾರಿ ಒಂದು ಬಾವಿಯಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದನು. ಮಾತ್ಸರ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಉಳಿದ ಇಬ್ಬರೂ ಅವನನ್ನು ಅಲ್ಲೇ ಬಿಟ್ಟು ಹಣವನ್ನೂ ಎತ್ತಿಕೊಂಡು ಹೊರಟರು.]



ತ್ರಿದಶಾಧಿಪ ತ್ರಿದಶಾಧಿಪ (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳ ಒಡೆಯ,  
 ಇಂದ್ರ. ತ್ರಿದಶಾನಾಮಧಿಪ: । -ಅಧಿಪತಿ: -ಅಧಿಪತಿ:



ತ್ರಿದಶಾಧ್ಯಕ್ಷ ತ್ರಿದಶಾಧ್ಯಕ್ಷ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ತ್ರಿದಶಾನಾಂ  
ದೇವಾನಾಂ ಬ್ರಹ್ಮಾದೀನಾಮ್ ಅಧ್ಯಕ್ಷಃ ಸ್ವಾಮಿ | ಬ್ರಹ್ಮಾದೇಃ ಪ್ರಲಯಾಪ-  
ತ್ಸಖತ್ವಾತ್ ತ್ರಿದಶಾಧ್ಯಕ್ಷಃ | “ಸಖಾ ಸ್ಯಾತ್ ತ್ರಿದಶಾಧ್ಯಕ್ಷಃ  
ಬ್ರಹ್ಮಾದೇಃ ಪ್ರಲಯಾಪದಿ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | “ತ್ರಿಪದಸ್ತ್ರಿದಶಾ-  
ಧ್ಯಕ್ಷೋ ಮಹಾಶೃಂಗಃ ಕೃತಾಂತಕೃತ್” ವಿಂ ಸಂ |

ತ್ರಿದಶಾಯುಧ ತ್ರಿದಶಾಯುಧ (ನಂ) 1. ವಜ್ರಾಯುಧ.  
ತ್ರಿದಶಾನಾಮಾಯುಧಮ್ | 2. ಇಂದ್ರಧನುಸ್ಸು. “ಅಥ ನಮಸ್ಯ  
ಇವ ತ್ರಿದಶಾಯುಧಮ್ ಕನಕಪಿಙ್ಗುತಟಿಗುಣಸಂಯುತಮ್” ರಘುಂ  
೯-೪೪ |

ತ್ರಿದಶಾರಿ ತ್ರಿದಶಾರಿ (ಪುಂ) ಅಸುರ, ರಾಕ್ಷಸ. ತ್ರಿದಶಾ-  
ನಾಮರಿಃ |

ತ್ರಿದಶಾಲಯ ತ್ರಿದಶಾಲಯ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆಗಳ ವಾಸ  
ಸ್ಥಾನ, ಸ್ವರ್ಗಲೋಕ. 2. ಸುಮೇರು ಪರ್ವತ. ತ್ರಿದಶಾ-  
ನಾಮಾಲಯಃ |

ತ್ರಿದಶಾವಾಸ ತ್ರಿದಶಾವಾಸ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆಗಳ ವಾಸ  
ಸ್ಥಾನ, ಸ್ವರ್ಗಲೋಕ. 2. ಸುಮೇರು ಪರ್ವತ. ತ್ರಿದಶಾ-  
ನಾಮಾವಾಸಃ |

ತ್ರಿದಶೇಶ್ವರ ತ್ರಿದಶೇಶ್ವರಂ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆಗಳ ರಾಜ,  
ಇಂದ್ರ. ತ್ರಿದಶಾನಾಮೀಶ್ವರಃ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರೀ -ರೀ.  
2. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

ತ್ರಿದಿನಸ್ಪೃಶ್ ತ್ರಿದಿನಸ್ಪೃಶ್ (ಪುಂ) ಮೂರು ದಿನಗಳ  
ಸಂಬಂಧವಿರುವ ಒಂದು ತಿಥಿ. ತ್ರಿದಿನಂ ಸ್ಪೃಶತಿ — ಸ್ಪೃಶ  
(ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೆ) “ಕಿವನ್” (೩-೨-೪೮) |

ತ್ರಿದಿವ ತ್ರಿದಿವ (ಪುಂ) 1. ಸ್ವರ್ಗಲೋಕ, ದೇವಲೋಕ.  
ತ್ರಯಃ ಬ್ರಹ್ಮವಿಷ್ಣುರೂದ್ರಾಃ ದಿವ್ಯನ್ತ್ಯತ್ರ “ಛಕ್” (೩-೩-೧೨೧) |  
ತೃತೀಯಾ ದ್ವಿಃ ಲೋಕಃ ಇತಿ ವಾ | “ಪ್ರಭಾಮಹತ್ಯಾ ಶಿಕ್ಷಯೇವ  
ದೀಪಸ್ತ್ರಿಮಾರ್ಗೇವ ತ್ರಿದಿವಸ್ಯ ಮಾರ್ಗಃ” ಕುಮಾಂ ೧-೨೮ |  
2. ಅಕಾಶ. “ತ್ರಿದಿವೌ ಗಗನಸ್ವರ್ಗೌ” ನಾನಾರ್ಥಂ |  
(ನಂ) 3. ಸುಖ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವಾ -ವಾ. 4. ಒಂದು  
ನದಿ. “ತ್ರಿದಿವಂ ತು ಸ್ತೇ | ಸ್ವರ್ಗೇಽಪಿ ತ್ರಿದಿವಾ ನದೀಮ್”  
ಹೇಮಂ |

ತ್ರಿದಿವಾಧೀಶ ತ್ರಿದಿವಾಧೀಶ, -ಅಧೀಶ್ವರ -ಅಧೀಶ್ವರ  
(ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. 2. ದೇವತೆ. ತ್ರಿದಿವಸ್ಯ ಸ್ವರ್ಗಸ್ಯ  
ಅಧೀಶಃ ಅಧೀಶ್ವರೋ ವಾ |

ತ್ರಿದಿವೇಶ ತ್ರಿದಿವೇಶ (ಪುಂ) ದೇವತೆ. ತ್ರಿದಿವಸ್ಯ ಔಶಃ |  
“ತ್ರಿದಿವೇಶಾ ದಿವೌಕಸಃ” ಅಮಂ |

ತ್ರಿದಿವೋದ್ಭವ ತ್ರಿದಿವೋದ್ಭವ (ವಿಂ) 1. ಸ್ವರ್ಗದಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟಿದ. ತ್ರಿದಿವಃ ಉದ್ಭವೋ ಯಸ್ಯ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಉದ್ಭವಾ

-ಉದ್ಭವಾ. 2. ಗಂಗಾನದಿ. 3. ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ  
ಯಾಲಕ್ಕಿ.

ತ್ರಿದಿವೌಕಸ್ ತ್ರಿದಿವೌಕಸ್ (ಪುಂ) ದೇವತೆ. ತ್ರಿದಿವಃ ಔಕೋ  
ಯಸ್ಯ | “ದೇವಂ ಮಹೇಶಂ ಗಿರಿಜಾಂ ಚ ದೇವೀಂ ತತಃ ಪ್ರಣಮ್ಯ  
ತ್ರಿದಿವೌಕಸೋಽಪಿ” ಕುಮಾಂ ೧೩-೬ |

ತ್ರಿದೃಶ ತ್ರಿದೃಶ (ಪುಂ) ಪರಿಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ತಿಸ್ರೋ  
ದೃಶಃ ಅಸ್ಯ |

ತ್ರಿದೋಷ ತ್ರಿದೋಷ (ನಂ) 1. ವಾತ ಪಿತ್ತ ಮತ್ತು ಕಫ  
ಗಳೆಂಬ ಮೂರು ದೋಷಗಳು. ತ್ರಯಾಣಾಂ ದೋಷಾಣಾಂ ವಾತಪಿತ್ತ-  
ಕಫಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ | 2. ತ್ರಿದೋಷದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ  
ಜ್ವರ. ತ್ರಯೋ ದೋಷಾ ಹೇತುರ್ವೇನ ಯತ್ರ |

ತ್ರಿದೋಷಜ್ವರ ತ್ರಿದೋಷಜ್ವರ (ವಿಂ) ವಾತ ಪಿತ್ತ ಕಫಗಳನ್ನು  
ನಾಶಪಡಿಸುವ. ತ್ರಿದೋಷಂ ಹಂತಿ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತಿಯೆ)  
“ಠಕ್” (೩-೨-೪೩) | “ಗಗನಾಮ್ಬು ತ್ರಿದೋಷಜ್ವರಂ ಗೃಹೀತಂ  
ಯತ್ ಸುಭಾಜನೇ” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೪-೨೬ |

ತ್ರಿದೋಷಜ ತ್ರಿದೋಷಜ (ವಿಂ) ವಾತ ಪಿತ್ತ ಮತ್ತು ಕಫ  
ಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದ. ತ್ರಿದೋಷಾತ್ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತವಿ)  
“ಠಃ” (೩-೨-೯೮) | “ಚಿರಜ್ವರೇ ವಾತಕಫೋಲ್ಬಣೇ ವಾ  
ತ್ರಿದೋಷಜೇ ವಾ ದಶಮೂಲಮಿಶ್ರಃ” ಚಕ್ರದಂ |

ತ್ರಿಧನ್ವನ್ ತ್ರಿಧನ್ವನ್ (ಪುಂ) ಸುಧನ್ವರಾಜನ ಮಗ. “ಸುಧನ್ವನಃ  
ಸುತಶ್ಚಾಸೀತ್ ತ್ರಿಧನ್ವಾ ರಿಪುಮರ್ದನಃ” ಹರಿವಂ |

ತ್ರಿಧಾ ತ್ರಿಧಾ (ಅವ್ಯಂ) ಮೂರು ವಿಧವಾಗಿ, ಮೂರು  
ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ. ತ್ರಿ ಪ್ರಕಾರೇ “ಧಾ” (೪-೩-೪೨) | “ಜ್ಞಾನಂ  
ಕರ್ಮ ಚ ಕರ್ತಾ ಚ ತ್ರಿಧೇವ ಗುಣಭೇದತಃ” ಗೀತಾ ೧೮-೧೯ |

ತ್ರಿಧಾತು ತ್ರಿಧಾತು (ಪುಂ) 1. ಗಣಪತಿ, ವಿನಾಯಕ. ತ್ರಿನ್  
ಧರ್ಮಾರ್ಥಕಾಮಾನ್ ದಧಾತಿ — ಡು ಧಾಕ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ)  
“ತುನ್” (೩ಂ ೧-೬೯) | “ತ್ರಿಧಾತುರೇಕದಂತಶ್ಚ ದ್ವಿದೇಹೋ  
ಮೃಷಿಕಾಞ್ಚನಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 2. ಮೂರು ಧಾತುಗಳು.

ತ್ರಿಧಾಮನ್ ತ್ರಿಧಾಮನ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ತ್ರಿಣಿ ಭೂರಾದಿನಿ  
ಸತ್ತ್ವಾದಿನಿ ವಾ ಧಾಮಾನಿ ಸ್ಥಾನಾನಿ ಯಸ್ಯ | ದುಃಖಾಮ್ಬುಧಿ-  
ರವಿಮಂಡಲಪರಮಪದರೂಪಾಣಿ ಸ್ಥಾನಾನ್ಯಸ್ಯ ವಾ | “ಸಂಸಾರಾಲ್ಯೇ  
ಮಹತಿ ಜಲಧೌ ಮಜ್ಜತಾಂ ನಸ್ತ್ರಿಧಾಮನ್ ಪಾದಾಮ್ಬೋಜೇ ವರದ  
ಭವತೋ ಭಕ್ತಿನಾಂ ಪ್ರಯಚ್ಛ” ಮುಂ ಮಾಂ | 2. ಬ್ರಹ್ಮ.  
3. ಪರಿಶಿವ. 4. ಅಗ್ನಿ. 5. ಮೃತ್ಯು. 6. ಹತ್ತನೆಯ  
ದ್ವಾಪರಯುಗದ ವ್ಯಾಸ. “ಸಾರಸ್ವತಸ್ತು ನವಮೇ ತ್ರಿಧಾಮಾ  
ದಶಮೇ ತಥಾ” ದೇವಿಭಾಂ | 7. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ.  
“ತಾವಾಸ್ವಾಸ್ಯ ಜಗತ್ಸ್ರಷ್ಟಾ ಕುಮಾರೈಃ ಸಹ ನಾರದಃ | ಹಂಸೋ  
ಹಂಸೇನ ಯಾನೇನ ತ್ರಿಧಾಮ ಪರಮಂ ಯಯಿ” ಭಾಗಂ ೩-೨೪-೨೦ |



(ವಿಂ) 8. ಮೂರು ಲೋಕದಲ್ಲಿಯೂ ಹೊಳೆಯುವ.

9. ಮೂರು ಸಂಖ್ಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ತ್ರಿಧಾರ ತ್ರಿಧಾರ (ವಿಂ) 1. ಮೂರು ಧಾರಗಳುಳ್ಳ. ತಿಸ್ತೊ

ಧಾರಾ: ಅಗ್ರಾಣಿ ಯಸ್ಯ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಧಾರಾ -ಧಾರಾ.

2. ಗಂಗಾನದಿ. ತಿಸ್ತೊ ಧಾರಾ: ಪ್ರವಾಹಾ: ಸ್ವರ್ಗಮಧ್ಯಪಾತಾಲೇಷು  
ಯಸ್ಯಾ:।

ತ್ರಿಧಾರಸ್ತುಹಿ ತ್ರಿಧಾರಸ್ತುಹಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಂಡಗಲ್ಕಿ ಗಡ.

ತ್ರಿಧು ಭಾಗೇಷು ಧಾರಾ ಯಸ್ಯಾ. ತಾದೃಶಿ ಸ್ತುಹಿ।

ತ್ರಿನಯನ ತ್ರಿನಯನ (ಪುಂ) 1. ಮುಕ್ಕಣ್ಣ, ಈಶ್ವರ. ಪರಶಿವ.

ತ್ರಿಣಿ ನಯನಾನಿ ಯಸ್ಯ। ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರ ಮತ್ತು ಅಗ್ನಿ

ರೂಪವಾದ ಮೂರು ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳವನಾದುದರಿಂದ

ಪರಶಿವನಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು. "ಶೋಭಾಂ ಶುಭ್ರತ್ರಿನಯನವೃಷೋತ್ಪಾತ-

ಪಕ್ಷೋಫಮೇಯಾಮ್" ಮೇಘಂ ೧-೪೨। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಯನಾ

-ನಯನಾ. 2. ಪಾರ್ವತಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

ತ್ರಿನವತ ತ್ರಿನವತ (ವಿಂ) ತೊಂಬತ್ತಮೂರನೆಯ. ತ್ರಿನವತೇ:

ಪೂರ್ಣ: "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್"

(೪-೧-೧೫)। -ನವತೀ -ನವತೀ.

ತ್ರಿನವತಿ ತ್ರಿನವತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೊಂಬತ್ತಮೂರು. ತ್ರಿಧಾರಾ

ನವತಿ:।

ತ್ರಿನವತೀತಮ ತ್ರಿನವತೀತಮ (ವಿಂ) ತೊಂಬತ್ತಮೂರ

ನೆಯ. ತ್ರಿನವತೇ: ಪೂರ್ಣ: ಡಟೊ ವಾ ತಮಟ್ (೪-೨-೪೬)।

ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ತಮಿ -ತಮಿ.

ತ್ರಿನಾಭ ತ್ರಿನಾಭ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ತ್ರಯೋ ಲೋಕಾ: ನಾಭೌ ಯಸ್ಯ

"ಅಚ್" (೪-೪-೭೫)। "ನಮಸ್ತೇ ಪೃಥಿವ್ಯಾಭಯಾ ವೇದಗರ್ಭಾಯ

ವೇದಸೇ। ತ್ರಿನಾಭಾಯ ತ್ರಿಪೃಥಾಯ ಶಿಪಿವಿಷ್ಠಾಯ ವಿಷ್ಣವೇ"

ಭಾಗಂ ೭-೧೭-೨೬।

ತ್ರಿನೇತ್ರ ತ್ರಿನೇತ್ರ (ಪುಂ) ಮುಕ್ಕಣ್ಣ, ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.

ತ್ರಿಣಿ ನೇತ್ರಾಣಿ ಯಸ್ಯ। "ಬಭಾರ ಶಾಸ್ತ್ರಾಣಿ ದೃಶಂ ದ್ವಯಾಧಿಕಾಂ

ನಿಜತ್ರಿನೇತ್ರಾವತರತ್ವಬೋಧಿಕಾಮ್" ನೈಷಂ ೧-೬।

ತ್ರಿನೇತ್ರಚೂಡಾಮಣಿ ತ್ರಿನೇತ್ರಚೂಡಾಮಣಿ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ.

ತ್ರಿನೇತ್ರಾ ತ್ರಿನೇತ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಾರ್ವತಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

2. ಹಂದಿಗಡ್ಡೆ, ವಾರಾಹಗಿಡ.

ತ್ರಿಪಂಚಾಶ ತ್ರಿಪಂಚಾಶ (ವಿಂ) ಐವತ್ತಮೂರನೆಯ.

ತ್ರಿಪಂಚಾಶತ: ಪೂರ್ಣ: "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್

"ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಪಂಚಾಶತಿ -ಪಂಚಾಶತಿ.

ತ್ರಿಪಂಚಾಶತ್ ತ್ರಿಪಂಚಾಶತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಐವತ್ತಮೂರು.

ತ್ರಿಧಾರಾ ಪಂಚಾಶತ್।

ತ್ರಿಪಂಚಾಶತ್ತಮ ತ್ರಿಪಂಚಾಶತ್ತಮ (ವಿಂ) ಐವತ್ತಮೂರ

ನೆಯ. ತ್ರಿಪಂಚಾಶತ: ಪೂರ್ಣ: ಡಟೊ ವಾ ತಮಟ್ (೪-೨-೪೬)।

ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ತಮಿ -ತಮಿ.

ತ್ರಿಪತಾಕ ತ್ರಿಪತಾಕ (ನಂ) 1. ಮೂರು ರೇಖೆಗಳಿಂದ

ಕೂಡಿದ ಹಣೆ. ತಿಸ್ತ: ಪತಾಕಾ ಇವ ರೇಖಾ ಯತ್ರ। "ರೇಖಾ-

ತ್ರಯಾಚ್ಛಿತಂ ಫಾಲಂ ತ್ರಿಪತಾಕಂ ವಿದುರ್ಬುದ್ಧಾ:" ಹಾರಾಂ। (ಪುಂ) 2.

ಮೂರು ಪತಾಕೆಗಳಂತೆ ಬಿಚ್ಚಿದ ಬೆರಳುಗಳುಳ್ಳ ಹಸ್ತ.

"ಪ್ರಸಾರಿತಾ: ಸಮಾ: ಸರ್ವಾ ಯಸ್ಯಾಙ್ಗುಲ್ಯೋ ಭವಂತಿ ಹಿ।

ಕುಚ್ಚಿತಶ್ಚ ತಥಾಙ್ಗುಲ: ಸ ಪತಾಕಾ ಇತಿ ಸ್ಮೃತ:॥ ಪತಾಕೇ ತು

ಯದಾ ವಕ್ರಾನಾಮಿಕಾತ್ವಙ್ಗುಲಿರ್ಭವೇತ್। ತ್ರಿಪತಾಕ: ಸ ವಿಶೇಷ:"।

"ತ್ರಿಪತಾಕಕರೇಣಾನ್ಯಾನಪವಾರ್ಯಾಂತರಾ ಕಥಾಮ್। ಅನ್ಯೋನ್ಯಾ-

ಮನ್ವಣಂ ಯತ್ ಸ್ಯಾತ್ತಜ್ಜನಾಂತೇ ಜನಾಂತಿಕಮ್" ಸಾಂಧಂ ೬-೧೩೯।

ತ್ರಿಪತ್ರ ತ್ರಿಪತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಬಿಲ್ವವೃಕ್ಷ. ತ್ರಿಣಿ ತ್ರಿಣಿ ಪತ್ರಾಣಿ

ಯಸ್ಯ। ಬಿಲ್ವಪತ್ರದಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮ ವಿಷ್ಣು ಮಹೇಶ್ವರರು

ನೆಲೆಸಿರುವರು. "ಊರ್ವಪತ್ರಂ ಹರೋ ಜೇಯ: ಪತ್ರಂ ವಾಮಂ ವಿಧಿ:

ಸ್ವಯಮ್। ಅಹಂ ದಕ್ಷಿಣಪತ್ರಂ ಚ ತ್ರಿಪತ್ರದಲಮಿತ್ಯುತ"।

2. ಮುತ್ತಗದಮರ, ಪಲಾಶವೃಕ್ಷ.

ತ್ರಿಪಥ ತ್ರಿಪಥ (ಪುಂ) 1. ಕಪಾಲಕುಹರ. "ಕಲಾಂ ಪರಾಙ್ಮುಖೀಂ

ಕೃತ್ವಾ ತ್ರಿಪಥೇ ಪರಿಯೋಜಯೇತ್। ಸಾ ಭವೇತ್ ಸೇವರೀ ಮುಕ್ತಾ

ವ್ಯೋಮಚಕ್ರಂ ತದುದ್ಯತೇ" ಹಠಂ। (ನಂ) 2. ಮೂರು ಮಾರ್ಗ

ಗಳು, ಮೂರು ದಾರಿಗಳು. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಪಥಾಂ ಸಮಾಹಾರ:

"ಅ:" (೪-೪-೭೪)। ನಪುಂಸಕತ್ವಮ್ (ವಾಂ ೨-೪-೧೭)।

(ವಿಂ) 3. ಮೂರು ರಸ್ತೆಗಳು ಸೇರುವ ಜಾಗ. ತ್ರಯ:

ಪಂಥಾನೋ ಯತ್ರ।

ತ್ರಿಪಥಗಾ ತ್ರಿಪಥಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗಾನದಿ. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಪಥಾಂ

ಸಮಾಹಾರ: ತ್ರಿಪಥಮ್। ತ್ರಿಪಥೇನ ಸ್ವರ್ಗಮರ್ತ್ಯಪಾತಾಲಮಾರ್ಗೇಣ

ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಡ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)।

"ಗಜ್ಞಾ ತ್ರಿಪಥಗಾ ನಾಮ ದಿವ್ಯಾ ಭಾಗೀರಥೀತಿ ಚ। ತ್ರಿನ್

ಪಥೋ ಭಾವಯಂತೀತಿ ತಸ್ಮಾತ್ ತ್ರಿಪಥಗಾ ಸ್ಮೃತಾ" ರಾಮಾಂ।

ಸ್ವರ್ಗ ಭೂಮಿ ಮತ್ತು ಪಾತಾಳ ಈ ಮೂರು ಮಾರ್ಗ

ಗಳಿಂದಲೂ ಪ್ರವಹಿಸುವುದರಿಂದ ಗಂಗಾನದಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು.

ತ್ರಿಪಥಗಾಮಿನ್ ತ್ರಿಪಥಗಾಮಿನ್ (ವಿಂ) ಮೂರು ದಾರಿ

ಗಳಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ. ತ್ರಿಪಥೇನ ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ಲ (ಗತೌ)

"ಗಿರಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)।

-ಗಾಮಿನಿ -ಗಾಮಿನೀ.

ತ್ರಿಪಥಗಾಮಿನಿ ತ್ರಿಪಥಗಾಮಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗಾನದಿ.

ತ್ರಿಪಥೇನ ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಗಿರಿ:" (೩-೧-೧೩೪)।

ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)।



ತ್ರಿಪದ ತ್ರಿಪದ (ಪುಂ) ಎಷ್ಟು. ತ್ರಿಣಿ ಅಕಾರೋಕಾರಮಕಾರ-  
ರೂಪಾಣಿ ಪದಾನಿ ತದ್ವಾಚಕಾನ್ಯಸ್ಯ, ವಾರಾಹರೂಪಾಸ್ಥಾನೇ ತ್ರಿಣಿ  
ಪದಾನಿ ಕಕುದಾನಿ ಅಸ್ಯ, ಭೋಕ್ತೃಭೋಗ್ಯನಿಯಂತುಣಿ ಚೇತನಪ್ರಧಾನ-  
ತದೀಶ್ವರರೂಪಾಣಿ ತತ್ತ್ವಾನಿ ಪದಾನಿ ಜ್ಞಾಪ್ಯಾನಿ ಅಸ್ಯ ಇತಿ ವಾ ।  
“ಭೋಕ್ತೃಭೋಗ್ಯನಿಯಂತುಣಿ ಜ್ಞಾಪ್ಯಾನ್ಯಸ್ಯ ಪದಾನಿ ವಾ । ಪ್ರಣವೇ  
ತ್ರಿಣಿ ವಾಚ್ಯಾನಿ ವಾಚಕಾನಿ ಪದಾನಿ ವಾ । ವಾರಾಹರೂಪ-  
ಸ್ಯಾಸ್ಥಾನೇ ಪದಾನಿ ಕಕುದಾನಿ ವಾ । ಯಸ್ಯ ಸಂತಿ ಹೃಸೌ  
ನಿತ್ಯಂ ತ್ರಿಪದಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । “ತ್ರಿಪದ-  
ಸ್ತ್ರಿಪದಶಾಘ್ಯಕಃ” ವಿಂ ಸಂ ।

ತ್ರಿಪದಾ ತ್ರಿಪದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಂಸಪಾದಿಗಿಡ. ತ್ರಯಃ ಪಾದಾ  
ಮೂಲಾನಿ ಯಸ್ಯಾಃ । ಪಾದಸ್ಯ ಪದ್ಮಾವಃ (೬-೪-೧೩೦) ।  
2. ಗಾಯತ್ರೀಛಂದಸ್ಸು. “ಔಷ್ಣಾರಪೂರ್ವಿಕಾಸ್ತಿಸ್ತೋ  
ಮಹಾವ್ಯಾಹುತಯೋವ್ಯಯಾಃ । ತ್ರಿಪದಾ ಚೈವ ಸಾವಿತ್ರಿ ವಿಜ್ಞೇಯಂ  
ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಮುಖಮ್” ಮನುಂ ೨-೮೧ । -ಪದೀ -ಪದೀ. 3.  
ಅನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ. “ನಾಸ್ರಸತ್ ಕರಿಣಾಂ ಗ್ರೇವಂ  
ತ್ರಿಪದೀಛೇದಿನಾಮಪಿ” ರಘುಂ ೪-೪೮ । 4. ಗಂಗಾನದಿ.  
ತ್ರಿಪು ಮಾರ್ಗೇ ಪಾದೋ ಗಮನಂ ಯಸ್ಯಾಃ । “ತ್ರೈಲೋಕ್ಯಲಕ್ಷ್ಮೀಸ್ತ್ರಿಪದೀ  
ತಥ್ಯಾ ತಿಮಿರಚಂದ್ರಿಕಾ” ಕಾಶೀಖಂ ।

ತ್ರಿಪದಿಕಾ ತ್ರಿಪದಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರ್ಘ್ಯಪಾತ್ರೆಯನ್ನು  
ಇಡುವ ಮೂರು ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಪೀಠ. ತ್ರಿಣಿ  
ಪದಾನಿ ಪಾದಾಃ ಅಸ್ಯಾಃ । ಸಂಜಾಯಾಂ “ಕನ್” ।

ತ್ರಿಪರಿಕ್ರಾಂತ ತ್ರಿಪರಿಕ್ರಾಂತ (ಪುಂ) ಮೂರು ರೀತಿಯ  
ವ್ಯವಹಾರವನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ತ್ರಿಪು  
ವೃತ್ಯರ್ಥ ಕರ್ಮಸು ಪರಿಕ್ರಾಂತಃ । ಯಾಜನ ಅಧ್ಯಾಪನ ಪ್ರತಿಗ್ರಹ  
ರೂಪವಾದ ಮೂರು ವೃತ್ತಿಯನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವ  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. “ತೃವಿಧೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ವಿಧ್ವಾನ್ ನ ಚಾಧ್ಯಯನ-  
ಜೀವಕಃ । ತ್ರಿಕರ್ಮಾ ತ್ರಿಪರಿಕ್ರಾಂತಃ ಮೈತ್ರೇಷ ಸ್ಮೃತೋ ದ್ವಿಜಃ”  
ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೪೧-೬೬ ।

ತ್ರಿಪರ್ಣ ತ್ರಿಪರ್ಣ (ಪುಂ) 1. ಪಲಾಶವೃಕ್ಷ. ತ್ರಿಣಿ ತ್ರಿಣಿ ಪ್ರತಿ  
ಪತ್ರಂ ಪರ್ಣಾನ್ಯಸ್ಯಾಃ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪರ್ಣಾ -ಪರ್ಣೀ. 2. ಕಾಡು  
ಹತ್ತಿಗಿಡ. 3. ನರಿಹೋನ್ನೆ ಗಿಡ. 4. ಮೂರು ಎಲೆಗಳು.  
ತ್ರಯಾಣಾಂ ಪರ್ಣಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ ।

ತ್ರಿಪಾಠ ತ್ರಿಪಾಠ (ಪುಂ) ಪದ ಕ್ರಮ ಮತ್ತು ಸಂಹಿತೆಗಳ  
ಪಾಠ.

ತ್ರಿಪಾಠಿನ್ ತ್ರಿಪಾಠಿನ್ (ಪುಂ) ಪದ ಕ್ರಮ ಮತ್ತು  
ಸಂಹಿತೆಗಳನ್ನು ಓದುವವನು. ತ್ರಿನ್ ಪದಕ್ರಮಸಂಹಿತಾ-  
ಗ್ರಂಥಾನ್ ಪಠತಿ - ಪಠ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) । “ಗಿರಿನಿಃ”  
(೩-೧-೧೩೪) ।

ತ್ರಿಪಾದ್ ತ್ರಿಪಾದ್ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. ತ್ರಿವಿಕ್ರಮ.  
2. ತ್ರೇತಾಯುಗದ ಧರ್ಮರೂಪವಾದ ವೃಷಭ. “ರಾಘವಃ  
ಶಿಥಿಲಂ ತಸ್ಯೌ ಭುವಿ ಧರ್ಮಸ್ತ್ರಿಪಾದಿವ” ।

ತ್ರಿಪಾದ ತ್ರಿಪಾದ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ, ತ್ರಿವಿಕ್ರಮ. ತ್ರಯಃ  
ಪಾದಾ ಯಸ್ಯ । “ಪಾದೋಽಸ್ಯ ವಿಶ್ವಾ ಭೂತಾನಿ, ತ್ರಿಪಾದಸ್ಯಾಮೃತಂ-  
ದಿವಿ” ಶ್ರುತಿಃ । 2. ಒಂದು ರಾಶಿಗೆ ಮೂರು ಪಾದಗಳು  
ಸೇರುವ ನಕ್ಷತ್ರ. ಉದಾಃ ಕೃತ್ತಿಕೆಯ ಮೊದಲನೆಯ  
ಪಾದವು ಮೇಷರಾಶಿಗೂ 2, 3, 4 ನೆಯ ಪಾದಗಳು  
ವೃಷಭರಾಶಿಗೂ ಸೇರುವುದರಿಂದ ಕೃತ್ತಿಕೆಯು ತ್ರಿಪಾದ  
ನಕ್ಷತ್ರ. ಹೀಗೆಯೇ ಉಳಿದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳನ್ನು ತಿಳಿಯಬೇಕು.

ತ್ರಿಪಾದಿಕಾ ತ್ರಿಪಾದಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಂಸಪಾದೀಗಿಡ.

ತ್ರಿಪಿಂಡ ತ್ರಿಪಿಂಡ (ನಂ) ಪಾರ್ವಣ ಶ್ರಾದ್ಧ. ತ್ರಿಣಿ  
ಪಿಂಡಾನಿ ಯತ್ರ । ಪಿತ್ರ ಪಿತಾಮಹ ಪ್ರಪಿತಾಮಹರನ್ನು  
ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಮಾಡುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ತ್ರಿಪುಟ ತ್ರಿಪುಟ (ಪುಂ) 1. ಬಾಣ. ತ್ರಿಣಿ ಪುಟಾನ್ಯಸ್ಯ ।  
2. ತೀರ, ದಡ. 3. ಒಂದು ಹಸ್ತ ಪ್ರಮಾಣ, ಒಂದು  
ಮೊಳದ ಅಳತೆ. 4. ನೆಲಗಡಲೆಕಾಯಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪುಟಾ  
-ಪುಟಾ. 5. ಮಲ್ಲಿಗೆಗಿಡ. 6. ಸಣ್ಣ ಜಾತಿಯ ಯಾಲಕ್ಕಿ  
ಗಿಡ. 7. ಕೆಂಪು ತಿಗಡೆ ಮರ. 8. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. “ತ್ರಿಪುಟಾ  
ಮಲ್ಲಿಕಾರ್ಜುನಾಂ ಚ ಸೂಕ್ಷ್ಮಲಾತ್ರಿವೃತೋಃ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ । ಸತೀನಕೇ ಚ  
ತೀರೇ ಚ ತ್ರಿಪುಟಃ ಸಮುದಾಹುತಃ” ಮೇದಿಂ ।

ತ್ರಿಪುಟಿನ್ ತ್ರಿಪುಟಿನ್ (ಪುಂ) ಏರಂಡವೃಕ್ಷ. ಹರಳು ಗಿಡ.  
ತ್ರಿಣಿ ಪುಟಾನಿ ಸನ್ಯಸ್ಯ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪) ।

ತ್ರಿಪುಟಿ ತ್ರಿಪುಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ). ಕೆಂಪು ತಿಗಡೆ ಮರ.

ತ್ರಿಪುಂಡ್ರ ತ್ರಿಪುಂಡ್ರ (ನಂ) ಹಣೆಯಲ್ಲಿ ಧರಿಸುವ ಕಬ್ಬಿನ  
ಪಟ್ಟಿಯ ಅಕಾರದ ಪುಂಡ್ರ. ಲಲಾಟದಲ್ಲಿ ಹಾಕಿಕೊಳ್ಳುವ  
ತೀರ್ಥ ಅಥವಾ ಉದ್ವೇಗಪುಂಡ್ರ. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಪುಂಡ್ರಾಣಾಂ  
ಸಮಾಹಾರಃ । “ವಕ್ರಾ ಲಲಾಟಗಾಸ್ತ್ರಿಪುಂಡ್ರಾ ಭಸ್ಮರೇಖಾಸ್ತ್ರಿಪುಂಡ್ರ-  
ಕಮ್” । “ವಿನಾ ಭಸ್ಮತ್ರಿಪುಂಡ್ರೇಣ ವಿನಾ ರುದ್ರಾಕ್ಷಮಾಲಯಾ ।  
ಪೂಜಿತೋಽಪಿ ಮಹಾದೇವೋ ನ ಸ್ಯಾತ್ತಸ್ಯ ಫಲಪ್ರದಃ” । “ಶಿವಾಗಮೇ  
ದೀಕ್ಷಿತೇಸ್ತು ಧಾರ್ಯ ತೀರ್ಥಕ್ ತ್ರಿಪುಂಡ್ರಕಮ್ । ವಿಷ್ಣವಾಗಮೇ ದೀಕ್ಷಿತೇಸ್ತು  
ಋತ್ವಪುಂಡ್ರಂ ವಿಧಾರಯೇತ್” । ಉದ್ವೇಗಪುಂಡ್ರವನ್ನು ಮೃತ್ತಿ  
ನಿಂದಲೂ ತೀರ್ಥ ಪುಂಡ್ರವನ್ನು ಭಸ್ಮದಿಂದಲೂ  
ತಿಲಕವನ್ನು ಚಂದನದಿಂದಲೂ ಧರಿಸಬೇಕು. “ಋತ್ವಪುಂಡ್ರಂ  
ಮೃದಾ ಕುರ್ಯಾತ್ ತ್ರಿಪುಂಡ್ರಂ ಭಸ್ಮನಾ ಸದಾ । ತಿಲಕಂ ವೈ ದ್ವಿಜಃ  
ಕುರ್ಯಾತ್ ಚಂದನೇನ ಯದ್ವಿಚ್ಛಯಾ” ।

ತ್ರಿಪುರ್ ತ್ರಿಪುರ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂರು ಪಟ್ಟಣಗಳು. ತ್ರಿಗುಣಿತಾಃ  
ಪುರಃ । “ಸ ನಿರ್ಮಾಯ ಪುರಸ್ತ್ರಿಪುರ್ ಹೇಮಿರೋಪಾಯಸೀವಿಭುಃ ।  
ದುರ್ಲಭ್ಯಾಪಾಯಸಂಯೋಗಾ ದ್ವಿತೀಯಪರಿಚ್ಛದಾಃ” ಭಾಗಂ ೭-೧೦-೪೪ ।



**ತ್ರಿಪುರ ತ್ರಿಪುರ (ನಂ)** ಬ್ರಹ್ಮನ ವರದಿಂದ ತಾರಕಾಸುರನ ಮಕ್ಕಳಾದ ತಾರಾಕ್ಷ ಕಮಲಾಕ್ಷ ಮತ್ತು ವಿದ್ಯುನ್ಮಾಲಿ ಇವರಿಗಾಗಿ ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಮಯನಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಮೂರು ನಗರಗಳು. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಪುರಾಣಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ | ತಾರಾಕ್ಷನು ಸಂವರ್ಣಪುರವನ್ನೂ ಕಮಲಾಕ್ಷನು ರಜತಪುರವನ್ನೂ ವಿದ್ಯುನ್ಮಾಲಿಯು ಅಯೋನಗರವನ್ನೂ ಪಡೆದು ಅನೇಕ ವಿಧವಾದ ಭೋಗಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿದ್ದರು. ಅಂದಿನಿಂದಲೂ ಮಯನ ಉಪದೇಶದಂತೆ ಈ ಮೂವರೂ ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ತೊಂದರೆಕೊಡದೆ ಸದಾ ವಿಷ್ಣು ಭಕ್ತರಾಗಿರುತ್ತಿದ್ದರು. ಕಾಲಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಗರ್ವಿತರಾದ ಇವರ ಹಾವಳಿಯನ್ನು ತಡೆಯಲಾರದೆ ದೇವತೆಗಳು ಪರಮೇಶ್ವರನನ್ನು ಮರೆಹೊಕ್ಕಲಾಗಿ ಪರಶಿವನು — ಭೂಮಿಯನ್ನು ರಥವನ್ನಾಗಿಯೂ ಬ್ರಹ್ಮನನ್ನು ಸಾರಥಿಯನ್ನಾಗಿಯೂ ವೇದಗಳನ್ನು ಕುದುರೆಗಳನ್ನಾಗಿಯೂ ಮಂದರಪರ್ವತವನ್ನು ಧನುಸ್ಸನ್ನಾಗಿಯೂ ಆದಿಶೇಷನನ್ನು ಹೆದೆಯನ್ನಾಗಿಯೂ ವಿಷ್ಣುವನ್ನು ಬಾಣವನ್ನಾಗಿಯೂ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಮೂವರೂ ಒಂದು ಕಡೆ ಸೇರಿದಾಗ ತ್ರಿಪುರಾಸುರರನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದನು. ಭಾಂ ಕರ್ಣಂ ೨೬, ೨೭ | ಧರ್ಮವನ್ನು ರಥವನ್ನಾಗಿಯೂ ಜ್ಞಾನವನ್ನು ಸಾರಥಿಯನ್ನಾಗಿಯೂ ವಿರಕ್ತಿಯನ್ನು ಧ್ವಜವನ್ನಾಗಿಯೂ ಋದ್ಧಿಯನ್ನು ಕುದುರೆಗಳನ್ನಾಗಿಯೂ ತಪಸ್ಸನ್ನು ಧನುಸ್ಸನ್ನಾಗಿಯೂ ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಂಚುಕವನ್ನಾಗಿಯೂ ಕ್ರಿಯೆಯನ್ನು ಬಾಣವನ್ನಾಗಿಯೂ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಈ ಮೂವರೂ ಒಂದು ಕಡೆ ಸೇರಿದಾಗ ತ್ರಿಪುರಗಳನ್ನು ದಹಿಸಿದನು. “ಅಥಾಸೌ ಶಕ್ತಿಮಿಃ ಸ್ವಾಮಿಃ ಶಮ್ಭೋಃ ಪ್ರಾಥಮಿಕಂ ವ್ಯವಾತ್ | ಧರ್ಮಜ್ಞಾನ-ವಿರಕ್ತೃದ್ವಿತಪೋವಿಧ್ಯಾಕ್ರಿಯಾದಿಮಿಃ | ರಥಂ ಸೂತಂ ಧ್ವಜಂ ವಾಹನಂ ಧನುರ್ವರ್ಮಶರಾದಿ ಯತ್ | ಸನ್ನದೋ ರಥಮಾಸ್ಥಾಯ ಶರಂ ಧನುರಪಾದದೇ | ಶರಂ ಧನುಷಿ ಸನ್ಧಾಯ ಮುಹೂರ್ತೇಭಿಜಿತಿಶಿವರಃ | ದದಾಹ ತೇನ ಕುರ್ಮೇಭಾಃ ಹರೋಽಪಿ ತ್ರಿಪುರೋ ನೃಪ | ದಿವಿ ದುನ್ದುಭಯೋ ನೇಕಃ ವಿಮಾನಶತಸಂಕ್ತುಲಾಃ” ಭಾಗಂ ೭-೧೦ |

**ತ್ರಿಪುರಾಣ ತ್ರಿಪುರಘ್ನ (ಪುಂ)** ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. ತ್ರಿಪುರಂ ಹತವಾನ್ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) “ಕಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೪) | [“ತ್ರಿಪುರ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ತ್ರಿಪುರಭರವಿ ತ್ರಿಪುರಭೈರವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

**ತ್ರಿಪುರಾಂತಕ ತ್ರಿಪುರಾಂತಕ (ಪುಂ)** ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. ತ್ರಿಪುರಸ್ಯಾಂತಂ ಕರೋತಿ — ಅಂತ + ಣಿಕ್ “ಫ್ತುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) |

**ತ್ರಿಪುರಾರಿ ತ್ರಿಪುರಾರಿ (ಪುಂ)** ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. ತ್ರಿಪುರಾಘಾರಿಃ |

**ತ್ರಿಪು(ಪು)ರಾ ತ್ರಿಪು(ಪೂ)ರುಷ (ನಂ)** 1. ಮೂವರು ಪೂರ್ವಪುರುಷರು, ಪಿತೃಪಿತಾಮಹಪುತ್ರಪಿತಾಮಹರು, ತಂದೆ ತಾತ ಮುತ್ತಾತರೆಂಬ ಮೂವರು. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಪು(ಪು)ರಾಣಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ | (ವಿಂ) 2. ಮೂರು ಪುರುಷಪ್ರಮಾಣವುಳ್ಳ, ಮೂರು ಆಳುಗಳ ಅಳತೆಯುಳ್ಳ. ತ್ರಯಃ ಪು(ಪು)ರಾಃ ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ |

**ತ್ರಿಪುಷ್ಕರ ತ್ರಿಪುಷ್ಕರ (ನಂ)** 1. ಮೂರು ಪುಷ್ಕರಗಳು, ಬ್ರಹ್ಮನಿರ್ಮಿತವಾದ ಒಂದು ತೀರ್ಥ. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಪುಷ್ಕರಾಣಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ | 2. ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಮಧ್ಯಮ ಕನಿಷ್ಠಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಮಡುಗಳು. (ಪುಂ) 3. ತಿಥಿ ವಾರ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಒಂದು ಯೋಗ. “ವಾರಾಃ ಕರಾಸ್ತಿಥಿಭಿರ್ದ್ರಾ ನಕ್ಷತ್ರಂ ಭಗ್ನಪಾದಕಮ್ | ಜಾತೇಽತ್ರ ಜಾರಜೋ ಯೋಗೋ ಮರಣೇಽತ್ರ ತ್ರಿಪುಷ್ಕರಮ್” |

**ತ್ರಿಪ್ರಲಂಬ ತ್ರಿಪ್ರಲಂಬ (ವಿಂ)** ದೇಹದಲ್ಲಿ ತೊಂಗಾಡು ತಿರುವ ಮೂರು ಅಂಗಗಳುಳ್ಳವನು. ಇದು ಸಾಮುದ್ರಿಕ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ ಮಹಾಪುರುಷ ಲಕ್ಷಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಹುಬ್ಬು ತೋಳುಗಳು ಮತ್ತು ಅಂಡಕೋಶ ಇವು ಮೂರೂ ಉದ್ದವಾಗಿ ತೊಂಗುತ್ತಿರುವುದು ಮಹಾಪುರುಷ ಲಕ್ಷಣ, “ದೀರ್ಘಭ್ರೂವಾಹುಮುಕ್ತಸ್ತು ಚಿರಜೀವಿ ಧನಿ ನರಃ” |

**ತ್ರಿಪ್ರಸೂತ ತ್ರಿಪ್ರಸೂತ (ಪುಂ)** ಮೂರು ಜಾಗದಲ್ಲಿ ಮದೋದಕ ಸುರಿಯುತ್ತಿರುವ ಮತ್ತೆಗಜ. ತ್ರಿಪು ಸ್ಥಾನೇಷು ಪ್ರಸೂತಃ | ಮೇಥ್ರ (ಶಿಶು) ಕಪೋಲ ಮತ್ತು ಕಣ್ಣುಗಳಲ್ಲಿ ಆನೆಗೆ ಮದೋದಕವು ಸುರಿಯುವುದು. “ಗಜಾನಾಂ ತು ಪ್ರಭಿಷ್ಠಾನಾಂ ತ್ರಿಪಾ ಪ್ರಸೂತಾಂ ಮದಮ್” ಭಾಂ ಆದಿಂ |

**ತ್ರಿಫಲಾ ತ್ರಿಫಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮೂರು ಫಲಗಳು. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಫಲಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ | ಅಳಲೆ ತಾರೆ ಮತ್ತು ನೆಲ್ಲಿಕಾಯಿಗಳು. “ಪಥ್ಯಾ ವಿಭಿತ್ತವಾತ್ರಿಣಾಂ ಫಲೈಃ ಸ್ಯಾತ್ ತ್ರಿಫಲಾ ಸಮಾ” |

**ತ್ರಿಫಲೀಕೃತ ತ್ರಿಫಲೀಕೃತ (ವಿಂ)** ಮೂರು ಸಲ ಹೊಟ್ಟು ತೆಗೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೈಗಳಿಂದ ಮೂರಾವೃತ್ತಿ ಉಜ್ಜಿ ಶುದ್ಧ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಅಕ್ಕಿ ಮುಂತಾದುದು. ತ್ರಿಃ ತ್ರಿವಾರಂ ಫಲೀಕೃತಃ | “ದಕ್ಷಿಣೋತ್ತರಾಮ್ಯಾಂ ಪಾಣಿಮ್ಯಾಂ ತ್ರಿಃ ಫಲೀಕೃತಾಸ್ತಾಽಽಶ್ವಲಾನ್ ತ್ರಿವೇದತಾಮ್ಯಃ ಪ್ರಕ್ಷಾಲಯೇತ್” |

**ತ್ರಿವಲಿ ತ್ರಿವಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿರುವ ತ್ರಿವಳಿಗಳು.

**ತ್ರಿಬಂಧನ ತ್ರಿಬಂಧನ (ಪುಂ)** 1. ಜೀವ, ಜಾಗ್ರತ್ ಸ್ವಪ್ನ ಸುಷುಪ್ತಿ ಈ ಮೂರು ಅವಸ್ಥೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಜೀವಾತ್ಮ. ತ್ರಿವಿಧಿ ಬಂಧನಾನಿ ಯಸ್ಯ | 2. ಹರ್ಯಶ್ವನ ಮೊಮ್ಮಗ, ಅರುಣನ ಮಗ. “ಹರ್ಯಶ್ವಸ್ತಸ್ಮುತಸ್ತಸ್ಮಾದರುಣೋಽಪಿ ತ್ರಿಬಂಧನಃ” ಭಾಂ ೯-೭-೪ |



ತ್ರಿವಿಧ ತ್ರಿವಿಧ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಸ್ವರ್ಗಮಧ್ಯ-  
ಪಾತಾಲಾನಾಂ ಬಂಧು: ।

ತ್ರಿವಿಧ ತ್ರಿವಿಧ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಂಪು ತಿಗಡೆ ಮರ.  
ಶ್ರೀನ್ ದೋಷಾನ್ ಭಂಡತೇ - ಭಂಡಿ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) "ಅನ್"  
(೩-೨-೧) ।

ತ್ರಿವಿಧ ತ್ರಿವಿಧ (ನಂ) ಸುರತ, ಸಂಭೋಗ. ತ್ರಿವಿಧ ದಂತ-  
ಕ್ಷತಾಲಿಜ್ಜನಮರ್ದನೇಷು ಭದ್ರಂ ಯತ್ರ । "ಉಪಸೃಷ್ಟಂ ತ್ರಿವಿಧಂ ಚ  
ಕ್ರೋಧಾರ್ತನಂ ಮಹಾಸುಖಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ತ್ರಿವಿಧ ತ್ರಿವಿಧ (ಪುಂ) ಮೂರನೆಯ ಭಾಗ. ತೃತೀಯೋ  
ಭಾಗ: । "ತ್ರಿವಿಧಶೇಷಾಸು ನಿಶಾಸು ಚ ಕ್ಷಣಂ ನಿಮಿತ್ತೇ ನೇತ್ರೇ  
ಸಹಸ್ರಾ ವ್ಯಬುಧ್ಯತ" ಕುಮಾರಂ ೫-೫೭ ।

ತ್ರಿವಿಧ ತ್ರಿವಿಧ (ಪುಂ) ತುರ್ವಸುರಾಜನ ವಂಶದಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟಿದ ಭಾನುಮಂತನ ಮಗ. ಕರಂಧಮನ ತಂದೆ.  
"ತುರ್ವಸೋಸ್ತು ಸುತೋ ವಹ್ನಿವಹ್ನೇರ್ಭಗೌಷ್ಠಿ ಭಾನುಮಾನ್ । ತ್ರಿವಿಧ-  
ಸ್ತತ್ಸುತೋಽಸ್ಯಾಪಿ ಕರಂಧಮ ಉದಾರವಿ: " ಭಾಗಂ ೯-೨೩-೪ ।

ತ್ರಿವಿಧ ತ್ರಿವಿಧ (ನಂ) ಮೂರು ಕೋಣ (ಮೂಲೆ)ಗಳುಳ್ಳ  
ಒಂದು ಕ್ಷೇತ್ರ. ತ್ರಯೋ ಭುಜಾ ಯತ್ರ ।

ತ್ರಿವಿಧ ತ್ರಿವಿಧ (ನಂ) ಮೂರು ಲೋಕಗಳು, ಸ್ವರ್ಗ  
ಮರ್ತ್ಯ ಪಾತಾಲ ಲೋಕಗಳು. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಭುವನಾನಾಂ  
ಸಮಾಹಾರ: । "ತ್ರಿವಿಧನೈಕಭುಧರಸ್ಯ ಶೌರ್ಯರಾಶಿ: " ಚಂ ರಾಂ ।

ತ್ರಿವಿಧ ತ್ರಿವಿಧ (ಪುಂ) ಮೂರು ಮಹಡಿಗಳುಳ್ಳ ಮನೆ,  
ಉಪ್ಪರಿಗೆ ಮನೆ. ತಿಸ್ರೋ ಭೂಮಯ: ಕರ್ವಾಧೋಮಧ್ಯಸ್ಥಾ ಯಸ್ಯ  
"ಅನ್" (ವಾಂ ೫-೪-೭೫) ।

ತ್ರಿವಿಧ ತ್ರಿವಿಧ (ಪುಂ) 1. ವಿದ್ಯೆ ಧನ ಮತ್ತು ವಂಶ ಇವು  
ಗಳ ಪ್ರಯುಕ್ತವಾದ ಅಹಂಕಾರ. ತ್ರಿಗುಣಿತೋ ಮದ: ।  
"ವಿದ್ಯಾಮದೋ ಧನಮದಸ್ತಥೈವಾಭಿಜನೋ ಮದ: । ಏತೇ ಮದಾ  
ಮದಾನ್ವಾನಾಂ ತ ಏವ ಹಿ ಸತಾಂ ದಮ: " । "ನೂನಂ ನೃಪಾಣಾಂ  
ತ್ರಿಮದೋತ್ಪಥಾನಾಂ ಮಹಿಂ ಮುಹೂರ್ತಾಲಯತಾಂ ಚಮುಭಿ: " ಭಾಗಂ  
೩-೧-೪೩ । 2. ಭದ್ರಮುಸ್ತೆ ಚಿತ್ರಮೂಲ ಮತ್ತು ವಾಯು  
ವಿಳಂಗ. "ವಿಡ್ವಜ್ಜಮುಸ್ತಚಿತ್ರಂ ಚ ತ್ರಿಮದ: ಸಮುದಾಹೃತ: " ।  
ಇವು ವಿದ್ಯೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡಿ ಮೈಮೇಲಿನ ಎಚ್ಚರವನ್ನು  
ತಪ್ಪಿಸುವವು.

ತ್ರಿವಿಧ ತ್ರಿವಿಧ - ಮಧುರ - ಮಧುರ (ನಂ) ಹಾಲು  
ಜೇನುತುಪ್ಪ ಮತ್ತು ಸಕ್ಕರೆ. ಈ ಮೂರು ಮಧುರ (ಸಿಹಿ)  
ಪದಾರ್ಥಗಳು. ತ್ರಿಗುಣಿತಂ ಮಧು ಮಧುರಂ ವಾ । "ಕುಷ್ಠಂ  
ಸಿತಾ ಮಾಕ್ಷಿಕಂ ಚ ವಿಜ್ಞೇಯಂ ಮಧುರತ್ರಯಮ್" ।

ತ್ರಿವಿಧ ತ್ರಿವಿಧ (ನಂ) ಆಣವುಲ ಮಾಯಾವುಲ ಮತ್ತು  
ಕಾರ್ಮಿಕವುಲಗಳೆಂಬ ಮೂರು ವುಲಗಳು.

ತ್ರಿವಿಧ ತ್ರಿವಿಧ (ಪುಂ) ಪುಂಡ್ರಸ್ವರ. ತಿಸ್ರೋ ಮಾತ್ರಾ  
ಉಚ್ಚಾರಣಕಾಲೋಽಸ್ಯ । "ಏಕಮಾತ್ರೋ ಭವೇದ್ಭವೋ ದ್ವಿಮಾತ್ರೋ ದೀರ್ಘ  
ಉಚ್ಯತೇ । ತ್ರಿಮಾತ್ರಸ್ತು ಪ್ಲುತೋ ಜ್ಞೇಯ: ವ್ಯಂಜನಂ ತ್ವರ್ಧಮಾತ್ರಕಮ್" ।

ತ್ರಿವಿಧ ತ್ರಿವಿಧ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗಾ. ತ್ರಿವಿಧಗಿರಿ:  
ಗಂಧರ್ವಗಿರಿ (ಗತೌ) "ಹ:" (೩-೨-೪೮) । "ಅನ್ವರ್ಥ-  
ಸಂಜ್ಞೇವ ಪರಂ ತ್ರಿವಿಧಗಂಗಾ ಯಾವಸಂಖ್ಯೆ: ಪಥಿಭಿಶ್ಚಮೂರಸೌ"  
ಮಾಧಂ ೧೨-೨೩ ।

ತ್ರಿವಿಧ ತ್ರಿವಿಧ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಂಗಾನದಿ. ತ್ರಯೋ ಮಾರ್ಗಾ  
ಅಸ್ಯಾ: । "ಪ್ರಭಾಮಹತ್ಯಾ ಶಿಕ್ಷಯೇವ ದೀಪಸ್ತ್ರಿಮಾರ್ಗೇವ  
ತ್ರಿದಿವಸ್ಯ ಮಾರ್ಗ: " ಕುಮಾರಂ ೧-೨೮ । -ಮಾರ್ಗಿ-ಮಾರ್ಗೀ.

2. ಮೂರು ಮಾರ್ಗಗಳು. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಮಾರ್ಗಾಣಾಂ ಸಮಾಹಾರ: ।

ತ್ರಿವಿಧ ತ್ರಿವಿಧ (ಪುಂ) ತ್ರಿಕೂಟಪರ್ವತ. ತ್ರಿವಿಧ  
ಮುಕುಟಾನಿವ ಶೃಂಗಾಪ್ಯಸ್ಯ ।

ತ್ರಿವಿಧ ತ್ರಿವಿಧ (ಪುಂ) 1. ಶಾಕಮುನಿ. ತ್ರಿವಿಧ ಮುಖಾನಿ  
ಯಸ್ಯ । 2. ಗಾಯತ್ರೀಜಪದ ಅಂಗವಾದ ಒಂದು  
ಮುದ್ರೆ. "ಸಂಮುಖಾಸಕ್ತಯೋ: ಪಾಣ್ಯೋ: ಕನಿಷ್ಠಾದ್ವಯಯೋಗತ: ।  
ಶೇಷಾಙ್ಗುಲಿನಾಂ ವೇರಲ್ಯಾತ್ ಮುಧ್ರಾ: ಸ್ಯುರ್ವಿಮುಖಾದಯ: " । ಎರಡು  
ಹಸ್ತಗಳನ್ನು ಎದುರಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಕಿರುಬೆರಳುಗಳನ್ನು  
ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಿ ಉಳಿದ ಬೆರಳುಗಳನ್ನು ಎರಳವಾಗಿ  
ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ಮಾಡುವ ಮುದ್ರೆಯು ದ್ವಿಮುಖ ಮುದ್ರೆ  
ಯಾಗುವುದು. ಹೀಗೆಯೇ ಅಂಗುಷ್ಠ (ಹೆಬ್ಬೆರಳು) ಮೊದ  
ಲಾಗಿ ಅನಾಮಿಕೆಗಳ ಪರ್ಯಂತ ಸೇರಿಸಿ ಮಾಡುವ ಮುದ್ರೆ  
ಗಳು ತ್ರಿಮುಖ ಚತುರ್ಮುಖ ಪಂಚಮುಖ ಮುದ್ರೆ  
ಗಳಾಗುವವು. -ಮುಖಾ-ಮುಖಾ. 3. ಮಾಯಾದೇವಿ,  
ಶಾಕಮುನಿಯ ತಾಯಿ.

ತ್ರಿವಿಧ ತ್ರಿವಿಧ (ನಂ) 1. ಮುನಿತ್ರಯ, ಪಾಣಿನಿ  
ಕಾತ್ಯಾಯನ ಮತ್ತು ಪತಂಜಲಿ ಮುನಿಗಳು. ತ್ರಯಾಣಾಂ  
ಮುನೀನಾಂ ಸಮಾಹಾರ: । 2. ಈ ಮೂವರು ಮುನಿಗಳಿಂದ  
ಪ್ರಣೀತವಾದ ವ್ಯಾಕರಣ. ತ್ರಯೋ ಮುನಯ: । ಇಲ್ಲಿ ಮುನಿ  
ಶಬ್ದವು ವಿದ್ಯಾವಂಶವಾಚಕ. ವಂಶವು ವಿದ್ಯೆಯಿಂದ  
ಮತ್ತು ಜನ್ಮದಿಂದ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಇಲ್ಲಿ ವಿದ್ಯಾ  
ವಂಶದಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಕರಣವು ಹುಟ್ಟಿದುದರಿಂದ ವಿದ್ಯಾವಂಶ  
ವಾಚಕವಾದ ಮುನಿಶಬ್ದದೊಡನೆ ತ್ರಿಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಸಮಾಸ  
ಬಂದಿರುವುದು. (೨-೧-೧೯) ।

ತ್ರಿವಿಧ ತ್ರಿವಿಧ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮ ವಿಷ್ಣು ಮಹೇಶ್ವರ  
ರೂಪದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪರಮಾತ್ಮ. ತಿಸ್ರೋ ಮೂರ್ತಯೋಽಸ್ಯ ।  
"ನಮಸ್ತ್ರಿಮೂರ್ತಯೇ ತುಮ್ಯಂ ಪ್ರಾಕ್ಸೃಷ್ಟೇ: ಕೇವಲಾತ್ಮನೇ" ಕುಮಾರಂ  
೨-೪ ।



**ತ್ರಿಮೂರ್ತಿ** (ಪುಂ) ಮೂರು ತಲೆಯುಳ್ಳವನು.

ತ್ರಯೋ ಮೂರ್ತಿನೋ ಯಸ್ಯ "ಬ:" (೪-೪-೧೧೫) । "ಬಹುಮೂರ್ತೌ ದ್ವಿಮೂರ್ತೌ ತ್ರಿಮೂರ್ತೌ ಪ್ರಾಹತಾ ಮೃಘೇ" ಭೃಗುಂ ೪-೪೧ ।

**ತ್ರಿಯಂಬಕ** (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಮುಕ್ಕಣ್ಣು.

ಪರಮೇಶ್ವರ. ತ್ರಿಣಿ ಅಂಬಕಾನಿ ಯಸ್ಯ "ದ್ವಿಬ್" (೬-೪-೮೬) ।  
ಅಂದಸ: ಪ್ರಯೋಗ: ।

**ತ್ರಿಯವ** (ವಿಂ) ಮೂರು ಯವಗಳ ತೂಕವುಳ್ಳ

(ಕೃಷ್ಣಲವೆಂಬ ತೂಕ). ತ್ರಯೋ ಯವಾ: ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ ।

"ಸರ್ವಪಾ: ಷಡ್ ಯವೋ ಮಘ್ಯ: ತ್ರಿಯವಂ ತ್ರೇಕಕೃಷ್ಣಲಮ್" ಮನುಂ ೮-೧೩೪ ।

**ತ್ರಿಯಾಮಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಾತ್ರಿ. ತ್ರಯೋ ಯಾಮಾ

ಅಸ್ಯಾ: । "ತ್ರಿಯಾಮಾಂ ರಜನೀಂ ಪ್ರಾಹು: ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ ದ್ವಂತಚತುಷ್ಟಯಮ್ ।

ನಾಡೀನಾಂ ತದ್ಗುಹೇ ಸಂಧ್ಯೇ ದಿವಸಾದ್ವಂತಸಂಜಿತೇ" । ರಾತ್ರಿಯು

ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಮುಹೂರ್ತ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಒಂದು

ಮುಹೂರ್ತ ಹೀಗೆ ಎರಡು ಮುಹೂರ್ತ (ಏಳೂವರೆ

ಘಳಿಗೆ) ಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಉಳಿದ ಇಪ್ಪತ್ತೆರಡೂವರೆ ಘಳಿಗೆ

ಗಳು ಅಂದರೆ ಮೂರು ಯಾಮಗಳು 9 ಗಂಟೆಗಳ ಕಾಲವು

ರಾತ್ರಿಯಾಗುವುದು. ಅದರಿಂದ ರಾತ್ರಿಗೆ "ತ್ರಿಯಾಮಾ"

ಎಂದು ಹೆಸರು. "ತ್ರಿಯಾಮಾ ಶಶಿನಾ ಭಾತಿ ಶಶಿ ಭಾತಿ

ತ್ರಿಯಾಮಯಾ" ಚಂದ್ರಾಂ । 2. ಹರಿದ್ರೆ, ಅರಶಿನ.

**ತ್ರಿಯುಗ** (ಪುಂ) ಯಜ್ಞಪುರುಷ. ತ್ರಿಣಿ ಯುಗಾನಿ

ಆವಿರ್ಭವಿಕಾಲೋಽಸ್ಯ । ಕೃತಯುಗದಲ್ಲಿ ಯಜ್ಞಪುರುಷನ

ಅವತಾರವಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಇತ್ಯಂ ನೃತಿಯಂ-

ಗೃಷಿವೇವಶಪಾವತಾರೇಲೋಕಾನ್ ವಿಭಾವಯಸಿ ಹೃಸಿ ಜಗತ್ಪ್ರತಿ-

ಪಾನ್ । ಧರ್ಮಂ ಮಹಾಪುರುಷ ಪಾಸಿ ಯುಗಾನುವೃತ್ತಂ ಛತ್ರ: ಕಲೋ

ಯದಭವಸ್ತ್ರಿಯುಗೋಽಸ್ಯ ಸ ತ್ವಮ್" ಭಾಗಂ ೭-೧-೩೮ ।

**ತ್ರಿಸಾತ್ರ** (ನಂ) 1. ಮೂರು ರಾತ್ರಿಗಳು. ತಿಸೃಣಾಂ

ರಾತ್ರಿಣಾಂ ಸಮಾಹಾರ: "ಅಬ್" (೪-೪-೮೭) । 2. ಮೂರು

ರಾತ್ರಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮೂರು ದಿನಗಳು. "ಉಪಾಕರ್ಮಣಿ

ಚೋತ್ಸಗೇ ತ್ರಿಸಾತ್ರಂ ಷೇಪಣಂ ಸ್ಮೃತಮ್" ಮನುಂ ೪-೧೧೯ ।

.. ಮೂರು ರಾತ್ರಿಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡಬಹುದಾದ ಒಂದು

ವ್ರತ. "ಏಕರಾತ್ರಂ ತ್ರಿಸಾತ್ರಂ ವಾ ಷಡ್‌ರಾತ್ರಂ ವಾ ವಿಧೀಯತೇ"

(ಅವ್ಯಂ) 4. ಮೂರು ರಾತ್ರಿಗಳಲ್ಲಿ.

**ತ್ರಿಸೇಖ** (ಪುಂ) 1. ಶಂಖ. ತಿಸ್ತೋ ರೇಖಾ ಯಸ್ಯ ।

(ನಂ) 2. ಮೂರು ರೇಖೆಗಳು. ತಿಸೃಣಾಂ ರೇಖಾಣಾಂ

ಸಮಾಹಾರ: ।

**ತ್ರಿಸು** (ಪುಂ) 1. ಮೂರು ಲಘುವರ್ಣಗಳುಳ್ಳ

"ನ" ಣ. "ತ್ರಿಸೋ ನ:" ವುಂ ರಂ । (ವಿಂ) 2. ದೇಹ

ದಲ್ಲಿ ಮೂರು ಲಘು (ಪ್ರಸ್ಥ) ಅಂಗಗಳುಳ್ಳವನು. ಕತ್ತಂ

ಮೋಳಕಾಲು ಶಿಶ್ನ ಇವು ಹ್ರಸ್ವವಾಗಿರುವುದು ಮಹಾಪುರುಷ

ಲಕ್ಷಣ. "ಶ್ರೀವಾಜ್ಞಾನಮೇಹನೇಶ್ವರ ತ್ರಿಭಿರ್ಹಸ್ವೋಽಯಮೀಡಿತ:"

ಕಾಶೀಖಂ ।

**ತ್ರಿಸುಲವಣ** (ನಂ) ಲವಣತ್ರಯ, ಮೂರು ಲವಣ

ಗಳು. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಲವಣಾಣಾಂ ಸಮಾಹಾರ: । "ಸೇನಿವಶ್ಚ

ವಿಡ್‌ವಂಶ್ಚ ರುಚಕಂ ಚ ತೃತೀಯಕಮ್ । ಮಿಲಿತವೇತತ್ ತ್ರಿಸುಲವಣಮ್"

ರಾಜನಿಂ ।

**ತ್ರಿಸುಲಿಂಗ** (ವಿಂ) 1. ಮೂರು ಲಿಂಗಗಳುಳ್ಳ ಶಬ್ದ.

ಪುಲ್ಲಿಂಗ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗ ಮತ್ತು ನಪುಂಸಕಲಿಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗ

ವುಳ್ಳ ಶಬ್ದ. ತ್ರಿಣಿ ಲಿಂಗಾಣ್ಯಸ್ಯ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಿಂಗೀ

-ಲಿಂಗೀ. 2. ಮೂರು ಲಿಂಗಗಳು. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಲಿಂಗಾಣಾಂ

ಸಮಾಹಾರ: । "ತ್ರಿಸುಲಿಂಗಾಂ ತ್ರಿವಿವಿತಿ ಪದಮ್" ಅಮಂ ।

**ತ್ರಿಸುಲೋಕ** (ಪುಂ) ಮೂರು ಲೋಕಗಳಲ್ಲೂ ಇರುವ

ಜನರು. "ನಿರೀಕ್ಷ್ಯ ದಕ್ಷಸ್ವಸ್ತಿಯನಂ ತ್ರಿಸುಲೋಕ:" ಭಾಗಂ

೩-೨-೧೩ ।

**ತ್ರಿಸುಲೋಕ** (ಪುಂ) ಮೂರು ಲೋಕಗಳನ್ನೂ ಉದರದಲ್ಲಿ ಧರಿಸಿರುವ ಪರಮಾತ್ಮ.

ತ್ರಯಾಣಾಂ ಲೋಕಾಣಾಂ ಧೃತ್-ಧೃತ್ (ಧಾರಣೆ) "ಕ್ವಿಪ್" (ವಾಂ

೩-೩-೧೪) । "ಲೋಕತ್ರಯಸ್ಯ ಧರಣಾತ್ ಸ ತ್ರಿಸುಲೋ-

ಕಧೀರಿತ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ:" । "ಅಮಾನಿ ಮಾನದೋ ಮಾನ್ಯೋ

ಲೋಕಸ್ವಾಮಿ ತ್ರಿಸುಲೋಕಧೃತ್ (ಕ್)" ವಿಂ ಸಂ ।

**ತ್ರಿಸುಲೋಕನಾಥ** (ಪುಂ) 1. ಮೂರು ಲೋಕ

ಗಳಿಗೂ ಸ್ವಾಮಿಯಾದ ಪರಮಾತ್ಮ. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಲೋಕಾಣಾಂ

ನಾಥ: ಸ್ವಾಮಿ । "ಅಕಿಂಚನ: ಸನ್ ಪ್ರಮವ: ಸ ಸಂಪದಾಂ ತ್ರಿಸುಲೋ-

ಕನಾಥ: ಪಿತೃಸದೃಗೋಚರ:" ಕುಮಾಂ ೪-೭೭ । 2. ದೇವೇಂದ್ರ.

"ತ್ರಿಸುಲೋಕನಾಥೇನ ಸದಾ ಮಹದಿವಿಪಸ್ತ್ವಯಾ ನಿಯಮ್ಯಾ ನನು

ದಿವ್ಯಚಕ್ಷುಷಾ" ರಘುಂ ೩-೪೫ ।

**ತ್ರಿಸುಲೋಕಾತ್ಮನ್** (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ,

ಪರಮಾತ್ಮ. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಲೋಕಾಣಾಂ ಆತ್ಮಾ ಸಾತತ್ಯೇನ ಗಂತಾ -

ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೇ) "ಮನಿಪ್" (ತಂ ೪-೧೫೩) ।

ಲೋಕಾನುಗ್ರಹಕ್ಕಾಗಿ ತಾನು ಮೂರು ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿಯೂ

ಸದಾ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು.

"ಯ: ಸಾತತ್ಯೇನ ಲೋಕಾಸ್ತ್ರೀನ್ ಭಕ್ತಾನುಗ್ರಹಕಾಮ್ಯಯಾ । ಗಂತ್ಯತೀತಿ

ತ್ರಿಸುಲೋಕಾತ್ಮಾ ವಸ್ವಣೋ ಭೂತಿದಾಯಕ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ:" ।

"ತ್ರಿಸುಲೋಕಾತ್ಮಾ ತ್ರಿಸುಲೋಕೇಶ: ಕೇಶವ: ಕೇಶಿಹಾ ಹರಿ:" ವಿಂ ಸಂ ।

**ತ್ರಿಸುಲೋಕಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂರು ಲೋಕಗಳು,

ಸ್ವರ್ಗ ಮರ್ತ್ಯ ಮತ್ತು ಪಿತೃಲೋಕ ಲೋಕಗಳು. ತ್ರಯಾಣಾಂ



ಲೋಕಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರ: " ಡೀಪ್ " (೪-೧-೨೧)। "ವಿಶೇಷಕೋ  
ವಾ ವಿಶಿಷೇಷ ಯಸ್ಯಾ: ಶ್ರಿಯಂ ತ್ರಿಲೋಕೀತಲಕ: ಸ ಏವ"  
ಮಾಘಂ ೩-೬೩।

**ತ್ರಿಲೋಕೇಶ ತ್ರಿಲೋಕೇಶ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ.  
ತ್ರಯಾಣಾಂ ಲೋಕಾನಾಂ ಔಶ:। "ತ್ರಿಲೋಕಾನಾಮಿಶತಯಾ ತ್ರಿಲೋಕೇಶ:  
ಪ್ರಕೀರ್ತಿತ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ:। "ತ್ರಿಲೋಕಾತ್ಮಾ ತ್ರಿಲೋಕೇಶ:  
ಕೇಶವ: ಕೇಶಿಹಾ ಹರಿ:" ವಿಂ ಸಂ। 2. ಸೂರ್ಯ.

**ತ್ರಿಲೋಚನ ತ್ರಿಲೋಚನ (ಪುಂ)** 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.  
ಶ್ರೀಣಿ ಲೋಚನಾನ್ಯಸ್ಯ। "ಪ್ರತಿಗ್ರಹೀತು ಪ್ರಣಯಿಪ್ರಿಯತ್ವಾತ್  
ತ್ರಿಲೋಚನಸ್ತಾಮುಪಚಕ್ರಮೇ ವ" ಕುಮಾರಂ ೩-೬೬। (ವಿಂ) 2.  
ಮೂರು ಕಣ್ಣುಗಳಿರುವವನು. "ಸ ಬಾಲ ಆಸೀದ್ವಪುಷಾ  
ಚತುರ್ಮುಖೋ ಮುಖೇನ ಪೂರ್ಣೇಂದ್ರನಿಶ್ಚಿತಲೋಚನ:" ಮಾಘಂ ೧-೭೦।  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲೋಚನಾ -ಲೋಚನಾ. 3. ದುರ್ಗಾದೇವಿ,  
ಪಾರ್ವತಿ.

**ತ್ರಿವರ್ಗ ತ್ರಿವರ್ಗ (ಪುಂ)** 1. ಧರ್ಮ ಅರ್ಥ ಮತ್ತು ಕಾಮ  
ಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಪುರುಷಾರ್ಥಗಳು. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಧರ್ಮಾರ್ಥ-  
ಕಾಮಾನಾಂ ವರ್ಗ:। "ತ್ರಿವರ್ಗೋ ಧರ್ಮಕಾಮಾರ್ಥ:" ಅಮಂ। "ತ್ರಿವರ್ಗ-  
ಪಾರೀಣಮಸೌ ಭವಂತಮ್" ಸೌಂದರ್ಯಂ ೨-೪೬। 2. ರಾಜನ ಕ್ಷಯ  
ಸ್ಥಾನ ಮತ್ತು ವೃದ್ಧಿಗಳೆಂಬ ಮೂರರ ಗುಂಪು. (1) ಕೋಶ  
ದಂಡಗಳು ಕಡಮೆಯಾಗುವುದು ಕ್ಷಯ. (2) ಕೋಶ  
ದಂಡಗಳು ಇದ್ದಂತೆಯೇ ಇರುವುದು ಸ್ಥಾನ. (3) ಕೋಶ  
ದಂಡಗಳ ಅಧಿಕವು ವೃದ್ಧಿ.

(1) ತನ್ನ ಕೆಲಸಗಳಿಗೆ ಹಾನಿಯುಂಟಾಗುವುದೆಂದು  
ಮತ್ತು ಶತ್ರುಗಳ ಕೆಲಸಗಳಿಗೆ ಹಾನಿಯುಂಟಾಗುವುದಿಲ್ಲ  
ವೆಂದು ತೋರುವ ಗುಣವನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸುವುದು ಕ್ಷಯಕ್ಕೆ  
ಕಾರಣವಾಗುವುದರಿಂದ ಅದು ಕ್ಷಯವು. "ಯಸ್ಮಿನ್ ವಾ  
ಗುಣೇ ಸ್ಥಿತ: ಸ್ವಕರ್ಮಣಾಮುಪಚಾತಂ ಪಶ್ಯೇತ್-ನೇತರಸ್ಯ, ತಸ್ಮಿನ್  
ನ ತಿಷ್ಠೇತ್-ಏಷ ಕ್ಷಯ:" ಅರ್ಥಶಾಂ।

(2) ತನಗೆ ವೃದ್ಧಿಯನ್ನಾಗಲಿ ಕ್ಷಯವನ್ನಾಗಲಿ ಉಂಟು  
ಮಾಡದಿರುವ ಗುಣಾಶ್ರಯಣವು ಕೋಶದಂಗಳ ಯಥಾವ  
ಸ್ಥಿತಿಗೆ ಕಾರಣವಾಗುವುದರಿಂದ ಅದು ಸ್ಥಾನ. "ಯಸ್ಮಿನ್  
ವಾ ಗುಣೇ ಸ್ಥಿತ: ಸ್ವಕರ್ಮವೃದ್ಧಿ ಕ್ಷಯಂ ವಾ ನಾಭಿಪಶ್ಯೇತ್-ಏತತ್  
ಸ್ಥಾನಮ್" ಅರ್ಥಶಾಂ।

(3) ದುರ್ಗದ ಕೆಲಸ, ನೀರಾವರಿ, ಸಾರಿಗೆಯ ಮಾರ್ಗ  
ಗಳು, ಕೃಷಿ, ಆಕರ ಇತ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸಿ ಶತ್ರುಗಳ  
ಈ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ನಾಶಮಾಡಬಹುದೆಂಬ ಗುಣವ  
ನ್ನಾಶ್ರಯಿಸುವುದು ವೃದ್ಧಿ. "ಯಸ್ಮಿನ್ ವಾ ಗುಣೇ ಸ್ಥಿತ:  
ಪಶ್ಯೇತ್ ಇಹಸ್ಯ: ಶಕ್ಯಾಮಿ ದುರ್ಗಸೇತುಕರ್ಮವಿಘ್ನಶೂನ್ಯ-

ನಿವೇಶನನಿರ್ದ್ರವ್ಯಹಸ್ತಿವನಕರ್ಮಾಪ್ಯಾತ್ಮನ: ಪ್ರವರ್ತಯಿತು, ಪರಸ್ಯ-  
ಚೈತಾನಿ ಕರ್ಮಾಪ್ಯುಪಹಂತುಮ್ ಇತಿ, ತಮಾತಿಷ್ಠೇತ್-ಸಾ ವೃದ್ಧಿ:"  
ಅರ್ಥಶಾಂ। "ಕ್ಷಯ: ಸ್ಥಾನಂ ವ ವೃದ್ಧಿಶ್ಚ ತ್ರಿವರ್ಗೋ ನೈತಿವೇದಿನಾಮ್"  
ಅಮಂ। 3. ಸತ್ತ್ವ ರಜಸ್ಸು ಮತ್ತು ತಮಸ್ಸುಗಳೆಂಬ  
ಮೂರು ಗುಣಗಳ ಗುಂಪು. 4. ತ್ರಿಕಟು, ಶುಂಠಿ ಹಿಪ್ಪಲಿ  
ಮತ್ತು ಮೆಣಸು ಈ ಮೂರರ ಗುಂಪು. 5. ತ್ರಿಫಲೆ,  
ನೆಲ್ಲಿಕಾಯಿ ಅಳಲೆಕಾಯಿ ಮತ್ತು ತಾರೆಕಾಯಿ ಈ ಮೂರರ  
ಗುಂಪು. "ತ್ರಿವರ್ಗೋ ಧರ್ಮಕಾಮಾರ್ಥ ತ್ರಿಫಲಾಃ ಕಡುತ್ರಿಕೇ।  
ವೃದ್ಧಿಸ್ಥಾನಕ್ಷಯೇ ಸತ್ತ್ವರಜಸ್ತಮಸಿ ಚೇಷ್ಯತೇ" ಮೇದಿಂ।

**ತ್ರಿವರ್ಣಕ ತ್ರಿವರ್ಣಕ (ನಂ)** 1. ತ್ರಿಫಲೆ, ನೆಲ್ಲಿಕಾಯಿ ಅಳಲೆ  
ಕಾಯಿ ಮತ್ತು ತಾರೆಕಾಯಿ. 2. ಹಿಪ್ಪಲಿ ಶುಂಠಿ ಮತ್ತು  
ಮೆಣಸು. 3. ನೆಗ್ಗಿಲು ಗಿಡ. 4. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ವೈಶ್ಯ  
ರೆಂಬ ದ್ವಿಜಾತಿತ್ರಯ. "ತ್ರಿವರ್ಣಕಂ ಗೋಕುರಕೇ ತ್ರಿಫಲಾಃ  
ಕಡುತ್ರಿಕೇ" ಮೇದಿಂ। 5. ಕಸ್ತೂರಿ ಗೋರೋಚನ ಮತ್ತು  
ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. "ತ್ರಿಫಲಾಃ ತ್ರಿಕಡುಕೇ ತ್ರಿಗಂಧೇ ವ  
ತ್ರಿವರ್ಣಕಮ್" ನಾನಾರ್ಥರಂ।

**ತ್ರಿವರ್ಮನ್ ತ್ರಿವರ್ಮನ್ (ಪುಂ)** 1. ದೇವಯಾನ ಪಿತೃಯಾನ  
ಮತ್ತು ದಕ್ಷಿಣಯಾನಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಮಾರ್ಗಗಳಲ್ಲಿ  
ಹೋಗುವ ಜೀವ. ಶ್ರೀಣಿ ವರ್ಮನೀಸ್ಯ। 2. ಸ್ವರ್ಗ ಮಧ್ಯ  
ಮತ್ತು ಪಾತಾಳಗಳ ಮಾರ್ಗ. ತ್ರಿಗುಣಿತಂ ವರ್ಮಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
3. ಗಂಗಾನದಿ.

**ತ್ರಿವರ್ಷ ತ್ರಿವರ್ಷ (ನಂ)** 1. ಮೂರು ವರ್ಷಗಳು. ತ್ರಿಗುಣಿತಂ  
ವರ್ಷ:। (ವಿಂ) 2. ಮೂರು ವರ್ಷ ಪಯಸ್ಸುಳ್ಳ. ತ್ರಯೋ  
ವರ್ಷಾ ವಯಸ್ಸಸ್ಯ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವರ್ಷಾ -ವರ್ಷಾ. ಮೂರು  
ವರ್ಷ ಪಯಸ್ಸಿನ ಹಸು. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"। -ವರ್ಷಿಕಾ  
-ವರ್ಷಿಕಾ.

**ತ್ರಿವರ್ಷೀಯ ತ್ರಿವರ್ಷೀಯ (ವಿಂ)** ಮೂರು ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ  
ಉಂಟಾದ. ತ್ರಿವರ್ಷ ಭವ: "ಛ:" (೪-೨-೧೩೮)। "ಏಕೈಕಂ  
ವೈ ತ್ರಿವರ್ಷೀಯಂ ತೇನ ಪಿವಾನ್ ಶುನಾ ಸಹ" ಭಾಂ ಅನುಂ।

**ತ್ರಿವಲಿ ತ್ರಿವಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹೊಟ್ಟೆಯ ಮೇಲಿರುವ ಮೂರು  
ಗೆರೆಗಳು, ಉದರದ ಮೇಲಿನ ಮೂರು ಮಡಿಕೆಗಳು.  
ತ್ರಿಗುಣಿತಾ ವಲಿ:। ವಾ "ಡೀಪ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫)।  
-ವಲಿ -ವಲಿ.

**ತ್ರಿವಲಿವತ್ ತ್ರಿವಲಿವತ್ (ವಿಂ)** ಹೊಟ್ಟೆಯ ಮೇಲೆ  
ಮೂರು ಮಡಿಕೆಗಳಿಲ್ಲ, -ಮೂರು ಗೆರೆಗಳಿಲ್ಲ. ತ್ರಿವಲಿ  
ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪)। "ತ್ರಿವಲಿವಾನ್ಯ-  
ವನತ: ಚತುರ್ವಿಜ್ರಾಚಸ್ತಿಸಿಶಿರ್ಷವಾನ್" ರಾಮಾಂ। ಇದೊಂದಂ  
ಭಾಗ್ಯಸೂಚಕವಾದ ಮಹಾಪುರುಷಲಕ್ಷಣ. "ಸ್ಥಿರಾ



ತ್ರಿವೇದಾ ಸುಭಗೋಪನಾ ಸ್ನಿಗ್ಧಾ ಸುಮಾಸೋಪಚಿತಾ ಸುವೃತ್ತಾ ।  
ನಚಾತಿರ್ದೀರ್ಘಾ ಚತುರಂಗುಲಾ ಚ ಗ್ರೀವಾ ಸುದೀರ್ಘಾ ಭವತೀಹ  
ಧನ್ಯಾ ” ।

**ತ್ರಿವಿಕ್ರಮ ತ್ರಿವಿಕ್ರಮ (ಪುಂ)** ವಾಮನಾವತಾರವೆತ್ತಿದ  
ಶ್ರೀವಿಷ್ಣು. ತ್ರಯೋ ವಿಕ್ರಮಾಃ ಪಾದನ್ಯಾಸಾ ಯಸ್ಯ । ತ್ರಯೋ ವೇದಾಃ  
ವಿಕ್ರಮಾಃ ಕ್ರಾಂತಾ ಯೇನ ಇತಿ ವಾ । “ ತ್ರಿರೀತ್ಯೇವ ತ್ರಯೋ ವೇದಾಃ  
ಕೀರ್ತಿತಾ ಮುನಿಸತ್ತಮಃ । ಕ್ರಮಸೇ ತಾಂಸ್ತಥಾ ಸರ್ವಾನ್ ತ್ರಿವಿಕ್ರಮ  
ಇತಿ ಸ್ಮೃತಃ ” ಸಹಂ ನಾಂ ಭಾಂ । “ ತ್ರೀನ್ ವೇದಾನ್  
ಕ್ರಮತೇ ಯೇನ ಮಹಿಮ್ನಾ ಸ ತ್ರಿವಿಕ್ರಮಃ ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ ।  
ಪರಮಾತ್ಮನು ಮೂರು ವೇದಗಳನ್ನೂ ಆಕ್ರಮಿಸಿರುವುದರಿಂದ  
“ ತ್ರಿವಿಕ್ರಮ ” ನೆಂಬ ಹೆಸರು. “ ಆನಂದೋ ನಂದಃ ಸತ್ಯಧರ್ಮಾ ತ್ರಿವಿಕ್ರಮಃ ” ವಿಂ ಸಂ । ಒಲಿಯ  
ನಿಗ್ರಹಕ್ಕಾಗಿ ವಾಮನಾವತಾರ ತಾಳಿ ಮೂರು ಪಾದ  
ಗಳಿಂದ ಮೂರು ಲೋಕಗಳನ್ನೂ ಆಕ್ರಮಿಸಿರುವುದರಿಂದ  
“ ತ್ರಿವಿಕ್ರಮ ” ನೆಂಬ ಹೆಸರು. ತ್ರಯೋ ವಿಕ್ರಮಾಃ ತ್ರಿಷು  
ಲೋಕೇಷು ವಿಕ್ರಮಃ ಕ್ರಾಂತಾ ಯಸ್ಯ ವಾ । “ ತ್ರೀಣಿ ಪದಾ ವಿಚಕ್ರಮೇ ”  
ಇತಿ ಶ್ರುತಿಃ ।

**ತ್ರಿವಿಧ ತ್ರಿವಿಧ (ಪುಂ)** ಮೂರು ವಿಧ (ವೇದ) ಗಳನ್ನೂ  
ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು. ತಿಸ್ತೋ ವಿಧಾ ಅಧೀತೇ “ ಠಕ್ ”  
(ವಾಂ ೪-೨-೬೦) । ಠಕೋ ಲುಕ್ (೪-೧-೮೮) ।

**ತ್ರಿವಿಧ ತ್ರಿವಿಧ (ವಿಂ)** ಮೂರು ವಿಧವಾದ, ಮೂರು  
ಪ್ರಕಾರವಾದ. ತಿಸ್ತೋ ವಿಧಾ ಯಸ್ಯ । “ ಪರದ್ರವ್ಯೇಷ್ವಭಿಧ್ಯಾನಂ  
ಮನಸಾನಿಷ್ಟಚಿಂತನಮ್ । ವಿತಥಾಭಿನಿವೇಶಶ್ಚ ತ್ರಿವಿಧಂ ಕರ್ಮ  
ಮಾನಸಮ್ ” ಮನುಂ ೧೨-೫ । “ ನಿಯಂ ನೈಮಿತ್ತಿಕಂ ಕಾಮ್ಯಂ  
ತ್ರಿವಿಧಂ ಸ್ನಾನಮಿಷ್ಯತೇ ” ।

**ತ್ರಿವಿಷ್ಟಪ ತ್ರಿವಿಷ್ಟಪ (ನಂ)** 1. ಸ್ವರ್ಗಲೋಕ, ದೇವ  
ಲೋಕ. ತೃತೀಯ ವಿಷ್ಟಪಮ್ । “ ಅಸೌ ಕುಮಾರಸ್ತಮಜೋಽ-  
ನುಜಾತಸ್ತ್ರಿವಿಷ್ಟಪಸ್ಯೇವ ಪತಿ ಜಯಂತಃ ” ರಘುಂ ೬-೭೮ ।  
2. ಸ್ವರ್ಗ ಮರ್ತ್ಯ ಮತ್ತು ಪಾತಾಳ ಲೋಕಗಳು. ತ್ರಯಾಣಾಂ  
ವಿಷ್ಟಪಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ । ಪಾತ್ರಾಚಂತತ್ವಾತ್ ನ ಸ್ತ್ರೀತ್ವಮ್ ।

**ತ್ರಿವಿಷ್ಟಪ ತ್ರಿವಿಷ್ಟಪ (ನಂ)** ಯತಿಗಳ ತ್ರಿದಂಡ, ಜೋಡಿಸಿ  
ಕಟ್ಟಿದ ಮೂರು ದಂಡಗಳು. ತ್ರೀಣಿ ವಿಷ್ಟಪಾನಿ ಯತ್ರ ।  
“ ಯ ಇಮಾಂ ಕುಂಡಿಕಾಂ ಭಿನ್ದಾತ್ ತ್ರಿವಿಷ್ಟಪಂ ಚ ಯೋ ಹರೇತ್ ।  
ವಾಸಶ್ಚಾಪಹರೇತ್ ತಸ್ಮಿನ್ ಕಥಂ ತೇ ಮಾನಸಂ ಭವೇತ್ ” ।

**ತ್ರಿವಿಷ್ಟಪ ತ್ರಿವಿಷ್ಟಪ (ವಿಂ)** ಮೂರು ಅವಯವಗಳಲ್ಲಿ  
ವೈಶಾಲ್ಯವುಳ್ಳವನು, ಹಣೆ ಕಟಿ (ಬಿರೆ) ಮತ್ತು ವಕ್ಷಸ್ಸು  
(ಎದೆ) ವಿಶಾಲವಾಗಿರುವವನು. ತ್ರಿಭಿಃ ವಿಸ್ತೀರ್ಣಃ ।  
ಇದು ಪುರುಷನ ಶುಭ ಲಕ್ಷಣಗಳಲ್ಲೊಂದು.

**ತ್ರಿವೃತ್ತ ತ್ರಿವೃತ್ತ (ಪುಂ)** 1. ಕೆಂಪು ತಿಗಡೆ ಮರ. ತ್ರಿವೃತ್ತವಾದ  
ವೃಣೋತಿ — ವೃನ್ (ವರಣೆ) “ ಕಿಷ್ಕಿ ” (೩-೨-೧೭೮) ।  
(ವಿಂ) 2. ಮೂರರಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಮೂರರಷ್ಟಾದ,  
ಮುಮ್ಮಡಿಯಾದ, ಮೂರು ಸುತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ. “ ಮೌಙ್ಜಿ  
ತ್ರಿವೃತ್ತಸಮಾ ಇಲಕ್ಷಣಾ ಕಾರ್ಯಾ ವಿಪ್ರಸ್ಯ ಮೇಖಲಾ ” ಮನುಂ  
೨-೪೨ । “ ಕಾರ್ಪಾಸಮುಪವೀತಂ ಸ್ಯಾದ್ವಿಪ್ರಸ್ಯೋರ್ಧ್ವವೃತ್ತಂ ತ್ರಿವೃತ್ತ ”  
ಮನುಂ ೨-೪೪ ।

**ತ್ರಿವೃತ್ತ ತ್ರಿವೃತ್ತ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕೆಂಪು ತಿಗಡೆ ಮರ. ತ್ರಿವಿರವಯವ-  
ವೃತ್ತಾ ।

**ತ್ರಿವೃತ್ತ ತ್ರಿವೃತ್ತ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕೇರಸೊಪ್ಪು. ತ್ರಿಷು  
ದೋಷೇಷು ವರ್ತತೇ — ತ್ರಿವೃತ್ತ ತ್ರಿದೋಷಂ ಪರ್ಣಮಸ್ಯಾಃ ।

**ತ್ರಿವೃತ್ತ ತ್ರಿವೃತ್ತ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮೂರರಷ್ಟಾದ, ಮುಮ್ಮಡಿ-  
ಯಾದ, ಮೂರು ಸುತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ. ತ್ರಿವೃತ್ತಾ । “ ತ್ರಿವೃತ್ತಾ  
ಗ್ರಂಥಿನೇಕೇನ ತ್ರಿಭಿಃ ಪञ್ಚಭಿರೇವ ವಾ ” ಮನುಂ ೨-೪೩ ।

**ತ್ರಿವೃತ್ತ ತ್ರಿವೃತ್ತ (ಪುಂ)** 1. ಮೃಗಜುಃಸಾಮಗಳೆಂಬ  
ಮೂರು ವೇದಗಳು. ಋಗ್ಯಜುಃಸಾಮರೂಪೇಣ ತ್ರಿವರ್ತತೇ ಇತಿ  
ತ್ರಿವೃತ್ತ — ತ್ರಿವೃತ್ತಾಸೌ ವೇದಶ್ಚ । “ ಋತೋ ಯಜುಷಿ ಚಾನ್ಯಾನಿ  
ಸಾಮಾನಿ ವಿವಿಧಾನಿ ಚ । ಏಷ ಜೇಯಃ ತ್ರಿವೃತ್ತಃ ಯೋ ವೇದೇನ  
ಸ ವೇದವಿತ್ ” ಮನುಂ ೧೧-೨೬೪ ।

**ತ್ರಿವೇಣಿ ತ್ರಿವೇಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗಂಗಾ ಯಮುನಾ ಮತ್ತು  
ಸರಸ್ವತೀ ನದಿಗಳು ಸೇರುವ (ಸಂಗಮ) ಸ್ಥಳ, ಪ್ರಯಾಗ.  
ತಿಸ್ತೋ ವೇಣ್ಯಃ ಪ್ರವಾಹಾ ಯತ್ರ । ಈಗಿನ Allahabad  
(ಅಲಹಾಬಾದ್).

**ತ್ರಿವೇಣಿ ತ್ರಿವೇಣಿ (ಪುಂ)** ಗಾಡಿಯ ಮೂಕಿ, ರಥದ ಮುಂಭಾಗ  
ದಲ್ಲಿ ನೋಗವನ್ನು ಕಟ್ಟಲು ಬಾಚಿಕೊಂಡಿರುವ ಮೂರು  
ಬೊಂಬುಗಳು. ತ್ರಯೋ ವೇಣವೋ ಯತ್ರ । “ ಅಶ್ವಾಸ್ತ್ರಿವೇಣುಮಕ್ಷಂ  
ಚ ತಿಲಶೋ ವ್ಯಥಮಚ್ಚರೇಃ ” ಭಾಂ ವನಂ ೨೪೩-೫ ।

**ತ್ರಿವೇದ ತ್ರಿವೇದ (ಪುಂ)** ಮೂರು ವೇದಗಳನ್ನೂ ತಿಳಿದವನು,  
ಮೂರು ವೇದಗಳನ್ನೂ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು. ತ್ರೀನ್  
ವೇದಾನ್ ವೇತ್ತಿ — ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) “ ಅನ್ ” (೩-೨-೧) ।

**ತ್ರಿಶಕ್ತಿ ತ್ರಿಶಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಾಳೀ ತಾರಾ ತ್ರಿಪುರಾ ಎಂಬ  
ಮೂವರು ದೇವಿಗಳು. ತ್ರಿಗುಣಿತಾ ಶಕ್ತಿಃ ।

**ತ್ರಿಶಂಕು ತ್ರಿಶಂಕು (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ  
ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. ತ್ರಯಃ ಶಂಕುವ ಇವ ಯಸ್ಯ । [ ತ್ರಿಶಂಕುವು  
ಸೂರ್ಯವಂಶದ ನಿಬಂಧನ ರಾಜನ ಮಗ. ಈತನಿಗೆ  
ಸತ್ಯವ್ರತನೆಂಬುದು ತಂದೆಯು ಇಟ್ಟ ಹೆಸರು. ತ್ರಿಶಂಕುವು  
ಒಬ್ಬ ವಿವಾಹವಾಗಿದ್ದ ಹೆಂಗಸನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿಕೊಂಡು  
ಬಂದುದನ್ನು ಕಂಡ ರಾಜನು “ ನೀನು ಚಂಡಾಲರ ಸಂಪರ್ಕ



ವನ್ನು ಹೊಂದಂ" ಎಂದೂ ಇವನನ್ನು ಶಪಿಸಿದನು. ಆಮೇಲೆ ಶ್ವಪಾಕರ ಗುಂಪಿನಲ್ಲಿ ಇವನು ಅಲೆದಾಡುತ್ತಿರಲು ರಾಜನು ಸರಿಯಾದ ಮಗನನ್ನು ಪಡೆಯಲು ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ತಪಸ್ಸಿಗಾಗಿ ಹೋದನು. ರಾಜ್ಯವು ಅರಾಜಕವಾಯಿತು. ಅನಾವೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ಪ್ರಜೆಗಳು ತತ್ತರಿಸಿದರು. ತಂದೆಯು ತನ್ನನ್ನು ಮನೆಬಿಟ್ಟು ಓಡಿಸಿದಾಗ ವಸಿಷ್ಠರೂ ಅದಕ್ಕೆ ಸಮ್ಮತಿಯಿತ್ತಿದ್ದರಿಂದ ಅವರ ಮೇಲಿನ ಕೋಪದಿಂದ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿದನು. ವಸಿಷ್ಠರ ಧೇನುವನ್ನು ಕೊಂದು ಅದರ ಮಾಂಸವನ್ನು ತಿಂದನು. ತಂದೆಗೆ ಸಮೃತ್ತವಿಲ್ಲದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಿದುದು ಒಂದು, ಆಜಾರ್ಯರ ಧೇನುವನ್ನು ಕೊಂದುದು ಒಂದು, ಅದರ ಮಾಂಸವನ್ನು ಸಂಸ್ಕರಿಸದೆ ತಿಂದುದು ಒಂದು— ಈ ಮೂರು ಪಾಪಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡಿದ್ದರಿಂದ ಪತಿತನಾದ ಇವನಿಗೆ "ತ್ರಿಶಂಕು" ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು.

ತ್ರಿಶಂಕುವು ಈ ದೇಹದೊಂದಿಗೆ ಸ್ವರ್ಗವನ್ನು ಹೊಂದಬೇಕೆಂದು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ ವಸಿಷ್ಠರ ಬಳಿಗೆ ಬಂದು ಯಾಗ ಮಾಡಿಸಬೇಕೆಂದು ಕೇಳಿದನು. ವಸಿಷ್ಠರು ಅದು ಅಸಾಧ್ಯವೆಂದರು. ಅವರ ಮಕ್ಕಳೂ ಅದೇ ರೀತಿ ಹೇಳಲು ಅವರನ್ನು ಧಿಕ್ಕರಿಸಿ ಚಂಡಾಲನಾಗುವಂತೆ ಅವರಿಂದ ಶಾಪ ಪಡೆದನು. ಬಳಿಕ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ ತನ್ನ ಅಪೇಕ್ಷೆಯನ್ನು ತಿಳಿಸಿದನು. ವಸಿಷ್ಠರ ಮೇಲಿನ ಕೋಪದಿಂದ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನು ಅನೇಕ ಋಷಿಗಳನ್ನು ಕರೆದು ಯಾಗಮಾಡಿಸಿದನು. ಯಾಗದ ಹವಿಸ್ಸನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಲು ದೇವತೆಗಳು ಬರದಿರಲು ಕುಪಿತನಾದ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನು ಇದೇ ಶರೀರದಿಂದಲೇ ನೀನು ಸ್ವರ್ಗಕ್ಕೆ ಹೊರಡು ಎಂದು ತ್ರಿಶಂಕುವನ್ನು ಪ್ರೇರಿಸಿದನು. ತ್ರಿಶಂಕುವು ಸ್ವರ್ಗಕ್ಕೆ ಏರುತ್ತಿರುವಾಗ ಇಂದ್ರನು ಪತಿತನಾದ ಅವನನ್ನು ಸ್ವರ್ಗಕ್ಕೆ ಏರಲು ಅನುಮತಿಸದೆ "ತಲೆ ಕೆಳಗಾಗಿ ನೆಲದ ಮೇಲೆ ಬೀಳು" ಎಂದನು. ತ್ರಿಶಂಕುವು ಬೀಳುತ್ತಿರುವಾಗ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನು ಕೋಪದಿಂದ ಅಲ್ಲೇ ಸ್ವರ್ಗವೊಂದನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಲು ಯತ್ನಿಸಿದನು. ಆಗ ಇಂದ್ರನ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಂತೆ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನು ಧ್ರುವನಕ್ಷತ್ರವಿರುವ ವರೆಗೆ ತ್ರಿಶಂಕುವು ಸಶರೀರನಾಗಿ ಅಲ್ಲೇ ಇರಲಿ ಎಂದನು. ಎಲ್ಲರೂ ಒಪ್ಪಿದರು. ಅಂದಿನಿಂದ ತ್ರಿಶಂಕುವು ಭೂಮಿಯಲ್ಲೂ ಸ್ವರ್ಗದಲ್ಲೂ ನಿಲ್ಲದೆ ಉಭಯ ಭ್ರಷ್ಟನಾಗಿ ಅಂತರಾಳದಲ್ಲಿ ನಿಂತನು.] 2. ಶಲಭ, ಪತಂಗದ ಹುಳ. 3. ಮಾರ್ಜಾರ, ಬೆಕ್ಕು. "ತ್ರಿಶತ್ಕುರ್ನಾ ರಾಜಭೇದೇ ಶಲಭೇ ವೃಷದಂಶಕೇ" ಮೇದಿಂ. 4. ಚಾತಕವಕ್ಷಿ. "ಚಾತಕೇ ಬಭ್ರುವಾ-ಘಿಹವನತೋಲತ್ರಿಶತ್ಕುಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 5. ಮಿಂಚು ಹುಳು.

ತ್ರಿಶತ್ಕುಜ ತ್ರಿಶಂಕುಜ (ಪುಂ) ತ್ರಿಶಂಕುರಾಜನೆ ಮಗ. ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರ. ತ್ರಿಶತ್ಕೋಜಯಿತೆ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತವಿ) "ತಃ" (೩-೨-೯೮)।

ತ್ರಿಶತ್ಕುಯಾಜಿನ್ ತ್ರಿಶಂಕುಯಾಜಿನ್ (ಪುಂ) ತ್ರಿಶಂಕುವಿನ ಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡಿಸಿದ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಮಹರ್ಷಿ. ತ್ರಿಶತ್ಕು ಯಾಜಯತಿ — ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾಯಾಮ್) + ಯಜಿ "ಯಿಜಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। ["ತ್ರಿಶತ್ಕು" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ತ್ರಿಶತ ತ್ರಿಶತ (ನಂ) 1. ಮೂರುನೂರು. ತ್ರಿಗುಣಿತ ಶತಮ್। 2. ಒಂದುನೂರ ಮೂರು. ಅಧಿಕಂ ಶತಮ್। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಶತೀ -ಶತೀ. ಮೂರುನೂರು.

ತ್ರಿಶಿಖ ತ್ರಿಶಿಖ (ಪುಂ) 1. ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಇಂದ್ರರಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕನೆಯವನು. 2. ರಾಕ್ಷಸ, ರಾವಣನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. (ನಂ) 3. ತ್ರಿಶೂಲವೆಂಬ ಒಂದು ಆಯುಧ. ತಿಸ್ರಃ ಶಿಖಾ ಅಸ್ಯ। 4. ಕಿರೀಟ. (ವಿಂ) 5. ಮೂರು ಶಿಖೆಯುಳ್ಳ. "ತ್ರಿಶಿಖಾಂ ಭ್ರೂಕುಟಿಂ ಕೃತ್ವಾ ಸಂದಶ್ಯ ದಶನಂ ಚಂದಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ। "ತ್ರಿಶಿಖೋ ರಕ್ಷಸ್ತ್ರಿಶಿಖಂ ಸ್ಯಾತ್ ಕಿರೀಟ-ತ್ರಿಶೂಲಯೋಃ" ಹೇಮಂ।

ತ್ರಿಶಿರಸ್ ತ್ರಿಶಿರಸ್ (ಪುಂ) 1. ಕುಬೇರ. ತ್ರಿಣಿ ಶಿರಾಸಿ ಅಸ್ಯ। 2. ರಾವಣನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. 3. ಖರನ ಒಬ್ಬ ಸೇನಾಪತಿ. 4. ವಿಶ್ವರೂಪ ನಾಮಾಂತರವುಳ್ಳ ತ್ವಷ್ಟ ನೆಂಬ ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಗ, [ಈತನಿಗೆ ಮೂರು ತಲೆಗಳಿದ್ದುದರಿಂದ ಎಲ್ಲರೂ ಈ ಹೆಸರಿನಿಂದಲೇ ಇವನನ್ನು ಕರೆಯುತ್ತಿದ್ದರು. ಈತನು ಒಂದು ತಲೆಯಿಂದ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದನು. ಇನ್ನೊಂದು ತಲೆಯಿಂದ ಸೋಮ ಪಾನವನ್ನೂ ಮತ್ತೊಂದರಿಂದ ಸುರಾಪಾನವನ್ನೂ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದನು. ಇವನು ತ್ವಷ್ಟನಿಂದ ಪ್ರಹ್ಲಾದನ ಮಗಳಾದ ವಿರೋಚನೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ್ದುದರಿಂದ ಇವನಲ್ಲಿ ದೇವತೆಗಳ ಮತ್ತು ರಾಕ್ಷಸರ ಗುಣಗಳೆರಡೂ ಮಿಶ್ರವಾಗಿದ್ದುವು. "ಸರ್ವೇ ಸಾಂತಾಃ ಅದಂತಾಃ ಸ್ಯುಃ" ಈ ವಚನದಂತೆ "ತ್ರಿಶಿರ" ಎಂದು ಆಕಾರಾಂತವೂ ಆಗುವುದು. "ತಸ್ಯಾಃ ಖರತ್ರಿಶಿರ-ದ್ವಿಷಣಮುಖ್ಯಬನ್ಧುನ್" ಭಾಗಂ ೯-೧೦-೯। "ಮನುಷ್ಯಘರ್ಮಲಬಿಲಃ ಪಾಲಸ್ತಯೋ ಧನದೋ ಧನಿಃ। ಕೇಲಾಸನಾಥಸ್ತ್ರಿಶಿರಾ ಧನಾಘ್ರಕ್ಷೋ ವಟಾಶ್ರಯಃ। ನಿಧಿಪಾಲೋ ವೈಶ್ರವಣೋ ವಿಕೃತಶೋ ನರವಾಹನಃ" ವೇಜಂ। 5. ಜ್ವರ. "ವಿದ್ರಾವಿತೇ ಭತಗಣೇ ಜ್ವರಸ್ತು ತ್ರಿಶಿರಾಸ್ತ್ರಿಪಾತ್। ಅಮ್ಯಭಾವತ ದಾಶಾಹಂ ದಹಸ್ತಿದ ದಿಶೋ ದಶ" ಭಾಗಂ ೧೦-೬೩-೨೨।

ತ್ರಿಶೂಲ ತ್ರಿಶೂಲ (ನಂ) ಚೂಪಾದ ಮೂರು ಅಗ್ರವುಳ್ಳ ಒಂದು ಆಯುಧ. ತ್ರಿಣಿ ಶೂಲಾನಿವ ಅಗ್ರಾಣಿ ಯಸ್ಯ।



ತ್ರಿಶೂಲಿನ್ ತ್ರಿಶೂಲಿನ್ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. ತ್ರಿಶೂಲಮಸ್ತಯಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಶೂಲಿನಿ-ಶೂಲಿನೀ. ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ. "ತ್ರಿಶೂಲಿನಿ ನಮಸ್ಯಾಮಿ ಮಹಿಷಾಸುರಧಾತಿನಿಮ್" ಹರಿವಂ. 1.

ತ್ರಿಶೃಂಗ ತ್ರಿಶೃಂಗ (ಪುಂ) 1. ತ್ರಿಕೂಟಪರ್ವತ. ತ್ರಿಣಿ ಶೃಂಗಾಣ್ಯಸ್ಯ। "ತ್ರಿಶೃಂಗ: ಪರ್ವತಶ್ಚೈವ ಕುಮಾರಿ ಚ ಸರಿದ್ವರಾ" ಹರಿವಂ. (ನಂ) 2. ತ್ರಿಕೋಣ, ಮೂರು ಮೂಲಗಳು, ತ್ರಿಭುಜಗಳು. 3. ಮೂರು ಕೋಣಗಳುಳ್ಳ ಕ್ಷೇತ್ರ.

ತ್ರಿಶೋಕ ತ್ರಿಶೋಕ (ಪುಂ) ಜೀವ, ಜೀವಾತ್ಮ. ತ್ರಯ: ಶೋಕಾ ಯಸ್ಯ। [ಜೀವನಿಗೆ ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ ಅಧಿದೈವಿಕ ಮತ್ತು ಅಧಿ ಭೌತಿಕಗಳೆಂಬ ಮೂರು ತಾಪಗಳುಂಟು.]

ತ್ರಿಷವಣ ತ್ರಿಷವಣ (ನಂ) ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಮಧ್ಯಾಹ್ನ ಮತ್ತು ಸಾಯಂಕಾಲಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಕಾಲ. ಸೂಯತೆ ಸೋಮಾಂತ್ರ ಷು ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ಕುರ್ಯಾತ್ ತ್ರಿಷವಣಸ್ನಾಯಿ ಕುಂಠಂ ಚಾನ್ದ್ರಾಯಣಂ ತಥಾ" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೩೨೫।

ತ್ರಿಷಟ್ ತ್ರಿಷಟ್ (ವಿಂ) ಅರವತ್ತಮೂರನೆಯ. ತ್ರಿಷಟ್: ಪೂರ್ಣ: "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮)।

ತ್ರಿಷಟ್ ತ್ರಿಷಟ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರವತ್ತಮೂರು. ಅಧಿಕಾ ಷಟ್: 1.

ತ್ರಿಷಟ್ತಮ ತ್ರಿಷಟ್ತಮ (ವಿಂ) ಅರವತ್ತಮೂರನೆಯ. ತ್ರಿಷಟ್ ಡಟೊ ವಾ ತಮಙಾಗಮ: (೪-೨-೬೬)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ತಮಿ-ತಮಿ.

ತ್ರಿಷ್ಠು ತ್ರಿಷ್ಠು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹನ್ನೊಂದನೆಯ ಭಂದಸ್ಸು, ಹನ್ನೊಂದು ಅಕ್ಷರಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಭಂದಸ್ಸು. ತ್ರಿಷು ಸ್ಥಾನೇಶು ಸ್ತುಮ್ಯತೇ - ಸ್ತುಮ್ (ರೋಧನೆ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬)। "ಗಾಯತ್ರಿಞಿಗನುಷ್ಠುಪ್ ಚ ಬೃಹತೀ ಪಙ್ಕ್ತಿರೇವ ಚ। ತ್ರಿಷ್ಠುಪ್ ಚ ಜಗತೀ ಚೈವ" ವೃಂ ೨೦। "एकादेशाक्षरा वै त्रिषु गायत्री क्षत्रं त्रिषु च" ಶ್ರುತಿ: 2. ತ್ರಿಷ್ಠುಪ್ ಭಂದಸ್ಸಿನ ಅಭಿಮಾನಿದೇವತೆ. "इन्द्र एकादशाक्षरेण छन्दसा त्रिषु त्रिषु छन्दोऽभिमानिनीं देवतामुदजयत्" ಶ್ರುತಿ: 1.

ತ್ರಿಸ್ ತ್ರಿಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಮೂರು ಸಲ, ಮೂರಾವೃತ್ತಿ, ತಿಸ್ರ: ಕ್ರಿಯಾಯಾ ಅಭ್ಯಾವೃತ್ತಯ: - ತ್ರಿ "ಮುಕ್" (೪-೪-೧೮)। "त्रि: सप्तकृत्वो जगतीपतीनां हन्ता गुर्यस्य स जामदग्न्य:" ಕಿರಾಂ ೩-೧೮।

ತ್ರಿಸಂಧಿ ತ್ರಿಸಂಧಿ (ವಿಂ) ಮೂರು ಸಂಧಿಗಳುಳ್ಳ, ಮೂರು ಭಾಗಗಳುಳ್ಳ. ತ್ರಯ: ಸಂಧಯೋ ಪರಿच्छेदात्मका भागा यस्य

ತ್ರಿಸಂಧ್ಯ ತ್ರಿಸಂಧ್ಯ (ನಂ) 1. ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಮಧ್ಯಾಹ್ನ ಮತ್ತು ಸಾಯಂಕಾಲಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲಗಳು. ತಿಸೃಣಾಂ ಸಂಧ್ಯಾಣಾಂ ಸಮಾಹಾರ: 1. "अकारि तस्यै मुकुटो-पलस्त्रलत्करैस्त्रिसंध्यं त्रिदशैर्दिशे नमः" ಮಾಘಂ ೧-೪೬। ಪಾಕ್ಷಿಕಂ ಸ್ತ್ರೀತ್ವಮ್ (ವಾಂ ೨-೪-೧೭)। -ಸಂಧ್ಯಾ-ಸಂಧ್ಯೀ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ತ್ರಿಸಂಧ್ಯಾಕಾಲಗಳೆಲ್ಲಾ.

ತ್ರಿಸಪ್ತ ತ್ರಿಸಪ್ತ (ವಿಂ) ಎಪ್ಪತ್ತಮೂರನೆಯ. ತ್ರಿಸಪ್ತತೆ: ಪೂರ್ಣ: "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಸಪ್ತತೀ-ಸಪ್ತತೀ.

ತ್ರಿಸಪ್ತತಿ ತ್ರಿಸಪ್ತತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎಪ್ಪತ್ತಮೂರು. ಅಧಿಕಾ ಸಪ್ತತಿ: 1. ತ್ರೆ: ತ್ರಯ: 1. ತ್ರಯ: ಸಪ್ತತಿ: ತ್ರಯ: ಸಪ್ತತೀ.

ತ್ರಿಸಪ್ತತಮ ತ್ರಿಸಪ್ತತಮ (ವಿಂ) ಎಪ್ಪತ್ತಮೂರ ನೆಯ. ತ್ರಿಸಪ್ತತೆ: ಪೂರ್ಣ: ಡಟ: ವಾ ತಮಙಾಗಮ: 1. ತ್ರೆ: ತ್ರಯ: 1. ತ್ರಯ: ಸಪ್ತತಮ: ತ್ರಯ: ಸಪ್ತತಮ: 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಸಪ್ತತಮಿ-ಸಪ್ತತಮಿ.

ತ್ರಿಸಪ್ತನ್ ತ್ರಿಸಪ್ತನ್ (ವಿಂ) ಎಪ್ಪತ್ತೊಂದು. ತ್ರಿಗುಣಿತಾ: ಸಪ್ತ 1.

ತ್ರಿಸಮ ತ್ರಿಸಮ (ವಿಂ) ದೇಹದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಕಡಮೆಯಿಲ್ಲದೆ ಸಮವಾಗಿರುವ ಮೂರು ಅವಯವಗಳುಳ್ಳವನು. ತ್ರಿಷು ಸಮ: 1. ಕೇಶಾಗ್ರ (ತಲೆಯ ಕೂದಲಿನ ತುದಿ) ವೃಷಣಗಳು ಮತ್ತು ಮೊಳಕಾಲುಗಳು ಒಂದೇ ಅಳತೆಯಲ್ಲಿರುವುದು ರಾಜಲಕ್ಷಣ. "केशाग्रं वृषणं जानू समा यस्य स भूपति:" 1. "त्रिस्थिरस्त्रिप्रलम्बश्च त्रिसमस्त्रिषु चोन्नत:" ರಾಮಾಂ 1.

ತ್ರಿಸರಕ ತ್ರಿಸರಕ (ನಂ) 1. ಮೂರು ಸಲ ಮದ್ಯವನ್ನು ಕುಡಿಯುವುದು. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಸರಕಾಣಾಂ ಮಧುಪಾನಾಣಾಂ ಸಮಾಹಾರ: 1. ಪಾತ್ರಾನ್ತರವಾತ್ ನ "ಡೀಪ್" 1. "प्रातिभं त्रिसरकेण गतानां वक्रवाक्यरचनारमणीय:" ಮಾಘಂ ೧೦-೧೨। 2. ಮೂರು ಮದ್ಯದ ಪಾತ್ರೆಗಳು. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಶಿಥುಪಾತ್ರಾಣಾಂ ಸಮಾಹಾರ: 1. "सरकोऽस्त्री शीघ्रुपाने शीघ्रुपात्रेषु शीघ्रुनो:" ಮೇದಿಂ 1.

ತ್ರಿಸರ್ಗ ತ್ರಿಸರ್ಗ (ಪುಂ) ಸತ್ತ್ವ ರಜಸ್ಸು ಮತ್ತು ತಮಸ್ಸು ಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಗುಣಗಳ ಸೃಷ್ಟಿ. ತ್ರಯಾಣಾಂ ಸತ್ವರಜ-ಸ್ತಮಸಾಂ ಸರ್ಗ: ಸೃಷ್ಟಿ: 1. "तेजो वारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि" ಭಾಗಂ ೧-೧-೧।

ತ್ರಿಸಾಮನ್ ತ್ರಿಸಾಮನ್ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ತ್ರಿಣಿ ಸಾಮಾನಿ ಸ್ವಗಾಯಕಪ್ರಧಾನಾನಿ ಬೃಹದ್ರಥನ್ತರವಾಮದೇವ್ಯಾನ್ಯಸ್ಯ 1. "प्रोक्तस्त्रिसामा यश्चासौ बृहदादित्रिसामक:" ಇತಿ







ಮಾನ-ದೇವಮಾನ-3,600, ಮಾನುಷ-12,96,000 ವರ್ಷಗಳು. "ತೇತಾಯುಗೇ ಭವಿಷ್ಯಾಮಿ ರಾಮೋ ಭಗುಕುಲೋದ್ಭವಃ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೩೪೮-೧೫. 3. ಮೂರರ ಒಂದು ಗುಂಪು, ಮೂರರ ಒಂದು ತಂಡ. 4. ಪಗಡೆಯಾಟದಲ್ಲಿ ಮೇಲುಮುಖವಾಗಿ ಬೀಳುವ ದಾಳದ ಮೂರರ ಗರ. 5. ಕವಡೆಯಾಟದಲ್ಲಿ ಮೇಲುಮುಖವಾಗಿ ಬೀಳುವ ಮೂರರ ಗರ.

**ತ್ರೇಧಾ ತ್ರೇಧಾ** (ಅವ್ಯಂ) ಮೂರು ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ, ಮೂರು ವಿಧವಾಗಿ. ತ್ರಿ ಪ್ರಕಾರೇ "ಏಘಾಚ್" (೪-೩-೪೬). "ನಮೋ ವಿಶ್ವಸೃಜೇ ಪೂರ್ವಂ ವಿಶ್ವಂ ತದನು ವಿಭ್ರತೇ | ಅಥ ವಿಶ್ವಸ್ಯ ಸಂಹತೇ ತುಮ್ಯಂ ತ್ರೇಧಾ ಸ್ಥಿತಾತ್ಮನೇ" ರಘುಂ ೧೦-೧೬ |

**ತ್ರೈಕಕುದ ತ್ರೈಕಕುದ** (ನಂ) ತ್ರಿಕಕುತ್ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ ಸೌರಾಂಜನ. ತ್ರಿಕಕುತ್ಪರ್ವತೇ ಭವಃ "ಅಘ್" (೪-೩-೫೩) |

**ತ್ರೈಕಾಲಿಕ ತ್ರೈಕಾಲಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಭೂತ ಭವಿಷ್ಯತ್ ಮತ್ತು ವರ್ತಮಾನಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಇರುವ, ಮೂರು ಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ತ್ರಿಕಾಲೇ ಭವಃ "ಠಕ್" (ವಾಂ ೪-೩-೬೦) | 2. ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಮಧ್ಯಾಹ್ನ ಸಾಯಂಕಾಲಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. "ತ್ರೈಕಾಲಿಕಮಿದಂ ಜ್ಞಾನಂ ಪ್ರಾಡುಭೂತಂ ಯಥೇಷ್ಟಿತಮ್" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೩೪೯-೨೬ |

**ತ್ರೈಕಾಲ್ಯ ತ್ರೈಕಾಲ್ಯ** (ನಂ) ಭೂತ ಭವಿಷ್ಯತ್ ಮತ್ತು ವರ್ತಮಾನಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಕಾಲಗಳು. ತ್ರಿಕಾಲ ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಏಘ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪) |

**ತ್ರೈಗರ್ತ ತ್ರೈಗರ್ತ** (ಪುಂ) 1. ತ್ರಿಗರ್ತನ ಮಗ. ತ್ರಿಗರ್ತಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಅಘ್" (೪-೧-೧೧೪) | 2. ತ್ರಿಗರ್ತ ದೇಶದ ದೊರೆ.

**ತ್ರೈಗರ್ತಕ ತ್ರೈಗರ್ತಕ** (ವಿಂ) ತ್ರಿಗರ್ತದೇಶದ ಸಮಾಪದೇಶ, ತ್ರಿಗರ್ತಸ್ಯ ಅದೂರಭವಃ "ಕುಘ್" (೪-೨-೮೦) |

**ತ್ರೈಗುಣಿಕ ತ್ರೈಗುಣಿಕ** (ವಿಂ) ತನ್ನ ದ್ರವ್ಯವು ಮೂರರಷ್ಟು ಹೆಚ್ಚುಗಳು ದ್ರವ್ಯವನ್ನು ಸಾಲವಾಗಿ ಕೊಡುವವನು, ಹಣವು ಮುಮ್ಮಡಿಯಾಗಿ ಹೆಚ್ಚು ಬಡ್ಡಿಗಾಗಿ ಸಾಲವನ್ನು ಕೊಡುವವನು. ತ್ರಿಗುಣಾರ್ಥ ದ್ರವ್ಯಂ ತ್ರಿಗುಣಮ್ ತತ್ ಪ್ರಯಚ್ಛತಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೩೦) |

**ತ್ರೈಗುಣ್ಯ ತ್ರೈಗುಣ್ಯ** (ನಂ) 1. ಸತ್ತ್ವ ರಜಸ್ಸು ಮತ್ತು ತಮಸ್ಸುಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಗುಣಗಳು. ತ್ರಯೋ ಗುಣಾಃ-ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಏಘ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪) | 2. ಸತ್ತ್ವರಜಸ್ಸುಮೋ ಗುಣಪ್ರಚುರನಾದ ಪುರುಷ. ಸತ್ತ್ವರಜಸ್ತಮಃಪ್ರಚುರಾಃ ಪುರುಷಾಃ ತ್ರೈಗುಣ್ಯಶಬ್ದೇನೋಚ್ಯಂತೇ | "ತ್ರೈಗುಣ್ಯವಿಷಯಾ ವೇದಾ ನಿತ್ಯೇಗುಣ್ಯೋ ಭವಾರ್ಜುನ" ಗೀತಾ ೨-೪೫ | 3. ಶೈತ್ಯ ಸೌರಭ್ಯ ಮಾಂದ್ಯ

ಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಗುಣಗಳು. "ತ್ರೈಗುಣ್ಯಲಲಿತೇಶ್ವಾರಮಹದ್ವಿಘ್ನವಿಜಿತೇ" |

**ತ್ರೈಙ್ - ಪಾಲನೆ** (ಶ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) | ತ್ರಾಯತೇ | ತತ್ರೇ | ತ್ರಾತಾ | ತ್ರಾಸ್ಯತೇ | ತ್ರಾಯತಾಮ್ | ತ್ರಾಯತ | ತ್ರಾಯತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತ್ಸುಃ** - ತ್ರಾತವ್ಯಮ್ | ತ್ರಾಣೀಯಮ್ | ತ್ರಾಣಃ, ತ್ರಾತಃ | ತ್ರಾತವಾನ್ | ತ್ರಾಯಮಾಣಃ | ತ್ರಾತುಮ್ | ತ್ರಾಣಮ್, ತ್ರಾತಮ್ | ತ್ರಾತಾ |

**ತ್ರೈದಶಿಕ ತ್ರೈದಶಿಕ** (ನಂ) ದೈವತೀರ್ಥ, ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ತೀರ್ಥ, ಅಂಗುಳಿಯ ತುದಿಯಿಂದ ಬಿಡುವ ತೀರ್ಥ. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ವಿಪ್ರಸ್ತೀರ್ಥೇನ ನಿಯತಕಾಲಮುಪಸ್ಥುತ | ಕಾಯತ್ರೈದಶಿಕಾಮ್ಯಾಂ ವಾ ನ ಪಿಶ್ಯೇಣ ಕದಾಚನ" ಮನುಂ ೨-೫೮ |

**ತ್ರೈಧಮ್ ತ್ರೈಧಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಮೂರು ವಿಧವಾಗಿ, ಮೂರು ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ. ತ್ರಿ ವಾ "ಧಮುಃ" (೪-೩-೪೫) | ಪಕ್ಷೇ "ಧಾ" | ತ್ರಿವಾ ತ್ರಿಧಾ. "ಏಘಾಚ್" ಚ | ತ್ರೇಧಾ ತ್ರೇಧಾ. "ಸರ್ವಮೇವ ಹಠೇನೇಕೇ ದೇವೇನೇಕೇ ವದಂತ್ಯುತ | ಪುಂಸಃ ಪ್ರಯತ್ನಜಂ ಕಿಂಚಿತ್ ತ್ರೈಧಮೇತನ್ನಿರೂಪ್ಯತೇ" ಭಾಂ ವನಂ ೩೨-೩೨ |

**ತ್ರೈಮಾತುರ ತ್ರೈಮಾತುರ** (ಪುಂ) ಲಕ್ಷ್ಮಣ, ಮೂರು ಮಂದಿ ತಾಯಿಂದಿರೆ ಮಗ. ತಿಸೃಣಾಂ ಮಾತುಣಾಮಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಅಘ್" | ತತ್ ಆದೇಶಶ್ಚ (೪-೧-೧೧೫) | ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ಕೃಷ್ಣನ ಸುಮಿತ್ರ ಮತ್ತು ಕೈಕಯಿ ಈ ಮೂವರ ಪ್ರೀತಿಗೂ ಪಾತ್ರ ನಾದುದರಿಂದ ಅವನಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು. "ತ್ರೈಮಾತುರಃ ಕೃತ್ಸು-ಜಿತಾಸ್ತ್ರಶಸ್ತ್ರಃ" ಭದ್ರಿಂ ೧-೨೫ |

**ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಮೂರು ತಿಂಗಳು ವಯಸ್ಸುಳ್ಳ, ಮೂರನೆಯ ತಿಂಗಳನ್ನು ಮುಟ್ಟಿರುವ. ತ್ರಿಮಾಸಂ ತೃತೀಯಮಾಸಂ ಭೂತಃ ಸ್ವಸತ್ತಯಾ ಪ್ರಾಪ್ತಃ "ಠಕ್" (೪-೧-೮೦) | "ತೋಕೇನ ಜೀವಹರಣಂ ಯದ್ಕುಲಪಿಕಾಯಾಸ್ತ್ರೈ-ಮಾಸಿಕಸ್ಯ ಚ ಪದಾ ಶಕಟೋಪವೃತ್ತಃ" ಭಾಗಂ ೨-೭-೨೭ | 2. ಮೂರು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ, ಮೂರು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಬರುವ. ತ್ರಿಷು ಮಾಸೇಷು ಭವಃ "ಠಕ್" (೪-೩-೧೧) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಫ್" (೪-೧-೧೫) | -ಮಾಸಿಕೀ -ಮಾಸಿಕೀ.

**ತ್ರೈಮಾಸ್ಯ ತ್ರೈಮಾಸ್ಯ** (ನಂ) ಮೂರು ತಿಂಗಳು. ತ್ರಿಮಾಸ ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಏಘ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪) |

**ತ್ರೈಮ್ಬಕ ತ್ರೈಮ್ಬಕ** (ವಿಂ) ಪರಮೇಶ್ವರನ ಸಂಬಂಧ ವಾದ. ತ್ರೈಮ್ಬಕಸ್ಯ ಇದಮ್ "ಅಘ್" (೪-೩-೧೨೦) | ಲೇವಾಗಮಃ (೭-೩-೩) | "ಆರೋಪಣೇನ ಪಣಮಪ್ರತಿಕಾರ್ಯ-ಮಾರ್ಯಸ್ತ್ರೈಮ್ಬಕಸ್ಯ ಧನುಷೋ ಯದಿ ನಾಕರಿಷ್ಯತ್" ಮಂ ವೀಂ ೧-೨೭ |



**ಶ್ರೇಷ್ಠಿಕ ತ್ರೈರಾಶಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಮೂರು ರಾಶಿಗಳನ್ನು ಕುರಿತ ಗಣಿತ. ತ್ರಿನ್ ರಾಶಿನ್ ಅಧಿಕೃತ ಕೃತಮ್ | 2. ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ ರಾಶಿಚಕ್ರದಲ್ಲಿ ಮೂರು ರಾಶಿಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.

**ಶ್ರೀಲೋಕ ತ್ರೈಲೋಕ್ಯ** (ನಂ) ಸ್ವರ್ಗ ಮಧ್ಯ ಮತ್ತು ಪಾತಾಳ ಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಲೋಕಗಳು. ತ್ರಯೋ ಲೋಕಾಃ ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಫ್ಯಾನ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪) | "ಶ್ರೀಲೋಕಮಪ್ಯಪರ್ಯಾಪ್ತಿಂ ರಕ್ಷಸಾಂ ಸ್ಥಾತುಮಪ್ಯದಃ" ಮಂ ವೀಂ ೬-೬೦ |

**ಶ್ರೀಲೋಕಾಧಿಪತ್ಯ ತ್ರೈಲೋಕ್ಯಾಧಿಪತ್ಯ** (ನಂ) ಮೂರು ಲೋಕಗಳ ಒಡೆತನ.

**ಶ್ರೇವರ್ಗಿಕ ತ್ರೈವರ್ಗಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಧರ್ಮ ಅರ್ಥ ಮತ್ತು ಕಾಮ ಇವುಗಳಿಗೆ ಅನುಕೂಲವಾದ ಕಾರ್ಯ. ತ್ರಿವರ್ಗೀಯ ಹಿತಮ್ "ಠನ್" ಬಾಹುಂ | "ಸಂಸ್ಥಾಂ ವಿಜಾಯ ಸಂನ್ಯಸ್ಯ ಕರ್ಮ ಶ್ರೇವರ್ಗಿಕಂ ಚ ಯತ್" ಭಾಗಂ ೨-೪-೪ | 2. ಧರ್ಮ ಅರ್ಥ ಮತ್ತು ಕಾಮಗಳಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿ ಹೊಂದಿರುವವನು. "ಶ್ರೇವರ್ಗಿಕಾಸ್ತೇ ಪುರುಷಾ ವಿಮುಕ್ತಾ ಹರಿಮೇಷಸಃ" ಭಾಗಂ ೩-೩೨-೧೮ | 3. ಸತ್ಯ ರಜಸ್ಸು ಮತ್ತು ತಮಸ್ಸುಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.

**ಶ್ರೇವರ್ಗಿಕ ತ್ರೈವರ್ಣಿಕ** (ಪುಂ) 1. ದ್ವಿಜಾತಿಗಳು, ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಮತ್ತು ವೈಶ್ಯರು. 2. ದ್ವಿಜಾತಿಗಳ ಧರ್ಮ.

**ಶ್ರೇವರ್ಷಿಕ ತ್ರೈವರ್ಷಿಕ** (ವಿಂ) ಮುಂದಿನ ಮೂರು ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ. ತ್ರಿವರ್ಷ ಭಾವಿ "ಠನ್" (೪-೧-೮೦) |

**ಶ್ರೇವರ್ಷಿಕ ತ್ರೈವಾರ್ಷಿಕ** (ವಿಂ) ಮೂರು ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ಮೂರು ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ನಡೆದ. ತ್ರಿವರ್ಷ ಭೂತಃ "ಠನ್" (೪-೧-೮೦) |

**ಶ್ರೇವಿಕ್ರಮ ತ್ರೈವಿಕ್ರಮ** (ವಿಂ) 1. ತ್ರಿವಿಕ್ರಮಾವತಾರ. "ವರ್ಷಯಸ್ವ ಮಹಾಬಾಹೋ ಪುರಾ ಶ್ರೇವಿಕ್ರಮೇ ಯಥಾ" ಹರಿವಂ | 2. ತ್ರಿವಿಕ್ರಮ ಸಂಬಂಧವಾದ. ತ್ರಿವಿಕ್ರಮಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | "ಬಲಿಪ್ರದಿಷ್ಟಾಂ ಶ್ರಿಯಮಾದದಾನಂ ಶ್ರೇವಿಕ್ರಮಂ ಪಾದಮಿವೇಂದ್ರಶತ್ರುಃ" ರಘುಂ ೭-೩೫ |

**ಶ್ರೇವಿಧ್ಯ ತ್ರೈವಿಧ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಯುಗ್ಯಜುಃಸಾಮಗಳೆಂಬ ಮೂರು ವೇದಗಳನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು ಅಥವಾ ತಿಳಿದವನು. ತ್ರಿವಿಧ್ಯಾಮಧೀತೇ ವೇದ ವಾ "ಅನ್" (೪-೨-೪೯) | "ಶ್ರೇವಿಧ್ಯಂ ವೃತ್ತಿಮದ್ಬ್ರೂಯಾತ್ಸ್ವಧರ್ಮಃ ಪಾಲ್ಯತಾಮಿತಿ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೮೪ | (ನಂ) 2. ಯುಗ್ಯಜುಃಸಾಮಗಳೆಂಬ ಮೂರು ವಿದ್ಯೆಗಳು. ತಿಸೃಣಾಂ ವಿಜ್ಞಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ | ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮) |

**ಶ್ರೇವಿಧ್ಯ ತ್ರೈವಿಧ್ಯ** (ನಂ) ಮೂರು ವಿಧ, ಮೂರು ಪ್ರಕಾರ. ತ್ರಿವಿಧಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಫ್ಯಾನ್" (೪-೧-೧೨೪) |

**ಶ್ರೇವಿಷ್ಟಪ ತ್ರೈವಿಷ್ಟಪ** (ಪುಂ) ದೇವತೆ. ತೃತೀಯಂ ವಿಷ್ಟಪಂ ಸ್ವರ್ಗಃ, ತ್ರಿವಿಷ್ಟಪೇ ಭವಃ "ಅನ್" (೪-೩-೪೩) | "ಇಷ್ಟೇಶ್ವರೈ-ವಿಷ್ಟಪಾನಾಂ ವಿಧವತು ವಿಧಿವತ್ ಪ್ರೀಣನಂ ವಿಪ್ರಮುಖ್ಯಾಃ" ರತ್ನಾಂ ೪-೨೧ |

**ಶ್ರೇವಿಷ್ಟಪೇಯ ತ್ರೈವಿಷ್ಟಪೇಯ** (ಪುಂ) ದೇವತೆ. ತ್ರಿವಿಷ್ಟಪ "ಠಕ್" ಬಾಹುಂ | "ಗಂಧರ್ವಯಕ್ಷಾಸುರಸಿದ್ಧಚಾರಣಶ್ರೇವಿಷ್ಟ-ಪೇಯಾದಿಭು ನಾನ್ವವಿನ್ದತ" ಭಾಗಂ ೮-೮-೧೯ |

**ಶ್ರೇಶಾಕ್ಷುಷ ತ್ರೈಶಂಕವ** (ಪುಂ) 1. ತ್ರಿಶಂಕುವಿನ ಮಗ, ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರ. ತ್ರಿಶಾಕ್ಷೋರಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೯೨) | 2. ತ್ರಿಶಂಕುವಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ತ್ರಿಶಾಕ್ಷೋರಿದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) |

**ಶ್ರೇಸ್ವರ್ಯ ತ್ರೈಸ್ವರ್ಯ** (ನಂ) ಉದಾತ್ತ ಅನುದಾತ್ತ ಮತ್ತು ಸ್ವರಿತಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಸ್ವರಗಳು. ತ್ರಿಸ್ವರ ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಫ್ಯಾನ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪) |

**ಶ್ರೇಹಾಯಣ ತ್ರೈಹಾಯಣ** (ವಿಂ) ಮೂರು ವರ್ಷಗಳ ಸಂಬಂಧವಾದ. ತ್ರಿಹಾಯಣಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) |

**ಶ್ರೋತಕ ತ್ರೋಟಿಕ** (ನಂ) ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. ಹದಿನೆಂಟು ವಿಧ ಉಪರೂಪಕಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಹದಿನೆಂಟು ಉಪರೂಪಕಗಳು : (1) ನಾಟಕ, (2) ತ್ರೋಟಕ, (3) ಗೋಷ್ಠಿ, (4) ಸದೃಕಮ್, (5) ನಾಟಕರಾಸಕಮ್, (6) ಪ್ರಸ್ಥಾನಮ್ | (7) ಉಲ್ಲಾಪ್ಯಮ್, (8) ಕಾವ್ಯಮ್, (9) ಪ್ರೇಕ್ಷಣಮ್, (10) ರಾಸಕಂ, (11) ಸಂಲಾಪಕಮ್, (12) ಶ್ರೀಗದಿತಮ್, (13) ಶಿಲ್ಪಕಮ್, (14) ವಿಲಾಸಿಕಾ, (15) ದುರ್ಮಲಿಕಾ, (16) ಪ್ರಕರಣಿಕಾ, (17) ಹಲ್ಲೀಶಃ ಮತ್ತು (18) ಭಾಣಿಕಾ | ತ್ರೋಟಿಕ ರೂಪಕದಲ್ಲಿ 5, 7, 8 ಅಥವಾ 9 ಅಂಕಗಳಿರಬೇಕು. ದೇವತೆ ಮತ್ತು ಮನುಷ್ಯರು ನಾಯಕರು, ಪ್ರತಿ ಅಂಕದಲ್ಲಿಯೂ ವಿದೂಷಕನ ಸಂಬಂಧವಿರಬೇಕು. ವಿದೂಷಕನ ಸಂಬಂಧ ವಿರುವುದರಿಂದ ಶೃಂಗಾರರಸವು ಪ್ರಧಾನವಾಗಿರುವುದು. "ಸಪ್ತಾಷ್ಟನವಪಶ್ಚಾತ್ಕ ದಿವ್ಯಮಾನುಷಸಂಶ್ರಯಮ್ | ತ್ರೋಟಕಂ ನಾಮ ತತ್ರಾಹುಃ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಂ ಸವಿದೂಷಕಮ್" ಸಾಂ ೬-೨೭೩ |

**ಶ್ರೋತಿ ತ್ರೋಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೊಕ್ಕು, ಹಕ್ಕಿಯ ಮೂತಿ. ತ್ರೂಟ (ಹೆದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಃ" (೩ಂ ೪-೧೩೮) | 2. ಕಿರಿಯ ಶಿವನಿ ಮರ. 3. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. 4. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. "ಶ್ರೋತಿಃ ಸ್ತ್ರೀ ಕರ್ತೃಲೇ ಚಞ್ಚ್ವಾಂ ಸ್ವಗೋ ಮೀನಾಂತರೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ |

**ಶ್ರೋತಿಹಸ್ತ ತ್ರೋಟಿಕಸ್ತ** (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಶ್ರೋತಿಃ ಚಞ್ಚ್ವಃ ಹಸ್ತ ಇವ ಯಸ್ಯ |



ಅಂಶ ತ್ರ್ಯಂಶ (ಪುಂ) 1. ಮೂರನೆಯ ಭಾಗ. ತೃತೀಯಾಂಶಃ |  
2. ಮೂರು ಭಾಗಗಳು. ತ್ರಿಗುಣಿತಂಶಃ | "ಅಂಶಂ ದಾಯಾ-  
ದ್ದರೆದಿಪ್ರೋ ದ್ವಾವಂಶೌ ಕ್ಷತ್ರಿಯಾಸುತಃ" ಮನುಂ ೧-೧೫೧ |  
3. ರಾಶಿಯ ಮೂರನೆಯ ಭಾಗ. (ವಿಂ) 4. ಮೂರು  
ಭಾಗಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ.

ಅಕ್ಷ ತ್ರ್ಯಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. ತ್ರಿಣಿ  
ಅಕ್ಷಿಣಿ ಅಸ್ಯ | "ಷಕ್" (೪-೪-೧೧೩) | (ವಿಂ) 2.  
ಮೂರು ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳವನು. ತ್ರಿಣಿ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯ |  
"ವೇದಿರಾಜಕುಲೇ ಜಾತಸ್ಯಾಕ್ಷ ಏಷ ಚತುರ್ಭುಜಃ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧) | ಅಕ್ಷಿ ತ್ರ್ಯಕ್ಷಿಃ |  
"ದ್ವಯಕ್ಷಿಂ ಅಕ್ಷಿಂ ಲಲಾಟಾಕ್ಷಿಂ ದೀರ್ಘಜಿಹ್ವಾಮಜಿಹ್ವಿಕಾಮ್"  
ಭಾಂ ವನಂ ೨೮೧-೪೬ |

ಅಕ್ಷರ ತ್ರ್ಯಕ್ಷರ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಣವ, ಒಂಕಾರ. ತ್ರಿಣಿ  
ಅಕಾರೋಕಾರಮಕಾರರೂಪಾಣಿ ಅಕ್ಷರಾಣಿ ಯತ್ರ | "ಆದ್ಯಂ ಯತ್  
ಅಕ್ಷರಂ ಬ್ರಹ್ಮ ತ್ರಯೀ ಯಸ್ಮಿನ್ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಾ | ಸ ಗುಹ್ಯೋಽನ್ಯ-  
ಸ್ತ್ರಿವೃದ್ಧೋ ಯಸ್ತಂ ವೇದ ಸ ವೇದವಿತ್" ಮನುಂ ೧೧-೨೬೫ |  
(ನಂ) 2. ಮೂರು ಅಕ್ಷರಗಳುಳ್ಳ ಮೂರನೆಯ (ಮಧ್ಯಾ)  
ಭಂದಸ್ಸು. ತ್ರಿಪ್ಯಕ್ಷರಾಣಿ ಪ್ರತಿಪಾದಂ ಯತ್ರ | (ವಿಂ) 3.  
ಮೂರು ಅಕ್ಷರಗಳುಳ್ಳ.

ಅಡ್ಡ ತ್ರ್ಯಂಕಟಿ (ಪುಂ) 1. ಈಶ್ವರ, ಪರಶಿವ. (ನಂ)  
2. ಶಿಕ್ಯ, ಕಾವಡಿಯ ನಿಲುವು. 3. ಒಂದು ವಿಧ  
ಅಂಜನ.

ಅಙ್ಗುಲ ತ್ರ್ಯಂಗುಲ (ವಿಂ) ಮೂರು ಬೆರಳುಗಳ ಪ್ರಮಾಣ  
ವುಳ್ಳ. ಮೂರು ಬೆರಳುಗಳ ಅಳತೆಯುಳ್ಳ. ತಿಸ್ರೋಙ್ಗುಲಯಃ  
ಪ್ರಮಾಣಮಸ್ಯ "ಅಕ್" (೪-೪-೮೬) |

ಅಧಿಷ್ಠಾನ ತ್ರ್ಯಧಿಷ್ಠಾನ (ಪುಂ) ಜೀವಾತ್ಮ. ತ್ರಿಣಿ ಅಧಿಷ್ಠಾ-  
ನಾನಿ ಮನೋವಾಕ್ಕಾಯರೂಪಾಣ್ಯಾಶ್ರಯಸ್ಥಾನಾನಿ ಯಸ್ಯ | ತಿಸ್ಸುಣಾಂ  
ಜಾಗೃದಾಶ್ರಯಸ್ಥಾನಾಮಧಿಷ್ಠಾನಮ್ ವಾ | ತತ್ಪುರುಷಪಕ್ಷೇ ನಂ |  
ಮೊದಲು ಮನಸಾ ಸಂಕಲ್ಪಿಸುವುದು, ಅನಂತರ ಮಾತಿ  
ನಿಂದ ಹೇಳುವುದು, ಬಳಿಕ ಶರೀರ ವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ ಕಾರ್ಯ  
ವನ್ನು ಮಾಡುವುದು. ಈ ಮೂರೂ (ಮನಸ್ಸು, ವಾಕ್ಯ  
ಮತ್ತು ಕಾರ್ಯಗಳು) ಜೀವನಿಗೆ ಆಶ್ರಯವಾಗಿರುವುದರಿಂದ  
(ಇವು ಮೂರೂ) ಅಧಿಷ್ಠಾನಗಳಾದುವು. "ತಸ್ಮಾತ್ ಪುರುಷೋ  
ಮನಸಾಭಿಗಚ್ಛತಿ ತದ್ವಾಚಾ ವದತಿ ತತ್ಕರ್ಮಣಾ ಕರೋತಿ" ಇತಿ  
ಶ್ರುತಿಃ | ಜಾಗ್ರತ್ ಸ್ವಪ್ನ ಮತ್ತು ಸುಷುಪ್ತಿ ಈ ಮೂರು  
ಅವಸ್ಥೆಗಳಿಗೂ ಜೀವನು ಆಶ್ರಯನು. "ತಸ್ಯೇಹ ತ್ರಿವಿಧ-  
ಸ್ಯಾಪಿ ಅಧಿಷ್ಠಾನಸ್ಯ ದೇಹಿನಃ | ದಶಲಕ್ಷಣಯುಕ್ತಸ್ಯ ಮನೋ  
ವಿಧಾತ್ ಪ್ರವರ್ತಕಮ್" ಮನುಂ ೧೨-೪ |

ಅಧ್ವಗಾ ತ್ರ್ಯಧ್ವಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗಾನದಿ. ತ್ರಿಭಿರಧ್ವಮಿಃ  
ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಡಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) |

ಅಮ್ಬಕ ತ್ರ್ಯಂಬಕ (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ,  
ಮಹಾದೇವ. ತ್ರಿಣಿ ಅಮ್ಬಕಾನಿ ನೇತ್ರಾಣಿ ಯಸ್ಯ | ತ್ರಿಣಿ  
ಭೂಮ್ಯಂತರಿಕ್ಷಬಲೋಕಾಖ್ಯಾನಿ ಅಮ್ಬಕಾನಿ ಸ್ಥಾನಾನ್ಯಸ್ಯ |  
ತ್ರಯಃ ಅಕಾರೋಕಾರಮಕಾರಾಖ್ಯಾ ಅಮ್ಬಾಃ ಶಬ್ದಾಃ ಪ್ರತಿಪಾದಕಾಃ  
ವಾಚಕಾಃ ಯಸ್ಯ ಇತಿ ವಾ | "ಅಮ್ಬಕಂ ದೇವಮಾಚಾರ್ಯಮಾಚಾರ್ಯಾನಿ  
ಚ ಪಾರ್ವತೀಮ್" ಮಂ ವೀಂ ೩-೬ | (ವಿಂ) 2. ಮೂರು  
ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ. -ಕಾ -ಕಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾರ್ವತಿ.

ಅಮ್ಬಕಸಖ ತ್ರ್ಯಂಬಕಸಖ (ಪುಂ) ಈಶ್ವರನ ಗೆಳೆಯ,  
ಕುಬೇರ. ಅಮ್ಬಕಸ್ಯ ಸಖಾ "ಡಕ್" (೪-೪-೯೧) |

ಅಶೀತ ತ್ರ್ಯಶೀತ (ವಿಂ) ಎಂಬತ್ತಮೂರನೆಯ. ಅಶೀತೇಃ  
ಪೂರ್ಣಃ "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೧೫) | -ತೀ -ಶೀ.

ಅಶೀತಿ ತ್ರ್ಯಶೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎಂಬತ್ತಮೂರು. ಅಧಿಕಾ  
ಅಶೀತಿಃ |

ಅಶೀತೀತಮ ತ್ರ್ಯಶೀತೀತಮ (ವಿಂ) ಎಂಬತ್ತಮೂರನೆಯ.  
ಅಶೀತಿ ಡಟಃ ತಮಜಾಗಮಃ (೪-೨-೫೬) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೧೫) -ತಮೀ -ತಮಿ.

ಅಷ್ಟನ್ ತ್ರ್ಯಷ್ಟನ್ (ತ್ರಿಂ) ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು. ತ್ರಿಗುಣಿತಾಃ  
ಅಷ್ಟ | "ಅಷ್ಟವರ್ಷೋಽಷ್ಟವರ್ಷಿ ವಾ ಧರ್ಮೇ ಸಿದತಿ ಸತ್ವರಃ"  
ಮನುಂ ೧-೧೪ |

ಅಸ್ತ್ರ ತ್ರ್ಯಸ್ತ್ರ (ವಿಂ) ಮೂರು ಕೋಣಗಳುಳ್ಳ, ಮೂರು  
ಮೂಲೆಗಳುಳ್ಳ. ತ್ರಯೋಸ್ತ್ರಾಃ ಯಸ್ಯ | "ಆಯತಾಶ್ಚತುರಸ್ತ್ರಾಶ್ಚ  
ಅಸ್ತ್ರಾ ಮಂಡಲಿನಸ್ತಥಾ" ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೨-೫ |

ಅಹ ತ್ರ್ಯಹ (ಪುಂ) ಮೂರು ದಿನಗಳು. ತ್ರಯಾಣಾಮಹ್ನಾಂ ಸಮಾ-  
ಹಾರಃ "ಡಕ್" (೪-೪-೯೧) | ಪರವಲ್ಲಿಗನುಪುಸಕಂ ಚ  
ಬಾಧಿತ್ವಾ ಪುಸ್ತಮ್ | "ಅಹಂ ಪ್ರಾತಸ್ತ್ಯಹಂ ಸಾಯಂ ಅಹಮಧ್ಯಾ-  
ದಯಾಚಿತಮ್" ಮನುಂ ೧೧-೨೧೧ |

ಅಹಸ್ಪೃಶ್ ತ್ರ್ಯಹಸ್ಪೃಶ್ (ಪುಂ) ಮೂರು ದಿನಗಳ ಸಂಬಂಧ  
ವುಳ್ಳ ಒಂದು ತಿಥಿ. ಅಹಂ ಸ್ಪೃಶತಿ - ಸ್ಪೃಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೆ)  
"ವಿವನ್" (೩-೨-೫೮) |

ಅಹೀನ ತ್ರ್ಯಹೀನ (ವಿಂ) ಮೂರು ದಿವಸಗಳಲ್ಲಿ ನಡೆದ,  
ಮೂರು ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ. ತ್ರಿಭಿರಹೋಭಿಃ ನಿವೃತ್ತಃ  
"ಃ" (೪-೧-೮೭) |

ಅಹೇಹಿಕ ತ್ರ್ಯಹೇಹಿಕ (ವಿಂ) ಮೂರು ದಿನಗಳಿಗಾಗುವಷ್ಟು  
ಧನವುಳ್ಳ, ಮೂರು ದಿನಗಳ ಹೊಟ್ಟೆಪಾಡಿಗಾಗುವಷ್ಟು  
ಧನಧಾನ್ಯವುಳ್ಳ. ಇಹಾಘಾಂ ಭವಂ ಏಹಿಕಮ್ ಧನಧಾನ್ಯಾದಿ -



ಅಹರ್ಯಾಪ್ತಮ್ ಏಹಿಕಮ್ ಧನಂ ಯಸ್ಯ । “ಅಹೇಹಿಕೋ ವಾಪಿ  
ಭವೇದಶ್ವಸ್ತನಿಕ ಏವ ವಾ” ಮನುಂ ೪-೭ ।

**ಶ್ರೀಯುಷ ತ್ರ್ಯಯುಷ** (ನಂ) ಬಾಲ್ಯ ಯೌವನ ಮತ್ತು  
ಮುಪ್ಪುಗಳೆಂಬ ಮೂರು ವಿಧ ಆಯುಷ್ಸು. ತ್ರಯಾಣಾಂ  
ಬಾಲ್ಯಯೌವನವಾರ್ಧಕಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರ: “ಅಚ್” (೪-೪-೭೭) ।  
ನಿಪಾಂ ।

**ಶ್ರೀಯುಷ ತ್ರ್ಯಯುಷ** (ವಿಂ) 1. ಮೂರನೆಯ ಜ್ವರ,  
ಮೂರು ದಿನಗಳಿಗೊಂದಾವೃತ್ತಿ ಬರುವ ಜ್ವರ. ತೃತೀಯೇ  
ಅಹ್ನಿ ಭವ: “ಠನ್” (ವಾಂ ೪-೩-೬೦) । “ಏಕಾಹಿಕೋ  
ದ್ವಾಹಿಕಶ್ಚ ತ್ರಾಹಿಕಶ್ಚ ತಥಾಪರ:” । 2. ಮೂರು ದಿನ  
ಗಳಿಗೊಂದಾವೃತ್ತಿ ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. ಅಹರ್ಯಾಪ್ತ  
ಧಾನ್ಯಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಠನ್” (೪-೨-೧೧೪) । “ಕುಶಲಕುಮ್ಮಿ-  
ಧಾನ್ಯೋ ವಾ ತ್ರಾಹಿಕೋಶ್ವಸ್ತನೋಽಪಿ ವಾ” ಯಜ್ಞಂ ೧-೧೨೮ ।

**ಶ್ರೀಯುಷ ತ್ರ್ಯಯುಷ** (ನಂ) ಶುಂಠಿ ಹಿಪ್ಪಲಿ ಮತ್ತು ಮೆಣಸು.  
ತ್ರಯಾಣಾಮುಷಣಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರ: ।

**ಶ್ರೀಯುಷ ತ್ರ್ಯಯುಷ** (ನಂ) ಮೂರು ಋತುಗಳು. ತಿಸೃಣಾಂ ಋತು-  
ಸಮಾಹಾರ: “ಅಚ್” (೪-೪-೭೪) ।

**ತವಕ್ಷೀರಾ ತ್ವಕ್ಷೀರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತವಕ್ಷೀರ, ಬಿದಿರಿನ  
ಹಾಲಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ ಒಂದು ಔಷಧ. ತವ: ವಂಶತವ:  
ಕ್ಷೀರಮಸ್ಯಸ್ಯಾ: “ಅಚ್” (೪-೨-೧೨೭) । ಗೌರಾಂ “ಡೀಪ್”  
(೪-೧-೪೧) । -ಕ್ಷೀರೀ -ಕ್ಷೀರೀ. “ಸಿತಾಜಗನ್ಧಾತ್ವಕ್-  
ಕ್ಷೀರೀವಿದಾರೀತ್ರಿವೃತ: ಸಮಾ” ಸುಶ್ರುತಂ ೧-೪೪-೧೬ ।

**ತವಕ್ಷತ್ರ ತ್ವಕ್ಷತ್ರ** (ನಂ) ದೇಹದ ಚರ್ಮವನ್ನು ಕಾಪಾಡುವ  
ಕವಚ. ತವಚ್ ತ್ರಾಯತೇ - ತ್ರೈಜ್ (ಪಾಲನೇ) “ಕ:” (೩-೨-೩) ।  
“ತವಕ್ಷತ್ರ: ಸಂವಿವ್ಯಯುರ್ದೇಹಾನ್” ಭट्टಿಂ ೧೪-೭೪ ।

**ತವಕ್ಷಪತ್ರ ತ್ವಕ್ಷಪತ್ರ** (ನಂ) ನೈಗೋಧ (ಅಲ)  
ಉದಂಬರ (ಅತ್ತಿ) ಅಶ್ವತ್ಥ (ಅರಳಿ) ಶಿರೀಷ (ಬಾಗೆ)  
ಮತ್ತು ಪ್ಲಕ್ಷ (ಬಸುರಿ) ವೃಕ್ಷಗಳ ತೊಗಟೆಗಳು. ತವಚಾಂ  
ಪञ್ಚಕಮ್ ।

**ತವಕ್ಷಪತ್ರ ತ್ವಕ್ಷಪತ್ರ** (ನಂ) 1. ಅವಂಗ ಪಟ್ಟಿ, ದಾಲ್ಚಿನ್ನಿ.  
ತವಗಿವ ಪತ್ರಮಸ್ಯ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪತ್ರಿ -ಪತ್ರಿ. 2. ಹಿಂಗಿನ  
ಮರದ ಎಲೆ.

**ತವಕ್ಷಪಾಠ್ಯ ತ್ವಕ್ಷಪಾಠ್ಯ** (ನಂ) ಚರ್ಮವು ಬರಬಾಗಿರು  
ವುದು, ಚರ್ಮವು ನುಣುಪಾಗಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ತವಚ:  
ಪಾಠ್ಯಮ್ ।

**ತವಕ್ಷಪುಷ್ಪ ತ್ವಕ್ಷಪುಷ್ಪ** (ನಂ) ರೋಮಾಂಚ, ಮೈನಿಲು  
ಗೂದಲು. ತವಚ: ಪುಷ್ಪಮಿವ । “ರೋಮೋದ್ದೇದಸ್ತು ಪುಲಕಸ್ತವಕ್-  
ಪುಷ್ಪಂ ಚ ತವಗಡ್ಕುರ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ತವಕ್ಷಸಾರ ತ್ವಕ್ಷಸಾರ** (ಪುಂ) 1. ವಂಶ, ಬಿದಿರು. ತವಚಿ  
ಸಾರೋಷ್ಯ । 2. ಅವಂಗ ಪಟ್ಟಿ, ದಾಲ್ಚಿನ್ನಿ. ತವಗೇವ ಸಾರೋಷ್ಯ ।  
3. ಹೆಮ್ಮರ, ತಿಗಡುಮರ. 4. ಚೋಳಾದ ಬಿದಿರು, ಹೆಚ್ಚು  
ರಂಧ್ರವಿರುವ ಬಿದಿರು. “ತವಕ್ಷಸಾರಂಧ್ರಪರಿಪೂರ್ಣಲಬ್ಧಗಿ-  
ತಿರಸ್ಮಿನ್ನಸೌ ಮೃದಿತಪಕ್ಷ್ಮಲರಲ್ಲಕಾಙ್ಗ:” ಮಾಘಂ ೪-೬೧ ।

**ತವಕ್ಷಸುಗಂಧ ತ್ವಕ್ಷಸುಗಂಧ** (ಪುಂ) 1. ಹೇರಿಳೆಗಿಡ. ತವಚಿ  
ಫಲತವಚಿ ಸುಗಂಧೋಷ್ಯ । 2. ಕಿತ್ತಲೆಗಿಡ.

**ತವಗಡ್ಕುರ ತ್ವಗಂಕುರ** (ಪುಂ) ರೋಮಾಂಚ, ಮೈನಿಲು  
ಗೂದಲು. ತವಚ: ಅಡ್ಕುರ ಇವ ।

**ತವಗಾಕ್ಷೀರೀ ತ್ವಗಾಕ್ಷೀರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತವಕ್ಷೀರ, ಬಿದಿರಿನ  
ತೊಗಟೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ ಒಂದು ಔಷಧ.

**ತವಗಂಧ ತ್ವಗಂಧ** (ಪುಂ) 1. ಹೇರಿಳೆಗಿಡ. ತವಚಿ ಫಲತವಚಿ  
ಗಂಧೋಷ್ಯ । 2. ಕಿತ್ತಲೆಗಿಡ.

**ತವಗೋಷ ತ್ವಗೋಷ** (ಪುಂ) ಕುಷ್ಮರೋಗ. ತವಚ್ ದೂಷಯತಿ-  
ದೂಷ (ವೈಕೃತ್ಯೇ) + ಣಿಚ್ “ಅಣ್” (೩-೨-೧) ।

**ತವಚ್ ತ್ವಚ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚರ್ಮ, ಸ್ಪರ್ಶವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ  
ಒಂದು ಇಂದ್ರಿಯ. ತವಚ್ಯತೇ ಸಂವ್ರಿಯತೇ ದೇಹೋನಯಾ ತವಚಿತಿ  
ಸಂವೃಣೋತಿ ವಾ ದೇಹಮ್ - ತವಚ (ಸಂವರಣೇ) “ಕಿವಿಪ್”  
(೩-೨-೧೭೮) । 2. ಮೃಗದ ಚರ್ಮ, ತೊಗಲು. “ತವಚ್  
ಸ ಮೇಧ್ಯಾಂ ಪರಿಧಾಯ ರೌರವೀಮಶಿಕ್ಷಿತಾಸ್ತ್ರಂ ಪಿತುರೇವ ಮನ್ತ್ರವತ್”  
ರಘುಂ ೩-೩೧ । 3. ಮರದ ತೊಗಟೆ, ಸಿಪ್ಪೆ. “ಕಣ್ಡೂಯ-  
ಮಾನೇನ ಕಟಂ ಕದಾಚಿದ್ವನ್ಯದ್ವಿಪೇನೋನ್ಮಥಿತಾ ತವಗಸ್ಯ” ರಘುಂ  
೨-೩೭ । 4. ಅವಂಗ ಪಟ್ಟಿ, ದಾಲ್ಚಿನ್ನಿ. “ತವಕ್ಷಸ್ತ್ರೀ  
ಚರ್ಮಣಿ ವಲ್ಕೇ ಚ ಗುಡತವಚಿ ವಿಶೇಷತ:” ಮೇದಿಂ । “ಆಪಂ  
ಚೈವ ಹಲ್ಮಂತಾನಾಂ ಯಥಾ ವಾಚಾ ನಿಶಾ ದಿಶಾ” । ತವಚಾ ತ್ವಚಾಂ.

**ತವಚ ತ್ವಚ** (ನಂ) 1. ಅವಂಗ ಪಟ್ಟಿ, ದಾಲ್ಚಿನ್ನಿ. ಪ್ರಶಸ್ತಾ  
ತವಗಸ್ಯ “ಅಚ್” (೪-೨-೧೨೭) । 2. ತೊಗಟೆ, ಸಿಪ್ಪೆ.

**ತವಚಿಸಾರ ತ್ವಚಿಸಾರ** (ಪುಂ) ವಂಶ, ಬಿದಿರು. ಸಪ್ತಮ್ಯಾ:  
ಅಲುಕ್ (೬-೩-೯) ।

**ತವಚಿಸುಗಂಧ ತ್ವಚಿಸುಗಂಧ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣ್ಣ ಜಾತಿಯ  
ಯಾಲಕ್ಕಿ. ತವಚಿ ಸುಗಂಧೋಷ್ಯಾ: । ಸಪ್ತಮ್ಯಾ: ಅಲುಕ್  
(೬-೩-೯) ।

**ತವತ್ಸತ್ ತ್ವತ್ಸತ್** (ಅವ್ಯಂ) ನಿನ್ನಿಂದ. ಯುಷ್ಮದ್ “ತಸಿಲ್”  
(೪-೩-೭) । ತವಾದೇಶ: (೭-೨-೯೮) । “ತವತ್ಸತ್: ಶ್ರುತಂ ನೇತಿ  
ನಲೇ ಮಯಾತ: ಪರಂ ವದಸ್ವೇತ್ಯುದಿತಾಥ ದೇವ್ಯಾ” ನೈಷಂ ೧೪-೩೬ ।

**ತವದೀಯ ತ್ವದೀಯ** (ವಿಂ) ನಿನ್ನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ತವ ಇದಮ್-  
ಯುಷ್ಮದ್ “ಛ:” (೪-೨-೧೧೪) । ತವಾದೇಶ: (೭-೨-೯೮) ।  
“ಅತೋಷ್ಯಮಶ್ವ: ಕಪಿಲಾನುಕಾರಿಣಾ ಪಿತುಸ್ತವದೀಯಸ್ಯ ಮಯಾಪ-



ಹಾರಿತ: " ರಘುಂ ೩-೪೦ | " ತ್ವದೀಯಸೇವಾವಸರಪ್ರತೀಕ್ಷೇರ-  
ಮ್ಯಥಿತ: " ಕುಮಾಂ ೯-೯ |

ತ್ವದ್ವಿಧ ತ್ವದ್ವಿಧ (ವಿಂ) ನಿನ್ನಂತಹ, ನಿನಗೆ ಸಮಾನನಾದ.  
ತವೇವ ವಿಧಾ ಪ್ರಕಾರೋ ಯಸ್ಯ |

ತ್ವರಣ ತ್ವರಣ (ನಂ) 1. ಆತುರಪಡುವುದು, ಅವಸರಪಡು-  
ವುದು. ತ್ವರಾ (ಸಮ್ಭ್ರಮೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |  
(ವಿಂ) 2. ಅವಸರಪಡುವ, ಆತುರಪಡುವ. ತ್ವರಾ  
ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) |

ತ್ವರಣೀಯ ತ್ವರಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಅವಸರಪಡಬೇಕಾದ.  
2. ಅವಸರಪಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ತ್ವರಾ (ಸಮ್ಭ್ರಮೇ)  
"ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) |

ತ್ವರಣಾ ತ್ವರಣಾ (ವಿಂ) ಅವಸರಪಡುತ್ತಿರುವ,  
ಆತುರಪಡುತ್ತಿರುವ. ತ್ವರಾ (ಸಮ್ಭ್ರಮೇ) "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ತ್ವರಣಾಶಾಸ್ತ್ರೀಕಸವೇಗವದನಪವನಾಭಿ  
ಪೂರಿತ:" ಮಾಘಂ ೧೪-೭೨ |

ತ್ವರಾ ತ್ವರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆತುರ, ಅವಸರ, ವೇಗ. ತ್ವರಾ  
(ಸಮ್ಭ್ರಮೇ) "ಅಡ್" (೩-೩-೧೦೪) | "ಔತುಕಯೇನ  
ಕೃತತ್ವರಾ ಸಹಭುವಾ ವ್ಯಾವರ್ತಮಾನಾ ಹ್ಲಿಯಾ ತೈಸ್ತೇಬಂಧುವಧೂಜನಸ್ಯ  
ವಚನೇನೀತಾಭಿಮುಖ್ಯಂ ಪುನ:" ರತ್ನಾಂ ೧-೨ |

ತ್ವರಿತ ತ್ವರಿತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇಗ, ಆತುರ, ಅವಸರ.

ತ್ವರಿತ ತ್ವರಿತ (ನಂ) 1. ವೇಗ, ಆತುರ, ಅವಸರ. ತ್ವರಾ  
(ಸಮ್ಭ್ರಮೇ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೮೭) | "ತ್ವರಿತಂ  
ಪ್ರಜವೇ ಶೀಘ್ರೇ" ಮೇದಿಂ | (ವಿಂ) 2. ವೇಗವುಳ್ಳ, ತೀಘ್ರ  
ವಾದ, ಅವಸರವುಳ್ಳ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಟಾಪ್" | ತ್ವರಿತಾ ತ್ವರಿತಾ.  
"ಬಹ್ವಂತರಾಯುಕ್ತಸ್ಯ ಧರ್ಮಸ್ಯ ತ್ವರಿತಾ ಗತಿ:" ಪञ्ಚತಂ  
೩-೧೦೦ | (ಅಥ್ಯಂ) 3. ವೇಗವಾಗಿ, ತೀಘ್ರವಾಗಿ, ಜಾಗ್ರತೆ  
ಯಾಗಿ. "ದೂರದಪಾರ್ವತಿತಭಾರವಾಹಣಾ: ಪಥೋಪಸಕ್ತುಸ್ತ್ವರಿತಂ  
ಚಮೂಚರಾ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೩೪ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತಾ -ತಾ.  
4. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

ತ್ವರಿತೋದಿತ ತ್ವರಿತೋದಿತ (ನಂ) ವೇಗವಾಗಿ ಉಚ್ಚರಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ ಮಾತು. ತ್ವರಿತಮುದಿತಮ್ |

ತ್ವಷ್ಟ ತ್ವಷ್ಟ (ವಿಂ) ಕೆತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಿಲುಕಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ತೆಳುವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ತ್ವಕ್ಷು (ತನೂಕರಣ) "ಕ್ತ:"  
(೩-೨-೧೦೨) |

ತ್ವಷ್ಟಿ ತ್ವಷ್ಟಿ (ಪುಂ) ಮರಗೆಲಸ ಮಾಡುವುದು, ಮರವನ್ನು  
ಕೆತ್ತುವುದು. ತ್ವಕ್ಷು (ತನೂಕರಣ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) |  
"ಮತ್ಸ್ಯಾಘಾತೋ ನಿಷಾದಾತಾಂ ತ್ವಷ್ಟಿತ್ವಾಯೋಗವಸ್ಯ ಚ" ಮನುಂ  
೧೦-೪೮ |

ತ್ವಷ್ಟ ತ್ವಷ್ಟ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ತ್ವಷ್ಟಿತಿ  
ತನೂಕರೋತಿ ನಾಮರೂಪವ್ಯಾಕರಣೇನ ಸುರನರಾದಿವೈಚಿತ್ರ್ಯವಿಭಕ್ತಂ  
ವ್ಯನಕ್ತಿ - ತ್ವಕ್ಷು (ತನೂಕರಣ) "ತೃಕ್" (೩ಂ ೨-೯೩) |  
"ನಾಮರೂಪವ್ಯಾಕರಣಾತ್ ತ್ವಷ್ಟಾ ಸೃಷ್ಟಸ್ಯ ಗಚ್ಛತೇ" ಇತಿ  
ನಿರುಕ್ತಿ: | "ವಿಶ್ವಕರ್ಮಾ ಮನುಸ್ತ್ವಷ್ಟಾ ಸ್ಥವಿಷ್ಟ: ಸ್ಥವಿರೋ  
ಧ್ರುವ:" ವಿಂ ಸಂ | 2. ದ್ವಾದಶಾದಿತ್ವರಲ್ಲಿ ಒಟ್ಟು.  
ದ್ವಾದಶಾದಿತ್ವರು. "ಧಾತಾ ಮಿತ್ರೋರ್ಯಮಾ ರುಧ: ವರುಣ:  
ಸೂರ್ಯ ಏವ ಚ | ಭಗೋ ವಿವಸ್ವಾನ್ ಪೂಷಾ ಚ ಸವಿತಾ ದಶಮ:  
ಸ್ಮೃತ: | ಏಕಾದಶಸ್ತಥಾ ತ್ವಷ್ಟಾ ವಿಷ್ಣುರ್ವಾದಶ ಉಚ್ಯತೇ"  
ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೬-೧೬ | 3. ಬಡಗಿ. ಮರಗೆಲಸದವನು.  
4. ದೇವತೆಗಳ ಶಿಲ್ಪಿ, ವಿಶ್ವಕರ್ಮ. 5. ತ್ವಷ್ಟದೇವತಾಕ  
ವಾದ ಚಿತ್ತಾನಕ್ಷತ್ರ. 6. ಮನುಷ್ಯ ಮತ್ತು ಪಶುಪ್ರಾಣಿ  
ಗಳ ಗರ್ಭವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ರೂಪವಿಕಾರಗಳನ್ನು ಮಾಡುವ  
ದೇವತೆ. "ತ್ವಷ್ಟಾ ಪುಮಾನ್ ದೇವಶಿಲ್ಪಿತಕ್ಷಣೋರಾದಿತ್ಯಭಿವ್ಯಾಪಿ"  
ಮೇದಿಂ | (ವಿಂ) 7. ಮರಗೆಲಸ ಮಾಡುವವನು.

ತ್ವಾದೃಶ ತ್ವಾದೃಶ (ವಿಂ) ನಿನ್ನಂತಹ, ನಿನಗೆ ಸಮಾನನಾದ.  
ತ್ವಮಿವಾಯಂ ಪश्यತಿ - ಯುಷ್ಮದ್ + ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣ) "ಕಕ್"  
(೩-೨-೬೦) | ತ್ವಾದೇಶ: (೭-೨-೯೮) ಆಕಾರ: (೬-೩-೯೧) |

ತ್ವಾಟ್ ತ್ವಾಟ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಶ್ವರೂಪಾಚಾರ್ಯ, ವಿಶ್ವಕರ್ಮನ  
ಮಗ. ತ್ವಾಟ್: ಅಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಅಘ್" (೪-೧-೯೪) |  
2. ವೃತ್ತಾಸುರ. [ವಿಶ್ವರೂಪನಿಗೆ ಮೂರು ತಲೆಗಳಿದ್ದುವು,  
ಒಂದು ತಲೆಯಿಂದ ಸೋಮಪಾನ. ಇನ್ನೊಂದರಿಂದ  
ಸುರಾಪಾನ. ಮತ್ತೊಂದರಿಂದ ಆಹಾರ ಸೇವನೆ. ಇವನ  
ತಾಯಿ ರಾಕ್ಷಸನ ಮಗಳಾಗಿದ್ದುದರಿಂದ ಇವನಿಗೆ ರಾಕ್ಷಸ  
ಗುಣಗಳಿದ್ದು ರಾಕ್ಷಸರಲ್ಲಿಯೂ ಇವನಿಗೆ ಅಭಿಮಾನವಿದ್ದಿತು.  
ಈ ಕಾರಣದಿಂದ ಯಜ್ಞಗಳಲ್ಲಿ ರಾಕ್ಷಸರಿಗೂ ರಹಸ್ಯದಲ್ಲಿ  
ಆಹುತಿಗಳನ್ನು ಕೊಡುತ್ತಿದ್ದನು ಈ ರಹಸ್ಯವನ್ನು ತಿಳಿದ  
ಇಂದ್ರನು ವಿಶ್ವರೂಪನನ್ನು ಕೊಂದುಹಾಕಿದನು. ಇದರಿಂದ  
ಕೋಪಗೊಂಡ ವಿಶ್ವಕರ್ಮನು ಇಂದ್ರನನ್ನು ಜಯಿಸುವ  
ಮಗನನ್ನು ಪಡೆಯಲು ಯಾಗ ಮಾಡಿದನು. ಮಂತ್ರದ  
ಸ್ವರವ್ಯತ್ಯಾಸದಿಂದ ಇಂದ್ರನಿಗೆ ಶತ್ರುವಾದ ಮಗನಿಗೆ  
ಬದಲು ಇಂದ್ರನೇ ಶತ್ರುವಾಗಿ ಉಳ್ಳ (ಇಂದ್ರನಿಂದ ಸಂಹರಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ) ಮಗನು ಹುಟ್ಟಿದನು. ಇವನೇ ವೃತ್ತಾಸುರ.]  
"ಹತಪುತ್ರಸ್ತತಸ್ತ್ವಷ್ಟಾ ಜುಹಾವೇಂದ್ರಾಯ ಶತ್ರುವೇ | ಇಂದ್ರಶತ್ರೋ  
ವಿವರ್ಧಸ್ವ ಮಾ ಚಿರಂ ಜಹಿ ವಿಧಿಷಮ್ | ಯೇನಾವೃತಾ ಇಮೇ ಲೋಕಾ-  
ಸ್ತಮಸಾ ತ್ವಾಟ್ಸ್ಮೃತಿನಾ | ..... | ಸ ವೈ ವೃತ ಇತಿ ಪ್ರೋಕ್ತ:  
ಪಾಪ: ಪರಮದಾರುಣ." ಭಾಗಂ ೬-೯ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಷ್ಟೀ -ಷ್ಟೀ.  
3. ಚಿತ್ತಾನಕ್ಷತ್ರ. 4. ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ ಸಂಜ್ಞಾದೇವಿ  
"ತ್ವಾಷ್ಟೀ ಚಿತ್ರಾ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ |



ತಿವಿಷ್ ತ್ವಿಷ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಂಠ. 2. ಪ್ರಕಾಶ, ಪ್ರಭೆ. ತಿವಿಷ (ದೀಪ್ತೌ) "ವಿವಿ" (೩-೨-೧೭೮). "ಸರಲಾಸಕ್ತಮಾತೃ-  
ಗ್ರೇವೇಯಸ್ಕುರಿತವಿವಿ:" ರಘುಂ ೪-೭೫. "ಚಯಸ್ತಿವಿವಾಮಿ-  
ತ್ಯವಧಾರಿತಂ ಪುರಾ" ಮಾಘಂ ೧-೩. ಹಲಂತತ್ವಾತ್ "ಆಪಂ  
ಚೈವ ಹಲಂತಾನಾಂ ಯಥಾ ವಾಚಾ ನಿಶಾ ದಿಶಾ" ಇತಿ "ಢಾಪ್".  
ತಿವಿಷಾ ತ್ವಿಷಾ. 3. ಕಂಠ. "ತಿವಿಷಂ ಚಕೋರಾಯ ಸುಧಾಂ  
ಸುರಾಯ ಕಲಾಮಪಿ ಸ್ವಾದಯವಂ ಹರಾಯ" ನೈಷಂ ೨೨-೨೩.  
4. ವಾಕ್ಯ, ಮಾತು. 5. ಅಸೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ. 6. ಜಯಿಸುವ  
ಅಸೆ. 7. ವ್ಯವಸಾಯ, ಉದ್ಯಮ. "ತಿವಿಡ್ ಕಾಂತೌ ವ್ಯವಸಾಯೇ  
ಚ ಜಿಗಿಷಾಯಾಂ ಕ್ವೌ ಗಿರಿ" ವಿಷ್ವಂ.

ತಿವಿಷಾಂಪತಿ ತ್ವಿಷಾಂಪತಿ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ತಿವಿಷಾಂ ಪತಿ:  
ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಅಲಕ್. ಬಾಹುಂ.  
ತಿವಿಷಿ ತ್ವಿಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಂಠ. ತಿವಿಷ (ದೀಪ್ತೌ) "ಇನ್"  
(೩ಂ ೪-೧೧೨).  
ತ್ಸರು ತ್ಸರು (ಪುಂ) ಖಡ್ಗ ಮೊದಲಾದ ಆಯುಧಗಳ ಮುಷ್ಟಿ,  
ಕತ್ತಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಹಿಡಿ. ತ್ಸರತಿ-ತ್ಸರ (ಛದ್ಯಗತೌ)  
"ತ:" (೩ಂ ೧-೭). "ಅಸ್ಪೃಷ್ಣತ್ಸರಣಾಪಿ ಚಾಸಿ-  
ದ್ರಕ್ಷಾವತೀ ತಸ್ಯ ಭುಜೇನ ಭೂಮಿ:" ರಘುಂ ೧೮-೪೮.  
ತ್ಸಾರುಕ ತ್ಸಾರುಕ (ವಿಂ) ಖಡ್ಗ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ನಿಪುಣನಾದ,  
ಕತ್ತಿಯ ಕಾಳಗದಲ್ಲಿ ಜಾಣನಾದ. ತ್ಸರೌ ಕುಶಲ: "ಕನ್"  
(೪-೨-೬೪).

ಇತಿ "ತ" ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್.

## ಯ

ಯ ಥ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ "ತ" ವರ್ಗದ ಎರಡನೆಯ  
ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಂತರಸ್ಪೃಷ್ಠಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ದಂತಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟುವ ಮಹಾಪ್ರಾಣಾಕ್ಷರ. "ಲೃತುಲಸಾನಾಂ ದಂತಾ:"  
"ಕಾದಯೋ ಮಾವಸಾನಾಃ ಸ್ಪರ್ಶಾಃ. ಸ್ಪೃಷ್ಠಂ ಪ್ರಯತನಂ ಸ್ಪರ್ಶಾನಾಮ್"  
ಸಿಂ ಕೌಂ.

ಯ ಥ (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. (ನಂ) 2. ರಕ್ಷಣೆ. 3. ಭಯ.  
4. ಮಂಗಳ. (ವಿಂ) 5. ಭಯದಿಂದ ಕಾಪಾಡುವವನು.  
"ಯಂ ರಕ್ಷಣೇ ಮಜ್ಜಲೇ ಚ ಸಾಧವಸೇ ಚ ನಪುಂಸಕಮ್. ಶಿಲೋಂಚಯೇ  
ಪುಮಾನೇವ ಕ್ವಚಿತ್ತು ಭಯರಕ್ಷಣೇ" ಮೇದಿಂ.

ಯಕಾರ ಥಕಾರ (ಪುಂ) "ಯ" ಎಂಬ ಅಕ್ಷರ. ಯ "ಕಾರ:"  
(ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮).

ಯುಡ - ಸಂವರಣ (ತುಡಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ). ಯುಡತಿ. ತುಯೊಡ.  
ಯುಡಿತಿ. ಯುಡಿಷ್ಯತಿ. ಇತ್ಯಾದಿ. ಆಚ್ಛಾದಿಸು, ಹೊದಿಸು,  
ಮುಚ್ಚು.

ಯುಡನ ಥುಡನ (ನಂ) ಆಚ್ಛಾದಿಸುವುದು, ಹೊದಿಸುವುದು.  
ಯುಡ (ಸಂವರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

ಯುತಕಾರ ಥುತಕಾರ (ಪುಂ) ಉಗುಳುವುದು, ಉಗಿಯುವುದು.  
ಯುತ್ ಇತಿ ಅವ್ಯಕ್ತಶಬ್ದಸ್ಯ ಕಾರ:

ಯುರ್ವಿ - ಹಿಸಾಯಾಮ್ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ). ಯುರ್ವತಿ.  
ತುಯುರ್ವ. ಯುರ್ವಿತಾ. ಯುರ್ವಿಷ್ಯತಿ. ಯುರ್ವತು. ಇತ್ಯಾದಿ.  
ಹಿಂಸಿಸು, ಪೀಡಿಸು.

ಕರ್ಮಣಿ: -ಯುರ್ವತೇ. ತುಯುರ್ವೆ. ಯುರ್ವಿತಾ. ಯುರ್ವಿಷ್ಯತೇ.  
ಯುರ್ವತಾಮ್. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು: -ಯುರ್ವಿತವ್ಯ: ಯುರ್ವಣೀಯ: ಯುರ್ವ್ಯ: ಯುರ್ವ್ಯಾ:  
ಯುರ್ವ್ಯಾನ್, -ವತೀ. ಯುರ್ವನ್, -ಂತೀ. ಯುರ್ವಿತಮ್. ಯುರ್ವಣಮ್.  
ಯುರ್ವಿತವಾ.

ಯುಯ್ ಥೂಥೂ (ಅವ್ಯಂ) ಉಗಿಯುವ ಅನುಕರಣಶಬ್ದ.  
ಯುಯ್ ಥೂಢು (ವಿಂ) ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಯುಯ್  
(ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).

ಯುಯ್ವತ್ ಥೂಢುತ್ (ವಿಂ) ಹಿಂಸಿಸಿದವನು, ಪೀಡಿಸಿ  
ದವನು. ಯುಯ್ವಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨).  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). -ವತೀ -ವತೀ.

ಯುಯ್ವಣ ಥೂರ್ವಣ (ನಂ) ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ಪೀಡಿಸುವುದು.  
ಯುಯ್ವಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

ಯುಯ್ವಣೀಯ ಥೂರ್ವಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಡುವ,  
ಪೀಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಹಿಂಸಿಸಬೇಕಾದ, ಪೀಡಿಸಬೇಕಾದ.

ಯುಯ್ವತ್ ಥೂರ್ವತ್ (ವಿಂ) ಪೀಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹಿಂಸಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. ಯುಯ್ವಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಾತ್" (೩-೨-೧೨೪).  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). -ಂತೀ -ಂತೀ.

ಯೆಥೆ ಥೈಥೈ (ಅವ್ಯಂ) ಸಂಗೀತದ ತಾಳವನ್ನು ಅನುಸರಿಸುವ  
ಅನುಕರಣ ಶಬ್ದ.

ಇತಿ "ಯ" ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್.



ವಂಶಿತ ದಂಶಿತ (ನಂ) 1. ಹಲ್ಲಿನಿಂದ ಕಚ್ಚಿ ಸುವುದು. ವಂಶ  
(ದಶನೆ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ)  
2. ಕಚ್ಚಿ ಸಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಅಂಗಿ ತೊಟ್ಟಿರುವ ಅಥವಾ ಅಂಗಿ  
ತೊಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ವಂಶ: ಸಂಜಾತೌಽಸ್ಯ "ಐತಚ್" (೪-೨-೩೬)।



ದಂಶಯತೇ — ದಂಶ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) ವಾ । "ಮಹತಾ ಬಲಚಕ್ರೇಣ ಪರರಾಷ್ಟ್ರಾವಮದಿನಾ । ಹಸ್ತಶ್ಚರಥಪೂರ್ಣೇನ ದಂಶಿತೇನ ಪ್ರತಾಪವಾನ್" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ।

ದಂಶಿನ್ ದಂಶಿನ್ (ಫಂ) 1. ಕಣಜದ ಹುಳು. 2. ನಾಯಿ.

ದಂಶಿ ದಂಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣ್ಣ ಜಾತಿಯ ಕಾಡುನೋಣ. ದಂಶ ಗಿರಾಂ "ಡೀಷ್" (೪-೧-೪೧) । "ದಂಶಿ ತಜ್ಜಾತಿರಲ್ಪಾ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ ।

ದಂಶಾ ದಂಶ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೋರೆಹಲ್ಲು, ಅನೆ ಹುಲಿ ಸಿಂಹ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಉದ್ದದ ಹೊರಹಾಯ್ದಿರುವ ಹಲ್ಲು. ದಂಶ (ದಶನೇ) "ಫ್ರನ್" (೩-೨-೧೮೨) । "ದಂಶಾಭಿಜ್ಞಂ ಮೃಗಾಣಾಮಧಿಪತಯ ಇವ ವ್ಯಕ್ತಮಾನಾವಲೇಪಾಃ" ಮುಡ್ರಾಂ ೩-೨೨ ।

ದಂಶಾಯುಧ ದಂಶ್ಯಾಯುಧ (ಫಂ) 1. ಕಾಡುಹಂದಿ. ದಂಶಾ ಆಯುಧಮಿವಾಸ್ಯ । (ವಿಂ) 2. ಕೋರೆಹಲ್ಲೇ ಆಯುಧ ವಾಗಿ ಉಳ್ಳ.

ದಂಶಾಲ ದಂಶ್ಯಾಲ (ವಿಂ) ಕೋರೆಹಲ್ಲುಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ, ದವಡೆಯ ದೊಡ್ಡ ಹಲ್ಲುಗಳುಳ್ಳ. ದಂಶಾಸ್ತ್ರಸ್ಯ "ಲಕ್" (೪-೨-೯೬) ।

ದಂಶಾವಿಷ ದಂಶ್ಯಾವಿಷ (ವಿಂ) ಹಲ್ಲಿನಲ್ಲಿ ವಿಷವುಳ್ಳ (ಸರ್ಪ).

ದಂಶಿನ್ ದಂಶಿನ್ (ಫಂ) 1. ವರಾಹ, ಹಂದಿ. ದಂಶಾಸ್ತ್ರಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೬) । "ಉಪಯುಷಿ ವಿಭ್ರತ-ಮಂತಕಚ್ಚುತಿ ವಧಾದ್ವರೇ ಪತಿಸ್ಯ ದಂಶಿಣಃ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೩೮ । 2. ಸರ್ಪ. 3. ಹುಲಿ. 4. ಕೋರೆಹಲ್ಲುಗಳುಳ್ಳ ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಮೀನು. (ವಿಂ) 5. ಕೋರೆಹಲ್ಲುಗಳುಳ್ಳ. "ದಂಶಿಣೋ ವನವರಾಹಯುಥಾ ದಂಶಭಿಃ-ಗುರ-ವಿಸಾಡ್ಕುರಾ ಇವ" ಕುರ್ಮಾಂ ೮-೩೪ ।

ದಕ್ಷ ದಕ್ಷ (ನಂ) ಜಲ, ನೀರು. ದೈ (ಶೋಧನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) । ಸಂಜಾಯಾಂ "ಕನ್" । "ಪಾನೀಯಂ ಜೀವನೀಯಂ ಕಂ ಜಲಮಮ್ಬದಕಂ ದಕ್ಷಮ್" ವೈಜಂ ।

ದಕ್ಷಗಲ್ ದಕ್ಷಗಲ್ (ನಂ) ಜಲಶೋಧನೆ, ನೀರನ್ನು ಕಂಡುಹಿಡಿಯುವುದು, ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಜಲನಾಳವು ಎಷ್ಟು ಕೆಳಮಟ್ಟದಲ್ಲಿರುವುದೆಂಬುದನ್ನು ತಿಳಿಯುವುದು. "ಋಷಿಃ ಯಶಸ್ಯಂ ಚ ವದಾಮ್ಯತೋಹಂ ದಕ್ಷಗಲ್ ಯೇನ ಜಲೋಪಲಬ್ಧಿಃ । ಪುಂಸೋ ಯಥಾಕ್ಷೇಪುಃ ಶಿರಾಸ್ತಥೈವ ಕ್ಷಿತಾವಪಿ ಪ್ರೋಸತನಿಮ್ನಸಂಸ್ಥಾಃ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೪೪-೧ । [ವಿವರಕ್ಕೆ ಬೃಹತ್ಸಂಹಿತೆಯಲ್ಲಿ 54ನೆಯ ಅಧ್ಯಾಯ ನೋಡಿ.]

ದಕ್ಷೋದರ ದಕ್ಷೋದರ (ನಂ) ಜಲೋದರ, ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ನೀರು ತುಂಬಿಕೊಂಡು ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ವ್ಯಾಧಿ.

ದಕ್ಷ ದಕ್ಷ (ಫಂ) 1. ದಕ್ಷಪ್ರಜಾಪತಿ. ಸ್ವಾಯಂಭೂವ ಮನ್ವಂತರದ ದಕ್ಷ ಮತ್ತು ಚಾಕ್ಷುಷಮನ್ವಂತರದ ದಕ್ಷ ಎಂದು ದಕ್ಷಪ್ರಜಾಪತಿಗಳು ಇಬ್ಬರು. (1) ಮೊದಲನೆಯ ದಕ್ಷನು ಬ್ರಹ್ಮನ ಬಲ ಹೆಬ್ಬೆರಳಿನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಬ್ರಹ್ಮನ ಎಡ ಬೆರಳಿನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಪ್ರಸೂತಿಯು ಇವನ ಪತ್ನಿ. "ದಕ್ಷಸ್ವಜಾಯತಾಙ್ಗುಷ್ಠಾದ್ವಕ್ಷಿಣಾಙ್ಗುಗವಾನ್ ಕೃಷಿಃ । ಬ್ರಹ್ಮಣಃ ಪೃಥಿವೀಪಾಲ ಶಾಂತಾತ್ಮಾ ಸುಮಹಾತಪಾಃ । ವಾಮಾದಜಾಯ-ತಾಙ್ಗುಷ್ಠಾಙ್ಗಾರ್ಯಾ ತಸ್ಯ ಮಹಾತ್ಮನಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೭-೧೦ । ಇವನಿಗೆ ಪ್ರಸೂತಿಯಲ್ಲಿ ಶ್ರದ್ಧಾ ಲಕ್ಷ್ಮಿಃ ಕೃಷಿಃ ಪುಷ್ಕಿಃ ಧೃತಿಃ ಮೇಘಾ ಮೊದಲಾದ 24 ಮಂದಿ ಕನ್ಯೆಯರು ಜನಿಸಿದರು. ಇವರಲ್ಲಿ ಖ್ಯಾತಿಯೆಂಬೊಬ್ಬಳು ಭೃಗುಮಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿ. ಸತಿಯೆಂಬುವಳು ಪರಶಿವನ ಪತ್ನಿ. ಒಂದು ಸಲ ದೇವಸಭೆಯಲ್ಲಿ ಪರಶಿವನು ತನ್ನನ್ನು ಗೌರವಿಸಲಿಲ್ಲವೆಂಬ ಕಾರಣದಿಂದ ದಕ್ಷನು ನಿರೀಶ್ವರಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡಿದನು. ಪರಮೇಶ್ವರನಿಗೆ ಅಹ್ವಾನವಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಸತಿಯು ಆ ಯಾಗಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ತಿರಸ್ಕೃತಳಾಗಿ ಕೋಪದಿಂದ ಯೋಗಾಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಶರೀರವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದಳು. ಪರಶಿವನಿಗೆ ಈ ವಿಷಯ ತಿಳಿಯಿತು. ವೀರಭದ್ರನಿಗೆ ಅಜ್ಞೆಯಿತ್ತು ದಕ್ಷನ ಯಾಗಶಾಲೆಯನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸಿದನು. ದಕ್ಷನ ಕುತ್ಸಿಗೆಯನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿ ವೀರಭದ್ರನು ಯಾಗಕುಂಡದಲ್ಲಿ ಹಾಕಿ ಸುಟ್ಟನು. ದೇವತೆಗಳ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಂತೆ ಪರಮೇಶ್ವರನು ಟಗರಿನ ತಲೆಯೊಂದನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ದಕ್ಷನನ್ನು ಬದುಕಿಸಿದನು.

(2) ದಕ್ಷನು ಸತಿಯ ಶಾಪದಿಂದ ಹತ್ತು ಮಂದಿ ಪ್ರಜೀತಸರಿಂದ ಚಾಕ್ಷುಷಮನ್ವಂತರದಲ್ಲಿ ಮತ್ತೆ ಜನಿಸಿದನು. ಬ್ರಹ್ಮನ ಅಜ್ಞೆಯಂತೆ ಸಂಕಲ್ಪಮಾತ್ರದಿಂದಲೇ ದೇವ ಗಂಧರ್ವ ಋಷಿ ಮೊದಲಾದವರ ಸೃಷ್ಟಿಯನ್ನು ಮಾಡಿ ಆ ಸಂತತಿಯು ಅಭಿವೃದ್ಧಿಹೊಂದದಿರಲು ಸ್ತ್ರೀ ಪುರುಷರ ಮೈಥುನದಿಂದ ಪ್ರಜಾವೃದ್ಧಿಯಾಗಬೇಕೆಂದು ಸಂಕಲ್ಪಿಸಿ ತಾನು ಮದುವೆಯಾದ ವೀರಿಣಿಯಲ್ಲಿ 5 ಸಾವಿರ ಮಂದಿ ಪುತ್ರರನ್ನು ಪಡೆದು ಅವರನ್ನು ಪ್ರಜಾಸೃಷ್ಟಿ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿಯಮಿಸಿದನು. ನಾರದರ ಬೋಧನೆಯಂತೆ ಅವರು ಅದರಿಂದ ವಿಮುಖರಾಗಲು ದಕ್ಷನು ದುಃಖಗೊಂಡು ಮತ್ತೆ 60 ಮಂದಿ ಹೆಣ್ಣು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪಡೆದನು. ಇವರಲ್ಲಿ 10 ಮಂದಿಯನ್ನು ಧರ್ಮಋಷಿಗೂ 13 ಮಂದಿಯನ್ನು ಕಶ್ಯಪರಿಗೂ 27 ಮಂದಿಯನ್ನು ಚಂದ್ರನಿಗೂ ಉಳಿದವರನ್ನು ಅರಿಷ್ಟನೇಮಿ ಭೃಶಾಶ್ವ ಕೃಶಾಶ್ವ ಅಂಗಿರಸ್ಸು ಮುಂತಾದವರಿಗೂ ಕೊಟ್ಟು ಮದುವೆ ಮಾಡಿದನು. ಆಗಿನಿಂದಲೇ ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ಮೈಥುನದಿಂದ ಪ್ರಜಾಸೃಷ್ಟಿಯಾರಂಭವಾದುದು. "ಸಂಕಲ್ಪಾದರ್ಶನಾತ್ ಸ್ಪರ್ಶಾತ್ ಗ್ವಣಿಭಿಃ"



ಸೃಷ್ಟಿಹುಯೇ । ದಕ್ಷಾಪ್ರಾಚೇತಸಾದ್ಧವೈ ಸೃಷ್ಟಿಮೈಶುನಸಮ್ಮವಾ ” ।  
2. ಎಷ್ಟು. ದಕ್ಷತೇ ದಸ್ಯುವಧೇ ಶೀಘ್ರಕಾರಿ ಭವತಿ - ದಕ್ಷ  
(ವೃದ್ಧಿ ಶೀಘ್ರಾರ್ಥೇ ಚ) “ಅನ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ಶೀಘ್ರಾರ್ಥ-  
ತ್ವಾದ್ಧಕ್ಷಾತೋನಿಮೇಷಾದ್ಧಸ್ಯವೋ ಹತಾಃ । ಯೇನ ಸ ಸ್ಯಾಚ್ಛೀಘ್ರ-  
ಕಾರಿ ದಕ್ಷ ಇತ್ಯುಚ್ಯತೇ ಬುಧೈಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । “ಉಗ್ರಃ  
ಸಂವತ್ಸರೋ ದಕ್ಷಃ” ವಿಂ ಸಂ । 3. ಕುಕ್ಕುಟ, ಹುಂಜ, ಕೋಳಿ. 4. ದಕ್ಷಸಂಹಿತೆಯನ್ನು ಬರೆದ ಒಬ್ಬ ಯುಷಿ.  
5. ಈಶ್ವರನ ವ್ಯವಸ್ಥೆ. 6. ಒಂದು ವ್ಯಕ್ತಿ. 7. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 8. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. (ವಿಂ) 9. ಸಮರ್ಥ, ಚತುರ. “ಯಂ ಸರ್ವಶೈಲಾಃ ಪರಿಕಲ್ಪಯ ವತ್ಸಂ ಮೇರೌ ಸ್ಥಿತೇ ದೋಧರಿದೋಹದಕ್ಷೇ” ಕುಮಾಂ ೧-೨ । 10. ಅಭಿಜ್ಞ, ತಿಳಿದವನು. “ದಕ್ಷಃ ಪ್ರಜಾಪತೌ ವಹ್ನೌ ತಾಮ್ರಚೂಡೇ ಹರೇ ಮನೌ । ತ್ರಿವಿಭಿಜ್ಞೇ” ನಾನಾರ್ಥರಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕ್ಷಾ -ಞ್. 11. ಭೂಮಿ. “ದಕ್ಷಃ ಪತೌ ಹರವೃಷೇ ತಾಮ್ರಚೂಡೇ ಪ್ರಜಾಪತೌ । ಮುನಿಭೇದೇ ದ್ರುಮೇ ವಹ್ನೌ ದಕ್ಷೋ ದಕ್ಷಾ ಭುವಿ ಸ್ಮೃತಾ” ವಿಶ್ವಂ ।

**ದಕ್ಷಕನ್ಯಾ ದಕ್ಷಕನ್ಯಾ, -ತನಯಾ -ತನಯಾ, -ಸುತಾ**  
ಸುತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಕ್ಷಪ್ರಜಾಪತಿಯ ಹೆಣ್ಣು ಮಕ್ಕಳು. ಸ್ವಾಯಂಭುವ ಮನ್ವಂತರದ ದಕ್ಷನ 24 ಮಂದಿ ಚಾಕ್ಷುಷ ಮನ್ವಂತರದ ದಕ್ಷನ 60 ಮಂದಿ ಕನ್ಯೆಯರು, ಸತೀದೇವಿ ಅಶ್ವಿನೀ ಮೊದಲಾದ 27 ಕನ್ಯೆಯರು ಮುಂತಾದವರು. ದಕ್ಷಸ್ಯ ಕನ್ಯಾಃ । “ಅಥಾವಮಾನೇನ ಪಿತುಃ ಪ್ರಯುಕ್ತಾ ದಕ್ಷಸ್ಯ ಕನ್ಯಾ ಭವಪೂರ್ವಪತ್ನೀ । ಸತೀ ಸತೀ ಯೋಗವಿಸೃಷ್ಟಿದೇಹಾ” ಕುಮಾಂ ೧-೨೧ । “ನರೇಂದ್ರಕನ್ಯಾಸ್ತಮವಾಪ್ಯ ಸತ್ಯಪತಿ ತಮೋನುದಂ ದಕ್ಷಸುತಾ ಇವಾಬಭುಃ” ರಘುಂ ೩-೩೩ ।

**ದಕ್ಷಕೃತು ದಕ್ಷಕೃತು (ಪುಂ)** ದಕ್ಷಬ್ರಹ್ಮನು ಮಾಡಿದ ನಿರೀಶ್ವರ ಯಾಗ. [ಒಮ್ಮೆ ದೇವಲೋಕದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಯಾಗ ನಡೆಯಿತು. ಬ್ರಹ್ಮರುದ್ರಾದಿ ದೇವತೆಗಳೆಲ್ಲರೂ ನೆರೆದಿದ್ದ ಸಭೆಗೆ ದಕ್ಷಬ್ರಹ್ಮನೂ ಬಂದಾಗ ಎಲ್ಲಾ ದೇವತೆಗಳೂ ಯುಷಿಗಳೂ ಎದ್ದುನಿಂತು ಗೌರವಿಸಿದರು. ಬ್ರಹ್ಮನೂ ಪರಶಿವನೂ ಆಸನದಿಂದಲೇ ಏಳಲಿಲ್ಲ. ಇದರಿಂದ ಕ್ರೋಧದಿಂದ ದಕ್ಷನು ದೇವತೆಗಳೊಡನೆ ಈಶ್ವರನು ಹವಿರ್ಭಾಗವನ್ನು ಪಡೆಯಲು ಯೋಗ್ಯನಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳಿ ನಿರೀಶ್ವರ ಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡಲು ಯತ್ನಿಸಿದನು. ಈಶ್ವರನಿಗೆ ಆಹ್ವಾನವಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಸತೀದೇವಿಯು ಯಾಗಕ್ಕೆ ಹೊರಡಲು ಉದ್ಯುಕ್ತಳಾಗಿ ಈಶ್ವರನು ತಡೆದರೂ ನಿಲ್ಲದೆ ಹೋಗಿ ತಂದೆಯಿಂದ ತಿರಸ್ಕೃತಳಾಗಿ ಕೋಪದಿಂದ ಯೋಗಾಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಶರೀರತ್ಯಾಗ ಮಾಡಿದಳು. ಈ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿದ ಪರಮೇಶ್ವರನು ತನ್ನ ಜಟೆಯಿಂದ ಒಂದು ಹಿಡಿ ಕೂದಲನ್ನು ಕಿತ್ತೆಸೆದನು. ಅದರಿಂದ ಅವತರಿಸಿದ ವೀರಭದ್ರನು

ಪರಿವಾರ ಸಹಿತನಾಗಿ ಪರಮೇಶ್ವರನ ಅಪ್ಪಣೆಯಂತೆ ದಕ್ಷನ ಯಾಗಶಾಲೆಯನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸಿ ಅವನ ಶಿರಸ್ಸನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿ ಯಾಗಕುಂಡದಲ್ಲಿ ಹಾಕಿ ಸುಟ್ಟನು. ಅವನ ಪರಿವಾರದವರು ಸೂರ್ಯನ ಹಲ್ಲುಗಳನ್ನು ಮುರಿದರು. ಭಗನ ಕಣ್ಣನ್ನು ಕಿತ್ತರು. ಭೃಗುಯುಷಿಯ ಗಡ್ಡವನ್ನು ಸುಟ್ಟರು. ಆಗ ದೇವತೆಗಳೆಲ್ಲರೂ ಬ್ರಹ್ಮನೊಡನೆ ಕೈಲಾಸಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಪರಶಿವನನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲಾಗಿ “ಎಲ್ಲರೂ ಬದುಕಿ ಸುಖವಾಗಿರಲಿ, ದಕ್ಷನ ಮುಖವು ಮಾತ್ರ ಟಗರಿನ ಮುಖವಾಗಲಿ” ಎಂದು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದನು. “ಜೀವತಾಽಜಮಾನೋಽಯಂ ಪ್ರಪಚ್ಛತಾಕ್ಷಿಣಿ ಭಗಃ । ಭಗೋಃ ಶಮಶ್ರಣಿ ರೋಹಂತು ಪೂಣೋ ದಂತಾಶ್ಚ ಪೂರ್ವವತ್ । ದೇವಾನಾಂ ಭಗ್ನಗಾತ್ರಾಣಾಂ ಕೃತ್ವಿಜಾಂ ಚಾಯುಧಾಶಮಿಃ । ಭವತಾನುಗೃಹೀತಾನಾಮಾಶು ಮನ್ಯೋಃಸ್ವನಾತುರಮ್” ಇತ್ಯಾದಿ. ಭಾಗಂ ೪-೬ । ಈಶ್ವರನಿಗೆ ಭಾಗವಿಲ್ಲದೆ ನಡೆದ ಈ ಯಾಗದಲ್ಲಿ ತಂದೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ ಈ ಅವಮಾನವನ್ನು ಸಹಿಸದೆ ಸತಿ (ದಾಕ್ಷಾಯಣಿ)ಯು ಯೋಗಾಗ್ನಿಯಿಂದ ದೇಹತ್ಯಾಗ ಮಾಡಿ ಹಿಮವಂತನಿಂದ ಮೇನಕೆಯಲ್ಲಿ ಅಪರ್ಣೆಯಾಗಿ ಜನಿಸಿ ಪರಮೇಶ್ವರನನ್ನು ಮಮುವೆಯಾದಳು.] ಭಾಗಂ ೪ ।

**ದಕ್ಷಜಾ ದಕ್ಷಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ದಕ್ಷನ ಮಗಳು, ಸತೀದೇವಿ, ಪರಶಿವನ ಸತಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ ಬಂ ವಂ) 2. ಅಶ್ವಿನೀ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ಮಂದಿ ದಕ್ಷನ ಕನ್ಯೆಯರು, ಚಂದ್ರನ ಪತ್ನಿಯರು. -ಆತ್ಮಜಾ -ಅತ್ಮಜಾ, -ಸುತಾ -ಸುತಾ. ಇತ್ಯಾದಿ. “ನರೇಂದ್ರಕನ್ಯಾಸ್ತಮವಾಪ್ಯ ಸತ್ಯಪತಿ ತಮೋನುದಂ ದಕ್ಷಸುತಾ ಇವಾಬಭುಃ” ರಘುಂ ೩-೩೩ ।

**ದಕ್ಷತಾ ದಕ್ಷತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಶಕ್ತಿ. 2. ಜಾಣತನ. ದಕ್ಷಸ್ಯ ಭಾವಃ “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯) । “ಸ ವಿಧೇಯಪದೇಷು ದಕ್ಷತಾಂ ನಿಯತಿ ಲೋಕ ಇವಾನುರೂಪತೇ” ಕಿರಾಂ ೨-೧೨ ।

**ದಕ್ಷಸಾರ್ವಣ ದಕ್ಷಸಾರ್ವಣ (ಪುಂ)** ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಮನುಗಳಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬತ್ತನೆಯವನು. ಈತನ ಅಳ್ವಿಕೆಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸ್ವರ್ಗದಲ್ಲಿ “ಅದ್ಭುತ” ಸೆಂಬ ಇಂದ್ರನು ದೇವತೆಗಳ ಒಡೆಯನಾಗಿದ್ದನು. ಈ ಇಂದ್ರನಿಗೆ “ಶ್ರುತ” ಎಂದೂ ಹೆಸರು.

**ದಕ್ಷಸುತ ದಕ್ಷಸುತ (ಪುಂ)** ದೇವತೆಗಳು. ದಕ್ಷಸ್ಯ ಸುತಾಃ । ದೇವತೆಗಳು ದಕ್ಷಪ್ರಜಾಪತಿಯಿಂದ ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟವರು. “ಪ್ರಜಾಃ ಸೃಜೇತಿ ವ್ಯಾಧಿಷ್ಠಃ ಪೂರ್ವ ದಕ್ಷಃ ಸ್ವಯಂಭುವಾ । ಮನಸಾ ಚೈವ ಭೂತಾನಿ ಪೂರ್ವಮೇವಾಸೃಜತ್ ಪ್ರಭುಃ । ಕೃಷಿನ್ ದೇವಾನ್ ಸಗಂಧರ್ವಾನ್ ಅಸುರಾನ್ಯ ರಾಕ್ಷಸಾನ್” ಹರಿವಂ ।



**ದಕ್ಷಿಣ ದಕ್ಷಿಣ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. ದಕ್ಷಿಣೇ ಸ್ವರೂಪಾಸಾದಿ-  
ಗರ್ಹಣಮುಖೇನ ಅತಿಸಮರ್ಥೋ ಗಜೇಂದ್ರಂ ಸಾನ್ತವಯನ್ ತಸ್ಯಾನುಕೂಲೋ  
ವರ್ಧತೇ - ದಕ್ಷ (ವೃದ್ಧಿ) "ಇನ್" (ತಂ ೨-೪೧) ।  
"ಗಜೇಂದ್ರಸ್ಯ ಪ್ರಪನ್ನಸ್ಯ ಯಃ ಪ್ರೀತೋ ದಕ್ಷಿಣಸ್ತು ಸಃ" ಇತಿ  
ನಿರೂಪಿತಃ । "ಅಕ್ರೂರಃ ಪೇಶಲೋ ದಕ್ಷೋ ದಕ್ಷಿಣಃ ಕ್ಷಮಿಣಾಂ  
ವರಃ" ವಿಂ ಸಂ । 2. ದಕ್ಷಿಣಾಕ್ಷಿ, ಯಜ್ಞದ ಮೂರು  
ಅಗ್ನಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. 3. ಅನೇಕ ನಾಯಕಿಯರಲ್ಲಿ ಸಮಾನ  
ವಾದ ಅನುರಾಗವುಳ್ಳ ನಾಯಕ. "ಉತ್ಪನ್ನೇಕಮಹಿಲಾ-  
ಸಮರಾಗೋ ದಕ್ಷಿಣಃ ಕಥಿತಃ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೩೪ । 4. ದೇಹದ  
ಬಲಭಾಗ. (ವಿಂ) 5. ಸರಳಸ್ವಭಾವದವನು, ಕಪಟವಿಲ್ಲ  
ದವನು, ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ. 6. ದಕ್ಷಿಣದ ಸ್ವಭಾವದವನು,  
ಇತರರ ಮನಸ್ಸನ್ನನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯುವವನು, ಇತರರ  
ಅಭಿಪ್ರಾಯದಂತೆ ವರ್ತಿಸುವವನು. 7. ಬಲಭಾಗದಲ್ಲಿ  
ರುವ, ಬಲಪಾರ್ಶ್ವದ. "ಬ್ರಹ್ಮಾ ವಿಷ್ಣುಶ್ಚ ರುದ್ರಶ್ಚ ಸೋಮಃ  
ಸೂರ್ಯೋಽನಲಸ್ತಥಾ । ತೇ ಸರ್ವೇ ಚಾಪಿ ತಿಷ್ಠಂತಿ ಕರ್ಣೇ ವಿಪ್ರಸ್ಯ  
ದಕ್ಷಿಣೇ" ಪರಾಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಞಾ -ಞಾ. 8. ಯಜ್ಞದ  
ಪತ್ನಿ. "ಪತ್ನೀ ಸುದಕ್ಷಿಣೇತ್ಯಾಸೀದಧ್ವರಸ್ಯೇವ ದಕ್ಷಿಣಾ"  
ರಘುಂ ೧-೩೧ । 9. ಉಪಾಧ್ಯಾಯರಿಗೆ ಕೊಡುವ ಗುರು  
ದಕ್ಷಿಣೆ, ಗುರುವಿಗೆ ಕೊಡುವ ಸಂಭಾವನೆ, ವಿದ್ಯಾಶುಲ್ಕ.  
"ಉಪಾಧ್ಯಾಯೋ ಗುರುದಕ್ಷಿಣಾರ್ಥಿ ಕೌತ್ಸಃ ಪ್ರಪೇದೇ ವರತಂತುಶಿಷ್ಯಃ"  
ರಘುಂ ೪-೧ । 10. ಯಜ್ಞ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಕೊನೆ  
ಯಲ್ಲಿ ಕೊಡುವ ದಕ್ಷಿಣೆ. 11. ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕು. "ರತ್ನಾನು-  
ವಿಧಾರ್ಣವಮೇಖಲಾಯಾ ದಿಶಃ ಸಪತ್ನೀ ಭವ ದಕ್ಷಿಣಸ್ಯಾಃ"  
ರಘುಂ ೬-೬೩ । "ದಿಗ್ದಕ್ಷಿಣಾ ಗಂಧವಹಂ ಮುಖೇನ ವ್ಯಲೀಕ-  
ನಿಶ್ವಾಸಮಿವೋತ್ಸರ್ಜ" ಕುಮಾರಂ ೩-೨೪ ।

**ದಕ್ಷಿಣತಸ್ ದಕ್ಷಿಣತಸ್ (ಅವ್ಯಂ)** 1. ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕು, ದಕ್ಷಿಣ  
ದಿಕ್ಕಿನಿಂದ, ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ. 2. ದಕ್ಷಿಣ ದೇಶ, ದಕ್ಷಿಣ  
ದೇಶದಿಂದ, ದಕ್ಷಿಣ ದೇಶದಲ್ಲಿ. ದಕ್ಷಿಣಾ "ಅತಸ್ತುಚ್"  
(೪-೩-೨೮) । ಪುಂಙ್ಮಾವಃ (ವಾಂ ೨-೧-೪೧) । 3. ಬಲ  
ಭಾಗದಿಂದ. ದಕ್ಷಿಣ "ತಸಿಲ್" (೪-೩-೭) ।

**ದಕ್ಷಿಣತಾರ ದಕ್ಷಿಣತಾರ (ನಂ)** ನದಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ  
ತೀರಪ್ರದೇಶ. ತೀರಸ್ಯ ವಾ "ತಾರಃ" (ವಾಂ ೬-೩-೧೦೯) ।  
ಪಕ್ಷೇ -ತೀರಸ್ -ತೀರಮ್.

**ದಕ್ಷಿಣದಿಶ್ ದಕ್ಷಿಣದಿಶ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕು,  
ಬಲಗಡೆಯ ದಿಕ್ಕು.

**ದಕ್ಷಿಣದಿವಪಾಲಕ ದಕ್ಷಿಣದಿವಪಾಲಕ (ಪುಂ)** ದಕ್ಷಿಣ  
ದಿಕ್ಕನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವವನು.

**ದಕ್ಷಿಣದಿವಪಾಶ ದಕ್ಷಿಣದಿವಪಾಶ (ಪುಂ)** ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನ  
ಪಾಶಚಕ್ರ, ಭಾನುವಾರದಲ್ಲಿ ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಯುದ್ಧಾಧಿ

ಗಳನ್ನು ನಿಷೇಧಿಸುವ ಪಾಶ. ["ಉತ್ತರದಿವಪಾಶ" ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.]

**ದಕ್ಷಿಣದಿಕ್ಷಾಲ್ ದಕ್ಷಿಣದಿಕ್ಷಾಲ್ ಶೂಲ (ಪುಂ)** ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕು  
ನಲ್ಲಿ ಪ್ರಯಾಣವನ್ನು ನಿಷೇಧಿಸುವ ಶೂಲ, ಗುರುವಾರ  
ಮತ್ತು ಪೂರ್ವಾಭಾದ್ರಪದಾ ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕು  
ನಲ್ಲಿ ಶೂಲ. ಈ ಶೂಲಗಳಿರುವ ದಿವಸ ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿಗೆ  
ಪ್ರಯಾಣಮಾಡಕೂಡದು. "ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ಪೂರ್ವಾಭಾದ್ರಪದಾ  
ರೋಹಿಣ್ಯುತ್ತರಫಲ್ಗುನೀ । ಪೂರ್ವಾದಿಷು ಕ್ರಮಾಚ್ಛಲಾ ಯಾತ್ರಾದೌ  
ಮರಣಪ್ರದಾಃ" ।

**ದಕ್ಷಿಣದಿಗಿಶ ದಕ್ಷಿಣದಿಗಿಶ, -ದೈಶ್ವರ -ಈಶ್ವರ (ಪುಂ)**  
ಅಂಗಾರಕ, ಕುಜಗ್ರಹ. "ಸೂರ್ಯಃ ಸೋಮಃ ಕ್ಷಮಾಪುತ್ರಃ ಸೇಹಿಕೇಯಃ  
ಶನಿಃ ಶಶಿಃ । ಸೌಮ್ಯಸ್ತ್ರಿದಶಮನ್ತ್ರಿ ಚ ಪ್ರಾಚ್ಯಾದಿದಿಗ-  
ಧೀಶ್ವರಾಃ" ।

**ದಕ್ಷಿಣದಿಗ್ಧಾರ ದಕ್ಷಿಣದಿಗ್ಧಾರ (ನಂ)** ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ  
ಪ್ರಯಾಣಕ್ಕೆ ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು, ಮಖೆ, ಪೂರ್ವ  
ಫಲ್ಗುನಿ, ಉತ್ತರಫಲ್ಗುನಿ, ಹಸ್ತ, ಚಿತ್ತ, ಸ್ವಾತಿ ಮತ್ತು  
ವಿಶಾಖಾ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು. "ಪ್ರಾಚ್ಯಾದಿಷು ಚತುರ್ದಿಕ್ಸು ಸಪ್ತಸಪ್ತಾ-  
ನಲಕ್ಷಿತಃ" । ದಕ್ಷಿಣದಿಶಿ ದ್ವಾರಂ ಮುಖಮಸ್ಯ ।

**ದಕ್ಷಿಣದಿಗ್ಬಲಿನ್ ದಕ್ಷಿಣದಿಗ್ಬಲಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯ.  
2. ಕುಜ. ಇವರು ದಕ್ಷಿಣದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಬಲಿಷ್ಠರು. "ಪ್ರಾಚ್ಯಾಂ  
ಸೌಮ್ಯಸುರಾಚಾರ್ಯೋ ಯಾಮ್ಯಾಂ ಭಾಸ್ಕರಭೂಮಿಜೌ । ಪ್ರತ್ಯಕ್ ಸೌರಿ-  
ರ್ದೀಪ್ಯಾಂ ತು ಸಿತೇನ್ದ್ರ ದಿಗ್ಬಲಾನಿವಿತೌ" ।

**ದಕ್ಷಿಣಪಶ್ಚಿಮ ದಕ್ಷಿಣಪಶ್ಚಿಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದಕ್ಷಿಣ ಮತ್ತು  
ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕುಗಳ ಮಧ್ಯದ ದಿಕ್ಕು, ನೈರುತ್ಯ ದಿಕ್ಕು.  
ದಕ್ಷಿಣಸ್ಯಾಶ್ಚ ಪಶ್ಚಿಮಾಶ್ಚ ಅಂತರಾಲ್ । ಪುಂಙ್ಮಾವಃ (ವಾಂ  
೨-೧-೪೧) ।

**ದಕ್ಷಿಣಪೂರ್ವ ದಕ್ಷಿಣಪೂರ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದಕ್ಷಿಣ ಮತ್ತು  
ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕುಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಅಗ್ನೇಯ ದಿಕ್ಕು. ದಕ್ಷಿಣ-  
ಸ್ಯಾಶ್ಚ ಪೂರ್ವಾಶ್ಚ ದಿಶೋಽಂತರಾಲ್ -ಬಹುಗ್ರಹಿಃ (೨-೨-೨೬) ।  
ಪುಂಙ್ಮಾವಃ (ವಾಂ ೨-೧-೪೧) । (ವಿಂ) -ಪೂರ್ವ -ಪೂರ್ವಾ.  
ಅಗ್ನೇಯ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ, ದಕ್ಷಿಣ ಪೂರ್ವ ದಿಕ್ಕುಗಳ ಮಧ್ಯ  
ಭಾಗದ.

**ದಕ್ಷಿಣಮಾರ್ಗ ದಕ್ಷಿಣಮಾರ್ಗ (ಪುಂ)** ಪಿತೃಯಾಣ,  
ಧೂಮಾದಿ ಮಾರ್ಗ.

**ದಕ್ಷಿಣಸಮುದ್ರ ದಕ್ಷಿಣಸಮುದ್ರ, -ಸಾಗರ -ಸಾಗರ (ಪುಂ)**  
ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನ ಸಮುದ್ರ, ಹಿಂದೂಮಹಾಸಾಗರ.

**ದಕ್ಷಿಣಸ್ಯ ದಕ್ಷಿಣಸ್ಯ (ಪುಂ)** 1. ಸೂತ. ಸಾರಥಿ, ರಥವನ್ನು  
ನಡೆಸುವವನು. ದಕ್ಷಿಣೇ ತಿಷ್ಠತಿ - ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ)



“ಕ:” (೩-೨-೪) । (ವಿಂ) 2. ಬಲಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ, ಬಲಗಡೆಯಿರುವ.

**ದಕ್ಷಿಣಾ ದಕ್ಷಿಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. “ದಕ್ಷಿಣ” ಪದದ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗದ ಅರ್ಥ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕು, ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನಿಂದ, ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ. ದಕ್ಷಿಣಾ “ಆಚ್” (೪-೩-೩೬) ।

**ದಕ್ಷಿಣಾಗ್ನಿ ದಕ್ಷಿಣಾಗ್ನಿ** (ಪುಂ) ಯಜ್ಞದ ಮೂರು ಅಗ್ನಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. ದಕ್ಷಿಣೋಗ್ನಿ: । “ದಕ್ಷಿಣಾಗ್ನಿಗರ್ಹಿಪತ್ಯಾ-ಹವನೀಯೌ ತ್ರಯೋಗ್ನಯ:” ಅಮಂ ।

**ದಕ್ಷಿಣಾಚಲ ದಕ್ಷಿಣಾಚಲ** (ಪುಂ) ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ ಮಲಯ ಪರ್ವತ. ದಕ್ಷಿಣಸ್ಥಿತೋಚಲ: ।

**ದಕ್ಷಿಣಾತ್ ದಕ್ಷಿಣಾತ್** (ಅವ್ಯಂ) ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕು, ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನಿಂದ, ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ. ದಕ್ಷಿಣ “ಆತಿ:” (೪-೩-೩೪) ।

**ದಕ್ಷಿಣಾಪಥ ದಕ್ಷಿಣಾಪಥ** (ಪುಂ) ನರ್ಮದಾನದಿಗೆ ದಕ್ಷಿಣ ಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ ಭಾರತ ದೇಶದ ಒಂದು ಭಾಗ. ದಕ್ಷಿಣಾ ಪಥಾ: — “ಅ:” (೪-೪-೭೪) । “ಅಸ್ತಿ ದಕ್ಷಿಣಾಪಥೇ ವಿದರ್ಮೇ ಪುಷ್ಪಪುರಂ ನಾಮ ನಗರಮ್” ಮಾಲತೀಂ ೧ ।

**ದಕ್ಷಿಣಾಪಥಿಕ ದಕ್ಷಿಣಾಪಥಿಕ** (ವಿಂ) ದಕ್ಷಿಣಾಪಥಕ್ಕೆ ಸೇರಿದ. ದಕ್ಷಿಣಾ ಪಥೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಠ್” (೪-೨-೧೧೫) ।

**ದಕ್ಷಿಣಾಪರಾ ದಕ್ಷಿಣಾಪರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಕ್ಷಿಣ ಮತ್ತು ಪಶ್ಚಿಮದಿಕ್ಕುಗಳ ಮಧ್ಯದ ದಿಕ್ಕು, ನಿಯತಿ ದಿಕ್ಕು. ದಕ್ಷಿಣ-ಸ್ಯಾಶ್ಚ ಅಪರಾಶ್ಚ ಅಂತರಾಲಮ್—ಬಹುಗ್ರೀಹಿ: (೨-೨-೨೬) ।

**ದಕ್ಷಿಣಾಭಿಮುಖ ದಕ್ಷಿಣಾಭಿಮುಖ** (ವಿಂ) ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿಗೆ ಎದುರಾಗಿರುವ, ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿಗೆ ಮುಖವುಳ್ಳ. ದಕ್ಷಿಣಾ ದಕ್ಷಿಣಸ್ಯಾಮಭಿಮುಖಮಸ್ಯ । “ಆಯುಷ್ಯಂ ಪ್ರಾಡ್‌ಮುಖೋ ಭುಕ್ತೇ ಯಶಸ್ಯಂ ದಕ್ಷಿಣಾಮುಖ: । ಶ್ರಿಯಂ ಪ್ರತ್ಯಡ್‌ಮುಖೋ ಭುಕ್ತೇ ನ ಕದಾಚಿದುದಡ್‌ಮುಖ:” ।

**ದಕ್ಷಿಣಾಮूर्ತಿ ದಕ್ಷಿಣಾಮೂರ್ತಿ** (ಪುಂ) ಪರಿಶಿವ, ಈಶ್ವರ. ದಕ್ಷಿಣಾ ಅನುಕೂಲಾ ಮೂರ್ತೀರಸ್ಯ । “ನಿತ್ಯಶೋ ದಕ್ಷಿಣಾಮೂರ್ತಿ ಧ್ಯಾಯೇತ್ ಸಾಧಕಸತ್ತಮ: । ಶಾಸ್ತ್ರವ್ಯಾಖ್ಯಾನಸಾಮರ್ಥ್ಯಂ ಲಬ್ಹಂತೇ ವತ್ಸರಾಂತರೇ” ।

**ದಕ್ಷಿಣಾಯನ ದಕ್ಷಿಣಾಯನ** (ನಂ) 1. ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನ ಸಂಚಾರ. ದಕ್ಷಿಣಾ ದಕ್ಷಿಣಸ್ಯಾಂ ದಿಶಿ ಅಯನಂ ಸಂಚಾರ: । 2. ಸೂರ್ಯನು ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ ಕಾಲ, ಕರ್ಕಾಟಕ ಸಂಕ್ರಾಂತಿಯಿಂದ ಮಕರಸಂಕ್ರಾಂತಿಯ ವರೆಗಿನ ಕಾಲ. “ಶ್ರುತವ್ಯಂ ಚಾಪ್ಯಯನಂ ದ್ವೇ ಅಯನೇ ವರ್ಷಸಂಜ್ಞಿತೇ । ಕರ್ಕಟಾದಿस्थಿತೇ ಭಾನೌ ದಕ್ಷಿಣಾಯನಮುಚ್ಯತೇ” । ಒಂದು ಮಾನುಷವರ್ಷವು ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಒಂದು ದಿವಸ. ಉತ್ತರ

ರಾಯಣವು ಹಗಲು. ದಕ್ಷಿಣಾಯನವು ರಾತ್ರಿ. “ದೇವೇ ರಾತ್ರಿಹನೀ ವರ್ಷಂ ಪ್ರವಿಭಾಗಸ್ತಯೋ: ಪುನ: । ಅಹಸ್ತತ್ರೋದಗಯನಂ ರಾತ್ರಿ: ಸ್ಯಾದ್ದಕ್ಷಿಣಾಯನಮ್” ಮನುಂ ೧-೬೭ ।

**ದಕ್ಷಿಣಾರುಸ್ ದಕ್ಷಿಣಾರುಸ್** (ಪುಂ) ವ್ಯಾಧನ ಬಾಣದಿಂದ ಬಲಭಾಗದಲ್ಲಿ ಗಾಯಗೊಂಡ ಮೃಗ. ದಕ್ಷಿಣೇ ಅರುರಸ್ಯ ।

**ದಕ್ಷಿಣಾರ್ಹ ದಕ್ಷಿಣಾರ್ಹ** (ಪುಂ) ದಕ್ಷಿಣಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ ಋತ್ವಿಕ್ಕು. ದಕ್ಷಿಣಾಮರ್ಹತಿ — ಅರ್ಹ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) “ಅಚ್” (೩-೨-೧೨) ।

**ದಕ್ಷಿಣಾವರ್ತ ದಕ್ಷಿಣಾವರ್ತ** (ವಿಂ) 1. ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ. ದಕ್ಷಿಣಾ ದಕ್ಷಿಣಸ್ಯಾಂ ದಿಶಿ ವರ್ತತೇ — ವೃತು (ವರ್ತನೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । 2. ಬಲಗಡೆಗೆ ತಿರುಗಿರುವ. (ಪುಂ) 3. ಶಂಖ.

**ದಕ್ಷಿಣಾವಹ ದಕ್ಷಿಣಾವಹ** (ಪುಂ) ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನ ಗಾಳಿ. ದಕ್ಷಿಣಾ ವಹತಿ — ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) ।

**ದಕ್ಷಿಣಾಶಾ ದಕ್ಷಿಣಾಶಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕು. 2. ದಕ್ಷಿಣೆಯಲ್ಲಿ ಆಸೆ.

**ದಕ್ಷಿಣಾಹಿ ದಕ್ಷಿಣಾಹಿ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ದೂರದಲ್ಲಿ. 2. ಬಲಗಡೆ ದೂರದಲ್ಲಿ. ದಕ್ಷಿಣ “ಆಹಿ” (೪-೩-೩೭) ।

**ದಕ್ಷಿಣೀಯ ದಕ್ಷಿಣೀಯ** (ವಿಂ) ದಕ್ಷಿಣಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ (ಋತ್ವಿಕ್ಕು). ದಕ್ಷಿಣಾಮರ್ಹತಿ—ದಕ್ಷಿಣಾ “ಃ” (೪-೧-೬೯) । “ದಕ್ಷಿಣೀಯಮಧಿಗಮ್ಯ ಪಙ್ಕ್ತಿಶ: ಪಙ್ಕ್ತಿಪಾವನಮಥ ದ್ವಿಜ-ವ್ರಜಮ್” ಮಾಘಂ ೧೪-೩೩ ।

**ದಕ್ಷಿಣೇನ ದಕ್ಷಿಣೇನ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ. 2. ಬಲ ಭಾಗದಲ್ಲಿ. ದಕ್ಷಿಣ “ಏನ್” (೪-೩-೩೫) । “ದಕ್ಷಿಣೇನ ವೃಕ್ಷವಾಟಿಕಾಮಾಲಾಪ ಇವ ಶ್ರೂಯತೇ” ಶಾಕುಂ ೧ । “ತತ್ರಾಗಾರಂ ಧನಪತಿಗೃಹಾನ್ ದಕ್ಷಿಣೇನಾಸ್ಮದೀಯಮ್” ಮೇಘಂ ೨-೧೨ ।

**ದಕ್ಷಿಣೇರ್ಮನ್ ದಕ್ಷಿಣೇರ್ಮನ್** (ಪುಂ) ಬೇಟೆಗಾರನ ಬಾಣದಿಂದ ಬಲಭಾಗದಲ್ಲಿ ಗಾಯಗೊಂಡ ಮೃಗ. ದಕ್ಷಿಣೇ ಇರ್ಮಮಸ್ಯ “ಅನಿಚ್” (೪-೪-೧೨೬) । ನಿಪಾಂ । “ಮೃಗಯುಮಿವ ಮೃಗೋಽಥ ದಕ್ಷಿಣೇರ್ಮಾ ದಿಶಮಿವ ದಾಹವತೀಂ ಮರಾವುದನ್ಯನ್” ಭट्टಿಂ ೪-೪೪ ।

**ದಕ್ಷಿಣ್ಯ ದಕ್ಷಿಣ್ಯ** (ವಿಂ) ದಕ್ಷಿಣಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ (ಋತ್ವಿಕ್ಕು). ದಕ್ಷಿಣಾ “ಯತ್” (೪-೧-೬೯) । “ದಕ್ಷಿಣ್ಯದಿಷ್ಟಂ ಕೃತ-ಮಾತ್ವಿಜಿನೇಸ್ತದ್ವಾತುಧಾನೇಶ್ವರಿತೇ ಪ್ರಸಪ್ತಮ್” ಭट्टಿಂ ೨-೨೯ ।

**ದಕ್ಷಿಣ ದಕ್ಷಿಣ** (ಪುಂ) 1. ದಕ್ಷಿಣೋಗ, ತಿಥಿ ಮತ್ತು ವಾರಗಳು ಸೇರುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ಯೋಗ: ;



|          |    |         |
|----------|----|---------|
| ಭಾನುವಾರ  | .. | ದ್ವಾದಶಿ |
| ಸೋಮವಾರ   | .. | ಏಕಾದಶಿ  |
| ಮಂಗಳವಾರ  | .. | ಪಂಚಮಿ   |
| ಬುಧವಾರ   | .. | ತೃತೀಯೆ  |
| ಗುರುವಾರ  | .. | ಷಷ್ಠಿ   |
| ಶುಕ್ರವಾರ | .. | ಅಷ್ಟಮಿ  |
| ಶನಿವಾರ   | .. | ನವಮಿ    |

ಈ ತಿಥಿ ವಾರಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ದಗ್ಧ ಯೋಗವುಂಟಾಗುವುದು. (ನಂ) 2. ದಹಿಸುವುದು, ಸುಡುವುದು. ದಹ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114). (ವಿಂ) 3. ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟ. ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ನ ನೂನಮಾರೂಢಃ ಶರೀರಮೇತೇನ ದಘಂ ಕುಸುಮಾಯುಧಸ್ಯ" ಕುಮಾಂ 9-69. "ದೃಶಾ ದಘಂ ಮನಸಿಜಂ ಜೀವಯಂತಿ ದೃಶೇವ ಯಾ:" ಚಂದ್ರಾಂ.

**ದಘಕಾಕ ದಗ್ಧ ಕಾಕ** (ಪುಂ) ರಣಹದ್ದು. ದಘ ಇವ ಕಾಕ: |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೀಪ್" (4-1-63). -ಕಾಕೀ -ಕಾಕೀ.

**ದಘರಥ ದಗ್ಧ ರಥ** (ಪುಂ) ಚಿತ್ರರಥನೆಂಬ ಒಬ್ಬ ಗಂಧರ್ವ. [ಇವನು ಕಶ್ಯಪಮುನಿಯಿಂದ ಮುನಿಯೆಂಬ ಪತ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದನು. ಇವನಿಗೆ ಅಂಗಾರಪರ್ಣನೆಂಬುದು ನಾಮಾಂ ತರ. ಒಂದು ದಿನ ಈತನು ಗಂಗಾನದಿಯಲ್ಲಿ ಜಲಕ್ರೀಡೆ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ದ್ರೌಪದೀಸ್ವಯಂವರಕ್ಕಾಗಿ ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದ ಪಾಂಡವರನ್ನು ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸಲು ಅರ್ಜುನನು ಇವನ ರಥವನ್ನು ಸುಟ್ಟು ಇವನನ್ನು ಸೋಲಿಸಿದನು. ಇದರಿಂದ ಇವನಿಗೆ "ದಗ್ಧ ರಥ" ಎಂದೂ ದಗ್ಧ ವಾದ ರಥವನ್ನು ತನ್ನ ಮಹಿಮೆಯಿಂದ ಚಿತ್ರರತ್ನಮಯವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದುದರಿಂದ "ಚಿತ್ರ ರಥ" ಎಂದೂ ಹೆಸರಾಯಿತು. ಅರ್ಜುನನು ಧರ್ಮರಾಜನ ಮಾತಿನಂತೆ ಇವನನ್ನು ಜೀವ ಸಹಿತ ಬಿಟ್ಟಿದ್ದರಿಂದ ಸಂತೋಷಗೊಂಡವನಾಗಿ ದಗ್ಧ ರಥನು ಅರ್ಜುನನಿಗೆ ಜಾಕ್ಷುಷೀವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸಿದನು.]  
ಭಾಂ ಆದಿಂ 103.

**ದಘವತ್ ದಗ್ಧ ವತ್** (ವಿಂ) ದಹಿಸಿದವನು, ಸುಟ್ಟವನು. ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) "ಕ್ತವತು:" (3-2-102). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೀಪ್" (4-2-6) -ವತೀ -ವತೀ.

**ದಘವ್ಯ ದಗ್ಧ ವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಸುಡಲ್ಪಡುವ. ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) ಕರ್ಮಂ "ತವ್ಯ:" (3-1-96). 2. ಸುಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಸುಡಬೇಕಾದ.

**ದಘಿಕಾ ದಗ್ಧಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೀದುವುದು ಅನ್ನ.

**ದಘದ ದಂಡ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯನ ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿರುವ ಒಬ್ಬ ದೇವತೆ, ಸೂರ್ಯನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ. ದಂಡೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ

"ಅನ್" (4-2-129). "ಮಾಠರ: ಪಿಙ್ಗಲೋ ದಂಡ: ಚಂಡಾಂಶೋ: ಪಾರಿಪಾಶ್ವಕಾ:" ಅಮಂ. (ಪುನಂ) 2. ಕೋಲು, ದೊಣ್ಣೆ. "ಪರಸ್ಯ ದಂಡಂ ನೋಚ್ಛೇತ್ ಕ್ರುದ್ಧೋ ನೇವ ನಿಪಾತಯೇತ್ | ಅನ್ಯತ್ರ ಪುತ್ರಾಂಚ್ಛಿಷ್ಯಾದ್ವಾ ಶಿಷ್ಟಚರ್ಯಂ ತಾಡಯೇತ್ ತೌ" ಮನುಂ 8-164. 3. ರಾಜನ ಪ್ರಭುತ್ವವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ದಂಡ, ದೊರೆಯ ಅಧಿಕಾರವನ್ನು ಸೂಚಿಸಲು ಸೇವಕರು ಕೈಯಲ್ಲಿ ಹಿಡಿಯುವ ಚಿನ್ನದ ಅಥವಾ ಬೆಳ್ಳಿಯ ದೊಣ್ಣೆ. 4. ಸಂನ್ಯಾಸಿಗಳು ಹಿಡಿಯುವ ದಂಡ. 5. ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಗಳು ಹಿಡಿಯುವ ಪಾಲಾಶಾದಿ ದಂಡ. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ಬೇಲ್ವಪಾಲಾಶೌ ಕ್ಷತ್ರಿಯೋ ವಟಸಾದಿರೌ | ಪೇಲವೌದ್ವುಂಬರೌ ವೈಶ್ಯೋ ದಂಡಾನಿಹಂತಿ ಧರ್ಮತ:" ಮನುಂ 2-45. "ಪಾಣೌ ಕಾರ್ಮುಕಮಕ್ಷಸೂತ್ರವಲಯಂ ದಂಡೋಽಪರ: ಪೇಪಲ:" ಮಂ ವೀಂ 1-10. 6. ಭತ್ತಿಯ ಹಿಡಿ. "ರಾಜ್ಯಂ ಸ್ವಹಸ್ತಘತದಂಡಮಿವಾತಪತ್ರಮ್" ಶಾಕುಂ 4-6. 7. ಭಲ್ಮ ಮೊದಲಾದ ಆಯುಧಗಳ ಹಿಡಿ. 8. ಧ್ವಜದ ದಂಡ. ಬಾವುಟದ ಕೋಲು. 9. ಸವುಟಿನ ಕಾವು. 10. ರಾಜನ ಚತುರಂಗ ಸೈನ್ಯ. "ಪ್ರಭವ: ಖಲ್ವು ಕೋಶದಂಡಯೋ: ಕೃತಪಚ್ಚಾಙ್ಗ-ವಿನಿರ್ಣಯೋ ನಯ:" ಕಿರಾಂ 2-12. 11. ದಮನ, ಹತೋಟಿ, ಅಂಕೆ, ನಿಬಂಧ. "ವಾಗ್ದಂಡೋಽಥ ಮನೋದಂಡ: ಕಾಯದಂಡಸ್ತಥೈವ ಚ" ಮನುಂ 12-10. 12. ಸೈನ್ಯ, ದಂಡು, ಪಡೆ. ದಂಡಯತೇ ರಿಪುರೇಭಿ: - ದಂಡ (ದಂಡನಿಪಾತನೆ) + ಣಿಕ್ "ಘನ್" (3-3-121). "ತಸ್ಯ ದಂಡವತೌ ದಂಡ: ಸ್ವದೇಹಾನ್ ವ್ಯಶಿಷ್ಯತ" ರಘುಂ 19-62. 13. ಶಿಕ್ಷೆ, ದಂಡನೆ, ಯಮ ಮತ್ತು ಕ್ರಿಯೆಗಳ ಮಗ. "ಗುರುಪದಿಷ್ಟೇನ ರಿಪೌ ಸುತೇಽಪಿ ವಾ ನಿಹಂತಿ ದಂಡೇನ ಸ ಧರ್ಮವಿಪ್ಲವಮ್" ಕಿರಾಂ 1-13. "ರಾಜಾಪಥ್ಯಕಾರಿಣು ತೀಕ್ಷ್ಣದಂಡೋ ರಾಜಾ" ಮುಡ್ರಾಂ 1. 14. ಭೂಮಿಯ ಒಂದು ಅಳತೆ, ನಾಲ್ಕು ಗುದ್ದು ಮೊಳಗಳ ಉದ್ದದ ಅಳತೆ. "ಹಸ್ತೇಶ್ವತುರ್ಭಿರ್ಮವತೀಹ ದಂಡ:" ಲೀಲಾಂ. 15. ಬೇರಿನಿಂದ ರೆಂಬೆಗಳವರೆಗೆ ಇರುವ ಗಿಡ ಮರಗಳ ಮಧ್ಯದ ದೂಲ. 16. ಶರಣಾಗತರಾದವರ ರಕ್ಷಣೆ ಪ್ರಾಣಿಹಿಂಸೆ ಮಾಡದಿರುವುದು ಮತ್ತು ದಾನ ಈ ಮೂರು. "ಶರಣಾಗತಸಂತ್ರಾಣಂ ಭೂತಾನಾಮಪ್ಯಹಿಸನಮ್ | ಬಹಿರ್ವೇದಿ ಚ ದಾನಂ ದಂಡಮಿತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ" ಮೋಕ್ಷಧರ್ಮ: | 17. ಕೋಣ, ವೀಣೆ ಮೊದಲಾದ ತಂತೀ ವಾದ್ಯಗಳನ್ನು ನುಡಿಸುವ ಕೋಲು. 18. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. 19. ಯಮ ಧರ್ಮರಾಯ. 20. ಗರ್ವ, ಅಭಿಮಾನ. 21. ಕಡೆ ಗೋಲು. 22. ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಕೋಲಿನ ಆಕಾರದ ಒಂದು ಗ್ರಹ. 23. ವ್ಯೂಹ, ಗುಂಪು. 24. ದಂಡದ ಆಕಾರವುಳ್ಳ ಸೂರ್ಯನ ಪರಿವೇಷ. 25. ದೇಹ, ಶರೀರ. ದಂಡಯತೇ - ದಂಡ + ಣಿಕ್ "ಘನ್" (3-3-121). 26. ಕೋಲಿ



ನಂತೆ ನೇರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವುದು. ದೃಢ + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಧಮ್"  
(೩-೩-೧೮)। 27. ಕೋಲಿನಂತೆ ನೇರವಾಗಿರುವ  
ಸೂರ್ಯನ ಕಿರಣಗಳ ಸಮೂಹ. "ರವಿಕಿರಣಜಲದಮಹ್ತಾಂ  
ಸಂಜ್ಞಾತೋ ದೃಢವತ್ ಸ್ಥಿತೋ ದೃಢಃ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೩೦-೧೬।  
28. ವಿಷ್ಣು. "ವೇದಧರ್ಮಾರಿಷ್ಠತಾತಿನೃಪಾದಿಮುಖತಃ ಸ್ವಲ್ಪಾನ್।  
ದೃಢನೀತ್ಯಾ ದಾಮ್ಯತೀತಿ ದೃಢಃ ಸ್ಯಾದ್ವರ್ಣಕಃ" ಇತಿ  
ನಿರ್ದಿಷ್ಟಃ"। "ಧನುರ್ವರೋ ಧನುರ್ವದೋ ದೃಢೋ ದಮಯಿತಾ ದಮಃ"  
ವಿಂ ಸಂ 1. 29. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. "ಶತ್ರುಂದಮಾಯ ದೃಢಾಯ  
ಪರ್ಣವೀರಪಟಾಯ ಚ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೨೯೦-೮೭।  
30. ರಾಜನು ಧರ್ಮದಿಂದ ಪ್ರಜಾಪರಿಪಾಲನ ಮಾಡು  
ವುದಕ್ಕಾಗಿ ಅವನಲ್ಲಿ ಪರಮಾತ್ಮನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದ ಬ್ರಹ್ಮ  
ತೇಜೋಮಯವಾದ ಧರ್ಮ. "ತಸ್ಯಾರ್ಥೇ ಸರ್ವಭೂತಾನಾಂ  
ಗೋಪಾರಂ ಧರ್ಮಮಾತ್ಮಜಮ್। ಬ್ರಹ್ಮತೇಜೋಮಯಂ  
ದೃಢಮಸೃಜತ್ಪೂರ್ವ-  
ಮಿಶ್ವರಃ" ಮನುಂ ೭-೧೪। ಈ ತೇಜೋರೂಪವಾದ  
ದಂಡವೇ ಪ್ರಜೆಗಳನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವುದು. ಅದೇ ಪ್ರಜೆಗಳನ್ನು  
ಶಿಕ್ಷಿಸುವುದು. ರಾಜನು ಅಜಾಗರೂಕನಾಗಿದ್ದರೂ ಈ  
ತೇಜೋರೂಪವಾದ ದಂಡವು ಯಾವಾಗಲೂ ಎಚ್ಚೆತ್ತಿರು  
ವುದರಿಂದ ಪ್ರಜೆಗಳಲ್ಲಿ ಪರಸ್ಪರ ದ್ವೇಷಾಸೂಯೆಗಳಿರು  
ವುದಿಲ್ಲ. ಹೊಡೆದಾಟವಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಚೌರ್ಯಾದಿಭಯವೂ  
ಇರುವುದಿಲ್ಲ. ಈ ಕಾರಣಗಳಿಂದ ಈ ದಂಡವೇ ಧರ್ಮ  
ವೆಂದು ತಿಳಿಯುವರು. "ದೃಢಃ ಶಾಸ್ತಿ ಪ್ರಜಾಃ ಸರ್ವಾಃ  
ದೃಢಃ ಉಪರಿಕ್ಷತಿ। ದೃಢಃ ಸುಪ್ತೇಷು ಜಾಗತಿ ದೃಢಃ ಧರ್ಮ  
ವಿದ್ಬುಧಾಃ" ಮನುಂ ೭-೧೮। ಈ ತೇಜೋರೂಪವಾದ  
ಧರ್ಮವನ್ನು ಪಾಲಿಸಲು ಅಸಂಸ್ಕೃತಮತಿಗಳಾದ ರಾಜರು  
ಅಸಮರ್ಥರಾಗುವರು. ಧರ್ಮವಿಹೀನರಾದ ರಾಜರನ್ನು  
ಇದು ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. "ದೃಢೋ ಹಿ ಸುಮಹತ್ತೇಜೋ ದುರ್ವಿ-  
ಶ್ರಾಕೃತಾತ್ಮಭಿಃ। ಧರ್ಮಾದಿಚಲಿತಂ ಹಂತಿ ನೃಪಮೇವ ಸಬಾಂಧವಮ್"  
ಮನುಂ ೭-೨೮। ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯರು ಯುಧಿಷ್ಠಿರನಿಗೆ  
ಉಪದೇಶಿಸಿದ ದಂಡ ಮತ್ತು ಧರ್ಮವ್ಯವಹಾರ  
ಗಳ ಸ್ವರೂಪಃ "ಶೃಣು ಕೌರವ್ಯ ಯೋ ದೃಢೋ ವ್ಯವಹಾರೋ  
ಯಥಾ ಚ ಸಃ। ಯಸ್ಮಿನ್ ಹಿ ಸರ್ವಮಾಯತಂ ಸ ಧರ್ಮಃ ಇತಿ ಕೇವಲಃ"।  
ಜಗತ್ತಿನ ಸಕಲ ವ್ಯವಹಾರಗಳೂ ಧರ್ಮಕ್ಕೆ ಅಧೀನ  
ವಾಗಿರುವುವು. ದಂಡವೇ ಮೂರ್ತಿಯನ್ನು ತಾಳಿ ಜಗತ್ತಿ  
ನಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವುದು. ದಂಡವೇ ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಶಿಕ್ಷಿಸು  
ವುದು. ಅದೇ ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಅನುಗ್ರಹಿಸುವುದು. "ದೃಢ  
ಃ ಸರ್ವಾತ್ಮಾ ಲೋಕೇ ಚರತಿ ಮೃತಿಮಾನ್। ಮಿಹಿನ್  
ಛಿಹಿನ್ ರಜನ್ ಕೃಹಿನ್ ದಾರಯನ್ ಪಾಟಯನ್ ತಥಾ। ಧಾತಯನ್  
ಅಭಿಧಾವನ್ ದೃಢಃ ಸರ್ವಾತ್ಮಾ ಲೋಕೇ ಚರತಿ ಮೃತಿಮಾನ್"। ಈ ದಂಡವೊಂದು  
ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಇಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ಜನರು ಅಧರ್ಮನಿರತರಾಗಿ

ದ್ವೇಷಾಸೂಯೆಗಳಿಂದ ಪರಸ್ಪರ ಹೊಡೆದಾಡುವರು.  
ದಂಡದ ಭಯವಿದ್ದರೇ ಅನ್ವೀಕ್ಷಿಕೆ (ಅರ್ಥ ತತ್ತ್ವಗಳನ್ನು  
ಹೇತುಪೂರ್ವಕ ವಿಚಾರಮಾಡುವ ವಿದ್ಯೆ) ಮೊದಲಾದುವು  
ಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರವರ್ತಿಸುವರು. ಬ್ರಹ್ಮತೇಜೋರೂಪವಾದ  
ರಾಜನ ದಂಡ (ಶಾಸನ) ದಿಂದ ಸುರಕ್ಷಿತರಾದ ಪ್ರಜೆಗಳು  
ರಾಜನನ್ನೂ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವರು. "ನ ಸ್ಯಾದ್ವದಿಹ  
ದೃಢೋ ವೈ ಪ್ರಮಥೇಯಃ ಪರಸ್ಪರಮ್। ಭಯಾದ್ವದಸ್ಯ ನಾನ್ಯೋನ್ಯಂ  
ಘನಂತಿ ಚೈವ ಯುಧಿಷ್ಠಿರಃ। ದೃಢೇನ ರಕ್ಷಯಾಣಾ ಹಿ ರಾಜಭಹರಹಃ  
ಪ್ರಜಾಃ। ರಾಜಾನಂ ವರ್ಧಯಂತೀಹ ತಸ್ಮಾದ್ವದಃ ಪರಾಯಣಮ್"।  
ರಾಜಶಾಸನರೂಪವಾದ ಈ ದಂಡವು ಲೋಕವನ್ನು ಒಂದು  
ರೀತಿ ವ್ಯವಸ್ಥೆಗೊಳಿಸಿ ಸುಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿಡುವುದು. ಸತ್ಯದಲ್ಲಿ  
ವ್ಯವಸ್ಥಿತವಾದ ಧರ್ಮವು ಬ್ರಾಹ್ಮಣರಲ್ಲಿ ನೆಲೆಗೊಳ್ಳು  
ವುದು. ಧರ್ಮಪರಾಯಣರಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣರು ದೇವತೆಗಳ  
ಪ್ರೀತ್ಯರ್ಥವಾಗಿ ಯಜ್ಞಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸುವರು. ಯಜ್ಞ  
ದಿಂದ ಸುಪ್ರೀತರಾದ ದೇವತೆಗಳು ಲೋಕವನ್ನು ಇಂದ್ರನಿಗೆ  
ಒಪ್ಪಿಸುವರು. ಸಕಲ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಪ್ರಾಣಗಳೂ ಅನ್ನಗತ  
ವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಇಂದ್ರನು ಅನ್ನವನ್ನೂ ಕೊಟ್ಟು ಪ್ರಜೆ  
ಗಳನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸುತ್ತಾನೆ. ಇದರಿಂದ ಪ್ರಜೆಗಳೂ ಸುರಕ್ಷಿತ  
ರಾಗಿ ಅವರಲ್ಲಿ ಈ ದಂಡ (ರಾಜಶಾಸನ) ವು ಜಾಗೃತವಾಗಿ  
ನಿಲ್ಲುವುದು. "ವ್ಯವಸ್ಥಾಪಯತೇ ನಿಯಮಿಮಂ ಲೋಕಂ ನರೇಶ್ವರಃ।  
ಸತ್ಯೇ ವ್ಯವಸ್ಥಿತೋ ಧರ್ಮೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೇಶ್ವರತಿಷ್ಠತೇ। ಧರ್ಮಯುಕ್ತಾ  
ದ್ವಿಜಶ್ರೇಷ್ಠಾ ದೇವಯುಕ್ತಾ ಭವಂತಿ ಚ। ಬಭೂವ ಯಜ್ಞೋ ದೇವೇಭ್ಯೋ  
ಯಜ್ಞಃ ಪ್ರೀಣಾತಿ ದೇವತಾಃ। ಪ್ರೀತಾಶ್ಚ ದೇವತಾ ಲೋಕಮಿಹ  
ಪ್ರತಿದದತ್ಯುತಃ। ಅಗ್ನಿಃ ದದಾತಿ ಶಕ್ರಶ್ಚಾಪ್ಯನುಗೃಹ್ಣಿಷ್ಠಿಮಾಃ ಪ್ರಜಾಃ।  
ಪ್ರಾಣಾಶ್ಚ ಸರ್ವಭೂತಾನಾಂ ನಿಯಮಿಮಃ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಾಃ। ತಸ್ಮಾದ್ವದಃ  
ಪ್ರತಿಷ್ಠಂತೇ ದೃಢೋ ಜಾಗತಿ ತಾಸು ಚ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೧೨೧।  
ಆದುದರಿಂದ ಬ್ರಹ್ಮತೇಜೋರೂಪವಾದ ದಂಡ (ರಾಜ  
ಶಾಸನ) ದಲ್ಲಿ ಈ ಜಗತ್ತಿನ ಸಕಲ ವ್ಯವಹಾರಗಳೂ ಸೇರಿರು  
ವುವು. ಈ ಲೋಕದ ವ್ಯವಹಾರಗಳು ಸುವ್ಯವಸ್ಥಿತವಾಗಿ  
ನಡೆಯಬೇಕಾದರೆ ರಾಜನು ಧರ್ಮದಿಂದ ಪ್ರಜಾಪರಿಪಾಲನ  
ಮಾಡಬೇಕು. ಈ ದಂಡವೇ ವ್ಯವಹಾರ. ವ್ಯವಹಾರವೇ  
ವೇದ. ವೇದವೇ ಧರ್ಮ. ಧರ್ಮವೇ ಸನ್ಮಾರ್ಗ.  
ಅಪರಾಧ ಮಾಡಿದವರು ತಾಯಿ ತಂದೆ ಸಹೋದರ ಪತ್ನಿ  
ಪುರೋಹಿತ ಯಾರೇ ಆಗಲಿ ರಾಜನ ಶಿಕ್ಷೆಗೆ ಒಳಪಡಬೇಕು.  
ಆ ರೀತಿ ನಿಷ್ಪಕ್ಷಪಾತಿಯಾದ ರಾಜನೇ ತನ್ನ ಧರ್ಮದಲ್ಲಿ  
ವಿಶ್ವಾಸವುಳ್ಳವನೆಂದು ತಿಳಿ. "ಯಶ್ಚ ದೃಢಃ ಸ ದೃಢೋ ನೋ  
ವ್ಯವಹಾರಃ ಸನಾತನಃ। ವ್ಯವಹಾರಶ್ಚ ದೃಢೋ ಯಃ ಸ ವೇದಃ ಇತಿ  
ನಃ ಶ್ರುತಿಃ। ಯಶ್ಚ ವೇದಃ ಸ ವೈ ಧರ್ಮಃ ಯಶ್ಚ ಧರ್ಮಃ ಸ ಸತ್ಯಃ॥  
ಮಾತಾ ಪಿತಾ ಚ ಭ್ರಾತಾ ಚ ಭಾರ್ಯಾ ಚೈವ ಪುರೋಹಿತಃ। ನಾದೃಢಯೋ



ವಿವಿಧ ರಾಜಾ ಯಃ ಸ್ವರ್ಗಮೇವ ತಿಷ್ಠತಿ " ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೧೨೧ |  
ಇದು ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯರು ಧರ್ಮರಾಜನಿಗೆ ಮಾಡಿದ  
ದಂಡಸ್ವರೂಪದ ಉಪದೇಶಸಂಗ್ರಹ. 31. ಸಾಮ  
ಮೊದಲಾದ ನಾಲ್ಕು ಉಪಾಯಗಳಿಲ್ಲೊಂದು. ಸಾಮ  
ದಾನ ಭೇದ ಮತ್ತು ದಂಡ ಎಂದು ಉಪಾಯಗಳು ನಾಲ್ಕು.  
32. ಅಪರಾಧಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ ರಾಜನು ಕೊಡುವ ಶಿಕ್ಷೆ.  
"ಯಥಾಪರಾಧದಂಡಾನಾಂ ಯಥಾಕಾಲಪ್ರಬೋಧಿನಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೬ |  
ರಾಜನು ಅಪರಾಧಿಗಳಿಗೆ ವಿಧಿಸುವ ಶಿಕ್ಷೆಯು ಹತ್ತು ಸ್ಥಾನ  
ಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿರಬೇಕು. ಇದು ಅಪರಾಧಮಾಡಿದ  
ಅಂಗಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಶಿಕ್ಷೆಯಾಗಿರಬೇಕು. (1) ಉಪಸ್ಥ  
(ಜನನೇಂದ್ರಿಯ), (2) ಉದರ (ಹೊಟ್ಟೆ), (3) ನಾಲಗೆ,  
(4) ಹಸ್ತಗಳು, (5) ಪಾದಗಳು, (6) ಕಣ್ಣುಗಳು,  
(7) ಮೂಗು, (8) ಕಿವಿಗಳು, (9) ಧನ ಮತ್ತು (10) ದೇಹ  
ಇವು ಹತ್ತು ಅಪರಾಧಸ್ಥಾನಗಳು. "ದಶ ಸ್ಥಾನಾನಿ ದಂಡಸ್ಯ  
ಮನುಃ ಸ್ವಾಯಮ್ಭವೋಽವಿತ್ | ಉಪಸ್ಥಮುದರಂ ಜಿಹ್ವಾ ಹಸ್ತೌ ಪಾದೌ  
ಚ ಪಶ್ಚಿಮಮ್ | ಚಕ್ಷುರ್ನಾಸಾ ಚ ಕರ್ಣೌ ಚ ಧನಂ ದೇಹಸ್ತಥೈವ ಚ"  
ಮನುಂ ೮-೧೨೪, ೨೫ | ಅಪರಾಧಿಗೆ ಶಿಕ್ಷೆಯನ್ನು ವಿಧಿಸು  
ವಾಗ ಅಪರಾಧದ ದೇಶ ಕಾಲ ಅಪರಾಧವು ಅಲ್ಪವಾದುದೇ  
ಗುರುತರವಾದುದೇ ಅಪರಾಧಿಯು ಎಂತಹ ಶಿಕ್ಷೆಯನ್ನು  
ಅನುಭವಿಸಲು ಸಮರ್ಥ ಇತ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ  
ವಿವೇಚಿಸಬೇಕು. "ಅನುಬಂಧಂ ಪರಿಜ್ಞಾಯ ದೇಶಕಾಲೌ ಚ  
ತತ್ವತಃ | ಸಾರಾಪರಾಧೌ ಚಾಲೋಕ್ಯ ದಂಡಂ ದಂಡಯೇಷು ಪಾತಯೇತ್"  
ಮನುಂ ೮-೧೨೬ | ಅಪರಾಧಿಯನ್ನು ಕರೆದು ಮೊದಲು  
ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತಿನಿಂದ ಹೇಳಿ ಮನ್ನಿಸಬೇಕು. ಅದಕ್ಕೆ ತಲೆ  
ಬಾಗದಿದ್ದರೆ ಬಾಯಿಮಾತಿನಿಂದ ಹೆದರಿಸಬೇಕು. ಅದಕ್ಕೂ  
ಹೆದರದಿದ್ದರೆ ಧನ ದಂಡವನ್ನು (ಜುಲ್ಮಾನೆ) ವಿಧಿಸಬೇಕು.  
ಅದಾದಮೇಲೆ ಮರಣದಂಡನೆ. ಅಪರಾಧಿಗಳಲ್ಲದವರನ್ನು  
ಶಿಕ್ಷಿಸುವುದೂ ಅಪರಾಧಿಗಳನ್ನು ಶಿಕ್ಷಿಸದಿರುವುದೂ ರಾಜನ  
ಅಪಕೀರ್ತಿಗೆ ಕಾರಣವಾಗುವುದಲ್ಲದೆ ಅದರಿಂದ ನರಕ  
ಪ್ರಾಪ್ತಿಯೂ ಆಗುವುದು. "ವಾಗ್ದಂಡಂ ಪ್ರಥಮಂ ಕುರ್ಯಾತ್ ಧಿಗ್ದಂಡಂ  
ತದನಂತರಮ್ | ತೃತೀಯಂ ಧನದಂಡಂ ತು ವಧದಂಡಮತಃ ಪರಮ್ ||  
ಅದೃಷ್ಟಾನ್ ದೃಷ್ಟಯನ್ ರಾಜಾ ದೃಷ್ಟಾಂಶ್ಚೈವಾಪ್ಯದೃಷ್ಟಯನ್ |  
ಅಯಶೋ ಮಹದಾಪ್ನೋತಿ ನರಕಂ ಚೈವ ಗಂಚತಿ" ಮನುಂ ೮ |  
ಆದುದರಿಂದ ರಾಜನು ಅಪರಾಧಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾದ ಶಿಕ್ಷೆ  
ಯನ್ನು ವಿಧಿಸಬೇಕು. 33. ದುಷ್ಕನಿಗ್ರಹ. ದುಷ್ಕನಿಗ್ರಹೋ  
ದಂಡಃ" ಸಾಂ ೪೦ ೩ |

ದೃಷ್ಟಕ ದಂಡಕ(ಪುಂ) 1. ಸಣ್ಣ ಕೋಲು, ತುಂಡು ದೊಣ್ಣೆ.  
ಹ್ರಸ್ವೋ ದಂಡಃ "ಕನ್" (೪-೩-೮೬) | 2. ವತ್ತರತ್ತಾಕರ  
ದಲ್ಲಿ ಉಕ್ಕುವಾದ 26 ಕ್ಕಿಂತಲೂ ಅಧಿಕಾಕ್ಷರ ಪಾದಗಳುಳ್ಳ

ಒಂದು ಛಂದಸ್ಸು. ಪ್ರತಿ ಪಾದದಲ್ಲಿಯೂ ಮೊದಲು ನ  
ಗಣದ್ವಯ ಅನಂತರ ಏಳು ರ ಗಣಗಳಿದ್ದರೆ "ವೃಷದಾಸ-  
ಪ್ರಯಾತ" ಎಂಬ ದಂಡಕವಾಗುವುದು. "ಯದಿಹ ನಯಗಲಂ ತತಃ  
ಸಪ್ತ ರೇಫಾಸ್ತದಾ ವೃಷದಾಸಪ್ರಯಾತೋ ಭವೇದೃಷ್ಟಕಃ" ವೃಂ ೨೦ |

ಇದರ ಗಣನಿನ್ಯಾಸ:

ನ ನ ರ ರ ರ ರ ರ ರ  
||| ||| ೦|೦ ೦|೦ ೦|೦ ೦|೦ ೦|೦ ೦|೦ ೦|೦

ಈ ಲಕ್ಷಣದ ಮುಂದೆ ಒಂದೊಂದು ರ ಗಣವು ಹೆಚ್ಚುತ್ತಾ  
ಬಂದರೆ ದಂಡಕದ ಹೆಸರೂ ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿ ಕ್ರಮವಾಗಿ  
ಅರ್ಣಃ ಅರ್ಣವಃ ವ್ಯಾಲಃ ಜಿಮೂತಃ ಲೀಲಾಕರಃ ರದಾಮಃ ಶಕ್ಷಃ  
ಇತ್ಯಾದಿ ದಂಡಕಗಳಾಗುವುವು. "ಪ್ರತಿಚರಣವಿವೃದ್ಧರೇಫಾಃ  
ಸ್ಯುರರ್ಣಾರ್ಣವವ್ಯಾಲಜಿಮೂತಲೀಲಾಕರೋದಾಮಶಂಖಾದಯಃ" ವೃಂ ೨೦ |

3. ಇಕ್ಷ್ವಾಕುರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ದೃಷ್ಟಕೋ ನೃಪತಿಃ  
ಕಾಮಾತ್ ಕ್ರೋಧಾನ್ವ ಜನಮೇಜಯಃ" | (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 4.  
ದಂಡಕಾರಣ್ಯ. "ಪ್ರಾಪ್ತಾನಿ ದುಃಖಾನ್ಯಪಿ ದೃಷ್ಟಕೇಷು ಸಂಚಿಂತ್ಯ-  
ಮಾನಾನಿ ಸುಖಾನ್ಯಭೂವನ್" ರಘುಂ ೧೪-೨೫ | "ದೃಷ್ಟಕಾನಘ್ಯ-  
ವಾತ್ಸಾಯಿ ವೀರ ರಕ್ಷಃಪ್ರಕಾಂಡಕೌ" ಭಟ್ಟಿಂ ೫-೬ | (ಸ್ತ್ರೀಂ)

-ಕಾ -ಕಾ. 5. ದಂಡಕಾರಣ್ಯ, ದಂಡಕಾವನಪ್ರದೇಶ.  
"ಸ ದೃಷ್ಟಕಾಯಾಂ ಕೃತದೃಷ್ಟಕಾಯಾಂ ಸ್ವಸಾರಮೇನಾಂ ಪ್ರಥಿತಸ್ವಸಾರಃ"  
ಚಂ ೨೦ |

ದೃಷ್ಟಕರ್ಮನ್ ದಂಡಕರ್ಮನ್ (ನಂ) ಶಿಕ್ಷೆ, ದಂಡನೆ. ದೃಷ್ಟಸ್ಯ  
ಕರ್ಮ | "ದೇಶಕಾಲವಯಃಶಕ್ತಿ ಸಂಚಿಂತ್ಯ ದೃಷ್ಟಕರ್ಮಣಿ"  
ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೨೭೫ |

ದೃಷ್ಟಗೌರೀ ದಂಡಗೌರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸು.  
"ಉರ್ವಶೀ ಮಿಶ್ರಕೇಶಿ ಚ ದೃಷ್ಟಗೌರೀ ವರುಣಿನಿ" ಭಾಂ ಬಂ |  
ದೃಷ್ಟಗ್ರಾಹ ದಂಡಗ್ರಾಹ (ವಿಂ) ಕೋಲನ್ನು ಹಿಡಿದು  
ಕೊಂಡಿರುವವನು. ದೃಷ್ಟಂ ಗೃಹ್ಣಾತಿ - ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ)  
"ಅಣ್" (೩-೨-೧) |

ದೃಷ್ಟಜನ ದಂಡಜ್ಞ (ವಿಂ) ಕೈಯಿಂದ ಮತ್ತು ಕೋಲಿನಿಂದ  
ಹೊಡೆದು ಹಿಂಸಿಸುವವನು. "ಯಸ್ಯ ಸ್ತೇನಃ ಪುರೇ ನಾಸ್ತಿ  
ನಾನ್ಯಸ್ತ್ರೀಗೋ ನ ದುಷ್ಟವಾಕ್ | ನ ಸಾಹಸಿಕದೃಷ್ಟಜನೌ ಸ  
ರಾಜಾ ಶಕ್ರಲೋಕಭಾಕ್" ಮನುಂ ೮-೩೮೬ |

ದೃಷ್ಟಚಕ್ರ ದಂಡಚಕ್ರ (ನಂ) ಸೇನಾಸಮೂಹ, ಸೈನ್ಯಗಳ  
ಗುಂಪು.

ದೃಷ್ಟದಾಸ ದಂಡದಾಸ(ಪುಂ) ಶಿಕ್ಷೆಯ ಹಣ (ಜುಲ್ಮಾನೆ ಹಣ)  
ವನ್ನು ಕೊಡಲು ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದೆ ಅದರ ಬದಲು ಸೇವಕ  
ನಾಗಿರುವವನು. ದೃಷ್ಟೇನ ಕೃತೋ ದಾಸಃ | "ಧ್ವಜಾಹತೋ ಭಕ್ತ-  
ದಾಸೋ ಗೃಹಜಃ ಕ್ರಿತದತ್ತಿಮೌ | ಪೇತ್ರಿಕೋ ದೃಷ್ಟದಾಸಃ ಸಪ್ತತೇ  
ದಾಸಯೋನಯಃ" ಮನುಂ ೮-೪೧೬ |



**ದಂಡಧರ ದಂಡಧರ (ಪುಂ)** 1. ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. ದಂಡ  
ಪ್ರಾಣಿನಾಂ ಕರ್ಮನುಸಾರಿಣಿಂ ಶಿಕ್ಷಾಂ ಧರತಿ - ದಂಡಸ್ಯ ಧರಃ ।  
2. ರಾಜ, ದೊರೆ. "ಬಲನಿಷ್ಠದನಮರ್ಥಪತಿ ಚ ತಂ ಶ್ರಮನುಂ  
ಮನುಷ್ಯಧರಾನ್ವಯಮ್" ರಘುಂ ೧-೩ । (ವಿಂ) 3. ಕೋಲನ್ನು  
ಹಿಡಿದಿರುವವನು. 4. ಕುಲಾಲ, ಕುಂಬಾರ. 5. ಶಿಕ್ಷೆ  
ಯನ್ನು ಕೊಡುವವನು, ಶಿಕ್ಷೆಯನ್ನು ವಿಧಿಸುವವನು.

**ದಂಡಧಾರ ದಂಡಧಾರ (ಪುಂ)** 1. ಯಮಧರ್ಮರಾಯ.  
2. ರಾಜ, ದೊರೆ. ದಂಡಂ ಧರತಿ-ಧೃನ್ (ಧಾರಣೆ) "ಅನ್"  
(೩-೨-೧) । (ವಿಂ) 3. ಕೋಲನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವವನು.

**ದಂಡನ ದಂಡನ (ನಂ)** ಶಿಕ್ಷಿಸುವುದು, ದಂಡಿಸುವುದು. ದಂಡ  
(ದಂಡನಿಪಾತನೆ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

**ದಂಡನಾಯಕ ದಂಡನಾಯಕ (ಪುಂ)** 1. ಸೇನಾಪತಿ. ದಂಡಾನ್  
ಸೇನ್ಯಾನಿ ನಯತಿ-ಣಿಕ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಫ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।  
2. ರಾಜ, ದೊರೆ. 3. ನ್ಯಾಯಾಧಿಪತಿ.

**ದಂಡನೀತಿ ದಂಡನೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ರಾಜನೀತಿ, ಅರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರ.  
ದಂಡೇನ ನಿಯತೇ-ದಂಡೋ ನಿಯತೇಽನಯಾ ವಾ - ಣಿಕ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ)  
ಕರ್ಮಂ ಕರಂ ವಾ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) । ಸಾಮ  
ಮೊದಲಾದ ನಾಲ್ಕು ಉಪಾಯಗಳಲ್ಲಿ ದಂಡವು ಪ್ರಧಾನ  
ವಾದುದು. ಧರ್ಮದಿಂದ ಪ್ರಜಾಪರಿಪಾಲನೆಗಾಗಿ ರಾಜನಿ  
ಗೋಸ್ಕರ ಪರಮಾತ್ಮನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದ ಬ್ರಹ್ಮತೇಜೋರೂಪ  
ವಾದ ಈ ದಂಡವನ್ನು ರಾಜನು ಧರಿಸಿರುವುದರಿಂದ ರಾಜ  
ನಿಗೂ ದಂಡವೆಂದು ಹೆಸರು. ರಾಜನು, ಹೇತುಪೂರ್ವಕ  
ಅರ್ಥತತ್ತ್ವಗಳ ಪರೀಕ್ಷಾರೂಪವಾದ ಅನ್ವೀಕ್ಷಿಕೆ ಮೊದ  
ಲಾದವುಗಳ ಯೋಗಕ್ಷೇಮಸಾಧನವಾದ ದಂಡವನ್ನು  
ತನ್ನ ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿ ನಯನಮಾಡಿ ಅನುಷ್ಠಾನಕ್ಕೆ ತರುವುದ  
ರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ "ದಂಡನೀತಿ" ಎಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು.  
"ದಮೋ ದಂಡ ಇತಿ ಕ್ಷ್ಯಾತಸ್ತಾತ್ಸತ್ಯಾದ್ಧಂಡೋ ಮಹೀಪತಿಃ । ತಸ್ಯ  
ನೀತಿರ್ದಂಡನೀತಿನೈಯನಾಶ್ಚೀತಿರೀಚ್ಯತೇ" ಕಾಮಂದಂ । ಮನುಷ್ಯನ  
ವ್ಯವಹಾರಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ ಭೂಮಿ ಧನ ಇವುಗಳ ಲಾಭ  
ಮತ್ತು ಲಬ್ಧವಾದ ಇವುಗಳ ರಕ್ಷಣೆಗೆ ಉಪಾಯಗಳನ್ನು  
ಹೇಳುವ ಶಾಸ್ತ್ರವು "ಅರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರ". ಕೃಷಿ ವಾಣಿಜ್ಯ  
ಪಶುಪಾಲನೆಗಳ ಮತ್ತು ಭೂಮಿ ಧನಕನಕಾದಿಗಳ ಯೋಗ  
ಕ್ಷೇಮವು ರಾಜನಿಗೆ ಸೇರಿದುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ "ರಾಜ  
ನೀತಿ" ಎಂದೂ ಹೆಸರು. "ಆನ್ವೀಕ್ಷಿಕೀತ್ರಯೀವಾತಿನಾಂ  
ಯೋಗಕ್ಷೇಮಸಾಧನೋ ದಂಡಃ, ತಸ್ಯ ನೀತಿಃ ದಂಡನೀತಿಃ" ಅರ್ಥಶಾಂ ।  
2. ಸುವ್ಯವಸ್ಥಿತ ರಾಜ್ಯಪದ್ಧತಿ, ನ್ಯಾಯವಾದ ರಾಜ್ಯದ  
ಆಡಳಿತ. 3. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

**ದಂಡನೀಯ ದಂಡನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಶಿಕ್ಷೆ  
ಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. 3. ಶಿಕ್ಷಿಸಲು ಶಕ್ಯನಾದ. 4. ಶಿಕ್ಷಿಸ

ಬೇಕಾದ. ದಂಡ (ದಂಡನಿಪಾತನೆ) ಕರ್ಮದೊ "ಅನೀಯರ್"  
(೩-೧-೯೬) । "ತವ್ಯಃ" । -ಯಿತವ್ಯಃ - ಯಿತವ್ಯಃ.

**ದಂಡನೆತೃ ದಂಡನೆತೃ (ಪುಂ)** ಅನ್ವೀಕ್ಷಿಕೆ ಮೊದಲಾದವು  
ಗಳಿಗೆ ಯೋಗಕ್ಷೇಮ ಸಾಧನವಾದ ದಂಡವನ್ನು ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿ  
ನಯನಮಾಡಿ ಅನುಷ್ಠಾನಕ್ಕೆ ತರುವ ರಾಜ. ದಂಡಸ್ಯ  
ಆನ್ವೀಕ್ಷಿಕಯಾದಿನಾಂ ಯೋಗಕ್ಷೇಮಸಾಧನಸ್ಯ ನೇತಾ । ತಸ್ಯ ಭಾವಃ  
"ತ್ವಃ" (೫-೧-೧೧೯) । -ನೇತೃತ್ವಮ್ - ನೇತೃತ್ವಮ್.  
ದಂಡವನ್ನು ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿ (ರಾಜ್ಯದ ಜನರಲ್ಲಿ) ಅನ್ವಯ  
ಮಾಡುವುದು (ಅನುಷ್ಠಾನಕ್ಕೆ ತರುವುದು). "ಸೇನಾಪತ್ಯಂ  
ಚ ರಾಜ್ಯಂ ಚ ದಂಡನೆತೃತ್ವಮೇವ ಚ । ಸರ್ವಲೋಕಾಧಿಪತ್ಯಂ ಚ  
ವೇದಶಾಸ್ತ್ರವಿದರ್ಹತಿ" ಮನುಂ ೧೨-೧೦೦ ।

**ದಂಡಪಾಸುಲ ದಂಡಪಾಸುಲ (ಪುಂ)** ದ್ವಾರಪಾಲಕ,  
ಬಾಗಿಲನ್ನು ಕಾಯುವವನು. ದಂಡೇನ ಲಗುಡೇನ ಪಾಸುಲಃ ।

**ದಂಡಪಾಣಿ ದಂಡಪಾಣಿ (ಪುಂ)** 1. ಯಮಧರ್ಮರಾಯ.  
ದಂಡಃ ಪಾಣಿ ಯಸ್ಯ । 2. ಕಾಶೀಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿರುವ  
ಪರಮೇಶ್ವರ.

**ದಂಡಪಾತ ದಂಡಪಾತ (ಪುಂ)** ದಂಡವು ಬೀಳುವುದು, ಶಿಕ್ಷೆ  
ಯನ್ನು ವಿಧಿಸುವುದು. ದಂಡಸ್ಯ ಪಾತಃ ।

**ದಂಡಪಾತನ ದಂಡಪಾತನ (ನಂ)** ಶಿಕ್ಷೆಯನ್ನು ವಿಧಿಸುವುದು.  
ದಂಡಸ್ಯ ಪಾತನಮ್ ।

**ದಂಡಪಾರುಷ್ಯ ದಂಡಪಾರುಷ್ಯ (ನಂ)** ಹಿಂಸಿಸುವಿಕೆ, ಕೈಯಿಂದ  
ಹೊಡೆಯುವುದು ಕಾಲಿನಿಂದ ಒದೆಯುವುದು ದೊಣ್ಣೆ  
ಕತ್ತಿ ಮೊದಲಾದವುಗಳಿಂದ ಹೊಡೆಯುವುದು ಮಣ್ಣು  
ಬೂದಿ ಮುಂತಾದವನ್ನು ಎರಚುವುದು ಈ ರೀತಿ ನಾನಾ  
ವಿಧ ಹಿಂಸೆಯನ್ನು ಕೊಡುವುದು. ದಂಡೇನ ದೇಹೇನ ಪಾರುಷ್ಯಂ  
ವಿರುದ್ಧಾಚರಣಮ್ । "ಪರಗಾತ್ರೇಷ್ವಭಿವ್ರೋಹೋ ಹಸ್ತಪಾದಾಯುಧಾ-  
ದಿಭಿಃ । ಭಸ್ಮಾದಿಭಿಃಶೋಷಾತೋ ದಂಡಪಾರುಷ್ಯಮುಚ್ಯತೇ"  
ನಾರದಃ ।

**ದಂಡಪಾಲ ದಂಡಪಾಲ (ಪುಂ)** 1. ನ್ಯಾಯಮೂರ್ತಿ,  
ನ್ಯಾಯಾಧಿಪತಿ. 2. ಸೇನಾಪತಿ. ದಂಡಂ ಪಾಲಯತಿ-ಪಾಲ  
(ರಕ್ಷಣೆ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) । 3. ದ್ವಾರಪಾಲಕ.

**ದಂಡಪಾಶಿಕ ದಂಡಪಾಶಿಕ (ಪುಂ)** ಮಾರಕ, ಕೊಲ್ಲುವವನು,  
ಕೊಚ್ಚುಕ, ನೇಣು ಹಾಕುವವನು, ಗಲ್ಲಿಗೆ ವಿರಿಸುವವನು.  
"ಶಾಙ್ಗೇರವ, ಉಚ್ಯತಾಂ ಮದ್ವಚನಾತ್ ಕಾಲಪಾಶಿಕೋ ದಂಡಪಾಶಿ-  
ಕಶ್ಚ" ಮುದ್ರಾಂ ।

**ದಂಡಪ್ರಣಾಮ ದಂಡಪ್ರಣಾಮ (ಪುಂ)** ದಂಡಾಕಾರವಾಗಿ  
ಮುಖವಡಿಯಾಗಿ ಮಲಗಿ ಮಾಡುವ ನಮಸ್ಕಾರ. ದಂಡವತ್  
ಕೃತಃ ಪ್ರಣಾಮಃ ।



**ದಂಡಭಜ್ಞ ದಂಡಭಂಗ** (ಪುಂ) ಶಿಕ್ಷೆಯನ್ನು ರದ್ದುಮಾಡುವುದು. ದಂಡಸ್ಯ ಭಜ್ಞಃ | "ಯಸ್ಯ ದೇವಸ್ಯ ನ ದಂಡಭಜ್ಞಃ ಕುತಶ್ಚನರ್ಥೇ ಶ್ರುತಪೂರ್ವ ಆಸೀತ್" ಭಾಗಂ ೬-೩-೨ |

**ದಂಡಭೃತ್ ದಂಡಭೃತ್** (ಪುಂ) 1. ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. 2. ಕುಲಾಲ, ಕುಂಬಾರ. ದಂಡಂ ವಿಭಿತಿ-ಛು ಭೃತ್ (ಧಾರಣೆ) "ವಿಭಿ" (೩-೨-೭೬) | (ವಿಂ) 3. ದೊಣ್ಣೆಯನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವವನು.

**ದಂಡಯತ್ ದಂಡಯತ್** (ವಿಂ) ದಂಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಶಿಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ದಂಡ (ದಂಡನಿಪಾತನೆ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ. "ಸ್ಥಿತೀ ದಂಡಯತೋ ದಂಡಯಾನ್ ಪರಿಣೇತುಃ ಪ್ರಸೂತೇ" ರಘುಂ ೧-೨೫ |

**ದಂಡಯಾತ್ರಾ ದಂಡಯಾತ್ರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸಲು ಹೊರಡುವ ಯಾತ್ರೆ, ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಜಯಿಸಲು ಮಾಡುವ ಪ್ರಯಾಣ. ದಂಡಾರ್ಥ ಶತ್ರುದಮನಾರ್ಥ ಯಾತ್ರಾ | 2. ಮೆರವಣಿಗೆ. 3. ಮದುವೆ ವರನ ಮೆರವಣಿಗೆ, ಮದುವಣಿಗೆನ ಮೆರವಣಿಗೆ. "ದಂಡಯಾತ್ರಾ ದಿಗ್ವಿಜಯೇ ಸಂಯಾನವರ-ಯಾತ್ರಯೋಃ" ಮೇದಿಂ |

**ದಂಡಯಾಮ ದಂಡಯಾಮ** (ಪುಂ) 1. ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. 2. ಅಗಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿ. 3. ದಿವಸ. "ದಂಡಯಾಮಸ್ತು ಕಿನಾಶೋ ದಿವಸೇ ಕುಂಭಸಮ್ಮವೇ" ಮೇದಿಂ |

**ದಂಡಯಿತ್ ದಂಡಯಿತ್** (ವಿಂ) ದಂಡಿಸುವವನು, ಶಿಕ್ಷಿಸುವವನು. ದಂಡ (ದಂಡನಿಪಾತನೆ) + ಣಿಚ್ "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫) | -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

**ದಂಡವಾದಿನ್ ದಂಡವಾದಿನ್** (ಪುಂ) 1. ದ್ವಾರಪಾಲಕ. ದಂಡೇನ ತದ್ವುತಾಲೇನ ವದತಿ-ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಣಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮) | 2. ಶಿಕ್ಷೆಯನ್ನು ವಿಧಿಸಿ ಹೇಳುವ ನ್ಯಾಯಾಧಿಪತಿ. ದಂಡ + ವದ "ಣಿನಿಃ" (೩-೩-೧೭೦) |

**ದಂಡವಾಸಿನ್ ದಂಡವಾಸಿನ್** (ಪುಂ) ದ್ವಾರಪಾಲಕ.

**ದಂಡವಿಷ್ಕಮ್ಭ ದಂಡವಿಷ್ಕಂಭ** (ಪುಂ) ಕಡೆಗೋಲಿನ ಹಗ್ಗವನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಕಂಬ, ಮೊಸರನ್ನು ಕಡೆಯುವ ಕೋಲಿಗೆ ಆಧಾರವಾದ ಕಂಬ. ದಂಡಂ ಮನ್ಯಾನ್ ವಿಷ್ಕಮ್ಭಾತಿ-ಸ್ಕಮ್ಭು (ರೋಧನೆ) "ಅಞ್" (೩-೨-೧) |

**ದಂಡವ್ಯುಹ ದಂಡವ್ಯುಹ** (ಪುಂ) ಸೈನ್ಯದ ವ್ಯುಹ, ಸೈನ್ಯಗಳನ್ನು ದಂಡಾಕಾರವಾಗಿ ಸಾಲಿಸಲಾಗಿ ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು. ದಂಡಸಂಕ್ರಮಣೋ ವ್ಯುಹಃ | ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ದಳಾಧಿಪತಿ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ರಾಜ ಹಿಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ಸೇನಾಪತಿ ಎರಡೂ ಪಾರ್ಶ್ವ

ಗಳಲ್ಲಿ ಅನೆಗಳು ಅವುಗಳ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಕುದುರೆಗಳು ಅಮೇಲೆ ಕಾಲಾಳುಗಳು ಈ ರೀತಿ ಸುತ್ತಲೂ ವ್ಯುಹವನ್ನು ರಚಿಸಿಕೊಂಡು ರಾಜನು ದಿಗ್ವಿಜಯಕ್ಕೆ ಹೊರಡಬೇಕು. "ದಂಡವ್ಯುಹೇನ ತನ್ಮಾರ್ಗಂ ಯಾತು ಶಕಟೇನ ವಾ | ಬರಾಹಮಕರಾಭ್ಯಾಂ ವಾ ಸೂಚ್ಯಾ ವಾ ಗರ್ಹಣೇನ ವಾ" ಮನುಂ ೭-೧೮೭ |

**ದಂಡಸಹಾಯ ದಂಡಸಹಾಯ** (ಪುಂ) ರಾಜನು ದುಷ್ಟರನ್ನು ಶಿಕ್ಷಿಸುವ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಹಾಯಕ. ದಂಡೇ ಸಹಾಯಕಃ | "ದಂಡೇ ಸುಹೃತ್ಕುಮಾರಾಢವಿಕಾಃ ಸಾಮಂತಸೇನಿಕಾಃ" ಸಾಂ ೩-೪೫ |

**ದಂಡಸ್ಥಾನ ದಂಡಸ್ಥಾನ** (ನಂ) ಶಿಕ್ಷೆಗೆ ಅರ್ಹವಾದ ಸ್ಥಾನಗಳು, ರಾಜನು ಅಪರಾಧಿಗಳಿಗೆ ವಿಧಿಸುವ ಶಿಕ್ಷೆಯ ಸ್ಥಾನ, ಉಪಸ್ಥ ಉದರ ಮುಂತಾದುದು. ["ದಂಡ" ಪದದ 32 ನೆಯ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ದಂಡಾಜಿನ ದಂಡಾಜಿನ** (ನಂ) 1. ದಂಡ ಮತ್ತು ಅಜಿನ. ದಂಡಶ್ಚ ಅಜಿನಶ್ಚ ಅನಯೋಃ ಸಮಾಹಾರಃ | 2. ದಂಭ, ಮೋಸ, ಮಂಚನೆ. ದಂಡ ಮತ್ತು ಅಜಿನಧಾರಣೆಯಿಂದ ಜನರನ್ನು ಮಂಚಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ದಂಡಾಜಿನಂ ಚಲೇನ ಧಾರ್ಯತಯಾಸ್ತಸ್ಯ "ಅಚ್" (೫-೨-೧೨೭) | "ದಮ್ಭೋ ದಂಡಾಜಿನಂ ಕೂಟಂ ದೌನ್ದುಭಿಃ ಕ್ಷಂದನೋಪಧಾ" ವೇಜಂ |

**ದಂಡಾಡಣಿ ದಂಡಾಡಣಿ** (ಅವ್ಯಂ) ದೊಣ್ಣೆಗಳ ಹೊಡೆದಾಟದಿಂದ ನಡೆಯುವ ಯುದ್ಧ. ದಂಡೇಶ್ಚ ದಂಡೇಶ್ಚ ಪ್ರಹೃತ್ಯೇದಂ ಪ್ರವೃತ್ತಂ ಯುದ್ಧಮ್ "ಙ್" ಪೂರ್ವಪದಸ್ಯ ದೀರ್ಘಃ (೫-೪-೧೨೭) |

**ದಂಡಾಧಿಪ ದಂಡಾಧಿಪ** (ಪುಂ) ಶಿಕ್ಷೆಯನ್ನು ವಿಧಿಸುವ ನ್ಯಾಯಾಧಿಪತಿ. -ಅಧಿಪತಿಃ -ಅಧಿಪತಿಃ.

**ದಂಡಾಪುಪ ದಂಡಾಪುಪ** (ಪುಂ) ದಂಡವನ್ನು ಆಕರ್ಷಿಸಿದಾಗ ಆಗುವ ಅದರಲ್ಲಿರುವ ಅಪೂಪಗಳ ಆಕರ್ಷಣ. ದಂಡೇ ದಂಡಸ್ಯಾಕರ್ಷೇ ತ್ ಗತಸ್ಯಾಪುಪಸ್ಯಾಪ್ಯಾಕರ್ಷಃ | ದಂಡವನ್ನು ಎಳೆದರೆ ಅದರಲ್ಲಿ ಸೇರಿರುವ ಅಪೂಪಗಳನ್ನೂ ಆಕರ್ಷಿಸಿತು ಎಂದರ್ಥ. ಇಲಿಯು ದಂಡವನ್ನು ತಿಂದಿತೆಂದರೆ ಅದರಲ್ಲಿರುವ ಅಪೂಪಗಳನ್ನೂ ತಿಂದಿತೆಂಬ ಅರ್ಥಬರುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ "ದಂಡಾಪುಪನ್ಯಾಯ" ಎಂದು ಹೆಸರು. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ ಎರಡು ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದನ್ನು ಸಾಧಿಸಿದರೆ ಮತ್ತೊಂದನ್ನೂ ಸಾಧಿಸಿದಂತಾಯಿತು. ಇಂತಹ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ದಂಡಾಪುಪನ್ಯಾಯವನ್ನು ಅನ್ವಯಿಸುವರು.

**ದಂಡಾಪುಪಿಕಾ ದಂಡಾಪುಪಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಂಡಾಪುಪನ್ಯಾಯ. "ದಂಡಾಪುಪಿಕಯಾನ್ಯಾರ್ಥಗಮೋರ್ಥಾಪತ್ತಿರೀಪ್ಯತೇ" ಸಾಂ ೩-೧೦-೮೩ |



**ದಣ್ಣಾರ ದಂಡಾರ(ಪುಂ)** 1. ಮದಿಸಿದ ಅನೆ. 2. ಕುಂಬಾರನ ಚಕ್ರ. 3. ಧನುಸ್ಸು. 4. ದೋಣೆ. 5. ತೆಪ್ಪು, ಹರಿ ಗೋಲು. 6. ರಥ. ದಣ್ಣ ಕೃಚ್ಛತಿ - ಕೃ (ಗತೌ) "ಅನ್" (೩-೨-೧)। "ದಣ್ಣಾರೋ ವಾಹನೇ ಮತ್ತವಾರಣೇ ಶರಯನ್ತ್ರಕೇ। ಕುಮ್ಮಕಾರಸ್ಯ ಚಕ್ರೇ ಚ" ಮೇದಿಂ।

**ದಣ್ಣಾಸನ ದಂಡಾಸನ (ನಂ)** 1. ನೆಲದ ಮೇಲೆ ದಂಡಾಕಾರ ವಾಗಿಮಲಗಿಕೊಂಡು ಹಾಕುವ ಒಂದು ಆಸನ, ಯೋಗಾಸನ ಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. 2. ಒಂದು ಬಾಣ. "ತ್ರಿಭಾಗ-ಶಲ್ಯನಾರಾಚೋ ದ್ವೌ ದಣ್ಣಾಸನದಣ್ಣಿಕೌ" ವೇಜಂ।

**ದಣ್ಣಾಹತ ದಂಡಾಹತ (ನಂ)** ಕಡೆಗೋಲಿನಿಂದ ಕಡೆಯ ಲ್ಲಿಟ್ಟು ಮೊಸರು. ದಣ್ಣೇನ ಮನ್ಯನದಣ್ಣೇನ ಆಹತಮ್। "ದಣ್ಣಾಹತ ಕಾಲಶೇಯಮರಿಷ್ಠಮಪಿ ಗೋರಸಃ" ಅಮಂ।

**ದಣ್ಣಿಕ ದಂಡಿಕ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. 2. ಮೂರು ಭಾಗದಷ್ಟು ಕಬ್ಬಿಣದ ಸಲಾಕೆಯುಳ್ಳ ಬಾಣ. "ತ್ರಿಭಾಗಶಲ್ಯನಾರಾಚೋ ದ್ವೌ ದಣ್ಣಾಸನದಣ್ಣಿಕೌ" ವೇಜಂ। 3. ದ್ವಾರಪಾಲಕ, ಕಾವಲುಗಾರ. (ವಿಂ) 4. ದಂಡವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ. ದಣ್ಣೋಸ್ತಾಸ್ತಿ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೪)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ -ಕಾ. 5. ರಜ್ಜು, ಹಗ್ಗ. 6. ಮುಕ್ತಾ ಹಾರ, ಮುತ್ತಿನ ಸರ.

**ದಣ್ಣಿತ ದಂಡಿತ (ವಿಂ)** ದಂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ದಣ್ಣ (ದಣ್ಣನಿಪಾತನೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ತಾಡಿತೋಽಪಿ ದುರ್ದುಕ್ತೋಽಪಿ ದಣ್ಣಿತೋಽಪಿ ಮಹಿಭುಜಾ। ಯೋ ನ ಚಿಂತಯತೇ ಪಾಪಂ ಸ ಭೃತ್ಯೋಽರ್ಹೋ ಮಹಿಭುಜಾಮ್" ಪञ्ಚತಂ।

**ದಣ್ಣಿನ್ ದಂಡಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ದ್ವಾರಪಾಲಕ, ಕಾವಲುಗಾರ. ದಣ್ಣೋಸ್ತಾಸ್ತಿ "ಙ್ನಿನ್" (೪-೨-೧೧೪)। 2. ಯಮ ಧರ್ಮರಾಯ. 3. ಸೂರ್ಯನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ. 4. ದಂಡಿ ಕವಿ, ದಶಕುಮಾರಚರಿತ ಕಾವ್ಯಾರ್ಥ ಮೊದಲಾದುವು ಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಕವಿ. 5. ಯತಿ, ಸಂನ್ಯಾಸಿ. 6. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 7. ರಾಜ, ದೊರೆ. 8. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. 9. ದೋಣೆ ಹಡಗುಗಳಿಗೆ ಹುಟ್ಟುಹಾಕುವವನು. (ವಿಂ) 10. ಕೋಲು ಹಿಡಿದಿರುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪)। -ನಿ -ನೀ.

**ದಣ್ಣೋಽಮ ದಂಡೋಽಮ (ಪುಂ)** ಕೋಲನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವುದು, ಒಬ್ಬನನ್ನ ಹೊಡೆಯಲು ದಂಡವನ್ನು ಹಿಡಿ ದೆತ್ತುವುದು. ದಣ್ಣಸ್ಯ ಉಚಮಃ। "ವಿಪ್ರದಣ್ಣೋಽಮೇ ಕೃಚ್ಛ-ಸ್ವತಿಕೃಚ್ಛೋ ನಿಪಾತನೆ" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೨೯೨।

**ದಣ್ಣಚ ದಂಡ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. ದಣ್ಣಚತೇ-ದಣ್ಣ (ದಣ್ಣನಿಪಾತನೆ) + ಣಿಚ್ "ಞ್" (೩-೧-೧೨೪)।

2. ಶಿಕ್ಷೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದ, ಶಿಕ್ಷೆಯನ್ನು ವಿಧಿಸಲು ತಕ್ಕವನಾದ. ದಣ್ಣಮಹಂತಿ - ದಣ್ಣ "ಯತ್" (೪-೧-೬೬)। "ಸ್ಥಿತೀ ದಣ್ಣಯತೋ ದಣ್ಣಚಾನ್ ಪರಿಣೇತುಃ ಪ್ರಸೂತಯೇ" ರಘುಂ ೧-೨೪।

**ದತ್ತ ದತ್ತ (ಪುಂ)** 1. ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಪುತ್ರರಲ್ಲೊಬ್ಬ. ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಪುತ್ರರು: "ಔರಸಃ ಕ್ಷೇತ್ರಜಶ್ಚೈವ ದತ್ತಃ ಕೃತ್ರಿಮ ಏವ ಚ। ಗೃಹೋತ್ಪನ್ನೋಽಪಿವಿದ್ವಾಶ್ಚ ದಾಯಾದಾ ಬಾನ್ಧವಾಶ್ಚ ಷಟ್॥ ಕಾನೀನಶ್ಚ ಸಹೋದಶ್ಚ ಕ್ರೌತಃ ಪೌನರ್ಮವಸ್ತಥಾ। ಸ್ವಯಂ-ದತ್ತಶ್ಚ ಶೌದ್ರಶ್ಚ ಷಡ್ದಾಯಾದಬಾನ್ಧವಾಃ" ಮನುಂ ೯-೧೪೯, ೬೦। 2. ದತ್ತಾತ್ರೇಯ. ಪುತ್ರಾರ್ಥಿಯಾಗಿ ತಪಸ್ಸು ಮಾಡಿದ ಅತ್ರಿ ಮಹರ್ಷಿಗೆ ತ್ರಿಮೂರ್ತಿ (ಬ್ರಹ್ಮವಿಷ್ಣುಮಹೇಶ್ವರರು) ಗಳು ತಮ್ಮ ಒಬ್ಬೊಬ್ಬರ ಅಂಶದಿಂದಲೂ ಒಬ್ಬೊಬ್ಬ ಮಗನು ಹುಟ್ಟುವಂತೆ ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದರು. ಬ್ರಹ್ಮನ ಅಂಶದಿಂದ ಚಂದ್ರ, ವಿಷ್ಣು ವಿನ ಅಂಶದಿಂದ ದತ್ತಾತ್ರೇಯ, ಮಹೇಶ್ವರನ ಅಂಶದಿಂದ ದುರ್ವಾಸಮುನಿ ಇವರು ಜನಿಸಿದರು. "ಅತ್ರೇಃ ಪತ್ನಯನಸ್ಯಾ ತ್ರಿನ್ ಜಜ್ಞೇ ಸುಯಶಸಃ ಸುತಾನ್। ದತ್ತಂ ದುರ್ವಾಸಸಂ ಸೋಮಮಾತೇಶಬ್ರಹ್ಮಸಂಭವಾನ್" ಭಾಗುಂ ೪-೧-೧೪। 3. ಹೆಸರಿನ ಮುಂದೆ ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವ ಒಂದು ಪದ. ಯಜ್ಞದತ್ತಃ, ದೇವದತ್ತಃ, ಬ್ರಹ್ಮದತ್ತಃ ಇತ್ಯಾದಿ. 4. "ದೇವದತ್ತ" ಪದದ ಒಂದು ರೂಪ. (ವಾಂ ೪-೩-೮೩)। ["ದತ್ತಿಕ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. 5. ಕಳೆದ ಉತ್ಸರ್ಪಣೆ ಕಾಲದ 8 ನೆಯ ತೀರ್ಥಂಕರರು. (ನಂ) 6. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. ಡು ದಾಣ (ದಾನ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। ದಾ ಇತ್ಯಸ್ಯ "ದತ್" ಆದೇಶಃ (೭-೪-೪೬)। "ಇದಂ ಹಿ ಪುಂಸಸ್ತಪಸಃ ಶ್ರುತಸ್ಯ ವಾ ಸ್ವಿಷ್ಟಸ್ಯ ಸೂಕ್ತಸ್ಯ ಚ ಬುದ್ಧಿದತ್ತಯೋಃ" ಭಾಗಂ ೧-೪-೨೨। (ವಿಂ) 7. ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ, ದಾನಮಾಡ ಲ್ಪಟ್ಟ. "ದತ್ತಮಾತ್ತಮದನಂ ದಯಿತೇನ ವ್ಯಾಪ್ತಮಾತಿಶಯಿಕೇನ ರಸೇನ" ಮಾಘಂ ೧೦-೨೩।

**ದತ್ತಕ ದತ್ತಕ (ಪುಂ)** ಸ್ವೀಕೃತ ಪುತ್ರ, ದತ್ತಪುತ್ರ. ದತ್ತ ಸ್ವಾಯೇ "ಕನ್" (೪-೪-೪)। ತಾಯಿತಂದೆಗಳಿಬ್ಬರೂ ಸಮ್ಮತಿಸಿ ಪುತ್ರನಿಲ್ಲದವನಿಗೆ ಕೊಡುವ ಪುತ್ರನು ದತ್ತಕ ಪುತ್ರನು. "ದತ್ತಾನ್ಮಾತಾ ಪಿತಾ ವಾ ಯಂ ಸ ಪುತ್ರೋ ದತ್ತಕೋ ಭವೇತ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೩೦।

**ದತ್ತಾತ್ಮನ್ ದತ್ತಾತ್ಮನ್ (ಪುಂ)** ತಾಯಿತಂದೆಗಳಿಂದ ತ್ಯಜಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟು ತಾನಾಗಿಯೇ ಒಬ್ಬನಿಗೆ ದತ್ತಪುತ್ರನಾಗುವವನು, ನಾನು ನಿನಗೆ ಪುತ್ರನಾಗಿರುವೆನೆಂದು ತಾನೇ ಹೇಳಿ ಬಂದ ತಾಯಿತಂದೆಗಳಿಲ್ಲದವನು. ಇವನಿಗೆ "ಸ್ವಯಂದತ್ತ" ಎಂದು ಹೆಸರು. ಹನ್ನೆರಡು ಮಂದಿ ಪುತ್ರರಲ್ಲಿ ಇವ ನೊಬ್ಬನು. "ದತ್ತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ. "ದತ್ತಾತ್ಮಾ ತು ಸ್ವಯಂದತ್ತೋ ಗರ್ಭೇ ವಿಜ್ಞಃ ಸಹೋದಜಃ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೩೧। "ಮಾತಾ-



ಪಿತೃವಿಹೀನೋ ಯಃ ಸ್ಯಕ್ತೋ ವಾ ಸ್ಯಾದಕಾರಣಾತ್ | ಆತ್ಮಾನಂ  
ಸ್ಪರ್ಶಯೇದಸ್ಮೈ ಸ್ವಯಂದತ್ತಸ್ತು ಸ ಸ್ಮೃತಃ" ಮನುಂ ೯-೧೭೭ |

**ದತ್ತಾತ್ರೇಯ ದತ್ತಾತ್ರೇಯ**(ಪುಂ) ಅತ್ರಿಮಹರ್ಷಿಗೆ ಅನಸೂಯಾ  
ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಮಗ. ["ದತ್ತ" ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.] ದತ್ತಾತ್ರೇಯನು ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಯಾಗಿದ್ದು  
ಅರ್ಕನಿಗೆ ಅನ್ವೀಕ್ಷಿಕೆ ವಿಧಿಯನ್ನು ಹೇಳಿಕೊಟ್ಟು  
ಪ್ರಹ್ಲಾದಾದಿಗಳಿಗೆ ಜ್ಞಾನೋಪದೇಶ ಮಾಡಿದನು.  
"ಏಕಮತ್ರೇಪತ್ಯತ್ವಂ ವೃತಃ ಪ್ರಾಪ್ತೋಽನುಸೂಯಾ | ಆನ್ವೀಕ್ಷಿಕೀ-  
ಮಲಕಾಯಿ ಪ್ರಹ್ಲಾದಾದಿಮ್ಯ ಅಚಿವಾನ್" ಭಾಗಂ |

**ದತ್ತಾನಪಕರ್ಮನ್ ದತ್ತಾನಪಕರ್ಮನ್**(ನಂ) ದಾನಮಾಡಿದು  
ದನ್ನು ಹಿಂತಿರುಗಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ದಾನ ತೆಗೆದುಕೊಂಡ  
ವನು ಯೋಗ್ಯನಲ್ಲವೆಂದು ತಿಳಿದು ದಾನಮಾಡಿದುದನ್ನು  
ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ದತ್ತಸ್ಯಾನಪಕರ್ಮ | "ಸಮ್ಭೂಯ  
ಚ ಸಮುತ್ಥಾನಂ ದತ್ತಸ್ಯಾನಪಕರ್ಮಂ ಚ" ಮನುಂ ೮-೪ |

**ದತ್ತಾಪಹಾರ ದತ್ತಾಪಹಾರ**(ಪುಂ) ದಾನಮಾಡಿದುದನ್ನು  
ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕಸಿದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ದತ್ತಸ್ಯಾಪಹಾರಃ |

**ದತ್ತಾಪಹತ ದತ್ತಾಪಹತ**(ವಿಂ) ದಾನಮಾಡಿ ಹಿಂದಕ್ಕೆ  
ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ದತ್ತಂ ಚ ತತ್ ಅಪಹತಂ ಚ |

**ದತ್ತಾಪ್ರದಾನಿಕ ದತ್ತಾಪ್ರದಾನಿಕ**(ನಂ) ದಾನ ತೆಗೆದು  
ಕೊಂಡವನು ಯೋಗ್ಯನಲ್ಲವೆಂದಾಗಲಿ ಕ್ಷೇಪದಿಂದಾಗಲಿ  
ದಾನಮಾಡಿದ ವಸ್ತುವನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು.  
ಅಷ್ಟಾದಶ ವ್ಯವಹಾರಗಳಲ್ಲಿ ಇದೊಂದು ಭೇದ. ದತ್ತಸ್ಯ  
ಅಶಾಸ್ತ್ರೀಯಮಾರ್ಗೇಣ ದತ್ತತ್ವಾತ್ ಪುನರಾಪ್ರದಾನಂ ಗ್ರಹಣಮಸ್ತಸ್ಯ  
"ಠನ್" (೪-೨-೧೧೫) | "ದಾತಾ ಪ್ರತಿಗ್ರಹೀತಾ ಚ ಶ್ರದ್ಧಾ  
ದೇಯಂ ಚ ಧರ್ಮಯುಕ್ | ದೇಶಕಾಲೌ ಚ ದಾನಾನಾಮಜ್ಞಾನೇತಾನಿ  
ಷಡ್ವಿಧಃ" | ಈ ಆರರಲ್ಲಿ ಯಾವುದೊಂದು ನ್ಯೂನವಾದರೂ  
ದಾನವು ಅಶಾಸ್ತ್ರೀಯವಾಗುವುದು.

**ದತ್ತಿ ದತ್ತಿ**(ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ)  
"ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) |

**ದತ್ತಿಕ ದತ್ತಿಕ**(ಪುಂ) 1. ದೇವದತ್ತ. 2. ಯಜ್ಞದತ್ತ.  
ಮನುಷ್ಯವಾಚಕವಾದ ಬಹುವ್ರತ್ ವರ್ಣಗಳುಳ್ಳ ಶಬ್ದಗಳಿಗೆ  
ಈ ಕೆಳಗೆ ಕಂಡ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು ಬಂದು ಅನೇಕ ರೂಪ  
ಗಳಾಗುವುವು. ದೇವದತ್ತ ಯಜ್ಞದತ್ತ ಅನುಕ್ರಮಾಢಾಂ ವಾ "ಠಕ್"  
ಪೂರ್ವಪದಲೋಪಶ್ಚ (ವಾಂ ೪-೩-೭೮, ೪-೩-೮೩) | ಪಕ್ಷೆ "ಕಃ"  
ಚ (೪-೩-೭೬) | ದತ್ತಕಃ ದತ್ತಕಃ ಪಕ್ಷೆ "ಘನ್" "ಫಲಕ್"  
ಚ (೪-೩-೭೮) | ದತ್ತಿಯಃ ದತ್ತಿಯಃ, ದತ್ತಿಲಃ ದತ್ತಿಲಃ.  
ಠಕ್ ಮತ್ತು ಅಜಾದಿ ಪ್ರತ್ಯಯ ಪರವಾದಾಗ ದ್ವಿತೀಯ  
ವರ್ಣದ ಮುಂದಿನ ವರ್ಣಗಳು ಉಪ್ಪವಾಗುವುವು.

(೪-೩-೮೩) | ಠಕ್-ದೇವಿಕಃ ದೇವಿಕಃ, ಘನಿ-ದೇವಿಯಃ  
ದೇವಿಯಃ, ಫಲಕ್-ದೇವಿಲಃ ದೇವಿಲಃ. ಅಜಾದಿಯಲ್ಲದ  
"ಕ" ಪ್ರತ್ಯಯ ಪರವಾದಾಗ ಏಕಲ್ಪವಾಗಿ ಲೋಪ ಬರು  
ವುದು. (ವಾಂ ೪-೩-೮೩) | ದೇವದತ್ತಕಃ ದೇವದತ್ತಕಃ,  
ದೇವಕಃ ದೇವಕಃ. "ಠಕ್" ಮೊದಲಾದ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು  
ಬಾರದಿದ್ದರೂ ಏಕಲ್ಪವಾಗಿ ಪೂರ್ವೋತ್ತರ ಪದಗಳಿಗೆ  
ಲೋಪ ಬರುವುದು. ದೇವದತ್ತಃ ದೇವದತ್ತಃ, ದತ್ತಃ ದತ್ತಃ,  
ದೇವಃ ದೇವಃ (ವಾಂ ೪-೩-೮೩) | ಈ ಮೇಲೆ ಹೇಳಿದ  
ಎಲ್ಲಾ ಪದಗಳೂ ದೇವದತ್ತ ವಾಚಕಗಳಾಗುವುವು.  
ಹೀಗೆಯೇ ಯಜ್ಞದತ್ತ ಪದದ ರೂಪಗಳೂ ಆಗುವುವು.

**ದತ್ತೇಯ ದತ್ತೇಯ**(ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. 2. ದತ್ತಮಗಳ  
ಮಗ. ದತ್ತಾಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಡಕ್" (೪-೧-೧೨೦) |

**ದತ್ತೋಲಿ ದತ್ತೋಲಿ**(ಪುಂ) ಪುಲಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿಃ.

**ದತ್ತಿಮ ದತ್ತಿಮ**(ಪುಂ) 1. ದತ್ತಪುತ್ರ, ದಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ  
ಪುತ್ರ. ದಾನೇನ ನಿವೃತ್ತಃ-ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕ್ತಿಃ"  
(೩-೩-೮೮) | "ಮಪ್" (೪-೪-೨೦) | "ಮಾತಾ ಪಿತಾ  
ವಾ ದತ್ತಾತಾಂ ಯಮದ್ವಿಃ ಪುತ್ರಮಾಪದಿ | ಸದೃಶಂ ಪ್ರೀತಿಸಂಯುಕ್ತಂ ಸ  
ಜ್ಞೇಯೋ ದತ್ತಿಮಃ ಸುತಃ" ಮನುಂ ೯-೧೬೮ | (ವಿಂ) 2. ದಾನ  
ದಿಂದ ಲಬ್ಧವಾದ, ಕೊಡುಗೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ. ದಾನೇನ  
ನಿವೃತ್ತಮ್ - ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕ್ತಿಃ" (೩-೩-೮೮) |  
"ಮಪ್" (೪-೪-೨೦) | "ನಿಷ್ಠಾಂ ಗತೇ ದತ್ತಿಮಸಮ್ಯತೋಽ  
ವಿಹಿತ್ರಿಮೇ ಕರ್ಮಣಿ ರಾಜಪತ್ನಯಃ" ಭಟ್ಟಿಂ ೧-೧೩ |

**ದದ -ದಾನೇ** (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ದದತೇ | ದದದೇ |  
ದದಿತಾ | ದದಿಷ್ಯತೇ | ದದತಾಮ್ | ಅದದತ | ದದೇತ | ಇತ್ಯಾದಿ.  
ಕೊಡು, ದಾನಮಾಡು. "ಡುಡಾದಂ ದದತೇ ಡುಡೇ" ಮಾಘಂ  
೧೯-೧೧೪ |

**ಕರ್ಮಣಿಃ**-ದದತೇ | ದದತಾಮ್ | ದದೇತ | ಅದಾದಿ |  
ಅದದಿಷ್ಯತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಣಿಚಿಃ**-ದಾದಯತಿ, -ತೇ | ದಾದಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ,  
-ಚಭೂವ, -ಆಸ | ದಾದಯಿತಾ | ದಾದಯತು, -ತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕ್ರತುಃ**-ದದಿತವ್ಯಮ್ | ದದನೀಯಮ್ | ದಾದಮ್ | ದದಿತಃ,  
ದದಿತವಾನ್, -ವತೀ | ದದಮಾನ್ | ದದಿತಮ್ | ದದನಮ್ |  
ಇತ್ಯಾದಿ.

**ದದ ದದ**(ವಿಂ) ದಾನಮಾಡುವವನು, ಕೊಡುವವನು.  
ದದ (ದಾನೇ) "ಶಃ" (೩-೧-೧೩೯) | "ಡುಡಾದಂ ದದದೇ  
ಡುಡೇ ದದಾದದದದೋದದಃ" ಮಾಘಂ ೧೯-೧೧೪ |

**ದದತ್ ದದತ್**(ವಿಂ) ಕೊಡುವ, ದಾನಮಾಡುವ. ಡು ದಾನ್  
(ದಾನೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ದದತಮಂತರಿತಾ-



ಹಿಮದೀರ್ಘಿತಿ ಖಗಕುಲಸ್ಯ ಕುಲಾಯಿನಿಲಾಯಿತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೬-೪೧. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | ದದತೀ ದದತಿ. ದದನ ದದನ (ನಂ) ದಾನ, ಕೊಡುವುದು. ದದ (ದಾನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |  
 ದದಮಾನ ದದಮಾನ (ವಿಂ) ಕೊಡುತ್ತಿರುವ, ದಾನಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ದದ (ದಾನೇ) "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) |  
 ದದಾನ ದದಾನ (ವಿಂ) ಕೊಡುತ್ತಿರುವ, ದಾನಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ದದಾನಯಾ ದಿಕ್ಸರಿತಾಂ ಪ್ರಸಾದಂ ಪ್ರಸಕ್ತಹಂಸಾಗಮಯಾ ಸ್ವಕಾಂತಯಾ" ಯಾದಂ ೨-೭೬ |  
 ದದಿತ್ ದದಿತ್ಯ (ವಿಂ) ದಾನಮಾಡುವವನು, ಕೊಡುವವನು. ದದ (ದಾನೇ) "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩) |  
 ದದತ್ ದದತ್ (ವಿಂ) ಒಡೆದುಹಾಕುವ, ಭೇದಿಸುವ. ದೀರ್ಘಿತಿ - ದ್ (ಭಯೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (ವಾಂ ೩-೨-೧೭೮) | ಹ್ರಸ್ವಶ್ಚ |  
 ದದ್ರು ದದ್ರು (ಪುಂ) ನವೆಯನ್ನು ಒಯ್ಯುವುದು ಹುಳುಕಡ್ಡಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಪ್ರಣ. ದದತೇ ಕಣ್ಡು - ದದ (ದಾನೇ) "ಃ" ಬಾಹುಂ |  
 ದದ್ರುಕ ದದ್ರುಕ (ಪುಂ) ಹುಳುಕಡ್ಡಿಯೆಂಬ ಪ್ರಣ. ದದ್ರು ಸ್ವಾಯೆ "ಕನ್" (೪-೪-೪) |  
 ದದ್ರುಘ್ನ ದದ್ರುಘ್ನ (ಪುಂ) ತಗಚಿ ಗಿಡ, ತಗಚಿ ಗಿಡ. ದದ್ರು ಹಂತಿ - ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) "ಟಕ್" (೩-೨-೪೩) | "ದದ್ರುಘ್ನಶ್ಚಕ್ರಮದಕಃ" ಅಮಂ |  
 ದದ್ರುಣ ದದ್ರುಣ (ವಿಂ) ದದ್ರು ರೋಗವುಳ್ಳವನು, ಹುಳು ಕಡ್ಡಿಯ ರೋಗದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು. ದದ್ರುರಸ್ಯಾಸ್ತಿ - ದದ್ರು / ಪಾಮಾದಿಂ "ನಃ" (೪-೨-೧೦೦) |  
 ದದ್ರು ದದ್ರು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುಳುಕಡ್ಡಿ. ದರಿದ್ರಾ (ದುರ್ಗತೌ) "ಃ" (೩ಂ ೧-೧೦) | ಇಕಾರಾಕಾರಲೋಪಶ್ಚ |  
 ದದತ್ ದದತ್ (ವಿಂ) ಧರಿಸಿರುವ, ಹೊಂದಿರುವ, ಹೊತ್ತಿರುವ. ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೩೪) | "ದಧತ್ಸಂಧ್ಯಾರುಣವ್ಯೋಮಸ್ಕುರತ್ತಾರಾನುಕಾರಿಣಿಃ" ಮಾಘಂ ೨-೧೮ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) ದದತೀ ದದತಿ. "ಗತಯಾ ಪುರಃ ಪ್ರತಿ ಗವಾಕ್ಷಮುಖಂ ದದತೀ ರತೇನ ಭೃಗುಮುತುಕತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೨ |  
 ದಧಾನ ದಧಾನ (ವಿಂ) ಧರಿಸಿರುವ, ಹೊಂದಿರುವ. ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ದಧಾನಮಘೋರುಹೇಸರದ್ವಿತಿರ್ಜಟಾಃ ಶರಣ್ವಂದ್ರಮರೀಚಿರೋಚಿಷಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೫ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪) | ದಧಾನಾ ದಧಾನಾ.

"ದಧಾನಯಾ ನೇತ್ರಸುಖೈಕಸತ್ರಂ ಪುತ್ರಂ ಪವಿತ್ರಂ ಸುತಯಾ ತಯಾಃ" ಕುಮಾರಂ ೧೧-೨೯ |  
 ದಧಿ ದಧಿ (ನಂ) 1. ಗಟ್ಟಿ ಮೊಸರು, ಹೆಪ್ಪುಗಟ್ಟಿದ ಮೊಸರು. ದಧಾತಿ - ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕ್ವಿಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೧೭೯) | "ತರಣಂ ಸರ್ಪಪಶಾಕಂ ನವೋದನಂ ಪಿಚ್ಛಿಲಾನಿ ಚ ದಧಿನಿ" ವೃಂ ೨೦ | 2. ಹಾಲುಮಡ್ಡಿ. 3. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. "ದಧಿ ಗೋರಸಭೇದೇ ಸ್ವಾತ್ತಯಾ ಶ್ರೀವಾಸ-ವಾಸಯೋಃ" ಹೇಮಂ | (ವಿಂ) 4. ಧರಿಸಿರುವ, ಧಾರಣ ಮಾಡಿರುವ.   
 ದಧಿಕ್ವಿಚಿಕಾ ದಧಿಕ್ವಿಚಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೊಸರಿನೊಡನೆ ಸೇರಿಸಿ ಪಕ್ಷಮಾಡಿದ ಹಾಲು. "ದಧ್ನಾ ಸಹ ಪಯಃ ಪಕ್ವಂ ಯತ್ ಸ್ಯಾತ್ ಸಾ ದಧಿಕ್ವಿಚಿಕಾ" |  
 ದಧಿಚಾರ ದಧಿಚಾರ (ಪುಂ) ಮಂತ್ರ, ಕಡೆಗೋಲು. ದಧಿ ಚಾರಯತಿ - ಚರ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಅನ್" (೩-೨-೧) |  
 ದಧಿಜ ದಧಿಜ (ನಂ) ಬೆಣ್ಣೆ. ದಧ್ನೋ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರಭವಿ) "ಃ" (೩-೧-೯೮) |  
 ದಧಿತ್ಯ ದಧಿತ್ಯ (ಪುಂ) ಬೇಲದ ಮರ. ದಧಿವರ್ಣಸ್ತಿಷ್ಠತ್ಯತ್ರ - ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಕಃ" (೩-೨-೪) | ಪೃಷಂ |  
 ದಧಿಫಲ ದಧಿಫಲ (ಪುಂ) ಬೇಲದ ಮರ. ದಧಿವ ದ್ರವಃ ಫಲೇಷ್ಯ |  
 ದಧಿಮಂಡ ದಧಿಮಂಡ (ಪುಂ) ಮೊಸರಿನ ಕೆನೆ.   
 ದಧಿಮುಖ ದಧಿಮುಖ (ಪುಂ) ಸುಗ್ರೀವನ ಮಧುವನವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಒಬ್ಬ ವಾನರ.   
 ದಧಿವಾಮನ ದಧಿವಾಮನ (ಪುಂ) ಸಾಲಗ್ರಾಮ ಮೂರ್ತಿಗಳಲ್ಲಿ ವಾಮನ ಮೂರ್ತಿ. "ಅತಿಕ್ಷುಧ್ರಂ ದ್ವಿಚಕ್ರಂ ಚ ನವೀನ-ನೀರದೋಪಮಮ್ | ದಧಿವಾಮನಕಂ ಜ್ಞೇಯಮ್ ಗೃಹಿಣಾಂ ಸುಖಪ್ರದಮ್" |  
 ದಧಿಶೋಣ ದಧಿಶೋಣ (ಪುಂ) ವಾನರ, ಕಪಿ.   
 ದಧಿಸಕ್ತು ದಧಿಸಕ್ತು (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ಮೊಸರಿನೊಡನೆ ಬೆರೆತಿರುವ ಹುರಿಹಿಟ್ಟು, ಮೊಸರಿನಲ್ಲಿ ಕಲೆಸಿದ ಹುರಿಹಿಟ್ಟು. ದಧ್ಯುಪಸಿಕ್ತಾಃ ಸಕ್ತವಃ |  
 ದಧಿಸಮುದ್ರ ದಧಿಸಮುದ್ರ (ಪುಂ) ಸಪ್ತಸಮುದ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು.   
 ದಧಿಸಾರಃ ದಧಿಸಾರಃ (ಪುಂ) ನವನೀತ, ಬೆಣ್ಣೆ. ದಧನ ಸಾರಃ |  
 ದಧಿಚ ದಧಿಚ (ಪುಂ) ದಧಿಚಮಹರ್ಷಿ, ಅಥರ್ವಮುಷಿಯ ಮಗ. [ಈ ಮಹರ್ಷಿಯು ಇಂದ್ರನ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಂತೆ ಪ್ರಾಣವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿ ತನ್ನ ಎಲುವುಗಳನ್ನು ಅವನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟನು. ಇಂದ್ರನು ಅವುಗಳಿಂದ ವಜ್ರಾಯುಧವನ್ನು



ತಯಾರಿಸಿ ಎಲ್ಲಾ ಅಸುರರನ್ನೂ ಸಂಹರಿಸಿದನು. "ಋತೇ-  
ಸ್ಥಿಭಿರ್ದಧೀಚಸ್ಯ ನ ಹಂತುಂ ತ್ರಿದಶದ್ವಿಷಃ | ತಸ್ಮಾದ್ಗತ್ವಾ  
ಋಷಿಶ್ರೇಷ್ಠೋ ಯಾಚ್ಯತಾ ಸುರಸತ್ತಮಾಃ | ದಧೀಚಾಸ್ಥಿಭಿರ್ದೇಹೀತಿ  
ತೇವಧಿಷ್ಯಾಮಹೇ ರಿಪುನ್ | ಸ ಚ ತೇರ್ಯಾವಿತೋಸ್ಥಿಭಿರ್ದಧೀನಿ ಯತ್ನಾತ್  
ಋಷಿವರಸ್ತದಾ | ಸಾಹಾಯ್ಯಂ ನಃ ಕುರುಷ್ವೇತಿ ಚಕಾರೇವಾ-  
ವಿಚಾರಯನ್ | ತಸ್ಯಾಸ್ಥಿಭಿರಯೋ ಶಕ್ರಃ ಸಂಪ್ರಹೃಷ್ಟಮನಾಸ್ತದಾ |  
ಕಾರಯಾಮಾಸ ದಿವ್ಯಾನಿ ನಾನಾಪ್ರಹರಣಾನ್ಯುತ | ಗದಾ ವಜ್ರಾಣಿ  
ಚಕ್ರಾಣಿ ಗುರುನ್ ದಂಟಾಂಶ್ಚ ಪುಷ್ಕಲಾನ್ | ತೇನ ವಜ್ರೇಣ ಭಗವಾನ್  
ಮನ್ತ್ರಯುಕ್ತೇನ ಭಾರತ | ದೇವದಾನವವೀರಾಣಾಂ ಜಘಾನ ನವತೀನವ"  
ಭಾಂ ಶಲ್ಯಂ ೪೨ |

ದಧುಕ್ ದಧ್ಯಕ್ (ವಿಂ) ದೃಷ್ಟನಾದ, ದೃಷ್ಟಾಂತೆಯಾದ.  
ಧೃಷ (ಪ್ರಸಹನೆ) "ವಿವನ್" (೩-೨-೪೯) | "ಅಮ್ಯಭೂತಲಯಂ  
ಭ್ರಾತುಃ ಸುಗ್ರಿವೋ ನಿನದನ್ ದಧುಕ್" ಭಟ್ಟಿಂ ೬-೧೧೭ |

ದಧ್ಯನ್ ದಧ್ಯನ್ (ನಂ) ಮೊಸರಿನಲ್ಲಿ ಕಲಸಿದ ಅನ್ನ. ದಧ್ನಾ  
(ಉಪಸಿಕ್ತಮ್) ಅನ್ನಮ್—"ಅನ್ನೇನ ವ್ಯಂಜನಮ್" (೨-೧-೩೪) |  
ಇತಿ ಸಮಾಸಃ | ಹೀಗೆಯೇ ದಧ್ಯೋದನಮ್ ದಧ್ಯೋದನಮ್.  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ದಧ್ಯಾಕರ ದಧ್ಯಾಕರ (ಪುಂ) ದಧಿಸಮುದ್ರ.

ದನಾಯು ದನಾಯು (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ದಾನವ. ದನುವಿನ ಮಗ.

ದನಾಯುಸ್ ದನಾಯುಸ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಕ್ಷಪ್ರಜಾಪತಿಯ ಒಬ್ಬ  
ಮಗಳು, ಕಶ್ಯಪನ ಪತ್ನಿ. ವಿಕಾರ: ಬಲ: ವೀರ: ದೃಢ: ಎಂಬ  
ನಾಲ್ಕರೂ ಇವಳ ಮಕ್ಕಳು. "ದನಾಯುಃ ಪುನಃ ಪುತ್ರಾಶ್ಚತ್ವಾರೋ-  
ಸುರಪುಂಜವಾಃ | ವಿಕಾರೋ ಬಲವೀರೋ ಚ ದೃಢಶ್ಚೈವ ಮಹಾಸುರಾಃ"  
ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೬-೩೩ |

ದನು ದನು (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀ ಎಂಬ ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸಿನ ಮಗ.  
[ಈತನು ಸ್ಥೂಲಶಿರಸ್ಸೆಂಬ ಯುಷಿಯ ಶಾಪದಿಂದ ರಾಕ್ಷಸ  
ನಾದನು. ಇಂದ್ರನ ಬಾಣಪ್ರಹಾರದಿಂದ ಕುಂಭನಾದನು.  
ಅನಂತರ ಇವನಿಗೆ "ದನುಕುಂಭ" ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು.  
"ದನುರ್ಮಿತ್ರಯಃ ಪುತ್ರಃ ಶಾಪಾದ್ರಾಕ್ಷಸತಾಂ ಗತಃ | ಇಂದ್ರಾಸ್ತಕೃತ-  
ಕಾಬಂಧುಃ ಪೂತೋಽಸ್ಮಿ ಭವದಾಶ್ರಯಾತ್" ಮಂ ಬಿಂ ೪-೩೪ |  
"ತದನ್ ದನುಕಬಂಧುನಾದರಾದೃಶಿತೌ ತೌ" ಚಂ ರಾಂ ೩ |  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ದಕ್ಷಬ್ರಹ್ಮನ ಒಬ್ಬ ಮಗಳು, ಕಶ್ಯಪನ  
ಪತ್ನಿ. ದಕ್ಷಪ್ರಜಾಪತಿಯ ಹದಿಮೂರು ಮಂದಿ ಹೆಣ್ಣು  
ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ಇವಳೊಬ್ಬಳು. ಇವಳು ದಾನವರ ತಾಯಿ.  
"ಪ್ರಜಾಪತೇ ಮಹಾಭಾಗಾ ದಕ್ಷಕನ್ಯಾಸ್ತಯೋದಶ | ಅದಿತಿರ್ದಿತಿರ್ದನುಃ  
ಕಾಲಾ ದನಾಯುಃ ಸಿಹಿಕಾ ತಥಾ | ಕ್ರೋಧಾ ಪ್ರಾಧಾ ಚ ವಿಶ್ವಾ ಚ  
ವಿನತಾ ಕಪಿಲಾ ಮುನಿಃ | ಕದ್ರೂಶ್ಚ ಮನುಜವ್ಯಾಃ ದಕ್ಷಕನ್ಯೈವ  
ಭಾರತ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೬ |

ದನುಜ ದನುಜ (ಪುಂ) ದನುವಿನ ಮಗ ದಾನವ. ದನುಜಾಯಿತೆ—  
ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಙ:" (೩-೨-೯೮) | "ಜಗದೇಕಹಿತೇನ  
ಜನ್ಮನಾಸೌ ದನುಜೇರಾಕ್ರಮಣಂ ಭುವೋ ನಿರುಧನ್" ಯಾದಂ ೧೪-೬ |

ದನುಜದ್ವಿಷ ದನುಜದ್ವಿಷ್ (ಪುಂ) ದೇವತೆ. ದನುಜಾನ್ ದ್ವೇಷಿ—  
ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬) | -ಅರಿಃ-೭೦೩,  
-ರಿಪುಃ-೭೦೪, -ಶತ್ರುಃ-೭೦೫, ಇತ್ಯಾದಿ. "ಮುಷಿತಾಮ್ಬರ-  
ಮಸ್ತ್ರಶಸ್ತ್ರಭೂಮ್ನಾ ದನುಜಾರೆದಮಧೋಜನ್ಮನಶ್ಚ" ಯಾದಂ  
೧೪-೧೨೧ |

ದನುತನಯ ದನುತನಯ, -ಸುತಃ-ಸುತಃ, -ಸುನುಃ-  
-ಸುನುಃ (ಪುಂ) ದನುವಿನ ಮಗ, ಅಸುರ.

ದಂತ ದಂತ (ಪುಂ) 1. ರದನ, ಹಲ್ಲು. ದಾಮ್ಯತಿ — ದಮು  
(ಉಪಶಮೇ) "ತನ್" (೩ಂ ೩-೮೬) | "ದಂತಾನಾಮಧರ-  
ಮಯಾವಕಂ ಪದಾನಿ ಪ್ರತ್ಯಗ್ರಾಸ್ತನುಮವಿಲೇಪನಾಂ ನಖಾಕ್ಷಾಃ" ಮಾಘಂ  
೮-೪೪ | 2. ಅನೆಯ ದಂತ, ಅನೆಯ ಕೊಂಬು, ಗಜದಂತ.  
"ದಂತಾ ದಂತೇರಾಹತಾಃ ಸಾಮಜಾನಾಂ ಭಜ್ಜಂ ಜಗ್ಮುನ್ ಸ್ವಯಂ  
ಸಾಮಜಾತಾಃ" ಮಾಘಂ ೧೮-೩೩ | 3. ಗಿಡ ಬಳ್ಳಿಗಳ  
ಪೊದರು. "ದಂತೋಜ್ವಲಾಸು ವಿಮಲೋಪಲಮೇಖಲಾಂತಾಃ ಸದ್ರಲ್ಪ-  
ಚಿತ್ರಕಟಕಾಸು ಬೃಹನ್ನಿತಮ್ಬಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೪೦ | 4. ಪರ್ವತದ  
ನಿಂತುಪ್ರದೇಶ, ಬೆಟ್ಟದ ತಪ್ಪಲು ಪ್ರದೇಶ. 5. ಪರ್ವತದ  
ಶೃಂಗ, ಬೆಟ್ಟದ ಶಿಖರ. 6. ಮೂವತ್ತೆರಡು ಸಂಖ್ಯೆ.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) 7. ಒಪ್ಪಡಿಯ ಒಂದು ಭೇದ. "ದಶನೇ ಶೈಲಶೃಂಗೇ  
ಚ ದಂತಃ ಸ್ಯಾದೋಷಧಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | "ದಂತೋಽ-  
ದ್ರಿಕಟಕೇ ಕುಂಜೇ" ಮೇದಿಂ |

ದಂತಕ ದಂತಕ (ಪುಂ) 1. ದಂತ, ಹಲ್ಲು. ಪೊದಲಾದ  
"ದಂತ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ದಂತ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ" | 2. ಶೃಂಗದ  
ಶೃಂಗ, ಪರ್ವತದ ಶಿಖರ, ಬೆಟ್ಟದ ತುದಿ. 3. ಮುಂದಕ್ಕೆ  
ಚಾಚಿಕೊಂಡಿರುವ ಬುಡೆ. (ವಿಂ) 4. ದಂತಗಳ ವಿಷಯ  
ದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಗಮನಕೊಡುವ, ಹಲ್ಲುಗಳ ರಕ್ಷಣೆಯಲ್ಲಿ  
ಉತ್ಸುಕನಾದ. ದಂತೇಷು ಪ್ರಸಿತಃ "ಕನ್" (೪-೧-೬೬) |

ದಂತಕರ್ಷಣ ದಂತಕರ್ಷಣ (ಪುಂ) ನಿಂಬೆಹಣ್ಣು.

ದಂತಕಾರ ದಂತಕಾರ (ಪುಂ) ದಂತದ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು.

ದಂತಕಾಂಠ ದಂತಕಾಂಠ (ನಂ) ಹಲ್ಲನ್ನು ಉಜ್ಜಿ ಶುದ್ಧ  
ಮಾಡುವ ಕಡ್ಡಿ. ದಂತಧಾವನಾರ್ಥ ಕಾಂಠಮ್ |

ದಂತಚ್ಛದ ದಂತಚ್ಛದ (ಪುಂ) ಅಧರ. ತುಟಿ. ದಂತಾಶ್ಚಾಘಾತೇಽ-  
ನೇನ — ಛದ (ಸಂವರಣೇ) + ಣಿಕ್ "ಛಃ" (೩-೩-೧೧೮) |  
"ದಂತಚ್ಛದಾರುಣಿಮರಾಂಜಿತದಂತಮಾಲಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೯-೩೧ |

ದಂತಜಾತ ದಂತಜಾತ (ಪುಂ) ಹಲ್ಲು ಹುಟ್ಟಿದ ಶಿಶು. ಜಾತೋ  
ದಂತೋಽಸ್ಯ | ಪರಿನಿಪಾಂ | "ದಂತಜಾತೇಽನುಜಾತೇ ಚ ಕೃತಚೂಡೇ ಚ  
ಸಂಸ್ಥಿತೇ" ಮನುಂ ೪-೪೮ |



**ದಂತಜಾಹ ದಂತಜಾಹ** (ನಂ) ಹಲ್ಲಿನ ಬುಡ, ಹಲ್ಲಿನ ಬೇರು.  
ದಂತಸ್ಯ ಮೂಲಮ್ "ಜಾಹ್" (೪-೨-೨೪) ।

**ದಂತಧಾವನ ದಂತಧಾವನ** (ಪುಂ) 1. ಕಗ್ಗಲಿಮರ, ಖದಿರ  
ವೃಕ್ಷ. ದಂತಾನ್ ಧಾವಯತಿ - ಧಾವು (ಗತಿಶುಭ್ರಯೋಃ) + ಣಿಕ್  
"ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) । "ಕ್ಷದಿರೋ ದಂತಧಾವನಃ" ಅಮಂ ।  
2. ಹೊಂಗಿಮರ. 3. ವಕುಳವೃಕ್ಷ (ನಂ) 4. ಹಲ್ಲಿನ್ನು  
ಉಜ್ಜಿ ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು. ದಂತಾನಾಂ ಧಾವನಮ್ - ಧಾವು  
ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

**ದಂತಪತ್ರ ದಂತಪತ್ರ** (ನಂ) ದಂತಾಕಾರದ ಪತ್ರವುಳ್ಳ ಒಂದು  
ಕಿವಿಯ ಅಭರಣ. ದಂತ ಇವ ಪತ್ರಮಸ್ಯ । "ವಿಲಾಸಿನಿ-  
ವಿಭ್ರಮದಂತಪತ್ರಮ್" ರಘುಂ । "ಕರ್ಣಾವಿಸಕ್ತಾಮಲದಂತಪತ್ರಂ  
ಮಾತಾ ತದೀಯಂ ಮುಖಮುತ್ರಮಯ್ಯ" ಕುಮಾಂ ೭-೨೩ ।

**ದಂತಪತ್ರಕ ದಂತಪತ್ರಕ** (ನಂ) ಕುಂದಪುಷ್ಪ, ಮೊಲ್ಲೆಹೂವು.  
ದಂತ ಇವ ಪತ್ರಮಸ್ಯ ।

**ದಂತಪತ್ರಿಕಾ ದಂತಪತ್ರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಂತದ ಆಕಾರದ  
ಎಲೆಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಕಿವಿಯ ಅಭರಣ. "ವಿದಗ್ಧಲಿಲೋ-  
ಚಿತದಂತಪತ್ರಿಕಾವಿಧಿಸ್ತಸ್ಯಾ ನೂನಮನೇನ ಮಾನಿನಾ" ಮಾಘಂ  
೧-೬೦ ।

**ದಂತಪವನ ದಂತಪವನ** (ನಂ) 1. ಹಲ್ಲಿನ್ನು ಉಜ್ಜುವ ಕಡ್ಡಿ.  
ದಂತಂ ಪುನಾತ್ಯನೇನ-ಪೂಜ್ (ಪವನೇ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) ।  
2. ಹಲ್ಲಿನ್ನು ಉಜ್ಜಿ ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು. ದಂತಸ್ಯ ಪವನಮ್-  
ಪೂಜ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

**ದಂತಪಾತ ದಂತಪಾತ** (ಪುಂ) ಹಲ್ಲು ಬೀಳುವುದು. ದಂತಸ್ಯ  
ಪಾತಃ ।

**ದಂತಪಾಲಿ ದಂತಪಾಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಯಲ್ಲಿ ಹಲ್ಲುಗಳು  
ನಿಂತಿರುವ ಗಟ್ಟಿ ಮಾಂಸ, ಒಸಡು. ದಂತಾನಾಂ ಪಾಲಿ ।  
ಹಲ್ಲಿನ ಬುಡದ ಒಸಡು ಕೆಂಪಗಿದ್ದರೆ ಪುರುಷನು ಯಾವಾ  
ಗಲೂ ಸಂತೋಷವುಳ್ಳವನಾಗಿಯೂ ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ  
ನಾಗಿಯೂ ಪತ್ನೀಪುತ್ರರುಳ್ಳವನಾಗಿಯೂ ಇರುವನು.  
"ತಾಲ್ವೋಷ್ಠದಂತಪಾಲಿಜಿಹ್ವಾನೇತ್ರಾಂತಪಾಯುಕರಚರಣಃ । ರಕ್ತೇ  
ತು ರಕ್ತಸಾರಾ ಬಹುಸುಖವನಿತಾರ್ಥಪುತ್ರಯುತಾಃ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೬೮-೧೭ ।

**ದಂತಪುಪ್ಪುಟ ದಂತಪುಪ್ಪುಟ** (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ದಂತ  
ರೋಗ. ಹಲ್ಲಿನ ಒಸಡು ಉದುವುದು ಒಸಡು ಹುಣ್ಣು ಗು  
ವುದು ಇವು ದಂತಪುಪ್ಪುಟಕದ ಲಕ್ಷಣ. ಈ ರೋಗವು  
ಕಫ ಮತ್ತು ರಕ್ತ ಇವುಗಳ ದೋಷದಿಂದ ಬರುವುದು.  
"ದಂತಯೋಸ್ತ್ರಿಷು ವಾ ಯಸ್ಯ ಶ್ವಯಥುಃ ಸರ್ಜಾ ಮಹಾನ್ ।  
ದಂತಪುಪ್ಪುಟಕೋ ಶ್ಲೇಷಃ ಕಫರಕ್ತನಿಮಿತ್ತಜಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ನಿದಾನಂ  
೧೬-೧೬ ।

**ದಂತಪುಷ್ಪ ದಂತಪುಷ್ಪ** (ನಂ) 1. ಮೊಲ್ಲೆಗಿಡ. ದಂತ ಇವ  
ಶುಭ್ರಂ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ । 2. ಚಿಲ್ಲದ ಬೀಜ, ಅಂಟುವಾಳದ ಕಾಯಿ.  
3. ಮೊಲ್ಲೆಹೂವು.

**ದಂತಪ್ರಕ್ಷಾಲನ ದಂತಪ್ರಕ್ಷಾಲನ** (ನಂ) ಹಲ್ಲಿನ್ನು ಉಜ್ಜಿ  
ತೊಳೆಯುವುದು.

**ದಂತಫಲ ದಂತಫಲ** (ಪುಂ) 1. ಕಪಿತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಬೇಲದಮರ.  
ದಂತ ಇವ ಶುಭ್ರಂ ಫಲಮಸ್ಯ । (ನಂ) 2. ಚಿಲ್ಲದ ಬೀಜ.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪಲಾ -ಫಲಾ. 3. ಹಿಪ್ಪಲಿ.

**ದಂತಭಾಗ ದಂತಭಾಗ** (ಪುಂ) 1. ಅನೆಯ ಕೊಂಬಿರುವ  
ಭಾಗ, ಅನೆಯ ಮುಖದಿಂದ ಕತ್ತಿನವರೆಗೆ ನ ಭಾಗ.  
2. ದಂತದ ಭಾಗ.

**ದಂತಮಾಂಸ ದಂತಮಾಂಸ** (ನಂ) ಹಲ್ಲುಗಳ ಕೆಳಗಿನ ಗಟ್ಟಿ  
ಮಾಂಸ, ಒಸಡು.

**ದಂತಮೂಲ ದಂತಮೂಲ** (ನಂ) ಹಲ್ಲುಗಳ ಬುಡದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾ  
ಗುವ ಒಂದು ರೋಗ.

**ದಂತರೋಗ ದಂತರೋಗ** (ಪುಂ) ಮುಖ ರೋಗಗಳಲ್ಲೊಂದು  
ಭೇದ, ಒಸಡು ರೋಗ, ಒಸಡಿನ ಉತ.

**ದಂತವಕ್ತ್ರ ದಂತವಕ್ತ್ರ** (ಪುಂ) ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವಿನ ಮುಂದಿನ  
ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಶ್ರುತದೇವಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಕರೂಪದೇಶದ  
ಒಬ್ಬ ರಾಜ. [ಇವನು ಶಿಶುಪಾಲನಿಗೆ ಅಪ್ತಮಿತ್ರ.  
ರಾಜಸೂಯಯಾಗದಲ್ಲಿ ಶಿಶುಪಾಲನು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಿಗೆ  
ನಡೆದ ಅಗ್ರಪೂಜೆಯನ್ನು ಸಹಿಸದೆ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನನ್ನು ದೂಷಿಸಿ  
ಅವನ ಚಕ್ರಾಯುಧಕ್ಕೆ ಅಸುವನ್ನು ಅರ್ಪಿಸಿದನು. ಇದನ್ನು  
ಕೇಳಿದ ದಂತವಕ್ತ್ರನು ದ್ವಾರಕೆಯ ಮೇಲೆ ದಂಡೆತ್ತಿ ಬಂದು  
ಧಾಳಿಮಾಡುತ್ತ ರಾಜಸೂಯಯಾಗದಿಂದ ಹಿಂತಿರುಗಿ  
ಬಂದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಮಾಡಿ ಕೌಮೋದಕಿಗೆ  
ಆಹುತಿಯಾಗಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಲ್ಲಿ ಐಕ್ಯನಾದನು.] ಭಾಗಂ  
೧೦-೭೮ ।

**ದಂತವಸ್ತ್ರ ದಂತವಸ್ತ್ರ** (ನಂ) ಅಧರ, ತುಟಿ, ಓಷ್ಠ. ದಂತಸ್ಯ  
ವಸ್ತ್ರಮಿವ ।

**ದಂತವಾಸಸ್ ದಂತವಾಸಸ್** (ನಂ) ಓಷ್ಠ, ತುಟಿ. ದಂತಸ್ಯ  
ವಾಸ ಇವ । "ಚಿರೋಜ್ಜಿತಾಲತಕಪಾಟಲೇನ ತುಲಾಂ ಯದಾರೋಹತಿ  
ದಂತವಾಸಸಾ" ಕುಮಾಂ ೫-೩೪ ।

**ದಂತವೇಷ ದಂತವೇಷ** (ಪುಂ) 1. ಒಸಡು, ದಂತಮೂಲ.  
"ದಂತವೇಷೇಷು ನೇತ್ರೇಷು ಕುಂಭೇಷು ಚ ಕಟೇಷು ಚ" ಭಾಂ ಕರ್ಣಂ  
೪೬-೪೬ । 2. ಅನೆಯ ಕೊಂಬಿಗೆ ಹಾಕುವ ಬಳೆ. 3. ದಂತ  
ರೋಗದ ಒಂದು ಭೇದ, ರಕ್ತ ಮತ್ತು ಕೀವು ಸುರಿಯುವ  
ಹಲ್ಲಿನ ಒಂದು ರೋಗ. "ಸವಂತಿ ಪುಯರ್ಧಿರಂ ಚಲಾ ದಂತಾ



भवन्ति च । दन्तवेष्टः स विज्ञेयो दुष्टशोणितसंभवः " सुश्रुत० निदान० १६-१७ ।

ದಂತಶಾಸ್ತ್ರ ದಂತಶಾಸ್ತ್ರ (ಪುಂ) 1. ನಿರ್ದಿಷ್ಟ. ದಂತಾನಾಂ ಶಾಸ್ತ್ರ ಇವ । "ಸ್ಯುಜ್ಜಮ್ಬೀರೇ ದಂತಶಾಸ್ತ್ರಜಮ್ಬೀರಜಮ್ಬಲಾಃ" ಅಮಂ । 2. ಬೇಲದ ಮರ, ಕಬ್ಬಿಡುವೃಕ್ಷ. "ತಸ್ಮಿನ್ ದಧಿಫಲಃ ಪುಷ್ಪಫಲದಂತಶಾಸ್ತ್ರಾವಪಿ" ಅಮಂ । 3. ಗಜನಿರ್ದಿಷ್ಟ. 4. ಹಿರಣ್ಯ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಶಾಸ್ತ್ರ -ಶಾಸ್ತ್ರ. 5. ಪುಷ್ಪಫಲದಂತಶಾಸ್ತ್ರ. "ದಂತಶಾಸ್ತ್ರಃ ಸ್ಯಾಜ್ಜಮ್ಬೀರೇ ಕಪಿತ್ಥೇ ಕರ್ಮ-ರಜ್ಜುಕೇ । ನಾಗರಜ್ಜೇಽಪಿ ಚಾಜ್ಜೇಯಾ ಸ್ಮೃತಾ ದಂತಶಾಸ್ತ್ರಾ ಬುಧಃ" ವಿಶ್ವಂ ।

ದಂತಶಾಸ್ತ್ರ ದಂತಶಾಸ್ತ್ರ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಲ್ಲಿನ ಪಾಚಿ, ದಂತ ಮಲ, ಹಲ್ಲಿನ ಕೊಳೆ.

ದಂತಶಾಸ್ತ್ರ ದಂತಶಾಸ್ತ್ರ (ಪುಂ) ಹಲ್ಲುಪುಡಿ, ದಂತಧಾವನ ಚೂರ್ಣ. ದಂತಸ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರ ಇವ ।

ದಂತಶಾಸ್ತ್ರ ದಂತಶಾಸ್ತ್ರ (ನಂ) ಹಲ್ಲುನೋವು. ದಂತಸ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರಮಿವ । "ಶಿರೋರೋಗೇಽಕ್ಷಿರೋಗೇ ಚ ದಂತಶಾಸ್ತ್ರೇ ಗಲಗ್ರಹೇ" ಭಾಂ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ३०१-५ ।

ದಂತಶಾಸ್ತ್ರ ದಂತಶಾಸ್ತ್ರ (ಪುಂ) ಒಡೆದಿನ ಉದಲು.

ದಂತಶಾಸ್ತ್ರ ದಂತಶಾಸ್ತ್ರ (ಪುಂ) ದಂತರೋಗದ ಒಂದು ಭೇದ, ಶೀತೋಷ್ಣಗಳೆರಡನ್ನೂ ತಡೆಯಲಾರದ ಮತ್ತು ಮುಟ್ಟಲೂ ಆಗದಂತಹ ಹಲ್ಲಿನ ಒಂದು ವ್ಯಾಧಿ. "ದಶನಾಃ ಶೀತಮುಷ್ಣಂ ಚ ಸಹಂತೇ ಸ್ಪರ್ಶನಂ ನ ಚ । ಯಸ್ಯ ತಂ ದಂತಶಾಸ್ತ್ರಂ ವ್ಯಾಧಿ ವಿಧಾತ್ ಸಮೀರಣಾತ್" ಸುಶ್ರುತ० ನಿदान० १६-३० ।

ದಂತಶಾಸ್ತ್ರ ದಂತಶಾಸ್ತ್ರ (ಪುಂ) ನಿರ್ದಿಷ್ಟ. ದಂತಾನ್ ಹರ್ಷಯತಿ-ಹರ್ಷ(ಹುಟ್ಟು) + ಣಿಚ್ "ಫಲ್" (३-१-१३३) ।

ದಂತಾಸ್ತ್ರ ದಂತಾಸ್ತ್ರ (ನಂ) ಹಲ್ಲಿನ ತುದಿ.

ದಂತಾಸ್ತ್ರ ದಂತಾಸ್ತ್ರ (ವಿಂ) ದಂತದ ತುದಿಯಲ್ಲಿರುವ, ಹಲ್ಲಿನ ತುದಿಯಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ದಂತಾಸ್ತ್ರ "ಛಃ" (४-२-१३८) ।

ದಂತಾಸ್ತ್ರ ದಂತಾಸ್ತ್ರ (ಪುಂ) ಹಲ್ಲಿನ ಏಟು, ಹಲ್ಲಿನಿಂದ ಕಚ್ಚುವುದು. ದಂತೇರಾಹನ್ಯತೇ-ಆ+ಹನ್(ಹಿಸಾಗತಯೋಃ)ಭಾವೇ "ಛಃ" (३-३-१८) । "ಸ್ತನಯೋರ್ಗಂಧಯೋಶ್ಚೈವ ಆಂಠೇ ಶೈವ ತಥಾಧರೇ । ದಂತಾಸ್ತ್ರಾತಃ ಪ್ರಕರ್ತವ್ಯಃ ಕಾಮಿನೀನಾಂ ಸುಖಾವಹಃ" ।

ದಂತಾಸ್ತ್ರ ದಂತಾಸ್ತ್ರ (ಪುಂ) ಹಲ್ಲುಗಳನ್ನು ಕೊರೆದು ತಿನ್ನುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕ್ರಮ. ದಂತಾನ್ ಅತ್ತಿ - ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ) "ಅನ್" (३-२-१) । "ಕೇಶರೋಗನಖಾದಾಶ್ಚ ದಂತಾಸ್ತ್ರಾಃ ಚಿಕ್ಕಕಶಾಸ್ತ್ರಾಃ" ಸುಶ್ರುತ० ।

ದಂತಾಸ್ತ್ರ ದಂತಾಸ್ತ್ರ (ಅವ್ಯಂ) ಹಲ್ಲುಗಳಿಂದ ಕಚ್ಚಿ ಮಾಡುವ ಯುದ್ಧ. ದಂತೇಶ್ಚ ದಂತೇಶ್ಚ ಪ್ರಹತ್ಯೇದಂ ಪ್ರವೃತ್ತಂ ಯುದ್ಧಮ್ "ಇಚ್" (५-४-१२७) । ಪೂರ್ವದಾಂತಸ್ಯ ದೀರ್ಘಶ್ಚ ।

ದಂತಾಸ್ತ್ರ ದಂತಾಸ್ತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಸೂಕರ, ವರಾಹ, ಹಂದಿ. ದಂತಾ ಆಯುಧಮಿವಾಸ್ಯ । "ಶೂಕರೇ ವನಾಹಿರದಂತಾಸ್ತ್ರಾಚಕ್ರ-ವಜ್ರದೀರ್ಘರದಾಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । (ವಿಂ) 2. ದಂತವೇ ಆಯುಧವಾಗಿ ಉಳ್ಳ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಫ್" (४-१-६३) । -ಆಯುಧಿ - ಆಯುಧಿ.

ದಂತಾಸ್ತ್ರ ದಂತಾಸ್ತ್ರ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ದಂತರೋಗ.

ದಂತಾಲಿಕಾ ದಂತಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುದುರೆಯ ಕಡಿವಾಣ. ದಂತಾನ್ ಅಲತಿ ಭೂಷಯತಿ - ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ) "ಫಲ್" (३-१-१३३) । "ದಂತಾಲಿಕಾಧರಣನಿಶ್ಚಲಪಾಣಿಯುಗಮ-ಮರ್ಧೋದಿತೋ ಹರಿರವಿವೋದಯಶೈಲಮೂರ್ಧನಃ" ಮಾಘಂ ५-५६ । "ಅನ್" (३-२-१) । "ಡೀಫ್" (४-१-४१) । ದಂತಾಲಿ ದಂತಾಲಿ. "ಮುಖರಜ್ಜುಸ್ತು ದಂತಾಲಿ" ವೈಜಂ ।

ದಂತಾವಲ ದಂತಾವಲ (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. ಅತಿಶಯಿತೌ ದಂತೌ ಸ್ತೋಷ್ಯ - ದಂತ "ವಲಚ್" (५-२-११३) । ಪೂರ್ವದದೀರ್ಘಃ । "ಸಿಂಹಃ ಪ್ರಬಲಮತಿಃ ಸ್ಥೂಲಮಪಿ ದಂತಾವಲಂ ಹಂತುಮಾಕ್ರಮತೇ" ।

ದಂತಿಕಾ ದಂತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಾಪಾಳದ ಗಿಡ. ದಮ್ಯತೇ-ದಮು (ಉಪಶಮೇ) "ತನ್" (३० ३-८६) । ಸಂಜ್ಞಾಯಾಮ್ "ಕನ್" (५-३-७५) । "ನಿಕುಂಭೋ ದಂತಿಕಾ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಶ್ರೇಣ್ಯ-ದುಮ್ಬರಪರ್ಣ್ಯಪಿ" ಅಮಂ ।

ದಂತಿನ್ ದಂತಿನ್ (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. ಅತಿಶಯಿತೌ ದಂತಾವಸ್ಯ "ಛಿನಿಃ" (५-२-११५) । "ಯದಂತಿನಃ ಕಟಕಟಾಹ-ತಟಾನ್ಮಿಮಙ್ಕೋರ್ಮಙ್ಕೂದಪಾತಿ ಪರಿತಃ ಪಟಲೇರಲಿನಾಮ್" ಮಾಘಂ ५-३७ ।

ದಂತಿನಿ ದಂತಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಾಪಾಳದ ಗಿಡ.

ದಂತಿಮೂಲಿಕಾ ದಂತಿಮೂಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಾಪಾಳದ ಗಿಡ.

ದಂತುರ ದಂತುರ (ವಿಂ) 1. ಎತ್ತರವಾದ ಹಲ್ಲುಗಳುಳ್ಳ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಜಾಚಿದ ಹಲ್ಲುಗಳುಳ್ಳ. ದಂತಾ ಉನ್ನತಾಃ ಸನ್ತ್ಯಸ್ಯ "ಉರಚ್" (५-२-१०६) । "ಅಕಲಯನ್ ಮುದಿತಾಮಿವ ಸರ್ವತಃ ಸ ಶರದಂ ಶರದಂತುರದಿಡ್ಢಮುಖಮ್" ಮಾಘಂ ६-५४ । 2. ಸಮ ವಲ್ಲದ, ವಿಷಮವಾದ, ಹಳ್ಳತಿಟ್ಟಾಗಿರುವ. "ದಂತುರಂ ವಾಚ್ಯವದ್ವಿಧಾತ್ ವಿಷಮೋನ್ನತದಂತಯೋಃ" ವಿಶ್ವಂ । "ಕರಯನ್ತ್ರಣ-ದಂತುರಾಂತರೇ ವ್ಯಲಿಖ್ವಚ್ಚಪುಟೇನ ಪಕ್ಷತೀ" ನೈಷಂ २-२ । 3. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ, ಹರಡಿರುವ. "ಶಶಾಂಕಶಾಸ್ತ್ರಸಂಭಿನ್ನ-ತಾರಾಮೌಕ್ತಿಕದಂತುರಾ" ಚಂ ರಾಂ ।



ದಂತುರಚ್ಛದ ದಂತುರಚ್ಛದ (ಪುಂ) ಮಾದಳದ ಗಿಡ.

ದಂತುಲೂಲಿಕ ದಂತೋಲೂಲಿಕ (ಪುಂ) ವಾನಪ್ರಸ್ಥ.

ತೃತೀಯಾಶ್ರಮಿ. ದಂತಾ ಎವ ತಲೂಲಂ ಕಂಡನಸಾಧನಂ

ವಿಚಿತೇಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೫) । ವಾನಪ್ರಸ್ಥಾಶ್ರಮ

ದವನು ಧಾನ್ಯದ ಹೊಟ್ಟುಗಳನ್ನು ಹಲ್ಲಿನಿಂದಲೇ ತೆಗೆದು

ಅಹಾರವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

"ಅಶ್ಮಕುಡ್ಠೋ ಭವೇದಾಪಿ ದಂತುಲೂಲಿಕೋಽಪಿ ವಾ" ಮನುಂ ೬-೧೭ ।

ದಂತುಲೂಲಿಕ ದಂತೋಷ್ಠ (ನಂ) ಹಲ್ಲು ಮತ್ತು ತುಟಿಗಳು.

ದಂತಾಶ್ಚ ಔಷ್ಠೌ ಚ ಣಾಂ ಸಮಾಹಾರ: (೨-೪-೨) ।

ದಂತುಲೂಲಿಕ ದಂತೋಷ್ಠಕ (ವಿಂ) ಹಲ್ಲು ಮತ್ತು ತುಟಿಗಳ

ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಗಮನಕೊಡುವುದರಲ್ಲಿ ಉತ್ಪನ್ನವಾದ.

ದಂತುಲೂಲಿಕ ಪ್ರಸಿತ: "ಕನ್" (೪-೨-೬೬) ।

ದಂತು ದಂತ (ಪುಂ) 1. ಹಲ್ಲು ಮತ್ತು ಅವುಗಳ ಮೂಲ

ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ವರ್ಣ. ಲೃತವರ್ಗ (ತ ತ ದ ಧ ನ)

ಲ ಸ ವರ್ಣಗಳು. "ಲೃತುಲಸಾನಾಂ ದಂತಾ:" ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ದಂತೇ ದಂತಮೂಲೇ ಭವ: "ಯತ್" (೪-೧-೬) । (ವಿಂ) 2.

ಹಲ್ಲುಗಳಿಗೆ ಹಿತವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ದಂತೇಭ್ಯೋ ಹಿತ:

"ಯತ್" (೪-೧-೫) । 3. ಹಲ್ಲಿನಲ್ಲಿರುವ. ದಂತೇ ಭವಮ್

"ಯತ್" (೪-೩-೫೫) ।

ದಂದಶೂಕ ದಂದಶೂಕ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಪಾವು. ಗಹಿತಂ

ದಶತಿ — ದಂಶ (ದಶನೇ) "ಯಡ್" (೩-೧-೨೪) । ನುಕ್

(೭-೪-೮೬) । "ಝಕ:" (೩-೨-೧೬೬) । "ದಂದಶೂಕ:

ಪತಂಜಲಿ ವಾ ಭವೇತ್ಕಿಟಾಶ್ಚವಾ ಕೃಮಿ:" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೧೯೭ ।

2. ಝಡ್ಠಸ. "ದಂದಶೂಕಸ್ತು ಪುಲ್ಲಿಜ್ಞೋ ರಾಕ್ಷಸೇ ಚ ಸರಿಸೃಪೇ"

ಮೇದಿಂ । "ಇಷಮತಿ ರಘುಸಿಂಹೇ ದಂದಶೂಕಾನ್ ಜಿಘಾಂಸೌ"

ಮೇದಿಂ ೧-೨೬ । 3. ಕಚ್ಚುವ ಪ್ರಾಣಿ, ನಾಯಿ ಮೊದಲಾದವು.

"ದಂದಶೂಕಾಸ್ತು ದಂಶಕಾ:" ವೇಜಂ ।

ದಂಶ ದಂಶ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಸಾಗರ, ಕಡಲು. (ನಂ)

2. ಸ್ವಲ್ಪ, ಅಲ್ಪ. ದಂಶು (ದಂಶನೇ) "ರಕ್" (೩ಂ ೨-೧೩) ।

ದಂಶ: ಸಮುದ್ರ: ಸ್ವಲ್ಪಂ ಚ ಸಿಂ ಕೌಂ । (ವಿಂ) 3. ಸ್ವಲ್ಪ

ವಾದ, ಕೊಂಚವಾದ. "ಅದಂಶದಭಿಮಿಧಿಶಯ ಸ ಸ್ಥಳೀಮ್"

ಕಿರಾಂ ೧-೩೮ ।

ದಮ ದಮ (ಪುಂ) 1. ನಿಗ್ರಹ, ಹತೋಟಿ, ಅಂಕೆ, ಬಹಿರಿಂದ್ರಿಯ

ವ್ಯಾಪಾರಗಳನ್ನು ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡುವುದು. ದಮು (ಉಪಶಮೇ)

"ಘಜ್" (೩-೩-೧೮) । "ನಿಗ್ರಹೋ ವಾಹ್ಯವೃತ್ತಿನಾಂ ದಮ

ಇತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ" । "ಬುದ್ಧಿಜ್ಞಾನಮಸಂಮೋಹ: ಕ್ಷಮಾ ಸತ್ಯಂ ದಮ:

ಶಮ:" ಗೀತಾ ೧೦-೪ । 2. ದಂಡನೆ, ಶಿಕ್ಷೆ, ದಂಡೋಪಾಯ.

"ನಿಕ್ಷೇಪಸ್ಯಾಪಹರ್ತಾರಿಂ ತತ್ಸಮಂ ದಾಪಯೇದಮ್" ಮನುಂ ೮-೧೯೨ ।

"ಸಾಹಸಂ ತು ದಮೋ ದಂಡ:" ಅಮಂ । 3. ಚಿತ್ತಸ್ಥೈರ್ಯ

ಮನಸ್ಸು ವಿಚಾರಹೊಂದದಿರುವುದು. 4. ಅಡಗಿಸು,

ವುದು, ಹತೋಟಿಯಲ್ಲಿಡುವುದು. 5. ಕರ್ದಮಮಹರ್ಷಿ.

6. ತಪಸ್ಸಿನ ಕ್ಲೇಶವನ್ನು ಸಹಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. "ದಮಸ್ತು

ದಮಯೇ ದಂಡೇ ಕರ್ದಮೇ ದಮನೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ ।

ದಮಕ ದಮಕ (ವಿಂ) ದಮನಮಾಡುವವನು, ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿ

ಇಡುವವನು. ದಮಯತಿ—ದಮು (ಉಪಶಮೇ) + ಣಿಚ್ "ಫ್ವಲ್"

(೩-೧-೧೩೩) । "ಹಸ್ತಿಗೋಷ್ಠವೋಽದಮಕೋ ನಕ್ಷತ್ರೇಽಶ್ಚ

ಜೀವತಿ" ಮನುಂ ೩-೧೬೨ ।

ದಮಧೋಷ ದಮಧೋಷ (ಪುಂ) ಚೇದಿದೇಶದ ದೊರೆ.

ಶಿಶುಪಾಲನ ತಂದೆ. "ದಮಧೋಷದೇವಿರಾಜ: ಶ್ರುತಶ್ರವಸ-

ಮಗ್ರಹೀತ್" ಭಾಗಂ ೯-೨೪-೩೯ ।

ದಮಧೋಷಜ ದಮಧೋಷಜ (ಪುಂ) ಶಿಶುಪಾಲ, ದಮ

ಧೋಷನ ಮಗ. ದಮಧೋಷಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ)

"ಙ:" (೩-೨-೯೮) । "ಚಿರಸ್ಯ ಮಿತ್ರವ್ಯಸನಿ ಸುದಮೋ

ದಮಧೋಷಜ:" ಮಾಘಂ ೨-೬೦ ।

ದಮಧೋಷಸುತ ದಮಧೋಷಸುತ, —ಸುತು —ಸೂನು (ಪುಂ)

ಶಿಶುಪಾಲ. ದಮಧೋಷಸುತ: ಸುತುರ್ವಾ । "ದಮಧೋಷಸುತೇನ

ಕಶ್ಚನ ಪ್ರತಿಶಿಷ್ಟ: ಪ್ರತಿಭಾನವಾನಥ" ಮಾಘಂ ೧೬-೧ ।

ದಮಥ ದಮಥ (ಪುಂ) 1. ಬಹಿರಿಂದ್ರಿಯ ನಿಗ್ರಹ, ಬಹಿ

ರಿಂದ್ರಿಯವ್ಯಾಪಾರಗಳನ್ನು ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡುವುದು. ದಮು

(ಉಪಶಮೇ) "ಅಥ:" (೩ಂ ೩-೧೧೩) । 2. ದಂಡ,

ಶಿಕ್ಷೆ. 3. ತಪಸ್ಸಿನ ಕಷ್ಟವನ್ನು ಸಹಿಸುವಿಕೆ. "ದಮಥಸ್ತು

ಪುಮಾನ್ ದಂಡೇ ದಮೇ ಚ ಪರಿಕೀರ್ತಿತ:" ಮೇದಿಂ ।

ದಮನ ದಮನ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಕಾಂತಿಮಂದಾಕಿನಿಭಿ:

ಭವತಾಪಂ ದಮಯತಿ — ದಮು (ಉಪಶಮೇ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್"

(೩-೩-೧೧೩) । ಬಾಹುಲಕಾತ್ । "ಭವತಾಪಸ್ಯ ದಮನಾತ್

ಕಾಂತ್ಯಾ ದಮನ ಇರೀತ:" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ: । "ಮರೀಚಿದಮನೋ

ಹಂಸ:" ವಿಂ ಸಂ । 2. ವೀರ, ಪರಾಕ್ರಮಿ. 3. ಮೊಟ್ಟೆ

ಗಿಡ. (ನಂ) 4. ನಿಗ್ರಹ, ಅಡಗಿಸುವಿಕೆ. 5. ಶಿಕ್ಷಿಸು

ವುದು. ದಮು ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । "ದುರ್ದಾಂತಾನಾಂ

ದಮನವಿಧಯ: ಕ್ಷತ್ರಿಯೇಷ್ವಾಯತಂತೇ ದುರ್ದಾಂತಸ್ತ್ವಂ ವಯಮಪಿ ಚ ತೇ

ಕ್ಷತ್ರಿಯಾ: ಶಾಸಿತಾರ:" ಮಂ ವೀಂ ೩-೩೪ । 6. ಬಹಿರಿಂದ್ರಿಯ

ನಿಗ್ರಹ, ಬಹಿರಿಂದ್ರಿಯ ವ್ಯಾಪಾರಗಳನ್ನು ತಡೆಯುವುದು.

(ವಿಂ) 7. ನಿಗ್ರಹಿಸುವ, ಅಡಗಿಸುವ. 8. ಶಾಂತಚಿತ್ತ

ನಾದ, ಸಮಾಧಾನಹೊಂದಿದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ.

ದಮನೀಯ ದಮನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಅಡಗಿಸಲ್ಪಡುವ, ನಿಗ್ರಹಿಸ

ಲ್ಪಡುವ. 2. ನಿಗ್ರಹಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ನಿಗ್ರಹಿಸ



ಬೇಕಾದ. 4. ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಶಿಕ್ಷಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 6. ಶಿಕ್ಷಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 7. ಶಿಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ. ದಮು (ಉಪಶಮೇ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬). "ತವ್ಯಃ". ದಮಿತವ್ಯಮ್ ದಮಿತವ್ಯಮ್.

ದಮಯತ್ ದಮಯತ್ (ವಿಂ) 1. ನಿಗ್ರಹಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅಡಗಿಸುತ್ತಿರುವ. ದಮು (ಉಪಶಮೇ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). 2. ಶಿಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬). -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

ದಮಯಂತಿ ದಮಯಂತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎದರ್ಭದೇಶದ ರಾಜನಾದ ಭೀಮನ ಮಗಳು, ನಳಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಪತ್ನಿ. [ಭೀಮಭೂಪಾಲನು ಪುತ್ರಾರ್ಥಿಯಾಗಿ ಅನೇಕ ವ್ರತಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸಿದನು. ದಮನೇಂಬ ಋಷಿಯ ವರದಿಂದ ದಮಯಂತಿಯೆಂಬ ಕನ್ಯೆಯನ್ನೂ ದಮ ದಾಂತ ಮತ್ತು ದಮನೇಂಬ ಪುತ್ರರನ್ನೂ ಪಡೆದನು. ದಮಯಂತಿಯು ನಿಷಧಾಧಿಪತಿಯಾದ ನಳಚಕ್ರವರ್ತಿಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ಇಂದ್ರಸೇನನೆಂಬ ಮಗನನ್ನು ಪಡೆದಳು.] [ವಿವರಕ್ಕೆ "ನಲ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ದಮಯಿತ್ ದಮಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅಡೆಯಲ್ಲಿಡುವ, ಹತ್ತೋಟಿಯಲ್ಲಿಡುವ. 2. ನಿಗ್ರಹಿಸುವ. 3. ದಂಡಿಸುವ, ಶಿಕ್ಷಿಸುವ. 4. ಶಿಕ್ಷಿಸುವ, ಪಳಗಿಸುವ. ದಮು (ಉಪಶಮೇ) "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩). (ಪುಂ) 5. ವಿಷ್ಣು. ದಮು + ಣಿಕ್ ತಾಚ್ಛೀಲ್ಯೇ "ತನ್" (೩-೨-೧೩೪). "ತಾಚ್ಛೀಲ್ಯಾ-ದ್ರಾವಣಾದೀನಾಂ ಹರ್ತಾ ದಮಯಿತಾ ಸ್ವಯಮ್" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ. "ಧನುರ್ಧರೋ ಧನುರ್ವದೋ ದಂಡೋ ದಮಯಿತಾಽದಮಃ" ವಿಂ ಸಂ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೪). -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

ದಮಿತ ದಮಿತ (ವಿಂ) 1. ಅಡಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ದಂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ದಮಿತಂ ರಘುವೀರೇಣ ದದರ್ಶಾಂವಿ ಸ ದಕ್ಷಿಣಮ್" ಯಾದಂ ೨೨-೧೭೭. 3. ಪಳಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ದಮು (ಉಪಶಮೇ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨).

ದಮಿತವತ್ ದಮಿತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಅಡಗಿಸಿದವನು, ನಿಗ್ರಹಿಸಿದವನು. 2. ಪಳಗಿಸಿದವನು. 3. ಶಿಕ್ಷಿಸಿದವನು. ದಮು (ಉಪಶಮೇ) "ಕ್ತವತ್" (೩-೨-೧೦೨).

ದಮಿನ್ ದಮಿನ್ (ವಿಂ) 1. ನಿಗ್ರಹಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಅಂಕಿಯಲ್ಲಿಡುವ ಸ್ವಭಾವದ. ದಮಯತಿ - ದಮು (ಉಪಶಮೇ) + ಣಿಕ್ "ಧಿನ್ಯು" (೩-೨-೧೪೧). 2. ಬಹಿರಂದ್ರಿಯ ವ್ಯಾಪಾರವನ್ನು ತಡೆಯುವ.

ದಮುನಸ್ ದಮುನಸ್ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ದಾಮಯತಿ - ದಮು (ಉಪಶಮೇ) ಅಂತರ್ಮಾವಿತವ್ಯರ್ಥಃ "ಉನಸಿಃ" (೩ಂ ೪-೨೩೪). "ಸಪ್ತಾಚಿದಮುನಾಃ ಶುಕ್ರಃ" ಅಮಂ.

ದಮ್ಪತೀ ದಂಪತೀ (ಪುಂ ದ್ವಿವಂ) ಪತಿ ಮತ್ತು ಪತ್ನಿ, ಹೆಂಡತಿ ಮತ್ತು ಗಂಡ. ಜಾಯಾ ಚ ಪತಿಶ್ಚ - ಜಾಯಾಶಬ್ದಸ್ಯ ವಾ ದಮ್ ಭಾವೋ ನಿಪಾತ್ಯತೇ (೨-೨-೩೧). "ತೌ ದಮ್ಪತೀ ವಸಿಷ್ಠಸ್ಯ ಗುರೋರ್ಮತುರಾಶ್ರಮಮ್" ರಘುಂ ೧-೩೪. "ತೌ ದಮ್ಪತೀ ತ್ರಿಃ ಪರಿಣೀಯ ವಹ್ನಿಮನ್ಯೋನ್ಯಸಂಸ್ಪರ್ಶನಿಮಿಲಿತಾಕ್ಷೌ" ಕುಮಾಂ ೭-೮೦.

ದಮ್ಭ ದಂಭ (ಪುಂ) 1. ಮೋಸ, ವಂಚನೆ, ಠಕ್ಕು. 2. ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ. 3. ಕಪಟ, ಇತರರನ್ನು ಮೆಚ್ಚಿಸುವ ಕರ್ಮಾಚರಣೆ. ದಮ್ಯತೇ - ದಮ್ಭು (ದಮ್ಭನೇ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮). 4. ಇತರರಿಂದ ಗೌರವ ಸಂಪಾದಿಸಲು ಹಾಕುವ ವೇಷ, ತಾನು ಮಹಾವ್ಯಕ್ತಿಯೆಂದು ತೋರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಸತ್ಕಾರಮಾನಪೂಜಾರ್ಥಂ ತಪೋ ದಮ್ಭೇನ ಚೈವ ಯತ್. ಕ್ರಿಯತೇ ತದಿಹ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ರಾಜಸಂ ಚಲಮಧ್ರುವಮ್" ಗೀತಾ ೧೭-೧೮. 5. ಮೂರ್ಖತನ, ದುರುಳತನ, ದುರ್ವರ್ತನೆ. "ದಮ್ಭಸ್ತು ಕೇತವೇ ಕಲ್ಕೇ" ಮೇದಿಂ.

ದಮ್ಭಕ ದಂಭಕ (ವಿಂ) ಮೋಸಗಾರ, ವಂಚಕ, ಠಕ್ಕು. ದಮ್ಭು (ದಮ್ಭನೇ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩). "ಘರ್ಮಧ್ವಜಿ ಸದಾ ಲುಂಘಶ್ಚಾಧಿಕೋ ಲೋಕದಮ್ಭಕಃ" ಮನುಂ ೪-೧೯೪.

ದಮ್ಭನ ದಂಭನ (ನಂ) ವಂಚನೆ, ಮೋಸಮಾಡುವುದು. ದಮ್ಭು (ದಮ್ಭನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪).

ದಮ್ಭಿನ್ ದಂಭಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಕಪಟ, ವೇಷಹಾಕುವವನು. ಇತರರ ಮೆಚ್ಚಿಗೆಗಾಗಿ ಕರ್ಮಾಚರಣೆಯುಳ್ಳವನು. ದಮ್ಭೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಛಿನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪). 2. ಮೋಸಗಾರ, ವಂಚಕ. ದಮ್ಭು (ದಮ್ಭನೇ) "ಞಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮). "ದಮ್ಭಿಹೇತುಕಪಾಣಿವಕವೃತ್ತಿಶ್ಚ ವರ್ಜಯೇತ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೧೩೦.

ದಮ್ಭೋಲಿ ದಂಭೋಲಿ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧ. ದಮ್ಭ (ದಮ್ಭನೇ) "ಅಸುನ್" (೩ಂ ೪-೧೮೮). ದಮ್ಭಸಿ ರೋಷನೇ ಅಲಿಃ. ಸಮರ್ಥಃ - ಅಲ (ಭೂಷಣಾದಿ) "ಛಿನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭). 2. ವಜ್ರ.

ದಮ್ಯ ದಮ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಪಳಗಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ವಯಸ್ಸಿನ ಹೋರಿ, ಭಾರಹೋರಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ವಯಸ್ಸಿನ ಎತ್ತು. ದಮು (ಉಪಶಮೇ) "ಯತ್" (೩-೧-೯೮). 2. ಶಿಕ್ಷಣ ಹೊಂದಲು ಯೋಗ್ಯ ವಯಸ್ಸುಳ್ಳ. "ಗುರ್ವಿ ಧುರಂ ಯೋ ಭುವನಸ್ಯ ಪಿತ್ರಾ ಧುಯೇಣ ದಮ್ಯಃ ಸದೃಶಂ ವಿಭವತಿ" ರಘುಂ ೬-೭೮. 3. ಶಿಕ್ಷೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದ, ಶಿಕ್ಷಿಸಬಹುದಾದ. 4. ಶಿಕ್ಷಿಸಲು ಶಕ್ಯನಾದ.

ದಯಮಾನ ದಯಮಾನ (ವಿಂ) ದಯೆತೋರಿಸುವ, ಕನಿಕರ ತೋರಿಸುವ, ಕರುಣೆಯುಳ್ಳ. ದಯತೇ - ದಯ (ದಾನಗತಿ-



ರಕ್ಷಣಾದಿಷು) ಕರ್ತಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಅವತಂಸ-  
ಯಂತಿ ದಯಮಾನಾಃ ಪ್ರಮದಾಃ ಶಿರೀಷಕುಸುಮಾನಿ" ಶಾಕುಂ ೧-೪।

**ದಯಾ ದಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕರುಣೆ, ಕನಿಕರ, ಅನುಕಂಪ.

ದಯತೆ ರಕ್ಷತೃನಯಾ — ದಯ (ದಾನಗತಿರಕ್ಷಣಾದಿಷು) "ಅಹ್" (೩-೩-೧೦೪)। "ದಯಾ ವಾ ಸ್ನೇಹೋ ವಾ ಭಗವತಿ ನಿಜೇ-  
ಸ್ಮಿನ್ ಶಿಶುಜನೇ" ಮಾಲತೀಂ ೪-೬। 2. ಇತರರ ಕಷ್ಟ  
ವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವ ಇಚ್ಛೆ, ಇತರರ ಕಷ್ಟವನ್ನು ನೋಡಿ  
ಸಹಿಸದಿರುವುದು. "ಯತ್ನಾದಪಿ ಪರಕಲೇಶಂ ಹರ್ತುಂ ಯಾ ಹೃದಿ-  
ಜಾಯತೇ।. ಇಚ್ಛಾ ಭೂಮಿಸುರಶ್ರೇಷ್ಠ ಸಾ ದಯಾ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾ"।

"ಪ್ರಾಣಾ ಯಥಾತ್ಮನೋಽಭೀಷ್ಟಾ ಭೂತಾನಾಮಪಿ ತೇ ತಥಾ।

ಆತ್ಮೋಪಮೇನ ಸರ್ವತ್ರ ದಯಾಂ ಕುರ್ವಂತಿ ಸಾಧವಃ"। ದಯೆಯು

ಮೋಹದ ಪತ್ನಿ. ಮೋಹವಿದ್ದೆಡೆ ದಯೆಯೂ ಇರು

ವುದು. "ಮೋಹಪತ್ನೀ ದಯಾ ಸಾಧವಿ ಪೂಜಿತಾ ಚ ಜಗತ್ಪ್ರಿಯಾ।

ಸರ್ವಲೋಕಾಶ್ಚ ಸರ್ವತ್ರ ನಿಷ್ಫಲಾಶ್ಚ ಯಾ ವಿನಾ"। 3. ದಕ್ಷ

ಪ್ರಜಾಪತಿಯ ಒಬ್ಬ ಮಗಳು, ಧರ್ಮಪ್ರಜಾಪತಿಯ

ಪತ್ನಿ. "ಶ್ರದ್ಧಾ ಮೇತ್ರಿ ದಯಾ ತುಷ್ಟಿಃ ಶಾಂತಿಃ ಪುಷ್ಟಿಃ ಕ್ರಿಯಾ

ಉತ್ತಮತಃ ಬುದ್ಧಿಃ ಮೇಧಾ ತಿತಿಕ್ಷಾ ಹ್ರೀಃ ಮೂರ್ತಿಃ" ಇವರು ದಕ್ಷ

ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಕ್ಕಳು. ಧರ್ಮಪುರುಷನ ಪತ್ನಿಯರು.

**ದಯಾನಿಧಿ ದಯಾನಿಧಿ** (ವಿಂ) ದಯೆಗೆ ವಾಸಸ್ಥಾನವಾದ,

ಒಪ್ಪಳ ದಯೆಯುಳ್ಳ. ದಯಾ ನಿಧಿಃ।

**ದಯಾನ್ವಿತ ದಯಾನ್ವಿತ** (ವಿಂ) ದಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ದಯಾ ಅನ್ವಿತಃ।

**ದಯಾಂಬುಧಿ ದಯಾಂಬುಧಿ, -ಅಂಬೋಧಿ -ಅಂಬೋಧಿ,**

**-ಸಾಗರಃ -ಸಾಗರಃ** (ಪುಂ) ದಯೆಗೆ ಸಮುದ್ರದಂತಿ

ರುವ.

**ದಯಾಲು ದಯಾಲು** (ವಿಂ) ಕನಿಕರದ ಸ್ವಭಾವದ, ದಯೆ

ಯುಳ್ಳ. ದಯ (ದಾನಗತಿರಕ್ಷಣಾದಿ) "ಆಲುಚ್" (೩-೨-೧೫೮)।

"ಕಿಮಪ್ಯಹಿಸ್ಯಸ್ತವ ಚೇನ್ಮತೋಽಹಂ ಯಶಃಶರೀರೇ ಭವ ಮೇ

ದಯಾಲುಃ" ರಘುಂ ೨-೫೭।

**ದಯಾವತ್ ದಯಾವತ್** (ವಿಂ) ದಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ,

ಕನಿಕರವುಳ್ಳ. ದಯಾಸ್ಥಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೧೪)।

"ಉದಾರಕೀರ್ತೇರ್ದಯಂ ದಯಾವತಃ ಪ್ರಶಾಂತವಾಙ್ ದಿಶತೋಽಭಿರಕ್ಷಯಾ"

ಕಿರಾಂ ೧-೧೮।

**ದಯಾವೀರ ದಯಾವೀರ** (ಪುಂ) 1. ಕರುಣೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ

ವೀರರಸ. 2. ಕರುಣೆಯಿಂದಕೂಡಿದ ವೀರನಾಯಕ. ದಯಾ

ವೀರಃ। ವೀರರಸವು ದಾನವೀರಃ ಧರ್ಮವೀರಃ ಯುದ್ಧವೀರಃ ಮತ್ತು

ದಯಾವೀರಃ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. "ಸ ಚ ದಾನಧರ್ಮಯುಕ್ತೇ-

ರ್ದಯಾ ಚ ಸಮನ್ವಿತಶ್ಚತುರ್ಥಾ ಸ್ಯಾತ್" ಸಾಂ ದಂ ೩-೨೩೪।

**ದಯಿತ ದಯಿತ** (ಪುಂ) 1. ಪತಿ, ಗಂಡ. ದಯ (ದಾನಗತಿ-

ರಕ್ಷಣಾದಿ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಕರಣ್ಣನಿವಿ

ದಯಿತೋಪಗತೌ ಗಲಿತಂ ತ್ವರಾವಿರಹಿತಾಸನಯಾ" ಮಾಘಂ ೧-೭೫।

"ಸಂಜ್ಞಮಶ್ವ ದಯಿತೈಃ ಸ್ಮ ನಯಂತಿ" ಕಿರಾಂ ೧-೭೧। "ಜಹೀಹಿ

ಕೋಪಂ ದಯಿತೋಽನುಗಮ್ಯತಾಂ" ಕಿರಾಂ ೮-೮। (ವಿಂ) 2.

ಇಷ್ಟವಾದ, ಪ್ರಿಯವಾದ. "ನ ಗಜಾ ನಗಜಾ ದಯಿತಾ

ದಯಿತಾ ವಿಗತಂ ವಿಗತಂ ಲಲಿತಂ ಲಲಿತಮ್" ಮೃದ್ವಿಂ ೧೦-೯।

(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತಾ -ತಾ. 3. ಪತ್ನಿ, ಹೆಂಡತಿ. "ಪ್ರತ್ಯಾಸನ್ನೇ

ನಭಸಿ ದಯಿತಾಜೀವಿತಾಲಂಬನಾರ್ಥಿ" ಮೇಘಂ ೧-೪। "ಲೋಲ-

ದೃಷ್ಟಿ ವದನಂ ದಯಿತಾಯಾಃ" ಕಿರಾಂ ೮-೪೭।

**ದರ ದರ** (ಪುಂ) 1. ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ. ದೀಯತೆ — ದ್ವ (ಭಯ)

"ಅಪ್" (೩-೩-೫೭)। "ಅಮರ್ಷಶೂನ್ಯೇನ ಜನಸ್ಯ ಜನ್ತುನಾ

ನ ಜಾತಹಾರ್ದೇನ ಚ ವಿಧಿಷಾದರಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೩೩। "ಸಾ

ದರಂ ಪುತನಾ ನಿನ್ಯೇ ಹೀಯಮಾನಾ ರಸಾದರಮ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೨೩।

2. ಹೆಳ್ಳ, ಗುಳಿ, ಗರ್ಜ. "ದರೋಽಸ್ತ್ರೀ ಸಾಧವಸೇ ಗತೇ" ಮೇದಿಂ।

3. ಶಂಖ. (ಅವ್ಯಂ) 4. ಸ್ವಲ್ಪವಾಗಿ, ಕೊಂಚವಾಗಿ.

"ವಾತಾಹ್ಕೂರಾಜಿಹೀರ್ಷಾದರವಿವೃತಫಣಾಶ್ಚ ಭೂಭುಜ್ಜಗಮ್"

ಚಂ ಭಾಂ। "ದರೋ ಭಯೇ ಚ ಗತೇ ಚ ಕಿಂಚಿದರ್ಥೇ ದರಾವ್ಯಯಮ್"

ಶಾಶ್ವಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರೀ -ರೀ. ಗಂ, ಗುಹೆ. "ದರೋಽಸ್ತ್ರೀ

ಶಕ್ತುರನಯೋರ್ಗತೇಽಪಿ ಚ ಗುಹಾ ದರೀ। ದರಂ ತ್ವವ್ಯಯಮಲ್ಪಾರ್ಥೇ"

ನಾನಾರ್ಥರಂ।

**ದರಕ ದರಕ** (ವಿಂ) ಭಯದ ಸ್ವಭಾವದ, ಭೀರು. ದ್ವ (ಭಯ)

"ಕ್ವುನ್" (೩ಂ ೨-೩೮)।

**ದರಣ ದರಣ** (ನಂ) ಒಡೆಯುವುದು, ಸೇಳುವುದು, ಕತ್ತರಿಸು

ವುದು. ದ್ವ (ವಿದಾರಣೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ದರಣಿ ದರಣಿ** (ಪುಂ) ಬಂಡೆಗಳ ಮೇಲೆ ನೀರಿನ ಅಲೆಗಳು

ಬಡಿದು ಏಳುವ ನೋರೆ, ತೆರೆನೋರೆ. ದ್ವ (ವಿದಾರಣೆ)

"ಅನಿಃ" (೩ಂ ೨-೧೦೩)।

**ದರಥ ದರಥ** (ಪುಂ) ಕಂದರ, ಗುಹೆ, ಗಂಟೆ. ದ್ವ (ವಿದಾರಣೆ)

"ಅಥಃ" ಬಾಹ್ಯಂ।

**ದರದ್ ದರದ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೃದಯ, ಅಂತಃಕರಣ 2. ತೀರ,

ದಡ. "ದರದ್ಹೃದಯಕೂಲಯಃ" ಸಿಂ ಕೌಂ। 3. ಭಯ,

4. ಪ್ರಪಾತ, ಬೆಟ್ಟದ ಕಡಿದಾದ ಪ್ರದೇಶ. 5. ಪರ್ವತ,

ಬೆಟ್ಟ. ದ್ವ (ವಿದಾರಣೆ) "ಅದಿಃ" (೩ಂ ೧-೧೨೭)।

"ದರತ್ ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಪ್ರಪಾತೇಽಪಿ ಭಯಪರ್ವತಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ।

**ದರದ ದರದ** (ವಿಂ) 1. ಭಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ದರಂ

ಭಯಂ ದದಾತಿ — ಡು ದಾಕ್ (ದಾನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)।

(ಪುಂ) 2. ಮೇಲ್ಮಜ್ಜಾತಿಯವನು. "ಪಾರದಾಃ ಪಲ್ಲವಾ-

ಶ್ವೀನಾಃ ಕಿರಾತಾ ದರದಾಃ ಕ್ಷಶಾಃ" ಮನುಂ ೧೦-೪೪।



**ದರವರ ದರವರ** (ಪುಂ) ಶ್ರೀವಿಷ್ಣುವಿನ ಪಾಂಚಜನ್ಯವೆಂಬ ಶಂಖ. ದರೇಷು ಶಸ್ತ್ರೇಷು ವರಃ | "ದರ್ಮೌ ದರವರಂ ತೇಷಾಂ ವಿಷಾದಂ ಶಮಯಶ್ಚಿವ" ಭಾಗಂ ೧-೧೧-೧ |

**ದರಿತ ದರಿತ** (ವಿಂ) ಭಯವುಂಟಾಗಿರುವ, ಹೆದರಿರುವ. ದರೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ "ಇತಚ್" (೪-೨-೩೬) |

**ದರಿತವ್ಯ ದರಿತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಸೀಳಲ್ಪಡುವ, ಎರಡಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಎರಡು ತುಂಡಾಗಿ ಮಾಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ಸೀಳಬೇಕಾದ, ತುಂಡುಮಾಡಬೇಕಾದ. ದೃ (ವಿದಾರಣೆ) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬) |

**ದರಿದ್ರ ದರಿದ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಭಿಕ್ಷುಕ, ಹೊಟ್ಟೆಬಟ್ಟೆಗಳಿಗಿಲ್ಲದೆ ಕಷ್ಟದಲ್ಲಿರುವವನು. "ಸ್ತ್ರೀಬಾಲೋನ್ಮತ್ತವೃದ್ಧಾನಾಂ ದರಿದ್ರಾಣಾಂ ಚ ರೋಗಿಣಾಮ್" ಮನಂ ೯-೨೩೦ | 2. ಬಡವ, ಧನವಿಲ್ಲದವನು, ಗತಿಯಿಲ್ಲದವನು. ದರಿದ್ರಾ (ದುರ್ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಮನಸಿ ಚ ಪರಿತುಷ್ಟೇ ಕೋಽರ್ಥವಾನ್ ಕೋ ದರಿದ್ರಃ" ಭರ್ತುಂ ೩-೪೩ |

**ದರಿದ್ರಾ - ದುರ್ಗತೌ** (ಅದಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ) | ದರಿದ್ರಾತಿ ದರಿದ್ರತಿಃ ದರಿದ್ರತಿ | ದರಿದ್ರಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ದರಿದ್ರಿತಾ | ದರಿದ್ರಿಷ್ಯತಿ | ದರಿದ್ರಾತು | ಅದರಿದ್ರಾತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. ದರಿದ್ರನಾಗು, ಕಿಟ್ಟಿಸ್ತಿತಿಹೊಂದು, ಧನಹೀನನಾಗು.

**ಭಾವಃ**:-ದರಿದ್ರಯತೇ | ದರಿದ್ರಾಂ ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸೇ | ದರಿದ್ರಿತಾ | ದರಿದ್ರಿತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತ್ಸು**:-ದರಿದ್ರಿತವ್ಯಮ್ | ದರಿದ್ರಣೀಯಮ್ | ದರಿದ್ರಿತಃ | ದರಿದ್ರಿತವಾನ್, -ವತಿ | ದರಿದ್ರತ್, -ದ್ರತಿ | ದರಿದ್ರಿತಮ್ | ದರಿದ್ರಾಣಮ್ |

**ದರಿದ್ರಾಯಕ ದರಿದ್ರಾಯಕ** (ವಿಂ) ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. ದರಿದ್ರಾತಿ - ದರಿದ್ರಾ (ದುರ್ಗತೌ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |

**ದರಿದ್ರಿತ ದರಿದ್ರಿತ** (ವಿಂ) ದಾರಿದ್ರ್ಯದಿಂದಕೂಡಿದ, ಬಡತನದಿಂದ ಕೂಡಿರುವ, ಬಡವನಾಗಿರುವ. ದರಿದ್ರಾ (ದುರ್ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) |

**ದರಿದ್ರಿತ ದರಿದ್ರಿತ** (ವಿಂ) ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. ದರಿದ್ರಾ (ದುರ್ಗತೌ) ಕರ್ತಂ "ತನ್" (೩-೨-೧೩೪) |

**ದರಿ ದರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗುಹೆ, ಗವಿ. ದೃ (ವಿದಾರಣೆ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭) | ವಾ "ಡೀಪ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೪) | ಪಕ್ಷೆ ದರಿಃ ದರಿಃ. "ವನೇಚರಾಣಾಂ ವನಿತಾಸಖಾನಾಂ ದರಿಗೃಹೋತ್ಸಜ್ಜನಿಷಕ್ತಭಾಸಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೧೦ |

**ದರಿಗೃಹ ದರಿಗೃಹ** (ನಂ) ಗುಹೆಯೆಂಬ ಮನೆ. ದರ್ಯವ ಗೃಹಮ್ | "ವನೇಚರಾಣಾಂ ವನಿತಾಸಖಾನಾಂ ದರಿಗೃಹೋತ್ಸಜ್ಜನಿಷಕ್ತಭಾಸಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೧೦ |

**ದರಿಮುಖ ದರಿಮುಖ** (ನಂ) ಗುಹೆಯೆಂಬ ಬಾಯಿ, ಗುಹೆಯ ರೂಪವಾದ ಬಾಯಿ. ದರ್ಯವ ಮುಖಮ್ | "ಯಃ ಪೂರಯನ್ ಕೀಚಕರಂಧ್ರಭಾಗಾನ್ ದರಿಮುಖೋತ್ಥೇನ ಸಮೀರಣೇನ" ಕುಮಾಂ ೧-೮ |

**ದರ್ದರ ದರ್ದರ** (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. (ವಿಂ) 2. ಸ್ವಲ್ಪ ಒಡೆದಿರುವ ಪಾತ್ರೆ. "ದರ್ದರಃ ಪರ್ವತೇ ಪುಂಸಿ ತ್ರಿವಿಧಿಷ್ಠಾನ್ ಭಾಜನೇ" ಮೇದಿಂ |

**ದರ್ದರ ದರ್ದರ** (ಪುಂ) 1. ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. ದೃಣಾತಿ ಕರ್ಣಿ ಶಬ್ದಃ:-ದೃ (ವಿದಾರಣೆ) "ಊರ್ಚ್" ದ್ವಿತ್ವಂ ಅಮ್ಯಾಸಸ್ಯ ಕ್ಕು ಟಿಲೋಪಶ್ಚ ನಿಪಾತ್ಯತೇ (೩ಂ ೧-೪೦) | "ಕೌಶೇಯಂ ತಿತ್ತಿರಿಹಿತ್ವಾ ಕೌಮಂ ಹತ್ವಾ ತು ದರ್ದರಃ" ಮನುಂ ೧೨-೬೪ | 2. ಒಂದು ಪರ್ವತ. "ಸ್ತನಾವಿವ ದಿಶಸ್ತಸ್ಯಾಃ ಶೈಲೌ ಮಲಯದರ್ದರೌ" ರಘುಂ ೪-೪೧ | 3. ಮೇಘ, ಮಂಡ. 4. ಒಂದು ಪಾದ್ಯ. "ದರ್ದರಸ್ತೋದೇ ಭೇಕೇ ವಾಙ್ಮಾಣ್ಡಾದ್ರಿ-ಭೇದಯೋಃ" ಮೇದಿಂ | "ಪರ್ಯಂತವರ್ಮಸು ವಿಚಕ್ರಮಿರೇ ಮಾಹಾಶ್ವಾಃ ಶೈಲಸ್ಯ ದರ್ದರಪುಟಾನಿವ ವಾದಯಂತಃ" ಮಾಘಂ ೪-೯ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಾ-ರಾ. 5. ಚಂಡಿಕೆ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ. (ನಂ) 6. ಹಳ್ಳಿಗಳ ಗುಂಪು, ಜಿಲ್ಲೆ, ಮಂಡಲ. "ದರ್ದರಾ ಚಂಡಿಕಾಯಾಂ ಸ್ಯಾತ್ ಗ್ರಾಮಜಾಲೇ ನಪುಂಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ |

**ದರ್ದುಘ್ನ ದರ್ದುಘ್ನ** (ಪುಂ) ತಗ್ಗಿಕೆಗಿಡ. ದರ್ದುಂ ಹಂತಿ-ಹಂತ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) "ಠಕ್" (೩-೨-೪೩) | "ದರ್ದುಘ್ನಶ್ಚಕ್ರಮದಕಃ" ಅಮಂ |

**ದರ್ದುಣ ದರ್ದುಣ** (ವಿಂ) ಹುಳುಕಡ್ಡಿ ರೋಗವುಳ್ಳವನು. ದರ್ದುರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ನಃ" ಹ್ರಸ್ವಶ್ಚ (ಗಂ ೪-೨-೧೦೦) | "ದರ್ದುಣೋ ದರ್ದುರೋಗಿ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ |

**ದರ್ದು ದರ್ದು** (ಪುಂ) ದರ್ದು, ಹುಳುಕಡ್ಡಿ. ದರಿದ್ರಾ (ದುರ್ಗತೌ) "ಃ" ಇಕಾರಸ್ಯ ಆಕಾರಸ್ಯ ಚ ಲೋಪಃ (೩ಂ ೧-೯೦) |

**ದರ್ಪ ದರ್ಪ** (ಪುಂ) 1. ಸೊಕ್ಕು, ಕೊಬ್ಬು, ಗರ್ವ. ದೃಪ (ಹರ್ಷಮೋಹನಯೋಃ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮) | "ದರ್ಪೋದಯೋಲ್ಲಸಿತಫೇನ-ಜಲಾನುಸಾರಸಂಲಕ್ಷ್ಯಪತ್ಯಯನವಧ್ವಂಪದಾಸ್ತುರಜ್ಞಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೪೩ | 2. ದುಡುಕು, ಉತ್ತಾವಳಿ, ಹಿರಿಯರನ್ನು ತಿರಸ್ಕಾರದಿಂದ ಕಾಣುವ ಬುದ್ಧಿ. 3. ಅಹಂಕಾರ, ಹೆಮ್ಮೆ. "ದರ್ಪಃ ಸ್ಪಾದಮೃತೇನ ಚೇದಿಹ ತದಪ್ಯಸ್ತೇವ ಬಿಂಬಾಧರೇ" ರತ್ನಾಂ ೩-೧೩ | 4. ಕಸೂರಿ. "ದರ್ಪೋಽಹಿಂಸಾರಕಸ್ತುರಿಯೋಃ" ನಾನಾರ್ಥರಂ | 5. ಕಾವು, ಬಿಸುಪು, ಉಪ್ಪುತೆ. 6. ಉತ್ತರ. "ತೇಜೋವಿಹೀನಂ ವಿಜಹಾತಿ ದರ್ಪಃ" ಕಿರಾಂ ೧೭-೧೬ |

**ದರ್ಪಕ ದರ್ಪಕ** (ಪುಂ) 1. ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮ. ದರ್ಪಯತಿ-ದೃಪ (ಹರ್ಷಮೋಹನಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |



(ವಿಂ) 2. ಅಹಂಕಾರವನ್ನೂ ಕೊಬ್ಬನ್ನೂ ಉಂಟು ಮಾಡುವ. "ಕಂದರ್ಪೋ ದರ್ಪಕೋಜ್ಞಃ" ಅಮಂ ।

**ದರ್ಪಣ ದರ್ಪಣ** (ಪುಂ) 1. ಕನ್ನಡಿ. ದರ್ಪಯತಿ — ದೃಪ (ಹರ್ಷ-ಮೋಹನಯೋಃ) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) । "ನವಂ ನವಕ್ಷೌಮನಿವಾಸಿನಿ ಸಾ ಭೂಯೋ ಬಭೌ ದರ್ಪಣಮಾದಧಾನಾ" ಕುಮಾಂ ೭-೨೬ । 2. ಕುಬೇರನ ವಾಸಸ್ಥಾನವಾದ ಪರ್ವತ. 3. ನೇತ್ರ, ಕಣ್ಣು. "ತತಃ ಪೂರ್ವಂ ಮಹಾರಾಜ ದರ್ಪಣೋ ನಾಮ ಪರ್ವತಃ । ಕುಬೇರೋ ಯತ್ರ ವಸತಿ ಧನಪಾಲಃ ಸಮಂ ಸದಾ" ।

**ದರ್ಪಣಿಕಾ ದರ್ಪಣಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕನ್ನಡಿ. "ಯನ್ಮತೌ ವಿಮಲ ದರ್ಪಣಿಕಾಯಾಮ್" ನೈಷಂ ೪-೧೦೬ ।

**ದರ್ಪದ ದರ್ಪದ** (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ದರ್ಪ ಯಾದವಾನಾಂ ಮಧುಪಾನಮದಂ ದದಾತಿ—ಙ್ ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) । "ಮಧುರಾಢ್ಯಾಂ ಯಾದವೇಶ್ಯೋ ಮಧುಪಾನಾದಿನಾ ತತಃ । ದರ್ಪಂ ಚ ದತ್ತವಾನ್ ಯೋಷ್ಠೌ ದರ್ಪದಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । "ದರ್ಪಹಾ ದರ್ಪದೋದ್ಭುತಃ" ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ) 2. ಅಹಂಕಾರವನ್ನೂಂಟುಮಾಡುವ.

**ದರ್ಪಹನ್ ದರ್ಪಹನ್** (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ದರ್ಪಂ ಗೋವರ್ಧನೋದ್ಧರಣ ಪಾರಿಜಾತಾಹರಣಾದೌ ದೇವಾನಾಂ ಗರ್ವಂ ಹತವಾನ್ — ಹನ್ (ಹಿಸಾ-ಗತ್ಯೋಃ) ಉಪಪದನಿಯಮಸ್ಯ ಪ್ರಾಯಿಕತ್ವಾತ್ "ವಿಪ್" । "ಗೋವರ್ಧನಸ್ಯೋದ್ಧರಣೇ ಪಾರಿಜಾತಪರಿಗ್ರಹೇ । ಬಾಣದೋರ್ದಂಢವಿಷ್ಣುಜನಾಂ ಖಂಡನಾದೌ ತದಾ ತದಾ । ದೇವಾನಾಂ ವೈ ದರ್ಪಮಾತ್ರಂ ಹತವಾನ್ ಯಃ ಸ ದರ್ಪಹಾ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । "ದರ್ಪಹಾ ದರ್ಪದೋದ್ಭುತಃ" ವಿಂ ಸಂ । 2. ಕೊಬ್ಬನ್ನು ಅಡಗಿಸುವ, ಸೊಕ್ಕನ್ನು ಮುರಿಯುವ.

**ದರ್ಪಿತ ದರ್ಪಿತ** (ವಿಂ) 1. ಅಹಂಕಾರವುಂಟಾಗಿರುವ. 2. ಕೊಬ್ಬಿರುವ. ದರ್ಪೋಽಸ್ಯ ಸಂಜ್ಞಾತಃ "ಇತ್" (೪-೨-೩೬) ।

**ದರ್ಪಿನ್ ದರ್ಪಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಕೊಬ್ಬಿರುವ. 2. ಅಹಂಕಾರ ದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ದರ್ಪೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) ।

**ದರ್ಭ ದರ್ಭ** (ಪುಂ) ಕುಶ, ದರ್ಭೆಹುಲ್ಲು. ದೃಮ್ಯತೇ — ದೃಮಿ (ಗ್ರನ್ಯೇ) "ಘ" (೩-೩-೧೧) । "ಅದಭ್ರದರ್ಮಾಮಿವಿಶಯ್ಯ ಸ ಸ್ಥಲಿಂ ಜಹಾಸಿ ನಿರಾಮಶಿವಃ ಶಿವಾಸ್ತೇ" ಕಿರಾಂ ೧-೩೮ ।

**ದರ್ಭಟ ದರ್ಭಟ** (ನಂ) ಗುಪ್ತಗೃಹ, ರಹಸ್ಯಗೃಹ, ಏಕಾಂತ ಗೃಹ. ದೃಮಿ (ಗ್ರನ್ಯೇ) "ಅಟ್" (೩ಂ ೪-೮೧) । "ದರ್ಭಟಂ ನಿಭೃತಂ ಗೃಹಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ದರ್ಭಪತ್ರ ದರ್ಭಪತ್ರ** (ಪುಂ) ಕಾಶತ್ಯಣ, ಜಂಬುಹುಲ್ಲು.

**ದರ್ಭಪುಷ್ಪ ದರ್ಭಪುಷ್ಪ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹಾವು.

**ದರ್ಭಮುಷ್ಠಿ ದರ್ಭಮುಷ್ಠಿ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಹಿಡಿ ದರ್ಭ.

**ದರ್ವ ದರ್ವ** (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ. 2. ಹಿಂಸೆ. 3. ಸವಟು. 4. ದುಷ್ಟಪ್ರಾಣಿ. (ವಿಂ) 5. ವಂಚಿಸಿ ಸುಲಿಗೆ ಮಾಡುವವನು, ದೋಚಿಕೊಳ್ಳುವವನು, ಹಿಂಸಿಸುವವನು.

**ದರ್ವಟ ದರ್ವಟ** (ಪುಂ) ಶಿಕ್ಷೆಯನ್ನು ವಿಧಿಸಿ ಹೇಳುವ ನ್ಯಾಯಾಧಿ ಪತಿ. "ದರ್ವಟೋ ದಂಡವಾದೀ ಸ್ಯಾತ್" ಹಾರಾಂ ।

**ದರ್ವರೀಕ ದರ್ವರೀಕ** (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. ದೃ (ವಿದಾರಣೇ) "ಇಕ್" (೩ಂ ೪-೨೦) । ನಿಪಾಂ । 2. ಪಾತ, ಗಾಳಿ.

**ದರ್ವಿ ದರ್ವಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸವಟು, ಮಿಳ್ಳೆ, ಸಟ್ಟುಗ. ದೃಕ್ (ಆದರೆ) "ವಿನ್" (೩ಂ ೪-೪೩) । 2. ಹಾವಿನ ಹೆಡೆ. "ಪೃಥುದರ್ವಿಭೃತಸ್ತತಃ ಫಣಿನ್ದ್ರಾಃ ವಿಷಮಾಶೀಭಿರನಾರತಂ ವಮಂತಃ" ಮಾಘಂ ೨೦-೪೨ । ವಾ "ಙೀಘ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೪) । -ವಿಂ -ರ್ವಿ.

**ದರ್ವಿಭೃತ್ ದರ್ವಿಭೃತ್** (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ದರ್ವಿ ವಿಭೃತಿ—ಙ್ ಭೃತ್ (ಭಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬) । (ವಿಂ) 2. ಹೆಡೆಯನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ. "ಪೃಥುದರ್ವಿಭೃತಸ್ತತಃ ಫಣಿನ್ದ್ರಾಃ ವಿಷಮಾಶೀಭಿರನಾರತಂ ವಮಂತಃ" ಮಾಘಂ ೨೦-೪೨ ।

**ದರ್ವೀಕರ ದರ್ವೀಕರ** (ಪುಂ) ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ದರ್ವೀಕಾರಃ ಫಣಿನ್ದ್ರಾಃ ಏವ ಕರೋ ಯಸ್ಯ । "ದರ್ವೀಕರಾ ದೀಪಕಾಶ್ಚ ತೇಷುಕ್ತಾಃ ಕಟುಪಾಕಿನಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬-೮೪ ।

**ದರ್ವೀಸಂಕ್ರಮಣ ದರ್ವೀಸಂಕ್ರಮಣ** (ನಂ) ಒಂದು ಪುಣ್ಯ ಶೀರ್ಷಕ.

**ದರ್ಶ ದರ್ಶ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರರು ಒಂದು ಕಡೆ ಸೇರುವ ಕಾಲ, ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ. ದೃಶ್ಯತೇ ಶಾಸ್ತ್ರೇಣ ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರೌ ಏಕತ್ರ ಯತ್ರ—ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) "ಘಃ" (೩-೩-೧೧೮) । "ಏಕತ್ರಸ್ಥೌ ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರೌ ದರ್ಶನಾತ್ ದರ್ಶಂ ಉಚ್ಯತೇ" ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ । 2. ಅಮಾವಾಸ್ಯೆಯ ದಿನ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಯಾಗ. ದರ್ಶಃ ಕಾರಣತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) । "ದರ್ಶಶ್ಚ ಪೌರ್ಣಮಾಸಶ್ಚ ಯಾಗೌ ಪಕ್ಷಾಂತಯೋಃ ಪೃಥಕ್" ಅಮಂ । 3. ನೋಟ, ನೋಡುವುದು, ದರ್ಶನ. "ದರ್ಶಸ್ತು ಸ್ಯಾದಮಾವಾಸ್ಯಾ ಯಾಗ-ಭೇದಾವಲೋಕನೇ" ಮೇದಿಂ ।

**ದರ್ಶಕ ದರ್ಶಕ** (ಪುಂ) 1. ದ್ವಾರಪಾಲಕ. ಪಶ್ಯತಿ—ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । ದರ್ಶಯತಿ ರಾಜಾನಮ್—ದೃಶಿರ್+ಣಿच् "ಫ್ವಲ್" ವಾ । (ವಿಂ) 2. ನೋಡುವವನು. 3. ತೋರಿಸುವವನು. "ವಿಧಿಪ್ರಯುಕ್ತಸತ್ಕಾರೈಃ ಸ್ವಯಂ ಮಾಗಸ್ಯ ದರ್ಶಕಃ" ಕುಮಾಂ ೬-೪೨ । 4. ಪ್ರವೀಣ, ನಿಪುಣ, ಜಾಣ. "ದರ್ಶಕಃ ಸ್ಯಾತ್ ಪ್ರತೀಹಾರೇ ದರ್ಶಯಿತ್ ಪ್ರವೀಣಯೋಃ" ಮೇದಿಂ ।

**ದರ್ಶಿತ ದರ್ಶಿತ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಚಂದ್ರ. ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) "ಅತ್" (೩ಂ ೩-೧೦೦) । "ದರ್ಶಿತಃ ಸೋಮ-ಸೂರ್ಯಯೋಃ" ಸಿಂ ಕೌಂ ।



ದರ್ಶನ ದರ್ಶನ (ನಂ) 1. ನೋಡುವುದು, ಅವಲೋಕನ. ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। "ದರ್ಶನಾನು-  
ಪದಮೇವ ಕಾಮತಃ ಸ್ವಂ ವನೀಪಕಜನೇಽಧಿಗಚ್ಛತಿ" ಮಾಘಂ  
14-48। 2. ನಯನ, ನೇತ್ರ, ಕಣ್ಣು. ದೃಶಿರ್  
ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-116)। 3. ಬುದ್ಧಿ, ಜ್ಞಾನ. 4. ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ಅರಿವು. "ದರ್ಶನೇನ ವಿಹೀನಸ್ತು ಸಂಸಾರಂ  
ಪ್ರತಿಪದ್ಯತೇ" ಮನುಂ 6-94। 5. ತೋರಿಸುವುದು.  
6. ಯಾಗ. 7. ಸ್ವಪ್ನ, ಕನಸು. 8. ಚಿಂತಿಸುವುದು,  
ಅಲೋಚಿಸುವುದು. "ಯಥಾ ರಾಜಾ ನ ಕುರ್ಯಾತ್ ನೃಪತಿಃ  
ಕಯದರ್ಶನಮ್" ಮನುಂ 6-91। 9. ತೀರ್ಮಾನ, ನಿರ್ಣಯ.  
"ನ ಹಿ ಸ್ವಾಭಿಪ್ರಾಯೇಣ ಮೇ ದರ್ಶನಮ್" ಶಾಕ್ತುಂ 3।  
10. ಪರೀಕ್ಷಿಸಿ ನೋಡುವುದು. "ಬಲಾನಾಂ ದರ್ಶನಂ ಕೃತ್ವಾ  
ಸೇನಾನ್ಯಾ ಸಹ ಚಿಂತಯೇತ್" ಯಾಜ್ಞಂ 1-329। 11. ವರ್ಣ,  
ಬಣ್ಣ. 12. ದರ್ಪಣ, ಕನ್ನಡಿ. 13. ಧರ್ಮ. 14. ಶಾಸ್ತ್ರ.  
"ದರ್ಶನಂ ನಯನಂ ಸ್ವಪ್ನಬುದ್ಧಿಧರ್ಮೋಪಲಬ್ಧಿಷು | ಶಾಸ್ತ್ರದರ್ಪಣಯೋಶ್ಚ"  
ಮೇದಿಂ | 15. ತತ್ತ್ವಶಾಸ್ತ್ರ, ಆಯಾ (ದಾರ್ಶನಿಕರ)  
ತತ್ತ್ವಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ. ದೃಶ್ಯತೇ ಜ್ಞಾಯತೇ ಚಾತ್ಮಾ  
ಅನೇನ — ದೃಶಿರ್ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-116)। ಇಂತಹ  
ದರ್ಶನಗಳು (1) ವೈಶೇಷಿಕ, (2) ನ್ಯಾಯ, (3) ವೇದಾಂತ,  
(4) ಸಾಂಖ್ಯ, (5) ಯೋಗ ಮತ್ತು (6) ವಿಷಯವಾದಿಗಳು  
ಎಂದು ಆರು ವಿಧ. ಇವು ಆರೂ ಆಸ್ತಿಕ ದರ್ಶನಗಳು.  
"ಕಣಾದಸ್ಯಾಕ್ಷಪಾದಸ್ಯ ವ್ಯಾಸಸ್ಯ ಕಪಿಲಸ್ಯ ಚ | ಪತಂಜಲೇ-  
ಜಮಿನೇಶ್ಚ ದರ್ಶನಾನಿ ಷಡೇವ ಹಿ" | ಸಾಂಖ್ಯವು ಸೇಶ್ವರ  
ನಿರೀಶ್ವರ ಭೇದಗಳಿಂದ ಎರಡು ವಿಧ. ವೇದಾಂತವೂ ದ್ವೈತ,  
ಅನ್ವೈತ, ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತ, ಶಕ್ತಿ ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತ ಮೊದ  
ಲಾಗಿ ಅನೇಕ ವಿಧಗಳಾಗಿರುವುದು. ಇವಲ್ಲದೆ ಚಾರ್ವಾಕ  
ಬೌದ್ಧ ಮತ್ತು ಜೈನಗಳೆಂಬ ಮೂರು ದರ್ಶನಗಳಿರುವುವು.  
ಇವಿಷ್ಟೂ ಹಿಂದೂ ದರ್ಶನಗಳು. ದರ್ಶನವೆಂದರೆ ತತ್ತ್ವ  
ಮಾರ್ಗವೆಂದೂ ಮತವೆಂದರೆ ಭಕ್ತಿಮಾರ್ಗವೆಂದೂ ಹೆಸರು.  
ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ ಪರೋಕ್ಷವಾದ ಸಕಲ ವಸ್ತುಗಳ ವಿಚಾರವೇ ತತ್ತ್ವ  
ಮಾರ್ಗವು. ಮತವೆಂದರೆ ಮನೋಭಾವಕ್ಕೆ ಗೋಚರ  
ವಾದುದು. ಈ ಮನೋಭಾವವನ್ನು ಶ್ರದ್ಧಾ ಭಕ್ತಿ  
ವಿಶ್ವಾಸ ನಂಬಿಕೆ ಮೊದಲಾದ ಶಬ್ದಗಳಿಂದ ವ್ಯವ  
ಹರಿಸುವರು. ಒಂದು ವಸ್ತುಸ್ವಭಾವ ವಿಷಯವಾದುದು.  
ಮತ್ತೊಂದು ಸಾಂಪ್ರದಾಯಿಕಮನೋಭಾವವಿಷಯ  
ವಾದುದು. (1) ಶೈವ, (2) ವೈಷ್ಣವ, (3) ಶಾಕ್ತ, (4) ಸೌರ,  
(5) ಗಾಣಾಪತ್ಯ ಮತ್ತು (6) ಸ್ಕಾಂದಗಳೆಂದು ಆರು ಭಕ್ತಿ  
ಮಾರ್ಗದ ದರ್ಶನಗಳು. "ಶೈವಂ ಚ ವೈಷ್ಣವಂ ಶಾಕ್ತಂ ಸೌರಂ  
ವೈನಾಯಕಂ ತಥಾ | ಸ್ಕಾಂದಂ ಚ ಭಕ್ತಿಮಾರ್ಗಸ್ಯ ದರ್ಶನಾನಿ ಷಡೇವ

ಹಿ" | ಈ ಪಂಕ್ತಿಗಳೂ ಪೂಜ್ಯ ದೇವತಾವಿಭಾಗದಿಂದ  
ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿರುವುವು.

ದರ್ಶನಗೃಹ ದರ್ಶನಗೃಹ (ನಂ) ಅಭ್ಯಾಗತ ಮೊದಲಾದವ  
ರನ್ನು ನೋಡುವ ಕೊಠಡಿ.

ದರ್ಶನಪ್ರತಿಭೂ ದರ್ಶನಪ್ರತಿಭೂ (ಪುಂ) ಜಾಮೀನುದಾರ,  
ಅವಶ್ಯವಾದಾಗ ಅಪಾದಿತನನ್ನು ತಂದು ತೋರಿಸುವ ಹೊಣೆ  
ಯನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವವನು. ದರ್ಶನಾಯ ಪ್ರತಿಭೂಃ | ಜಾಮೀನು  
ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. (1) ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದಾಗ ಒಬ್ಬನನ್ನು ತಂದು  
ತೋರಿಸುವುದು. (2) ನಂಬಿಕೆಯಿಡುವುದು. (3) ಒಬ್ಬನಿ  
ಗಾಗಿ ಹಣವನ್ನು ಕೊಡುವುದು. (4) ಒಬ್ಬನ ಸಾಲವನ್ನು  
ತೀರಿಸುವುದು. "ದರ್ಶನೇ ಪ್ರತಿಯೇ ದಾನೇ ಋಣದ್ರವ್ಯಾರ್ಪಣೇ ತಥಾ |  
ಚತುಃಪ್ರಕಾರಃ ಪ್ರತಿಭೂಃ ಶಾಸ್ತ್ರೇ ದೃಷ್ಟೋ ಮನೀಷಿಭಿಃ" |

ದರ್ಶನಪ್ರಾತಿಭಾವ್ಯ ದರ್ಶನಪ್ರಾತಿಭಾವ್ಯ (ನಂ) ಅವಶ್ಯ  
ವಾದಾಗ/ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದಾಗ (ಒಬ್ಬನನ್ನು) ತಂದು ತೋರಿಸುವ  
ಹೊಣೆಗಾರಿಕೆ, ಜಾಮೀನು. "ದರ್ಶನಪ್ರಾತಿಭಾವ್ಯೇ ತು ವಿಧಿಃ  
ಸ್ಯಾತ್ಪೂರ್ವಚೋದಿತಃ" ಮನುಃ 6-160 |

ದರ್ಶನಲಾಲಸ ದರ್ಶನಲಾಲಸ (ವಿಂ) ನೋಡುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ  
ಯುಳ್ಳವನು. ದರ್ಶನೇ ಲಾಲಸಃ |

ದರ್ಶನವಿಷಯ ದರ್ಶನವಿಷಯ (ವಿಂ) ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಗೋಚರ  
ವಾದ, ನೋಡಕ್ಕೆ ವಿಷಯವಾದ.

ದರ್ಶನಾರ್ಥಿನ್ ದರ್ಶನಾರ್ಥಿನ್ (ವಿಂ) ದರ್ಶನವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷೆ  
ಸುವವನು, ಭೇಟಿಗಾಗಿ ಬಂದಿರುವವನು. ದರ್ಶನಮರ್ಥಯತೇ—  
ಅರ್ಥ (उपयाच्यायाम्) "ಗಿತಿಃ" (3-1-134) |

ದರ್ಶನೀಯ ದರ್ಶನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋ  
ಹರವಾದ. ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) |  
"ಅಹೋ ದರ್ಶನೀಯಾನ್ಯಕ್ಷರಾಣಿ" ಮುಡ್ರಾಂ 1 | "ಪ್ರಸಭಮುಡು-  
ಗಣೋಸೌ ದರ್ಶನೀಯೋಪಾಸ್ತಃ" ಮಾಘಂ 11-49 | 2. ನೋಡ  
ಲ್ಪಡುವ. 3. ನೋಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ನೋಡಲು  
ಶಕ್ಯವಾದ. 5. ನೋಡಬೇಕಾದ.

ದರ್ಶಪ ದರ್ಶಪ (ಪುಂ) ದೇವತೆ. ದರ್ಶನ ಅವಲೋಕನೇನ  
ಪಿಬತಿ — ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕಃ" (3-2-8) | ದೇವತೆಗಳು  
ಯಾವುದನ್ನೂ ತಿನ್ನುವುದೂ ಇಲ್ಲ, ಕುಡಿಯುವುದೂ ಇಲ್ಲ.  
ದರ್ಶನಮಾತ್ರದಿಂದಲೇ ತೃಪ್ತಿಹೊಂದುವರು. "ನ ವೈ  
ದೇವಾ ಅಶನಂತಿ ಪಿಬಂತಿ ಏತದೇವಾಮೃತಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ತೃಪ್ಯಂತಿ"  
ಛಾಂದೋಗ್ಯಂ | "ಶುಭ್ರಾಶ್ಚ ನಿರ್ಮಾಣರತಾಶ್ಚ ದೇವಾಃ ಸ್ಪರ್ಶಾಶಿನಾ  
ದರ್ಶಪಾ ಆಜ್ಯಪಾಶ್ಚ" ಭಾಂ ಅನುಂ 49-95 |

ದರ್ಶಯತ್ ದರ್ಶಯತ್ (ವಿಂ) ತೋರಿಸುತ್ತಿರುವ. ದೃಶಿರ್  
(ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (3-2-124) | "ದರ್ಶಯಸ್ತದನು



ರಾಮಣೀಯಕಂ ನಂದನಸ್ಯ ವಸುಧೇವನಂದನಃ" ಯಾದಂ ೧೭-೧೧।

ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ -ಯಶ್ಚಿಃ.

ದರ್ಶಯಾಮಿನಿ ದರ್ಶಯಾಮಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕತ್ತಲೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಅಮಾವಾಸ್ಯೆಯ ರಾತ್ರಿ.

ದರ್ಶಯಿತವ್ಯ ದರ್ಶಯಿತವ್ಯ (ವಿಂ) 1 ತೋರಿಸಲ್ಪಡುವ.

2. ತೋರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ತೋರಿಸಬೇಕಾದ.

ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೨೬)।

ದರ್ಶಯಿತ್ ದರ್ಶಯಿತ್ಯ (ಪುಂ) 1. ದ್ವಾರಪಾಲಕ. (ವಿಂ) 2.

ತೋರಿಸುವವನು, ಪ್ರದರ್ಶಿಸುವವನು. ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) +

ಣಿಚ್ "ತೃಚ್" (೩-೧-೨೩೩)। 3. (ದಾರಿ) ತೋರಿಸು

ವವನು, ಸಲಹೆಗಾರ. "ಪಥಃ ಶ್ರುತೇದರ್ಶಯಿತಾರ ಇಶ್ವರಾ

ಮಲೆಮಸಾಮಾದದತೇ ನ ಪದ್ಧತಿಮ್" ರಘುಂ ೩-೪೬। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್

"ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿಃ.

ದರ್ಶಯಿಪದ್ ದರ್ಶಯಿಪದ್ (ಪುಂ) ಜಂದ್ರ. ದರ್ಶಿ ಅಮಾ-

ವಾಸ್ಯಾಯಾಂ ವಿಪತ್ ನಾಶೋ ಯಸ್ಯ।

ದರ್ಶಿತ ದರ್ಶಿತ (ವಿಂ) 1. ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ)

"ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಇತಿ ದರ್ಶಿತವಿಕ್ರಿಯಂ ಸುತಂ

ಮಹತಃ ಕೋಪಪರೀತಮಾನಸಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೨೫। 2 ಪ್ರಕಟಿಸ

ಲ್ಪಟ್ಟ. ಹೊರಗೆಡಹಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕ್ಷಣಮೇವ ರಾಜಸತಯೇವ

ಜಗದ್ವದ್ಯದರ್ಶಿತೋಚತಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೫-೧೩। 3. ತೋರಿಸ

ಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣುವಂತೆ

ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಯತ್ರೌಷಧಿಪ್ರಕಾಶೇನ ನವತಂ ದರ್ಶಿತಸಂಚರಾಃ"

ಕುಮಾಂ ೬-೪೩। 4. ವಿವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿವರವಾಗಿ ತಿಳಿಸ

ಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಹಾಜರುಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ತಂದು ತೋರಿಸ

ಲ್ಪಟ್ಟ.

ದರ್ಶಿತವತ್ ದರ್ಶಿತವತ್ (ವಿಂ) 1. ತೋರಿಸಿದ. 2. ಪ್ರಕಾಶ

ಪಡಿಸಿದ. 3. ಪ್ರಕಟಿಸಿದ. 4. ವಿವರಿಸಿದ. 5. ಹಾಜರು

ಪಡಿಸಿದ. ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ದರ್ಶಿನ್ ದರ್ಶಿನ್ (ವಿಂ) 1. ನೋಡುವ. ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ)

"ಣಿನಿಃ" (೩-೧-೨೩೪)। "ತದರ್ಶಿನಮುದಾಸೀನಂ ತ್ವಾಮೇವ

ಪುರುಷಂ ವಿದ್ವಃ" ಕುಮಾಂ ೨-೧೩। 2. ತಿಳಿಯುವ. ಮನವರಿಕೆ

ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ, ಅರ್ಥಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ. "ತಸ್ಯೆ

ಮುನಿರ್ದೋಹದಲಿಂಗದರ್ಶಿ" ರಘುಂ ೧೪-೭೨। 3. ವಿವೇಚನೆ

ಮಾಡುವ. 4. ಸಂಪಾದಿಸುವ, ಗಳಿಸುವ. "ನೃಪತಿರಿವ

ನಿಕಾಮಮಾಯದರ್ಶಿ ವಿಭವವತಾ ಸಮುಪಾಸ್ಯತೇ ಜನೇನ" ಮೃಚ್ಛಂ

೨-೭। 5. ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರಿಸುವ. "ಯೋ ಹ್ಯಗ್ನಿಃ ಸ ದ್ವಿಜೋ

ವಿಪ್ರಃ ಮನ್ವದರ್ಶಿಭಿರಹ್ಯತೇ" ಮನುಂ ೩-೨೧೨। ಸಾಮಾನ್ಯ

ವಾಗಿ ಈ ಪದವು ಸಮಾಸಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ ಬರುವುದು.

ದಲ - ವಿಶರಣೆ (ಭಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ)। ದಲತಿ। ದದಾಲ।

ದಲಿತಾ। ದಲಿಷ್ಯತಿ। ದಲತು। ಅದಲತ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

1. ಅರಳು, ವಿಕಾಸಹೊಂದು. 2. ಒಡೆ, ಎರಡಾಗು, ಸೀಳಾಗು, ಬಿರುಕುಬಿಡು.

ಕ್ರಮಣಿಃ-ದಲಯತೇ। ದೇಲೆ। ದಲಿತಾ। ದಲಿಷ್ಯತೇ।

ದಲಯತಾಮ್। ಅದಲಯತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿಃ-ದಲಯತಿ। ದಲಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ।

ದಲಯಿತಾ। ದಲಯಿಷ್ಯತಿ। ದಲಯತು। ಅದಲಯತ್।

ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತುಃ-ದಲಿತವ್ಯಮ್। ದಲನೀಯಮ್। ದಲಯಮ್। ದಲಿತಃ।

ದಲಿತವಾನ್, -ವತೀ। ದಲನ್, -ಂತೀ। ದಲಿತಮ್। ದಲನಮ್।

ದಲಿತುಮ್। ದಲಿತವಾ।

ದಲ - ವಿದಾರಣೆ (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ದಾಲಯತಿ, -ತೇ।

ದಾಲಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸೀಳುಮಾಡು, ಒಡೆ, ಭೇದಿಸು.

ದಲ ದಲ (ನಂ) 1. ಪತ್ರ, ಎಲೆ. ದಲತಿ - ದಲ (ವಿಶರಣೆ)

"ಅಚ್" (೩-೧-೨೩೪)। "ತಾಮ್ಬೂಲಿನಾಂ ದಲೇಸ್ತತ್ರ ರಚಿತಾಪಾನ-

ಭೂಮಯಃ" ರಘುಂ ೪-೪೨। 2. ಖಂಡ, ಶಕಲ, ಚೂರು.

"ವಾಪೀಶ್ವಂತಲೀನಮಹಾನೀಲದಲಾಸು" ಮಾಘಂ ೪-೪೪। "ದಲಂ

ಖಂಡೇ ದಲಂ ಪತ್ರೇ" ಶಾಶ್ವಂ। 3. ಒಂದು ಭಾಗ, ಅರ್ಧ

ಭಾಗ. "ತ್ರಿಪಿಂಶಕೇಷು ಪಾದೋ ದಲಯೋರಾಕ್ಷೇಪು ದೃಶ್ಯತೇ ಯಸ್ಯಾಃ"

ವೃಂ ೨೦। 4. ಹಕ್ಕಿಗಳ ಗಿರಿ. "ಅರ್ಥೇ ಪತ್ರೇ ಕ್ಷೇಪೇ ದಲಮ್"

ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 5. ಸಣ್ಣ ಕತ್ತಿ. 6. ಎತ್ತರ, ಔನ್ನತ್ಯ.

7. ಶುದ್ಧಮಾಡಿದ ಲೋಹ. "ದಲಮುತ್ಸೇಧಖಂಡಯೋಃ।

ಶಸ್ತ್ರೀಚ್ಛೇದೇಷ್ಯಪದ್ರವ್ಯೇ ಪತ್ರೇಽಪಿ" ಮೇದಿಂ।

ದಲಕೋಶ ದಲಕೋಶ (ಪುಂ) ಮೊಲ್ಲೆಗಿಡ.

ದಲತ್ ದಲತ್ (ವಿಂ) 1. ಅರಳುತ್ತಿರುವ, ವಿಕಾಸಹೊಂದು

ತ್ತಿರುವ. ದಲ (ವಿಶರಣೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೨೨೪)।

"ತನುತರಜ್ಜತತಿ ಸರಸಾಂ ದಲತುಕುಲಯಂ ವಲಯನ್ ಮರುದಾವವೌ"

ಮಾಘಂ ೬-೩। 2. ಒಡೆಯುತ್ತಿರುವ. ಪುಡಿಯಾಗುತ್ತಿರುವ,

ಚೂರಾಗುತ್ತಿರುವ. "ದೃಷ್ಟ್ವಾ ರಥಂ ಪ್ರಲಯವಾತಚಲದ್ಗಿರಿಂದ್ರ-

ಕಲ್ಪಂ ದಲದಲವಿರಾವವಿಶೇಷರೌದ್ರಮ್" ಕುಮಾಂ ೧೭-೧೧।

ದಲನ ದಲನ (ನಂ) 1. ವಿಕಾಸಹೊಂದುವಿಕೆ, ಅರಳುವಿಕೆ.

ದಲ (ವಿಶರಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೨೧೫)। 2. ನಾಶ

ಪಡಿಸುವುದು, ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು. "ಸ್ಯಾದಸ್ಯಾ ನಲದಂ

ವಿನಾ ನ ದಲನೇ ತಾಪಸ್ಯ ಕೋಽಪಿ ಕ್ಷಮಃ" ನೈಷಂ ೪-೨೧೬।

3. ಒಡೆಯುವಿಕೆ, ಸೀಳುವಿಕೆ, ಚೂರುಮಾಡುವಿಕೆ. (ವಿಂ)

4. ಒಡೆಯುವ, ಸೀಳುವ, ಹೋಳುಮಾಡುವ. ದಲ ಕರಂ



“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)। “ಉತ್ಪ್ರಮೇಧದಲನಾ ವೈದ್ಯತಾ ಇವ ವಹ್ಯಯಃ” ಭಾಗಂ ೭-೧೦-೬೦। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೫)। -ನಿ-ನೀ.

ದಲಪ ದಲಪ (ಪುಂ) 1. ಅಯ್ಯುಧ. ದಲ (ವಿದಾರಣೆ) “ಕಪನ್” (೩-೩-೧೪೨)। ದಲಪ: ಪ್ರಹರಣಮ್—ಸಿಂ ಕೌಂ। 2. ಸೇನಾಪತಿ. 3. ಸ್ವರ್ಣ. ಚಿನ್ನ. ಹೀಗೆಯೇ ದಲಪತಿ: ದಲಪತಿಃ, ದಲಾಧಿಪತಿ: ದಲಾಧಿಪತಿಃ, ದಲಾಧಿಶ್ವರ: ದಲಾಧಿಶ್ವರಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

ದಲಪುಷ್ಪಾ ದಲಪುಷ್ಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೇತಕೀವೃಕ್ಷ, ತಾಳಮರ. ದಲ ಇವ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯಾಃ।

ದಲಸು(ಚಿ)ಚಿ ದಲಸೂ(ಚಿ)ಚೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಂಟಕ, ಮುಳ್ಳು. ದಲಸ್ಯ ಸುಚಿರಿವ। “ಕಂಟಕಸಂಜ್ಞಾಸ್ತುನಖ-ಗಿತಾಗ್ರದಲಸುಚಿರಾಕ್ಷಿಲದ್ರುಮರಾಃ” ಹಾರಾಂ।

ದಲಾಡಕ ದಲಾಡಕ (ಪುಂ) 1. ಕಾಡು ಎಳ್ಳಿನ ಗಿಡ. 2. ನಾಗಕೇಸರ. 3. ಫೇನ, ನೋರೆ. 4. ಕಾಲುಪೆ. 5. ಕಂದಕ. 6. ಸಿಂದೂರ, ಚಂದ್ರವೆಂಬ ಒಂದು ಗೃಹಿಕ ಧಾತು. 7. ಮೊಲ್ಲೆ ಗಿಡ. 8. ಅನೆಯ ಕಿವಿ. 9. ಶಿರೀಷ ವೃಕ್ಷ. ಬಾಗೆಮರ. 10. ಚಂಡಮಾರುತ, ಬಿರುಗಾಳಿ. “ದಲಾಡಕೋಽರ್ಣ್ಯತೀಲೇ ಗೈರಿಕೇ ನಾಗಕೇಸರೇ। ಕುಂದೇ ಮಹತ್ತರೇ ಫೇನೇ ಕರಿಕರ್ಣಶಿರೀಷಯೋಃ” ಹೇಮಂ।

ದಲಾಡಕ ದಲಾಡಕ (ಪುಂ) ಪಂಕ, ಕೆಸರು.

ದಲಾಮಲ ದಲಾಮಲ (ನಂ) 1. ಮರುಗದ ಗಿಡ. 2. ಮದನ ವೃಕ್ಷ, ಮಂಗಾರಿಗಿಡ. ದಲೇನ ಅಮಲಮ್।

ದಲಾಮಲ ದಲಾಮಲ (ನಂ) ಹುಳಿಹಬ್ಬೆ, ನುಚ್ಚುಗೋಣೇ ಮರ.

ದಲಿ ದಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಣ್ಣು ಹೆಂಟೆ. ದಲ (ವಿಶರಣೆ) “ಇನ್” (೩-೩-೧೧೭)।

ದಲಿತ ದಲಿತ (ವಿಂ) 1. ಒಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೀಳಲ್ಪಟ್ಟ, ತುಂಡು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ದಲ (ವಿಶರಣೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೦೨)। 2. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಚಂಡಶ್ಚಾಲ ದಲಿತಾಸ್ತೀಲಶತ್ರು-ಸೈನ್ಯಮಾಂಸಾಸ್ಥಿಶೋಣಿತವಿಪಕ್ಷವಿಲುಪ್ತಚಕ್ರಃ” ಕುಮಾಂ ೧೭-೧೦। 3. ಪುಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಅರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. “ದಲಿತಮೌಕ್ತಿಕ-ಚೂರ್ಣವಿಪಾಂಡವಃ” ಮಾಘಂ ೬-೩೫। 4. ಅರಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಎಕಾಸಹೊಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ದಲಿತಕೋಮಲಪಾಟಲಕುಡ್ಮಲೇ ನಿಜವಧುಶ್ಚಸಿತಾನುವಿಧಾಯಿನಿ। ಮಹತಿ ವಾತಿ ವೀಲಾಸಿಮಿ-ಹ್ಮದಭ್ರಮದಲೌ ಮದಲೌಲ್ಯಮುಪಾದದೇ” ಮಾಘಂ ೬-೨೩।

ದಲಿನ್ ದಲಿನ್ (ವಿಂ) ದಳಗಳಿಂದಕೂಡಿದ. ದಲ “ಇನಿಃ” (೫-೨-೧೩೧)।

ದಲಿಮ ದಲಿಮ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. ದಲ (ವಿಶರಣೆ) “ಮಿಃ” (೩-೩-೪೭)। 2. ಇಂದ್ರಾಯುಧ, ವಜ್ರ. ದಲಿಮ-ರಿಂದ್ರಾಯುಧಮ್ ಸಿಂ ಕೌಂ।

ದವ ದವ (ಪುಂ) 1. ಅರಣ್ಯ. ಕಾಡು. ದವತಿ — ದು (ಗತೌ) “ಅವ್” (೩-೩-೧೩೪)। “ವಿಕವಕಿಶುಕಮಹತಿಶ್ಚಕೌರವ-ವಹದ್ವಹವ್ಯವಹಶ್ರಿಯಮ್” ಮಾಘಂ ೬-೨೧। 2. ಕಾಡುಗಿಡು. “ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಗತಾ ನಿವೃತ್ತಿಮಥ ಸರ್ವೇ ಗಜಾ ದವಾರ್ತಾ ಇವ ಗಾಙ್ಗ-ಮಮ್ಮಃ” ಭಾಗಂ ೮-೬-೧೩। 3. ಅಗ್ನಿ. ಬೆಂಕಿ. 4. ಉಪ ತಾಪ.

ದವಥು ದವಥು (ಪುಂ) 1. ಯಾತನೆ, ನೋವು. ದುದು (ಉಪತಾಪೇ) “ಅಯುಚ್” (೩-೩-೮೯)। “ಕೇವಿದ್ವೇಪಥುಮಾಸೇದುರಗ್ನೇ ದವಥು-ಮುತ್ತಮಮ್” ಭಟ್ಟಿಂ ೪-೪೩। 2. ಉಂಡ.

ದವದಹನ ದವದಹನ (ಪುಂ) ಕಾಡುಗಿಡು. ದವಜಾತೌ ದಹನಃ ಅಗ್ನಿಃ। एवं ದವಾಗ್ನಿಃ ದವಾಗ್ನಿಃ, ದವಾನಲಃ ದವಾನಲಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

ದವಿಠ ದವಿಠ (ವಿಂ) ಬಹಳ ದೂರವಾದ. ಇದಮೇವಾಮತಿ-ಶಯೇನ ದೂರಮ್ “ಇಠನ್” (೫-೩-೫೫)। ರಸ್ಯ ಲೋಪಃ ಪೂರ್ವಸ್ಯ ಚ ಗುಣಃ (೬-೪-೧೫೬)।

ದವಿಯಸ್ ದವೀಯಸ್ (ವಿಂ) ದೂರದಲ್ಲಿರುವ, ಬಹಳ ದೂರವಾದ. ಇದಮನಯೋರತಿಶಯೇನ ದೂರಮ್ “ದೀಯುನ್” (೫-೩-೫೭)। ರಸ್ಯ ಲೋಪಃ। “ತೇಜಸ್ವಿಮಧ್ಯೇ ತೇಜಸ್ವಿ ದವೀಯಾನಪಿ ಗಣ್ಯತೇ” ಮಾಘಂ ೨-೫೧। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)। -ಯಸಿ-ಯಸೀ.

ದಶಕ ದಶಕ (ನಂ) ಹತ್ತು. ದಶ ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ “ಕನ್” (೫-೧-೫೮)।

ದಶಕಂಠ ದಶಕಂಠ (ಪುಂ) ರಾವಣ. ದಶ ಕಂಠಾ ಯಸ್ಯ। [“ರಾವಣ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ದಶಕಂಠಜಿತ್ ದಶಕಂಠಜಿತ್ (ಪುಂ) ಶ್ರೀರಾಮ. ದಶಕಂಠ ಜಿತವಾನ್ — ಜಿ (ಜಯೇ) “ವಿವಪ್” (೩-೨-೭೬)।

ದಶಕಂಠರಿಪು ದಶಕಂಠರಿಪು, -ಶತ್ರು -ಶತ್ರು (ಪುಂ) ಶ್ರೀರಾಮ. ದಶಕಂಠಸ್ಯ ರಿಪುಃ ಶತ್ರುರ್ವಾ।

ದಶಕಂಠರ ದಶಕಂಠರ (ಪುಂ) ರಾವಣ. ದಶ ಕಂಠರಾ ಯಸ್ಯ। “ತತಃ ಪರಿವ್ರಾಡುತಂ ಪ್ರವಿಷ್ಟೋ ಭಿಕ್ಷುಕ್ತರೂಪೋ ದಶಕಂಠರೋ-ಯಮ್” ಮಂ ವೀಂ ೫-೧೬।

ದಶಕರ್ಮ ದಶಕರ್ಮ (ನಂ) ದ್ವಿಜರಿಗೆ ವಿಹಿತವಾದ ಗರ್ಭಾಧಾನ ಮೊದಲಾದ ಹತ್ತು ಸಂಸ್ಕಾರ ಕರ್ಮಗಳು.

ದಶಕರ್ಮಪದ್ಧತಿ ದಶಕರ್ಮಪದ್ಧತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದ್ವಿಜರಿಗೆ ವಿಹಿತವಾದ ಹತ್ತು ಸಂಸ್ಕಾರ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಹೇಳುವ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ.



**ದಶಕುಮಾರಚರಿತ್ರ ದಶಕುಮಾರಚರಿತ್ರ** (ನಂ) ಹತ್ತು ಮಂದಿ ರಾಜಕುಮಾರರ ಸಾಹಸಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವ ದಂಡಿಮಹಾಕವಿಕೃತವಾದ ಒಂದು ಗದ್ಯಗ್ರಂಥ.

**ದಶಕ್ಷೀರ ದಶಕ್ಷೀರ** (ನಂ) ಹತ್ತು ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಹಾಲು.

(1) ಹಸು, (2) ಎಮ್ಮೆ, (3) ಕುದುರೆ, (4) ಆಡು, (5) ಒಂಟೆ, (6) ಕುರಿ, (7) ಆನೆ, (8) ಹೆಂಗಸು, (9) ಜಿಂಕೆ ಮತ್ತು (10) ಕತ್ತೆ ಇವುಗಳ ಈ ಹತ್ತು ವಿಧ ಹಾಲುಗಳು. ದಶವಿಧಂ ಕ್ಷೀರಮ್. "ಗವ್ಯಮಾಜಂ ತಥಾ ಕೌಷ್ಠಮಾವಿಕಂ ಮಾಹಿಷಶ್ಚ ಯತ್. ಅಶ್ವಾಶ್ಚೈವ ನಾರ್ಯಾಶ್ಚ ಕರಣ್ಣಾಂ ಚ ಯತ್ಪಯಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೫-೪೭. ಜಿಂಕೆ ಮತ್ತು ಕತ್ತೆಗಳ ಹಾಲು ಸೇರಿ ಹತ್ತು ವಿಧ ಕ್ಷೀರ.

**ದಶಗ್ರಾಮಪತಿ ದಶಗ್ರಾಮಪತಿ** (ಪುಂ) ಹತ್ತು ಗ್ರಾಮಗಳ ಯಜಮಾನ, ಹತ್ತು ಹಳ್ಳಿಗಳ ಒಡೆಯ, ಹತ್ತು ಗ್ರಾಮಗಳ ಯೋಗಕ್ಷೇಮಗಳನ್ನು ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಅಧಿಕಾರಿ. ದಶಾನಾಂ ಗ್ರಾಮಾಣಾಂ ಪತಿಃ. "ಗ್ರಾಮಸ್ಯಾಧಿಪತಿ ಕುರ್ಯಾತ್ ದಶಗ್ರಾಮಪತಿ ತಥಾ. ವಿಶತೀಶಂ ಶತೇಶಂ ಚ ಸಹಸ್ರಪತಿಮೇವ ಚ. ಗ್ರಾಮೇ ದೋಷಾನ್ ಸಮುತ್ಪನ್ನಾನ್ ಗ್ರಾಮಿಕಃ ಶನಕೈಃ ಸ್ವಯಮ್. ಶಂಸೇದ್ ಗ್ರಾಮದಶೇಶಾಯ ದಶೇಶೋ ವಿಶತೀಶಿನೇ. ವಿಶತೀಶಸ್ತು ತತ್ಸರ್ವಂ ಶತೇಶಾಯ ನಿವೇದयेತ್. ಶಂಸೇದ್ ಗ್ರಾಮಶತೇಶಸ್ತು ಸಹಸ್ರಪತये ಸ್ವಯಮ್" ಮನುಂ ೭-೧೧೫, ೧೬, ೧೭. ಹತ್ತು ಹಳ್ಳಿಗಳಿಗೊಬ್ಬ ಅಧಿಕಾರಿ. ಅಂತಹ ಇಪ್ಪತ್ತು ಗ್ರಾಮಗಳಿಗೊಬ್ಬ, ನೂರು ಗ್ರಾಮಗಳಿಗೊಬ್ಬ, ಸಾವಿರ ಗ್ರಾಮಗಳಿಗೊಬ್ಬ. ಈ ರೀತಿ ನಿಯಮಿತರಾದ ಅಧಿಕಾರಿಗಳು ತಮ್ಮ ಮೇಲು ಮೇಲಿನ ಅಧಿಕಾರಿಗಳಿಗೆ ತಮ್ಮ ಕುಂದುಕೊರತೆಗಳನ್ನು ನಿವೇದಿಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ಅವರಿಂದ ಪರಿಹಾರಗಳನ್ನು ಪಡೆಯಬೇಕು.

**ದಶಗ್ರಾಮಿಕ ದಶಗ್ರಾಮಿಕ** (ಪುಂ) ಹತ್ತು ಗ್ರಾಮಗಳ ಅಧಿಕಾರಿ. ದಶ ಗ್ರಾಮಾಃ ಸಂತಯಸ್ಯ "ಠನ್" (೫-೨-೧೧೫). "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫). -ಗ್ರಾಮಿನ್ -ಗ್ರಾಮಿನ್.

**ದಶಗ್ರೀವ ದಶಗ್ರೀವ** (ಪುಂ) 1. ರಾವಣ. ದಶ ಗ್ರೀವಾ ಅಸ್ಯ. "ಪುಷ್ಪೋತ್ಕಟಾಯಾಂ ಜಜ್ಞಾತೇ ದ್ವೌ ಪುತ್ರೌ ರಾಕ್ಷಸೇಶ್ವರೌ. ಕುಂಭಕರ್ಣ-ದಶಗ್ರೀವೌ ಬಲೇನಾಪ್ರತಿಮೌ ಭುವಿ" ಭಾಂ ಷನಂ. 2. ದಮಘೋಷನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಶಿಶುಪಾಲೋ ದಶಗ್ರೀವೋ ರೆಂಮ್ಯೋಽ-ಥೋಪದಿಶೋ ಬಲಿಃ. ಸರ್ವಾಸ್ತ್ರಕುಶಲಾ ವೀರಾ ವೀರ್ಯವಂತೋ ಮಹಾ-ಬಲಾಃ" ಹರಿವಂ.

**ದಶತ್ ದಶತ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹತ್ತು, ಹತ್ತರ ಗುಂಪು. ದಶ ಪರಿमाणಮಸ್ಯ ವರ್ಗಸ್ಯ - ದಶನ್ "ಙಿತಿಃ" (೫-೧-೬೦). (ವಿಂ) 2. ಕಚ್ಚುತ್ತಿರುವ. ದಶ (ದಶನೇ) "ಶತ್"

(೩-೨-೧೨೪). "ದಂತೇದಶಂತೋ ವಸುಧಾಂ ಶೇರತೇ ಕ್ಷತಜೋಷಿತಾಃ" ಭಾಂ ಕರ್ಣಂ ೮೫-೩೦.

**ದಶತಯ ದಶತಯ** (ವಿಂ) ಹತ್ತು, ಹತ್ತರಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ಗುಂಪು. ದಶ ಅವಯವಾಃ ಅಸ್ಯ "ತಯಃ" (೫-೨-೪೨). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫). -ತಯಿ -ತಯಿ.

**ದಶದಿಶ್ ದಶದಿಶ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹತ್ತು ದಿಕ್ಕುಗಳು. ಉರ್ಧ್ವ ಮತ್ತು ಅಧರ ಎರಡೂ ಸೇರಿ ಹತ್ತು ದಿಕ್ಕುಗಳು.

**ದಶಧರ್ಮ ದಶಧರ್ಮ** (ಪುಂ) ಎಲ್ಲಾ ಪಂಗಡದವರಿಗೂ ಸಮಾನವಾದ ಹತ್ತು ಧರ್ಮಗಳು. (1) ಧೃತಿಃ-ಸಂತೋಷ. (2) ಕ್ಷಮಾ-ಇತರಿಂದ ಆಗುವ ಅಪಕಾರಕ್ಕೆ ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಮಾಡದಿರುವುದು. (3) ದಮಃ-ಚಿತ್ತಸ್ಥೈರ್ಯ. (4) ಅಸ್ತೇಯಮ್-ಕದಿಯದಿರುವುದು. (5) ಶೌಚಮ್-ಶುಚಿಯಾಗಿರುವುದು. (6) ಇಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹಃ-ಇಂದ್ರಿಯಗಳ ಜಯ. (7) ಧೀಃ-ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನ. (8) ವಿद्या-ಆತ್ಮಜ್ಞಾನ. (9) ಸತ್ಯಮ್-ನಿಜ ಹೇಳುವುದು ಮತ್ತು (10) ಅಕ್ರೋಧಃ-ಕೋಪವಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ಇವು ಹತ್ತು ಸಾಮಾನ್ಯ ಧರ್ಮಗಳು.

**ದಶಧಾ ದಶಧಾ** (ಅವ್ಯಂ) ಹತ್ತು ವಿಧವಾಗಿ, ಹತ್ತು ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ. ದಶಾನಾಂ ಪ್ರಕಾರಃ -ದಶನ್ "ಘಾ" (೫-೩-೪೨). "ದೇವೋ ನಃ ಶುಭಮಾತನೋತು ದಶಧಾ ನಿವರ್ತಯನ್ ಭೂಮಿಕಾಮ್" ದಶಾವತಾರಂ.

**ದಶನ್ ದಶನ್** (ವಿಂಬಂವಂ) ಹತ್ತು. ದಶ ದಶ ದಶಮಿಃ ದಶಮ್ಯಃ ದಶಮ್ಯಃ ದಶಾನಾಮ್ ದಶಸು.

**ದಶನ ದಶನ** (ಪುಂ) 1. ದಂತ, ಹಲ್ಲು. ದಶ್ಯತೇಽನೇನ-ದಶ (ದಶನೇ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭). "ಸ್ಮರದಾಯಿನಃ ಸ್ಮರಯತಿ ಸ್ಮ ಭೃಶಂ ದಯಿತಾಧರಸ್ಯ ದಶನಾಂಶುಭೃತಃ" ಕಿರಾಂ ೬-೧೩. "ಮಿಶ್ರಂ ದಧದ್ದಶನಚರ್ಚುರಶಬ್ದಮಶ್ವಃ" ಮಾಘಂ ೫-೫೮. 2. ಶಿಖರ, ತುದಿ, ಅಗ್ರಭಾಗ. (ನಂ) 3. ಕವಚ, ಅಂಗಿ. "ದಶನಃ ಶಿಖರೇ ದಂತೇ ಕವಚೇ ತು ನಪುಂಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ. 4. ಕಚ್ಚುವುದು, ಕಡಿಯುವುದು. ದಶ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫). "ದಶನಂ ದಶವರ್ಮಣೋಃ" ನಾನಾರ್ಥಂ.

**ದಶನಕ್ಷತ ದಶನಕ್ಷತ** (ನಂ) ಹಲ್ಲಿನಿಂದ ಕಚ್ಚಿದ ಗಾಯ.

**ದಶನಕ್ಷದ ದಶನಕ್ಷದ** (ಪುಂ) ಅಧರ, ತುಟ. ದಶನಾ ಇಕ್ಷಾಙ್ತೇಽನೇನ -ಕ್ಷದ (ಸಂವರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಘಃ" (೩-೩-೧೧೮). ಹ್ರಸ್ವಃ (೬-೪-೯೬).

**ದಶನಪದ ದಶನಪದ** (ನಂ) ಹಲ್ಲಿನಿಂದ ಕಚ್ಚಿದ ಜಾಗ, ದಂತ ಕ್ಷತ. ದಶನಸ್ಯ ದಂತ(ಕ್ಷತ)ಸ್ಯ ಪದಮ್.

**ದಶನಬೀಜ ದಶನಬೀಜ** (ಪುಂ) ದಾಡಿಮವೃಕ್ಷ. ದಾಳಿಂಬೆ ಗಿಡ. ದಶನ ಇವ ಬೀಜಮಸ್ಯ.



ದಶನವಾಸಸ್ ದಶನವಾಸಸ್ (ನಂ) ಅಧರ, ಡುಟಿ. ದಶನಾನಾಂ  
ವಾಸ ಇವ. "ದಂತವಾಸಸಿ ಸಮಾನಗುಣಶ್ರೀ: ಸಮುಖೇಽಪಿ  
ಪರಭಾಗಮವಾಪ" ಮಾಘಂ ೧೦-೮೬.

ದಶನಾಕ್ಷು ದಶನಾಂಕ (ಪುಂ) ಹಲ್ಲಿನಿಂದ ಕಚ್ಚಿದ ಗುರುತು,  
ದಂತಕ್ಷುತ. ದಶನಸ್ಯ ದಂತಸ್ಯ ಅಕ್ಷು: "ಭಾತು ನಾಮ ಸುದೃಶಾಂ  
ದಶನಾಕ್ಷು:" ಮಾಘಂ ೧೦-೮೬.

ದಶನೋಚ್ಚಿಷ್ಟ ದಶನೋಚ್ಚಿಷ್ಟ (ಪುಂ) 1. ಚುಂಬನ,  
ಮುಕ್ತಿಕ್ಕುವುದು. ದಶನಸ್ಯೋಚ್ಚಿಷ್ಟಂ ಯತ್ರ. "ರೇವತೀದಶನೋ-  
ಚ್ಚಿಷ್ಟಪರಿಪೂತಪುಟೇ ದೃಶೌ" ಮಾಘಂ ೨-೧೬. 2. ನಿಶ್ವಾಸ,  
ನಿಟ್ಟುಸಿರು. "ದಶನೋಚ್ಚಿಷ್ಟ: ಪುಸಿ ಸ್ಯಾನ್ನಿಶ್ವಾಸಾಧರ-  
ಚುಂಬಯೋ:" ಮೇದಿಂ.

ದಶಪ ದಶಪ (ಪುಂ) ಹತ್ತು ಗ್ರಾಮಗಳ ಯಜಮಾನ, ಹತ್ತು  
ಹಳ್ಳಿಗಳ ಅಧಿಕಾರಿ. ದಶ ಗ್ರಾಮಾನ್ ಪಾತಿ - ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ)  
"ಕ:" (೩-೨-೩). "ದಶಪಸ್ತೇನ ಭರ್ತವ್ಯಸ್ತೇನಾಪಿ ದ್ವಿಗುಣಾ-  
ಧಿಪ:" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೮೭-೬.

ದಶಪೂರ ದಶಪೂರ (ನಂ) ಕೃಪರ್ತಿಮುಷ್ಟ, ತುಂಗಮುಷ್ಟ,  
ಕೊನ್ನಾರಿಯ ಒಂದು ಭೇದ.

ದಶಪೂರ ದಶಪೂರ (ಪುಂ) ಹತ್ತು ತಲೆಮೊರೆಯವರು,  
ತಂದೆಯಿಂದ ಹಿಡಿದು ಹಿಂದಿನ ಹತ್ತು ತಲೆಯವರೆಗಿನ  
ಪುರುಷರು. ದಶಪುಷ್ಪ: ಪುಷ್ಪ:

ದಶಬಲ ದಶಬಲ (ಪುಂ) ಬುದ್ಧದೇವ. ದಶ ಬಲಾನಿ ಯಸ್ಯ.  
"ದಾನಶೀಲಕ್ಷಮಾವೀರ್ಯಧ್ಯಾನಪ್ರಜ್ಞಾಬಲಾನಿ ಚ. ಉಪಾಯ:  
ಪ್ರಜಿಧಿಜ್ಞಾನಿ ದತ್ತ ಬುದ್ಧಬಲಾನಿ ವೇ".

ದಶಭುಜಾ ದಶಭುಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ.  
ದಶ ಭುಜಾ ಯಸ್ಯಾ: "ಇತಿವೃತ್ತಂ ಪುರಾ ಕಲ್ಪೇ ಮನೋ: ಸ್ವಾಯಮ್ಭು-  
ಜಂತರೇ. ಆವಿರ್ಭೂತಾ ದಶಭುಜಾ ದೇವೀ ದೇವಹಿತಾಯ ವೇ"  
ಕಾಲಿಕಾಪುಂ.

ದಶಭೂಮಿಶ ದಶಭೂಮಿಶ (ಪುಂ) ಬುದ್ಧದೇವ. ದಶಾನಾಂ  
ದಾನಾದೀನಾಂ ಭೂಮಿನಾಮಿಶ: "ತ್ರಿಮೂರ್ತಿರ್ದಶಭೂಮಿಶ: ಪಂಚ-  
ಜ್ಞಾನೋ ಬಹುಕ್ಷಮ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ದಶಮ ದಶಮ (ವಿಂ) 1. ಹತ್ತನೆಯ. ದಶಾನಾಂ ಪೂರಣ:  
"ಓಟ್" (೪-೨-೪೮). ಓಟ್ ಮಡಾಗಮ: (೪-೨-೪೯).  
"ಪ್ರಮುಖಭೂಮಿವನತ್ರಯಸ್ಯ ಯ: ಶಿರೋಽತಿರಾಗಾದೃಶಮಂ ಚಿಕಿತ್ಸಿತು:"  
ಮಾಘಂ ೧-೪೯. "ಸ್ಥಾಪಿತೋ ದಶಮೋ ಮೂರ್ಧ್ನಿ ಲಭ್ಯಾಂಶ ಇವ  
ರಕ್ಷಸಾ" ರಘುಂ ೧೦-೪೧. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಓಪ್" (೪-೧-೧೫).  
ದಶಮಿ ದಶಮಿ, 2. ಪುರುಷಾಯುಷ್ಸಿನ (ನೂರು ವರ್ಷ  
ಗಳ) ಹತ್ತನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ, ತೊಂಬತ್ತೊಂಬತ್ತನೆಯ  
ವರ್ಷದಿಂದ ನೂರು ವರ್ಷಗಳವರೆಗಿನ ಕಾಲ. ದಶಮಿ

ಅವಸ್ಥಾ. "ಪಂಚಾನಾಂ ತ್ರಿಭು ವರ್ಣೇಭು ಭುಯಾಸಿ ಗುಣವಂತಿ ಚ.  
ಯತ್ರ ಸ್ಯು: ಸೌತ್ರ ಮಾನಾಹ: ಶೂದ್ರೋಽಪಿ ದಶಮಿ ಗತ:" ಮನುಂ  
೨-೧೩೭. 3. ದಶಮಿ ತಿಥಿ, ಎರಡು ಪಕ್ಷಗಳ ಹತ್ತನೆಯ  
ತಿಥಿ. 4. ಹತ್ತನೆಯ ಮನ್ಮಥಾವಸ್ಥೆ.

ದಶಮಭಾವ ದಶಮಭಾವ (ಪುಂ) ತನ್ನಾದಿ ಹನ್ನೆರಡು ಭಾವ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಹತ್ತನೆಯ ಭಾವ. ಹತ್ತನೆಯ ಭಾವದಿಂದ ಪ್ರವೃತ್ತಿ,  
ಆಜ್ಞೆ, ಕೀರ್ತಿ, ವೃಷ್ಟಿ, ಪ್ರವಾಸ, ಪೂರ್ತ (ಬಾವಿ ಕೆರೆ  
ತೋಪು ಮುಂತಾದ ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳು), ಮನ, ಕರ್ಮ,  
ಆಜೀವ (ಜೀವನೋಪಾಯ) ಜಾನುಸ್ಥಾನ (ಮಂಡಿ) ಇವು  
ಗಳನ್ನು ಕುರಿತು ಹೇಳಬೇಕು.

ದಶಮಿನ್ ದಶಮಿನ್ (ವಿಂ) ಹತ್ತನೆಯ ಅವಸ್ಥೆಯುಳ್ಳ  
ವನು, ತೊಂಬತ್ತೊಂದು ವರ್ಷಗಳ ನಂತರ ನೂರು ವರ್ಷ  
ಗಳೊಳಗಿನ ವಯಸ್ಸಿನಲ್ಲಿರುವನು. ದಶಮೋಽವಸ್ಥಾವಿಶೇಷೋ-  
ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇತಿ:" (೪-೨-೧೩೦).

ದಶಮಿಥ ದಶಮಿಥ (ವಿಂ) 1. ಹತ್ತನೆಯ ಅವಸ್ಥೆ  
ಯಲ್ಲಿರುವವನು, ತೊಂಬತ್ತಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚು ವಯಸ್ಸುಳ್ಳ  
ಮುಮುಕ್ಷು. ದಶಮ್ಯಾಮವಸ್ಥಾಯಾಂ ತಿಷ್ಠತಿ - ಷಾ (ಗತಿ-  
ನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ:" (೩-೨-೪). "ಚಕ್ರಿಣೋ ದಶಮಿಥಸ್ಯ  
ರೋಗಿಣೋ ಭಾರಿಣ: ಸ್ತ್ರಿಯಾ: ಸ್ನಾತಕಸ್ಯ ಚ ರಾತ್ರಾಶ್ಚ ಪನ್ಥಾ  
ದೇವೋ ವರಸ್ಯ ಚ" ಮನುಂ ೨-೧೩೮. 2. ಹತ್ತನೆಯ  
ಮನ್ಮಥಾವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿರುವವನು, ಅಂತ್ಯಾವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿರು  
ವವನು.

ದಶಮುಖ ದಶಮುಖ (ಪುಂ) ರಾವಣ. ದಶಮುಖಾನ್ಯಸ್ಯ.  
"ಜೀವಾತವೇ ದಶಮುಖೋರಗಪಿಡಿತಾನಾಂ ಗರ್ಭಂಚ್ಛೇನ ವಸತಾ  
ಪ್ರಥಮೇನ ಪುಂಸಾ" ಚಂ ರಾಂ.

ದಶಮುಖರಪು ದಶಮುಖರಪು (ಪುಂ) ಶ್ರೀರಾಮ. ದಶಮುಖಸ್ಯ  
ರಪು: "ಸೀತಾಂ ಹಿತ್ವಾ ದಶಮುಖರಪುನೋಪಯೇಮೇ ಯದನ್ಯಾಮ್"  
ರಘುಂ ೧೪-೮೭.

ದಶಮೂಲ ದಶಮೂಲ (ನಂ) ಹತ್ತುವಿಧ ಔಷಧ ಮೂಲಿಕೆ  
ಗಳಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮತ್ತು ಬಲವನ್ನು ವೃದ್ಧಿ ಪಡಿಸುವ  
ಒಂದು ಔಷಧ. ದಶಾನಾಂ ಮೂಲಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರ: ಪಾತ್ರಾಶ್ಚಂತತ್ವಾತ್  
ನ ಓಪ್ (ವಾಂ ೨-೪-೧೭). ಬಿಲ್ವ, ಹೆಮ್ಮರ, ಗಂಭಾರಿ  
(ತಗ್ಗಿಗಿಡ), ಕರಿಯ ಗಜ್ಜುಗ, ಆಗ್ನಿಮಂಥ (ನರುವಲುಗಿಡ),  
ಶಾಲಪರ್ಣೀ (ಒಂದೆಲೆಹೊನ್ನೆ), ಪೃಶ್ನಿ ಪರ್ಣೀ (ನರಿಹೊನ್ನೆ  
ಗಿಡ), ಬೃಹತೀದ್ವಯ (ಹೆಗ್ಗುಳ್ಳ, ನೆಲಗುಳ್ಳಗಳು),  
ಗೋಕ್ಷುರ (ಅನೆ ನೆಗ್ಗಿಲು ಗಿಡ) ಇವು ಹತ್ತು ವಿಧಮೂಲಿಕೆ  
ಗಳು. "ಬಿಲ್ವಶ್ಯೋನಾಕಗಾಮ್ಭಾರಿ ಪಾಟಲಾಗಣಿಕಾರಿಕಾ: |  
ದೀಪನಂ ಕಫವಾತಘ್ನಂ ಪಂಚಮೂಲಮಿದಂ ಮಹತ್ | ಶಾಲಪರ್ಣಿ-



ಗೃಹಿಣಿವಿಹಿತೀದ್ರಯಗೋಚರಮ್ । ವಾತಪಿತ್ತಹರಂ ವೃಷ್ಯಂ ಕನೀಯಃ  
ಪಶ್ಚಮೂಲಕಮ್ । ತುಭಯಂ ದಶಮೂಲಂ ತು ಸನ್ನಿಪಾತಜ್ವರಾಪಹಮ್ ।  
ಕಾಮೇ ಶ್ವಾಸೇ ಚ ತಂದ್ರಾಢ್ಯಾಂ ಪಾರ್ಶ್ವಶೂಲೇ ಚ ಶಸ್ಯತೇ । ಪಿಪ್ಪಲಿ-  
ಚೂರ್ಣಸಂಯುಕ್ತಂ ಕಣ್ಠಹೃದ್ಗ್ರಹನಾಶನಮ್ ” ಚಕ್ರದಂ ।

**ದಶರಥ ದಶರಥ (ಪುಂ)** ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾದ  
ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಅಜಮಹಾರಾಜನ ಮಗ, ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನ  
ತಂದೆ. ದಶಮು ದಿಕ್ಷು ಅಪ್ರತಿಹತೋ ರಥೋಽಸ್ಯ ।

**ದಶರಥತನಯ ದಶರಥತನಯ, -ತನುಜ -ತನೂಜ (ಪುಂ)**  
ಶ್ರೀರಾಮ.

**ದಶರಥಪುತ್ರ ದಶರಥಪುತ್ರ (ಪುಂ)** ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರ  
ದಶರಥಸ್ಯ ಪುತ್ರಃ ಸುತೋ ವಾ ।

**ದಶರಥಿಮಶತ ದಶರಥಿಶತ (ಪುಂ)** ಸಹಸ್ರ ಕಿರಣಗಳುಳ್ಳ  
ಸೂರ್ಯ. ದಶ ರಥಿಮಶತಾನ್ಯಸ್ಯ । “ದಶರಥಿಮಶತೋಪ-  
ಮಚ್ಯುತಿ ಯಶಸಾ ದಿಕ್ಷು ದಶಸ್ವಪಿ ಶ್ರುತಮ್ । ದಶಪೂರ್ವರಥಂ  
ಯಮಾಖ್ಯಯಾ ದಶಕಂಠಾರಿಗುಹಂ ವಿದುರ್ಬುಧಾಃ ” ರಘುಂ ೮-೧೯ ।

**ದಶರಾತ್ರ ದಶರಾತ್ರ (ಪುಂ)** 1. ಹತ್ತು ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ನಡೆಸಬಹುದಾದ  
ಯಾಗ. ದಶಭಿಃ ರಾತ್ರಿಭಿಃ ನಿವೃತ್ತಃ । (ನಂ) 2. ಹತ್ತು ರಾತ್ರಿಗಳು, ಹತ್ತು ದಿನಗಳು. ದಶಾನಾಂ ರಾತ್ರಿಣಾಂ  
ಸಮಾಹಾರಃ “ಅಚ್” (೪-೪-೮೭) । ಸಂಖ್ಯಾಪೂರ್ವ ರಾತ್ರಿಕ್ಷೇಪಮ್ ।  
“ಪ್ರತಿಪಥೇಃ ಸಮಂ ತತ್ರ ದಶರಾತ್ರಮಶ್ನುಯತಿ । ಯಚ್ಛೇಷಂ ದಶರಾತ್ರಸ್ಯ  
ತಾವದೇವಾಶುಚಿರಭವೇತ್ ” ಮನುಂ ।

**ದಶರೂಪಕ ದಶರೂಪಕ (ನಂ)** ನಾಟಕ ಮೊದಲಾದ ಹತ್ತು  
ದೃಶ್ಯ ಕಾವ್ಯಗಳ ಲಕ್ಷಣಗಳನ್ನು ಹೇಳುವ ಒಂದು ಲಕ್ಷಣ  
ಗ್ರಂಥ. ದಶ ರೂಪಕಾಣಿ ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯಾನಿ ಪ್ರತಿಪಾದಿತಯಾ  
ಸಂತ್ಯತ್ರ “ಅಚ್” (೪-೨-೧೨೭) । ಹತ್ತು ರೂಪಕ  
ಗಳು: “ನಾಟಕಂ ಸಪ್ರಕರಣಂ ಭಾಣಃ ಪ್ರಹಸನಂ ಡಿಮಃ ।  
ವ್ಯಾಯೋಗಸಮವಾಕಾರೋ ವೀಥ್ಯಜ್ಞೇಹಾಮೃಗಾ ದಶ ” ।

**ದಶರೂಪಭೃತ್ ದಶರೂಪಭೃತ್ (ಪುಂ)** ಹತ್ತು ವಿಧ ರೂಪ  
ಗಳನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿ ಅವತರಿಸಿದ ವಿಷ್ಣು. ದಶ ಮತ್ಸ್ಯಾದಿನಿ  
ರೂಪಾಣಿ ವಿಭರ್ತಿ - ಡು ಭೃತ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) “ವಿವಪ್”  
(೩-೨-೭೬) ।

**ದಶಲಕ್ಷಣಕ ದಶಲಕ್ಷಣಕ (ವಿಂ)** ಹತ್ತು ವಿಧ ಲಕ್ಷಣಗಳುಳ್ಳ  
(ಧರ್ಮ). ದಶ ಲಕ್ಷಣಾನ್ಯಸ್ಯ “ಕಪ್” (೪-೪-೧೪೪) ।  
“ದಶಲಕ್ಷಣಕೋ ಧರ್ಮಃ ಸೇವಿತವ್ಯಃ ಪ್ರಯತ್ನತಃ ” ಮನುಂ ೬-೯೧ ।  
ಕ್ಷಮಾ ಮತ್ತು ದಶಧರ್ಮ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ದಶವರ್ಷ ದಶವರ್ಷ (ವಿಂ)** 1. ಹತ್ತು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸುಳ್ಳ.  
ದಶ ವರ್ಷಾಣಿ ಯಸ್ಯ । “ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ದಶವರ್ಷಂ ತು ಶತವರ್ಷಂ ತು  
ಭೂಮಿಪಮ್ ” ಮನುಂ ೨-೩೪ । 2. ಹತ್ತು ವರ್ಷಗಳಿಂದ

ನಡೆದ, ಹತ್ತು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ನಡೆದ. ದಶಭಿಃ ವರ್ಷಃ  
ನಿವೃತ್ತಃ ವಾ “ಖಃ” (೪-೧-೮೮) । ದಶವರ್ಷಿಣಃ ದಶ  
ವರ್ಷಿಣಃ. ಪಶ್ಚ “ಠಜ್” (೪-೧-೧೮) । ಉತ್ತರಪದವೃದ್ಧಿಃ  
(೭-೩-೧೬) । ದಶವಾರ್ಷಿಕಃ ದಶವಾರ್ಷಿಕಃ. ವಾ ಲುಕ್ ।  
ದಶವರ್ಷಃ ದಶವರ್ಷಃ. 3. ಹತ್ತು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ವೇತನ  
ಕೊಟ್ಟು ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ದಶಭಿಃ ವರ್ಷಃ ಭೂತಃ ।  
4. ಹತ್ತು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಉಪಚರಿಸಿ ಕೆಲಸಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ದಶಭಿಃ ವರ್ಷಃ ಅಧೀಷ್ಠಃ ಸತ್ಕೃತ್ಯ ವ್ಯಾಪಾರಿತಃ । 5. ಹತ್ತು  
ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಇದ್ದ. ದಶಭಿಃ ವರ್ಷಃ ಭೂತಃ । ಈ ಎಲ್ಲಾ  
ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲೂ ಖಃ ಠಜ್ ಮತ್ತು ಇವುಗಳಿಗೆ ವಿಕಲ್ಪವಾಗಿ  
ಲುಕ್ ಬಂದು ದಶವರ್ಷಿಣಃ ದಶವರ್ಷಿಣಃ, ದಶವಾರ್ಷಿಕಃ  
ದಶವಾರ್ಷಿಕಃ, ದಶವರ್ಷಃ ದಶವರ್ಷಃ ಎಂದು ಮೂರು  
ರೂಪಗಳಾಗುವುವು.

**ದಶವಾಜಿನ್ ದಶವಾಜಿನ್ (ಪುಂ)** ಚಂದ್ರ. ದಶ ವಾಜಿನೋಽಸ್ಯ  
ರಥೇ । “ದಶಾಶ್ವಂ ಶ್ವೇತಪಶ್ಯಸ್ಯ ವಿಚಿನ್ತ್ಯೋಮಾಧಿದೇವತಮ್ ” ।  
**ದಶವಾರ್ಷಿಕ ದಶವಾರ್ಷಿಕ (ವಿಂ)** “ದಶವರ್ಷ” ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.

**ದಶವಿಧ ದಶವಿಧ (ವಿಂ)** ಹತ್ತು ವಿಧವಾದ, ಹತ್ತು ಪ್ರಕಾರ  
ವಾದ. ದಶ ವಿಧಾ ಪ್ರಕಾರಾ ಯಸ್ಯ ।

**ದಶಶತ ದಶಶತ (ನಂ)** 1. ಒಂದು ಸಹಸ್ರ, ಒಂದು ಸಾವಿರ.  
ದಶಗುಣಿತಂ ಶತಮ್ । “ದಶಶತನಯನೇಽಪಿ ವೀಕ್ಷಯಮಾಣೇ ದಶರಥ-  
ಪುತ್ರಸಿಞ್ಜೇವಿವೇದ ಜಾತಾ ” ಚಂ ರಾಂ । 2. ಹತ್ತು ಅಧಿಕ  
ವಾದ ಒಂದು ನೂರು, ಒಂದುನೂರ ಹತ್ತು. ದಶಾಧಿಕಂ  
ಶತಮ್ । (ವಿಂ) 3. ಒಂದು ಸಾವಿರ. ದಶ ಶತಾನಿ  
ಯೇಷಾಮ್ । “ದಶಶತದಲಭೇದಂ ಕೌತುಕೇನಾಶು ಕೃತ್ವಾ ” ಮಾಘಂ  
೧೧-೬೧ ।

**ದಶಸಾಹಸ್ರ ದಶಸಾಹಸ್ರ (ನಂ)** ಹತ್ತು ಸಾವಿರ, ಅಯುತ.  
ದಶಗುಣಿತಂ ಸಹಸ್ರಂ ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ “ಅಣ್” (೪-೨-೧೦೩) ।  
**ದಶಸಾಹಸ್ರಿಕ ದಶಸಾಹಸ್ರಿಕ (ವಿಂ)** ಹತ್ತು ಸಹಸ್ರದ  
ಒಂದು ಭಾಗ. ದಶಸಹಸ್ರಾಣಾಮ್ ಪರಿಮಾಣಮ್ “ಠಜ್”  
(೪-೧-೧೮) । ಉತ್ತರಪದವೃದ್ಧಿಃ (೭-೩-೧೭) ।

**ದಶಾ ದಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಅವಸ್ಥೆ, ಸ್ಥಿತಿ, ಇರಿಕೆ. ದೃಶ್ಯತೇ-ದಶಾ  
(ದಶನೇ) “ಅಡ್” (೩-೩-೧೦೪) । “ದ್ವಿಪನ್ನಿಮಿತ್ತಾ  
ಯದಿಯಂ ದಶಾ ತತಃ ಸಮೂಲಮುನ್ಮೂಲಯತೀವ ಮೇ ಮನಃ ” ಕಿರಾಂ  
೧-೪೧ । 2. ಜೀವಮಾನದ ಒಂದು ಕಾಲ, ಬಾಲ್ಯ, ಯೌವನ  
ಕೌಮಾರ ಮತ್ತು ವಾರ್ಧಕ ರೂಪವಾದ ಅವಸ್ಥೆ, ವಯಸ್ಸಿನ  
ಧರ್ಮ. 3. ದೀಪದ ಬತ್ತಿ. “ಪ್ರದೀಪಃ ಸ್ತೇಹಮಾದತ್ತೇ  
ದಶಾಯಾಮ್ಯಂತರಸ್ಯಯಾ ” ಮಾಘಂ ೨-೮೪ । 4. ಮನ್ಮಥಾವಸ್ಥೆ,



ಮನ್ಮಥನ ವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ದರ್ಶನ ಮೊದಲಾದ ಅವಸ್ಥೆಗಳು. "ದೃಢಮನಃಸಜ್ಜಸಂಕಲ್ಪಾ ಜಾಗರಃ ಕೃಶತಾ-  
ಸ್ತತಿಃ | ಹಿತಾಗೋನಿಮಾದಮುಚ್ಛಾಂತಾ ಇತ್ಯನೃಜ್ಞದಶಾ ದಶ" |

5. ಸೂರ್ಯಾದಿ ನವಗ್ರಹಗಳ ದಶೆಗಳು. ಜಾತಕನ ಜನ್ಮ ನಕ್ಷತ್ರಾನುಸಾರವಾಗಿ ಸೂರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹಗಳು ಅಧಿಪತಿಗಳಾಗಿದ್ದು ಕೊಂಡು ಫಲಕೊಡುವ ಕಾಲ.

ಈ ಕೆಳಗೆ ಕಂಡಂತೆ ಆಯಾ ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನಿಗೆ ಆಯಾಗ್ರಹಗಳ ದಶೆಗಳು ಆರಂಭವಾಗಿ ನಡೆಯುವುವು :

| ನಕ್ಷತ್ರಗಳು                                | ದಶಾನಾಥ | ವರ್ಷಗಳು |
|---|--------|---------|
| 1. ಕೃತ್ತಿಕಾ<br>ಉತ್ತರಫಲ್ಗುಣಿ<br>ಉತ್ತರಾಷಾಢಾ | ರವಿ    | 6       |
| 2. ರೋಹಿಣಿ<br>ಹಸ್ತ<br>ಶ್ರವಣಾ               | ಚಂದ್ರ  | 10      |
| 3. ಮೃಗಶಿರಃ<br>ಚಿತ್ತಾ<br>ಧನಿಷ್ಠಾ           | ಕುಜ    | 7       |
| 4. ಆರ್ಧ್ರಾ<br>ಸ್ವಾತಿ<br>ಶತಭಿಷಕ್           | ರಾಹು   | 18      |
| 5. ಪುನರ್ವಸುಃ<br>ವಿಶಾಖಾ<br>ಪೂರ್ವಾಭಾದ್ರಾ    | ಗುರು   | 16      |
| 6. ಪುಷ್ಯ<br>ಅನೂರಾಧಾ<br>ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರಾ       | ಶನಿ    | 19      |
| 7. ಆಶ್ಲೇಷಾ<br>ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ<br>ರೇವತಿ           | ಬುಧ    | 17      |
| 8. ಮುಖಾ<br>ಮೂಲಮ್<br>ಅಶ್ವಿನಿ               | ಕೇತು   | 7       |
| 9. ಪೂರ್ವಫಲ್ಗುಣಿ<br>ಪೂರ್ವಾಷಾಢಾ<br>ಭರಣಿ     | ಶುಕ್ರ  | 20      |

ಒಟ್ಟು ವರ್ಷಗಳು 120

[ಇವುಗಳ ಅಂತರ್ದಶಾವಿವರಕ್ಕೆ "ಭುಕ್ತಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] (ಸ್ತ್ರೀಂ ಬಂ ವಂ) 6. ಬಟ್ಟೆಯ ತುದಿ, ಸರಗು, ಅಂಚು. "ದಶಾವಸ್ಥಾಧೀಪವರ್ಯೋವಸ್ತ್ರಾಂತೇ ಭೂಮಿ ಧೌಪಿತಿ" ಮೇದಿಂ |

ದಶಾಂಶ ದಶಾಂಶ (ಪುಂ) ಹತ್ತುನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ.

ದಶಾಕರ್ಷ ದಶಾಕರ್ಷ (ಪುಂ) 1. ದೀಪ. ದಶಾಯಾ ತೇಲಮಾಕರ್ಷತಿ - ಆ + ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಅಚ್" (3-1-134) | 2. ಬಟ್ಟೆಯ ಸರಗು.

ದಶಾಕ್ಷರ ದಶಾಕ್ಷರ (ನಂ) 1. ಒಂದು ಪಾದದಲ್ಲಿ ಹತ್ತು ಅಕ್ಷರಗಳುಳ್ಳ "ಪಞ್ಚ" ಛಂದಸ್ಸು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಅಕ್ಷರೀ -ಅಕ್ಷರೀ. 2. ತಂತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಒಂದು ಸ್ತ್ರೀ ದೇವತೆಯ ಮಂತ್ರ. "ಏಷಾ ದಶಾಕ್ಷರೀ ವಿद्या ಸರ್ವಸಂಪತ್ತದಾಯಿನಿ" ತನ್ವಸಾಂ |

ದಶಾಕ್ಷರ ಧೂಪ ದಶಾಂಗಧೂಪ (ಪುಂ) 1. ಅವಗ್ರಹ ಮತ್ತು ಪಿಶಾಚಗಳನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ ಒಂದು ವಿಧ ಧೂಪ. "ವಾಸಯೇದ್ವಾ ದಶಾಕ್ಷರೇನ ತ್ರಿದೋಷೋನೇನ ಚಾರ್ಭಕಮ್ | ನಶ್ಯಂತಿ ಯಸ್ಯ ಧೂಪೇನ ಅವಗ್ರಹಪಿಶಾಚಕಾಃ" | 2. ದೇವರ ಪೂಜಾ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಪಿಸುವ ಒಂದು ವಿಧ ಧೂಪ. "ಮಧು ಮುಸ್ತಂ ಧೃತಂ ಗಂಧೋ ಗುಗ್ಗುಲವಗುರುಶೈಲಜಮ್ | ಸರಲಂ ಸಿಂಹಸಿದ್ಧಾರ್ಥ ದಶಾಕ್ಷರ ಧೂಪ ಉಚ್ಯತೇ" |

ದಶಾಕ್ಷರ ದಶಾಂಗುಲ (ನಂ) 1. ಖರ್ಬುಜದ ಹಣ್ಣು. (ವಿಂ) 2. ಹತ್ತು ಅಂಗುಲಗಳ ಪ್ರಮಾಣವುಳ್ಳ. ದಶ ಅङ್ಗುಲಯಃ ಪ್ರಮಾಣಂ ಯಸ್ಯ | "ದ್ವಯಸಚ್" (4-2-37) | ತಸ್ಯ ಲುಕ್ (ವಾಂ 4-2-37) | ತತಃ "ಅಚ್" (4-4-66) | "ನಿಕ್ಷೇಪ್ಯೋಷ್ಯೋಮಯಃ ಶङ್ಕುಃ ಜ್ವಲನ್ನಾಸ್ಯೇ ದಶಾङ್ಗುಲಃ" ಮನುಂ 6-271 |

ದಶಾಧಿಪತಿ ದಶಾಧಿಪತಿ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯಾದಿ ಗ್ರಹಗಳ ದಶೆಗಳಿಗೆ ಅಧಿಪತಿಗಳಾದ ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರ ಕುಜ ರಾಹು ಗುರು ಶನಿ ಬುಧ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹಗಳು.

ದಶಾನನ ದಶಾನನ (ಪುಂ) ಹತ್ತು ಮುಖಗಳುಳ್ಳ ರಾವಣ. ದಶ ಆನನಾನಿ ಯಸ್ಯ | "ದಶಾನನತಿರಸ್ಕಾರಪ್ರಶಸ್ತಿಮಿವ ಲಕ್ಷ್ಮಣಃ" ಮಂ ವೀಂ 4-22 |

ದಶಾನಾಥ ದಶಾನಾಥ (ಪುಂ) "ದಶಾಧಿಪತಿ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ದಶಾಂತ ದಶಾಂತ (ಪುಂ) 1. ವಾರ್ಧಕ. ಮುಪ್ಪು, ಕೊನೆಯ ಅವಸ್ಥೆ. 2. ದೀಪದ ಬತ್ತಿಯ ಕೊನೆ. ದಶಾಯಾಃ ಜೀವಿತಾಂತಿ-ಮಾವಸ್ಥಾಯಾಃ ಅಂತಃ ವರ್ಯಾ ವಾ ಅಂತಃ |

ದಶಾಣಿ ದಶಾಣಿ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಒಂದು ದೇಶ. ದಶ ಋಣಾನಿ ಯತ್ರ | ದಶಾಣಿಂ ದೇಶಃ ಸಿಂ ಕೌಂ | "ಸಂಪತ್ಸ್ಯಂತೇ



ಕತಿಪಯದಿನಸ್ಥಾಯಿಹಂಸಾ ದಶಾಣಿ:" ಮೇವಂ ೧-೨೩ |  
ಈ ದೇಶವು ಮಧ್ಯದೇಶಕ್ಕೆ ಆಗ್ನೇಯದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವುದು.  
"ಆಗ್ನೇಯಾ ದಿಶಿ ಕೋಸಲಕಲಿಂಗವಜ್ರೋಪವಜ್ರಚರಾಜ್ಞಾಃ |  
..... | ಕಿಂಕಿಣ್ಯಕಂಠಕಸ್ಥಲ-  
ನಿಷಾದರಾಷ್ಟ್ರಾಣಿಪುರಿಕದಾಶಾಣಿ:" ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೪-೧೦ |  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರ್ಣಿ -ರ್ಣಾಃ 2. ಒಂದು ನದಿ. ದಶ ಕೃಣಾಣಿ  
ಜಲಾನಿ ಯತ್ರ | "ಕೃಣಂ ದೇಯೇ ಜಲೇ ದುರ್ಗಂ" ಹೇಮಂ |

ದಶಾವತಾರ ದಶಾವತಾರ (೧೦) ವಿಷ್ಣು. ದಶ ಅವತಾರಾ  
ಮತ್ಸ್ಯಾದಯೋ ಯಸ್ಯ | ವಿಷ್ಣು ವಿನ ಹತ್ತು ಅವತಾರಗಳು :

- (1) ಮತ್ಸ್ಯ, (2) ಕೂರ್ಮ, (3) ವರಾಹ, (4) ನೃಸಿಂಹ,
- (5) ವಾಮನ, (6) ಜಾಮದಗ್ನಿ, (7) ಶ್ರೀರಾಮ,
- (8) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ, (9) ಬುದ್ಧ ಮತ್ತು (10) ಕಲ್ಕಿ.

(1) ಕಲ್ಪಾಂತದಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮನು ನಿದ್ರೆಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ  
ಅವನ ಮುಖದಿಂದ ಹೊರಟ ವೇದಗಳನ್ನು ಹಯಗ್ರೀವ  
ನೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನು ಅಪಹರಿಸಲಾಗಿ ಶ್ರೀ ವಿಷ್ಣುವು ಮತ್ಸ್ಯ  
ರೂಪದಿಂದ ಅವತರಿಸಿ ರಾಕ್ಷಸನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ವೇದವನ್ನು  
ಉದ್ಧರಿಸಿದನು. "ಪ್ರಲಯಪಯಸಿ ಧಾತುಃ ಸುಪ್ತಶಕ್ತೇರ್ಮುಕ್ತೇಮ್ಯಃ  
ಶ್ರುತಿಗಣಮಪನೀತಂ ಪ್ರತೃಪಾದತ್ತ ಹತ್ವಾ | ದಿತಿರಜಮಕಥಯದ್ಯೌ  
ಬ್ರಹ್ಮ ಸತ್ಯವ್ರತಾನಾಂ ತಮಹಮಸಿಲಹೇತು ಜಿಹ್ವಾಮೀನಂ ನತೋಽಸ್ಮಿ"  
ಭಾಗಂ ೮-೨೪-೬೧ | ವಿಷ್ಣುವಿನ ಈ ಮತ್ಸ್ಯಾವತಾರವು  
ಬ್ರಹ್ಮನ ಇಪ್ಪತ್ತೈದನೆಯ ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ನಡೆ  
ಯಿತು.

(2) ಒಂದು ಕಾಲದಲ್ಲಿ ರಾಕ್ಷಸರು ದೇವತೆಗಳಿಗಿಂತಲೂ  
ಬಲಿಷ್ಠರಾಗಿದ್ದರು. ಆಗ ದೇವತೆಗಳು ನಿರ್ವೀರ್ಯರಾಗಿದ್ದು  
ದನ್ನು ಕಂಡು ವಿಷ್ಣುವು "ರಾಕ್ಷಸರೊಂದಿಗೆ ನೀವು ಸ್ನೇಹ  
ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರವನ್ನು ಕಡೆದು ಅಮೃತವನ್ನು  
ಸಂಪಾದಿಸಿದರೆ ನಿಮಗೆ ಕ್ಷೇಮವುಂಟು" ಎಂದು ದೇವತೆ  
ಗಳಿಗೆ ಹೇಳಲು ದೇವತೆಗಳು ರಾಕ್ಷಸರೊಡನೆ ಸ್ನೇಹ ಬೆಳೆಸಿ  
ಕೊಂಡು ಸಮುದ್ರಮಥನ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಕಡೆಗೋಲಾ  
ಗಿದ್ದ ಮಂದರಪರ್ವತವು ಸಮುದ್ರದ ತಳದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು  
ಕೊಂಡಿತು. ಆಗ ದೇವತೆಗಳ ಅನುಗ್ರಹಕ್ಕಾಗಿ ವಿಷ್ಣುವು  
ಕೂರ್ಮರೂಪವನ್ನು ತಾಳಿ ತನ್ನ ಬೆನ್ನಿನ ಮೇಲೆ ಪರ್ವತ  
ವನ್ನು ಹೊತ್ತು ಸಮುದ್ರಮಥನಕ್ಕೆ ಸೌಕರ್ಯಮಾಡಿ  
ಕೊಟ್ಟನು. ಈ ಕೂರ್ಮಾವತಾರವು ಈಗಿನ ಶ್ವೇತ  
ವರಾಹಕಲ್ಪದ ಚಾಕ್ಷುಷಮನ್ವಂತರದಲ್ಲಿ ನಡೆಯಿತು.  
"ಮೇಘಶ್ಯಾಮಃ ಕನಕಪರಿಧಿಃ ಕರ್ಣವಿಜೃಂಭಿತವಿಜೃಂಭಿಣಿ ಚಾಜ-  
ದ್ವಿಲುಲಿತಕಚಃ ಸ್ನಿಗ್ಧರೋ ರಕ್ತನೇತ್ರಃ | ಜೇತೃರ್ದೋರ್ಭಿರ್ಜಗದಭಯದೈ-  
ರ್ದಂದಶೂಕಂ ಗೃಹ್ಣಿತ್ವಾ ಮಥನ್ ಮಥ್ನಾ ಪ್ರತಿಗಿರೀರಿವಾಶೋಭತಾಥೋ-  
ದ್ಭುತಾರಿಃ" ಭಾಗಂ ೮-೨-೧೭ |

(3) ವರಾಹಾವತಾರವು ವಿಷ್ಣುವಿನ ಹತ್ತು ಅವತಾರ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಮೂರನೆಯದು. ಪ್ರಳಯಾರ್ಣವದಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿ  
ಹೋಗಿದ್ದ ಭೂಮಿಯನ್ನು ಉದ್ಧರಿಸಲು ಮತ್ತು ಲೋಕ  
ಕುಟಕನಾಗಿದ್ದ ಹಿರಣ್ಯಾಕ್ಷನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಲು ವಿಷ್ಣುವು  
ವರಾಹಾವತಾರ ತಾಳಿದನು. ಈ ಅವತಾರವು ಈಗಿನ  
ಶ್ವೇತವರಾಹಕಲ್ಪದ ವೈವಸ್ವತ ಮನ್ವಂತರದಲ್ಲಿ ನಡೆಯಿತು.  
ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ |

(4) ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ದಶಾವತಾರಗಳಲ್ಲಿ ನೃಸಿಂಹಾ  
ವತಾರವು ನಾಲ್ಕನೆಯದು. ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ವರವನ್ನು  
ಪಡೆದ ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವು ಲೋಕಕುಟಕನಾಗಿ ಎಲ್ಲರನ್ನೂ  
ಪೀಡಿಸುತ್ತಲೂ ವಿಷ್ಣುಭಕ್ತನಾದ ತನ್ನ ಮಗ ಪ್ರಹ್ಲಾದ  
ನನ್ನು ಅನೇಕವಿಧವಾಗಿ ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಲೂ ಇದ್ದಾಗ ವಿಷ್ಣುವು  
ಅವನ ಸಭಾಂಗಣದ ಕಂಬದಿಂದ ನೃಸಿಂಹರೂಪದಿಂದ  
ಅವತಾರಹೊಂದಿ ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದನು.  
ಈ ಅವತಾರವು ಈಗಿನ ವೈವಸ್ವತ ಮನ್ವಂತರದ ನಾಲ್ಕ  
ನೆಯ "ಕೃತ" ಯುಗದಲ್ಲಿ ನಡೆಯಿತು.

(5) ವಾಮನಾವತಾರವು ವಿಷ್ಣುವಿನ ಐದನೆಯ  
ಅವತಾರ. ಇದು ಈಗಿನ ವೈವಸ್ವತಮನ್ವಂತರದ ಏಳನೆಯ  
"ತೃತೀತಾ" ಯುಗದಲ್ಲಿ ನಡೆಯಿತು. ಬಲಿಚಕ್ರವರ್ತಿಯು  
ಇಂದ್ರನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಮಾಡಿ ಸ್ವರ್ಗವನ್ನು ಸ್ವಾಧೀನ  
ಪಡಿಸಿಕೊಂಡು ನರ್ಮದಾ ತೀರದಲ್ಲಿ ಅಶ್ವಮೇಧ ಯಾಗ  
ವನ್ನು ಮಾಡತೊಡಗಿದನು. ಆಗ ವಿಷ್ಣುವು ಅದಿತಿಯಲ್ಲಿ  
ವಾಮನರೂಪದಿಂದ ಅವತರಿಸಿ ಬಲಿಚಕ್ರವರ್ತಿಯಲ್ಲಿಗೆ  
ಬಂದು ಮೂರಡಿ ಭೂಮಿಯನ್ನು ಬೇಡಿ ತ್ರಿವಿಕ್ರಮನಾಗಿ  
ಬೆಳೆದು ಬಲಿಯ ತಲೆಯ ಮೇಲೆ ಕಾಲಿಟ್ಟು ಪಾತಾಳಕ್ಕೆ  
ಮೆಟ್ಟಿ ನಿಗ್ರಹಿಸಿದನು.

(6) ಪರಶುರಾಮಾವತಾರವು ವಿಷ್ಣುವಿನ ಆರ  
ನೆಯ ಅವತಾರ. ಇದು ಈಗಿನ ವೈವಸ್ವತ ಮನ್ವಂತರದ  
ಹತ್ತೊಂಬತ್ತನೆಯ "ತೃತೀತಾ" ಯುಗದಲ್ಲಿ ನಡೆಯಿತು.  
ವಿಷ್ಣುವು ಜಮದಗ್ನಿ ಮಹರ್ಷಿಯ ಮಗನಾಗಿ ಅವತರಿಸಿ  
ದುಷ್ಟ ಕ್ಷತ್ರಿಯರನ್ನು ಧ್ವಂಸಮಾಡಿದನು. "एकोनविंश्यां  
त्रेतायां सर्वक्षत्रान्तकृद्भिः | जामदग्न्यस्तथा षष्ठो  
विश्वामित्रपुरस्सरः" ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ |

(7) ಶ್ರೀರಾಮಾವತಾರವು ವಿಷ್ಣುವಿನ ಹತ್ತು  
ಅವತಾರಗಳಲ್ಲಿ ಏಳನೆಯದು. ಲೋಕಕುಟಕರಾಗಿದ್ದ  
ರಾವಣ ಕುಂಭಕರ್ಣರ ನಿಗ್ರಹಕ್ಕಾಗಿ ವಿಷ್ಣುವು ದಶರಥನಿಗೆ  
ಕೌಸಲ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಪುತ್ರನಾಗಿ ಅವತರಿಸಿದನು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ರಾಮ"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕನೆಯ "ತೃತೀತಾ" ಯುಗ  
ದಲ್ಲಿ ಈ ಅವತಾರ ನಡೆಯಿತು. "चतुर्विंशे युगे रामो



ವಸಿಷ್ಠೇನ ಪುರೋವಸಾ । ಸಪ್ತಮೋ ರಾವಣಸ್ಯಾರ್ಥೇ ಜನ್ತೇ ದಶರಥಾ-  
ತ್ಮಜಃ" ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ ।

(8) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಾ ವತಾರವು ವಿಷ್ಣುವಿನ ಹತ್ತು ಅವತಾರಗಳಲ್ಲಿ ಎಂಟನೆಯದು. ವಸುದೇವನ ಪತ್ನಿ ದೇವಕಿಯು ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ವಿಷ್ಣುವು ಶಿಶುಪಾಲ ದಂಡವಕ್ತೃರ ಸಂಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಾಗಿ ಅವತರಿಸಿದನು. ಈ ಅವತಾರವು ಈಗ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ ವೈವಸ್ವತ ಮನ್ವಂತರದ ಇಪ್ಪತ್ತೆಂಟನೆಯ "ದ್ವಾಪರ" ಯುಗದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ನಡೆಯಿತು. ["ಕೃಷ್ಣ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

(9) ಬುದ್ಧಾವತಾರವು ವಿಷ್ಣುವಿನ ಒಂಬತ್ತನೆಯ ಅವತಾರ. ದೇವತೆಗಳನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸುವವರ ಬುದ್ಧಿಯನ್ನು ಮೋಹಗೊಳಿಸಲು ಕೀಟಕ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಜನನಂಬು-ನ ಮನೆ ಯಲ್ಲಿ ಅವತರಿಸಿದನು. "ತತಃ ಕಲೌ ಸಂಪ್ರವೃತ್ತೇ ಸಂಮೋಹಾಯ ಸುರದ್ವಿಷಾಮ್ । ಬುದ್ಧೋ ನಾಮ್ನಾ ಜಿನಸುತಃ ಕಿರೀಟಕೇ ಭವಿಷ್ಯತಿ" भाग० १-३-२४ ।

(10) ಕಲ್ಕಿ ಅವತಾರವು ವಿಷ್ಣುವಿನ ಹತ್ತು ಅವತಾರಗಳಲ್ಲಿ ಹತ್ತನೆಯದು. ಲೋಕವೆಲ್ಲಾ ಅಧರ್ಮ ಭೂಯಿಷ್ಠವಾಗಿ ದುಷ್ಟರಾಜರ ಪೀಡೆಯನ್ನು ತಡೆಯಲಾರದೆ ಭೂದೇವಿಯು ಬ್ರಹ್ಮಾದಿ ದೇವತೆಗಳೊಡನೆ ವಿಷ್ಣುವಿನಲ್ಲಿ ಮೊರೆಯಿಡಲು ವಿಷ್ಣುವು ವಿಷ್ಣುಯಶನೇಬ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಕಲ್ಕಿಯೆಂಬ ಹೆಸರಿನಿಂದ ಅವತರಿಸಿ ದುಷ್ಟನಿಗ್ರಹ ಮಾಡಿ ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಶಾಂತಿ ಸೌಖ್ಯಗಳು ನೆಲೆಸುವಂತೆ ಮಾಡುವನು. "अथासौ युगसन्ध्यायां दस्युप्रायेषु राजसु । जनिता विष्णुयशसो नाम्ना कल्किर्जगत्पतिः" भाग० १-३-२५ ।

ದಶಾಶ್ವ ದಶಾಶ್ವ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ದಶ ಅಶ್ವಾ ರಯೇಜ್ಯ । "रथस्त्रिचक्रः सोमस्य कुन्दाभास्तस्य वाजिनः । वाम-  
दक्षिणतो युक्ता दश तेन चरत्यसौ । वीथ्याश्रयाणि ऋक्षाणि ध्रुवाधारेण वेगिना । हासवृद्धिकमस्तस्य राशीनां सवितुर्यथा । अर्कस्येव स्थितस्याश्वः सकृद्युक्ता वहन्ति ते । कल्पमेकं मुनिश्रेष्ठ वारिगर्भसमुद्भवाः" विष्णुपुಂ २-१२ । 2. ಇಕ್ಷ್ವಾಕುರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

ದಶಾಶ್ವಮೇಧ ದಶಾಶ್ವಮೇಧ (ನಂ) ಕಾಶೀಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಪುಣ್ಯ ತೀರ್ಥ.

ದಶಾಸ್ಯ ದಶಾಸ್ಯ (ಪುಂ) ಹತ್ತು ಮುಖಗಳುಳ್ಳ ರಾಮಣ.

ದಶಾಹ ದಶಾಹ (ಪುಂ) ಹತ್ತು ದಿವಸಗಳು. ದಶಾನಾಮಹ್ನಿ ಸಮಾಹಾರ: "ಠಕ್" (५-४-९१) । ಪುಸ್ತಕ (२-४-२९) ।

ದಶಿನ್ ದಶಿನ್ (ಪುಂ) ಹತ್ತು ಗ್ರಾಮಗಳ ಅಧಿಕಾರಿ, ಹತ್ತು ಹಳ್ಳಿಗಳ ಯೋಗಕ್ಷೇಮವನ್ನು ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುವ

ಅಧಿಕಾರಿ. ದಶ ಗ್ರಾಮಾಃ ಸಂತ್ಯಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (५-२-११६) । "दशी कुलं तु भुञ्जीत विशी पञ्च कुलानि च" मनु० ७-११९ ।

ದಶೋನ್ವನ ದಶೋನ್ವನ (ಪುಂ) ದೀಪ. ದಶಾ ವರ್ತಿಕೇವ ಇನ್ವನಂ यस्य । "दीपस्तु स्नेहाशः कज्जलध्वजः । दशोन्वनो गृहमणिः दोषातिलक इत्यपि" त्रिकाण्ड० ।

ದಶೇರಕ ದಶೇರಕ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ಮರುಭೂಮಿ. "मरवस्तु दशेरकाः" वैज० ।

ದಶೇಶ ದಶೇಶ (ಪುಂ) 1. "दशानाथ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ದಶಾನಾಮಿಶಃ । 2. ಹತ್ತು ಗ್ರಾಮಗಳ ಅಧಿಪತಿ, ಹತ್ತು ಹಳ್ಳಿಗಳ ಅಧಿಕಾರಿ. ದಶಾನಾಂ ಗ್ರಾಮಾಣಾಮಿಶಃ । "शंसेद् ग्रामदशेशाय दशेशो विशतीशिने" मनु० ८-११६ ।

ದಶಕಾದಶಿಕ ದಶಕಾದಶಿಕ (ವಿಂ) ಹನ್ನೊಂದು ರೂಪಾಯಿಗಳನ್ನೂ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಹತ್ತು ರೂಪಾಯಿಗಳನ್ನು ಸಾಲವಾಗಿ ಕೊಡುವವನು, ಶೇಕಡ 10 ರಂತೆ ಬಡ್ಡಿ ಗಾಗಿ ಸಾಲ ಕೊಡುವವನು. एकादशार्थत्वात् एकादश ते च ते वस्तुतो दश च दशकಾದशः । पूर्वनिपातः (२-२-३४) । समासान्तोऽकारः निपा० । दशकಾದशान् प्रयच्छति "छच्" (४-४-३१) । स्त्रियाम् "डीष्" (४-१-४१) । दशकಾದशिकी दशकಾದशिके.

ದಶೋಷಕಾಲ ದಶೋಷಕಾಲ (ಪುಂ) ಹತ್ತು ವಿಧ ಔಷಧ ಸೇವನೆಯ ಕಾಲ. ದಶವಿಧಃ ಔಷಧಕಾಲಃ । (1) ಅಭಕ್ತಮ್, (2) ಪ್ರಾಭಕ್ತಮ್, (3) ಅಧೋಭಕ್ತಮ್, (4) ಮಧ್ಯೆಭಕ್ತಮ್, (5) ಅಂತರಾಭಕ್ತಮ್, (6) ಸಭಕ್ತಮ್, (7) ಸಾಮುದ್ಗಮ್, (8) ಮುಹುರ್ಮುಹುಃ, (9) ಗ್ರಾಸಮ್ ಮತ್ತು (10) ಗ್ರಾಸಾಂತರಮ್ ಎಂದು ಹತ್ತು ವಿಧ.

(1) ಅಹಾರವಿಲ್ಲದೆ ಕೇವಲ ಔಷಧಸೇವನೆಯು ಅಭಕ್ತವು. "तत्राभवत् तु यत् केवलमेवौषधमुपयुज्यते" सुश्रुत० उत्तरत० ६४-६६ । "वीर्याधिकं भवति भेषज-  
मग्नहीनं हन्यात्तथाऽऽमयमसंशयमाशु चैव । तद्वालवृद्ध-  
वनितामृदवस्तु पीत्वा ग्लानिं परां समुपयान्ति बलक्षयं च" ६४-६७ ।

(2) ಅಹಾರಕ್ಕೆ ಮೊದಲು ಔಷಧಸೇವನೆಯು "ಪ್ರಾಭಕ್ತಮ್". "प्राग्भक्तं नाम यत् प्राग्भक्तस्योप-  
युज्यते" । "शीघ्रं विपाकमुपयाति बलं न हिंस्या-  
दन्नावृतं न च मुहुर्वदनाग्निरेति । प्राग्भक्तसेवितमथौषध-  
मेतदेव दद्याच्च वृद्धशिशुभीरुकृशाङ्गनाभ्यः" सुश्रुत० उत्तरत० ६४-६८, ६९ ।



(3) ಉಟವಾದನಂತರ ಔಷಧಸೇವನೆಯು “ಅಧೋಭಕ್ತ”. “ಅಧೋಭಕ್ತಂ ನಾಮ ಯದಧೋ ಭಕ್ತ-ಸ್ಯೇತಿ”.

(4) ಉಟದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಔಷಧಸೇವನೆಯು “ಮಧ್ಯೇಭಕ್ತ”. “ಮಧ್ಯೇಭಕ್ತಂ ನಾಮ ಯನ್ಮಧ್ಯೇ ಭಕ್ತಸ್ಯ ಪೀಯತೇ”.

(5) ಹಗಲಿನ ಮತ್ತು ರಾತ್ರಿಯ ಉಟಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಔಷಧಸೇವನೆಯು “ಅಂತರಾಭಕ್ತ”. “ಅಂತರಾಭಕ್ತಂ ನಾಮ ಯದಂತರಾ ಪೀಯತೇ ಪೂರ್ವಪರಯೋರ್ಭಕ್ತಯೋಃ”.

(6) ಉಟದೊಡನೆ ಔಷಧಸೇವನೆಯು “ಸಭಕ್ತ”. “ಸಭಕ್ತಂ ನಾಮ ಯತ್ ಸಹಭಕ್ತೇನ”.

(7) ಉಟಕ್ಕೆ ಮೊದಲು ಮತ್ತು ಅನಂತರ ಔಷಧ ಸೇವನೆಯು “ಸಾಮುದ್ಗ”. “ಸಾಮುದ್ಗಂ ನಾಮ ಯದ್ಭಕ್ತ-ಸ್ಯಾಧಾವಂತೇ ಚ ಪೀಯತೇ”.

(8) ಉಟದ ಜೊತೆಯಲ್ಲಾಗಲಿ ಉಟವಿಲ್ಲದೆ ಯಾಗಲಿ ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಮಾಡುವ ಔಷಧಸೇವನೆಯು “ಮುಹುರ್ಮುಹುಃ” (ಮತ್ತೆಮತ್ತೆ). “ಮುಹುರ್ಮುಹುಃ ಸಭಕ್ತಮಭಕ್ತಂ ವಾ ಯದೋಷಂ ಮುಹುರ್ಮುಹುಃಪಯುಜ್ಯತೇ”.

(9) ಅಹಾರದೊಡನೆ ಬೆರಸಿ ಮಾಡುವ ಔಷಧ ಸೇವನೆಯು “ಗ್ರಾಸ”. “ಗ್ರಾಸಂ ತು ಯತ್ಪಿಂಡವ್ಯಾಮಿಶ್ರಮ್”.

(10) ಉಟದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಒಂದೊಂದು ಕವಳದ (ತುತ್ತಿನ) ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಔಷಧವನ್ನು ಸೇವಿಸುವುದು “ಗ್ರಾಸಾಂತರ”. “ಗ್ರಾಸಾಂತರಂ ತು ಯದ್ ಗ್ರಾಸಾಂತರೇಷು”.

ದೃಷ್ಟ ದಷ್ಟ (ನಂ) 1. ಕಡಿತ, ಕಚ್ಚುಗಾಯ. ದಂಶ (ದಶನೆ) ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (3-3-114). 2. ಕಚ್ಚುಲಟ್ಟು, ಕಡಿಯ ಲಟ್ಟು. ದಂಶ (ದಶನೆ) “ಕ್ತಃ” (3-2-102). “ನವ-ನಖಪದಮಜ್ಜಂ ಗೋಪಯಸ್ಸುಕೇನ ಸ್ಥಗಯಸಿ ಪುನರೊಠಂ ಪಾಣಿನಾ ದಂತದೃಷ್ಟಮ್” ಮಾಘಂ 11-34.

ದೃಷ್ಟವತ್ ದಷ್ಟವತ್ (ವಿಂ) ಕಚ್ಚಿದವನು, ಕಡಿದವನು. ದಂಶ (ದಶನೆ) “ಕ್ತವತುಃ” (3-2-102). “ಪಲ್ಲವೋ-ಪಮಿತಿಸಾಮ್ಯಸಪಕ್ಷಂ ದೃಷ್ಟವತ್ಯಧರವಿಮ್ಬಮಭೀಷ್ತೇ” ಮಾಘಂ 10-43. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (4-1-6). -ವತೀ-ವತೀ.

ದಸ್ಮ ದಸ್ಮ (ಪುಂ) 1. ಯಜಮಾನ. 2. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 3. ಜೋರ, ಕಳ್ಳ. ದಸು (ಉಪಕ್ಷಯ) “ಮಕ್” (3-1-142). “ದಸ್ಮಸ್ತು ಹವ್ಯವಾಹೇ ಸ್ಯಾಘಜಮಾನೇ ಮಲಿಮ್ಲುಚೇ” ಹೇಮಂ.

ದಸ್ಯ ದಸ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಜೋರ, ಕಳ್ಳ, ತಸ್ಮರ. ದಸ್ಯತಿ-ದಸು (ಉಪಕ್ಷಯ) “ಯುಃ” (3-2-20). “ಪಾತ್ರಿಕೃತೋ ದಸ್ಯುರಿವಾಸಿ ಯೇನ” ಶಾಕುಂ 4-20. 2. ರಿಪು, ಶತ್ರು, ಹಗ್ಗ. “ದಸ್ಯುಶ್ಚೋರೇ ರಿಪೌ ಪುಸಿ” ಮೇದಿಂ.

ದಸ್ಯ ದಸ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಗದಭ, ಕತ್ತೆ. ದಸ್ಯತಿ ಪಾಸುನ್ “ರಕ್” (ಪುಂ ದ್ವಿವಂ) 2. ಅಶ್ವಿನೀದೇವತೆಗಳು, ದೇವ ವೈದ್ಯರು. ದಸ್ಯತಃ ಕ್ಷಿಪತಃ ರೋಗಾನ್ — ದಸು (ಉಪಕ್ಷಯ) “ರಕ್” (3-2-13). “ವಿಜಯಶ್ರಿಯಾ ವೃತಮಿವಾರ್ಕಮಾರುತಾ-ವನುಸಸತುಸ್ತಮಥ ದಸ್ಯಯೋಃ ಸುತೌ” ಮಾಘಂ 13-23. “ದಸ್ರಃ ಕ್ಷರೇಶ್ವಿನೀಸುತೇ” ಮೇದಿಂ. ನಾಸತ್ಯಃ ದಸ್ರಃ ಎಂದು ಅಶ್ವಿನೀ ಕುಮಾರರ ಇಬ್ಬರ ಹೆಸರು. ಈ ಎರಡು ಪದಗಳನ್ನು ದ್ವಿವಚನದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸುವುದು ಗೌಣವೆಂದು ಅಮರ ಸುಧಾವ್ಯಾಖ್ಯಾನ. ಇವರಿಬ್ಬರೂ ಅವಿನಾಭೂತರಾಗಿ ಯಾವಾಗಲೂ ಜೊತೆಯಲ್ಲೇ ಇರುವುದರಿಂದ ಈ ದ್ವಿವಚನ ಪ್ರಯೋಗವು ಕಂಡುಬರುವುದು. “ನಾಸತ್ಯಶ್ಚೈವ ದಸ್ರಃ ಸ್ಮೃತೌ ದ್ವಾವಶ್ವಿನಾವಪಿ. ಮಾರ್ತಂಡಸ್ಯಾತ್ಮಜಾವತೌ ಅಷ್ಟಮಸ್ಯ ಬೃಹಸ್ಪತೇಃ” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ 209-19. 3. ಶಿಶಿರಮೃತಂ. 4. ಅಶ್ವಿನೀನಕ್ಷತ್ರ. 5. ಎರಡು ಸಂಖ್ಯೆ.

ದಸ್ಯ ದಸ್ಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿಯಾದ ಸಂಜ್ಞಾ ದೇವಿ. “ಸಂಜ್ಞಾ ತು ಯಮಕಾಲಿಂದೀರೇವಂತಮನುರ್ದಸ್ಯಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ದಹ-ಭಸ್ಮೀಕರಣ (ಶ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ). ದಹತಿ. ದದಾಹ. ದಗ್ಧಾ. ದಹ್ಯತಿ. ದಹತು. ಅದಹತ್. ದಹೇತ್. ಇತ್ಯಾದಿ. ದಹಿಸು, ಸುಡು. “ಏಕಮೇವ ದಹತ್ಯಗ್ನಿನರಂ ದುರೂಪಸರ್ಪಿಣಮ್. ಕುಲಂ ದಹತಿ ರಾಜಾಗ್ನಿಃ ಸಪಶುರ್ದ್ರವ್ಯಸಂಚಯಮ್” ಮನುಂ 9-9.



ಕರ್ಮಣಿ:—ದಹಯತೇ | ದೇಹೇ | ದಹಯತೇ | ದಹಯತಾಂ |  
ಅದಹಯತ | ಇತ್ಯು. “ದಹಯೇಹಂ ಮಧುನೋ ಲೇಹೈರ್ವಾಹೈರಪ್ರಯಥಾ  
ಗಿರಿ:” ಮಡಿಂ ೬-೮೨ |

ಣಿಚಿ:—ದಾಹಯತಿ, -ತೇ | ದಾಹಯಾಂ ಚಕಾರ, -ವಕ್ರೇ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ | ದಾಹಯಿತಾ | ದಾಹಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ದಾಹಯತು,  
-ತಾಂ | ಇತ್ಯು. “ದಾಹಯತು” |

ಸನಿ:—ದಿವ್ಯಾತಿ | ದಿವ್ಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ |  
ದಿವ್ಯಾತಿ | ದಿವ್ಯಾತಿಷ್ಯತಿ | ದಿವ್ಯಾತು | ಇತ್ಯು. “ದಿವ್ಯಾತಿ” |

ಕೃತ್ಸು:—ದಹವ್ಯ: | ದಹನೀಯ: | ದಾಹ್ಯ: | ದಹ್ಯ: |  
ದಹವಾನ್, -ವತಿ | ದಹನ್, -ಂತಿ | ದಹ್ಯುಮ್ | ದಹ್ಯಮ್ |  
ದಹನ್ಮ | ದಹ್ಯವಾ | ದಿವ್ಯಾತಿ |

ಪ್ಯಂತಾತ್ ಕೃತ್ಸು:—ದಾಹಯಿತವ್ಯ: | ದಾಹನೀಯ: | ದಾಹ್ಯ: |  
ದಾಹಿತ: | ದಾಹಿತವಾನ್, -ವತಿ | ದಾಹಯನ್, -ಂತಿ |  
ದಾಹಯಮಾನ್: | ದಾಹಯಿತುಮ್ | ದಾಹಿತಮ್ | ದಾಹನಮ್ |  
ದಾಹಯಿತ್ವಾ | ದಿವ್ಯಾತಿ |

ದಹತ್ ದಹತ್ (ವಿಂ) ದಹಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸುಡುತ್ತಿರುವ.  
ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) | “ತಥಾ  
ಸಮಕ್ಷಂ ದಹತಾ ಮನೋಮವಮ್” ಕುಮಾಂ ೪-೧ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
“ಛಿಪ್” (೪-೧-೬) | -ಂತಿ -೨೯ |

ದಹದಹಾ ದಹದಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಮಾರಸ್ವಾಮಿಯ ಸೇವೆ  
ಮಾಡುವ ಮಾತೃಗಳಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬಳು.

ದಹನ ದಹನ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ದಹತಿ—ದಹ (ಭಸ್ಮೀ-  
ಕರಣ) “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪) | “ಛಾಮಿಯಾ ದಹನಸ್ಯ  
ಕೇತನ: ಕೀರ್ತಯನ್ನಿವ ದಿವ್ಯಾಕಸಾಂ ಪ್ರಿಯಮ್” ಮಾಘಂ ೧೪-೨೮ |  
2. ಕಪೋತ, ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ. 3. ಗೇರುಮರ.  
4. ಚಿತ್ರಮೂಲದ ಗಿಡ. 5. ದುರ್ವ್ಯಾಪಾರ, ಕೆಟ್ಟಕೆಲಸ.  
“ದಹನಶಿವಶ್ರೇಷ್ಠೇ ಭಲ್ಲಾತಕೇಜನೌ ದುಷ್ಟೇಷ್ಠಿತೇ” ಮೇದಿಂ |  
6. ಕೃತ್ರಿಕಾನಕ್ಷತ್ರ. (ನಂ) 7. ಸುಡುವುದು. ದಹ ಭಾವ  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) | (ವಿಂ) 8. ಸುಡುವ. ದಹಿಸುವ.  
ದಹ ಕರ್ತಂ “ಲ್ಯು:” |

ದಹನಕೇತನ ದಹನಕೇತನ (ಪುಂ) ಧೂಮ, ಹೊಗೆ. ದಹನ-  
ಸ್ಯಾಗ್ನೇ: ಕೇತನ ಇವ |

ದಹನಪ್ರಿಯಾ ದಹನಪ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಯ ಪತ್ನಿ,  
ಸ್ವಾಹಾದೇವಿ. .

ದಹನಕ್ಷ ದಹನಕ್ಷ (ನಂ) ಅಗ್ನಿ ದೇವತಾಕವಾದ ಕೃತ್ರಿಕಾ  
ನಕ್ಷತ್ರ. ದಹನಸ್ಯ ಋಷಿಮ್ | ಕೃತ್ರಿಕಾನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಶನಿಗ್ರಹವು  
ಸಂಚರಿಸುವಾಗ ಪ್ರಜೆಗಳಲ್ಲಿ ಅನೀತಿಯು ಉಲ್ಬಣಾವಸ್ಥೆ  
ಯನ್ನು ಹೊಂದುವುದು. “ಯದಾ ವಿಶಾಖಾಸು ಮಹೇಂದ್ರಮನ್ತ್ರಿ

ಮುತಶ್ಚ ಭಾನೋರ್ದಹನಕ್ಷಯಾತ: | ತದಾ ಪ್ರಜಾನಾಮನಯೋಽಪಿಧೀರ:  
ಪುರಪ್ರಭೇದೋ ಗತಯೋರ್ಮೇಕಮ್” ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೦-೧೯ |

ದಹನಸಾರಥಿ ದಹನಸಾರಥಿ (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾಳಿ.  
ದಹನಸ್ಯ ಸಾರಥಿ: | “ದಕ್ಷಿಣದಹನಸಾರಥಿರಯಾಹತಚಕ್ಷಲ-  
ಚೂತಕಲಿಕೇ” ದಶಕುಂ |

ದಹನಾರಾತಿ ದಹನಾರಾತಿ (ಪುಂ) ಜಲ, ನೀರು.

ದಹನೀಯ ದಹನೀಯ (ವಿಂ) “ದಹವ್ಯ” ಪದದ ಅರ್ಥ  
ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) |

ದಹನೋಪಲ ದಹನೋಪಲ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯಕಾಂತ ಶಿಲೆ.  
ದಹನಾಯ ಹಿತ: ಉಪಲ: |

ದಹನೋಲ್ಕಾ ದಹನೋಲ್ಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉರಿಯುವ ಕೊಳ್ಳಿ.  
“ಅಥಾಗ್ನಿಕುಕ್ಕುಟ: | ಸಂಕಿಲೋ ದಹನೋಲ್ಕಾ ಚ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ದಹರ ದಹರ (ಪುಂ) 1. ಬಾಲ್ಯ, ಹುಡುಗ. ದಹ (ಭಸ್ಮೀ-  
ಕರಣ) “ಖರ:” ಬಾಹುಂ | 2. ಕಿರಿಯ ಸಮೋದರ,  
ತಮ್ಮ, ಅನುಜ. 3. ಹೆಗ್ಗಣ, ಉದ್ದದ ಮೈಯುಳ್ಳ ಇಲಿ.  
(ವಿಂ) 4. ಅಲ್ಪವಾದ, ಬಹಳ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ, ಬಹಳ  
ಚಿಕ್ಕದಾದ, ಕಿರಿದಾದ. 5. ತಿಳಿಯಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ.  
“ಅಥ ಯದಿದಂ ದಹರಂ ಪುಂಡರೀಕಂ ವೇಷ್ಮ ದಹರೋಽಸ್ಮಿನ್ನಂತರಾ-  
ಕಾಶಸ್ತಸ್ಮಿನ್ ಯದಂತಸ್ತದನ್ವೇಷ್ಯಂ ತದ್ವಾವ ವಿಜಿಜ್ಞಾಸಿತವ್ಯಮ್”  
ಛಾಂದೋಗ್ಯಂ | “ಉದರಮುಪಾಸತೇ ಯ ಋಷಿವತ್ಸಮಸು ಕುಪ್ಪದಶ:  
ಪರಿಸರಪದ್ಧತಿ ಹೃದಯಮಾರುಣಯೋ ದಹರಮ್” ಭಾಗಂ ೧೦-೮೭-೧೮ |  
“ದಹರೋ ಭ್ರಾತರೀ ಸ್ವಲ್ಪೇ ಮುಷಿಕಾಯಾಶ್ಚ ಬಾಲಕೇ” ಮೇದಿಂ |

ದಹರಾಕಾಶ ದಹರಾಕಾಶ (ಪುಂ) ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ಹೃದಯಾಕಾಶ.

ದಹಯಮಾನ ದಹಯಮಾನ (ವಿಂ) ಸುಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ,  
ದಹಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) ಕರ್ಮಂ “ಶಾನಚ್”  
(೩-೨-೧೨೪) | “ರೋದ್ರೇಣ ದಹಯಮಾನಸ್ಯ ಮಹಸಾತಿಮಹೀಯಸಾ”  
ಕುಮಾಂ ೧೦-೧೪ |

ದಹ್ನ ದಹ್ನ (ಪುಂ) 1. ದವಾಗ್ನಿ, ಕಾಡುಕೆಚ್ಚು. ದಹ (ಭಸ್ಮೀ-  
ಕರಣ) “ರಕ್” (೩ಂ ೨-೧೩) | ದಹ್ನೋಽಗ್ನಿ: ಸಿಂ ಕೌಂ |  
(ನಂ) 2. ಜಠರ, ಹೊಟ್ಟೆ. “ಸೌಜ್ಯಜನ್ಮಾನಿ ದಹ್ನಾಗ್ನಿ:  
ವಿಶ್ರವಾಶ್ಚ ಮಹಾತಪಾ:” ಭಾಗಂ ೪-೧-೩೬ |

ದಾ ದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶುದ್ಧ. ದೇವ್ (ಶೋಧನೆ) “ವಿವಪ್”  
(೩-೨-೧೭೮) |

ಓ ದಾನ್-ದಾನೆ (ಜುಹೋಂ ಉಮಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) | ದದಾತಿ ದತ್ತ:  
ದದತಿ ; ದತ್ತೇ ದದಾತೇ ದದತೇ | ದದೌ ದದತು: ದದು: ; ದದೇ ದದಾತೇ  
ದದಿರೇ | ದಾತಾ | ದಾಸ್ಯತಿ, -ತೇ | ದದಾತು, ದತ್ತಾತ್ ದತ್ತಾಂ  
ಬ್ರದತು ; ದತ್ತಾಂ ದದಾತಾಂ ದದತಾಂ | ಅದದಾತ್ ಅದತ್ತಾಂ  
ಅದದು: ; ಅದತ್ತ ಅದದಾತಾಂ ಅದದತ | ದದಾತ್ ; ದದೀತ |



ದೇಯಾತ್ ; ದಾಸೀಷ್ಟಿ । ಅದಾತ್ ; ಅದಿತ । ಅದಾಸ್ಯತ್, -ತ । ಕೊಡು, ದಾನಮಾಡು. “ದದಾತಿ ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಣಾತಿ ಗುಹ್ಯ-ಮಾಖ್ಯಾತಿ ಪೃಚ್ಛತಿ । ಭುಕ್ತೇ ಭೋಜಯತೇ ಚೈವ ಪಙ್ಕ್ತಿವಿಧಂ ಪ್ರೀತೀಲಕ್ಷಣಮ್” ಪञ्ಚತಂ ೨-೪೧ ।

**ಕರ್ಮಣಿ** :—ದೀಯತೇ । ಸಂದೀಯತೇ । ದದೇ । ದಾಯಿತಾ, ದಾತಾ । ದಾಯಿಷ್ಯತೇ, ದಾಸ್ಯತೇ । ದೀಯತಾಮ್ । ಅದೀಯತ । ದೀಯತ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಣಿಚಿ** :—ದಾಪಯತಿ, -ತೇ । ದಾಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ । ದಾಪಯಿತಾ । ದಾಪಯಿಷ್ಯತಿ, ದಾಪಯಿಷ್ಯತೇ । ದಾಪಯತು, -ತಾಮ್ । ಅದಾಪಯತ್, -ತ । ದಾಪಯೇತ್, -ತ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಪ್ರಯಂತಾತ್ ಕರ್ಮಣಿ** :—ದಾಪಯತೇ । ದಾಪಯಾಂ ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವೇ, -ಆಸೇ । ದಾಪಯಿತಾ, ದಾಪಿತಾ । ದಾಪಯಿಷ್ಯತೇ, ದಾಪಿಷ್ಯತೇ । ದಾಪಯತಾಮ್ । ಅದಾಪಯತ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಸನಿ** :—ದಿತ್ಸತಿ । ದಿತ್ಸಾಂ ಚಕಾರ । ದಿತ್ಸಿತಾ । ದಿತ್ಸಿಷ್ಯತಿ । ದಿತ್ಸತು । ಅದಿತ್ಸತ್ । ದಿತ್ಸೇತ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಆತ್ಮಂ** :—ದಿತ್ಸತೇ । ದಿತ್ಸಾಂ ಚಕ್ರೇ । ದಿತ್ಸಿತಾ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತ್ಸು** :—ದಾತವ್ಯಮ್ । ದಾನೀಯಮ್ । ದಾನೀಯೋ ವಿಪ್ರಃ । ಕೃತ್ಯಲ್ಯುಟೋ ಬಹುಲಮ್ ಇತಿ ಸಂಪ್ರದಾನೇಽಪ್ಯನೀಯರ್ । ದೇಯಮ್ । ದತ್ತಃ । ದತ್ತವಾನ್, -ವತೀ । ದದತ್, -ತೀ, ದದಾನ್ । ದಾತುಮ್ । ದತ್ತಮ್ । ದಾನಮ್ । ದತ್ತಾ । ಪ್ರದಾಯ । “ದಾತವ್ಯಮಿತಿ ಯದ್ವಾನ್ ದೀಯತೇಽನುಪಕಾರಿಣಿ” ಗೀತಾ ೧೭-೨೦ ।

**ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥ ಭೇದಗಳು** :

(1) ಅತಿ + ದಾನ್ = ಅತಿದದಾತಿ । 1. ಅತಿಯಾಗಿ ದಾನಮಾಡು. 2. ಅತಿಕ್ರಮಿಸಿ (ಮೀರಿ) ದಾನಮಾಡು.

(2) ಅನು + ದಾನ್ = ಅನುದದಾತಿ । 1. ಪ್ರದಾನ, ಅನು ದಾನಮಾಡು. 2. ಅನುರೂಪವಾಗಿ ಕೊಡು, ಸಮಾನವಾಗಿ ಕೊಡು.

(3) ಅಭಿ + ದಾನ್ = ಅಭಿದದಾತಿ । ಎದುರಾಗಿ ಕೊಡು. ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ದಾನಮಾಡು. “ತಥೈವ ಚೈನಮುಕ್ತವಾ ವಾಮಪಾಣಿಮಮ್ಯದಾತ್ ಅಥ ಪ್ರಾಯಾತ್ ಪುನರಪಿ ಚಾನ್ಯೋಽಪ್ಯ-ಶ್ವಾರ್ಥಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಆಗಚ್ಛತ್” ಭಾಂ ವನಂ ೨೦೧-೮ ।

(4) ಅವ + ದಾನ್ = ಅವದದಾತಿ । ಅವತ್ತಮ್, ಅವದತ್ತಮ್ । “ಅವದತ್ತಂ ವಿದತ್ತಂ ಚ ಪ್ರದತ್ತಂ ಚಾದಿಕರ್ಮಣಿ । ಸುದತ್ತಮನುದತ್ತಂ ಚ ನಿದತ್ತಮಿತಿ ಚೇಷ್ಯತೇ” ಸಿಂ ಕೌಂ । ಕೆಳಮುಖವಾಗಿ ಕೊಡು.

(5) ಆ + ದಾನ್ = ಆದದಾತಿ । ಆದದಾನಃ । ಆದಾನಮ್ । ತೆಗೆದುಕೊ, ಪ್ರತಿಗ್ರಹಿಸು, ಸ್ವೀಕರಿಸು. “ಆದಾನಂ ಹಿ ವಿಸರ್ಗಾಯ ಸತಾಂ ವಾರಿಮುಚಾಮಿವ” ರಘುಂ ೪-೮೬ ।

(6) ಉಪ + ಆ + ದಾನ್ = ಉಪಾದದಾತಿ । ಉಪಾತ್ತಮ್ । ಉಪಾದಾನಮ್ । ಸಮೀಪದಿಂದ ಸ್ವೀಕರಿಸು, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿದ್ದು ತೆಗೆದುಕೊ. “ಉಪಾತ್ತವಿದೋ ಗುರುದಕ್ಷಿಣಾರ್ಥಿ ಕೌತ್ಸಃ ಪ್ರಪೇದೇ ವರತಂತುಷಿಷ್ಯಃ” ರಘುಂ ೪-೧ ।

(7) ಪ್ರತಿ + ಆ + ದಾನ್ = ಪ್ರತ್ಯಾದದಾತಿ । ಪ್ರತ್ಯಾದಾನಮ್ । ಕೊಟ್ಟದನ್ನೂ ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊ. “ನ ಚಾಹಂ ಶಕ್ತಃ ಶಾಪಂ ಪ್ರತ್ಯಾದಾತುಮ್” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೩-೧೨೨ ।

(8) ವಿ + ಆ + ದಾನ್ = ವ್ಯಾದದಾತಿ । ವ್ಯಾತ್ತಮ್ । ವ್ಯಾದಾನಮ್ । ಅಗಲವಾಗಿ ತೆರೆ, ಅಗಲವಾಗಿ ಬಿಡು. “ನಮಃಸ್ಪೃಶಂ ದೀಪ್ತಮನೇಕವರ್ಣಂ ವ್ಯಾತ್ತಾನನಂ ದೀಪ್ತವಿಶಾಲನೇತ್ರಮ್” ಗೀತಾ ೧೧-೨೪ ।

(9) ಸಂ + ಪ್ರ + ದಾನ್ = ಸಂಪ್ರದಾನಮ್ । ಸಂಪ್ರದಾಯ । ದೆನ್ನಾಗಿ ಗೌರವಿಸಿ ಕೊಡು. “ಅಹನ್ಯಹನಿ ಚಾಪ್ಯೇವಂ ಯಾಚತಾಂ ಸಂಪ್ರದೀಯತೇ” ಭಾಂ ವನಂ ।

**ದಾನ್ - ದಾನೇ** (ಭವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) । ಯಚ್ಛತಿ । ಪ್ರಣಿಯಚ್ಛತಿ । ದದೌ ದದತುಃ ದದುಃ । ದಾತಾ । ದಾಸ್ಯತಿ । ಯಚ್ಛತು । ಅಯಚ್ಛತ್ । ಯಚ್ಛೇತ್ । ದೇಯಾತ್ । ಅದಾತ್ । ಅದಾಸ್ಯತ್ । ದಾನಮಾಡು, ಕೊಡು. “ಫಲಂ ದಾಸ್ಯತಿ ತೇ ಯತು ದಾನೇ ಪರಮಿಹೋಚ್ಯತೇ” ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೩೦-೪೫ ।

**ಕರ್ಮಣಿ** :—ದೀಯತೇ । ಸಂದೀಯತೇ । ದದೇ । ದಾಯಿತಾ, ದಾತಾ । ದಾಯಿಷ್ಯತೇ, ದಾಸ್ಯತೇ । ದೀಯತಾಮ್ । ಅದೀಯತ । ದೀಯತ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಣಿಚಿ** :—ದಾಪಯತಿ, -ತೇ । ದಾಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ । ದಾಪಯಿತಾ । ದಾಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ । ದಾಪಯತು, -ತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕರ್ಮಣಿ ಸನಿ ಚ** :—“ದಾನ್” ಧಾತುವಿನ ರೂಪಗಳಂತಾಗುವುವು.

**ಕೃತ್ಸು** :—ದಾತವ್ಯಃ । ದಾನೀಯಃ । ದೇಯಮ್ । ದತ್ತಃ । ದತ್ತವಾನ್, -ವತೀ । ಪ್ರತ್ತಃ । ಅವತ್ತಃ । ಧೀರಚಃ ತಾದೇಶೇ ಚತ್ವರ್ಮ (೭-೪-೪೭) । ನೇತ್ತಮ್ । ಸುತ್ತಮ್ । ದೀರ್ಘಃ (೬-೩-೧೨೪) । ಅವದತ್ತಮ್ । ವಿದತ್ತಮ್ । ಸುದತ್ತಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ. ಯಚ್ಛನ್, ಯಚ್ಛಂತೀ । ದಾತುಮ್ । ದಾನಮ್ । ದತ್ತಮ್ । ದತ್ತಾ । ಪ್ರದಾಯ ।

**ದಾಕ ದಾಕೆ** (ಪುಂ) 1. ಯೋಗಮಾಡುವವನು, ಯಜಮಾನ. ದದಾತಿ ಯಜ್ಞೇ ಹವಿರಾದಿಕಂ—ದಾನ್ (ದಾನೇ) “ಕಃ” (ಉಂ ೩-೪೦) । ಬಾಹುಂ ಇತ್ಸಂಜ್ಞಾ ನ । 2. ದಾನಿ, ದಾನಮಾಡುವವನು.

**ದಾಕ್ಷ ದಾಕ್ಷಿ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ದಕ್ಷನ ಮಗನಾದ ದಾಕ್ಷಿಯು ಶಿಷ್ಯರು. ದಕ್ಷಸ್ಯ ಗೌತ್ರಾಪತ್ಯಂ ದಾಕ್ಷಿಃ, ದಾಕ್ಷೇಶ್ವರಾತ್ರಾಃ “ಅನ್”



(೪-೨-೧೧೨) 1. (ಪುಂ) 2. ದಕ್ಷನ ಮಕ್ಕಳ ಗುಂಪು. ದಾಕ್ಷಿಗಳ ಸಮುದಾಯ. 3. ದಾಕ್ಷಿಯ ಗುರುತು. 4. ದಾಕ್ಷಿಯ ಲಕ್ಷಣ. ದಾಕ್ಷಿಣಾ ಸಕ್ಷ: ಅಕ್ಷ: ಲಕ್ಷಣಂ ವಾ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) 1. ಹಸು ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಮೈಮೇಲೆ ದಾಕ್ಷಿಯ ಹೆಸರಿನ ಮುದ್ರೆಯನ್ನು ಕಾಯಿಸಿ (ಬರೆ) ಹಾಕಿದರೆ ಅದು ಪರಂಪರಾ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಅಂಕವೆನಿಸುವುದು. ದೇವದತ್ತಾದಿ ಶಿಷ್ಯರಲ್ಲಿ ವಿದ್ಯೆಯು ಸಂಬಂಧಿಸಿರುವುದರಿಂದ ಅದು ಸಾಕ್ಷಾತ್ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಲಕ್ಷಣವೆನಿಸುವುದು. ಅದುದರಿಂದ ಪರಂಪರಾಸಂಬಂಧವು ಇರುವಲ್ಲಿ ಅಂಕವೆಂದೂ ಸಾಕ್ಷಾತ್ ಸಂಬಂಧವಿದ್ದಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷಣವೆಂದೂ ಹೇಳಬೇಕು. "ಪರಂಪರಾಸಂಬಂಧೋಽಕ್ಷ: ಯಥಾ ಗವಾದಿನಿಷ್ಠ: ತಪ್ತಮದ್ರಾವಿಶೇಷ: 1. ತಸ್ಯ ಗೋದ್ವಾರಾ ಸ್ವಾಮಿ-ಸಂಬಂಧ: 1. ಸಾಕ್ಷಾತ್ಸಂಬಂಧೋ ಲಕ್ಷಣಮ್ 1. ಯಥಾ ದೇವದತ್ತಾದೌ ವಿಶ್ವಾದೇ: ಸಾಕ್ಷಾತ್ಸಂಬಂಧಮಾನತ್ವಾತ್ ತಸ್ಯ ಲಕ್ಷಣಮ್" ಸಿಂ ಕೌಂ 1. (ವಿಂ) 5. ದಾಕ್ಷಿಯಿಂದ ಬಂದ. ದಾಕ್ಷೀರಾಗತ: "ಅನ್" (೪-೩-೮೦) 1. 6. ದಕ್ಷನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ದಕ್ಷಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) 1. "ದಾಕ್ಷಿ ಕೋಪ: ಶಿವಸ್ಯೇವ ಸಮೇಧಿತಮಹಾ ಹವೇ" ಮಾಘಂ ೧೯-೪೪ 1.

ದಾಖಕ ದಾಕ್ಷಿಣ್ಯ (ಪುಂ) 1. ದಾಕ್ಷಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ದಾಕ್ಷೀರಿದಮ್ "ಬು" (೪-೩-೧೨೬) 1. ಶಿಷ್ಯವಾಚಕವಾದ ಈ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ "ಅನ್" (೪-೨-೧೧೨) ಪ್ರತ್ಯಯ ಬಂದು ದಾಕ್ಷಾ: ಎಂದು ರೂಪವಾಗುವುದು. 2. ದಾಕ್ಷಿಗಳು ವಾಸಮಾಡುವ ದೇಶ. "ಬು" (೪-೨-೪೩) 1.

ದಾಖಾಯಣ ದಾಕ್ಷಾಯಣ (ಪುಂ) 1. ದಕ್ಷನ ಗೋತ್ರಪತ್ಯ, ದಕ್ಷನ ಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು, ದಾಕ್ಷಿಯ ಮಗ (ಯುವಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳವನು). ದಕ್ಷಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಮ್ "ಇನ್" (೪-೧-೯೪) 1. ದಾಕ್ಷಿ: 1. ದಾಕ್ಷೀರಪತ್ಯಂ ಯುವಾ "ಫಕ್" (೪-೧-೧೦೧) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ದಾಕ್ಷೀರಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ "ಫಕ್" 1. "ಡೀ" (೪-೧-೪೧) 1. -ಯಣಿ -ಯಣೀ. (ನಂ) 2. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. "ದಾಖಾಯಣಂ ಶ್ರೀಮಕುಟಂ ಗಾರುಡಂ ತಾರ-ಜೀವನಮ್ 1. ಅಗ್ರಬೀಜಂ ರತ್ನವರಂ ಗೈರಿಕಂ ಹೇಮ ಕರ್ಬುರಮ್" ವೈಜಂ 1.

ದಾಖಾಯಣಿ ದಾಕ್ಷಾಯಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಾಕ್ಷಿಯ ಮಗಳು. ದಾಕ್ಷೀರಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ "ಫಕ್" (೪-೧-೧೦೧) 1. "ಡೀ" (೪-೧-೪೧) 1. 2. ಸತೀದೇವಿ, ಪರಮೇಶ್ವರನ ಪತ್ನಿ, ದಕ್ಷ ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಗಳು. ದಕ್ಷಸ್ಯಾಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ "ಇನ್" (೪-೧-೯೪) 1. "ಫಕ್" (೪-೧-೧೦೧) 1. "ಡೀ" (೪-೧-೪೧) 1. "ಪ್ರಸುತಿ ಮಾನವೀ ದಕ್ಷ: ಉಪಯೇಮೇಹಜಾತಮಜ: 1. ತಸ್ಯಾಂ ಸಸಜ ದುಹಿತು: ಷೋಡಶಾಮಲೋಚನಾ: 1. ತ್ರಯೋದಶಾದಾದ್ವರ್ಮಯಿ ತಥೇಕಾ-

ಮನ್ಯೇ ವಿಭು: 1. ಪಿತೃಸ್ಯ ಏಕಾಂ ಯುಕ್ತೇಭ್ಯಾ ಭವಾಯೇಕಾಂ ಭವಚ್ಛಿದೇ" ಭಾಗಂ ೪-೧ 1. 3. ಕಶ್ಯಪನ ಪತ್ನಿ, ದಿತಿದೇವಿ, ದೈತ್ಯರ ತಾಯಿ. 4. ಅದಿತಿದೇವಿ, ದೇವತೆಗಳ ತಾಯಿ. 5. ಕದ್ರೂ. 6. ವಿನತಾದೇವಿ. 7. ದಕ್ಷನಿಗೆ ವೀರಿಣಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಅಶ್ವಿನೀ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ಕನ್ಯೆಯರು. "ದಾಖಾಯಣೋಽಶ್ವಿನೀತ್ಯಾದಿ ತಾರಾ:" ಅಮಂ 1. 8. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. 9. ಭೂಮಿ. 10. ರೋಹಿಣೀ ದೇವಿ. "ದಾಖಾಯಣಿ ಭವಾನ್ಯಾಂ ಭುವ್ಯಶ್ವಿನ್ಯಾಶ್ಚುಡ್ಬು ಶ್ರಿಯಾಮ್" ವೈಜಂ 1. "ದಾಖಾಯಣಿ-ತ್ವರ್ಣಾಣಾಂ ರೋಹಿಣ್ಯಾಂ ತಾರಕಾಸು ಚ" ವಿಶ್ವಂ 1. 11. ದಂತೀ ವೃಕ್ಷ, ಜಾಪಾಳದ ಗಿಡ.

ದಾಖಾಯ ದಾಕ್ಷಾಯ (ಪುಂ) ಹದ್ದು. ದಕ್ಷತೇ - ದಕ್ಷ (ವೃದ್ಧೌ ಶೋಧಾರ್ಥೇ ಚ) "ಆಯ:" (ಉಂ ೩-೯೬) 1. ದಕ್ಷಾ-ಯಸ್ಯಾಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) 1.

ದಾಖ ದಾಕ್ಷಿ (ಪುಂ) ದಕ್ಷನ ಮಗ. ದಕ್ಷಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಇನ್" (೪-೧-೯೪) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀ" (೪-೧-೬೪) 1. ದಾಕ್ಷಿ ದಾಕ್ಷೀ.

ದಾಖಿಣಕ ದಾಕ್ಷಿಣಕ (ವಿಂ) 1. ಯಾಗವಾದನಂತರ ದಕ್ಷಿಣೆಯಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದ. 2. ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಮಾಡಿ ದಕ್ಷಿಣ ಮಾರ್ಗದಿಂದ ಚಂದ್ರಲೋಕಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ.

ದಾಖಿಣಶಾಲ ದಾಕ್ಷಿಣಶಾಲ (ವಿಂ) ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನ ಮಂದಿರ (ಹಜಾರ) ದಲ್ಲಿರುವ. ದಕ್ಷಿಣಶಾಲಾಃ ಭವ: "ಞ:" (೪-೨-೧೦೭) 1.

ದಾಖಿಣಾತ್ಯ ದಾಕ್ಷಿಣಾತ್ಯ (ಪುಂ) 1. ತೆಂಗಿನಮರ. ದಕ್ಷಿಣಾ (ಆಜಂತಮವ್ಯಯಮ್) ಭವ: "ತ್ಯಕ್" (೪-೨-೯೮) 1. (ವಿಂ) 2. ದಕ್ಷಿಣದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ದಕ್ಷಿಣದಲ್ಲಿರುವ. "ದಾಖಿಣಾತ್ಯೋ ನಾರಿಕೇಲೇ ತ್ರಿಷು ದಕ್ಷಿಣದಿಗಭವೇ" ಭೇದಿಂ 1. "ದಾಖಿಣಾತ್ಯಾಂಶ್ರ ಭೋಜಾಂಶ್ರ ಶೂರಾನ್ ಸಂಗ್ರಾಮಕರ್ತೃಶಾನ್" ಭಾಂ ಕರ್ಣಂ ೪೬-೧೧ 1.

ದಾಖಿಣಪಥಕ ದಾಕ್ಷಿಣಪಥಕ (ವಿಂ) ದಕ್ಷಿಣಾಪಥದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ದಕ್ಷಿಣಾಪಥೇ ಭವ: "ಬು" (೪-೨-೧೨೭) 1.

ದಾಖಿಣ್ಯ ದಾಕ್ಷಿಣ್ಯ (ನಂ) 1. ಸರಳತೆ, ಸೌಜನ್ಯ. ದಕ್ಷಿಣಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಯನ್" (೪-೧-೧೨೪) 1. 2. ಪಟುತ್ವ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. 3. ಅನುಕೂಲ, ಅನುಕೂಲವಾಗಿರುವಿಕೆ. "ಸ್ಫುರತಾ ವಾಮಕೇನಾಪಿ ದಾಖಿಣ್ಯಮವಲಮ್ಬತೇ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೧ 1. 4. ಪರಚ್ಛೇದಾನುವರ್ತನ, ಇತರರ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯುವುದು; ಇದೊಂದು 36 ವಿಧ ನಾಟಕಲಕ್ಷಣಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. "ದಾಖಿಣ್ಯಂ ಚೇಷ್ಟಯಾ ವಾಚಾ ಪರಚ್ಛಂದಾನುವರ್ತನಮ್" ಸಾಂ ದಂ 1. "ತಸ್ಯ ದಾಖಿಣ್ಯರೂಢೇನ ನಾಮ್ನಾ ಮಗಧವಂಶಜಾ" ರಘುಂ ೧-೩೧ 1. 5. ಎಲ್ಲರಲ್ಲೂ ಸಮಾನವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಸರ್ವ



ಸಮವರ್ತನೆ. "ದಾಕ್ಷಿಣ್ಯಂ ನಾಮ ಬಿಂಬೋಷಿ ನಾಯಕಾನಾಂ ಕುಲ-  
ವ್ರತಮ್" ಮಾಲಂ ೪-೧೪।

ದಾಕ್ಷಿ ದಾಕ್ಷೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಕ್ಷನ ಮಗಳು, ದಕ್ಷಸ್ಯಾಪತ್ಯಂ  
ಸ್ತ್ರೀ "ಇನ್" (೪-೧-೧೫)। 2. ಪಾಣಿನಿಮಹರ್ಷಿಯ  
ತಾಯಿ.

ದಾಕ್ಷಿಪುತ್ರ ದಾಕ್ಷೀಪುತ್ರ (ಪುಂ) ಪಾಣಿನಿಮಹರ್ಷಿ. ದಾಕ್ಷಿ:  
ಪುತ್ರ:।

ದಾಕ್ಷೀಯ ದಾಕ್ಷೀಯ (ಪುಂ) ಪಾಣಿನಿಮಹರ್ಷಿ. ದಾಕ್ಷಿ:  
ಅಪತ್ಯಮ್ "ಡಕ್" (೪-೧-೧೨೦)।

ದಾಕ್ಷ್ಯ ದಾಕ್ಷ್ಯ (ನಂ) ದಕ್ಷತೆ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಕುಶಲತೆ. ದಕ್ಷಸ್ಯ  
ಭಾವ: "ಛ್ಯನ್" (೫-೧-೧೨೪)। "ದಾಕ್ಷ್ಯಂ ಹಿ ಸತ್ಯ: ಫಲದಂ  
ಯದಪ್ರತಶ್ಚಕ್ಷಾದ ದಾಸೇರಯುವಾ ವನಾವಲಿ:" ಮಾಧಂ ೧೨-೩೨।

ದಾಘ ದಾಘ (ಪುಂ) ದಾಹ, ಸುಡುವಿಕೆ. ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ)  
ಭಾವೆ "ಘನ್" (೩-೩-೧೮)। ಕೃತ್ವಮ್ (೭-೩-೫೩)।

ದಾಡಿಮ ದಾಡಿಮ (ವಿಂ) 1. ದಾಳಿಂಬೆ ಗಿಡ, ದಾಡಿಮವೃಕ್ಷ.  
ದಲ (ವಿಶರಣ) ಭಾವೆ "ಘನ್" (೩-೩-೧೮)। ದಲೇನ  
ನಿವೃತ್ತ: "ಇಮಪ್" (ವಾಂ ೪-೪-೨೦)। ಡಲಯೋರಭೇದ:।  
2. ಯಾಲಕ್ಕಿ ಗಿಡ. "ದಾಡಿಮಸ್ತು ತ್ರಿಲಿಂಗ: ಸ್ಯಾದೇಲಾಃ  
ಕರಕೇ ತ್ರಿಫು" ಮೇದಿಂ। (ನಂ) ದಾಳಿಂಬೆಹಣ್ಣು.  
"ಕಾಂಪಿಲ್ಯಕಪ್ರಸವಪಾಟಲಗಂಧಪಾಲಿಪಾಕಾರುಣಸ್ಫುಟಿತದಾಡಿಮ-  
ಕಾಂತಿವಕ್ತ್ರಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೯-೩೧।

ದಾಡಿಮಪತ್ರಕ ದಾಡಿಮಪತ್ರಕ (ಪುಂ) ಮುಳ್ಳುವುತ್ತುಗದ  
ಗಿಡ. ದಾಡಿಮಸ್ಯ ಪತ್ರಮಿವ ಪತ್ರಮಸ್ಯ "ಕಪ್" (೫-೪-೧೫೪)।

ದಾಡಿಮಪುಷ್ಪಕ ದಾಡಿಮಪುಷ್ಪಕ (ಪುಂ) ಮುಳ್ಳುವುತ್ತುಗದ  
ಗಿಡ. ದಾಡಿಮಸ್ಯ ಪುಷ್ಪಮಿವ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ "ಕಪ್" (೫-೪-೧೫೪)।

ದಾಡಿಮಪ್ರಿಯ ದಾಡಿಮಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) 1. ಶುಕ, ಗಿಣಿ.  
ದಾಡಿಮಂ ತತ್ಫಲಂ ಪ್ರಿಯಮಸ್ಯ। (ವಿಂ) 2. ದಾಳಿಂಬೆಹಣ್ಣು  
ಪ್ರಿಯವಾಗಿರುವ.

ದಾಡಿಮಭಕ್ಷಣ ದಾಡಿಮಭಕ್ಷಣ (ಪುಂ) 1. ಶುಕ, ಗಿಣಿ.  
ದಾಡಿಮಂ ದಾಡಿಮಫಲಂ ಭಕ್ಷಯತಿ - ಭಕ್ಷ (ಅದನ) "ಲ್ಯು:"  
(೩-೧-೧೩೪)। (ನಂ) 2. ದಾಳಿಂಬೆಹಣ್ಣನ್ನು ತಿನ್ನು  
ವುದು. (ವಿಂ) 3. ದಾಳಿಂಬೆ ಹಣ್ಣನ್ನು ತಿನ್ನುವ.

ದಾಡಿಮ್ಬ ದಾಡಿಂಬ (ಪುಂ) ದಾಳಿಂಬೆ ಗಿಡ.

ದಾಡಿ ದಾಡೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಾಳಿಂಬೆ ಗಿಡ. ದಲತೇ ಫಲೇಷೋ-  
ದಲ (ವಿಶರಣ) ಕರ್ಮಂ "ಘನ್" (೩-೩-೧೯)। ಗೌರಾಂ  
"ಡೀಷ್" (೪-೧-೪೧)। ಡಲಯೋರಭೇದ:। 2. ದಾಳಿಂಬೆ  
ಹಣ್ಣು. ದಾಡ್ಯಾ: ಫಲಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೩೫)।  
ಅಣೋ ಲ್ಘ್ (೪-೩-೧೬೭)। ಪ್ರಕೃತಿವಲ್ಲಿಜ್ಞಂ ಚ।

ದಾಡಾ ದಾಡಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೋರೆಹಲ್ಲು. 2. ಅಪೇಕ್ಷೆ,  
ಅಭಿಲಾಷೆ. "ದಾಡಾ ದಂಷ್ಟಾಭಿಲಾಷಯೋ:" ಹೇಮಂ। 3. ಪ್ರಾರ್ಥನೆ,  
ಬೇಡಿಕೆ. 4. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು.

ದಾಡಿಕಾ ದಾಡಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಡ್ಡ. ಗಂಡಸರ ಮುಖ  
ದಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯುವ ಕೂದಲು. "ಕೇಶೇಶು ಗೃಹ್ಣತೋ ಹಸ್ತೌ ಛೇದಯೇದ-  
ವಿಚಾರಯನ್। ಪಾದಯೋರ್ದಾಡಿಕಾಃ ಚ ಗ್ರೀವಾಃ ವೃಷಣೇಶು ಚ"  
ಮನುಂ ೮-೨೭೩। 2. ಕೋರೆಹಲ್ಲು.

ದಾಂಡ ದಾಂಡ (ನಂ) 1. ದಂಡಗಳ ಸಮೂಹ, ದೊಣ್ಣೆಗಳ  
ರಾಶಿ. ದಂಡಾನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಅನ್" (೪-೨-೩೭)। (ವಿಂ) 2.  
ದಂಡ ಸಂಬಂಧವಾದ. 3. ಶಿಕ್ಷೆಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ದಂಡಸ್ಯೇದಮ್  
"ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

ದಾಂಡಾ ದಾಂಡಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಂಡವೇ ಆಯುಧವಾಗಿ ಉಳ್ಳ  
ಒಂದು ವಿಧ ಅಟ. ದಂಡ: ಪ್ರಹರಣಮಸ್ಯಾಂ ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್ "ಞ:"  
(೪-೨-೫೭)।

ದಾಂಡಪಾತಾ ದಾಂಡಪಾತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೋಲನ್ನು ಎಸೆದು  
ಅಟವಾಡುವ ಒಂದು ತಿಥಿ. ದಂಡ: ಪಾತೋಽಸ್ಯಾಂ ತಿಥೌ "ಞ:"  
(೪-೨-೫೮)।

ದಾಂಡಾಜಿನಿಕ ದಾಂಡಾಜಿನಿಕ (ವಿಂ) ಮೋಸಗಾರ, ಕಪಟಿ,  
ವೇಷದಿಂದ ಹಣವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಲು ದಂಡ ಮತ್ತು  
ಅಜಿನಗಳನ್ನು ಧರಿಸಿರುವವನು. ದಾಂಡಾಜಿನಂ ದಮ್ಭ: ತೇನ  
ಧನಮನ್ವಿಚ್ಛತಿ "ಠಕ್" (೫-೨-೭೬)। ದಂಡ ಮತ್ತು  
ಅಜಿನಗಳನ್ನು ಮೋಸದ ವೇಷಕ್ಕಾಗಿ ಧರಿಸುವವನಲ್ಲಿ  
ದಂಡಾಜಿನ ಪದವು "ದಂಭ" ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಲಾಕ್ಷಣಿಕ.  
ಅವನ್ನು ಧರಿಸಿ ಕಪಟದಿಂದ ಹಣವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸುವವನು  
ದಾಂಡಾಜಿನಿಕನು.

ದಾಂಡಿಕ ದಾಂಡಿಕ (ವಿಂ) 1. ದಂಡವನ್ನು ಹಿಡಿದು ಜೀವಿಸು  
ವವನು, ದೊಣ್ಣೆಯನ್ನು ಹಿಡಿದು ನಿಲ್ಲುವ ಪಹರೆಯವನು.  
ದಂಡೇನ ತದ್ಧಾರಣೇನ ಜೀವತಿ - "ಠಕ್" (೪-೪-೧೨)।  
2. ಶಿಕ್ಷೆಯನ್ನು ವಿಧಿಸುವವನು, ಶಿಕ್ಷೆ ಕೊಡುವವನು.

ದಾಂಡಿನ್ ದಾಂಡಿನ್ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ದಂಡ ಋಷಿಯಿಂದ  
ಪ್ರೋಕ್ತವಾದ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವರು.  
ದಂಡೇನ ಪ್ರೋಕ್ತಮಧೀಯತೇ "ಞಿನಿ:" (೪-೩-೧೦೬)।

ದಾಂಡಿನಾಯನ ದಾಂಡಿನಾಯನ (ಪುಂ) ದಂಡಿಯ ಗೋತ್ರ  
ದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ದಾಂಡಿನೋ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಮ್ "ಫಕ್"  
(೪-೧-೯೯)। ಟಿಲೋಪಾಭಾವೋ ನಿಪಾತ್ಯತೇ (೬-೪-೧೭೪)।

ದಾತ ದಾತ (ವಿಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ದಾಪ್ (ಲವನೆ) "ಕ್ತ:"  
(೩-೨-೧೦೨)। 2. ಕೊಯ್ದಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ತುಂಡುಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ತೊಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಶುದ್ಧಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ದೈಪ್  
(ಶೋಧನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।



**ದಾತಿ ದಾತೃ(ಸ್ರೀಂ)** 1. ಶುದ್ಧಿ. 2. ಭೇದನ, ಕತ್ತರಿಸುವುದು.

ದೈಪ್ (ಶೋಧನೆ) ದಾಪ್ (ಲವನೆ) ವಾ "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)।

3. ಕೊಯ್ಯುವುದು. 4. ತುಂಡುಮಾಡುವುದು.

**ದಾತೃ ದಾತೃ(ವಿಂ)** 1. ದಾನಮಾಡುವವನು, ಕೊಡುವವನು.

ಓ ದಾನ್ (ದಾನ) "ತೃತ್" (3-1-133)। "ಯತ್ರ ದಾತಾ

ಗ್ರಹೀತಾ ಚ ಸ್ವಯಂ ಕುಶಿಕನಂದನಃ" ತಂ ರಾಂ 1-17।

2. ದಾನಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಓಪ್"

(4-1-4)। -ತ್ರಿ-ತ್ರಿ.

**ದಾತೃಹ ದಾತೃಹ (ಪುಂ)** 1. ನೀರುಕೋಳಿ. ದಾಪ್ (ಲವನೆ)

"ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)। ದಾತಿಮಹತೇ -ಓಹ (ವಿತಕ್)

"ಅಪ್" (3-2-1)। 2. ಚಾತಕಪಕ್ಷಿ. "ದಾತೃಹಃ ಪುಮಾನ್

ಕಾಲಕಂಠಚಾತಕಪಕ್ಷಿಣಿಃ" ಮೇದಿಂ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ

"ಓಪ್" (4-1-41)। ದಾತೃಹೀ ದಾತೃಹೀ.

**ದಾತೃಹ ದಾತೃಹ (ಪುಂ)** "ದಾತೃಹ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ದಾತೃಹ ಪೃಷಂ।

**ದಾತ್ರ ದಾತ್ರ (ನಂ)** ಕುಡುಗೋಲು, ಕೊಯ್ಯುವ ಒಂದು

ಆಯುಧ. ದಾಪ್ (ಲವನೆ) "ಛ್ರನ್" (3-2-142)।

**ದಾದ ದಾದ (ಪುಂ)** ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. ದದತೇ -ದದ (ದಾನ)

ಕರ್ಮಂ "ಘನ್" (3-3-19)। "ದಾದದೋ ದುದುದಾದೋ

ದಾದಾದೋ ದುದದಾದದೋ" ಮಾಘಂ 19-194।

**ದಾಧಿಕ ದಾಧಿಕ (ವಿಂ)** 1. ಮೊಸರಿನಲ್ಲಿ ಉಪ್ಪು ಕಾರ

ಹಾಕಿ ಒಗ್ಗರಿಸಲ್ಪಟ್ಟವಸ್ತು, ರಾಯತ. ದಧಿ ಸಂಸ್ಕೃತಮ್

"ಠಕ್" (4-2-14)। 2. ಮೊಸರಿನಿಂದ ನೆನೆಸಲ್ಪಟ್ಟ

ಪುರಿ, ಹುರಿಹಟ್ಟು ಮೊದಲಾದವು. ದಧ್ನಾ ಸಂಸ್ಕೃತಮ್

"ಠಕ್" (4-4-3)। 3. ಮೊಸರಿನಲ್ಲಿ ಉಟಮಾಡು

ವವನು. ದಧ್ನಾ ಭಕ್ಷಯತಿ - "ಠಕ್" (4-4-4)।

**ದಾಧಿತ್ಯ ದಾಧಿತ್ಯ (ನಂ)** ಬೇಲದಹಣ್ಣಿನ ರಸಾಯನ.

ದಾಧಿತ್ಯಸ್ಯಾವಯವೋ ವಿಕಾರೋ ವಾ "ಅನ್" (4-3-140)।

**ದಾನ ದಾನ (ನಂ)** 1. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. ಓ ದಾನ್ (ದಾನ)

ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)। "ನಿರತ್ಯಯಂ ಸಾಮ ನ

ದಾನವಾಜಿತಂ ನ ಭೂರಿ ದಾನಂ ವಿರಹ್ಯಯ ಸತ್ಕಿಯಾಮ್" ಕಿರಾಂ

1-12। ದಾನವು (1) ಸಾತ್ವಿಕ, (2) ರಾಜಸ ಮತ್ತು

(3) ತಾಮಸ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ.

(1) ದೇಶಕಾಲಪಾತ್ರಗಳನ್ನರಿತು ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರ ಮೊದ

ಲಾದ ಯಾವ ಫಲವನ್ನೂ ಅಪೇಕ್ಷಿಸದೆ ಮಾಡುವ ದಾನವು

"ಸಾತ್ವಿಕ". "ದಾತವ್ಯಮಿತಿ ಯದಾನಂ ದೀಯತೇನುಪ

ಕಾರಿಣಿಃ। ದೇಶ ಕಾಲೇ ಚ ಪಾತ್ರೇ ಚ ತದಾನಂ ಸಾತ್ವಿಕಂ ಸ್ಮೃತಸ್"

ಗೀತಾ 17-20।

(2) ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರ ರೂಪವಾದ ಫಲವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ

ಬಹಳ ಕಷ್ಟದಿಂದ ಮಾಡುವ ದಾನವು "ರಾಜಸ".

"ಯತ್ ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರಾರ್ಥಂ ಫಲಮುದ್ವಿಷ್ಯ ವಾ ಪುನಃ। ದೀಯತೇ ಚ

ಪರಿವಿಲಾಸಂ ತದ್ರಾಜಸಮುದಾಹತಮ್" ಗೀತಾ 17-21।

(3) ಕಾಲದೇಶಗಳನ್ನೂ ಯೋಚಿಸದೆ ಅಪಾತ್ರರಿಗೆ

(ವಂಚಕ, ಕಪಟ, ತಪ್ಕರ ಮೊದಲಾದವರಿಗೆ) ತಿರಸ್ಕಾರದಿಂದ

ಮಾಡುವ ದಾನವು "ತಾಮಸ". "ಅದೇಶಕಾಲೇ ಯದಾನ-

ಮಪಾತ್ರೇಮ್ಯಶ್ಚ ದೀಯತೇ। ಅಸತ್ಕೃತಮವಜ್ಞಾತಂ ತತ್ತಾಮಸಮುದಾಹತಮ್"

ಗೀತಾ 17-22। 2. ಆನೆಯ ಮದೋದಕ, ಆನೆಯ

ಕುಂಭಸ್ಥಳದಿಂದ ಸುರಿಯುವ ರಸಿಗಿ. ಏತನೇನ - ದೊ

(ಅವಲಂಕಿತ) "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)। "ಸ್ತಂಭಂ ಮಹಾಂತ-

ಮುಚಿತಂ ಸಹಸಾ ಮುಮೋಚ ದಾನಂ ದದಾವತೀತರಾಂ ಸರಸಾಗ್ರಹಸ್ತಃ"

ಮಾಘಂ 4-44। 3. ಧನ, ಹಣ. ದೀಯತೇ -ಓ ದಾನ್ (ದಾನ)

ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)। 4. ಸಾಮ ಮೊದಲಾದ

ನಾಲ್ಕು ಉಪಾಯಗಳಲ್ಲೊಂದು, ಶತ್ರು ಮೊದಲಾದವ

ರನ್ನು ಗೆಲ್ಲಲು (ಅಡಗಿಸಲು) ಹಣ ಮೊದಲಾದವನ್ನು

ಕೊಡುವುದು. "ಸಾಮದಾನೇ ಭೇದದಂಡಾವಿತೃಪಾಯಚತುಷ್ಟಯಮ್"

ಅಮಂ। "ಸಾಮ್ನಾ ದಾನೇನ ಭೇದೇನ ಸಮಸ್ತೇರಥವಾ ಪೃಥಕ್।

ವಿಜೇತುಂ ಪ್ರಯತೇತಾರೀನ್ ನ ಯುಧೇನ ಕದಾಚನ" ಮನುಂ 9-194।

5. ಪಾಲನೆ, ಕಾಪಾಡುವುದು. 6. ಭೇದನ, ಕತ್ತರಿಸು

ವುದು, ತುಂಡುಮಾಡುವುದು. 7. ಶುದ್ಧಿ. "ದಾನಂ ಗಜಮದೇ

ತ್ಯಾಗೇ ಪಾಲನಚ್ಛೇದಶುಢಿಷ್ಠಿ" ಮೇದಿಂ।

**ದಾನಕ ದಾನಕ (ನಂ)** ಅಯೋಗ್ಯದಾನ, ಹೀನವಾದ ದಾನ,

ಅಪಾತ್ರದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಅಶಾಸ್ತ್ರೀಯವಾದ ದಾನ. ಕೃತಿಸಿತಂ

ದಾನಮ್ "ಕನ್" (4-4-29)।

**ದಾನಪಾತ್ರ ದಾನಪಾತ್ರ (ನಂ)** ದಾನಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದವನು,

ದಾನವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಯೋಗ್ಯನಾದವನು. ದಾನಸ್ಯ

ಪಾತ್ರಮ್। "ಸಾಕ್ಷಾಂತು ಚತುರೋ ವೇದಾನ್ ಯೋಧೀತೇ ವೈ ದ್ವಿಜರ್ಷಮಃ।

ಷಡ್ಭ್ಯೋಽನಿವೃತಃ ಕರ್ಮಮ್ಯಸ್ತಂ ಪಾತ್ರಮೃಷಯೋ ವಿಢುಃ"। "ಶ್ರೋತ್ರಿಯಾಯ

ದರಿದ್ರಾಯ ಅರ್ಥಿಣೇ ಚ ವಿಶೇಷತಃ। ಯದಾನಂ ದೀಯತೇ ತಸ್ಮೈ ತದಾನಂ

ಶುಭಕಾರಕಮ್"।

**ದಾನಫಲ ದಾನಫಲ (ನಂ)** ದಾನಮಾಡಿದುದರಿಂದ ಅನು

ಭವಿಸುವ ಫಲ. ದಾನಸ್ಯ ಫಲಮ್। ಕೋಪದಿಂದಲೂ ಭಯ

ದಿಂದಲೂ ಕೊಡಿ ಮಾಡುವ ದಾನದ ಫಲವನ್ನು ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ

ಇರುವಾಗಲೇ ಅನುಭವಿಸುತ್ತಾನೆ. "ತಮೋವೃತಸ್ತು ಯೋ ದದಾತ್

ಭಯಾತ್ ಕ್ರೋಧಾತ್ತಯೈವ ಚ। ನೃಪ ದಾನಂತು ತತ್ ಸರ್ವಂ ಮುಕ್ತೇ

ಗರ್ಭಸ್ಥಿ ಎವ ಹಿ"। ಅಸೂಯೆ ಮತ್ತು ಕೋಪಗಳಿಂದ

ಕೊಡಿ ಸಂಪಾದನೆಗಾಗಿಯೂ ದಂಭಕ್ಕಾಗಿಯೂ ಕಪಟದಿಂದ



ಮಾಡುವ ದಾನದ ಫಲವನ್ನು ಬಾಲ್ಯಾವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ಅನುಭವಿಸುತ್ತಾನೆ. "ईर्ष्यामन्युमनाश्चैव दम्भार्थं चार्थ-कारणात् । यो ददाति द्विजातिभ्यः स बाल्ये तु तदश्नुते"। ಇತ್ಯಾದಿ.

**ದಾನವ ದಾನವ(ಪುಂ)** ಕಶ್ಯಪನಿಗೆ ದನುವಿನಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಮಕ್ಕಳು, ದಕ್ಷಬ್ರಹ್ಮನ ಮಗಳಾದ ದನುವಿನ ಮಕ್ಕಳು. ದನೋರಪತ್ಯಮ್ "अण्" (४-१-९२) । "उद्धतानधिकमेधितौजसो दानवांश्च विबुधा विजिग्यिरे" ಮಾಘಂ १४-३१ । "तमस्त्र-मायाम्यधिका दानवाः पर्यवारयन्" यादಂ १६-७९ । ವಿಪ್ರಚಿತ್ತಿ ಶಂಬರ ನಮುಚಿ ಪುಲೋಮ ಅಸಿಲೋಮ ಕೇಶಿ ದುರ್ಜಯ ಅಯಶಿರಸ್ಸು ಅಶ್ವಶಿರಸ್ಸು ಅಶ್ವಶಂಕು ಮುಂತಾದ ನಲವತ್ತು ಮಂದಿ ದಾನವರು ದನುವಿನ ಮಕ್ಕಳು. "चत्वारिंशद्वनोः पुत्राः ख्याताः सर्वत्र भारत । तेषां प्रथमतो राजा विप्रचित्तिर्महायशः । शम्बरो नमुचिश्चैव पुलोमश्चेति विश्रुतः । असिलोमा च केशी च दुर्जयश्चैव दानवः" । ಇತ್ಯಾದಿ ಭಾಂ ಆದಿಂ ६६ ।

**ದಾನವಗುರು ದಾನವಗುರು (ಪುಂ)** ದಾನವರಿಗೆ ಆಚಾರ್ಯರಾದ ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರು.

**ದಾನವರಿಯು ದಾನವರಿಪು (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ದೇವತೆ. ದಾನವಾನಾಂ ರಿಪುಃ ।

**ದಾನವಾರಿ ದಾನವಾರಿ(ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ದೇವತೆ. ದಾನ-ವಾನಾಮರಿಃ । "बहिर्मुखाः क्रतुभुजो गीर्वाणा दानवारयः" ಅಮಂ । (ನಂ) 3. ಆನೆಯ ಮದೋದಕ, ಆನೆಯ ಗಂಡ ಸ್ಥೂಲದಲ್ಲಿ ಹೊರಡುವ ಮದಜಲ. "तदीयमातङ्गघटा-विघट्टितैः कटस्थलप्रोषितदानवारिभिः" ಮಾಘಂ १-६४ ।

**ದಾನವೀರ ದಾನವೀರ (ಪುಂ)** 1. ವೀರರಸದ ಒಂದು ಭೇದ. ವೀರರಸವು ದಾನವೀರ ಧರ್ಮವೀರ ಯುದ್ಧ ವೀರ ಮತ್ತು ದಯಾವೀರ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. 2. ದಾನವೀರರಸಕ್ಕೆ ಆಶ್ರಯನಾದ ನಾಯಕ. "स च दानधर्मयुद्धैः दयया च समन्वितश्चतुर्धा स्यात्" ಸಾಂ ದಂ ३-२३४ । "त्यागः सप्तसमुद्रमुद्रितमहीनिर्व्याजदानावधिः" । ಇಲ್ಲಿ ಪರಶು ರಾಮನು ದಾನಮಾಡುವುದರಲ್ಲಿ ತೋರಿದ ಉತ್ಸಾಹವು ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ. ಬ್ರಾಹ್ಮಣರು ಆಲಂಬನವಿಭಾವ. ಸತ್ತ್ವ ಗುಣದ ಉದ್ರೇಕವು ಉದ್ದೀಪನ ವಿಭಾವ. ಸರ್ವಸ್ವತ್ಯಾಗವು ಅನುಭಾವ. ಹರ್ಷ ಧೃತಿ ಮೊದಲಾದುವು ಸಂಚಾರಿಭಾವ ಗಳು. ಈ ವಿಭಾವಾದಿಗಳಿಂದ ಪರಿಪುಷ್ಪವಾದ ಸ್ಥಾಯಿ ಭಾವವು ರಸವಾಗಿ ಪರಿಣಮಿಸಿ "ದಾನವೀರ" ವೆಂಬ ಭೇದವನ್ನು ಹೊಂದುವುದು.

**ದಾನವೇಯ ದಾನವೇಯ (ಪುಂ)** ದನುವಿನ ಮಕ್ಕಳು. ದನ್ವಾ ಅಪತ್ಯಮ್ — ದನು ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ऊङ्" (४-१-६६) । "ढक्" (४-१-१२०) । "विष्णुना विहतेष्वेव दानवेयेषु देवताः" ಭಾಂ ಕರ್ಣಂ ७७-५९ ।

**ದಾನಶೀಲ ದಾನಶೀಲ (ವಿಂ)** ದಾನಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ದಾನಂ ಶೀಲಂ यस्य । "यत् फलं दानशीलस्य क्षमाशीलस्य यत् फलम्" ಭಾಂ उद्योगಂ १२२-५ ।

**ದಾನಶೌಂಡ ದಾನಶೌಂಡ (ವಿಂ)** ಹೆಚ್ಚು ದಾನಮಾಡುವವನು, ಉದಾರ ಸ್ವಭಾವದವನು, ದಾನಮಾಡುವುದರಲ್ಲಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾದವನು. ದಾನೇ ಶೌಂಡಃ ।

**ದಾನೀಯ ದಾನೀಯ (ವಿಂ)** ದಾನಮಾಡಲು ಉದ್ದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನು, ದಾನ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ದೀಯತೇ-ಹು ದಾನ್ (ದಾನೇ) ಸಂಪ್ರದಾನೇ "अनीयर्" (३-३-११३) ।

**ದಾನು ದಾನು (ವಿಂ)** 1. ದಾನಮಾಡುವವನು. ಹು ದಾನ್ (ದಾನೇ) "नुः" (उ० ३-३२) । ದಾನುದಾತಾ ಸಿಂ ಕೌಂ । 2. ಪರಾಕ್ರಮಿ, ಬಲಶಾಲಿ. "दानुर्दातरि विक्रान्ते" ಮೇದಿಂ । 3. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 4. ತೃಪ್ತಿ, ತಣೆಪು.

**ದಾಂತ ದಾಂತ (ವಿಂ)** 1. ಬಹಿರಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸಿದವನು, ತಪಸ್ಸಿನ ಕಷ್ಟವನ್ನು ಸಹಿಸುವವನು. ದಾಮ್ಯತಿ ಸ್ಮ — ದಮ್ (उपशमे) ಕರ್ತಂ "क्तः" (३-४-७२) । ದೀರ್ಘಃ (६-४-१५) । 2. ಅಡಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ದಮ್ಯತೇ ಸ್ಮ — ದಮ್ + ಣಿಕ್ "क्तः" (३-२-१०२) । "वा दान्तशान्त....." (७-२-२७) । ಇತಿ ನಿಪಾಂ । ಪಕ್ಷೇ ದಮಿತಃ ದಮಿತಃ.

**ದಾಂತಿ ದಾಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ತಪಸ್ಸಿನ ಕಷ್ಟವನ್ನು ಸಹಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 2. ಬಹಿರಂದ್ರಿಯ ನಿಗ್ರಹ. 3. ಶಿಕ್ಷಣ, ಪಳಗಿಸುವುದು. ದಮ್ (उपशमे) "क्तिन्" (३-३-९४) । ದೀರ್ಘಃ (६-४-१५) ।

**ದಾಪನ ದಾಪನ (ನಂ)** ಕೊಡಿಸುವುದು. ಹು ದಾನ್ (ದಾನೇ) + ಣಿಕ್ "ल्युट्" (३-३-११५) ।

**ದಾಪನೀಯ ದಾಪನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಕೊಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. 2. ಕೊಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ಹು ದಾನ್ (ದಾನೇ) + ಣಿಕ್ "अनीयर्" (३-१-९६) । "तथ्यः" । ದಾಪಯಿತವ್ಯಃ ದಾಪಯಿತವ್ಯಃ.

**ದಾಪಯತ್ ದಾಪಯತ್ (ವಿಂ)** ಕೊಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಹು ದಾನ್ (ದಾನೇ) + ಣಿಕ್ "शत्" (३-२-१२४) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "डीप्" (४-१-६) । —ಯಂತಿ —ಯಂತೀ.

**ದಾಪಯಮಾನ ದಾಪಯಮಾನ (ವಿಂ)** ಕೊಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಹು ದಾನ್ (ದಾನೇ) ಕರ್ತಂ "शानच्" (३-२-१२४) ।



ದಾಪಯಿತ್ ದಾಪಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕೊಡಿಸುವ. 2. ದಾನ ಮಾಡಿಸುವ. ಡು ದಾನ್ (ದಾನೆ) + ಣಿನ್ "ತೃನ್" (3-1-133)। ಸ್ತ್ರಿಯಾನ್ "ಡೀಪ್" (4-1-4)। -ಯಿತ್ಯೇ.

ದಾಪಿತ ದಾಪಿತ (ನಂ) 1. ಕೊಡಿಸುವುದು. 2. ದಾನ ಮಾಡಿಸುವುದು. ಡು ದಾನ್ (ದಾನೆ) + ಣಿನ್ "ಕ್ತಃ" (3-3-114)। (ವಿಂ) 3. ಕೊಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಧನ). ದಾನ್ + ಣಿನ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। 4. ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ದಂಡ ಕೊಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಪ್ರತಿವಾದಿ).

ದಾಪಿತವತ್ ದಾಪಿತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಕೊಡಿಸಿದವನು. 2. ದಾನಮಾಡಿಸಿದವನು. ಡು ದಾನ್ (ದಾನೆ) + ಣಿನ್ "ಕ್ತವತುಃ" (3-2-102)। ಸ್ತ್ರಿಯಾನ್ "ಡೀಪ್" (4-1-4)। ದಾಪ್ಯ ದಾಪ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕೊಡಿಸಲ್ಪಡುವವನು. 2. ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವವನು. ಡು ದಾನ್ (ದಾನೆ) + ಣಿನ್ "ಯತ್" (3-1-97)। "ಯದಿ ಸಂಸಾಧಯೇತ್ತತ್ ದರ್ಪಾಲೋಭೇನ ವಾ ಪುನಃ। ರಾಜಾ ದಾಪ್ಯಃ ಸುವರ್ಣಂ ಸ್ಯಾತ್ ತಸ್ಯ ಸ್ತೇಯಸ್ಯ ನಿಷ್ಕೃತಿಃ" ಮನುಂ 9-213।

ದಾಮಗ್ರನ್ಥಿ ದಾಮಗ್ರಂಥಿ (ಪುಂ) ವಿರಾಟರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಅಶ್ವಾಧ್ಯಕ್ಷ. "ಅಥ ಮಾತ್ಸ್ಯೋಽಬ್ರವೀದ್ರಾಜಾ ಶತಾನಿಕಂ ಜಘನ್ಯಜಮ್। ಕಕ್ಷುಃಶ್ಚ ವಲಲಃಸೂದೋ ದಾಮಗ್ರನ್ಥಿಃಶ್ಚ ವೀರ್ಯವಾನ್" ಭಾಂ ವಿರಾಂ 33-31। ಇದು ವಿರಾಟನಗರದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ನಕುಲನ ಹೆಸರು.

ದಾಮಚಂದ್ರ ದಾಮಚಂದ್ರ (ಪುಂ) ದ್ರುಪದರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ವಸುಚಂದ್ರೋ ದಾಮಚಂದ್ರಃ ಸಿಂಹಚಂದ್ರಃ ಸುತೇಜನಃ" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ 149-39।

ದಾಮನ್ ದಾಮನ್ (ಸ್ತ್ರೀನಂ) 1. ರಜ್ಜು, ಹೆಗ್ಗು. ದೋ (ಅವ-ಖಂಡನೆ) "ಮನಿನ್" (3-4-144)। "ಚಣ್ಡೀ ಚಣ್ಡಂ ಹಂತುಮಸ್ಯುಽಯತಾ ಮಾಂ ವಿಶ್ವದಾಮ್ನಾ ಮೇಧರಾಜೀವ ವಿದ್ಯಮ್" ಮಾಲಂ 3-21। 2. ಪುಷ್ಪಮಾಲೆ, ಹೂವಿನ ಸರ. "ಕ್ಷಣಮಲಘುವಿಲಮ್ಬಿಪಿಚ್ಛದಾಮ್ನಃ" ಮಾಘಂ 4-40। 3. ಹಸುವನ್ನು ಕರೆಯುವಾಗ ಅದರ ಕಾಲಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಹೆಗ್ಗು. 4. ಹಾರ, ಸರ. "ಮುಕ್ತಾಮಯಂ ಸಾರಸನಾವಲಮ್ಬಿ ಭಾತಿ ಸ್ಮ ದಾಮಾಪ್ರಪದೀನಮಸ್ಯ" ಮಾಘಂ 3-10। ಸ್ತ್ರಿಯಾನ್ ವಾ "ಡಾಪ್" (4-1-13)। ದಾಮಾ ದಾಮೇ ದಾಮಾಃ ಪಕ್ಷೇ ದಾಮಾ ದಾಮಾನೋ ದಾಮಾನಃ।

ದಾಮಿನಿ ದಾಮಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಸುವನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಹೆಗ್ಗು. ದಾಮೇವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಣ್" (4-4-38)। ಪ್ರಕೃತಿಭಾವಃ (ಅನೋ ಲೋಪಾಭಾವಃ) (6-4-167)। "ಡೀಪ್" (4-1-14)। "ಪಶುರಜ್ಜುಸ್ತು ದಾಮಿನಿ" ಅಮಂ।

ದಾಮಾಂಜಲ ದಾಮಾಂಜಲ (ನಂ) ಕುದುರೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಕಾಲಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಹೆಗ್ಗು. "ದಾಮಾಂಜಲಂ ಪಾದಪಾಶಃ" ವೇಜಂ। "ಸಸುಃ ಸರೋಪರಿಚಾರಕವಾರ್ಯಮಾಣದಾಮಾಂಜಲ-ಸ್ಥಲಿತಲೋಲಪದಂ ತುರಗಾಃ" ಮಾಘಂ 4-61।

ದಾಮಿನಿ ದಾಮಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿದ್ಯುತ್ತು. ಮಿಂಚು. ದಾಮನ್ "ಇನಿಃ" (4-2-137)। ಟಿಲೋಪಃ। "ಡೀಪ್" (4-1-4)।

ದಾಮೋದರ ದಾಮೋದರ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ, ವಾಸುದೇವ. ದಾಮ ಉದರೇ ಯಸ್ಯ। ಸಕಲಲೋಕಾಧಾರತಯಾ ದಾಮಾನಿ ಲೋಕಾಃ ಉದರೇ ಅಸ್ಯ ಇತಿ ವಾ। "ದಾಮಾನಿ ಲೋಕನಾಮಾನಿ ಹೃದಯೇ ಯಸ್ಯ ಸಂತಿ ಸಃ। ದಾಮೋದರ ಇತಿ ಸ್ಥಾತೋ ಯಶೋದಾದಾಮ-ಬಂಧನಾತ್। ದೇವಾನಾಂ ಸುಖಸಂಸಿದ್ಧಿವಾತ್ ದಾಮಾದಾಮೋದರೋಽಪಿ ವಾ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ। "ಹೇತುರ್ದಾಮೋದರಃ ಸಹಃ" ವಿಂ ಸಂ। ಯಶೋದಾಯು ಕೋಪಿಸಿಕೊಂಡು ಕೃಷ್ಣನನ್ನು ಹೆಗ್ಗು ದಿಂದ ಕಟ್ಟಿಹಾಕಿದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. 2. ದಾಮೋದರವೆಂಬ ಒಂದು ಗಂಡುಹೊಳೆ, ನದಿ. 3. ಕಳೆದ ಉತ್ಸರ್ಪಿಣೀಕಾಲ ದಲ್ಲಿದ್ದ 9 ನೆಯ ಅರ್ಹಂಶ.

ದಾಮ್ಪತ್ಯ ದಾಮ್ಪತ್ಯ (ನಂ) 1. ದಂಪತಿಗಳ (ಪತಿಪತ್ನಿಯರ) ಪರಸ್ಪರ ಪ್ರೀತಿ, ಅನೋನ್ಯ ಅನುರಾಗ. ದಾಮ್ಪತ್ಯೋರ್ಭಾವಃ "ಯಕ್" (4-1-128)। 2. ದಂಪತಿಗಳ ಸಂಬಂಧವಾದ ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರಾದಿ ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ.

ದಾಮ್ಭಿಕ ದಾಮ್ಭಿಕ (ವಿಂ) 1. ವೇಷಧಾರಿ, ಕಪಟಿ, ಕೀರ್ತಿ ಪಡೆಯಲು ವೇಷಹಾಕಿ ಧರ್ಮವನ್ನು ಅಚರಿಸುವವನು. ದಮ್ಭೇನ ಚರತಿ—"ಠಕ್" (4-4-8)। "ಪರ್ಯಾಯಗ್ರಥಿತಾಕ್ಷ-ಸೂತ್ರವಲಯಪ್ರತ್ಯೇಕಬೀಜಗ್ರಹವ್ಯಗ್ರಾಙ್ಗುಲಯೋ ಹರಂತಿ ಧನಿನಾಂ ವಿದ್ವಾನ್ಯಹೋ ದಾಮ್ಭಿಕಾಃ" ಪ್ರಬೋಧಂ 2-4। 2. ಅಹಂಕಾರ ದಿಂದ ಕೊಡಿದವನು. 3. ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. 4. ಅಡಂಬರದಿಂದ ಮೆರೆಯುವವನು, ಬೊಳ್ಳು ತೀವಿ ಯುಳ್ಳವನು.

ದಾಯ ದಾಯ (ಪುಂ) 1. ಪಿತೃರ್ವಿತ್ತವಾದ ಆಸ್ತಿ, ಭಾಗ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಬೇಕಾದ ತಂದೆಯ ಆಸ್ತಿ. ಡು ದಾನ್ (ದಾನೆ) "ಘಜ್" (3-3-19)। "ಔರಸೋ ವಿಭಜನ್ ದಾಯಂ ಪಿತ್ರೈ ಪಶ್ಚಮಮೇವ ವಾ" ಮನುಂ 9-164। 2. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. ದಾನ್ ಭಾವೇ "ಘಜ್" (3-3-18)। "ಅಸ್ವಾಮಿನಾ ಕೃತೋ ಯಸ್ತು ದಾಯೋ ವಿಕ್ರಯ ಉವ ವಾ। ಅಕೃತಃ ಸ ತು ವಿಜೇಯೋ ವ್ಯವಹಾರೇ ಯಥಾ ಸ್ಥಿತಿಃ" ಮನುಂ 8-199। 3. ಭಾಗಮಾಡಿಕೊಡಲು ಅರ್ಹವಾದ ಆಸ್ತಿ. "ಸಂವತ್ಸರಂ ಪ್ರತೀಕ್ಷೇತ ದ್ವಿಪಂತೀ ಯೋಷಿತಂ ಪತಿಃ। ಋಷಿಂ ಸಂವತ್ಸರಾತ್ವೇನಾಂ ದಾಯಂ ಹೃತ್ವಾ ನ ಸಂವಸೇತ್" ಮನುಂ 9-77। 4. ಉಪಹಾಸದಿಂದ ಕೊಡಿದ ಮಾತು.



5. ಕನ್ಯಾದಾನಸಮಯದಲ್ಲಿ ಅಳಿಯನಿಗೂ ಮಗಳಿಗೂ ಕೊಡುವ ಬಳುವಳಿ. 6. ಸ್ಥಾನ, ಜಾಗ. 7. ಖಂಡನ, ಕತ್ತರಿಸುವುದು. ದೊ (ಅವಸ್ಥಾಪನೆ) "ಘ" (3-3-114)। (ವಿಂ) 8. ದಾನಮಾಡುವ, ಕೊಡುವ. ದದಾತಿ—ಓ ದಾನ್ (ದಾನೆ)। "ಶಃ" (3-1-141)। "ದಾಯೋ ದಾನೇ ಯೌತಕಾದಿಧನೇ ಸೋಲ್ಪುಣಭಾಷಣೇ ವಿಭಕ್ತವ್ಯಪಿತೃದ್ರವ್ಯೇ" ಹೇಮಂ।

**ದಾಯಕ ದಾಯಕ** (ವಿಂ) 1. ದಾನಮಾಡುವವನು. 2. ಕೊಡುವವನು. ಓ ದಾನ್ (ದಾನೆ) "ಫಲ್" (3-1-133)। "ತಾವತಾಂ ಗೋಸಹಸ್ರಾಣಾಂ ಫಲಂ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ ದಾಯಕಃ" ಭಾಂ ವನಂ 196-33। 2. ಕತ್ತರಿಸುವವನು, ಒಡೆಯುವವನು, ಸೀಳುವವನು. ದೊ (ಅವಸ್ಥಾಪನೆ) "ಫಲ್" (3-1-133)। 3. ದಾಯಾದ, ಜ್ಞಾತಿ.

**ದಾಯಬಂಧು ದಾಯಬಂಧು** (ಪುಂ) ಪಿತ್ರಾರ್ಜಿತವಾದ ಆಸ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಭಾಗಹೊಂದುವ ಸಹೋದರ. ದಾಯೇ ಬಂಧುಃ।

**ದಾಯಭಾಗ ದಾಯಭಾಗ** (ಪುಂ) ಪಿತ್ರಾರ್ಜಿತವಾದ ಆಸ್ತಿಯ ವಿಭಾಗ, ತಂದೆಯ ಆಸ್ತಿಯ ಪಾಲು. ದಾಯಸ್ಯ ಭಾಗಃ। "ವಿಭಾಗೋಽರ್ಥಸ್ಯ ಪಿತ್ರಸ್ಯ ಪುತ್ರೈಶ್ಚ ಪ್ರಕಲ್ಪ್ಯತೇ। ದಾಯಭಾಗ ಇತಿ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ತದ್ವಿವಾದಪದಂ ಬುಧೈಃ" ಇತಿ ನಾರದಃ। "ಏಷ ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸಯೋರೂಕ್ತೋ ಧರ್ಮೋ ವೋ ರತಿಸಂಹಿತಃ। ಆಪಞ್ವಪತ್ಯಪ್ರಾಪ್ತಿಶ್ಚ ದಾಯಭಾಗಂ ನಿಬೋಧತ" ಮನುಂ 9-103।

**ದಾಯಾದ ದಾಯಾದ** (ಪುಂ) 1. ಪಿತ್ರಾರ್ಜಿತವಾದ ಆಸ್ತಿಯ ಭಾಗ ಪಡೆಯುವವನು, ತಂದೆಯ ಆಸ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಪಾಲು ಹೊಂದುವವನು, ಪುತ್ರ, ಮಗ. ದಾಯಮತ್ತಿ—ಅದ (ಭಕ್ಷಣ) "ಅನ್" (3-2-1)। ದಾಯಮಾದತ್ತೇ—ಆ+ದಾನ್ (ದಾನೆ) "ಕಃ" (3-1-136) ಇತಿ ವಾ। "ಪುರುಷಾ ನ ಕೃತಂ ವಾಕ್ಯಂ ಮಾನಿತಂ ಚ ವಿಶೇಷತಃ। ಕನೀಯಾನ್ ಮಮ ದಾಯಾದೋ ಧೃತಾ ಯೇನ ಜರಾ ಮಮ" ಭಾಂ ಆದಿಂ 69-32। 2. ಜ್ಞಾತಿ, ಬಂಧು. "ಕ್ಷತ್ರಿಯಸ್ತನಯಃ ಪಾಂಡೋರಹಂ ಪಾರ್ಥೋ ಧನಂಜಯಃ। ಸ್ಥಿತಃ ಪ್ರಾಸ್ತಸ್ಯ ದಾಯಾದೇಭ್ರಾತೃಜ್ಯೇಷ್ಠಸ್ಯ ಶಾಸನೇ" ಕಿರಾಂ 11-45। "ತೇಷಾಮಿದಾನಿಂ ದಾಯಾದೋ ವೃದ್ಧಃ ಸೀರಧ್ವಜೋ ನೃಪಃ" ಮಂ ವೀಂ 1-14। (ವಿಂ) 3. ಭಾಗವನ್ನು ಪಡೆಯಲು ಯೋಗ್ಯ ನಾದವನು. "ಔರಸಃ ಕ್ಷೇತ್ರಜಶ್ಚೈವ ದತ್ತಃ ಕೃತ್ರಿಮ ಏವ ಚ। ಗೃಹೋತ್ಪನ್ನೋಽಪಿವಿದ್ವಾಶ್ಚ ದಾಯಾದಾ ಬಾಂಧವಾಶ್ಚ ಷಟ್" ಮನುಂ 9-149। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ದಾ -ದಾ, -ದೀ -ದೀ. ಕನ್ಯೆ, ಮಗಳು.

**ದಾಯಾದ ದಾಯಾದ್ಯ** (ನಂ) 1. ಭಾಗಹೊಂದುವ ಹಕ್ಕು, ಪಾಲು ಪಡೆಯುವ ಹಕ್ಕು. ದಾಯಾದಸ್ಯ ಭಾವಃ "ವ್ಯನ್"

(4-1-124)। 2. ಪಿತ್ರಾರ್ಜಿತವಾದ ಆಸ್ತಿ, ಪಾಲಿಗೆ ಬರಬೇಕಾದ ತಂದೆಯ ಆಸ್ತಿ. "ಸ ಏಷ ಪಾಂಡೋರ್ದಯಾಽವ ಯದಿ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ ಪಾಂಡವಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ 142-16।

**ದಾಯಾಹ ದಾಯಾರ್ಹ** (ವಿಂ) ತಂದೆಯ ಆಸ್ತಿಯನ್ನು ಹೊಂದಲು ಅರ್ಹನಾದವನು.

**ದಾರ ದಾರ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಪತ್ನಿ, ಹೆಂಡತಿ. ದಾರಯತಿ ಭ್ರಾತೃನ್—ದ್ (ವಿದಾರಣ) + ಣಿಕ್ "ಘ" (ವಾಂ 3-3-20)। "ಏತೇ ವಯಮಮಿ ದಾರಾಃ ಕನ್ಯೇಯಂ ಕುಲಜೀವಿತಮ್" ಕುಮಾಂ 6-63। "ಇಚ್ಛತೀಶಶ್ಚ್ಯುತಾಚಾರಾನ್ ದಾರಾನಿವ ನಿಗೋಪಿತುಮ್" ಕಿರಾಂ 14-19। (ಪುಂ) 2. ಒಡೆಯುವುದು, ಭೇದಿಸುವುದು, ಸೀಳುವುದು. ದ್ ಭಾವೇ "ಘ" (3-3-14)।

**ದಾರಕ ದಾರಕ** (ಪುಂ) 1. ಬಾಲಕ, ಹುಡುಗ. ದ್ (ವಿದಾರಣ) "ಫಲ್" (3-1-133)। "ಪ್ರಕೃತ್ಯಾ ಪುಣ್ಯಲಕ್ಷ್ಮೀಕೌ ಕಾವೇತೌ ಜಾಯತೇ ತ್ವಿದಮ್। ರಾಜನ್ಯದಾರಕೌ ನೂನಂ ಕೃತೋಪನಯನಾವಿತಿ" ಮಂ ವೀಂ 1-16। 2. ಕುಮಾರ, ಪುತ್ರ. "ಯು-ರಾಜಸ್ತು ಕುಮಾರೋ ಭರ್ತೃದಾರಕಃ" ಅಮಂ। (ವಿಂ) 3. ಒಡೆಯುವವನು, ಸೀಳುವವನು, ಭೇದಿಸುವವನು. "ದರಕೋ ಬಾಲಕೇಽಪಿ ಸ್ಯಾಢ್ವೇದಕೇಽಪ್ಯಭಿಧೇಯವತ್" ಮೇದಿಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಿಕಾ -ರಿಕಾ. ಮಗಳು.

**ದಾರಕರ್ಮನ್ ದಾರಕರ್ಮನ್** (ನಂ) ವಿವಾಹ, ಮದುವೆ, ಪತ್ನಿ ಯಾಗುವ ಕಾರ್ಯ. ದಾರತ್ವಸಂಪಾದಕಂ ಕರ್ಮ। "ಸರ್ವಣಿಪ್ರೇ ದ್ವಿಜಾತೀನಾಂ ಪ್ರಶಸ್ತಾ ದಾರಕರ್ಮಣಿ" ಮನುಂ 3-12। -ಕ್ರಿಯಾ -ಕ್ರಿಯಾ. "ತಂ ಶ್ಲಾಘ್ಯಸಮ್ಬಂಧಮಸೌ ವಿಚಿಂತ್ಯ ದಾರಕ್ರಿಯಾ-ಯೋಗ್ಯದಶಂ ಚ ಪುತ್ರಮ್" ರಘುಂ 4-40।

**ದಾರಗವ ದಾರಗವ** (ನಂ) ಪತ್ನಿ ಮತ್ತು ಹಸು. ದಾರಾಶ್ಚ ಗಾವಶ್ಚ "ಅಕ್" (4-4-33) ನಿಪಾಂ।

**ದಾರಗ್ರಹಣ ದಾರಗ್ರಹಣ** (ನಂ) ವಿವಾಹ, ಮದುವೆ. ದಾರಾಣಾಂ ಗ್ರಹಣಮ್।

**ದಾರಪರಿಗ್ರಹ ದಾರಪರಿಗ್ರಹ** (ಪುಂ) ವಿವಾಹ, ಮದುವೆ. ದಾರಾಣಾಂ ಪರಿಗ್ರಹಃ। "ಅತಃ ಪರಂ ಸಮಾವೃತ್ತಃ ಕುರ್ಯಾದಾರ-ಪರಿಗ್ರಹಮ್" ಮನುಂ।

**ದಾರಣ ದಾರಣ** (ನಂ) 1. ಭೇದನ, ಒಡೆಯುವುದು, ತುಂಡು ಮಾಡುವುದು. ದ್ (ವಿದಾರಣ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। "ಕಪಿಕುಲಪತಿಹೃದಯವಿಶಾಲಶಿಲಾತಲ-ದಾರಣದಾರಣಶಿಲೀಮುಖ" ರಘುಂ ಗಂ। 2. ಕಡೆಕಡಬೀಜ, ಚೆಲ್ಲದಬೀಜ. (ವಿಂ) 3. ಸೀಳುವ ಸಾಧನ, ಒಡೆಯುವ ಆಯುಧ, ಕತ್ತರಿಸುವ ಆಯುಧ. ದೀಯತೇನೆನ—ದ್ (ವಿದಾರಣ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 4. ಭೇದ



ಸುವ, ಒಡೆಯುವ, ತುಂದುಮಾಡುವ. ದೃ ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। "ಸಮಾಪತ್ತ ಶಿತಂ ಬಾಣಂ ಗಿರಿಣಾಮಪಿ ದಾರಣಮ್" ಭಾಂ ಕರ್ಣಂ ೪೪-೨೦। 5. ಪ್ರಣವನ್ನು ಮಾಗಿಸಿ ಒಡೆಯುವಂತೆ ಮಾಡುವ ಒಂದು ಔಷಧ. "ಚಿರವಿಲ್ವೋಽಗ್ನಿಕೋ ದಂತಿ ಚಿತ್ರಕೋ ಹ್ಯಮಾರಕಃ। ಕಪೋತಗೃಧ್ರಕಡ್ಡುನಾಂ ಪುರೀಷಾಣಿ ಚ ದಾರಣಮ್। ಕ್ಷಾರದ್ರವ್ಯಾಣಿ ವಾ ಯಾನಿ ಕ್ಷಾರೋ ವಾ ದಾರಣಂ ಪರಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ।

ದಾರದ ದಾರದ (ಪುಂ) 1. ಎಷದ ಭೇದ. ದರದಿ ದೇಶ ಭವ: "ಅಞ್" (೪-೩-೯೩)। "ದಾರದೋ ವತ್ಸನಾಮಶ್ಚ ವಿಷಭೇದಾ ಅಮಿ ನವ" ಅಮಂ। 2. ಪಾದರಸ. 3. ಹಿಂಗುಲ, ಇಂಗುಲಿಕ. "ದಾರದೋ ವಿಷಭೇದೇ ಸ್ಯಾತ್ಪಾರದೇ ಹಿಡ್ಗುಲೇ ಪುಮಾನ್ ಮೇದಿಂ। 4. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. "ಪಾರಾವಾರಮಹಾಕಚ್ಛೋ ಮಹಿಪ್ರಾಚೀರದಾರದೋ" ಹಾರಾಂ।

ದಾರವ ದಾರವ (ವಿಂ) ಮರದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರದಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ದಾರುಣೋ ವಿಕಾರಃ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೫೪)।

ದಾರಿಕಾ ದಾರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕನ್ಯೆ, ಮಗಳು, ಪುತ್ರಿ. ದಾರಕ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪)। ಇತ್ವಮ್ (೭-೩-೪೪)।

ದಾರಿತ ದಾರಿತ (ವಿಂ) ಭೇದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೀಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ದೃ (ವಿದಾರಣೆ) + ಣಿच् "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಪ್ರಥಮಂ ಪಾತಯಾಮಾಸುರಸಿನಾ ದಾರಿತಾನರೀನ್" ಕುಮಾಂ ೧೬-೨೬।

ದಾರಿದ್ರ್ಯ ದಾರಿದ್ರ್ಯ (ನಂ) ಬಡತನ. ದರಿದ್ರಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಘ್ವ" (೫-೧-೧೨೪)। "ಮೃಷಾ ನ ಚಕ್ರೇತ್ಪಿತಕಲ್ಪ-ಪಾದಪಃ ಪ್ರಣೀಯ ದಾರಿದ್ರ್ಯದರಿದ್ರತಾಂ ನಲಃ" ನೈಷಂ ೧-೧೫।

ದಾರಿನ್ ದಾರಿನ್ (ಪುಂ) ಬಹು ಪತ್ನಿಯರನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು, ಅನೇಕ ಮಂದಿ ಮಡದಿಯರುಳ್ಳವನು. ದಾರಾಃ ಸಂತ್ಯಸ್ಯ ಭೂಮಾರ್ಥೆ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫)। "ದಾರೀ ದರದರಿದ್ರೋಽರಿದಾರುರೋಽರಿದ್ರದ್ವರದಃ" ಮಾಘಂ ೧೯-೧೦೬।

ದಾರು ದಾರು (ಪುಂ) 1. ಮರದ ದಿಮ್ಮಿ. 2. ಕಾಷ್ಠ, ಸೌದೆ. ದೀಯತೇ-ದೃ (ವಿದಾರಣೆ) "ಋಣ್" (೩ಂ ೧-೩)। (ನಂ) 3. ದೇವದಾರುವೃಕ್ಷ. (ವಿಂ) 4. ದಾನಶೀಲ, ದಾನ ಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. 5. ಶಿಲ್ಪಿ. 6. ಸೀಳುವವನು, ಕತ್ತರಿಸುವವನು.

ದಾರುಕ ದಾರುಕ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಸಾರಥಿ. ದಾರು ಸಂಜ್ಞಾयां "ಕನ್"। "ಉಕ್ತಂ ಧರಂ ದ್ರಷ್ಟುಮೇಕ್ಷ್ಯ ಶೌರಿಮುಕ್ತಾನ್ಧರಂ ದಾರುಕ ಇತ್ಯುವಾಚ" ಮಾಘಂ ೪-೧೮। 2. ದೇವದಾರು ವೃಕ್ಷ. ದಾರು ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕಃ"।

ದಾರುಕದಲಿ ದಾರುಕದಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಡುಬಾಳೆ. 2. ಮರಬಾಳೆ.

ದಾರುಕಾ ದಾರುಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರದ ಬೊಂಬೆ. ದಾರುಣಾ ಕಾಯತಿ - ಕೈ (ಶಬ್ದ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)।

ದಾರುಣ ದಾರುಣ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ದಾರಯತಿ ಬಾಹ್ಯಾ-ನಾಮ್ಯಂತರಾಂಶ್ವಾರೀನ್ ವಿದಾರಯತಿ-ದೃ (ವಿದಾರಣೆ) + ಣಿच् "ಉನ್" (೩ಂ ೩-೫೩)। "ಬಾಹ್ಯಾಮ್ಯಂತರಶತ್ರುಣಾಂ ದಾರುಣಾ-ದಪಿ ದಾರುಣಃ" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ। "ಕುಧನ್ವಾ ಕ್ಷಣ್ಡಪರಶುಃ ದಾರುಣೋ ದ್ರವಿಣಪ್ರದಃ" ವಿಂ ಸಂ। 2. ಭಯಾನಕ ರಸ. (ವಿಂ) 3. ಭಯಂಕರವಾದ, ಭಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. "ಮूर्ತಾಃ ಪ್ರಾಣಾ ನೂನಮದ್ವಾಪ್ಯವೇಕ್ಷಾಮಾಸುಃ ಕಾಯಂ ತ್ಯಾಜಿತಾ ದಾರುಣಾಸ್ತ್ರೈಃ" ಮಾಘಂ ೧೮-೭೩। 4. ಕ್ರೂರನಾದ, ದುರುಳ ನಾದ. "ಪ್ರಸಾದ ನಾಥ, ಸಾಹಸಿಕ, ದಾರುಣಃ ಕ್ಷಲು ಹತಾಶಃ। ಪರಿತ್ರಾಸ್ಯಸ್ವ ಮಾಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೫।

ದಾರುನಿಶಾ ದಾರುನಿಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರದರಿತಿನ. ದಾರುಪ್ರಧಾನಾ ನಿಶಾ।

ದಾರುಪಾತ್ರ ದಾರುಪಾತ್ರ (ನಂ) ಮರದಪಾತ್ರೆ, ಮರದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಪಾತ್ರೆ, ಬೊಂಬು, ತೊಟ್ಟಿ ಮೊದಲಾದುವು. ದಾರುಣಃ ಪಾತ್ರಮ್।

ದಾರುಪೀತಾ ದಾರುಪೀತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರದರಿತಿನ. ದಾರುಣಾ ಕಾಷ್ಠೇನ ಪೀತಾ।

ದಾರುಪುತ್ರಿಕಾ ದಾರುಪುತ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರದ ಬೊಂಬೆ. ದಾರುಮಯಿ ಪುತ್ರಿಕಾ।

ದಾರುಮುಖ್ಯಾಹ್ವಯಾ ದಾರುಮುಖ್ಯಾಹ್ವಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಲ್ಲಿ, ಗಿಳಿ.

ದಾರುಯನ್ತ್ರ ದಾರುಯನ್ತ್ರ (ನಂ) ಮರದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಯಂತ್ರ. ದಾರುಮಯಂ ಯನ್ತ್ರಮ್। "ಅಸ್ವತನ್ತ್ರೋ ಹಿ ಪುರುಷಃ ಕಾರ್ಯತೇ ದಾರುಯನ್ತ್ರವತ್" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೫೯-೧೪।

ದಾರುಸಾರ ದಾರುಸಾರ (ಪುಂ) ಚಂದನ, ಶ್ರೀಗಂಧ.

ದಾರುಸಿತಾ ದಾರುಸಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಾಲ್ಪಿನ್ನಿ.

ದಾರುಸ್ತ್ರೀ ದಾರುಸ್ತ್ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಾಲಭಂಜಕೆ, ಮರದ ಬೊಂಬೆ.

ದಾರುಹರಿದ್ರಾ ದಾರುಹರಿದ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರದರಿತಿನ. ದಾರುಮಯಿ ಹರಿದ್ರಾ।

ದಾರುಹಸ್ತಕ ದಾರುಹಸ್ತಕ (ಪುಂ) ಮರದ ಸವಟು, ಮರದ ಸಟ್ಟುಗ. ದಾರುಹಸ್ತ ಇವ ಪ್ರತಿಕೃತಿಃ "ಕನ್" (೫-೩-೯೬)।

ದಾರ್ಢಸತ್ರ ದಾರ್ಢಸತ್ರ (ವಿಂ) ದೀರ್ಘಕಾಲದ ಯಾಗದಲ್ಲಿರುವ. ದೀರ್ಢಸತ್ರೇ ಭವಃ "ಅಞ್" (೪-೩-೫೩)। ಅದೇರವಃ ಆತ್ (೭-೩-೧)।



ದಾಢ್ಯ ದಾಢ್ಯ (ನಂ) 1. ದೃಢವಾಗಿರುವುದು. ಗಟ್ಟಿ ಯಾಗಿರುವುದು. 2. ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವುದು. 3. ಬಲದಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು. ದೃಢಸ್ಯ ಭಾವ: "ಘ್" (೪-೧-೧೨೪) । "ಉತ್ಸಾಹೋ ವಾಗ್ಮಿತಾ ದಾಢ್ಯಮಾಪತ್ಯಲೇಶಸಹಿಷ್ಣುತಾ" ಕಾಮಂದಂ ।

ದಾತೇಯ ದಾತೇಯ (ವಿಂ) ಚರ್ಮದ ಚೀಲದಲ್ಲಿರುವ. ದತೌ ಭವಮ್ "ಢ್" (೪-೩-೪೬) ।

ದಾದುರ ದಾದುರ (ಪುಂ) 1. ದಕ್ಷಿಣಾವರ್ತ ಶಂಖ, ಬಲಗಡೆ ವದನವುಳ್ಳ ಶಂಖ. ದಾದುರ: ತದಾಕಾರೋಸ್ತಸ್ಯ "ಞ:" (೪-೨-೧೦೧) । (ವಿಂ) 2. ದಾದುರಸಂಬಂಧವಾದ, ಕಪ್ಪೆಯಸಂಬಂಧವಾದ. ದಾದುರಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) । 3. ಮೇಘಸಂಬಂಧವಾದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಘ್" (೪-೧-೧೪) । -ರೀ-೦೬.

ದಾದುರಿಕ ದಾದುರಿಕ (ವಿಂ) ಕುಲಾಲ, ಕುಂಬಾರ. ದಾದುರಂ ಕರೋತಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೩೪) ।

ದಾರ್ಭ ದಾರ್ಭ (ವಿಂ) ದರ್ಭೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ದರ್ಮಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) ।

ದಾರ್ವಟ ದಾರ್ವಟ (ನಂ) ಮಂತ್ರಾಲೋಚನೆಯ ಗೃಹ. ದಾರ್ವ ಇವ ನಿಶ್ಚಲತಯಾ ಅಂತನ್ಯತ್ರ - ಅಟ (ಗತೌ) ಧರ್ಮ "ಕ:" (ವಾಂ ೩-೩-೪೮) ।

ದಾರ್ವಂಡ ದಾರ್ವಂಡ (ಪುಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು.

ದಾರ್ವಾಘಾಟ ದಾರ್ವಾಘಾಟ (ಪುಂ) ಮರಕುಟಕ ಹಕ್ಕಿ. ದಾರ್ವಾ ಆಹಂತಿ - ಆ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತೃಯೋ:) "ಅಞ್" ಅನ್ತಸ್ಯ ಚ "ಠ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೯) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಙೀಘ್" (೪-೧-೬೩) । ದಾರ್ವಾಘಾಟಿ ದಾರ್ವಾಘಾಟಿ.

ದಾರ್ವಿಕಾ ದಾರ್ವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಸಾಂಜನ, ಮರದರಿಶಿನ ವನ್ನು ಕುದಿಯಿಸಿ ಮಾಡಿದ ಒಂದು ಅಂಜನ. ದಾರ್ವಿ ದಾರ್ವಹರಿದ್ರಾ - ತದ್ವಿಕಾರೋಽಪಿ ದಾರ್ವಿ ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಕನ್" (೪-೪-೪) ।

ದಾರ್ವಿ ದಾರ್ವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರದರಿಶಿನ. ದೀಯತೇ - ದ್ (ವಿದಾರಣೇ) "ಋಞ್" (೩ಂ ೧-೩) । "ಙೀಘ್" (೪-೧-೪೪) ।

ದಾರ್ಶ ದಾರ್ಶ (ಪುಂ) 1. ದರ್ಶಯಾಗ, ಅಮಾವಾಸ್ಯೆಯ ದಿನದ ಯಾಗ. "ದಾರ್ಶಮಸ್ಕಂದಯನ್ ಪರ್ವ ಪೌರ್ಣಮಾಸಂ ಚ ಯೋಗತ:" ಮನುಂ ೬-೯ । (ವಿಂ) 2. ದರ್ಶದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ಅಮಾವಾಸ್ಯೆಯ ದಿನ ಉಂಟಾದ. ದರ್ಶಂ ಭವಮ್ "ಅಞ್" । 3. ಕಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ದೃಶಿ ಭವಮ್ "ಅಞ್" ।

ದಾರ್ಶನಿಕ ದಾರ್ಶನಿಕ (ಪುಂ) ದರ್ಶನಗಳ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ, ತತ್ತ್ವಗಳನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದಿರುವ.

ದಾರ್ಪದ ದಾರ್ಪದ (ವಿಂ) ಕಲ್ಲಿನಲ್ಲಿ ಅರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ದೃಢದಿ ಪಿಷ್ಠ: - ದೃಢ್ "ಅಞ್" (೪-೨-೯೨) । ದಾರ್ಪದಾ: ಸಕ್ತವ: ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ದಾರ್ಶನಿಕ ದಾರ್ಶನಿಕ (ವಿಂ) ದೃಷ್ಟಾಂತದೊಡನೆ ಕೂಡಿದ, ದೃಷ್ಟಾಂತದಿಂದ ವಿವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ದಾಲ ದಾಲ (ನಂ) ಮಕರಂದ, ಪುಷ್ಪಪರಾಗ.

ದಾಲನ ದಾಲನ (ಪುಂ) ವಾತದೋಷದಿಂದ ಉಂಟಾದ ಹಲ್ಲಿನ ಸೆಳೆತ, ಒಂದು ವಿಧ ದಂತರೋಗ. ದಾಲಯತಿ - ದಲ (ವಿಶರಣೇ) + ಣಿच् "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) । "ದಾಲಯಂತೇ ಬಹುಧಾ ದಂತಾ ಯಸ್ಮಿನ್ಸ್ತೀವ್ರಗನ್ವಿತಾ: । ದಾಲನ: ಸ ಹಿ ವಿಜ್ಞೇಯ: ಸದಾಗತಿನಿಮಿತ್ತಜ:" ।

ದಾಲಿಮ ದಾಲಿಮ (ಪುಂ) ದಾಳಂಬೆ ಗಿಡ.

ದಾಲಿಮನ್ ದಾಲಿಮನ್ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ.

ದಾವ ದಾವ (ಪುಂ) 1. ಅರಣ್ಯ, ಕಾಡು. ದುನೋತಿ - ದ್ ದ್ವ (ಉಪತಾಪೇ) "ಞ:" (೩-೧-೧೪೨) । "ಲತಾಪ್ರತಾನೋ- ದ್ಗ್ರಾಶಿತ: ಸ ಕೇಶೇರಧಿಜ್ಯಧನ್ವಾ ವಿಚಾರ ದಾವಮ್" ರಘುಂ ೨-೮ । 2. ಕಾಡುಕಿಚ್ಚು, ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ ಬೆಂಕಿ. "ದಾವದಗ್ಧಸ್ಥಳೀಮಸೀಮಿಲನಮಲಿನಾ:" ಹರ್ಷಚಂ ।

ದಾವಾಗ್ನಿ ದಾವಾಗ್ನಿ (ಪುಂ) ಕಾಡುಕಿಚ್ಚು, ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ ಬೆಂಕಿ. ದಾವಸ್ಯ ಅಗ್ನಿ: ।

ದಾವಿಕಾ ದಾವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವಿಕಾ ನದಿಯಲ್ಲಿರುವ, ದೇವಿಕಾನದಿಯಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ದೇವಿಕಾयां ಭವಮ್-ದೇವಿಕಾ "ಅಞ್" (೪-೩-೪೩) । ಆದೇಶ: ಆತ್ (೭-೩-೧) ।

ದಾವಿಕಾಕೂಲ ದಾವಿಕಾಕೂಲ (ವಿಂ) ದೇವಿಕಾ ನದಿಯ ತೀರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ದೇವಿಕಾನದಿಯ ತೀರದಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದ. ದೇವಿಕಾಕೂಲೇ ಭವಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೪೩) । ಆದೇಶ: ಆತ್ (೭-೩-೧) ।

ದಾಶ ದಾಶ (ಪುಂ) 1. ಬೆಸ್ತರಜಾತಿಯವನು, ಮೀನು ಹಿಡಿಯುವವನು, ಮೊಗೆಯವನು. ದಶತಿ ಮತ್ಸ್ಯಾನ್-ದಶ (ದಶನೇ) "ಠ:" ಧಾತೋರ್ನೇಕಾರಸ್ಯಾಕಾರಶ್ಚ (೩ಂ ೪-೧೧) । ದಾಶಯತೇ ಮೂಲಮಸ್ಮೈ-ದಾಶ್ (ದಾನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಘಞ್" (೩-೩-೧೯) ವಾ । ಇವನು ಅಂಬಿಗ (ದೋಣಿಯನ್ನು ನಡೆಸುವವನು.) "ಏಷ ನೌಯಾಪಿನಾಮುಕ್ತೋ ವ್ಯವಹಾರಸ್ಯ ನಿರ್ಣಯ: । ದಾಶಾಪರಾಧತಸ್ತೋ ದೇವಿಕೇ ನಾಸ್ತಿ ನಿಗ್ರಹ:" ಮನುಂ ೮-೪೦೯ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಙೀಘ್" (೪-೧-೬೩) । -ಶೀ-೦೬. 2. ಭೃತ್ಯ, ಸೇವಕ, ಅಳು. ದಾಶಯತೇ ಭೃತಿರಸ್ಮೈ । 3. ದಾನ.

ದಾಶಕನ್ಯಾ ದಾಶಕನ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬೆಸ್ತನ ಮಗಳು. 2. ಸತ್ಯವತಿ, ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯ ತಾಯಿ,



ದಾಸಗ್ರಾಮ ದಾಶಗ್ರಾಮ (ಪುಂ) ಬೆಸ್ತರ ಹಳ್ಳಿ. ದಾಸಗ್ರಾಮನೊ  
ಗ್ರಾಮ: ।

ದಾಸಪುರ ದಾಶಪುರ (ನಂ) ತುಂಗಮುಖ್ಯ, ಕೊನ್ನಾರಿಯ  
ಭೇದ. ದಾಸಾನ್ ಕೆವರ್ತನ್ ಪಿಪರ್ತಿ ಪಾಲಯತಿ-ಪ (ಪಾಲನ-  
ಪೂರ್ಣಯೋ:) "ಕ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪) ।

ದಾಸರಥ ದಾಶರಥ (ಪುಂ) 1. ದಾಶರಥನ ಮಗ. ದಾಸರಥ-  
ಸ್ಯಾಯಮ್-"ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) । "ಪ್ರದೀಯತಾಂ ದಾಸರಥಾಯ  
ಮೇಥಿಲಿ" ಹನುಂ ನಾಂ । (ವಿಂ) 2. ದಾಶರಥಿಯ  
(ಶ್ರೀರಾಮನ) ಸಂಬಂಧವಾದ. ದಾಸರಥೇರಿದಮ್ "ಅನ್"  
(೪-೩-೧೨೦) । "ಅಜೀಗಣದಾಸರಥಂ ನ ವಾಕ್ಯಂ ಯದಾ ಸ  
ದರ್ಪಣ ತದಾ ಕುಮಾರ:" ಭಟಿಂ ೨-೪೩ ।

ದಾಸರಥಿ ದಾಶರಥಿ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀರಾಮ. 2. ದಾಶರಥನ  
ಮಗ. ದಾಸರಥಸ್ಯಾಯಮ್ "ಇನ್" (೪-೧-೯೪) । "ಸೋಹಂ  
ದಾಸರಥಿಭೂತ್ವಾ ರಣಭೂಮೇಬಲಿಕ್ಷಮಮ್" ರಘುಂ ೧೦-೪೪ ।  
[ಶ್ರೀರಾಮ ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಭರತ ಶತ್ರುಘ್ನ ಎಲ್ಲರೂ ದಾಶರಥಿ  
ಗಳು.]

ದಾಸರಾತ್ರಿಕ ದಾಶರಾತ್ರಿಕ (ವಿಂ) ಹತ್ತು ರಾತ್ರಿಗಳಲ್ಲಿ  
ಮಾಡಬಹುದಾದ (ಯಾಗ). ದಾಸರಾತ್ರೇಣ ನಿವೃತ್ತ: "ಠ್" (೪-೧-೮೭) ।

ದಾಸಾರ್ಹ ದಾಶಾರ್ಹ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ದಾಸಂ ಭಕ್ತಕರ್ತೃಕ  
ಸ್ವಸಂಪ್ರದಾನಕಸ್ವಾತ್ಮನಿವೇದನರೂಪಂ ದಾನಮ್ ಅರ್ಹತಿ, ದಾಸಾನ್ತಿ  
ಯಸ್ಮೈ ಭಕ್ತಾಃ ಸ್ವಾತ್ಮನಃ ಕರ್ಮ, ಸಚಾಸಾರ್ಹ: ಪೂಜ್ಯಶ್ಚ ಇತಿ  
ವಾ, ಕೃಷ್ಣತ್ವೇ ದಾಸಾರ್ಹಪ್ರಾಪ್ತಿಯಮಿತಿ ವಾ । "ಆತ್ಮನೋ ವಾರ್ಪಣಂ  
ಭಕ್ತೈಃ ತೇಭ್ಯೋ ವಾ ಸ್ವಾತ್ಮನೋರ್ಜ್ಞಮ್ । ದಾಸಸ್ತಮರ್ಹತಿ ಚ ಯಃ  
ದಾಸಾರ್ಹ: ಸ ತು ಕೀರ್ತಿತ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । "ವಿನಯೋ  
ಜಯಃ ಸತ್ಯಸಂಧೋ ದಾಸಾರ್ಹ: ಸಾತ್ವತಾಂ ಪತಿ:" ವಿಂ ಸಂ ।  
(ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ಯಾದವರು. "ಉಪಕುಂಭಂತು ದಾಸಾರ್ಹಾಃ  
ಪುರೀ ಮಾಹಿಷಮತೀ ದ್ವಿಷ:" ಮಾಘಂ ೨-೬೪ ।

ದಾಸೇಯ ದಾಶೇಯ (ಪುಂ) ಬೆಸ್ತರವಳ ಮಗ. ದಾಸೇಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್  
"ಢಕ್" (೪-೧-೧೨೧) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) ।  
-ಯಿ -ಯಾ.

ದಾಸೇರ ದಾಶೇರ (ಪುಂ) ಬೆಸ್ತರವಳ ಮಗ. ದಾಸೇರಾ ಅಪತ್ಯಮ್  
"ಢಕ್" (೪-೧-೧೩೧) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡಾಪ್" (೪-೧-೪) ।  
-ರಾ -ರಾ.

ದಾಸೇರಕ ದಾಶೇರಕ (ಪುಂ) 1. ಮಾಲವದೇಶ, ಬೆಸ್ತರು  
ಅಧಿಕವಾಗಿರುವ ದೇಶ, ಬೆಸ್ತರೇ ಪ್ರಧಾನವಾಗಿರುವ ದೇಶ.  
(ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ಆ ದೇಶದ ದೊರೆಗಳು. 3. ಆ ದೇಶದ  
ಜನರು.

ದಾಸವಸ್ ದಾಶವಸ್ (ವಿಂ) ಕೊಡುವವನು, ದಾನಮಾಡು  
ವವನು. ದಾಸು (ದಾನೇ) "ವಸು:" (೬-೧-೧೨) । "ತಸ್ಯ  
ಮುನಿರ್ದೋಹದಲಿಂಗದರ್ಶಿ ದಾಸಾನ್ ಸುಪುತ್ರಾಶಿಷಮಿತ್ಯುವಾಚ"  
ರಘುಂ ೧೪-೭೧ ।

ದಾಸು -ದಾನೇ (ಸ್ವಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ದಾಸತಿ, -ತೇ ।  
ಅದಾಸೀತ್, ಅದಾಸಿಷ್ಠ । ಇತ್ಯಾದಿ. ಕೊಡು, ದಾನಮಾಡು.

ದಾಸ ದಾಸ (ಪುಂ) 1. ಸೇವಕ, ಆಳು. ದಾಸ್ಯತೇ -ದಾಸು  
(ದಾನೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೯) । ದಾಸಿ (ಭಾಷಾರ್ಥಿ)  
"ಠ:" (೩ಂ ೪-೧೦) । ಧಾತೋರ್ನಕಾರಸ್ಯ ಆಕಾರಶ್ಚ ಇತಿ  
ವಾ । "ಅಥ ಪ್ರಭೃತ್ಯವನತಾಜ್ಞಿ ತವಾಸ್ಮಿ ದಾಸ:" ಕುಮಾಂ  
೪-೮೬ । 2. ಶೂದ್ರ, ಸಾಲ್ಯನೆಯ ವರ್ಣದವನು.  
3. ಬೆಸ್ತರವನು. 4. ದಾನಪಾತ್ರ, ದಾನಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ  
ವನು, ದಾನತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಯೋಗ್ಯನಾದವನು. "ದಾಸಃ  
ಶೂದ್ರೇ ದಾನಪಾತ್ರೇ ಭೃತ್ಯಧೀವರಯೋರಪಿ" ವಿಶ್ವಂ । 5. ವೃತ್ತಾ  
ಸುರ. 6. ಪುರಿಯವರ್ಣದವನ ಹೆಸರಿಗೆ ಸೇರಿಸುವ ಪದ.  
"ಶರ್ಮಂತಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ಸ್ಯಾತ್ ವರ್ಮಂತಿ ಕ್ಷತ್ರಿಯಸ್ಯ ಚ । ಗುಪ್ತ-  
ದಾಸಾಂತಕಂ ನಾಮ ಪ್ರಶಸ್ತಂ ವೈಶ್ಯಶೂದ್ರಯೋ:" । 7. ಅತ್ಯುಚ್ಛ್ರಾನ್  
ವುಳ್ಳವನು. 8. ಅಶಿಕ್ಷಿತ, ಕಾಡುಮನುಷ್ಯ, ಕಿರಾತ. "ದಾಸೋ  
ಭೃತ್ಯೇ ಚ ಶೂದ್ರೇ ಚ ಜ್ಞಾತಾತ್ಮನಿ ಚ ಧೀವರೇ" ಮೇದಿಂ ।

ದಾಸಜನ ದಾಸಜನ (ಪುಂ) ಸೇವಕ, ಆಳು.

ದಾಸಜೀವನ ದಾಸಜೀವನ (ನಂ) 1. ಸೇವಕನ ಜೀವನ,  
ಸೇವಕನ ಬಾಳು. (ವಿಂ) 2. ಸೇವಕನಂತೆ ಜೀವನವುಳ್ಳ.  
ದಾಸಸ್ಯೇವ ಜೀವನಂ ಯಸ್ಯ ।

ದಾಸಭಾವ ದಾಸಭಾವ (ಪುಂ) ದಾಸ್ಯ, ಅಡಿಯಾಳಾಗಿರು  
ವುದು, ಪರರಿಗೆ ಅಧೀನವಾಗಿರುವುದು.

ದಾಸಮೀಯ ದಾಸಮೀಯ (ಪುಂ) ಮನೆಯಲ್ಲಿರುವ ಶೂದ್ರ  
ನನ್ನು ಕಾಮಿಸುವ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಗ. ದಾಸಂ  
ಶೂದ್ರಂ ಮಿಮೀತೇ ಮಾನಯತಿ ಮೇಥುನಾಥಿನಿ ಸಾ ದಾಸಮೀ, ದಾಸಮ್ಯಾ  
ಅಯಮ್ "ಠ:" (೪-೨-೧೧೪) । "ವ್ರಾತಿಯಾಂ ದಾಸಮೀ-  
ಯಾಂ ವಾಹೀಕಾನಾಮಯಜ್ವನಾಮ್" ಭಾಂ ಕರ್ಣಂ ೪೪-೨೦ ।

ದಾಸೀ ದಾಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೇವಕಿ, ಪರಿಚಾರಿಕೆ. 2. ಶೂದ್ರನ  
ಪತ್ನಿ. 3. ಸೇವಕನ ಪತ್ನಿ. 4. ಬೆಸ್ತರವನ ಹೆಂಡತಿ.  
5. ನೀಲಿ ಗೋರಂಟಿ, ಕರಿ ಗೋರಂಟಿ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:" ।  
-ಸಿಕಾ -ಸಿಕಾ.

ದಾಸೀಜನ ದಾಸೀಜನ (ಪುಂ) ಸ್ತ್ರೀಸೇವಕಿ, ಹೆಣ್ಣುಳು.

ದಾಸೀತ್ವಮ್ ದಾಸೀತ್ವಮ್ (ನಂ) ದಾಸೀಭಾವ, ಸೇವಕಿ  
ಯಾಗಿರುವುದು. ದಾಸ್ಯಾ ಭಾವಃ ಕರ್ಮ ವಾ "ತ್ವ:"  
(೪-೧-೧೧೯) ।



ದಾಸಿಮಾಣವಕ ದಾಸೀಮಾಣವಕ (ಪುಂ) ಸೇವಕ ಮತ್ತು ಬಾಲಕರು.

ದಾಸೀಯ ದಾಸೀಯ (ಪುಂ) ದಾಸಿಯ ಮಗ. ದಾಸ್ಯಾ ಅಪत्यಮ್ "ಡಕ್" (೪-೧-೧೨೧)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಯಿ -ಯಾ.

ದಾಸೀರ ದಾಸೀರ (ಪುಂ) 1. ದಾಸಿಯ ಮಗ, ಪರಿಚಾರಕಿಯ ಮಗ. ದಾಸ್ಯಾ ಅಪत्यಮ್ "ಡಕ್" (೪-೧-೧೨೧)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪)। -ರಾ -ರಾ. 2. ಉಷ್ಣ, ಒಂಟಿ. ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। -ರೀ -ರೀ. "ದಾಸೀರೋ ದಾಸಿಕಾಪತ್ಯೇ ತ್ರಿಪು ಪುಸಿ ಕ್ರಮೇಲಕೇ" ಮೇದಿಂ. "ದಾಸ್ಯಂ ಹಿ ಸದ್ವ: ಫಲದಂ ಯದಗ್ರತ: ಚಕ್ಷಾದ ದಾಸೀರಯುವಾ ವನಾವಲಿ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೩೨। ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕ:"। -ರಕ:-ರಕಃ. "ದಾಸೀರಕ: ಸಪದಿ ಸಂವಲಿತಂ ನಿಷಾದೇವಿಪ್ರಂ ಪುರಾ ಪತಗರಾಡಿದಿ ನಿಜಂಗಾಮ" ಮಾಘಂ ೫-೬೬।

ದಾಸ್ಯ ದಾಸ್ಯ (ನಂ) 1. ದಾಸತ್ವ, ಅಡಿಯಾಳಾಗಿರುವುದು "ಯಾ ದಾಸ್ಯಮಪ್ಯಸ್ಯ ಲಭೇತ ನಾರೀ ಸಾ ಸ್ಯಾತ್ ಕೃತಾರ್ಥಾ ಕಿಮುತಾಕ್ಷಯ್ಯಾಮ್" ಕುಮಾರಂ ೭-೬೫। 2. ಸೇವೆ, ಬಾಕರಿ. ದಾಸಸ್ಯ ಮಾವ: ಕರ್ಮ ವಾ "ಛಜ್" (೫-೧-೧೨೪)। "ಪತಿಕುಲೇ ತವ ದಾಸ್ಯಮಪಿ ಕ್ಷಮಮ್" ಶಾಕುಂ ೫-೨೭।

ದಾಸ್ಯ ದಾಸ್ಯ (ನಂ) ಅಶ್ವಿನೀನಕ್ಷತ್ರ. ದತ್ತೌ ದೇವತೇ ಅಸ್ಯ "ಅಜ್" (೪-೨-೨೪)।

ದಾಹ ದಾಹ (ಪುಂ) 1. ಸುಡುವುದು, ಭಸ್ಮವಾಗಿಮಾಡುವುದು. ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) "ಛಜ್" (೩-೩-೧೮)। "ಮಹುರನುಸ್ಮರಯಂತಮನುಷ್ಯಂ ತ್ರಿಪುರದಾಹಮುಮಾಪತಿಸೇವಿನ:" ಕಿರಾಂ ೫-೧೪। "ಛೇದೋ ದಂಶಸ್ಯ ದಾಹೋ ವಾ ಕ್ಷತೇರ್ವಾ ರಕ್ತ-ಮೋಕ್ಷಣಮ್" ಮಾಲಂ ೪-೪। 2. ದೇಹದೊಳಗೆ ಉಂಟಾಗುವ ಸಂತಾಪ. 3. ಉರಿತ.

ದಾಹಕ ದಾಹಕ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ದಹತಿ - ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) ಕರ್ಮಂ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಚಿತ್ರ ಮೂಲದ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 3. ದಹಿಸುವ. ಸುಡುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪)। -ಹಿಕಾ -ಹಿಕಾ.

ದಾಹಣ ದಾಹಣ (ನಂ) ಮೈಯೊಳಗಿನ ಉರಿತವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ ಔಷಧ. ದಾಹಂ ಹಂತಿ-ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯಾ:) "ಡಕ್" (೩-೨-೫೩)।

ದಾಹಜ್ವರ ದಾಹಜ್ವರ (ಪುಂ) ಮೈಯಲ್ಲಿ ಉರಿತವುಂಟು ಮಾಡುವ ಜ್ವರದ ಒಂದು ಭೇದ. ದಾಹಪ್ರಧಾನೋ ಜ್ವರ:।

ದಾಹನ ದಾಹನ (ನಂ) ಸುಡಿಸುವುದು, ಸುಡುವಂತೆಮಾಡುವುದು. ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ದಾಹನೀಯ ದಾಹನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸುಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ದಹಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಸುಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಸುಡಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। "ತವ್ಯ:"। -ಯಿತವ್ಯ: -ಯಿತವ್ಯ:.

ದಾಹಯತ್ ದಾಹಯತ್ (ವಿಂ) ಸುಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) + ಣಿಚ್ "ಶತೃ" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ-ಯಂತಿ.

ದಾಹಯಮಾನ ದಾಹಯಮಾನ (ವಿಂ) ಸುಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) + ಣಿಚ್ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)।

ದಾಹಹರಣ ದಾಹಹರಣ (ನಂ) 1. ಲಾಮಂಚದ ಬೇರು. ದಾಹೋ ಹ್ರಿಯತೇಜೇನ-ಹ್ರವ್ (ಹರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। (ವಿಂ) 2. ಉರಿತವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. ದಾಹಂ ಹರತಿ-ಹ್ರವ್ (ಹರಣ) ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)।

ದಾಹಿತ ದಾಹಿತ (ನಂ) 1. ಸುಡುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಸುಡುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ದಹ + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೦೨)।

ದಾಹಿತವತ್ ದಾಹಿತವತ್ (ವಿಂ) ಸುಡುವಂತೆಮಾಡಿದವನು. ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ವತೀ -ವತೀ.

ದಾಹಿನ್ ದಾಹಿನ್ (ವಿಂ) ಸುಡುವ, ದಹಿಸುವ. ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)।

ದಾಹ್ಯ ದಾಹ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸುಡಲ್ಪಡುವ, ದಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ದಹಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. "ಅಂಶೋಷ್ಯಮದಾಹ್ಯೋಷ್ಯಮಕಲೋಷೋಷ್ಯ ಎವ ಚ" ಗೀತಾ ೨-೨೪। 3. ದಹಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 4. ದಹಿಸಬೇಕಾದ. ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) ಕರ್ಮಾದಿ "ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)। "ದಾಹ್ಯಾಭಾವಾನ್ ಛೇದಾತ್ ಜ್ವಲನ ಇವ ವನೇ ಶಾಖ್ಯತಿ ಕ್ರೋಧವಹ್ನಿ:" ಮುद्रಾಂ ೧-೧೧।

ದಿವ್ಯಕನ್ಯಾ ದಿವ್ಯಕನ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಿಕ್ಕುಗಳೆಂಬ ಕನ್ಯೆಯರು, ಬ್ರಹ್ಮನ ಕನ್ಯೆಯರು. ದಿವ್ಯ ಎವ ಕನ್ಯಾ:। [ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಯ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಚತುರ್ಮುಖಬ್ರಹ್ಮನ ಕಿವಿಗಳಿಂದ ಹತ್ತು ಮಂದಿ ಕನ್ಯೆಯರು ಜನಿಸಿದರು. ಇವರೆಲ್ಲರೂ ತಮಗೆ ಇರಲು ಅವಕಾಶವನ್ನೂ ತಮಗೆ ಪತಿಗಳನ್ನೂ ಕೇಳಲು ಇಂದ್ರ ಅಗ್ನಿ ಯಮ ನಿರ್ಮತಿ ವರುಣ ವಾಯು ಕುಬೇರ ಮತ್ತು ಈಶಾನರೆಂಬ ಎಂಟು ಮಂದಿ ಲೋಕಪಾಲಕರನ್ನೂ ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ಅವರಿಗೆ ಎಂಟು ಮಂದಿ ಕನ್ಯೆಯರನ್ನೂ ಕೊಟ್ಟು ವಿವಾಹಮಾಡಿ ಊರ್ಧ್ವದಲ್ಲಿ ತಾನಿದ್ದು



ಕೊಂಡು ಅಧೋಲೋಕಕ್ಕೆ ಆದಿಶೇಷನನ್ನು ಪಡೆಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿ ತನ್ನ ಹತ್ತು ಮಂದಿ ಕನ್ಯೆಯರಿಗೂ ಹತ್ತು ದಿಕ್ಕುಗಳ ಹೆಸರನ್ನೂ ಕೊಟ್ಟನು.] ವರಾಹಪುಂ.

ದಿವಕರ ದಿಕ್ಕುರ (ಪುಂ) 1. ತರುಣ, ಪ್ರಾಯದವನು. ದಿಶಂ ಸ್ತ್ರೀಮುಖದಂಶನಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಃ" (3-2-20). 2. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.

ದಿವಕರಿಕಾ ದಿಕ್ಕುರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ನದಿ. "ಅಸ್ತಿ ನಾಡಕಶೇಲೇ ತು ಸರೋ ಮಾನಸಸನ್ನಿಭಮ್ | ತಸ್ಯ ಪಶ್ಚಿಮಭಾಗೇ ತು ನದೀ ದಿವಕರಿಕಾಹ್ವಯಾ" ಕಾಲಿಕಾಪುಂ. 2. ಯುವತಿ, ಪ್ರಾಯದ ಹೆಂಗಸು. ದಿಕ್ ದಂತದಂಶನಂ ಕರಿಕಾ ನಕ್ಷತ್ರ-ರೇಖಾ ಚ ಯಸ್ಯಾಃ | "ಸತತಮಸುಮತಾಮಗ್ಮ್ಯರೂಪಾಃ ಪರಿಣತ-ದಿವಕರಿಕಾಸ್ತದೀವಿಭತಿ" ಮಾಘಂ 4-29. "ದಿಗ್ವಿಷ್ಣು ವರ್ತುಲಾಕಾರೇ ಕರಿಕಾ ನಕ್ಷರೇಖಿಕಾ" ವೈಜಂ. (ವಿಂ) 3. (ಬಹುವ್ರೀಹಿಸಮಾಸಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ) ದಿಗ್ಗಜಗಳುಳ್ಳ, ದಿಗ್ಗಜಗಳಿರುವ. "ಪರಿಣತದಿವಕರಿಕಾಸ್ತದೀವಿಭತಿ" ಮಾಘಂ 4-29. ಪರಿಣತಾಃ ತಿರಿಯದಂತಪ್ರಹಾರಿಣಿ ದಿವಕರಿಣಿ ಯಾಸು ತಾಃ "ಕಪ್" (4-4-142).

ದಿವಕರಿನ್ ದಿಕ್ಕುರಿನ್ (ಪುಂ) ದಿಗ್ಗಜ, ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿರುವ ಆನೆಗಳು, ಐರಾವತ ಮೊದಲಾದ ದಿಗ್ಗಜಗಳು. ದಿಕ್ಷು ಸ್ಥಿತಾಃ ಕರಿಣಃ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕರಿಣಿ -ಕರಿಣೀ. ದಿಗ್ಗಜಗಳ ಪತ್ನಿಯರು. "ದಿಗ್ಗಜ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ದಿವಕರೀ ದಿಕ್ಕುರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯುವತಿ, ತರುಣಿ, ಪ್ರಾಯದ ಹೆಂಗಸು. ದಿವಕರಸ್ಯ ಯುನಃ ಸ್ತ್ರೀ "ಡೀಪ್" (ವಾಂ 4-1-20).

ದಿವಕಾಮಿನಿ ದಿಕ್ಕಾಮಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ದಿವಕನ್ಯಾ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ದಿವಕುಂಜರ ದಿಕ್ಕುಂಜರ (ಪುಂ) ದಿಗ್ಗಜ.

ದಿಕ್ಚಕ್ರ ದಿಕ್ಕುಕ್ತು (ನಂ) ದಿಜ್ಞಮಂಡಲ, ದಿಕ್ಕುಗಳ ಪರಿಧಿ. ದಿಶಾಂ ಚಕ್ರಮ್ | "ವ್ಯಾಕೃಷ್ಯಾವಸ್ಥಿತೋಸ್ತಕ್ಷಿತಿಭೃತಿ ನಯತೀವಿಷ ದಿಕ್ಚಕ್ರಮರ್ಕಃ" ರತ್ನಾಂ 3-4.

ದಿಕ್ಚಕ್ರವಾಲ ದಿಕ್ಚಕ್ರವಾಲ (ನಂ) ದಿಜ್ಞಮಂಡಲ, ವರ್ತುಲಾಕಾರದ ದಿಕ್ಕುಗಳ ಸಮೂಹ. ದಿಶಾಂ ಚಕ್ರವಾಲಮ್ | "ಖಲಲ್ಲೋಲಮ್ಬಕೋಲಾಹಲಮುಖರಿದಿಕ್ಚಕ್ರವಾಲಾಂತರಾಲಮ್" ಚಂ ಭಾಂ.

ದಿಕ್ಪತಿ ದಿಕ್ಕುತಿ (ಪುಂ) 1. ದಿಕ್ಕುಗಳ ಪತಿಗಳು, ಇಂದ್ರ, ಅಗ್ನಿ, ಯಮ ನಿರ್ಮತಿ ಮೊದಲಾದವರು. ಬ್ರಹ್ಮನು ಇಂದ್ರಾದಿ ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ತನ್ನ ಹತ್ತು ಮಂದಿ ಕನ್ಯೆಯರನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಮದುವೆ ಮಾಡಿದ್ದರಿಂದ ಇವರು ದಿಕ್ಪತಿಗಳಾದರು. "ಏಕಾಮಿन्द्रಾಯ ಚ ಪ್ರಾದಾದಗ್ನಯೇಜ್ಯಾಂ ಯಮಾಯ ಚ |

ನಿಷ್ಕೃತಾಯ ಚ ದೇವಾಯ ವರುಣಾಯ ಮಾತಮೇ | ವಾಯವೇ ಧನದೇಶಾಯ ಇಶಾನಾಯ ಚ ಸುಖತಃ | ಋತ್ವೇ ಸ್ವಯಮಧಿಷ್ಠಾಯ ಶೇಷಾಯಾಧೋ ವ್ಯವಸ್ಥಿತಾಮ್ | एवं ದತ್ವಾ ಪುನರ್ಬ್ರಹ್ಮಾ ತಿಥಿಂ ಪ್ರಾದಾದಿಶಾಂ ಪುನಃ | ತತಃ ಪ್ರಭೃತಿ ತಾ ದೇವ್ಯಃ ಸೇಂದ್ರಾಘಾಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾಃ" ವರಾಹಪುಂ. 2. ದಿಗ್ಧಿಃಶ್ವರರಾದ ಸೂರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹಗಳು, ದಿಕ್ಕುಗಳ ಒಡೆಯರು.

| ದಿಕ್ಕು  | ಅಧಿಪತಿ      |
|---------|-------------|
| ಪೂರ್ವ   | .. ರವಿ      |
| ಆಗ್ನೇಯ  | .. ಶುಕ್ರ    |
| ದಕ್ಷಿಣ  | .. ಕುಜ      |
| ನಿರ್ಮತಿ | .. ರಾಹು     |
| ಪಶ್ಚಿಮ  | .. ಶನಿ      |
| ವಾಯು    | .. ಚಂದ್ರ    |
| ಉತ್ತರ   | .. ಬುಧ      |
| ಈಶಾನ್ಯ  | .. ಬೃಹಸ್ಪತಿ |

"ಸೂರ್ಯಸ್ಸಿತೋ ಭೂಮಿಸುತೋಽಥ ರಾಹುಃ ಶನಿಃ ಶಶಿಃ ಚಾಪಿ ಬೃಹಸ್ಪತಿಶ್ಚ | ಪ್ರಾಚ್ಯಾದಿತೋ ದಿಕ್ಷು ವಿವಿಧಕ್ಷು ಚಾಪಿ ದಿಶಾಮ-ಖಿಷಾಃ ಕ್ರಮತಃ ಪ್ರದಿಷ್ಟಾಃ" ಮುಂ ಚಿಂ.

ದಿಕ್ಪಾಲ ದಿಕ್ಕಾಲ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ ಮೊದಲಾದ ಹತ್ತು ಮಂದಿ ಲೋಕಪಾಲಕರು. ದಿಶಾಃ ಪಾಲಯಂತಿ - ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಕ್ "ಅಣ್" (3-2-1) | "ಫ್ವಲ್" (3-1-133) | -ಪಾಲಕಃ -ಪಾಲಕಃ.

| ದಿಕ್ಕು  | ದಿಕ್ಕಾಲಕ   |
|---------|------------|
| ಪೂರ್ವ   | .. ಇಂದ್ರ   |
| ಆಗ್ನೇಯ  | .. ಅಗ್ನಿ   |
| ದಕ್ಷಿಣ  | .. ಯಮ      |
| ನೈರುತ್ಯ | .. ನಿರ್ಮತಿ |
| ಪಶ್ಚಿಮ  | .. ವರುಣ    |
| ವಾಯು    | .. ಮರುತ್   |
| ಉತ್ತರ   | .. ಕುಬೇರ   |
| ಈಶಾನ್ಯ  | .. ಈಶ್ವರ   |
| ಉದ್ಧ್ವ  | .. ಬ್ರಹ್ಮ  |
| ಅಧೋಲೋಕ  | .. ಅನನ್ತ   |

"ಯತ್ರಾರ್ಚಯಂತಿ ವಿಧಿನಾ ದಿಕ್ಪಾಲಾದೀಸ್ತು ಕರ್ಮಿಣಃ | ತತ್ರ ಪ್ರಪೂಜಯೇದನ್ ವಿಧಿಂ ಭಾಗವತಂ ಶುಕ್ರಮ್" ಪದ್ಮಪುಂ.

ದಿಕ್ಶಬ್ದ ದಿಕ್ಶಬ್ದ (ಪುಂ) ದಿಕ್ಕುಗಳ ಹೆಸರನ್ನು ಹೇಳುವ ಪೂರ್ವ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಶಬ್ದಗಳು. ದಿಶಿ ದೃಷ್ಟಃ ಶಬ್ದಃ |



ದಿಗ್‌ದೇವತಾ ದಿಗ್ವೇವತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಿಕ್ಕುಗಳ ಎಲ್ಲೆಗಳಲ್ಲಿ  
 ರುವ ದೇವತೆ, ದಿಕ್ಕುಗಳನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವ ದೇವತೆ. ದಿಶಾ  
 ತನ್ಮರ್ಯಾದಿನಾಂ ದೇವತಾ ।



**ದಿವ್ಯ ದಿಗ್ಗಂ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷಯಯಲ್ಪಟ್ಟ ಬಾಣ. ದಿಹ (ಽಪವೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ತೈಲ, ಎಣ್ಣೆ. 3. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. (ವಿಂ) 4. ಲೇಪನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಥ ತೈ: ಪರಿವೇಶಿತಾಕ್ಷರೇಹೈ ದಯೇ ದಿವ್ಯಶರೀ-ರಿವಾಹತ:" ಕುಮಾಂ ೪-೨೫। 5. ಬೆಳೆದಿರುವ, ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿರುವ. ದಿಹ ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ದಿವ್ಯೋ ವಿಷಪ್ರಲಿಪ್ತೇಷು ಲಿಪ್ತೇ ಸ್ನೇಹಪ್ರವೃದ್ಧಯೋ:" ವೈಜಂ।

**ದಿವ್ಯಲ ದಿಗ್ಗಂ** (ನಂ) ಲಗ್ನ ಮೊದಲಾದ ದ್ವಾದಶ (ಹನ್ನೆರಡು) ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿರುವ ಗ್ರಹಗಳ ಬಲ, ದ್ವಾದಶ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಆಯಾ ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿರುವ ಗ್ರಹಗಳ ಬಲ. ದಿಙ್ನಿಮಿತ್ತಂ ಗ್ರಹಾಣಾಂ ಬಲಮ್। ಗ್ರಹಗಳಿಗೆ ಬಲವಿರುವ ದಿಕ್ಕುಗಳು:

| ಗ್ರಹಗಳು      | ದಿಕ್ಕು    |
|--------------|-----------|
| ಬುಧ, ಗುರು    | .. ಪೂರ್ವ  |
| ರವಿ, ಕುಜ     | .. ದಕ್ಷಿಣ |
| ಶನಿ          | .. ಪಶ್ಚಿಮ |
| ಶುಕ್ರ, ಚಂದ್ರ | .. ಉತ್ತರ  |

ಈ ರೀತಿ ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿ ಗ್ರಹಗಳಿಗೆ ಬಲವಿರುವುದು.

**ದಿವ್ಯಲಿನ್ ದಿಗ್ಗಂ** (ಪುಂ) ಪೂರ್ವ ಮೊದಲಾದ ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿ ಬಲವಿರುವ ಗ್ರಹ. ದಿವ್ಯಲಮಸ್ಯಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿ ಬಲವಿರುವ ಗ್ರಹಗಳು:

| ದಿಕ್ಕು            | ಗ್ರಹ            |
|-------------------|-----------------|
| ಪೂರ್ವ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ | .. ಬುಧ, ಗುರು    |
| ದಕ್ಷಿಣ ..         | .. ರವಿ, ಕುಜ     |
| ಪಶ್ಚಿಮ ..         | .. ಶನಿ          |
| ಉತ್ತರ ..          | .. ಶುಕ್ರ, ಚಂದ್ರ |

"ಪ್ರಾಚ್ಯಾಂ ಸೌಮ್ಯಸುರಾಚಾರ್ಯಾ ಯಾಮ್ಯಾಂ ಭಾಸ್ಕರಭೂಮಿಜೌ। ಪ್ರತ್ಯಕ್ ಸೌರೀರುದ್ರಾಚ್ಯಾಂ ತು ಸಿತೇನ್ದ್ರ ದಿವ್ಯಲಾನ್ವಿತೌ"।

**ದಿವ್ಯಭಾಗ ದಿಗ್ಗಂ** (ಪುಂ) ದಿಕ್ಕಿನ ಪ್ರದೇಶ. ದಿಶೋ ಭಾಗ:। "ಕೌಬೇರದಿವ್ಯಭಾಗಮಪಾಸ್ಯ ಮಾರ್ಗಮಾಗಸ್ಯಮುಣಾಂಶುರಿವಾವತೀರ್ಣ:" ಮಾಘಂ ೩-೧।

**ದಿವ್ಯದನ ದಿಗ್ಗಂ** (ನಂ) ಪೂರ್ವ ಮೊದಲಾದ ದಿಕ್ಕುಗಳಿಗೆ ಅಭಿಮುಖವಾಗಿರುವ ರಾಶಿ. ದಿಶಿ ವದನಂ ಯಸ್ಯ।

| ರಾಶಿ    | ಅಭಿಮುಖದಿಕ್ಕು |
|---------|--------------|
| ಮೇಷ     | .. ಪೂರ್ವ     |
| ವೃಷಭ    | .. ದಕ್ಷಿಣ    |
| ಮಿಥುನ   | .. ಪಶ್ಚಿಮ    |
| ಕರ್ಕಾಟಕ | .. ಉತ್ತರ     |

| ರಾಶಿ    | ಅಭಿಮುಖದಿಕ್ಕು |
|---------|--------------|
| ಸಿಂಹ    | .. ಪೂರ್ವ     |
| ಕನ್ಯಾ   | .. ದಕ್ಷಿಣ    |
| ತುಲಾ    | .. ಪಶ್ಚಿಮ    |
| ವೃಶ್ಚಿಕ | .. ಉತ್ತರ     |
| ಧನುಸ್ಸು | .. ಪೂರ್ವ     |
| ಮಕರ     | .. ದಕ್ಷಿಣ    |
| ಕುಂಭ    | .. ಪಶ್ಚಿಮ    |
| ಮೀನ     | .. ಉತ್ತರ     |

**ದಿವ್ಯಲಯ ದಿಗ್ಗಂ** (ನಂ) ದಿವ್ಯಮಂಡಲ, ದಿಕ್ಚಕ್ರ. ದಿಶಾಂ ವಲಯಮ್। "ಕುರವಿನ್ದದಲಪ್ರತಿಬದ್ಧಮಧ್ಯಮಿವ ದಿವ್ಯಲ-ಯಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೮।

**ದಿವ್ಯಸನ ದಿಗ್ಗಂ**, -ವಸ್ತ್ರ -ವಸ್ತ್ರ (ಪುಂ) "ದಿಗ್ಮಬರ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

**ದಿವ್ಯಾರಣ ದಿಗ್ಗಂ** (ಪುಂ) ದಿಗ್ಗಂಗಳು, ಅಷ್ಟದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿರುವ ಅನೆಗಳು. ದಿಕ್ಷು ಸ್ಥಿತಾ ವಾರಣಾ:। "ಮಂದಾಕಿನ್ಯಾ: ಪಯ:ಶೇಷಂ ದಿವ್ಯಾರಣಮದಾವಿಲಮ್" ಕುಮಾಂ ೨-೪೪।

**ದಿವ್ಯಜಯ ದಿಗ್ಗಂ** (ಪುಂ) ನಾನಾ ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿರುವ ರಾಜರನ್ನು ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಜಯಿಸುವುದು. ದಿಶಾಂ ತತ್ರತ್ಯಾನಾಂ ನೃಪಾಣಾಂ ವಿಜಯ:।

**ದಿಙ್ಕ ದಿಂಕ** (ಪುಂ) ಹೇನಿನ ಮೊಟ್ಟೆ, ಸೀರು.

**ದಿಙ್ನಕ್ಷತ್ರ ದಿಙ್ಕಂ** (ನಂ) ಪೂರ್ವ ಮೊದಲಾದ ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿರುವ ಕೃತ್ತಿಕಾ ಮೊದಲಾದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು. ಪೂರ್ವ ಮೊದಲಾದ ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿ ಕೃತ್ತಿಕಾ ಮೊದಲಾದ ಏಳು ಏಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿದರೆ ಯಾರ ನಕ್ಷತ್ರವು ಯಾವ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವುದೋ ಆಯಾ ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿ ಅವರವರಿಗೆ ಶುಭ ವೆಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕು. "ಕೃತ್ತಿಕಾಽಸ್ತು ಪೂರ್ವಾದಿ ಸಪ್ತ ಸಪ್ತೋದಿತಾ: ಕ್ರಮಾತ್। ಯದ್ವಿಷ್ಯಂ ಯಸ್ಯ ನಕ್ಷತ್ರಂ ತತ್ರ ತಸ್ಯ ಶುಭಂ ಗೃಹಮ್"।

**ದಿಙ್ನಾಗ ದಿಙ್ಗಂ** (ಪುಂ) ದಿಗ್ಗಂಗಳು, ಎಂಟು ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿರುವ ಅನೆಗಳು. ದಿಕ್ಷು ಸ್ಥಿತಾ ನಾಗಾ:। "ದಿಙ್ನ-ನಾಗಾಣಾಂ ಪಥಿ ಪರಿಹರನ್ ಸ್ಥೂಲಹಸ್ತಾವಲೇಪಾನ್" ಮೇಘಂ ೧-೧೪।

**ದಿಙ್ನಮಂಡಲ ದಿಙ್ಗಂ** (ನಂ) 1. ದಿಕ್ಕುಗಳ ಸಮೂಹ, ಮಂಡಲಾಕಾರವಾದ ದಿಕ್ಕುಗಳ ಗುಂಪು. 2. ದಿಕ್ಕುಗಳ ವಲಯ. ದಿಶಾಂ ಮಂಡಲಮ್। "ಉನ್ನಾದಾಂಬುದವಿತ್ತಾನ್ಧ-ತಮಸಪ್ರಭೃದಿಙ್ನಮಂಡಲೇ" ಉಷ್ಣಂ।

**ದಿಙ್ನಮಾತ್ರ ದಿಙ್ಗಂ** (ನಂ) 1. ಕೇವಲ ದಿಕ್ಕು, ಏಕದೇಶ, ಸ್ವಲ್ಪಭಾಗ. 2. ಸೂಚನೆ, ಲಕ್ಷಣ ಮಾತ್ರ ಹೇಳುವುದು, ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಮಾತ್ರ ತಿಳಿಸುವುದು.



**ದಿಡ್‌ಮುಡ ದಿಜ್ಜುಡ** (ವಿಂ) 1. ದಿಗ್ಭ್ರಮೆ ಹಿಡಿದವನು, ದಿಕ್ಕುಗಳ ಪರಿಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದವನು, ಪೂರ್ವಾದಿ ದಿಕ್ಕುಗಳನ್ನು ತಿಳಿಯದವನು. ದಿಶಿ ಮೂಡು. 2. ದಿಕ್ಕುಗಳ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಸಂಶಯವಿರುವವನು. "ಪ್ರಾಗುತ್‌ರೋತ್ತರೇ ಧನಸುತಕುಪಯಃ ಸುತವಚಶ್ಚ ದುರ್ಗಂಧೇ | ವಕ್ರೇ ಬಂಧುನಾಶೋ ನ ಸಂತಿ ಗರ್ಭಾಶ್ಚ ದಿಡ್‌ಮುಡೇ" ಬೃಹತ್‌ಸಂ ೪೩-೧೧೪ |

**ದಿತ ದಿಡ** (ವಿಂ) ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಎರಡಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ತುಂಡುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ದೊ (ಅವಲಂಕರಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | ಇತ್ವಂ (೭-೪-೪೦) | "ಚಿತ್ರಂ ಚಾತಂ ಲೂನಂ ಕೃತಂ ದಾತಂ ದಿತಂ ಚಿತ್ರಂ ವೃಕ್ಷಂ" ಅಮಂ | "ಪುನಃ ಪ್ರಸಾಧ ತಂ ಸೋಮಃ ಕಲಾ ಲೇಖೇ ಕುಪೇ ದಿತಾಃ" ಭಾಗಂ ೬-೬-೨೪ |

**ದಿತ ದಿತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಶ್ಯಪನ ಪತ್ನಿ, ದಕ್ಷನ ಮಗಳು, ದೈತೃರ ತಾಯಿ. ದೊ (ಅವಲಂಕರಣ) "ಕ್ತಿ" (೩-೩-೧೭೪) | "ಪ್ರಜಾಪತೇ ಮಹಾಭಾಗಾ ದಕ್ಷಕನ್ಯಾಸ್ತ್ರಯೋದಶಃ | ಅದಿತಿದಿತಃ ದನುಃ ಕಾಲಾ ದನಾಯುಃ ಸಿಹಿಕಾ ತಥಾ | ಕ್ರೋಧಾ ಪ್ರಾಧಾ ಚ ವಿಶ್ವಾ ಚ ವನಿತಾ ಕಪಿಲಾ ಮುನಿಃ | ಕರ್ಮಾಶ್ಚ ಮನುಜವ್ಯಾಃ ದಕ್ಷಕನ್ಯೇವ ಭಾರತ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೬-೧೨, ೧೩ | 2. ಕತ್ತರಿಸುವುದು, ತುಂಡುಮಾಡುವುದು. ದೊ (ಅವಲಂಕರಣ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪) |

**ದಿತಜ ದಿತಿಜಃ**, -ತನಯ -ತನಯ, -ಸುತ -ಸುತ (ಪುಂ) ದೈತೃ, ದಿತಿಯ ಮಗ. ದಿತೇರ್ಜಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಮವಿ) "ಜಃ" (೩-೨-೧೮) | ದಿತೇಸ್ತನಯಃ ಸುತೋ ವಾ | "ಕರ್ಣಾಂತಿಮೇತ್ಯ ದಿತೀಜೇನ ವಿಕೃಷ್ಯಮಾಣಂ" ಕುಮಾಂ ೧೭-೨೦ |

**ದಿತಜನ್ಮನ್ ದಿತಿಜನ್ಮನ್** (ಪುಂ) ದೈತೃ, ದಿತಿಯ ಮಗ. ದಿತೇರ್ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ | "ಮುಧಿತೇಸ್ತದೇತಿ ದಿತೀಜನ್ಮನಾಂ ರಿಪಿ" ಮಾಘಂ ೧೩-೨೪ |

**ದಿತ್ಸತ್ ದಿತ್ಸತ್** (ವಿಂ) ಕೊಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |

**ದಿತ್ಸನೀಯ ದಿತ್ಸನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಕೊಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಕೊಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ. ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) + ಸನ್ "ನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) | "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೧೬) | -ಸ್ತಿಸ್ತವ್ಯಃ -ಸ್ತಿಸ್ತವ್ಯಃ.

**ದಿತ್ಸಾ ದಿತ್ಸಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೊಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ, ದಾನಮಾಡುವ. ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨) | "ದಿತ್ಸಯಾ ತದಪಿ ಪಾರ್ಥಿವೋರ್ಜಧಿನಂ ಗುಣ್ಯಗುಣ್ಯ ಇತಿ ನ ವ್ಯಜಿ-ಗಣತ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೪೭ |

**ದಿತ್ಸಿತ ದಿತ್ಸಿತ** (ವಿಂ) ಕೊಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) + ಸನ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

**ದಿತ್ಸು ದಿತ್ಸು** (ವಿಂ) ದಾನಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಕೊಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) + ಸನ್ "ತಃ" (೩-೨-೧೬೮) |

**ದಿದ್‌ಕ್ಷಮಾಣ ದಿದ್‌ಕ್ಷಮಾಣ** (ವಿಂ) ನೋಡಲು ಆಸೆ ಪಡುವ. ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣ) + ಸನ್ "ಶಾನ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ದಿದ್‌ಕ್ಷಮಾಣಾಃ ಪ್ರತಿರಥ್ಯಮೀಯುರ್ಮುರಾರಿಮಾರಾದನಂ ಜನೀಘಾಃ" ಮಾಘಂ ೩-೩೧ |

**ದಿದ್‌ಕ್ಷಾ ದಿದ್‌ಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೋಡಲು ಆಸೆ, ನೋಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨) | "ಅಧಿರೂಪಮಂದಿರಗವಾಕ್ಷಮುಲ್ಲಸತ್ಸುದೃಶೋ ರಾಜ ಮುರಜಿ-ದಿದ್‌ಕ್ಷಯಾ" ಮಾಘಂ ೧೩-೩೫ | "ಏಕಸ್ಥಸೌಂದರ್ಯದಿದ್‌ಕ್ಷಯೇವ" ಕುಮಾಂ ೧-೪೯ |

**ದಿದ್‌ಕ್ಷು ದಿದ್‌ಕ್ಷು** (ವಿಂ) ನೋಡಲು ಆಸೆಪಡುವ, ನೋಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣ) + ಸನ್ "ತಃ" (೩-೨-೧೬೮) | "ಸಂಕಥೇಚ್ಛುರಭಿಧಾತುಮನೀಶಾ ಸಂಮುಖೀ ನ ಚ ಬಬ್ಬವ ದಿದ್‌ಕ್ಷುಃ" ಮಾಘಂ ೧೦-೪೧ |

**ದಿದ್‌ಕ್ಷುತ್ ದಿದ್‌ಕ್ಷುತ್** (ವಿಂ) 1. ಹೊಳೆಯುವ, ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ. (ಪುಂ) 2. ವಜ್ರಾಯುಧ.

**ದಿಧಕ್ಷತ್ ದಿಧಕ್ಷತ್** (ವಿಂ) ಸುಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸುಡಲು ಆಸೆಪಡುತ್ತಿರುವ. ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) | -ಂತಿ -ಂತಿ.

**ದಿಧಕ್ಷಾ ದಿಧಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ, ದಹಿಸಲು ಆಸೆ. ದಾಘಮಿಚ್ಛಾ - ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨) |

**ದಿಧಕ್ಷು ದಿಧಕ್ಷು** (ವಿಂ) ಸುಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ದಾಘಮಿಚ್ಛುಃ - ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) + ಸನ್ "ತಃ" (೩-೨-೧೬೮) |

**ದಿಧಿ ದಿಧಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧೈರ್ಯ, ಸ್ಥಿರತೆ, ದೃಢವಾಗಿರುವಿಕೆ.

**ದಿಧಿಕ್ಷತ್ ದಿಧಿಕ್ಷತ್** (ವಿಂ) ಲೇಪನ ಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಬಳಿಯಲು ಆಸೆಪಡುತ್ತಿರುವ. ದಿಹ (ಉಪಚಯ) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |

**ದಿಧಿಕ್ಷಾ ದಿಧಿಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಳಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ, ಲೇಪಿಸಲು ಆಸೆ. ದಾಘಮಿಚ್ಛಾ - ದಿಹ (ಉಪಚಯ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨) |

**ದಿಧಿಕ್ಷು ದಿಧಿಕ್ಷು** (ವಿಂ) ಲೇಪಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಬಳಿಯಲು ಆಸೆಪಡುವ. ದಿಹ (ಉಪಚಯ) + ಸನ್ "ತಃ" (೩-೨-೧೬೮) |

**ದಿಧಿಷು ದಿಧಿಷು** (ಪುಂ) 1. ಎರಡು ಸಲ ಮದುವೆಯಾದವಳು ಗಂಡ, ಎರಡನೆಯ ಗಂಡ. ದಿಧಿಷುಮಾತನ ಇಚ್ಛತಿ -



“ಕೃತ್” (೩-೧-೮)। “ಕೃತ್” (೩-೨-೧೭೮)।  
ಹ್ರಸ್ವಃ ಬಾಹುಂ। 2. ಪತಿ, ಗಂಡ. “ಬ್ರಾಹ್ಮಣಿ ವೀಕ್ಷ್ಯ  
ದಿವಿಷುಂ ಪುರುಷಾದೇನ ಭಕ್ತಿತಮ್” ಭಾಗಂ ೯-೯-೩೪।  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಅರತಿ, ಬೇಸರ. 4. ಎರಡುಸಲ ಮದುವೆ  
ಯಾದವಳು. 5. ಅಕ್ಕನಿಗಿಂತಲೂ ಮೊದಲು ಮದುವೆ  
ಯಾದವಳು. 6. ಚಿಕ್ಕ ಹೆಂಡತಿ. “ಕನಿಷ್ಠಪತ್ನಾಮರತೌ  
ಪುನರ್ಮುಪರಿವಿವ್ರಯೋಃ। ಸ್ತ್ರೀ ಪುನರ್ಮಾಸ್ತು ಪತ್ನೌ ನಾ  
ದಿವಿಷುರ್ದಿವಿಷುರಪಿ”।

ದಿವಿಷ್ ದಿವಿಷ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) “ದಿವಿಷು” ಪದದ ಅರ್ಥ.  
ದಿವಿ ಧೈರ್ಯ ಸ್ಯತಿ ತ್ಯಜತಿ। ನಿಪಾಂ (೩೦ ೧-೯೩)।

ದಿವಿಷುಪತಿ ದಿವಿಷ್ಯಾಪತಿ (ಪುಂ) ಸಹೋದರನು ಮೃತ  
ನಾದನಂತರ ಅವನ ಪತ್ನಿಯನ್ನು ಕಾಮಿಸುವವನು.  
ದಿವಿಷ್ವಾಃ ಪತಿಃ। “ಆತುಮಂತಸ್ಯ ಭಾರ್ಯಾಂ ಯೋಜುರಜ್ಯೇತ  
ಕಾಮತಃ। ಧರ್ಮೇಣಾಪಿ ನಿಯುಕ್ತಾಂ ಸ ಜ್ಞೇಯೋ ದಿವಿಷುಪತಿಃ”  
ಮನುಂ ೩-೧೭೩।

ದಿನ ದಿನ (ನಂ) 1. ದಿವಸ, ಹಗಲು, ಸೂರ್ಯನಿರುವ  
ಕಾಲ. ಛತಿ ತಮಃ—ದೋ (ಅವಲಂಕರಣ) “ಇನ್”  
(೩೦ ೨-೪೯)। “ದಿನೇನಾಸ್ಯಾ ಮುಖಸ್ಯೇಂದ್ರುಃ ಸಕ್ಷಾ ಯದಿ  
ತಿರಸ್ಕೃತಃ। ತತ್ಕೃತಾ ಶತಪತ್ರಾಣಾಂ ತನ್ಮಿತ್ರಾಣಾಮಪಿ ಶ್ರಿಯಃ”  
ನೈಷಂ ೨೦-೫೫। 2. ಒಂದು ದಿವಸ, ಹಗಲು ರಾತ್ರಿಗಳಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ಕಾಲ. “ಸಪ್ತ ವ್ಯತೀಯುಸ್ತ್ರಿಗುಣಾನಿ ತಸ್ಯ ದಿನಾನಿ  
ದಿನೋದ್ವರ್ಣನೋಚಿತಸ್ಯ” ರಘುಂ ೨-೨೫। “ದಿನೇ ದಿನೇ ಸಾ  
ಪರಿವರ್ಧಮಾನಾ ಲಬ್ಧೋದಯಾ ಚಾಂದ್ರಮಸೀವ ಲೇಖಾ” ಕುಮಾರಂ ೧-೨೫।  
3. ತಿಥಿ, ಚಂದ್ರನ ಸಂಚಾರಕಾಲ. ಪಿತ್ರಗಳಿಗೆ ಒಂದು  
ಚಂದ್ರಮಾಸವು ಒಂದು ದಿನ. ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷ ಹಗಲು, ಕೃಷ್ಣ  
ಪಕ್ಷವು ರಾತ್ರಿ. ಉತ್ತರಾಯಣ ಮತ್ತು ದಕ್ಷಿಣಾಯನ  
ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ವರ್ಷವು ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಒಂದು  
ದಿನ. ಬ್ರಹ್ಮನಿಗೆ ಒಂದು ಕಲ್ಪವು ಒಂದು ದಿನವಾಗುವುದು.  
ಬ್ರಹ್ಮನ ಒಂದು ಹಗಲು ಮತ್ತು ಒಂದು ರಾತ್ರಿಗಳಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ಕಲ್ಪ (ಒಂದು ದಿನ)ಕ್ಕೆ 8,64,00,00,000  
ಸೌರವರ್ಷಗಳಾಗುವವು. 4. ಸಿಂಹ, ಕನ್ಯಾ, ತುಲಾ,  
ವೃಶ್ಚಿಕ, ಕುಂಭ ಮತ್ತು ಮೀನ ರಾಶಿಗಳು. “ಅಜಗೋಪತಿ-  
ಯುಗ್ಮಶ್ಚ ಕರ್ಕಿಷನ್ವಿಮೃಗಾಸ್ತಥಾ। ನಿಶಾಸಂಜಾಃ ಸ್ಮೃತಾಃ ಶಿವ  
ಶೋಭಾನ್ವೇ ದಿನಾಖ್ಯಕಾಃ”।

ದಿನಕರ ದಿನಕರ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಕರೋತಿ—ಡು  
ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। ದಿನಸ್ಯ ಕರಃ।  
“ಗತವತ್ಯರಾಜತ ಜಪಾಕುಸುಮಸ್ತಬಕವೃತ್ತೌ ದಿನಕರೇವನತಿಮ್”  
ಮಾಘಂ ೯-೮। 2. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

ದಿನಕರತನಯ ದಿನಕರತನಯ, -ಸುತ-ಸುತ, -ಸುನು  
-ಸೂನು(ಪುಂ) ಸೂರ್ಯನ ಮಗ. 1. ಶನಿ. 2. ಯಮ.  
3. ಸುಗ್ರೀವ. 4. ಕರ್ಣ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತನಯಾ-ತನಯಾ,  
-ಸುತಾ-ಸುತಾ. 5. ತಪತೀನದಿ. 6. ಯಮುನಾನದಿ.

ದಿನಕರತನಯ ದಿನಕರತನಯ (ನಂ) ಪ್ರತಿ ದಿನವೂ ಮಾಡ  
ಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯ. ದಿನೇ ಕರತವ್ಯಮ್।

ದಿನಕರ ದಿನಕರ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ,  
ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. ದಿನಂ ಕರೋತಿ—ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ತತ್”  
(೩-೧-೧೩೩)। “ಕೃತ್” (೩-೨-೭೬)। -ಕೃತ್-ಕೃತ್.  
“ಜಿಗೀಷುರೇಕೋ ದಿನಕರಾದಿತೀರ್ಷಿವ ಕಲ್ಪತೇ” ಮಾಘಂ ೨-೮೧।  
“ದಿನಕರತಮಿವ ಲಕ್ಷ್ಮೀಸ್ತ್ವಾಂ ಸಮಾಪ್ಯೇತು ಭೂಃ” ಕಿರಾಂ ೧-೪೬।

ದಿನಕರ ದಿನಕರ (ನಂ) ಪ್ರತಿದಿನದ ಕರತವ್ಯ, ಪ್ರತಿ  
ನಿತ್ಯವೂ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯ. ದಿನೇ ಕರತವ್ಯಮ್।

ದಿನಕೇಶರ ದಿನಕೇಶರ (ಪುಂ) ಅಂಧಕಾರ, ಕತ್ತಲೆ. ದಿನಸ್ಯ  
ಕೇಸರ ಇವ।

ದಿನಕ್ಷಯ ದಿನಕ್ಷಯ (ಪುಂ) ಅವಮ ದಿನ, ಮೂರು ತಿಥಿ  
ಗಳು ಸೇರಿದ ಒಂದು ದಿನ. ದಿನಸ್ಯ ತಿಥಿಃ ಷಯಃ।  
ಮೂರು ತಿಥಿಗಳು ಒಂದು ದಿನದಲ್ಲಿ ಸೇರಿದರೆ ಮೂರನೆಯ  
ತಿಥಿಯು ಕ್ರಮವಾಗಿ ಕಡಮೆಯಾಗುತ್ತಾ ಉಪ್ಪವಾಗು  
ವುದು. “ಏಕಸ್ಮಿನ್ ಸಾವನೇ ತ್ವಹ್ನಿ ತಿಥಿನಾಂ ತ್ರಿತಯಂ ಯದಾ।  
ತದಾ ದಿನಕ್ಷಯಃ ಪ್ರೋಕ್ತಸ್ತತ್ರ ಸಾಹಸ್ರಿಕಂ ಫಲಮ್”।

ದಿನಚರ್ಯಾ ದಿನಚರ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಿನಕೃತ್, ಪ್ರತಿದಿನದಲ್ಲೂ  
ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯ. ದಿನೇ ಚರ್ಯಾ।  
ಮನುಷ್ಯನು ಪ್ರತಿದಿನ ಹಗಲಿನಲ್ಲಿ ರಾತ್ರಿಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮತ್ತು  
ಆಯಾ ಮತುಗಳಲ್ಲಿ ವಿಹಿತವಾದ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸುತ್ತ  
ಇದ್ದರೆ ಅವನ ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಸರ್ವವಿಧದಲ್ಲೂ ನೆಮ್ಮದಿ  
ಸೌಖ್ಯಗಳಿರುತ್ತವೆ. ತ್ರಿದೋಷಗಳ ಸಮತೆ ಸಮಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿ  
ರುವ ಅಗ್ನಿಶಕ್ತಿ ಧಾತು ಮತ್ತು ಮಲಮೂತ್ರಾದಿಗಳ  
ಕಾರ್ಯವು ಏರುಪೇರಲ್ಲದಿರುವುದು ಇಂದ್ರಿಯ ಮನಸ್ಸು  
ಮತ್ತು ಆತ್ಮನು ಯಾವಾಗಲೂ ಹರ್ಷದಿಂದಿರುವುದು  
ಇವೆಲ್ಲವೂ ನೆಮ್ಮದಿ ಮತ್ತು ಸೌಖ್ಯಗಳಿಗೆ ಕಾರಣಗಳು.  
ಇವೆಲ್ಲಕ್ಕೂ ವಿಹಿತವಾದ ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಯು ಕಾರಣ.  
“ದಿನಚರ್ಯಾ ನಿಶಾಚರ್ಯಾ ಋತುಚರ್ಯಾ ಯಥೋದಿತಾಮ್। ಆಚರನ್  
ಪುರುಷಃ ಸ್ವಸ್ಥಃ ಸದಾ ಭವತಿ ನಾನ್ಯಥಾ”। “ಸಮದೋಷಃ  
ಸಮಾನಿಶ್ಚ ಸಮಧಾತುಮಲಕ್ರಿಯಃ। ಪ್ರಸನ್ನಾತ್ಮೇಂದ್ರಿಯಮನಾಃ ಸ್ವಸ್ಥ  
ಇತ್ಯಭಿವಿಧೀಯತೇ” ಸುಶ್ರುತಂ। ದಿನಚರ್ಯಾಃ ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಬ್ರಾಹ್ಮ  
ಮುಹೂರ್ತದಲ್ಲಿ ಎದ್ದು ಪರಮಾತ್ಮನ ಸ್ಮರಣೆಮಾಡಬೇಕು.  
ಇದರಿಂದ ಆಯುರ್ವೃದ್ಧಿಯೂ ದುಃಖಪ್ರಶಮನವೂ



ಅಗುವುದು. “ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಮೂರ್ತೇ ಬುಧೇತ ಸ್ವಸ್ಥೋ ರಕ್ಷಾರ್ಥ-  
ಮಾಯುಃ | ತತ್ರ ದುಃಖಪ್ರಶಾಂತ್ಯರ್ಥಂ ಸ್ಮರೇದ್ವಿ ಮಧುಸೂದನಮ್” |  
ಹಾಸಿಗೆಯಿಂದೆದ್ದು ಮಂಗಳ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ನೋಡಬೇಕು.  
ಬಳಿಕ ಮಲಮೂತ್ರಾದಿ ವಿಸರ್ಜನೆ. ಅನಂತರ ದಂತಧಾವನ,  
ಸ್ನಾನ, ಅಡ್ಡಿಕ, ದೇವತಾರ್ಚನೆ, ಭೋಜನ ಭೋಜನದ  
ತರುವಾಯ ಸ್ವಲ್ಪ ಸಂಚಾರ. “ಭುಕ್ತ್ವಾ ಶತಪದಂ ಗಚ್ಛೇ-  
ಚ್ಛನೇಸ್ತೇನ ತು ಜಾಯತೇ | ಅಙ್ಗಸಂಕ್ಷಾತಶೀತಲಂ ಗ್ರೀವಾಜಾನು-  
ಕಟಿಮುಕ್ತಮ್” | ಭೋಜನಮಾಡಿ ಕೂತರೆ ಸೋಮಾರಿತನ.  
ಮಲಗಿದರೆ ದೇಹಪುಷ್ಟಿ. ಸಂಚಾರದಿಂದ ಆಯುರ್ವೃದ್ಧಿ.  
“ಭುಕ್ತ್ವೋಪವಿಶತಸ್ತನ್ದ್ರಾ ಶಯಾನಸ್ಯ ತು ಪುಷ್ಟತಾ | ಆಯು-  
ಶ್ಚಕ್ರಮಮಾಣಸ್ಯ ಮೃತ್ಯುರ್ಧಾವತಿ ಧಾವತಃ” | ಇತ್ಯಾದಿ.

ದಿನಜ್ಯೋತಿಃ ದಿನಜ್ಯೋತಿಃ (ನಂ) ಆತಪ. ಬಿಸಿಲು.  
ದಿನಸ್ಯ ಜ್ಯೋತಿಃ |

ದಿನದುಃಖಿತ ದಿನದುಃಖಿತ (ಪುಂ) ಚಕ್ರವಾಕಪಕ್ಷಿ. ದಿನೇ  
ದುಃಖಿತಃ ವಿರಹಾತ್ |

ದಿನನಾಥ ದಿನನಾಥ (ಪುಂ) ಹಗಲಿನ ಒಡೆಯ, ಸೂರ್ಯ.  
ದಿನಸ್ಯ ನಾಥಃ | “ಉದಯಾದಿಮೂರ್ಧ್ನಿ ಯುಗಪಚ್ಚಕಾಸತೋದಿನನಾಥ-  
ಪೂರ್ಣಶಶಿನೋರಸಂಭವಾಮ್” ಮಾಘಂ ೧೩-೬೪ |

ದಿನನಿಶ್ ದಿನನಿಶ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ ದ್ವಿಂ) ಹಗಲು ಮತ್ತು ರಾತ್ರಿ.  
“ಪ್ರಾಘ್ನಿತ್ರಿಚತುರ್ಭಗಿಣಿ ದಿನನಿಶೋಃ ಕಂಪಯಿಷ್ಯಂತಿ” ಬೃಹತ್ಸಂ  
೩೨-೭ |

ದಿನಪ ದಿನಪ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ದಿನಂ ಪಾತಿ - ಪಾ  
(ರಕ್ಷಣೆ) “ಕಃ” (೩-೨-೩) | 2. ವಾರಾಧಿಪತಿಯಾದ  
ಸೂರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹ. 3. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

ದಿನಪತಿ ದಿನಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ರವಿ ಮೊದ  
ಲಾದ ವಾರಾಧಿಪತಿ, 3. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.  
4. ಆಯಾ ದಿವಸದ ಉದಯ ಲಗ್ನದ ಅಧಿಪತಿ. ದಿನಸ್ಯ  
ಪತಿಃ |

ದಿನಪಾತ ದಿನಪಾತ (ಪುಂ) ದಿನಕ್ಷಯ, ತಿಥಿಯ ಪ್ರಮಾಣವು  
ಕಡಮೆಯಾದಂತೆ ತಿಥಿಯು ಉಪ್ಪವಾಗುವುದು. ದಿನಸ್ಯ  
ಚಾಂದ್ರತಿಯೆ: ಪಾತಃ ಕ್ಷಯಃ | “ಅಧಿವಾಸೇ ದಿನಪಾತೇ ಧನುಃ  
ರವೌ ಭಾನುಲಕ್ಷಿತೇ ಮಾಸಿ | ಚಕ್ರಿಣಿ ಸುಪ್ತೇ ಕುರ್ಯಾನ್ಮಿ ಮಾಙ್ಗಲ್ಯಂ  
ವಿವಾಹಶ್ಚ” |

ದಿನಪ್ರಣಿ ದಿನಪ್ರಣಿ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ದಿನಂ ಪ್ರಣಯತಿ—  
ಪ್ರ + ಣಿ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ವಿವಪ್” (೩-೨-೭೬) | 2. ಅರ್ಕ  
ವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

ದಿನಪ್ರಭಾ ದಿನಪ್ರಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆತಪ, ಬಿಸಿಲು.

ದಿನಬಂಧು ದಿನಬಂಧು (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.  
ದಿನಬಲ ದಿನಬಲ (ಪುಂ) 1. ಹಗಲಿನಲ್ಲಿ ಬಲವುಳ್ಳ ರಾಶಿ,  
5, 6, 7, 8, 11 ಮತ್ತು 12 ನೆಯ ರಾಶಿಗಳು. ದಿನೇ  
ಬಲಂ ಯಸ್ಯ | 2. ಹಗಲಿನಲ್ಲಿ ಬಲವುಳ್ಳ ಗ್ರಹಗಳು, ಸೂರ್ಯ  
ಗುರು ಮತ್ತು ಶುಕ್ರ. “ನಿಶಿ ಶಶಿಕುಜಸೌರಾಃ ಸರ್ವದಾ  
ಶೋಭಿಹಿ ಚಾನ್ಯೇ” ಬೃಹಜ್ಜಾಂ |

ದಿನಮಣಿ ದಿನಮಣಿ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ದಿನೇ ಮಣಿರಿವ |  
2. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

ದಿನಮಾನ ದಿನಮಾನ (ನಂ) ಹಗಲಿನ ಪ್ರಮಾಣ, ಸೂರ್ಯ  
ನಿರುವ ಕಾಲದ ಪ್ರಮಾಣ. ದಿನಸ್ಯ ಸೂರ್ಯದರ್ಶನಕಾಲಸ್ಯ  
ಮಾನಮ್ |

ದಿನಮುಖ ದಿನಮುಖ (ನಂ) ಹಗಲಿನ ಪ್ರಾರಂಭಕಾಲ,  
ಪ್ರಾತಃಕಾಲ. ದಿನಸ್ಯ ಮುಖಂ ಪ್ರಾರಂಭಃ | “ಆಯಯಾವಹರಿದಶ್ವ-  
ವಿಪಾಂಡುಸ್ತುಲಯತಾಂ ದಿನಮುಖೇನ ದಿನಾಂತಃ” ಕಿರಾಂ ೯-೮ |

ದಿನಮೂರ್ಧನ್ ದಿನಮೂರ್ಧನ್ (ಪುಂ) ಉದಯ ಪರ್ವತ.  
ದಿನಸ್ಯ ಮೂರ್ಧನ್ |

ದಿನಯೌವನ ದಿನಯೌವನ (ನಂ) ಮಧ್ಯಾಹ್ನ. ದಿನಸ್ಯ  
ಯೌವನಮಿವ |

ದಿನರತ್ನ ದಿನರತ್ನ (ನಂ) 1. ದಿನಮಣಿ, ಸೂರ್ಯ. ದಿನಸ್ಯ  
ರತ್ನಮಿವ | 2. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

ದಿನಾಂಶ ದಿನಾಂಶ (ಪುಂ) 1. ಹಗಲಿನ ಒಂದು ಭಾಗ;  
ಪ್ರಾತಃಕಾಲ, ಮಧ್ಯಾಹ್ನ ಮತ್ತು ಸಾಯಂಕಾಲಗಳೆಂಬ  
ಹಗಲಿನ ಮೂರು ಭಾಗಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭಾಗ. ದಿನಸ್ಯ  
ಅಂಶಃ | 2. ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಸಂಗವಕಾಲ ಮಧ್ಯಾಹ್ನ  
ಅಪರಾಹ್ನ ಮತ್ತು ಸಾಯಂಕಾಲಗಳೆಂಬ ಹಗಲಿನ ಐದು  
ಭಾಗಗಳಲ್ಲೊಂದು. “ಪ್ರಾತಃಕಾಲೋ ಮೂರ್ತಸ್ತ್ರಿನ್ ಸಜ್ಜವ-  
ಸ್ತಾವದೇವ ತು | ಮಧ್ಯಾಹ್ನಸ್ತ್ರಿಮೂರ್ತಃ ಸ್ಯಾದಪರಾಹ್ನಸ್ತತಃ ಪರಮ್ |  
ಸಾಯಾಹ್ನಸ್ತ್ರಿಮೂರ್ತಃ ಸ್ಯಾತ್ ಶ್ರಾದ್ಧಂ ತತ್ರ ನ ಕಾರಯೇತ್” |

ದಿನಾಗಮ ದಿನಾಗಮ (ಪುಂ) ಪ್ರಾತಃಕಾಲ.

ದಿನಾತ್ಯಯ ದಿನಾತ್ಯಯ (ಪುಂ) ಸಾಯಂಕಾಲ.

ದಿನಾದಿ ದಿನಾದಿ (ಪುಂ) ದಿವಸದ ಅದಿಭಾಗ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲ.  
ದಿನಸ್ಯಾದಿಃ | “ರಿಪುತಿಮಿರಮುದಸ್ಯೋದಿಯಮಾನಂ ದಿನಾದಿ  
ದಿನಕೃತಮಿವ ಲಕ್ಷ್ಮೀಸ್ತ್ವಾಂ ಸಮನ್ಯೇತು ಭೂಯಃ” ಕಿರಾಂ ೧-೪೬ |

ದಿನಾಂತ ದಿನಾಂತ (ಪುಂ) ಹಗಲಿನ ಕೊನೆಯಭಾಗ, ಸಾಯಂ  
ಕಾಲ. ದಿನಸ್ಯಾಂತಃ | “ದಿನಾಂತೇ ನಿಹಿತಂ ತೇಜಃ ಸವಿತ್ರೇವ  
ಹುತಾಶನಃ” ರಘುಂ ೪-೧ |

ದಿನಾಂತಕ ದಿನಾಂತಕ (ಪುಂ) ಅಂಧಕಾರ, ತಮಸ್ಸು, ಕತ್ತಲೆ.  
ದಿನಮಂತಯತಿ — ಅಂತ + ಣಿಕ್ “ಞ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) |



ದಿನಾರಂಭ ದಿನಾರಂಭ (ಪುಂ) ಪ್ರಾತಃಕಾಲ. ದಿನಸ್ವಾರಂಭಃ ।  
ದಿನಾರ್ಥ ದಿನಾರ್ಥ (ಪುಂ) ಹಗಲಿನ ಅರ್ಧಭಾಗ. ದಿನಸ್ವಾ-  
ರ್ಥಮ್ ।

ದಿನಿಕಾ ದಿನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಿನದ ಕೂಲಿ, ಪ್ರತಿದಿನ ಮಾಡಿದ  
ಕಾರ್ಯದ ಕೂಲಿ. ದಿನಂ ದಿನೇ ಕೃತಂ ಕರ್ಮ ಹೇತುತಯಾ ಅಸ್ಯತ್ರ  
ಭೃತೌ "ಠ್" (೪-೨-೧೧೫) ।

ದಿನೇಶ ದಿನೇಶ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಸೂರ್ಯ ಮೊದ  
ಲಾದ ಪಾರಾಧಿಪತಿ. ದಿನಸ್ಯ ಇಶಃ । 3. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ,  
ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

ದಿರಿಪಕ ದಿರಿಪಕ (ಪುಂ) ಕಂದುಕ, ಚೆಂಡು.

ದಿಲೀಪ ದಿಲೀಪ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾದ  
ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. ಸೂರ್ಯವಂಶದಲ್ಲಿ ದಿಲೀಪರು ಇಬ್ಬರು.  
ಒಬ್ಬನು ಅಂಶುಮಂತನ ಮಗ. ಭಗೀರಥನ ತಂದೆ.  
ಇನ್ನೊಬ್ಬನು ರಘುವಂಶಾಧಿಪನ ತಂದೆ. ಅಜಮಹಾ  
ರಾಜನ ತಾತ.

ದಿಲೀರ ದಿಲೀರ (ನಂ) ನಾಯಿಕೊಡೆ. ದಲ (ವಿಶರಣೆ)  
"ಇರಃ" ಬಾಹುಂ । ಪೃಷೋಂ । "ಗೋಮಯಚ್ಚತ್ರೀಕಾಮಾಹುಃ  
ದಿಲೀರಂ ಚ ಶಿಲೀಂಧ್ರಕಮ್" ಹಾರಾಂ ।

ದಿವ್ ದಿವ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ. ದೀವ್ಯಂತ್ಯತ್ರ—  
ದಿವು (ಕೃತಾದೌ) "ದಿವಿಃ" ಬಾಹುಂ (೩-೩-೧) । ಇದು  
ವಕಾರಾಂತ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗ ಶಬ್ದ.

|       |         |           |
|-------|---------|-----------|
| ದಿವಿಃ | ದಿವಿಃ   | ದಿವಿಃ ।   |
| ದಿವಂ  | ದಿವಿಃ   | ದಿವಿಃ ।   |
| ದಿವಾ  | ದಿವ್ಯಾಂ | ದಿವಿಃ ।   |
| ದಿವೇ  | ದಿವ್ಯಾಂ | ದಿವ್ಯಿಃ । |
| ದಿವಃ  | ದಿವ್ಯಾಂ | ದಿವ್ಯಿಃ । |
| ದಿವಃ  | ದಿವಿಃ   | ದಿವಿಃ ।   |
| ದಿವಿಃ | ದಿವಿಃ   | ದಿವಿಃ ।   |

"ದಿವಮಿಚ್ಛನ್ ಯುಧಾ ಗಂತುಂ ಕೋಮಲಮಲಸಂಪದಾಮ್" ಮಾಘಂ  
೧೯-೩೧ । 2. ಅಕಾಶ, ಗಗನ, ಅಂತರಿಕ್ಷ. "ದಿವಃ  
ಪೃಥಿವ್ಯಾಃ ಕುಕುಭಾಂ ನು ಮಂಡಲಾತ್ ಪತಂತಿ ವಿಮ್ವಾದುತ ತಿಗ್ಮ-  
ತೇಜಸಃ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೫೩ । "ದಿವಿಃ ಸ್ವರ್ಗಂ ನಮಸಿ ಸ್ವಾತಾ"  
ಶಾಕವತಂ । "ದಿವಿಃ ಸ್ತ್ರೀ ಸ್ವರ್ಗಂ ಚ ಗಗನೇ" ಮೇದಿಂ ।  
3. ದಿನ, ಹಗಲು. "ಸೌರೇಣ ದ್ವಿನಿಶೋಮಾನಿಂ ಪಡಶೀತಿ  
ಮುಖಾನಿ ಚ" ಸುಂ ಸಿಂ ೧೪-೩ ।

ದಿವ ದಿವ (ನಂ) 1. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ. ದೀವ್ಯಂತ್ಯತ್ರ—  
ದಿವು (ಕೃತಾದೌ) ಷಷ್ಠ್ಯೇ "ಕಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೫೮) ।  
"ಲೋಕಪಾಲಂಹಾಭಾಗೇದಿವ ದೇವರೇರಿವ" ಭಾಂ ವನಂ ೧೬೨-೮ ।

2. ಅಕಾಶ, ಗಗನ, ಅಂತರಿಕ್ಷ. 3. ದಿನ, ಹಗಲು. "ಶುಶುಭೇ-  
ಮ್ಯಧಿಕಂ ರಾಜನ್ ದಿವಂ ಜ್ಯೋತಿರ್ಗಣೇರಿವ" ಹರಿವಂ ।  
4. ಅರಣ್ಯ, ಕಾಡು. "ದಿವಂ ಸೇ ತ್ರಿದಿವೇ ದಿನೇ" ಹೇಮಂ ।

ದಿವಜ್ಞಮ ದಿವಂಜಮ (ವಿಂ) 1. ಗಗನಕ್ಕೆ ಹೋಗುತ್ತಿರುವ.  
ಅಕಾಶದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ. 2. ಸ್ವರ್ಗಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ. ದಿವ-  
ಮಾಕಾಶಂ ಸ್ವರ್ಗಂ ವಾ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ಯ (ಗತೌ) "ಸಚ್" (೩-೨-೪೭) ।  
"ದಿವಜ್ಞಮ ರೂಪಾಥ ಮಾರ್ಗಂ ಭೂಮಸ್ಯ ಕಾರ-  
ಣಾತ್" ಭಾಂ ವನಂ ೧೪೮-೭೧ ।

ದಿವಸ ದಿವಸ (ಪುಂ) 1. ಹಗಲು, ಸೂರ್ಯನಿರುವ ಕಾಲ.  
ದೀವ್ಯಂತ್ಯತ್ರ—ದಿವು (ಕೃತಾದೌ) "ಅಸಚ್" (ತಂ ೩-೧೨೧) ।  
"ಪ್ರಚ್ಛಾಯಸುಲಭನಿಧಾಃ ದಿವಸಾಃ ಪರಿಣಾಮರಮಣೀಯಾಃ" ಶಾಕುಂ  
೧-೩ । 2. ಹಗಲು ಮತ್ತು ರಾತ್ರಿ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ದಿನ.  
"ತಪತಿ ಪ್ರಾವೃಷಿ ನಿತರಾಮಮೃಗಜಲಾಗಮೋ ದಿವಸಃ" ರತ್ನಾಂ  
೩-೧೦ । ಅರವತ್ತು ಘಳಿಗೆಗಳ ಪ್ರಮಾಣದ ಒಂದು  
ದಿವಸಕ್ಕೆ ಸಾವನದಿನವೆಂದು ಹೆಸರು. ಸೂರ್ಯನಿರುವ  
ರಾತ್ರಿಯ ಮೂವತ್ತನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗವು ಸೌರದಿನ  
ವಾಗುವುದು. ಪ್ರತಿಪದಾದಿ ಒಂದೊಂದು ತಿಥಿಯೂ ಒಂದೂ  
ಚಾಂದ್ರದಿವಸವೆನಿಸುವುದು.

ದಿವಸಕರ ದಿವಸಕರ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಕರೋತಿ—ಡು  
ಕೃತ್ (ಕರಣೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । ದಿವಸಸ್ಯ ಕರಃ ।  
"ಬಹಿರಪಿ ವಿಸಂತ್ಯಃ ಕಾಮಮಾನಿನೀರೆ ಯದಿವಸಕರಃ ಪೂಜಂತಿ  
ಧ್ವಾಂತಮಂತಗೃಹೇಷು" ಮಾಘಂ ೧೧-೫೯ । 2. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ,  
ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬) । -ಕೃತ್ -ಕೃತ್.

ದಿವಸ್ಪತಿ ದಿವಸ್ಪತಿ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ, ಸ್ವರ್ಗಲೋಕದ ಒಡೆಯ.  
ದಿವಃ ಪತಿಃ । ಸತ್ವಂ ಪಠ್ಯಾ ಅಲುಕ್ ಚ (೮-೩-೫೩) ।  
ಕಸ್ಕಾದಿತ್ವಾತ್ ವಾ । "ಇಂದ್ರಾಣಿಮಾನಯಿಷ್ಯಾಮೋ ಯಥೇಚ್ಛಸಿ  
ದಿವಸ್ಪತೇ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೨-೯ ।

ದಿವಾ ದಿವಾ (ಅವ್ಯಂ) ಹಗಲಿನಲ್ಲಿ. ದೀವ್ಯಂತ್ಯತ್ರ — ದಿವು  
(ಕೃತಾದೌ) "ಕಾ" । "ಪ್ರಿಯಮಾಪ ದಿವಾಪಿ ಕೋಕಿಲೇ ಸ್ತ್ರೀ  
ಪರಿತಸ್ತಾರರವೇ ರಸತ್ಯವಸ್ಯಮ್" ಮಾಘಂ ೬-೭೦ ।

ದಿವಾಕರ ದಿವಾಕರ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ದಿವಾ ದಿನಂ ಕರೋತಿ  
—ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೨೧) । 'ದಿವಾ' ಇತಿ  
ಆಕಾಶಾಂತಮವ್ಯಯಮಧಿಕರಣಶಕ್ತಿಪ್ರಧಾನಮ್ । ತಥಾಪಿ ವೃತ್ತಿ-  
ವಿಷಯೇ ಕರ್ಮತ್ವಮ್ । "ದಿವಾಕರಾದ್ರಕ್ಷತಿ ಯೋ ಗುಹಾಸು ಲೀನಂ  
ದಿವಾಭಿತಮಿವಾನ್ಧಕಾರಮ್" ಕುಮಾರಂ ೧-೧೨ । 2. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ,  
ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 3. ಗರುಡನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಮಾಲಯೋ  
ಮಾತರಿಶ್ವಾ ಚ ನಿಶಾಕರದಿವಾಕರೌ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ  
೧೦೧-೧೪ ।



**ದಿವಾಕರತನಯ ದಿನಾಕರತನಯ, -ತನುಜ -ತನೂಜ**

(ಪುಂ) ಸೂರ್ಯನ ಮಗ 1. ಶನಿ. 2. ಯಮ. 3. ಸುಗ್ರೀವ. 4. ಕರ್ಣ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತನಯಾ -ತನಯಾ, -ತನುಜಾ -ತನೂಜಾ. ಸೂರ್ಯನ ಮಗಳು 1. ತಪತೀನದಿ. 2. ಯಮುನಾನದಿ. ಏವಂ -ಸುತಃ -ಸುತಃ -ತಾ -ತಾ, -ಸುತುಃ -ಸೂನುಃ. ಇತ್ಯಾದಿ. "ಗಜ್ಞಾದಿವಾಕರಸುತಾಜಲಚಾರ ಹಾರಾಮ್" ಬೃಹತ್ಸಂ ೪೩-೩೨.

**ದಿವಾಕೀರ್ತಿ ದಿನಾಕೀರ್ತಿ (ಪುಂ)** 1. ನಾಪಿತ, ನಾಯಿಂದ, ಕ್ಷುರಕ. ದಿವಾ ಕೀರ್ತಿರಸ್ಯ. 2. ಜಂಡಾಲ. 3. ಉಲ್ಲಾಕ, ಗೂಬೆ. ದಿವಾ ಅಕೀರ್ತಿಯಸ್ಯ. "ದಿವಾಕೀರ್ತಿस्तು ಚಂಡಾಲೇ ನಾಪಿತೋಲೂಕಯೋರಪಿ" ವಿಶ್ವಂ.

**ದಿವಾಚರ ದಿನಾಚರ (ಪುಂ)** 1. ಜಂಡಾಲ. ದಿವಾ ದಿವಸೇ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಠಃ" (೩-೨-೧೬). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫). -ಚರೀ -ಚರೀ. 2. ಹಗಲಿನಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಸಂಚರಿಸುವ ಪಕ್ಷಿಗಳು ಮತ್ತು ಇತರ ಪ್ರಾಣಿಗಳು ; ಗಿರಜಗನ ಹಕ್ಕಿ, ಚಕ್ರವಾಕ, ನವಿಲು, ಗುಬ್ಬಿಚ್ಚಿ, ಹಂಗನ ಹಕ್ಕಿ, ಭಾರದ್ವಾಜಪಕ್ಷಿ, ಕೋಳಿ, ಹಾರೀತಪಕ್ಷಿ, ಪಾರಿವಾಳ (ಕಪೋತ), ಗಿಣಿ, ಕಾಗೆ, ಹದ್ದು ಮುಂತಾದ ಪಕ್ಷಿಗಳೂ ಕಪಿ ಮುಂತಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳೂ ಹಗಲಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಸಂಚರಿಸುವವು. "ದಿವಾಚರೋ ನ ಶರೈರ್ಯಾ ನ ಚ ನಕ್ತಾಚರೋ ದಿವಾ".

**ದಿವಾತನ ದಿನಾತನ (ಪುಂ)** 1. ವಾಯುಸ, ಕಾಗೆ. ದಿವಾ ಅತತಿ - ಅತ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩). (ವಿಂ) 2. ಹಗಲಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ.

**ದಿವಾತನ ದಿನಾತನ (ವಿಂ)** ಹಗಲಲ್ಲಿರುವ. ದಿವಾ ಭವಃ "ಠ್ಯುಃ" (೪-೩-೨೩). ತುಡ್ ಚ. "ಶಶಿನ ಇವ ದಿವಾತನಸ್ಯ ಲೇಖಾ ಕಿರಣಪರಿಕ್ಷಯಧೂಸರಾ ಪ್ರದೋಷಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೪೬.

**ದಿವಾನ್ಧ ದಿನಾಂಧ (ಪುಂ)** 1. ಉಲ್ಲಾಕ, ಗೂಬೆ. ದಿವಾ ದಿವಸೇ ಅನ್ಧಃ. "ವೇನತೇಯೇ ಸ್ವಾಮಿನಿ ಸ್ಥಿತೇ ಕಿಮೇಶ ದಿವಾನ್ಧಃ ಕ್ರಿಯತೇ ರಾಜಾ" ಪञ्ಚತಂ ೩. 2. ಹಗಲಲ್ಲಿ ಕುರುಡಾಗಿರುವ ಪ್ರಾಣಿ. "ದಿವಾನ್ಧಾಃ ಪ್ರಾಣಿನಃ ಕೇಚಿದ್ರಾತ್ರಾವನ್ಧಾ-ಸ್ತಥಾಪರೇ".

**ದಿವಾಭೀತಿ ದಿನಾಭೀತಿ (ಪುಂ)** 1. ಉಲ್ಲಾಕ, ಗೂಬೆ. ದಿವಾ ದಿವಸೇ ಭೀತಃ. "ದಿವಾಕರಾದ್ರಕ್ಷತಿ ಯೋ ಗುಹಾಸು ಲೀನಂ ದಿವಾ-ಭೀತಮಿವಾನ್ಧಕಾರಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೧೨. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್". 2. ಜೋರ, ಕಳ್ಳ. 3. ಕುಮುದಾಕರ, ಬಿಳಿ ತಾವರೆಯ ಕೊಳ. "ದಿವಾಭೀತಃ ಕುಮಿಲೇ ಸ್ಯಾದುಲೋಕೇ ಕುಮುದಾಕರೇ" ಮೇದಿಂ.

**ದಿವಾಭೀತಿ ದಿನಾಭೀತಿ (ಪುಂ)** 1. ಉಲ್ಲಾಕ, ಗೂಬೆ. (ವಿಂ) 2. ಹಗಲಲ್ಲಿ ಹೆದರುವ. ದಿವಾ ಭೀತಿರಸ್ಯ.

**ದಿವಾಮಣಿ ದಿನಾಮಣಿ (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯ. ದಿವಾ ಮಣಿರಿವ. 2. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

**ದಿವಾವಸು ದಿನಾವಸು (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯ. ದಿವಾ ವಸು ಕಿರಣೋಽಸ್ಯ. 2. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

**ದಿವಾಶಯ ದಿನಾಶಯ (ವಿಂ)** ಹಗಲಲ್ಲಿ ನಿದ್ರೆಮಾಡುವವನು. ಹಗಲಲ್ಲಿ ಮಲಗುವವನು. ದಿವಾ ದಿವಸೇ ಶೇತೇ - ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಅಚ್" (೩-೨-೧೫). "ಆರೂರೋಹ ಕುಮುದಾಕರೋಪಮಾಂ ರಾತ್ರಿಜಾಗರಪರೋ ದಿವಾಶಯಃ" ರಘುಂ ೧೯-೩೪.

**ದಿವಾಸಂಚರ ದಿನಾಸಂಚರ (ವಿಂ)** ಹಗಲಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ (ಪ್ರಾಣಿ). ದಿವಾ ದಿವಸೇ ಸಂಚರತಿ - ಸಮ್ + ಚರ (ಗತೌ) "ಠಃ" (೩-೨-೧೬). [ಹಗಲಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ವಿವರಕ್ಕೆ "ದಿವಾಚರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ದಿವಾಸ್ವಪ್ನ ದಿನಾಸ್ವಪ್ನ (ಪುಂ)** 1. ಹಗಲು ನಿದ್ರೆ. ದಿವಾ ದಿವಸೇ ಸ್ವಪ್ನಃ. -ಸ್ವಾಪಃ -ಸ್ವಾಪಃ. ಗ್ರೀಷ್ಮಯುತು ಹೊರತು ಇತರ ಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಹಗಲು ನಿದ್ರೆಯು ನಿಷಿದ್ಧ. "ಸರ್ವತೃಪ್ತು ದಿವಾಸ್ವಾಪಃ ಪ್ರತಿಷಿದ್ಧೋಽನ್ಯತ್ರ ಗ್ರೀಷ್ಮಾತ್" ಸುಶ್ರುತಂ. "ಮೃಗಯಾಕ್ಷೋ ದಿವಾಸ್ವಪ್ನಃ ಪರೀವಾದಃ ಸ್ತ್ರಿಯೋ ಮದಃ. ತೌರ್ಯತ್ರಿಕಂ ವೃಥಾತ್ಯಾ ಚ ಕಾಮಜೋ ದಶಕೋ ಗಣಃ" ಮನುಂ. 2. ಉಲ್ಲಾಕ, ಗೂಬೆ. ದಿವಾ ಸ್ವಾಪೋ ಯಸ್ಯ.

**ದಿವಿ ದಿವಿ (ಪುಂ)** ಹಗನ ಹಕ್ಕಿ.

**ದಿವಿಚರ ದಿವಿಚರ (ವಿಂ)** ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. ದಿವಿ ಚರತಿ ಚರ (ಗತೌ) "ಠಃ" (೩-೨-೧೬). ಅಲುಕ್ (೬-೩-೧೪). "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪). -ಚಾರಿನ್ -ಚಾರಿನ್.

**ದಿವಿಜ ದಿವಿಜ (ಪುಂ)** 1. ದೇವತೆ. ದಿವಿ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುಭವಿ) "ಠಃ" (೩-೨-೧೭). ಅಲುಕ್ (೬-೩-೧೫). (ವಿಂ) 2. ಸ್ವರ್ಗದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. 3. ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

**ದಿವಿರಥ ದಿವಿರಥ (ಪುಂ)** ಭುಮನ್ನು ರಾಜನ ಮಗ, ಪುರುಷಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ.

**ದಿವಿಷದ್ ದಿವಿಷದ್ (ಪುಂ)** ದೇವತೆ. ದಿವಿ ಸೀದತಿ - ಪದಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) "ವಿವ್" (೩-೨-೬೧). ಅಲುಕ್ (ವಾಂ ೮-೩-೧೫). "ಸಮಯೇ ಪರಿಷತ್ಸಭಾಜನಾರ್ಹೇ ದಿವಿಷತ್ಪೂಜ್ಯ-ಪದೋಽಪಿ ದೈತ್ಯಹಂತಾ" ಯಾದಂ ೧೫-೩೪. "ರಾಮಸ್ಯ ತ್ರಿಪುರಾಂತ-ಕೃದಿವಿಷದಾಂ ತೇಜೋಭಿರಿದ್ಧಂ ವನುಃ" ಮಂ ವೀಂ ೧-೫೩.



**ದಿವಿಷ್ಠ ದಿವಿಷ್ಠ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ವರ್ಗದಲ್ಲಿರುವ. 2. ಆಕಾಶದಲ್ಲಿರುವ. ದಿವಿ ತಿಷ್ಠತಿ - ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ:" (೩-೨-೪) | ಅಲುಕ್ (ವಾಂ ೮-೩-೯೫) |

**ದಿವಿಃಪೃಶ್ ದಿವಿಃಪೃಶ್** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. ಪರವಿಜಯಾ ದಿವಿ ಚ ಪರಮಪದೇ ಸ್ಥಿತಂ ಸ್ವತತ್ವಂ ರಹಃ ಸ್ಪೃಶತಿ - ಸ್ಪೃಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೆ) "ಕಿವನ್" (೩-೨-೫೮) | ಅಲುಕ್ (ವಾಂ ೮-೩-೯೫) | "ಪರಯಾ ವಿಜಯಾ ಯಃ ಸ್ವಂ ಸ್ಪೃಶತೀತಿ ಪರೇ ಪದೇ | ದಿವಿಃಪೃಶ್ ಸೋಚ್ಯತೇ ನಿಯಮಃ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ | "ದಿವಿಃಪೃಶ್ ಸರ್ವದಕ್ ವ್ಯಾಸಃ" ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ಗಗನವನ್ನು ಮುಟ್ಟುವ. "ಹೇಮಶೃಂಗೈರ್ದಿವಿಃಪೃಶಿಭಿಃ ಸ್ಕಾಟಿಕಾಡ್ರಾಽಗೋಪುರೈಃ" ಭಾಗಂ ೧೦-೫೦-೫೨ |

**ದಿವಿ ದಿವೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೆದ್ದು ಹುಳು. "ಉಪಜಿಹ್ವಿಕೋ-ತ್ಪಾತಿಕಾ ಚ ವರಹೇಹಿಕಾ ದಿವಿ" ಹಾರಾಂ |

**ದಿವೋಕ್ಸ ದಿವೋಕ್ಸ** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. 2. ಚಾತಕ ಪಕ್ಷಿ. ಧೌಃ ಸ್ವರ್ಗಃ ಆಕಾಶೋ ವಾ ಆಕಾಶೋ ಯಸ್ಯ | "ದಿವೋಕ್ಸಾಶ್ಚ ದಿವೋಕ್ಸಾಶ್ಚ ಪುನಿ ದೇವೇ ಚ ಚಾತಕೇ" ಮೇದಿಂ |

**ದಿವೋದಾಸ ದಿವೋದಾಸ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಶಿರಾಜನಾದ ಭೀಮ ಸೇನನ ಮಗ. ಯಯಾತಿಯ ಮಗಳಾದ ಮಾಧವಿಯ ಪತಿ, ಪ್ರತರ್ಧನನ ತಂದೆ. ಹೈಹಯ ರಾಜನಾದ ವಿಶ್ವಹವ್ಯನು ಭೀಮಸೇನನನ್ನು ಕೊಂದನೆಂಬ ಕಾರಣದಿಂದ ಈತನ ಮಗ ನಾದ ಪ್ರತರ್ಧನನು ವಿಶ್ವಹವ್ಯನನ್ನು ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಸೋಲಿಸಿದನು. "ಮಹಾವೀರ್ಯೋ ಮಹೀಪಾಲಃ ಕಾಶಿನಾಮೀಶ್ವರಃ ಪ್ರಭುಃ | ದಿವೋದಾಸ ಇತಿ ಖ್ಯಾತೋ ಭೀಮಸೇನನಿರಾಧಿಪಃ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೧೭-೧ | 2. ವಧ್ಯಶ್ವನ ಮಗ, ಅಹಲ್ಯಾದೇವಿಯ ಸಹೋದರ. 3. ಧನ್ವಂತರಿ. "ಧನ್ವಂತರಿದಿವೋದಾಸಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ದಿವೋದ್ಭವ ದಿವೋದ್ಭವ** (ವಿಂ) 1. ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. 2. ಸ್ವರ್ಗದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಉದ್ಭವಾ -ಉದ್ಭವಾ. 3. ಯಾಲಕ್ಕಿಕಾಯಿ. ದಿವೇ ಉದ್ಭವತಿ -ಉದ್+ಭೂ "ಅಪ್" (೩-೩-೫೮) |

**ದಿವೋಲ್ಕಾ ದಿವೋಲ್ಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಗಲಲ್ಲಿ ಆಕಾಶದಿಂದ ಬಿದ್ದ ಕೊಳ್ಳಿ. ದಿವಾ ದಿವಸೇ ಜಾತಾ ಉಲ್ಕಾ |

**ದಿವೋಕ್ಸ ದಿವೋಕ್ಸ** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. ದಿವಮೋಕೋ ಯಸ್ಯ | "ಪ್ರಸಾದಾಭಿಮುಕ್ತೋ ವೇದಾಃ ಪ್ರತಿಯಾಚ ದಿವೋಕ್ಸಃ" ಕುಮಾಂ ೨-೧೬ | 2. ಚಾತಕ ಪಕ್ಷಿ. "ದಿವೋಕ್ಸಾಶ್ಚ ದಿವೋಕ್ಸಾಶ್ಚ ಪುನಿ ದೇವೇ ಚ ಚಾತಕೇ" ಮೇದಿಂ | (ವಿಂ) 3. ಸ್ವರ್ಗದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ. "ದದಶ ಪಥಿ ಗಚ್ಛಂತಿ ವಸುನ್ ದೇವಾನ್ ದಿವೋಕ್ಸಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೦೨-೧೦ |

**ದಿವೋಕ್ಸ ದಿವೋಕ್ಸ** (ಪುಂ) ದೇವತೆ. ದಿವಮೋಕೋ ಯಸ್ಯ | (ಆಕಾಶಶಬ್ದಃ ಅದಂತಃ) | "ವಸುಧಾಮಿಹ ಸಂಪ್ರಾಪ್ತಃ ಸರ್ವೇವ ದಿವೋಕ್ಸಃ" ಹರಿವಂ |

**ದಿವ್ಯ ದಿವ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನಿ, ಆತ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಅರಿತ ವೇದಾಂತಿ. ದಿವಿ ದ್ಯೋತಿಸ್ವರೂಪೇ ಆದಿದೇವತಾಬ್ರಹ್ಮಣಿ ವಾ ಸ್ವಸ್ವರೂಪೇ ಭವಃ "ಯತ್" (೪-೩-೫೪) | "ದಿವ್ಯಶ್ಚ ದೇವತಾಪ್ರಾಪ್ತಃ ಶುದ್ಧಾಂತಃಕರಣಃ ಸದಾ | ದ್ವಂದ್ವಾತೀತೋ ವೀತರಾಗಃ ಸರ್ವಭೂತಸಮಃ ಕ್ಷಮಿ" | 2. ಗುಗುಳ. 3. ಯಮ. 4. ಉತ್ಪಾತ, ಅಶುಭಸೂಚಕ ಜಿಹ್ವೆ, ಸಾಮಾನ್ಯಿಕ ವಿಷ ತನ್ನ ಸೂಚಿಸುವ ಉತ್ಪಾತ ಬಾಲಜುಕ್ಕಿ ಮುಂತಾದುವು. ಉತ್ಪಾತವು (1) ದಿವ್ಯಃ, (2) ಆಂತರಿಕ್ಷಃ ಮತ್ತು (3) ಭೂಮಿಃ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ಜನರು ಮಾಡುವ ಆಕಾರ್ಯ ಮತ್ತು ಪಾಪಕೃತ್ಯಗಳ ಫಲವಾಗಿ ಈ ಉತ್ಪಾತಗಳು ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವು. ಜನರ ಪಾಪಕೃತ್ಯಗಳಿಂದ ಕೋಪಗೊಂಡ ದೇವತೆಗಳು ಈ ಉತ್ಪಾತಗಳನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸುವರು. ಅದರ ನಿವಾರಣೆಗಾಗಿ ರಾಜನು ಶಾಂತಿಯನ್ನು ಮಾಡಿಸಬೇಕು. "ಅಪಚಾರೇಣ ನರಾಣಾಮುಪಸರ್ಗಃ ಪಾಪಸಂಚಯಾ-ಛವತಿ | ಸಂಸೂಚಯಂತಿ ದಿವ್ಯಾಂತರಿಕ್ಷಭೂಮಾಸ್ತು ಉತ್ಪಾತಾಃ | ಮನುಜಾನಾಮಪಚಾರಾದಪರಕ್ತಾ ದೇವತಾಃ ಸೃಜಂತೀತಾನ್ | ತತ್ಪ್ರತಿ-ಘಾತಾಯ ನೃಪಃ ಶಾಂತಿಂ ರಾಷ್ಟ್ರೇ ಪ್ರಯುಜೀತ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೪೬-೭, ೮ |

(1) ಗ್ರಹಗಳೂ ನಕ್ಷತ್ರಗಳೂ ವಿಕಾರವಾದ (ವಿಪರೀತ) ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಧೂಮಕೇತು, ಉತ್ಪಾತ, ಸಿಡಿಲು, ಬಿರುಗಾಳಿ, ಸೂರ್ಯಜಂದ್ರರ ಸುತ್ತಲೂ ಕಟ್ಟುವ ಪ್ರಭೆಯ ಮಂಡಲ ಮುಂತಾದುವು ದಿವ್ಯ ಉತ್ಪಾತ.

(2) ಅಂತರಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ ನಗರಗಳು ಇಂದ್ರಧನುಸ್ಸು ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು ಮುಂತಾದುವು ಅಂತರಿಕ್ಷ ಉತ್ಪಾತ.

(3) ಸ್ಥಾವರ ಜಂಗಮಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದು ಭೀಮ ಉತ್ಪಾತ. "ದಿವ್ಯಂ ಗ್ರಹಕ್ಷೇಪಕೃತಮುಲ್ಕಾನಿರ್ವಾತಪವನಪರಿವೇಷಾಃ | ಗಂಧರ್ವಪುರಪುರಂದರವಾಪಾದಿ ಯದಾಂತರಿಕ್ಷಂ ತತ್ || ಭೂಮಿಂ ಚರ-ಸ್ಥಿರಮವಂ ತಚ್ಚಾಂತಿಭಿರಾಹುತಂ ಶಮಮುಪೇತಿ | ನಾಭಸಮುಪೇತಿ ಮೃದುತಾಂ ಶಾಮ್ಯತಿ ನೋ ದಿವ್ಯಮಿತೀಕೇ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೪೬-೪, ೫ |

5. ಜಲ, ನೀರು. ಇದು (1) ಧಾರಾಜಮ್, (2) ಕರಕಾ-ಭವಮ್ (3) ತೌಷಾರಮ್ ಮತ್ತು (4) ಹೈಮಮ್ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. "ದಿವ್ಯಂ ಚತುರ್ವಿಧಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಧಾರಾಜಂ ಕರಕಾಭವಮ್ | ತೌಷಾರಂ ಚ ತಥಾ ಹೈಮಂ ತೇಷು ಧಾರಂ ಗುಣಾಧಿಕಮ್" ಭಾವಪ್ರಂ |

(ನಂ) 6. ಆಕಾಶ, ಅಂತರಿಕ್ಷ. "ವಿವೃಷ್ಟಿಪದಂ ದಿವ್ಯಂ ವಾಯುವರ್ಮ ವಿಹಾಯಸಮ್" ವೇಜಂ | 7. ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳಿ. "ಕಾಮಾಙ್ಗ



ಲಶುನಂ ದಿವ್ಯಂ ಮಹಾಕಂದಾಮೃತೋದ್ಭವೇ" ವೈಜಂ. 8. ಲವಂಗ. 9. ದೇವತೆಗಳ ಕಾಲಮಾನ. 10. ಕಠಿನವಾದ ಒಂದು ಪರೀಕ್ಷೆ, ಲೌಕಿಕವಾದ ಪ್ರಮಾಣವು ದೊರೆಯದಿರುವಾಗ ನಡೆಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಒಂದು ಪರೀಕ್ಷೆ. ಸತ್ಯ ಪ್ರಮಾಣಗಳನ್ನು ಮಾಡಿಸುವುದು. "ಯುಕ್ತಿಷ್ವಪ್ಯಸಮರ್ಥಾಸು ಶಪಥೇನಮರ್ದಯೇತ್. ಅರ್ಥಕಾಲಬಲಾಪೇಕ್ಷಮನ್ಯಮ್ಬಸುಕೃತಾದಿभिः। घटोऽग्निरुदकं चैव विषं कोशश्च पञ्चमः। उक्तान्येतानि दिव्यानि विशुद्धयर्थं महात्मभिः"। ಸರಿಯಾದ ಸಾಕ್ಷಿಗಳು ದೊರಕದೆ ವಾದಿ ಪ್ರತಿವಾದಿಗಳು ಜಗಳವಾಡುತ್ತಿರುವಾಗ ಮಧ್ಯಸ್ಥಗಾರರು ಅಗ್ನಿ ನೀರು ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಮೂಲಕ ಪ್ರಮಾಣ ಮಾಡಿಸಬೇಕು. "असाक्षिकेषु त्वर्थेषु मिथो विवदमानयोः। अविदंस्तत्त्वतः सत्यं शपथेनापि लभ्येत्। अग्निं बाह्यारयेदेनमप्सु चैनं निमज्जयेत्। पुत्रदारस्य वाप्येनं शिरांसि स्पर्शयेत् पृथक्। यस्माद्देवैः प्रयुक्तानि पुष्करार्थं महात्मभिः। परस्परविशुद्धयर्थं तस्माद्दिव्यानि नामतः" मनु०। 11. ಸಪ್ತವಿಧ ಸ್ನಾನ ಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ವಿಧ. ಶರೀರವ ಅನಾರೋಗ್ಯದಿಂದಲೂ ಕಾಲದೇಶಗಳಿಗೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿಯೂ ಸರಿಯಾದ ಸ್ನಾನ ಮಾಡಲು ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದಿರುವಾಗಲೂ ಉಪಾಯದಿಂದ ಸಪ್ತವಿಧ ಸ್ನಾನಗಳು ಉಕ್ತವಾಗಿವೆ. (1) ಮಾನ್ವಮ್, (2) ಭೌಮಮ್, (3) ಆಗ್ನೇಯಮ್, (4) ವಾಯವ್ಯಮ್, (5) ದಿವ್ಯಮ್, (6) ವಾರುಣಮ್ ಮತ್ತು (7) ಮಾನಸಮ್ ಎಂದು ಸ್ನಾನವು ಏಳು ವಿಧ.

(1) आपोहिष्ठेति मान्त्रं स्नानम्।

(2) मृदालम्भं पार्थिवम् } स्नानम्।  
(भौमम्)

(3) भस्मना आग्नेयम् स्नानम्।

(4) गोरजसा वायव्यम् स्नानम्।

(5) सातपवर्षेण दिव्यम् स्नानम्।

(6) सलिलेऽवगाह्य वारुणम् स्नानम्।

(7) विष्णुचिन्तनेन मानसम् स्नानम्।

"समस्तं स्नಾನमुद्दिष्टं मन्त्रस्नानक्रमेण तु। कालदोषाद-  
सामर्थ्यात् सर्वं तस्य फलं स्मृतम्" योगियाज्ञवल्क्यः।  
(वि०) 12. ಸ್ವರ್ಗದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಸ್ವರ್ಗದಲ್ಲಿರುವ. 13. ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಆಕಾಶದಲ್ಲಿರುವ. ದಿವಿ ಭವಃ "यत्" (४-२-१०१)। "अथ ते मुनयो दिव्याः प्रेक्ष्य हैमवतं पुरम्" कुमा० ६-४७। 14. ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. "अनुजगुरथ दिव्यं दुन्दुभिध्वानमाशाः सुर-  
कुसुमनिपातैः व्योम्नि लक्ष्मीवितेने" किरा० ३-६०।

15. ಭವ್ಯವಾದ, ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ. "दिव्यामस्त्रोपनिषद-  
मृषेयः कृशाश्वस्य शिष्यात् विश्वामित्राद्विजयजननीमप्रमेयः  
प्रपेदे" म० वि० २-२। 16. ರಮಣೀಯವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ, ಸುಂದರವಾದ. "अमुष्य दूरादसि-  
ताक्षि दृष्टि दिव्ये गिरौ दातुमिहार्हसि त्वम्" याद०  
१८-२९। 17. ಅಮಾನುಷವಾದ, ಅಲೌಕಿಕವಾದ. "सहजान्घटशः स्वदुर्नये परदोषेक्षणदिव्यचक्षुषः" माघ०  
१६-२९। 18. ಅದ್ಭುತವಾದ, ಅಶ್ಚರ್ಯಕರವಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -व्या-व्या. 19. ಆಮಲಕವೃಕ್ಷ, ನೆಲ್ಲಿಗಿಡ. 20. ಶತಾವರಿ, ಹಿಲ್ಲುಬಿಚ್ಚರ. 21. ಹೊನ್ನಗೊನ್ನೆಸೊಪ್ಪು. 22. ಅಳಲೆ ಗಿಡ. 23. ಬಿಳಿ ಗರಿಕೆ.

ದಿವ್ಯಗಂಧ ದಿವ್ಯಗಂಧ (ವುಂ) 1. ಸುವಾಸನೆ, ಮನೋಹರವಾದ ವಾಸನೆ. (ನಂ) 2. ಲವಂಗ. 3. ಗಂಧಕ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -गन्धा-गन्धा. 4. ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಯಾಲಕ್ಕಿ. ದಿವ್ಯೋ ಗಂಧೋಽಸ್ಯಾಃ।

ದಿವ್ಯಚಕ್ಷುಸ್ ದಿವ್ಯಚಕ್ಷುಸ್ (ವುಂ) 1. ವಾಸರ, ಕಪಿ. ದಿವ್ಯ ಚಕ್ಷುರ್ಯಸ್ಮಾತ್. 2. ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ. 3. ಸುಲೋಚನ, ಕನ್ನಡಕ. 4. ಅಂಧ, ಕುರುಡ. "दिव्यचक्षुः  
सुगन्धस्य भेदे नाज्ಞे सुलोचने" मेदि०। (ನಂ) 5. ಚರ್ಮ ಚಕ್ಷುಸ್ಸಿನಿಂದ ಕಾಣಲಾಗದ ವಸ್ತುವನ್ನು ನೋಡುವ ಅಪ್ರಾಕೃತಚಕ್ಷುಸ್ಸು. "न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा। दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्" ಗೀತಾ ೧೧-೮। (ವಿಂ) 6. ಚರ್ಮಚಕ್ಷುಸ್ಸಿನಿಂದ ನೋಡಲಾಗದ ವಸ್ತುವನ್ನು ನೋಡುವ ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು. ದಿವ್ಯ ಚಕ್ಷುರ್ಯಸ್ಯ। "त्रिलोकनाथेन सदा मखद्विषस्त्वया नियम्या ननु दिव्यचक्षुषा" रघु० ३-४५।

ದಿವ್ಯಜ್ಞಾನ ದಿವ್ಯಜ್ಞಾನ (ನಂ) 1. ಉತ್ಕೃಷ್ಟವಾದ ಜ್ಞಾನ, ಸಕಲ ಚರಾಚರವಸ್ತುಗಳನ್ನು (ಜಗತ್ತನ್ನು) ಕರತಲಾ ಮಲಕವಾಗಿ ತಿಳಿಯುವ ಜ್ಞಾನ. 2. ಅಧ್ಯಾತ್ಮಜ್ಞಾನ. 3. ಅಲೌಕಿಕವಸ್ತುಜ್ಞಾನ. (ವಿಂ) -ज्ञानिन्-ज्ञानिन्. ಅಲೌಕಿಕ ವಸ್ತುವಿನ ಜ್ಞಾನವುಳ್ಳ.

ದಿವ್ಯತೇಜಸ್ ದಿವ್ಯತೇಜಸ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬ್ರಾಹ್ಮೀಲತೆ, ಹೊನ್ನಗೊನ್ನೆಸೊಪ್ಪು. ದಿವ್ಯ ತೇಜೋ ಯಸ್ಯಾಃ। (ವಿಂ) 2. ದಿವ್ಯವಾದ ತೇಜಸ್ಸುಳ್ಳ, ಅದ್ಭುತವಾದ ತೇಜಸ್ಸುಳ್ಳ. ದಿವ್ಯ ತೇಜೋ ಯಸ್ಯ।

ದಿವ್ಯದರ್ಶನ ದಿವ್ಯದರ್ಶನ (ನಂ) ಅಲೌಕಿಕ ವಸ್ತುವನ್ನು ನೋಡುವುದು, ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗದ ವಸ್ತುವನ್ನು ಜ್ಞಾನದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ನೋಡುವುದು.







ಅದೇಶತಃ 1. ದಾನಮಾಡು, ಕೊಡು. "ದಿದೇಶ ಕೌತ್ಸಾಯ  
ಸಮಸ್ತಮೇವ ಪಾದಂ ಸುಮೇರೋರಿವ ಬಜ್ರಭಿನ್ನಮ್" ರಘುಂ ೫-೩೦ |  
2. ತೋರಿಸು, ಒಪ್ಪಿಸು, ಹಾಜರುಪಡಿಸು. "ಸಾಕ್ಷಿಣಃ  
ಸಂತಿ ಮೇತ್ಯುಕ್ತವಾ ದಿಶೇತ್ಯುಕ್ತೋ ದಿಶೇತ್ತ ಯಃ" ಮನುಂ ೮-೫೭ |  
3. ಒಪ್ಪಿಗೆಕೊಡು, ಸಮೃದ್ಧಿಸು. "ಭೃತ್ಯಭಾವಿ ದುಹಿತುಃ  
ಪರಿಗ್ರಹಾದಿಷ್ಯತಾಂ ಕುಲಮಿದಂ ನಿಮೇರಿತಃ" ರಘುಂ ೧೧-೪೯ |  
4. ಆಜ್ಞೆ ಕೊಡು, ಅಪ್ಪಣೆಮಾಡು. "ಮಹೋತ್ಸವಾಯ ಪ್ರಮಥ-  
ಪ್ರಮುಖ್ಯಾನ್ ಪೃಥುನ್ ಗಣಾನ್ ಶಮ್ಭುರಥಾದಿದೇಶ" ಕುಮಾಂ ೧೧-೩೦ |  
5. ಅನುಮತಿಸು, ಎಡೆಮಾಡಿಕೊಡು, ಅವಕಾಶಕೊಡು.  
"ಅಸ್ಮಿನ್ ರತಿಶ್ರಮನುದ್ವಾ ಸರೋಜವಾತಾಃ ಸ್ಮರ್ತುಂ ದಿಶಂತಿ ನ  
ದಿವಃ ಸುರಸುಂದರೀಮ್ಯಃ" ಕಿರಾಂ ೫-೨೮ | 6. ತೋರಿಸು,  
ಸೂಚಿಸು.

ಕರ್ಮಣಿಃ-ದಿಶ್ಯತೇ | ದಿದಿಶೇ | ದೇಶ್ಠಾ | ದೇಶ್ಯತೇ |  
ದಿಶ್ಯತಾಮ್ | ಅದಿಶ್ಯತ | ದಿಶ್ಯೇತ | ಇತ್ಯಾಂ.

ಗಿಚಿಃ-ದೇಶಯತಿ, -ತೇ | ದೇಶಯಾಂ -ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ | ದೇಶಯಿತಾ | ದೇಶಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ದೇಶಯತು,  
-ತಾಮ್ | ಅದೇಶಯತ್, -ತ | ಇತ್ಯಾಂ.

ಸನಿಃ-ದಿದಕ್ಷತಿ, -ತೇ | ದಿದಿಕ್ಷಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ,  
ಆಸ | ದಿದಕ್ಷಾಂ ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವೇ, -ಆಸೇ | ಇತ್ಯಾಂ.

ಕೃತ್ಸುಃ-ದೇಶ್ಯಮ್ | ದೇಶನೀಯಮ್ | ದೇಶ್ಯಮ್ | ದಿಷ್ಟಃ |  
ದಿಷ್ಟವಾನ್ | ದಿಶನ್, -ತೀ, -ಂತೀ | ದಿಶಮಾನ್ | ದೇಶ್ಯಮ್ |  
ದಿಷ್ಟಮ್ | ದೇಶನಮ್ | ದಿಷ್ಟವಾ | ನಿರ್ದಿಶ್ಯ |

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು :

(1) ಅತಿ + ದಿಶ = ಅತಿದಿಶತಿ | ಅತಿದೇಶಃ |  
ಒಂದರ ಧರ್ಮವನ್ನು ಮತ್ತೊಂದರಲ್ಲಿ ಹೇಳು, ಒಂದು  
ಕಡೆ ವಿಧಿಸುವ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮತ್ತೊಂದು ಕಡೆ ವಿಧಿಸು.  
"ಅನ್ಯತ್ರೈವ ಪ್ರಣೀತಾಯಾಃ ಕೃತ್ಸನಾಯಾ ಷರ್ಮಸಂಹತೇಃ | ಅನ್ಯತ್ರ  
ಕಾರ್ಯತಃ ಪ್ರಾಪ್ತೀರತಿರ್ದೇಶಃ ಸ ಉಚ್ಯತೇ" | ["ಅತಿದೇಶ"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

(2) ಅಪ + ದಿಶ = ಅಪದಿಶತಿ | ಅಪದಿಶನ್ | ಅಪದೇಶಃ |  
1. ವ್ಯಾಜ, ನೆಪ. "ರಕ್ಷಾಪದೇಶಾನ್ಮುನಿಹೋಮಧೇನೋರ್ವನ್ಯಾ  
ನ್ವಿನೇಷ್ಯನ್ನಿವ ದುಷ್ಟಸತ್ವಾನ್" ರಘುಂ ೨-೮ | 2. ಉದ್ದೇಶ,  
ಗುರಿ. "ಸಿತಚ್ಚದಾನಾಮಪದಿಶ್ಯ ಭಾವತಾಂ ಸ್ತೋರಮಿಷಾಂ ಪ್ರಥಿತಾಃ  
ಪತತ್ರಣಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೪-೩೦ |

(3) ವಿ + ಅಪ + ದಿಶ = ವ್ಯಪದಿಶತಿ | ವ್ಯಪದೇಶಃ |  
ಮುಖ್ಯವಲ್ಲದ ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯ ಧರ್ಮವನ್ನು ಹೇಳು.  
"ನಿಮಿತ್ತಸದ್ಭಾವಾತ್ ವಿಶಿಷ್ಟೋಪದೇಶಃ ಅಮುಖ್ಯವ್ಯವಹಾರೋ  
ವ್ಯಪದೇಶಃ" ಪರಿಭಾಂ ೨೦ |

(4) ಆ + ದಿಶ = ಆದಿಶತಿ | ಆದೇಶಃ | 1. ಆಜ್ಞೆ  
ಮಾಡು. "ಆದೇಶಂ ದೇಶಕಾಲಜಃ ಶಿಷ್ಯಃ ಶಾಸಿತುರಾನತಃ"  
ರಘುಂ ೧-೯೨ | "ಆದಿಕ್ಷದಾದೀಪ್ತಕೃಶಾನುಕಲ್ಪಮ್" ಭट्टಿಂ  
೩-೩ | 2. ಉಪದೇಶ, ಬೋಧನೆ. "ನ ಚಾಸ್ಯೋಪದಿಶೇದ್ವರ್ಮ  
ನ ಚಾಸ್ಯ ವ್ರತಮಾದಿಶೇತ್" ಮನುಂ ೪-೮೦ | 3. ಒಂದರ  
ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಇನ್ನೊಂದು ಬಂದು ಕೊಡುವುದು. "ಧಾತೋಃ  
ಸ್ಥಾನ ಇವಾದೇಶಂ ಸುಗ್ರೀವಂ ಸನ್ನಯವೇಶಯತ್" ರಘುಂ ೧೨-೫೮ |  
4. ಕಥನ, ಹೇಳುವುದು, ನುಡಿಯುವುದು. "ಸಿದ್ಧಾದೇಶ-  
ಪ್ರತ್ಯಯಪ್ರಾಥಿತಾಯಾಃ ಸಿಂಹಲೇಶ್ವರದುಹಿತುಃ ಸಮುದ್ರೇ ಪ್ರಬಹಣಭಜ್ಞ-  
ನಿಮಗ್ನಾಯಾಃ ಫಲಕಾಸಾದನಮ್" ರತ್ನಾಂ ೧ |

(5) ಅನು + ಆ + ದಿಶ = ಅನ್ವಾದಿಶತಿ | ಅನ್ವಾದೇಶಃ |  
1. ಅನಂತರ ಆಜ್ಞೆ ಮಾಡು. 2. ಒಂದು ಕಾರ್ಯವನ್ನು  
ಬೋಧಿಸಲು ಹೇಳುವುದನ್ನು ಮತ್ತೊಂದು ಕಾರ್ಯ  
ಕ್ಕಾಗಿ ಮತ್ತೆ ಹೇಳು. "ಕಿಂಚಿತ್ ಕಾರ್ಯಂ ವಿಚಾರತುಮುಪಾಂತಸ್ಯ  
ಕಾರ್ಯಾಂತರಂ ವಿಧಾತುಂ ಪುನಃಪಾದಾನಮ್ ಅನ್ವಾದೇಶಃ" |

(6) ಪ್ರತಿ + ಆ + ದಿಶ = ಪ್ರತ್ಯಾದಿಶತಿ | ಪ್ರತ್ಯಾದೇಶಃ |  
1. ತಿರಸ್ಕರಿಸು, ನಿರಾಕರಿಸು. "ಪ್ರತ್ಯಾದಿಷ್ಟವಿಶೇಷಮಂಡನ-  
ವಿಧಿಃ ವಾಮಪ್ರಕೋಷಾರ್ಪಿತಮ್" ಶಾಕುಂ ೬-೬ | 2. ವಿಸರ್ಜಿಸು,  
ಬಿಟ್ಟುಬಿಡು. "ಕೃಜುಪ್ರಮಾಣಕ್ರಿಯಯೇವ ತನ್ಮಿತಿ ಪ್ರತ್ಯಾದಿ  
ದೇಶನಮಭಾಷಮಾಣಾ" ರಘುಂ ೬-೨೫ |

(7) ವಿ + ಆ + ದಿಶ = ವ್ಯಾದಿಶತಿ | ವ್ಯಾದೇಶಃ |  
ಯಿಂದ ಹೇಳು. "ಸಮೀರಣೋ ನೋದಯಿತಾ ಭವೇತಿ ವ್ಯಾದಿಶ್ಯತೇ  
ಕೇನ ಹುತಾಶನಸ್ಯ" ಕುಮಾಂ ೩-೨೧ |

(8) ಸಮ್ + ಆ + ದಿಶ = ಸಮಾದಿಶತಿ | ಸಮಾದೇಶಃ |  
1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಆಜ್ಞೆ ಮಾಡು, ಸರಿಯಾಗಿ ಅಜ್ಞಾಪಿಸು.  
"ಆರಾಧನಾಯಾಸ್ಯ ಸಖಿಸಮೇತಾಂ ಸಮಾದಿದೇಶ ಪ್ರಯತಾಂ ತನುಜಾಮ್"  
ಕುಮಾಂ ೧-೫೮ | 2. ಹೇಳು, ತಿಳಿಸು, ನುಡಿ. "ಸಮಾದಿದೇಶಕ-  
ವಧುಂ ಭವಿತ್ರಿಂ ಪ್ರೇಮ್ಣಾ ಶರೀರಾರ್ಥಹರಾಂ ಹರಸ್ಯ" ಕುಮಾಂ ೧-೫೦ |

(9) ಉ + ದಿಶ = ಉದಿಶತಿ | ಉದೇಶಃ | 1. ಸೂಚಿಸು,  
ತಿಳಿಸು, ಹೇಳು. "ಭಗವಾನಪಿ ಸಂಪ್ರಾಪ್ತಃ ಪ್ರಥಮೋದಿಷ್ಟ-  
ಮಾಸ್ಪದಮ್" ಕುಮಾಂ ೬-೩೫ | 2. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ನಿರೂಪಿಸು,  
ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಹೇಳು. "ತ್ವಂ ಸಾಧುಭಿರುದಿಷ್ಟಃ ಪ್ರಥಮಮೇವ  
ಚಕ್ರವರ್ತಿನಂ ಪುತ್ರಂ ಜನಮಿಷ್ಯಸೀತಿ" ಶಾಕುಂ ೫ | 3. ಗುರಿ  
ಯಿಡು, ಲಕ್ಷ್ಯವಿಡು. "ಯತ್ ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರಾರ್ಥಂ ಫಲಮುದಿಷ್ಟ  
ವಾ ಪುನಃ" ಗೀತಾ ೧೭-೨೫ | 4. ಸಂಕಲ್ಪಿಸು, ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ  
ನಿಶ್ಚಯಿಸು. "ಚಾಮುಂಡೇ, ಭಗವತಿ ಮನ್ತ್ರಸಾಧನಾದಾವುದಿಷ್ಟಾ-  
ಮುಪನಿಹಿತಾಂ ಭಜಸ್ವ ಪೂಜಾಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೫-೨೫ | 5. ಉಪ-  
ದೇಶಿಸು, ಹೇಳಿಕೊಡು. "ಸತಾಂ ಕೇನೋದಿಷ್ಟಂ ವಿಷಮಮಸಿ-  
ಧಾರಾವ್ರತಮಿದಮ್" ಭರ್ತುಂ ೧-೫೬ |



(10) **ಉಪ+ದಿಶ=ಉಪದಿಶತಿ**। ಉಪದೇಶಃ। 1. ಉಪದೇಶಿಸು, ಬೋಧಿಸು, ಕಲಿಸು. 2. ಬೋಧಿಸು, ಸಲಹೆ ಕೊಡು, ಬುದ್ಧಿ ಹೇಳು. “ಇತ್ಯೇಕ ಉಪದೇಶ ಇವ ಸ್ವಾಧೀನತೆ ಯುವತಿರ್ಮಮವಾರಃ” ಕಿರಾಂ ೧-೫೩।

(11) **ಪ್ರತಿ+ಉಪ+ದಿಶ=ಪ್ರತಿಯುಪದಿಶತಿ**। ಪ್ರತಿಯುಪದೇಶಃ। ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಉಪದೇಶಿಸು, ಹೇಳಿಕೊಟ್ಟವನಿಗೆ ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಹೇಳಿಕೊಡು. “ಯದ್ವತ್ ಪ್ರಯೋಗವಿಷಯೇ ಭಾವಿಕಮುಪದಿಶ್ಯತೇ ಮಯಾ ತಸ್ಯೈ। ತತ್ತದ್ವಿಶೇಷಕರಣಾತ್ ಪ್ರತಿಯುಪದಿಶತೀವ ಮೇ ಬಾಲಾ” ಮಾಲಂ ೧-೫।

(12) **ನಿರ್+ದಿಶ=ನಿರ್ದಿಶತಿ**। ನಿರ್ದೇಶಃ। 1. ನಿಶ್ಚಯವಾಗಿ ಹೇಳು, ನಿರ್ಣಯಮಾಡಿ ತೋರಿಸು. “ಅನುಷ್ಠಾನ ಪೀಠಮಾಸನ್ನೇ ನಿರದಿಕ್ಷನ್ವ ಕಾಶ್ವನಮ್” ಭಟ್ಟಿಂ ೧೫-೮।

(13) **ಸಮ್+ದಿಶ=ಸಂದಿಶತಿ**। ಸಂದೇಶಃ। 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೇಳು, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಹೇಳು. “ನಿಪುಣಂ ತಥೇನಮುಪಗಮ್ಯ ವದೇರಭಿಧೃತಿ ಕಾಚಿದಿತಿ ಸಂದಿಶತೇ” ಮಾಘಂ ೧-೫೬। 2. ಬಾಯಿಮಾತಿನಿಂದ ಹೇಳಿಕಳುಹಿಸು. “ನನು ಸಂದಿಶತೇ ಸುದೃಶೋದಿತಯಾ ತ್ರಪಯಾ ನ ಕಿಂಚನ ಕಿಲಾಭಿದಧೇ” ಮಾಘಂ ೧-೬೧।

**ದಿಶ ದಿಶ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಗ ಜೇಂದ್ರಮೋಕ್ಷಣ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ವಿಷ್ಮಿತಾನ್ ಬ್ರಹ್ಮಾದೀನ್ ವಂದಮಾನಾನ್ ನಾನ್ತರಜ್ಞೀಕರೋತಿ ಗಜೇಂದ್ರವತ್ ಕಿಂತು ದಿಶತಿ ಆಜ್ಞಾಪಯತಿ—ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೫)। “ವಾತ್ರಾದೀನ್ ಸರ್ವಕೃತ್ಯೇಷು ಸ್ವಾಜ್ಞಾಪಯತಿ ಯಃ ಸದಾ। ದಿಶಃ ಸ ತು ಸಮಾಖ್ಯಾತಃ ಷಡ್ಗಂ ಮನುರೂತಮಃ” ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ। “ಚತುರಶ್ರೋ ಗಂಭೀರಾತ್ಮಾ ವಿದಿಶೋ ವ್ಯಾದಿಶೋ ದಿಶಃ” ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 2. ಕೊಡುವವನು. 3. ಅಜ್ಞೆ ಮಾಡುವವನು.

**ದಿಶತ್ ದಿಶತ್ (ವಿಂ)** 1. ಕೊಡುತ್ತಿರುವ, ದಾನಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। “ಕಾಲೀಯಕಕ್ಷೋದವಿಲೇಪನಶ್ರಿಯಂ ದಿಶದಿಶಾಮುಲ್ಲಸದಂಶುಮದ್ಯುತಿ” ಮಾಘಂ ೧೨-೧೪। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಛಿಪ್” (೪-೧-೬)। -ತೀ, -ಂತೀ-೩೯, -೨೯. “ಅಭ್ಯುಮಿರಾಜಿ ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿತಾಭಿ-ಮುಂದಂ ದಿಶಂತೀಂ ಬ್ರಜತಾಂ ಜನಾನಾಮ್” ಕುಮಾರಂ ೧೩-೨೮। 2. ಅಜ್ಞೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ.

**ದಿಶಮಾನ ದಿಶಮಾನ (ವಿಂ)** “ದಿಶತ್” ಪದದ ಅರ್ಥ. ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) “ಶಾನ್” (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಛಿಪ್” (೪-೧-೬)। -ಮಾನಾ -ಮಾನಾ.

**ದಿಶಾ ದಿಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪೂರ್ವ ಪಶ್ಚಿಮ ಮೊದಲಾದ ದಿಕ್ಕು, ದಿಶೆ. ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೫)।

“ಛಿಪ್” (೪-೧-೬)। “ವಿಷ್ಣು ಭಾಗುರೀರಲೋಪಮವಾಪ್ಯೋ-ರೂಪಸಂಗಯೋಃ। ಆಪಂ ಚೈವ ಹಲಂತಾನಾಂ ಯಥಾ ವಾಚಾ ನಿಶಾ ದಿಶಾ”। ವಿಭೂಷಯಾಮಾಸ ವಿಭೂತಿವೈಭವಂ ದಿಶಾಭಿರಷ್ಠಾಭಿ-ರಿವಾತ್ಮನಃ ಪದಮ್” ಯಾದಂ ೧೪-೭೬।

**ದಿಶಾಗಜ ದಿಶಾಗಜ (ಪುಂ)** ದಿಗ್ಗಜ, ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿರುವ ಅನೆ. ದಿಶಾಭಿಂ ಸ್ಥಿತೋ ಗಜಃ।

**ದಿಶಾಚಕ್ಷುಸ್ ದಿಶಾಚಕ್ಷುಸ್ (ಪುಂ)** ಗರುಡಂತನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

**ದಿಶಾಪಾಲ ದಿಶಾಪಾಲ (ಪುಂ)** 1. ಇಂದ್ರ ಮೊದಲಾದ ದಿಕ್ಕಾಲಕರು. ದಿಶಾಃ ಪಾಲಯತಿ—ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) “ಅಣ್” (೩-೨-೧)। 2. ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ದಿಕ್ಕಾಲಕರಾಗಿ ನೇಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ವೈರಾಜ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಜಾಪತಿಗಳ ಮಕ್ಕಳು. ಇವರು ಪೂರ್ವ ಮೊದಲಾದ ನಾಲ್ಕು ದಿಕ್ಕುಗಳ ಪಾಲಕರು.

ವೈರಾಜ ಪ್ರಜಾಪತಿಯ ಮಗ } ಪೂರ್ವ ದಿಕ್ಕಾಲಕ.  
ಸುಧನ್ವನು

ಕರ್ದಮ ಪ್ರಜಾಪತಿಯ ಮಗ } ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಾಲಕ.  
ಶಂಖಪದನು

ರಜಸ್ವಿನ ಮಗ } ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕಾಲಕ.  
ಕೇತುಮಂತನು

ಪರ್ಜನ್ಯ ಪ್ರಜಾಪತಿಯ ಮಗ } ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಾಲಕ.  
ಹಿರಣ್ಯರೋಮನು

**ದಿಶ್ಯ ದಿಶ್ಯ (ವಿಂ)** ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ. ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ದಿಶಿ ಭವಮ್ “ಯತ್” (೪-೩-೫೪)। “ವಿಕೀರ್ಯ ದಿಶ್ಯಾನಿ ಧನಾನ್ಯುರೂಪಿಣಿ ದ್ವೈಪ್ಯಾನಸಾವುತ್ತಮಲಾಭಭಾಜಃ” ಮಾಘಂ ೩-೭೬।

**ದಿಷ್ಟ ದಿಷ್ಟ (ಪುಂ)** 1. ಕಾಲ, ಸಮಯ. ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) ಸಂಜ್ಞಾಭಿಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೭೪)। “ಕಾಲೋ ದಿಷ್ಟೋಽಪ್ಯ-ನೇಹಾಪಿ” ಅಮಂ। 2. ವೈವಸ್ವತಮನುವಿನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. “ನರೀಶ್ವರೋಽಪ್ಯ ನಾಭಾಗಃ ಸಪ್ತಮೋ ದಿಷ್ಟಃ ಉಚ್ಯತೇ” ಭಾಗಂ ೮-೧೩-೩। (ನಂ) 3. ಭಾಗ್ಯ, ಅದೃಷ್ಟ. ದಿಶ ಕರ್ತಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨)। “ನ ದಿಷ್ಟಮಿಷ್ಟಂ ಕುರುತೇ ನ ತಿಷ್ಠತಿ ತು ಪೌರೋ” ವಿಷ್ಣುಪುಂ। 4. ಮೃತ್ತಿಕಾಸ್ಥಾನ. “ಯನ್ಮೃತ್ತಿಕಾ-ಮ್ಭಸಾ ಸ್ನಾನಂ ದಿಷ್ಟಂ ದೇಶನಿಕಂ ಚ ತತ್” ವೈಜಂ। 5. ಸಂದೇಶ, ಹೇಳಿಕಳುಹಿದ ಬಾಯಿಮಾತು. “ಆಖ್ಯಾಯಿನಿ ತು ಸಂದೇಶೋ ದಿಷ್ಟಂ ಸಂವದನ್ವ ತತ್” ವೈಜಂ। 6. ಅನಂದ, ಸಂತೋಷ. 7. ಪರಿಣಾಮ. “ದಿಷ್ಟಂ ದೈವಪರೀಣಾಮಾನಂದೇಷು ಸಮೇ ತು ನಾ” ನಾನಾರ್ಥರಂ। (ವಿಂ) 8. ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 9. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ.



**ದಿಷ್ಟಾಂತ ದಿಷ್ಟಾಂತ** (ಪುಂ) 1. ಅದೃಷ್ಟದ ಕೊನೆ. 2. ಅವಸಾನ, ಮರಣ. ದಿಷ್ಟಾಂತಃ. "ತतो ದಿಷ್ಟಾಂತಮಾಪन्नः सर्वेषां दुःखमावहन्" भा० आदि०। "दिष्टान्तमाप्स्यति भवानपि पुत्रशोकात्" रघु० ९-७९।

**ದಿಷ್ಟಿ ದಿಷ್ಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀ) 1. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. ದಿಷ್ಟಿ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಿನ್" (३-३-९४)। "राजकुले दिष्टिवृद्धिसम्भ्रमो महानभूत्" काद०। 2. ಒಂದು ಪರಿಮಾಣ, ಎಂಟು ಅಂಗುಲಗಳ ಅಳತೆ. "दिष्टिर्मुत्परिमाणयोः" मेदि०। "वनग्रहश्च दिष्टिश्च स्यातामष्टाङ्गुलावुभौ" वैज०। 3. ಸೌಖ್ಯ. 4. ಧ್ಯಾನ. 5. ಪರಿಣಾಮ. "दिष्टिर्घ्यानसुखानन्दपरिणामेषु" नानार्थ०। 6. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. "दिष्टिः सुखे च दाने च" वैज०। 7. ಭಾಗ್ಯ, ಅದೃಷ್ಟ. "दिष्टिवृद्धिमिव शुश्राव" काद०। 8. ಉಪದೇಶ, ಬೋಧನೆ.

**ದಿಷ್ಟಾ ದಿಷ್ಟಾ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಕಲ್ಯಾಣ, ಮಂಗಳ. ದಿಷ್ಟಾ ದೇಶನಂ ಸ್ತಾಯತಿ - ಷ್ಟಾ (ಶಬ್ದಸಂಧಾತಯೋಃ) "क्विप्" (३-२-१७८)। 2. ಹರ್ಷ, ಆನಂದ. "दिष्ट्या हर्षमङ्गले च" मेदि०। "अनेन सम्बन्धमुपेत्य दिष्ट्या मनोरथप्रार्थितमीश्वरेण" कुमा० ७-६८। 3. ಅದೃಷ್ಟದಿಂದ, ಭಾಗ್ಯವಿಶೇಷದಿಂದ. ಇದು ವಿಭಕ್ತಿಪ್ರತಿರೂಪ ಕಾವ್ಯಯ. "दिष्ट्या त्वमसि मे धात्रा भीतेनोपपादितः" रघु० १५-१८। "वत्स माधव, दिष्ट्या वर्धितोऽसि मालत्या। सोऽयमवसरः प्रीतिदानस्य" मालती० ४।

**ದಿಷ್ಟು ದಿಷ್ಟು** (ವಿಂ) ದಾನಮಾಡುವವನು.

**ದಿಹ - उपचये** (ಅದಾಂ ಉಚಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ)। ದೇಗಿ, ದಿಗಿ. ದಿದೇಹ, ದಿದಿಹೇ. ದೇಗಾ. ಧೇಷ್ಯತಿ, -ತೇ. ದೇಗು, ದಿಗಾಮ್. ಅಧೇಕ್, ಅದಿಗಿ. ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಬೆಳೆ, ವೃದ್ಧಿಹೊಂದು. 2. ಬಳಿ, ಲೇಪನಮಾಡು, ಹಚ್ಚು. "अदिहंश्चन्दनैः शुभ्रैर्विचित्रं समवस्त्रयन्" भट्टि० १७-५४।

**ಕರ್ಮಣಿ**:-ದಿಹ್ಯತೇ. ದಿಗಿ. ದೇಗಾ. ಧೇಷ್ಯತೇ. ದಿಹ್ಯತಾಮ್. ಅದಿಹ್ಯತ. ದಿಹ್ಯತ. ಅದೇಹಿ. ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತು**:-ದೇಗ್ಯಮ್. ದೇಹನೀಯಮ್. ದೇಹ್ಯಮ್. ದಿಗಿ. ದಿಗಿವಾನ್. ದಿಹನ್, -ತೀ. ದಿಹಾನಃ. ದೇಗ್ಯಮ್. ದಿಗಿಮ್. ದೇಹನಮ್. ದಿಗಿವಾ. ಪ್ರದಿಹ್ಯ.

**ದಿಡ್ - क्षये** (ದಿವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ)। ದೀಯತೇ. ದಿಗಿ. ಅದಾಸ್ತ. ಇತ್ಯಾದಿ. ಕ್ಷಯಹೊಂದು, ನಾಶವಾಗು.

**ದೀಕ್ಷ-मौण्डचेज्योपनयननियमव्रतादेशेषु** (ಪ್ರಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸಂ)। ದೀಕ್ಷತೇ. ದಿದೀಕ್ಷೇ. ದೀಕ್ಷಿತಾ. ದೀಕ್ಷಿಷ್ಯತೇ. ದೀಕ್ಷಿತಾಮ್. ಅದೀಕ್ಷತ. ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಮುಂಡನಮಾಡು, ಕ್ಷೌರಮಾಡು. 2. ಯಾಗಮಾಡು. 3. ವೇದಾಧ್ಯಯನಕ್ಕಾಗಿ ಬಾಲಕನಿಗೆ ಉಪನಯನ ಸಂಸ್ಕಾರಮಾಡಿ ಗುರುವಿನಲ್ಲಿಗೆ ಕಳುಹಿಸು. 4. ನಿಯಮದಲ್ಲಿರು, ಕಟ್ಟುಪಾಡಿನಲ್ಲಿರು, ನಿರ್ಬಂಧದಲ್ಲಿರು. 5. ಪವಿತ್ರವಾದ ಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಸಂಸ್ಕಾರಹೊಂದು, ಮಂತ್ರಗ್ರಹಣಮೊದಲಾದುದಕ್ಕಾಗಿ ಉಪದೇಶಹೊಂದು. 6. ಅಚ್ಚೆಯಂತೆ ನಡೆ, ಅಪ್ಪಣೆಯ ಮೇರೆಗೆ ಇರು.

**ಭಾವೇ**:-ದೀಕ್ಷತೇ. ದಿದೀಕ್ಷೇ. ದೀಕ್ಷಿತಾ. ದೀಕ್ಷಿತಾಮ್. ಅದೀಕ್ಷತ. ದೀಕ್ಷೇತ. ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತು**:-ದೀಕ್ಷಿತವ್ಯಃ. ದೀಕ್ಷಣೀಯಃ. ದೀಕ್ಷಯಃ. ದೀಕ್ಷಿತಃ. ದೀಕ್ಷಿತವಾನ್. ದೀಕ್ಷಿಮಾಣಃ. ದೀಕ್ಷಿತುಮ್. ದೀಕ್ಷಿತಮ್. ದೀಕ್ಷಣಮ್. ದೀಕ್ಷಿತವಾ.

**ದೀಕ್ಷಕ ದೀಕ್ಷಕ** (ಪುಂ) ದೀಕ್ಷೆಯನ್ನು ಕೊಡುವವನು, ಆಚಾರ್ಯ, ಮಂತ್ರೋಪದೇಶ ಮಾಡುವವನು. ದೀಕ್ಷ (ಮೌಂಡಚೇಜ್ಯಾದಿಭು) "ण्वल्" (३-१-१३३)।

**ದೀಕ್ಷಣ ದೀಕ್ಷಣ** (ನಂ) ಯಾಗ ಮೊದಲಾದ ಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಕೈಗೊಳ್ಳುವ ನಿಯಮ, ಪ್ರಾರಂಭದ ಸಂಸ್ಕಾರ. ದೀಕ್ಷ (ಮೌಂಡಚೇಜ್ಯಾದಿಭು) ಭಾವೇ "ल्युट्" (३-३-११५)।

**ದೀಕ್ಷಣೀಯ ದೀಕ್ಷಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ನಿಯಮದಲ್ಲಿರಬೇಕಾದ. 2. ನಿಯಮದಲ್ಲಿರಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ನಿಯಮದಲ್ಲಿರಲು ಶಕ್ತನಾದ. ದೀಕ್ಷ (ಮೌಂಡಚೇಜ್ಯಾದಿಭು) "अनीयर्" (३-१-९६)। 4. ಕ್ಷೌರಮಾಡಿಸಬೇಕಾದ, ಮುಂಡನಮಾಡಿಸಬೇಕಾದ. 5. ಯಾಗ ಮೊದಲಾದ ಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಸಂಸ್ಕಾರ ಹೊಂದಬೇಕಾದ, ಪವಿತ್ರಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಮಂಗಳಕಾರ್ಯ ಮಾಡಬೇಕಾದ. 6. ಮಂತ್ರಗ್ರಹಣಮೊದಲಾದುದಕ್ಕಾಗಿ ಆಚಾರ್ಯರಿಂದ ಉಪದೇಶಹೊಂದಬೇಕಾದ. "तव्यः" (३-१-९६)। -ಕ್ಷಿತವ್ಯಃ:-ಕ್ಷಿತವ್ಯಃ.

**ದೀಕ್ಷಾ ದೀಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀ) 1. ನಿಯಮವನ್ನು ಹಿಡಿಯುವುದು, ವ್ರತಧಾರಣೆ. 2. ಒಂದು ಪವಿತ್ರ ಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ (ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ) ನಡೆಸುವ ಸಂಸ್ಕಾರ. ದೀಕ್ಷ (ಮೌಂಡಚೇಜ್ಯಾದಿಭು) "अः" (३-३-१०३)। "अजस्रदीक्षाप्रयतः स मद्गुरुः क्रतोरशेषेण फलेन युज्यताम्" रघु० ३-६५। 3. ಉಪನಯನ ಸಂಸ್ಕಾರ. 4. ಮಂತ್ರ ಸ್ವೀಕಾರ, ಉಪದೇಶ. ಇಂತಹ ಸಂಸ್ಕಾರದಿಂದ ನಿರ್ಮಲ ಜ್ಞಾನವು ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವುದು. ಕರ್ಮವಾಸನೆಯು ನಾಶವಾಗುವುದು. ಅದಂಥ



ರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ದೀಕ್ಷೆಯೆಂದು ಹೆಸರು. "ದೀಯತೇ ವಿಮಲಂ ಜ್ಞಾನಂ ಧೀಯತೇ ಕರ್ಮವಾಸನಾಃ | ತೇನ ದೀಕ್ಷೇತಿ ಸಾ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಮುನಿಃ ಸ್ತನ್ಮತೇದಿಭಿಃ" | ಯಜ್ಞ, ವಿವಾಹ, ತಪಸ್ಸು, ಜಪ ಮೊದಲಾದ ಪವಿತ್ರಕಾರ್ಯಗಳ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿಯೂ ಎಲ್ಲಾ ಆಶ್ರಮಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಎಲ್ಲಾ ಕಾರ್ಯಗಳಿಗೂ ದೀಕ್ಷೆಯು ಅವಶ್ಯವಾದುದು. "ದೀಯತೇ ಜ್ಞಾನಸಂಹಾರಃ | ಶಾಲನಾತ್ಪಾಪಸಂಹತೇಃ | ತತಃ ದೀಕ್ಷೇತಿ ಸಾ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಮುನಿಃ ಸ್ತನ್ಮತೇದಿಭಿಃ | ದೀಕ್ಷಾಮೂಲಂ ಜಪಂ ಸರ್ವಂ ದೀಕ್ಷಾಮೂಲಂ ಪರಂ ತಪಃ | ದೀಕ್ಷಾಮಾಶ್ರಿತೃ ನಿವಸೇತ್ ಯತ್ರ ಕುತ್ರಾಶ್ರಮೇ ವಸನ್" ತನ್ಮತಾಂ | ದೀಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದೆ ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ಕರ್ಮವು ನಿಷ್ಫಲ. "ಅದೀಕ್ಷಿತಾ ಯೇ ಕುರ್ವಂತಿ ಜಪಪೂಜಾದಿಕಾಃ ಕ್ರಿಯಾಃ | ನ ಭವಂತಿ ಶ್ರೀಯೇ ತೇಷಾಂ ಶಿಲಾಯಾಮುಪ್ತಬೀಜವತ್ | ದೇವಿ ದೀಕ್ಷಾ-ವಿಹೀನಸ್ಯ ನ ಸಿದ್ಧಿರ್ನ ಚ ಸದ್ಗತಿಃ | ತಸ್ಮಾತ್ಸರ್ವಪ್ರಯತ್ನೇನ ಗುರುಣಾ ದೀಕ್ಷಿತೋ ಭವೇತ್" ತನ್ಮತಾಂ | 5. ಯಾಗಕ್ಕೆ ಮೊದಲು ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ಒಂದು ಕರ್ಮ, ಯಜ್ಞದೀಕ್ಷೆ, ದೇವತಾಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ದಿಕಾರ್ಯ. 6. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ, ದೃಢಸಂಕಲ್ಪ. 7. ಶುಭಕಾರ್ಯ, ವಿವಾಹಸಂಸ್ಕಾರ. "ಸಮೇತಬನ್ಧು-ಹಿಮವಾನ್ ಸುತಾಯಾ ವಿವಾಹದೀಕ್ಷಾವಿಧಿಮನ್ವತಿಷ್ಠತ್" ಕುಮಾಂ ೭-೧ |

**ದೀಕ್ಷಾಗುರು ದೀಕ್ಷಾಗುರು (ಪುಂ)** ದೀಕ್ಷೆಯನ್ನು ಕೊಡುವ ಆಚಾರ್ಯ, ಮಂತ್ರೋಪದೇಶ ಮಾಡುವ ಆಚಾರ್ಯ. ದೀಕ್ಷಾಘಾತ ಗುರುಃ |

**ದೀಕ್ಷಾಂತ ದೀಕ್ಷಾಂತ (ಪುಂ)** ಪ್ರಧಾನಯಾಗದ ಅನಂತರ ಮಾಡುವ ಯಾಗ, ಅವಭೃಥಸ್ನಾನವೆಂಬ ಯಾಗ. ದೀಕ್ಷಾಘಾತಃ ಪ್ರಧಾನಯಾಗಸ್ಯ ಅಂತಃ ಸಮಾಪಕೋ ಯಾಗಃ | "ದೀಕ್ಷಾಂತೋಽವಭೃಥೋ ಯಜ್ಞಃ" ಅಮಂ |

**ದೀಕ್ಷಿತ ದೀಕ್ಷಿತ (ಪುಂ)** 1. ಸೋಮಯಾಜಿ, ಸೋಮಯಾಗ ಮೊದಲಾದ ಯಾಗಾಂಗವಾದ ವ್ರತವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವವನು. ದೀಕ್ಷಿತಃ - ದೀಕ್ಷ (ಮೌಢ್ಯಜ್ಯಾದಿಭಿಃ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | 2. ತಂತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಯಾಗದೀಕ್ಷೆಯನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿರುವವನು. "ವರ್ಣಾನಾಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಶ್ರಾಪಿಸಿ ವಿಪ್ರೇಣ ದೀಕ್ಷಿತೋ ದ್ವಿಜಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ | "ಚತ್ವಾರೋ ವಯಮೃತ್ವಿಜಃ ಸ ಭಗವಾನ್ ಕರ್ಮಪ್ರದೇಶಾ ಹರಿಃ ಸಂಗ್ರಾಮಾಧ್ಯರದೀಕ್ಷಿತೋ ನರಪತಿಃ ಪತ್ನೀ ಗೃಹೀತವ್ರತಾ" ವೇಣಿಂ ೧-೨೫ | "ಆಪಸ್ತಂಬಸತ್ರೇಷು ದೀಕ್ಷಿತಾಃ ಸ್ವಲ್ಪ ಪೌರವಾಃ" ಶಾಕುಂ ೨-೧೬ | 3. ಮಂತ್ರ ಗ್ರಹಣರೂಪವಾದ ದೀಕ್ಷೆಯನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದವನು. ದೀಕ್ಷಾ ಅಸ್ಯ ಸಂಜ್ಞಾತಾ "ಇತ್ಯು" (೫-೧-೩೬) | 4. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡಿದವನು, ಯಾವುದಾದರೂ ಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ದೃಢ

ಸಂಕಲ್ಪಮಾಡಿದವನು. "ತಂ ಪಿತುರ್ವಧಭವೇನ ಮನ್ಯುನಾ ರಾಜವಂಶ ನಿವನಾಯ ದೀಕ್ಷಿತಮ್" ರಘುಂ ೧೧-೬೭ | 5. ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ ಮೊದಲಾದ ಶುಭ ಸಂಸ್ಕಾರವನ್ನು ಹೊಂದಿದವನು. "ಪದಾ ಪದಾತಪತ್ರೇಣ ಭೇಜೇ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯದೀಕ್ಷಿತಮ್" ರಘುಂ ೪-೫ |

**ದೀಕ್ಷಿತವತ್ ದೀಕ್ಷಿತವತ್ (ವಿಂ)** ದೀಕ್ಷೆಯನ್ನು ಕೈಗೊಂಡವನು. ದೀಕ್ಷ "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

**ದೀಕ್ಷಿತ ದೀಕ್ಷಿತ (ವಿಂ)** ದೀಕ್ಷೆಯನ್ನು ಹಿಡಿಯುವ ಸ್ವಭಾವದವನು, ವ್ರತವನ್ನು ಕೈಗೊಳ್ಳುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ದೀಕ್ಷ (ಮೌಢ್ಯಜ್ಯಾದಿಭಿಃ) "ತನ್" (೩-೨-೧೫೩) |

**ದೀದಿವಿ ದೀದಿವಿ (ಪುಂ)** 1. ಗುರು, ಬೃಹಸ್ಪತಿ, ದೇವತೆಗಳ ಆಚಾರ್ಯ. ದಿವು (ಕೀಡಾದಿಭಿಃ) "ವಿವನ್" ದ್ವಿತ್ವಮ್ ಅಭ್ಯಾಸಸ್ಯ ದೀರ್ಘಶ್ಚ (೩ಂ ೪-೫೫) | 2. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ. 3. ಮೋಕ್ಷ. (ಪುನಂ) 4. ಅನ್ನ. "ಪುನಿ ಸ್ವರ್ಗೋ ದೀದಿವಿ-ನಾಂ ವಿಷಣೇಶ್ಚ ತದಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ | (ವಿಂ) 5. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ. ಪುನಃ ಪುನಃ ಭೃಶಂ ವಾ ದೀವ್ಯತಿ |

**ದೀಧಿತಿ ದೀಧಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಕಿರಣ, ರಶ್ಮಿ, ಕದಿರು. ದೀಧೀತೇ ದೀಧೀತೇ-ದೀಧಿಡ್ (ದೀಪ್ತಿವೇದನಯೋಃ) "ಕ್ತಿಚ್" (೩-೩-೧೭೪) | "ಅಂತಿಕಾಂತಿಕಗತೇಂದ್ರವಿಸೃಷ್ಟೇ ಜಿಹ್ವಾತಾಂ ದಧತಿ ದೀಧಿತಿಜಾಲೇ" ಕಿರಾಂ ೯-೨೧ | 2. ಅಂಗುಳಿ, ಬೆರಳು.

**ದೀಧಿತಿಮತ್ ದೀಧಿತಿಮತ್ (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯ. ದೀಧಿತಯೋಽಸ್ಯ ಸಂತಿ-ಮತುಪ್ (೫-೨-೯೪) | "ವಶಾವತೀರ್ಯಾಚ್ಯುತದಸ-ಹಸ್ತಃ ಶರದ್ಧನಾದೀಧಿತಿಮಾನಿವಾಧನಃ" ಕುಮಾಂ ೭-೭೦ | (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ.

**ದೀಧಿಡ್ - ದೀಪ್ತಿವೇದನಯೋಃ** (ಅದಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) | ದೀಧೀತೇ | ದೀಧೀ | ದೀಧೀಯಾಂ ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ದೀಧಿತಾ | ದೀಧೀಯತೇ | ದೀಧೀತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಪ್ರಕಾಶಿಸು, ಹೊಳೆ. 2. ಅಟವಾಡು, ಕ್ರೀಡಿಸು. 3. ವ್ಯವಹರಿಸು.

**ದೀನ ದೀನ (ವಿಂ)** 1. ಬಡವ, ದರಿದ್ರ. ದೀಯತೇ ಸ್ಮ - ದೀಡ್ (ಕ್ಷಯೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | ತಸ್ಯ ನತ್ವಮ್ (೮-೨-೪೫) | "ದೀನೋ ವಾ ರಾಜ್ಯಹೀನೋ ವಾ ಯೋ ಮೇ ಭರ್ತಾ ಸ ಮೇ ಗುರುಃ | ತಂ ನಿಯಮನುರಕ್ತಾಸ್ಮಿ ಯಥಾ ಸೂರ್ಯ ಸುಬರ್ವಲಾ" ರಾಮಾಂ | 2. ಭಯಗೊಂಡವನು. "ಸಪ್ತ ವ್ಯತೀಯುಃ ತ್ರಿಗುಣಾನಿ ತಸ್ಯ ದಿನಾನಿ ದೀನೋದ್ಧರಣೋಚಿತಸ್ಯ" ರಘುಂ ೨-೨೫ | 3. ಕಷ್ಟದಲ್ಲಿರುವವನು, ದುಃಖಪಡುತ್ತಿರುವವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಾ -ನಾ. 4. ಹೆಣ್ಣು ಇಲಿ. "ದೀನಾ ಸ್ತ್ರೀ ಮೃಗಿಕಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ | ವಾಚ್ಯವತ್ ದುಗಂತೇ ಭೀತೇ" ಮೇದಿಂ |



**ದೀನಚಿತ್ತ ದೀನಚಿತ್ತ** (ವಿಂ) ದೈನ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು, ದುಃಖಗೊಂಡ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು. ದೀನ ಚಿತ್ತಂ ಯಸ್ಯ |

**ದೀನತಾ ದೀನತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಡತನ, ದಾರಿದ್ರ್ಯ. ದೀನಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) |

**ದೀನದಯಾಲ್ಯ ದೀನದಯಾಲ್ಯ** (ವಿಂ) ಕಷ್ಟದಲ್ಲಿರುವವರಲ್ಲಿ ದಯೆಯುಳ್ಳವನು, ಕಷ್ಟಪಡುತ್ತಿರುವವರಲ್ಲಿ ಕನಿಕರವುಳ್ಳವನು. ದೀನೇಷು ದಯಾಲ್ಯ: | "ದೀನದಯಾಲ್ಯತಯಾವನಿಪಾಲ:" |

**ದೀನನಾಥ ದೀನನಾಥ** (ಪುಂ) ಬಡವರನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನು, ಗತಿಯಿಲ್ಲದವರನ್ನು ಪಾಲಿಸುವವನು. ದೀನಾನಾಂ ನಾಥ: |

**ದೀನಮನಸ್ ದೀನಮನಸ್** (ವಿಂ) ದುಃಖಪಡುತ್ತಿರುವವನು.

**ದೀನಮಾನಸ ದೀನಮಾನಸ** (ವಿಂ) ದುಃಖಗೊಂಡ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು. ದೀನಂ ಮಾನಸಂ ಯಸ್ಯ |

**ದೀನಾರ ದೀನಾರ** (ಪುಂ) 1. ಸುವರ್ಣಾಭರಣ. 2. ಸುವರ್ಣದ ಒಂದು ನಾಣ್ಯ. 3. ಚಿನ್ನದ ಒಂದು ತೂಕ, 28 ರೋಪಕಗಳ ತೂಕ.

|                   |            |
|-------------------|------------|
| 5 ಗುಲಗಂಜಿಗಳ ತೂಕ   | 1 ಆದ್ಯಮಾಪಕ |
| 16 ಆದ್ಯಮಾಪಕಗಳ ತೂಕ | 1 ಅಕ್ಷ.    |
| 1 ಚಿನ್ನದ ಅಕ್ಷ     | 1 ಸುವರ್ಣ   |
|                   | ಅಥವಾ ಬಿಸ್ತ |

|                    |          |
|--------------------|----------|
| 70 ನೆಯ ಒಂದು ಸುವರ್ಣ | 1 ರೋಪಕ   |
| 28 ರೋಪಕಗಳು         | 1 ದೀನಾರ. |

(ಹಿಂದಿನ ಕಾಲದಲ್ಲಿದ್ದ ಚಿನ್ನದ ಒಂದು ನಾಣ್ಯ). "ದೀನಾರೋ ರೋಪಕೇಷ್ವಾ ವಿಶಲ್ಯಾ ಪರಿಕೀರ್ತಿತ: | ಸುವರ್ಣಸಪ್ತತೀತಮೋ ಭಾಗೋ ರೋಪಕ ಉಚ್ಯತೇ" | 4. ಮುದ್ರೆ, ಮೊಹರು.

**ದೀಪ ದೀಪ** (ಪುಂ) 1. ದೀಪ, ದೀವಿಗೆ, ಎಣ್ಣೆ ಮತ್ತು ಬತ್ತಿಯ ಸಾಹಾಯ್ಯದಿಂದ ಬೆಳಕನ್ನು ಕೊಡುವ ಒಂದು ಜ್ವಾಲೆ. [ಇದು ಪೂರ್ವಕಾಲದ ದೀಪ. ಈಗಿನ ಎದ್ದುದ್ದೀಪಕ್ಕೆ ಎಣ್ಣೆ ಬತ್ತಿಗಳ ಅವಶ್ಯಕತೆಯಿಲ್ಲ.] ದೀಪಯತಿ - ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೀ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಸುಕೃತ: ಪರಿಶುದ್ಧ ಆಗಮ: ಕುಸ್ತೇ ದೀಪ ದ್ವಾರ್ಥದರ್ಶನಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೩೩ | "ರತೌ ಹ್ಲಿಯಾ ಯತ್ರ ನಿಶಾಮ್ಯ ದೀಪಾನ್" ಮಾಘಂ ೩-೪೫ | ದೇವರ ಪೂಜಾಸಮಯದಲ್ಲಿ ಅಭಿಷೇಕ ಧೂಪ ದೀಪ ಸಮರ್ಪಣೆ ನೈವೇದ್ಯ ಅಲಂಕಾರ ಮಂಗಳಾರತಿ ಇವುಗಳನ್ನು ಘಂಟಾನಾದ ಪೂರ್ವಕ ಮಾಡಬೇಕು. "ಸ್ನಾನೇ ಧೂಪೇ ತಥಾ ದೀಪೇ ನೈವೇದ್ಯೇ ಭೂಷಣೇ ತಥಾ | ಘಂಟಾನಾದಂ ಪ್ರಕುರ್ವೀತಿ ತಥಾ ನೀರಾಜನೇಽಪಿ ಚ" | ಪುರುಷರು ದೀಪವನ್ನು ಅರಿಸಿಕೊಡದು.

"ದೀಪನಿರ್ವಾಪಿಣಾತ್ಯುಸ: ಕೂಷ್ಮಾಂಡಚ್ಛೇದನಾತ್ ಸ್ತ್ರೀಯ: | ಅಚಿರೇ ಣೈವ ಕಾಲೇನ ವಂಶಚ್ಛೇದೋ ಭವೇದ್ಭುವಮ್" | ದೇವರ ಸನ್ನಿಧಿಯಲ್ಲಿರುವ ದೀಪವನ್ನು ನಾವಾಗಿ ಅರಿಸಿಕೊಡದು. "ನೈವ ನಿರ್ವಾಪಿಣೇದೀಪಂ ಕದಾಚಿದಪಿ ಯತ್ನತ: | ಸತತಂ ಲಕ್ಷಣೋಪೇತಂ ದೇವಾರ್ಯಮುಪಕಲ್ಪಿತಮ್" | 2. ದೀಪನ:

**ದೀಪಕ ದೀಪಕ** (ಪುಂ) 1. ದೀಪ, ದೀವಿಗೆ. ದೀಪಯತಿ - ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೀ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೩) | 2. ಶೈಲ, ಗಿಡುಗ, ಬೇಟೆಯ ಹಕ್ಕಿ. ಈ ಹಕ್ಕಿಯು ನೆರವಿನಿಂದ ಬೇಟೆಗಾರರು ಇತರ ಹಕ್ಕಿಗಳನ್ನು ಹಿಡಿಯುತ್ತಾರೆ. "ಪಕ್ಷಿಣಾ ಯೇನ ಗೃಹ್ಯಂತೇ ಪಕ್ಷಿಣೋಽನ್ಯೇ ಸ ದೀಪಕ:" ವೇಜಂ | (ನಂ) 3. ದೀಪಕಾಲಂಕಾರ, ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ವರ್ಣ್ಯ (ಪ್ರಕೃತ) ಮತ್ತು ಅವರ್ಣ್ಯ (ಅಪ್ರಕೃತ) ಇವುಗಳಿಗೆ ಏಕಧರ್ಮಾನ್ವಯವಿರುವಲ್ಲಿ "ದೀಪಕಾಲಂಕಾರ". "ವದಂತಿ ವರ್ಣ್ಯಾವರ್ಣ್ಯಾನಾಂ ಧರ್ಮಕಯ ದೀಪಕಂ ಬುಧಾ:" ಚಂದ್ರಾಂ | ತದಾ: "ಮದೇನ ಮಾತಿ ಕಲಮ: ಪ್ರತಾಪೇನ ಮಹೀಪತಿ:" | ಇಲ್ಲಿ ಪ್ರಕೃತವಾದ ರಾಜನಿಗೂ ಅಪ್ರಕೃತವಾದ ಕಲಭಕ್ಕೂ ಶೋಭಾರೂಪವಾದ ಏಕಧರ್ಮಾನ್ವಯವಿರುವುದರಿಂದ ದೀಪಕಾಲಂಕಾರ. 4. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. 5. ಓಮ. 6. ಮಾತ್ರಾವೃತ್ತದ ಒಂದು ಭೇದ. (ವಿಂ) 7. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುವ, ಬೆಳಗುವ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:" ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಠಾಪ್" (೪-೧-೪) | ದೀಪಿಕಾ ದೀಪಿಕಾ. 8. ಸಣ್ಣ ದೀಪ. "ದೀಪಿಕಾಚಪಲಯಾ ತಮೋಧನೇ" ನೈಷಂ ೧೮-೯೨ |

**ದೀಪಕಲಿಕಾ ದೀಪಕಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೀಪದ ಶಿಖೆ, ದೀವಿಗೆಯ ಜ್ವಾಲೆ. ದೀಪಸ್ಯ ಕಲಿಕಾ |

**ದೀಪಕಿಡ್ಡ ದೀಪಕಿಟ್ಟಿ** (ನಂ) ಕಾಡಿಗೆ, ಹೊಗೆಯ ಮಸಿ, ದೀಪದ ಹೊಗೆಯ ಕರಿ.

**ದೀಪಕೂಪಿ ದೀಪಕೂಪಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೀಪದ ಬತ್ತಿ. ದೀಪಸ್ಯ ಕೂಪಿವ |

**ದೀಪಧ್ವಜ ದೀಪಧ್ವಜ** (ಪುಂ) ದೀಪದ ಮಸಿ, ಕಾಡಿಗೆ, ದೀಪದ ಹೊಗೆಯ ಕರಿ. ದೀಪಸ್ಯ ಧ್ವಜ ಇವ |

**ದೀಪನ ದೀಪನ** (ಪುಂ) 1. ಈರುಳ್ಳಿ. 2. ಕಾಸಮರ್ದ ವೃಕ್ಷ. (ನಂ) 3. ಬೆಳಗುವಿಕೆ, ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುವಿಕೆ. ದೀಪಯತಿ - ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೀ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | 4. ಉರಿಸುವುದು, ಬೆಂಕಿ ಹೊತ್ತಿಸುವುದು. 5. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. ದೀಪಯತಿ - ದೀಪಿ + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) | "ಜಾಗುಡಂ ದೀಪನಂ ವಸಂ ಸೌರಭಂ ಧುಸೃಣಂ ಚ ತತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | (ವಿಂ) 6. ಜೀರ್ಣಶಕ್ತಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ಅಹಾರವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಉದರದಲ್ಲಿ ಜೀರ್ಣಗೊಳಿಸುವ. 7. ರೇಗಿ



ಸುವ, ಉದ್ರೇಕಗೊಳಿಸುವ, ಪ್ರೇರಿಸುವ, ಹುರಿದುಂಬಿಸುವ. 8. ಬೆಳಗುವ, ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುವ. ದೀಪ್ಯತೇನೆ—ದೀಪಿ ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೫) | ದೀಪನಿ ದೀಪನೀ. “ನೃಪಸ್ಯ ಮನ್ಯುವ್ಯವಸಾಯ-ದೀಪನೀರುದಾಜಹಾರ ದ್ರುಪದಾತ್ಮಜಾ ಗಿರಃ” ಕಿರಾಂ ೧-೨೭ |

ದೀಪನಿ ದೀಪನೀ(ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೆಂತ್ಯ. 2. ಅಗುಳು ಶುಂಠಿ, 3. ಓಮ.

ದೀಪನೀಯ ದೀಪನೀಯ (ಪುಂ) 1. ಓಮ. ದೀಪನಾಯ ಹಿತಃ “ಛಃ” (೫-೧-೫) | (ವಿಂ) 2. ಉರಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಉರಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ಉರಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 5. ಉರಿಸಬೇಕಾದ. 6. ರೇಗಿಸಲ್ಪಡುವ. 7. ರೇಗಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. 8. ರೇಗಿಸಬೇಕಾದ. 9. ರೇಗಿಸಲು ಶಕ್ಯನಾದ. ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮದೌ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) |

ದೀಪಪಾದಪ ದೀಪಪಾದಪ (ಪುಂ) ದೀಪದ ಕಂಬ. ದೀಪಸ್ಯ ಪಾದಪ ಇವ |

ದೀಪಪುಷ್ಪ ದೀಪಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) ಸಂಬಗೆ ಮರ. ದೀಪಸ್ಯ ದೀಪಕಜಿಕಾವಾ ಇವ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ |

ದೀಪಭಾಜನ ದೀಪಭಾಜನ (ನಂ) ದೀಪದ ಬಟ್ಟಲು, ದೀಪಕ್ಕೆ ಎಣ್ಣೆ ತುಂಬುವ ಪಾತ್ರೆ. ದೀಪಸ್ಯ ಭಾಜನಮ್ | “ರಾಜ್ಞಿ ತತ್ಕುಲಮಭೂತ್ಯಾತುರೇ ವಾಮನಾಚಿರೀವ ದೀಪಭಾಜನಮ್” ರಘುಂ ೧೯-೫೧ |

ದೀಪಮಾಲಾ ದೀಪಮಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೀಪಗಳ ಪಚ್ಚು, ದೀಪಗಳ ಸಾಲು. ದೀಪಾನಾಂ ಮಾಲಾ |

ದೀಪವತ್ ದೀಪವತ್ (ವಿಂ) ದೀಪಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ದೀಪ “ಮತುಪ್” (೫-೨-೯೪) |

ದೀಪಶತ್ರು ದೀಪಶತ್ರು (ಪುಂ) ಶಲಭ, ಪತಂಗದ ಹುಳು.

ದೀಪಶಿಖಾ ದೀಪಶಿಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೀಪದ ಜ್ವಾಲೆ, ದೀಪದ ಉರಿ. 2. ಕಾಡಿಗೆ.

ದೀಪಶೃಂಗಲಾ ದೀಪಶೃಂಗಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೀಪಗಳ ಸಾಲು. ದೀಪಾನಾಂ ಶೃಂಗಲೇವ | “ದೀಪಾಲಿ ದೀಪಶೃಂಗಲಾ” ಹಾರಾಂ |

ದೀಪಿತ ದೀಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೆಳಗಲ್ಪಟ್ಟ. ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) | “ತೇನಾಂಭಸಾ ಸಾರಮಯಃ ಪಯೋಧೇದಧ್ರೇ ಮಣಿರ್ದೀಪಿತಿದೀಪಿತಾಶಃ” ಮಾಘಂ ೩-೯ | 2. ಬೆಂಕಿ ಹೊತ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಉರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ರೇಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉದ್ರೇಕಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಪ್ರಕಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ನಕ್ಷಪದಲಿಪಯೋಽಪಿ ದೀಪಿತಾರ್ಥಃ ಪ್ರಗಿದಧಿರೇ ದಯಿತೇರನಜ್ಜಲೇಕ್ಷಾಃ” ಮಾಘಂ ೭-೩೯ |

ದೀಪೀಯ ದೀಪೀಯ (ವಿಂ) ದೀಪಕ್ಕೆ ಹಿತವಾದ, ದೀಪ ಉರಿಯಲು ಅನುಕೂಲವಾದ. ದೀಪಾಯ ಹಿತಮ್—ವಾ “ಛಃ” (೫-೧-೫) | ಪಕ್ಷೆ “ಯತ್” (೫-೧-೪) | ದೀಪ್ಯಮ್ ದೀಪ್ಯಮ್. ದೀಪೋತ್ಸವ ದೀಪೋತ್ಸವ (ಪುಂ) 1. ದೀಪಾರಾಧನೆ, ಕೃತ್ತಿಕಾ ದೀಪೋತ್ಸವ. ದೀಪೋತ್ಸವಃ | 2. ದೀಪದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ.

ದೀಪ್ತ ದೀಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ, ಹೊಳೆಯುವ. ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೌ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) | “ಯೇ ದೀಪ್ತಸ್ಯ ಶ್ರೇಯಸಃ ಪಾರಕಾಮಾಃ ಚತ್ವಾರೋಽಪಿ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಂ ಚರಂತಿ” ಮಂವಿಂ ೧-೨೪ | 2. ಉರಿಯುವ, ಜ್ವಲಿಸುವ. 3. ರೇಗಿದ, ಉದ್ರೇಕಗೊಂಡ. 4. ಉರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ದೀಪಿ ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) | “ದೀಪ್ತಾಂ ನಿರ್ಮಾಸಿತೇ ದಗ್ಧೇ ಜ್ವಲಿತೇ” ಮೇದಿಂ | “ದಗ್ಧೇ ವಿರ್ಮಾಸಿತೇ ದೀಪ್ತಾಂ ದೃಷ್ಟಂ ಜ್ವಲಿತವದ್ಭುಃ” ವಿಶ್ವಂ | (ನಂ) 7. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 8. ಹಿಂಗು. (ಪುಂ) 9. ಸಿಂಹ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪೧) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೀಪ್ತಾ ದೀಪ್ತಾ. 10. ಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತೀಲತೆ, ಕಂಗೊಂಗೆ ಗಿಡ. 11. ನೀರುಹಿಪ್ಪಲಿ.

ದೀಪ್ತಕೀರ್ತಿ ದೀಪ್ತಕೀರ್ತಿ (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪಣ್ಣುಖ. ದೀಪ್ತಾ ಕೀರ್ತಿಸ್ಯ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶಗೊಂಡ ಕೀರ್ತಿ, ಬೆಳಕಿಗೆ ಬಂದ ಯಶಸ್ಸು. ದೀಪ್ತಾ ಕೀರ್ತಿಃ | (ವಿಂ) 3. ಪ್ರಕಾಶಗೊಂಡ ಕೀರ್ತಿಯುಳ್ಳ, ಬೆಳಕಿಗೆ ಬಂದ ಯಶಸ್ಸುಳ್ಳ. ದೀಪ್ತಾ ಕೀರ್ತಿಯಸ್ಯ |

ದೀಪ್ತಜಿಹ್ವಾ ದೀಪ್ತಜಿಹ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ನರಿ. ದೀಪ್ತಾ ಜಿಹ್ವಾ ಅಸ್ಯಾಃ | ರಾತ್ರಿಕಾಲದಲ್ಲಿ ಹೆಣ್ಣು ನರಿಯ ಬಾಯಿಂದ ಕಿಡಿಯು ಹೊರಡುವುದು. [ಈ ಪದವು ಕೋಪಸ್ವಭಾವದ ಮತ್ತು ಜಗಳಗಂಟಿ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಲಾಕ್ಷಣಿಕ.] “ಲೋಮಾಶಿಕಾ ದೀಪ್ತಜಿಹ್ವಾ ಕಿಷ್ಕಿರಲ್ಕಾಮುಖೀ ಚ ಸಾ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ದೀಪ್ತಮೂರ್ತಿ ದೀಪ್ತಮೂರ್ತಿ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ಯತ್ಕಿಂಚಿತ್ ಕೇನಚಿದ್ಗುಣೇನ ದೀಪ್ತಂ ತದಸ್ಯ ವಿಶೇಷೇಣ ಮೂರ್ತಿಃ ಅಸ್ಯ | “ಯತ್ಕಿಂಚಿತ್ಕೇನಚಿದ್ದೀಪ್ತಂ ಗುಣೇನಾತ್ರ ವಿಶೇಷತಃ | ತತ್ಸರ್ವಂ ಮೂರ್ತಿಸ್ಯೇತಿ ದೀಪ್ತಮೂರ್ತಿಸೌ ಸ್ಮೃತಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ ದೇಹವುಳ್ಳವನು.

ದೀಪ್ತರಶ್ಮಿ ದೀಪ್ತರಶ್ಮಿ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ.

ದೀಪ್ತರಸ ದೀಪ್ತರಸ (ಪುಂ) ಕೆಸರಿನಲ್ಲಿರುವ ಎರಲು ಹುಳು. ದೀಪ್ತೌ ರಸೋಽಸ್ಯ |

ದೀಪ್ತಲೋಚನ ದೀಪ್ತಲೋಚನ (ಪುಂ) ಮಾರ್ಜಾರ, ಬೆಕ್ಕು. ದೀಪ್ತಂ ಪ್ರಕಾಶಮಾನಂ ಲೋಚನಂ ಯಸ್ಯ |



ದೀಪಲೋಹ ದೀಪ್ಯಲೋಹ (ನಂ) 1. ಕಂಚು. 2. ಪ್ರಕಾಶ  
ಮಾನವಾದ ಲೋಹ.

ದೀಪ್ತವರ್ಣ ದೀಪ್ಯವರ್ಣ (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪಣ್ಣುಖ.  
(ವಿಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ ಬಣ್ಣವುಳ್ಳ.

ದೀಪ್ತಶಕ್ತಿ ದೀಪ್ಯಶಕ್ತಿ (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪಣ್ಣುಖ.  
ದೀಪ್ತಾ ಶಕ್ತಿರಸ್ತ್ರಂ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶವಾದ ಶಕ್ತಿ  
ಯುಳ್ಳ. ದೀಪ್ತಾ ಶಕ್ತಿ: ಸಾಮರ್ಥ್ಯಂ ಯಸ್ಯ |

ದೀಪ್ತಾಂಶು ದೀಪ್ಯಾಂಶು (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ದೀಪ್ತಾ  
ಅಂಶವೋಽಸ್ಯ | 2. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

ದೀಪ್ತಾಕ್ಷ ದೀಪ್ಯಾಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಮಾರ್ಜಾರ, ಬೆಕ್ಕು. ದೀಪ್ತೇ  
ಅಕ್ಷಿಣಿ ಅಸ್ಯ "ಏಕ್" (೪-೪-೧೧೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೪೧) | -ಕ್ಷೀ-ಕ್ಷೀ. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶಮಾನ  
ವಾದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ.

ದೀಪ್ತಾಗ್ನಿ ದೀಪ್ಯಾಗ್ನಿ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿಸ್ತಮುನಿ. ದೀಪ್ತೋಽ-  
ಗ್ನಿರಸ್ಯ | ವಾತಾಪಿಯಂಬ ದಾನವನನ್ನು ಆ ಕೂಡಲೆ  
ಉದರದಲ್ಲಿ ಜೀರ್ಣಗೊಳಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಅಗ್ನಿಸ್ತರಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು.  
2. ಉರಿಯುತ್ತಿರುವ ಬೆಂಕಿ. (ವಿಂ) 3. ಶಕ್ತಿಯುತ  
ವಾದ ಜಾಠರಾಗ್ನಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಜಠರಾಗ್ನಿಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ.  
"ದೀಪ್ತಾಗ್ನಿರೌವಶೇಶ್ಚ ಸಮುದ್ರಚುಲಕ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ದೀಪ್ತಾಙ್ಗ ದೀಪ್ಯಾಙ್ಗ (ಪುಂ) 1. ಮಯೂರ, ನವಿಲು.  
ದೀಪ್ತಂ ಪ್ರಕಾಶಮಾನಮಙ್ಗಮಸ್ಯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧) |  
-ಙ್ಗೀ-ಙ್ಗೀ. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ ದೇಹವುಳ್ಳ.

ದೀಪ್ತಿ ದೀಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೌ)  
"ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | "ತ್ವಾಂ ಭೂರಿಯಂ ಯೋಗ್ಯತಯಾಧಿರುಹಾ  
ದೀಪ್ತಯಾ ದಿನಶ್ರೀರಿವ ತಿಗ್ಮರಶ್ಮಿಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೪೦ |  
2. ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿದ ಹೆಗ್ಗಸರ ಲಾವಣ್ಯ, ಮನ್ಮಥೋನ್ಮೇಷ  
ದಿಂದ ಎಸ್ಮಾರಗೊಂಡ ಸ್ತ್ರೀಯರ ದೇಹಕಾಂತಿ. "ಕಾಂತಿ-  
ರೇವಾತಿವಿಸ್ತೀರ್ಣಾ ದೀಪ್ತೀರೀತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ" ಸಾಂ ೬೦ |  
3. ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ, ಪ್ರಕಾಶವಾಗುವುದು, ಪ್ರಕಟವಾಗುವುದು.  
4. ಅರಗು. 5. ಕಂಚು.

ದೀಪ್ತಿಮತ್ ದೀಪ್ಯಮತ್ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಒಬ್ಬ ಮಗ.  
(ವಿಂ) 2. ಕಾಂತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಪ್ರಕಾಶದಿಂದ ಕೂಡಿದ.  
ದೀಪ್ತಿರಸ್ತ್ಯಸ್ಯ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪) | "ತದ್ವಯೋಽಗ್ನಿ  
ಶತಥಾ ಮಿತ್ರಂ ದದೃಶು ದೀಪ್ತಿಮನ್ಮುಖಮ್" ರಘುಂ ೧೨-೯೮ |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಮತೀ-ಮತೀ.

ದೀಪ್ಯ ದೀಪ್ಯ (ಪುಂ) 1. ನೀರುಹಿಪ್ಪಲಿ. ದೀಪೇ ದೀಪನೇ  
ಸಾಧು: "ಯತ್" (೪-೪-೯೮) | 2. ಓಮ, ವಾದಕ್ಕು.  
3. ಜೀರಿಗೆ. (ವಿಂ) 4. ದೀಪಕ್ಕೆ ಹಿತವಾದ, ದೀಪ

ಉರಿಯಲು ಅನುಕೂಲವಾದ. ದೀಪಾಯ ಹಿತಮ್ ವಾ "ಯತ್"  
(೪-೧-೪) | ಪಕ್ಷೇ "ಛ:" (೪-೧-೪) | ದೀಪೀಯಮ್  
ದೀಪೀಯಮ್.

ದೀಪ್ಯಕ ದೀಪ್ಯಕ (ಪುಂ) 1. ಓಮ, ವಾದಕ್ಕು. ದೀಪ್ಯ ಸಂಜ್ಞಾयां  
"ಕನ್" (೪-೩-೭೪) | 2. ನವಿಲಿನ ಜುಟ್ಟು. "ದೀಪ್ಯಕಂ  
ಚಾಜಮೋದಾಯಾಂ ಯವಾನಿರ್ಬಹಿಚ್ಛಯೋ:" ಮೇದಿಂ | 3. ನೀರು  
ಹಿಪ್ಪಲಿ.

ದೀಪ್ರ ದೀಪ್ರ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶ  
ಸುವ ಸ್ವಭಾವದ. ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೌ) "ರ:" (೩-೧-೧೬೭) |  
3. ಜ್ವಲಿಸುವ, ಉರಿಯುವ.

ದೀರ್ಘ ದೀರ್ಘ (ಪುಂ) 1. ದೀರ್ಘವರ್ಣ, ಎರಡು ಮಾತ್ರ  
ಗಳುಳ್ಳ ಅಕ್ಷರ. ದ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಏಕ್" ಬಾಹುಂ |  
"ಏಕಮಾತ್ರೋ ಭವೇದ್ಭವೋ ದ್ವಿಮಾತ್ರೋ ದೀರ್ಘಃ ಉಚ್ಯತೇ | ತ್ರಿಮಾತ್ರಸ್ತು  
ಪ್ಲುತೋ ಜ್ಞೇಯ: ವ್ಯಂಜನಂ ತ್ವರ್ಧಮಾತ್ರಕಮ್" | 2. ಉಷ್ಣ, ಒಂಟಿ.  
3. ಸಿಂಹ ಕನ್ಯಾ ತುಲಾ ಮತ್ತು ವೃಶ್ಚಿಕ ರಾಶಿಗಳು.  
"ವೃಶ್ಚಿಕಕನ್ಯಾಮೃಗಪತಿವರ್ಣಿಜೋ ದೀರ್ಘ:" | 4. ಶ್ರೀರಾಮನ  
ಬಾಣ. (ವಿಂ) 5. ದೀರ್ಘವಾದ, ಉದ್ದವಾದ. (ಕಾಲ  
ಮತ್ತು ದೇಶಗಳಲ್ಲಿ). "ಸಂಕ್ಷಿಪ್ಯತ ಕ್ಷಣ ಇವ ಕರ್ಷ ದೀರ್ಘಯಾಮಾ  
ತ್ರಿಯಾಮಾ" ಮೇವಂ ೨-೪೪ | "ಮುಖೈ: ಸರೋಜಾನಿ ಚ ದೀರ್ಘ-  
ಲೋಚನೈ: ಸುರಸ್ತ್ರಿಯ: ಸಾಮ್ಯಗುಣಾ ನಿರಾಸಿರೇ" ಕಿರಾಂ ೮-೨೯ |  
"ಅಪಾಙ್ಗಯೋ: ಕೇವಲಮಸ್ಯ ದೀರ್ಘಯೋ:" ಕುಮಾಂ ೪-೨೧ |  
(ಅವ್ಯಂ) 6. ಬಹಳ ಕಾಲ. 7. ಬಹಳ ಉದ್ದ  
ವಾಗಿ. 8. ಬಹಳ ಎಸ್ಮಾರವಾಗಿ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೪) |

ದೀರ್ಘಕಣಾ ದೀರ್ಘಕಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಳಿ ಜೀರಿಗೆ.

ದೀರ್ಘಕಣ್ಠ ದೀರ್ಘಕಣ್ಠ (ಪುಂ) 1. ಬಹಳವಾಗಿ, ಕೊಕ್ಕರೆ. ದೀರ್ಘ:  
ಕಣ್ಠೋಽಸ್ಯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩) |  
-ಕಣ್ಠೀ-ಕಣ್ಠೀ. 2. ಉದ್ದವಾದ ಕುತ್ತಿಗೆ. ದೀರ್ಘ: ಕಣ್ಠ: |  
(ವಿಂ) 3. ಉದ್ದವಾದ ಕುತ್ತಿಗೆಯುಳ್ಳ. ದೀರ್ಘ: ಕಣ್ಠೋ  
ಯಸ್ಯ |

ದೀರ್ಘಕಂದ ದೀರ್ಘಕಂದ (ನಂ) ಮೂಲಂಗಿ. ದೀರ್ಘ:  
ಕಂದೋಽಸ್ಯ |

ದೀರ್ಘಕಂಠರ ದೀರ್ಘಕಂಠರ (ಪುಂ) 1. ಬಹಳವಾಗಿ, ಕೊಕ್ಕರೆ.  
ದೀರ್ಘ: ಕಂಠರಾಽಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಉದ್ದವಾದ ಕುತ್ತಿಗೆಯುಳ್ಳ.  
ದೀರ್ಘ: ಕಂಠರಾ ಯಸ್ಯ |

ದೀರ್ಘಕೇಶ ದೀರ್ಘಕೇಶ (ಪುಂ) 1. ಭಲ್ಲೂಕ, ಕರಡಿ. ದೀರ್ಘ:  
ಕೇಶ: ಲೋಮಾಽಸ್ಯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩) |  
-ಕೇಶೀ-ಕೇಶೀ. (ವಿಂ) 2. ಉದ್ದವಾದ ಕೂದಲುಳ್ಳ.



ದೀರ್ಘಕೋಶಿಕಾ ದೀರ್ಘಕೋಶಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನೆಯ ರಕ್ತವನ್ನು ಹಿರವ ದೊಡ್ಡಜಾತಿಯ ಜಿಗಣೆ. ದೀರ್ಘ: ಕೋಶೋತ್ಪಾ: | ಜಾತಿಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೬೩) | -ಕೋಶಿ -ಕೋಶೀ. ಸಂಜ್ಞಾಂ "ಕನ್" (೪-೩-೭೪) |

ದೀರ್ಘಗತಿ ದೀರ್ಘಗತಿ (ಪುಂ) ಉಷ್ಣ, ಒಂಟಿ. ದೀರ್ಘ ಗತಿರಸ್ಯ | ಒಂಟಿಯು ದೂರದೂರಕ್ಕೆ ಕಾಲಿಟ್ಟು ನಡೆಯು ವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ದೀರ್ಘಗ್ರನ್ಥಿ ದೀರ್ಘಗ್ರಂಥಿ (ಪುಂ) ಗಜಹಿಪ್ಪಲಿ.

ದೀರ್ಘಗ್ರೀವ ದೀರ್ಘಗ್ರೀವ (ಪುಂ) ಉಷ್ಣ, ಒಂಟಿ. ದೀರ್ಘ ಗ್ರೀವಾಸ್ಯ |

ದೀರ್ಘಗಾಟಿಕ ದೀರ್ಘಗಾಟಿಕ (ಪುಂ) ಉಷ್ಣ, ಒಂಟಿ. ದೀರ್ಘ ಗಾಟಾ ಕೃಕಾಟಿಕಾಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೬) |

ದೀರ್ಘಜಿಹ್ವ ದೀರ್ಘಜಿಹ್ವ (ಪುಂ) 1. ಉಷ್ಣ, ಒಂಟಿ. ದೀರ್ಘ ಜಿಹ್ವಾಸ್ಯ | 2. ಬಹುಪಕ್ಷಿ, ಕೊಕ್ಕರೆ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ವಾ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೪೪) | -ಜಿಹ್ವೀ -ಜಿಹ್ವೀ, -ಜಿಹ್ವಾ -ಜಿಹ್ವಾ. (ವಿಂ) 3. ಉದ್ದವಾದ ಮೊಳಕಾಲುಗಳುಳ್ಳವನು.

ದೀರ್ಘಜಿಹ್ವ ದೀರ್ಘಜಿಹ್ವ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ದೀರ್ಘ ಜಿಹ್ವಾಸ್ಯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೬೩) | 2. ಒಬ್ಬ ದಾನವ.

ದೀರ್ಘಜೀವಿನ್ ದೀರ್ಘಜೀವಿನ್ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಕಾಲ ಬದುಕುವ.

ದೀರ್ಘತಪಸ್ ದೀರ್ಘತಪಸ್ (ಪುಂ) 1. ಗೌತಮಮಹರ್ಷಿ. ದೀರ್ಘ ತಪೋಸ್ಯ | "ಯೇಷು ದೀರ್ಘತಪಸ: ಪರಿಗ್ರಹೋ ವಾಸವ-ಕ್ಷಣಕಲತ್ರತಾಂ ಯಯಿ" ರಘುಂ ೧೧-೩೩ | 2. ಆಯುಷ್ಯವಂತದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ.

ದೀರ್ಘತಮ ದೀರ್ಘತಮ (ವಿಂ) ಬಹಳ ದೀರ್ಘವಾದ.

ದೀರ್ಘತಮಸ್ ದೀರ್ಘತಮಸ್ (ಪುಂ) ಆಂಗಿರಸಮಹರ್ಷಿಯ ಮಗನಾದ ಉಚಥ್ಯ (ಉತಥ್ಯ) ಮಹರ್ಷಿಯ ಮಗ, ಮಮತೆಯೆಂಬುವಳು ಈತನ ತಾಯಿ. [ಮಮತೆಯು ಗರ್ಭಿಣಿಯಾಗಿದ್ದಾಗ ಬೃಹಸ್ಪತಿಯು ಈಕೆಯನ್ನು ಮಾನ ಭಂಗಗೊಳಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಶಿಶುವು ಬೃಹಸ್ಪತಿಯನ್ನು ನಂದಿಸಿ ಅವನ ಶಾಪದಿಂದ ಹುಟ್ಟು ಕುರುಡನಾಗಿ ಜನಿಸಿತು. ಅದರಿಂದ ಈ ಮುಷಿಗೆ ದೀರ್ಘತಮಸ್ಸೆಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು. ತಂದೆಯ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ಸರ್ವಜ್ಞನಾದನು. ಈ ಮುಷಿಯ ಪತ್ನಿ ಪ್ರದ್ವೇಷಿಣಿಯೆಂಬುವಳು ಬಹುಪುತ್ರವತಿ. ತಾನೇ ಸಂಸಾರನಿರ್ವಹಣೆ ಮಾಡಬೇಕಾಗಿ ಬಂದು ಕೋಪದಿಂದ ಪತಿಯನ್ನು ಮಕ್ಕಳ ಮೂಲಕ ನದಿಗೆ ತಳ್ಳಿಸಿದಳು. ಬಲಿಯೆಂಬ ರಾಜನೊಬ್ಬನು ಈತನನ್ನು ಬದುಕಿಸಿ ಅರಮನೆಗೆ

ಕರೆತಂದು ಪೋಷಿಸುತ್ತಿದ್ದನು. ಸಂತಾನವಿಲ್ಲದ ಈ ರಾಜನ ಪತ್ನಿಯು ಈ ಮುಷಿಯಿಂದ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪಡೆದಳು.]

ದೀರ್ಘತುಂಡ ದೀರ್ಘತುಂಡ (ಪುಂ) 1. ಉದ್ದವಾದ ಮುಖ. (ವಿಂ) 2. ಉದ್ದವಾದ ಮುಖವುಳ್ಳ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತುಂಡಾ -ತುಂಡಾ. 3. ಮೂಗಿಲಿ.

ದೀರ್ಘದಂಡ ದೀರ್ಘದಂಡ (ಪುಂ) 1. ಏರಂಡವೃಕ್ಷ, ಹರಳು ಗಿಡ. 2. ತಾಳವೃಕ್ಷ, ಪನೆಮರ. 3. ತೆಂಗಿನಮರ. 4. ಅಡಕಮರ.

ದೀರ್ಘದರ್ಶಿನ್ ದೀರ್ಘದರ್ಶಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಗೃಧ್ರ, ಹದ್ದು. 2. ಪಂಡಿತ. 3. ಭಲ್ಲೂಕ, ಕರಡಿ. (ವಿಂ) 4. ವಿಚಾರ ಮಾಡುವ ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು. ದೀರ್ಘದರ್ಶಿನ್ಮಾಡುವವನು. ದೀರ್ಘ ಪಶ್ಯತಿ - ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) "ಗಿರಿನಿ:" (೩-೨-೭೮) | 5. ದೂರದಿಂದ ನೋಡುವವನು. "ದೀರ್ಘ-ದರ್ಶಿಮಿರಕಾರಿ ವೃಕ್ಷಾಂ ಲಕ್ಷ್ಮಣಂ ನ ನಯನೈ: ಶ್ರವಣಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೧೦-೪೦ | 6. ಭವಿಷ್ಯತ್ತನ್ನು ತಿಳಿಯುವವನು ಮುಂದಿನ ದನ್ನು ಕಾಣುವವನು.

ದೀರ್ಘದೃಷ್ಟಿ ದೀರ್ಘದೃಷ್ಟಿ (ಪುಂ) 1. ಪಂಡಿತ. 2. ದೂರ ದರ್ಶಕ ಯಂತ್ರ, ದೂರದ ವಸ್ತುವನ್ನು ನೋಡುವ ಯಂತ್ರ, ದುರ್ಬೀನು. ದೀರ್ಘ ದೃಷ್ಟಿಯಸ್ಯ ಯೇನ ವಾ |

ದೀರ್ಘದ್ರೂಮ ದೀರ್ಘದ್ರೂಮ, -ವೃಕ್ಷ -ವೃಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ತಾಳ ವೃಕ್ಷ, ಪನೆಮರ. 2. ಅಡಕಮರ. 3. ತೆಂಗಿನಮರ. 4. ಉದ್ದವಾದ ಮರ. ದೀರ್ಘ ದ್ರೂಮ: ವೃಕ್ಷೋ ವಾ |

ದೀರ್ಘನಾದ ದೀರ್ಘನಾದ (ಪುಂ) 1. ಶಂಖ. 2. ಕಂಚಿನ ಗಂಟೆ. ದೀರ್ಘ ನಾದೋಸ್ಯ | 3. ದೀರ್ಘವಾದ ಧ್ವನಿ, ಬಹುಕಾಲದ ವರೆಗೂ ಇರುವ ಶಬ್ದ. ದೀರ್ಘ ನಾದ: |

ದೀರ್ಘನಿद्रಾ ದೀರ್ಘನಿद्रಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಹಳ ಕಾಲ ಮಾಡುವ ನಿದ್ರೆ. 2. ಮರಣ. ದೀರ್ಘ ನಿद्रಾ | "ರಾಮೇ-ಷುಮಿರಿತೀವಾಸೌ ದೀರ್ಘನಿद्रಾಂ ಪ್ರವೇಶಿತ:" ರಘುಂ ೧೨-೮೧ |

ದೀರ್ಘಪತ್ರ ದೀರ್ಘಪತ್ರ (ಪುಂ) 1. ತೆಂಗಿನಮರ. 2. ತಾಳ ವೃಕ್ಷ, ಪನೆಮರ. 3. ಬಿದಿರು ಗಿಡ. 4. ಗಣಗಿಲೆ ಗಿಡ. 5. ರಾಜೀರುಳ್ಳಿ. 6. ಹರಳು ಗಿಡ. ದೀರ್ಘ ಪತ್ರಂ ಯಸ್ಯ |

ದೀರ್ಘಪರ್ಣಿ ದೀರ್ಘಪರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನರಿಹೊನ್ನೆ ಗಿಡ.

ದೀರ್ಘಪಾದ ದೀರ್ಘಪಾದ (ಪುಂ) 1. ಬಹುಪಕ್ಷಿ, ಕೊಕ್ಕರೆ. ದೀರ್ಘ: ಪಾದೋಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಉದ್ದವಾದ ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳ.

ದೀರ್ಘಪಾದಪ ದೀರ್ಘಪಾದಪ (ಪುಂ) "ದೀರ್ಘದ್ರೂಮ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ದೀರ್ಘಪುಟ ದೀರ್ಘಪುಟ (ಪುಂ) ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ದೀರ್ಘ ಪುಟಮಸ್ಯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೬೩) |



ದೀರ್ಘಪ್ರಜ್ಞ ದೀರ್ಘಪ್ರಜ್ಞ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ರಾಜ. "ವೃಷವೇತಿ  
ವಿಖ್ಯತಃ ಶ್ರೀಮಾನ್ ಯಸ್ತು ಮಹಾಸುರಃ | ದೀರ್ಘಪ್ರಜ್ಞ ಇತಿ ಖ್ಯಾತಃ  
ಪೃಥಿವ್ಯಾಂ ಸೌಮವನ್ಮನುಷ್ಯಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ | (ವಿಂ) 2. ದೀರ್ಘ  
ಕಾಲ ಅಲೋಚನೆ ಮಾಡುವವನು, ವಿಚಾರಮಾಡುವ  
ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು. ದೀರ್ಘ ಪ್ರಜ್ಞಾ ಯಸ್ಯ | "ಕಾಮಮೂರ್ತಿಧರಃ  
ಕ್ರೂರಃ ಕಾಲಕಲ್ಪೋ ವ್ಯದೃಶ್ಯತ | ತಮುವಾಚ ತತೋ ರಾಜಾ ದೀರ್ಘಪ್ರಜ್ಞೋ  
ಯುಧಿಷ್ಠಿರಃ" ಭಾಂ ವನಂ ೧೧-೨೧ |

ದೀರ್ಘಬಾಹು ದೀರ್ಘಬಾಹು (ಪುಂ) 1. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ  
ಮಗ. 2. ಪರಿಶಿವನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ. (ವಿಂ) 3.  
ಉದ್ದವಾದ ತೋಳುಗಳುಳ್ಳ. ದೀರ್ಘ ಬಾಹು ಯಸ್ಯ |

ದೀರ್ಘಮಾರುತ ದೀರ್ಘಮಾರುತ (ಪುಂ) ಗಜ, ಅನೆ. ದೀರ್ಘ  
ಮಾರುತೋ ವಾಯುಸ್ಯ | "ಹಸ್ತೀ ಮಹಾಮೃಗಃ ಪೀಲುಃ ಸಿಂಧುರೋ  
ದೀರ್ಘಮಾರುತಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ದೀರ್ಘಮೂಲ ದೀರ್ಘಮೂಲ (ಪುಂ) 1. ಕುರಟೆಗೆ ಗಿಡ.  
2. ಲಾಮಂಚ. 3. ಮೂಲಂಗಿ. 4. ಗಜ್ಜುಗದ ಗಿಡ.  
ದೀರ್ಘ ಮೂಲಮಸ್ಯ | 5. ತೀಟಕಸಂಧಿ.

ದೀರ್ಘಯಜ್ಞ ದೀರ್ಘಯಜ್ಞ (ಪುಂ) 1. ಅಯೋಧ್ಯಾನಗರಿ  
ಯಲ್ಲಿದ್ದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. "ಅಯೋಧ್ಯಾಂ ತು ಭರ್ಮಜ್ಞಂ ದೀರ್ಘಯಜ್ಞಂ  
ಮಹಾಬಲಮ್ | ಅಜಯತ್ ಪಾಂಡವಶ್ರೇಷ್ಠೋ ನಾತಿತಿವ್ರೇಣ ಕರ್ಮಣಾ"  
ಭಾಂ | (ವಿಂ) 2. ಬಹಳ ದೀರ್ಘಕಾಲದ ಯಜ್ಞವನ್ನು  
ಮಾಡುವವನು. ದೀರ್ಘಃ ದೀರ್ಘಕಾಲವ್ಯಾಪಿ ಯಜ್ಞೋ ಯಸ್ಯ |

ದೀರ್ಘರದ ದೀರ್ಘರದ, -ರವನ -ರದನ (ಪುಂ) ವರಾಹ,  
ಹಂದಿ. ದೀರ್ಘ ರದಾ ರದನಾ ಅಸ್ಯ |

ದೀರ್ಘರಸನ ದೀರ್ಘರಸನ (ಪುಂ) ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ದೀರ್ಘ  
ರಸನಾ ಯಸ್ಯ |

ದೀರ್ಘರಾಗಾ ದೀರ್ಘರಾಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರಿಶಿನ. ದೀರ್ಘ ರಾಗೋ  
ರಂಜನಂ ಯಸ್ಯಾಃ |

ದೀರ್ಘರಾತ್ರ ದೀರ್ಘರಾತ್ರ (ನಂ) ಚಿರಕಾಲ, ಬಹಳಕಾಲ.

ದೀರ್ಘರೋಮನ್ ದೀರ್ಘರೋಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಭಲ್ಲೂಕ, ಕರಡಿ.  
ದೀರ್ಘಾಣಿ ರೋಮಾಣ್ಯಸ್ಯ | 2. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.  
3. ಈಶ್ವರನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ.

ದೀರ್ಘಲೋಚನ ದೀರ್ಘಲೋಚನ (ಪುಂ) 1. ಪರಿಶಿವನ ಒಬ್ಬ  
ಅನುಚರ. 2. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. ದೀರ್ಘ ಲೋಚನ  
ಯಸ್ಯ | (ನಂ) 3. ಉದ್ದವಾದ ಕಣ್ಣು. ದೀರ್ಘಮಾಯತಂ  
ಲೋಚನಮ್ |

ದೀರ್ಘವೃತ್ತ ದೀರ್ಘವೃತ್ತ (ಪುಂ) ಹೆಮ್ಮರ, ತಿಗಡುಮರ.  
ದೀರ್ಘ ವೃತ್ತಮಸ್ಯ |

ದೀರ್ಘವ್ಯಾಧಿ ದೀರ್ಘವ್ಯಾಧಿ (ಪುಂ) ಬಹಳ ಕಾಲದ ರೋಗ.

ದೀರ್ಘಶಾಖ ದೀರ್ಘಶಾಖ (ಪುಂ) ಸಾಲವೃಕ್ಷ, ಮತ್ತಿಮರ.  
ದೀರ್ಘಾ ಶಾಖಾ ಯಸ್ಯ |

ದೀರ್ಘಶ್ರವಸ್ ದೀರ್ಘಶ್ರವಸ್ (ಪುಂ) 1. ದೀರ್ಘತಮಸ್ಸೆಂಬ  
ಋಷಿಯ ಒಬ್ಬ ಮಗ. ದೀರ್ಘ ಶ್ರವಾಸ್ಯ | (ನಂ) 2.  
ಉದ್ದವಾದ ಕಿವಿ. (ವಿಂ) 3. ಉದ್ದವಾದ ಕಿವಿಯುಳ್ಳ.

ದೀರ್ಘಸತ್ರ ದೀರ್ಘಸತ್ರ (ನಂ) 1. ಬಹುಕಾಲ ನಡೆಯುವ  
ಯಾಗ. (ವಿಂ) 2. ಬಹುಕಾಲದ ಯಾಗಮಾಡುವವನು.  
ದೀರ್ಘ ಸತ್ರಂ ಚಿರಕಾಲಸಾಧ್ಯೋ ಯಾಗಃ ಯಸ್ಯ | "ಹವಿಷೇ ದೀರ್ಘ-  
ಸತ್ರಸ್ಯ ಸಾ ಚೇದಾನಿಂ ಪ್ರಚೇತಸಃ | ಭುಜ್ಜಪಿಹಿತದ್ವಾರಂ ಪಾತಾಲ-  
ಮಧಿತಿಷ್ಠತಿ" ರಘುಂ ೧-೮೦ |

ದೀರ್ಘಸತ್ರಿನ್ ದೀರ್ಘಸತ್ರಿನ್ (ವಿಂ) ಬಹುಕಾಲ ನಡೆ  
ಯುವ ಯಾಗಮಾಡುವವನು. ದೀರ್ಘ ಸತ್ರಮಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿಃ"  
(೪-೨-೧೧೪) |

ದೀರ್ಘಸುರತ ದೀರ್ಘಸುರತ (ಪುಂ) 1. ನಾಯಿ. ದೀರ್ಘ ಬಹುಕಾಲ  
ಸುರತಮಸ್ಯ | "ಕುಕ್ಕುರೇ ದೀರ್ಘಸುರತವಾಂತಾದೋ ರಸನಾಲಿಹಃ"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩) |

(ನಂ) 2. ದೀರ್ಘಕಾಲದ ಸಂಭೋಗ. ದೀರ್ಘ ಸುರತಮ್ |

ದೀರ್ಘಸೂತ್ರ ದೀರ್ಘಸೂತ್ರ (ನಂ) 1. ಉದ್ದವಾದ ದಾರ.  
ದೀರ್ಘ ಸೂತ್ರಮ್ | (ವಿಂ) 2. ಸುವಕಾಶವಾಗಿ ಕೆಲಸಮಾಡು  
ವವನು, ಬಹಳಕಾಲ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು. ದೀರ್ಘ ಸೂತ್ರಂ  
ಕಾರ್ಯವ್ಯವಸ್ಥಾ ಯಸ್ಯ | ವಿಲಂಬದಿಂದ ಕಾರ್ಯಮಾಡು  
ವವನು ಕಷ್ಟವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವವನು. "ಅನಾಗತ-  
ವಿಧಾತಾ ಚ ಪ್ರತ್ಯುತ್ಪನ್ನಮತಿಶ್ರಯಃ | ದ್ವಾವೇವ ಸುಖಮೇಧೇತೇ ದೀರ್ಘ-  
ಸೂತ್ರೋ ವಿನಶ್ಯತಿ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ | 3. ಉದ್ದವಾದ  
ದಾರವುಳ್ಳ (ವಸ್ತ್ರ). "ಮೇಖಲಾಗುಣವಿಲಗ್ನಮಸುಯಾಂ ದೀರ್ಘಸೂತ್ರ-  
ಮಕರೋತ್ಪರಿಧಾನಮ್" ಮಾಘಂ ೧೦-೬೧ |

ದೀರ್ಘಸೂತ್ರಿನ್ ದೀರ್ಘಸೂತ್ರಿನ್ (ವಿಂ) ಸುವಕಾಶವಾಗಿ  
ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು, ವಿಲಂಬದಿಂದ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು.  
ದೀರ್ಘ ಚಿರಕಾಲಂ ಸೂತ್ರಂ ಕಾರ್ಯವ್ಯವಸ್ಥಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿಃ"  
(೪-೨-೧೧೪) |

ದೀರ್ಘಾಕ್ಷಿ ದೀರ್ಘಾಕ್ಷಿ (ವಿಂ) ಉದ್ದವಾದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ.  
ದೀರ್ಘಾ ಆಕ್ಷತೇ ಅಕ್ಷಿಣೀ ಯಸ್ಯ | "ದೀರ್ಘಾಕ್ಷಿಂ ಶರದಿಂದುಕಾಂತಿ  
ವದನಮ್" ಮಾಲಂ ೨-೩ |

ದೀರ್ಘಾಧ್ವಗ ದೀರ್ಘಾಧ್ವಗ (ಪುಂ) 1. ಉಪ್ಪು, ಒಂಟೆ.  
2. ಬಹಳ ದೂರ ದಾರಿ ನಡೆಯುವವನು, ದೂತ, ವಾರ್ತಾ  
ವಾಹಕ, ಊರಂದೂರಿಗೆ ಕಾಗದವನ್ನು ಒಯ್ಯುವವನು.  
ದೀರ್ಘಮಧ್ವಾನಂ ಮಾರ್ಗಂ ಗಂಚತಿ - ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಓಃ"  
(ವಾಂ ೩-೨-೪೮) |



ದೀರ್ಘಾ ದೀರ್ಘಾಯು (ವಿಂ) ದೀರ್ಘಕಾಲದ ಆಯುಸ್ಸುಳ್ಳವನು, ಬಹಳಕಾಲ ಬದುಕುವವನು. ಇದು ವೈದಿಕ ಪ್ರಯೋಗ.

ದೀರ್ಘಾಯು ದೀರ್ಘಾಯುಧ (ಪುಂ) 1. ಸೂತರ, ಹಿಂದಿ. ದೀರ್ಘ ದಂತರೂಪಮಾಯುಧಂ ಯಸ್ಯ. 2. ಕುಂತಪೆಂಬ ಒಂದು ಆಯುಧ. "ದೀರ್ಘಾಯುಃ ಶಲಃ ಕುಂತಃ ಶಲ್ಯಃ ಶತ್ಕುರ್ವಿಷಾ-ಙ್ಕುರಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ದೀರ್ಘಾಯುಷ್ಯ ದೀರ್ಘಾಯುಷ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಮಾರ್ಕಂಡೇಯ ಮುಷಿ. (ನಂ) 2. ದೀರ್ಘಕಾಲದ ಆಯುಸ್ಸು. (ವಿಂ) 3. ದೀರ್ಘಕಾಲದ ಆಯುಸ್ಸುಳ್ಳ. ದೀರ್ಘಮಾಯುಷ್ಯಂ ದೀರ್ಘ-ಮಾಯುಷ್ಯಂ ಯಸ್ಯ ವಾ.

ದೀರ್ಘಾಯುಸ್ ದೀರ್ಘಾಯುಸ್ (ಪುಂ) 1. ಮಾರ್ಕಂಡೇಯ ಮುಷಿ. 2. ಶಾಲ್ಮಲಿವೃಕ್ಷ, ಬೂರುಗದ ಮರ. 3. ಹೊನ್ನೆ ಮರ. 4. ವಾಯಸ, ಕಾಗೆ. (ವಿಂ) 5. ಬಹಳ ಕಾಲ ಬದುಕುವವನು. ದೀರ್ಘಮಾಯುಸ್ಯ. "ದೀರ್ಘಾಯುಃ ಶಾಲ್ಮಲಿವೃಕ್ಷೇ ವಾಯಸೇ ಜೀವಕದ್ವಮೇ. ಮಾರ್ಕಂಡೇಯೇ ಚ ಪುನಿ ಸ್ವಾತ್ ಚಿರಜೀವಿನಿ ವಾಚ್ಯವತ್" ಮೇದಿಂ. (ನಂ) 6. ದೀರ್ಘಕಾಲದ ಆಯುಸ್ಸು. ದೀರ್ಘಮಾಯುಃ.

ದೀರ್ಘಸ್ಯ ದೀರ್ಘಸ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಗಂಜ, ಅನೆ. ದೀರ್ಘಮಾಯತ-ಮಾಸ್ಯಮಸ್ಯ. 2. ಭಾರತದ ವಾಯವ್ಯ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ದೇಶ. "ಏಕವಿಲೋಚನಶೂಲಿಕದೀರ್ಘಗ್ರೀವಾಸ್ಯಕೋಶಾಶ್ಚ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೪-೨೩.

ದೀರ್ಘಾಹ ದೀರ್ಘಾಹ (ಪುಂ) ದೀರ್ಘವಾದ ಹಗಲು. ದೀರ್ಘಮಹಃ "ಠ್" (೪-೪-೧೧).

ದೀರ್ಘಿಕಾ ದೀರ್ಘಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸರಸ್ಸು, ಕೊಳ, ಕಲ್ಯಾಣ, ಉದ್ದವಾದ ಕೊಳ. ದೀರ್ಘವ ಸಂಜ್ಞಾಯಾಂ "ಕನ್" (೪-೩-೭೪). "ದೀರ್ಘಿಕಾಕಮಲೋನ್ಮೇಷೋ ಯಾವನ್ಮಾತ್ರೇಣ ಸಾಧ್ಯತೇ" ಕುಮಾಂ ೨-೩೩.

ದೀರ್ಘ ದೀರ್ಘ (ವಿಂ) 1. ಸೀಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ದ್ (ವಿದಾರಣೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). 2. ಹೆದರಿದ, ಭಯಗೊಂಡ. ದ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨). (ನಂ) 3. ಸೀಳುವಿಕೆ, ಒಡೆಯುವಿಕೆ. ದ್ ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪). 4. ಭಯ. "ದೀರ್ಘ ವಿದಾರಿತೇ ಭೀತೇ" ಮೇದಿಂ.

ದೀರ್ಘತ್ ದೀರ್ಘತ್ (ವಿಂ) ಕ್ರೋಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅಟವಾಡುತ್ತಿರುವ. ದಿವು (ಕ್ರೋಡಾದೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). "ದುರಕ್ಷಾನ್ ದೀರ್ಘತಾ ರಾಜಾ ರಾಜ್ಯಮಾತ್ಮಾ ವಯಂ ವಧುಃ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೪೭. "ದೀರ್ಘತಾಕ್ಷೇಸ್ತದಾನೇನ ನೂನಂ ತದಪಿ ಹಾರಿತಮ್" ವೇಣೀಂ ೧-೧೩.

ದು - ಗತೌ (ಭವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ). ದವತಿ. ದುದಾವ. ದೊತಾ. ದೋಷ್ಯತಿ. ದವತು. ಅದವತ್. ಇತ್ಯಾದಿ. ಹೋಗು, ಚಲಿಸು.

ಭಾವೇ:-ದ್ವಯತೇ. ದುದುವೇ. ದಾವಿತಾ, ದೊತಾ. ದಾವಿಷ್ಯತೇ, ದೋಷ್ಯತೇ. ದ್ವಯತಾಮ್. ಅದ್ವಯತ. ದ್ವಯತ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:-ದೊತವ್ಯಮ್. ದವನೀಯಮ್. ದಾವ್ಯಮ್. ದುತಮ್. ದುತವಾನ್, -ವತೀ. ದವನ್, -ಂತೀ. ದುತಮ್. ದವನಮ್.

ದುಡು - ಉಪತಾಪೇ (ಭವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ). ದುನೋತಿ. ದುದಾವ, ದುದುವತುಃ. ದೊತಾ. ದೋಷ್ಯತಿ. ದುನೋತು. ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಉಪತಾಪಹೊಂದಿಸು, ಸಂಕಟವುಂಟುಮಾಡು. "ಇದ-ಮುಚ್ಛವಸಿತಾಲಕಂ ಮುಖಂ ತವ ವಿಶ್ರಾಂತಕಥಂ ದುನೋತಿ ಮಾಮ್" ರಘುಂ ೮-೪೪. 2. ನೋವುಂಟುಮಾಡು, ಹೀಡಿಸು. "ಉದ್ಭಾಸಿನಿ ಜಲೇಜಾನಿ ದುನ್ವನ್ಯದಯಿತಂ ಜನಮ್" ಭट्टಿಂ ೬-೭೪. 3. ದಹಿಸು, ಸುಡು. "ಸ ಭಸ್ಮಸಾತ್ ಚಕಾರಾರೀನ್ ದುದಾವ ಚ ಕೃತಾಂತವತ್" ಭट्टಿಂ ೧೪-೮೪.

ಕೃತ್ಸು:-ದೊತವ್ಯಮ್. ದವನೀಯಮ್. ದವ್ಯಮ್. ದುತಃ. ದುತವಾನ್, -ವತೀ. ದುನ್ವನ್ -ತೀ. ದುತಮ್. ದವನಮ್.

ದುಃಖ ದುಃಖ (ನಂ) 1. ದುಃಖ, ವ್ಯಥೆ, ಕೋರಗು, ಶೋಕ. ದುಷ್ಟಾನಿ ಖಾನಿ ಸನ್ತ್ಯಸ್ತಮಿನ್ ದುರ್ ನಿಂದಿತಂ ಖನತಿ - ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಠ್" (೩-೨-೧೦೧). ದುಃಖಯತಿ - ದುಃಖ (ತತ್ಕರಿಯಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ವಾ. "ಮಾ ಜೀವನ್ ಯಃ ಪರಾವಣ್ಣಾದುಃಖದಘೋಷಿ ಜೀವತಿ" ಮಾವಂ ೨-೪೪. ಸಾಂಖ್ಯರು ರಜೋಗುಣದಿಂದ ಉಂಟಾದ ಒಂದು ಚಿತ್ತಧರ್ಮವೇ ದುಃಖವೆಂದು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ನೈಯಾಯಿಕರು ಇದೊಂದು ಅತ್ಯಧರ್ಮವೆಂದು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. "ಇಂಚ್ಛಾದೇಷಪ್ರಯತ್ನಸುಖದುಃಖಜ್ಞಾನಾನ್ಯಾತ್ಮನೋ ಲಿಙ್ಗಮ್". 2. ಯಾತನೆ, ನೋವು. "ಯದೇವೋಪನತಂ ದುಃಖಾತ್ಸುಖಂ ತದ್ರಸ-ವತ್ತರಮ್" ವಿಕ್ರಂ ೩-೨೧. 3. ಕಷ್ಟ, ತೊಂದರೆ. "ಅರ್ಥಾನಾಮರ್ಜನೇ ದುಃಖಮರ್ಜಿತಾನಾಂ ಚ ರಕ್ಷಣೇ. ಆಯೇ ದುಃಖಂ ವ್ಯಯೇ ದುಃಖಂ ಧಿಗರ್ಥಾಃ ಕಷ್ಟಸಂಶ್ರಯಾಃ" ಪञ्ಚತಂ ೧-೧೭೪. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 4. ಕಷ್ಟದಿಂದ. "ಸ್ವಾದುಃಖಿಸ್ತು ವಿಷಯೈ-ಹೃತಸ್ತತೋ ದುಃಖಮಿन्द्रಿಯಗಣೋ ನಿವಾರ್ಯತೇ" ರಘುಂ ೧೯-೪೯. (ವಿಂ) 5. ದುಃಖವುಳ್ಳ, ಶೋಕವುಳ್ಳ, ಸಂಕಟವುಳ್ಳ. "ಸುಖಂ ದುಃಖಂ ಮಲಂ ಕ್ಷಿಪ್ರಂ ಕಿಲಾಸಂ ಸಿಂಧುಮರ್ಮರೀ. ರಭಸಃ ಪಲಿತಂ ಶ್ವಿತ್ರಮೇತೇಷಿ ತ್ರಿಭು ಧರ್ಮಿಣಿ" ವೈಜಂ.

ದುಃಖಕರ ದುಃಖಕರ (ವಿಂ) ದುಃಖವನ್ನು ಉಂಟು ಮಾಡುವ. ದುಃಖಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃಬ್ (ಕರಣೆ) "ಠ್" (೩-೨-೨೦).



ದುಃಖಪ್ರಾಸ ದುಃಖಗ್ರಾಮ (ಫಂ) 1. ಸಂಸಾರ. ದುಃಖಾನಾಂ  
ಗ್ರಾಮೋತ್ರ. 2. ದುಃಖಗಳ ಸಮುದಾಯ. ದುಃಖಾನಾಂ  
ಗ್ರಾಮಃಸಮೂಹಃ.

ದುಃಖಜಾತ ದುಃಖಜಾತ (ನಂ) 1. ದುಃಖಗಳ ಸಮು  
ದಾಯ. ದುಃಖಾನಾಂ ಜಾತಮ್. (ವಿಂ) 2. ದುಃಖವುಂಟಾಗಿ  
ರುವ. ದುಃಖಂ ಜಾತಂ ಯಸ್ಯ (ವಾಂ ೨-೨-೩೬)।

ದುಃಖತ್ರಯ ದುಃಖತ್ರಯ (ನಂ) ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ ಆಧಿದೈವಿಕ  
ಮತ್ತು ಆಧಿಭೌತಿಕಗಳೆಂಬ ಮೂರು ದುಃಖಗಳು. ["ಆಧಿ-  
ದೈವಿಕ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ದುಃಖದೋಹ್ಯ ದುಃಖದೋಹ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಕಳು, ಹಸು.  
ದುಃಖೇನ ದೋಹ್ಯಾ।

ದುಃಖಪ್ರಾಪ್ತ ದುಃಖಪ್ರಾಪ್ತಯ (ವಿಂ) 1. ಶೋಕಮಯವಾದ.  
2. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಮುಖದ.

ದುಃಖಬೋಧ ದುಃಖಬೋಧ (ವಿಂ) ಕಷ್ಟದಿಂದ ತಿಳಿಯ-  
ಲ್ಪಡುವ.

ದುಃಖಭಾಗಿನ್ ದುಃಖಭಾಗಿನ್ (ವಿಂ) ಸುಖವಿಲ್ಲದ, ದುಃಖ  
ವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ದುಃಖಭಾಗಿ  
ಚ ಸತತಂ ವ್ಯಾಧಿತೋಲ್ಪಾಯುರೇವ ಚ" ಮನುಂ ೪-೧೫೭।

ದುಃಖಭಾಜ್ ದುಃಖಭಾಜ್ (ವಿಂ) ದುಃಖದಲ್ಲಿರುವ, ವ್ಯಥೆ  
ಯುಂಟಾಗಿರುವ, ಸುಖವಿಲ್ಲದ. ದುಃಖಂ ಭಜತೇ - ಭಜ  
(ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಫಿವಃ" (೩-೨-೬೨)।

ದುಃಖಶೀಲ ದುಃಖಶೀಲ (ವಿಂ) ದುಃಖಪಡುವ ಸ್ವಭಾವದ.  
ದುಃಖಂ ಶೀಲಯತಿ - ಶೀಲ (ಸಮಾಧಿ) "ಅನ್" (೩-೨-೧)।  
"ಕಾಮೇಕಪತ್ನೀವ್ರತದುಃಖಶೀಲಾಂ ಲೋಲಂ ಮನಶ್ಚಾಸ್ತಯಾ ಪ್ರವಿಷ್ಟಾಮ್"  
ಕುಮಾಂ ೩-೭।

ದುಃಖಸಂಸ್ಥಿತಿ ದುಃಖಸಂಸ್ಥಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಹಳಕಷ್ಟದ  
ಪರಿಸ್ಥಿತಿ, ಬಹಳ ತೊಂದರೆಯಲ್ಲಿರುವುದು. (ವಿಂ) 2.  
ಕಷ್ಟದ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರುವ, ಬಹಳ ತೊಂದರೆಯಲ್ಲಿ  
ರುವ.

ದುಃಖಿತ ದುಃಖಿತ (ವಿಂ) 1. ಕೊರಗುವ, ಸಂಕಟಪಡುವ.  
ದುಃಖವುಂಟಾದ. ದುಃಖಂ ಸಂಜ್ಞಾತಮಸ್ಯ "ಇತತ್"  
(೫-೨-೩೬)। "ದುಃಖಿತಾ ಯತ್ರ ದೃಶ್ಯೇರನ್ ವಿಕೃತಾಃ  
ಪಾಪಕಾರಿಣಃ" ಮನುಂ ೯-೨೮೮। 2. ಕಷ್ಟಪಡುವ,  
ತೊಂದರೆಯಪಡುವ. "ಸೇಹಿರೇ ನ ಕಿರಣಾ ಹಿಮರಸಮೇದ್ಢುಃಖಿತೇ  
ಮನಸಿ ಸರ್ವಮಸಹ್ಯಮ್" ಕಿರಾಂ ೯-೩೧।

ದುಃಖಿನ್ ದುಃಖಿನ್ (ವಿಂ) ದುಃಖದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ದುಃಖ-  
ಮಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೩೧)।

ದುಃಶಕ ದುಃಶಕ (ವಿಂ) ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯವಿಲ್ಲದ.

ದುಃಶಕ್ತುನ ದುಃಶಕ್ತುನ (ನಂ) ಅಪಶಕ್ತುನ, ಕೆಟ್ಟ ಸೂಚನೆ.  
ದುಃಶಕ್ತುನಃ। ಬುಜೆ, ತೋಗಲು, ಹೊಟ್ಟು, ಎಲುಬು,  
ಸರ್ಪ, ಬೆಂಕಿ, ಸೌದೆ, ಪುಡ, ವೈಶ್ಯ, ಎಣ್ಣೆ, ಹುಚ್ಚ,  
ಜಿಷಧ, ತತ್ತು, ಸುನ್ಯಾಸಿ, ಹುಲ್ಲು, ರೋಗಿ, ನಗ್ನ,  
ಅಂಗವಿಕಲ, ಮೈಗೆ ಎಣ್ಣೆ ಸವರಿಕೊಂಡವನು, ಹಸಿದಿರು  
ವವನು, ಎಮ್ಮೆ ಕಾಳಗ ಇತ್ಯಾದಿಗಳ ದಶಃನವು ಪ್ರಯಾ  
ಣಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ಅಪಶಕ್ತುನವೆಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕು.

ದುಃಶಲಾ ದುಃಶಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಮಗಳಂ,  
ಜಯದ್ರಥನ ಹೆಂಡತಿ.

ದುಃಶಾಸನ ದುಃಶಾಸನ (ಫಂ) 1. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ,  
ದುರ್ಯೋಧನನ ತಮ್ಮ. ದುರ್ಯೋಧನನ ಮಾತಿನಂತೆ  
ಇವನು ಜೂಜಿನಲ್ಲಿ ಸೇತ ಪಾಂಡವರ ಪತ್ನಿ ದ್ರೌಪದಿ  
ಯನ್ನು ರಾಜಸಭೆಗೆ ಎಳೆತಂದು ಅವಳ ವಸ್ತ್ರಾಪಹಾರ  
ಮಾಡಲು ಯತ್ನಿಸಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ಲಬ್ಧವಾದ  
ಅಕ್ಷಯ ವಸ್ತ್ರವನ್ನು ಪೂರ್ತಿಯಾಗಿ ಎಳೆಯಲಾರದೆ ಜಾರಿ  
ಬಿದ್ದು ಪರಾಭವಗೊಂಡನು. ಉತ್ತರ ಗೋಗ್ರಹಣ  
ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಅರ್ಜುನನಿಂದ ಪರಾಜಿತನಾದನು. ಯುದ್ಧ  
ದಲ್ಲಿ ಸಾತ್ಯಕಿಗೆ ಹೆದರಿ ಓಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯನು  
ಇವನನ್ನು ಹೀಯಾಳಿಸಿದನು. ಭೀಮಸೇನನು ಎಲ್ಲಾ  
ರಾಜರ ಎದುರಿಗೆ ಇವನ ತೋಳುಗಳನ್ನು ಮುರಿದು ಎದೆ  
ಯನ್ನು ಸೀಳಿಹಾಕಿದನು. (ವಿಂ) 2. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಶಿಕ್ಷಿಸ  
ಲ್ಪಡುವವನು.

ದುಃಶೀಲ ದುಃಶೀಲ (ವಿಂ) ಕೆಟ್ಟ ಸ್ವಭಾವದವನು. ದುಃ  
ಶೀಲಂ ಯಸ್ಯ। "ಪೂರ್ವಮಪ್ಯತಿದುಃಶೀಲೋ ನ ಧೈರ್ಯ ಕರ್ತುಮರ್ಹತಿ"  
ಭಾಂ ಸಭಾಂ।

ದುಃಷಮ ದುಃಷಮ (ಫಂ) 1. ಜೈನ ಸಿದ್ಧಾಂತದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ  
ಅವಸರ್ಪಿಣೀ ಮತ್ತು ಉತ್ಸರ್ಪಿಣೀ ಕಾಲಗಳ ಒಂದು  
ಭಾಗ. ["ಅವಸರ್ಪಿಣಿ" ಮತ್ತು "ಉತ್ಸರ್ಪಿಣಿ" ಪದ  
ಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] (ಅಖ್ಯಂ) 2. ನಿಂದ್ಯವಾದ. ದುಃಷಮಮತ್ರ।  
"ನಿಃಷಮಂ ದುಃಷಮಂ ಗಾಹ್" ಅಮಂ।

ದುಃಸಹ ದುಃಸಹ (ವಿಂ) ಸಹಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಬಹಳ  
ಕಷ್ಟದಿಂದ ಸಹಿಸಲ್ಪಡುವ. ದುಃಖೇನ ಸಹ್ಯತೇ-ಸಹ (ಮರ್ಷಣೆ)  
"ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬)। "ಭವತ್ಯನಿಷ್ಠಾದಪಿ ನಾಮ  
ದುಃಸಹಾನ್ಮನಸ್ವಿನೀನಾಂ ಪ್ರತಿಪತ್ತಿರೀದೃಶೀ" ಕುಮಾಂ ೫-೪೨।

ದುಃಸಾ(ಛ)ಛ ದುಃಸಾ(ಛ)ಛ (ವಿಂ) ಸಾಧಿಸಲು ಕಷ್ಟ  
ವಾದ, ಸಾಧಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. ದುಃಖೇನ ಸಾಧ್ಯತೇ-ಸಾಘ  
(ಸಂಸಿದ್ಧಿ) "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬)। "ಘತ್" (೩-೧-೧೨೪)।  
ವಾ। "ಅಂದಾನುವೃತ್ತಿದುಃಸಾಘ್ಯಾಃ ಸುಹೃದೋ ವಿಮನೀಕೃತಾಃ"  
ಮಾಘಂ ೨-೧೦೫।



ದುಃಸ್ವ ದುಃಸ್ವ (ವಿಂ) 1. ದೃಢ, ಬಡವ. ದುಃಖೇನ ತಿಷ್ಠತಿ—  
ಷಾ (ಗತಿनिवृत्तौ) "ಕ:" (೩-೨-೪) 2 ಮೂರ್ಛಿ.  
3. ಬಹಳ ಕಷ್ಟದಿಂದ ಇರುವ. "ದುಃಸ್ವೋ ಮುಕ್ತೇ ದುರ್ಗತೇ  
ಸ್ಯಾತ್ ದುಃಖೇನ ತಿಷ್ಠತಿ ತ್ರಿಷು" ಮೇದಿಂ. 4. ಲುಬ್ಧ,  
ಕೃಪಣ, ಜಿಪ್ಸಣ.

ದುಃಸ್ಪರ್ಶ ದುಃಸ್ಪರ್ಶ (ಪುಂ) 1. ಅಪ್ರೀತಿಸಂಧಿ. ದುಃಖೇನ ಸ್ಪೃಶ್ಯತೇ—  
ಸ್ಪರ್ಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶಾನೇ) "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬) 1. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಶಾ -ಶಾಫ. 2. ಹೆಣ್ಣುಳ್ಳ, ಮುಳ್ಳುಬದನೆಕಾಯಿ.  
"ದುಃಸ್ಪರ್ಶೋ ಧನ್ವಯಾಸೇ ನಾ ಕಂಠಕಾರ್ಯಾ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ.

ದುಃಸ್ವಪ್ನ ದುಃಸ್ವಪ್ನ (ಪುಂ) ಅಶುಭಸೂಚಕವಾದ ಕನಸು.  
ದುಃಸ್ವಪ್ನ: 1. ಸ್ವಪ್ನದಲ್ಲಿ ಸಂತೋಷದಿಂದ ನೆನಪಾದ  
ವಿವಾಹವನ್ನು ನೋಡುವುದು ನರ್ತನ ನೋಡುವುದು  
ಸಂಗೀತವನ್ನು ಕೇಳುವುದು ತನ್ನ ಹಲ್ಲುಗಳು ಬಿದ್ದಂತೆ  
ಕಾಣುವುದು ಅಭ್ಯಂಗ ಮಾಡಿದಂತೆ ಕಾಣುವುದು ಬೆತ್ತಲೆ  
ಯಾಗಿರುವ ಕಷ್ಟ ಬಣ್ಣದ ಶೂದ್ರವಿಂತಂತುವನ್ನು ಕಾಣು  
ವುದು ಕೋಪಿಸಿಕೊಂಡ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನನ್ನೂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ  
ಸ್ತ್ರೀಯನ್ನೂ ನೋಡುವುದು ಹತ್ತಿ ಕೇಪುವಸ್ತ್ರ ಮರ್ಕಟ  
ಇವನ್ನು ಕಾಣುವುದು ಮುಂತಾದುವು ದುಃಸ್ವಪ್ನಗಳು.  
ಬ್ರಹ್ಮವೆಂ. "ದುಃಸ್ವಪ್ನದೋಷನಾಶಾಯ ಭಯಾರ್ತಾ ಭಯಮೋಹಿತಾ |  
ತಮೇವ ಶರಣಂ ವಿಷ್ಣುಂ ಜಗಾಮ ಜನಕಾತ್ಮಜಾ" ರಾಮಾಂ.

ದುಕೂಲ ದುಕೂಲ (ನಂ) 1. ರೇಷ್ಮೆವಸ್ತ್ರ, ಪಟ್ಟಿವಸ್ತ್ರ.  
ದುಃಕೂಲತಿ — ಕೂಲ (ಆವರಣ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫) 1.  
"ನಾರೀಣಾಂ ವಿಮಲತರೋ ಸಮುಲ್ಲಸಂತಯಾ ಭಾಸಾಂತರ್ದಧತುರೂ  
ದುಕೂಲಮೇವ" ಮಾಘಂ ೮-೬೫. 2. ನುಣುಪಾದ ಬಟ್ಟೆ,  
ಮೃದುವಾದ ವಸ್ತ್ರ. "ದುಕೂಲಂ ಶಲಕ್ಷಣವಸ್ತ್ರೇ ಸ್ಯಾತ್ ಕ್ಷೀಮೇ ಚ"  
ಮೇದಿಂ. 3. ಸೂಕ್ಷ್ಮವಸ್ತ್ರ, ತೆಳುವಾದ ಬಟ್ಟೆ. "ಕ್ಷೀಮೇ  
ದುಕೂಲಮಿಚ್ಛಂತಿ ದುಕೂಲಂ ಸೂಕ್ಷಮವಾಸಸಿ" ಶಾಶ್ವಂ. "ದುಕೂಲಂ  
ತು ಕ್ಷೀಮೇ ಸೂಕ್ಷಮಾಂಶುಕೇ ಚ ತತ್" ನಾನಾರ್ಥರಂ.

ದುಗೂಲ ದುಗೂಲ (ನಂ) 1. ರೇಷ್ಮೆವಸ್ತ್ರ. 2. ನುಣುಪಾದ  
ಬಟ್ಟೆ. 3. ತೆಳುವಾದ ಬಟ್ಟೆ. ದುಕೂಲ ಪೃಷಂ.

ದುಘ ದುಘ (ನಂ) 1. ಕ್ಷೀರ, ಹಾಲು. ದುಹತೇ ಸ್ವ—ದುಹ  
(ಪ್ರಪೂರಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) 1. 2. ಮರದ ರಸ,  
ಮರದ ಹಾಲು. 3. ಹಾಲು ಕರೆಯುವುದು. ದುಹ ಭಾವೇ  
"ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) 1. 4. ತುಂಬುವಿಕೆ. "ದುಘಂ ಪ್ರಪೂರಣಂ  
ಕ್ಷೀರೇ" ವಿಶ್ವಂ. (ವಿಂ) 5. ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಗಾ -ಗಾ. 6. ಹಾಲು ಕರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ ಹಸು. ದುಹ  
ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) 1. "ದುಘಂ ಪ್ರಪೂರಿತೇ ಕ್ಷೀರೇ"  
ಮೇದಿಂ.

ದುಘತಾಲೀಯ ದುಘತಾಲೀಯ (ನಂ) 1. ಹಾಲಿನ ನೊರೆ.  
2. ಹಾಲಿನಲ್ಲಿ ಪಕ್ವವಾದ ಮಾವಿನಹಣ್ಣು.

ದುಘಪಾಚನ ದುಘಪಾಚನ (ನಂ) ಹಾಲು ಕಾಯಿಸುವ  
ಪಾತ್ರ. ದುಘಂ ಪಾಚ್ಯತೇಜೇನ—ಡು ಪವಃ (ಪಾಕೆ) + ಣಿಚ್  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) 1.

ದುಘಪಾತ್ರ ದುಘಪಾತ್ರ (ನಂ) ಹಾಲಿನ ಪಾತ್ರೆ.

ದುಘಫೇನ ದುಘಫೇನ (ಪುಂ) 1. ಹಾಲಿನ ನೊರೆ. 2. ಹಾಲಿನ  
ಕನೆ.

ದುಘಬಂಧ ದುಘಬಂಧ (ಪುಂ) ಹಾಲು ಕರೆಯಲು ಹಸು  
ವನ್ನು ಕಟ್ಟುವುದು. ದುಘಾರ್ಥ ಬಂಧ: 1.

ದುಘಸಮುದ್ರ ದುಘಸಮುದ್ರ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ, ಹಾಲಿನ  
ಸಮುದ್ರ, ಪಾಲ್ಗಡಲು.

ದುಘಸಿಂಧು ದುಘಸಿಂಧು (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ, ಪಾಲ್ಗ  
ಡಲು. "ದುಘಸಿಂಧುಧುಹಿತು: ಸಹೋದರೇ" ಯಾದಂ ೧೭-೪೩.

ದುಘಾಂಬುಧಿ ದುಘಾಂಬುಧಿ, -ಅಂಬೋಧಿ -ಅಂಬೋಧಿ  
(ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ, ಪಾಲ್ಗಡಲು.

ದುಘಾಂಬುರಾಶಿ ದುಘಾಂಬುರಾಶಿ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ,  
ಹಾಲಿನ ಸಮುದ್ರ. "ದುಘಾಂಬುರಾಶಿಪೃಷತೇರಿವ ರೂಪಮಗ್ರಚಮ್"  
ಯಾದಂ ೧೯-೭.

ದುಘಾಸ್ರ ದುಘಾಸ್ರ (ನಂ) ಹಾಲಿನಲ್ಲಿ ಪಕ್ವವಾದ ಮಾವಿನ  
ಹಣ್ಣು. ದುಘಪಕ್ವಮಾಸ್ರಮ್.

ದುಘಿಕಾ ದುಘಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಾಲುತೊಟ್ಟಿನ ಗಿಡ. ದುಘ-  
ಮಸ್ತಯಸ್ಯಾ: "ಠನ್" (೫-೨-೧೧೫) 1. "ಕ್ಷೀರಾವಿ ದುಘಿಕಾ  
ಸಮೇ" ಅಮಂ.

ದುಘಿ ದುಘಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಾಲುತೊಟ್ಟಿನ ಗಿಡ. ದುಘಮಸ್ತಯ-  
ಸ್ಯಾ: "ಅಚ್" (೫-೨-೧೨೭) 1. "ಡೋಃ" (೪-೧-೪೧) 1.

ದುಘೋದ ದುಘೋದ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ. "ದೇವಸ್ಯ  
ದುಘೋದಶಯಸ್ಯ ದೈತ್ಯಾದೈರೋಚನಾದ್ವಿಧಾಲಭುಜೋಪನಿತ್:" ಯಾದಂ  
೪-೮೧. -ಉದಧಿ: -ಉದಧಿ:

ದುಘಡುಕ ದುಘಡುಕ (ವಿಂ) ಕಟ್ಟು ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು, ವಂಚಕ.  
ಮೋಸಗಾರ.

ದುಘಡುಭ ದುಘಡುಭ (ಪುಂ) ರಾಜಲವಂಬ ಒಂದು ಜಾತಿಯ  
ಸರ್ಪ, ಎರಡು ತಲೆಗಳುಳ್ಳ ಉರಿಶಿಂಗಿ ಹಾವು. "ಸಮೌ  
ರಾಜಿಲದುಘಡುಭೌ" ಅಮಂ.

ದುತ ದುತ (ವಿಂ) ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ತೊಂದರೆಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ದೃಢ (ಉಪತಾಪೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) 1. "ಸ್ಫುರತಿವಿವಾರಣಂ  
ಹಿಮಸಾರ್ತಮೈದುತಯಾ ದುತಯಾಽಧರಲೇಖಯಾ" ಮಾಘಂ ೬-೫೯.







**ದುರಭಿಪ್ರಾಯ ದುರಭಿಪ್ರಾಯ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಅಭಿಪ್ರಾಯ, ಕೆಟ್ಟ ಮನೋಭಾವ. ದುಷ್ಟ: ಅಭಿಪ್ರಾಯ:। (ವಿಂ) 2. ಕೆಟ್ಟ ಉದ್ದೇಶವುಳ್ಳ, ದುಷ್ಟವಾದ ಅಭಿಪ್ರಾಯವುಳ್ಳ. ದುಷ್ಟ ಆಶಯೋ यस್ಯ। “ಅಥ ತಾನ್ ದುರಭಿಪ್ರಾಯಾನ್ ವಲೋಕ್ಯ ವಲಕೇಶವೀ। ಕ್ರುದ್ಧಿ ಧನ್ವನ ಆದಾಯ ಶಕಲೇ ತಾಂಶ್ಚ ಜಘನತು:” ಭಾಗಂ ೧೦-೪೨-೨೦।

**ದುರಭಿಮಾನ ದುರಭಿಮಾನ** (ಪುಂ) ಕೆಟ್ಟ ಅಹಂಕಾರ, ಒಣ ಹೆಮ್ಮೆ, ಸಲ್ಲದ ಆತ್ಮಗೌರವಬುದ್ಧಿ. ದುಷ್ಟ: ಅಭಿಮಾನ:।

**ದುರಭಿಮಾನಿನ್ ದುರಭಿಮಾನಿನ್** (ವಿಂ) ಅಹಂಕಾರವುಳ್ಳವನು, ಸಲ್ಲದ ಆತ್ಮಗೌರವಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು, ಬಡಾಯಿ ಕೂಚ್ಚಿ ಕೊಳ್ಳುವವನು. “ಪ್ರಿಯೇ, ಏನ್ ದುರಭಿಮಾನಿನ್ ಭಿಕ್ಷು ತಾವದ್ಗೃಹಾಣ” ಪ್ರಬೋಧಂ ೩।

**ದುರಭಿಸಂಧಿ ದುರಭಿಸಂಧಿ** (ಪುಂ) ಕೆಟ್ಟ ಉದ್ದೇಶ, ಕೆಟ್ಟ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. ದುಷ್ಟ ಅಭಿಸಂಧಿ:।

**ದುರವಗಮ ದುರವಗಮ** (ವಿಂ) ತಿಳಿಯಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ತಿಳಿಯಬಹುದಾದ. ದು:ಖೇನಾವಗಮ್ಯತೇ—ದುರ್+ಅವ+ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬)। “ಅಥ ತದೇವೇತದ್ದುರವಗಮಂ ಸಮವೇತಾನುಕಲ್ಪೇನ ನಿರ್ದಿಶ್ಯತಾಮಿತಿ” ಭಾಗಂ ೪-೧೩-೨೬।

**ದುರವಗಾಹ ದುರವಗಾಹ** (ವಿಂ) ನಿರನೀಳಕ್ಕೆ ತಿಳಿಯಲು ಅಸಾಧ್ಯವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ತಿಳಿಯಬಹುದಾದ. ದು:ಖೇನ ಅವಗಾಹ್ಯತೇ—ದುರ್+ಅವ+ಗಾಹ (ವಿಲೋಡನೆ) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬)।

**ದುರವಸ್ಥ ದುರವಸ್ಥ** (ವಿಂ) 1. ಕಷ್ಟಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)—ಅವಸ್ಥಾ—ಅವಸ್ಥಾ. 2. ಕಷ್ಟದ ಪರಿಸ್ಥಿತಿ, ಕೆಟ್ಟ ಸನ್ನಿವೇಶ, ಕಷ್ಟದಶೆ. ದುಷ್ಟಾ ಅವಸ್ಥಾ। “ಪುತ್ರ, ತಥಾ ದುರವಸ್ಥಾಗತೇನಾಪಿ ಮಹಾಮೋಹಹತಕೇನ ಸ್ವಾಮಿನ: ಪ್ರರೋಚನಾಯ ಮಧುಮತ್ಯಾ ವಿವ್ರಯಾ ಸಹೋಪಸರ್ಗಾ: ಪ್ರೇಷಿತಾ:” ಪ್ರಬೋಧಂ ೬।

**ದುರವಾಪ ದುರವಾಪ** (ವಿಂ) ಕಷ್ಟದಿಂದ ಹೊಂದಬಹುದಾದ, ಹೊಂದಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. ದು:ಖೇನಾವಾಪ್ಯತೇ—ದುರ್+ಅವ+ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬)। “ಮರ್ತ್ಯ-ಲೋಕದುರವಾಪಮವಾಪ್ತರಸೋದಯಮ್” ಮಾಘಂ ೧೩-೬೯। “ನ ದುರವಾಪೇಯಂ ಪ್ರಾರ್ಥನಾ” ಶಾಕುಂ ೧।

**ದುರಾಕ್ರಮಣ ದುರಾಕ್ರಮಣ** (ನಂ) ಅನ್ಯಾಯದ ಆಕ್ರಮಣ, ನ್ಯಾಯವಲ್ಲದ ಮುತ್ತಿಗೆ, ನ್ಯಾಯವಿಲ್ಲದೆ ಮೇಲೆ ಬೀಳುವುದು. ದುಷ್ಟಮಾಕ್ರಮಣಮ್।

**ದುರಾಕ್ರಾಂತ ದುರಾಕ್ರಾಂತ** (ನಂ) 1. ಅನ್ಯಾಯದಿಂದ ಆಕ್ರಮಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 2. ಅನ್ಯಾಯದಿಂದ ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ದುರಾಗ್ರಹ ದುರಾಗ್ರಹ** (ಪುಂ) ಫಲ, ಪಟ, ಹಟಮಾಂಸನ. ದುಷ್ಟ ಆಗ್ರಹ:। “ಯತ್ಸಾನುಬಂಧೇಽಸತಿ ದೇಹಗೇಹೇ ಮಮಾಹಮಿತ್ಯುಡ-ದುರಾಗ್ರಹಾಣಾಮ್” ಭಾಗಂ ೩-೪-೪೩।

**ದುರಾಚರ ದುರಾಚರ** (ವಿಂ) 1. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಅಚರಿಸಬಹುದಾದ, ಅಚರಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. ದು:ಖೇನ ಆಚರಯತೇ—ದುರ್+ಆ+ಚರ (ಗತೌ) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬)। “ಸೌಖ್ಯಂ ಚತುಣಮಿತೇಷಾಮಾಶ್ರಮಾಣಾಂ ದುರಾಚರ:” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೨೩-೬। 2. ಗುಣಪಡಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ಬೆತ್ತೆನಡೆಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ.

**ದುರಾಚಾರ ದುರಾಚಾರ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ನಡವಳಿಕೆ, ದುರ್ವರ್ತನೆ, ಕೆಟ್ಟ ಜಾಳಿ. ದುಷ್ಟ ಆಚಾರ:। “ಪ್ರಾಪ್ತೇ ಕಲಿಯುಗೇ ಧೋರೇ ನರಾ: ಪುಣ್ಯವಿವರ್ಜಿತಾ:। ದುರಾಚಾರರತಾ: ಸರ್ವೇ ಸತ್ಯ-ವಾರ್ತಾಪರಾಡ್ಢಮುಖಾ:”। (ವಿಂ) 2. ಕೆಟ್ಟ ನಡವಳಿಕೆಯುಳ್ಳ, ದುರ್ವರ್ತನೆಯುಳ್ಳ. “ದುರಾಚಾರೋ ಹಿ ಪುರುಷೋ ಲೋಕೇ ಭವತಿ ನಿಂದಿತ:” ಮನ್ ೪-೧೪೭। “ದುರಾಚಾರಾ ಸದಾಚಾರಾ ದುರ್ದರ್ಶಾ ಪ್ರಿಯದರ್ಶನಾಮ್” ಪ್ರಬೋಧಂ ೩-೭।

**ದುರಾತ್ಮನ್ ದುರಾತ್ಮನ್** (ವಿಂ) ಕೆಟ್ಟ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಕೆಟ್ಟ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ, ನೀಚ. ದುಷ್ಟ ಆತ್ಮಾ ಯಸ್ಯ। “ಯೇ ಚ ಪ್ರಾಹುದುರಾತ್ಮಾನೋ ದುರಾರಾಧ್ಯಾ ಮಹಿಭುಜ:” ಪञ್ಚತಂ ೧-೪೦।

**ದುರಾರ್ಥ ದುರಾರ್ಥ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಗಾಂಭೀರ್ಯಾತಿ-ಶಯೇನ ಅಮೋಘವತ್ ಅನಭಿಭವನೀಯತಯಾ ಆರ್ಥಾಪಿತುಮಶಕ್ಯ:। ದುರ್+ಆ+ಞಿ ಧೃಷಾ (ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯೇ) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬)। “ಅಪಾಂನಿಧಿವದಕ್ಷೋಮ್ಯ: ದುರಾರ್ಥ ಇತಿರೀತ:” ಇತಿ ನಿರೂಕ್ತಿ:। “ಅನುತ್ತಮೋ ದುರಾರ್ಥ:” ವಿಂ ಸಂ 1. 2. ಬಿಳಿ ಸಾಸವೆ. ದುಷ್ಟಾನ್ ಆರ್ಥಯತಿ—ದುರ್+ಆ+ಧೃಷ (ಪ್ರಸಹನೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। (ವಿಂ) 3. ತಡೆಯಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಅಡಗಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ. 4. ಮೇಲೆ ಬೀಳಲು ಸಾಧ್ಯವಲ್ಲದ, ಆಕ್ರಮಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ. ದು:ಖೇನ ಆರ್ಥಾಪಿತುಂ ಶಕ್ಯ:—ದುರ್+ಆ+ಞಿ ಧೃಷಾ (ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯೇ) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬)।

**ದುರಾರ್ಥ ದುರಾರ್ಥ** (ಪುಂ) ಕೆಟ್ಟ ಮನೋವ್ಯಾಧಿ, ಕೆಟ್ಟ ಮನೋವ್ಯಥೆ. ದುಷ್ಟ ಆರ್ಥ:। “ತಥಾಪಿ ವಕ್ತುಂ ವ್ಯವಸಾಯಯಂತಿ ಮಾ ನಿರಸ್ತನಾರೀಸಮಯಾ ದುರಾರ್ಥಯ:” ಕಿರಾಂ ೧-೨೮।

**ದುರಾನಮ ದುರಾನಮ** (ವಿಂ) ಬಗ್ಗಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಬಗ್ಗಿಸಬಹುದಾದ. ದು:ಖೇನ ಆನಮ್ಯತೇ—ದುರ್+ಆ+ಞಿ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ ಚ) + ಞಿಚ್ “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬)। “ಸ್ವಂ ವಿಚಿಂತ್ಯ ಚ ಧನುದುರಾನಮಂ ಪಿಡಿತೋ ದುಹಿತುಶುಲ್ಕ-ಸಂಸ್ಥಯಾ” ರಘುಂ ೧೧-೩೮।

**ದುರಾಪ ದುರಾಪ** (ವಿಂ) ಹೊಂದಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಪಡೆಯಲು ಕಷ್ಟವಾದ. ದು:ಖೇನ ಆಪ್ತುಂ ಶಕ್ಯಮ್—ದುರ್+ಆಪ್



(ವ್ಯಾಪ್ತೌ) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬) । “ಏತೇ ದುರಾಪಂ  
ಸಮವಾಪ್ಯ ವೀರೈರ್ಮುನ್ಮಲಿತಾರಃ ಕಪಿಕೇತನೇನ” ಕಿರಾಂ ೩-೨೨ ।  
“ದುರಾರಾಧ್ಯಾಃ ಶ್ರಿಯೋ ರಾಜಾಂ ದುರಾಪಾಃ ದುಃಪ್ರಸಿಘಾಃ” ಪಂಚತಂ  
೧-೭೩ ।

ದುರಾರಾಧ್ಯ ದುರಾರಾಧ್ಯ (ವಿಂ) ಅರಾಧಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ,  
ಒಲಿಸಲು ಅಸಾಧ್ಯವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಒಲಿಸಬಹುದಾದ.  
ದುಃಖೇನಾರಾಧ್ಯತೇ—ದುರ್+ಆ+ರಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧೌ) “ಞ್ಯತ್”  
(೩-೧-೧೨೪) । “ದುರಾರಾಧ್ಯಾ ಹಿ ರಾಜಾಃ ಪವಂತಾ ಇವ  
ಸರ್ವದಾ” ಪಂಚತಂ ೧-೬೮ । “ಯೇ ಚ ಪ್ರಾಹುದುರಾತ್ಮಾನೋ  
ದುರಾರಾಧ್ಯಾ ಮಹೀಭುಜಃ । ಪ್ರಮಾದಾಲಸ್ಯಜಾಡಧಾನಿ ಕ್ವಾಪಿತಾನಿ  
ನಿಜಾನಿ ತೈಃ” ಪಂಚತಂ ೧-೪೦ ।

ದುರಾರಿಹನ್ ದುರಾರಿಹನ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ದುರ್ಮಿಗಗಾಮಿನೋ  
ದುರಾರಯಃ । ತಾನ್ ತ್ರಯಿಧರ್ಮತ್ಯಾಜನಾದಿಭಿಃ ತೈಸ್ತೈರಪಾಯೇಹಂತ-  
ವಾನ್” ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ । “ದುರಾವಾಸೋ ದುರಾರಿಹಾ” ವಿಂ ಸಂ ।

ದುರಾರೋಹ ದುರಾರೋಹ (ಪುಂ) 1. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆ  
ಹತ್ತುವುದು. ದುರ್+ಆ+ರೂ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) ಭಾವೇ  
“ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬) । 2. ತೆರಿಗೆನಮರ. 3. ಖರ್ಜೂರದ  
ಗಿಡ. (ವಿಂ) 4. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಹತ್ತುಬಹುದಾದ, ಹತ್ತುಲು  
ಕಷ್ಟವಾದ. “ದುರಾರೋಹಂ ಪದಂ ರಾಜಾಂ ಸರ್ವಲೋಕನಮಸ್ಮಕೃತಮ್”  
ಪಂಚತಂ ೧-೭೨ ।

ದುರಾಲಕ್ಷ್ಯ ದುರಾಲಕ್ಷ್ಯ (ವಿಂ) ನೋಡಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ,  
ನೋಡಲು ಕಷ್ಟವಾದ. ದುರ್+ಆ+ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನಾಕ್ಷುಣಯೋಃ)  
“ಞ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪) । “ದ್ರಹಿಣಹರವಲಮಯನದುರಾಲಕ್ಷ್ಯ-  
ಶರಲಕ್ಷ್ಯದಂಧಕಾತಪೋವನಜಙ್ಗಮಪಾರಿಜಾತ” ರಘುಂ ಗಂ ।

ದುರಾಲಭಾ ದುರಾಲಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೀರಿಕಸಂಧಿ. ದುಃಖೇನಾ-  
ಲಮ್ಯತೇ—ದುರ್+ಆ+ಛ ಲಭ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) “ಖಲ್”  
(೩-೩-೧೨೬) । “ರೋದನೀ ಕಂಞ್ಚುರಾನಂತಾ ಸಮುದ್ರಾಂತಾ  
ದುರಾಲಭಾ” ಅಮಂ ।

ದುರಾಲಾಪ ದುರಾಲಾಪ (ಪುಂ) 1. ಕಟ್ಟಿಮಾತು, ನಿಂದೆ.  
2. ಶಾಪ, ಬೈಗಳು. ದುಃಖಃ ಅಲಾಪಃ ।

ದುರಾಲೋಕ ದುರಾಲೋಕ (ಪುಂ) 1. ಕಣ್ಣು ಕೊರೆಯುವ  
ಬೆಳಕು, ಅತಿಯಾದ ಪ್ರಕಾಶ. (ವಿಂ) 2. ನೋಡಲು  
ಬಹಳ ಕಷ್ಟವಾದ, ಬಹಳ ಕಷ್ಟದಿಂದ ನೋಡಬಹುದಾದ.  
ದುಃಖೇನ ಅಲೋಕಯತೇ “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬) ।

ದುರಾವಾಸ ದುರಾವಾಸ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ದುರ್+ಆ+ವಸ  
(ನಿವಾಸೇ) “ಘ್” (೩-೩-೧೨೧) । “ದುಷ್ಕರಾವಾಸ  
ಭೂಮಿತ್ವಾತ್ ದುರಾವಾಸ ಇತಿರಿತಃ” ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ । “ದುರಾ-  
ವಾಸೋ ದುರಾರಿಹಾ” ವಿಂ ಸಂ ।

ದುರಾಶ ದುರಾಶ (ವಿಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಅಸೆಯುಳ್ಳ, ಸಲ್ಲದ  
ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಅಸೆಯಿಟ್ಟಿರುವ. ದುಃಖಾ ಆಶಾ ಯಸ್ಯ ।  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಶಾ—ಶಾ. 2. ಕೆಟ್ಟ ಅಸೆ, ಕಡೆ. ರವ ಅಸೆ,  
ಕೆಟ್ಟ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಅಸೆ. ದುಃಖಾ ಆಶಾ । “ಅಮ್ಬಾಮನುಸರ-  
ತ್ಯೇಷಾ ದುರಾಶಾ ನ ಕಥಂಚನ” ಪ್ರಬೋಧಂ ೩-೭ ।

ದುರಾಶಯ ದುರಾಶಯ (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಅಭಿಪ್ರಾಯ, ದುರು-  
ದ್ದೇಶ, ಕೆಟ್ಟ ಮನೋಭಾವ. ದುಃಖಾ ಆಶಯಃ । (ವಿಂ) 2.  
ಕೆಟ್ಟ ಮನೋಭಾವವುಳ್ಳ, ಕೆಟ್ಟ ಉದ್ದೇಶವುಳ್ಳ, ಕೆಟ್ಟ  
ಅಭಿಪ್ರಾಯವುಳ್ಳ. ದುಃಖಾ ಆಶಯೋ ಯಸ್ಯ । “ಪರವೃದ್ಧಿಮಿರಾ-  
ಹಿತವ್ಯಯಃ ಸ್ಫುಟನಿಭಿಃ ದುರಾಶಯೋಽಪಮಃ” ಮಾಧಂ ೧೬-೨೩ ।

ದುರಾಸ ದುರಾಸ (ನಂ) ಕಷ್ಟದಿಂದ ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವುದು-  
ದುಃಖೇನಾಸ್ಯತೇ—ದುರ್+ಆಸ (ಉಪವೇಶನೇ) ಭಾವೇ “ಖಲ್”  
(೩-೩-೧೨೬) । “ಪ್ರಾಹುದುರವತ್ ಸಪದಿ ಚಂದ್ರಕವಾನ್ ದ್ರುಮಾಗ್ರಾತ್  
ಸಂಭವಿಣಾ ಸಹ ಗುಣಾಮ್ಯಧಿಕೇದುರಾಸಮ್” ಮಾಧಂ ೪-೧೯ ।

ದುರಾಸದ ದುರಾಸದ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ದುಃಖೇನಾಸಾಂತತೇ—  
ದುರ್+ಆ+ಫಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬) ।  
“ಹಿರಣ್ಯರೆತಾಃ ಸಪ್ತಾರ್ಚಿವಸುರೆತಾ ಹುತಾಶನಃ । ಕೃಪಿಡಯೋನಿ-  
ರರ್ಚಿಷ್ಠಾನ್ ಧೂಮೇತುರ್ದುರಾಸದಃ” ವೈಜಂ । (ವಿಂ) 2.  
ಹೊಂದಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಸೇರಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ  
ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಹೋಗಬಹುದಾದ. “ದುರಾಸದಾನರೀನುಗ್ರಾನ್  
ಧೃತೇವಿಶ್ವಾಸಜನ್ಮನಃ” ಕಿರಾಂ ೧೧-೨೩ । 3. ಹೊಂದಲು  
ಕಷ್ಟವಾದ, ಪಡೆಯಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. 4. ತಡೆಯಲು  
ಕಷ್ಟವಾದ, ಸಹಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. “ತವ ದುರಾಸದವೀರೈ-  
ವಿಭಾವಸೌ ಶಲಭತಾಂ ಲಭತಾಮಸುಹೃದ್ಗಣಃ” ಮಾಧಂ ೨-೧೧೭ ।

ದುರಾಸಿಕಾ ದುರಾಸಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರ್ಯಾದೆಯಿಲ್ಲದೆ  
ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವುದು. “ದುರೀಶ್ವರದ್ವಾರಬಹಿರ್ವಿತದಿಕಾದುರಾ-  
ಸಿಕಾಯೈ ರಚಿತೋಽಯಮಂಜಲಿಃ” ವೈರಾಗ್ಯಪಂ ।

ದುರೀತ ದುರೀತ (ನಂ) ಪಾಪ, ಪಾತಕ. ದುಃಖಮಿತಂ ನರಕಾದಿ-  
ಗಮನಂ ಯಸ್ಮಾತ್ । “ಸಂದೃಷ್ಟೇನ ಚ ಮಯಾ ಸಕೃದಾಕ್ಷಿತಶ್ಚೇದ್ವತ್ಸಸ್ಯ  
ಭಾಗವಶಿಶೋದುರೀತಂ ಹಿ ತತ್ಸತ್ಯಾತ್” ಮಂ ವೀಂ ೩-೪೨ ।

ದುರಿಷ್ಟ ದುರಿಷ್ಟ (ನಂ) ಮಾಟ, ಶೂನ್ಯ, ಮೊದಲಾದುವು  
ಗಳಿಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಹೋಮ. ದುಃಖಮಿಷ್ಠಂ ಯಜಃ ।

ದುರಿಷ್ಟಿ ದುರಿಷ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಶಾಸ್ತ್ರೀಯವಾದ ಯಾಗ.  
ದುಃಖಾ ಇಷ್ಟಿಃ ।

ದುರೀಶ ದುರೀಶ, —ಶಿವರ—ಕುಶ್ವರ (ಪುಂ) ಅಯೋಗ್ಯ,  
ನಾದ ಯಜಮಾನ. ದುಃಖಾ ಇಶಃ ಇಶ್ವರೋ ವಾ । “ದುರೀಶ್ವರ-  
ದ್ವಾರಬಹಿರ್ವಿತದಿಕಾದುರಾಸಿಕಾಯೈ ರಚಿತೋಽಯಮಂಜಲಿಃ”  
ವೈರಾಗ್ಯಪಂ ।



ದುರೀಷಣಾ ದುರೀಷಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಾಪ, ಕೇಡನ್ನು ಬಯಸುವುದು.

ದುರಕ್ತ ದುರುಕ್ತ (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಮಾತು, ನಿದೇ. 2. ಕಠಿಣವಾದ ಮಾತು, ಜಿರುಸಾದ ಮಾತು, ಬೈಗಳು. ದುಷ್ಟಮುಕ್ತಮ್ | (ವಿಂ) 3. ಕಠಿಣವಾಗಿ ಆಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಜಿರುಸಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ನಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ದುರಕ್ತಮಾಘಾಭಿಹಿತೈಃ ಪ್ರಾಪ್ತುವಂತಿ ಸುದುಷ್ಕೃತಮ್" ಭಾಂ ಅನುಂ ೩೧-೨೧.

ದುರಕ್ಷೇದ ದುರುಚ್ಛೇದ (ವಿಂ) ನಿವಾರಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ನಾಶಪಡಿಸಲು ಅಸಾಧ್ಯವಾದ. ದುರ್ + ಉ + ಛಿದ್ರಿ (ಛೇದನಾರ್ಥ) "ಛಲ್" (೩-೩-೧೨೬) | "ತೌ ಹಿ ತತ್ವಾವಬೋಧಸ್ಯ ದುರಕ್ಷೇದಾವುಪಪ್ಲವೌ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೨೦ |

ದುರತ್ತರ ದುರುತ್ತರ (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಉತ್ತರ, ಆಯೋಗ್ಯವಾದ ಉತ್ತರ. ದುಷ್ಟಮುತ್ತರಮ್ | (ವುಂ) 2. ಕಷ್ಟದಿಂದ ದಾಟುವುದು. ದುಃಖೇನ ತರಃ ತರಣಮ್-ತ (ಪ್ರವನತರಣಯೋಃ) ಭಾವೇ "ಛಲ್" (೩-೩-೧೨೬) | (ವಿಂ) 3. ಉತ್ತರ ಕೊಡಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. 4. ದಾಟಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ದಾಟಬಹುದಾದ. "ದುರತ್ತರೇ ಪಕ್ಷು ಇವಾನ್ವಕಾರೇ ಮನಂ ಜಗತ್ಸಂತರಶಿರಜ್ಜುಃ" ಭಟ್ಟಿಂ ೧೧-೨೦ |

ದುರದಾಹರ ದುರುದಾಹರ (ವಿಂ) ಕಷ್ಟದಿಂದ ಉದಾಹರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹೇಳಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. ದುಃಖೇನ ಉದಾಹರಯತೇ- ದುರ್ + ಉ + ಆ + ಹ್ರ (ಹರಣೇ) "ಛಲ್" (೩-೩-೧೨೬) | "ಅನುಜ್ಞಿತಾರ್ಥಸಮ್ಬಂಧಃ ಪ್ರಬಂಧೋ ದುರದಾಹರಃ" ಮಾಘಂ ೨-೨೩ |

ದುರದಕ್ ದುರುದಕ್ (ವುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಭವಿಷ್ಯ, ಒಳ್ಳೆಯ ದಲ್ಲದ ಮುಂದಿನ ಕಾಲ. ದುಷ್ಟ ಉದಕ್ | (ವಿಂ) 2. ಕೆಟ್ಟ ಭವಿಷ್ಯವುಳ್ಳ, ನಿಷ್ಪಲವಾದ. "ಛಾಂ ಗತಸ್ಯ ಹೃದಿ ಮೇ ದುರದಕ್ಃ ಕ್ಷಮಾತಲದ್ವಯಮಟಾಜಿವಿತಕ್ಃ" ನೈಷಂ ೪-೪೧ |

ದುರದ್ವಹ ದುರುದ್ವಹ (ವಿಂ) ವಹಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಹೊರಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ಬಹಳ ಭಾರವಾದ. ದುರ್ + ಉ + ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಛಲ್" (೩-೩-೧೨೬) | "ದುರದ್ವಹಾಃ ಕ್ಷಣಮಪರೇಸ್ತದಂತರೇ ರಣಶ್ರವಾದುಪಚಯಮಾಶು ವಿಭ್ರತಿ" ಮಾಘಂ ೧೨-೨೨ |

ದುರಧರಾ ದುರುಧರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜನನಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನ ಹೊರತು ಇತರ ಎಲ್ಲಾ ಗ್ರಹಗಳೂ ಚಂದ್ರನಿಗೆ ದ್ವಿತೀಯ ಮತ್ತು ದ್ವಾದಶದಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ಯೋಗ. "ರವಿವರ್ಜಂ ದ್ವಾದಶಗೌರನಫಾ ಚಂದ್ರಾತ್ ದ್ವಿತೀಯಗೌಃ ಸುನಫಾ | ಉಭಯಸ್ಥಿತೇರ್ಧುರಧರಾ ಕೇಮದ್ರುಮಸಂಜಿತೋಜ್ಯಃ" | ಈ ಯೋಗದ ಫಲಃ "ಬಹುಮೃತ್ಯುಕುಡ್ಮಬಾರಮ್ಭಮುಹುಧಿನ್-ಚಿತ್ತಮಪಿ ದೌರಧರೇ" |

ದುರಪಾದ ದುರುಪಪಾದ (ವಿಂ) ತೋರಿಸಿಕೊಡಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ವಿವರಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ.

ದುರಪಸದ ದುರುಪಸದ (ವಿಂ) ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಸೇರಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಹೋಗಬಹುದಾದ. ದುಃಖೇನ ಉಪಸದತೇ- ದುರ್ + ಉ + ಪದ್ (ವಿಶರಣಾದಿ) "ಛಲ್" (೩-೩-೧೨೬) | "ಅತ್ಯರ್ಥ ದುರಪಸದಾಉಪೇತ್ಯ ದೂರಂ ಪರ್ಯಂತಾ-ದಹಿಮಮಯುಷಮಂಡಲಸ್ಯ" ಕಿರಾಂ ೨-೧ |

ದುರಹ ದುರುಹ (ವಿಂ) ಉಹಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ತಿಳಿಯಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. ದುಃಖೇನ ಉಹತೇ- ದುರ್ + ಉಹ (ವಿತರ್ಕೇ) "ಛಲ್" (೩-೩-೧೨೬) | "ಜಾನೀತೇ ಜಯದೇವ ಏವ ಶರಣಃ ಶ್ಲಾಘ್ಯೇ ದುರಹದ್ವತೇ" ಗೀತಗೋಂ |

ದುರೋದರ ದುರುೋದರ (ವುಂ) 1. ಜೂಜುಗಾರ, ಜೂಜಾಡುವವನು. ದುಷ್ಟಮಾಸಮಂತಾತ್ ಉದರಮಸ್ಯ | 2. ಪಣ, ಮದ್ಯ. "ದುರೋದರಂ ದ್ವಿತಭೇದೇ ದ್ವಿತಕೃತ್ಪನಯೋಃ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ | "ದುರೋದರಚ್ಛಜಿತಾಂ ಸಮೀಹತೇ ನಯೇನ ಜೇತುಂ ಜಗತೀಂ ಸುಯೋಧನಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೨ | (ನಂ) 3. ಜೂಜು, ದ್ಯೂತ.

ದುರ್ಗ ದುರ್ಗ (ವುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ದುಃಖೇನ ಗಚ್ಛಂತೀತಿ- ದುರ್ + ಗಮ್ (ಗತೀ) "ಛಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೪೭) | ಅವಿದ್ಯೆ ಮೊದಲಾದ ಅವರಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪಾಪಾತ್ಮರಿಗೆ ಹೊಂದಲು ಅಶಕ್ಯನಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ದುಃಪ್ರವೇಶತಯಾ ದುರ್ಗಃ ಪಾಪಿಭಿಸ್ತು ಕದಾಚನ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ | "ದುರ್ಲಭೋ ದುರ್ಗಮೋ ದುರ್ಗಃ" ವಿಂ ಸಂ | (ನಂ) 2. ಕೋಟಿ, ಕೊತ್ತಲು, ಪ್ರಾಕಾರ, ಕಂದಕ, ಬೆಟ್ಟ, ಗುಡ್ಡ ಮೊದಲಾದುದು. ಇದು ಏಕಂ ರಾಜ್ಯಾಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. "ಸ್ವಾಮ್ಯಮಾತ್ಯಸುಹೃತ್ಕೋಶ-ರಾಷ್ಟ್ರದುರ್ಗಬಲಾನಿ ಚ" ಅಮಂ | "ದುರ್ಗಾಣಿ ದುರ್ಗಹಾಪ್ಯಾಸನ್ ತಸ್ಯ ರೋದಮಪಿ ದ್ವಿಷಾಮ್" ರಘುಂ ೧೨-೪೨ | ದೇಶದ ಅಂಚಿನಲ್ಲಿ ಸ್ವಭಾವವಾಗಿ ನಿರ್ಮೋನ್ನತವಾಗಿರುವ ನಾಲ್ಕು ದಿಕ್ಕುಗಳಿಗೂ ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವ ಸ್ಥಳವನ್ನು ದುರ್ಗವೆನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿ ಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ಈ ದುರ್ಗವು ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಅನುಕೂಲವಾಗಿರಬೇಕು. ಇದು ಔದಕಮ್ ಪಾರ್ವತಮ್ ಚಾನ್ವನಮ್ ಮುಂತಾಗಿ ಆರು ವಿಧ. (1) ಸುತ್ತಲೂ ನದಿಯಿಂದ ಆವೃತವಾದ ಅಥವಾ ದೊಡ್ಡ ಸರೋವರಗಳಿಂದ ಆವೃತವಾದ ಸ್ಥಳವು ಔದಕ ದುರ್ಗವು. "ಅಂತರ್ದೀಪಂ ಸ್ಥಲಂ ವಾ ನಿಮ್ನಾವರೂಢ-ಮೌದಕಮ್" | "ನದೀದಿಶ್ವಾಭಾವಿಕ ಜಲಾಶಯಪರಿವೃತದ್ವೀಪ-ಮಧ್ಯಗತಮಿತೀಕಮ್, ಕೃತ್ರಿಮಜಲಾಶಯಪರಿವೃತಭೂಭಾಗರೂಪಮಿತ್ಯ-ಪರಮ್ ಔದಕಂ ದುರ್ಗಮ್" ಅರ್ಥಶಾಂ |

(2) ಬೆಟ್ಟ ಗುಡ್ಡಗಳು ಅಥವಾ ಸ್ವಾಭಾವಿಕವಾದ ಗುಹೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು ಪಾರ್ವತ ದುರ್ಗ. "ಪ್ರಾಸ್ತರಂ ಗುಹಾಂ ವಾ ಪಾರ್ವತಮ್" |



(3) ನೀರು ಹುಲ್ಲು ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲದೆ ಕೇವಲ ಮರು ಭೂಮಿಯಿಂದ ಅವ್ಯತಪ್ರದೇಶವು ಧಾನ್ಯನ ದುರ್ಗ. "ನಿರ್ದಕಸ್ತಮ್ಬಂ ಇರಿಣಿಂ ವಾ ಧಾನ್ವನಮ್" ।

(4) ಕೇವಲ ಪಂಕ್ತಮಯವಾಗಿ ಸಂಚರಿಸಲೂ ಅಸಾಧ್ಯವಾಗಿರುವುದು ಮತ್ತು ವಟ್ಟವಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವ ಮರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು ವನದುರ್ಗ. "ಖಜನೋದಕಂ ಸ್ತಮ್ಬಗಹನಂ ವಾ ವನದುರ್ಗಮ್" । ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಔದಕ (ನದೀ) ದುರ್ಗ ಮತ್ತು ಪರ್ವತದುರ್ಗಗಳು ಆಪತ್ಸಮಯದಲ್ಲಿ ದೇಶವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವವು. ಧಾನ್ಯನ ಮತ್ತು ವನದುರ್ಗಗಳು ಆಪತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಅರಣ್ಯಸೈನ್ಯದ ರಕ್ಷಣೆಗೂ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಯುದ್ಧದಿಂದ ಹಿಮ್ಮೆಟ್ಟಿ ಓಡಿಹೋಗುವುದಕ್ಕೂ ಉಪಕಾರಕವಾಗಿರುವವು. "ತೇಷಾಂ ನದೀಪರ್ವತದುರ್ಗಂ ಜನಪದರಕ್ಷಣಸ್ಥಾನಮ್ । ಧಾನ್ವನವನದುರ್ಗಂ ಅದವೀಸ್ಥಾನಂ ಆಪದಪಸರೋ ವಾ" ಅರ್ಥಶಾಂ । ದುರ್ಗದಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ಸೇನಾಪತಿಗಳುಳ್ಳ ಚತುರಂಗ ಬಲವನ್ನಿರಿಸಬೇಕು. ಸೇನಾಪತಿಯು ಒಬ್ಬನೇ ಆದರೆ ಪ್ರಲೋಭನೆಗಳಿಂದ ಶತ್ರುಗಳ ಭೇದೋಪಾಯಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗಿ ಸೈನ್ಯವನ್ನು ಶತ್ರುಗಳ ಪಕ್ಷಕ್ಕೆ ತಿರುಗಿಸಬಹುದು. ಆದುದರಿಂದ ಶತ್ರುಗಳಿಗೆ ಅಭೇದ್ಯವಾದ ಅನೇಕ ಸೇನಾಪತಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಸೈನ್ಯವನ್ನು ಇಡಬೇಕು. "ಹಸ್ತಶ್ಚರಯಪಾದಾತಂ ಅನೇಕಮುಖ್ಯಂ ಅವಸ್ಥಾಪಯೇತ್ । ಅನೇಕಮುಖ್ಯಂ ಹಿ ಪರಸ್ಪರಭಯಾತ್ ಪರೋಪಜಾಪಂ ನೋಪೇತಿ" ಅರ್ಥಶಾಂ । 3. ನರಕ. 4. ಪಟ್ಟಣ. 5. ಹೋಗಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. "ಪುರಾಣಿ ದುರ್ಗಾಣಿ ನಿಶಾತಮಾಯುಷಂ ಬಲಾನಿ ಶೂರಾಣಿ ಧನಾಶ್ಚ ಕಂಚುಕಾಃ" ಮಾಘಂ ೧-೪೫ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರ್ಗಾ -ರ್ಗಾಃ. 6. ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ. 7. ಕಾಳಿಕಾದೇವಿ. "ದುರ್ಗಾ ತು ಗೌರ್ಯಾ ಕಾಲ್ಯಾಂ ಚ ದುರ್ಗಾ ತು ನರಕೇ ಪುರೇ । ಶೈಲಾದಿದುರ್ಗಮಸ್ಥಾನೇ ತ್ರಿಭುತ್ವೇಷ ದುರಾಸದೇ" ನಾನಾರ್ಥರಂ ।

ದುರ್ಗಕರ್ಮನ್ ದುರ್ಗಕರ್ಮನ್ (ನಂ) ಕೋಟೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟಿ ಬಲಪಡಿಸುವುದು.

ದುರ್ಗಕಾರಕ ದುರ್ಗಕಾರಕ (ಪುಂ) 1. ಬೇಲಿಗಾಗಿ ಹಾಕುವ ಮುಳ್ಳುಗಿಡ, ಮುಂಡಕಳ್ಳಿ. (ವಿಂ) 2. ಕೋಟೆಯನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸುವ, ಬೇಲಿಯನ್ನು ಹಾಕುವ. ದುರ್ಗಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

ದುರ್ಗತ ದುರ್ಗತ (ವಿಂ) ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. ದುರ್ಗಚ್ಛತಿ - ದುರ್+ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) । "ಸಮಾಶ್ರಿಸಿಮಿ ಕೇನಾಹಂ ಕಥಂ ಪ್ರಾಣಿಮಿ ದುರ್ಗತಃ" ಮೃದ್ವಿಂ ೧೮-೧೦ ।

ದುರ್ಗತಿ ದುರ್ಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ಬಡತನ. ದುಷ್ಟಾ ಗತಿಃ । 2. ಅಧೋಗತಿ, ನರಕ. 3. ಅನಿಷ್ಟ, ಕೇಡು. "ಪಾರ್ಥ ನೇವೇಹ ನಾಮುತ್ರ ವಿನಾಶಸ್ತಸ್ಯ ವಿವೃತೇ । ನ ಹಿ

ಕಲ್ಯಾಣಕೃತ್ ಕಶ್ಚಿದ್ದುರ್ಗತಿ ತಾತ ಗಚ್ಛತಿ" ಗೀತಾ ೬-೪೦ । (ವಿಂ) 4. ದಾರಿದ್ರ್ಯವುಳ್ಳವನು, ಬಡತನವುಳ್ಳವನು. ದುಷ್ಟಾ ಗತಿಯಸ್ಯ । "ದುರ್ಗತಿರ್ನರಕೇ ನಿಃಸ್ವೇ" ಮೇದಿಂ ।

ದುರ್ಗತಿನಾಶಿನಿ ದುರ್ಗತಿನಾಶಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ. ದುರ್ಗತಿ ನಾಶಯತಿ-ಗಣ (ಅದರ್ಶನೆ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೭೮) । "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) । "ಬ್ರಹ್ಮಾಣ್ಡವಿಜಯಸ್ಯಾಸ್ಯ ಕವಚಸ್ಯ ಪ್ರಜಾಪತಿಃ । ಕೃಷಿಞ್ಚಂದ್ರಾಶ್ಚ ಗಾಯತ್ರೀ ದೇವೀ ದುರ್ಗತಿನಾಶಿನೀ" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ ।

ದುರ್ಗಂಧ ದುರ್ಗಂಧ (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ವಾಸನೆ. ದುಷ್ಟೋ ಗಂಧಃ । 2. ಸೌವರ್ಚಲವಣ. (ವಿಂ) 3. ಕೆಟ್ಟ ವಾಸನೆಯುಳ್ಳ. ದುಃಸ್ಥಿತೋ ಗಂಧೋ ಯಸ್ಯ ।

ದುರ್ಗಂಧಿನ್ ದುರ್ಗಂಧಿನ್ (ವಿಂ) ಕೆಟ್ಟ ವಾಸನೆಯುಳ್ಳ. ದುರ್ಗಂಧೋಽಸ್ಯಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫) । "ಚರ್ಮವಿನದಂ ದುರ್ಗಂಧಿ ಪೂರ್ಣಂ ಮೃತಪುರೀಷಯಃ" ಮನುಂ ೬-೭೬ ।

ದುರ್ಗಪತಿ ದುರ್ಗಪತಿ (ಪುಂ) ದುರ್ಗಪಾಲಕ, ಕೋಟೆಯ ರಕ್ಷಕ, ಕೋಟೆಯ ರಕ್ಷಣಾಧಿಕಾರಿ. ದುರ್ಗಸ್ಯ ಪತಿಃ । "ವಯಂ ಜಯೇಮ ಹೇಲಾಭಿದಸ್ಯನ್ ದುರ್ಗಪತಿಯಥಾ" ಭಾಗಂ ೩-೧೪-೧೯ ।

ದುರ್ಗಪಾಲ ದುರ್ಗಪಾಲ (ಪುಂ) ಕೋಟೆಯ ರಕ್ಷಕ, ಕೋಟೆಯನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನು. ದುರ್ಗಂ ಪಾಲಯತಿ-ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣ) "ಅಣ್" (೩-೨-೧) । "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । -ಪಾಲಕಃ -ಪಾಲಕಃ ।

ದುರ್ಗಮ ದುರ್ಗಮ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ದುಃಖೇನ ಗಂತುಂ ಶಕ್ಯಃ ಗಂತುಂ ಪ್ರವರ್ಷಯಿತುಮಶಕ್ಯಃ-ದುರ್+ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬) । "ನೆತ್ರದುರ್ಬಲವೃತ್ತಿನಾಂ ಮಧ್ಯಾಹ್ನದ್ಯುಮಣೇಯಥಾ । ಪ್ರಾಪ್ತಿದುರ್ಭರತೇಜಸ್ವಾತ್ ದುರ್ಗಮಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ" ಇತಿ ನಿರ್ಣಿತಿಃ । "ದುರ್ಲಭೋ ದುರ್ಗಮೋ ದುರ್ಗಃ" ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ) 2. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಸಂಚರಿಸಬಹುದಾದ, ಸಂಚರಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. "ಪಿಷ್ಠಾದ್ರಿಪೃಷ್ಠಾಸ್ತರಸಾ ಚ ದಂತಿನಶ್ಚಲ-ತ್ರಿಜಾಙ್ಗಾಚಲದುರ್ಗಮಾ ಮುಖಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೪೯ । 3. ತಿಳಿಯಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ತಿಳಿಯಬಹುದಾದ. 4. ಹೊಂದಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ಹೊಂದಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. "ಅಮೋಘಮಕ್ಷುಣ್ಣತಯಾತಿದುರ್ಗಮಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೩೨ ।

ದುರ್ಗಲಕ್ಷಣ ದುರ್ಗಲಕ್ಷಣ (ಪುಂ) 1. ಕೋಟೆಯನ್ನು ದಾಟಿ ಹೋಗುವ ಉಷ್ಣ, ಒಂಟಿ. ದುರ್ಗಂ ಲಕ್ಷಣತೇಜೇನ-ಲಘಿ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) । (ನಂ) 2. ಕೋಟೆಯನ್ನು ದಾಟುವುದು. ದುರ್ಗಸ್ಯ ಲಕ್ಷಣಮ್ ।

ದುರ್ಗಸಂಸ್ಕಾರ ದುರ್ಗಸಂಸ್ಕಾರ (ಪುಂ) ಕೋಟೆಯ ಕಾಮಗಾರಿ, ಕೋಟೆಯನ್ನು ಭದ್ರಪಡಿಸುವುದು, ಶಿಥಿಲವಾದ



ಕೋಟಿಯನ್ನು ಸರಿಪಡಿಸಿ ಬಲಪಡಿಸುವುದು. ದುರ್ಗಸಂಸ್ಕಾರ: "ಅತೌ ದುರ್ಗಸಂಸ್ಕಾರೇ ಆರಂಭವ್ಯೇ ಕಿ ಕೌಮುದಿ-ಮಹೋತ್ಸವೇನೆತಿ ಪ್ರತಿಷಿದ್ಧ: " ಮುಕ್ತಾಂ ೩ |

**ದುರ್ಗಸಂಚರ ದುರ್ಗಸಂಚರ** (ಪುಂ) ನದಿ ಕಂದಕ ಬೆಟ್ಟ ಕೋಟಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಸುಲಭವಾಗಿ ದಾಟುವ ಕಟ್ಟೆ ಸೇತುವೆ ಮುಂತಾದ ಉಪಾಯ (ಮಾರ್ಗ). ದುರ್ಗ ಸಂಚರ-ರನ್ಯನೇನ - ಸಮ್ + ಚರ (ಗತೌ) "ಛ:" (೩-೩-೧೧೯) | ನಿಪಾಂ |

**ದುರ್ಗಾ ದುರ್ಗಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ. 2. ಕಾಳಿಕಾದೇವಿ. 3. ನೀಲಿಗಿಡ. "ದುರ್ಗೋಮಾನೀತ್ಯೋ: ಸ್ತ್ರೀ ದುರ್ಗೇ ತ್ರಿಪು" ಮೇದಿಂ | "ದುರ್ಗಾ ತು ಗೌರ್ಯಾ ಕಾಲ್ಯಾಂ ಚ ದುರ್ಗಾ ತು ನರಕೇ ಪುರೇ" ನಾನಾರ್ಥರಂ |

**ದುರ್ಗಾಡ ದುರ್ಗಾಡ** (ವಿಂ) 1. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಇಳಿಯಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ, ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. 2. ತಿಳಿಯಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ತಿಳಿಯಬಹುದಾದ. ದುರ್ + ಗಾಹ್ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |

**ದುರ್ಗಾಧಿಕಾರಿನ್ ದುರ್ಗಾಧಿಕಾರಿನ್, -ಅಧ್ಯಕ್ಷ - ಅಧ್ಯಕ್ಷ** (ಪುಂ) ಕೋಟಿಯನ್ನು ಕಾಪಾಡುವ ಅಧಿಕಾರಿ.

**ದುರ್ಗಾನವಮಿ ದುರ್ಗಾನವಮಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ತಿಕ ಶುಕ್ಲ ನವಮಿ. ದುರ್ಗಾಪ್ರಿಯಾ ನವಮಿ | "ಕಾರ್ತಿಕಸ್ಯ ಸಿತೇ ಪಕ್ಷೇ ನವಮ್ಯಾಂ ಜಗದಂಬಿಕಾಮ್ | ದುರ್ಗಾ ಪ್ರಪೂಜಯೇತ್ ಭಕ್ತ್ಯಾ ಭರ್ಮ-ಕಾಮಾರ್ಥಸಿದ್ಧಯೇ" |

**ದುರ್ಗುಣ ದುರ್ಗುಣ** (ಪುಂ) ಕೆಟ್ಟಗುಣ, ಅಸೂಯೆ ದ್ವೇಷ ಮೊದಲಾದ ಅತ್ಯಧರ್ಮ. ದುಷ್ಟೋ ಗುಣ: |

**ದುರ್ಗುಣಿನ್ ದುರ್ಗುಣಿನ್** (ವಿಂ) ಕೆಟ್ಟ ಗುಣಗಳುಳ್ಳವನು. ದುಷ್ಟಾ: ಗುಣಾ: ಸಂತಿ ಯಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) |

**ದುರ್ಗ್ರಹ ದುರ್ಗ್ರಹ** (ವಿಂ) 1. ಹಿಡಿಯಲು ಕಷ್ಟವಾದ. 2. ತಿಳಿಯಲು ಕಷ್ಟವಾದ. 3. ಹೊಂದಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. ದು:ಖೇನ ಗೃಹ್ಯತೇಷೌ - ದುರ್ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬) | "ದುರ್ಗಾಣಿ ದುರ್ಗ್ರಹಾಪ್ಯಾಸನ್ ತಸ್ಯ ರೋಡ್ಧಮಪಿ ದ್ವಿಷಾಮ್" ರಘುಂ ೧೭-೪೨ |

**ದುರ್ಗ್ರಾಹ ದುರ್ಗ್ರಾಹ್ಯ** (ವಿಂ) ಹಿಡಿಯಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ಹಿಡಿದು ಕೊಳ್ಳಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. ದು:ಖೇನ ಗೃಹ್ಯತೇಷೌ ಕರ್ಮಂ "ಪ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) | "ಜಗ್ರಾಹ ತದ್ಗುಣಂ ದುರ್ಗ್ರಾಹ್ಯಂ ದೇವತೇರಪಿ" ಹರಿವಂ |

**ದುರ್ಘಟ ದುರ್ಘಟ** (ವಿಂ) ಸೇರಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಹೊಂದಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ. ದುರ್ + ಘಟ (ಚ್ಛೇದಾಯಾಮ್) ಕರ್ಮಂ "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬) |

**ದುರ್ಗೋಪ ದುರ್ಗೋಪ** (ಪುಂ) 1. ಭಲ್ಲೂಕ, ಕರಡಿ. ದುಷ್ಟೋ ಘೋಷ್ಯ | 2. ಕಠಿನವಾದ ಶಬ್ದ. (ವಿಂ) 3. ಕಠಿನವಾದ ಶಬ್ದವುಳ್ಳ, ಎಕಾರವಾಗಿ ಕೂಗುವ.

**ದುರ್ಜನ ದುರ್ಜನ** (ಪುಂ) ಕೆಟ್ಟ ಮನುಷ್ಯ, ನೀಚ, ದುರುಳ. ದುಷ್ಟೋ ಜನ: | "ದುರ್ಜನ: ಪರಿಹರತೇವ್ಯೋ ವಿಶ್ವಾಲಂಕೃತೋಽಪಿ ಸನ್" | "ಶಾಮ್ಯೇತ್ ಪ್ರತ್ಯಪಕಾರೇಣ ನೌಪಕಾರೇಣ ದುರ್ಜನ:" ಕುಮಾಂ ೨-೪೦ |

**ದುರ್ಜಯ ದುರ್ಜಯ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಜೇತುಮಶಕ್ಯ: | ದುರ್ + ಜಿ (ಜಯೇ) "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬) | ದೇವತೆಗಳಿಂದಲೂ ಮನುಷ್ಯರಿಂದಲೂ ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಶಕ್ಯನಲ್ಲದುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ದುರ್ಜಯನು. "ಶಕ್ತ್ಯಾ ದೇವಮನುಷ್ಯಾಣಿ: ವಶೀಕರ್ತುಂ ನ ಶಕ್ಯತೇ | ಅನ್ವೇಷ್ತುಂ ವಾಪಿ ಯ: ಸ ಸ್ಯಾತ್ ದುರ್ಜಯ: ಸಪ್ತವರ್ಷಕ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: | "ಸಮಾವರ್ತೌ ನಿವೃತ್ತಾತ್ಮಾ ದುರ್ಜಯೋ ದುರತಿಕರ್ಮ:" ವಿಂ ಸಂ | 2. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. (ವಿಂ) 3. ಜಯಿಸಲಾಗದ, ಅಜೇಯನಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಜಯಿಸಬಹುದಾದ. ದು:ಖೇನ ಜೀಯತೇ - ಜಿ "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬) | "ಜೀಯಂತಾಂ ದುರ್ಜಯಾ ದೇಹೇ ರಿಪವಶ್ಚಕ್ಷುರಾದಯ:" ಕಿರಾಂ ೧೧-೩೨ | "ದುರ್ಜಯೋಽಪಿ ವಿಜಿಗಿಷಿತೋ ವಿಭು: ಸಸ್ಮಿತ: ಸಮರಸಮ್ಮುಖೋಽಭವತ್" ಬಾದಂ ೧೭-೪೦ |

**ದುರ್ಜರ ದುರ್ಜರ** (ವಿಂ) ಜೀರ್ಣವಾಗಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಜೀರ್ಣವಾಗುವ. ದು:ಖೇನ ಜೀಯತಿ - ದುರ್ + ಜೃಷ್ (ವಯೋಹಾನೌ) "ಖಲ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಸ್ವಾದು ಪಾಕರಸಂ ಶಾಕಂ ದುರ್ಜರಂ ಹರಿಮನ್ಯಜಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಸ್ತಂ ೪೬-೨೭೭ |

**ದುರ್ಜಾತಿ ದುರ್ಜಾತಿ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಮಗ, ಅಸಭ್ಯನಾದ ಮಗ. "ದುರ್ಜಾತಿಮತ್ರ ವಿಮಲೇ ಭರತಾನ್ವಯೇ ವ: ಕಿ ಮಾಂ ಸುತಕ್ಷಯಕರಂ ಸುತ ಇತ್ಯವೇಷಿ" ವೇಣೀಂ ೪-೨ | (ನಂ) 2. ವ್ಯಸನ, ವಿಪತ್ತು, ದುರ್ಘಟನೆ, ಕಷ್ಟ. ದುಷ್ಟಂ ಜಾತಮ್ | "ಇಮಾಂ ಪರೀಪ್ಸುರ್ದುಜತಿ ಪರಾಭಿಭವಕಾತರಾಮ್" ಮಾಲಂ ೪-೧೧ | "ದುರ್ಜಾತಿಬನ್ಧುರಯ-ಮೃಗಹರೀಶ್ವರೋ ಮೇ ಪೌಲಸ್ತ್ಯ ಏಷ ಸಮರೇಷು ಪುರ:ಪ್ರಹರ್ತಾ" ರಘುಂ ೧೩-೭೨ | (ವಿಂ) 3. ಅಯೋಗ್ಯತನದಿಂದ ಉಂಟಾದ, ಅಸಭ್ಯತೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ. 4. ಅಸಮಂಜಸವಾದ. "ದುರ್ಜಾತಿಂ ವ್ಯಸನೇ ಕಲಿಬರಸಮ್ಯಗ್ಜಾತೇಽನ್ಯವತ್" ಮೇದಿಂ | 5. ನೀಚ, ಅಸಭ್ಯ.

**ದುರ್ಜಾತಿ ದುರ್ಜಾತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಜಾತಿ, ದುಷ್ಟ ಜಾತಿ. 2. ನೀಚವಂಶ. (ವಿಂ) 3. ನೀಚ, ಅಸಭ್ಯ. 4. ನಿಂದಿತವಾದ ಜನ್ಮವುಳ್ಳ, ಕ್ರೂರವಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ನಿಕೃಷ್ಟವಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದ.



**ದುರ್ಜಿವ ದುರ್ಜೀವ** (ವಿಂ) 1. ಕಷ್ಟದಲ್ಲಿ ಜೀವಿಸುವ, ಪರರ ಅಶ್ರಯದಲ್ಲಿ ಬದುಕುವ. ದುಃಖೇನ ಜೀವತಿ — ಜೀವ (ಪ್ರಾಣ-ಧಾರಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । (ನಂ) 2. ನಿಂದಿತವಾದ ಜೀವನ, ಕಷ್ಟದ ಜೀವನ. “ಸುಜೀವಂ ನಿಲಾಶಸ್ತಸ್ಯ ಯಃ ಪರೇಷಜೀವ್ಯತೇ । ರಾಮ ತಸ್ಯ ತು ದುರ್ಜೀವಂ ಯಃ ಪರಾನುಪ-ಜೀವತಿ” ರಾಮಾಂ ।

**ದುರ್ಜಯ ದುರ್ಜಯ** (ವಿಂ) ತಿಳಿಯಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ತಿಳಿಯಬಹುದಾದ. ದುಃಖೇನ ಜಾಯತೇ — ಜಾ (ಅವಬೋಧನೆ) “ಯತ್” (೩-೧-೧೭) । “ಉಚ್ಚಾವಚೇಷು ಭೂತೇಷು ದುರ್ಜಯಾಮಕೃತಾತ್ಮಭಿಃ” ಮನುಂ ೬-೭೩ ।

**ದುರ್ದಮ ದುರ್ದಮ** (ಪುಂ) 1. ವಸುದೇವನಿಗೆ ದೋಷಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ಮಗ. (ವಿಂ) 2. ಅಡಗಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಹತೋಚಿಗೆ ತರಲು ಕಷ್ಟವಾದ. ದುಃಖೇನ ದಮ್ಯತೇ — ದುರ್ + ದಮ (ಉಪಶಮೆ) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬) । “ಸಕೃ-ತ್ಪಾಶಾವಕೀರ್ಣಾಸ್ತೇ ನ ಭವಿಷ್ಯಂತಿ ದುರ್ದಮಾಃ” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೮೮-೯ ।

**ದುರ್ದಮನ ದುರ್ದಮನ** (ಪುಂ) 1. ಶತಾನೇಕ ರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. (ವಿಂ) 2. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಅಡಗಿಸಲ್ಪಡುವ, ಅಡಗಿಸಲು ಅಶಕ್ಯನಾದ. ದುಃಖೇನ ದಮನಂ ಯಸ್ಯ ।

**ದುರ್ದಮ್ಯ ದುರ್ದಮ್ಯ** (ವಿಂ) ಬಹಳ ಕಷ್ಟದಿಂದ ಅಡಗಿಸಲ್ಪಡುವ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಅಡಗಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ದುರ್ + ದಮ (ಉಪಶಮೆ) “ಯತ್” (೩-೧-೧೮) ।

**ದುರ್ದರ್ಶ ದುರ್ದರ್ಶ** (ವಿಂ) ಭಯಂಕರವಾದ, ನೋಡಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ನೋಡಬಹುದಾದ. ದುಃಖೇನ ದೃಶ್ಯತೇ — ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) ಕರ್ಮಂ “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬) । “ದುರಾಚಾರಾ ಸದಾಚಾರಾಂ ದುರ್ದರ್ಶಾ ಪ್ರಿಯದರ್ಶನಾಮ್” ಪ್ರಬೋಧಂ ೩-೭ ।

**ದುರ್ದರ್ಶನ ದುರ್ದರ್ಶನ** (ನಂ) 1. ಭಯಂಕರವಾದ ನೋಟ. ದುಷ್ಟಂ ದರ್ಶನಮ್ । (ವಿಂ) 2. ಭಯಂಕರವಾದ, ನೋಡಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ನೋಡಲ್ಪಡುವ. ದುಃಖೇನ ದೃಶ್ಯತೇ — ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) “ಯುಕ್” (ವಾಂ ೩-೩-೧೨೮) । “ವಿಶೇಷ-ತಶ್ಚಾತ್ರ ದುರ್ದರ್ಶನಾನಿ ಪರೂಪಿಣಿ” ಸುಶ್ರುತಂ ।

**ದುರ್ದಶಾ ದುರ್ದಶಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಷ್ಟದ ಪರಿಸ್ಥಿತಿ. ದುಷ್ಟಾ ದಶಾ ।  
**ದುರ್ದಾಂತ ದುರ್ದಾಂತ** (ಪುಂ) 1. ವತ್ಸ, ಕರು. 2. ಯುದ್ಧ, ಕಾಳಗ. 3. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. (ವಿಂ) 4. ಅಡಗಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಅಡಗಿಸಲ್ಪಡುವ. ದುಃಖೇನ ದಮ್ಯತೇ — ದಮ (ಉಪಶಮೆ) + ಣಿಕ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । “ದುರ್ದಾಂತಾನಾಂ ದಮನವಿಧಯಃ ಕ್ಷತ್ರಿಯೇಷ್ವಾಯತಂತೇ ದುರ್ದಾಂತಸ್ತ್ವಂ ವಯಮಪಿ ಚ ತೇ ಕ್ಷತ್ರಿಯಾಃ ಶ ಸಿತಾರಃ” ಮಂ ವೀಂ ೩-೩೪ ।

**ದುರ್ದಿನ ದುರ್ದಿನ** (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ದಿವಸ, ಕಷ್ಟದ ದಿವಸ. ದುಷ್ಟಂ ದಿನಮ್ । “ಯದಚ್ಯುತಕಥಾಲಾಪರಸಪೀಯುಷವಜಿತಮ್ । ತದ್ಧಿನಂ ದುರ್ದಿನಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಮೇಘಾಕ್ಷತ್ರಂ ನ ದುರ್ದಿನಮ್” । 2. ಮೇಘದಿಂದ ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ ದಿವಸ, ಸೂರ್ಯರಶ್ಮಿಯು ಇಲ್ಲದ ದಿವಸ. “ಯತ್ರೋಷಧಿಪ್ರಕಾಶೇನ ನಕ್ತಂ ದರ್ಶಿತಸಂಚರಾಃ । ಅನಭಿ-ಜ್ಞಾಸ್ತಮಿಸ್ತಾಣಾಂ ದುರ್ದಿನೇಷ್ವಭಿಸಾರಿಕಾಃ” ಕುಮಾಂ ೬-೪೩ । 3. ಕಗ್ಗತ್ತಲೆ, ನಿವಿಡವಾದ ಅಂಧಕಾರ. 4. ವೃಷ್ಟಿ, ಮಳೆ. (ಇದು ಲಾಕ್ಷಣಿಕ ಪ್ರಯೋಗ). “ದ್ವಿಷಾಂ ವಿಷಹ್ಯ ಕಾಕು-ತ್ಸತ್ಯಸ್ತತ್ರ ನಾರಾಚದುರ್ದಿನಮ್” ರಘುಂ ೪-೪೧ । “ಘನಾಂಧಕಾರೇ ವೃಣೌ ಚ ದುರ್ದಿನಂ ಕವಯೋ ವಿಧುಃ” ।

**ದುರ್ದೃಷ್ಟ ದುರ್ದೃಷ್ಟ** (ವಿಂ) 1. ತಪ್ಪಾಗಿ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ನ್ಯಾಯವಲ್ಲದ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ತೀರ್ಮಾನಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ದುಷ್ಟಂ ದೃಷ್ಟಮ್ । “ದುರ್ದೃಷ್ಟಾಸ್ತು ಪುನರ್ದೃಷ್ಟವಾ ವ್ಯವಹಾರಾನ್ಮುಪೇಣ ತು । ಸಮ್ಯಾಃ ಸಜಯಿನೋ ದೃಢಚಾಃ ವಿವಾದಾದ್ವಿಗುಣಂ ದಮಮ್” ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೩೦೫ ।

**ದುರ್ದೇವ ದುರ್ದೇವ** (ನಂ) ದೌರ್ಭಾಗ್ಯ, ಕೆಟ್ಟ ಆದೃಷ್ಟ, ದುರದೃಷ್ಟ, ಪಾಪ. ದುಷ್ಟಂ ದೇವಮ್ ।

**ದುರ್ದೃತ ದುರ್ದೃತ** (ನಂ) ಕಪಟದ ದ್ಯೂತ, ಮೋಸದಿಂದ ಆಡುವ ಜೂಜು. ದುಷ್ಟಂ ದೃತಮ್ ।

**ದುರ್ದ್ರಮ ದುರ್ದ್ರಮ** (ಪುಂ) ಈರುಳ್ಳಿ. ದುಷ್ಟೋ ದ್ರುಮಃ ।

**ದುರ್ಧರ ದುರ್ಧರ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಧರ್ಮ-ಮಶಕಯಃ — ದುರ್ + ಧರ್ಮ (ಧಾರಣೆ) ಕರ್ಮಂ “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬) । ಬಾಲಲೀಲಾದಿಷು ಅತಿಚಿತ್ತಲಚೇಷ್ಟಿತಯಾ ನಂದಯಶೋದಾಮ್ಯಾಂ ಧರ್ಮಮಶಕಯಃ । “ಬಾಲಲೀಲಾಪ್ರಸಂಗೇಷು ಯಶೋದಾನಂದಲಾಲನಾತ್ । ದೃಪ್ತೋ ಮತ್ತೋ ಭವೇತ್ತಾಮ್ಯಾಂ ದುರ್ಗ್ರಹೋ ದುರ್ಧರೋ ಮತಃ” ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ । “ದರ್ಪಹಾ ದರ್ಪದೋ ದೃಪ್ತೋ ದುರ್ಧರಃ” ವಿಂ ಸಂ । 2. ಪಾದರಸ. 3. ಒಂದು ನರಕ. 4. ಹೆರಿಗೆಹಾಲೆ. (ವಿಂ) 5. ತಡೆಯಲಾಗದ, ಎದುರಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ. 6. ಹೊರಲು ಕಷ್ಟವಾದ. 7. ಹಿಡಿಯಲಾಗದ, ಹಿಡಿಯಲು ಕಷ್ಟವಾದ. “ವನ್ಯಭದಾನಾನಿಲಗಂಧದುರ್ಧರಾಃ” ಮಾಘಂ ೧೨-೨೮ ।

**ದುರ್ಧರ್ಷ ದುರ್ಧರ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. “ವಿನ್ದಾನುವಿನ್ದೋ ದುರ್ಧರ್ಷಃ ಸುಬಾಹುದುಷ್ಪ್ರಧರ್ಷಣಃ” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೮-೯೪ । 2. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. 3. ಒಂದು ಪರ್ವತ. (ವಿಂ) 4. ಎದುರಿಸಲಾಗದ, ಮೇಲೆ ಬೀಳಲು ಅಶಕ್ಯನಾದ, ಪ್ರತಿಭಟಿಸಲಾಗದ. ದುರ್ + ಧರ್ಮ (ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯ) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬) । 5. ಕೊಬ್ಬಿದ, ಸೊಕ್ಕಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. “ಯುಕ್” (ವಾಂ ೩-೩-೧೨೮) । ದುರ್ಧರ್ಷಃ



ದುರ್ಭಾಗ್ಯಃ. "ಸ ಹಿ ದುರ್ಭಾಗೋ ವಾಲಿ ನಿದ್ರಾಂ ಸಮರಕರ್ಮಸು" ರಾಮಾಂ ।

ದುರ್ಭಾಗ್ಯ ದುರ್ಭಾಗ್ಯ (ವಿಂ) ಧೃ (ಗ್ರಹ) ಸಲು ಕಷ್ಟ ವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಮನದಟ್ಟು ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಬಹುದಾದ. ದುಃಖೇನ ವಾಯಿ—ಫಲ್ (ಧಾರಣೆ) "ಯತ್" (೩-೩-೧೨೪) । "ದುರ್ಭಾಗ್ಯಮೇತನ್ಮನಸಾ ಗಚ್ಛಾವತರ ಪದ್ಧಿಮಿನ್" ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೪೨-೨೬ ।

ದುರ್ಭಾಗ್ಯ ದುರ್ಭಾಗ್ಯ (ವಿಂ) ಕೆಟ್ಟ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ, ಅವಿವೇಕಿ. ದುಷ್ಟಾ ಧೀಯಸ್ಯ । "ಅನುತ್ಪಾನವತಾ ಚಾಪಿ ದುರ್ವಿನಿಶಿತೇನ ದುರ್ಭಾಗ್ಯಾ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೩೫-೧೧ ।

ದುರ್ಭಾಗ್ಯ ದುರ್ಭಾಗ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ನೀತಿ, ಕೆಟ್ಟ ನಡತೆ. ದುಷ್ಟೋ ನಯಃ । "ಅಮ್ಬಿಕೇ ತವ ಪೌತ್ರಸ್ಯ ದುರ್ಭಾಗ್ಯಾತ್ ಕಿಲ ಭಾರತಾಃ । ಸಾನುಬಂಧಾ ವಿನಿತ್ಯಂತಿ ಪೌರಾಣಿಕೇವೇತಿ ನಃ ಶ್ರುತಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೩೭-೧೦ । (ವಿಂ) 2. ಕೆಟ್ಟ ನಡತೆಯುಳ್ಳ. ದುಷ್ಟೋ ನಯೋ ಯಸ್ಯ । "ಅನುಗತನಯಮಾರ್ಗಮಿಗಲಾಂ ದುರ್ಭಾಗ್ಯಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೨-೧೧೮ ।

ದುರ್ಭಾಗ್ಯ ದುರ್ಭಾಗ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಅಶೋಕರೋಗ, ಮೂಲವ್ಯಾಧಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಅನೆಯ ರಕ್ತವನ್ನು ಹೀರುವ ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಜಿಗಣೆ.

ದುರ್ಭಾಗ್ಯ ದುರ್ಭಾಗ್ಯ (ಪುಂ) ಸೂರಣ ಗಡ್ಡೆ.

ದುರ್ಭಾಗ್ಯ ದುರ್ಭಾಗ್ಯ (ವಿಂ) ಅವಸರದಲ್ಲಿ ಅಜಾಗರೂಕತೆ ಯಿಂದ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. ದುಃಖೇನ ನಿಮಿತ್ತಮ್—ದುರ್+ನಿ+ಛಿಮಿ (ಪ್ರಕ್ಷೇಪಣೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । "ಅರ್ಪಿತಾ ಸತ್ವರಮುತ್ಥಿತಾಃ ಪದೇ ಪದೇ ದುರ್ಭಾಗ್ಯಾಂ ಗಲಂತಿ" ರಘುಂ ೭-೧೦ ।

ದುರ್ಭಾಗ್ಯ ದುರ್ಭಾಗ್ಯ (ನಂ) ಅನಿಷ್ಟದ ಸೂಚನೆ, ಕೆಡಕಿನ ಸೂಚನೆ. ದುಷ್ಟಂ ನಿಮಿತ್ತಮ್ । "ದೃಷ್ಟ್ವಾ ತು ದುರ್ಭಾಗ್ಯಾನಿ ಜರಾಸನ್ಧಮದರ್ಶಯನ್" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೨೧-೨೬ ।

ದುರ್ಭಾಗ್ಯ ದುರ್ಭಾಗ್ಯ (ವಿಂ) ತಡೆಯಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ನಿವಾರಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ. ದುಃಖೇನ ನಿವಾರಯಿತುಂ ಶಕ್ಯಮ್—ದುರ್+ನಿ+ವಿ (ವರಣೆ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೨೬) । "ಯತ್" (೩-೧-೧೭) । -ನಿವಾರ್ಯಃ -ನಿವಾರ್ಯಃ.

ದುರ್ಭಾಗ್ಯ ದುರ್ಭಾಗ್ಯ (ನಂ) 1. ದುರಾಚಾರ, ಕೆಟ್ಟ ನಡತೆ, ದುರ್ವರ್ತನೆ. ದುರ್+ಣಿಕ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) । (ವಿಂ) 2. ಕೆಟ್ಟ ನಡತೆಯುಳ್ಳವನು, ನ್ಯಾಯಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಾದ ವರ್ತನೆಯುಳ್ಳವನು.

ದುರ್ಭಾಗ್ಯ ದುರ್ಭಾಗ್ಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಟ್ಟ ನಡತೆ, ನ್ಯಾಯಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧ ವಾದ ನಡವಳಿಕೆ. ದುಷ್ಟಾ ನೀತಿಃ ।

ದುರ್ಬಲ ದುರ್ಬಲ (ವಿಂ) 1. ಬಲಹೀನ, ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದವನು, ಶಕ್ತಿಹೀನವಾದವನು. ದುಃಸ್ಥಿತಂ ಬಲಂ ಯಸ್ಯ । "ತಕ್ರಂ ನೈವ ಕ್ಷತೇ ದಕ್ಷಾತ್ ನೋಣಕಾಲೇ ನ ದುರ್ಬಲೇ" ಸುಶ್ರುತಂ । 2. ಕೃಶವಾದ, ತೆಳುವಾದ. 3. ಚಿಕ್ಕದಾದ, ಕಡಮೆಯಾದ. "ಸ್ವಾರ್ಥೋಪಪತ್ತಿ ಪ್ರತಿ ದುರ್ಬಲಾಶಸ್ತಮಿತ್ಯವೋಚದ್ವರತನ್ತುಶಿಷ್ಯಃ" ರಘುಂ ೫-೧೨ ।

ದುರ್ಬುದ್ಧಿ ದುರ್ಬುದ್ಧಿ (ಪುಂ) 1. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಕೆಟ್ಟ ಬುದ್ಧಿ, ಮೂರ್ಖತನ, ಅವಿವೇಕ. (ವಿಂ) 3. ಕೆಟ್ಟ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ, ಅವಿವೇಕಿ, ಮೂರ್ಖ. ದುಷ್ಟಾ ಬುದ್ಧಿಃ ಯಸ್ಯ ।

ದುರ್ಬೋಧ ದುರ್ಬೋಧ (ಪುಂ) ತಿಳಿಯಲು ಅಶಕ್ತವಾದ, ಅರಿಯಲು ಕಷ್ಟವಾದ. ದುಃಖೇನ ಬೋಧುಂ ಶಕ್ಯಮ್—ದುರ್+ಬುಧ (ಅವಗಮನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೨೬) । "ನಿಸರ್ಗದುರ್ಬೋಧ-ಮಬೋಧವಿಕಲವಾಃ ಕ್ವ ಭೂಪತೀನಾಂ ಚರಿತಂ ಕ್ವ ಜನ್ತವಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೬ ।

ದುರ್ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ದುರ್ಬ್ರಾಹ್ಮಣ (ಪುಂ) ನಿಂದ್ಯನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣ್ಯವಿಲ್ಲದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ದುಷ್ಟೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಃ । ಮೂರು ತಲೆಗಳಿಂದ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡದವನಲ್ಲಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ್ಯ ವಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಅಂತಹವನು ದುರ್ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. "ಯಸ್ಯ ವೇದಶ್ಚ ವೇದಿ ಚ ಉತ್ಸಾಹಾ ಚ ತ್ರಿಪೌರೂಷಿ । ಸ ವೈ ದುರ್ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ಜ್ಞೇಯಃ" ।

ದುರ್ಭಗ ದುರ್ಭಗ (ವಿಂ) 1. ಅನೃಷ್ಟಹೀನ, ದುರದೃಷ್ಟದ. ದುಃಸ್ಥಿತಂ ಭಗಮೇಶ್ವರೈರ್ಮಯಸ್ಯ । "ದುರ್ಭಗೋಽಯಂ ಜನಸ್ತತ್ರ ಕಿಮರ್ಥ-ಮನುಶಂದಿತಃ" । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಗಾ -ಗಾ. 2. ಅದೃಷ್ಟ ಹೀನಳಾದ ಹೆಂಗಸು, ಪತಿಯು ಪ್ರೀತಿಸದ ಹೆಂಗಸು. "ಕರ್ಮಭಿಃ ಸ್ವಕೃತಃ ಸಾ ತು ದುರ್ಭಗಾ ಸಮಪದತ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೮೪-೭ ।

ದುರ್ಭರ ದುರ್ಭರ (ವಿಂ) ತಾಳಲಾಗದ, ದುಃಸಹವಾದ, ಹೊರಲಾಗದ. ದುಃಖೇನ ಭ್ರಿಯತೇ—ಭೃ (ಭರಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೨೬) ।

ದುರ್ಭಾಗ್ಯ ದುರ್ಭಾಗ್ಯ (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಭಾಗ್ಯ, ದುರದೃಷ್ಟ. ದುಷ್ಟಂ ಭಾಗ್ಯಮ್ । (ವಿಂ) 2. ಅದೃಷ್ಟಹೀನ, ದುರದೃಷ್ಟ ದವನು. ದುಷ್ಟಂ ಭಾಗ್ಯಂ ಯಸ್ಯ ।

ದುರ್ಭಾವಿನಾ ದುರ್ಭಾವಿನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಟ್ಟ ಆಲೋಚನೆ, ಕೆಟ್ಟ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. ಕೆಟ್ಟ ಮನಸ್ಸು. ದುಷ್ಟಾ ಭಾವನಾ ।

ದುರ್ಭಾಷಾ ದುರ್ಭಾಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಟ್ಟ ಮಾತು, ನೋಯಿ ಸುವ ಮಾತು, ಕಠಿನವಾದ ಮಾತು.

ದುರ್ಭಾವಿತ ದುರ್ಭಾವಿತ (ನಂ) 1. ದುರ್ಭಾಷೆ, ಕೆಟ್ಟ ಮಾತು, ಮನನೋಯಿಸುವ ಮಾತು. ದುಷ್ಟಂ ಭಾವಿತಮ್ । (ವಿಂ) 2. ಕೆಟ್ಟವಾಗಿ ಆಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮನನೋಯುವಂತೆ ಆಡಲ್ಪಟ್ಟ.



**ದುರ್ಭಿಷಿನ್ ದುರ್ಭಾಷಿನ್** (ವಿಂ) ಕೆಟ್ಟ ಮಾತನ್ನಾಡುವವನು, ಕಠಿನವಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವವನು. ದುಷ್ಟ ಭಾಷಣ — ಭಾಷ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಗಿಣಿ:” (೩-೨-೭೮) ।

**ದುರ್ಭಿಕ್ಷ ದುರ್ಭಿಕ್ಷು** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಕ್ಷಾಮ, ಬರ, ತುಟ್ಟ, ಮಿಕ್ಷಾಯಾ ಅಭಾವ: । “ಸೌರಾಷ್ಟ್ರೇ ಮಾಲವೇ ದೇಶೋ ದಕ್ಷಿಣೇ ಕೋಡ್ಗುಣೇ ತಥಾ । ದುರ್ಭಿಕ್ಷಂ ಜಾಯತೇ ಘೋರಂ ಕ್ಷಯೇ ಸಂವತ್ಸರೇ ಪ್ರಿಯೆ” । (ವಿಂ) 2. ದುರ್ಭಿಕ್ಷವುಳ್ಳ (ದೇಶ). “ಏಕಗ್ರಾಮೇ ಚತು:ಶಾಲೇ ದುರ್ಭಿಕ್ಷೋ ರಾಷ್ಟ್ರವಿಪ್ಲವೇ । ಪತಿತಾ ನಿಯಮಾನಾಯಾ: ಪುರ:ಶುಕ್ರೋ ನ ದುಷ್ಯತಿ” ।

**ದುರ್ಮತಿ ದುರ್ಮತಿ** (ಪುಂ) 1. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಕೆಟ್ಟ ಬುದ್ಧಿ, ಮೂರ್ಖತನ. ದುಷ್ಟಾ ಮತಿ: । 3. ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು, ದುರ್ಮತಿ ಸಂವತ್ಸರ, ಪ್ರಭವ ಮೊದಲಾದ ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಐವತ್ತೈದ ನೆಯದು. “ದುರ್ಮಿಷ್ಠಂ ಮಧ್ಯಮಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ವ್ಯವಹಾರೋ ನ ವರ್ತತೇ । ಮೇವೇ ಮಧ್ಯಮಾ ವೃಷ್ಟಿರ್ದುರ್ಮತೌ ಸಮುಪಸ್ಥಿತೇ” । (ವಿಂ) 4. ದುಷ್ಟಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ, ಮೂರ್ಖ. ದುಷ್ಟಾ ಬುದ್ಧಿರಸ್ಯ ।

**ದುರ್ಮದ ದುರ್ಮದ** (ಪುಂ) 1. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. “ದುರ್ಮದೋ ದುಷ್ಪ್ರವಚನಂ ವಿವಿತ್ಸುರ್ವಿಕಟಾನನ:” ಮಾಂ ಆದಿಂ ೬೮-೯೬ । (ವಿಂ) 2. ಉನ್ಮತ್ತ, ಮದಿಸಿದವನು. “ಕುಮಾರಾನ್ ಕ್ರೋಧಮಾನಾಸ್ತಾನ್ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ರಾಜಾ ಚ ದುರ್ಮದಾನ್” ಮಾಂ ಆದಿಂ ೧೨೯-೪೧ ।

**ದುರ್ಮನಸ್ ದುರ್ಮನಸ್** (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಮನಸ್ಸು, ಸಿಡುಕಿನ ಮನಸ್ಸು. ದುಷ್ಟ ಮನ: । 2. ದು:ಖಿಗೊಂಡ ಮನಸ್ಸು. 3. ಕುಗ್ಗಿದ ಮನಸ್ಸು. ದು:ಸ್ಥಿತ ಮನ: । (ವಿಂ) 4. ಕೆಟ್ಟ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. 5. ದು:ಖಿಗೊಂಡ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. 6. ಕುಗ್ಗಿದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ದು:ಸ್ಥಿತ ಮನೋ ಯಸ್ಯ ।

**ದುರ್ಮನ್ತ್ರ ದುರ್ಮಂತ್ರ** (ಪುಂ) ದುರಾಲೋಚನೆ, ಸಲಹೆ ಪಡೆಯುವ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ಸ್ನೇಹಿತರೊಡನೆ ಕಲೆತು ಮಾಡುವ ಕೆಟ್ಟ ಸಮಾಲೋಚನೆ. ದುಷ್ಟೋ ಮನ್ತ್ರ: । “ದುರ್ಮನ್ತ್ರಾನ್ವೃಪತಿ-ವಿನಶ್ಯತಿ ಯತಿ: ಸಜ್ಜಾತ್ ಸುತೋ ಲಾಲನಾತ್ ವಿಪ್ರೋಜಘ್ರಯನಾತ್ ಕುಲಂ ಕುತನಯಾತ್ ಶೀಲಂ ಕ್ಷಲೋಪಾಸನಾತ್” ಪञ्ಚತಂ ೧-೧೮೦ ।

**ದುರ್ಮನ್ತ್ರಿನ್ ದುರ್ಮಂತ್ರಿನ್** (ಪುಂ) ಕೆಟ್ಟ ಮಂತ್ರಿ, ಕೆಟ್ಟ ಸಲಹೆ ಕೊಡುವ ಸಚಿವ. ದುಷ್ಟೋ ಮನ್ತ್ರಿ । “ಸಂತಾಪಯಂತಿ ಕಮಪಥ್ಯಭುಜಂ ನ ರೋಗಾ ದುರ್ಮನ್ತ್ರಿಣಂ ಕಮುಪಯಂತಿ ನ ನೀತಿರ್ದೋಷಾ:” ಪञ್ಚತಂ ೩-೨೩೦ ।

**ದುರ್ಮರಣ ದುರ್ಮರಣ** (ನಂ) ಬಲಾತ್ಕಾರದ ಮರಣ, ಅಸ್ವಾಭಾವಿಕವಾದ ಸಾವು. ದುಷ್ಟಮಸ್ವಾಭಾವಿಕಂ ಮರಣಮ್ । ಹಸು ಮೊದಲಾದ ಶೃಂಗವುಳ್ಳ ಪ್ರಾಣಿಗಳು ಕೋರಹಲ್ಲು

ಗಳುಳ್ಳ ಹಂದಿ ವ್ಯಾಘ್ರ ಮೊದಲಾದ ಮೃಗಗಳು ನಖ ರಾಯುಧಗಳಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳು ಆನೆ ವಿಷ ಅಗ್ನಿ ಸರ್ಪ ಜಲ ವಿದ್ಯುತ್ತು ಯಂತ್ರ ಇವುಗಳಿಂದ ಸಂಭವಿಸುವುದು ದುರ್ಮರಣ.

**ದುರ್ಮಠ ದುರ್ಮಠ** (ವಿಂ) ಕಷ್ಟದಿಂದ ಸಹಿಸಲ್ಪಡುವ, ಸಹಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. ದುರ್ + ಮಠ (ತಿದಿತಕ್ಷಾಯಾಮ್) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬) ।

**ದುರ್ಮರ್ಷಣ ದುರ್ಮರ್ಷಣ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ದುಷ್ಕರಂ ಮರ್ಷಣ-ಮಸ್ಯ । “ದುಷ್ಕರಂ ಮರ್ಷಣಂ ಯಸ್ಯ ಪರೇರ್ದುರ್ಮರ್ಷಣ: ಸ್ಮೃತ:” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । “ಅಜ್ಞೋ ದುರ್ಮರ್ಷಣ: ಶಾಸ್ತಾ” ವಿಂ ಸಂ । 2. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. (ವಿಂ) 3. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಸಹಿಸಲ್ಪಡುವ, ಸಹಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. ದುರ್ + ಮಠ (ತಿದಿತಕ್ಷಾಯಾಮ್) “ಯುಕ್” (ವಾಂ ೩-೩-೧೨೮) ।

**ದುರ್ಮಲ್ಲಿ ದುರ್ಮಲ್ಲಿ**, -ಲ್ಲಿಕಾ -ಲ್ಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾಟಕಾ ತೋಟಕ ಮೊದಲಾದ ಹದಿನೆಂಟು ಉಪರೂಪಗಳ ಲೊಂದು. [“ಉಪರೂಪಕ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಈ ಉಪರೂಪದಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕು ಅಂಕಗಳಿರಬೇಕು. ಕೈಬಿಡು ಮತ್ತು ಭಾರತೀ ವೃತ್ತಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರಬೇಕು. ಇದರಲ್ಲಿ ಗರ್ಭ ಸಂಧಿಯಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಕೆಳಮಟ್ಟದ ನಾಯಕ. ಮೊದಲ ನೆಯ ಅಂಕವು ವಿಟಪುರುಷನ ಆಟಪಾಟಗಳಿಂದ ಮೂರು ಘಳಿಗೆಗಳಲ್ಲಿ ಆಡುವಂತೆಯೂ ಎರಡನೆಯ ಅಂಕವು ಐದು ಘಳಿಗೆಗಳಲ್ಲಿ ವಿದೂಷಕನ ವಿಲಾಸಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ ಆಡುವಂತೆಯೂ ಮೂರನೆಯ ಅಂಕವು ಆರು ಘಳಿಗೆಗಳಲ್ಲಿ ಆಡುವಂತೆಯೂ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಅಂಕವು ಹತ್ತು ಘಳಿಗೆಗಳಲ್ಲಿ ಆಡುವಂತೆಯೂ ಇರಬೇಕು. “ದುರ್ಮಲ್ಲಿ ಚತುರಕ್ಷಾ ಸ್ಯಾತ್ ಕೇಶಿಕೀಭಾರತೀಯತಾ । ಅಗರ್ಭಾ ನಾಗರನರಾ ನ್ಯೂನನಾಯಕ-ಭೂಷಿತಾ । ತ್ರಿನಾಲಿ: ಪ್ರಥಮೋಽಕ್ಷೋಽಸ್ಯಾ ವಿಡಕ್ಶೀಡಾಮಯೋ ಭವೇತ್ । ಪञ್ಚನಾಲಿಃತ್ವಿತಿರ್ದೋಽಕ್ಷೋ ವಿದೂಷಕವಿಲಾಸವಾನ್” ಇತ್ಯಾದಿ. ಸಾಂ ೬೦ ।

**ದುರ್ಮುಖ ದುರ್ಮುಖ** (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. 2. ಒಂದು ಸರ್ಪ. 3. ವಾನರ, ಕಪಿ. 4. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. 5. ಶ್ರೀರಾಮನ ಅಂತಃಪುರದ ಒಬ್ಬ ಸೇವಕ. “ಶುದ್ಧಾಂತ-ಚಾರೀ ದುರ್ಮುಖ: ಸ ಮಯಾ ಪೌರಜಾನಪದಾನಪಸಪಿತುಂ ಪ್ರಯುಕ್ತ:” ೩೦ ರಾಂ ೧ । 6. ಪರಮೇಶ್ವರ. 7. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. 8. ಪ್ರಭವ ಮೊದಲಾದ ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಮೂವತ್ತನೆಯ ಸಂವತ್ಸರ. (ವಿಂ) 9. ಅಪ್ರಿಯವಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವವನು, ದುರ್ಭಾಷೆಯನ್ನಾಡುವವನು. ದುಷ್ಟ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ । 10. ಗಂಟುಹಾಕಿದ ಮುಖವುಳ್ಳವನು,



ಭಯಂಕರವಾದ ಮುಖವುಳ್ಳವನು. “ದುರ್ಮಹರ್ತೋ ಮುಖೇ  
ನಾಗಭೇದೇ ವಾಜಿನಿ ವಾನರೇ” ಹೇಮಂ ।

ದುರ್ಮಹರ್ತ ದುರ್ಮಹರ್ತ (ಪುಂ) ಕೆಟ್ಟ ಸಮಯ, ಪ್ರಶಸ್ತ  
ವಲ್ಲದ ಕಾಲ, ಕೆಟ್ಟ ಘಳಿಗೆ. ದೃಷ್ಟೋ ಮಹರ್ತಃ ।

ದುರ್ಮಹಸ್ ದುರ್ಮಹಸ್ (ವಿಂ) 1. ಮಂದಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ  
ವನು, ದಡ್ಡು. ದೃಷ್ಟಾ ಮೇಧಾ ಯಸ್ಯ “ಅಸಿಚ್” (೪-೪-೧೨೨) ।  
“ಗ್ರಂಥಾನುಷಂಗೀಕೃತಮಿತಿ ದುರ್ಮಹಸೋಪಲಮ್” ಮಾಘಂ  
೨-೨೬ । 2. ದುರ್ಮಹದ್ವಿಯುಳ್ಳವನು, ಮೂರ್ಖ,  
ಅವಿವೇಕಿ.

ದುರ್ಯೋಗ ದುರ್ಯೋಗ (ಪುಂ) ಕೆಟ್ಟ ಯೋಗ, ಅಶುಭ ಯೋಗ,  
ಅನಿಷ್ಟವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಪಾಪಗ್ರಹಗಳ ಸಂಬಂಧ. ದೃಷ್ಟೋ  
ಯೋಗಃ । “ದಾಸೀಭೂತಾಸ್ಮಿ ದುರ್ಯೋಗಾತ್ ಸಪತ್ನ्याಃ ಪತಗೋತ್ತಮ”  
ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೭-೧೩ ।

ದುರ್ಯೋಧ ದುರ್ಯೋಧ (ವಿಂ) ಕಷ್ಟದಿಂದ ಯುದ್ಧಮಾಡಲು  
ಶಕ್ತನಾದ, ಯುದ್ಧಮಾಡಲು ಅಶಕ್ತನಾದ. ದುಃಖೇನ  
ಯುಜ್ಯತೇ—ದುರ್+ಯುಜ (ಸಂಪ್ರಹಾರೇ) “ಘಲ್” (೩-೩-೧೨೬) ।

ದುರ್ಯೋಧನ ದುರ್ಯೋಧನ (ಪುಂ) 1. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಹಿರಿಯ  
ಮಗ, ಕೌರವರ ಯಜಮಾನ. ದುರ್+ಯುಜ (ಸಂಪ್ರಹಾರೇ)  
“ಯುಜ್” (ವಾಂ ೩-೩-೧೨೮) । [ದುರ್ಯೋಧನನು ಜನಿಸಿ  
ದಾಗ ಕತ್ತೆಯಂತೆ ಕಿರುಚಿಕೊಂಡನು. ಅದನ್ನು ಕೇಳಿದ  
ಕತ್ತೆಗಳೂ ಕಿರುಚಿದವು. ಆಗ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನು ಹೆದರಿ  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣರನ್ನೂ ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯರನ್ನೂ ಕಂಡು ಭವಿಷ್ಯ  
ವನ್ನು ಕೇಳಲಾಗಿ ಅವರು “ಈ ಪುತ್ರನು ಜನಿಸಿದ ಕೂಡಲೆ  
ಅನೇಕ ದುರ್ನಿಮಿತ್ತಗಳು ಕಂಡುಬಂದದ್ದರಿಂದ ಇವನಿಂದ  
ವಂಶವೇ ನಿರ್ಮೂಲವಾಗುವುದು. ಅದುದರಿಂದ ಇವನನ್ನು  
ಪರಿತ್ಯಜಿಸುವುದೊಳ್ಳೆಯದು” ಎಂದರು. ಆದರೆ ಪುತ್ರ  
ಪ್ರೇಮದಿಂದ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನು ಹಾಗೆ ಮಾಡಲಿಲ್ಲ. “ಸ  
ಜಾತಮಾತ್ರ ಏವಾಥ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರಸುತೋ ನೃಪಃ । ರಾಜಸಾರವಸದೃಶಂ  
ಕರಾವ ಚ ನನಾದ ಚ । ತಂ ಕುರಾಃ ಪ್ರತಯಾಪಂತ ಗೃಧ್ರಗೋಮಾಯು-  
ವಾಯಸಾಃ । ವಾತಾಶ್ಚ ಪ್ರವೃಶ್ಯಾಪಿ ದಿಗದಾಹಶ್ಚಾಭವತ್ತದಾ ।  
ತತಸ್ತು ಭೀತವದ್ರಾಜಾ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರೋಜ್ಜವೀದಿದಮ್ । ಸಮಾನೀಯ  
ಬಹುನ್ ವಿಪ್ರಾನ್ ಭೀಷ್ಮಂ ವಿಧುರಮೇವ ಚ । ಅಸ್ಮಿನ್ ಜಾತೇ  
ನಿಮಿತ್ತಾನಿ ಶಂಸಂತಿ ಹಾಶಿವಂ ಮಹತ್ । ಕ್ರತ್ಯಾದಾಃ ಪ್ರಾಣದನ್  
ಧೋರಾಃ ಶಿವಾಶ್ಚಾಶಿವನಿಶ್ವನಾಃ । ತೇಜ್ಞವನ್ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾ  
ರಾಜನ್ ವಿಧುಶ್ಚ ಮಹಾಮತಿಃ । ವ್ಯಕ್ತಂ ಕುಲಾಂತಕರಣೋ  
ಭವಿತೇಷು ಸುತಸ್ತವ । ತ್ಯಜೇನಮೇಕಂ ಶಾಂತಿಂ ಚೇತುಲಸ್ಯೇಚ್ಛಸಿ  
ಭಾರತ । ಸ ತಥಾ ವಿಧುರೇಣೋಕ್ತಸ್ತೇಷು ಸರ್ವೇದ್ವಿಜೋತ್ತಮಃ । ನ  
ಚಕಾರ ತಥಾ ರಾಜಾ ಪುತ್ರಸ್ತೇಹಸಮನ್ವಿತಃ” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೨೯ ।

ದುರ್ಯೋಧನನು ಕಲಿಯ ಅಂಶದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವನು.  
“ಕಲೇರಶಸ್ತು ಸಂಜ್ಞೆ ಭುವಿ ದುರ್ಯೋಧನೋ ನೃಪಃ । ದುರ್ಬುದ್ಧಿರ್ದುರ್ಮತಿ-  
ಶ್ಚೈವ ಕುರುಣಾಮಯಶಸ್ಕರಃ” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೮-೮೭ ।  
ಇವನು ಬಾಲ್ಯದಿಂದಲೂ ಪಾಂಡವರನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸುತ್ತಾ  
ಅವರನ್ನು ರಾಜ್ಯಭ್ರಷ್ಟರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದನು. ಪಾಂಡು  
ರಾಜನು ಕಾಲವಾದನಂತರ ಧರ್ಮರಾಜನು ತಮ್ಮಂದಿ  
ರೊಡನೆ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನಲ್ಲಿ ಬಂದು ಸೇರಿದನು. ಅಟಪಾಟ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಭೀಮನು ಜಯ ಗಳಿಸುತ್ತಿರಲು ಇದನ್ನು ಸಹಿಸದೆ  
ದುರ್ಯೋಧನನು ಭೀಮನನ್ನು ಕೊಲ್ಲಿಸಬೇಕೆಂದು ವಿಷಹಾಕಿ  
ಸಿದನು. ಕೈಕಾಲು ಕಟ್ಟಿ ನದಿಯಲ್ಲಿ ಹಾಕಿದನು. ಅರಗಿನ  
ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸಿ ಸುಡಲು ಏರ್ಪಡುಮಾಡಿದನು.  
ದ್ರೌಪದೀ ಸ್ವಯಂವರಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಅಲ್ಲಿ ಧರ್ಮರಾಜನಿಂದ  
ಪರಾಜಿತನಾದನು. “ಛಿತ್ತವಾ ರಾಜಾ ಧನುಃ ಸಂಯಂ ಭಾರ್ತಾರಾಷ್ಟ್ರಸ್ಯ  
ಸಂಯುಗಂ । ಅಭ್ಯವರ್ಪಂಚರೋಷೆಸ್ತಂ ಸ ಹಿತ್ತವಾ ಪ್ರಾದ್ರವದ್ರಣಮ್”  
ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೦೪-೪೨ । ಪಾಂಡವರು ದ್ರೌಪದಿ  
ಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ಸುಖವಾಗಿರುವುದನ್ನು ಕೇಳಿ  
ಶಕುನಿ ಮತ್ತು ಕರ್ಣನ ಮಾತಿನಂತೆ ಅವರನ್ನು ನಿರ್ಮೂಲ  
ಮಾಡುವ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ದ್ರೌಪದನ ರಾಜ್ಯಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ  
ಅಲ್ಲಿ ದುರ್ಯೋಧನನು ಭೀಮಸೇನನಿಂದ ಸೋತನು.  
ಆದಿಂ ೨೧೮ । ಧರ್ಮರಾಜನ ರಾಜಸೂಯ ಯಾಗಕ್ಕೆ  
ಹೋಗಿ ಮಯಸಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಸಭಾಭವನವನ್ನು  
ನೋಡಿ ಮರುಗಿದ ದುರ್ಯೋಧನನು ಜಲವಿಲ್ಲದ ಪ್ರದೇಶ  
ದಲ್ಲಿ ಜಲವಿರುವುದೆಂದೂ ಜಲವಿರುವ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಜಲ  
ವಿಲ್ಲವೆಂದೂ ಭ್ರಾಂತಿಯಿಂದ ನಡೆದು ಮುಗ್ಧರಾಗಿ ಭೀಮ  
ದ್ರೌಪದಿ ಮೊದಲಾದವರ ಹಾಸ್ಯಕ್ಕೆ ಗುರಿಯಾದನು.  
ಪಾಂಡವರನ್ನು ಪರಾಕ್ರಮದಿಂದ ಗೆಲ್ಲಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲವಾದುದು  
ದರಿಂದ ತಂತ್ರದಿಂದ ಗೆದ್ದು ಅವರನ್ನು ಓಡಿಸಬೇಕೆಂದು  
ಯೋಚಿಸಿ ಶಕುನಿಯ ತಂತ್ರದಿಂದ ದ್ಯೂತದಲ್ಲಿ ಅವರನ್ನು  
ಗೆದ್ದು ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ದ್ರೌಪದಿಯು ತನ್ನ ತೊಡೆಯ ಮೇಲೆ  
ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳಬೇಕೆಂದು ಹೇಳಿದನು. ಆಗ ಭೀಮನು  
ಅವನ ತೊಡೆಯನ್ನು ಮುರಿದು ಕೊಲ್ಲುವುದಾಗಿ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ  
ಮಾಡಿದನು. “ಏವಮುಕ್ತವಾ ತು ಕೌಂತೇಯಮಪೊಹ್ಯ ವಚನಂ  
ಸ್ವಕಮ್ । ದ್ರೌಪದಾಃ ಪ್ರೇಕ್ಷಮಾಣಾಃ ಸವ್ಯಮೂರ್ಮದರ್ಶಯತ್ ।  
ಭೀಮಸೇನಸ್ತಮಾಲೋಕಯ ನೇತ್ರೇ ಉತ್ಕಾಲ್ಯ ಲೋಹಿತೇ । ಪ್ರೋವಾಚ  
ರಾಜಮಧ್ಯೇ ತಂ ಸಮಾಂ ವಿಶ್ವಾವಯನ್ನಿವ । ಪಿತೃಭಿಃ ಸಹ ಸಾಲೋಕ್ಯಂ  
ಮಾ ಸ್ಮ ಗಂಛೇದ್ ವೃಕೋದರಃ । ಯದೇತಮೂರ್ಮಗದಯಾ ನ ಭಿನ್ದ್ಯಾಂ ತೇ  
ಮಹಾಹವೇ” ಸಭಾಂ ೯೨ । ತೊಡೆಯನ್ನು ತೋರಿದ  
ದುರ್ಯೋಧನನಿಗೆ ತೊಡೆಯೇ ಮೃತ್ಯುವಾಗುವುದೆಂದೂ  
ಸೀರೆಯನ್ನು ಹಿಡಿದಳೆಂದ ಪಾಪಿ ದುಃಶಾಸನನ ಎದೆ



ಯನ್ನು ಭೀಮಸೇನನು ಸೀಳಿ ರಕ್ತ ಪಾನಮಾಡುವನೆಂದೂ ದ್ರೌಪದಿಯು ಶಪಿಸಿದಳು. "ಯಸ್ಮಾಂಚ್ಚೋರಂ ದರ್ಶಯಸೇ ಯಸ್ಮಾಂಚ್ಚೋರಂ ನಿರೀಕ್ಷಸೇ। ತಸ್ಮಾತ್ತವಹ್ಯಾರ್ಥಮಿಷ್ಟ ಋರೋ ಮೃತ್ಯುರ್ಮವಿಷ್ಯತಿ। ಯಸ್ಮಾಂಚ್ಚೈವಂ ಕಲೇಶಯತಿ ಭ್ರಾತಾ ತೇ ಮಾಂ ದುರಾತ್ಮವಾನ್। ತಸ್ಮಾದ್ಭಿರಮೇವಾಸ್ಯ ಪಾಸ್ಯತೇ ವೈ ವೃಕೋದರಃ" ಸಭಾಂ ೧೨। ಜೂಜಿನಲ್ಲಿ ಸೋತ ಪಾಂಡವರಿಗೆ ಅರ್ಧ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಕೊಡುವಂತೆ ದುರ್ಯೋಧನನಿಗೆ ಉಪದೇಶಿಸಲು ವ್ಯಾಸ ಮಹರ್ಷಿಯು ಮೈತ್ರೇಯ ಋಷಿಯನ್ನು ಕಳುಹಿಸಿದಾಗ ದುರ್ಯೋಧನನು ಮೈತ್ರೇಯರನ್ನು ತಿರಸ್ಕರಿಸಿ ಮಾತನಾಡಿದ್ದರಿಂದ ಭೀಮಸೇನನ ಗದೆಯಿಂದ ಅವನ ತೊಡೆಗಳು ತುಂಡಾಗಲಿ ಎಂದು ಅವರು ಶಪಿಸಿದರು. ವನಂ ೧೦। ಪಾಂಡವರು ದ್ವೈತವನದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಅವರನ್ನು ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಬೇಕೆಂದು ದುರ್ಯೋಧನನು ಸಹಲ ಪರಿವಾರ ಸಮೇತ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ ಅಲ್ಲಿದ್ದ ಗಂಧರ್ವರೊಡನೆ ಯುದ್ಧ ಮಾಡಿ ಸೋತನು. ಗಂಧರ್ವರು ಇವನ ಕೈಕಾಲುಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟಿ ಒಯ್ಯುತ್ತಿರಲು ಯುಧಿಷ್ಠಿರನ ಮಾತಿನಂತೆ ಅರ್ಜುನನು ಇವನನ್ನು ಬಿಡಿಸಿದನು. ವನಂ ೨೪೧। ಪಾಂಡವರು ಅಜ್ಞಾತವಾಸದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಅವರನ್ನು ಕಂಡುಹಿಡಿದು ಪುನಃ ಕಾಡಿಗೆ ಓಡಿಸಬೇಕೆಂದು ಗಾಂಧಾರರನ್ನು ಕಳುಹಿಸಿ ಅವರ ಮೂಲಕ ಕೇಚಕವಧೆಯ ಪೃತ್ವಾಂತವನ್ನು ಕೇಳಿ ಅದು ಭೀಮಸೇನನ ಕೆಲಸವೆಂದು ಊಹಿಸಿ ಭೀಷ್ಮಾದಿಗಳೊಡನೆ ವಿರಾಟನಗರಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ವಿರಾಟನ ಗೋವುಗಳನ್ನು ತಡೆದು ಹಿಡಿದನು. ಅಲ್ಲಿ ಅರ್ಜುನನಿಂದ ಇವನಿಗೆ ಪರಾಜಯವಾಯಿತು. ವಿನಾಂ ೩೭, ೬೬। ಪಾಂಡವರೊಡನೆ ಸಂಧಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಬೇಕೆಂಬ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಮತ್ತು ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯರ ಮಾತನ್ನು ಕೇಳದೆ ದುರ್ಯೋಧನನು ತಾನು ಅಪರಾಧಿಯಲ್ಲವೆಂದೂ ಪಾಂಡವರಿಗೆ ಸೂಜಿಯ ಮೊನೆಯಷ್ಟೂ ಭೂಮಿಯನ್ನು ಕೊಡುವುದಿಲ್ಲವೆಂದೂ ಹೇಳಿದನು. ದುರ್ಯೋಧನನು ಕೊನೆಗೆ ಪಾಂಡವರೊಡನೆ ಸಂಧಿಮಾಡಿ ಕೊಳ್ಳಬೇಕೆಂಬ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಮತ್ತು ಗಾಂಧಾರಿಯ ಮಾತನ್ನೂ ಲಕ್ಷ್ಮಣಮಾಡದೆ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನನ್ನು ಬಂಧಿಸಲು ಯತ್ನಿಸಿದಾಗ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ವಿಶ್ವರೂಪವನ್ನು ತೋರಿಸಿ ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಅಶ್ವರ್ಯಗೊಳಿಸಿ ಹೊರಟುಹೋದನು. ಛಾಂದೋಗ್ಯಂ ೧೩೧। ದುರ್ಯೋಧನನು ಕರ್ಣಾದಿಗಳ ಮೂಲಕ ಯುದ್ಧಸಿದ್ಧತೆಗಳನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಕೃಪಾಚಾರ್ಯ ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯ ಮೊದಲಾದವರನ್ನು ಹನ್ನೊಂದು ಅಕ್ಷೌಹಿಣೀ ಸೈನ್ಯಕ್ಕೂ ಸೇನಾಪತಿಗಳನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿ ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯರನ್ನು ಎಲ್ಲಾ ಸೇನೆಗಳಿಗೂ ಅಧಿಪತಿಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿ ಯುದ್ಧದ ವಿಷಯವನ್ನು ಕರ್ಣನ ಮೂಲಕ

ಡಂಗುರ ಹೊಡೆಸಿದನು. "ಪ್ರತಿಯಾತೇ ತು ದಾಶಾಹೇ ರಾಜಾ ದುರ್ಯೋಧನಸ್ತದಾ। ಕರ್ಣಂ ದುಃಶಾಸನಂ ಚೈವ ಶಕುನಿ ಚಾಬ್ರವೀದಿದಮ್। ಅಕೃತೇನೈವ ಕಾರ್ಯೇಣ ಗತಃ ಪಾರ್ಥಾನಧೋಕ್ಷಜಃ। ಸ ಏನಾನ್ಮನ್ಯುನಾವಿಷ್ಟಃ ಧ್ರುವಂ ಧಕ್ಷ್ಯತೀತಸಂಶಯಮ್। ಇಷ್ಟೋ ಹಿ ವಾಸುಧೇವಸ್ಯ ಪಾಂಡವೈರಮ ವಿಗ್ರಹಃ। ಭವಿತಾ ವಿಗ್ರಹಃ ಸೋಽಯಂ ತುಮುಲೋ ರೋಮಹರ್ಷಣಃ। ತಸ್ಮಾತ್ಸಾಗ್ರಾಮಿಕಂ ಸರ್ವಂ ಕಾರಯಧ್ವಮತಂದ್ರಿತಾಃ। ಶಿಬಿರಾಣಿ ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರೇ ಕ್ರಿಯಂತಾಂ ವಸುಧಾಧಿಪಾಃ। ಪ್ರಯಾಣಂ ಧುಷ್ಯತಾಮಘ ಶ್ವೋಮೃತ ಇತಿ ಮಾಚಿರಮ್" ಛಾಂದೋಗ್ಯಂ ೧೫೩। ಭೀಷ್ಮನು ದುರ್ಯೋಧನನಿಗೆ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಮಹಿಮೆಯನ್ನು ತಿಳಿಸಿ ಅವನನ್ನು ಅಶ್ರಯಿಸಿರುವ ಪಾಂಡವರಿಗೇ ಜಯ ಲಭಿಸುವುದೆಂದು ಹೇಳಿ ಪಾಂಡವರ ಜೊತೆ ಸಂಧಿಮಾಡಿ ಕೊಳ್ಳುವಂತೆ ಉಪದೇಶಿಸಿದನು. "ತಮಬ್ರವೀನ್ಮಹಾರಾಜ ಭೀಷ್ಮಃ ಶಾಂತನವಃ ಪುನಃ। ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯಂ ತೇ ಶ್ರುತಂ ರಾಜನ್ ಕೇಶವಸ್ಯ ಮಹಾತ್ಮನಃ। ಪ್ರೀತಿಮಾನ್ ಹಿ ದೃಢಂ ಕೃಷ್ಣಃ ಪಾಂಡವೇಶು ಯಶಸ್ವಿಶು। ತಸ್ಮಾದ್ಬ್ರವೀಮಿ ರಾಜೇಂದ್ರ ಶಮೋ ಮವತು ಪಾಂಡವೈಃ" ಭೀಷ್ಮಂ ೬೮। ಕರ್ಣನ ಅನುಮತಿಯಂತೆ ದುರ್ಯೋಧನನು ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರಿಗೆ ಸೇನಾಧಿಕಾರವನ್ನು ವಹಿಸಿದನು. ದ್ರೋಣಂ ೫। ಯುಧಿಷ್ಠಿರನನ್ನು ಜೀವಸಹಿತ ಹಿಡಿದು ತರಬೇಕೆಂದು ದುರ್ಯೋಧನನು ಹೇಳಲು ಅದಕ್ಕಾಗಿ ಯತ್ನಿಸಿದ ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರಿಗೆ ಅದು ಅಸಾಧ್ಯವಾಯಿತು. ದ್ರೋಣಂ ೩೩। ಅರ್ಜುನ ಮತ್ತು ಯುಧಿಷ್ಠಿರರೊಡನೆ ಯುದ್ಧಮಾಡಿ ಸೋತನು. "ತತೋ ದುರ್ಯೋಧನಃ ಕೃಷ್ಣಂ ನವಭಿನ್ನವಿಭಿಃ ಶರೈಃ। ಅವಿಧ್ಯತ ರಣೇ ರಾಜನ್ ಶರೈರಾಶೀವಿಘೋಪಮೈಃ॥ ತತಃ ಕ್ರುದ್ಧೋ ರಣೇ ಪಾರ್ಥಃ ಸೃಕ್ವಿಣಿ ಪರಿಸಂಲಿಹನ್। ಧನುರಸ್ಯಾಚ್ಚಿತ್ತನೃಣಾಂ ಹಸ್ತಾವಪಿ ಚ ವೀರ್ಯವಾನ್। ದುರ್ಯೋಧನಂ ಚ ಬಾಣಾಮ್ಯಾಂ ತೀಕ್ಷ್ಣಾಮ್ಯಾಂ ವಿರಥೀಕೃತಮ್। ಅವಿದ್ಯದ್ವಂದಸ್ತತಲಯೋರಭಯೋರರ್ಜುನಸ್ತದಾ। ಸ ವೇದನಾಭಿರಾವಿಗ್ನಃ ಪಲಾಯನಪರಾಯಣಃ" ದ್ರೋಣಂ ೧೦೩। "ತಂ ತಪಂತಮಿವಾದಿತ್ಯಂ ಕುರುರಾಜಂ ಮಹಾಹವೇ। ನಾಶಕವೀಕ್ಷಿತುಂ ರಾಜನ್ ಪಾಂಡುಪುತ್ರಸ್ಯ ಸೈನಿಕಾಃ। ತತೋ ಯುಧಿಷ್ಠಿರೋ ರಾಜಾ ಕುಪಿತೋ ರಾಜಸತ್ತಮಃ। ಅಮ್ಯಧಾವತ್ಕುರುಪತಿ ತವ ಪುತ್ರಂ ಜಿಘಾಂಸಯಾ। ತತೋ ದುರ್ಯೋಧನಃ ಕ್ರುದ್ಧಃ ಶರೈಃ ಸನ್ನತಪರ್ವಭಿಃ। ವಿವ್ಯಾಧ ದಶಭಿಸ್ತುಣಾಂ ಧ್ವಜಂ ಚಿच्छೇದ ಚೇಷುಣಾ। ತತೋ ಯುಧಿಷ್ಠಿರೋ ರಾಜಾ ತವ ಪುತ್ರಸ್ಯ ಮಾರಿಷಃ। ಶರಂ ಚ ಸೂರ್ಯರಮ್ಯಭಮತ್ಯುಗ್ರಮನಿವಾರಣಮ್। ಹಾ ಹತೋಽಸೀತಿ ರಾಜಾನಮುಕ್ತ್ವಾಽಮೃತವ್ಯುಧಿಷ್ಠಿರಃ। ಸ ತೇನಾ ಕರ್ಣಮುಕ್ತೇನ ವಿದ್ಧೋ ಬಾಣೇನ ಕೌರವಃ। ನಿಷಸಾದ ರಥೋಪಸ್ಯೇ ಭೃಶಂ ಸಮೃತಚೇತನಃ"। ಧೃಷ್ಟದ್ಯುಮ್ನನಿಂದ ಪರಾಜಿತನಾದ ದುರ್ಯೋಧನನು ಕುದುರೆಯನ್ನು ಏರಿ ಓಡಿಹೋದನು. ಸೈನ್ಯವೆಲ್ಲವೂ ನಾಶವಾದುದನ್ನು ಕಂಡ ದುರ್ಯೋಧನನು



ಗದೆಯೊಡನೆ ಒಂದು ಮಡುವಿನಲ್ಲಿ ಅವಿತುಕೊಂಡು ಜಲ ಸ್ನಂಭನಮಾಡಿ ಕುಳಿತನು. ಆಗ ಆ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿದ ಪಾಂಡವರು ದುರ್ಯೋಧನನನ್ನು ಅನೇಕ ವಿಧವಾಗಿ ಮೂದಲಿಸಲು ಅವನು ಗದೆಯೊಡನೆ ಮಡುವಿನಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದು ಬಂದನು. ಭೀಮ ದುರ್ಯೋಧನರಿಗೆ ಗದಾಯುದ್ಧ ನಡೆದು ಭೀಮನು ದುರ್ಯೋಧನನ ತೊಡೆಯನ್ನು ಮುರಿದು ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯನ್ನು ಪೂರ್ತಿಮಾಡಿದನು. “ದ್ರಯೋಧನೋ ಹತೇ ಸಂಗ್ರೇ ವಿಧೃತೇಷು ಪದಾತಿಷು | ಹೃದಂ ದೈವಾಯನ ನಾಮ ವಿವೇಶ ಭುಷದ್ಭುಷಿತಃ | ಶಯಾನಂ ವಾರ್ತರಾಷ್ಟ್ರಂ ತು ಸಲಿಲೇ ಸ್ತಮ್ಭಿತೇ ತದಾ | ಪಾಂಡವಾಃ ಸಹ ಕೃಷ್ಣೇನ ವಾಗ್ಗಿರಾಭಿರಾರ್ದಯನ್ | ಸ ತುಘಮಾನೋ ಬಲವಾನ್ ವಾಗ್ಗಿರಾಭಿರಾಮ ಸಮಂತತಃ | ತತ್ಪಿತಃ ಸ ಹೃದಾದೀರಃ ಪ್ರಗೃಹ್ಯ ಮಹತೀಂ ಗದಾಮ್ | ಸ ಚಾಪ್ಯು-ಪಾಗತೋ ಯೋಧು ಭೀಮೇನ ಸಹ ಸಾಮ್ಪ್ರತಮ್ | ಆಜಗ್ಧೇ ಮೂರ್ಛಿತ ಕೌಂತೇಯಂ ಗದಯಾ ಭೀಮವೇಗಯಾ | ತಯಾತ್ವಾಭಿಹತೋ ಭೀಮಃ ಪುತ್ರೇಣ ತವ ಪಾಂಡವಃ | ನಾಕಂಪತ ಮಹಾರಾಜ ತದ್ಭೂತಮಿವಾಭವತ್ | ಋಷ್ಯಾಂ ಗ್ರಾಹಿಣೋದ್ರಾಜನ್ ಗದಾಂ ವೇಗೇನ ಪಾಂಡವಃ | ಸಾ ವಜ್ರ-ನಿಷ್ಪೇಷಸಮಾ ಪ್ರಹಿತಾ ಭೀಮಕರ್ಮಣಾ | ಋಷು ದ್ರಯೋಧನಸ್ಯಾಥ ಬಭಂಜ ಪ್ರಿಯದರ್ಶನೀ | ಸ ಪಪಾತ ನರವ್ಯಾಘ್ರಃ ವಸುಧಾಮನು-ನಾದಯನ್” ಶಲ್ಯಂ ೪೯ |

**ದ್ರವ್ಯೋನಿ ದುರ್ಯೋಧನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ನೀಚಜಾತಿ. (ವಿಂ) 2. ನೀಚಜಾತಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. “ನ ಕಥಂಚನ ದ್ರವ್ಯೋನಿಃ ಪ್ರಕೃತಿ ಸ್ವಾ ನಿಶ್ಚಲತಿ” ಮನುಂ ೧೦-೪೯ |

**ದ್ರುಲಕ್ಷ್ಯ ದುರ್ಲಕ್ಷ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ತಿಳಿಯಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ತಿಳಿಯಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. ದುಃಖೇನ ಲಕ್ಷ್ಯತೇ - ದುರ್ + ಲಕ್ಷ (ಆಲೋಚನೆ) “ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪) | “ಮನಶ್ಚಲಂ ಪ್ರಕೃತ್ಯೇವ ದ್ರುಲಕ್ಷ್ಯಂ ಚ ತಥಾಪಿ ಮೇ” ರತ್ನಾಂ ೩-೨ | 2. ನೋಡಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ನೋಡಬಹುದಾದ. ದುರ್ + ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) “ಯತ್” |

**ದ್ರುಲಕ್ಷ್ಯ ದುರ್ಲಕ್ಷ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ದಾಟಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ದಾಟಬಹುದಾದ. 2. ಮಾರಲಾಗದ, ಅತಿ ಕ್ರಮಿಸಲಾಗದ. ದುಃಖೇನ ಲಕ್ಷ್ಯತೇ - ದುರ್ + ಲಕ್ಷಿ (ಗತೌ) “ಯತ್” (೩-೧-೧೨೭) |

**ದ್ರುಲಭ ದುರ್ಲಭ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. ದುಃಖೇನ ಲಭ್ಯತೇ - ದುರ್ + ಲಭ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) “ಯತ್” (೩-೩-೧೨೬) | ಇಂದ್ರಿಯ ಜಯವಿಲ್ಲದವರಿಗೆ ಲಭಿಸುವುದಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ದುರ್ಲಭನು. “ಅಜಿತೇಂದ್ರಿಯದ್ರುಲಭಾಪ್ಯೋ ದ್ರುಲಭಃ ಸ ಚ ಕಥ್ಯತೇ” ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ | “ದ್ರುಲಭೋ ದ್ರುಗ್ಂ ದ್ರುಗ್” ವಿಂ ಸಂ | 2. ಕಠೋರ. (ವಿಂ) 3. ಹೊಂದಲು

ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಪಡೆಯಲು ಅಸಾಧ್ಯವಾದ. “ದ್ರುಲಭಃ ಪ್ರಿಯೋ ಮೇ ಭವ ಹೃದಯ ನಿರಾಶಮ್” ಮಾಲಂ ೨-೪ | “ಹಿತಂ ಮನೋಹಾರಿ ಚ ದ್ರುಲಭಂ ವಚಃ” ಕಿರಾಂ ೧-೪ | 4. ಉತ್ತಮವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ. “ಸರ್ವತ್ರ ಸುಲಭಾ ಗಜಾ ತ್ರಿಪು-ಸ್ಥಾನೇಷು ದ್ರುಲಭಾ | ಹರಿಹಾರೇ ಪ್ರಯಾಗೇ ಚ ಗಜಾ ಸಾಗರಸಂಕ್ರಮೇ” ಕೂರ್ಮಪುಂ | 5. ಪ್ರಿಯವಾದ, ಇಷ್ಟವಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದ್ರುಲಭಾ ದುರ್ಲಭಾ. 6. ತೀವ್ರಕಸಂಧಿ. 7. ಹೆಗ್ಗುಳ್ಳ.

**ದ್ರುಲಲಿತ ದುರ್ಲಲಿತ (ನಂ)** 1. ಮೊಂಡುತನ, ಹುಟ್ಟುಮಾರಿ ತನ. ದುರ್ + ಲಲ (ಔಪಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪) | 2. ದುರ್ವ್ಯಾಪಾರ, ದುಷ್ಟಕೃತ್ಯ, ಪುಂಡಾಟ. (ವಿಂ) 3. ಮೊಂಡುತನದ, ಹುಟ್ಟುಮಾರಿತನದ. “ಸ್ಪೃಹಯಾಮಿ ಸ್ವಲ್ಪ ದ್ರುಲಲಿತಾಯಾಸ್ಮಿ” ಶಾಕುಂ ೭ | 4. ಬಹಳ ಮುದ್ದಾಗಿ ಪ್ರೀತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಹಳ ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಕಾಣಲ್ಪಟ್ಟ. “ಬಹು ಕುಸುಮಿತಾಸ್ವಪಿ ಸಖೇ ನೋಪವನಲತಾಸು ನಮ್ರವಿವಿಧಾಸು | ಚಕ್ಷು-ಬಂಧನಾತಿ ಭೃತಿ ತದ್ಭಗನಾಲೋಕದ್ರುಲಲಿತಮ್” ವಿಕ್ರಂ ೨-೮ | “ಹಾ ವತ್ಸ ವೃಷಸೇನ, ಹಾ ಮದಜ್ಜದ್ರುಲಲಿತ, ಹಾ ಗದಾಯುದ್ಧಪ್ರಿಯ ಪ್ರಯಚ್ಛ ಮೇ” ವೇಣೀಂ ೪ |

**ದ್ರುಲಚ ದುರ್ಲಚ (ವಿಂ)** 1. ಹೇಳಲಾಗದ, ಹೇಳಲೂ ಕಷ್ಟವಾದ, ಬಹಳ ಕಷ್ಟದಿಂದ ಹೇಳಬಹುದಾದ. ದುರ್ + ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) “ಯತ್” (೩-೩-೧೨೬) | “ಅಪಿ ವಾಗಧಿಪಸ್ಯ ದ್ರುಲಚಂ ವಚನಂ ತದ್ವಿದಧಿತ ವಿಸ್ಮಯಮ್” ಕಿರಾಂ ೨-೨ | 2. ವಿವರಿಸಲಾಗದ, ವರ್ಣಿಸಲಶಕ್ಯವಾದ, ಹೇಳಲಾಗದ, ಅವಾಚ್ಯವಾದ. “ದ್ರುಲಚಂ ತದಥ ಮಾ ಸಮ ಭೂಮಗ-ಸ್ವವ್ಯಸೌ ಯದಕರಿಣ್ಯದೋಜಸಾ” ಕಿರಾಂ ೧೩-೪೯ |

**ದ್ರುಲಚನ ದುರ್ಲಚನ (ನಂ)** ಕೆಟ್ಟ ಮಾತು, ಬೈಗಳು.

**ದ್ರುಲಚಸ್ ದುರ್ಲಚಸ್ (ನಂ)** 1. ದುರ್ಭಾಷೆ, ಕೆಟ್ಟ ಮಾತು, ಬೈಗಳು. ದುಷ್ಟ ವಚಃ | “ಅಸಹ್ಯಂ ದ್ರುಲಚೋ ಜಾತೇರ್ಮಾ-ನ್ತರಿತರೋದ್ರವತ್” ತದ್ಭಂ | (ವಿಂ) 2. ದುರ್ಭಾಷೆ ಯಾಡುವ, ಕೆಟ್ಟ ಮಾತುಗಳನ್ನಾಡುವ, ಬಿರಂಸುಮಾತನ್ನಾಡುವ. ದುಷ್ಟ ವಚೋಽಸ್ಯ |

**ದ್ರುಲಂ ದುರ್ಲಂ (ಪುಂ)** 1. ಕೆಟ್ಟ ಬಣ್ಣ. ದುಷ್ಟೋ ವರ್ಣಃ | (ನಂ) 2. ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ. ದುಷ್ಟೋ ವರ್ಣೋಽಸ್ಯ | [ಬಣ್ಣದಲ್ಲಿ ಚಿನ್ನಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬೆಳ್ಳಿಯು ಕಿರಿದಾದುದು.] “ತುಚ್ಛ-ಸಂಹಾರಜತರಾಜಿವಿರಾಜಿತಾಸೌ ದ್ರುಲಂಭಿತ್ತಿರಿಹ ಸಾಂದ್ರಸುಧಾ-ಸವರ್ಣಿ” ಮಾಘಂ ೪-೨೮ | (ವಿಂ) 3. ಕೆಟ್ಟ ಬಣ್ಣವಳ್ಳ, ಕಂದುಬಣ್ಣದ.

**ದ್ರುಲಹ ದುರ್ಲಹ (ವಿಂ)** ವಹಿಸಲಶಕ್ಯವಾದ. ಮಾರಲಾಗದ, ಬಹಳ ಭಾರವಾದ. ದುಃಖೇನ ಲಹ್ಯತೇ - ದುರ್ + ಲಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ)



“ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬)। “ಪ್ರಾಪ್ಯ ಮನ್ಮಥರಸಾದತಿಮುಮಿ  
ದುವಹಸ್ತನುರಾ: ಸುರತಸ್ಯ” ಮಾಘಂ ೧೦-೮೦।

ದುವಾಕಿ ದುರ್ವಾಕ್ಯ (ನಂ) ಕೆಟ್ಟ ಮಾತು, ಬೈಗಳು. ದುಷ್ಠ  
ವಾಕ್ಯಮ್।

ದುವಾಕ್ ದುರ್ವಾಚ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಮಾತು. ದುಷ್ಠಾ ವಾಕ್।  
(ವಿಂ) 2. ಕೆಟ್ಟ ಮಾತುಳ್ಳ, ದುರ್ಭಾಷೆಯನ್ನಾಡುವ.  
ದುಷ್ಠಾ ವಾಗಸ್ಯ। “ಅತಿವ ಜಲ್ಪನ್ ದುವಾಚಿ ಭವತಿಹ” ಭಾಂ।

ದುವಾಚ್ಯ ದುರ್ವಾಚ್ಯ (ನಂ) 1. ಅಪವಾದ, ನಿಂದೆ.  
2. ಅಕೀರ್ತಿ. “ಕೃತಾನಿಮಿತ್ತಂ ದುವಾಚ್ಯಂ ಶ್ರುತ್ವಾ ಸ ನ ಭವಿ-  
ಷ್ಯತಿ” ರಾಮಾಂ। (ವಿಂ) 3. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಹೇಳಲ್ಪಡುವ.

ದುವಾದ ದುರ್ವಾದ (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಮಾತು, ದುರ್ಭಾಷೆ.  
2. ಅಕೀರ್ತಿ, ಅಪಯಶಸ್ಸು. ದುಷ್ಠಾ ವಾದ:। 3. ಅಸ  
ಮಂಜಸವಾದ ಮಾತು.

ದುವಾದಿನ್ ದುರ್ವಾದಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಮಾತುಗಳನ್ನಾಡು  
ವವನು. 2. ಅಸಂಬದ್ಧವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವವನು,  
ಅಸಮಂಜಸವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವವನು. ದುಷ್ಠಂ ವದತಿ—  
ದುರ್ + ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಗಿಣಿ:” (೩-೨-೭೮)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಛಿಪ್” (೪-೧-೫)। -ವಾದಿನಿ -ವಾದಿನೀ.

ದುವಾರ ದುರ್ವಾರ (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ,  
ಕಷ್ಟದಿಂದ ತಡೆಯಬಹುದಾದ, ಅಡಗಿಸಲಾಗದ. “ಕಿ  
ಚಾಯಮರಿದುವಾರ: ಪಾಣಿ ಪಾಶ: ಪ್ರವೇತಸ:” ಕುಮಾಂ ೨-೨೧।  
2. ಕಷ್ಟದಿಂದ ನಿವಾರಿಸಬಹುದಾದ. ದುರ್ + ವೃನ್ (ವರಣೆ)  
“ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬)।

ದುವಾರಣ ದುರ್ವಾರಣ (ವಿಂ) ಕಷ್ಟದಿಂದ ತಡೆಯಲ್ಪಡುವ.  
ದು:ಖೇನ ವಾರಣಂ ಯಸ್ಯ। “ಸಂರಂಧ್ರಶ್ಚ ಶರಾನಸ್ಯನ್ ದ್ರೋಣಂ  
ದುವಾರಣಂ ರಣೇ” ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೧೯೩-೩೦।

ದುವಾರ್ತ ದುರ್ವಾರ್ತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಟ್ಟ ಸಮಾಚಾರ. ದುಷ್ಠಾ  
ವಾರ್ತಾ।

ದುವಾಸಿನಾ ದುರ್ವಾಸಿನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಟ್ಟ ಬುದ್ಧಿ, ಕೆಟ್ಟ  
ಬಲವು. ದುಷ್ಠಾ ವಾಸಿನಾ। “ತ್ವತ್ಸಂನಿಕರ್ಷಿತ್ ದುವಾಸಿನೋಪಹರ್ತ-  
ರಸ್ಮದಂತೇವಾಸಿಮಿ: ಕರ್ಮಸು ಶಲ್ಯಾದರೇಭವಿತವ್ಯಮ್” ಪ್ರಬೋಧಂ ೬।

ದುವಾಸಿನ್ ದುರ್ವಾಸಿನ್ (ಪುಂ) 1. ದುರ್ವಾಸಮುನಿ,  
ಅತ್ರಿಮಹರ್ಷಿಯ ಪುತ್ರ. [ಈ ಋಷಿಯು ಪರಶಿವನ  
ಅಂಶದಿಂದ ಅತ್ರಿಮಹರ್ಷಿಗೆ ಅನುಸೂಯಾ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ  
ಜನಿಸಿದನು. “ಮಮಾಂಶಸ್ತು ಕ್ಷಿತಿಸ್ತಲೇ ಮಹಾಭಾಗೋ  
ದ್ವಿಜೋತ್ತಮ:। ದುವಾಸಾ ಇತಿ ವಿಖ್ಯಾತ: ಸ ಹಿ ತ್ವಾಂ  
ಯಜಯಿಷ್ಯತಿ” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೪೯-೫೪। “ಅತ್ರೇ:  
ಪಲ್ಯನಸುಯಾ ತ್ರಿನ್ ಜಜ್ಞೇ ಸುಯಶಸ: ಸುತಾನ್। ದತ್ತಂ ದುವಾಸಿನ್

ಸೋಮಮಾತಮೇಶಬ್ರಹ್ಮಸಂಬವಾನ್” ಭಾಗಂ ೪-೧-೧೫। ರುದ್ರಾಂಶ  
ಸಂಭೂತನಾದ ದುರ್ವಾಸಋಷಿಯು ಬಹಳ ಕೋಪದ  
ಸ್ವಭಾವದವನು. ಒಂದು ದಿನ ದೇವಲೋಕದಲ್ಲಿ ದೊರೆತ  
ಒಂದು ಪುಷ್ಪಮಾಲೆಯನ್ನು ಐರಾವತದ ಮೇಲೆ ಹೋಗು  
ತ್ತಿದ್ದ ಇಂದ್ರನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟಾಗ ಇಂದ್ರನು ಅದನ್ನು ಆನೆಯ  
ತಲೆಯ ಮೇಲೆ ಎಸೆದನು. ಆನೆಯು ಅದನ್ನು ತೆಗೆದು  
ನೆಲಕ್ಕೆ ಎಸೆಯಲು ಋಷಿಯು ಕೋಪಗೊಂಡು ಇಂದ್ರನ  
ಸಂಪತ್ತೆಲ್ಲವೂ ನಾಶವಾಗಲಿ ಎಂದು ಶಾಪವಿತ್ತನು.  
ವಿಷ್ಣುಪುಂ। ಒಂದು ಸಲ ಕುಂತಿಯ ಸೇವೆಯಿಂದ ಸಂತುಷ್ಟ  
ನಾದ ದುರ್ವಾಸ ಋಷಿಯು ಅವಳಿಗೆ ಮಂತ್ರೋಪದೇಶ  
ಮಾಡಿದನು. ಅದರಿಂದ ಕುಂತಿಯು ಧರ್ಮರಾಜ ಭೀಮ  
ಅರ್ಜುನರನ್ನೂ ಮಾದ್ರಿಯು ನಕುಲ ಸಹದೇವರನ್ನೂ  
ಪಡೆದರು. ಭಾಂ ಆದಿಂ। ಏಕಾದಶೀ ವ್ರತವನ್ನು  
ಆಚರಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಅಂಬರೀಷ ಮಹಾರಾಜನ ನಿಯಮವನ್ನು  
ಭಂಗಗೊಳಿಸಬೇಕೆಂದು ಯೋಚಿಸಿ ದುರ್ವಾಸ ಋಷಿಯು  
ಅವನಲ್ಲಿ ಅಪರಾಧಮಾಡಿ ವಿಷ್ಣುವಿನ ಚಕ್ರಾಯುಧಕ್ಕೆ ಸಿಕ್ಕಿ  
ಕೊಂಡು ಕೊನೆಗೆ ಅಂಬರೀಷನನ್ನೇ ಮರೆಹೊಕ್ಕು ತಪ್ಪಿಸಿ  
ಕೊಂಡನು. ಭಾಗಂ ೯-೪। ಪಾಂಡವರು ವನವಾಸಕಾಲ  
ದಲ್ಲಿ ಅಕ್ಷಯಪಾತ್ರೆಯ ಮಹಿಮೆಯಿಂದ ಸೌಖ್ಯವಾಗಿರುವು  
ದನ್ನು ತಿಳಿದು ದುರ್ಯೋಧನನು ದ್ರೌಪದಿಯ ಭೋಜನ  
ವಾದನಂತರ ಭಿಕ್ಷೆ ಬೇಡಿ ಅವರಿಗೆ ಶಾಪಕೊಟ್ಟು ಬರಬೇ  
ಕೆಂದು ದುವಾಸ ಋಷಿಯನ್ನು ಕಳುಹಿಸಿದನು. ಆದರೆ  
ಅಪದ್ಬಾಂಧವನಾದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಕರುಣೆಯಿಂದ ಶಿಷ್ಯ  
ರೊಡನೆ ಹೋಗಿದ್ದ ಈ ಋಷಿಗೆ ಭೋಜನ ಸಂತೃಪ್ತಿ  
ಯುಂಟಾಗಿ ಈ ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾಂಡವರೂ ಪಾರಾದರು.  
ಭಾಂ ವನಂ।] ಇತ್ಯಾದಿ. (ವಿಂ) 2. ಮಲಿನವಾದ  
ಮತ್ತು ಹರುಕುವಸ್ತುವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ.

ದುವಿಗಾಹ ದುರ್ವಿಗಾಹ (ಪುಂ) 1. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ  
ಮಗ. “ದುರ್ಮದೋ ದುವಿಗಾಹಶ್ಚ ವಿವಿತ್ಸುರ್ವಿಕೃತಾನನ:” ಭಾಂ  
ಆದಿಂ। (ವಿಂ) 2. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಇಳಿಯಲ್ಪಡುವ, ಇಳಿ  
ಯಲು ಬಹಳ ಕಷ್ಟವಾದ (ನದಿ ಕೆರೆ ಮುಂತಾದುವು).  
ದು:ಖೇನ ವಿಗಾಹ್ಯತೇ—ದುರ್ + ವಿ + ಗಾಹ್ (ವಿಲೋಡನೆ) “ಖಲ್”  
(೩-೩-೧೨೬)।

ದುವಿಗಾಹ್ಯ ದುರ್ವಿಗಾಹ್ಯ (ವಿಂ) “ದುವಿಗಾಹ” ಪದದ  
ಅರ್ಥ. ದುರ್ + ವಿ + ಗಾಹ್ (ವಿಲೋಡನೆ) “ಯತ್”  
(೩-೧-೧೨೪)।

ದುವಿಚಿಂತಿತ ದುರ್ವಿಚಿಂತಿತ (ನಂ) ಕೆಟ್ಟ ಆಲೋಚನೆ,  
ಕಡಕುಮಾಡುವ ಆಲೋಚನೆ. ದುಷ್ಠಂ ವಿಚಿಂತಿತಮ್। “ದು:ಸ್ವಪ್ನ-  
ದುವಿಚಿಂತಿತದುಃಪ್ರೇಕ್ಷಿತದುಃಕೃತಾನಿ ಕರ್ಮಾಣಿ” ಬೃಹತ್ಸಂ ೨-೨೧।



**ದ್ವಿವಿಚಿನ್ಯ ದುರ್ವಿಚಿಂತ್ಯ** (ವಿಂ) ಉಪಿಸಲೂ, ಕಲ್ಮ  
ನಗೂ ಸಿಲಕದ, ಯೋಚಿಸಲೂ ಕಷ್ಟವಾದ.

**ದ್ವಿವಿರ್ದಧ ದುರ್ವಿದಗ್ಧ** (ವಿಂ) 1. ಅವಿವೇಕ, ಮೂರ್ಖ.  
2. ಗರ್ವದಿಂದ ಕೊಪ್ಪಿರುವ. "ಜ್ಞಾನಲವದ್ವಿರ್ದಧಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಪಿ  
ನರಂ ನ ರಂಜಯತಿ" ಷ್ತುಂ ೧-೩. 3. ವ್ಯರ್ಥವಾಗಿ  
ಅಹಂಕಾರಪಡುವ. "ಅರೆ ರೇ ವಾಚಾಢ, ವೃಥಾಶಸ್ತ್ರಗ್ರಹಣ-  
ದ್ವಿವಿರ್ದಧ" ವೇಣೀಂ ೩.

**ದ್ವಿವಿಠ ದುರ್ವಿಠ** (ವಿಂ) 1. ದಂದಿ, ಬಡವ. ದುಃಸ್ಯಾ ವಿಠಾ  
ಪ್ರಕಾರ: ಸಮೃದ್ಧಿರ್ವಾ ಯಸ್ಯ. "ಅಪಿ ಸ್ವಜನಮಂಜನಾಶ್ಚಿತೇ  
ವಿರ್ದಧಾತೇ ರುಚಿಗರ್ವದ್ವಿವಿಠಮ್" ನೆಪಂ ೨-೨೩. 2. ನೀಚ,  
ದುಷ್ಟ, ದುರ್ಜನ. 3. ಮೂರ್ಖ, ಅಜ್ಞ, ತಿಳಿಗೇಡಿ.  
"ಶಾಸ್ತ್ರೇಷ್ವನ್ಯೇಷು ಮುಖ್ಯೇಷು ವಿಜ್ಞಮಾನೇಷು ದ್ವಿವಿಠಾಃ. ಬುದ್ಧಿ-  
ಮಾನ್ವೀಕ್ಷಿಕೀಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ನಿರರ್ಥಾನ್ ಪ್ರವದಂತಿ ತೇ" ರಾಮಾಂ. 1.  
"ದ್ವಿವಿಠೋ ವಾಚ್ಯಲಿಙ್ಗ: ಸ್ಯಾತ್ ದುರ್ಗತೇಽಪಿ ಖಲೇಽಪಿ ಚ"  
ಮೇದಿಂ.

**ದ್ವಿವಿನಯ ದುರ್ವಿನಯ** (ವುಂ) ಅವಿವೇಕ, ಉದ್ವಿಟತನ.  
ದುರ್+ವಿ+ಣಿಲ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) ಭಾವೆ "ಅಚ್" (೩-೩-೪೬).  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪). -ವಿನೀತಿ: -ವಿನೀತಿ:

**ದ್ವಿವಿನೀತ ದುರ್ವಿನೀತ** (ವುಂ) 1. ಪಳಗಿಸದ ಕುದುರೆ,  
ಅವಿಧೇಯ ಕುದುರೆ. ದುಃಖೇನ ವಿನೀಯತೇ-ದುರ್+ವಿ+ಣಿಲ್  
(ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ  
"ಜಿಷ್" (೪-೧-೬೩). (ವಿಂ) 2. ಅವಿಧೇಯ, ವಿನಯ  
ವಿಲ್ಲದವನು. "ಅನುತ್ಥಾನವತಾ ಚಾಪಿ ದ್ವಿವಿನೀತೇನ ದ್ವಿವಿಠಾ"  
ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೩೪-೧೧.

**ದ್ವಿವಿಭಾವ ದುರ್ವಿಭಾವ** (ವಿಂ) ಯೋಚಿಸಲೂ ಸಾಧ್ಯ  
ವಿಲ್ಲದ, ಉಪಿಸಲೂ ಅಶಕ್ಯವಾದ. ದುಃಖೇನ ವಿಭಾವ್ಯತೇ-  
ದುರ್+ವಿ+ಭೂ+ಣಿಲ್ "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬). "ಅಸ-  
ದೃತ್ತೇರಹೋವೃತ್ತಂ ದ್ವಿವಿಭಾವಂ ವಿವೇರೀವ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೪೬.

**ದ್ವಿವಿಮೋಚನ ದುರ್ವಿಮೋಚನ** (ವುಂ) 1. ದೃಢರಾಷ್ಟ್ರನ  
ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಚಿತ್ರಬಾಹುಶ್ಚಿತ್ರವರ್ಮಾ ಸುರ್ಮಾ ದ್ವಿವಿಮೋಚನ:"  
ಭಾಂ ಆದಿಂ. (ವಿಂ) 2. ಬಹಳ ಕಷ್ಟದಿಂದ ಬಿಡಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ, ಬಿಡಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ.

**ದ್ವಿವಿಲಸಿತ ದುರ್ವಿಲಸಿತ** (ನಂ) ದುಷ್ಟತನ, ಪುಂಡುತನ,  
ಕೀಟಲೆ. ದುಷ್ಟಂ ವಿಲಸಿತಮ್. "ಸರ್ವಮೇತನ್ಮಹಾಮೋಹಸ್ಯ  
ದ್ವಿವಿಲಸಿತಮ್" ಪ್ರಬೋಧಂ ೬.

**ದ್ವಿವಿವಾಹ ದುರ್ವಿವಾಹ** (ವುಂ) ನಿಂದಿತವಾದ ವಿವಾಹ,  
ಆಸುರ ರಾಕ್ಷಸ ಗಾಂಧರ್ವ ಮತ್ತು ಪೈಶಾಚ ವಿವಾಹ.  
ದುಷ್ಟ: ನಿಂದಿತ: ವಿವಾಹ: "ಜಾಯಂತೇ ದ್ವಿವಿವಾಹೇಷು ಬ್ರಹ್ಮಾಧಮ್-

ದ್ವಿವಿ: ಸುತಾ:" ಮನುಂ ೩-೪೧. ಅಷ್ಟವಿಧ ವಿವಾಹಗಳಲ್ಲಿ  
ಪ್ರಾಹ್ಮ ದೈವ ಅರ್ಪ ಮತ್ತು ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯ ಈ ನಾಲ್ಕು  
ಮಾತ್ರ ಪ್ರಶಸ್ತ ಮತ್ತು ಶಾಸ್ತ್ರೀಯ. ಉಳಿದ ನಾಲ್ಕು  
ದುರ್ವಿವಾಹಗಳು.

**ದ್ವಿವಿಷ ದುರ್ವಿಷ** (ವುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ದುಃಸ್ಥಿತಂ  
ವಿಷಮಸ್ಯ. "ದುರ್ದೈವೋ ದುಃಪ್ರಕಾಶಾಶ್ಚ ದ್ವಿವಿಠೋ ದುರ್ಜಯೋಜಯ:"  
ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೨೯೦-೧೪೭.

**ದ್ವಿವಿಠ ದುರ್ವಿಠ** (ವುಂ) 1. ದೃಢರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.  
"ದುರ್ಯೋಧನೋ ದ್ವಿವಿಠೋ ದುರ್ಮುಖೋ ದುಃಪ್ರಭರ್ಷಣ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ  
೨೦೧-೧. 2. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. "ದುರ್ವಿಠೋ  
ದ್ವಿವಿಠೋ ದುಃಸ್ಥಿತೋ ದುರತಿಕ್ರಮ:" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ. (ವಿಂ)  
3. ಸಹಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಸಹಿಸಬಹುದಾದ.  
ದುರ್+ವಿ+ಠ (ಮರ್ಷಣೆ) "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬).

**ದ್ವಿವೃತ್ತ ದುರ್ವೃತ್ತ** (ನಂ) 1. ದುರಾಚಾರ, ಕೆಟ್ಟ ನಡವಳಿಕೆ,  
ಅಯೋಗ್ಯ ಕೆಲಸ, ಅಸಭ್ಯ ವ್ಯಾಪಾರ. ದುಷ್ಟಂ ವೃತ್ತಮ್.  
"ದ್ವಿವೃತ್ತಂ ಧಾರ್ತರಾಷ್ಟ್ರಾಣಾಮುಕ್ತವಾನ್ ಭಗವಾನೃಷಿ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ  
೧-೭೬. (ವಿಂ) 2. ನೀಚ, ಅಸಭ್ಯ, ದುರ್ಜನ. ದುಷ್ಟಂ  
ವೃತ್ತಂ ಯಸ್ಯ. "ಚಾತತಸ್ಕರದ್ವಿವೃತ್ತಮಹಾಸಾಹಸಿಕಾದಿಭಿ:"  
ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೩೩೬.

**ದ್ವಿಹಂ ದುರ್ಹಂ** (ವಿಂ) ಕೊಲ್ಲಲು ಅಶಕ್ಯನಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ  
ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಡುವ. ದುಃಖೇನ ಹನ್ಯತೇ-ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:)  
"ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬). "ಪ್ರಕಲ್ಪಸ್ಯತಿ ಚ ತಸ್ಯಾರ್ಥೋ  
ನಿಕ್ರುಮ್ನೇ ದ್ವಿಹಂ ಹತೇ" ಭದ್ರಿಂ ೧೬-೧೧.

**ದ್ವಿಹಂತ ದುರ್ಹಂತ** (ನಂ) ಅಶಾಸ್ತ್ರೀಯವಾಗಿ ಮಾಡಿದ  
ಹೋಮ, ಯಾವ ಫಲವನ್ನೂ ಕೊಡದ ಹೋಮ. ದುಷ್ಟಂ  
ನಿಂದಿತಂ ಹಂತಮ್. "ಏತೇಷು ದಕ್ಷಿಣಾ ದತ್ತಾ ದಾವಾಗ್ನಾವಿವ  
ದ್ವಿಹಂತಮ್" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೧೮-೨೪.

**ದ್ವಿಹೃದ್ ದುರ್ಹೃದ್** (ವುಂ) 1. ವೈರಿ, ಶತ್ರು. ಹಗೆ. ದುಷ್ಟಂ  
ಹೃದಯಮಸ್ಯ-ಹೃದಯಸ್ಯ ಹೃದ್ಭಾವ: (೪-೪-೧೪೦). ನಿಪಾಂ.  
"ಕೀರ್ತಿ ಸುತೇ ದ್ವಿಹೃದೋ ನಿಷ್ಪ್ರಲಾಂತಿ" ತಂ ರಾಂ ೪-೩೦.  
(ವಿಂ) 2. ಕೆಟ್ಟ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ನೀಚವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ.  
ದುಷ್ಟಂ ಹೃದಯಮ್. "ಅಶಮಸಾರಮಯಂ ನೂನಂ ಹೃದಯಂ ಮಮ ದ್ವಿಹೃದ:"  
ಭಾಂ ವನಂ ೩೧೪-೧೨.

**ದ್ವಿಹೃದಯ ದುರ್ಹೃದಯ** (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಮನಸ್ಸು. ದುಷ್ಟಂ  
ಹೃದಯಮ್. (ವಿಂ) 2. ಕೆಟ್ಟ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ನೀಚವಾದ  
ಹೃದಯವುಳ್ಳ. ದುಷ್ಟಂ ಹೃದಯಂ ಯಸ್ಯ.

**ಬುಲ-ತತ್ಸೇ** (ಚುರಾಂ ತಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ). ದೋಲಯತಿ, -ತೇ.  
ದೋಲಯೇತ್, -ತ. ಅದ್ಬುಲಯೇತ್, -ತ. ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ



ಎತ್ತು. 2. ಅಲ್ಲಿಂದಿಲ್ಲಿಗೆ ಚಲಿಸು, ಅಕಡೆಯಿಂದ ಈಕಡೆಗೆ ಅಡುತ್ತಿರು.

ದ್ರುಲಿ ದುಲಿ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಪುಷ್ಪ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಹೆಣ್ಣು ಆಮೆ. (ವಿಂ) 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವ. ದ್ರುಲ (ಉತ್ಕೇಪೇ) "ಇನ್" (ತಂ ೪-೧೨೦)। "ದ್ರುಲಿ: ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್। ಕಮಠಾಂ ನಾ ಮನು" ಮೇದಿಂ।

ದ್ರುಶ್ವರ ದುಶ್ವರ (ಪುಂ) 1. ಭಲ್ಲೂಕ, ಕರಡಿ. 2. ಕಪ್ಪೆಚಿಪ್ಪು. ದ್ರುಷ್ಠಂ ಚರತಿ - ದ್ರುಸ್ + ಚರ (ಗತಿಭಕ್ಷಣಯೋ:) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। (ವಿಂ) 3. ಅಜರಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಮಾಡಲು ಕಷ್ಟವಾದ. ದ್ರು:ಖೇನ ಚರತೇ - ದ್ರುಸ್ + ಚರ "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬)। "ಸ್ಥಾನೇ ತಪೋ ದ್ರುಶ್ವರಮೇತದರ್ಶಮರ್ಪಣಯಾ ಪೇಲವಯಾಪಿ ತಪ್ತಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೬೫।

ದ್ರುಶ್ವರಿತ ದುಶ್ವರಿತ (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಕಾರ್ಯ, ಅಕಾರ್ಯ, ಪಾಪಕಾರ್ಯ. ದ್ರುಷ್ಠಂ ಚರಿತಮ್। "ಇಹ ದ್ರುಶ್ವರಿತೈ: ಕೇಚಿತ್ ಕೇಚಿತ್ ಪೂರ್ವಕೃತೈರತಥಾ। ಪ್ರಾಪ್ನುವಂತಿ ದುರಾತ್ಮಾನೋ ನರಾ ರೂಪವಿಪರ್ಯಯಮ್" ಮನುಂ ೧೧-೪೮। (ವಿಂ) 2. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ದ್ರು:ಖೇನ ಚರಿತಮ್। 3. ಪಾಪಕಾರ್ಯವುಳ್ಳ, ಕೆಟ್ಟ ಕೆಲಸಮಾಡಿದ. ದ್ರುಷ್ಠಂ ಚರಿತಂ ಯಸ್ಯ। "ಉಪಾಗಮೇ ದ್ರುಶ್ವರಿತಾ ಇವಾಪದಾಂ ಗತಿಂ ನ ನಿಶ್ಚೇತುಮಲಂ ಶಿಲೀಮುಖಾ:" ಕಿರಾಂ ೪-೩೫।

ದ್ರುಶ್ವರ್ಮಕ ದುಶ್ವರ್ಮಕ (ನಂ) ಕುಷ್ಠರೋಗ.

ದ್ರುಶ್ವರ್ಮನ್ ದುಶ್ವರ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಕುಷ್ಠರೋಗ, ಶ್ವೇತ. (ವಿಂ) 2. ಮೇಲಿನ ಚರ್ಮವಿಲ್ಲದ ಲಿಂಗವುಳ್ಳವನು. "ಹಿಮಹಾರಿ ತು ಕುನಕೀ ದ್ರುಶ್ವರ್ಮಾ ಗುರುತಲ್ಪಗ:" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೨೦೧।

ದ್ರುಶ್ವಾರಿತ್ರ ದುಶ್ವಾರಿತ್ರ (ನಂ) "ದ್ರುಶ್ವಾರಿತ್ರ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಚರಿತ್ರಮೇವ - ಸ್ವಾಯೇ "ಅನ್" (೫-೪-೩೮)। ದ್ರುಷ್ಠಂ ಚಾರಿತ್ರಮ್। (ವಿಂ) ದ್ರುಷ್ಠಂ ಚಾರಿತ್ರಮಸ್ಯ ವಾ।

ದ್ರುಶ್ವಿಕಿತ್ಸ್ಯ ದುಶ್ವಿಕಿತ್ಸ್ಯ (ವಿಂ) ಕಷ್ಟದಿಂದ ಚಿಕಿತ್ಸೆಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಚಿಕಿತ್ಸೆ (ರೋಗ ಪ್ರತಿಹಾರ) ಮಾಡಲು ಕಷ್ಟವಾದ. ದ್ರುಸ್ + ಕಿತ್ (ನಿವಾಸೇ ರೋಗಾಪನಯನೇ ಚ) + ಸನ್ ಕರ್ಮಂ "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)।

ದ್ರುಶ್ವಿಕೃ ದುಶ್ವಿಕೃ (ನಂ) ಲಗ್ನದಿಂದ ಮೂರನೆಯ ರಾಶಿ. "ತ್ರಿ ತ್ರಿಕೋಣಶ್ಚ ನವಧಾ ದ್ರುಶ್ವಿಕೃಯಂ ಸ್ಯಾತ್ ತೃತೀಯಕಮ್"।

ದ್ರುಶ್ವೇಷಿತ ದುಶ್ವೇಷಿತ (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಕೆಲಸ, ಅಯೋಗ್ಯ ಕೆಲಸ. ದ್ರುಷ್ಠಂ ಶೇಷಿತಮ್। (ವಿಂ) 2. ಕೆಟ್ಟ ಕೆಲಸವುಳ್ಳ, ಅಯೋಗ್ಯ ಕೆಲಸಮಾಡುವ, ಹಿಂಸೆಯ ಕಾರ್ಯವುಳ್ಳ. ದ್ರುಷ್ಠಂ ಶೇಷಿತಂ ಯಸ್ಯ। "ದ್ರುಶ್ವೇಷಿತೇ ದೇವರಿಪೌ ಸರೋಪಸ್ತಸ್ಯಾ-ವಿಷಣ್ಣಾ: ಸಮರಾಯ ಚೌತಕ:" ಕುಮಾಂ ೧೩-೩೭।

ದ್ರುಶ್ವಯವನ ದುಶ್ವಯವನ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. ದ್ರುಷ್ಠೇಽಪ್ಯು ಚಯನಮಸ್ಯ, ದ್ರು:ಖೇನ ಚಯನಂ ಚಾಲನಮಸ್ಯ ವಾ। ಬಹಳ ದೀರ್ಘಕಾಲದ ಪದವಿಯಾದುದರಿಂದ ಆ ಪದವಿಯಲ್ಲಿರುವ ಇಂದ್ರನಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು. (ವಿಂ) 2. ಕದಲಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಕದಲಿಸಬಹುದಾದ. ದ್ರುಸ್ + ಚ್ಯುಡ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)।

ದ್ರುಶ್ವಯಾವ ದುಶ್ವಯಾವ (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. (ವಿಂ) 2. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಕದಲಿಸಲ್ಪಡುವ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಕದಲಿಸಬಹುದಾದ. ದ್ರು:ಖೇನ ಚಾವ್ಯತೇ - ದ್ರುಸ್ + ಚ್ಯುಡ್ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬)।

ದ್ರುಶ್ವಯ ದುಶ್ವಯ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಕಾವ್ಯದೋಷ. ಕೇಳಲು ಕಷ್ಟವಾದ ಕಠಿನ ವರ್ಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕಾವ್ಯದ ಒಂದು ದೋಷ. ದ್ರುಸ್ + ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೇ) "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬)। "ಪರೂಪವರ್ಣತಯಾ ಶ್ರುತಿರ್ದು:ಖಾವಹತ್ವಂ ದ್ರು:ಶ್ವಯತ್ವಮ್" ಸಾಂ ೬೦। "ಸ್ಮರಾತ್ಯನ್ವ: ಕದಾ ಲಪ್ಸ್ಯೇ ಕಾರ್ತಾರ್ಯಿ ವಿರಹೇ ತವ" ಈ ವಾಕ್ಯವು ಅನೇಕ ಪರೂಪವರ್ಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ ದು:ಶ್ವಯತ್ವರೂಪವಾದ ಕಾವ್ಯದೋಷವಿರುವುದು.

ದ್ರುಷ - ದ್ರುಷ್ಯತೇ (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ)। ದ್ರುಷ್ಯತಿ। ದ್ರುದೋಷ। ದ್ರುಷ್ಠಾ। ದ್ರುಷ್ಯತಿ। ದ್ರುಷ್ಯತು। ಅದ್ರುಷ್ಯತ್। ದ್ರುಷ್ಯೇತ್। ದ್ರುಷ್ಯಾತ್। ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ವಿಕಾರಹೊಂದು, ಕೆಟ್ಟುಹೋಗು. "ದುರಾರೋಹಂ ಪದಂ ರಾಜಾಂ ಸರ್ವಲೋಕನಮಸ್ಕೃತಮ್। ಸ್ವಲ್ಪೇನಾಪ್ಯಪ-ಕಾರೇಣ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ್ಯಮಿವ ದ್ರುಷ್ಯತಿ" ಪञ्ಚತಂ ೧-೭೨। 2. ಅಶುದ್ಧವಾಗು, ಅಪವಿತ್ರವಾಗು. "ಪವಿತ್ರಂ ದ್ರುಷ್ಯತೀ-ತ್ಯೇತದ್ಧರ್ಮತೋ ನೋಪಪದತೇ" ಮನುಂ ೧೦-೧೦೨।

ಭಾವೇ:-ದ್ರುಷ್ಯತೇ। ದ್ರುಷುಃ। ದ್ರುಷ್ಠಾ। ದ್ರುಷ್ಯತೇ। ದ್ರುಷ್ಯತಾಮ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗಿಣಿ:-ದ್ರುಷ್ಯತಿ, -ತೇ। ಚಿತ್ತವಿರಾಗ (ಅಪ್ರೀತಿ) ರೂಪಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ವಿಕಲ್ಪವಾಗಿ ಉಪಧಾದೀರ್ಘಬರುವುದು. ಚಿತ್ತಂ ದ್ರುಷ್ಯತಿ ದೋಷಯತಿ ವಾ ಕಾಮ:।

ಕೃತ್ಸು:-ದ್ರುಷ್ಯವ್ಯಮ್। ದೋಷಣೀಯಮ್। ದೋಷ್ಯಮ್। ದ್ರುಷ್ಠಮ್। ದ್ರುಷ್ಠವಾನ್, -ವತೀ। ದ್ರುಷ್ಯನ್, -ಂತೀ। ದ್ರುಷ್ಠಮ್। ದ್ರುಷ್ಠಮ್। ದೋಷಣಮ್। ದ್ರುಷ್ಠವಾ। ಪ್ರದ್ರುಷ್ಯ।

(ಋತ್ವಪಕ್ಷೇ) ಣ್ಯಂತಾತ್ ಕೃತ್ಸು:-ದ್ರುಷ್ಯತವ್ಯ:। ದ್ರುಷ್ಯಣೀಯ:। ದ್ರುಷ್ಯ:। ದ್ರುಷಿತ:। ದ್ರುಷಿತವಾನ್, -ವತೀ। ದ್ರುಷ್ಯನ್, -ಂತೀ। ದ್ರುಷ್ಯಮಾನ:। ದ್ರುಷ್ಯತುಮ್। ದ್ರುಷಿತಮ್। ದ್ರುಷಣಮ್। ದ್ರುಷ್ಯಿತ್ವಾ।

ದ್ರುಷ್ಕರ ದುಷ್ಕರ (ನಂ) 1. ಬಹಳ ಕಷ್ಟದಿಂದ ಕೆಲಸಮಾಡುವುದು. ದ್ರುಸ್ + ಡ್ ಕೃಜ್ (ಕರಣೇ) ಭಾವೇ "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬)।



(ವಿಂ) 2. ಮಾಡಲು ಅಶಕ್ತವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಮಾಡಬಹುದಾದ, ದುಃಖದಿಂದ ಕ್ರಿಯತೆ—ದುಸ್ + ಕೃ (ಕರಣಂ) "ಕಲ್" (೩-೩-೧೨೬)। "ದುಷ್ಕರಂ ಕೃತವಾನ್ ರಾಮೋ ಹೀನೋ ಯದನಯಾ ಪ್ರಭುಃ" ರಾಮಾಂ ।

ದುಷ್ಕರ್ಣ ದುಷ್ಕರ್ಣ (ಪುಂ) ದೃಢರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

ದುಷ್ಕರ್ಮನ್ ದುಷ್ಕರ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟಕೆಲಸ, ಪಾಪಕಾರ್ಯ, ಅಕಾರ್ಯ. ದುಷ್ಠ ಕರ್ಮ। "ದುಷ್ಕರ್ಮಜಾ ನೃಣಾಂ ರೋಗಾಃ ಯಾಂತಿ ಚೈವ ಕ್ರಮಾಚ್ಛಮಮ್। ಜಪಃ ಸುರಾರ್ಚನಾಹೊಮಃ ದಾನೇಸ್ತೇಷಾಂ ಕ್ಷಯೋ ಭವೇತ್"। (ವಿಂ) 2. ಪಾಪಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವವನು. ದುಷ್ಠ ಕರ್ಮ ಧರ್ಮ। "ತತೋ ವಸತಿ ದುಷ್ಕರ್ಮಾ ನರಕೇ ಶಾಶ್ವತೀಃ ಸಮಾಃ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೩೨-೨೦ ।

ದುಷ್ಕಾಲ ದುಷ್ಕಾಲ (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟಕಾಲ, ಕಷ್ಟದ ಕಾಲ. ದುಷ್ಠಃ ಕಾಲಃ। "ದುಷ್ಕಾಲೇಽಪಿ ಕಲಾವಸಜ್ಜನರಶ್ಚೌ ಪ್ರಾಣಿಃ ಪರಂ ರಕ್ಷತಾ" ಮುದ್ರಾಂ ೭-೫ । 2. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 3. ಪ್ರಳಯ.

ದುಷ್ಕೀರ್ತಿ ದುಷ್ಕೀರ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಪಕೀರ್ತಿ, ಅಪಯಶಸ್ಸು, ಕೆಟ್ಟ ಹೆಸರು. ದುಷ್ಠಾ ಕೀರ್ತಿಃ। (ವಿಂ) 2. ಅಪಕೀರ್ತಿಯುಳ್ಳವನು, ಕೆಟ್ಟ ಹೆಸರು ಪಡೆದವನು. ದುಷ್ಠಾ ಕೀರ್ತಿಯಸ್ಯ ।

ದುಷ್ಕುಲ ದುಷ್ಕುಲ (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟವಂಶ, ಕೆಟ್ಟ ಮನೆತನ. ದುಷ್ಠಂ ಕುಲಮ್। "ಅನ್ಯಾದಪಿ ಪರಂ ಧರ್ಮಂ ಸ್ತ್ರೀರಲಂ ದುಷ್ಕುಲಾದಪಿ" ಮನುಂ ೨-೨೩೮ । (ವಿಂ) 2. ನೀಚವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ದುಷ್ಠಂ ಕುಲಂ ಯಸ್ಯ ।

ದುಷ್ಕುಲೀನ ದುಷ್ಕುಲೀನ (ವಿಂ) ಕೆಟ್ಟವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು, ನೀಚವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ದುಷ್ಕುಲೇ ಜಾತಃ ವಾ "ಕಃ" (೪-೧-೧೩೯) । ಪಕ್ಷ "ಢಕ್" (೪-೧-೧೪೨) । ದೌಷ್ಕುಲೇಯಃ ದುಷ್ಕುಲೇಯಃ। "ದುಷ್ಕುಲೀನಃ ಕುಲೀನೋ ವಾ ಮರ್ಯಾದಾಂ ಯೋ ನ ಲಕ್ಷ್ಯೇತ್। ಧರ್ಮಪೀಕ್ಷಾ ಮೃದ್ವಿಮಾನ್ ಸ ಕುಲೀನಶತಾಹರಃ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೩೯-೪೭ ।

ದುಷ್ಕೃತ ದುಷ್ಕೃತ (ನಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಕೆಲಸ, ನೀಚಕಾರ್ಯ, ಪಾಪಕಾರ್ಯ. ದುಷ್ಠಂ ಕೃತಮ್। "ಯಥಾ ಯಥಾ ಮನಸ್ತಸ್ಯ ದುಷ್ಕೃತಂ ಕರ್ಮ ಗರ್ಹತಿ। ತಥಾ ತಥಾ ಶರೀರಂ ತತ್ತೇನಾಧರ್ಮೇಣ ಮುಚ್ಯತೇ" ಮನುಂ ೧೧-೨೨೯ । 2. ಪಾಪ. "ಬುದ್ಧಿಯುಕ್ತೋ ಜಹಾತೀಹ ಉಭೇ ಸುಕೃತದುಷ್ಕೃತೇ" ಗೀತಾ ೨-೫೦ । "ಸುಕೃತಂ ದುಷ್ಕೃತಂ ಲೋಕೇ ಗಚ್ಛಂತಮನುಗಚ್ಛತಿ" ।

ದುಷ್ಕೃತಿ ದುಷ್ಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಕೆಲಸ, ನೀಚಕಾರ್ಯ, ಪಾಪಕಾರ್ಯ. ದುಷ್ಠಾ ಕೃತಿಃ। (ವಿಂ) 2. ಪಾಪಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವ. ದುಷ್ಠಾ ಕೃತಿಯಸ್ಯ ।

ದುಷ್ಕೃತಿನ್ ದುಷ್ಕೃತಿನ್ (ವಿಂ) ಪಾಪಕಾರ್ಯವುಳ್ಳ. ದುಷ್ಕೃತ-ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಛಿನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) ।

ದುಷ್ಕೃತ್ಯ ದುಷ್ಕೃತ್ಯ (ನಂ) ಕೆಟ್ಟಕೆಲಸ, ನೀಚಕಾರ್ಯ, ಪಾಪಕಾರ್ಯ.

ದುಷ್ಕರ್ಮ ದುಷ್ಕರ್ಮ (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಪದ್ಧತಿ, ವ್ಯವಸ್ಥೆಯಿಲ್ಲದಿರುವುದು. (ವಿಂ) 2. ಅಶ್ರಮವಾದ, ಕ್ರಮಬದ್ಧವಲ್ಲದ, ಕ್ರಮಾನುಸರಣಿಯಿಲ್ಲದ.

ದುಷ್ಕರಿಯಾ ದುಷ್ಕರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಟ್ಟ ಕೆಲಸ, ಪಾಪಕಾರ್ಯ, ಅಕಾರ್ಯ. ದುಷ್ಠಾ ಕರಿಯಾ ।

ದುಷ್ಕೃತ ದುಷ್ಕೃತ (ವಿಂ) ಪರೀಕ್ಷಿಸದೆ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ವಸ್ತುವಿನ ಯೋಗ್ಯತೆ ಮತ್ತು ಕ್ರಿಯದ ಮೊಬಲಗು ಇವನ್ನು ಸರಿಯಾಗಿ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳದೆ ಕೊಳ್ಳುವುದು ದುಷ್ಕೃತವಾಗುವುದು. ದುಷ್ಠಂ ಕೃತಮ್। "ಕೃತ್ವಾ ಮೂಲೇನ ಯೋ ದ್ರವ್ಯಂ ದುಷ್ಕೃತಂ ಮನ್ಯತೇ ಕ್ರಿಯಾ" ।

ದುಷ್ಠ ದುಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಕೆಟ್ಟವನಾದ, ಕೆಟ್ಟದಾದ, ದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ದುಷ್ಠ (ವೈಕಲ್ಯ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) । "ತ್ಯಾಜ್ಯೋ ದುಷ್ಠಃ ಪ್ರಿಯೋಽಪ್ಯಾಸೀದಙ್ಗುಲಿವೋರಾಕ್ಷತಾ" ರಘುಂ ೧-೨೮ । 2. ನೀಚ, ಅಧಮ. 3. ಅಪರಾಧಿ, ತಪ್ಪು ಮಾಡಿದವನು. 4. ಕೊರತೆಯುಳ್ಳ, ದೋಷವುಳ್ಳ. 5. ವ್ಯಭಿಚಾರ ವಿರೋಧ ಸತ್ತ್ವತಪಕ್ಷ ಅಸಿದ್ಧಿ ಮತ್ತು ಬಾಧೆ ರೂಪವಾದ ದೋಷಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ (ಹೇತು, ಹೇತ್ವಾಭಾಸ). (ನಂ) 6. ಕುಷ್ಠರೋಗದ ಒಂದು ಭೇದ.

ದುಷ್ಠಚಾರಿನ್ ದುಷ್ಠಚಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಕೆಟ್ಟಕೆಲಸ ಮಾಡುವ. ದುಷ್ಠಂ ಚರತಿ — ಚರ (ಗತೌ) "ಞಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೫) । —ಚಾರಿಣಿ —ಚಾರಿಣೀ.

ದುಷ್ಠಚೇತಸ್ ದುಷ್ಠಚೇತಸ್ (ವಿಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಕೆಡಕುಮಾಡುವ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ದುಷ್ಠಂ ಚೇತೋ ಯಸ್ಯ । (ನಂ) 2. ಕೆಟ್ಟ ಮನಸ್ಸು, ಕೆಡಕಿನ ಮನಸ್ಸು. ದುಷ್ಠಂ ಚೇತಃ ।

ದುಷ್ಠತಾ ದುಷ್ಠತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. 2. ನೀಚವಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ಅಪರಾಧದಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. 4. ಪಾಪಕಾರ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. ದುಷ್ಠಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) ।

ದುಷ್ಠಬುದ್ಧಿ ದುಷ್ಠಬುದ್ಧಿ, -ಮತಿ -ಮತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಬುದ್ಧಿ, ಕೆಡಕಿನ ಬುದ್ಧಿ. ದುಷ್ಠಾ ಬುದ್ಧಿಃ ಮತಿರ್ವಾ । (ಪುಂ) 2. ಕುಂತಲದೇಶದ ರಾಜನ ಮಂತ್ರಿ. (ವಿಂ) 3. ಕೆಡಕು ಮಾಡುವ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. ದುಷ್ಠಾ ಬುದ್ಧಿಃ ಮತಿರ್ವಾ ಯಸ್ಯ ।

ದುಷ್ಠಯೋಗ ದುಷ್ಠಯೋಗ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಕಂಭ ಮೊದಲಾದ ಇಷ್ಟತ್ರೇಳು ಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ ವೈದೃಢಿ ವ್ಯತಿಪಾತ ಮೊದ



ಲಾದ ಕೆಟ್ಟ ಯೋಗಗಳು. ಈ ದುಷ್ಟಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ ಶುಭಕಾರ್ಯಗಳು ನಿಷಿದ್ಧ.

**ದುಷ್ಠಾತ್ಮನ ದುಷ್ಟಾತ್ಮನ್** (ವಿಂ) ಕೆಡಕಿನ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ, ಇನ್ನೊಬ್ಬರಿಗೆ ಕೇಡೇಸವ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. ದುಷ್ಠ: ಆತ್ಮಾ यस್ಯ |

**ದುಷ್ಠ ದುಷ್ಟ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. ದುಸ್ + ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ್ರು:" (ಛಂ ೧-೨೪) | (ವಿಂ) 2. ಕೆಟ್ಟ ಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರುವ, ಕಷ್ಟ ದೆಸೆಯಲ್ಲಿರುವ. "ಕಥಂ ದುಷ್ಠ: ಸ್ವಯಂ ಧರ್ಮಂ ಪ್ರಜಾಸ್ತ್ವಂ ಪಾಲಯಿಷ್ಯಸಿ" ಮೃತ್ರಿಂ ೬-೧೩೨ | 3. ಅವಿನೀತ.

**ದುಷ್ಪಚ ದುಷ್ಟಚ** (ವಿಂ) ಜೀರ್ಣವಾಗಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ಕಷ್ಟ ದಿಂದ ಪಚನವಾಗುವ. ದು:ಖೇನ ಪಚ್ಯತೇ - ದುಸ್ + ಷ್ಠ ಪಚ (ಪಾಕೇ) "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬) |

**ದುಷ್ಪತನ ದುಷ್ಟತನ** (ನಂ) 1. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಬೀಳುವಿಕೆ. ದು:ಖೇನ ಪತನಮ್ | 2. ಅಪಶಬ್ದ, ವ್ಯಾಕರಣವಿರುದ್ಧವಾದ ಶಬ್ದ. ದುಷ್ಠಂ ಪತತೀನೇನ - ದುಸ್ + ಪಲ್ (ಗತೌ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | ಅಪಶಬ್ದ ಪ್ರಯೋಗದಿಂದ ಪಾಪವುಂಟಾಗುವುದು. "ನಾಪ ಭಾಷಿತ ವೈ ನ ಮ್ಲೇಚ್ಛಿತ ವೈ ಮ್ಲೇಚ್ಛೋ ಹ ವಾ ನಾಮ ಯದಪಶಬ್ದ:" ಶ್ರುತಿ: |

**ದುಷ್ಪತ್ರ ದುಷ್ಟತ್ರ** (ಪುಂ) ಕರಿಯ ಕಚೋರ. ದುಷ್ಠಂ ಪತ್ರಮಸ್ಯ | "ಚಂಡಾ ಧನಹರೀ ಕ್ಷೇಮದುಷ್ಪತ್ರಗಣಹಾಸಕಾ:" ಅಮಂ |

**ದುಷ್ಪರಾಜಯ ದುಷ್ಟರಾಜಯ** (ಪುಂ) 1. ದೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಉಗ್ರಶ್ರವಾ ಉಗ್ರಸೇನ: ಸೇನಾನಿರ್ದುಷ್ಪರಾಜಯ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೩೧-೯ | (ವಿಂ) 2. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಜಯಿಸಲ್ಪಡುವ, ಜಯಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. ದು:ಖೇನ ಪರಾಜೀಯತೇ - ದುಸ್ + ಪರಾ + ಜಿ (ಜಯೇ) "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬) |

**ದುಷ್ಪರಿಗ್ರಹ ದುಷ್ಟರಿಗ್ರಹ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಹೆಂಡತಿ, ದುಷ್ಟ ಭಾರ್ಯೆ. ದುಷ್ಠ: ಪರಿಗ್ರಹ: | (ವಿಂ) 2. ಅಯೋಗ್ಯಳಾದ ಪತ್ನಿಯುಳ್ಳವನು. ದುಷ್ಠ: ಪರಿಗ್ರಹೋ यस್ಯ | 3. ಪರಿಗ್ರಹಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ಸ್ವೀಕರಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. 4. ರಕ್ಷಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ. 5. ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಕಷ್ಟವಾದ. ದು:ಖೇನ ಪರಿಗ್ರಹ್ಯತೇ - ದುಸ್ + ಪರಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬) | "ದುರಾರಾಧ್ಯಾ: ಶ್ರಿಯೋ ರಾಜಾಂ ದುರಾಪ, ದುಷ್ಪರಿಗ್ರಹಾ:" ಪञ್ಚತಂ ೧-೭೩ |

**ದುಷ್ಪಾನ ದುಷ್ಟಾನ** (ನಂ) 1. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಕುಡಿಯುವುದು. ದು:ಖೇನ ಪಾನಮ್ | (ವಿಂ) 2. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಕುಡಿಯಲ್ಪಡುವ. ದು:ಖೇನ ಪೀಯತೇ - ದುಸ್ + ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಯುಕ್" (೩-೩-೧೨೮) | "ದುಷ್ಪಾನ: ಪುಮರೇತೇನ ಕಪಿನಾ ಭೃಕ್ಷಸಂಭೃತ:" ಮೃತ್ರಿಂ ೧-೧೦೮ |

**ದುಷ್ಪುಷ್ಪ ದುಷ್ಟುಷ್ಪ** (ಪುಂ) ಕೆಟ್ಟ ಮನುಷ್ಯ.

**ದುಷ್ಪೂರ ದುಷ್ಟೂರ** (ವಿಂ) 1. ಪೂರಯಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ಪೂರಯಿಸಲು ಅನರ್ಹವಾದ. ದು:ಖೇನ ಪೂಯತೇ - ದುಸ್ + ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೇ) "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬) | "ಆವೃತಂ ಜ್ಞಾನ-ಮೇತೇನ ಜ್ಞಾನಿನೋ ನಿಯತವೇರಿಣಾ | ಕಾಮರೂಪೇಣ ಕೌಂತೇಯ ದುಷ್ಪೂರ-ಗಾಣಲೇನ ಚ" ಗೀತಾ ೩-೩೯ | 2. ವಿಷಯಗಳಿಂದ ತೃಪ್ತಿ ಪಡಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ವಿಷಯೋಪಭೋಗದಿಂದ ತೃಪ್ತಿ ಪಡಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. "ಕಾಮಮಾಶ್ರಿತಯ ದುಷ್ಪೂರಂ ದಮ್ಭಮಾನ-ಮದಾನ್ವಿತಾ:" ಗೀತಾ ೧೬-೧೦ |

**ದುಷ್ಪ್ರಕಾಶ ದುಷ್ಟಪ್ರಕಾಶ** (ವಿಂ) ಅಂಧಕಾರಮಯ, ಕತ್ತಲೆ ಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ದುಷ್ಠ: ಪ್ರಕಾಶೋ ಯತ್ರ | "ಪಾಪಸ್ಯ ಲೋಕೋ ನಿರಯೋ ದುಷ್ಪ್ರಕಾಶೋ ನಿಯತಂ ದು:ಖಂ ಶೋಕಭಯಿಷ್ಠಮೇವ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೭೩-೬೪ |

**ದುಷ್ಪ್ರಕೃತಿ ದುಷ್ಟಕೃತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೆಟ್ಟ ಸ್ವಭಾವ. ದುಷ್ಠಾ ಪ್ರಕೃತಿ: | (ವಿಂ) 2. ಕೆಟ್ಟ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ. ದುಷ್ಠಾ ಪ್ರಕೃತಿ-ಯಸ್ಯ | "ತ್ವಂ ತು ದುಷ್ಪ್ರಕೃತಿರ್ಮೂಢೋ ಮಹಾಯುದ್ಧೇವಕೋವಿದ:" ಭಾಂ ಕರ್ಣಂ ೩೪-೧೪ |

**ದುಷ್ಪ್ರಜಸ್ ದುಷ್ಟಜಸ್** (ವಿಂ) ಕೆಟ್ಟ ಮಕ್ಕಳುಳ್ಳ, ಅಯೋಗ್ಯ ಸಂತಾನವುಳ್ಳ. ದುಷ್ಠಾ ಪ್ರಜಾ ಯಸ್ಯ "ಅಸಿಚ್" (೪-೪-೧೨೨) |

**ದುಷ್ಪ್ರಜಾ ದುಷ್ಟಜಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಟ್ಟ ಸಂತಾನ, ದುಷ್ಟ ಸಂತತಿ.

**ದುಷ್ಪ್ರಜ್ಞಾನ ದುಷ್ಟಜ್ಞಾನ** (ನಂ) 1. ತಪ್ಪು ತಿಳಿವಳಿಕೆ. 2. ಮಂದಬುದ್ಧಿ. ದುಷ್ಠಂ ಪ್ರಜ್ಞಾನಮ್ | (ವಿಂ) 3. ತಪ್ಪು ತಿಳಿವಳಿಕೆಯುಳ್ಳ. 4. ಮಂದಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. ದುಷ್ಠಂ ಪ್ರಜ್ಞಾನಂ ಯಸ್ಯ | 5. ತಿಳಿಯಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಅರಿಯಲು ಕಷ್ಟವಾದ.

**ದುಷ್ಪ್ರವರ್ಷ ದುಷ್ಟವರ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ದೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. (ವಿಂ) 2. ಎದುರಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ಮೇಲೆ ಬೀಳಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. ದುಸ್ + ಪ್ರ + ವಿವೃಣಾ (ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯೇ) "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬) | "ಸಾ ದುಷ್ಪ್ರವರ್ಷಾ ಮನಸಾಪಿ ಹಿಸ್ತೇರಿತದ್ರಿಶೋಭಾಪ್ರಹಿತೇಕ್ಷಣೇನ" ರಘುಂ ೨-೨೭ | 3. ಪರಾಭವಗೊಳಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಲ್ಲದ.

**ದುಷ್ಪ್ರವರ್ಷಣ ದುಷ್ಟವರ್ಷಣ** (ಪುಂ) 1. ದೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. (ವಿಂ) 2. ಎದುರಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ, ಮೇಲೆ ಬೀಳಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ. 3. ಪರಾಭವಗೊಳಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ. ದುಸ್ + ಪ್ರ + ವಿವೃಣಾ ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯೇ "ಯುಕ್" (ವಾಂ ೩-೩-೧೨೮) |

**ದುಷ್ಪ್ರವರ್ತಿಣಿ ದುಷ್ಟವರ್ತಿಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬದನೆ ಗಿಡ. 2. ಹೆಗ್ಗುಳ್ಳದ ಗಿಡ, ಮುಳ್ಳುಬದನೆ ಗಿಡ. ದು:ಖೇನ



ಪ್ರಥಮಸ್ಯಾ: ಅಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) । "ಕೀಪ್" (೪-೧-೪) ।

**ಕುಪ್ರಯುಕ್ತ ದುಷ್ಪ್ರಯುಕ್ತ** (ವಿಂ) ತಪ್ಪಾಗಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಪದ), ವ್ಯಾಕರಣವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಶಬ್ದ). ದಾರವಂ ಪಾತ್ರಂ ಎಂಬಲ್ಲಿ "ವೃದ್ಧಾಚ್ಛ:" (೪-೨-೧೧೪) ಸೂತ್ರದಿಂದ "ಛ:" ಪ್ರತ್ಯಯ ಬರಬೇಕಲ್ಲದೆ ದಾರ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಾರ್ಥದಲ್ಲಿ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) ಪ್ರತ್ಯಯಬರಲು ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ಈ ಪ್ರಯೋಗವು ದುಷ್ಪ್ರಯುಕ್ತ. "ದಾರವಶಬ್ದೋ ಕುಪ್ರಯುಕ್ತ:" ಕಾವ್ಯಾಂ ಸೂಂ ೪-೨-೪೩ ।

**ಕುಪ್ರವೃತ್ತಿ ದುಷ್ಪ್ರವೃತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಟ್ಟ ಸಮಾಚಾರ, ಕೆಟ್ಟ ವಾರ್ತೆ. ದುಷ್ಠಾ ಪ್ರವೃತ್ತಿವಾರ್ತೆ । "ತೇಷಾಂ ಶೂರ್ಣಸೇವಿಕಾ ದುಪ್ರವೃತ್ತಿಹರಾಭವತ್" ರಘುಂ ೧೨-೪೧ ।

**ಕುಪ್ರವೇಶ ದುಷ್ಪ್ರವೇಶ** (ವಿಂ) ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. ದುಷ್ಕರ: ಪ್ರವೇಶೋ ಯತ್ರ । "ಮಹರ್ಷಿ-ಗಣಸಮಾಭಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾ ಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾ ಸಮನ್ವಿತಮ್ । ದುಪ್ರವೇಶಂ ಮಹಾರಾಜ ನರೇಂದ್ರಮಬಹಿಷ್ಕೃತೈ:" ಭಾಂ ವನಂ ೧೪೭-೩೧ ।

**ಕುಪ್ರಹರ್ಷ ದುಷ್ಪ್ರಹರ್ಷ** (ಛಂ) ದೃಢರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

**ಕುಪ್ರಾಪ ದುಷ್ಪ್ರಾಪ** (ವಿಂ) ಹೊಂದಲು ಅಶಕ್ಯನಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಹೊಂದಲು ಸಾಧ್ಯನಾದ. ದು:ಖೇನ ಪ್ರಾಪ್ಯತೇ - ದುಸ್ + ಪ್ರ + ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬) । "ಸಮೀಕ್ಷಿತಸ್ಯಾಪಿ ಸಹತ್ವಸಂಜ್ಞಾದ್‌ದುಪ್ರಾಪಲೋಭಾದಪಿ ದ್ವಯಮಾನಾ" ಯಾದಂ ೧೩-೪೧ ।

**ಕುಪ್ರೇಕ್ಷಿತ ದುಷ್ಪ್ರೇಕ್ಷಿತ** (ನಂ) ಕೆಟ್ಟ ನೋಟ, ಕೆಟ್ಟದನ್ನು ನೋಡುವುದು, ನೋಡಬಾರದುದನ್ನು ನೋಡುವುದು. ದುಸ್ + ಪ್ರ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) । "ದು:ಸ್ವಪ್ನದ್‌ವಿಚಿಂತಿತದುಪ್ರೇಕ್ಷಿತದುಕ್ತತಾನಿ ಕರ್ಮಾಣಿ । ಕ್ಷಿಪ್ರಂ ಪ್ರಯಾಂತಿ ನಾಶಂ ಶಶಿನ: ಶ್ರುತ್ವಾ ಭಸಂವಾದಮ್" ಬೃಹತ್ಸಂ ೨-೨೧ ।

**ಕುಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯ ದುಷ್ಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯ** (ವಿಂ) ನೋಡಲು ಕಷ್ಟವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ನೋಡಲ್ಪಡುವ. ದುಸ್ + ಪ್ರ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) । "ತಪ:ಪರಾಮರ್ಶವಿವೃದ್ಧಮನ್ಯೋಽಭಿಜ್ಞದುಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯ-ಮುಖಸ್ಯ ತಸ್ಯ" ಕುಮಾಂ ೩-೭೧ ।

**ಕುಪ್ರಯತ್ ದುಷ್ಪ್ರಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಕೆಡುತ್ತಿರುವ, ವಿಕಾರಹೊಂದುತ್ತಿರುವ. ದುಷ (ವೈಕಲ್ಯೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಅಪವಿತ್ರವಾಗುತ್ತಿರುವ, ಅಶುದ್ಧವಾಗುತ್ತಿರುವ.

**ಕುಪ್ರಯಂತ ದುಷ್ಪ್ರಯಂತ** (ಛಂ) ಇಲಿನ ಪುತ್ರ, ಚಂದ್ರವಂಶದಲ್ಲಿ ಪುರುಸಂತತಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಶಕುಂತಲೆಯ

ಪತಿ, ಭರತ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ತಂದೆ. [ದುಷ್ಯಂತ ರಾಜನು ಒಂದು ದಿನ ಬೇಟೆಗಾಗಿ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಮೃಗಗಳ ಮೇಲೆ ಬಾಣವನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸಲು ಯಶಸ್ವಿದಾಗ ಋಷಿಗಳು ಒಂದು ತಡೆದು ಕಣ್ವಮಹರ್ಷಿಯ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಕರೆದು ಕೊಂಡು ಹೋದರು. ಅಲ್ಲಿ ಅತಿಥಿಸತ್ಕಾರದಲ್ಲಿ ನಿಯುಕ್ತಳಾಗಿದ್ದ ಶಕುಂತಲೆಯಿಂದ ಆತಿಥ್ಯವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿ ಶಕುಂತಲೆಯನ್ನು ಗಾಂಧರ್ವರೀತಿಯಿಂದ ಮದುವೆಯಾದನು. ತಪಸ್ಸಿಗೆ ತೆರಳಿದ್ದ ಕಣ್ವಮಹರ್ಷಿಯು ಒಂದು ಸಂತೋಷಗೊಂಡು ಶಕುಂತಲೆಯನ್ನು ಶಿಷ್ಯರೊಡನೆ ಪತಿಗೃಹಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಿಕೊಡಲು ದುಷ್ಯಂತನು ಶಕುಂತಲೆಯ ವಿಷಯವನ್ನೇ ಮರೆತವನಂತೆ ನಟಿಸಿ ಅವಳನ್ನು ತಿರಸ್ಕರಿಸುತ್ತಾನೆ. ಕೊನೆಗೆ ಆಕಾಶವಾಣಿಯನ್ನು ಕೇಳಿ ಶಕುಂತಲೆಯನ್ನು ಅಂಗೀಕರಿಸುತ್ತಾನೆ. ಇದು ಮಹಾಭಾರತದ ಕಥೆ. ಭಾಂ ಆದಿಂ । ಶಾಕುಂತಲ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಕಾಳಿದಾಸನು ರಸಪರಿಪುಷ್ಟಿಗಾಗಿ ದುಷ್ಯಂತನ ವಿಸ್ಮೃತಿಗೆ ದುರ್ವಾಸ ಋಷಿಯ ಶಾಪವನ್ನು ಕಾರಣವಾಗಿ ಕಲ್ಪಿಸಿರುತ್ತಾನೆ.]

**ದುಸ್ ದುಸ್** (ಅವ್ಯಂ) ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ ದ್ಯೋತಕವಾದ ಒಂದು ಉಪಸರ್ಗ. ದುಸ್ ಉಪಸರ್ಗದ "ಸ" ಕಾರವು ಕ ಮತ್ತು ಫ ಕಾರಗಳು ಪರವಾದರೆ "ಫ" ಕಾರವಾಗಿಯೂ ಚ ಮತ್ತು ಛ ಕಾರಗಳು ಪರವಾದರೆ "ಶ" ಕಾರವಾಗಿಯೂ ಷ ಷ ಸ ಹ ಗಳು ಪರವಾದರೆ ವಿಸರ್ಗ (:) ವಾಗಿಯೂ ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದುವುದು. 1. ದೋಷ, ತಪ್ಪು. "ದು:ಸ್ವಪ್ನದ್‌ವಿಚಿಂತಿತದುಪ್ರೇಕ್ಷಿತದುಕ್ತತಾನಿ ಕರ್ಮಾಣಿ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೨-೨೧ । 2. ಕೇಡು, ಕೆಡಕು. 3. ಕಷ್ಟ. "ದುಷ್ಕರಂ ಕೃತವಾನ್ ರಾಮೋ ಹೀನೋ ಯದನಯಾ ಪ್ರಭು:" ರಾಮಾಂ । 4. ಕಠಿಣ, ಕ್ಲಿಷ್ಟ. 5. ನೀಚ, ಅಧಮ, ಕೀಳು.

**ದುಸ್ತರ ದುಸ್ತರ** (ವಿಂ) ದಾಟಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. ದುಸ್ + ತೃ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋ:) "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬) । "ತಿತೀರ್ಷ-ದುಸ್ತರಂ ಮೋಹಾದುಛೇನಾಸ್ಮಿ ಸಾಗರಮ್" ರಘುಂ ೧-೨ ।

**ದುಸ್ತರಣ ದುಸ್ತರಣ** (ನಂ) ಕಷ್ಟದಿಂದ ದಾಟುವುದು, ದು:ಖೇನ ತರಣಮ್ ।

**ದುಸ್ತಕ ದುಸ್ತಕ** (ಛಂ) 1. ಅಸಮಂಜಸವಾಗಿ ವಾದಿಸುವುದು, ತಪ್ಪು ಕಾರಣಗಳನ್ನು ತೋರಿಸಿ ವಾದಿಸುವುದು. 2. ತಪ್ಪಾಗಿ ಊಹಿಸುವುದು. ಸರಿಯಾದ ಕಾರಣವಿಲ್ಲದೆ ಊಹಿಸುವುದು.

**ದುಸ್ತಕ್ಯ ದುಸ್ತಕ್ಯ** (ವಿಂ) ಊಹಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಊಹಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ. ದುಸ್ + ತಕ (ಭಾಷಾಣೈ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) ।



ದುಸ್ತ್ಯಾಜ್ಯ ದುಸ್ತ್ಯಾಜ್ಯ (ವಿಂ) ತೃಜಿಸಲಂ ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ, ತೃಜಿಸಲಂ ಕಷ್ಟವಾದ. ದುಃಖೇನ ತ್ಯಜ್ಯತೇ - ದುಸ್ + ತ್ಯಜ (ಹಾನಿ) "ಞತ್" (೩-೧-೧೨೪) ।

ದುಸ್ಪರ್ಶ ದುಸ್ಪರ್ಶ (ಪುಂ) 1. ತೀವ್ರಕಸಂಧಿ. ದುಃಖೇನ ಸ್ಪೃಶ್ಯತೇ - ಸ್ಪೃಶ (ಸ್ಪರ್ಶನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೯) । "ಖಲ್" ವಾ (೩-೩-೧೨೬) । 2. ಹೆಣ್ಣುಳ್ಳ, ಮುಳ್ಳು ಬದನೆ.

ದುಹ-ಪ್ರಪೂರಣ (ಅದಾಂ ಉಭಂ ದ್ವಿಕರ್ಮಂ ಅನಿಂ) । ದೋಗ್ಧ, ದುಗ್ಧೆ ದುಹಾತೇ ದುಹತೇ । ದುದೋಹ, ದುದುಹೇ । ದೋಗ್ಧಾ । ಧೋಕ್ಯತಿ, -ತೇ । ದೋಗ್ಧು ದುಗ್ಧಾತ್ ದುಗ್ಧಾಮ್ ದುಹಂತು, ದುಗ್ಧಾಮ್ ದುಹಾತಾಮ್ ದುಹತಾಮ್ । ಅಧೋಕ್, ಅಧುಗ್ಧ । ದುಹಾತ್, ಧುಕ್ಷೀಷ್ಟ । ಅಧುಕ್ಷತ್, ಅಧುಕ್ಷತ । ಅಧೋಕ್ಯತ್, -ತ । 1. ಹಾಲು ಕರೆ. "ಪಯೋ ಧತೋಽನಿರಪಿ ಗಾ ದುಹಂತಿ ಮಂದಂ ವಿವರ್ಣಂ ವಿರಸಂ ಚ ಗೋಪಾಃ" ಮೃತ್ರಿಂ ೧೨-೭೩ । 2. ಹಿಂಡು, ಹಿಂದುಕು, ಹಿಂಡಿಸಾರವನ್ನು ತೆಗೆ. "ಯಂ ಸರ್ವಶಿಲಾಃ ಪರಿಕಲ್ಪ್ಯ ವತ್ಸಂ ಮೇರೌ ಸ್ಥಿತೇ ದೋಗ್ಧರಿ ದೋಹದಕ್ಷೇ । ಭಾಸ್ವಂತಿ ರತ್ನಾನಿ ಮಹೌಷಧಿಶ್ಚ ಪೃಥುಪದಿಷ್ಟಾಂ ದುದುಗ್ಧರೀರಿತ್ರಿಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೨೦ । 3. ಎಳೆದುಕೊಂಡು, ಎಳೆದು ಬರಿದಾಗಿ ಮಾಡು. "ದುದೋಹ ಗಾಂ ಸ ಯಜ್ಞಾಯ ಸಸ್ಯಾಯ ಮಥವಾ ದಿವಮ್ । ಸಮ್ಪ-ದ್ವಿನಿಮಯೇನೋಭೌ ದಧತುರ್ಭುವನದ್ವಯಮ್" ರಘುಂ ೧-೨೬ । 4. ಇಷ್ಟಾರ್ಥವನ್ನು ಪೂರ್ತಿಮಾಡು, ಬೇಡಿದುದನ್ನು ಕೊಡು. "ಕಾಮಂ ದುಗ್ಧೇ ವಿಪ್ರಕರ್ಷಯಲಕ್ಷ್ಮಿಂ ಕೀರ್ತಿ ಸ್ಮೃತೇ ದುಹದೋ ನಿಷ್ಪ್ರಲಾಂತಿ" ಉಂ ರಾಂ ೫-೩೦ ।

ಕರ್ಮಣಿಃ-ದುಹತೇ । ದುದುಹೇ । ದೋಗ್ಧಾ । ಧೋಕ್ಯತೇ । ದುಹತಾಮ್ । ಅಧುಹತ । ದುಹತೇ । ಅದೋಹಿ । ಅಧೋಕ್ಯತ ।

ಣಿಚಿಃ-ದೋಹಯತಿ, -ತೇ । ದೋಹಯಾಂ ಚಕ್ರಾರ, -ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ । ದೋಹಯಿತಾ । ದೋಹಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ । ದೋಹಯತು, -ತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿಃ-ದುಧುಕ್ಷತಿ, -ತೇ । ಇತ್ಯಾದಿ. "ರಾಜನ್ ದುಧುಕ್ಷಸಿ ಯದಿ ಕ್ಷಿತಿಧೇನುಮೇನಾಮ್" ಭರ್ತಂ ೧-೩೬ ।

ಕೃತ್ಸುಃ-ದೋಗ್ಧವ್ಯಮ್ । ದೋಹನೀಯಮ್ । ದೋಹ್ಯಮ್ । ದುಹ್ಯಮ್ । ದುಗ್ಧಮ್ । ದುಗ್ಧವಾನ್, -ವತಿ । ದುಹನ್ -ತಿ । ದುಹಾನ್ । ದೋಗ್ಧಮ್ । ದುಗ್ಧಮ್ । ದೋಹನಮ್ । ದುಗ್ಧವಾ । ಪ್ರದುಹ ।

ದುಹತ್ ದುಹತ್ (ವಿಂ) 1. ಹಾಲು ಕರೆಯುತ್ತಿರುವ. 2. ಸಾರವನ್ನು ಹಿಂಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಇಷ್ಟಾರ್ಥವನ್ನು ಪೂರ್ತಿಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ದುಹ (ಪ್ರಪೂರಣ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) । ದುಹತೀ ದುಹತೀ. "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) । ದುಹಾನ್ ದುಹಾನ್.

ದುಹಿತುಃಪತಿ ದುಹಿತುಃಪತಿ (ಪುಂ) ಮಗಳಗಂಡ, ಅಳಿಯ.

ದುಹಿತುಃ ಪತಿಃ - ಷಟ್ಥಾಃ ವಾ ಅಲುಕ್ (೬-೩-೨೪) ।

ಪಕ್ಷೇ ದುಹಿತುಃಪತಿಃ ದುಹಿತುಃಪತಿಃ.

ದುಹಿತುಃ ದುಹಿತುಃ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಮಾರಿ, ಮಗಳು. ದುಹ (ಪ್ರಪೂರಣ)

"ತುಕ್" (೩ಂ ೨-೯೫) । ಇಡಾಗಮಃ ಗುಣಾಭಾವಶ್ಚ ನಿಪಾತ್ಯತೇ ।

"ತಯಾ ದುಹಿತಾ ಸುತರಾಂ ಸವಿತ್ರೀ ಸ್ಫುರತ್ಪ್ರಭಾಮಣ್ಡಲಯಾ ಚಕಾಸೇ" ಕುಮಾಂ ೧-೨೪ । "ಮಾತ್ರಾ ಸ್ವಸ್ತಾ ದುಹಿತಾ ವಾ ನ ವಿವಿಕ್ತಾಸನೌ ಭವೇತ್" ಮನುಂ ೨-೨೧೫ ।

ದುಹಿತುಃಮತ್ ದುಹಿತುಃಮತ್ (ವಿಂ) ಹೆಣ್ಣು ಮಕ್ಕಳುಳ್ಳವನು.

ದುಹಿತಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪) ।

ದುಹ್ಯ ದುಹ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹಾಲು ಕರೆಯಲ್ಪಡುವ. 2. ಹಾಲು ಕರೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಹಾಲು ಕರೆಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ (ಹಸು). ದುಹ (ಪ್ರಪೂರಣ) ವಾ "ಕ್ಯಪ್" (ವಾಂ ೬-೧-೭೧) । ಪಕ್ಷೇ "ಞತ್" (೩-೧-೧೨೪) । ದೋಹ್ಯಮ್ ದೋಹ್ಯಮ್. 4. ಕರೆಯಲ್ಪಡುವ. 5. ಕರೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 6. ಕರೆಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ (ಹಾಲು).

ದುಹ್ಯಮಾನ ದುಹ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಕರೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

2. ಹಿಂಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಹಿಡುಕಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ದುಹ (ಪ್ರಪೂರಣ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಫಾಪ್" (೪-೧-೪) । -ಮಾನಾ -ಮಾನಾ. 1. ಹಸು. 2. ಭೂಮಿ ಮೊದಲಾದುವು.

ದ್ವಿತ ದ್ವಿತ (ಪುಂ) 1. ಸಮಾಚಾರವನ್ನು ಒಯ್ಯುವವನು, ವಾರ್ತಾವಾಹಕ, ರಾಯಭಾರಿ, ಹರಿಕಾರ. ದ್ವಿ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩ಂ ೩-೯೦) ದೀರ್ಘಶ್ಚ । ಇತರರ ಮನೋಭಿ ಪ್ರಾಯವನ್ನು ತಿಳಿಯುವ ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನೂ ವ್ಯಂಗ್ಯವಾದ ಮಾತನ್ನು ಅರ್ಥಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವುಳ್ಳವನೂ ಪ್ರತಿಭಾಶಾಲಿಯಾದವನೂ ಧೈರ್ಯಶಾಲಿಯಾದವನೂ ದೂತನಾಗಿರಲು ಅರ್ಹನು. "ಪರೇಜ್ಞಿತಜ್ಞೋ ಪರವಾಗ್ವಿ-ಜ್ಞಚಾರ್ಯಸ್ಯಾಪಿ ತತ್ತ್ವವಿತ್ । ಸದೋತ್ಪನ್ನಮತಿರ್ಧೀರೋ ದ್ವಿತಃ ಸ್ಯಾತ್ ಪೃಥಿವೀಪತೇಃ" । "ಚಾರೆಕ್ಷಣೋ ದ್ವಿತಮುಖಃ ಪುರುಷಃ ಕೋಽಪಿ ಪಾಥಿವಃ ಮಾಘಂ ೨-೮೨ । ದೂತನಂ (1) ನಿಸ್ಸೃಷ್ಟಾರ್ಥಃ (2) ಮಿತಾರ್ಥಃ ಮತ್ತ (3) ಸಂದೇಶಹಾರಕಃ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. (1) ಅಮಾತ್ಯಗುಣಸಂಪನ್ನನು ನಿಸ್ಸೃಷ್ಟಾರ್ಥನು. "ಅಮಾತ್ಯಸಮ್ಪದೋಪೇತೋ ನಿಸ್ಸೃಷ್ಟಾರ್ಥಃ" । (2) ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಕಾಲುಭಾಗ ಕಡಮೆಯಾದವನು ಮಿತಾರ್ಥನು. "ಪಾದ-ಗುಣಹೀನಃ ಪರಿಮಿತಾರ್ಥಃ" । (3) ಅರ್ಧ ಗುಣ ಕಡಮೆಯಾದವನು ಸಂದೇಶಹರನು. "ಅರ್ಧಗುಣಹೀನಃ ಶಾಸನಹರಃ" ಅರ್ಯಶಾಂ । ಇಬ್ಬರ ಅಭಿಪ್ರಾಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿದು ಚಾತುರ್ಯ



ದಿಂದ ತಾನೇ ಉತ್ತರವನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಜಾಣತನದಿಂದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಬರುವವನು. “ನಿಸ್ಕರ್ಷಾರ್ಥ” ದೂತನಾಗುವನು. “ಅಭಯೋಮಿಮುಕ್ತಿಯ ಸ್ವಯಂ ವದತಿ ಚೋತ್ತರಮ್ | ಸುಶಿಲಂ ಕುರುತೇ ಕಾರ್ಯಂ ನಿಸ್ಕರ್ಷಾರ್ಥಸ್ತು ಸ ಸ್ಮತಃ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೪೮ | ಅಧಿಕೋಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದೆ ಹೇಳಿಕಳುಹಿಸಿದ ಮಾತನ್ನು ಮಾತ್ರ ಹೇಳಿ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಸಾಧಿಸಿಕೊಂಡು ಬರುವವನು “ಮಿತಾರ್ಥ” ದೂತನಾಗುವನು. “ಮಿತಾರ್ಥಭಾಷಿ ಕಾರ್ಯಸ್ಯ ಸಿದ್ಧಕಾರಿ ಮಿತಾರ್ಥಕಃ” | ಹೇಳಿಕಳುಹಿಸಿದ ಮಾತನ್ನು ಮಾತ್ರ ಹೇಳಿ ಬರುವವನು “ಸಂದೇಶಹಾರಕ” ದೂತನು. “ಮಿತಾರ್ಥಭಾಷಿ ಕಾರ್ಯಸ್ಯ ಸಿದ್ಧಕಾರಿ ಮಿತಾರ್ಥಕಃ | ಯಾವದ್ಭಾವಿತಸಂದೇಶಹಾರಕಃ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೪೯ | ಸ್ತ್ರೀಯಾ “ಕೀಪ್” (೪-೧-೪೧) | ದ್ವಿತೀ ದೂತಃ. ಸಮಾಚಾರವನ್ನು ತಲುಪಿಸುವ ಹೆಂಗಸು. ದೂತಿಯೂ ಮೂರು ವಿಧ. “ನಿಸ್ಕರ್ಷಾರ್ಥ ಮಿತಾರ್ಥಶ್ಚ ತಥಾ ಸಂದೇಶಹಾರಕಃ | ಕಾರ್ಯಪ್ರೇಮಸ್ತ್ರೀಯಾ ದ್ವಿತಃ ದ್ವಿತೀಯಾಪಿ ತಥಾವಿಧಾಃ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೪೭ | 2. ಸೇವಕ, ಅಳು. “ತತ್ಕೃತಾನುಗ್ರಹಪೀಕ್ಷಾ ತಂ ಮುಹೂರ್ತಹಾರಿತಃ” ಕುಮಾಂ ೨-೩೯ |

**ದ್ವಿತೀಯ ದೂತಕರ್ಮಣಃ** (ನಂ) ರಾಜನಿಂದ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ದೂತನ ಕಾರ್ಯ. ಶತ್ರು ರಾಜ್ಯಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ದೂತನು ಮಾಡಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯಗಳಿವು: ಶತ್ರುವಿಗೆ ರಾಜನ ಸಂದೇಶವನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದಕ್ಕೂ ಶತ್ರುವಿನ ವಿಷಯವನ್ನು ರಾಜನಿಗೆ ತಿಳಿಸುವುದಕ್ಕೂ ಶತ್ರು ರಾಜ್ಯಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಬರುವುದು, ಮಾಡಿದ ಸಂಧಿಯನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವುದು, ಸಮಯಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ ಶತ್ರುವಿನಲ್ಲಿ ಶಕ್ತಿಪ್ರದರ್ಶನ, ಅಲ್ಲಿ ಸ್ನೇಹಿತರ ಸಂಪಾದನೆ, ಅಲ್ಲಿ ಭೇದೋಪಾಯವನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸುವುದು, ಸ್ನೇಹಿತರಲ್ಲಿ ಭೇದವನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸುವುದು, ಸೈನ್ಯವನ್ನೂ ಗೂಢಚಾರರನ್ನೂ ಕಳುಹಿಸಿಕೊಡುವುದು, ಬಂಧು ಮತ್ತು ರತ್ನಗಳ ಅಪಹರಣ, ಗೂಢಚಾರರು ಮಾಡುವ ಕೆಲಸವನ್ನು ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಪರಾಕ್ರಮವನ್ನು ತೋರಿಸುವುದು, ಸಮಾಧಿ ಮೋಚನ, (ಸಂಧಿಯಲ್ಲಿ ನಂಬಿಕೆಹುಟ್ಟಿಸಲು ಶತ್ರುಪಕ್ಷದವರನ್ನು ಬಂಧನದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿಸುವುದು). ಮಾರಣ ಮೊದಲಾದ ಅಭಿಚಾರಿಕ ಕೃತ್ಯಗಳನ್ನು ನಡೆಸುವುದು ಇವೆಲ್ಲಾ ದೂತನ ಕಾರ್ಯಗಳು. “ಪ್ರೇಷಣ ಸಂಧಿಪಾಲತ್ವಂ ಪ್ರತಾಪೋ ಮಿತ್ರಸಂಘ್ರಹಃ | ಅಪಜಾಪಃ ಸುಹೃದ್ಭೇದಃ ಗುಹ್ಯದೃಷ್ಟಾತಿಸಾರಣಮ್ || ಬಂಧುರತ್ನಾಪಹರಣಂ ಚಾರಜ್ಞಾನಂ ಪರಾಕ್ರಮಃ | ಸಮಾಧಿಮೋಕ್ಷೋ ದ್ವಿತೀಯ ಕರ್ಮ ಯೋಗಸ್ಯ ಚಾಶ್ರಯಃ” ಅರ್ಥಶಾಂ ೧೨-೧೬-೩೩, ೩೪ |

**ದ್ವಿತೀಯ ದೂತನುಬ** (ವಿಂ) ದೂತನನ್ನೇ ಮುಂಬವಾಗಿ ಉಳ್ಳ (ರಾಜ). ದ್ವಿತಃ ಮುಖಂ ಮುಖಸ್ಥಾನಂ ಯಸ್ಯ | ದೂತನ ಮೂಲಕ ಶತ್ರು ರಾಜನಿಗೆ ಹೇಳಿಕಳುಹಿಸುವುದು ಅವನಿಂದ ಶತ್ರುವಿನ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವುದು ಈ ರೀತಿ ವ್ಯವಹಾರವಿರುವುದರಿಂದ ರಾಜನು ದೂತಮುಖನಾಗುವನು. “ಚಾರೇಕ್ಷಣೋ ದ್ವಿತೀಯಃ ಪುರುಷಃ ಕೋಽಪಿ ಪಾಥಿವಃ” ಮಾಘಂ ೨-೮೨ |

**ದ್ವಿತೀಯಪ್ರೇಷಣ ದೂತಸಂಪ್ರೇಷಣ** (ನಂ) ಗುಪ್ತ ಪತ್ರಗಳನ್ನು ಬರೆದು ಪರರಾಷ್ಟ್ರಗಳಿಗೆ ದೂತನನ್ನು ಕಳುಹಿಸುವುದು. ಇದು ರಾಜನ ಪ್ರತಿದಿನದ ಕರ್ತವ್ಯಗಳಲ್ಲೊಂದು. ದ್ವಿತೀಯ ಸಂಪ್ರೇಷಣಮ್ | “ದ್ವಿತೀಯಪ್ರೇಷಣಂ ಚೈವ ಕಾರ್ಯಶೇಷಂ ತಥೈವ ಚ | ಅಂತಃಪುರಪ್ರಚಾರಂ ಚ ಪ್ರಣಿಧಿನಾಂ ಚ ಚೇಷ್ಟಿತಮ್” ಮನುಂ ೭-೧೫೩ |

**ದ್ವಿತೀಯ ದೂತಾಂಗದ** (ನಂ) 1. ಸುಭಟಕವಿವರಣಿತವಾದ ಒಂದು ಛಾಯಾ ನಾಟಕ. 2. ಹನುಮನ್ನಾಟಕದ ಒಂದು ಅಂಕ.

**ದ್ವಿತೀಯ ದೂತ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೇವಕ, ಹೆಣ್ಣು ಅಳು. ದ್ವ (ಗತೌ) “ತಿಃ” ಬಾಹುಂ | “ಕಲ್ಪತಪುಷ್ಪಶಯನಾಲಲತಾಗೃಹಾನೇತ್ಯ ದ್ವಿತೀಯತಮಾಗದರ್ಶನಃ” ರಘುಂ ೧೯-೨೩ | 2. ಸ್ತ್ರೀ ರಾಯಭಾರಿ. **ದ್ವಿತೀಯ ದೂತ** (ನಂ) ದೂತಭಾವ ಮತ್ತು ದೂತನ ಕೆಲಸ, ರಾಯಭಾರ. ದ್ವಿತೀಯ ಭಾವಃ ಕರ್ಮ ವಾ “ಮತ್” (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೬) | “ಸಂಭವಾ ವಿರಚನಾಹಿತಶೋಭೇರಾಗತಪ್ರಿಯಕಥೇರಪಿ ದ್ವಿತೀಯಮ್” ಕಿರಾಂ ೯-೩೪ | [ಎವಂಕೆ “ದ್ವಿತೀಯಮ್” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ದ್ವಿನ ದೂತ** (ವಿಂ) 1. ಕಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ದ್ವ (ಅಪತಾಪೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) | ದೀರ್ಘಃ ನತ್ವಂ ಚ (ವಾಂ ೮-೨-೪೪) | “ಸಂತಾಪಿತಸಂತಪ್ತೌ ಭೂಪಿತಭೂಪಾಯಿತೌ ಚ ದ್ವಿನಶ್ಚ” ಅಮಂ | 2. ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಮಾರ್ಗಸಂಚಾರದಿಂದ ಬಳಲಿದ. 4. ಸಂತಾಪಹೊಂದಿದ, ಬೇನೆ ಹೊಂದಿದ. ದ್ವ (ಗತೌ) ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) | “ದ್ವಿನಾಸ್ತೇರಿವಲಾದ್ವಿನಾ ನಿರೇಶಾ ಬಹು ಮೇನಿರೇ” ಕಿರಾಂ ೧೫-೩೧ |

**ದ್ವಿನಮಾನ ದೂಯಮಾನ** (ವಿಂ) ಪೀಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ದ್ವ (ಅಪತಾಪೇ) ಕರ್ಮಂ “ಶಾನಮ್” (೩-೨-೧೨೪) | “ಬಲವತ್ ದ್ವಿನಮಾನಂ ಪ್ರತ್ಯಾಯಯತೀವ ಮೇ ಹೃದಯಮ್” ಶಾಕುಂ ೪-೩೧ |

**ದ್ವಿನ ದೂರ** (ನಂ) 1. ದೂರ, ಹೆಚ್ಚಿನ ಅಂತರ. (ಪ್ರದೇಶ ಮತ್ತು ಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ). ದ್ವಃಶ್ಚೇನ ಇಯತೇ ಪ್ರಾಪ್ಯತೇ-ದ್ವಿ+ಇನ್ (ಗತೌ) “ಕ್” ಧಾತುಲೋಪಶ್ಚ (ಉಂ ೨-೨೦) | “ದ್ವಿನೋ-



ಕ್ಷಿಪ್ತಕ್ಷಿಪ್ರಚಕ್ರೇಣ ಕೃತಂ ಮತ್ತೋ ಹಸ್ತಂ ಹಸ್ತಿರಾಜಃ ಸ್ವಮೇವ" ಮಾಘಂ ೧೮-೪೫ | (ವಿಂ) 2. ದೂರದ, ದೂರದಲ್ಲಿರುವ, ದೂರವಾದ, ಹೆಚ್ಚು ಅಂತರವುಳ್ಳ. "ದ್ವಾರಕಾಪರಿಷದಂ ಪ್ರಯಾಸ್ಯತೋ ದೂರವರ್ತಮಪಿಕಸ್ಯ ಮೇ ದೃಶಾ" ಯಾದಂ ೧೭-೩೯ | (ಅವ್ಯಂ) 3. ಬಹಳವಾಗಿ, ಅತ್ಯಂತವಾಗಿ. "ತಪಃ ಶರೀರೈಃ ಕಠಿನೈರಪಾರ್ಜಿತಂ ತಪಸ್ವಿನಾಂ ದೂರಮಧಶ್ಚಕಾರ" ಕುಮಾರಂ ೫-೨೯ | "ನೇತ್ರೇ ದೂರಮನುಜನೇ ಪುಲಕಿತಾ ತನ್ವೀ ತವೇಯಂ ತನುಃ" ಸಾಂ ೬೦ | (ಅವ್ಯಂ) 4. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ, ಪೂರ್ತಿಯಾಗಿ. "ಯಸ್ಮಿನ್ ದೃಷ್ಟೇ ಕರಣವಿಗಮಾದ್ದೂರಮುತ್ಪತ್ತಿಪಾಪಾಃ" ಮೇಘಂ ೧-೫೫ |

**ಹೂರತಸ್ ದೂರತಸ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ದೂರದಿಂದ, ದೂರದಲ್ಲಿ, ದೂರ "ತಸಿಃ" (ವಾಂ ೫-೪-೪೪) | "ಯದರ್ಥಂ ಭ್ರಾತರಃ ಪುತ್ರಾ ಅಪಿ ವಾಚ್ಛಂತಿ ಯೇ ನಿಜಾಃ | ವಧಂ ರಾಜ್ಯಕೃತಾಂ ರಾಜಾಂ ತದ್ರಾಜ್ಯಂ ದೂರತಸ್ತಜೇತ್" ಪಶ್ಚತಂ ೫-೬೮ | 2. ದೂರಕ್ಕೆ. "ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ ಜನಯಿತಾರಂ ಸ್ವಂ ನಿಃಸ್ವಂ ಗಚ್ಛತಿ ದೂರತಃ" ಪಶ್ಚತಂ ೧-೯ |

**ಹೂರದರ್ಶನ ದೂರದರ್ಶನ** (ಛಂ) 1. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. 2. ಗೃಹ್ಯ, ರಣಹದ್ದು. ದೂರಾತ್ಪಶ್ಯತಿ - ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) | (ನಂ) 3. ದೂರಾಲೋಚನೆ, ಮುಂದಿನ ದೃಷ್ಟಿ, ದೀರ್ಘವಾದ ಆಲೋಚನೆ. 4. ದೂರದ ನೋಟ, ದೂರದಿಂದ ನೋಡುವಿಕೆ. ದೃಶಿರ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | 5. ದೂರದರ್ಶಕ ಯಂತ್ರ, ದೂರದಿಂದ ವಸ್ತುವನ್ನು ನೋಡುವ ಯಂತ್ರ. ದೂರಾತ್ ದೃಶ್ಯತೇಜೇನ - ದೃಶಿರ್ ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭) | (ವಿಂ) 6. ಬಹಳ ದೂರದಲ್ಲಿರುವ, ಹೊಂದಲು ಅಶಕ್ಯವಾದ. "ತೈವಿಷ್ಟಪಾನಾಮಪಿ ದೂರದರ್ಶನಮ್" ಭಾಗಂ ೧-೧೧-೮ |

**ಹೂರದರ್ಶಿನ್ ದೂರದರ್ಶಿನ್** (ಛಂ) 1. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. ದೂರಾತ್ ಪಶ್ಯತಿ - ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) | (ವಿಂ) 2. ದೂರಾಲೋಚನೆಯುಳ್ಳ, ದೀರ್ಘವಾಗಿ ಮುಂದಿನದನ್ನು ಯೋಚಿಸುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | -ದರ್ಶಿನಿ - ದರ್ಶಿನೀ.

**ಹೂರದೃಶ್ ದೂರದೃಶ್** (ಛಂ) 1. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ, ಸೂಕ್ಷ್ಮದೃಷ್ಟಿಯುಳ್ಳ ಜ್ಞಾನಿ. 2. ಗೃಹ್ಯ, ರಣಹದ್ದು. ದೂರಾತ್ ಪಶ್ಯತಿ - ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬) | (ವಿಂ) 3. ದೂರದ ಆಲೋಚನೆ ಮಾಡುವ, ಮುಂದಿನದನ್ನು ಆಲೋಚಿಸುವ. 4. ದೂರದಲ್ಲಿರುವುದನ್ನು ನೋಡುವ, ದೂರದಿಂದ ನೋಡುವ.

**ಹೂರದೃಷ್ಟಿ ದೂರದೃಷ್ಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುಂದಿನ ದೃಷ್ಟಿ, ದೂರದ ಆಲೋಚನೆ. 2. ದೂರದ ನೋಟ,

**ಹೂರವರ್ತಿನ್ ದೂರವರ್ತಿನ್** (ವಿಂ) ದೂರದಲ್ಲಿರುವ. ದೂರೇ ವರ್ತತೇ - ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | -ವರ್ತಿನಿ - ವರ್ತಿನೀ.

**ಹೂರವೇಧಿನ್ ದೂರವೇಧಿನ್** (ವಿಂ) ದೂರದಿಂದ ಗುರಿಯಿಟ್ಟು ಹೊಡೆಯುವವನು. ದೂರಾತ್ ವೇಧೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫) |

**ಹೂರಸಂಸ್ಥ ದೂರಸಂಸ್ಥ** (ವಿಂ) ದೂರದಲ್ಲಿರುವ. ದೂರೇ ಸಂಸ್ಥಾ ಸ್ಥಿತೀರ್ಯಸ್ಯ | "ಕಂಠಾಶ್ಲೇಷಪ್ರಣಯಿನಿ ಜನೇ ಕಿಂ ಪುನರ್ದೂರಸಂಸ್ಥೇ" ಮೇಘಂ ೧-೩ |

**ಹೂರಸ್ಥ ದೂರಸ್ಥ** (ವಿಂ) ದೂರದಲ್ಲಿರುವ. ದೂರೇ ತಿಷ್ಠತಿ - ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕಃ" (೩-೨-೪) |

**ಹೂರಸ್ಥಾಯಿನ್ ದೂರಸ್ಥಾಯಿನ್** (ವಿಂ) ದೂರದಲ್ಲಿ ನಿಂತಿರುವ. ದೂರೇ ತಿಷ್ಠತಿ - ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | -ಸ್ಥಾಯಿನಿ - ಸ್ಥಾಯಿನೀ.

**ಹೂರಸ್ಥಿತ ದೂರಸ್ಥಿತ** (ವಿಂ) ದೂರದಲ್ಲಿರುವ. ದೂರೇ ಸ್ಥಿತಃ |

**ಹೂರಾರೂಢ ದೂರಾರೂಢ** (ವಿಂ) ದೂರದವರೆಗೂ ಹೋಗಿರುವ. ದೂರಾರೂಢಃ | "ಅಸಹನಾ ಖಲು ಸಾ | ದೂರಾರೂಢಾಽಸ್ಯಾಃ ಪ್ರಣಯಃ" ವಿಕ್ರಂ ೪ |

**ಹೂರಾರೋಹಣ ದೂರಾರೋಹಣ** (ನಂ) ದೂರದವರೆಗೂ ಹತ್ತುವುದು, ದೂರದವರೆಗೂ ಹೋಗುವುದು. ದೂರ-ಮಾರೋಹಣಮ್ |

**ಹೂರಾರೋಹಿನ್ ದೂರಾರೋಹಿನ್** (ವಿಂ) ದೂರದವರೆಗೂ ಹೋಗಿರುವ, ದೂರದವರೆಗೂ ಹತ್ತಿರುವ. ದೂರಾರೋಹಿತಿ - ಆ + ರೂಹ (ವಿಜಯಮಾದೌ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) |

**ಹೂರಾಲೋಕ ದೂರಾಲೋಕ** (ಛಂ) 1. ದೂರದಿಂದ ನೋಡುವುದು. 2. ದೂರದವರೆಗೂ ನೋಡುವುದು. ದೂರತಃ ಅಲೋಕಃ | "ಸ್ಥಿರಯೌವನಾ ಸ್ಥಿತಾ ತೇ ದೂರಾಲೋಕೇ ಸುಖಾಲೋಕಾ" ವಿಕ್ರಂ ೪-೪೬ |

**ಹೂರಾವಸ್ಥಿತ ದೂರಾವಸ್ಥಿತ** (ವಿಂ) ದೂರದಲ್ಲಿರುವ, ದೂರದಲ್ಲಿ ನಿಂತಿರುವ. ದೂರೇ ಅವಸ್ಥಿತಃ |

**ಹೂರಿಕರಣ ದೂರಿಕರಣ** (ನಂ) 1. ದೂರವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು, ದೂರಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸುವುದು. 2. ಬೇರ್ಪಡಿಸುವುದು, ಪ್ರತ್ಯೇಕ ಮಾಡುವುದು. 3. ತಿರಸ್ಕರಿಸುವುದು.

**ಹೂರಿಕೃತ ದೂರಿಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರತ್ಯೇಕಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಗರುಮತಃ ಪಕ್ಷಮರುಪ್ಪಚಾರಾತ್ ಹೂರಿ-ಕೃತೋ ವಾಣನಾಗಪಾಶಃ" ಯಾದಂ ೨೦-೩೯ | 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸ



ಲ್ಪಟ್ಟು, ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ದ್ವಿಭೂತಾ: ಸ್ವಲ್ಪ  
ಗುಣೀಶ್ವಾನಲತಾ ವನಲತಾಮಿ:" ಶಾಕುಂ ೧-೧೫. 3. ದೂರ  
ವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ದೂರಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

ದ್ವಿಭೂತ ದೂರೀಭೂತ (ವಿಂ) ದೂರದಲ್ಲಿರುವ, ದೂರ  
ವಾಗಿರುವ. "ದ್ವಿಭೂತೇ ಮಯಿ ಸಹಚರೇ ಚಕ್ರವಾಕೀಮಿವಂಕಾಮ್"  
ಮೇಘಂ ೨-೨೦.

ದ್ವಿರೋತ್ತಾರಣ ದೂರೋತ್ಸಾರಣ (ನಂ) ದೂರಕ್ಕೆ ಓಡಿಸು  
ವುದು.

ದ್ವಿರೋತ್ತಾರಿತ ದೂರೋತ್ಸಾರಿತ (ವಿಂ) 1. ದೂರಕ್ಕೆ ಓಡಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟು, ದೂರಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ದೂರದಿಂದ ತಳ್ಳ  
ಲ್ಪಟ್ಟು. ದ್ವಿರೋತ್ತಾರಿತ: "ದ್ವಿರೋತ್ತಾರಿತಹೃದಯಾನಂದ:  
ಅಮರಮಾನೇನ ಭ್ರಮತಿ ಗಜೇಂದ್ರ:" ವಿಕ್ರಂ ೪-೨೩.

ದ್ವಿರ್ವಾ ದೂರ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರಿಕೆಯಲ್ಲು. ದ್ವಿರ್ವತಿ - ದ್ವಿರ್ವಿ  
(ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಅವ್" (೩-೧-೧೩೪). ದೀರ್ಘ: (೮-೨-೭೮).  
"ಸಾ ಗೌರಸಿದ್ಧಾರ್ಥನಿವೇಶವದ್ಧಿ: ದ್ವಿರ್ವಾಪ್ರವಾಲೈ: ಪ್ರತಿಭಿನ್ನ-  
ಶೋಭಮ್" ಕುಮಾರಂ ೭-೭.

ದ್ವಿರ್ವಾಪ್ರಿಯಾ ದೂರ್ವಾಪ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭಾದ್ರಪದ ಶುಕ್ಲಾ  
ಷ್ಠಮಿ. ದ್ವಿರ್ವಾಪ್ರಿಯಾ ಅಷ್ಟಮಿ. [ಭಾದ್ರಪದ ಶುಕ್ಲಾಷ್ಠಮಿಯ  
ದಿನ ದೂರ್ವಾಪೂಜೆಯನ್ನು ಮಾಡುವ ಪದ್ಧತಿ.]

ದ್ವಿಲಿಕಾ ದೂಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀಲಿ ಗಿಡ.

ದ್ವಿಲಿ ದೂಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀಲಿ ಗಿಡ.

ದ್ವಿಲಕ ದೂಷಕ (ವಿಂ) 1. ಕೆಡಿಸುವ, ದೋಷವನ್ನುಂಟು  
ಮಾಡುವ. 2. ದೂಷಿಸುವ, ನಿಂದಿಸುವ. ದುಷ (ವೈಕೃತ್ಯೇ)  
+ ಣಿಚ್ "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩). "ಕೂಡಾಸನಕರ್ತೃಶ್ಚ  
ಪ್ರಕೃತಿನಾಂ ಚ ದೂಷಕಾನ್" ಭಾಂ ಅನುಂ ೧-೨೩೨. "ವೇದ-  
ವಿಕ್ರಿಯಿಣಶ್ಚೇವ ವೇದಾನಾಂ ಚೇವ ದೂಷಕಾ:" ಭಾಂ ಅನುಂ. 3. ನೀಚ, ದುಷ್ಟ, ದುರ್ಜನ. "ದೂಷಕಪಾಂಸನೌ"  
ವಿಕಾಂಡಂ.

ದ್ವಿಲಣ ದೂಷಣ (ವಿಂ) 1. ರಾವಣನ ಒಬ್ಬ ಸೇನಾಪತಿ.  
ದಂಡಕಾರಣ್ಯದಲ್ಲಿದ್ದ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. (ನಂ) 2. ಕೆಡಿಸು  
ವುದು, ದೋಷವುಂಟುಮಾಡುವುದು. ದುಷ (ವೈಕೃತ್ಯೇ) +  
ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). 3. ದೋಷ,  
ತಪ್ಪು, ಅಪರಾಧ. "ರಹಸ್ಯಭೇದೋ ಯಾಚ್ಛಾ ಚ ನೈಷ್ಠುರ್ಯ  
ಚಲಚಿತ್ತತಾ. ಕ್ರೋಧೋ ನಿಸ್ತಯತಾ ಶ್ರುತಮೇತನ್ಮಿತ್ರಸ್ಯ ದೂಷಣಮ್"  
ಹಿತಂ ೧-೧೮. 4. ದೂಷಣ, ನಿಂದಿಸುವುದು, ಬಯ್ಯು  
ವುದು. "ಅಸಜ್ಜನೇನ ಕಾಕುತ್ಸ್ಥ: ಪ್ರಯುಕ್ತಮಯ ದೂಷಣಮ್. ನ  
ಚಕ್ಷುಷಿ ಶುಭಾಚಾರ: ಸ ದೂಷಣಮಿವಾತ್ಮನ:" ರಘುಂ ೧೨-೪೬.  
5. ನಿಂದಿಸುವುದು, ತಪ್ಪೆಂದು ಹೇಳುವುದು. (ವಿಂ) 6.

ದೋಷವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಕೆಡಿಸುವ. ದುಷ (ವೈಕೃತ್ಯೇ) +  
ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪). "ಪಾನಂ ದುರ್ಜನಸಂಸಂಗ:  
ಪತ್ಯಾ ಚ ವಿರಹೋಽಢನಮ್. ಸ್ವಪ್ನೋಽನ್ಯಗೇಹವಾಸಶ್ಚ ನಾರೀ-  
ಸಂಕ್ಷುಬ್ಧಾಣಿ ಪಢ್" ಮನುಂ ೧-೧೩.

ದ್ವಿಲಣೀಯ ದೂಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ದೂಷಿಸಲ್ಪಡುವ,  
ನಿಂದಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ದೂಷಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. 3. ಕೆಡಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. 4. ಅಶುದ್ಧಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. ದುಷ (ವೈಕೃತ್ಯೇ) +  
ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬).

ದ್ವಿಲಯತ್ ದೂಷಯತ್ (ವಿಂ) 1. ದೂಷಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ನಿಂದಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಕೆಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಅಶುದ್ಧ  
ಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ದುಷ (ವೈಕೃತ್ಯೇ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್"  
(೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). -ಯಂತಿ  
-ಯಂತಿ.

ದ್ವಿಲಯತ್ ದೂಷಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ನಿಂದಿಸುವವನು, ದೂಷಿ  
ಸುವವನು. 2. ಕೆಡಿಸುವವನು. 3. ಅಶುದ್ಧಗೊಳಿಸು  
ವವನು. ದುಷ (ವೈಕೃತ್ಯೇ) + ಣಿಚ್ "ತತ್" (೩-೧-೧೩೩).  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫). -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

ದ್ವಿಲಿ ದೂಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೇತ್ರಮಲ, ಕಣ್ಣಿನೊಳಗಿನ ಕೊಳೆ.  
ದುಷ (ವೈಕೃತ್ಯೇ) + ಣಿಚ್ "ಃ" (೩ಂ ೪-೧೩೯). ವಾ  
"ಡೀಪ್" (೫ಂ ೪-೧-೪೫). -ಯಿ -ಯಿ.

ದ್ವಿಲಿಕಾ ದೂಷಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೇತ್ರಮಲ, ಕಣ್ಣಿನೊಳ  
ಗಿನ ಕೊಳೆ. ದ್ವಿಲಿ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೫-೪-೫). "ದ್ವಿಲಿಕಾ  
ನೇತ್ರಯೋರ್ಮಲಮ್" ಅಮಂ. 2. ಬಣ್ಣ ಹಾಕುವ ಕುಂಚ, ತೂಲಿಕೆ.  
3. ದೂಷಿಸುವ ಹೆಂಗಸು.

ದ್ವಿಲಿತ ದೂಷಿತ (ವಿಂ) 1. ಕೆಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಅಶುದ್ಧಗೊಳಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ದೂಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ನಿಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ದುಷ (ವೈಕೃತ್ಯೇ)  
+ ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). ಋತ್ (೬-೪-೯೦). 3. ಮಿಥ್ಯಾಪವಾದಕ್ಕೆ ಗುರಿಯಾದ. "ಸಂಭವಂತಿ ಯದದೋಷ-  
ದ್ವಿಲಿತೇ ಸಾರ್ವ ಸರ್ವಗುಣಸಂಪದಸ್ತವಯಿ" ಮಾಘಂ ೧೪-೪.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತಾ -ತಾ. 4. ಅಪವಾದಕ್ಕೆ ಒಳಗಾದ ಕನ್ಯೆ.

ದ್ವಿಲಯ ದೂಷ್ಯ (ನಂ) 1. ಬಟ್ಟೆಯಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮನೆ,  
ಡೇರೆ, ಪಟಮಂಟಪ. 2. ದ್ವಿಲಯ-ದುಷ (ವೈಕೃತ್ಯೇ) + ಣಿಚ್  
"ಯತ್" (೩-೧-೧೭). ದೀರ್ಘ: (೬-೪-೯೦). "ದ್ವಿಲಯಿವ  
ಶಿತಿಭೂತಾಂ ದ್ವಿರದೇಶದಾರತಾರಾವಲಿವಿರಚನೈರ್ವ್ಯರೂಪಿವಾಸಾ:"  
ಮಾಘಂ ೫-೨೧. 3. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. (ವಿಂ) 4. ನಿಂದೆಗೆ  
ಅರ್ಹನಾದವನು, ದೂಷಿಸಲ್ಪಡುವವನು, ಅಪವಾದಕ್ಕೆ  
ಒಳಗಾದವನು. "ಅಮಾತ್ಯವ್ಯಂಜನಾ ರಾಜಾಂ ದ್ವಿಲಯಾಸ್ತೇ  
ಶತ್ರುಸಂಜಿತಾ:" ಮಾಘಂ ೨-೫೬.



ದೃಶ್ಯ ದೃಕ್ ಪಥ (ಪುಂ) ದರ್ಶನಮಾರ್ಗ, ನೋಡಲು  
ಯೋಗ್ಯವಾದ ಸ್ಥಾನ. ದೃಶ: ಪಠ್ಯಾ: "ಅ:" (೪-೪-೭೪)।

ದೃಕ್ ಪ್ರಿಯಾ ದೃಕ್ ಪ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಂತಿ, ಸೌಂದರ್ಯ.  
ದೃಶಂ ಪ್ರೀಣಾತಿ-ಪ್ರೀತ್ (ತರ್ದೇ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೪)।

ದೃಕ್ ಶಕ್ತಿ ದೃಕ್ ಶಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶರೂಪವಾದ  
ಒಂದು ಶಕ್ತಿ, ಜೈತನ್ಯ. 2. ಚೇತನ, ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಪ್ರಕಾಶ  
ಗೊಳಿಸುವ ಒಂದು ಶಕ್ತಿ. "ದೃದರ್ಶನಶಕ್ತಿಯೋಕಾತ್ಮತೇ  
ವಾಸ್ಮಿತಾ" ಪಾಂ ಯಂ ಸುಂ।

ದೃಕ್ ಶ್ರುತಿ ದೃಕ್ ಶ್ರುತಿ (ಪುಂ) ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ದೃಗೇವ ಶ್ರುತಿ:  
ಶ್ರವಣಮಸ್ಯ।

ದೃಗ್ಧ್ಯಕ್ಷ ದೃಗ್ಧ್ಯಕ್ಷ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ದೃಶ: ಅಧ್ಯಕ್ಷ:  
"ರಶ್ಮಿಮಾಲಿ ದೃಗ್ಧ್ಯಕ್ಷ: ಕರ್ಮಸಾಕ್ಷಿ ತ್ರಯೀತನು:" ವೈಜಂ।

ದೃಗ್ಗೋಲ ದೃಗ್ಗೋಲ (ನಂ) ಮಂಡಲಾಕಾರವಾಗಿರುವ  
ಭೂಮಿಯ ದೊಡ್ಡ ವೃತ್ತರೇಖೆಯೊಳಗಿನ ಅಕ್ಷರೇಖೆಯಲ್ಲಿ  
ರುವ ಸಣ್ಣ ವೃತ್ತರೇಖೆ, ಖಗೋಳದೊಳಗಿನ ಒಂದು  
ಸಣ್ಣ ವೃತ್ತರೇಖೆ.

ದೃಗ್ವಿಷ ದೃಗ್ವಿಷ (ಪುಂ) ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ದೃಶಿ ವಿಷಮಸ್ಯ।

ದೃಗ್ಲಂಬನ ದೃಗ್ಲಂಬನ (ನಂ) ನೆತ್ತಿಯ ಮೇಲೆ ದೃಷ್ಟಿ  
ಸ್ಥಾನದ ಬದಲಾವಣೆಯಿಂದ ವಸ್ತುಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿಯೂ  
ಅದಂತೆ ತೋರುವ ಬದಲಾವಣೆ.

ದೃಗ್ವೃತ್ತ ದೃಗ್ವೃತ್ತ (ನಂ) ವೃತ್ತಾಕಾರದ ದೃಷ್ಟಿಯ ಪ್ರಸರಣ  
ಸ್ಥಳ. ದೃಶ: ಪ್ರಚಾರಸ್ಥಾನಂ ವೃತ್ತಮಿವ।

ದೃಢಮಂಡಲ ದೃಢಮಂಡಲ (ನಂ) ವಿಮಂಧ್ಯದಿಂದ ಕ್ಷಿತಿಜ  
(ದಿಗಂತ)ದ ವರೆಗೆ ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವ ವೃತ್ತಭಾಗ. ದೃಶ:  
ತತ್ಪ್ರಚಾರಸ್ಯ ಮಂಡಲಮಿವ।

ದೃಢ ದೃಢ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ದೃಹ (ವೃದ್ಧಿ) "ಕ್ತ:"  
(೩-೪-೭೨)। ನಿಪಾಂ (೭-೨-೨೦)। "ಸ್ಥೂಲತ್ವಾತ್  
ಬಲವತ್ವಾಚ್ಚ ದೃಢ ಇತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ:। "ವೇದಾ:  
ಸ್ವಾಜ್ಞೋಜಿತ: ಕೃಣ್ಣೋ ದೃಢ: ಸಂಕರ್ಮಣೋಽಚ್ಯುತ:" ವಿಂ ಸಂ।  
2. ಹದಿಮೂರನೆಯ ಮನುವಾದ ರುಚಿಯ ಒಬ್ಬ ಮಗ.  
"ತ್ರಯೋದಶಸ್ಯ ಪುತ್ರಾಸ್ತೇ ವಿಜ್ಞೇಯಾಸ್ತು ರುಚಿ: ಸುತಾ:। ಸುತೇಶ:  
ಕ್ಷತ್ರಬುದ್ಧಿಶ್ಚ ಸುತಪಾ ನಿಭಯೋ ದೃಢ:" ಹರಿವಂ। 3. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ  
ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ದೃಢ: ಸುಹಸ್ತೋ ವಿರಜಾ: ಪ್ರಮಾಥಶ್ಚೋಪ್ರಯಾಗ್ಯಪಿ"  
ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ। 4. ರೂಪಕತಾಳದ ಒಂದು ಭೇದ.  
(ನಂ) 5. ಕಬ್ಬಿಣ. 6. ಲಾಮಂಜದ ಬೇರು. 7. ಅತಿ  
ಶಯ, ಅಧಿಕ. 8. ಕಾಠಿನ್ಯ. (ವಿಂ) 9. ಅಧಿಕವಾದ,  
ದೃಢವಾದ, ಬಲವಾದ. "ಯಸ್ಯಾ: ಕರಿಷ್ಯಾಮಿ ದೃಢಾನುತಾಪಂ  
ಪ್ರವಾಲಶಯ್ಯಾಶರಣಂ ಶರೀರಮ್" ಕುಮಾಂ ೨-೮। 10. ದೃಢ

ವಾದ, ಬಲವಾದ, ಭದ್ರವಾದ. 11. ಕಠಿನವಾದ, ಗಟ್ಟಿ  
ಯಾದ, ಬಗ್ಗಿಸಲಾಗದ. 12. ದೃಢವಾದ, ಸ್ಥಿರವಾದ,  
ಅಚಲವಾದ. "ಲಕ್ಷ್ಮೀಶ್ವರಪ್ರಣತಿಮಙ್ಗದೃಢವತಂ ತದ್ವಚ್ಚಂ ಯುಗಂ  
ಚರಣಯೋರ್ಜನಕಾತ್ಮಜಾಯಾ:" ರಘುಂ ೧೩-೭೮। 13. ಸ್ಥೂಲ  
ವಾದ, ದಪ್ಪವಾದ. "ಕ್ಷೀಣಂ ಕ್ಷಾಮಂ ವಿಲಿಂಠಂ ಸ್ವಾತ್  
ಸ್ಥೂಲಂ ತು ಬಹುಲಂ ದೃಢಮ್" ವೈಜಂ। 14. ಶಕ್ತಿ, ಸಮರ್ಥ,  
ಬಲಶಾಲಿ. "ದೃಢ: ಸ್ಥೂಲೇ ನಿತಾಂತೇ ಚ ಪ್ರಗಾಢೇ ಬಲವತ್ಯಪಿ"  
ಮೇದಿಂ। "ಕಠೋರನಿಷ್ಠುರಕ್ರೂರದೃಢದಾಹುಣಕವಕ್ಷಾಟ:" ವೈಜಂ।  
(ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 15. ಅಧಿಕವಾಗಿ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ. 16. ಕಠಿನ  
ವಾಗಿ. 17. ದೃಢವಾಗಿ, ಬಲವಾಗಿ. "ಅಶಿಥಿಲಮಪರಾಃ-  
ವಸಜ್ಯ ಕಂಠೇ ದೃಢಪರಿರಂಭಬೃಹದ್ಬಹಿ:ಸ್ತನೇನ" ಮಾಧಂ ೭-೧೬।

ದೃಢಕಾಂಡ ದೃಢಕಾಂಡ (ಪುಂ) ಬಿದಿರುಮೇಳೆ, ವಂಶವೃಕ್ಷ.

ದೃಢಕಾಯ ದೃಢಕಾಯ (ವಿಂ) ದೃಢವಾದ ದೇಹವುಳ್ಳ,  
ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಶರೀರವುಳ್ಳ. ದೃಢ: ಕಾಯೋ ಯಸ್ಯ। ದೃಢದೇಹ:  
ದೃಢಶರೀರ: ಇತ್ಯಾದಿ.

ದೃಢಕ್ಷಾತ್ರ ದೃಢಕ್ಷಾತ್ರ (ಪುಂ) ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.  
"ದೃಢವರ್ಮಾ ದೃಢಕ್ಷಾತ್ರ: ಸೋಮಕೀರ್ತಿರನೂದಕ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ।

ದೃಢಗಾತ್ರिका ದೃಢಗಾತ್ರिका (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಕಂಬಿ, ಜೋನು  
ಬೆಲ್ಲ.

ದೃಢಗ್ರಂಥಿ ದೃಢಗ್ರಂಥಿ (ಪುಂ) 1. ಬಿದಿರು, ವಂಶವೃಕ್ಷ.  
2. ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಗಂಟು. 3. ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಗಿಣ್ಣು.  
(ವಿಂ) 4. ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಗಂಟುಗಳುಳ್ಳ. 5. ಗಟ್ಟಿಯಾದ  
ಗಿಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ. ದೃಢ ಗ್ರಂಥಿಯೋ ಯಸ್ಯ।

ದೃಢತಮ ದೃಢತಮ (ವಿಂ) ಬಹು ಮಂದಿಗಳಲ್ಲಿ ಅಥವಾ  
ಬಹು ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ 1. ಹೆಚ್ಚು ಬಲಶಾಲಿಯಾದ. 2. ಹೆಚ್ಚು  
ಕಠಿನವಾದ. 3. ಹೆಚ್ಚು ಭದ್ರವಾದ. 4. ಹೆಚ್ಚು ಸ್ಥಿರ  
ವಾದ. 5. ಹೆಚ್ಚು ದಪ್ಪವಾದ. 6. ದೊಡ್ಡದಾದ  
ಒಂದು ವಸ್ತು ಅಥವಾ ಒಬ್ಬ ಮನುಷ್ಯ. ಅಯಮೇತೇಷಾಮತಿ-  
ಶಯೇನ ದೃಢ: "ತಮಪ್" (೪-೩-೪೪)। ಹೀಗೆಯೇ ಅಯ-  
ಮನಯೋರತಿಶಯೇನ ದೃಢ: "ತರಪ್" (೪-೩-೪೭)। ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ  
ಒಬ್ಬನು ಹೆಚ್ಚು ಸಮರ್ಥ ಅಥವಾ ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ  
ಒಂದು ಅಧಿಕ ಇತ್ಯಾದಿ. -ತರ: -ತರಃ.

ದೃಢದಂಶಕ ದೃಢದಂಶಕ (ಪುಂ) ಮೊಸಳೆಯಾಕಾರದ ಒಂದು  
ಮೀನು. ದೃಢ ದಶತಿ - ದಂಶ (ದಶನೇ) "ಶ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ದೃಢಧನ ದೃಢಧನ (ಪುಂ) ಶಾಕ್ಯಮುನಿ.

ದೃಢಧನ್ವನ್ ದೃಢಧನ್ವನ್ (ಪುಂ) 1. ಪೂರುವಂಶದ ಒಬ್ಬ  
ದೊರೆ. "ಸುದಕ್ಷಿಣಾಶ್ಚ ಕಾಮಭೋಜೋ ದೃಢಧನ್ವಾ ಚ ಪೌರವ:"



ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೦೧-೧೫। (ವಿಂ) 2. ದೃಢವಾದ ಧನುಸ್ಸುಳ್ಳವನು. ದೃಢ ಧನುಸ್ಸು "ಅನಹ್" (೪-೪-೧೩೨)।

ದೃಢಿಶ್ರಯ ದೃಢನಿಶ್ಚಯ (ವಿಂ) ಅಚಲವಾದ ನಿರ್ಧಾರವುಳ್ಳವನು, ಸಂಶಯಲೇಶವೂ ಇಲ್ಲದವನು, ಯಾರಿಂದಲೂ ಬದಲಾಯಿಸಲು ಅಶಕ್ತವಾದ ನಿಶ್ಚಯಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. ದೃಢ: ಸ್ಥಿರ: ನಿಶ್ರಯ: ಅಧ್ಯವಸಾಯೋ यस್ಯ।

ದೃಢನೀರ ದೃಢನೀರ (ಪುಂ) ನಾರಿಕೇಳವೃಕ್ಷ, ತೆಂಗಿನಮರ.

ದೃಢನೆತ್ರ ದೃಢನೇತ್ರ (ಪುಂ) ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಯುಷಿಯ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

ದೃಢಪತ್ರ ದೃಢಪತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಬಿದಿರು ಮೆಳೆ, ಮಶವೃಕ್ಷ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪತ್ರಿ -ಪತ್ರಿ. 2. ಕರಡಿಹುಲ್ಲು.

ದೃಢಪಾದ ದೃಢಪಾದ (ಪುಂ) 1. ಚತುರ್ಮುಖಬ್ರಹ್ಮ. "ಬಹುತ್ವಾದ್ ದೃಢಪಾದಶ್ಚ ವಿಶ್ವಾತ್ಮಾ ಜಗತಾಂ ಪತಿ:" ಹರಿವಂ। (ವಿಂ) 2. ದೃಢವಾದ ನಿಶ್ಚಯವುಳ್ಳ, ಸ್ಥಿರವಾದ ನಿಶ್ಚಯ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ.

ದೃಢಪ್ರತ್ಯಗ ದೃಢಪ್ರತ್ಯಯ (ಪುಂ) 1. ದೃಢವಾದ ನಂಬಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ದೃಢವಾದ ನಂಬಿಕೆಯುಳ್ಳವನು. ದೃಢ: ಪ್ರತ್ಯಯ: ವಿಶ್ವಾಸ: ಯಸ್ಯ।

ದೃಢಪ್ರೋಹ ದೃಢಪ್ರೋಹ (ಪುಂ) ಮಟವೃಕ್ಷ, ಅಲದಮರ. ದೃಢ: ಪ್ರೋಹೋಽಸ್ಯ।

ದೃಢಫಲ ದೃಢಫಲ (ಪುಂ) ತೆಂಗಿನಮರ.

ದೃಢಬೀಜ ದೃಢಬೀಜ (ಪುಂ) 1. ಬೋರೆಗಿಡ, ಎಲಚಿಮರ. 2. ತೆಂಗಿಗಿಡ. ದೃಢ ಬೀಜಮಸ್ಯ। (ನಂ) 3. ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಬೀಜ, ಕಠಿನವಾದ ಬೀಜ.

ದೃಢಭಕ್ತಿ ದೃಢಭಕ್ತಿ (ವಿಂ) ಸ್ಥಿರವಾದ ಭಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು, ಅಚಲವಾದ ಭಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು. ದೃಢ ಭಕ್ತಿಯಸ್ಯ।

ದೃಢಮುಠಿ ದೃಢಮುಷ್ಠಿ (ಪುಂ) 1. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. 2. ಮಚ್ಚು. 3. ಕುಡುಗೋಲು ಮುಂತಾದುವು. ದೃಢ ಮುಠಿ: ಯಸ್ಯ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ಬಲವಾದ ಮುಷ್ಟಿ. (ವಿಂ) 5. ಕೃಪಣ, ಜಿಪ್ಪಣ.

ದೃಢಮೂಲ ದೃಢಮೂಲ (ಪುಂ) 1. ಮುಂಜತ್ಯಣ, ಮೌಂಜ ಹುಲ್ಲು. 2. ತೆಂಗಿನಮರ. ದೃಢ ಮೂಲಮಸ್ಯ।

ದೃಢರಜ್ಞ ದೃಢರಂಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಟಿಕ.

ದೃಢರಥ ದೃಢರಥ (ಪುಂ) ದೃಢರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಅಭಯೋ ರೋದ್ರಕರ್ಮಾ ಚ ತಥಾ ದೃಢರಥಶ್ಚ ಯ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ।

ದೃಢಲೋಮನ್ ದೃಢಲೋಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಮರಾಹ, ಹಂದಿ. ದೃಢಾನಿ ಲೋಮಾನ್ಯಸ್ಯ। 2. ದೃಢವಾದ ಕೂದಲು, ಒರಟು ಕೂದಲು. ದೃಢ ಲೋಮ। (ವಿಂ) 3. ಒರಟು ಕೂದಲುಳ್ಳ.

ದೃಢಾನಿ ಲೋಮಾನಿ ಯಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ವಾ "ಡಾಪ್" (೪-೧-೧೩)। ದೃಢಲೋಮಾ ದೃಢಲೋಮಾ. ಪಕ್ಷೆ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಲೋಮ್ನಿ -ಲೋಮ್ನಾ.

ದೃಢವರ್ಮನ್ ದೃಢವರ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ದೃಢರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ದೃಢವರ್ಮಾ ದೃಢಶಾತ್ರ: ಸೋಮಕೀರ್ತಿರನೂದರ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ। (ವಿಂ) 2. ದೃಢವಾದ ಕವಚವುಳ್ಳ, ಅಭೇದ್ಯವಾದ ಕವಚವುಳ್ಳ. ದೃಢ ವರ್ಮ ಯಸ್ಯ।

ದೃಢವಲಕಲ ದೃಢವಲ್ಕಲ (ಪುಂ) 1. ಅಡಕೆಮರ. ದೃಢ ವಲಕಲಂ ತ್ವಗಸ್ಯ। (ವಿಂ) 2. ಗಟ್ಟಿಯಾದ ತೊಗಟೆಯುಳ್ಳ.

ದೃಢವ್ರತ ದೃಢವ್ರತ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಥಿರಸಂಕಲ್ಪವುಳ್ಳ, ದೃಢ ನಿಶ್ಚಯವುಳ್ಳ, ಫಲವು ದೊರಕುವವರೆಗೂ ಪ್ರಯತ್ನವನ್ನು ಬಿಡದಿರುವ ಸ್ವಭಾವದ. ದೃಢ ವ್ರತಂ ಯಸ್ಯ। "ಸ್ಥೇಯಾಗ್ನಿಗೂಢಮಾನೋ ಧೀರೋದಾತ್ತೋ ದೃಢವ್ರತ: ಕಥಿತ:" ಸಾಂ ೧೦। 2. ಯಾರಿಂದಲೂ ಭಂಗಪಡಿಸಲು ಅಶಕ್ತವಾದ ಸಂಕಲ್ಪವುಳ್ಳ. ದೃಢ ಚಾಲಯಿತುಮಶಕಯಂ ವ್ರತಂ ಯಸ್ಯ। "ಎವಂ ದೃಢವ್ರತೋ ನಿಯಂ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ ಸಮಾಹಿತ:" ಮನುಂ ೧೧-೮೧।

ದೃಢಸಂಧ ದೃಢಸಂಧ (ಪುಂ) 1. ದೃಢರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಜರಾಸಂಧೋ ದೃಢಸಂಧ: ಸತ್ಯಸಂಧ: ಸಹಸ್ರವಾಕ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ। (ವಿಂ) 2. ಸ್ಥಿರವಾದ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯುಳ್ಳವನು. ದೃಢ ಸಂಧಾ ಯಸ್ಯ।

ದೃಢಸಂಧಿ ದೃಢಸಂಧಿ (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಭದ್ರವಾಗಿ ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವ. ದೃಢ: ಸಂಧಿ: ಸಂಧಾನಂ ಯಸ್ಯ।

ದೃಢಹಸ್ತ ದೃಢಹಸ್ತ (ಪುಂ) 1. ದೃಢರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. 2. ದೃಢವಾದ ಹಸ್ತವ್ಯಾಪಾರವುಳ್ಳ, ಶಸ್ತ್ರಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಭದ್ರವಾಗಿ ಹಿಡಿದು ಯುದ್ಧಮಾಡುವ ಸೈನಿಕ. ದೃಢ: ಹಸ್ತ: ಹಸ್ತವ್ಯಾಪಾರೋ ಯಸ್ಯ।

ದೃಢಾಙ್ಗ ದೃಢಾಂಗ (ವಿಂ) 1. ದೃಢವಾದ ಅಂಗವುಳ್ಳವನು, ಗಟ್ಟಿ ದೇಹವುಳ್ಳವನು, ಬಲಶಾಲಿ. ದೃಢಾನಿ ಅಙ್ಗಾನಿ ಯಸ್ಯ। (ನಂ) 2. ವಜ್ರ.

ದೃಢಾಯು ದೃಢಾಯು (ಪುಂ) 1. ಮೂರನೆಯ ಮನುವಾದ ಸಾವರ್ಣನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಕ್ಷೇತ್ರಧನ್ವಾ ದೃಢಾಯುಶ್ಚ ಆದರ್ಶ: ಪಂಡಕೋ ಮನು:। ಸಾವರ್ಣಸ್ಯ ತು ಪುತ್ರಾ ವೈ ತೃತೀಯಸ್ಯ ನವ ಸ್ಮೃತಾ:" ಹರಿವಂ। 2. ಉರ್ವಶಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಪುರೂರವಸ್ಥಿನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಪದ್ಸುತಾ ಜಗ್ನಿರೇ ಚೇಲಾ-ದಾಯುರ್ಭಿಮಾನಮಾವಸು:। ದೃಢಾಯುಶ್ಚ ವನಾಯುಶ್ಚ ಶತಾಯುಶ್ಚೋವಂಶೀ-ಸುತಾ:" ಭಾಂ ಆದಿ ೬೯-೨೮।

ದೃಢಾಯುಃ ದೃಢಾಯುಃ (ಪುಂ) 1. ದೃಢರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಉಗ್ರಾಯುಧೋ ಭೀಮಶರ: ಕನಕಾಯುದೃಢಾಯುಃ:" ಭಾಂ



ಆದಿಂ ೬೮-೯೯। (ವಿಂ) 2. ಬಲವಾದ ಆಯುಧ  
ವ್ಯಾಪಾರವುಳ್ಳ ಸೈನಿಕ.

ದೃತಿ ದೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚರ್ಮದ ಪಾತ್ರ, ತೋಗಲಿನ ಬೇಲ.  
ದೃಙ್ (ಆದರೆ) "ಕ್ರಿಚ್" (೩-೩-೧೭೪)। "ಇಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ  
ತು ಸರ್ವೇಷಾಂ ಯದೇಕಂ ಕರತೀಂದ್ರಿಯಮ್। ತೇನಾಸ್ಯ ಕರತೀ ಪ್ರಜ್ಞಾ  
ದತ್ತೇ: ಪಾದಾದಿವೋದಕಮ್" ಮನುಂ ೨-೯೯। (ಪುಂ) 2. ಮತ್ತೊಂದು.  
ಮಿಷು. "ದೃತಿಶ್ಚರ್ಮಪುಟೇ ಮತ್ಸ್ಯೇ ನಾ" ಮೇದಿಂ। 3. ಗಂಗೆ  
ದೊಡ್ಡಲು. "ಸವತ್ಸಾಂ ಪೀವರೀಂ ದತ್ವಾ ದೃತಿಕಣ್ಠಾಮಲಙ್ಕೃತಾಮ್"  
ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೧೪-೧೮।

ದೃತ್ಯ ದೃತ್ಯ (ನಂ) 1. ಆದರ, ಗೌರವ. ದೃಙ್ (ಆದರೆ)  
"ಕೃಪ್" (೩-೧-೧೧೦)। (ವಿಂ) 2. ಆದರಿಸಲ್ಪಡುವ.  
ಗೌರವಿಸಲ್ಪಡುವ. ದೃಙ್ ಕರ್ಮಂ "ಕೃಪ್"।

ದೃನ್ ದೃನ್ (ಅವ್ಯಂ) ಹಿಂಸೆ, ಬಾಧೆ, ತೊಂದರೆ. "ದೃನ್ ಇತಿ  
ಹಿಸಾರ್ಥೆ ಅವ್ಯಯಮ್" ಸಿಂ ಕೌಂ।

ದೃನ್ಮ ದೃನ್ಮ ಭೂ (ಪುಂ) 1. ವಜ್ರಾಯುಧ. 2. ಸೂರ್ಯ.  
ದೃನ್ ಹಿಸಾರ್ಥೆ ಭವತಿ - ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾ) "ಕು:" (೩ಂ  
೧-೯೩)। ನಿಪಾಂ। 3. ರಾಜ, ದೊರೆ. 4. ಚಕ್ರ,  
ಗಾಲಿ. 5. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. "ದೃನ್ಮ: ಸ್ತ್ರೀ ಸರ್ಪಚಕ್ರಯೋ:"  
ಮೇದಿಂ।

ದೃಪ - ಹೃಷಮೋಹನಯೋ: (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ವೇಂ)। ದೃಪ್ಯತಿ।  
ದರ್ದಪ್। ದರ್ದಪಿತಾ, ದರ್ದಪ್ತಾ, ದರ್ದಪ್ತಾ। ದರ್ದಪ್ಯತಿ, ದರ್ದಪ್ಯತಿ,  
ದರ್ದಪ್ಯತಿ। ದೃಪ್ಯತು। ಅದೃಪ್ಯತ್। ದೃಪ್ಯೇತ್। ದೃಪ್ಯಾತ್।  
ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಹರ್ಷಹೊಂದು, ಸಂತೋಷಪಡು. 2. ಗರ್ವ  
ಹೊಂದು, ಅಹಂಕಾರಪಡು. "ದೃಪ್ತಾರಿಸಂತ್ರಾಸಖಿಲೀಕೃತಾಸ್ತ  
ಕಥಂಚಿದಮ್ಭೋದವಿಹಾರಮಾರ್ಗಾತ್" ಕುಮಾಂ ೧೨-೨। "ಕೋ ನ  
ದೃಪ್ಯತಿ ವಿದ್ವೇನ ಕುಕೃತ್ಯೇ ಕೋ ನ ಪಂಡಿತ:" ಹಿತೋಂ।

ಭಾವೇ:-ದೃಪ್ಯತೇ। ದರ್ದಪೇ। ದರ್ದಪಿತಾ, ದರ್ದಪ್ತಾ, ದರ್ದಪ್ತಾ।  
ದರ್ದಪ್ಯತೇ, ದರ್ದಪ್ಯತೇ, ದರ್ದಪ್ಯತೇ। ದೃಪ್ಯತಾಮ್। ಅದೃಪ್ಯತ।  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:-ದರ್ದಪಿತವ್ಯಮ್, ದರ್ದಪ್ತವ್ಯಮ್, ದರ್ದಪ್ಯವ್ಯಮ್। ದರ್ದಪ್ಯವ್ಯಮ್।  
ದೃಪ್ತ:। ದೃಪ್ತವಾನ್, -ವತಿ। ದೃಪ್ಯನ್, -ಂತಿ। ದರ್ದಪಿತುಮ್,  
ದರ್ದಪ್ತುಮ್, ದರ್ದಪ್ಯುಮ್। ದೃಪ್ತಮ್। ದರ್ದಪ್ಯಮ್। ದೃಪ್ತವಾ।

ದೃಪ್ತ ದೃಪ್ತ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. "ದರ್ದಪ್ತಾ ದರ್ದಪ್ತೋ ದೃಪ್ತ:"  
ವಿಂ ಸಂ। "ಅದೃಪ್ತ:" ಇತಿ ವಾ। (ವಿಂ) 2. ಕೊಟ್ಟಿದ  
ವನು, ಅಹಂಕಾರದಿಂದ ಕೊಡಿದವನು. 3. ಸಂತೋಷ  
ಗೊಂಡವನು, ಹರ್ಷದಿಂದ ಕೊಡಿದವನು. ದೃಪ (ಹೃಷ-  
ಮೋಹನಯೋ:) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)।

ದೃಪ್ಯತ್ ದೃಪ್ಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಅಹಂಕಾರಪಡುತ್ತಿರುವ, ಗರ್ವ  
ಪಡುತ್ತಿರುವ. ದೃಪ (ಹೃಷಮೋಹನಯೋ:) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
"ದೃಪ್ಯತಾಮಯ ದೇಶಾನಾಂ ಧ್ವನಿರೂಪಯನ್ ದಿವಮ್। ಪಾಶ್ಚಾತ್ಯ-  
ಪ್ರಣಾಡೇನ ಪರ್ಯಭೃತ ಭೃಯಸಾ" ಯಾದಂ ೧೬-೮೩। 2. ಹರ್ಷ  
ಗೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಸಂತೋಷಪಡುತ್ತಿರುವ.

ದೃಪ್ತ ದೃಪ್ತ (ವಿಂ) ಬಲಶಾಲಿ, ಪರಾಕ್ರಮಿ. ದೃಪ (ಹೃಷಮೋಹ-  
ನಯೋ:) "ರಕ್" (೩ಂ ೨-೧೩) ದೃಪೋ ಬಲವಾನ್-ಸಿಂ ಕೌಂ।

ದೃಶ್ಯ ದೃಶ್ಯ (ನಂ) 1. ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ. ದೃಶಿ (ಭಯ)  
ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಕಟ್ಟುವುದು, ಪೋಷಿಸುವುದು.  
ದೃಶಿ (ಪ್ರಾಣಿ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)।  
(ವಿಂ) 3. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟು, ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ದೃಶಿ (ಪ್ರಾಣಿ)  
"ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 4. ಭಯಗೊಂಡ, ಹೆದರಿದ.  
ದೃಶಿ (ಭಯ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)।

ದೃಶ್ ದೃಶ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೋಡು, ಕಣ್ಣು. ದೃಶ್ಯತೇಜನಯಾ-ದೃಶಿರ್  
(ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) "ಕ್ವಿಪ್" (ವಾಂ ೩-೩-೯೪)। "ದೃಶಾ ದೃಶಂ  
ಮನಸಿಜಂ ಜೀವಯಂತಿ ದೃಶೇವ ಯಾ:। ವಿರೂಪಾಕ್ಷಸ್ಯ ಜಯಿನಿಸ್ತಾ:  
ಸ್ತುತೇ ವಾಮಲೋಚನಾ:"। 2. ದರ್ಶನ, ನೋಟ, ಅವಲೋಕನ.  
ದೃಶಿರ್ ಭಾವೇ "ಕ್ವಿಪ್"। "ಪದಂ ದೃಶ: ಸ್ಯಾ: ಕಥಮಿಶ-  
ಮಾದೃಶಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೩೭। 3. ಬುದ್ಧಿ, ಜ್ಞಾನ.  
4. ಎರಡು ಸಂಖ್ಯೆ. (ವಿಂ) 5. ನೋಡುವ, ಅವಲೋಕಿಸು-  
ವು. "ವಾಯುಮಕ್ಷೋ ದಿವಾ ತಿಷ್ಠನ್ ರಾತ್ರಿ ನೇತ್ವಾಪ್ಸು  
ಸೂರ್ಯದೃಕ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೩೧೧। "ದೃಕ್ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ದರ್ಶನೇ  
ನೇತ್ರೇ ಬುದ್ಧಿ ಚ ತ್ರಿಷು ವೀಕ್ಷಕೇ" ಮೇದಿಂ।

ದೃಶಾ ದೃಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೋಡು, ಕಣ್ಣು. ದೃಶ್ "ದಾಪ್"। "ಆಪಂ  
ಚೈವ ಹಲಂತಾನಾಂ ಯಥಾ ಬಾಚಾ ನಿಶಾ ದಿಶಾ"।

ದೃಶಾನ ದೃಶಾನ (ಪುಂ) 1. ಅಜ್ಞಾಯಕ. 2. ಉಪಾಧ್ಯಾಯ.  
3. ಲೋಕಪಾಲಕ. 4. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. 5. ವಿರೋಚನ,  
ಸೂರ್ಯ. ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) "ಆನಚ್" (೩ಂ ೨-೯೦)।  
(ನಂ) 6. ಜ್ಯೋತಿಷ್ಣು, ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. "ದೃಶಾನಂ  
ಜ್ಯೋತಿಷಿ ಕಲಿಬಂ ಪುಲಿಂಜಃ ಸ್ಯಾದ್ವಿರೋಚನೇ" ಮೇದಿಂ।

ದೃಶಿರ್ - ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ)। ಪಶ್ಯತಿ।  
ದದರ್ಶಂ। ದೃಶ್ಯತಿ। ಪಶ್ಯತು। ಅಪಶ್ಯತ್। ಪಶ್ಯೇತ್।  
ದೃಶ್ಯಾತ್। ಅದರ್ಶತ್, ಅದ್ರಾಕ್ಷಿತ್। ಅದ್ರಾಕ್ಷ್ಯತ್। ಅವಲೋಕಿಸುಂ,  
ನೋಡು. "ವಸಂದದರ್ಶಾವಿತರಂತಮಮ್ಬರಾದ್ವಿರಂಶಗರ್ಭಾಭಿಭುವಂ  
ಮುನಿ ಹರಿ:" ಮಾಘಂ ೧-೧।

ಕರ್ಮಣಿ:-ದೃಶ್ಯತೇ। ದದೃಶೇ। ದೃಶಿತಾ, ದೃಶ್ಯಾ। ದೃಶಿಷ್ಯತೇ,  
ದೃಶ್ಯತೇ। ದೃಶ್ಯತಾಮ್। ಅದೃಶ್ಯತ। ದೃಶ್ಯೇತ। ದೃಶಿಷೀಷ್ಯತ,  
ದೃಶಿಷ್ಯತ। ಇತ್ಯಾದಿ.



**ಗಿಚಿ:**—ದರ್ಶಯತಿ, -ತೇ। ದರ್ಶಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ, -ಬभूव, -आस। दर्शयिता। दर्शयिष्यति, -ते। दर्शयतु, -ताम्। ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಸನಿ:**—ದಿದೃಕ್ಷತೇ। ದಿದೃಕ್ಷಾಂ ಚಕ್ರೇ, -बभूव, -आस। दಿದृक्षिता। दಿದृक्षिष्यते। दಿದृक्षताम्। ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತ್ಸು:**—द्रष्टव्यः। दर्शनीयः। दृश्यः। दृष्टः। दृष्टवान्। पश्यन्, न्ती। द्रष्टुम्। दृष्टम्। दर्शनम्। दृष्ट्वा। सन्दृश्य।

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) अनु + दृशिर् = अनुपश्यति। अनुदर्श।

1. ಅನುಚಿಂತಿಸಿ ನೋಡು, ಯೋಚಿಸಿ ನೋಡು. “बहुविध-मनुदृश्य चार्थहेतोः कृपणमिहायमनार्यमाश्रयं तम्” भा० शान्ति० १७७-२९। 2. ಅನುಸಂಧಾನಮಾಡು. ದೀರ್ಘ ಕಾಲ ಮನನಮಾಡು. “जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानु-दर्शनम्” गीता १३-८।

(2) अभि + दृशिर् = अभिदर्शनम्। अभिदृष्टः।

ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ನೋಡು, ಎದುರಾಗಿ ನೋಡು. “तदा-प्रभृति कौन्तेय नरा गिरिमिमं सदा। नाशकुबजभिद्रष्टुं कुत एवाधिरोहणम्” भा० वन०।

(3) आ + दृशिर् = आदृश्यते। आदर्शः।

ಎದುರಾಗಿ ನೋಡು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡು. “उत्कलादर्शितपथः कलिङ्गाभिमुखो ययौ” रघु० ४-३८।

(4) नि + दृशिर् = निदर्शयति। निदर्शनम्।

1. ದೃಷ್ಟಾಂತವಾಗಿ ತೋರಿಸಿಕೊಡು. “स्वयं प्रणमतेऽ-ल्पेपि परवायावुपेयुषि। निदर्शनमसाराणां लघुर्बहुतृणं नरः” माघ० २-५०। 2. ಎದುರಿಗೆ ತೋರಿಸು, “द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं त्वं निदर्शय” भा० आश्रम०।

(5) प्र + दृशिर् = प्रदर्श। प्रदर्शयति। प्रदर्शनम्।

ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡು. “प्रददृशुरुमुक्तशीकरौघान् विमल-मणिद्युतिसंभृतेन्द्रचापान्” भट्टि० १०-५६।

(6) सम् + दृशिर् = संदर्श। संदर्शयति। संदर्शनम्।

ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡು. “संदर्शोन्नमद्ग्रीवः श्रीबहुत्व-कृताद्भुतान्” नैष० १७-११०।

**ದೃಶಿ ದೃಶಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೇತ್ರ, ಕಣ್ಣು. **ದೃಶಿರ್** “इन्” (उ० ४-११९)।

**ದೃಶ್ಯ ದೃಶ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ನೋಡಲಂ ಯೋಗ್ಯವಾದ.

2. ನೋಡಬಹುದಾದ. दृशिर् (प्रेक्षणे) “कयप्”

(३-१-११०)। “दृश्यं तमसि न पश्यति दीपेन विना

सचक्षुरपि” माल० १-९। 3. ರಮಣೀಯವಾದ,

ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ. “निदर्शयामास

विशेषदृश्यमिन्दुं नवोत्थानमिवेन्दुमत्यै” रघु० ६-३१।

(ನಂ) 4. ಅಭರಣ, ಒಡವೆ. 5. ಕಾವ್ಯದ ಒಂದು ಭೇದ.

ಕಾವ್ಯವು ದೃಶ್ಯ ಮತ್ತು ಶ್ರವ್ಯ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ.

ಅಭಿನಯಯೋಗ್ಯವಾದುದು ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯ. “दृश्यश्रव्य-

त्वभेदेन पुनः काव्यं द्विधा मतम्। दृश्यं तत्राभिनेयम्”

सा० द० ६-१। (अव्य०) 6. ನೋಡಿ. “दृष्ट्वा”

ಪದದ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಅರ್ಷಪ್ರಯೋಗ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -इया

-आ, 7. ಸೈನ್ಯ, ದಂಡು. “दृश्या स्त्री पृतना दृश्यं

दर्शनीये विभूषणे” वैज०।

**ದೃಶ್ಯಾದೃಶ್ಯ ದೃಶ್ಯಾದೃಶ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣುವ

ಮತ್ತು ಕಾಣದಿರುವ. दृश्यं चादृश्यं च। “दृश्यादृश्य-

तनुर्वीरः तदा चन्द्रायतेऽम्बरे” रामा०। (ಸ್ತ್ರೀಂ)

-इयादृश्या -आ, दृश्या, 2. ಸಿನೀವಾಲಿ, ಚತುರ್ದಶೀ

ಸಂಬಂಧವಿರುವ ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ. ಸೂರ್ಯೋದಯ ಕಾಲ

ದಲ್ಲಿ ಚತುರ್ದಶೀ ಯೋಗವಿರುವ ಅಮಾವಾಸ್ಯೆಯ ದಿನ

ಚಂದ್ರಕಲಾದರ್ಶನವಿರುವುದು. ಈ ಅಮಾವಾಸ್ಯೆಗೆ

“सिनीवाली” ಎಂದು ಹೆಸರು. “सा दृष्टेन्दुः

सिनीवाली” अम०।

**ದೃಶವನ್ ದೃಶ್ಯನ್** (ವಿಂ) (ಸಮಾಸಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ) ವೀಕ್ಷಿಸಿದ,

ನೋಡಿದ. दृशिर् (प्रेक्षणे) “क्वनिप्” (३-२-९४)।

ಪಾರಂ ದೃಷ್ಟವಾನ್ ಪಾರದೃಶ್ವಾ ಇತ್ಯಾದಿ. “अनाकृष्टस्य विशयै-

विद्यानां पारदृश्वनः” रघु० १-२३।

**ದೃಷದ್ ದೃಷದ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶಿಲೆ, ಕಲ್ಲು. दृणाति—दृ

(विदारणे) “अदिः” षुगागमः ह्रस्वश्च (उ० १-१२८)।

“गुर्वीरजसं दृषदः समन्तादुपर्युपर्यम्बुमुचां वितानैः”

माघ० ४-२। 2. ಅರೆಯುವ ಕಲ್ಲು, ಪ್ರಡಿಮಾಡುವ

ಅಡಿಗಲ್ಲು. 3. ಬೀಸುವ ಕಲ್ಲಿನ ಕೆಳಗಿನ ಅಥವಾ ಮೇಲಿನ

ಹೊಂಟು. “दृषन्निष्पेषणशिलापट्टप्रस्तरयोः स्त्रियाम्”

मेदि०। “दृषन्निष्पेषणशिला केवलापि शिला दृषत्”

शाश्व०।

**ದೃಷದಿಮಾಷಕ ದೃಷದಿಮಾಷಕ** (ಪುಂ) ಅರೆಯುವ ಕಲ್ಲಿನ

ಸುಂಕ, ಅರೆಯುವ ಕಲ್ಲಿನ ಯಂತ್ರಕ್ಕಾಗಿ ಸರ್ಕಾರಕ್ಕೆ ಕೊಡ

ಬೇಕಾದ ಮಾಷರೂಪವಾದ ಸುಂಕ. माषः शुल्कत्वेन



ದೀಯತೇ "ಕ್ನ" । ದೃಷ್ಟಿಮಾಪಕ: — ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಅಲ್ಪಕ್ (೬-೩-೧೦) ।

ದೃಷ್ಟತ್ ದೃಷ್ಟತ್ (ವಿಂ) ಕಲ್ಪಗಂಧ ಕೂಡಿದ, ಬಂಡೆ ಗಂಧ ತುಂಬಿದ. ದೃಷ್ಟ: ಭೂನಾ ಸನ್ಯತ್ರ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಹೀಪ್" (೪-೧-೬) । ದೃಷ್ಟತೀ ದೃಷ್ಟತೀ.

ದೃಷ್ಟತೀ ದೃಷ್ಟತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಯುಷಿಯ ಪತ್ನಿ. "ದೃಷ್ಟತೀಸುತಶ್ರಾಪಿ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಾತ್ಪಾಟಕ:" ಹರಿವಂ । 2. ಬಂದು ನದಿ. 3. ದುರ್ಗಾವೇವಿ. "ದೃಷ್ಟತೀ ನದಿಭೇದೇ ಕಾತ್ಯಾಯನಾಮಪಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ ।

ದೃಷ್ಟ ದೃಷ್ಟ (ನಂ) 1. ನೋಟ, ದರ್ಶನ. ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೨೪) । "ಅಕೃತ್ರಿಮಪ್ರೇಮರಸಾಭಿರಾಮಂ ರಾಮಾಪಿತಂ ದೃಷ್ಟಿವಿಲೋಭಿ ದೃಷ್ಟಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೩೭ । 2. ರಾಜರಿಗೆ ತಮ್ಮ ರಾಷ್ಟ್ರದಲ್ಲಿ ಕಳ್ಳಕಾಕರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಭಯ. 3. ಪರರಾಷ್ಟ್ರಗಳವರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಭಯ. "ದೃಷ್ಟಂ ಸ್ವಪರಚಕ್ರಜಮ್" ಅಮಂ । (ವಿಂ) 4. ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ದೃಷ್ಟೋಪಿ ಶೇಲ: ಸ ಮಧುರ್ಮುರಾರೇರ್ಪೂರ್ವವದ್ವಿಷಯ-ಮಾತತಾನ" ಮಾಘಂ ೪-೧೭ । 5. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ದೃಶಿರ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । 6. ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ ಹೊಂದಿದ, ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ ತೋರಿಸಿಕೊಂಡ. ದೃಶಿರ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) ।

ದೃಷ್ಟಚರ ದೃಷ್ಟಚರ (ವಿಂ) ಮೊದಲೇ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪೂರ್ವ ದೃಷ್ಟ: "ಚರತ್" (೪-೩-೪೩) ।

ದೃಷ್ಟದೋಷ ದೃಷ್ಟದೋಷ (ವಿಂ) 1. ತಪ್ಪುಮಾಡಿದುದನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ, ದೋಷವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ. ದೃಷ್ಟ: ದೋಷ: ಧೇನ । 2. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ ದೋಷವುಳ್ಳ ಅಪರಾಧಿ, ತಪ್ಪುಮಾಡಿದವನು. ದೃಷ್ಟೋ ದೋಷೋ ಯಸ್ಯ । 3. ದೋಷವನ್ನೇ ಹುಡುಕುವ (ಶತೃ).

ದೃಷ್ಟಿಪಥ ದೃಷ್ಟಿಪಥ (ಪುಂ) ನೋಟದದಾರಿ, ದೃಷ್ಟಿಮಾರ್ಗ. ದೃಷ್ಟಿ: ಪನ್ಯಾ: "ಅ:" (೪-೪-೭೪) । "ದೇವೋ ದೃಷ್ಟಿಪಥಂ ಗತ:" ಯಾದಂ ೧೬-೧೩೯ ।

ದೃಷ್ಟಪ್ರತ್ಯಯ ದೃಷ್ಟಪ್ರತ್ಯಯ (ವಿಂ) ದರ್ಶನದಿಂದ ನಂಬಿಕೆ ಹೊಂದಿದವನು. ದೃಷ್ಟೇನ ದರ್ಶನೇನ ಪ್ರತ್ಯಯೋ ಯಸ್ಯ ।

ದೃಷ್ಟರಜಸ್ ದೃಷ್ಟರಜಸ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಜಸ್ವಲೆ, ಪುಷ್ಪವತಿ ಯಾದ ಹೆಂಗಸು. ದೃಷ್ಟಂ ರಜ: ಆರ್ತವಂ ಯಸ್ಯಾ: । 2. ತರುಣಿ, ಪ್ರಾಯದ ಹೆಂಗಸು. "ಸ್ಯಾನ್ಮಧ್ಯಮಾ ದೃಷ್ಟರಜಾ:" ಅಮಂ ।

ದೃಷ್ಟವತ್ ದೃಷ್ಟವತ್ (ವಿಂ) ನೋಡಿದವನು. ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಹೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ವತೀ -ನತೀ.

ದೃಷ್ಟಾಂತ ದೃಷ್ಟಾಂತ (ಪುಂ) 1. ಉದಾಹರಣೆ, ನಿದರ್ಶನ, ನಿರ್ಣಯಕ್ಕಾಗಿ ಸಮಾನ ವಿಷಯವನ್ನು ನಿರೂಪಿಸುವುದು. ದೃಷ್ಟಾಂತೋ ನಿಶ್ಚಯೋ ಯತ್ರ । "ಪೂರ್ಣಶ್ರಂದ್ರೋದಯಾಕಾಂಕ್ಷೀ ದೃಷ್ಟಾಂತೋಽತ್ರ ಮಹಾರ್ಣವ:" ಮಾಘಂ ೨-೩೧ । 2. ದೃಷ್ಟಾಂತಾ ಲಂಕಾರ, ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಪ್ರಕೃತ ಮತ್ತು ಅಪ್ರಕೃತ ವಾಕ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಬಿಂಬ ಪ್ರತಿಬಿಂಬಭಾವದಿಂದ ಭಿನ್ನಧರ್ಮಗಳು ಭಿನ್ನಪದಗಳಿಂದ ಉಕ್ತವಾಗಿದ್ದರೂ ಪರಸ್ಪರ ಸಾದೃಶ್ಯದಿಂದ ಅಭಿನ್ನವಾದ ಆ ಧರ್ಮಗಳನ್ನು ಸಾಮಾನ್ಯ ಧರ್ಮವಾಗಿ ವರ್ಣಿಸುವುದು "ದೃಷ್ಟಾಂತಾ ಲಂಕಾರ:" । "ಚೇದಿಮ್ಬಪ್ರತಿಬಿಂಬತ್ವಂ ದೃಷ್ಟಾಂತಸ್ತ-ದಲಙ್ಕೃತಿ:" ತ್ವಮೇವ ಕೀರ್ತಿಮಾನ್ ರಾಜನ್ ವಿಧುರೇವ ಹಿ ಕಾಂತಿ-ಮಾನ್" ಚಂದ್ರಾಂ । ಈ ಉಪಮೇಯ ಮತ್ತು ಉಪಮಾನ ವಾಕ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಬಿಂಬ ಪ್ರತಿಬಿಂಬಭಾವದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕೀರ್ತಿ ಕಾಂತಿರೂಪವಾದ ಧರ್ಮಗಳು ಭಿನ್ನವಾಗಿದ್ದರೂ ಸಾದೃಶ್ಯ ದಿಂದ ಅಭಿನ್ನವಾದ ಅವುಗಳನ್ನು ಸಾಮಾನ್ಯ ಧರ್ಮವಾಗಿ ವರ್ಣಿಸಿರುವುದರಿಂದ ದೃಷ್ಟಾಂತಾಲಂಕಾರ. 3. ಶಾಸ್ತ್ರ. 4. ಮರಣ, ಸಾವು. "ದೃಷ್ಟಾಂತ ಉದಾಹರಣೆ" ಶಾಸ್ತ್ರೇ ಚ ಮರಣೇ" ಮೇದಿಂ ।

ದೃಷ್ಟಿ ದೃಷ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೋಟ, ದರ್ಶನ. ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪) । "ದೃಷ್ಟಿಪೂತಂ ನ್ಯಸೇತ್ಪಾದಂ ವಸ್ತ್ರಪೂತಂ ಜಲಂ ಪಿಬೇತ್ । ಸತ್ಯಪೂತಾಂ ವದೇದಾಚಂ ಮನ:ಪೂತಾಂ ಸಮಾಚರೇತ್" ಮನುಂ ೬-೪೬ । 2. ನೇತ್ರ, ಕಣ್ಣು. ದೃಶಿರ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಿನ್" । "ಮಹಿಮತ: ಪುತ್ರವತೋಽಪಿ ದೃಷ್ಟಿ-ಸ್ತಸ್ಮಿನ್ನಪತ್ಯೇ ನ ಜಗಾಮ ತೃಪ್ತಿಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೨೭ । "ಚಲಾಪಾಙ್ಗಾ ದೃಷ್ಟಿ ಸ್ಪೃಶಸಿ ಕ್ಷೇಪೋ ವೇಪಥುಮತೀ ರಹಸ್ಯಾ-ಖ್ಯಾಯಿವ ಸ್ವನಸಿ ಮೃದು ಕರ್ಣಾಂತಿಕಚರ:" ಶಾಕುಂ ೧-೨೦ । 3. ಜ್ಞಾನ, ಅರಿವು, ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ಪ್ರಜ್ಞೆ, ವಿವೇಕ, "ವಿದಿತ-ಬಂಧಕಾರಣಸ್ಯ ದೃಷ್ಟಯಾ ತದ್ವಪಮ್" ಸಾಂ ಸುಂ । 4. ಗ್ರಹಗಳ ದೃಷ್ಟಿ, ಗ್ರಹಗಳು ತಾವಿರುವ ರಾಶಿಯಿಂದ ಇತರ ರಾಶಿಗಳನ್ನೂ ಅಲ್ಲಿರುವ ಗ್ರಹಗಳನ್ನೂ ನೋಡುವುದು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಗ್ರಹ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. "ದೃಷ್ಟಿರ್ವಿಧೇನಾ-ಕ್ಷಿಪು" ವೈಜಂ ।

ದೃಷ್ಟಿಕ್ರತ್ ದೃಷ್ಟಿಕ್ರತ್ (ವಿಂ) 1. ನೋಡುವವನು. ದೃಷ್ಟಿ ಕರೋತಿ — ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣೆ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬) । (ನಂ) 2. ಸ್ಥೂಲಪದ್ಮ, ಸೆಲದಾಪರೆ.

ದೃಷ್ಟಿಕ್ಷೇಪ ದೃಷ್ಟಿಕ್ಷೇಪ-ಪಾತ-ಪಾತ (ಪುಂ) ದೃಷ್ಟಿಯನ್ನು ಬೀರುವುದು, ನೋಡುವುದು, ದರ್ಶನ. ದೃಷ್ಟಿ: ಕ್ಷೇಪ: ಪಾತೋ ವಾ । "ರಜ:ಕರ್ಣವಿಧಿನತದೃಷ್ಟಿಪಾತಾ:" ಕುಮಾಂ ೩-೩೧ ।



ದೃಷ್ಟಿಗುಣ ದೃಷ್ಟಿಗುಣ (ಪುಂ) ಲಕ್ಷ್ಯ, ಗುರಿ. ದೃಷ್ಟಾ  
ಗುಣಃ - ಗುಣ (ಆಮನ್ವಯ) "ಅಚ್" (೩-೧-೯೭) ।

ದೃಷ್ಟಿಗೋಚರ ದೃಷ್ಟಿಗೋಚರ (ವಿಂ) ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣುವ,  
ದೃಷ್ಟಿಗೆ ವಿಷಯವಾದ.

ದೃಷ್ಟಿದೋಷ ದೃಷ್ಟಿದೋಷ (ಪುಂ) ನೋಟದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ  
ಗುಣ ಕೆಡಕು, ನೋಡುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಕೆಟ್ಟ  
ಪರಿಣಾಮ.

ದೃಷ್ಟಿಪೂತ ದೃಷ್ಟಿಪೂತ (ವಿಂ) ನೋಟದಿಂದ ಶುದ್ಧವಾದ.  
ದೃಷ್ಟಾ ಪೂತಃ । "ದೃಷ್ಟಿಪೂತಂ ನ್ಯಸೇತ್ಪಾದಂ ವಸ್ತ್ರಪೂತಂ ಜಲಂ  
ಪಿಬೇತ್" ಮನುಂ ೬-೪೬ ।

ದೃಷ್ಟಿವಿಕ್ಷೇಪ ದೃಷ್ಟಿವಿಕ್ಷೇಪ (ಪುಂ) ಕಟಾಕ್ಷದರ್ಶನ,  
ಕಡೆಗಣ್ಣಿನ ನೋಟ, ಅರೆನೋಟ. ದೃಷ್ಟಿ: ತದೇಕದೇಶಸ್ಯ  
ವಿಕ್ಷೇಪಃ ।

ದೃಷ್ಟಿವಿಭ್ರಮ ದೃಷ್ಟಿವಿಭ್ರಮ (ಪುಂ) ದೃಷ್ಟಿಯವಿಲಾಸ,  
ಶೃಂಗಾರರಸವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ನೋಟ, ಮೋಹಗೊಳಿ  
ಸುವ ನೋಟ. ದೃಷ್ಟಿ: ವಿಭ್ರಮಃ ।

ದೃಷ್ಟಿವಿಷ ದೃಷ್ಟಿವಿಷ (ಪುಂ) ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ದೃಷ್ಟೌ  
ವಿಷಮಸ್ಯ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಘ್" (೪-೧-೬೩) ।

ದೃಷ್ಟಿಸಂಭೇದ ದೃಷ್ಟಿಸಂಭೇದ (ಪುಂ) ನೋಟಗಳ ಪರಸ್ಪರ  
ಮೇಳನ, ಪರಸ್ಪರ ನೋಟ. ದೃಷ್ಟಿ: ಸಂಭೇದಃ । "ವೈದಿಗ್ಯ-  
ಮುಖಮನೋಹರಾಃ ಮಯಾ ನ ನಿರೂಪಿತಾ ಉಪಯೋಗದೃಷ್ಟಿಸಂಭೇದಾಃ"  
ಮಾಲತೀಂ ೭ ।

ದೃಷ್ಟೇಂದ್ರ ದೃಷ್ಟೇಂದ್ರ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಿಂಹವಾಲಿ, ಚತುರ್ಧಶೀ  
ಯೋಗದಿಂದ ಚಂದ್ರನು ಕಾಣುವ ಅವಯವಾಸ್ಥೆ. ದೃಷ್ಟಿ:  
ಇಂದ್ರಃ ಯಸ್ಯಾಮ್ । "ಸಾ ದೃಷ್ಟೇಂದ್ರಃ ಸಿನಿವಾಲಿ" ಅಮಂ ।

ದೃ - ವಿದಾರಣೆ (ಕ್ರಿಯಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ದೃಣಾತಿ । ದದಾರ ।  
ದರಿತಾ, ದರಿತಾ । ದರಿಷ್ಯತಿ, ದರಿಷ್ಯತಿ । ದರತು । ಅದರತ್ ।  
ದರೆತ್ । ಇತ್ಯಾದಿ. ಸೀಳು, ಒಡೆ, ಕತ್ತರಿಸು.

ಕರ್ಮಣಿ :- ದೀಯತೇ । ದೇರೆ । ದಾರಿತಾ, ದರಿತಾ, ದರಿತಾ ।  
ದಾರಿಷ್ಯತೇ, ದರಿಷ್ಯತೇ, ದರಿಷ್ಯತೇ । ದೀಯತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ದೇ - ರಕ್ಷಣೆ (ಭವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) । ದಯತೇ ।  
ದಿಗ್ಯೇ । ದಾತಾ । ದಾಸ್ಯತೇ । ದಯತಾಮ್ । ಅದಯತ । ಇತ್ಯಾದಿ.  
ರಕ್ಷಿಸು, ಕಾಪಾಡು.

ಕರ್ಮಣಿ :- ದೀಯತೇ । ದಿಗ್ಯೇ । ದಾತಾ, ದಾಯಿತಾ ।  
ದಾಯಿಷ್ಯತೇ, ದಾಸ್ಯತೇ । ದೀಯತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಜಿ - ದಾಪಯತಿ, -ತೇ । ದಾಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ ।  
ದಾಪಯಿತಾ । ದಾಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ । ದಾಪಯತು, -ತಾಮ್ ।  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ದೇವೀಪ್ಯಮಾನ ದೇವೀಪ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಪ್ರಕಾಶಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ಬಹಳ ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ. ಅತಿಶಯೇನ ದೀಪ್ಯತೇ -  
ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೌ) + ಯಡ್ (೩-೧-೨೨) + "ಶಾನನ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

ದೇಯ ದೇಯ (ವಿಂ) 1. ದಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಕೊಡಲ್ಪ  
ಡುವ. ಡ ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಯತ್" (೩-೧-೯೭) । "ತಥಾಪಃ  
ಸರ್ವದಾ ದೇಯಾಃ ಪೇಯಾಶ್ಚೈವ ನ ಸಂಶಯಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೦೩-೧೯ ।  
2. ದಾನಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ, ದಾನಮಾಡಬಹುದಾದ.  
"ದೇಯಾಃ ಕಿಲಕ್ಷಣಾ ಗಾವಃ ಕಾಶ್ಚಾಪಿ ಪರಿವರ್ಜಯೇತ್" ಭಾಂ  
ಅನುಂ ೧೦೪-೧೪ । 3. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ, ಕಾಪಾಡಲ್ಪಡುವ.  
ದೇಡ್ (ರಕ್ಷಣೇ) "ಯತ್" (೩-೧-೯೭) । 4. ರಕ್ಷಿಸಲು  
ಅರ್ಹನಾದ. 5. ಬಿಟ್ಟುಕೊಡಲ್ಪಡುವ. 6. ಬಿಟ್ಟು  
ಕೊಡಬೇಕಾದ. "ಸ್ನಾತಕಸ್ಯ ಚ ರಾಜಾಶ್ಚ ಪನ್ಥಾ ದೇಯೋ ವರಸ್ಯ  
ಚ" ಮನುಂ ೨-೧೩೮ । 7. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕೊಡಲ್ಪಡುವ,  
ಹಿಂತಿರುಗಿಸಲ್ಪಡುವ. "ಹಂಸ ಪ್ರಯಂಚ್ಛ ಮೇ ಕಾಂತಾಂ ಗತಿರಸ್ಯಾ-  
ಸ್ತ್ವಯಾ ಹೃತಾ । ವಿಭಾವಿತೇಕದೇಶೇನ ದೇಯಂ ಯದಭಿಯುಜ್ಯತೇ" ವಿಕ್ರಂ  
೪-೩೩ । 8. ಪ್ರತ್ಯರ್ಪಣಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಒಪ್ಪಿಸಲ್ಪಡುವ.  
"ನಿಕ್ಷೇಪೋಪನಿಧಿ ನಿದ್ರಾಂ ನ ದೇಯೋ ಪ್ರತೀನಂತರೇ । ನಶ್ಯತೋ  
ವಿನಿಪಾತೇ ತಾವನಿಪಾತೇ ತವನಾಶಿನೋ" ಮನುಂ ೮-೧೮೫ ।

ದೇವ ದೇವ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ದೀವ್ಯತಿ ಮಾಯಾ-  
ಪಾಶೇನ ಜೀವಾನ್ ಬದ್ಧವಾ ಕ್ರೀಡತಿ - ದಿವು (ಕ್ರೀಡಾದೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।  
"ವ್ಯಾಘ್ರಾದಿವಜ್ಜೀವತೇರ್ಮಾಪಾಶೇನ ಬಂಧನಮ್ । ಕೃತ್ವಾ ನಿದ್ರಾಂ ಕ್ರೀಡತಿ ಯಃ ಸ ದೇವಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ"  
ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । "ಉದ್ಭವಃ ಕ್ಷೋಭಣೋ ದೇವಃ" ವಿಂ ಸಂ ।  
"ಭವದೋಷಾರ್ಥಮಾ ಯಾಸಾಂ ದೇವೋ ದೃಷ್ಟಿಪಥಂ ಗತಃ" ಯಾದಂ  
೧೬-೧೩೯ । 2. ದೇವತೆ. "ದೇವಾನಾಮಿದಮಾಮನಂತಿ ಮುನಯಃ  
ಕಾಂತಂ ಕೃತುಂ ಚಾಕ್ಷುಷಮ್" ಮಾಲಂ ೧-೪ । 3. ರಾಜ, ದೊರೆ.  
"ದೇವೋ ಮುರಮಹಿಭುಜೌ" ಶಾಶ್ವಂ । "ದೇವಾಕರ್ಣಯ ಸುಶ್ರುತೇನ  
ಚರಕಸ್ಯೋಕ್ತೇನ ಜಾನೇಸ್ವಿಲಮ್" ನೈಷಂ ೪-೧೧೬ । 4. ಮೇಘ,  
ಮೋಡ. 5. ಪಾದರಸ. 6. (ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ) ರಾಜ.  
"ವಿಜಯತಾಂ ದೇವಃ । ದೇವ, ಅಮಾತ್ಯೋ ವಿಜ್ಞಾಪಯತಿ" ಮಾಲಂ ೫ ।  
7. ದೇವದಾರು. 8. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. "ಧರ್ಮೋ ವಿಶಸನೋ  
ದೇವೋ ಮನುಷ್ಯೇಷಶಿವಂಕರಃ । ಶ್ರೀಗುರೋ ವಿಜಯಶಾಸ್ತಾ  
ಕೃಪಾಣಾಸಂಕ್ಷರಿಸ್ತಯಃ" ವೈಜಂ । 9. ವಿಷ್ಣುನ ಹೆಸರಿಗೆ  
ಸೇರಿಸುವ ಒಂದು ಪದ. ವಲಲಭದೇವಃ, ಕೃಷ್ಣದೇವಃ, ಗೋವಿಂದ-  
ದೇವಃ ಇತ್ಯಾದಿ. 10. ಮೂವತ್ತಮೂರು ಸಂಖ್ಯೆ.  
11. ಇಂದ್ರ. 12. ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ. 13. "ದೇವದತ್ತ" ಪದವಿ ಒಂದು ರೂಪ (ವಾಂ ೫-೩-೮೩) । (ನಂ) 14.



ಇಂದ್ರಿಯ. (ವಿಂ) 15. ಪೂಜ್ಯ, ಗೌರವಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ ವನು. 16. ಹೊಳೆಯುವ, ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವೀ -ವೀ. 17. ಪಟ್ಟಾಭಿಷಿಕ್ತಳಾದ ರಾಣಿ. ಪಟ್ಟಮಹಿಷಿ. 18. ಕುರಚಿಗೆ ಗಿಡ. 19. ಪೃಥ್ವಿ ಎಂಬ ಗಂಧದ್ರವ್ಯ. "ದೇವಂ ಹೃಷೀಕೇ ದೇವಸ್ತು ನೃಪತೌ ತೋದೇ ಸುರೇ. ದೇವೀ ಕೃತಾಭಿ-  
ಷೇಕಾಯಾಂ ತೇಜನೀಪೃಥ್ವೀಯೋರಪಿ" ಹೇಮಂ.

**ದೇವಕ ದೇವಕ (ಪುಂ)** 1. ದೇವಕಿಯ ತಂದೆ, ಉಗ್ರಸೇನ ರಾಜನ ಸಹೋದರ. ಆಹುಕ ರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮಗ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ತಾತ. ಪೂರ್ವಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಇವನು ಗಂಧರ್ವ ರಾಜನಾಗಿದ್ದನು. "ಯಸ್ತ್ವಾಸೀದೇವಕೋ ನಾಮ ದೇವರಾಜಸಮದೃತಿಃ. ಸ ಗಂಧರ್ವಪತಿರ್ಮುಖ್ಯಃ ಕ್ಷಿತೌ ಜಜ್ಞೇ ನರಾಧಿಪಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೮-೬೮. ಇವನಿಗೆ ದೇವಕಿ ಮೊದಲಾದ ಏಳು ಮಂದಿ ಕನ್ಯೆಯಿದ್ದರು. ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ವಸುದೇವನು ಮದುವೆ ಯಾದನು. 2. "ದೇವದತ್ತ" ಪದದ ಒಂದು ರೂಪ. (೪-೩-೮೩). (ವಿಂ) 3. ಕ್ರೇಡಿಸುವ, ಆಟವಾಡುವ.

**ದೇವಕಾತ್ಮಜಾ ದೇವಕಾತ್ಮಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದೇವಕ ರಾಜನ ಮಗಳು, ದೇವಕಿ.

**ದೇವಕಾರ್ಯ ದೇವಕಾರ್ಯ (ನಂ)** 1. ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಪ್ರಿಯ ವಾದ ಕೆಲಸ, ಪೂಜೆ ಹೋಮ ಮೊದಲಾದ ಕಾರ್ಯ, ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ. ದೇವಪ್ರಿಯ ಕಾರ್ಯಮ್. "ದೇವಕಾರ್ಯಾತ್ ದ್ವಿಜಾತೀನಾಂ ಪಿತೃಕಾರ್ಯಂ ವಿಶಿಷ್ಯತೇ" ಮನುಂ ೩-೨೦೩. 2. ದೇವತೆಗಳು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ ಕಾರ್ಯ. "ಯಂತಾ ಹರೇಃ ಸಪದಿ ಸಂಹತಕಾರ್ಮುಕಜ್ಯಮಾಪೃಚ್ಛತು ರಾಘವ-  
ಮನುಷಿತದೇವಕಾರ್ಯಮ್" ರಘುಂ ೧೨-೧೦೩.

**ದೇವಕಾಠ ದೇವಕಾಠ (ನಂ)** ದೇವದಾರು ಮರ.

**ದೇವಕೀ ದೇವಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದೇವಕೀ ದೇವಿ, ದೇವಕರಾಜನ ಮಗಳು, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ತಾಯಿ, ವಸುದೇವನ ಪತ್ನಿ. ದೇವಕಿಯು ಕಶ್ಯಪನ ಪತ್ನಿಯಾದ ಅದಿತಿಯ ಅವತಾರ. ಕಶ್ಯಪಪತ್ನಿಯಾದ ಅದಿತಿಯು ದೇವಕಿಯಾಗಿಯೂ ಸುರಭಿಯು ರೋಹಿಣಿಯಾಗಿಯೂ ಜನಿಸಿದರು. "ತಸ್ಯ ನಾರಿರ್ದಯಂ ಚೈವ ಅದಿತಿಃ ಸುರಭಿಸ್ತಯಾ. ದೇವಕೀ ರೋಹಿಣಿ ಚೈವ ವಸುದೇವಸ್ಯ ಭೀಮತಃ" ಹರಿವಂ.

**ದೇವಕೀತನಯ ದೇವಕೀತನಯ, -ನಂದನ -ನಂದನ, -ಸುತ -ಸುತ, -ಸುನು -ಸೂನು (ಪುಂ)** ದೇವಕಿಯ ಮಗ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ದೇವಕಿಯ ತನಯಃ ನಂದನಃ ಸುತಃ ಸುನುರ್ವಾ. "ದೇವಕೀನಂದನಃ ಸ್ರಷ್ಟಾ ಕ್ಷಿತಿಶಃ ಪಾಪನಾಶನಃ" ವಿಂ ಸಂ. "ನೃಧಾಪಿಷಾತಾಮಭಿದೇವಕೀಸುತಂ ಸುತೇನ ಧಾತುಶ್ಚರಣೌ ಭುವಸ್ತಲೇ" ಮಾವಂ ೧-೧೩.

**ದೇವಕುಲ ದೇವಕುಲ (ನಂ)** 1. ದೇವರ ಮನೆ, ದೇವಾಲಯ, ಗುಡಿ. 2. ದೇವತೆಗಳ ವಂಶ. 3. ದೇವತೆಗಳ ಗುಂಪು.

**ದೇವಕುಲ್ಯಾ ದೇವಕುಲ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದೇವನದಿ, ದೇವಗಂಗಾ, ಗಂಗಾನದಿ.

**ದೇವಕುಸುಮ ದೇವಕುಸುಮ (ನಂ)** ಲವಂಗ.

**ದೇವಖಾತ ದೇವಖಾತ (ನಂ)** 1. ಅಕೃತ್ರಿಮವಾದ ದೊಗರು, ಗವಿ, ಗುಹೆ. 2. ಅಕೃತ್ರಿಮವಾದ ಜಲಾಶಯ, ಸ್ವಭಾವ ವಾದ ಸರೋವರ, ಕೆರೆ ಮುಂತಾದುವು. ದೇವನ ಖಾತಮ್. 3. ದೇವಾಲಯಕ್ಕೆ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಜಲಾಶಯ. "ನದೀಷು ದೇವಖಾತೇಷು ತಡಾಗೇಷು ಸರಸ್ಸು ಚ. ಸ್ನಾನಂ ಸಮಾಚರೇನ್ನಿತ್ಯಂ ಗರ್ತಪ್ರಸವಣೇಷು ಚ" ಮನುಂ ೪-೨೦೩.

**ದೇವಗಣ ದೇವಗಣ (ಪುಂ)** 1. ದೇವತೆಗಳ ಸಮೂಹ. ದೇವಾನಾಂ ಗಣಃ. 2. ದೇವವರ್ಗಕ್ಕೆ ಸೇರಿದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಗುಂಪು. ಅಶ್ವಿನಿ, ಮೃಗಶಿರ್ಷ, ಪುನರ್ವಸು, ಪುಷ್ಯ, ಹಸ್ತ, ಸ್ವಾತಿ, ಅನೂರಾಧ, ಶ್ರವಣ ಮತ್ತು ರೇವತಿ ಇವು ದೇವಗಣದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು.

**ದೇವಗಣಿಕಾ ದೇವಗಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಪ್ಸರಸ್ಸು, ದೇವತೆಗಳ ವಂಶ.

**ದೇವಗಂಧರ್ವ ದೇವಗಂಧರ್ವ (ಪುಂ)** ದೇವತೆಗಳ ಸಂಗೀತ ಗಾರ, ದೇವಗಾಯಕ. ದೇವಾನಾಂ ಗಂಧರ್ವಃ ಗಾಯನಃ.

**ದೇವಗಾಯನ ದೇವಗಾಯನ (ಪುಂ)** ಗಂಧರ್ವ, ದೇವತೆಗಳ ಸಂಗೀತಗಾರ.

**ದೇವಗಿರಿ ದೇವಗಿರಿ (ಪುಂ)** ಒಂದು ಪರ್ವತ. "ಸಹ್ಯೋ ದೇವಗಿರಿಶ್ಚೈವಮುಖಃ ಶ್ರೀಶೈಲಃ" ಭಾಗಂ ೪-೧೯-೧೭.

**ದೇವಗುಹ ದೇವಗುರು (ಪುಂ)** ದೇವತೆಗಳ ಆಚಾರ್ಯ, ಬೃಹಸ್ಪತಿ. ದೇವಾನಾಂ ಗುಹಃ.

**ದೇವಗುಹ್ಯ ದೇವಗುಹ್ಯ (ನಂ)** ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಮಾತ್ರ ತಿಳಿದಿರುವ ರಹಸ್ಯ.

**ದೇವಗೃಹ ದೇವಗೃಹ (ನಂ)** ದೇವರ ಮನೆ, ದೇವಾಲಯ, ಗುಡಿ.

**ದೇವಚರ್ಯಾ ದೇವಚರ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಮಾಡುವ ಪೂಜೆ, ಹೋಮ ಮುಂತಾದುವು.

**ದೇವಚಿಕಿತ್ಸಕ ದೇವಚಿಕಿತ್ಸಕ (ಪುಂ ದ್ವಿಂ)** ದೇವತೆಗಳ ವೈದ್ಯರಾದ ಅಶ್ವಿನೀಕುಮಾರರು.

**ದೇವಚ್ಛಂದ ದೇವಚ್ಛಂದ (ಪುಂ)** 1. ಎಂಬತ್ತೊಂದು ಏಳು ಗಳುಳ್ಳ ಹಾರ, ಒಂದು ವಿಧ ಮುತ್ತುಗಳ ಹಾರ. "ಶತಮಂಟ-  
ಯುತಂ ಹಾರೋ ದೇವಚ್ಛಂದೋಹೃಷೀತಿರೇಕಯುತಾ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೮೧-೩೨.



2. ನೂರೇಳೆಗಳ ಮುತ್ತಿನ ಸರ. "ದೇವಚ್ಛಂದೋಸ್ತೌ ಶತ-  
ಯುಕ್ತಿಕಃ" ಅಮಂ ।

ದೇವಜಾಘ ದೇವಜಗ್ಘ (ನಂ) 1. ಕಾಚಿಹುಲ್ಲು. (ವಿಂ) 2.  
ದೇವತೆಗಳಿಂದ ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟ. ದೇವೇಜಂಘಮ್ । ಅರ್ಥಾತ್ "ಕನ್" ।  
-ಜಾಘಕಮ್ - ಜಗ್ ಕಮ್ ।

ದೇವಟ ದೇವಟಿ (ಪುಂ) ಶಿಲ್ಪಿ. ದಿವು (ಕಿಡಾದಿ) "ಅಡನ್"  
(ತಂ ೪-೮೧) ।

ದೇವತರು ದೇವತರು (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳ ವೃಕ್ಷಗಳು, ಸ್ವರ್ಗದ  
ವೃಕ್ಷಗಳು, ಮಂದಾರ ಪಾರಿಜಾತ ಸಂತಾನ ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷ  
ಮತ್ತು ಹರಿಚಂದನ ಇವು ಐದು ದೇವತರುಗಳು.

ದೇವತಾ ದೇವತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೇವತೆ. 2. ದೇವತ್ವ.  
ದೇವರಾಗಿರುವುದು. ದೇವ ಎವ-ಸ್ವಾರ್ಥ "ತಲ್" (೪-೪-೨೭) ।  
ಕವಚಿತ್ ಸ್ವಾರ್ಥಿಕಾ ಅಪಿ ಪ್ರತ್ಯಯಾಃ ಪ್ರಕೃತಿಸ್ತು ಲಿಂಗ-  
ವಚನಾನ್ಯತಿವರ್ತಂತೇ ಎಂಬ ಭಾಷ್ಯ ವಚನದಿಂದ ಇಲ್ಲಿ ಸ್ತ್ರೀತ್ವವು  
ಬಂದಿರುವುದು. ದೇವತಾಪದವು ಇಂದ್ರಾದಿ ದೇವತೆಗಳನ್ನು  
ಹೇಳುವುದು. "ಯಾಜ್ಞಯಾ ಯಜನಕರ್ಮಿಣೋಽಪ್ಯಜನ್ ದ್ರವ್ಯಜಾತ  
ಮಪದಿಶ್ಯ ದೇವತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೨೦ । 3. ದೇವರ ವಿಗ್ರಹ.  
ದೇವತೆಗಳ ಪ್ರತಿಮೆ. "ದೇವತಾನಾಂ ಗುರೋ ರಾಜಾಃ ಸ್ನಾತಕಾ-  
ಚಾರ್ಯಯೋಸ್ತಥಾ । ನಾಕ್ರಾಮೇತ್ ಕಾಮತರಣಾಃ ಬಭ್ರುಣೋ ದೀಕ್ಷಿತಸ್ಯ  
ಚ" ಮನುಂ ೪-೧೩೦ । ಮಂತ್ರದಿಂದ ಪ್ರಕಾಶಿಸಲ್ಪಡುವುದ  
ರಿಂದ ದೇವತೆಗಳಲ್ಲಿ ದೇವತ್ವವು ಉಕ್ತವಾಯಿತು. ದೀವ್ಯತೀತಿ  
ದೇವಃ ಮನ್ತ್ರೇಣ ದೀವ್ಯತೇ ಇತಿ ಯಾವತ್ । "ದೇವನಾಡ್ ದೇವೋಽಭೂದಿತಿ  
ತದೇವಾನಾಂ ದೇವತ್ವಮ್" । ಯಾವ ಮಂತ್ರದಿಂದ ಯಾವ  
ದೇವತೆಯನ್ನು ಆವಾಹನ ಮಾಡುವರೋ ಆ ದೇವತೆಯು  
ಅಲ್ಲಿ ಸಾನ್ನಿಧ್ಯಹೊಂದುವುದರಿಂದ ಆ ದೇವತೆಯು ರೂಪಾ  
ಬರುವುದು. "ಯಸ್ಯ ಯಸ್ಯ ತು ಮನ್ತ್ರಸ್ಯ ತದ್ವಿಷ್ಟಾ ದೇವತಾ ತು  
ಯಾ । ತದಾಕಾರಂ ಭವೇತ್ಸಯ ದೇವತ್ವಂ ದೇವತೋಚ್ಯತೇ" । ಪ್ರಧಾನ  
ದೇವತೆಗಳು (ಇಂದ್ರಾದಿಗಳು) ಮೂವತ್ತಮೂರು ಮಂದಿ  
ಗಳು. ಇವರ ಗಣದೇವತೆಗಳೊಡನೆ ಸೇರಿ ಇವರು  
ಮೂವತ್ತಮೂರು ಕೋಟಿಗಳಷ್ಟಾಗುವರು. "ಸದಾರಾ  
ವಿಬುಧಾಃ ಸರ್ವೇ ಸ್ವಾನಾಂ ಸ್ವಾನಾಂ ಗಣಃ ಸಹ । ತ್ರೈಲೋಕ್ಯೇ ತೇ  
ತ್ರಯಸ್ತ್ರಿಶತ್ಕೋಟಿಸಂಖ್ಯತಯಾಽಭವನ್" ।

ದೇವತಾಗೃಹ ದೇವತಾಗೃಹ (ನಂ) ದೇವರವನೆ, ದೇವಾಲಯ.  
ಗುಡಿ. ದೇವತಾಯಾ ಗೃಹಮ್ ।

ದೇವತಾಡ ದೇವತಾಡ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆಗಳಿಗಿರುವ. ದೇವಮಿನ್ದ್ರಿಯ  
ತಾಡಯತಿ-ತಡ (ಆಘಾತ) + ಣಿಚ್ "ಅನ್" (೩-೨-೧) ।  
2. ರಾಹು. 3. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. "ದೇವತಾಡಃ ಸೈಹಿಕೇಯ  
ಜಿಮೂತೇ ಚ ಹುತಾಶನೇ" ಮೇದಿಂ ।

ದೇವತಾತ ದೇವತಾತ (ಪುಂ) 1. ಮರೀಚಿ ಮೊದಲಾದ ಹತ್ತು  
ಮಂದಿ ಪ್ರಪಾಪತಿಗಳು. ದೇವತೆಗಳು ಇವರಿಂದ ಸೃಷ್ಟಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟವರಾದುದರಿಂದ ಇವರು ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ತಂದೆಯಾ  
ದರು. "ಏತೇ ಮನುಸ್ತು ಸಪ್ತಾನ್ಯಾನಸೃಜನ್ ಭೂರಿತೇಜಸಃ ।  
ದೇವಾನ್ ದೇವನಿಕಾಯಾಂಶ್ಚ ಮಹರ್ಷಿಃಶ್ರಾಮಿತೋಜಸಃ" ಮನುಂ ೧-೩೬ ।  
2. ಕಶ್ಯಪ, ಇಂದ್ರಾದಿ ದೇವತೆಗಳ ತಂದೆ.

ದೇವತಾಪ್ರತಿಮಾ ದೇವತಾಪ್ರತಿಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವತೆಯ  
ವಿಗ್ರಹ, ದೇವತೆಯ ಮೂರ್ತಿ. ದೇವತಾಯಾಃ ಪ್ರತಿಮಾ ।

ದೇವತಾಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ದೇವತಾಪ್ರತಿಷ್ಠಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಗ್ರಹಗಳಲ್ಲಿ  
ದೇವತೆಗಳ ಸಾನ್ನಿಧ್ಯವುಂಟಾಗಲು ಮಾಡುವ ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತ  
ವಾದ ಸಂಸ್ಕಾರ, ವಿಗ್ರಹಗಳಲ್ಲಿ ದೇವತ್ವಸಿದ್ಧಿಗಾಗಿ  
ಮಾಡುವ ಮಂತ್ರಪೂರ್ವಕವಾದ ಸಂಪ್ರೋಕ್ಷಣ ಆವಾಹ  
ನಾದಿಗಳು. ದೇವತಾಯಾಃ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ । ದೇವತಾಪ್ರತಿಷ್ಠೆಯು  
ಶುಭದಿವಸದಲ್ಲಿ ನಡೆಯಬೇಕು. "ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ಸರ್ವದೇವಾನಾಂ  
ಕೇಶವಸ್ಯ ವಿಶೇಷತಃ । ತುತರಾಯಣಮಾಪನ್ನೇ ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷೇ ಶುಭೇ  
ದಿನೇ । ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷೇ ಚ ಪಂಚಮ್ಯಾಮಷ್ಟಮ್ಯಾಂ ಚೈವ ಶಸ್ಯತೇ" ।  
ವಿಗ್ರಹಗಳಲ್ಲಿ ದೇವತ್ವ ಸಿದ್ಧಿಸಲು ಪ್ರಾಣಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ಕಾರ್ಯವು  
ಅವಶ್ಯವಾದುದು. "ಪ್ರತಿಮಾಯಾಃ ಕಪಾಲೌ ದ್ವೌ ಸ್ಪೃಶ್ವಾ  
ದಕ್ಷಿಣಪಾಣಿನಾ । ಪ್ರಾಣಪ್ರತಿಷ್ಠಾಂ ಕುರ್ವೀತ ತಸ್ಯಾ ದೇವಸ್ಯ ವಾ  
ಹರೇಃ । ಅಕೃತಾಯಾಂ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಃ ಪ್ರಾಣಾನಾಂ ಪ್ರತಿಮಾಸು ಚ ।  
ಯಥಾಪೂರ್ವಂ ತಥಾಭಾವಃ ಸ್ವರ್ಣಾದೀನಾಂ ನ ವಿಷ್ಣುತಾಃ । ಅನ್ಯೇಷಾಮಪಿ  
ದೇವಾನಾಂ ಪ್ರತಿಮಾಸು ಚ ಪಾರ್ಥಿವಾಃ । ಪ್ರಾಣಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ಕರ್ತವ್ಯಾ  
ತಸ್ಯಾಂ ದೇವತ್ವಸಿದ್ಧಯೇ" ।

ದೇವತ್ರಾ ದೇವತ್ರಾ (ಅವ್ಯಂ) 1. ದೇವತೆಗಳನ್ನು. 2. ದೇವತೆ  
ಗಳಲ್ಲಿ. ದ್ವಿತೀಯಾಂತಾತ್ ಸಪ್ತಮ್ಯಂತಾಂಚ ದೇವಶಬ್ದಾತ್ "ತ್ರಾ"  
(೪-೪-೫೬) । ದೇವತ್ರಾ ವಂದೇ । ದೇವತ್ರಾ ರಮೇ ।

ದೇವದತ್ತ ದೇವದತ್ತ (ಪುಂ) 1. ಅರ್ಜುನನ ಶಂಖ. ಪಾಶ್ಚಜನ್ಯ  
ಹೃಷೀಕೇಶೋ ದೇವದತ್ತಂ ಧನಂಜಯಃ" ಗೀತಾ ೧-೧೫ । 2. ದೇಹ  
ದೊಳಗಿನ ಪಂಚಪ್ರಾಣವಾಯುಗಳಲ್ಲಿೊಂದು. ಈ  
ವಾಯುವು ಆಕಳಿಕೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಬಾಯನ್ನು ಅಗಲಿಸು  
ವುದು. "ಕೃಕರಾಂಚ ಧೃತಂ ಜೇಯಂ ದೇವದತ್ತಾಢ್ವಿಜಮ್ಭಣಮ್" ಅಮಂ ।  
3. ಉದಾಸೀನನಾದ ಒಬ್ಬ ಮನುಷ್ಯನಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸುವ  
ಒಂದು ಪದ. ಒಬ್ಬ ಅನಿರ್ದಿಷ್ಟ ವ್ಯಕ್ತಿಯಲ್ಲಿ ದೇವದತ್ತಃ  
ಯಜ್ಞದತ್ತಃ ಮುಂತಾದ ಪ್ರಯೋಗಗಳುಂಟು. "ಪಿಂನೋ  
ದೇವದತ್ತೋ ದಿವಾ ನ ಭುಂಕ್ತೇ" ಇತ್ಯಾದಿ. (ವಿಂ) 4. ದೇವ  
ರಿಂದ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. ದೇವೇನ ದತ್ತಮ್ । "ದೇವದತ್ತಾಂ ಪತಿರ್ಭಾರ್ಯಾ  
ವಿಂದತೇ ನೇಚ್ಛಯಾತ್ಮನಃ । ತಾಂ ಸಾಧ್ವೀಂ ವಿಭೃಯಾನ್ನಿತ್ಯಂ ದೇವಾನಾಂ  
ಪ್ರಿಯಮಾಚರನ್" ಮನುಂ ೯-೧೫ । 5. ದೇವರಿಗೆ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ.



ದೇವರ ಪೂಜಾದಿಗಳಿಗಾಗಿ ದಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ದೇವಾಯ  
ದತ್ತಮ್ |

**ದೇವದತ್ತಕ ದೇವದತ್ತಕ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ದೇವದತ್ತನೇ  
ಮುಖ್ಯವಾಗಿರುವವರು, ದೇವದತ್ತನೇ ಪ್ರಧಾನನಾಗಿರು  
ವವರು. ದೇವದತ್ತೋ ಮುಖ್ಯೋ ಏಷಾಮ್ "ಕನ್" (೪-೨-೭೮) |  
2. "ದೇವದತ್ತ" ಪದದ ಒಂದು ರೂಪ (ವಾಂ ೪-೩-೮೩) |  
[ "ದತ್ತಿಕ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ. ]

**ದೇವದತ್ತೀಯ ದೇವದತ್ತೀಯ** (ವಿಂ) "ದೇವದತ್ತ" ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.

**ದೇವದರ್ಶ ದೇವದರ್ಶ** (ವಿಂ) 1. ದೇವರನ್ನು ನೋಡು  
ವವನು. ದೇವಂ ಪಶ್ಯತಿ - ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣಂ) "ಅನ್"  
(೩-೨-೧) | (ಅವ್ಯಂ) 2. ದೇವರನ್ನು ನೋಡಿ. ದೇವಂ  
ದೃಷ್ಟ್ವಾ "ಣಮುಲ್" (೩-೪-೨೯) | ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:"  
(೩-೧-೧೩೪) | -ದರ್ಶನ: -ದರ್ಶನಃ.

**ದೇವದಾರ ದೇವದಾರ** (ನಂ) ದೇವದಾರು ಮರ. ದೇವಾನಾಂ  
ಪ್ರಿಯಂ ದಾರ | ಇದರ ಪುಲ್ಲಿಂಗ ಪ್ರಯೋಗವೂ ಉಂಟು.  
"ಅಮು ಪುರ: ಪಶ್ಯಸಿ ದೇವದಾರಂ ಪುತ್ರಿಕೃತೌಸ್ತೌ ವೃಷಭವಜೇನ"  
ರಘುಂ ೨-೩೬ |

**ದೇವದಾಸ ದೇವದಾಸ** (ಪುಂ) 1. ದೇವಸ್ಥಾನದ ಸೇವಕ.  
2. ದೇವತೆಗಳ ದಾಸ.

**ದೇವದಾಸೀ ದೇವದಾಸೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೇಶ್ಯೆ. ದೇವಾಯ ಕ್ರೀಡಾಯೆ  
ದಾಸೀ | 2. ದೇವಾಲಯದ ಸೇವಕಿ. ದೇವಸ್ಥಾನದ ಕೆಲಸ  
ಕ್ಕಾಗಿ ಇರುವ ಹೆಂಗಸು.

**ದೇವದುಂದಿ ದೇವದುಂದುಭಿ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಂಪು ತುಲಸಿ.  
2. ದೇವತೆಗಳ ನಗಾರಿ.

**ದೇವದೇವ ದೇವದೇವ** (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ. 2. ವಿಷ್ಣು,  
ವಾಸುದೇವ. "ದ್ರೌಪದ್ಯಾ: ಸಂಹೃತಂ ಜ್ಞಾತ್ವಾ ದೇವದೇವೋ ಜಗತ್ಪತಿ: |  
ಪಾರ್ವತ್ಯಾಂ ಹರಿಮಣಿಂ ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ ಕೇಶವ: ಶಯನೇ ಪ್ರಭು:"  
ಭಾಂ ವನಂ ೨೬೪-೧೬ | 3. ಪರಶಿವ. ಪರಮೇಶ್ವರ.  
ದೇವಾನಾಂ ದೇವ: | "ಅಯಾಚಿತಾರಂ ನ ಹಿ ದೇವದೇವಮದ್ರಿ: ಸುತಾಂ  
ಗ್ರಾಹಯಿತುಂ ಶಶಾಕ" ಕುಮಾಂ ೧-೪೨ |

**ದೇವದೇವೇಶ ದೇವದೇವೇಶ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ವಾಸುದೇವ.  
2. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 3. ಇಂದ್ರ.

**ದೇವದ್ರೋಣಿ ದೇವದ್ರೋಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೇವರ ಉತ್ಸವ.  
2. ದೇವಯಾತ್ರೆ, ದೇವರ ದರ್ಶನಕ್ಕಾಗಿ ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರಗಳ  
ಯಾತ್ರೆ. "ದೇವದ್ರೋಣಿ ದೇವಯಾತ್ರಾ" ಹಾರಾಂ |

**ದೇವದ್ರಚಕ್ರ ದೇವದ್ರಚಕ್ರ** (ವಿಂ) 1. ದೇವರನ್ನು ಕುರಿತು  
ಹೋಗುವವನು. 2. ದೇವರನ್ನು ಪೂಜಿಸುವವನು. ದೇವಾನ್

ಅಶ್ವತಿ-ಅಶ್ವತು (ಗತಿಪೂಜನಯೋ: ) "ವಿವನ್" (೩-೨-೪೯) |  
ಠೇ: ಅದ್ರಿ ಆದೇಶ: (೬-೩-೯೨) | "ದೇವಾನಶ್ವತಿ ದೇವದ್ರಚಕ್ರ"  
ಅಮಂ |

**ದೇವಧನ ದೇವಧನ** (ನಂ) ದೇವರ ಪೂಜೆಗಾಗಿ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ  
ಹಣ.

**ದೇವಧಾನಿ ದೇವಧಾನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಂದ್ರನ ನಗರ, ಅಮರಾ  
ವತೀ ನಗರ. ದೇವಾ ಧೀಯಂತೇ-ಝ ಧಾನ್ (ಧಾರಣ-  
ಪೋಷಣಯೋ: ) ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೧೪) |

**ದೇವಧೂಪ ದೇವಧೂಪ** (ಪುಂ) ಗುಗ್ಗುಳ. ದೇವಾನಾಂ ಪ್ರಿಯೋ ಧೂಪ: |  
**ದೇವನ್ ದೇವನ್** (ಪುಂ) ಪತಿಯ ಕಿರಿಯ ಸಹೋದರ.

**ದೇವನ ದೇವನ** (ಪುಂ) 1. ಪಗಡೆಕಾಯಿ. ದೀವ್ಯತನೇನ-ದಿವು  
(ಕ್ರೀಡಾದೌ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | (ನಂ) 2.  
ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ. 3. ದೀಪ್ತಿ, ಪ್ರಕಾಶ. 4. ಜೂಜಾಟ,  
ಪಂದ್ಯ. 5. ವ್ಯವಹಾರ, ಉದ್ಯೋಗ, ಕಸಬು. ದಿವು  
ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | 6. ಗತಿ, ಗಮನ.  
7. ಸ್ಪರ್ಧೆ, ಪೈಪೋಟಿ, ವಿಜಿಗೀಷೆ. 8. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ,  
ತಾವರೆ. "ದೇವನಂ ವ್ಯವಹಾರೇ ಸ್ಯಾಜ್ಜಿಗೀಷಾಕ್ರೀಡಯೋರಪಿ |  
ದೇವನೋಕ್ಷೇಪು ಪುನಿ ಸ್ಯಾತ್" ಮೇದಿಂ | 9. ಉದ್ಯಾನವನ,  
ವಿಹಾರಭೂಮಿ. ದಿವು ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) |

**ದೇವನದೀ ದೇವನದೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗಾನದಿ. ದೇವಾನಾಂ ನದೀ |  
"ಅಸಂಭಾಧಾ ದೇವನದೀ ಸ್ವರ್ಗಸಂಪಾದನೀ ಶುಭಾ" ಭಾಂ ಆದಿಂ  
೧೮೬-೨೩ |

**ದೇವನಂದಿನ್ ದೇವನಂದಿನ್** (ಪುಂ) ಇಂದ್ರನ ದ್ವಾರಪಾಲಕ.  
ದೇವಮಿನ್ದ್ರಂ ನಂದಯತಿ - ದ್ವ ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) "ಗಿನಿ:"  
(೩-೧-೧೩೪) | "ಸುತೋ ಜಯೋ ಜಯಂತಿಶ್ಚ ಜಯದತ್ತೋಽಪ್ಯಥೋ  
ಸುತಾ | ಜಯಂತೀ ದೇವನಂದೀ ತು ದ್ವಾರ್ಥ: ಸುತಸ್ತು ಮಾತಲಿ:"  
ವೈಜಂ |

**ದೇವನಾ ದೇವನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ. 2. ವಿಲಾಸ,  
ರೋದನ. ದಿವು (ಕ್ರೀಡಾದೌ) + ಗಿನ್ "ಯುಕ್" (೩-೩-೧೦೭) |

**ದೇವನಾಗರಿ ದೇವನಾಗರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಸ್ಕೃತಲಿಪಿ, ಸಂಸ್ಕೃತ  
ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು ಬರೆದು ಹುದ್ದಿಸುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ  
ಅಕ್ಷರ.

**ದೇವಪಥ ದೇವಪಥ** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆಗಳ ಮಾರ್ಗ, ಸ್ವರ್ಗ.  
ದೇವಾನಾಂ ಪನ್ಥಾ: "ಅ:" (೪-೪-೭೪) | 2. ಒಂದು ಪುಣ್ಯ  
ತೀರ್ಥ. 3. ದೇವಾಲಯದ ಮಾರ್ಗ.

**ದೇವಪಾತ್ರ ದೇವಪಾತ್ರ** (ನಂ) ಅಗ್ನಿ.

**ದೇವಪುರೀ ದೇವಪುರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಂದ್ರನ ನಗರ, ಅಮರಾವತಿ.



ದೇವಪುರೋಹಿತ ದೇವಪುರೋಹಿತ (ಪುಂ) ಬೃಹಸ್ಪತಿ.

ದೇವಪುಷ್ಪ ದೇವಪುಷ್ಪ (ನಂ) ಲವಂಗ.

ದೇವಪೂಜಕ ದೇವಪೂಜಕ (ಪುಂ) ದೇವರನ್ನು ಪೂಜಿಸುವವನು. ದೇವಾನಾಂ ಪೂಜಕಃ |

ದೇವಪೂಜಾ ದೇವಪೂಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವರ ಪೂಜೆ, ದೇವತಾ ಚರ್ಚನೆ. ದೇವಸ್ಯ ಪೂಜಾ |

ದೇವಪೂಜಿತ ದೇವಪೂಜಿತ (ವಿಂ) ದೇವತೆಗಳಿಂದ ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ದೇವಃ ಪೂಜಿತಃ |

ದೇವಪೂಜ್ಯ ದೇವಪೂಜ್ಯ (ವಿಂ) ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಪೂಜ್ಯನಾದ ಬೃಹಸ್ಪತಿ, ದೇವತೆಗಳ ಆಚಾರ್ಯ.

ದೇವಪ್ರತಿಮಾ ದೇವಪ್ರತಿಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವರ ವಿಗ್ರಹ, ಅರ್ಚಾವಿಗ್ರಹ, ಅರ್ಚಾಮೂರ್ತಿ. "ಕುರ್ವಂತೀತಾಃ ಪತಿತಾ ದೇವಪ್ರತಿಮಾಸು ರಾಜರಾಷ್ಟ್ರಭಯಮ್ | ಶಕ್ರೋಪರಿ ನೃಪತೀನಾಂ ಗೃಹೈಶ್ಚ ತತ್ಸವಾಮಿನಾಂ ಪಿಡಾಮ್" ಬೃಹತ್ಸಂ ೩೩-೨೦ |

ದೇವಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ದೇವಪ್ರತಿಷ್ಠಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವರಪ್ರತಿಷ್ಠೆ, ವಿಗ್ರಹಗಳಲ್ಲಿ ದೇವರನ್ನಾಧ್ಯವುಂಟಾಗಲು ಮಾಡುವ ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಸಂಸ್ಕಾರ, ವಿಗ್ರಹದಲ್ಲಿ ದೇವತ್ವಸ್ಥಿತಿಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಸಂಸ್ಕಾರಣ ಆವಾಹನಾದಿಗಳು. ದೇವಸ್ಯ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ |

ದೇವಬ್ರಾಹ್ಮಣ ದೇವಬ್ರಾಹ್ಮಣ (ಪುಂ) ದೇವಲಕ, ದೇವರ ಪೂಜೆಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ದೇವಪೂಜಕೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಃ |

ದೇವಭಾಗ ದೇವಭಾಗ (ಪುಂ) ವಸುದೇವನ ಒಬ್ಬ ಸಹೋದರ.

ದೇವಭಿಷಜ್ ದೇವಭಿಷಜ್ (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳ ವೈದ್ಯ. ಅಶ್ವಿನೀ ದೇವತೆ.

ದೇವಭೂ ದೇವಭೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ. ದೇವಾನಾಂ ಭೂಃ | 2. ದೇವತೆಯಾಗಿ ಆಗುವುದು, ದೇವತ್ವವನ್ನು ಹೊಂದುವುದು.

ದೇವಭೂತ ದೇವಭೂತ (ವಿಂ) ದೇವತೆಯಾಗಿರುವ, ದೇವತ್ವವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ.

ದೇವಭೂತಿ ದೇವಭೂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಂಗಾನದಿ, ದೇವನದಿ. ದೇವೈಶ್ಚ ಭೂತಿರಸ್ಯಾಃ | 2. ದೇವತೆಗಳ ಐಶ್ವರ್ಯ. ದೇವಾನಾಂ ಭೂತಿಃ |

ದೇವಭೂಮಿ ದೇವಭೂಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ.

ದೇವಭೂಯ ದೇವಭೂಯ (ನಂ) ದೇವತ್ವ, ದೇವಭಾವ. ದೇವಸ್ಯ ಭಾವಃ - ಭೂ ಭಾವೇ "ಕೃಪ್" (೩-೧-೧೦೭) |

ದೇವಭೃತ್ ದೇವಭೃತ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ವಾಸುದೇವ. ದೇವಾನ್ ವಿಭೃತಿ-ತು ಭೃತ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೭೬) |

"ಬ್ರಹ್ಮಾಶಕ್ರಪ್ರಮಾದಿನಾಂ ಭರಣಾದ್ ದೇವಭೃತ್ ಸ್ಮೃತಃ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ | "ಆದಿದೇವೋ ಮಹಾದೇವೋ ದೇವೇಶೋ ದೇವಭೃದ್ಗುರುಃ" ವಿಂ ಸಂ | 2. ಇಂದ್ರ.

ದೇವಮಣಿ ದೇವಮಣಿ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ದೇವ ಇವ ಮಣಿಃ | 2. ಕುದುರೆಯ ಕತ್ತಿನ ಮೇಲಿರುವ ಒಂದು ಸುಳಿ. 3. ಕೌಸ್ತುಭಮಣಿ. "ಆವರ್ತಿನಃ ಶುಭಫಲಪ್ರದಶುಕ್ತಿಯುಕ್ತಾಃ ಸಂಪನ್ನದೇವಮಣಯೋ ಭೂತರಂಧ್ರಭಾಗಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೪ | "ಅಥ ದೇವಮಣಿಭಿರ್ಗಂಧಿವರ್ತ ಕೌಸ್ತುಭೇಷಿ ಚ" ಮೇದಿಂ |

ದೇವಮಾತೃ ದೇವಮಾತೃ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವತೆಗಳ ತಾಯಿ, ಅದಿತಿ ದೇವಿ. ದೇವಾನಾಂ ಮಾತಾ |

ದೇವಮಾತೃಕ ದೇವಮಾತೃಕ (ಪುಂ) ಮಳೆಯನೀರಿನಿಂದ ಬೆಳೆಯಾಗುವ ಭೂಮಿ. ದೇವಃ ಪರ್ಜನ್ಯಃ ಮಾತೇವ ಯಸ್ಯ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೪೪) | "ವಿತನ್ವತಿ ಕ್ಷೇಮದೇವಮಾತೃಕಾಶ್ವಿರಾಯ ತಸ್ಮಿನ್ ಕುರವಶ್ಚಕಾಸತಿ" ಕಿರಾಂ ೧-೧೭ |

ದೇವಮಾನ ದೇವಮಾನ (ನಂ) ದೇವತೆಗಳ ಕಾಲದ ಪರಿಮಾಣ. ದೇವಾನಾಂ ಮಾನಮ್ | ಮನುಷ್ಯರ ಒಂದು ವರ್ಷವು ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಒಂದು ದಿನವಾಗುವುದು. ದಕ್ಷಿಣಾಯನವು ರಾತ್ರಿ. ಉತ್ತರಾಯಣವು ಹಗಲು. ಈ ರೀತಿ ದೇವಮಾನದಲ್ಲಿ ಮಾಸವರ್ಷಾದಿಗಳನ್ನು ಗಣನೆಮಾಡಬೇಕು. "ಬ್ರಾಹ್ಮಂ ದಿವ್ಯಂ ತಥಾ ಪಿತ್ರೈಃ ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯಂ ಗುರೋಸ್ತಥಾ | ಸೌರಂ ಚ ಸಾವನಂ ಚಾನ್ದ್ರಮಾರ್ಷಿ ಮಾನಾನಿ ವೈ ನವ" ಸೂಂ ಸಿಂ | ಎಂದು ಕಾಲಮಾನವು ಒಂಬತ್ತು ವಿಧ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಅದ್" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ದೇವಮಾಯಾ ದೇವಮಾಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅವಿದ್ಯೆ, ಬಂಧನಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ಈಶ್ವರನ ಮಾಯೆ "ತೇ ದುಸ್ತರಾಮತೀತರಂತಿ ಚ ದೇವಮಾಯಾಂ ನೆಷಾಂ ಮಮಾಹಮಿತಿ ಧಿಃ ಶ್ವಶೃಗಾಲಭಕ್ಯೇ" ಭಾಗಂ ೨-೭-೪೨ |

ದೇವಮುನಿ ದೇವಮುನಿ (ಪುಂ) ದೇವರ್ಷಿ, ನಾರದಮಹರ್ಷಿ. ದೇವಯಜನ ದೇವಯಜನ (ನಂ) ಯಜ್ಞವೇದಿಕೆ, ಯಾಗ ಭೂಮಿ. ದೇವಾಃ ಇಜ್ಯಂತೇ-ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾಯಾಮ್) ಅಧಿಂ "ಽಯುತ್" (೩-೩-೧೧೭) |

ದೇವಯಜಿ ದೇವಯಜಿ (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಕುರಿತು ಯಾಗಮಾಡುವವನು. ದೇವಾನ್ ಯಜತೇ-ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭) |

ದೇವಯಜ್ಞ ದೇವಯಜ್ಞ (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳ ಪೂಜೆ, ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಕುರಿತು ಮಾಡುವ ಹೋಮ, ಗೃಹಸ್ಥನು ಪ್ರತಿ ದಿನವೂ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಪಂಚಯಜ್ಞಗಳಲ್ಲೊಂದು. ದೇವಾನಾಂ ಯಜಃ | "ದೇವಯಜೋ ಭೂತಯಜಃ ಪಿತೃಯಜೋ ಬ್ರಹ್ಮಯಜೋ"



ಮನ್ವಯಜ್ಞಃ" ಎಂದು ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞಗಳು ಗೃಹಸ್ಥನ ಪ್ರತಿದಿನದ ಕರ್ತವ್ಯಗಳು. (1) ಅಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಹೋಮ ಮಾಡುವುದು ದೇವಯಜ್ಞವು. (2) ಬಲಿಹಾಕುವುದು ಭೂತಯಜ್ಞವು. (3) ಪಿತೃಗಳನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿಕೊಂಡು ವುದು (ತರ್ಪಣ ಮೊದಲಾದವು) ಪಿತೃಯಜ್ಞವು. (4) ವೇದಾಧ್ಯಯನವು ಬ್ರಹ್ಮಯಜ್ಞವು. (5) ಅತಿಥಿ ಸತ್ಕಾರವು ಮನುಷ್ಯಯಜ್ಞವು. "ಅಧ್ಯಾಪನಂ ಬ್ರಹ್ಮಯಜ್ಞಃ ಪಿತೃಯಜ್ಞಸ್ತು ತರ್ಪಣಮ್ | ಹೊಮೋ ದೇವೋ ಬಲಿಭೌತೋ ನೃಪಯಜ್ಞಃ ಪೂಜನಮ್" ಮನುಂ ೩-೭೦ |

**ದೇವಯಾತ್ರಾ ದೇವಯಾತ್ರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವರ ಉತ್ಸವ.

**ದೇವಯಾನ ದೇವಯಾನ** (ನಂ) 1. ದೇವತೆಗಳು ಸಂಚರಿಸುವ ರಥ, ವಿಮಾನ. ಯಾನ್ತ್ಯನೇನ-ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | ದೇವಾನಾಂ ಯಾನಮ್ | (ಪುಂ) 2. ಅರ್ಚಾರಾದಿ ಮಾರ್ಗ. "ಯ ಏತಾನ್ ಬ್ರಹ್ಮ ಗಮಯತೀತ್ಯೇಷಃ ದೇವಯಾನಃ ಪನ್ಥಾಃ" ಛಾಂದೋಗ್ಯಂ |

**ದೇವಯಾನಿ ದೇವಯಾನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರ ಮಗಳು, ಯಯಾತಿ ರಾಜನ ಪತ್ನಿ. [ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರಲ್ಲಿ ಮೃತ ಸಂಜೀವಿನೀ ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿಯಲು ಬಂದಿದ್ದ ಕಚನನ್ನು ಇವಳು ಮೋಹಿಸಿ ತನ್ನನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಬೇಕೆಂದು ಕೇಳಿಕೊಂಡಳು. ಗುರುಪುತ್ರಿಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗುವುದು ಧರ್ಮವಲ್ಲವೆಂದು ಕಚನು ಹೇಳಲು "ಕಲಿತ ವಿದ್ಯೆಯು ನಿನಗೆ ಫಲಿಸದಿರಲಿ" ಎಂದು ಕಚನಿಗೆ ಶಾಪವಿತ್ತಳು. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಪುತ್ರಿಯಾದ ನೀನು ಧರ್ಮವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ವರ್ತಿಸಿದುದರಿಂದ ನೀನು ಕ್ಷತ್ರಿಯನನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗು" ಎಂದು ಕಚನೂ ಇವಳಿಗೆ ಪ್ರತಿ ಶಾಪವನ್ನು ಕೊಟ್ಟನು. ಇದರಿಂದ ದೇವಯಾನಿಯು ಯಯಾತಿರಾಜನನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ಯದು ಮತ್ತು ತುರ್ವಸುಗಳೆಂಬ ಇಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪಡೆದಳು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಯಯಾತಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ಯಯಾತಿರ್ದೇವಯಾನಾಂ ತು ಪುತ್ರಾವಜನಯನ್ಮುಪಃ | ಯದ್ವ ಚ ತುರ್ವಸು ಚೈವ ಶಕ್ರವಿಷ್ಣು ಇವಾಪರೌ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೭೭-೧೨ |

**ದೇವಯು ದೇವಯು** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. (ವಿಂ) 2. ಧಾರ್ಮಿಕ, ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಯಂಥವನು. ದೇವ ಯಾತಿ - ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ್ರುಃ" (೩ಂ ೧-೩೭) | 3. ಲೋಕಯಾತ್ರೆಯನ್ನು ನಡೆಸುವವನು, ಲೋಕವ್ಯವಹಾರವುಳ್ಳವನು. "ದೇವಯುರ್ವಾಚ್ಯಲಿಂಗಃ ಸ್ವಾರ್ಥಾಮಿಕೇ ಲೋಕಯಾತ್ರೀ" ಮೇದಿಂ |

**ದೇವಯುಗ ದೇವಯುಗ** (ಪುಂ) 1. ಸತ್ಯಯುಗ, ಕೃತಯುಗ. ದೇವಾನಾಂ ದೇವಪ್ರಿಯಂ ವಾ ಯುಗಮ್ | "ಪುರಾ ದೇವಯುಗೇ ಬ್ರಹ್ಮಾನ್ ಪ್ರಜಾಪತಿಸ್ತುತೇ ಶುಭೇ | ಆಸ್ತಾಂ ಭಗಿನ್ಯೌ ರೂಪೇಣ ಸಮುಪೇತೇಽದ್ಭುತೇಃ

ನವ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೬-೪ | 2. ಮನುಷ್ಯರ ನಾಲ್ಕು ಯುಗಗಳ ಕಾಲ, ದೇವತೆಗಳ ಹನ್ನೆರಡುಸಾವಿರ ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ.

**ದೇವಯೋನಿ ದೇವಯೋನಿ** (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳೇ ಉತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣವಾಗಿ ಉಳ್ಳ ವಿದ್ಯಾಧರರು ಅಪ್ಸರಸ್ಸುಗಳು ಯಕ್ಷರು ಗಂಧರ್ವರು ಮೊದಲಾದವರು, ದೇವತೆಗಳ ಅಂತರಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವರು. ದೇವಾಃ ಯೋನಿರೇಷಾಮ್ | "ವಿದ್ಯಾಧರೋಽಪ್ಸರೋಽಪ್ಸರಕ್ಷೋಗಂಧರ್ವಕಿನ್ನರಾಃ | ಪಿಶಾಚೋ ಗುಹ್ಯಕಃ ಸಿದ್ಧೋ ಭೂತೋಽಪಿ ದೇವಯೋನಯಃ" ಅಮಂ |

**ದೇವರ ದೇವರ** (ಪುಂ) 1. ಪತಿಯ ಸಹೋದರ, ಗಂಡನ ಒಡಹುಟ್ಟಿದವನು. ದೇವ (ದೇವನೇ) "ಅರಃ" (೩ಂ ೩-೧೩೨) | "ದೇವರಾಡ್ವಾ ಸಪಿಂಡಾಡ್ವಾ ಸ್ತ್ರಿಯಾ ಸಮ್ಯಜ್ನಿಯುಕ್ತಯಾ | ಪ್ರಜೇಷಿತಾಃ ಸ್ಥಿಗಂತವ್ಯಾ ಸಂತಾನಸ್ಯ ಪರಿಕ್ಷಯೇ" ಮನುಂ ೯-೪೯ | 2. ಪತಿ, ಗಂಡ. "ಕಾ ದೇವರಂ ವಶಗತಂ ಕುಸುಮಾಸ್ತ್ರವೇಗವಿಸ್ತಸ್ತಪೀನ್-ಮುಶತೀ ನ ಭಜೇತ ಕೃತ್ಯೇ" ಭಾಗಂ ೪-೨೬-೨೬ |

**ದೇವರಕ್ಷಿತ ದೇವರಕ್ಷಿತ** (ಪುಂ) 1. ದೇವಕನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ದೇವಕಸ್ಯಾಭವನ್ ಪುತ್ರಾಶ್ಚತ್ವಾರಸ್ತ್ರಿದಶೋಪಮಾಃ | ದೇವಾನುಪದೇವಶ್ಚ ಸಂದೇವೋ ದೇವರಕ್ಷಿತಃ | ಕುಮಾರ್ಯಃ ಸಪ್ತ ಚಾಸ್ಯಾಸನ್ ವಸುದೇವಾಯ ತಾ ದದೌ | ದೇವಕೀ ಶಾಂತಿದೇವೀ ಚ ಸಂದೇವಾ ದೇವರಕ್ಷಿತಾ | ವೃಕುಡೇವ್ಯುಪದೇವೀ ಚ ಸುನಾಮ್ನೀ ಚೈವ ಸಪ್ತಮೀ" ಹರಿವಂ | (ವಿಂ) 2. ದೇವತೆಗಳಿಂದ ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ದೇವಃ ರಕ್ಷಿತಃ |

**ದೇವರಥ ದೇವರಥ** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆಗಳ ರಥ, ವಿಮಾನ. ದೇವಾನಾಂ ರಥಃ | 2. ಸೂರ್ಯನ ರಥ.

**ದೇವರಹಸ್ಯ ದೇವರಹಸ್ಯ** (ನಂ) ಬಹಳ ಗುಟ್ಟು, ಅತಿರಹಸ್ಯ. ದೇವಾನಾಮಪಿ ರಹಸ್ಯಮ್ | "ಶ್ರುತಂ ದೇವರಹಸ್ಯಂ ತೇ ನಾರದಾಹೇವ-ದರ್ಶನಾತ್" ಭಾಂ ಆಶ್ರಮಂ ೩೮-೮ |

**ದೇವರಾಜ ದೇವರಾಜ** (ಪುಂ) ದೇವೇಂದ್ರ, ದೇವತೆಗಳ ಒಡೆಯ. ದೇವೇಶು ರಾಜತೇ - ರಾಜ (ದೀಪ್ತೌ) "ವಿವ್" (೩-೨-೬೧) |

**ದೇವರಾಜ ದೇವರಾಜ** (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳ ರಾಜ, ಮಹೇಂದ್ರ. ದೇವಾನಾಂ ರಾಜಾ "ರಾಜ್" (೪-೪-೯೧) | "ತಂ ದೇವರಾಜಪ್ರತಿಮಂ ಮತ್ತವಾರಣಧರ್ಮತಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೯೦-೧೩ |

**ದೇವರಾತ ದೇವರಾತ** (ಪುಂ) ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮಹರ್ಷಿಯ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

**ದೇವರ್ಷಿ ದೇವರ್ಷಿ** (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳ ಗುಂಪಿಗೆ ಸೇರಿದ ಋಷಿ, ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಪೂಜ್ಯನಾದ ಋಷಿ-ನಾರದ ಮೊದಲಾದವರು. ದೇವ ಇವ ಋಷಿಃ | ಅತ್ರಿ ಭೃಗು ಕಂತ್ಸ ವಸಿಷ್ಠ



ಗೌತಮ ಕಾಶ್ಯಪ ಮತ್ತು ಅಂಗಿರಸ್ಸು ಇವರಲ್ಲಿರೂ ದೇವರ್ಷಿಗಳು. "ಎಂ ಬಾದಿನಿ ದೇವರ್ಷಿ ಪಾರ್ವೆ ಪಿತುರಖೊಮುಖಿ" ಕುಮಾಂ ೬-೮೪.

**ದೇವಲ ದೇವಲ (ಪುಂ)** 1. ದೇವರ ಪೂಜೆಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. 2. ಜೀವಿಕೆಗಾಗಿ ದೇವಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು. ದೇವ (ದೇವನೆ) "ಕಲ:" (ತಂ ೧-೧-೬) 1. 3. ನಾರದ ಮಹರ್ಷಿ. 4. ಪತಿಯ ಸಹೋದರ, ಗಂಡನ ಒಡಹುಟ್ಟಿದವನು. 5. ಸ್ಮೃತಿಕಾರರಾದ ಒಬ್ಬ ಯುಷಿ. "ಅಸಿತೋ ದೇವಲೋ ವ್ಯಾಸ:" (ವಿಂ) 6. ಧರ್ಮ ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಯುಳ್ಳವನು. 7. ಅಷ್ಟವಸುಗಳಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ನಾದ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷನ ಒಬ್ಬ ಮಗ, ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿ.

**ದೇವಲಕ ದೇವಲಕ (ಪುಂ)** "ದೇವಲ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ದೇವಲ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:" 1. ದೇವಲಕನು ಹವ್ಯಕವಾದಿಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ನಿಷಿದ್ಧನು. "ಚಿಕಿತ್ಸಕಾ ದೇವಲಕಾ ಮಾಸವಿಕ್ರಿಯಿಣಸ್ತಥಾ | ವಿಪಣೇನ ಚ ಜೀವಂತೋ ವರ್ಜ್ಯಾಃ ಸ್ಯುರ್ಹವ್ಯಕವ್ಯಯೋಃ" ಮನುಂ ೩-೧೪೨.

**ದೇವಲತಾ ದೇವಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ನವಮಲ್ಲಿಕೆ, ವೀರಜಾಜಿಗಿಡ, ಹೆಜ್ಜಾಜಿಗಿಡ. ದೇವಪ್ರಿಯಾ ಲತಾ. 2. ದೇವಲತ್ಯ, ದೇವರ ಕೆಲಸವನ್ನು ಜೀವನಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವಿಕೆ. ದೇವಲಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯).

**ದೇವಲೋಕ ದೇವಲೋಕ (ಪುಂ)** 1. ದೇವತೆಗಳ ಲೋಕ, ಸ್ವರ್ಗ. ದೇವಾನಾಂ ಲೋಕ: 1. "ಆಚಾರ್ಯೋ ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕೇಶಃ ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯೇ ಪಿತಾ ಪ್ರಭುಃ | ಅತಿಥಿಸ್ತ್ವಿನ್ದ್ರಲೋಕೇಶೋ ದೇವಲೋಕಸ್ಯ ಚತ್ವಿಜಃ" ಮನುಂ ೪-೧೮೨. 2. ಭೂರಾದಿ ಸಪ್ತಲೋಕಗಳು. "ಭೂಲೋಕೋಽಥ ಭುವಲೋಕಃ ಸ್ವಲೋಕೋಽಥ ಮಹರ್ಜನಃ | ತಪಃ ಸತ್ಯಂ ಚ ಸಪ್ತೇತೇ ದೇವಲೋಕಾಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾಃ" ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ. 1.

**ದೇವಲರ್ಮನ್ ದೇವಲರ್ಮನ್ (ನಂ)** ದೇವತೆಗಳ ಮಾರ್ಗ, ಆಕಾಶ. ದೇವಾನಾಂ ಸುರಾಣಾಂ ರ್ಮನ್.

**ದೇವಲರ್ಮಿಕ ದೇವಲರ್ಮಿಕ (ಪುಂ)** ದೇವತೆಗಳ ಶಿಲ್ಪಿ, ವಿಶ್ವಕರ್ಮ.

**ದೇವಲಲಬ ದೇವಲಲಬ (ಪುಂ)** 1. ಸುರಗಿಮರ. ಸುರ ಹೊನ್ನೆಮರ. (ವಿಂ) 2. ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಪ್ರಿಯವಾದ. ದೇವಾನಾಂ ವಲಲಬಃ.

**ದೇವಲಾಹನ ದೇವಲಾಹನ (ಪುಂ)** 1. ಅಗ್ನಿ, ಅಗ್ನಿಪುರುಷ. (ನಂ) 2. ದೇವತೆಗಳ ವಾಹನ.

**ದೇವಲಿಖಾ ದೇವಲಿಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ನಿರುಕ್ತ.

**ದೇವಲಕ್ಷ ದೇವಲಕ್ಷ (ಪುಂ)** 1. ದೇವತರು, ಇಂದ್ರನ ಉದ್ಯಾನದಲ್ಲಿರುವ ಮಂದಾರ ಪಾರಿಜಾತ ಸಂತಾನ ಕಲ್ಪ.

ವೃಕ್ಷ ಹರಿಹಂದನ ವೃಕ್ಷಗಳು. 2. ಏಳೆಲೆ ಬಾಳೆಗಿಡ. 3. ಗುಗ್ಗುಳ. "ದೇವಲಕ್ಷಃ ಸಪ್ತಪರ್ಣೋ ಮಂದಾರಾದಿಭು ಗುಗ್ಗುಲೇ" ಮೇದಿಂ.

**ದೇವಲತ ದೇವಲತ (ಪುಂ)** 1. ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯ. 2. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪುಣ್ಯಖ. "ನಮೋ ವರದಾಯ ಕುಮಾರಕಾರ್ತಿಕೇಯಾಯ ನಮಃ ಕನಕಶಕ್ತಯೇ ಬ್ರಹ್ಮಣ್ಯದೇವಾಯ ದೇವಲತಾಯ" ಮೃಂತಂ ೩. (ನಂ) 3. ದೇವತ್ವವನ್ನು ಹೊಂದಲು ಮಾಡುವ ಒಂದು ವ್ರತ.

**ದೇವಲಾತ್ರ ದೇವಲಾತ್ರ (ಪುಂ)** ದೇವತೆಗಳ ವೈರಿ, ಅಸುರ. ರಾಕ್ಷಸ. "ಸ ದೇವಲಾತ್ರನಿವ ದೇವರಾಜಃ ಕಿರೀಟಮಾಲಿ ವ್ಯಧಮತ್ಸಪ್ತಾನು" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೧೪೭-೮೦.

**ದೇವಲಿಪಿನ್ ದೇವಲಿಪಿನ್ (ಪುಂ)** ದೇವತೆಗಳ ಶಿಲ್ಪಿ, ವಿಶ್ವಕರ್ಮ. ದೇವಾನಾಂ ಶಿಲ್ಪಿ.

**ದೇವಲನಿ ದೇವಲನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸರಮೆಯೆಂಬ ಒಂದು ನಾಯಿ. ದೇವ ಇವ ಮಹಿಮಾನ್ವಿತಾ ಶುನಿ.

**ದೇವಲೋಕ ದೇವಲೋಕ (ಪುಂ)** ದಮನಕವೃಕ್ಷ.

**ದೇವಲವಸ್ ದೇವಲವಸ್ (ಪುಂ)** 1. ವಸುದೇವನ ಒಬ್ಬ ಸಹೋದರ. "ವಸುದೇವಂ ದೇವಭಾಗಂ ದೇವಲವಸಮಾನಕಮ್ | ಸೃಜಯಂ ಶ್ಯಾಮಕಂ ಕಂಠಂ ಶಮೀಕಂ ವತ್ಸಕಂ ವೃಕಮ್" ಭಾಗಂ ೯-೨೪-೨೯. 2. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

**ದೇವಲಿ ದೇವಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದೇವತೆಗಳ ಸಂಪತ್ತು.

**ದೇವಲತ ದೇವಲತ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ಪರಮೇಶ್ವರ. 3. ನಾರದ. 4. ಜಿನದೇವ. 5. ಶಾಸ್ತ್ರ.

**ದೇವಲಸಾ ದೇವಲಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ದೇವತೆಗಳ ಸಭೆ, ಸುಧರ್ಮ. 2. ಅಟದ ಮನೆ, ಜೂಜಿನ ಮನೆ.

**ದೇವಲಸ್ಯ ದೇವಲಸ್ಯ (ಪುಂ)** 1. ಕ್ರೀಡಾಗೋಷ್ಠಿಯಲ್ಲಿರುವವನು. 2. ಅಟಗಾರ, ಜೂಜಾಟದವನು. 3. ದೇವತೆಗಳ ಅನುಚರ, ದೇವತೆಗಳ ಸೇವಕ.

**ದೇವಲಾಪ್ಯ ದೇವಲಾಪ್ಯ (ನಂ)** ದೇವತೆಯಾಗುವಿಕೆ, ದೇವತ್ವವನ್ನು ಹೊಂದುವಿಕೆ, ದೇವತೆಗಳೊಡನೆ ಸೇರಿ ಕೊಳ್ಳುವುದು. ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) ಭಾವೆ "ವಿವಪ್" (ವಾಂ ೩-೩-೯೪). ಯುಜಾ ಸಹ ವರ್ತತೇ ಸಯುಕ್, ತಸ್ಯ ಭಾವಃ "ವ್ಯಾಜ್" (೪-೧-೧೨೪). ದೇವಸ್ಯ ಸಾಯುಜ್ಯಮ್.

**ದೇವಲಾರ್ಣಿ ದೇವಲಾರ್ಣಿ (ಪುಂ)** ಪದಿಮೂರನೆಯ ಮನು. "ಮನುಸ್ತ್ರಯೋದಶೋ ಭಾವ್ಯೋ ದೇವಲಾರ್ಣಿರಾತ್ಮವಾನ್ | ಚಿತ್ರಸೇನ-ವಿಚಿತ್ರಾಕ್ಷಾಃ ದೇವಲಾರ್ಣಿರಾತ್ಮಜಾಃ" ಭಾಗಂ ೮-೧೩-೩೦.

**ದೇವಲಾಪಿ ದೇವಲಾಪಿ (ಪುಂ)** ಹೃದಯದ ಒಂದು ದ್ವಾರ. ದೇವಃ ರಕ್ಷಯಾಣಃ ಸುಖಃ ದ್ವಾರಮ್. ಈ ಸುಖಿಯು ಐದು ವಿಧ.



“ತಸ್ಯ ಹ ವಾ ಹೃದಯಸ್ಯ ಪಂಚ ದೇವಸುಖಯಃ ಸ ಯೋಸ್ಯ ಪ್ರಾಡ್‌ಸುಖಿಃ ಸ ಪ್ರಾಣಸ್ತಚ್ಚಕ್ಷುಃ ಸ ಆದಿತ್ಯಸ್ತದೇತತೇಜೋಜ್ಞಾತಮಿತುಪಾಸೀತ ತೇಜಸ್ವಿತ್ತಾದೋ ಭವತಿ ಯ एवं ವೇದ” ಇತ್ಯಾದಿ ಚಾಂದೋಗ್ಯಂ । ಹೃದಯದ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿರುವ ಸುಷಿಯು ಪ್ರಾಣವಾಯು. ಹೃದಯದ ದಕ್ಷಿಣಭಾಗದಲ್ಲಿರುವುದು ವ್ಯಾನವಾಯು. “ಅಥ ಯೋಸ್ಯ ದಕ್ಷಿಣಃ ಸುಖಿಃ ಸ ವ್ಯಾನಃ” । ಪಶ್ಚಿಮದಲ್ಲಿರುವ ಸುಷಿಯು ಅಪಾನವಾಯು. “ಅಥ ಯೋಸ್ಯ ಪ್ರತ್ಯಡ್‌ಸುಖಿಃ ಸೋಪಾನಃ” । ಉತ್ತರಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ ಸುಷಿಯು ಸಮಾನವಾಯು. “ಅಥ ಯೋಸ್ಯೋದಡ್‌ಸುಖಿಃ ಸ ಸಮಾನಃ” । ಹೃದಯದ ಉರ್ಧ್ವಭಾಗದ ಸುಷಿಯು ಉದಾನವಾಯು. “ಅಥ ಯೋಸ್ಯೋರ್ವಃ ಸುಖಿಃ ಸ ಉದಾನಃ” । ಪೂರ್ವದ ಸುಷಿಯಿಂದ ತೇಜಸ್ವಿಯಾಗುವನು. ದಕ್ಷಿಣದ ಸುಷಿಯಿಂದ ಶ್ರೀಮಂತ ಮತ್ತು ಯಶಸ್ವಿಯಾಗುವನು. ಪಶ್ಚಿಮದ ಸುಷಿಯಿಂದ ಬ್ರಹ್ಮವರ್ಚಸ್ವಿಯಾಗುವನು. ಉತ್ತರದ ಸುಷಿಯಿಂದ ಕೀರ್ತಿಶಾಲಿಯಾಗುವನು. ಉರ್ಧ್ವ ಸುಷಿಯಿಂದ ಓಜಸ್ವಿಯಾಗುವನು. ಚಾಂದೋಗ್ಯಂ ।

**ದೇವಸ್ ದೇವಸೂ(ಪುಂ)ನಾನಾ ವಿಧ ಅಧಿಕಾರಗಳಲ್ಲಿ ಅನುಜ್ಞೆ ಕೊಡುವ ದೇವತೆಗಳು.** ಈ ದೇವತೆಗಳು 8 ಮಂದಿ. (1) ಅಗ್ನಿ, (2) ಸೋಮ, (3) ಸವಿತ್ರ, (4) ರುದ್ರ, (5) ಬೃಹಸ್ಪತಿ, (6) ಇಂದ್ರ, (7) ಮಿತ್ರ ಮತ್ತು (8) ವರುಣ.

| ದೇವತೆ    | ಕೊಡುವ ಅಧಿಕಾರ                 |
|----------|------------------------------|
| ಅಗ್ನಿ    | .. ಗೃಹಸ್ಥಾಧಿಕಾರ              |
| ಸೋಮ      | .. ವನಸ್ಪತಿಯ ಅಧಿಕಾರ (ಆಧಿಪತ್ಯ) |
| ಸವಿತ್ರ   | .. ಯಾಗಾಧಿಕಾರ                 |
| ರುದ್ರ    | .. ಪಶುಪತಿತ್ವ                 |
| ಬೃಹಸ್ಪತಿ | .. ವಾಗಧಿಕಾರ (ಪಾಂಡಿತ್ಯ)       |
| ಇಂದ್ರ    | .. ಜ್ಯೇಷ್ಠಭಾವ                |
| ಮಿತ್ರ    | .. ಸತ್ಯವಚನ                   |
| ವರುಣ     | .. ಧರ್ಮೇಶ್ವರಾಧಿಕಾರ           |

(ಧರ್ಮಾಧಿಪತ್ಯ)

“ಸವಿತಾ ತ್ವಾ ಸವಾನಾಂ ಸುವತಾಮಗ್ನಿಗೃಹಪತೀನಾಂ ಸೋಮೋ ವನಸ್ಪತೀನಾಮ್ । ಬೃಹಸ್ಪತಿರ್ವಾಚ ಇಂದ್ರೋ ಜ್ಯೇಷ್ಠಥಾಯ ರುद्रಃ ಪಶುಭ್ಯೋ ಮಿತ್ರಃ ಸತಯೋ ವರುಣೋ ಧರ್ಮಪತೀನಾಮ್” ।

**ದೇವಸೇನಾ ದೇವಸೇನಾ(ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ದೇವತೆಗಳ ಸೈನ್ಯ. ದೇವಾನಾಂ ಸೇನಾ । “ಗುರುತರಪರಿಮೃಜ್ಜದ್‌ಭೂತೋ ದೇವಸೇನಾ ವವೃವುರಪಿ ಸುಪೂರ್ಣಾ ವ್ಯೋಮಭೂಮ್ಯಂತರಾಲೇ” ಕುಮಾಂ ೧೪-೫೧ । 2. ಪುಣ್ಯಭೂಮಿ ಪತ್ನಿ. “ಅಥೋಪಯನ್ತ್ರಾ ಸದೃಶೇನ ಯುಕ್ತಾಂ ಸ್ಕಂದೇನ ಸಾಕ್ಷಾದಿವ ದೇವಸೇನಾಮ್” ರಘುಂ ೭-೧ ।

**ದೇವಸೇನಾಪತಿ ದೇವಸೇನಾಪತಿ (ಪುಂ)** 1. ದೇವತೆಗಳ ಸೇನೆಯ ಅಧಿಪತಿ. 2. ದಕ್ಷಬೃಹ್ಮನ ಮಗಳಾದ ದೇವ ಸೇನೆಯ ಪತಿ, ಸ್ಕಂದ. ದೇವಸೇನಾಪತಿಃ ಪತಿಃ ।

**ದೇವಸ್ಥಾನ ದೇವಸ್ಥಾನ (ಪುಂ)** 1. ಒಬ್ಬ ಯಜ್ಞ. ದೇವಾನಾಂ ಸ್ಥಾನಮಿವ ಸ್ಥಾನಮಸ್ಯ । (ನಂ) 2. ದೇವಾಲಯ. 3. ದೇವತೆಗಳ ಸ್ಥಾನ, ಸ್ವರ್ಗ. “ದೈವಾಯನೋ ನಾರದಶ್ಚ ದೇವಲಶ್ಚ ಮಹಾನೃಷಿಃ । ದೇವಸ್ಥಾನಶ್ಚ ಕರ್ಣಶ್ಚ ತೇಷಾಂ ಶಿಷ್ಯಾಶ್ಚ ಸತ್ತಮಾಃ” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೧-೪ ।

**ದೇವಸ್ವ ದೇವಸ್ವ (ನಂ)** ದೇವರ ಧನ, ದೇವರ ಆಸ್ತಿ, ದೇವರ ಪೂಜಾದಿಗಳಿಗೆ ಕೊಟ್ಟಿರುವ ಸ್ವತ್ತು. ದೇವಸ್ಯ ಪೂಜಾರ್ಥ ದತ್ತ ಸ್ವಮ್ । “ದೇವಸ್ವಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ವಂ ವಾ ಲೋಭೇನೋಪಹಿನ್ಯತಿಸ್ತಿ ಯಃ । ಸ ಪಾಪಾತ್ಮಾ ಪರಂ ಲೋಕೇ ಗೃಧ್ರೋಂಚಿಷ್ಟೇನ ಜೀವತಿ” ಮನುಂ ೧೧-೨೬ ।

**ದೇವಹೃತಿ ದೇವಹೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸ್ವಾಯಂಭುವ ಮನು ವಿನ ಒಬ್ಬ ಮಗಳು, ಕರ್ಮಮನ ಪತ್ನಿ, ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿಯ ತಾಯಿ. “ಏವಂ ನಿಶಮ್ಯ ಕಪಿಲಸ್ಯ ವಚೋ ಜನಿತ್ರಿ ಸಾ ಕರ್ಮಸ್ಯ ದಯಿತಾ ಕಿಲ ದೇವಹೃತಿಃ” ಭಾಗಂ ೩-೩೩-೧ । 2. ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಕರೆಯುವುದು. ದೇವಾನಾಂ ಹೃತಿಃ ಆಕಾರಣಮ್ ।

**ದೇವಾಕ್ರೀಡ ದೇವಾಕ್ರೀಡ (ಪುಂ)** ದೇವತೆಗಳ ಕ್ರೀಡಾಸ್ಥಾನ, ದೇವತೆಗಳ ಉದ್ಯಾನವನ. ದೇವಾ ಆಕ್ರೀಡಂತ್ಯತ್ರ—ಆ + ಕ್ರೀಡ್ (ವಿಹಾರೆ) ಅಧಿಂ “ಘ್” (೩-೩-೧೨೧) ।

**ದೇವಾಗಾರಿಕ ದೇವಾಗಾರಿಕ (ಪುಂ)** ದೇವಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ನೇಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನು. ದೇವಾಗಾರೆ ನಿಯುಕ್ತಃ “ಠನ್” (೪-೪-೭೦) ।

**ದೇವಾಜೀವ ದೇವಾಜೀವ (ಪುಂ)** ದೇವಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡಿ ಜೀವಿಸುವವನು. ದೇವಮಾಜೀವತಿ—ಆ + ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೫) । “ಣಿನಿಃ” (೩-೨-೭೮) । —ಆಜೀವಿ—ಅಜೀವೀ.

**ದೇವಾಟ ದೇವಾಟ (ಪುಂ)** ಒಂದು ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ. ಹರಿಹರಕ್ಷೇತ್ರ. ದೇವಾ ಅಟಂತ್ಯತ್ರ ।

**ದೇವಾತಿಥಿ ದೇವಾತಿಥಿ (ಪುಂ)** ಚಂದ್ರವಂಶದ ಕ್ರೋಧನ ರಾಜನ ಮಗ. “ತತಶ್ಚ ಕ್ರೋಧನಸ್ತಸ್ಮಾದೇವಾತಿಥಿರಮುಷ್ಯ ಚ” ಭಾಗಂ ೯-೨೨-೧೧ ।

**ದೇವಾತ್ಮನ್ ದೇವಾತ್ಮನ್ (ವಿಂ)** 1. ದೇವಸ್ವರೂಪನಾದ ದೇವಃ ಆತ್ಮಾ ಯಸ್ಯ । 2. ದೇವತೆಗಳ ಸ್ವಭಾವದ. (ಪುಂ) 3. ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ.

**ದೇವಾಧಿದೇವ ದೇವಾಧಿದೇವ (ನಂ)** ಸರ್ವೇಶ್ವರ, ಪರಮಾತ್ಮ. ದೇವಾನಾಮಧಿದೇವಃ ।



**ದೇವಾಧಿಪ ದೇವಾಧಿಪ** (ಪುಂ) 1. ಸರ್ವೇಶ್ವರ, ಪರಮೇಶ್ವರ.  
2. ಇಂದ್ರ, ದೇವತೆಗಳ ರಾಜ. ದೇವಾನಾಮಧಿಪ: -ಅಧಿಪತಿ:  
-ಅಧಿಪತಿ.

**ದೇವಾನಾಂಪ್ರಿಯ ದೇವಾನಾಂಪ್ರಿಯ** (ಪುಂ) ಮೂರ್ಖ, ದಡ್ಡ,  
ಪಶುಸಮಾನನು. ದೇವಾನಾಂ ಪ್ರಿಯ: "ಅಲುಕ್" (ವಾಂ ೬-೩-೨೧).  
[ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಪಶುಗಳು ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಸಂತೋಷವುಂಟು  
ಮಾಡುವುದರಿಂದ ಪಶುಸಮಾನತೆಯು ತೋರುವುದರ  
ಮೂಲಕ ಈ ಪದಕ್ಕೆ ಮೂರ್ಖನೆಂದರ್ಥವನ್ನು ಹೇಳುವ  
ಭಾವ.] ದೇವತೆಗಳು ಕ್ರೀಡಾಸಕ್ತರಾದುದರಿಂದ ಅವರು  
ಮೂರ್ಖರು, ಅವರಿಗೆ ಪ್ರೀತಿಪಾತ್ರನಾದವನೂ ಮೂರ್ಖ.

**ದೇವಾನೀಕ ದೇವಾನೀಕ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಒಬ್ಬ  
ರಾಜ. "ಕ್ಷೇಮಧನ್ವಸುತಸ್ತ್ವಾಸೀದೇವಾನೀಕ: ಪ್ರತಾಪವಾನ್"  
ಹರಿವಂ. (ನಂ) 2. ದೇವತೆಗಳ ಸೈನ್ಯ.

**ದೇವಾನುಚರ ದೇವಾನುಚರ** (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳ ಕಿಂಕರ;  
ವಿದ್ಯಾಧರ ಅಪ್ಸರಸ್ಸು ಯಕ್ಷ ಗಂಧರ್ವ ಮೊದಲಾದವರು.  
ದೇವಾನುಚರತಿ-ಅನು+ಚರ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪).

**ದೇವಾನುಯಾಯಿನ್ ದೇವಾನುಯಾಯಿನ್** (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳ  
ಕಿಂಕರ.

**ದೇವಾನ್ಧಸ್ ದೇವಾನ್ಧಸ್** (ನಂ) ದೇವತೆಗಳ ಅನ್ವದಂತಿ  
ರುವ ಅಮೃತ. ದೇವಾನಾಂಧ ಇವ ಪ್ರೀತಿಕರಮ್.

**ದೇವಾನ್ ದೇವಾನ್** (ನಂ) 1. ಅಮೃತ. ದೇವಾನಾಮನ್ನಮಿವ.  
2. ದೇವರ ನೈವೇದ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡಿದ ಅನ್ನ. "ಅನುಪಾಕೃತ-  
ಮಾಂಸಾನಿ ದೇವಾನ್ಮಾನಿ ಹವಿಷಿ ಚ" ಮನು ೪-೬.

**ದೇವಾಪಿ ದೇವಾಪಿ** (ಪುಂ) ಪ್ರತಿಷ್ಠ ರಾಜನ ಮಗ, ಶಂತನು  
ರಾಜನ ಸಹೋದರ. "ಪ್ರತಿಪಸ್ಯ ತ್ರಯ: ಪುತ್ರಾ: ಜಜ್ಞಿರೇ  
ಭರತರ್ಷಭ. ದೇವಾಪಿ: ಶಂತನುಶ್ಚೈವ ಬಾಹ್ಲಿಕಿಶ್ಚ ಮಹಾರಥ:"  
ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೦೧-೪೯.

**ದೇವಾಭೀಷ್ಠ ದೇವಾಭೀಷ್ಠ** (ವಿಂ) 1. ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಇಷ್ಟ  
ವಾದ. ದೇವಾನಾಮಭೀಷ್ಠ: (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಷ್ಠಾ -ಷ್ಠಾ.  
2. ತಾಂಬೂಲೀಲತೆ, ವೀಳ್ಯದಲೆಯ ಬಳ್ಳಿ.

**ದೇವಾಯತನ ದೇವಾಯತನ** (ನಂ) ದೇವಾಲಯ, ದೇವಸ್ಥಾನ,  
ದೇವರ ಗುಡಿ. "ನ ದೇವಾಯತನಂ ಗಚ್ಛೇತ್ ಕದಾಚಿದ್ವಾಪ್ರದಕ್ಷಿಣಮ್"  
ಕೂರ್ಮಪುಂ.

**ದೇವಾಯುಧ ದೇವಾಯುಧ** (ನಂ) 1. ಇಂದ್ರನ ಧನುಸ್ಸು.  
ಮಳೆಯು ಬೀಳುತ್ತಿರುವಾಗ ಸೂರ್ಯನ ಕಿರಣಗಳು  
ಮೇಘದ ಮೇಲೆ ಬಿದ್ದಾಗ ಧನುಸ್ಸಿನ ಅಕಾರದಲ್ಲಿ ಕಾಣು  
ವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ಕಾಮನಬಿಲ್ಲು ಎಂದು ಹೆಸರು. 2. ಇಂದ್ರನ  
ವಜ್ರಾಯುಧ.

**ದೇವಾರಿ ದೇವಾರಿ** (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳ ಶತ್ರು, ಅಸುರ.  
ದೇವಾನಾಮರಿ: "ಯೇನ ದೇವಾರಯ: ಸರ್ವೇ ಮಹಾಯುಧಿ ನಿಪಾತಿತಾ:"  
ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ.

**ದೇವಾಲಯ ದೇವಾಲಯ** (ಪುಂ) 1. ದೇವರ ಗುಡಿ, ದೇವ  
ಸ್ಥಾನ. 2. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವತೆಗಳ ವಾಸಸ್ಥಾನ. ದೇವಾನಾಮಾಲಯ:

**ದೇವಾನ್ ದೇವಾನ್** (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿ  
ಮರ. 2. ದೇವಸ್ಥಾನ, ದೇವರಗುಡಿ. 3. ಸ್ವರ್ಗ,  
ದೇವಲೋಕ. 4. ಸುಮೇರು ಪರ್ವತ. ದೇವಾನಾಮಾಪಾಸ:

**ದೇವಾಶ್ವ ದೇವಾಶ್ವ** (ಪುಂ) ಇಂದ್ರನ ಕುದುರೆ, ಉಚ್ಚೈಃ  
ಶ್ರವಸ್ಸು. ದೇವಸ್ಯ ಇಂದ್ರಸ್ಯ ಅಶ್ವ:.

**ದೇವಿಕ ದೇವಿಕ** (ಪುಂ) ದಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇವದತ್ತ.  
ಅನುಕಂಪಿತೋ ದೇವದತ್ತ:-ದೇವದತ್ತ "ಠಕ್" (೪-೩-೭೮).  
ದ್ವಿತೀಯಾದಚ: ಪರಂ ಲೋಪ: (೪-೩-೮೩). ಇಕ: (೭-೩-೪೦).  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ -ಕಾ. ಒಂದು ನದಿ.

**ದೇವಿನ್ ದೇವಿನ್** (ವಿಂ) ಅಟವಾಡುವವನು, ಜೂಜಾಟ  
ದವನು. ದಿವು (ಕೃಷಾದೌ) "ಗಿರಿನಿ:" (೩-೨-೭೮).  
"ರಾಜಾ ಸಚಿಹ್ನಂ ನಿರ್ವಾಸ್ಯಾ: ಕೂಡಾಕ್ಷೋಪಧಿದೇವಿನ:" ಯಾಜ್ಞಂ  
೨-೨೦೨.

**ದೇವಿಯ ದೇವಿಯ** (ಪುಂ) ದಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇವದತ್ತ.  
ಅನುಕಂಪಿತೋ ದೇವದತ್ತ:-ದೇವದತ್ತ "ಘನ್" (೪-೩-೭೯).  
ದ್ವಿತೀಯಾದಚ: ಪರಂ ಲೋಪ: (೪-೩-೮೩). ಇಯಾದೇಶ  
(೭-೧-೨).

**ದೇವಿಲ ದೇವಿಲ** (ಪುಂ) 1. ದಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇವದತ್ತ.  
ಅನುಕಂಪಿತೋ ದೇವದತ್ತ:-ದೇವದತ್ತ "ಇಲಕ್" (೪-೩-೭೯).  
ದ್ವಿತೀಯಾದಚ: ಪರಂ ಲೋಪ: (೪-೩-೮೩). (ವಿಂ) 2.  
ಧಾರ್ಮಿಕ. ದೀವ್ಯತಿ ಆನಂದೇನ-ದಿವು (ಕೃಷಾದೌ) "ಇಲಕ್"  
(೩ಂ ೧-೪೭).

**ದೇವಿ ದೇವಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. ದೀವ್ಯತಿ-ದಿವು  
(ಕೃಷಾದೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಕೌಪ್"  
(೪-೧-೧೪). ಪಂಚಾದಿಗಣದಲ್ಲಿ ದೇವತ್ ಎಂದು ಹೇಳಿರು  
ವುದರಿಂದ "ಕೌಪ್" ಬಂದಿರುವುದು. "ದೇವ್ಯಾ ಯಾ  
ತತಮಿದಂ ಜಗದಾತ್ಮಶಕ್ತ್ಯಾ ನಿ:ಶೇಷದೇವಗಣಶಕ್ತಿಸಮೂಹಮೂರ್ತ್ಯಾ"  
ಮಾರ್ಕಂ. 2. ಮಹಿಷಿ, ಪಟ್ಟಾಭಿಷಿಕ್ತಳಾದ ರಾಜನ ಪತ್ನಿ  
(ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ಈ ಪ್ರಯೋಗ). "ಶಪೇ ದೇವ್ಯಾಶ್ಚರಣೈರ್ಯದಿ  
ಕಸ್ಯಾಪಿ ಪುರತ: ಪ್ರಕಾಶಯಾಮಿ" ರತ್ನಾಂ ೩. "ಪ್ರೇಷ್ಯಭಾವೇನ  
ನಾಮೇಯಂ ದೇವೀಶಬ್ದಕ್ಷಮಾ ಸತೀ" ಮಾಲಂ ೪-೧೨. 3. ಸ್ತ್ರೀ  
ದೇವತೆ. "ದೇವೀ ವಾಚಮುಪಾಸತೇ ಹಿ ಬಹವ: ಸಾರಂ ತು ಸಾರಸ್ವತಂ  
ಜಾನೀತೇ ನಿತರಾಮಸೌ ಗುರುಕುಲಕಿಲಿಷ್ಟೋ ಮುರಾರಿ: ಕವಿ:"



ಅನರ್ಥಂ | 4. ದೇವಾಂಗನಿ, ದೇವತೆಗಳ ಪತ್ನಿ. "ಆರಾಹ್ ನಾರ್ಯಃ ಖಣದಾಸು ಯತ್ರ ನಭೋಗತಾ ದೇವ್ಯ ಇವ ವ್ಯರಾಜನ್" ಮಾಘಂ ೩-೪೩ | 5. ಕುಂಟೆಗಿಡ. "ಮೂರ್ವಾ ದೇವೀ ಮಧುರಸಾ" ಅಮಂ | 6. ಸ್ವಲ್ಪಕ್ಕಾ ಎಂಬ ಗಂಧದ್ರವ್ಯ. 7. ಅಗುಳು ಶುಂಠಿ. 8. ಅಗಸೆ ಗಿಡ. 9. ಅಳಲೆ ಗಿಡ. 10. ಮದ್ಯ, ಸುರೆ, ಹೆಂಡ. "ಶಿಖು ಕಸ್ಯಮಿರಾ ಕಲ್ಯಾ ಶುಂಠಾ ದೇವೀ ಪರಿಪ್ಲುತಾ" ವೈಜಂ |

**ದೇವಿಕೋಟ ದೇವೀಕೋಟಿ** (ಪುಂ) ಬಾಣಾಸುರನ ನಗರ, ಶೋಣಿತಪುರ. "ದೇವಿಕೋಟಿ ಬಾಣಪುರಂ ಕೋಟಿವರ್ಷಮುಷಾವನಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ದೇವ ದೇವ್ಯ** (ಪುಂ) ಗಂಡನ ಒಡಹುಟ್ಟಿದವನು, ಪತಿಯ ಸಹೋದರ. ದೀವ್ಯತಿ - ದಿವ್ಯ (ಶ್ರೀಡಾದಿ) "ಋ:" (ತಂ ೨-೯೯) |

**ದೇವೇಜ್ಯ ದೇವೇಜ್ಯ** (ಪುಂ) ಬೃಹಸ್ಪತಿ, ದೇವತೆಗಳ ಆಚಾರ್ಯ (ಗುರು). ದೇವಾನಾಮಿಜ್ಯಃ |

**ದೇವೇಂದ್ರ ದೇವೇಂದ್ರ** (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳ ಪ್ರಭು, ಇಂದ್ರ. ದೇವಾನಾಮಿಂದ್ರಃ |

**ದೇವೇಶ ದೇವೇಶ - ಇಶ್ವರ - ಈಶ್ವರ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ದೇವಾನಾಂ ಬ್ರಹ್ಮಾದಿನಾಂ ಇಶಃ ಸ್ವಾಮಿ | "ಬ್ರಹ್ಮಾದಿನಾಂ ಚ ದೇವೇಶಃ ಯಥಾರ್ಹವಿನಿಯೋಗತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | "ದೇವೇಶೋ ದೇವಭೃದ್ಗುರುಃ" ವಿಂ ಸಂ | 2. ಮಹಾದೇವ, ಪರಶಿವ. "ಭಗವಾಂಶ್ಚಾಪಿ ದೇವೇಶೋ ಯತ್ರ ದೇವೀ ಚ ಕೀರ್ತಯತೇ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೨-೩೭ | 3. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. 4. ಇಂದ್ರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಶೀ - ಶೀ. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

**ದೇವೇಶಯ ದೇವೇಶಯ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ದೇವೇಶೇ-ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಅಚ್" (೩-೨-೧೪) | ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಅಲುಕ್ (೬-೩-೧೮) | 2. ಪರಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. "ಪರಮಜ್ಞೇಯ ಪರಮಯಾಜ್ಞಿಕ ಸಾಂಖ್ಯಯೋಗ ಸಾಂಖ್ಯಮೂರ್ತೇ ಅಮೃತೇಶಯ ಹಿರಣ್ಯೇಶಯ ವೇದೇಶಯ ದೇವೇಶಯ ಕುಶೇಶಯ ಬ್ರಹ್ಮೇಶಯ ಪಂಚೇಶಯ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೩೪೬-೪ |

**ದೇವೇಶ ದೇವೇಶ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಗುಗುಳ. (ವಿಂ) 2. ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಇಷ್ಟವಾದ. ದೇವಾನಾಮಿಷ್ಠಃ |

**ದೇವೋದಾನ ದೇವೋದ್ಯಾನ** (ನಂ) ದೇವತೆಗಳ ಉದ್ಯಾನವನ. ದೇವೋದ್ಯಾನವು (1) ನಂದನ, (2) ಚೈತ್ರರಥ, (3) ವೈಭ್ರಾಜ ಮತ್ತೂ (4) ಸರ್ವತೋಭದ್ರವೆಂಬ ನಾಲ್ಕು ವನಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು.

**ದೇವೋಕ್ತ ದೇವೋಕ್ತ** (ನಂ) ದೇವತೆಗಳ ಗೃಹ, ಸುಮೇರು ಪರ್ವತ. ದೇವಾನಾಮೋಕ್ತಃ |

**ದೇಶ ದೇಶ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರದೇಶ, ಜಾಗ, ಸ್ಥಳ. ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ದೇಶಃ ಸೋಮರಾತಿ-ಶೋಣಿತಜಲೈರಸ್ಮಿನ್ ಹೃದಾಃ ಪೂರಿತಾಃ" ವೇಣೀಂ ೩-೩೩ | 2. ಜನಪದ, ನಾಡು, ಸೀಮೆ, ರಾಷ್ಟ್ರ. "ಕೋ ವೀರಸ್ಯ ಮನಸ್ವಿನಃ ಸ್ವವಿಷಯಃ ಕೋ ವಾ ವಿದೇಶಸ್ತಥಾ ಯಂ ದೇಶಂ ಶ್ರಯತೇ ತಮೇವ ಕುರುತೇ ಬಾಹುಪ್ರತಾಪಾಜಿತಮ್" ಹಿತೋಂ ೧-೧೭೪ | 3. ಅಸಾಧಾರಣವಾದ ಅಜ್ಞೆ, ಶಾಸನ. ದಿಶ್ಯತೇ - ದಿಶ ಕರ್ಮಂ "ಏಚ್" (೩-೩-೧೯) | 4. ಉಪದೇಶ, ಶಿಕ್ಷಣ, ಬೋಧನೆ. ದಿಶ ಭಾವೇ "ಏಚ್" (೩-೩-೧೮) |

**ದೇಶಕ ದೇಶಕ** (ವಿಂ) 1. ಉಪದೇಶಮಾಡುವವನು, ಬೋಧಿಸುವವನು, ಶಿಕ್ಷಣ ಕೊಡುವವನು. 2. ಶಾಸನ ಮಾಡುವವನು, ಕಟ್ಟಳೆ ವಿಧಿಸುವವನು. ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಏಚ್" (೩-೧-೧೩೩) | 3. ತೋರಿಸಿಕೊಡುವವನು, ಸೂಚಿಸುವವನು.

**ದೇಶಧರ್ಮ ದೇಶಧರ್ಮ** (ಪುಂ) ದೇಶಕ್ಕೆ ಅನುಕೂಲವಾದ ಧರ್ಮ, ದೇಶಾಚಾರ, ವಂಶಪರಂಪರೆಯಾಗಿ ಬಂದ ದೇಶದ ಸಂಪ್ರದಾಯ. ದೇಶಸ್ಯ ಅನುಕೂಲೋ ಧರ್ಮಃ | "ದೇಶಧರ್ಮಾನ್ ಜಾತಿಧರ್ಮಾನ್ ಕುಲಧರ್ಮಾನ್ ಶಾಸ್ತ್ರತಾನ್ | ಪಾಪಪುಣ್ಯಧರ್ಮಾನ್ ಶಾಸ್ತ್ರೇಽಸ್ಮಿನ್ ಕೃತವಾನ್ ಮನುಃ" ಮನುಂ ೧-೧೧೮ |

**ದೇಶನ ದೇಶನ** (ನಂ) 1. ಉಪದೇಶ, ಶಿಕ್ಷಣ. ಬೋಧನೆ. ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) | 2. ತೋರಿಸುವುದು. 3. ಅಜ್ಞೆ ಮಾಡುವುದು.

**ದೇಶನಿಕ ದೇಶನಿಕ** (ನಂ) ವೃತ್ತಿಕಾಸ್ಥಾನ, ಮಣ್ಣು ಹಚ್ಚಿ ಕೊಂಡು ಮಾಡುವ ಸ್ಥಾನ. "ಯನ್ಮೃತಿಕಾಮ್ಭಸಾ ಸ್ನಾನ ದಿಷ್ಟಂ ದೇಶನಿಕಂ ಸ್ಮೃತಮ್" ವೈಜಂ |

**ದೇಶನೀಯ ದೇಶನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಉಪದೇಶಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. 2. ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಡುವ. ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | 3. ತೋರಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಅಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಡುವ. "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬) | ಲೇಖಕಃ ದೇವ್ಯವ್ಯಃ.

**ದೇಶಭಾಷಾ ದೇಶಭಾಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಯಾದೇಶದಲ್ಲಿ ವ್ಯವಹರಿಸುವ ಭಾಷೆ, ಮಾತೃಭಾಷೆ. ಆಯಾದೇಶದ ಜನರು ತಮ್ಮ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಆಡುವ ಭಾಷೆಯು ದೇಶಭಾಷೆ. "ಕುಶಲಾ ದೇಶಭಾಷಾಸು ಜಲ್ಪಂತೋನ್ಯೋನ್ಯಮಿಶ್ವರಾಃ" ಭಾಂ ಶಲ್ಯಂ ೪೬-೧೦೩ |

**ದೇಶರೂಪ ದೇಶರೂಪ** (ನಂ) ಯಂತ್ರತೆ, ಔಚಿತ್ಯ, ಹೊಂದಿಕೆ, ನ್ಯಾಯಮಾರ್ಗದಿಂದ ತಪ್ಪದಿರುವಿಕೆ. ದಿಶ್ಯತೇ - ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಏಚ್" (೩-೩-೧೯) | ದೇಶೋ ರೂಪಸ್ಯ |



ದಿಶ್ಯಮಾನಸ್ಯ ಉಚಿತಸ್ಯ ರೂಪಂ । ಪ್ರಶಸ್ತಂ ದೇಶನಮ್ - ದೇಶ  
ಪ್ರಶಂಸಾया "ರೂಪ" (೪-೩-೬೬) ವಾ । "ಅಭ್ರೇಷನ್ಯಾಯ-  
ಕಲ್ಪಾಸ್ತು ದೇಶರೂಪಂ ಸಮಂಜಸಮ್" ಅಮಂ ।

**ದೇಶವಾಸಿನ್ ದೇಶವಾಸಿನ್** (ವಿಂ) ನಿರಂತರವಾಗಿ ಒಂದು  
ದೇಶದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವವನು. ದೇಶ ವಸತಿ - ವಸ  
(ನಿವಾಸ) "ಗಿರಿನಿ:" (೩-೨-೭೮) ।

**ದೇಶಾಚಾರ ದೇಶಾಚಾರ** (ಪುಂ) ಆಯಾದೇಶದ ಸಂಪ್ರದಾಯ,  
ಆಯಾದೇಶದ ಪದ್ಧತಿ.

**ದೇಶಾಡನ ದೇಶಾಟನ** (ನಂ) ದೇಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವುದು.

**ದೇಶಾಂತರ ದೇಶಾಂತರ** (ನಂ) ಬೇರೆ ದೇಶ, ಭಾಷಾಭೇದ  
ದಿಂದಲೂ ಬೆಟ್ಟ ಮತ್ತು ನದಿಗಳ ವ್ಯವಧಾನದಿಂದಲೂ  
ದೇಶವು ಬೇರೆಯಾಗುವುದು. "ವಾಚೋ ತತ್ರ ವಿಭಿಜಂತಿ  
ಗಿರಿರ್ವಾ ವ್ಯವಧಾಯಕಃ । ಮಹಾನಂತರಂ ಯತ್ರ ತದೇಶಾಂತರ-  
ಮುಚ್ಯತೇ" ।

**ದೇಶಿಕ ದೇಶಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಮಂತ್ರವನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸುವ  
ಅಚಾರ್ಯ. 2. ಗುರು, ಧರ್ಮವನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸುವವನು.  
ದೇಶ ಉಪದೇಶ ನಿಯುಕ್ತ: "ಠನ್" (೪-೪-೬೯) । "ಧರ್ಮಿಣಾಂ  
ದೇಶಿಕಃ ಸಾಕ್ಷಾತ್ ಸ ಭವಿಷ್ಯತಿ ಧರ್ಮಭಾಕ್ । ಧರ್ಮವಿಧಿಃ  
ಸದೇವೇಶೋ ನಮಸ್ಕಾರ್ಯಃ ಸದೋದಿತಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ । 3. ಪಠಿಕ,  
ಯಾತ್ರಿಕ, ದೇಶಸಂಚಾರದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತನಾದವನು. ದೇಶ  
ಪ್ರಸಿತಃ । 4. ಸದಸ್ಯ, ಸಭಿಕ, ಸಭೆಯಲ್ಲಿರುವವನು.  
"ಸದಸ್ಯಾ ದೇಶಿಕಾಸ್ಥೇಯಾಸ್ಸಭಾಸ್ತಾರಾಸ್ಸಭಾಸದಃ" ವೈಜಂ ।

**ದೇಶಿತ ದೇಶಿತ** (ವಿಂ) 1. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
3. ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) + ಗಿಚ್ "ಕ್ತಃ"  
(೩-೨-೧೦೨) ।

**ದೇಶಿನ್ ದೇಶಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಉಪದೇಶಕ, ಭೋಧಕ, ಶಿಕ್ಷಣ  
ಕೊಡುವವನು. ದಿಶತಿ - ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಗಿರಿನಿ:"  
(೩-೧-೧೩೪) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಶಿನೀ - ಶಿನೀ. 2. ತರ್ಜನಿ  
ಬೆರಳು, ಹೆಬ್ಬೆರಳಿನ ಪಕ್ಕದ ಬೆರಳು, ತೋರು ಬೆರಳು.

**ದೇಶೀ ದೇಶೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೀಪಕರಾಗದ ಪತ್ನಿ, ರಾಗಿಣಿ.  
2. ಸಂಸ್ಕೃತ ಭಾಷೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ ಪ್ರಾಕೃತಭಾಷೆಯು  
ಒಂದು ಭೇದ. "ಸಂಸ್ಕೃತಂ ನಾಮ ದೇವೀ ವಾಗನ್ವಾಲ್ಯಾತಾ  
ಮಹರ್ಷಿಭಿಃ । ತದ್ಭವಸ್ತತ್ಸಮೋ ದೇಶೀತ್ಯನೇಕಃ ಪ್ರಾಕೃತಕ್ರಮಃ"  
ಕಾವ್ಯಾಂ ೧-೩೩ ।

**ದೇಶೀಯ ದೇಶೀಯ** (ವಿಂ) 1. ದೇಶ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
2. ದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. 3. ದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ದೇಶ "ಛಃ"  
(೪-೨-೧೩೮) । "ಸುರತೇ ಕರ್ಣಮೂಲೇ ತು ಯಚ್ಚ ದೇಶೀಯಭಾಷಯಾ ।  
ದಂಪತ್ಯೋರ್ಜಲಪಿತಂ ಮಂದಂ ಮನ್ಮನಂ ತದ್ವಿದುರ್ಬಧಾಃ" ।

**ದೇಶ್ಯ ದೇಶ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ತೋರಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಘತ್" (೩-೧-೧೨೪) ।  
3. ದೇಶದಲ್ಲಿರುವ, ದೇಶದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ. ದೇಶ  
"ಯತ್" (೪-೩-೪೪) । "ಅಭಿಯೋಕ್ತಾ ದಿಶೋದೇಶ್ಯಂ ಕಾರಣಂ  
ವಾನ್ಯದುದಿಶೇತ್" ಮನುಂ ೮-೪೨ । 4. ಪೂರ್ವಪಕ್ಷ.

**ದೇಶ್ಯ ದೇಶ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಉಪ  
ದೇಶಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. 3. ಉಪದೇಶಿಸಲು ಶಕ್ತನಾದ,  
4. ಉಪದೇಶಿಸಬೇಕಾದ. ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) ಕರ್ಮಾದಿ  
"ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬) । 5. ತೋರಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ತೋರಿ  
ಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. 7. ತೋರಿಸಲು ಶಕ್ತನಾದ.  
8. ತೋರಿಸಬೇಕಾದ. 9. ಆಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಡುವ. 10. ಆಜ್ಞೆ  
ಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ.

**ದೇಶ್ಯ ದೇಶ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಉಪದೇಶಿಸುವವನು. 2. ಆಜ್ಞೆ  
ಮಾಡುವವನು. 3. ತೋರಿಸುವವನು. ದಿಶ (ಅತಿ  
ಸರ್ಜನೆ) "ತನ್" (೩-೨-೧೩೪) । "ತೇಷಾಂ ಕುಪಥದೇಶ್ಯಾಣಾಂ  
ಪತತಾಂ ತಮಸಿ ಹ್ಯಥಃ । ಯೇ ಶ್ರದ್ಧಯುರ್ವಚಸ್ತೇ ವೈ ಮಜ್ಜಂತ್ಯಶಮಪ್ಲವಾ  
ಇವ" ಭಾಗಂ ೬-೭-೧೪ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ತೀಪ್" (೪-೧-೪) ।  
-ಶ್ರೀ - ಶ್ರೀ.

**ದೇಶ್ಯ ದೇಶ್ಯ** (ವಿಂ) ದಾನಶೀಲ, ದಾನಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವ  
ದವನು. ತು ದಾನ್ (ದಾನ) "ಇಣುಚ್" ।

**ದೇಹ ದೇಹ** (ಪುಂ) ಶರೀರ, ಮೈ. ದಿಹತೇ - ದಿಹ (ಉಪಚಯ)  
"ಘತ್" (೩-೩-೧೯) । ದೇಹವು ದಿನೇ ದಿನೇ ಬೆಳೆಯು  
ವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಆತ್ಮಕರ್ಮಕ್ಷಮಂ ದೇಹಂ ಜಾತೋ ಧರ್ಮ  
ಇವಾಶ್ರಿತಃ" ರಘುಂ ೧-೧೩ । ದೇಹವು ಸ್ಥೂಲ ಸೂಕ್ಷ್ಮ  
ಕಾರಣಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಶರೀರ"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ದೇಹಕರ್ತೃ ದೇಹಕರ್ತೃ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಮೇಶ್ವರ.  
ದೇಹಂ ಕರೋತಿ - ತು ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩) ।  
2. ಸೂರ್ಯ. "ದೇಹಕರ್ತಾ ಪ್ರಶಾಂತಾತ್ಮಾ ವಿಶ್ವಾತ್ಮಾ  
ವಿಶ್ವತೋಮುಖಃ" ಭಾಂ ವನಂ ೩-೮೦ । 3. ತಂದೆ. 4. ಪೃಥಿವಿ  
ಮೊದಲಾದ ಮಂಜಭೂತಗಳು. ಕೃತ್ "ಕಿವಿಪ್" (೩-೨-೭೩) ।  
-ಕೃತ್ - ಕೃತ್.

**ದೇಹಕೋಶ ದೇಹಕೋಶ** (ಪುಂ) 1. ದೇಹಕ್ಕೆ ಕೋಶ (ಮುಚ್ಚಳ)  
ದಂತಿರುವ ಚರ್ಮ. 2. ಪಕ್ಷಿಗಳ ರೆಕ್ಕೆ (ಗರಿ). ದೇಹಸ್ಯ  
ಕೋಶ ಇವ ।

**ದೇಹಕೃ ದೇಹಕೃ** (ಪುಂ) 1. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. ದೇಹಸ್ಯ  
ಕ್ಷಯೋ ಯಸ್ಮಾತ್ । 2. ದೇಹದ ನಾಶ.



ದೇಹಚ್ಯುತ ದೇಹಚ್ಯುತ (ವಿಂ) ದೇಹದಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಂದು ಬಿದ್ದಿರುವ. ದೇಹಾತ್ ಚ್ಯುತಃ |

ದೇಹಜ ದೇಹಜ (ಪುಂ) 1. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. 2. ಪುತ್ರ. ಮಗ. (ವಿಂ) 3. ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ದೇಹಾತ್ ದೇಹೇ ವಾ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಹಃ" (೩-೨-೯೭, ೯೮) | "ಅಹಿತೋ ದೇಹಜೋ ವ್ಯಾಧಿಃ ಹಿತಮಾರಣ್ಯಮೌಷಧಮ್" ತದ್ಭಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜಾ-ಜಾ. ಪುತ್ರಿ, ಮಗಳು.

ದೇಹತ್ಯಾಗ ದೇಹತ್ಯಾಗ (ಪುಂ) ಶರೀರವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸುವುದು, ಶರೀರವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಹೋಗುವುದು, ಮರಣ. ದೇಹಸ್ಯ ತ್ಯಾಗಃ | "ದೇಹತ್ಯಾಗಕೃತೋದೋಗೈರದೃಶ್ಯತ ಪುರಃ ಪುಮಾನ್" ಮಾಘಂ ೧೯-೮೭ |

ದೇಹದ ದೇಹದ (ಪುಂ) 1. ಪಾದರಸ. ದೇಹಂ ಶರೀರಂ ದಾಯತಿ ಶೋಧಯತಿ—ದೈಪ್ (ಶೋಧನೆ) ದೇಹಂ ದೇಹಪುಷ್ಪಿ ದದಾತಿ—ಡು ದಾನ್ (ದಾನೆ) ವಾ "ಕಃ" (೩-೨-೩) | (ವಿಂ) 2. ದೇಹವನ್ನು ಕೊಡುವ.

ದೇಹಧರ್ಮ ದೇಹಧರ್ಮ (ಪುಂ) ಶರೀರದ ಚಲನವಲನಾದಿಗಳು, ಶರೀರದ ವ್ಯಾಪಾರ.

ದೇಹಧಾರಕ ದೇಹಧಾರಕ (ನಂ) 1. ಶರೀರವನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವ ಎಲಿಮೆಂಟ್. (ವಿಂ) 2. ಶರೀರವನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವ (ಜೀವ). ದೇಹಂ ಧಾರಯತಿ—ಧೃ (ಧಾರಣೆ) + ಣಿನ್ "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | "ಣಿನ್" (೩-೧-೧೩೪) | -ಧಾರಿನ್ -ಧಾರಿನ್. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫) | -ಧಾರಿಣಿ -ಧಾರಿಣೀ.

ದೇಹಧಿ ದೇಹಧಿ (ಪುಂ) ಹಕ್ಕುಗಳ ರೆಕ್ಕೆ. ದೇಹೋ ಧೀಯತೇ—ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣೆ) "ಕಿಃ" (೩-೩-೯೩) |

ದೇಹಧುಕ್ ದೇಹಧುಕ್ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾಣವಾಯು. ಧೃಜ (ಗತೌ) "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೧೭೮) | "ವಾಯುರ್ಯೋ ವಕ್ತ್ರಸಂಚಾರಿ ಸ ಪ್ರಾಣೋ ನಾಮ ದೇಹಧುಕ್" ಸುಶ್ರುತಂ ನಿಧಾನಂ ೧-೧೩ | 2. ದೇಹವನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವ ಜೀವ.

ದೇಹಭುಜ್ ದೇಹಭುಜ್ (ಪುಂ) 1. ಜೀವ. ದೇಹೇ ಭುಜ್ತೇ—ಭುಜ (ಪಾಲನಾದೌ) "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೧೭೮) | 2. ಸೂರ್ಯ.

ದೇಹಭೃತ್ ದೇಹಭೃತ್ (ಪುಂ) 1. ಜೀವ, ಕರ್ಮಾನುಗುಣವಾದ ಶರೀರವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಜೀವಾತ್ಮ. ದೇಹಂ ವಿಭವತಿ—ಡು ಭುಜ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೧೭೮) | "ಕರ್ಮತಮಾ ತ್ವಪರೋ ಯೋಸೌ ಬಂಧಮೋಕ್ಷಃ ಸಂಯುಜ್ಯತೇ" | "ಧಿಗಿಮಾಂ ದೇಹಭೃತಾಮಸಾರತಾಮ್" ರಘುಂ ೮-೫೧ | 2. ಅವಿದ್ಯೆಯಿಂದ ವಿವೇಕಶೂನ್ಯನಾಗಿ ದುರಭಿಮಾನದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು.

ದೇಹಯಾತ್ರಾ ದೇಹಯಾತ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೇಹಸಂರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಉಪಚಾರ, ಭೋಜನ ಮೊದಲಾದುದು. ದೇಹ-ರಕ್ಷಣಾರ್ಥ ಯಾತ್ರಾ | 2. ಮರಣ, ನಿಧನ. "ದೇಹಯಾತ್ರಾ ಯಮಪುರಿಗಮನೇ ಭೋಜನೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ |

ದೇಹಲಿ ದೇಹಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಾಗಿಲ ಹೊಸ್ತಿಲು, ಬಾಗಿಲ ಪೊಕ್ಕಟ್ಟಿನ ಕೆಳಗಿನ ಅಡ್ಡಪಟ್ಟಿ. ದೇಹಂ ಲೇಪನಂ ಲಾತಿ—ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪೧) | "ವಿನ್ಯಸ್ಯಂತಿ ಭುವಿ ಗಣನಯಾ ದೇಹಲಿರ್ದತ್ತಪುಷ್ಪಃ" ಮೇಘಂ ೨-೨೪ | "ಶುಕ್ಲಾಂಜನೀಲೋಪಲನಿಮಿತಾನಾಂ ಲಿಪ್ತೇಷು ಭಾಸಾ ಗೃಹದೇಹಲಿನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೩-೪೮ | 2. ಹಳೆಯ ದೇಹಲಿ ನಗರ, ಈಗಿನ ಡೆಲ್ಲಿ ನಗರ. [ದೇಹಲಿಯು ಯುಧಿಷ್ಠಿರನ ರಾಜಧಾನಿಯಾಗಿದ್ದಿತು. ಹಳೆಯ ದೇಹಲಿಗೆ (1) ಇಂದ್ರಪ್ರಸ್ಥ, (2) ಪಾಂಡವಪ್ರಸ್ಥ, (3) ಬೃಹತ್ಪ್ರಸ್ಥ ಮತ್ತು (4) ದೇಹಲಿ ಎಂಬ ನಾಲ್ಕು ಹೆಸರುಗಳಿದ್ದವು. ಪುರಾಣಕಾಲದ ಪೆಂಬ ಕೋಟೆಯು ಈಗಲೂ ಪಾಂಡವರ ಕೋಟೆಯೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ. ಇದು, ಪಾಂಡವರಿಗಾಗಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ದುರ್ಯೋಧನನನ್ನು ಕೇಳಿದ ಪಾಂಡವರ ಭಾಗವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ತಿಲಪ್ರಸ್ಥವೆಂಬ ಪರಗಣದ ಒಂದು ಭಾಗವನ್ನೊಳಗೊಂಡಿದೆ. ಈ ಹಳೆಯ ದೇಹಲಿಯು ಹಸ್ತಿನಾಪುರಕ್ಕೆ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಯಮುನಾನದಿಯ ತೀರದಲ್ಲಿರುವುದು.] Geographical Dictionary by Nandu Lal DEY.

ದೇಹವತ್ ದೇಹವತ್ (ವಿಂ) ಶರೀರವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. ದೇಹೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪) |

ದೇಹವಾಯು ದೇಹವಾಯು (ಪುಂ) ಶರೀರದೊಳಗಿನ ಪ್ರಾಣವಾಯು. ದೇಹವರ್ತೀ ವಾಯುಃ |

ದೇಹಸಾರ ದೇಹಸಾರ (ಪುಂ) ಮಜ್ಜೆ, ದೇಹದೊಳಗಿನ ರಸ. ದೇಹಸ್ಯ ಸಾರಃ |

ದೇಹಾತಿತ ದೇಹಾತಿತ (ಪುಂ) ಶರೀರಾಭಿಮಾನವನ್ನು ತೊರೆದ ಜ್ಞಾನಿ. ದೇಹಂ ದೇಹಾಧ್ಯಾಸಮತಿತಃ |

ದೇಹಾತ್ಮವಾದ ದೇಹಾತ್ಮವಾದ (ಪುಂ) ದೇಹವೇ ಆತ್ಮನೆಂಬ ವಾದ, ಚಾರ್ವಾಕತತ್ತ್ವ (ಸಿದ್ಧಾಂತ).

ದೇಹಾತ್ಮವಾದಿನ್ ದೇಹಾತ್ಮವಾದಿನ್ (ಪುಂ) ದೇಹವೇ ಆತ್ಮನೆಂದು ಹೇಳುವ ಚಾರ್ವಾಕ. ದೇಹಮಾತ್ಮಾನಂ ವದತಿ—ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಣಿನ್" (೩-೨-೭೮) |

ದೇಹಾಧ್ಯಾಸ ದೇಹಾಧ್ಯಾಸ (ಪುಂ) ದೇಹವೇ ಆತ್ಮನೆಂಬ ಜ್ಞಾನ, ದೇಹದಲ್ಲಿ ಆತ್ಮತ್ವಭ್ರಾಂತಿ. ದೇಹಸ್ಯಾಧ್ಯಾಸಃ ಆತ್ಮತಯಾ ಭ್ರಾಂತಿಃ |



**ದೇಹಾಂತರ ದೇಹಾಂತರ** (ನಂ) ಬೇರೆ ಶರೀರ. ಬನ್ಯೋ ದೇಹಃ | ಜೀವನು ಮೋಕ್ಷಕ್ಕಿದ್ದಿ ಸುವವರೆಗೂ ಕರ್ಮಾನುಸಾರ ತೀರ್ಯಜ್ಞ ಮನುಷ್ಯಾದಿ ಜನ್ಮಪಡೆದು ಬೇರೆ ಬೇರೆ ದೇಹ ಗಳನ್ನು ಪಡೆಯುವನು. ಇವಲ್ಲದೆ ಸ್ಥೂಲ ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಕಾರಣಗಳೆಂಬ ಮೂರು ದೇಹಗಳನ್ನು ಪಡೆಯುವನು. ["ಶರೀರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ದೇಹಿಕಾ ದೇಹಿಕಾ**(ಸ್ತ್ರೀಂ)ಗೆದ್ದಲು ಹುಳು. "ವಟಿರೂಪಾದಿಕೋ ದೇಹಿಕಾ ಸ್ಯಾತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ದೇಹಿನ್ ದೇಹಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಜೀವ, ಪ್ರಾಣಿ, ಮನುಷ್ಯ. ದೇಹೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) | "ಸಾ ಕಿಮಾವೇಶತೇ ತುಭ್ಯಮಂತರಾತ್ಮಾಸಿ ದೇಹಿನಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೬-೨೧ | "ಸ್ವಸ್ಥಾ-ದೇವಾಪಮಾನೇಽಪಿ ದೇಹಿನಸ್ತದ್ವರಂ ರಜ:" ಮಾಧಂ ೨-೪೬ | (ವಿಂ) 2. ಶರೀರವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. "ತಥಾ ಶರೀರಾಣಿ ವಿಹಾಯ ಜಿರ್ಣಾನ್ಯನ್ಯಾನಿ ಸಂಯಾತಿ ನವಾನಿ ದೇಹಿ" ಗೀತಾ ೨-೨೨ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | ದೇಹಿನಿ ದೇಹಿನೀ. "ದೇಹಿನಿಮಿವ ಜಯಶ್ರಿಯಂ ನಿಜಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೭-೭ |

**ದೇತೇಯ ದೈತೇಯ** (ಪುಂ) ದಿತಿಯಮಕ್ಕಳಾದ ದೈತರು, ಅಸುರರು. ದಿತೇರಪತ್ಯಾನಿ ಪುಮಾಸಃ - ದಿತಿ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೦) | "ದೇತೇಯದನ್ಯಾವಲಿದನ್ತಘಾತೇ: ಕ್ಷುಣ್ಣಾ-ನ್ತರಾ: ಸ್ಫಾಟಿಕಹರ್ಮ್ಯಪಙ್ಕ್ತೀ:" ಕುಮಾಂ ೧೩-೩೮ |

**ದೇತೇಯಗುರು ದೈತೇಯಗುರು** (ಪುಂ) ಅಸುರರ ಅಚಾರ್ಯ, ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯ.

**ದೇತೇಯ ದೈತೇಯ** (ಪುಂ) ದಿತಿಯ ಮಕ್ಕಳು, ಅಸುರರು. ದಿತೇರ-ಪತ್ಯಾನಿ ಪುಮಾಸಃ - ದಿತಿ "ಞ:" (೪-೧-೮೫) | "ಇತಃ ಸ ದೇತೇಯಃ ಪ್ರಾಪ್ತಶ್ರೀನಂತ ಏವಾಹಂತಿ ಕ್ಷಯಮ್" ಕುಮಾಂ ೨-೫೫ |

**ದೇತೇಯಕುಲ ದೈತೇಯಕುಲ** (ನಂ) ಅಸುರರ ವಂಶ. ದೇತೇಯಾ ನಾಂ ಕುಲಮ್ | "ಋಷಿವಂಶಜಃ ಸ ಯದಿ ದೇತೇಯಕುಲೇ ಯದಿ ವಾನ್ವಯೇ ಮಹತಿ ಭೂಮಿಭೂತಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೬-೩೬ |

**ದೇತೇಯಗುರು ದೈತೇಯಗುರು** (ಪುಂ) ಅಸುರರ ಅಚಾರ್ಯ, ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯ. ದೇತೇಯಾ ನಾಂ ಗುರುಃ | "ಆಜ್ಞಾರ್ಥಮಾನಾಸ್ಪದ-ಭೂತಿವಸ್ತ್ರಶಸ್ತ್ರಕ್ಷಯಾನ್ ದೇತೇಯಗುರುಸ್ತೃತೀಯೇ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೦೪-೩೪ |

**ದೇತೇಯದೇವ ದೈತೇಯದೇವ** (ಪುಂ) 1. ವರುಣ. 2. ವಾಯು. "ಮೇಘನಾದಸ್ತು ವರುಣೋ ವಃ ಪರತಜಯಃ | ದೇತೇಯದೇವಶ್ಚ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ದೇತೇಯದ್ವಿಷ್ ದೈತೇಯದ್ವಿಷ್** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. "ದೇತೇಯದ್ವಿಷಾ ದೇವಿ ಮಹತ್ವದಾಶಾ:" ಯಾದಂ ೧೮-೧೦೧ |

**ದೇತೇಯದ್ವೀಪ ದೈತೇಯದ್ವೀಪ** (ಪುಂ) ಗರುಡಂತನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

**ದೇತೇಯಪತಿ ದೈತೇಯಪತಿ** (ಪುಂ) ದೈತರ ರಾಜ, ಅಸುರರ ದೊರೆ, ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪು. ದೇತೇಯಾ ನಾಂ ಪತಿಃ | "ಪ್ರಾಣಚ್ಛಿದಾ ದೇತೇಯಪತೇ-ನೇಶಾನಾಮುಪೇಯುಷಾ ಭೂಷಣತಾಂ ಕ್ಷತೇನ" ಮಾಧಂ ೩-೧೪ |

**ದೇತೇಯಪುರೋಧಸ್ ದೈತೇಯಪುರೋಧಸ್**, -ಪೂಜ್ಯ -ಪೂಜ್ಯ (ಪುಂ) ದೈತರ ಪುರೋಹಿತ, ಅಸುರರ ಅಚಾರ್ಯ. ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯ. ದೇತೇಯಾ ನಾಂ ಪುರೋಧಾಃ ಪೂಜ್ಯಶ್ಚ | "ಜಿಗೀಷಯಾ ತತೋ ದೇವಾ ವಕ್ರೀರ್ಜಿಜ್ಞೀರಸಂ ಮುನಿಮ್ | ಪೌರೋಹಿತೇನ ಯಾಜ್ಯಾರ್ಥೇ ಕಾವ್ಯಂ ತೃಣಸಂ ಪರೇ" ಭಾಂ ಆದಿಂ | "ಕನಕನಿಕಷಗೌರೇ ವ್ಯಾಧಯೋ ದೇವಪೂಜ್ಯೇ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೧-೪೪ |

**ದೇತೇಯಮಾತೃ ದೈತೇಯಮಾತೃ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೈತರ ತಾಯಿ, ಕಶ್ಯಪನ ಪತ್ನಿ, ದಿತಿದೇವಿ. ದೇತೇಯಾ ನಾಂ ಮಾತಾ |

**ದೇತೇಯಮೇದಜ ದೈತೇಯಮೇದಜ** (ಪುಂ) 1. ಗುಗ್ಗುಳ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಪೃಥಿವಿ, ಭೂಮಿ.

**ದೇತೇಯಯುಗ ದೈತೇಯಯುಗ** (ನಂ) ದೇವತೆಗಳ ಹನ್ನೆರಡು ಸಾವಿರ ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ, ಮನುಷ್ಯರ ನಾಲ್ಕು ಯುಗಗಳ ಕಾಲ.

**ದೇತೇಯ ದೈತೇಯ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುರೆಯೆಂಬ ಒಂದು ಗಂಧ ದ್ರವ್ಯ. 2. ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. 3. ಕರಿಯ ಕಬೋರ, ಚಂಡೇಷಧಿ. ದಿತೇರಿಯಮ್ "ಞ:" (೪-೧-೮೫) | "ಸುರಾಯಾನ್ತು ದೇತೇಯಾ ಚಂಡೇಷಧಾವಪಿ" ಮೇದಿಂ | "ದೇತೇಯೋಽಸುರೇ ದೇತೇಯಾ ಮುರೋಪಧೌ" ಹೇಮಂ |

**ದೇತೇಯಾರಿ ದೈತೇಯಾರಿ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ದೇತೇಯಾ ನಾಮರಿಃ | 2. ದೇವತೆಗಳು. "ದೇತೇಯಾರಿಃ ಪುಂಸಿ ಸಾಮಾನ್ಯದೇವೇ ಚ ಗುಹ್ಯಧ್ವಜೇ" ಮೇದಿಂ | "ದೇತೇಯಾರಿಃ ಕಮಲಾಕಪೋಲ-ಮಕರೀಲೇಖಾಙ್ಕಿತೋರಃ ಸ್ಥಲಃ ಶೇತೇಷ್ವಾವಿತರೇಷು ಜನ್ತುಷು ಪುನಃ ಕಾ ನಾಮ ಶಾಂತೇಃ ಕಥಾ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೨-೨೮ |

**ದೇತೇಯೇಜ್ಯ ದೈತೇಯೇಜ್ಯ** (ಪುಂ) ದೈತಗುರುವಾದ ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯ. ದೇತೇಯಾನಾಮಿಜ್ಯಃ |

**ದೇನ ದೈನ**(ವಿಂ) 1. ದಿನಸಂಬಂಧವಾದ. ದಿನಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | 2. ಹಗಲಲ್ಲಿರುವ, ಹಗಲಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ದಿನೇ ಭವಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೫೩) | 3. ದಿನಸಂಬಂಧ ವಾದ. ದಿನಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" | 4. ದಿನತತ್ತ್ವ. 5. ಬಡತನ. 6. ಕಷ್ಟದ ಅವಸ್ಥೆ. ದಿನಸ್ಯ ಭಾವಃ ವಾ "ಅನ್" (೫-೧-೧೨೨) | ೫. ಪಕ್ಷ "ಞ್" (೫-೧-೧೨೪) | ದೇನಮ್ ದೈನಮ್.

**ದೇನಂದಿನ ದೈನಂದಿನ** (ವಿಂ) ಪ್ರತಿದಿನದ. ಪ್ರತಿದಿನದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ. ದಿನೇ ದಿನೇ ಭವಮ್ - ವೀಕ್ಷಯಾಂ ದ್ವಿಭಾವಃ | "ಅನ್" (೪-೩-೫೩) | "ಏಷ ದೇನಂದಿನಃ ಸರ್ಗೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಃ ತ್ರಲೋಕ್ಯವರ್ತನಃ | ತಿರ್ಯಗ್ಜನ್ಮಪಿತೃದೇವಾನಾಂ ಸಂಭವೋ ಯತ್ರ ಕರ್ಮಭಿಃ" ಭಾಗಂ ೩-೧೧-೨೫ |



**ದೇನಂದಿನಪ್ರಲಯ ದೈನಂದಿನಪ್ರಲಯ (ಪುಂ)** ಬ್ರಹ್ಮನ ಪ್ರತಿ ದಿನದ (ಹಗಲಿನ) ಕೊನೆಯಲ್ಲಾಗುವ ಅವಾಂತರ ಪ್ರಳಯ. ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಇಂದ್ರರ ಕಾಲವು ಬ್ರಹ್ಮನ ಒಂದು ಹಗಲು. ಅಷ್ಟೇ ಕಾಲವು ರಾತ್ರಿ. ಅದಕ್ಕೆ “ಕಾಲರಾತ್ರಿ” ಎಂದು ಹೆಸರು. ಈ ರಾತ್ರಿ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕದ ಕೆಳಗಿನ ಲೋಕಗಳೆಲ್ಲವೂ ಸಂಕರ್ಷಣಮುಖೋತ್ಪನ್ನವಾದ ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ದಗ್ಧವಾಗುವವು. ಆಗ ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರ ಮತ್ತು ಬ್ರಹ್ಮನ ಪುತ್ರರೆಲ್ಲರೂ ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕಕ್ಕೆ ತೆರಳುವರು. ಬ್ರಹ್ಮನ ಈ ರಾತ್ರಿ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕ್ಷುದ್ರಪ್ರಳಯ ವುಂಟಾಗುವುದು. ಬ್ರಹ್ಮನ ರಾತ್ರಿಯು ಕಳೆದನಂತರ ಪುನಃ ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಕಾರ್ಯವು ಆರಂಭವಾಗುವುದು. ಈ ರೀತಿ ಮೂವತ್ತು ದಿನಗಳು ಕಳೆದರೆ ಬ್ರಹ್ಮನಿಗೆ ಒಂದು ತಿಂಗಳು. ಇಂತಹ ಹನ್ನೆರಡು ತಿಂಗಳು ಕಳೆದರೆ ಒಂದು ವರ್ಷವೂ ಆಗುವುದು. ಇಂತಹ ನೂರು ವರ್ಷಗಳು ಬ್ರಹ್ಮನ ಪರಮಾಯುಸ್ಸಿನ ಕಾಲ. “ಚತುರ್ದಶೇಂದ್ರಾವಚ್ಛಿತ್ತಂ ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ದಿನಮುಚ್ಯತೇ | ತಾವತೀ ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ರಾತ್ರಿಃ | ಸಾ ಚ ಬ್ರಾಹ್ಮಿ ನಿಶಾ ನೃಪ | ಕಾಲರಾತ್ರಿಶ್ಚ ಸಾ ಜೇಯಾ ವೇದೇಷು ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾ | ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕಾದಧಃ | ಸರ್ವೇ ಲೋಕಾ ದಧಾಶ್ಚ ತತ್ರ ವೇ | ತತ್ಪ್ರತೀತೇನೈವ ಸಹಸಾ ಸಂಕರ್ಷಣಮುಖಾಗ್ನಿನಾ | ಚಂದ್ರಾರ್ಕಬ್ರಹ್ಮಪುತ್ರಾಶ್ಚ ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕಂ ಗತಾ ದ್ರುತಮ್ | ಬ್ರಹ್ಮರಾತ್ರೇ ವ್ಯತಿತೇ ತು ಪುನಶ್ಚ ಸಸೃಜೇ ವಿಧಿಃ | ತಸ್ಯ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಂ ನಿಶಾಪಾಂ ಚ ಕ್ಷುಧ್ರಪ್ರಲಯಸಂಭವಃ | एवं ತ್ರಿಶದ್ವಿ-ವಾರಾಶ್ಚ | ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಮಾಸ ಏವ ಚ | ವರ್ಷಂ ದ್ವಾದಶಮಾಸಂಶ್ಚ ಬ್ರಹ್ಮ-ಸಂಬಂಧಿ ಚೈವ ಹಿ | ತತ್ರ ಸರ್ವೇ ಪ್ರಣೃಷ್ಠಾಶ್ಚ ಚಂದ್ರಾರ್ಕಾದಿ-ದಿಗಿಶ್ವರಾಃ | ಆದಿತಯಾ ವಸವೋ ರುದ್ರಾಃ | ಮನ್ವಿದ್ರಾ ಮಾನವಾದಯಃ | ಋಷಯೋ ಮುನಯಶ್ಚೈವ ಗಂಧರ್ವಾ ರಾಕ್ಷಸಾದಯಃ | ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕಾದಧಃ | ಸರ್ವೇ ಲೋಕಾ ನಾಗಾಲಯಾಸ್ತಥಾ | ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕಂ ಯಯುಃ | ಸರ್ವೇ ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕಾದಧಃಸ್ತಥಾ | ಗತೇ ದೇನಂದಿನೇ ಬ್ರಹ್ಮಾ ಲೋಕಾಂಶ್ಚ ಸಸೃಜೇ ಪುನಃ | एवं ಶತಾಯುಃಪರ್ಯಂತಃ | ಪರಮಾಯುಶ್ಚ ಬ್ರಹ್ಮಣಃ |” ಬ್ರಹ್ಮವೆಂ |

**ದೇನಿಕ ದೈನಿಕ (ವಿಂ)** 1. ದಿನದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ, ಒಂದು ದಿನದ. ದಿನೇ ಭವಃ “ಠ್” (೪-೩-೧೧) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕೀ -ಕೀ. 2. ಒಂದು ದಿನದ ಕಾಲಿ.

**ದೇನೈ ದೈನೈ (ನಂ)** 1. ದಿನತೆ, ಬಡತನ ಅಪರಾಧ ಮುಂತಾದವುಗಳಿಂದ ಮುಖದಲ್ಲಿ ಕಂಡುಬರುವ ತೇಜೋಹೀನತೆ, ಪೆಚ್ಚು ಮೋರೆಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. 2. ಕಷ್ಟದ ಪರಿಸ್ಥಿತಿ, ದಯೆ ತೋರಿಸಬಹುದಾದ ಅವಸ್ಥೆ. ದಿನಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಽಞ್” (೪-೧-೧೨೪) | “ಮನ್ತ್ರೇಣ ಹತವೀರಸ್ಯ ಫಣಿನೋ ದೇನೈ-ಮಾಶ್ರಿತಃ” ಕುಮಾಂ ೨-೨೧ | “ದೌಗತ್ಯಾದೇರನೌಜಸ್ಯ ದೇನೈ ಮಲಿನತಾದಿಕೃತ್” ಸಾಂ ೬೦ | “ವೃದ್ಧೋನ್ವಃ ಪತಿರೇವ ಮಂಚಕಗತಃ | ಸ್ಥೂಣಾವಶೇಷಂ ಗೃಹಂ ಕಾಲೋಽಮೃತ್ಯುಜಲಾಗಮಃ |

ಕುಶಲಿನಿ ವತ್ಸಸ್ಯ ವಾರ್ತಾಪಿ ನೋ | ಯತ್ನಾತ್ಸಂವಿತತೇಲಬಿಂದು-  
ಛಟಿಕಾ ಭಗ್ನೇತಿ ಪರ್ಯಾಕುಲಾ ದೃಷ್ಟಾ ಗರ್ಭಮರಾಲಸಾ ನಿಜವಧ್ವಂ  
ಶ್ಚಶ್ರುಶ್ಚಿರಂ ರೋದತಿ” ಸಾಂ ೬೦ |

**ದೇರ್ಯ ದೈರ್ಘ್ಯ (ನಂ)** ಉದ್ದ, ನೀಳ. ದೀರ್ಘಸ್ಯ ಭಾವಃ  
“ಽಞ್” (೪-೧-೧೨೪) | “ಅಪರಸ್ಯಾಂ ಚಲಕೇತುಃ | ಶಿಖಯಾ  
ಯಾಮ್ಯಾಪ್ರಯಾಙ್ಗುಲೋಚ್ಛ್ರಿತಯಾ | ಗಂಧೇವಯಾ ಯೋದಕ್ ತಥಾ  
ತಥಾ ದೇರ್ಯಮಾಯಾತಿ” ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೧-೩೩ |

**ದೇವ ದೈವ (ಪುಂ)** 1. ಎಂಟು ವಿಧ ವಿವಾಹಗಳಲ್ಲೊಂದು.  
“ಬ್ರಾಹ್ಮೋ ದೇವಸ್ತಥೈವಾರ್ಷಃ | ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯಸ್ತಥಾಸುರಃ | ಗಾಂಧರ್ವೋ  
ರಾಕ್ಷಸಶ್ಚೈವ ಪೇಶಾಚಶ್ಚಾಣ್ಮೋಽಧಮಃ” ಮನುಂ ೩-೨೧ | (ನಂ)  
2. ಭಾಗ್ಯ, ಅದೃಷ್ಟ, ಜನ್ಮಾಂತರದ ಶುಭಾಶುಭ ಕರ್ಮ.  
ದೇವಾದಾಗತಮ್ “ಅಞ್” (೪-೩-೭೪) | “ದೇವಾಯತಂ ಕುಲೇ  
ಜನ್ಮ ಮದಾಯತಂ ತು ಪೌರುಷಮ್” ವೇಣೀಂ ೩-೩೭ | “ದೇವೇ  
ಪುರುಷಕಾರೇ ಚ ಕಿಂಜಯಾಸ್ತದ್ಬ್ರವಿಹಿ ಮೇ | ಅತ್ರ ಮೇ ಸಂಶಯೋ  
ದೇವ ಛೇತುಮಹಸ್ಯಶೇಷತಃ” ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ | 3. ದೇವತೀರ್ಥ.  
ದೇವಸ್ಯೇದಮ್ “ಅಞ್” (೪-೩-೧೨೦) | ಬೆರಳುಗಳ ತುದಿ  
ಯಿಂದ ಬಿಡುವ ತೀರ್ಥವು ದೇವತೀರ್ಥವು. “ಅಕ್ಷುಲ್ಯಗ್ರೇ  
ದೇವಂ ತೀರ್ಥಮ್” ಅಮಂ | (ವಿಂ) 4. ದೇವತೆಗಳ ಸಂಬಂಧ  
ವಾದ. ದೇವಸ್ಯೇದಮ್ “ಅಞ್” (೪-೩-೧೨೦) | 5. ದೇವತೆ  
ಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದ. ದೇವಮ್ಯಃ ಆಗತಃ “ಅಞ್” (೪-೩-೭೪) |  
6. ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ಆಕಾಶದಲ್ಲಿರುವ. ದಿವಿ ಭವಮ್  
“ಅಞ್” (೪-೩-೫೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೧೫) |  
-ಕೀ -ಕೀ. ದೇವನ ಕ್ರೀಡಾಪ್ರವೃತ್ತೇನ (ಪರಮಾತ್ಮನಾ) ನಿರ್ಮಿತಾ  
ದೇವಿ | “ದೇವಿ ಹೃಷಾ ಗುಣಮಯಿ ಮಮ ಮಾಯಾ ದುರತ್ಯಯಾ”  
ಗೀತಾ ೭-೧೪ |

**ದೇವಕೃತ ದೈವಕೃತ (ವಿಂ)** ದೇವತೆಗಳಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
ದೇವನ ಕೃತಮ್ |

**ದೇವಕೋವಿದ ದೈವಕೋವಿದ (ಪುಂ)** ದೈವಜ್ಞ, ಶುಭಾಶುಭ  
ಕರ್ಮಫಲಗಳನ್ನು ತಿಳಿದವನು. ದೇವೇ ಕೋವಿದಃ |

**ದೇವಚಿಂತಕ ದೈವಚಿಂತಕ (ಪುಂ)** ದೈವಜ್ಞ, ಜೋಯಿಸ.  
ದೇವಂ ಶುಭಾಶುಭಕರ್ಮಫಲಂ ಚಿಂತಯತಿ—ಚಿಂತಿ (ಸ್ಮೃತ್ಯಾಮ್)  
“ಽಞ್” (೩-೧-೧೩೩) |

**ದೇವಚಿಂತನ ದೈವಚಿಂತನ (ನಂ)** ಅದೃಷ್ಟವನ್ನು ನಂಬಿರುವಿಕೆ,  
ಎಲ್ಲವೂ ಅದೃಷ್ಟದ ಮೇಲೆ ನಡೆಯುವುದೆಂಬ ನಂಬಿಕೆ.

**ದೇವಜ್ಞ ದೈವಜ್ಞ (ಪುಂ)** 1. ಅದೃಷ್ಟವನ್ನು ಬಲ್ಲವನು, ಶುಭಾ  
ಶುಭ ಕರ್ಮಫಲವನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ಜೋಯಿಸ. ದೇವಂ  
ಜಾನಾತಿ—ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೩) | (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಜ್ಞಾ -ಜ್ಞಾ. ಕಣ ಹೇಳುವ ಹೆಂಗಸು, ಶಕುನ ಹೇಳುವ



ಹೆಂಗಸು. "ದೇವಜೋ ಗಣಕೇ ಪುಮಾನ್ | ದೇವಜೇಕ್ಷಣಿಕಾಃ ಸ್ತ್ರೀ" ಮೇದಿಂ |

**ದೇವತ ದೈವತ (ನಂ)** 1. ದೇವತೆ, ದೇವರು. ದೇವತೆ-ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮) | "ದೇವಾಧಿನಂ ಜಗತ್ಸರ್ವಂ ಮನ್ವಾಧಿನಂ ತು ದೇವತಮ್ | ತನ್ಮನ್ವಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಧಿನಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ಮಮ ದೇವತಮ್" | 2. ದೇವತೆಗಳ ಸಮೂಹ. ದೇವತಾನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಅನ್" (೪-೨-೩೭) | 3. ಯಾಸ್ಯರ ನಿರುಕ್ತದ ಮೂರನೆಯ ಕಾಂಡ. (ವಿಂ) 4. ದೇವತಾಸಂಬಂಧವಾದ. ದೇವತಾಯಾ ಇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | "ಅನನ್ಯಸಾಧಾರಣಸಿದ್ಧ-ಮುಚ್ಚೇಸ್ತದೇವತಂ ಧಾಮ ನಿಕಾಮರಮ್ಯಮ್" ಕುಮಾಂ ೧೨-೩೮ |

**ದೇವತನ್ತ್ರ ದೈವತಂತ್ರ (ವಿಂ)** ದೈವಾಧೀನವಾದ, ಅದೃಷ್ಟಕ್ಕೆ ಅಧೀನವಾದ. ದೇವಸ್ಯ ಭಾಗ್ಯಸ್ಯ ಅಧೀನಮ್ | ದೇವಂ ಭಾಗ್ಯಂ ಪ್ರಧಾನಂ ಯಸ್ಯ ವಾ |

**ದೇವಸ್ಯ ದೈವತ್ಯ (ನಂ)** ದೇವತೆ. ದೇವತಾ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಏನ್" (೪-೧-೧೨೪) |

**ದೇವದತ್ತ ದೈವದತ್ತ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ)** 1. ದೇವದತ್ತನ ಶಿಷ್ಯರು. ದೇವದತ್ತಸ್ಯ छात्रा:—ವೃದ್ಧತ್ವಾಭಾವಪಕ್ಷೇ "ಅನ್" (೪-೨-೯೨) | ವೃದ್ಧತ್ವಪಕ್ಷೇ "ಃ" (೪-೨-೧೧೪) | ದೇವದತ್ತೀಯ: ದೇವದತ್ತೀಯಃ. (ವಿಂ) 2. ದೇವದತ್ತವಾದ, ದೇವತೆಗಳಿಂದ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಅದೃಷ್ಟದಿಂದ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ವಾಭಾವಿಕವಾದ.

**ದೇವದತ್ತಿ ದೈವದತ್ತಿ (ಪುಂ)** ದೇವದತ್ತನ ಮಗ. ದೇವದತ್ತಸ್ಯಾ-ಪತ್ಯಮ್ "ಇನ್" (೪-೧-೯೫) |

**ದೇವದತ್ತಿಕ ದೈವದತ್ತಿಕ (ವಿಂ)** ದೇವದತ್ತಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿ ರುವ. ದೇವದತ್ತೇ ಭವ: "ಠನ್" "ವಿಠ:" ವ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಠವಿ "ಠೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | -ದತ್ತಿಕೋ -ದತ್ತಿಕೇ. ವಿಠಪ್ರತ್ಯಯೇ "ಠಾಪ್" (೪-೧-೪) | -ದತ್ತಿಕಾ -ದತ್ತಿಕಾ.

**ದೇವದಾರವ ದೈವದಾರವ (ವಿಂ)** ದೇವದಾರು ಮರದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ದೇವದಾರೋವಿಕಾರ:—ದೇವದಾರ "ಅನ್" (೪-೩-೧೩೯) |

**ದೇವದೀಪ ದೈವದೀಪ (ಪುಂ)** ನೇತ್ರ, ಕಣ್ಣು.

**ದೇವಪ್ರಶ್ನ ದೈವಪ್ರಶ್ನ (ಪುಂ)** ಉಪಶ್ರುತಿ, ಶುಭಾಶುಭಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಅಕಾಶವಾಣಿ. ದಿವಿ ಭವ: ದೇವ:—ದೇವ: ಪ್ರಶ್ನ: | "ನಕ್ತಂ ನಿರ್ಗತೃ ಯತ್ಕಿಂಚಿತ್ ಶುಭಾಶುಭಕರಂ ವಚ: | ಶ್ರೂಯತೇ ತದ್ವಿಧುರ್ಬಿರಾ: ದೇವಪ್ರಶ್ನಮುಪಶ್ರುತಿಮ್" ಹಾರಾಂ |

**ದೇವಮಾನುಷಕ ದೈವಮಾನುಷಕ (ವಿಂ)** ದೇವತೆಗಳಿಗೂ ಮನುಷ್ಯರಿಗೂ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. "ತಪೋಮೂಲಮಿದಂ ಸರ್ವಂ ದೇವ-ಮಾನುಷಕಂ ಮುಖಮ್" ಮನುಂ ೧೧-೧೩೫ |

**ದೇವಯುಗ ದೈವಯುಗ (ನಂ)** ದೇವಮಾನದಲ್ಲಿ ಹನ್ನೆರಡು ಸಾವಿರ ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ, ದಿವ್ಯಯುಗ. (ಮನುಷ್ಯರ 360 ದಿನಗಳು ದೇವತೆಗಳ ಒಂದು ದಿನ. ಅಂತಹ 360 ದಿನಗಳು ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಒಂದು ವರ್ಷ). ದೇವಂ ಚ ತತ್ ಯುಗಂ ಚ |

|              | ಮಾನುಷ ವರ್ಷಗಳು | ದೈವ ವರ್ಷಗಳು |
|--------------|---------------|-------------|
| ಕೃತಯುಗ       | 1728000       | 4800        |
| ತ್ರೇತಾಯುಗ    | 1296000       | 3600        |
| ದ್ವಾಪರಯುಗ    | 864000        | 2400        |
| ಕಲಿಯುಗ       | 432000        | 1200        |
| ಚತುರ್ಯುಗಮಾನಂ | 4320000       | 12000       |

ಈ 12000 ದೇವಮಾನದ ವರ್ಷಗಳು ಒಂದು ದೈವಯುಗವಾಗುವುದು. ದೇವತೆಗಳ ಹಗಲು ದೈತ್ಯರಿಗೆ ರಾತ್ರಿ ಯಾಗಿಯೂ ರಾತ್ರಿಯು ಹಗಲಾಗಿಯೂ ಇರುವುದರಿಂದ ಅಷ್ಟಮಾತ್ರ ಅಹೋರಾತ್ರಗಳ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಭೇದ. ಉಳಿದೆಲ್ಲವೂ ಸಮಾನವಾದುದರಿಂದ ಇದೇ ಕಾಲವು ದೈತ್ಯಯುಗವೂ ಆಗುವುದು. ಇಂತಹ 2000 ದೈವಯುಗಗಳು ಬ್ರಹ್ಮನ ಒಂದು ಹಗಲು ಮತ್ತು ರಾತ್ರಿ (ಒಂದು ದಿನ). "ದೇವೇ ಯುಗಸಹಸ್ರೇ द्वे ब्राह्म: कल्पी तु ती नृणाम्" ಅಮಂ |

**ದೇವಯೋಗ ದೈವಯೋಗ (ಪುಂ)** ಅದೃಷ್ಟದ ಸಂಬಂಧ, ಜನ್ಮಾಂತರದ ಪುಣ್ಯ ಪಾಪ ಕರ್ಮಗಳ (ಫಲಕೊಡುವ) ಸಂಬಂಧ. ದೇವಸ್ಯ ಭಾಗ್ಯಸ್ಯ ಫಲೋನ್ಮುಖತಯಾ ಸಂಬಂಧ: |

**ದೇವರಕ್ಷಿತ ದೈವರಕ್ಷಿತ (ವಿಂ)** ದೇವತೆಗಳಿಂದ ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ದೇವೇನ ರಕ್ಷಿತಮ್ | "ಅರಕ್ಷಿತಂ ತಿಷ್ಠತಿ ದೇವರಕ್ಷಿತಂ ಸುರಕ್ಷಿತಂ ದೇವಹತಂ ವಿನश्यತಿ" ಹಿತೋಂ ೨-೧೮ |

**ದೇವರಾತಿ ದೈವರಾತಿ (ಪುಂ)** 1. ದೇವರಾತನ ಮಗ. ದೇವರಾತಸ್ಯ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಇನ್" (೪-೧-೯೫) | 2. ಜನಕಮಹಾರಾಜ. "ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕಯಮೃಷಿಶ್ರೇಷ್ಠಂ ದೇವರಾತಿರ್ಮಹಾಯಶಾ: | ಪಪ್ರಚ್ಛ ಜನಕೋ ರಾಜಾ ಪ್ರಶ್ನಂ ಪ್ರಶ್ನವಿದಾಂ ವರಮ್" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೩೧೫-೪ |

**ದೇವಲೇಖಕ ದೈವಲೇಖಕ (ಪುಂ)** ದೈವಜ್ಞ, ಜೋಯಿಸ, ಅದೃಷ್ಟದ ವಿಷಯವನ್ನು ಬರೆಯುವವನು. ದೇವಂ ಭಾಗ್ಯಂ ಲಿಖತಿ—ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | "ಮೌಹೂರ್ತೋ ದೇವಲೇಖಕ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ದೇವಾಣಿ ದೈವನಾಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಉಪಶ್ರುತಿ. ಅಕಾಶವಾಣಿ, ಶುಭಾಶುಭಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಅಶರೀರ ವಾಕ್ಯ. 2. ಸಂಸ್ಕೃತ ಭಾಷೆ. "ಸಂಸ್ಕೃತಂ ನಾಮ ದೇವೀ ವಾಕ್" ಕಾವ್ಯಾಂ |



ದೇವಸೃಷ್ಟಿ ದೈವಸೃಷ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬ್ರಹ್ಮನು ಮಾಡಿದ ದೇವತೆಗಳ ಸೃಷ್ಟಿ. ದೇವಿ ಸೃಷ್ಟಿ:।

ದೇವಹೀನ ದೈವಹೀನ (ವಿಂ) ಅದೃಷ್ಟವಿಲ್ಲದವನು. ದೇವನ ಹೀನ:। “ದೇವಹೀನಂ ರಿಪುಂ ಜೇತುಂ ಯಾತಾಂ ದೇವಾನಿವಿತುಂ ನೃಪ:”।

ದೇವಾಕರಿ ದೈವಾಕರಿ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯನ ಮಗ 1. ಶನಿ. 2. ಸುಗ್ರೀವ. 3. ಕರ್ಣ. ದಿವಾಕರಸ್ಯ ಅಪತ್ಯಮ್ “ಇನ್” (೪-೧-೧೫)।

ದೇವಾತ್ ದೈವಾತ್ (ಅವ್ಯಂ) ಅನೀರೀಕ್ಷಿತವಾಗಿ, ಅದೃಷ್ಟವಿಶೇಷದಿಂದ.

ದೇವಾತ್ಯಯ ದೈವಾತ್ಯಯ (ಪುಂ) ಅನೀರೀಕ್ಷಿತವಾದ ತೊಂದರೆ, ಅಕಸ್ಮಿಕ ಪ್ರಳಯ.

ದೇವಾಸುರ ದೈವಾಸುರ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆಗಳು ಮತ್ತು ಅಸುರರನ್ನು ಕುರಿತ ಅಧ್ಯಾಯ, ದೇವತೆ ಮತ್ತು ಅಸುರ ಪದಗಳು ಬರುವ ಅನುವಾಕ. ದೇವಾಸುರಶಬ್ದೋಽಸ್ಮಿನ್ನಸ್ತಿ “ಅನ್” (೪-೨-೬೧)। ದೇವಾಸುರಾಶ್ಚಿಕ್ರಮೇ ಕೃತಮಾಖ್ಯಾನಮ್। (ನಂ) 2. ದೇವತೆಗಳಿಗೂ ಅಸುರರಿಗೂ ಇರುವ ವೈರ. ದೇವಾಶ್ಚ ಅಸುರಾಶ್ಚ ದೇವಾಸುರಾ:—ತೇಷಾಂ ವೈರಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦)।

ದೇವಾಹೋರಾತ್ರ ದೈವಾಹೋರಾತ್ರ (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳ ಒಂದು ದಿನ (ಹಗಲು ಮತ್ತು ರಾತ್ರಿ), ಮನುಷ್ಯರ ಒಂದು ವರ್ಷ. ಮನುಷ್ಯರ 360 ದಿನಗಳು ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಒಂದು ದಿನ. ದೇವ: ದೇವಸಮ್ಬಂಧಿ ಅಹೋರಾತ್ರ:।

ದೇವಿಕ ದೈವಿಕ (ವಿಂ) 1. ದೇವತೆಗಳ ಸಂಬಂಧವಾದ. ದೇವಸ್ಯೇದಮ್ “ಠಕ್” (೪-೩-೭೨)। “ಅಹೋರಾತ್ರೇ ವಿಭಜತೇ ಸೂರ್ಯೋ ಮಾನುಷದೇವಿಕೇ” ಮನುಂ ೧-೬೫। 2. ದೇವತೆಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದ. “ದಾಶಾಪರಾಧತಸ್ತೋಯೇ ದೇವಿಕೇ ನಾಸ್ತಿ ನಿಗ್ರಹ:” ಮನುಂ ೮-೪೦೯। (ನಂ) 3. ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ.

ದೇವಿ ದೈವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೇವತೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ (ಸಂಪತ್ತು). ದೇವಸ್ಯೇಯಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦)। “ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೫)। “ದೇವಿ ಸಂಪದಿಮೋಕ್ಷಾಯ ನಿವಾಹಾ-ಯಾಸುರೀ ಮತಾ” ಗೀತಾ ೧೬-೫। ದೇವತೆಗಳು ಭಗವದಾಜ್ಞೆಯಂತೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವ ಸ್ವಭಾವದವರು. ಭಗವದಾಜ್ಞಾನುವರ್ತನವೇ ದೈವೀಸಂಪತ್ತು. 2. ದೈವಧರ್ಮದಿಂದ ವಿವಾಹವಾದ ಹೆಂಗಸು. 3. ಮೂರು ವಿಧ ಚಕ್ರಿತ್ರೆಗಳಲ್ಲೊಂದು. “ಆಸುರೀ ಮಾನುಷೀ ದೇವೀ ತ್ರಿಕಲ್ಪಾ ವಿವಿಧಾ ಮತಾ”।

ದೇವ್ಯ ದೈವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ದೇವತೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. (ನಂ) 2. ಭಾಗ್ಯ, ಅದೃಷ್ಟ. ದೇವಸ್ಯೇದಮ್ “ಯನ್” (ವಾಂ ೪-೧-೮೫)।

ದೇಶಿಕ ದೈಶಿಕ (ವಿಂ) 1. ದೇಶಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ದೇಶಸ್ಯೇದಮ್ “ಠಕ್” (೪-೩-೭೨)। 2. ದೇಶದಿಂದ ಉಂಟಾದ. 3. ದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. ದೇಶೋ ಭವ: “ಠಕ್” (೪-೩-೭೨)।

ದೇಶಿಕ ದೈಶಿಕ (ವಿಂ) ಅದೃಷ್ಟವನ್ನು ನಂಬಿರುವವನು, ದೈವವುಂಟೆಂದು ತಿಳಿದಿರುವವನು. ದಿಷ್ಟಮಿತಿ ಮತಿಯಸ್ಯ “ಠಕ್” (೪-೪-೬೦)।

ದೇಶಿಕತಾ ದೈಶಿಕತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅದೃಷ್ಟವನ್ನೇ ನಂಬಿರುವುದು. ದೇಶಿಕಸ್ಯ ಭಾವ: “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯)। “ನಾಲಮ್ಬತೇ ದೇಶಿಕತಾಂ ನ ನಿಷಿದಧತಿ ಪೌರೋ” ಮಾಘಂ ೨-೮೬।

ದೇಹಿಕ ದೈಹಿಕ (ವಿಂ) 1. ದೇಹಸಂಬಂಧವಾದ. 2. ದೇಹದಲ್ಲಿರುವ. 3. ದೇಹದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ದೇಹಸ್ಯೇದಮ್ ದೇಹೋ ವಾ “ಠಕ್” (೪-೩-೭೨)।

ದೇಹ್ಯ ದೈಹ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಜೀವಾತ್ಮ. ದೇಹೋ ಭವ:। “ಸೂರ್ಯೋಽಗ್ನಿ: ಕ್ವಂ ಮರುದ್ಗಾವ: ಸೋಮ: ಸಂವಾಹನೀ ದಿಶ:। ಕಂ ಕು: ಕಾಲೋ ಧರ್ಮ ಇತಿ ಹ್ಯೇತೇ ದೇಹಸ್ಯ ಸಾಕ್ಷಿಣ:” ಭಾಗಂ ೬-೧-೪೨। (ವಿಂ) 2. ದೇಹದಲ್ಲಿರುವ. “ತಥಾಪಿ ಬತ ಮೇ ದೇಹೋ ಹ್ಯಾತ್ಮಾ ಚೈವಾತ್ಮನಾ ವಿಭು:” ಭಾಗಂ ೧-೪-೩೦।

ದೋ - ಅವಲಂಛನೇ (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ)। ಛತಿ। ದದಿ। ದಾತಾ। ದಾಸ್ಯತಿ। ಛತು। ಅಛತ್। ಛೇತ್। ಇತ್ಯಾದಿ. ಕತ್ತರಿಸು, ತುಂಡುಮಾಡು.

ಕರ್ಮಣಿ:—ದೀಯತೇ। ದದೇ। ದಾಯಿತಾ, ದಾತಾ। ದಾಯಿಷ್ಯತೇ, ದಾಸ್ಯತೇ। ದೀಯತಾಮ್। ಅದೀಯತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ:—ದಾಪಯತಿ, -ತೇ। ಇತ್ಯಾದಿ. “ದಾನ್” ಧಾತುವಿನ ರೂಪಗಳಂತಾಗುವುವು.

ಕೃತ್ಸು:—ದಾತವ್ಯಮ್। ದಾನೀಯಮ್। ದೇಯಮ್। ದಿತ:। ದಿತವಾನ್, -ವತಿ। ಛನ್, ಛಂತಿ। ದಾತುಮ್। ದಿತಮ್। ದಾನಮ್। ದಿತ್ವಾ। ಪ್ರದಾಯ।

ದೋಷವ್ಯ ದೋಷಗೃಹ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕರೆಯಲ್ಪಡುವ. 2. ಹಾಲು ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಕರೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ದುಹ (ಪ್ರಪೂರಣ) “ತನ್ಯ:” (೩-೧-೯೬)।

ದೋಷ ದೋಷಗೃಹ್ಯ (ಪುಂ) 1. ವತ್ಸ, ಕರು. 2. ಗೋಲ್ಕ, ಗೋಪಾಲಕ, ಕವಾಡಿಗ. ದುಹ (ಪ್ರಪೂರಣ) “ತನ್” (೩-೨-೧೩೫)। 3. ದ್ರವ್ಯಸಂಪಾದನೆಗಾಗಿ ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು ಬರೆಯುವ ಕವಿ. (ವಿಂ) 4. ಹಾಲು ಕರೆಯುವವನು. “ಯಂ ಸರ್ವಶಿಲಾ: ಪರಿಕಲ್ಪ್ಯ ವತ್ಸಂ ಮೇರೌ ಸ್ಥಿತೇ ದೋಷರಿ



ದೋಹಕೋ "ಕುಮಾಂ ೧-೨. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪).  
ದೋಗ್ರೋ ದೋಗ್ರೋ. 5. ಧೇನು, ಅಕಳು, ಹಸು. "ದೋಹಾ-  
ವಸಾನೇ ಪುನರೇವ ದೋಗ್ರಿಂ ಭೇಜೆ ಭುಜೋಚ್ಚಿತ್ತರಿಪುನಿಷಣ್ಣಾಮ್"  
ರಘುಂ ೨-೨೩. "ದೋಧಾಽರ್ಥೋಪಜೀವಿಕವೌ ವತ್ಸಗೋಪಾಲಯೋಃ  
ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ.

**ದೋಷಕ ದೋಷಕ (ನಂ)** ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರೋಕ್ತವಾದ  
ಹನ್ನೊಂದನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ  
ಲಕ್ಷಣ: ಪ್ರತಿ ಪಾದದಲ್ಲೂ ಮೂರು "ಮ" ಗಣಗಳೂ  
ಎರಡು ಗುರು ವರ್ಣಗಳೂ ಇರಬೇಕು. "ದೋಷಕವೃತ್ತಮಿಹ  
ಮಮಾ ಗೌ" ವೃಂ ೨೦. ಇದರ ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ಮ ಮ ಮ ಗು ಗು  
೦|| ೦|| ೦|| ೦ ೦

**ದೋಷ್ಯಮಾನ ದೋಷ್ಯಮಾನಮಾನ (ವಿಂ)** ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ  
ಅಥವಾ ಅತಿಶಯವಾಗಿ ನಡುಗುತ್ತಿರುವ, ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ.  
"ದೋಷ್ಯಮಾನಂ ವಿವಿಧೋಮಿಯೋಗಾತ್ ಛಾಯಾಗಠಮಂತಸ್ತವೇಷ್ಯ  
ಮಿತಿ:" ಯಾದಂ ೧೮-೧೬.

**ದೋಗ್ರಹ ದೋಗ್ರಹ (ಪುಂ)** 1. ತೋಳುಗಳನ್ನು ಅಡಿಸಲಾಗ  
ದಂತೆ ಮಾಡುವ ಒಂದು ವಾತರೋಗ. (ವಿಂ) 2. ಬಲ  
ಶಾಲಿಯಾದ ಪುರುಷ. "ಕೇರಾತೋ ದೋಗ್ರಹಕಾಮಾ:" ಹಾರಾಂ.

**ದೋರ್ವಡ ದೋರ್ವಡ (ಪುಂ)** ದಂಡಾಕಾರವಾದ ಬಾಹು.  
ಕೋಲಿನಂತೆ ಉದ್ದವಾದ ತೋಳು. ದೋರ್ವಡ ಇವ.

**ದೋಮಲ ದೋಮೂಲ (ನಂ)** ಬಾಹುಮೂಲ, ಕಂಕಳು,  
ಕಡ್ಡೆ. ದೋಷ: ಮೂಲಮ್.

**ದೋಲ ದೋಲ (ಪುಂ)** 1. ತೂಗಾಡುವುದು, ಜೋಲಾಡು  
ವುದು, ಓಲಾಡುವುದು. ದುಲ (ಉತ್ಕೋಪೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮).  
2. ಫಾಲ್ಗುನಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ  
ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಮಾಡುವ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ದೋಲೋತ್ಸವ.  
ಉಯ್ಯಾಲೆ ಉತ್ಸವ. ದೋಲಯತೇ ಅಸ್ಮಿನ್ ಕೃಷ್ಣೇನ—ದುಲ  
ಅಧಿಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧). "ವಿಶೇಷತಃ ಕಲಿಯುಗೇ  
ದೋಲೋತ್ಸವೋ ವಿಧೀಯತೇ. ಫಾಲ್ಗುನೇ ಚ ಚತುರ್ದಶ್ಯಾಮಷ್ಟಮೇ  
ಯಾಮಸಂಜ್ಞಕೇ || ಅಥವಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಾಂ ತು ಪ್ರತಿಪತ್ಸಂಧಿಸಮ್ಮಿತೌ |  
ಪೂಜಯೇದ್ವಿಧಿವಜ್ಞಕ್ಯಾ ಫಲ್ಗುಚೂರ್ಣಶ್ಚತುರ್ವಿಧಿ:" ||

**ದೋಲಾ ದೋಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಉಯ್ಯಾಲೆ, ತೂಗುವಂಜ.  
ದುಲ (ಉತ್ಕೋಪೇ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಇತ್ಯೇಕ-  
ಪಕ್ಷಾಭಯವಿವಲವತ್ವಾದಾಸೀತ್ಸ ದೋಲಾಚಲಚಿತ್ತವೃತ್ತಿ:" ರಘುಂ  
೧೪-೩೪. 2. ಶಿಬಿರ, ಜಲ್ಲಕ್ಕ. "ದೋಲಾ ನೋತ್ಯಾ  
ಯಾನಾಂತರೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:". ದೋಲಿಕಾ  
ದೋಲಿಕಾ. ತೋಟ್ಟಲು. 3. ನೀಲಿ ಗಿಡ.

**ದೋಲಿ ದೋಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ತೋಟ್ಟಲು. 2. ಉಯ್ಯಾಲೆ.  
ದುಲ (ಉತ್ಕೋಪೇ) "ಙ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭).

**ದೋಷ ದೋಷ (ಪುಂ)** 1. ತಪ್ಪು, ಅಪರಾಧ. ದುಷ (ವೈಕಲ್ಯೇ)  
+ ಣಿಚ್ "ಘ್" (೩-೩-೧೮). "ನಾತ್ರ ಕುಲಪತಿರ್ದೋಷ  
ಗ್ರಹೀಷ್ಯತಿ" ಶಾಕುಂ. "ಅದಾತಾ ವಂಶದೋಷೇಣ ಕರ್ಮದೋಷಾದ್ರಿದ್ರತಾ |  
ಽನ್ಮಾದೋ ಮಾತೃದೋಷೇಣ ಪಿತೃದೋಷೇಣ ಮೂಲತಾ" | 2. ಪಾಪ.  
ದುಷ್ಯತ್ಪನೇನ—ದುಷ ಕರಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧). "ಕಿಮಾತ್ಮ-  
ನಿರ್ವಾದಕಯಾಮುಪೇಕ್ಷೇ ಜಾಯಾಮದೋಷಾಮುತ ಸನ್ಯಜಾಮಿ" ರಘುಂ  
೧೪-೩೪. 3. ಅಪಗುಣ, ಕೆಟ್ಟಗುಣ, ದುರ್ಗುಣ. "ಮೂಲಂ  
ದೋಷಸ್ಯ ಹಿಸಾದೇರರ್ಥಕಾಮೌ ಸ್ಮ ಮಾ ಪುಷ:" ಕಿರಾಂ ೧೧-೨೦. |  
4. ಅಹಿತವಾದ ಗುಣ, ಕೆಡಕನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ ಧರ್ಮ.  
"ಪರಸ್ಯ ಸಮಾವಿಧಮುಜ್ಜತಾಂ ನಿಜಂ ದ್ವಿಜಿಹ್ವತಾದೋಷಮಜಿಹ್ವ-  
ಗಾಮಿಭಿ:" ಮಾಧಂ ೧-೬೩. 5. ಅಪರಾಧ, ಅಪಚಾರ,  
ಅಪಕಾರ. "ನಾಲ್ಪೀಯಾನ್ ಬಹು ಸುಕೃತಂ ಹಿನಸ್ತಿ ದೋಷ:"  
ಕಿರಾಂ ೭-೧೫. 6. ದೋಷಣೆ, ನಿಂದೆ, ತೆಗಳುವಿಕೆ.  
"ವಿವಕ್ಷತಾ ದೋಷಮಪಿ ಚ್ಯುತಾತ್ಮನಾ ತ್ವಯಂಕಮಿಶಂ ಪ್ರತಿ ಸಾಧು  
ಭಾಷಿತಮ್" ಕುಮಾಂ ೫-೮೧. 7. ಅನರ್ಥ, ಕೆಡಕು.  
"ಅಸನ್ಮೇತ್ರಿ ಹಿ ದೋಷಾಯ ಕೂಲಚ್ಛಾಯೇವ ಸೇವಿತಾ" ಕಿರಾಂ  
೧೧-೫೫. 8. ಕೊರತೆ, ನ್ಯೂನತೆ, ಅಪಕರ್ಷವನ್ನುಂಟು  
ಮಾಡುವ ವಸ್ತುಗತವಾದ ಒಂದು ಧರ್ಮ.

(ಕ) **ಕಾವ್ಯದೋಷ:** ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ರಸಕ್ಕೆ ಅಪಕರ್ಷ  
ವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಧರ್ಮವು ದೋಷವೆನಿಸುವುದು.  
ಇದು (1) ಪದ. (2) ಪದಾಂಶ. (3) ವಾಕ್ಯ. (4) ಅರ್ಥ  
ಮತ್ತು (5) ರಸದೋಷಗಳೆಂದು ಐದು ವಿಧ. "ರಸಾಪ-  
ಕರ್ಷಕಾ ದೋಷಾಸ್ತೇ ಪುನಃ ಪಂಚಭಾ ಮತಾಃ | ಪದೇ ತದಂಶೋ ವಾಕ್ಯೇಽರ್ಥೇ  
ಸಮ್ಮವಂತಿ ರಸೇಽಪಿ ಯತ್" ಸಾಂ ದಂ ೭-೧.

### (1) ಪದದೋಷಗಳು:

1. **ದ್ರುಃಖವತ್ವಮ್**—ಕರ್ಕಶವರ್ಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು.  
"ಕಾತಾರ್ಥಿರ್ಯಾತು ತನ್ವಜ್ಞಿ ಕದಾನಜ್ಞವಶಂವದಾ" |
2. **ಅಪ್ರಯುಕ್ತವತ್ವಮ್**—ಶಾಸ್ತ್ರಸಮ್ಮತವಾಗಿದ್ದರೂ ಕವಿಗಳು  
ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸದಿರುವುದು. "ಭಾತಿ ಪಶ್ಯ: ಸರೋವರೇ" |  
"ಪಶ್ಯ" ಪದಕ್ಕೆ ಪುಲಿಂಗದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗವು ಕಡಮೆ  
ಯಾದುದರಿಂದ ಅಪ್ರಯುಕ್ತತ್ವ ದೋಷ.
3. **ಗ್ರಾಮ್ಯವತ್ವಮ್**—ಅನಾಗರಕ ಪದಪ್ರಯೋಗ. "ಕಟಿಸ್ತೇ  
ಹರತೇ ಮನ:" ಇಲ್ಲಿ ಕಟಿಪದವು ಗ್ರಾಮ್ಯ.
4. **ನೇಯಾರ್ಥತಾ**—ರೂಢಿಪ್ರಯೋಜನಗಳಾವುವೂ ಇಲ್ಲದೆ  
ಲಕ್ಷಣೆಯಿಂದ ಹೇಳುವುದು. "ಕಮಲೇ ಚರಣಾಘಾತಂ ಮುಖಂ  
ಸುಮುಖಿ ತೇಽಕರೋತ್" ಇಲ್ಲಿ "ಚರಣಾಘಾತ" ಪದಕ್ಕೆ "ಜಯ"



ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷಣ. ಆದರೆ ರೂಢಿ ಪ್ರಯೋಜನ ಗಳಾವುವೂ ಇಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ನೇಯಾರ್ಥತ್ವರೂಪವಾದ ದೋಷವು; ಇತ್ಯಾದಿ.

(2) ಹೀಗೆಯೇ ಕೆಲವು ದೋಷಗಳು ಪದಾಂಶಗಳ ಲ್ಲಿಯೂ ಕಂಡುಬರುವುವು.

(3) ವಾಕ್ಯ ದೋಷಗಳು:

1. ಅಧಿಕಪದತಾ:—ಅವಶ್ಯವಿಲ್ಲದ ಪದಗಳ ಪ್ರಯೋಗ. "ಸದಾಶಿವಂ ನೌಮಿ ಪಿನಾಕಪಾಣಿನಮ್" ಇಲ್ಲಿ "ಪಿನಾಕಪಾಣಿ" ಪದವು ಅಧಿಕ.

2. ನ್ಯೂನಪದತಾ:—ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಇರಬೇಕಾದ ಪದದ ಪ್ರಯೋಗವಿಲ್ಲದಿರುವುದು. "ಯದಿ ಮಯ್ಯಪಿತಾ ದೃಷ್ಟಿ: ಕಿಂ ಮಮೇಂದ್ರತಯಾ ತದಾ" ಇಲ್ಲಿ "ತವಯಾ" ಎಂಬ ಪದದ ಪ್ರಯೋಗವು ಅವಶ್ಯವಾಗಿರಬೇಕು. ಇತ್ಯಾದಿ.

(4) ಅರ್ಥದೋಷಗಳು:

1. ಅಪುಷ್ಪತ್ವಮ್—ಮುಖ್ಯಾರ್ಥಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸದ ಪದ ಪ್ರಯೋಗವು ಅಪುಷ್ಪವಾಗುವುದು. "ವಿಲೋಕಯ ವಿತತೇ ವ್ಯೋಮಿನಿ ವಿಧುಂ ಮುಚ್ಚ ರುಪಂ ಪ್ರಿಯೇ" ಇಲ್ಲಿ "ವಿತತ" ಪದ ವಿಶೇಷಣದಿಂದ "ವ್ಯೋಮ" ಪದಕ್ಕೆ ಪ್ರಯೋಜನವೇನೂ ಇಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಇದು ಅಪುಷ್ಪವಾಗುವುದು.

2. ದುರ್ಗಮತಾ—ಕ್ರಮತಃ ಹೇಳುವುದು. "ದೇಹಿ ಮೇ ಷಾಜಿನಂ ರಾಜನ್ ಗಜೇಂದ್ರಂ ವಾ ಮದಾಲಸಮ್" ಇಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯವಾದ ಗಜೇಂದ್ರನ ಯಾಚನೆಯನ್ನು ಮೊದಲು ಹೇಳದೆ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಹೇಳುವುದು ಅಕ್ರಮ. ಇತ್ಯಾದಿ.

(5) ರಸದೋಷಗಳು:

1. ರಸಸ್ಯ ಸ್ವಶಬ್ದವಾಚ್ಯತ್ವಮ್—ಶೃಂಗಾರಾದಿ ರಸಪದಗಳನ್ನು ತದ್ವಾಚಕಪದಗಳಿಂದ ಹೇಳುವುದು ದೋಷವಾಗುವುದು. "ತಾಮೃದ್ವೀಕಯ ಕುರಜ್ಜಾಕ್ಷಿಂ ರಸೋ ನ: ಕೋಷ್ಯ-ಜಾಯತ | ಚಂದ್ರಮಂಡಲಮಾಲೋಕಯ ಶೃಂಗಾರೇ ಮಗನಮಂತರಮ್" |

2. ಸ್ಥಾಯಿಭಾವಸ್ಯ ಸ್ವಶಬ್ದವಾಚ್ಯತ್ವಮ್—ಸ್ಥಾಯಿಭಾವಗಳನ್ನು ತದ್ವಾಚಕಪದಗಳಿಂದ ಹೇಳುವುದು ದೋಷ. "ಅಜಾಯತ ರತಿಃ ಸ್ತಸ್ಯಾಮ್" |

3. ಅಕ್ಷರಸಸ್ಯಾನನುಸಂಧಾನಮ್ — ಪ್ರಧಾನವಾದುದನ್ನೇ ಮರೆತುಬಿಡುವುದು "ರತ್ನಾವಳಿ"ಯಲ್ಲಿ ಬಾಭ್ರವ್ಯನು ಬಂದಾಗ ಸಾಗರಿಕೆಯನ್ನೇ ಮರೆತುಬಿಡುವುದು ರಸದೋಷವಾಗುವುದು. ಇತ್ಯಾದಿ.

(ಃ) ತರ್ಕಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಲಕ್ಷಣ ದೋಷಗಳು ಮತ್ತು ಹೇತು ದೋಷಗಳು:

(1) ಲಕ್ಷಣ ದೋಷಗಳು:

ಅವ್ಯಾಪ್ತಿ:—ಲಕ್ಷ್ಯದ ಏಕದೇಶದಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷಣವಿಲ್ಲದಿರುವುದು. "ಲಕ್ಷ್ಯೇಕದೇಶಾವೃತ್ತಿತ್ವಮ್" | ಲಕ್ಷ್ಯತಾವಚ್ಛೇದಕಸಾಮಾ-ನಾಧಿಕರಣ್ಯ ಸತಿ ಲಕ್ಷ್ಯತಾವಚ್ಛೇದಕಸಾಮಾಧಿಕರಣಾತ್ಯಂತಾ-ಭಾವಪ್ರತಿಯೋಗಿತ್ವಮ್ ಇತ್ಯರ್ಥ: | "ಗೋನಿಲರೂಪವತ್ವಂ ಲಕ್ಷಣಮ್" ಎಂದು ಲಕ್ಷಣ ಹೇಳಿದರೆ ಶ್ವೇತಗೋವಿನಲ್ಲಿ (ಬಿಳಿಯ ಹಸುವಿನಲ್ಲಿ) ನೀಲರೂಪವಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಲಕ್ಷಣಕ್ಕೆ "ಅವ್ಯಾಪ್ತಿ" ರೂಪದೋಷ ಬರುವುದು.

ಅತಿವ್ಯಾಪ್ತಿ:—ಅಲಕ್ಷ್ಯದಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷಣವಿರುವುದು. "ಲಕ್ಷ್ಯ-ವೃತ್ತಿತ್ವೇ ಸತಿ ಅಲಕ್ಷ್ಯವೃತ್ತಿತ್ವಮ್" | ಲಕ್ಷ್ಯತಾವಚ್ಛೇದಕ-ಸಾಮಾಧಿಕರಣ್ಯ ಸತಿ ಲಕ್ಷ್ಯತಾವಚ್ಛೇದಕಾವಚ್ಛಿನ್ನಪ್ರತಿ-ಯೋಗಿತಾಕಭೇದಸಾಮಾಧಿಕರಣ್ಯಮ್ ಇತ್ಯರ್ಥ: | "ಗೋ: ಕೃತ್ವಿತ್ವಂ ಲಕ್ಷಣಮ್" ಈ ಲಕ್ಷಣಕ್ಕೆ ಲಕ್ಷ್ಯಭೂತವಾದ ಗೋವಿಗಿಂತಲೂ ಇತರವಾದ ಮಹಿಷದಲ್ಲಿ (ಅಲಕ್ಷ್ಯದಲ್ಲಿ) ಶೃಂಗಿತ್ವವಿರುವುದರಿಂದ "ಅತಿವ್ಯಾಪ್ತಿ" ರೂಪವಾದ ದೋಷವಿರುವುದು.

ಅಸಂಭವ:—ಲಕ್ಷ್ಯಸಾಮಾನ್ಯದಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷಣವಿಲ್ಲದಿರುವುದು. "ಲಕ್ಷ್ಯಮಾತ್ರೇ ಲಕ್ಷಣಾವೃತ್ತಿತ್ವಮ್" | ಲಕ್ಷ್ಯತಾವಚ್ಛೇದಕ ವ್ಯಾಪಕಿಭೂತಾಭಾವಪ್ರತಿಯೋಗಿತ್ವಮ್ ಇತ್ಯರ್ಥ: | "ಗೋರೇಕಶಪವತ್ವಂ ಲಕ್ಷಣಮ್" ಈ ಲಕ್ಷಣಕ್ಕೆ ಲಕ್ಷ್ಯಭೂತವಾದ ಗೋಸಾಮಾನ್ಯಕ್ಕೂ ಶಫದ್ವಯ (ಎರಡು ಗೊರಸುಗಳು) ಇರುವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ "ಅಸಂಭವ" ರೂಪ ದೋಷವು.

ಆತ್ಮಾಶಯ: ಮತ್ತು ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಶಯ: ಆಯಾಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

(2) ಹೇತು ದೋಷಗಳು: (1) ವ್ಯಭಿಚಾರ:.

(2) ವಿರೋಧ: (3) ಸತ್ಪ್ರತಿಪಕ್ಷ: (4) ಅಸಿದ್ಧಿ: ಮತ್ತು (5) ವಾಘ: ಇವು ಐದು ಹೇತುದೋಷಗಳು. [ವಿವರಕ್ಕೆ ಆಯಾಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 9. ವೈದ್ಯಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ ದೋಷಗಳು. (1) ವಾತ: (2) ಪಿತ್ತಮ್ ಮತ್ತು (3) ಕಫ: | ದುಷ್ಯಂತೈಃ—ದುಷಕರಂ "ಘಬ್" (3-3-19) |

"ವಾತವಶ್ಚ ಮಲಾಶ್ರಾಪಿ ದುಷ್ಯಂತೈಃ ಭಿರ್ಯತಸ್ತತ: | ವಾತಪಿತ್ತ-ಕಫಾ ಏತೇ ತ್ರಯೋ ದೋಷಾ ಇತಿ ಸ್ಮೃತಾ: |" | ಈ ಮೂರು ದೋಷಗಳೂ ಸಮವಾಗಿದ್ದರೆ ದೇಹದ ಬೆಳವಣಿಗೆಗೆ ಕಾರಣವಾಗುವುವು. ಏಕಾರಹೊಂದಿ ಏರುವೇರಾದರೆ ದೇಹ ಕ್ಷಯಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗುವುವು. "ವಾತ: ಪಿತ್ತಂ ಕಫಶ್ಚೇತಿ ತ್ರಯೋ ದೋಷಾ: ಸಮಾಸತ: | ವಿಕೃತಾ ಅವಿಕೃತಾ ದೇಹಂ ಧ್ವಂಸಂತಿ ತೇ ವರ್ಧಯಂತಿ ಚ | ತೇ ವ್ಯಾಪಿನೋಽಪಿ ಹೃಷಾಮ್ಯೋರಧೋಮಧ್ಯೋರ್ಧ್ವಸಂಶ್ರಯಾ: | ವಯೋಽಹೋರಾತ್ರಭುಕ್ತಾನಾಮಂತಮಧ್ಯಾದಿಗಾ: ಕ್ರಮಾತ್" | ಭಾವಪ್ರಂ |

10. ವಾತಪಿತ್ತಕಫಗಳ ಏಕಾರ. 11. ಮನುಷ್ಯನು ಪುಣ್ಯ



ಪಾಪಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರವರ್ತಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವ ರಾಗದೋಷ  
ಮೋಹರೂಪವಾದ ಒಂದು ಧರ್ಮ. 12. ವತ್ಸ, ಕರು.

ದೋಷಕಲ್ಪನ ದೋಷಕಲ್ಪನ (ನಂ) ದೋಷದ ಆರೋಪಣೆ,  
ದೋಷವಿಲ್ಲದ ಕಡೆ ದೋಷವನ್ನು ಹೇಳುವುದು, ತಪ್ಪು  
ಹೊರಿಸುವುದು.

ದೋಷಗ್ರಸ್ತ ದೋಷಗ್ರಸ್ತ (ವಿಂ) 1. ಅಪರಾಧಿ, ತಪ್ಪು  
ಮಾಡಿದವನು. 2. ದೋಷಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದವನು,  
ದುರ್ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದವನು. ದೋಷ: ಗ್ರಸ್ತ: |

ದೋಷಗ್ರಾಹಿನ್ ದೋಷಗ್ರಾಹಿನ್ (ವಿಂ) ದುರ್ಜನ, ಕೆಟ್ಟ  
ಮನು, ದೋಷವನ್ನೇ ಕಂಡುಹಿಡಿಯುವವನು. ದೋಷ  
ಗೃಹ್ಣತಿ-ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) "ಗಿರಿ:" (3-2-36) |  
"ವಿಸೃಜ್ಯ ಶೂರ್ವದೋಷಾನ್ ಗುಣಾನ್ ಗೃಹ್ಣಂತಿ ಸಾಧವ: | ದೋಷಗ್ರಾಹಿ  
ಗುಣತ್ಯಾಗಿ ಚಾಲಿನಿವ ಹಿ ದುರ್ಜನಾ:" ಉಕ್ತಂ |

ದೋಷಜ್ಞ ದೋಷಜ್ಞ (ವಿಂ) ವಾತಪಿತ್ತಕಫಗಳ ವಿಚಾರವನ್ನು  
ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ, ಧಾತುಗಳ ದೋಷವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸಿ  
ಸುವ. ದೋಷ ಹಂತಿ-ಹನ (ಹಿಸಾಗತಿಯು:) "ಠಕ್" (3-2-43) |  
"ದೋಷಜ್ಞಾ ಗ್ರಹಣಿಪಾಣ್ಡುರೋಗಾಶ್ಚಕ್ರುಷ್ಣಾಶನಾ:" ಸುಷ್ರುತಂ |

ದೋಷಕ್ಷಿಪ್ ದೋಷಕ್ಷಿಪ್ (ವಿಂ) 1. ವಾತಾದಿ ದೋಷ  
ಗಳನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. 2. ಪಾಪ ದುಃಖ ಮೊದ  
ಲಾದ ದೋಷಗಳನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ. ದೋಷಾನ್ ಚಿನತಿ-  
ಚಿದಿರ್ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ಕ್ವಿಪ್" (3-2-36) |

ದೋಷಜ್ಞ ದೋಷಜ್ಞ (ವಿಂ) 1. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. ದೋಷ  
ಜಾನಾತಿ-ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ:" (3-2-3) | "ಜಾತಾನು-  
ನಾದಾ ಜಗತಾಂ ತ್ರಯಾಣಾಂ ದೋಷಕ್ಷಿಪ್ತೋ ದುನ್ದುಭಯ: ಪ್ರಣೇದು:" ಯಾದಂ  
13-20 | "ಅಥ ಪ್ರದೋಷೇ ದೋಷಜ್ಞ: ಸಂವಿವೇಶ ವಿಶಾಂಪತಿ:"  
ರಘುಂ 1-93 | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜ್ಞಾ -ಜ್ಞಾ. ವಿದುಷಿ,  
ಪಂಡಿತೆ. (ವಿಂ) 2. ಇತರರ ದೋಷವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ.  
"ಅಜ್ಞಾತದೋಷದೋಷಜ್ಞಃ ಕ್ಷುಧಾಭಯವೇತನೇ:" ಮಾಘಂ 2-113 |

ದೋಷತ್ರಯ ದೋಷತ್ರಯ (ನಂ) ವಾತ ಪಿತ್ತ ಕಫಗಳೆಂಬ  
ಮೂರು ದೋಷಗಳು. ದೋಷಾಣಾಂ ವಾತಪಿತ್ತಕಫಾನಾಂ ತ್ರಯಮ್ |

ದೋಷ ದೋಷ (ಅವ್ಯಂ) 1. ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ. ದುಷ್ಯತ್ಯತ್ರ-  
ದುಷ (ವೈಕಲ್ಯ) "ಆ" (1-1-37) | ಸಪ್ತಮ್ಯರ್ಥೇ ಅವ್ಯಯಮ್ |  
"ದೋಷಾಪಿ ನೂನಮಹಿಮಾಂಶುರಸೌ ಕಿಲೇತಿ ವ್ಯಾಕೋಶಕೋಕನದತಾಂ  
ದಧತೇ ನಲಿನ್ಯ:" ಮಾಘಂ 4-46 | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಬಾಹ್ಯ,  
ತೋಳು. ದೋಸ್ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಠಾಪ್" ಭಾಗುರಿ: |

ದೋಷಕರ ದೋಷಕರ (ವಿಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ದೋಷ ರಾತ್ರಿ  
ಕರೋಜ್ಯ | 2. ದೋಷಗಳ ರಾಶಿ, -ಸಮೂಹ. (ವಿಂ)  
3. ದೋಷಗಳಿಗೆ ಗಣಯಾಗಿರುವ. ದೋಷಾಣಾಮಾಕರ: |

ದೋಷಾತನ ದೋಷಾತನ (ವಿಂ) ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿರುವ. ದೋಷ  
"ಠ್ಯು:" ತಸ್ಯ ತುಡ್ ಅನಾದೇಶಶ್ಚ (4-3-23) | "ದೋಷಾತನಂ  
ಬೃಹಬೃಹಸ್ಪತಿಯೋಗದೃಶ್ಯಸ್ತಾರಾಪತಿಸ್ತರಲವಿಚ್ಛದಿವಾಭವಂದಮ್"  
ರಘುಂ 13-36 |

ದೋಷಾತಲಕ ದೋಷಾತಲಕ (ವಿಂ) ರಾತ್ರಿಗೆ ಅಲಂಕಾರ  
ವಾದ ದೀಪ. ದೋಷ ರಾತ್ರಿಸ್ತಲಕ ಇವ | "ದಶೇಂದ್ರನೋ  
ಗೃಹಮಣಿದೋಷಾತಲಕ ಇತ್ಯಪಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ದೋಷಾಮನ್ಯ ದೋಷಾಮನ್ಯ (ವಿಂ) ರಾತ್ರಿಯೆಂದು ತಿಳಿ  
ಯುವ. ದೋಷ ರಾತ್ರಿಮಾತ್ಮಾನಂ ಮನ್ಯತೇ - ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ)  
"ಲಶ್" (3-2-63) | "ದೋಷಾಮನ್ಯಂ ವಿದಧತಿ ಸುರತ-  
ಕ್ರೀಡಾಸಾಸ್ರಮಶಮಪಟವ:" ಮಾಘಂ 4-62 |

ದೋಷಿನ್ ದೋಷಿನ್ (ವಿಂ) 1. ದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಕೆಟ್ಟ  
ಗುಣವುಳ್ಳ. 2. ತಪ್ಪುಮಾಡಿದವನು, ಅಪರಾಧಿ. 3. ಪಾಪ  
ಮಾಡಿದವನು. ದೋಷಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114) |  
ದುಷ (ವೈಕಲ್ಯ) "ಗಿರಿ:" (3-1-134) ವಾ |

ದೋಷಕವಶ್ ದೋಷಕವಶ್ (ವಿಂ) ದೋಷವನ್ನೇ ಮುಖ್ಯ  
ವಾಗಿ ನೋಡುವವನು, ದುರ್ಜನ. ದೋಷೇ ಏಕಸ್ಮಿನ್ನೇವ ದೃಕ್  
ಜ್ಞಾನಂ ಯಸ್ಯ | ದೋಷಮೇವೈಕಂ ಪಶ್ಯತಿ - ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣಂ)  
"ಕ್ವಿಪ್" ವಾ |

ದೋಸ್ ದೋಸ್ (ವಿಂ) ಭುಜ, ತೋಳು. ದಾಮ್ಯತ್ಯನೇನ-ದಮು  
(ಉಪಶಮೇ) "ಡೋಸಿ:" (3-2-30) | "ಇತ್ಯುಕ್ತವಂತಂ  
ಪರಿಸ್ಮಯ ದೋಮ್ಯಾಂ ತನೂಜಮಾವಿಷ್ಕೃತದಿವ್ಯಮೂತಿ:" ಕಿರಾಂ  
11-20 | "ಕಕ್ರುದೋಷಿಣಿ" ಎಂದು ಮಹಾಭಾಷ್ಯಕಾರರ  
ಪ್ರಮೋಗವಿರುವುದರಿಂದ ನಪುಂಸಕತ್ವವೂ ಉಂಟು.  
"ತಮುಪಾದ್ರವದುಷ್ಮಯ ದಕ್ಷಿಣಂ ದೋನಿಶಾಚರ:" ರಘುಂ 14-23 |

ದೋಸ್ಯ ದೋಸ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ. 2. ಸೇವೆ,  
ಕುಶ್ರೂಷೆ, ಉಪಚಾರ. (ವಿಂ) 3. ಆಟವಾಡುವವನು.  
4. ಸೇವಕ, ಆಳು. "ಕ್ರೀಡಾಕ್ರೀಡಕಯೋರ್ದೋಸ್ಯ: ಸೇವಾಃ ಸೇವಕೇ  
ಚ ಸ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 5. ತೋಳಿನಲ್ಲಿರುವ. ದೋಷಿ  
ತಿಷ್ಠತಿ-ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ:" (3-2-4) |

ದೋಹ ದೋಹ (ವಿಂ) 1. ಹಾಲು ಕರೆಯುವುದು. ದುಹ  
(ಪ್ರಪೂರಣ) ಭಾವೇ "ಘ್" (3-3-14) | "ದೋಹಾವಸಾನೇ  
ಪುನರೇವ ದೋಹಿ ಭೇಜೆ ಭುಜೋಚ್ಚಿನ್ನರಿಪುನಿಷ್ಣಾಮ್" ರಘುಂ  
2-23 | 2. ಹಾಲು, ಕ್ಷೀರ. ದುಹತೇ-ದುಹ ಕರ್ಮಂ "ಘ್" (3-3-19) | 3. ಹಾಲು ಕರೆಯುವ ಪಾತ್ರೆ. ದುಹತ್ಯತ್ರ-  
ದುಹ ಅಭಿಂ "ಘ್" (3-3-121) |

ದೋಹದ ದೋಹದ (ವಿಂ) 1. ಬಯಕೆ, ಇಚ್ಛೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ.  
ದೋಷಮಾಕರ್ಷಣ ದದಾತಿ-ಡು ವಾಚ (ದಾನೇ) "ಕ:" (3-2-3) |



ಸ್ತ್ರೀಯರ ಪಾದಾಘಾತ ಮತ್ತು ಮುಖಾಸವಗಳಿಂದ ಗಿಡ  
ಲತೆಗಳು ಪುಷ್ಟಿಸುವವೆಂದು ಕವಿಸಮಯಸಿದ್ಧ. ಇದಕ್ಕೆ  
ದೋಹದವೆಂದು ಹೆಸರು. ಇದೇ ಗಿಡಲತೆಗಳ ಬಯಕೆ.  
“ತಾಭಿರಪ್ಯುಪಹೃತಂ ಮುಖಾಸವಂ ಸೋಽಪಿಬಹ್ವಕುಲತುಲ್ಯದೋಹದಃ”  
ರಘುಂ ೧೯-೧೨. 2. ಗರ್ಭಿಣಿಯರ ಬಯಕೆ, ಗರ್ಭದ  
ಲಕ್ಷಣವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಬಯಕೆ. “ಪ್ರಜಾವತೀ ದೋಹದಶಿಸಿನೀ  
ತೇ ತಪೋವನೇಷು ಸ್ಪೃಹ್ಯಾಲುರೇವ” ರಘುಂ ೧೪-೪೫. 3. ಗರ್ಭ,  
ಬಸಿರು. “ದೋಹದೋ ಗರ್ಭಲಕ್ಷಣೇ. ಅಭಿಲಾಷೇ ತಥಾ ಗರ್ಭಂ”  
ಹೇಮಂ. [“ಖಜ್ಜ” “ಗರ್ಭಿಣಿದೋಹದ” ಪದಗಳಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.]

ದೋಹದವತೀ ದೋಹದವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಯಕೆಯುಳ್ಳ  
ಗರ್ಭಿಣಿ, ಬಸಿರಾಗಿ ಬಯಕೆಯುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ದೋಹದಮ-  
ಸ್ಯಸ್ಯಾ: “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪).

ದೋಹನ ದೋಹನ (ನಂ) 1. ಹಾಲು ಕರೆಯುವುದು. ದುಹ  
(ಪ್ರಪೂರಣ) ಭಾವ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫). (ವಿಂ) 2.  
ಹಾಲು ಕರೆಯುವವನು. ದುಹ ಕರ್ತಂ “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪).  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನೀ-ನೀ. ದುಹ ಅಧಿಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭).  
“ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೫). ಹಾಲು ಕರೆಯುವ ಪಾತ್ರೆ.

ದೋಹನೀಯ ದೋಹನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಹಾಲು ಕರೆಯಲ್ಪಡುವ.  
2. ಹಾಲು ಕರೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಹಾಲು  
ಕರೆಯಬೇಕಾದ. ದುಹ (ಪ್ರಪೂರಣ) ಕರ್ಮಾದಿ “ಅನೀಯರ್”  
(೩-೧-೯೬).

ದೋಹಲ ದೋಹಲ (ನಂ) 1. ಇಚ್ಛೆ, ಬಯಕೆ, ಗರ್ಭಿಣಿಯರ  
ಅಪೇಕ್ಷೆ. ದೋಹಮಾಕರ್ಷ ಲಾತಿ-ಲಾ (ಆದಾನೇ) “ಕ:”  
(೩-೨-೩). “ಗರ್ಭಿಣ್ಯಾ: ಪುನರಿಚ್ಛಾಪಾಂ ಶ್ರದ್ಧಾ ದೋಹಲದೋಹದೇ”  
ವೈಜಂ. 2. ಬೆರಣಿ, ಒಣಗಿದ ಸಗಣೆ. “ದೋಹಲಂ ತು  
ಕರೀಷೋಸ್ತೀ ಗೋಗ್ರನ್ಥಿ: ಶುಷ್ಕಗೋಮಯ:” ವೈಜಂ.

ದೋಹಪನಯ ದೋಹಪನಯ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರ, ಹಾಲು.  
ದೋಹಪನಯತಿ-ಅಪ+ಣಿನ್ (ಪ್ರಾಪಣ) “ಅಪ್” (೩-೩-೫೬).

ದೋಹ್ಯ ದೋಹ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹಾಲು ಕರೆಯಲ್ಪಡುವ. ದುಹ  
(ಪ್ರಪೂರಣ) “ಘ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪). (ನಂ) 2. ಕ್ಷೀರ,  
ಹಾಲು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಹ್ಯಾ-ಹ್ಯಾ. ಅಕಳು, ಹಸು, ಎಮ್ಮೆ  
ಮೊದಲಾದುವು. “ಬೀಜಾಯೋವಾಹರತಸ್ತೀದೋಹ್ಯಪುಂಸಾಂ  
ಪರೀಕ್ಷಣಮ್” ಯಾಜಂ ೨-೧೭೭.

ದೋಹ್ಯ ದೋಹ್ಯ (ನಂ) 1. ದೂತತ್ವ, ದೂತಭಾವ, ರಾಯಭಾರ.  
2. ದೂತನ ಕೆಲಸ. ದೂತಸ್ಯ ಭಾವ: ಕರ್ಮ ವಾ “ಘ್ಯನ್”  
(೪-೧-೧೨೪). “ನನು ಸರ್ವಮೇವೇದಾನಿಂ ಪ್ರತಿಹತಮಮೃತಮ್  
ಸ್ವಯಂ ಪ್ರತಿಪನ್ನದೋಹ್ಯೇನ ಸಂಧಿಕಾರಿಣಾ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣೇನ” ವೇಣಿಂ ೧.

ದೋಹ್ಯ ದೋಹ್ಯ (ನಂ) 1. ದೂತತ್ವ, ಕೆಲಸ, ದೂತನ,  
ದೂತಸ್ಯ. 2. ದೂತಸ್ವಭಾವ, ಕೇಡಿಗೆತನ. ದುಹ:  
ಆತ್ಮಾ ಬುದ್ಧಿ: ಸ್ವಭಾವೋ ವಾ ಯಸ್ಯ - ದೂರಾತ್ಮಾ, ತಸ್ಯ ಭಾವ:  
“ಘ್ಯನ್” (೪-೧-೧೨೪). “ದೋಹ್ಯಾತ್ಮಾಕ್ಷಸಸ್ತಾಂ ತು  
ನಾತ್ರತ್ಯಾ: ಶ್ರದ್ಧಾ: ಪ್ರಜಾ:” ರಘುಂ ೧೫-೭೨. “ದೋಹ್ಯಾ-  
ದರಿಭಿನ್ನಿಜಾರ್ಜವಶುಚೌ ಮಾಯಾವಿಭಿವೃದ್ಧಿ” ಮಂ ವೀಂ ೫-೪೬.

ದೋಹ್ಯ ದೋಹ್ಯ (ವಿಂ) 1. ದೂತಸಂಬಂಧವಾದ, ಕೋಟಿಗೆ  
ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ದೂತಸ್ಯ ಇದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦).  
2. ದೂತದೇವಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ದೂತಿಯಾ ಇದಮ್  
“ಅನ್”.

ದೋಹ್ಯ ದೋಹ್ಯ (ನಂ) 1. ದೂತತ್ವ, ಬಡತನ. ದೂತಸ್ಯ  
ಭಾವ: “ಘ್ಯನ್” (೪-೧-೧೨೪). 2. ಬಡತನ ಮೊದಲಾದ  
ಲಾವುಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ದೂರವಸ್ಥೆ, ಕೆಟ್ಟಸ್ಥಿತಿ,  
ಸಂಕಟ. “ದೋಹ್ಯಾತ್ಮೇರನೌಜಸ್ಯ ದೇನಮ್” ಸಾಂ ದಂ.

ದೋಹ್ಯ ದೋಹ್ಯ (ನಂ) ಕೆಟ್ಟವಾಸನೆ. ದುಹೋ ಗಂಧೋಸ್ಯ  
ದುರ್ಗಂಧ: ತಸ್ಯ ಭಾವ: “ಘ್ಯನ್” (೪-೧-೧೨೪).

ದೋಹ್ಯ ದೋಹ್ಯ (ನಂ) ದೂತತ್ವ, ದೂತಸ್ಯ,  
ಕೆಟ್ಟತನ. ದೂತಸ್ಯ ಭಾವ: “ಘ್ಯನ್” (೪-೧-೧೨೪).

ದೋಹ್ಯ ದೋಹ್ಯ (ನಂ) ಬಲಹೀನತೆ, ಅಶಕ್ತತೆ ದುರ್ಬಲಸ್ಯ  
ಭಾವ: “ಘ್ಯನ್” (೪-೧-೧೨೪).

ದೋಹ್ಯ ದೋಹ್ಯ (ಪುಂ) ಅದೃಷ್ಟಹೀನತೆ  
ಮಗ, ಬಡ ಹೆಂಗಸಿನ ಮಗ. ಗಂಡನು ತೊರೆದು ಗತಿಯಿಲ್ಲ  
ದವಳ ಮಗ. ದುರ್ಭಾಗ್ಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ “ಡಕ್” ಇನ್ಡ್ ವ  
(೪-೧-೧೨೬). ಉಭಯಪದವೃದ್ಧಿ: (೭-೩-೧೯). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೫). ದೋಹ್ಯದೋಹ್ಯ ದೋಹ್ಯದೋಹ್ಯ.

ದೋಹ್ಯ ದೋಹ್ಯ (ನಂ) 1. ಅದೃಷ್ಟಹೀನತೆ. 2. ಬಡತನ,  
ದಾರಿದ್ರ್ಯ. ದುರ್ಭಾಗ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: “ಘ್ಯನ್” (೪-೧-೧೨೪).  
“ಅಥ ಕೇಕೇಯಿ ದೋಹ್ಯಾಂ ರಾಜಾ ತೇ ಖ್ಯಾಪಿತಂ ಮಹತ್” ಭಾಂ  
ವನಂ ೨೭೮-೧೮.

ದೋಹ್ಯ ದೋಹ್ಯ (ನಂ) ಕೆಟ್ಟ ಸಹೋದರತ್ವ, ಕೆಟ್ಟ  
ಸೋದರನಾಗಿರುವಿಕೆ. ದುಹೋ ಭ್ರಾತಾ, ತಸ್ಯ ಭಾವ: “ಘ್ಯನ್”  
(೪-೧-೧೩೦).

ದೋಹ್ಯ ದೋಹ್ಯ (ನಂ) ದೋಹ್ಯದಿಂದ ಮನಸ್ಸು  
ನಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ, ವಿಷಾದದಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. ಚಿಂತೆ  
ಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. ದುರ್ಭಾಗ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: “ಘ್ಯನ್”  
(೪-೧-೧೨೪). “ತನ್ಮಿತ್ರಪೂಜಾ ತದರಿವಿಷತ್ವಂ ಕೃತಸ್ಮೃತಿ:  
ಪ್ರಾಪಿತದೋಹ್ಯಸ್ಯಮ್” ಬೃಹತ್ಸಂ ೭೮-೬.



ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ (ನಂ) ಕಟ್ಟಿಸಲಹೆ, ದುರುಪದೇಶ, ಕಾಲದೇಶಗಳನುಗುಣವಲ್ಲದ ಮಂತ್ರಾಲೋಚನೆ. ದುಷ್ಟೋ ಮನ್ತ್ರ: यस्य-ತಸ್ಯ ಭಾವ: "ಏನ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ದೊರ್ಮನ್ಯಾಪತಿವಿನಶಯತಿ ಯತಿ: ಸಜ್ಜಾತ್ ಸುತೋ ಲಾಲನಾತ್" ಭರ್ತಂ ೧-೩೩।

ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ (ನಂ) ಹೊಂದಲು ಅಶಕ್ತವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಡೆಯಬೇಕಾಗುವಿಕೆ. ದುರ್ಲಭಸ್ಯ ಭಾವ: "ಏನ್" (೪-೧-೧೨೪)।

ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ (ನಂ) 1. ವೈರ, ದ್ವೇಷ, ಶತ್ರುತ್ವ. 2. ನೀಚತನ. ದುರ್ಹದೋ ಭಾವ: "ಅನ್" (೪-೧-೧೩೦)।

ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ (ಪುಂ) 1. ದುಲಿಯುಷಿಯ ಮಗ. ದುಲೇರಪತ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೨)। 2. ಅಮೆಯ ಮರಿ. ದುಲ್ಯಾ: ಕಮಠಾ: ಅಪತ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೨)।

ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ.

ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ (ಪುಂ) ದ್ವಾರಪಾಲಕ, ಬಾಗಿಲು ಕಾಯುವವನು. ದ್ವಾರಿ ನಿಯುಕ್ತ: "ಠಕ್" (೪-೪-೬೯)। ಏಜಾಗಮ: (೭-೩-೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ, "ಅಯೋಗಾಪ್ಯಸ್ಯ ಪುರಸ್ಯ ನಾಥಂ ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೇವಸರೂಪಮೇತ್ಯ" ರಘುಂ ೬-೪೯।

ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ (ನಂ) ಮೇಲಿನ ಚರ್ಮವಿಲ್ಲದ ಲಿಂಗ ದಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು. ಇದೊಂದು ರೋಗ. ದುಷ್ಕರ್ಮಣೋ ಭಾವ: "ಏನ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ಬ್ರಹ್ಮಹಾ ಕ್ಷಯರೋಗಿತ್ವಂ ದೊರ್ಮನ್ಯ ಗುರುತ್ವಗ: " ಮನುಂ ೧೧-೪೯।

ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ (ವಿಂ) 1. ತೋಳುಗಳಿಂದ ನದಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ದಾಟುವವನು. ದೋಷಾ ತರತಿ-ದೋಸ್ "ಠಕ್" (೪-೪-೪)। ಠಸ್ಯ "ಕ:" (ವಾಂ ೭-೩-೪೯)। 2. ತೋಳುಗಳಿಂದ ಸಂಚರಿಸುವವನು. ದೋಷಾ ಚರತಿ - "ಠಕ್" (೪-೪-೮)। "ಕ:" (ವಾಂ ೭-೩-೪೯)।

ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ (ವಿಂ) ನೀಚವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ದುಷ್ಟಂ ಕುಲಮಸ್ಯ ದುಷ್ಟುಲ:—ಸ್ವಾಥೆ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮)। "ನ ದುರ್ಜನೇ ದೊರ್ಮನ್ಯೇ ವಾ ವ್ರತೆಯೋ ವಾ ನ ಸಂಸ್ಕೃತ:" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೩೪-೩೮।

ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ (ಪುಂ) ನೀಚವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನ ಮಗ. ದುಷ್ಟುಲಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೪೨)। "ಕುಲೇ ಜಾತಾಶ್ಚ ಕಿಲಶ್ಯಂತೇ ದೊರ್ಮನ್ಯೇವಶಾನುಗಾ:" ಭಾಂ ವನಂ ೧೯೬-೨೩।

ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ (ನಂ) ದುಷ್ಟುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿರುವಿಕೆ. ದುಷ್ಟುಲಸ್ಯ ಭಾವ: "ಏನ್" (೬-೧-೧೨೪)। "ದೊರ್ಮನ್ಯ-

ಮಾಧಿ ವಿಘನೋತಿ ಶೀಘ್ರಂ ಮಹತ್ತಮಾನಾಮಭಿಧಾನಯೋಗ:" ಭಾಗಂ ೧-೧೮-೧೮।

ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ (ನಂ) ದುಷ್ಟತನ, ನೀಚತನ. ದುಷ್ಟಸ್ಯ ಭಾವ: "ಏನ್" (೪-೧-೧೨೪)।

ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ (ಪುಂ) ದುಷ್ಟತನ ಮಗ, ಭರತ ಚಕ್ರವರ್ತಿ. ದುಷ್ಟಂತಸ್ಯ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಐನ್" (೪-೧-೯೪)। "ದೊರ್ಮನ್ಯಂತಿಮಪ್ರತಿರಥಂ ತನಯಂ ನಿವೇಶ್ಯ" ಶಾಕುಂ ೪-೧೯।

ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ (ವಿಂ) ನಿತ್ಯವೂ ಕರೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಪ್ರತಿದಿನವೂ (ಹಾಲು) ಕರೆಯಲು ಅರ್ಹವಾದ (ಹಸು ಮೊದಲಾದುದು). ದೊಹಂ ನಿಯಮಹಂತಿ—ದೊಹ "ಠಕ್" (೪-೧-೬೪)।

ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಮೊಮ್ಮಗ, ಮಗಳ ಮಗ. ದುಹಿತುರಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೦೪)। "ಪೌತ್ರ-ದೊರ್ಮನ್ಯಯೋಲೋಕಿ ವಿಶೇಷೋ ನಾಸ್ತಿ ಕಶ್ಚನ। ತಯೋಹಿ ಮಾತಾಪಿತರೌ ಸಮ್ಮತೌ ತಸ್ಯ ದೇಹತ:" ಮನುಂ ೯-೧೩೩। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛಿಪ್" (೪-೧-೧೪)। -ತ್ರಿ-೨೯. ಮೊಮ್ಮಗಳು, ಮಗಳ ಮಗಳು. (ನಂ) 2. ತಿಲ, ಎಳ್ಳು. 3. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. 4. ಕಪಿಲವರ್ಣದ ಹಸುವಿನ ತುಪ್ಪ. "ದೊರ್ಮನ್ಯ ಸ್ವಾಮಿತ್ಯಾಹುರಪತ್ಯಂ ದುಹಿತುಸ್ತೀಲಾ:। ಕಪಿಲಾಯಾ ಧೃತಂ ಚೈವ ದೊರ್ಮನ್ಯಮಿತಿ ಚೋಚ್ಯತೇ"।

ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ (ಪುಂ) ದೊರ್ಮನ್ಯನ ಮಗ, ಮಗಳ ಮಗನ ಮಗ. ದುಹಿತುರನಂತರಾಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೦೪)। ಯುನಿ "ಫಕ್" (೪-೧-೧೦೦)।

ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ (ಮೇ) ದ್ಯಾವಾಪೃಥಿವೀ (ಮೇ) (ಸ್ತ್ರೀಂ ದ್ವಿವಂ) ಸ್ವರ್ಗ ಮತ್ತು ಭೂಮಿ. ದ್ಯಾವಾ ಪೃಥಿವೀ ಚ—ದಿವೋ ದ್ಯಾವಾದೇಶ: (೬-೩-೨೯)। "ದ್ಯಾವಾ" ಪದಕ್ಕೆ ಮೇದದಲ್ಲಿ ಭೂಮಿ ಎಂದು ಅರ್ಥ.

ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ (ವ್ಯೌ) ದ್ಯಾವಾಪೃಥಿವೀ (ವ್ಯೌ) (ಸ್ತ್ರೀಂ ದ್ವಿವಂ) ಸ್ವರ್ಗ ಮತ್ತು ಭೂಮಿ. ದ್ಯಾವಾ ಪೃಥಿವೀ ಚ—ದಿವೋ ದ್ಯಾವಾದೇಶ: (೬-೩-೩೦)। ದಿವೋ ದಿವಸಾದೇಶ:। ದಿವಸ್ಪೃಥಿವ್ಯೌ ದಿವಸ್ಪೃಥಿವ್ಯೌ.

ದೊರ್ಮನ್ಯ ದೊರ್ಮನ್ಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ ದ್ವಿವಂ) ಸ್ವರ್ಗ ಮತ್ತು ಭೂಮಿ. ದ್ಯಾವಾ ಭೂಮಿ—ದಿವೋ ದ್ಯಾವಾದೇಶ: (೬-೩-೨೯)।

ದ್ಯು - ಅಭಿಗಮನೇ (ಅದಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ)। ದ್ಯೌತಿ। ದ್ಯೌತಾ। ಅದ್ಯೌತಿತ್। ಇತ್ಯಾದಿ. ಎದುರಾಗಿ ಹೋಗು.

ದ್ಯು ದ್ಯು (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ದ್ಯು (ಅಭಿಗಮನೇ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬)। (ನಂ) 2. ದಿವಸ, ಹಗಲು.



“ಪಶಬಂಧು: ಕೋಹಿತೋ ಛುಶ್ಚ ಕಲಿ ಸ್ಯಾದರ್ಹದಿನಮ್” ವೈಜಂ |

3. ಗಗನ, ಆಕಾಶ. “ಆಕಾಶೇ ದಿವಸೇ ಚ ಛು:” ವೈಜಂ |

ಮೇದಿನೀಕೋಶದಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಯೆಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಪುಲಿಂಗ ವಾಗಿಯೂ ಹಗಲು ಮತ್ತು ಆಕಾಶವೆಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ನಪುಂಸಕಲಿಂಗವಾಗಿಯೂ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. “ಛು ಕಲಿಬಮಹ್ನಿ ಗಗನೇಽಪಿ ಚ | ನಾ ಜ್ವಲನೇ” ಮೇದಿಂ |

ಛುಗ ದ್ಯುಗ (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಛುನಿ ಗಗನೇ ಗಚ್ಛತಿ— ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ಛ:” (೩-೨-೯೭) | (ವಿಂ) 2. ಆಕಾಶ ದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ.

ಛುಚರ ದ್ಯುಚರ (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. 2. ಗ್ರಹ. 3. ವಿದ್ಯಾರಥಿ. ಛುನಿ ಚರತಿ—ಚರ (ಗತೌ) “ಛ:” (೩-೨-೯೬) | (ವಿಂ) 4. ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಛೀಪ್” (೪-೧-೧೫) | -ಚರೀ -ಚರೀ.

ಛುತ್ ದ್ಯುತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಿರಣ. 2. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. ಛೋತತೇ—ಛುತ (ದೀಪ್ತೌ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೯೭೭) |

ಛುತ—ದೀಪ್ತೌ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) | ಛೋತತೇ | ದಿಛುತೇ | ಛೋತಿತಾ | ಛೋತಿಷ್ಯತೇ | ಛೋತತಾಮ್ | ಅಛೋತತ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಪ್ರಕಾಶಿಸು, ಹೊಳೆ.

ಛುತು:—ಛೋತಿತವ್ಯಮ್ | ಛೋತನೀಯಮ್ | ಛೋತ್ಯಮ್ | ಛುತಿತಮ್, ಛೋತಿತಮ್ | ಛುತಿತವಾನ್, ಛೋತಿತವಾನ್, -ವತೀ | ಛೋತಮಾನ: | ಛೋತಿತುಮ್ | ಛುತಿತಮ್, ಛೋತಿತಮ್ | ಛೋತನಮ್ | ಛುತಿತ್ವಾ | ಪ್ರಛುತ್ಯ | ಛೋತಿತ್ವಾ | ಪ್ರಛೋತ್ಯ |

ಛುತಿ ದ್ಯುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಂತಿ, ಹೊಳಪು. ಛುತ (ದೀಪ್ತೌ) “ಛನ್” (೩ಂ ೪-೧೨೦) | “ಲೇಖೇ ಪರಾಂ ಛುತಿಮಮರ್ತ್ಯ-ವಭೂಸಮೂಹ:” ಕಿರಾಂ ೬-೪೬ | 2. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. “ಸುವರ್ಣಪುಷ್ಪಛುತಿರಜ್ಜಿತಾಙ್ಗುಲಿಮ್” ರಘುಂ ೩-೬೪ | 3. (ಸೂರ್ಯನ) ಪ್ರಭೆ. “ಽಽಣಾಂಶುಛುತಿಜನಿತ: ಕಪೋಲ-ರಾಗ:” ಕಿರಾಂ ೭-೩ |

ಛುತಿತ ದ್ಯುತಿತ (ನಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶ. ಬೆಳಕು. ಛುತ (ದೀಪ್ತೌ) ಭಾವೇ “ಕ್ತ:” (೩-೩-೧೧೪) | ವಾ ಕಿತ್ವಾಭಾವ: | ಪಕ್ಷೇ ಛೋತಿತಮ್ ದ್ಯುತಿತಮ್. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ. ಛುತ ಕರ್ತಂ “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨) |

ಛುತಿಧರ ದ್ಯುತಿಧರ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಛುತಿ ತಾರುಣ್ಯೇಽಪಿ ಇಂದ್ರಾಭಿಭಾವುಕಾಂ ದೀಪ್ತಿ ಧರತಿ—ಧೃತ್ (ಧಾರಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) | ಷಠೀತಪುರುಷ: | “ಅಮಾನುಷೀ ಯೋ ಧೃತವಾನ್ ಛುತಿಮೇಂದ್ರಾಭಿಭಾವುಕಾಮ್ | ಸ್ಯಾತ: ಸ ಹಿ ಛುತಿಧರ: ವಸ್ವರ್ಣ: ಕಾಂತಿದೋ ಮನು:” ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ: | “ತೇಜೋವೃಷೋ ಛುತಿಧರ:” ವಿಂ ಸಂ |

ಛುತಿಮತ್ ದ್ಯುತಿಮತ್ (ಪುಂ) 1. ಸಾಲ್ವದೇಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. 2. ಮದಿರಾಶ್ವನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. 3. ಮದ್ರದೇಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಸಹದೇವನ ಮಾವ. “ಸಹದೇವಸ್ತು ಮಾದ್ರೀಮೇವ ಸ್ವಯಂವರೇ ವಿಜಯಾಂ ನಾಮೋಪಯೇಮೇ ಮದ್ರರಾಜಸ್ಯ ಛುತಿಮತೋ ದುಹಿತರಮ್” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೪ | 4. ಅಧಿಕಾಂತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ. ಛುತಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ—“ಮತುಪ್” (೫-೨-೯೪) | “ನವವಿನಿರ್ದ್ರಜಪಾಕ್ಸುಮತ್ವಿಷಾಂ ಛುತಿಮತಾಂ ನಿಕರೇಣ ಮಹಾ-ಶಮನಾಮ್” ಕಿರಾಂ ೫-೮ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಛೀಪ್” (೪-೧-೬) | -ಮತೀ -ಮತೀ.

ಛುನ ದ್ಯುನ (ನಂ) ಲಗ್ನದಿಂದ ಏಳನೆಯ ಸ್ಥಾನ.

ಛುಧುನಿ ದ್ಯುಧುನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವನದಿ, ಗಂಗಾನದಿ.

ಛುನಿವಾಸ ದ್ಯುನಿವಾಸ (ಪುಂ) ದೇವತೆ. ಛುನಿ ನಿವಾಸೋಽಸ್ಯ |

ಛುನಿವಾಸಭ್ಯ ದ್ಯುನಿವಾಸಭೂಯ (ನಂ) ದೇವತ್ವ, ದೇವ ಭಾವ. ಛುನಿವಾಸಸ್ಯ ಭಾವ:—ಭೂ “ಕೃಪ್” (೩-೧-೧೦೭) | “ಶೋಕಾಗ್ನಿನಾಽಗಾಧಛುನಿವಾಸಭೂಯಮ್” ಮೃದ್ವಿಂ ೩-೨೧ |

ಛುಪತಿ ದ್ಯುಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. 2. ಸೂರ್ಯ.

ಛುಪಥ ದ್ಯುಪಥ (ಪುಂ) ಆಕಾಶ.

ಛುಮಣಿ ದ್ಯುಮಣಿ (ಪುಂ) 1. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. ದಿವೋ ಮಣಿರಿವ | 2. ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. “ಜ್ಯೋತಿರಿಜ್ಞಣವತ್ಸಸ್ಯ ಛುಮಣೇರಿವ ಸನ್ನಿಧಿ” ಯಾದಂ ೧೬-೩೪ |

ಛುಮತ್ಸೇನ ದ್ಯುಮತ್ಸೇನ (ಪುಂ) ಸಾಲ್ವದೇಶದ ದೊರೆ, ಸತ್ಯವಂತನ ತಂದೆ, ಸಾವಿತ್ರಿಯ ಮಾವ. [ದ್ಯುಮತ್ಸೇನನು ರಾಜ್ಯವಾಳುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ ಇವನು ಕುರುಡ ನಾಗಲು ಶತ್ರುಗಳು ಇವನನ್ನು ರಾಜ್ಯಭ್ರಷ್ಟನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಓಡಿಸಿದರು. ಈತನ ಮಗನಾದ ಸತ್ಯವಂತನು ಒಂದು ದಿನ ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಸೌದೆಯನ್ನು ಒಡೆಯುತ್ತಿದ್ದಾಗ ತಂದೆಯಿಂದ ಪ್ರೇರಿತಳಾಗಿ ತನಗೆ ಯೋಗ್ಯನಾದ ಪತಿ ಯನ್ನು ಹುಡುಕಲು ಹೊರಟಿದ್ದ ಅಶ್ವಪತಿಯ ಮಗಳಾದ ಸಾವಿತ್ರಿಯು ಈತ (ಸತ್ಯವಂತ) ನನ್ನು ಕಂಡು ಇವನೇ ತನಗೆ ಯೋಗ್ಯಪತಿಯೆಂದು ತಂದೆಗೆ ತಿಳಿಸಿ ಅವನನ್ನು ಮದುವೆಯಾದಳು. ಅಲ್ಪಾಯುವಾದ ಸತ್ಯವಂತನು ಪಂಚತ್ವ (ಮರಣ) ಹೊಂದಲು ಸತೀಮಣಿಯಾದ ಸಾವಿತ್ರಿಯ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಂತೆ ಯಮಧರ್ಮರಾಯನು ಸತ್ಯವಂತನಿಗೆ ದೀರ್ಘಾಯುಸ್ಸನ್ನೂ ದ್ಯುಮತ್ಸೇನನಿಗೆ ಕಣ್ಣು ಮತ್ತು ರಾಜ್ಯಗಳನ್ನೂ ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದನು.] 2. ಸಾಲ್ವ ದೇಶದ ಇನ್ನೊಬ್ಬ ದೊರೆ. [ಈತನು ರಾಜಸೂಯ ಯಾಗದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ದಿಗ್ವಿಜಯಕ್ಕೆ ಹೊರಟಿದ್ದ ಅರ್ಜುನ ನಿಂದ ಜಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟನು.]



**ಉಮಯಿ ದ್ಯುಮಯಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಶ್ವಕರ್ಮನ ಮಗಳು, ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ. "ಸ್ವರೇಣ್ಯುಮಯಿ ತ್ವಾಷ್ಟ್ರಿ ಪ್ರಿಯೆ ಚೇತೆ ವಿಭಾವಸೋ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಉಮ್ನ ದ್ಯುಮ್ನ** (ನಂ) 1. ಧನ, ಹಣ. ದಿವ್ ಮನತಿ-ಮಾ (ಅಮ್ಯಾಸೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩) । 2. ಬಲ, ಶಕ್ತಿ, ಪರಾಕ್ರಮ. "ಉಮ್ನ ವಿಸ್ತೇ ಪರಾಕ್ರಮೇ" ನಾನಾರ್ಥಂ ।

**ಉಲೋಕ ದ್ಯುಲೋಕ** (ಪುಂ) ದೇವಲೋಕ, ಸ್ವರ್ಗಲೋಕ. ಛೋರೇವ ಲೋಕ: ।

**ಉಸದ್ ದ್ಯುಸದ್** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. 2. ಸೂರ್ಯಾದಿ ಗ್ರಹಗಳು. ದಿವಿ ಸಿದತಿ-ಏದ್ (ವಿಶರಣಾದಿ) "ಕಿವ್" (೩-೨-೬೧) । "ಭಯಸ್ಯ ಪೂರ್ವಾಂತರಸ್ತರಸ್ವಿನಾ ಮನಸ್ಸು ಯೇನ ಉಸದಾಂ ನ್ಯಯೀಯತ" ಮಾಘಂ ೧-೪೩ ।

**ಉ ದ್ಯು** (ವಿಂ) ಅಟವಾಡುವವನು. ಬಿವ್ಯತಿ - ದಿವು (ಕ್ರೋಡಾದಿ) "ಕಿವ್" (೩-೨-೭೬) । ಋಠ್ (೬-೪-೧೯) ।

**ಉತ ದ್ಯುತ** (ಪುಂ) 1. ಜೂಜು, ಅಟ. ದಿವು (ಕ್ರೋಡಾದಿ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) । 2. ಪಗಡೆಯಾಟ. "ಕಿ ತೇ ಉತೇನ ರಾಜೇಂದ್ರ ಬಹುದೋಷೇಣ ಮಾನದ । ದೇವೇನ ಬಹವೋ ದೋಷಾಸ್ತಸ್ಮಾತ್ತತ್ಪರಿವರ್ಜಯೇತ್ । ಶ್ರುತೋ ವಾ ಯದಿ ವಾ ದೃಷ್ಟೋ ಧರ್ಮರಾಜೋ ಯುಷ್ಥಿಷ್ಠಿರ: । ಸ ರಾಜ್ಯಂ ಧನಮಕ್ಷಯ್ಯಂ ಪಣಮೇಕ-ಮಮನ್ಯತ" ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೭೦-೭, ೮ ।

**ಉತಕರ ದ್ಯುತಕರ** (ಪುಂ) 1. ಅಟಗಾರ, ಜೂಜಾಟದವನು. ಉತಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣೇ) "ಠ:" (೩-೨-೨೦) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೧೫) । -ಕರೀ -ಕರೀ ।

**ಉತಕಾರ ದ್ಯುತಕಾರ** (ವಿಂ) ಜೂಜಾಡುವವನು, ಅಟ ವಾಡುವವನು. ಉತಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣೇ) "ಅಣ್" (೩-೨-೧) ।

**ಉತಕಾರಕ ದ್ಯುತಕಾರಕ** (ವಿಂ) 1. ಜೂಜಾಡುವವನು, ಅಟವಾಡುವವನು. ಉತಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣೇ) "ಞ್" (೩-೧-೧೩೩) । 2. ಜೂಜನ್ನು ಆಡಿಸುವವನು. ಉತಂ ಕಾರಯತಿ-ಡು ಕೃನ್+ಣಿವ್ "ಞ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

**ಉತಕೃತ್ ದ್ಯುತಕೃತ್** (ವಿಂ) ಜೂಜಾಡುವವನು, ಅಟ ವಾಡುವವನು. ಉತಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣೇ) "ಕಿವ್" (೩-೨-೭೬) ।

**ಉತದಾಸ ದ್ಯುತದಾಸ** (ಪುಂ) ಜೂಜಿನಲ್ಲಿ ಗೆಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟು ದಾಸ ನಾಗಿರುವವನು, ಜೂಜಿನಲ್ಲಿ ಸೋತು ಸೇವಕನಾಗಿರುವವನು. ಉತೇ ಜಿತೋ ದಾಸ: । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ದಾಸೀ -ದಾಸೀ । "ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾಂ ಭೂಪತೀನಾಂ ಮಮ ಭುವನಪತೇರಾಜಯಾ ಉತದಾಸೀ" ವೇಣೀಂ ೫-೩೦ ।

**ಉತಧರ್ಮ ದ್ಯುತಧರ್ಮ** (ಪುಂ) ಜೂಜಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಧರ್ಮ, ಜೂಜಾಟದ ವ್ಯವಸ್ಥೆ. ಉತಸ್ಯ ಧರ್ಮ: । "ಕ್ರಮಶಃ ಕ್ಷೇತ್ರಜಾದೀನಾಂ ಉತಧರ್ಮ ನಿಬೋಧತ" ಮನುಂ ೯-೨೨೦ ।

**ಉತಪೂರ್ಣಿಮಾ ದ್ಯುತಪೂರ್ಣಿಮಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಶ್ವಯುಜ ಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. [ಲಕ್ಷ್ಮೀದೇವಿಯ ಪ್ರೀತ್ಯರ್ಥವಾಗಿ ಈ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ದಿನ ಜನರು ರಾತ್ರಿಯೆಲ್ಲಾ ಅಟದಲ್ಲೇ ಕಾಲ ಕಳೆಯುತ್ತಾರೆ. ಇದಕ್ಕೆ "ಕೋಜಾಗರಪೂರ್ಣಿಮಾ" ಎಂದೂ ಹೆಸರು.]

**ಉತಪ್ರತಿಪದ್ ದ್ಯುತಪ್ರತಿಪದ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ತಿಕ ಶುದ್ಧ ಪಾಡ್ಯ. ಉತಾರ್ಥಿ ಪ್ರತಿಪತ್ । [ಈ ಪಾಡ್ಯದ ದಿವಸ ಜನರು ಜೂಜಾಡುವ ಪದ್ಧತಿ.]

**ಉತಪ್ರಿಯ ದ್ಯುತಪ್ರಿಯ** (ಪುಂ) ಜೂಜಾಟದಲ್ಲಿ ಇಷ್ಟವುಳ್ಳವನು.

**ಉತವೃತ್ತಿ ದ್ಯುತವೃತ್ತಿ** (ಪುಂ) ಜೂಜನ್ನೇ ಕಸಬನ್ನಾಗಿಟ್ಟು ಕೊಂಡಿರುವವನು, ಜೂಜಿನಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು, ಜೂಜು ಕಟ್ಟಿಯಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ಅಟವಾಡಿ ಅದರಿಂದ ಬಂದ ಹಣದಿಂದ ಜೀವನ ನಡೆಸುವವನು. ಉತಂ ವೃತ್ತಿರ್ಜೀವಿಕಾ ಯಸ್ಯ । "ಮಿತ್ರಧ್ರುಕ್ ಉತವೃತ್ತಿಶ್ಚ ಪುತ್ರಾಚಾರ್ಯಸ್ತಥೇವ ಚ" ಮನುಂ ೩-೧೬೦ ।

**ಉತಶಾಲಾ ದ್ಯುತಶಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೂಜಿನ ಮನೆ. ಉತಸ್ಯ ಶಾಲಾ ।

**ಉತಾಧಿಕಾರಿನ್ ದ್ಯುತಾಧಿಕಾರಿನ್** (ಪುಂ) ಜೂಜಿನ ಮನೆಯ ಯಜಮಾನ, ಜೂಜಿನ ಕಟ್ಟಿಯನ್ನು ನಡೆಸುವವನು.

**ಉತಾಧ್ಯಕ್ಷ ದ್ಯುತಾಧ್ಯಕ್ಷ** (ಪುಂ) ಜೂಜಿನ ಯಜಮಾನ, ಜೂಜನ್ನು ನಡೆಸುವವನು.

**ಉನ್ ದ್ಯುನ್** (ನಂ) ಲಗ್ನದಿಂದ ಏಳನೆಯ ಸ್ಥಾನ. "ಛೂನಜನ್ಮ-ರಿಪುಲಾಭಃಪ್ರತಿಗ್ರಾಹ್ಯಾನ್ಮರ್ಮಾಃ ಶುಭಫಲಪ್ರದಸ್ತಥಾ" ।

**ಛೋ ದ್ಯೋ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ. ಛೋತಂತೇ-ಸ್ಯಾಮ್-ಛುತ (ದೀಪ್ತೀ) "ಛೋ:" ಬಾಹುಂ । ಛೋ: ಛಾವೋ ಛಾವ: ಇತ್ಯಾದಿ ಗೋ ಶಬ್ದದಂತೆ ರೂಪಗಳು. 2. ಗಗನ, ಆಕಾಶ. "ಛೋ: ಸ್ವರ್ಗಸುರವರ್ಮನೋ:" ವಿಶ್ವಂ । "ಛೋರವಾಹ ಪರಿವೃತ್ತಿ-ವಿಲೋಲಾಂ ಹಾರಯಿಷ್ಠಿಮಿವ ವಾಸರಲಕ್ಷ್ಮೀಮ್" ಕಿರಾಂ ೯-೨ ।

**ಛೋತ ದ್ಯೋತ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯನ ಪ್ರಕಾಶ, ಬಿಸಿಲು. 2. ಪ್ರಕಾಶ. ಬೆಳಕು. ಛುತ (ದೀಪ್ತೀ) ಭಾವೇ "ಞ್" (೩-೩-೧೮) ।

**ಛೋತಕ ದ್ಯೋತಕ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುವ. 2. ಸೃಷ್ಟಿ ಪಡಿಸುವ. 3. ವಿವರಿಸಿ ತೋರಿಸುವ. 4. ಸೂಚಿಸುವ. ಹೊರಗೆಡಹುವ, ಛುತ (ದೀಪ್ತೀ) "ಞ್" (೩-೧-೧೩೩) ।



**ಛೋತನ ದ್ಯೋತನ** (ಪುಂ) 1. ದೀಪ. ಛುತ (ದೀಪ್ತ) "ಯುಕ್" (೩-೨-೪೯)। (ನಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. ಛುತ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 3. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುವಿಕೆ. ಛುತ+ಣಿಕ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। (ವಿಂ) 4. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುವ. ಛುತ+ಣಿಕ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। 5. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ. ಛುತ "ಯುಕ್" (೩-೨-೧೪೯)। "ವಿಲೋಕ್ಯ ಛೋತನಂ ಚಂದ್ರಂ ಲಕ್ಷ್ಮಣಂ ಶೋಚನೋಽವದತ್" ಭट्टಿಂ ೭-೧೫। 6. ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸುವ. 7. ಸೂಚಿಸುವ. 8. ವಿವರಿಸಿ ತೋರಿಸುವ.

**ಛೋತನಿಕಾ ದ್ಯೋತನಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿವರಣೆ, ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ.

**ಛೋತಮಾನ ದ್ಯೋತಮಾನ** (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ.

ಛುತ (ದೀಪ್ತ) "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)।

**ಛೋತಯತ್ ದ್ಯೋತಯತ್** (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ.

ಛುತ (ದೀಪ್ತ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।

"ತೇ ಪ್ರಭಾಮಂಡಲೈರ್ವ್ಯೋಮ ಛೋತಯಂತಸ್ತಪೋಧನಾಃ" ಕುಮಾಂ ೬-೪।

ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

**ಛೋತಯಮಾನ ದ್ಯೋತಯಮಾನ** (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ.

ಛುತ (ದೀಪ್ತ) + ಣಿಕ್ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)।

"ದಿಶೋ ಛೋತಯಮಾನಾಭಿದಿವ್ಯನಾರೀಭಿರಾಕುಲಮ್" ಭट्टಿಂ ೮-೪೬।

**ಛೋತಿತ ದ್ಯೋತಿತ** (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಛುತ (ದೀಪ್ತ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಛೋತಿತಾಂತ:ಸಮೈ: ಕುಂದಕುಡ್ಮಲಾಗ್ರದತ: ಸ್ಮಿತೆ:" ಮಾಘಂ ೨-೭।

**ಛೋಭೂಮಿ ದ್ಯೋಭೂಮಿ** (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಛೋರಾಕಾಶೋ ಭೂಮಿಗತಿಸ್ಥಾನಂ ಯಸ್ಯ। (ಸ್ತ್ರೀಂ ದ್ವಿವಂ) 2. ಆಕಾಶ ಮತ್ತು ಭೂಮಿ.

**ಬ್ರಗಡ ದ್ರಗಡ** (ಪುಂ) ಭೇರಿ, ನಗಾರಿ. ಬ್ರ ಇತಿ ಗಡತಿ-ಗಡ (ಸೇವನೆ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಬ್ರಗಡ: ಪ್ರತಿಪತ್ತಯಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಬ್ರಹ್ಮ ದ್ರಂಗ** (ಪುಂ) ಸಣ್ಣ ಪಟ್ಟಣ. "ಕರ್ವತಾದಧಮೋ ಬ್ರಹ್ಮ: ಪತ್ತನಾದುತ್ತಮಶ್ಚ ಸ:"।

**ಬ್ರಹ್ಮಿಮನ್ ದ್ರಧಿಮನ್** (ಪುಂ) "ದಾರ್ಢ್ಯ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ದೃಢಸ್ಯ ಭಾವ: "ಇಮನಿಕ್" (೪-೧-೧೨೨)। "ಹೃದಯ-ಮರಿವಧೋದಯಾದುರ್ದೃಢಬ್ರಹ್ಮಿಮ ದಧಾತು ಪುನ: ಪುರಂದರಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೧-೭೪।

**ಬ್ರಹ್ಮಿಠ ದ್ರಧಿಷ್ಠ** (ವಿಂ) ಬಹು ಮಂದಿಗಳಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ದೃಢ ನಾದ, ಅನೇಕ ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ದೃಢವಾದ, -ಸ್ಥಿರ ವಾದ. ಅಯಮೇವಾಮತಿಶಯೇನ ದೃಢ: "ಇಠನ್" (೪-೩-೫೫)।

**ಬ್ರಹ್ಮೀಯಸ್ ದ್ರಧೀಯಸ್** (ವಿಂ) ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಬಲಶಾಲಿ ಯಾದ, ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ದೃಢವಾದ, -ಸ್ಥಿರ ವಾದ. ಅಯಮನಯೋರತಿಶಯೇನ ದೃಢ: "ಇಯಸುನ್" (೪-೩-೫೭)। "ಶಾರ್ಙ್ಗಂ ಧನುರ್ಮಿತ್ರಮಿವ ಬ್ರಹ್ಮೀಯ:" ಮಾಘಂ ೩-೨೦। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

**ಬ್ರಹ್ಮ ದ್ರಹ್ಮ** (ನಂ) ತೆಳುವಾದ ಮೊಸರು, ಮಜ್ಜೆಗೆ, ನೀರು ಬೆರೆಸಿದ ಗಟ್ಟಿಯಲ್ಲದ ಮೊಸರು. ದೃಢವಾದದಿಂದ -ದೃಢ (ಹರ್ಷಾದಿ) "ಅಮ್" (೬-೧-೫೯)। ಬಾಹುಂ ಸ:। "ಬ್ರಹ್ಮ ದಧಿ ಧನೇತರತ್" ಅಮಂ।

**ಬ್ರಹ್ಮಿಡ ದ್ರಮಿಡ** (ಪುಂ) ಮೊದಲು ವೈಶ್ಯನ ಪತ್ನಿಯಾಗಿದ್ದ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಸಂಸ್ಕಾರಹೀನನಾದ ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಂದ ಜನಿಸಿದವನು. "ಲಿಚ್ಛಿವಿ ಕ್ಷತ್ರಿಯಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಾಜ್ಞಹಂ ಸಾ ವಿಪ್ರಪೂರ್ವಿಕಾ। ಸಾ ವೈಶ್ಯಪೂರ್ವಾ ಬ್ರಹ್ಮಿಡಮ್" ವೇಜಂ।

**ಬ್ರಹ್ಮ ದ್ರಮ್ಯ** (ಪುಂ) ಹದಿನಾರು ಪಣಗಳು.

20 ಕವಡೆಗಳು .. 1 ಕಾಕಿಣಿ

4 ಕಾಕಿಣಿಗಳು .. 1 ಪಣ

16 ಪಣಗಳು .. 1 ದ್ರಮ್ಯ.

"ವರಾಡಕಾನಾಂ ದಶಕದ್ವಯಂ ಯತ್ ಸಾ ಕಾಕಿಣಿ ತಾಶ್ಚ ಪಣಶ್ಚತಸ್ರ:। ತೇ ಷೋಡಶ ಬ್ರಹ್ಮ ಇಹಾಪಿ ಕೀರ್ತಿತೋ ಬ್ರಹ್ಮಮೆಸ್ತಥಾ ಷೋಡಶಭಿಶ್ಚ ನಿಷ್ಕ:"।

**ಬ್ರಹ್ಮ ದ್ರವ** (ಪುಂ) 1. ರಸ, ಹಣ್ಣು ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಸಾರ. ದ್ರ (ಗತೀ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭)। 2. ಪ್ರವಹಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ ವಸ್ತು. 3. ಪಲಾಯನ, ಓಡುವುದು. "ತತೋ ದೈತ್ಯಬ್ರಹ್ಮಕರಂ ಪೋರಾಣಾಂ ಶಾಸ್ತ್ರಮುತ್ತಮಮ್" ಹರಿವಂ। 4. ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ಪರಿಹಾಸ, ಕಾಮುಕ ಕಾಮುಕಿಯರ ಕ್ರೀಡೆ. 5. ವೇಗ. 6. ಗತಿ, ಗಮನ, ಚಲನ. 7. ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. (ವಿಂ) 8. ದ್ರವವಾದ, ನೀರಾದ, ಹರಿಯುವ ಸ್ವಭಾವದ. "ಬ್ರಹ್ಮ: ಸಂಘಾತಕಠಿಣ: ಸ್ಥೂಲ: ಸೂಕ್ಷ್ಮ: ಲಘುಗುಹ:" ಕುಮಾಂ ೨-೧೧। 9. ಸೋರುವ ಸ್ವಭಾವದ. 10. ಒದ್ದೆಯಾದ, ತೇವವಾದ. "ಪ್ರಸಾಧಿಕಾಲಮ್ಬಿತಮಗ್ರಪಾದಮಾಕ್ಷಿಪ್ಯ ಕಾಚಿದ್ಬ್ರಹ್ಮರಾಗಮೇವ" ರಘುಂ ೭-೭। 11. ವೇಗವಾದ, ಓಡುತ್ತಿರುವ.

**ಬ್ರಹ್ಮಕ ದ್ರವಕ** (ವಿಂ) 1. ಓಡುವ ಸ್ವಭಾವದ. 2. ಸೋರುವ ಸ್ವಭಾವದ.

**ಬ್ರಹ್ಮಜ ದ್ರವಜ** (ಪುಂ) 1. ಬೆಲ್ಲ. 2. ಕಾಕಂಬಿ. (ವಿಂ) 3. ದ್ರವವಸ್ತುವಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಬ್ರಹ್ಮಾತ್ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರಭವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೯೮)।

**ಬ್ರಹ್ಮತ್ ದ್ರವತ್** (ವಿಂ) 1. ಓಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಸುರಿಯುತ್ತಿರುವ, ಸೋರುತ್ತಿರುವ. ದ್ರ (ಗತೀ) "ಶತ್"



(೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಂತಿ  
-೨೨.

**ದ್ರವಂತಿ ದ್ರವಂತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನದಿ, ಹೊಳೆ. 2. ಇಲಿ  
ಯಾಲದ ಗಿಡ. ದ್ರವತಿ-ಝ (ಗತೌ) "ಶತೃ" (೩-೨-೧೨೪) ।  
"ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) । "ಸವಂತಿ ಚ ದ್ರವಂತಿಪಿ । ನದೀ-  
ಮೋಷಧಿಭೇದೇ ಚ" ಹೇಮಂ ।

**ದ್ರವಾಧಾರ ದ್ರವಾಧಾರ** (ಪುಂ) 1. ದ್ರವವಸ್ತುವಿಗೆ ಆಧಾರ  
ವಾದ ಪಾತ್ರೆ. 2. ಚುಲಕ, ನೀರು ನಿಲ್ಲುವಂತೆ ಗುಳಿಯಾಗಿ  
ರುವ ಅಂಗೈ. ದ್ರವಸಾಧಾರ: ।

**ದ್ರವಿಡ ದ್ರವಿಡ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ದ್ರವಿಡದೇಶ. 2. ದ್ರವಿಡ  
ದೇಶದ ಜನರು. ಅಂಧರು ಕನ್ನಡಿಗರು ಗುರ್ಜರರು  
ದ್ರವಿಡರು ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರದವರು ಇವರು ದ್ರವಿಡದೇಶ  
ದವರು. "ಆಂಧ್ರಾ: ಕರ್ಣಾಟಕಾಶ್ಚೈವ ಗುರ್ಜರಾ ದ್ರವಿಡಾಸ್ತಥಾ ।  
ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರಾ ಇತಿ ಸ್ವಾತಾ: ಪಶ್ಚತ್ತೇ ದ್ರವಿಡಾ: ಸ್ಮೃತಾ: " ।  
3. ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ವ್ಯಾತ್ಯಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿ-  
ದವನು. 4. ಪರಶುರಾಮನ ಭಯದಿಂದ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಧರ್ಮ  
ವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದ ಕ್ಷತ್ರಿಯ. "ತತಸ್ತು ಕ್ಷತ್ರಿಯಾ: ಕೇಚಿಜ್ಜಾಮ-  
ದಗ್ನ್ಯಭಯಾದಿತಾ: । ವಿವಿಶುಗಿರಿದುರ್ಗಾಣಿ ಮೃಗಾ: ಸಿಂಹಾದಿತ  
ಇವ" ॥

**ದ್ರವಿಣ ದ್ರವಿಣ** (ನಂ) 1. ಧನ, ಹಣ. ದ್ರವತಿ-ಝ (ಗತೌ)  
"ಇನನ್" (೩ಂ ೨-೫೦) । "ದ್ರವಿಣಂ ಪರಿಮಿತಮಮಿತವ್ಯ-  
ಯಿನಂ ಜನಮಾಕುಲಿಕುಸ್ತೇ । ಕ್ಷೀಣಾಶ್ಚಲಮಿವ ಪೀನಸ್ತನಜಘನಾಃ  
ಕುಲಿನಾಃ" । 2. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. "ತೇಷಾಂ ಸದಶ್ಚ-  
ಭೂಯಿಷ್ಠಾಸ್ತುಜ್ಞಾ ದ್ರವಿಣರಾಶಯ: " ರಘುಂ ೪-೭೦ । 3. ಬಲ,  
ಶಕ್ತಿ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. 4. ಗೃಹ, ಮನೆ. 5. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವ  
ಲೋಕ. 6. ಶೌರ್ಯ, ಪರಾಕ್ರಮ. "ದ್ರವಿಣಂ ಗೇಹೇ  
ವಿತ್ತೇ ಸ್ವರ್ಗೋ ಪರಾಕ್ರಮೇ" ನಾನಾರ್ಥರಂ । "ಬಭೂವತುಸ್ತತಸ್ತಸ್ಯ  
ಪಕ್ಷೌ ದ್ರವಿಣವತ್ತರೌ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೧೩-೨೦ ।

**ದ್ರವಿಣಕ ದ್ರವಿಣಕ** (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿಯ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಅಗ್ನೇರ್ಭಾರ್ಯಾ  
ವಸೋಧರಾ ಪುತ್ರಾ ದ್ರವಿಣಕಾದಯ: " ಭಾಗಂ ೬-೬-೧೩ ।

**ದ್ರವಿಣನಾಶನ ದ್ರವಿಣನಾಶನ** (ಪುಂ) ನುಗ್ಗಿಗಿಡ. ದ್ರವಿಣ  
ನಾಶಯತಿ - ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) ।  
ನುಗ್ಗಿ ಸೊಪ್ಪನ್ನು ತಿನ್ನುವುದರಿಂದ ಧನಹಾನಿ ಸಂಭವಿಸುವ  
ಕಾರಣ ಈ ಹೆಸರು.

**ದ್ರವಿಣಪ್ರದ ದ್ರವಿಣಪ್ರದ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ದ್ರವಿಣಂ ತದ್ವಿಧಾನ-  
ವಿಧಿನಾ ಸಮಗ್ರಂ ಶಾಸ್ತ್ರತದರ್ಥರೂಪಂ ಧನಂ ಪ್ರದದಾತಿ - ಪ್ರ+ಙು  
ದಾಜ್ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೬) । "ಶಾಸ್ತ್ರಂ ತದರ್ಥ  
ದ್ರವಿಣಂ ಪ್ರದದಾತಿ ಜನಾಯ ಯ: । ವ್ಯಾಸೋ ಭೂತ್ವಾ ಹರಿ: ಸಾಕ್ಷಾತ್

ದ್ರವಿಣಪ್ರದ ಉಚ್ಯತೇ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । "ದಾರುಣೋ ದ್ರವಿಣಪ್ರದ:"  
ವಿಂ ಸಂ । 2. ಧನವನ್ನು ಕೊಡುವ, ಐಶ್ವರ್ಯವನ್ನು  
ಕೊಡುವ.

**ದ್ರವಿಣಾಧಿಪ ದ್ರವಿಣಾಧಿಪ, -ಅಧಿಪತಿ -ಅಧಿಪತಿ** (ಪುಂ)  
ಕುಬೇರ.

**ದ್ರವಿಣೋದಯ ದ್ರವಿಣೋದಯ** (ಪುಂ) ಧನಾಗಮ, ಧನ  
ಪ್ರಾಪ್ತಿ. ದ್ರವಿಣಸ್ಯೋದಯ: । "ಪರಾಙ್ಮುಖೇ ವಿಧೌ ಚೇತ್ಸ್ಯಾತ್  
ಕಥಂಚಿದ್‌ದ್ರವಿಣೋದಯ:" ಪಶ್ಚತಂ ।

**ದ್ರವ್ಯ ದ್ರವ್ಯ** (ನಂ) 1. ಧನ, ವಿತ್ತ, ಹಣ. ದ್ವರಿವ ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷ  
ಇವ "ಯ:" (೫-೩-೧೦೪) । "ಏಕಮೇವ ದಹತ್ಯಗ್ನಿನರಂ  
ದುರಪಸರ್ಪಿಣಮ್ । ಕುಲಂ ದಹತಿ ರಾಜಾಗ್ನಿ: ಸಪಶುದ್ರವ್ಯಸಂಚಯಮ್"  
ಮನ್ವಂ ೭-೯ । 2. ವಸ್ತು, ಪದಾರ್ಥ. 3. ಮಂಗಳ  
ವಸ್ತು, ಶುಭಸೂಚಕವಸ್ತು, ಹರ್ಷವಂಟುಮಾಡುವ  
ಸಂಪತ್ತು. "ನ ಕಿಂಚಿದಪಿ ಕುರ್ವಾಣಿ: ಸೌಖ್ಯೇದ್ದು:ಖಾನ್ಯಪೋಹತಿ ।  
ತತ್ತಸ್ಯ ಕಿಮಪಿ ದ್ರವ್ಯಂ ಯೋ ಹಿ ಯಸ್ಯ ಪ್ರಿಯೋ ಜನ:" ೩ಂ ರಾಂ  
೨-೧೯ । 4. ವಿಲೇಪನ, ಹಚ್ಚುವ ಮುಲಾಮು. 5. ಮದ್ಯ,  
ಹೆಂಡ. 6. ಔಷಧಿ, ಮೂಲಿಕೆ. 7. ಕಾಂಕ್ಷೆ, ಕಂಚು.  
8. (ಕ) ನೈಯಾಯಿಕ ಮತದಲ್ಲಿ ಸಪ್ತ ಪದಾರ್ಥಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು. "ದ್ರವ್ಯಂ ಗುಣಸ್ತಥಾ ಕರ್ಮ ಸಾಮಾನ್ಯಂ ಸವಿಶೇಷಕಮ್ ।  
ಸಮವಾಯಸ್ತಥಾಽಭಾವ: ಪದಾರ್ಥಾ: ಸಪ್ತ ಕೀರ್ತಿತಾ:" ಭಾಷಾಪಂ ।  
ಈ ದ್ರವ್ಯಪದಾರ್ಥವು (1) ಪೃಥಿವಿ, (2) ಜಲಮ್ (ನೀರು),  
(3) ತೇಜ:, (4) ವಾಯು:, (5) ಆಕಾಶ:, (6) ಕಾಲ:,  
(7) ದಿಕ್, (8) ಆತ್ಮಾ ಮತ್ತು (9) ಮನ: ಎಂದು  
ಒಂಬತ್ತು ವಿಧ. "ಕ್ಷಿಪ್ರಪ್ತೇಜೋಮರುದ್ವ್ಯೋಮಕಾಲದಿಗದೇಹಿನೋ  
ಮನ: । ದ್ರವ್ಯಾಣಿ" ಭಾಷಾಪಂ । (ಖ) ವೈದ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ  
ದಲ್ಲಿ (1) ರಸ:, (2) ಗುಣ:, (3) ವೀರ್ಯಮ್, (4) ವಿಪಾಕ:  
ಮತ್ತು (5) ಶಕ್ತಿ: ಎಂದು ಈ ಐದೂ ಸೇರಿ ದ್ರವ್ಯವೆನಿಸು  
ವುದು. "ರಸೋ ಗುಣಸ್ತಥಾ ವೀರ್ಯಂ ವಿಪಾಕ: ಶಕ್ತಿರೇವ  
ವಾ । ಪಶ್ಚಾನ್ತಾಂ ಯ: ಸಮಾಹಾರ: ತದ್ದ್ರವ್ಯಮಿತಿ ಕೀರ್ತಯಂತೇ ।  
(ಗ) ದ್ವೈತಮತದಲ್ಲಿ (1) ಪರಮಾತ್ಮಾ, (2) ಲಕ್ಷ್ಮಿ:,  
(3) ಜೀವಾತ್ಮಾ, (4) ಅವ್ಯಾಕೃತಾಕಾಶ:, (5) ಪ್ರಕೃತಿ:,  
(6) ಗುಣತ್ರಯಮ್, (7) ಮಹತ್ತತ್ವಮ್, (8) ಅಹಂಕಾರತತ್ವಮ್,  
(9) ಬುದ್ಧಿ:, (10) ಮನ:, (11) ಇಂದ್ರಿಯಮ್, (12) ಮಾತ್ರಾ,  
(13) ಭೂತಮ್, (14) ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡಮ್, (15) ಅವಿದ್ಯಾ, (16) ವರ್ಣ:,  
(17) ಅನ್ವಕಾರ:, (18) ಕಾಲ:, (19) ವಾಸನಾ ಮತ್ತು  
(20) ಪ್ರತಿವಿಂಬ: ಎಂದು ಇಪ್ಪತ್ತು ವಿಧ. (ಘ) ವಿಶಿಷ್ಟಾ  
ದ್ವೈತಮತದಲ್ಲಿ (1) ಪ್ರಕೃತಿ:, (2) ಕಾಲ:, (3) ಶುದ್ಧ-  
ಸತ್ತ್ವಮ್, (4) ಧರ್ಮಭೂತಜ್ಞಾನಮ್, (5) ಜೀವ: ಮತ್ತು



(6) ಇಶ್ವರ: ಎಂದು ಆರು ವಿಧ. (ಙ) ಜೈನದರ್ಶನದಲ್ಲಿ (1) ಜೀವ:, (2) ಧರ್ಮ:, (3) ಅಧರ್ಮ:, (4) ಆಕಾಶ:, (5) ಕಾಲ: ಮತ್ತು (6) ಪುದ್ಗಲ: ಎಂದು ಆರು ವಿಧ. 9. ಮರದ ಸಾರ, ಗೋಂದ. (ವಿಂ) 10. ಮರದ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಮರದಿಂದ ತಯಾರಾದ. ದ್ವೈತ:—ತಸ್ಯ ವಿಕಾರ: ಅವಯವೋ ವಾ—ದ್ವೈತ "ಯತ್" (೪-೩-೧೬೧) ।

ದ್ರವ್ಯಕ ದ್ರವ್ಯಕ (ವಿಂ) 1. ದ್ರವ್ಯವನ್ನು ಒಯ್ಯುವ. 2. ದ್ರವ್ಯವನ್ನು ಹೊರುವ. 3. ದ್ರವ್ಯವನ್ನು ತರುವ. ದ್ರವ್ಯಂ ಹರತಿ वहति आवहति वा "ಕನ್" (೪-೧-೪೧) ।

ದ್ರವ್ಯಗುಣ ದ್ರವ್ಯಗುಣ (ಫಂ) ವೈದ್ಯಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಔಷಧಿ (ಮೂಲಿಕೆ)ಗಳ ಗುಣ (ಗುಂಪು). ಈ ಗುಣಗಳು ಮೂವತ್ತೇಳು. (1) ವಿದಾರಿಗನ್ಧಾದಿಗುಣ: (2) ಆರಗ್ವ-ಘಾದಿಂ (3) ಸಾಲಸಾರಾದಿಂ (4) ವರುಣಾದಿಂ (5) ವೀರ-ತರ್ವಾದಿಂ (6) ರೋಧಾದಿಂ (7) ಅರ್ಕಾದಿಂ (8) ಸುರ-ಸಾದಿಂ (9) ಮುಷ್ಕಕಾದಿಂ (10) ಪಿಪ್ಪಲಾದಿಂ (11) ಶಲಾದಿಂ (12) ವಚಾದಿಂ (13) ಹಿರಿದ್ರಾದಿಂ (14) ಶ್ಯಾಮಾದಿಂ (15) ಬೃಹತ್ಯಾದಿಂ (16) ಪಟೋಲಾದಿಂ (17) ಕಾಕೋಲ್ಯಾದಿಂ (18) ಋಷಕಾದಿಂ (19) ಸಾರಿವಾದಿಂ (20) ಅಜ್ಜನಾದಿಂ (21) ಪರೂಷಕಾದಿಂ (22) ಪ್ರಿಯङ್ಗವಾದಿಂ (23) ಅಮ್ಬಠಕಾದಿಂ (24) ನ್ಯಗ್ರೋಧಾದಿಂ (25) ಗುಡ್ಡುಚ್ಯಾದಿಂ (26) ಉತ್ಪಲಾದಿಂ (27) ಮುಸ್ತಾದಿಂ (28) ಹರಿತಕ್ಯಾದಿಂ (29) ಆಮಲಕ್ಯಾದಿಂ (30) ತ್ರಿಪ್ಲಾದಿಂ (31) ಲಾಕ್ಷಾದಿಂ (32) ಲಘುಪಚ್ಚಮೂಲಂ (33) ಬೃಹತ್ಪಚ್ಚಮೂಲಂ (34) ದಶಮೂಲಂ (35) ವಿದಾರ್ಯಾದಿಂ (36) ಕರಮದಾದಿಂ ಮತ್ತು (37) ಕುಶಾದಿಂ ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೩೮ । ದೋಷಗಳ ಬಲಾಬಲಗಳನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದುಕೊಂಡು ಇವುಗಳಿಂದ ಲೇಪಗಳು ಕಷಾಯ ತೈಲ ಘೃತ ಪಾನಕ (ಗಂಜಿ ಮೊದಲಾದವು) ಗಳನ್ನು ಆಯಾ ಚಿಕಿತ್ಸೆಗನುಗುಣವಾಗಿ ತಯಾರಿಸಿ ಉಪಯೋಗಿಸಬೇಕು. "ಸಮಾಸೇನ ಸಪ್ತತ್ರಿಶದ್ವ್ಯಗುಣಾ ಭವಂತಿ" । "ಜ್ಞಾತ್ವಾ ದೋಷಬಲಾಬಲಮ್ । ಏಭಿರ್ಲೇಪಾನ್ ಕಠಾಪಾನ್ ತೈಲ ಸರ್ಪಿಷಿ ಪಾನಕಾನ್ । ಪ್ರವಿಭಜ್ಯ ಯಥಾನ್ಯಾಯಂ ಕುರ್ವೀತ ಗತಿಮಾನ್ ಭಿಷಕ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೩೮-೪೯, ೮೦ ।

ದ್ರವ್ಯಗುಣ ದ್ರವ್ಯಗುಣ (ಫಂ) 1. ದ್ರವ್ಯ (ವಸ್ತು)ಗಳ ಗುಣಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಗ್ರಂಥ. ದ್ರವ್ಯಾಣಾಂ ಗುಣಾ: ಪ್ರತಿಪಾದನಯಾ ಯತ್ರ । 2. ದ್ರವ್ಯಗಳಲ್ಲಿರುವ ಗುಣ. ಎಲ್ಲಾ ದ್ರವ್ಯಗಳೂ ಪೃಥಿವೀ ಮೊದಲಾದ ಪಂಚಭೂತಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗಿದ್ದರೂ ಪಾರ್ಥಿವದ್ರವ್ಯಮ್ ಆಪ್ಯದ್ರವ್ಯಮ್ ತೈಜಸದ್ರವ್ಯಮ್ ವಾಯವ್ಯದ್ರವ್ಯಮ್ ಆಕಾಶೀಯದ್ರವ್ಯಮ್ ಎಂದು ಆಯಾ ಭೂತಗಳ ಅಧಿಕೃತದಿಂದ

ವ್ಯವಹರಿಸಲ್ಪಡುವುದು. "ಪೃಥಿವ್ಯಪ್ತೇಜೋವಾಯ್ವಾಕಾಶಾಣಾಂ ಸಮುದಾಯಾತ್ ದ್ರವ್ಯಾಭಿನಿವೃತ್ತಿ: । उत्कर्षस्त्वभिव्यञ्जको भवति" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೧-೩ ।

(1) ಪಾರ್ಥಿವದ್ರವ್ಯಮ್—ಇದರಲ್ಲಿ ಗಂಧ ಗುಣವು ಅಧಿಕವಾಗಿರುವುದು. ಕಷಾಯರಸವೂ ಮಧುರರಸವೂ ಸ್ವಲ್ಪವಾಗಿರುವುದು. ಈ ದ್ರವ್ಯವು ಸ್ಥೂಲ ಸಾಂದ್ರ (ನಿಬಿಡ) ಮಂದ ಸ್ಥಿರ ಗುರು ಮತ್ತು ಕಠಿಣ.

(2) ಆಪ್ಯದ್ರವ್ಯಮ್—ಇದು ರಸಭೂಯಿಷ್ಠವಾದುದು. ಕಷಾಯ ಅಮ್ಲ ಲವಣ ಮತ್ತು ಮಧುರ ರಸಗಳೂ ಇರುವುವು. ಇದು ಶೀತ ಜಡ ಮಂದ ಗುರು ಮತ್ತು ಮೃದು.

(3) ತೈಜಸದ್ರವ್ಯಮ್—ಇದು ರೂಪಬಹುಲವಾದುದು. ಇದು ಉಷ್ಣ ತೀಕ್ಷ್ಣ ಸೂಕ್ಷ್ಮ ರೂಕ್ಷ ಲಘು ಮತ್ತು ವಿಶದವಾದುದು.

(4) ವಾಯವ್ಯದ್ರವ್ಯಮ್—ಸ್ಪರ್ಶಬಹುಲವಾದುದು. ಇದು ಸೂಕ್ಷ್ಮ ರೂಕ್ಷ ಖರ ಶೀತಲ ಲಘು ಮತ್ತು ವಿಶದವಾದುದು.

(5) ಆಕಾಶೀಯದ್ರವ್ಯಮ್—ಶಬ್ದಬಹುಲವಾದುದು. ಇದು ಶ್ಲಕ್ಷ್ಮ (ನುಣುಪು) ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಮೃದು ವಿಶದ ವಿವಿಕ್ತ (ಪ್ರತ್ಯೇಕ) ಮತ್ತು ಅವ್ಯಕ್ತವಾದುದು.

ದ್ರವ್ಯಪತಿ ದ್ರವ್ಯಪತಿ (ಫಂ) ವಸ್ತುಗಳಿಗೆ ಅಧಿಪತಿಯಾದ ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ ರಾಶಿಗಳು. ದ್ರವ್ಯಾಣಾಂ ಪತಿ: ।

ದ್ರವ್ಯಗಳು

ಅಧಿಪತಿಯಾದ ರಾಶಿ

ವಸ್ತ್ರ, ಕುರಿಯ ಉಣ್ಣೆ, ಕಡಲೆ, ಗೋಧಿ, ಅರಗು, ಯವ, ಮೂಲಿಕೆಗಳು ಮತ್ತು ಸ್ವರ್ಣ .. ಮೇಷ.

ವಸ್ತ್ರ, ಪುಷ್ಪ, ಗೋಧಿ, ಬತ್ತ, ಯವ, ಎಮ್ಮೆ ಮತ್ತು ಎತ್ತು. .. ವೃಷಭ.

ಧಾನ್ಯ, ಶರದೃತುವಿನ ಲತೆಗಳು, ತಾವರೆಯಗಡ್ಡೆ ಮತ್ತು ಹತ್ತಿ .. ಮಿಥುನ.

ಹಾರಕ, ಬಾಳೆ, ಗರಿಕೆಹುಲ್ಲು, ಹಣ್ಣು, ಗೆಡ್ಡೆ, ಪತ್ರ, ಲವಂಗಪಟ್ಟಿ (ದಾಲ್ಚಿನ್ನಿ) .. ಕರ್ಕಟ.

ಹೊಟ್ಟಿನ ಧಾನ್ಯ, ಹೆಣ್ಣಿನ ರಸ, ಸಿಂಹ ಮೊದಲಾದವುಗಳ ಚರ್ಮ ಮತ್ತು ಬೆಲ್ಲ .. ಸಿಂಹ.

ಅಗಸೆ, ಹುರುಳಿ, ಗೋಧಿ, ಹೆಸರು ಮತ್ತು ಅವರೆ .. ಕನ್ಯಾ.

ಉದ್ದು, ಯವ, ಗೋಧಿ ಮತ್ತು ಸಾಸವೆ .. ತುಲಾ.



| ದ್ರವ್ಯಗಳು   | ಅಧಿಕಾರಿಯಾದ ರಾಶಿ |
|---|-----------------|
| ಕಬ್ಬು, ಕಬ್ಬಿಣ, ಕುರಿಯ ಮತ್ತು<br>ಅಡಿನ ತುಪ್ಪಟ ..  | ವೃಶ್ಚಿಕ.        |
| ಕುದುರೆ, ಲವಣ, ವಸ್ತ್ರ, ಅಸ್ತ್ರ,<br>ಎಳ್ಳು, ಧಾನ್ಯ ಮತ್ತು ಗೆಣಸು ..   | ಧನುಸ್ಸು.        |
| ವೃಕ್ಷ, ಲತೆಗಳ ಪೊದರು, ನೀರಿ<br>ನಿಂದ ಬೆಳೆಯುವ ಸಸ್ಯಗಳು, ಕಬ್ಬು<br>ಚೆನ್ನ ಮತ್ತು ಕಬ್ಬಿಣ ..                    | ಮಕರ.            |
| ನೀರಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ ವಸ್ತುಗಳು,<br>ಹಣ್ಣು, ಹೂವು, ರತ್ನ ಮತ್ತು<br>ಹೊಳೆಯುವ ವಸ್ತುಗಳು ..                          | ಕುಂಭ.           |
| ಚಿಪ್ಪಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ ಮತ್ತು,<br>ನೀರಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ ವಸ್ತುಗಳು,<br>ವಜ್ರ, ತೈಲಗಳು ಮೀನಿನಿಂದ ತಯಾ<br>ರಾದ ವಸ್ತುಗಳು .. | ಮೀನ.            |

**ದ್ರವ್ಯವಿಜ್ಞಾನ ದ್ರವ್ಯಯಜ್ಞ (ಪುಂ)** ದ್ರವ್ಯದಿಂದ ಮಾಡುವ  
ಯಜ್ಞ. ಕೆಲವರು ದ್ರವ್ಯವನ್ನು ದೇವರ ಪೂಜೆಗಾಗಿ ಉಪ  
ಯೋಗಿಸುವರು. ಕೆಲವರು ದಾನಮಾಡುವರು. ಕೆಲವರು  
ಯಾಗಕ್ಕಾಗಿ ಓನಿಯೋಗಿಸುವರು. ಇವೆಲ್ಲವೂ ದ್ರವ್ಯ  
ಯಜ್ಞಗಳು. "ದ್ರವ್ಯಜ್ಞಾಸ್ತಪೋಯಜ್ಞಾ ಯೋಗಯಜ್ಞಾಸ್ತಪಾಪರೆ।  
ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯಜ್ಞಾನಯಜ್ಞಾಶ್ಚ ಯತಯಃ ಸಂಶಿತವ್ರತಾಃ" ಗೀತಾ ೪-೨೮।

**ದ್ರವ್ಯಸಂಚಯ ದ್ರವ್ಯಸಂಚಯ (ಪುಂ)** ಧನಸಂಗ್ರಹ, ಧನ  
ವನ್ನು ಕೂಡಿಸುವುದು. ದ್ರವ್ಯಸಂಚಯಃ।

**ದ್ರವ್ಯಾರ್ಜನ ದ್ರವ್ಯಾರ್ಜನ (ನಂ)** ದ್ರವ್ಯಸಂಪಾದನೆ, ಹಣ  
ವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸುವುದು. ದ್ರವ್ಯಸಂಪಾದನಂ।

**ದ್ರವ್ಯದ್ರವ್ಯವ್ಯವಸ್ಥಾ (ವಿಂ)** 1. ನೋಡಲ್ಪಡುವ. 2. ನೋಡಲು  
ಯೋಗ್ಯನಾದ. 3. ನೋಡಬೇಕಾದ. ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣಂ)  
"ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೧೬)। 4. ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ.  
"ಆತ್ಮಾ ವಾ ಅರೆ ದ್ರವ್ಯಃ ಶ್ರೋತವ್ಯೋ ಮಂತವ್ಯೋ ನಿವಿ-  
ಧ್ಯಾಸಿತವ್ಯಃ"।

**ದ್ರವ್ಯಕಾಮ ದ್ರವ್ಯಕಾಮ (ವಿಂ)** ನೋಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ,  
ನೋಡಲು ಆಸೆಪಡುವ. ದ್ರವ್ಯ ಕಾಮೋ ಯಸ್ಯ। "ತತೋ  
ಭರ್ತೃದಾರಿಕಾಂ ದ್ರವ್ಯಕಾಮಯಾ ಪ್ರವೃತ್ತಿನಿಮಿತ್ತಮವಲೋಕಿತಾನ್ತು-  
ಪ್ರೇಷಿತಾ" ಮಾಲತೀಂ ೨।

**ದ್ರವ್ಯಮನಸ್ ದ್ರವ್ಯಮನಸ್ (ವಿಂ)** ನೋಡಲು ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ.  
ದ್ರವ್ಯ ಮನೋ ಯಸ್ಯ। "ಲಲಿತಾಭಿನಯಂ ತಮಃ ಭರ್ತೃ ಮರುತಾಂ  
ದ್ರವ್ಯಮನಾಃ ಸಲೋಕಪಾಲಃ" ವಿಕ್ರಂ ೨-೧೭।

**ದ್ರವ್ಯ ದ್ರವ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ನೋಡುವವನು. ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣಂ)  
"ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೧೬)। 2. ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರಿಸುವವನು,  
ಎದುರಿಗೆ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರಿಸಿ ನೋಡುವವನು. "ದ್ರವ್ಯಾರೋ  
ವ್ಯವಹಾರಾಣಾಂ ಸಾಕ್ಷಿಣಶ್ಚ ತ ಏವ ಹಿ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೨೦೨।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। ದ್ರವ್ಯ ದ್ರವ್ಯಃ.

**ದ್ರಾ - ಕುತ್ಸಾಯಾಂ ಗತೌ (ಅದಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ)**। ದ್ರಾತಿ।  
ದ್ರಾವಿ। ದ್ರಾತಾ। ದ್ರಾಸ್ಯತಿ। ದ್ರಾತು। ಅದ್ರಾತ್। ದ್ರಾಪಾತ್।  
ಇತ್ಯಾದಿ. ಓಡಿಹೋಗು, ವೇಗವಾಗಿ ಹೋಗು. ಪಲಾಯನ  
ಮಾಡು.

**ದ್ರಾಕ್ ದ್ರಾಕ್ (ಅವ್ಯಂ)** ಜಾಗೃತೆಯಾಗಿ, ಶೀಘ್ರವಾಗಿ, ಬೇಗ.  
ದ್ರಾ ಕುತ್ಸಾಯಾಂ (ಗತೌ) "ಕ್ರುಃ" ಬಾಹುಂ। "ದ್ರಾಙ್ನಿಷ್ಠೇಷ-  
ವಿಶಿಣ್ವಂವಜ್ರಕಲಪ್ರತ್ಯುಪ್ತರೂಢವ್ರಣಗ್ರನ್ಥ್ಯುಢ್ನಾಸಿನಿ" ಮಂ  
ವಿಂ ೧-೩೪।

**ದ್ರಾಕ್ಷಾ ದ್ರಾಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ದ್ರಾಕ್ಷಾಲತೆ, ದ್ರಾಕ್ಷಿಯ  
ಬಳ್ಳಿ. ದ್ರಾಕ್ಷಿ (ದ್ರಾಕ್ಷಾಯಾಮ್) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೯)।  
"ವಾಸ್ತೀರ್ಣಾಜಿನರತ್ನಾಸು ದ್ರಾಕ್ಷಾವಲಯಭೂಮಿಷು" ರಘುಂ ೪-೬೫।  
2. ದ್ರಾಕ್ಷಿಯ ಹಣ್ಣು. ದ್ರಾಕ್ಷಾಯಾಃ ಫಲಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೬೪)। ಅಙೋ ಲುಪ್ (೪-೩-೧೬೭)।

**ದ್ರಾಕ್ಷಾರಸ ದ್ರಾಕ್ಷಾರಸ (ಪುಂ)** ದ್ರಾಕ್ಷಿಯ ಹಣ್ಣಿನ ರಸ,  
ಮೆದ್ದೆ. "ಪುನ್ನಾಗತಾಲಿಬಹುಲಂ ದ್ರಾಕ್ಷಾರಸಧನಂ ಕ್ವಚಿತ್"   
ಹರಿವಂ ೧।

**ದ್ರಾಘಿಮನ್ ದ್ರಾಘಿಮನ್ (ಪುಂ)** ದೈರ್ಘ್ಯ, ಉದ್ದ, ನೀಳ.  
ದೀರ್ಘಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಇಮನಿಚ್" (೫-೧-೧೨೨)। ದೀರ್ಘಶಬ್ದಸ್ಯ  
ದ್ರಾಘಾದೇಶಃ (೬-೪-೧೫೭)।

**ದ್ರಾಘಿಠ ದ್ರಾಘಿಠ (ವಿಂ)** ಬಹಳ ಉದ್ದವಾದ, ಬಹಳ  
ದೀರ್ಘವಾದ. ಅತಿಶಯೇನಾಂ ದೀರ್ಘಃ - ದೀರ್ಘ "ಇಠನ್" (೫-೩-೫೫)। ದೀರ್ಘಶಬ್ದಸ್ಯ ದ್ರಾಘಾದೇಶಃ (೬-೪-೧೫೭)।

**ದ್ರಾಘೀಯಸ್ ದ್ರಾಘೀಯಸ್ (ವಿಂ)** ಹೆಚ್ಚು ದೀರ್ಘವಾದ.  
ಅಯಮೇನಯೋರತಿಶಯೇನ ದೀರ್ಘಃ-ದೀರ್ಘ "ಇಯಸುನ್" (೫-೩-೫೭)।  
ದೀರ್ಘಶಬ್ದಸ್ಯ ದ್ರಾಘಾದೇಶಃ (೬-೪-೧೫೭)। "ದ್ರಾಘೀಯಸ್ಯ  
ವಯೋಜಿತಃ ಪರಿವಲಾಂತಃ ಕಿಲಾಘವನಾ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೨।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಸಿ-ಯಸಿಃ. "ದ್ರಾಘೀಯಸಿ  
ದೃಢತರಾ ಗುಣವಾಗುರಾತ್ವಮ್" ದಯಾಶಂ ೧। "ದ್ರಾಘೀಯಸಿ ದಾರುಕ-  
ಸಾರಥಿಸ್ತಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೩-೩೯।

**ದ್ರಾಣ ದ್ರಾಣ (ವಿಂ)** 1. ನಿದ್ರೆಮಾಡಿದ. 2. ಓಡಿಹೋದ,  
ಪಲಾಯನಮಾಡಿದ. ದ್ರಾ (ಕುತ್ಸಾಯಾಂ ಗತೌ) ಕರ್ತಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। 3. ನಿದ್ರೆ. 4. ಓಟ, ಪಲಾಯನ. ದ್ರಾ  
ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)।



ದ್ರಾವ ದ್ರಾವ (ಪುಂ) 1. ಪಂಕ, ಕೆರರು. ದ್ರಾ (ಕುತ್ಸಾಯಾಂ ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಅಕಾಶ. 3. ಮೂರ್ಖ. 4. ಪರಮೇಶ್ವರ.

ದ್ರಾವಿಲ ದ್ರಾವಿಲ (ಪುಂ) 1. ಚಾಣಕ್ಯ. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ದ್ರವಿಡದೇಶದ ನಿವಾಸಿಗಳು.

ದ್ರಾವ ದ್ರಾವ (ಪುಂ) 1. ಗಮನ, ಸಂಚಾರ. ದ್ರ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಏವ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಸೋರುವುದು. 3. ಅನುತಾಪ.

ದ್ರಾವಕ ದ್ರಾವಕ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರಕಾಂತಶಿಲೆ. ದ್ರವತಿ-ದ್ರ (ಗತೌ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ. 3. ಬುದ್ಧಿವಂತ, ಜಾಣ. 4. ವಿಟ, ಕಾಮುಕ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ. "ದ್ರಾವಕಸ್ತು ಶಿಲಾಭೇದೇ ಸ್ವಾಮೋಷಕವಿದಾಧಯಃ" ಹೇಮಂ। 5. ಬಿಳಿಗಾರ, ಚಿನ್ನವನ್ನು ಕರಗಿಸುವ ಒಂದು ಕ್ಷಾರ. (ನಂ) 6. ಜೇನುಮೇಣ. (ವಿಂ) 7. ಕರಗಿಸುವ, ದ್ರವವಾಗಿ ಮಾಡುವ. ದ್ರ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। 8. ಮನೋಹರವಾದ. 9. ಓಡಿಸುವ.

ದ್ರಾವಣ ದ್ರಾವಣ (ನಂ) 1. ಜಿಲ್ಲದ ಬೀಜ. ದ್ರ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಕರಗಿಸುವುದು, ದ್ರವವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ದ್ರ+ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 3. ಓಡಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 4. ಓಡಿಸುವ, ಪಲಾಯನಮಾಡಿಸುವ. ದ್ರ+ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)। "ಸದೇವಯುಕ್ತೋ ರಥಸತ್ತಮೋ ವೈ ದುರಾಧರ್ಮೇ ದ್ರಾವಣಃ ಶಾತ್ರವಾಣಾಮ್" ಭಾಂ ಕರ್ಣಂ ೨೭-೭। 5. ಕರಗಿಸುವ, ದ್ರವವಾಗಿ ಮಾಡುವ.

ದ್ರಾವಯತ್ ದ್ರಾವಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಕರಗಿಸುತ್ತಿರುವ, ದ್ರವವಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ದ್ರ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। 2. ಓಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಓಡುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ -ಯಸ್ತಿ.

ದ್ರಾವಯಿತ್ ದ್ರಾವಯಿತ್ (ವಿಂ) 1. ಕರಗಿಸುವ, ದ್ರವವಾಗಿ ಮಾಡುವ. 2. ಓಡಿಸುವ. ದ್ರ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ದ್ರಾವಿಡ ದ್ರಾವಿಡ (ಪುಂ) ದ್ರವಿಡದೇಶದಲ್ಲಿ ವಂಶಪರಂಪರೆಯಾಗಿ ವಾಸಿಸುವವನು. ದ್ರವಿಡದೇಶೋಭಿಜನೋಽಸ್ಯ "ಅಞ್" (೪-೩-೯೦)। "ಕರ್ಣಾಟಾಶ್ಚೈವ ತೈಲಜ್ಞಾ ಗುರ್ಜರಾ ರಾಷ್ಟ್ರವಾಸಿನಃ। ಆನ್ಧ್ರಾಶ್ಚ ದ್ರಾವಿಡಾಃ ಪಂಚ ವಿಂಧ್ಯದಕ್ಷಿಣವಾಸಿನಃ" ಸ್ಕಾಂದಂ।

ದ್ರಾವಿಡಕ ದ್ರಾವಿಡಕ (ಪುಂ) ಕಚೋರ. ದ್ರವಿಡದೇಶ ಜಾತಃ "ಅಞ್" (೪-೩-೨೫)। "ಕನ್" (೫-೩-೭೫)। (ನಂ) 2. ವಿಡ್ಲವಣ, ಒಂದು ವಿಧ ಉಪ್ಪು.

ದ್ರಾವಿಡಿ ದ್ರಾವಿಡಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದ್ರವಿಡದೇಶದ ಹೆಂಗಸು. 2. ಸಣ್ಣ ಜಾತಿಯ ಯಾಲಕ್ಕಿ. ದ್ರವಿಡೇ ಭವಾ "ಅಞ್" (೪-೩-೫೩)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)।

ದ್ರಾವಿತ ದ್ರಾವಿತ (ವಿಂ) 1. ಕರಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ದ್ರವವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ದ್ರ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಕ್ಷಾಲಿತಂ ನು ಶಮಿತಂ ನು ವಧುನಾಂ ದ್ರಾವಿತಂ ನು ಹೃದಯಂ ಮಧುವಾರಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೦-೧೪। 2. ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಓಡುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ದ್ರ-ಗತೌ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ)। ದ್ರವತಿ। ದ್ರಾವ। ದ್ರೋತಾ। ದ್ರೋಷ್ಯತಿ। ದ್ರವತು। ಅದ್ರವತ್। ದ್ರವೇತ್। ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಓಡು, ವೇಗವಾಗಿ ಹೋಗು. 2. ಪಲಾಯನಮಾಡು, ಓಡಿಹೋಗು. "ರಕ್ಷಾಸಿ ಭಿತಾನಿ ದಿಶೋ ದ್ರವಂತಿ ಸರ್ವೇ ನಮಸ್ಯಂತಿ ಚ ಸಿದ್ಧಸಂಘಾಃ" ಗೀತಾ ೧೧-೩೬। 3. ದ್ರವವಾಗು, ಕರಗು. "ವಿಕಸತಿ ಹಿ ಪತಙ್ಗಸ್ಯೋದಯೇ ಪುಂಡರೀಕಂ ದ್ರವತಿ ಚ ಹಿಮರಶ್ಮಾವುದ್ಗತೇ ಚಂದ್ರಕಾಂತಃ" ತಂ ರಾಂ ೬-೧೨।

ಭಾವೇ:-ದ್ರೂಯತೇ। ದ್ರೂವೇ। ದ್ರಾವಿತಾ, ದ್ರೋತಾ। ದ್ರಾವಿಷ್ಯತೇ, ದ್ರೋಷ್ಯತೇ। ದ್ರೂಯತಾಮ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ:-ದ್ರಾವಯತಿ। ದ್ರಾವಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ದ್ರಾವಯಿತಾ। ದ್ರಾವಯಿಷ್ಯತಿ। ದ್ರಾವಯತು। ಅದ್ರಾವಯತ್। ದ್ರಾವಯೇತ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:-ವಿದ್ರೋತವ್ಯಮ್। ವಿದ್ರವಣೀಯಮ್। ದ್ರಾವ್ಯಮ್, ವಿದ್ರಾವ್ಯಮ್। ವಿದ್ರೂತಮ್। ವಿದ್ರೂತವಾನ್, -ವತೀ। ವಿದ್ರವನ್, -ವಂತೀ। ವಿದ್ರೂತುಮ್। ವಿದ್ರೂತಮ್। ವಿದ್ರವಣಮ್। ದ್ರೂತ್ವಾ। ವಿದ್ರೂತ್ಯ।

ದ್ರ ದ್ರ (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ದ್ರವತ್ಯರ್ಥಮ್ - ದ್ರ (ಗತೌ) "ಡುಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೧೮೦)। "ಆದದೀತಾಥ ಷಡ್ಭಾಗಂ ದ್ರುಮಾಂಸಮಧುಸರ್ಪಿಣಾಮ್" ಮನುಂ ೭-೧೩೧। 2. ಕೊಂಬೆ, ರೆಂಬೆ, ಶಾಖೆ. "ಸಮುದಾಯೇ ವಿद्यಮಾನಾಃ ಶಬ್ದಾಃ ಅವಯವೇಷ್ವಪಿ ದೃಶ್ಯಂತೇ" ಇತಿ ನ್ಯಾಯಃ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಚಲನ, ಗಮನ. (ನಂ) 4. ಮರ. 5. ಮರದಿಂದ ತಯಾರಾದ ಪದಾರ್ಥ.

ದ್ರುಕಿಲಿಮ ದ್ರುಕಿಲಿಮ (ನಂ) ದೇವದಾರು ವೃಕ್ಷ. ಕಿಲಿತಿ-ಕಿಲ (ಶ್ವೇತ್ಯಕ್ರೋಡನಯೋಃ) "ಕಿಮಚ್"। ಬಾಹುಂ। ದ್ರುಶ್ವಾಸೀ ಕಿಲಿಮಂ ಚ।

ದ್ರುಗ ದ್ರುಗ್ (ನಂ) 1. ತೊಂದರೆ, ಕೆಡಕು, ಹಿಂಸೆ. ದ್ರುಹ (ಜಿಘಾಂಸಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ದ್ರೋಹಮಾಡಿದ, ತೊಂದರೆಪಡಿಸಿದ. ದ್ರುಹ ಕರ್ತಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)।

ದ್ರುಗವತ್ ದ್ರುಗವತ್ (ವಿಂ) ದ್ರೋಹಮಾಡಿದವನು, ತೊಂದರೆಪಡಿಸಿದವನು, ದ್ರುಹ (ಜಿಘಾಂಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತವತುಃ"



(೩-೨-೧೦೨) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಃ" (೪-೧-೬) ।  
-ವತೀ -ವತೀ.

ದ್ರುಪದ(ನ) ದ್ರುಪದ(ನ) (ಫಂ) 1. ಮುದ್ದರವೆಂಬ  
ಒಂದು ಆಯುಧ, ಕಬ್ಬಿಣದ ಗುದಿಗೆ. 2. ಮರದಿಂದ  
ಮಾಡಿದ ಕೊಡತಿ. 3. ಪರಶು, ಕೊಡಲಿ. ದ್ರುಕ್ಷಃ  
ಹನ್ಯತೇಜೇನ । 4. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ದ್ರುಃ ಸಂಸಾರ-  
ಗತಿಃ ಹನ್ಯತೇಜೇನ-ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) "ಅಃ" ಧನಾದೇಶಶ್ಚ  
(೩-೩-೮೨) ।

ದ್ರುಣಿ ದ್ರುಢೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೈಕೊಡಲಿ, ಚಿಕ್ಕ ಕೊಡಲಿ.  
2. ಮಜ್ಜುಕತ್ತಿ.

ದ್ರುಣ ದ್ರುಣ (ಫಂ) 1. ಭೃಗ, ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ದ್ರುಣಿ-  
ದ್ರುಣ (ಹಿಸಾಗತಿಕೌಟಿಲ್ಯೇಷು) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫) ।  
2. ವೃಶ್ಚಿಕ, ಚೀಳು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಾತಿಂ "ಙೀಃ" ।  
-ಣಿ-ಣೀ. (ನಂ) 3. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. 4. ಧನುಸ್ಸು,  
ಬಿಲ್ಲು. "ದ್ರುಣಂ ಚಾಪೇ ಚ ಖಡ್ಗೇ ಚ ದ್ರುಣೋ ವೃಶ್ಚಿಕಮೃಗ್ಗಯೋಃ"  
ವಿಷಯಂ । (ವಿಂ) 5. ಪಿಶುನ ದುರ್ಜನ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಣಾ-ಣಾ. 6. ಮೌರ್ವಿ, ಬಿಲ್ಲಿನ ಅಂಜು. -ಣಿ-ಣೀ.  
7. ಹೆಣ್ಣು ಅವೆ. 8. ನೀರಿನ ತೊಟ್ಟಿ. "ದ್ರುಣ್ಯಮ್ಬು-  
ದ್ರೋಣಿಕಚ್ಚಯೋಃ" ಮೇದಿಂ ।

ದ್ರುಣಸ ದ್ರುಣಸ (ವಿಂ) ಮರದಂತೆ ಉದ್ದವಾದ ಮೂಗುಳ್ಳ  
ವನು. ದ್ರುರಿವ ದೀರ್ಘಾ ನಾಸಿಕಾಽಸ್ಯ "ಅಃ" (೪-೪-೧೧೮) ।  
ನಾಸಿಕಾಯಾ ನಸಾದೇಶಶ್ಚ । ಣತ್ವಮ್ (೮-೪-೩) ।

ದ್ರುಣಹ ದ್ರುಣಹ (ಫಂ) ಖಡ್ಗದ ಶೋಶ, ಕತ್ತಿಯ ಒರೆ.  
ದ್ರುಣಂ ಖಡ್ಗಂ ಹಂತಿ ಗಚ್ಛತಿ-ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ)  
"ಹಃ" ।

ದ್ರುತ ದ್ರುತ (ವಿಂ) 1. ಕರಗಿರುವ, ದ್ರವವಾಗಿರುವ. ದ್ರು  
(ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) । "ಯಸ್ಯಾ ಮಹಾನೀಲ-  
ತದೀರಿವ ದ್ರುತಾಃ ಪ್ರಯಾಂತಿ ಪೀತ್ವಾ ಹಿಮಪಿಂಡಪಾಂಡುರಾಃ" ಮಾಘಂ  
೧೨-೬೮ । 2. ಬೆಂಕಿಯಲ್ಲಿ ಕಾದು ಕರಗಿರುವ. "ದ್ರುತಗಾತ-  
ಕ್ರಮಭಿನಿಮಗ್ನಮತೋ ವಪುರರ್ಧಮನವಪುಃ ಪಯಸಿ" ಮಾಘಂ  
೯-೯ । 3. ವೇಗದಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಉತ್ತೇರುತ್ತಾಲಕ್ಷುರಾರವಂ  
ದ್ರುತಾಃ ಶಲಶೀಕೃತಪ್ರಗ್ರಹಮವತಾಂ ವ್ರಜಾಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೩೧ ।  
4. ಪಲಾಯನಮಾಡಿದ, ಓಡಿಹೋದ. "ಪಯಃ ಸ್ಫುರ-  
ಣ್ಣಾಲಿಶಿಸ್ತಾಪಿಶಿಜ್ಜಿತಂ ದ್ರುತಂ ಧನುಷ್ಠಾಂಡಮಿವಾಹಿವಿವಿಧಿಃ"  
ಕಿರಾಂ ೪-೨೭ । (ನಂ) 5. ಗಾನದ ವೇಗವಾದ ಕಾಲ  
(ದ್ರುತಕಾಲ). (ಅವ್ಯಂ) 6. ವೇಗವಾಗಿ, ಶೀಘ್ರವಾಗಿ.  
"ಅಪದಾಂತರಂ ಚ ಪರಿತಃ ಕ್ಷಿತಿಕ್ಷಿತಿತಾಮಪತನ್ ದ್ರುತಭ್ರಮಿತಹೇಮ-  
ನೇಮಯಃ" ಮಾಘಂ ೧೩-೪ ।

ದ್ರುತಪದ ದ್ರುತಪದ(ನಂ) 1. ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆಯುವ ಕಾಲು.  
ದ್ರುತಂ ಶೀಘ್ರಗಾಮಿ ಪದಮ್ । (ವಿಂ) 2. ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆ  
ಯುವ ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳ.

ದ್ರುತವಿಲಮ್ಬಿತ ದ್ರುತವಿಲಂಬಿತ(ನಂ) ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರದಲ್ಲಿ  
ಉಕ್ತವಾದ ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ.  
ಪ್ರತಿಪಾದದಲ್ಲಿಯೂ ನ ಗಣ ಮ ಗಣ ಮ ಗಣ ಮತ್ತು ರ  
ಗಣಗಳಿರುವುದು "ದ್ರುತವಿಲಂಬಿತ" ವೃತ್ತವಾಗುವುದು.  
ಇದರ ಲಕ್ಷಣಃ "ದ್ರುತವಿಲಮ್ಬಿತಮಾಹ ನಮೋ  
ಮರೋ" ವೃಂ ರಂ । ಇದರ ಗಣವಿನ್ಯಾಸಃ

ನ ಮ ಮ ರ  
||| ||| ||| |||

ದ್ರುತಿ ದ್ರುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕರಗುವುದು, ದ್ರವವಾಗುವುದು.  
2. ಗತಿ, ಗಮನ. ದ್ರು (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) ।

ದ್ರುನಖ ದ್ರುನಖ (ಫಂ) ಕಂಟಕ, ಮುಳ್ಳು. ದ್ರೋಣ ಇವ ।  
"ಕಂಟಕೇ ಪತ್ರಸುಚಿದ್ರುನಖವಿಜ್ಞಾಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ದ್ರುಪದ ದ್ರುಪದ (ಫಂ) 1. ಪಾಂಚಾಲ ದೇಶದ ದೊರೆ,  
ದ್ರುಪದರಾಜ. "ಗಚ್ಛತೋ ನಸ್ತು ಪಾಂಚಾಲಾನ್ ದ್ರುಪದಸ್ಯ ಪುರಂ  
ಪ್ರತಿ । ಇಚ್ಛಾಮೋ ಭವತೋ ಜ್ಞಾತುಂ ಪರಂ ಕೌತುಹಲಂ ಹಿ ನಃ"  
ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೮೫-೫ । [ದ್ರುಪದರಾಜನೂ ದ್ರೋಣಾ  
ಜಾರ್ಯರೂ ದ್ರೋಣಾಜಾರ್ಯರ ತಂದೆಯಾದ ಭರದ್ವಾಜ  
ರಲ್ಲಿ ಧನುರ್ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿತರು. ದ್ರುಪದನು, ತಾನು  
ರಾಜನಾದನಂತರ ದ್ರೋಣಾಜಾರ್ಯರಿಗೂ ಅರ್ಧ ರಾಜ್ಯ  
ವನ್ನು ಕೊಡುವುದಾಗಿ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡಿದ್ದನು. ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ  
ಮುಗಿದು ದೊರೆಯಾದನಂತರ ದ್ರುಪದನ ಆಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ  
ಹೋಗಿದ್ದ ದ್ರೋಣಾಜಾರ್ಯರನ್ನು ಇವನು ಗರ್ವದಿಂದ  
ತಿರಸ್ಕರಿಸಿ ಮಾತನಾಡಿದನು. ಆಜಾರ್ಯರು ಇದರಿಂದ  
ಕುಪಿತರಾಗಿ ತಮ್ಮ ಶಿಷ್ಯರಾದ ಪಾಂಡವರ ಮೂಲಕ  
ದ್ರುಪದನನ್ನು ಸೆರೆಹಿಡಿಯಿಸಿ ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಿದರು.  
ದ್ರುಪದನು ಬಹಳ ದುಃಖಿತನಾಗಿ ಈ ಸೇಡನ್ನು ತೀರಿಸಿ  
ಕೊಳ್ಳಲು ಒಂದು ಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡಿ ದ್ರೋಣಾಜಾರ್ಯ  
ರನ್ನು ಜಯಿಸುವ ಒಬ್ಬ ಪುತ್ರನನ್ನು ಪಡೆದನು. ಈತನೇ  
ದ್ರೋಣಾಜಾರ್ಯರ ಶಿರಸ್ಸನ್ನು ಕಡಿದ ಧೃಷ್ಟದ್ಯುಮ್ನನು.  
ಈ ಧೃಷ್ಟದ್ಯುಮ್ನನ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಕುಂಡದಿಂದ ಯಾಜ್ಞ  
ಸೇನಿ (ದ್ರೌಪದಿ)ಯೂ ಆವಿರ್ಭವಿಸಿದಳು. ದ್ರುಪದನಿಗೆ  
ಇವರಿಬ್ಬರಲ್ಲದೆ ಸುಮಿತ್ರ, ಪ್ರಿಯದರ್ಶನ, ವೀರಕೇತು,  
ಸುರಥ, ಶತ್ರುಂಜಯ ಮತ್ತು ಧೃಜಕೇತು ಎಂಬ ಮಕ್ಕಳೂ  
ಇದ್ದರು. ಇದಕ್ಕೆ ಮುಂಚೆ ಸ್ತ್ರೀರೂಪದಿಂದ ಶಿಖಂಡಿಯೂ  
ಹುಟ್ಟಿದ್ದನು.]



ದ್ರುಪದಾತ್ಮಜ ದ್ರುಪದಾತ್ಮಜ (ಪುಂ) ದ್ರುಪದಾತ್ಮಜ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)

-ಆತ್ಮಜಾ - ಅತ್ಮಜಾ. ದ್ರೋಪದಿ.

ದ್ರುಪದೋ ದ್ರುಪದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರದಂತೆ ಉದ್ದವಾದ ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ದ್ರುಪದ ದೀರ್ಘ ಪಾದೀ ಯಸ್ಯಾ:-ಪಾದಸ್ಯ ಲೋಪೋ "ಙೀಪ್" ಚ ನಿಪಾಂ (೪-೪-೧೩೯)।

ದ್ರುಮ ದ್ರುಮ (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ದ್ರು: ಶಾಸ್ತ್ರಾಸ್ತಾಸ್ತಿ "ಮ:" (೪-೨-೧೦೮)। "ದ್ರುಮೇಷು ಸಖ್ಯಾ ಕೃತಜನ್ಮಸು ಸ್ವಯಂ ಫಲಂ ತಪ:ಸಾಧಿಷು ದೃಷ್ಟಮೇಷ್ವಪಿ" ಕುಮಾಂ ೪-೬೦। 2. ಪಾರಿಜಾತದ ಗಿಡ. 3. ಕನ್ನರರ ರಾಜ. "ದ್ರುಮೋ ಮಹೀರಹೇ ಪಾರಿಜಾತೇ ಕಿಪುರಾಶ್ವರೇ" ಮೇದಿಂ। "ಕಿಪುರಾಶ್ವರಾಜ್ಯಮಿವ ಮುನಿಜನಗೃಹಿತಜಲಕಲಶಪರಿಚಿನ್ಯಮಾನದ್ರುಮಮ್" ಕಾದಂ। 4. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಿಗೆ ರುಕ್ಮಿಣಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

ದ್ರುಮನಖ ದ್ರುಮನಖ (ಪುಂ) ಕಂಟಕ. ಮುಳ್ಳು.

ದ್ರುಮವ್ಯಾಧಿ ದ್ರುಮವ್ಯಾಧಿ (ಪುಂ) 1. ಲಾಕ್ಷ, ಅರಗು. ದ್ರುಮಸ್ಯ ವ್ಯಾಧಿರಿವ।

ದ್ರುಮಶ್ರೇಷ್ಠ ದ್ರುಮಶ್ರೇಷ್ಠ (ಪುಂ) ತಾಳವೃಕ್ಷ, ಪನೆಮರ.

ದ್ರುಮಷಂಡ ದ್ರುಮಷಂಡ (ಪುಂ) ಮರಗಳ ಸಮೂಹ.

ದ್ರುಮಸೇನ ದ್ರುಮಸೇನ (ಪುಂ) ಗವಿಷ್ಠನೆಂಬ ಅಸುರನ ಅಂಶ ದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ.

ದ್ರುಮಾಮಯ ದ್ರುಮಾಮಯ (ಪುಂ) 1. ಲಾಕ್ಷ, ಅರಗು. ದ್ರುಮಸ್ಯಾಮಯ ಇವ। 2. ಮರಗಳಿಗೆ ಬರುವ ರೋಗ.

ದ್ರುಮಾರಿ ದ್ರುಮಾರಿ (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. ದ್ರುಮಾಣಾಮರಿ:

ದ್ರುಮಾಶ್ರಯ ದ್ರುಮಾಶ್ರಯ (ಪುಂ) 1. ಓತಿಕೇತ, ಹೆಂಟೆ ಗೊದ್ದು. (ವಿಂ) 2. ಮರವನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿರುವ, ಮರದ ಆಸರೆಯುಳ್ಳ. ದ್ರುಮಾ ಆಶ್ರಯೋ ಯಸ್ಯ।

ದ್ರುಮೋತ್ಪಲ ದ್ರುಮೋತ್ಪಲ (ನಂ) ಬೆಟ್ಟಗಣಗಿಲೆ ಗಿಡ. ದ್ರುಮೋತ್ಪಲಮಿವ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ।

ದ್ರುಮಯ ದ್ರುಮಯ (ನಂ) ಅಳತೆ. ದ್ರು "ವಯ:" (೪-೩-೧೬೨)। "ಯೌತವಂ ದ್ರುಮಯಂ ಪಾಯಮಿತಿ ಮಾನಾರ್ಥಕಂ ತ್ರಯಮ್" ಅಮಂ।

ದ್ರುಮಲಲಕ ದ್ರುಮಲಲಕ (ಪುಂ) ಪ್ರಿಯಾಲವೃಕ್ಷ. ದ್ರುಮ ಸಲಲಕ ಇವ।

ದ್ರೂ - ಜಿಘಾಂಸಾಯಾಮ್ (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ವೇದ್)। ದ್ರೂಹತಿ। ದ್ರೂಹಿ। ದ್ರೂಹಿತಾ, ದ್ರೂಹಾ। ದ್ರೂಹಿಷ್ಯತಿ, ಧೂಹ್ಯತಿ। ದ್ರೂಹತು। ಅದ್ರೂಹತ್। ದ್ರೂಹೇತ್। ಇತ್ಯಾದಿ. ದ್ರೂಹಮಾಡು, ಹಿಂಸಿಸು, ತೊಂದರೆಪಡಿಸು, ಕೇಡನ್ನು ಬಯಸು. "ಯಾವೇತಿ ಮಾಂ ದ್ರೂಹತಿ ಮಹ್ಯಮೇವ" ನೆಪಂ ೩-೭।

ಕರ್ಮಣಿ:-ದ್ರೂಹತೇ। ದ್ರೂಹೇ। ದ್ರೂಹಿತಾ, ದ್ರೂಹಾ, ದ್ರೂಹಾ। ದ್ರೂಹಿಷ್ಯತೇ, ಧೂಹ್ಯತೇ। ದ್ರೂಹತಾಮ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:-ದ್ರೂಹಿತವ್ಯಮ್, ದ್ರೂಹವ್ಯಮ್, ದ್ರೂಹವ್ಯಮ್। ದ್ರೂಹಣೀಯಮ್। ದ್ರೂಹಮ್। ದ್ರೂಹ:, ದ್ರೂಹ:। ದ್ರೂಹವಾನ್, ದ್ರೂಹವಾನ್। ದ್ರೂಹನ್, ದ್ರೂಹಂತಿ। ದ್ರೂಹಿತುಮ್, ದ್ರೂಹುಮ್, ದ್ರೂಹುಮ್। ದ್ರೂಹಮ್, ದ್ರೂಹಮ್। ದ್ರೂಹಿತ್ವಾ, ದ್ರೂಹಿತ್ವಾ, ದ್ರೂಹ್ವಾ, ದ್ರೂಹ್ವಾ। ಅನುದ್ರೂಹ।

ದ್ರೂಹ ದ್ರುಹ (ವಿಂ) ದ್ರೂಹಮಾಡುವ, ಹಿಂಸಿಸುವ, ತೊಂದರೆಪಡಿಸುವ. ದ್ರೂಹ (ಜಿಘಾಂಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧)। ಇದರ ಪ್ರಥಮಾವಿಭಕ್ತಿಯ ರೂಪಗಳು (೮-೨-೩೩)।

ಧುಕ್  
ಧುಗ್  
ಧುತ್  
ಧುಹ್  
ದ್ರೂಹಿ ದ್ರೂಹ:।

"ನಿಜೋಜಸೋಜಾಸಯಿತು ಜಗದ್ಬ್ರಹ್ಮಾಂ ಪಾಜಹೀಥಾ ನ ಮಹೀತಲಂ ಯದಿ" ಮಾಘಂ ೧-೩೭।

ದ್ರೂಹ ದ್ರುಹ (ಪುಂ) 1. ಶೂದ್ರನಿಗೆ ದ್ರವಿಡಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು. "ನದೀ ಭ್ರಾಣಜ್ಜಕಂ ವಾಡೀ ವಿಭಣ್ಣಂ ದ್ರವಿಡೀ ದ್ರೂಹಮ್" ವೇಜಂ। 2. ಪುತ್ರ, ಮಗ. (ವಿಂ) 3. ದ್ರೂಹಮಾಡುವ, ತೊಂದರೆಕೊಡುವ, ಹಿಂಸಿಸುವ, ಕೇಡನ್ನು ಬಯಸುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಹೀ-ಹೀ. ಪುತ್ರ, ಮಗಳು.

ದ್ರೂಹಿಣ ದ್ರುಹಿಣ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ದ್ರೂಹಿಣ-ಸುರೇಶ್ವರ: ದ್ರೂಹಿಣೋ ವಾ-ದ್ರೂಹ (ಜಿಘಾಂಸಾಯಾಮ್) "ಇನಕ್" ಬಾಹುಂ। "ದ್ರೂಹಿಣೇ ಸೃಷ್ಟಿಶಕ್ತಿಶ್ಚ ಹರೋ ಪಾಲನಶಕ್ತಿಶ್ಚ"। 2. ವಿಷ್ಣು. 3. ಈಶ್ವರ, ಪರಶಿವ. "ದ್ರೂಹಿಣಿ ಹರಿ-ವಾತಾರಿ" ವೇಜಂ।

ದ್ರೂಹತ್ ದ್ರುಹತ್ (ವಿಂ) ತೊಂದರೆಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ದ್ರೂಹ (ಜಿಘಾಂಸಾಯಾಮ್) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಸ್ತೀ-ಸ್ತೀ.

ದ್ರೂಹ್ಯ ದ್ರುಹ್ಯ (ಪುಂ) ಯಯಾತಿರಾಜನಿಗೆ ಶರ್ಮಿಷ್ಠೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ಮಗ. ಈತನು ತನ್ನ ತಂದೆಯ ಮುಪ್ಪನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ತನ್ನ ಯೌವನವನ್ನು ಅವನಿಗೆ ಕೊಡಲು ಸಮ್ಮತಿಸಲಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ತನಗೂ ತನ್ನ ವಂಶದವರಿಗೂ ತಂದೆಯ ಶಾಪದಿಂದ ರಾಜ್ಯದ ಅಧಿಕಾರವಿಲ್ಲವಾಯಿತು.

ಬ್ರೂ - ಹಿಸಾಯಾಮ್ (ಕ್ರಯಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಬ್ರೂಹತಿ, ಬ್ರೂಹಿತಿ। ದ್ರೂಹಾ। ದ್ರೂಹಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ। ಇತ್ಯಾದಿ. ಹಿಂಸಿಸು, ತೊಂದರೆಪಡಿಸು.



ದ್ರೋಣ (ಪುಂ) ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ದ್ರುಹ (ಗತೌ) "ವಿವ" ದೀರ್ಘಶ್ಚ (೩ಂ ೨-೪೮) ।

ದ್ರೂದ್ರ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಂದರೆಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. (ನಂ) 2. ಹಿಂಸೆ, ತೊಂದರೆ, ಕೇಡು.

ದ್ರೂಣ (ಪುಂ) ವೃಶ್ಚಿಕ, ಚೀಳು.

ದ್ರೇಕ - ಶಬ್ದೋತ್ಸಾಹಯೋ: (ಮಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸಂ) । ದ್ರೇಕೇ । ದ್ರೇಕೇ । ಅದ್ರೇಕಿಣಿ । 1. ಶಬ್ದಮಾಡು. 2. ಬೆಳೆ, ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದು.

ದ್ರೇಕ ದ್ರೇಕೈ (ಪುಂ) ರಾಶಿಯ ಮೂರನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. ದ್ರೇಕಾಣ - ಪೃಷ್ಠಂ ।

ದ್ರೇಕಾಣ ದ್ರೇಕಾಣ (ಪುಂ) ರಾಶಿಯ ಮೂರನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. ಲಗ್ನರಾಶಿಯ ಪ್ರಮಾಣವನ್ನು ಮೂರು ಭಾಗ ಮಾಡಿದರೆ ಪ್ರತಿಯೊಂದಕ್ಕೂ "ದ್ರೇಕಾಣ" ಎಂದು ಹೆಸರು. 12 ರಾಶಿಗಳಲ್ಲೂ 36 ದ್ರೇಕಾಣಗಳಿವೆ.

ದ್ರೇಕಾಣ ದ್ರೇಕಾಣ (ಪುಂ) ದ್ರೇಕಾಣ, ರಾಶಿಯ ಮೂರನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ.

ದ್ರೋಣ್ಯ ದ್ರೋಣ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಡುವ, ತೊಂದರೆ ಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಹಿಂಸಿಸಲು ಶಕ್ಯನಾದ. 3. ಹಿಂಸಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. ದ್ರೂಹ (ಜಿಘಾಂಸಾಯಾಮ್) "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೬) । ಇತ್ಯರ್ಥೇ ವಾ ದ್ರೂಹಮುಹಂ (೮-೨-೩೩) ಇತಿ ಧ್ವನಿಃ । ಪಕ್ಷೇ ಡಃ ದ್ರೋಣ್ಯಮ್ ದ್ರೋಣ್ಯಮ್. ಇತ್ ಪಕ್ಷೇ ದ್ರೋಹಿತವ್ಯಮ್ ದ್ರೋಹಿತವ್ಯಮ್. "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) । ದ್ರೋಹಣೀಯಮ್ ದ್ರೋಹಣೀಯಮ್.

ದ್ರೋಣ ದ್ರೋಣ (ಪುಂ) 1. ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯ. ದ್ರೋಣ: ಕಲಶ: ತತ್ಪತ್ತಿಪ್ರಾಪ್ತಿಯಮಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) । [ಭರದ್ವಾಜಮಹರ್ಷಿಯು ಒಂದು ದಿನ ಗಂಗಾನದಿಗೆ ಸ್ನಾನಕ್ಕೆ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಘೃತಾಚಿಯೆಂಬ ಅಪ್ಪರಸಿಯನ್ನು ಕಂಡು ಮೋಹಿಸಿದ್ದರಿಂದ ವೀರ್ಯಸ್ಥನಾದನಂತೆ. ಅದನ್ನು ಒಂದು ದ್ರೋಣದಲ್ಲಿಡಲು ಅಲ್ಲಿಯೇ ಒಂದು ಗಂಡುಮಗು ಹುಟ್ಟಿತು. ಈ ಮಗುವೇ ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರು. ದ್ರೋಣದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು ಬಂದಿತು. ಪರಶುರಾಮನಲ್ಲಿ ಅಸ್ತವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸಮಾಡಿ ಆಚಾರ್ಯ ಪದವಿಯನ್ನು ಪಡೆದರು. ಶರದ್ವತನ ಮಗಳಾದ ಕೃಪಿಯು ಇವರ ಪತ್ನಿ. ಅಪ್ರತಿಮ ಪರಾಕ್ರಮಿಯಾದ ಅಶ್ವತ್ಥಾಮನೇ ಇವರ ಪುತ್ರ. ಕೌರವರೂ ಪಾಂಡವರೂ ಇವರಲ್ಲಿ ಅಸ್ತವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸಮಾಡಿದರು. ಇವರು ದ್ರುಪದ ರಾಜನಿಂದ ಅರ್ಧರಾಜ್ಯವನ್ನು ಗೆದ್ದು ಅದಕ್ಕೆ "ಅಹಿಚ್ಛತ್ರ" ಎಂದು ಹೆಸರಿಟ್ಟರು. ಇವರ ಪರಾಕ್ರಮಕ್ಕೆ ಮೆಚ್ಚಿದ

ದರ್ಯೋಧನನು ಇವರನ್ನು ತನ್ನ ಸೇನಾಪತಿಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡನು. ಇವರು ಪಾಂಡವರೊಡನೆ ಸಂಧಿಮಾಡಿ ಕೊಳ್ಳಲು ದರ್ಯೋಧನನಿಗೆ ಬೋಧನೆಮಾಡಿದರೂ ಅದಕ್ಕೆ ಅವನು ಸಮ್ಮತಿಸಲಿಲ್ಲ. ಇದರಿಂದ ಅರ್ಜುನ ನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಮಾಡಬೇಕಾಗಿ ಬಂದದ್ದರಿಂದ ಬಹಳ ವಿಷಾದಿಸಿದರು. ಧರ್ಮರಾಜನನ್ನು ಸೆರೆಹಿಡಿದು ತರಬೇಕೆಂಬ ದರ್ಯೋಧನನ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಂತೆ ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರು ಅದಕ್ಕಾಗಿ ಹೋಗಿ ಅರ್ಜುನನಿಂದ ಸೋತು ಓಡಿಹೋದರು. ಭೀಮನು ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರ ಸಾರಥಿಯನ್ನು ಕೊಂದು ಅವರ ಎಂಟು ರಥಗಳನ್ನು ಮುರಿದನು. ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರು ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ "ಅಶ್ವತ್ಥಾಮಾ ಹತ: ...." ಎಂಬ ಧರ್ಮರಾಜನ ವಾಕ್ಯವನ್ನು ಕೇಳಿದ ಕೂಡಲೆ ಪುತ್ರಪ್ರೇಮಿಯಾದ ಇವರು ತಮ್ಮ ಪುತ್ರ ಹತನಾದನೆಂದು ತಿಳಿದು ಶಸ್ತ್ರಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಕೆಳಗಿಟ್ಟು ಯುದ್ಧವನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸಿ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳಲು ದ್ರುಪದಪುತ್ರನಾದ ಧೃಷ್ಟದ್ಯುಮ್ನನು ಇವರ ತಲೆಯನ್ನು ಕಡಿದು ಕೊಂದನು. ಮಹಾಭಾರತ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಇವರು ಪ್ರಧಾನ ಪಾತ್ರವನ್ನು ವಹಿಸಿದ್ದರು.] ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ । 2. ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಕಾಗೆ, ಹೊಲಕಾಗೆ, ಮಂಡಕಾಗೆ. (ಪುಂ) 3. ಆಡಕ. ಕೊಳಗ, ಎಂಟು ಸೇರು. 4. ನಾಲ್ಕು ಆಡಕಗಳ ಅಳತೆ, ಮೂವತ್ತೆರಡು ಸೇರು. 5. ನೀರು ತುಂಬಿರುವ ಮರದ ಪಾತ್ರೆ. (ಪುಂ) 6. ವೃಶ್ಚಿಕ, ಚೀಳು. "ದ್ರೋಣೋಸ್ತ್ರಿಯಾಮಾಡಕೇ ಸ್ಯಾದಾಡಕಾನಾಂ ಚತುರ್ದಶೈಃ । ಪುಮಾನ್ ಕೃಪಿಪತೌ ದಗ್ಧಕಾಕೇ" ಮೇದಿಂ । "ಪರಿಮಾಣೋ ದಾಹಪಾತ್ರೋ ದ್ರೋಣೋಸ್ತ್ರಿ ವಾಯಸೇ ಪುಮಾನ್" ವೈಜಂ । "ಅಲಿದ್ರೋಣೌ ತು ವೃಶ್ಚಿಕೇ" ಅಮಂ । 7. ತಂಬೆ ಗಿಡ. 8. ನಾಲ್ಕು ಧನುಸ್ಸುಗಳ ಅಳತೆಯುಳ್ಳ ಒಂದು ಜಲಾಶಯ. "ಶತೇನ ಧನುಃಪುಂಃ ಪುಣ್ಕರಿಣಿ ತ್ರಿಭಿಃ ದೀರ್ಘಿಕಾ ಚತುರ್ಮಿಃ ದ್ರೋಣ:" । 9. ಭೇಕ, ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. "ದ್ರೋಣ: ಕೃಪಿಪತೌ ಕಾಕೇ ಭೇಕವೃಶ್ಚಿಕಯೋಶ್ಚ ನಾ" ನಾನಾರ್ಥರಂ ।

ದ್ರೋಣಕ ದ್ರೋಣಕ (ವಿಂ) 1. ಬೆಟ್ಟಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ವಾಸ ಮಾಡುವವರು. 2. ಮರದ ತೊಟ್ಟಿ. 3. ನೀಲಿಗಿಡ.

ದ್ರೋಣಕಾಕ ದ್ರೋಣಕಾಕ (ಪುಂ) ಮಂಡಕಾಗೆ, ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಕಾಗೆ.

ದ್ರೋಣಕೀರಾ ದ್ರೋಣಕೀರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ದ್ರೋಣ ದಷ್ಟು ಹಾಲು ಕರೆಯುವ ಹಸು. ದ್ರೋಣಪರಿಮಿತಂ ಕೀರಮಸ್ಯಾಃ ।

ದ್ರೋಣಗಂಧಿಕಾ ದ್ರೋಣಗಂಧಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣ್ಣ ರಾಶಿ.

ದ್ರೋಣದ್ರೂಢಾ ದ್ರೋಣದ್ರೂಢಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದ್ರೋಣದಷ್ಟು ಹಾಲು ಕರೆಯುವ ಹಸು. ದ್ರೋಣಮಿತಂ ದ್ರೂಢಂ ಯಸ್ಯಾಃ ।



ದ್ರೋಣದ್ರೂಪದ್ರೂಪ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದ್ರೋಣದ್ರೂಪದ್ರೂಪ  
ಹಾಲು ಕರೆಯುವ ಹಸು. ದ್ರೋಣಪರಿಮಿತ ದೋಷ — ದ್ರೂಹ  
(ಪ್ರಪೂಣ) “ಕಪ್” ವಶಾಂತಾದೇಶ: (೩-೨-೭೦) ।

ದ್ರೋಣಪದಿ ದ್ರೋಣಪದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದ್ರೋಣದಂತೆ ಕಾಲು  
ಗಳುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ದ್ರೋಣ ಇವ ಪಾದಾವಸ್ಯಾ: “ಕೀಪ್”  
(೪-೪-೧೩೯) । ಪಾದಸ್ಯಾಂತ್ಯಲೋಪಿ ಪದ್ಮಾವಶ್ಚ ।

ದ್ರೋಣಮುಖ ದ್ರೋಣಮುಖ (ನಂ) ನಾಲ್ಕು ನೂರು ಗ್ರಾಮ  
ಗಳನ್ನೊಳಗೊಂಡ ಒಂದು ಮುಖ್ಯ ಪಟ್ಟಣ. ಒಂದು  
ಜಿಲ್ಲೆಯ ಮುಖ್ಯ ಪಟ್ಟಣ. “ಕರ್ವಟೋಸ್ತೀ ದ್ರೋಣಮುಖಂ  
ಪೃಥ್ವಿ ಪುಟಭೇದನಮ್” ವೈಜಂ ।

ದ್ರೋಣಾ ದ್ರೋಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದ್ರೋಣ, ನೀರಿನ ತೊಟ್ಟಿ,  
ಜಲಾಶಯ, ನೀರು ತುಂಬುವ ಪಾತ್ರೆ. 2. ಒಂದು ವಿಧ  
ಮದ್ಯ.

ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯ ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯ (ಪುಂ) ಭರದ್ವಾಜ  
ಮಹರ್ಷಿಯ ಮಗ, ಕೌರವ ಪಾಂಡವರ ಅಸ್ತ್ರವಿದ್ಯಾ  
ಚಾರ್ಯರು. [“ದ್ರೋಣ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ದ್ರೋಣಾಹವ ದ್ರೋಣಾಹವ (ಪುಂ) ಹಸು ಮತ್ತು ಕುದುರೆ  
ಮೊದಲಾದವುಗಳಿಗೆ ಕುಡಿಯುವ ನೀರನ್ನು ತುಂಬಿಡುವ  
ಮರದ ತೊಟ್ಟಿ, ನೀರು ತುಂಬಿಡುವ ಮರದ ದೊಡ್ಡ  
ಪಾತ್ರೆ. ಆಹ್ವಯಂತ್ಯತ್ರ ಜಲಪಾನಾರ್ಥಂ ಪಶುನ್ ಆಹಾವೋ ಜಲಾಶಯ:  
—ದ್ರೋಣಮಯ: ಆಹಾವ: ।

ದ್ರೋಣಿ ದ್ರೋಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮರದ ದೋಣ, ನೀರನ್ನು  
ದಾಟುವ ಹರಿಗೋಲು. ದ್ರವತಿ ಗಚ್ಛತಿ ಜಲಮ್ — ದ್ರೂ  
(ಗತೀ) “ನಿ:” (೩ಂ ೪-೫೧) । “ಕೀಪ್” (ಗಂ  
೪-೧-೪೫) । 2. ಜಲಾಧಾರ, ನೀರು ತುಂಬಿಡುವ ಮರದ  
ಪಾತ್ರೆ. 3. ಮರದಿಂದ ಮಾಡಿದ ಸ್ನಾನದ ತೊಟ್ಟಿ.  
4. ಗೋವುಗಳಿಗೆ ಹುಲ್ಲುಹಾಕುವ ಮರದ ದೋಣ.  
5. ಒಂದು ದೇಶ. “ಸ್ತ್ರೀ ನಿವೃದಂತರೆ । ತಥಾ ಕಾಷ್ಠಾಂಬು-  
ವಾಹಿನ್ಯಾಂ ಗವಾದನ್ಯಾಮಪೀಷ್ಯತೇ” ಮೇದಿಂ । 6. ಎರಡು ಬೆಟ್ಟ  
ಗಳ ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶ, ಪರ್ವತಗಳ ಸಂಧಿ ಪ್ರದೇಶ. “ದ್ರೋಣಿ  
ತು ನಿವೃತಿ । ನೌಮೇದೇ ಶೈಲಸಂಧೌ ಚ” ಹೇಮಂ । 7. ದ್ರೋಣಾ  
ಚಾರ್ಯರ ಪತ್ನಿ ಕೃಷಿ. ದ್ರೋಣಸ್ಯ ಪತ್ನಿ । 8. ನೀರಿಗಿಡ.  
9. ಬಾಳೆಗಿಡ.

ದ್ರೋಣಿದಲ ದ್ರೋಣೀದಲ (ಪುಂ) ಕೇತಕೀವೃಕ್ಷ, ತಾಳೇಮರ.  
ದ್ರೋಣಿವ ದಲಮಸ್ಯ ।

ದ್ರೋಹ ದ್ರೋಹ (ಪುಂ) ಹಿಂಸೆ, ತೊಂದರೆ, ದ್ರೋಹ, ಕೆಡಕು,  
ಅನಿಷ್ಟ. ದ್ರೂಹ (ಜಿಘಾಂಸಾಯಾಮ್) “ಘಕ್” (೩-೩-೧೮) ।  
“ದೇವದ್ರೋಹಾದ್ಗುರೋದ್ರೋಹ: ಕೋಟಿಕೋಟಿಗುಣಾಧಿಕ:” ಕೂರ್ಮಪುಂ ।

ದ್ರೋಹಚಿಂತನ ದ್ರೋಹಚಿಂತನ (ನಂ) ಕೇಡನ್ನು ಬಯಸು  
ವುದು, ತೊಂದರೆಕೊಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು. ದ್ರೋಹಸ್ಯ  
ಅನಿಷ್ಟಸ್ಯ ಚಿಂತನಮ್ ।

ದ್ರೋಹವಚನ ದ್ರೋಹವಚನ (ನಂ) ಕೆಡಕಿನ ಮಾತು, ಅನಿಷ್ಟದ  
ಮಾತು.

ದ್ರೋಹಾಟ ದ್ರೋಹಾಟಿ (ವಿಂ) 1. ಮಾರ್ಜಾರವೃತ್ತವುಳ್ಳವನು,  
ಇತರರನ್ನು ವಂಚಿಸಿ ಹಿಂಸಿಸಲು ಪೇಷಹಾಕಿರುವವನು.  
2. ಬೇಡರವನು, ಕಿರಾತ, ಬೇಟೆಗಾರ. ದ್ರೋಹಾಟತಿ—ಅಟ  
(ಗತೀ) “ಅಚ್” । (ಪುಂ) 3. ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ಭೇದ.  
“ದ್ರೋಹಾಟೋ ಮೃಗಲುಘಕೇ । ಚತುಷ್ಪದೀಪ್ರಭೇದೇ ಚ ಬೈಡಾಲ-  
ವ್ರತಿಕೇಽಪಿ ಚ” ಹೇಮಂ ।

ದ್ರೋಹಿನ್ ದ್ರೋಹಿನ್ (ವಿಂ) ದ್ರೋಹಮಾಡುವವನು,  
ಕೆಡಕುಮಾಡುವವನು. ದ್ರೂಹತಿ — ದ್ರೂಹ “ಣಿನಿ:”  
(೩-೧-೧೩೪) ।

ದ್ರೋಣ ದ್ರೋಣ (ವಿಂ) ಒಂದು ದ್ರೋಣದಷ್ಟು ಧಾನ್ಯವನ್ನು  
ಹೊಂದಿರುವ, —ಒಯ್ಯುವ, —ಬೇಯಿಸುವ. ದ್ರೋಣ ಸಮ್ಮವತಿ  
ಅವಹರತಿ ಪಚತಿ ವಾ — ವಾ “ಅಣ್” (ವಾಂ ೪-೧-೫೨) ।  
ಪಕ್ಷೆ “ಠಕ್” (೪-೧-೧೫) । ದ್ರೋಣಕ: ದ್ರೋಣಕ:

ದ್ರೋಣಾಯನ ದ್ರೋಣಾಯನ (ಪುಂ) ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರ  
ಪುತ್ರ, ಅಶ್ವತ್ಥಾಮ. ದ್ರೋಣಸ್ಯಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ ವಾ “ಫಕ್”  
(೪-೧-೧೦೩) । ಪಕ್ಷೆ “ಙ್” (೪-೧-೧೫) । ದ್ರೋಣಾಯಿನಿ:  
ದ್ರೋಣಾಯಿನಿ: ಇಲ್ಲಿ ಮಹಾಭಾರತದ ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರಿ  
ಗಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನನಾದ ದ್ರೋಣನ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯ ಎಂಬ  
ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ “ಫಕ್” ಪ್ರತ್ಯಯ ವಿಹಿತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ  
“ಅಶ್ವತ್ಥಾಮ” ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಗೌಣ.

ದ್ರೋಣಾಯಿನಿ ದ್ರೋಣಾಯಿನಿ (ಪುಂ) ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರ  
ಮಗ, ಅಶ್ವತ್ಥಾಮ. ದ್ರೋಣಸ್ಯಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ “ಫಿಕ್” ।  
“ಸಕರ್ಣದ್ವಯೋಧನಶಾಲ್ವಶಲ್ಯದ್ರೋಣಾಯಿನಿಕಾಶಸುನೀತವಕ್ತಾ:” ಭಾಂ  
ಆದಿಂ ೨೦೨-೧೫ ।

ದ್ರೋಣಿ ದ್ರೋಣಿ (ಪುಂ) ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರ ಮಗ, ಅಶ್ವತ್ಥಾಮ.  
ದ್ರೋಣಸ್ಯಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ “ಙ್” (೪-೧-೧೫) ।

ದ್ರೋಣಿಕ ದ್ರೋಣಿಕ (ವಿಂ) 1. ಒಂದು ಕೋಳಿಗೆ ಧಾನ್ಯವನ್ನು  
ಬಿತ್ತಬಹುದಾದ ಕ್ಷೇತ್ರ. ದ್ರೋಣಸ್ಯ ವಾಪ: ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ — ದ್ರೋಣ  
“ಠಕ್” (೪-೧-೪೫) । 2. ಒಂದು ಕೋಳಿಗೆ ಧಾನ್ಯದಿಂದ  
ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ದ್ರೋಣೇನ ಕ್ರೀತಮ್ “ಠಕ್” (೪-೧-೨೦) ।

ದ್ರೋಪದ ದ್ರೋಪದ (ಪುಂ) ದ್ರುಪದರಾಜನ ಮಗ. ದ್ರುಪದಸ್ಯಾ-  
ಪತ್ಯಮ್ “ಅಣ್” (೪-೧-೧೧೨) ।



ಶ್ರೀಪದಾಯನಿ ದ್ರೌಪದಾಯನಿ (೪೦) 1. ದ್ರೌಪದನ ಮಗ. ದ್ರೌಪದಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಫಿನ್" (೪-೧-೧೫೪)। 2. ದ್ರೌಪದನು ವಾಸಿಸುವ ದೇಶ. ದ್ರೌಪದಸ್ಯ ನಿವಾಸೋ ದೇಶಃ "ಫಿನ್"। (ವಿಂ) 3. ದ್ರೌಪದನಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ದ್ರೌಪದೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಫಿನ್" (೪-೨-೮೦)।

ಶ್ರೀಪದೀ ದ್ರೌಪದೀ (ಸ್ರೀಂ) ದ್ರೌಪದರಾಜನ ಮಗಳು, ಪಾಂಡವರ ಪತ್ನಿ. ದ್ರೌಪದಸ್ಯಾಪತ್ಯಂ ಸ್ರೀ "ಅನ್" (೪-೧-೧೧೨)। "ಕೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। [ದ್ರೌಪದಿಯು ಧೃಷ್ಟದ್ಯುಮ್ನನೊಡನೆ ದ್ರೌಪದನ ಯಜ್ಞಕುಂಡದಿಂದ ಆವಿರ್ಭವಿಸಿದಳು. ಇವಳಿಗೆ ಕೃಷ್ಣಾ, ಯಾಜ್ಞಸೇನೀ, ಪಾಂಚಾಲೀ ಎಂದೂ ನಾಮಾಂತರಗಳುಂಟು. ಇವಳ ಸ್ವಯಂವರಕ್ಕೆ ಪಣವಾಗಿ ಟ್ಟಿದ್ದ ಮತ್ಸ್ಯಯಂತ್ರವನ್ನು ಅರ್ಜುನನು ಭೇದಿಸಿದ್ದರಿಂದ ವರಣಮಾಲೆಯನ್ನು ಅರ್ಜುನನಿಗೆ ಹಾಕಿದಳು. ತಾಯಿಯ ಮಾತಿನಂತೆ ಪಾಂಡವರು ಐವರೂ ದ್ರೌಪದಿಯ ಪಾಣ ಗ್ರಹಣಕ್ಕೆ ಬಂದರು. ಒಬ್ಬ ಮಗಳನ್ನು ಐದು ಮಂದಿಗೆ ವಿವಾಹಮಾಡಿಕೊಡಲು ಸಂಶಯವಡುತ್ತಿದ್ದ ದ್ರೌಪದನಿಗೆ ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯು ದ್ರೌಪದಿಯ ಪಂಚಪತ್ನೀತ್ವಕ್ಕೆ ಕಾರಣವನ್ನು ತಿಳಿಸಲಾಗಿ [ಕಾರಣವನ್ನು "ನಾಲಾಯನಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಧರ್ಮರಾಜ ಮೊದಲಾದ ಐದು ಮಂದಿ ಪಾಂಡವರಿಗೂ ಕೊಟ್ಟು ಮದುವೆಮಾಡಿದನು. ದ್ರೌಪದಿಯು ಧರ್ಮರಾಜ, ಭೀಮಸೇನ, ಅರ್ಜುನ, ನಕುಲ ಮತ್ತು ಸಹದೇವ ಇವರಿಂದ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಪ್ರತಿವಿಂಧ್ಯ, ಶ್ರುತಸೋಮ, ಶ್ರುತಕೀರ್ತಿ, ಶತಾನೀಕ ಮತ್ತು ಶ್ರುತಸೇನ ಎಂಬ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪಡೆದಳು. ಧರ್ಮರಾಜನ ರಾಜಸೂಯ ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಮಯನಿರ್ಮಿತವಾದ ಯಾಗಮಂಟಪದಲ್ಲಿ ದುರ್ಯೋಧನನು ಭ್ರಾಂತನಾಗಿ ತಬ್ಬಿಬ್ಬಾಗಿ ನಡೆಯುತ್ತಿದ್ದುದನ್ನು ನೋಡಿ ದ್ರೌಪದಿಯು ನಗಲಾಗಿ ಅದೇ ಕ್ರೋಧದಿಂದ ಧರ್ಮರಾಜನನ್ನು ದ್ಯೂತದಲ್ಲಿ ಸೋಲಿಸಿ ದ್ರೌಪದಿಯನ್ನು ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಿದನು. ಆರಣ್ಯವಾಸದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ದ್ರೌಪದಿಯು ಬೋಜನಾನಂತರ ದುರ್ಯೋಧನನ ಪ್ರೇರಣೆಯಿಂದ ಬಂದ ದುರ್ವಾಸ ಮಹರ್ಷಿಯು ದ್ರೌಪದಿಯ ಮಹಿಮೆಯನ್ನು ಕಂಡು ಶಿಷ್ಯರೊಡನೆ ಪಲಾಯನಮಾಡಿದರು. ದ್ರೌಪದಿಯು ಅಜ್ಞಾತವಾಸದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ "ಮಾಲಿನಿ" ಎಂಬ ಹೆಸರನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಂಡಿದ್ದಳು. ವಿರಾಟನಗರದಲ್ಲಿ ತನ್ನನ್ನು ಮೋಹಿಸಿ ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಯತ್ನಿಸಿದ ಕೀಚಕನನ್ನು ಭೀಮಸೇನನಿಂದ ಕೊಲ್ಲಿಸಿದಳು. ಧರ್ಮರಾಜನ ಅಭಿಪ್ರಾಯದಂತೆ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ದುರ್ಯೋಧನನಲ್ಲಿಗೆ ಸಂಧಿಗಾಗಿ ಹೊರಟಾಗ ದ್ರೌಪದಿಯು ದುರ್ಯೋಧನನ ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ತನಗಾದ

ಪರಾಭವವನ್ನು ಸ್ಮರಿಸಿಕೊಂಡು ಅಳುತ್ತಿರಲು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ದುರ್ಯೋಧನನ ಸಂಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಮಾಡಿ ದ್ರೌಪದಿಯನ್ನು ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸಿದನು. ಮಹಾಭಾರತದ ಯುದ್ಧಮುಗಿದ ದಿವಸವೇ ರಾತ್ರಿ ಶಿಬಿರದಲ್ಲಿ ಮಲಗಿದ್ದ ಉಪಪಾಂಡವರನ್ನು ಅಶ್ವತ್ಥಾಮನು ಕೊಂದುಹಾಕಲು ದ್ರೌಪದಿಯು ಅಶ್ವತ್ಥಾಮನನ್ನು ಕೊಂದುಬರುವಂತೆ ಭೀಮಸೇನನನ್ನು ಪ್ರೇರಿಸಲು ಭೀಮಸೇನನು ಅವನನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವ ಬದಲು ಅವನ ತಲೆಯಲ್ಲಿದ್ದ ರತ್ನವನ್ನು ತಂದುಕೊಟ್ಟು ದ್ರೌಪದಿಯನ್ನು ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸಿದನು. ದ್ರೌಪದಿಯು ತನ್ನ ಕರ್ತವ್ಯದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ಕೊನೆಯವರಿಗೂ ಗಾಂಧಾರಿಯನ್ನು ಉಪಚರಿಸುತ್ತ ಪ್ರಜಾಪರಿಪಾಲನೆಯು ಕ್ಷತ್ರಿಯನ ಕರ್ತವ್ಯವೆಂದು ಧರ್ಮರಾಜನಿಗೆ ಹೇಳುತ್ತಿದ್ದಳು.]

ಶ್ರೀಪದೇಯ ದ್ರೌಪದೇಯ (೪೦) ದ್ರೌಪದಿಯ ಮಕ್ಕಳು, ಉಪಪಾಂಡವರು.

|                                      |             |
|--------------------------------------|-------------|
| ಧರ್ಮರಾಜನಿಗೆ ದ್ರೌಪದಿಯಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿವಿಂಧ್ಯ |             |
| ಭೀಮಸೇನನಿಗೆ ..                        | ಶ್ರುತಸೋಮ    |
| ಅರ್ಜುನನಿಗೆ ..                        | ಶ್ರುತಕೀರ್ತಿ |
| ನಕುಲನಿಗೆ ..                          | ಶತಾನೀಕ      |
| ಸಹದೇವನಿಗೆ ..                         | ಶ್ರುತಸೇನ    |

ಎಂಬ ಮಕ್ಕಳು ಜನಿಸಿದರು. ಶ್ರೀಪದಾಃ ಅಪತ್ಯಮ್ "ತಕ್" (೪-೧-೧೨೦)।

ಶ್ರೀಹಿಕ ದ್ರೌಹಿಕ (ವಿಂ) ದ್ರೋಹಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದವನು, ಯಾವಾಗಲೂ ದ್ರೋಹಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯನಾದವನು. ದ್ರೋಹಂ ನಿಯಮಹಂತಿ "ತಕ್" (೫-೧-೬೪)।

ಶ್ರೀಹ್ಯ ದ್ರೌಹ್ಯ (ವಿಂ) ದ್ರೌಹ್ಯನ ಮಗ. ದ್ರೌಹ್ಯಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೧೨)।

ಛಂದಃ ದ್ವಂದ್ವ (ನಂ) 1. ಜೊತೆ, ಜೋಡಿ. ದ್ವಿಶಬ್ದಸ್ಯ ದ್ವಿತ್ವಂ — ಛಿ ಛಿ — ಪೂರ್ವಪದಸ್ಯ ಅಮ್ಭಾವಃ ಅತ್ವಂ ಚೋತ್ತರಪದಸ್ಯ ನಪುಂಸಕತ್ವಂ ಚ ನಿಪಾಂ (೮-೧-೧೫)। "ಮೃಗಛಂದೇಷು ಪಶ್ಯಂತೀ ಸ್ಯಂದನಾಬದ್ಧದೃಷ್ಟಿಃ" ರಘುಂ ೧-೪೦। 2. ಎರಡು ವಾದ ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳ ಜೊತೆ — ಸುಖ-ದುಃಖ, ಶೀತ-ಉಷ್ಣ, ಸ್ಥಾವರ-ಜಂಗಮ ಇತ್ಯಾದಿ. "ಛಂದೋರಯೋಜಯಜ್ವೇಮಾಃ ಸುಖ-ದುಃಖಾದಿಭಿಃ ಪ್ರಜಾಃ" ಮನುಂ ೧-೨೬। "ನ ಛಂದಃಕೃತ್ಸುಮಿಹ ಕಿಂಚಿದಕಿಂಚನೋಽಪಿ" ಮಾಘಂ ೪-೬೪। "ಕಾಠಾಗತಸ್ತೇಹ-ರಸಾನುವಿಛಂ ಛಂದಾತಿ ಭಾವಂ ಕ್ರಿಯಯಾ ವಿವತ್ಸುಃ" ಕುಮಾರಂ ೩-೩೫। 3. ಕಲಹ, ಜಗಳ. "ಘಟಂ ದಧಾನ್ ವಿವದೇವಿತಿ ಪ್ರಾಜಸ್ಯ ಲಕ್ಷಣಮ್। ವಿಠಾ ಹೇತುಮಪಿ ಛಂದಃಮೇತನ್ಮೂಲಸ್ಯ



ಲಕ್ಷಣಮ್" ಹಿತಂ । 4. ರಹಸ್ಯ, ಗುಟ್ಟು. 5. ಸ್ತ್ರೀ ಪುರುಷರ ಜೋಡಿ. 6. ದ್ವಂದ್ವಯುದ್ಧ, ಜಟ್ಟಿಕಾಳಗ. "ದ್ವಂದ್ವಂ ರಹಸ್ಯೇ ಕಲಹೇ ತಥಾ ಮಿಥುನಯುಗಮಯೋಃ" ಮೇದಿಂ । "ದ್ವಂದ್ವಂ ದ್ವಯಹಿಮೋಷಾಢಿ ಕಲಹೋ ಮಿಥುನಂ ರಹಃ" ನಾನಾರ್ಥಂ । (ಪುಂ) 7. ದ್ವಂದ್ವಸಮಾಸ, ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಅರ್ಥಗಳುಳ್ಳ ಪದಗಳಿಗೆ ಹೇಳುವ ಸಮಾಸ. ರಾಮಶ್ಚ ಕೃಷ್ಣಶ್ಚ ರಾಮಕೃಷ್ಣೌ ಹರಿಶ್ಚ ಹರಶ್ಚ ಹರಿಹರೌ । ಅನ್ವಾಚಯಃ ಸಮಾಹಾರಃ ಇತರೇತರ-ಯೋಃ ಸಮುನ್ವಯಃ ಎಂಬ ನಾಲ್ಕು ಅರ್ಥಗಳ ಪೈಕಿ ಸಮಾಹಾರ ಮತ್ತು ಇತರೇತರಯೋಃಗಳೆಂಬ (ಚ ಕಾರದ) ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಈ ದ್ವಂದ್ವಸಮಾಸವು ಬರುವುದು. 8. ದುರ್ಗ, ಕೋಟೆ. "ರಾಜೋ ಬಲಂ ನ ಹಿ ಬಲಂ ದ್ವಂದ್ವಮೇವ ಬಲಂ ಬಲಮ್ । ಅಪ್ಯಲ್ಪ-ಬಲವಾನ್ ರಾಜಾ ಸ್ಥಿರೋ ದ್ವಂದ್ವಬಲಾಢ್ನುವೇತ್" । 9. ಒಂದು ವಿಧ ರೋಗ.

ದ್ವಂದ್ವಾದ ದ್ವಂದ್ವಗದ (ಪುಂ) ರಾಗ-ದ್ವೇಷ ಕಾಮ-ಕ್ರೋಧ ರೂಪದ ದ ರೋಗ. ದ್ವಂದ್ವರೂಪೋ ಗದಃ ।

ದ್ವಂದ್ವಚರ ದ್ವಂದ್ವಚರ (ಪುಂ) 1. ಚಕ್ರವಾಹಪಕ್ಷಿ. ದ್ವಂದ್ವಿಭೂಯ ಚರತಿ-ಚರ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ಶಶಿನಾ ಪುನರೆತಿ ಶಶ್ವರೌ ದಯಿತಾ ದ್ವಂದ್ವಚರಂ ಪತತ್ರಣಮ್" ರಘುಂ ೮-೪೬ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬೩) । -ಚರೌ-ಚರೀ (ವಿಂ) 2. ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೪) ।

ದ್ವಂದ್ವಚಾರಿನ್ ದ್ವಂದ್ವಚಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ. ದ್ವಂದ್ವಿಭೂಯ ಚರತಿ-ಚರ "ಚಿರಿ" (೩-೨-೭೮) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪) । -ಚಾರಿಣಿ-ಚಾರಿಣೀ.

ದ್ವಂದ್ವಜ ದ್ವಂದ್ವಜ (ವಿಂ) 1. ಕಲಹದಿಂದ ಉಂಟಾದ. ದ್ವಂದ್ವಾಜ್ಜಾಯತೇ-ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಙಃ" (೩-೨-೯೮) । 2. ಪಾತಪಿತ್ತಕಫಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವುದಾದರೊಂದರಿಂದ ಉಂಟಾದ ರೋಗ.

ದ್ವಂದ್ವಯುದ್ಧ ದ್ವಂದ್ವಯುದ್ಧ (ನಂ) ಇಬ್ಬರಿರ ಜಗಳ. ದ್ವಯೋರ್ಧ್ವಯೋರ್ಯುದ್ಧಮ್ । "ಕೇರಾತೇ ದ್ವಂದ್ವಯುದ್ಧೇ ಚ ತದಿದಂ ಮಯಿ ವರ್ತತೇ" ಭಾಂ ತತ್ಪ್ರಾಂ ೧೯೪-೧೨ ।

ದ್ವಯ ದ್ವಯ (ನಂ) 1. ಎರಡು, ಒಂದು ಜೊತೆ. ಎರಡು ಅವಯವಗಳ ಸಮುದಾಯ. ದ್ವಿ ಅವಯವೇ "ತಯಪ್" (೪-೨-೪೨) । ವಾ "ಅಯಚ್" (೪-೨-೪೩) । "ಸೇನಾ ಪರಿಚ್ಛದಂತಸ್ಯ ದ್ವಯಮೇವಾರ್ಥಸಾಧನಮ್" ರಘುಂ ೧-೧೯ । "ಶಬ್ದಾರ್ಥೌ ಸತ್ಕವಿರಿವ ದ್ವಯಂ ವಿಧಾನೇಷತೇ" ಮಾಧಂ ೨-೮೬ । 2. ಎರಡು ವಿಧವಾದ, ಎರಡು ಬಗೆಯಾದ. "ಜನೇರಜಾತ-

ಸ್ವಲನೇನ ಜಾತು ದ್ವಯೇಷ್ಯಮುಚ್ಯಂತ ವಿನಿತಿತಮಾರ್ಗಃ" ಮಾಧಂ ೩-೪೭ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೪) । ದ್ವಯೌ ದ್ವಯೌ । "ಪುನರ್ಗ್ರಹೀತುಂ ನಿಯಮಸ್ಯಥಾ ತಥಾ ದ್ವಯೌ ನಿಕ್ಷೇಪ ಇವಾಪಿತಂ ದ್ವಯಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೧೩ ।

ದ್ವಯಾತಿಗ ದ್ವಯಾತಿಗ (ವಿಂ) ರಜಸ್ಸು ಮತ್ತು ತಮಸ್ಸು ಗಳೆಂಬ ಎರಡು ಗುಣಗಳನ್ನು ಮೀರಿದವನು, ಸತ್ತ್ವಗುಣ ಪ್ರಚುರನು. ದ್ವಯಮತಿಗಚ್ಛತಿ-ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಙಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) ।

ದ್ವಾಃಸ್ಯ ದ್ವಾಃಸ್ಯ (ಪುಂ) ದ್ವಾರಪಾಲಕ, ಬಾಗಿಲು ಕಾಯುವವನು. ದ್ವಾರಿ ತಿಷ್ಠತಿ-ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಕಃ" (೩-೨-೪) । "ತೇ ಸಧನಿ ಗಿರೇರ್ಬಗಾಡುನ್ಮುಖದ್ವಾಃಸ್ಯವೀಕ್ಷಿತಾಃ" ಕುಮಾಂ ೬-೪೮ ।

ದ್ವಾಃಸ್ಯಿತ ದ್ವಾಃಸ್ಯಿತ (ಪುಂ) ದ್ವಾರಪಾಲಕ, ಬಾಗಿಲಲ್ಲಿ ನಿಂತು ಕಾಯುವವನು. ದ್ವಾರಿ ಸ್ಥಿತಃ ।

ದ್ವಾಃಸ್ಯಿತದರ್ಶಕ ದ್ವಾಃಸ್ಯಿತದರ್ಶಕ (ಪುಂ) ದ್ವಾರಪಾಲಕ. ದ್ವಾಚತ್ವಾರಿಶ ದ್ವಾಚತ್ವಾರಿಂಶ (ವಿಂ) ನಲವತ್ತೆರಡನೆಯ. ದ್ವಾಚತ್ವಾರಿಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ "ಙಟ್" (೪-೨-೪೮) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೪) । -ಚತ್ವಾರಿಶೌ-ಚತ್ವಾರಿಂಶೀ. ಙಟ್ಃ ವಾ "ತಮಟ್" (೪-೨-೪೬) । -ಚತ್ವಾರಿಶತಮಃ-ಚತ್ವಾರಿಂಶತ್ತಮಃ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" -ತಮೌ-ತಮಿಜಾ.

ದ್ವಾಚತ್ವಾರಿಶತ್ ದ್ವಾಚತ್ವಾರಿಂಶತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಲವತ್ತೆರಡು. ದ್ವಯಧಿಕಾ ಚತ್ವಾರಿಶತ್ । ದ್ವಿಶಬ್ದಸ್ಯ ವಾ "ಆತ್" (೬-೩-೪೯) ।

ದ್ವಾತ್ರಿಶ ದ್ವಾತ್ರಿಂಶ (ವಿಂ) ಮೂವತ್ತೆರಡನೆಯ. ದ್ವಾತ್ರಿಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ "ಙಟ್" (೪-೨-೪೮) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೪) । -ತ್ರಿಶೌ-ತ್ರಿಂಶೀ. ಙಟ್ಃ ವಾ "ತಮಟ್" (೪-೨-೪೬) । -ತ್ರಿಶತಮಃ-ತ್ರಿಂಶತ್ತಮಃ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೪) । -ತಮೌ-ತಮಿಜಾ.

ದ್ವಾತ್ರಿಶತ್ ದ್ವಾತ್ರಿಂಶತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂವತ್ತೆರಡು. ದ್ವಯಧಿಕಾ ತ್ರಿಶತ್ ।

ದ್ವಾತ್ರಿಶದಪರಾಧ ದ್ವಾತ್ರಿಂಶದಪರಾಧ (ಪುಂ) ದೇವರ ಸನ್ನಿಧಿಯಲ್ಲಿ ನಡೆಯಬಹುದಾದ ಮೂವತ್ತೆರಡು ವಿಧ ಅಪಚಾರಗಳು. ದೇವಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಪಾಪನದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ಸಂಚರಿಸುವುದು, ಪಾದರಕ್ಷೆಯನ್ನು ಹಾಕಿಕೊಂಡು ಹೋಗುವುದು, ಉತ್ಸವಕಾಲದಲ್ಲಿ ದೇವರ ಸೇವೆ ಮಾಡದಿರುವುದು, ದೇವರನ್ನು ನಮಸ್ಕರಿಸದಿರುವುದು, ಅಶೌಚಕಾಲದಲ್ಲಿ ದೇವರನ್ನು ನಮಸ್ಕರಿಸುವುದು, ಒಂದು ಕೈಯಿಂದ ದೇವರನ್ನು ನಮಸ್ಕರಿಸುವುದು, ದೇವರ ಮುಂದೆ ಕಾಲುಚಾಚಿ ಕೂಡು



ವುದು, ಮಲಗುವುದು, ತಿನ್ನುವುದು, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಮಾತಾಡುವುದು, ಪರಸ್ಪರ ಸಲ್ಲಾಪ, ರೋದನ, ಅನವಶ್ಯವಾದ ಮಾತು, ಅಮಂಗಲಭಾಷಣ, ಅಪಾನವಾಯು ಬಿಡುವುದು, ದೇವರ ನಿಂದೆ ಇತ್ಯಾದಿ ದೇವರ ಸನ್ನಿಧಿಯಲ್ಲಿ ಮಹಾಪರಾಧಗಳು.

**ದ್ವಾತ್ರಿಸಂಖ್ಯಾ ದ್ವಾತ್ರಿಂಶತ್ ಲಕ್ಷಣ (೪೦) ಮೂವತ್ತೆರಡು ಶುಭಲಕ್ಷಣಗಳುಳ್ಳ ಮಹಾಪುರುಷ. ಮಹಾಪುರುಷನ ಮೂವತ್ತೆರಡು ಲಕ್ಷಣಗಳು :**

**ಪಂಚವೀರ್ಯ :**—ಬಾಹುಗಳು ನೇತ್ರಗಳು ಕನ್ನೆಗಳ ಮೇಲುಭಾಗಗಳು ಮೂಗು ಮತ್ತು ಎದೆ ಇವು ಐದೂ ದೀರ್ಘವಾಗಿಯೂ

**ಪಂಚಸೂಕ್ಷ್ಮ :**—ಚರ್ಮ ತಲೆಯ ಕೂದಲು ಬೆರಳುಗಳು ಹಲ್ಲುಗಳು ಮತ್ತು ಬೆರಳುಗಳ ಗಿಣ್ಣುಗಳು ಇವು ಐದೂ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿಯೂ

**ಸಪ್ತರಕ್ತ :**—ಅಂಗೈಗಳು ಅಂಗುಲುಗಳು ಕಡೆಗಣ್ಣುಗಳು ದವಡೆ ನಾಲಿಗೆ ಕೆಳತುಟಿ ಮತ್ತು ಉಗುರು(ನಖ) ಇವು ಏಳೂ ರಕ್ತವಾಗಿಯೂ

**ಷಡ್ವಜ್ರತ :**—ಕಕ್ಷ (ಕಂಕಳು)ಗಳು ಉದರ ಹಣೆ ಭುಜಗಳು ಕೈ ಮತ್ತು ಮುಖ ಇವು ಆರೂ ಉನ್ನತ (ಉಬ್ಬಿದವು) ಗಳಾಗಿಯೂ

**ತ್ರಿಪುಷ್ಪ :**—ಹಣೆ ಕಟ (ಪಿರ್ರ) ಮತ್ತು ಎದೆ ಇವು ಮೂರೂ ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿಯೂ

**ತ್ರಿಲಘು :**—ಕಂಠ (ಕುತ್ತಿಗೆ) ಮೊಳಕಾಲು ಮತ್ತು ಮೇಹನ (ಶಿಶ್ನ) ಇವು ಮೂರೂ ಹ್ರಸ್ವವಾಗಿಯೂ

**ತ್ರಿಗಂಧಿರ :**—ಸ್ವರ ಸತ್ತ್ವ ಮತ್ತು ನಾಭಿ ಇವು ಮೂರೂ ಗಂಧೀರವಾಗಿಯೂ ಇರುವವನು ಮಹಾಪುರುಷನು.

**ದ್ವಾದಶ ದ್ವಾದಶ (ವಿಂ) ಹನ್ನೆರಡನೆಯ. ದ್ವಾದಶಾನಾಂ ಪೂರ್ಣ :**  
ದ್ವಾದಶಾನ್ "ಡ್" (೪-೨-೪೮) । ಸ್ತ್ರಿಯಾನ್ "ಕೀ" (೪-೨-೨೪) । -ದಶಿ -ದಶೀ.

**ದ್ವಾದಶಕ ದ್ವಾದಶಕ (ವಿಂ) ಹನ್ನೆರಡರಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಹನ್ನೆರಡು ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ. ದ್ವಾದಶಸಂಖ್ಯಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಕನ್" ।**  
"ವೇಶ್ಯೇ ಸ್ಯಾದರ್ಶಪಂಚಾಶ್ಚಕ್ಷುರೇ ದ್ವಾದಶಕೋ ದಮಃ" ಮನ್ಯುಂ ೮-೨೬೮ ।

**ದ್ವಾದಶಕರ ದ್ವಾದಶಕರ (೪೦) ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪಣ್ಣುಖ. ದ್ವಾದಶ ಕರಾ ಯಸ್ಯ ।**

**ದ್ವಾದಶಾನ್ ದ್ವಾದಶನ್ (ವಿಂ) ಹನ್ನೆರಡು. ದ್ವಿ ವ ದಶ ವ । ದ್ವಿಶಬ್ದಸ್ಯ "ಬಾತ್" (೬-೩-೪೭) ।**

**ದ್ವಾದಶಾಕ್ಷರ ದ್ವಾದಶಪುತ್ರ (೪೦ ೪೦ ೪೦) ಔರಸ ಮೊದಲಾದ ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಪುತ್ರರು. (1) ಔರಸಃ, (2) ಕ್ಷೇತ್ರಜಃ, (3) ದತ್ತಃ, (4) ಕೃತ್ರಿಮಃ, (5) ಗೃಹೋತ್ಪನ್ನಃ, (6) ಅಪವಿಡಃ, (7) ಕಾನೀನಃ, (8) ಸಹೋದರಃ, (9) ಕೌತಃ, (10) ಪೌನರ್ಮವಃ, (11) ಸ್ವಯಂಜಿತಃ ಮತ್ತು (12) ಶೋದಃ ಇವರು ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಪುತ್ರರು.**

(1) ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ ಮದುವೆಯಾದ ಪತ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು ಔರಸಪುತ್ರ.

(2) ತನ್ನ ಪತ್ನಿಯಲ್ಲಿ ತನಗೆ ಮಕ್ಕಳಾಗದೆ ನಿಯುಕ್ತನಾದವನಿಂದ ಜನಿಸಿದವನು ಕ್ಷೇತ್ರಜ.

(3) ಆಪತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ ತಾಯಿತಂದೆಗಳು ತಮ್ಮ ಸಮ್ಮತಿಯಿಂದ ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ ದಾನಮಾಡಿದ ಪುತ್ರಗುಣ ಸಂಪನ್ನನಾದ ಮಗನು ದತ್ತಪುತ್ರನು.

(4) ಗುಣದೋಷಗಳನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದ ಮತ್ತು ಪುತ್ರಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಬ್ಬನನ್ನು ತನ್ನ ಪುತ್ರನನ್ನಾಗಿ ಪರಿಗಣಿಸಿದರೆ ಅವನು ಕೃತ್ರಿಮಪುತ್ರ.

(5) ಪತಿಯು ಮನೆಯಲ್ಲಿಲ್ಲದಿರುವಾಗ ಗೂಢವಾಗಿ ಪರಪುರುಷಸಂಗದಿಂದ ಜನಿಸಿದ ಪುತ್ರನು ಗೂಢೋತ್ಪನ್ನನು.

(6) ಹೆತ್ತ ತಾಯಿತಂದೆಗಳಿಂದ ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನನ್ನು ಪುತ್ರನನ್ನಾಗಿ ಸಾಕಿದರೆ ಅವನು ಅಪವಿಡ.

(7) ಪಿತೃಗೃಹದಲ್ಲಿರುವಾಗಲೇ ವಿವಾಹವಾಗದ ಕನ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು ಕಾನೀನ.

(8) ಗರ್ಭಿಣಿಯಾದನಂತರ ಮದುವೆಯಾದ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು ಸಹೋದರನು.

(9) ಹೆತ್ತ ತಾಯಿತಂದೆಗಳಿಂದ ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಪಡೆದ ಮಗನು ಕೌತಪುತ್ರ.

(10) ಪತಿಯಿಂದ ಪರಿತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಅಥವಾ ವಿಶ್ವಸ್ತೆಯಲ್ಲಿ ಪರಪುರುಷನಿಂದ ಜನಿಸಿದ ಮಗನು ಪೌನರ್ಮವನು.

(11) ತಾಯಿತಂದೆಗಳಲ್ಲದವನು ಅಥವಾ ಕಾರಣವಿಲ್ಲದೆ ದ್ವೇಷದಿಂದ ಅವರು ತ್ಯಜಿಸಿದಕಾರಣ ಮಗನಾಗುವನೆಂದು ತಾನಾಗಿ ಬಂದ ಮಗನು ಸ್ವಯಂದತ್ತಪುತ್ರ.

(12) ಕ್ಷೇತ್ರನಿಯಮವಿಲ್ಲದೆ ಯಾವಳಾದರೊಬ್ಬ ಶೂದ್ರಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ಜನಿಸಿದ ಮಗನು ಶೋದ. ಈ 12 ವಿಧ ಪುತ್ರರಲ್ಲಿ ಮೊದಲು ಮುಂದಿನವನಿಗಿಂತ ಹಿಂದಿನವನು ಶ್ರೇಷ್ಠ.



**ದ್ವಾದಶಭಾವ ದ್ವಾದಶಭಾವ (೧೦) ಜ್ಯೋತಿಃಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ**  
ಹೇಳಿರುವ ಜನನಕಾಲದ ಲಗ್ನ ಮೊದಲಾದ ಹನ್ನೆರಡು ಭಾವಗಳು.

(1) **ಲಗ್ನ : ತನುಭಾವ:-**ಇದರಿಂದ ಜಾತಕನ ರೂಪ, ವರ್ಣ, ಶರೀರ ಸಂಪತ್ತು, ಚಿಹ್ನೆ, ಜಾತಿ, ಆಯುಷ್ಯ, ಪ್ರಮಾಣ, ಸುಖ, ದುಃಖ, ಸಾಹಸ, ಇತ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ತಿಳಿಯಬಹುದು.

(2) **ದ್ವಿತೀಯಭಾವ:-**ಇದರಿಂದ ಕುಟುಂಬ, ಧನ, ಮೃತ್ಯು, ಗಂಡ, ವೈರ ಲೋಹ, ಮುಖ, ವಾಕ್ಯ, ವಿದ್ಯೆ, ಮಿತ್ರರು ಮುಂತಾದವನ್ನು ತಿಳಿಯಬಹುದು.

(3) **ತೃತೀಯಭಾವ:-**ಭ್ರಾತೃ, ಭಗಿನಿ, ವಿಕ್ರಮ, ಧೈರ್ಯ, ಭೃತ್ಯ, ದಕ್ಷಿಣಕರ್ಣ, ಪ್ರಯಾಣ, ಔಷಧ, ಕಂಠಸ್ಥಾನ, ಇತ್ಯಾದಿ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿಯಬಹುದು.

(4) **ಚತುರ್ಥಭಾವ:-**ಇದು ಮಾತೃ, ಸುಖ, ಗೃಹ, ಕ್ಷೇತ್ರ, ವಾಹನ, ಬಂಧು, ನಿಧಿ, ಪ್ರಾಸಾದ, ಧರ್ಮ, ಸಿಂಹಾಸನ, ಶಯನಸುಖ ಇತ್ಯಾದಿ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು.

(5) **ಪಂಚಮಭಾವ:-**ಇದು ಪುತ್ರ, ಬುದ್ಧಿ, ಮಂತ್ರ, ವಿನಯ, ನೀತಿ, ಭೋಜನ, ಉದರ, ವಿವೇಕ, ಶಕ್ತಿ, ರೇತಸ್ಸು ಇತ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು.

(6) **ಷಷ್ಠಭಾವ:-**ಇದು ಜ್ಞಾತಿಗಳು, ಮಾತುಲ, ಸಪತ್ನೀಮಾತೃ, ಚೋರ, ರೋಗ, ರಿಪು, ಋಣ, ವಿಘ್ನ, ಕ್ಲೇಶ, ನಾಭಿ ಇತ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು.

(7) **ಸಪ್ತಮಭಾವ:-**ಇದರಿಂದ ಕಳತ್ರ (ಪತ್ನಿ), ಭರ್ತೃ (ಪತಿ), ವಿವಾಹ, ಕಾಮ, ಪ್ರಯಾಣ ಇತ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ತಿಳಿಯಬಹುದು.

(8) **ಅಷ್ಟಮಭಾವ:-**ಆಯುಷ್ಯ, ಮೃತಿ, ಉಪ ಜೀವನ ಇವುಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು.

(9) **ನವಮಭಾವ:-**ಪಿತೃಭಾಗ್ಯ, ಆಚಾರ, ಧರ್ಮ ಬುದ್ಧಿ, ದೇವತೋಪಾಸನೆ ಮುಂತಾದವುಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು.

(10) **ದಶಮಭಾವ:-**ಇದು ಜೀವನೋಪಾಯ, ವೃತ್ತಿ, ಕರ್ಮ, ಗೌರವ, ಕೀರ್ತಿ ಇತ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು.

(11) **ಏಕಾದಶಭಾವ:-**ಇದು ಲಾಭ, ವಾಹನ, ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರ, ಜಯ, ರತ್ನಪ್ರಾಪ್ತಿ ಇತ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು.

(12) **ದ್ವಾದಶಭಾವ:-**ಇದು ವ್ಯಯ, ಅಪವರ್ಗ ಮುಂತಾದವನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು.

**ದ್ವಾದಶಮಘ ದ್ವಾದಶಮಘ (೧೦) ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಮಂದ್ಯ**  
ಗಳು. (1) ಪಾನಸಮ್, (2) ದ್ರಾಕ್ಷಮ್, (3) ಮಾಧುಕಮ್, (4) ಕ್ಷಾರ್ಜುರಮ್, (5) ತಾಲಮ್, (6) ಔಷ್ಣವಮ್, (7) ಮಾಧ್ವಿಕಮ್, (8) ಟಾಕ್ಷಮ್, (9) ಟಕ್ಷುಮಾಧ್ವಿಕಮ್, (10) ಮೇರೆಯಮ್, (11) ನಾರಿಕೇಲಜಮ್ ಮತ್ತು (12) ಸುರಾಮಘಮ್. ಇವು ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಮಂದ್ಯಗಳು.

**ದ್ವಾದಶಮಲ ದ್ವಾದಶಮಲ (೧೦) ಮನುಷ್ಯನ ದೇಹದಲ್ಲಿ**  
ರುವ ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಮಲಗಳು. (1) ಕೊಬ್ಬು, (2) ವೀರ್ಯ (ಶುಕ್ರ), (3) ರಕ್ತ, (4) ಮಜ್ಜೆ (ದೇಹ ಸಾರ), (5) ಮೂತ್ರ, (6) ವಿಷ್ಣೆ, (7) ಕಿವಿಯ ಗುಗ್ಗಿ, (8) ನಖ, (9) ಕಫ, (10) ಅಸ್ಥಿ (ಎಲುಬು), (11) ಕಣ್ಣಿನ ಪಿಸುರು ಮತ್ತು (12) ಬೆವರು ಇವು ಹನ್ನೆರಡು ಮಲಗಳು. "ವಸಾಶ್ರುಕ್ರಮಸೃಗ್ಮಜ್ಜಂ ಮೂತ್ರವಿಡ್ಕರ್ಣವಿಡ್ನಣ್ಣಾಃ | ಕ್ಲೇಷ್ಮಾಸ್ಥಿರ್ದೂಷಿಕಾ ಸ್ವೇದೋ ದ್ವಾದಶೇತೇ ನೃಣಾಂ ಮಲಾಃ" ಅತ್ರಿಸಂ |

**ದ್ವಾದಶಮಾಸ ದ್ವಾದಶಮಾಸ (೧೦) 1. ಚೈತ್ರ ಮೊದಲಾದ**  
ಹನ್ನೆರಡು ತಿಂಗಳು. (1) ಚೈತ್ರ, (2) ವೈಶಾಖ, (3) ಜ್ಯೇಷ್ಠ, (4) ಆಷಾಢ, (5) ಶ್ರಾವಣ, (6) ಭಾದ್ರಪದ, (7) ಆಶ್ವಯುಜ, (8) ಕಾರ್ತಿಕ, (9) ಮಾರ್ಗಶಿರ, (10) ಪುಷ್ಯ, (11) ಮಾಘ ಮತ್ತು (12) ಫಾಲ್ಗುಣ ಇವು ಹನ್ನೆರಡು ತಿಂಗಳುಗಳು. 2. ಹನ್ನೆರಡು ತಿಂಗಳುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ವರ್ಷ.

**ದ್ವಾದಶಲೋಚನ ದ್ವಾದಶಲೋಚನ (೧೦) ಪಣ್ಣುಖ,**  
ಕಾರ್ತಿಕೇಯ. ದ್ವಾದಶ ಲೋಚನಾನಿ ಯಸ್ಯ |

**ದ್ವಾದಶಸಂಕ್ರಾಮ ದ್ವಾದಶಸಂಕ್ರಾಮ (೧೦) ದೇವದಾನವ**  
ರಿಗೆ ನಡೆದ ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಯುದ್ಧ.

- |                           |                   |
|---------------------------|-------------------|
| (1) ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವಿನೊಡನೆ    | ..ನಾರಸಿಂಹ ಸಂಕ್ರಾಮ |
| (2) ಬಲಿಯೊಡನೆ              | ..ವಾಮನ            |
| (3) ಹಿರಣ್ಯಾಕ್ಷನೊಡನೆ       | ..ವರಾಹ            |
| (4) ದಾನವರೊಡನೆ             | ..ಅಪ್ಸರತಮೋಧನ      |
| (5) ದೇವತೆಗಳ ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ    | ..ತಾರಕಾಮಯ         |
| (6) ..                    | ..ಆಜೀವಕ           |
| (7) ತ್ರಿಪುರಾಸುರವಧೆಗಾಗಿ    | ..ತೃಪುರ           |
| (8) ಅಂಧಕಾಸುರ ಸಂಹಾರಕ್ಕಾಗಿ  | ..ಅಂಧಕವಧ          |
| (9) ವೃತ್ರವಧೆಗಾಗಿ          | ..ವೃತ್ರಘಾತಕ       |
| (10) ದುಷ್ಪಕ್ಷತ್ರಯ ವಧೆಗಾಗಿ | ..ಜಿತ             |
| (11) ಹಾಲಾಹಲದೈತ್ಯನಿಗಾಗಿ    | ..ಹಾಲಾಹಲ          |
| (12) ಕೋಲಾಹಲ ದೈತ್ಯವಧೆಗಾಗಿ  | ..ಕೋಲಾಹಲ          |



ದ್ವಾರ ದ್ವಾರ (ನಂ) 1. ಬಾಗಿಲು, ಮನೆಯಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೂ  
ಹೊರಗಿಂದ ಮನೆಗೂ ಹೋಗುವ ಜಾಗ. ದ್ವಾರಯತಿ-ದ್ವ  
(ಸಂವರಣ) + ಣಿच् "ಅಚ್" (3-1-138)। "ಆಕೋಣಮೃ-  
ಪತ್ನೀನಾಮೃತಜದ್ವಾರರೋಷಿಭಿಃ" ರಘುಂ 1-50। ಮನೆಯು



ಹೊರಬಾಗಿಲನ್ನು ಸರಿಮಧ್ಯದಲ್ಲಿಡಬೇಕೆಂದು. ಸ್ವಲ್ಪ ಹೆಚ್ಚು ಕಡಮೆ ಒಂದು ಪಾರ್ಶ್ವಕ್ಕೆ ಸೇರಿದಂತಿಡಬೇಕು. "ಗೃಹಿಣಾಂ ಶುಭದ್ ದ್ವಾರಂ ಪ್ರಾಕಾರಸ್ಯ ಗೃಹಸ್ಯ ಚ | ನ ಮಧ್ಯದೇಶೋ ಕರ್ತವ್ಯಃ | ಕಿಂಚಿನ್ಯುನಾಧಿಕಂ ಶುಭಮ್" ಬ್ರಹ್ಮವೈವರ್ತೇ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಜನ್ಮಖಂಡಮ್ | 2. ಉಪಾಯ, ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. "ದ್ವಾರಂ ತು ದ್ವಾರ್ಯಪಾಢೇ ಚ" ನಾನಾರ್ಥರಂ | 3. ಹೊರಬಾಗಿಲು. "ವಗವಿಮೌ ದೇವಮಹಿ-ಧರಾಣಾಂ ದ್ವಾರೆ ಪುರಸ್ಯೋದ್ಭವದಿತಾಪಿಧಾನೇ" ಕುಮಾರಂ ೭-೫೩ | 4. ಮಹಾದ್ವಾರ. 5. ದೇಹದ ನವರಂಧ್ರಗಳು. "ಮನೋ ನವದ್ವಾರನಿಷಿದ್ಧವೃತ್ತಿ ಹೃದಿ ವ್ಯವಸ್ಥಾಪ್ಯ ಸಮಾಧಿವಶ್ಯಮ್" ಕುಮಾರಂ ೭-೫೦ |

**ದ್ವಾರಕಾಂಟಕ ದ್ವಾರಕಾಂಟಕ (ಪುಂ)** ಕವಾಟ, ಕದ. ದ್ವಾರಸ್ಯ ಕಾಂಟಕ ಇವ | "ಕಪಾಟೋ ದ್ವಾರಕಾಂಟಕಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ದ್ವಾರಕಾ ದ್ವಾರಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದ್ವಾರಕಾನಗರ. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಪ್ರಧಾನನಗರ. ಪ್ರಾಸ್ತೇನ ದ್ವಾರೆಣ ಕಾಯತಿ - ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | [ಕಂಸವಧೆಯಿಂದ ಕುಹಿತನಾದ ಜರಾಸಂಧನು ಪದೇ ಪದೇ ಮಧುರೆಯನ್ನು ಮುತ್ತಿ ಜನರನ್ನು ಹೀಡಿಸುತ್ತಿರಲು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಸಮುದ್ರತೀರದಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವಕರ್ಮನಿಂದ ಈ ನಗರ ನಿರ್ಮಾಣಮಾಡಿಸಿದನು. ಇದು ಗುಜರಾತಿನ ಪಶ್ಚಿಮಭಾಗದಲ್ಲಿರುವುದು.]

**ದ್ವಾರಕಾನಾಥ ದ್ವಾರಕಾನಾಥ, -ಪತಿ -ಪತಿ (ಪುಂ)** ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ.

**ದ್ವಾರಗೋಪ ದ್ವಾರಗೋಪ (ಪುಂ)** ದ್ವಾರಪಾಲಕ, ಬಾಗಿಲು ಕಾಯುವವನು. ದ್ವಾರಂ ಗೋಪಾಯತಿ-ಗುಪ್ತ (ರಕ್ಷಣೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |

**ದ್ವಾರಪ ದ್ವಾರಪ (ಪುಂ)** ದ್ವಾರಪಾಲಕ, ಬಾಗಿಲು ಕಾಯುವವನು. ದ್ವಾರಂ ಪಾತಿ-ಪಾ (ರಕ್ಷಣೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) |

**ದ್ವಾರಪಾಲ ದ್ವಾರಪಾಲ (ಪುಂ)** ದ್ವಾರಪಾಲಕ. ದ್ವಾರಂ ಪಾಲಯತಿ - ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೇ) + ಣಿಚ್ "ಅನ್" (೩-೨-೧) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | -ಪಾಲಿ -ಕಾಲೀ. "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | -ಪಾಲಕಃ -ಕಾಲಕಃ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಢಾಪ್" (೪-೧-೪) | ಅತಃ ಇತ್ಯಮ್ | -ಪಾಲಿಕಾ -ಕಾಲಿಕಾ.

**ದ್ವಾರಪಾಲಿಕ ದ್ವಾರಪಾಲಿಕ (ಪುಂ)** ದ್ವಾರಪಾಲಿಯ ಮಗ. ದ್ವಾರಪಾಲಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೪೬) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | -ಪಾಲಿಕೀ -ಕಾಲಿಕೀ.

**ದ್ವಾರಪಿಂಡಿ ದ್ವಾರಪಿಂಡೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದೇಹಳಿ, ಹೊಟ್ಟೆ. ದ್ವಾರಪಿಧಾಂ ದ್ವಾರಪಿಧಾನ (ನಂ) ಬಾಗಿಲನ್ನು ಮುಚ್ಚುವುದು. ದ್ವಾರಸ್ಯ ಪಿಧಾನಮ್ | "ದ್ವಾರಪಿಧಾನಮಿವ ಭೃತೇರ್ಮಯೇ ತಸ್ಯಾಸ್ತಿರಸ್ಕರಿಣಿಮ್" ಮಾಲಂ ೨-೧೧ |

**ದ್ವಾರಬಾಹು ದ್ವಾರಬಾಹು (ಪುಂ)** ದ್ವಾರಬಂಧದ ಕಂಬ, ಬಾಗಿಲಿಗೆ ಅಗುಳಿಹಾಕುವ ಕಂಬ.

**ದ್ವಾರಯನ್ತ್ರ ದ್ವಾರಯಂತ್ರ (ನಂ)** ಬಾಗಿಲಿನ ತಾಪಾಳು, ಬಾಗಿಲಿಗೆ ಹಾಕುವ ಅಗುಳಿ. ದ್ವಾರೆ ಸ್ಥಿತಂ ಯನ್ತ್ರಮ್ |

**ದ್ವಾರರಕ್ಷಕ ದ್ವಾರರಕ್ಷಕ (ಪುಂ)** ಬಾಗಿಲನ್ನು ಕಾಯುವವನು, ದ್ವಾರಪಾಲಕ. ದ್ವಾರಂ ರಕ್ಷತಿ-ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |

**ದ್ವಾರವತೀ ದ್ವಾರವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದ್ವಾರಕಾನಗರ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಮುಖ್ಯ ನಗರ. ದ್ವಾರಾಣಿ ಚತುರ್ವರ್ಣಮೋಕ್ಷದ್ವಾರಾಣಿ ಪ್ರಾಸ್ತಾ-ನ್ಯಸ್ಯ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪) | ಮಸ್ಯ ವಃ | ["ದ್ವಾರಕಾ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ದ್ವಾರಶಾಖಾ ದ್ವಾರಶಾಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಬಾಗಿಲಿನ ಪಕ್ಕದ ಹಲ್ಲು, ಒಂದು ಪಕ್ಕದ ಕದ.

**ದ್ವಾರಸ್ಥ ದ್ವಾರಸ್ಥ (ಪುಂ)** ದ್ವಾರಪಾಲಕ. ದ್ವಾರೆ ತಿಷ್ಠತಿ-ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕಃ" (೩-೨-೪) |

**ದ್ವಾರಾಧ್ಯಕ್ಷ ದ್ವಾರಾಧ್ಯಕ್ಷ (ಪುಂ)** ದ್ವಾರಪಾಲಕ. ದ್ವಾರೆ ಅಧ್ಯಕ್ಷಃ |

**ದ್ವಾರಿಕ ದ್ವಾರಿಕ (ಪುಂ)** ದ್ವಾರಪಾಲಕ. ದ್ವಾರಂ ಪಾಲಯತಿ ಅಸ್ತಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೫) |

**ದ್ವಾರಿನ್ ದ್ವಾರಿನ್ (ಪುಂ)** ದ್ವಾರಪಾಲಕ. ದ್ವಾರ "ಙಿನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) |

**ದ್ವಾವಿಂಶ ದ್ವಾವಿಂಶ (ವಿಂ)** ಇಪ್ಪತ್ತೆರಡನೆಯ. ದ್ವಾವಿಂಶತೇಃ ಪೂರ್ಣಃ "ಙಟ್" (೪-೨-೪೮) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | -ವಿಂಶಿ -ವಿಂಶೀ.

**ದ್ವಾವಿಂಶತಿ ದ್ವಾವಿಂಶತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಇಪ್ಪತ್ತೆರಡು. ದ್ವಾವಿಂಶತಿಃ | ಆತ್ (೬-೩-೪೭) |

**ದ್ವಾವಿಂಶತೀ ದ್ವಾವಿಂಶತೀತಮ (ವಿಂ)** ಇಪ್ಪತ್ತೆರಡನೆಯ. ದ್ವಾವಿಂಶತೇಃ ಪೂರ್ಣಃ-ಙಟ್ "ತಮಟ್" (೪-೨-೫೫) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | -ತಮೀ -ತಮೀ.

**ದ್ವಾಷ್ಠ ದ್ವಾಷ್ಠ (ವಿಂ)** ಅರವತ್ತೆರಡನೆಯ. ದ್ವಾಷ್ಠತೇಃ ಪೂರ್ಣಃ "ಙಟ್" (೪-೨-೪೮) | ವಾ ಆತ್ (೬-೩-೪೯) |

**ದ್ವಾಷ್ಠಿ ದ್ವಾಷ್ಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅರವತ್ತೆರಡು. ದ್ವಾಷ್ಠಿಕಾ ಷ್ಠಿಃ | ವಾ ಆತ್ (೬-೩-೪೯) |

**ದ್ವಾಷ್ಠಿತಮ ದ್ವಾಷ್ಠಿತಮ (ವಿಂ)** ಅರವತ್ತೆರಡನೆಯ. ದ್ವಾಷ್ಠಿ-ಙಟ್ ವಾ "ತಮಟ್" (೪-೨-೫೫) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | -ತಮೀ -ತಮೀ. ವಾ ಆತ್ (೬-೩-೪೯) |



ಹಾಸಪ್ರತ ದ್ವಾಸಪ್ರತ (ವಿಂ) ಎಪ್ಪತ್ತೆರಡನೆಯ. ಹಾಸಪ್ರತೇ:  
ಪೂರ್ಣ: "ಛಡ್" (೪-೨-೪೮)। ವಾ ಆತ್ (೬-೩-೪೯)।  
ಹಾಸಪ್ರತ ದ್ವಾಸಪ್ರತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎಪ್ಪತ್ತೆರಡು. ದ್ವಯವಿಕಾ  
ಸಪ್ರತ:। ವಾ ಆತ್ (೬-೩-೪೯)।

ಹಾಸಪ್ರತದ್ವಾಸಪ್ರತ (ವಿಂ) ಎಪ್ಪತ್ತೆರಡನೆಯ.  
ಹಾಸಪ್ರತ ಛಡ್: ವಾ "ತಮಡ್" (೪-೨-೪೯)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಛಿಪ್" (೪-೨-೪೯)। -ಸಮಿ-ತಮಿ.

ಹಾಸಪ್ರತ ದ್ವಾಸಪ್ರತ (ವಿಂ) ದ್ವಾರಪಾಲಕ, ಬಾಗಿಲು ಕಾಯು  
ವವನು. ದ್ವಾರಿ ತಿಷ್ಠತಿ-ಛಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ:"  
(೩-೨-೪)। ವಾ ವಿಸರ್ಗಲೋಪ: (ವಾಂ ೮-೩-೩೬)।

ಹಾಸಪ್ರತ ದ್ವಾಸಪ್ರತ (ವಿಂ) ದ್ವಾರಪಾಲಕ, ಬಾಗಿಲು  
ಕಾಯುವವನು. ದ್ವಾರಿ ಸ್ಥಿತ:। ವಾ ವಿಸರ್ಗಲೋಪ: (ವಾಂ  
೮-೩-೩೬)।

ಹಾಸಪ್ರತದ್ವಾಸಪ್ರತದ್ವಾಸಪ್ರತ (ವಿಂ) ದ್ವಾರಪಾಲಕ.  
ಹಾಸಪ್ರತ: ಸನ್ ಪಯತಿ-ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) "ಛುಲ್"  
(೩-೨-೩೩)।

ದ್ವಿ ದ್ವಿ (ವಿಂ ದ್ವಿಂ) ಎರಡು. ಇದೊಂದು ಸರ್ವನಾಮ  
ಶಬ್ದ. ಇದರ ಲಿಂಗತ್ರಯದ ರೂಪಗಳು. (ವಿಂ) ದ್ವಿ ದ್ವಿ  
ದ್ವಾಮ್ಯಾ ದ್ವಾಮ್ಯಾ ದ್ವಾಮ್ಯಾ ದ್ವಯೋ ದ್ವಯೋ:

(ಸ್ತ್ರೀಂ) ದ್ವೇ ದ್ವೇ } ತೃತೀಯಾದಿ ವಿಭಕ್ತಿಗಳಲ್ಲಿ ಪುಂಲಿಂಗದ  
ಮತ್ತು } ರೂಪಗಳಂತಾಗುವವು. "एको नव  
(ನಂ) ದ್ವೇ ದ್ವೇ } ದ್ವಿ ದಶ ಪञ्च सप्तत्यजीगणभात्ममुखं  
प्रसार्य "कुमा० ११-४५। "तद्वल्गुना युगपदुन्मिवितेन  
तावत्सद्यः परस्परतुलामधिरोहतां द्वे" रघु० ५-६८।  
ದ್ವಿ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ದಶನ್ ವಿಶತಿ ಮತ್ತು ತ್ರಿಶತ್ ಇವು ಪರಮಾದರೆ  
ಆತ್ಮವು ಒಂದು (೬-೩-೪೭) ದ್ವಾದಶ ದ್ವಾವಿಶತಿ:  
ದ್ವಾವಿಶತ್ ಎಂದು ರೂಪಗಳಾಗುವವು. (ದ್ವಿ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ)  
ಚತ್ವಾರಿಶತ್ ಪञ्चाशत् षष्टिः सप्ततिः ಮತ್ತು नवतिः ಇವು  
ಪರಮಾದರೆ ವಿಕಲ್ಪವಾಗಿ ಆತ್ಮವು ಒಂದು ದ್ವಾಚತ್ವಾರಿಶತ್  
ದ್ವಿಚತ್ವಾರಿಶತ್ ದ್ವಾಪञ्चाशत् ದ್ವಿಪञ्चाशತ್ ದ್ವಾषष्टिः ದ್ವಿषष्टिः  
ದ್ವಾಸಪ್ರತಿ: ದ್ವಿಸಪ್ರತಿ: ದ್ವಾನವತಿ: ದ್ವಿನವತಿ: ಇತ್ಯಾದಿ  
ರೂಪಗಳಾಗುವವು. ಅಶತಿ ಪದವು ಪರಮಾದರೆ  
ಆತ್ಮವು ಒರುವುದಿಲ್ಲ. ದ್ವಯಶತಿ: ದ್ವಯಶತೀತಮ: ಇತ್ಯಾದಿ  
ರೂಪಗಳಾಗುವವು. (ಅವ್ಯಂ) 2. ದ್ವಿ:-ಎರಡು ಸಲ,  
ಎರಡುವೃತ್ತಿ.

ದ್ವಿ ದ್ವಿ (ವಿಂ) 1. ಕಾಗೆ, ವಾಯಸ. 2. ಚಕ್ರವಾಕಪಕ್ಷಿ.  
ದ್ವಿ ಕೌ ಕಕಾರೌ ಯಸ್ಯ। ಕಾಕ: ಕೌಕ: ಈ ಶಬ್ದಗಳಲ್ಲಿ  
ಎರಡು ಕಕಾರಗಳು ಇರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

3. ಎರಡು ಸಂಖ್ಯೆ. ದ್ವಾಮ್ಯಾ ಕಾಯತಿ-ಕೆ (ಶಾಢೇ) "ಕ:"  
(೩-೨-೪)। 4. ಎರಡನೆಯವನಾಗಿ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು.  
ದ್ವಿತ್ಯ "ಕನ್" ಪೂರ್ಣಪ್ರತ್ಯಯಸ್ಯ ತೀಯಸ್ಯ ವಾ ಲುಕ್ ಚ  
(೪-೨-೭೭)। ದ್ವಿತ್ಯಕಂ ದ್ವಿಕಂ ವಾ ग्रहणं वेदत्तस्य।  
ಸಿಂ ಕೌಂ। ಗೃಹ್ಣಾತಿ ಇತ್ಯರ್ಥೆ ಪೂರ್ಣಪ್ರತ್ಯಯಸ್ಯ ನಿಯಂ  
ಲುಕ್ (ವಾಂ ೪-೨-೭೭)। ಷಠೇನ ರೂಪೇಣ ಗೃಹ್ಣಾತಿ ಷಟ್ಕೌ  
ದೇವದತ್ತ:।

ದ್ವಿಕಕಾರ ದ್ವಿ ಕಕಾರ (ವಿಂ) 1. ವಾಯಸ, ಕಾಗೆ.  
2. ಚಕ್ರವಾಕಪಕ್ಷಿ. ದ್ವಿ ಕಕಾರೌ ಯಸ್ಯ। ಕಾಕ: ಕೌಕ:।  
ದ್ವಿಕಕುಡ್ ದ್ವಿ ಕಕುಡ್ (ವಿಂ) ಉಷ್ಣ, ಒಂಟೆ. ದ್ವಿ ಕಕುಡೇ ಯಸ್ಯ।  
ದ್ವಿಕರ ದ್ವಿ ಕರ (ನಂ) 1. ಎರಡು ಕೈಗಳು. ದ್ವಯೋ: ಕರಯೋ:  
ಸಮಾಹಾರ:। "बुभुक्षितः किं द्विकरेण भुङ्क्ते"। (ವಿಂ) 2.  
ಎರಡು ಕೆಲಸಗಳನ್ನು ಮಾಡುವ. ದ್ವಿ ಕರೋತಿ - ಡು ಕುಕ್  
(ಕರಣೆ) "ಡ:" (೩-೨-೨೧)।

ದ್ವಿಕಾರ್ಷಾಪಣ ದ್ವಿ ಕಾರ್ಷಾಪಣ (ವಿಂ) ಎರಡು ಕಾರ್ಷಾಪಣ  
(ನಾಣ್ಯ)ಗಳಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ದ್ವಾಮ್ಯಾ ಕಾರ್ಷಾಪಣಾಮ್ಯಾ  
ಕ್ರೇತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೨-೩೭)। ಠಕ್ ವಾ ಲುಕ್ (೪-೨-೨೯)।  
ಪಕ್ಷೇ (ಲಗುಭಾವೇ) ದ್ವಿಕಾರ್ಷಾಪಣಿಕಮ್ ದ್ವಿಕಾರ್ಷಾಪಣಿಕಮ್.

ದ್ವಿಗು ದ್ವಿಗು (ವಿಂ) 1. ಸಮಾ ಗಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ,  
ತತ್ಪರವು ಸಮಾಸವು ಒಂದು ಭೇದ. "संख्यापूर्वं द्विगुः"  
(೨-೨-೪೨)। ಪञ्चानां गवां समाहार: "टच्" (೪-೪-೯೨)।  
ಪञ्चगवम्। एकवचनम् (೨-೪-೧)। (ವಿಂ) 2. ಎರಡು  
ಹಸುಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. ದ್ವಿ ಗಾವೌ ಯಸ್ಯ। ಹ್ರಸ್ವ:  
(೨-೨-೪೮)।

ದ್ವಿಗುಣ ದ್ವಿಗುಣ (ವಿಂ) ಎರಡರಷ್ಟಾದ. ಇಮ್ಮಡಿಯಾದ.  
ದ್ವಿ ಗುಣಿ ಆವೃತ್ತಿ ಯಸ್ಯ। "एतच्छीघ्रं गृहस्थानां द्विगुणं  
ब्रह्मचारिणाम्" मनु० ५-१३७।

ದ್ವಿಗುಣಾಕೃತ ದ್ವಿಗುಣಾಕೃತ (ನಂ) ಎರಡು ಸಲ ಉಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ  
ಭೂಮಿ ದ್ವಿಗುಣ ಕೃತಮ್ "ಡಾಕ್" (೪-೪-೪೯)।

ದ್ವಿಗುಣಿತ ದ್ವಿಗುಣಿತ (ವಿಂ) ಎರಡರಿಂದ ಗುಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಇಮ್ಮಡಿಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಎರಡರಷ್ಟಾದ. ಎರಡ  
ರಷ್ಟು ಅಧಿಕಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ದ್ವಾಮ್ಯಾ ಗುಣಿತ:। "वैरोचने-  
द्विगुणिताः सहसा मयूखः" किरा० ५-४६।

ದ್ವಿಗುಣೀಕೃತ ದ್ವಿಗುಣೀಕೃತ (ವಿಂ) ಇಮ್ಮಡಿಯಾಗಿ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಎರಡರಷ್ಟು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ದ್ವಿ ಗುಣಾವೃತ್ತಂ  
ಯಸ್ಯ ದ್ವಿಗುಣ:-ಅದ್ವಿಗುಣ: ದ್ವಿಗುಣ: ಕೃತ: "चिः" (ವಾಂ  
೪-೪-೪೦)। "बभार बाष्पेद्विगुणं कृतं तनुस्तनूपाद्भूम-  
वितानमाधिजैः" माघ० १-६२।



ದ್ವಿಚ್ಛಾರಿಣಿ ದ್ವಿಚ್ಛಾರಿಣಿ (ವಿಂ) ನಲವತ್ತೆರಡನೆಯ.

ದ್ವಿಚ್ಛಾರಿಣಿ: ಪೂರ್ಣ: "ಛ" (೪-೨-೪೮) ।

ದ್ವಿಚ್ಛಾರಿಣಿ ದ್ವಿಚ್ಛಾರಿಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಲವತ್ತೆರಡು.

ದ್ವಿಚ್ಛಾರಿಣಿ ಚತ್ವಾರಿಣಿ ।

ದ್ವಿಚ್ಛಾರಿಣಿ ದ್ವಿಚ್ಛಾರಿಣಿ (ವಿಂ) ನಲವತ್ತೆರಡನೆಯ.

ದ್ವಿಚ್ಛಾರಿಣಿ "ಛ" । ಛ: ವಾ "ತಮ" (೪-೨-೪೯) ।

ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛಿ" (೪-೨-೫೦) ।

-ತಮಿ -ತಮಿ.

ದ್ವಿಚರಣ ದ್ವಿಚರಣ (ವುಂ) 1. ಮನುಷ್ಯ. ದ್ವಿ ಚರಣೋ

ಯಸ್ಯ । "ಗತ: ಕಾಲೋ ಯತ್ರ ದ್ವಿಚರಣಪಶುನಾಂ ಕ್ಷಿತಿಶ್ಚುಜಾಂ

ಪುರ:ಸ್ವಸ್ತಿತ್ಯುಕ್ತಾ ವಿಷಯಸುಖಮಾಸ್ವಾದಿತಮಹೋ" । 2. ಎರಡು

ಪಾದಗಳುಳ್ಳ ರಾಶಿ. (ನಂ) 3. ಎರಡು ಕಾಲುಗಳು.

ದ್ವಿಜ ದ್ವಿಜ (ವುಂ) 1. ಉಪನಯನ ಮೊದಲಾದ ಸಂಸ್ಕಾರ

ಹೊಂದಿದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ದ್ವಿಜಯಿ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುರ್ಮಿ) "ಛ:" (೩-೨-೧೦೧) ।

"ಜನ್ಮನಾ ಜಾಯತೇ ಶೂದ್ರ: ಕರ್ಮಣಾ ಜಾಯತೇ ದ್ವಿಜ:" ।

"ವಡುಮಾತ್ರೇಣ ಶಕ್ಯಂ ಹಿ ಸಜ್ಯಂ ಕರ್ತುಂ ಧನುರ್ದಿವಾ: ।

ಅವಹಾಸ್ಯಾ ಭವಿಷ್ಯಂತಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾ: ಸರ್ವರಾಜಸು" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೦೩-೪ ।

2. ಮೊದಲನೆಯ ಮೂರು ವರ್ಣಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು.

(ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಮತ್ತು ವೈಶ್ಯ).

3. ಮೊಟ್ಟೆಯಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ (1) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. (2) ಸರ್ಪ, ಹಾವು.

(3) ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು ಮುಂತಾದುವು. 4. ದಂತ, ಹಲ್ಲು.

"ದ್ವಿಜಾವಲಿವ್ಯಾಜನಿಶಾಕರಾಂಶುಭಿ: ಶುಚಿಃ ಸ್ಮಿತಾಂ ವಾಚಮವೋದದ್ಯುತ:" ಮಾಘಂ ೧-೨೪ ।

"ದ್ವಿಜ: ಸ್ಯಾದ್ಬ್ರಾಹ್ಮಣಕ್ಷತ್ರವೈಶ್ಯದಂತಾಂಜಲೇಷು ನಾ" ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ)

5. ಎರಡು ಸಲ ಹುಟ್ಟುವ.

ದ್ವಿಜತ್ವ ದ್ವಿಜತ್ವ (ನಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣತ್ವ, ದ್ವಿಜನಾಗಿರುವಿಕೆ.

ದ್ವಿಜಸ್ಯ ಭಾವ: "ತ್ವ:" (೪-೨-೧೧೯) ।

ದ್ವಿಜನ್ಮನ್ ದ್ವಿಜನ್ಮನ್ (ವುಂ) 1. "ದ್ವಿಜ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ದ್ವಿ ಜನ್ಮನಿ ಯಸ್ಯ । "ವೈದಿಕೇ: ಕರ್ಮಭಿ: ಪುಣ್ಯನಿಷೇಕಾದಿ-

ದ್ವಿಜನ್ಮನಾಮ್ ಮನುಂ ೨-೨೬ । "ಇತಿ ಪ್ರವಿಷ್ಯಾಭಿಹಿತಾ ದ್ವಿಜನ್ಮನಾ"

ಕುಮಾಂ ೪-೪೧ । "ದ್ವಿಜಾತಿಶ್ಚ ದ್ವಿಜನ್ಮಾ ಚ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾದಿಪತತ್ರಿಣಿ:

"ವೈಜಂ । "ದ್ವಿಜನ್ಮಾ ದಶನೇ ವಿಪ್ರೇ" ಮೇದಿಂ ।

2. ಮೊದಲು ಶೂದ್ರನಿಗೆ ಮದುವೆಯಾಗಿದ್ದ ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ವ್ರಾತ (ಸಂಸ್ಕಾರಹೀನ) ನಾದ ಪಕ್ಷಿ

ನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಗ. "ಶೂದ್ರಪೂರ್ವಾ ದ್ವಿಜಮಾನಮ್" ವೈಜಂ ।

ದ್ವಿಜಪತಿ ದ್ವಿಜಪತಿ (ವುಂ) 1. ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋತ್ತಮ, ಶ್ರೇಷ್ಠ

ನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. 2. ಚಂದ್ರ. 3. ಪಕ್ಷಿರಾಜ, ಗರುಡ.

ದ್ವಿಜಾನಾಂ ಪತಿ: ।

ದ್ವಿಜಪತಿ ದ್ವಿಜಪತಿ (ವುಂ) ಪತಿತನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ.

"ಶೂದ್ರೋಽನ್ಯವರ್ಣೋ ವೃಷಲೋ ದ್ವಿಜಪಿತೌ ಜಘನ್ಯಜ:" ವೈಜಂ ।

ದ್ವಿಜಪ್ರಪಾ ದ್ವಿಜಪ್ರಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮರದ ಕೆಳಗಡೆ ಮಾಡಿ

ರುವ ಪಾತಿ. 2. ಹಕ್ಕಿಗಳು ನೀರು ಕುಡಿಯಲು ಬಾವಿಯ ಹತ್ತಿರ

ಮಾಡಿರುವ ನೀರಿನ ತೊಟ್ಟಿ. "ದ್ವಿಜಪ್ರಪಾಲವಾಲ್ ಸ್ಯಾತ್"

ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ದ್ವಿಜಬಂಧು ದ್ವಿಜಬಂಧು (ವುಂ) ಪತಿತನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ.

ಜನ್ಮ ಮತ್ತು ಹೆಸರಿನಿಂದ ಮಾತ್ರ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಾಗಿರುವವನು,

ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಕರ್ತವ್ಯವನ್ನು ಬಿಟ್ಟಿರುವವನು.

ದ್ವಿಜಬ್ರೂವ ದ್ವಿಜಬ್ರೂವ (ವುಂ) ಕರ್ಮಭ್ರಷ್ಟನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ.

ಜಾತಿಮಾತ್ರದಿಂದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನೆಂದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ದ್ವಿಜ-

ಮಾತಮಾನ್ ಬ್ರೂತೇ - ಬ್ರೂ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) । "ಕ:" (೩-೨-೧೩೪) ।

ದ್ವಿಜರಾಜ ದ್ವಿಜರಾಜ (ವುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ದ್ವಿಜಾನಾಂ ರಾಜಾ

"ಛ:" (೪-೪-೯೧) । "ಇತ್ಯಂ ದ್ವಿಜೇನ್ ದ್ವಿಜರಾಜ-

ಕಾಂತಿರಾವೇದಿತೋ ವೇದವಿದಾಂ ವರೇಣ" ರಘುಂ ೪-೨೩ ।

2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋತ್ತಮ, ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. 3. ಪಕ್ಷಿ

ರಾಜ, ಗರುಡ. 4. ಅನನ್ಯ, ಸರ್ಪರಾಜ. "ದ್ವಿಜರಾಜ: ಶಶಧರೇ

ಸುಪರ್ಣೋಽನ್ತರಭೋಗಿನಿ" ವಿಷ್ಣುಂ । 5. ಕರ್ಪೂರ.

ದ್ವಿಜರ್ಷಭ ದ್ವಿಜರ್ಷಭ (ವುಂ) ಉತ್ತಮನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ,

ಶ್ರೇಷ್ಠ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ದ್ವಿಜೇಷು ಋಷಭ: ಶ್ರೇಷ್ಠ: ।

ದ್ವಿಜಲಿಙ್ಗಿನ್ ದ್ವಿಜಲಿಙ್ಗಿನ್ (ವುಂ) 1. ಕ್ಷತ್ರಿಯ. ದ್ವಿಜಸ್ಯ

ಲಿಙ್ಗಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಛಿ:" (೪-೨-೧೧೪) । (ವಿಂ) 2.

ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ವೇಷವನ್ನು ಹಾಕಿರುವ. "ತಾನ್ ಸರ್ವಾನ್ ಧಾತಯೇದ್ರಾಜಾ

ಶೂದ್ರಾಸ್ತು ದ್ವಿಜಲಿಙ್ಗಿನ್:" ಮನುಂ ೯-೨೪೪ ।

ದ್ವಿಜವರ ದ್ವಿಜವರ, -ವರ -ವರ್ಯ (ವುಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ,

ಉತ್ತಮನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ.

ದ್ವಿಜವಾಹನ ದ್ವಿಜವಾಹನ (ವುಂ) ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ.

ದ್ವಿಜೋ ಗರುಡೋ ವಾಹನಮಸ್ಯ ।

ದ್ವಿಜವ್ರಣ ದ್ವಿಜವ್ರಣ (ನಂ) ದಂತರೋಗದ ಒಂದು ಭೇದ.

ದ್ವಿಜಶಪ್ತ ದ್ವಿಜಶಪ್ತ (ವುಂ) ರಾಜಮಾಪ, ಕಾರಾಮಣಿ, ಅಲಸಂದ.

ದ್ವಿಜ:ಶಪ್ತ: ।

ದ್ವಿಜಶ್ರೇಷ್ಠ ದ್ವಿಜಶ್ರೇಷ್ಠ (ವುಂ) ಉತ್ತಮ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ.

ದ್ವಿಜಾ ದ್ವಿಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರೇಣುಕ ಎಂಬ ಒಂದು ಗಂಧಿಗರ

ವಸ್ತು. ದ್ವಿಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುರ್ಮಿ) "ಛ:" (೩-೨-೧೦೧) ।

2. ಭಾರಂಗಿ ಗಿಡ. "ದ್ವಿಜಾ ಭಾಗ್ಯಾ ಹರೇಣಿ ಚ" ಮೇದಿಂ ।

ದ್ವಿಜಾಪ್ರಭ ದ್ವಿಜಾಪ್ರಭ (ವುಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋತ್ತಮ. ದ್ವಿಜೇಷು

ಅಪ್ರಭ: । "ಅದ್ವೀರೇವ ದ್ವಿಜಾಪ್ರಭಾಣಾಂ ಕನ್ಯಾದಾನಂ ವಿಶಿಷ್ಯತೇ"

ಮನುಂ ೩-೩೪ ।



**ದ್ವಿಜಾತಿ ದ್ವಿಜಾತಿ (ಪುಂ)** 1. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ದ್ವೆ ಜಾತಿ ಜನ್ಮನಿ  
ಯಸ್ಯ । "ಪುರೋಪನಿಶಿತಂ ನೃಪ ರಾಮಣೀಯಕಂ ದ್ವಿಜಾತಿಶೇಷೇಣ ಯದೇತ-  
ದ್ವಿಜಾತಿ" ಕಿರಾಂ ೧-೩೯ । 2. ಮೊದಲನೆಯ ಮೂರು  
ವರ್ಣಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು, ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಮತ್ತು  
ವೈಶ್ಯ. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣಃ ಕ್ಷತ್ರಿಯೋ ವೈಶ್ಯಸ್ಯ ವರ್ಣಾ ದ್ವಿಜಾತಯಃ"  
ಮನುಂ ೧೦-೪ । 3. ಮೊಟ್ಟೆ (ತತ್ತ್ವ)ಯಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ  
(1) ಪಕ್ಷಿ. ಹಕ್ಕಿ. (2) ಸರ್ಪ. ಹಾವು. (3) ಮತ್ಸ್ಯ.  
ಮೀನು ಮುಂತಾದವು. "ದ್ವಿಜಾತಿವಿಪ್ರಾಣಜಯೋಸ್ತು  
ಪುಲಿಂಜಃ" ಮೇದಿಂ । "ದ್ವಿಜಾತಿಶ್ಚ ದ್ವಿಜನ್ಮಾ ಚ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾದಿ-  
ಪತತ್ರಿಣಿಃ" ವೈಜಂ । 4. ದಂತ. ಹಲ್ಲು.

**ದ್ವಿಜಾಯನಿ ದ್ವಿಜಾಯನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋತ್ತಮ,  
ಯಜ್ಞೋಪವೀತ. ದ್ವಿಜಃ ಅಯ್ಯತೇ ಜಾಯತೇಜಯಾ — ಅಯ  
(ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) । ಗತೃಯಾಂ ಜ್ಞಾನಾರ್ಥಕ-  
ತ್ವಾತ್ । "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) । "ಪವಿತ್ರಂ ಯಜೋಪವೀತಂ  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣಃ ದ್ವಿಜಾಯನೀ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ದ್ವಿಜಾಲಯ ದ್ವಿಜಾಲಯ (ಪುಂ)** 1. ಪಕ್ಷಿಗಳ ವಾಸಸ್ಥಾನ,  
ಮರದ ಪೊಟರೆ. 2. ಹಕ್ಕಿಗಳ ಗೂಡು. 3. ದ್ವಿಜರ  
ಮನೆ. ದ್ವಿಜಾನಾಮಾಲಯಃ ವಾಸಸ್ಥಾನಮ್ ।

**ದ್ವಿಜಾವಲಿ ದ್ವಿಜಾವಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ದ್ವಿಜರ ಪತ್ನಿ.  
2. ಹಕ್ಕಿಗಳ ಸಾಲು. 3. ದಂತಪತ್ನಿ, ಹಲ್ಲುಗಳ  
ಸಾಲು. ದ್ವಿಜಾನಾಮಾವಲಿಃ । "ದ್ವಿಜಾವಲಿವ್ಯಾಜನಿಶಾ-  
ಕರಾಂಶುಭಿಃ" ಮಾಘಂ ೧-೨೫ ।

**ದ್ವಿಜಿಹ್ವ ದ್ವಿಜಿಹ್ವ (ಪುಂ)** 1. ಸರ್ಪ. ಹಾವು. ದ್ವೆ ಜಿಹ್ವ  
ಅಸ್ಯ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩) ।  
ಸರ್ಪಗಳಿಗೆ ಎರಡು ನಾಲಿಗೆಗಳಾಗಲು ಕಾರಣಃ  
ಸರ್ಪಮಾತೆಯಾದ ಕದ್ರೂವಿಗೂ ಗರುತ್ಮಂತನ ತಾಯಿ  
ಯಾದ ವಿನತೆಗೂ ಉಚ್ಚೈಶ್ವರವಸ್ಥಿನ ಬಣ್ಣದ ವಿಷಯ  
ದಲ್ಲಿ ಪಂದ್ಯವುಂಟಾಗಿ ಕದ್ರೂವಿನ ಮೋಸದಿಂದ ವಿನತೆಯು  
ಸೋತು ಅವಳಿಗೆ ದಾಸಿಯಾದಳು. ಈ ದಾಸ್ಯವಿಮೋಚನೆ  
ಗಾಗಿ ವಿನತಾಪುತ್ರನಾದ ಗರುತ್ಮಂತನು ಕದ್ರೂಪುತ್ರನಾದ  
ಸರ್ಪಗಳಿಗೆ ಅಮೃತವನ್ನು ತಂದುಕೊಡುವುದಾಗಿ ಮಾತು  
ಕೊಟ್ಟು ಇಂದ್ರನ ಮನೆಯಿಂದ ಅಮೃತವನ್ನು ತಂದು  
ಸ್ನಾನಮಾಡಿ ಈ ಅಮೃತವನ್ನು ಪಾನಮಾಡದೇಕೆಂದೂ ತನ್ನ  
ತಾಯಿ ವಿನತೆಗೆ ದಾಸ್ಯವು ಹೋಗಬೇಕೆಂದೂ ಸರ್ಪಗಳಿಗೆ  
ಹೇಳಿ ಅಮೃತವನ್ನು ದರ್ಭೆಯ ಮೇಲಿಟ್ಟು ಹೊರಟು  
ಹೋದನು. ಸರ್ಪಗಳು ಸ್ನಾನಕ್ಕೆ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಇಂದ್ರನು  
ಬಂದು ಆ ಅಮೃತವನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿಕೊಂಡು ಹೋದನು.  
ಸರ್ಪಗಳು ಬಂದು ನೋಡಿದಾಗ ಅಲ್ಲಿ ಅಮೃತವಿಲ್ಲದಿರಲು

ದರ್ಭೆಯನ್ನೇ ನಾಲಿಗೆಯಿಂದ ನೆಕ್ಕಿದುವು. ಆಗ ನಾಲಿಗೆಯು  
ಸೀಳಿಹೋಗಿ ಅಂದಿನಿಂದ ಸರ್ಪಗಳಿಗೆ ಎರಡು ನಾಲಿಗೆಗಳಾ  
ದುವು. ಅಮೃತವನ್ನಿಟ್ಟಿದ್ದರಿಂದ ಅಂದಿನಿಂದ ದರ್ಭೆಯೂ  
ಪವಿತ್ರವಾಯಿತು. "ಅಥ ಸರ್ಪಾನುವಾಚೇದಂ ಸರ್ವಾನ್ ಪರಮ-  
ಹೃಷವತ್ । ಇದಮಾನೀತಮಮೃತಂ ನಿಕ್ಷೇಪ್ಯಾಮಿ ಕುಶೇಷು ವಃ ।  
ಸ್ನಾತಾ ಮಜ್ಜಲಸಂಯುಕ್ತಾಸ್ತತಃ ಪ್ರಾಶನೀತ ಪನ್ನಗಾಃ । ಭವದ್ಭಿ-  
ರಿದಮಾಸೀನೈರೈದುಕ್ತಂ ತದ್ವಚಸ್ತದಾ । ಅದಾಸೀ ಚೈವ ಮಾತೇಯ-  
ಮಥಪ್ರಭೃತಿ ಚಾಸ್ತು ಮೇ । ತತಃ ಸ್ನಾತುಂ ಗತಾಃ ಸರ್ಪಾಃ ಪ್ರತ್ಯುತ್ಸವಾ  
ತಂ ತಥೇತ್ಯುತ । ಶಕ್ರೋಽಪ್ಯಮೃತಮಾಕ್ಷಿಪ್ಯ ಜಗಾಮ ತ್ರಿವಿಧಂ ಪುನಃ ।  
ಅಥಾಗತಾಸ್ತಮುದ್ದೇಶಂ ಸರ್ಪಾಃ ಸೋಮಾರ್ಥಿನಸ್ತದಾ । ಸ್ನಾತಾಶ್ಚ  
ಕೃತಜಞ್ಯಾಶ್ಚ ಪ್ರಹೃಷಾಃ ಕೃತಮಜ್ಜಲಾಃ । ಯತ್ರೇತದಮೃತಂ ಚಾಪಿ  
ಸ್ಥಾಪಿತಂ ಕುಶಸಂಸ್ತರೇ । ತದ್ವಿಜಾಯ ಹೃತಂ ಸರ್ಪಾಃ ಪ್ರತಿಮಾಯಾಕೃತಂ  
ಚ ತತ್ । ಸೋಮಸ್ಥಾನಮಿದಂ ಚೇತಿ ದರ್ಭಾಸ್ತೇ ಲಿಲಿಹುಸ್ತದಾ ।  
ತದಾ ದ್ವಿಧಾಕೃತಾ ಜಿಹ್ವಾ ಸರ್ಪಾಣಾಂ ತೇನ ಕರ್ಮಣಾ । ಅಭವ-  
ಶ್ರಾಮೃತಸ್ಪರ್ಶಾತ್ ದರ್ಭಾಸ್ತೇಶ್ಚ ಪವಿತ್ರಾಣಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ  
೩೪ । "ಅಮರ್ಷಣಃ ಶೋಣಿತಕಾಙ್ಕ್ಷಯಾ ಕಿಂ ಪದಾ ಸ್ಪೃಶಂತ  
ದಶತಿ ದ್ವಿಜಿಹ್ವಃ" ರಘುಂ ೧೪-೪೧ । 2. ಖಲ, ದುರ್ಜನ.  
ಜಾಡಿಕೋರ. "ದ್ವಿಜಿಹ್ವೌ ಸರ್ಪಸೂಚಕೌ" ಅಮಂ ।

**ದ್ವಿಜೇಂದ್ರ ದ್ವಿಜೇಂದ್ರ (ಪುಂ)** 1. ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋತ್ತಮ, ಶ್ರೇಷ್ಠ  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ದ್ವಿಜಃ ಇಂದ್ರ ಇವ । 2. ಚಂದ್ರ. ದ್ವಿಜಾನಾಮಿಂದ್ರಃ ।  
"ಹಸ್ತಸ್ಥಿತಾಖಂಡಿತಚಕ್ರಶಾಲಿನಂ ದ್ವಿಜೇಂದ್ರಕಾಂತಂ ಶ್ರಿತವಕ್ಷಸಂ  
ಶ್ರಿಯಾ" ಮಾಘಂ ೧೨-೩ । 3. ಗರುಡ, ಪಕ್ಷಿರಾಜ.  
4. ಕರ್ಪೂರ.

**ದ್ವಿಜೇಶ ದ್ವಿಜೇಶ (ಪುಂ)** 1. ಪಕ್ಷಿರಾಜ, ಗರುಡ. 2. ಚಂದ್ರ.  
3. ಕರ್ಪೂರ. —ಹಿಮರಃ —ಈಶ್ವರಃ.

**ದ್ವಿಜೋತ್ತಮ ದ್ವಿಜೋತ್ತಮ (ಪುಂ)** ವಿಪ್ರ. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ.  
ದ್ವಿಜೇಷು ತತ್ತಮಃ ।

**ದ್ವಿತ ದ್ವಿತ (ಪುಂ)** ಗೌತಮ ಮುನಿಯ ಒಬ್ಬ ಮಗ. ಏಕತ  
ತ್ರಿತರೆಂಬವರು ಈತನ ಸಹೋದರರು. ["ದ್ವಿತ"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ದ್ವಿತನ್ತ್ರ ದ್ವಿತಂತ್ರ (ಪುಂ)** ಎರಡು ಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ  
ಮಾಡಿದವನು ಅಥವಾ ತಿಳಿದವನು. ದ್ವೆ ತನ್ತ್ರೇ ಅಧೀತೇ ವೇದ  
ವಾ "ಅಣ್" (೪-೨-೫೯) । ಅಣೋ "ಲುಕ್" (೪-೧-೮೮) ।

**ದ್ವಿತೀಯ ದ್ವಿತೀಯ (ನಂ)** 1. ಎರಡು, ಎರಡು ಅವಯವ  
ಗಳುಳ್ಳ ಸಮುದಾಯ. ದ್ವಿ ಅವಯವೌ ಯಸ್ಯ "ತಯಪ್"  
(೫-೨-೪೨) । ತಯಸ್ಯ ವಾ "ಅಯಚ್" (೫-೨-೪೩) ।  
ಪಕ್ಷೌ ದ್ವಯಮ್ ದ್ವಯಮ್. "ಅಧಿಕಂ ಶುಶುಭೇ ಶುಭಂಯುನಾ ದ್ವಿತೀಯೇನ  
ದ್ವಯಮೇವ ಸಂಕ್ರಮತು" ರಘುಂ ೮-೬ । (ವಿಂ) 2. ಎರಡು



ಎಧವಾದ, ಎರಡು ಪ್ರಕಾರವಾದ. "ದ್ವಿಸಾನ್ಯಮತಾ ಕಿಮನ್ತರಂ  
ಯದಿ ವಾಯಿ ದ್ವಿತೀಯೇನ ತೇ ಚಲಾಃ" ರಘುಂ ೮-೯೦ ।

ದ್ವಿತೀಯ ದ್ವಿತೀಯ (ಫಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. "ಪುತ್ರೋ  
ದ್ವಿತೀಯಃಕುಲಧಾರಕಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 2. ಮಿತ್ರ, ಜೊತೆಗಾರ,  
ಸಹಾಯ. "ರತಿರ್ದ್ವಿತೀಯೇ ಮದನೇ ಪ್ರಪನ್ನೇ" ಕುಮಾಂ ೩-೩೫ ।  
"ಅಭ್ಯಾಸ್ಯ ಪ್ರಯತಪರಿಗ್ರಹದ್ವಿತೀಯಃ" ರಘುಂ ೧-೯೫ ।  
3. (ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ) ಕ್ರಿಯಾಪದದ ಎರಡನೆಯ (ಮಧ್ಯಮ)  
ಪುರುಷ. (ವಿಂ) 4. ಎರಡನೆಯ. ದ್ವಯೋಃ ಪೂರ್ಣಃ—ದ್ವಿ  
"ತೀಯಃ" (೪-೨-೫೪) । "ಪ್ರಭವೇಣ ದ್ವಿತೀಯೇನ ತಥೈವೋ-  
ನ್ವಿರಸಾ ತ್ವಯಾ" ಕುಮಾಂ ೬-೭೦ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಠಾಪ್"  
(೪-೧-೪) । ದ್ವಿತೀಯಾ ದ್ವಿತೀಯಾ. 5. ಭಾರ್ಯಾ, ಪತ್ನಿ,  
ಹೆಂಡತಿ. 6. ದ್ವಿತೀಯಾ ತಿಥಿ, ಪಕ್ಷದ ಎರಡನೆಯ ತಿಥಿ.  
7. (ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ) ಶಬ್ದದ ಎರಡನೆಯ ವಿಭಕ್ತಿ. ದ್ವಿತೀಯಾ-  
ವಿಭಕ್ತಿಃ ದ್ವಿತೀಯಾವಿಭಕ್ತಿಃ.

ದ್ವಿತೀಯಕ ದ್ವಿತೀಯಕ (ನಂ) 1. ಎರಡನೆಯವನಾಗಿ  
ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ದ್ವಿತೀಯೇನ ರೂಪೇಣ ಗ್ರಹಣಮ್—ದ್ವಿತೀಯ  
"ಕನ್" (೪-೨-೭೭) । ಪೂರ್ಣಪ್ರತ್ಯಯಸ್ಯ ವಾ ಲೂಕ್ । ಪಕ್ಷೇ  
ದ್ವಿಕಮ್ ದ್ವಿಕಮ್. 2. ಎರಡನೆಯ ದಿನ ಬರುವ ಜ್ವರ.  
ದ್ವಿತೀಯಾಕೃತ ದ್ವಿತೀಯಾಕೃತ (ವಿಂ) ಎರಡನೆಯ ಸಲ  
ಉಳಲ್ಪಟ್ಟು (ಭೂಮಿ). ದ್ವಿತೀಯ ಕರ್ಷಣ ಕೃತಮ್ "ಠಾಪ್"  
(೪-೪-೫೯) ।

ದ್ವಿತೀಯಾಶ್ರಮ ದ್ವಿತೀಯಾಶ್ರಮ (ಫಂ) ಎರಡನೆಯ  
ಅಶ್ರಮ, ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮ. ದ್ವಿತೀಯಃ ಆಶ್ರಮಃ । "ಕಾಲಾಘ್ರಂ  
ಸಂಕ್ರಮಿತುಂ ದ್ವಿತೀಯಂ ಸರ್ವೋಪಕಾರಕ್ಷಮಮಾಶ್ರಮಂ ತೇ" ರಘುಂ ೫-೧೦ ।  
ಈ ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಪತ್ನೀಸಮೇತನಾಗಿ ಮನೆಗೆ ಒಂದ  
ಅತಿಥಿ ಅಭ್ಯಾಗತರುಗಳನ್ನು ಸತ್ಕರಿಸುತ್ತ ಯಜ್ಞಯಾಗಾದಿ  
ಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸುತ್ತ ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಾನಿರತನಾಗಿರಬೇಕು.  
ಮನುಷ್ಯನ ಧಾರ್ಮಿಕ ಜೀವಮಾನದಲ್ಲಿ ಇದು ಎರಡನೆಯ  
ಅವಸ್ಥೆ.

ದ್ವಿತೀಯಕ ದ್ವಿತೀಯಕ (ವಿಂ) ಎರಡನೆಯ ಸಲ ಬಡ್ತಿ  
ಲಾಭ ತೆಗೆ ಮುಂತಾದುವನ್ನು ಕೊಡುವ ಕಾಲ ಮುಂ  
ದು. ದ್ವಿತೀಯೋ ವೃದ್ಧಿರಾದಿರಸ್ಮಿನ್ ದೀಯತೇ—ದ್ವಿತೀಯ "ಕನ್"  
(೪-೧-೪೮) ।

ದ್ವಿತೀಯಿನ್ ದ್ವಿತೀಯಿನ್ (ವಿಂ) ಎರಡನೆಯ ಅರ್ಧಭಾಗ  
ವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ದ್ವಿತೀಯೋ ಭಾಗೋ ಗ್ರಾಹ್ಯತಯಾ-  
ಸ್ಯಸ್ಯ "ಐನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) ।

ದ್ವಿತ್ರ ದ್ವಿತ್ರ (ವಿಂ ೩೦ ೩೦) ಇಬ್ಬರು ಅಥವಾ ಮೂವರು,  
ಎರಡು ಅಥವಾ ಮೂರು. ದ್ವಿ ವಾ ತ್ರಯಿ ವಾ "ಠಾಪ್"

(೪-೪-೭೩) । "ದ್ವಿತ್ರಾಪ್ಯಹಾನ್ಯಹಸಿ ಸೋಢುಮಹನ್ಯಾವಚತೇ  
ಸಾಧಯಿತುಂ ತ್ವದಯಮ್" ರಘುಂ ೫-೨೫ ।

ದ್ವಿತ್ವ ದ್ವಿತ್ವ (ನಂ) 1. ಎರಡು ರೂಪವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಎರಡಾ  
ಗಿರುವಿಕೆ. ದ್ವಯೋರ್ಭಾವಃ "ತ್ವಃ" (೪-೧-೧೧೯) । ಎರಡು  
ವಸ್ತುನಿಷ್ಠವಾದ ಗುಣವು ದ್ವಿತ್ವದಲ್ಲಿ ಸಮವಾಯ  
ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿರುವುದು. ಆದರೆ ಎರಡನ್ನೂ  
ಒಟ್ಟಿಗೆ ಹೇಳುವಾಗ ಸಮುದಾಯದಲ್ಲಿರುವುದು. ಪ್ರತ್ಯೇಕ  
ವಾಗಿ ಹೇಳಲಾಗುವುದಿಲ್ಲ. ಈ ದ್ವಿತ್ವದಲ್ಲಿ ಎರಡೂ ಸಮಾನ  
ಜಾತೀಯವಾದುದರಿಂದ ಪ್ರತ್ಯೇಕ ವ್ಯವಹಾರವಿಲ್ಲ.

ದ್ವಿವೃದ್ಧಿ ದ್ವಿವೃದ್ಧಿ (ಅಭ್ಯಂ) ಎರಡು ಕೋಲುಗಳಿಂದ ನಡೆ  
ಯುವ ಹೊಡೆದಾಟ, ಎರಡು ದಂಡಗಳಿಂದ ನಡೆಯುವ  
ಯುದ್ಧ. ದ್ವಿ ದೃಢೋ ಯಸ್ಮಿನ್ ಪ್ರಹರಣೇ "ಠಾಪ್" (೪-೪-೧೨೮) ।

ದ್ವಿವತ್ ದ್ವಿವತ್ (ಫಂ) ಎರಡು ಹಲ್ಲುಗಳು ಹುಟ್ಟುವ  
ವಯಸ್ಸಿನ ಎತ್ತು ಮೊದಲಾದುದು. ದ್ವಿ ದಂತಾವಸ್ಯ—  
ದಂತಸ್ಯ "ದತ್" (೪-೪-೧೪೧) ।

ದ್ವಿವಂತ ದ್ವಿವಂತ (ಫಂ) ಎರಡು ದಂತಗಳುಳ್ಳ ಆನೆ. ದ್ವಿ  
ದಂತಾವಸ್ಯ ।

ದ್ವಿವಲ ದ್ವಿವಲ (ಫಂ) 1. ದ್ವಿವಲ ಧಾನ್ಯ, ಎರಡು ಭಾಗ  
ವಾಗಿ ಬೇಳೆಯಾಗುವ ಧಾನ್ಯ, ತೊಗರಿ ಕಡಲೆ ಅವರೆ  
ಹೆಸರು ಉದ್ದು ಇತ್ಯಾದಿ. ದ್ವಿ ದಲೇ ಯಸ್ಯ । 2. ಎರಡು  
ಭಾಗವಾಗುವ ದರ್ಭೆ.

ದ್ವಿವಶ ದ್ವಿವಶ (ವಿಂ ೩೦ ೩೦) ಎರಡು ಹತ್ತು, ಇಪ್ಪತ್ತು.  
ದ್ವಿವಾತಾಃ ದಶ ದ್ವಿವಾತಾಃ—ದ್ವಿ+ದಶನ್ "ಠಾಪ್" (೪-೪-೭೩) ।

ದ್ವಿವಾಸ್ನಿ ದ್ವಿವಾಸ್ನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎರಡು ಹಗ್ಗಗಳಿಂದ ಕಟ್ಟಿ  
ಬೇಕಾದ ದುಪ್ಪ ಹಸು. ದ್ವಿ ದಾಮನಿ ಸಂದಾನೇ ಯಸ್ಯಾಃ—  
"ಠಾಪ್" (೪-೧-೨೭) ।

ದ್ವಿವೇಹ ದ್ವಿವೇಹ (ಫಂ) ಗಣಪತಿ, ವಿನಾಯಕ.

ದ್ವಿವಾದಶ ದ್ವಿವಾದಶ (ಫಂ) ವಧೂವರರ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿನ  
ಒಂದು ದೋಷ, ಎರಡನೆಯ ಮತ್ತು ಹನ್ನೆರಡನೆಯ  
ರಾಶಿಗಳಾಗುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ದೋಷ.  
ದ್ವಿತೀಯಃ ದ್ವಾದಶಶ್ಚ । ತ್ರಿಭಾಗವತ್ ದ್ವಿವಾದಶಸ್ಯ ಪೂರ್ಣಾರ್ಥತ್ವಮ್ ।  
ವಧೂವರರ ಜಾತಕಗಳಲ್ಲಿ ವಧುವಿನ ರಾಶಿಯಿಂದ ಪರನ  
ರಾಶಿಯು ಎರಡನೆಯದಾಗಿಯೂ ಪರನ ರಾಶಿಯಿಂದ  
ವಧುವಿನ ರಾಶಿಯು ಹನ್ನೆರಡನೆಯದಾಗಿಯೂ ಇರುವುದು  
ದೋಷವಾಗುವುದು. "ದ್ವಿಕೇ ದ್ವಾದಶಕೇ ಮೃತ್ಯುರಾಯುರ್ದ್ವಾದಶಕೇ  
ದ್ವಿಕೇ । ತೃತೀಯಕಾದಶೇ ದುಃಖಃ ಸುಖಮೇಕಾದಶತಿಕೇ" ಮೃಹಂ ೬೦ ।

ದ್ವಿವಾ ದ್ವಿವಾ (ಅಭ್ಯಂ) ಎರಡು ವಿಧವಾಗಿ, ಎರಡು ಪ್ರಕಾರ  
ವಾಗಿ. ದ್ವಿ ಪ್ರಕಾರೇ "ಠಾ" (೪-೩-೪೨) । "ದ್ವಿವಾ



ಪ್ರಯುಕ್ತೇನ ಚ ವಾಚ್ಯಮೇನ ಸರಸ್ವತೀ ತನ್ಮಿಥುನ ನುನಾವ”  
ಕುಮಾಂ ೭-೨೦ ।

**ದ್ವಿಧಾಗತಿ ದ್ವಿಧಾಗತಿ** (ಪುಂ) 1. ಏಡಿ, ಸಳ್ಳ, ಕುಳೇರ.  
ದ್ವಿಧಾ ಗತಿಗಮನಮಸ್ಯ । ಏಡಿಯು ಹಿಂದುಮುಂದಾಗಿಯೂ  
ಸಂಚರಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. 2. ಮೊಸಳೆ. ಇದು  
ನೀರಿನಲ್ಲೂ ನೆಲದಮೇಲೆಯೂ ಸಂಚರಿಸುವುದು.  
(ವಿಂ) 3. ಎರಡು ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ.

**ದ್ವಿನವತಿ ದ್ವಿನವತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೋಬತ್ತಮೂರು. ದ್ವಯಧಿಕಾ  
ನವತಿಃ । “ದ್ವಿ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ದ್ವಿನವತಿಸಮ ದ್ವಿನವತಿಸಮ** (ವಿಂ) ತೋಬತ್ತಮೂರನೆಯ.  
ದ್ವಿನವತೇಃ ಪೂರ್ಣಃ—ಓಟೋ ವಾ “ತಮತ್” (೪-೨-೪೬) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ಓಪ್” (೪-೨-೨೪) । —ತಮಿ —ತಮಿ.

**ದ್ವಿನಾವ ದ್ವಿನಾವ** (ನಂ) ಎರಡು ಹಡಗುಗಳು. ದ್ವಯೋನಿವೋಃ  
ಸಮಾಹಾರಃ “ಓತ್” (೪-೪-೨೨) ।

**ದ್ವಿನಿಷ್ಕ ದ್ವಿನಿಷ್ಕ** (ವಿಂ) ಎರಡು ನಿಷ್ಕಗಳಿಂದ ಕ್ರಯಕ್ಕೆ  
ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ದ್ವಾಮ್ಯಾ ನಿಷ್ಕಾಮ್ಯಾ ಕ್ರಿತಮ್ “ಓತ್”  
(೪-೨-೨೭) । ತಸ್ಯ ವಾ ಲುಕ್ (೪-೨-೨೦) । ಲುಗಮಾಏ  
ಉತ್ತರಪದವೃದ್ಧಿಃ (೭-೨-೨೪) । ದ್ವಿನಿಷ್ಕಕಃ ದ್ವಿನಿಷ್ಕಕಃ.

**ದ್ವಿಪ ದ್ವಿಪ** (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. ದ್ವಾಮ್ಯಾ ಪಿಬತಿ—ಪಾ (ಪಾನೇ)  
“ಕಃ” (೩-೨-೪) । “ವರ್ಷಂ ದ್ವಿಪಾನಾಂ ವಿಶ್ವಂತ ಉಚ್ಚಕಂ-  
ವೇನೇವೇಮ್ಯಶ್ವಿರಮಾಚವಶಿರೇ” ಮಾಘಂ ೧೨-೬೪ । ಸೊಂಡಿಲು  
ಮತ್ತು ಬಾಯಿ ಎರಡರಿಂದಲೂ ನೀರು ಕುಡಿಯುವುದರಿಂದ  
ಆನೆಗೆ ಈ ಹೆಸರು.

**ದ್ವಿಪಕ್ಷ ದ್ವಿಪಕ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಮಾಸ, ತಿಂಗಳು. ದ್ವಿ ಪಕ್ಷೌ  
ಸ್ತೋಷ್ಯ । 2. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ.

**ದ್ವಿಪಚಾಶ ದ್ವಿಪಚಾಶ** (ವಿಂ) ಐವತ್ತೆರಡನೆಯ.  
ದ್ವಿಪಚಾಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ “ಓಟ್” (೪-೨-೪೮) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ಓಪ್” (೪-೨-೨೪) । —ಪಚಾಶತಿ—ಪಚಾಶತಿ. [“ದ್ವಿ”  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ದ್ವಿಪಚಾಶತ್ ದ್ವಿಪಚಾಶತ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಐವತ್ತೆರಡು.  
ದ್ವಯಧಿಕಾ ಪಚಾಶತ್ । [“ದ್ವಿ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ದ್ವಿಪಚಾಶತ್ತಮ ದ್ವಿಪಚಾಶತ್ತಮ** (ವಿಂ) ಐವತ್ತೆರಡನೆಯ.  
ದ್ವಿಪಚಾಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ—ಓಟ್ ವಾ “ತಮತ್” (೪-೨-೪೬) ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಓಪ್” (೪-೨-೨೪) । —ತಮಿ —ತಮಿ.

**ದ್ವಿಪಣ್ಯ ದ್ವಿಪಣ್ಯ** (ವಿಂ) ಎರಡು ಪಣಗಳಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ.  
ದ್ವಾಮ್ಯಾ ಪಣಾಮ್ಯಾ ಕ್ರಿತಮ್ “ಯತ್” (೪-೨-೨೪) ।

**ದ್ವಿಪಥ ದ್ವಿಪಥ** (ಪುಂ) ಎರಡು ಮಾರ್ಗಗಳು. ಎರಡು ದಾರಿ  
ಗಳು. ದ್ವಯೋಃ ಪಯೋಃ ಸಮಾಹಾರಃ ಸಮಾಸಾಂತಃ “ಅಃ” (೪-೪-೭೪) ।

**ದ್ವಿಪದ ದ್ವಿಪದ** (ಪುಂ) 1. ಎರಡು ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳ (1) ಮನುಷ್ಯ,  
(2) ದೇವತೆ, (3) ರಾಕ್ಷಸ ಮತ್ತು (4) ಪಕ್ಷಿ. ದ್ವೇ ಪದೇ  
ಯಸ್ಯ । 2. ದ್ವಿಪದಸಮಾಸ, ಎರಡು ಪದಗಳ ಸಮಾಸ.  
(ನಂ) 3. ಎರಡು ಪಾದಗಳು. ಎರಡು ಕಾಲುಗಳು.  
ದ್ವಯೋಃ ಪಾದಯೋಃ ಸಮಾಹಾರಃ । -

**ದ್ವಿಪವರಾಶಿ ದ್ವಿಪವರಾಶಿ** (ಪುಂ) ಮಿಥುನ ಕನ್ಯಾ  
ತುಲಾ ಮತ್ತು ಕುಂಭ ರಾಶಿಗಳು ಮತ್ತು ಧನುಸ್ಸಿನ  
ಪೂರ್ವಾರ್ಧ. “ಮಿಥುನತುಲಾಪಟಕನ್ಯಾ ದ್ವಿಪದಾಖ್ಯಾಶ್ಚಾಪೂರ್ವ-  
ಭಾಗಶ್ಚ” ।

**ದ್ವಿಪಾಘ ದ್ವಿಪಾಘ** (ಪುಂ) 1. ಎರಡರಷ್ಟು ಶಿಕ್ಷೆ, ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ  
ಹೇಳುವುದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಇಮ್ಮಡಿಯಾದ ಶಿಕ್ಷೆ. ದ್ವಿ ಪಾದೌ  
ಗುಣೌ ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ “ಯತ್” (೪-೨-೨೪) । “ದ್ವಿಪಾಘೌ  
ದ್ವಿಗುಣೌ ದಂಡಃ” ಅಮಂ । (ವಿಂ) 2. ಎರಡು ಪಾದ  
(ಕಾಲುಭಾಗ)ಗಳಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ದ್ವಾಮ್ಯಾ ಪಾದಾಮ್ಯಾ  
ಚತುರ್ಥಾಂಶಾಮ್ಯಾ ಕ್ರಿತಮ್ “ಯತ್” (೪-೨-೨೪) ।

**ದ್ವಿಪಾಧಿಪ ದ್ವಿಪಾಧಿಪ** (ಪುಂ) 1. ಐರಾವತ, ಇಂದ್ರನ ಆನೆ.  
2. ಗಜಶ್ರೇಷ್ಠ, ಸಲಗ, ಆನೆಗಳ ಹಿಂದಿನ ಯಜಮಾನ.  
ದ್ವಿಪಾನಾಮಧಿಪಃ । “ತತ್ಪೂರ್ವಮಸದ್ವಯಸಂ ದ್ವಿಪಾಧಿಪಾಃ ಕ್ಷಣಂ  
ಸಹೇಲಾಃ ಪರಿತೌ ಜಗಾಹಿರೇ” ಮಾಘಂ ೧೨-೭೨ ।

**ದ್ವಿಪಾನನ ದ್ವಿಪಾನನ** (ಪುಂ) ಗಣಪತಿ, ವಿನಾಯಕ. ದ್ವಿಪಸ್ಯ  
ವಾನನಂ ಯಸ್ಯ ।

**ದ್ವಿಪಾಯಿನ್ ದ್ವಿಪಾಯಿನ್** (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. ದ್ವಾಮ್ಯಾ  
ಶುಣ್ಡಾಮುಖಾಮ್ಯಾ ಪಿಬತಿ—ಪಾ (ಪಾನೇ) “ಗಿಣಿಃ”  
(೩-೨-೭೮) ।

**ದ್ವಿಪಾಸ್ಯ ದ್ವಿಪಾಸ್ಯ** (ಪುಂ) ಗಣಪತಿ, ವಿನಾಯಕ. ದ್ವಿಪಸ್ಯ  
ಆಸ್ಯಂ ಯಸ್ಯ ।

**ದ್ವಿಪುರುಷ ದ್ವಿಪುರುಷ** (ವಿಂ) ಎರಡು ಪುರುಷಪ್ರಮಾಣ  
ವುಳ್ಳ, ಎರಡು ಆಳು ಉದ್ದದ ಅಳತೆಯುಳ್ಳ. ದ್ವಿ ಪುರುಷೌ  
ಪ್ರಮಾಣಮಸ್ಯ—ದ್ವಿಪುರುಷ “ಮಾತ್ರಚ್” (೪-೨-೨೭) । ತಸ್ಯ  
ಲುಕ್ (ವಾಂ ೪-೨-೨೭) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ವಾ “ಓಪ್” (೪-೨-೨೪) ।  
ದ್ವಿಪುರುಷೌ ದ್ವಿಪುರುಷಾ ವಾ ಪರಿಕ್ಷಾಃ ।

**ದ್ವಿಬಿಂದು ದ್ವಿಬಿಂದು** (ಪುಂ) ಎರಡು ಬಿಂದುಗಳಿರುವ ವಿಸರ್ಗ.  
ದ್ವಿ ಬಿಂದು ಯಸ್ಯ ।

**ದ್ವಿಭೂಮ ದ್ವಿಭೂಮ** (ವಿಂ) ಎರಡು ಭೂಮಿಗಳುಳ್ಳ  
ಉಪ್ಪರಿಗೆ (ಮಹಡಿ) ಮನೆ ಮೊದಲಾದುದು. ದ್ವೇ ಭೂಮಿ  
ಯಸ್ಯ “ಅಚ್” (ವಾಂ ೪-೪-೭೪) ।

**ದ್ವಿಮಾತೃ ದ್ವಿಮಾತೃ** (ಪುಂ) 1. ಗಣಪತಿ. ದ್ವಿ ಮಾತರೌ ಅಸ್ಯ ।  
ಸಮಾಸಾಂತವಿಧೇರಿನಿತ್ಯತ್ವಾತ್ ನ ಕಪ್ । 2. ಐರಾವತ.



**ದ್ರಿಮಾತೃಜ ದ್ವಿಮಾತೃಜ** (ಪುಂ) 1. ಗಣಪತಿ. 2. ಜರಾಸಂಧ. ದ್ವಾಮ್ಯಾ ಮಾತೃಮ್ಯಾ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಙ:" (3-2-98)।

**ದ್ರಿಮಾತ್ರ ದ್ವಿಮಾತ್ರ** (ಪುಂ) ದೀರ್ಘಸ್ವರ. ದ್ವೆ ಮಾತ್ರೇ ಉಚ್ಚಾರಣ-ಕಾಲೋಽಸ್ಯ | ಆ ಇ ಉ ಇತ್ಯಾದಿ. "ಏಕಮಾತ್ರೋ ಭವೇದ್ಹಸ್ವೋ ದ್ರಿಮಾತ್ರೋ ದೀರ್ಘ ಉಚ್ಯತೇ | ತ್ರಿಮಾತ್ರಸ್ತು ಪ್ಲುತೋ ಜ್ಞೇಯಃ ವ್ಯಂಜನಂ ತ್ವರ್ಧಮಾತ್ರಕಮ್" ಪಾಂ ಶಿಂ |

**ದ್ರಿಮಾಸ್ಯ ದ್ವಿಮಾಸ್ಯ** (ವಿಂ) ಎರಡು ತಿಂಗಳು ವಯಸ್ಸುಳ್ಳ, ಹುಟ್ಟಿ ಎರಡು ತಿಂಗಳಾಗಿರುವ. ದ್ವಿ ಮಾಸೌ ಭೂತಃ "ಯ್" (4-1-62)।

**ದ್ರಿಮುಖ ದ್ವಿಮುಖ** (ಪುಂ) 1. ಎರಡು ಮುಖಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಸರ್ಪ. ದ್ವೆ ಮುಖೇ ಅಸ್ಯ | 2. ಒಂದು ವಿಧ ಕೃಮಿ. "ಚೂರವೋ ದ್ರಿಮುಖಾಃ ಸಪ್ತವಂತೇ ಪುರೀಷಜಾಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರತಂ 48-6. (ವಿಂ) 3. ಎರಡು ಮುಖಗಳುಳ್ಳ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಮುಖಾ -ಮುಖಾ. 4. ಜಿಗಣೆ.

**ದ್ರಿಮುನಿ ದ್ವಿಮುನಿ** (ಅವ್ಯಂ) ವ್ಯಾಕರಣವಿದ್ಯಾಪ್ರವರ್ತಕ ರಾದ ಪಾಣಿನಿ ಮತ್ತು ಕಾತ್ಯಾಯನ ಋಷಿಗಳು. "ದ್ವೆ ಮುನಿ ವಂಶಯೋ ದ್ರಿಮುನಿ ವ್ಯಾಕರಣಸ್ಯ" ಸಿಂ ಕೌಂ | ಅವ್ಯಯಿ-ಭಾವಃ (2-1-19) | ಈ ಮುನಿಗಳಿಬ್ಬರೂ ಸಮಾನ ವಿದ್ಯಾವಂತರಾದುದರಿಂದ ಸಮಾನವಂಶ್ಯರಾದರು. ವಿದ್ಯೆಗೂ ವಿದ್ಯಾವಂತರಿಗೂ ಅಭೇದವಿವಕ್ಷೆಯಿಂದ ದ್ರಿಮುನಿ ವ್ಯಾಕರಣಮ್ ಎಂದೂ ಹೇಳಬಹುದು.

**ದ್ರಿಮುಸಲಿ ದ್ವಿಮುಸಲಿ** (ಅವ್ಯಂ) ಎರಡು ಒನಕೆ (ಮುಸಲ) ಗಳಿಂದ ನಡೆಯುವ ಯುದ್ಧ. ದ್ವಿ ಮುಸಲೌ ಯಸ್ಮಿನ್ ಪ್ರಹರಣೇ "ಙ್" (4-4-126) |

**ದ್ರಿಮೂರ್ಧ ದ್ವಿಮೂರ್ಧ** (ವಿಂ) ಎರಡು ತಲೆಗಳುಳ್ಳ. ದ್ವಿ ಮೂರ್ಧನೌ ಯಸ್ಯ "ಃ" (4-4-114) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಃ" (4-1-41) |

**ದ್ವಿರ ದ್ವಿರ** (ಪುಂ) ಭ್ರಮರ, ದ್ವಿರೇಫ, ದುಂಬಿ. ದ್ವಿ ರೌ ರೇಫೌ ಯಸ್ಯ | ಭ್ರಮರಶಬ್ದದಲ್ಲಿ ಎರಡು ರೇಫಗಳಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ದ್ವಿರದ ದ್ವಿರದ** (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. ದ್ವಿ ರದೌ ಯಸ್ಯ | "ಉಪಾಲಂಘ್ಯೋರ್ವೈಗಿರಿಪತಿರತಿಶ್ರೀಪತಿಮಸೌ ಬಲಾಕ್ರಾಂತಃ ಕ್ರೋಡದ್ವಿರದಮಥಿತೋವೀರಹರವಃ" ಮಾಘಂ 4-69 |

**ದ್ವಿರದರಿಪು ದ್ವಿರದರಿಪು**, -ಶತ್ರು -ಶತ್ರು (ಪುಂ) ಆನೆಗೆ ಶತ್ರುವಾದ ಸಿಂಹ. ದ್ವಿರದಸ್ಯ ರಿಪುಃಶತ್ರುರ್ವಾ |

**ದ್ವಿರದಾಂತಕ ದ್ವಿರದಾಂತಕ**, -ಅರಾತಿ -ಅರಾತಿ (ಪುಂ) ಸಿಂಹ. ದ್ವಿರದಸ್ಯ ಅಂತಕಃ ಅರಾತಿರ್ವಾ |

**ದ್ವಿರಸನ ದ್ವಿರಸನ** (ಪುಂ) ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ದ್ವೆ ರಸನೇ ಯಸ್ಯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಙೀಃ" (4-1-63) |

**ದ್ವಿರಾಗಮನ ದ್ವಿರಾಗಮನ** (ನಂ) ಮದುವೆಯಾದನಂತರ ತಂದೆಯ ಮನೆಯಿಂದ ಪತಿಯ ಗೃಹಕ್ಕೆ ಎರಡನೆಯ ಸಲ ಬರುವುದು. ದ್ವಿಃ ದ್ವಿವಾರಮಾಗಮನಮ್ | "ವೃತ್ತೇ ಪಾಣಿಗ್ರಹೇ ಗೇಹಾತ್ ಪಿತುಃ ಪತಿಗೃಹಂ ಪ್ರತಿ | ಪುನರಾಗಮನಂ ಬಹ್ವಾಸ್ತದ್ವಿರಾಗಮನಂ ವಿಧುಃ" | ತಂದೆಯ ಮನೆಯಿಂದ ಪತಿಗೃಹಕ್ಕೆ ಎರಡನೆಯ ಸಲ ಬರುವುದಕ್ಕೆ ಶುಭ ದಿನಗಳು. ವಿಷಮ (ಒಂದು ಮೂರು ಐದು ಇತ್ಯಾದಿ) ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ಮೇಷ ವೃಶ್ಚಿಕ ಅಥವಾ ಕುಂಭಮಾಸದಲ್ಲಿ ರವಿ ಗುರುಗಳ ಯೋಗವಿರುವಾಗ ಶುಭಗೃಹಗಳ ವಾರ (ಸೋಮ ಬುಧ ಗುರು ಶುಕ್ರ)ಗಳಲ್ಲಿ ವೃಷಭ ಮಿಥುನ ಕನ್ಯಾ ತುಲಾ ಅಥವಾ ಮೀನುಗಳಲ್ಲಿ ಅಶ್ವಿನಿ ಪುಷ್ಯ ಹಸ್ತ ಶ್ರವಣ ಧನಿಷ್ಠ ಶತಭಿಷಕ್ ಈ ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ದ್ವಿರಾಗಮನವು ಪ್ರಶಸ್ತವು. ಶುಕ್ರನು ಅಭಿಮುಖನಾಗಿರುವಾಗಲೂ ಹೊರಡುವವರಿಗೆ ದಕ್ಷಿಣಭಾಗದಲ್ಲಿರುವಾಗಲೂ ಶಿಶು ಗರ್ಭಿಣಿ ಮತ್ತು ನೂತನ ವಧು ಇವರು ಪ್ರಯಾಣ ಮಾಡಕೂಡದು.

**ದ್ವಿರಾತ್ರ ದ್ವಿರಾತ್ರ** (ನಂ) ಎರಡು ರಾತ್ರಿಗಳು. ದ್ವಯೋ ರಾತ್ರಯೋಃ ಸಮಾಹಾರಃ | ನಪುंसಕತ್ವಮ್ (ಲಿङ्ಗಾಂ 2-4-29) |

**ದ್ವಿರಾತ್ರಿಣ ದ್ವಿರಾತ್ರಿಣ** (ವಿಂ) 1. ಎರಡು ರಾತ್ರಿಗಳಲ್ಲಿ ನಡೆದ. ದ್ವಾಮ್ಯಾ ರಾತ್ರಿಮ್ಯಾ ನಿर्वೃತ್ತಃ ವಾ "ಃ" (4-1-66) | ಇಂದೇಶಃ (3-1-2) | 2. ಎರಡು ರಾತ್ರಿಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿಸಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಎರಡು ರಾತ್ರಿಗಳ ಕಾಲದ. 4. ಮುಂದಿನ ಎರಡು ರಾತ್ರಿಗಳಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ. ಪಕ್ಷೇ "ಠ್" (4-1-66) | ದ್ವಿರಾತ್ರಿಕಃ ದ್ವಿರಾತ್ರಿಕಃ |

**ದ್ವಿರಾಷಾಢ ದ್ವಿರಾಷಾಢ** (ಪುಂ) ಎರಡು ಅಮಾವಾಸ್ಯೆಗಳು ಬರುವ ಮಿಥುನಮಾಸ; ಮಿಥುನಮಾಸದಲ್ಲಿ ಎರಡು ಅಮಾವಾಸ್ಯೆಗಳು ಬಂದರೆ ಅದಕ್ಕೆ "ದ್ವಿರಾಷಾಢ" ಎಂದು ಹೆಸರು. "ಮಿಥುನಸ್ಥೋ ಯದಾ ಭಾನುರಮಾವಾಸ್ಯಾಢ್ಯಂ ಸೃಶೇತ್ | ದ್ವಿರಾಷಾಢಃ ಸ ವಿಜ್ರೇಯಃ ವಿಷ್ಣುಃ ಸ್ವಪಿಪಿತಿ ಕರ್ಕಟೇ" |

**ದ್ವಿರುಕ್ತ ದ್ವಿರುಕ್ತ** (ಪುಂ) 1. ಅಭ್ಯಾಸ ಸಂಜ್ಞೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿ ದ್ವಿತ್ವಹೊಂದಿದ ಧಾತು. (ವಿಂ) 2. ಎರಡು ಸಲ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ದ್ವಿಃ ದ್ವಿವಾರಮುಕ್ತಃ |

**ದ್ವಿರುಡಾ ದ್ವಿರುಡಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎರಡು ಸಲ ಮದುವೆಯಾದ ಹೆಂಗಸು. ದ್ವಿವಾರಮೂಡಾ |

**ದ್ವಿರೇತಸ್ ದ್ವಿರೇತಸ್** (ಪುಂ) 1. ಹೇಸರಗತ್ತೆ. ದ್ವೆ ರೇತಸಿ (ರಾಸಭಾಷಯೋಃ) ಕಾರಣಮಸ್ಯ | 2. ಗರ್ಭ, ಕತ್ತೆ.



ದ್ವಿರೇಕ ದ್ವಿರೇಕ (ಪುಂ) ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ದ್ವಿ ರೇಕೌ ಯಸ್ಯ  
ವಾಚಕಶಬ್ದೇ | ಭ್ರಮರ ಶಬ್ದದಲ್ಲಿ ಎರಡು ರೇಖೆಗಳಿರುವುದು  
ರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ನಿವೇಶಯಾಮಾಸ ಮಧುಧಿರೇಕಾನ್"  
ಕುಮಾಂ ೩-೨೭ | "ಸುಗಂಧಿನಿಶ್ವಾಸವಿವೃದ್ಧತೃಣಂ ಬಿಂಬಾ-  
ಖರಾಸನ್ನವರಂ ದ್ವಿರೇಕಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೫೬ |

ದ್ವಿವಚನ ದ್ವಿವಚನ (ನಂ) 1. ಅಭ್ಯಾಸಸಂಜ್ಞೆ ಹೊಂದಿದ  
ಧಾತು. (ವಿಂ) 2. ಎರಡು ಸಲ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು ದ್ವಿರೂಪತೆ—  
ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣ) ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩) |

ದ್ವಿವಕ್ತ್ರ ದ್ವಿವಕ್ತ್ರ (ಪುಂ) ಎರಡು ತಲೆಗಳುಳ್ಳ ಉರಿಶಿಂಗಿ  
ಯೆಂಬ ಹಾವು. ದ್ವೇ ವಕ್ತ್ರೇ ಯಸ್ಯ |

ದ್ವಿವಚನ ದ್ವಿವಚನ (ನಂ) ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಅಥವಾ  
ಇಬ್ಬರನ್ನು ಹೇಳುವ ಪ್ರತ್ಯಯ. ದ್ವಿ ದ್ವಿವಮುಚ್ಯತೇಜೇನ—  
ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣ) ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩) |  
ಓ ಆದ್ ಮ್ಯಾ ಇತ್ಯಾದಿ ದ್ವಿವಚನ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು.

ದ್ವಿವಜ್ರಕ ದ್ವಿವಜ್ರಕ (ಪುಂ) ಹದಿನಾರು ಕೋಣ (ಮೂಲೆ)  
ಗಳುಳ್ಳ ಮನೆ. "ವಜ್ರೋಷ್ಠಾಸ್ತಿದ್ವಿವಜ್ರಕೋ ದ್ವಿಗುಣಃ" |

ದ್ವಿವರ್ಷ ದ್ವಿವರ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಎರಡು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸುಳ್ಳ  
ವೃಷಭ ಮೊದಲಾದುದು. ದ್ವೇ ವರ್ಷೇ ವಯೋಮಾನಮಸ್ಯ "ಠ್" (೫-೧-೮೮) | ತಸ್ಯ ವಾ ಲುಕ್ (೫-೧-೨೮) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಠ್" (೫-೧-೪) | -ವರ್ಷಾ-ವರ್ಷಾ. ಎರಡು ವರ್ಷ  
ವಯಸ್ಸಿನ ಹಸು. 2. ಎರಡು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸುಳ್ಳ ಬಾಲಕ.  
ದ್ವಿವರ್ಷೋ ದಾರಕಃ | ತಸ್ಯ ಠ್ ಪ್ರತ್ಯಯಸ್ಯ ಚ ಚಿತ್ತವತಿ  
ನಿತ್ಯಂ ಲುಕ್ (೫-೧-೮೯) | 3. ಎರಡು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ  
ಸಲಹಿ ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ ಸೇವಕ, -ಸತ್ಕರಿಸಿ ಕೆಲಸ  
ಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ದ್ವೇ ವರ್ಷೇ ಅಖಿಷ್ಠೋ ಭೂತಶ್ಚ "ಠ್" (೫-೧-೮೦) | ವಾ ಲುಕ್ (೫-೧-೮೮) | ತಯೋಃ ವಾ ಲುಕ್ (೫-೧-೮೮) | ದ್ವಿವರ್ಷಿಣಃ, ದ್ವಿವರ್ಷಃ | 4. ಎರಡು ವರ್ಷ  
ಗಳ ಕಾಲದ, ಎರಡು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಕಳೆದಿರುವ. ದ್ವೇ ವರ್ಷೇ  
ಭೂತಃ ವಾ "ಠ್" (೫-೧-೮೮) | ಪಕ್ಷೇ "ಠ್" (೫-೧-೮೦) |  
ತಯೋಃ ವಾ ಲುಕ್ (೫-೧-೮೮) | ದ್ವಿವರ್ಷಿಣಃ, ದ್ವಿವರ್ಷಃ | 5. ಎರಡು ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ಆಗುವ. ದ್ವೇ ವರ್ಷೇ ಭಾವಿ—  
ದ್ವಿವರ್ಷಿಣಃ, ದ್ವಿವರ್ಷಃ | 6. ಎರಡು ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ನಡೆದ.  
ದ್ವಾಮ್ಯಾ ವರ್ಷಮ್ಯಾ ನಿವೃತ್ತಃ | ದ್ವಿವರ್ಷಿಣಃ, ದ್ವಿವರ್ಷಃ | ಅಧೀಷ್ಟ  
ಮತ್ತು ಭೃತ ಈ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಭವಿಷ್ಯದರ್ಥದಲ್ಲಿ  
ಉತ್ತರಪದವೃದ್ಧಿಯು ಬರುವುದು. ದ್ವೇ ವರ್ಷೇ ಅಖಿಷ್ಠೋ  
ಭೂತೋ ವಾ ಕರ್ಮ ಕರಿಸ್ಯತಿ ದ್ವಿವಾರ್ಷಿಕಃ ದ್ವಿವಾರ್ಷಿಕಃ |

ದ್ವಿವಿಶತಿಕೋನ ದ್ವಿವಿಂಶತಿಕೋನ (ವಿಂ) ಎರಡು ವಿಂಶತಿ  
ಗಳಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಎರಡು ವಿಂಶತಿಗಳ ಬೆಲೆ ಬಾಳುವ,

ದ್ವಾಮ್ಯಾ ವಿಶತಿಮ್ಯಾ ಕ್ರೀತಮ್—ದ್ವಿವಿಶತಿ "ಠ್" (೫-೧-೩೨) |  
"ಕನ್" (೫-೧-೨೪) | ದ್ವಾವಿಶತಿಕಃ ದ್ವಾವಿಂಶತಿಕಃ |

ದ್ವಿವಿದ ದ್ವಿವಿದ (ಪುಂ) ಶ್ರೀರಾಮನ ಸೈನ್ಯದಲ್ಲಿದ್ದ ಒಬ್ಬ  
ವಾನರ. "ಮಂದ್ರಾ ದ್ವಿವಿದಶ್ಚೈವ ಹನುಮಾನ್ಶಾನಿಲಾತ್ಮಜಃ" |

ದ್ವಿವಿಧ ದ್ವಿವಿಧ (ವಿಂ) ಎರಡು ವಿಧವಾದ, ಎರಡು ಪ್ರಕಾರ  
ವಾದ. ದ್ವೇ ವಿಧೇ ಯಸ್ಯ | "ನಿಕಾಮತಪ್ತಾ ದ್ವಿವಿಧೇನ  
ವಹ್ನಿನಾ" ಕುಮಾಂ ೫-೨೩ |

ದ್ವಿವೇದ ದ್ವಿವೇದ (ಪುಂ) ಎರಡು ವೇದಗಳನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ  
ಮಾಡಿದವನು ಅಥವಾ ತಿಳಿದವನು. ದ್ವಿ ವೇದಾವಧೀತೇ ವೇದ ವಾ  
"ಅನ್" (೫-೨-೫೯) | ತಸ್ಯ ಲುಕ್ (೫-೧-೮೮) | ದ್ವಿವೇದೋ-  
ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫) | -ವೇದಿನ್ -ವೇದಿನ್ |

ದ್ವಿವೇಶರಾ ದ್ವಿವೇಶರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೈಗಾಡಿ, ಮನುಷ್ಯರಿಂದ  
ಎಳೆಯಲ್ಪಡುವ "ರಿಕ್ಷಾ" ಎಂಬ ಗಾಡಿ. ದ್ವಿ ವೇಶೌ  
ಯಾನಸ್ಥಾನರೂಪೌ ರಾತಿ ದದಾತಿ—ರಾ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) |

ದ್ವಿವ್ರಣ ದ್ವಿವ್ರಣ (ಪುಂ) ದೇಹಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಎರಡು ವಿಧ  
ವ್ರಣ. ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಎರಡು ವಿಧವಾದ ವ್ರಣ  
ಗಳುಂಟಾಗುವುವು. ಒಂದು ಶರೀರ. ಇದು ಶರೀರ  
ದೊಳಗಿನದು. ಇನ್ನೊಂದು ಶರೀರದ ಮೇಲುಗಡೆ ಸಂಭವಿ  
ಸುವುದು. ಇದು ಆಗಂತುಕವು. ವಾತ ಪಿತ್ತ ಕಫಾದಿ ದೋಷ  
ಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದು ಶರೀರವ್ರಣ. ಮನುಷ್ಯ ಪಶು  
ಪಕ್ಷಿ ಸರ್ಪ ಇತ್ಯಾದಿಗಳಿಂದಲೂ ಪತನ ಪ್ರಹಾರ ಅಗ್ನಿ  
ವಿಷ ಬಾಣ ಆಯುಧ ಇತ್ಯಾದಿಗಳಿಂದಲೂ ಉಂಟಾಗು  
ವುದು ಆಗಂತುಕವ್ರಣ. "ದ್ವಿ ವ್ರಣೌ ಭವತಃ ಶಾರೀರ  
ಆಗಂತುಕಶ್ಚೇತಿ | ತಯೋಃ ಶಾರೀರಃ ಪವನಪಿತ್ತಕಫಶೋಣಿತ-  
ಸನ್ನಿಪಾತನಿಮಿತ್ತಃ | ಆಗಂತುರಪಿ ಪುರುಷಪಶುಪಕ್ಷಿವ್ಯಾಲಸರೀಸೃಪ-  
ಪ್ರಪತನಪೀಡನಪ್ರಹಾರಾಗ್ನಿಕಾರವಿಷಪರಶುಶಕ್ತಿಕುಂತಾಘಾಯುಧಾ-  
ಭಿಘಾತನಿಮಿತ್ತಜಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೧-೩ |

ದ್ವಿಶತ ದ್ವಿಶತ (ನಂ) ಇನ್ನೂರು, ಎರಡು ನೂರು. ದ್ವಿಗುಣಿತಂ  
ಶತಮ್ |

ದ್ವಿಶತಕ ದ್ವಿಶತಕ (ವಿಂ) ಎರಡು ನೂರುಗಳಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ.  
ದ್ವಿಶತೇನ ಕ್ರೀತಮ್ "ಕನ್" (೫-೧-೨೨) |

ದ್ವಿಶತತಮ ದ್ವಿಶತತಮ (ವಿಂ) ಇನ್ನೂರನೆಯ. ದ್ವಿಶತ  
ಪೂರ್ಣಂ ಡಟ್—ತಸ್ಯ ನಿತ್ಯಂ ತಮಙಾಗಮಃ (೫-೨-೫೭) |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೋ" (೫-೧-೧೫) | -ಶತತಮೋ-ಶತತಮೋ |

ದ್ವಿಶತಿಕಾ ದ್ವಿಶತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎರಡೆರಡುನೂರು. ದ್ವಿಶತ  
ವಿಪ್ಸಾಃ "ವುನ್" (೫-೪-೧) | ಟಾಪ್ (೫-೧-೪) | ಅತ  
ಇತ್ಯಮ್ (೭-೩-೪೪) |



ದ್ವಿಶತೀ ದ್ವಿಶತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎರಡುನೂರು. ದ್ವಯೋಃ ಶತಯೋಃ  
ಸಮಾಹಾರಃ |

ದ್ವಿಶತೀ ದ್ವಿಶತೀ (ನಂ) ಇನ್ನೂರರಿಂದ ಕ್ರಿಯಕ್ಕೆ ಕೊಳ್ಳು  
ಲ್ಪಟ್ಟು. ದ್ವಿಶತೀನ ಕ್ರಿಯೆ "ಯತ್" (೪-೧-೩೪) |

ದ್ವಿಶತೀ ದ್ವಿಶತೀ (ಪುಂ) 1. ಎರಡು (ಸೀಳಿದ) ಗೊರಸುಗಳುಳ್ಳ  
ಹಸು ಎಮ್ಮೆ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಾಣಿ. ದ್ವಿ ಶತೀ ಯಸ್ಯ |  
ಹಸು ಆಡು ಎಮ್ಮೆ ಜಿಂಕೆ ಹಂದಿ ಗವಯ ಈ ಪ್ರಾಣಿಗಳ  
ಕಾಲಿನ ಗೊರಸು ಎರಡಾಗಿ ಸೀಳಿದೆ.

ದ್ವಿಶರೀರ ದ್ವಿಶರೀರ (ಪುಂ) ಚರಸ್ಥಿರ ರೂಪವಾದ ದ್ವಿ  
ಸ್ವಭಾವದ ರಾಶಿ. ದ್ವೇ ಚರಸ್ಥಿರಾತ್ಮಕೇ ಶರೀರೇ ಯಸ್ಯ |  
ಮಿಥುನ ಕನ್ಯಾ ಧನುಸ್ಸು ಮತ್ತು ಮೀನ ಇವು ದ್ವಿಸ್ವಭಾವದ  
ರಾಶಿಗಳು.

ದ್ವಿಶಸ್ ದ್ವಿಶಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಎರಡೆರಡಾಗಿ (ಕೊಡು), ಎರಡೆರ  
ಡಾಗಿ (ಮಾಡು). ದ್ವಿ ದ್ವಿ ದವಾತಿ ಕರೋತಿ ವಾ ದ್ವಿ "ಶಸ್"  
(೪-೪-೪೩) |

ದ್ವಿಶಾಣ ದ್ವಿಶಾಣ (ವಿಂ) ಎರಡು ಶಾಣಗಳಿಂದ ಕೊಳ್ಳು  
ಲ್ಪಟ್ಟು. ದ್ವಾಮ್ಯಾಂ ಶಾಣಾಮ್ಯಾಂ ಕ್ರಿಯೆ ವಾ "ಶ್ಚ" (೪-೧-೩೬) |  
ತಸ್ಯ ಲುಕ್ (೪-೧-೨೮) | ಪಕ್ಷೇ ವಾ "ಯತ್" (೪-೧-೩೪) |  
ದ್ವಿಶಾಪ್ಯಮ್ ದ್ವಿಶಾಪ್ಯಮ್. ಪಕ್ಷೇ "ಅನ್" (೪-೧-೩೬) |  
ದ್ವಿಶಾಪ್ಯಮ್ ದ್ವಿಶಾಪ್ಯಮ್.

ದ್ವಿಶಿರಸ್ ದ್ವಿಶಿರಸ್ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ. ದ್ವೇ ಶಿರಸಿ ಅಸ್ಯ |  
ವಾ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೫೪) | -ಶಿರಸ್ಕಃ -ಶಿರಸ್ಕಃ |  
(ವಿಂ) 2. ಎರಡು ತಲೆಗಳುಳ್ಳ.

ದ್ವಿಶೀರ್ಷ ದ್ವಿಶೀರ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ. ದ್ವೇ ಶೀರ್ಷಿ ಅಸ್ಯ |  
ವಾ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೫೪) | -ಶೀರ್ಷಕಃ -ಶೀರ್ಷಕಃ |  
(ವಿಂ) 2. ಎರಡು ತಲೆಗಳುಳ್ಳ.

ದ್ವಿಶೂರ್ಪ ದ್ವಿಶೂರ್ಪ (ವಿಂ) ಎರಡು ಶೂರ್ಪಗಳಿಂದ ಕೊಳ್ಳು  
ಲ್ಪಟ್ಟು. ದ್ವಾಮ್ಯಾಂ ಶೂರ್ಪಾಮ್ಯಾಂ ಕ್ರಿಯೆ ವಾ "ಅನ್" (೪-೧-೨೬) |  
ಪಕ್ಷೇ "ಶ್ಚ" (೪-೧-೩೬) | ತಯೋರ್ಲೋಪಃ (೪-೧-೨೮) |

ದ್ವಿಶೌರ್ಪಿಕಮ್ ದ್ವಿಶೌರ್ಪಿಕಮ್ (ವಿಂ) ಎರಡು ಶೂರ್ಪ  
ಗಳಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು. ದ್ವಯೋಃ ಶೌರ್ಪಯೋಃ ಸಮಾಹಾರಃ ದ್ವಿಶೌರ್ಪ  
ತೇನ ಕ್ರಿಯೆ "ಶ್ಚ" (೪-೧-೩೬) | ಅತ್ರ ದ್ವಿಗುನಿಮಿತ್ತತ್ವಾ  
ಭಾವಾತ್ ಠಜಿ ನ ಲುಕ್ |

ದ್ವಿಷ್ ದ್ವಿಷ್ (ಪುಂ) ಶತ್ರು, ವೈರಿ, ಹಗೆ. ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ)  
"ವಿವಪ್" (೩-೨-೬೧) | "ಉಪಕುಂಠಂತು ದಾಶಾರ್ಹಿಃ ಪುರೀಂ  
ಮಾಹಿಷ್ಮತೀಂ ದ್ವಿಷಃ" ಮಾಘಂ ೨-೬೪ |

ದ್ವಿಷ - ಅಪ್ರೀತೌ (ಅದಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) | ದ್ವೇಷಿ,  
ದ್ವೇಷಿ. ದಿವೇಷ, ದಿವೇಷಿ. ದ್ವೇಷಾ. ದ್ವೇಷ್ಯತಿ, -ತೇ. ದ್ವೇಷ್ಯ

ದ್ವಿಷಾತ್, ದ್ವಿಷಾಮ್ ದ್ವಿಷಾತಾಮ್ | ಅದ್ವೇಷ, ಅದ್ವೇಷಿ. ದ್ವಿಷ್ಯಾತ್,  
ದ್ವಿಷೀತ | ದ್ವಿಷ್ಯಾತ್, ದ್ವಿಷೀಷಿ. ಅದ್ವಿಷತ್, ಅದ್ವಿಷತ |  
ಅದ್ವೇಷ್ಯತ್, -ತ | ದ್ವೇಷಿಸು, ಅಪ್ರೀತಿಯನ್ನು ತೋರಿಸು.  
"ಮಮ ಪುತ್ರಾ ಇತಿ ಮಾತಾಸ್ತೇ ಪುತ್ರಾ ಅಪಿ ಶತ್ರುವಃ | ದ್ವಿಷಂತಿ  
ಪ್ರತಿಕುರ್ವಂತಿ ನ ತೇ ವಚನಕಾರಿಣಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೮-೩೬ |  
ಕರ್ಮಣಿಃ - ದ್ವಿಷ್ಯತೇ | ದ್ವಿಷ್ಯತಾಮ್ | ಅದ್ವಿಷ್ಯತ | ದ್ವಿಷ್ಯತ |  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಯುಃ - ದ್ವೇಷ್ಯಃ | ದ್ವೇಷಣೀಯಃ | ದ್ವೇಷ್ಯಃ | ದ್ವಿಷಿಃ |  
ದ್ವಿಷಿವಾನ್, -ವತಿ | ದ್ವಿಷನ್, -ಂತಿ | ದ್ವಿಷಾಣಃ | ದ್ವೇಷ್ಯಮ್ |  
ದ್ವಿಷಮ್ | ದ್ವೇಷಣಮ್ | ದ್ವಿಷಿವಾ | ವಿವಿಧಿಷ್ಯ |

ದ್ವಿಷತ್ ದ್ವಿಷತ್ (ವಿಂ) 1. ವೈರಿ, ಶತ್ರು, ಹಗೆ. ದ್ವಿಷ  
(ಅಪ್ರೀತೌ) "ಶತ್ರು" (೩-೨-೧೩೧) | ದ್ವಿಷತಾಮುದಯಃ  
ಸುಮೇಧಸಾ ಗುಹರಸ್ವಂತರಃ ಸುಮರ್ಷಣಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೮ |  
(ವಿಂ) 2. ದ್ವೇಷಿಸುವ, ಶತ್ರುತ್ವವನ್ನು ತೋರಿಸುವ.  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) | -ದ್ವಿಷಂತಿ - ದ್ವಿಷಂತೀಃ |  
ದ್ವಿಷಂತಪ ದ್ವಿಷಂತಪ (ವಿಂ) ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಬಳಲಿಸುವ,  
ಹಗೆಯನ್ನು ನರಳಿಸುವ. ದ್ವಿಷಂತಾಂ ತಾಪಯತಿ - ತಪ  
(ಸಂತಾಪೇ) + ಣಿಷ್ "ಲಚ್" (೩-೨-೩೯) | ಮುಮಾಗಮಃ  
(೬-೩-೬೭) |

ದ್ವಿಷಿಷ್ ದ್ವಿಷಿಷ್ (ವಿಂ) ಎರಡು ಅರು, ಹನ್ನೆರಡು.  
ದ್ವಿಗುಣಿತಾಃ ಷಟ್ | (ದ್ವಿಷಿಷ್) |

ದ್ವಿಷಿಷ್ ದ್ವಿಷಿಷ್ (ವಿಂ) ಅರವತ್ತೆರಡನೆಯ. ದ್ವಿಷಿಷ್ಠಃ ಪೂರ್ಣಃ  
ತಮಃಭಾವೇ "ಛಟ್" (೪-೨-೪೮) | ವಾ ತಮಟ್ (೪-೨-೪೮) |  
-ವಿಷಿಷ್ಠತಮಃ - ವಿಷಿಷ್ಠತಮಃ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) |  
-ತಮಿ - ತಮಿ. ["ದ್ವಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ದ್ವಿಷಿಷ್ಠಿ ದ್ವಿಷಿಷ್ಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರವತ್ತೆರಡು. ದ್ವಿವಿಧಿಕಾ  
ವಿಷಿಃ | ["ದ್ವಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ದ್ವಿಷಾಷ್ಟಿಕ ದ್ವಿಷಾಷ್ಟಿಕ (ವಿಂ) 1. ನೂರ ಇಪ್ಪತ್ತು  
ದಿನಗಳ ಕಾಲ ಸಲಹೆ ಕೆಲಸಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ನೂರ  
ಇಪ್ಪತ್ತು ದಿನಗಳ ಕಾಲ ವೇತನದಿಂದ ಕ್ರಿಯಕ್ಕೆ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು  
(ಸೇವಕ, ಅಳು). 3. ನೂರ ಇಪ್ಪತ್ತು ದಿನಗಳ, ನೂರ  
ಇಪ್ಪತ್ತು ದಿನಗಳು ಕಳೆದಿರುವ. 4. ನೂರ ಇಪ್ಪತ್ತು  
ದಿನಗಳಲ್ಲಾಗುವ. ದ್ವೇ ಷಷ್ಟಿ ದಿನಾನಿ ಅಧೀಷ್ಠಾ ಭೂತಃ  
ಭೂತಃ ಭಾವಿ ವಾ "ಶ್ಚ" (೪-೧-೮೦) | ಉತ್ತರಪದವೃದ್ಧಿಃ  
(೭-೩-೧೫) |

ದ್ವಿಷಿಷ್ಠಿ ದ್ವಿಷಿಷ್ಠಿ (ನಂ) 1. ತಾಮ್ರಲೋಹ. 2. ದ್ವೇಷ.  
(ವಿಂ) 3. ದ್ವೇಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) ಕರ್ಮಂ  
ಕರ್ಮಂ ವಾ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨, ೩-೨-೧೦೨) |



ದ್ವಿಷ ದ್ವಿಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಎರಡರಲ್ಲಿರುವ, ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿರುವ.  
2. ಎರಡು ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿರುವ. ದ್ವಿಃ:ತಿಷ್ಠತಿ - ಷಾ  
(ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ:" (3-2-4) ।

ದ್ವಿಷ್ ದ್ವಿಷ್ಯ (ಅವ್ಯಂ) ಎರಡು ಸಲ, ಎರಡಾವೃತ್ತಿ. ದ್ವಿ  
"ಸುಚ್" (4-4-12) । ದ್ವಿಃ: "ದ್ವಿರಿವ ಪ್ರತಿಶಬ್ದೇನ  
ವ್ಯಾಜಹಾರ ಹಿಮಾಲಯ:" ಕುಮಾಂ 6-64 ।

ದ್ವಿಸಂವತ್ಸರೀಣ ದ್ವಿಸಂವತ್ಸರೀಣ (ವಿಂ) 1. ಎರಡು ವರ್ಷ  
ಗಳಲ್ಲಿ ನೆರವೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಎರಡು ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ಸಾಧಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟು, -ಪೂರೆಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಎರಡು ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ  
ವೇತನದಿಂದ ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು (ಸೇವಕ). 3. ಎರಡು  
ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲದ, ಎರಡು ವರ್ಷಗಳು ಕಳೆದಿರುವ.  
4. ಮುಂದಿನ ಎರಡು ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ಆಗುವ. ಡಾಮ್ಯಾಂ  
ಸಂವತ್ಸರಾಮ್ಯಾಂ ನಿವೃತ್ತ: ದ್ವಿ ಸಂವತ್ಸರೀ ಅಖಿಷ್ಠೋ ಭೂತ: ಭೂತ:  
ಭಾವಿ ಚ ವಾ "ಃ:" (4-1-29) । ಪಕ್ಷೆ "ಠ್" (4-1-3) ।  
ಉತ್ತರಪದವೃದ್ಧಿ: (3-3-14) । -ಸಂವತ್ಸರೀಕ:  
-ಸಂವತ್ಸರೀಕ:

ದ್ವಿಸಪ್ತತ ದ್ವಿಸಪ್ತತ (ವಿಂ) ಎಪ್ಪತ್ತೆರಡನೆಯ. ದ್ವಿಸಪ್ತತೇ:  
ಪೂರ್ಣ: "ಙ್" (4-2-42) ।

ದ್ವಿಸಪ್ತತಿ ದ್ವಿಸಪ್ತತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎಪ್ಪತ್ತೆರಡು. ದ್ವಿಪತ್ನಿ  
ಸಪ್ತತಿ: ।

ದ್ವಿಸಪ್ತತೀತಮ ದ್ವಿಸಪ್ತತೀತಮ (ವಿಂ) ಎಪ್ಪತ್ತೆರಡನೆಯ.  
ದ್ವಿಸಪ್ತತೇ: ಪೂರ್ಣ: ಙ್: ವಾ ತಮಃ (4-2-46) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಙೀಪ್" (4-1-14) । -ತಮೀ-ತಮೀ.

ದ್ವಿಸಮೀನ ದ್ವಿಸಮೀನ (ವಿಂ) 1. ಎರಡು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ  
ಪ್ರೀತಿಸಿ ಕೆಲಸಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಎರಡು ವರ್ಷಗಳ  
ಕಾಲ ವೇತನದಿಂದ ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಎರಡು  
ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಕಳೆದಿರುವ. 4. ಎರಡು ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ  
ಪೂರೆಯಿಸಿದ. 5. ಎರಡು ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ನೆಡೆಯಲಿರುವ.  
ಏ ಸಮೇ ಅಖಿಷ್ಠೋ ಭೂತೋ ಭೂತೋ ಭಾವಿ ವಾ ಡಾಮ್ಯಾಂ ಸಮಾಖ್ಯಾಂ  
ನಿವೃತ್ತೋ ವಾ-ವಾ "ಃ:" (4-1-26) । ಪಕ್ಷೆ "ಠ್" (4-1-3) ।  
ಉತ್ತರಪದವೃದ್ಧಿ: (3-3-14) । -ಸಮೀಕ: ದ್ವಿಸಮೀಕ:

ದ್ವಿಸಂವತ್ಸರೀಕ ದ್ವಿಸಂವತ್ಸರೀಕ (ವಿಂ) ["ದ್ವಿಸಂವತ್ಸರೀಣ"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ದ್ವಿಸಾಹಸ್ರ ದ್ವಿಸಾಹಸ್ರ (ವಿಂ) 1. ಎರಡು ಸಾವಿರಗಳಿಂದ  
ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು. ಡಾಮ್ಯಾಂ ಸಹಸ್ರಾಮ್ಯಾಂ ಕ್ರೀತಮ್ "ಅಃ"  
(4-1-29) । ಅಃ ವಾ ಲುಕ್ (4-1-29) । ಪಕ್ಷೆ  
ದ್ವಿಸಾಹಸ್ರಮ್ ದ್ವಿಸಾಹಸ್ರಮ್. (ನಂ) 2. ಎರಡು ಸಾವಿರ.

ದ್ವಿಸೀತ ದ್ವಿಸೀತ (ವಿಂ) ಎರಡು ಸಲ ಉಳಲ್ಪಟ್ಟು  
(ಭೂಮಿ). ದ್ವಿವಾರಂ ಸೀತಯಾ ಸಂಮಿತಮ್ "ಯತ್" (4-4-1) ।

ದ್ವಿಸುರ್ವಣ ದ್ವಿಸುರ್ವಣ (ವಿಂ) 1. ಎರಡು ಸುರ್ವಣಗಳಿಂದ  
ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು. ಡಾಮ್ಯಾಂ ಸುರ್ವಣಾಮ್ಯಾಂ ಕ್ರೀತಮ್ "ಠ್"  
(4-1-39) । ತಸ್ಯ ಲುಕ್ (4-1-22) । ದ್ವಿಸುರ್ವಣಂ  
ಕ್ರೀತಮಿತಿ ವಿಪ್ರೇ ಹೇ ತು. ಠ್ಕೋ ದ್ವಿಗುಣಿಮಿತ್ತತ್ವಾಭಾವಾತ್  
ನ ಲುಕ್ । ಉತ್ತರಪದವೃದ್ಧಿ: (3-3-14) । ದ್ವಿಸೌರ್ವಣಿಕ:  
ದ್ವಿಸೌರ್ವಣಿಕ:

ದ್ವಿಸ್ವಭಾವ ದ್ವಿಸ್ವಭಾವ (ವಿಂ) 1. ಎರಡು ಸ್ವಭಾವಗಳುಳ್ಳ.  
ದ್ವಿ ಸ್ವಭಾವೋ ಯಸ್ಯ । (ಪುಂ) 2. ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ  
ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಚರ ಮತ್ತು ಸ್ಥಿರ ಸ್ವಭಾವದ ರಾಶಿಗಳು.  
ಮಿಥುನ ಕನ್ಯಾ ಧನುಸ್ಸು ಮತ್ತು ಮೀನ ಇವು  
ದ್ವಿಸ್ವಭಾವದ ರಾಶಿಗಳು.

ದ್ವಿಹಲ್ಯ ದ್ವಿಹಲ್ಯ (ವಿಂ) ಎರಡು ಸಲ ಉಳಲ್ಪಟ್ಟು (ಕ್ಷೇತ್ರ).  
ದ್ವಿವಾರಂ ಹಲೇನ ಕೃಷ್ಣಮ್ "ಯತ್" (4-4-14) ।

ದ್ವಿಹಾಯನ ದ್ವಿಹಾಯನ (ಪುಂ) 1. ಎರಡು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸುಳ್ಳ  
ಏ ಮತ್ತು ಏಮ್ಮ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಾಣಿ. ದ್ವಿ ಹಾಯನೋ  
ಯಸ್ಯ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (4-1-29) । -ಹಾಯನೋ  
-ಹಾಯನೋ. ಎರಡು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನ ಹಸು. "ದ್ವಿಹಾಯನೋ  
ದ್ವಿವರ್ಷಿ ಗೌ:" ಅಮಂ । (ನಂ) 2. ಎರಡು ವರ್ಷಗಳು.  
ದ್ವಿಹಾಯನಯೋ: ಸಮಾಹಾರ: । ಪಾತ್ರಾದಿತ್ವಾತ್ ನ "ಙೀಪ್" ।  
"ಶುಕೇ ದ್ವಿಹಾಯನಂ ವತ್ಸಂ ಕ್ರೀಷ್ಣಂ ಹತ್ವಾ ತ್ರಿಹಾಯನಮ್" ಮನುಂ  
11-134 ।

ದ್ವಿಹೀನ ದ್ವಿಹೀನ (ವಿಂ) 1. ಎರಡರಿಂದ ಹೀನವಾದ, ಎರಡ  
ರಿಂದ ವರ್ಜಿತವಾದ. 2. ಪುಂಲಿಂಗ ಮತ್ತು ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗ  
ಹೀನವಾದ. ಡಾಮ್ಯಾಂ ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸಾಮ್ಯಾಂ ಹೀನಮ್ । ನಪುಂಸಕಲಿಂಗ.  
"ದ್ವಿಹೀನಂ ಪ್ರಸವೇ ಸರ್ವಮ್ ಹರೀತಕಯಾದಯ: ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಅಮಂ ।

ದ್ವಿಹೃದಯಾ ದ್ವಿಹೃದಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರ್ಭಿಣಿ ಹೆಂಗಸು, ಬಸು  
ರಾಗಿರುವ ಹೆಂಗಸು. ದ್ವಿ ಹೃದಯೇ ಯಸ್ಯಾ: । "ದ್ವಿಹೃದಯಾಂ ಚ  
ನಾರೀ ದೌಹದಿನೋಮಾಚಕ್ಷತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ ।

ದ್ವಿಷ ದ್ವಿಷ (ಪುಂ) 1. ನೀರಿನ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಪ್ರದೇಶ,  
ಸುತ್ತಲೂ ನೀರಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ಭೂಮಿ. ದ್ವಿಗತಾ ಆಪೋಽನ್  
"ಃ" (4-3-14) । ಸಮಾಸಾಂತ: "ಅ:" (4-4-34) ।  
"ದ್ವಿಷೋಽಸ್ತ್ರಿಯಾಮಂತರೀಪಂ ಯದಂತರ್ವೀರಿಣಸ್ತದಮ್" ಅಮಂ ।  
"ದ್ವಿಷಾದನ್ಯಸ್ಮಾದಪಿ ಮಧ್ಯಾದಪಿ ಜಲನಿರ್ಧೇಶೋಽಪ್ಯಂತಾತ್"  
ರತ್ನಾಂ 1-6 । ಜಲಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶಗಳು ಅನೇಕವಾಗಿದ್ದರೂ  
(1) ಜಂಬೂದ್ವೀಪ, (2) ಶಾಕದ್ವೀಪ, (3) ಶಾಲ್ಮಲಿದ್ವೀಪ,  
(4) ಕುಶದ್ವೀಪ, (5) ಕ್ರೌಂಚದ್ವೀಪ, (6) ಗೋಮೇದಕ



(ಪ್ರಕೃ) ದ್ವೀಪ ಮತ್ತು (7) ಪುಷ್ಕರದ್ವೀಪಗಳೆಂದು ಸಪ್ತ ದ್ವೀಪಗಳು ಪ್ರಧಾನವಾದುವು. ನಮ್ಮ ಭಾರತ ದೇಶವು ಜಂಬೂದ್ವೀಪದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವುದು. ಒಟ್ಟು ಭೂಭಾಗದ ಅರ್ಧಭಾಗವು ಲವಣಸಮುದ್ರದ ಉತ್ತರ ಭಾಗದಲ್ಲಿರುವುದು. ಅದೇ ಜಂಬೂದ್ವೀಪ. ಉಳಿದ ಆರು ದ್ವೀಪಗಳೂ ಉಳಿದ ಅರ್ಧಭಾಗದಲ್ಲಿರುವವು. ಈ ಸಪ್ತದ್ವೀಪಗಳೂ ಸಪ್ತಸಮುದ್ರಗಳಿಂದ ಸುತ್ತಲ್ಪಟ್ಟಿರುವವು. [ಸ್ವಾಯಂಭುವ ಮನುವಿನ ಮಗನಾದ ಪ್ರಿಯವ್ರತರಾಜನು ವಿಶ್ವಕರ್ಮನ ಮಗಳಾದ ಬರ್ಹಿಷ್ಠತಿಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ಆಗ್ನೇಧ್ರ, ಇಧ್ಮಜಿಹ್ವ, ಯಜ್ಞಬಾಹು, ಮಹಾವೀರ, ಹಿರಣ್ಯರೇತ, ಘೃತಪೃಷ್ಠ, ಸವನ, ಮೇಧಾತಿಥಿ, ವೀತಿಹೋತ್ರ ಮತ್ತು ಕವಿಗಳೆಂಬ ಹತ್ತು ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪಡೆದನು. ಇವರಲ್ಲಿ ಮಹಾವೀರ, ಸವನ ಮತ್ತು ಕವಿ ಎಂಬವರು ವೈರಾಗ್ಯಹೊಂದಿ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಹೋದರು. ಪ್ರಿಯವ್ರತನು ತನ್ನ ರಥದ ಚಕ್ರದ ರೇಖೆಯಿಂದ ಸಪ್ತ ಸಮುದ್ರಗಳನ್ನೂ ಸಪ್ತ ದ್ವೀಪಗಳನ್ನೂ ಮಾಡಿ ಏಳು ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳಿಗೂ ಹಂಚಿಕೊಟ್ಟು ತಾನು ನಾರದರಿಂದ ತತ್ತ್ವೋಪದೇಶ ಪಡೆದು ಮುಕ್ತಿಹೊಂದಿದನು.] “ಯೇ ವಾ ತಹ ತದ್ರ-ಚರಣನೇಮಿಕೃತಪರಿಷ್ಕಾತಾಸ್ತೇ ಸಪ್ತ ಸಿಂಧವ ಆಸನ್ ಯತ ಏವ ಕೃತಾಃ ಸಪ್ತ ಭುವೋ ದ್ವೀಪಾಃ” ಭಾಗಂ ೪-೧. “ಭೂಮೇರಥ ಕ್ಷಾರಸಿಂಧೋರ್ದವಸ್ಥಂ ಜಮ್ಬೂದ್ವೀಪಂ ಪ್ರಾಹುರಾಚಾರ್ಯವರ್ಯಾಃ. ಅರ್ಥ-ನ್ಯಸಿಮನ್ ದ್ವೀಪವತ್ಕಸ್ಯ ಯಾಮ್ಯೇ ಕ್ಷಾರಕ್ಷೀರಾಣ್ಯಮ್ಬುಧಿನಾಂ ನಿವೇಶಃ. ಶಾಕಂ ತತಃ ಶಾಲ್ಮಲಮತ್ರ ಕೌಶಂ ಕೌಶ್ವಶ್ಚ ಗೋಮೇದಕಪುಷ್ಕರೇ ಚ” ಸಿದ್ಧಾಂತಶಿಂ. “ಜಮ್ಬುಲಕ್ಷಾಹ್ವಯೋ ದ್ವೀಪೌ ಶಾಲ್ಮಲಿಶ್ವಾಪರೋ ದ್ವಿಜಃ. ಕುಶಃ ಕೌಶ್ವಸ್ತಥಾ ಶಾಕಃ ಪುಷ್ಕರಶ್ಚೈವ ಸಪ್ತಮಃ. ಏತೇ ದ್ವೀಪಾ ಸಮುದ್ರೇಸ್ತು ಸಪ್ತ ಸಪ್ತಭಿರಾವೃತಾಃ. ಲವಣೇಷುಸುರಾ ಸರ್ಪಿರ್ದಧಿದುಃಖಜಲೈಃ ಸಮಮ್. ಜಮ್ಬೂದ್ವೀಪಃ ಸಮಸ್ತಾನಾಮೇತೇಷಾಂ ಮಧ್ಯಸಂಸ್ಥಿತಃ. ತಸ್ಯಾಪಿ ಮೇಋತೇಯ ಮಧ್ಯೇ ಕನಕಪರ್ವತಃ” ವಿಷ್ಣುಪುಂ. ಈ ದ್ವೀಪಗಳೊಡನೆ ಉಪದ್ವೀಪಗಳೂ ಸೇರಿ ಒಟ್ಟು ಹದಿನೆಂಟು ದ್ವೀಪಗಳಾಗುವವು. “ಸತ್ಯಾಮನಿ-ವಿಷ್ಣುಸಹಸ್ರಬಾಹುರ್ದಾಶದ್ವೀಪನಿಷ್ಕಾತಯುಃ” ರಘುಂ ೬-೩೮. “ಅಗಾಹತಾಷ್ಟಾದಶತಾಂ ಜಿಗೌಷಯಾ ನವದ್ವೀಪಪೃಥಗ್ಜಯಶ್ರಿಯಾಮ್” ನೆಪಂ ೧-೪. 2. ಹುಲಿಯ ಚರ್ಮ. 3. ಮರಳು.

ದ್ವೀಪವತ್ ದ್ವೀಪವತ್ (ವಿಂ) 1. ಸಮುದ್ರ. ದ್ವೀಪೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೧೪). 2. ನದಿ, ಗಂಡುಹೊಳೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವತಿ -ವತಿ. “ದೀಪ್” (೪-೧-೬). 3. ನದಿ, ಹೊಳೆ.

ದ್ವೀಪಶತ್ರು ದ್ವೀಪಶತ್ರು (ಪುಂ) ಶತಾವರಿಗಿಡ, ಪಿಲ್ಲುಪಿಚ್ಚರ. ದ್ವೀಪಸ್ಯ ಶತ್ರುರಿವ.

ದ್ವೀಪಿಕಾ ದ್ವೀಪಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶತಾವರಿಗಿಡ, ಪಿಲ್ಲುಪಿಚ್ಚರ. ದ್ವೀಪಿನ್ ದ್ವೀಪಿನ್ (ಪುಂ) ವ್ಯಾಘ್ರ, ಹುಲಿ. ದ್ವೀ ವರ್ಣಾ ಇಯತೇ-ಇಡ್ (ಗತೌ) “ಪಃ” ಬಾಹುಂ. ದ್ವೀಪಂ ವರ್ಮ (ದ್ವೀಪಾಕಾರ-ರೇಖಾವತ್ವಾತ್) ತದಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪). 1.

ದ್ವೀಪಿನಸ್ತ ದ್ವೀಪಿನಸ್ತ (ಪುಂ) ಹುಲಿಯುಗುರು ಗಿಡ. ದ್ವೀಪಿನೋ ನಸ್ತ ಇವ.

ದ್ವೀಪ್ಯ ದ್ವೀಪ್ಯ (ವಿಂ) ದ್ವೀಪದಲ್ಲಿರುವ, ಜಲಮಧ್ಯ ಪ್ರದೇಶ ದಲ್ಲಿರುವ. ದ್ವೀಪೇ ಭವಃ “ಯತ್” (೪-೩-೪೪). 1.

ದ್ವೇಷಾ ದ್ವೇಷಾ (ಅವ್ಯಂ) ಎರಡು ವಿಧವಾಗಿ, ಎರಡು ಪ್ರಕಾರ ವಾಗಿ. ದ್ವಿ+ಛಾ “ಏಷಾಚ್” ಆದೇಶಃ (೪-೩-೪೬). “ವೇಷಾ ದ್ವೇಷಾ ಭ್ರಮಂ ಚಕ್ರೇ ಕಾಂತಾಸು ಕನಕೇಷು ಚ. ತಾಸು ತೇಷ್ವಪ್ಯನಾಸಕ್ತಃ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರಗೌ ನರಾಕೃತಿಃ” ಕುವಂ. 1.

ದ್ವೇಷ ದ್ವೇಷ (ಪುಂ) 1. ವೈರ, ಹಗೆತನ, ವಿರೋಧ. ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) “ಛಕ್” (೩-೩-೧೮). “ದ್ವಿಷದ್ವೇಷೋಪರಕ್ತಾಙ್ಗ-ಸಾಕ್ಷಿನಿಃ ಸ್ವೇದವಿಪ್ರುಃ” ಮಾಘಂ ೨-೧೮. ನ್ಯಾಯಮತ ದಲ್ಲಿ ಇದೊಂದು ಆತ್ಮಧರ್ಮ. ಯಾವ ವಿಷಯದಿಂದ ಆತ್ಮನು ಕಷ್ಟಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗುವನೋ ಆ ವಿಷಯವನ್ನು ಪರಿತ್ಯಜಿಸುವ ಇಚ್ಛೆಯು ದ್ವೇಷವೆನಿಸುವುದು. “ಇಚ್ಛಾ-ದ್ವೇಷಪ್ರಯತ್ನಸುಖದುಃಖಜ್ಞಾನಾನ್ಯಾತ್ಮನೋ ಲಿಙ್ಗಮ್” ಗೌತಮಸುಂ. 2. ಅರುಚಿ, ಅಪ್ರೀತಿ, ಜುಗುಪ್ಸೆ. 3. ಕ್ರೋಧ, ಕೋಪ.

ದ್ವೇಷಣ ದ್ವೇಷಣ (ಪುಂ) 1. ಶತ್ರು, ಹಗೆ, ವೈರಿ. ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) “ಯುಚ್” (೩-೨-೧೪೧). (ನಂ) 2. ದ್ವೇಷ, ಹಗೆತನ, ಶತ್ರುತ್ವ. ದ್ವಿಷ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪). 1.

ದ್ವೇಷಣೀಯ ದ್ವೇಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ದ್ವೇಷಿಸಲು ಅರ್ಹ ನಾದ. 2. ದ್ವೇಷಿಸಲ್ಪಡುವ. ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೧೬). “ತವ್ಯಃ” 1. ದ್ವೇಷಣೀಯಃ.

ದ್ವೇಷಿನ್ ದ್ವೇಷಿನ್ (ಪುಂ) ಶತ್ರು, ಹಗೆ, ವೈರಿ. ದ್ವೇಷಿ-ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) “ಛಿನುಣ್” (೩-೨-೧೪೨). “ತಥಾಪಿ ವ್ಯವೇಶ ತಸ್ಯ ತತ್ಕಾರಿದ್ವೇಷಿಣೋ ಯಶಃ” ರಘುಂ ೧೭-೭೩. 1.

ದ್ವೇಷ್ಠ ದ್ವೇಷ್ಠ (ವಿಂ) ದ್ವೇಷಿಸುವವನು, ಹಗೆಕಾರುವವನು. ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) “ತುಚ್” (೩-೧-೧೩೩). “ದ್ವೇಷಾರಸ್ತಸ್ಯ ನೇವಾಸನ್ ಸ ಚ ದ್ವೇಷಿ ನ ಕಂಚನ” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೪೯-೯. 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ದೀಪ್” (೪-೧-೪). -ಛಿ-ಛಿ.

ದ್ವೇಷ್ಯ ದ್ವೇಷ್ಯ (ವಿಂ) “ದ್ವೇಷಣೀಯ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) “ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪). 2. ಅಪ್ರಿಯ, ವಿರೋಧವಳ್ಳವನು. “ದ್ವೇಷ್ಯೋಽಪಿ ಸಮತಃ ಪಿಷ್ಠಸ್ತಸ್ಯಾತಸ್ಯ ಯಥೋಪಮಮ್” ರಘುಂ ೧-೨೮. (ಪುಂ) 3. ಶತ್ರು, ಹಗೆ,



ವೈರಿ. "ಯಥಾ ಯಮಃ ಪ್ರಿಯದ್ವೇಷಿ ಪ್ರಾಪ್ತೇ ಕಾಲೇ ನಿಯಚ್ಛತಿ"  
ಮನುಂ ೧-೩೦೭।

**ದ್ವೈಗುಣಿಕ ದ್ವೈಗುಣಿಕ (ವಿಂ)** ಎರಡರಷ್ಟಾಗಲು ದ್ರವ್ಯ  
(ಹಣ)ವನ್ನು ಸಾಲವಾಗಿ ಕೊಡುವವನು, ತನ್ನ ಹಣವು  
ಎರಡರಷ್ಟು ಬೆಳೆಯಲು ಬಡ್ಡಿಗಾಗಿ ಸಾಲವನ್ನು ಕೊಡು  
ವವನು. ದ್ವಿಗುಣಾರ್ಥ ದ್ರವ್ಯ ದ್ವಿಗುಣಮ್—ತತ್ಪ್ರಯಚ್ಛತಿ "ಠಕ್"  
(೪-೪-೩೦)।

**ದ್ವೈಗುಣ್ಯ ದ್ವೈಗುಣ್ಯ (ನಂ)** ಎರಡರಷ್ಟು ಆಗಿರುವಿಕೆ, ದ್ವಿಗುಣ  
ವಾಗಿರುವಿಕೆ. ದ್ವಿಗುಣಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಏನ್" (೪-೧-೧೨೪)।

**ದ್ವೈತ ದ್ವೈತ (ನಂ)** 1. ಎರಡು, ಒಂದು ಜೊತೆ. ದ್ವಿವಾ ಇತ್  
ದ್ವೈತಮ್—ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮)। 2. ದ್ವಿತ್ವ,  
ಭೇದ. ದ್ವೈತಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಅನ್" (೪-೧-೧೩೦)।  
3. ಜೀವೇಶ್ವರ ಭೇದವನ್ನು ಹೇಳತಕ್ಕ ಒಂದು ವಂಶ.  
ವಿವರಕ್ಕೆ "ದ್ವೈತದರ್ಶನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ದ್ವೈತದರ್ಶನ ದ್ವೈತದರ್ಶನ (ನಂ)** ಅಸ್ತಿತ್ವದರ್ಶನಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದಾದ ವೇದಾಂತದರ್ಶನದ ಒಂದು ಭೇದ. ಜೀವಾತ್ಮ  
ಮತ್ತು ಈಶ್ವರ ಇವರಿಗಿರುವ ಅತ್ಯಂತ ಭೇದವನ್ನು  
ಹೇಳುವ ಪೂರ್ಣಪ್ರಜ್ಞರ ದರ್ಶನ.

ಈ ಮತದಲ್ಲಿ ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿಗೆ ಸರ್ವೋತ್ಕರ್ಷವನ್ನು  
ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಿ ಈ ಉತ್ಕರ್ಷಜ್ಞಾನವೇ ಮೋಕ್ಷಸಾಧನವೆಂದು  
ಸಿದ್ಧಾಂತಮಾಡಿರುವುದರಿಂದಲೂ ವಿಷ್ಣುಭಕ್ತಿಯೇ ಮುಖ್ಯ  
ವೆಂದು ನಿರ್ಣಯಿಸಿರುವುದರಿಂದಲೂ ಈ ದರ್ಶನಕ್ಕೆ  
ವೈಷ್ಣವಸಿದ್ಧಾಂತವೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಯಿರುವುದು. "ದ್ವಾವಿಮೌ  
ಪುರುಷೌ ಲೋಕೇ ಕ್ಷರಾಕ್ಷರ ಏವ ಚ। ಕ್ಷರಃ ಸರ್ವಾಣಿ ಭೂತಾನಿ  
ಕೂಠಸ್ಥೋಕ್ಷರ ಉಚ್ಯತೇ। ಉತ್ತಮಃ ಪುರುಷಸ್ತ್ವನೃಃ ಪರಮಾತ್ಮೇತ್ಯುದಾ-  
ಹುತಃ। ಯೋ ಲೋಕತ್ರಯಮಾವಿಷ್ಯ ವಿಮರ್ಶ್ಯವ್ಯಯ ಇಶ್ವರಃ॥  
ಯಸ್ಮಾತ್ ಕ್ಷರಮತೀತೋಹಮಕ್ಷರಾದಪಿ ಚೋತ್ತಮಃ। ಅತೋಽಸ್ಮಿ  
ಲೋಕೇ ವೇದೇ ಚ ಪ್ರಥಿತಃ ಪುರುಷೋತ್ತಮಃ॥ ಯೋ ಮಾಮೇವಮಸಂಕುಟೋ  
ಜಾನಾತಿ ಪುರುಷೋತ್ತಮಮ್। ಸ ಸರ್ವವಿಜ್ಞಾನಿ ಮಾಂ ಸರ್ವಭಾವೇನ  
ಭಾರತ" ಗೀತಾ ೧೫-೧೬, ೧೭, ೧೮, ೧೯।

ಈ ಮತವು ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿಗೆ ಸರ್ವೋತ್ಕರ್ಷವನ್ನು  
ಹೇಳಿ ವಿಷ್ಣುವಿಗೂ ಲಕ್ಷ್ಮಿಗೂ ತಾರತಮ್ಯವನ್ನು ಹೇಳಿರು  
ವುದಲ್ಲದೆ ಬ್ರಹ್ಮ-ಸರಸ್ವತಿ ವಾಯುದೇವರು-ವಾಯುಪತ್ನಿ  
ಇತ್ಯಾದಿ ದೇವತೆಗಳಿಗೂ ಉಚ್ಚನೀಚ ಭಾವವೆಂಬ ತಾರ  
ತಮ್ಯವನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಿರುವುದು.

ಹೀಗೆಯೇ ಮನುಷ್ಯರಲ್ಲೂ ಪಶುಪಕ್ಷಾದಿಗಳಲ್ಲೂ  
ಬಾಹ್ಯಸ್ವರೂಪದಲ್ಲಿ ಭೇದವಿದ್ದು ತಾರತಮ್ಯವಿರುವಂತೆ ಆತ್ಮ  
ಸ್ವರೂಪದಲ್ಲಿ ತಾರತಮ್ಯವನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಿರುವುದು.

ಈ ಮತದಲ್ಲಿ ತತ್ತ್ವವು ಸ್ವತಂತ್ರ ಮತ್ತು ಪರತಂತ್ರ  
ಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಈಶ್ವರನು ಸ್ವತಂತ್ರ. ಜೀವಾತ್ಮನು  
ಪರತಂತ್ರ. "ಸ್ವತನ್ತ್ರಂ ಪರತನ್ತ್ರಂ ಚ ದ್ವಿವಿಧಂ ತತ್ವಮಿಷ್ಯತೇ।  
ಸ್ವತನ್ತ್ರೋ ಭಗವಾನ್ ವಿಷ್ಣುಃ ನಿರ್ದೋಷೋಪಸದ್ಗುಣಃ" ತತ್ವವಿಂ।  
ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತಸಿದ್ಧಾಂತದಲ್ಲಿ ಶರೀರಾತ್ಮಭಾವದಿಂದ  
ಪಾರತಂತ್ರವಿರುವುದು. ಈ ಸಿದ್ಧಾಂತದಲ್ಲಿ ಅದಕ್ಕಿಂತಲೂ  
ಅತಿಶಯವಾಗಿ ಜೀವಾತ್ಮಪಾರತಂತ್ರವು ನಿರೂಪಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದು.

ಸೇವ್ಯ ಸೇವಕಭಾವವಿರುವ ರಾಜ ಮತ್ತು ಭೃತ್ಯರಂತೆ  
ಸೇವ್ಯನಾದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಸೇವಕನಾದ ಜೀವನಿಗಿಂತಲೂ  
ಭಿನ್ನನು ಎಂದು ಇವರ ಸಿದ್ಧಾಂತ. ಈ ರೀತಿ ಭೇದವನ್ನು  
ನಿರೂಪಿಸಿ ಜೀವೇಶ್ವರ ಭೇದ, ಪರಸ್ಪರ ಜೀವಭೇದ,  
ಜಡೇಶ್ವರಭೇದ, ಜಡಜೀವಭೇದ ಮತ್ತು ಪರಸ್ಪರ  
ಜಡಭೇದಗಳೆಂದು ಪ್ರಪಂಚವು ಐದು ಪ್ರಕಾರವೆಂದು  
ಇವರ ಸಿದ್ಧಾಂತ. "ಜೀವೇಶ್ವರಮಿದಾ ಚೈವ ಜಡೇಶ್ವರಮಿದಾ  
ತಥಾ। ಜೀವಭೇದೋ ಮಿಥ್ಯಾಚೈವ ಜಡಜೀವಭೇದೋ ತಥಾ।  
ಮಿಥ್ಯಾ ಜಡಭೇದೋಽಪಿ ಪ್ರಪಂಚೋ ಭೇದಪಂಚಕಃ। ಸೌಖ್ಯಂ ಸತ್ಯೋ-  
ಪನಾದಿಶ್ಚ ಸಾದಿಶ್ಚೇಶ್ವರಶಾಶ್ವತಮಾನ್ಯುಯಾತ್। ನ ಚ ನಾಶಂ ಪ್ರಯಾತ್ಯೇಶ  
ನ ಚಾಸೌ ಭ್ರಾಂತಿಕಲ್ಪಿತಃ। ಕಲ್ಪಿತಶ್ಚೇಶ್ವರಿವರ್ತತೇ ನ ಚಾಸೌ  
ವಿನಿವೃತ್ತತೇ। ದ್ವೈತಂ ನ ವಿವೃತಂ ಇತಿ ತಸ್ಮಾದಜ್ಞಾನಿನಾಂ ಮತಮ್।  
ಮತಂ ಹಿ ಜ್ಞಾನಿನಾಮತತ್ ಮಿತಂ ತ್ರಾತಂ ಹಿ ವಿಷ್ಣುನಾ"।

ಈ ರೀತಿ ಭೇದನಿರೂಪಣಕ್ಕೆ ಕಾರಣಃ—  
ಜೀವೇಶ್ವರ ಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದೆ ತಾನೇ ಈಶ್ವರನೆಂದು ತಿಳಿದರೆ  
ರಾಜವೇಷವನ್ನು ಧರಿಸಿ ತಾನೇ ರಾಜನೆಂದು ತಿಳಿದು ಕೆಲಸ  
ಮಾಡುವ ರಾಜಭೃತ್ಯನ ಗತಿಯು ಈ ಜೀವನಿಗೂ  
ಉಂಟಾಗುವುದು.

ರಾಜಸೇವಕನಾದ ಭೃತ್ಯನು ತಾನು ಸೇವಕನೆಂದು ತಿಳಿದು  
ರಾಜಾನುಗ್ರಹಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರನಾಗುವಂತೆ ಜೀವನು ಪರಮಾತ್ಮನ  
ಭೃತ್ಯನೆಂದು ತಿಳಿದು ಅವನನ್ನು ಆರಾಧಿಸುತ್ತಿದ್ದರೆ ಸಕಲ  
ಸಂಪತ್ತುಗಳನ್ನೂ ಅನುಭವಿಸುತ್ತಾನೆ. ಇದಕ್ಕೆ ಈ ಭೇದ  
ಜ್ಞಾನವೇ ಕಾರಣ. "ಘಾತಯಂತಿ ಹಿ ರಾಜಾನೋ ರಾಜಾಃ ಸಹಮಿತಿ  
ವಾದಿನಃ। ದದತ್ಯಕ್ಷಿಲಮಿಷ್ಠಂ ಚ ಸ್ವಗುಣೋತ್ಕರ್ಷವಾದಿನಾಂ"।  
ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಈ ಸಿದ್ಧಾಂತದಲ್ಲಿರುವ ಅಂಶವು ತಾರತಮ್ಯ.  
ಅಂದರೆ ಉಚ್ಚನೀಚಭಾವವು. ಇದು ಜೀವಾತ್ಮರಲ್ಲಿ  
ಶಾಶ್ವತವಾಗಿರುವುದು. ಈ ಜ್ಞಾನವು ಪ್ರತಿಜೀವನೂ ತನ್ನ  
ಯೋಗ್ಯತೆಯಿಷ್ಟೇ ಎಂದು ತಿಳಿದು ಅದರಲ್ಲೇ ತೃಪ್ತನಾಗಿ  
ಕಾಮಕ್ರೋಧಾದಿಗಳಿಗೆ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದೆ ಶಾಂತನಾಗಿರು  
ವುದಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗುವುದು ಎಂದು ತಾತ್ಪರ್ಯ.



**ಪರಮಾತ್ಮ :**—ಪರಮಾತ್ಮನು ಸರ್ವಜ್ಞನು. ಸರ್ವ ಶಕ್ತನು. ಸರ್ವವ್ಯಾಪಕನು. ನಿರತಿಶಯಜ್ಞಾನಾನಂದ ಕಲ್ಯಾಣಗುಣಗಣಪರಿಪೂರ್ಣನು. ಭಕ್ತವತ್ಸಲನು. ಸೃಷ್ಟಿಸ್ಥಿತಿ ಸಂಹಾರನಿಯಮನಜ್ಞಾನಾಜ್ಞಾನಬಂಧಮೋಕ್ಷ ವ್ಯಾಪಾರಗಳಿರುವುದರಿಂದ ಜಗತ್ಕಾರಣನು. “ತಪಸ್ತಿ-  
ಸ್ಥಿತಿಸಂಹಾರಾ ನಿಯತಿಸ್ಥಾನಿಮಾವೃತಿಃ | ಬಂಧಮೋಕ್ಷೌ ಚ ಪುಣ್ಯ-  
ಯಸ್ಮಾತ್ಸ ಹರಿರೇಕರಾಟ್” ಸ್ಕಾಂದಂ | “ಯತೋ ವಾ ಇಮಾನಿ  
ಭೂತಾನಿ ಜಾಯಂತೇ | ಯೇನ ಜಾತಾನಿ ಜೀವಂತಿ” ಶ್ರುತಿಃ |  
ಸರ್ವದೇಶ ಸರ್ವಕಾಲ ಸರ್ವಗುಣಗಳಿಂದ ವ್ಯಾಪ್ತನಾಗಿರು  
ವುದರಿಂದ ಅನಂತನು. ಸರ್ವಶಬ್ದವಾಚ್ಯನು. ಅಮೋಘ  
ವಾದ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಯಾವರೀತಿಯಿಂದ ಬೇಕಾದರೂ ಇರು  
ವನು. ಸಾಲಗ್ರಾಮ ಪ್ರತಿಮೆ ಮೊದಲಾದ ಅರ್ಚಾ  
ರೂಪಗಳೂ ಭಗವಂತನಿಗೆ ಇರುವುದಾದರೂ ಅವು ಸಾಕ್ಷಾ  
ದ್ರೂಪಗಳಲ್ಲ. ಪರಮಾತ್ಮನ ಸಾನ್ನಿಧ್ಯದಿಂದ ಅವನ ರೂಪ  
ವೆಂದು ವ್ಯವಹಾರ ಮಾತ್ರ. ಆ ರೂಪಗಳ ಮೂಲಕ  
ಪೂಜಕರು ಅವನ ಆರಾಧನೆಯಿಂದ ಇಷ್ಟಾರ್ಥಗಳನ್ನು  
ಹೊಂದಬಹುದು. ಕೆಲವು ಪುರುಷಶ್ರೇಷ್ಠರಿಗೆ ಪ್ರತಿಮಾ  
ಮೂಲಕ ಉಪಾಸನೆಯೇ ಮೋಕ್ಷಸಾಧನವಾದ ಅಪರೋಕ್ಷ  
ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಉಪಾಯವಾಗುವುದು. ಸಂಕರ್ಷಣ ಅನಿರುದ್ಧ  
ಪ್ರದ್ಯಮ್ನ ಕೇಶವಾದಿ ನಾಮಭೇದದಿಂದ ಅನೇಕ ರೂಪ  
ಗಳಿರುವವು. ರಾಮಕೃಷ್ಣಾದಿ ಅವತಾರಗಳು ಅಜ್ಞರ  
ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಪಾಂಚಭೌತಿಕವಾಗಿ ಕಂಡರೂ ಪ್ರಾಜ್ಞರ ದೃಷ್ಟಿ  
ಯಿಂದ ಅವು ಜ್ಞಾನಾನಂದಮಯವಾಗಿಯೇ ತೋರುವವು.

ಪರಮಾತ್ಮನು ನಿತ್ಯಮುಕ್ತ. ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಬಂಧವೇ  
ಯಾವಾಗಲೂ ಇಲ್ಲ. ಪ್ರಪಂಚದ ಸೃಷ್ಟಿ ಮೊದಲಾದುವು  
ಪರಮಾತ್ಮನ ವ್ಯಾಪಾರಗಳು. ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಪ್ರಪಂಚ  
ವನ್ನು ನಾನಾರೂಪಗಳಿಂದ ಪೋಷಿಸುವುದು ಸ್ಥಿತಿ.  
ಪ್ರಪಂಚದ ಸಂಹಾರವೇ ಪ್ರಲಯ.

**ಜೀವಾತ್ಮ :**—ಜೀವಾತ್ಮರು ಅಸಂಖ್ಯಾತರು. ಇವರು  
ಅಜ್ಞಾನಾದಿದೋಷಗಳಿಂದ ಸಂಸಾರಿಗಳಾಗಿರುವರು.  
ಜೀವಾತ್ಮರು ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷಭೇದವುಳ್ಳವರು. ನಪುಂಸಕ  
ಜೀವಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಸ್ತ್ರೀ ಜೀವರಿಗೆ ಪುರುಷದೇಹ  
ಪ್ರಾಪ್ತಿಯೇ ಇಲ್ಲ.

ಜೀವಾತ್ಮರು ಉತ್ತಮ ಮಧ್ಯಮ ಮತ್ತು ಅಧಮ  
ಭೇದದಿಂದ ಮುಕ್ತಿಯೋಗ್ಯರು ತಮೋಯೋಗ್ಯರು ಮತ್ತು  
ನಿತ್ಯಸಂಸಾರಿಗಳೆಂದೂ ಮೂರು ವಿಧವಾಗಿರುವರು. ಮುಕ್ತ  
ಯೋಗ್ಯರಲ್ಲಿ ದೇವ ಋಷಿ ಪಿತೃ ಚಕ್ರವರ್ತಿ ಮನುಷ್ಯೋ  
ತ್ತಮ ಎಂದು ಐದು ವಿಧ. ಇವರು ಸಾಧನಾನುಷ್ಠಾನ  
ದಿಂದ ಮುಕ್ತರಾಗಿ ಸ್ವರೂಪಭೂತವಾದ ನಿತ್ಯಾನಂದವನ್ನು

ಅನುಭವಿಸುವರು. ದೈತ್ಯ ರಾಕ್ಷಸ ಪಿಶಾಚ ವಂಶುಷ್ಯಾದಿವಂ  
ಶಂ ಬಾಲ್ಯ ವಿಧ ತಮೋಯೋಗ್ಯರು ನಿತ್ಯನರಕವೆಂಬ  
ತಮೋಲೋಕವನ್ನು ಹೊಂದಲು ಮಾರ್ಗವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿ  
ನಿತ್ಯ ದುಃಖವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವರು. ನಿತ್ಯ ಸಂಸಾರಿಗಳು  
ಸಾಧನಾನುಷ್ಠಾನದಿಂದ ನಿತ್ಯವಾದ ಸುಖದುಃಖ ಮಿಶ್ರಾನು  
ಭವಕ್ಕೆ ಸಿದ್ಧರಾಗುವರು.

ಜೀವಾತ್ಮರಿಗೆ ಸಂಸಾರದಶೆಯೆಲ್ಲೂ ಮುಕ್ತದಶೆಯೆಲ್ಲೂ  
ವಿಚಿತ್ರವಾದ ಗುಣಕ್ರಿಯೆಗಳಿರುವವು. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಕೆಲವು  
ನಿತ್ಯ ಕೆಲವು ಅನಿತ್ಯ.

ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಜೀವಾತ್ಮರಿಗೆ ಜಾಗ್ರತ್ಸ್ವಪ್ನ ಸುಷುಪ್ತಿ  
ಮೋಹ ಮತ್ತು ತುರಿಯುಗಳೆಂಬ ಐದು ಅವಸ್ಥೆಗಳು  
ವುಳ್ಳವು. ತುರಿಯವೇ ಮುಕ್ತಾವಸ್ಥೆ.

ಪುರುಷಾರ್ಥ ಚತುಷ್ಟಯದಲ್ಲಿ ಧರ್ಮಾರ್ಥಕಾಮಗಳು  
ಮೂರೂ ಅನಿತ್ಯ. ಮೋಕ್ಷವು ಮಾತ್ರ ನಿತ್ಯವಾದುದು.  
“ವಿಮರ್ಶಿಕಾಮಾಃ ಸರ್ವೇಽಪಿ ನ ನಿತ್ಯಾ ಮೋಕ್ಷ ಏವ ಹಿ | ನಿತ್ಯ-  
ಸ್ತಸ್ಮಾತ್ತದರ್ಶಯಿ ಯತೇತ ಮತಿಮಾಜರಃ” |

**ಮೋಕ್ಷ ಸಾಧನ :**—ಅಪರೋಕ್ಷಜ್ಞಾನವು ಮೋಕ್ಷ  
ಸಾಧನವಾಗುವುದು. ಈ ಅಪರೋಕ್ಷಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಗುರುಕುಲ  
ವಾಸ, ಗುರುಭಕ್ತಿ, ಅಧ್ಯಯನ, ಶಾಸ್ತ್ರಶ್ರವಣ, ವೈರಾಗ್ಯ,  
ನಿಷಿದ್ಧಕರ್ಮಗಳ ಪರಿತ್ಯಾಗ, ತಾರತಮ್ಯಜ್ಞಾನ, ಪ್ರಕೃತಿ  
ಪುರುಷವಿವೇಕ, ಹರಿನಾಮ ಸಂಕೀರ್ತನ, ಹರಿಪೂಜೆ, ಧ್ಯಾನ  
ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲಿ ಮಹಾವಿಶ್ವಾಸದಿಂದ ಆತ್ಮಸಮರ್ಪಣ  
(ಶರಣಾಗತಿ) ಇವೆಲ್ಲವೂ ಕಾರಣ.

**ಮೋಕ್ಷ :**—ಅಪರೋಕ್ಷ ಜ್ಞಾನದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ  
ಭಗವತ್ಪ್ರಸಾದದ ಮೂಲಕ ಪ್ರಕೃತಿಸಂಬಂಧ ವಿನಾಶರೂಪ  
ವಾದ ಮೋಕ್ಷವು ಲಭಿಸುವುದು. ಪ್ರಕೃತಿಸಂಬಂಧದೊಡನೆ  
ಅಪರೋಕ್ಷಜ್ಞಾನವೆಂಬ ಸ್ವರೂಪಜ್ಞಾನವು ಪ್ರಕಾಶವಾಗಿ  
ಸ್ವರೂಪಭೂತಜ್ಞಾನಾನಂದಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರಿ  
ಸುತ್ತ ಭಗವದ್ಗುಣಾನುಭವದಲ್ಲಿ ಜೀವನು ಮಗ್ನನಾಗು  
ವನು. ಇದೇ ಮೋಕ್ಷವೆಂದು ಇವರ ಸಿದ್ಧಾಂತ.  
“ಯಸ್ಯ ಪ್ರಸಾದಾತ್ಪರಮಾತ್ಮಿಕರೂಪದಸ್ಮಾತ್ಸಂಸಾರಾನ್ಮುಚ್ಯತೇ ನಾಪರೇಣ |  
ನಾರಾಯಣೋಽಸೌ ಪರಮೋ ವಿಚಿನ್ತ್ಯೋ ಮುಮುಕ್ಷುಃ | ಕರ್ಮಪಾಶಾ-  
ದಮುಕ್ತಾತ್” |

ಮೋಕ್ಷವು ಯೋಗ್ಯತೆಯ ತಾರತಮ್ಯಾನುಗುಣವಾಗಿ  
ಸಾಲೋಕ್ಯ, ಸಾಮೀಪ್ಯ, ಸಾರೋಪ್ಯ ಮತ್ತು ಸಾಯುಜ್ಯ  
ಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ದೇವತೆಗಳು ಸ್ವೋತ್ತಮದೇವತೆ  
ಗಳ ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಅನುಪ್ರವೇಶಪೂರ್ವಕ ಪರಮಾತ್ಮನ  
ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಅನುಪ್ರವೇಶಮಾಡಿ ಆನಂದವನ್ನು ಅನುಭವಿಸು  
ವುದು ಸಾಯುಜ್ಯವು, ಸಾಲೋಕ್ಯ, ಸಾಮೀಪ್ಯ, ಸಾರೋಪ್ಯ



ಭೋಗಗಳು ಭಗವತ್ಸ್ವರೂಪಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಸಹಿತವಾಗಿ ಅವರವರ ಅಪೇಕ್ಷಾನುಗುಣವಾಗಿ ತಾರತಮ್ಯಾನುಗುಣಗಳಾಗಿರುವುವು.

ಈ ಮತದ ಒಂಬತ್ತು ಪ್ರಮೇಯಗಳು ಈ ಶ್ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿವೆ.

“ಶ್ರೀಮನ್ಮಧ್ವಮತೇ ಹರಿಃ ಪರತರಃ ಸತ್ಯಂ ಜಗತ್ ತತ್ವತೋ  
ಭಿಕ್ಷಾ ಜೀವಗಣಾ ಹರೇರನುಚರಾಃ ನಿಕೋಚಭಾವಂ ಗತಾಃ | ಮುಕ್ತಿಃ  
ನೈಜಸುಖಾನುಭೂತಿರಮಲಾ ಭಕ್ತಿಶ್ಚ ತತ್ಸಾಧನಂ ಹ್ಯಕ್ಷಾದಿತ್ರಯಂ  
ಪ್ರಮಾಣಮಕ್ಷಿಲಾಮ್ನಾಯೈಕವೇದೋ ಹರಿಃ” |

**ದ್ವೈತವನ ದ್ವೈತವನ (ನಂ) 1.** ಒಂದು ತಪೋವನ. ದ್ವೈತ ಶೋಕಮೋಹಾದಿಕೇ ಇತೇ ಗತೇ ಯಸ್ಮಾತ್ | ಶ್ಲೋಕಮೋಹಾದಿಗಳಿಂದ ವರ್ಜಿತವಾದುದರಿಂದ ಈ ವನಕ್ಕೆ ಈ ಹೆಸರು. “ಸ ವರ್ಣಿಲಿಕ್ಷ್ಮೀ ವಿದಿತಃ ಸಮಾಯಯೋ ಯುಷ್ಕಿಂಶಿರಂ ದ್ವೈತವನೇ ವನೇಶ್ವರಃ” ಕಿರಾಂ ೧-೧ | 2. ಈ ವನದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ಸರೋವರ. “ಗಂಧಾಮಃ ಪುಣ್ಯವಿಷ್ಣುತಾಂ ಮಹದ್ವೈತವನಂ ಸರಃ” ಭಾಂ ವನಂ ೨೪-೧೨ |

**ದ್ವೈತವಾದ ದ್ವೈತವಾದ (ಪುಂ) 1.** ಜೀವ ಮತ್ತು ಈಶ್ವರನಿಗೆ ಭೇದವನ್ನು ನಿರ್ಣಯಿಸುವ ವಾದ. ದ್ವೈತಮತವಾದ ವಾದಃ | 2. ಜೀವರ ನಾನಾತ್ವವನ್ನು ಹೇಳುವ ಸಾಂಖ್ಯರ ವಾದ. “ಜನ್ಮಮರಣಕರಣಾನಾಂ ಪ್ರತಿನಿಯಮಾಣುಗಪತ್ಪ್ರವೃತ್ತೇಶ್ಚ | ಪುರುಷ-ಬಹುತ್ವಂ ಸಿದ್ಧಂ ತ್ರಿಗುಣ್ಯವಿಪರ್ಯಾಯಾನ್ವಯೇ” ಸಾಂ ಕಾಂ | “ಜನ್ಮಾದಿ-ವ್ಯವಸ್ಥಾತಃ ಪುರುಷಬಹುತ್ವಮ್” ಸಾಂ ಸುಂ |

**ದ್ವೈತವಾದಿನ್ ದ್ವೈತವಾದಿನ್ (ಪುಂ) 1.** ಜೀವಾತ್ಮರ ಭೇದವನ್ನು ಹೇಳುವ ಸಾಂಖ್ಯಮತಾನುಯಾಯಿ. 2. ಜೀವೇಶ್ವರ ಭೇದವನ್ನು ಹೇಳುವ ದ್ವೈತಮತಾನುಯಾಯಿ. 3. ಜೀವೇಶ್ವರ ಭೇದವನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ನೈಯಾಯಿಕ ಮೊದಲಾದವರು. ದ್ವೈತಂ ಜೀವಭೇದಂ ಜೀವೇಶ್ವರಭೇದಂ ವಾ ವದಂತಿ—ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಞಿತಿಃ” (೩-೨-೭೮) |

**ದ್ವೈತಿನ್ ದ್ವೈತಿನ್ (ವಿಂ) 1.** ದ್ವೈತಮತಾನುಯಾಯಿ, ಜೀವೇಶ್ವರಭೇದವನ್ನು ಹೇಳುವ ಪೂರ್ಣಪ್ರಜ್ಞಾ ರಮತಾನುಯಾಯಿ. 2. ಜೀವರ ನಾನಾತ್ವವನ್ನು ಹೇಳುವ ಸಾಂಖ್ಯಮತಾನುಯಾಯಿ. 3. ಜೀವೇಶ್ವರ ಭೇದವನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ನೈಯಾಯಿಕ ಮೊದಲಾದವರು. ದ್ವೈತಂ ಪ್ರತಿಪಾದಿತಯಾ ಅಸ್ಯಸ್ಯ “ಛಿತಿಃ” (೪-೨-೧೧೫) |

**ದ್ವೈತೀಯಿಕ ದ್ವೈತೀಯಿಕ (ವಿಂ) ಎರಡನೆಯ.** ದ್ವೈತೀಯಃ ಸ್ವಾರ್ಥೇ ವಾ “ಛಿತಿಕ್” (ವಾಂ ೪-೩-೪೮) | “ದ್ವೈತೀಯಿಕತಯಾ ಮಿತೋಪಮಗಮತಸ್ಯ ಪ್ರಬಂಧೇ ಮಹಾಕಾವ್ಯೇ” ನೆಪಂ ೨-೧೧೦ | ಪಕ್ಷೇ ದ್ವೈತೀಯಃ ದ್ವೈತೀಯಃ.

**ದ್ವೈಪ ದ್ವೈಪ (ನಂ) 1.** ರಾಜನ ಸಂಧಿವಿಗ್ರಹ ಮೊದಲಾದ ಆರು ಗುಣಗಳಲ್ಲೊಂದು, ಕಪಟಾಚರಣೆಯಿಂದ ಎರಡು ರೀತಿಯಾಗಿ ವರ್ತಿಸುವಿಕೆ. “ಸನ್ನಿವರ್ಣಿ ವಿಗ್ರಹೋ ಯಾನಮಾಸನಂ ದ್ವೈಪಮಾಶ್ರಯಃ” ಭಮಂ | ಈ ದ್ವೈಪವು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. “ದ್ವೈಪಿಭಾವ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ. 2. ವ್ಯತ್ಯಾಸ, ಪರಸ್ಪರ ವಿರೋಧ, ಭಿನ್ನತೆ. “ಶ್ರುತಿರ್ದೈವಂ ತು ಯತ್ರ ಸ್ವಾತಂತ್ರ ಭರ್ಮಾವುಭೌ ಸ್ಮೃತೌ | ತಸ್ಯಾವಪಿ ಹಿತೌ ಭರ್ಮಾ ಸಮ್ಯಗ್ಭೂತೌ ಮನೀಷಿಮಿಃ” ಮನುಂ ೨-೧೪ | 3. ಬೇರೆಯಾಗಿರುವಿಕೆ, ಎರಡು ವಿಧವಾಗಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 4. ಎರಡು ರೀತಿಯಾದ, ಎರಡು ಪ್ರಕಾರವಾದ. ದ್ವಿ+ಧಾ+ಭಮುಕ್ “ಛಿತಿಃ” (ವಾಂ ೪-೩-೪೫) | “ಬಹುತ್ವಂ ಪರಿಗೃಹ್ಣೀಯಾತ್ ಸಾಕ್ಷಿತ್ವೇ ನರಾಧಿಪಃ” ಮನುಂ ೮-೭೩ | (ಅವ್ಯಂ) 5. ಎರಡು ರೀತಿಯಾಗಿ, ಎರಡು ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ. ದ್ವಿ+(ಪ್ರಕಾರೇ) ಧಾ (೪-೩-೪೨) | ತಸ್ಯ “ಭಮುಕ್” (೪-೩-೪೫) |

**ದ್ವೈಪಿಭಾವ ದ್ವೈಪಿಭಾವ (ಪುಂ) 1.** ಬೇರೆಬೇರೆಯಾಗಿರುವಿಕೆ, ಎರಡಾಗಿರುವಿಕೆ. ಅದ್ವೈಪಸ್ಯ ದ್ವೈಪಸ್ಯ ಭಾವಃ—ದ್ವೈಪ + ಭೂ “ಛಿತಿಃ” (೪-೪-೫೦) | ತತೋ ಭಾವೇ “ಭವ” (೩-೩-೧೮) | 2. ಸಂಶಯ, ಸಂದೇಹ. “ಸತ್ಯಾಃ ಪರಿಹಾಸೋಬಾಹುತಾಂ ವರಪ್ರಾರ್ಥನಾಂ ಶ್ರುತ್ವಾ ಭೃತದ್ವೈಪಿಭಾವಕಾತರಂ ಮೇ ಮನಃ” ಶಾಕುಂ ೧ | 3. ವಿರೋಧ, ವ್ಯತ್ಯಾಸ. 4. ಸಂಧಿವಿಗ್ರಹ ಮೊದಲಾದ ರಾಜನ ಆರು ಗುಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಈ ಗುಣವು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. (1) ಪ್ರಬಲರಾದ ಇಬ್ಬರು ಶತ್ರುಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಅವರೊಬ್ಬರಿಗೂ ತಿಳಿಯದಂತೆ ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿಯೂ ಸಮನಾಗಿರುವಂತೆ ನಟಿಸುತ್ತಾ ಕಪಟದಿಂದ ವ್ಯವಹರಿಸುತ್ತಿರುವುದು. (2) ಪ್ರಬಲನಾದ ಶತ್ರುವಿನೊಡನೆ ಸಂಧಿಮಾಡಿಕೊಂಡು ದುರ್ಬಲನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಮಾಡುವುದು. (3) ಶತ್ರುವಿನ ಸೈನ್ಯವನ್ನು ಬೇರ್ಪಡಿಸಿ ಮೂಲಬಲದೊಡನೆ ಸ್ನೇಹಮಾಡಿಕೊಂಡು ಶತ್ರುವಿನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಮಾಡುವುದು. (4) ಸಂಧಿಗಾಗಲಿ ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಲಿ ಬಲಾಧಿಷ್ಠಿತನಾದ ರಾಜನು ದುರ್ಗಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿದ್ದು ಕೊಂಡು ಆತ್ಮರಕ್ಷಣೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಈ ರೀತಿಯಾಗಿ ದ್ವೈಪವು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ.

**ದ್ವೈಪ ದ್ವೈಪ (ನಂ) 1.** ವ್ಯಾಘ್ರದ ಚರ್ಮ, ಹುಲಿಯ ತೊಗಲು. ದ್ವೈಪಿನೋ ವ್ಯಾಘ್ರಸ್ಯ ವಿಕಾರಃ “ಅಘ್” (೪-೩-೧೫೪) | (ಪುಂ) 2. ಹುಲಿಯ ಚರ್ಮದಿಂದ ಹೊದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ರಥ. ದ್ವೈಪೇನ ದ್ವೈಪಿಚರ್ಮಣಾ ಪರಿವೃತೌ ರಥಃ “ಅಘ್” (೪-೨-೧೨) | (ವಿಂ) 3. ಹುಲಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ದ್ವೈಪಿನಃ ಇದಮ್ “ಅಘ್” (೪-೩-೧೨೦) |



ದ್ರವ್ಯ ದ್ವೈಪದಕ (ವಿಂ) ದ್ವೀಪದಲ್ಲಿರುವ, ದ್ವೀಪದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ. ದ್ವೀಪೇ ಭವ: "ಬ್" (೪-೨-೧೨೭)।

ದ್ವಿಪಾಯನ ದ್ವೈಪಾಯನ(ಪುಂ) ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ. ದ್ವಿಪ: ಅಯನಂ ಜನ್ಮಭೂಮಿರಸ್ಯ ದ್ವಿಪಾಯನ:-ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮)। ಪರಾಶರರಿಂದ ಸತ್ಯವತಿಯ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಯಮುನಾ ನದಿಯ ದ್ವೀಪದಲ್ಲಿ ಇವರು ಜನಿಸಿದುದರಿಂದ ಇವರಿಗೆ "ದ್ವೈಪಾಯನ" ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. "ಇತಿ ಸತ್ಯವತೀ ಹೃಷಾ ಲಙ್ವಾ ವರಮನುತ್ತಮಮ್ | ಪರಾಶರೇಣ ಸಂಯುಕ್ತಾ ಸದೌ ಗರ್ಭಂ ಸುಭಾವ ಸಾ | ಜಜ್ಞೇ ಚ ಯಮುನಾದ್ವೀಪೇ ಪರಾಶರಯ: | ಸ ವೀರೈವಾನ್ | ಸ ಮಾತರಮನುಜಾಯ ತಪಸ್ಯೇವ ಮನೋ ದಧೇ | एवं ದ್ವಿಪಾಯನೋ ಜಜ್ಞೇ ಸತ್ಯವತಯಾಂ ಪರಾಶರಾತ್ | ನ್ಯಸ್ತೋದ್ವೀಪೇ | ಸ ಯದ್ವಾಲಸ್ತಸ್ಮಾದ್ವಿಪಾಯನ: ಸ್ಮೃತ: | ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೦ | "ಉದಾರವೇತಾ ಗಿರಮಿತೃದಾರಾಂ ದ್ವಿಪಾಯನೇನಾಭಿದಧೇ ನರೇಂದ್ರ: | ಕಿರಾಂ ೩-೧೦ |

ದ್ವೈಪ ದ್ವೈಪ (ವಿಂ) ಸಮುದ್ರಕ್ಕೆ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ, ದ್ವೀಪ ದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ದ್ವೀಪೇ ಜಾತ: "ಯ" (೪-೩-೧೦)।

ದ್ವೈಮಾತುರ ದ್ವೈಮಾತುರ (ಪುಂ) 1. ಗಣಪತಿ. ದ್ವಯೋರ್ಮಾತುರ-ಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೧೫)। ಉದಾಹರಣೆ | [ಗಣಪತಿಯು ವರೇಣ್ಯನೆಂಬ ರಾಜನಿಗೆ ಪುಷ್ಪಕೇಯಂಬ ಪತ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಪುತ್ರನಾಗಿ ಜನಿಸಿದನು. ಜನಿಸಿದ ಕೂಡಲೆ ಜತುರ್ಭೂಜಗಳನ್ನೂ ಆನೆಯ ಮುಖವನ್ನೂ ನೋಡಿ ಭೀತಳಾದ ಪುಷ್ಪಕೇಯು ಶಿಶುವನ್ನು ಒಂದು ಸರೋವರ ದಲ್ಲಿ ಬಿಡಲಾಗಿ ಪಾರ್ಶ್ವನೆಂಬ ಮಹರ್ಷಿಯು ಆ ಶಿಶುವನ್ನು ತನ್ನ ಅಶ್ವಮಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿಕೊಂಡು ಹೋದನು. ಯುಷಿ ಪತ್ನಿಯಾದ ದೀಪವತ್ಸಲೆಯೂ ಆ ಶಿಶುವನ್ನು ಸಲಹಿದುದರಿಂದ ಗಣಪತಿಗೆ "ದ್ವೈಮಾತುರ"ನೆಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು.] ಸ್ಕಾಂದಂ ಗಣೇಶಪುರಾಣ: | 2. ಜರಾಸಂಧ. ["ಜರಾಸಂಧ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ಹತೇ ಹಿಡಿಮ್ಬರಿಪುಣಾ ರಾಜಿ ದ್ವೈಮಾತುರೇ ಯುಷಿ" ಮಾಘಂ ೨-೬೦ |

ದ್ವೈಮಾತೃಕ ದ್ವೈಮಾತೃಕ (ಪುಂ) ನದಿ ಮತ್ತು ಮಳೆಯ ನೀರಿನಿಂದ ಬೆಳೆಯಾಗತಕ್ಕ ದೇಶ. ದ್ವೈ ಮಾತೃಕೇ ಇವ ಅಸ್ಯ | ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮)।

ದ್ವೈಯಕ್ಷಿಕ ದ್ವೈಯಕ್ಷಿಕ (ವಿಂ) 1. ಎರಡು ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ದ್ವಾಮ್ಯಾಮಹೋಮ್ಯಾಂ ನಿವೃತ್ತ: "ಠ್" (೪-೧-೧೮)। 2. ಎರಡು ದಿನಗಳು ಸತ್ಕರಿಸಿ ಕೆಲಸಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಎರಡು ದಿನಗಳು ವೇತನಕೊಟ್ಟು ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಎರಡು ದಿನಗಳು ಕಳೆದಿರುವ. 5. ಎರಡು ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ. ದ್ವೈ ಅಹನಿ ಅಖಿಷ್ಠ: ಭೂತ: ಭೂತೋ ಭಾವಿ

ವಾ "ಠ್" (೪-೧-೧೮) ವಾ "ಃ" (೪-೧-೮೭)। ದ್ವೈಯಕ್ಷಿಕ: ದ್ವೈಯಕ್ಷಿಕೇನ |

ದ್ವೈಯಕ್ಷಿಕ ದ್ವೈಯಕ್ಷಿಕ (ನಂ) ಎರಡು ರಥಗಳಿಂದ ಮಾತ್ರ ನಡೆಯುವ ಯುದ್ಧ. ದ್ವೈ ರಥೋ ಯತ್ರ ಯುದ್ಧೇ | ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮)।

ದ್ವೈರಾತ್ರಿಕ ದ್ವೈರಾತ್ರಿಕ (ವಿಂ) "ದ್ವಿರಾತ್ರಿಣ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ದ್ವೈವಿಧ್ಯ ದ್ವೈವಿಧ್ಯ (ನಂ) ಎರಡು ಪ್ರಕಾರ, ಎರಡು ವಿಧ. ದ್ವಿವಿಧಸ್ಯ ಭಾವ: "ಞ್" (೪-೧-೧೨೪)।

ದ್ವೈಸಮಿಕ ದ್ವೈಸಮಿಕ (ವಿಂ) "ದ್ವಿಸಮೀನ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ದ್ವೈಶಂಶ ದ್ವೈಶಂಶ (ನಂ) ಎರಡು ಭಾಗಗಳು. ದ್ವೈಶಂಶಯೋ: ಸಮಾಹಾರ: |

ದ್ವೈಶಂಶ ದ್ವೈಶಂಶ (ವಿಂ) ಎರಡು ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ. ದ್ವೈ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯ "ಞ್" (೪-೪-೧೧೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಷ್" (೪-೧-೪೧)। ದ್ವೈಶಂಶ ದ್ವೈಶಂಶೇ.

ದ್ವೈಶಂಶ ದ್ವೈಶಂಶ (ಪುಂ) 1. ಎರಡು ಅಕ್ಷರಗಳುಳ್ಳ ಶಬ್ದ. ದ್ವೈ ಅಕ್ಷರೇ ಯತ್ರ | 2. ಎರಡು ಅಕ್ಷರಗಳುಳ್ಳ ಮಂತ್ರ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಷ್" (೪-೧-೪೧)। ದ್ವೈಶಂಶ ದ್ವೈಶಂಶೇ.

ದ್ವೈಶಂಶ ದ್ವೈಶಂಶ (ನಂ) 1. ಎರಡು ಬೆರಳುಗಳು. ದ್ವೈಶಂಶಯೋ: ಸಮಾಹಾರ: | (ವಿಂ) 2. ಎರಡು ಅಂಗುಲಿಗಳ ಪ್ರಮಾಣವುಳ್ಳ. ದ್ವೈ ಅಂಗುಲಿ ಪ್ರಮಾಣಮಸ್ಯ ಸಮಾಸಾಂತ: "ಅನ್" (೪-೪-೮೬)।

ದ್ವೈಶಂಶ ದ್ವೈಶಂಶ (ನಂ) ಎರಡು ಅಂಜಲಿಗಳು, ಎರಡು ಬೊಕಸೆಗಳು. ದ್ವೈಶಂಶಯೋ: ಸಮಾಹಾರ: ವಾ "ಠ್" (೪-೪-೧೦೨)। ಟಜಭಾವೇ ದ್ವೈಶಂಶ ದ್ವೈಶಂಶೇ. "ಮಧ್ಯೇಜಲಾತ್ ರಾಘವಲಕ್ಷ್ಮಣಾಮ್ಯಾಂ ಪ್ರತ್ಯಂ ಜಲಂ ದ್ವೈಶಂಶ-ಮಂತಿಕೇಷಾಮ್" ಭಟ್ಟಂ ೩-೫೦ |

ದ್ವೈಶಂಶ ದ್ವೈಶಂಶ (ವಿಂ) ಎರಡು ಬೊಕಸೆಗಳಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ದ್ವಾಮ್ಯಾಮಂಜಲಿಮ್ಯಾಂ ಕ್ರೀತ: "ಠ್" (೪-೧-೩೭)। ತಸ್ಯ ಲುಕ್ (೪-೧-೨೮)।

ದ್ವೈಶಂಶ ದ್ವೈಶಂಶ (ನಂ) ಎರಡು ಪರಮಾಣುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದ್ರವ್ಯ, ಪರಮಾಣು ದ್ವಯದ ಸಮಾವೇಶ. ದ್ವೈ ಅನ್ ಕಾರಣೇ ಯಸ್ಯ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೫೪)। "ವಿಷಯೋ ದ್ವೈಶಂಶಾದಿಸ್ತು ಬ್ರಹ್ಮಾಣ್ಡಾಂತ ಉದಾಹೃತ: | ಭಾಷಾಪಂ |

ದ್ವೈಶಂಶ ದ್ವೈಶಂಶ (ವಿಂ) ಇಬ್ಬರಿಗಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದ, ಎರಡು ಕಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದ. ದ್ವಾಮ್ಯಾಮನ್ಯ: |

ದ್ವೈಶಂಶ ದ್ವೈಶಂಶ (ವಿಂ) 1. ಎರಡು ಅರ್ಥಗಳುಳ್ಳ (ಶಬ್ದ). ದ್ವೈ ಅರ್ಥೋ ಯಸ್ಯ | "ದ್ವೈಶಂಶಮಪಿ ಸದಸಿ ವೇದಿಪತೇಸ್ತದತೋಽ-



ಪರಾಧಗಣನಾಮಗಾಢವ: " ಮಾಧಂ ೧೪-೩೪ | 2. ಎರಡು ಪ್ರಯೋಜನಗಳುಳ್ಳ (ಕಾರ್ಯ). "ಆಮ್ರಾಶ್ರ ಸಿಕ್ತಾ: ಪಿತರಶ್ಚ ತೃಪ್ತಾ ಏಕಾ ಕ್ರಿಯಾ ದ್ವಿವರ್ಣಕರೀ ಬಭೂವ" | (ನಂ) 3. ಎರಡು ಕಾರ್ಯಗಳು. ದ್ವಯೋರ್ಯೋ: ಕಾರ್ಯಯೋ: ಸಮಾಹಾರ: |

ದ್ವಿಪದಿ ದ್ವಿಪದಿ (ವಿಂ) ಎಂಬತ್ತೆರಡನೆಯ. ದ್ವಿಪದಿ: ಪೂರ್ಣ: "ಢ್" (೪-೨-೪೮) |

ದ್ವಿಪದಿ ದ್ವಿಪದಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎಂಬತ್ತೆರಡು. ದ್ವಿಪದಿ ಅಶಿತಿ: | (ವಿಂ) 2. ಎಂಬತ್ತೆರಡು ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ, ಎಂಬತ್ತೆರಡು ಎಣಿಕೆಯುಳ್ಳ.

ದ್ವಿಪದಿತಮ ದ್ವಿಪದಿತಮ (ವಿಂ) ಎಂಬತ್ತೆರಡನೆಯ. ದ್ವಿಪದಿ: ಪೂರ್ಣ: "ಢ್" -ತಸ್ಯ "ತಮಢ್" (೪-೨-೪೬) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಢಿಪ್" (೪-೧-೧೪) | -ತಮಿ -ತಮಿ.

ದ್ವಿಪದಿ ದ್ವಿಪದಿ (ನಂ) ತಾಮ್ರಲೋಹ. ಡೆ ಹೇಮರೂಪ ಕಾರಣತಯಾ ಅಶ್ನುತೇ-ಅಶ್ನು (ವ್ಯಾಪ್ತೀ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) |

ದ್ವಿಪದಿ ದ್ವಿಪದಿ (ಪುಂ) ಎರಡು ದಿನಗಳು. ದ್ವಯೋ ರಾತ್ರಯೋ: ಸಮಾಹಾರ: "ಢ್" (೪-೪-೯೧) | ಪುಸ್ತಕಮ್ (೨-೪-೨೯) |

ದ್ವಿಪದಿ ದ್ವಿಪದಿ (ವಿಂ) "ದ್ವಿಪದಿ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ದ್ವಿ + ಅಹನ್ "ಃ" (೪-೧-೮೭) |

ದ್ವಿಪದಿ ದ್ವಿಪದಿ (ವಿಂ) 1. ಹುಟ್ಟಿ ಎರಡು ದಿನಗಳಾಗಿರುವ, ಎರಡು ದಿನಗಳ ಹಿಂದೆ ಹುಟ್ಟಿರುವ. ಡೆ ಅಹನಿ ಜಾತಸ್ಯ ಯಸ್ಯ | "ಢ್" (೪-೪-೯೧) | ಅಕ್ಷಾಂಶ: (೪-೪-೮೮) |

ದ್ವಿಪದಿ ದ್ವಿಪದಿ (ವಿಂ) 1. ಎರಡು ಅಚಿತದಷ್ಟು ಹಿಡಿಸುವ. 2. ಎರಡು ಅಚಿತಕ್ಕೆ ಸಮವಾದ. 3. ಎರಡು ಅಚಿತದಷ್ಟು ಬೇಯಿಸುವ. ದ್ವಿ ಆಚಿತೌ ಸಮವತ್ಯವಹರತಿ ಪಚತಿ ವಾ-ದ್ವಿ + ಆಚಿತ "ಢ್" (೪-೧-೧೮) | ಠ್ವಾ ಲುಕ್ (೪-೧-೨೮) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಢಿಪ್" ನ (೪-೧-೨೨) | ಕಿನ್ತು "ಢಾಪ್" (೪-೧-೪) | ದ್ವಿಪದಿ ದ್ವಿಪದಿ.

ದ್ವಿಪದಿತಿಕಿ ದ್ವಿಪದಿತಿಕಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ದ್ವಿಪದಿ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ದ್ವಿ ಆಚಿತೌ ಸಮವತ್ಯವಹರತಿ ಪಚತಿ ವಾ-ವಾ "ಢ್" (೪-೧-೪೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಢಿಪ್" (೪-೧-೪೧) | ಪಕ್ಷೇ "ಃ" (೪-೧-೪೪) | ದ್ವಿಪದಿತಿನಾ ದ್ವಿಪದಿತಿನಾ.

ದ್ವಿಪದಿ ದ್ವಿಪದಿ (ವಿಂ) 1. ಎರಡು ಅಚಿತದಷ್ಟು ಹಿಡಿಸುವ. 2. ಎರಡು ಅಚಿತದಷ್ಟು ಅಳೆಯುವ. 3. ಎರಡು ಅಚಿತದಷ್ಟು ಬೇಯಿಸುವ. ದ್ವಿ ಆಚಿತೌ ಸಮವತ್ಯವಹರತಿ ಪಚತಿ ವಾ "ಢ್" (೪-೧-೧೮) | ಠ್ವಾ ಲುಕ್ (೪-೧-೨೮) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಢಿಪ್" (೪-೧-೨೧) | ದ್ವಿಪದಿ ದ್ವಿಪದಿ.

ದ್ವಿಪದಿಕಿಕಿ ದ್ವಿಪದಿಕಿಕಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ದ್ವಿಪದಿ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ದ್ವಿ ಆಚಿತೌ ಸಮವತ್ಯವಹರತಿ ಪಚತಿ ವಾ-ವಾ "ಢ್" (೪-೧-೪೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಢಿಪ್" (೪-೧-೪೧) | ಪಕ್ಷೇ "ಃ" (೪-೧-೪೪) | ದ್ವಿಪದಿಕಿನಾ ದ್ವಿಪದಿಕಿನಾ.

ದ್ವಿಪದಿ ದ್ವಿಪದಿ (ಪುಂ) ಚರಸ್ಥಿರಗಳೆಂಬ ದ್ವಿಪದಿಭಾವದ ರಾಶಿ. ದ್ವಿ ದ್ವಿವಿಧಿ ಆತ್ಮಾನೌ ಸ್ವರೂಪೌ ಯಸ್ಯ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೪೪) | ಮೇಷಾದಿ ದ್ವಿಪದಿರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಮಿಥುನ ಕನ್ಯಾ ಧನುಸ್ಸು ಮತ್ತು ಮೀನ ಈ ನಾಲ್ಕು ದ್ವಿಪದಿಭಾವದ ರಾಶಿಗಳು. "ಚರಸ್ಥಿರದ್ವಿಪದಿಕನಾಮಧೇಯಾ ಮೇಷಾದಯೋಷಿ ಕ್ರಮಶ: ಪ್ರದಿಷ್ಟಾ:" | ಈ ನಾಲ್ಕು ರಾಶಿಗಳ ಹಿಂದಿನ ರಾಶಿಗಳು ಸ್ಥಿರರಾಶಿಗಳಾದುದರಿಂದ ಅವುಗಳ ಸಾಮಾನ್ಯದಿಂದ ಪೂರ್ವಾರ್ಧವು ಸ್ಥಿರಾತ್ಮಕ. ಮುಂದಿನ ರಾಶಿಗಳು ಚರ ರಾಶಿಗಳಾದುದರಿಂದ ಉತ್ತರಾರ್ಧವು ಚರಾತ್ಮಕ. ಈ ಕಾರಣದಿಂದ ಇವು ದ್ವಿಪದಿಭಾವದ ರಾಶಿಗಳು.

ದ್ವಿಪದಿ ದ್ವಿಪದಿ (ಪುಂ) ಜನಕ ಮತ್ತು ಸ್ವೀಕಾರಪಡೆದ ತಂದೆ ಇಬ್ಬರಿಗೂ ಮಗನಾಗಿರುವವನು. ಅಮುಷ್ಯ ಜನಕಪಿತು: ಅಪತ್ಯಮ್ "ಕಪ್" (೪-೧-೯೯) | ದ್ವಯೋರಮುಷ್ಯಾಣ: | ಜನಕ ಮತ್ತು ಸ್ವೀಕಾರ ಪಡೆದವನು ಇವರಿಬ್ಬರಿಗೂ ಪುತ್ರನಾಗಿರಬೇಕೆಂಬ ಅಡುಮಾತಿನಂತೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು ದ್ವಿಪದಿಮುಷ್ಯಾಣನು.

ದ್ವಿಪದಿ ದ್ವಿಪದಿ (ನಂ) ಎರಡರಷ್ಟು ಆಯುಸ್ಸು. ಆಯುಸ್ಸಿನ ಎರಡರಷ್ಟು ಕಾಲ. ದ್ವಯೋರಾಯುಷಿ: ಸಮಾಹಾರ: | "ಅಪ್" ನಿಪಾಂ (೪-೪-೭೭) |

ದ್ವಿಪದಿ ದ್ವಿಪದಿ (ವಿಂ) 1. ಎರಡು ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ, ಎರಡು ದಿನಗಳಿಗೊಂದು ಸಲ ಉಂಟಾಗುವ. 2. ಎರಡು ದಿನಗಳಿಗೊಂದು ಸಲ ಬರುವ (ಜ್ವರ). ದ್ವಿಪದಿ ಜಾತ: "ಢ್" (೪-೩-೧೧) |

ದ್ವಿಪದಿ ದ್ವಿಪದಿ (ವಿಂ) ಎರಡು ಅಥವಾ ಒಂದು, ಇಬ್ಬರು ಅಥವಾ ಒಬ್ಬ. ದ್ವಿ ವಾ ಏಕೋ ವಾ | "ದ್ವಿಪದಿಂತರಾಸು ಜಾತಾನಾಂ ಧರ್ಮ ವಿಜ್ಞಾದಿಸಂ ವಿಧಿಮ್" ಮನುಂ ೧೦-೭ |

ಇತಿ "ದ" ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್ |



## ಧ

ಧ ಧ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ "ತ" ವರ್ಗದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಂತರಸ್ಪೃಷ್ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ದಂತಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಮಹಾಪ್ರಾಣಾಕ್ಷರ. "ಲೃತುಲಸಾನಾ ದಂತಾಃ"। "ಕಾದಯೋ ಮಾವಸಾನಾಃ ಸ್ಪರ್ಶಾಃ। ಸ್ಪೃಷ್ಠಂ ಪ್ರಯತನಂ ಸ್ಪರ್ಶನಾಮ್" ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಧ ಧ (ಪುಂ) 1. ಧರ್ಮ. 2. ಕುಬೇರ. 3. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. 4. ಧನ್ವಂತರಿ. 5. ಘಟ, ಕಲಶ. 6. ಧ್ಯಾನ. 7. ಧ್ವನಿ. 8. ಮನು. 9. ಇಂದ್ರ. (ನಂ) 10. ಧನ, ಹಣ. 11. ಮನೆ, ಗೃಹ. 12. ಧಾನ್ಯ. "ಘೋ ನಾ ಧರ್ಮೇ ಕುಬೇರೇ ಚ ಕಲಿಬಿಂ ತು ವಸುನಿ ಸ್ಮೃತಮ್" ಮೇದಿಂ। "ಘಃ ಪುಂಸಿನ್ದ್ರೇ ಧ್ವನೌ ಧ್ಯಾನೇ ಶ್ರೀದೇ ಧನ್ವಂತರೌ ಧತೇ। ಧಂ ವೇಶಮನಿ ಧನೇ ಧಾನ್ಯೇ" ನಾನಾರ್ಥರಂ। "ಧಂ ಧನೇ ಸದನೇ ಧಃ ಸ್ಯಾದ್ವಿಘಾತರಿ ಮನಾವಪಿ" ಏಕಾಂ।

ಧಕಾರ ಧಕಾರ (ಪುಂ) "ಧ" ಎಂಬ ಅಕ್ಷರ. ಧ "ಕಾರಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮)।

ಧಟ ಧಟ (ಪುಂ) 1. ತಕ್ಕಡಿ, ತ್ರಾಸು. ಧಂ ಧನಂ ಅತಃ ಗಂಧತಿ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ - ಅಟ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ತಕ್ಕಡಿಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಪರೀಕ್ಷೆ. 3. ತುಲಾರಾಶಿ. "ಸಿಂಹೋ ವೃಷಶ್ಚ ಮೇಷಶ್ಚ ಕನ್ಯಾ ಧನ್ವಿ ಧಟೋ ಧಟಃ। ಅರ್ಕಾದಿನಾಂ ತ್ರಿಕೋಣಾನಿ ಮೂಲಾನಿ ರಾಶಯಃ ಕ್ರಮಾತ್"। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಟಿ -ಖೇ. 4. ಚಿಂದಿಬಟ್ಟೆ, ಹರುಕುಬಟ್ಟೆ. 5. ಕೌಖೀನ. "ಧಟೋ ದಿವ್ಯತುಲಾಃ ಸ್ಯಾತ್ ಧಟಿ ಚೀರೇ ಚ ವಾಸಸಃ" ಮೇದಿಂ।

ಧಟಕ ಧಟಕ (ಪುಂ) ನಲವತ್ತೆರಡು ಗುಲಗಂಜಿಗಳ ತೂಕ. "ತುಲ್ಯಾ ಯವಾಮ್ಯಾಂ ಕಥಿತಾತ್ರ ಗುಜಾ ವಲ್ಲಸ್ತ್ರಿಗುಜೋ ಧರಣಂ ಚ ತೇಷ್ಠಿ। ಗದಾನಕಸ್ತದ್ವಯಮಿನ್ದ್ರತುಲ್ಯೈವೈಲೈಸ್ತಥೈವೋ ಧಟಕಃ ಪ್ರದಿಷ್ಟಃ" ಲೀಲಾಂ।

ಧಟಕಕಂಡ ಧಟಕಕಂಡ (ಪುಂ) ತಕ್ಕಡಿಯ ಅಡ್ಡಕೋಲು, ತ್ರಾಸಿನ ಎರಡು ಉರಿಗಳನ್ನು ತೂಗುಹಾಕುವ ಅಡ್ಡಪಟ್ಟಿ.

ಧಟಿಕಾ ಧಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹರುಕುಬಟ್ಟೆ, ಚಿಂದಿಬಟ್ಟೆ. 2. ಕೌಖೀನ, ಖಂಡವಸ್ತ್ರ. ಧಟಿ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ"। 3. ಪಂಚೇರು, ವೀಸೆ. [ಇದೊಂದು ಹಿಂದಿನಕಾಲದ ತೂಕ.] "ದ್ವಯೋನ್ದುಸಂಖ್ಯೆಧಟಕೇಸ್ತು ಸೇರಸ್ತಃ ಪಂಚಮಿಃ ಸ್ಯಾದ್ಧಟಿಕಾ ಚ ತಾಮಿಃ" ಲೀಲಾಂ।

ಧಟಿನ್ ಧಟಿನ್ (ಪುಂ) 1. ತುಲಾರಾಶಿ. 2. ಈಶ್ವರ. (ವಿಂ) 3. ತಕ್ಕಡಿಯನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವವನು. ಧಟೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಛಿನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪)।

ಧಟಿನಿ ಧಟಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಟಿಸೂತ್ರ, ಉಡುದಾರ. "ಮೌಖ್ಯಾ ತು ಮೇಖಲಾಕ್ಷೋಣಿ ಮೌಖ್ಯೇಕಲಮಾತ್ರಿಕಾ। ಸೌಖ್ಯಾ ತು ಧಟಿನಿ" ವೇಜಂ।

ಧಟಿ ಧಟೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಖಂಡವಸ್ತ್ರ, ಕೌಖೀನ. 2. ಹರುಕು ಬಟ್ಟೆ, ಚಿಂದಿಬಟ್ಟೆ. "ಕಂಠಾ ಕಂಠಟಿಕಾ ಕಕ್ಷಾ ಧಟಿ ಕೌಪಿನಮಿತ್ಯಪಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಧತ್ತೂರ ಧತ್ತೂರ (ಪುಂ) ದತ್ತೂರಿ ಗಿಡ. ಧಯತಿ ಧಾತುನ್ - ಧೇ (ಪಾನೇ) "ಝರಚ್" ಬಾಹುಂ। ಪೃಷಂ। "ಝಮತಃ ಕಿತವೋ ಧತ್ತಃ ಧತ್ತೂರಃ ಕನಕಾಹ್ವಯಃ" ಅಮಂ।

ಧನ ಧನ (ನಂ) 1. ಹಣ, ಐಶ್ವರ್ಯ. ಧನತಿ-ಧನ (ಧಾನ್ಯೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಗೃಹಮಧ್ಯನಿಖಾತೇನ ಧನೇನ ಧನಿನೋ ಯದಿ। ಭವಾಮಃ ಕಿಂ ನ ತೇನೈವ ಧನೇನ ಧನಿನೋ ವಯಮ್" ಪಂಚತಂ ೨-೧೪೪। 2. ಆಸ್ತಿ, ಸ್ವತ್ತು. 3. ಗೋಧನ, ಗೋರೂಪವಾದ ಆಸ್ತಿ (ಐಶ್ವರ್ಯ). "ಧನಂ ಸ್ಯಾದ್ಗೋಧನೇ ವಿದ್ಧಿ" ಮೇದಿಂ। ಧನವು (1) ಸಾತ್ವಿಕ, (2) ರಾಜಸ ಮತ್ತು (3) ತಾಮಸಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. "ಧನಂ ತು ತ್ರಿವಿಧಂ ಜ್ಞೇಯಂ ಶುಕ್ಲಂ ಶಬಲಮೇವ ಚ। ಕೃಷ್ಣಂ ಚ ತಸ್ಯ ವಿಜ್ಞೇಯೋ ವಿಭಾಗಃ ಸಪ್ತಧಾ ಪೃಥಕ್"॥ (1) ವೇದ ಮತ್ತು ಶಾಸ್ತ್ರಾಭ್ಯಾಸದಿಂದಲೂ ಪರಾಕ್ರಮದಿಂದಲೂ ತಪಸ್ಸಿನಿಂದಲೂ ಶಿಷ್ಯರಿಂದ ಗುರುದಕ್ಷಿಣೆ ಮೂಲಕವಾಗಿಯೂ ಕನ್ಯೆಯೊಡನೆ ಮಾವನಮನೆಯಿಂದಲೂ ಯಜ್ಞಯಾಗಾದಿಗಳಿಂದಲೂ ವಂಶಪರಂಪರೆಯಾಗಿಯೂ ಬಂದ ಧನವು "ಸಾತ್ವಿಕ" ಧನ. "ಶ್ರುತಶೌರ್ಯತಪಃಕನ್ಯಾಶಿಷ್ಯಯಾಜ್ಯಾನ್ವಯಾಗತಮ್। ಧನಂ ಸಪ್ತವಿಧಂ ಶುದ್ಧಂ ಮುನಿಭಿಃ ಸಮುದಾಹೃತಮ್"। (2) ಲೇಣಿ ದೇಣಿಗಳಿಂದ, ವ್ಯವಸಾಯ, ವ್ಯಾಪಾರ, ಸುಂಕ, ಸಂಗೀತ, ಇತರರ ಸೇವೆ ಇವುಗಳಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಿದ ಧನವೂ ಮಾಡಿದ ಉಪಕಾರಕ್ಕೆ ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರ ರೂಪವಾಗಿ ಬಂದ ಧನವೂ "ರಾಜಸ" ಧನ. "ಕೃಷಾದಿವಿವಾಣಿಜ್ಯಶುಲ್ಕಗಾನಾನು-ವೃತ್ತಿಭಿಃ। ಕೃತೋಪಕಾರಾದಾಪ್ತಂ ಚ ರಾಜಸಂ ಸಮುದಾಹೃತಮ್"। (3) ಒಂದು ಪಕ್ಷವನ್ನು ಸೇರಿ ಅದರಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಿದ ಮತ್ತು ಜೂಜು, ಕಳ್ಳತನ, ಪರಹಿಂಸೆ, ವಂಚನೆಯ ವ್ಯಾಪಾರ, ಸಾಹಸಕಾರ್ಯ, ಮೋಸ ಇವುಗಳಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಿದ ಧನವು "ತಾಮಸ" ಧನ. "ಪಾಶ್ವಿಕಕೃತ-ಚೌರ್ಯಾತಿಪ್ರತಿರೂಪಕಸಾಹಸಃ। ವ್ಯಾಜೇನೋಪಾಜಿತಂ ಯತ್ನು ತತ್ಕೃಷ್ಣಂ ಸಮುದಾಹೃತಮ್"। 4. ಜನ್ಮಲಗ್ನದಿಂದ ಎರಡನೆಯ ಸ್ಥಾನ, ಧನಸ್ಥಾನ. 5. ಸ್ನೇಹಪಾತ್ರ ವಿಶ್ವಾಸಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರನಾದವನು.



“ಗುರೋರಪಿಧಂ ಧನಮಾಹಿತಾನೇನೈತುರಸ್ತಾದನುಪೇಕ್ಷಣೀಯಮ್”  
ರಘುಂ ೨-೪೪। 6. ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ. 7. ಜೀವನೋಪಾಯ,  
ಜೀವಿಕೆ.

ಧನಕ ಧನಕ (ಪುಂ) ಧನದ ಅಸೆ, ಐಶ್ವರ್ಯದ ಬಯಕೆ.  
ಧನೇ ಕಾಮ: “ಕನ್” (೪-೨-೬೪)।

ಧನಕೇಲಿ ಧನಕೇಲಿ (ಪುಂ) ಕುಬೇರ. ಧನೇನ ಕೇಲಿಸ್ಯ।

ಧನಜಿತ್ ಧನಜಿತ್ (ವಿಂ) ಧನವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿದವನು,  
ಐಶ್ವರ್ಯವನ್ನು ಗಳಿಸಿದವನು. ಧನಂ ಜಿತವಾನ್।

ಧನಜಯ ಧನಂಜಯ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಧನಂ  
ಜಯತಿ—ಜಿ (ಜಯೆ) “ಖತ್” (೩-೨-೪೬)। “ಆರೋಗ್ಯಂ  
ಭಾಸ್ಕರಾದಿಚ್ಛೇತ್ ಧನಮಿಚ್ಛೇದ್ಧುತಾಶನಾತ್”। 2. ಅರ್ಜುನ,  
ಪಾರ್ಥ. ದೇಶವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಗೆದ್ದು ಧನವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿದ್ದ  
ರಿಂದ ಅರ್ಜುನನಿಗೆ ಧನಂಜಯನೆಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು.

“ಸರ್ವಾನ್ ಜನಪದಾನ್ ಜಿತ್ವಾ ವಿದ್ವತ್ಪಾದಯ ಕೇವಲಮ್। ಮಧ್ಯೆ  
ಧನಸ್ಯ ತಿಷ್ಠಾಮಿ ತೇನಾಹುಮಾ ಧನಜಯಮ್” ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೪೪।

“ವಿಜಿತಯ ಯಃ ಪ್ರಾಜ್ಯಮಯಚ್ಛದ್ವುತರಾನ್ ಕುರುನಕುಪ್ಯಂ ವಸು  
ವಾಸವೋಪಮಃ। ಸ ವಲಕವಾಸಾಸಿ ತವಾಧುನಾಹರನ್ ಕರೋತಿ  
ಮನ್ಯುನ್ ನ ಕಥಂ ಧನಜಯಃ” ಕಿರಾಂ ೧-೩೪। 3. ವಿಷ್ಣು.  
ಧನಂ ಹೇಮರತ್ನಾದಿಕಂ ದ್ರವ್ಯಂ ಜಯತಿ ಅಧಃಕರೋತಿ। “ಮಣಿ-  
ಮೌಕ್ತಿಕರತ್ನಾನಿ ಹೇಮರೌಪ್ಯಾದಿಕಂ ಧನಮ್। ಯೋಽಧಃಕರೋತಿ ಸತತಂ  
ಧನಜಯ ಇತಿರೀತಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ। “ಅನಿರ್ದೇಶ್ಯವಪು-  
ವಿಷ್ಣುರ್ವಿರೋಜಂತೋ ಧನಜಯಃ” ವಿಂ ಸಂ। 4. ಒಂದು  
ಸರ್ಪ. “ಶೇಷಃ ಪ್ರಥಮತೋ ಜಾತೋ ವಾಸುಕಿಃ ಸ್ತದಂತರಮ್।

ಘೋರವತ್ಸ್ತಕಶ್ಚ ಕರ್ಕೋಟಕಧನಜಯೋ” ಭಾಂ ಆದಿಂ  
೩೪-೪। 5. ದೇಹದೊಳಗಿನ ಒಂದು ವಾಯು. ಶರೀರ

ದಲ್ಲಿರುವ ಪಂಚವಾಯುಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ಈ ವಾಯುವು  
ಶರೀರದ ಎಲ್ಲಾಕಡೆಯಲ್ಲೂ ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವುದು. “ವಾಗ್ದಾರೆ

ನಾಗ ಆರೂಪಾತಃ ಕೂರ್ಮಂ ತನ್ಮೀಲನೇ ಸ್ಮೃತಃ। ಕೃಕರಾಂಶ್ಚ ಕ್ಷುತಂ  
ಜೇಯಂ ದೇವದತ್ತಾದ್ವಿಜೃಂಭಣಮ್। ನ ಜಹಾತಿ ಮೃತಶ್ಚಾಪಿ ಸರ್ವವ್ಯಾಪಿ  
ಧನಜಯಃ”। “ಧನಜಯಸ್ತಥಾ ಧೋಃ ಮಹಾರಜತವರ್ಣಕಃ।

ಲಲಾಟೇ ಚೋರಸಿ ಸ್ಕಂಧೇ ಹೃದಿ ನಾಭೌ ತ್ವಗಾಸ್ಥಿಭು”।

6. ಇಂದ್ರ. “ಧನಜಯೋಽಜುನೇ ವಹ್ನಿನಾಗಾಭಿಹೇಮಾಸ್ತೇ”  
ಮೇದಿಂ। “ಪಾರ್ಥಿವೀಂದ್ರಾಃ ಧನಜಯಾಃ” ವೈಜಂ। 7. ದಶ

ರೂಪಕವನ್ನು ಬರೆದ ಒಬ್ಬ ಪಂಡಿತ.

ಧನದ ಧನದ (ಪುಂ) 1. ಕುಬೇರ. ಧನಂ ದದಾತಿ—ಓ ದಾನ್  
(ದಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೩)। 2. ದೇಹದೊಳಗಿನ

ಒಂದು ವಾಯು, ಧನಂಜಯ ವಾಯು. 3. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ.  
“ಧನಮಿಚ್ಛೇದ್ಧುತಾಶನಾತ್”। 4. ಚಿತ್ರಕವ್ಯಕ್ಷ. (ವಿಂ) 5.

ಹಣವನ್ನು ಕೊಡುವವನು. “ಧನದಸ್ತು ಕುಬೇರೇ ಸ್ಯಾತ್  
ಪುಲಿಂಜೋ ದಾತರಿ ತ್ರಿಭು” ಮೇದಿಂ।

ಧನದಂಡ ಧನದಂಡ (ಪುಂ) ಧನರೂಪವಾದ ಶಿಕ್ಷೆ, ಜುಲ್ಮಾನೆ.

ಧನರೂಪೋ ದಂಡಃ। “ವಾಗ್ದಂಡಂ ಪ್ರಥಮಂ ಕುರ್ಯಾತ್ ಧಿಗ್ದಂಡಂ  
ತದನಂತರಮ್। ತೃತೀಯಂ ಧನದಂಡಂ ತು ವಧದಂಡಮತಃ ಪರಮ್”

ಮನ್ವಂ ೮-೧೨೯। ಅಪರಾಧಿಯನ್ನು ಮೊದಲು ಮೃದು  
ವಾದ ಮಾತಿನಿಂದಲೂ ಅನಂತರ ಬಿರುಸುಮಾತಿನಿಂದಲೂ

ಬೆದರಿಸಬೇಕು. ಅದಕ್ಕೆ ಹೆದರದಿದ್ದರೆ ಧನದಂಡವನ್ನು  
ವಿಧಿಸಬೇಕು. ಅದರಿಂದಲೂ ಸನ್ಮಾರ್ಗಕ್ಕೆ ಬರದಿದ್ದರೆ

ವಧದಂಡವನ್ನು ವಿಧಿಸಬೇಕು.

ಧನದರ್ಪ ಧನದರ್ಪ (ಪುಂ) ಧನಮದ, ಐಶ್ವರ್ಯದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅಹಂಕಾರ, -ಕೊಬ್ಬು.

ಧನದಾನುಜ ಧನದಾನುಜ (ಪುಂ) ಕುಬೇರನ ತಮ್ಮನಾದ—  
1. ರಾವಣ. 2. ಕಂಭಕರ್ಣ. 3. ವಿಭೀಷಣ, ಧನದಸ್ಯ

ಅನುಜಃ। “ಭುಜಮೂರ್ಖಾಹುಲ್ಯಾದೇಕೋಽಪಿ ಧನದಾನುಜಃ” ರಘುಂ  
೧೨-೮೮।

ಧನದಾಯಿನ್ ಧನದಾಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಧನಂ  
ದದಾತಿ—ಓ ದಾನ್ (ದಾನೇ) “ಗಿರಿನಿಃ” (೩-೧-೧೩೪)।

“ಆರೋಗ್ಯಂ ಭಾಸ್ಕರಾದಿಚ್ಛೇತ್ ಧನಮಿಚ್ಛೇದ್ಧುತಾಶನಾತ್। ಜ್ಞಾನಂ  
ಮಹೇಶ್ವರಾದಿಚ್ಛೇದ್ಧುತಾಶನಾದಿನಾತ್”। (ವಿಂ) 2.

ಹಣವನ್ನು ಕೊಡುವವನು.

ಧನಧಾನಿ ಧನಧಾನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧನವನ್ನೂ ಬೆಲೆಬಾಳುವ  
ವಸ್ತುಗಳನ್ನೂ ಇಡುವ ಗೃಹ, ಖಜಾನೆ, ಬೊಕ್ಕಸ. ಧನಾನಿ

ಧೀಯಂತೇ ಅಸ್ಯಾಮ್—ಓ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೭)। “ಕೀಪ್” (೪-೧-೧೪)।

ಧನಪತಿ ಧನಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಕುಬೇರ. ಧನಸ್ಯ ಪತಿಃ।  
“ತತ್ರಾಗಾರಂ ಧನಪತಿಗೃಹಾನುತರೇಣಾಸ್ಮದೀಯಂ ದೂರಾಲಕ್ಷ್ಯಂ ಸುರಪತಿ-

ಧನುಶ್ಚಾಣಾ ತೋರಣೇ” ಮೇಘಂ ೨-೧೨। 2. ದೇಹದೊಳಗಿನ  
ಗಿರುವ ಧನಂಜಯವೆಂಬ ಒಂದು ವಾಯು. 3. ಧನಾಧ್ಯಕ್ಷ,  
ಬೊಕ್ಕಸದ ಅಧಿಕಾರಿ.

ಧನಪಾಲ ಧನಪಾಲ (ಪುಂ) 1. ಕುಬೇರ. ಧನಂ ಪಾಲಯತಿ—  
ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಪಿನ್ “ಅನ್” (೩-೨-೧)। (ವಿಂ) 2.

ಧನವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವವನು.

ಧನಪಿಪಾಸಿಕಾ ಧನಪಿಪಾಸಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧನದ ಅಸೆ,  
ಧನದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಅತಿಯಾದ ಅಸೆ. ಧನೇ ಪಿಪಾಸಿಕೇವ।

ಧನಪ್ರಯೋಗ ಧನಪ್ರಯೋಗ (ಪುಂ) ಧನವು ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಲು  
ಬಡ್ಡಿಗಾಗಿ ಸಾಲಕೊಡುವುದು. ಧನಸ್ಯ ವೃದ್ಧಿಪ್ರಯೋಗಃ।  
ಬಡ್ಡಿಯ ಸಂಪಾದನೆಗಾಗಿ ಹಣವನ್ನು ಸಾಲಕೊಡಲು



ಅಶ್ವಿನಿ, ಮೃಗಶಿರ್ಷ, ಪುನರ್ವಸು, ಪುಷ್ಯ, ಚಿತ್ತ, ಸ್ವಾತಿ, ವಿಶಾಖ, ಅನೂರಾಧ, ಶ್ರವಣ, ಧನಿಷ್ಠ, ಶತಭಿಷ ಈ ಹನ್ನೊಂದು ನಕ್ಷತ್ರಗಳೂ ಮೇಷ, ಕರ್ಕಾಟಕ, ತುಲಾ ಮತ್ತು ಮಕರ ಲಗ್ನಗಳೂ ಪ್ರಶಸ್ತವಾದುವು. “ಸ್ವಾತ್ಯಾದಿತ್ಯಮೃದುವೈವಗುರೋ ಕರ್ಣತ್ರಯಾಶ್ವೇ ಚರೇ ಲಗ್ನೇ ಧರ್ಮಸುತಾಷ್ಟ-ಶುದ್ಧಿಸಹಿತೇ ದ್ರವ್ಯಪ್ರಯೋಗಃ ಶುಭಃ | ನಾರೆ ಗ್ರಾಹ್ಯಮೃಗಂ ತು ಸಂಕ್ರಮದಿನೇ ವೃದ್ಧಿ ಕರೇತ್ಕೋಹ್ನಿ ಯತ್ತದ್ವಂಶೇ ಭವೇದೃಗಂ ನ ಚ ಬುಧೇ ದೇಯಂ ಕದಾಚಿದ್ಧನಮ್” ಮುಂ ಚಿಂ |

**ಧನಮಠ ಧನಮಠ** (ಪುಂ) ಧನದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅಹಂಕಾರ, ಐಶ್ವರ್ಯದ ಕೊಬ್ಬು. ಧನಸ್ಯ ಮಠಃ |

**ಧನವತ್ ಧನವತ್** (ವಿಂ) ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ, ಹಣವಂತ. ಧನಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ — “ಮತುಪ್” (೪-೨-೧೪) | ಮಸ್ಯ ವಃ (೮-೨-೧) | “ನಾರಾಜಕೇ ಜನಪದೇ ಧನವಂತಃ ಸುರಕ್ಷಿತಾಃ” ರಾಮಾಂ |

**ಧನವತೀ ಧನವತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧನಿಷ್ಠಾ ನಕ್ಷತ್ರ. ಈ ನಕ್ಷತ್ರವು ಧನದೇವತಾಕವಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ಧನವೃದ್ಧಿ ಧನವೃದ್ಧಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಐಶ್ವರ್ಯದ ಬೆಳವಣಿಗೆ.

**ಧನಸ್ಥಾನ ಧನಸ್ಥಾನ** (ನಂ) ಜನ್ಮಲಗ್ನದಿಂದ ಎರಡನೆಯ ಸ್ಥಾನ, ಧನದ ವಿಷಯವನ್ನು ನೋಡುವ ರಾಶಿ. ಧನಚಿಂತಾ ನಾಥಂ ಸ್ಥಾನಮ್ |

**ಧನಾಧಿಕಾರಿನ್ ಧನಾಧಿಕಾರಿನ್** (ಪುಂ) ಧನಾಧ್ಯಕ್ಷ, ಕೋಶಾಧಿಕಾರಿ. ಧನಮಧಿಕರೋತಿ—ಅಧಿ+ಕೃತ್ “ಣಿನಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) |

**ಧನಾಧಿಪ ಧನಾಧಿಪ**, —ಅಧಿಪತಿ —ಅಧಿಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಕುಂಬೇರ. 2. ಧನಾಧ್ಯಕ್ಷ, ಕೋಶಾಧಿಕಾರಿ. ಧನಸ್ಯ ಅಧಿಪಃ ಅಧಿಪತಿರ್ವಾ | “ಪುರಾಂ ವಿಜೇತುರ್ಧತಯೇ ಧನಾಧಿಪಃ” ಕಿರಾಂ ೪-೩೪ | “ಅನುಚರೇಣ ಧನಾಧಿಪತೇರಥೋ ನಗವಿಲೋಕನವಿಷ್ಮಿತ-ಮಾನಸಃ” ಕಿರಾಂ ೪-೧೬ | 3. ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ.

**ಧನಾಧ್ಯಕ್ಷ ಧನಾಧ್ಯಕ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಕುಂಬೇರ. “ತತಃ ಕ್ರುದ್ಧೋ ದಶಗ್ರಿವೋ ಜಗಾಮ ಧನದಾಲಯಮ್ | ವಿರ್ನಿಜಿತಯ ಧನಾಧ್ಯಕ್ಷಂ ಜಹಾರೋತ್ತಮಪುಷ್ಪಕಮ್” ಅಧ್ಯಾತ್ಮಂ | 2. ಧನಾಧ್ಯಕ್ಷ, ಕೋಶಾಧಿಕಾರಿ.

**ಧನಾರ್ಥಿನ್ ಧನಾರ್ಥಿನ್** (ವಿಂ) ಧನವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಧನ ಸಂಪಾದನೆಗಾಗಿ ಆಸೆಪಡುವ. ಧನಮರ್ಶಯತೇ—ಅರ್ಥ (ಉಪಯಾಚ್ಛಾಯಾಮ್) “ಣಿನಿಃ” (೩-೨-೭೮) | “ನ ತಾದೃಶಂ ಭವತ್ಯೇನೋ ಮೃಗಹಂತುರ್ಧನಾರ್ಥಿನಃ | ಯಾದೃಶಂ ಭವತಿ ಪ್ರೇತಯಾ ವೃಥಾ-ಮಾಂಸಾನಿ ಖಾದತಃ” ಮನುಂ ೪-೩೪ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೪) | —ಅರ್ಥಿನೋ —ಅರ್ಥಿನೋ.

**ಧನಾಶಾ ಧನಾಶಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಣದ ಆಸೆ, ಹಣವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸುವ ಆಶೆಯಾಸೆ. ಧನಸ್ಯಾಶಾ | “ಜೀರ್ಯಂತಿ ಜೀರ್ಯತಃ ಕೇಶಾ ದಂತಾ ಜೀರ್ಯಂತಿ ಜೀರ್ಯತಃ | ಧನಾಶಾ ಜೀವಿತಾಶಾ ಚ ಜೀರ್ಯಂತೋಽಪಿ ನ ಜೀರ್ಯಂತಿ” ಹರಿವಂ |

**ಧನಿಕ ಧನಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ, ಹಣವಂತ. ಧನಮಸ್ಯಸ್ಯ “ಠನ್” (೪-೨-೧೧೪) | 2. ಉತ್ತಮಾರ್ಥ, ಸಾಲಕೊಡುವವನು. “ದಾಪಯೇದಧನಿಕಸ್ಯಾರ್ಥಂ ದಣ್ಡಲೇಶಂ ಚ ಶಕ್ತಿಃ” ಮನುಂ ೮-೪೧ | (ಪುಂ) 3. ಪತಿ, ಗಂಡ. 4. ದಶರೂಪಕವ್ಯಾಖ್ಯಾಕಾರನಾದ ಒಬ್ಬ ಪಂಡಿತ. 5. ಧನಿಯ, ಕೊತ್ತುಂಬರಿ. 6. ಸಾಧುವಾದ ವರ್ತಕ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಕಾ—ಕಾ. 7. ಉತ್ತಮ ಹೆಂಗಸು, ಸಾಧುವಾದ ಹೆಂಗಸು, ಸದಾಚಾರಸಂಪನ್ನಳಾದ ಹೆಂಗಸು. “ಧನಿಕಃ ಸಾಧುಧನಾಕಧವೇಷು ಧನಿಕಾ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” ವಿಶ್ವಂ | “ಧನಿಕಾ ಸಾಧುನಾರ್ಯಾ ನಾ ಧನಾಕೇ ತ್ರಿಷು ಸಾಧುಧನಿನೋಽಶ್ರ” ಮೇದಿಂ | 8. ಯುವತಿ, ಪ್ರಾಯದ ಹೆಂಗಸು. 9. ಪ್ರಿಯಂಗು ವೃಕ್ಷ, ಪ್ರೇಂಕಣ ಗಿಡ.

**ಧನಿನ್ ಧನಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಹಣವಂತ, ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ. ಧನಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಙಿನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪) | “ಗೃಹಮಧ್ಯ-ನಿಖಾತೇನ ಧನೇನ ಧನಿನೋ ಯದಿ | ಭವಾಮಃ ಕಿಂ ನ ತೇನೈವ ಧನೇನ ಧನಿನೋ ವಯಮ್” ಪञ्ಚತಂ ೨-೧೪೪ | “ಕ್ರುಲಜೇ ವೃತ್ತಸಂಪನ್ನೇ ಧರ್ಮಜೇ ಸತ್ಯವಾದಿನಿ | ಮಹಾಪಕ್ಷೇ ಧನಿನ್ಯಾರ್ಯೇ ನಿಕ್ಷೇಪಂ ನಿಕ್ಷಿಪೇದ್ವಃ” ಮನುಂ ೮-೧೭೯ | 2. ಸಾಲಕೊಡುವವನು, ಬಡ್ಡಿಗಾಗಿ ಧನಪ್ರಯೋಗಮಾಡುವವನು. “ಯಾದೃಶಾ ಧನಿಭಿಃ ಕಾರ್ಯಾ ವ್ಯವಹಾರೇಷು ಸಾಕ್ಷಿಣಃ | ತಾದೃಶಾನ್ ಸಂಪ್ರ-ಕ್ಷಾಮಿ ಯಥಾ ವಾಚ್ಯಮೃತಂ ಚ ತೈಃ” ಮನುಂ ೮-೬೧ |

**ಧನಿಷ್ಠ ಧನಿಷ್ಠ** (ವಿಂ) ಅಧಿಕ ಧನವುಳ್ಳವನು, ದೊಡ್ಡ ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ. ಅತಿಶಯೇನ ಧನಿ “ಙಿಷ್ಠನ್” (೪-೩-೪೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙಾಪ್” (೪-೧-೪) | —ಙಾ—ಙಾ.

**ಧನಿಷಾ ಧನಿಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧನಿಷ್ಠಾ ನಕ್ಷತ್ರ, ಅಶ್ವಿನಿ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಇಪ್ಪತ್ತಮೂರನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ. ಧನಿಷ್ಠಾ ನಕ್ಷತ್ರವು ವಸುದೇವತಾಕವಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ಇದರ ಮೊದಲು ಎರಡು ಪಾದಗಳು ಮಕರ ರಾಶಿಗೂ ಮುಂದಿನ ಎರಡು ಪಾದಗಳು ಕುಂಭರಾಶಿಗೂ ಸೇರಿದುವು. ಇದು ರಾಕ್ಷಸಗಣಕ್ಕೂ ಸಿಂಹಯೋನಿಗೂ ಸೇರಿದುದು. ಈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವರಿಗೆ ಜನ್ಮಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕುಜದಶೆ ಪ್ರಾರಂಭವಾಗುವುದು. ಈ ದಶೆಯ ಪ್ರಮಾಣ ಎಳು ವರ್ಷಗಳು. ಭಾನುವಾರದೊಡನೆ ಸೇರಿದ ಈ ನಕ್ಷತ್ರವು ಪ್ರಯಾಣಕ್ಕೆ ಪ್ರಶಸ್ತವಾದುದು.



ಧನೀಯಕ ಧನೀಯಕ (ನಂ) ಸಣ್ಣ ಜಾತಿಯ ಕೊತ್ತುಂಬರಿ ಬೀಜ, ಧನಿಯ. ಧನಾಯ ಹಿತಮ್ "ಛ:" (೪-೧-೪) । ಸಂಜಾಯಾ "ಕನ್" (೪-೩-೮೭) ।

ಧನೀಯಿಕಾ ಧನೀಯಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೊತ್ತುಂಬರಿಬೀಜ, ಧನಿಯ. "ಛತ್ರಾ ಕುಸ್ತುಂಬರೀ ಧಾನ್ಯಾ ಧನ್ಯಾ ಧಾನಾ ಧನೀಯಿಕಾ" ವೈಜಂ ।

ಧನು ಧನು (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಿಯಾಲವ್ಯಕ್ಷ, ಮೊರಟೆ ಗಿಡ. ಧನ (ಧಾನ್ಯ) "ಛ:" (೩ಂ ೧-೭) । 2. ಧನುಸ್ಸು, ಬಿಲ್ಲು. 3. ಧನೂರಾಶಿ. "ಧನು: ಪುಮಾನ್ ಪ್ರಿಯಾಲದ್ರೌ ರಾಶಿಭೇದೇ ಶರಾಸನೇ" ಮೇದಿಂ । (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ಮೌರ್ವಿ, ಬಿಲ್ಲಿನದಾರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 5. ಒಳ್ಳೆಯ ಹೆಂಗಸು. "ಧನು: ಸುಸ್ತ್ರೀಧನುಜ್ಯಾಸು" ವೈಜಂ । (ವಿಂ) 6. ಧನುರ್ಧರ, ಬಿಲ್ಲುಗಾರ.

ಧನುಗುಣ ಧನುಗುಣ (ಪುಂ) 1. ಮೌರ್ವಿ, ಬಿಲ್ಲಿನಹೆದೆ, ಬಿಲ್ಲನ್ನು ಎಳೆದುಕಟ್ಟುವ ತೊಗಲಿನ ಹಗ್ಗ. ಧನುಷೋ ಗುಣ: । 2. ಕುರಟೆ ಗಿಡ.

ಧನುಗ್ರಹ ಧನುಗ್ರಹ (ಪುಂ) 1. ಧನುರ್ಧರ, ಬಿಲ್ಲುಗಾರ. ಧನು: ಗೃಹ್ಣತಿ - ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) ಅನುಕ್ರಮಣೆ "ಅಚ್" (ವಾಂ ೩-೨-೯) । 2. ದೃಢರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಕವಚಿ ನಿಷಜ್ಞಿ ದಣ್ಣಿ ದಣ್ಣಧಾರೋ ಧನುಗ್ರಹ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೮-೧೦೩ । 3. ಎಂಟು ಅಂಗುಲಗಳ ಅಳತೆ. "ಧನುಗ್ರಹಶ್ಚ ದಿಷ್ಟಿಶ್ಚ ಸ್ವಾತಾಮಷ್ಟಾಙ್ಗುಲಾವುಭೌ" ವೈಜಂ । 4. ಧನುರ್ವಿದ್ಯೆ. ಧನುಷೋ ಗ್ರಹ:-ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) ಭಾವೇ "ಅಪ್" (೩-೩-೪೮) ।

ಧನುರ್ದಂಡ ಧನುರ್ದಂಡ (ಪುಂ) ನಾಲ್ಕು ಹಸ್ತಗಳ ಅಳತೆ, ನಾಲ್ಕು ಮೊಳೆಗಳ ಅಳತೆ. "ಚತುರ್ದಂತೋ ಧನುರ್ದಂಡ: ಧನು-ಧನ್ವಂತರಂ ಯುಗಮ್" ವೈಜಂ ।

ಧನುರ್ದ್ರಮ ಧನುರ್ದ್ರಮ (ಪುಂ) ಮಂಶವೃಕ್ಷ, ಬಿದಿರು ಮೆಳೆ. ಧನುಷ: ಸಾಧನಂ ದ್ರುಮ: । ಧನುಸ್ಸನ್ನು ಬಿದಿರಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ಧನುರ್ಧರ ಧನುರ್ಧರ (ಪುಂ) 1. ಬಿಲ್ಲುಗಾರ. ಧನುಸ್ಸನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವವನು. ಧನುರ್ಧರತಿ - ಧೃಢ್ (ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । ಧನುಷೋ ಧರ: । "ಸ ಪಾಟಲಾಪಾಂ ಗವಿ ತಸ್ಥಿವಾಸಂ ಧನುರ್ಧರ: ಕೇಸರಿಣಿ ದದಶ್" ರಘುಂ ೨-೨೯ । 2. ವಿಷ್ಣು. ಉಪಾಸಕಾನಾಂ ಕಣ್ತಕೋದ್ಧರಣಾಯ ಸ್ವಯಮೇವ ಧನು: ಕಾರ್ಮುಕಂ ಧರತಿ । "ಉಪಾಸಕಾನಾಂ ಭಕ್ತೇರ್ಯ: ಪ್ರತ್ಯುಹವಿನಿವೃತ್ತಯೇ । ಧನುಷೋ ಧಾರಕೋ ನಿಯಂ ಸ್ವಯಂ ಸ ಸ್ಯಾದ್ಧನುರ್ಧರ:" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ್ತಿ: । "ಧನುರ್ಧರೋ ಧನುರ್ವೇದೋ ದಣ್ಣೋ ದಮಯಿತಾಽದಮ:" ವಿಂ ಸಂ । 3. ದೃಢರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

ಧನುರ್ಧಾರಿನ್ ಧನುರ್ಧಾರಿನ್ (ಪುಂ) ಧನುರ್ಧರ, ಬಿಲ್ಲುಗಾರ. ಧನು: ಧರತಿ - ಧೃಢ್ (ಧಾರಣೆ) "ಞಿತಿ:" (೩-೨-೭೮) । "ಶೂರಶ್ಚ ರಣದಕ್ಷಶ್ಚ ಗಜಾಶ್ವರಥಕೋವಿದ: । ಧನುರ್ಧಾರಿ ಭವೇದ್ರಾಜ: ಸರ್ವಕಲೇಶಸಹ: ಶುಚಿ:" ।

ಧನುರ್ಮತಃ ಧನುರ್ಮತಃ (ಪುಂ) ಬಿಲ್ಲುಗಾರ. ಧನು: ಬಿಮತಿ - ಡು ಭೃಃ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ: ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬) । "ಮಹೋಜಸೋ ಮಾನಧನಾ ಧನಾಚಿತಾ ಧನುರ್ಮತ: ಸಂಯತಿ ಲಘ-ಕೀರ್ತಯ:" ಕಿರಾಂ ೧-೧೯ ।

ಧನುರ್ಮಧ್ಯ ಧನುರ್ಮಧ್ಯ (ನಂ) ಬಿಲ್ಲಿನ ಮಧ್ಯಭಾಗ. ಧನುಷೋ ಮಧ್ಯಮ್ । "ಲಸ್ತಕಸ್ತು ಧನುರ್ಮಧ್ಯಮ್" ಅಮಂ ।

ಧನುರ್ಮಾಸ ಧನುರ್ಮಾಸ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯನು ಧನೂರಾಶಿ ಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ ತಿಂಗಳು.

ಧನುರ್ವಿದ್ಯಾ ಧನುರ್ವಿದ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧನುಸ್ಸನ್ನು ಹಿಡಿದು ಬಾಣವನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸುವ ಮತ್ತು ಉಪಸಂಹರಿಸುವ ವಿಧ್ಯೆ. ಧನುಷೋ ವಿದ್ಯಾ ।

ಧನುರ್ವೃಕ್ಷ ಧನುರ್ವೃಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಧನುಸ್ಸನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ ವೃಕ್ಷ, ಬಿದಿರುಮೆಳೆ. ಧನುಷೋ ವೃಕ್ಷ: । 2. ಗೇರು ಮರ. 3. ಅರಳಿ ಮರ.

ಧನುರ್ವೇದ ಧನುರ್ವೇದ (ಪುಂ) 1. ಧನುರ್ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ತಿಳಿ ಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ, ಯಜುರ್ವೇದದ ಉಪವೇದ. ಧನುರ್ವಿ ವಿದಂತೇ ಜ್ಞಾಂತೇಜೇನ - ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) ಕರಂ "ಧಮ್" (೩-೩-೧೨೧) । "ಲಘ್ವ ಧನುರ್ವೇದಮನಙ್ಗವಿದ್ವಿಷಸ್ತ್ರಿ:ಸಪ್ತ-ಕೃತ್ವ: ಸಮರೇ ಮಹಿಭುಜಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೧೪-೩೬ । 2. ವಿಷ್ಣು. ಸುರನೇಂದ್ರಾದಯ: ಧನುರಾದಿಕಂ ತತ್ತಚ್ಚಾಸ್ತ್ರಪ್ರವರ್ತಕೇಽಸ್ಮಿನ್ ವಿನಂದಂತಿ ಲಭಂತೇ-ವಿದಲ್ (ಲಾಭೇ) ಅಧಿಂ "ಧಮ್" (೩-೩-೧೨೧) । "ಸುರೇಂದ್ರಾಽಥಾ ಧನು:ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಯಸ್ಮಾದ್ವಿನಂದಂತಿ ಸ ಶ್ರುತ: । ಧನುರ್ವೇದೋ ಹ್ಯಷ್ಟವರ್ಣೋ ಧನುರ್ವೇದಪ್ರದಾಯಕ:" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ್ತಿ: । "ಧನುರ್ಧರೋ ಧನುರ್ವೇದೋ ದಣ್ಣೋ ದಮಯಿತಾಽದಮ:" ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ) 3. ಧನುಸ್ಸಿನ ಪ್ರಯೋಗ ಮತ್ತು ಉಪಸಂಹಾರಗಳನ್ನು ತಿಳಿದವನು. ಧನುರ್ವಿ ಧನುಷ: ಪ್ರಯೋಗ-ಸಂಹಾರೋ ವೇತ್ತಿ-ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಅಞ್" (೩-೨-೧) ।

ಧನುರ್ವೇದಿನ್ ಧನುರ್ವೇದಿನ್ (ವಿಂ) ಧನುರ್ವೇದವನ್ನು ಅಭ್ಯಾಸಮಾಡಿದವನು.

ಧನುಷ್ಕರ ಧನುಷ್ಕರ (ವಿಂ) 1. ಧನುಸ್ಸನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. ಧನು: ಕರತಿ - ಡು ಕೃಢ್ (ಕರಣ) "ಛ:" (೩-೨-೨೧) । ಪತ್ವಮ್ (ವಾಂ ೩-೨-೨೧) । 2 ಕೈಯಲ್ಲಿ ಧನುಸ್ಸನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ. ಧನು: ಕರೇ ಯಸ್ಯ ।



ಧನುಷ್ಯಾಣಿ ಧನುಷ್ಯಾಣಿ (ವಿಂ) ಕೈಯಲ್ಲಿ ಬಿಲ್ಲನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ. ಧನು: ಪಾಣಿ ಯಸ್ಯ । “ಯುವಜಾನಿಧನುಷ್ಯಾಣಿಭೂಮಿಷಃ: ಸವಿಚಾರಿಣಃ” ಭट्टಿಂ ೪-೧೩ ।

ಧನುಷ್ಮತ್ ಧನುಷ್ಮತ್ (ವಿಂ) ಧನುರ್ಧರ, ಧನುಸ್ಸನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವವನು. ಧನು: ಧಾರ್ಯತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ “ಮನುಪ್” (೪-೨-೯೪) । “ಏಕ: ಪದಾತಿ: ಪುರುಷೋ ಧನುಷ್ಮಾನ್ ಯೋಜೇಕಮಾಯಾನಿ ವಿಯದ್ಗತಾನಿ” ಭट्टಿಂ ೧೨-೪೬ ।

ಧನುಸ್ ಧನುಸ್ (ಪುಂ) 1. ಧನುಸ್ಸು, ಬಿಲ್ಲು. ಧನತಿ-ಧನ (ಶಬ್ದ) “ಜಸಿ:” (೩ಂ ೨-೧೧೭) । “ಧನು: ಪ್ರಬಂಧ ಧ್ವನಿತಂ ಕ್ಷೇವ ಸಕೃದ್ವಿಕ್ರೂಷ್ಠಾ ವಿತತೇವ ಮೌರ್ವಿ” ಕಿರಾಂ ೧೬-೨೦ । “ದ್ವಿಧೇವ ಕುರ್ವನ್ ಧನುಷ: ಪ್ರಣಾದೇ:” ೧೬-೧೯ । “ಧನುಷ್ಯಮೋಘಂ ಸಮಧತ್ತ ಬಾಣಮ್” ಕುಮಾಂ ೩-೬೬ । 2. ಧನುಸ್ ರಾಶಿ, ಮೇಷಾದಿಯಾಗಿ ಒಂಬತ್ತನೆಯ ರಾಶಿ. (ಪುಂ) 3. ಪ್ರಿಯಾಲವೃಕ್ಷ, ಮೊರಟಿ ಗಿಡ. “ಧನು: ಪ್ರಿಯಾಲೇ ನಾ ನಸ್ತ್ರೀ ರಾಶಿಮೇದೇ ಶರಾಸನೇ । ಧನುರ್ಧರೇ ತ್ರಿಪು” ಮೇದಿಂ । 4. ನಾಲ್ಕು ಹಸ್ತಗಳ ಅಳತೆ, ನಾಲ್ಕು ಮೊಳಗಳ ಪ್ರಮಾಣ. “ಚತುರ್ಹಸ್ತೋ ಧನುರ್ಧರೋ ಧನುರ್ಧನ್ವಂತರಂ ಯುಗಮ್” ವೈಜಂ । (ವಿಂ) 5. ಧನುರ್ಧರ, ಬಿಲ್ಲನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವವನು.

ಧನೇಚ್ಛಾ ಧನೇಚ್ಛಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧನದ ಆಸೆ, ಹಣವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸುವ ಬಯಕೆ. ಧನಸ್ಯೇಚ್ಛಾ ।

ಧನೇಶ ಧನೇಶ, -ईश्वर -ಈಶ್ವರ (ಪುಂ) 1. ಕುಬೇರ, ಧನಾಧಿಪತಿ, ಐಶ್ವರ್ಯದ ಒಡೆಯ. ಧನಸ್ಯ ईश: ईश्वರೋ ವಾ । “ಅಕ್ಷಯಾ ರಾಜರಾಜಸ್ಯ ಧನೇಶಸ್ಯ ಮಹಾತ್ಮನ:” ಹರಿವಂ । 2. ವಿಷ್ಣು. ಕ್ಷಿಪ್ರಕಾರಿತಯಾ ಧನಸ್ಯ ತತ್ತದಿಷ್ಟವಿಭವಸ್ಯ ईश्वರ: ದಾನೇ ಆಶುಕಾರಿ । ಅಶು (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) ಆಶುಕರ್ಮಣಿ “ವರಟ್” ಉಪಧಾಯಾ ಇತ್ವಂ ಚ (೩ಂ ೪-೪೭) । “ತತ್ತದಿಷ್ಟ-ದ್ರವ್ಯದಾನೇ ಶೀಘ್ರಕಾರಿ ಧನೇಶ್ವರ:” ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: । “ವತ್ಸರೋ ವತ್ಸಲೋ ವತ್ಸೀ ರತ್ನಗರ್ಭೋ ಧನೇಶ್ವರ:” ವಿಂ ಸಂ । 3. ಲಗ್ನ ದಿಂದ ದ್ವಿತೀಯಸ್ಥಾನದ ಅಧಿಪತಿ, ಧನಸ್ಥಾನಾಧಿಪತಿ. 4. ಕೋಶಾಧ್ಯಕ್ಷ, ಬೊಕ್ಕಸದ ಅಧಿಕಾರಿ.

ಧನ್ಯ ಧನ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಪುಣ್ಯಶಾಲಿ, ಅದ್ಭುತವಂತ. ಧನಂ ಲಾಘಾ “ಯತ್” (೪-೪-೮೪) । “ಧನ್ಯಂ ಪುಣ್ಯವತಿ ತ್ರಿಪು” ಮೇದಿಂ । “ಧನ್ಯಾ ಕೇಯಂ ಸ್ಥಿತಾ ತೇ ಶಿರಸಿ ಶಶಿಕಲಾ ಕಿಷ್ಕು ನಾಮೇತದಸ್ಯಾ:” ಮುದ್ರಾಂ ೧-೧ । 2. ಹಣವಂತ, ಐಶ್ವರ್ಯ ವಂತ. “ಧನ್ಯೋ ಧನವತಿ ಸ್ಮೃತ:” ವಿಶ್ವಂ । 3. ಧನಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ, ಧನಲಾಭಕ್ಕೆ ನಿಮಿತ್ತವಾದ. ಧನಸ್ಯ ನಿಮಿತ್ತಮ್ “ಯತ್” (೪-೧-೩೯) । 4. ಧನಕ್ಕೆ ಹಿತವಾದ. ಧನಾಯ ಹಿತಮ್ “ಯತ್” (೪-೧-೪) । “ಧನ್ಯಂ ಯಶಸ್ಯ-

ಮಾಯುಷ್ಯಂ ಸ್ವರ್ಗ್ಯಂ ವಾತಿಥಿಪೂಜನಮ್” ಮನುಂ ೩-೧೦೬ । 5. ಕೃತಕೃತೃನಾದ, ಕೃತಾರ್ಥನಾದ, ಕರ್ತವ್ಯವನ್ನು ನೆರವೇರಿ ಸಿದ. 6. ಉದಾರ, ದೊಡ್ಡ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು, ಮಹಾತ್ಮ. “ಉದಾರೋದೀಗಂಧನ್ಯಾಸ್ತು ಮಹಾತ್ಮಾ ಸುಕೃತೀತಿ ಚ” ವೈಜಂ । 7. ಶ್ಲಾಘ್ಯವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. (ಪುಂ) 8. ವಿಷ್ಣು. ಧನಂ ಲಾಘಾ ದೇವಕೀಜನ್ಮಧನಲಾಭಾತ್-“ಯತ್” (೪-೪-೮೪) । “ಧನ್ಯಸ್ತು ದೇವಕೀಜನ್ಮಧನಲಾಭಾದಿತಿ ಸ್ಮೃತ:” ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: । “ಸುಮೇಧಾ ಮೇಧಜೋ ಧನ್ಯ: ಸತ್ಯಮೇಧಾ ಧರಾಧರ:” ವಿಂ ಸಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ)-ನ್ಯಾ-ನ್ಯಾ. 9. ಧಾತ್ರಿ, ಉಪಮಾತೆ, ದಾದಿ. 10. ನೆಲ್ಲಿಮರ. “ಧನ್ಯಾ ಧಾನ್ಯಾ-ಮಲಕಯೋ: ಸ್ಯಾತ್” ಮೇದಿಂ । 11. ಧನಿಯ, ಕೊತ್ತುಂಬರಿ ಬೀಜ. “ಈಶ್ವರಾ ಕುಸ್ತುಂಬರೀ ಧನ್ಯಾ ಧಾನಾ ಧಾನ್ಯಾ ಧನೀಯಿಕಾ” ವೈಜಂ । 12. ಧುವನ ಪತ್ನಿ.

ಧನ್ಯತಾ ಧನ್ಯತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅದ್ಭುತ, ಭಾಗ್ಯ. ಧನ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯) । 2. ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ ನಾಗಿರುವಿಕೆ. “ತವ:” (೪-೧-೧೧೯) । -ತ್ವಮ್ -ತ್ವಮ್.

ಧನ್ಯಮನ್ಯ ಧನ್ಯಮನ್ಯ (ವಿಂ) ತನ್ನನ್ನು ಧನ್ಯನನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದು ಕೊಂಡಿರುವವನು. ಧನ್ಯಮಾತ್ಮಾನಂ ಮನ್ಯತೇ-ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) “ಸಶ್” (೩-೨-೮೩) ।

ಧನ್ಯವಾಡ ಧನ್ಯವಾದ (ಪುಂ) 1. ಕೃತಜ್ಞತೆಯನ್ನು ಹೇಳುವುದು, ವಂದನಾರ್ಪಣೆ. 2. ಪ್ರಶಂಸೆ, ಶ್ಲಾಘನೆ, ಮೆಚ್ಚಿಗೆ. ಧನ್ಯಸ್ಯ ವಾದ: ।

ಧನ್ಯಾ ಧನ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) “ಧನ್ಯ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ

ಧನ್ಯಾಕ ಧನ್ಯಾಕ (ಪುಂ) 1. ಧನಿಯದ ಗಿಡ, ಕೊತ್ತುಂಬರಿ ಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಕೊತ್ತುಂಬರಿ ಬೀಜ. ಧನ (ಧಾನ್ಯ) “ಆಕ:” (೩ಂ ೪-೧೪) । ನಿಪಾಂ ।

ಧನ್ಯೇಯ ಧನ್ಯೇಯ (ನಂ) ಧನಿಯ, ಕೊತ್ತುಂಬರಿ ಬೀಜ. “ಸುಚರಿತ್ರಾ ಚ ಧನ್ಯಾಕಧನ್ಯೇಯಕತಕಾನಿ ಚ” ವೈಜಂ ।

ಧನ್ವದುರ್ಗ ಧನ್ವದುರ್ಗ (ನಂ) ನಾಲ್ಕು ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲೂ ಐದು ಯೋಜನಗಳ ದೂರ ಮರುಪ್ರದೇಶದಿಂದ ಆವೃತವಾದ ದೇಶ. ಧನ್ವನಾ ಆವೃತಂ ದುರ್ಗಮ್ ।

ಧನ್ವನ್ ಧನ್ವನ್ (ಪುಂ) 1. ಮರುಭೂಮಿ, ಮರಳುಕಾಡು. (ನಂ) 2. ಸ್ಥಳ, ಭೂಮಿ. 3. ಧನಸ್ಸು, ಬಿಲ್ಲು. ಧನ್ವತೇ-ಧವಿ (ಗತೌ) “ಕನಿನ್” (೩ಂ ೧-೧೪೪) । “ಧನ್ವಾ ತು ಮಹದೇಶೋ ನಾ ಕಲಿಬಂ ಚಾಪೇ ಸ್ಥಲೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ ।

ಧನ್ವಂತರ ಧನ್ವಂತರ (ನಂ) ನಾಲ್ಕು ಹಸ್ತಗಳ ಪರಿಮಾಣ, ನಾಲ್ಕು ಮೊಳಗಳ ಅಳತೆ. “ವಿತಸ್ತಿ: ಸ್ಯಾದತೋ ದ್ವಾಭ್ಯಾಂ



ಹಸ್ತಃ ಸ್ಯಾತ್ತಿಚ್ಚತುಷ್ಠಯಮ್ | ದಂಟೋ ಧನ್ವಂತರಂ ತಸ್ಯ ಸಹಸ್ರ-  
ದ್ವಿತೀಯೇನ ತು | ಕ್ರೋಶಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಧನ್ವಂತರಿ ಧನ್ವಂತರಿ(ಪುಂ) 1.** ದೇವತೆಗಳ ವೈದ್ಯ. ಅಮೃತ  
ಕೃಷ್ಣಿ ದೇವತೆಗಳೂ ದಾನವರೂ ಸೇರಿ ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ  
ವನ್ನು ಮಥನಮಾಡಿದಾಗ ಈತನು ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರದಿಂದ  
ಅಮೃತಕಲಶವನ್ನು ಹಿಡಿದುಕೊಂಡು ಅವಿರ್ಭವಿಸಿದನು.  
ಧನ್ವಂತರಿಯು ವಿಷ್ಣುವಿನ ಅಂಶಾವತಾರ. "ಅಥೋದಧೇ-  
ಮಂಥಮಾನಾತ್ ಕಾಶ್ಯಪೇರಮೃತಾಥಿಭಿಃ | ತದತಿಷ್ಠನ್ಮಹಾರಾಜ  
ಪುರುಷಃ ಪರಮಾದ್ಭುತಃ | ದೀರ್ಘಪೀವರದೋರ್ದಂಡಃ ಕಮ್ಬುಗ್ರಿವೋಽ-  
ರುಣೇಕ್ಷಣಃ | ಅಮೃತಾಪೂರ್ಣಕಲಶಂ ಬಿಭ್ರದ್ವಲಯಭೂಷಿತಃ | ಸ ವೈ  
ಭಗವತಃ ಸಾಕ್ಷಾದ್ವಿಷ್ಣೋರಂಶಾಶಸಂಬವಃ | ಧನ್ವಂತರೀರೀತಿ ಕ್ವಾತ  
ಆಯುರ್ವೇದಗಿಜ್ಯಭಾಕ್" ಭಾಗಂ ೮-೮ | ಧನ್ವಂತರಿಯು  
ಈ ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಆಯುರ್ವೇದವನ್ನು ಪ್ರಚಾರಕ್ಕೆ ತಂದನು.

ಬ್ರಹ್ಮನು ಆಯುರ್ವೇದವನ್ನು ಮೊದಲು ದಕ್ಷಪ್ರಜಾ  
ಪತಿಗೆ ಉಪದೇಶಿಸಿದನು. ದಕ್ಷಪ್ರಜಾಪತಿಯಿಂದ ಅಶ್ವಿನೀ  
ದೇವತೆಗಳು ಕಲಿತರು. ಅವರಿಂದ ಇಂದ್ರನೂ ಇಂದ್ರನಿಂದ  
ಧನ್ವಂತರಿಯೂ ಉಪದೇಶಹೊಂದಿ ಧನ್ವಂತರಿಯಿಂದ  
ಪ್ರಜೆಗಳ ಹಿತಕ್ಕಾಗಿ ಆಯುರ್ವೇದವು ಭೂಲೋಕದಲ್ಲಿ  
ಪ್ರಚಾರವಾಯಿತು. "ಬ್ರಹ್ಮಾ ಪ್ರೋವಾಚ ತತಃ ಪ್ರಜಾಪತಿ-  
ರಧಿಜಗೇ | ತಸ್ಮಾದಶ್ವಿನೌ, ಅಶ್ವಿಮ್ಯಾಮಿन्द्रಃ ಇಂದ್ರಾದಹಂ  
ಮಯಾತ್ವಿಹ ಪ್ರದೇಯಮಶ್ವಿಮ್ಯಃ ಪ್ರಜಾಹಿತಹೇತೋಃ | ಅಹಂ ಹಿ  
ಧನ್ವಂತರೀರಾದಿದೇವೋ ಜರಾರುಜಾಮೃತುಹರೋಽಮರಾಣಾಮ್ | ಶಲ್ಯಾಙ್ಗ-  
ಮಙ್ಗೈರಪರೈರಪೇತಂ ಪ್ರಾಪ್ತೋಽಸ್ಮಿ ಗಾಂ ಭೂಯ ಇಹೋಪದೇಷ್ತುಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ  
ಸೂತ್ರಂ ೧-೨೦, ೨೧ | 2. ವಿಕ್ರಮಾದಿತ್ಯನ ಅಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿದ್ದ  
ನವಮಂಟಪಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ ಕವಿ. "ಧನ್ವಂತರೀಕ್ಷಣಕಾಮರಸಿಹ-  
ಶತ್ಕುವೇತಾಲಭದ್ವಟಕರ್ಪರಕಾಲಿದಾಸಾಃ | ಕ್ವಾತೋ ವರಾಹ-  
ಮಿಹಿರೋ ನೃಪತೇಃಸಭಾಪಾಂ ರತ್ನಾನಿ ವೈ ವರಕವಿರ್ನವ ವಿಕ್ರಮಸ್ಯ" |

3. ಸೂರ್ಯ. "ಧನ್ವಂತರೀರೀತೇಽಪಿ ಚ" ನಾನಾರ್ಥಂ |

**ಧನ್ವಯಾಸ ಧನ್ವಯಾಸ (ಪುಂ) ತೀಟಕಸಂಧಿ.**

**ಧನ್ವಿನ್ ಧನ್ವಿನ್ (ವಿಂ) 1.** ಧನುರ್ಧರ, ಬಿಲ್ಲುಗಾರ. ಧನ್ವ  
ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೬) | "ಕುರ್ಯಾ ಹರಸ್ಯಾಪಿ  
ಪಿನಾಕಪಾಣಃ ಧೈರ್ಯಚ್ಯುತಿ ಕೇ ಮಮ ಧನ್ವಿನೋಽನ್ಯೇ" ಕುಮಾಂ  
೩-೧೦ | "ಧನ್ವಿನಸ್ತುರಗಾರುಡಾ ಗಜಾರೋಹಾನ್ ಶರೈಃ ಕ್ಷತಾನ್"  
ಕುಮಾಂ ೧೬-೩೭ | (ಪುಂ) 2. ಪಾರ್ಥ, ಅರ್ಜುನ.  
3. ವಿದಗ್ಧ, ನಿಪುಣ, ಬುದ್ಧಿವಂತ. 4. ಕಕುಭವೃಕ್ಷ,  
ಕೆಂಪುಮುತ್ತಿಮರ. "ಧನ್ವಿ ಧನ್ವರ್ಧರೇ ಪಾಥೇ ವಿದಗ್ಧೇ ಕಕುಭದ್ರಮೇ"  
ವಿಶ್ವಂ | 5. ವಿಷ್ಣು. ನಿರತಿಶಯವಾದ ಪೌರುಷಕ್ಕೆ  
ಅನುಗುಣವಾದ ಸಕಲ ದಿವ್ಯಾಯುಧಗಳನ್ನೂ ಶಾಖ್ಯ

ವನ್ನೂ ಧರಿಸಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ಇದ್ದನಿರತಿಶಯ-  
ಪೋಷಾನ್ತುರಪಂ ಸರ್ವದಿವ್ಯಾಯುಧೋಪಲಕ್ಷಕಂ ಶಾಙ್ಗೈ ಧನುಃ ನಿಯ-  
ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೬) | "ಶರಾ ನಾನಾವಿಧಾ-  
ಕಾರಾಃ ಧನುರಾಯತವಿಪ್ರಹಮ್ | ಅನುಬ್ರಜಂತಿ ಕಾಕುತ್ಸ್ಥಂ ಸರ್ವೇ  
ಪುರುಷವಿಪ್ರಹಾಃ" | "ಪೋಷಾನ್ತುಗುಣಂ ಶಾಙ್ಗೈ ಯಸ್ಯ ಧನ್ವಿ  
ಸ ಉಚ್ಯತೇ" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ | "ಇಶ್ವರೋ ವಿಕ್ರಮೀ ಧನ್ವಿ"  
ವಿಂ ಸಂ | 6. ಧನೂರಾಶಿ.

**ಧಮ ಧಮ (ವಿಂ) ಶಬ್ದ ಮಾಡುವ, ಸದ್ದುಮಾಡುವ. ಧಮತಿ—**  
ಧಮ (ಶಬ್ದ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |

**ಧಮಕ ಧಮಕ (ಪುಂ) ಕಮ್ಮಾರ, ಕಬ್ಬಿಣದ ಕೆಲಸಮಾಡು**  
ವವನು, ಗೆಜ್ಜುಗಾರ. ಧ್ಮಾ (ಶಬ್ದಾಗ್ನಿಸಂಯೋಗಯೋಃ) "ಕವುನ್"  
ಛಾತೋಃ ಧಮಾದೇಶಃ (ತಂ ೨-೩೬) | ಧಮಕಃ ಕರ್ಮಕಾರಃ  
ಸಿಂ ಕೌಂ |

**ಧಮನ ಧಮನ (ಪುಂ) 1.** ನಾಸಾರಂಧ್ರ, ಮೂಗಿನ ಹೊಳ್ಳೆ.  
ಧಮ (ಶಬ್ದ) "ಯುಚ್" (ತಂ ೨-೭೯) | "ಧಮನೋ  
ನಾಸಿಕಾಪುಟೋ" ವೈಜಂ | 2. ಲಾಳದಗಿಡ, ದೇವನಾಳ.  
"ನಡಸ್ತು ಧಮನಃ ಪೊಟಗಲಃ" ಅಮಂ | 3. ಅಗ್ನಿ. (ವಿಂ)  
4. ತಿದಿಯನ್ನು ಒತ್ತುವವನು. 5. ಕೂರ. "ಧಮನೋ  
ನಾಜಲೇ ಭಸ್ತ್ರಾಘ್ರಾಪಕಕ್ರೂಯೋಸ್ತ್ರಿಷು" ಮೇದಿಂ |

**ಧಮನಿ ಧಮನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1.** ನರ, ಸಿರೆ. ಧಮ (ಶಬ್ದ)  
"ಅನಿಃ" (ತಂ ೨-೧೦೨) | "ನಾಡೀ ತು ಧಮನಿಃ ಸಿರಾ"  
ಅಮಂ | 2. ಹರಿದ್ರೆ, ಅರಿಶಿನ. 3. ಕುತ್ತಿಗೆ, ಕತ್ತು.  
"ಧಮನೀ ತು ಹರಿದ್ರಾಪಾಂ ಕಂಧರಾಶಿರಯೋರಪಿ" ವಿಶ್ವಂ |  
4. ಹಟ್ಟಿವಿಲಾಸಿನ (ನಖ) ಎಂಬ ಗಂದಿಗರೊಂದು ವಸ್ತು.  
5. ನರಿಹೊನ್ನೆಗಿಡ. 6. ವಾಕ್ಯ, ಮಾತು. ವಾ "ಡೀಪ್"  
(ಗಂ ೪-೧-೪೪) | -ನೀ-ನೀ.

**ಧಮನೀಲ ಧಮನೀಲ (ವಿಂ) ಧಮನಿಗಳಿಂದಕೂಡಿದ, ನಾಡಿ**  
ಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. ಧಮನೀ "ಲಚ್" (೪-೨-೯೭) |

**ಧಮಿಲ್ಲ ಧಮಿಲ್ಲ (ಪುಂ) ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಿದ ಕೂದಲು,**  
ಗಂಟುಹಾಕಿದ ಕೂದಲು, ಮುಡಿಗಂಟು, ಹೂವನ್ನು  
ಮುಡಿದು ಅಲಂಕರಿಸಿದ ಗಂಟು. ಧಮ (ಶಬ್ದ) "ವಿಚ್"  
(೩-೨-೭೪) | ಮಿಲತಿ—ಮಿಲ (ಸಂಗಮ) "ಕಃ"  
(೩-೧-೧೩೪) | ಧಮ್ ಚಾಸೌ ಮಿಲಶ್ಚ | ಪೃಷೋಂ | "ಧಮಿಲ್ಲೇ  
ನವಮಲ್ಲಿಕಾಸಮುದಯೋ ಹಸ್ತೇ ಸಿತಾಮ್ಬೋರುಹಮ್" ಸಾಂ ೬೦ |

**ಧಯತ್ ಧಯತ್ (ವಿಂ) ಪಾನಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಹಾಲು**  
ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಕುಡಿಯುತ್ತಿರುವ. ಧೇ (ಪಾನ)  
"ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) |  
-ನೀ-ನೀ.



ಧಯನ ಧಯನ (ನಂ) ಪಾನಮಾಡುವುದು, ಹಾಲು ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಕುಡಿಯುವುದು. ಧೇ (ಪಾನ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಧರ ಧರ (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಧರತಿ-ಭೂ (ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ನಾಸುರೋಷ್ಯಂ ನ ವಾ ನಾಗೋ ಧರಸಂಸ್ಥೋ ನ ರಾಕ್ಷಸಃ" ಕಿರಾಂ ೧೫-೧೨। "ಧರಸ್ಯೋ-ದ್ಧರ್ತಾಸಿ ತ್ವಮಿತಿ ಸರ್ವತ್ರ ಜಗತಿ ಪ್ರತೀತಃ" ಮಾಘಂ ೫-೬೯। 2. ಕೂರ್ಮರಾಜ, ಕೂರ್ಮಾವತಾರವನ್ನೆತ್ತಿದ ಮಹಾವಿಷ್ಣು. 3. ಅಷ್ಟವಸುಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. 4. ಹತ್ತಿ. "ಧರೋ ಗಿರೌ। ಕಾರ್ಪಾಸತೂಲಕೇ ಕೂರ್ಮರಾಜೇ ವಸ್ವಂತರೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ। (ವಿಂ) 5. ಹೊತ್ತಿರುವ, ಧರಿಸಿರುವ. [ಸಮಾಸದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ] ಚಕ್ರಧರಃ, ಗದಾಧರಃ, ಮಹಿಧರಃ ಇತ್ಯಾದಿ. "ರಥಚರಣಧರಾಙ್ಗನಾಕರಾಜ್ಯವ್ಯತಿಕರಸಂಪದ್ವಿಪಾತ್ತಸೌಮನಸ್ಯಾಃ" ಮಾಘಂ ೭-೨೮।

ಧರಣ ಧರಣ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಲೋಕ, ಜಗತ್ತು. 3. ಸ್ತನ. 4. ಧಾನ್ಯ. 5. ಸರ್ಪರಾಜ. ಭೂ (ಧಾರಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಧರಣೋಽಹಿಪತೌ ಲೋಕೇ ಸ್ತನೇ ಧಾನ್ಯೇ ದಿವಾಕರೇ" ಹೇಮಂ। 6. ಸೇತುವೆ. "ಧರಣಃ ಪಿಪ್ಪಿಲಿ: ಸೇತುಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। (ನಂ) 7. ಧರಿಸುವುದು, ಹೊತ್ತಿರುವುದು. ಭೂ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಯಜ್ಞಾಙ್ಗಯೋನಿತ್ವಮವೇಕ್ಷ್ಯ ಯಸ್ಯ ಸಾರಂ ಧರಿಸ್ತ್ರಿಧರಣಕ್ಷಮಂ ಚ" ಕುಮಾರಂ ೧-೧೭। 8. ಹದಿನಾರು ಮಾಷಗಳ ತೂಕ. "ರೂಪ್ಯಮಾಷೌ ದ್ವಿಗುಣಜೌ ವಾ ಧರಣಂ ಷೋಡಶೈವ ತೇ" ವೈಜಂ। 9. ಹತ್ತು ಪಲಗಳ ತೂಕ. "ಪಲಂ ಸುವರ್ಣಾಶ್ಚಿತ್ತವಾರಃ ಪಲಾನಿ ಧರಣಂ ದಶ" ಮನುಂ ೮-೧೩೫। (ವಿಂ) 10. ಹೊತ್ತಿರುವ, ಧರಿಸಿರುವ.

ಧರಣಿ ಧರಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭೂಮಿ, ಪೃಥಿವಿ. ಭೂ (ಧಾರಣೆ) "ಅನಿಃ" (೩ಂ ೨-೧೦೨)। "ನಾಸುರೋಷ್ಯಂ ನ ವಾ ನಾಗಃ ಧರಸಂಸ್ಥೋ ನ ರಾಕ್ಷಸಃ। ನಾ ಸುರೋಷ್ಯಂ ನವಾಭೋಗೋ ಧರಣಿಸ್ಥೋ ಹಿ ರಾಜಸಃ" ಕಿರಾಂ ೧೫-೧೨। 2. ಧರಣಿದಾಸವಿರಚಿತವಾದ "ಧರಣಿ" ಎಂಬ ಒಂದು ಕೋಶ.

ಧರಣಿಜ ಧರಣಿಜ, -ಜಾತ -ಜಾತ (ಪುಂ) 1. ಅಂಗಾರಕ ಗ್ರಹ. 2. ನರಕಾಸುರ. ಧರಣಿಜಯಿತೆ ಜಾತೋ ವಾ। 3. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. (ವಿಂ) 4. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಧರಣ್ಯಾಂ ಜಾಯತೇ ಜಾತೋ ವಾ। (ಸ್ತ್ರೀಂ)-ಜಾ -ಜಾ, -ಜಾತಾ -ಜಾತಾ. 1. ಸೀತಾದೇವಿ. 2. ಗೋದಾದೇವಿ.

ಧರಣಿಧರ ಧರಣಿಧರ (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಧರಣ್ಯಾ ಧರಃ। 2. ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ. 3. ವಿಷ್ಣು. 4. ಆದಿಶೇಷ.

ಧರಣಿಭೂತ್ ಧರಣಿಭೂತ್ (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. 2. ಆದಿಶೇಷ. 3. ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ. 4. ವಿಷ್ಣು. ಧರಣಿ ಬಿಭರ್ತಿ-ಓ ಭೂ (ಧಾರಣಾಪೂರ್ಣಯೋಃ) "ವಿವಿ" (೩-೨-೭೬)।

ಧರಣಿರೂಹ ಧರಣಿರೂಹ, -ರೂಹ -ರೂಹ (ಪುಂ) ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಧರಣ್ಯಾಂ ರೋಹತಿ - ರೂಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ವಿವಿ" (೩-೨-೭೬) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫) ವಾ।

ಧರಣಿ ಧರಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೃಥಿವಿ, ಭೂಮಿ. ಭೂ (ಧಾರಣೆ) "ಅನಿಃ" (೩ಂ ೨-೧೦೨)। ವಾ "ಡೀಪ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫)। ಪಕ್ಷೆ ಧರಣಿಃ ಧರಣಿಃ.

ಧರಣಿಜ ಧರಣಿಜ, -ಜಾತ -ಜಾತ, -ತನಯ -ತನಯ, -ಸುತ -ಸುತ, -ಸುನು -ಸುನು (ಪುಂ) 1. ಅಂಗಾರಕ ಗ್ರಹ. 2. ನರಕಾಸುರ. ಧರಣ್ಯಾಂ ಜಾಯತೇ ಜಾತೋ ವಾ, ಧರಣ್ಯಾಃ ತನಯಃ ಸುತಃ ಸುನುರ್ವಾ।

ಧರಣಿತಲ ಧರಣಿತಲ (ನಂ) ಭೂಮಿಯ ಮೇಲುಭಾಗ, ಭೂಮಿಯ ಮೇಲುಮೈ. ಧರಣ್ಯಾಸ್ತಲಮ್।

ಧರಣಿಧರ ಧರಣಿಧರ (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಧರತಿ-ಭೂ (ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಧರಣ್ಯಾ ಧರಃ। 2. ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ. 3. ಆದಿಶೇಷ. 4. ವಿಷ್ಣು. ಧರಣಿಂ ಧಾರಕಾಂತರೋಪಲಕ್ಷಣಿಂ ಭುವಂ ಧರತಿ। ಧರಣ್ಯಾ ಧರಃ। "ಭೂತಧಾತ್ಯಾಶ್ಚ ಧರಣೋರ್ಧರಣಾತ್ ಧರಣಿಧರಃ" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ। "ಅಹಸ್ಸಂವರ್ತಕೋ ವಹ್ನಿರನಿಲೋ ಧರಣಿಧರಃ" ವಿಂ ಸಂ।

ಧರಣಿಧರೇಂದ್ರ ಧರಣಿಧರೇಂದ್ರ (ಪುಂ) ಪರ್ವತರಾಜನಾದ ಹಿಮವಂತ. ಧರಣಿಧರಾಣಾಮಿन्द्रಃ। "ಧರಣಿಧರೇಂದ್ರ-ದುಹಿತುರ್ಮಯಾದಸೌ ವಿಷಮೇಕ್ಷಣಃ ಸ್ಫುಟಮಮೂರ್ತಂ ಪಶ್ಯತಿ" ಮಾಘಂ ೧೩-೩೯।

ಧರಣಿಮಂಡಲ ಧರಣಿಮಂಡಲ (ನಂ) ಭೂಮಂಡಲ, ಗೋಳಾಕಾರವಾದ ಭೂಮಿ. ಧರಣ್ಯಾ ಮಂಡಲಮ್।

ಧರಣಿರೂಹ ಧರಣಿರೂಹ (ಪುಂ) ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಧರಣ್ಯಾಂ ರೋಹತಿ - ರೂಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫)।

ಧರಣಿಶ್ವರ ಧರಣಿಶ್ವರ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. 2. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 3. ವಿಷ್ಣು. ಧರಣ್ಯಾ ಇಶ್ವರಃ।

ಧರಾ ಧರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭೂಮಿ, ಪೃಥಿವಿ. ಧರತಿ ವಿಶ್ವಮ್-ಭೂ (ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ನಿಪತಂತ-ಮಿವೋಣ್ಣರಶ್ಮಿಮೃಗ್ಯಾ ವಲಯಿಭೂತತರಂ ಧರಾಂ ಚ ಮೇನೆ" ಕಿರಾಂ ೧೩-೩೦। 2. ಹೆಂಗಸರ ಗರ್ಭಾಶಯ, ಬಸುರು ಜೀಲ, ಗರ್ಭಕೋಶ. 3. ಮೇದಸ್ಸು, ಕೊಬ್ಬು. "ಧರಾ ವಿಶ್ವಮ್ಭರಾಃ ಚ ಸ್ತ್ರೀ ಗರ್ಭಾಶಯಮೇದಸೋಃ" ಮೇದಿಂ। 4. ಸಿರಿ.



ನಾಡಿ. 5. ದಾನಮಾಡಲು ಇಟ್ಟಿರುವ ಸುವರ್ಣದ ರಾಶಿ.

6. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. "ಛತ್ರಾ ಛಿನ್ನರಹಾ ಧರಾ" ವೈಜಂ.

ಧರಾಕದಂಬ ಧರಾಕದಂಬ (ಪುಂ) ನೀಪವೃಕ್ಷ, ಈಚಲು ಮರ. ಧರಾಜಾತ: ಕದಂಬ:। "ನೀಪೋ ಧರಾಕದಂಬ: ಸ್ಯಾತ್" ಹಾರಾಂ।

ಧರಾತ್ಮಜ ಧರಾತ್ಮಜ, -ತನಯ -ತನಯ, -ಸುತ -ಸುತ, -ಸುನು -ಸುನು (ಪುಂ) 1. ಅಂಗಾರಕ, ಕಂಜಗೃಹ. 2. ನರಕಾಸುರ. ಧರಾಯಾ ಆತ್ಮಜ: ತನಯ: ಸುತ: ಸುನುರ್ವಾ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಆತ್ಮಜಾ -ಅತ್ಮಜಾ, -ತನಯಾ -ತನಯಾ, -ಸುತಾ -ಸುತಾ. 1. ಸೀತಾದೇವಿ. 2. ಗೋದಾದೇವಿ.

ಧರಾಧರ ಧರಾಧರ(ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. 2. ಅದಿಶೇಷ. 3. ಕೂರ್ಮರಾಜ. ಧರಾಯಾ ಧರ:। 4. ವಿಷ್ಣು. ಗೋವರ್ಧನಸ್ಯ ಪರಿತ್ರಿಣಾಯ ಧರಂ ಗೋವರ್ಧನಗಿರಿಂ ಧೇಯದಾಧರತಿ। "ಧರಂ ಗೋವರ್ಧನಂ ಶೀಘ್ರಂ ಧೃತವಾನ್ ಸ ಧರಾಧರ:" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ:। "ಸುಮೇಧಾ ಮೇಧಜೋ ಧನ್ಯ: ಸತ್ಯಮೇಧಾ ಧರಾಧರ:" ವಿಂ ಸಂ।

ಧರಾಧಿನಾಥ ಧರಾಧಿನಾಥ, -ಅಧಿಪ -ಅಧಿಪ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಧರಾಯಾ ಅಧಿನಾಥ: ಅಧಿಪೋ ವಾ।

ಧರಾಮರ ಧರಾಮರ, -ಸುರ -ಸುರ (ಪುಂ) ಭೂದೇವ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಧರಾಯಾಮರ: ಸುರ ಇವ ವಾ।

ಧರಾಶಯ ಧರಾಶಯ (ವಿಂ) ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಮಲಗಿರುವ. ಧರಾಯಾಂ ಶೇತೆ-ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೆ) "ಅಚ್" (3-2-14)। "ಅಪ್ರಯತ್ನ: ಸುಖಾರ್ಥೇ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ ಧರಾಶಯ:" ಮನುಂ 6-26।

ಧರಿಸ್ತ್ರೀ ಧರಿಸ್ತ್ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೂಮಿ, ಪ್ರಥಿವಿ. ಧೃನ್ (ಧಾರಣೆ) "ಇತ್ರ:" (3-4-13)। ಗೋರಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-41)। "ಲಮ್ಯಾ ಧರಿಸ್ತ್ರೀ ತವ ವಿಕ್ರಮೇಣ ಜ್ಯಾಘಾಂಶ್ಚ ವೀರ್ಯಸ್ತ್ರಬಲೈ-ವಿಪಕ್ಷ:" ಕಿರಾಂ 3-17। "ಗುರುರ್ಧರಿಸ್ತ್ರೀ ಕ್ರಿಯತೇತರಾಂ ತ್ವಯಾ" ಮಾಘಂ 1-36।

ಧರಿಸ್ಮನ್ ಧರಿಸ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ತೊಕದ ಅಳತೆ, ತೊಕದ ಪರಿಮಾಣ. ಧೃನ್ (ಧಾರಣೆ) "ಇಮನಿಕ್" (3-4-147)। 2. ರೂಪ, ಆಕಾರ. ಧರಿಸ್ಮಾ ರೂಪಂ ಸಿಂ ಕೌಂ। "ತಥಾ ಧರಿಸ್ಮಮೇಯಾನಾಂ ಶತಾದಮ್ಯಧಿಕೇ ವಧ:" ಮನುಂ 6-321।

ಧರಣ ಧರಣ (ಪುಂ) 1. ಸ್ವರ್ಗಲೋಕ. 2. ಜಲ, ನೀರು. ಧೃನ್ (ಧಾರಣೆ) "ಉನನ್" ಬಾಹುಂ। 3. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 4. ಸೂರ್ಯ. 5. ಲೋಕ. 6. ಸ್ತನ. 7. ಬ್ರಹ್ಮ. (ವಿಂ) 8. ಸಮೃದ್ಧವಾದ, ಇಷ್ಟವಾದ. "ಧರಣ: ಸಮ್ಮತೇ ನೇರೇ ಸ್ವಲೋಕೇ ಪರಮೇಷ್ಠಿನಿ" ಮೇದಿಂ। "ಧರಣಾ: ಸ್ತನಧಾತು-ಲೋಕಾರ್ಕಿ:" ವೈಜಂ।

ಧರ್ಮ ಧರ್ಮ (ವಿಂ) ಧರಿಸಿರುವ, ಹೊತ್ತಿರುವ. ಕು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ತುನ್" (3-1-133)। "ಯತ: ಸ ಭರ್ತಾ ಜಗತಾಂ ಜಗಾಮ ಧರ್ಮಾ ಧರಿಸ್ತ್ಯಾ: ಫಣಿನಾ ತತೋಽಧ:" ಮಾಘಂ 3-24। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-4)। -ತ್ರಿ-ತ್ರಿಫಲ.

ಧರ್ಮ ಧರ್ಮ (ನಂ) 1. ಗೃಹ. ಮನೆ. ಧೃನ್ (ಧಾರಣೆ) "ತ್ರ:" (3-4-146)। ಧರ್ಮ ಗೃಹಂ ಸಿಂ ಕೌಂ। 2. ಯಜ್ಞ. 3. ಧರ್ಮ. (ವಿಂ) 4. ಧರಿಸಿರುವ, ಹೊತ್ತಿರುವ.

ಧರ್ಮ ಧರ್ಮ (ಪುಂ) 1. ವಿಶ್ವಧರ್ಮ, ಜಗತ್ತಿನ ಸ್ಥಿತಿ ಮತ್ತು ಅದರ ಅಭ್ಯುದಯ ಮತ್ತು ನ್ಯಾಯಸಮ್ಮತವ್ಯವಹಾರಗಳು ಯಾವುದನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿರುವುದೋ ಅಂತಹ ಒಂದು ಗುಣ. ಧಿಯತೇಜೇನ ಲೋಕ:-ಧರತಿ ವಿಶ್ವಂ ವಾ ಧೃನ್ (ಧಾರಣೆ) "ಮನ್" (3-1-137)। "ಧಾರಣಾಧರ್ಮ ಇತ್ಯಾಹು:" ಭಾಂ। ಜಗತ್ತಿನ ಅಭ್ಯುದಯ ಮತ್ತು ನೀಶ್ರೇಯಸ್ಸಿಗಾಗಿ ಕಾರಣಭೂತವಾದ ಗುಣವೇ ಧರ್ಮವು. "ಧರ್ಮ: ಶ್ರೇಯ: ಸಮುದ್ರಿಷ್ಟಂ ಶ್ರೇಯೋಽಭ್ಯುದಯಸಾಧನಮ್"। "ಧರ್ಮೋ ವಿಶ್ವಸ್ಯ ಜಗತ: ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ಲೋಕೇ ಧರ್ಮಿಣಂ ಪ್ರಜಾ ಉಪಸರ್ಪಂತಿ" "ಯತೋಽಭ್ಯುದಯನಿ:ಶ್ರೇಯಸಸಿದ್ಧಿ: ಸ ಧರ್ಮ:" ವೈಂ ಸುಂ। ಜಗತ್ತಿನ ಶ್ರೇಯಸ್ಸಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ ಈ ಧರ್ಮವು ಮನುಷ್ಯಸಾಮಾನ್ಯನಲ್ಲೂ ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಇರಬೇಕು. ಇದು ಹತ್ತು ವಿಧ. "ಧೃತಿ: ಕ್ಷಮಾ ದಮೋಽಸ್ತೇಯಂ ಶೌಚಮಿन्द्रಿಯನಿಗ್ರಹ:। ಧೌರ್ವಿಧ್ಯಾ ಸತ್ಯಮಕ್ರೋಧೋ ದಶಕಂ ಧರ್ಮಲಕ್ಷಣಮ್"। ಧರ್ಮ ಸ್ವರೂಪ: ಸದಾಚಾರಸಂಪನ್ನರಾದ ಹಿರಿಯರು ಸರಿ ಎಂದು ಪ್ರಶಂಸೆಮಾಡುವ ಮನುಷ್ಯನ ಆಚಾರವೇ ಧರ್ಮ. "ಯಮಾರ್ಯಾ: ಕ್ರಿಯಮಾಣಂ ಹಿ ಶಂಸಂತ್ಯಾಗಮವೇದಿನ:। ಸ ಧರ್ಮ: ಯಂ ವಿಗರ್ಹಂತಿ ತಮಧರ್ಮಂ ಪ್ರಚಕ್ಷತೇ"। ಈ ಧರ್ಮವು ಯುಗ ಪ್ರಮಾಣಗಳನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿರುವುದು. "ಅನ್ಯೇ ಕೃತಯುಗೇ ಧರ್ಮಾಸ್ತ್ರಿತಾಯಾಂ ದ್ವಾಪರೇಽಪರೇ। ಅನ್ಯೇ ಕಲಿಯುಗೇ ನೃಣಾಂ ಯುಗಹ್ಲಾಸಾನುಸಾರತ:" ಮನುಂ 1-44। ವ್ಯವಹಾರ ನಿಬಂಧನೆಗಳಿಗನುಗುಣವಾಗಿ ಮನುಷ್ಯನು ತನ್ನ ಆಚರಣೆಗಳಿಂದ ಈ ಧರ್ಮವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುತ್ತ ಬಂದರೆ ಅದೂ ಮನುಷ್ಯನನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವುದು. "ಧರ್ಮೋ ರಕ್ಷತಿ ರಕ್ಷಿತ:"। 2. ಆಚಾರ, ಸಂಪ್ರದಾಯ, ವಾಡಿಕೆಯಾಗಿ ಬಂದ ಮತ ಸಂಬಂಧವಾದ ಅನುಷ್ಠಾನ. "ಆಚಾರ: ಪ್ರಥಮೋ ಧರ್ಮ: ಧರ್ಮಸ್ಯ ಪ್ರಭುರಚ್ಯುತ:"। "ಆಚಾರ: ಪ್ರಥಮೋ ಧರ್ಮ: ಶ್ರುತಯುಕ್ತ: ಸ್ಮಾರ್ತೇವ ಚ। ತಸ್ಮಾದಸ್ಮಿನ್ ಸದಾ ಯುಕ್ತ: ನಿಯಮಂ ಸ್ಯಾದಾತ್ಮ-ವಾನ್ ದ್ವಿಜ:" ಮನುಂ 1-108। 3. ಮೋಕ್ಷಧರ್ಮ, ಮೋಕ್ಷಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದ ಅನುಷ್ಠಾನ, -ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ. "ನ ಜಾತಂ ತಾತ ಯತಸ್ಯ ಪೌರ್ವಪ್ರಿಯಮಮುಷ್ಯ ತೇ। ಶಾಸಿತು



येन मां धर्मं मुनिभिस्तुल्यमिच्छसि" किरा० ११-४२ ।  
4. ವೇದವಿಹಿತವಾದ ಕರ್ಮಾಚರಣೆ, ವೈದಿಕ ಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನ, ಯಾಗಾದಿ ಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನ. "ಶ್ರುತಿ: ಸ್ತ್ರೀ ವೇದ ಆಮ್ನಾಯ: ತ್ರಯಿಧರ್ಮಸ್ತು ತದ್ವಿಧಿ:" ಅಮ० । "ಚೋದನಾ-  
ಲಕ್ಷಣೋಽಯಂ ಧರ್ಮ:" । "ವಿಹಿತಕ್ರಿಯಾ ಸಾಧ್ಯೋ ಧರ್ಮ:" । "ಪ್ರತಿಪದ್ಧಕ್ರಿಯಾಸಾಧ್ಯ: ಸ ಗುಣೋಽಧರ್ಮ ಉಂಸೋ ಗುಣೋ ಮತ: । ಪ್ರತಿಪದ್ಧಕ್ರಿಯಾಸಾಧ್ಯ: ಸ ಗುಣೋಽಧರ್ಮ ಉಂಸೋ ಗುಣೋ ಮತ: । ಪ್ರತಿಪದ್ಧಕ್ರಿಯಾಸಾಧ್ಯ: ಸ ಗುಣೋಽಧರ್ಮ ಉಂಸೋ ಗುಣೋ ಮತ: ।  
5. ಮನುಷ್ಯನು ಇಹಪರಸೌಖ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯ, ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ. ಇದು ಚತುರ್ವಿಧ ಪುರುಷಾರ್ಥಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಇದು ವೇದದಲ್ಲಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. ಈ ಧರ್ಮವು ಪ್ರವೃತ್ತ ಮತ್ತು ನಿವೃತ್ತ ಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಅಭ್ಯುದಯಕ್ಕೆ ಸಾಧನಭೂತ ವಾದುದು ಪ್ರವೃತ್ತಧರ್ಮ. ಮೋಕ್ಷಸಾಧನಭೂತ ವಾದುದು ನಿವೃತ್ತಧರ್ಮ. ಪ್ರವೃತ್ತಧರ್ಮವು ಸಾತ್ವಿಕ ರಾಜಸ ಮತ್ತು ತಾಮಸ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. "ಪ್ರವೃತ್ತಂ ಚ ನಿವೃತ್ತಂ ಚ ದ್ವಿವಿಧಂ ಕರ್ಮ ವೈದಿಕಮ್ । ಸರ್ಗಾದೌ ಸೃಜತಾ ಸೃಷ್ಟಿಂ ಬ್ರಹ್ಮಣಾ ವೇದರೂಪಿಣಾ । ಪ್ರವೃತ್ತಸಂಜ್ಞಕೋ ಧರ್ಮೋ ಗುಣತ-  
ಸ್ತ್ರಿವಿಧೋ ಭವೇತ್ । ಸಾತ್ವಿಕೋ ರಾಜಸಃಕೇವ ತಾಮಸಃಕೇತಿ ಭೇದತ:" ಭಗ್ವ: । [ಈ ಭೇದಗಳಿಗೆ "ಕರ್ಮನ್" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ಆಸ್ತಿಕ್ಯಶುದ್ಧಮವತ: ಪ್ರಿಯಧರ್ಮ ಧರ್ಮ ಧರ್ಮಾತ್ಮಜಸ್ಯ ವಿಹಿತಾಗಸಿ ಶಾಶ್ವತಂ" ಕಿರಾ० १८-४३ । 6. ಅವಶ್ಯ ಕರ್ತವ್ಯದ ಆಚರಣೆ. ಈ ಧರ್ಮವು (1) ವರ್ಣಧರ್ಮ:, (2) ಆಶ್ರಮಧರ್ಮ:, (3) ವರ್ಣಾಶ್ರಮಧರ್ಮ:, (4) ಗೌಣಧರ್ಮ: ಮತ್ತು (5) ನೈಮಿತ್ತಿಕಧರ್ಮ: ಎಂದು ಐದು ವಿಧ.

(1) ವರ್ಣಧರ್ಮವನ್ನು ಮಾತ್ರ ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಹೇಳುವ ಧರ್ಮವು ವರ್ಣಧರ್ಮ. ದ್ವಿಜರಿಗೆ ವಿಹಿತವಾದ ಉಪನಯನವು ವರ್ಣಧರ್ಮ. "ವರ್ಣತವಮೇಕಮಾಶ್ರಿತಯ ಯೋ ಧರ್ಮ: ಸಂಪ್ರವರ್ತತೇ । ವರ್ಣಧರ್ಮ: ಸ ಉಕ್ತಸ್ತು ಯಥೋಪನಯನಂ ನೃಪ" ॥

(2) ಅಶ್ರಮವನ್ನು ಮಾತ್ರ ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಹೇಳುವ ಧರ್ಮವು ಅಶ್ರಮಧರ್ಮ. ದಂಡಧಾರಣೆ ಭಿಕ್ಷಾಚರಣೆ ಇತ್ಯಾದಿ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾಶ್ರಮಧರ್ಮ. ಪಂಚಯಜ್ಞಗಳು ಅತಿಥಿಸತ್ಕಾರ ದಾನ ಯಜ್ಞ ಯಾಗಾದಿಗಳು ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮಧರ್ಮ. ತಪಸ್ಸು ವಾನಪ್ರಸ್ಥಾಶ್ರಮಧರ್ಮ. ಜ್ಞಾನಸಂಪಾದನೆಯೂ ಮೋಕ್ಷೋಪಾಯವೂ ಸಂನ್ಯಾಸಾಶ್ರಮಕ್ಕೆ ವಿಹಿತವಾದ ಧರ್ಮಗಳು. "ಆಶ್ರಮಂ ಚ ಸಮಾಶ್ರಿತಯ ಯೋ ಧರ್ಮ: ಸಂಪ್ರವರ್ತತೇ । ಸ ಖಲ್ವಾಶ್ರಮಧರ್ಮಸ್ತು ಮಿಕ್ಷಾದೃಷಾಡಿಕೋ ಯಥಾ" ।

(3) ವರ್ಣ ಮತ್ತು ಅಶ್ರಮಗಳನ್ನು ಕುರಿತು ಹೇಳುವ ಧರ್ಮವು ವರ್ಣಾಶ್ರಮಧರ್ಮ. "ವರ್ಣತವಮಾಶ್ರಮತ್ವಂ

ವ ಯೋಧಿಕೃತ್ಯ ಪ್ರವರ್ತತೇ । ಸ ವರ್ಣಾಶ್ರಮಧರ್ಮಸ್ತು ಸ್ಯಾನ್ಮೌಞ್ಜಿ-  
ಮೇಖಲಾ ಯಥಾ" ।

(4) ಗುಣವನ್ನು ಕುರಿತು ಹೇಳುವ ಧರ್ಮವು ಗೌಣ ಧರ್ಮ. ಪಟ್ಟಾಭಿಷಿಕ್ತನಾದ ರಾಜನಿಗೆ ಪ್ರಜಾಪರಿಪಾಲನೆ ಯಜ್ಞ ಯಾಗಾದಿ ಸಂರಕ್ಷಣೆ ಇತ್ಯಾದಿ. "ಯೋ ಗುಣೇನ ಪ್ರವರ್ತತೇ ಗೌಣಧರ್ಮ: ಸ ಉಚ್ಯತೇ । ಯಥಾ ಮೂರ್ಖಾಭಿಷಿಕ್ತಸ್ಯ ಪ್ರಜಾಣಾಂ ಪರಿಪಾಲನಮ್" । "ಪಟ್ಟಾಂಶವೃತ್ತೇರಪಿ ಧರ್ಮ ಏವ:" ಶಾಕು० ।

(5) ಯಾವುದಾದರೊಂದು ನಿಮಿತ್ತದಿಂದ ಉಕ್ತವಾದ ಧರ್ಮವು ನೈಮಿತ್ತಿಕಧರ್ಮ. ಜ್ಞಾನಾಜ್ಞಾನಕೃತವಾದ ಪಾಪಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ ಮೊದಲಾದುದು. "ನಿಮಿತ್ತಮೇಕಮಾಶ್ರಿತಯ ಯೋ ಧರ್ಮ: ಸಂಪ್ರವರ್ತತೇ । ನೈಮಿತ್ತಿಕ: ಸ ವಿಜ್ಞೇಯ: ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತವಿಧಿರ್ಯಥಾ" । 7. ಧರ್ಮ ಪುರುಷ, ಧರ್ಮಾಧಿಷ್ಠಾತ್ಯದೇವತೆ, ಧರ್ಮದೇವತೆ. ಧರ್ಮಪುರುಷನ ಶ್ರುತಿ: ಚತುರ್ಮುಖನು ತಾನು ಸೃಷ್ಟಿಸಲಿರುವ ಪ್ರಜೆಗಳ ಪಾಲನೆಯ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಚಿಂತಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಅವನ ದೇಹದ ಬಲಭಾಗದಿಂದ ದಿವ್ಯಪುಷ್ಪ ಮಾಲೆಯನ್ನು ಧರಿಸಿ ಚತುಷ್ಪಾದಗಳಿಂದಲೂ ವೃಷಭಾಕೃತಿಯಿಂದಲೂ ಪುರುಷನೊಬ್ಬನು ಹುಟ್ಟಿದನು. ಬ್ರಹ್ಮನು ಲೋಕಕ್ಕೆಲ್ಲಾ ಹಿರಿಯ ಪ್ರಜೆಯಾದ ಆ ಪುರುಷನಿಗೆ ಪ್ರಜಾರಕ್ಷಣೆಯ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಒಪ್ಪಿಸಿದನು. ಈತನೇ ಧರ್ಮಪುರುಷ.

ಧರ್ಮಪುರುಷನು ಕೃತಯುಗದಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕು ಪಾದಗಳನ್ನೂ ತ್ರೇತಾಯುಗದಲ್ಲಿ ಮೂರು ಪಾದಗಳನ್ನೂ ದ್ವಾಪರಯುಗದಲ್ಲಿ ಎರಡು ಪಾದಗಳನ್ನೂ ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ ಒಂದೇ ಪಾದವನ್ನೂ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಪ್ರಜೆಗಳನ್ನು ಪಾಲಿಸುತ್ತಿರುವನು. ಕಲಿಯುಗಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ ಆ ಒಂದು ಪಾದವನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆದುಕೊಂಡಾಗ ಧರ್ಮವು ಭೂಲೋಕದಲ್ಲಿ ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಅಳಿದುಹೋಗಿ ಪ್ರಳಯವಾಗುವುದು. "ಪೂರ್ವಂ ಬ್ರಹ್ಮಾವ್ಯಯ: ಶುದ್ಧ: ಪರಾದಪರಸಂಜಿತ: । ಸ ಸಿಸೃಕ್ಷು: ಪ್ರಜಾಸ್ತ್ವಾದೌ ಪಾಲನಂ ತಾಸ್ವಚಿಂತಯತ್ । ತಸ್ಯ ಚಿಂತಯತಸ್ತ್ವಜ್ಞಾಕ್ಷಿಣಾಖ್ಯಾತ್ ಸುಕುಂಡಲ: । ಪ್ರಾಡುರ್ಬಭೂವ ಪುರುಷ: ಕ್ವೇತಮಾಲ್ಯಾನುಲೇಪನ: । ತಂ ದೃಷ್ಟ್ವೋವಾಚ ಭಗವಾಂಶ್ಚತುಷ್ಪಾದಂ ವೃಷಾಕೃತಿಮ್ । ಪಾಲಯೇಮಾ: ಪ್ರಜಾ: ಪುತ್ರ ತ್ವಂ ಜ್ಯೇಷ್ಠೋ ಜಗತೋ ಭವ । ಇತ್ಯುಕ್ತ: ಸ ಸಮುತ್ಥಸ್ಥೋ ಚತುಷ್ಪಾದ: ಕೃತೇ ಯುಗೇ । ತ್ರೇತಾಯಾಂ ಸ ತ್ರಿभि: ಪಾದೈ: ದ್ವಾಭ್ಯಾಂ ವೈ ದ್ವಾಪರೇಽಭವತ್ । ಕಲಾವೇಕೇನ ಪಾದೇನ ಪ್ರಜಾ: ಪಾಲಯತೇ ಪ್ರಭು:" ವರಾಹಪು० ।  
ಧರ್ಮಪುರುಷನ ಪತ್ನಿಯರು ಮತ್ತು ಮಕ್ಕಳು: ದಕ್ಷಪ್ರಜಾಪತಿಯ ಹದಿಮೂರು ಮಂದಿ ಕನ್ಯೆಯರು ಧರ್ಮಪುರುಷನ ಪತ್ನಿಯರು :



| ಪತ್ನಿಯರು     | ಮಕ್ಕಳು                    |
|--------------|---------------------------|
| 1. ಶ್ರದ್ಧಾ   | .. ಧೃತಿ: (ಧೈರ್ಯ)          |
| 2. ಮೆತ್ರಿ    | .. ಪ್ರಸಾದ: (ಅನುಗ್ರಹ)      |
| 3. ದಯಾ       | .. ಅಮಯಮ್ (ಅಭಯ)            |
| 4. ಶಾಂತಿ:    | .. ಸುಖಮ್ (ಸೌಖ್ಯ)          |
| 5. ತುಷ್ಟಿ:   | .. ಮುಕ್ (ಸಂತೋಷ)           |
| 6. ಪುಷ್ಟಿ:   | .. ಸಮಯ: (ಗರ್ವ)            |
| 7. ಕ್ರಿಯಾ    | .. ಯೋಗ (ಯೋಗ)              |
| 8. ಉನ್ನತಿ:   | .. ಧರ್ಮ: (ಅಹಂಕಾರ, ಕೊಬ್ಬು) |
| 9. ಬುದ್ಧಿ:   | .. ಅರ್ಥ: (ಕಾರ್ಯ)          |
| 10. ಮೇಧಾ     | .. ಸ್ಮೃತಿ: (ಸ್ಮರಣ)        |
| 11. ತಿತಿಕ್ಷಾ | .. ಕ್ಷೇಮಮ್ (ಕ್ಷೇಮ)        |
| 12. ಹಿ:      | .. ಪ್ರಶ್ರಯ: (ವಿನಯ)        |
| 13. ಮೃತಿ:    | .. ನರನಾರಾಯಣಿ              |
|              | (ನರ ಮತ್ತು ನಾರಾಯಣ)         |

“ತೃಯೋದಶಾದಾದ್ಧರ್ಮಯಿ ತಥೈಕಾಮಗ್ನಯೇ ವಿಭು: | ಪಿತೃಮ್ಯ ಏಕಾಂ  
ಯುಕ್ತೇಮ್ಯೋ ಭವಾಯೆಕಾಂ ಭವಚ್ಛಿದೇ | ಶ್ರದ್ಧಾ ಮೆತ್ರಿ ದಯಾ  
ಶಾಂತಿ: ತುಷ್ಟಿ: ಪುಷ್ಟಿ: ಕ್ರಿಯೋನ್ನತಿ: | ಬುದ್ಧಿಮೇಧಾ ತಿತಿಕ್ಷಾ  
ಹಿ: ಮೃತಿರ್ಧರ್ಮಸ್ಯ ಪಲಯ:” ಇತ್ಯಾದಿ ಭಾಗಂ ೪-೧ |  
8. ಈಗಿನ (ವೈವಸ್ವತ) ಮನ್ವಂತರದಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಾನಸ  
ಪುತ್ರರಲ್ಲೊಬ್ಬ. ಉತ್ತಾನಪಾದವಂಶದ ಪ್ರಾಚೀತಸದಕ್ಷನ  
ಹತ್ತುವಂದಿ ಕನ್ಯೆಯರು ಈತನ ಪತ್ನಿಯರು. 9. ಯಮ.  
10. ಯುಧಿಷ್ಠಿರ. 11. ದ್ರವ್ಯಗತವಾದ ಒಂದು ಗುಣ.  
“ದ್ರವ್ಯಂ ಗುಣವತ್” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಗುಣವು ಧರ್ಮ. ಘಟದಲ್ಲಿ  
ಘಟತ್ವವು ಧರ್ಮ. 12. ವಿಹಿತಕರ್ಮಾಚರಣೆಯಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅದೃಷ್ಟವಿಶೇಷ (ಪುಣ್ಯ). “ಏಕ ಏವ  
ಸುಹೃದ್ಧರ್ಮೋ ನಿಖನೇಽಪ್ಯನುಯಾತಿ ಯ: | ಶರೀರೇಣ ಸಮಂ ನಾಶಂ  
ಸರ್ವಮನ್ಯತ್ ಗುಣಶ್ಚಿತಿ” ಮನುಂ | ಇದು ಕಾಯ ವಾಕ್ಯ ಮತ್ತು  
ಮನಸ್ಸು ಇವುಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದರಿಂದ ಮೂರು ವಿಧ.  
ದಾನ ಆರ್ತಪರಿತ್ಯಾಜ ಇತ್ಯಾದಿ ಶರೀರವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ  
ಲಬ್ಧವಾಗುವ ಪುಣ್ಯ. ಹಿತವಾದ ನುಡಿ ಸತ್ಯವಚನ ಇತ್ಯಾದಿ  
ವಾಗ್ವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ ಲಬ್ಧವಾಗುವ ಪುಣ್ಯ. “ಅಹಿಸಾ  
ಪರಮೋ ಧರ್ಮ: ಹಿಸಾ ಚಾಧರ್ಮಲಕ್ಷಣಮ್” ಎಂಬ ವಚನದಂತೆ  
ಪರಹಿಂಸಾಪರಿಹಾರವು ಮನೋವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ ಬರುವ  
ಪುಣ್ಯ(ಧರ್ಮ). 13. ಧನುಸ್ಸು, ಬಿಲ್ಲು. 14. ಸೋಮ  
ಪಾನ ಮಾಡುವವನು. 15. ಉತ್ತಮಮನ್ವಂತರದ  
ಒಬ್ಬ ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿ. 16. ಪರಮಾತ್ಮ. 17. ಜೀವಾತ್ಮ.  
18. ಯಜ್ಞ. 19. ಭಾಗ್ಯಸ್ಥಾನ, ಲಗ್ನದಿಂದ ಒಂಬತ್ತ  
ನೆಯ ಸ್ಥಾನ. 20. ಆಗಮ, ವೇದ. (ಪುನಂ) 21.

ಉಪಮಾ, ಸಾದೃಶ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ. 22. ಸಮಾನವಾದ  
ಗುಣ. “ವದಂತಿ ವರ್ಷಾವರ್ಷಾನಾಂ ಧರ್ಮಕಂ ದೀಪಕಂ ಬುಧಾ:” |  
23. ಸ್ವಭಾವ, ಮನೋಧರ್ಮ. 24. ಉಪನಿಷತ್ತು.  
25. ಅಹಿಂಸೆ. 26. ನೀತಿ, ನ್ಯಾಯ. 27. ಪುಣ್ಯ,  
ಸುಕೃತ. “ಧರ್ಮೋಽಸ್ಮಿನ್ ಪುಣ್ಯ ಆಚಾರೇ ಸ್ವಭಾವೋಪಮಯೋ: ಕೃತೌ |  
ಅಹಿಸೋಪನಿಷನ್ಯಾಯೇ ನಾ ಧನುರ್ಮಸೋಮಪೇ” ಮೇದಿಂ | “ಸ್ವಭಾವ-  
ನ್ಯಾಯಯಾಗಾದಿಯಮಾಚಾರೇಷು ಸೋಮಪೇ | ಪ್ರವಕ್ಷತೇ ಧರ್ಮಶಬ್ದಮಹಿಸಾ-  
ಗಮಯೋರಪಿ” ಶಾಸ್ತ್ರಂ |

**ಧರ್ಮಕರ್ಮನ್ ಧರ್ಮಕರ್ಮನ್ (ನಂ)** 1. ವೇದ ವಿಹಿತವಾದ  
ಯಜ್ಞಯಾಗಾದಿಗಳ ಆಚರಣೆ. 2. ಸಂಪ್ರದಾಯದ  
ಕಾರ್ಯ, ವಾಡಿಕೆಯಾಗಿ ಬಂದ ಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನ. 3. ಇಹ  
ಪರ ಸೌಖ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಆಚರಿಸುವ ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯ. ಧರ್ಮಸ್ಯ  
ಧರ್ಮಿಣಿ ವಾ ಕರ್ಮ |

**ಧರ್ಮಕಥಾರಿತ್ರ ಧರ್ಮಕಥಾರಿತ್ರ (ಪುಂ)** ಕಲಿಯುಗ  
ದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮನುಷ್ಯ. ಧರ್ಮಕಥಾಂ ದರಿತ್ರ: | ಕಲಿಯುಗ  
ದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನಿಗೆ ಧರ್ಮಕಥೆಗಳಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿಯಿರುವುದಿಲ್ಲ.

**ಧರ್ಮಕಾಮ ಧರ್ಮಕಾಮ (ಪುಂ)** ಫಲವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸದೆ  
ಧರ್ಮಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಶ್ರದ್ಧೆಯುಳ್ಳವನು. ಧರ್ಮ ಕಾಮಯತೇ -  
ಕಮ್ (ಕಾಂತಿ) + ಕಿಂ “ಅನ್” (3-2-1) |

**ಧರ್ಮಕಾಯ ಧರ್ಮಕಾಯ (ಪುಂ)** ಬುದ್ಧದೇವ. ಧರ್ಮಸ್ಯ  
ಧರ್ಮಿಣಿ ವಾ ಕಾಯೋಽಸ್ಯ | “ವಿಶ್ವಬೋಧೋ ಧರ್ಮಕಾಯ: ಸಂಗುಪ್ತೋಽಹಂ  
ಸುನಿಶ್ಚಿತ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಧರ್ಮಕೀಲ ಧರ್ಮಕೀಲ (ಪುಂ)** ರಾಜಶಾಸನ, ರಾಜನ ಆಜ್ಞೆ,  
ಆಜ್ಞಾಪತ್ರ. ಧರ್ಮಸ್ಯ ಕೀಲ ಇವ |

**ಧರ್ಮಕೃತ್ ಧರ್ಮಕೃತ್ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. ಸರ್ವಾನ್ ಧಾರ್ಮಿಕಯನ್  
ಅಕಾರಣಾದನುಗ್ರಹದೇಹಂ ಧರ್ಮ ಕರೋತಿ - ಟ್ ಕೃ (ಕರಣ)  
“ಕಿವಪ್” (3-2-96) | “ಸರ್ವಂ ಜನಂ ಧಾರ್ಮಿಕಯನ್  
ಲೀಲಾನುಗ್ರಹಲಕ್ಷಣಮ್ | ಧರ್ಮ ಕರೋತಿ ಯಸ್ಮಾದಿ ತಸ್ಮಾದ್ಧರ್ಮ-  
ಕೃದ್ವ್ಯತೇ” ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ: | “ಧರ್ಮಗುಪ್ ಧರ್ಮಕೃದ್ಧರ್ಮಿ”  
ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ಧರ್ಮಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡು  
ವವನು. ಧರ್ಮ ಧರ್ಮಸಾಧನಂ ಕರ್ಮ ಕರೋತಿ - ಕೃ “ಕಿವಪ್” |  
“ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಸು ಚ ನ ಬಹುಮಿತ್ರ: ಸಂತುಷ್ಟೋ ಧರ್ಮಕೃತ್ ಪ್ರಚುರಕೋಪ:”  
ಬೃಹತ್ಸಂ 101-10 |

**ಧರ್ಮಕೇತು ಧರ್ಮಕೇತು (ಪುಂ)** 1. ಬುದ್ಧದೇವ. ಧರ್ಮ:  
ಅಹಿಸಾರೂಪಂ ಕರ್ಮ ಕೇತುರಸ್ಯ | 2. ಸುಕೇತುರಾಜನ ಒಬ್ಬ  
ಮಗ.

**ಧರ್ಮಕೋಶ ಧರ್ಮಕೋಶ (ಪುಂ)** ಧರ್ಮದ ಸಮೂಹ.  
ಧರ್ಮಸ್ಯ ಕೋಶ: ಸಮೂಹ: | “ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ಜಾಯಮಾನೋ ಹಿ



ಪೃಥಿವ್ಯಾಮಧಿಜಾಯತೇ । ಇಂದ್ರಃ ಸರ್ವಭೂತಾನಾಂ ಧರ್ಮಕೋಶಸ್ಯ  
ಗುಪ್ತಯೇ" ಮನುಂ ೧-೧೯ ।

**ಧರ್ಮಕ್ಷೇತ್ರ ಧರ್ಮಕ್ಷೇತ್ರ (ನಂ)** 1. ಧರ್ಮಸಂಪಾದನೆಗೆ  
ಯೋಗ್ಯವಾದ ಭಾರತದೇಶ. ಧರ್ಮಜಿನಾರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ ।  
2. ಧರ್ಮದ ಬೆಳವಣಿಗೆಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ಭೂಮಿ,  
ಧರ್ಮಕ್ಕೆ ಸ್ಥಾನವಾಗಿರುವ ಭೂಮಿ. ಧರ್ಮಸ್ಯ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ ।  
"ಧರ್ಮಕ್ಷೇತ್ರೇ ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರೇ ಸಮವೇತಾ ಯುಯತ್ಸವಃ । ಮಾಮಕಾಃ ಪಾಂಡವಾ-  
ಃ ಕಿಮಕುರ್ವಂತ ಸಂಜಯ" ಗೀತಾ ೧-೧ । ಎಂತಹ  
ಪಾಪಾತ್ಮರಿಗೂ ಚಿತ್ತಪ್ರಸಾದವುಂಟಾಗಿ ಸನ್ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ  
ಪ್ರವರ್ತಿಸುವಂತೆ ಪ್ರೇರಿಸುವ ಪುಣ್ಯಭೂಮಿಯಾದುದರಿಂದ  
ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರವು ಧರ್ಮಕ್ಷೇತ್ರವಾಯಿತು.

**ಧರ್ಮಗುಪ್ ಧರ್ಮಗುಪ್ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. ಅರ್ಥಕಾಮೋ  
ದತ್ವಾಪಿ ದುರ್ವಿಷಯಾನ್ನಿವರ್ತಯತಾಂ ಹಿತಧರ್ಮರಕ್ಷಣಾತ್ ಧರ್ಮಂ  
ಗೋಪಯತಿ ರಕ್ಷತಿ-ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೭೬) ।  
"ಕಾಮಂ ದತ್ವಾಪ್ಯರ್ಥಕಾಮೋ ನಿವರ್ತಯತಾಂ ವಿಷಯಾಂತರಾತ್ । ತಾಂಹಿ  
ಹಿ ತಸ್ಯ ಧರ್ಮಸ್ಯ ರಕ್ಷಣಾಧರ್ಮಗುಪ್ ಸ್ಮೃತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ ।  
"ಧರ್ಮಗುಪ್ ಧರ್ಮಕೃದ್ಧರ್ಮಿ" ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ) 2. ಧರ್ಮ  
ವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವವನು.

**ಧರ್ಮಚಕ್ರ ಧರ್ಮಚಕ್ರ (ನಂ)** 1. ಧರ್ಮಸಮೂಹ. ಧರ್ಮಸ್ಯ  
ಚಕ್ರಮ್ । "ಭೀಷ್ಮೇಣ ವಿಹಿತಂ ರಾಷ್ಟ್ರೇ ಧರ್ಮಚಕ್ರಮವರ್ತತ" ಭಾಂ  
ಆದಿಂ ೧೧೮-೧೪ । 2. ಬುದ್ಧ. "ಬುದ್ಧೋ ಕನಿಷ್ಠಗಮಹಾಮು-  
ನಿಧರ್ಮಚಕ್ರರಾಗಾಶನಿವಿಶರಣಾಃ ಖಸಮೋ ದಶಾರ್ಹಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಧರ್ಮಚಾರಿನ್ ಧರ್ಮಚಾರಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಧರ್ಮಕಾರ್ಯ  
ವನ್ನು ಆಚರಿಸುವವನು, ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಡೆಸು-  
ವವನು. ಧರ್ಮಂ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತಿರಕ್ಷಣಯೋಃ) "ಗಿರಿನಿಃ"  
(೩-೨-೭೮) । "ಸ ಚೇತ್ಸರ್ವಯಂ ಕರ್ಮಸು ಧರ್ಮಚಾರಿಣಾಂ ತ್ವಮಂತ-  
ರಾಯೋ ಭವಸಿ ಚ್ಯುತೋ ವಿಧಿಃ" ರಘುಂ ೩-೪೫ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಜಿಪ್" (೪-೧-೫) । -ಚಾರಿಣಿ - ಚಾರಿಣೀ. 2. ಜೊತೆ  
ಯಲ್ಲಿ ಧರ್ಮಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಡೆಸುವ ಹೆಂಗಸು, ಸಹಧರ್ಮಿ  
ಚಾರಿಣಿ, ಪತ್ನಿ. "ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಃ ಧರ್ಮಚಾರಿಣ್ಯಾಂ ಮಹಿಷ್ಯಾಂ  
ಗರ್ಭಮಾದಧೇ" ಭಾಂ ವನಂ ।

**ಧರ್ಮಚಿಂತಕ ಧರ್ಮಚಿಂತಕ (ವಿಂ)** ಧರ್ಮವನ್ನು ಅನು-  
ಸಂಧಾನಮಾಡುವವನು, ಧರ್ಮವನ್ನು ಪರ್ಯಾಲೋಚಿಸು-  
ವವನು, ಧರ್ಮದ ವಿಚಾರಮಾಡುವವನು. ಧರ್ಮಂ ಚಿಂತಯತಿ  
-ಚಿಂತಿ (ಸ್ಮೃತ್ಯಾಮ್) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

**ಧರ್ಮಚಿಂತನ ಧರ್ಮಚಿಂತನ (ನಂ)** ಧರ್ಮದ ವಿಷಯ  
ವಾಗಿ ಯೋಚಿಸುವುದು, ಧರ್ಮದ ವಿಚಾರಮಾಡುವುದು.  
ಧರ್ಮಸ್ಯ ಚಿಂತನಮ್ ।

**ಧರ್ಮಚಿಂತಾ ಧರ್ಮಚಿಂತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಧರ್ಮದ ಚಿಂತನೆ,  
ಧರ್ಮದ ವಿಷಯವಾಗಿ ಯೋಚಿಸುವುದು, ಅವಶ್ಯ  
ಕರ್ತವ್ಯವಾದ ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳ ಪರ್ಯಾಲೋಚನೆ.  
ಧರ್ಮಸ್ಯ ಚಿಂತಾ ।

**ಧರ್ಮಜ ಧರ್ಮಜ (ಪುಂ)** 1. ಔರಸಪುತ್ರ, ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ  
ಪುತ್ರರಲ್ಲೊಬ್ಬ, ಧರ್ಮದಿಂದ ಜನಿಸಿದ ಪುತ್ರ, ಧರ್ಮ  
ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಗಾಗಿ ಧರ್ಮಪತ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಪುತ್ರ.  
ಧರ್ಮೇಣ ಜಾಯತೇ-ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತಭವಿ) "ಙಃ" (೩-೨-೧೦೧) ।  
"ಯಸ್ಮಿನ್ನಣಂ ಸಂನಯತಿ ಯೇನ ಚಾನನ್ಯಮನ್ಯತೇ । ಸ ಏವ ಧರ್ಮಜಃ  
ಪುತ್ರಃ ಕಾಮಜಾನಿತರಾನ್ ವಿಧುಃ" ಮನುಂ ೧-೧೦೭ । ಯಾವ  
ಪುತ್ರನು ಜನಿಸಿದ ಕೂಡಲೆ ಪಿತೃಗಳ ಋಣವನ್ನು ತೀರಿಸಿ  
ಅವರು ಮೋಕ್ಷಹೊಂದಲು ಕಾರಣನಾಗುವನೋ ಆತನೇ  
ಧರ್ಮಜನು. 2. ಧರ್ಮರಾಜ, ಯುಧಿಷ್ಠಿರ. ಧರ್ಮ-  
ಜ್ಜಾಯತೇ - ಜನಿ "ಙಃ" (೩-೨-೯೮) । "ಏವಂ ಸಚ್ಚಿಂತಯ  
ಭಗವಾನ್ ಸ್ವರಾಜ್ಯೇ ಸ್ಥಾಪ್ಯ ಧರ್ಮಜಮ್ । ನಂದಯಾಮಾಸ ಸುಹೃದಃ  
ಸಾಧುನಾಂ ವರ್ಮ ದರ್ಶಯನ್" ಭಾಗಂ ೩-೩-೧೬ । (ವಿಂ) 3.  
ಧರ್ಮದಿಂದ ಉಂಟಾದ.

**ಧರ್ಮಜನ್ಮನ್ ಧರ್ಮಜನ್ಮನ್ (ಪುಂ)** 1. ಯುಧಿಷ್ಠಿರ, ಧರ್ಮ  
ರಾಜ. ಧರ್ಮಜನ್ಮನು ಯಸ್ಯ । "ಇತ್ಯಮತ್ರ ವಿತತತಕ್ರಮೇ ಕೃತೌ  
ವೀಕ್ಷ್ಯ ಧರ್ಮಮಥ ಧರ್ಮಜನ್ಮನಾ" ಮಾಘಂ ೧೪-೫೩ ।

**ಧರ್ಮಜನ್ಯ ಧರ್ಮಜನ್ಯ (ವಿಂ)** ಧರ್ಮದಿಂದ ಉಂಟಾದ.  
ಧರ್ಮೇಣ ಜನ್ಯಮ್ । ಸುಖ ಮೊದಲಾದುದು. "ಸುಖಂ ತು  
ಜಗತಾಮೇವ ಕಾಮ್ಯಂ ಧರ್ಮೇಣ ಜನ್ಯತೇ" ।

**ಧರ್ಮಜಿಜ್ಞಾಸಾ ಧರ್ಮಜಿಜ್ಞಾಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ವೇದೋಕ್ತ  
ಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನಕ್ಕಾಗಿ ಧರ್ಮವನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವ  
ಅಪೇಕ್ಷೆ, ವೇದೋಕ್ತ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿಯಲು ಮಾಡುವ  
ವಿಮರ್ಶೆ, ವೇದಾರ್ಥವಿಚಾರ. ಧರ್ಮಾರ್ಥಂ ಧರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನಾಯ  
ಜಿಜ್ಞಾಸಾ । "ಅಥಾತೋ ಧರ್ಮಜಿಜ್ಞಾಸಾ" ।

**ಧರ್ಮಜೀವನ ಧರ್ಮಜೀವನ (ಪುಂ)** ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳಿಂದ  
ಜೀವಿಸುವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ಯಾಜನ (ಯಜ್ಞ ಮಾಡಿಸುವುದು)  
ಅಧ್ಯಾಪನ (ವಿದ್ಯೋಪದೇಶ) ಇವುಗಳಿಂದ ಜೀವನ ನಡೆಯು-  
ಸುವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಧರ್ಮೇಣ ಧರ್ಮೋಪಾದನೇನ ಜೀವತಿ - ಜೀವ  
(ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) । "ಯಸ್ಮಾಪಿ  
ಧರ್ಮಸಮಯಾತ್ ಪ್ರಚ್ಯುತೋ ಧರ್ಮಜೀವನಃ । ದೃಢೇನೈವ ತಮಪ್ಯೋಷೇತ್  
ಸ್ವಕಾಢರ್ಮಾದಿ ವಿಚ್ಯುತಮ್" ಮನುಂ ೧-೨೭೩ ।

**ಧರ್ಮಜ್ಞ ಧರ್ಮಜ್ಞ (ವಿಂ)** ಧರ್ಮವನ್ನು ತಿಳಿದವನು,  
ಧರ್ಮದ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಅರಿತವನು. ಧರ್ಮಂ ಜಾನಾತಿ-ಜ್ಞಾ  
(ಅವಬೋಧನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) । "ಅಮಾತ್ಯಮುಖ್ಯಂ ಧರ್ಮಜ್ಞಂ



ಪ್ರಾಜ್ಞಂ ದಾಂತಂ ಕುಲೋದ್ಭವಮ್ | ಸ್ಥಾಪಯೇದಾಸನೇ ತಸ್ಮಿನ್ ಕ್ಷಿಪ್ರಃ  
ಕಾರ್ಯಕ್ಷಣೇ ನೃಣಾಮ್ " ಮನುಂ ೭-೧೪೧ |

**ಧರ್ಮವಾನ್ ಧರ್ಮದಾನ (ನಂ)** ಯಾವ ಪ್ರಯೋಜನವನ್ನೂ  
ಅಪೇಕ್ಷಿಸದೆ ಸತ್ಪತ್ರದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ದಾನ. "ಪಾತ್ರೇಮ್ಯೋ  
ದೀಯತೇ ನಿಯಮನಪೇಕ್ಷಯ ಪ್ರಯೋಜನಮ್ | ಕೇವಲಂ ಧರ್ಮಬುದ್ಧಿಭಾ ಯತ್  
ಧರ್ಮದಾನಂ ಪ್ರವಕ್ಷತೇ" ದೇವಲಃ |

**ಧರ್ಮದಾರ ಧರ್ಮದಾರ (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ)** ಧರ್ಮಪತ್ನಿ, ಪುಣ್ಯ  
ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡಲು ಸಹಾಯಕಾದ ಪತ್ನಿ. ಧರ್ಮಿಣಿಮ್  
ಅನ್ಯಾಧಾನಾನ್ಯಥಾ ದಾರಾಃ | "ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಭರ್ತಾ ಧರ್ಮದಾರಾಃ  
ಪುಂಸಾಮಿತ್ಯನ್ಯೋನ್ಯಂ ವತ್ಸಯೋಜಿತಮಸ್ತು" ಮಾಲತೀಂ ೬-೧೮ |

**ಧರ್ಮದೇಶ ಧರ್ಮದೇಶ (ಪುಂ)** ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳಿಗೆ ಅನು  
ಕೂಲವಾದ ದೇಶ. ಧರ್ಮಸಾಧನಂ ದೇಶಃ | ಜಂಕೆಗಳು ಭಯ  
ವಿಲ್ಲದೆ ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ಸಂಚರಿಸುವ ದೇಶವು ಧರ್ಮದೇಶ.  
ಕ್ರೂರಮೃಗಗಳು ಘಾತುಕರು ಕಳ್ಳಕಾಕರು ಇವರ ಸಂಚಾರ  
ವಿಲ್ಲದೆ ಪ್ರಶಾಂತವಾದ ಪ್ರದೇಶ. ಇದು ಧರ್ಮಚರಣಿಗೆ  
ಹಿತವಾದ ಪ್ರದೇಶವು. "ಸ್ವಭಾವಾನ್ವಿತಂ ಚರತಿ ಕೃಷ್ಣಸಾರಃ  
ಸದಾ ಮೃಗಃ | ಧರ್ಮದೇಶಃ ಸ ವಿಜ್ಞೇಯೋ ದ್ವಿಜಾನಾಂ ಧರ್ಮಸಾಧನಮ್" |

**ಧರ್ಮದ್ರವಿ ಧರ್ಮದ್ರವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗಂಗಾನದಿ. ಧರ್ಮಜನಕೋ  
ದ್ರವೋಽಸ್ಯಾಃ | "ವಿಷ್ಣುಪಾದಾಗ್ರಸಮ್ಭೂತೇ ಗಂಧೇ ತ್ರಿಪಥಗಾಮಿನಿ |  
ಧರ್ಮದ್ರವೀತಿ ವಿಖ್ಯಾತೇ ಪಾಪಂ ಮೇ ಹರ ಜಾಹ್ನವಿ" |

**ಧರ್ಮದ್ರೋಹಿನ್ ಧರ್ಮದ್ರೋಹಿನ್ (ವಿಂ)** ಧರ್ಮಕಾರ್ಯ  
ಗಳಿಗೆ ತೊಂದರೆ ಕೊಡುವವನು, ರಾಕ್ಷಸವೃತ್ತಿಯುಳ್ಳ  
ವನು. ಧರ್ಮಿಯ ದ್ರುಹತಿ-ದ್ರುಹ (ಜಿಘಾಂಸಾಯಾಮ್) "ಞಿನಿಃ"  
(೩-೨-೭೮) |

**ಧರ್ಮಧ್ವಜಿನ್ ಧರ್ಮಧ್ವಜಿನ್ (ಪುಂ)** ಧಾರ್ಮಿಕವೇಷ ಧರಿಸಿ  
ಜೀವಿಸುವವನು, ವೇಷಧಾರಿ, ಲೋಕದ ಮೆಚ್ಚಿಗೆಗಾಗಿ  
ಧರ್ಮವನ್ನು ಆಚರಿಸುವವನು. ಧರ್ಮೋ ಧ್ವಜಃ ಚಿಹ್ನಮಿವಾ-  
ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) | "ಧರ್ಮಧ್ವಜಿ ಸದಾ  
ಲುಬ್ಧಃ ಛಾಧಿಕೋ ಲೋಕದಮ್ಭಕಃ" ಮನುಂ ೪-೧೧೪ |

**ಧರ್ಮತನಯ ಧರ್ಮತನಯ, -ನಂದನ -ನಂದನ, -ಪುತ್ರ  
-ಪುತ್ರ, -ಸುತ -ಸುತ, -ಸುನು -ಸುನು (ಪುಂ)**  
ಧರ್ಮರಾಜ, ಯುಧಿಷ್ಠಿರ. ಧರ್ಮಸ್ಯ ತನಯಃ ನಂದನಃ ಪುತ್ರಃ  
ಸುತಃ ಸುನುರ್ವಾ | "ನಿಜಗೃಹಮಥ ಗತ್ವಾ ಸಾದರಂ ಪಾಣ್ಡುಪುತ್ರೋ  
ಧೃತಗುರುಜಯಲಕ್ಷ್ಮೀಧರ್ಮಸುನುಂ ನನಾಮ" ಕಿರಾಂ ೧೮-೪೮ |

**ಧರ್ಮಪತ್ತನ ಧರ್ಮಪತ್ತನ (ನಂ)** 1. ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಉತ್ತರ  
ಕೋಸಲದ ಒಂದು ರಾಜಧಾನಿ, ಶ್ರಾವಸ್ಥಿನಗರ. "ಶ್ರಾವಸ್ಥಿ  
ಧರ್ಮಪತ್ತನಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | ಈಗ ಇದು ಸಾಹೆತ್-ಮಾಹೆತ್  
ಎಂಬ ಹೆಸರಿನ ಒಂದು ಗ್ರಾಮ. 2. ಮೇಣಸು. ಇದು

ಉತ್ತರ ಕೋಸಲದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.  
"ಮರಿಚಂ ಕೋಲಕಂ ಕೃಷ್ಣಮೂಷಣಂ ಧರ್ಮಪತ್ತನಮ್" ಅಮಂ |

**ಧರ್ಮಪತ್ನಿ ಧರ್ಮಪತ್ನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಚರಣಿಗೆ  
ಸಹಾಯಕಾದ ಪತ್ನಿ, ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ ಮದುವೆಯಾದ  
ಹೆಂಡತಿ. ಧರ್ಮಿಣಿ ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಾನುಷ್ಠಾನಾಯ ಪತ್ನಿ | "ಮಾರ್ಗಂ  
ಮನುಷ್ಯೇಶ್ವರಧರ್ಮಪತ್ನೀ ಶ್ರುತೇರಿವಾರ್ಥಂ ಸ್ಮೃತಿರನ್ವಗಚ್ಛತ್" ರಘುಂ  
೨-೨ | 2. ಧರ್ಮಪುರುಷನ ಪತ್ನಿಯರು, ದಕ್ಷಕನ್ಯೆಯರು.  
ಇವರು ಹದಿಮೂರು ಮಂದಿ. (1) ಶ್ರದ್ಧಾ, (2) ಮೆತ್ರಿ, (3) ದಯಾ, (4) ಶಾಂತಿಃ, (5) ತುಷ್ಟಿಃ (6) ಪುಷ್ಟಿಃ,  
(7) ಕ್ರಿಯಾ, (8) ಉನ್ನತಿಃ, (9) ಬುದ್ಧಿಃ, (10) ಮೇಧಾ, (11) ತಿತ್ತಿಕ್ಷಾ, (12) ಹ್ನಿಃ ಮತ್ತು (13) ಮೂರ್ತಿಃ "ತ್ರಯೋ-  
ದಶಾದಾಡರ್ಮಾಯ ತಥೇಕಾಮಗನಯೇ ವಿಭುಃ | ಪಿತೃಮ್ಯ ಏಕಾಂ  
ಯುಕ್ತೇಮ್ಯೋ ಭವಾಯೇಕಾಂ ಭವಚ್ಛಿದೇ" ಭಾಗಂ ೪-೧ | ["ಧರ್ಮ"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಧರ್ಮಪಾಠಕ ಧರ್ಮಪಾಠಕ (ಪುಂ)** ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಓದಿ  
ತಿಳಿದಿರುವವನು. ಧರ್ಮ ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರಂ ಪಠತಿ - ಪಠ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾ  
ವಾಚಿ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | "ತೈವಿದ್ಯೋ ಹೇತುಕಸ್ತರ್ಕೀ  
ನೈರುಕ್ತೋ ಧರ್ಮಪಾಠಕಃ" ಮನುಂ ೧೨-೧೧೧ |

**ಧರ್ಮಪಾಲ ಧರ್ಮಪಾಲ (ಪುಂ)** 1. ದಂಡ, ಶಿಕ್ಷೆ. ಧರ್ಮ  
ಪಾಲಯತಿ-ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೇ) + ಣಿಚ್ "ಅನ್" (೩-೨-೧) |  
ಶಿಕ್ಷೆಯ ಭಯದಿಂದ ಜನರು ಧರ್ಮವನ್ನಾಚರಿಸುವುದರಿಂದ  
ಈ ಹೆಸರು. 2. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. "ಶ್ವೇತಿಃ ಕ್ಷುಬ್ಧಃ  
ಪ್ರಚಾರೋಽಸಿಧರ್ಮಪಾಲಃ ಪ್ರಜಾಗರಃ" ಬೈಜಂ | 3. ದಶರಥ  
ಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಒಬ್ಬ ಮಂತ್ರಿ. (ವಿಂ) 4. ಧರ್ಮವನ್ನು  
ಕಾಪಾಡುವವನು. "ದಂಡಃ ಏವ ಚ ಧರ್ಮಾತ್ಮಾ ಲೋಕೇ ಚರತಿ  
ಮೂರ್ತಿಮಾನ್ | ಭಿನ್ನದನ್ ಕ್ಷಿನ್ನದನ್ ರುಜನ್ ಕೃಂತನ್ ದಾರಯನ್  
ಪಾಟಯಂತಿಥಾ | ಘಾತಯನ್ನಭಿಧಾವನ್ನಶ್ಚ ದಂಡಃ ಏವ ಚರತ್ಯುತ"  
ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೧೨೧-೧೮, ೧೯ |

**ಧರ್ಮಪುತ್ರ ಧರ್ಮಪುತ್ರ (ಪುಂ)** 1. ಯುಧಿಷ್ಠಿರ, ಧರ್ಮರಾಜ.  
2. ಧರ್ಮಪತ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಗ, ಔರಸಪುತ್ರ.  
3. ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಚರಣಿಗಾಗಿ ಪುತ್ರನಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ  
ವನು. 4. ಧರ್ಮದೇವತೆಯ ಪುತ್ರ.

**ಧರ್ಮಪ್ರತಿರೂಪಕ ಧರ್ಮಪ್ರತಿರೂಪಕ (ಪುಂ)** ಧರ್ಮಭಾಸ,  
ಧರ್ಮದಂತೆ ತೋರುವ ದಾನ. ಧರ್ಮಸ್ಯ ಪ್ರತಿರೂಪಮಿವ  
ಕಾಯತಿ - ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | ದೊಡ್ಡ  
ಐಶ್ವರ್ಯವಂತನಾಗಿದ್ದು ತಾಯಿತಂದೆಗಳನ್ನೂ ಮತ್ತು  
ದಾರಿದ್ರ್ಯದಿಂದ ಕಷ್ಟಪಡುತ್ತಿರುವ ಬಂಧುಗಳನ್ನೂ ಬಿಟ್ಟು  
ಇತರರಿಗೆ ಮಾಡುವ ದಾನವು ಧರ್ಮದಂತೆ ತೋರುವುದೇ



ಹೊರತು ಸರಿಯಾದ ಧರ್ಮವಲ್ಲ. ಈ ದಾನವು ತತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕೀರ್ತಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದಾದರೂ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ನೆರಕಪ್ರದವಾದುದರಿಂದ ಇದು ಧರ್ಮಪ್ರತಿರೋಧಕವಾಗುವುದು. "ಶಕ್ತಃ ಪರಜನೇ ದಾತಾ ಸ್ವಜನೇ ದುಃಖ-ಜೀವಿನಿ। ಮಘಾಪಾತೋ ವಿಷಾಸ್ವಾದಃ ಸ ಧರ್ಮಪ್ರತಿರೂಪಕಃ" ಮನುಂ ೧೧-೯।

**ಧರ್ಮಪ್ರವಕ್ತೃ ಧರ್ಮಪ್ರವಕ್ತೃ** (ಪುಂ) ಧರ್ಮೋಪದೇಶ ಮಾಡುವವನು. ಧರ್ಮಾಧಿಕಾರಿ, ಧರ್ಮದ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುವವನು. ಧರ್ಮ ಪ್ರವಕ್ತಿ—ಪ್ರ+ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣ) "ತತ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಜಾತಿಮಾತ್ರೋಪಜೀವಿ ವಾ ಕಾಮ ಸ್ಯಾದ್ಬ್ರಾಹ್ಮಣಬ್ರವಃ। ಧರ್ಮಪ್ರವಕ್ತಾ ನೃಪತೇಃ" ಮನುಂ ೮-೨೦।  
**ಧರ್ಮಪ್ರಸಥ ಧರ್ಮಪ್ರಸಥ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ, ಒಂದು ಯಾತ್ರಾಸ್ಥಳ.

**ಧರ್ಮಭಗಿನಿ ಧರ್ಮಭಗಿನೀ**(ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಚಾರ್ಯಪುತ್ರ, ಗುರುವಿನ ಮಗಳು. 2. ಧರ್ಮಕಾರ್ಯದಿಂದ ತಂಗಿಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟವಳು. ಧರ್ಮತಃ ಕೃತಾ ಭಗಿನಿ।

**ಧರ್ಮಭಿಕ್ಷುಕ ಧರ್ಮಭಿಕ್ಷುಕ** (ಪುಂ) ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಭಿಕ್ಷೆಬೇಡುವವನು. ಧರ್ಮಿಣಿ ಭಿಕ್ಷುಕಃ। ಧರ್ಮಪ್ರಜೆಗಾಗಿ ವಿವಾಹಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು, ಯಾಗ ಮಾಡುವ ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು, ಪಠಿಕ, ಸಕಲಧನವನ್ನೂ ದಕ್ಷಿಣೆಯಾಗಿ ಕೊಡುವ ವಿಶ್ವಜಿದ್ಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡುವವನು, ಆಚಾರ್ಯನ ಊಟ ಉಪಚಾರಾದ್ಯರ್ಥವಾಗಿ ಭಿಕ್ಷೆಬೇಡುವವನು, ತಾಯಿತಂದೆಗಳ ಉಪಚಾರಗಳಿಗಾಗಿ ಭಿಕ್ಷೆಬೇಡುವವನು, ವೇದಾಧ್ಯಯನಮಾಡುವವನು, ರೋಗಗ್ರಸ್ತನಾದವನು ಇವರೆಲ್ಲರೂ ಧರ್ಮಭಿಕ್ಷುಕರು. "ಸಾಂತಾನಿಕಂ ಯಥ್ಯಮಾಣಮಧ್ವಗಂ ಸರ್ವಂ ವೇದಸಮ್। ಗುರ್ವರ್ಥಂ ಪಿತೃಮಾತ್ರರ್ಥಂ ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯಾರ್ಥ್ಯುಪತಾಪಿನಃ। ನವತಾನ್ ಸ್ನಾತಕಾನ್ ವಿಶ್ವಾದ್ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾನ್ ಧರ್ಮಭಿಕ್ಷುಕಾನ್" ಮನುಂ ೧೧-೧, ೨।

**ಧರ್ಮಭೃತ್ ಧರ್ಮಭೃತ್** (ವಿಂ) 1. ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸುವವನು, ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡುವವನು. ಧರ್ಮ ಭಿರತಿ—ಃ ಭೃತ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ವಿವಿಪ್" (೩-೨-೭೬)। 2. ಧರ್ಮವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವವನು. "ಏವ ಧರ್ಮಭೃತಾಂ ಶ್ರೇಷ್ಠೋ ಭವಿಷ್ಯತಿ ನರೋತ್ತಮಃ" ಭಾಂ ಏನಂ।

**ಧರ್ಮಭೃತ ಧರ್ಮಭೃತ**(ಪುಂ) 1. ಹದಿಮೂರನೆಯ ಮನುವಿನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. (ವಿಂ) 2. ಧರ್ಮವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಿದವನು. ಧರ್ಮೋ ಭೃತೋ ಯೇನ।

**ಧರ್ಮಭ್ರಾತೃ ಧರ್ಮಭ್ರಾತೃ**(ಪುಂ) 1. ಗುರುಪುತ್ರ, ಆಚಾರ್ಯರ ಮಗ. ಧರ್ಮತಃ ಕೃತೋ ಭ್ರಾತಾ। 2. ಸಹಾಧ್ಯಾಯಿ, ಒಬ್ಬ

ಗುರುವಿನಲ್ಲಿ ಸಂಗಡ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸಮಾಡಿದವನು. "ಧರ್ಮ-ಭ್ರಾತಾ ಸಹಾಧ್ಯಾಯಿ" ವೈಜಂ।

**ಧರ್ಮಮಾರ್ಗ ಧರ್ಮಮಾರ್ಗ** (ಪುಂ) ನ್ಯಾಯವಾದ ಮಾರ್ಗ. **ಧರ್ಮಮೂಲ ಧರ್ಮಮೂಲ** (ನಂ) ವೇದ, ಧರ್ಮಕಾರ್ಯವನ್ನು ಆಚರಿಸುವುದರಲ್ಲಿ ಪ್ರಮಾಣವಚನ. ಧರ್ಮ ಮೂಲಮ್। "ವೇದೋಽಖಿಲೋ ಧರ್ಮಮೂಲಂ ಸ್ಮೃತಿಶಿಲೇ ಚ ತದ್ವಿದಾಮ್। ಆಚಾರ-ಶ್ಚೈವ ಸಾಧುನಾಮಾತ್ಮನಸ್ತುಷ್ಠಿರೇವ ಚ" ಮನುಂ ೨-೬। "ಶ್ರುತಿಃ ಸ್ಮೃತಿಃ ಸದಾಚಾರಃ ಸ್ವಸ್ಯ ಚ ಪ್ರಿಯಮಾತ್ಮನಃ। ಸಮ್ಯಕ್ಸಂಕಲ್ಪಜಃ ಕಾಮೋ ಧರ್ಮಮೂಲಮಿದಂ ಸ್ಮೃತಮ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೭।

**ಧರ್ಮಮೇಘ ಧರ್ಮಮೇಘ** (ಪುಂ) ಅಸಂಪ್ರಜ್ಞಾತ ಸಮಾಧಿ, ಧರ್ಮಿಣಿ ಮೇಹತಿ—ಮಿಹ (ಸೇವನೆ) ಕೃತ್ವಮ್ (೭-೩-೪೩)। "ಪ್ರಸಂಖ್ಯಾನೇಽಪ್ಯಕುಸೀದಸ್ಯ ಸರ್ವಥಾ ವಿವೇಕಖ್ಯಾತೇರ್ಧರ್ಮಮೇಘಃ" ಪಾಂ ಯಂ ಸುಂ।

**ಧರ್ಮಯುಗ ಧರ್ಮಯುಗ** (ನಂ) ಸತ್ಯಯುಗ, ಕೃತಯುಗ. ಧರ್ಮಪ್ರಧಾನಂ ಯುಗಮ್।

**ಧರ್ಮಯುಜ್ಞ ಧರ್ಮಯುಜ್ಞ** (ವಿಂ) 1. ಧರ್ಮದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ನ್ಯಾಯದಿಂದ ನಡೆಯುವ. ಧರ್ಮೇಣ ಯುಜ್ಯತೇ—ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) "ವಿವಿಪ್" (೩-೨-೬೧)। (ನಂ) 2. ಧರ್ಮದಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಿದ ದ್ರವ್ಯ, ನ್ಯಾಯದಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಿದ ಧನ. ಇದು ದಾನಮಾಡಲು ಮುಖ್ಯವಾದ ಆರು ಅಂಗಗಳಲ್ಲೊಂದು.

**ಆರು ಅಂಗಗಳು:** (1) ದಾನಮಾಡುವವನು. (2) ದಾನತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಯೋಗ್ಯ (ಸತ್ಪಾತ್ರ)ನಾದವನು. (3) ದಾನಮಾಡುವುದರಲ್ಲಿ ಶ್ರದ್ಧೆ. (4) ನ್ಯಾಯದಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಿದ ದ್ರವ್ಯ. (5) ದಾನಮಾಡಲು ಸರಿಯಾದ ದೇಶ ಮತ್ತು (6) ದಾನಮಾಡಲು ಸರಿಯಾದ ಕಾಲ. "ದಾತಾ ಪ್ರತಿಗ್ರಹೀತಾ ಚ ಶ್ರದ್ಧಾ ದೇಯಂ ಚ ಧರ್ಮಯುಕ್। ದೇಶಕಾಲೋ ಚ ದಾನಾನಾಮಜ್ಞಾನೇತಾನಿ ಪಙ್ಚವಿದುಃ"। "ದೇಶಂ ಕಾಲೇ ತಥಾ ಪಾತ್ರೇ ಧನಂ ನ್ಯಾಯಾರ್ಜಿತಂ ತಥಾ। ಯಥತ್ತಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಶ್ರೇಷ್ಠಾಸ್ತ್ವನತ್ತಂ ತತ್ ಪ್ರಕೀರ್ತಿಸಮ್" ವಿಂ ಥಂ।

**ಧರ್ಮಯುಪ ಧರ್ಮಯುಪ** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಧರ್ಮ ಧರ್ಮತತ್ವಂ ಶಿರೋಽವಯವತಯಾ ಯೋತಿ ಮಿಶ್ರಯತಿ "ಯಃ" (೩ಂ ೩-೨೭)। "ಉತ್ತಮಾಜ್ಞತಯಾ ಧರ್ಮತತ್ವಂ ಯೋತಿತಿ ಸರ್ವದಾ। ಧರ್ಮಯುಪಃ ಸಮಾಖ್ಯಾತೋಽಪ್ಪಾಣೋ ಧರ್ಮದಾಯಕಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ। "ಅನಿವಿಣ್ಣಃ ಸ್ಥವಿಣ್ಣೋ ಮೂರ್ವಮಯುಪೋ ಮಹಾಮತಃ" ವಿಂ ಸಂ। ಧರ್ಮ ಯುಪ ಇವ ವಾ। ಯೂಪಸ್ತಂಭದಲ್ಲಿ ಯಾಗಪಶುವನ್ನು ಕಟ್ಟುವಂತೆ ಭಗವದಾರಾಧನರೂಪವಾದ ಧರ್ಮಗಳನ್ನು ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸುವುದರಿಂದ ಧರ್ಮಗಳಿಗೆ ಅವನು ಯೂಪದಂತಾದನು.



**ಧರ್ಮರಥ ಧರ್ಮರಥ** (ಪುಂ) ಸಂಗರಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

**ಧರ್ಮರಾಜ ಧರ್ಮರಾಜ** (ಪುಂ) 1. ದಂಡಧರ, ಯಮ ಧರ್ಮರಾಯ. ಧರ್ಮಣ ರಾಜತೇ—ರಾಜ (ದೀಪ್ತ) “ವಿವ್” (3-2-61)। “ಸೋಗ್ನಿರ್ಭವತಿ ವಾಯುಃ ಸೋಗ್ನಿಃ ಸೋಮಃ ಸ ಧರ್ಮರಾಜ್” ಮನುಂ 9-9। (ವಿಂ) 2. ಧರ್ಮದಿಂದ ವಿರಾಜಿಸುವವನು, ಧಾರ್ಮಿಕ, ಧರ್ಮಕಾರ್ಯದಿಂದ ಪ್ರಕಾಶಿಸುವವನು.

**ಧರ್ಮರಾಜ ಧರ್ಮರಾಜ** (ಪುಂ) 1. ಜನದೇವ, ಬುದ್ಧದೇವ, ಧರ್ಮಣ ರಾಜತೇ—ರಾಜ (ದೀಪ್ತ) “ಅಚ್” (3-1-134)। “ಸರ್ವಜ್ಞಃ ಸುಗತೋ ಬುದ್ಧೋ ಧರ್ಮರಾಜಸ್ತಥಾಗತಃ” ಅಮಂ 1. 2. ದಂಡಧರ, ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. 3. ಯುಧಿಷ್ಠಿರ, ಧರ್ಮರಾಜ. “ಸಹಾಯಮಧ್ವರಧುರಾಂ ಧರ್ಮರಾಜೋ ವಿವಸತೇ” ಮಾಘಂ 2-103। 4. ಧರ್ಮದಿಂದ ರಾಜ್ಯವಾಳುವದೊರೆ.

**ಧರ್ಮಲಕ್ಷಣ ಧರ್ಮಲಕ್ಷಣ** (ನಂ) 1. ವೇದ, ಧರ್ಮ ಕಾರ್ಯಗಳಿಗೆ ಪ್ರಮಾಣವಾಗಿರುವ ವಚನ. ಧರ್ಮ ಲಕ್ಷಯತೇ—ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನಾಕ್ಷಯೋಃ) ಕರಂ “ನ್ಯುತ್” (3-3-119)। 2. ಧರ್ಮಸ್ವರೂಪ, ಜನಸಾಮಾನ್ಯಕ್ಕೂ ಬೇಕಾದ ಮುಖ್ಯವಾದ ಧರ್ಮದ ಲಕ್ಷಣ. “ಭೃತಿಃ ಕ್ಷಮಾ ದಮೋಸ್ತೇಯಂ ಶೌಚಮಿಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹಃ। ಧೀರ್ವಿಶ್ವಾ ಸತ್ಯಮಕ್ರೋಧೋ ದಶಕಂ ಧರ್ಮಲಕ್ಷಣಮ್” ಮನುಂ 6-92। ಸಂತೋಷ ಶಾಂತತೆ ದಮ (ಮನೋವಿಕಾರಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಿದ್ದ ರೋ ವಿಕಾರಹೊಂದ ದಿರುವುದು) ಅಸ್ತೇಯ (ಪರರ ಧನವನ್ನು ಅಪಹರಿಸ ದಿರುವುದು) ಶೌಚ (ದೇಹಶುದ್ಧಿ) ಇಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹ (ಆಯಾ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಚಕ್ಷುರಾದಿ ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ಬಿಡ ದಿರುವುದು) ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನ ಅತ್ಮಜ್ಞಾನ ಸತ್ಯ ಕೋಪವಿಲ್ಲ ದಿರುವುದು ಇವು ಹತ್ತೂ ಮನುಷ್ಯಸಾಮಾನ್ಯಕ್ಕೂ ಇರ ಬೇಕಾದ ಧರ್ಮಗಳು.

**ಧರ್ಮವಾಣಿಜಿಕ ಧರ್ಮವಾಣಿಜಿಕ** (ವಿಂ) ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆ ಯಿಂದ ಕರ್ಮಾಚರಣೆ ಮಾಡುವವನು. ಧರ್ಮ ವಾಣಿಜಿಕ ಇವ. ಧರ್ಮವನ್ನು ಮಾಡಿ ಫಲವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದ ರಿಂದ ಇವನು ವರ್ತಕನಂತಾಗುವನು. ಇದರಿಂದ ಇಂತಹ ವನಿಗೆ ಇಷ್ಟಸಿದ್ಧಿಯಾಗುವುದಿಲ್ಲ. “ಧರ್ಮವಾಣಿಜಿಕಾ ಮೃಢಾಃ ಫಲಕಾಮಾ ನರಾಧಮಾಃ। ಅರ್ಚಯಂತಿ ಜಗನ್ನಾಥಂ ತೇ ಕಾಮಾಪ್ನಾನ್-ವಂತಿ ಹಿ” ವಿಂ 40।

**ಧರ್ಮವಿದ್ ಧರ್ಮವಿದ್** (ವಿಂ) ಧರ್ಮಜ್ಞ, ಧರ್ಮವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. ಧರ್ಮ ವೇತ್ತಿ—ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) “ವಿವ್” (3-2-61)।

**ಧರ್ಮವಾಸರ ಧರ್ಮವಾಸರ** (ಪುಂ) ಪೂರ್ಣಮ, ಹುಣ್ಣಿಮೆ. “ಪೂರ್ಣಮ್ ಧರ್ಮವಾಸರಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1.

**ಧರ್ಮವಿದುತ್ತಮ ಧರ್ಮವಿದುತ್ತಮ** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಧರ್ಮವಿತು ಉತ್ತಮಃ। “ಧರ್ಮವಿತುತ್ತಮತ್ವೇನ ಮತೋ ಧರ್ಮ-ವಿದುತ್ತಮಃ” ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ। “ವೀರಃ ಶಕ್ತಿಮತಾಂ ಶ್ರೇಷ್ಠೋ ಧರ್ಮೋ ಧರ್ಮವಿದುತ್ತಮಃ” ವಿಂ ಸಂ 1.

**ಧರ್ಮವಿಧಾ ಧರ್ಮವಿಧಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಧರ್ಮವನ್ನು ತಿಳಿ ಸುವ ವಿದ್ಯೆ. 2. ಶಾಸ್ತ್ರ.

**ಧರ್ಮವಿಪ್ಲವ ಧರ್ಮವಿಪ್ಲವ** (ಪುಂ) ಧರ್ಮದ ನಾಶ, ಧರ್ಮವನ್ನು ಮಾರಿ ನಡೆಯುವುದು. ಧರ್ಮಸ್ಯ ವಿಪ್ಲವಃ। “ಗುರುಪದಿಷ್ಟೇನ ರಿಪೌ ಸುತೇಽಪಿ ವಾ ನಿಹಂತಿ ದೃಢೇನ ಸ ಧರ್ಮವಿಪ್ಲವಮ್” ಕಿರಾಂ 1-131.

**ಧರ್ಮವೀರ ಧರ್ಮವೀರ** (ಪುಂ) 1. ವೀರರಸದ ಒಂದು ಭೇದ. ವೀರರಸವು ದಾನವೀರ ಧರ್ಮವೀರ ಯುದ್ಧ ವೀರ ಮತ್ತು ದಯಾವೀರ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. 2. ಧರ್ಮವೀರ ರಸಕ್ಕೆ ಅಶ್ರಯನಾದ ನಾಯಕ. “ಸ ಚ ದಾನಧರ್ಮಯುಧಃ ದಯಾ ಚ ಸಮನ್ವಿತಶ್ಚತುರ್ಥಿ ಸ್ಥಾತ್” ಸಾಂ 40 3-234। ಯುಧಿಷ್ಠಿರ ಮೊದಲಾದವರು ಧರ್ಮವೀರರು. “ರಾಜ್ಯಂ ಚ ವಸು ದೇಹಶ್ಚ ಭಾರ್ಯಾ ಭಾತೃಪುತ್ರಾಶ್ಚ ಯೇ। ಯನ್ವ ಲೋಕೇ ಮಮಾಯತಂ ತದರ್ಮಾಯ ಸದೋಷತಮ್”। ಇಲ್ಲಿ ವೈದಿಕಕರ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಧರ್ಮ ರಾಜನಿಗಿರುವ ಉತ್ಸಾಹವು ಸಾಮಾಜಿಕರಿಂದ ಅಸ್ವಾದಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟು ವೀರರಸತ್ವವನ್ನು ಹೊಂದುವುದು.

**ಧರ್ಮವೃದ್ಧ ಧರ್ಮವೃದ್ಧ** (ವಿಂ) ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ ಯಿಂದ ದೊಡ್ಡ ವನು. ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡುವುದ ರಿಂದ ಶ್ರೇಷ್ಠನೆನಿಸಿದವನು. ಧರ್ಮಣ ವೃದ್ಧಃ। “ದಿದೃಕ್ಷವಸ್ತಾಂ ಶ್ರುಣ್ವಯೋಽಪ್ಯುಪಾಗಮನ್ ನ ಧರ್ಮವೃದ್ಧೇಭು ವಯಃ ಸಮೀಕೃತೇ” ಕುಮಾಂ 4-161.

**ಧರ್ಮವೈತಸಿಕ ಧರ್ಮವೈತಸಿಕ** (ಪುಂ) ಜನರಿಂದ ಹೊಗಳಿಸಿ ಕೊಳ್ಳಲು ದಾನಮಾಡುವವನು, ಬಿರುದುಗಳನ್ನು ಪಡೆ ಯಲು ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡುವವನು. ಧರ್ಮ ವೈತಸಿಕ ಇವ. “ಧರ್ಮವೈತಸಿಕೋ ಯಸ್ತು ಪಾಪಾತ್ಮಾ ಪುರುಷಸ್ತಥಾ। ದದಾತಿ ದಾನಂ ವಿಪ್ರೇಸ್ಯೋ ಲೋಕವಿಶ್ವಾಸಕಾರಣಮ್” ಅಗ್ನಿಪುಂ 1.

**ಧರ್ಮವ್ಯಾಧ ಧರ್ಮವ್ಯಾಧ** (ಪುಂ) ಧರ್ಮಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವ ಒಬ್ಬ ಬೇಡ, —ಬೇಟೆಗಾರ, ಪೂರ್ವಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋತ್ತಮನಾಗಿದ್ದು ಈ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಧನಾಗಿ ಜನಿಸಿದವನು. ಧರ್ಮಪ್ರಾಪ್ತಿಯ ವ್ಯಾಧಃ। [ಈ ವ್ಯಾಧನು ಪೂರ್ವಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಸಕಲಶಾಸ್ತ್ರಪಾರಂಗತನಾದ ಒಬ್ಬ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಾಗಿದ್ದನು. ಒಬ್ಬ ರಾಜನ ಸಹವಾಸದಿಂದ



ಧರ್ಮವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿತು ಒಂದು ದಿನ ರಾಜನೊಡನೆ ಬೇಟೆಗೆ ಹೊರಟನು. ರಾಜನು ಮೃಗಗಳಮೇಲೆ ಬಾಣ ಪ್ರಯೋಗಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಇವನೂ ಬಾಣಗಳನ್ನು ಬಿಡುತ್ತಿರಲು ಇವನ ಬಾಣವು ಒಬ್ಬ ಋಷಿಗೆ ತಗುಲಿ ಋಷಿಯು ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬಿದ್ದನು. ಆಗ ಋಷಿಯು ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ತಿಳಿಯದೆ ಮಾಡಿದ ಅಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಕ್ಷಮೆ ಬೇಡಿದನು. ಇಂತಹ ಕೆಲಸಮಾಡಿದ್ದರಿಂದ ಮುಂದಿನ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಬೇಟೆಗಾರನಾಗಿ ಹುಟ್ಟುವಂತೆ ಋಷಿಯು ಇವನನ್ನು ಶಪಿಸಿ ಅಜ್ಞಾನದಿಂದ ಈ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಿದುದರಿಂದ ಆ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿಯೂ ಧರ್ಮಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾಗಿರುವೆ ಯೆಂದೂ ಪೂರ್ವಜನ್ಮದ ಸ್ಮರಣೆಯು ಬರುವುದೆಂದೂ ಶಾಪವಿಮೋಚನೆಯಾಗಿ ಮತ್ತೆ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಾಗಿ ಹುಟ್ಟುವೆ ಯೆಂದೂ ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದನು. ಈತನು ವ್ಯಾಧನಾಗಿ ಜನಿಸಿದ್ದರೂ ಅನೇಕರಿಗೆ ಧರ್ಮೋಪದೇಶಮಾಡುತ್ತಿದ್ದುದರಿಂದ ಧರ್ಮವ್ಯಾಧನೆಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು.] ಭಾ.ವನಂ ೨೧೮, ೧೯.

**ಧರ್ಮವ್ರತ ಧರ್ಮವ್ರತ** (ವಿಂ) 1. ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದವನು. ಧರ್ಮ ವ್ರತಂ ಯಸ್ಯ | (ಸ್ತ್ರೀಂ)-ವ್ರತಾ-ವ್ರತಾ. 2. ಧರ್ಮಪುರುಷನ ಒಬ್ಬ ಕನ್ಯೆ, ಮರೀಚಿಕಾಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿ.

**ಧರ್ಮಶಾಲಾ ಧರ್ಮಶಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಧರ್ಮಭಕ್ತ, ಪ್ರವಾಸಿಗರಿಗಾಗಿ ಧರ್ಮವಾಗಿ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಗೃಹ, ಯಾತ್ರಾರ್ಥಿಗಳು ತಂಗಲು ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಮನೆ. ಧರ್ಮಶಾಲಾ | 2. ನ್ಯಾಯಸ್ಥಾನ, ಧರ್ಮಪೀಠ.

**ಧರ್ಮಶಾಸನ ಧರ್ಮಶಾಸನ** (ನಂ) 1. ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ. ಧರ್ಮ: ಶಿಷ್ಯತೇನೇನ-ಶಾಸ್ತು (ಅನುಶಿಷ್ಟಿ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | 2. ಧರ್ಮವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವುದು. ಧರ್ಮಸ್ಯ ಶಾಸನಮ್ | "ಶರೀರಕೃತ್ ಪ್ರಾಣದಾತಾ ಯಸ್ಯ ಚಾಕ್ಷಾನಿ ಭುಜಜತೇ | ಕ್ರಮೇಣೈತೇ ತ್ರಯೋಪ್ಯುಕ್ತಾ: ಪಿತರೋ ಧರ್ಮಶಾಸನೇ" ಭಾಂ |

**ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ** (ನಂ) ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ, ಧರ್ಮದ ವಿಷಯವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ ಮನು ಪರಾಶರ ಮೊದಲಾದವರಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಸ್ಮೃತಿ. ಶಿಷ್ಯತೇನೇನ-ಶಾಸ್ತು (ಅನು-ಶಿಷ್ಟಿ) ಕರಂ "ಫ್ಲನ್" (೩ಂ ೪-೧೫೮) | ಸ್ಮೃತಿ ಕಾರರು: ಮನು ಪರಾಶರ ಯಮ ವಸಿಷ್ಠ ಅತ್ರಿ ದಕ್ಷ ವಿಷ್ಣು ಅಂಗಿರಸ್ಸು ಉಶನಸ್ಸು ಬೃಹಸ್ಪತಿ ವ್ಯಾಸ ಆಪಸ್ತಂಬ ಗೌತಮ ಕಾತ್ಯಾಯನ ನಾರದ ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕ್ಯ ಸಂವರ್ತ ಶಂಖ ಲಿಖಿತ ಮತ್ತು ಹಾರೀತ ; ಇವರಲ್ಲದೆ ಶಾತಾತಪ ಪ್ರಾಚೀತಸ ದೇವಲ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ವೃದ್ಧಶಾತಾತಪ

ಪೈಠೀನಸಿ ಬೋಧಾಯನ ಜಾಬಾಲಿ ಚ್ಯವನ ಮರೀಚಿ ಕಶ್ಯಪ ಮುಂತಾದವರೂ ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರಕಾರರು. "ಮನುಸ್ಮೃತಿ ವಸಿಷ್ಠೋಷ್ಣಿ: ದಕ್ಷೋ ವಿಷ್ಣುಸ್ತಥಾಜ್ಞಿರಾ: | ಉಶನಾ ವಾಕಪ-ತಿವ್ಯಸಿ: ಆಪಸ್ತಂಬೋಽಪಿ ಗೌತಮ: | ಕಾತ್ಯಾಯನೋ ನಾರದಃ ಪ್ರಾಜ್ಞವಲ್ಕಯ: ಪರಾಶರ: | ಸಂವತ್ಸರೇವ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಹಾರೀತೋ ಲಿಖಿತಸ್ತಥಾ" |

**ಧರ್ಮಶೀಲ ಧರ್ಮಶೀಲ** (ವಿಂ) 1. ಧರ್ಮದ ಸ್ವಭಾವ ದವನು, ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಯಲ್ಲಿ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. 2. ಧರ್ಮಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದವನು. ಧರ್ಮಸಾಧನಂ ಶೀಲಂ ಯಸ್ಯ |

**ಧರ್ಮಸಂವರ್ಧನ ಧರ್ಮಸಂವರ್ಧನ** (ನಂ) 1. ಧರ್ಮವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 2. ಧರ್ಮವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವ. **ಧರ್ಮಸಂವರ್ಧಿನ್ ಧರ್ಮಸಂವರ್ಧಿನ್** (ವಿಂ) ಧರ್ಮವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವ. ಧರ್ಮ ಸಂವರ್ಧಯತಿ-ಸಮ್+ವೃಙ್ (ವೃದ್ಧೌ) "ಣಿಣಿ:" (೩-೧-೧೩೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೌಪ್" (೪-೧-೫) | -ವರ್ಧಿನಿ -ವರ್ಧಿನೀ.

**ಧರ್ಮಸಂಹಿತಾ ಧರ್ಮಸಂಹಿತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ಮೃತಿ, ಧರ್ಮ ಶಾಸ್ತ್ರ, ಮನುಸ್ಮೃತಿ ಮೊದಲಾದುದು. ಧರ್ಮಬೋಧನಾರ್ಥ ರಚಿತಾ ಸಂಹಿತಾ |

**ಧರ್ಮಸಭಾ ಧರ್ಮಸಭಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನ್ಯಾಯಸ್ಥಾನ, ನ್ಯಾಯ ತೀರ್ಮಾನಕ್ಕಾಗಿ ಕೂಡುವ ಸಭೆ.

**ಧರ್ಮಸಮಯ ಧರ್ಮಸಮಯ** (ಪುಂ) ಧರ್ಮದ ಮರ್ಯಾದೆ. ನ್ಯಾಯದ ಕಟ್ಟಳೆ, -ಕಟ್ಟುಪಾಡು. ಧರ್ಮಸ್ಯ ಸಮಯ: | "ಯಶ್ಚಾಪಿ ಧರ್ಮಸಮಯಾತ್ಮಚ್ಯುತೋ ಧರ್ಮಜೀವನ:" ಮನುಂ ೯-೨೭೩ |

**ಧರ್ಮಸಹಾಯ ಧರ್ಮಸಹಾಯ** (ಪುಂ) ರಾಜನ ಧರ್ಮಕಾರ್ಯ ಗಳಲ್ಲಿ ಸಾಹಾಯ್ಯಮಾಡುವವನು. ಧರ್ಮ ಸಹಾಯ: | ಋತ್ವಿಜ್ಞಗಳು ಪುರೋಹಿತರು ಆತ್ಮಜ್ಞಾನಿಗಳು ಇವರು ಧರ್ಮಸಹಾಯರು. "ಋತ್ವಿಕ್ಪುರೋಹಿತ: ಸ್ಯುಬ್ರಹ್ಮವಿದಸ್ತಾ-ಪಸಾಸ್ತಥಾ ಧರ್ಮ" ಸಾಂ ೬ಂ ೩-೪೫ |

**ಧರ್ಮಸಾಧನ ಧರ್ಮಸಾಧನ** (ನಂ) ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳಿಗೆ ಬೇಕಾದ ಉಪಕರಣ, ಧರ್ಮಸಂಪಾದನೆಗೆ ಬೇಕಾದ ಉಪಾಯ. ಧರ್ಮಸ್ಯ ಸಾಧನಮ್ | ಧರ್ಮವು ಶರೀರ ವಾಕ್ಯ ಬುದ್ಧಿ ಮತ್ತು ಧನ ಇವುಗಳಿಂದ ಸಾಧಿಸಲ್ಪಡುವುದು. "ಅಪಿ ಸ್ವಶಕ್ತ್ಯಾ ತಪಸಿ ಪ್ರವರ್ತತೇ ಶರೀರಮಾಚ್ಛೇದನಂ ಧರ್ಮ-ಸಾಧನಮ್" ಕುಮಾಂ ೫-೩೩ |

**ಧರ್ಮಸಾರ್ವಣಿ ಧರ್ಮಸಾರ್ವಣಿ** (ಪುಂ) ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಮನುಗಳಲ್ಲಿ ಹನ್ನೊಂದನೆಯವನು. ["ಇಂದ್ರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]



**ಧರ್ಮಸಿಂಧು ಧರ್ಮಸಿಂಧು** (ಪುಂ) ಧರ್ಮವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ, ಒಂದು ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ ಗ್ರಂಥ. ಧರ್ಮಸಿಂಧುರೀತಿ.

**ಧರ್ಮಸುತ ಧರ್ಮಸುತ** (ಪುಂ) ಧರ್ಮರಾಜ, ಯುಧಿಷ್ಠಿರ. ಧರ್ಮಸುತ:

**ಧರ್ಮಸುತ ಧರ್ಮಸೂತ್ರ** (ವಿಂ) 1. ಧರ್ಮವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ, ಧರ್ಮವನ್ನು ಗಳಿಸಿಕೊಡುವ. ಧರ್ಮ ಸೂತ್ರೇ—ಪುಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಪ್ರಸವೇ) "ಕಿವ್" (೩-೨-೬೧). (ಪುಂ) 2. ನದಿಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ ಕುಕ್ಕುಟಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಹಕ್ಕಿ.

**ಧರ್ಮಸೂತ್ರ ಧರ್ಮಸೂತ್ರ** (ನಂ) ಧರ್ಮವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ ಸೂತ್ರರೂಪವಾದ ಗ್ರಂಥ. ಧರ್ಮವಿವರಣೆ ಸೂತ್ರಮ್. ಅಪಸ್ತಂಬ ಧರ್ಮಸೂತ್ರ, ಗೌತಮ ಧರ್ಮಸೂತ್ರ.

**ಧರ್ಮಸೇತು ಧರ್ಮಸೇತು** (ವಿಂ) ಧರ್ಮವನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನು. ಧರ್ಮಸೇತುರೀತಿ. "ರಾಜಾ ದಶರಥೋ ನಾಮ ಧರ್ಮಸೇತುರೀವಾಚಲಃ" ರಾಮಾಂ.

**ಧರ್ಮಹೀನ ಧರ್ಮಹೀನ** (ವಿಂ) ಧರ್ಮಕಾರ್ಯವನ್ನು ಆಚರಿಸದಿರುವವನು. ಧರ್ಮೇಣ ಹೀನಃ.

**ಧರ್ಮಾಚಾರ್ಯ ಧರ್ಮಾಚಾರ್ಯ** (ಪುಂ) ಧರ್ಮವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ ಗುರು, ಧರ್ಮೋಪದೇಶಕ. ಧರ್ಮೇ ಆಚಾರ್ಯಃ.

**ಧರ್ಮಾತ್ಮಜ ಧರ್ಮಾತ್ಮಜ** (ಪುಂ) ಧರ್ಮರಾಜ, ಯುಧಿಷ್ಠಿರ. ಧರ್ಮಾತ್ಮಜಃ. "ಆಸ್ತಿಕವ್ಯಶುಕ್ಲಮವತಃ ಪ್ರಿಯಧರ್ಮ ಧರ್ಮಾತ್ಮಜಸ್ಯ ವಿಹಿತಾಗಸಿ ಶತ್ರುರ್ವಗ್" ಕಿರಾಂ ೧೮-೪೩.

**ಧರ್ಮಾತ್ಮನ್ ಧರ್ಮಾತ್ಮನ್** (ವಿಂ) ಧರ್ಮಸ್ವಭಾವದವನು, ಧರ್ಮಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. ಧರ್ಮಃ ಆತ್ಮಾ ಸ್ವಭಾವೋ ಯಸ್ಯ.

**ಧರ್ಮಧರ್ಮ ಧರ್ಮಧರ್ಮ** (ಪುಂ ದ್ವಿಂ) ಪುಣ್ಯ ಮತ್ತು ಪಾಪ. ಧರ್ಮಶ್ರಾದ್ಧಮಶ್ರ.

**ಧರ್ಮಾಧಿಕರಣ ಧರ್ಮಾಧಿಕರಣ** (ಪುಂ) 1. ನ್ಯಾಯಾಧೀಶ, ನ್ಯಾಯಾಧಿಕಾರಿ. ಧರ್ಮಾಧಿಕರಣಮಸ್ಯಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭). "ಸಮಃ ಶತ್ರುಃ ಚ ಮಿತ್ರಃ ಚ ಸರ್ವಶಾಸ್ತ್ರ-ವಿಶಾರದಃ. ವಿಪ್ರಮುಖ್ಯಃ ಕುಲೀನಶ್ಚ ಧರ್ಮಾಧಿಕರಣಃ ಭವೇತ್" ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ. (ನಂ) 2. ನ್ಯಾಯಸ್ಥಾನ, ವ್ಯವಹಾರಗಳನ್ನು ತೀರ್ಮಾನಿಸುವ ಸ್ಥಾನ. ಧರ್ಮೋಪದೇಶಕೀತಿ—ಅಧಿ+ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭).

**ಧರ್ಮಾಧಿಕರಣಿನ್ ಧರ್ಮಾಧಿಕರಣಿನ್** (ಪುಂ) ನ್ಯಾಯಾಧೀಶ, ವ್ಯವಹಾರಗಳನ್ನು ತೀರ್ಮಾನಿಸಲು ನಿಯುಕ್ತನಾದ ಅಧಿಕಾರಿ. ಧರ್ಮಾಧಿಕರಣಮಸ್ಯಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫).

**ಧರ್ಮಾಧಿಕಾರ ಧರ್ಮಾಧಿಕಾರ** (ಪುಂ) ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಣೆ. ಧರ್ಮೇ ಅಧಿಕಾರಃ. "ಯಃ ಪೌರವೇಣ ರಾಜಾ ಧರ್ಮಾಧಿಕಾರೇ ನಿಯುಕ್ತಃ" ಶಾಕುಂ ೧.

**ಧರ್ಮಾಧಿಕಾರಿನ್ ಧರ್ಮಾಧಿಕಾರಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಧರ್ಮವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಅಧಿಕಾರಿ, ರಾಜನಿಗೆ ಧರ್ಮದ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಬೋಧಿಸುವವನು. ಧರ್ಮಮಧಿಕರೋತಿ—ಅಧಿ+ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) "ಇನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪). 2. ಮನುಷ್ಯ. ಧರ್ಮ ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ ಅಧಿಕಾರಿ.

**ಧರ್ಮಾಧಿಕೃತ ಧರ್ಮಾಧಿಕೃತ** (ಪುಂ) ನ್ಯಾಯಾಧೀಶ, ನ್ಯಾಯ ತೀರ್ಮಾನದ ಅಧಿಕಾರಿ.

**ಧರ್ಮಾಧಿಷ್ಠಾನ ಧರ್ಮಾಧಿಷ್ಠಾನ** (ನಂ) ನ್ಯಾಯಸ್ಥಾನ.

**ಧರ್ಮಾಧ್ಯಕ್ಷ ಧರ್ಮಾಧ್ಯಕ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಧರ್ಮಸ್ಯ ಅಧ್ಯಕ್ಷಃ. "ಧರ್ಮಾಧಿಕಾರಿಣೋ ಲೋಕಾಃ ತದಾರಾಧ್ಯಾಃ ಸುರಾಸ್ತಥಾ. ಧರ್ಮಸ್ತತ್ಸಾಧನಂ ತೇಷಾಮಧ್ಯಕ್ಷಃ ಸ್ಯಾತ್ ತ್ರಿನಾಮವಾನ್. ಲೋಕಾಧ್ಯಕ್ಷಃ ಸುರಾಧ್ಯಕ್ಷೋ ಧರ್ಮಾಧ್ಯಕ್ಷಃ ಇತಿ ಕ್ರಮಾತ್" ಇತಿ ನಿರ್ವಹಿಃ. "ಲೋಕಾಧ್ಯಕ್ಷಃ ಸುರಾಧ್ಯಕ್ಷೋ ಧರ್ಮಾಧ್ಯಕ್ಷಃ ಕೃತಾಕೃತಃ" ವಿಂ ಸಂ. 2. ನ್ಯಾಯಾಧೀಶ, ವ್ಯವಹಾರವನ್ನು ತೀರ್ಮಾನಿಸುವ ನ್ಯಾಯಮೂರ್ತಿ. ಧರ್ಮೇ ಅಧ್ಯಕ್ಷಃ. "ಕುಲಶೀಲ-ಗುಣೋಪೇತಃ ಸರ್ವಕರ್ಮಪರಾಯಣಃ. ಪ್ರವೀಣಃ ಪ್ರೇಷಣಾಧ್ಯಕ್ಷೋ ಧರ್ಮಾಧ್ಯಕ್ಷೋಽಭಿವಿಧೀಯತೇ" ಚಾಣಕ್ಯಃ.

**ಧರ್ಮಾನುಯಾಯಿನ್ ಧರ್ಮಾನುಯಾಯಿನ್** (ವಿಂ) ಧರ್ಮವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯುವವನು. ಧರ್ಮಮನುಯಾತಿ.

**ಧರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನ ಧರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನ** (ನಂ) ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ.

**ಧರ್ಮಾಭಾಸ ಧರ್ಮಾಭಾಸ** (ಪುಂ) ಶ್ರುತಿ ಮತ್ತು ಸ್ಮೃತಿಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಇತರ ಗ್ರಂಥಗಳಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಅಸದ್ಧರ್ಮ. "ಅನ್ಯಶಾಸ್ತ್ರೇಷು ಯಃ ಪ್ರೋಕ್ತೋ ಧರ್ಮಾಭಾಸಃ ಸ ಉಚ್ಯತೇ" ದೇವೀಮಾಂ.

**ಧರ್ಮಾಪೇತ ಧರ್ಮಾಪೇತ** (ವಿಂ) ಧರ್ಮಭ್ರಷ್ಟ, ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳಿಂದ ಹೊರಗಿರುವವನು. ಧರ್ಮದಿಪೇತಃ.

**ಧರ್ಮಾರಣ್ಯ ಧರ್ಮಾರಣ್ಯ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ. ಈಗ ಇದು ಗಯಾ ಜಿಲ್ಲೆಯಲ್ಲಿ ಬುಧ್ಧಗಯೆಗೆ ನಾಲ್ಕು ಮೈಲಿಗಳ ದೂರದಲ್ಲಿರುವುದು. "ಸೋಹಮವಿಜ್ಞಾತಕ್ರಿಯೋಪ-ಲಾಭಾಯ ಧರ್ಮಾರಣ್ಯಮಿದಮಾಹಾತಃ" ಶಾಕುಂ ೧. 2. ಮಧ್ಯದೇಶದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಅರಣ್ಯ. 3. ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯಗಳಿಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ಅರಣ್ಯ.

**ಧರ್ಮಸಿಂಧು ಧರ್ಮಸಿಂಧು** (ನಂ) ನ್ಯಾಯಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ರಾಜನಾಗಲಿ ನ್ಯಾಯಾಧೀಶನಾಗಲಿ ವ್ಯವಹಾರ ನಿರ್ಣಯಕ್ಕಾಗಿ



ಕೂಡುವ ಅಸನ. ಧರ್ಮಂ ಧರ್ಮನಿರ್ಣಯಾಂ ಆಸನಮ್ |

"ಧರ್ಮನಮಧಿಷ್ಠಾಯ ಸಂವೀತಾಙ್ಗ: ಸಮಾಹಿತ: " ಮನುಂ ೮-೨೩ |

**ಧರ್ಮಸ್ತಿಕಾಯ ಧರ್ಮಾಸ್ತಿಕಾಯ (ಪುಂ)** ಜೈನಮತಸಿದ್ಧವಾದ ಐದು ವಿಧ ಅಸ್ತಿಕಾಯಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ವಿಧ. ಜೀವದ್ರವ್ಯಕ್ಕೆ ಗತಿಯಿರುವುದಾದ ಉಪಕರಮಾಡುವ ಧರ್ಮವೆಂಬ ಒಂದು ಅಸ್ತಿಕಾಯ. "ಗತಿಸ್ಥಿತ್ಯುಪಗ್ರಹೌ ಧರ್ಮಧರ್ಮಯೋರೂಪಕಾರ:" ತತ್ವಾಂ ಸುಂ |

**ಧರ್ಮಿಕ ಧರ್ಮಿಕ (ವಿಂ)** ಧರ್ಮವುಳ್ಳವನು, ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಯುಳ್ಳವನು. ಧರ್ಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೬) |

**ಧರ್ಮಿನ್ ಧರ್ಮಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. ಧರ್ಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) | ಸಕಲ ಧರ್ಮಗಳಿಗೂ ಪರಮಾತ್ಮನು ಆಧಾರನಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಧರ್ಮಿ ಸಕಲಧರ್ಮಿಣಾಂ ಸದಾಧಾರತಯಾ ಸ್ಮೃತ:" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ: | "ಧರ್ಮಗುಪ್ ಧರ್ಮಕೃತ್ ಧರ್ಮಿ ಸದಸತ್ಕರಮಕರಮ್" ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ಧರ್ಮದಿಂದಕೂಡಿದ. 3. ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯವನ್ನು ಆಚರಿಸುವ. 4. ಕರ್ತವ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾಗಿರುವ. ಧರ್ಮ: ಕರ್ತವ್ಯತ್ವೇನಾಸ್ತಿಸ್ಯ "ಇನಿ:" |

**ಧರ್ಮಿಣ ಧರ್ಮಿಣ (ವಿಂ)** ಧರ್ಮಾತ್ಮ, ಹೆಚ್ಚು ಧರ್ಮಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ, ಹೆಚ್ಚು ನ್ಯಾಯವಾಗಿ ವರ್ತಿಸುವ. ಅತಿಶಯೇನ (ಧರ್ಮವಾನ್) ಧರ್ಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಐಠನ್" (೪-೩-೫೫) | ಮತುಪೋ ಲುಕ್ (೪-೩-೬೫) |

**ಧರ್ಮೇಂದ್ರ ಧರ್ಮೇಂದ್ರ (ಪುಂ)** ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. ಧರ್ಮೇಂದ್ರ ಇವ | "ಪಿತೃಣಾಮಿವ ಧರ್ಮೇಂದ್ರೋ ಯಾದಸಾಮಿವ ಚಾಮ್ಬುರಾಡ್" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೬-೬ |

**ಧರ್ಮೇಷು ಧರ್ಮೇಷು (ವಿಂ)** ಪುಣ್ಯವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು.

**ಧರ್ಮೇಶ ಧರ್ಮೇಶ, -ಕೈಶರ -ಈಶ್ವರ (ಪುಂ)** "ಧರ್ಮೇಂದ್ರ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

**ಧರ್ಮೋತ್ತರ ಧರ್ಮೋತ್ತರ (ವಿಂ)** ಧರ್ಮಕಾರ್ಯವೇ ಪ್ರಧಾನವಾಗಿರುವ, ಧರ್ಮಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾಗಿರುವ. ಧರ್ಮ: उत्तर: प्रधानं यस्य | "ನೃಪಾ ಇವೋಪಪ್ಲವಿನ: ಪರೇಮ್ಯೋ ಧರ್ಮೋತ್ತರಂ ಮಧ್ಯಮಮಾಶ್ರಯಂತೇ" ರಘುಂ ೧೩-೭ |

**ಧರ್ಮೋಪದೇಶ ಧರ್ಮೋಪದೇಶ (ಪುಂ)** 1. ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ. ಧರ್ಮ: उपदिश्यतेऽनेन—उप+दिश (अतिसर्जने) करं "धम्" (೩-೩-೧೨೧) | "ಆರ್ಮ ಧರ್ಮೋಪದೇಶಂ ಚ ವೇದಶಾಸ್ತ್ರಾವಿರೋಧಿನಾ" ಮನುಂ ೧೨-೧೦೬ | 2. ಧರ್ಮದ ಉಪದೇಶ, ಧರ್ಮದ ಬೋಧನೆ. ಧರ್ಮಸ್ಯ ಉಪದೇಶ: | "ಧರ್ಮೋಪದೇಶಂ

ದರ್ಪಣ ವಿಪ್ರಾಣಾಮಸ್ಯ ಕುರ್ವತ: | ತಪ್ತಮಾಸೇವಯೇತೈಲಂ ವಕ್ತ್ರೇ ಶ್ರೋತ್ರೇ ಚ ಪಾರ್ಥಿವ:" ಮನುಂ ೮-೨೭೨ |

**ಧರ್ಮೋಪದೇಶಕ ಧರ್ಮೋಪದೇಶಕ (ಪುಂ)** ಧರ್ಮದ ಉಪದೇಶವನ್ನು ಮಾಡುವ ಆಚಾರ್ಯ, ಗುರು. ಧರ್ಮಮುಪದಿಶತಿ—उप+दिश (अतिसर्जने) "ध्" (೩-೧-೧೩೩) |

**ಧರ್ಮೋಪಧ ಧರ್ಮೋಪಧ (ವಿಂ)** ಧರ್ಮದ ನೆಪವನ್ನು ಇಟ್ಟು ಕೊಂಡು ಮೋಸಮಾಡುವ, ಧರ್ಮದ ವ್ಯಾಜದಿಂದ ವಂಚಿಸುವ. ಧರ್ಮಸ್ಯ ಉಪಧಾ ಯಸ್ಯ |

**ಧರ್ಮೋಪಿತ ಧರ್ಮೋಪಿತ (ವಿಂ)** ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸುವ, ಧರ್ಮದಿಂದ ಕೂಡಿರುವ.

**ಧರ್ಮ್ಯ ಧರ್ಮ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಧರ್ಮಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಲ್ಲದ, ಧರ್ಮವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಹೋಗದಿರುವ, ನ್ಯಾಯಮಾರ್ಗದಿಂದ ಜಾರದಿರುವ. ಧರ್ಮಾದಿನಪೇತ: "ಯತ್" (೪-೪-೯೨) | "ಯೋ ಯಸ್ಯ ಧರ್ಮ್ಯೋ ವರ್ಣಸ್ಯ ಗುಣದೋಷೌ ಚ ಯಸ್ಯ ಯೌ" ಮನುಂ ೩-೨೨ | "ಕ್ರಿಯಾಣಾಂ ಖಲು ಧರ್ಮ್ಯಾಣಾಂ ಸತ್ಯತಯೋ ಮೂಲಕಾರಣಮ್" ಕುಮಾಂ ೬-೧೩ | 2. ಧರ್ಮದಿಂದ ಹೊಂದಲ್ಪಡುವ. ಧರ್ಮೇಣ ಪ್ರಾಪ್ಯ: "ಯತ್" (೪-೪-೯೧) | 3. ನೀತಿಮತ. ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ.

**ಧರ್ಮ ಧರ್ಮ (ಪುಂ)** 1. ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯ, ಧೈರ್ಯ, ದಿಟ್ಟತನ. 2. ಹಿಂಸೆ, ತೊಂದರೆ, ಬಾಧೆ. 3. ಅಸಹನೆ. ತಿಷ್ಠಾ (ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯೇ) ಧರ್ಮ (ಪ್ರಸಹನೆ) ವಾ "ಧರ್ಮ" (೩-೩-೧೮) | 4. ಅಹಂಕಾರ, ಗರ್ವ, ಕೊಬ್ಬು, ಸೊಕ್ಕು.

**ಧರ್ಮಕ ಧರ್ಮಕ (ವಿಂ)** 1. ತೊಂದರೆ ಕೊಡುವವನು, ಹಿಂಸಿಸುವವನು. 2. ಬಲಾತ್ಕರಿಸುವವನು. 3. ಮಾನಭಂಗ ಮಾಡುವವನು. ಧರ್ಮ (ಪ್ರಸಹನೆ) "ಧ್" (೩-೧-೧೩೩) | (ಪುಂ) 4. ನಟ, ನರ್ತಕ.

**ಧರ್ಮಣ ಧರ್ಮಣ (ನಂ)** 1. ತೊಂದರೆಕೊಡುವುದು. 2. ಮಾನಭಂಗಮಾಡುವುದು. 3. ಆಕ್ರಮಣಮಾಡುವುದು, ಮೇಲೆ ಬೀಳುವುದು. 4. ವ್ಯಭಿಚಾರಮಾಡುವುದು. 5. ಸಂಭೋಗ. 6. ಅವಮಾನ. ಧರ್ಮ (ಪ್ರಸಹನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | (ವಿಂ) 7. ತೊಂದರೆ ಕೊಡುವವನು, ಹಿಂಸಿಸುವವನು. 8. ಆಕ್ರಮಣಮಾಡುವವನು, ಮೇಲೆ ಬೀಳುವವನು. 9. ವ್ಯಭಿಚಾರ ಮಾಡುವವನು. 10. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸುವವನು. ಧರ್ಮ ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಣಾ -ಣಾ. 11. ಆಕ್ರಮಣ, ಮೇಲೆ ಬೀಳುವುದು. 12. ಅವಮಾನ. ಧರ್ಮ+ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭) | "ಶ್ರುತ್ವೇಮಾಂ ಧರ್ಮಣಾಂ ತಾತ ತವ ತೇನ ದುರಾತ್ಮನಾ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೪೧-೧೮ | -ಣಿ -ಣೀ. 13. ಅಸಭ್ಯ ಹೆಂಗಸು, ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ. 14. ಅಭಿಸಾರಿಕೆ, ಕಾಮುಕನನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ



ಸಂಕೇತಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ ಹೆಗ್ಗು. "ವರ್ಷಣಿ ಸ್ಯಾತ್ಪರಿಭವೇ ರತೇಽಸ್ಯಾಂ ತು ವರ್ಷಣಿ" ಮೇದಿಂ. "ವರ್ಷಣಿ ತ್ವಮಿಸಾರಿಕಾ" ಹೇಮಂ.

**ವರ್ಷಣೀಯ ಧರ್ಷಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಅಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಡುವವನು. 2. ಅಕ್ರಮಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದವನು. 3. ಅಕ್ರಮಿಸಲು ಶಕ್ಯನಾದವನು. ಧೃಷ (ಪ್ರಸಹನೆ) "ವನೀಯರ್" (3-1-96).

**ವರ್ಷಿತ ಧರ್ಷಿತ** (ನಂ) 1. ಅವಮಾನ, ತಿರಸ್ಕಾರ, ಧಿಕ್ಕಾರ. 2. ಸಂಭೋಗ, ಮೈಥುನ. ಧೃಷ (ಪ್ರಸಹನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114). (ವಿಂ) 3. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಧೃಷ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತಾ -ತಾ. 4. ಅಸಭ್ಯ ಹೆಗ್ಗು, ಸ್ವರೀಣ. ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣ.

**ವರ್ಷಿನ್ ಧರ್ಷಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸುವವನು. 2. ತೊಂದರೆ ಕೊಡುವವನು. 3. ವ್ಯಭಿಚಾರ ಮಾಡುವವನು. ಧೃಷ (ಪ್ರಸಹನೆ) "ಞಿನಿ:" (3-1-134).

**ವವ ಧವ** (ಪುಂ) 1. ಪತಿ, ಗಂಡ. ವವತಿ-ವುಜ್ (ಕಂಪನೆ) + ಣಿಜ್ "ಅಜ್" (3-1-134). "ಮಾ ವಿಜ್ಞಾ ಚ ಹರೇ: ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಯಸ್ಯಾ ಇಶೋ ಯತೋ ಭವಾನ್. ತಸ್ಮಾನ್ಮಾವವನಾಮಾಸಿ ವವ: ಸ್ವಾಮೀತಿ ಶಬ್ದಿತ:" ಹರಿವಂ. 2. ಒಂದು ವೃಕ್ಷ. 3. ಮನುಷ್ಯ. 4. ಕಂಪನ, ನಡುಕ. 5. ಕೊಡಹುವುದು. ಧೂ ಭಾವೇ "ಅಪ್" (3-3-59). (ವಿಂ) 6. ಧೂರ್ತ, ಮಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. "ವವೋ ಧೂತೇ ನರೇ ಪತ್ಯಾ ದ್ರುಭೇದೇ" ಹೇಮಂ. "ವವ: ಪುಮಾನ್ ನರೇ ಧೂತೇ ಪತ್ಯಾ ವೃಕ್ಷಾಂತರೇಽಪಿ ಚ ಮೇದಿಂ.

**ವವಲ ಧವಲ** (ಪುಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಎತ್ತು, ಮಹಾವೃಷಭ. 2. ಶುಕ್ಲಗುಣ, ಬಿಳುಪು. (ವಿಂ) 3. ನಿರ್ಮಲವಾದ, ಸ್ವಚ್ಛವಾದ. ವಾವು (ಗತಿಶುದ್ಧತೆ) "ಕಲಜ್" (3-1-106). "ಕ್ರಿಯತೇ ವವಲ: ಲಲಜ್ಜಕೇವಲೇವ ಸಿತೇತರೇ-ರವ:" ಮಾಘಂ 16-46. 4. ಬಿಳುಪಾದ, ಬೆಳ್ಳಗಿರುವ. "ವವಲಾನ್ಯಾತಪತ್ರಾಣಿ ವಾಜಿನಶ್ಚ ಮನೋರಮಾ:" ಪಶ್ಚತಂ 1-43. 5. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ. 6. ಸುಂದರವಾದ, ಅಂದವಾದ. "ವವಲೋ ಮಹೋಕ್ಷೇ ಸುಂದರೇ ಸಿತೇ" ಹೇಮಂ. "ಶುಕ್ಲೇ ಶುಭ್ರಶುಚಿಶ್ವೇತಾ: ಪುಂಡ್ರಕೋ ವವಲೋಽರ್ಜುನ:" ವೈಜಂ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ದಾಪ್". ವವಲಾ ಧವಲಾ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಿ -ಲೀ. ಬಿಳಿಯ ಹೆಗ್ಗು. "ಚಾರೋ ಶ್ರೇಷ್ಠೇ ವೃಷೇ ಶ್ವೇತೇ ವವಲೋ ವವಲಿ ಗವಿ" ವೈಜಂ.

**ವವಲಗಿರಿ ಧವಲಗಿರಿ** (ಪುಂ) ಹಿಮಾಲಯದ ಉನ್ನತ ಶಿಖರಗಳಲ್ಲೊಂದು.

**ವವಲಪಕ್ಷ ಧವಲಪಕ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷ, ಚಾಂದ್ರ ಮಾಸದ ಮೊದಲನೆಯ ಅರ್ಧಭಾಗ. 2. ಹಂಸಪಕ್ಷ. ವವಲೋ ಪಕ್ಷೋ ಯಸ್ಯ.

**ವವಲಿಮನ್ ಧವಲಿಮನ್** (ಪುಂ) ಬಿಳುಪು, ಶುಕ್ಲಗುಣ. ವವಲಸ್ಯ ಭಾವ: "ಇಮನಿಜ್" (4-1-123). "ಅಹಿ-ಪರಿಕರಭಾಜೋ ಭಾಸ್ಮನೇರಜ್ಜರಾಗೇರಧಿಗತವವಲಿಮನ್: ಶೂಲಪಾಣೇ-ರಭಿಖ್ಯಾಮ್" ಮಾಘಂ 4-64.

**ವವಿತ್ರ ಧವಿತ್ರ** (ನಂ) ಜಿಂಕೆಯು ಚರ್ಮದಿಂದ ಮಾಡಿದ ಬೀಸಣಿಗೆ. ಧುಯತೇಜನ - ಧೂ (ಕಂಪನೆ) "ಇತ್ರ:" (3-2-104).

**ಋ ಧಾಮ್-ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:** (ಜುಹೋಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ).

ದಧಾತಿ ಧತ್ತ: ದಧತಿ.

ದಧಾಸಿ ಧತ್ತ: ಧತ್ತ.

ದಧಾಮಿ ದಧ್ವ: ದಧಮ:

ಧತ್ತೇ ದಧಾತೇ ದಧತೇ.

ದಧೌ ದಧತು: ದಧು:

ದಧೇ ದಧಾತೇ ದಧಿರೇ.

ಧಾತಾ ಧಾತಾರೋ ಧಾತಾರ:

ಧಾಸ್ಯತಿ, ಧಾಸ್ಯತೇ.

ದಧಾತು } ಧತ್ತಾಮ್ ದಧತು.

ಧತ್ತಾಮ್ ದಧಾತಾಮ್ ದಧತಾಮ್.

ಅದಧಾತ್, ಅಧತ್ತ. ದಧ್ಯಾತ್,

ದಧೀತ. ಧೇಯಾತ್, ಧಾಸೀಷ್ಠ.

ಅಧಾತ್, ಅಧಿತ್ತ. ಅಧಾಸ್ಯತ್,

ಅಧಾಸ್ಯತ. 1. ಇಡು, ಇರಿಸು. "ತತ್ಪದಯಾಂ ಪದಂ ಧತ್ತೇ

ತಸ್ಯ ಕಕ್ಷಾಂ ವಿಗಾಹತೇ" ಕಾವ್ಯಾಂ 2-64. 2. ಗುರಿಯಿಡು,

ನೇರವಾಗಿ ನೋಡು. "ಧತ್ತೇ ಚಕ್ಷುರ್ಮುಕ್ತುಲಿನಿ ರಣತ್ಕೋಕಿಲೇ

ಬಾಲಚೂತೇ" ಮಾಲತೀಂ 3-12. 3. ಕೊಡು, ಒಪ್ಪು

ಗ್ರಹಿಸು, ದಯಪಾಲಿಸು. "ಧುಯಿ ಲಕ್ಷ್ಮೀಮಿಹ ಮಯಿ ಭೃಷಂ

ವೇಹಿ ದೇವ ಪ್ರಸಾದ" ಮಾಲತೀಂ 1-5. 4. ಹಿಡಿದುಕೊ,

ಧರಿಸು. "ನಾಯುಧಾನಿ ದಧತೇ ಮುಮುಕ್ಷವ:" ಕಿರಾಂ 13-54.

5. ಉಡು, ಧರಿಸು. "ದಧತೋ ಮಜ್ಜಲಕ್ಷೋಮೇ ವಸಾನಸ್ಯ ಚ

ವತ್ಕಲೇ" ರಘುಂ 12-6. 6. ಪೋಷಿಸು, ಸಾಕು, ಸಲಹು.

"ಸಂಪದ್ವಿನಿಮಯೇನೋಮಿ ದಧತುರ್ಮುಮದ್ವಯಮ್" ರಘುಂ 1-26.

7. ಹೊಂದು, ವಹಿಸು. "ದಧತುರೋಜದ್ವಯಮುಂವಂಶೀತಲಮ್"

ಮಾಘಂ 9-66. 8. ಹೊರು, ಹೊತ್ತುಕೊ. "ಗಾಮ

ಧಾಸ್ಯತ್ಕಥಂ ನಾಗೋ ಮೃಣಾಲಮೃದ್ಭಿ: ಫಣಿ:" ಕುಮಾಂ 6-66.



**ಕರ್ಮಣಿ:**—ಧೀಯತೇ ಧೀಯೇತೇ ಧೀಯಂತೇ । ದಧೇ ದಧಾತೇ ದಧೀರೇ ।  
ಧಾತಾ, ಧಾಯಿತಾ । ಧಾಸ್ಯತೇ, ಧಾಯಿಷ್ಯತೇ । ಧೀಯತಾಮ್  
ಧೀಯೇತಾಮ್ ಧೀಯಂತಾಮ್ । ಅಧೀಯತ ಅಧೀಯೇತಾಮ್ ಅಧೀಯಂತ ।  
ಧೀಯೇತ । ಧಾಸೀಷಟ್, ಧಾಯಿಸೀಷಟ್ । ಅಧಾಯಿ ಅಧಾಯಿಷಾತಾಮ್  
ಅಧಾಯಿಷತ । ಅಧಾಸ್ಯತ, ಅಧಾಯಿಷ್ಯತ ।

**ಣಿಚಿ:**—ಧಾಪಯತಿ, -ತೇ । ಧಾಪಯಾಮಾಸ, -ಬಭೂವ, -ಚಕ್ರೇ ।  
ಧಾಪಯಿತಾ, -ಸಿ, -ಸೇ, -ಹೇ । ಧಾಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ । ಧಾಪಯತು,  
-ತಾಮ್ । ಅಧಾಪಯತ್, -ತ । ಧಾಪ್ಯಾತ್ ಧಾಪ್ಯಾಸ್ತಾಮ್,  
ಧಾಪಯಿಷೀಷಟ್ । ಅಧೀಪಯತ್, -ತ । ಅಧಾಪಯಿಷ್ಯತ್, -ತ ।

**ವ್ಯಂತಾತ್ ಕರ್ಮಣಿ:**—ಧಾಪ್ಯತೇ ಧಾಪ್ಯೇತೇ ಧಾಪ್ಯಂತೇ । ಧಾಪಯಾಂ  
ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವೇ, -ಆಸೇ । ಧಾಪಯಿತಾ, ಧಾಪಿತಾ । ಧಾಪಯಿಷ್ಯತೇ,  
ಧಾಪಿಷ್ಯತೇ । ಧಾಪ್ಯತಾಮ್ । ಅಧಾಪ್ಯತ । ಧಾಪ್ಯೇತ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಸನಿ:**—ಧಿತ್ಸತಿ, -ತೇ । ಧಿತ್ಸಾಂಚಕಾರ, -ಬಭೂವ,  
-ಆಸ, -ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವೇ, -ಆಸೇ । ಧಿತ್ಸಿತಾ । ಧಿತ್ಸಿಷ್ಯತಿ,  
-ತೇ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಹ್ವತ್ಸು:**—ಧಾತವ್ಯಮ್ । ಧಾನೀಯಮ್ । ಧೇಯಮ್ । ಹಿತಃ,  
ನಿಹಿತಃ । ಹಿತವಾನ್, ನಿಹಿತವಾನ್ । ದಧತ್, -ತೀ । ದಧಾನ್ ।  
ಧಾತುಮ್ । ಹಿತಮ್ । ಧಾನಮ್ । ಹಿತ್ವಾ । ಪ್ರಧಾಯ, ನಿಧಾಯ ।

**ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:**

(1) ಅಪಿ + ಧಾನ್ = ಅಪಿದಧಾತಿ । ಅಪಿಧಾನಮ್ ।  
1. ಮರೆಯಾಗು. “ಧನೇನಾಧರ್ಮಲಬ್ಧೇನ ಯಚ್ಚಿದ್ರಮಪಿಧೀಯತೇ”  
ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ । 2. ಅಚ್ಛಾದಿಸು, ಮುಚ್ಛು, ಮರೆಮಾಡು.

(2) ಅಭಿ + ಧಾನ್ = ಅಭಿದಧಾತಿ । ಅಭಿಧತ್ತೇ ।  
ಅಭಿಹಿತಃ । ಅಭಿಷ್ಠೇ । ಹೇಳು. “ಉದಾರಚೇತಾ ಗಿರಮಿತ್ಯುದಾರಾಂ  
ಹೈಪಾಯನೇನಾಭಿದಧೇ ನರೇಂದ್ರಃ” ಕಿರಾಂ ೩-೧೦ ।

(3) ಪ್ರತಿ + ಅಭಿ + ಧಾನ್ = ಪ್ರತಿಭಿದಧಾತಿ । ಪ್ರತಿಭಿ-  
ಧಾಯ । ಬದಲು ಹೇಳು, ಉತ್ತರಕೊಡು. “ಮಯಾ ಚ  
ಪ್ರತಿಭಿಹಿತಂ ದೇವಕಾರ್ಯಾರ್ಥದರ್ಶನಮ್” ಭಾಂ ।

(4) ಅವ + ಧಾನ್ = ಅವಧಾನಮ್ । ಅವಧಾಯ । ಮನಸ್ಸನ್ನು  
ಇಡು, ಜಾಗರೂಕತೆಯಿಂದ ತಿಳಿ, ಒಂದೇ ಮನಸ್ಸಿನಿಂದ  
ಗಮನಿಸು. “ಅಭಿತಿಗ್ಮರಶಿಮಿ ಚಿರಮಾವಿರಮಾದವಧಾನ-  
ಖಿನ್ನಮನಿಮೇಷತಯಾ” ಮಾಘಂ ೧-೧೧ ।

(5) ವಿ + ಅವ + ಧಾನ್ = ವ್ಯವಧಾನಮ್ । ವ್ಯವಹಿತಃ ।  
1. ಮರೆಮಾಡು, ಮುಚ್ಛು, ಅಚ್ಛಾದಿಸು. “ವ್ಯವಹಿತ-  
ಮವಿಜಾನತೀ ಕಿಲಾಂತರ್ವಣಭುವಿ ವಲ್ಲಭಮಾಮಿಮುಖ್ಯಭಾಜಮ್”  
ಮಾಘಂ ೭-೩೫ । 2. ನಡುವೆ ಸೇರಿಸು. 3. ಭೇರೆ  
ಮಾಡು, ಪ್ರತ್ಯೇಕಮಾಡು. 4. ಮಧ್ಯೆ ಅವಕಾಶಕೊಡು,  
ವಿರಾಮಕೊಡು.

(6) ಆ + ಧಾನ್ = ಆದಧಾತಿ । ಆದಧೇ । ಆಧತ್ತೇ ।  
ಆಹಿತಃ । 1. ಇಡು, ಇರಿಸು. “ದುಷ್ಯಂತೇನಾಹಿತಂ ತೇಜೋ  
ದಧಾನ್ ಭೂತಯೇ ಭುವಃ” ಶಾಕುಂ ೪-೩ । 2. ಹೊಂದಿಸು,  
ಛೇರಿಸು, ಸ್ಥಿರೀಕರಿಸು. “ನರಪತಿಕುಲಭೂತೈರ್ಮಮಾಧತ್ತ ರಾಜೀ  
ಗುರುಭಿರಭಿನಿವಿಷ್ಟಂ ಲೋಕಪಾಲಾನುಭಾವೈಃ” ರಘುಂ ೨-೭೫ ।  
3. ಉಂಟುಮಾಡು. “ಪಾಲಸ್ತುತುಲಿತಸ್ಯಾದ್ರೇರಾದಧಾನ್ ಇವ  
ಹ್ರಿಯಮ್” ರಘುಂ ೪-೮೦ ।

(7) ಅತಿ + ಆ + ಧಾನ್ = ಅತ್ಯಾಹಿತಮ್ । ಅತ್ಯಾಧಾನಮ್ ।  
1. ಅಪಾಯ, ಅನರ್ಥ. “ಅಭಿಮನ್ಯುವಧಾಮರ್ಷಿತೈಃ ಪಾಂಡುಪುತ್ರೈಃ  
ನ ಕಿञ್ಚಿದತ್ಯಾಹಿತಮಾಚರಿತಂ ಭವೇತ್” ವೇಣೀಂ ೨ । 2. ಅತಿ  
ಕ್ರಮಣ, ಉಲ್ಲಂಘನೆ, ಮೀರಿನಡೆಯುವುದು. “ಕಾರ್ಯ-  
ಮತ್ಯಾಹಿತಂ ಭವಿಷ್ಯತಿ” ಪ್ರಬೋಧಂ ೨ ।

(8) ಅನು + ಆ + ಧಾನ್ = ಅನ್ವಾಧಾನಮ್ । 1. ಅನಂತರ  
ಇಡುವುದು. 2. ತನ್ನಲ್ಲಿ ಇಟ್ಟು, ವಸ್ತುವನ್ನು ಯಜಮಾನ  
ನಿಗೆ ಕೊಡಲು ಹೇಳಿ ಮತ್ತೊಬ್ಬನಲ್ಲಿ ಕೊಡುವುದು.

(9) ಅಭಿ + ಆ + ಧಾನ್ = ಅಭ್ಯಾದಧಾತಿ । ಎದುರಾಗಿ  
ಇಡು. “ಅಭ್ಯಾದಧ್ಯುಷ್ಣ ಕಾಷ್ಠಾನಿ ತತ್ರ ದಹೇತ ಪಾಪಕೃತ್”  
ಮನುಂ ೮-೩೭೨ ।

(10) ಉಪ + ಆ + ಧಾನ್ = ಉಪಾದಧಾತಿ । ಉಪಾಧತ್ತೇ ।  
ಉಪಾಹಿತಮ್ । 1. ಧರ್ಮದ ವಿಷಯವಾಗಿ ಚಿಂತಿಸು.  
“ಉಪಾಧಿನಾ ಧರ್ಮಚಿಂತಾ” ಅಮಂ । 2. ಸಮೀಪ ಕಾಲ  
ದಲ್ಲಿ (ಕ್ಷಿಪ್ರದಲ್ಲಿ) ಫಲಕೊಡು. “ಅಗ್ನಯುತ್ಪಾತ ಉಪಾಹಿತಃ”  
ಅಮಂ । 3. ಕೂಡಿಸು, ಸಂಬಂಧಪಡಿಸು.

(11) ಸಮ್ + ಆ + ಧಾನ್ = ಸಮಾಧತ್ತೇ । ಸಮಾಧಾನಮ್ ।  
ಸಮಾಹಿತಃ । 1. ಮೊದಲು ಹೇಳಿದ ದೋಷವನ್ನು ಹೋಗ  
ಲಾಡಿಸು, ತೀರ್ಪುಕೊಟ್ಟು ಮೊದಲು ಹೇಳಿದ ದೋಷಣ  
ವನ್ನು ನಿರಾಕರಿಸು. 2. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ಇಡು, ಸರಿಯಾಗಿ  
ಇಡು, ಅಚಲವಾಗಿ ಇಡು. “ಅಥ ಚಿತ್ತಂ ಸಮಾಧಾತುಂ ನ  
ಶಕ್ನೋಪಿ ಮಯಿ ಸ್ಥಿರಮ್” ಗೀತಾ ೧೨-೯ । 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ  
ಇಡು. “ಸೌಹಂ ಭಾರಂ ಸಮಾಧಾಸ್ಯೇ ತ್ವಯಿ ತ್ವಂ ಬೌದ್ಧಮಹಿಸಿ”  
ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ।

(12) ಉಪ + ಧಾನ್ = ಉಪದಧಾತಿ । ಉಪಹಿತಃ । ಸಮೀಪ  
ದಲ್ಲಿ ಇರಿಸು. “ಪುಷ್ಪಂ ಪ್ರವಾಲೋಪಹಿತಂ ಯದಿ ಸ್ಯಾನ್ಮುಕ್ತಾಫಲಂ  
ವಾ ಯದಿ ವಿದ್ರುಮಸ್ಥಮ್” ಕುಮಾಂ ೧-೪೪ ।

(13) ನಿ + ಧಾನ್ = ನಿಧತ್ತೇ । ನಿಹಿತಮ್ । 1. ಇಡು,  
ಇರಿಸು. “ದಿನಾಂತೇ ನಿಹಿತಂ ತೇಜಃ ಸವಿತ್ರೇವ ಹೃತಾಶನಃ”  
ರಘುಂ ೪-೧ । 2. ನಿಕ್ಷೇಪಮಾಡು, ಹಣವನ್ನು ರಹಸ್ಯ  
ವಾಗಿ ಭೂಮಿಯೊಳಗಿಡು.



(14) ಪ್ರ+ನಿ+ಭಾಷ್ = ಪ್ರಣಿಧಾತಿ । ಪ್ರಣಿಧಾನಮ್ ।  
1. ಮನಸ್ಸನ್ನು ಒಂದೇ ಕಡೆ ನಿಲ್ಲಿಸು, ಮನಸ್ಸನ್ನು ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ಒಂದು ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಇಡು. “ಇಶ್ವರ-ಪ್ರಣಿಧಾನಾಢ್ವಾ” । 2. ಮನಸ್ಸುಮಾಡು. “ಕಿಷ್ಕಿನ್ಧಾದ್ರಿ-ಗುಹಾಂ ಗಂತುಂ ಮನಃ ಪ್ರಣಿಧೇ ದ್ರುತಮ್” ಭट्टಿಂ ೬-೧೪೨ ।

(15) ಸಮ್+ನಿ+ಭಾಷ್ = ಸನ್ನಿಧಾನಮ್ । ಸನ್ನಿಧತ್ತಾಮ್ ।  
1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಇಡು, ಸರಿಯಾಗಿ ಇಡು. “ದ್ವಾರಾಹುತೃ ಸಮಿಧಃ ಸನ್ನಿಧಯಾದ್ರಿಹಾಯಸಿ” ಮನುಂ ೨-೧೮೬ । 2. ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ ಇರು, ಸಮೀಪ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದು. “ಅಸ್ಮಿನ್ ಲತಾಮಣ್ಡಪೇ ಸನ್ನಿಹಿತಯಾ ತಯಾ ಭವಿತವ್ಯಮ್” ಶಾಕುಂ ೩ । 3. ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ ಇಡು, ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಇರಿಸು. “ಸ ಚಾಹಂ ಸಹ ಸಖ್ಯಾ ಧನಮಿತ್ರೇಣ ತತ್ರ ಸನ್ಯಧಿಷಿ” ದಶಕುಂ ।

(16) ಪರಿ+ಭಾಷ್ = ಪರಿಧತ್ತೇ । ಪರಿಧತ್ತೇ । ಪರಿಧಾನಮ್ ।  
ಬಟ್ಟೆ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಸುತ್ತ, ಸುತ್ತಲೂ ಹೊದಿಸು, ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ಉಡು. “ವಾಸಶ್ಚ ಪರಿಧಾಯಕಂ ಕೃಣ್ಣಾ ಸುಮಲಿನಂ ಮಹತ್” ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೧೪-೨ ।

(17) ವಿ+ಪರಿ+ಭಾಷ್ = ವಿಪರಿಧತ್ತೇ । ವಿಪರಿಧಾಯ ।  
ವಸ್ತ್ರಪರಿವರ್ತನೆಮಾಡು, ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ಬದಲಾಯಿಸಿ ಉಡು. “ಆಚಾಂತಃ ಪುನರಾಚಾಮೇತ್ ವಾಸೋ ವಿಪರಿಧಾಯ ಚ” ಯಾಜಂ ೧-೧೯೬ ।

(18) ವಿ+ಭಾಷ್ = ವಿಧಾತಿ । ವಿಧತ್ತೇ । ವಿಧಾನಮ್ ।  
ವಿಧಾಯ । ಮಾಡು, ಉಂಟುಮಾಡು. “ವಿಧಾಯ ಮೃತಿ ಕಪಟೇನ ವಾಮನೀಂ ಸ್ವಯಂ ಬಲಿಷ್ವಂಸಿವಿಡಮ್ಬಿನೀಮಯಮ್” ನೈಷಂ ೧-೧೨೪ ।

(19) ಅನು+ವಿ+ಭಾಷ್ = ಅನುವಿಧತ್ತೇ । ಅನುವಿಧಾನಮ್ ।  
ಅನುವಿಧಾಯ । ಅನಂತರ ಮಾಡು, ಒಬ್ಬ ಮಾಡಿದ ಮೇಲೆ ಮಾಡು, ಅನುಸರಿಸಿ ಮಾಡು. “ಉಪತಿಷ್ಠತಿ ತಿಷ್ಠಂತಂ ಗಚ್ಛಂತಮನುಗಚ್ಛತಿ । ಕರೋತಿ ಕುರ್ವಂತಃ ಕರ್ಮ ಛಾಯೇವಾನು-ವಿಧೀಯತೇ” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ।

(20) ಪ್ರತಿ+ವಿ+ಭಾಷ್ = ಪ್ರತಿವಿಧತ್ತೇ । ಪ್ರತಿವಿಧಾನಮ್ ।  
1. ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಮಾಡು. 2. ಪ್ರತೀಕಾರ ಮಾಡು. “ಕ್ಷಿಪ್ರಮೇವ ಕಸ್ಮಾನ್ ಪ್ರತಿವಿಹಿತಮಾರ್ಯಣ” ಮುದ್ರಾಂ ೩ ।

(21) ಸಮ್+ಭಾಷ್ = ಸಂಧತ್ತೇ । ಸಂಧಾನಮ್ । 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸೇರಿಸು, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸು. “ಸಿಕ್ತವಾಮ್ಬುಹಿಸ್ತತಃ ಶೀತಃ ಸಂಧಾನೀಯೈರಪಾಚರೆತ್” ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೩-೪೨ । 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಇಡು. “ಮನಸ್ಯೇತಾನಿ ಸಂಧಾಯ ಮನಸಾ ಸಂಪ್ರಧಾರಯೇತ್” ಭಾಂ ಆಶ್ವಂ । 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅಳವಡಿಸು, ಸರಿಯಾಗಿ ಸೇರಿಸು. “ತತ್ಸಾಧು ಕೃತಸಂಧಾನಂ ಪ್ರತಿಸಂಹರ ಸಾಯಕಮ್” ಶಾಕುಂ ೧-೧೦ ।

(22) ಅತಿ+ಸಮ್+ಭಾಷ್ = ಅತಿಸಂಧತ್ತೇ । ಅತಿಸಂಧಾನಮ್ ।  
1. ಮಂಚಿಸು, ಮೋಸಮಾಡು. “ಜನಂ ವಿಧಾನೇಕಃ ಸಕಲಮತಿಸಂಧಾಯ ಕಪಟಃ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೭ । 2. ನೋಯಿಸು, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ನೋವುಂಟುಮಾಡು. “ತ್ವಯಾ ಚಂದ್ರಮಸಾ ಚ ವಿಶ್ವಸನೀಯಾಮ್ಯಾಮತಿಸಂಧೀಯತೇ ಕಾಮಿಜನ-ಸಾರ್ಥಃ” ಶಾಕುಂ ೩ ।

(23) ಅನು+ಸಮ್+ಭಾಷ್ = ಅನುಸಂಧತ್ತೇ । ಅನುಸಂಧಾನಮ್ ।  
1. ಚಿಂತನೆಮಾಡು, ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲೇ ಪುನಃ ಆಲೋಚಿಸು. “ಯಸ್ತಕೇಣಾನುಸಂಧತ್ತೇ ಸ ಧರ್ಮ ವೇದ ನೇತರಃ” ಮನುಂ ೧೨-೧೦೬ । 2. ಹುಡುಕು, ಅನ್ವೇಷಣಮಾಡು. “ಭೋಃ ಸಾರಸ, ತ್ವಂ ಸತ್ವರಂ ದುರ್ಮನುಸಂಧೇಹಿ” ಹಿತೋಂ ೩ ।

(24) ಅಭಿ+ಸಮ್+ಭಾಷ್ = ಅಭಿಸಂಧತ್ತೇ । ಅಭಿಸಂಧಾನಮ್ ।  
ಅಭಿಸಂಧಾಯ । ಅಪೇಕ್ಷಿಸು, ಉದ್ದೇಶಿಸು, ಲಕ್ಷ್ಯ ದಲ್ಲಿಡು, “ಅಭಿಸಂಧಾಯ ತು ಫಲಂ ದಮ್ಭಾರ್ಥಮಪಿ ಚೈವ ಯತ್” ಗೀತಾ ೧೭-೧೨ ।

(25) ಪ್ರತಿ+ಸಮ್+ಭಾಷ್ = ಪ್ರತಿಸಂಧತ್ತೇ । ಪ್ರತಿಸಂಧಾನಮ್ ।  
ಪ್ರತಿಸಂಧಾಯ । ಪ್ರತಿಯಾಗಿ (ಬಾಣಗಳನ್ನು) ಹೂಡು, (ಪ್ರಯೋಗಿಸಿದ ಬಾಣಕ್ಕೆ) ಎದುರು ಬಾಣವನ್ನು ಧನುಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಏರಿಸು. “ಪ್ರತಿಸಂಧಾಯ ಚಾಸ್ತ್ರಾಣಿ ತೇಜ್ಯೋನ್ಯಸ್ಯ ವಿಶಾಂಪತೇ । ಮುಮುಚುಃ ಪಾಂಡವಾಶ್ಚೈವ ಕೌರವಾಶ್ಚ ಮಹಾಮೃಘೇ” ಭಾಂ ಭೀಷ್ಮಂ ೭೫-೩೭ ।

ಧಾ ಧಾ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ. 2. ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವತಿ. (ವಿಂ) 3. ಧಾರಕ, ಹೊತ್ತಿರುವವನು, ಧಾರಣಮಾಡಿರುವವನು.

ಧಾಕ ಧಾಕ (ಪುಂ) 1. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. 2. ಸ್ತಂಭ, ಕಂಬ. 3. ಧಾಕ (ಧಾರಣ) “ಕಃ” (ಉಂ ೩-೪೦) । “ಧಾಕೋಽನ್ವಾ-ನಾಧಾರಶ್ಚ” ಸಿಂ ಕೌಂ । 3. ಆಹಾರ. 4. ಬ್ರಹ್ಮ. (ವಿಂ) 5. ಅಧಾರ ವಸ್ತು, ಹೊತ್ತಿರುವ ವಸ್ತು.

ಧಾಡೀ ಧಾಡೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶತ್ರುವಿಗೆ ಎದುರಾಗಿ ಹೋಗುವುದು, ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ಎದುರಾಗಿಹೋಗಿ ಆಕ್ರಮಣ ಮಾಡುವುದು.

ಧಾಣಕ ಧಾಣಕ (ಪುಂ) ದೀನಾರವೆಂಬ ಸುವರ್ಣನಾಣ್ಯದ ಒಂದು ಭಾಗ. 3. ಧಾಣ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಆಣಕಃ” (ಉಂ ೩-೮೩) ।

ಧಾತಕೀ ಧಾತಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರಾಟೆಮೊಗ್ಗು. ಧಾತು ಕರೋತಿ—ಧಾತು—ತತ್ಕರೋತಿ ಣಿಚ್ “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) । ಗೌರಾಂ “ಡೀಫ್” (೪-೧-೪೧) । “ಧಾತಕೀ ಧಾತುಪುಷ್ಪಿಕಾ” ಅಮಂ ।

ಧಾತವ್ಯ ಧಾತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಧರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಧರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಧರಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 4. ಧರಿಸ



ಬೇಕಾದ. 5. ಪೋಷಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ಪೋಷಣೆಗೆಯೋಗ್ಯವಾದ. 7. ಪೋಷಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 8. ಪೋಷಿಸಬೇಕಾದ. 9. ಛಾತು (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) ಕರ್ಮದಿ "ತವ್ಯಃ" (3-1-96). "ಅನೀಯರ್" (3-1-96). ಛಾತುಯಃ ಧಾತುಯಃ.

**ಛಾತು ಧಾತು (ಪುಂ)** 1. ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಬ್ರಹ್ಮ, ಧೀಯತೇ-  
ಸ್ಮಿನ್ ಸರ್ವಮ್—ಛಾತು (ಧಾರಣ) "ತುನ್" (3-1-99).  
2. ಮಾತು ಪಿತ್ತ ಮತ್ತು ಕಫಗಳೆಂಬ ದೋಷತ್ರಯ. "ಶರೀರ-  
ದೂಷಣಾಕ್ಷೋಷಾಃ ಮಲಿನೀಕರಣಾನ್ಮಲಾಃ। ಧಾರಣಾಧಾತವಸ್ತೇ  
ಸ್ಯುವಾತಿಪಿತ್ತಕಫಾಸ್ತ್ರಯಃ"। 3. ದೇಹದೊಳಗಿನ ರಸ  
ಮೊದಲಾದ ಸಪ್ತಧಾತುಗಳು. (1) ರಸಃ (ಅನ್ನರಸ),  
(2) ರಕ್ತಮ್, (3) ಮಾಸಮ್, (4) ಮೇಧಃ, (5) ಅಸ್ಥಿ,  
(6) ಮಜ್ಜಾ ಮತ್ತು (7) ಶುಕ್ರಮ್ ಇವು ಸಪ್ತಧಾತುಗಳು.  
"ರಸಾಸುಕ್ರಮಾಸಮೇದೋಸ್ಥಿಮಜ್ಜಶುಕ್ರಾಣಿ ಧಾತವಃ। ಏತೇ ಸಪ್ತ  
ಸ್ವಯಂ ಸ್ಥಿತ್ವಾ ದೇಹಂ ದಧತಿ ಯಜ್ಞಗಾಮ್"। 4. ಚಿನ್ಮ ಬೆಳ್ಳಿ  
ಮೊದಲಾದ (ಏಳು) ಧಾತುಗಳು. "ಸ್ವರ್ಣಂ ರೂಪಂ ಚ ತಾಮ್ರಂ  
ಚ ರತ್ನಂ ಯಶೋದಮೇವ ಚ। ಸೀಸಂ ಲೋಹಂ ಚ ಸಪ್ತೇ ಧಾತವೋ  
ಗಿರಿಸಮಭವಾಃ"। 5. ಗೌರಿಕ ಧಾತುಗಳು, ಮೆಣಶಿಲೆ  
ಹರಿದಳ ಸಿಂಧೂರ ಅಭ್ರಕ ಮುಂತಾದುವು. "ನೃಪಾಕ್ಷರಾ  
ಧಾತುರಸೇನ ಯತ್ರ ಮೂರ್ತವಚಃ ಕುಂಜರಬಿಂದುಶೋಣಾಃ" ಕುಮಾಂ  
1-9. 6. ಕಾವಿ ಮೊದಲಾದ ಶಿಲಾವಿಕಾರಗಳು. 7. ಪಂಚ  
ಮಹಾಭೂತಗಳು. (1) ಪೃಥಿವಿ, (2) ಆಪಃ, (3) ತೇಜಃ,  
(4) ವಾಯುಃ ಮತ್ತು (5) ಆಕಾಶಃ ಇವು ಪಂಚಮಹಾ  
ಭೂತಗಳು. 8. ಪಂಚಮಹಾಭೂತಗಳ ಗುಣಗಳು.  
(1) ಗಂಧಃ, (2) ರಸಃ, (3) ರೂಪಮ್, (4) ಸ್ಪರ್ಶಃ ಮತ್ತು  
(5) ಶಬ್ದಃ ಇವು ಪಂಚಮಹಾಭೂತಗಳ ಗುಣಗಳು.  
9. ಚಕ್ಷುಸ್ಸು ಮೊದಲಾದ ಇಂದ್ರಿಯಗಳು. (1) ಚಕ್ಷುಃ,  
(2) ಶ್ರೋತ್ರಮ್, (3) ಛಾಣಮ್, (4) ಜಿಹ್ವಾ ಮತ್ತು (5) ತ್ವಕ್  
ಇವು ಪಂಚೇಂದ್ರಿಯಗಳು. 10. ಶಬ್ದರೂಪಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿಗೆ  
ಮೂಲವಾದ ಮ್ ಎಫ ಮೊದಲಾದ ಧಾತುಗಳು. "ಮೂಲದಯೋ  
ಧಾತವಃ" ಪಾಂ ಸೂಂ 1-3-1. ಧಾತುಗಳಿಗೆ ಕೃತ್ ಪ್ರತ್ಯಯ  
ಬಂದು ಸುಪ್ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿದರೆ ಸುಬನ್ತರೂಪ  
ಗಳೂತಿತ್ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿದರೆ ತಿಜನ್ತರೂಪ  
ಗಳೂ ನಿಪ್ಪನ್ನವಾಗುವವು. ಉದಾಃ ರಮ್ (ಶ್ರೀಡಾಯಾಮ್)  
"ವಚ್" (3-3-121). ರಾಮ+ಸು=ರಾಮಃ। ಇಶ (ऐश्वर्य)  
"ವರಚ್" (3-2-174). ಇಶ್ವರ+ಸು=ಇಶ್ವರಃ।  
ತು ನದಿ (समुद्रौ)+ति = नन्दति। एघ (वृद्धौ)+त  
= एघते। ಇತ್ಯಾದಿ. ಧಾತುಗಳು ಸಕರ್ಮಕಃ ಮತ್ತು  
ಅಕರ್ಮಕಃ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಸಕರ್ಮಕಧಾತುಃ—ಕರ್ಮಪದ  
ದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಧಾತುವು ಸಕರ್ಮಕ. ಕರ್ಮಣಾ ಸಹ ವರ್ತತೆ।

ಸಕರ್ಮಕಧಾತುಗಳು ಏಕಕರ್ಮಕ ಮತ್ತು ದ್ವಿಕರ್ಮಕ  
ಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಉದಾಃ ಏಕಕರ್ಮಕ ಧಾತು  
ಗಳುಃ ದೇವದತ್ತಃ ಹರಿಃ ಭಜತೆ। ಯಜ್ಞದತ್ತಃ ಗುಹಂ ವಂದತೆ।  
ಇತ್ಯಾದಿ. ದ್ವಿಕರ್ಮಕ ಧಾತುಗಳುಃ ಗಾಂ ದೋಷಿ ಪಯಃ।  
ಬಲಿಂ ಯಾಚತೆ ವಸುಧಾಮ್। ಇತ್ಯಾದಿ. ಅಕರ್ಮಕಧಾತುಃ—ಕರ್ಮ  
ಪದದ ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ ಧಾತುವು ಅಕರ್ಮಕ. ನಾಸ್ತಿ ಕರ್ಮ  
ಯಸ್ಯ "ಕಪ್"। [ಎವರಕ್ಕೆ "ಅಕರ್ಮಕ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]  
11. ಲೋಹ, ಕಬ್ಬಿಣ. 12. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ.  
13. ಸ್ವಭಾವ. 14. ಎಲುಬು, ಮೂಳೆ. "ಧಾತುನೆಂದ್ರಿಯೇಷು  
ಚ। ಶಬ್ದಯೋನಿಮಹಾಭೂತದ್ಗುಣೇಷು ರಸಾದಿಷು। ಮನಃಶಿಲಾದೌ  
ಶ್ಲೇಷಾದೌ ವಿಶೇಷಾದ್ಗೈರಿಕೇಽಸ್ಥಿನ್ ಚ" ಮೇದಿಂ। "ವಸಾದಯಃ  
ಸಪ್ತ ಕಫಾದಯಸ್ತ್ರಯಃ ಭೂತಾನಿ ಪञ्च ಸ್ವಗುಣಾಃ ಗೈರಿಕಮ್।  
ಶಿಲಾವಿಕಾರೇಂದ್ರಿಯಶಬ್ದಯೋನಯೋ ಲೋಹಂ ಸ್ವಭಾವಃ ಕನಕಂ ಚ  
ಧಾತವಃ" ನಾನಾರ್ಥರಂ। 15. ಪ್ರಭವ ಮೊದಲಾದ  
ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲೊಂದು.

**ಛಾತುಕಾಸೀಸ ಧಾತುಕಾಸೀಸ (ನಂ)** ಗಂಧಕಾಮ್.

**ಛಾತುಕುಶಲ ಧಾತುಕುಶಲ (ವಿಂ)** ಧಾತುಗಳ ಕಲಸದಲ್ಲಿ  
ನಿಪುಣನಾದವನು. ಛಾತುಕುಶಲಃ।

**ಛಾತುಕ್ಷಯ ಧಾತುಕ್ಷಯ (ಪುಂ)** 1. ದೇಹದೊಳಗಿನ ರಸಾದಿ  
ಧಾತುಗಳು ಕಡಮೆಯಾಗುವುದು. ಧಾತುನಾಂ ರಸರಕ್ತಾದೀನಾಂ  
ಕ್ಷಯಃ। 2. ರಸಧಾತುವಿನ ನಾಶದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ  
ಕಾಸರೋಗ. ಛಾತುನಾಂ ಕ್ಷಯೋ ಯತ್ರ।

**ಛಾತುಹನ ಧಾತುಹನ (ನಂ)** 1. ಗಂಜಿ, ಅಂಬಲಿ. ಛಾತು  
ಹಂತಿ—ಹನ (हिसागत्योः) "ಹಕ್" (4-2-43).  
(ವಿಂ) 2. ಧಾತುವನ್ನು ನಾಶಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದ.

**ಛಾತುಧಾವಕ ಧಾತುಧಾವಕ (ಪುಂ)** ಲೋಹಗಳನ್ನು ಕರಗಿ  
ಸುವ ಟುಂಕಣಕ್ಷಾರ, ಬಿಳಿಗಾರ. ಛಾತುಂ ಧಾವಯತಿ—ಧ್ವ (ಗತೀ)  
+ಣಿಚ್ "ಫ್ವಲ್" (3-1-133)।

**ಛಾತುನಾಶನ ಧಾತುನಾಶನ (ನಂ)** 1. ಗಂಜಿ, ಅಂಬಲಿ.  
(ವಿಂ) 2. ಧಾತುವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ.  
ಛಾತುಂ ನಾಶಯತಿ—ಞಶ (अदशने)+ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ"  
(3-1-134)।

**ಛಾತುಪ ಧಾತುಪ (ಪುಂ)** ದೇಹರಸ, ದೇಹದೊಳಗಿನ ಸಪ್ತ  
ಧಾತುಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ಧಾತು. ಛಾತುನ್ ಪಾತಿ—ಪಾ  
(रक्षणे) "ಕಃ" (3-2-3)। ರಸಧಾತುವು ಹೃದಯದ  
ಮೂಲಕ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಉಳಿದ ಎಲ್ಲಾ ಧಾತುಗಳನ್ನೂ ವೃದ್ಧಿ  
ಪಡಿಸುವುದು. "ರಸಸ್ತು ಹೃದಯಂ ಯಾತಿ ಸಮಾನಮಸ್ತೇರಿತಃ।  
ಸ ತು ವ್ಯಾನೇನ ವಿಕಿಷ್ಪತಃ ಸರ್ವಾನ್ ಛಾತುನ್ ವಿವರ್ಧಯೇತ್। ಕೇದಾರೆಷು



ಯಥಾ ಕುಲ್ಯಾ: ಪುಣ್ಣಂತಿ ವಿವಿಧೌಷಧಿ: । ತಥಾ ಕಲೇಬರೇ ಛಾತುನ್  
ಸರ್ವಾನ್ ವರ್ಧಯತೇ ರಸ: " ಭಾವಪ್ರಂ ।

ಛಾತುಪಾಠ ಧಾತುಪಾಠ (ಪುಂ) ಭೂವಾದಿ ಧಾತುಗಳ ಅರ್ಥ  
ಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಗ್ರಂಥ. ಛಾತುನಾಂ ಪಾಠೋ ಯತ್ರ ।

ಛಾತುಪುಷ್ಪಿಕಾ ಧಾತುಪುಷ್ಪಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರಾಟಿಮೊಗ್ಗು,  
ಅರೆಹೂವು. ಛಾತುರಿವ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯಾ: "ಕಪ್" (೪-೪-೧೫೪) ।

ಛಾತುಪುಷ್ಪಿ ಧಾತುಪುಷ್ಪಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇಹದೊಳಗಿನ ರಸಾದಿ  
ಧಾತುಗಳ ಬೆಳವಣಿಗೆ.

ಛಾತುಮಲ ಧಾತುಮಲ (ನಂ) 1. ರಸಾದಿಧಾತುಗಳ ಪಾಕ  
ದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಕೇಶ ನಖ ಬೆವರು ಮುಂತಾದುವು.  
ಛಾತುನಾಂ ರಸಾದಿನಾಂ ಪಾಕತೋ ಜಾಯಮಾನಂ ಮಲಮ್ । "ಕಫ:  
ಪಿತ್ತಂ ಮಲ: ಕ್ಷೇಪು ಸ್ವೇದ: ಸ್ನಾಗ್ರಜಲರೋಮ ಚ । ನೇತ್ರವಿಡ್ ತ್ವಕ್ಷು ಚ  
ಸ್ನೆಹೋ ಛಾತುನಾಂ ಕ್ರಮಶೋ ಮಲಾ: " ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬-೫೨೯ ।  
2. ಸೀಸಲೋಹ.

ಛಾತುರಾಜಕ ಧಾತುರಾಜಕ (ನಂ) ವೀರ್ಯ, ರೇತಸ್ಸು,  
ಶುಕ್ರಧಾತು. ಛಾತುಃ ರಾಜತೇ-ರಾಜ್ (ದೀಪ್ತೌ) "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

ಛಾತುರೂಪಾವಲಿ ಧಾತುರೂಪಾವಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧಾತುಗಳ  
ರೂಪಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಗ್ರಂಥ.

ಛಾತುವಲ್ಲಭ ಧಾತುವಲ್ಲಭ (ನಂ) ಟಂಕಣ, ಬಿಳಿಗಾರ.

ಛಾತುವಾವ ಧಾತುವಾವ (ಪುಂ) 1. ಲೋಹವಿದ್ದೆ, ಲೋಹದ  
ಕೆಲಸದ ವಿದ್ದೆ. 2. ಧಾತುವಿದ್ದೆ, ಧಾತುವನ್ನು ಶೋಧಿ  
ಸುವ ವಿದ್ದೆ.

ಛಾತುವಾದಿನ್ ಧಾತುವಾದಿನ್ (ಪುಂ) ಧಾತುಪರೀಕ್ಷಕ, ಧಾತು  
ವನ್ನು ಶೋಧಿಸುವ ಕ್ರಮವನ್ನರಿತವನು, ರಸಾಯನದಿಂದ  
ಧಾತುಗಳನ್ನು ಶೋಧಿಸಿ ಚಿನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿ ಮುಂತಾದುವನ್ನು  
ಮಾಡುವವನು.

ಛಾತುವೇರಿನ್ ಧಾತುವೇರಿನ್ (ಪುಂ) ಗಂಧಕಾಮ್ಲ.

ಛಾತುಸಾಮ್ಯ ಧಾತುಸಾಮ್ಯ (ನಂ) ಧಾತುಗಳು ಸಮವಾ  
ಗಿರುವುದು, ರಸಾದಿ ಧಾತುಗಳು ಸಮಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರುವುದು,  
ಉತ್ತಮವಾದ ಆರೋಗ್ಯದಿಂದಿರುವುದು. ಛಾತುನಾಂ ಸಾಮ್ಯಮ್  
ಸಮಸ್ಥಿತಿ: ।

ಛಾತು ಧಾತು (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ದಧಾತಿ-  
ಓ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ: ) "ತತ್" (೩-೧-೧೩೩) ।  
"ವಿಷ್ಣೋರ್ಹರಸ್ತಸ್ಯ ಹರಿ: ಕದಾಚಿದ್ವೇಧಾಸ್ತಯೋಸ್ತಾವಪಿ ಛಾತು-  
ರಾಧೌ" ಕುಮಾಂ ೭-೪೪ । "ಸೂರ್ಯಚಿನ್ದ್ರಮಸೌ ಧಾತಾ ಯಥಾಪೂರ್ವ-  
ಮಕಲ್ಪಯತ್" । 2. ವಿಷ್ಣು. ಅಚಿತ್ಸಮಷ್ಟಿಭೂತಾಯಾಂ ಪ್ರಕೃತೌ  
ಚಿತ್ಸಮಷ್ಟಿಭೂತಂ ವಿರಿಚ್ಛಾತ್ಯಂ ಗರ್ಭಂ ದಧಾತಿ-ಓ ಧಾನ್

(ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ: ) "ತನ್" (೩-೨-೧೩೫) । "ಮಮ  
ಯೋನಿರ್ಮಹದ್ಬ್ರಹ್ಮ ತಸ್ಮಿನ್ ಗರ್ಭಂ ದಧಾಮ್ಯಹಮ್ । ಸಮ್ಭವ:  
ಸರ್ವಭೂತಾನಾಂ ತತೋ ಭವತಿ ಭಾರತ" ಗೀತಾ ೧೪-೩ ।  
"ಅಚಿತ್ಸಮಷ್ಟಿಭೂತಾಯಾಂ ಪ್ರಕೃತೌ ಚಿತ್ಸಮಷ್ಟಿಕಮ್ । ಗರ್ಭಂ  
ವೇಧಾತ್ಮಕಂ ವಸ್ತು ಯಸ್ತು ಧಾತೇತಿ ಚಕ್ಷತೇ" ಇತಿ ನಿರ್ವಹಿ: ।  
"ಅನಾದಿನಿಧನೋ ಧಾತಾ" ವಿಂ ಸಂ । 3. ಬ್ರಹ್ಮಸೃಷ್ಟಿಯ  
ನಂತರ ಉಳಿದ ಜಗತ್ತನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದ ಸಪ್ತಮುಖಗಳು.  
"ಸರ್ಗಶಿಷಪ್ರಣಯನಾದ್ವಿಶ್ವಯೋನೀರನಂತರಮ್ । ಪುರಾತನ: ಪುರಾವಿಹ್ನಿ:  
ಧಾತಾರ ಇತಿ ಕೀರ್ತಿತಾ: " ಕುಮಾಂ ೬-೯ । 4. ಹನ್ನೆರಡು  
ಮಂದಿ ಸೂರ್ಯರಲ್ಲೊಬ್ಬ. "ಧಾತಾ ಮಿತ್ರೋರ್ಯಮಾ ರುद्र:  
ವರುಣ: ಸೂರ್ಯ ಏವ ಚ । ಮಗೋ ವಿವಸ್ವಾನ್ ಪೂಷಾ ಚ ಸವಿತಾ ದಶಮ:  
ಸ್ಮೃತ: । ಏಕಾದಶಸ್ತಥಾ ತ್ವಷ್ಟಾ ವಿಷ್ಣುರ್ವಾದಿಶ ಉಚ್ಯತೇ" ।  
ಮಾಸಭೇದದಿಂದ ಸೂರ್ಯನಿಗೆ ನಾಮಭೇದಗಳು. ಪ್ರಳಯ  
ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಈ ಹನ್ನೆರಡು ರೂಪಗಳನ್ನೂ ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ಸ್ವೀಕರಿಸುವನು. 5. ವ್ಯಭಿಚಾರಿ. 6. ನಲವತ್ತೊಂಬತ್ತು  
ವಾಯುಗಳಲ್ಲೊಂದು. 7. ಬ್ರಹ್ಮನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಓ  
ಪುತ್ರೋ ಬ್ರಹ್ಮಣಸ್ತ್ವಗ್ರಾಧೀ ಯಯೋಸ್ತಿಷ್ಠತಿ ಲಕ್ಷಣಮ್ । ಲೋಕೇ ಧಾತಾ  
ವಿಧಾತಾ ಚ ಯೋ ಸ್ಥಿತೌ ಮನುನಾ ಸಹ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೭-೫೦ ।  
8. ಧರಿಸುವವನು, ವಹಿಸುವವನು. 9. ಪಾಲಕ, ಕಾಪಾಡು  
ವವನು. 10. ಮಾಡುವವನು. "ಛಾತುರದಯನಿವೇಜೇ ಜಗತಾಂ  
ನರಮಂಶಮಾದಿಪುರುಷಸ್ಯ ಗಾಂ ಗತಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೨-೩೩ ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಓಪ್" (೪-೧-೫) । ಛಾತ್ರೀ ಧಾತ್ರೀ. "ಧಾತಾ  
ವೇಷಸಿ ಪಾಲಕೇ" ಹೇಮಂ । "ಧಾತಾ ಹಿರಣ್ಯಗರ್ಭಂ ಸ್ವಾತ್ಪಾಲಕೇ  
ತ್ವಭಿಧೇಯವತ್" ವಿಶ್ವಂ । "ಧಾತಾ ಧರ್ತರಿ ನಾ ವಿಧೌ"  
ನಾನಾರ್ಥಂ । 11. ರುದ್ರಾಕ್ಷ. "ಧಾತು: ಸರ್ವೇಷು ಪರ್ಯಾಯಾ  
ರುದ್ರಾಕ್ಷೇ ಸ್ಯುಷ್ಣತುರ್ಮುಖೇ" ವೇಜಂ ।

ಛಾತುಪುತ್ರ ಧಾತುಪುತ್ರ, -ಸುತ -ಸುತ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮನ  
ಮಗ, ಸನತ್ತುಮಾರ.

ಛಾತುಪುಷ್ಪಿ ಧಾತುಪುಷ್ಪಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರಾಟಿಮೊಗ್ಗು,  
ಅರೆಹೂವು.

ಛಾತ್ರ ಧಾತ್ರ (ನಂ) ಪಾತ್ರೆ. ಓ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ: )  
"ಛನ್" (೩ಂ ೪-೧೫೬) ।

ಛಾತ್ರೀ ಧಾತ್ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಾಯಿ, ಜನನಿ. ಧೀಯಂತೇ ಪುರುಷಾರ್ಥಿ:  
ಅನಯಾ-ಓ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ: ) ಕರಂ "ಛನ್"  
(೩ಂ ೪-೧೫೬) । "ಗುಣಧಾತ್ರೀಂ ಪುನರ್ಗರ್ಭಮೋಜಸ್ತಸ್ಯ ಪ್ರಧಾ-  
ವತಿ" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೮೨ । 2. ದಾದಿ, ಉಪಮಾತೆ, ಸಾಕು  
ತಾಯಿ. ಧೀಯತೇ ಪೀಯತೇ-ಧೇತ್ (ಪಾನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಛನ್"  
(೩ಂ ೪-೧೫೬) । "ಧಾತ್ರೀಙ್ಗುಲಿಭಿ: ಪ್ರತಿಸಾರ್ಯಮಾಣ-



ಮೂರ್ಣಮಯಂ ಕೌತುಕಹಸ್ತಸೂತ್ರಮ್” ಕುಮಾರಂ ೭-೨೫. ಶಿಶುಗಳಿಗೆ ಹಾಲುಣಿಸಲು ನೇಮಿಸಲ್ಪಡುವ ದಾದಿಯು ಸುಶೀಲಳಾಗಿಯೂ ಯಾವಾಗಲೂ ಸಂತೋಷವುಳ್ಳವಳಾಗಿಯೂ ಆರೋಗ್ಯವಂತಳಾಗಿಯೂ ಪುಷ್ಕಳವಾದ ಎದೆಯ ಹಾಲುಳ್ಳವಳಾಗಿಯೂ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ಪ್ರೇಮವುಳ್ಳವಳಾಗಿಯೂ ಇರಬೇಕು. “ಪಾನಾಯ ಯದಿ ಬಾಲಸ್ಯ ವಿದಧ್ಯಾದುಪಮಾತರಮ್. ಸುವಿಚಾರ್ಯ ಗುಣಾನ್ ದೋಷಾನ್ ಕುರ್ಯಾದ್ಧಾತ್ರೀಂ ತದೇದೃಶೀಮ್. ಸರ್ವಾಣಿ ಮಧ್ಯವಯಸಾಂ ಸಂಜ್ಞಾಂತಿ ಮುದಿತಾ ಸದಾ. ಶುದ್ಧದುಗ್ಧಾ ಬಹುಕ್ಷೀರಾ ಸರ್ವಸಾಮತಿವತ್ಸಲಾಮ್” ಭಾವಪ್ರಂ. 3. ಭೂಮಿ. ದಧಾತಿ ವಿಶ್ವಮ್. ಭೂದೇವಿಯು ಸಕಲ ಜಗತ್ತನ್ನೂ ಧರಿಸಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. 4. ಆಮಲಕವೃಕ್ಷ, ನೆಲ್ಲಿಮರ. ಆಮಲಕವು ಸರ್ವದಾ ತಾಯಿಯಂತೆ ಕಾಪಾಡುವುದು. ಆಮಲಕ ಸ್ನಾನವು ಧರ್ಮವನ್ನು ಗಳಿಸಿಕೊಡುವುದು. ಇದರ ಪಾನದಿಂದ ಆಯುಸ್ಸು ಹೆಚ್ಚುವುದು. ದಾರಿದ್ರ್ಯವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು. ಮೋಕ್ಷವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಡುವುದು. ಎಫ್ಫುಗಳನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವುದು. “ಧಾತ್ರೀ ವತ್ಸ ನೃಣಾಂ ಧಾತ್ರೀ ಮಾತೃವತ್ ಕುರುತೇ ದಯಾಮ್. ದದಾದಾಯುಃ ಪಯಃ ಪಾನಾತ್ ಸ್ನಾನಾದ್ಧೇ ಧರ್ಮಸಂಪ್ರದಯಮ್. ಅಲಕ್ಷ್ಮೀನಾಶನಂ ಸದ್ಯೋಪ್ಯಂತೇ ನಿರ್ವಾಣಮೇವ ಚ. ವಿಘ್ನಾನಿ ನೈವ ಜಾಯಂತೇ ಧಾತ್ರೀಸ್ನಾನೇನ ವೈ ನೃಣಾಮ್. ತಸ್ಮಾತ್ ತ್ವಂ ಕುರು ವಿಪ್ರೇಂದ್ರ ಧಾತ್ರೀಸ್ನಾನಂ ಹಿ ಯತ್ನತಃ”.

ಧಾತ್ರೀಪತ್ರ ಧಾತ್ರೀಪತ್ರ (ನಂ) ತಾಳೇಶಪತ್ರ.

ಧಾತ್ರೀಪುತ್ರ ಧಾತ್ರೀಪುತ್ರ (ಪುಂ) ಸಾಕುತಾಯಿಯ ಮಗ. ಧಾತ್ರೀ: ಪುತ್ರ:.

ಧಾತ್ರೀಫಲ ಧಾತ್ರೀಫಲ (ನಂ) ನೆಲ್ಲಿಕಾಯಿ.

ಧಾತ್ರೀಯಿಕಾ ಧಾತ್ರೀಯಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಪಮಾತೆಯ ಮಗಳು. ಧಾತ್ರೀ ಅಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ “ಢಕ್” (೪-೧-೧೨೦). ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕ:” “ಕಸ್ಯಾಪಿ ಕೋಪಿತಿ ನಿವೇದಿತಂ ಚ ಧಾತ್ರೀಯಿಕಾಯಾಶ್ಚತುರಂ ವಚಶ್ಚ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೩೬.

ಧಾತ್ರೀಯಿ ಧಾತ್ರೀಯಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಪಮಾತೆಯ ಮಗಳು. ಧಾತ್ರೀ ಅಪತ್ಯಮ್ “ಢಕ್” (೪-೧-೧೨೦). “ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೫). ಕಥಿತಮೇವ ನೋ ಮಾಲತೀಧಾತ್ರೀಯಾ ಲವಣ್ಣಿಕಯಾ” ಮಾಲತೀಂ ೧.

ಧಾತ್ರೀರಿಷ್ಠ ಧಾತ್ರೀರಿಷ್ಠ (ಪುಂ) ನೆಲ್ಲಿಕಾಯಿ ಅರಿಷ್ಟ. 2000 ನೆಲ್ಲಿಕಾಯಿ ರಸ-ಅದರ 8ನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ ಜೇನುತುಪ್ಪ-ಹಿಪ್ಪಲಿಯ ಜೋಣ ಅರ್ಧಸೇರು-50 ಪಲಗಳ ಶೂಕ ಕಲ್ಲುಸಕ್ಕರೆ ಇವುಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಪುಟಹಾಕಿ ಪಾಕಮಾಡಿ ಸೇವಿಸಿದರೆ (1) ಪಾಂಡುರೋಗ, (2) ಕಾಮಾಲೆ

(3) ಹೃದಯರೋಗ, (4) ವಾತರೋಗ, (5) ರಕ್ತಭೇದಿ, (6) ವಿಷಮಜ್ಜರ, (7) ಕಾಸರೋಗ, (8) ಗೂರಲು, (9) ಅಜೀರ್ಣ ಮತ್ತು (10) ಶ್ವಾಸ ಇವು ಗುಣವಾಗುವುವು. “ಧಾತ್ರೀಫಲಸಹಸ್ರೇ ದ್ವೇ ಪಿಡಯಿತ್ವಾ ರಸಂ ಭಿಷಕ್. ಕ್ಷೌದ್ರಾಷ್ಟಭಾಗಂ ಪಿಪ್ಪಲಿಯಾಚ್ಛುರ್ಣಿಧಿಕುಡವಾನ್ವಿತಮ್. ಶಕರಾರ್ಥ-ತುಲೋನ್ಮಿಶ್ರಂ ಪಕ್ವಂ ಸ್ನಿಗ್ಧಪುಟೇ ಸ್ಥಿತಮ್. ಪ್ರಪಿವೇತ್ ಪಾಂಡು-ರೋಗಾಂತೋಜೀರ್ಣೇ ಹಿತಮಿತಾಶನಃ. ಕಾಮಲಾಪಾಂಡುಹೃದ್ರೋಗವಾತಾ-ಸೃಗ್ವಿಷಮಜ್ವರಾನ್. ಕಾಸಹಿಷ್ಕಾಷ್ಣಚಿಶ್ವಾಸಾನೇಶೋರಿಷ್ಠಃ ಪ್ರಣಾಶಯೇತ್”.

ಧಾನ್ ಧಾನ್ (ನಂ) 1. ಧಾರಣ, ಧರಿಸುವಿಕೆ. 2. ಪೋಷಣ, ಕಾಪಾಡುವಿಕೆ. ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫). 3. ಯಾವುದನ್ನಾದರೂ ಒಳಕೊಳ್ಳುವ ಅಥವಾ ಯಾವುದಾದರೂ ಹಿಡಿಸುವ ಸಂಪುಟ, ಕೋಶ, ಪಾತ್ರೆ, ಒಂದು ಆಶ್ರಯಸ್ಥಾನ. ಧಾನ್ ಅಧಿಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭).

ಧಾನ್ಯ ಧಾನ್ಯ (ನಂ) ಧಾನ್ಯಾಕ, ಕೊತ್ತುಂಬರಿ ಬೀಜ, ಧನಿಯ. ಧನ್ಯಾಕ ಪೃಷೋ.

ಧಾನಾ ಧಾನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಹುರಿದ ಅಕ್ಕಿ, ಪುರಿ. 2. ಕೊತ್ತುಂಬರಿ ಬೀಜ, ಧನಿಯ. 3. ಮೊಳಕೆ, ಹೊಸ ಚಿಗುರು. ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ನ:” (೩-೩-೬). “ಧಾನಾ ಅಷ್ಟಯವೇ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್. ಧಾನ್ಯಾಕೇಽ-ಭಿನವೋದ್ವಿಜ್ಞೇ” ಮೇದಿಂ. 4. ಹುರಿಹಿಟ್ಟು, ಹುರಿದ ಧಾನ್ಯದ ಹಿಟ್ಟು. “ಧಾನಾ ಅಷ್ಟಯವೇಽಡ್ಕುರೇ ಧಾನ್ಯಾಕೇ ಚೂರ್ಣಸಕ್ತುಷು” ಹೇಮಂ. 5. ಮರಗಳ ಬೀಜ. “ಧಾನಾ ಬೀಜೇಽಪಿ ಭೂಹಾಮ್” ವೈಜಂ.

ಧಾನಾಕಾ ಧಾನಾಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಧನಿಯ, ಕೊತ್ತುಂಬರಿ. 2. ಹುರಿದ ಅಕ್ಕಿ, ಪುರಿ. ಧಾನಾ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕ:”.

ಧಾನಾಚೂರ್ಣ ಧಾನಾಚೂರ್ಣ (ನಂ) ಹುರಿಹಿಟ್ಟು.

ಧಾನಿಕಾ ಧಾನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಶ್ರಯಸ್ಥಾನ, ಆಧಾರವಸ್ತು. ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣ) ಅಧಿಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭). ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” (೫-೪-೫). “ಅಜ್ಞಾರಧಾನಿಕಾಜ್ಞಾರ-ಶಕಟಯಪಿ ಹಸನ್ತ್ಯಪಿ” ಅಮಂ.

ಧಾನೀ ಧಾನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಶ್ರಯಸ್ಥಾನ, ಆಧಾರವಸ್ತು. ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭). ರಾಜಧಾನಿ, ಮತ್ಸ್ಯಧಾನಿ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಧಾನ್ವರ್ಧಿಕ ಧಾನ್ವರ್ಧಿಕ (ಪುಂ) ಧನುಸ್ಸಿನಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು, ಧನುಸ್ಸಿನ ವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ ಜೀವನಮಾಡು



ವವನು. ಧನುಃ ಧಢ್ಢ ಇವ—ಧನುಃಪ್ರಣೇನ ಜೀವತಿ “ಠಕ್” (೪-೪-೧೨) ।

ಧಾನ್ಯಕ ಧಾನ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಬಿಲ್ಲುಗಾರ, ಬಿಲ್ಲಿನಿಂದ ಯುದ್ಧ ಮಾಡುವವನು. ಧನುಃ ಪ್ರಹರಣಮಸ್ಯ “ಠಕ್” (೪-೪-೫೭) । “ಕಃ” (೭-೩-೫೧) । 2. ಧನುಸ್ಸಿನಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಧನುಃ ಜೀವತಿ—ಧನುಸ್ “ಠಕ್” (೪-೪-೧೨) । “ಕಃ” (೭-೩-೫೧) । “ನಿಮಿತ್ತಾದಪರಾಧೋಧಾನುಷ್ಕಸ್ಯೇವ ವಲಿತಮ್” ಮಾಘಂ ೨-೨೭ ।

ಧಾನ್ಯ ಧಾನ್ಯ (ಪುಂ) ಬಿದಿರು, ವಂಶ.

ಧಾನ್ಯ ಧಾನ್ಯ (ನಂ) ಧಾನ್ಯ, ಕಾಳು. ಧಾನೇ ಪೌಷಣಿ ಸಾಧು “ಯತ್” (೪-೪-೯೮) । ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಪೈರಿಸೊಡನೆ ಫಲದಲ್ಲಿರುವುದು ಶಸ್ತ್ರವೆನಿಸುವುದು. ಪೈರನ್ನು ಬಡಿದ ಮೇಲೆ ಬೇರೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟಿದ್ದು ಧಾನ್ಯ. ಧಾನ್ಯದ ಹೊಟ್ಟು ತೆಗೆದ ಮೇಲೆ ತಂಡುಲವಾಗುವುದು. ತಂಡುಲವನ್ನು ಬೇಯಿಸಿದರೆ ಅನ್ನವಾಗುವುದು. “ಶಸ್ಯಂ ಕ್ಷೇತ್ರಗತಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಸತುಷಂ ಧಾನ್ಯಮುಚ್ಯತೇ । ನಿಸ್ತುಷಸ್ತಂಡುಲಃ ಪ್ರೋಕ್ತಃ ಸ್ವಿನ್ನಮಗ್ರಮುದಾಹೃತಮ್” । ಧಾನ್ಯವು ಶಾಲಿಧಾನ್ಯ, ಪ್ರೀಹಿಧಾನ್ಯ, ಶೂಕಧಾನ್ಯ, ಶಿಂಬೀ ಧಾನ್ಯ ಮತ್ತು ಕ್ಷುದ್ರ ಧಾನ್ಯಗಳೆಂದು ಐದು ವಿಧ. ಭತ್ತವು ಶಾಲಿಧಾನ್ಯ. ರಾಗಿ ಮತ್ತು ಜೋಳ ಪ್ರೀಹಿಧಾನ್ಯ. ಮುಳ್ಳಿರುವ ಯವ ಧಾನ್ಯವು ಶೂಕಧಾನ್ಯ. ಉದ್ದು ಕಡಲೆ ಹೆಸರು ಮೊದಲಾದ ಸಿಪ್ಪೆಯಿರುವ ಧಾನ್ಯಗಳು ಶಿಂಬೀ ಧಾನ್ಯ. ಹಾರಕ ನವಣೆ ಮುಂತಾದುವು ಕ್ಷುದ್ರ ಧಾನ್ಯಗಳು. “ಶಾಲಿಧಾನ್ಯಂ ವ್ರಿಹಿಧಾನ್ಯಂ ಶೂಕಧಾನ್ಯಂ ತೃತೀಯಕಮ್ । ಶಿಂಬೀಧಾನ್ಯಂ ಕ್ಷುದ್ರಧಾನ್ಯಮಿತ್ಯುಕ್ತಂ ಧಾನ್ಯಪञ್ಚಕಮ್ । ಶಾಲಯೋ ರಕ್ತಶಾಲ್ಯಾಃ ಕ್ರಿಹಯಃ ಷಷ್ಟಿಕಾದಯಃ । ಯಾದಿಕಂ ಶೂಕಧಾನ್ಯಂ ಮುದಗಾಞ್ ಶಿಂಬಿಧಾನ್ಯಕಮ್ । ಕಡ್ಗಾದಿಕಂ ಕ್ಷುದ್ರಧಾನ್ಯಂ ತೃಣಧಾನ್ಯಂ ತತ್ ಸ್ಮೃತಮ್” ಭಾವಪ್ರಂ ।

ಧಾನ್ಯಕೂಟ ಧಾನ್ಯಕೂಟ (ಪುನಂ) ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಇಡುವ ಉಗ್ರಾಣ. ಹಗೆವು.

ಧಾನ್ಯಕೋಷ್ಠಕ ಧಾನ್ಯಕೋಷ್ಠಕ (ನಂ) ಉಗ್ರಾಣ, ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಶೇಖರಿಸಿ ಇಡುವ ಜಾಗ, ಕಣಜ.

ಧಾನ್ಯತ್ವಕ್ ಧಾನ್ಯತ್ವಕ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧಾನ್ಯದ ಹೊಟ್ಟು, ಧಾನ್ಯದ ಸಿಪ್ಪೆ.

ಧಾನ್ಯಪञ್ಚಕ ಧಾನ್ಯಪಂಚಕ (ನಂ) ಐದು ವಿಧ ಧಾನ್ಯಗಳು, ಧಾನ್ಯಗಳ ಐದು ವಿಧ. ಧಾನ್ಯಾನಾಂ ಪञ್ಚಕಮ್ : [“ಧಾನ್ಯ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಧಾನ್ಯಮಾತ್ ಧಾನ್ಯಮಾತ್ಯ (ಪುಂ) ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಅಳತೆಮಾಡುವವನು. ಧಾನ್ಯ ಮಾತಿ-ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) “ತೃಕ್” (೩-೧-೧೩೩) ।

ಧಾನ್ಯಮಾನ ಧಾನ್ಯಮಾನ (ನಂ) ಧಾನ್ಯದ ಅಳತೆ, ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಅಳೆಯುವುದು. ಧಾನ್ಯಸ್ಯ ಮಾನಮ್ ।

ಧಾನ್ಯಮಾಯ ಧಾನ್ಯಮಾಯ (ವಿಂ) 1. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಅಳೆಯುವವನು. 2. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಮಾರುವವನು. ಧಾನ್ಯ ಮಾತಿ-ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) “ಅಣ್” (೩-೨-೧) ।

ಧಾನ್ಯರಾಜ ಧಾನ್ಯರಾಜ (ಪುಂ) ಯವಧಾನ್ಯ. ಧಾನ್ಯಾನಾಂ ರಾಜಾ “ಠಕ್” (೫-೪-೯೧) ।

ಧಾನ್ಯವರ್ಧನ ಧಾನ್ಯವರ್ಧನ (ನಂ) 1. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಸಾಲವಾಗಿ ಕೊಟ್ಟು ಬಡ್ಡಿಯ ರೂಪದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು. ಧಾನ್ಯಸ್ಯ ವರ್ಧನಮ್ । 2. ಬಡ್ಡಿಗಾಗಿ ಕೊಡುವ ಧಾನ್ಯದ ಸಾಲ. ಧಾನ್ಯಸ್ಯ ವರ್ಧನಂ ಯತ್ರ ।

ಧಾನ್ಯವೀರ ಧಾನ್ಯವೀರ (ಪುಂ) ಮಾಷಧಾನ್ಯ, ಉದ್ದು. ಧಾನ್ಯೇಷು ವೀರ ಇವ । ಉದ್ದಿನ ಪದಾರ್ಥಗಳನ್ನು ತಿನ್ನುವುದರಿಂದ ಶಕ್ತಿಯು ಹೆಚ್ಚುವ ಕಾರಣ ಈ ಹೆಸರು.

ಧಾನ್ಯಶೀರ್ಷಕ ಧಾನ್ಯಶೀರ್ಷಕ (ನಂ) ಧಾನ್ಯದ ತೆನೆ.

ಧಾನ್ಯಶಿಲ ಧಾನ್ಯಶಿಲ (ಪುಂ) ದಾನಕ್ಕಾಗಿ ನಿರ್ಮಿಸುವ ಧಾನ್ಯಮಯವಾದ ಪರ್ವತ. ದಾನಾರ್ಥ ನಿರ್ಮಿತಃ ಧಾನ್ಯಮಯಃ ಶಿಲಃ ।

ಧಾನ್ಯಾ ಧಾನ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧನಿಯ, ಕೊತ್ತುಂಬರಿ ಬೀಜ. ಧಾನ್ಯಾಕ ಪೃಷಂ । “ಛತ್ರಾ ಕ್ರುಸ್ತುಮ್ಬರೀ ಧಾನ್ಯಾ ಧನ್ಯಾ ಧಾನಾ ಧನೀಯಿಕಾ” ವೈಜಂ ।

ಧಾನ್ಯಾಕ ಧಾನ್ಯಾಕ (ನಂ) ಧನಿಯ, ಕೊತ್ತುಂಬರಿ ಬೀಜ. ಧನ್ಯಾಕ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಅಣ್” (೫-೪-೩೮) ।

ಧಾನ್ಯಾಮ್ಲ ಧಾನ್ಯಾಮ್ಲ (ನಂ) ಗಂಜ, ಅಂಬಲಿ.

ಧಾನ್ಯಾರಿ ಧಾನ್ಯಾರಿ (ಪುಂ) ಧಾನ್ಯಕ್ಕೆ ಶತ್ರುವಾದ ಇಲಿ, ಮೂಷಕ. ಧಾನ್ಯಸ್ಯಾರಿಃ ।

ಧಾನ್ಯಾರ್ಥಿನ್ ಧಾನ್ಯಾರ್ಥಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಧಾನ್ಯರೂಪವಾದ ಸಂಪತ್ತುಳ್ಳವನು. ಧಾನ್ಯರೂಪೋಽರ್ಥೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಛಿನಿಃ” (೫-೨-೧೧೫) । 2. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಬೇಡುವವನು. ಧಾನ್ಯಮರ್ಥಯತೇ—ಮರ್ಥ (ಉಪಯಾಚ್ಛಾಯಾಮ್) “ಛಿನಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಧಾನ್ಯಾಸ್ಥಿ ಧಾನ್ಯಾಸ್ಥಿ (ನಂ) ಹೊಟ್ಟು, ಧಾನ್ಯದ ಮೇಲಿನ ಸಿಪ್ಪೆ.

ಧಾನ್ಯೋತ್ತಮ ಧಾನ್ಯೋತ್ತಮ (ಪುಂ) ಶಾಲಿಧಾನ್ಯ, ಬತ್ತ. ಧಾನ್ಯೇಷು ಉತ್ತಮಃ ।

ಧಾನ್ಯಂತರ್ಯ ಧಾನ್ಯಂತರ್ಯ (ವಿಂ) ಧನ್ವಂತರಿ ದೇವತಾಕವಾದ ಹೋಮ ಮೊದಲಾದುದು.

ವಾಮಕೇಶಿನ್ ಧಾನ್ಯಕೇಶಿನ್ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ವಾಮ ಜ್ಯೋತೀರೂಪಃ ಕೇಶೋಽಸ್ಯ “ಛಿನಿಃ” (೫-೨-೧೧೫) ।



“ದಿವಾಕರ: ಸಪ್ತಸಪ್ತಿರ್ಧಾಮಿಕೇಶಿ ವಿರೋಚನ:” ಮಾಂ ವನಂ ೩-೪೪।

**ಧಾಮನ್ ಧಾಮನ್** (ನಂ) 1. ವಾಸಸ್ಥಾನ, ಗೃಹ, ಮನೆ. ಧೀಯತೇ—ಓ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) “ಮನಿನ್” (ಉಂ ೪-೧೪೪)। “ಇತ್ಯುಕ್ತ್ವಾ ಸಪದಿ ಹಿತಂ ಪ್ರಿಯಂ ಪ್ರಿಯಾಹಂ ಧಾಮ ಸ್ವಂ ಗತವತಿ ರಾಜರಾಜಭೂತೇ” ಕಿರಾಂ ೫-೫೧। “ತುರಾಸಾಹಂ ಪುರೋಧಾಯ ಧಾಮ ಸ್ವಾಯಮ್ಭುವಂ ಯಯು:” ಕುಮಾಂ ೨-೧। 2. ಸ್ಥಾನ, ಜಾಗ. “ಧ್ವಜಾಗ್ರಧಾಮಾ ದದೃಶುಃ ಶೌರೇ: ಸಂಕ್ರಾಂತಮೂರ್ಮಿಮಣಿಮೇದಿನೀಪು” ಮಾಧಂ ೩-೨೩। 3. ದೇಹ, ಶರೀರ. 4. ಕೃಂತ್ರಿ, ಪ್ರಭು. “ಪತತ್ಯಧೋ ಧಾಮ ವಿಸಾರಿ ಸರ್ವತ: ಕಿಮೇತದಿತ್ಯಾಕುಲಮೀಕ್ಷಿತಂ ಜನೇ:” ಮಾಧಂ ೧-೨। 5. ತೇಜಸ್ಸು. “ಕ್ಷಯಯುಕ್ತಮಪಿ ಸ್ವಭಾವಜಂ ದಧತಂ ಧಾಮ ಶಿವಂ ಸಮೃದ್ಧಯೇ” ಕಿರಾಂ ೨-೧೧। 6. ಪ್ರಭಾವ, ಮಹಿಮೆ. “ಅಖಂಡಮಾಖಂಡಲತುಲ್ಯಧಾಮಭಿ: ಚಿರಂ ಧೃತಾ ಭೂಪತಿಭಿ: ಸ್ವವಂಶಜೇ:” ಕಿರಾಂ ೧-೨೯। 7. ರಶ್ಮಿ, ಕಿರಣ. “ಕ್ಷಣ-ಮತುಹಿನಧಾಮ್ನಿ ಪ್ರೋಷ್ಯ ಭೂಯ: ಪುರಸ್ತಾದುಪಗತವತಿ ಪಾಣಿಗ್ರಾಹ-ವದ್ವಿವಧುನಾಮ್” ಮಾಧಂ ೧೧-೬೫। 8. ಜನ್ಮ, ಉತ್ಪತ್ತಿ. “ಧಾಮ ದೇಹೇ ಗೃಹೇ ರಶ್ಮೌ ಸ್ಥಾನೇ ಜನ್ಮಪ್ರಭಾವಯೋ:” ಮೇದಿಂ 1. ಪ್ರಭಾವ, ಶಕ್ತಿ, ವೀರ್ಯ. “ಸಹತೇ ನ ಜನೋಪ್ಯಧ: ಕ್ರಿಯಾಂ ಕಿಮು ಲೋಕಾಧಿಕಧಾಮ ರಾಜಕಮ್” ಕಿರಾಂ ೨-೪೭। 10. ಸುಖ. “ಧಾಮ ಜನ್ಮಪ್ರಭಾವಸ್ಥಾನಪ್ರಭಾವಸುಖಸಂಪದಸು” ನಾನಾರ್ಥರಂ 1. 11. ಗಗನ, ಆಕಾಶ. 12. ಅನ್ನ, ಆಹಾರ. 13. ಭೋಜನ, ಊಟ. “ಧಾಮ ಜನ್ಮಪ್ರಭಾವಾಗ್ರಭಾಸ್ತು ಲೇ ಭೋಜನೇ ಗೃಹೇ” ವೈಜಂ 1. 14. ಹೆಸರು. “ಧಾಮಾನಿ ತ್ರಿಣಿ ಭವಂತಿ ಸ್ಥಾನಾನಿ ಜನ್ಮಾನಿ ನಾಮಾನಿ” ನೇರುಕ್ತಮ್ (ನಂ) 15. ಪರಮಾತ್ಮ, ವಿಷ್ಣು. ಸಕಲ ಚರಾಚರಗಳಿಗೂ ಆಶ್ರಯನಾಗಿರುವುದರಿಂದ ವಿಷ್ಣುವಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು. ಚರಾ-ಚರಬೀಜಾಧಾರನೌಕರ್ಣಧಾರತಯಾ ತಸ್ಯ ಧಾಮ ಸ್ಥಾನಮ್। “ಚರಾಚರಾಧಾರತಯಾ ಧಾಮೇತಿ ಪರಿಚಕ್ಷತೇ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ:। “ಗುರುಗುರುತಮೋ ಧಾಮ ಸತ್ಯಸ್ಸತ್ಯಪರಾಕ್ರಮ:” ವಿಂ ಸಂ 1.

**ಧಾಮನಿಕಾ ಧಾಮನಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧಮನಿ, ಊದುವ ಕೊಳವೆ. ಧಮನಿ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಅನ್” (೫-೪-೩೮)। “ಛೀಪ್” (೪-೧-೧೫)। ಧಾಮನಿ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕ:”।

**ಧಾಮನಿಧಿ ಧಾಮನಿಧಿ** (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಧಾಮಾನಿ ನಿಧೀಯಂತೇಽಸ್ಮಿನ್—ಓ ಧಾನ್ (ಧಾರಣ) “ಕಿ:” (೩-೩-೯೨)। “ಸುರೋತ್ತಮೋ ಧಾಮನಿಧಿ: ಪಶ್ಚಿಮೀವಲ್ಲಭೋ ಹರಿ:” ಅಮಂ 1.

**ಧಾಮನಿ ಧಾಮನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧಮನಿ, ಊದುವ ಕೊಳವೆ. ಧಮನಿ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಅನ್” (೫-೪-೩೮)। “ಛೀಪ್” (೪-೧-೧೫)।

**ಧಾಮವತ್ ಧಾಮವತ್** (ವಿಂ) ತೇಜಸ್ಸು, ಅವಮಾನವನ್ನು ಸಹಿಸದ ಗುಣವುಳ್ಳವನು. ಧಾಮಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ—“ಮತುಪ್” (೫-೨-೯೪)। “ಪುರ:ಸರಾ ಧಾಮವತಾಂ ಯಶೋಧನಾ:” ಕಿರಾಂ ೧-೪೩।

**ಧಾಮಾರ್ಗವ ಧಾಮಾರ್ಗವ** (ಪುಂ) 1. ಉತ್ತರಣೆ ಗಿಡ. 2. ಕಹಿ ಹೀರಿ ಗಿಡ. “ಧಾಮಾರ್ಗವಸ್ತು ಪುಂಸಿ ಸ್ಯಾದಪಾಮಾರ್ಗಂ ಚ ಧೋಷಕೇ” ಮೇದಿಂ 1. “ಧಾಮಾರ್ಗವಸ್ಯಾಪಿ ಮದನಫಲಮಜ್ಜವ-ದುಪಯೋಗೋ ವಿಶೇಷತಸ್ತು ಪರಂ ಗುಲ್ಮೋದರಕಾಸಸ್ವಾಸಹಲೇಷ್ಠಾಮಯೇಷು” ಸುಶ್ರುತಂ 1. 3. ಹಳದಿ ಹೂವುಳ್ಳ ಕಾಡು ಹೀರಿಗಿಡ. “ಮಹಾಜಾಲಿ ಪೀತಧೋಷಾ ಕೋಡೋ ಧಾಮಾರ್ಗವೋಽಪಿ ಚ” ವೈಜಂ 1.

**ಧಾಯ ಧಾಯ** (ವಿಂ) ಪೋಷಕವಾದ. ಓ ಧಾನ್ (ಧಾರಣ-ಪೋಷಣಯೋ:) “ಣ:” (೩-೧-೧೪೧)। “ಯುಕ್” (೭-೩-೩೩)। “ದದೇದ್ದು:ಸ್ವಸ್ಯ ಮಾದೃಗ್ಯಯೋ ಧಾಯೈರಾಮೋದಮುತ್ತಮಮ್” ಮೃದ್ವಿಂ ೬-೭೯।

**ಧಾಯ್ಯ ಧಾಯ್ಯ** (ಪುಂ) ಪುರೋಹಿತ. ಓ ಧಾನ್ (ಧಾರಣ-ಪೋಷಣಯೋ:) ಕರ್ಮಂ “ಞ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೯)। “ಯುಕ್” (೭-೩-೩೩)।

**ಧಾಯ್ಯಾ ಧಾಯ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಸಮಿತ್ತನ್ನು ಹಾಕಲು ಹೇಳುವ ಮಂತ್ರ, ಸಮಿತ್ತನ್ನು ಹಾಕಿ ಅಗ್ನಿಯು ಜ್ವಲಿಸಲು ಹೇಳುವ ಮಂತ್ರ. ಧೀಯತೇಜನಯಾ ಸಮಿತ್—ಓ ಧಾನ್ (ಧಾರಣ-ಪೋಷಣಯೋ:) ಕರಂ “ಞ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೯)। “ಯುಕ್” (೭-೩-೩೩)। ಧೀಯತೇ ಪುಷ್ಯತೇಽಗ್ನಿನರನಯಾ ವಾ 1.

**ಧಾರ ಧಾರ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಘದಿಂದ ಧಾರಾಕಾರವಾಗಿ ನೀರು ಸುರಿಯುವುದು, ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ ಮಳೆ ಸುರಿಯುವುದು. ಧ್ (ಧಾರಣ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ “ಅಪ್” (೩-೩-೫೭)। 2. ಮುಣ, ಸಾಲ. “ಧಾರೋ ಜಲಧರಾಸಾರವರ್ಣೇ ಸ್ಯಾದ್ಧೇಽಪಿ ಚ” ಹೇಮಂ 1. 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಶಿಲೆ. “ಧಾರೋ ಪಾವಾಂತರೇಽಪ್ಯುಣೇ” ಮೇದಿಂ 1. (ನಂ) 4. ಮಳೆಯು ಧಾರೆಯಾಗಿ ಬೀಳುತ್ತಿರುವಾಗ ಪಾತ್ರೆಯಲ್ಲಿ ಹಿಡಿದಿರುವ ನೀರು; ಮಳೆಯು ಹೊಯ್ಯುತ್ತಿರುವಾಗ ಶುಭ್ರವಾದ ದಪ್ಪ ಬಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಹಿಡಿದ ನೀರು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತೊಳೆದ ಕಲ್ಲು ಅಥವಾ ನೆಲದಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದ ನೀರು ಬೆಳ್ಳಿ ತಾಮ್ರ ಸ್ಪಟಿಕ ಗಾಜು ಅಥವಾ ಮಣ್ಣಿನ ಪಾತ್ರೆಗಳಲ್ಲಿ ಹಿಡಿದ ನೀರು ಧಾರವೆನಿಸುವುದು. ಧಾರದ ಗುಣ: ತ್ರಿದೋಷ (ವಾತಪಿತ್ತಕಫ) ಗಳನ್ನು ಹೊಡೆಯುವುದು. ಬಲಕಾರಿ. ಉಲ್ಲಾಸಕರ. ಜೀರ್ಣಕಾರಿ. ಬುದ್ಧಿಪ್ರದ. ಮೂರ್ಛಾರ್ಥಿ ಅಲಸ್ಯ (ಸೋಮಾರಿ ತನ) ಉರಿ (ದಾಹ) ಶ್ರಮ ದಣವು ಬಾಯಾರಿಕೆ ಇವು ಗಳನ್ನು ನಿವಾರಿಸುವುದು. ವರ್ಷಾರ್ಥವಿನಲ್ಲಿ ಹಿಡಿದಿರುವ ನೀರು ಉತ್ತಮ. “ಧಾರಾಭಿ: ಪತಿತಂ ತೋಯಂ ಗೃಹೀತಂ ಸ್ಕೂತ-



ವಾಸಸಾ । ಶಿಲಾಢಾಂ ವಸುಧಾಢಾಂ ವಾ ಧೌತಾಢಾಂ ಪತಲತಂ ಚ ಯತ್ । ಸೌವರ್ಣಂ ರಾಜತಂ ತಾಂಢ್ರಂ ಸ್ಫಾಟಲಿಕಂ ಕಾಚನಲಮಲತಂ । ಢಾಜನಂ ಮೃಗ್ಮಯಂ ವಾಪಲ ಸ್ಥಾಪಲತಂ ಧಾರಮುಚ್ಯತಂ । ಧಾರಂ ನಲರಂ ತ್ರಲದೌಷಜ್ಞ-ಮನಲದೇಶ್ಯರಸಂ ಲಘು । ಸೌಮ್ಯಂ ರಸಾಯನಂ ಬಲ್ಯಂ ತರ್ಪಣಂ ಹ್ಲಾಢಲ ಜಲವನಮ್ । ಪಾಚನಂ ಸತಲಕೃನ್ಮುಚ್ಛಾತಲದ್ರಾಢಾಹಶ್ರಮಕಲಮಾನ್ । ತೃಷ್ಣಾಂ ಹರತಲ ತತ್ ಪಥ್ಯಂ ವಲಶೇಷಾತ್ ಪ್ರಾವೃಷಲ ಸ್ಮೃತಮ್" ಢಾವಪ್ರಂ ।

**ಧಾರಕ ಧಾರಕಂ (ಪುಂ)** 1. ಪಾತ್ರಂ, ಯಾವ ವಸ್ತುವನ್ನಾದರೂ ತುಂಬಲಡುವ ಒಂದು ಅಧಾರವಸ್ತು. ಧಾರಯತಲ-ಘೃ (ಧಾರಣಂ) + ಣಲಿಚ್ "ಞ್ಞಲ್" (3-1-133) । 2. ನಲರಂ ತುಂಬಲ ಡುವ ಪಾತ್ರಂ, ಕೂಡ, ಬಲಂದಲಗಲ. 3. ಸಾಲಗಾರ. (ವಲಂ) 4. ಧರಲಸಲರುವ, ಹೂತ್ತಲರುವ, ಹೂಂದಲರುವ. 5. ಧಾರಣಂ ಮಾಡುವವನು, ವಲಷಯವನ್ನು ಗ್ರಹಲಸಲ ನೆನಪಲನಲ್ಲಲಡುವವನು.

**ಧಾರಕಾ ಧಾರಕಾ (ಸ್ತ್ರಲಂ)** ಯೂನಲ, ಮೂತ್ರಮಾರ್ಗಂ ಮೂತ್ರನಾಳ.

**ಧಾರಣ ಧಾರಣ (ನಂ)** 1. ಧರಲಸಲವುಡು, ಹೂರುವುಡು ವಹಲಸಲವುಡು, ಹೂಂದಲವುಡು. 2. ಗ್ರಹಲಸಲ ಚೆನ್ನಾಗಲ ನೆನಪಲನಲ್ಲಲಡುವುಡು. "ಗ್ರಹಣಧಾರಣಪಢ್ಠಃ ಬಾಲಃ" । 3. ಯೂನಲ ಯಾಗಲರುವುಡು, ಸಾಲಗಾರನಾಗಲರುವುಡು, ಉಪಕಾರ ಬಢ್ಢನಾಗಲರುವುಡು. ಘೃ (ಧಾರಣಂ) + ಣಲಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । 4. ವಲಚಾರಣಂ, ವಲವಂಶಂ. 5. ಉಪವಾಸಾ ಚರಣಂ, ಉಪವಾಸವ್ರತವನ್ನು ಹಲಡಲಯುಲವುಡು.

**ಧಾರಣಾ ಧಾರಣಾ (ಸ್ತ್ರಲಂ)** 1. ಎಂಟು ವಲಧ ಯೂಗಾಂಗ ಗಳಲ್ಲೂಂದು, ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲಲ ಮನಸ್ಸನ್ನು ದೃಢವಾಗಲ ನಲ್ಲಲಸಲವುಡು. ಘೃ (ಧಾರಣಂ) + ಣಲಿಚ್ "ಯುಚ್" (3-3-109) । ಶುಭವಾಢ ಅಶ್ತ್ರಯವಾಢ ನಾಭಲಚಕ್ರ ಹೃದಯ ಜಲಹ್ವಾಗ್ರ ನಾಸಾಗ್ರ ಶಲರಸ್ಸು ಮೂಢಲಲಾಢ ಶರಲರಢ ಅವಯವಗಳಲ್ಲಲ ಅಥವಾ ಹೂರಗಲನ ಶುಭವಾಢ ವಸ್ತುವಲನಲ್ಲಲ ಚಲತ್ತವನ್ನು ಸ್ಥಲರವಾಗಲ ನಲ್ಲಲಸಲವ ಅಭ್ಯಾಸವೇ ಧಾರಣಯು. ಇಢೇ ಢೇಶಬಂಧವಾಗುವುಡು. ಀ ಅಭ್ಯಾಸಢಲ್ಲಲ ಅರ್ಥಫಲಲಗಲ ಒಂದು ಫಲಲಗಲ ಎರಡು ಫಲಲಗಲ ಀ ರಲಂತಲ ಚಲತ್ತಸ್ಥೆಯು ವುಂಟಾಗುವುಡು. "ಢೇಶಬಂಧಶ್ಚಲತ್ತಸ್ಯ ಧಾರಣಾ" ಪಾಂ ಯಂ ಸುಂ 3-1 । "ಯಮಾಢಲಗುಣಯುಕ್ತಸ್ಯ ಮನಸಃ ಸ್ಥಲತಲ-ರಾತ್ಮನಲ । ಧಾರಣೇತ್ಯುಚ್ಯತಂ ಸಢ್ಢಲಯೌಗಶಾಸ್ತ್ರವಲಶಾರಢೇಃ" । ನಾಭಲಚಕ್ರಂ ಹೃದಯಪುಂಢರಲಕಲ ಮೂಲಲಿ ಜ್ಯಾಲತಲಿಷಲ ನಾಸಾಗ್ರಂ ಜಲಹ್ವಾಗ್ರಂ ಀತಯವಮಾಢಲಷು ಢೇಶಲಬು ಬಾಹ್ಯಂ ವಾ ವಲಷಯಂ ಚಲತ್ತಸ್ಯ ವೃತ್ತಲಮಾತ್ರಂ ಬಂಧಃ ಧಾರಣಾ । 2. ವಹಲಸಲವುಡು, ಹೂತ್ತುಕೂಂದಲರು

ವುಡು. 3. ಮನಸ್ಸಲನಲ್ಲಲ ನೆನಪಲಡುವುಡು. "ಬಲಧಾರಣಾವತಲ ಮೇಘಾ" ಅಮಂ । 4. ಸಾಂಖ್ಯಸೂತ್ರಢಲ್ಲಲ ಹೇಳಲರುವ ಪೂರಣ ರೇಚಕ ಕುಂಭಕಗಳೆಂಬ ಪ್ರಾಣನಲರೂಢ ರೂಪವಾಢ ಪ್ರಾಣಾಯಾಮ. "ಧಾರಣಾಸನಸ್ವಕರ್ಮಣಾ ತಲತ್ತಲಸಢ್ಢಲಃ" । 5. ಮರ್ಯಾಢೇ, ನ್ಯಾಯವಾಢ ಮಾರ್ಗಢಲ್ಲಲರುವುಡು, ಗೂರವಢಲಂದಲರುವುಡು. "ಮರ್ಯಾಢಾ ಧಾರಣಾ ಸ್ಥಲತಲಃ" ಅಮಂ । "ನ ಲಕ್ಷಣೇಢ್ಢತ್ಸತನ್ತ್ರಲಂ ನ ಪ್ರಘಾಲೇಚ್ಚ ವರ್ಷತಲ । ನ ಚಲಢಕಲ ನಲರಲಕ್ಷಲತ ಸ್ವಂ ರೂಪಮಲತಲ ಧಾರಣಾ" ಮನುಂ 8-38 ।

**ಧಾರಣಲ ಧಾರಣಂ (ಸ್ತ್ರಲಂ)** 1. ಸ್ಥೂರ್ಯಂ. ಘೃ (ಧಾರಣಂ) + ಣಲಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । "ಶಾಲರಲಕಧಾರಣಲ-ಶಲಶಲಲಾನ್" ಢಶಕ್ರುಂ । 2. ಸಲರ, ನಾಢಲ, ನರ. 3. ಶ್ರೇಣಂ, ಸಾಲು. 4. ಅಳಲಕಾಯಲ. "ಅವ್ಯಥಾ ಚಲತಕಲ ಪಥ್ಯಾ ಧಾರಣಲ ಕಾಲಕೂಣಲಕಾ" ವೇಜಂ ।

**ಧಾರಣಲಯ ಧಾರಣಲಯ (ವಲಂ)** 1. ಧರಲಸಲಲ್ಪಡುವ. 2. ಧರಲ ಸಲು ಶಕ್ಯವಾಢ. 3. ಧರಲಸಲು ಯೂಗ್ಯವಾಢ. 4. ಧರಲ ಸಲೇಕಾಢ. 5. ಪೂಷಲಸಲಲ್ಪಡುವ. 6. ಪೂಷಲಸಲು ಯೂಗ್ಯವಾಢ. 7. ಪೂಷಲಸಲೇಕಾಢ. ಘೃ (ಧಾರಣಂ) + ಣಲಿಚ್ ಕರ್ಮಾಢಲ "ಅನಲಯರ್" (3-1-96) । "ತವ್ಯಃ" (3-1-96) । -ಯಲತವ್ಯಃ -ಯಲತವ್ಯಃ ।

**ಧಾರಯ ಧಾರಯ (ವಲಂ)** 1. ಧರಲಸಲರುವ, ವಹಲಸಲರುವ, ಹೂತ್ತಲರುವ. ಘೃ (ಧಾರಣಂ) + ಣಲಿಚ್ "ಶಃ" (3-1-138) । "ಧಾರಯಃ ಕುಸುಮಲರ್ಮಲಣಾಂ ಪಾರಯಲರ್ಬಲಧಲತುಂ ಜನಾನ್ । ಶಾಲಸ್ತಲಲಲರ್ಹಲ ಹತಾ ಭೂಯೂ ಹೃದಯಾನಾಮುಢೇಜಯಃ" ಢಢ್ಢಲಂ 6-98 । 2. ಪೂಷಲ ಸುವ, ಪಾಲಲಸುವ.

**ಧಾರಯತ್ ಧಾರಯತ್ (ವಲಂ)** ವಹಲಸುಕ್ತಲರುವ, ಧರಲಸು ತಲರುವ. ಘೃ (ಧಾರಣಂ) + ಣಲಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124) । "ಪ್ರನಲತಲತಾಲಶೇಷಲತಾಭುಜಾಲಾನ್ ರುಢಾನಲನಲಕಾನಲವ ಧಾರಯನ್ತಮ್" ಮಾಘಂ 8-9 । ಸ್ತ್ರಲಯಾಮ್ "ಜಲಪ್" (8-1-6) । -ಯಸ್ತಲ -ಯಂತಲ.

**ಧಾರಯಲತ್ ಧಾರಯಲತ್ಯ (ವಲಂ)** 1. ವಹಲಸುವವನು, ಧರಲಸು ವವನು. 2. ಹೂತ್ತುಕೂಳ್ಳುವ, ಅಸರಲಕೂಡುವ. 3. ತಲಳಲಡುಕೂಂಡು ನೆನಪಲನಲ್ಲಲಡುವವನು. ಘೃ (ಧಾರಣಂ) + ಣಲಿಚ್ "ತೃಚ್" (3-1-133) । ಸ್ತ್ರಲಯಾಮ್ "ಜಲಪ್" (8-1-6) । -ಯಲತಲ -ಯಲತಲ.

**ಧಾರಾ ಧಾರಾ (ಸ್ತ್ರಲಂ)** 1. ಕುಂದುರೆಯ ವೇಗವಾಢ ನಡಗಲ. ಧಾರಯಂತೆಶ್ಚಾ ಅನಯಾ - ಘೃ (ಧಾರಣಂ) + ಣಲಿಚ್ "ಅಙ್" (3-3-104) । ಅಶ್ತ್ರಗತಲ (ಕುಂದುರೆಯ ನಡಗಲ) ಯುಂ (1) ಆಸ್ಕನ್ಢಲತಮ್. (2) ಧೂರಲತಕಮ್. (3) ರೇಚಲತಮ್,



(4) ವಲಿತಂ ಮುತ್ತು (5) ಪ್ಲುತಮ್ ಎಂದು ಐದು ವಿಧ. "ಅಶ್ವಾನಾಂ ತು ಗತಿರ್ಧಾರಾ ವಿಭಿನ್ನಾ ಸಾ ಚ ಪಂಚಧಾ | ಆಸ್ಕಂದಿತಂ ಧೌರಿತಕಂ ರೇವಿತಂ ವಲಿತಂ ಪ್ಲುತಮ್" ವೈಜಂ | "ಅವ್ಯಾಕುಲಂ ಪ್ರಕೃತಮುತ್ತರಧೇಯಕರ್ಮಧಾರಾ: ಪ್ರಸಾಧಯಿತುಮವ್ಯತಿ-ಕೀರ್ಣರೂಪಾ:" ಮಾಘಂ ೪-೬೦ | 2. ನೀರಿನ ಧಾರೆ, ಮೋಡ ದಿಂದ ಬೀಳುವ ಮಳೆಯ ಹನಿ, ಏಕಾಕಾರವಾಗಿ ಮೇಲೆ ನಿಂದ ಸುರಿಯುವ ನೀರು ಎಣ್ಣೆ ಮೊದಲಾದ ದ್ರವವಸ್ತುಗಳ ಹರಿವು, ಬಿಂದಿಗೆ ಮೊದಲಾದ ಪಾತ್ರೆಗಳ ತೂತುಗಳಿಂದ ಎಡೆಬಿಡದೆ ಸುರಿಯುತ್ತಿರುವ ನೀರಿನ ಹರಿವು. "ರಾಜನ್ಯಾನಾಂ ಶಿತಶರಶತೈರೈಶ್ಚ ಗಾಂಧೀವಧನ್ವಾ ಧಾರಾಪಾತ-ಸ್ತವಿವ ಕಮಲಾನ್ಯಮ್ಯವರ್ಷನ್ಮುಖಾನಿ" ಮೇಘಂ ೧-೪೮ | 3. ಚೂರಿ ಕತ್ತಿ ಕೊಡಲಿ ಉಳಿ ಮುಂತಾದುವುಗಳ ಹರಿತವಾದ ಅಂಚು, -ಅಲಗು. "ರಾಜಸೇವಾ ಮನುಷ್ಯಾಣಾಮಸಿ-ಧಾರಾವಲೇಹನಮ್ | ಪಂಚಾನನಪರಿಷ್ವಜ್ಞೋ ವ್ಯಾಲಿವದನಚುಮ್ಬನಮ್" | "ಧಾರಾಂ ಶಿತಾಂ ರಾಮಪರಶ್ವಯಸ್ಯ ಸಂಭಾವಯತ್ಯುತ್ಪಲಪತ್ರಸಾರಾಮ್" ರಘುಂ ೬-೪೨ | 4. ಚಕ್ರಧಾರೆ, ಚಕ್ರದ ಹೊರಮೈ, ಚಕ್ರದ ಅಂಚು. "ಆಭಾತಿ ವೇಲಾ ಲವಣಾಮ್ಬುರಾಶೇರ್ಧಾರಾನಿಬದ್ಧೇವ ಕಲಕ್ಷುರೇಖಾ" ರಘುಂ ೧೩-೧೪ | 5. ಮುಂದೆ ಸಾಗುತ್ತಿರುವ ಸೈನ್ಯದ ಮುಂಭಾಗ, ಸೈನ್ಯದ ಮುನ್ಸಾಲು. 6. ಮುಳ್ಳುಗಿಡಗಳ ಬೇಲಿ. 7. ಉತ್ಕರ್ಷ, ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ. 8. ಧಾರಾನಗರ, ಭೋಜರಾಜನ ರಾಜಧಾನಿಯಾದ ಒಂದು ಪಟ್ಟಣ. 9. ಅರಿಶಿನ. "ಧಾರಾ ಪು: ಕಾಪಿ ಸೇನಾಂ ಪತದಮ್ಬಾದಿಸಂತತಿ: | ಖಜ್ಜಾದಿನಿಶಿತಪ್ರಾಂತೇ ತುರಜ್ಜ-ಗತಿಪಂಚಕೇ" ನಾನಾರ್ಥಂ | 10. ಪಂಕ್ತಿ, ಸಾಲು. 11. ರಾತ್ರಿ. "ಧಾರಾ ಸೇನ್ಯಾಘ್ರಿಮಸ್ಕಂಧಸಂತತಿಯೋ: ಪತ್ತನಾಂತರೇ | ದ್ರವದ್ರವ್ಯಪ್ರಪಾತೇಽಪಿ ತುರಜ್ಜಗತಿಪಂಚಕೇ | ಖಜ್ಜಾದೀನಾಂ ಚ ನಿಶಿತಮುಖೇ ಧಾರಾಪಿ ಕೀರ್ತಯಂತಿ" ವಿಶ್ವಂ | "ಧಾರಾ ಹರಿದ್ರಾಶ್ವ-ಗತಿ: ನಿಶಾಮ್ಬುಸುತೀರಾಜಿಷು" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಧಾರಾಗೃಹ ಧಾರಾಗೃಹ, -ಗೃಹ -ಗೃಹ (ನಂ)** 1. ಕೊಳಾಯಿಯ ಸಣ್ಣ ರಂಧ್ರಗಳಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ಚಿಮ್ಮುತ್ತಿರುವ ತುಂತುರುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮನೆ. "ದೇಶೇ ದೇಶೇ ಜಡಿ-ಮಕುರಜ್ಞಾ: ತೇಜೋಮಲ್ಲದಿನಕರಭಿಲ್ಲೇ | ಧಾವಂ ಧಾವಂ ಪ್ರಹರತಿ ರಾಜಾಂ ಧಾರಾಗೃಹಂ ಶರಣಮವಾಪು:" ಚಂ ಭಾಂ | 2. ಮೇಲೆ ನಿಂದ ಜಲ್ಲಡಿಯಂತಿರುವ ಕೊಳಾಯಿಯ ಬಾಯಿಂದ ಮಳೆಯಂತೆ ನೀರು ಬೀಳುವ ಸ್ನಾನದ ಮನೆ. "ಶಿಲಾವಿಶೇಷಾ-ನಧಿಶಯ್ಯ ನಿನ್ಯುರ್ಧಾರಾಗೃಹೇಷ್ವಾತಪಮೃದ್ವಿಮಂತ:" ರಘುಂ ೧೬-೪೯ |

**ಧಾರಾಚ್ಚುರ ಧಾರಾಂಕುರ (ಪುಂ)** 1. ತುಂತುರು, ನೀರಿನ ಸಣ್ಣ ಹನಿ. 2. ಅಲಿಕ್ಕಲ್ಲು, ಮುಗಿಲ್ಲಲ್ಲು. 3. ಸೇನಾ ಮುಖ, ಸೈನ್ಯದ ಮುಂದಿನ ಸಾಲು. ಧಾರಾಯಾ ಅಚ್ಚುರ

ಇವ | "ಧಾರಾಚ್ಚುರಸ್ತು ನಾಸೀರೇ ಶೀಕರೇಽಪಿ ಧನೋಪಲೇ" ಮೇದಿಂ |

**ಧಾರಾಜ್ಞ ಧಾರಾಂಜ (ಪುಂ)** 1. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. ಧಾರಾ ಅಜ್ಞ-ಮಿವಾಸ್ಯ | 2. ಒಂದು ಪುಣ್ಯತೀರ್ಥ. "ಧಾರಾಜ್ಞ: ಸ್ವಜ್ಞತೀರ್ಥಯೋ:" ಹೇಮಂ |

**ಧಾರಾಟ ಧಾರಾಟ (ಪುಂ)** 1. ಚಾತಕಪಕ್ಷಿ, ಮಳೆಗುಟುಕಿನ ಹಕ್ಕಿ. 2. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. ಧಾರಾಯೆ ಧಾರಯಾ ವಾ ಅಟತಿ—ಅಟ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಧಾರಾಟಶ್ವಾತಕಾಶ್ವಯೋ:" ಮೇದಿಂ | 3. ಮೇಘ, ಮೋಡ.

**ಧಾರಾಧರ ಧಾರಾಧರ (ಪುಂ)** ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಧರತಿ—ಧೃತ್ (ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | ಧಾರಾಯಾ: ಧರ: | "ಧಾರಾಧರ ಧರಾ ವಾರಿಧಾರಯಾ ಪರಿಪೂರ್ಯಂತಿ | ಸ್ವಗಚ್ಚು-ಪುಟದ್ರೋಣಿಪೂರ್ಣೇ ತವ ಕ: ಶ್ರಮ:" ಚಾತಕಾಂ |

**ಧಾರಾಪಾತ ಧಾರಾಪಾತ (ಪುಂ)** ನೀರು ಸುರಿಯುವಿಕೆ, ಮೋಡ ಪಾತ್ರೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಎಡೆಬಿಡದೆ ನೀರಿನ ಹರಿವು. ಧಾರಾಯಾ: ಪಾತ: | "ಧಾರಾಪಾತೇಸ್ತವಿವ ಕಮಲಾ-ನ್ಯಮ್ಯವರ್ಷನ್ಮುಖಾನಿ" ಮೇಘಂ ೧-೪೮ |

**ಧಾರಾಪುಷ್ಪ ಧಾರಾಪುಷ್ಪ (ಪುಂ)** "ಧಾರಾ" ಎಂಬ ಒಂದು ವಿಧ ಸಿಹಿ ರೊಟ್ಟಿ. ಧಾರಾಪುಷ್ಪ: | ಮೈದಾಹಿಟ್ಟನ್ನು ತುಪ್ಪದಲ್ಲಿ ಕಲಸಿ ತುಪ್ಪದಲ್ಲಿ ಕರಿದು ಸಕ್ಕರೆ ಪಾಕಕ್ಕೆ ಹಾಕಿ ತೆಗೆದರೆ ಅದು "ಧಾರಾ" ಎಂಬ ಭಕ್ಷ್ಯವಾಗುವುದು.

**ಧಾರಾಯನ್ತ್ರ ಧಾರಾಯಂತ್ರ (ನಂ)** ಸಣ್ಣ ಜಲಕಣಗಳು ಚಿಮ್ಮುವಂತೆ ಮಾಡಿದ ಬಹಳ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ರಂಧ್ರಗಳುಳ್ಳ ಕೊಳಾಯಿ, ಬೀಕೊಳವೆ, ಕಾರಂಜಿ. ಧಾರಾಯಾ: ಜಲಧಾರಾಯಾ: ಸ್ರವಣಾರ್ಥಂ ಯನ್ತ್ರಮ್ | "ಅಜ್ಞಂ ಚಂದನಪಾಣ್ಡು ಪಲ್ಲವಮೃದು-ಸ್ತಾಮ್ಬಲತಾಮ್ರೋಽಧರೋ ಧಾರಾಯನ್ತ್ರಜಲಾಭಿಷೇಕಕಲ್ಪುಃ ಧೌತಾ-ಜ್ಜನೇ ಲೋಚನೇ" ಅಮರಂ ೧೨೪ |

**ಧಾರಾಲ ಧಾರಾಲ (ವಿಂ)** ಅಲಗುಳ್ಳ, ಅಂಚುಳ್ಳ (ಕತ್ತಿ ಮೊದಲಾದುದು). ಧಾರಾಸ್ತಯಸ್ಯ "ಲಚ್" (೪-೨-೯೭) |

**ಧಾರಾವನಿ ಧಾರಾವನಿ (ಪುಂ)** ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಧಾರಾಯಾ ಅವನಿರಿವ | "ಭೌಗಿಕಾಂತ: ಕಂಪಲಕ್ಷ್ಮಾ ಪಶ್ಚ ಧಾರಾವನಿಶ್ರ ಸ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಧಾರಾವರ್ಷ ಧಾರಾವರ್ಷ (ಪುಂ)** ಮಳೆ ಸುರಿಯುವಿಕೆ, ಎಡೆ ಬಿಡದೆ ನೀರು ಬೀಳುವುದು, ಧಾರಾಕಾರವಾಗಿ ಸುರಿಯುವ ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾದ ಮಳೆ. ಧಾರಾಯಾ ವರ್ಷ: | "ನ ಪ್ರಸೇಹೇ ಸ ರುದ್ಧಾರ್ಕಮಧಾರಾವರ್ಷದ್ವಿದಿನಮ್" ರಘುಂ ೪-೮೨ |

**ಧಾರಾವಾಹಿನ್ ಧಾರಾವಾಹಿನ್ (ವಿಂ)** ಸಂತತವಾದ, ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾದ, ಎಡೆಬಿಡದ. ಧಾರಯಾ ವಹತಿ—ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಞಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) |



ಧಾರಾವಿಷ ಧಾರಾವಿಷ (ಪುಂ) ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. ಧಾರಾಯಾಂ ವಿಷಮಸ್ಯ । “ಋಷಿಃ ಕ್ಷತ್ರಗ್ನಸ್ತರವಾರಿಃ ಶಸ್ತ್ರೋ ಭದ್ರಾತ್ಮಜಶ್ಚ ಸಃ । ಧಾರಾವಿಷೋ ವಿಶಸನಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಧಾರಾಸಂಪಾತ ಧಾರಾಸಂಪಾತ (ಪುಂ) “ಧಾರಾಪಾತ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ಧಾರಾಯಾಃ ಸಂಪಾತಃ । “ಧಾರಾಸಂಪಾತ ಆಸಾರಃ” ಅಮಂ ।

ಧಾರಿಣಿ ಧಾರಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೂಮಿ.

ಧಾರಿನ್ ಧಾರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಪೀಲುವ್ಯಕ್ಷ, ಗೋನುಮರ. (ವಿಂ) 2. ಧರಿಸಿರುವ. 3. ವಿಷಯವನ್ನು ಗ್ರಹಿಸಿರುವ. ವಿಷಯವನ್ನು ನೆನಪಿನಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವ. ಧೃ (ಧಾರಣೆ) “ಗಿಣಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) । “ಅನ್ತೇಮ್ಯೋ ಗ್ರನ್ಥಿನಃ ಶ್ರೇಷ್ಠಾಃ ಗ್ರನ್ಥಿಮ್ಯೋ ಧಾರಿಣಿಃ ವರಾಃ । ಧಾರಿಮ್ಯೋ ಜ್ಞಾನಿನಃ ಶ್ರೇಷ್ಠಾಃ ಜ್ಞಾನಿಮ್ಯೋ ವ್ಯವಸಾಯಿನಃ” ಮನುಂ ೧೨-೧೦೩ । 4. ಮುಣ, ಸಾಲಗಾರ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೫) । -ಣಿ - ಣೀ.

ಧಾರೋಣ ಧಾರೋಣ (ನಂ) (ಹಸುವನ್ನು) ಕರೆಯುವಾಗ ಬಿಸಿಯಾಗಿ ಬೀಳುವ ಹಾಲು. ಈ ಬಿಸಿಯ ಹಾಲು ಬಹಳ ಆರೋಗ್ಯಕರ.

ಧಾರ್ತರಾಷ್ಟ್ರ ಧಾರ್ತರಾಷ್ಟ್ರ (ಪುಂ) 1. ದೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಮಗ ದುರ್ಯೋಧನ ಮೊದಲಾದ ನೂರೊಂದು ಮಂದಿ ಕೌರವರು ಧಾರ್ತರಾಷ್ಟ್ರರು. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರಸ್ಯ ಅಪತ್ಯ “ಅನ್” (೪-೧-೯೨) । “ಅಯ ವ್ಯವಸ್ಥಿತಾನ್ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಧಾರ್ತರಾಷ್ಟ್ರಾನ್ ಕಪಿಧ್ವಜಃ । ಪ್ರವೃತ್ತೇ ಶಸ್ತ್ರಸಂಪಾತೇ ಧನುರ್ದಮ್ಯ ಪಾಂಡವಃ” ಗೀತಾ ೧-೨೦ । 2. ಕಪ್ಪುಕಾಲುಗಳೂ ಕೊಕ್ಕೂ ಉಳ್ಳ ಹಂಸ. “ಸತ್ಪಕ್ಷಾ ಮಧುರಗಿರಃ ಪ್ರಸಾಧಿತಾಶಾಃ ಮದೋದ್ಭುತಾಃ ರಮಾಃ । ನಿಪತಂತಿ ಧಾರ್ತರಾಷ್ಟ್ರಾಃ ಕಾಲವಶಾನ್ಮೇದಿನಿಪೃಷ್ಠೇ” ವೇಣೀಂ ೧ ।

ಧಾರ್ಮ ಧಾರ್ಮ (ವಿಂ) ಧರ್ಮಸಂಬಂಧವಾದ. ಧರ್ಮಸ್ಯೇದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) ।

ಧಾರ್ಮಪತ ಧಾರ್ಮಪತ (ವಿಂ) ಧರ್ಮಪತಿ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಧರ್ಮಪತೇರಿದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) ।

ಧಾರ್ಮವಿಷ್ಣು ಧಾರ್ಮವಿಷ್ಣು (ವಿಂ) ನ್ಯಾಯವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ, ವಕೀಲ, ನ್ಯಾಯವಾದಿ.

ಧಾರ್ಮಿಕ ಧಾರ್ಮಿಕ (ವಿಂ) 1. ಧರ್ಮಶೀಲ, ಧರ್ಮದ ಸ್ವಭಾವದವನು. 2. ಧರ್ಮವನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ಧರ್ಮ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸುವವನು. ಧರ್ಮ ಚರತಿ “ಠಕ್” (೪-೪-೪೧) । “ಆಚಾರ್ಯಪುತ್ರಃ ಶುಶ್ರೂಃ ಜ್ಞಾನದೋ ಧಾರ್ಮಿಕಃ ಶುಚಿಃ । ಆಪ್ತಃ ಶಕ್ತೋರ್ಜದಃ ಸಾಧುಃ ಸ್ವೋಽಧ್ಯಾಪ್ಯಾ ದಶ ಧರ್ಮತಃ” ಮನುಂ ೨-೧೦೯ ।

ಧಾರ್ಮಿಕ ಧಾರ್ಮಿಕ (ನಂ) ಧಾರ್ಮಿಕತೆ, ಧರ್ಮಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಧಾರ್ಮಿಕಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಯಕ್” (೫-೧-೧೨೮) ।

ಧಾರ್ಮಿಣ ಧಾರ್ಮಿಣ (ನಂ) ಧಾರ್ಮಿಕರ ಸಮೂಹ. ಧಾರ್ಮಿಣಾಂ ಸಮೂಹಃ “ಅನ್” (೪-೨-೩೮) ।

ಧಾರ್ಮಿಣೀಯ ಧಾರ್ಮಿಣೀಯ (ಪುಂ) ಧರ್ಮಿಣೀಯ ಮಗ, ಧರ್ಮಕಾರ್ಯವನ್ನು ಆಚರಿಸುವವಳ ಮಗ. ಧಾರ್ಮಿಣ್ಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ “ಠಕ್” (೪-೧-೧೨೩) ।

ಧಾರ್ಯ ಧಾರ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಧರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಧರಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಧೃನ್ (ಧಾರಣೆ) “ಞತ್” (೩-೨-೧೨೪) । “ಧಾರ್ಯಃ ಕಥಂಕಾರಮಹಂ ಭವತ್ಯಾ ವಿಯದ್ವಿಹಾರೀವಸುಧೇಕಗತ್ಯಾ” ನೈಷಂ ೩-೧೫ । 3. ಪೋಷಿಸಲ್ಪಡುವ, ಸಾಕಲ್ಪಡುವ.

ಧಾಟ್ಯ ಧಾಟ್ಯ (ನಂ) 1. ಗಡುಸು, ಕಚ್ಚು, ಧೈರ್ಯ. ಧೃಷ್ಟಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಞತ್” (೫-೧-೧೨೪) । 2. ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. “ಅಹೋ ಧಾಟ್ಯಮಹೋ ಧಾಟ್ಯಂ ತಯೋಃ ಕ್ಷತ್ರಿಯ-ವೀರಯೋಃ” ಹರಿವಂಶಂ । “ಅಪ್ಯುಚ್ಚೇಭವತಿ ಲಘುಯಸಾಂ ಹಿ ಧಾಟ್ಯಮ್” ಮಾಘಂ ೮-೬೦ ।

ಧಾವಕ ಧಾವಕ (ಪುಂ) 1. ರಜಕ, ಅಗಸ. ಧಾವತಿ ವಸ್ತ್ರಾಣಿ ಮಾರ್ಪಿ-ಧಾವು (ಗತಿಶುದ್ಧಯೋಃ) “ಞಲ್” (೩-೧-೧೩೩) । 2. ಒಬ್ಬ ಕವಿ. “ಶ್ರೀಹರ್ಷಾದಿಧಾವಿಕಾದೀನಾಮಿವ ಧನಮ್” ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ । (ವಿಂ) 3. ಶುದ್ಧಮಾಡುವ, ತೊಳೆಯುವ. 4. ವೇಗವಾಗಿ ಓಡುವ. 5. ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ಒಗೆಯುವ.

ಧಾವತ್ ಧಾವತ್ (ವಿಂ) 1. ಓಡುತ್ತಿರುವ, ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ. ಧಾವು (ಗತಿಶುದ್ಧಯೋಃ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । “ಯುಧಾಯ ಧಾವತಾಂ ಧೀರಂ ವೀರಾಣಾಮಿತರೇತ-ರಮ್” ಕುಮಾಂ ೧೬-೩ । 2. ಶುದ್ಧಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ತೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ. 3. ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ಒಗೆಯುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ಂತಿ - ಣೀ.

ಧಾವನ ಧಾವನ (ನಂ) 1. ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆಯುವುದು, ವೇಗವಾಗಿ ಓಡುವುದು. 2. ತೊಳೆಯುವುದು, ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು. 3. ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ಒಗೆಯುವುದು. ಧಾವು (ಗತಿಶುದ್ಧಯೋಃ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । “ಉಚ್ಚಿಷ್ಠಂ ನೈವ ಭುಂಜೀಯಾಂ ನ ಕುರ್ಯಾ ಪಾದಧಾವನಮ್ । ನ ಚಾಹಂ ಪುರುಷಾನ್ಯಾನ್ ಪ್ರಭಾಷಯಂ ಕಥಂಚನ” ಭಾಂ ವನಂ ೬೨-೬೯ ।

ಧಾವನಿ ಧಾವನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನರಿಹೊನ್ನೆ ಗಿಡ. 2. ಹೆಣ್ಣು ಕುದುರೆ ಗಿಡ. ಧಾವು (ಗತಿಶುದ್ಧಯೋಃ) “ಅನಿಃ” ಬಾಹುಂ । ವಾ “ಡೀಪ್” । -ನಿ - ಣೀ.



**ಧಾವನೀಯ ಧಾವನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಓಡಿಸಲ್ಪಡುವ, ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆಯಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಓಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. 3. ಓಡಿಸಲು ಶಕ್ಯನಾದ. 4. ಶುದ್ಧಮಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಶುದ್ಧಮಾಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 6. ಓಡಿಸಬೇಕಾದ. 7. ಶುದ್ಧಮಾಡಿಸಬೇಕಾದ. ಧಾವು (ಗತಿಶುದ್ಧಯೋಃ) + ಣಿच् "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। 8. ಶುದ್ಧಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 9. ಶುದ್ಧಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 10. ಶುದ್ಧಮಾಡಬೇಕಾದ. 11. ಶುದ್ಧಮಾಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 12. ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆಯಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. 13. ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆಯಬೇಕಾದ. ಧಾವು + ಣಿच् "ತವ್ಯಃ" (3-1-96)। -ಯಿತವ್ಯಃ -ಯಿತವ್ಯಃ. ಧಾವು "ತವ್ಯಃ"। ಧಾವಿತವ್ಯಮ್ ಧಾವಿತವ್ಯಮ್.

**ಧಾವಮಾನ ಧಾವಮಾನ (ವಿಂ)** "ಧಾವತ್" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಧಾವು "ಶಾನच्" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಠಾಪ್" (4-1-4)। -ಮಾನಾ -ಮಾನಾ.

**ಧಾವಲ್ಯ ಧಾವಲ್ಯ (ನಂ)** ಬಿಳುಪು, ಶ್ವೇತಗುಣ. ಧವಲಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಽವ್ಯ" (4-1-124)।

**ಧಾವಿತ ಧಾವಿತ (ವಿಂ)** 1. ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಧಾವು (ಗತಿಶುದ್ಧಯೋಃ) + ಣಿच् "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। 2. ಶುದ್ಧಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಳೆಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಧಾವಿತವತ್ ಧಾವಿತವತ್ (ವಿಂ)** 1. ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನು, ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನು. 2. ಶುದ್ಧಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಧಾವು (ಗತಿಶುದ್ಧಯೋಃ) + ಣಿच् "ಕ್ತವತ್" (3-2-102)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (4-1-6)। -ವತೀ -ವತೀ.

**ಧಾವು-ಗತಿಶುದ್ಧಯೋಃ** (ಮ್ವಾಂ ಉಭಂ ಗತೌ ಅಕಂ ಶುದ್ಧೌ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಧಾವತಿ, -ತೇ। ದಧಾವ, -ವೇ। ಧಾವಿತಾ। ಧಾವಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ। ಧಾವತು, -ತಾಮ್। ಅಧಾವತ್, -ತ। ಧಾವೇತ್, -ತ। ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಓಡು, ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆ. "ಗच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः" ಶಾಕುಂ 1-30। 2. ಶುದ್ಧಮಾಡು, ತೊಳೆ.

**ಕರ್ಮಣಿಃ**:-ಧಾವ್ಯತೇ। ಧಾವ್ಯತಾಮ್। ಅಧಾವ್ಯತ। ಧಾವ್ಯತ। ಅಧಾವಿ। ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಣಿಚಿಃ**:-ಧಾವಯತಿ। ಧಾವಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಧಾವಯಿತಾ। ಧಾವಯಿಷ್ಯತಿ। ಧಾವಯತು। ಅಧಾವಯತ್। ಧಾವಯೇತ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತ್ಸುಃ**:-ಧಾವಿತವ್ಯಮ್। ಧಾವನೀಯಮ್। ಧಾವ್ಯಮ್। ಧೌತವ್ಯಃ, ಧಾವಿತಮ್। ಧೌತವಾನ್, -ವತೀ। ಧಾವನ್, -ಂತೀ।

ಧಾವಮಾನಃ। ಧೌತಮ್। ಧಾವನಮ್। ಧಾವಿತವಾ, ಧೌತವಾ। ಅನಧಾವ್ಯಃ।

**ಧಾವ್ಯ ಧಾವ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಓಡಿಸಲ್ಪಡುವ, ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆಯಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಶುದ್ಧಮಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಶುದ್ಧಮಾಡಿಸಬೇಕಾದ. 4. ಓಡಿಸಬೇಕಾದ. ಧಾವು (ಗತಿಶುದ್ಧಯೋಃ) + ಣಿच् "ಽವ್ಯತ್" (3-1-124)।

**ಧಿಕ್ ಧಿಕ್ (ಅವ್ಯಂ)** 1. ನಿಂದೆ, ಬೈಗಳು. 2. ಹೆದರಿಕೆ. ಧವಕ (ನಾಶನೆ) "ಡಿಕ್" ಬಾಹುಂ। ಈ ಪದದ ಯೋಗದಿಂದ ದ್ವಿತೀಯಾವಿಭಕ್ತಿ ಬರುವುದು. ನಿಂದಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ಪ್ರಥಮಾವಿಭಕ್ತಿ. "ಧಿಕ್ ತಂ ವಿಧೇಃ ಪಾಣಿ-ಮಜಾತಲಜ್ಜಂ ನಿರ್ಮಾತಿ ಯಃ ಪರ್ವಣಿ ಪೂರ್ಣಚಂದ್ರಮ್" ನೆಪಂ 3-32। "ಧಿಕ್ ಸಾನುಜಂ ಕುರಪತಿ ಧಿಗಜಾತಶತ್ರುಂ ಧಿಗಭೂಪತೀನ್ ವಿಫಲ-ಶಸ್ತ್ರಭತೌ ಧಿಗಸ್ಮಾನ್" ವೇಣೀಂ 3-13। "ಧಿಙ್ಮಾತಾ ಮಮ ಕೇಕೇಯಿ ಯಾ ಪಾಪಮಿದಂ ಕೃತಮ್" ರಾಮಾಂ।

**ಧಿವಕಾರ ಧಿವಕಾರ (ಪುಂ)** 1. ನಿಂದೆ, ಬೈಗಳು. 2. ಹೆದರಿಕೆ, ಭಯಪಡಿಸುವುದು. 3. ತಿರಸ್ಕಾರ. ಧಿಕ್ + ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣೇ) "ಅನ್" (3-2-1)।

**ಧಿಕ್ಕೃತ ಧಿಕ್ಕೃತ (ವಿಂ)** 1. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ನಿಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಹೆದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಧಿಗದಂಡ ಧಿಗದಂಡ (ಪುಂ)** ನಿಂದಾರೂಪವಾದ ಶಿಕ್ಷೆ. ಧಿಗಿತಿ ದಂಡಃ। ಅಪರಾಧಿಯನ್ನು ಮೊದಲು ಮೃದುವಾದ ಮಾತಿನಿಂದ ಶಿಕ್ಷಿಸಬೇಕು. ಅನಂತರ ಅವನ ಕೆಲಸವನ್ನು ಖಂಡಿಸಿ ನಿಂದಾರೂಪವಾದ ಶಿಕ್ಷೆ ಕೊಡಬೇಕು. ಅದಕ್ಕೂ ವಶನಾಗದಿದ್ದರೆ ಧನದಂಡವನ್ನು ವಿಧಿಸಬೇಕು. ಅದರಿಂದಲೂ ಮಾರ್ಗಕ್ಕೆ ಒರದಿದ್ದರೆ ವಧದಂಡ ವಿಧಿಸಬೇಕು. "वाग्दण्डं प्रथमं कुर्यात् धिगदण्डं तदनन्तरम्। तृतीयं धनदण्डं तु वधदण्डमतः परम्" ಮನುಂ 6-129।

**ಧಿಗವಣ ಧಿಗವಣ (ಪುಂ)** ವಿಪ್ರನಿಗೆ ಆಯೋಗವಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಜರಕೆ ಜಾತಿಯವನು. "ब्राह्मणादुग्रकन्यायामावृतो नाम जायते। आभीरोऽम्बष्ठकन्यायामायोगव्यां तु धिगवणः" ಮನುಂ 10-15।

**ಧಿತ ಧಿತ (ವಿಂ)** ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಡು ಧಾವ್ (ಧಾರಣೇ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। ಧಾಂದಸ ಪ್ರಯೋಗ.

**ಧಿತಿ ಧಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಧಾರಣೆ, ಧರಿಸುವುದು. ಧಿ (ಧಾರಣ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)।

**ಧಿಪ್ಸು ಧಿಪ್ಸು (ವಿಂ)** ಮೋಸಪಡಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ವಂಚಿಸಲು ಇಷ್ಟಪಡುವ. ದಮ್ಭಿತುಮಿಚ್ಛುಃ:-ದಮ್ಭ (ದಮ್ಭನೆ) + ಸನ್ "ಃ" (3-2-166)। "भूयस्तं धिप्सुमाहूय राजपुत्रं दिदम्भिषुः" ಭट्टಿಂ 9-33।



ವಿವಿಧಾಂಶಿ (ಪುಂ) ಗುರು, ಬೃಹಸ್ಪತಿ. ವಿವಿಧಾಂಶಿ ಪತಿ: 1. ಪಠ್ಯಾ ಅಲಕ್ ಬಾಹುಂ ।

ವಿವಿಧಾಂಶಿ (ಪುಂ) ಗುರು, ಬೃಹಸ್ಪತಿ, ದೇವತೆಗಳ ಅಪಾರ್ಥ. ಪ್ರಶಸ್ತಾ ವಿವಿಧಾಂಶಿ "ಅಕ್" (೪-೨-೧೨೭) । ವೃಣೋತಿ—ವಿಧಿ (ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯ) "ಕ್ಯು:" (೩೦ ೨-೮೩) । ವಿಧಿ ಚ । "ಗಿಣ್ವತಿವಿಧಿಗುರು:" ಅಮಂ ।

ವಿವಿಧಾಂಶಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬುದ್ಧಿ, ಪ್ರಜ್ಞೆ. ವೃಣು-ವನ್ತನಯಾ — ವಿಧಿ (ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯ) "ಕ್ಯು:" ಧಾತೋ: ವಿಧಿ ಆದೇಶಾ (೩೦ ೨-೮೩) । "ಬುದ್ಧಿಮಂತಿವಿವಿಧಾಂಶಿ" ಅಮಂ । "ವಿಶುದ್ಧವೋತ್ಪತ್ತಾ ಪತತಿ ನ ಚ ತತ್ಪಾಪವಿವಿಧಾಂಶಿ" ಮಂ ವೀಂ ೬-೮ । 2. ಸ್ತುತಿ, ಹೊಗಳಿಕೆ. 3. ವಾಕ್ಯ, ಮಾತು. 4. ಪೃಥಿವಿ, ಭೂಮಿ.

ವಿವಿಧಾಂಶಿ (ಪುಂ) ಗುರು, ಬೃಹಸ್ಪತಿ. ವಿವಿಧಾಂಶಿ ಅಧಿಪ: ।

ವಿವಿಧಾಂಶಿ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 2. ಬಲ, ಶಕ್ತಿ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. ವಿಧಿ (ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯ) "ಯ:" (೩೦ ೪-೧೦೭) । ಋಕಾರಸ್ಯ ಇಕಾರಾಚ್ಚ । 3. ಶುಕ್ರ, ಜಾಯಮ, ಅಸುರರ ಗುರು. (ನಂ) 4. ಸ್ಥಾನ, ಜಾಗ. "ಅಮಿ ವೇದಿ ಪರಿತೋ ಕಲ್ಪತವಿವಿಧಾಂಶಿ: ಸಮಿದ್ವಂತ: ಪ್ರಾಂತಸಂಸ್ತೋರ್ಧರ್ಮ:" | ಶಾಕುಂ ೪-೭ । 5. ಗೃಹ, ಮನೆ. 6. ನಕ್ಷತ್ರ. "ವಿವಿಧಾಂಶಿ ಸ್ಥಾನಾಗ್ನಿಸಂಸು । ಶಕ್ತಾವಕ್ಷೇಷಿ" ಮೇದಿಂ । "ವಿವಿಧಾಂಶಿ ಸ್ಥಾನೋದವೇಷಮಸು । ಬಲೇ ವಿವಿಧಾಂಶಿಗುರು ಶುಕ್ರೇ ಚ" ಹೇಮಂ ।

ವಿವಿಧಾಂಶಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಕಾಶದಲ್ಲಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಬಾಲಚುಕ್ಕೆ, ಉಲ್ಕಾ ಭೇದ. ಸ್ವರ್ಗ ಸೌಖ್ಯವನ್ನು ಅನುಭವಿಸಿ "ಕ್ಷೀಣೇ ಪುಣ್ಯೇ ಮರ್ತ್ಯಲೋಕಂ ವಿಶಂತಿ" ಎಂಬ ವಚನದಂತೆ ಭೂಲೋಕಕ್ಕೆ ಬೀಳುವವರು ಉಲ್ಕಾರೂಪದಲ್ಲಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವರು. "ದಿವಿ ಭುಕ್ತಶುಭಫಲಾನಾಂ ಪತತಾಂ ರೂಪಾಣಿ ಯಾನಿ ತಾನ್ಯುಲ್ಕಾ: । ವಿವಿಧಾಂಶಿಲಾಶನಿವಿದ್ವತ್ತಾರಾ ಇತಿ ಪಚ್ಚಾ ಮಿಶ್ರಾ:" ಬೃಹತ್ಸಂ ೩೩-೧ ।

ವಿವಿಧಾಂಶಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬುದ್ಧಿ, ಪ್ರಜ್ಞೆ, ಜ್ಞಾನ. ವ್ಯಾಯತ್ಯನಯಾ—ವ್ಯ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ಕ್ವಿಪ್" ಸಂಪ್ರಸಾರಣಂ ಚ (ವಾಂ ೩-೨-೧೭೮) । "ಅಪನೇಯಮುದೇತುಮಿಚ್ಛತಾ ತಿಮಿರಂ ರೋಷಮಯಂ ವಿವಿಧಾಂಶಿ ಪುರ:" ಕಿರಾಂ ೨-೩೬ । 2. ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿ, ಉದ್ದೇಶ, ಅಭಿಪ್ರಾಯ. "ಇಮಾಮಹಂ ವೇದ ನ ತಾವಕೀಂ ವಿವಿಧಾಂಶಿ ವಿಚಿತ್ರ-ರೂಪಾ: ಸಲಲ ಚಿತ್ತವೃತ್ತಯ:" ಕಿರಾಂ ೧-೩೭ । "ಕಾಮ: ಸಂಕಲ್ಪೋ ವಿಚಿಕಿತ್ಸಾ ಶ್ರದ್ಧಾಶ್ರದ್ಧಾ ವೃತ್ತಿರಭೃತಿರ್ಹೀರ್ಷಿ-ರೀತೀತತ್ಸರ್ವಂ ಮನ ಏವ" ಶ್ರುತಿ: ।

ವಿವಿಧಾಂಶಿ (ಪುಂ) ಬುದ್ಧಿಯ ಧರ್ಮ. (1) ಶುಶ್ರುಷಾ, (2) ಶ್ರವಣಮ್, (3) ಗ್ರಹಣಮ್, (4) ಭಾರಣಮ್, (5) ಋಹ:, (6) ಅಪೋಹ:, (7) ಅರ್ಥವಿಜ್ಞಾನಮ್ ಮುಂತಾದ (8) ತತ್ವಜ್ಞಾನಮ್ ಈ ಎಲ್ಲಾ ವಿವಿಧಾಂಶಿಗಳು.

ವಿವಿಧಾಂಶಿ (ವಿಂ) 1. ಬುದ್ಧಿಯನ್ನು ಕೊಡುವ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ವಿವಿಧಾಂಶಿ ದದಾತಿ—ಙ್ ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ವಾ—ವಾ. 2. ಬುದ್ಧಿ. 3. ಕನ್ಯೆ, ಹುಡುಗಿ, ಪುತ್ರಿ. "ವಿವಿಧಾಂಶಿ ಪುತ್ರೀಮನೀಷಯ:" ಮೇದಿಂ ।

ವಿವಿಧಾಂಶಿ (ಪುಂ) 1. ಬೃಹಸ್ಪತಿ, ದೇವತೆಗಳ ಗುರು. ವಿವಿಧಾಂಶಿ: ಪ್ರಶಸ್ತಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪) । 2. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. (ವಿಂ) 3. ಬುದ್ಧಿವಂತ. "ವಿವಿಧಾಂಶಿ ಸುರೀ: ಕೃತೀ ಕೃಷಿ:" ಅಮಂ ।

ವಿವಿಧಾಂಶಿ (ಪುಂ) 1. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ, ಜ್ಞಾನಿ. ವಿವಿಧಾಂಶಿ ರಾತಿ — ರಾ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩) । "ಸೋಪಧಾನಾಂ ವಿವಿಧಾಂಶಿ: ಸ್ಥೇಯಸೀಂ ಲಬ್ಧವಂತಿ ಯೇ" ಮಾವಂ ೨-೭೭ । 2. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. 3. ಮಂದರ ಪರ್ವತ. (ವಿಂ) 4. ಧೈರ್ಯಶಾಲಿ. "ವಿವಿಧಾಂಶಿ ನಾ ಬುಧೇ । ಅಮ್ಬುಧೌ ಚ ತ್ರಿಪು ತ್ವೇಷ ಮಂದರೇ ಧೈರ್ಯವತ್ಯಪಿ" ನಾನಾರ್ಥರಂ । 5. ಬುದ್ಧಿವಂತ, ಜಾಣ. "ಯಯಾಕ್ರಮಂ ಪುಂಸವನಾದಿಕಾ: ಕ್ರಿಯಾ ವೃತ್ತೇಶ್ಚ ವಿವಿಧಾಂಶಿ: ಸದೃಶೀರ್ವ್ಯಧತ" ರಘುಂ ೩-೧೦ । 6. ಗಂಭೀರವಾದ. "ಅವೋಚದೇನಂ ಗಗನಸ್ಪೃಶಾ ರಘು: ಸ್ವರೇಣ ವಿವಿಧಾಂಶಿ ನಿವರ್ತಯನ್ನಿವ" ರಘುಂ ೩-೪೩ । 7. ಸ್ಥಿರವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ದೃಢಸಂಕಲ್ಪವುಳ್ಳ. "ವಿಕಾರಹೇತೋ ಸತಿ ವಿಕ್ರಿಯಂತೇ ಯೇಷಾಂ ನ ಚೇತಾಸಿ ತ ಏವ ವಿವಿಧಾಂಶಿ:" ಕುಮಾಂ ೧-೪೯ । 8. ಮನೋಹರವಾದ. "ವಿವಿಧಾಂಶಿ ಸಮೀರೇ ಯಮುನಾತೀರೇ ವಸತಿ ವನೇ ವನಮಾಲೀ" ಗೀತಗೋಂ । 9. ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ನಡೆಯುವ, ತನ್ನ ಇಷ್ಟದಂತೆ ನಡೆದಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ. 10. ಮಂದಗಾಮಿಯಾದ, ಮೆಲ್ಲಗೆ ನಡೆಯುವ. "ಜಹ್ಣಾಲೋತಿಜವೇ ವಿವಿಧಾಂಶಿ ಮನ್ದಗಾಮಿನಿ" ವೇಜಂ । (ನಂ) 11. ಕುಂಟುಮಕ್ಕಳೆಸರಿ. ವಿವಿಧಾಂಶಿ — ಙ್ ದಾನ್ (ಭಾರಣಪೋಷಣಯೋ: ) "ಕ್ಲ" (೩೦ ೨-೨೪) । ಇತ್ವಮ್ (೩-೪-೬೬) । "ವಿವಿಧಾಂಶಿ ಧೈರ್ಯಾನ್ವಿತೇ ಸ್ವರೇ ಬುಧೇ ಕಲಿಬಂತು ಕುಡ್ಕುಮೇ" ಮೇದಿಂ । (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 12. ಗಂಭೀರವಾಗಿ, "ಯುಧಾಯ ಭಾವತಾಂ ವಿವಿಧಾಂಶಿ ವೀರಾಣಾಮಿತ-ರೇತರಮ್" ಕುಮಾಂ ೧೬-೩ । 13. ಧೈರ್ಯದಿಂದ. 14. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ, ಅಚಲವಾಗಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ವಾ—ವಾ. 15. ಮಹಾಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತೀಲತೆ.

ವಿವಿಧಾಂಶಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಧೈರ್ಯ. 2. ಸ್ಥೈರ್ಯ. 3. ಸ್ಥಿರಚಿತ್ತದಿಂದಿರುವಿಕೆ. ವಿವಿಧಾಂಶಿ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) ।



“ಪರೋಜ್ವಾನಾತಿ ಯದಜ್ಜತಾಜಡಸ್ತದ್ಭುತಾನಾಂ ನ ವಹಂತಿ  
ಧೀರತಾಮ್” ಕಿರಾಂ ೧೪-೨೩. 4. ಗಾಂಭೀರ್ಯ,  
ಮಹತ್ವ, ಹಿರಿಮೆ. “ಪ್ರತ್ಯಾದೇಶಾನ್ನ ಖಲು ಭವತೋ ಧೀರತಾಂ  
ತರ್ಕಯಾಮಿ” ಮೇಘಂ ೨-೫೧. 5. ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿತನ, ಜಾಣ್ಮೆ.  
ಧೀರಲಲಿತ ಧೀರಲಲಿತ (ಪುಂ) ನಾಯಕನ ಒಂದು ಭೇದ.  
ರಾಜ್ಯದ ಯೋಗಕ್ಷೇಮವನ್ನು ಮಂತ್ರಿಗಳಿಗೆ ವಹಿಸಿ ಯಾವ  
ಚಿಂತೆಯೂ ಇಲ್ಲದೆ ಕಲೆಗಳಲ್ಲಿ ಅಭಿರುಚಿಯುಳ್ಳವನಾಗಿಯೂ  
ಸುಖಶಾಲಸನಾಗಿಯೂ ಮೃದುಸ್ವಭಾವದವನಾಗಿಯೂ  
ಇರುವವನು ಧೀರಲಲಿತ ನಾಯಕ. “ನಿಶ್ಚಿಂತೋ ಮೃದುರನಿಶ್ಚ  
ಕಲಾಪರೋ ಧೀರಲಲಿತಃ ಸ್ಯಾತ್” ಸಾಂ ದಂ ೩-೩೪.

ಧೀರಶಾಂತ ಧೀರಶಾಂತ (ಪುಂ) ನಾಯಕನ ಒಂದು ಭೇದ.  
ನಾಯಕನ ಸಾಮಾನ್ಯಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ ಧೀರೋದಾತ್ತಾದಿ  
ನಾಯಕರಿಗಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನಗುಣವುಳ್ಳವನಾಗಿರುವವನು ಧೀರ  
ಶಾಂತನಾಯಕನಾಗುವನು. “ಸಾಮಾನ್ಯಗುಣೈರ್ಭೇದಾನ್ಧಿಜಾದಿಕೋ  
ಧೀರಶಾಂತಃ ಸ್ಯಾತ್” ಸಾಂ ದಂ ೩-೩೪.

ಧೀರಾ ಧೀರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಧ್ಯಾ ಮತ್ತು ಪ್ರಗಲ್ಭಾ ನಾಯಿಕೆ  
ಯರ ಭೇದ. “ತೇ ಧೀರಾ ಚಾಪ್ಯಧೀರಾ ಚ ಧೀರಾಧೀರೇತಿ  
ಷಡ್ವಿಧೇ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೬೧.

ಮಧ್ಯಾ ಧೀರಾ:—ಕೋಪದಿಂದಲೂ ಪರಿಹಾಸದಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ವಕ್ರೋಕ್ತಿ (ಶ್ಲೇಷ) ಯಿಂದಲೂ ನಾಯಕನ  
ಮನಸ್ಸಿಗೆ ನೋವುಂಟುಮಾಡುವ ನಾಯಿಕೆಯು ಮಧ್ಯ  
ಧೀರ. “ಪ್ರಿಯಂ ಸೋತ್ರಾಸವಕ್ರೋಕ್ತಿಯಾ ಮಧ್ಯಾ ಧೀರಾ ವದೇದ್ರುಷಾ”  
ಸಾಂ ದಂ ೩-೬೧. “ತದವಿತಥಮವಾದೀರ್ಯಮಮ ತ್ವಂ ಪ್ರಿಯೇತಿ  
ಪ್ರಿಯಜನಪರಿಭುಕ್ತಂ ಯದ್ದುಕ್ತುಲಂ ದಧಾನಃ. ಮದಧಿವಸತಿಮಾಗಾಃ  
ಕಾಮಿನಾಂ ಮಂಡನಶ್ರೋವಣಜತಿ ಹಿ ಸಫಲತ್ವಂ ವಲ್ಲಭಾಲೋಕನೇನ”.

ಪ್ರಗಲ್ಭಾ ಧೀರಾ:—ಒಳಗೇ ಕೋಪವನ್ನು ಅಡಗಿಸಿ  
ಕೊಂಡು ಹೊರಗೆ ಪ್ರೀತಿಯನ್ನು ತೋರಿಸುತ್ತಾ ಸುರತ  
ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಉದಾಸೀನಳಾಗಿರುವ ನಾಯಿಕೆಯು ಪ್ರಗಲ್ಭ  
ಧೀರ. “ಪ್ರಗಲ್ಭಾ ಯದಿ ಧೀರಾ ಸ್ಯಾತ್ ಛನ್ನಕೋಪಾಕೃತಿಃ ಸ್ತದಾ  
ಉದಾಸ್ತೇ ಸುರತೇ ಯತ್ರ ದರ್ಶಯಂತ್ಯಾದರಾನ್ ಬಹಿಃ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೬೨.  
“ಏಕತ್ರಾಸನಸಂಸ್ಥಿತಃ ಪರಿಹೃತಾ ಪ್ರತ್ಯುದ್ಗಮಾದ್ಭರತಃ ತಾಮ್ಬೂಲಾ-  
ನಯನಂಚಲೇನ ರಭಸಾಶ್ಲೇಷೋಽಪಿ ಸಂವಿಧಿತಃ. ಆಲಾಪೋಽಪಿ  
ನ ಮಿಶ್ರಿತಃ ಪರಿಜನಂ ವ್ಯಾಪಾರಯಂತ್ಯಾಂತಿಕೇ ಕಾಂತಂ ಪ್ರತ್ಯುಪ-  
ಕಾರತಶ್ಚತುರಯಾ ಕೋಪಃ ಕೃತಾರ್ಥೀಕೃತಃ”.

ಪ್ರಗಲ್ಭಾ ಧೀರಾಧೀರಾ:—ಪ್ರಿಯವಾಗಿ ತೋರಿದರೂ  
ಅಪ್ರಿಯವಾದ ಮಾತುಗಳಿಂದ ನಾಯಕನ ಮನಸ್ಸಿಗೆ  
ನೋವುಂಟುಮಾಡುವ ನಾಯಿಕೆಯು ಪ್ರಗಲ್ಭಧೀರಾ  
ಧೀರ. “ಧೀರಾಧೀರಾ ತು ಸೋಲ್ಘುಣಭಾಷಿತಃ ಕ್ಷೇದಯತುಮು”  
ಸಾಂ ದಂ ೩-೬೩. “ಅನಲಂಕೃತೋಽಪಿ ಸುಂದರ ಹರಸಿ ಮನೋ

ಮೇ ಯತಃ ಪ್ರಸಭಮ್. ಕಿಪುನರಲಂಕೃತಸ್ತ್ವಂ ಸಂಪ್ರತಿ ನಕ್ಷರಕ್ಷತೈ-  
ಸ್ತಸ್ಯಾಃ”.

ಧೀರಾಧೀರಾ ಧೀರಾಧೀರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಧ್ಯಾ ಮತ್ತು  
ಪ್ರಗಲ್ಭಾ ನಾಯಿಕೆಯರ ಭೇದ. “ತೇ ಧೀರಾ ಚಾಪ್ಯಧೀರಾ  
ಚ ಧೀರಾಧೀರೇತಿ ಷಡ್ವಿಧೇ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೬೧. ಮಧ್ಯಾ  
ಧೀರಾಧೀರಾ: ನಾಯಕನ ಔದಾಸೀನ್ಯದಿಂದ ಆಳುತ್ತ ಅವನ  
ಮನಸ್ಸಿಗೆ ನೋವುಂಟುಮಾಡುವ ನಾಯಿಕೆಯು ಮಧ್ಯ  
ಧೀರಾಧೀರ. “ಧೀರಾಧೀರಾ ತು ಕ್ಷದಿತಃ” ಸಾಂ ದಂ  
೩-೬೨. “ಬಾಲೇ ನಾಥ ವಿಮುಚ್ಚ ಮಾನಿನಿ ಕ್ಷಂ ರೋಷಾನ್ಮಯಾ  
ಕಿ ಕೃತಂ ಕ್ಷೇದೋಽಸ್ಮಾಸು ನ ಮೇಘರಾಘ್ಯತಿ ಭವಾನ್ ಸರ್ವೇಽಪರಾಧಾ  
ಮಯಿ. ತತ್ ಕಿ ರೋದಿಷಿ ಗದಗದೇನ ವಚಸಾ ಕಸ್ಯಾಪ್ರತೋ  
ಕೃತೇ ನನ್ವೇತನ್ಮಮ ಕಾ ತವಾಸ್ಮಿ ದಯಿತಾ ನಾಸ್ಮೀತ್ಯತೋ  
ಕೃತೇ”.

ಧೀರೋದಾತ್ತ ಧೀರೋದಾತ್ತ (ಪುಂ) ನಾಯಕನ ಒಂದು ಭೇದ.  
ಅತ್ಯಪ್ರಶಂಸೆಯಿಲ್ಲದೆ ಯಾವಾಗಲೂ ಕ್ಷಮಾಗುಣದಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ಸಂತೋಷ ದುಃಖಗಳಿಂದ ಉಬ್ಬುತ್ತಿಗುಣಗಳಿಂದ  
ವಿನಯದಿಂದ ಮುಚ್ಚಿದ ಗರ್ವವುಳ್ಳ ಮತ್ತು ಕೈಗೊಂಡ  
ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಪೂರ್ತಿಯಾಗಿ ನೆರವೇರಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ  
ನಾಯಕನು ಧೀರೋದಾತ್ತನು. “ಅವಿಕಲ್ಪನಃ ಕ್ಷಮಾ-  
ವಾನತಿಗಮ್ಭೀರೋ ಮಹಾಸತ್ವಃ. ಸ್ಥೇಯಾನ್ನಿಗೂಢಮಾನೋ ಧೀರೋದಾತ್ತೋ  
ದೃಢವ್ರತಃ ಕಥಿತಃ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೩೨.

ಧೀರೋದ್ಭುತ ಧೀರೋದ್ಭುತ (ಪುಂ) ನಾಯಕನ ಒಂದು ಭೇದ  
ಚಪಲಚಿತ್ತನೂ ಅಹಂಕಾರ ಮತ್ತು ಶೌರ್ಯವೀರ್ಯ  
ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದವನೂ ಭಯಂಕರವಾದ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ  
ಅಭಿರುಚಿಯುಳ್ಳವನೂ ಅತ್ಯಪ್ರಶಂಸೆಯಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದ  
ವನೂ ಧೀರೋದ್ಭುತ ನಾಯಕನು. “ಮಾಯಾಪರಃ ಪ್ರಚಂಡ-  
ಶ್ಚಪಲೋಽಹಂಕಾರಭೂಷಿಣಃ. ಆತ್ಮಶೂನ್ಯಾನಿರತೋ ಧೀರೋದ್ಭುತೋ  
ದೃಢಃ ಕಥಿತಃ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೩೩.

ಧೀವರ ಧೀವರ (ಪುಂ) ಬೆಸ್ತರವನು, ವಿನಾಸಹೀನಿಯವನು.  
ದಧಾತಿ ಮತ್ಸ್ಯಾನ್—ಡು ಧಾಜ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಧೀವರ”  
(ಉಂ ೩-೧). ಇತ್ವಂ ನಿಪಾಂ. “ಯತೋಽಪಿ ನಿಮ್ನಂ ಭವತಿ  
ನಯಂತಿ ಹಿ ತತೋ ಜಲಮ್. ಯತಃಶಿಠಂ ತತಃಶ್ರಾಪಿ ನಯಂತಿ  
ಧೀವರಾ ಜಲಮ್” ಭಾಂ ವನಂ ೨೦-೧೭. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ಙೀಷ್” (೪-೧-೪೮). -ವರೀ-ವರೀ.

ಧೀಶಕ್ತಿ ಧೀಶಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬುದ್ಧಿ ಶಕ್ತಿ, ಬುದ್ಧಿಯ ಗುಣ.  
ಧಿಯಃ ಶಕ್ತಿಃ.

ಧೀಸಚಿವ ಧೀಸಚಿವ (ಪುಂ) ಮಂತ್ರಾಲೋಚನೆಗೆ ಸಮರ್ಥ  
ನಾದ ಮಂತ್ರಿ, ಹೆಚ್ಚು ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿಯಾದ ಮಂತ್ರಿ.  
ಧೀಪ್ರಧಾನಃ ಸಚಿವಃ.



ಛುತ ಛುತ (ವಿಂ) 1. ಅಲ್ಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ನಡುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ತೃಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಬಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಛುನ್ (ಕಂಪನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಅಥಾ ಛುತಮ್ | ತ್ಯಕ್ತೇ ವಿಛುತೇ" ಮೇದಿಂ |

ಛುತವತ್ ಛುತವತ್ (ವಿಂ) ತೃಜಿಸುವ, ಬಿಟ್ಟಿರುವ. ಛುನ್ (ಕಂಪನೆ) "ಕ್ತವತು:" (3-2-102) |

ಛುನಿ ಛುನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನದಿ, ಹೊಳೆ. ಛುನೋತಿ ವೇತಸಾದೀನ್—ಛುನ್ (ಕಂಪನೆ) "ವಿವಪ್" (3-2-104) | ನುಕ್ ಪೃಷೋಂ | "ಛೀಪ್" (4-1-5) |

ಛುನಿನಾಥ ಛುನೀನಾಥ (ಪುಂ) ನದಿಗಳ ಒಡೆಯನಾದ ಸಮುದ್ರ. ಛುನಿನಾಂ ನಾಥಃ |

ಛುನ್ಮುಮಾರ ಛುಂಛುಮಾರ (ಪುಂ) ಕುವಲಾಶ್ವನಂಬ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. ಇಕ್ಷ್ವಾಕುವಂಶದ ಬೃಹದಶ್ವರಾಜನ ಮಗ. ಈ ದೊರೆಗೆ ಕುವಲಾಶ್ವನಂದೂ ಹೆಸರು. ಉದಂಕ ಮುನಿಯ ತಪೋಭಂಗಕ್ಕೆ ಕಾರಣನಾದ ಛುಂಛುಮಂಬ ರಾಕ್ಷಸನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದುದರಿಂದ ಇವನಿಗೆ "ಛುನ್ಮುಮಾರ" ಎಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು. "ಉತ್ಸಾದನಾಯ ಲೋಕಾನಾಂ ಛುನ್ಮುನಾಮ ಮಹಾಸುರಃ | ತಪಸ್ಯತಿ ತಪೋ ಛೋರಂ ಶೃಣು ಯಸ್ತಂ ಹನಿಷ್ಯತಿ | ರಾಜಾ ಹಿ ವೀರ್ಯವಾಂತಾತ ಇಕ್ಷ್ವಾಕುರಪರಾಜಿತಃ | ಬೃಹದಶ್ವ ಇತಿ ಖ್ಯಾತೋ ಭವಿಷ್ಯತಿ ಮಹೀಪತಿಃ | ತಸ್ಯ ಪುತ್ರಃ ಶುಚಿದಾಂತಃ ಕುವಲಾಶ್ವ ಇತಿ ಶ್ರುತಃ | ಸ ಯೋಗಬಲಮಾಸ್ಥಾಯ ಮಾಮಕಂ ಪಾಥಿವೋತ್ತಮಃ | ಶಾಸನಾತ್ತವ ವಿಪ್ರಃ ಛುನ್ಮುಮಾರೋ ಭವಿಷ್ಯತಿ | ಉದಕ್ಷುಮೇವಮುಕ್ತವಾ ತು ವಿಷ್ಣುರಂತರಧೀಯತ" ಭಾಂ ವನಂ 204-31-34 |

ಛುನ್ವತ್ ಛುನ್ವತ್ (ವಿಂ) ಕೊಡವುತ್ತಿರುವ. ಛುನ್ (ಕಂಪನೆ) "ಶತ್" (3-2-124) | "ತಟಾಭಿಘಾತಾದಿವ ಲಗನಪಕ್ಷೇ ಛುನ್ವನ್ ಮುಹುಃ ಪ್ರೋತಘನೇ ವಿಘಾಣೇ" ಕುಮಾಂ 9-49 | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (4-1-6) | ಛುನ್ವತೀ ಛುನ್ವತೀ |

ಛುನ್ವಾನ ಛುನ್ವಾನ (ವಿಂ) ಒದರುತ್ತಿರುವ, ಕೊಡವುತ್ತಿರುವ. ಛುನ್ (ಕಂಪನೆ) "ಶಾನವ್" (3-2-124) | "ಸ್ಫುರತಿಪಶ್ಚಿಮೋರ್ವಿಕಂ ಛುನ್ವಾನಃ ಸ ಬೃಹದ್ವನುಃ" ಕಿರಾಂ 14-39 | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (4-1-4) | ಛುನ್ವಾನಾ ಛುನ್ವಾನಾ. "ಛುನ್ವಾನಾ ಕರಯುಗಮೀಕ್ಷಿತುಂ ವಿಲಾಸಾನ್" ಮಾಘಂ 6-19 |

ಛುರ್ ಛುರ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಾಡಿ ರಥ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಮುಂಭಾಗ, ಬಂಡಿಯ ಮೂತಿ. ಛುರ್ವತಿ—ಛುರ್ವಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ವಿವಪ್" (3-2-104) | ಛುಃ ಛುರೋ ಛುರಃ | 2. ಭಾರ, ಹೊರೆ. "ಆಸಕ್ತಾ ಛುರ್ಯಿ ಕ್ಷಾ ಜನನಿ

ದೂರಗಾ ಚ ಮೇ | ತಿರಸ್ಕಂಠೇತಿ ಸ್ವಾತನ್ತ್ರ್ಯಂ ಜ್ಯಾಯಾಂಶ್ಚಾಚಾರವಾನ್ ನೃಪಃ" ಕಿರಾಂ 11-99 | "ಉತ್ತೇನ ಸ್ಥಿತಿಮತಾ ಛುರಮುಹುತಾ ಭುವಃ" ಕುಮಾಂ 6-30 | 3. ಮುಂಭಾಗ, ಮುಂದಾಗಡೆ. "ತಸ್ಯಾಃ ಛುರನ್ಯಾಸಪವಿತ್ರಪಾಂಸುಮಪಾಂಸುಲಾನಾಂ ಛುರಿ ಕೀರ್ತನೀಯಾ" ರಘುಂ 2-2 | 4. ನೋಗ. "ಅಥಾನುಕೂಲಶ್ರವಣಪ್ರತಿತಾಮತ್ರಸ್ತುಭಿರ್ಯುಕ್ತಧುರಂ ತುರಜ್ಞಃ" ರಘುಂ 14-49 | 5. ಹೊಣೆ ಗಾರಿಕೆ, ಉತ್ತರವಾದಿತ್ವ. "ತೇನ ಛುರ್ಜಗತೋ ಗುರ್ವಿ ಸಚಿವೇಷು ನಿಚಿಕ್ಷಿಪೇ" ರಘುಂ 1-34 | 6. ದ್ರವ್ಯ, ಧನ, ಐಶ್ವರ್ಯ, ಸಂಪತ್ತು. 7. ಕಂಪನ, ನಡುಕ. (ಪುಂ) 8. ಧೂಪ. "ಛುರ್ವಿ ಛುಪೇ ಸ್ತ್ರೀ ತು ಕಂಪೇ ವಿಕೃತೇ ಭಾರೆ ಯುಗಾಘ್ರಯೋಃ" ನಾನಾರ್ಥಂ |

ಛುರ್ನ್ವರ ಛುರ್ನ್ವರ (ವಿಂ) 1. ಭಾರವನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವ, ಹೊರೆ ಹೊತ್ತಿರುವ. ಛುರಾಂ ಛಾರಯತಿ—ಛುನ್ (ಛಾರಣೆ) + ಣಿವ್ "ಛವ್" (3-2-46) | "ಛುರ್ನ್ವರಃ ಸ್ವರ್ಗನಿಕೇತನಾನಾಂ ಛುರ್ಯೋತ್ಥಿತೈರ್ಭೂಸರಿತೋ ರಜೋಭಿಃ" ಯಾದಂ 23-24 | 2. ಅಗ್ರಗಣ್ಯ, ಮುಂದಾಳು, ಯಜಮಾನ. 3. ಹೊಣೆ ಗಾರಿಕೆಯನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವ, ಉತ್ತರವಾದಿಯಾಗಿರುವ. "ಹೈರಮ್ಬಮ್ಬುಹುಹುಮ್ಬರಚೋರ್ಯನಿಷ್ಠಂ ವಿಘ್ನಾದ್ರಿಮೇದಶತಧಾರಃ ಛುರ್ನ್ವರಂ ನಃ" ಚಂ ಭಾಂ | 4. ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ, ಉತ್ತಮನಾದ. "ಕುಲಛುರ್ನ್ವರೋ ಭವ" ವಿಕ್ರಂ | "ಛುರ್ನ್ವರಃ ಪುಣ್ಯಕೃದೇಶ ತಾಪಸಃ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ 36-9 |

ಛುರಾ ಛುರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭಾರ, ಹೊರೆ. "ಆಪಂ ಚೈವ ಹಲ್ಂತಾನಾಂ ಯಥಾ ವಾಚಾ ನಿಶಾ ದಿಶಾ" ಭಾಗುರಿಃ | "ತಾತೇ ಚಾಪದ್ವಿತೀಯೇ ವಹತಿ ರಣಛುರಾಂ ಕೋ ಭಯಸ್ಯಾವಕಾಶಃ" ವೇಣೀಂ 3-9 |

ಛುರೋ ಛುರೋ (ವಿಂ) 1. ಭಾರವನ್ನು ಹೊರುವ. ಛುರಂ ವಹತಿ—"ಛಃ" ಯೋಗವಿಭಾಗಾತ್ (4-4-96) | 2. ಹೊಣೆ ಗಾರಿಕೆಯನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವ. 3. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ. 4. ಮುಂದಾಳು, ಅಗ್ರಗಣ್ಯ, ಯಜಮಾನ.

ಛುರ್ಯ ಛುರ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು, ಜಗತ್ತಿನ ಭಾರವನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವ ಪರಮಾತ್ಮ. ಛುರಂ ಭುವನಮಾರಂ ವಹತಿ—"ಯತ್" (4-4-99) | "ಭುವನಂ ಛುತವಾನ್ ಛುರ್ಯಃ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ್ತಃ | "ಸ್ಕಂದಃ ಸ್ಕಂದಧರೋ ಛುರ್ಯಃ" ವಿಂ ಸಂ | 2. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. 3. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. ಛುರಂ ವಹತಿ | "ನಾವಿನೀತೈರ್ವ್ರಜೇದ್ಧುರ್ಯೇನ ಚ ಕ್ಷುಧ್ರಾಧಿಪಿಡಿತೈಃ" ಮನುಂ 4-69 | "ಯೇನೇದಂ ಧ್ರಿವತೇ ವಿಶ್ವಂ ಛುರ್ಯಾನಿಮಿವಾಧ್ವನಿ" ಕುಮಾಂ 6-96 | (ವಿಂ) 4. ಭಾರವನ್ನು ಹೊರುವ ಎತ್ತು, ಕುದುರೆ ಮೊದಲಾದುವು. ಛುರಂ ವಹತಿ—"ಯತ್" (4-4-99) | "ಛುರ್ನ್ವರಃ ಸ್ವರ್ಗನಿಕೇತನಾನಾಂ ಛುರ್ಯೋತ್ಥಿತೈರ್ಭೂಸರಿತೋ ರಜೋಭಿಃ"



ಖಾದಂ ೨೩-೨೪। 5. ಕಾರ್ಯಭಾರವನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವ, ಕಾರ್ಯನಿರ್ವಹಣೆಯ ಹೊಣೆಯನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವ. "ಪ್ರಗಲ್ಬಮಾತ್ಮಾ ಧುರೀ ಧುರೈ ವಾಗ್ಮಿನಾ ವನೇಚರೇಣಾಪಿ ಸತಾಧಿರೋಪಿತಃ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೬। 6. ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ, ಉತ್ತಮನಾದ. 7. ಅಗ್ರಗಣ್ಯ, ಮುಂದಾಳು, ಯಜಮಾನ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಧುರೈ ಧುರ್ಯಾ. "ಅಮಂಸತ ಸೌಭಾಗ್ಯವತೀಷು ಧುರೈಮಾತ್ಮಾನಮುತ್ಕೃತವಿಲಕ್ಷಭಾವಾ" ಕುಮಾಂ ೯-೩೦।

**ಧುರೈ ಧುರ್ವೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಡೆಯ ಮುಂಭಾಗ, ಗಾಡಿಯ ಮೂತಿ. "ಧುಃ ಸ್ತ್ರೀ ಧುರೈ ಯಾನಮುಕ್ತಮ್" ವೈಜಂ।

**ಧುವಕ ಧುವಕ** (ವಿಂ) ಒದರುವ, ಕೊಡುವುವ. ಧುಕ್ (ಕಂಪನೆ) "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ಧುವನ ಧುವನ** (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಧುಕ್ (ಕಂಪನೆ) "ಕಯುನ್" (೩ಂ ೨-೮೧)। (ನಂ) 2. ಅಡಿಸುವುದು, ಕೊಡುವುದು. ಧುಕ್ (ಕಂಪನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 3. ಅಡಿಸುವ, ನಡುಗಿಸುವ. "ಅಯಮ್ಚತಃ ಪಶ್ಚ-ಶರಾನುಚರೋ ನವನಿಪವನಿಧುವನಃ ಪವನಃ"।

**ಧುವಿತ್ರ ಧುವಿತ್ರ** (ನಂ) 1. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಉರಿಯಿಸಲು ಕೃಷ್ಣಾಜನದಿಂದ ತಯಾರಿಸಿದ ಬೀಸಣಿಗೆ. 2. ಬೀಸಣಿಗೆ.

**ಧುಸ್ತರ ಧುಸ್ತರ** (ಪುಂ) 1. ದತ್ತೂರಿ ಗಿಡ. 2. ಉಮ್ಮತ್ತಿ ಗಿಡ.

**ಧುಕ್ ಧೂಕ** (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಧುನೋತಿ ವೃಕ್ಷಾದಿನ್—ಧುಕ್ (ಕಂಪನೆ) "ಕನ್" (೩ಂ ೩-೪೭)। ದೀರ್ಘಶ್ಚ। 2. ಕಾಲ, ಸಮಯ. 3. ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ.

**ಧೂತ ಧೂತ** (ವಿಂ) 1. ಅಲ್ಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕದಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಧುಕ್ (ಕಂಪನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಅಥೋಚ್ಚಕೈರಾಸನತಃ ಪರಾರ್ಥಾದಿಘ್ನಂ ಸ ಧೂತಾರಣವತ್ಕಲಾಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೪೭। 2. ನಡುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಧೂತಧೂತಾಸಯಃ ಪ್ರಠಾಃ ಪ್ರಾತಿಘ್ನಂತ ಕ್ಷಮಾಭೂತಾಂ" ಮಾಘಂ ೧೯-೩೦। 3. ತೃಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ತ್ಯವತ್ ಹೀನಂ ವಿಧುತಂ ಸಮುಜ್ಜಿತಂ ಧೂತಮುತ್ಸೃಷ್ಟಮ್" ಅಮಂ। 4. ಹೆದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಭಯಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಧೂತಂ ತು ಕಂಪಿತೇ ಭೃತಿಸತೇ ತ್ರಿಪು" ಮೇದಿಂ।

**ಧೂತವತ್ ಧೂತವತ್** (ವಿಂ) 1. ತೃಜಿಸಿದವನು. 2. ನಡುಗಿಸಿದವನು. 3. ಹೆದರಿಸಿದವನು.

**ಧೂತಪಾಪ ಧೂತಪಾಪ** (ವಿಂ) ಪಾಪದಿಂದ ಮುಕ್ತನಾದ, ಪಾಪದಿಂದ ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಧೂತಂ ತ್ಯಕ್ತಂ ಪಾಪಂ ಯೇನ।

**ಧೂತಪಾಪಾ ಧೂತಪಾಪಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಶಿಯಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ನದಿ. [ವೇದಶಿರಸ್ಸೆಂಬ ಮುನಿಯೊಬ್ಬನು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಶುಚಿಯೆಂಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸನ್ನು ಕಂಡು ಮೋಹಿಸಿದನು. ಅವಳಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಕನ್ಯೆಗೆ "ಧೂತ ಪಾಪಾ" ಎಂಬ ಹೆಸರಿಟ್ಟನು. ಈಕೆಯು ತಪಸ್ಸುಮಾಡಿ ಎಲ್ಲಾ ವಸ್ತುಗಳಿಗಿಂತಲೂ ತಾನೇ ಪವಿತ್ರಳಾಗಿರುವಂತೆ ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ವರವನ್ನು ಪಡೆದಳು. ಒಂದು ಸಲ ಧರ್ಮನು ಇವಳನ್ನು ಮೋಹಿಸಿ ನದಿಯಾಗುವಂತೆ ಇವಳಿಂದ ಶಾಪ ಪಡೆದನು. ಇವಳು ಶಿಲೆಯಾಗುವಂತೆ ಧರ್ಮನೂ ಇವಳನ್ನು ಶಪಿಸಿದನು. ಧೂತಪಾಪೆಯು ಚಂದ್ರಶಿಲೆಯಾಗಿ ಚಂದ್ರೋದಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ದ್ರವವಾಗಿ ನದಿಯ ರೂಪದಿಂದ ಧರ್ಮನನ್ನು ಸೇರಿದಳು.] ಕಾಶೀಖಂ।

**ಧೂತಿ ಧೂತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒದರುವುದು, ಕೊಡುವುದು. ಧುಕ್ (ಕಂಪನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪)। 2. ಅಲುಗಾಡಿಸುವುದು, ಕದಲಿಸುವುದು. 3. ನಡುಕ, ತತ್ತರ, ಕಂಪನ. 4. ಹರಯೋಗದ ಒಂದು ಅಂಗ.

**ಧೂನ ಧೂನ** (ನಂ) 1. ಅಲುಗಾಡಿಸುವುದು. 2. ಕೊಡುವುದು. 3. ನಡುಗಿಸುವುದು. ಧುಕ್ (ಕಂಪನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।

**ಧೂಪ ಧೂಪ** (ಪುಂ) 1. ದಶಾಂಗ ಸಾಂಬ್ರಾಣಿ ಮೊದಲಾದ ವಾಸನೆಯ ಪದಾರ್ಥಗಳಿಂದ ಹೊರಡುವ ಹೊಗೆ. ಧೂಪಯತಿ ರೋಗಾನ್—ಧೂಪ (ಸಂತಾಪೇ) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಜಾಲೋದ್ಗೀರ್ಣರೂಪಚಿತವಪುಃ ಕೇಶಸಂಸ್ಕಾರಧೂಪಃ ಬನ್ಧುಪ್ರೀತ್ಯಾ ಭವನಶಿಖಿಮಿರ್ದಂತನ್ಯೋಪಹಾರಃ" ಮೇಘಂ ೧-೩೨। 2 ಸಾಂಬ್ರಾಣಿ ಮೊದಲಾದ ಸುವಾಸನೆಯ ಪುಡಿ. "ಧೂತಾಶೇಷ-ಮಹಾದೋಷಪೂತಿಗಂಧಃ ಪ್ರಭಾವತಃ। ಪರಮಾನಂದಜನನಾದ್ಧೂಪ ಇತ್ಯಭಿ-ಧೀಯತೇ"। ದಶಾಂಗಧೂಪಃ—"ಮಧು ಮುಸ್ತಂ ಧೂತಂ ಗಂಧೋ ಗುಗುಲ್ವ-ಗುಣ್ವಲಂಜಮ್। ಸರಲಂ ಸಿಂಹಸಿದ್ಧಾರ್ಥಂ ದಶಾಂಗೋ ಧೂಪ ಇವ್ಯತೇ"।

**ಧೂಪನ ಧೂಪನ** (ಪುಂ) 1. ಯಕ್ಷಧೂಪ, ಸಜ್ಜರಸ. ಧೂಪ (ಸಂತಾಪೇ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಧೂಪ, ವಾಸನೆಯು ದ್ರವ್ಯದ ಹೊಗೆ. 3. ಧೂಪ ಹಾಕುವುದು. "ಪರೀಕ್ಷಿತಾಃ ಸ್ತ್ರೀಯಶ್ಚೇನಂ ವ್ಯಜನೋದಕಧೂಪನಃ" ಮನುಂ ೭-೨೧೯। 4. ಧೂಪದ ಪುಡಿ.

**ಧೂಪಾತ್ರ ಧೂಪಾತ್ರ**, -ಭಾಜನ-ಭಾಜನ (ನಂ) ಧೂಪ ಹಾಕುವ ಪಾತ್ರೆ. ಧೂಪಸ್ಯ ಪಾತ್ರಮ್ ಭಾಜನಂ ವಾ।

**ಧೂಪಮುಕ್ತಾ ಧೂಪಮುಕ್ತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧೂಪವನ್ನು ಸಮರ್ಪಿಸಲು ಹಾಕುವ ಒಂದು ಹಸ್ತಮುದ್ರೆ, ಮಧ್ಯಮ ಮತ್ತು ಅನಾರ್ವಿಕ ಬೆರಳುಗಳ ಮಧ್ಯದ ಗಿಣ್ಣುಗಳನ್ನು ಅಂಗೂಷ್ಠದ



ತುದಿಯಿಂದ ಸ್ಪರ್ಶಿಸಿ ಮಾಡುವ ಒಂದು ಮುದ್ರೆ. ಧೂಪ-  
ಪ್ರದರ್ಶನಾರ್ಥ ಮುದ್ರಾ। "ಮಧ್ಯಮಾನಾಮಿಕಾಮ್ಯಾಂ ತು ಮಧ್ಯಪರ್ವಣಿ  
ದೇಶಿಕಃ। ಅಙ್ಗುಲಾಘ್ರೇಣ ದೇವೇಶಿ ಧೃತ್ವಾ ಧೂಪಂ ನಿವೇದಯೇತ್"  
ತನ್ತ್ರಸಾಂ।

**ಧೂಪವಾಸ ಧೂಪನಾಸ (ಪುಂ)** ಸ್ನಾನವಾದನಂತರ ಧೂಪ  
ದಿಂದ ಮೈಗೆ ವಾಸನೆ ಕಟ್ಟುವುದು. ಧೂಪನ ವಾಸಃ ಸುಗಂಧಿ-  
ಕರಣಮ್। "ಸ್ನಾನಾದ್ರಮುಕ್ತೇಷ್ವನುಧೂಪವಾಸಂ ವಿನ್ಯಸ್ತಸಾಯಂತನ-  
ಮಲ್ಲಿಕೇಷು" ರಘುಂ ೧೬-೪೦।

**ಧೂಪವೃಕ್ಷ ಧೂಪವೃಕ್ಷ (ಪುಂ)** ಸರಳವೃಕ್ಷ. ಸರಳ ದೇವದಾರು  
ಮರ. ಧೂಪಾರ್ಥಿ ವೃಕ್ಷಃ। "ಸರಲೋ ಧೂಪವೃಕ್ಷಃ ಸ್ಯಾತ್"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಧೂಪಾಯಿತ ಧೂಪಾಯಿತ (ವಿಂ)** 1. ಸಂತಾಪಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
2. ಕಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಧೂಪ (ಸಂತಾಪ) ವಾ ಆಯಾಧೇಶಃ  
(೩-೧-೧೮)। "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। ೨. ಪಕ್ಷಿ ಧೂಪಿತಃ  
ಧೂಪಿತಃ. 3. ಮಾರ್ಗಾಯಾಸದಿಂದ ಬಳಲಿದ.

**ಧೂಪಿತ ಧೂಪಿತ (ವಿಂ)** ಸುಗಂಧ ವಸ್ತುಗಳಿಂದ ವಾಸನೆ  
ಕಟ್ಟಿರುವ, ವಾಸನೆ ಹಿಡಿದಿರುವ, ವಾಸನೆಯ ದ್ರವ್ಯ  
ದಿಂದ ಸುಗಂಧವಾಗಿರುವ. ಧೂಪಾಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ "ಇತತ್"  
(೪-೨-೩೬)।

**ಧೂಮ ಧೂಮ (ಪುಂ)** 1. ಹೊಗೆ. ಧೂಮ (ಕಂಪನೆ) "ಮಕ್"  
(೩೦ ೧-೧೪೨)। "ಕೋಣಿ ಪಯೋದನಿವಹೇರಿವ ಧೂಮಸಂಕ್ಷಿ-  
ರ್ಯಾಮಾನ್ಯಲಕ್ಷ್ಯತ ಕುಲೇಸ್ತದಿತಿಮಿವೋಚ್ಚೇಃ" ಕುಮಾಂ ೧೭-೩೮।  
"ಪುನಾನ್ ಪವನೋದ್ಭೂತೇಷುಮೇರಾಹುತಿಗಾಂಧಿಭಿಃ" ರಘುಂ ೧-೪೩।  
2. ಧೂಮಕೇತು. 3. ಉತ್ಪಾಪಾತ. 4. ಮೇಘ,  
ಮೋಡ.

**ಧೂಮಕೇತನ ಧೂಮಕೇತನ (ಪುಂ)** 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಧೂಮಃ  
ಕೇತನಂ ಛವಜ ಇವ ಯಸ್ಯ। 2. ಧೂಮಕೇತು. "ಸ್ಯಾಡ್ಧೂಮ-  
ಕೇತನಃ ಪುಂಸಿ ಕೇತುಃ ಪ್ರಹುತಾಶಯೋಃ" ಮೇದಿಂ। "ನಿಷ್ಪ್ರಮಶ್ಚ  
ರಿಪುರಾಸ ಭೂಮತಾಂ ಧೂಮಶೇಷ ಇವ ಧೂಮಕೇತನಃ" ರಘುಂ ೧೧-೮೧।

**ಧೂಮಕೇತು ಧೂಮಕೇತು (ಪುಂ)** 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಧೂಮಃ  
ಕೇತುಃ ಲಿಙ್ಗಮಸ್ಯ। 2. ಹೊಗೆಯಂತೆ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ  
ಒಂದು ಗ್ರಹ, ಉತ್ಪಾತ. ಈ ಗ್ರಹವು ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡಾಗ  
ದೇಶದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಅನರ್ಥಗಳಿಗೆ ಸೂಚನೆಯೆಂದು  
ತಿಳಿಯಬೇಕು. "ಉಪಲವಾಯ ಲೋಕಾನಾಂ ಧೂಮಕೇತುರಿವೋತ್ಥಿತಃ"  
ಕುಮಾಂ ೨-೩೨।

**ಧೂಮಗ್ರಹ ಧೂಮಗ್ರಹ (ಪುಂ)** ಧೂಮಕೇತು. "ಧೂಮಗ್ರಹೇಣ  
ವಿಮಲಾ ಶಶಿನಃ ಕಲೇವ" ಮಾಲತೀಂ ೨-೮।

**ಧೂಮಜ ಧೂಮಜ (ಪುಂ)** ಮೇಘ, ಮೋಡ.

**ಧೂಮದರ್ಶಿನ್ ಧೂಮದರ್ಶಿನ್ (ವಿಂ)** ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಹೊಗೆ  
ಯಂತೆ ನೋಡುವವನು. ಇದು ಪಿತ್ತ ಮತ್ತು ಕಫ ದೋಷ  
ದಿಂದ ಬರುವ ಒಂದು ನೇತ್ರರೋಗ.

**ಧೂಮಧ್ವಜ ಧೂಮಧ್ವಜ (ಪುಂ)** ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಧೂಮಃ ಧ್ವಜ  
ಇವಾಸ್ಯ।

**ಧೂಮಪ ಧೂಮಪ (ಪುಂ)** ತಪಸ್ಸಿನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಹೊಗೆಯನ್ನು  
ಮಾತ್ರ ಆಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಕುಡಿಯುವ ಒಬ್ಬ ಋಷಿ. ಧೂಮಂ  
ಧೂಮಾತ್ರಂ ಪಿಬತಿ—ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)।  
"ಪಿಬಂತಿ ಮುನಯೋ ಯತ್ರ ಹವಿರ್ದೂಮಸ್ಯ ಧೂಮಪಾಃ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ  
೧೦೮-೧೪।

**ಧೂಮಪಥ ಧೂಮಪಥ (ಪುಂ)** ಧೂಮಮಾರ್ಗ. ಪಿತ್ತ  
ಯಾನ. ಧೂಮೋಪಲಕ್ಷಿತಃ ಪನ್ಥಾಃ "ಅಃ" (೪-೪-೭೪)।

**ಧೂಮಪಲ್ಲವ ಧೂಮಪಲ್ಲವ (ಪುಂ)** ಹೊಗೆಯ ಸಾಲು,  
ಧೂಮ ರೇಖೆ.

**ಧೂಮಪಾನ ಧೂಮಪಾನ (ನಂ)** 1. (ಕೆಲವು ರೋಗನಿವಾರಣೆ  
ಗಾಗಿ) ಹೊಗೆಯನ್ನು ಕುಡಿಯುವುದು. ಧೂಮಸ್ಯ ಪಾನಮ್।  
ನೇತ್ರರೋಗ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ವಾಸಿಮಾಡುವ ಐದು  
ವಿಧ ಹೊಗೆಯ ಪಾನವು ಸುಶ್ರುತದಲ್ಲಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ.  
ಇದು ಪ್ರಾಯಶಃ, ಸ್ನೇಹನ, ವೈರೇಚನ, ಕಾಸಫ್ನ ಮತ್ತು  
ವಾವನೀಯ ಎಂದು ಐದು ವಿಧ. 2. ಬೀದಿ ಸಿಗರೇಟು  
ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಸೇದಿ ಹೊಗೆ ಕುಡಿಯುವುದು.

**ಧೂಮಪ್ರಭಾ ಧೂಮಪ್ರಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಹೊಗೆಯಂತೆ ಕಗ್ಗ ತ್ತಲೆ  
ಯಾಗಿರುವ ಒಂದು ನರಕ. ಧೂಮಸ್ಯ ಪ್ರಭೇವ ಪ್ರಭಾ ಯತ್ರ।  
(ಪುಂ) 2. ಹೊಗೆಯ ಬಣ್ಣ.

**ಧೂಮಪ್ರಾಶ ಧೂಮಪ್ರಾಶ (ವಿಂ)** ಹೊಗೆಯನ್ನು ಕುಡಿ  
ಯುವ, ಧೂಮವನ್ನು ಭಕ್ಷಿಸುವ. ಧೂಮಂ ಪ್ರಾಶನಾತಿ—ಪ್ರ+  
ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಅಶ್" (೩-೧-೧೩೪)।

**ಧೂಮಮಹಿಷಿ ಧೂಮಮಹಿಷೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಇಬ್ಬನಿ, ಮಂಜು,  
ಹೊಗೆಮಂಜು, ಹೊಗೆಯಂತೆ ಮುಚ್ಚಿ ಕೊಳ್ಳುವ ಮಂಜು.  
ಧೂಮಸ್ಯ ಮಹಿಷಿವ। "ಕುಜ್ಜಲಿ ಧೂಮಮಹಿಷಿ ರತಾಂಧ್ರಿ ಚ  
ಕುಹೂಲಿಕಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಧೂಮಯೋನಿ ಧೂಮಯೋನಿ (ಪುಂ)** ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಧೂಮೋ  
ಯೋನಿಹೃತ್ಪ್ರಾಪ್ತಿಸ್ಥಾನಂ ಯಸ್ಯ। ಹೊಗೆಯಿಂದ ಮೇಘವು  
ಉತ್ಪನ್ನವಾಗುವುದು. ಯಜ್ಞದ ಧೂಮದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ  
ಮೇಘವು ದ್ವಿಜರಿಗೆ ಹಿತವಾದುದು. ಕಾಡುಕಿಟ್ಟಿನ ಹೊಗೆ  
ಯಿಂದ ಉಂಟಾದ ಮೇಘವು ಸಂಪತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣವಾಗು  
ವುದು. ಪಿತ್ತವನದ ಹೊಗೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ ಮೇಘವು  
ಅಮಂಗಳಕ್ಕೆ ಕಾರಣ. ಅಭಿಚಾರಕ್ಕಿಂತ ಹೊಗೆಯಿಂದ



ಉತ್ಪನ್ನವಾದ ಮೇಘವು ಭೂತನಾಶಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗುವುದು. "ಯಜ್ಞಭೂಮೋದ್ಭವಂ ತ್ವಂ ದ್ವಿಜಾನಾಂ ಹಿತಂ ಸದಾ | ದವಾಗ್ನಿಭೂಮಸಮ್ಮತಮಂ ಭೂಮಿಹಿತಂ ಸ್ಮೃತಮ್ | ಮೃತಭೂಮೋದ್ಭವಂ ತ್ವಂ ಭೂಮಶುಭಾಯ ಭವಿಷ್ಯತಿ | ಅಭಿವರಾಗ್ನಿಭೂಮೋತ್ಥಂ ಭೂತನಾಶಾಯ ಕಲ್ಪತೇ" |

**ಭೂಮಲ ಭೂಮಲ** (ಪುಂ) 1. ಬೂದಿಬಣ್ಣ. 2. ಕಪ್ಪು ಕೆಂಪು ಬೆರೆತ ಬಣ್ಣ. ಭೂಮ ತದ್ವರ್ಣ ಲಾತಿ-ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ:" (3-2-3) |

**ಭೂಮಿಕಾ ಭೂಮಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊಗೆಮಂಜು, ಹೊಗೆಯಂತೆ ಮುಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳುವ ಇಬ್ಬನಿ. ಭೂಮೋಸ್ತಯಸ್ಯಾ: "ಠನ್" (4-2-114) | "ಕುಜ್ಜಾತಿರ್ಭೂಮಮಹಿಷಿ ರತಾಂಧ್ರಿ ಚ ಕುಹೋಲಿಕಾ | ಭೂಮಿಕಾ ಚ ನಮೋರೇಣು:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಭೂಮಿತ ಭೂಮಿತ** (ವಿಂ) 1. ಹೊಗೆಯಾಗಿರುವ, ಹೊಗೆ ಹುಟ್ಟಿರುವ, ಹೊಗೆಯಾಡುತ್ತಿರುವ. ಭೂಮೋಸ್ತಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತ್" (4-2-36) | "ದುರ್ದೇಶನಂ ದದರ್ಶಾಗ್ನಿ ಭೂಮಿಭೂಮಿತಮಂಡಲಮ್" ಕುಮಾಂ 10-2 | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತಾ-ತಾ. 2. ಸೂರ್ಯನು ಹೊಗೆಬೇಕಾದ ದಿಕ್ಕು, ಸೂರ್ಯನು ತಿರುಗಬೇಕಾದ ದಿಕ್ಕು.

**ಭೂಮಿನ್ ಭೂಮಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಹೊಗೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಭೂಮಿ ಬಾಹ್ಯೇನಾಸ್ತಯಸ್ಯ "ಇತಿ:" (4-2-114) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಿ-ನಿ. 2. ಅಜಮೀಡನ ಬಬ್ಬ ಪತ್ನಿ.

**ಭೂಮೋದ್ಗಾರ ಭೂಮೋದ್ಗಾರ** (ಪುಂ) ಹೊಗೆ ಹೊರಡುವಿಕೆ, ಹೊಗೆ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳುವಿಕೆ. ಭೂಮೋದ್ಗಾರ: | "ಭೂಮೋದ್ಗಾರಾನುಕೃತಿವಿಪುಣಾ: ಜರ್ಜರಾ ನಿಷ್ಪತಂತಿ" ಮೇಘಂ 2-6 |

**ಭೂಮೋರ್ಣ ಭೂಮೋರ್ಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯಮಧರ್ಮರಾಯನ ಪತ್ನಿ. "ಜೀವಿತೇಶೋ ಯಮ: ಶೀರ್ಣಪಾದೋ ಮಹಿಷಧ್ವಜ: | ಮಂದೋಸ್ತಯ ಕಾಂತಾ ಭೂಮೋರ್ಣಾ ಚಿತ್ರಗುಪ್ತಸ್ತು ಲೇಖಕ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | "ಶಕ್ರ: ಶಚೀಪತಿರ್ದೇವೋ ಯಮೋ ಭೂಮೋರ್ಣಾ ಸಹ | ವರಹ: ಸಹ ಗೌರ್ಯಾ ಚ ಸಹ ಕೃದ್ವಾ ಭೂಮೋರ್ಣಾ:" ಭಾಂ ಅನುಂ 201-11 | 2. ಮಾರ್ಕಂಡೇಯಮುಷಿಯ ಪತ್ನಿ. "ಮಾರ್ಕಂಡೇಯಸ್ಯ ಭೂಮೋರ್ಣಾ ಕೃದ್ವಿಶ್ವವರಣಸ್ಯ ತು" ಭಾಂ ಅನುಂ 246-4 |

**ಭೂಮ್ಯಾ ಭೂಮ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊಗೆಯ ಸಮೂಹ. ಹೊಗೆಯ ಗುಂಪು. ಭೂಮಾನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಯತ್" (4-2-49) | "ವಾತ್ಯಾಸಂವೇಗವಿಷ್ವವಿತತವಲಯಿತಸ್ಕೀತಭೂಮ್ಯಾಪ್ರಕಾಶಮ್" ಮಾಲತೀಂ 4-6 | 2. ಹೊಗೆಗೆ ಕಾರಣವಾದ, ಹೊಗೆ ಹುಟ್ಟುವುದಕ್ಕೆ ಅನುಕೂಲವಾದ. ಭೂಮಾಯ ಹಿತಮ್ |

**ಭೂಮ್ಯಾಃ ಭೂಮ್ಯಾಃ** (ಪುಂ) ಕುಕ್ಕುಟ ಹಕ್ಕಿ, ಹೊಳೆಯೊಳಗಾಡುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹಕ್ಕಿ. ಭೂಮ್ಯೇವ ಭೂಮಸಮೂಹ ಇವ

ಅರ್ಥ-ಅರ್ಥ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (3-1-134) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಾತಿಂ "ಡೀಃ" (4-1-63) | -ತಿ-ಟೀ.

**ಭೂಮ ಭೂಮ** (ಪುಂ) 1. ಬೂದಿ ಬಣ್ಣ. ಭೂಮ ತದ್ವರ್ಣ ರಾತಿ-ರಾ (ದಾನೆ) "ಕ:" (3-2-3) | "ದುರ್ದೇಶನಂ ದದರ್ಶಾಗ್ನಿ ಭೂಮಿಭೂಮಿತಮಂಡಲಮ್" ಕುಮಾಂ 10-2 | 2. ಕಪ್ಪು ಮತ್ತು ಕೆಂಪು ಬೆರೆತ ಬಣ್ಣ. "ಭೂರೇಣವೋ ನಮಸಿ ಬದ್ಧಪಯೋದಕಾಶ್ರಕ್ರೋವದ್ಭೂಮಿಭೂಮಿವೋ ವಿಸಮ್ತು:" ಮಾಘಂ 4-6 | 3. ಭೂಮಿ ಮೊದಲಾದ ವಾರಗಳಲ್ಲಿ ಅಶ್ವಿನಿ ಮೊದಲಾದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಆನಂದ ಮೊದಲಾದ 28 ಯೋಗಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಆನಂದಾದಿ ಯೋಗಗಳು:- (1) ಆನಂದ:, (2) ಕಾಲದಂಡ:, (3) ಭೂಮ:, (4) ಭಾತಾ, (5) ಸೌಮ್ಯ:, (6) ಛಾಡ್ಕ:, (7) ಕೇತು:, (8) ಶ್ರೀವತ್ಸ:, (9) ವಜ್ರಮ್, (10) ಮುದಗರ:, (11) ಕ್ರೂರಮ್, (12) ಮಿತ್ರಮ್, (13) ಮಾನಸಮ್, (14) ಪದ್ಮಮ್, (15) ಲಮ್ಬ:, (16) ಉಪಾತ:, (17) ಮೃತ್ಯು:, (18) ಕಾಣ:, (19) ಸಿದ್ಧಿ:, (20) ಶುಭಮ್, (21) ಅಮೃತಮ್, (22) ಮುಸಲ:, (23) ಗದಾ, (24) ಮಾತಂಗ:, (25) ರಾಕ್ಷಸ:, (26) ಚರ:, (27) ಸ್ಥಿರ:, ಮತ್ತು (28) ವರ್ಮಮಾನ: | ಭೂಮಿವಾರ ಅಶ್ವಿನಿನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ ಸೋಮವಾರ ಮೃಗಶಿರ್ಷದಿಂದ ಮಂಗಳವಾರ ಅಶ್ಲೇಷೆಯಿಂದ ಬುಧವಾರ ಕರ್ಕನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ ಗುರುವಾರ ಅನೂರಾದಿಯಿಂದ ಶುಕ್ರವಾರ ಉತ್ತರಾಷಾಢದಿಂದ ಶನಿವಾರ ಶತಭಿಷಕ್ ನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ಆಯಾ ದಿನದ ನಕ್ಷತ್ರದವರೆಗೆ ಎಣಿಸಿ ಬರುವ ಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅನುಕ್ರಮವಾಗಿ (ಅಭಿಜಿತ್ ನಕ್ಷತ್ರ ಸೇರಿ) ಆನಂದ ಮೊದಲಾದ ಯೋಗಗಳು ಉಂಟಾಗುವುವು. "ದತ್ತಾದಕಂ ಮೃಗಾದಿಂದಿ ಸಾರ್ಪಾಕ್ಷಿಮೇ ಕರಾಡುಃ | ಮೇವಾದ್ಗುರೋ ಭೂಮಿ ವೇವಾದ್ಗುಣ್ಯಾ ಮಂದೇ ಚ ವಾರುಣಾತ್" ಮುಂ ಚಿಂ | ಈ 28 ಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ ಕ್ರೂರವಾದ ಯೋಗಗಳು ಮತ್ತು ಆ ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಬಿಡಬೇಕಾದ ಕಾಲ.

|                           |      |         |
|---------------------------|------|---------|
| ಧ್ವಾಂಕ್ಷ ವಜ್ರ ಮತ್ತು ಮುದಗರ | .. 5 | ಘಟನೆಗಳು |
| ಪದ್ಮ ಮತ್ತು ಲಂಬ            | .. 4 | "       |
| ಗದಾಯೋಗ                    | .. 7 | "       |
| ಭೂಮಿಯೋಗ                   | .. 1 | "       |
| ಕಾಣಯೋಗ                    | .. 2 | "       |
| ಮುಸಲಯೋಗ                   | .. 2 | "       |

ರಾಕ್ಷಸ ಮತ್ತು ಉತ್ತಾಪ ಯೋಗಗಳು .. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ

"ಛಾಡ್ಕೇ ವಜ್ರೇ ಮುದಗರೇ ಚೇನಾಡ್ಯೋ ವಜ್ರ್ಯಾ ವೇದಾ: ಪದ್ಮಲಮ್ಬೇ ಗದೇಶ್ವಾ: | ಭೂಮೇ ಕಾಣೇ ಮೌಸಲೇ ಭೂಮ್ಯಾ ದ್ವೇ ರಕ್ಷೋಮೃತ್ಯುತ್ಪಾತಕಾಲಾಶ್ಚ ಸರ್ವೇ" ಮುಂ ಚಿಂ | 4. ಲೋಬಾನಮೆಂಬ ತುರುಕರ



ದೇಶದ ಒಂದು ವಾಸನಾದ್ರವ್ಯ. 5. ಒಬ್ಬ ಅಸುರ. "ಸಮುದ್ರೋ ರಭಸಪ್ರಾಣೋ ಭೂತಕೇವ ಮಹಾಸುರಃ" ಹರಿವಂ. (ವಿಂ) 6. ಬೂದಿಬಣ್ಣದ. 7. ಕಪ್ಪು ಮತ್ತು ಕೆಂಪು ಬೆರೆತ ಬಣ್ಣದ. "ಭೂಮುಕ್ತೋ ವಸಾಗನ್ವಿ ಜ್ವಾಲಾಬಭ್ರುಶಿರೋ-  
ರುಹಃ" ರಘುಂ ೧೫-೧೬.

ಭೂತಕ ಧೂಮ್ರಕ (ಪುಂ) ಉಷ್ಣ, ಒಂಟೆ. ಭೂತ ಇವ ಕಾಯತಿ-ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕಃ" (೩-೨-೪)।

ಭೂತಕೇತು ಧೂಮ್ರಕೇತು (ಪುಂ) ಭರತ ಮಹಾರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮ.

ಭೂತಕೇಶ ಧೂಮ್ರಕೇಶ (ಪುಂ) ಪೃಥು ಮಹಾರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

ಭೂತಾಕ್ಷ ಧೂಮ್ರಾಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ರಾವಣನ ಮಂತ್ರಿಯಾದ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. "ಭೂತಾಕ್ಷೋಽಪಿ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಸಾಂಚಕ್ರೇ ರಾವಣ-  
ಸಮತಃ" ಮದ್ರಿಂ ೧೪-೧೩. (ವಿಂ) 2. ಧೂಮ್ರವರ್ಣದ ನೇತ್ರಗಳುಳ್ಳವನು. ಭೂತೇ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೪೧)। -ಶಿ-ಕ್ತೀ.

ಭೂತಜಿ ಧೂರ್ಜಿ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. ಭುರಃ ಜಗತ್ಕಾಲನಚಿಂತಾಃ ಜತಿಃ ಸಮೂಹಃ ಯಸ್ಯ। "ಬದ್ಧಾ ಮಯಾ ಸುರಪತಿಪ್ರಮುಖಾಃ ಪ್ರಸಹ್ಯ ಬಾಲಸ್ಯ ಭೂತಜಿಸುತಸ್ಯ ನಿರೀಕ್ಷಣೇನ" ಕುಮಾಂ ೧೭-೮.

ಭೂತ ಧೂರ್ತ (ಪುಂ) 1. ಉಮ್ಮತ್ತಿಗಿಡ. ಭೂತೇ-ಭೂತ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಉಮತ್ತಃ ಕಿತವೋ ಭೂತಃ" ಅಮಂ. 2. ನಾಯಕನ ಒಂದು ಭೇದ, ಶರನಾಯಕ. (ನಂ) 3. ಖಂಡಲವಣ. 4. ಕೆಂಪು ಗಂಧದ ಮರ. 5. ಹಿಂಸೆ, ತೊಂದರೆ, ಪೀಡೆ. (ವಿಂ) 6. ಎಟ. ಕಾಮುಕ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ. "ಭೂತೇನ್ವೀಯಮಾನಾಃ ಸ್ಕುಟಚತುರಕಥಾಕೋವಿದೈ-  
ವೇಶನಾರ್ಯಃ" ಮುದ್ರಾಂ ೩-೧೦. 7. ಕಪಟ, ಮಂಚ, ಮೋಸಗಾರ. "ನರಾಣಾಂ ನಾಪಿತೋ ಭೂತಃ ಪಕ್ಷಿಣಾಂ ಚೈವ ವಾಯಸಃ। ದಂಷ್ಟ್ರಿಣಾಂ ಚ ಸುಗಾಲಸ್ತು ಶ್ವೇತಭಿಕ್ಷುಸ್ತಪಸ್ವಿನಾಮ್" ಪञ्ಚತಂ ೩-೭೪. 8. ಮಾಯಾವಿ. 9. ಜೂಜುಕೋರ. 10. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನು.

ಭೂತಕ ಧೂರ್ತಕ (ಪುಂ) ಜಂಬುಕ, ನರಿ. ಭೂತ ಇವ ಕಾಯತಿ-ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕಃ" (೩-೨-೪)। ಇವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೫-೩-೯೭) ವಾ।

ಭೂತಕೃತ್ ಧೂರ್ತಕೃತ್ (ಪುಂ) 1. ಉಮ್ಮತ್ತಿಗಿಡ. (ವಿಂ) 2. ಹಿಂಸಿಸುವವನು, ತೊಂದರೆ ಕೊಡುವವನು. ಭೂತ ಹಿಸಾಂ ಕರೋತಿ-ಓ ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬)।

ಭೂತಜನ್ತು ಧೂರ್ತಜಂತು (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯ.

ಭೂತಮಾನುಷಾ ಧೂರ್ತಮಾನುಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣ್ಣ ರಾಶಿ. ಭೂತಿ ಧೂರ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಂಸೆ, ತೊಂದರೆ. ಭೂತಿ (ಹಿಸಾ-  
ಯಾಮ್) ಭಾವ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।

ಭೂರ್ವಹ ಧೂರ್ವಹ (ವಿಂ) 1. ಭಾರವನ್ನು ಹೊರುವ, ಹೊರೆಯನ್ನು ಹೊತ್ತುತರುವ. ವಹತಿ-ವಹ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಭೂರೋ ವಹಃ। 2. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸುವವನು.

ಭೂರ್ವಾ ಧೂರ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಥದ ಅಗ್ರಭಾಗ, ಗಾಡಿಯ ಮೂಕಿ, ಗಾಡಿಯ ಮುಂಭಾಗ.

ಭೂಲಿ ಧೂಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಧೂಳು, ಮಣ್ಣಿನ ಪುಡಿ. ಭೂಯೇ-ಭೂ (ವಿಭೂನೇ) "ಲಿಃ" ಬಾಹುಂ. "ಅನೀತ್ವಾ ಪಕ್ಷುತಾಂ ಭೂಲಿಮುದಕಂ ನಾವತಿಷ್ಠತೇ" ಮಾಘಂ ೨-೩೪. 2. ಪುಡಿ, ಜೂರ್ಣ.

ಭೂಲಿಕುಟ್ಮಿ ಧೂಲಿಕುಟ್ಮಿ (ಪುಂ) 1. ಉತ್ತ ಭೂಮಿ. ಉಳಲ್ಪಟ್ಟ ಹೊಲ. 2. ಮಣ್ಣಿನ ದಿಬ್ಬ, ಮಣ್ಣಿನ ಜಗುಲಿ.

ಭೂಲಿಕೇದಾರ ಧೂಲಿಕೇದಾರ (ಪುಂ) 1. ಉಳಲ್ಪಟ್ಟ ಜಮೀನು, ಉತ್ತರವ ಗವ್ವೆ. ಭೂಲಿಪ್ರಧಾನಃ ಕೇದಾರಃ। "ವಪಸ್ತು ಭೂಲಿಕೇದಾರಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 2. ಮಣ್ಣಿನ ದಿಬ್ಬ.

ಭೂಲಿಗುಚ್ಛಕ ಧೂಲಿಗುಚ್ಛಕ (ಪುಂ) ಸುವಾಸನೆಯ ಪುಡಿ. ಭೂಲಿನಾಂ ಗುಚ್ಛ ಇವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"। "ಪಿಷ್ಠಾತೋ ಭೂಲಿ-  
ಗುಚ್ಛಕಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಭೂಲಿಧ್ವಜ ಧೂಲಿಧ್ವಜ (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಭೂಲಿಃ ಧ್ವಜೋ ಯಸ್ಯ। "ಸರ್ವಾಸಃ ಕ್ಷಿಪಣುಭೂಲಿಧ್ವಜಃ ಸರಯುಗಂತಿಕಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಭೂಲಿ ಧೂಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧೂಳು, ಮಣ್ಣಿನ ಪುಡಿ. ಭೂಲಿ "ಕೀಪ್" (೧೦-೪-೧-೪೫)। "ಲಕ್ಷಃ ಕ್ವಣತ್ಕಾಶ್ವನಕಿಕ್ಷುಣಿ-  
ಕುಲರಸಜ್ಜಿ ಭೂಲಿಜಲಧಿ ನಮೋಗತೇ" ಕುಮಾಂ ೧೪-೪೬.

ಭೂಲಿಕದಂಬ ಧೂಲಿಕದಂಬ (ಪುಂ) 1. ನೀಪವೃಕ್ಷ. ಈಚಲುಮರ. 2. ಸೆಮ್ಮಿಗಿಡ. 3. ವಲಸೆಗಿಡ. "ಭೂಲಿಕದಂಬೋ ನೋಪೇ ಸ್ಥಾತಿನಿಶೋ ವರಣದ್ರುಮೇ" ಮೇದಿಂ.

ಭೂಸರ ಧೂಸರ (ಪುಂ) 1. ಎಳೆಯ ಬಿಳುಪು (ಬಣ್ಣ). 2. ಕಪ್ಪು ಬಿಳುಪು ಬೆರೆತ ಬಣ್ಣ. 3. ಬಿಳುಪು ಹಳದಿ ಬೆರೆತ ಬಣ್ಣ. 4. ಗರ್ದಭ, ಕತ್ತ. 5. ಗಾಣಗ, ಗಾಣದಿಂದ ಎಣ್ಣೆ ತೆಗೆಯುವವನು. (ವಿಂ) 6. ಧೂಸರ ವರ್ಣದ, ಬೂದಿಬಣ್ಣದ. 7. ಬಿಳುಪು ಹಳದಿ ಬೆರೆತ ಬಣ್ಣದ. "ತದಾಪ್ರಮೃತ್ಯುಮದನಾ ಪಿತುರ್ಗೃಹೇ ಲಲಾಟಿಕಾಚಂದನ-  
ಭೂಸರಾಲಕಾ" ಕುಮಾಂ ೫-೫೫. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೪೧)। -ರೀ-ರೀ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 8. ಒಬ್ಬ ಕಿನ್ನರ



ಹಂಸಂ. "ಧೂಸರೀ ಕಿನ್ನರೀಭೇದೇ ನಾ ಸ್ವರೇ ತ್ರಿಘ್ನ ಪಾಂಡುರೇ" ಮೇದಿಂ.

ಧ - ಧಾರಣೆ (ಧಿರಾಂ ಉಮಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ). ಧಾರಯತಿ, -ತೇ. ಅದೀಧರತ್, -ತ. ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಧರಿಸು. "ವೈಷ್ಣವೀ ಧಾರಯೇದ್ವಿಷ್ಟಿ ಸೋದಕಂ ಚ ಕಮಂಡಲಮ್" ಮನುಂ. 2. ಕಾರ್ಯದ ಹೊಣೆ ಹೊರು. "ವೃಕ್ಷಸೇವನೇ ದ್ವೇ ಧಾರಯಸಿ ಮೇ. ಏಹಿ ತಾವತ್. ಆತ್ಮಾನಂ ಮೋಚಯಿತ್ವಾ ತತೋ ಗಮಿಷ್ಯಸಿ" ಶಾಕುಂ. 1.

ಧೃಙ್ - ಅವಸ್ಥಾನೆ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ). ಧರತೇ. ದಧ್ರೇ. ಧರ್ತಾ. ಧರಿಸ್ಯತೇ. ಧರತಾಮ್. ಅಧರತ. ಇತ್ಯಾದಿ. ಭಾವೇ:-ಧ್ರಿಯತೇ. ದಧ್ರೇ. ಧಾರಿತಾ, ಧರ್ತಾ. ಧಾರಿಸ್ಯತೇ, ಧರಿಸ್ಯತೇ. ಧ್ರಿಯತಾಮ್. ಅಧ್ರಿಯತ. ಇತ್ಯಾದಿ. ಕೃತ್ಸು:-ಧರತವ್ಯಮ್. ಧರಣೀಯಮ್. ಧಾರ್ಯಮ್. ಧೃತಮ್. ಧೃತವಾನ್. ಧರಮಾಣಃ. ಧರತುಮ್. ಧೃತಮ್. ಧರಣಮ್. ಧೃತ್ವಾ.

ಧೃಙ್ - ಅವಸ್ಥಾನೆ (ತುಡಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ). ಧ್ರಿಯತೇ. ದಧ್ರೇ. ಧರ್ತಾ. ಧರತಾಮ್. ಅಧ್ರಿಯತ. ಧ್ರಿಯೇತ. ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಇರು, ಉಳಿದಿರು. 2. ಬದುಕಿರು, ಜೀವಂತವಾಗಿರು. "ಧ್ರಿಯತೇ ಯಾವದೇಕೋಽಪಿ ರಿಪುಸ್ತಾವತ್ಕುತಃ ಸುಖಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೩೫. 3. ಧರಿಸು. "ಪಾಂಡುರೇಣಾತಪತ್ರೇಣ ಧ್ರಿಯಮಾಣೇನ ಮೂರ್ಛನಿ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ.

ಕೃತ್ಸು:-ಧರತವ್ಯಮ್. ಧರಣೀಯಮ್. ಧಾರ್ಯಮ್. ಧೃತಃ. ಧೃತವಾನ್, -ವತೀ. ಧ್ರಿಯಮಾಣಃ. ಧರಣಮ್. ಧೃತಮ್. ಧೃತ್ವಾ. ಅವಧೃತ್ಯ.

ಧೃಜ್ - ಧಾರಣೆ (ಮ್ವಾಂ ಉಮಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ). ಧರತಿ -ತೇ. ದಧ್ರೇ. ಧರ್ತಾ. ಧರಿಸ್ಯತಿ, -ತೇ. ಧರತು, -ತಾಮ್. ಅಧರತ್, -ತ. ಧರೇತ್, -ತ. ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಧರಿಸು. 2. ನೆನಪಿನಲ್ಲಿಡು.

ಗಿಚಿ:-ಧಾರಯತಿ, -ತೇ. ಧಾರಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ. ಧಾರಯಿತಾ. ಧಾರಯತು, -ತಾಮ್. ಅಧಾರಯತ್, -ತ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ:-ದಿಧಿರ್ಷತಿ, -ತೇ. ದಿಧಿರ್ಷಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ. ದಿಧಿರ್ಷಿತಾ. ದಿಧಿರ್ಷಿಸ್ಯತಿ, -ತೇ. ದಿಧಿರ್ಷತು, -ತಾಮ್. ಅದಿಧಿರ್ಷತ್, -ತ. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:-ಧರತವ್ಯಮ್. ಧರಣೀಯಮ್. ಧಾರ್ಯಮ್. ಧೃತಮ್. ಧೃತವಾನ್, -ವತೀ. ಧರನ್, -ಂತೀ. ಧರಮಾಣಃ. ಧರತುಮ್. ಧೃತಮ್. ಧರಣಮ್. ಧೃತ್ವಾ.

ಧೃತ ಧೃತ (ನಂ) 1. ಸ್ಥಿತಿ, ಇರುವಿಕೆ. ಧೃಙ್ (ಅವಸ್ಥಾನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪). 2. ಧಾರಣ, ಧರಿಸುವಿಕೆ.

3. ಗ್ರಹಣ, ಹಿಡಿಯುವಿಕೆ. 4. ರಕ್ಷಣೆ. 5. ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಧರಿಸುವುದು, ನೆನಪಿನಲ್ಲಿಡುವುದು. 6. ಪಡೆನ, ಬೀಳುವುದು. 7. ಹಿಡಿಯುವುದು, ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳುವುದು. (ವಿಂ) 8. ಧರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಧಾರಣಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಧೃ (ಧಾರಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). 'ಧೃತಹೇತಿರಪ್ಯಧೃತಜಿಹ್ವಾಮತಿ-ಶ್ಚರಿತೈರ್ಮುನೀನಧರಯನ್ ಶುಚಿಭಿಃ' ಕಿರಾಂ ೬-೨೪. "ಧೃತಂ ತ್ವಯಾ ವಾರ್ಧಕಶೋಭಿ ವಲ್ಕಲಮ್" ಕುಮಾಂ ೫-೪೪. 9. ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ದಧತಮುನ್ನತಸಾನುಸಮುದ್ರತಾಂ ಧೃತಸಿತವ್ಯಜನಾಮಿವ ಜಾಹ್ನವೀಮ್" ಕಿರಾಂ ೫-೧೫. 10. ಅಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ತೂಕಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಶ್ವಮೇಧಸಹಸ್ರಂ ಚ ಸತ್ಯಂ ಚ ತುಲಯಾ ಧೃತಮ್. ಅಶ್ವಮೇಧಸಹಸ್ರಾದ್ವಿ ಸತ್ಯಮೇವ ವಿಶಿಷ್ಯತೇ" ಭಾಂ ಆದಿಂ. 11. ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಧೃತಾಂ ಧನಂಜಯವಧೇ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾಂ ಚಾಪಿ ಚಕ್ರೀ" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ. 12. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಪರಂ ಚ ತೇನ ತವ ವಿರುದ್ಧಕರಣೇ ಸುಕೃತಮನ್ತರೇ ಧೃತಮ್" ಪञ्ಚತಂ ೪. 13. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕಾಪಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಖಂಡಮಾಖಂಡತುಲ್ಯಧಾಮಭಿಃ ಚಿರಂ ವೃತಾ ಭೂಪತಿಭಿಃ ಸ್ವವಂಶಜಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೨೯. 14. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಿಹಸ್ಯ ಪಾಣೌ ವಿಧೃತೇ ಧೃತಾಂಭಸಿ ಪ್ರಿಯೇಣ ಬಧ್ವಾ ಮದನಾರ್ಥಂ ಚೇತಸಃ" ಕಿರಾಂ ೮-೫೧.

ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರ (ಪುಂ) 1. ಕುರುವಂಶದ ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ದುರ್ಯೋಧನ ಮೊದಲಾದ ಕೌರವರ ತಂದೆ, ಶಂತನುವಿನ ಮಗನಾದ ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯನ ಪತ್ನಿ ಅಂಬಿಕೆಯಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಜನಿಸಿದ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರ. ಇವನು ಮಾತೃದೋಷದಿಂದ ಅಂಧನಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದನು. ಗಾಂಧಾರಿಯು ಇವನ ಪತ್ನಿ. ["ಅಂಬಿಕಾ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ಪಕ್ಷ, ಹಕ್ಕಿ. 3. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. 4. ಒಳ್ಳೆಯ ರಾಜನಿರುವ ದೇಶ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)-ರಾಷ್ಟ್ರೀ-ರಾಷ್ಟ್ರೀ. 5. ಕಶ್ಯಪನ ಪತ್ನಿ ತಾಮ್ರೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ಮಗಳು(ಹೆಣ್ಣು ಹಂಸಪಕ್ಷಿ), ಹಂಸಪಕ್ಷಿಗಳ ತಾಯಿ.

ಧೃತವತ್ ಧೃತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಧರಿಸಿರುವವನು, ಹೊತ್ತಿರುವವನು. 2. ರಕ್ಷಿಸಿದವನು, ಕಾಪಾಡಿದವನು. ಧೃಜ್ (ಧಾರಣೆ) "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ಧೃತವಾನ್ ಚಕ್ರಮರಿಚಕ್ರಭಯಚಕಿತಮಾಹವೇ ನಿಜಮ್. ಚಕ್ರಧರ ಇತಿ ರಥಾಙ್ಗಮದಃ ಸತತಂ ವಿಭರ್ಷಿ ಭುವನೇಷು ರುಹ್ಯೇ" ಮಾಘಂ ೧೫-೨೬. 3. ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಧಾರಣಮಾಡಿದವನು, ನೆನಪಿನಲ್ಲಿಟ್ಟಿರುವವನು. 4. ಹಿಡಿದವನು. 5. ನಿಶ್ಚಯಿಸಿದವನು.

ಧೃತವರ್ಮನ್ ಧೃತವರ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಕೌರವಪಕ್ಷದಲ್ಲಿದ್ದ ಒಬ್ಬ ಯೋಧ, ಅರ್ಜುನನೊಡನೆ ಯುದ್ಧ ಮಾಡಿದ



ಒಬ್ಬ ವೀರ. (ವಿಂ) 2. ಕವಚವನ್ನು ತೊಟ್ಟಿರುವ. ಭೃತ ವರ್ಮ ಯೇನ.

ಭೃತವ್ರತ ಧೃತವ್ರತ (ವಿಂ) ವ್ರತವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವವನು, ನಿಯಮದಲ್ಲಿರುವವನು. ಭೃತ ವ್ರತ ಯೇನ.

ಭೃತಾತ್ಮನ್ ಧೃತಾತ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಭೃತಾ ಆತ್ಮಾನೋ ಯೇನ. "ಯೇನಾತ್ಮಾನೋ ಭೃತಾ ನಿಯಮ ಸ ಭೃತಾತ್ಮೇತಿ ಕೀರ್ಯತೇ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ. ಅಥವಾ ಜನ್ಮ ಜರಾದಿಗಳಾವುವೂ ಇಲ್ಲದೆ ಏಕರೂಪದಿಂದಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ಭೃತಃ: ಏಕರೂಪತಯಾ ಸ್ಥಿತಃ: ಆತ್ಮಾ ಯಸ್ಯ. "ಭೃತಾತ್ಮಾ ಹರೀರಾತ್ಮಾ ಯದೇಕರೂಪತಯಾ ಭೃತಃ:" ಇತಿ ಚ ನಿಶ್ಚಿತಃ. "ಭೃತಾತ್ಮಾ ನಿಯಮೋ ಯಮಃ:" ವಿಂ ಸಂ.

ಭೃತಿ ಧೃತಿ (ಪುಂ) 1. ವಿಶ್ವೇದೇವತೆಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ ದೇವತೆ. "ಬಲಂ ಭೃತಿವಿಪಾಷ್ಮಾ ಚ ಪುಣ್ಯಕೃತ್ ಪಾವನಸ್ತಥಾ" ಭಾಂ ಅನುಂ. 2. ಇಷ್ಟಿ, ಯಾಗ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಸಂತೋಷ, ಆನಂದ. ಭೃತ್ (ಧಾರಣೆ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-98). ಇದು ಮನಃಷ್ಠನಲ್ಲಿ ಇರಬೇಕಾದ ಹತ್ತು ವಿಧ ಧರ್ಮಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. "ಭೃತಿಃ ಕ್ಷಮಾ ದಮೋಸ್ತೇಯಂ ಶೌಚಮಿन्द्रಿಯನಿಗ್ರಹಃ. ಧೌರ್ವಿಶ್ವಾ ಸತ್ಯಮಕ್ರೋಧೋ ದಶಕಂ ಧರ್ಮಲಕ್ಷಣಮ್" ಮನುಂ 6-92. "ಯೋಷಿತಾಮಿತಿ ಕಥಾಸು ಸಮೇತಃ ಕಾಮಿಭಿರ್ಬಹುರಸಾ ಭೃತಿರಹೇ" ಕಿರಾಂ 9-40. 4. ಧೈರ್ಯ. "ಜನ ಇವ ನ ಭೃತೇಶ್ಚಾಲ ಜಿಷ್ಣುರ್ನ ಹಿ ಮಹತಾಂ ಸುಕರಃ ಸಮಾಧಿಮಜ್ಞಃ" ಕಿರಾಂ 10-23. 5. ಉತ್ತರಾಹ. "ಭೃತಿಮಾತತಾನ ತನಯಸ್ಯ ಹರೇಸ್ತಪಸೇಽಧಿ-ವಸ್ತುಮಚಲಾಮಚಲಃ" ಕಿರಾಂ 6-18. 6. ಪ್ರೀತಿ, ಪ್ರೇಮ, ವಿಶ್ವಾಸ. "ಅಧಿಕಾಂಸ ರೋಧಸಿ ಬಬಂಧ ಭೃತಿ ಮಹತೇ ರಜನಪಿ ಗುಣಾಯ ಮಹಾನ್" ಕಿರಾಂ 6-9. 7. ಅಸ್ಥಿ, ಆದರ. "ಅನಾದೃತಸ್ಯಾಮರಸಾಯಕೇವಪಿ ಸ್ಥಿತಾ ಕಥಂ ಶಿಲಜನಾಶುಗೇ ಭೃತಿಃ" ಕಿರಾಂ 14-10. 8. ಧಾರಣೆ, ವಹಿಸುವುದು. "ಭೃತಿಕಷಮಂ ದೇವಿ ಸುರಸ್ರವಂತಯಾಃ ಸಿದ್ಧಾಶ್ರಿತಂ ಶಂಭುಮಿವ ದ್ವಿತೀಯಮ್" ಯಾದಂ 18-33. 9. ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. 10. ತುಷ್ಟಿ, ತೃಪ್ತಿ. 11. ವಿಷ್ಣುಭ ಮೊದಲಾದ 27 ಯೋಗಗಳಲ್ಲೊಂದು. ["ಯೋಗ" ಪದ ದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 12. ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಹದಿನೆಂಟನೆಯ ಛಂದಸ್ಸು. 13. ಸುಖ. 14. ಯೋಗ ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾದ "ಧಾರಣಾ" ಎಂಬ ಒಂದು ಯೋಗಾಂಗ, ಧ್ಯೇಯವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ವಿಷಯಾಂತರದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತವಾಗದ ಮನಸ್ಸನ್ನಿಡುವುದು. ಈ ಧೃತಿಯು (1) ಸಾತ್ವಿಕಿ, (2) ರಾಜಸಿ ಮತ್ತು (3) ತಾಮಸಿ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. (1) ಯೋಗದ ಮೂಲಕ ಮನಸ್ಸು ಪ್ರಾಣ ಮತ್ತು ಇಂದ್ರಿಯಗಳ ವ್ಯಾಪಾರಗಳನ್ನು ಹಿಡಿಯುವಂತಹ ಮತ್ತು

ವಿಷಯಾಂತರದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತವಾಗದ ಧೃತಿಯು ಸಾತ್ವಿಕವು. ಇದು ಮೋಕ್ಷಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದ ಯೋಗ. "ಭೃತ್ಯಾ ಯಾ ಭಾರಯತೇ ಮನಃಪ್ರಾಣೇಂದ್ರಿಯಕ್ರಿಯಾಃ. ಯೋಗೇನಾಭಿಚಾರಿಣ್ಯಾ ಭೃತಿಃ ಸಾ ಪಾರ್ಥ ಸಾತ್ವಿಕಿ" ಗೀತಾ 18-33. (2) ಭಲ ವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು ಸಂಗದಿಂದ ಧರ್ಮಾರ್ಥ ಕಾಮ ಗಳ ಸಾಧನಭೂತವಾದ ಮನಸ್ಸು ಪ್ರಾಣ ಮತ್ತು ಇಂದ್ರಿಯ ವ್ಯಾಪಾರಗಳನ್ನು ಯಾವ ಧೃತಿಯಿಂದ ಹಿಡಿಯು ತಾನೆಯೋ ಅದು "ರಾಜಸ" ಧೃತಿ. "ಯಾ ತು ಧರ್ಮಕಾಮಾರ್ಥಾನ್ ಭೃತ್ಯಾ ಭಾರಯತೇಽಜುನ್. ಪ್ರಸಜ್ಞೇನ ಫಲಾಕಾಂಕ್ಷಾ ಭೃತಿಃ ಸಾ ಪಾರ್ಥ ರಾಜಸಿ" ಗೀತಾ 18-34. (3) ದುರ್ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು ಯಾವ ಧೃತಿಯಿಂದ ನಿದ್ರೆ ಭಯ ಶೋಕ ವಿಷಾದ ಮತ್ತು ಮದಗಳನ್ನು ಬಿಡುವುದಿಲ್ಲವೋ ಅದು ತಾಮಸ ಧೃತಿಯು. "ಯಾ ಸ್ವಪ್ನಂ ಭಯಂ ಶೌಕಂ ವಿಷಾದಂ ಮದಮೇವ ಚ. ನ ವಿಮುಚ್ಚತಿ ದುರ್ಮಘಾಃ ಭೃತಿಃ ಸಾ ಪಾರ್ಥ ತಾಮಸಿ" ಗೀತಾ 18-35. 15. ಮೂವತ್ತು ಮೂರು ವ್ಯಭಿಚಾರಿಭಾವಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಜ್ಞಾನ, ಅಭಿಷ್ಠಾಪ್ತಿ, ಮುಂತಾದವುಗಳಿಂದ ಆಸೆಯು ಪೂರ್ಣ ವಾಗುವುದು ಧೃತಿಯೆನಿಸುವುದು. ಇದರಿಂದ ತೃಪ್ತಿ, ಸಂತೋಷದ ಮಾತು, ಲೋಭ ಶೋಕ ಭಯ ಇತ್ಯಾದಿ ಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದ ಮನೋವ್ಯಾಕುಲತೆಯ ನಿವಾರಣೆಗಳಾ ಗುವುವು. "ಜ್ಞಾನಾಭಿಷ್ಠಾಗಮಾದೈಸ್ತು ಸಂಪೂರ್ಣಸ್ಪೃಹತಾ ಭೃತಿಃ. ಸೌಹೃದ್ಯವಚನೋಲ್ಲಾಸಸಾಹಸಪ್ರತಿಭಾದಿಕ್ರುತ್" ಸಾಂ ದಂ 3-168. ಲೋಭಶೋಕಭಯಾದಿಜನಿತೋಪಪ್ಲವ-ನಿವಾರಣಕಾರಣಿಭೂತಶ್ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿವಿಶೇಷೋ ಭೃತಿಃ. "ಕೃತ್ವಾ ದೀನನಿಪೀಡನಾಂ ನಿಜಜನೇ ಬದ್ಧವಾ ವಚೋವಿಗ್ರಹಂ ನೈವಾಲೋಚ್ಯ ಗರೀಯಸೀರಪಿ ಚಿರಾದಾಮುಷ್ಮಿಕೀರ್ಯತೀನಾಃ. ದ್ರವ್ಯೋಘಾಃ ಪರಿ-ಸಂವೃತಾಃ ಕ್ಷಲಮಯಾ ಯಸ್ಯಾಃ ಕೃತೇ ಸಾಂಪ್ರತಂ ನಿವಾರಾಜ್ಜಲಿನಾಪಿ ಕೇವಲಮಹೋ ಸೇಯಂ ಕೃತಾರ್ಥಾ ತನುಃ" |

ಭೃತಿಮತ್ ಧೃತಿಮತ್ (ಪುಂ) 1. ರೈವತ ಮನುವಿನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. 2. ಹದಿಮೂರನೆಯ ಮನ್ವಂತರದ ಸಪ್ತರ್ಷಿಗಳ ಲ್ಲೊಬ್ಬ. (ವಿಂ) 3. ಧೈರ್ಯವುಳ್ಳ, ಧೈರ್ಯಶಾಲಿಯಾದ. ಭೃತಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ - "ಮತುಃ" (4-2-98). 4. ತುಷ್ಟಿ ಯುಳ್ಳ, ತೃಪ್ತಿಯುಳ್ಳ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ತೃಪ್" (4-1-6). -ಮತೀ - ಮತೀ. "ನಯತಿ ಸಂತತಮುತ್ಸುಕತಾಮಯಂ ಭೃತಿಮತೀ-ರೂಪಕಾಂತಮಪಿ ಸ್ತ್ರೀಯಃ" ಕಿರಾಂ 4-19.

ಭೃತ್ವನ್ ಧೃತ್ವನ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಭೃ (ಧಾರಣೆ) "ವನಿಃ" (ತಂ 4-113). 2. ಗಗನ, ಆಕಾಶ. 3. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. 4. ಧರ್ಮ. 5. ವಿಪ್ರ. (ವಿಂ) 6. ಜಾಣ, ಬುದ್ಧಿವಂತ. 7. ಧರಿಸಿರುವ, ಹೊತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್



"ಙೀಪ್" (೪-೧-೩) | ರಶ್ಮಾಂತಾದೇಶಃ | ಧ್ವನಿರೀ. 8. ಭೂಮಿ.

ನಿಘಟಾ - ಪ್ರಾಗಲ್ಮ್ಯ (ಸ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ) | ಧ್ವನಿರೀತಿ |

ದಧಿಪ್ | ಧಿಪಿತಾ | ಧಿಪಿಷ್ಯತಿ | ಧ್ವನಿರೀತಿ | ಅಧ್ವನಿರೀತಿ |

1. ತಿರಸ್ಕಾರದಿಂದ ನೋಡು. 2. ಧೈರ್ಯದಿಂದಿರು.

ಭಾವೇ:-ಧ್ವನಿರೀತಿ | ದಧಿಪ್ | ಧಿಪಿತಾ | ಧಿಪಿಷ್ಯತಿ | ಧ್ವನಿರೀತಿ | ಅಧ್ವನಿರೀತಿ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಯು:-ಧಿಪಿತವ್ಯಃ | ಧಿಪಿಣೀಯಃ | ಧ್ವನಿರೀತಿ | ಧ್ವನಿರೀತಿ | ಧ್ವನಿರೀತಿ | ಧ್ವನಿರೀತಿ | ಧಿಪಿತವಾನ್, -ವತಿ | ಧಿಪಿತಃ | ಧಿಪಿತವಾನ್, -ವತಿ | ಧಿಪಿತುಮ್ | ಧ್ವನಿರೀತಿ | ಧಿಪಿತುಮ್ | ಧಿಪಿಣೀಯಮ್ | ಧಿಪಿತವಾನ್ |

ಧ್ವನಿರೀತಿ (ಧ್ವಂ) 1. ನಾಯಕರಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. ಧ್ವನಿರೀತಿ ಸ್ವ - ನಿಘಟಾ (ಪ್ರಾಗಲ್ಮ್ಯ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೩೨) |

ಧೀರೋದಾತ್ತ ಧೀರೋದ್ಧತ ಧೀರಲಲಿತ ಮತ್ತು ಧೀರ ಶಾಂತರೇಖ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ನಾಯಕರೂ ದಕ್ಷಿಣ ಧ್ವನಿರೀತಿ ಅನುಕೂಲ ಮತ್ತು ಶರೀರೇಖ ನಾಲ್ಕು ಭೇದಗಳಿಂದ ಹದಿನಾರು ವಿಧವಾಗುವರು. "ಋಷಿರ್ದಕ್ಷಿಣಧ್ವನಿರೀತಿಗುಣ-ಶತರೂಪಿಮಿಸ್ತು ಷೋಡಶಾ" ಸಾಂ ೬೦ ೩-೩೫ | ಧ್ವನಿರೀತಿ ನಾಯಕನ ಲಕ್ಷಣ:-ಪರಸ್ಪರಸಂಬಂಧ ಮೊದಲಾದ ಅಪರಾಧ ಮಾಡಿದ್ದರೂ ಸ್ವಲ್ಪವೂ ಭಯವಿಲ್ಲದವನೂ ನಾಯಕಿಯ ಶರ್ಜನವಾಕ್ಯಗಳಿಂದಲೂ ಕಿಂಚಿತ್ತೂ ಲಜ್ಜೆಯುಂಟಾಗದವನೂ ಮತ್ತು ತನ್ನ ದೋಷವನ್ನು ಎತ್ತಿ ತೋರಿಸಿದರೂ ಅಪಲಾಪದಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಲಕ್ಷಣವುಳ್ಳವನೂ ಧ್ವನಿರೀತಿ ನಾಯಕ. "ಕೃತಾಗಾ ಅಪಿ ನಿಃಶಕ್ತ-ಸ್ತಜಿತೋಽಪಿ ನ ಲಜ್ಜಿತಃ | ದೃಷ್ಟದೋಷೋಽಪಿ ಮಿಥ್ಯಾ ವಾಕ್ ಕಥಿತೋ ದೃಷ್ಟನಾಯಕಃ" ಸಾಂ ೬೦ ೩-೩೬ | 2. ವಿಳಂಬ (ವೈವಸ್ವತ) ಮನುವಿನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಸಪ್ತಮೋ ವತಮಾನೋ ಯಸ್ತದಪತ್ಯಾನಿ ಮೇ ಶೃಣು | ಇಕ್ಷ್ವಾಕುರ್ಮಗಶ್ಚೈವ ದೃಷ್ಟಃ ಶರ್ಯಾತಿರೇವ ಚ" ಭಾಗಂ ೮-೧೩-೨ | (ವಿಂ) 3. ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದ, ನಾಚಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. 4. ಅವಿನೀತ. 5. ಧೈರ್ಯಶಾಲಿ. "ದೃಷ್ಟಃ ಪಾಶ್ವೇ ಭವತಿ ಚ ವಸನ್ ದೂರತೋಽಪ್ಯಪ್ರಗಲ್ಭಃ" ಭರ್ತಂ ೧-೪೩ | 6. ದಯೆಯಿಲ್ಲದ, ಕನಿಕರವಿಲ್ಲದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಛಾ -ಛಾ. 7. ಅಸಭ್ಯ ಹೆಗಸು, ಸ್ವರೀಣ.

ಧ್ವನಿರೀತಿ (ಧ್ವಂ) 1. ಧ್ವನಿರೀತಿ ಮಗ. "ಧ್ವನಿರೀತಿ ಸುತಸ್ತಸ್ಯ ಧ್ವನಿರೀತಿ ತಸ್ಯುತಃ" ಹಿರಿವಂ |

2. ಶಿಶುಪಾಲನ ಮಗ. "ಧ್ವನಿರೀತಿಶ್ಚೇಕಿತಾನಃ ಕಾಶಿ ರಾಜಶ್ಚ ವೀರವಾನ್" ಗೀತಾ ೧-೫ | ಈತನು ಶಿಶುಪಾಲನ ಸಂಹಾರಾನಂತರ ಶುಕ್ರಮತಿಯನ್ನು ಸೇರಿ ಭಾರತಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಪಾಂಡವರ ಕಡೆ ಸೇರಿಕೊಂಡನು. "ಧ್ವನಿರೀತಿಃ ಸ್ವಸಾರಂ ಚ ಸಮಾಧಾಯಾಥ ಚೇದಿರಾಡ್ | ಜಗಾಮ ಪಾಂಡವಾನ್, ದೃಷ್ಟವಾ

ರಮ್ಯಾಂ ಶುಕ್ತಿಮತೀಂ ಪುರೀಮ್" ಭಾಂ ವನಂ ೨೨-೫೦ | 3. ಕೆಂಕಯ ದೇಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. "ಕೆಂಕಯೋ ದೃಷ್ಟಕೇತುಶ್ಚ ಶ್ರುತಕೀರ್ತಿ-ಮವಿಂದತ | ಸಂತರ್ದನಾದವಸ್ತಸ್ಯ ಪಶ್ಚಾಸನ್ ಕೆಂಕಯಃ ಸುತಾಃ" ಭಾಗಂ ೯-೨೪-೩೮ |

ಧ್ವನಿರೀತಿ (ಧ್ವಂ) ದ್ರುಪದರಾಜನ ಮಗ. [ಧ್ವನಿರೀತಿ ಮನು ಯಜ್ಞದ ಅಗ್ನಿಕುಂಡದಿಂದ ದ್ರೌಪದಿಯು ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಯ ಅಂಶದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದನು. "ತಥೈವ ದೃಷ್ಟಕೇತುಃ ಸಾಕ್ಷಾದಗ್ನಿಸಮದ್ಯುತಿಃ | ವೈತಾನೇ ಕರ್ಮಣಿ ತತೇ ಪಾವಕಾತ್ಸಮಜಾಯತ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೪-೧೫೦ | ಈತನು ಬಹಳ ಧೈರ್ಯಶಾಲಿಯೂ ಒಲಶಾಲಿಯೂ ಆದುದರಿಂದಲೂ ಕವಚಕುಂಡಲಾದಿಗಳೊಡನೆಯೂ ಶೌರ್ಯೋತ್ಸಾಹಗಳಿಂದಲೂ ಹುಟ್ಟಿದವನಾದುದರಿಂದಲೂ ಈತನಿಗೆ ಈ ಹೆಸರಾಯಿತು. "ಧ್ವನಿರೀತಿಪ್ರಭುತ್ವಾತ್ ದೃಷ್ಟಕೇತುಃ ಸಮಜಾಯತ | ಧ್ವನಿರೀತಿಃ ಕುಮಾರೋಽಯಂ ದ್ವಪದಸ್ಯ ಭವತಿವಿತಿ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೪೯-೩೨ | ಧ್ವನಿರೀತಿ ಮಗನಿಗೆ ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರಲ್ಲಿ ಅಸ್ತ್ರವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ನಡೆಯಿತು. ದ್ರೌಪದೀಸ್ವಯಂವರವಾದ ಬಳಿಕ ಪಾಂಡವರು ದ್ರೌಪದಿಯನ್ನು ಕುಂಬಾರನ ಮನೆಗೆ ಕರೆದೊಯ್ದರು ಇವನು ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಹೋಗಿ ಅವರು ಪಾಂಡವರೆಂಬುದನ್ನು ತಿಳಿದನು. ಇವನ ಪರಾಕ್ರಮಕ್ಕೆ ಮೆಚ್ಚಿದ ಪಾಂಡವರು ಇವನನ್ನು ತಮ್ಮ ಸೇನಾಪತಿಯಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡರು. ಮೊದಲನೆಯ ದಿನದ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಪಾಂಡವರ ಸೈನ್ಯವನ್ನು ಕ್ರೌಂಚ ಪಕ್ಷಿಯ ರೂಪದಲ್ಲಿ ಆರನೆಯ ದಿನದ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಮಂಕರಾಕಾರವಾಗಿಯೂ ಏರ್ಪಡಿಸಿದ್ದನು. ಹದಿನೈದನೆಯ ದಿನದ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರ ಶಿರಸ್ಸನ್ನು ಕಡಿದನು. ಹದಿನೆಂಟನೆಯ ದಿನದ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ದುರ್ಯೋಧನನನ್ನು ಸೋಲಿಸಿ ಒಡಿಸಿದನು. ಕೊನೆಗೆ ಪಿತೃವಧದಿಂದ ಕುಪಿತನಾದ ಅಶ್ವತ್ಥಾಮನಿಂದ ಹತನಾದನು.]

ಧ್ವನಿರೀತಿ (ಧ್ವಂ) ಒಬ್ಬ ದೊರೆ.

ಧ್ವನಿರೀತಿ (ಧ್ವಂ) 1. ಹಿರಣ್ಯಾಕ್ಷನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಹಿರಣ್ಯ-ಕಶಿಪುಶ್ಚಾತುಃ ಸಂಪರೇತಸ್ಯ ದ್ರುಃಖಿತಃ | ಶಕ್ರುನಿ ಶಮ್ಬರಂ ದೃಷ್ಟಿ ಭೂತಸಂತಾಪನಂ ವೃಕಮ್" ಭಾಗಂ ೭-೨-೧೮ | 2. ಧೈರ್ಯದಿಟ್ಟತನ. ನಿಘಟಾ (ಪ್ರಾಗಲ್ಮ್ಯ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) |

ಧ್ವನಿರೀತಿ (ಧ್ವಂ) 1. ಪ್ರಗಲ್ಭ, ಧೈರ್ಯಶಾಲಿ. ನಿಘಟಾ (ಪ್ರಾಗಲ್ಮ್ಯ) "ನಜಿಙ್" (೩-೨-೧೭೨) | 2. ಅವಿನೀತ, ಅವಿಧೇಯ. 3. ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದವನು.

ಧ್ವನಿರೀತಿ (ಧ್ವಂ) ಕಿರಣ. ನಿಘಟಾ (ಪ್ರಾಗಲ್ಮ್ಯ) "ನಿಃ" ಬಾಹ್ಯಂ |



ಧೃಣ್ಣು ಧೃಷ್ಣು (ಪುಂ) 1. ವೈವಸ್ವತಮನುವಿನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. 2. ಸಾವರ್ಣಮನುವಿನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. (ವಿಂ) 3. ಧೃಯ್ ಶಾಲಿ. 4. ಅವಿನೀತ, ಅವಿಧೇಯ. 5. ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದವನು. ತ್ರಿ ಧೃಷಾ (ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯ) "ಕನು:" (3-2-140)।

ಧೃಷ್ಯ ಧೃಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಆಕ್ರಮಿಸಲು ಶಕ್ತನಾದ, ಮೇಲೆ ಬೀಳಲು ಶಕ್ತನಾದ. ತ್ರಿ ಧೃಷಾ (ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯ) "ಕಯ್" (3-1-110)। "ಅಧೃಷ್ಯಾಭಿಗಮ್ಯಶ್ಚ ಪಾದೋರನ್ವೇರಿವಾಣವ:" ರಘುಂ 1-16।

ಧೇ - ಪಾನೇ (ಮಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ)। ಧಯತಿ। ದಧೌ ದಧತು: ದಧು:। ಧಾತಾ। ಧಾಸ್ಯತಿ। ಧಯತು। ಅಧಯತ್। ಧಯೇತ್। ಧಯಾತ್। ಅದಧತ್, ಅಧಾತ್, ಅಧಾಸೀತ್। ಕುಡಿ, ಬೀಜ, ನೆಕ್ಕು, ಹೀರು. "ಅಧಾಢಸಾಮಧಾಸೀಚ್ಚ ಧಿಧಿರಂ ವನವಾಸಿನಾಮ್" ಮೃತ್ಯುಂ 14-21।

ಕರ್ಮಣಿ: - ಧೀಯತೆ। ದಧೆ। ಧಾಯಿತಾ, ಧಾತಾ। ಧಾಯಿಷ್ಯತೆ, ಧಾಸ್ಯತೆ। ಧೀಯತಾಮ್। ಅಧೀಯತ। ಧೀಯತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ: - ಧಾಪಯತಿ, -ತೆ। ಧಾಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೆ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಧಾಪಯಿತಾ। ಧಾಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೆ। ಧಾಪಯತು, -ತಾಮ್। ಅಧಾಪಯತ್, -ತ।

ಘ್ಯಂತಾಸ್ ಕರ್ಮಣಿ: - ಧಾಪ್ಯತೆ। ಧಾಪಯಾಂ ಚಕ್ರೆ, -ಬಭೂವೆ, -ಆಸೆ। ಧಾಪಯಿತಾ, ಧಾಪಿತಾ। ಧಾಪಯಿಷ್ಯತೆ, ಧಾಪಿಷ್ಯತೆ। ಧಾಪ್ಯತಾಮ್। ಅಧಾಪ್ಯತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ: - ಧಿತ್ಸತಿ। ಧಿತ್ಸಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಧಿತ್ಸಿತಾ। ಧಿತ್ಸಿಷ್ಯತಿ। ಧಿತ್ಸತು। ಅಧಿತ್ಸತ್। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು: - ಧಾತವ್ಯಮ್। ಧಾನೀಯಮ್। ಧೇಯಮ್। ಧೀತಮ್। ಧೀತವಾನ್, -ವತೀ। ಧಯನ್, -ಂತೀ। ಧಾತುಮ್। ಧೀತಮ್। ಧಯನಮ್। ಧೀತ್ವಾ। ಪ್ರಧಾಯ।

ಘ್ಯಂತಾತ್ ಕೃತ್ಸು: - ಧಾಪಯಿತವ್ಯ:। ಧಾಪನೀಯ:। ಧಾಪ್ಯ:। ಧಾಪಿತ:। ಧಾಪಿತವಾನ್, -ವತೀ। ಧಾಪಯನ್, -ಂತೀ। ಧಾಪಯಮಾನ:। ಧಾಪಿತಮ್। ಧಾಪನಮ್। ಧಾಪಯಿತ್ವಾ। ಪ್ರಧಾಪ್ಯ।

ಧೇನ ಧೇನ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಧೇ (ಪಾನೇ) "ನ:" ಇಕಾರಶ್ಚ (3ಂ 3-11)। 2. ನದಿ, ಗಂಡು ಹೊಳೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಾ -ನಾ. 3. ನದಿ, ಹೊಳೆ. 4. ಭಾಷಣ, ಮಾತು. "ಧೇನ: ಸಮುದ್ರೇ ಧೇನಾ ತು ನದಿ ಸ್ಯಾತ್ ಭಾರತೀಭಿಧಿ" ಹೇಮಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನೀ -ನೀ. 5. ಧನಿಯ.

ಧೇನು ಧೇನು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಕಳು, ಹಸು. ಧೀಯತೆ ಪೀಯತೆ ವರ್ತು: - ಧೇ (ಪಾನೇ) "ನು:" (3ಂ 3-34)। "ತದಂತರೇ

ಸಾವಿರರಾಜ ಧೇನುರ್ದಿನಕ್ಷಪಾಮಧ್ಯಗತೇವ ಸಂಧ್ಯಾ" ರಘುಂ 2-20। 2. ಹೊಸದಾಗಿ ಕರುಹಾಡಿದ ಹಸು. "ಧೇನು: ಸ್ಯಾನಿವ-ಸುತಿಕಾ" ಅಮಂ।

ಧೇನುಕ ಧೇನುಕ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. ಧೇನುರಿವ "ಕನ್" (4-3-96)। [ಈ ರಾಕ್ಷಸನು ಕತ್ತೆಯ ರೂಪದಿಂದ ತನ್ನ ಪರಿವಾರದೊಡನೆ ಬೃಂದಾವನದ ಹತ್ತಿರದ ತಾಳವನದಲ್ಲಿರುತ್ತ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದವರೆಲ್ಲರನ್ನೂ ಹೊಡೆದು ತಿನ್ನುತ್ತಿದ್ದನು. ಒಂದು ದಿನ ಗೋಪಾಲಕರು ತಾಳ ಫಲವನ್ನು ತಿನ್ನುಲು ಅವೇಕ್ಷಿಸಿದರು. ಬಲರಾಮನು ಮರದಿಂದ ಫಲಗಳನ್ನು ಉದುರಿಸಿದಾಗ ಅವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಬಂದ ಗೋಪಾಲಕರನ್ನು ಈ ಅಸುರನು ಬೀಡಿಸಲು ಬಂದು ಬಲರಾಮನಿಂದ ಹತನಾದನು] ಭಾಗಂ 10-14।

2. ಒಂದು ವಿಧ ರತಿಬಾಧ. "ಸುಪ್ತಾಂ ಸ್ತ್ರಿಯಂ ಸಮಾಲಿಂಗ್ಯ ಸ್ವಯಂ ಸುಪ್ತೋ ರಮೇತ್ ಪುನ:। ಲಘು ಲಿಙ್ಗಂ ಚಾಲಯೇದ್ವಿ ಬಂಧೋಽಯಂ ಧೇನುಕ: ಸ್ಮೃತ:" (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ -ಕಾ. 3. ಹೆಣ್ಣು ಆನೆ 4. ಹಸು. 5. ಧನಿಯ, ಲೂಟುಂಬರಿ ಬೀಜ. "ಸ್ಯಾಢೇನುಕಾ ಕರಿಷ್ಯಾ ಧೇನಾವಪಿ ನಾ ತು ದಾನವವಿಶೇಷೇ" ಮೇದಿಂ।

ಧೇನುಕಪ್ರಮಥನ ಧೇನುಕಪ್ರಮಥನ, -ಸುದನ -ಸೂದನ (ಪುಂ) ಧೇನುಕಸುರನನ್ನು ಕೊಂದ ಬಲರಾಮ. ಧೇನುಕಂ ಪ್ರಮಥನಾತಿ ಸುದಯತಿ ವಾ -ಮಥ (ವಿಲೋಡನೆ) ಷೂದ (ಕ್ಷರಣ) ವಾ "ತ್ಯು:" (3-1-134)। "ಆತ್ಮನ: ಸದೃಶಮಾದ್ರಿಯತೆಂಕಂ ಧೇನುಕಪ್ರಮಥನೇನ ನಿಯುಧಮ್" ಪಾದಂ 21-48।

ಧೇನುಷ್ಯಾ ಧೇನುಷ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಾಲ ತೀರುವವರೆಗೂ ಹಾಲು ಕರೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಸಾಲ ಕೊಟ್ಟವನ ವಶದಲ್ಲಿರುವ ಹಸು. ಧೇನು "ಯ:" ಷುಗಾಗಮಶ್ಚ ನಿಪಾಂ (4-4-69)।

ಧೇಯ ಧೇಯ (ವಿಂ) 1. ಧರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಪೋಷಿಸಲ್ಪಡುವ, ಕಾಪಾಡಲ್ಪಡುವ. ಡು ಧಾಜ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಯತ್" (3-1-99)। ಇತ್ವಮ್ (6-4-64)। 3. ಧರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 4. ಪೋಷಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 5. ಕುಡಿಯಲ್ಪಡುವ. 6. ಕುಡಿಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಧೇ (ಪಾನೇ) "ಯತ್" (3-1-99)। 7. ಮಾಡಬೇಕಾದ. "ಅವ್ಯಾಕುಲಂ ಪ್ರಕೃತಮುತ್ತರಧೇಯಕರ್ಮಧಾರಾ: ಪ್ರಸಾಧಯಿತುಮವ್ಯತಿ-ಕೀರ್ಣರೂಪಾ:" ಮಾಧಂ 4-60। (ನಂ) 8. ಧಾರಣ, ಧರಿಸುವುದು. 9. ಪೋಷಿಸುವುದು. 10. ಕುಡಿಯುವುದು. ಧೇ ಭಾವೇ "ಯತ್"।

ಧೇನವ ಧೇನವ (ಪುಂ) ಹಸುವಿನ ಕರ. ಧೇನೋಪಪತ್ತಯಮ್ "ಅನ್" (4-1-104)।



**ಧನುಕ ಧೈನುಕ (ನಂ)** ಹಸುಗಳ ಗುಂಪು, ಆಳುಗಳ ಹಿಂಡು.

ಧನುನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಠಕ್" (೪-೨-೪೭) ।

**ಧೈಯ ಧೈರ್ಯ (ನಂ)** 1. ಕೆಚ್ಚು, ಗುಂಡಿಗೆ, ಹೆದರದಿರುವಿಕೆ.

ಧೀರಸ್ಯ ಭಾವ: "ಘ್ರ" (೪-೧-೧೨೪) । "ಅವಧೀಯಂ

ಧೈಯಕಲಿತಾ ದಯಿತಂ ವಿದಧೇ ವಿರೋಧಮಥ ತೇನ ಸಹ" ಮಾಘಂ

೧-೫೯ । 2. ಚಿತ್ತವು ವಿಚಾರ ಹೊಂದದಿರುವುದು, ವಿಚಾರಕ್ಕೆ

ಕಾರಣವಿದ್ದರೂ ಮನಸ್ಸು ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವುದು. "ಮನಸೋ

ನಿರ್ವಿಕಾರತ್ವಂ ಧೈಯಂ ಸತ್ಸರ್ವಪಿ ಹೇತುಃ" । "ನ ಜಗಾಮ

ವಿಸ್ಮಯವಶಂ ವಶಿತಾಂ ನ ನಿಹಂತಿ ಧೈಯಮನುಭಾವಗುಣಃ" ಕಿರಾಂ

೬-೨೮ । 3. ನಾಯಕನ ಎಂಟು ವಿಧ ಸಾತ್ವಿಕ ಗುಣಗಳ

ಲ್ಲೊಂದು, ಎಷ್ಟೇ ವಿಘ್ನಗಳೊಡಗಿದರೂ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ

ದೂರವಾಗದಿರುವಿಕೆ. "ವ್ಯವಸಾಯಾದಚಲನಂ ಧೈಯಂ ವಿಧೇ

ಮಹತ್ಯಪಿ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೫೩ । "ಆತ್ಮೇಶ್ವರಾಣಾಂ ನ ಹಿ

ಜಾತು ವಿಘ್ನಾಃ ಸಮಾಧಿಭೇದಪ್ರಭವೋ ಭವಂತಿ" ಕುಮಾಂ ೩-೪೦ ।

4. ನಾಯಕನಾಯಕರ ಅಂಗಜ ಮೊದಲಾದ ಅಲಂಕಾರ

ಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಈ ಗುಣವು ಯತ್ನವಿಲ್ಲದೆ ತಾನಾಗಿಯೇ

ಉಂಟಾಗುವುದು. "ಔದಾರ್ಯಂ ಧೈಯಮಿತ್ಯೇತೇ ಸಪ್ತೇವ ಸ್ಪುರ-

ಯತ್ನಜಾಃ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೯೦ । ಆತ್ಮಶ್ಲಾಘನೆಯಿಲ್ಲದೆ ಸ್ಥಿರ

ವಾದ ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿಯು ಧೈರ್ಯವೆನಿಸುವುದು. "ಮುಕ್ತಾತ್ಮ-

ಶ್ಲಾಘನಾ ಧೈಯಂ ಮನೋವೃತ್ತಿರವಶಲಾ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೯೮ ।

**ಧೇವತ ಧೈವತ (ಪುಂ)** ಸಂಗೀತದ ಸಪ್ತ ಸ್ವರಗಳಲ್ಲಿ ಅರಣೆಯದು.

ಧೀಮತಾಮಯಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦) । ಪೃಷೋಂ (೬-೩-೧೦೯)

ನಾಭಿಯು (ಹೊಕ್ಕಳನ) ಕೆಳಭಾಗವನ್ನು ಮುಟ್ಟಿ ಪುನಃ

ಮೇಲುಮುಖವಾಗಿ ಕಂಠದವರೆಗೂ ಮೇಗವಾಗಿ ಓಡು

ತ್ತಿರುವಂತೆ ಕಾಣುವ ಸ್ವರವು ಧೈವತವು. "ಗತ್ವಾ

ನಾಭೇರಧೋಭಾಗಂ ವಸ್ತಿ ಪ್ರಾಪ್ಯೋರ್ಧ್ವಗಃ ಪುನಃ । ಧಾವನ್ನಿವ ಚ ಯೋ

ಯಾತಿ ಕಂಠಂ ದೇಶಂ ಸ ಧೇವತಃ" ಸಂಧಾಂ । ಈ ಸ್ವರವು

ಕುದುರೆಯು ಕೆನೆಯುವಂತಿರುವುದು. "ಅಶ್ವಸ್ತು ಧೇವತಂ

ರೌತಿ" ।

**ಧೇವರ ಧೈವರ (ವಿಂ)** ಬಿಸ್ತರವನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಧೇವರಸ್ಯ

ಇದಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦) ।

**ಧೇವರಿ ಧೈವರಿ (ಪುಂ)** ಧೇವರನ ಮಗ, ಬಿಸ್ತರವನ ಮಗ.

ಧೇವರಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಇಙ್" (೪-೧-೯೫) ।

**ಧೋಕ್ - ಗತಿಚಾತುರ್ಯ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ)** । ಧೋರತಿ ।

ದುಧೋರ । ಧೋರಿತಾ । ಧೋರಿಷ್ಯತಿ । ಧೋರತು । ಅಧೋರತ್ ।

ಮೇಗವಾಗಿನಡೆ, ಚುರುಕಾಗಿನಡೆ. ಚಟುವಟಿಕೆಯಿಂದ ನಡೆ.

ಭಾವೇ:—ಧೋರತೇ । ದುಧೋರೆ । ಧೋರಿತಾ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:—ಧೋರಿತವ್ಯಮ್ । ಧೋರಣೀಯಮ್ । ಧೋರಯಮ್ । ಧೋರಿತಃ ।

ಧೋರಿತವಾನ್, -ವತಿ । ಧೋರಮ್, -ಂತಿ । ಧೋರಿತಮ್ ।

ಧೋರಣಮ್ ।

**ಧೋರಣ ಧೋರಣ (ನಂ)** 1. ವಾಹನ, ಅನೆ ಕುದುರೆ ರಥ

ಮೊದಲಾದುವು. ಧೋರತಿ ಗಚ್ಛತೀನೇನ — ಧೋಕ್ (ಗತಿ

ಚಾತುರ್ಯ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭) । "ಚಕ್ರಕುರಂ

ಧೋರಣಂ ಯಾನಮಾತ್ರೇ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 2. ಗತಿ, ಗಮನ.

3. ಚುರುಕಾಗಿ ಹೋಗುವುದು, ಚಟುವಟಿಕೆಯಿಂದ ನಡೆ

ಯುವುದು. 4. ಕುದುರೆಯ ನಡಗುಲು ಒಂದು ಭೇದ.

"ತತ್ರ ಧೋರಿತಕಂ ಧೋರಣಂ ಧೋರಿತಂ ಚ ತತ್" ಅಭಿಂ

ವಿಂ ।

**ಧೋರಿಣಿ (ಙೀ) ಧೋರಣಿ (ಙೀ) (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನ

ವಾಗಿರುವುದು, ಎಡೆಬಿಡದಿರುವುದು, ಪರಂಪರೆಯಾಗಿರು

ವುದು. ಧೋಕ್ (ಗತೌ) "ಅನಿ:" ಬಾಹುಂ । ವಾ "ಙೀಘ್"

(೪-೧-೪೫) । "ಯೈರ್ಮಾಕಂದವನೇ ಮನೋಜಪವನೇ ಸದ್ಭ:

ಸ್ವಲ್ಪಮಾಧುರೀಧಾರಾಧೋರಿಣಿಧೌತಧಾಮನಿ ಧರಾಧೀಶತ್ವ-

ಮಾಲಂಬತೇ" ಝಂ ।

**ಧೋರಣೀಯ ಧೋರಣೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಮೇಗವಾಗಿ ನಡೆ

ಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ಚುರುಕಾಗಿ ನಡೆಯಲು ಶಕ್ತ

ವಾದ. ಧೋಕ್ (ಗತಿಚಾತುರ್ಯ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) ।

"ತವ್ಯ:" । ಧೋರಿತವ್ಯಃ ಧೋರಿತವ್ಯಃ ।

**ಧೋರಿತ ಧೋರಿತ (ನಂ)** 1. ಕುದುರೆಯು ಒಂದು ವಿಧ

ನಡಗೆ. ಧೋಕ್ (ಗತಿಚಾತುರ್ಯ) "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) ।

2. ಗತಿ, ಗಮನ, ನಡಗೆ. (ವಿಂ) 3. ಮೇಗವಾಗಿ ನಡೆದ.

ಧೋಕ್ ಕರಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) ।

**ಧೋರಿತವತ್ ಧೋರಿತವತ್ (ವಿಂ)** ಚುರುಕಾಗಿ ಓಡಿದ,

ಚಟುವಟಿಕೆಯಿಂದ ನಡೆದ, ಮೇಗವಾಗಿ ಓಡಿದ. ಧೋಕ್

(ಗತಿಚಾತುರ್ಯ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨) ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್

'ಙೀಘ್' (೪-೧-೬) । -ವತಿ -ವತಿ.

**ಧೌತ ಧೌತ (ನಂ)** 1. ತೊಳೆಯುವುದು. 2. ಶುದ್ಧ ಮಾಡು

ವುದು. ಧಾವು (ಗತಿಶುದ್ಧಯೋ) ಭಾವೇ 'ಕ್ತ:' (೩-೩-೧೧೪) ।

3. ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ. (ವಿಂ) 4. ತೊಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಧಾವು

ಕರ್ಮಂ 'ಕ್ತ:' (೩-೨-೧೦೨) । "ಧೌತೇಽಪಿ ಕೀರ್ತಿಧಾರಾಭಿ-

ಶ್ರೀತೇ ಚಾರುಣಿ ದ್ವಿಷ:" ನೈಷಂ ೨೦-೧೩೬ । 5. ಶುದ್ಧ

ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ತಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಧೌತಕ ಧೌತಕಟ (ಪುಂ)** ಬಟ್ಟೆಯ ಚೀಲ, ಕೈಚೀಲ.

**ಧೌತಕೌಶೇಯ ಧೌತಕೌಶೇಯ (ನಂ)** ತೊಳೆದು ಶುದ್ಧ

ಮಾಡಿದ ರೇಷ್ಮೆ ವಸ್ತ್ರ. ಧೌತಂ ಚ ತತ್ ಕೌಶೇಯಂ ಚ ।

"ಪತ್ರೋಽನ್ಯ ಧೌತಕೌಶೇಯಮ್" ಅಮಂ ।

**ಧೌತಶಿಲ ಧೌತಶಿಲ (ನಂ)** ಸ್ಫಟಿಕ. ಧೌತಾ ಶಿಲಾ ಯಸ್ಯ ।

"ಭಾಸುರಃ ಸ್ಫಾಟಿಕೋಪಲಃ । ಶಾಲಿಪಿಷ್ಠಂ ಧೌತಶಿಲಮ್" ।

ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।



ಬೌತಾತ್ಮನ್ ಧೌತಾತ್ಮನ್ (ವಿಂ) ಕುದ್ಡವಾದ ಹೃದಯ ಪುಳುವನು.

ಧೌತಿ ಧೌತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಠಯೋಗದ ಒಂದು ಅಂಗ, ಹಠಯೋಗದ ಆರು ಕರ್ಮಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಆರು ಕರ್ಮಗಳು: (1) ಧೌತಿ, (2) ಬಸ್ತಿ, (3) ನೇತಿ, (4) ತ್ರಾಟಕಮ್, (5) ನೌಲಿಕಮ್ ಮತ್ತು (6) ಕಪಾಲಭಿತ್ತಿ: "ಧೌತಿರ್ಬಸ್ತಿಸ್ತಥಾ ನೇತಿತ್ವಾಟಕಂ ನೌಲಿಕಂ ತಥಾ | ಕಪಾಲ-ಭಾತಿಶ್ಚೈತಾನಿ ಷಡ್ಕರ್ಮಾಣಿ ಪ್ರವಕ್ಷತೇ" ಹಠಂ ೨-೨೨ | ಮೇದಸ್ಸು ಮತ್ತು ಶ್ಲೇಷ್ಮ ಅಧಿಕವಾಗಿರುವವನು ಈ ಷಡ್ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸಬೇಕು. "ಭೇದಶ್ಲೇಷ್ಮಾಧಿಕ: ಪೂರ್ವ ಷಡ್ಕರ್ಮಾಣಿ ಸಮಾಚರೆತ್" ಹಠಂ ೨-೨೧ | ಧೌತಿಕರ್ಮ: ನಾಲ್ಕು ಅಂಗುಲ ಅಗಲದ ಹದಿನೈದು ಮೊಳ ಉದ್ದದ ವಸ್ತ್ರವನ್ನು ನೆನಸಿ ಗುರುಗಳು ಹೇಳಿದಂತೆ ಕೊಂಡ ಕೊಂಡ ವಾಗಿ ನುಂಗಿ ಪುನಃ ಅದನ್ನು ಹೊರಕ್ಕೆ ತೆಗೆಯಬೇಕು. "ಚತುರङ್ಗುಲವಿಸ್ತಾರಂ ಹಸ್ತಪಂಚದಶಾಯತಮ್ | ಗುರುಪದಿಷ್ಟ-ಮಾರ್ಗೇಣ ಸಿಕ್ತಂ ವಸ್ತ್ರಂ ಶನೈರ್ಗ್ರಹೇತ್ | ಪುನಃ ಪ್ರತ್ಯಾಹರೇತ್ಚೈತತ್ ತದಿತ್ಯಂ ಧೌತಿಕರ್ಮ ತತ್" ಹಠಂ ೨-೨೪ | ಈ ಧೌತಿಕರ್ಮದಿಂದ ಕಾಸ (ಕಮ್ಮಲು) ಶ್ವಾಸ (ಉಪ್ಪುಸ) ಪ್ಲೀಹ (ಉದರ ಮಾಂಸಗ್ರಂಥಿ) ಕುಷ್ಠ ಮತ್ತು ಇಪ್ಪತ್ತು ವಿಧ ಶ್ಲೇಷ್ಮ ರೋಗಗಳೂ ವಾಸಿಯಾಗುವುವು. "ಕಾಸಶ್ವಾಸಪ್ಲೀಹಕುಷ್ಠ ಕಫರೋಗಾಶ್ಚ ವಿಶತಿ: | ಧೌತಿಕರ್ಮಪ್ರಭಾವೇನ ಪ್ರಯಾಂತ್ಯೇವ ನ ಸಂಶಯ:" ಹಠಂ ೨-೨೫ |

ಧೌಮಕ ಧೌಮಕ (ಪುಂ) ಧೂಮ ದೇಶದಲ್ಲಿರುವವನು. ಧೂಮ ತತ್ಪ್ರಧಾನೇ ದೇಶೇ ಭವ: "ಬುಜ್" (೪-೨-೧೨೭) |

ಧೌಮ್ಯ ಧೌಮ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಪಾಂಡವರ ಪುರೋಹಿತನಾದ ಒಬ್ಬ ಯುಷ್ಠಿ. ಧೂಮಸ್ಯ ಗೌತ್ರಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಯಜ್" (೪-೧-೧೦೫) | "ತತಃ ತತ್ಕೋವಕಂ ತೀರ್ಥಂ ಗತ್ವಾ ಧೌಮ್ಯಾಶ್ರಮಂ ತು ತೇ | ತಂ ವತ್ಸು: ಪಾಂಡವಾ ಧೌಮ್ಯಂ ಪೌರೋಹಿತಾಯ ಭಾರತ | ತಾನ್ ಧೌಮ್ಯ: ಪ್ರತಿಜಗ್ರಾಹ ಸರ್ವವೇದವಿದಾಂ ವರ: | ವನ್ಯೇನ ಫಲಮೂಲೇನ ಪೌರೋಹಿತೇನ ಚೈವ ಹ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೯೯-೫೯ | 2. ವ್ಯಾಘ್ರಪಾದ ಯುಷ್ಠಿಯ ಒಬ್ಬ ಮಗ, ಉಪಮನ್ಯುವಿನ ತಮ್ಮ.

ಧೌರಿತ ಧೌರಿತ (ನಂ) ಕುದುರೆಯ ನಾಗಾಲೋಟದ ಒಂದು ಭೇದ. ಧೌರಿತ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಙ್" (೫-೪-೩೮) | "ವರ್ಧಾವಿಧ್ವಾ ಧೌರಿತೇನ ಪ್ರಯಾತಾಮಶ್ವೀಯಾನಾಮುಚ್ಚಕೇಹಲಸಂತ:" ಮಾಘಂ ೧೮-೫ |

ಧೌರಿತಕ ಧೌರಿತಕ (ನಂ) ಕುದುರೆಯ ನಾಗಾಲೋಟದ ಒಂದು ಭೇದ, ಕುಕ್ಕುಲೋಟ. ಧೌಕ್ (ಗತಿಚಾತುರ್ಯ)

"ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) | ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೫-೪-೫) | "ಅಙ್" (೫-೪-೩೮) | "ಆಸ್ಕಂದಿತಂ ಧೌರಿತಕಂ ರೇಚಿತಂ ವಲಿತಂ ಪ್ಲುತಮ್ | ಗತಯೋಃ ಪञ್ಚ ಧಾರಾ:" ಅಮಂ |

ಧೌರೇಯ ಧೌರೇಯ (ವಿಂ) 1. ಭಾರವನ್ನು ಹೊರುವ ಎತ್ತು, ಕುದುರೆ ಮೊದಲಾದುವು. ಧುರಂ ವಹತಿ "ಡಕ್" (೪-೪-೭೭) | 2. ಭಾರವನ್ನು ಹೊರುವ, ಹೊಣೆಗಾರಿಕೆಯನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವ. 3. ಅಗ್ರಗಣ್ಯ, ಮುಂದಾಳು, ಯಜಮಾನ. "ಜಯ ಜಯ ಮಹಾವೀರ, ಮಹಾಧೀರಧೌರೇಯ" ರಘುಂ ಗಂ |

ಧೌರ್ತಕ ಧೌರ್ತಕ (ನಂ) 1. ಧೂರ್ತತನ, ಪುಂಡಾಟ. ಧೌರ್ತಸ್ಯ ಭಾವ: "ಬುಜ್" (೫-೧-೧೩೩) | 2. ವಂಚನೆ, ಮೋಸ. "ಘಜ್" (೫-೧-೧೨೪) | ಧೌರ್ತಮ್ ಧೌರ್ತಮ್.

ಧ್ಮಾ - ಶಬ್ದಾಗ್ನಿಸಂಯೋಗಯೋ: (ಭ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) | ಧಮತಿ | ಧಮ್ನಿ | ಧ್ಮಾತಾ | ಧ್ಮಾಸ್ಯತಿ | ಧಮತು | ಅಧಮತ್ | ಧಮೇತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಊದು. 2. ತಿದಿಯೊತ್ತಿ ಗಾಳಿಯನ್ನು ತುಂಬು. "ಮುಖೇನೈವ ಧಮೇದ್ಗ್ನಿ ಮುಖಾದಗ್ನಿ: ಪ್ರಜಾಯತೇ" |

ಕರ್ಮಣಿ: -ಧ್ಮಾಯತೇ | ಧಮೇ | ಧ್ಮಾಯಿತಾ, ಧ್ಮಾತಾ | ಧ್ಮಾಯಿಷ್ಯತೇ, ಧ್ಮಾಸ್ಯತೇ | ಧ್ಮಾಯತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಘ್ಯಂತಾತ್ ಕರ್ಮಣಿ: -ಧ್ಮಾಪಯತಿ, -ತೇ | ಧ್ಮಾಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ | ಧ್ಮಾಪಯಿತಾ | ಧ್ಮಾಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ಧ್ಮಾಪಯತು, -ತಾಮ್ | ಅಧ್ಮಾಪಯತ್ -ತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು: -ಧ್ಮಾತವ್ಯ: | ಧ್ಮಾನೀಯ: | ಆಧ್ಮಾತ: | ಆಧ್ಮಾತ-ವಾನ್ | ಧಮನ್ | ಧಮಂತಿ | ಆಧ್ಮಾತುಮ್ | ಆಧ್ಮಾತಮ್ | ಆಧ್ಮಾತಮ್ | ಧ್ಮಾತ್ವಾ | ಆಧ್ಮಾಯ |

ಧ್ಮಾ ಧ್ಮಾ (ವಿಂ) 1. ಊದುವವನು. 2. ಗಾಳಿ ತುಂಬುವವನು.

ಧ್ಮಾಕಾರ ಧ್ಮಾಕಾರ (ಪುಂ) ಕಮ್ಮಾರ, ಕಬ್ಬಿಣದ ಕೆಲಸಗಾರ. ಧ್ಮಾ ಇತಿ ಶಬ್ದಸ್ಯ ಕಾರ: |

ಧ್ಮಾತ ಧ್ಮಾತ (ವಿಂ) 1. ಊದಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಊದಿ ಉರಿಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಧ್ಮಾ (ಶಬ್ದಾಗ್ನಿಸಂಯೋಗಯೋ:) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | (ನಂ) 3. ಊದುವುದು. 4. ಊದಿ ಉರಿಯಿಸುವುದು. ಧ್ಮಾ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) |

ಧ್ಮಾತವ್ಯ ಧ್ಮಾತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಊದಲ್ಪಡುವ. 2. ಊದಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಊದಬೇಕಾದ. ಧ್ಮಾ (ಶಬ್ದಾಗ್ನಿಸಂಯೋಗಯೋ:) "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) |

ಧ್ಮಾತೃ ಧ್ಮಾತೃ (ವಿಂ) 1. ಬಾಯಿಂದ ಊದುವವನು. 2. ಬಾಯಿಂದ ಊದಿ ಬೆಂಕಿಯನ್ನು ಉರಿಯಿಸುವವನು. ಧ್ಮಾ (ಶಬ್ದಾಗ್ನಿಸಂಯೋಗಯೋ:) "ತೃತ್" (೩-೧-೧೩೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ತೃತ್" (೪-೧-೫) | ಧ್ಮಾತೃ ಧ್ಮಾತೃ.



**ಧ್ಯಾನ ಧ್ಯಾನ (ನಂ)** 1. ಬೆಂಕಿಯನ್ನು ಬೀಸಣಿಗೆಯಿಂದ ಬೀಸುವುದು. 2. ಬೆಂಕಿಯನ್ನು ಬಾಯಿಂದ ಉದುವುದು. 3. ಬಾಯಿಂದ ಉದಲ್ಪಟ್ಟ ಬೆಂಕಿಯು ವೃದ್ಧಿಯಾಗುವುದು. 4. ಬಾಯಿಂದ ಉದಿ ಗಾಳಿ ತುಂಬುವುದು. ಧ್ಮಾ (ಶಬ್ದಾಗ್ನಿಸಂಯೋಗಯೋಃ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

**ಧ್ಯಾಪನ ಧ್ಯಾಪನ (ನಂ)** 1. ಬೆಂಕಿಯನ್ನು ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವುದು, ಬೆಂಕಿಯನ್ನು ಅಧಿಕಗೊಳಿಸುವುದು. 2. ಬಾಯಿಂದ ಉದಿ ಗಾಳಿ ತುಂಬಿಸುವುದು. ಧ್ಮಾ (ಶಬ್ದಾಗ್ನಿಸಂಯೋಗಯೋಃ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

**ಧ್ಯಾಪಿತ ಧ್ಯಾಪಿತ (ವಿಂ)** 1. ಅಧಿಕಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವೃದ್ಧಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಧ್ಮಾ (ಶಬ್ದಾಗ್ನಿಸಂಯೋಗಯೋಃ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಗಾಳಿಬೀಸಿ ಉರಿಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಧ್ಯಾತ ಧ್ಯಾತ (ವಿಂ)** ಧ್ಯಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಿಂತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಧೈ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । "ತದಾತ್ಮತಾ-ಧ್ಯಾತವಾ ರತೇ ಚ ಕಾ ಚಕಾರ ವಾ ನ ಸ್ವಮನೋಭವೋದ್ಭವಮ್" ನೆಪಂ ೧-೩೦ ।

**ಧ್ಯಾತವತ್ ಧ್ಯಾತವತ್ (ವಿಂ)** ಧ್ಯಾನಮಾಡಿದವನು.

**ಧ್ಯಾತವ್ಯ ಧ್ಯಾತವ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಧ್ಯಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಚಿಂತಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಧ್ಯಾನಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. ಧೈ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬) । "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । ಧ್ಯಾನೀಯಃ ಧ್ಯಾನೀಯಃ.

**ಧ್ಯಾನ ಧ್ಯಾನ (ನಂ)** 1. ಚಿಂತನೆ, ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲೇ ಯೋಚಿಸುವುದು, ಮನನ. ಧೈ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । "ಪ್ರಾಂತೇಷು ಸಂಸಕ್ತನಮೇಕಶಾಖಂ ಧ್ಯಾನಾಸ್ಪದಂ ಭೂತಪತೇವಿವೇಶ" ಕುಮಾಂ ೩-೪೩ । 2. ಪರಮಾತ್ಮನ ಚಿಂತನೆ, ಯಾವಾಗಲೂ ಪರಬ್ರಹ್ಮನನ್ನು ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಚಿಂತಿಸುತ್ತಿರುವುದು, ಪರಮಾತ್ಮನ ವಿಷಯದ ಅನುಸಂಧಾನ. "ಶ್ರೇಯೋ ಹಿ ಜ್ಞಾನಮಭ್ಯಾಸಾತ್ ಜ್ಞಾನಾದ್ಧ್ಯಾನಂ ವಿಶಿಷ್ಯತೇ । ಧ್ಯಾನಾತ್ಕರ್ಮಫಲತ್ಯಾಗಃ ತ್ಯಾಗಾಚ್ಛಾಂತಿರನಂತರಮ್" ಗೀತಾ ೧೨-೧೨ । 3. ಮನಸ್ಸನ್ನು ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ಇಡುವುದು. "ಏತಿ ವಿಜ್ಞಾಪಿತೋ ರಾಜಾ ಧ್ಯಾನಸ್ತಿಮಿತಲೋಚನಃ" ರಘುಂ ೧-೭೩ । 4. (ಅಷ್ಟಾಂಗ) ಯೋಗದ ಎಂಟು ಅಂಗಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ತತ್ರ ಪ್ರತ್ಯಯೇಕತಾನತಾ ಧ್ಯಾನಮ್" ಪಾಂ ಯಂ ಸೂಂ ೩-೨ । "ಲಕ್ಷ್ಮೀಕಾಂತಂ ಕಮಲನಯನಂ ಯೋಗಿಭಿರ್ಧ್ಯಾನಿಗಮ್ಯ ವಂದೇ ವಿಷ್ಣುಂ ಭವಭಯಹರಂ ಸರ್ವಲೋಕೇಕನಾಥಮ್" । ಧೈಯವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಇಟ್ಟಿರುವ ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಇತರ ವಿಷಯಗಳ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದೆ ಇರುವ ಚಿತ್ತಸ್ಥೈರ್ಯವು ಧ್ಯಾನಕ್ಕೆ ಸಹಕಾರಿಯಾಗುವುದು. ಚಿತ್ತವನ್ನು ಸ್ಥಿರವಾಗಿ

ನಿಲ್ಲಿಸುವ ಅಭ್ಯಾಸವು ಧಾರಣೆಯೆನಿಸುವುದು. ಧ್ಯಾನವು ಅದರ ಮುಂದಿನ ಸಿದ್ಧಿ. "ತಸ್ಮಿನ್ ದೇಶೇ ಧೈಯಾವಲಂಬನಸ್ಯ ಪ್ರತ್ಯಯಸ್ಯ ವಿಸದೃಶಪ್ರತ್ಯಯಪ್ರಹಾಣೇನ ಪ್ರವಾಹೋ ಧ್ಯಾನಮ್" । "ತದ್ವಿಪ್ರತ್ಯಯೇಕಾಪ್ರಾಪ್ತಾ ಸಂತತಿಶ್ರಾನ್ಯನಿಃಸ್ಪೃಹಾ । ತದ್ಧ್ಯಾನಂ ಪ್ರಥಮೇರಜ್ಞಃ ಪಙ್ಚಭಿರ್ನಿಷ್ಪಾದತೇ ನೃಪ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ ೬-೭-೯೧ । ವಿಜಾತೀಯಪ್ರತ್ಯಯಾನಂತರಿಸಜಾತೀಯಪ್ರತ್ಯಯಪ್ರವಾಹೋ ಧ್ಯಾನಮ್ । 5. ಚತುರ್ಮುಖಬ್ರಹ್ಮನ ಒಂದು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಬರುವ ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷದ ಏಕಾದಶಿ.

**ಧ್ಯಾನಗಮ್ಯ ಧ್ಯಾನಗಮ್ಯ (ವಿಂ)** ಧ್ಯಾನದಿಂದ ಹೊಂದಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ.

**ಧ್ಯಾನಯೋಗ ಧ್ಯಾನಯೋಗ (ಪುಂ)** ಧ್ಯಾನರೂಪವಾದ ಯೋಗ. ಧ್ಯಾನಮೇವ ಯೋಗಃ । ಚಿತ್ತೈಕಾಗ್ರ್ಯ ರೂಪವಾದ ಧ್ಯಾನವೇ ಯೋಗವು. ಅಂದರೆ ಧೈಯವಸ್ತುವಿನ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರೋಪಾಯವು ಧ್ಯಾನಯೋಗವು. "ಧ್ಯಾನಯೋಗೇನ ಸಂಪಶ್ಯೇತ್ ಗತಿಮಸ್ಯಾಂತರಾತ್ಮನಃ" ಮನುಂ ೮-೭೩ । "ವಿವಿಕ್ತ-ಸೇವಿ ಲಘ್ವಾಶೀ ಯತವಾಕ್ಕಾಯಮಾನಸಃ । ಧ್ಯಾನಯೋಗಪರೋ ನಿದ್ರಾಂ ವೈರಾಗ್ಯಂ ಸಮುಪಾಶ್ರಿತಃ" ಗೀತಾ ೧೮-೫೨ ।

**ಧ್ಯಾನಾಭ್ಯಾಸ ಧ್ಯಾನಾಭ್ಯಾಸ (ಪುಂ)** ಧ್ಯಾನದ ಅಭ್ಯಾಸ ರೂಪವಾದ ಸಮಾಧಿ.

**ಧ್ಯಾನಿಕ ಧ್ಯಾನಿಕ (ವಿಂ)** ಧ್ಯಾನದಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಧ್ಯಾನೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (೫-೧-೭೯) । "ಧ್ಯಾನಿಕಂ ಸರ್ವಮೇವ-ತದೇತದಭಿಶಬ್ದಿತಮ್" ಮನುಂ ೬-೮೨ ।

**ಧ್ಯಾನಿನ್ ಧ್ಯಾನಿನ್ (ವಿಂ)** ಧ್ಯಾನಪರ, ಧ್ಯಾನಶೀಲ. ಧ್ಯಾನ-ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಏತಿಃ" (೫-೨-೧೧೫) ।

**ಧ್ಯಾಮ ಧ್ಯಾಮ (ನಂ)** ಧ್ಯಾನಕಾರವಾದ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹುಲ್ಲು. ಧೈ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ಮಕ್" ಬಾಹುಂ ।

**ಧ್ಯಾಯತ್ ಧ್ಯಾಯತ್ (ವಿಂ)** ಧ್ಯಾನಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಚಿಂತಿಸುತ್ತಿರುವ. ಧೈ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಧ್ಯಾಯತೋ ವಿಷಯಾನ್ ಪುನಃ ಸಂಕ್ಷೇಪಪ್ರಜಾಯತೇ" ಗೀತಾ ೨-೬೨ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಂತಿ -೨೭೦.

**ಧ್ಯಾಯಮಾನ ಧ್ಯಾಯಮಾನ (ವಿಂ)** ಧ್ಯಾನಮಾಡಲಡುತ್ತಿರುವ, ಚಿಂತಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಧೈ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

**ಧೈಯ ಧೈಯ (ವಿಂ)** 1. ಧ್ಯಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಧ್ಯಾನ ಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. 3. ಧ್ಯಾನಿಸಲು ಶಕ್ತವಾದ. 4. ಧ್ಯಾನಮಾಡಬೇಕಾದ. ಧೈ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ಯತ್" (೩-೧-೯೭) । "ವೇದಂ ಚ ವೇದಿತಾ ಚಾಸಿ ಧ್ಯಾತಾ ಧೈಯಂ ಚ ಯತ್ಪರಮ್" ಕುಮಾಂ ೨-೧೫ । "ಧೈಯಮೇಕಮಪಥೇ ಸ್ಥಿತಂ ಧೈಯಃ ಸ್ತುತ್ಯಮುತ್ತಮಮತೀತವಾಕ್ಯಮ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೬೦ ।



ಸ ದುರುಕ್ತವಿದ್ವಃ ಶ್ವಸನ್ ಕೃಷಾ ದಣ्डಹತೋ ಯಥಾಹಿಃ ।  
ಹಿತವಾ ಮಿಷಂತಂ ಪಿತರಂ ಸನ್ನವಾಚಂ ಜಗಾಮ ಮಾತುಃ ಪ್ರರುದನ್  
ಸಕಾಶಮ್ । ವಾಕ್ಯಂ ಸಪತ್ನ्याಃ ಸ್ಮರತೀ ಸರೋಜಶ್ರಿಯಾ ವೃಷಾ  
ಬಾಷ್ಟಕಲಾಮುವಾಹ । ದೀರ್ಘಂ ಶ್ವಸಂತೀ ವೃಜಿನಸ್ಯ ಪಾರಮಪश्यती  
ಬಾಲಕಮಾಹ ಬಾಲಾ । ಆತಿಷ್ಠ ತತ್ತಾತ ವಿಮತ್ಸರಸ್ತ್ವಮುಕ್ತಂ  
ಸಮಾತ್ರಾಪಿ ಯದವ್ಯಲೋಕಮ್ । ಆರಾಧಯಾಧೋಕ್ಷಜಪಾದಪದ್ಧಂ  
ಯದೀಚ್ಛಸೇಽಧ್ಯಾಸನಮುತ್ತಮೋ ಯಥಾ । ಅಥಾಭಿಷ್ಠತು एवं ವೈ  
ಸತ್ಸಂಕ್ಷಲ್ಪೇನ ಧೀಮತಾ । ಭೂತಾನುರಕ್ತೋ ಭಗವಾನ್ ಪ್ರತಿನಂದೇ-  
ಮಬ್ರवीತ್ । ವೇದಾಹಂ ತೇ ವ್ಯವಸಿತಂ ಹೃದಿ ರಾಜನ್ಯಬಾಲಕ । ತತ್  
ಪ್ರಯच्छಾಮಿ ಭದ್ರಂ ತೇ ದುರಾಪಮಪಿ ಸುತ್ರತ । ಇತ್ಯಾದಿ ಭಾಗಂ  
೪-೮, ೯, ೧೦ । “ಸಪ್ತರ್ಷಿಣಾಮಶೇಷಾಣಾಂ ಯೇ ಚ ವೈಮಾನಿಕಾಃ  
ಸುರಾಃ । सर्वेषामुपरि स्थानं तव दत्तं मया ध्रुवं” विष्णुपु० ।  
2. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಧ್ರುವತಿ ಅನಂತಪರಿಣಾಮಾದಪಿ  
ಸ್ವರೂಪಾದಪ್ರಚ್ಯಾವ್ಯೋ ಭವತಿ—ಧ್ರುವ (ಗತಿಸ್ಥಿರಯೋಃ) “ಅವ್”  
(೩-೧-೧೩೪) । “अप्रच्यव्यस्वस्वरूपात् सदा योजसौ  
ध्रुवः स्मृतः” इति निरुक्तिः । ಧ್ರುವತಿ ಸ ಎವಾರ್ವಾಚೀನಮಪಿ  
ಧ್ರುವಂ ತುಙ್ಗಪದಪ್ರದಾನೇನ ಸ್ಥಿರಯತಿ—(ಅಂತರ್ಮಾವಿತನ್ಯಥೋಽಪಿ  
ಧ್ರುವತಿಃ) । “अर्वाचीनं ध्रुवमपि तुङ्गस्थानप्रदानतः ।  
ध्रुवीचकार यस्माद्वि ध्रुवस्तस्मात् प्रकीर्तितः” इति च  
निरुक्तिः । ಯಾವಾಗಲೂ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಸ್ವಸ್ವರೂಪ  
ಜ್ಯೋತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದಲೂ ಧ್ರುವಕುಮಾರನನ್ನು  
ಶಾಶ್ವತಪದವಿಗೆ ಏರಿಸಿದುದರಿಂದಲೂ ಪರಮಾತ್ಮನು  
ಧ್ರುವನು. “स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः” । “संस्थानः  
स्थानदो ध्रुवः” वि०स० । 3. ಪರಶಿವ, ಪರಮಾತ್ಮ,  
ಪರಮೇಶ್ವರ. “धाता शक्रश्च विष्णुश्च मित्रस्त्वष्टा ध्रुवो  
घरः” भा० अनु० ४८-१०४ । 4. ಅಪ್ಪವಸುಗಳಲ್ಲಿ  
ಒಬ್ಬ. “आपो ध्रुवश्च सोमश्च धरश्चैवानिलोऽनलः ।  
प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवोऽष्टौ प्रकीर्तिताः” मत्स्यपु० ।  
5. (ಜ್ಯೋತಿಷದಲ್ಲಿ) ವಿಷ್ಣುಂಭ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು  
ಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ ಹನ್ನೆರಡನೆಯದು. “गण्डो वृद्धिर्ध्रुवश्चैव  
व्याघ्रातो हर्षणस्तथा” । 6. ಮೋಟುಮರ, ರೆಂಬೆ  
ಗಳೆಲ್ಲಾ ತರಿಯಲ್ಪಟ್ಟು ಮೋಟಾಗಿ ನಿಂತಿರುವ ಮರ.  
7. ಸರಕುಟಗ ಹಕ್ಕಿ. 8. ಕಂಬ, ಗೂಟ. 9. ವಟವೃಕ್ಷ,  
ಆಲದಮರ. 10. ನಹುಷ ಮಹಾರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.  
“यति ययाति सयातिमयातिमर्याति ध्रुवम् । नहुषो  
जनयामास षट् सुतान् प्रियवादिनः” भा० आदि०  
६९-३३ । 11. ಮೂಗಿನ ತುದಿ, ನಾಶಕೆಯ ಅಗ್ರ  
ಭಾಗ. “अरुन्धतीं ध्रुवं चैव विष्णोस्त्रीणि पदानि  
च । आसन्नमृत्युर्नो पश्येत् चतुर्थ मातृमण्डलम्” ।



“ಅರ್ಹತೀ ಭವೇಜ್ಜಿಹ್ವಾ ಧ್ರುವೋ ನಾಸಾಗ್ರಮುಚ್ಯತೇ | ವಿಷ್ಣೋಃ  
ಪದಾನಿ ಭೂಮ್ಯೇ ನೇತ್ರಯೋರ್ಮತಿಮಂಡಲಮ್” ಕಾಶೀಖಂ | 12.  
ಎಲ್ಲಾ ನಕ್ಷತ್ರಗಳಿಗೂ ಆಧಾರವಾಗಿರುವ ದಕ್ಷಿಣೋತ್ತರ  
ಧ್ರುವ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು. “ಮೇರೂಭಯತೋ ಮಧ್ಯೇ ಧ್ರುವತಾರೆ ನಮಃ  
ಸ್ಥಿತೇ | ನಿರಕ್ಷದೇಶಸಂಸ್ಥಾನಾಮುಭಯೇ ಕ್ಷಿತಿಜಾಶ್ರಯೇ” ಸೂಂ ಸಿಂ |  
13. ಅತ್ಯದ ದೇಹದ ಮೇಲಿರುವ ರೋಮದ ಸುಳಿ. ಈ  
ಸುಳಿಗಳು ವಕ್ಷಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡು. ತಲೆಯಲ್ಲಿ ಎರಡು.  
ರಂಧ್ರೋಪರಂಧ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡೆರಡು. ಹಣೆಯಲ್ಲಿ ಒಂದು.  
ನೆತ್ತಿಯ ಮೇಲೆ ಒಂದು ಈ ರೀತಿ ಹತ್ತು ವಿಧ. (ನಂ) 14.  
ಗಗನ, ಅಂತರಿಕ್ಷ. 15. ಉತ್ತರಫಲ್ಗುನೀ ಉತ್ತರಾಷಾಢ  
ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರಾ ಮತ್ತು ರೋಹಿಣೀ ಈ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು.  
ಈ ಧ್ರುವಯೋಗ ಜಾತಕ ಫಲ:- “ನರೀನತಿ ವಾಣಿ ಸದಾ  
ವಕ್ತ್ರಮಧ್ಯೇ ಚರೀಕಿತಿ ಕಾವ್ಯಂ ಬರೀಭತಿ ಬನ್ಹುನ್ | ಧ್ರುವಾಶ್ವೇ  
ಪ್ರಸುತಿಧ್ರುವಾ ತಸ್ಯ ಕೀರ್ತಿರ್ದಿಗಂತೇ ನಿತಾಂತಂ ಭವೇಚ್ಚಾಸ್ಮುತಿ:” |  
16. ವಿತರ್ಕ, ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆ. “ಧ್ರುವಂ ಸ ನೀಲೋತ್ಪಲಪತ್ರಾಚಾರಯಾ  
ಸಮಿಲಿತಾಂ ಚೇತುಮೃಷಿರ್ವ್ಯವಸ್ಯತಿ” ಶಾಕುಂ ೧-೧೬ | (ವಿಂ)  
17. ಸ್ಥಿರವಾದ, ಶಾಶ್ವತವಾದ, ಅಚಲವಾದ. “ಧ್ರುವೇಣ ಭರ್ತ್ವಾ  
ಧ್ರುವದರ್ಶನಾಯ ಪ್ರಯುಜ್ಯಮಾನಾ ಪ್ರಿಯದರ್ಶನೇನ” ಕುಮಾಂ ೭-೮೫ |  
“ಧ್ರುವಮಪಾಯೇಽಪಾದಾನಮ್” ಪಾಂಸುಂ ೧-೪-೨೪ | ಅಪಾಯೋ  
ವಿಶ್ಲೇಷಃ | ವಿಶ್ಲೇಷವೆಂದರೆ ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ  
ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಬೇರೆಯಾಗುವಿಕೆ, ಕದಲುವಿಕೆ.  
ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಚಲನವಾಗದಿರುವುದು ಧ್ರುವವೆನಿಸುವುದು.  
“ಗ್ರಾಮಾದಾಯಾತಿ” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಧ್ರುವವಾದ “ಗ್ರಾಮ” ಪದಕ್ಕೆ  
ಅಪಾದಾನಸಂಜ್ಞೆ ಬಂದು ಪಂಚಮಾ ಬಂದಿರುವುದು.  
“ಯೋ ಧ್ರುವಾಣಿ ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ ಅಧ್ರುವಾಣಿ ನಿಷೇವತೇ | ಧ್ರುವಾಣಿ  
ತಸ್ಯ ನಶ್ಯಂತಿ ಅಧ್ರುವಂ ನಷ್ಟಮೇವ ಚ” ಹಿತೋಂ | 18. ನಿಶ್ಚಿತ  
ವಾದ, ಸಂಶಯವಿಲ್ಲದೆ ಕರಗತವಾದ. 19. ನಿತ್ಯವಾದ,  
ನಿತ್ಯಸಿದ್ಧವಾದ. “ಜಾತಸ್ಯ ಹಿ ಧ್ರುವೋ ಮೃತ್ಯುಃ ಧ್ರುವಂ ಜನ್ಮ  
ಮೃತಸ್ಯ ಚ” ಗೀತಾ ೨-೨೭ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧ್ರುವಾ ಧ್ರುವಾ.  
20. ಒಂದು ಯಜ್ಞಪಾತ್ರೆ. 21. ಕುರಟಗೆ ಗಿಡ. 22. ಶಾಲಿಪರ್ಣಿಗಿಡ,  
ಮೂರಲೆ ಹೊನ್ನೆಗಿಡ. (ಅವ್ಯಂ) -ವಸ್ -ವವಸ್. 23. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ,  
ಶಾಶ್ವತವಾ. 24. ನಿಶ್ಚಯವಾಗಿ.

ಧ್ರುವಕ ಧ್ರುವಕ(ಪುಂ) 1. ಸಂಗೀತದ ಒಂದು ಅಂಗ. “ಉತ್ತಮಃ  
ಷಡ್ಪದಃ ಪ್ರೋಕ್ತೋ ಮಧ್ಯಮಃ ಪಂಚಮಃ ಸ್ಮೃತಃ | ಕನಿಷ್ಠಶ್ಚ  
ಚತುರ್ಥಿಃ ಸ್ವಾತ್ ಧ್ರುವಕೋಽಯಂ ಮಯೋದಿತಃ” ಸಂಧ್ಯಾಂ |  
2. “ಧ್ರುವ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ಧ್ರುವ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್”  
(೪-೪-೪) |

ಧ್ರುವತಾರಾ ಧ್ರುವತಾರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧ್ರುವನಕ್ಷತ್ರ.

ಧ್ರುವಮಂಡಲ ಧ್ರುವಮಂಡಲ (ನಂ) ಧ್ರುವಚಕ್ರ.

ಧ್ರುವಲೋಕ ಧ್ರುವಲೋಕ(ಪುಂ) ಸತ್ಯಲೋಕದಲ್ಲಿರುವ ಧ್ರುವ  
ನಕ್ಷತ್ರದ ನೆಲೆ, ಧ್ರುವಮಂಡಲ. ಧ್ರುವಾಧಿಷ್ಠಿತೋ ಲೋಕಃ |

ಧ್ರುವಾ ಧ್ರುವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯಜ್ಞದ ಒಂದು ಪಾತ್ರೆ.  
2. ಮೂರಲೆ ಹೊನ್ನೆಮರ. 3. ಕುರಟಗೆ ಗಿಡ.

ಧ್ರುವಾವರ್ತ ಧ್ರುವಾವರ್ತ (ಪುಂ) ಕುದುರೆಯ ಮೈಯಲ್ಲಿ  
ರುವ ರೋಮಗಳ ಸುಳಿ.

ಧ್ರುವಾ ಧ್ರುವಾ (ನಂ) 1. ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಚಲಿಸದಿರುವಿಕೆ.  
ಧ್ರುವಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಽವ್ಯ” (೪-೧-೧೨೪) | (ವಿಂ) 2.  
ಸ್ಥಿರವಾದ, ಅಚಲವಾದ. ಧ್ರುವ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಽವ್ಯ” (ವಾಂ  
೪-೧-೧೨೪) |

ಧ್ವಂಸ ಧ್ವಂಸ (ಪುಂ) 1. ನಾಶ, ಅಳಿವು. ಧ್ವಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ)  
ಭಾವೇ “ಽವ್ಯ” (೩-೩-೧೮) | 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳುವುದು.

ಧ್ವಂಸಕ ಧ್ವಂಸಕ(ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸುವ. ಧ್ವಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ)  
ಕರ್ತಂ “ಽವ್ಯ” (೩-೧-೧೩೩) |

ಧ್ವಂಸತ್ ಧ್ವಂಸತ್ (ವಿಂ) ನಾಶವಾಗುತ್ತಿರುವ, ಅಳಿದು  
ಹೋಗುತ್ತಿರುವ. ಧ್ವಂಸು(ಅವಸಂಸನೆ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬) | -ಂತೀ-೨೨೦.

ಧ್ವಂಸನ ಧ್ವಂಸನ (ನಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. ಧ್ವಂಸು  
(ಅವಸಂಸನೆ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) |  
2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳುವುದು. ಧ್ವಂಸು ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) |  
(ವಿಂ) 3. ನಾಶಪಡಿಸುವ. ಧ್ವಂಸು + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಃ”  
(೩-೧-೧೩೪) | “ಮಹೇಂದ್ರಮಿವ ಶತ್ರುಣಾಂ ಧ್ವಂಸನಂ ಶರವೃಷ್ಟಿಭಿಃ”  
ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೫೭-೩ |

ಧ್ವಂಸನೀಯ ಧ್ವಂಸನೀಯ (ವಿಂ) 1. ನಾಶವಾಗಬೇಕಾದ.  
ಧ್ವಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೧೧೬) | 2. ನಾಶ  
ಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ನಾಶಪಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.  
4. ನಾಶಪಡಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಧ್ವಂಸು + ಣಿಚ್ “ಅನೀಯರ್”  
(೩-೧-೧೧೬) | “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೧೧೬) | -ಯಿತವ್ಯಃ  
-ಯಿತವ್ಯಃ.

ಧ್ವಂಸಯತ್ ಧ್ವಂಸಯತ್ (ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಧ್ವಂಸು  
(ಅವಸಂಸನೆ) + ಣಿಚ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
“ಙೀಪ್” (೪-೧-೬) | -ಯಂತೀ -ಯಂತೀ.

ಧ್ವಂಸಿತ ಧ್ವಂಸಿತ (ವಿಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಧ್ವಂಸು  
(ಅವಸಂಸನೆ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) | (ನಂ) 2.  
ನಾಶ. ಧ್ವಂಸು ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪) | 3. ಮೃದಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ತಳ್ಳಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. “ಪ್ರಸ್ಥಿತಾಭಿರಧಿನಾಯನಿವಾಸಂ  
ಧ್ವಂಸಿತಪ್ರಿಯಸಖೀವಚನಾಭಿಃ” ಕಿರಾಂ ೧-೩೬ |



ಧ್ವಂಸಿತವತ್ ಧ್ವಂಸಿತವತ್ (ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸಿದವನು.  
ಧ್ವಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ) "ಕ್ವತು:" (೩-೨-೧೦೨)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಙೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ವತೀ -ವತಿ.

ಧ್ವಂಸಿನ್ ಧ್ವಂಸಿನ್ (ವಿಂ) 1. ನಾಶಹೊಂದುವ, ಅಳಿದು  
ಹೋಗುವ. ಧ್ವಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ) "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)।  
"ಸ್ನೇಹಾನಾಹು: ಕಿಮಪಿ ವಿರಹೇ ಧ್ವಂಸಿನಸ್ತೇ ತ್ವಭೋಗಾತ್"  
ಮೇಘಂ ೨-೪೯। 2. ನಾಶಪಡಿಸುವ. ಧ್ವಂಸು+ಣಿನ್ "ಣಿನಿ:"  
(೩-೧-೧೩೪)।

ಧ್ವಜ ಧ್ವಜ (ಪುಂ) 1. ಪತಾಕೆ, ಬಾವುಟ. ಧ್ವಜತಿ-ಧ್ವಜ  
(ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಧ್ವಜೇಷು ನಾಗೇಷು ರಥೇಷು  
ವಾಜಿಷು ಕ್ಷಣೇನ ತಸ್ಯೌ ಸುರಸೈನ್ಯಜಂ ರಜ:" ಕುಮಾರಂ ೧೪-೩೪।  
2. ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು. 3. ಖಟ್ಟಾಂಗ, ಪರಮೇಶ್ವರನ  
ಒಂದು ಆಯುಧ. 4. ಶಿಶು, ಪುರುಷರ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ.  
(ಪುಂ) 5. ಮದ್ಯವನ್ನು ತಯಾರಿಸಿ ಮಾರುವವನು. "ಧ್ವಜ:  
ಸ್ಯಾತ್ ಶೌಣ್ಡಿಕೇ ಪುಮಾನ್। ನ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ತು ಪತಾಕಾಃ ಸ್ವತ್ವಾಙ್ಗೇ  
ಮೇಧಚಿಹ್ನಯೋ:" ಮೇದಿಂ। 6. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನ ಮನೆ.  
"ಧ್ವಜ: ಪೂರ್ವದಿಶೋ ಗೃಹೇ। ಶಿಶ್ನೇ ಚಿಹ್ನೇ ಪತಾಕಾಃ ಸ್ವತ್ವಾಙ್ಗೇ  
ಶೌಣ್ಡಿಕೇಽಪಿ ಚ" ಹೇಮಂ। 7. ಬಾವುಟದ ಕೋಲು.  
8. ಮದ್ಯವನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ ಒಂದು ವಸ್ತು.

ಧ್ವಜಗೃಹ ಧ್ವಜಗೃಹ (ನಂ) ಧ್ವಜಗಳನ್ನು ಇಡುವ ಮನೆ.  
ಧ್ವಜಗ್ರೀವ ಧ್ವಜಗ್ರೀವ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. ಧ್ವಜ ಇವ  
ಗ್ರೀವಾ ಯಸ್ಯ।

ಧ್ವಜದ್ರುಮ ಧ್ವಜದ್ರುಮ (ಪುಂ) ತಾಳೆವೃಕ್ಷ, ಪಸಮರ. ತಾಳೆ  
ಮರ. ಧ್ವಜ ಇವ ದೀರ್ಘಕಾಂಡೋ ದ್ರುಮ:।

ಧ್ವಜಪ್ರಹರಣ ಧ್ವಜಪ್ರಹರಣ (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾಳಿ.  
ಧ್ವಜ ಪ್ರಹರತಿ-ಪ್ರ+ಹೃ (ಹರಣೇ) "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)।

ಧ್ವಜಭಜ್ಞ ಧ್ವಜಭಂಗೆ (ಪುಂ) ನಪುಂಸಕತ್ವಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ  
ಒಂದು ರೋಗ. ಧ್ವಜಭಂಗೆ ರೋಗಕ್ಕೆ ಕಾರಣಗಳು:  
"ಅತ್ಯಮಲವಣಕ್ಷಾರವಿರುದ್ಧಾಜಿರ್ಣಭೋಜನಾತ್। ಅತ್ಯಮ್ಬುಪಾನಾ-  
ದ್ವಿಷಮಾಪಿಷ್ಠಾನ್ನಗುರುಭೋಜನಾತ್। ಕನ್ಯಾನಾಂ ಚೈವ ಗಮನಾದಯೋನಿ-  
ಗಮನಾದಪಿ। ದೀರ್ಘರೋಗಾಂ ಚಿರೋತ್ಪ್ರಸೃಟಾಂ ತಥೈವ ಚ ರಜಸ್ವ-  
ಲಾಮ್। ದುರ್ಗಂಧಾಂ ದುಷ್ಟಯೋನಿಂ ಚ ತಥೈವ ಚ ಪರಿಸ್ತುತಾಮ್।  
ಅಧಾವನಾದ್ವಾ ಮೇಧಸ್ಯ ಶಸ್ತ್ರದಂತನಕ್ಷತತಾತ್। ರೇತಸಶ್ಚ  
ಪ್ರತಿಘಾತಾತ್ ಧ್ವಜಭಜ್ಞ: ಪ್ರವರ್ತತೇ" ವರಕಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೩೦।

ಧ್ವಜವತ್ ಧ್ವಜವತ್ (ಪುಂ) 1. ಮದ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಿ ಮಾರು  
ವವನು. ಧ್ವಜ: ಶುಣ್ಡಿಕೋಪಕರಣಂ ಅಸ್ತಿಯಸ್ಯ "ಮತುಪ್"  
(೪-೨-೯೪)। "ಸುನಾಚಕ್ರಧ್ವಜವತಾಂ ವೇಶನೈವ ಚ ಜೀವತಾಮ್"  
ಮನುಂ ೪-೮೪। 2. ಒಬ್ಬ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನನ್ನು ಕೊಂದು

ಅವನ ಶರೀರಪಾಲವನ್ನು ತನ್ನ ಧ್ವಜವನ್ನಾಗಿಟ್ಟುಕೊಂಡು  
ತಪಸ್ಸುಮಾಡುವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. "ಶಿರ:ಕಪಾಲಿ ಧ್ವಜವಾನ್  
ಭಿಕ್ಷಾಶೀ ಕರ್ಮ ವೇದಯನ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೨೪೩। (ವಿಂ) 3.  
ಚಿಹ್ನೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಗುರುತುಳ್ಳ. ಧ್ವಜ: ಚಿಹ್ನಂ ಯಸ್ಯ  
"ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬)।  
-ವತೀ -ವತಿ.

ಧ್ವಜಾಂಶುಕ ಧ್ವಜಾಂಶುಕ (ನಂ) ಬಾವುಟದ ಬಟ್ಟೆ. ಧ್ವಜಸ್ಯಾಂ-  
ಶುಕಮ್। "ಧ್ವಜಾಂಶುಕಧ್ರುವಮನುಕೂಲಮಾಸ್ತು ಪ್ರಸಾರಿತೆ: ಪ್ರಸಭ-  
ಕೃತೋಪಹೃತಯ:" ಮಾಘಂ ೧೭-೪೯।

ಧ್ವಜಾರೋಪಣ ಧ್ವಜಾರೋಪಣ (ನಂ) ಪತಾಕೆ (ಬಾವುಟ)  
ಯನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಿಸುವುದು, ಬಾವುಟ ಹಾರಿಸುವುದು.  
ಧ್ವಜಸ್ಯಾರೋಪಣಮ್।

ಧ್ವಜಾಹುತ ಧ್ವಜಾಹುತ (ಪುಂ) ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಗೆದ್ದು ಕರೆತಂದ  
ದಾಸ, ಧ್ವಜದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಎದುರಾಳಿ  
ಯಜಮಾನನನ್ನು ಗೆದ್ದು ಕರೆತಂದ ಅವನ ಸೇವಕ. ಧ್ವಜೇನ  
ಧ್ವಜೋಪಲಕ್ಷಿತಸಂಗ್ರಾಮೇಣಾಹುತ:। "ಧ್ವಜಾಹುತೋ ಭಕ್ತದಾಸ:  
ಗೃಹಜ: ಕ್ಷೌತದತ್ತಿಮೌ" ಮನುಂ ೮-೪೧೫।

ಧ್ವಜಿನ್ ಧ್ವಜಿನ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಪ್ರ. 2. ರಥ. 3. ಪರ್ವತ,  
ಬೆಟ್ಟ. 4. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. 5. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ.  
6. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. "ಧ್ವಜಿ ತು ಪೃಥಿವೀಧರೇ। ರಥ-  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣಯೋಶ್ಚಾಪಿ ಭುಜಙ್ಗಮತುರಙ್ಗಯೋ:" ಮೇದಿಂ। 7. ಮದ್ಯ  
ವನ್ನು ತಯಾರಿಸಿ ಮಾರುವವನು. "ಪ್ರತಿಗ್ರಹೇ ಸುನಿಚಕ್ರಿ-  
ಧ್ವಜಿವೇಶ್ಯಾನರಾಧಿಪಾ" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೧೪೧। (ವಿಂ) 8.  
ಧ್ವಜದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಧ್ವಜೋಸ್ತಿಯಸ್ಯ "ಙಿನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)।  
9. ಬಾವುಟ ಹಿಡಿದಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫)।  
ಧ್ವಜಿನಿ ಧ್ವಜಿನಿ.

ಧ್ವಜಿನಿ ಧ್ವಜಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೈನ್ಯ, ದಂಡು, ಪಡೆ. ಧ್ವಜೋಸ್ಯಾ  
ಅಸ್ತಿ "ಙಿನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫)।  
"ಯಯಿ ಸಮೀಪಂ ಧ್ವಜಿನಿಮುಪೇಯುಷ: ಪ್ರಸನ್ನರೂಪಸ್ಯ ವಿರೂಪಚಕ್ಷುಷ:"  
ಕಿರಾಂ ೧೪-೨೬।

ಧ್ವಜೋತ್ಥಾನ ಧ್ವಜೋತ್ಥಾನ (ನಂ) ಇಂದ್ರನ ಸಂತೋ  
ಷಾರ್ಥವಾಗಿ ನಡೆಸುವ ಒಂದು ಋತ್ನವ, ಹಬ್ಬ. ಧ್ವಜಸ್ಯ  
ಇಂದ್ರಧ್ವಜಸ್ಯ ಉತ್ಥಾನಂ ಯತ್ರ।

ಧ್ವನ - ಶಬ್ದ (ಭಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ)। ಧ್ವನತಿ। ದಧ್ವಾನ।  
ಧ್ವನಿತಾ। ಧ್ವನಿಷ್ಯತಿ। ಧ್ವನತು। ಅಧ್ವನತ್। ಇತ್ಯಾದಿ.  
1. ಶಬ್ದಮಾಡು, ಸದ್ದುಮಾಡು. 2. ಸೂಚನೆ ಕೊಡು,  
ಸೂಳವು ಕೊಡು. 3. ವ್ಯಂಜನಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ತಿಳಿಸು,  
ವ್ಯಂಗ್ಯವಾಗಿ ತಿಳಿಸು.

ಭಾವೇ :-ಧ್ವನ್ಯತೇ। ದಧ್ವನೇ। ಇತ್ಯಾದಿ.



ಹೃತ್ಸು:-ಧ್ವನಿತವ್ಯಮ್ | ಧ್ವನನೀಯಮ್ | ಧ್ವನ್ಯಮ್ |  
 ಧ್ವನಿತಃ | ಧ್ವನಿತವಾನ್, -ವತಿ | ಧ್ವನನ್, -ಂತಿ |  
 ಧ್ವನಿತುಮ್ | ಧ್ವನಿತಮ್ | ಧ್ವನನಮ್ | ಧ್ವನಿತವಾ |  
 ಧ್ವನತ್ ಧ್ವನತ್ (ವಿಂ) ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಸದ್ದು  
 ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಧ್ವನ (ಶಬ್ದ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |  
 "ಧ್ವನತೋ ನಿತರಾಂ ರೇಣ ಗುರ್ವಸ್ತದಿಡಾಕಾರವಲದ್ಗುಣಾ-  
 ದಸಂಖ್ಯಾಃ" ಮಾಘಂ ೨೦-೨೧ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೬) |  
 -ಂತಿ -೨೨೯.

ಧ್ವನನ ಧ್ವನನ (ನಂ) 1. ಶಬ್ದಮಾಡುವುದು, ಸದ್ದುಮಾಡು  
 ವುದು. ಧ್ವನ (ಶಬ್ದ) ಭಾವ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |  
 2. ಸೂಚನೆ ಕೊಡುವುದು, ಸೂಚಿವು ಕೊಡುವುದು.  
 3. ವ್ಯಂಜನಾವೃತ್ತಿ, ವಾಚ್ಯ ಮತ್ತು ಲಕ್ಷ್ಯ (ಅಭಿಧಾ  
 ಮತ್ತು ಲಕ್ಷಣಾವೃತ್ತಿಗಳಿಂದ ತಿಳಿಸುವ) ಅರ್ಥಕ್ಕಿಂತಲೂ  
 ಭಿನ್ನವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ವ್ಯಂಜನಾವ್ಯಾಪಾರ.  
 ಧ್ವನ್ಯತೇ ವ್ಯಜ್ಯತೇರ್ಥೋಜೇನ-ಧ್ವನ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೬) |  
 ಧ್ವನನೀಯ ಧ್ವನನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದಮಾಡಬೇಕಾದ.  
 2. ವ್ಯಂಗ್ಯವಾಗಿ ಸೂಚಿಸಬೇಕಾದ. ಧ್ವನ (ಶಬ್ದ)  
 "ಅನೀಯರ್" (೩-೨-೯೬) | "ತವ್ಯಃ" | ಧ್ವನಿತವ್ಯಮ್  
 ಧ್ವನಿತವ್ಯಮ್.

ಧ್ವನಯತ್ ಧ್ವನಯತ್ (ವಿಂ) ಶಬ್ದಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ,  
 ಸದ್ದುಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಧ್ವನ (ಶಬ್ದ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್"  
 (೩-೧-೧೨೪) | "ಭಿನ್ನಜಲಧಿಜಲನಾದಗುರ ಧ್ವನಯನ್ ದಿಶಾಂ  
 ವಿವರಮನ್ವಕಾಂತಕಃ" ಕಿರಾಂ ೧೨-೩೨ | "ದಧ್ವಾನ  
 ಧ್ವನಯಪ್ರಾಶಾಃ ಸ್ಫುಟಸ್ಥಿವ ಧರಾಧರಃ" ಕಿರಾಂ ೧೫-೩೪ |  
 ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಯಂತಿ -೨೨೯.

ಧ್ವನಿ ಧ್ವನಿ (ಫಂ) 1. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು, ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾದ ಶಬ್ದ.  
 ಧ್ವನ (ಶಬ್ದ) "ಃ" (೩ಂ ೪-೧೩೯) | "ಮುದಮಸ್ಯ ಮಾಜ್ಞಲಿಕ-  
 ತ್ಯಯಕೃತಾಂ ಧ್ವನಯಃ ಪ್ರತೇನುರನುವಪ್ರಮಪಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೬-೪ |  
 2. ಮೃದಂಗ ಮೊದಲಾದ ವಾದ್ಯಗಳ ಶಬ್ದ. "ಶಬ್ದೋ  
 ಧ್ವನಿಃ ವರ್ಣಃ ಮೃದಙ್ಗಾದಿಭವಧ್ವನಿಃ | ಕಂಠಸಂಯೋಗಜನ್ಮಾನೋ  
 ವರ್ಣಾಸ್ತೇ ಕಾದಯೋ ಮತಾಃ" ಭಾಷಾಪಂ | "ಉಪಸಿ ಸ  
 ಗಜಯುಕ್ತಕರ್ಣತಾಲಃ ಪಟುಪಟಹಧ್ವನಿಭಿವಿನೀತನಿಧಿಃ" ರಘುಂ  
 ೧-೭೧ | ಶಬ್ದವು ಬುದ್ಧಿಹೇತುಕ ಮತ್ತು ಅಬುದ್ಧಿಹೇತುಕ  
 ಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಮೇಘ ಮೊದಲಾದವುಗಳ  
 ಶಬ್ದವು ಅಬುದ್ಧಿಹೇತುಕವಾದುದು. ಬುದ್ಧಿಹೇತುಕವಾದ  
 ಶಬ್ದವು ಸ್ವಾಭಾವಿಕ ಮತ್ತು ಕಾಲ್ಪನಿಕಗಳೆಂದು ಎರಡು  
 ವಿಧ. ವರ್ಣಗಳ ಉಚ್ಚಾರಣೆಯಿಂದ ತೋರಿಸಿರುವ  
 ನಗುವುದು ಅಳುವುದು ಮುಂತಾದವು ಸ್ವಾಭಾವಿಕ ಧ್ವನಿ.  
 ಇದು ಸಕಲ ಪ್ರಾಣಿಗಳಿಗೂ ಸಮಾನವಾದುದು. ವಾದ್ಯ

ರೂಪ ಸಂಗೀತರೂಪ ಮತ್ತು ವರ್ಣೋಚ್ಚಾರಣರೂಪ  
 ಶಬ್ದಗಳೆಂದು ಕಾಲ್ಪನಿಕ ಶಬ್ದವು ಮೂರು ವಿಧ. ವಾದ್ಯ  
 ರೂಪವಾದುದು ನಗಾರಿ ಮೊದಲಾದ ಶಬ್ದ. ರಾಗಾಭಿ  
 ವ್ಯಂಜಕ ಶಬ್ದವು ಸಂಗೀತ ರೂಪವಾದುದು. ಕಂಠ ತಾಲು  
 ದಂತಮೂಲ ಮುಂತಾದ ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ವರ್ಣಗ  
 ಳಿಂದ ಉಂಟಾದುದು ವರ್ಣೋಚ್ಚಾರಣ ರೂಪವಾದುದು.  
 ವರ್ಣಗಳು ಅನಿತ್ಯವಾದುದರಿಂದ ವಾಚಕತ್ವವು ಅನುಪ  
 ಪನ್ನವಾಗಿ ಈ ವರ್ಣೋಚ್ಚಾರಣ ಗುಣ ಸಾರವಾಗಿ  
 ತತ್ತ್ವದ್ವಂಜಕ ವಾಯುಸಂಯೋಗದಿಂದ ವ್ಯಂಗ್ಯವಾದ  
 ಮತ್ತು ನಿತ್ಯವಾದ ಧ್ವನಿಯನ್ನು ವೈಯಾಕರಣರು  
 "ಸ್ಪೋಟಿ" ಎಂದು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. "ವರ್ಣಿನಾಂ ವಾಚಕ-  
 ತ್ವಾನುಪಪತ್ತೌ ಯದ್ಬಲಾದರ್ಥಪ್ರತಿಪತ್ತಿಃ ಸ ಸ್ಫೋಟಃ | ವರ್ಣಾ-  
 ತಿರಿಕ್ತೋ ವರ್ಣಾಮಿವ್ಯಕ್ತಃ ಅರ್ಥಪ್ರತ್ಯಾಯಕಃ ನಿಯತಃ ಶಬ್ದಃ  
 ಸ್ಫೋಟಃ ಇತಿ ತದ್ವಿದೋ ವದಂತಿ" ಸಂ ೬೦ ಸಂ | ಈ  
 ಸ್ಪೋಟವೇ ಸಕಲ ಜಗತ್ತಿಗೂ ಕಾರಣವಾದ ಬ್ರಹ್ಮವೆಂದು  
 ಇವರ ಮತ. "ಜಗನ್ನಿದಾನಂ ಸ್ಫೋಟಾಪ್ಯೋ ನಿರವಯವೋ  
 ನಿಯತಃ ಶಬ್ದೋ ಬ್ರಹ್ಮವ" "ಅನಾದಿನಿಧನಂ ಬ್ರಹ್ಮ ಶಬ್ದತತ್ತ್ವಂ  
 ತದಕ್ಷರಮ್ | ವಿವರತೇರ್ಥಭಾವೇನ ಪ್ರಕ್ರಿಯಾ ಜಗತೋ ಯತಃ"  
 ವಾಕ್ಯಪಂ | 3. ಶಬ್ದಾರ್ಥಗಳ ಸಮುದಾಯ. ಧ್ವನತಿ  
 ವ್ಯಂಜನಯಾ ರಸಾದಿನ್ ಪ್ರತ್ಯಾಯಯತಿ | 4. ವ್ಯಂಜನೆ,  
 ಅನುರಣನೆ, ವ್ಯಂಜನಾವೃತ್ತಿ, ವಾಚ್ಯಾರ್ಥ ಮತ್ತು  
 ಲಕ್ಷ್ಯಾರ್ಥಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಅತಿರಿಕ್ತವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಬೋಧಿ  
 ಸುವ ಒಂದು ವೃತ್ತಿ (ವ್ಯಾಪಾರ). ಧ್ವನ್ಯತೇಜಯಾ |  
 5. ವ್ಯಂಜನೆಯಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ರಸಾದಿಗಳ ಪ್ರತಿತಿ.  
 ಧ್ವನ ಭಾವ "ಃ" | 6. ರಸಾದಿಗಳು. ಧ್ವನ್ಯತೇಜಸಿ |  
 7. ಉತ್ತಮ ಕಾವ್ಯ. ವಾಚ್ಯವಾದ (ಅಭಿಧಾವೃತ್ತಿ ಪ್ರತಿ  
 ಪಾದ್ಯವಾದ) ಅರ್ಥಕ್ಕಿಂತಲೂ ಗಂಟೆ ಮೊದಲಾದವುಗಳ  
 ತೊಡನದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಶಬ್ದವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ದೀರ್ಘ  
 ವಾಗಿ ಹೊರಡುವ ನಾದದಂತೆ ಉಂಟಾಗುವ ವ್ಯಂಗ್ಯಾರ್ಥವು  
 (ವ್ಯಂಜನಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಪ್ರತಿಪಾದ್ಯವಾದ ಅರ್ಥವು)  
 ಅಧಿಕವಾಗಿ ಚಮತ್ಕಾರಜನಕವಾಗಿರುವಲ್ಲಿ ಅದು ಉತ್ತಮ  
 ಕಾವ್ಯವಾಗುವುದು. ಧ್ವನ್ಯತೇ ವ್ಯಜ್ಯತೇಜಮಾತ್ ಇತಿ ಧ್ವನಿಃ |  
 "ಕಾವ್ಯಂ ಧ್ವನಿಗುಣಿಭೂತವ್ಯಕ್ತಃ ಚೇತಿ ದ್ವಿಧಾ ಮತಮ್ |  
 ವಾಚ್ಯಾತಿಶಾಯಿನಿ ವ್ಯಕ್ತಃ ಧ್ವನಿಃ ಸ್ತತ್ಕಾವ್ಯಮುತ್ತಮಮ್"  
 ಸಾಂ ೬೦ ೪-೧ | ಧ್ವನಿಯ ಭೇದಗಳು : ಈ ಧ್ವನಿಯು  
 (1) ಲಕ್ಷಣಮೂಲ ಮತ್ತು (2) ಅಭಿಧಾಮೂಲ ಎಂದು  
 ಎರಡು ವಿಧ. (1) ವಾಚ್ಯಾರ್ಥಕ್ಕೆ ವಿವಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ  
 (ವಾಚ್ಯಾರ್ಥವು ಅನ್ವಯಾಯೋಗ್ಯವಾಗಿ ಅನುಪಯುಕ್ತ  
 ವಾಗುವ) ಕಾರಣ ಧ್ವನಿಯು ಲಕ್ಷಣೆಯಿಂದ ಉಂಟಾಗು







ಧ್ವನಿಕಾರ ಧ್ವನಿಕಾರ (ಪುಂ) ಧ್ವನ್ಯಾಲೋಕವನ್ನು ರಚಿಸಿದ  
ಅನಂದವರ್ಧನಾಚಾರ್ಯರು. ಧ್ವನಿ ತತ್ಪ್ರತಿಪಾದಕಂ ಗ್ರಂಥಂ  
ಕರೋತಿ—ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ಅಙ್” (೩-೨-೧)। “ವಿವ್”  
(೩-೨-೭೬)। -ಕೃತ್ -ಕೃತ್.

ಧ್ವನಿಕಾವ್ಯ ಧ್ವನಿಕಾವ್ಯ (ನಂ) ಉತ್ತಮ ಕಾವ್ಯ. [“ಕಾವ್ಯ”  
ಮತ್ತು “ಧ್ವನಿ” ಪದಗಳಲ್ಲಿ ಸೇರಿ.]

ಧ್ವನಿಗ್ರಹ ಧ್ವನಿಗ್ರಹ (ಪುಂ) ಕರ್ಣ, ಕಿವಿ, ಶ್ರೋತ್ರೇಂದ್ರಿಯ.  
ಧ್ವನಿ: ಗೃಹ್ಯತೇಜೇನ—ಗ್ರಹ (उपादाने) करं “अप्”  
(೩-೩-೫೮)। “कर्णस्तु श्रोत्रं क्लीबे ध्वनिग्रहः” ಹಾರಾಂ।

ಧ್ವನಿತ ಧ್ವನಿತ (ನಂ) 1. ಧ್ವನಿ, ಶಬ್ದ. ಧ್ವನ (ಶಬ್ದ) ಭಾವೆ  
“ಕ್ತ:” (೩-೩-೧೧೪)। “गम्भीरभेरीध्वनितैर्भयङ्करै-  
र्महागुहान्तप्रतिनादमेदुरै:” ಕುಮಾಂ ೧೪-೨೭। (ವಿಂ) 2.  
ವ್ಯಂಗ್ಯವಾಗಿ ಸೂಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವ್ಯಂಜನಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ತಿಳಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಶಬ್ದಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಧ್ವನಿತಾಲಾ ಧ್ವನಿತಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಹಳೆ, ಕೊಂಬು.  
2. ಕೊಳಲು, ವೇಣುವಾದ್ಯ. 3. ವೀಣೆ. 4. ವಂಶ,  
ಬಿದಿರು. ಧ್ವನಿ: ನಾಲೆವ. “ಧ್ವನಿತಾಲಾ ತು ವೀಣಾयां  
वेणुकाहलयोरपि” ಮೇದಿಂ।

ಧ್ವನಿವಿಕಾರ ಧ್ವನಿವಿಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಕಾಕು, ದುಃಖ ಭಯ  
ಮುಂತಾದುವುಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ವಿಕಾರಸ್ವರ. ಧ್ವನಿ-  
ವಿಕಾರ:। 2. ವಿಕಾರವಾದ ಶಬ್ದ.

ಧ್ವನ್ಯ ಧ್ವನ್ಯ (ವಿಂ) ಧ್ವನಿತವಾಗುವ, ವ್ಯಂಗ್ಯವಾಗಿ  
ಸೂಚಿಸಲ್ಪಡುವ. ಧ್ವನ (ಶಬ್ದ) “ಘ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪)।  
मित्वात् ह्रस्व:।

ಧ್ವಸ್ತ ಧ್ವಸ್ತ (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬಿದ್ದಿರುವ. 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಜಾರಿ  
ರುವ. ಧ್ವಂಸು (अवसंसने) कर्तं “क्त:” (೩-೪-೭೨)।  
“करालवाचालमुखाश्चमूस्वनै: ध्वस्ताम्बरा वीक्ष्य दिशो  
रजस्वला:” ಕುಮಾಂ ೧೪-೪೮। 3. ನಾಶವಾದ. “मनोभि:  
सोद्वेगै: प्रणयविहतिध्वस्तरुचय: सगन्धर्वा धाम त्रिदश-  
वनिता: स्वं प्रतिययु:” ಕಿರಾಂ ೧೦-೬೩। 4. ನಾಶ  
ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಧ್ವಂಸು (अन्तर्भावितप्यन्त:) कर्म “क्त:”  
(೩-೨-೧೦೨)। “येन ध्वस्तमनोभवेन बलिजित्काय:  
पुरास्त्रीकृत:” ಸಾಂ ೧೦।

ಧ್ವಸ್ತಿ ಧ್ವಸ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾಶ, ಅಳಿಪು. ಧ್ವಂಸು (अवसंसने)  
“ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪)।

ಧ್ವಾಕ್ಷ ಧ್ವಾಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ವಾಂಸ, ಕಾಗೆ. ಧ್ವಾಕ್ಷಿ  
(घोरवाशिते) “अच्” (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಬಕಪಕ್ಷಿ.  
3. (ಜ್ಯೋತೀಷದಲ್ಲಿ) ಭಾನು ಮೊದಲಾದ ವಾರಗಳಲ್ಲಿ

ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ (ಪ್ರಯಾಣಕ್ಕೆ  
ಸಂಬಂಧಿಸಿದ) ಅನುವ ಮೊದಲಾದ ಯೋಗಗಳಲ್ಲೊಂದು.  
ಭಾನು-ಆದರ್ಶ, ಸೋಮ-ಮಹಾ, ಮಂಗಳ-ಚಿತ್ತಾ,  
ಬುಧ-ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ, ಗುರು-ಅಭಿಜಿತ್, ಶುಕ್ರ-ಪೂರ್ವಾ  
ಭಾದ್ರಾ, ಶನಿ-ಭರಣೀನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಈ  
(ಧ್ವಾಂಕ್ಷ) ಯೋಗವುಂಟಾಗುವುದು. 4. ಯಜ್ಞ,  
ಭಿಕ್ಷುಕ. 5. ಗೃಹ, ಮನೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕ್ಷಿ -ಕ್ಷೀ.  
6. ಒಂದು ಔಷಧದ ಮೂಲಿಕೆ. “ध्वाक्ष: काके बके-  
थिनि। गृहे ध्वाक्षी तु काकोल्याम्” ಹೇಮಂ।

ಧ್ವಾಕ್ಷತುಂಡಿ ಧ್ವಾಂಕ್ಷತುಂಡೀ, -ದಂತಿ -ದಂತೀ,  
-ನಖಿ -ನಖೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಗತೊಂಡೆ ಗಿಡ.

ಧ್ವಾಕ್ಷನಾಮ್ನಿ ಧ್ವಾಂಕ್ಷನಾಮ್ನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಲ್ಲು ಗಿಡ,  
ಬ್ರಹ್ಮಮೇಡಿ ಗಿಡ.

ಧ್ವಾಕ್ಷನಾಸಿಕಾ ಧ್ವಾಂಕ್ಷನಾಸಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಗತೊಂಡೆ  
ಗಿಡ.

ಧ್ವಾಕ್ಷಪುಟ ಧ್ವಾಂಕ್ಷಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) ಕೋಗಿಲೆ, ಪ ರಾವತ  
ಪಕ್ಷಿ.

ಧ್ವಾಕ್ಷಮಾಚಿ ಧ್ವಾಂಕ್ಷಮಾಚೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರಗದ ಸೊಪ್ಪು.

ಧ್ವಾನ ಧ್ವಾನ (ಪುಂ) ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ, ಸದ್ದು. ಧ್ವನ (ಶಬ್ದ)  
ಭಾವೆ “ಘ್” (೩-೩-೧೮)। “शशामाक्रन्दितध्वानो  
न च चीरो व्यभाव्यत” ರಾಜತಂ।

ಧ್ವಾನಿತ ಧ್ವಾನಿತ (ವಿಂ) ಶಬ್ದಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರತಿಧ್ವನಿ  
ಯುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಧ್ವನ (ಶಬ್ದ) + ಣಿच् “ಕ್ತ:”  
(೩-೨-೧೦೨)। “घोरारावैर्ध्वानिताशेषदिवके विष्के  
नाग: पर्यणंसीत् स्व एव” ಮಾಘಂ ೧೮-೨೭।

ಧ್ವಾಂತ ಧ್ವಾಂತ (ನಂ) ಕತ್ತಲೆ. ಧ್ವನ (ಶಬ್ದ) “ಕ್ತ:”  
(೭-೨-೧೮)। ನಿಶಾಂ। “एतैर्वभूतं तदशर्मं कृष्णं  
विभावरीं ध्वान्तमिव प्रपेदे” ಕಿರಾಂ ೩-೩೫।

ಧ್ವಾಂತಶತ್ರು ಧ್ವಾಂತಶತ್ರು, -ಶಾತ್ರವ -ಶಾತ್ರವ (ಪುಂ)  
1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 2. ಸೂರ್ಯ. 3. ಚಂದ್ರ.  
4. ಬಿಳುಪು. ಧ್ವಾಂತಸ್ಯ ಶತ್ರು: ಶಾತ್ರವೋ वा। एवं  
ध्वान्ताराति: ध्वाಂತारण्य:, ध्वान्तारि: ध्वाಂತारि:  
ಇತ್ಯಾದಿ. “ध्वान्तारि सर्वपापघ्नम्”।

ಧ್ವಾಂತೋನ್ಮೇಷ ಧ್ವಾಂತೋನ್ಮೇಷ (ಪುಂ) ಮಿಂಚುಹುಳ.  
ಧ್ವಾಂತೇ उन्मिषति—उद् + मिष (स्पर्शायाम) “अच्”  
(೩-೧-೧೩೪)। “ज्योतिर्बीजं च खद्योत: ध्वान्तोन्मेष-  
स्तमोमणि:” ಹಾರಾಂ।

इति “घ” कारादिपदार्थनिरूपणम्।



## ನ

ನ ನ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ "ನ" ವರ್ಗದ ಐದನೆಯ ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಂತರಸ್ಪೃಷ್ಪಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ನಾಸಿಕೆ ಮತ್ತು ದಂತಮೂಲಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಅಕ್ಷರ. "ಕಾದಯೋ ಮಾವಸಾನಾಃ ಸ್ಪರ್ಶಾಃ"। "ಸ್ಪೃಷ್ಠಂ ಪ್ರಯತನಂ ಸ್ಪರ್ಶಾನಾಮ್" ಸಿಂ ಕೌಂ। "ಲೃತುಲಸಾನಾಂ ದಂತಾಃ"। "ಋಮಙ್ಗನಾನಾಂ ನಾಸಿಕಾ ಚ"।

ನ ನ (ಪುಂ) 1. ಗಣಪತಿ, ವಿನಾಯಕ. 2. ಬುದ್ಧದೇವ. 3. ಬುದ್ಧಿ. 4. ಸ್ತುತಿ, ಸ್ತೋತ್ರ. 5. ವ್ಯಕ್ತ. ಮರ. "ನಕಾರಃ ಸೌಗತೇ ಬೃಹದೌ ಸ್ತುತೌ ವೃಕ್ಷೇ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ" ಏಕಂ। 6. "ನ" ವರ್ಣ, "ನ" ಎಂಬ ಅಕ್ಷರ. 7. ಬಂಧ. (ನಂ) 8. ಜ್ಞಾನ. 9. ವಾದ್ಯ. (ವಿಂ) 10. ಸೂಕ್ಷ್ಮ ವಾದ, ತಿಳಗಿರುವ. 11. ಶೂನ್ಯ, ಅಭಾವ. 12. ಸಮಾನ ವಾದ. 13. ಸ್ತುತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. (ಅವ್ಯಂ) 14. ನಿಷೇಧ, ತಡೆಯುವುದು, ಬೇಡವೆನ್ನುವುದು. "ಅತಿವಾದಾಸ್ತಿತಿಸ್ತೇತ ನಾವಮನ್ಯೇತ ಕಚ್ಚನ। ನ ಚಮಂ ದೇಹಮಾಶ್ರಿತ್ಯ ವೇರಂ ಕುರ್ವೀತ ಕೇನಚಿತ್" ಮನುಂ ೬-೪೭। 15. ಕೂಡದು, ಆಗಬಾರದು. "ಕ್ಷತ್ರಿಯೇರ್ಧಾರ್ಯತೇ ಶಸ್ತ್ರಂ ನಾತಶಬ್ದೋ ಭವೇದಿತಿ" ರಾಮಾಂ। 16. ಇಲ್ಲ, ಅಲ್ಲ. "ನಾದೃಶ್ಯೋ ನಾಮ ರಾಜೋಸ್ತಿ" ಮನುಂ ೮-೩೩೫। ನನ್ ಸಂಬಂಧವಾದ "ನ" ಕಾರವು ಉತ್ತರ ಪದವು ಪರವಾದಾಗ ಲೋಪಹೋದುವುದು. ನ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಃ ಅಬ್ರಾಹ್ಮಣಃ। ಉತ್ತರಪದವು ಅಜಾದಿಯಾದರೆ "ನುತ್" ಆಗಮ ಬರುವುದು. ನ ಅಶ್ವಃ ಅನಶ್ವಃ। ನನ್ ಸಂಬಂಧ ವಾದ "ಅ" ಕಾರವು ಆರು ವಿಧ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು. ["ಅ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. ಎರಡು ನನ್ ಪ್ರಯೋಗವಿರುವ ಕಡೆ ಪ್ರಕೃತವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ದೃಢ ಪಡಿಸುವುದು. "ನಿರಸ್ತಗಾಮ್ಭೀರ್ಯಮಪಾಸ್ತಪುಷ್ಪಕಂ ಪ್ರಕಮ್ಪಯಾಮಾಸ ನ ಮಾನಸಂ ನ ಸಃ" ಮಾಘಂ ೧-೫೫। 17 ಸಾದೃಶ್ಯ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾ ನಾ. 18. ನಾಭಿ, ಹೊಕ್ಕಳು. "ಹೇರಮ್ಬೇ ನಃ ಪುಮಾನ್ ನಾ ಸ್ತ್ರೀ ನಾಭೌ ನಂ ಜ್ಞಾನವಾಚಯೋಃ" ನಾನಾರ್ಥರಂ।

ನಂಟು ನಂಷ್ಟು (ವಿಂ) ನಾಶವಾಗುವ, ನಾಶಹೋದುವ. ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩)। ನುಮಾಗಮಃ (೭-೧-೬೦)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಛ್ರೀ-ಘ್ರೀ.

ನಕಾರ ನಕಾರ (ಪುಂ) "ನ" ವರ್ಣ, "ನ" ಎಂಬ ಅಕ್ಷರ. ನ "ಕಾರಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮)।

ನಕಿಂಚನ ನಕಿಂಚನ (ವಿಂ) ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. ನಾಸ್ತಿ ಕಿಂಚನ ಯಸ್ಯ। "ಸರ್ವಕಾಮರಸೇಹೀನಾಃ ಸ್ಥಾನಭ್ರಷ್ಟಾ ನಕಿಂಚನಾಃ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ।

ನಕುಟ ನಕುಟ (ನಂ) ನಾಸಿಕೆ, ಮೂಗು.

ನಕುಲ ನಕುಲ (ಪುಂ) 1. ಮುಂಗುಸಿ, ಕೀರ. ನಾಸ್ತಿ ಕುಲಮಸ್ಯ (೬-೩-೭೫)। 2. ಪಾಂಡುರಾಜನ ಪತ್ನಿ ಮಾದ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಮಗ. ಮಾದ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಅಶ್ವಿನಿ ದೇವತೆ ಗಳಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಗ. "ತತೋ ಮಾದ್ರೀ ವಿಚಾರ್ಯವಂ ಜಗಾಮ ಮನಸಾಶ್ವಿನಿಂ। ತಾವಾಗಮ್ಯ ಸುತಾವಸ್ಯಾಂ ಜನಯಾಮಾಸತುರ್ಯಮೌ। ನಕುಲಂ ಸಹದೇವಂ ಚ ರೂಪೇಣಾಪ್ರತಿಮಂ ಭುವಿ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೩೩-೧೮। (ಸ್ತ್ರೀಂ)-ಕುಲಿ-ಕುಲೀ. 3. ಜಟಾಮುಂಗುಸಿ. 4. ಕುಂಕುಮಕಸರಿ. 5. ಹೆಣ್ಣು ಮುಂಗುಸಿ.

ನಕುಲೇಷಾ ನಕುಲೇಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸರ್ವಾಕ್ಷಿ, ಈಶ್ವರಿಹಂಬು. ನಕುಲಾನಾಮಿಷಾ।

ನಕ್ತ ನಕ್ತ (ನಂ) ರಾತ್ರಿ.

ನಕ್ತಕ ನಕ್ತಕ (ಪುಂ) ಹದುಕುಬಟ್ಟಿ. ನಕ್ತಂ ಕಂ ಸುಖಮಸ್ಮಾತ್। "ಸಮೌ ನಕ್ತಕಕರ್ಪಟೌ" ಅಮಂ।

ನಕ್ತಚಾರಿನ್ ನಕ್ತಚಾರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಮಾರ್ಜಾರ, ಬೆಕ್ಕು. 2. ಉಲ್ಲಾಕ, ಗೂಬೆ. 3. ರಾಕ್ಷಸ. (ವಿಂ) 4. ರಾತ್ರಿ ಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. ನಕ್ತೇ ಚರತಿ-ಚರ (ಗತೌ) "ಣಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಚಾರಿಣಿ -ಚಾರಿಣೀ.

ನಕ್ತಶ್ವರ ನಕ್ತಶ್ವರ (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ. ನಕ್ತಂ ರಾತ್ರೌ ಚರತಿ-ಚರ (ಗತೌ) "ಠಃ" (೩-೨-೧೬)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಶ್ವರೀ -ಶ್ವರೀ. 2. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ. 3. ಉಲ್ಲಾಕ, ಗೂಬೆ. 4. ಮಾರ್ಜಾರ, ಬೆಕ್ಕು. (ವಿಂ) 5. ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ.

ನಕ್ತಚಾರಿನ್ ನಕ್ತಚಾರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ. ನಕ್ತಂ ರಾತ್ರೌ ಚರತಿ-ಚರ (ಗತೌ) "ಣಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮)। 2. ಮಾರ್ಜಾರ, ಬೆಕ್ಕು. 3. ಉಲ್ಲಾಕ, ಗೂಬೆ. 4. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ. (ವಿಂ) 5. ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. "ದಿವಾಚರೇಮ್ಯೋ ಭೂತೇಮ್ಯೋ ನಕ್ತಚಾರಿಮ್ಯೇವ ಚ" ಮನುಂ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಚಾರಿಣಿ -ಚಾರಿಣೀ.

ನಕ್ತಜಾತ ನಕ್ತಜಾತ (ವಿಂ) ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ನಕ್ತಂ ರಾತ್ರೌ ಜಾತಃ।

ನಕ್ತಂತನ ನಕ್ತಂತನ (ವಿಂ) ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿರುವ. ನಕ್ತಂ ರಾತ್ರೌ ಭವಃ "ಠ್ಯುಲ್" ತುಡಾಗಮಶ್ಚ (೪-೩-೨೩)। "ಇದಂ ನಕ್ತಂತನಂ ದಾಮ ಪೌಷ್ಪಮೇತದ್ವಾತನಮ್" ಭದ್ರಿಂ ೬-೧೩।



ನಕ್ತಾಂಶವಿವರ ನಕ್ಷತ್ರಂಶವಿವರ (ಅವ್ಯಂ) ರಾತ್ರಿ ಮುತ್ತು ಹಗಲು. ನಕ್ಷತ್ರಂ ಚ ದಿವಾ ಚ "ಅಚ್" (೪-೪-೭೭) ನಿಪಾಂ. ಅವ್ಯಯಿಭಾವಶ್ಚ. "ವಿಭಜ್ಯ ನಕ್ತಾಂಶವಿವರಸ್ತದ್ವಿಧಾ ವಿತನ್ಯತೇ ತೇನ ನಯೇನ ಪೌರೂಷಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೯.

ನಕ್ತಮ್ ನಕ್ಷತ್ರಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ. ಸಪ್ತಮ್ಯರ್ಯವ್ಯಯಮ್. "ರಥಾಜ್ಞಾಪಾಣಿ: ಪಟಲೇನ ರೋಚಿಷಾಮೃಷಿವಿಷ: ಸಂಬಲಿತಾ ವಿರೇಜಿರೆ. ಚಲತ್ಪಲಾಶಾಂತರಗೋಚರಾಸ್ತರೋ: ತುಷಾರಮೂರ್ತೇರಿವ ನಕ್ತಮಂಶವ:" ಮಾಘಂ ೧-೨೧.

ನಕ್ತಮಾಲ ನಕ್ಷತ್ರಮಾಲ (ಪಂ) ಕರಂಜವೃಕ್ಷ, ಹೊಂಗೆಮರ. ನಕ್ತಮ್ ಆ ಅಲತಿ—ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಸ ನರ್ಮದಾರೋಷಸಿ ಸೀಕರಾರ್ಥಮೇವ ಸಿದ್ಧಿರಾ-ರ್ಥಿತನಕ್ತಮಾಲೇ" ರಘುಂ ೪-೪೨.

ನಕ್ತವ್ರತ ನಕ್ಷತ್ರವ್ರತ (ನಂ) ಹಗಲು ಉಪವಾಸವಿದ್ದು ರಾತ್ರಿ ಭೋಜನಮಾಡುವ ಒಂದು ವ್ರತ. "ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷೇ ಸಿತೇ ಪಕ್ಷೇ ಪ್ರತಿಪದ್ಯಾ ತಿಥಿರ್ಮವೇತ್. ತಸ್ಯಾಂ ನಕ್ಷತ್ರಂ ಪ್ರಕುರ್ವೀತ ರಾತ್ರೌ ವಿಷ್ಣುಂ ಪ್ರಪೂಜಯೇತ್" ವರಾಹಪುಂ.

ನಕ್ತಾಂಶ ನಕ್ಷತ್ರಾಂಶ (ನಂ) ಇರುಳು ಕಣ್ಣು ಕಾಣಿಸದಿರುವಿಕೆ, ರಾತ್ರಿಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕುರುಡಾಗಿರುವಿಕೆ. ನಕ್ಷತ್ರೇ ಆಂಶವ್ಯಮ್. ಶ್ಲೇಷ್ಮವು ದೃಷ್ಟಿಯಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡು ರಾತ್ರಿ ಯಲ್ಲಿ ಕುರುಡನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ಹಗಲು ವೇಳೆಯಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನ ಕಿರಣದಿಂದ ಶ್ಲೇಷ್ಮವು ಕಡಮೆಯಾಗಿ ಕಣ್ಣು ಕಾಣಿಸುವುದು. "ತೃಪ್ತುಃ ಸ್ಥಿತೋ ಯ: ಪಟಲೇಷು ದೋಷೋ ನಕ್ತಾಂಶ-ಮಾಪಾದಯತಿ ಪ್ರಸಹ್ಯ. ದಿವಾ ಸ ಸೂರ್ಯಗ್ರಹೀತದೃಷ್ಟಿ: ಪಶ್ಯೇತ್ ರೂಪಾಣಿ ಕಫಾಲ್ಯಭಾವಾತ್" ಭಾವಪ್ರಂ.

ನಕ್ಷತ್ರ ನಕ್ಷತ್ರ (ಪಂ) 1. ಮೊಸಳೆ. ನ ಕ್ರಾಮತಿ ದೂರಸ್ಥಲಮ್—ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಓ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮). ನಕ್ಷತ್ರ: ಪ್ರಕೃತಿ-ಭಾವ: (೬-೩-೭೫). "ಲಿಙ್ಗೈರ್ಮದ: ಸಂವೃತವಿಕ್ರಿಯಾಸ್ತೇ ಹೃದಾ: ಪ್ರಸನ್ನಾ ಇವ ಗುಣನಕ್ಷತ್ರಾ:" ರಘುಂ ೭-೩೦. 2. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. "ತಥಾ ಚೇನ್ನಾಚರೇಯಂ ನಯೇತ ನಕ್ಷತ್ರೇತನ: ಕ್ಷಣೇನೇ-ನಾಕೀರ್ತನೀಯಾಂ ದಶಾಂ ಜನಜ್ಞೇನಮ್" ಕಾದಂ. (ನಂ) 3. ಬಾಗಿಲಿನ ಮೇಲುಭಾಗದ ಪಟ್ಟಿ. 4. ನಾಸಿಕೆ, ಮೂಗು.

"ನಕ್ಷತ್ರಂ ಸ್ಯಾದಗ್ರದಾರುಣಿ. ನಾಸಾಯಾಂ ಪುಸಿ ಕುಮ್ಮಿರೆ" ಮೇದಿಂ.

ನಕ್ಷತ್ರಾಜ ನಕ್ಷತ್ರಾಜ (ಪಂ) ದೊಡ್ಡ ಆಕಾರದ ಮೀನು, ತಿಮ್ಮಿಂಗಿಲ. ನಕ್ಷತ್ರಾಂ ರಾಜಾ "ಓ:" (೪-೪-೯೧).

ನಕ್ಷತ್ರ ನಕ್ಷತ್ರ (ನಂ) 1. ತಾರೆ, ಚುಕ್ಕಿ. ನ ಕ್ಷರತಿ—ಕ್ಷರ (ಸಂಚಲನೆ) ನಿಪಾಂ (೬-೩-೭೫). 2. ಅಶ್ವಿನಿ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳು, ದಕ್ಷಿಣಾಂಶ ಕನ್ಯೆಯರು. "ಸಪ್ತವಿಂಶತಿ: ಸೋಮಸ್ಯ ಪತ್ನಿಯೋ ಲೋಕಸ್ಯ ವಿಶ್ರುತಾ: ಕಾಲಸ್ಯ

ನಯೇನ ಯುಕ್ತಾ: ಸೋಮಪತ್ನಯ: ಶುಚಿವ್ರತಾ: ಸರ್ವಾ ನಕ್ಷತ್ರಯೋಗಿನ್ಯೋ ಲೋಕಯಾತ್ರಾವಿಧಾನತ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೭. ನಕ್ಷತ್ರಗಳು ಮತ್ತು ನಕ್ಷತ್ರಾಧಿಪತಿಗಳು:

| ನಕ್ಷತ್ರ          | ಅಧಿಪತಿ              |
|------------------|---------------------|
| (1) ಅಶ್ವಿನಿ      | .. ಅಶ್ವಿನಿ ದೇವತೆಗಳು |
| (2) ಭರಣಿ         | .. ಯಮ               |
| (3) ಕೃತ್ತಿಕೆ     | .. ಅಗ್ನಿ            |
| (4) ರೋಹಿಣಿ       | .. ಬ್ರಹ್ಮ           |
| (5) ಮೃಗಶಿರ್ಷ     | .. ಚಂದ್ರ            |
| (6) ಆರಿದ್ರ       | .. ರುದ್ರ            |
| (7) ಪುನರ್ವಸು     | .. ಅದಿತಿ            |
| (8) ಪುಷ್ಯ        | .. ಗುರು             |
| (9) ಆಶ್ಲೇಷ       | .. ಸರ್ಪ             |
| (10) ಮಘ          | .. ಪಿತೃಗಳು          |
| (11) ಪೂರ್ವಾಷ್ಠಾ  | .. ಭಗ               |
| (12) ಉತ್ತರಾಷ್ಠಾ  | .. ಅರ್ಯಮ            |
| (13) ಹಸ್ತ        | .. ರವಿ              |
| (14) ಚಿತ್ತ       | .. ತೃಷ್ಣ            |
| (15) ಸ್ವಾತಿ      | .. ವಾಯು             |
| (16) ವಿಶಾಖ       | .. ಇಂದ್ರಾಗ್ನಿ       |
| (17) ಅನೂರಾಧ      | .. ಮಿತ್ರ            |
| (18) ಜ್ಯೇಷ್ಠ     | .. ಇಂದ್ರ            |
| (19) ಮೂಲ         | .. ರಾಕ್ಷಸ           |
| (20) ಪೂರ್ವಾಷಾಢ   | .. ಜಲ               |
| (21) ಉತ್ತರಾಷಾಢ   | .. ವಿಶ್ವೇದೇವತೆಗಳು   |
| (22) ಆಭಿಜಿತ್     | .. ಬ್ರಹ್ಮ           |
| (23) ಶ್ರವಣ       | .. ವಿಷ್ಣು           |
| (24) ಧನಿಷ್ಠ      | .. ಅಪ್ಸರಮಗಳು        |
| (25) ಶತಭಿಷ       | .. ವರುಣ             |
| (26) ಪೂರ್ವಾಭಾದ್ರ | .. ಅಜೈಕಪಾತ್         |
| (27) ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರ | .. ಅಹಿರ್ಬುದ್ಧ       |
| (28) ರೇವತಿ       | .. ಪೂಷ              |

ನಕ್ಷತ್ರಗಳಿಗೆ ಕ್ಷಿಪ್ರಾದಿ ಸಂಜ್ಞೆಗಳು:

| ನಕ್ಷತ್ರ                  | ಸಂಜ್ಞೆ             |
|--------------------------|--------------------|
| ಅಶ್ವಿನಿ, ಪುಷ್ಯ, ಹಸ್ತ.    | .. ಕ್ಷಿಪ್ರ (ಲಘು)   |
| ಮೂಲ, ಆರ್ದ್ರ, ಜ್ಯೇಷ್ಠ,    |                    |
| ಆಶ್ಲೇಷ.                  | .. ದಾರುಣ (ತೀಕ್ಷ್ಣ) |
| ಮೃಗಶಿರ್ಷ, ಚಿತ್ತ, ಅನೂರಾಧ, |                    |
| ರೇವತಿ.                   | .. ಮೃದು            |



ನಕ್ಷತ್ರ

ಸಂಜ್ಞೆ

ರೋಹಿಣಿ, ಉತ್ತರಫಲ್ಗುನಿ.

ಉತ್ತರಾಷಾಢ, ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರ. .. ಸ್ಕರ (ಧ್ರುವ)

ಭರಣಿ, ಮಖ, ಪೂರ್ವಫಲ್ಗುನಿ.

ಪೂರ್ವಾಷಾಢ, ಪೂರ್ವಾಭಾದ್ರ. .. ಉಗ್ರ

ಕೃತ್ತಿಕೆ, ವಿಶಾಖೆ. .. ಸಾಧಾರಣ

ಸ್ವಾತಿ, ಪುನರ್ವಸು, ಶ್ರವಣ.

ಧನಿಷ್ಠೆ, ಶತಭಿಷ್ಠೆ. .. ಚರ.

ನಕ್ಷತ್ರಗಣ ನಕ್ಷತ್ರಗಣ (ಪುಂ) ಕ್ಷಿಪ್ರ ಮೊದಲಾದ ಸಂಜ್ಞೆಗಳಲ್ಲಿ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಸಮೂಹ. ["ನಕ್ಷತ್ರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ನಕ್ಷತ್ರಚಕ್ರ ನಕ್ಷತ್ರಚಕ್ರ (ನಂ) ರಾಶಿಚಕ್ರ. ನಕ್ಷತ್ರಾಣಾಂ ಚಕ್ರಂ ಯತ್ರ |

ನಕ್ಷತ್ರದರ್ಶನ ನಕ್ಷತ್ರದರ್ಶನ (ಪುಂ) 1. ನಕ್ಷತ್ರಗಳನ್ನು ನೋಡಿ ಫಲವನ್ನು ಹೇಳುವ ಜೋಯಿಸ. ನಕ್ಷತ್ರಂ ತತ್ಫಲಂ ದರ್ಶಯತಿ—ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣಂ) + ಣಿच् "ಅನ್" (3-2-1). (ವಿಂ) 2. ನಕ್ಷತ್ರವನ್ನು ನೋಡುವವನು ನಕ್ಷತ್ರಂ ಪಶ್ಯತಿ—ದೃಶಿರ್ "ಅನ್" (3-2-1).

ನಕ್ಷತ್ರನಾಥ ನಕ್ಷತ್ರನಾಥ (ಪುಂ) ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಒಡೆಯನಾದ ಚಂದ್ರ. ನಕ್ಷತ್ರಾಣಾಮ್ ಅಶ್ವಿನ್ಯಾದೀನಾಂ ನಾಥಃ | "ದಿವಾಕರಾದರ್ಶನಬದ್ಧಕೋಶೇ ನಕ್ಷತ್ರನಾಥಾಂಶುರಿವಾರವಿಂದೇ" ರಘುಂ 6-66 |

ನಕ್ಷತ್ರನೆಮಿ ನಕ್ಷತ್ರನೆಮಿ (ಪುಂ) 1. ಧ್ರುವನಕ್ಷತ್ರ. ನಕ್ಷತ್ರಸ್ಯ ನಕ್ಷತ್ರಚಕ್ರಸ್ಯ ನೆಮಿರಿವ | 2. ವಿಷ್ಣು. ನಕ್ಷತ್ರಾಣಿ ಜ್ಯೋತಿಷಿ ನಯತಿ ನಿರ್ವಹತಿ—ಗ್ರೀಕ್ (ಪ್ರಾಪಣಂ) "ಮಿಃ" (3-4-3). "ಯನ್ನಕ್ಷತ್ರಾತ್ಮಕಂ ಚಕ್ರಂ ಜ್ಯೋತೀರೂಪಮನಾಮಯಮ್ | ಯಸ್ತನ್ನಿತ್ಯಂ ಭ್ರಾಮಯತಿ ಭ್ರಮಂತಮನುಯಾತಿ ಚ | ನಕ್ಷತ್ರನೆಮಿವಿಜ್ಞೇಯೋ ನವಾಣಾಂ ಭ್ರಮನಾಯಕಃ" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ | "ನಕ್ಷತ್ರನೆಮಿರ್ನಕ್ಷತ್ರೀ" ವಿಂ ಸಂ | 3. ಚಂದ್ರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ರೇವತಿ. "ನಕ್ಷತ್ರ-ನೆಮಿಃ ಶೀತಾಂಶುರೇವತ್ಯೋತ್ತಾನಪಾದಿಷು" ಹೇಮಂ |

ನಕ್ಷತ್ರಪತಿ ನಕ್ಷತ್ರಪತಿ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ನಕ್ಷತ್ರಾಣಾಂ ಪತಿಃ |

ನಕ್ಷತ್ರಪಥ ನಕ್ಷತ್ರಪಥ (ಪುಂ) ನಕ್ಷತ್ರಗಳು ಸಂಚರಿಸುವ ಮಾರ್ಗ.

ನಕ್ಷತ್ರಮಾಲಾ ನಕ್ಷತ್ರಮಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಸಾಲು. ನಕ್ಷತ್ರಾಣಾಂ ಮಾಲಾ | 2. ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ಮುತ್ತುಗಳಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಹಾರ. ನಕ್ಷತ್ರಾಣಾಮಶ್ವಿನ್ಯಾದೀನಾಂ ಮಾಲೇವ |

ನಕ್ಷತ್ರಯಾಜಕ ನಕ್ಷತ್ರಯಾಜಕ (ಪುಂ) ದ್ರವ್ಯಾಶೆಯಿಂದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಇಲ್ಲದ ದೋಷಗಳನ್ನು ಹೇಳಿ ಅದಕ್ಕಾಗಿ ಶಾಂತಿಯನ್ನು ಮಾಡಿಸುವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಧಮ. ನಕ್ಷತ್ರನಿಮಿತ್ತಂ

ವೃತ್ಯರ್ಥಂ ಯಾಜಯತಿ—ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾಯಾಮ್) + ಣಿच् "ಫಲ್" (3-1-133) |

ನಕ್ಷತ್ರರಾಜ ನಕ್ಷತ್ರರಾಜ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ನಕ್ಷತ್ರಾಣಾಂ ರಾಜಾ—"ರಜ್" (4-4-91) |

ನಕ್ಷತ್ರಲೋಕ ನಕ್ಷತ್ರಲೋಕ (ಪುಂ) ನಭೋಮಂಡಲ. ಅಂತರಿಕ್ಷ. ಆಕಾಶ. ನಕ್ಷತ್ರಾಣಾಂ ಲೋಕಃ | "ಜ್ಯೋತಿಷ್ಯಕ್ರೇ ಸಮಸ್ತೇಽಸ್ಮಿನ್ ಅಗ್ರಗಣ್ಯಾ ಭವಿಷ್ಯಥ | ಮೇಷಾದೀನಾಂ ಚ ರಾಶೀನಾಂ ಯೋನಯೋ ಯುಯುತಮಾಃ | ಅಪಧೀನಾಂ ಸುಧಾಯಾಶ್ಚ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಣಾಂ ಚ ಯಃ ಪತಿಃ | ಪತಿಮತ್ಯೋ ಭವತ್ಯೋಽಪಿ ತೇನ ಪತ್ಯಾ ಶುಭಾನನಾಃ | ಭವತೀನಾಮಿದಂ ಲಿङ್ಗಂ ನಕ್ಷತ್ರೇಶ್ವರಸಂಜ್ಞಿತಮ್ | ಪೂಜಯಿತ್ವಾ ನರೋ ಗಂತಾ ನಕ್ಷತ್ರಲೋಕಮುತ್ತಮಮ್ | ಉಪರಿಷ್ಠಾನ್ಮುಗಾಕ್ಷಸ್ಯ ಲೋಕೋ ಯಸ್ತು ಭವಿಷ್ಯತಿ | ಸರ್ವಾಸಾಂ ತಾರಕಾಣಾಂ ಚ ಮಧ್ಯೇ ಮಾನ್ಯಾ ಭವಿಷ್ಯಥ" ಕಾಶೀಖಂ | ಈ ನಕ್ಷತ್ರಲೋಕವು ಚಂದ್ರ ಲೋಕಕ್ಕಿಂತಲೂ ಮೇಲಿರುವುದು.

ನಕ್ಷತ್ರವಿದ್ಯಾ ನಕ್ಷತ್ರವಿದ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ ಗ್ರಹಗಳ ಚರವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಜ್ಯೋತಿಷವಿದ್ಯೆ. ಜ್ಯೋತಿಷಶಾಸ್ತ್ರ. ನಕ್ಷತ್ರಾಣಾಂ ತತ್ರ ಸ್ಥಿತಾನಾಂ ಗ್ರಹಾಣಾಂ ಚಾರಜ್ಞಾನಾಯ ವಿದ್ಯಾ | "ನ ಚೋತ್ಪಾತನಿಮಿತ್ತಾಮ್ಯಾಂ ನ ನಕ್ಷತ್ರಾಙ್ಗ-ವಿದ್ಯಾ | ನಾನುಶಾಸನವಾದಾಮ್ಯಾಂ ಮಿಕ್ಷಾಂ ಲಿಪ್ಸೇತ ಕಹಿಚಿತ್" ಮನುಂ 6-40 |

ನಕ್ಷತ್ರವ್ಯೂಹ ನಕ್ಷತ್ರವ್ಯೂಹ (ಪುಂ) ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಗುಂಪು. ಜೇತನ ಮತ್ತು ಅಜೇತನ ವಸ್ತುಗಳ ಶುಭಾಶುಭಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಸಮೂಹ.

ನಕ್ಷತ್ರಶೂಲ ನಕ್ಷತ್ರಶೂಲ (ಪುಂ) ಪೂರ್ವ ಮೊದಲಾದ ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಯಾಣಕ್ಕೆ ನಿಷಿದ್ಧವಾದ ನಕ್ಷತ್ರ.

| ದಿಕ್ಕು                     | ನಿಷಿದ್ಧ ನಕ್ಷತ್ರ          |
|----------------------------|--------------------------|
| ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನ ಪ್ರಯಾಣಕ್ಕೆ .. | ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಮತ್ತು ಧನಿಷ್ಠೆ    |
| ದಕ್ಷಿಣದಿಕ್ಕಿನ ..           | ಅಶ್ವಿನಿ ಮತ್ತು ಶ್ರವಣ      |
| ಪಶ್ಚಿಮದಿಕ್ಕಿನ ..           | ರೋಹಿಣಿ ಮತ್ತು ಪುಷ್ಯ       |
| ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿನ ..            | ಉತ್ತರಫಲ್ಗುನಿ ಮತ್ತು ಹಸ್ತ. |

"ಪೂರ್ವೇ ಜ್ಯೇಷ್ಠನಿಷ್ಠೇ ಚ ಶ್ರವಣಾಶ್ವಿನಿದಕ್ಷಿಣೇ | ಪಶ್ಚಿಮೇ ಪುಷ್ಯರೋಹಿಣ್ಯೋ ಹಸ್ತಾಫಲ್ಗುನಿಚೋತ್ತರೇ" ಮುಹೂಂ 60 |

ನಕ್ಷತ್ರಸಂಧಿ ನಕ್ಷತ್ರಸಂಧಿ (ಪುಂ) ಒಂದು ನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ ಮುಂದಿನ ನಕ್ಷತ್ರಕ್ಕೆ ಗ್ರಹಗಳ ಪ್ರವೇಶದ ಕಾಲ. ನಕ್ಷತ್ರಯೋಃ ಸಂಧಿಃ |

ನಕ್ಷತ್ರಸೂಚಕ ನಕ್ಷತ್ರಸೂಚಕ (ಪುಂ) ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದ ಜೋಯಿಸ. ಜ್ಯೋತಿಷಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳದೆ



ಜೋಯಿಸನೆಂದು ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳುವವನು. ನಖತ್ರಾಣಿ  
ಶುಭಾಶುಭತಯಾ ಸೂಚಯತಿ - ಸೂಚ (ಪೇಶುನ್ಯ) "ಞ್ವಲ್"  
(೩-೧-೧೩೩). "ಅವಿದಿತ್ವೇವ ಯಃ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ದೈವಜ್ಞತ್ವಂ  
ಪ್ರಪದ್ಯತೇ | ಸ ಪಙ್ಕ್ತಿರ್ದೂಷಕಃ ಪಾಪೋ ಜ್ಞೇಯೋ ನಖತ್ರಸೂಚಕಃ"  
ಬೃಹತ್ಸಂ ೨-೧೬ |

ನಖತ್ರಿನ್ ನಖತ್ರಂ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ಶಿಶುಮಾರಾಕೃತಿ-  
ಜ್ಯೋತೀರೂಪಂ ನಖತ್ರಮಸ್ಮಿನ್ನಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) |  
"ಶಿಶುಮಾರಾಕೃತಿ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಯದ್ವಂ ಜ್ಯೋತಿಷಾಂ ದಿವಿ |  
ತದಸ್ಯಾಸ್ತಿ ಸ ನಖತ್ರೀ ಸಪ್ತಾಣಾಂ ಲೋಕಪಾವನಃ" ಇತಿ  
ನಿರೂಪಿತಃ | "ನಖತ್ರನೆಮಿರ್ನಖತ್ರೀ" ವಿಂಸಂ | 2. ಚಂದ್ರ.

ನಖತ್ರೇಶ ನಖತ್ರೇಶ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ನಖತ್ರಾಣಾಮೀಶಃ |  
"ನಖತ್ರೇಶಕೃತೇಕ್ಷಣೋ ಗಿರಿಗುರೋ ಗಾಢಾಂ ರುಚಿಂ ಧಾರಯನ್"  
ಸಾಂ ದಂ |

ನಖ ನಖ (ಪುಂ) 1. ನಖ, ಉಗುರು. ನ ಖಮಸ್ಯ |  
ಪ್ರಕೃತ್ಯಾ ಭವತಿ (೬-೩-೭೪) | "ಕಾಮಿನಾಮನಿಮೃತಾನ್ಯಪಿ  
ರಮಾಸ್ತಮ್ಭಕೋಮಲತಲೇಷು ನಖಾನಿ" ಮಾಘಂ ೧೦-೬೬ |  
2. ಷಡ್. (ನಂ) 3. ಒಂದು ಗಂಧದ್ರವ್ಯ. 'ನಖಂ  
ತು ಗಂಧದ್ರವ್ಯೇ ಸ್ಯಾನ್ನಖಃ ಕರಜಘಂಜಯೋಃ" ವಿಶ್ವಂ |

ನಖಕುಟ ನಖಕುಟ (ಪುಂ) ನಾಪಿತ, ಉಗುರನ್ನು ಕತ್ತರಿಸುವ  
ವವನು, ಕ್ಷೌರಿಕ. ನಖಂ ಕುಟಯತಿ-ಕುಟ (ಛೇದನ) "ಅಞ್"  
(೩-೨-೧) |

ನಖಕೃತ ನಖಕೃತ (ನಂ) ಉಗುರಿನಿಂದಾದ ಗಾಯ. ನಖೈಃ  
ಕೃತಮ್ | "ಸದ್ಯೋ ವಸಂತೇನ ಸಮಾಗತಾನಾಂ ನಖಕೃತಾನೀವ ವನ-  
ಸ್ಥಳೀನಾಮ್" ಕುಮಾರಂ ೩-೨೯ |

ನಖದಾರಣ ನಖದಾರಣ (ನಂ) ಉಗುರನ್ನು ಕತ್ತರಿಸುವ  
ನಾಪಿತನ ಒಂದು ಆಯುಧ, ಚೀರಣ. ನಖಂ ದಾಯತೇಜೇನ-ದ್  
(ವಿದಾರಣ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) |

ನಖಾನಿಕ್ರಂತನ ನಖಾನಿಕ್ರಂತನ (ನಂ) ಚೀರಣ, ನಾಪಿತನು  
ಉಗುರನ್ನು ಕತ್ತರಿಸುವ ಒಂದು ಆಯುಧ. ನಖಂ ನಿಕ್ರಂತಯತಿ  
ಅನೇನ-ಕೃತೀ (ಛೇದನ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | ಮುಮ್ |  
ಬಾಹುಂ |

ನಖಪದ ನಖಪದ (ನಂ) ನಖಕೃತ. ನಖಸ್ಯ ಪದಮ್ |

ನಖಪಚ ನಖಪಚ (ವಿಂ) ಉಗುರನ್ನು ಸುಡುವ, ಉಗು-  
ರನ್ನು ಬಿಸಿಯಾಗಿ ಮಾಡುವ. ನಖಂ ಪಚತಿ - ಡು ಪಚಷ್  
(ಪಾಕೇ) "ಖಶ್" (೩-೨-೩೪) | ಮುಮ್ (೬-೩-೬೭) |

ನಖರ ನಖರ (ಪುಂ) ಉಗುರು. ನಖಂ ರಾತಿ-ರಾ (ದಾನೇ)  
"ಕಃ" (೩-೨-೩) | "ಕಿಂ ಪುನರಲಂಕೃತಸ್ತ್ವಂ ಸಂಪ್ರತಿ ನಖರ-  
ಕೃತೇಸ್ತಸ್ಯಾಃ" ಸಾಂ ದಂ |

ನಖರಂಜನಿ ನಖರಂಜನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾಪಿತನು ಉಗುರನ್ನು  
ತೆಗೆಯುವ ಒಂದು ಆಯುಧ, ಚೀರಣ. ನಖಂ ರಂಜಯತಿ-  
ರಂಜ (ರಾಗೇ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) | ಗೌರಾಂ  
"ಡೀಷ್" (೪-೧-೪೧) | "ಪುನರ್ಮವಂಚೇದಕರೀ ಗಂಜೇವ  
ನಖರಂಜನೀ" ಉದ್ಧಂ |

ನಖರಾಯುಧ ನಖರಾಯುಧ (ಪುಂ) 1. ಸಿಂಹ. 2. ವ್ಯಾಘ್ರ,  
ಹುಲಿ. 3. ನಾಯಿ. ನಖರ ಎವಾಯುಧಮಸ್ಯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
ಜಾತಿಂ "ಡೀಷ್" (೪-೧-೬೩) |

ನಖರಾಹ ನಖರಾಹ (ಪುಂ) ಗಂಧದ್ರವ್ಯ ಗಿಡ. ನಖರಮಾಹ್ವಯತೇ  
ಸ್ಪರ್ಧಂತೇ ಆಕಾರೇಣ |

ನಖವಿಷ ನಖವಿಷ (ಪುಂ) ಮಂಜುಷ್ಯ. ನಖೇ ವಿಷಮಸ್ಯ |  
"ನಾಗಾಃ ಸ್ಯುರ್ದಗ್ವಿಷಾ ಲೂನವಿಷಾಸ್ತು ವೃಶ್ಚಿಕಾದಯಃ | ವ್ಯಾಘ್ರಾ-  
ದಯೋ ಲೋಮವಿಷಾ ನಖವಿಷಾ ನರಾದಯಃ | ಲಾಲಾವಿಷಾಸ್ತು  
ಲೂತಾಃ ಕಾಲಾಂತರವಿಷಾಃ ಪುನಃ | ಮೃಷಿಕಾಃ" |

ನಖಾಘಾತ ನಖಾಘಾತ (ಪುಂ) ನಖಗಳಿಂದ ಹೊಡೆಯುವುದು.  
ನಖೇರಾಘಾತಃ | ಸುರತ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ನಾಯಿಕಾ  
ನಾಯಕರ ಅಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಬೀಳುವ ನಖಗಳ ಏಟು. "ನಖಾ-  
ಘಾತಃ ಪ್ರದಾತವ್ಯೋ ಯಥಾಸ್ಥಾನಾನಿ ನರ್ಮಸು | ಪಾರ್ಶ್ವಯೋಃ ಸ್ತನಯೋ-  
ಃ ಕೇವಲಂ ಒರೀ ಕೇವಲಂ ನಿತಂಬಕೇ | ಕಕ್ಷಸ್ಥಲೇ ಚ ಕಕ್ಷಾಂತೇ  
ಕಪಾಲೇ ಬಾಹುಮೂಲಕೇ | ಶ್ರೀವಾಯಾಂ ಕಂಠದೇಶೇ ಚ ನಖಾಘಾತಂ  
ಸಮಾಚರೇತ್" |

ನಖಾನಖಿ ನಖಾನಖಿ (ಅವ್ಯಂ) ಪರಸ್ಪರ ನಖಗಳಿಂದ  
ಹೊಡೆದು ಮಾಡುವ ಯುದ್ಧ. ನಖೇಶ್ಚ ನಖೇಶ್ಚ  
ಪ್ರಹೃತ್ಯ ಪ್ರವೃತ್ತಂ ಯುದ್ಧಮ್ ಕರ್ಮವ್ಯಂ "ಇಚ್" ಸಮಾಸಾಂತಃ  
(೪-೪-೧೨೭) |

ನಖಾಯುಧ ನಖಾಯುಧ (ಪುಂ) 1. ಸಿಂಹ. 2. ವ್ಯಾಘ್ರ,  
ಹುಲಿ. 3. ನಾಯಿ. ನಖ ಎವಾಯುಧಮಸ್ಯ |

ನಖಾಲ ನಖಾಲ (ಪುಂ) ನೀಲಿ ಗಿಡ.

ನಖಾಶಿನ್ ನಖಾಶಿನ್ (ಪುಂ) ಉಲ್ಲಾಕ, ಗೂಬೆ. ನಖಮ-  
ಶ್ನಾತಿ-ಅಶ (ಭೋಜನ) "ಣಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮) |

ನಖಿನ್ ನಖಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಸಿಂಹ. 2. ವ್ಯಾಘ್ರ, ಹುಲಿ.  
3. ನಾಯಿ. ನಖೋಸ್ತಸ್ಯ ಪ್ರಾಶಸ್ತೇನ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) |  
"ನದೀನಾಂ ಶಸ್ತ್ರಪಾಣಿನಾಂ ನಖಿನಾಂ ಶೃಂಗಿಣಾಂ ತಥಾ | ವಿಶ್ವಾಸೋ  
ನೈವ ಕರ್ತವ್ಯಃ ಸ್ತ್ರೀಷು ರಾಜಕುಲೇಷು ಚ" ಚಾಣಕ್ಯಃ | (ವಿಂ)  
4. ನಖಿವೇ ಪ್ರಧಾನವಾಗಿ ಉಳ್ಳವನು.

ನಖಿ ನಖೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಖಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಗಂಧದ್ರವ್ಯ.  
ನಖಃ ಆಕಾರತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) | ಗೌರಾಂ  
"ಡೀಷ್" (೪-೧-೪೧) |



**ನಗ ನಗ (ಪುಂ)** 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ನ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ಡ:” (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) । ವಾ ನಗೋ ನಲೋಪ: (೬-೩-೭೭) । “ಅನುಚರೇಣ ಧನಾಧಿಪತೇರಥೋ ನಗವಿಲೋಕನ-ವಿಷ್ಮಿತಮಾನಸ:” ಕಿರಾಂ ೪-೧೬ । 2. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. “ವನಂ ಬಬಾಧೇ ವಿಷಪಾವಕೋತ್ಯಾ ವಿಪನ್ನಗಾನಾಮವಿಪನ್ನಗಾನಾಮ್” ಮಾಘಂ ೪-೧೫ ।

**ನಗಜ ನಗಜ (ವಿಂ)** 1. ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ನಗೇ ಜಾಯತೇ—ಜನೀ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) “ಡ:” (೩-೨-೯೭) । “ನ ಗಜಾ ನಗಜಾ ದಯಿತಾ ದಯಿತಾ ವಿಗತಂ ವಿಗತಂ ಲಲಿತಂ ಲಲಿತಮ್” ಭट्टಿಂ ೧೦-೯ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಜಾ-ಜಾ. 2. ಪರ್ವತ. ಪರ್ವತರಾಜನ ಪುತ್ರಿ.

**ನಗನಿಮ್ನಗಾ ನಗನಿಮ್ನಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗಿರಿನದಿ, ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ನದಿ.

**ನಗಪತಿ ನಗಪತಿ (ಪುಂ)** 1. ಪರ್ವತರಾಜ, ಹಿಮವಂತ. ನಗಾನಾಂ ಪತಿ: । 2. ಚಂದ್ರ. ನಗಾನಾಮೋಷಧಿನಾಂ (ವೃಕ್ಷಾಣಾಮ್) ಪತಿ: ।

**ನಗಭೂ ನಗಭೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಪರ್ವತಪ್ರದೇಶ. ನಗಸ್ಯ ಭೂ: । (ವಿಂ) 2. ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ನಗೇ ಭವತಿ—ಭೂ “ಕ್ವಿಪ್” ।

**ನಗರ ನಗರ (ನಂ)** 1. ಪುರ, ಪಟ್ಟಣ. ನಗಾ: ಸಂತೃಪ್ತ “ರ:” (ವಾಂ ೪-೨-೧೦೭) । ವಾಣಿಜ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿಪುಣರಾದ ವರ್ತಕರಿಂದಲೂ ಚಾತುರ್ವರ್ಣ್ಯದಿಂದಲೂ ನಾನಾಜಾತಿಯ ಜನರಿಂದಲೂ ಅನೇಕ ಶಿಲ್ಪಿಗಳಿಂದಲೂ ಸಕಲ ದೇವತೆ (ದೇವರ ಗುಡಿ)ಗಳಿಂದಲೂ ಕೂಡಿದ ಊರು ನಗರವೆನಿಸು ವುದು. “ಪಣ್ಯಕ್ರಿಯಾದಿನಿಪುಣೈಶ್ಚಾತುರ್ವರ್ಣ್ಯಜನೈರ್ಯುತಮ್ । ಅನೇಕ-ಜಾತಿಸಮ್ಬದ್ಧಂ ನೈಕಶಿಲ್ಪಿಸಮಾಕುಲಮ್ । ಸರ್ವದೇವತಸಮ್ಬದ್ಧಂ ನಗರತ್ವಮಿಧೀಯತೇ” । ಗೌರಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪೧) ।

ನಗರೀ ನಗರೀ.

**ನಗರಕಾಕ ನಗರಕಾಕ (ಪುಂ)** ಪಟ್ಟಣದ ಕಾಗೆ. ಕಾಗೆಯಂತೆ ನಡೆವಳಿಕೆಯುಳ್ಳ ಮನುಷ್ಯನಲ್ಲಿ ಈ ಪ್ರಯೋಗ.

**ನಗರಗಾಮಿನ್ ನಗರಗಾಮಿನ್ (ವಿಂ)** ನಗರಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ, ಪಟ್ಟಣಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಸೇರುವ (ದಾರಿ). ನಗರಂ ಗಚ್ಛತಿ ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ಣಿಗಿ:” (೩-೧-೧೩೪) । “ಗಜವಧು-ಮಾರುಹ ನಗರಗಾಮಿನಂ ಮಾರ್ಗಮಿಂದುವದನಾಲಂಕೃತವತೀ” ಮಾಲತೀಂ ೧ ।

**ನಗರಘಾತ ನಗರಘಾತ (ಪುಂ)** ಗಜ, ಆನೆ. ನಗರಂ ಹಂತಿ—ಹನ (ಹಿಸಾಗತೃಯೋ:) “ಅನ್” ಬಾಹುಂ । ನಗರಘಾತೋ ಹಸ್ತೀ ಸಿಂ ಕೌಂ ।

**ನಗರಮಾರ್ಗ ನಗರಮಾರ್ಗ (ಪುಂ)** ಪಟ್ಟಣದ ರಸ್ತೆ, ನಗರ ದೊಳಗಿನ ರಸ್ತೆ, ರಾಜಮಾರ್ಗ. ರಾಜಮಾರ್ಗವು ರಾಜನ ಆರಮಣಿಯ ಸುತ್ತಲೂ (ಸಾಲ್ಕು ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿಯೂ) ಇರಬೇಕು. ಮೊದಲನೆಯ ದರ್ಜೆಯ ಮಾರ್ಗವು ಮೂವತ್ತು ಹಸ್ತಗಳ (ಮೊಳಗಳ) ಅಗಲವಾಗಿಯೂ ಎರಡನೆಯ ದರ್ಜೆಯದು ಇಪ್ಪತ್ತು ಹಸ್ತ (ಮೊಳ)ಗಳ ಅಗಲವಾಗಿಯೂ ಇರಬೇಕು. ಅಧಮವಾದುದು ಹದಿನೈದು ಮೊಳ ಅಗಲದ್ದಾಗಿರಬೇಕು. “ರಾಜಮಾರ್ಗಸ್ತು ಕರ್ತವ್ಯಾಶ್ವತು-ದಿಕ್ಷು ನೃಪಾಲಯಾತ್ । उत्तमो राजमार्गस्तु त्रिशद्वस्त-मितो भवेत् । मध्यमो विशतिकरो दशपञ्चकरोऽऽ-धम:” ।

**ನಗರಂಧಕರ ನಗರಂಧಕರ (ಪುಂ)** ಪಣ್ಣುಖ. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಸ್ಕಂದ. ನಗಸ್ಯ ಕೌञ्चस्य रन्ध्रं करोति—ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣೇ) “ಠ:” (೩-೨-೨೦) । “ಅಭವದಸ್ಯ ತತೋ ಗುಣವತ್ತರಂ ಸನಗರಂ ನಗರಂಧಕರೋಜಸ:” ರಘುಂ ೯-೨ ।

**ನಗರಾಧ್ಯಕ್ಷ ನಗರಾಧ್ಯಕ್ಷ (ಪುಂ)** ನಗರಸಭೆಯ ಅಧ್ಯಕ್ಷ. ರಾಜನಿಂದ ಅಥವಾ ಪ್ರಜೆಗಳಿಂದ ಚುನಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ನಗರದ ಪ್ರಥಮ ಪ್ರಜೆ. ನಗರೇ ಅಧ್ಯಕ್ಷ: । ನಗರಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಜೆಗಳ ಸಕಲ ಹಿತಗಳನ್ನೂ ಚಿಂತಿಸಲು ಮತ್ತು ಅವರಿಗೆ ತಕ್ಕ ಸೌಕರ್ಯ ಸೌಲಭ್ಯಗಳನ್ನೂ ಕಲ್ಪಿಸಲು ಒಬ್ಬನನ್ನು ಅಧ್ಯಕ್ಷನೆನ್ನಾಗಿ ಚುನಾಯಿಸಬೇಕು. “ನಗರೇ ನಗರೇ ವಾ ಸ್ಥಾದೇಕ: ಸರ್ವಾರ್ಥಚಿಂತಕ: । उच्चै: स्थाने घोररूपो नक्षत्राणामिव ग्रह: । भवेत्स तान् परिक्रामेत् सर्वनिव सभासद:” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೮೭-೧೦, ೧೧ ।

**ನಗಾಟನ ನಗಾಟನ (ಪುಂ)** 1. ವಾನರ, ಕಪಿ. ನಗೇ ವೃಕ್ಷೇ ಅಟನಮಸ್ಯ । “ಗೋಲಾಙ್ಗುಲೇ ಕಪಿತ್ಥಾಸ್ಯದಧಿಶೋಣನಗಾಟನಾ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । (ನಂ) 2. ಪರ್ವತ ಮತ್ತು ವೃಕ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚಾರ. ನಗೇ ಗಿರೌ ವೃಕ್ಷೇ ವಾ ಅಟನಮ್ ।

**ನಗಾಧಿಪ ನಗಾಧಿಪ (ಪುಂ)** 1. ಪರ್ವತಗಳ ರಾಜ. ನಗಾ-ನಾಮಧಿಪ: । 2. ಸುಮೇರ. ಪರ್ವತ.

**ನಗಾಧಿರಾಜ ನಗಾಧಿರಾಜ (ಪುಂ)** ಪರ್ವತಗಳ ರಾಜ, ಹಿಮವಂತ. ನಗಾನಾಮಧಿರಾಜ: । “ಅಸ್ಯುತರಸ್ಯಾಂ ದಿಶಿ ದೇವತಾತ್ಮಾ ಹಿಮಾಲಯೋ ನಾಮ ನಗಾಧಿರಾಜ:” ಕುಮಾಂ ೧-೧ ।

**ನಗಾರಿ ನಗಾರಿ (ಪುಂ)** ಪರ್ವತಗಳ ಶತ್ರು, ಇಂದ್ರ. ನಗಾ-ನಾಮರಿ: । ಪರ್ವತಗಳ ರಕ್ಕಗಳನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿದುದರಿಂದ ಇಂದ್ರನು ಪರ್ವತಗಳಿಗೆ ಶತ್ರುವಾದನು. “ನದೀಜ, ಲಕ್ಷ್ಮೀಶ-ವನಾರಿಕೇತುರ್ನಗಾಹ್ವಯೋ ನಾಮ ನಗಾರಿಸುತು:” ಭಾಂ ವೀರಾಂ ೪೦-೧೧ ।



**ನಗಾಖ್ಯ ನಗಾಕ್ರಿಯ** (ವಿಂ) ಪರ್ವತ ಮತ್ತು ವೃಕ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ. ನಗ: ಪರ್ವತ: ವೃಕ್ಷೋ ವಾ ಆಶ್ರಯೋ यस್ಯ ।

**ನಗೇಂದ್ರ ನಗೇಂದ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತಗಳ ಒಡೆಯ, ಹಿಮವಂತ. ನಗಾನಾಮಿन्द्र: । “ರಶ್ಮಿಪ್ವಿವಾಡಾಯ ನಗೇಂದ್ರಸಕ್ತಾಂ ವಿವರತಯಾ-  
ಮಾಸ ನೃಪಸ್ಯ ದೃಷ್ಟಿಮ್” ರಘುಂ ೨-೨೮ । 2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಪರ್ವತ.

**ನಗೌಕಸ್ ನಗೌಕಸ್** (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ನಗೋ ವೃಕ್ಷ: ನಗೇ ವೃಕ್ಷೇ ವಾ ಆಕೋಽಸ್ಯ । 2. ಸಿಂಹ. 3. ಶರಭಮೃಗ. 4. ವ್ಯಾಘ್ರ, ಹುಲಿ. ನಗ: ಪರ್ವತ: ಆಕೋ ಯಸ್ಯ । (ವಿಂ) 5. ಬೆಟ್ಟ ಮತ್ತು ವೃಕ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ. “ನಗೌಕಾ: ಪುಸಿ ಶರಭೇ ಪಕ್ಷಿಪಚ್ಚಾಸ್ಯಯೋರಪಿ” ಮೇದಿಂ ।

**ನಗ್ನ ನಗ್ನ** (ಪುಂ) 1. ದಿಗಂಬರ ಜೈನಸಂನ್ಯಾಸಿ. 2. ಸ್ತುತಿ ಪಾಠಕ, ಹೊಗಳುಭಟ. (ವಿಂ) 3. ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ಧರಿಸದಿರುವವನು, ಬೆತ್ತಲೆಯವನು. ನಜತೇ—ಆ ನಜಿ (ಲಜ್ಜಾ-ಯಾಮ್) “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨) । ನತ್ವಮ್ (೮-೨-೪೫) । “ನಗ್ನೋ ವಿವಾಸಸಿ । ಮಾಗಧೇ ಚ ಕ್ಷಣಕೇ” ಹೇಮಂ । ನಗ್ನರು ಐದು ವಿಧ. (1) ದ್ವಿಕಚ್ಛ: (ಎರಡು ಕಚ್ಚೆಗಳನ್ನು ಹಾಕಿರುವವನು). (2) ಕಚ್ಛಶೇಷ: (ಬಟ್ಟೆಯ ತುದಿಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಕಚ್ಚೆ ಹಾಕಿರುವವನು). (3) ಮುಕ್ತಕಚ್ಛ: । (4) ಏಕವಾಸಾ: (ಒಂದೇ ವಸ್ತ್ರವನ್ನು ಉಟ್ಟಿರುವವನು). ಮತ್ತು (5) ಅವಾಸಾ: (ಬೆತ್ತಲೆಯಾಗಿರುವವನು) ಇವರೆಲ್ಲರೂ ನಗ್ನರು. ನಗ್ನರಾಗಿರುವ ಪುರುಷರನ್ನೂ ಹೆಂಗಸರನ್ನೂ ನೋಡಕೂಡದು. “ನ ನಗ್ನಾಂ ಸ್ತ್ರೀಯಮೀಕ್ಷೇತ ಪುರುಷಂ ವಾ ಕದಾಚನ” । 4. ವೇದಶಾಸ್ತ್ರಾಭ್ಯಾಸಗಳಿಲ್ಲದ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಇವನ ಅನ್ನವು ನಿಷಿದ್ಧ. “ಯೇಷಾಂ ಕುಲೇ ನ ವೇದೋಽಸ್ತಿ ನ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ನೈವ ಚ ಶ್ರುತಮ್ । ತೇ ನಗ್ನಾ: ಕೀರ್ತಿತಾ: ಸದ್ವಿಹಿತೇಷಾಮಗ್ರಂ ವಿಗೃಹಿತಮ್” ಮಾರ್ಕಂ ।

**ನಗ್ನಜಿತ್ ನಗ್ನಜಿತ್** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ರಾಜ. ಈತನ ಮಗಳಾದ ಸತ್ಯೆ ಎಂಬುವಳನ್ನು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಮದುವೆ ಯಾದನು. ಭಾಗಂ ೧೦-೫೮ । 2. ವಾಸ್ತುಶಿಲ್ಪ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಬರೆದ ಒಬ್ಬ ಪಂಡಿತ. “ಆಸ್ಯಂ ಸಕೇಶನಿಚಯಂ ಷೋಡಶ ದೈರ್ಯಂ ನಗ್ನಜಿತ್ಪ್ರೋಕ್ತಮ್” ಬೃಹತ್ಸಂ ೫೮-೧೫ ।

**ನಗ್ನತಾ ನಗ್ನತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆತ್ತಲೆಯಾಗಿರುವಿಕೆ. ನಗ್ನ “ತಲ್” (೫-೧-೧೧೯) ।

**ನಗ್ನಮುಷಿತ ನಗ್ನಮುಷಿತ** (ವಿಂ) ಧನ ಮತ್ತು ಆಸ್ತಿಗಳನ್ನು ಕಸಿದುಕೊಂಡುದರಿಂದ ನಗ್ನನಾಗಿರುವವನು. ಮುಷಿತೋ ನಗ್ನ: । ಪರಿನಿಪಾತ: (೨-೨-೩೧) । “ಕೋ ನಗ್ನಮುಷಿತ-ಪ್ರಖ್ಯಂ ಬಹು ಮನ್ಯೇತ ರಾಜವಮ್” ಭಟ್ಟಿಂ ೫-೮೪ ।

**ನಗ್ನಭವಿಷ್ಣು ನಗ್ನಭವಿಷ್ಣು** (ವಿಂ) ನಗ್ನನಾಗಿ ಆಗುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಬೆತ್ತಲೆಯಾಗಿ ಆಗುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಅನಗ್ನೋ ನಗ್ನೋ ಭವತಿ—ಮ “ಖಿಣ್ಣುಕ್” (೩-೨-೫೭) । “ಕುಕಬ್” (೩-೨-೫೭) । —ಭಾವುಕ-ಭಾವುಕ. ಮುಂ (೬-೩-೬೭) ।

**ನಗ್ನಹ ನಗ್ನಹ** (ಪುಂ) ಮದ್ಯ ತಯಾರಿಸಲು ಬೇಕಾದ ಅನೇಕ ವಸ್ತುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಗಟ್ಟಿಪದಾರ್ಥ. ಹೃಯತೇ—ಹ್ವೇ (ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) “ವಿವಪ” (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮) । ನಗ್ನಸ್ಯ ಹ: । ಈ ವಸ್ತುವು ಇದನ್ನು ಸೇವಿಸುವವನನ್ನು ನಗ್ನನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ನಗ್ನಾಟ ನಗ್ನಾಟ** (ಪುಂ) ದಿಗಂಬರನಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವ ಜೈನ ಸಂನ್ಯಾಸಿ. ನಗ್ನ: ಸನ್ ಅಟತಿ—ಅಟ (ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ಫಲ್” (೩-೧-೧೩೩) । —ಅಟಕ: —ಅಟಕ:

**ನಗ್ನಿಕಾ ನಗ್ನಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪುಷ್ಪವತಿಯಾಗದಿರುವ ಹೆಂಗಸು, ಮೈ ನೆರೆಯದಿರುವ ಹೆಂಗಸು (ಕನ್ಯೆ). ನಜತೇ—ಆನಜಿ (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್) “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨) । ನತ್ವಮ್ (೮-೨-೪೫) । ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” (೫-೩-೭೫) । 2. ಬೆತ್ತಲೆಯ ಹೆಂಗಸು.

**ನಗ್ನೀಕರಣ ನಗ್ನೀಕರಣ** (ನಂ) ಬೆತ್ತಲೆಯಾಗಿ ಮಾಡುವುದು.

**ನಗ್ನೀಕೃತ ನಗ್ನೀಕೃತ** (ವಿಂ) ಬೆತ್ತಲೆಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನಗ್ನ: ನಗ್ನ: ಕೃತ: ।

**ನಗ್ನೀಭವನ ನಗ್ನೀಭವನ** (ನಂ) ಬೆತ್ತಲೆಯಾಗಿ ಆಗುವುದು.

**ನಗ್ನೀಭೂತ ನಗ್ನೀಭೂತ** (ವಿಂ) ಬೆತ್ತಲೆಯಾಗಿ ಆಗಿರುವ. ಅನಗ್ನ: ನಗ್ನೋ ಭೂತ: ।

**ನಗ್ನ ಸಂಗ** (ಪುಂ) ಜಾರ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿ.

**ನಚಿಕೇತ(ಸ್) ನಚಿಕೇತ(ಸ್)** (ಪುಂ) ಆರುಜಯೆಂಬ ಉದ್ದಾಲಕಮುಷಿಯ ಮಗ. [ಉದ್ದಾಲಕನು ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣರಿಗೆ ದಕ್ಷಿಣೆಗೆ ಬದಲಾಗಿ ಮುದಿ ಹಸುಗಳನ್ನು ಕೊಡುತ್ತಿದ್ದನು. ಇದನ್ನು ನೋಡುತ್ತಿದ್ದ ನಚಿಕೇತನು ನನ್ನನ್ನು ಯಾಗಿಗೆ ಕೊಡುವೆಯೆಂದು ತಂದೆಯನ್ನು ಕೇಳಿದನು. ಇದರಿಂದ ಕೋಪಗೊಂಡ ಉದ್ದಾಲಕನು ನಿನ್ನನ್ನು ಮೃತ್ಯುವಿಗೆ ಕೊಡುತ್ತೇನೆಂದು ಹೇಳಿದನು. ನಚಿಕೇತನು ಯಮನಲ್ಲಿಗೆ ಹೋದನು. ಯಮನು ಮನೆಯಲ್ಲಿಲ್ಲದಿರಲು ಬರುವವರೆಗೂ ಕಾದಿದ್ದನು. ಯಮನು ಬಂದು ನಚಿಕೇತನನ್ನು ಸತ್ಕರಿಸಿದನಂತರ ಇಬ್ಬರಿಗೂ ವಾದ ಪ್ರತಿವಾದಗಳು ನಡೆದವು. ನಚಿಕೇತನು ತನ ಬುದ್ಧಿಶಕ್ತಿಯಿಂದ



ಯಮನನ್ನು ಪೆಚ್ಚಿಸಿ ಒಳ್ಳೆಯ ಜ್ಞಾನವನ್ನು ಪಡೆದು ಮತ್ತೆ ತಂದೆಯಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದು ಸೇರಿದನು.] "ಮೃತ್ಯುಪ್ರೋಕ್ತಾಂ ನಚಿಕೇತೋಽಪ್ಯ ಲಂಘ್ಯಾ ವಿಜ್ಞಾನೇತಾಂ ಯೋಗವಿಧಿಂ ಚ ಕೃತ್ಸನಮ್" ಕಠೋಂ ।

**ನಚಿರ ನಚಿರ** (ಅವ್ಯಂ) ಬೇಗ, ಶೀಘ್ರವಾಗಿ, ಕ್ಷುಪ್ರವಾಗಿ. ನ ಚಿರಮ್ । ಚಿರ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ನ ಶಬ್ದದೊಡನೆ "ಸಹಸುಪಾ" (೨-೧-೪) ಸೂತ್ರದಿಂದ ಸಮಾಸ ಬಂದಿರುವುದು. ಹೀಗೆಯೇ ನಚಿರೇಣ ನಚಿರಾತ್ ಇತ್ಯಾದಿ. "ತೇಷಾಮಹಂ ಸಮುದ್ಧರ್ತಾ ಮೃತ್ಯುಸಂಸಾರಸಾಗರಾತ್ । ಭವಾಮಿ ನಚಿರಾತ್ ಪಾರ್ಥ ಮಯ್ಯಾವೇಶಿತಚೇತಸಾಮ್" ಗೀತಾ ೧೨-೭ ।

**ಆ ನಜಿ - ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್** (ಮಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸಂ) । ನಜತೇ । ಅನಜಿಷ್ಠ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ನನ್ ನನ್** (ಅವ್ಯಂ) ಇದು ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಕೊಡುವ ಒಂದು ಅವ್ಯಯ. (ಸಮಾಸದಲ್ಲಿ) ಉತ್ತರಪದವು ಪರವಾದಾಗ ಇದರ ನಕರಕ್ಕೆ ಲೋಪ ಬರುವುದು. ಉತ್ತರ ಪದವು ಅಜಾದಿಯಾಗಿದ್ದಲ್ಲಿ ನುಡ್ ಆಗುವುದು ಬರುವುದು. ನ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಃ ಅಬ್ರಾಹ್ಮಣಃ । ನ ಅಶ್ವಃ ಅನಶ್ವಃ । **ನನ್** ಅರ್ಥಗಳು: 1. ಅಭಾವ. "ಅಪಾಪಮ್" । "ಭೂತಲೇ ಷಡೌ ನಾಸ್ತಿ" ಇತ್ಯಾದಿ. 2. ನಿಷೇಧ. "ನ ಕುರ್ವೀತ ಬೃಥಾಚೇಷ್ಠಾಂ ನ ವಾಯಂಜಲಿನಾ ಪಿಬೇತ್ । ನೋತ್ಸಂಜ್ಞೇ ಮಹಾಬೇದ್ವಕ್ಷಯಾನ್ ನ ಜಾತು ಸ್ಯಾತ್ ಕುತೂಹಲಿ" ಮನುಂ ೪-೬೩ । 3. ಸ್ವರೂಪ. "ನ" ಇತಿ ನಕಾರಸ್ವರೂಪೋ ವರ್ಣಃ । 4. ಅತಿಕ್ರಮ, ಎರೆಯುವುದು, ಉಲ್ಲಂಘಿಸುವುದು. 5. ಈಷತ್, ಸ್ವಲ್ಪ. "ಅನುದರಾ ಕನ್ಯಾ" । 6. ಸಾದೃಶ್ಯ. "ಅಬ್ರಾಹ್ಮಣಃ" - ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸದೃಶಃ । 7. ವಿರುದ್ಧ. "ಅಧರ್ಮೇಣ ಚ ಯಃ ಪ್ರಾಹ ಯಶ್ಚಾಧರ್ಮೇಣ ಪೃಚ್ಛತಿ" ಮನುಂ ೨-೧೧೧ । 8. ಅನ್ಯತ್ವ, ಭೇದ. "ಅನಶ್ವಃ" । "ನಜಾಭಾವೇ ನಿಪೇಧೇ ಚ ಸ್ವರೂಪಾರ್ಥೋಪಪತ್ತಿಕರ್ಮೇ । ಷಡ್ವರ್ತೇ ಚ ಸಾದೃಶ್ಯೇ ತದ್ವಿರುದ್ಧತದನ್ಯಯೋಃ" ಖೇದಿಂ । "ತತ್ಸಾದೃಶ್ಯಮಭಾವಶ್ಚ ತದನ್ಯತ್ವಂ ತದಲ್ಪತಾ । ಅಪ್ರಾಶಸ್ತ್ಯಂ ವಿರೋಧಶ್ಚ ನಜರ್ಥಃ ಷಡ್ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ । ನನ್ ದ್ವಯವು ಪ್ರಕೃತಾರ್ಥವನ್ನು ದೃಢಪಡಿಸುವುದು. "ನ ಕಶ್ಚಿನ್ನಾಪರಾಧ್ಯತಿ" ।

**ನಟ - ನೃತ್ಯ** (ಮಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ) । ನಟತಿ । ನನಾಟ । ನಟಿತಾ । ನಟಿಷ್ಯತಿ । ನಟತು । ಅನಟತ್ । ನಟೇತ್ । ಇತ್ಯಾದಿ. ಕುಣಿದಾಡು, ಸಂಗೀತ ಮತ್ತು ವಾದ್ಯಗಳ ಸಮ್ಮೇಶ ಕುಣಿದಾಡು.

ಭಾವೇ :- ನಟಯತೇ । ನೆಡೆ । ನಟಿತಾ । ನಟಿಷ್ಯತೇ । ನಟಯತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ನಿವಿಧಿ :-** ನಟಯತಿ, -ತೇ । ನಟಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ । ನಟಯಿತಾ । ನಟಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ । ನಟಯತು, -ತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತ್ಸು :-** ನಟಿತವ್ಯಮ್ । ನಟನೀಯಮ್ । ನಾಟಯಮ್ । ನಟಿತಃ । ನಟಿತವಾನ್, -ವತೀ । ನಟನ್, -ಂತೀ । ನಟಿತುಮ್ । ನಟಿತಮ್ । ನಟನಮ್ । ನಟಿತ್ವಾ । ಪ್ರಣಟಯ ।

**ನಟ - ಅವಸ್ಥಾಪನೇ** (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸಂ) । ನಾಟಯತಿ, -ತೇ । ಅನೀನಟತ್, -ತ । ಇತ್ಯಾದಿ. ಸ್ವಲ್ಪ ಚಲಿಸು, ಸ್ವಲ್ಪ ಅಲುಗಾಡು.

**ನಟ ನಟಿ** (ಪುಂ) 1. ಶೈಲಾಪ, ಅಭಿನಯಪೂರ್ವಕ ಸಂಗೀತ ಮೇಳಗಳೊಡನೆ ಕುಣಿದಾಡುವವನು. ನಟ (ನೃತ್ಯ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । 2. ವ್ರಾತೃ (ಸಂಸ್ಕಾರಹೀನ) ನಾದ ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಗೆ ಸರ್ವರ್ಷ ಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಗ. "ಶಲೋ ಮಲಶ್ಚ ರಾಜನ್ಯಾದ್ವಾತ್ಯಾಸ್ತಿಚ್ಚಿವಿರೇವ ಚ । ನಟಶ್ಚ ಕರಣಶ್ಚೈವ ಷಸೌ ದ್ರವಿಡ ಏವ ಚ" ಮನುಂ ೧೦-೨೨ । 3. ಹೆಮ್ಮರ, ತಿಗಡುಮರ. 4. ವೃಶ್ಯಕಾವ್ಯಗಳ ಅರ್ಥವನ್ನು ಶರೀರ ಮತ್ತು ಮಾತುಗಳಿಂದ ಅಭಿನಯಿಸಿ ತೋರಿಸುವ ನರ್ತಕ. 5. ಅಶೋಕವೃಕ್ಷ. 6. ಲಾಳದ ಗಿಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ದೀ -ಟೀ. 7. ನರ್ತಕ. "ನದೀ ವಿದೂಷಕೋ ವಾಪಿ ಪಾರಿಪಾಶ್ವಕ ಏವ ವಾ" ಸಾಂ ೬೦ । 8. ಒಂದು ಗಂದಿಗರ ಸರಕು.

**ನಟಚರ್ಯಾ ನಟಚರ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಟನಕಾರ್ಯ, ವಾಕ್ಯಾರ್ಥಗಳನ್ನು ಅಭಿನಯದಿಂದ ತೋರಿಸುವುದು. ನಟಸ್ಯ ಚರ್ಯಾ । "ನಾಮಾನಿ ರೂಪಾಣಿ ಮನೋವಚೋಭಿಃ ಸಂತನ್ವತೋ ನಟಚರ್ಯಾಮಿ-ವಾಜಃ" ಭಾಗಂ ೧-೩-೩೭ ।

**ನಟತ್ ನಟಿತ್** (ವಿಂ) ನರ್ತನಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಕುಣಿದಾಡುತ್ತಿರುವ. ನಟ (ನೃತ್ಯ) "ಶತೃ" (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೌಪ್" (೪-೧-೬) । -ಂತೀ -ಶ್ವೀ.

**ನಟನ ನಟಿನ** (ನಂ) 1. ನರ್ತನ, ಕುಣಿದಾಟ. ನಟ (ನೃತ್ಯ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಶರೀರ ಮತ್ತು ವಾಕ್ಯ ಇವುಗಳಿಂದ ರಾಮ ಕೃಷ್ಣ ಮೊದಲಾದವರ ಅನುಕರಣ.

**ನಟನೀಯ ನಟಿನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ನರ್ತನಮಾಡಬೇಕಾದ. 2. ಅಭಿನಯಿಸಬೇಕಾದ. ನಟ (ನೃತ್ಯ) "ಅನೀಯರ್" ।

**ನಟಭೂಷಣ ನಟಭೂಷಣ** (ಪುಂ) ಹರಿದಳ. ನಟಾನ್ ಭೂಷಯತಿ - ಮೃಷ (ಅಲಕ್ಷ್ಯಾರೇ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) ।

**ನಟಮಂಡನ ನಟಮಂಡನ** (ನಂ) ಹರಿದಳ. ನಟಾನ್ ಮಂಡಯತಿ - ಮಡಿ (ಭೂಷಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) ।



ನಟಸೂತ್ರ ನಟಸೂತ್ರ (ನಂ) ನಟನ ಅಭಿನಯಾದಿ ವಿಷಯ  
ಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಿಲಾಲಿಯಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಒಂದು  
ಗ್ರಂಥ. ನಟಸ್ಯ ತದ್ವ್ಯಾಪಾರಸ್ಯ ಅಭಿನಯಾದಿ: ಪ್ರತಿಪಾದಕಂ  
ಸೂತ್ರಮ್. "ಪಾರಾಶರೇಶಿಲಾಲಿಮ್ಯಾಂ ಭಿಕ್ಷುನಟಸೂತ್ರಯೋ: " ಪಾಂ  
ಸೂಂ ೪-೩-೧೧೦.

ನಟಾಂತಿಕಾ ನಟಾಂತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲಜ್ಜೆ, ನಾಚಿಕೆ. ನಟಸ್ಯ  
ತದ್ವ್ಯಾಪಾರಸ್ಯ ಅಂತೋ ಯಸ್ಯಾ: "ಕಪ್" (೪-೪-೧೫೪).

ನಟೇಶ ನಟೇಶ, -ಇಶ್ವರ -ಈಶ್ವರ (ಪುಂ) ನಟರಾಜ.  
ಪರಮೇಶ್ವರ.

ನಟಚಾ ನಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಟರ ಸಮೂಹ. ನಟಾನಾಂ ಸಮೂಹ:  
"ಯ:" (೪-೨-೪೯).

ನಟ(ಲ) ನಟ(ಲ) (ಪುಂ) 1. ಲಾಳದ ಗಿಡ, ಒಂದು  
ಜಾತಿಯ ಹುಲ್ಲು, ಜೊಂಡುಹುಲ್ಲು. 2. ಗೋತ್ರ  
ಪ್ರವರ್ತಕರಾದ ಒಬ್ಬ ಪುಷ್ಪ.

ನಟಕ ನಟಕ (ನಂ) ಎರಡು ಹೆಗಲುಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ  
ಒಂದು ಮೂಳೆ.

ನಟ(ಲ)ಕೀಯ ನಟ(ಲ)ಕೀಯ (ವಿಂ) ಲಾಳದ ಗಿಡ  
ಗಳಿಂದ ತುಂಬಿರುವ. ನಟಾ: ಸನ್ಯತ್ರ "ಕ:" ಕುಕ್ ಚ  
(೪-೨-೯೧).

ನಟ(ಲ)ಕೂಬರ ನಟ(ಲ)ಕೂಬರ (ಪುಂ) ಕುಬೇರನ  
ಮಗ.

ನಟ(ಲ)ಪ್ರಾಯ ನಟ(ಲ)ಪ್ರಾಯ (ಪುಂ) ಲಾಳದ ಗಿಡದಿಂದ  
ತುಂಬಿದ ಪ್ರದೇಶ.

ನಟ(ಲ)ಮೀನ ನಟ(ಲ)ಮೀನ (ಪುಂ) ಜಂಬುಮೀನ,  
ಹುಲ್ಲುಮೀನ. ಜಂಬುಹುಲ್ಲಿನ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ  
ಮೀನ. ನಟ(ಲ)ವನಸ್ಥಿತೋ ಮೀನ:

ನಟಚಾ ನಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಟಸಮೂಹ, ಜಂಬುಹುಲ್ಲಿನ  
ಸಮುದಾಯ, ಜಂಬುಹುಲ್ಲಿನ ರಾಶಿ. ನಟಾನಾಂ ಸಮೂಹ:  
"ಯ:" (೪-೨-೪೯).

ನಟವತ್ ನಟವತ್ (ವಿಂ) ಜಂಬುಹುಲ್ಲು ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವ  
ದೇಶ. ನಟಾ: ಸನ್ಯತ್ರ "ಓಮತುಪ್" (೪-೨-೮೭).

ನಟವಲ ನಟವಲ (ವಿಂ) ಜಂಬುಹುಲ್ಲು ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವ ದೇಶ.  
ನಟಾ: ಸನ್ಯತ್ರ "ವಲಕ್" (೪-೨-೮೮). "ನಟವಾನಿವಲ  
ಇತ್ಯಪಿ" ಅಮಂ. "ಯೋ ನಟವಲಾನಿವ ಗಜ: ಪರೇಷಾಂ ಬಲಾನ್ಯ  
ಮೃದ್ನಾನಿಲಿನಾಭವತ್ರ:" ರಘುಂ ೧೮-೫.

ನತ ನತ (ನಂ) 1. ನಮಸ್ಕಾರ, ಪ್ರಣಾಮ. (ವಿಂ) 2.  
ವಕ್ರವಾಗಿರುವ, ಡೊಂಕಾಗಿರುವ. 3. ಬಗ್ಗಿರುವ. ಣಮ  
(ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). "ನತೇನ ಧನುಷಾ

ನಾಕಂ ವಪುಷಾ ಚ ವಸುನ್ಧರಾಮ್" ಯಾದಂ ೨೨-೧೪೪.

4. ನಮಸ್ಕರಿಸಿದ. "ತಥಾಪಿ ಮುಹುರ್ಯಂತಿ ತವಾಜ ಮಾಯಾ  
ಸುವಿಷ್ಣುತಂ ಕೃತ್ಯಮಜಂ ನತೋಽಸ್ಮಿ ತಮ್" ಭಾಗಂ ೫-೧೮-೪.

5. ನಮಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಣಮ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).

6. ಅಳವಾಗಿರುವ. "ತಸ್ಯಾ: ಪ್ರವಿಷ್ಟಾ ನತನಾಭಿರನ್ಧ್ರಂ  
ರರಾಜ ತನ್ವೀ ನವಲೋಮರಾಜಿ:" ಕುಮಾಂ ೧-೩೮. 7. ಚಪ್ಪಟೆ  
ಯಾದ.

ನತಕನ್ಧರ ನತಕಂಧರ(ವಿಂ) ಬಗ್ಗಿದ ಕುತ್ತಿಗೆಯುಳ್ಳವನು.  
ಕತ್ತನ್ನು ಬಗ್ಗಿಸಿದವನು. ನತಾ ಕನ್ಧರಾ ಯಸ್ಯ.

ನತನಾಸಿಕ ನತನಾಸಿಕ (ವಿಂ) ಚಪ್ಪಟೆಯಾದ ಮೂಗುಳ್ಳ  
ವನು. ನತಾ ನಾಸಿಕಾ ಯಸ್ಯ.

ನತಭ್ರೂ ನತಭ್ರೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಕ್ರವಾದ ಹುಬ್ಬುಗಳುಳ್ಳ  
ಹೆಗ್ಗೂ. ನತಾ ಕುಟಿಲಾ ಭ್ರೂ: ಯಸ್ಯಾ: "ನತಭ್ರುವ:  
ಸ್ವಚ್ಛನಖಾನುಬಿಮ್ಬನಚ್ಛಲೇನ ಕೋಽಪಿ ಸ್ಫುಟಕಂಪಕಂಠಕ:"  
ನೈಷಂ ೧೬-೬೦.

ನತಾಙ್ಗೀ ನತಾಂಗೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಗ್ಗಿದ ದೇಹವುಳ್ಳ ಹೆಗ್ಗೂ.  
ನತಮಂಜುಮಸ್ಯಾ: "ಡೀಪ್" (ವಾಂ ೪-೧-೫೫). "ತಾಮೀಷ-  
ತ್ಪ್ರವಲವಿಲೋಚನಾಂ ನತಾಙ್ಗೀಮಾಲಿಙ್ಗನ್ ಪವನ ಮಮ ಸ್ಪೃಶಾಙ್ಗ-  
ಮಂಜುಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೧-೪೧.

ನತಿ ನತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಮಸ್ಕಾರ. ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ)  
"ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪). 2. ಬಗ್ಗಿರುವಿಕೆ.

ನತೋತ್ತರ ನತೋತ್ತರ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚುತ್ತಿದ್ದಾಿರುವ. ನತಂ ಚ  
ತದುತ್ತರಂ ಚ. "ಅಸ್ಮಿನ್ನಲಕ್ಷಿತನತೋತ್ತರಭೂಮಿಭಾಗೇ ಮಾರ್ಗ  
ಪದಾನಿ ಖಲು ತೇ ವಿಷಮಿಭವಂತಿ" ಶಾಕುಂ ೪-೧೪.

ನದ ನದ (ಪುಂ) 1. ಗಂಡುಹೊಳೆ, ಪಶ್ಚಿಮಾಭಿಮುಖವಾಗಿ  
ಹರಿಯುವ ಹೊಳೆ. ನದತಿ-ಗದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಅಚ್"  
(೩-೧-೧೩೪). "ಯಥಾ ನದೀನದಾ: ಸರ್ವೇ ಸಾಗರೇ ಯಾಂತಿ  
ಸಂಸ್ಥಿತಮ್. ತಥೈವಾಶ್ರಮಿಣ: ಸರ್ವೇ ಗೃಹಸ್ಥೇ ಯಾಂತಿ ಸಂಸ್ಥಿತಮ್"  
ಮನುಂ ೬-೯೦. 2. ಸಮುದ್ರ.

ನದತ್ ನದತ್ (ವಿಂ) ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಗದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ  
ಶಬ್ದೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೬). -ಂತಿ-೨೯.

ನದನ ನದನ (ನಂ) ಶಬ್ದಮಾಡುವುದು. ಗದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ  
ಶಬ್ದೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫).

ನದನೀಯ ನದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದಮಾಡಬೇಕಾದ. ಗದ  
(ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). 2. ಶಬ್ದ  
ಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬).  
-ದಿತವ್ಯ: -ದಿತವ್ಯ:



ನದರ ನದರ (ವಿಂ) 1. ಭಯವಿಲ್ಲದ, ಹೆದರಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ದರೋ ಭಯಂ ಯಸ್ಯ | 2. ನದದ ಸಮಾಪಪ್ರದೇಶ. ನದಸ್ಯಾದ್ವರಭವ: "ರ:" (೪-೨-೮೦) | 3. ನದದಿಂದ ಉಂಟಾದ. ನದೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ರ:" (೪-೨-೮೦) |

ನದರಾಜ ನದರಾಜ (ಪುಂ) ನದಗಳ ಪತಿಯಾದ ಸಮುದ್ರ. ನದಾನಾಂ ರಾಜಾ "ರಾಜ್" (೪-೪-೯೧) |

ನದಿತ ನದಿತ (ನಂ) 1. ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ. ಣದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) | (ವಿಂ) 2. ಶಬ್ದಮಾಡಿದ. ಸದ್ವ್ಯಮಾಡಿದ. ಣದ ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) |

ನದಿತವತ್ ನದಿತವತ್ (ವಿಂ) ಶಬ್ದಮಾಡಿದ. ಣದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ವತೀ -ವತೀ.

ನದೀ ನದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನದಿ, ಹೊಳೆ. ನದತಿ-ಣದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | ಪಚಾದಿಗಳಲ್ಲಿ "ನದತ್" ಎಂದೂ ಟಕಾರಾಂಜವಾಗಿರುವುದರಿಂದ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | "ನದೀ ಸರिति ಶೋಣಾದೀ ನಾ" ಮೇದಿಂ | ಎಂಟು ಸಾವಿರ ಧನಾಃಪ್ರಮಾಣಕ್ಕೆ ಕಡಮೆಯಿಲ್ಲದಷ್ಟು ದೂರ ಪ್ರವಹಿಸುವ ಜಲಪ್ರವಾಹಕ್ಕೆ "ನದಿ"ಯೆಂದು ಹೆಸರು. "ಧನು: ಸಹಸ್ರಾಣ್ಯಷ್ಟೌ ಚ ಗತಿರ್ಯಾಸಾಂ ನ ವಿಶ್ಯತೇ | ನ ತಾ ನದೀಶಬ್ದವಹಾ ಗತಿಸ್ತೇ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾ:" | "ವಿವಿಧ-ಕಾಮಹಿತಾ ಮಹಿತಾಮ್ಭಸ: ಸ್ಫುಟಮರೋಜವನಾ ಜವನಾ ನದೀ:" ಕಿರಾಂ ೫-೭ |

ನದೀಕಾಂತ ನದೀಕಾಂತ (ಪುಂ) 1. ನದಿಗಳಿಗೆ ಪತಿಯಾದ ಸಮುದ್ರ. ನದೀನಾಂ ಕಾಂತ: | 2. ನೀರುಹಲ-ನ ಗಿಡ. ನದೀ ಕಾಂತಾ ಯಸ್ಯ | 3. ಲಕ್ಕಿಗಿಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾಂತಾ -ಕಾಂತಾ. 4. ಜಂಬೂವೃಕ್ಷ, ನೇರಳೆಮರ. 5. ಲತೆ, ಬಳ್ಳಿ. 6. ಕಾಕಜಂಘೆಯೆಂಬ ಗಿಡ. "ನದೀಕಾಂತ: ಸಮುದ್ರೇ ಸ್ಯಾತ್ ಹಿಜ್ಜಲೇ ಸಿಂದುವಾರಕೇ | ನದೀಕಾಂತಾ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ ಜಮ್ಬವಾಂ ಕಾಕಜಂಘೌಷಧಾವಪಿ" ಮೇದಿಂ |

ನುನದಿ -ಸಮೃದ್ಧಿ (ಭವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) | ನಂದತಿ | ನನಂದ | ನಂದಿತಾ | ನಂದಿಷ್ಯತಿ | ನಂದತು | ಅನಂದತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಸಂತೋಷಪಡು, ಹರ್ಷಹೊಂದು. "ನನಂದ ಸ್ವಭಟಾನ್ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ನಖರಶ್ಚಿತಮೌಕ್ತಿಕಾನ್" ಯಾದಂ ೨೨-೧೫೬ | ಭಾವೇ:-ನಂದತೇ | ನನಂದೇ | ನಂದಿತಾ | ನಂದಿಷ್ಯತೇ | ನಂದತಾಮ್ | ಅನಂದತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ನಿಚಿ:-ನಂದಯತಿ, -ತೇ | ನಂದಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ನಂದಯಿತಾ | ನಂದಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ನಂದಯತು, -ತಾಮ್ | ಅನಂದಯತ್, -ತ |

ನಿನ:-ನಿನಂದಿಷತಿ | ನಿನಂದಿಷಾಂ ಚಕಾರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ನಿನಂದಿಷ್ಯತಿ | ನಿನಂದಿಷತು | ಅನಿನಂದಿಷತ್ |

ನುನದಿ:-ನಂದಿತವ್ಯ: | ನಂದನೀಯ: | ನಂದ: | ನಂದಿತ: | ನಂದಿತವಾನ್, -ವತೀ | ನಂದನ್, -ಂತೀ | ನಂದಿತುಮ್ | ನಂದನಮ್ | ನಂದಿತವಾ |

ನದೀಕೂಲ ನದೀಕೂಲ (ನಂ) ನದಿಯ ತೀರ, ಹೊಳೆಯ ತೀರ. ನದಾ: ಕೂಲಮ್ |

ನದೀಜ ನದೀಜ (ಪುಂ) 1. ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯ. ನದಾಂ ಗಜಾಢಾಂ ಜಾಯತೇ-ಜನೀ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೯೭) | "ನದೀಜ. ಲಕ್ಷ್ಮೀಶವನಾರಿಕೇತುನಂಗಾಹ್ವಯೋ ನಾಮ ನಗಾರಿಸುನು:" ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೪೦-೧೧ | 2. ಅರ್ಜುನವೃಕ್ಷ, ಕೆಂಪುಮತ್ತಿ ಮರ. 3. ನೀರುಹಲ-ನ ಮರ. (ನಂ) 4. ಸೋಮೇರಾಂಜನ. (ವಿಂ) 5. ನದಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. 6. ಅಗ್ನಿಮಂಥ ವೃಕ್ಷ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜಾ -ಜಾ.

ನದೀಧರ ನದೀಧರ (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ. ಪರಶಿವ. ನದಾ ಧರ: |

ನದೀನ ನದೀನ (ಪುಂ) 1. ಸಾಗರ, ಸಮುದ್ರ. ಕಡಲು. ನದೀನಾಮ್ ಇನ: | "ತರಂತೋ ದಾರದ: ಪೇಹ: ಮಹಾಪ್ರಾಚೀರ-ಮದ್ರಯೋ: | ನದೀನಶ್ಚ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | "ರತ್ನೇರಲಂಕರಣ-ಭಾವಮಿತೇನದೀನ:" ನೆಪಂ ೧೩-೨೩ | 2. ವರುಣ. (ವಿಂ) 3. ದೀನಸಲ್ಲವಮನು. ಬಡವಸಲ್ಲವಮನು.

ನದೀಪತಿ ನದೀಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಸಾಗರ. ನದೀನಾಂ ಪತಿ: | 2. ವರುಣ.

ನದೀಮಾತೃಕ ನದೀಮಾತೃಕ (ವಿಂ) ನದಿಯ ನೀರಿನಿಂದ ಬೆಳೆಯತಕ್ಕ (ಪ್ರದೇಶ). ನದೀ ಮಾತೇವ ಯಸ್ಯ |

ನದೀಮುಖ ನದೀಮುಖ (ನಂ) ನದಿಗಳು ಸಮುದ್ರಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಸೇರುವ ಮಾರ್ಗ. ನದೀ ಮುಖಮಿವ | "ವೃದ್ಧೋ ನದೀಮುಖೇನೈವ ಪ್ರಸ್ಥಾನಂ ಲವಣಾಮ್ಭಸ:" ರಘುಂ ೧೭-೫೪ |

ನದೀಣ ನದೀಣ (ವಿಂ) ನದಿಯಲ್ಲಿ ಜಾಣನಾಗಿ ಸ್ನಾನ ಮಾಡುವವನು. ನದಾಂ ಕುಶಲಂ ಸ್ನಾತಿ-ಣಾ (ಶೌಚೇ) "ಕ:" (೩-೨-೪) | ಪತ್ವಮ್ (೮-೩-೮೯) |

ನದೀಸರ್ಜ ನದೀಸರ್ಜ (ಪುಂ) ಅರ್ಜುನವೃಕ್ಷ. ಕೆಂಪು ಮತ್ತಿ ಮರ. ಸರ್ಜಯತೇ - ಸರ್ಜ (ಅರ್ಜನೇ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬) | ನದಾ: ಸರ್ಜ: | "ನದೀಸರ್ಜೋ ವೀರತಪ: ಇಂದ್ರದ್ವ: ಕಕುಭೋರ್ಜುನ:" ಅಮಂ |

ನದ ಸದ್ಧ (ವಿಂ) ಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. ಣಹ (ಬಂಧನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ಖರ್ಜೂರೀಸ್ಕಂಧನದಾನಾಂ ಮದೋದ್ಗಾರ-ಸುಗಂಧಿಭು" ರಘುಂ ೪-೫೭ |



ನದ್ಧಿ ನದ್ಧಿ (ವಿಂ) ಚರ್ಮದ ಹಗ್ಗ, ಮಿಳಯ ಹಗ್ಗ.  
ನದ್ಧಿ-ನಯಾ-ಣಹ (ಬನ್ಧನೆ) ಕರಂ "ಢ್ಢನ್" (೩-೨-೧೮೨).  
"ನದ್ಧಿ ವರ್ಧಿ ವರತ್ರಾ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ.

ನದ್ಧಾವರ್ತಕ ನದ್ಧಾವರ್ತಕ (ಪುಂ) ಪ್ರಯಾಣಸಂಘಂಧ  
ವಾದ ಒಂದು ಯೋಗ. ಜನ್ಮರಾಶಿಯಲ್ಲಿ ಬುಧಪ್ರಯಾಣದ  
ಅಗ್ನದಲ್ಲಿ ಗುರು ಅಥವಾ ಶುಕ್ರ ಇರುವಾಗ ಪ್ರಯಾಣ  
ಮಾಡಿದರೆ ಇಷ್ಟಸಿದ್ಧಿಯಾಗುವುದು. "ಸ್ವರಾಶಿಗೆ ಬುಧ  
ಲಗ್ನೇ ಸಿತೇ ವಾ ಸುರವಂದಿತೇ । ನದ್ಧಾವರ್ತಕಯೋಗೋಽಯಾತುರಿಷ್ಟಾರ್ಥ-  
ಸಿದ್ಧಿಃ" ।

ನನಂದ ನನಂದ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪತಿಯ ಸಹೋದರಿ, ಗಂಡನ  
ಒಡಹುಟ್ಟಿದವಳು. ನ ನಂದತಿ ನ ತುಷ್ಯತಿ, ನ ನಂದಯತಿ  
ಭ್ರಾತೃಜಾयां ವಾ-ಢ್ಢನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) "ಞ್ಢನ್" (೩-೨-೧೮೮).  
"ನನಂದಾ ತು ಸ್ವಸಾ ಪತ್ಯುಃ" ಅಮಂ.

ನನು ನನು (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅನುಜ್ಞೆ, ಅನುಮತಿ. ನ ನುದತಿ-  
ಣುದ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಢ್ಢುಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೧೮೦). "ನನು ಸಂದಿಶೇತಿ  
ಸುದೃಶೋದಿತಯಾ ತ್ರಪಯಾ ನ ಕಿಂಚನ ಕಿಲಾಭಿದಧೇ" ಮಾಘಂ  
೯-೬೧. 2. ಅಮಂತ್ರಣ, ಕರೆ, ಸಂಭೋಧನ. "ವಿಘುರಾಂ  
ಜ್ವಲನಾತಿಸರ್ಜನಾನ್ಮನು ಮಾಂ ಪ್ರಾಪಯ ಪತ್ಯುರಂತಿಕಮ್" ಕುಮಾಂ  
೪-೩೨. 3. ಅವಧಾರಣ, ನಿಶ್ಚಯ. "ಉಪಪನ್ನಂ ನನು  
ಶಿವಂ ಸಪ್ತಸ್ವಜ್ಞೇಷು ಯಸ್ಯ ಮೇ । ದೇವೀನಾಂ ಮಾನುಷೀಣಾಂ ಚ ಪ್ರತಿಹರ್ತೃ  
ತ್ವಮಾಪದಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೬೦. 4. ಪ್ರಶ್ನೆ, ಕೇಳಿಕೆ.  
5. ಪ್ರಶ್ನಕೃತ್. 6. ಅಕ್ಷೇಪ. 7. ವಾಕ್ಯಾರಂಭ. 8.  
ಅನುನಯ, ಅನುಸರಣೆ. "ನನ್ವಾಕ್ಷೇಪೇ ಪರಿಪ್ರಶ್ನೇ ಪ್ರತ್ಯುಕ್ತಾ-  
ವವಧಾರಣೆ । ವಾಕ್ಯಾರಂಭೇಽಪ್ಯನುನಯಾಮನ್ತ್ರಣಾನುಜಯೋರಪಿ"  
ಹೇಮಂ. 9. ಉತ್ತೇಕ್ಷೆ. "ಮನ್ಯೇ ಶಕ್ತೇ ಧ್ರುವಂ ನುನಂ ಕಿವಾ  
ಪ್ರಾಯೋಽನುವೇದಿ ಚ । ನನು ನಾಮ ಹಿ ಜಾನಾಮಿ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾ-  
ವ್ಯಂಜಕಾನಿ ಚ" ।

ನನುಚ ನನುಚ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪ್ರಶ್ನೆ. 2. ಕೆಟ್ಟ ಮಾತು.  
3. ಸರಿಯಾದ ಮಾತು. 4. ಸ್ತುತಿ, ಹೊಗಳಿಕೆ. "ನನುಚ  
ಪ್ರಶ್ನೇ ದುಷ್ಟೋಕ್ತೌ ಸಮ್ಯಗ್ವಾದೇ ಸ್ತುತಾವಪಿ" ಹೇಮಂ.

ನಂತವ್ಯ ನಂತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ನಮಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ನಮಸ್ಕರಿಸಬೇಕಾದ. ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ತವ್ಯಃ"  
(೩-೧-೯೬) ।

ನಂತು ನಂತು (ವಿಂ) 1. ನಮಸ್ಕರಿಸುವವನು. 2. ತಲೆಬಾಗಿ  
ವವನು. ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩).  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ತುಃ" (೪-೧-೪) । -ಸ್ತ್ರೀ-ಢ್ಢೀ.

ನಂದ ನಂದ (ಪುಂ) 1. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. ಢ್ಢು ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ)  
ಭಾವೇ "ಢ್ಢನ್" (೩-೩-೧೮೮). 2. ವಿಷ್ಣು. ಢ್ಢು ನದಿ ಅಧಿಂ

"ಢ್ಢನ್" (೩-೩-೧೨೧) । ಭೋಗ ಭೋಗೋಪಕರಣ  
ಭೋಗ್ಯ ಭೋಕ್ತೃ ಸಮೃದ್ಧಿಯಿರುವುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮ  
ನಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು. "ಭೋಗ್ಯಭೋಗೋಪಕರಣಭೋಗೈರಭಿವಿಭಕ್ತೈಃ  
ಚ । ತಸ್ಮಿನ್ ಸಮೃದ್ಧತೇ ನಿದ್ಯಮಿತಿ ನಂದಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ"  
ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ । "ಆನಂದೋ ನಂದನೋ ನಂದಃ" ವಿಂ ಸಂ ।  
3. ಒಬ್ಬ ಕ್ಷತ್ರಿಯ, ಕುಸುಮಪುರದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ನಂದರ  
ತಂದೆ. "ನವನಂದಾನ್ ಡಿಜಃ ಕಶ್ಚಿತ್ ಪ್ರಪನ್ನಾನುಧರಿಸ್ಯತಿ"  
ಭಾಗಂ ೧೨. 4. ಭೀಕ, ಕಪ್ಪೆ. 5. ನಂದಗೋಪ,  
ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಸಾಕುತಂದೆ. 6. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.  
7. ಕ್ರೌಂಚದ್ವೀಪದ ಒಂದು ಪರ್ವತ. 8. ಒಂಬತ್ತು  
ಸಂಖ್ಯೆ.

ನಂದಕ ನಂದಕ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣುವಿನ ಏಡ್ಗ. ನಂದಯತಿ-ಢ್ಢು  
ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್ "ಢ್ಢುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।  
"ಅರ್ಥಮುಧೇಜಯಿತಾ ಪರೇಷಾಂ ನಾಮ್ನಾಪಿ ತಸ್ಯೈವ ಸ ನಂದಕೋಽಭೂತ್"  
ಮಾಘಂ ೩-೧೯. 2. ಭೀಕ, ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. "ವ್ಯಜ್ಞಸ್ತು  
ನಂದಕೋ ಭೇಕೋ ಗುಡವರ್ಚಾಃ ಕೃತಾಲಯಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 3. ನಂದ  
ಗೋಪ. ನಂದ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ" । 4. ಏಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ.  
5. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. 6. ಸ್ಕಂದನ ಒಬ್ಬ  
ಅನುಜರ. (ವಿಂ) 7. ಸಂತೋಷವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.  
8. ಕುಲಪಾಲಕ.

ನಂದಕಿ ನಂದಕಿ (ಪುಂ) ಕಿಷ್ಕಿಲಿ.

ನಂದಕಿನ್ ನಂದಕಿನ್ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ನಂದಕೋ ವಿद्याಮಯೋಽ-  
ಸಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) ।

ನಂದಕಿಶೋರ ನಂದಕಿಶೋರ (ಪುಂ) ನಂದಗೋಪನ ಮಗು,  
ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ನಂದಸ್ಯ ಕಿಶೋರಃ ।

ನಂದಕುಮಾರ ನಂದಕುಮಾರ (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ, ನಂದಗೋಪನ  
ಮಗ. ನಂದಸ್ಯ ಕುಮಾರಃ ।

ನಂದಗೋಪ ನಂದಗೋಪ (ಪುಂ) ಗೋಪಾಲಕರ ಯಜಮಾನ,  
ಗೋಲ್ಲರ ಪಾಳೆಯಗಾರ, ವಸುದೇವನ ಅಪ್ತಮಿತ್ರ. ಪೂರ್ವ  
ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಇವನು ಅಷ್ಟವಸುಗಳಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬನಾದ ದ್ರೋಣ  
ನಾಗಿದ್ದನು. ಈತನ ಪತ್ನಿ ಯಶೋದಾದೇವಿ. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು  
ತನ್ನ ಬಾಲಲೀಲೆಗಳನ್ನು ಇವನ ಮನೆಯಲ್ಲಿರುವಾಗಲೇ  
ತೋರಿಸಿದನು.

ನಂದಥು ನಂದಥು (ಪುಂ) ಅನಂದ, ಸಂತೋಷ. ಢ್ಢು ನದಿ  
(ಸಮೃದ್ಧಿ) "ಅಥುಚ್" (೩-೩-೮೯) । "ಸಾರೋಽಸಾವಿನ್ದ್ರಿಯಾ-  
ರ್ಥಿನಾಂ ಯಸ್ಯಾಸೌ ತಸ್ಯ ನಂದಥುಃ" ಭಟ್ಟಿಂ ೪-೨೦ ।

ನಂದನ ನಂದನ (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. ನಂದಯತಿ-ಢ್ಢು ನದಿ  
(ಸಮೃದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್ "ಢ್ಢುಃ" (೩-೧-೧೩೪) । "ಅತೀಂದ್ರಿ-



ಯೇವ್ಯಪ್ಯುಪಪದರೋನೋ ಬಭೌವ ಭಾವೇಷು ದಿಲೀಪನಂದನಃ" ರಘುಂ ೩-೪೧. 2. ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. 3. ಪ್ರಭವ ಮೊದಲಾದ ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಇಷ್ಟತ್ತಾರನೆಯದು. "ಸುಭಿಕ್ಷಂ ಕ್ಷೇಮಮಾರೋಗ್ಯಂ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಭವತಿ ಶೋಭನಮ್ | ಬಹುಕ್ಷೀರಾಸ್ತಥಾಗಾವೋ ನಂದಂತೇ ನಂದನೇ ಪ್ರಿಯೇ" ಭವಿಷ್ಯಪುಂ. 4. ಎಷ್ಟು. ಆನಂದಂ ಮುಕ್ತೌ ಪ್ರಾಪಯ್ಯ ನಂದಯತಿ ತಾನ್-ಠ ನದಿ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪). "ತಮಾನಂದಂ ಯಥೋಕ್ತಾಯಾಂ ಮುಕ್ತೌ ಪ್ರಾಪಯ್ಯ ಯಃ ಸದಾ | ಮುಕ್ತಾನ್ವಿತಾನ್ವಂದಯತೇ ನಂದನಃ ಸ ತು ಕೀರ್ತಿತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ. "ಆನಂದೋ ನಂದನೋ ನಂದಃ" ವಿಂ ಸಂ. 5. ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಶಿವ. 6. ಒಂದು ಪರ್ವತ. (ನಂ) 7. ಇಂದ್ರನ ಉದ್ಯಾನವನ. "ಪುರಿ-ಮವಸ್ಕಂದ ಲುನಿಹಿ ನಂದನಂ ಮುಷಾಣ ರತ್ನಾನಿ ಹರಾಮರಾಜ್ಞನಾಃ" ಮಾಘಂ ೧-೫೧. (ವಿಂ) 8. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವ.

ನಂದನಂದನ ನಂದನಂದನ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ನಂದಸ್ಯ ನಂದನಃ. ವಸುದೇವನು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಮಾತಿನಂತೆ ಯಶೋದೆಯು ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಯೋಗಮಾಯೆಯನ್ನು ತಂದು ದೇವಕಿಯ ಹತ್ತಿರ ಮಲಗಿಸಿ ಕಂಸನ ಭಯದಿಂದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನನ್ನು ಯಶೋದೆಯ ಬಳಿ ಯೋಗಮಾಯೆಯ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಇಟ್ಟಿದ್ದರಿಂದ ತನ್ನ ಮಗನೆಂದು ತಿಳಿದ ನಂದನ ವಿಶ್ವಾಸಾಭಿಮಾನಗಳಿಗೆ ಪಾತ್ರನಾದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ನಂದನ ಪುತ್ರನಾದನು. "ತತಶ್ಚ ಶೌರಿಭಗವತ್ಪ್ರಚೋದಿತಃ ಸುತಂ ಸಮಾಧಾಯ ಸ ಸುತಿಕಾಗೃಹಾತ್ | ಯದಾ ಬಹಿರ್ಗಂತುಮಿಷೇಷ ತಹರ್ಯಜಾ ಯಾ ಯೋಗಮಾಯಾಽಜನಿ ನಂದಜಾಯಯಾ | ಶಿಶುಂ ಯಶೋದಾಶಯನೇ ನಿಧಾಯ ತತ್ಸುತಾಂ ಸಮಾಧಾಯ ಪುನರ್ಗೃಹಾಣಗಾತ್ | ದೇವಕಯಾಃ ಶಯನೇ ನ್ಯಸ್ಯ ವಸುದೇವೋಽಥ ದಾರಿಕಾಮ್ | ಪ್ರತಿಮುಚ್ಯ ಪದೋಲೋಹಮಾಸ್ತೇ ಪೂರ್ವದಾವೃತಃ | ಯಶೋದಾ ನಂದಪತ್ನೀ ಚ ಜಾತಂ ಪುತ್ರಮಬುಧ್ಯತ | ನ ತಲ್ಲಿಕ್ಷಂ ಪರಿಶ್ರಾಂತಾ ನಿद्रಯಾಪಗತಸ್ಮೃತಿಃ" ಭಾಗಂ ೧೦-೩. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಂದನಾ -ನಂದನಾ. 2. ಯೋಗಮಾಯೆ.

ನಂದಂತ ನಂದಂತ (ಪುಂ) ಪುತ್ರ, ಮಗ. ನಂದಂತೇನ-ಠ ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) "ಞ್" (ಉಂ ೩-೧೨೭).

ನಂದಪಾಲ ನಂದಪಾಲ (ಪುಂ) ವರುಣ. ನಂದಂ ಹೃಷಿ ಪಾಲಯತಿ-ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಅನ್" (೩-೨-೧).

ನಂದಸುತ ನಂದಸುತ, -ಸುತು -ಸೂನು (ಪುಂ) 1. ನಂದಗೋಷನ ಮಗ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ನಂದಸ್ಯ ನಂದಗೋಷಸ್ಯ ಸುತಃ ಸುತುರ್ವಾ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸುತಾ -ಸುತಾ. 2. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

ನಂದಾ ನಂದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. "ನಂದತೇ ಸುರ-ಲೋಕೇಷು ನಂದನೇ ವಸತೇಽಥವಾ | ಹಿಮಾಚಲೇ ಮಹಾಪುಣ್ಯೇ ನಂದಾ ದೇವೀ ತತಃ ಸ್ಮೃತಾ" ದೇವೀಪುಂ. 2. ನಂದಾತಿಥಿ, ಶುಕ್ಲ

ಮತ್ತು ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷಗಳ ಪಾಡ್ಯ ಪಕ್ಷಿ ಮತ್ತು ಏಕಾದಶೀ ತಿಥಿಗಳು. "ನಂದಾ ಭದ್ರಾ ಜಯಾ ರಿಕ್ತಾ ಪೂರ್ಣಾ ಚ ಪ್ರತಿಪತ್ಕ್ರಮಾತ್" 3. ಧರ್ಮಪುರುಷನ ಪುತ್ರನಾದ ಹರ್ಷನ ಪತ್ನಿ. "ನಂದಾ ತು ಭಾರ್ಯಾ ಹರ್ಷಸ್ಯ ಯಾಸು ಲೋಕಾಃ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಾಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೭-೩೩. 4. ಪತಿಯ ಸಹೋದರಿ. 5. ಮಣ್ಣಿನ ಗುಡಾಣ. "ನಂದಾ ಸ್ಯಾದಲಿಜ್ಜರೇ | ಗೌರ್ಯಾ ತಿಥಿವಿಶೇಷೇ ಸ್ತ್ರೀ ನಿಧಿರಾಜಭಿದೋಃ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ. 6. ಸುಪತ್ತು, ಐಶ್ವರ್ಯ. "ನಂದಾ ಸಮ್ಪದಲಿಜ್ಜರೇ | ತಿಥಿಭೇದೇ ಚ" ಹೇಮಂ.

ನಂದಾತ್ಮಜ ನಂದಾತ್ಮಜ (ಪುಂ) 1. ನಂದಗೋಷನ ಪುತ್ರ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ನಂದಸ್ಯಾತ್ಮಜಃ. -ಆತ್ಮಜಾ -ಆತ್ಮಜಾ. 2. ಯೋಗಮಾಯೆ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

ನಂದಿ ನಂದಿ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ಸರ್ವದಾ ಸರ್ವತ್ರ ಸರ್ವಥಾ ಚ ನಂದತಿ ಸಮೃದ್ಧಯತಿ-ಠ ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) "ಞ್" (ಉಂ ೪-೨೭೭). "ನಂದಿಃ ಸರ್ವತ್ರ ನಿಯಮಃ ಸಃ ಶ್ರಿಯಾ ಕೃದ್ವಯತಿ ಸರ್ವದಾ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ. "ಸ್ವಕ್ಷಃ ಸ್ವಜ್ಞಃ ಶತಾನಂದೋ ನಂದಿರ್ಯೋತಿಗಣೇಶ್ವರಃ" ವಿಂ ಸಂ. 2. ಪರಶಿವ, ಈಶ್ವರ. 3. ಪರಮೇಶ್ವರನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ, ನಂದಿಕೇಶ್ವರ. 4. ಈಶ್ವರನ ವಾಹನವಾದ ವೃಷಭ. 5. ಆನಂದ, ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. 6. ದ್ಯೂತ, ಜೂಜು. "ನಂದಿಸ್ತು ಪ್ರತಿಹಾರೆ ಪಿನಾಕಿನಃ | ಆನಂದನೇ ಚ ದೃತೇ ಚ" ಹೇಮಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 7. ಆನಂದ, ಸಂತೋಷ, ಹರ್ಷ. "ಅತೋ ಮೇ ಭುಯಸೀ ನಂದಿರೈದೇವಮನುಪಶ್ಯಸಿ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೩೫-೨೦. (ವಿಂ) 8. ಆನಂದಜನಕವಾದ, ಹರ್ಷವನ್ನಂಟು ಮಾಡುವ.

ನಂದಿಕ ನಂದಿಕ (ಪುಂ) 1. ನಂದಿಮರ. 2. ಆನಂದ, ಸಂತೋಷ. 3. ಮಣ್ಣಿನ ಗುಡಾಣ. 4. ಈಶ್ವರನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಂದಿಕಾ ನಂದಿಕಾ. 5. ನಂದಾತಿಥಿ, ಶುಕ್ಲ ಮತ್ತು ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷಗಳ ಪಾಡ್ಯ ಪಕ್ಷಿ ಮತ್ತು ಏಕಾದಶೀ ತಿಥಿಗಳು.

ನಂದಿಕೇಶ್ವರ ನಂದಿಕೇಶ್ವರ (ಪುಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರನ ದ್ವಾರಪಾಲಕ. 2. ಈಶ್ವರನ ವಾಹನವಾದ ವೃಷಭ. 3. ನಂದಿಕೇಶ್ವರನಿಂದ ಪ್ರೋಕ್ತವಾದ ಶಿವಧರ್ಮವೆಂಬ ಒಂದು ಉಪಪುರಾಣ.

ನಂದಿಗ್ರಾಮ ನಂದಿಗ್ರಾಮ (ಪುಂ) ಶ್ರೀರಾಮನ ವನವಾಸದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಭರತನು ಅವನ ಪಾದುಕೆಗಳನ್ನು ಆರಾಧಿಸುತ್ತಾ ಪಾದುಕೆಗಳ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ರಾಜ್ಯಾಡಳಿತ ನಡೆಸುತ್ತಿದ್ದ ಒಂದು ಗ್ರಾಮ. "ವಿಸಜಿತಃ ಸ ರಾಮೇಣ ಪಿತುರ್ವಚನಕಾರಿಣಾ | ನಂದಿಗ್ರಾಮೇಽಕರೋದ್ರಾಜ್ಯಂ ಪುರಸ್ಕೃತ್ಯಾಸ್ಯ ಪಾದುಕೇ" ಭಾಂ ವನಂ



೨೭೮-೪೫ | ಈಗ ಇದರ ಹೆಸರು "ದೌಲತಾಬಾದ್" ಎಂದಾಗಿದೆ.

**ನಂದಿಘೋಷ ನಂದಿಘೋಷ (ಪುಂ)** 1. ಅರ್ಜುನನ ರಥ. ನಂದಿರಾನಂದಜನಕೋ ಘೋಷಸ್ಯ | 2. ಅನಂದದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಶಬ್ದ. 3. ಹೊಗಳಿಕೆಯುಳ್ಳ ಹೊಗಳಿಕೆ, ಹೊಗಳಿಕೆಯ ಶಬ್ದ. "ನಂದಿಘೋಷೋರ್ಜುನರಥೇ ಘೋಷೇ ವಂದಿಜನಸ್ಯ ಚ" | 4. ಹರ್ಷವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಶಬ್ದ ದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

**ನಂದಿನ್ ನಂದಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ಈಶ್ವರನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ. ಪರಮೇಶ್ವರನ ದ್ವಾರಪಾಲಕ, ನಂದಿಕೇಶ್ವರ. 2. ಪರಮೇಶ್ವರನ ವಾಹನವಾದ ವೃಷಭ. "ಲತಾಗೃಹದ್ವಾರಗತೋಽಥ ನಂದಿ ವಾಮಪ್ರಕೋಠಾರ್ಪಿತಹೇಮವೇತ್ರಃ" | 3. ಸಂತೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ನಂದತೇ-ತು ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) "ಗಿರಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) |

**ನಂದಿನಿ ನಂದಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀ)** 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ. ತು ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) "ಗಿರಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) | "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | 2. ಮಗಳು. "ನಂದಗೋಪಸ್ಯ ನಂದಿನಿ" | "ತೇಷಾಂ ವಧುಸ್ತ್ವಮಸಿ ನಂದಿನಿ ಪಾರ್ಥಿವಾನಾಮ್" | 3. ಪತಿಯ ಸಹೋದರಿ, ಗಂಡನ ಒಡಹುಟ್ಟಿದವಳು. 4. ನಂದಿನೀಧೇನು, ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿಯ ಹೋಮಧೇನು. "ಇತಿ ವಾದಿನ ಏವಾಸ್ಯ ಹೋತುರಾಹುತಿಸಾಧನಮ್ | ಅನಿನ್ದಾ ನಂದಿನಿ ನಾಮ ಧೇನುರಾವೃತೇ ವನಾತ್" | 5. ಗಂಗಾ ನದಿ. "ನಂದಿನ್ಯುಮಾಯಾಂ ಗಂಧಾರಾಂ ನಂದಿನೀಧೇನುಃ" | 6. ಸುರಸುರಕೆ ಗಿಡ. 7. ವ್ಯಾಡಿಯ ತಾಯಿ. 8. ಜಟಾ ಮಾಂಸ.

**ನಂದಿನೀತನಯ ನಂದಿನೀತನಯ, -ಸುತ -ಸುತ (ಪುಂ)** ವ್ಯಾಡಿಯು, ಉಪವರ್ಷಯುಷಿಯ ಶಿಷ್ಯ. ನಂದಿನೀ-ಸ್ತನಯಃ | ವರರುಚಿ ಪಾಣಿನಿ ಮತ್ತು ವ್ಯಾಡಿ ಈ ಮೂವರೂ ಉಪವರ್ಷಯುಷಿಯ ಶಿಷ್ಯರು. ಪಾಣಿನಿ ಮುನಿಯು ತನ್ನ ಸಹಪಾಠಿಗಳಿಂದ ಪರಾಜಿತನಾಗಿ ಪರಮೇಶ್ವರನ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ವ್ಯಾಕರಣಸೂತ್ರಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದನು. ಅದಕ್ಕೆ ಪೂರಕವಾಗಿ ವರರುಚಿಯು ಪಾರ್ಶ್ವಿಕಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದನು. ಇವರಿಬ್ಬರ ಗ್ರಂಥಗಳಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಅರ್ಥಗಳ ನ್ಯಾಯಪರಿಶೀಲನರೂಪವಾದ ಒಂದು ಗ್ರಂಥವನ್ನು ವ್ಯಾಡಿಯು ಬರೆದನು. ಇದೊಂದು ಕೋಶಾತ್ಮಕವಾಗಿದೆ.

**ನಂದಿವರ್ಧನ ನಂದಿವರ್ಧನ (ಪುಂ)** 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. ನಂದಿ-ಮಾನಂದಂ ವರ್ಧಯತಿ-ವೃಷ (ವೃದ್ಧಿ) "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) |

2. ಪರಿಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 3. ಪಕ್ಷದ ಕೊನೆ. ಹುಣ್ಣಿಮೆ ಅಥವಾ ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ. 4. ಮಿತ್ರ, ಗೆಳೆಯ. (ವಿಂ) 5. ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವ, "ಸ್ಯಾನಂದಿವರ್ಧನೋ ಭಗೋ ಪಕ್ಷಾಂತೇ ತನಯೇಷು ಚ" | 6. ಮೆದಿಂ |

**ನಂದಿವೃಕ್ಷ ನಂದಿವೃಕ್ಷ (ಪುಂ)** ನಂದಿಮರ. ನಂದಾ ವೃಕ್ಷಃ | **ನಂದೀಶ ನಂದೀಶ, -ಈಶ್ವರ -ಈಶ್ವರ (ಪುಂ)** 1. ಪರಿಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 2. ಈಶ್ವರನ ಅನುಚರರ ಯಜಮಾನ. **ನಂದಾವರ್ತ ನಂದಾವರ್ತ (ಪುಂ)** 1. ಪಶ್ಚಿಮದ ಬಾಗಿಲಿಲ್ಲದೆ ಉಳಿದ ಮೂರು ಬಾಗಿಲುಗಳುಳ್ಳ ಮನೆ. "ನಂದಾವರ್ತ-ಮಲಿನದೈಃ ಶಾಲಾಕುಡಯಾತ್ ಪ್ರದಕ್ಷಿಣಾಂತಗತೈಃ | ದ್ವಾರಂ ಪಶ್ಚಿಮ-ಮಸ್ಮಿನ್ ವಿಹಾಯ ಶೇಷಾಣಿ ಕಾರ್ಯಾಣಿ" | 2. ಒಂದು ಚಾತಿಯ ಮೀನು. 3. ಪ್ರಯಾಣ ಸಂಬಂಧವಾದ ಒಂದು ಯೋಗ. ["ನಂದಾವರ್ತಕ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ನಪಾತ್ ನಪಾತ್ (ವಿಂ)** 1. ರಕ್ಷಿಸದೆ ಇರುವವನು. ನ ಪಾತಿ-ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ನಪಾನ್ ನಪಾಂತಿ ನಪಾಂತಃ | 2. ತಳ್ಳಿದಿರುವವನು. ನ ಪಾತಯತಿ-ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ವಿವ್" (೩-೨-೭೬) | ನಪಾತ್ ನಪಾತೌ ನಪಾತಃ | (ಪುಂ) 3. ಪುತ್ರ, ಮಗ. ನಿಪಾಂ (೬-೩-೭೫) | ನರಕವನು ತಪ್ಪಿಸಿ ಸದ್ಗತಿಗೆ ಕಾರಣನಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ನಪುಂಸಕ ನಪುಂಸಕ (ಪುಂ)** ಪಂಡ, ಪುಂಸ್ತ್ವವಿಲ್ಲದವನು, ಪುರುಷನ ಅಥವಾ ಸ್ತ್ರೀಲಕ್ಷಣವಿಲ್ಲದವನು. ನಸ್ತ್ರೀಪುಮಾನ್ | ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸಯೋಃ ಪುಂಸಕಭಾವೋ ನಿಪಾಂ (೬-೩-೭೫) |

**ನಪ್ತ್ ನಪ್ತ್ (ಪುಂ)** ಮೊಮ್ಮಗ. 1. ಮಗನ ಮಗ. 2. ಮಗಳ ಮಗ. ನ ಪತಯತೇನ ಪಿತಾ ನರಕೇ-ಪಲ್ (ಗತೌ) "ತೃಕ್" (೩-೨-೯೫) | ನಿಪಾಂ | "ಪುತ್ರೇಣ ಲೋಕಾನ್ ಜಯತಿ ಪೌತ್ರೇಣಾನ್ತರ್ಮನುತೇ" | 3. ಮಗನ ಮಗಳು. 4. ಮಗಳ ಮಗಳು.

**ನಭ ನಭ (ಪುಂ)** 1. ಶ್ರಾವಣಮಾಸ. ನಭತೇ ಹಿನಸ್ತಿ ಕೀಟಾದಿನ್-ನಭ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ಸ್ವಾರೋಚಿಷ (ಎರಡನೆಯ) ಮನುವಿನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. 3. ನಳಮಹಾರಾಜನ ಮಗ.

**ನಭಃಕ್ರಾಂತಿನ್ ನಭಃಕ್ರಾಂತಿನ್ (ಪುಂ)** ಸಿಂಹ. ನಭಃ ಕ್ರಾಂತಿ-ಮಯಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫) |



ನಮ:ಪ್ರಾಣ ಸಭ್ಯಃಸ್ಯಾಣ (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾತ್ರ. ನಮಸ: ಪ್ರಾಣ ಇವ. "ದೈತದೇವಶ್ಚ ವಾತಸ್ತು ನಮ:ಪ್ರಾಣೋ ಜಗದ್ವಲ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ನಮ:ಶ್ರೀತ್ ಸಭ್ಯಃಶ್ರುತ್ (ವಿಂ) ಆಕಾಶವನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿರುವ. ನಮ:ಶ್ರಯತೇ—ಶ್ರೀತ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬).

ನಮ:ಸದ್ ಸಭ್ಯಃಸದ್ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. ನಮಸಿ ಸಿದತಿ ಷಡ್ಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧). "ನಿವರ್ತಯ ಸೋನುಬ್ರಜತ: ಕೃತಾನತೀನತೀಂದ್ರಿಯಜ್ಞಾನನಿಧಿರ್ನಮ:ಸದ:" ಮಾಘಂ ೧-೧೧. 2. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ವಿಸರ್ಗಸ್ಯ ಸತ್ವೇ ನಮಸ್ಸದ್ ಸಭ್ಯಃಸದ್.

ನಮ:ಸರಿತ್ ಸಭ್ಯಃಸರಿತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗಾನದಿ, ಆಕಾಶ ಗಂಗೆ.

ನಮ:ಸ್ಥ ಸಭ್ಯಃಸ್ಥ (ವಿಂ) ಆಕಾಶದಲ್ಲಿರುವ ಅಂತರಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ ನಿಂತಿರುವ. ನಮಸಿ ತಿಷ್ಠತಿ—ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಕ:" (೩-೨-೪). ವಿಸರ್ಗಸ್ಯ ಲೋಪೇ ನಮಸ್ಯ: ಸಭ್ಯಃಸ್ಥಃ. ಸತ್ವೇ ನಮಸ್ಯ: ಸಭ್ಯಃಸ್ಥಃ.

ನಮ:ಸ್ಥಲ ಸಭ್ಯಃಸ್ಥಲ (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ನಮ: ಸ್ಥಲಮಿವಾಸ್ಯ. "ಉರ್ವರೆತಾ ಉರ್ವಲಿಙ್ಗ ಉರ್ವಸಾಯಿ ನಮ:ಸ್ಥಲ:" ಭಾಂ ಅನುಂ ೪೮-೪೬. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಗಗನಮಂಡಲ, ಬಾಂದಳ. ನಮಸ: ಸ್ಥಲಮ್. ವಿಸರ್ಗಸ್ಯ ವಾ ಲೋಪ: 1. ನಮಸ್ಥಲಮ್ ಸಭ್ಯಃಸ್ಥಲಮ್. ವಿಸರ್ಗಸ್ಯ ಸತ್ವೇ ನಮಸ್ಥಲಮ್ ಸಭ್ಯಃಸ್ಥಲಮ್. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಃ" (೪-೧-೪೨). ನಮ:ಸ್ಥಲೀ ಸಭ್ಯಃಸ್ಥಲೀ. ವಿಸರ್ಗಲೋಪೇ ನಮಸ್ಥಲೀ ಸಭ್ಯಃಸ್ಥಲೀ. ವಿಸರ್ಗಸ್ಯ ಸತ್ವೇ ನಮಸ್ಥಲೀ ಸಭ್ಯಃಸ್ಥಲೀ. "ನಿವಾರಿತಾಂಶಾವಿತತಿತ್ಸದಾಸೀತ್ ನಮಸ್ಥಲೀ ನಾಕಿಭಿರಪ್ಯದೃಶ್ಯತ" ಯಾದಂ ೨೦-೨೫.

ನಮ:ಸ್ಥಿತ ಸಭ್ಯಃಸ್ಥಿತ (ವಿಂ) ಆಕಾಶದಲ್ಲಿರುವ, ಅಂತರಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ ನಿಂತಿರುವ, ನಮಸಿ ಸ್ಥಿತ: 1. ವಿಸರ್ಗಸ್ಯ ಲೋಪೇ ನಮಸ್ಥಿತ: ಸಭ್ಯಃಸ್ಥಿತಃ.

ನಮ:ಸ್ಪೃಶ್ ಸಭ್ಯಃಸ್ಪೃಶ್ (ವಿಂ) ಗಗನವನ್ನು ಮುಟ್ಟುವ. ಆಕಾಶದವರೆಗೂ ಹೋಗಿರುವ. ನಮ: ಸ್ಪೃಶತಿ—ಸ್ಪೃಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶೇ) "ಕ್ವಿನ್" (೩-೨-೪೮).

ನಮ:ಶ್ವರ ಸಭ್ಯಃಶ್ವರ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. 2. ಗಂಧರ್ವ. 3. ಸೂರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹ 4. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ನಮಸಿ ಶ್ವರತಿ—ಶ್ವರ (ಗತೌ) "ಠ:" (೩-೨-೧೬). 5. ಮೇಘ, ಮೋಡ. "ನಿಕಾಮತಪ್ತಾ ವಿವಿಧೇನ ವಹ್ನಿನಾ ನಮ:ಶ್ವರೇಣೈವನಸಂಭೃತೇನ ಸಾ" ಕುಮಾಂ ೫-೨೩.

ನಮಸ್ ಸಭ್ಯಃ (ನಂ) 1. ಗಗನ, ಆಕಾಶ. ನಮತೇ ಮೇಘ:-ಗಹ (ಬಂಧನೇ) "ಅಸುನ್" ಮತ್ತಾಂತಾದೇಶ: (೩ಂ ೪-೨೧೦). "ನೇಕ್ಷತೋದಂತಮಾದಿತ್ಯಂ ನಾಸ್ತಂ ಯನ್ತಂ ಕದಾಚನ. ನೋಪಸೃಷ್ಟಂ ನ ವಾರಿಸ್ಥಂ ನ ಮಧ್ಯಂ ನಮಸೋ ಗತಮ್" ಮನುಂ ೪-೩೭. (ಪುಂ) 2. ಶ್ರಾವಣಮಾಸ. ನಮತೇ ಹಿನಸ್ತಿ ವಿರಹಿಣ:- ಣಮ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಅಸುನ್" (೩ಂ ೪-೧೮೯). "ನಿವಾರಿತಾವಗ್ರಹನೀರನಿಶ್ಚರೇ ನಮೋನಮಸ್ಯತ್ವಮಲಮಭಯದೃಶೌ" ನೈಷಂ ೯-೮೪. 3. ಮೂಗು, ನಾಸಿಕೆ. 4. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 5. ವರ್ಷಾಕಾಲ, ವರ್ಷಗಾಲ. 6. ತಾವರೆದಂಟಿನ ದಾರ. 7. ಪಡಿಗೆ, ಪಿಂಡದಾನಿ. "ನಮ: ಕ್ಲಿಬಂ ವ್ಯೋಮ್ನಿ ಪುಮಾನ್ ಧನೇ. ಧ್ರಾಣಶ್ರಾವಣವರ್ಷಾಸು ವಿಸತಂತೌ ಪತದ್ರಗ್ರಹೇ" ಮೇದಿಂ.

ನಮಸ ಸಭ್ಯಃ (ಪುಂ) 1. ಗಗನ, ಆಕಾಶ. 2. ವರ್ಷಾಕಾಲ, ಮಳೆಗಾಲ. 3. ಸಮುದ್ರ. "ನಮಸಸ್ತು ನದೀಪತೌ. ಗಗನೇ ಋತುಭೇದೇ ಚ" ಹೇಮಂ.

ನಮಸಂಗಮ ಸಭ್ಯಃಸಂಗಮ (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ನಮಸಂ ಗಚ್ಛತಿ —ಗಮ್ಲ್ (ಗತೌ) "ಖತ್" (೩-೨-೪೭). ಮುಮ್ (೬-೩-೬೭).

ನಮಸ್ತಲ ಸಭ್ಯಃಸ್ತಲ (ನಂ) ಗಗನಮಂಡಲ, ಅಂತರಿಕ್ಷ. ನಮಸ: ತಲಮ್. "ಉದಹೇಮ ಕಷಸ್ತ್ರಿವಾಲಸತ್ ಕಷಪಾಪಾಣನಿಭೇ ನಮಸ್ತಲೇ" ನೈಷಂ ೨-೬೯.

ನಮಸ್ತಸ್ ಸಭ್ಯಃಸ್ತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಆಕಾಶದಿಂದ.

ನಮಸ್ಯ ಸಭ್ಯಃ (ಪುಂ) 1. ಭಾದ್ರಪದಮಾಸ. ನಮಸಿ ಮೇಘ ಸಾಧು: "ಯತ್" (೪-೪-೯೮). "ನಮೋ ನಮಸ್ಯತ್ವಮಲಮಭಯದೃಶೌ" ನೈಷಂ ೯-೮೪. "ನಮೋನಮಸ್ಯಯೋವೃಷ್ಟಿಮವಗ್ರಹ ಇವಾಂತರೇ" ರಘುಂ ೧೨-೨೯. 2. ಸ್ವಾರೋಚಿಷ ಮನುವಿನ ಮಗ. "ಪ್ರಥಿತಶ್ಚ ನಮಸ್ಯಶ್ಚ ನಮ ಋಜಸ್ತಯೇವ ಚ" ಹರಿವಂ.

ನಮಸ್ವತ್ ಸಭ್ಯಃಸ್ವತ್ (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾತ್ರ. ನಮ: ಆಶ್ರಯ-ತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪). "ಆಕಾಶಾಢ್ಯಾಯು: ವಾಯೋರಗ್ನಿ:" ಶ್ರುತಿ: 1. "ಆದದೇ ನಾತಿಶೀತೋಷ್ಣೋ ನಮಸ್ಕಾ-ನಿವ ದಕ್ಷಿಣ:" ರಘುಂ ೪-೮.

ನಮೋಗ ಸಭ್ಯಃಗ (ಪುಂ) 1. ಹತ್ತನೆಯ ಮನ್ವಂತರದ ಸಪ್ತರ್ಷಿಗಳಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ಮುಖ. (ವಿಂ) 2. ಅಂತರಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. ನಮಸಿ ಗಚ್ಛತಿ —ಗಮ್ಲ್ (ಗತೌ) "ಠ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮).

ನಮೋಗಜ ಸಭ್ಯಃಗಜ (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ. ನಮಸಿ ಗಜ ಇವ. "ಮದಯಿತ್ಸುಬಯಿದಾಹ:ವ್ಯೋಮಧೂಮೋ ನಮೋಗಜ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ನಮೋಗತ ಸಭ್ಯಃಗತ (ವಿಂ) ಗಗನಕ್ಕೆ ಹೋಗಿರುವ, ಆಕಾಶಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಸೇರಿರುವ. ನಮ: ಗತ:



**ನಭೋಗತಿ ಸಭೋಗತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವುದು. ನಮಸಿ ಗತಿಃ | (ವಿಂ) 2. ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ (1) ವಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ, (2) ಗ್ರಹ, (3) ಗಂಧರ್ವ, (4) ದೇವತೆ. ನಮಸಿ ಗತಿರಸ್ಯ |

**ನಭೋಭೂಮ ಸಭೋಭೂಮ** (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ. ನಮಸಿ ಭೂಮ ಇವ |

**ನಭೋನದೀ ಸಭೋನದೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಕಾಶಗಂಗಾ, ಗಂಗಾನದಿ. "ನಭೋನದೀವ್ಯತಿಕರಣತಮೂರ್ತಿಭಿವಿಧ್ಯದ್ಗತೇರನಭಿಗತಾನಿ ಲೇಖಿರೆ" ಮಾಘಂ ೧೭-೬೪ |

**ನಭೋಮಣಿ ಸಭೋಮಣಿ** (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ನಮಸಿ ಮಣಿರಿವ |

**ನಭೋಮಂಡಲ ಸಭೋಮಂಡಲ** (ನಂ) ಆಕಾಶಮಂಡಲ, ಬಾಂದಳ. ನಮಸೋ ಮಂಡಲಮಿವ |

**ನಭೋಮಂಡಲದೀಪ ಸಭೋಮಂಡಲದೀಪ** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ನಭೋಮಂಡಲೇ ದೀಪ ಇವ | "ನಭೋಮಂಡಲದೀಪಾಯ ಶಿರೋರತ್ನಾಯ ಭೂಜಂತಃ" |

**ನಭೋಽಮ್ಬು ಸಭೋಽಮ್ಬು** (ಪುಂ) ಚಾತಕಪಕ್ಷಿ, ಮಳೆ ಗುಟ್ಟುಕಿನ ಹಕ್ಕಿ. ನಮಸಿ ಅಮ್ಬು ಪಿಬತಿ—ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) |

**ನಭೋರಜಸ್ ಸಭೋರಜಸ್** (ನಂ) ಅಂಧಕಾರ, ಕತ್ತಲೆ. ನಮಸಿ ರಜ ಇವ |

**ನಭೋಲಯ ಸಭೋಲಯ** (ಪುಂ) 1. ಧೂಮ, ಹೊಗೆ. ನಮಸಿ ಲೀಯತೇ—ಲಿಙ್ (ಫಲೇಷಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೩-೪೬) | (ವಿಂ) 2. ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಲೀನವಾಗಿರುವ, ಅಂತರಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. ನಮಸಿ ಲೀನಃ |

**ನಭೋವೀಥಿ ಸಭೋವೀಥಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಕಾಶಮಾರ್ಗ. ನಭೋ-ರೂಪಾ ವೀಥಿ | "ಅಥ ಚ ಯಾವತಾರ್ಥೇನ ನಭೋವೀಥ್ಯಾಂ ಪ್ರಚರತಿ ತಂ ಕಾಲಮಯನಮಾಚಕ್ಷತೇ" ಭಾಗಂ ೪-೨೨-೭ |

**ನಭೋಕಸ್ ಸಭೋಕಸ್** (ವಿಂ) ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವ, ಆಕಾಶವೇ ವಾಸಸ್ಥಾನವಾಗಿ ಉಳ್ಳ. ನಮಃ ಖೋಕಃ ವಾಸಸ್ಥಾನಂ ಯಸ್ಯ | "ಅನ್ಯೇ ಚ ವಿವಿಧಾ ಜೀವಾ ಜಲಸ್ಥಲನಭೋಕಸಃ" ಭಾಗಂ ೨-೪-೧೪ |

**ನಮ್ಯ ಸಭ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಅಕ್ಷಪುಟಕ್ಕೆ ಹಿತವಾದ ತೈಲ, ಗಾಡಿಯ ಚಕ್ರದ ಮಧ್ಯದ ರಂಧ್ರಕ್ಕೆ ಹಾಕುವ ಎಣ್ಣೆ ಮೊದಲಾದುದು. ನಾಮಯೇ—ರಥಚಕ್ರಾವಯವಾಂ ಹಿತಮ್ "ಯತ್" (ಗಂ ೪-೧-೨) | ನಾಮೇನಮಾದೇಶಃ | 2. ಗಾಡಿಯ ದೂರಿ, ಇರಬೆ.

**ನಮತ್ ನಮತ್** (ವಿಂ) 1. ನಮಸ್ಕರಿಸುತ್ತಿರುವ. "ವನಮತೋ ನಮತೋಽನುಮತಾನ್ ಪ್ರಿಯಾಃ" ಮಾಘಂ ೬-೬೪ | 2. ಬಗ್ಗು

ತ್ತಿರುವ. "ಯಸ್ಯಾಮಸೇವಂತ ನಮದ್ವಲಿಕಾಃ" ಮಾಘಂ ೩-೪೩ | 3. ವಕ್ರವಾಗುತ್ತಿರುವ, ಡೊಂಕಾಗುತ್ತಿರುವ, ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಸ್ತೀ -೨೭೯. "ನಮಂತೀಂ ಸೇವ್ಯಭಾರೆಣ ಶನೇ-ರನುಜಗಾಮ ಗಾಮ್" ಯಾದಂ ೨೨-೭೨ |

**ನಮತ ನಮತ** (ವಿಂ) 1. ಬಗ್ಗಿರುವ. 2. ವಿಧೇಯನಾಗಿರುವ. (ಪುಂ) 3. ನಟ, ಅಭಿನಯಕಾರ. 4. ಯಜಮಾನ. ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ಅತಚ್" (೩ಂ ೩-೧೧೦) |

**ನಮನ ನಮನ** (ನಂ) 1. ನಮಸ್ಕರಿಸುವುದು. ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | 2. ಬಗ್ಗುವುದು, ಡೊಂಕಾಗುವುದು. (ವಿಂ) 3. ನಮಸ್ಕರಿಸುವ, ಪ್ರಣಾಮ ಮಾಡುವ. ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) | "ನಮಯತಿ ಸ್ಮ ವನಾನಿ ಮನಸ್ವಿನೀಜನಮನೋನಮನೋ ವನಮಾಸುತಃ" ಮಾಘಂ ೬-೩೦ | 4. ಬಗ್ಗುವ, ಡೊಂಕಾಗುವ.

**ನಮನೀಯ ನಮನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ನಮಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ನಮಸ್ಕರಿಸಬೇಕಾದ. 3. ನಮಸ್ಕರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯ ನಾದ. ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬) | -ಘಿತವ್ಯಃ -ಯಿತವ್ಯಃ |

**ನಮಯತ್ ನಮಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಬಗ್ಗಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ನಮಸ್ಕಾರ ಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ತಲೆ ಬಾಗಿ ಸುತ್ತಿರುವ ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಯಂತೀ -ಯಂತೀ. "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) | ನಮಯಮಾನಃ ನಮಯಮಾನಃ |

**ನಮಸ್ ನಮಸ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ನಮಸ್ಕಾರ. 2. ತಲೆ ಬಾಗಿ ಸುವುದು. ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) "ಅಸುನ್" (೩ಂ ೪-೧೮೮) | "ನಮಸ್ತ್ರೀಮೂರ್ತೇ ತುಮ್ಯಂ ಪ್ರಾಕ್ಸೃಷ್ಟೇಃ ಕೇವಲಾತ್ಮನೇ" ಕುಮಾರಂ ೨-೪ | ನಮೋಸಕಲಿಂಗದಲ್ಲಿಯೂ ಪ್ರಯೋಗವುಂಟು. "ವಿಧೇಮ ಚಾಸ್ಯೇ ನಮಸಾ ಸಹ ತ್ವಯಾ" ಭಾಗಂ ೩-೧೩-೪೨ | (ನಂ) 3. ತ್ಯಾಗ, ದಾನ. 4. ಅನ್ನ. 5. ವಜ್ರಾಯುಧ 6. ಯಜ್ಞ.

**ನಮಸ ನಮಸ** (ವಿಂ) ಅನುಕೂಲವಾದ. ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ಅಸಚ್" |

**ನಮಸಿತ ನಮಸಿತ** (ವಿಂ) ನಮಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಮಸ್ + ಕ್ಯಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | ವಾ ಯಲೋಪಃ (೬-೪-೪೦) | ಪಕ್ಷೇ ನಮಸಿತಃ ನಮಸ್ಕಿತಃ |

**ನಮಸ್ಕರ್ತು ನಮಸ್ಕರ್ತು** (ವಿಂ) ನಮಸ್ಕಾರಮಾಡುವವನು. ನಮಃ ಕರೋತಿ—ಕೃಮ್ "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪) | -ಕರ್ತೃ -ಕರ್ತೃಃ |



श्रीः

# शब्दार्थकौस्तुभः

(प्रायौगिक संस्कृत-कर्णाटक शब्दकोशः)

ಸಂಸ್ಕೃತ-ಕನ್ನಡ ತಬ್ಬಿಕೋಶ

ಸಂಪುಟ ೪

ಪದಗಳು : ನಮಸ್ಕಾರ-ಬಹುವಿರ್ಯ

ಸಾಹಿತ್ಯ ವಿದ್ವಾನ್

ಚಕ್ರವರ್ತಿ ಶ್ರೀನಿವಾಸ ಗೋಪಾಲಾಚಾರ್ಯ

ಬಾಪ್ಪೊ ಪ್ರಕಾಶನ

ಬೆಂಗಳೂರು ಪ್ರೆಸ್, ಬೆಂಗಳೂರು



॥ श्रीः ॥

श्रीमते हयग्रीवाय नमः ।

## शब्दार्थकौस्तुभः ।

(संस्कृत-कर्णाटक शब्दकोशः)

संस्कृत-कन्नಡ ಶಬ್ದ ಕೋಶ

ತುರೀಯ ಭಾಗ

लक्ष्मीं तनोतु व्यवधूय चित्ते वितर्कडोलां विविधार्थराशेः ।

लक्ष्मीहयास्यः स्फुरिताक्षमालो लक्ष्मीलसद्वत्सतलः सदा नः ॥

नत्वा लक्ष्मीहयग्रीवौ गुरुवन्दनपूर्वकम् ।

शब्दार्थकौस्तुभस्यास्य तुरीयं भागमारभे ॥

नमस्कार नಮಸ್ಕಾರ (ಪುಂ) ಪ್ರಣಾಮ, ವಂದನೆ. ನಮಸ್+  
ಕೃತ್ "ಕೃ" (೩-೩-೧೮) ।

ನಮಸ್ಕಾರಕ್ಕೆ ಅರ್ಹರಾದವರು : ಉಪಾಧ್ಯಾಯ  
ತಂದೆ ಜ್ಯೇಷ್ಠಸಹೋದರ ರಾಜ ಮಾತುಲ (ಸೋದರ  
ಮಾವ) ಶ್ವಶುರ (ಪತ್ನಿಯ ತಂದೆ) ರಕ್ಷಕ ಮಾತಾಮಹ  
ಪಿತಾಮಹ ಬಂಧುಗಳಲ್ಲಿ ಹಿರಿಯನಾದವನು ತಂದೆಯ  
ಸಹೋದರ ಇಷ್ಟುಮಂದಿ ಗುರುಜನರು ನಮಸ್ಕಾರ  
ರಾರ್ಹರು. ತಾಯಿ ಮಾತಾಮಹಿ ಗುರುಪತ್ನಿ ತಾಯಿ  
ತಂದೆಗಳ ಸಹೋದರಿಯರು ಶ್ವಶ್ರು (ಪತ್ನಿಯ ತಾಯಿ)  
ಪಿತಾಮಹಿ ಜ್ಯೇಷ್ಠಸಹೋದರಿ ದಾದಿ (ಉಪಮಾತೆ)  
ಈ ಹೆಂಗಸರೂ ನಮಸ್ಕಾರಾರ್ಹರು. "उपाध्यायः पिता  
ज्येष्ठो भ्राता चैव महीपतिः । मातुलः श्वशुरस्त्राता  
मातामहपितामही । बन्धुज्येष्ठः पितृव्यश्च पुंस्येते गुरवः  
स्मृताः । माता मातामही गुर्वी पितुर्मतिश्च सोदरा ।  
श्वश्रूः पितामही ज्येष्ठा धात्री च गुरवः स्त्रियाम् ।  
दैवರು ಗುರು ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಇವರನ್ನು ಕಂಡು ನಮಸ್ಕರಿಸಿ  
ದವನು ಮಹಾಪಾಪಿಯಾಗಿ ಕಾಲಸೂತ್ರವೆಂಬ ನರಕವನ್ನು  
ಹೊಂದುತ್ತಾನೆ. "देवं विप्रं गुहं दृष्ट्वा न नमोऽस्तु  
सम्भ्रमात् । स कालसूत्रं ब्रजति यावच्चन्द्रदिवाकरौ"  
ब्रह्मवै० ।

ನಮಸ್ಕಾರಕ್ಕೆ ಅರ್ಹರಲ್ಲದವರು : ತಾಯಿ  
ಮತ್ತು ತಂದೆಯ ಕಿರಿಯ ಸಹೋದರರನ್ನು ವಯಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ  
ಹಿರಿಯನಾದವನು ನಮಸ್ಕರಿಸಕೂಡದು. ಅದರೆ ಗುರು  
ಪತ್ನಿ ಹಿರಿಯಸಹೋದರನ ಪತ್ನಿ ಮಲತಾಯಿ ಇವರು  
ವಯಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಕಿರಿಯವರಾದರೂ ನಮಸ್ಕಾರಾರ್ಹರು.  
"मातुः पितुः कनीयांसं न नमोद्वयसाधिकः । नमस्कुर्यात्  
गुरोः पत्नीं भ्रातृजायां विमातरम्" ।

ನಮಸ್ಕಾರಿ ನಮಸ್ಕಾರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಟ್ಟಿದರೆ ಮುನಿವ  
ಗಿಡ. ನಮಸ್+ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) "णिनिः" (೩-೨-೨೮) ।

ನಮಸ್ಕಾರ್ಯ ನಮಸ್ಕಾರ್ಯ (ವಿಂ) 1. ನಮಸ್ಕಾರಕ್ಕೆ  
ಯೋಗ್ಯನಾದವನು. 2. ನಮಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವವನು.  
3. ನಮಸ್ಕರಿಸಬೇಕಾದವನು. ನಮಸ್+ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ)  
"ण्यत्" (೩-೧-೧೨೪) । "ನಮಸ್ಕಾರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ನಮಸ್ಕೃತಿ ನಮಸ್ಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಣಾಮ, ನಮಸ್ಕಾರ.

ನಮಸ್ಕ್ರಿಯಾ ನಮಸ್ಕ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಣಾಮ, ನಮ  
ಸ್ಕಾರ. ನಮಸ್+ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) "शः" (೩-೩-೧೦೦) ।

ನಮಸ್ಯ ನಮಸ್ಯ (ವಿಂ) ನಮಸ್ಕಾರಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ, ಗೌರ  
ವಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯನಾದ.



**ನಮಸ್ಯಾ ನಮಸ್ಕಾರ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಣಾಮ, ನಮಸ್ಕಾರ. 2. ಪೂಜೆ. ನಮಸ್ + ಕ್ಯವ್ (3-1-19). "ಅ:" (3-2-102). "ಪೂಜಾ ನಮಸ್ಯಾಪಚಿತಿ:" ಅಮಂ. **ನಮಸ್ಯತ ನಮಸ್ಕಿತ** (ವಿಂ) ನಮಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಮಸ್ + ಕ್ಯವ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102). ವಾ ಯಲೋಪ: (6-4-50). **ನಮಸಿತ:** ನಮಸ್ಕಿತ. **ನಮಿತ ನಮಿತ** (ವಿಂ) 1. ನಮಸ್ಕಾರಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102). 2. ಬಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಯತ್ತಸ್ಥೇ ನಮಿತಮುಖೇಂದು ಮಾನವತ್ಯಾ" ಮಾಘಂ 9-44. **ನಮುಚಿ ನಮುಚಿ** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಅಸಂಖ್ಯ. 2. ಮನುಷ್ಯ. ತಮುಚತಿ ನಜ್ ಪ್ರಕೃತ್ಯಾ ಭವತಿ (6-3-95). "ನಮುಚಿಸ್ತು ಪುಮಾನ್ ದೈತ್ಯಭೇದೇ ಕುಸುಮಕಾಮುಕೇ" ಮೇದಿಂ. **ನಮುಚಿವಿಷ್ ನಮುಚಿದ್ವಿಷ್** (ಪುಂ) ನಮುಚಿಯ ಶತ್ರುವಾದ ಇಂದ್ರ. ನಮುಚಿ ದ್ವಿಷ್—ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) "ವಿವ್" (3-2-61). "ವಿಗೃಹ್ಯಾ ಚಕ್ರೇ ನಮುಚಿವಿಷಾ ಬಲಿ ಯ ಇತ್ಯಮಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯಮಹದಿವಂ ದಿವ:" ಮಾಘಂ 1-51. **ನಮುಚಿಸುದನ ನಮುಚಿಸೂದನ** (ಪುಂ) ನಮುಚಿಯನ್ನು ಸಂಪರಿಸಿದ ಇಂದ್ರ. ನಮುಚಿ ಸುದಯತಿ—ಷೂದ (ಆರಣಂ) "ಲ್ಯು:" (3-1-134). **ನಮೇರು ನಮೇರು** (ಪುಂ) ಪುನ್ನಾಗವೃಕ್ಷ, ಸುರಗಿ ಮರ, ಸುರಹೊನ್ನೆ ಮರ. ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ಋ:" ಬಾಹುಂ. "ಗಣಾ ನಮೇರುಪ್ರಸವಾವತಂಸಾ ಭೂಜತ್ವಚ: ಸ್ಪರ್ಶವತೀರ್ದಧಾನಾ:" ಕುಮಾಂ 1-55. **ನಮೋಗುರ ನಮೋಗುರು** (ಪುಂ) ವಿಪ್ರ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. **ನಮೋವಾಕ ನಮೋವಾಕ** (ಪುಂ) ನಮಸ್ಕಾರದ ಮಾತು. ತಮ: ನಮಸ್ಕಾರಾಯ ವಾಕ:। "ಇದಂಕವಿಮ್ಯ: ಪೂರ್ವೇಭ್ಯೋ ನಮೋವಾಕಮಧೀಮಹೇ" ತಂರಾಂ 1-1. **ನಮೋವೃಥ ನಮೋವೃಥ** (ಪುಂ) ಯಾಗ. ನಮಸೋಽಸ್ಯ ವೃಥ್ ವರ್ಧನಂ ಯಸ್ಮಾತ್. ಯಾಗದ ಅಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ ಅಹುತಿಯು ಅದಿತ್ಯನನ್ನು ಸೇರುವುದು. ಅದಿತ್ಯನಿಂದ ಮಳೆಯುಂಟಾಗುವುದು. ಮಳೆಯಿಂದ ಪ್ರಜೆಗಳಿಗೆ ಅನ್ನವು ಲಭಿಸುವುದು. ಅದುದರಿಂದ ಯಜ್ಞವು ಅನ್ನಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗುವುದು. "ಅಗ್ನೌ ಪ್ರಾಸ್ತಾಹುತಿ: ಸಮ್ಯಗಾದಿತ್ಯಮುಪತಿಷ್ಠತೇ। ಆದಿತ್ಯಾಜ್ಜಾಯತೇ ವೃಷ್ಟಿವೃಷ್ಟೇರನ್ನಂ ತತ: ಪ್ರಜಾ:" ಮನುಂ 3-96. **ನಮ್ಯ ನಮ್ಯ** (ವಿಂ) ನಮಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ. ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) ಕರ್ಮಂ "ಯತ್" (3-1-94). **ನಮ್ರ ನಮ್ರ** (ವಿಂ) 1. ವಿಧೇಯ, ವಿನಯದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು. ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ರ:" (3-2-167).

"ಅಮೃತ್ವ ನಮ್ರ: ಪ್ರಣಿಪಾತಶಿಕ್ಷಯಾ ಪಿತುಮುಂದಂ ತೇನ ತತಾನ ಸೋಮಕ:" ರಘುಂ 3-25. 2. ಬಗ್ಗಿರುವ. "ಶಶ್ವತಿಸಿದ್ಧರೂಪ-ಚಿತಬಲಿ ಭಕ್ತಿನಮ್ರ: ಪರೀಯಾ:" ಮೇಘಂ 1-55. **ನಮ್ರಕ ನಮ್ರಕ** (ಪುಂ) 1. ಲಘುಗಿಡ. ನಮ್ರ ಇವ ಕಾಯತಿ—ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ:" (3-2-3). 2. ಬಗ್ಗಿರುವ. ನಮ್ರ ಎವ್ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (5-4-5). **ನಮ್ರತಾ ನಮ್ರತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿಧೇಯತೆ, ವಿನಯದಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. ನಮ್ರಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (5-1-119). 2. ಬಗ್ಗಿರುವಿಕೆ. "ತ್ವ:" (5-1-119). ನಮ್ರತ್ವಮ್ ನಮ್ರತ್ವಮ್. "ಮಯಿ ಸ್ಥಿತಿನಮ್ರತಯೇವ ಲಭ್ಯತೇ ದಿಗೇವ ತು ಸ್ತಂಭತಯಾ ವಿಲಕ್ಷ್ಯತೇ" ನೈಷಂ 12-34. **ನಮ್ರಮುಖ ನಮ್ರಮುಖ** (ವಿಂ) ತಗ್ಗಿದ ಮುಖವುಳ್ಳವನು, ತಲೆ ತಗ್ಗಿಸಿರುವವನು. ನಮ್ರಂ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಹೀಪ್"। -ಮುಖೀ-ಮುಖೀ. "ಸಾ ಸಾ ಹ್ಲಿಯಾ ನಮ್ರಮುಖೀ ಬಭೂವ" ಮಾಘಂ 3-16. **ನಯ ನಯ** (ಪುಂ) 1. ನೀತಿ, ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆ, ವಿವೇಕಯುಕ್ತ ವ್ಯವಹಾರ. ಣಿಜ್ (ಪ್ರಾಪಣಂ) "ಅಚ್" (3-3-56). "ಕಥಂಚಿನ್ನ ವಿಕಲ್ಪಂತೇ ವಿಧ್ವಿಷ್ಣಿಶ್ಚಿಂತಿತಾ ನಯಾ:" ಪञ्ಚತಂ 1-370. 2. ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರ, ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ. "ವಿಷಮೋಽಪಿ ವಿಗಾಹ್ಯತೇ ನಯ: ಕೃತತೀರ್ಥ: ಪಯಸಾಮಿವಾಶಯ:" ಕಿರಾಂ 2-3. 3. ರಾಜನೀತಿ, ವಿವೇಕದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಅಡಳಿತ ನೈಪುಣ್ಯ, ರಾಜಕೀಯ ಚತುರತೆ, "ವಿಕ್ರಾಂತೇನಯಶಾಲಿಭಿ: ಸುಸಚಿವೈ: ಶ್ರೀರ್ವಕ್ರನಾಸಾದಿಭಿ: ನಂದೇ ಜೀವತಿ ಯಾ ತದಾ ನ ಗಮಿತಾ ಸ್ಥೈರ್ಯ ಚಲಂತಿ ಮೃದು:" ಮುದ್ರಾಂ 1-23. 4. ವಿಷ್ಣು. ನಿಯಂತೇ ನಿಯಮಸ್ಮಿನ್-ಣಿಜ್ ಅಧಿಂ "ಅಚ್"। "ಯಸ್ಮಿನ್ ತಪೋಧನಾ ನಿಯಂ ನಿಯಂತೇ ಇತಿ ವೈ ನಯ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ:। "ರಾಮೋ ವಿರಾಮೋ ವಿರಜೋ ಮಾರ್ಗೋ ನೇಯೋ ನಯೋನಯ:" ವಿಂಸಂ. 5. ಸಿದ್ಧಾಂತ, ತತ್ತ್ವ. "ತತ್ರಾಪಿ ಪರಮಾಣಿ ಸ್ಯಾತ್ ಪಾಕೋ ವೈಶೇಷಿಕೇ ನಯೇ" ಭಾಷಾಪಂ. 6. ಒಂದು ವಿಧ ದ್ಯೂತ. (ವಿಂ) 7. ನಾಯಕ, ಮಂಡೂಳು. 8. ನಾಯವಾದ. ಕ್ರಮಬದ್ಧವಾದ. "ನಯೋ ನಿಯತೀತವಿಶೇಷಯೋ:" ಮೇದಿಂ. **ನಯಕ ನಯಕ** (ವಿಂ) ನೀತಿಯಲ್ಲಿ ಚತುರನಾದವನು, ರಾಜ ನೀತಿಯಲ್ಲಿ ಕುಶಲನಾದವನು. ನಯೇ ಕುಶಲ: "ಕನ್" (5-2-64). **ನಯತ್ ನಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಒಯ್ಯುತ್ತಿರುವ. "ತಾಮೇಕತ: ಕ್ಷಿತಿಪತೇರಪರಂ ನಯಂತ:" ನೈಷಂ 11-61. 2. ಮಾರ್ಗದರ್ಶನ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಸೂಚನೆ ಕೊಡುತ್ತಿರುವ. ಣಿಜ್ (ಪ್ರಾಪಣಂ) "ಶತ್" (3-2-124). 3. ಹೊಂದಿಸು



ತ್ರಿರುವ. "ನಯನ್ ಮಧುಲಿಹಃ ಶ್ವೇತಮುದ್ರದಶನಾಂಶುಭಿಃ" ಮಾಘಂ ೨-೨೧. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). -ಸ್ತೀ -೨೨.

ನಯನ ಸಯನ (ನಂ) 1. ನೇತ್ರ. ಕಣ್ಣು. ನಿಯತೇಜೇನ—ಗೌಞ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩). "ತಮೇಕದೃಶ್ಯಂ ನಯನೇ ಪಿಬಂತ್ಯೋ ನಾರ್ಯೋ ನ ಜಮ್ಭುವಿಷಯಾಂತರಾಣಿ" ಕುಮಾಂ ೭-೬೪. 2. ಒಯ್ಯುವುದು, ಸಾಗಿಸುವುದು. 3. (ಕಾಲ) ಕಳೆಯುವುದು. "ಕಾಲಸ್ಯ ನಯನೇ ಯುಕ್ತಾಃ ಸೋಮಪತ್ನಯಃ ಶುಚಿವ್ರತಾಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೭-೧೬.

ನಯನಗೋಚರ ಸಯನಗೋಚರ (ವಿಂ) ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಗೋಚರವಾದ, ನೋಟಕ್ಕೆ ವಿಷಯವಾದ, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸುವ. ನಯನಸ್ಯ ಗೋಚರಃ.

ನಯನಚ್ಛವ ಸಯನಚ್ಛವ (ಪುಂ) ಕಣ್ಣಿನ ಟೆಪ್ಪೆ. ನಯನಂ ಚಾಪತೇಜೇನ—ಚ್ಛವ (ಸಂವರಣೆ)+ಣಿಚ್ "ಛಃ" (೩-೩-೧೧೮).

ನಯನಪಥ ಸಯನಪಥ (ಪುಂ) ದೃಷ್ಟಿಯ ಮಾರ್ಗ. ನೋಟವು ಹರಡುವ ಪ್ರದೇಶ. ನಯನಸ್ಯ ಪಥಾಃ "ಪಃ" (೪-೪-೭೪).

ನಯನವತ್ ಸಯನವತ್ (ವಿಂ) ನೇತ್ರಗಳೆಳ್ಳವನು. ನೇತ್ರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದವನು. ನಯನೇಷ್ಯ ಸ್ತಃ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪). "ಇಹ ಜಗತಿ ಮಹೋತ್ಸವಸ್ಯ ಹೇತುರ್ನಯನವತಾ-ಮುಡಿಯಾ ಬಾಲಚಂದ್ರಃ" ಮಾಲತೀಂ ೨-೧೦. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). -ವತೀ -ವತೀ.

ನಯನಾನಂದ ಸಯನಾನಂದ (ಪುಂ) ಕಣ್ಣಿಗೆ ಉಂಟಾಗುವ ಆಹ್ಲಾಸ, ನಯನಯೋರಾನಂದಃ. "ಕಿಂ ಪದಸ್ಯ ಕುಚಿ ನ ಹಂತಿ ನಯನಾನಂದಂ ವಿಧತ್ತೇ ನ ಕಿಮ್" ರತ್ನಾಂ ೩-೧೩.

ನಯನಾಭಿರಾಮ ಸಯನಾಭಿರಾಮ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ನಯನಮಭಿರಮಯತಿ—ಅಭಿ + ರಮು (ಕೃಡಾಯಾಮ್)+ಣಿಚ್ "ಅಞ್" (೩-೨-೧). (ವಿಂ) 2. ಕಣ್ಣಿಗೆ ಮನೋಹರವಾಗಿ ತೋರುವ, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಪ್ರೀತಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.

ನಯನೀಯ ಸಯನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಒಯ್ಯಲ್ಪಡುವ, ಸಾಗಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಒಯ್ಯಲು ಶಕ್ತವಾದ. 3. ಒಯ್ಯಬೇಕಾದ. 4. ಒಯ್ಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಗೌಞ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬).

ನಯನೋತ್ಸವ ಸಯನೋತ್ಸವ (ಪುಂ) ಕಣ್ಣಿಗೆ ಉಂಟಾಗುವ ಹಬ್ಬ, ಸುಂದರ ವಸ್ತುವನ್ನು ನೋಡುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಸಂತೋಷ. ನಯನಯೋತ್ಸವಃ.

ನಯಮಾನ ಸಯಮಾನ (ವಿಂ) ಒಯ್ಯುತ್ತಿರುವ, ಸಾಗಿಸುತ್ತಿರುವ. ಗೌಞ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) ಕರ್ತಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪).

ನಯವತ್ ಸಯವತ್ (ವಿಂ) 1. ನೀತಿಯುಳ್ಳವನು. 2. ವಿವೇಕಶಾಲಿ. 3. ಒಳ್ಳೆಯ ವ್ಯವಹಾರವುಳ್ಳವನು. 4. ರಾಜನೀತಿಯನ್ನು ತಿಳಿದವನು. ನಯೋಷ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). -ವತೀ -ವತೀ.

ನಯವತ್ಮನ್ ಸಯವತ್ಮನ್ (ನಂ) ನೀತಿಮಾರ್ಗ, ರಾಜನೀತಿಯ ನೈಪುಣ್ಯ. ರಾಜ್ಯಾಡಳಿತದಲ್ಲಿ ಸಂಧಿವಿಗ್ರಹವೊಂದಾದ ಅದು ಗುಣಗಳನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸುವುದು. ನಯಸ್ಯ ವತ್ಮಂ. "ತವಾನುಭಾವೋಽಯಮವೇದಿ ಯನ್ಮಯಾ ನಿಗೂಢತತ್ವಂ ನಯವತ್ಮಂ ವಿಧಿಷಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೬.

ನಯವಿದ್ ಸಯವಿದ್ (ವಿಂ) ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ರಾಜನೀತಿಯನ್ನು ಬಲ್ಲವನು. ನಯಂ ವೇದಿ—ವಿದ (ಜ್ಞಾನೆ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೬೧). "ನಯವಿದ್ವಿನ್ವೇ ರಾಜಿ ಸದಸಂಚೋಪದಶಿತಮ್" ರಘುಂ ೪-೧೦.

ನಯವಿಶಾರದ ಸಯವಿಶಾರದ (ವಿಂ) ರಾಜನೀತಿಯಲ್ಲಿ ನಿಪುಣನಾದವನು. ನಯೇ ವಿಶಾರದಃ. "ಸಾಂವಿವಿಗ್ರಹಿಕಃ ಕಾರ್ಯೋ ರಾಜಾ ನಯವಿಶಾರದಃ".

ನಯವೇದಿನ್ ಸಯವೇದಿನ್ (ವಿಂ) "ನಯವಿದ್" ಪದದ ಅರ್ಥ. ನಯಂ ವೇದಿ—ವಿದ (ಜ್ಞಾನೆ) "ಣಿತಿಃ" (೩-೧-೧೩೪).

ನಯಶಾಸ್ತ್ರ ಸಯಶಾಸ್ತ್ರ (ನಂ) ರಾಜನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರ.

ನಯಸಿದ್ಧಿ ಸಯಸಿದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾಜನೀತಿಯ ಫಲ, ರಾಜನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರ ಪ್ರಯೋಗದ ಫಲ. ನಯಸ್ಯ ಸಿದ್ಧಿಃ.

ನರ ನರ (ಪುಂ) 1. ಮನುಷ್ಯ. ನರತಿ—ನ್ (ನಯೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). "ವಾನರಾಣಾಂ ನರಾಣಾಂ ಚ ಕಥಮಾಸೀ-ತ್ಸಮಾಗಮಃ" ರಾಮಾಂ. 2. ವಿಷ್ಣು. ಪರಮಾತ್ಮ. "ರಃ ಕ್ಷಯೋ ಯಸ್ಯ ನಾಸ್ತಿ ಸ ನರಃ ಸಮುದಾಹುತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ. "ಜಹ್ನುರ್ನಾರಾಯಣೋ ನರಃ" ವಿಂಸಂ. 3. ಪುರುಷ. 4. ಅರ್ಜುನ. [ಸಹಸ್ರಕವಚನೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನು ಲೋಕವನ್ನು ಪೀಡಿಸುತ್ತಿರಲು ಅವನ ಸಂಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ವಿಷ್ಣುವಿನ ಅಂಶದಿಂದ ನರ ನಾರಾಯಣರೆಂಬ ಇಬ್ಬರು ಮುನಿಗಳು ಧರ್ಮಪುರುಷನ ಪುತ್ರರಾಗಿ ಜನಿಸಿದರು. ಸಾವಿರ ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ತಪಸ್ಸು ಮಾಡಿದವರಿಂದ ಮಾತ್ರ ತನಗೆ ಮರಣವುಂಟಾಗಬೇಕೆಂಬ ವರವನ್ನು ಸಹಸ್ರಕವಚನು ಪಡೆದದ್ದರಿಂದ ಈ ಮುನಿಗಳು ಬದರಿಕಾಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ತಪಸ್ಸು ಮಾಡತೊಡಗಿ ಇಬ್ಬರೂ ಸರದಿಯಂತೆ ಈ ರಾಕ್ಷಸನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಮಾಡಿ ಒಬ್ಬನೊಬ್ಬನು ತೊಂಬತ್ತೊಂಬತ್ತು ಕವಚಗಳನ್ನು ಭೇದಿಸಿದರು. ಇಷ್ಟರಲ್ಲಿ ಈ ರಾಕ್ಷಸನು ಮೃತಿಹೊಂದಿ ಒಂದು ಕವಚದೊಡನೆ ಕರ್ಣನಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದನು. ಆಗ ಈ ಮುನಿಗಳೂ ಕೃಷ್ಣಾರ್ಜುನರಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿ ತನ್ನ



ಸರದಿಯಾಗಿದ್ದ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ನರ (ಅರ್ಜುನ)ನು ಕರ್ಣನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದನು.] (ನಂ) 5. ರಾಮಕರ್ಪೂರವೆಂಬ ಒಂದು ತ್ಯಾಣ. "ನರೋಜಃ ಸನುಜೋಜುನೆ | ಕಲಿಬನ್ತು ರಾಮ-ಕರ್ಪುರೆ" ಮೇದಿಂ |

**ನರಕ ನರಕ (ಫಂ) 1.** ಜೀವಾತ್ಮನು ತಾನು ಮಾಡಿದ ಪಾಪ ಕಾರ್ಯಗಳ ಫಲವನ್ನು ಯಮಲೋಕದಲ್ಲಿ ಅನುಭವಿಸುವ ಸ್ಥಳ. ನರತಿ ನಯತಿ ಪಾಪಿಲೋಕಮ್—ನ್ (ನಯೆ) "ವುನ್" (ತಂ ೪-೩೪) | ನಾನಾವಿಧ ಪಾಪಕಾರ್ಯಗಳಿಗೆ ಶಿಕ್ಷೆಯನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವ ನರಕಗಳು ಇಪ್ಪತ್ತೆಂಟು. (1) ತಾಮಿಸ್ರಃ, (2) ಅನ್ಧತಾಮಿಸ್ರಃ, (3) ರೋರವಃ, (4) ಮಹಾರೋರವಃ, (5) ಕುಂಭಿ-ಪಾಕಃ, (6) ಕಾಲಸೂತ್ರಮ್, (7) ಅಸಿಪತ್ರವನಮ್, (8) ಸೂಕರ-ಮುಖಮ್, (9) ಅನ್ವಕೂಪಃ, (10) ಕುಮಿಭೋಜನಃ, (11) ಸಂದಶಃ, (12) ತಪ್ತಸೂಮಿಃ, (13) ವಜ್ರಕಂಠಕಃ, (14) ಶಾಲ್ಮಲಿಃ, (15) ವೇತರಣಿ, (16) ಪೂಯೋದಃ, (17) ಪ್ರಾಣರೋಧಃ, (18) ವಿಶಸನಮ್, (19) ಲಾಲಾಭಕ್ಷಃ, (20) ಸಾರಮೇಯಾದನಮ್, (21) ಅಬೀಚಿಃ, (22) ಅಯಃಪಾನಮ್, (23) ಕ್ಷಾರಕದಮಃ, (24) ರಕ್ಷೋಗಣಭೋಜನಃ, (25) ಶೂಲಪ್ರೊತಃ, (26) ದಂಧಶೂಕಃ, (27) ಪರ್ಯವರ್ತನಃ ಮತ್ತು (28) ಸೂಚಿಮುಖಮ್ | ಪಾಪಕಾರ್ಯಗಳಿಗನುಗುಣವಾಗಿ ಮೇಲೆ ಹೇಳಿರುವ ನರಕಗಳಲ್ಲಿ ಶಿಕ್ಷೆಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸಬೇಕಾಗುವುದು. [ವಿವರಗಳಿಗೆ ಭಾಗಂ ೪-೨೬ ಅಧ್ಯಾಯದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] **2. ನರಕಾಸುರ.** [ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ವರಾಹಾವತಾರಕಾಲದಲ್ಲಿ ವಿಷ್ಣುವಿನ ದೇಹದಿಂದ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದ ಬೆವರಿನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದುದರಿಂದ ಇವನಿಗೆ ಭೌಮಾಸುರನೆಂದೂ ಹೆಸರಾಯಿತು. ಭೂದೇವಿಯು ಈ ಅಸುರನಿಗೆ ವೈಷ್ಣವಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿ ಕೊಟ್ಟಳು. ಅದರಿಂದ ಕೊಬ್ಬಿದ ಇವನು ಲೋಕವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಪೀಡಿಸುತ್ತಿರಲು ಇಂದ್ರನು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ ಈ ವೃತ್ತಾಂತವನ್ನು ತಿಳಿಸಲಾಗಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ನರಕಾಸುರನ ರಾಜಧಾನಿಯಾದ ಪ್ರಾಗ್ಜ್ಯೋತಿಷಪುರಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಅವನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಮಾಡಿ ಅವನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದನು. ಬಳಿಕ ನರಕಾಸುರನ ಮಗನಾದ ಭಗದತ್ತನಿಗೆ ಅಭಯಪ್ರದಾನಮಾಡಿ ನರಕನು ಸೆರೆಯಲ್ಲಿಟ್ಟಿದ್ದ ರಾಜಕನ್ಯೆಯರೆಲ್ಲರನ್ನೂ ಬಿಡಿಸಿ ನರಕನಿಂದ ಅಪಹೃತವಾದ ಅದಿತಿಯ ಕುಂಡಲಗಳನ್ನೂ ಮೇರುಶಿಖರವನ್ನೂ ಇಂದ್ರನ ಛತ್ರವನ್ನೂ ಕೊಡಿಸಿದನು.] ಭಾಗಂ ೧೦-೪೯ |

**ನರಕಕುಂಡ ನರಕಕುಂಡ (ನಂ)** ಯಮಲೋಕದಲ್ಲಿ ಜೀವಾತ್ಮನು ತನ್ನ ಪಾಪಕೃತ್ಯಗಳಿಗೆ ಶಿಕ್ಷೆಯನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವ ಯಾತನಾಸ್ಥಾನ. ಕ್ರೂರವಾದ ಮಾತುಗಳಿಂದ ಬಂಧುಗಳನ್ನು ಪೀಡಿಸುವವನಿಗೆ ವಹಿ ಕುಂಡದಲ್ಲಿ ಶಿಕ್ಷೆ. ಬ್ರಾಹ್ಮ

ಣರು ಬಂದಾಗ ಆತಿಥ್ಯವನ್ನು ಮಾಡದವನಿಗೆ ತಪ್ಪುಕುಂಡದಲ್ಲಿ ಶಿಕ್ಷೆ. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ವೃತ್ತಿಯನ್ನು ಅಪಹರಿಸುವವನಿಗೆ ವಿಟ್ ಕುಂಡದ ಶಿಕ್ಷೆ. ಇತರರ ತಟಾಕಗಳನ್ನು ಒಡೆದುಹಾಕುವವನಿಗೆ ಮೂತ್ರಕುಂಡದಲ್ಲಿ ಶಿಕ್ಷೆ. ಏಕಾಕಿಯಾಗಿ ಮಿಷ್ಣಾನ್ನ ಭುಜಿಸುವವನಿಗೆ ಶ್ಲೇಷ್ಮಕುಂಡದಲ್ಲಿ ಶಿಕ್ಷೆ. ತಾಯಿ ತಂದೆ ಗುರು ಮತ್ತು ಪತ್ನಿ ಇವರನ್ನು ಪೋಷಿಸದವನಿಗೆ ಗರಕುಂಡದ ಶಿಕ್ಷೆ. ಅತಿಥಿಯನ್ನು ಕಂಡು ದೃಷ್ಟಿಯನ್ನು ವಕ್ರವಾಗಿ ಮಾಡುವವನಿಗೆ ದೂಷಿಕಾ (ನೇತ್ರಮಲ) ಕುಂಡದಲ್ಲಿ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣನೊಬ್ಬನಿಗೆ ಕೊಡುವುದಾಗಿ ವಾಗ್ದಾನಮಾಡಿ ಮತ್ತೊಬ್ಬನಿಗೆ ಕೊಡುವವನಿಗೆ ವಸಾಕುಂಡದಲ್ಲಿ, ಪರಸ್ತ್ರೀಸಂಗಮ ಮಾಡುವ ಪುರುಷನಿಗೆ ಮತ್ತು ಪರಪುರುಷನ ಸಂಗ ಮಾಡುವ ಹೆಂಗಸಿಗೆ ಶುಕ್ರಕುಂಡದಲ್ಲಿ ಶಿಕ್ಷೆ. ತಾಯಿ ತಂದೆ ಆಚಾರ್ಯ ಇವರನ್ನು ಹೊಡೆದು ಅವರ ಪೈಯಿಂದ ರಕ್ತ ಸುರಿಸುವವನು ರಕ್ತಕುಂಡದಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದು ಯಾತನೆಯನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವನು. ಗರ್ಭಿಣಿಯ ಸಂಗದಿಂದ ತಾಮ್ರಕುಂಡದಲ್ಲಿ ಶಿಕ್ಷೆ. ವಿಷ ಪ್ರಯೋಗದಿಂದ ಪ್ರಾಣ ತೆಗೆಯುವವನು ವಿಷಕುಂಡದಲ್ಲಿ ಯಾತನೆಯನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವನು. ಬ್ರಾಹ್ಮಣರ ಮತ್ತು ದೇವರ ದ್ರವ್ಯವನ್ನು ಅಪಹರಿಸುವವನು ವಜ್ರಕುಂಡದಲ್ಲಿ ಯಾತನೆಯನ್ನು ಅನುಭವಿಸಬೇಕು. ದ್ರವ್ಯದ ಆಸೆಯಿಂದ ಪ್ರಜೆಗಳನ್ನು ಶಿಕ್ಷಿಸುವ ರಾಜನಿಗೆ ವೃತ್ತಿಕುಂಡದಲ್ಲಿ ಶಿಕ್ಷೆ. ಇತ್ಯಾದಿ ನಾನಾವಿಧವಾದ ಅಪರಾಧಗಳಿಗೆ ಎಂಬತ್ತಾರು ಕುಂಡಗಳಲ್ಲಿ ಶಿಕ್ಷೆಯು ವಿಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. ब्रह्मवं प्रकृति-खण्डः |

**ನರಕಜಿತ್ ನರಕಜಿತ್ (ಫಂ)** ವಿಷ್ಣು, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ನರಕಜಿತವಾನ್ — ಜಿ (ಜಯೆ) "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೬೧) | एवं -भिद् -भित्. "ನರಕಜಿತಾ ನಿರಪಾಯವಿಭವೇನ" ಥಾದಂ ೨೪-೨೩ |

**ನರಕಭೂಮಿ ನರಕಭೂಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪಾಪಿಗಳು ಯಮಲೋಕದಲ್ಲಿ ಶಿಕ್ಷೆಯನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವ ಪ್ರದೇಶ. ನರಕಸ್ಯ ಭೋಗಯೋಗ್ಯಾ ಭೂಮಿಃ |

**ನರಕಮುಕ್ತ ನರಕಮುಕ್ತ (ಫಂ)** ನರಕಯಾತನೆಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸಿದನಂತರ ಬಿಡುಗಡೆಹೊಂದಿದವನು. ನರಕದಿಂದ ಮುಕ್ತನಾದ ಜೀವನು ತನ್ನ ಪಾಪಕರ್ಮಾನುಗುಣವಾಗಿ ನಾನಾವಿಧವಾದ ಜನ್ಮಗಳನ್ನು ಪಡೆಯಬೇಕಾಗುವುದು. ಉಪಾಧ್ಯಾಯನಲ್ಲಿ ಅಪರಾಧಮಾಡಿದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನು ನಾಯಿಜನ್ಮವನ್ನು ಪಡೆಯುವನು. ಗುರುಪತ್ನಿಯನ್ನೂ ಗುರುವಿನ ದ್ರವ್ಯವನ್ನೂ ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದವನು ಗರ್ದಭವಾಗಿ ಹುಟ್ಟುವನು. ತನ್ನಲ್ಲಿಟ್ಟಿದ್ದ ವಸ್ತು ಧನ ಮೊದಲಾದ



ವನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿದವನು ನರಕದಿಂದ ಮುಕ್ತನಾಗಿ ಕೃಮಿಯಾಗಿ ಹುಟ್ಟುವನು. ಪರರ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಯನ್ನು ಕಂಡು ಅಸೂಯೆಪಡುವವನು ರಾಕ್ಷಸನಾಗಿ ಹುಟ್ಟುವನು. ಒಬ್ಬನ ಊಟವನ್ನು ಕದ್ದು ತಿನ್ನುವವನು ಮಕ್ಷಿಕ (ನೋಣ) ವಾಗಿ ಹುಟ್ಟುವನು. ಕಾಂಸ್ಯ (ಕಂಚು) ವನ್ನು ಅಪಹರಿಸುವವನು ಕಪೋತ (ಪಾರಿವಾಳ) ವಾಗಿ ಜನಿಸುವನು. ಒಬ್ಬನ ಮನೆಯನ್ನು ಮೋಸದಿಂದ ಅಪಹರಿಸುವವನು ರೌದ್ರನರಕ ವನ್ನು ಹೊಂದುವನು. ಸುವರ್ಣಕಲಶಚೋರನಿಗೆ ಕೃಮಿ ಜನ್ಮವು ಬರುವುದು. ಇತ್ಯಾದಿ ಇತ್ಯಾದಿ. “उपाध्याय व्यलीकन्तु कृत्वा इवा भवति द्विजः । तज्जायां मनसा वाञ्छन् तद्रव्यं वाप्यसंशयम् । गर्दभो जायते जन्तु-मित्रस्यैवापमानकृत् । असूयकश्च नरकान्मुक्तो भवति राक्षसः । भोजनं चोरयित्वा तु मक्षिको जायते नरः” ಇತ್ಯಾದಿ.

**ನರಕಾಂತಕ ನರಕಾಂತಕ** (ಪುಂ) ನರಕಾಸುರನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದ ಶ್ರೇಷ್ಠ. ನರಕಸ್ಯ ಅಂತಕಃ. “नरके वा नरकान्तक प्रकामम्” ಮುಂ ಮಾಂ.

**ನರಕಾರ್ಣವ ನರಕಾರ್ಣವ** (ಪುಂ) ನರಕರೂಪವಾದ ಸಮುದ್ರ. ನರಕ ಎವ ಅರ್ಣವಃ.

**ನರಕೇಸರಿನ್ ನರಕೇಸರಿನ್** (ಪುಂ) 1. ನರಸಿಂಹಾವತಾರ ಮಾಡಿದ ಮಹಾವಿಷ್ಣು. 2. ಪುರುಷಶ್ರೇಷ್ಠ.

**ನರಜಾಙ್ಗಲ ನರಜಾಙ್ಗಲ** (ನಂ) ರಕ್ತಸಹಿತವಾದ ನರ ಮೂಸ. ನರಸ್ಯ ಜಾಙ್ಗಲಮ್.

**ನರತಾ ನರತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನುಷ್ಯತ್ವ. ಮನುಷ್ಯನಾಗಿರುವಿಕೆ. ನರಸ್ಯ ಭಾವಃ “तल्” (೪-೧-೧೧೯). “त्वಃ”

• (೪-೧-೧೧೯). -त्वम् -ತ್ವಮ್. “नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा”.

**ನರದೇವ ನರದೇವ** (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ನರೋ ದೇವ ಇವ. “भवन्तमेतर्हि मनस्विगर्हिते विवर्तमानं नरदेव वर्त्मनि” ಕಿರಾಂ ೧-೩೨.

**ನರದ್ವಿಷ ನರದ್ವಿಷ** (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯನ ಶತ್ರುವಾದ ರಾಕ್ಷಸ. ನರಾನ್ ದ್ವೇಷಿ—ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) “विष्” (೩-೨-೬೧).

**ನರನಾಥ ನರನಾಥ** (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ.

**ನರನಾರಾಯಣ ನರನಾರಾಯಣ** (ಪುಂಧಿವಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣು ವಿನ ಅಂಶದಿಂದ ಅವತರಿಸಿದ ನರ ಮತ್ತು ನಾರಾಯಣ ಮುನಿಗಳು. ಇವರು ಧರ್ಮಪುರುಷನ ಪುತ್ರರಾಗಿ ಜನಿಸಿದರು. [“ನರ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ನರಶ್ಚ ನಾರಾಯಣಶ್ಚ.

**ನರಪ ನರಪ** (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ನರಾನ್ ಪಾತಿ—ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) “कः” (೩-೨-೩).

**ನರಪತಿ ನರಪತಿ** (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ನರಾಣಾಂ ಪತಿಃ. “नरपतिकुलभृत्यै गर्भमाधत्त राज्ञी गुरुभिरभिनिविष्ट लोकपालानुभावं” ರಘುಂ ೨-೭೫.

**ನರಪಶು ನರಪಶು** (ಪುಂ) ಪಶುವಿನಂತಿರುವ ಮನುಷ್ಯ. ಅಜ್ಞಾನಿ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು. ನರಃ ಪಶುರಿವ.

**ನರಪಾಲ ನರಪಾಲ** (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ನರಾನ್ ಪಾಲ-ಯತಿ—ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿच् “अण्” (೩-೨-೧).

**ನರಪುಙ್ಗವ ನರಪುಂಗವ** (ಪುಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ಮನುಷ್ಯ, ಉತ್ತಮ ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮನುಷ್ಯ. ಪುಮಾಂಶ್ರಾಸೌ ಗೌಶ್ಚ “टच्” (೪-೪-೯೨). ನರಃ ಪುಙ್ಗವ ಇವ. “पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः” ಗೀತಾ ೧-೫.

**ನರಪ್ರಿಯ ನರಪ್ರಿಯ** (ವಿಂ) ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ಇಷ್ಟವಾದ, ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ಪ್ರೀತಿಪಾತ್ರವಾದ. ನರಸ್ಯ ಪ್ರಿಯಃ.

**ನರಬಲಿ ನರಬಲಿ** (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯನನ್ನು ಉಪಾಹಾರವಾಗಿ ಕೊಡುವ ಒಂದು ಯಾಗ.

**ನರಭುಜ್ ನರಭುಜ್** (ಪುಂ) ನರಭಕ್ಷಕ, ಮನುಷ್ಯರನ್ನು ತಿನ್ನುವ ಪ್ರಾಣಿ. ನರಂ ಭುಜ್ವತೇ—ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾ-ಮ್ಯವಹಾರಯಃ) “क्विप्” (೩-೨-೭೬).

**ನರಭೂ ನರಭೂ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭಾರತವರ್ಷ. ನರಾಣಾಂ ಭೂಃ ಭೂಮಿಃ. 2. ಮನುಷ್ಯರ ಉತ್ಪತ್ತಿ. -ಭೂಮಿಃ—ಭೂಮಿಃ. “भारतं नरभूः किपूरुषम् हरिवर्षं ततः” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ನರಮಾನಿನಿ ನರಮಾನಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುರುಷನಂತಿರುವ ಹೆಂಗಸು, ಪುರುಷಲಕ್ಷಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹೆಂಗಸು, ಪುರುಷ ನೆಂದು ತಿಳಿದುಕೊಂಡಿರುವ ಹೆಂಗಸು. ನರಂ ಮನ್ಯತೇ—ಮನ (ಜ್ಞಾನೆ) “णिनिः” (೩-೧-೧೩೪). “डीप्” (೪-೧-೫). “मरुण्डोच्चललाटा स्यात्सश्मश्रुर्नरमानिनी” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ನರಮಾಲಾ ನರಮಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನುಷ್ಯರ ಮುಂಡಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮಾಲೆ. ನರಾಣಾಂ ನರಮುಂಡಾನಾಂ ಮಾಲಾ.

**ನರಮಾಲಿನಿ ನರಮಾಲಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮನುಷ್ಯರ ಮುಂಡಗಳ ಮಾಲೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹೆಂಗಸು. 2. ಪುರುಷ ರಂತೆ ಗಡ್ಡ ವಿಸಾಸಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹೆಂಗಸು. ನರಸ್ಯೇವ ಮಾಲಾ ಕೇಶಮಾಲಾ ಮುಕ್ತೇಸ್ತಸ್ಯಾಃ “इनिः” (೪-೧-೧೧೬).

**ನರಮೇಧ ನರಮೇಧ** (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯನನ್ನು ಬಲಿಯಾಗಿ ಕೊಡುವ ಒಂದು ಯಾಗ. ನರೋ ಮೇಧ್ಯತೇ ಹಿಸ್ಯತೇಷ್ವ—ಮೇಧ (ಮೇಧಾಹಿಸನಯಃ) “घब्” (೩-೩-೧೨೧). “ब्राह्मण-राजन्ययोरतिष्ठाकामयोः पुरुषमेधमंजको यज्ञो भवति.



ಸರ್ವಭೂತಾನ್ಯತಿಕ್ರಮ್ಯ ಸ್ಥಾನಮತಿಷ್ಠಾ । ಚೈಶ್ವಕುಲದಶಮ್ಯಾ-  
ಮಾರಮ್ಭಃ" । "ರಾಜಸೂಯಾಶ್ವಮೇಧೌ ಚ ಸರ್ವಮೇಧಂ ಚ ಭಾರತ ।  
ನರಮೇಧಂ ಚ ನೃಪತೇ ತ್ವಮಾಹರ ಯುಧಿಷ್ಠಿರ" ಭಾಂ ಆಶ್ವಂ ೩-೮ ।  
ನರಮೇಧವು ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ ನಿಷಿದ್ಧ. "ಸಮುದ್ರಯಾತ್ರಾ-  
ಸ್ವೀಕಾರಃ ಕಮಂಡಲುವಿಧಾರಣಮ್ । ದೇವರೇಣ ಸುತೋತ್ಪತ್ತಿಃ ಮಧುಪುಕೆ  
ಪಶೋರ್ವಧಃ । ದತ್ತಾಯಾಶ್ವೇವ ಕನ್ಯಾಯಾಃ ಪುನರ್ದಾನಂ ವರಸ್ಯ ಚ ।  
ದೀರ್ಘಕಾಲಂ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ ನರಮೇಧಾಶ್ವಮೇಧಕೌ । ಇಮಾನ್ ಧರ್ಮಾನ್  
ಕಲಿಯುಗೇ ವರ್ಜ್ಯಾನಾಹುರ್ಮನೀಷಿಣಃ" ಉದಾಹೃತಂ ।

**ನರ್ಮಮ್ಯ ನರಮೃತ್ಯು** (ಪುಂ) ತನ್ನನ್ನು ಮನುಷ್ಯನೆಂದು  
ತಿಳಿದುಕೊಂಡಿರುವವನು. ಆತ್ಮಾನಂ ನರಂ ಮನ್ಯತೇ - ಮನ  
(ಜ್ಞಾನೇ) "ಽಶ್ವ" (೩-೨-೮೩) । ಸುಮಾಗಮಃ (೬-೩-೬೭) ।

**ನರಯನ್ತ್ರ ನರಯಂತ್ರ** (ನಂ) ನೆರಳಿನ ಮೂಲಕ ಕಾಲವನ್ನು  
ತಿಳಿಯಲು ಮಾಡಿರುವ ಹನ್ನೆರಡು ಅಂಗುಲ ಪ್ರಮಾಣದ  
ನೆರಳು ಗಡಿಯಾರದ ಕಂಬ, ಹನ್ನೆರಡು ಅಂಗುಲಗಳ ಉದ್ದದ  
ಒಂದು ಸರಳು. "ನರಯನ್ತ್ರಂ ತಥಾ ಸಾಧು ದಿನೇ ಚ ವಿಮಲೇ  
ರವೌ । ಛಾಯಾಸಂಸಾಧನೈಃ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಕಾಲಸಾಧನಮುತ್ತಮಮ್"  
ಸೂಂಸಿಂ ೧೩-೨೪ । ವಿಮಲೇ ಮೇಘಾದಿವ್ಯವಧಾನರೂಪಮಲೇನ  
ರಹಿತೇ ಸೂರ್ಯೇ ಏತದ್ರೂಪೇ ದಿನೇ । ಮೇಘಾದಿಗಳಿಂದ ಸೂರ್ಯನು  
ಅಚ್ಚಾದಿತನಾಗದಿರುವ ಹಗಲಲ್ಲಿ ಕಾಲಜ್ಞಾನಕ್ಕಾಗಿ ಈ  
ಯಂತ್ರವನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸಬೇಕು.

**ನರಯಾನ ನರಯಾನ** (ನಂ) ಮನುಷ್ಯರಿಂದ ಎಳೆಯಲ್ಪಡುವ  
ಗಾಡಿ. ನರೇಣ ವಾಹ್ಯಂ ಯಾನಮ್ । "ನರಯಾನೇನ ತು ಜ್ಯೇಷ್ಠಃ  
ಪಿತಾ ಪಾರ್ಥಸ್ಯ ಭಾರತ । ಅಗ್ರತಃ ಧರ್ಮರಾಜಸ್ಯ ಗಾಂಧಾರೀಸಹಿತೋ  
ಯಯೌ" ಭಾಂ ।

**ನರವಂಶ ನರವಂಶ** (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯಶ್ರೇಷ್ಠ. ಉತ್ತಮ  
ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮನುಷ್ಯ. ನರೇಷು ಋಷಭಃ ನರೋ ಋಷಭ  
ಇವ ವಾ ।

**ನರಲೋಕ ನರಲೋಕ** (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯಲೋಕ. ಮನುಷ್ಯರು  
ವಾಸಿಸುವ ಭೂಲೋಕ. ನರಾಧಿಷ್ಠಿತೋ ಲೋಕಃ । "ತಥಾ  
ತವಾಮಿ ನರಲೋಕವೀರಾ ವಿಶಂತಿ ವಕ್ತ್ರಾಣ್ಯಭಿವಿಜ್ವಲಂತಿ"  
ಗೀತಾ ೧೧-೨೮ ।

**ನರವಾಹನ ನರವಾಹನ** (ಪುಂ) 1. ಕುಬೇರ. ನರೋ ವಾಹನ-  
ಮಸ್ಯ । "ವಿಜಯದುಂದುಭಿತಾಂ ಯಯುರ್ಣವಾ ಧನರವಾ ನರವಾಹನ-  
ಸಂಪದಃ" ರಘುಂ ೯-೧೧ । (ನಂ) 2. ಮನುಷ್ಯರಿಂದ  
ಎಳೆಯಲ್ಪಡುವ ವಾಹನ. (ವಿಂ) 3. ಮನುಷ್ಯರು ಎಳೆ-  
ಯುವ ಗಾಡಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವವನು.

**ನರವಾಹಿನ್ ನರವಾಹಿನ್** (ವಿಂ) ಮನುಷ್ಯರಿಂದ ಒಯ್ಯ-  
ಲ್ಪಡುವವನು.

**ನರವಿಷ್ಣು ನರವಿಷ್ಣು** (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ. ನರಂ ವಿಷ್ಣುನತಿ  
ಹಿನಸ್ತಿ-ವಿ+ವಿಷ್ಣು (ಶಬ್ದೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।  
(ವಿಂ) 2. ಮನುಷ್ಯರನ್ನು ಹಿಂಸಿಸುವವನು. "ಕಿಲಾಲಪಾಃ  
ಪಲಾಶಿ ಚ ಕಪಾಟೋ ನರವಿಷ್ಣುಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ನರವ್ಯಾಘ್ರ ನರವ್ಯಾಘ್ರ** (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯಶ್ರೇಷ್ಠ. ಉತ್ತಮ  
ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮನುಷ್ಯ. ನರೇಷು ವ್ಯಾಘ್ರಃ ನರೋ  
ವ್ಯಾಘ್ರ ಇವ ವಾ ।

**ನರಶಾದ್ದೇಶ ನರಶಾದ್ದೇಶ** (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯಶ್ರೇಷ್ಠ.  
ಉತ್ತಮ ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮನುಷ್ಯ. ನರೇಷು ಶಾದ್ದೇಶಃ  
ನರಃ ಶಾದ್ದೇಶ ಇವ ವಾ । "ಉತ್ಪಿಷ್ಠ ನರಶಾದ್ದೇಶ ಕರ್ತವ್ಯಂ  
ದೇವಮಾಹ್ನಿಕಮ್" ರಾಮಾಂ ।

**ನರಸಿಂಹ ನರಸಿಂಹ** (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯನ ಮತ್ತು ಸಿಂಹದ  
ಆಕಾರವುಳ್ಳ ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಒಂದು ಅವತಾರ. ನರಶ್ಚ  
ಸಿಂಹಶ್ಚ ಆಕಾರೇಽಸ್ಯಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) ।  
ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವು ಬ್ರಹ್ಮಸೃಷ್ಟವಾದ ಪಶು ಪಕ್ಷಿ ಮನುಷ್ಯ  
ಮೊದಲಾದ ಯಾರಿಂದಲೂ ತನಗೆ ಮೃತ್ಯುವು ಸಂಭವಿಸ  
ಕೂಡದೆಂದು ಚತುರ್ಮುಖನಿಂದ ವರವನ್ನು ಪಡೆದು  
ದರ್ಪದಿಂದ ಲೋಕವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಪೀಡಿಸುತ್ತಿರಲು ಇವನ  
ಕ್ರೂರವಾದ ಶಿಕ್ಷೆಗಳಿಗೆ ಪಾತ್ರನಾಗಿದ್ದ ಪ್ರಹ್ಲಾದಕುಮಾರ  
ನನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಲು ಲೋಕವನ್ನು ಇವನ ಹಿಂಸೆಯಿಂದ ಪಾರು  
ಮಾಡಲು ತಾನು ಸರ್ವವ್ಯಾಪಿಯೆಂಬುದನ್ನು ಪ್ರಕಟ  
ಸಲು ಪರಮಾತ್ಮನು ಕಂಬವನ್ನು ಭೇದಿಸಿಕೊಂಡು ನರಸಿಂಹ  
ರೂಪದಿಂದ ಅವತರಿಸಿ ಇವನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದನು.

"ಯಸ್ತ್ವಯಾ ಮಂದಭಾಃಯೋಕ್ತೋ ಮದನ್ಯೋ ಜಗದೀಶ್ವರಃ । ಕವಾಸೌ  
ಯದಿ ಸ ಸರ್ವತ್ರ ಕಸ್ಮಾತ್ ಸ್ತಂಭೇ ನ ದೃಶ್ಯತೇ । ಸೌಙ್ಹಂ ವಿಕಲ್ಪ-  
ಮಾನಸ್ಯ ಶಿರಃ ಕಾಯಾದ್ವರಾಮಿ ತೇ । ಗೋಪಾಯೇತ ಹರಿಸ್ತ್ವಾಘ  
ಯಸ್ತೇ ಶರಣಮೀಪ್ಸಿತಮ್ । एवं ದುಃಖತಮುಹುರದಯನ್ ರುಷಾ ಸುತಂ  
ಮಹಾಭಾಗವತಂ ಮಹಾಸುರಃ । ಽಙ್ಗಂ ಪ್ರಗೃಹ್ಯೋತ್ಪತ್ತಿತೋ ವರಾಸನಾತ್  
ಸ್ತಂಭಂ ತತಾಡಾತಿಬಲಃ ಸ್ವಮುಷ್ಠಿನಾ । ತದೇವ ತಸ್ಮಿನ್ ನಿನದೌಃ-  
ತಿಭೀಷಣೋ ಬಭೂವ ಯೇನಾಙ್ಕಕಟಾಹಮಸ್ಕುತ್ । ಯಂ ವೈ  
ಸ್ವಧಿಷ್ಣ್ಯೋಪಗತಂ ತ್ವಜಾದಯಃ ಶ್ರುತ್ವಾ ಸ್ವಧಾಮಾಪ್ಯಯಮಙ್ಗ  
ಮೇನಿರೇ । ಸ ವಿಕ್ರಮನ್ ಪುತ್ರವಧೇಽಸುರೋಜಸಾ ನಿಶಮ್ಯ ನಿಹ್ನದಿ-  
ಮಪೂರ್ವಮದ್ಭುತಮ್ । ಅಂತಃಸಭಾಭಾಂ ನ ದದಶ ತತ್ಪದಂ ವಿತತ್ರಸುಯೇನ  
ಸುರಾರಿಯುಥಾಃ । ಸತ್ಯಂ ವಿಧಾತುಂ ನಿಜಭೃತ್ಯಭಾಷಿತಂ ವ್ಯಾಪ್ತಿ  
ಚ ಭೂತೇಶ್ವರೇಷು ಚಾತ್ಮನಃ । ಅದೃಶ್ಯತಾತ್ಯದ್ಭುತರೂಪಮದ್ಭುತ-  
ಸ್ತಂಭೇ ಸಭಾಭಾಂ ನ ಮೃಗಂ ನ ಮಾನುಷಮ್" ಭಾಗಂ ೭-೮ ।

**ನರಸಿಂಹಪುರಾಣ ನರಸಿಂಹಪುರಾಣ** (ನಂ) ನರಸಿಂಹಾವ-  
ತಾರದ ವಿಷಯವನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವ ಒಂದು ಪುರಾಣ.



ಇದೊಂದು ಉಪಪುರಾಣ. "ಪಾಶ್ವ ಪುರಾಣೇ ಯತ್ರೋತ್ತಮ  
ನರಸಿಂಹೋಪವರ್ಣನಮ್ | ತತ್ಪಾಶ್ವಾಡಶಸಾಹಸ್ರಂ ನಾರಸಿಂಹ-  
ಮಿಹೋಚ್ಯತೇ" ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ |

ನರಹರಿ ನರಹರಿ (ಪುಂ) "ನರಸಿಂಹ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ನರಾಜ್ಞ ನರಾಂಜ (ಪುಂ) 1. ಪುರುಷನ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ.  
2. ಒಂದು ವಿಧ ಮುಖದ ರೋಗ.

ನರಾಧಮ ನರಾಧಮ (ಪುಂ) ಕಟ್ಟಿ ಮನುಷ್ಯ, ನೀಚ ಮನುಷ್ಯ.  
"ಅಜ್ಞಾನೋಪಹಿತೋ ಬಾಲಯೇ ಯೌವನೇ ವನಿತಾಹತಃ | ಶೇಷೇ ಕಲತ್ರ-  
ಚಿಂತಾಂತಃ ಕಿಂ ಕರೋತಿ ನರಾಧಮಃ" |

ನರಾಧಿಪ ನರಾಧಿಪ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ನರಾಣಾಮಧಿಪಃ |  
"ಗುಣಾನುರಕ್ತಾಮನುರಕ್ತಸಾಧನಃ ಕುಲಾಭಿಮಾನಿ ಕುಲಜಾ ನರಾ-  
ಧಿಪಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೩೧ | -ಅಧಿಪತಿಃ -ಅಧಿಪತಿಃ.

ನರಾಂತಕ ನರಾಂತಕ (ಪುಂ) 1. ಮನುಷ್ಯನನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವ  
ರಾಕ್ಷಸ. ನರಸ್ಯಾಂತಕಃ | 2. ರಾವಣನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.  
(ವಿಂ) 3. ಮನುಷ್ಯನನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವ. ನರಮಂತಯತಿ |

ನರಾಯಣ ನರಾಯಣ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ನರಾ-  
ಣಾಮಯನಮಾಶ್ರಯಸ್ಥಾನಮ್ | "ನರಾಣಾಮಯನಂ ಯಸ್ಮಾತ್ ತೇನ  
ನರಾಯಣಃ ಸ್ಮೃತಃ" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ |

ನರಾಶ ನರಾಶ (ಪುಂ) ರಾಕ್ಷಸ. ನರಮಶನಾತಿ—ಅಶ (ಭೋಜನೆ)  
"ಅಶ್" (೩-೨-೧) | "ಯಾವನ್ನರಾಶೇನ ರಿಪುಃ ಶವಾಶಾನ್  
ಸಂತಪಯತ್ಯಾನಮ ತಾವದಸ್ಮಿ" ಭಟ್ಟಿಂ ೧೨-೭೫ |

ನರೀಷ್ಯಂತ ನರೀಷ್ಯಂತ (ಪುಂ) ವೈವಸ್ವತ ಮನುವಿನ ಒಬ್ಬ  
ಮಗ. "ವೇನಂ ಧೃಣ್ಣಂ ನರೀಷ್ಯಂತಂ ನಾಭಾಗೋಕ್ಷಾಕುಮೇವ ಚ"  
ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೧-೧೮ |

ನರೀ ನರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನುಷ್ಯನ ಪತ್ನಿ. ನರಸ್ಯ ಪತ್ನಿ |

ನರೇಂದ್ರ ನರೇಂದ್ರ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ನರಾಣಾಮಿन्द्रಃ |  
"ತದನುಮತಮಲಂಚಕಾರ ಪಶ್ಚಾತ್ ಪ್ರಥಮ ಇವ ಶ್ರುತಮಾಸನಂ ನರೇಂದ್ರಃ"  
ಕಿರಾಂ ೨-೫೮ | 2. ವಿಷ್ಣುವೈದ್ಯ. "ಸುನಿಗ್ರಹಾ ನರೇಂದ್ರೇಣ  
ಫಣಿन्द्रಾ ಇವ ಶತ್ರುಕಃ" ಮಾಧಂ ೨-೮೮ |

ನರೇಶ ನರೇಶ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ನರಾಣಾಮೀಶಃ | -ईश्वरः  
-ಈಶ್ವರಃ. ನರಾಣಾಮೀಶ್ವರಃ |

ನರೋತ್ತಮ ನರೋತ್ತಮ (ಪುಂ) 1. ಪುರುಷಶ್ರೇಷ್ಠ, ಉತ್ತಮ  
ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮನುಷ್ಯ. ನರೇಷ್ಠಮಃ | 2. ಪುರು  
ಷೋತ್ತಮನಾದ ವಿಷ್ಣು.

ನರಕುಟಕ ನರಕುಟಕ (ಪುಂ) ನಾಸಿಕೆ, ಮೂಗು. ನರಸ್ಯ  
ಕುಟಕಮಿವ | ಪೃಷಂ |

ನರ್ತ ನರ್ತ (ಪುಂ) 1. ನರ್ತನ, ಕುಣಿತ, ಅಭಿನಯದಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ಕುಣಿತ, ನೃತ್ಯ (ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪ) "ವಚ್" (೩-೩-೧೮) |

(ವಿಂ) 2. ನರ್ತಕ. ಅಭಿನಯಪೂರ್ವಕ ಕುಣಿದಾಡುವವನು.  
ನೃತ್ಯತಿ—ನೃತ್ಯಿ (ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |  
"ನೃತ್ಯಪ್ರಿಯೋ ನೃತ್ಯನರ್ತೋ ನರ್ತಕಃ ಸರ್ವಲಾಲಸಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ  
೪೮-೫೦ |

ನರ್ತಕ ನರ್ತಕ (ಪುಂ) 1. ನಟ, ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯಗಳ ಅರ್ಥವನ್ನು  
ಶರೀರ ಮತ್ತು ಮಾತುಗಳಿಂದ ಅಭಿನಯಿಸಿ ತೋರಿಸು  
ವವನು. 2. ಗಜ, ಆನೆ. 3. ಜಂಬುಹುಲ್ಲು. 4. ಪರಶಿವ,  
ನಟರಾಜ. 5. ಅಭಿನಯದೊಡನೆ ನರ್ತನ ಮಾಡುವವನು,  
ನೃತ್ಯತಿ—ನೃತ್ಯಿ (ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪ) "ಫುನ್" (೩-೧-೧೪೫) |  
6. ಸ್ತುತಿಪಾಠಕ, ಹೊಗಳುಭಟ. (ವಿಂ) 7. ನರ್ತನ  
ಮಾಡಿಸುವವನು, ಕುಣಿದಾಡಿಸುವವನು. ನರ್ತಯತಿ—ನೃತ್ಯಿ  
(ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪ) + ಣಿಚ್ "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧) | ನರ್ತಕೀ ನರ್ತಕೀ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಕೀ -ಕೀ. 8. ಹೆಣ್ಣು ಆನೆ. 9. ನರ್ತನ ಮಾಡುವವಳು,  
ಅಭಿನಯದೊಡನೆ ಕುಣಿದಾಡುವವಳು. "ನರ್ತಕಃ ಕೆಲಕೇ  
ನಟೇ | ದ್ವಿಪೇ ಗೊಡಗಲೇ ಚಾಪಿ ನರ್ತಕೀ ಲಾಸಿಕಾ ದ್ವಿಪಿ" ಹೇಮಂ |  
"ನರ್ತಕೀರಭಿನಯಾತೀಲಕ್ಷಣಿಃ" ರಘುಂ ೧೯-೧೪ |

ನರ್ತನ ನರ್ತನ (ನಂ) 1. ನೃತ್ಯ, ಕುಣಿತ. ನೃತ್ಯಿ (ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪ)  
ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | "ಕಾಮಂ ಕ್ರೋಧಂ ಚ ಲೋಭಂ ಚ  
ನರ್ತನಂ ಗೀತವಾದನಮ್" ಮನುಂ ೨-೧೭೮ | 2. ಕುಣಿದಾಡಿಸು  
ವುದು. ನೃತ್ಯಿ + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |  
(ವಿಂ) 3. ನರ್ತನಮಾಡಿಸುವವನು, ಕುಣಿದಾಡಿಸುವವನು.  
ನರ್ತನಶಾಲಾ ನರ್ತನಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನರ್ತನ ಮಾಡಿಸುವ  
ಮನೆ. ನೃತ್ಯವನ್ನು ಕಲಿಸುವ ಗೃಹ. ನರ್ತನಸ್ಯ ಶಾಲಾ |  
"ಯೇಷಾ ನರ್ತನಶಾಲೇಹ ಮತ್ಸ್ಯರಾಜೇನ ಕಾರಿತಾ" ಭಾಂ ವಿರಾಂ  
೨೫-೩ |

ನರ್ತನೀಯ ನರ್ತನೀಯ (ವಿಂ) ಕುಣಿಯಬೇಕಾದ, ನರ್ತನ  
ಮಾಡಬೇಕಾದ. ನೃತ್ಯಿ (ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪ) "ಅನೀಯರ್"  
(೩-೧-೯೬) | 2. ನರ್ತನ ಮಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ, ಕುಣಿದಾಡಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. 3. ನರ್ತನ ಮಾಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 4. ನರ್ತನ ಮಾಡಿಸಬೇಕಾದ. ನೃತ್ಯಿ + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್"  
(೩-೧-೯೬) | "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬) | -ಯಿತವ್ಯಃ  
-ಯಿತವ್ಯಃ.

ನರ್ತಯತ್ ನರ್ತಯತ್ (ವಿಂ) ನರ್ತನ ಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಕುಣಿದಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ನೃತ್ಯಿ (ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್"  
(೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) |  
-ಯಂತಿ -ಯಂತಿ. "ನರ್ತಯಂತಮಸತ್ಯಾಜಿಂ ನೇತ್ರಕೌತುಕಸ್ಮೃತಿ-  
ಕಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೬-೧೦ |



**ನರತಯಿತವ್ಯ ನರ್ತಯಿತವ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ನರ್ತನ ಮಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ, ಕುಣಿಯಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ನರ್ತನ ಮಾಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ನರ್ತನ ಮಾಡಿಸಬೇಕಾದ, ಕುಣಿಯಿಸಬೇಕಾದ. ನೃತಿ (ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪ) + ಣಿच् "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) ।

**ನರತಯಿತ್ ನರ್ತಯಿತ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ನರ್ತನ ಮಾಡಿಸುವವನು, ಕುಣಿದಾಡಿಸುವವನು. ನೃತಿ (ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪ) + ಣಿच् "ತೃತ್" (3-1-133) । 2. ನೃತ್ಯಾಚಾರ್ಯ, ನರ್ತನವನ್ನು ಕಲಿಸುವ ಗುರು. "ಛಂದೋ ನರತಯಿತುರ್ಯೇವ ಮನಸಃ ಕಿಲಂ ತಥಾಸ್ಯಾ ವಪುಃ" ಮಾಲಂ 2-3 । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-5) । -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿಃ.

**ನರತನ ನರ್ತನ (ನಂ)** 1. ನೃತ್ಯ, ನರ್ತನ, ಕುಣಿತ. ನೃತಿ (ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-3-114) । (ವಿಂ) 2. ನರ್ತನ ಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕುಣಿದಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನೃತಿ + ಣಿच् ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-2-102) । "ವಯಸ್ಯ ನರತನೋಽಸ್ಮಿ, ನಹಿ ನಹಿ ಕ್ಷಿಡ್ವಿತ್ವಾ ಪಲಾಯಿತೋಽಸ್ಮಿ" ರತ್ನಾಂ 1 । 3. ಅಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಗುಹಿತರ ಕಲನುಪುರಾನುನಾದಂ ಸಲಲಿತನರತನವಾಮಪಾದಪದ್ಮಾ" ಮಾಧಂ 9-16 ।

**ನರತನವತ್ ನರ್ತನವತ್ (ವಿಂ)** ನರ್ತನ ಮಾಡಿದವನು, ಕುಣಿದಾಡಿದವನು. ನೃತಿ (ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪ) "ಕ್ತವತುಃ" (3-2-102) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-5) । -ವತೀ -ವತೀಃ.

**ನರತ್ ನರ್ತೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ನರ್ತಕಿ, ನರ್ತನ ಮಾಡುವ ಹೆಂಗಸು. (ಪುಂ) 2. ಕತ್ತಿಯ ಅಲುಗಿನ ಮೇಲೆ ನಿಂತು ನರ್ತನ ಮಾಡುವವನು. "ಲಯಪುತ್ರೀ ನರೀ ನರತ್ಃ ಸ್ವಜ್ಞಧಾರಾದಿನರತೇ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ನರ್ದ - ಶಬ್ದ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ)** । ನರ್ದತಿ । ನರ್ದಂ । ನರ್ದಿತಾ । ನರ್ದಿಷ್ಯತಿ । ನರ್ದತುಃ । ಅನರ್ದತ್ । ನರ್ದೇತ್ । ನರ್ದತಿ । ಅನರ್ದೇತ್ । ಅನರ್ದಿಷ್ಯತ್ 1. ಗರ್ಜಿಸು. 2. ಶಬ್ದಮಾಡು, ಕೂಗು. "ಅನರ್ದಿಷುಃ ಕಪಿವ್ಯಾಘ್ರಾಃ ಸಮ್ಯಕ್ ಚಾಯುತಸತಾಹವೇ" ಭಟ್ಟಂ 14-34 ।

ಭಾವೇ :—ನರ್ದಂತೆ । ನರ್ದೆ । ನರ್ದಿತಾ । ನರ್ದಿಷ್ಯತೆ । ನರ್ದತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿ :—ನರ್ದಯಿಸಿ, -ತೆ । ನರ್ದಯಾ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ । ನರ್ದಯಿತಾ । ನರ್ದಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೆ । ನರ್ದಯತು, -ತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕರ್ಮಣಿ :—ನರ್ದಂತೆ । ನರ್ದಯಾ ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸೆ । ನರ್ದಯಿತಾ, ನರ್ದಿತಾ । ನರ್ದಯಿಷ್ಯತೆ, ನರ್ದಿಷ್ಯತೆ । ನರ್ದತಾಮ್ । ಅನರ್ದತ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು :—ನರ್ದಿತವ್ಯಮ್ । ನರ್ದನೀಯಮ್ । ನರ್ದಮ್ । ನರ್ದಿತಃ । ನರ್ದಿತವಾನ್, -ವತೀ । ನರ್ದನ್, -ಂತೀ । ನರ್ದಿತಮ್ । ನರ್ದನಮ್ । ನರ್ದಿತವಾ । ಪ್ರಣಯಃ ।

**ನರ್ದ ನರ್ದ (ವಿಂ)** 1. ಕೂಗಿ ಶಬ್ದಮಾಡುವ. 2. ಗರ್ಜಿಸುವ. 3. ಅರಚುವ. 4. ಮೊಳಗುವ. ನರ್ದ (ಶಬ್ದ) "ಅಚ್" (3-1-134) ।

**ನರ್ದತ್ ನರ್ದತ್ (ವಿಂ)** 1. ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಗರ್ಜಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಮೊಳಗುತ್ತಿರುವ. 4. ಅರಚುತ್ತಿರುವ. ನರ್ದ (ಶಬ್ದ) "ಶತ್" (3-2-124) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (4-1-5) । -ಂತೀ -ಂತೀಃ. "ನರ್ದತಾಂ ಕಪಿಮುಖ್ಯಾನಾಮಚಿರಾತ್ ಶ್ರೋಷ್ಯಸಿ ಸ್ವನಮ್" ರಾಮಾಂ ।

**ನರ್ದನ ನರ್ದನ (ನಂ)** 1. ಶಬ್ದಮಾಡುವುದು, ಕೂಗುವುದು. 2. ಅರಚುವುದು. 3. ಗರ್ಜಿಸುವುದು. 4. ಮೊಳಗುವುದು. ನರ್ದ (ಶಬ್ದ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) ।

**ನರ್ದನೀಯ ನರ್ದನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಶಬ್ದಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ಶಬ್ದಮಾಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ಶಬ್ದಮಾಡಬೇಕಾದ. ನರ್ದ (ಶಬ್ದ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) । "ತವ್ಯಃ" (3-1-96) । -ದಿತವ್ಯಃ -ದಿತವ್ಯಃಃ.

**ನರ್ದಮಾನ ನರ್ದಮಾನ (ವಿಂ)** 1. ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸದ್ವಿಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ನರ್ದ (ಶಬ್ದ) "ಶಾನಚ್" (3-2-124) । 2. ಗದ್ದಲಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಅಬ್ಬರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅರ್ಭಟಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಅನುಕ್ರಮಂ ವಿಕರಮಸತ್ವಯುಕ್ತಾ ಬಲೇನ ವೀರ್ಯೇಣ ಚ ನರ್ದಮಾನಾಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ 202-17 ।

**ನರ್ದಿತ ನರ್ದಿತ (ನಂ)** 1. ಶಬ್ದ. 2. ಕೂಗು. 3. ಮೊಳಗುವುದು. 4. ಗರ್ಜನೆ. ನರ್ದ (ಶಬ್ದ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-3-114) । (ವಿಂ) 5. ಶಬ್ದಮಾಡಿದ. 6. ಕೂಗಿದ. 7. ಮೊಳಗಿದ. 8. ಅರಚಿದ. ನರ್ದ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-4-92) ।

**ನರ್ದಿನ್ ನರ್ದಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಶಬ್ದಮಾಡುವ. 2. ಕೂಗುವ, 3. ಮೊಳಗುವ. 4. ಗರ್ಜಿಸುವ. ನರ್ದತಿ — ನರ್ದ (ಶಬ್ದ) "ಣಿತಿಃ" (3-1-134) । ಸಮಾಸದಲ್ಲಿ ನರ್ದಿನ್ ಶಬ್ದವು ಪರವಾದರೆ ಸಪ್ತಮಿಾವಿಭಕ್ತಿಗೆ ಲೋಪ ಬರುವುದಿಲ್ಲ (ನಿಂದಾರ್ಥದಲ್ಲಿ). ಗೇಹೇನರ್ದಿ (2-1-44) ।

**ನರ್ಮಕೀಲ ನರ್ಮಕೀಲ (ಪುಂ)** ಪತಿ, ಗಂಡ. ನರ್ಮಣಃ ಪರಿಹಾಸಸ್ಯ ಕೀಲ ಇವ । "ಭರ್ಮಾ ಭರ್ಮನರ್ಮಕೀಲಃ ಪ್ರಾಣನಾಥಃ ಸುಖೋತ್ಸವಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।



**ನರ್ಮಗರ್ಭ ನರ್ಮಗರ್ಭ** (ಪುಂ) ಪ್ರಜ್ಞನ್ನರೂಪದಿಂದ ನಾಯಕನು ನಡೆಸುವ ವ್ಯವಹಾರ, ನಾಯಕನು ವೇಷ ಮರೆಸಿ ಕೊಂಡು ವ್ಯವಹರಿಸುವುದು. "ನರ್ಮಗರ್ಭೋ ವ್ಯವಹರಿಸುತು: ಪ್ರಚ್ಛನ್ನವರ್ತನ:" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೨೮.

**ನರ್ಮಠ ನರ್ಮಠ** (ಪುಂ) 1. ಗಡ್ಡ. 2. ವಿಟ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿ. 3. ಚೂಚುಕ, ಕುಚದ ಅಗ್ರಭಾಗ, ಸ್ತನದ ತುದಿ. 4. ಸಂಭೋಗ, ಮೈಥುನ. 5. ನಕಲಿ. ಹಾಸ್ಯಗಾರ. "ನರ್ಮಠಶ್ಚಿಬುಕೇ ಪಿಙ್ಗು" ಮೇದಿಂ. "ನರ್ಮಠಿ ಪಿಙ್ಗುಚುಕೌ" ಹೇಮಂ.

**ನರ್ಮದ ನರ್ಮದ** (ವಿಂ) 1. ನರ್ಮಸಚಿವ. ಹಾಸ್ಯದ ಮಾತುಗಳಿಂದ ಸಂತೋಷಗೊಳಿಸುವವನು. (ವಿಂ) 2. ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ದಾ-ದಾ. 3. ನರ್ಮದಾ ನದಿ. "ನರ್ಮದ: ಕೆಲಿಸಚಿವೇ ನರ್ಮದಾ ಸರಿದಂತರೆ" ಮೇದಿಂ.

**ನರ್ಮನ್ ನರ್ಮನ್** (ನಂ) 1. ಪರಿಹಾಸ, ತಮಾಷೆ, ವಿನೋದ. 2. ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ. 3. ಆನಂದ, ಸಂತೋಷ. ನೃ (ನಯೆ) "ಮನಿನ್" (೩-೨-೭೫). "ದರ್ಪಣೇ ಪರಿಭೋಗದಶಿನಿ-ನರ್ಮಪೂರ್ವಮನುಷ್ಯಸಂಸ್ಥಿತ:" ರಘುಂ ೧೯-೨೮. 4. ಕೈಶಿಕೀ ವೃತ್ತಿಯ ಒಂದು ಅಂಗ. (1) ನರ್ಮ (2) ನರ್ಮಸ್ಫೂರ್ಜ: (3) ನರ್ಮಸ್ಫೋಟ: ಮತ್ತು (4) ನರ್ಮಗರ್ಭ: ಇವು ನಾಲ್ಕು ಕೈಶಿಕೀ ವೃತ್ತಿಯ ಅಂಗಗಳು. ಜಾಣತನದಿಂದ ಮಿತ್ರನೊಡನೆ ಆಟವಾಡುವುದು ವಿನೋದವಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವುದು ಇತ್ಯಾದಿ ನರ್ಮವೆನಿಸುವುದು. "ವೇದಾಘ್ಯಕ್ರೋಧಿತಂ ನರ್ಮ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೨೫. ಈ ನರ್ಮವು (1) ಶುದ್ಧಹಾಸ್ಯ (2) ಶೃಂಗಾರ ಸಹಿತಹಾಸ್ಯ ಮತ್ತು (3) ಭಯಸಹಿತಹಾಸ್ಯಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. "ವಿಹಿತಂ ಶುಭಹಾಸ್ಯೇನ ಸಶೃಂಗಾರಭಯೇನ ಚ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೨೬.

**ನರ್ಮರಾ ನರ್ಮರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದರಿ, ಡೊಗರು. 2. ವಯಸ್ಸಾದ ಹೆಂಗಸು, ಮುಟ್ಟು ನಿಂತುಹೋದ ಹೆಂಗಸು. 3. ಚರ್ಮದಿಂದ ಮಾಡಿದ ತಿಡಿ, ಬೆಂಕಿಗೆ ಗಾಳಿಯನ್ನೂಡುವ ಚರ್ಮದ ಚೀಲ. 4. ಕೆಂಪುತಿಗಡೆ ಮರ. "ನರ್ಮರಾ ತು ದರೀಭಸ್ತ್ರಾಸರಲಾನಿಷ್ಕಲಾಸು ಚ" ಮೇದಿಂ.

**ನರ್ಮವತ್ ನರ್ಮವತ್** (ವಿಂ) 1. ಪರಿಹಾಸ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 2. ಕ್ರೀಡಾಸಕ್ತ, ಆಟವಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದ. ನರ್ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೧೨೭). 3. ಸಂತೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೬). -ವತ್ತಿ-ವತಿ.

**ನರ್ಮಸಚಿವ ನರ್ಮಸಚಿವ** (ಪುಂ) ವಿನೋದವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ ಜೊತೆಗಾರ, ಪರಿಹಾಸ್ಯವಚನಗಳಿಂದ ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಹರ್ಷವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ರಾಜನ ಸಹಾಯಪುರುಷ,

ಆಟ ಪಾಟಿಗಳಿಂದ ರಾಜನನ್ನು ಸಂತೋಷಗೊಳಿಸುವ ಮಿತ್ರ. ನರ್ಮಸು ಸಚಿವ: | ವಿಟ ಚೀಟಿ ವಿದೂಷಕ ಮೊದಲಾದವರು ರಾಜನಿಗೆ ಶೃಂಗಾರ ಸಹಾಯರು. "ಶೃಂಗಾರೇಷ್ಯ ಸಹಾಯಾ ವಿಡೇಟವಿದೂಷಕಾಃ ಸ್ಯು: | ಭಕ್ತಾ ನರ್ಮಸು ನಿಪುಣಾ: ಕುಪಿತ-ವಧುಮಾನಭಂಜನಾ: ಶುಭಾ:" ಸಾಂ ದಂ ೩-೪೦.

**ನರ್ಮಸಾಚಿವ್ಯ-ನರ್ಮಸಾಚಿವ್ಯ** (ನಂ) ನರ್ಮಸಚಿವನ ಅಧಿಕಾರ, ಪರಿಹಾಸ್ಯವಚನಗಳಿಂದ ರಾಜನಿಗೆ ವಿನೋದವುಂಟುಮಾಡುವುದು, ಆಟ ಪಾಟಿಗಳಿಂದ ರಾಜನನ್ನು ಸಂತೋಷಗೊಳಿಸುವುದು. ನರ್ಮಸಚಿವಸ್ಯ-ಕರ್ಮ "ವ್ಯಜ್" (೫-೧-೧೨೪). "ವಿಲಾಸಿನಸ್ತಸ್ಯ ವಿನಿವೃತ್ತಾ ರತಿ ನ ನರ್ಮಸಾಚಿವ್ಯಮಕಾರಿ ನೇದುನಾ" ಮಾಘಂ ೧-೫೯.

**ನರ್ಮಸ್ಫೂರ್ಜ ನರ್ಮಸ್ಫೂರ್ಜ** (ಪುಂ) ಸುಖದಲ್ಲಿ ಪ್ರಾರಂಭವಾಗಿ ಭಯದಲ್ಲಿ ಕೊನೆಗೊಳ್ಳುವ ನಾಯಿಕಾ ನಾಯಕರ ಪ್ರಥಮ ಸಂಗಮ. "ನರ್ಮಸ್ಫೂರ್ಜ: ಸುಖಾರಮ್ಭೋ ಭಯಾಂತೋ ನವಸಂಗಮ:" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೨೭. "ಭರ್ತ: ದೇವ್ಯಾ ಭಯ-ನಾತ್ಮನೋಽಪಿ ಪ್ರಿಯಂ ಕರ್ತು ನ ಪಾರಯಾಮಿ" ಮಾಲಂ ೪.

**ನರ್ಮಸ್ಫೋಟ ನರ್ಮಸ್ಫೋಟ** (ಪುಂ) ಅನೇಕ ವಿಧ ಭಾವಗಳಿಂದ ಕಂಡುಬರುವ ರಸದ ಸೂಚನೆ. "ನರ್ಮಸ್ಫೋಟೋ ಭಾವಲೇಶ: ಸೂಚಿತಾಲ್ಪರಸೋ ಮತ:" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೨೭.

**ನಲ ನಲ** (ಪುಂ) 1. ಲಾಳದ ಹುಲ್ಲು, ಜೊಂಡು ಹುಲ್ಲು. ಗಲ (ಗಲ್ಘೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). 2. ಪ್ರಭವ ಮೊದಲಾದ ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಐವತ್ತನೆಯ ಸಂವತ್ಸರ. 3. ಸುಗ್ರೀವನ ಒಬ್ಬ ಸೇನಾಪತಿ, ರಾಮ ಸೇತುವೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ವಾನರ. 4. ನಿಷಧ ದೇಶದ ದೊರೆಯಾದ ವೀರಸೇನನ ಮಗ, ನಳ ಚಕ್ರವರ್ತಿ. [ನಳ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಪತ್ನಿ ವಿದರ್ಭರಾಜನ ಮಗಳಾದ ದಮಯಂತಿ, ಇವನಿಗೆ ಇಂದ್ರಸೇನನೆಂಬ ಮಗನೂ ಇಂದ್ರ ಸೇನೆಯೆಂಬ ಮಗಳೂ ಇದ್ದರು. ಒಂದು ದಿನ ನಳನು ಉದ್ಯಾನವನದಲ್ಲಿ ವಿಹರಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಸುವರ್ಣದ ಗರಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹಂಸವೊಂದನ್ನು ಕಂಡು ವಿನೋದಕ್ಕಾಗಿ ಅದನ್ನು ಹಿಡಿದುಕೊಂಡನು. ಎಷ್ಟು ಪ್ರಯತ್ನಪಟ್ಟರೂ ತನ್ನಿಂದ ಬಿಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲಾರದ ಹಂಸವು ಖೇದಗೊಂಡು ದನ್ನು ಕಂಡ ದೀನದಯಾಳುವಾದ ನಳನು ಅದನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬಿಡುವನು. ಅದರಿಂದ ಸಂತೋಷಗೊಂಡ ಹಂಸವು ನಳನಲ್ಲಿ ದಮಯಂತಿಗೆ ಅನುರಾಗವು ಹುಟ್ಟುವಂತೆ ಮಾಡಿತು. ನಳನು ದಮಯಂತಿಯ ಸ್ವಯಂವರಕ್ಕಾಗಿ ಹೊರಟಾಗ ಮಾರ್ಗಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಇಂದ್ರ ಅಗ್ನಿ ಯಮ ಮತ್ತು ವರುಣರು ನಳನನ್ನು ಸಂಧಿಸಿ ದಮಯಂತಿಯು ತಮ್ಮಲ್ಲೊಬ್ಬರನ್ನು ವರಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲು ದೂತನಾಗಿ ಹೋಗಬೇಕೆಂದು



ಹೇಳಿದರು. ಅವರ ಆದೇಶದಂತೆ ನಳನು ತನ್ನ ಕರ್ತವ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಿದನು. ಸ್ವಯಂವರಮಂಟಪದಲ್ಲಿ ದಮಯಂತಿಯು ಸಕಲಗುಣಸಂಪನ್ನನಾದ ನಳನಿಗೆ ಪುಷ್ಪಮಾಲಿಕೆಯನ್ನು ಹಾಕಿ ಅವನನ್ನೇ ಪರಿಸಿದಳು. ನಳನ ಸದ್ವರ್ತನೆಗೆ ಮೆಚ್ಚಿದ ಇಂದ್ರನು ಯಾಗದಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಸಾಕ್ಷಾದ್ವರ್ತನ ಅಗ್ನಿಯು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದ ಕಡೆ ತನ್ನ ಸಾನ್ನಿಧ್ಯ ಯಮನು ಅನ್ನರಸ ಮತ್ತು ಧರ್ಮಬುದ್ಧಿ ವರುಣನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದ ಕಡೆ ಜಲ ಸಮೃದ್ಧಿ ಮುಂತಾದ ವರಗಳನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದರು. ನಳನು ದಮಯಂತಿಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ಸುಖದಿಂದ ರಾಜ್ಯವಾಳುತ್ತಿರಲು ಈ ವಿವಾಹದಿಂದ ಕುಪಿತನಾದ ಕಲಿಯು ಸಮಯವನ್ನು ಪ್ರತಿಕ್ಷಿಸುತ್ತ ಒಂದು ದಿನ ನಳನು ಅಶುಚಿಯಾಗಿದ್ದಾಗ ಅವನಲ್ಲಿ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಪುಷ್ಕರ ನೊಡನೆ ಜೂಜಾಡಲು ಪ್ರೇರಿಸಿದನು. ಜೂಜಿನಲ್ಲಿ ನಳನು ಸೋತು ದಮಯಂತಿಯೊಡನೆ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಹೋದನು. ಅಲ್ಲಿ ಒಂದು ಪಕ್ಷಿಯು ಇವನ ವಸ್ತ್ರವನ್ನು ಆಪಹರಿಸಿಕೊಂಡು ಹೋಗಲು ತನ್ನ ಪತ್ನಿಯ ಸೀರೆಯನ್ನು ಅರ್ಧ ಕತ್ತರಿಸಿ ಉಟ್ಟುಕೊಂಡು ಅವಳು ನಿದ್ರಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಬಹಳ ದುಃಖದಿಂದ ಓಡಿಹೋದನು. ಪತಿಯ ವಿರಹದಿಂದ ದುಃಖಿತಳಾದ ದಮಯಂತಿಯು ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಅವನನ್ನು ಹುಡುಕುತ್ತ ಹೋಗುತ್ತಿರುವಾಗ ಕ್ಷಿಪ್ರದಲ್ಲೇ ಪತಿಯೊಡನೆ ಸೇರಿ ಸುಖಸಂತೋಷಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವಂತಾಗುವುದೆಂದು ಅಲ್ಲಿದ್ದ ತಪಸ್ವಿಗಳಿಂದ ಆಶ್ವಾಸನೆ ಪಡೆದು ಒಂದು ವರ್ತಕರ ಗುಂಪಿನೊಡನೆ ಚೇದಿರಾಜನ ಪಟ್ಟಣವನ್ನು ಸೇರಿ ರಾಜಮಾತೆಯ ವಿಶ್ವಾಸ ಸಂಪಾದಿಸಿ ಅಂತಃಪುರದಲ್ಲಿ ಪತಿಧ್ಯಾನಪರಾಯಣೆಯಾಗಿ ಕಾಲ ಕಳೆಯುತ್ತಿದ್ದಳು. ಇತ್ತ ನಳನು ಬಾಹುಕನೆಂಬ ಹೆಸರಿನಿಂದ ಋತುಪರ್ಣನ ನಗರಕ್ಕೆ ಬಂದು ಅಲ್ಲಿ ಅವನ ಸಾರಥಿಯಾಗಿ ಸೇರಿದನು. ನಳನು ಋತುಪರ್ಣನಿಗೆ ಅಶ್ವವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಹೇಳಿಕೊಟ್ಟು ಅವನಿಂದ ಅಶ್ವವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿತನು. ದಮಯಂತಿಯ ಪುನಃ ಸ್ವಯಂವರ ವಾರ್ತೆಯನ್ನು ಕೇಳಿ ಅದಕ್ಕಾಗಿ ಹೊರಟ ಋತುಪರ್ಣನೊಡನೆ ನಳನು ವಿದರ್ಭ ರಾಜ ಧಾನಿಯನ್ನು ಸೇರಿದನು. ಮತ್ತೆ ಪುಷ್ಕರನನ್ನು ಜೂಜಿನಲ್ಲಿ ಸೋಲಿಸಿ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಪಡೆದು ದಮಯಂತಿಯೊಡನೆ ಸುಖವಾಗಿ ರಾಜ್ಯವಾಳುತ್ತಿದ್ದನು.] (ನಂ) 5. ಕಮಲ, ಪದ್ಮ. "ಅಥ ನಲಂ ಸ್ಯಾತ್ಪಶಂ" ಹೇಮಂ.

**ನಲಕಿನಿ ನಲಕಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೋಣಕಾಲು. ನಲಕಂ ನಲಾ-ಕಾರಮಸ್ಥಿ ವಿವರೇತ್ "ಇತಿ:" (೪-೨-೧೧೪)।

**ನಲಕೀಲ ನಲಕೀಲ** (ಫಂ) ಮಂಡಿ. ನಲ ಇವ ಕೀಲೀತ್ಸ।

**ನಲಕೂಬರ ನಲಕೂಬರ** (ಫಂ) ಕುಬೇರನ ಮಗ. ಮಣಗ್ರೀವ ನೆಂಬುವನು ಇವನ ಸಹೋದರ. [ಇವರಿಬ್ಬರೂ ಕೈಲಾಸ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ವಿಲಾಸಿನಿಯರೊಡನೆ ವಿಹರಿಸುತ್ತ ಗಂಗಾನದಿಯಲ್ಲಿ ಜಲಕ್ರೀಡೆಯಾಡುತ್ತಿದ್ದರು. ಅಲ್ಲಿಗೆ ನಾರದ ಮುನಿಯು ಬಂದುದನ್ನು ಕಂಡೂ ಅವರು ಅದೇ ಅವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿದ್ದುದರಿಂದ ಮತ್ತಿಯ ಮರಗಳಾಗಿ ಹುಟ್ಟುವಂತೆ ನಾರದರು ಅವರನ್ನು ಶಪಿಸಿದರು. ಅಪರಾಧವನ್ನು ಕ್ಷಮಿಸ ಬೇಕೆಂದು ಅವರು ಬೇಡಿಕೊಳ್ಳಲು ನೂರು ವರ್ಷಗಳ ನಂತರ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಿಂದ ಶಾಪವಿಮೋಚನೆಯಾಗುವುದೆಂದು ಹೇಳಿದರು. ಇಬ್ಬರೂ ಮತ್ತಿಮರಗಳಾಗಿ ನಂದಗೋಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದರು. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಾವತಾರಕಾಲದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಬಾಲಚೇಷ್ಟೆಯಿಂದ ಕುಪಿತಳಾದ ಯಶೋದೆಯು ಅವನನ್ನು ಒಂದು ಒರಳುಕಲ್ಲಿಗೆ ಕಟ್ಟಿಹಾಕಿರಲು ಒರಳನ್ನು ಎಳೆದುಕೊಂಡು ಆ ಎರಡು ಮತ್ತಿಮರಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಕೃಷ್ಣನು ಹೋದಾಗ ಆ ಮರಗಳು ಬಿದ್ದು ಅವೆರಡರಿಂದಲೂ ಇಬ್ಬರು ಪುರುಷರು ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಂದರು. ಅವರು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನನ್ನು ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಿ ವಿಮಾನವನ್ನು ಹತ್ತಿ ಅಲಕಾನಗರಿಗೆ ಹೋದರು.]

**ನಲದ ನಲದ** (ಫಂ) 1. ಲಾಮಂಚದ ಬೇರು. ನಲಂ ಏತಿ — ದೊ (ಅವಲಂಚೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। "ಇತಿ ಸಿಂಧವಶ್ಚ ವರಣಾವರಣಾ: ಕರಿಣಾಂ ಮುಧೇ ಸನಲದಾನಲದಾ:" ಕಿರಾಂ ೪-೨೪। 2. ಪುಷ್ಕರಸ. 3. ಜಟಾಮಾಂಸಿ. (ವಿಂ) 4. ನಳನನ್ನು ಕೊಡುವ. ನಲಂ ನಲನಾಮಾನಂ ರಾಜಾನಂ ದದಾತಿ — ಟುಡಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। "ದೇವಾ-ಕರ್ಣಯ ಸುಶ್ರುತೇನ ಚರಕಸ್ಯೋಕ್ತೇನ ಜಾನೇಽಖಿಲಂ ಸ್ಯಾದಸ್ಯಾ ನಲದಂ ವಿನಾ ನ ದಲನೇ ತಾಪಸ್ಯ ಕೋಽಪಿ ಕ್ಷಮ:" ನೆಫಂ ೪-೧೧೬।

**ನಲವಿಕ ನಲದಿಕ** (ವಿಂ) ಲಾಮಂಚದ ವ್ಯಾಪಾರ ಮಾಡುವವನು. ನಲದಂ ಪಞ್ಚಮಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೪-೪೩)।

**ನಲಮೀನ ನಲಮೀನ** (ಫಂ) ಜಂಬುವಿನಾಂ, ಜೊಂಡು ಹುಲ್ಲಿನ ಮಧ್ಯೆ ಇರುವ ವಿನಾಂ. ನಲವನಸ್ಥಿತೋ ಮೀನಃ।

**ನಲಸೇತು ನಲಸೇತು** (ಫಂ) ನಲನೆಂಬ ವಾನರನಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಸೇತು. ನಲನಿರ್ಮಿತಃ ಸೇತುಃ। ನಲನು ದೇವತೆಗಳ ಬಡಗಿಯಾದ ವಿಶ್ವಕರ್ಮನ ಮಗ. ಇವನು ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಹಾಕಿದ ಮರ ಕಲ್ಲುಗಳೆಲ್ಲವೂ ಮುಳುಗದೆ ತೇಲುವಂತೆ ವರವನ್ನು ಪಡೆದಿದ್ದನು. ಶ್ರೀರಾಮನು ಸಮುದ್ರಕ್ಕೆ ಸೇತುವನ್ನು ಕಟ್ಟುವಂತೆ ಇವನಿಗೆ ಹೇಳಲು ಸಮುದ್ರವನ್ನು ದಾಟಲು ಇವನು ಹತ್ತು ಯೋಜನ ವಿಸ್ತಾರದ ಮತ್ತು ನೂರು ಯೋಜನ ಉದ್ದದ ಸೇತುವನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿದನು. ಇದಕ್ಕೆ "ನಲಸೇತು" ವೆಂದೂ ಹೆಸರಾಯಿತು.



**ನಲಿಕಾ ಸಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ನಳಯಂಬ ಗಂದಿಗರ ಒಂದು ದಿನಸು, ಒಂದು ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ. ನಲ ಇವಾಕೃತಿರಸ್ತಿಸ್ಯಾ: "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೫). "ನಲಿಕಾ ವಿಧುಮಲತಾ ಕಪೋತ-ಚರಣಾ ನದೀ। ಧಮನ್ಯಜ್ಜನಕೇಶಿ ಚ ನಿರ್ಮಯಾ ಸುಖಿರಾ ನಲೀ। ನಲಿಕಾ ಶೀತಲಾ ಲಘ್ವಿ ಚಕ್ಷುಷ್ಯಾ ಕಫಪಿತ್ತನುತ್" ಭಾವಪ್ರಂ. 2. ಒಳಗೆ ಟೊಳ್ಳಾಗಿರುವ ಕೊಳವೆಯ ಅಸ್ತು, ಬಂದೂಕ ಮೊದಲಾದುದು. "ನಲಿಕಾ ಕ್ಷುಜುರ್ದೇಹಾ ಸ್ಯಾತ್ತ-ನ್ವಕ್ಷ್ಮಿ ಮಧ್ಯರನ್ಧ್ರಿಕಾ"। 3. ನಲ್ಲಿ ನೀರು ಹರಿಯಲು ಮಾಡಿರುವ ಲೋಹದ ಅಥವಾ ಮರದ ಕೊಳವೆ, ಕೊಳಾಯಿ. "ವೇದಾಙ್ಗುಲಂ ಮಸ್ತಕೋರ್ಧ್ವಂ ಕಾರ್ಯಂ ತೋಯಸ್ಯ ಧಾರಣೆ। ಸಮರ್ಥಾ ತತ್ರ ನಲಿಕಾಂ ಕುರ್ಯಾತ್ತೋಯವಿಮೋಚನೀಮ್"।

**ನಲಿನ ಸಲಿನ (ನಂ)** 1. ಪದ್ಮ, ತಾವರೆ ಹೂವು, ಕಮಲ. ಗಲ (ಗಂಧ) "ಇನಚ್" (೩೦ ೨-೪೯)। "ನಲಿನಾಂತಿ-ಕೋಪಹಿತಪಲ್ಲವಶ್ರಿಯಾ ವ್ಯವಧಾಯ ಚಾರು ಮುಖಮೇಕಪಾಣಿನಾ" ಮಾಘಂ ೧೩-೪೩. 2. ನೀಲಿಗಡ. 3. ಜಲ, ನೀರು. (ಸ್ತ್ರೀಂ)-ನೀ-ನೀ. 4. ಕಮಲಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪ್ರದೇಶ, ಸರೋವರ. ನಲಾನಿ ಕಮಲಾನಿ ಸಂತ್ಯತ್ರ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೩೫)। 5. ಕಮಲಗಳ ಸಮೂಹ. ನಲಾನಾಂ ಪಶಾನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಇನಿ:" (ವಾಂ ೪-೨-೫೧)। 6. ಕಮಲ ಲತೆ, ತಾವರೆಯ ಬಳ್ಳಿ. ನಲಾನ್ಯತ್ರ ಸಂತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೩೫)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। "ದೋಷಾಪಿ ನೂನಮಹಿಮಾಂಶುರಸೌ ಕಿಲೇತಿ ವ್ಯಾಕೋಶಕೋಕನದತಾಂ ದಧತೇ ನಲಿನ್ಯ:" ಮಾಘಂ ೪-೪೬. 7. ಕಮಲ, ಪದ್ಮ. "ಹಾ ಹಂತ ಹಂತ ನಲಿನೀಂ ಗಜ ಉಜ್ಜಹಾರ"। 8. ಗಂಗಾನದಿಯ ಒಂದು ಶಾಖೆ, ಸಪ್ತಪ್ರಕಾರವಾಗಿ ಹರಿದ ಗಂಗಾನದಿಯ ಒಂದು ಪ್ರವಾಹ. ಪೂರ್ವ ದಿಕ್ಕಿಗೆ ಹರಿದ ಗಂಗಾನದಿಯ ಒಂದು ಪ್ರವಾಹ. "ನಲಿನಿ ಕ್ಷಾದಿನಿ ಚೈವ ಪಾವನಿ ಚೈವ ಪ್ರಾಚ್ಯಗಾ"। 9. ಮೂಗಿನ ಎಡಭಾಗ. "ನಲಿನಿ ನಾಲಿನಿ ಚ ಪ್ರಾಕ್ ದ್ವಾರಾವೇಕತ್ರ ನಿರ್ಮಿತೆ" ಭಾಗಂ ೪-೨೫-೪೬. 10. ತೆಂಗಿನ ಮರದ ಮದ್ದು. "ನಲಿನಿ ನಾರಿಕೇಲಸ್ಯ ಸುರಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. "ನಲಿನಂ ನೀಲಿಕಾತೋಯಾಂಬುಜೇಷು ನಲಿನಿ ಪುನ:। ಪಶಾಕರೇ ಗಜ್ಜಾಂಜಿನಯೋ:" ಹೇಮಂ।

**ನಲಿನಿ ಸಲಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** "ನಲಿನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ನಲಿನೀಲತ ಸಲಿನೀಬಂಡ (ಪುಂ)** ಕಮಲಗಳ ಸಮೂಹ, ತಾವರೆಹೂವುಗಳ ರಾಶಿ.

**ನಲಿನೀಬಲ ಸಲಿನೀದಲ (ನಂ)** ತಾವರೆಯ ಎಲೆ.

**ನಲಿನೀನನ್ವನ ಸಲಿನೀನಂದನ (ನಂ)** ಕುಬೇರನ ಉದ್ಯಾನ ವನ. ನಲಿನ್ಯಾ ನಂದಯತಿ - ಡನಡಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್

"ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। "ವನಂ ಚೈವರಥಂ ದಿವ್ಯಂ ನಲಿನೀ-ನಂದನಂ ವನಮ್। ಯೋ ವಿನಾಶಿತವಾನ್ ಕ್ರೋಧಾತ್ ದೇವೋದಾನಾನಿ ವೀರ್ಯವಾನ್" ರಾಮಾಂ।

**ನಲಿನೀರಹ ಸಲಿನೀರುಹ (ಪುಂ)** 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. 2. ಮೃಣಾಳ, ತಾವರೆಯ ದಳು.

**ನಲಿನೀಶಯ ಸಲಿನೀಶಯ (ಪುಂ)** ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ನಲಿನೀ ಚತುರ್ಮುಖನಾಭಿಕಮಲೇ ಶೇತೆ-ಶೀಙ್ (ಸ್ವಪ್ನ) "ಅಚ್" (೩-೨-೧೫)। ಅಲುಕ್ (೬-೩-೧೪)।

**ನಲಿ ಸಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ನಲ್ಲಿ, ಕೊಳಾಯಿ, ನೀರು ಹರಿಯಲು ಮಾಡಿರುವ ಲೋಹದ ಅಥವಾ ಮರ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಟೊಳ್ಳಾದ ಕೊಳವೆ. 2. ಮಣಿಶಿಲೆ.

**ನಲೋದಯ ಸಲೋದಯ (ಪುಂ)** ಕಾಳಿದಾಸವಿರಚಿತವಾದ ಒಂದು ಕಾವ್ಯ.

**ನಲ್ವ ಸಲ್ವ (ಪುಂ)** ನಾಲ್ಕುನೂರು ಮೊಳಗಳ ಉದ್ದದ ಮಾರ್ಗ, ಸುಮಾರು ಒಂದು ಫರ್ಲಾಂಗು. ಗಲ (ಬಂಧನೆ) "ವ:" (೩೦ ೪-೯೫)। "ರಾವಣಸ್ಯ ಶರೀರಂ ತು ಪಶ್ಚನ್ನಲ್ವಾನು-ವಿಸ್ತೃತಮ್" ರಾಮಾಂ।

**ನಲ್ವವರ್ಮಗಾ ಸಲ್ವವರ್ತುಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಕಾಕಾಕ್ಷೀಲತೆ. (ವಿಂ) 2. ನಾಲ್ಕುನೂರು ಮೊಳಗಳ ಉದ್ದದ ದಾರಿ ನಡೆಯುವವನು. ನಲ್ವಮಿತಂ ಮಾರ್ಗಂ ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ಲ (ಗತೀ) "ಡ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)।

**ನವ ಸವ (ಪುಂ)** 1. ಸ್ತುತಿ, ಸ್ತೋತ್ರ, ಹೊಗಳಿಕೆ. ಗು (ಸ್ತುತೀ) ಭಾವ "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭)। 2. ಕೆಂಪು ಕೊಮ್ಮೆಗಿಡ. (ವಿಂ) 3. ನವೀನ, ನೂತನ. ಹೊಸದಾದ. "ಉರೋಭುವಾ ಕುಂಭಯುಗೇನ ಜೃಂಭಿತಂ ನವೋಪಹಾರೇಣ ವಯ:ಕೃತೇನ" ನೆಪಂ ೧-೪೮।

**ನವಕ ಸವಕ (ನಂ)** 1. ಒಂಬತ್ತು ಸಂಖ್ಯೆ. ನವ ಪರಿಮಾಣ-ಮಸ್ಯ - "ಕನ್" (೪-೧-೫೮)। (ವಿಂ) 2. ಒಂಬತ್ತು ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ.

**ನವಕಾರಿಕಾ ಸವಕಾರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಹೊಸದಾಗಿ ಮದುವೆಯಾದ ಯುವತಿ. ನವಂ ಕರೋತಿ-ಡುಕ್ರಮ್ (ಕರಣ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಹೊಸದಾಗಿ ರಚಿತ ವಾದ ಕಾರಿಕೆ. 3. ಹೊಸ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವ ಹೆಂಗಸು.

**ನವಗ್ರಹ ಸವಗ್ರಹ (ಪುಂ)** ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರ ಮೊದಲಾದ ಒಂಬತ್ತು ಗ್ರಹಗಳು. "ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರೌ ಮಂಜುಲಶ್ಚ ಬುಧಶ್ಚಾಪಿ ಬೃಹಸ್ಪತಿ:। ಶುಕ್ರ: ಶನಿಶ್ಚರೌ ರಾಹು: ಕೇತವಶ್ಚ ನವಗ್ರಹಾ:" [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಗ್ರಹ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]



**ನವಚ್ಚಾತ್ರ ನವಚ್ಯುತ** (ಪುಂ) ಮೊದಲನೆಯದಾಗಿ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿರುವ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ.

**ನವಚ್ಚಿತ್ತ ನವಚೈದ್ರ** (ನಂ) ಶರೀರ, ದೇಹ, ಮೈ. ನವ ಚಿತ್ತಾಣಿ ಯತ್ರ | ದೇಹದಲ್ಲಿ ಒಂಬತ್ತು ದ್ವಾರಗಳಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ನವಜ್ವರ ನವಜ್ವರ** (ಪುಂ) ಹೊಸದಾಗಿ ಬಂದ ಜ್ವರ, ತರುಣ ಜ್ವರ. ನವೋ ಜ್ವರಃ | ತರುಣ ಜ್ವರವನ್ನು ಲಂಘನ (ಉಪವಾಸ)ದಿಂದ ವಾಸಿಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು. "ತರುಣಂ ತು ಜ್ವರಂ ಪೂರ್ವ ಲಕ್ಷಣೇನ ಕ್ಷಯಂ ನಯತ್" ಭಾವಪ್ರಂ |

**ನವತ ನವತ** (ಪುಂ) 1. ಅನೆಯ ಬೆನ್ನಿನ ಮೇಲೆ ಹಾಸುವ ರತ್ನಗಂಜಿ, ಗು (ಸ್ತುತೌ) "ಅತತ್" ಬಾಹುಂ | "ಕುಘೇ ವರ್ಣಃ ಪರಿಸ್ತೋಮಃ ಪ್ರವೇಣೀನವತಾಸ್ತರಃ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ | (ವಿಂ) 2. ತೊಂಬತ್ತನೆಯ. ನವತಃ ಪೂರ್ಣಃ "ಛಡ್" (೪-೨-೪೮) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೨-೨೪) |

**ನವತಾ ನವತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊಸದಾಗಿರುವಿಕೆ. ನವಸ್ಯ ನೂತನಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೨-೨೨೯) | "ಕ್ಷಣೇ ಕ್ಷಣೇ ಯನ್ನವತಾ-ಮುಪೇತಿ ತದೇವ ರೂಪಂ ರಮಣೀಯತಾಯಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೨೭ | "ತ್ವಃ" (೪-೨-೨೨೯) | -ವತ್ಸಮ್ -ವತ್ಸಮಃ.

**ನವತಿ ನವತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೊಂಬತ್ತು. ನವದಶತಃ ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ ಸಂಖ್ಯಸ್ಯ - "ತಿ" ಪ್ರತ್ಯಯೋ ನಿಪಾತ್ಯತೇ (೪-೨-೪೯) | "ಇತಿ ಕ್ಷಿತಿಶೋ ನವತಿ ನವಾಧಿಕಾಂ ಮಹಾಕ್ರತುನಾಂ ಮಹನೀಯ-ಶಾಸನಃ" ರಘುಂ ೩-೬೯ |

**ನವತಿಸಮ ನವತಿಸಮ** (ವಿಂ) ತೊಂಬತ್ತನೆಯ. ನವತಃ ಪೂರ್ಣಃ - ಛಟೋ ವಾ "ತಮಡ್" (೪-೨-೪೯) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಡೀಪ್" (೪-೨-೨೪) | -ತಮಿ -ತಮಿ.

**ನವದಂಡಕ ನವದಂಡಕ** (ನಂ) ರಾಜರ ಭತ್ತಿಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ವಿಧ. (1) ಮನೋಹರ. (2) ತ್ರಿಕನಕದಂಡ ಮತ್ತು (3) ನವದಂಡಕಗಳೆಂದು ರಾಜರ ಭತ್ತಿಗಳು ಮೂರು ವಿಧ. "ಮನೋಹರಂ ತ್ರಿಕನಕದಂಡಂ ಚ ನವದಂಡಕಮ್ | ಈತಂ ತು ತ್ರಿವಿಧಂ ಜ್ಞೇಯಂ ತ್ರಿವಿಧಾನಾಂ ಮಹಿಮಾಜಾಮ್" |

**ನವದಲ ನವದಲ** (ನಂ) 1. ಕಮಲದ ಕಿಂಜಲ್ಕಗಳ ಎಳೆಯ ದಳ, ತಾವರೆಯ ಕುಸುರುಗಳ ಎಳೆಯ ರೇಕುಗಳು. ನವಂ ಚ ತದ್ಗಲಂ ಚ | 2. ಹೊಸದಾದ ಚಿಗುರು.

**ನವದೀಧಿತಿ ನವದೀಧಿತಿ** (ಪುಂ) ಅಂಗಾರಕ ಗ್ರಹ. ನವ ದೀಧಿತಯೋಸ್ಯ |

**ನವದುರ್ಗಾ ನವದುರ್ಗಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂಬತ್ತು ರೂಪಗಳುಳ್ಳ ದುರ್ಗಾದೇವಿ. ನವಸಂಖ್ಯಾಚಾನ್ವಿತಾ ದುರ್ಗಾ | ದೇವಿಯ ಒಂಬತ್ತು ಹೆಸರುಗಳು, (1) ಶೈಲಪುತ್ರಿ, (2) ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಣಿ,

(3) ಚಂದ್ರವಣ್ಣಿ, (4) ಕುಶ್ಮಾಂಡಿ, (5) ಸ್ಕಂದಮಾತಾ, (6) ಕಾತ್ಯಾಯಿನಿ, (7) ಕಾಲರಾತ್ರಿಃ, (8) ಮಹಾಗೌರಿ ಮತ್ತು (9) ಸಿದ್ಧಿದಾ | "ಪ್ರಥಮಂ ಶೈಲಪುತ್ರಿ ಚ ದ್ವಿತೀಯಂ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಣಿ | ತೃತೀಯಂ ಚಂದ್ರವಣ್ಣಿತಿ ಕುಶ್ಮಾಂಡಿತಿ ಚತುರ್ಥಕಮ್ | ಪಂಚಮಂ ಸ್ಕಂದಮಾತೇತಿ ಷಷ್ಠಂ ಕಾತ್ಯಾಯಿನಿತಿ ಚ | ಸಪ್ತಮಂ ಕಾಲರಾತ್ರಿಶ್ಚ ಮಹಾಗೌರಿತಿ ಚಾಷ್ಟಮಮ್ | ನವಮಂ ಸಿದ್ಧಿದಾ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ನವ ದುರ್ಗಾಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾಃ | ಉಕ್ತಾನ್ಯೇತಾನಿ ನಾಮಾನಿ ಬ್ರಹ್ಮಣ್ಯವ ಮಹಾತ್ಮನಾ" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ |

**ನವದ್ವಾರ ನವದ್ವಾರ** (ನಂ) ಶರೀರ, ದೇಹ, ಮೈ. ನವ ದ್ವಾರಾಣಿ ಯತ್ರ | ದೇಹದಲ್ಲಿ ಒಂಬತ್ತು ರಂಧ್ರಗಳಿರುವುದರಿಂದ ದೇಹಕ್ಕೆ ಈ ಹೆಸರು. "ನವದ್ವಾರೆ ಪುರೇ ದೇಹಿ ಹಂಸೋ ಲೇಲಾಯತೇ ಬಹಿಃ | ವಶಿ ಸರ್ವಸ್ಯ ಲೋಕಸ್ಯ ಸ್ಥಾವರಸ್ಯ ಚರಸ್ಯ ಚ" ಶ್ವೇತಾಶ್ವಂ ೩-೨೮ | ಚರಾಚರಾತ್ಮಕ ವಾದ ಸಕಲ ಲೋಕಗಳನ್ನೂ ವಶಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವ ಹಂಸ (ಪರಮಾತ್ಮ)ನು ಜೀವಭಾವ ಹೊಂದಿ ನವದ್ವಾರಗಳುಳ್ಳ ದೇಹರೂಪವಾದ ಪುರದಲ್ಲಿಯೂ ಹೊರಗಿನ ವಿಷಯಗಳನ್ನೂ ಗ್ರಹಿಸಲು ಹೊರಗೆ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಾನೆ.

**ನವದ್ವಾರಗಳು** : ಎರಡು ನೇತ್ರಗಳು, ಎರಡು ಕಿವಿಗಳು, ಎರಡು ನಾಸಾರಂಧ್ರಗಳು, ಬಾಯಿ, ಗುದ ಮತ್ತು ಉಪಸ್ಥ.

**ನವದ್ವೀಪ ನವದ್ವೀಪ** (ಪುಂ) ನಾಡಿಯಾ ಎಂಬ ಒಂದು ನಗರ. ನಾಡಿಯಾ ನಗರವು ಬಂಗಾಳದ ಒಂದು ಜಿಲ್ಲಾ ಕೇಂದ್ರ. ಇದು ಚೈತನ್ಯರ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ. ಚೈತನ್ಯರ ನವದ್ವೀಪವು ಈಗಿನ ನವದ್ವೀಪಕ್ಕೆ ಎದುರಾಗಿ ಗಂಗಾನದಿಯ ಆಚೆ ದಡದಲ್ಲಿದ್ದ ತೆಂದು ತಿಳಿದುಬಂದಿದೆ. ಈಗಿನ ನವದ್ವೀಪವು ಪೂರ್ವದ ಕುಲಿಯಾ ಗ್ರಾಮವಿದ್ದ ಜಾಗದಲ್ಲಿರುವುದು. (Vide Nando Lal Day's Geographical Dictionary, p. 139.)

**ನವಧಾ ನವಧಾ** (ಅವ್ಯಂ) ಒಂಬತ್ತು ವಿಧವಾಗಿ, ಒಂಬತ್ತು ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ. ನವನ್ "ಧಾ" (೪-೩-೪೨) |

**ನವನ್ ನವನ್** (ತ್ರಿಂಬಂವಂ) 1. ಒಂಬತ್ತು. 2. ಒಂಬತ್ತು ಸಂಖ್ಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಒಂಬತ್ತು ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ.

**ನವನಿ ನವನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನವನೀತ, ಬೆಣ್ಣೆ. ನವಂ ನಿಯತೇ - ಣಿತ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಛಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) | "ಹೈಯಜ್ಞ-ವಿನಾನಾಂ ನವನೀನಾಂ ಪರತರಂ ಮುದಾ | ಲಙ್ಕುಕಾನಾಂ ಶರ್ಕರಾಣಾಂ ಸ್ವಸ್ತಿಕಾನಾಂ ಚ ಯತ್ನತಃ" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ |

**ನವನೀತ ನವನೀತ** (ನಂ) ನವನೀತ, ಬೆಣ್ಣೆ. ನವಂ ನಿಯತೇ - ಣಿತ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೨೦೨) | ನವಂ ಚ ತಸ್ಮೀತಿ |



ಚ ಇತಿ ವಾ । “ತಸ್ಯನ್ಮುಕ್ತುರ್ದೋ ನವನೀತಕೋರ್ಯಾಭಿಮುಗ್ಧಗಾತ್ರೋ  
ನಿಮೃತಂ ಶಯಾನಃ” ಯಾದಂ ೪-೨೯ ।

**ನವನೀತಕ ನವನೀತಕ** (ನಂ) ಬೆಣ್ಣೆ. ನವನೀತ ಸ್ವಾರ್ಥ  
“ಕಃ” ।

**ನವಪಂಚಮ ನವಪಂಚಮ** (ಪುಂ) ಕನ್ನೆ ಮತ್ತು ವರ ಇವರ  
ರಾಶಿಗಳಿಂದ ಪರಸ್ಪರ ಒಂಬತ್ತು ಮತ್ತು ಐದನೆಯ ರಾಶಿ  
ಗಳಾಗಿರುವ ಒಂದು ಯೋಗ. ನವ ನವಮಂ ಚ ಪಂಚಮಂ ಚ  
ಯತ್ರ । ಕನ್ನೆಯ ಜನ್ಮರಾಶಿಯಿಂದ ವರನ ಜನ್ಮರಾಶಿಯು  
ಐದನೆಯದಾಗಿಯೂ ವರನ ರಾಶಿಯಿಂದ ಕನ್ನೆಯ ರಾಶಿಯು  
ಒಂಬತ್ತನೆಯದಾಗಿಯೂ ಇರುವ ಒಂದು ಯೋಗ.  
ಈ ಯೋಗವು ರಾಕ್ಷಸಗಣದ ಕನ್ನೆಯರಿಗೆ ಶುಭಪ್ರದ  
ವಾದುದು. “ದ್ವಿಧಾದಶೇ ವಾ ನವಪಂಚಮೇ ವಾ ಷಷ್ಠಾಷ್ಟಕೇ  
ರಾಕ್ಷಸಕನ್ಯಕಾಃ । ಏಕಾಧಿಪತ್ಯೇಪ್ಯುಭಯೋಃ ಸುಹೃತ್ವೇ ಪಾಣಿಗ್ರಹೋ  
ಮಜ್ಜಲಮಾತನೋತಿ” ಮುಹೂರ್ತಂ ೧ ।

**ನವಫಲಿಕಾ ನವಫಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನವೀನವಾದ,  
ಹೊಸದಾದ. ನವ ಫಲಂ ಯಸ್ಯಾಃ—“ಕಪ್” (೪-೪-೧೫೪) ।  
ಅತ ಇತ್ವಮ್ (೭-೩-೪೪) । 2. ಹೊಸದಾಗಿ ಪುಷ್ಪವತಿ  
ಯಾಗಿರುವ ಹೆಂಗಸು. “ನವಫಲಿಕಾ ಸ್ತ್ರೀ ನವ್ಯೇ ನವಜಾತ-  
ರಜೋಽಜ್ಞನಾಃ ಚ” ಮೇದಿಂ ೧ ।

**ನವಭಾಗ ನವಭಾಗ** (ಪುಂ) 1. ಮೂವತ್ತು ಭಾಗಗಳುಳ್ಳ  
ರಾಶಿಯ ಒಂಬತ್ತನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ, ನವಾಂಶ.  
2. ಒಂಬತ್ತನೆಯ ಭಾಗ.

**ನವಮ ನವಮ** (ವಿಂ) ಒಂಬತ್ತನೆಯ. ನವಾನಾಂ ಪೂರ್ಣಃ  
“ಛಟ್” (೪-೨-೪೮) । ಛಟೋ ಮಡಾಗಮಃ (೪-೨-೪೯) ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಛಿಪ್” (೪-೧-೧೫) । —ಮಿ-ಮಿ. ಒಂಬತ್ತ  
ನೆಯ ತಿಥಿ.

**ನವಮಲ್ಲಿಕಾ ನವಮಲ್ಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎರಜಾಜಿ ಗಿಡ,  
ಹೆಜ್ಜಾಜಿ ಗಿಡ. ನವಾ ಸ್ತುತ್ಯಾ ಮಲ್ಲಿಕಾ । 2. ಎರಜಾಜಿ  
ಹೂವು. “ಉಪಯಯಿ ವಿದಧನ್ನವಮಲ್ಲಿಕಾಃ ಶುಚಿರಸೌ ಚಿರ-  
ಸೌರಭಸಂಪದಃ” ಮಾಘಂ ೬-೨೨ ।

**ನವಮಾಲಿಕಾ ನವಮಾಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎರಜಾಜಿ ಗಿಡ,  
ಹೆಜ್ಜಾಜಿ ಗಿಡ. ನವಾ ಸ್ತುತ್ಯಾ ಮಾಲಿಕಾ । 2. ಎರಜಾಜಿ  
ಹೂವು.

**ನವಯಜ್ಞ ನವಯಜ್ಞ** (ಪುಂ) ಹೊಸ ಧಾನ್ಯದಿಂದ ಮಾಡುವ  
ಯಜ್ಞ, ಹೊಸ ಧಾನ್ಯವು ಬಂದಾಗ ಮೊದಲು ದೇವತೆಗಳ  
ಪ್ರೀತ್ಯರ್ಥ ಮಾಡುವ ಯಜ್ಞ. ನವಧಾನ್ಯನಿಮಿತ್ತೋ ಯಜ್ಞಃ ।

**ನವಯೌವನ ನವಯೌವನ** (ನಂ) ಹೊಸ ತಾರುಣ್ಯ, ಹೊಸ  
ಪ್ರಾಯ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಯೌವನಾ —ಯೌವನಾ. ತರುಣಿ,  
ಪ್ರಾಯಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ ಹೆಂಗಸು. ನವ ಯೌವನಂ ಯಸ್ಯಾಃ ।

**ನವರತ್ನ ನವರತ್ನ** (ನಂ) 1. ಒಂಬತ್ತು ವಿಧ ರತ್ನಗಳು.

(1) ಮಾಣಿಕ್ಯ, (2) ಮುತ್ತು, (3) ಹವಳ, (4) ಪಚ್ಚಿ.  
(5) ಪುಷ್ಪರಾಗ, (6) ವಜ್ರ, (7) ನೀಲ, (8) ಗೋಮೇದಕ  
ಮತ್ತು (9) ವೈಡೂರ್ಯ ಇವು ನವರತ್ನಗಳು. 2. ವಿಕ್ರ.  
ಮಾದಿತ್ಯನ ಆಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿದ್ದ ನವಮಣಿಗಳು. (1) ಧನ್ವಂತರಿ.  
(2) ಕ್ಷಪಣಕ, (3) ಅಮರಸಿಂಹ, (4) ಶಂಕು, (5) ವೇತಾಳ  
ಭಟ್ಟ, (6) ಘಟಕರ್ಪರ, (7) ಕಾಳಿದಾಸ, (8) ವರರುಚಿ  
ಮತ್ತು (9) ವರಾಹಮಿಹಿರ. ಇವರು ನವಮಣಿಗಳು.

“ಧನ್ವಂತರಿಕ್ಷಪಣಕಾಮರಸಿಹಶಡ್ಕುವೇತಾಲಭದ್ರಘಟಕರ್ಪರಕಾಲಿ-  
ದಾಸಾಃ । ಖ್ಯಾತೋ ವರಾಹಮಿಹಿರೋ ನೃಪತೇಃ ಸಭಾಃ ರತ್ನಾನಿ  
ವೈ ವರರಚಿನಂ ವಿಕ್ರಮಸ್ಯ” ಜ್ಯೋತಿರ್ವಿಂ ೧ ।

**ನವರಸ ನವರಸ** (ಪುಂ) ಅಲಂಕಾರ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ  
ಶೃಂಗಾರ ಮೊದಲಾದ ಒಂಬತ್ತು ರಸಗಳು. (1) ಶೃಂಗಾರಃ,  
(2) ಹಾಸ್ಯಃ, (3) ಕರುಣಃ, (4) ರೋದಃ, (5) ವೀರಃ,  
(6) ಭಯಾನಕಃ, (7) ಬಿಭತ್ಸಃ, (8) ಅದ್ಭುತಃ ಮತ್ತು  
(9) ಶಾಂತಃ ಇವು ಒಂಬತ್ತು ರಸಗಳು. “ಶೃಂಗಾರಹಾಸ್ಯ-  
ಕರುಣರೋದ್ರವೀರಭಯಾನಕಾಃ । ಬಿಭತ್ಸೋಽದ್ಭುತಃ ಇತ್ಯಷ್ಟೈ ರಸಾಃ  
ಶಾಂತಸ್ತಥಾ ಮತಃ” ಸಾಂ ದಂ ೧ । ಇವುಗಳಿಗೆ ಕ್ರಮವಾಗಿ  
ರತಿಃ ಹಾಸಃ ಶೋಕಃ ಕ್ರೋಧಃ ಉತ್ಸಾಹಃ ಭಯಮ್ ಜಗುಪ್ಸಾ ವಿಸ್ಮಯಃ  
ಮತ್ತು ಶಮಃ ಇವು ಒಂಬತ್ತು ರಸಗಳ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವಗಳು.  
“ರತಿಹಾಸಿಶ್ಚ ಶೋಕಶ್ಚ ಕ್ರೋಧೋತ್ಸಾಹೋ ಭಯಂ ತಥಾ । ಜಗುಪ್ಸಾ  
ವಿಸ್ಮಯಶ್ಚೈವಮಷ್ಟೈ ಪ್ರೋಕ್ತಾಃ ಶಮೋಽಪಿ ಚ” ಸಾಂ ದಂ ೧ ।

**ನವರಾತ್ರ ನವರಾತ್ರ** (ನಂ) 1. ಒಂಬತ್ತು ರಾತ್ರಿಗಳು.  
ನವಾನಾಂ ರಾತ್ರಿಣಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ “ಅಚ್” (೪-೪-೮೭) ।  
ಸಂಖ್ಯಾಪೂರ್ವ ರಾತ್ರಂ ಕಲಿವಮ್” (ಲಿಂಗಾಂ ೧೩೧) ಇತಿ  
ಕಲಿವತ್ವಮ್ ।

**ನವರಾಷ್ಟ್ರ ನವರಾಷ್ಟ್ರ** (ನಂ) ಉತ್ತೀರ್ಣರ ರಾಜನ ದೇಶ.  
“ನವರಾಷ್ಟ್ರಂ ಚ ನಿಜಿತೈ ಕುಂತಿಭೋಜಮುಪಾದ್ರವತ್” ಭಾಂ  
ಸಭಾಂ ೩೨-೬ ।

**ನವವಚ್ಚ ನವವಚ್ಚ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊಸದಾಗಿ ಮದುವೆಯಾದ  
ಕನ್ಯೆ.

**ನವವಚ್ಚಪ್ರವೇಶ ನವವಚ್ಚಪ್ರವೇಶ** (ಪುಂ) ಮದುವೆಯಾದ  
ನಂತರ ಕನ್ಯೆಯು ಮೊದಲನೆಯ ಸಲ ಪತಿಗೃಹಕ್ಕೆ ಬರು  
ವುದು, ಮೊದಲನೆಯದಾಗಿ ಪತಿಗೃಹಕ್ಕೆ ಪ್ರವೇಶಿಸು  
ವುದು.

**ನವವಚ್ಚಪ್ರವೇಶಕ್ಕೆ ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ ಕಾಲಃ**—  
ವಿವಾಹದಿವಸ ಮೊದಲುಗೊಂಡು ಸಮುದಿವಸಗಳು (2,  
4, 6, 8, 10, 12, 14 ಮತ್ತು 16 ನೆಯ ದಿವಸಗಳು)



ವಿಷಮದಿವಸಗಳಲ್ಲಿ 5, 7 ಮತ್ತು 9 ನೆಯ ದಿವಸಗಳು ಪ್ರಶಸ್ತವಾದುವು. ಹದಿನಾರು ದಿವಸಗಳ ನಂತರ ವಿಷಮ ವರ್ಷ ವಿಷಮ ಮಾಸ ವಿಷಮ ದಿವಸಗಳಲ್ಲಿ ಶುಭಕರ.

“ಸಮಾಧಿಪಚ್ಚಾಕ್ಷದಿನೇ ವಿವಾಹಾತ್ ವಧುಪ್ರवेशೋಷ್ಠಿದಿನಾಂತ ರಾಲೇ । ಶುಭಃ ಪರಸ್ತಾತ್ ವಿಷಮಾಬ್ದಮಾಸದಿನೇಷ್ವರ್ಷಾನ್ತರತೋ ಯಥೇಷ್ಠಮ್” ।

**ನವವರಿಕಾ ನವವರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊಸದಾಗಿ ಮದುವೆ ಯಾದ ಕನ್ಯೆ. ನವೋ ವರೋಽಸ್ಯಾ: “ಠನ್” (೪-೨-೧೧೪) ।

**ನವವಸ್ತ್ರ ನವವಸ್ತ್ರ** (ನಂ) ಹೊಸದಾದ ಮತ್ತು ಸಲವೆ ಮಾಡದಿರುವ ಬಟ್ಟೆ.

**ನವವಿಧ ನವವಿಧ** (ವಿಂ) ಒಂಬತ್ತು ವಿಧವಾದ, ಒಂಬತ್ತು ಪ್ರಕಾರವಾದ, ಒಂಬತ್ತು ರೀತಿಯಾದ. ನವ ವಿಧಾಃ ಯಸ್ಯ ।

**ನವವ್ಯೂಹ ನವವ್ಯೂಹ** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ನವ ವ್ಯೂಹಾ ಯಸ್ಯ । ಅಷ್ಟದಳ ಪದ್ಮದಲ್ಲಿ ಸಂಕರ್ಷಣ ಪ್ರದ್ಯುಮ್ನ ಅನಿರುದ್ಧಾದಿ ರೂಪದಿಂದಲೂ ಮಧ್ಯೆ ಕೇಸರಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಪರವಾಸುದೇವ ರೂಪದಿಂದಲೂ ಪರಮಾತ್ಮನು ಇರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ನವಶಕ್ತಿ ನವಶಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂಬತ್ತು ಶಕ್ತಿಗಳು. ನವ-ಗುಣಿತಾ ಶಕ್ತಿಃ । “ಪ್ರಭಾ ಮಾಯಾ ಜಯಾ ಸುಕ್ಷಮಾ ವಿಶುದ್ಧಾ ನಂದಿನೀ ಪುನಃ । ಸುಪ್ರಭಾ ವಿಜಯಾ ಸರ್ವಸಿದ್ಧಿದಾ ನವ ಶಕ್ತಯಃ” ತನ್ತ್ರಸಾಂ ।

**ನವಶಸ್ಯ ನವಶಸ್ಯ** (ನಂ) ಹೊಸದಾಗಿ ಬೆಳೆದು ಬಂದ ಧಾನ್ಯ, ಹೊಸ ವರ್ಷದಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ಸಲ ಬಂದ ಧಾನ್ಯ.

**ನವಶಸ್ಯೇಷ್ಠಿ ನವಶಸ್ಯೇಷ್ಠಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊಸ ಧಾನ್ಯದಿಂದ ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಮಾಡುವ ಯಾಗ. ನವಶಸ್ಯನಿಮಿತ್ತಾ ಇಷ್ಟಿಃ । “ಶಸ್ಯಂತೇ ನವಶಸ್ಯೇಷ್ಠಯಾ ತಥತ್ವಂತೇ ದ್ವಿಜೋಽಧ್ವರೇಃ । ಪಶು-ನಾಪ್ಯಯನಸ್ಯಾದೌ ಸಮಾಂತೇ ಸೌಮಿಕಮೆವ” ಮನ್ವಂ ೪-೨೬ ।

**ನವಶಾಯಕ ನವಶಾಯಕ** (ಪುಂ) ಒಂಬತ್ತು ವಿಧ ಮಿಶ್ರ ಜಾತಿಯವರು. (1) ಗೋಪಾಲಕ (ಗೊಲ್ಲ), (2) ಉದ್ಯಾನ ಪಾಲಕ. (3) ಗಾಣೆಗ, (4) ನೇಯ್ಗೆಯವನು, (5) ಆಪೂಷಿಕ, (ಭಕ್ಷ್ಯಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು), (6) ನೀರು ಹೊರುವವನು, (7) ಕುಂಬಾರ, (8) ಕಮ್ಮಾರ ಮತ್ತು (9) ನಾಪಿತ (ನಾಯಿಂದ) ಇವರು ಒಂಬತ್ತು ವಿಧ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವರು.

**ನವಸು ನವಸೂ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊಸದಾಗಿ ಕರು ಹಾಕಿದ ಹಸು ಮೊದಲಾದುದು. ನವಂ ಸುತೇ —ಬೃಹ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭವಿಮೋಚನೆ) “ಕಿವಪ್” (೩-೨-೬೧) ।

**ನವಸುತಿಕಾ ನವಸೂತಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊಸದಾಗಿ ಕರು ಹಾಕಿದ ಹಸು. ನವಂ ಸುತಂ ಪ್ರಸವೋಽಸ್ಯಾ: “ಕಪ್” (೪-೪-೧೪೪) । 2. ಹೊಸದಾಗಿ ಪ್ರಸವಿಸಿದ ಹೆಂಗುಸು.

**ನವಾಂಶ ನವಾಂಶ** (ಪುಂ) ಒಂಬತ್ತನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. ನವಮಾಂಶಾಃ । ಮೂವತ್ತು ಭಾಗಗಳುಳ್ಳ ರಾಶಿಯ ಒಂಬತ್ತನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗವು ನವಾಂಶ.

**ನವಾಕ್ಷ ನವಾಂಕ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಒಂಬತ್ತು ಅಂಗಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕಷಾಯ. ನವವಿಧಮಕ್ಷಂ ಯಸ್ಯ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನವಾಕ್ಷಿ ನವಾಂಕ್ಷಿ. 2. ಯುವತಿ, ಪ್ರಾಯದ ಹೆಂಗುಸು.

**ನವಾಕ್ಷ ನವಾಕ್ಷ** (ನಂ) 1. ಹೊಸದಾದ ಅನ್ನ. 2. ಹೊಸ ಧಾನ್ಯ. 3. ಹೊಸದಾದ ಫಲ. ನವಂ ಚ ತದಕ್ಷಂ ಚ । 4. ಹೊಸ ಧಾನ್ಯವು ಬರುವ ಕಾಲ. ನವಾಕ್ಷಂ ಪ್ರಾಪ್ಯತಯಾ-ಶ್ರಾಸ್ತಿ “ಅಚ್” (೪-೨-೧೨೭) ।

**ನವಾಂಶು ನವಾಂಶು** (ನಂ) 1. ಹೊಸ ನೀರು, ಬಾವಿ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ತೋಡಿದಾಗ ಬರುವ ಹೊಸ ನೀರು. ನವ-ಮುತ್ಥಿತಮಂಶು । 2. ಅಂತರಿಕ್ಷದಿಂದ ಬಿದ್ದ ಮಳೆಯ ನೀರು.

**ನವಾಯಸ ನವಾಯಸ** (ನಂ) ಸುಶ್ರುತಸಂಹಿತೆಯಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಒಂದು ಚೂರ್ಣ. ನವ ಭಾಗಾ ಆಯಸಾ ಯತ್ರ । ತ್ರಿಫಲಾ (ಅಳಲೆ ತಾರೆ ಮತ್ತು ನೆಲ್ಲಿಕಾಯಿ) ಚಿತ್ರಕ (ಚಿತ್ರ ಮೂಲ) ತ್ರಿಕಟು (ಶುಂಠಿ ಹಿಪ್ಪಲಿ ಮೆಣಸು) ವಿಡಂಗ (ವಾಯಿವಿಳಂಗ) ಮತ್ತು ಮುಸ್ತಿ (ಕೊನ್ನಾರಿ) ಇವುಗಳ ಒಂಬತ್ತು ಭಾಗ ಇದಕ್ಕೆ ಸಮವಾಗಿ ಲೋಹಚೂರ್ಣ ಇವುಗಳನ್ನು ಬೆರಸಿ ತುಪ್ಪ ಅಥವಾ ಜೇನುತುಪ್ಪದಲ್ಲಿ ಸೇವಿಸಬೇಕು. ಇದರಿಂದ ಉದರವ್ಯಾಧಿ ಪಾಂಡುರೋಗ ಕುಷ್ಠರೋಗ ಕಾಸ ಶ್ವಾಸ ಪ್ರಮೇಹ ಮೊದಲಾದ ವ್ಯಾಧಿಗಳು ವಾಸಿಯಾಗುವುವು.

**ನವಾಹ ನವಾಹ** (ಪುಂ) 1. ಹೊಸದಿವಸ, ತಿಂಗಳಿನ ಮೊದಲನೆಯ ದಿನವಾದ ಪ್ರತಿಪತ್ತು. 2. ಒಂಬತ್ತು ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡಬಹುದಾದ ಒಂದು ಯಾಗ. ನವಾಹಿರಹೋಭಿಃ ನಿವೃತ್ತಃ “ಠಕ್” (೪-೧-೭೯) । ಠಕ್ನಿ ಲುಕ್ (೪-೧-೨೮) । “ಅಚ್” (೪-೪-೭೪) ।

**ನವೀಕರಣ ನವೀಕರಣ** (ನಂ) ಹೊಸದನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ನವ + ಕೃತ್ “ಚ್ವಿಃ” (೪-೪-೪೦) । “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪) ।

**ನವೀಕರಣೀಯ ನವೀಕರಣೀಯ** (ವಿಂ) ಹೊಸದಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ. ನವೀಕೃ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) ।

**ನವೀಕೃತ ನವೀಕೃತ** (ವಿಂ) ಹೊಸದಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಳೆಯದನ್ನು ಕೆರಳುವುದರಿಂದ ಹೊಸದಾಗಿ ತೋರುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. “ಽದೀರಿತಾ ತಾಮಿತಿ ಯಾಜ್ಞಸೇನ್ಯಾ ನವೀಕೃತೋದ್ಗಾಹಿತವಿಪ್ರಕಾರಾಮ್” ಕಿರಾಂ ೩-೪೪ ।



ನವೀನ ಸವೀನ (ವಿಂ) ನೂತನವಾದ, ಹೊಸದಾದ. ನವ  
“ಖ:” ಪ್ರಕೃತೇ: ನೂಭಾವಶ್ಚ (ವಾಂ ೪-೪-೨೫) | ಗುಣ:  
ಅವಾदेशश्च | “ದಿವೀಕಸಂ ಕಾಮಯತೇ ನ ಮಾನವೀ ನವೀನಮಶ್ರಾವಿ  
ತವಾನನಾದಿದಮ್” ನೆಪಂ ೯-೪೧ |

ನವೋಡಾ ಸವೋಡಾ (ಸ್ತಂ) 1. ಹೊಸದಾಗಿ ಮದುವೆ  
ಯಾದ ಹೆಂಗುಸು. ನವಮ್ ಡಾ | “ಸ್ಮರಶಾಸ್ತ್ರವಿದಾ  
ಸೇಯಂ ನವೋಡಾ ನಸ್ತ್ವಯಾ ಸಖೀ” ನೆಪಂ ೨೦-೩೯ | 2.  
ನಾಯಿಕೆಯರಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. ಲಜ್ಜೆಯಿಂದ ರತಿಕ್ರೀಡೆ  
ಯಲ್ಲಿ ಹಿಂಜರಿಯುವ ನಾಯಿಕೆ, ಮಗ್ಗುನಾಯಿಕೆ.  
ಲಜ್ಜಾಭರಪರಾಧಿನರತಿರ್ನವೋಡಾ | “ದೃಷ್ಟ್ವಾ ದೃಷ್ಟಿಮಧೋ  
ದದಾತಿ ಕುರುತೇ ನಾಲಾಪಮಾಭಾಷಿತಾ ಶಯ್ಯಾयां ಪರಿವೃತ್ಯ  
ತಿष्ठತಿ ಬಲಾದಾಲಿಜ್ಜಿತಾ ವೇಪತೇ | ನಿಯಾಂತೀಷು ಸಖೀಷು  
ವಾಸಭವನಾನ್ವಿಗಂತುಮೇವೇಹತೇ ಜಾತಾ ವಾಮತಯೇವ ಸಂಪ್ರತಿ ಮಮ  
ಪ್ರೀತ್ಯೈ ನವೋಡಾ ಪ್ರಿಯಾ” ಸಾಂ ೬೦ |

ನವೋದಕ ಸವೋದಕ (ನಂ) 1. ಹೊಸ ನೀರು, ಬಾವಿ  
ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ತೋಡಿದಾಗ ಬರುವ ಹೊಸ ನೀರು.  
ನವಮುತ್ಥಿತಮುದಕಮ್ | 2. ಅಂತರಿಕ್ಷದಿಂದ ಬಿದ್ದ ಮಳೆಯ  
ನೀರು. ನವಂ ಪತಿತಮುದಕಮ್ |

ನವೋದಿತ ಸವೋದಿತ (ವಿಂ) 1. ಹೊಸದಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿರುವ,  
ಹೊಸದಾಗಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ. 2. ಹೊಸದಾಗಿ ಹೇಳ  
ಲ್ಪಟ್ಟ.

ನವೋದ್ಯತ್ ಸವೋದ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಹೊಸದಾಗಿ ಹುಟ್ಟು  
ತ್ತಿರುವ. “ನವೋದ್ಯದಮೋದರಧೋರದರ್ಶನೇ ಯುಧಾಯ ರೂಢಿ ಮಕರೇ  
ಮಹತ್ತರೇ” ಕುಮಾಂ ೧೪-೯ |

ನವೋದ್ಭುತ ಸವೋದ್ಭುತ (ನಂ) 1. ನವನೀತ, ಹೊಸದಾಗಿ  
ತೆಗೆಯಲ್ಪಟ್ಟ ಬೆಣ್ಣೆ. ನವಮುದ್ಭುತಮ್ | “ನವನೀತಂ ನವೋದ್ಭುತಮ್”  
ಅಮಂ | 2. ಕೆಳಗಿನಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ.

ನವ್ಯ ಸವ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಕೆಂಪುಕೊಮ್ಮೆಗಿಡ. (ನಂ) 2.  
ಸುತ್ತಿ, ಸ್ತೋತ್ರ, ಹೊಗಳಿಕೆ. (ವಿಂ) 3. ಹೊಸದಾದ,  
ನೂತನವಾದ. ಗು (ಸ್ತುತೌ) “ಯತ್” (೩-೨-೯೭) |  
4. ಸ್ತೋತ್ರಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ, ಹೊಗಳಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ.

ನಶನ ಸಶನ (ನಂ) 1. ನಾಶವಾಗುವಿಕೆ, ಮರೆಯಾಗುವಿಕೆ.  
ಗಣ (ಅದರ್ಶನೇ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) | 2.  
ನಾಶ, ನಷ್ಟ.

ನಶನೀಯ ಸಶನೀಯ (ವಿಂ) 1. ನಾಶವಾಗಬೇಕಾದ. 2.  
ನಾಶವಾಗಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಗಣ (ಅದರ್ಶನೇ) “ಅನೀಯರ್”  
(೩-೧-೯೬) | “ತವ್ಯ:” (೩-೧-೯೬) | ನಶಿತವ್ಯಮ್  
ಸಶಿತವ್ಯಮ್.

ನಶಯತ್ ಸಶಯತ್ (ವಿಂ) ನಾಶಹೊಂದುತ್ತಿರುವ. ಗಣ  
(ಅದರ್ಶನೇ) “ಶತ್” (೩-೧-೧೨೪) |

ನಶ್ವರ ಸಶ್ವರ (ವಿಂ) ನಾಶವಾಗುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಗಣ  
(ಅದರ್ಶನೇ) “ಕವರಪ್” (೩-೨-೧೬೩) |

ನಶ್ಟ ಸಶ್ಟ (ವಿಂ) ನಾಶವಾದ, ಅದೃಶ್ಯವಾದ. ಗಣ  
(ಅದರ್ಶನೇ) “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨) |

ನಸಾ ಸಸಾ (ಸ್ತಂ) ನಾಸಿಕೆ, ಮೂಗು. ನಸ್ ಹಲಂತತ್ವಾತ್  
“ಟಾಪ್” | “ನಸಾ ನಸ್ಯಾ ಚ ನಾಸಿಕಾ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ನಸ್ತ ಸಸ್ತ (ಪುಂ) ಮೂಗಿನ ಹೊಳ್ಳೆ.

ನಸ್ತಸ್ ಸಸ್ತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ನಾಸಿಕೆಯಿಂದ, ಮೂಗಿನಿಂದ.  
ನಾಸಿಕಾ “ತಸಿ:” (ವಾಂ ೪-೪-೪೪) |

ನಸ್ಯ ಸಸ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಮೂಗಿಗೆ ಹಿತವಾದ. ನಾಸಿಕಾಯೈ  
ಹಿತಮ್ “ಯತ್” ನಸ್ ಆದೇಶಶ್ಚ (ವಾಂ ೪-೧-೬) | 2.  
ಮೂಗಿನಲ್ಲಿರುವ. ನಾಸಿಕಾಯಾಂ ಭವ: “ಯತ್” ನಸ್ ಆದೇ-  
ಶಶ್ಚ | 3. ಸುಶ್ರುತದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಮೂಗಿಗೆ ಹಿತಕರ  
ವಾದ ಔಷಧಸೇವನೆ. “ನಸ್ಯಸ್ಯಾತ: ಪ್ರವಕ್ಷ್ಯಾಮಿ ವಿಧಿ  
ನಿರವಶೇಷತ:” ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೪೦-೨೦ | “ಔಷಧ-  
ಮೌಷಧಸಿದ್ಧಿ ವಾ ಸ್ನೆಹೋ ನಾಸಿಕಾಭ್ಯಾಂ ದೀಯತೇ ಇತಿ ನಸ್ಯಮ್ |  
ತದ್ವಿವಿಧಮ್ ಶಿರೋವಿರೇಚನಂ ಸ್ನೆಹನುಚ | ತದ್ವಿವಿಧಮಪಿ  
ಪञ्चधा (1) ನಸ್ಯಮ್ (2) ಶಿರೋವಿರೇಚನಮ್ (3) ಪ್ರತಿಮರ್ಶ:  
(4) ಅವಪಿಡ: ಮತ್ತು (5) ಪ್ರಥಮನಂ ಚ | ಸುಶ್ರುತಂ  
ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೪೦-೩೩ |

ನಸ್ಯೋತ ಸಸ್ಯೋತ (ಪುಂ) ಮೂಗುದಾರ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ ಮತ್ತು.  
ನಸಿ ನಾಸಿಕಾಯಾಂ ಆತ:—ಆ+ವೇಜ್ (ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) “ಕ್ತ:”  
(೩-೨-೧೦೨) | “ಮಣಿ: ಸುತ್ರ ಇವ ಪ್ರೋತೋ ನಸ್ಯೋತ ಇವ  
ಗೋವೃಷ:” ಭಾಂ ವನಂ ೩೦-೨೬ |

ನಹಿ ಸಹಿ (ಅವ್ಯಂ) 1. ನಿಷೇಧ. 2. ಅಭಾವ. ನಹ್ಯತಿ—  
ಗಹ (ಬಂಧನೇ) “ಇನ್” (೩-೪-೧೧೮) |

ನಹುಳ ಸಹುಷ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಪುರೂರ  
ವೆಸ್ಸಿನ ಮಗನಾದ ಆಯುವಿನ ಮಗ. ವಿರಜೆಯೆಂಬುವಳು  
ಈತನ ಪತ್ನಿ. ಈ ರಾಜನಿಗೆ ವಿರಜೆಯಲ್ಲಿ ಯತಿ ಯಯಾತಿ  
ಸಂಯಾತಿ ಆಯತಿ ಆಯತಿ ಮತ್ತು ಧ್ರುವರೆಂಬ ಆರು  
ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳು ಜನಿಸಿದರು. ಇಂದ್ರನು ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯಾ  
ದೋಷದಿಂದ ಪದಚ್ಯುತನಾಗಿದ್ದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ದೇವತೆಗಳ  
ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಂತೆ ನಹುಷನು ಇಂದ್ರಲೋಕದ ಅಧಿಪತ  
ವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದನು. ಅಷ್ಟರಲ್ಲಿ ಇಂದ್ರನು ಮಹಾ  
ವಿಷ್ಣುವಿನ ಮಾತಿನಂತೆ ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗ ಮಾಡಿ ಬ್ರಹ್ಮ  
ಹತ್ಯಾ ದೋಷವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸಿಕೊಂಡನು. ಅದಕ್ಕೆ ಸರಿ



ಯಾಗಿ ನಹುಷನಿಗೆ ತನ್ನ ದೌರ್ಭಾಗ್ಯದಿಂದ ಶಚೀದೇವಿಯಲ್ಲಿ ಮೋಹವುಂಟಾಗಿ ಅವಳನ್ನು ಕರೆತರಲು ಸೇವಕರನ್ನು ಕಳುಹಿಸಿದನು. ನಹುಷನು ಅಪೂರ್ವವಾದ ವಾಹನವೊಂದರಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ಬಂದರೆ ತಾನು ಅವನಲ್ಲಿಗೆ ಬರುವುದಾಗಿ ಹೇಳಿಕಳುಹಿಸಿದಳು. ನಹುಷನು ಸಪ್ತಮುಷಿಗಳು ಹೊತ್ತ ಪಲ್ಲಕ್ಕಿಯಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಆಗಸ್ಯಮಹರ್ಷಿಯನ್ನು ಕಾಲಿನಿಂದ ಒದ್ದು "ಸರ್ಪ ಸರ್ಪ" ಎಂದು ಹೇಳಿದನು. ಇದರಿಂದ ಕುಪಿತರಾದ ಆಗಸ್ಯರು "ಸರ್ಪೋ ಭವ" ಎಂದು ನಹುಷನನ್ನು ಶಪಿಸಿದರು. ಆ ಕೂಡಲೆ ನಹುಷನು ಸರ್ಪವಾಗಿ ಕೆಳಗೆ ಬಿದ್ದನು. ಈ ಸರ್ಪವು ಪಾಂಡವರು ವನವಾಸದಲ್ಲಿದ್ದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಧರ್ಮರಾಜನಿಂದ ತನ್ನ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳಿಗೆಲ್ಲಾ ಉತ್ತರವನ್ನು ಪಡೆದು ಸರ್ಪದೇಹವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ನಹುಷ ರೂಪವನ್ನು ತಾಳಿತು. ಬಳಿಕ ನಹುಷನು ಸ್ವರ್ಗಕ್ಕೆ ತೆರಳಿದನು. "ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿಣಾಂ ಸಹಸ್ರಂ ಹಿ ತವಾಹ ಶಿಬಿಕಾಂ ಮಮ | ಸ ಮಾಮನಯೋ ರಾಜನ್ ಭ್ರಂಶಯಾಮಾಸ ವೈ ಶ್ರಿಯಃ | ತತ್ರ ಹ್ಯಗಸ್ತಯಃ ಪಾದೇನ ವಹನ್ ಸ್ಪೃಷ್ಠೋ ಮಹಾಮುನಿಃ | ಅಗಸ್ತೇನ ತತೋಸ್ಮ್ಯುಕ್ತೋ ಧ್ವಂಸ ಸರ್ಪೇಸಿ ವೈ ಸ್ಥಾ | ತತಸ್ತಸ್ಮಾದ್ವಿಮಾನಾಗ್ರಚಾತ್ ಪ್ರಚ್ಯುತ-ಶ್ಚ್ಯುತಲಕ್ಷಣಃ | ಪ್ರಪತನ್ ಬುಬುಧೇಽಽತ್ಮಾನಂ ವ್ಯಾಲಿಭೂತಮಧೋ-ಮುಖಮ್ | ಅಯಾಚಂ ತಮಹಂ ವಿಪ್ರಂ ಶಾಪಸ್ಯಾಂತೋ ಭವೇದಿತಿ | ಪ್ರಮಾದಾತ್ಸಂಪ್ರಮೂಢಸ್ಯ ಭಗವನ್ ಕ್ಷಂತುಮಹಂಸಿ | ತತಃ ಸ ಮಾಮು-ವಾ-ಚೇದಂ ಪ್ರಪತಂತಂ ಕೃಪಾನ್ವಿತಃ | ಯುಧಿಷ್ಠಿರೋ ಧರ್ಮರಾಜಃ ಶಾಪಾತ್ವಾಂ ಮೋಕ್ಷಯಿಷ್ಯತಿ | ಸ ಚಾಯಂ ಪುರುಷವ್ಯಾಘ್ರ ಕಾಲಃ ಪುಣ್ಯ-ಉಪಾಗತಃ | ತದಸ್ಮಾತ್ ಕಾರಣಾತ್ ಪಾರ್ಥ ಕಾರ್ಯಂ ತನ್ಮೇ ಮಹತ್-ಕೃತಮ್ | ಇತ್ಯುಕ್ತ್ವಾಽಽಜಗರಂ ದೇಹಂ ಮುಕ್ತ್ವಾ ಸ ನಹುಷೋ ನೃಪಃ | ದಿವ್ಯಂ-ವ-ಪುಃ ಸಮಾಸ್ಥಾಯ ಗತಸ್ತ್ರಿದಶಮೇವ ಹ" ಭಾಂ ವನಂ ೧೮೩ |

2. ಎಷ್ಟು. ನಹುತಿ ಬಧ್ನಾತಿ ಜೀವಾನ್ ಸ್ವಮಾಯಯಾ-ಗಹ (ಬಂಧನೆ) "ಉಪಚ್ (೩೦ ೪-೭೫) | "ಜೀವಾನ್ ಸ್ವಮಾಯಯಾಃ-ನಿತ್ಯಂ ನಹುಷೋ ನಹುತಿತಿ ಯಃ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ | "ಇಷ್ಟೋ-ವಿ-ಶಿಷ್ಟಃ ಶಿಷ್ಟೇಷ್ಠಃ ಶಿಷ್ಣುಷ್ಠಿ ನಹುಷೋ ವೃಷಃ" ವಿಂ ಸಂ |

3. ಒಂದು ಸರ್ಪ.

ನಾಹುಮಾನ ನಹುಮಾನ (ವಿಂ) ಕಟ್ಟುಟ್ಟುಡುತ್ತಿರುವ, ಬಂಧಿಸ ಲ್ಲಡುತ್ತಿರುವ. ಗಹ (ಬಂಧನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಅಸ್ಯಾ ಮುಖೇನೈವ ವಿಜಿತಯ ನಿತ್ಯಸ್ಪರ್ಶಿ-ಮಿ-ಲ-ಕ್ರು-ಡ್-ಕು-ಮ-ರೋ-ಭಾ-ಸಾ | ಪ್ರಸಹ್ಯ ಚಂದ್ರಃ ಖಲು ನಹುಮಾನಃ-ಸ್ಯಾ-ದೇ-ವ-ತಿ-ಷ್ಠ-ತ್ಪ-ರಿ-ವೇ-ಷ-ಪಾ-ಶಃ" ನೈಷಂ ೭-೫೮ |

ನಾಕ ನಾಕ (ಪುಂ) 1. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ. ಕಂ ಸುಖಮ್—ಅಕಂ ತದ್ವಿರೂಪಂ ದುಃಖಮ್ | ನಾಸ್ತಿ ಅಕಂ ದುಃಖಮತ್ರ | "ಯತ್ರ-ದುಃಖೇನ ಸಂಭಿನ್ನಂ ನ ಚ ಪ್ರಸ್ತಮನಂತರಮ್ | ಅಭಿಲಾಷೋಪನೀತಂ

ಚ ತತ್ಸುಖಂ ಸ್ವಃಪದಾಸ್ಪಕ್ಮ" | "ನಾಕೇಽಪಿ ದೀವ್ಯತಮದಿವ್ಯ-ವಾ-ಚಿ-ವ-ಚಃ-ಸ್ರ-ಗಾ-ಚಾರ್ಯ-ಕ-ವಿ-ತ್ ಕ-ವಿ-ಯಃ" ನೈಷಂ ೧೦-೫೯ |

2. ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. 3. ಗಗನ, ಆಕಾಶ. (ವಿಂ) 4. ದುಃಖವಿಲ್ಲದ, "ನಾಕಸ್ತು ತ್ರಿವಿವೇಂಶ್ವರೇ" ಮೇದಿಂ |

ನಾಕಚರ ನಾಕಚರ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. 2. ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹ. ನಾಕೇ ಸ್ವರ್ಗೋ ಗಗನೇ ವಾ ಚರತಿ-ಚರ (ಗತೌ) "ಛಃ" (೩-೨-೧೬) |

ನಾಕದ್ವಿಪ ನಾಕದ್ವಿಪ (ಪುಂ) ದೇವಲೋಕದ ಆನೆ, ಜಿರಾವತ. ನಾಕಸ್ಯ ದ್ವಿಪಃ | "ಪಾದೇಷು ಭಾಂತಿ ಸ್ಫಟಿಕಾಃ ಪ್ರಭೂತಾ-ನಾ-ಕ-ದ್ವಿ-ಪ-ಸ್ಯ-ವ-ನ-ಖ-ನ-ದ್ರು-ವಿ-ಮ್ಬಾಃ" ಯಾದಂ ೧೮-೨೧ |

ನಾಕನದಿ ನಾಕನದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವಲೋಕದ ನದಿ, ಗಂಗಾನದಿ.

ನಾಕನಾಥ ನಾಕನಾಥ -ಪತಿ -ಪತಿ (ಪುಂ) ದೇವಲೋಕದ ಒಡೆಯ, ಇಂದ್ರ. ನಾಕಸ್ಯ ನಾಥಃ ಪತಿರ್ವಾ |

ನಾಕನಾಯಕ ನಾಕನಾಯಕ (ಪುಂ) ದೇವಲೋಕದ ಒಡೆಯ, ಇಂದ್ರ. ನಾಕಸ್ಯ ನಾಯಕಃ | "ಸ ವ್ಯತೀತ್ಯ ವಿಯದಂತರಗಾಘ್ರಂ-ನಾ-ಕ-ನಾ-ಯ-ಕ-ನಿ-ಕೇ-ತ-ನ-ಮಾ-ಪ" ನೈಷಂ ೫-೮ |

ನಾಕನಾರಿ ನಾಕನಾರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವಲೋಕದ ಹೆಂಗಸು, ಅಪ್ಸರಸ್ಸು. ನಾಕಸ್ಯ ನಾರೀ |

ನಾಕಪಾಲ ನಾಕಪಾಲ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ನಾಕಂ ಪಾಲಯತಿ-ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಅಣ್" (೩-೨-೧೧) | "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | -ಪಾಲಕಃ -ಪಾಲಕಃ |

ನಾಕಪೃಠ ನಾಕಪೃಷ್ಠ (ನಂ) ಸ್ವರ್ಗಪೃಠ. ನಾಕಸ್ಯ ಪೃಠಮ್ | "ಆಯುಷ್ಮನ್, ಇತಃ ಪಶ್ಯ ನಾಕಪೃಠಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಸ್ಯ ಸೌಭಾಗ್ಯ-ಮಾ-ತ್ಮ-ಯ-ಶ-ಸಃ" ಶಾಕುಂ ೭ |

ನಾಕಲೋಕ ನಾಕಲೋಕ (ಪುಂ) ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ. "ನಾಕಲೋಕಭಿಷಜೋಃ ಸುಷಮಾ ಯಾ ಪುಷ್ಪಚಾಪಮಪಿ ಚುಮ್ಬತಿ-ಸೇ-ವ" ನೈಷಂ ೫-೪೬ |

ನಾಕಸದ್ ನಾಕಸದ್ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. ನಾಕೇ ಸೀದತಿ-ಷದ್ಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೬೧) | "ಪುಣ್ಯೋ-ಮ-ಹಾ-ಬ್ರ-ಹ್ಮ-ಸ-ಮೂ-ಹ-ಜು-ಷ್ಠಃ ಸ-ನ್ತ-ರ್ಮ-ಣೋ ನಾಕಸದಾಂ ವರೇಣ್ಯಃ" ಭದ್ರಿಂ ೧-೪ | (ವಿಂ) 2. ಸ್ವರ್ಗದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ.

ನಾಕಾಧಿಪ ನಾಕಾಧಿಪ (ಪುಂ) ದೇವಲೋಕದ ಒಡೆಯ, ಇಂದ್ರ. ನಾಕಸ್ಯಾಧಿಪಃ | "ಅಮ್ಯರ್ಚ್ಯ ಪೂರ್ವವಿಭವಾದಧಿಕೈಃ-ಪ್ರ-ದಿ-ಷ್ಠೈಃ ನಾಕಾಧಿಪಾನಿವ ನವೋಪಹೃತಾನನರೇಂದ್ರಾನ್" ಯಾದಂ ೨೨-೨೪೨ |

ನಾಕಾಪಗಾ ನಾಕಾಪಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವಲೋಕದ ನದಿ ಗಂಗಾನದಿ.



**ನಾಕಿನ್ ನಾಕನ್** (ಪುಂ) ಸ್ವರ್ಗದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ ದೇವತೆ.

ನಾಕ: ವಾಸಸ್ಥಾನತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇತಿ:" (೪-೨-೧೧೪) ।

"ಸಪ್ರಸಾದಮಭಿನಂದ್ಯ ಸನ್ನತಾನ್ ನಾಕಿನೋ ನರಕಭೀತಿರ್ವಜಿತಾನ್" ಯಾದಂ ೧೭-೮ ।

**ನಾಕು ನಾಕು** (ಪುಂ) 1. ವಲ್ಮೀಕಿ, ಹುತ. ನಮ್ಯತೇಜೇನ—ಗಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ಃ" (ಛಂ ೧-೧೮) । 2. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. 3. ಒಬ್ಬ ಮುನಿ. "ನಾಕುಮುನ್ಯಂತರೇ ಪೃಥ್ವೀಧರ-ವಲ್ಮೀಕಯೋ: ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ ।

**ನಾಕುಲ ನಾಕುಲ** (ಪುಂ) 1. ನಕುಲನ ಮಗ. ನಕುಲಸ್ಯ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೧೪) । "ಶಬರಾ: ತದ್ಭಸಾಶ್ಚೈವ ವತ್ಸಾಶ್ಚ ಸಹ ನಾಕುಲೈ: । ನಕುಲ: ಸಹದೇವಶ್ಚ ವಾಮಂ ಪಕ್ಷಂ ಸಮಾಶ್ರಿತಾ:" "ಭಾಂ ಭೀಷಮಂ ೪೦-೪೩ । (ವಿಂ) 2. ನಕುಲನಂತಿರುವ, ನಕುಲನಿಗೆ ಸದೃಶವಾದ. ನಕುಲ ಇವ "ಅನ್" (೪-೩-೧೦೭) । 3. ನಕುಲನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ನಕುಲಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) । 4. ಮುಂಗುಸಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಿ-೦೧. 5. ಸರ್ಪಾಕ್ಷಿ, ಈಶ್ವರೀಹಂಬು. 6. ಸಣ್ಣ ರಾಶಿ. 7. ಚವ್ಯ. "ನಾಕುಲಿ ಕಂಠರಾಸ್ತನಯೋ:" ಹೇಮಂ ।

**ನಾಕೋಕಸ್ ನಾಕೋಕಸ್** (ಪುಂ) ಸ್ವರ್ಗಲೋಕದಲ್ಲಿ ವಾಸ ಮಾಡುವ ದೇವತೆ. ನಾಕ: ಆಕೋ ಯಸ್ಯ ।

**ನಾಕ್ಷತ್ರ ನಾಕ್ಷತ್ರ** (ವಿಂ) 1. ನಕ್ಷತ್ರಸಂಬಂಧವಾದ, ನಕ್ಷತ್ರಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ನಕ್ಷತ್ರಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) । "ಭವಕ್ರಮಣಂ ನಿಯಮಂ ನಾಕ್ಷತ್ರಂ ದಿನ-ಮುಚ್ಯತೇ" ಸುಂ ಸಿಂ । ನಕ್ಷತ್ರಸಮೂಹವು ಒಂದು ಸಲ ಸುತ್ತಿ ಬಂದರೆ ಅದು ನಾಕ್ಷತ್ರದಿನವಾಗುವುದು. (ಪುಂ) 2. ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ತಿಂಗಳು, ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳು ಸಂಚರಿಸುವ ಕಾಲ. "ನಕ್ಷತ್ರ-ಸತ್ರಾಣ್ಯಯನಾನಿ ಚಂದ್ರೋಮಾನಿನ ಕುರ್ಯಾದ್ಭಿಗಣಾತ್ಮಕೇನ" ವಿಂ ಧಂ । 3. (ಅರವತ್ತು ಘಳಿಗೆಗೆ ಒಂದು ದಿನ.) ಮೂವತ್ತು ದಿನಗಳ ಕಾಲದ ಒಂದು ತಿಂಗಳು, ಸಾವನಮಾಸ. "ನಾಡಿ ಷಟ್ಪಾ ತು ನಾಕ್ಷತ್ರಮಹೋರಾತ್ರಂ ಪ್ರಕೀರ್ತಿಸಮ್ । ತತ್ತ್ರಿಶತಾ ಭವೇನ್ಮಾಸ: ಸಾವನೋಽಕೋದಯಸ್ತಥಾ" ಸುಂ ಸಿಂ ೧-೧೨ । ಸೂರ್ಯೋದಯದಿಂದ ಮರುದಿನದ ಸೂರ್ಯೋದಯದ ವರೆಗೆ 60 ಘಳಿಗೆಗಳ ಕಾಲವು ಸಾವನ ದಿನವಾಗುವುದು. ಮೂವತ್ತು ಸಾವನ ದಿನಗಳ ಕಾಲ ಒಂದು ಸಾವನ ಮಾಸ. "ಉದಯಾದಯಂ ಭಾನೋ: ಸಾವನಂ ತತ್ಪ್ರಕೀರ್ತಿಸಮ್ । ಸಾವನಾನಿ ಸ್ಯುರೇತೇನ ಯಜ್ಞಕಾಲವಿಧಿಸ್ತು ತೈ:" ಸುಂ ಸಿಂ ೧೪-೧೮ ।

**ನಾಗ ನಾಗ** (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ನಗೇ ಭವ: "ಅನ್" (೪-೩-೪೩) । "ನಾಗೇಷು ಸಾನುರಾಗೇಷು ಪಶ್ಯತ್ಸು ದಿವಿಷತ್ಸು ಚ । ಭೂಮಿಪಾಲಂ ನರಂ ಭೀಮಿ ವರಂ ಸಾಞ್ವರವರಮ್" ನೈಷಂ ೧೭-೧೧೯ । 2. ಗಂಜ, ಅನೆ. "ನಾಗಂ ಪುನರ್ಮೃದು ಸಲೀಲ-ನಿಮಿಲಿತಾಕ್ಷಂ ಸರ್ವ: ಪ್ರಿಯ: ಸ್ವಲ್ಪ ಭವತ್ಯನುರೂಪಚೇಷ್ಟ:" ಮಾಘಂ ೪-೬ । 3. ನಾಗಕೇಸರ ವೃಕ್ಷ, ನಾಗಸಂಪಿಗೆ ಮರ. 4. ಮುಸ್ತಾಕ, ಕೊನ್ನಾರಿ ಗೆಡ್ಡೆ. 5. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 6. ಪುನ್ನಾಗವೃಕ್ಷ, ಸುರಗಿಮರ. 7. ನಾಗದಂತವೃಕ್ಷ. 8. ಶರೀರದೊಳಗಿರುವ ಪಂಚವಾಯುಗಳಲ್ಲೊಂದು. 9. ಸಮಾಸದಲ್ಲಿ ಉತ್ತರಪದವಾದಾಗ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾಚಕವಾದ ಒಂದು ಪದ. "ಸಿಂಹಶಾರ್ದೂಲನಾಗಾಘಾ: ಪುಂಸಿ ಶ್ರೇಷ್ಠಾರ್ಥ ಗೋಚರಾ:" ಅಮಂ । (ನಂ) 10. ಸೀಸಲೋಹ. 11. ತಗರ. 12. (ಜ್ಯೋತಿಷದಲ್ಲಿ) ಬವ ಬಾಲವ ಮೊದಲಾದ ಹನ್ನೊಂದು ಕರಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಇದು ತಿಥಿಯ ಅರ್ಧ ಭಾಗವನ್ನು ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವ ಒಂದು ಕಾಲವಿಶೇಷ. (ವಿಂ) 13. ಕ್ರೂರವಾದ ಕೆಲಸವನ್ನು ಮಾಡುವವನು, ದಯೆಯಿಲ್ಲದವನು. "ನಾಗಂ ನಪುಂಸಕಂ ರಜ್ಜೇ ಸೀಸಕೇ ಕರಣಾಂತರೇ । ನಾಗ: ಪನ್ನಗಮಾತಙ್ಗಕ್ರೂರಾಚಾರಿಷು ತೋಯದೇ । ನಾಗಕೇಸರಪುಷ್ಪಾಗ-ನಾಗದಂತಕಮುಸ್ತಕೇ । ದೇಹಾನಿಲಪ್ರಭೇದೇ ಚ ಶ್ರೇಷ್ಠೇ ಸ್ಯಾದುತ್ತರ-ಸ್ಥಿತ:" ಮೇದಿಂ ।

**ನಾಗಕರ್ಣ ನಾಗಕರ್ಣ** (ಪುಂ) ಕೆಂಪು ಹರಳು ಗಿಡ.

**ನಾಗಕೇಸರ ನಾಗಕೇಸರ** (ಪುಂ) ನಾಗಸಂಪಿಗೆ ಮರ. ನಾಗಸ್ಯೇವ ಕೇಸರೋಽಸ್ಯ ।

**ನಾಗಗಂಧಾ ನಾಗಗಂಧಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸರ್ಪಾಕ್ಷಿ, ಈಶ್ವರೀ ಹಂಬು. ನಾಗಸ್ಯ ಗಂಧ ಇವ ಗಂಧೋಽಸ್ಯಾ: ।

**ನಾಗಗರ್ಭ ನಾಗಗರ್ಭ** (ನಂ) ಸಿಂಧೂರವೆಂಬ ಒಂದು ಧಾತು. ನಾಗ: ಸೀಸಕಂ ಗರ್ಭ: ಕಾರಣಂ ಯಸ್ಯ ।

**ನಾಗಜ ನಾಗಜ** (ನಂ) 1. ಸಿಂಧೂರವೆಂಬ ಒಂದು ಧಾತು. ನಾಗಾತ್ ಸೀಸಕಾತ್ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಃ:" (೩-೨-೯೭) । 2. ತಗರ. (ವಿಂ) 3. ನಾಗದಿಂದ ಉಂಟಾದ, ಅನೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ.

**ನಾಗಜಿಹ್ವಾ ನಾಗಜಿಹ್ವಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನಂತನಗೊಂಡ ಗಿಡ. 2. ಸೊಗಡೆ ಗಿಡ. ನಾಗಸ್ಯ ಸರ್ಪಸ್ಯ ಜಿಹ್ವೇವಾಕಾರೋಽಸ್ಯ ।

**ನಾಗಜಿಹ್ವಿಕಾ ನಾಗಜಿಹ್ವಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಣಿಶಿಲೆ. ನಾಗಸ್ಯ ಹಸ್ತಿನೋ ಜಿಹ್ವೇವ—ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೪-೪-೪) । "ಮನ:-ಶಿಲಾ ಮನೋಗುಪ್ತಾ ಮನೋಜ್ಞಾ ನಾಗಜಿಹ್ವಿಕಾ:" ಅಮಂ ।

**ನಾಗಜೀವನ ನಾಗಜೀವನ** (ನಂ) ತಗರ. ನಾಗೇನ ಸೀಸಕೇನ ಜೀವನಂ ಯಸ್ಯ ।







ಮಜ್ಜಲಃ । ದಿವ್ಯಾಭರಣಸಂಕಲನೋ ನಾಗಾನಾಮನ್ಯ ಪಾಂಡವಃ ।  
 ತದತಿಷ್ಠತ್ಪ್ರಹೃಷ್ಠಾತ್ಮಾ ನಾಗಲೋಕಾದರಿಂದಮಃ । ತಸ್ಮಿನ್ನೇವ  
 ವನೋದೇಶೋ ಸ್ಥಾಪಿತಃ ಕುರುನಂದನಃ । ತತಃ ತತ್ಥಾಯ ಕೌಂತೇಯೋ  
 ಭೀಮಸೇನೋ ಮಹಾಬಲಃ । ಆಜಗಾಮ ಮಹಾಬಾಹುರ್ಮತುರಂತಿಕ-  
 ಮಂಜಸಾ । ತತೋಽಭಿವಾಳ ಜನನೀಂ ಜ್ಯೇಷ್ಠಂ ಭ್ರಾತರಮೇವ ಚ ।  
 ಕನೀಯಸಃ ಸಮಾಗ್ರಾಯ ಶಿರಃಸ್ವರವಿಮರ್ದನಃ । ತತಸ್ತತ್ಸರ್ವ-  
 ಮಾಚ್ಛತ್ ದುರ್ಯೋಧನವಿವೇಷಿತಮ್ । ನಾಗಲೋಕೇ ಚ ಯದ್ವೃತ್ತಂ  
 ಗುಣದೋಷಮಶೇಷತಃ ” ಭಾಂ ಆದಿಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಬಲಾ  
 -ಬಲಾ. ಬೋಳಂಗಳೆ. “ಗಾಜ್ಜೇಕುಕಿ ನಾಗಬಲಾ ಕ್ಷಪಾ  
 ಹ್ಲಸ್ವಗವೇಧುಕಾ ” ಅಮಂ ।

**ನಾಗಭಗಿನಿ ನಾಗಭಗಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನಸಾದೇವಿ,  
 ವಾಸುಕಿಯ ತಂಗಿಯಾದ ಜರತ್ಕಾರು, ಜರತ್ಕಾರುಯುಷಿಯ  
 ಪತ್ನಿ.

**ನಾಗಭೂಷಣ ನಾಗಭೂಷಣ** (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಮಹಾದೇವ,  
 ಪರಮೇಶ್ವರ. ನಾಗಾ ಭೂಷಣಮಸ್ಯ । ಪರಶಿವನಿಗೆ ಸರ್ಪಗಳು  
 ಅಭರಣವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ನಾಗಮಲ್ಲ ನಾಗಮಲ್ಲ** (ಪುಂ) ಆನೆಗಳ ಗುಂಪಿನಲ್ಲಿ ಬಲಶಾಲಿ  
 ಯಾದ ಐರಾವತ.

**ನಾಗಮಾತೃ ನಾಗಮಾತೃ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಣಿಲಿ. 2.  
 ಸುರಸಾದೇವಿ. 3. ಮನಸಾದೇವಿ.

**ನಾಗಯಶ್ವಿ ನಾಗಯಶ್ವಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರೆ ಕೊಳ ಮೊದಲಾದುವು  
 ಗಳ ದಡದಲ್ಲಿ ನೆಟ್ಟಿರುವ ವಲಸೆ ಮೊದಲಾದ ಮರದ  
 ಕಂಬ. ನಾಗಾಭಿಷಿತ್ತಾ ಯಶ್ವಿಃ ।

**ನಾಗರ ನಾಗರ** (ಪುಂ) 1. ದೇವರ, ಭಾವಮೈದುನ, ಪತಿಯ  
 ಸಹೋದರ. “ನಾಗರೋ ದೇವರಃ ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 2. ಒಬ್ಬ  
 ಪೌರ, ಪಟ್ಟಣಗ, ಪಟ್ಟಣದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವವನು. 3.  
 ಹೇರಿಳೆ ಗಿಡ. 4. ನಾಗರದೇಶ. (ನಂ) 5. ಶುಂಠಿ.  
 6. ಮುಸ್ತಕ, ಕೊನ್ನಾರಿ ಗೆಡ್ಡೆ. 7. ಒಂದುವಿಧ ರತಿ  
 ಬಂಧ. 8. ನಾಗರದೇಶದ ಲಿಪಿ, ನಾಗರ ಲಿಪಿ, ನಾಗರಾಕ್ಷರ.  
 (ವಿಂ) 9. ನಗರಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ನಗರಸಂಬಂಧವಾದ.  
 ನಗರ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) ।

**ನಾಗರಕ ನಾಗರಕ** (ಪುಂ) 1. ನಗರಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಕುಶಲ  
 ನಾದವನು, ಪಟ್ಟಣದಲ್ಲಿ ಪ್ರವೀಣನಾದವನು. 2. ಜೋರ,  
 ಕಳ್ಳ. ನಗರ “ಕುನ್” (೪-೨-೧೨೮) । 3. ಒಂದು ವಿಧ  
 ರತಿಬಂಧ. “ಋಮೂಲೋಪರಿ ಸ್ಥಿತವಾ ಯೋಷಿದ್ವಯಂ ರಮೇತ್ ।  
 ಶ್ರೀವಾಂ ಧೃತ್ವಾ ಕರಾಮ್ಯಾಂ ಚ ಬಂಧೋ ನಾಗರಕೋ ಮತಃ ” ।

**ನಾಗರಕ್ತ ನಾಗರಕ್ತ** (ನಂ) ಸಿಂದೂರವೆಂಬ ಒಂದು ಗೃಹಕ  
 ಧಾತು.

**ನಾಗರಖಂಡ ನಾಗರಖಂಡ** (ಪುಂ) ಸ್ವಾಂದಪುರಾಣದಲ್ಲಿ  
 ಆರನೆಯ ಖಂಡ. ಈ ಖಂಡದಲ್ಲಿ ಲಿಂಗೋತ್ಪತ್ತಿ,  
 ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರನ ಕಥೆ, ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಯುಷಿಯ ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ,  
 ತ್ರಿಶಂಕುವಿನ ಸ್ವರ್ಗಗಮನ ಮುಂತಾದ ವಿಷಯಗಳು  
 ಉಕ್ತವಾಗಿವೆ.

**ನಾಗರಜ್ಞ ನಾಗರಂಜ** (ಪುಂ) ಹೇರಿಳೆ ಗಿಡ. ನಾಗಾ  
 ರಜ್ಯನ್ತಯತ್ರ — ರಂಜ (ರಾಗೆ) “ಖನ್” (೩-೩-೧೨೧) ।

**ನಾಗರಮುಸ್ತಾ ನಾಗರಮುಸ್ತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ  
 ಕೊನ್ನಾರಿ ಗೆಡ್ಡೆ. ನಾಗರೀ ಚಾಸೀ ಮುಸ್ತಾ ಚ ।

**ನಾಗರಾಜ ನಾಗರಾಜ** (ಪುಂ) 1. ಆದಿಶೇಷ, ಸರ್ಪಗಳ  
 ದೊರೆ. ನಾಗಾನಾಂ ರಾಜಾ “ರಾಜ್” (೪-೪-೧೧) । 2. ದೊಡ್ಡ  
 ಆನೆ. 3. ಛಂದಃಶಾಸ್ತ್ರಪ್ರವರ್ತಕನಾದ ಒಬ್ಬ ಪಂಡಿತ.

**ನಾಗರಾಹ ನಾಗರಾಹ** (ನಂ) ಶುಂಠಿ.

**ನಾಗರಿಕ ನಾಗರಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಪೌರ, ಪಟ್ಟಣಗ, ನಗರ  
 ದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವವನು. 2. ಸುಸಂಸ್ಕೃತ, ಮರ್ಯಾದೆ  
 ಯಿಂದ ವರ್ತಿಸುವವನು. “ಗಚ್ಛ ನಾಗರಿಕವೃತ್ತಾ  
 ಸಂಶಾಪಯೇನಮ್” ಶಾಕುಂ ೪ । 3. ನಗರರಕ್ಷಕ, ನಗರರಕ್ಷಣೆಯ  
 ಅಧಿಕಾರಿ. ನಗರ ರಕ್ಷತಿ—“ರಕ್” (೪-೪-೩೩) ।

**ನಾಗರೀ ನಾಗರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಳ್ಳಿಗಿಡ. 2. ಜಾಣೆಯಾದ  
 ಹೆಂಗಸು.

**ನಾಗರೇಣು ನಾಗರೇಣು** (ಪುಂ) ಸಿಂದೂರ, ಒಂದು ಗೃಹಕ  
 ಧಾತು.

**ನಾಗರೇಯಕ ನಾಗರೇಯಕ** (ವಿಂ) 1. ನಗರಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.  
 2. ನಗರಿಯಲ್ಲಿರುವ, ಪಟ್ಟಣಗ. ನಾಗರೀ ಜಾತೋ ಭವೋ ವಾ  
 “ರಕ್” (೪-೨-೧೪) ।

**ನಾಗರ್ಯ ನಾಗರ್ಯ** (ನಂ) ನಾಗರಿಕತೆ, ಸಂಸ್ಕೃತಿಯಿಂದ  
 ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. ನಾಗರಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಯಕ್” (೪-೧-೧೨೮) ।

**ನಾಗಲತಾ ನಾಗಲತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೀಳ್ಯದಲೆಯ ಬಳ್ಳಿ.  
 2. ಪುರುಷನ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ. “ಸ್ಮರಸ್ತಮಭಜ್ಞ ಕಂದರ್ಪ-  
 ಮುಸಲೋ ಧ್ವಜ ಇತ್ಯಪಿ । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ನಾಗಲತಾ ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ನಾಗಲೋಕ ನಾಗಲೋಕ** (ಪುಂ) ಸರ್ಪಗಳ ಲೋಕ,  
 ಪಾತಾಳ ಲೋಕ. ನಾಗಾಭಿಷಿತ್ತೋ ಲೋಕಃ । ಈ ಲೋಕವು  
 ಭೂಲೋಕದ ಕೆಳಭಾಗದಲ್ಲಿರುವುದು. ಇದು ಸಪ್ತ (7)  
 ಅಧೋಲೋಕಗಳಲ್ಲೊಂದು. [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಪಾತಾಲ”  
 ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ನಾಗವಲ್ಲರಿ ನಾಗವಲ್ಲರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೀಳ್ಯದಲೆಯ ಬಳ್ಳಿ.  
 ನಾಗ ಇವ ದೀರ್ಘ ವಲ್ಲರಿ. —ವಲ್ಲಿ —ವಲ್ಲಿ. ಇದೇ  
 ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ. ಇದರಲ್ಲಿ ದೇಶ ಭೂಮಿ ಇವುಗಳ ಗುಣವಿಶೇಷ



ದಿಂದ ಶ್ರೀವಾಡಿ ಅಸ್ಲವಾಡಿ ಮುಂತಾದ ನಾನಾ ಭೇದಗಳುಂಟು.

**ನಾಗವಾರಿಕ ನಾಗವಾರಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. 2. ನವಿಲು. 3. ಮಾವಟಿಗ. 4. ರಾಜನ ಆನೆಯ ಮಾವಟಿಗ. 5. ಆನೆಯ ಗುಂಪಿನಲ್ಲಿರುವ ಸಲಗ. ನಾಗಸ್ಯ ಸರ್ಪಸ್ಯ ಗಜಸ್ಯ ವಾ ವಾರಿ ವಾರಣಂ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಬ್" (೪-೨-೧೦೧)। "ನಾಗವಾರಿಕ ಉದ್ವಿಷ್ಟೋ ರಾಜಕುಂಜರಹಸ್ತಿಪೇ। ಗಣಸ್ಥರಾಜೇ ಗರುಡೇ ಚಿತ್ರಮೇಖಲಕೇಷಿ ಚ" ಮೇದಿಂ।

**ನಾಗವೃಕ್ಷ ನಾಗವೃಕ್ಷ** (ಪುಂ) ನಾಗಕೇಸರ ವೃಕ್ಷ.

**ನಾಗಸಂಭವ ನಾಗಸಂಭವ** (ನಂ) ಸಿಂದೂರ.

**ನಾಗಸಾಹಸ್ಯ ನಾಗಸಾಹಸ್ಯ** (ನಂ) ಹಸಿ ನಾಪುರ. ನಾಗೇನ ಗಜೇನ ಸಮಾನಃ ಸಾಹಸ್ಯೋ ಯಸ್ಯ। "ಜಗಾಮ ತಕ್ಷಕಸ್ತೂರ್ಣ ನಗರಂ ನಾಗಸಾಹಸ್ಯಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ।

**ನಾಗಸುಗಂಧಾ ನಾಗಸುಗಂಧಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಈಶ್ವರಿ ಹಂಪು, ಸರ್ಪಾಕ್ಷೀಲತೆ.

**ನಾಗಾಹ್ಯ ನಾಗಾಹ್ಯ** (ಪುಂ) ನಾಗಕೇಸರ ವೃಕ್ಷ. ನಾಗ ಇತಿ ಆಹ್ಯಾ ಯಸ್ಯ। "ಸುಪರ್ಣಭನಾಗಾಹ್ಯೋ ನಾಗಕೇಸರಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ನಾಗಾಂಜನಾ ನಾಗಾಂಜನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಆನೆ. 2. ನಾಗಯಕ್ಷಿ. "ನಾಗಾಂಜನೇಭಸುಂದರ್ಯಾ ನಾಗಯಂಟೌ ಚ ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ।

**ನಾಗಾಧಿಪ ನಾಗಾಧಿಪ** (ಪುಂ) 1. ಅನನ್ತ, ಆದಿತೇಷ. 2. ಅನೇಗಳ ಗುಂಪಿನ ಸಲಗ. 3. ಸರ್ಪಗಳ ರಾಜ. ನಾಗಾ-ನಾಮಧಿಪಃ। एवं ನಾಗಾಧಿಪತಿಃ ನಾಗಾಧಿರಾಜಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ನಾಗಾನನ ನಾಗಾನನ** (ಪುಂ) ಗಣಪತಿ, ವಿನಾಯಕ. ನಾಗಸ್ಯಾ-ನನಂ ಯಸ್ಯ।

**ನಾಗಾನಂದ ನಾಗಾನಂದ** (ನಂ) ಶ್ರೀಹರ್ಷಕವಿ ರಚಿತವಾದ ಒಂದು ನಾಟಕ.

**ನಾಗಾಂತಕ ನಾಗಾಂತಕ** (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. 2. ನವಿಲು. 3. ಸಿಂಹ. ನಾಗಾಂತಕೋ ಸರ್ಪಾಣಾಂ ಗಜಾಂತಕಃ। "ನಾಗಾಂತಕೋ ವಿಷ್ಣುರಥಃ ಸುಪರ್ಣಃ ಪನ್ನಗಾಶನಃ" ಅಮಂ।

**ನಾಗಾರಾತಿ ನಾಗಾರಾತಿ** (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. 2. ನವಿಲು. 3. ಸಿಂಹ. ನಾಗಾಂತಕೋ ಸರ್ಪಾಣಾಂ ಗಜಾಂತಕಃ।

**ನಾಗಾಲಾಬ್ ನಾಗಾಲಾಬ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆನೆಯ ಕುಂಭಸ್ಥಳದ ಆಕಾರದ ಸೋರೆಕಾಯಿ ಗಿಡ.

**ನಾಗಾಶನ ನಾಗಾಶನ** (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. 2. ನವಿಲು, ಮಯೂರ. 3. ಸಿಂಹ. ನಾಗಾನ್ ಅಶನಾತಿ — ಅಶ (ಭೋಜನ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)।

**ನಾಗಾಹ್ವ ನಾಗಾಹ್ವ** (ಪುಂ) ಹಸಿ ನಾಪುರ. ನಾಗಯುಕ್ತಾ ಆಹ್ವಾ ಯಸ್ಯ। -ಆಹ್ವಯಃ -೪೫ಯಃ.

**ನಾಗಿನ ನಾಗಿನ** (ಪುಂ) ಸರ್ಪಭೂಷಣನಾದ ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಶಿವ. ನಾಗಾ ಆಭರಣತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪)। "ನಾಗೋಪವೀತಿನಂ ನಗ್ನಂ ನಾಗಿನಮಗ್ನಿ-ವರ್ವಸಮ್" ಹರಿವಂ.।

**ನಾಗೇಂದ್ರ ನಾಗೇಂದ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪಗಳ ರಾಜ. ನಾಗಾನಾ-ಮಿತ್ರಃ। 2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಆನೆ. ನಾಗಃ ಇಂದ್ರ ಇವ। "ನಾಗೇಂದ್ರ-ಹಸ್ತಾಸ್ತವಚಿ ಕರ್ಕಶತ್ವಾದೇಕಾಂತಶೈತ್ಯಾತ್ಕದಲಿವಿಶೇಷಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೩೬।

**ನಾಗೇಶ ನಾಗೇಶ** (ಪುಂ) 1. ಅನನ್ತ, ಆದಿತೇಷ. ನಾಗಾನ್ ಸರ್ಪಾಣಾಮೀಶಃ। 2. ಒಬ್ಬ ವ್ಯಾಕರಣಪಂಡಿತ, ಲೆಖಕ ಶಬ್ದೇಂದುಶೇಖರವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ವೈಯಾಕರಣ. "ನಾಗೇಶಮದ್ವಸ್ತನುತೇ ಲಘುಶಬ್ದೇಂದ್ರಶೇಖರಮ್"। एवं ನಾಗೇಶ್ವರಃ ನಾಗೇಶ್ವರಃ (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕೇಶವರಿ -ಈಶ್ವರಿ. ಮನಸಾದೇವಿ.

**ನಾಗೋದರ ನಾಗೋದರ** (ನಂ) 1. ಉದರದ ಒಂದು ರಕ್ಷಾಕವಚ, ಹೊಟ್ಟೆಯ ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಹಾಕಿಕೊಳ್ಳುವ ಒಂದು ಕವಚ. 2. ವಾತರೋಷದಿಂದ ಹೊಸರ ಗರ್ಭಕ್ಕೆ ಒದಗುವ ಒಂದು ಉಪದ್ರವ. "ಶುಕ್ರಶೋಣಿತಂ ವಾಯುನಾಽಭಿಪ್ರಪನ್ನ-ಮವಕ್ರಾಂತಜೀವಮಾಹ್ಮಾಪಯತುರದರಮ್, ತಂ ಕದಾಚಿದ್ವದೃಚ್ಛಯೋಪ-ಶಾಂತಂ ನೈಗಮೇಷಾಪಹೃತಮಿತಿ ಭಾಷಂತೇ, ತಮೇವ ಕದಾಚಿತ್ ಪ್ರಲೀಯ-ಮಾನಂ ನಾಗೋದರಮಿತ್ಯಾಹುಃ, ತತ್ರಾಪಿ ಲಿಂನವತ್ ಪ್ರತೀಕಾರಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೧೦-೪೭।

**ನಾಗೋದ್ವೇದ ನಾಗೋದ್ವೇದ** (ಪುಂ) ಅಂತರ್ವಾಹಿನಿಯಾದ ಸರಸ್ವತೀನದಿಯು ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಪ್ರಕಾಶವಾಗಿ ಪ್ರವಹಿಸಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಪ್ರದೇಶ. "ಗಚ್ಛಂತ್ಯಂತರ್ಹಿತಾ ಯತ್ರ ಮೇರುಪುಂಡ್ರೇ ಸರಸ್ವತೀ। ಚಮಸೇಷ್ಯ ಶಿವೋದ್ವೇದೇ ನಾಗೋದ್ವೇದೇ ಚ ದೃಶ್ಯತೇ। ನಾಗೋದ್ವೇದೇ ನರಃ ಸ್ನಾತ್ವಾ ನಾಗಲೋಕಮವಾಪ್ನು-ಯಾತ್" ಭಾಂ ವನಂ ೮೦-೧೧೧, ೧೨।

**ನಾಚಿಕೇತ ನಾಚಿಕೇತ** (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 2. ಒಬ್ಬ ಮುಷಿ, ಉದ್ದಾಲಕ ಮುಷಿಯ ಮಗ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ನಾಚಿಕೇತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ನಾಟ ನಾಟ** (ಪುಂ) 1. ನೃತ್ಯ, ನರ್ತನ, ಕುಣಿತ. ನಟ (ನೃತ್ಯ) "ಛಬ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಒಂದು ದೇಶ. 3. ಆ ದೇಶದ ದೊರೆ. "ವ್ಯಾವೃತ್ಯ ಚೋಲಕರ್ಣಾಟಿನಾಡಾದಿಂಶ್ಚ ನರೇಶ್ವರಾನ್"।

**ನಾಟಕ ನಾಟಕ** (ನಂ) 1. ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯ, ಹತ್ತು ವಿಧ ರೂಪಕಗಳಲ್ಲೊಂದು, ಗದ್ಯ ಪದ್ಯ ಮತ್ತು ಪ್ರಾಕೃತ ಮೊದಲಾದ ಭಾಷೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯ. ನಾಟಯತಿ—



ನಟ (ನೃತ್ಯ) + ಣಿಚ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

(1) ನಾಟಕಮ್, (2) ಪ್ರಕರಣಮ್, (3) ಭಾಣಃ, (4) ಪ್ರಹಸನಮ್, (5) ಡಿಮಃ, (6) ವ್ಯಾಯೋಗಃ, (7) ಸಮವಕಾರಃ, (8) ವೀಥಿ, (9) ಅಕ್ಷಃ ಮತ್ತು (10) ಇಹಾಮೃಗಃ ಇವು ಹತ್ತು ರೂಪಕಗಳು. ನಾಟಕ ಲಕ್ಷಣಃ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಇತಿವೃತ್ತವು (ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಡುವ ವೃತ್ತಾಂತವು) ಪ್ರಖ್ಯಾತ (ಪ್ರಸಿದ್ಧ) ವಾಗಿರಬೇಕು. ಮುಖಾದಿ ಪಂಚಸಂಧಿಗಳಿಂದಲೂ ವಿಲಾಸ (ಧೀರದೃಷ್ಟಿ, ಧೀರವಾದ ಉದ್ದತನದಗೆ ಸ್ಥಿತಪೂರ್ವಕ ಭಾಷಣ ಮುಂತಾದ ನಾಯಕನ ಗುಣ) ಗಾಂಭೀರ್ಯ ಅಭ್ಯುದಯ ಮುಂತಾದ ಗುಣಗಳಿಂದಲೂ ಪರಿಶೋಭಿತ ವಾಗಿರಬೇಕು. ಸುಖದುಃಖಾದಿಗಳಿಂದ ಸಂಭವಿಸುವ ನಾನಾ ರಸಗಳಿಂದ ಉಜ್ವಲವಾಗಿರಬೇಕು. ಅಂಕಗಳು ಐದರಿಂದ ಒಂಬತ್ತರವರೆಗೆ ಇರಬಹುದು. ಪ್ರಖ್ಯಾತ ವಂಶದವನೂ ಧೀರೋದಾತ್ತಗುಣದಿಂದ ಶೋಭಿತನೂ ಆಗಿರುವ ದಿವ್ಯ ಅಥವಾ ದಿವ್ಯಾದಿವ್ಯರಾಜನು ನಾಯಕ. ಶೃಂಗಾರ ಅಥವಾ ವೀರರಸವು ಪ್ರಧಾನವಾಗಿಯೂ ಇತರ ರಸಗಳು ಅಂಗರಸಗಳಾಗಿಯೂ ಇರಬೇಕು. ನಿರ್ವಹಣಸಂಧಿಯಲ್ಲಿ ಅದ್ಭುತರಸವು ಪ್ರಧಾನರಸಕ್ಕೆ ಪರಿಪೋಷಕವಾಗಿರಬೇಕು. ಸಾಂ. ೬ । "ಭಾವಶುದ್ಧಿಸಹಿತಮುಂದೆ ಜನೋ ನಾಟಕೇರಿವ ಬಭಾರ ಭೋಜನಃ" ಮಾ. ೧೪-೫೦ । 2. ಒಂದು ಪರ್ವತ. "ಏಶಾನ್ಯಾ ನಾಟಕೇ ಶೈಲೇ ಶಂಕರಸ್ಯ ಮಹಾಶ್ರಮಮ್ । ನಿಯಂ ವಸತಿ ತತ್ರೇಶಸ್ತದಧೀನಾ ತು ಪಾರ್ವತೀ" ಕಾಲಿಕಾಪುಂ. 1 (ವಿಂ) 3. ನರ್ತಕ, ಕುಣಿಯಿಸುವವನು. ನಟ + ಣಿಚ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

ನಾಟಕೀಯ ನಾಟಕೀಯ (ವಿಂ) ನಾಟಕಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಬರುವ, ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಡುವ. ನಾಟಕೇ ಭವಮ್ — ನಾಟಕ "ಛಃ" (೪-೨-೧೧೪) । ಇಂದ್ರಾದೇಶಃ (೭-೧-೨) । "ಭವದ್ಗಿರಾಮವಸರಪ್ರದಾನಾಯ ವಚಾಸಿ ನಃ । ಪೂರ್ವಜಃ ಪ್ರಸಜ್ಞಾಯ ನಾಟಕೀಯಸ್ಯ ವಸ್ತುನಃ" ಮಾ. ೨-೮ ।

ನಾಟಯಿತವ್ಯ ನಾಟಯಿತವ್ಯ (ವಿಂ) ಅಭಿನಯಿಸಲ್ಪಡ ಬೇಕಾದ, ಅಭಿನಯದಿಂದ ಪ್ರದರ್ಶಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. ನಟ (ನೃತ್ಯ) + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ತವ್ಯತ್" (೩-೧-೧೬) । "ತತ್ತಸ್ಯೇವ ರಾಜಃ ಸಕಲಜನಹೃದಯಾಹ್ಲಾದಿನೋ ಬಹುಮಾನಾತ್ ಅಸ್ಮಾಸು ಚಾನುಪ್ರಹಬುದ್ಧಯಾ ಯಥಾವತ್ಪ್ರಯೋಗೇಣ ತ್ವಯಾ ನಾಟಯಿತವ್ಯಾ" ರತ್ನಾಂ ೧ ।

ನಾಟಾನ್ರ ನಾಟಾಮೃ (ಪುಂ) ಕರಬೂಜ ಕಲ್ಲಂಗಡಿ ಮೊದಲಾದ ಗಿಡ, ಲತಾಪನಸ. ನಟಾನಾಂ ಪ್ರಿಯಃ ನಾಟೋಽಪ್ರೋ ರಸೋಽಪ್ರ । "ಲತಾಪನಸನಾಟಾನ್ರೋ ಸೇದುರ್ನಿರ್ವಾಸಿತಸ್ತು ಯಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ನಾಟಾರ ನಾಟಾರ (ಪುಂ) ನಟನ ಅಥವಾ ನಟಿಯ ಮಗ.

ನಟಸ್ಯ ನಟಯಾ ವಾ ಅಪत्यಮ್—ವಾ "ಆರಕ್" (೪-೧-೧೩೦) ।

ನಾಟಿಕಾ ನಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಷ್ಟಾದಶ (ಹದಿನೆಂಟು) ವಿಧ ಉಪರೂಪಕಗಳಲ್ಲೊಂದು, ಒಂದು ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯ. ನಾಟಿಕಾಲಕ್ಷಣಃ ನಾಟಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಕಥಾವಸ್ತುವು ಕವಿ ಕಲ್ಪಿತ. ಅಂಕಗಳು ನಾಲ್ಕು. ಲೋಕಪ್ರಸಿದ್ಧನೂ ಧೀರ ಲಲಿತನೂ ಆದ ರಾಜನು ನಾಯಕ. ಪುರುಷರಿಗಿಂತ ಸ್ತ್ರೀಪಾತ್ರಗಳು ಹೆಚ್ಚು. ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಯಾವಾಗಲೂ ಅಂತಃಪುರದಲ್ಲೇ ಇದ್ದು ಸಂಗೀತದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಳಾದ ಅಥವಾ ನವಾನುರಾಗದಿಂದ ಕೂಡಿದ ರಾಜಕುಲದ ಕನ್ಯೆಯು ನಾಯಿಕೆ. ನಾಯಕನ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಕಾರ್ಯವೂ ರಾಣಿಯ ಅಧೀನವಾಗಿದ್ದು ಇವನು ಅವಳಿಗೆ ಹೆದರಿ ನಡೆಯುವನು. ರಾಜಮನೆತನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಪ್ರಗಲ್ಭಳಾದ ಜ್ಯೇಷ್ಠ ನಾಯಿಕೆಯು ರಾಣಿಯಾಗಿರುವಳು. ನಾಯಿಕಾ ನಾಯಕರ ಪರಸ್ಪರ ಸಮಾಗಮವು ಇವಳ ಅಧೀನವಾಗಿರುವುದು. ಇದರಲ್ಲಿ ಶೃಂಗಾರರಸವು ಪ್ರಧಾನ. ಕೈಶಿಕೀ ವೃತ್ತಿ. ಪಂಚ ಸಂಧಿಗಳಿದ್ದರೂ ವಿಮರ್ಶಸಂಧಿಯು ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿರುವುದು. "ನಾಟಿಕಾ ಕಲ್ಪತವೃತ್ತಾ ಸ್ಯಾತ್ ಸ್ತ್ರೀಪ್ರಾಪ್ತಾ ಚತುರಕ್ಷಿಕಾ । ಪ್ರಖ್ಯಾತೋ ಧೀರಲಲಿತಸ್ತತ್ರ ಸ್ಯಾನ್ರಾಯಕೋ ನೃಪಃ । ಸ್ಯಾದಂತಃ-ಪುರಸಮ್ಬದ್ಧಾ ಸಂಗೀತವ್ಯಾಪೃತಾಽಥವಾ । ನವಾನುರಾಗಾ ಕನ್ಯಾತ್ರ ನಾಯಿಕಾ ನೃಪವಂಶಜಾ । ಸಂಪ್ರವರ್ತತೇ ನೇತಾಸ್ಯಾಂ ದೇವ್ಯಾಸ್ತ್ರಾಸೇನ ಶಿಕ್ಷಿತಃ । ದೇವೀ ಭವೇತ್ಪುನರ್ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ಪ್ರಗಲ್ಭಾ ನೃಪವಂಶಜಾ । ಪದೇ ಪದೇ ಮಾನವತೀ ತದ್ವಶಃ ಸಂಗಮೋ ದ್ವಯೋಃ । ವೃತ್ತಿಃ ಸ್ಯಾತ್ಕೇಶಿಕೀ ಸ್ವಲ್ಪವಿಮರ್ಶಾಃ ಸಂಧಯಃ ಪುನಃ" ಸಾಂ. ೬ ।

ನಾಟಿತ ನಾಟಿತ (ನಂ) 1. ಅಭಿನಯ. ನಟ (ನೃತ್ಯ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) । (ವಿಂ) 2. ಅಭಿನಯಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟ. ನಟ + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।

ನಾಟೇಯ ನಾಟೇಯ (ಪುಂ) ನಟಿಯ ಮಗ. ನಟಯಾ ಅಪत्यಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೦) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಠೀಪ್" (೪-೧-೧೫) । -ಯಿ-ಯಾ.

ನಾಟೇರ ನಾಟೇರ (ಪುಂ) ನಟಿಯ ಮಗ. ನಟಯಾ ಅಪत्यಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೩೧) ।

ನಾಟ್ಯ ನಾಟ್ಯ (ನಂ) 1. ಭರತನಾಟ್ಯ, ಶಾಸ್ತ್ರೀತಿಯಿಂದ ಕುಣಿಯುವುದು, ನಟಸ್ಯ ಕರ್ಮ "ಽಯ್ಯ" (೫-೧-೧೨೪) । ನಟಸ್ಯ ಧರ್ಮಃ "ಜ್ಯಃ" (೪-೩-೧೨೯) ವಾ । 2. ನರ್ತನ ಮಾಡುವುದು (ಕುಣಿಯುವುದು), ಹಾಡುವುದು ಮತ್ತು ವಾದ್ಯ ಬಾರಿಸುವುದು ಈ ಮೂರರ ಮೇಳನ. "ತೀರ್ಯತ್ರಿಕಂ ನೃತ್ಯಗೀತಂ ವಾಕ್ಯಂ ನಾಟ್ಯಮಿದಂ ತ್ರಯಮ್" ಅಮಂ । "ನಾಟ್ಯಂ ತೀರ್ಯತ್ರಿಕೇ ಲಾಸ್ಯೇ" ಮೇದಿಂ ।



**ನಾಟ್ಯದ ಉತ್ಪತ್ತಿ :** ದೇವೇಂದ್ರನ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಂತೆ ಚತುರ್ಮುಖಬ್ರಹ್ಮನು ನಾಲ್ಕು ವೇದಗಳಿಂದ ಉದ್ಭವಿಸಿದನೆಯ ವೇದವಾದ ಗಾಂಧರ್ವವೇದವನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿದನು. ಈ ಭರತನಾಟ್ಯಶಾಸ್ತ್ರವು ಸಕಲಶಾಸ್ತ್ರಾರ್ಥಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದುದು. ಮತ್ತು ಮುಗ್ಧಾದಿಂದ ನಾಟ್ಯಶಾಸ್ತ್ರವಿಷಯವನ್ನೂ ಸಾಮವೇದದಿಂದ ಗೀತವನ್ನೂ ಯಜುರ್ವೇದದಿಂದ ಅಭಿನಯವನ್ನೂ ಅಥರ್ವವೇದದಿಂದ ರಸಗಳನ್ನೂ ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ರಚಿಸಿದುದರಿಂದ ಚತುರ್ವೇದ ಸಾರಭೂತವಾದುದು. “ದೇವದಾನವಗಂಧರ್ವರಕ್ಷೋಯಕ್ಷಮಹೋರಗೈಃ | ಜಂಬೂದ್ವೀಪೇ ಸಮಾಕ್ರಾಂತೇ ಲೋಕಪಾಲಪ್ರತಿಷ್ಠಿತೇ | ಮಹೇಂದ್ರಪ್ರಮುಖೈಃ ದೇವೈಃ ಕಿಲ ಪಿತಾಮಹಃ | ಕ್ರೀಡನೀಯಕಮಿಚ್ಛಾಮೋ ದೃಶ್ಯಂ ಶ್ರವ್ಯಂ ಚ ಯದ್ಭವೇತ್ | ತಸ್ಮಾತ್ಸೃಜಾಪರಂ ವೇದಂ ಪञ್ಚಮಂ ಸಾರ್ವವರ್ಣಿಕಮ್ | ಏವಮಸ್ತಿವತಿ ತಾನುಕ್ತವಾ ದೇವರಾಜಂ ವಿಸೃಜ್ಯ ಚ | ಸಸ್ಮಾರ ಚತುರೋ ವೇದಾನ್ ಯೋಗಮಾಸ್ಥಾಯ ತತ್ತ್ವವಿತ್ | ಸರ್ವಶಾಸ್ತ್ರಾರ್ಥಸಂಪನ್ನಂ ಸರ್ವಶಿಲ್ಪಪ್ರದಶಂಕಮ್ | ನಾಟಕಸಂಜ್ಞಾಮಿಮಂ ವೇದಂ ಸೇತಿಹಾಸಂ ಕರೋಮ್ಯಹಮ್ | ಏವಂ ಸಂಕಲ್ಪ್ಯ ಭಗವಾನ್ ಸರ್ವವೇದಾನುಸ್ಮರನ್ | ನಾಟಕವೇದಂ ತತಃಶ್ಚಕ್ರೇ ಚತುರ್ವೇದಾಂಗಳ್ಲಸಂಭವಮ್ | ಜಗ್ರಾಹ ಪಾಠಕಮುಗ್ಧವೇದಾತ್ ಸಾಮಮ್ಯೋ ಗೀತಮೇವ ಚ | ಯಜುರ್ವೇದಮಿನಯಾನ್ ರಸಾನಾಶರ್ವಣಾದಪಿ | ವೇದೋಪವೇದಸಂಬಂಧೋ ನಾಟಕವೇದೋ ಮಹಾತ್ಮನಾ | ಏವಂ ಭಗವತಾ ಸೃಷ್ಟೋ ಬ್ರಹ್ಮಣಾ ಲಲಿತಾತ್ಮನಾ | ಉತ್ಪಾದ್ಯ ನಾಟಕವೇದಂ ತು ಬ್ರಹ್ಮೋವಾಚ ಸುರೇಶ್ವರಮ್” |

ಈ ನಾಟ್ಯವು ಲಾಸ್ಯ ಮತ್ತು ತಾಂಡವಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಹೆಂಗಸರ ನೃತ್ಯವು ಲಾಸ್ಯವೆನಿಸುವುದು. ಪುರುಷರ ನೃತ್ಯಕ್ಕೆ ತಾಂಡವವೆಂದು ಹೆಸರು. ಈ ಎರಡು ವಿಧ ನೃತ್ಯಗಳೂ ಅರ್ಧನಾರೀಶ್ವರರಾದ ಪಾರ್ವತೀ ಪರಮೇಶ್ವರರ ದೇಹದಲ್ಲಿ ಲಾಸ್ಯತಾಂಡವರೂಪದಿಂದ ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವುವು. ನಾನಾ ರಸಸಂಪನ್ನವಾದ ಈ ನಾಟ್ಯವು ಭಿನ್ನ ಭಿನ್ನ ರಸಾಸ್ವಾದ ಮಾಡುವ ಜನರಿಗೆ ದೊಡ್ಡ ರಸದೌತಣವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದು. “ದೇವಾನಾಮಿದಮಾನಂತಿ ಮುನಯಃ ಕಾಂತಂ ಕೃತುಂ ಚಾಕ್ಷುಷಂ ರುದ್ರೇಣ-ದಮುಮಾಕೃತವ್ಯತಿಕರೇ ಸ್ವಾಕ್ಷೇ ವಿಭಕ್ತಂ ದ್ವಿಧಾ | ತ್ರೈಗುಣ್ಯೋದ್ಭವ-ಮತ್ರ ಲೋಕಚರಿತಂ ನಾನಾರಸಂ ದೃಶ್ಯತೇ ನಾಟಕಂ ಭಿನ್ನರಸೇರ್ಜನಸ್ಯ ಬಹುಭಾಷ್ಯಕಂ ಸಮಾರಾಧಕಮ್” ಮಾಲಂ ೧ |

ನಾಟ್ಯಶಾಸ್ತ್ರವು ಬೋಧಪ್ರದವಾದುದು. ಶಿಲ್ಪ ವಿದ್ಯೆ ಕಲೆ ಯೋಗ ಇತ್ಯಾದಿಗಳಿಗೆಲ್ಲಾ ಆಕರವಾದುದು, ಇದರಲ್ಲಿ ಲ್ಲದ ಶಿಲ್ಪ ವಿದ್ಯೆ ಕಲೆ ಯೋಗ ಮುಂತಾದುವು ಮತ್ತಾವ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳಿಲ್ಲ. “ನ ತಜ್ಞಾನಂ ನ ತಚ್ಛಿಲ್ಪಂ ನಾಸೌ ವಿद्या ನ ಸಾ ಕಲಾ | ನಾಸೌ ಯೋಗೋ ನ ತತ್ಕರ್ಮ ನಾಟಕೇಽಸ್ಮಿನ್ ಯತ್ರ ದೃಶ್ಯತೇ” |

**ನಾಟ್ಯಸಂಭಕ್ಕೆ ಶುಭನಕ್ಷತ್ರಗಳು :** ಪುಷ್ಯ ಹಸ್ತ ಚಿತ್ತಾ ಸ್ವಾತಿ ಅನೂರಾಧಾ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ಧನಿಷ್ಠಾ ಶತಭಿಷೆ ಮತ್ತು ರೇವತಿ ಈ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು ನಾಟ್ಯಸಂಭಕ್ಕೆ ಪ್ರಶಸ್ತವಾದವು.

**ನಾಟಕಧರ್ಮಿಕಾ ನಾಟ್ಯಧರ್ಮಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪ್ರೇಕ್ಷಕರ ಸಮಾರಾಧನೆಗಾಗಿ ಶಾಸ್ತ್ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಪ್ರದರ್ಶಿಸಲ್ಪಡುವ ನಾಟ್ಯ. ನಾಟಕಧರ್ಮೋಽಸ್ಯಸ್ಯಾಮ್ ಕ್ರಿಯಾಯಾಮ್ “ಠನ್” (೪-೨-೧೧೪) | “ಗೀತವಾದ್ಯನೃತ್ಯತ್ರಯಂ ನಾಟಕಂ ತೌರ್ಯತ್ರಿಕಂ ಚ ತತ್ | ಸಂಗೀತಂ ಪ್ರೇಕ್ಷಣಾರ್ಥೇಽಸ್ಮಿನ್ ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತೇ ನಾಟಕ-ಧರ್ಮಿಕಾ” |

**ನಾಟಕಪರಿಭಾಷಾ ನಾಟ್ಯಪರಿಭಾಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ನಾಟ್ಯದಲ್ಲಿ ರಾಜ ರಾಣಿ ಅಮಾತ್ಯ ಸೇವಕ ಮುಂತಾದವರು ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬೋಧಿಸಿ ಕರೆಯುವ ಪಾರಿಭಾಷಿಕ ಪದ. ರಾಜನನ್ನು ಭೃತ್ಯ(ಸೇವಕ)ರು “ಸ್ವಾಮಿನ್” “ದೇವ” ಎಂದೂ ರಾಜಪತ್ನಿಗಳು ಮತ್ತು ವಿದೂಷಕನು “ವಯಸ್ಯ” ಎಂದೂ ಮುಷಿಗಳು “ರಾಜನ್” ಎಂದೂ ಮತ್ತು ಅಪತ್ಯ ಪ್ರತ್ಯಯಾಂತ “ದಾಶರಥೇ”, “ಪಾಂಡವ”, “ಪೌರವ” ಮುಂತಾದ ಪದಗಳಿಂದಲೂ ವಿಪ್ರನು ವಿಪ್ರನನ್ನು ಅವನ ಹೆಸರಿನಿಂದಲೂ ಅಥವಾ “ಆರ್ಯ” ಪದದಿಂದಲೂ ಸಂಬೋಧಿಸಬೇಕು. ರಾಜನು ವಿದೂಷಕನನ್ನು ಅವನ ಹೆಸರಿನಿಂದಲೂ ಅಥವಾ “ವಯಸ್ಯ” ಎಂದೂ ನಟಿಸೂತ್ರಧಾರರು ಪರಸ್ಪರ “ಆರ್ಯ” “ಆರ್ಯ” ಎಂದೂ ಪಾರಿಪಾಶ್ವರ್ಯಕನು ಸೂತ್ರಧಾರನನ್ನು “ಭಾವ” ಎಂದೂ ಸೂತ್ರಧಾರನು ಅವನನ್ನು “ಮಾರಿಷ” ಎಂದೂ ಕರೆಯಬೇಕು. ದೇವತೆಗಳು ಮುಷಿಗಳು ಮತ್ತು ಯತಿಗಳನ್ನು ಎಲ್ಲರೂ “ಭಗವನ್” ಎಂದು ಸಂಬೋಧಿಸಬೇಕು. ವಿದೂಷಕನು ರಾಣಿಯನ್ನೂ ಚೇತಿಯನ್ನೂ “ಭವತಿ” ಎಂದು ಸಂಬೋಧಿಸಬೇಕು. ಸಾರಥಿಯು ರಾಜನನ್ನು “ಆಯುಷ್ಮನ್” ಎನ್ನಬೇಕು. ಮಗನು “ವತ್ಸ” “ಪುತ್ರ” “ತಾತ” ಮುಂತಾದ ಪದಗಳಿಂದ ಸಂಬೋಧಿಸಲ್ಪಡಬೇಕು. ಇತ್ಯಾದಿ. ಸಾಂ ೬ಂ ೬ |

**ನಾಟಕಪ್ರಿಯ ನಾಟ್ಯಪ್ರಿಯ (ಫಂ)** ಮಹಾದೇವ, ನಟರಾಜ, ಪರಿವ. ನಾಟಕಂ ಪ್ರಿಯಮಸ್ಯ |

**ನಾಟಕಭಾಷಾ ನಾಟ್ಯಭಾಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ನಾಟ್ಯದಲ್ಲಿ ಪಾತ್ರಗಳು ಉಪಯೋಗಿಸಬೇಕಾದ ಭಾಷೆಗಳು. **ಭಾಷಾ ವಿಭಾಗ :** ಉತ್ತಮ ಮತ್ತು ಮಧ್ಯಮ ಪಾತ್ರಗಳು ಮತ್ತು ವಿದ್ವಾಂಸರಿಗೆ ಸಂಸ್ಕೃತ ಭಾಷೆ (ರಾಜ ಅಮಾತ್ಯ ರಾಜಪುರೋಹಿತ ರಾಜಕುಮಾರ ಇತ್ಯಾದಿ), ಉತ್ತಮ



ಸ್ತ್ರೀ ಪಾತ್ರಗಳಿಗೆ ಶೌರಸೇನೀ ಭಾಷೆ. ಇದೇ ಸ್ತ್ರೀಪಾತ್ರಗಳಿಗೆ ಶ್ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರಭಾಷೆ. ರಾಜನ ಅಂತಃಪುರದಲ್ಲಿರುವ ವಾಮನ ಪಂಡ ಕಂಚುಕಗಳಿಗೆ ಮಾಗಧೀ ಭಾಷೆ. ಚೇಟಿ (ಭೃತ್ಯ)ರಿಗೆ ಅರ್ಧಮಾಗಧಿ. ವಿದೂಷಕನಿಗೆ ಗೌಡೀ ಭಾಷೆ. ಧೂರ್ತ (ಜೂಜುಗಾರ ಮುಂತಾದವ) ರಿಗೆ ಅವಂತೀಭಾಷೆ. ಯೋಧರು ಮತ್ತು ಪಟ್ಟಣಗಳಿಗೆ ವೈದರ್ಭೀಭಾಷೆ. ಶಬರರಿಗೆ ಶಾಬರೀ ಭಾಷೆ. ಇತ್ಯಾದಿ. "ಪುರುಷಾಣಾಮನೀಚಾನಾಂ ಸಂಸ್ಕೃತಂ ಸ್ಯಾತ್ಕೃತಾತ್ಮನಾಮ್ | ಶೌರಸೇನೀ ಪ್ರಯೋಕ್ತವ್ಯಾ ತಾದೃಶಿನಾಂ ಚ ಯೋಷಿತಾಮ್ | ಆಸಾಮೇವ ತು ಗಾಥಾಸು ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರೀ ಪ್ರಯೋಜಯೇತ್ | ಅತ್ರೋಕ್ತಾ ಮಾಗಧಿ ಭಾಷಾ ರಾಜಾಂತಃಪುರಚಾರಿಣಾಮ್ | ಚೇಟಾನಾಂ ರಾಜಪುತ್ರಾಣಾಂ ಶ್ರೇಷ್ಠಾನಾಂ ಚಾರ್ಧಮಾಗಧಿ | ಪ್ರಾಚ್ಯಾ ವಿದೂಷಕಾದೀನಾಂ ಭೂತಾನಾಂ ಸ್ಯಾದವಂತಿಜಾ | ಯೋಜನಾಗರಿಕಾದೀನಾಂ ದಾಕ್ಷಿಣಾತ್ಯಾ ಹಿ ದೀವ್ಯತಾಮ್ | ಶಬರಾಣಾಂ ಶಕಾದೀನಾಂ ಶಾಬರೀ ಸಂಪ್ರಯೋಜಯೇತ್" ಸಾಂ ದಂ ೬ |

**ನಾಟಕರಾಸಕ ನಾಟ್ಯರಾಸಕ (ನಂ)** ಹದಿನೆಂಟು ವಿಧ ಉಪರೂಪಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: ನಾಟ್ಯ ರಾಸಕವು ಒಂದು ಏಕಾಂಕಉಪರೂಪಕ. ಅನೇಕ ವಿಧ ತಾಳ ಮತ್ತು ಲಯಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು. ಇದರಲ್ಲಿ ನಾಯಕನು ಉದಾತ್ತಗುಣವುಳ್ಳವನು ಮತ್ತು ಪೀಠ ಮರ್ಧನು ಉಪನಾಯಕನಾಗಿರುವನು. ಶೃಂಗಾರರಸ ಮಿಶ್ರವಾದ ಹಾಸ್ಯರಸವು ಪ್ರಧಾನವಾದುದು. ವಾಸಕ ಸಜ್ಜಿಕೆಯು ನಾಯಕ. ಮುಖ ಮತ್ತು ನಿರ್ವಹಣ ಎರಡು ಮಾತ್ರ ಸಂಧಿಗಳು. ಇತ್ಯಾದಿ. "ನಾಟಕರಾಸಕಮೇಕಾಂಕ ಬಹುತಾಲಲಯಸ್ಥಿತಿ | ಉದಾತ್ತನಾಯಕಂ ತದ್ವತ್ ಪೀಠಮರ್ಧನಾಯಕಮ್ | ಹಾಸ್ಯೋಜ್ಞಾಶ್ಚ ಸಶೃಂಗಾರೋ ನಾರೀ ವಾಸಕಸಜ್ಜಿಕಾ | ಮುಖನಿರ್ವಹಣಂ ಸಂಧಿ ಲಾಸ್ಯಾಂಜ್ಞಾನಿ ದಶಾಪಿ ಚ" ಇತ್ಯಾದಿ. ಸಾಂ ದಂ ೬ |

**ನಾಟಕಶಾಲಾ ನಾಟ್ಯಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ನಾಟಕಮಂದಿರ, ನಾಟ್ಯವನ್ನು ಪ್ರದರ್ಶಿಸುವ ಗೃಹ, ಕಲಾಹವ್ಯಾಸಿಗಳ ರಂಗ ಮಂದಿರ. ನಾಟಕಾರ್ಥ ಶಾಲಾ |

**ನಾಟಕಾಂಜ್ಞ ನಾಟ್ಯಾಂಗ (ನಂ)** ಅಸ್ತದ ಹತ್ತು ವಿಧ ಅಂಗಗಳು. (1) ಗೇಯಪದಮ್, (2) ಸ್ಥಿತಿಪಾಠ್ಯಮ್, (3) ಆಸೀನಮ್, (4) ಪುಷ್ಪಗಣ್ಡಿಕಾ, (5) ಪ್ರಚ್ಛೇದಕಃ, (6) ತ್ರಿಗುಣಕಮ್, (7) ಸಂವಿವರ್ಮ, (8) ದ್ವಿಗುಣಕಮ್, (9) ಉತ್ತಮೋತ್ತಮಕಮ್ ಮತ್ತು (10) ಉತ್ತಮೋತ್ತಮಕಮ್ ಇವು ಹತ್ತು ವಿಧ ಅಂಗಗಳು.

(1) ಗೇಯಪದಮ್ — ಆಸನದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ ವೀಣೆಯನ್ನು ನುಡಿಸುತ್ತ ಹಾಡುವುದು "ಗೇಯಪದ".

"ತನ್ವೀಭಾಂಡಂ ಪುರಸ್ಕೃತ್ಯೋಪವಿಷ್ಟಸ್ಯಾಸನೇ ಪುರಃ | ಶುಷ್ಕಂ ಗಾನಂ ಗೇಯಪದಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೧೪ |

(2) ಸ್ಥಿತಿಪಾಠ್ಯಮ್ — ಮನ್ಮಥವಾಧೆಯಿಂದ ಪೀಡಿತಳಾಗಿ ನಿಂತು ಪ್ರಾಕೃತವನ್ನು ಓದುವುದು "ಸ್ಥಿತಿಪಾಠ್ಯ". "ಸ್ಥಿತಿಪಾಠ್ಯಂ ತದ್ವಚನಂ | ಮದನೋತ್ತಾಪಿತಾ ಯತ್ರ ಪಠತಿ ಪ್ರಾಕೃತಂ ಸ್ಥಿತಾ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೧೫ |

(3) ಆಸೀನಮ್ — ವೀಣಾ ವೇಣು ಮೃದಂಗ ಮೊದಲಾದ ಯಾವ ವಿಧವಾದ ವಾದ್ಯವೂ ಇಲ್ಲದೆ ಯಾವ ಅಲಂಕಾರವನ್ನೂ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳದೆ ದುಃಖ ಮತ್ತು ಚಿಂತಾಕ್ರಾಂತಳಾಗಿ ಕೂಡುವುದು "ಆಸೀನ". "ನಿಖಿಲಾತೋದರಹಿತಂ ಶೋಕಚಿಂತಾಕ್ರೂರಾಬಲಾ | ಅಪ್ರಸಾಧಿತಗಾತ್ರಂ ಯದಾಸೀನಾಸೀನಮೇವ ತತ್" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೧೬ |

(4) ಪುಷ್ಪಗಣ್ಡಿಕಾ — ವೀಣಾ ವೇಣು ಮೃದಂಗ ವಾದ್ಯಗಳೊಡನೆ ಹೆಂಗಸರು ಪುರುಷನಂತೆಯೂ ಪುರುಷರು ಹೆಂಗಸಿನಂತೆಯೂ ಅಭಿನಯ ಮಾಡುತ್ತಾ ಹಾಡುವುದು "ಪುಷ್ಪಗಣ್ಡಿಕ". "ಆತೋದ್ರಮಿಶ್ರಿತಂ ಗೇಯಂ ಚಂದಾಂಸಿ ವಿವಿಧಾನಿ ಚ | ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸಯೋರ್ವಿಪರ್ಯಾಸಚೇಷ್ಟಿತಂ ಪುಷ್ಪಗಣ್ಡಿಕಾ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೧೭ |

(5) ಪ್ರಚ್ಛೇದಕಃ — ಪತಿಯು ಪರಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತನಾಗಿರುವುದನ್ನು ತಿಳಿದು ದುಃಖಗೊಂಡು ನಾಯಕಿಯು ವೀಣೆಯೊಡನೆ ತಾನೂ ಹಾಡುವುದು "ಪ್ರಚ್ಛೇದಕ". "ಅನ್ಯಾಸಕ್ತಂ ಪತಿಂ ಮತ್ವಾ ಪ್ರೇಮವಿಚ್ಛೇದಮನ್ಯುನಾ | ವೀಣಾಪುರಃಸರಂ ಗಾನಂ ಸ್ತ್ರೀಯಾಃ ಪ್ರಚ್ಛೇದಕೋ ಮತಃ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೧೮ |

(6) ತ್ರಿಗುಣಕಮ್ — ಪುರುಷರು ಸ್ತ್ರೀವೇಷವನ್ನು ಧರಿಸಿ ನಾಟ್ಯವಾಡುವುದು "ತ್ರಿಗುಣಕ". "ಸ್ತ್ರೀವೇಷಚಾರಿಣಾಂ ಪುಂಸಾಂ ನಾಟ್ಯಂ ಶಿಕ್ಷಣಂ ತ್ರಿಗುಣಕಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೧೯ |

(7) ಸಂವಿವರ್ಮ — ಸಂಕೇತಸ್ಥಾನವನ್ನು ಗೊತ್ತುಮಾಡಿ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದ ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಂಡ ನಾಯಕನು ವೀಣಾದಿ ವಾದ್ಯಗಳೊಡನೆ ಪ್ರಾಕೃತದಲ್ಲಿ ಮಾತನಾಡುವುದು "ಸಂವಿವರ್ಮ". "ಕಷ್ಠನ ಭ್ರಷ್ಟಸಂಕೇತಃ ಸುವ್ಯಕ್ತಕರಣಾನಿವಿತಃ | ಪ್ರಾಕೃತಂ ವಚನಂ ವಕ್ತಿ ಯತ್ರ ತತ್ಸಂವಿವರ್ಮ ಮತಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೨೦ |

(8) ದ್ವಿಗುಣಕಮ್ — ಉಕ್ತಪ್ರತ್ಯುಕ್ತಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ ರಸಭಾವ ಪರಿಪೂರ್ಣವಾದ ಸಪ್ತಸ್ವರಸಹಿತವಾದ ಸಂಗೀತವು "ದ್ವಿಗುಣಕ". "ಚತುರಸ್ತಪದಂ ಗೀತಂ ಮುಖಪ್ರತಿಮುಖಾನಿವಿತಮ್ | ದ್ವಿಗುಣಕಂ ರಸಭಾವಾಡಯಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೨೧ |

(9) ಉತ್ತಮೋತ್ತಮಕಮ್ — ಕೋಪ ಮತ್ತು ಪ್ರಸನ್ನತೆಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದ ಮತ್ತು ತಿರಸ್ಕಾರದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹಾಗೂ ರಸಭಾವಗಳ್ಳಿತವಾದ ಮತ್ತು ಹಾವಲೀಲೆಗಳಿಂದಲೂ ಚಿತ್ರಶ್ಲೋಕ ಬಂಧಗಳಿಂದಲೂ ಮನೋಹರ



ವಾದ ಗಾನವು "ಉತ್ತಮೋತ್ತಮಕ". "ಉತ್ತಮೋತ್ತಮಕಂ  
ಪುನಃ। ಕೋಪಪ್ರಸಾದಜಮಧಿಕೋಪಯುಕ್ತಂ ರಸೋತ್ತರಮ್। ಹಾವ-  
ಹೇಲಾನವಿತಂ ಚಿತ್ರಶಲೋಕಬಂಧಮನೋಹರಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೨೨।

(10) ಉಕ್ತಿಪ್ರತ್ಯುಕ್ತಮ್ — ಉಕ್ತಿಪ್ರತ್ಯುಕ್ತಿಗಳಿಂದಲೂ  
ನಿಂದೆಯೊಡಗೂಡಿದ ಅಪ್ರಿಯ ವಚನಗಳಿಂದಲೂ ವಿಲಾಸ  
ದಿಂದಲೂ ಕೂಡಿದ ಗೀತಾರ್ಥವು "ಉಕ್ತಿಪ್ರತ್ಯುಕ್ತ".  
"ಉಕ್ತಿಪ್ರತ್ಯುಕ್ತಿಸಂಯುಕ್ತಂ ಸೋಪಾಲಂಭಮಲೀಕವತ್। ವಿಲಾಸಾನವಿತ-  
ಗೀತಾರ್ಥಮುಕ್ತಪ್ರತ್ಯುಕ್ತಮುಚ್ಯತೇ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೨೩।

ನಾಟಕಾಲಂಕಾರ ನಾಟ್ಯಾಲಂಕಾರ (ಪುಂ) ನಾಟ್ಯದ  
ಅಲಂಕಾರ, ನಾಟ್ಯದ ಸೊಗಸಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ ಸಂದರ್ಭ.  
ನಾಟ್ಯಾಲಂಕಾರವು ಮೂವತ್ತಮೂರು (33) ವಿಧ.

(1) ಆಶೀಃ, (2) ಆಕ್ರಂದಃ, (3) ಕಪಟಮ್, (4) ಅಕ್ಷಮಾ,  
(5) ಗರ್ವಃ, (6) ಉದ್ವಿಗ್ನಃ, (7) ಆಶ್ರಯಃ, (8) ಉಪಾಸನಮ್,  
(9) ಸ್ಪೃಹಾ, (10) ಕ್ಷೋಭಃ, (11) ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪಃ, (12) ಉಪಪತ್ತಿಃ,  
(13) ಆಶಂಸಾ, (14) ಅಧ್ಯವಸಾಯಃ, (15) ವಿಸರ್ಪಃ,  
(16) ಉಲ್ಲೇಖಃ, (17) ಉತ್ತೇಜನಮ್, (18) ಪರೀವಾದಃ,  
(19) ನೀತಿಃ, (20) ಅರ್ಥವಿಶೇಷಣಮ್, (21) ಪ್ರೋತ್ಸಾಹನಮ್,  
(22) ಸಾಹಾಯ್ಯಮ್, (23) ಅಭಿಮಾನಃ, (24) ಅನುವರ್ತನಮ್,  
(25) ಉತ್ಕರ್ಷಣಮ್, (26) ಯಾಚ್ಛಾ, (27) ಪರಿಹಾರಃ,  
(28) ನಿವೇದನಮ್, (29) ಪ್ರವರ್ತನಮ್, (30) ಆಖ್ಯಾನಮ್,  
(31) ಯುಕ್ತಿಃ, (32) ಪ್ರಹರ್ಷಃ ಮತ್ತು (33) ಉಪದೇಶನಮ್।  
ಸಾಂ ದಂ ೬।

ಆಶೀಃ — ಬಂಧುಜನರ ಶುಭಾಶಂಸನ, ಒಳ್ಳೆಯದಾಗ  
ಬೇಕೆಂಬ ಬಂಧುಗಳ ಕೋರಿಕೆ. "ಆಶೀರಿಷ್ಟಜನಾಶಂಸಾ"  
ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೯೯। "ಯಾತೇರಿವ ಶಮಿಷ್ಠಾ ಭರ್ತುರ್ಬಹುಮತಾ  
ಭವ। ಸುತಂ ತ್ವಮಪಿ ಸಮ್ರಾಜಂ ಸೇವ ಪೂಜಯಾನ್ಮಹಿ" ಶಾಕುಂ ೪-೬।

ಆಕ್ರಂದಃ — ದುಃಖದಿಂದ ಅಳುವುದು. "ಆಕ್ರಂದಃ  
ಪ್ರಲಪಿತಂ ಶುಚಾ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೯೯। "ಹಾ ದೇವಿ ಕುಂತಿ  
ಭೋಜರಾಜಭವನಪತಾಕೇ" ವೇಣೀಂ ೬।

ಕಪಟಮ್ — ಮಾಯೆಯಿಂದ ರೂಪವನ್ನು ಬದಲಾಯಿಸಿ  
ಕೊಂಡು ಮೋಸಗೊಳಿಸುವುದು. "ಕಪಟಂ ಮಾಯಯಾ ಯತ್ರ  
ರೂಪಮನ್ಯದ್ವಿಭಾಜತೇ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೯೯। "ಮೃಗರೂಪಂ  
ಪರೀತ್ಯಜ್ಯ ವಿಧಾಯ ಕಪಟಂ ವಪುಃ। ನಿಯತೇ ರಕ್ಷಸಾ ತೇನ"।

ಅಕ್ಷಮಾ — ಸ್ವಲ್ಪವೂ ಅವಮಾನವನ್ನು ಸಹಿಸದಿರುವಿಕೆ.  
"ಅಕ್ಷಮಾ ಸಾ ಪರಿಭವಃ ಸ್ವಲ್ಪೋಽಪಿ ನ ವಿಷಹತೇ" ಸಾಂ  
ದಂ ೬-೨೦೦। "ಭೋಃ ಸತ್ಯವಾದಿನ್ ಕಿಂ ಪುನರಿಮಾಮತಿ-  
ಸಂಧಾಯ ಲಭ್ಯತೇ। ಶಾಙ್ಗೇರವಃ—ವಿನಿಪಾತಃ" ಶಾಕುಂ ೫।

ಗರ್ವಃ — ಅಹಂಕಾರದ ಮಾತು. "ಗರ್ವೋಽವಲೇಪಜಂ ವಾಕ್ಯಮ್"  
ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೦೦। "ಮಮಾಪಿ ನಾಮ ಸತ್ವೇರಭಿಭೂಯಂತೇ  
ಗೃಹಾಃ" ಶಾಕುಂ ೬।

ಉದ್ವಿಗ್ನಃ — ಕಾರ್ಯದ ಪ್ರಾರಂಭ. "ಕಾರ್ಯಸ್ಯಾರಂಭಃ  
ಉದ್ವಿಗ್ನಃ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೦೦। "ಪಶ್ಯಾಮಿ ಶೋಕವಿವಶೋ-  
ನ್ತಕಮೇವ ತಾವತ್" ಇಲ್ಲಿ ರಾವಣನಲ್ಲಿ ಯುದ್ಧದ ಮನೋ-  
ಭಾವವು ಸೂಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ.

ಆಶ್ರಯಃ — ತನ್ನ ಶ್ರೇಯಸ್ಸಿಗಾಗಿ ಸಜ್ಜನರನ್ನು ಸೇರು-  
ವುದು. "ಗ್ರಹಣಂ ಗುಣವತ್ಕಾರ್ಯಹೇತೋರಾಶ್ರಯಃ ಉಚ್ಯತೇ" ಸಾಂ  
ದಂ ೬-೨೦೧। "ವಿಭೀಷಣಃ — ರಾಮಮೇವಾಶ್ರಯಾಮಿ"।

ಉಪಾಸನಮ್ — ತಾನೇ ಉತ್ತಮನೆಂದು ತಿಳಿದಿರುವ  
ಅನುತ್ತಮನ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಅಪಹಾಸ್ಯ.  
"ಉಪಾಸನಂ ತುಪಹಾಸೋ ಯೋಽಸಾಧೋ ಸಾಧುಮಾನಿನಿ" ಸಾಂ ದಂ  
೬-೨೦೧। "ಯದಾ ತು ಪೂರ್ವವೃತ್ತಮನ್ಯಸಜ್ಞಾಽದ್ವಿಷ್ಮತೋ ಭವಾನ್  
ತದಾ ಕಥಮಧರ್ಮಭೀರುಃ" ಶಾಕುಂ ೫।

ಸ್ಪೃಹಾ — ಸುಂದರವಾದ ವಸ್ತುವನ್ನು ಹೊಂದುವ ಆಸೆ.  
"ಆಕಾಂಕ್ಷಾ ರಮಣೀಯತ್ವಾದ್ವಸ್ತುನೋ ಯಾ ಸ್ಪೃಹಾ ತು ಸಾ" ಸಾಂ  
ದಂ ೬-೨೦೨। "ಚಾರುಣಾ ಸ್ಫುರತೀನಾಯಮಪರಿಕ್ಷಿತಕೋಮಲಃ।  
ಪಿಪಾಸತೋ ಮಮಾನುಜಾಂ ದದಾತೀವ ಪ್ರಿಯಾಧರಃ"।

ಕ್ಷೋಭಃ — ತಿರಸ್ಕಾರ ಮತ್ತು ದೂಷಣೆಗಳಿಂದ ಆಗುವ  
ಮನೋವ್ಯಥೆ. "ಅಧಿಕೋಪವಚಃಕಾರಿ ಕ್ಷೋಭಃ ಪ್ರೋಕ್ತಃ ಸ  
ಏವ ತು" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೦೨। "ತ್ವಯಾ ತಪಸ್ವಿಚಂಡಾಲ  
ಪ್ರಚ್ಛನ್ನವಧವರ್ತಿನಾ। ನ ಕೇವಲಂ ಹತೋ ವಾಲೀ ಸ್ವಾತ್ಮಾ ಚ  
ಪರಲೋಕತಃ"।

ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪಃ — ಅಜ್ಞಾನದಿಂದ ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ವಿಷಯ  
ದಲ್ಲಿ ಅನಂತರ ಪರಿತಪಿಸುವುದು. "ಮೋಹಾವಧೀರಿತಾರ್ಥಸ್ಯ  
ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪಃ ಸ ಏವ ತು" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೦೩। "ಕಿಂ ದೇವ್ಯಾ  
ನ ವಿಚುಮ್ಬಿತೋಽಸ್ಮಿ ಬಹುಶೋ ಮಿಥ್ಯಾಭಿಶಪ್ತಸ್ತದಾ"।

ಉಪಪತ್ತಿಃ — ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿಗಾಗಿ ಅದಕ್ಕೆ ಅನುಕೂಲ  
ವಾದ ಉಪಾಯ. "ಉಪಪತ್ತಿರ್ಮತಾ ಹೇತೋರಪನ್ಯಾಸೋಽರ್ಥ-  
ಸಿದ್ಧಯೇ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೦೩। "ಮ್ರಿಯತೇ ಮ್ರಿಯಮಾಣೇ ಯಾ  
ತ್ವಯಿ ಜೀವತಿ ಜೀವತಿ। ತಾಂ ಯದೀಚ್ಛಸಿ ಜೀವಂತೀಂ ರಕ್ಷಾತ್ಮಾನ್  
ಮಮಾಸುಭಿಃ"।

ಆಶಂಸಾ — ತನ್ನ ಇಷ್ಟಾರ್ಥವು ಕೈಗೊಂಡು ಅಪೇಕ್ಷೆ.  
"ಆಶಂಸನಂ ಸ್ಥಾಪಾಶಂಸಾ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೦೪। "ತತ್ಪಶ್ಯೇಯ-  
ಮನಜ್ಞಮಜ್ಞಲಗೃಹಂ ಭಯೋಽಪಿ ತಸ್ಯಾ ಮುಖಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೫-೯।

ಅಧ್ಯವಸಾಯಃ — ಉತ್ಸಾಹದಿಂದ ಮಾಡುವ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ,  
ದೃಢಸಂಕಲ್ಪ. "ಪ್ರತಿಜ್ಞಾಧ್ಯವಸಾಯಕಃ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೦೪।  
"ಅಸ್ಯ ವಕ್ಷಃ ಕ್ಷಣೇನೈವ ನಿರ್ಮಥ್ಯ ಗದಯಾಽನಯಾ। ಲೀಲಯೋನ್ಮೂಲ-  
ಯಾಮ್ಯೇಷ ಭುವನದ್ವಯಮಥ ವಃ"।

ವಿಸರ್ಪಃ — ಅನಿಷ್ಟಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವ ಕಾರ್ಯ. "ವಿಸರ್ಪೋ  
ಯತ್ಸಮಾರಂಭಂ ಕರ್ಮಾನಿಷ್ಟಫಲಪ್ರದಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೦೪।



“ಏಕಸ್ಯ ತಾವತ್ಪಾಕೋಷ್ಯಂ ದಾರುಣೋ ಭುವಿ ವರ್ತತೇ । ಕೇಶವಹೇ  
ದ್ವಿತೀಯೇಽಸ್ಮಿನ್ ನೂನಂ ನಿಃಶೇಷಿತಾಃ ಪ್ರಜಾಃ” ವೇಣೀಂ ೩-೧೪ ।

ಅಲ್ಲೇಖಃ — ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಿರ್ದೇಶಮಾಡಿ ಹೇಳು  
ವುದು. “ಕಾರ್ಯದರ್ಶನಮಲ್ಲೇಖಃ” ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೦೫ ।

“ರಾಜನ್ ಸಮಿದಾಹರಣಾಯ ಪ್ರಸ್ಥಿತಾ ವಯಮ್ । ಏಷ ಕುಲಪತೇಃ  
ಕಂಠಸ್ಯಾಶ್ರಮೋ ದೃಶ್ಯತೇ । ನ ಚೇದನ್ಯಕಾರ್ಯಾತಿಪಾತಃ ಪ್ರವಿಶ್ಯ  
ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಯತಾಮಾತೀಯಃ ಸತ್ಕಾರಃ” ಶಾಕುಂ ೧ ।

ಉತ್ತೇಜನಮ್ — ತನ್ನ ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿಗಾಗಿ ವ್ಯತ್ಯಾಸವನ್ನು  
ಹುರಿದುಂಬಿಸಲು ಅಡುವ ಕಠಿನವಾದ ಮಾತು. “ಉತ್ತೇಜನ-  
ಮಿತಿಷ್ಯತೇ । ಸ್ವಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಯೇಽನ್ಯಸ್ಯ ಪ್ರೇರಣಾಯ ಕಠೋರವಾಕ್”  
ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೦೫ । “ಇಂದ್ರಜಿವಿಚ್ಛವೀರ್ಯೋಽಸಿ ನಾಮೈವ  
ಬಲವಾನಸಿ । ಧಿಕ್ ಧಿಕ್ ಪ್ರಚ್ಛನ್ನರೂಪೇಣ ಯುಧ್ಯಸೇಽಸ್ಮದ್ಭ್ರಾ-  
ತುಲಃ” ।

ಪರೀವಾದಃ — ಬೆದರಿಸಿ ಮಾತಾಡುವುದು. “ಭರ್ತನಾ ತು  
ಪರೀವಾದಃ” ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೦೬ । “ಧಿಕ್ ಧಿಕ್ ಸೂತ ಕಿಂ  
ಕೃತವಾನಸಿ । ವತ್ಸಸ್ಯ ಮೇ ಪ್ರಕೃತಿದುರ್ಲಲಿತಸ್ಯ ಪಾಪೋ ಪಾಪ  
ವ್ಯವಸ್ಯತಿ ಸಮಕ್ಷಮುದಾಯುಧೋಽಸೌ” ವೇಣೀಂ ೪-೫ ।

ನೀತಿಃ — ಶಾಸ್ತ್ರದಂತೆ ನಡೆಯುವುದು. “ನೀತಿಃ  
ಶಾಸ್ತ್ರೇಣ ವರ್ತನಮ್” ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೦೬ । “ವಿನೀತವೇಷಣ  
ಪ್ರವೇಷವ್ಯಾನಿ ತಪೋವನಾನಿ ನಾಮ । ಇದಂ ತಾವದ್ಗೃಹ್ಯತಾಮ್”  
ಶಾಕುಂ ೧ ।

ಅರ್ಥವಿಶೇಷಣಮ್ — ಒಬ್ಬನು ಪ್ರತಿಕೂಲವಾಗಿ ಹೇಳಿದ  
ಮಾತನ್ನು ಖಂಡಿಸಿ ತಾನು ಮಾಡಲು ಹೇಳಿದ ಮಾತನ್ನೇ  
ಅನೇಕ ಸಲ ಹೇಳಿ ಸ್ಥಿರಪಡಿಸುವುದು. “ಉಕ್ತಸ್ಥಾರ್ಥಸ್ಯ ಯತ್ನ  
ಸ್ಯಾದುತ್ಕರ್ತನಮನೇಕಥಾ । ಉಪಾಲಂಭವಿಶೇಷೇಣ ತತ್ಸ್ಯಾದರ್ಥ-  
ವಿಶೇಷಣಮ್” ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೦೭ । “ಆಃ ಕಥಮಿದಂ ನಾಮ ।  
ನನು ಭವಾನೇವ ನಿತರಾಂ ಲೋಕವೃತ್ತಾಂತನಿಷ್ಣಾತಃ । ಸತೀಮಪಿ  
ಜ್ಞಾತಿಕುಲೈಕಸಂಶ್ರಯಾಂ ಜನೋಽನ್ಯಥಾ ಭರ್ತೃಮತೀಂ ವಿಶಿಷ್ಟತೇ । ಅತಃ  
ಸಮೀಪೇ ಪರಿಣತುರೀಷ್ಯತೇ ಪ್ರಿಯಾಪ್ರಿಯಾ ವಾ ಪ್ರಮದಾ ಸ್ವಬಂಧುಮಿಃ”  
ಶಾಕುಂ ೫-೧೭ ।

ಪ್ರೋತ್ಸಾಹನಮ್ — ಪ್ರೋತ್ಸಾಹದ ಮಾತು ಹೇಳಿ ಕಾರ್ಯ  
ವನ್ನು ಮಾಡಿಸುವುದು. “ಪ್ರೋತ್ಸಾಹನಂ ಸ್ಯಾದುತ್ಸಾಹಗಿರಾ  
ಕಸ್ಯಾಪಿ ಯೋಜನಮ್” ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೦೭ । “ಕಾಲರಾತ್ರಿ-  
ಕರಾಲೇಯಂ ಸ್ತ್ರೀತಿ ಕಿಂ ವಿಚಿಕ್ರಿಸ್ಯಸಿ । ತಜ್ಜಗತ್ಪ್ರಿತಯಂ ತ್ರಾತುಂ  
ತಾತ ತಾಡಯ ತಾಡಕಾಮ್” ಬಾಲರಾಂ ।

ಸಾಹಾಯ್ಯಮ್ — ಇತರರ ಕಷ್ಟಕಾಲದಲ್ಲಿ ಅವರಿಗೆ ಅನುಕೂಲ  
ವಾಗಿ ವರ್ತಿಸುವುದು. “ಸಾಹಾಯ್ಯಂ ಸಂಕಟೇ ಯತ್ ಸ್ಯಾತ್ಸಾನುಕೂಲ್ಯಂ  
ಪರಸ್ಯ ಚ” ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೦೮ । “ಅಶ್ವತ್ಥಾಮಾ — ತ್ವಮಪಿ  
ತಾವದ್ರಾಜಃ ಪಾರ್ಶ್ವವರ್ತೀ ಭವ । ಕೃಪಃ — ಗಚ್ಛಾಮ್ಯಹಮತ್ರ  
ಪ್ರತಿವಿಧಾತುಮ್” ವೇಣೀಂ ೩ ।

ಅಭಿಮಾನಃ — ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ. “ಅಭಿಮಾನಃ ಸ  
ಏವ ಸ್ಯಾತ್” ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೦೮ । “ದुर್ಯೋಧನಃ — ಮಾತಃ  
ಕಿಮಪ್ಯಸದೃಶಂ ಕೃಪಣಂ ವಚಸ್ತೇ ಸುಕೃತವ್ರಿಯಾ ಕ್ವ ಭವತೀ ಕ್ವ ಚ  
ದೀನತೇಷಾ” ವೇಣೀಂ ೫-೩ ।

ಅನುವರ್ತನಮ್ — ಏನೆಯಾದಿಂದ ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳು  
ವುದು. “ಪ್ರಶ್ರಯಾದನುವರ್ತನಮ್” ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೦೮ ।  
“ರಾಜಾ — ಅಪಿ ತಪೋ ವರ್ತತೇ । ಅನಸೂಯಾ — ಇದಾನೀಮತಿಥಿ-  
ವಿಶೇಷಲಾಭೇನ” ಶಾಕುಂ ೧ ।

ಉತ್ಕರ್ತನಮ್ — ಹಿಂದೆ ನಡೆದ ವೃತ್ತಾಂತವನ್ನು ಹೇಳು  
ವುದು. “ಭೂತಕಾರ್ಯಾಖ್ಯಾನಮುತ್ಕರ್ತನಮ್” ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೦೯ ।  
“ಅತ್ರಾಸೀತಿಫಣಿಪಾಶಬಂಧನವಿಧಿಃ ಶಕ್ಯಾ ಭವದೇವರೇ ಗಾಢಂ  
ವಕ್ಷಸಿ ತಾಡಿತೇ ಹನುಮತಾ ದ್ರೋಣಾದ್ರಿರಾಹುತಃ” ಬಾಲರಾಂ ।

ಯಾಚ್ಛಾ — ತಾನು ನೇರವಾಗಿ ಅಥವಾ ದೂತನ  
ಮೂಲಕ ಯಾಚಿಸುವುದು. “ಯಾಚ್ಛಾ ತು ಕ್ವಾಪಿ ಯಾಚ್ಛಾ  
ಯಾ ಸ್ವಯಂ ದೂತಮುಕ್ತೇನ ವಾ” ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೦೯ । “ಭೋ  
ಲಕ್ಷ್ಮಣೇಶ್ವರ ದೀಯತಾಂ ಜನಕಜಾ ರಾಮಃ ಸ್ವಯಂ ಯಾಚತೇ” । “ಅಥಾಪಿ  
ದೇಹಿ ವೇದೇಹೀಂ ದಯಾಲ್ಯುಸ್ತ್ವಯಿ ರಾಘವಃ । ಶಿರೋಮಿಃ ಕಂದುಕಕ್ರೀಡಾಂ  
ಕಿಂ ಕಾರಯಸಿ ವಾನರಾನ್” ।

ಪರಿಹಾರಃ — ಅಕಾರ್ಯ ಮಾಡಿದವನ ಅಪರಾಧವನ್ನು  
ಮನ್ನಿಸುವುದು. “ಪರಿಹಾರ ಇತಿ ಪ್ರೋಕ್ತಃ ಕೃತಾನುಚಿತ-  
ಮಾರ್ಜನಮ್” ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೧೦ । “ಪ್ರಾಣಪ್ರಯಾಣದ್ಘಾತಂ  
ಉಕ್ತವಾನಸ್ಮಯನಕ್ಷರಮ್ । ತತ್ಕ್ಷಮಸ್ವ ವಿಮೋ ಕಿಂ ಚ ಸುಗ್ರೀವಸ್ತೇ  
ಸಮರ್ಪಿತಃ” ।

ನಿವೇದನಮ್ — ತಿರಸ್ಕೃತವಾದ ಕರ್ತವ್ಯವನ್ನು ಹೇಳು  
ವುದು. “ಅವಧೀರಿತಕರ್ತವ್ಯಕಥನಂ ತು ನಿವೇದನಮ್” ಸಾಂ  
ದಂ ೬-೨೧೦ । “ಆರ್ಯ, ಸಮುದ್ರಾಭ್ಯರ್ಥನಯಾ ಗಂತುಮುಚ್ಯತೋಽಸಿ ।  
ತತ್ಕಿಮೇತತ್” ರಾಘವಾಭ್ಯುಂ ।

ಪ್ರವರ್ತನಮ್ — ಕರ್ತವ್ಯವನ್ನು ಸರಿಯಾದ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ  
ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವಂತೆ ಹೇಳುವುದು. “ಪ್ರವರ್ತನಂ ತು ಕಾರ್ಯಸ್ಯ  
ಯತ್ಸ್ಯಾತ್ಸಾಧುಪ್ರವರ್ತನಮ್” ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೧೧ । “ರಾಜಾ —  
ಕಂಚುಕಿನ್ ದೇವಸ್ಯ ದೇವಕೀನಂದನಸ್ಯ ಬಹುಮಾನಾತ್ ವತ್ಸಸ್ಯ ಮೇ  
ಭೀಮಸೇನಸ್ಯ ವಿಜಯಮಜ್ಞಲಾಯ ಪ್ರವರ್ತಂತಾಂ ತದ್ಛಿಂತಾಃ ಸಮಾ-  
ರಮ್ಭಾಃ” ವೇಣೀಂ ೬ ।

ಆಖ್ಯಾನಮ್ — ಪೂರ್ವವೃತ್ತಾಂತವನ್ನು ಹೇಳುವುದು.  
“ಆಖ್ಯಾನಂ ಪೂರ್ವವೃತ್ತೋಕ್ತಿಃ” ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೧೧ । “ದೇಶಃ  
ಸೋಽಯಮರಾತಿಶೋಣಿತಜಲಃ ಯಸ್ಮಿನ್ ಹೃದಾಃ ಪೂರಿತಾಃ” ವೇಣೀಂ  
೩-೩೩ ।

ಯುಕ್ತಿಃ — ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕೆಂಬ  
ನಿರ್ಧಾರ. “ಯುಕ್ತಿರರ್ಥವಿಧಾರಣಮ್” ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೧೧ ।



“ಯದಿ ಸಮರಮಪಾಸ್ಯ ನಾಸ್ತಿ ಮೃತ್ಯೋಃ ಭಯಮಿತಿ ಯುಕ್ತಮಿತೋ-  
ನ್ಯತಃ ಪ್ರಯಾತುಮ್” ವೇಣೀಂ ೩-೬ ।

ಪ್ರಹರ್ಷಃ — ಅತಿಶಯವಾದ ಅನಂದ. “ಪ್ರಹರ್ಷಃ ಪ್ರಮದಾ-  
ಧಿಕಯಮ್” ಸಾಂ ೬೦ ೬-೨೧೨ । “ರಾಜಾ — ಕಥಮಿವ  
ಸಂಪೂರ್ಣಮಪಿ ಮೇ ಮನೋರಥಂ ನಾಭಿನಂದಾಮಿ” ಶಾಕುಂ ೭ ।

ಅಪವೇಶನಮ್ — ಉಪದೇಶದ ಮಾತು, ಅವಶ್ಯ ಕರ್ತವ್ಯ  
ದಲ್ಲಿ ತೊಡಗುವಂತೆ (ಮಾಡುವುದು) ಬೋಧಿಸುವುದು.  
“ಶಿಕ್ಷಾ ಸ್ಯಾದುಪದೇಶನಮ್” ಸಾಂ ೬೦ ೬-೨೧೨ । “ಸಖಿ  
ನ ಯುಕ್ತಮಾಶ್ರಮವಾಸಿನೋ ಜನಸ್ಯ ಅಕೃತಸತ್ಕಾರಮತಿಥಿವಿಶೇಷಂ  
ವಿಸೃಜ್ಯ ಸ್ವಚ್ಛಂದತೋ ಗಮನಮ್” ಶಾಕುಂ ೧ ।

ನಾಟ್ಯೋಕ್ತಿ ನಾಟ್ಯೋಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಾಟ್ಯದಲ್ಲಿ ಉಪ-  
ಯೋಗಿಸುವ ಪಾರಿಭಾಷಿಕ ಶಬ್ದ. ನಾಟ್ಯ ನೃತ್ಯಗೀತಾದಿ  
ಉಕ್ತಿಃ । ನಾಟ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ನಟನು ತಾನೊಬ್ಬನೇ ಮಾತನಾಡಿ  
ಕೊಳ್ಳುವಾಗ ಸ್ವಗತಮ್ ಎಂದೂ ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಕೇಳಿಸುವಂತೆ  
ಇತರರೊಡನೆ ಮಾತನಾಡುವಾಗ ಪ್ರಕಾಶಮ್ ಎಂದೂ ರಹಸ್ಯ-  
ವಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವಾಗ ಅಪವಾರಿತಮ್ ಎಂದೂ ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿ  
ರುವವರೊಡನೆ ಮಾತನಾಡುವಾಗ ಜನಾಂತಿಕಮ್ ಎಂದೂ  
ಯಾವ ಪಾತ್ರವೂ ಇಲ್ಲದೆ ಯಾರೂ ಮಾತನಾಡದಿದ್ದರೂ  
ಮಾತು ಕೇಳಿಸಿದಂತೆ ನಟನಿ ಆಕಾಶದ ಕಡೆಗೆ ಉತ್ತರ  
ಕೊಟ್ಟು ಮಾತನಾಡುವಾಗ ಆಕಾಶಭಾಷಿತಮ್ ಎಂದೂ  
ಪಾರಿಭಾಷಿಕ ಶಬ್ದಗಳನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸಬೇಕು. “ಅಶ್ರಾವ್ಯಂ  
ಖಲು ಯದ್ವಸ್ತು ತದಿಹ ಸ್ವಗತಂ ಮತಮ್ । ಸರ್ವಾಶ್ರಾವ್ಯಂ ಪ್ರಕಾಶಂ  
ಸ್ಯಾತ್ತದ್ಭವೇದಪವಾರಿತಮ್ । ರಹಸ್ಯಂ ತು ಯದನ್ಯಸ್ಯ ಪರಾವೃತ್ಯ  
ಪ್ರಕಾಶಯತೇ । ತ್ರಿಪತಾಕಾಕರೇಣಾನ್ಯಾನಪವಾಯಂತಿರಾ ಕಯಾಮ್ ।  
ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಮನ್ತ್ರಣಂ ಯತ್ಸ್ಯಾತ್ತಜ್ಜನಾಂತೇ ಜನಾಂತಿಕಮ್ । ಕಿ  
ಬ್ರವೀಷೀತಿ ಯನ್ನಾಟ್ಯೇ ವಿನಾ ಪಾತ್ರಂ ಪ್ರಯುಜ್ಯತೇ । ಶ್ರುತ್ವೇವಾನುಕ್ತಮಪ್ಯಥ  
ತತ್ಸ್ಯಾದಾಕಾಶಭಾಷಿತಮ್” ಸಾಂ ೬೦ ೬-೧೩೭-೪೦ ।  
2. ನಾಟ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ನಟರು ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬೋಧಿಸಿ ಕರೆಯುವ  
ಪಾರಿಭಾಷಿಕ ಶಬ್ದ. “ನಾಟ್ಯಪರಿಭಾಷಾ” ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.

ನಾಡ ನಾಡ (ಪುಂ) ಒಳಗೆ ಟೊಳ್ಳಾಗಿರುವ ದಂಟು, ಸಸ್ಯದ  
ಟೊಳ್ಳು ದಂಟು. ಣಲ (ಬನ್ಧ) “ಞಃ” (೩-೧-೧೪೦) ।  
ಙಸ್ಯ ಲಃ ।

ನಾಡಾಯನ ನಾಡಾಯನ (ಪುಂ) ನಡೆನ ಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ-  
ದವನು. ನಡಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಮ್ “ಫಕ್” (೪-೧-೯೯) ।

ನಾಡಿ ನಾಡಿ (ಪುಂ) 1. ನಡೆನ ಮಗ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ನಾಡಿ,  
ಶರೀರದೊಳಗಿನ ಧಮನಿ. ನಲ (ಭಾಷಾರ್ಥ) + ಣಿच् “ಅच्”  
(೩-೧-೧೩೪) । “ಙಃ” (೩-೧-೧೩೯) ।

ನಾಡಿಕಾ ನಾಡಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಘಳಿಗೆ, ಅಹೋರಾತ್ರ ರೂಪ  
ವಾದ ಕಾಲದ ಅರವತ್ತನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ.

ನಾಡಿಕೀರ ನಾಡಿಕೀರ (ನಂ) ನೆಯ್ಗೆಯಲ್ಲಿ ಹಾಸು ಎಳೆಗಳ  
ನಡುವೆ ಹೊಕ್ಕು ಎಳೆಗಳನ್ನು ಹಾಯಿಸುವ ಲಾಳಿ. ನಾಡಿ  
ಕೀರಮಿವ ।

ನಾಡಿನ್ಯಮ ನಾಡಿನ್ಯಮ (ಪುಂ) 1. ಸ್ವರ್ಣಕಾರ, ಚಿನ್ನದ  
ಕೆಲಸದವನು, ಅಕ್ಕಸಾಲಿಗ. ನಾಡೀಂ ಧಮತಿ — ಧ್ಮಾ  
(ಶಬ್ದಾಗ್ನಿಸಂಯೋಗಯೋಃ) “ಖಶ್” (೩-೨-೩೦) । ಹ್ರಸ್ವಃ  
(೬-೩-೬೬) । (ವಿಂ) 2. ಕೊಳವೆಯನ್ನು ಉದಾ-  
ವವನು.

ನಾಡಿನ್ಯಯ ನಾಡಿನ್ಯಯ (ವಿಂ) ಕೊಳವೆಯ ಮೂಲಕ  
ಕುಡಿಯುವವನು, ನಡೀಂ ಧಮತಿ — ಧೇಡ್ (ಪಾನೇ) “ಖಶ್”  
(೩-೨-೩೦) । ಹ್ರಸ್ವಃ (೬-೩-೬೬) ।

ನಾಡಿ ನಾಡಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಿರೆ, ಶರೀರದೊಳಗಿನ ಧಮನಿ. ಣಲ  
(ಗನ್ಧ) + ಣಿच् “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ಙೀಃ”  
(೪-೧-೪೧) । “ನಾಡೀನಾಮುದಯಕ್ರಮೇಣ ಜಗತಃ ಪञ್ಚಾಮೃತಾ-  
ಕರ್ಷಣಾತ್” ಮಾಲತೀಂ ೪-೨ । ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಏಳುನೂರು  
(700) ನಾಡಿಗಳಿರುವುವು. ನೀರನ್ನು ಹಾಯಿಸುವ ದೊಡ್ಡ  
ಕೊಳಾಯಿಗಳಿಂದ ತೊಟ್ಟವೂ ಸಣ್ಣ ಕಾಲುವೆಗಳಿಂದ ಗದ್ದೆ  
ಗಳೂ ಪುಷ್ಟಿಗೊಳ್ಳುವಂತೆ ಶರೀರವು ಈ ರಸವಾಹಿನಿ  
ಯಾದ ನಾಡಿಗಳಿಂದ ಪುಷ್ಟಿಗೊಳ್ಳುವುದು. ಇದರಿಂದ  
ಕರಚರಣಾದಿ ಅವಯವಗಳ ಆಕುಂಚನ ಪ್ರಸಾರಣ ಭಾವಣ  
ಸ್ವಾಪ ಮುಂತಾದ ಕಾರ್ಯಗಳಿಗೆ ಸೌಕರ್ಯವಾಗುವುದು.  
ಈ ಎಲ್ಲಾ ನಾಡಿಗಳಿಗೂ ನಾಭಿಯು (ಹೊಕ್ಕುಳು) ಮೂಲ  
ಸ್ಥಾನವಾಗಿರುವುದು. ಅಲ್ಲಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೂ ಕೆಳಭಾಗಕ್ಕೂ  
ಪಾಶ್ವರ್ಥಗಳಿಗೂ ಹರಡಿಕೊಂಡಿರುವುವು. “ಸಪ್ತ ಸಿರಾ-  
ಶತಾನಿ ಭವಂತಿ, ಯಾಭಿರಿದಂ ಶರೀರಮಾರಾಮ ಇವ ಜಲಹಾರಿ-  
ಣಿಭಿಃ ಕೇದಾರ ಇವ ಚ ಕುಲ್ಯಾಭಿರಪಸ್ನಿಹತೇಜುಗೃಹ್ಯತೇ  
ಚಾಕುಂಚನಪ್ರಸಾರಣಾರ್ಥಿವಿಶೇಷಃ । ಧೂಮಪತ್ರಸೇವನಿನಾಮಿವ ತಾಸಾಂ  
ಪ್ರತಾನಾಃ । ತಾಸಾಂ ನಾಭಿರ್ಮೂಲಮ್ । ತತಃ ಪ್ರಸರಂತ್ಯುರ್ಧ್ವಮಧ-  
ಸ್ತೀರ್ಯಕ್ ಚ” ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೭-೩ । “ಯಾವತ್ಯಸ್ತು  
ಸಿರಾಃ ಕಾಯೇ ಸಂಭವಂತಿ ಶರೀರಣಾಮ್ । ನಾಭ್ಯಾಂ ಸರ್ವಾ  
ನಿಬದ್ಧಾಸ್ತಾಃ ಪ್ರತನ್ವಂತಿ ಸಮಂತತಃ” ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ  
೭-೪ । “ವ್ಯಾಪ್ತುರ್ವನ್ಯಮಿತೋ ದೇಹಃ ನಾಭಿತಃ ಪ್ರಸೃತಾಃ ಸಿರಾಃ ।  
ಪ್ರತಾನಾಃ ಪದ್ಮಿನೀಕಂದಾದ್ವಿಸಾದೀನಾಂ ಯಥಾ ಜಲಮ್” ಸುಶ್ರುತಂ  
ಶಾರೀರಂ ೭-೨೩ । ಪ್ರಾಣಗಳ ಪ್ರಾಣಗಳೆಲ್ಲಾ ನಾಭಿಯಲ್ಲಿ  
ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವುವು. ನಾಭಿಯು ಪ್ರಾಣಗಳನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿ  
ಕೊಂಡಿರುವುದು. ಚಕ್ರದ ಅರೆಕಾಲುಗಳು ಗುಂಬವನ್ನು



ಆಶ್ರಯಿಸಿರುವಂತೆ ಸಿರೆ (ನಾಡಿ) ಗಳೆಲ್ಲಾ ನಾಭಿಯಲ್ಲಿ ಸೇರಿ ಕೊಂಡಿರುವುವು. ಅದುದರಿಂದ ನಾಡಿಗಳಿಗೂ ಪ್ರಾಣಿಗಳಿಗೂ ಅಧಾರಾಧೇಯ ಭಾವವಿರುವುದು. "ನಾಭಿಸ್ಥಾ: ಪ್ರಾಣಿನಾಂ ಪ್ರಾಣಾ: ಪ್ರಾಣಾನಾಭಿವ್ಯುಪಾಶ್ರಿತಾ | ಸಿರಾಭಿರಾವೃತಾ ನಾಭಿಶ್ಚಕ್ಷುರಾಭಿರಿವಾರಕೆ:" ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೭-೫ | ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಮೂಲ ಸಿರೆ (ನಾಡಿ)ಗಳು ನಲವತ್ತು (40). ವಾತವು ಸಂಚರಿಸುವ ನಾಡಿಗಳು ಹತ್ತು (10). ಪಿತ್ತವು ಹರಿಯುವ ನಾಡಿಗಳು ಹತ್ತು (10). ಕಫ ಹರಿಯುವ ನಾಡಿಗಳು ಹತ್ತು (10). ರಕ್ತವು ಪ್ರವಹಿಸುವ ನಾಡಿಗಳು ಹತ್ತು (10).

ವಾತಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ನೂರ ಎಪ್ಪತ್ತೈದು (175) ವಾತ ನಾಡಿಗಳೂ ಪಿತ್ತಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ನೂರ ಎಪ್ಪತ್ತೈದು (175) ಪಿತ್ತನಾಡಿಗಳೂ ಕಫಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ನೂರ ಎಪ್ಪತ್ತೈದು (175) ಕಫನಾಡಿಗಳೂ ಯಕ್ಕತ್ತು (ಉದರದ ಬಲಗಡೆಯ ದೊಡ್ಡ ಮಾಂಸ ಗ್ರಂಥಿ) ಮತ್ತು ಗುಲ್ಮ (ಉದರದ ಎಡ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಅನ್ನಕೋಶದ ಹಿಂದಿರುವ ಮಾಂಸ ಗ್ರಂಥಿ)ಗಳಲ್ಲಿ ರಕ್ತವು ಪ್ರವಹಿಸುವ ನೂರ ಎಪ್ಪತ್ತೈದು (175) ರಕ್ತ ನಾಡಿಗಳೂ ಇವೆ. "ತಾಸಾಂ ಮೂಲಸಿರಾಶ್ಚತ್ವಾರಿಂಶತ್ | ತಾಸಾಂ ವಾತವಾಹಿನ್ಯೋ ದಶ | ಪಿತ್ತವಾಹಿನ್ಯೋ ದಶ | ಕಫವಾಹಿನ್ಯೋ ದಶ | ದಶ ರಕ್ತವಾಹಿನ್ಯಃ | ತಾಸಾಂ ತು ವಾತವಾಹಿನೀನಾಂ ವಾತಸ್ಥಾನಗತಾನಾಂ ಪಂಚಸಪ್ತತಿಂಶತ್ ಭವತಿ | ತಾವತ್ಯ ಏವ ಪಿತ್ತವಾಹಿನ್ಯಃ ಪಿತ್ತಸ್ಥಾನೇ | ಕಫವಾಹಿನ್ಯಶ್ಚ ಕಫಸ್ಥಾನೇ | ರಕ್ತವಾಹಿನ್ಯಶ್ಚ ಯಕೃತ್ಲಿಂಗೋ | ಏವಮೇತಾನಿ ಸಪ್ತ ಸಿರಾ-ಶತಾನಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೭-೬ |

ಈ ಎಲ್ಲಾ ನಾಡಿಗಳೂ ಶರೀರದಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವ ಸ್ಥಾನಗಳ ನಿವಾರ:

| ಸ್ಥಾನ                      | ನಾಡಿಗಳ ಸಂಖ್ಯೆ |
|----------------------------|---------------|
| <b>ಒಂದು ತೊಡೆಯಲ್ಲಿ:</b>     |               |
| ವಾತವಾಹಿನಿ                  | 25            |
| ಪಿತ್ತವಾಹಿನಿ                | 25            |
| ಕಫವಾಹಿನಿ                   | 25            |
| ರಕ್ತವಾಹಿನಿ                 | 25            |
|                            | 100           |
| <b>ಇನ್ನೊಂದು ತೊಡೆಯಲ್ಲಿ:</b> |               |
| ವಾತವಾಹಿನಿ                  | 25            |
| ಪಿತ್ತವಾಹಿನಿ                | 25            |
| ಕಫವಾಹಿನಿ                   | 25            |
| ರಕ್ತವಾಹಿನಿ                 | 25            |
|                            | 100           |

| ಸ್ಥಾನ  | ನಾಡಿಗಳ ಸಂಖ್ಯೆ |
|--|---------------|
| <b>ಒಂದು ತೋಳಿನಲ್ಲಿ:</b>                         |               |
| ವಾತವಾಹಿನಿ                                      | 25            |
| ಪಿತ್ತವಾಹಿನಿ                                    | 25            |
| ಕಫವಾಹಿನಿ                                       | 25            |
| ರಕ್ತವಾಹಿನಿ                                     | 25            |
|  | 100           |
| <b>ಇನ್ನೊಂದು ತೋಳಿನಲ್ಲಿ:</b>                     |               |
| ವಾತವಾಹಿನಿ                                      | 25            |
| ಪಿತ್ತವಾಹಿನಿ                                    | 25            |
| ಕಫವಾಹಿನಿ                                       | 25            |
| ರಕ್ತವಾಹಿನಿ                                     | 25            |
|  | 100           |
| <b>ಒಳ ಹೊಟ್ಟೆಯ ಭಾಗ:</b>                         |               |
| ಗುದ್ರಪ್ರದೇಶ ಮತ್ತು ಜನನೇಂದ್ರಿಯ ಸೇರಿರುವ ಪಿರಿಯಲ್ಲಿ |               |
| ವಾತವಾಹಿನಿ                                      | 8             |
| ಪಿತ್ತವಾಹಿನಿ                                    | 8             |
| ಕಫವಾಹಿನಿ                                       | 8             |
| ರಕ್ತವಾಹಿನಿ                                     | 8             |
|  | 32            |
| <b>ಪಾಶ್ವರಗಳಲ್ಲಿ:</b>                           |               |
| ವಾತವಾಹಿನಿ                                      | 2+2           |
| ಪಿತ್ತವಾಹಿನಿ                                    | 2+2           |
| ಕಫವಾಹಿನಿ                                       | 2+2           |
| ರಕ್ತವಾಹಿನಿ                                     | 2+2           |
|  | 16            |
| <b>ಪೃಷ್ಠದಲ್ಲಿ:</b>                             |               |
| ವಾತವಾಹಿನಿ                                      | 6             |
| ಪಿತ್ತವಾಹಿನಿ                                    | 6             |
| ಕಫವಾಹಿನಿ                                       | 6             |
| ರಕ್ತವಾಹಿನಿ                                     | 6             |
|  | 24            |
| <b>ಉದರದಲ್ಲಿ:</b>                               |               |
| ವಾತವಾಹಿನಿ                                      | 6             |
| ಪಿತ್ತವಾಹಿನಿ                                    | 6             |
| ಕಫವಾಹಿನಿ                                       | 6             |
| ರಕ್ತವಾಹಿನಿ                                     | 6             |
|  | 24            |
| <b>ವಕ್ಷಸ್ಥಿನಲ್ಲಿ:</b>                          |               |
| ವಾತವಾಹಿನಿ                                      | 10            |
| ಪಿತ್ತವಾಹಿನಿ                                    | 10            |
| ಕಫವಾಹಿನಿ                                       | 10            |
| ರಕ್ತವಾಹಿನಿ                                     | 10            |
|  | 40            |



| ಸ್ಥಾನ                | ನಾಡಿಗಳ ಸಂಖ್ಯೆ |       |
|----------------------|---------------|-------|
| <b>ಹೆಗಲ ಸಂಧಿಯು</b>   |               |       |
| <b>ಮೇಲುಭಾಗ :</b>     |               |       |
| <b>ಕಂಠದಲ್ಲಿ :</b>    |               |       |
| ವಾತವಾಹಿನಿ            | 14            |       |
| ಪಿತ್ತವಾಹಿನಿ          | 14            |       |
| ಕಫವಾಹಿನಿ             | 14            |       |
| ರಕ್ತವಾಹಿನಿ           | 14            | 56    |
| <b>ಕನಿಗಳಲ್ಲಿ :</b>   |               |       |
| ವಾತವಾಹಿನಿ            | 4             |       |
| ಪಿತ್ತವಾಹಿನಿ          | 4             |       |
| ಕಫವಾಹಿನಿ             | 4             |       |
| ರಕ್ತವಾಹಿನಿ           | 4             | 16    |
| <b>ನಾಲಗೆಯಲ್ಲಿ :</b>  |               |       |
| ವಾತವಾಹಿನಿ            | 9             |       |
| ಪಿತ್ತವಾಹಿನಿ          | 9             |       |
| ಕಫವಾಹಿನಿ             | 9             |       |
| ರಕ್ತವಾಹಿನಿ           | 9             | 36    |
| <b>ನಾಸಿಕೆಯಲ್ಲಿ :</b> |               |       |
| ವಾತವಾಹಿನಿ            | 6             |       |
| ಪಿತ್ತವಾಹಿನಿ          | 6             |       |
| ಕಫವಾಹಿನಿ             | 6             |       |
| ರಕ್ತವಾಹಿನಿ           | 6             | 24    |
| <b>ನೇತ್ರಗಳಲ್ಲಿ :</b> |               |       |
| ವಾತವಾಹಿನಿ            | 8             |       |
| ಪಿತ್ತವಾಹಿನಿ          | 8             |       |
| ಕಫವಾಹಿನಿ             | 8             |       |
| ರಕ್ತವಾಹಿನಿ           | 8             | 32    |
|                      |               | <hr/> |
|                      |               | 700   |

ತತ್ರ ವಾತವಾಹಿನಿ: ಸಿರಾ: ಏಕಸ್ಮಿನ್ ಸಕ್ವಿನ್ ಪಂಚ-  
ವಿಂಶತಿ:; ಏತೇನ ಇತರಸಕ್ವಿನ್ಬಾಹು ಚ ವ್ಯಾಖ್ಯಾತೌ । ವಿಶೇಷ-  
ತಸ್ತು ಕೋಠೇ ಚತುರ್ವಿಂಶತ್ ; ತಾಸಾಂ ಗುಡಮೇಧಾಶ್ರಿತಾ: ಶ್ರೋण्या-  
ಮಷ್ಟೌ, ದ್ವೇ ದ್ವೇ ಪಾರ್ಶ್ವಯೋ:; ಷಟ್ ಪೃಷ್ಠೇ, ತಾವತ್ಯ ಏವೋದರೇ, ದಶ  
ವಕ್ಷಸಿ । एवं ಚತ್ವಾರಿಂಶಜ್ಜನ್ಮಣಿ ಋರ್ಧ್ವಮ್ ; ತಾಸಾಂ ಚತುರ್ದಶ  
ಗ್ರೀವಾಯಾಮ್, ಕರ್ಣಯೋಶ್ಚತಸ್ಸ:; ನವ ಜಿಹ್ವಾಯಾಮ್, ಷಟ್ ನಾಸಿಕಾ-  
ಯಾಮ್, ಅಷ್ಟೌ ನೇತ್ರಯೋ: । ಏವಮೇತತ್ ಪಂಚಸಪ್ತತಿಶತಂ  
ವಾತವಾಹಿನೀನಾಂ ಸಿರಾಣಾಂ ವ್ಯಾಖ್ಯಾತಂ ಭವತಿ । ಏಷ ಏವ

ವಿಭಾಗ: ಶೇಖಣಾಮಪಿ । ಏವಮೇತಾನಿ ಸಪ್ತಸಿರಾಶತಾನಿ  
ವ್ಯಾಖ್ಯಾತಾನಿ ” ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೭-೭ ।

ಈ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ನಾಡಿಗಳೂ ಶರೀರವನ್ನು ಸಂರಕ್ಷಿಸು  
ವುವು. “ಚತುರ್ವಿಧಾ ಯಸ್ತು ಸಿರಾ: ಶರೀರೇ ಪ್ರಾಪ್ತೇ ತಾ ಮಮಸು  
ಸನ್ನಿವಿಷ್ಟಾ: । ಸ್ನಾಯುಸ್ಥಿಮಾಂಸಾನಿ ತಥೈವ ಸಂಧೀನ್ ಸಂತಪ್ಯ  
ದೇಹಂ ಪ್ರತಿಯಾಪಯಂತಿ ” ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೬-೧೮ ।

ಆದರೆ ಉಪನಿಷತ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲಾ ನಾಡಿಗಳಿಗೂ ಹೃದ  
ಯವು ಮೂಲಸ್ಥಾನವೆಂದೂ ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ನೂರ ಒಂದು  
ನಾಡಿಗಳು ಆಶ್ರಯ ಹೊಂದಿರುವವೆಂದೂ ಜೀವಾತ್ಮನು  
ಉತ್ಕ್ರಮಣಸಮಯದಲ್ಲಿ ನೂರೊಂದನೆಯದಾದ  
ಸುಷುಮ್ನಾನಾಡಿಯ ಮೂಲಕ ಉದ್ವಿಗಮವಾಗಿ  
ಶರೀರವನ್ನು ಭೇದಿಸಿಕೊಂಡು ಹೊರಟು ಮೋಕ್ಷಸಾಮ್ರಾಜ್ಯ  
ವನ್ನು ಪಡೆಯುವನೆಂದೂ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. “ಶತಂ ಚೆಕಾ  
(ಸುಷುಮ್ನಾ) ಚ ಹೃದಯಸ್ಯ ನಾಡ್ಯ: । ತಾಸಾಂ ಮೂರ್ಧಾನಮಭಿನಿ: ಸೃತಿಕಾ  
(ಸುಷುಮ್ನಾ) । ತಯೋರ್ಧ್ವಮಾಯನ್ನಮೃತತ್ವಮೇತಿ । ವಿಷ್ವಜ್ಞಾ  
ಉತ್ಕ್ರಮಣೇ ಭವಂತಿ ” ಕಠಂ ।

“ಅತ್ರೇತತ್ ಏಕಶತಂ ನಾಡಿಣಾಮ್ ; ತಾಸಾಂ ಶತಶತಮೇಕೈಕಸ್ಯಾಂ  
ದ್ವಾಸಪ್ತತಿರ್ವಾಸಪ್ತತಿ: । ಪ್ರತಿಶಾಖಂ ನಾಡೀಸಹಸ್ರಾಣಿ ಭವಂತಿ ।  
ಆಸು ವ್ಯಾನ: ಚರತಿ ” ಪ್ರಶ್ನೋಪಂ । ಹೃದಯೇ ನಾಡಿಣಾಮೇಕಶತಾ-  
ಧಿಕಂ ವರ್ತತೇ । ತಾಸಾಂ ನಾಡಿಣಾಂ ಮಧ್ಯೇ ಏಕೈಕಸ್ಯಾ: ದ್ವಾಸಪ್ತತಿ-  
ಪ್ರಭೇದಾ ಭವಂತಿ । ಏಕೈಕಂ ದ್ವಾಸಪ್ತತಿಪ್ರಭೇದಂ ಪ್ರತಿಶಾಖಾಭೂತ-  
ನಾಡೀಸಹಸ್ರಾಣಿ ಶತಂ ಶತಂ ಭವಂತಿ ” ರಙ್ಗರಾಂ ಭಾಂ ।  
“ನಾಡೀಪ್ರಕಾಶ ” ಗ್ರಂಥದಲ್ಲಿ ನಾಡಿಗಳು ಮೂರೂವರೆ  
ಕೋಟಿಗಳಿರುವವೆಂದು ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. “ಸಾರ್ಧತ್ರಿಕೋಟ್ಯೋ  
ನಾಡ್ಯೋ ಹಿ ಸ್ಥೂಲಾ: ಸೂಕ್ಷ್ಮಾಶ್ಚ ದೇಹಿಣಾಮ್ । ನಾಭಿಕಂದ-  
ನಿಬದ್ಧಾಸ್ತಾಸ್ತೀರ್ಯಗೃಹ್ವಮಧ: ಸ್ಥಿತಾ: ” । ನಾಡಿಗಳು ಈ  
ರೀತಿ ಅಸಂಖ್ಯತವಾಗಿದ್ದರೂ ಪ್ರಧಾನವಾದ ನಾಡಿಗಳು  
ಹದಿನಾರು (16). (1) ಇಡಾ, (2) ಪಿಙ್ಗಲಾ, (3) ಸುಷುಮ್ನಾ,  
(4) ಗಾಂಧಾರಿ, (5) ಹಸ್ತಿಜಿಹ್ವಾ, (6) ಪೂಷಾ, (7) ವಸುವಶಾ,  
(8) ಅಲಂಬುಷಾ, (9) ಕುಹು:; (10) ಶಕ್ಷಿಣಿ, (11) ತಾಲುಜಿಹ್ವಾ,  
(12) ಇಮಜಿಹ್ವಾ, (13) ವಿಜಯಾ, (14) ಕಾಮದಾ, (15) ಅಮೃತಾ  
ಮತ್ತು (16) ಬಹುಲಾ । “ಇಡಾ ಚ ಪಿಙ್ಗಲಾ ಚೈವ ಸುಷುಮ್ನಾ  
ಚಾಪರಾ ಸ್ಮೃತಾ । ಗಾಂಧಾರಿ ಹಸ್ತಿಜಿಹ್ವಾ ಚ ಪೂಷಾ ವಸುವಶಾ  
ತಥಾ । ಅಲಂಬುಷಾ ಕುಹುಶ್ಚೈವ ಶಕ್ಷಿಣಿ ದಶಮಿ ಸ್ಮೃತಾ ।  
ತಾಲುಜಿಹ್ವೇಮಜಿಹ್ವಾ ಚ ವಿಜಯಾ ಕಾಮದಾ ಪರಾ । ಅಮೃತಾ  
ಬಹುಲಾ ನಾಮ ನಾಡ್ಯೋ ವಾಯುಸಮೀರಿತಾ: ” । “ಷಡಧಿಕದಶ-  
ನಾಡಿಚಕ್ರಮಧ್ಯಸ್ಥಿತಾತ್ಮಾ ಹೃದಿ ವಿನಿಹಿತರೂಪ: ಸಿದ್ಧಿದಸ್ತ-  
ದ್ವಿಧಾ ಯ: । ಅವಿಚಲಿತಮನೋಭಿ: ಸಾಧಕೈರ್ಮೃಗ್ಯಮಾಣ: ಸ ಜಯತಿ  
ಪರಿಣದ: ಶಕ್ತಿಭಿ: ಶಕ್ತಿನಾಥ: ” ಮಾಲತೀಂ ೫-೧ ।



ಅಪರಿಮಿತವಾದ ಸೂಕ್ಷ್ಮನಾಡಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹದಿನಾರು ಪ್ರಧಾನ ನಾಡಿಗಳ ಸಮೂಹವೇ ರಕ್ತ ಮೇದಸ್ಸು ಮಾಂಸ ಮೊದಲಾದ ಧಾತುಗಳಿಂದ ತುಂಬಿ ಚರ್ಮದಿಂದ ಆಚ್ಛಿನ್ಯವಾಗಿರುವ ಶರೀರ ಎಂದು ಯೋಗಿಗಳ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

“ಅಪರಿಮಿತಸೂಕ್ಷ್ಮನಾಡಿಸಹಿತಪ್ರಧಾನಖಂಡನಾಡಿಸಮೂಹ ಉದಿರವಸಾಮಾನ್ಯಾದಿಧಾತುಪರಿಪೂರಿತಂ ತ್ವಗಾಚ್ಛಿನ್ಯಂ ಪಿಂಡಶಬ್ದ-ವಾಚ್ಯಂ ಶರೀರಮಿತಿ ಯೋಗಮಾರ್ಗಃ” ।

ರೋಗಿಗಳ ರೋಗಸ್ವರೂಪವನ್ನು ವೈದ್ಯನು ಪುರುಷನ ಬಲಗೈ ನಾಡಿಗಳ ಮೂಲಕವೂ ಹೆಂಗಸಿನ ಎಡಗೈ ನಾಡಿಗಳ ಮೂಲಕವೂ ಪರೀಕ್ಷಿಸಿ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ಆಗತಾನೆ ಸ್ನಾನಮಾಡಿರುವ, ನಿದ್ರೆಯಿಂದ ಎದ್ದಿರುವ, ಹಸಿವು ಬಾಯಾರಿಕೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವ ಮತ್ತು ವ್ಯಾಯಾಮದಿಂದ ಆಯಾಸಗೊಂಡಿರುವವನ ನಾಡಿಗಳು ದೇಹಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಸರಿಯಾಗಿ ತಿಳಿಸುವುದಿಲ್ಲ. “ಪುಂಸಿ ದಕ್ಷಿಣಹಸ್ತಸ್ಯ ತ್ರಿವಿಧೋ ವಾಮಹಸ್ತಸ್ಯ ತು । ಅಙ್ಗುಲಮೂಲಜಾ ನಾಡಿ ಪರಿಕ್ಷೇತ ಮಿಥಾವರಃ । ಅಙ್ಗುಲಿಮಿಹ ಸ್ತು ತ್ರಿಸೃಭಿರ್ನಾಡಿಮವಹಿತಃ ಸ್ಪೃಶೇತ್ । ತಚ್ಛೇಷ್ಠಯಾ ಸುಖಂ ದುಃಖಂ ಜಾನೀಯಾತ್ ಕುಶಲೋಽಖಿಲಮ್ । ಸದ್ಯಃ ಸ್ನಾತಸ್ಯ ಸುಪ್ತಸ್ಯ ಕ್ಷುತ್ಪಿಷ್ಣಾತಪಶೀಲಿನಃ । ವ್ಯಾಯಾಮಶಾಂತ-ದೇಹಸ್ಯ ಸಮ್ಯಕ್ನಾಡಿ ನ ಬುಧ್ಯತೇ” ಭಾವಪ್ರಂ ।

ವೈದ್ಯನು ಪ್ರತೀಕಾಲದ ಕರ್ತವ್ಯಗಳನ್ನು ನೆರವೇರಿಸಿಕೊಂಡು ಸುಖಾಸೀನನಾಗಿರುವ ರೋಗಿಯನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸಬೇಕು. “ಪ್ರಾತಃ ಕೃತಸಮಾಚಾರಃ ಕೃತಾಚಾರಪರಿಗ್ರಹಮ್ । ಸುಖಾಸೀನಃ ಸುಖಾಸೀನಂ ಪರೀಕ್ಷಾಂ ಮುಪಾಚರೇತ್” । “ವಾತಂ ಪಿತ್ತಂ ಕಫಂ ದ್ವಂದ್ವಂ ಸನ್ನಿಪಾತಂ ತಥೈವ ಚ । ಸಾಧ್ಯಾಸಾಧ್ಯವಿವೇಕಂ ಚ ಸರ್ವಂ ನಾಡಿ ಪ್ರಕಾಶಯೇತ್” । 2. ಕೊಳವೆಯಂತೆ ಉದ್ದವಾದ ವ್ರಣ, ಭಗಂದರ. 3. ನಾಳ, ಕೊಳವೆ, 4. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಗರಿಕೆ ಹುಲ್ಲು. 5. ವೇಣು ವಾದ್ಯ. 6. ಒಂದು ಘಳಿಗೆ. 7. ವೆಂಚನೆ, ಮೋಸ. “ನಾಡಿ ನಾಲೆ ವ್ರಣಾಂತರೇ । ಶಿರಾಯಾಂ ಗಂಧದ್ವಾರಾಂ ಚರ್ಯಾಂ ಕುಹನಸ್ಯ ಚ । ತಥಾ ಷಡಕ್ಷಣ-ಕಾಲೇಽಪಿ” ಮೇದಿಂ ।

**ನಾಡಿಕ ನಾಡೀಶ್ವರ (ಪುಂ)** ಕೇರದಂಟು. ನಾಡೀಶ್ವರ ಕಾಯತಿ—ಕೆ (ಶಬ್ದ) “ಕಃ” (೩-೨-೪) ।

**ನಾಡಿಕೂಟ ನಾಡೀಶ್ವರ (ನಂ)** (ವಿವಾಹಕ್ಕಾಗಿ) ವಧೂವರರ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಹೊಂದಿಕೆಗಾಗಿ ನೋಡುವ ದ್ವಾದಶ (ದಿನ, ಗಣ ಮೊದಲಾದ ಹನ್ನೆರಡು) ಕೊಟಗಲೊಂದು, ನಾಡೀ ಚಕ್ರದಲ್ಲಿ ಸೂಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಗುಂಪು.

ಅಶ್ವಿನಿ ಆದ್ಯಾ ಪುನರ್ವಸು ಉತ್ತರಫಲ್ಗುನಿ ಹಸ್ತ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ಮೂಲ ಶತಭಿಷ್ ಪೂರ್ವಾಭಾದ್ರಾ ಇವು ಪ್ರಥಮ ಪಾರ್ಶ್ವನಾಡಿ.

ಭರಣಿ ಮೃಗಶಿರ ಪುಷ್ಯ ಪೂರ್ವಫಲ್ಗುನಿ ಚಿತ್ತಾ ಅನೂರಾಧಾ ಪೂರ್ವಾಷಾಢಾ ಧನಿಷ್ಠಾ ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರಾ ಇವು ಮಧ್ಯನಾಡಿ.

ಕೃತ್ತಿಕಾ ರೋಹಿಣಿ ಆಶ್ಲೇಷಾ ಮಘಾ ಸ್ವಾತಿ ವಿಶಾಖಾ ಉತ್ತರಾಷಾಢಾ ಶ್ರವಣ ರೇವತಿ ಇವು ತೃತೀಯಪಾರ್ಶ್ವನಾಡಿ. ವಧೂವರರ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು ಒಂದೇ ನಾಡಿಗೆ ಸೇರಿರ ಕೂಡದು. ಒಂದೇ ನಾಡಿಯಾದರೂ ಒಂದೇ ರಾಶಿಯಾಗಿ ಬೇರೆ ನಕ್ಷತ್ರವಾಗಿದ್ದರೂ ಅಥವಾ ಒಂದೇ ನಕ್ಷತ್ರವಾಗಿದ್ದು ಬೇರೆ ರಾಶಿಯಾಗಿದ್ದರೂ ನಾಡೀದೋಷವಿಲ್ಲವೆಂದು ಕೆಲವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

**ನಾಡಿಕೇಲ ನಾಡೀಶ್ವರ (ಪುಂ)** ತೆಂಗಿನಮರ.

**ನಾಡಿಚಕ್ರ ನಾಡೀಶ್ವರ (ನಂ)** 1. ನಾಭಿಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಚಕ್ರ. ಸಕಲ ನಾಡಿಗಳೂ ನಾಭಿಯಿಂದ ಹೊರಟು ದೇಹದ ಎಲ್ಲಾ ಭಾಗಗಳಿಗೂ ಹರಡಿಕೊಳ್ಳುವುದರಿಂದ ನಾಭಿ ಮಂಡಲದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಚಕ್ರದಂತಿರುವುದು. ಇದು ಒಂದು ಕುಕ್ಕುಟಾಂಡದಂತಿರುವುದು. “ನಾಮಿಮಂಡಲಮಾಸಾಢ ಕುಕ್ಕುಟಾಂಡಮಿವ ಸ್ಥಿತಮ್ । ನಾಡಿಚಕ್ರಮಿಹ ಪ್ರಾಕೃತಸ್ತಸ್ಮಾನ್ನಾಡ್ಯಃ ಸಮುದಗತಾಃ” । 2. (ವಿವಾಹಕ್ಕಾಗಿ) ವಧೂವರರ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಹೊಂದಿಕೆಗಾಗಿ ನೋಡಬೇಕಾದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ (ಒಂದು ಚಕ್ರ) ಸಮೂಹ.

**ನಾಡಿಚರಣ ನಾಡೀಶ್ವರ (ಪುಂ)** ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ನಾಡಿ ನಾಲಮಿವ ಚರಣಿ ಯಸ್ಯ । “ಪಕ್ಷಿ ತು ನಾಡಿಚರಣಃ ಸ್ಯಾತ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ನಾಡಿಜಿಹ್ವ ನಾಡೀಶ್ವರ (ಪುಂ)** 1. ವಾಯುಸ, ಕಾಗೆ. ನಾಡಿವ ನಾಲಮಿವ ಜಿಹ್ವಾಸ್ಯ । “ಅಪಕೃಣ್ಣೋ ನಗರೀಬಕಃ । ಏಂದ್ರಿಶ್ಚ ನಾಡಿಜಿಹ್ವಾಸ್ಯ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 2. ಬಕಪಕ್ಷಿ. “ಅಸ್ತಿ ಖಲ್ವಿನ್ದ್ರಬುಧ್ನಂ ನಾಮ ಸರಸ್ತಸ್ಮಿನ್ನಾಡಿಜಿಹ್ವಾ ನಾಮ ಬಕಃ ಪ್ರತಿವಸತಿ ಸೋಽಸ್ಮತ್ತಶ್ಚಿರಜಾತತರಃ ತಂ ಪೃಚ್ಛ” ಭಾಂವನಂ ೨೦೨-೩ ।

**ನಾಡಿತಿಕ್ತ ನಾಡೀಶ್ವರ (ಪುಂ)** ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಬೇವಿನ ಮರ.

**ನಾಡಿವೇಹ ನಾಡೀಶ್ವರ (ಪುಂ)** ಪರಶಿವನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ.

**ನಾಡಿನಕ್ಷತ್ರ ನಾಡೀಶ್ವರ (ನಂ)** ವಿವಾಹೋಪಯುಕ್ತವಾದ ನಾಡಿಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ನಕ್ಷತ್ರ.

**ನಾಡೀಶ್ವರ ನಾಡೀಶ್ವರ (ನಂ)** ಶಸ್ತ್ರಚಿಕಿತ್ಸೆಗೆ ಬೇಕಾದ ಒಂದು ಕೊಳವೆಯಾಕಾರದ ಉಪಕರಣ. —ಸಲಕರಣೆ, —ಆಯುಧ. ನಾಡಿವ ನಾಲಿವ ಯನ್ತ್ರಮ್ । ನಾಡಿವತ್ ಮಧ್ಯ-ಸುಪಿರಂ ಯನ್ತ್ರಮ್ । ಶಸ್ತ್ರಚಿಕಿತ್ಸೆಗೆ ಬೇಕಾದ ಯಂತ್ರಗಳು



ಅರುವಿಧ. (1) ಸ್ವಸ್ತಿಕಯನ್ತ್ರಾಣಿ, (2) ಸಂದಂಶಯನ್ತ್ರಾಣಿ, (3) ತಾಲಯನ್ತ್ರಾಣಿ, (4) ನಾಡೀಯನ್ತ್ರಾಣಿ, (5) ಶಲಾಕಾಯನ್ತ್ರಾಣಿ. ಮೆತ್ತು, (6) ಉಪಯನ್ತ್ರಾಣಿ ಚೇತಿ ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೭-೫. ನಾಡೀಯಂತ್ರಗಳೂ ಇವು, ಬಗೆ. ಇವುಗಳೂ ಅನೇಕ ರೀತಿಯಲ್ಲಿರುವುವು. "ನಾಡೀಯನ್ತ್ರಾಣಿ ಅನೇಕಪ್ರಕಾರಾಣಿ ಅನೇಕಪ್ರಯೋಜನಾನಿ ಏಕತೋಮುಖಾನಿ ಉಭಯತೋಮುಖಾನಿ ಚ; ತಾನಿ ಸ್ತೋತೃಗತಶಲ್ಯೋದ್ವರ್ಣಾರ್ಥಂ ರೋಗದರ್ಶನಾರ್ಥಮ್ ಆಚೂಷಣಾರ್ಥಂ ಕ್ರಿಯಾಸೌಕರ್ಯಾರ್ಥಂ ಚೇತಿ; ತಾನಿ ಸ್ತೋತೃದ್ವಾರಪರಿಣಾಹಾನಿ ಯಥಾಯೋಗದೀರ್ಘಾಣಿ ಚ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೭-೧೩.

**ನಾಡೀವಲಯ ನಾಡೀವಲಯ (ನಂ)** ಕಾಲಪರಿಚ್ಛೇದನಕ್ಕಾಗಿ ವಲಯಾಕಾರವಾಗಿ ಮಾಡಿರುವ ಒಂದು ಯಂತ್ರ. ನಾಡಿಯಾ ವಲಯಾಕಾರವಾಗಿ ಮಾಡಿರುವ ಒಂದು ಯಂತ್ರ. ನಾಡಿಯಾ ವಲಯಾಕಾರವಾಗಿ ಮಾಡಿರುವ ಒಂದು ಯಂತ್ರ. ನಾಡಿಯಾ ವಲಯಾಕಾರವಾಗಿ ಮಾಡಿರುವ ಒಂದು ಯಂತ್ರ.

**ನಾಡೀವಲಯ ನಾಡೀವಲಯ (ಪುನಂ)** ಕೊಳವೆಯಾಕಾರದ ಒಂದು ವೃಣ, ಭಗಂದರ. (Fistula) ನಾಡಿಯಾ ವಲಯಾಕಾರವಾಗಿ ಮಾಡಿರುವ ಒಂದು ಯಂತ್ರ. ನಾಡಿಯಾ ವಲಯಾಕಾರವಾಗಿ ಮಾಡಿರುವ ಒಂದು ಯಂತ್ರ. ನಾಡಿಯಾ ವಲಯಾಕಾರವಾಗಿ ಮಾಡಿರುವ ಒಂದು ಯಂತ್ರ. ನಾಡಿಯಾ ವಲಯಾಕಾರವಾಗಿ ಮಾಡಿರುವ ಒಂದು ಯಂತ್ರ.

**ನಾಡೀಶಾಕ ನಾಡೀಶಾಕ (ಪುಂ)** ದಂಟುಕೀರೆ. ನಾಡೀಪ್ರಧಾನ: ಶಾಕ:.

**ನಾಣಕ ನಾಣಕ (ವಿಂ)** 1. ಕೃತ್ರಿಮ ಮುದ್ರೆ ಒತ್ತಿದ ಒಂದು ನಾಣ್ಯ, ವ್ಯವಹಾರದಲ್ಲಿಲ್ಲದ ಕೃತ್ರಿಮವಾದ ನಾಣ್ಯ. ನ ಆಣಕ:, ನಶಬ್ದದ "ಸಹಸುಪಾ" (೨-೧-೪) ಇತಿ ಸಮಾಸ: 1. "ತುಲಾಶಾಸನಮಾನಾನಾಂ ಕೂಟಕೃಷ್ಣಾಣಕಸ್ಯ ಚ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೨೪೦. 2. ಕುತ್ರಿತವಲ್ಲದ.

**ನಾಥ ನಾಥ (ಪುಂ)** 1. ಸ್ವಾಮಿ. ಯಜಮಾನ, ಪ್ರಭು. ನಾಥತಿ ಇಶ್ವರೋ ಭವತಿ ನಾಥ (ಯಾಚ್ಛೋಪತಾಪೇಶ್ವರಾಶಿ:ಘ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) 1. "ನಾಥೇ ಶ್ರೀಪುರುಷೋತ್ತಮೇ ತ್ರಿಜಗತಾ-ಮೇಕಾಧಿಪೇ ಚೇತಸಾ" ಮುಂ ಮಾಂ. 2. ಪತಿ, ಗಂಡ, "ನಾಥೋ ಮೇ ವಿಪರ್ಣಿ ಗತೋ ನ ಗಣಯತೇಷಾ ಸಪತ್ನೀ ಚ ಮಾಂ ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ ಮಾಮಿಹ ಪುಷ್ಪಿಣೀತಿ ಗುರವ: ಪ್ರಾಪ್ತಾ ಗೃಹಾಮ್ಯಂತರಮ್" 1.

**ನಾಥನೀಯ ನಾಥನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಬೇಕಾದ, ಯಾಚಿಸಬೇಕಾದ. 2. ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲ್ಪಡುವ, ಯಾಚಿಸ

ಲ್ಪಡುವ. 3. ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಬೇಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ನಾಥ (ಯಾಚ್ಛೋಪತಾಪೇಶ್ವರಾಶಿ:ಘ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) 1. "ನಾತ: ಪರಂ ಕಿಮಪಿ ಮೇ ತ್ವಯಿ ನಾಥನೀಯಂ ಮಾತರ್ದಯೇ ಮಯಿ ಕುರುಷ್ವ ತಥಾ ಪ್ರಸಾದಮ್" ದಂಶಂ. 4. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ. 5. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.

**ನಾಥಮಾನ ನಾಥಮಾನ (ವಿಂ)** ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ನಾಥ (ಯಾಚ್ಛೋಪತಾಪೇಶ್ವರಾಶಿ:ಘ) "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) 1.

**ನಾಥವತ್ ನಾಥವತ್ (ವಿಂ)** 1. ಪರತಂತ್ರ, ಒಬ್ಬನಿಗೆ ಅಧೀನ ನಾಗಿರುವವನು, ಒಬ್ಬನ ಆಶ್ರಯದಲ್ಲಿರುವವನು. ನಾಥೋ-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪) 1. 2. ರಕ್ಷಕನುಳ್ಳ. "ನಾಥವಂತಸ್ತವಯಾ ಲೋಕಾಸ್ತವಮನಾಥಾ ವಿಪತ್ಸಯಸೇ" ತಂ ರಾಂ ೧-೪೩. 3. ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೬) 1. -ವತೀ -ವತೀ. ಪತಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವಳು, ಗಂಡನುಳ್ಳ, ಹೆಂಗಸು.

**ನಾಥಿತ ನಾಥಿತ (ನಂ)** 1. ಪ್ರಾರ್ಥನೆ, ಯಾಚನೆ, ಬೇಡಿಕೆ. 2. ಅಪೇಕ್ಷೆ. ನಾಥಿ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" 1. (ವಿಂ) 3. ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಯಾಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಾಥಿ (ಯಾಚ್ಛೋಪತಾಪೇಶ್ವರಾಶಿ:ಘ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) 1.

**ನಾಥಮಾನ ನಾಥಮಾನ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಯಾಚಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಾಥಿ (ಯಾಚ್ಛೋಪತಾಪೇಶ್ವರಾಶಿ:ಘ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) 1.

**ನಾಡ ನಾಡ (ಪುಂ)** 1. ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ. ಣದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮) 1. "ನಾಡಸ್ತಾವದ್ವಿಕಲಕುರರೀಕೃಜಿತ ಸ್ನಿಗ್ಧತಾರಶ್ಚಿತ್ತಾಕರ್ಷಿ ಪರಿಚಿತ ಇವ ಶ್ರೋತ್ರಸಂವಾದಮೇತಿ' ಮಾಲತೀಂ ೫-೨೦. 2. ವರ್ಣಗಳ ಉಚ್ಚಾರಣೆಯ ಹನ್ನೊಂದನೆಯ ವಿಧ ಬಾಹ್ಯ ಪ್ರಯತ್ನಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಬಾಹ್ಯಪ್ರಯತ್ನಸ್ತವೇಕಾಬ ಶಬ್ದ—(1) ವಿವಾರ:, (2) ಸಂವಾರ:, (3) ಇವಾಸ:, (4) ನಾಡ: (5) ಘೋಷ:, (6) ಅಘೋಷ:, (7) ಅಲ್ಪಪ್ರಾಣ:, (8) ಮಹಾಪ್ರಾಣ: (9) ಉದಾತ್ತ:, (10) ಅನುದಾತ್ತ:, (11) ಸ್ವರಿತ: ಇತಿ 3. ಪರಬ್ರಹ್ಮಸ್ವರೂಪವಾದ ಒಂದು ಘೋಷ, ನಾಡ ಬ್ರಹ್ಮ. ಸಂಜ್ಞಾದಾನಂದಸ್ವರೂಪನಾದ ಪರಮೇಶ್ವರನಿಂದ ಒಂದು ಶಕ್ತಿಯುಂಟಾಗಿ ಅದರಿಂದ ನಾಡವೂ ಅದರಿಂದ ಬಿಂದುವೂ ಹುಟ್ಟಿದುವು. ಅದು ನಾಡ, ಬಿಂದು ಮತ್ತು ಬೀಜಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ನಾಭಿಯ ಮೇಲುಭಾಗದಲ್ಲಿ ಹೃದಯದಲ್ಲಿರುವ ಪ್ರಾಣವಾಯುವು ಬ್ರಹ್ಮರಂಧ್ರ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಅವ್ಯಕ್ತ ಶಬ್ದ ಮಾಡುವುದರಿಂದ "ನಾಡ ವೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. "ನಾಭೀಕುರ್ವ ಹೃದಿ ಸ್ಥಾನಾನು ಮಾರ್ತ



ಪ್ರಾಣಸಂಜ್ಞಕಃ । ನದತಿ ಬ್ರಹ್ಮಾನ್ಧಾಂತೇ ತೇನ ನಾದಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ” ।  
 ನಾಭಿಯ ಮೇಲುಭಾಗದಲ್ಲಿ ಆಕಾಶ, ಅಗ್ನಿ ಮತ್ತು ವಾಯು  
 ಗಳಿಂದ ಹುಟ್ಟಿ ಮುಖದಲ್ಲಿ ವ್ಯಕ್ತವಾಗಿ ಹೊರಡುವ  
 ಒಂದು ಶಬ್ದವು ನಾದವೆನಿಸುವುದು. “ಆಕಾಶಾಗ್ನಿಮಹ-  
 ಜಾತೋ ನಾಭೇರ್ಛ್ವ ಸಮುಚ್ಚರನ್ । ಮುಖೇತಿವ್ಯಕ್ತಮಾಪ್ನಾತಿ  
 ಯಃ ಸ ನಾದ ಇತಿರೀತಃ” । ಇದು ಪ್ರಾಣಿಗಳಿಂದ ಮತ್ತು  
 ಅಪ್ರಾಣಿಗಳಿಂದ ಮತ್ತು ಎರಡರಿಂದಲೂ ಹೊರಡುವುದ  
 ರಿಂದ ಮೂರು ವಿಧ. ಶರೀರದಿಂದ ಹೊರಡುವ ಶಬ್ದ  
 ಪ್ರಾಣಿಭವ. ವೀಣೆ ಪಿಟೀಲು ಮೊದಲಾದವುಗಳಿಂದ ಹೊರ  
 ಡುವ ಶಬ್ದ ಅಪ್ರಾಣಿಭವ. ಕೊಳಲು ವಾದ್ಯದಿಂದ ಹೊರ  
 ಡುವ ಶಬ್ದ ಉಭಯಭವ. “ಸ ಚ ಪ್ರಾಣಿಭವೋಪ್ರಾಣಿ-  
 ಭವಶ್ಚೋಭಯಸಮ್ಮವಃ । ಆದ್ಯಃ ಕಾಯಭವೋ ವೀಣಾದಿಭವಸ್ತು  
 ದ್ವಿತೀಯಕಃ । ತೃತೀಯೋಪಿ ಚ ವಂಶಾದಿಭವ ಇತ್ಯಂ ತ್ರಿವಿಧಾ ಮತಃ” ।  
 ಬ್ರಹ್ಮನ ಸ್ಥಾನವಾದ ಬ್ರಹ್ಮಗ್ರಂಥಿಯ ಮಧ್ಯಭಾಗದಲ್ಲಿ  
 ಪ್ರಾಣವಿರುವುದು. ಅದರಿಂದ ಅಗ್ನಿಯು ಉತ್ಪನ್ನವಾಗು  
 ವುದು. ಅಗ್ನಿ ಮತ್ತು ವಾಯುಸಂಯೋಗದಿಂದ ನಾದವು  
 ಹುಟ್ಟುವುದು. ನಾದವಿಲ್ಲದೆ ಸಂಗೀತವಿಲ್ಲ. ನಾದವಿಲ್ಲದೆ  
 ಸ್ವರವಿಲ್ಲ. ನಾದವಿಲ್ಲದೆ ಯಾವ ರಾಗವೂ ಇಲ್ಲ. ಅದುದ  
 ರಿಂದ ಜಗತ್ತು ನಾದಮಯವಾದುದು. ನಾದವಿಲ್ಲದೆ  
 ಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲ. ಜ್ಞಾನ ಸಂಪಾದಿಸಿದ ಹೊರತು ಪರಶಿವನ  
 ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವಿಲ್ಲ. ಜ್ಯೋತಿಯು ನಾದರೂಪವಾದುದು.  
 ಶ್ರೀ ಹರಿಯೂ ನಾದಸ್ವರೂಪನು. “ಯದುಕ್ತಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಣಃ  
 ಸ್ಥಾನಂ ಬ್ರಹ್ಮಾನ್ಧಿಶ್ಚ ಯೋ ಮತಃ । ತನ್ಮಧ್ಯೇ ಸಂಸ್ಥಿತಾಃ ಪ್ರಾಣಾಃ  
 ಪ್ರಾಣಾದ್ವಹ್ನಿಸಮುಕ್ತವಃ । ವಹ್ನಿಮಾರುತಸಂಯೋಗಾನ್ನಾದಃ ಸಮುಪ-  
 ಜಾಯತೇ । ನ ನಾದೇನ ವಿನಾ ಗೀತಂ ನ ನಾದೇನ ವಿನಾ ಸ್ವರಃ ।  
 ನ ನಾದೇನ ವಿನಾ ರಾಗಸ್ತಸ್ಮಾನ್ನಾದಾತ್ಮಕಂ ಜಗತ್ । ನ ನಾದೇನ  
 ವಿನಾ ಜ್ಞಾನಂ ನ ನಾದೇನ ವಿನಾ ಶಿವಃ । ನಾದರೂಪಂ ಪರಂ ಜ್ಯೋತಿಃ  
 ನಾದಿರೂಪಿ ಪರಂ ಹರಿಃ” ಸಂ ದಾಂ । 4. ಒಂದು ಯೋಗದ  
 ಹೆಸರು. ನಕಾರಂ ಪ್ರಾಣನಾಮಾನಂ ದಕಾರಮನಲಂ ವಿಧುಃ । ಜಾತಃ  
 ಪ್ರಾಣಾಗ್ನಿಸಂಯೋಗಾತ್ ತೇನ ನಾದೋಽಭಿಧೀಯತೇ” ।

**ನಾದನ ನಾದನ** (ನಂ) 1. ಶಬ್ದ ಮಾಡಿಸುವುದು. 2. ಸದ್ದು  
 ಮಾಡಿಸುವುದು. 3. ಧ್ವನಿ ಹೊರಡಿಸುವುದು. ಣದ  
 (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) + ಣಿच् “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-115) ।

**ನಾದನೀಯ ನಾದನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದ ಮಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ.  
 2. ಧ್ವನಿ ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ಣದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) + ಣಿच्  
 “ಅನೀಯರ್” (3-1-96) । 3. ಶಬ್ದ ಮಾಡಿಸಬೇಕಾದ.

**ನಾದಯತ್ ನಾದಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದ ಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ.  
 2. ಧ್ವನಿ ಹೊರಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಣದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) +  
 ಣಿच् “ಶತ್” (3-2-124) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಙೀಪ್” (4-1-6) ।

-ಯಂತಿ -ಯಂತಿ. “ನಾದಯಂತೋ ದಿಶಃ ಸರ್ವಾಃ ಕರ್ಣತ್ರಸ್ತಾ  
 ವಿಚೇತಸಃ” ಭಾಂ ಕರ್ಣಂ 44-92 ।

**ನಾದಯಿತವ್ಯ ನಾದಯಿತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದ ಮಾಡಿಸ  
 ಲ್ಪಡುವ. 2. ಧ್ವನಿ ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ಣದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ  
 ಶಬ್ದೇ) + ಣಿच् “ತವ್ಯಃ” (3-1-96) ।

**ನಾದಿತ ನಾದಿತ** (ನಂ) 1. ನಾದ, ಶಬ್ದ. 2. ಧ್ವನಿ. ಣದ  
 (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) + ಣಿच् ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (3-3-114) ।  
 (ವಿಂ) 3. ಶಬ್ದ ಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಧ್ವನಿ ಹೊರಡಿ  
 ಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಣದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) + ಣಿच् “ಕ್ತಃ”  
 (3-2-102) ।

**ನಾದಿತವತ್ ನಾದಿತವತ್** (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದ ಮಾಡಿಸಿದವನು.  
 2. ಧ್ವನಿ ಹೊರಡಿಸಿದವನು. ಣದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) + ಣಿच्  
 “ಕ್ತವತ್” (3-2-102) ।

**ನಾಡ ನಾಡ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದ ಮಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಧ್ವನಿ  
 ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ಣದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) + ಣ್ಯತ್  
 (3-1-124) ।

**ನಾದವತ್ ನಾದವತ್** (ಛಂ) 1. ನಾದರೂಪವಾದ ಬಾಹ್ಯ  
 ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ವರ್ಣ. ನಾದೋ ಬಾಹ್ಯ-  
 ಪ್ರಯತ್ನಭೇದೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್” (4-2-94) । (ವಿಂ)  
 2. ಶಬ್ದದಿಂದ ಕೂಡಿದ, 3. ಧ್ವನಿ ಸಹಿತವಾದ.

**ನಾದಿನ್ ನಾದಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಣದ  
 (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) “ಣಿಞಿಃ” (3-1-134) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ  
 “ಙೀಪ್” (4-1-6) । -ನಾದಿನಿ -ನಾದಿನೀ. “ತತಃ  
 ಪ್ರಕೋಠೇ ಹರಿಃಚಂದನಾಕ್ಷಿತೇ ಪ್ರಮಥ್ಯಮಾನಾಣವಧೀರನಾದಿನೀಮ್”  
 ರಘುಂ 3-49 । 2. ಜಿಂಕೆಯ ಜನ್ಮವನ್ನು ಪಡೆದ ಒಬ್ಬ  
 ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಗುರುವಿನ ಧೇನುವನ್ನು ಕೊಂದು ಪಿತೃ  
 ಶ್ರಾದ್ಧವನ್ನು ಮಾಡಿದ ಅಪರಾಧಕ್ಕಾಗಿ ಗರ್ಗಮಹರ್ಷಿಯ  
 ಶಿಷ್ಯರಿಗೆ ಮೃಗಜನ್ಮವು ಪ್ರಾಪ್ತವಾಯಿತು. ಅವರಲ್ಲಿ  
 ಏಳನೆಯವನು ನಾದಿ. “ಉನ್ಮುಖೋ ನಿದ್ಯವಿತ್ರಸ್ತಃ ಸ್ತಂಭಕರ್ಣೋ  
 ವಿಲೋಚನಃ । ಪಂಡಿತೋ ಧರ್ಮರೋ ನಾದೀ ನಾಮತಸ್ತೇಽಭವನ್ಮೃಗಾಃ” ।  
 (ವಿಂ) 3. ಶಬ್ದದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ನಾದೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಞಿಞಿಃ”  
 (4-2-114) ।

**ನಾದೇಯ ನಾದೇಯ** (ಛಂ) 1. ಹಬ್ಬೆ ಗಿಡ. ನದ್ಯಾ ಭವಃ  
 “ಡಕ್” (4-2-96) । 2. ನಾಗರಂಗವೃಕ್ಷ. ಹೇರಿಕೆ  
 ಗಿಡ. 3. ಕಾಶತ್ಯಣ, ಜಂಬುಹುಲ್ಲು. (ನಂ) 4. ಸೃಂಧವ  
 ಲವಣ. 5. ಸೌವೀರಾಂಜನ. (ವಿಂ) 6. ಸ್ವೀಕರಿಸಲು  
 ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ, ಅಗ್ರಾಹ್ಯವಾದ. 7. ಕೊಡಲು ಯೋಗ್ಯ  
 ವಾದ. ನ ಆದೇಯಮ್ ಅದೇಯಂ ವಾ । “ನಾದೇಯಂ ನಾದೇಯಂ ಶರದಿ



ವಸಂತೇ ಚ ನಾಡೇಯಮ್" 8. ನದಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. 9. ನದಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ನದ್ಯಾ ಜಾತ: ನದ್ಯಾ ಇದಂ ವಾ "ಢಕ್" (೪-೨-೯೭) 10. ನದಿಯಲ್ಲಿರುವ. ನದ್ಯಾ ಭವ: "ಢಕ್" (೪-೨-೯೭) 11. ನೀರು ಹಬ್ಬಿ ಗಿಡ. 12. ತಕ್ಕಿಲೆ ಗಿಡ. 13. ಭೂಮಿ ಜಂಬು, ಕಾಗೆ ಹೇರಿಳೆ. 14. ದಾಸಿವಾಳದ ಗಿಡ. "ನಾಡೇಯೋ ನಾಗರಜ್ಞೇ ಸ್ಯಾಜ್ಜಯಾಮಮ್ಬುವೇತಸೇ" ಮೇದಿಂ. "ನಾಡೇಯೋ ಜಲವೇತಸೇ. ತರ್ಕಾರ್ಯಾ ಭೂಮಿಜಮ್ಬವಾಂ ಚ ಜಪಾಯಾಂ ನಾಗರಜ್ಞಕೇ. ನಾಡೇಯಂ ಸಿಂಧುಲವಣೇ ತ್ರಿಪುತ್ವೇಷ ನದೀಭವೇ" ನಾನಾರ್ಥರಂ.

**ನಾಡೇಶ್ವರ ನಾಡೇಶ್ವರ** (ಪುಂ) ಕಾಶಿಯಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಶಿವ ಲಿಂಗ. "ನಾಡೇಶ್ವರಂ ಸಮಮ್ಯರ್ಚ್ಯ ಕೈ: ಕೈರ್ನಾಪಿ ಸುಚಿಂತಿತಮ್. ತಸ್ಮಾತ್ಕಾಶ್ಯಾಂ ಪ್ರಯತ್ನೇನ ಸೇವ್ಯೋ ನಾಡೇಶ್ವರೋ ನೃಭಿ:" ಕಾಶೀಖಂ.

**ನಾಥು -** ಯಾಚ್ಛೋಪತಾಪೇಶ್ವರಾಶಿ:ಘ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) 1. ನಾಥತೆ. 2. ನಾಥೆ. 3. ನಾಥಿತಾ. 4. ಅನಾಥಿಷ್ಠ. 5. ಇತ್ಯಾದಿ.

**ನಾನಾ ನಾನಾ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ವಿನಾ, ಹೊರತು, ಬಿಟ್ಟು, ಇಲ್ಲದೆ. ನ "ನಾನ್" (೪-೨-೨೭) 2. "ನಾನಾ ನಾರೀನಿಷ್ಠಲಾ ಲೋಕಯಾತ್ರಾ" 3. ಅನೇಕವಾಗಿ, ಬಹಳವಾಗಿ, ಬಗೆಬಗೆ ಯಾಗಿ. 4. ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿ, ಎರಡಾಗಿ. (ವಿಂ) 5. ಬಗೆ ಬಗೆಯಾದ, ಅನೇಕ ವಿಧವಾದ. "ನಾನಾಶಸ್ತ್ರಪ್ರಹರಣಾ: ಸರ್ವೇ ಯುದ್ಧವಿಶಾರದಾ:" ಗೀತಾ ೧-೯. "ನಾನಾಜಾವವಜಾನಾನಾ ಸಾ ಜನೌಘನೌಜಸಾ" ಮಾಘಂ ೧೯-೪೦. "ನಾನಾಶಬ್ದೋ ವಿನಾರ್ಥೇ ಸ್ಯಾತ್ ತಥಾನೇಕೋಭಯಾರ್ಥಯೋ:" ಮೇದಿಂ. ಇದು ಉಪ ಪದವಾದಲ್ಲಿ "ಚಿವ" ಪ್ರತ್ಯಯಾರ್ಥದಲ್ಲಿ "ಕ್ಲವ್" ಮತ್ತು "ಭೂ" ಧಾತುಗಳಿಗೆ "ಕ್ತವಾ" ಮತ್ತು "ಣಮುಲ್" ಪ್ರತ್ಯಯ ಗಳು ಬರುವುವು (೩-೪-೬೨) 6. ಸಮೂಹದಲ್ಲಿ ನಾನಾಕೃತ್ಯ ನಾನಾಕೃತ್ಯ. ಅಸಮೂಹದಲ್ಲಿ ನಾನಾಕೃತ್ವಾ ನಾನಾಕೃತ್ಯ. ನಾನಾಕಾರಮ್ ನಾನಾಕಾರಮ್. ಹೀಗೆಯೇ ನಾನಾಭೂಯ ನಾನಾ ಭೂಯ, ನಾನಾಭೂತ್ವಾ ನಾನಾಭೂತ್ಯ, ನಾನಾಭಾವಮ್ ನಾನಾ ಭಾವಮ್ ಎಂದು ರೂಪಗಳಾಗುವುವು. ಅನೇಕ ವಿಧವಾಗಿ ಮಾಡಿ. ಅನೇಕ ವಿಧವಾಗಿ ಆಗಿ.

**ನಾನಾಜಾತೀಯ ನಾನಾಜಾತೀಯ** (ವಿಂ) ಭಿನ್ನವಾದ, ಸಾಮ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಬಗೆ ಬಗೆಯಾದ, ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾದ. ನಾನಾ+ ಜಾತಿ "ಛ:" (೪-೪-೯) 1.

**ನಾನಾಂದ್ರ ನಾನಾಂದ್ರ** (ಪುಂ) ನಾದಿನಿಯ ಮಗ, ಗಂಡನ ಸಹೋದರಿಯ ಮಗ. ನನಾಂದ್ರಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೦೪) 1.

**ನಾನಾಂದ್ರಾಯಣ ನಾನಾಂದ್ರಾಯಣ** (ಪುಂ) ನಾದಿನಿಯ ಮೊಮ್ಮಗನ ಮಗ. ನನಾಂದ್ರ: ಅಪತ್ಯಂ ಯುವಾ-ನನಾಂದ್ರ "ಅನ್" (೪-೧-೧೦೪) 1. ತತೋ ಹರಿತಾದಿಂ "ಫಕ್" (೪-೧-೧೦೦) 1.

**ನಾನಾರಸ ನಾನಾರಸ** (ವಿಂ) 1. ಅನೇಕ ವಿಧ ಅಭಿರುಚಿ ಯುಳ್ಳ, ಅನೇಕ ವಿಧ ರುಚಿಯುಳ್ಳ. 2. ಅನೇಕ ವಿಧ (ಶೃಂಗಾರಾದಿ) ರಸಗಳುಳ್ಳ. ನಾನಾ ಅನೇಕಪ್ರಕಾರಾ ರಸಾ ಯತ್ರ. "ತೈಗುಣ್ಯೋದ್ಭವಮತ್ರ ಲೋಕಚರಿತಂ ನಾನಾರಸಂ ದೃಶ್ಯತೇ" ಮಾಲಂ ೧-೪.

**ನಾನಾರೂಪ ನಾನಾರೂಪ** (ನಂ) 1. ಅನೇಕ ರೂಪಗಳು, ಬಹುವಿಧ ರೂಪ. ನಾನಾ ರೂಪಾಣಿ. "ನಾನಾರೂಪಿವಿರೂಪಾಸ್ತೇ ರೂಪೈರಶುಭದರ್ಶನಾ:" ರಾಮಂ. (ವಿಂ) 2. ಅನೇಕ ವಿಧ ರೂಪಗಳುಳ್ಳ, ಅನೇಕ ಬಗೆಯ ಆಕಾರವುಳ್ಳ. ನಾನಾ ರೂಪಾಣಿ ಯಸ್ಯ. "ನಾನಾರೂಪಾಣಿ ಜಾಯಂತೇ ಬೀಜಾನಿಹ ಸ್ವಭಾವತ:" ಮನುಂ ೯-೩೮.

**ನಾನಾರ್ಥ ನಾನಾರ್ಥ** (ಪುಂ) 1. ಅನೇಕ ಅರ್ಥ. 2. ಅನೇಕ ಕಾರ್ಯ. ಅನೇಕ ಪ್ರಯೋಜನ. (ವಿಂ) 3. ಅನೇಕ ಕಾರ್ಯವುಳ್ಳ, ಅನೇಕ ರೀತಿಯ ಪ್ರಯೋಜನವುಳ್ಳ, ಅನೇಕ ಉದ್ದೇಶವುಳ್ಳ. 4. ಅನೇಕ ಅರ್ಥಗಳುಳ್ಳ. ನಾನಾ ಅರ್ಥಾ: ಪ್ರಯೋಜನಾನಿ ಅಭಿಧೇಯಾನಿ ವಾ ಯಸ್ಯ. "ನಾನಾರ್ಥಾ: ಕೇಷಾಂ ಕಾಂತಾದಿವರ್ಗೇವೇವಾತ್ರ ಕೀರ್ತಿತಾ:" ಅಮಂ. "ಹರಿ" ಪದವು ಯವ, ವಾಯು, ಇಂದ್ರ, ಚಂದ್ರ, ಸೂರ್ಯ, ವಿಷ್ಣು ಸಿಂಹ, ಕಿರಣ, ಕುದುರೆ ಮುಂತಾದ ನಾನಾರ್ಥಗಳುಳ್ಳದ್ದು ಈ ರೀತಿ ಅನೇಕಾರ್ಥಗಳುಳ್ಳ ಪದಗಳು ನಾನಾರ್ಥ ಪದಗಳು.

**ನಾನಾರ್ಥಕೋಶ ನಾನಾರ್ಥಕೋಶ** (ಪುಂ) ಅನೇಕ ಅರ್ಥ ಗಳುಳ್ಳ ಪದಗಳ ನಿಘಂಟು. ಏವಮ್ ನಾನಾರ್ಥಮಂಜರಿ ನಾನಾರ್ಥರತ್ನಮಾಲಾ, ನಾನಾರ್ಥಶಬ್ದಕೋಶ: ಇತ್ಯಾದಿ. "ಕ್ಷೀಂ ಪಯಸ್ಯಪಿ ಪದೇ ದ್ವಯವಾಚಿಭೂಯ ನಾನಾರ್ಥಕೋಶವಿಷಯೋಽಪಿ ಮೃಣೋಽಪಿ ಮಸ್ತು" ನೆಪಂ ೧೧-೭೮.

**ನಾನಾವರ್ಣ ನಾನಾವರ್ಣ** (ವಿಂ) ಅನೇಕ ವಿಧ ಬಣ್ಣಗಳುಳ್ಳ, ಬೆತ್ತವರ್ಣವುಳ್ಳ. ನಾನಾ ವರ್ಣಾ: ಶುಕ್ಲಾದಿಗುಣಾ: ಯಸ್ಯ.

**ನಾನಾವಿಧ ನಾನಾವಿಧ** (ವಿಂ) 1. ಅನೇಕ ವಿಧವಾದ ಅನೇಕ ಬಗೆಯ, ಅನೇಕ ರೀತಿಯ. ನಾನಾ ಅನೇಕ ವಿಧಾ ಪ್ರಕಾರಾ ಯಸ್ಯ. "ನಾನಾರತ್ನಜ್ಯೋತಿಷಾಂ ಸಂನಿಪಾತೇಶ್ಚಕ್ಷ್ಮಂ ಪ್ವಂತ:ಸಾನ್ತು ವಪ್ರಾಂತರೇಷು" ಕಿರಾಂ ೪-೩೬. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಅನೇಕ ವಿಧವಾಗಿ, ಅನೇಕ ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ, ಅನೇಕ ಬಗೆ ಯಾಗಿ. "ನಾನಾವಿಧಾವಿಷ್ಕೃತಸಾಮಜಸ್ವರ: ಸಹಸ್ರವತ್ಸಮ ಚಪಲೇದ್ದುರಧ್ಯಯ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೧೧.

**ನಾಂತರೀಯಕ ನಾಂತರೀಯಕ** (ವಿಂ) ಅವಿನಾಶಭೂತವಾದ ಒಂದನ್ನು ಇನ್ನೊಂದು ಬಿಟ್ಟು ಇಲ್ಲದಿರುವ. ನ ಅಂತರ ವಿನಾ ಭವ: "ಛ:" (೪-೨-೧೩೮) 1. ತತ: ಸ್ವಾ "ಕ:" 1. ತದಭಾವೇ ತದಭಾವ: ಅದಿದ್ದರೆ ಅದೂ ಇರುವುದು.



ಅದಿಲ್ಲದೆ ಅದೂ ಇಲ್ಲ ಎಂಬ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯುಳ್ಳದ್ದು.  
 ತತ್ಸತ್ತಾನಿಯತಸತ್ತಾಕಃ । “ಪ್ರತಿಬಂಧಕಾಭಾವೇ ನಾನ್ತರೀಯಕಾ  
 ಅರ್ಥೋತ್ಪತ್ತಿಃ” ಇತ್ಯಾದಿ.

नान्त्र ल० ३ (न०) सू० ३, सू० १३, क० १३.  
 णम (प्रहृत्ये शब्दे) "ष्ट्रन्" (उ० ४-१५९)।  
 आदिवद्विभ्र।

ನಾಂದಿಕರ ಸಾಂದಿಕರ (ಪುಂ) ಸಾಬಕಗಳಲ್ಲಿ ಸಾಂದಿಯನ್ನು  
(ಮಂಗಳವನ್ನು) ಪಠಿಸುವ ಸೂತ್ರಧಾರ. ನಾಂದಿ ಕರೋತಿ—  
ಓ ಕೃಜ್ (ಕರಣ) "ಢ:" (೩-೨-೨೧) । ಷ್ಠೀತತುರುಷ: ।  
ಪೂರ್ವಪದಸ್ಯ ವಾ ಹ್ರಸ್ವ: (೬-೩-೬೩) । ಪಕ್ಷೇ ನಾಂದೀಕರ:  
ಸಾಂದೀಕರ:.

ನಾಂದೀ ನಾಂದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಾಟಕದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ  
ಪರಿಸುವ ಮಂಗಳ ಶ್ಲೋಕ, ನಾಟಕದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ  
ಆಶೀರ್ವಾದ ಸಮೇತವಾಗಿ ಪರಿಸುವ ದೇವತೆಗಳು ದ್ವಿಜರು  
ಮತ್ತು ನೃಪರು ಮೊದಲಾದವರ ಸ್ತೋತ್ರರೂಪವಾದ  
ಮಂಗಳ ಪದ್ಯ. ನಂದಂತಿ ದೇವಾದಯಃ ಅತ್ರ—ಠ ನದಿ  
(ಸಮೃದ್ಧಿ) “ ಷಕ್ ” ( ೩-೩-೧೨೧ ) ।

ರಂಗಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ಸಂಭವಿಸಬಹುದಾದ ವಿಘ್ನಗಳ ಪರಿಹಾರ  
ಕ್ಕಾಗಿ ಮೊದಲು ಸೂತ್ರಧಾರನು ನಾಂದೀಪಠನ ಮಾಡ  
ಬೇಕು. "ಆಶೀರ್ವಚನಸಂಯುಕ್ತಾ ಸ್ತುತಿರ्यಸ್ಮಾತ್ ಪ್ರಯುಜ್ಯತೇ ।  
ದೇವದ್ವಿಜನೃಪಾದೀನಾಂ ತಸ್ಮಾನ್ನಾಂದೀತಿ ಸಂಜ್ಞಿತಾ" ಸಾಂ ದಂ  
೬-೨೪ ।

ಸಭಾಪತಿ ಪ್ರೋಕ್ಷಕರು ಗಾಯಕರು ನಟನಟಿಯರು ಎಲ್ಲರೂ ಪರಸ್ಪರ ಪ್ರೀತಿ ವಿಶ್ವಾಸಗಳಿಂದ ಕಲಿತು ಸಂತೋಷ ಪಡುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ರಂಗವೆಂದೂ ಇದು ನಾಟಕದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಪೂರ್ವರಂಗ ವೆಂದೂ ಹೆಸರು. “ಸಭಾಪತಿ: ಸಭಾಸಮ್ಯಾ: ಗಾಯಕಾ ವಾದಕಾ ಅಪಿ । ನದೀ ನಟಶ್ಚ ಮೋದಂತೆ ಯತ್ರಾನ್ಯೋನ್ಯಾನುರಂಜನಾತ್ । ಅತೋ ರಂಜಿತಃ ಇತಿ ಜ್ಞೇಯ: ಪೂರ್ವಂ ಯತ್ಸ ಪ್ರಕಲ್ಪತೇ । ತಸ್ಮಾದಯಂ ಪೂರ್ವರಂಜಿತಃ ಇತಿ ವಿವಿಧಿಃ ಲಿಖ್ಯತೇ” ಭಾವಪ್ರಕಾಂ ।

ಅನಂತರ ಸಭಾಪತಿ ಮತ್ತು ಸಾಮಾಜಿಕರ ಪೂಜೆ ನಡೆದು ಕವಿ ಮತ್ತು ಕಾವ್ಯದ ಪ್ರಶಂಸೆಯಾಗಬೇಕು. ಪೂರ್ವರಂಗಾಂಗಗಳಾದ ಇವೆಲ್ಲವೂ ನಡೆದರೂ ವಿಘ್ನ ಪ್ರಶಮನಕ್ಕಾಗಿ ನಾಂದಿಯನ್ನು ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಪಡಿಸಬೇಕು. “ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರಾದಿಕಾನ್ಯಜ್ಞಾನ್ಯಸ್ಯ ಭೂಯಾಸಿ ಯದಪಿ । ತಥಾಪ್ಯ-ವಶ್ಯಂ ಕರ್ತವ್ಯಾ ನಾಂದೀ ವಿघ्नोपशान्तये” ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೩ ।

ವಿಘ್ನಶಾಂತಿಗಾಗಿ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಆಶೀರ್ವಚನಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇವದ್ವಿಜನ್ಯಪಾದಿಗಳ ಸ್ತುತಿಯು

ಸೋತ್ರದಿಂದ ದೇವತೆಗಳನ್ನೂ ಆಶೀರ್ವಾದಗಳಿಂದ ಸಾಮಾಜಿಕರನ್ನೂ ಆನಂದಪಡಿಸುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಸಾಂದಿ ಯೆಂದು ಹೆಸರು. ನಂದಯತಿ ಆನಂದಯತಿ ಸ್ತವೇನ ದೇವಾನ್ ಆಶೀರ್ವಚನೇನ ಸಾಮಾಜಿಕಾನ್ ಇತಿ ನಾಂದೀ । “ಆಶೀರ್ವಚನ- ಸಂಯುಕ್ತಾ ಸ್ತುತೀರ್ಯಸ್ಮಾತ್ಪ್ರಯುಜ್ಯತೇ । ದೇವದ್ವಿಜನೃಪಾದೀನಾಂ ತಸ್ಮಾ- ನ್ನಾಂದೀತಿ ಸಂಜ್ಞಿತಾ ” ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೪ । “ಆಶೀರ್ನಮಸ್ಕ್ರಿಯಾ- ರೂಪಃ ಶಲೋಕಃ ಕಾವ್ಯಾರ್ಥಸೂಚಕಃ । ನಾಂದೀತಿ ಕಥ್ಯತೇ ” ಭರತಃ ।

ಸೂತ್ರಧಾರನು ನಾಂದಿಯನ್ನು ಪರಿಸಿ ನಿರ್ಗಮಿಸಿದ  
ನಂತರ ಅವನಂತೆಯೇ ಮತ್ತೊಬ್ಬನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಕವಿ  
ಕಾವ್ಯಗಳ ಪ್ರಶಂಸೆಮಾಡಿ ನಾಟ್ಯವಸ್ತುವನ್ನು ಸೂಚಿಸು  
ವನು. ಇವನು ಕಾವ್ಯಾರ್ಥವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವುದರಿಂದ  
ಇವನಿಗೆ ಸ್ಥಾಪಕನೆಂದು ಹೆಸರು. “ ನಾಂದೀಂ ಪ್ರಯುಜ್ಯ ನಿಷ್ಕ್ರಾ-  
ಮೇತ್ ಸೂತ್ರಧಾರಃ ಸಹಾನುಗಃ । ಸ್ಥಾಪಕಃ ಪ್ರವಿಶತ್ಪಶ್ಚಾತ್ಸೂತ್ರಧಾರ-  
ಗುಣಾಕೃತಿಃ । ಪೂರ್ವರಂಜನಂ ವಿಧಾಯಾದೌ ಸೂತ್ರಧಾರೆ ವಿನಿಗತೇ ।  
ಪ್ರವಿಶ್ಯ ತದ್ವದಪರಃ ಕಾವ್ಯಮಾಸ್ಥಾಪಯೇನ್ನತಃ ।

ನಾಂದಿಯನ್ನು ಪಡಿಸಿ ಸೂತ್ರಧಾರನು ನಿರ್ಗಮಿಸಿದರೂ  
ನಾನ್ದಂತೆ ಸ್ವತಃ: ಎಂದು ಸ್ಥಾಪಕನಲ್ಲಿ ಸೂತ್ರಧಾರ ಪದ  
ಪ್ರಯೋಗವು ಸೂತ್ರಧಾರನ ಸಾಮ್ಯದಿಂದ. ನಾಂದಿ  
ಪದ್ಯದಲ್ಲಿ ಎಂಟು ಹನ್ನೆರಡು ಹದಿನೆಂಟು ಅಥವಾ  
ಇಪ್ಪತ್ತೆರಡು ಪದಗಳಿರಬೇಕೆಂಬ ನಿಯಮವಿದೆ. "ಯತ್ರಾ-  
ಷ್ಟಭಿರ್ದ್ವಾದಶಭಿರಷ್ಟಾದಶಭಿರೇವ ವಾ । ಧ್ವಾವಿಂಶತ್ಯಾ ಪದೇರ್ವಿಂಶ-  
ತಿ ನಾಂದಿ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾ" ।

ನಾಂದೀಪದ್ಯದ ಅರ್ಥದ ಮೂಲಕ ಅಥವಾ ಶಬ್ದಗಳ ಮೂಲಕ ಈವ್ಯಾಖ್ಯೆ ಸೂಚಿತವಾಗಿರಬೇಕು. “ಅರ್ಥತಃ ಶಬ್ದತಃ ವಾಪಿ ಮನಾಕಾವ್ಯಾರ್ಥಸೂಚನಮ್” ಪ್ರಂ ೬೦ | ವೇಣೀ ಸಂಹಾರದ ನಾಂದೀಶ್ಲೋಕದಲ್ಲಿ “ನಿಷಿಡ್ಧೇರಪ್ಯೇಭಿಃ” ಇತ್ಯಾದಿ ಪದಗಳಿಂದ ಆಚಾರ್ಯರು ಮತ್ತು ಮಿತ್ರರು ಎಲ್ಲಾ ಸಮಯದಲ್ಲೂ ಎಷ್ಟೇ ತಡೆದರೂ ದುರ್ಯೋಧನಾದಿಗಳು ದರ್ಪದಿಂದ ತಮ್ಮ ಹಟವನ್ನು ಬಿಡದೆ ಯುದ್ಧದ ಸನ್ನಾಹದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿದರೆಂಬ ವಿಷಯ ಮತ್ತು “ಸಂಭಿತ್ತಮುಕ್ತುಲಃ” ಪದದಿಂದ ಧರ್ಮರಾಜ ಮೊದಲಾದವರು ವನವಾಸದಲ್ಲಿ ಅನುಭವಿಸಿದ ಕಷ್ಟ ಅನಂತರ ಅವರು ಜಯಗಳಿಸಿ ಅನುಭವಿಸಿದ ಸುಖ ಸಂತೋಷ ಇತ್ಯಾದಿ ಕಥಾವಸ್ತು ಸೂಚಿತವಾಯಿತು.

ನಂದೀಶ್ಲೋಕವು ಅಷ್ಟಪದಾತ್ಮಕ ದ್ವಾದಶ ಪದಾತ್ಮಕ  
ಅಷ್ಟಾದಶಪದಾತ್ಮಕ ಅಥವಾ ದ್ವಾವಿಂಶತಿಪದಾತ್ಮಕ  
ವಾಗಿರಬೇಕು. “ಯತ್ರಾಷ್ಟಮಿಛಾಶಿರಾಷ್ಟಾದಶಮಿರೇವ ವಾ ।  
ದ್ವಾವಿಂಶತ್ಯಾ ಪದೈವಾಪಿ” ।



ಕೆಲವರು ಸುಬುತ ಮತ್ತು ತಿಜನ್ನಗಳು ಪದವೆಂದೂ ಇನ್ನು ಕೆಲವರು ಶ್ಲೋಕದ ಒಂದು ಪಾದವು ಪದವೆಂದೂ ಮತ್ತೆ ಕೆಲವರು ಅವಾಂತರವಾಕ್ಯಗಳು ಪದವೆಂದೂ ಹೇಳುವರು. "ಶ್ಲೋಕಪಾದಃ ಪದಂ ಕೇचित್ ಸುಪ್ತಿಙ್ಗಂತಮಯಾಪರೇ | ಪರೇವಾಂತರವಾಕ್ಯಕೇವಲಪದಂ ಪದಮುಚಿರೇ" ನಾಟಕಪ್ರಂ. 1. ಸಂತೋಷ. 3. ದೇವತಾ ಪ್ರಾರ್ಥನೆ. 4. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಏಳಿಗೆ. 5. ಮಂಗಳ.

**ನಾಂದಿಕ ನಾಂದೀಕ** (ಪುಂ) ಮನೆಯ ಬಾಗಿಲಲ್ಲಿರುವ ಮಂಗಳ ಸೂಚಕವಾದ ತೋರಣಸ್ತಂಭ. ನಾಂದಿ ಕಾಯತಿ—ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕಃ" (೩-೨-೪) |

**ನಾಂದೀಕರ ನಾಂದೀಕರ** (ಪುಂ) ನಾಟಕದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ನಾಂದೀಶ್ಲೋಕವನ್ನು ಪಠಿಸುವ ಸೂತ್ರಧಾರ. ನಾಂದಿ ಕರೋತಿ—ತು ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಕಃ" (೩-೨-೨೧) | ಷಣ್ಣಿತ್ಯುಪಃ |

**ನಾಂದೀಘೋಷ ನಾಂದೀಘೋಷ** (ಪುಂ) ಮಂಗಳಕರವಾದ ನಗಾರಿ ಮೊದಲಾದವುಗಳ ಶಬ್ದ. ನಾಂದಿ ಘೋಷಃ |

**ನಾಂದೀಪಟ ನಾಂದೀಪಟ** (ಪುಂ) ಬಾವಿಯ ಬಾಯನ್ನು ಮುಚ್ಚುವ ಕವಾಟ. ನಾಂದಿಃ ಪಟಃ | "ನಾಂದೀಮುಖೋ ನಾಂದೀಪಟೋ ವೀತಾಹೋ ಮುಖಬಂಧನೇ" ಅಭಿಂ. ವಿಂ. |

**ನಾಂದೀಮುಖ ನಾಂದೀಮುಖ** (ಪುಂ) 1. ತಾಯಿ ತಂದೆ ಮೊದಲಾದವರು. ವೃದ್ಧಿಶ್ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಉದ್ದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ತಂದೆ, ತಾತ, ಪ್ರಪಿತಾಮಹ ಮೊದಲಾದ ಪಿತೃಗಳ. ಮಾತೃ ಪಿತಾಮಹೀ ಪ್ರಪಿತಾಮಹಿ (ತಾಯಿ ತಂದೆಯ ತಾಯಿ ಮತ್ತು ತಂದೆಯ ಪಿತಾಮಹಿ), ಪಿತೃ ಪಿತಾಮಹ ಪ್ರಪಿತಾಮಹ (ತಂದೆ ತಾತ ತಂದೆಯ ತಾತ), ಸಪತ್ನೀಕರಾದ ಮಾತಾಮಹ ಮಾತೃಪಿತಾಮಹ ಮಾತೃಪ್ರಪಿತಾಮಹ (ಪತ್ನೀ ಸಹಿತರಾದ ತಾಯಿಯ ತಂದೆ ತಾಯಿಯ ತಂದೆಯ ತಂದೆ, ಅವರ ತಂದೆ) ಇವರೆಲ್ಲರೂ ನಾಂದೀಮುಖರಾದ ಪಿತೃಗಳ. ಜಾತಕರ್ಮ, ನಾಮಕರಣ, ಚೂಡಾಕರ್ಮ, ಉಪನಯನ, ಪುತ್ರೀ ಮತ್ತು ಪುತ್ರನ ವಿವಾಹ, ಸೀಮಂತ, ಗೃಹಪ್ರವೇಶ ಮೊದಲಾದ ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲಿ ಪಿತೃಗಳಾದ ಪ್ರೀತ್ಯರ್ಥವಾಗಿ ಮತ್ತು ಎಲ್ಲರ ಅಭ್ಯುದಯಕ್ಕಾಗಿ ನಾಂದೀಮುಖವನ್ನು ಆಚರಿಸಬೇಕು. "ಕನ್ಯಾಪುತ್ರವಿವಾಹೇ ಚ ಪ್ರವೇಶೇ ನವವೇಶಮನಃ | ನಾಮಕರ್ಮಣಿ ಬಾಲಾನಾಂ ಚೂಡಾಕರ್ಮಾದಿಕೇ ತಥಾ | ಸೀಮಂತೋತ್ಸವೇನ ಚೈವ ಪುತ್ರಾದಿಮುಖದರ್ಶನೇ | ನಾಂದೀಮುಖಂ ಪಿತೃಗಣಂ ಪೂಜಯೇತ್ ಪ್ರಯತೋ ಗೃಹೀ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ. ೧೩. (ನಂ) 2. ಅಭ್ಯುದಯಸಾಧನವಾದ ಒಂದು ಶ್ರಾದ್ಧ, ವೃದ್ಧಿ ಶ್ರಾದ್ಧ. ನಾಂದಿ ವೃದ್ಧಿಮುಖಮ್ | (ವಿಂ) 3. ಸಂತೋಷದ

ಮುಖವುಳ್ಳ, ನಗುಮುಖವುಳ್ಳ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಮುಖಿ —ಮುಖೀ. 4. ನಾಂದಿ ಶ್ರಾದ್ಧದಲ್ಲಿ ಭಾಗಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು.

**ನಾಂದೀವಾದಿನ್ ನಾಂದೀವಾದಿನ್** (ಪುಂ) 1. ನಾಂದೀ (ಮಂಗಳ) ಶ್ಲೋಕವನ್ನು ಪಠಿಸುವವನು. ನಾಂದಿ ವದತಿ—ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ಭೇರಿ (ನಗಾರಿ) ಯನ್ನು ಬಾರಿಸುವವನು.

**ನಾಂದೀಶ್ರಾದ್ಧ ನಾಂದೀಶ್ರಾದ್ಧ** (ನಂ) ನಾಂದಿಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಶ್ರಾದ್ಧ. ಅಭ್ಯುದಯ ಶ್ರಾದ್ಧ, ಪಿತೃಗಳಾದ ಪ್ರೀತ್ಯರ್ಥವಾಗಿ ಮತ್ತು ಎಲ್ಲರ ಅಭ್ಯುದಯಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಶ್ರಾದ್ಧ. ನಾಂದಿನಿಮಿತ್ತಂ ಶ್ರಾದ್ಧಮ್ |

**ನಾಪಿತ ನಾಪಿತ** (ಪುಂ) ದಿವಾಹೀರ್ತಿ, ಕ್ಷೌರಿಕ, ನಾಯಿಂದ. ನ+ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ತನ್" ಇಡಾಗಮಶ್ಚ (೩ಂ ೩-೮೭) | ಇವನು ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಂದ ಶೂದ್ರಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು. "ನರಾಣಾಂ ನಾಪಿತೋ ಭೂತಃ ಪಕ್ಷಿಣಾಂ ಚೈವ ವಾಯಸಃ | ದಂಢಿಣಾಂ ಚ ಸುಗಾಲಸ್ತು ಇವೇತಮಿಕ್ಷುಸ್ತಪಸ್ವಿನಾಮ್" ಪಂಚತಂ. |

**ನಾಪಿತಶಾಲಾ ನಾಪಿತಶಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕ್ಷೌರದ ಮನೆ.

**ನಾಪಿತಭಾಂಡ ನಾಪಿತಭಾಂಡ** (ನಂ) ನಾಪಿತನ ಕ್ಷೌರದ ಸಾಮಾನುಗಳ ಪೆಟ್ಟಿಗೆ.

**ನಾಭ ನಾಭ** (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. "ಶ್ರುತೋ ಭಗೀರಥಾಜ್ಜನೇ ತಸ್ಯ ನಾಭೋಽಪರೋಽಭವತ್" ಭಾಗಂ. ೯-೯-೧೬ |

**ನಾಭಸ ನಾಭಸ** (ಪುಂ) 1. ಜಾತಕದಲ್ಲಿ ಲಗ್ನದಿಂದ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿರುವ ಗ್ರಹಗಳ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಯೋಗಗಳಲ್ಲೊಂದು. (ವಿಂ) 2. ನಭಸ್ಸಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಆಕಾಶಸಂಬಂಧವಾದ. ನಾಭಸಃ ಇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) |

**ನಾಭಾಗ ನಾಭಾಗ** (ಪುಂ) 1. ವೈವಸ್ವತ ಮನುವಿನ ಒಬ್ಬ ಪುತ್ರ. 2. ಶ್ರುತನೆಂಬ ರಾಜನ ಮಗ. "ಭಗೀರಥಸುತೋ ರಾಜಾ ಶ್ರುತ ಇತ್ಯಭಿವಿಶ್ರುತಃ | ನಾಭಾಗಸ್ತು ಶ್ರುತಸ್ಯಾಸೀತ್ ಪುತ್ರಃ ಪರಮಧಾರ್ಮಿಕಃ | ಅಮ್ಬರೀಷಸ್ತು ನಾಭಾಗಃ ಸಿಂಧುದ್ವೀಪಪಿತಾಃ-ಭವತ್" ಹರಿವಂ. |

**ನಾಭಿ ನಾಭಿ** (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉದರಾವರ್ತ, ಹೊಕ್ಕುಳು. ಣಹ (ಬಂಧನ) "ಇನ್" ಭಿಷ್ವಾಂತಾದೇಶಃ (೩ಂ ೪-೧೨೫) | "ನೃಪಂ ತಮಾವರ್ತಮನೋಜನಾಭಿಃ ಸಾ ವ್ಯತ್ಯಗಾದನ್ಯವಧುರ್ಭವಿತ್ರಿ" ರಘುಂ. ೬-೫೨ | ಸುಷುಮ್ನಾ ನಾಡಿಯೊಳಗಿರುವ ಈ ನಾಭಿ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಮಣಿಪೂರವೆಂಬ ದಶದಳಪದ್ಮವಿರುವುದು. "ತದ್ಗರ್ವಂ ನಾಭಿದೇಶೇ ತು ಮಣಿಪೂರಂ ಮಹಾಪ್ರಭಮ್ | ಮೇಘಾಭಂ ವಿಶ್ವದಾಭಂ ಚ ಬಹುತೇಜೋಮಯಂ ತತಃ | ದಶಭಿಷ್ವ ದಲೈರ್ಯುಕ್ತಂ



ಛಾದಿಫಾಂತಾಕ್ಷರಾನ್ವಿತಮ್ | ಶಿವೇನಾಧಿಷ್ಠಿತಂ ಪರ್ವಂ ವಿಷ್ಣೋಃ  
ಲೋಕನಕಾರಣಮ್" ತನ್ವಸಾಂ | 2. ಬಂಡಿಯ ಚಕ್ರದ  
ತೂಬು, ಚಕ್ರದ ಮಧ್ಯಭಾಗ. "ಅರೆ: ಸಂಧಾರ್ಯತೇ ನಾಭಿ:  
ನಾಭಿ ಚಾರಾ: ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಾ:" ಪञ್ಚತಂ ೧-೮೯ | 3. ಒಬ್ಬ  
ಕ್ಷತ್ರಿಯು. 4. ಪ್ರಧಾನ, ಮುಖ್ಯ. "ಕೃತ್ಸನಸ್ಯ ನಾಭಿರ್ನೃಪ-  
ಮಂಡಲಸ್ಯ" ರಘುಂ ೧೮-೨೦ | 5. ಚಕ್ರವರ್ತಿ. 6. ಸಮಾ-  
ಪದ ಬಂಧುತ್ವ, ಹತ್ತಿರದ ನೆಂಟು. 7. ಆಗ್ನೀಧ್ರ ರಾಜನ  
ಒಂಬತ್ತು ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. "ಆಗ್ನಿಧ್ರೋ ನಾಭಿ-  
ಕಿಂಪುರುಷಹರಿವರ್ಷಲಾವೃತರಮ್ಯಕಹಿರಣ್ಮಯಕುರ್ಮದ್ರಾಶ್ವಕೇತುಮಾಲ-  
ಸಂಜ್ಞಾನವ ಪುತ್ರಾನಜನಯತ್" ಭಾಗಂ ೪-೨-೧೯ |

**ನಾಭಿಕಂಡಕ ನಾಭಿಕಂಟಕ** (ಪುಂ) ಉಬ್ಬಿರುವ ಹೊಕ್ಕುಳು,  
ಮುಂದಕ್ಕೆ ಚಾಚಿಕೊಂಡಿರುವ ಹೊಕ್ಕುಳು. ನಾಭಿ: ಕಂಡಕ  
ಇವ |

**ನಾಭಿಕೂಪ ನಾಭಿಕೂಪ** (ಪುಂ) ಬಾವಿಯಂತೆ ಆಳವಾಗಿರುವ  
ನಾಭಿ, ಕುಳಿಯಾಗಿರುವ ಹೊಕ್ಕುಳು. ನಾಭಿ: ಕೂಪ ಇವ |  
"ರೋಮಾವಲೀರಜ್ಜುಮುರೋಜಕುಂಭೋ ಗಂಧೀರಮಾಸಾಙ್ಗ ಚ ನಾಭಿ-  
ಕೂಪಮ್" ನೈಷಂ ೭-೮೪ |

**ನಾಭಿಗಂಧ ನಾಭಿಗಂಧ** (ಪುಂ) ಕನ್ನೂರಿ ಮೃಗದ ಮದ.

**ನಾಭಿಗೋಲಕ ನಾಭಿಗೋಲಕ** (ಪುಂ) ಉಬ್ಬಿರುವ ಹೊಕ್ಕುಳು,  
ಮುಂದಕ್ಕೆ ಚೆಂಡಿನಂತೆ ಚಾಚಿಕೊಂಡಿರುವ ಹೊಕ್ಕುಳು.  
ನಾಭಿ: ಗೋಲಕ ಇವ |

**ನಾಭಿಜ ನಾಭಿಜ** (ಪುಂ) 1. ನಾಭಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಚತು-  
ರ್ಮುಖ, ಬ್ರಹ್ಮ. ನಾಭಿ ವಿಷ್ಣೋರ್ನಾಭಿ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ  
(ಪ್ರಾಕುಮವಿ) "ಓ:" (೩-೨-೯೭) | (ವಿಂ) 2. ನಾಭಿ-  
ಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

**ನಾಭಿಜನ್ಮನ್ ನಾಭಿಜನ್ಮನ್** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣುವಿನ ನಾಭಿ-  
ಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಬ್ರಹ್ಮ. ನಾಭಿ ವಿಷ್ಣೋರ್ನಾಭಿ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ |  
(ವಿಂ) 2. ಹೊಕ್ಕುಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

**ನಾಭಿಜಾತ ನಾಭಿಜಾತ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣುವಿನ ನಾಭಿಯಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟಿದ ಬ್ರಹ್ಮ. ನಾಭಿ ಜಾತ: | (ವಿಂ) 2. ಹೊಕ್ಕುಳಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟಿದ.

**ನಾಭಿದಘ್ನ ನಾಭಿದಘ್ನ** (ವಿಂ) ಹೊಕ್ಕುಳಿನ ಪ್ರಮಾಣದ,  
ಹೊಕ್ಕುಳಿನವರೆಗಿನ ಅಳತೆಯು. ನಾಭಿ: ಪ್ರಮಾಣಮಸ್ಯ —  
"ದಘ್ನವ್" (೪-೨-೩೭) |

**ನಾಭಿನಾಡಿ ನಾಭಿನಾಡಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊಕ್ಕುಳು ಕುಡಿ.  
ನಾಭಿನಾಡಿ |

**ನಾಭಿನಾಲ ನಾಭಿನಾಲ** (ನಂ) ಹೊಕ್ಕುಳು ಕುಡಿ. ನಾಭಿ-  
ನಾಲಮ್ | "ತದ್ಭುಜಯ್ಯಾಚ್ಯುತನಾಭಿನಾಲಾ ಕಚ್ಚಿನ್ಮಗ್ನಿಣಾ-  
ಮನಘಾ ಪ್ರಸೂತಿ:" ರಘುಂ ೪-೭ |

**ನಾಭಿಮ್ ನಾಭಿಮ್** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣುವಿನ ನಾಭಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ  
ಚತುರ್ಮುಖ, ಬ್ರಹ್ಮ. ನಾಭಿ ಭವತಿ — ನು (ಸತ್ತಾಯಾಮ್)  
"ವಿವಪ್" (೩-೨-೧೭೯) |

**ನಾಭಿಮಾತ್ರ ನಾಭಿಮಾತ್ರ** (ವಿಂ) ಹೊಕ್ಕುಳಿನವರೆಗಿನ  
ಅಳತೆಯು, ಹೊಕ್ಕುಳಿನವರೆಗಿನ ಪ್ರಮಾಣದ. ನಾಭಿ:  
ಪ್ರಮಾಣಮಸ್ಯ "ಮಾತ್ರವ್" (೪-೨-೩೭) |

**ನಾಭಿಲ ನಾಭಿಲ** (ವಿಂ) ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ ನಾಭಿಯುಳ್ಳ,  
ಉದ್ದದ ಹೊಕ್ಕುಳುಳ್ಳ, ಪ್ರಶಸ್ತ ನಾಭಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಲವ್"  
(೪-೨-೯೭) |

**ನಾಭಿಲ ನಾಭಿಲ** (ನಂ) 1. ಹೊಗಸರ ತೊಡೆಗಳ ಸಂದು,  
ಕಬ್ಬೊಟ್ಟೆಯ ಕೆಳಭಾಗಕ್ಕೂ ತೊಡೆಗಳ ಮೇಲುಭಾಗಕ್ಕೂ  
ಮಧ್ಯೆ ಇರುವ ಗುಳಿ. 2. ಕಷ್ಟ, ತೊಂದರೆ.

**ನಾಭಿವರ್ಧನ ನಾಭಿವರ್ಧನ** (ನಂ) ಹೊಕ್ಕುಳು ಕುಡಿ-  
ಯನ್ನು ಕತ್ತರಿಸುವುದು. ನಾಭಿ: ತತ್ರತ್ಯನಾಡಘಾ: ವರ್ಧನಮ್ |  
"ಪ್ರಾಙ್ನಾಭಿವರ್ಧನಾತ್ ಪುಂಸಿ ಜಾತಕರ್ಮ ವಿಧೀಯತೇ" ಮನುಂ  
೨-೨೯ |

**ನಾಭಿವರ್ಷ ನಾಭಿವರ್ಷ** (ನಂ) ಜಂಬೂದ್ವೀಪದ ಒಂಬತ್ತು  
ವರ್ಷ (ಭೂಭಾಗ)ಗಳಲ್ಲೊಂದು, ಆಗ್ನೀಧ್ರನು ತನ್ನ  
ಒಂಬತ್ತು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಹಂಚಿಕೊಟ್ಟ ಒಂಬತ್ತು ವರ್ಷಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು. ನಾಭಿ: ಆಗ್ನಿಧ್ರಪುತ್ರಸ್ಯ ವರ್ಷ: | ಸ್ವಾಯಂಭುವ  
ಮನುವಿನ ಮಗನಾದ ಪ್ರಿಯವ್ರತ ರಾಜನು ತನ್ನ ರಥದ  
ಚಕ್ರದ ಕೊನೆಯಿಂದ ಗೆರೆಯೆಳೆದು ಸಪ್ತ ಸಮುದ್ರಗಳನ್ನೂ  
ಸಪ್ತದ್ವೀಪಗಳನ್ನೂ ಮಾಡಿ ತನ್ನ ಏಳು ಮಂದಿ  
ಮಕ್ಕಳಿಗೂ ಭಾಗಮಾಡಿಕೊಟ್ಟನು. ಹಿರಿಯ ಮಗನಾದ  
ಆಗ್ನೀಧ್ರನು ತನ್ನ ಪಾಲಿಗೆ ಬಂದ ಜಂಬೂದ್ವೀಪವನ್ನು  
ಒಂಬತ್ತು ಭಾಗಮಾಡಿ ನಾಭಿ ಮೊದಲಾದ ತನ್ನ ಒಂಬತ್ತು  
ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳಿಗೂ ಹಂಚಿದನು. ಹಿರಿಯ ಮಗನಾದ  
ನಾಭಿಯು ಪಾಲಿಗೆ ಬಂದ ಅಜನಾಭ ದೇಶಕ್ಕೆ "ನಾಭಿವರ್ಷ"  
ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ನಾಭಿಯ ಮಗ ಋಷಭ. ಋಷಭ  
ರಾಜನ ಅನಂತರ ಅವನ ಮಗನಾದ ಭರತನು ರಾಜ್ಯವಾಳಿ-  
ದನು. ಇವನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ನಾಭಿವರ್ಷಕ್ಕೆ "ಭಾರತವರ್ಷ"  
ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. "ಆಗ್ನಿಧ್ರಸುತಾಸ್ತೇ ಪಿತ್ರಾ ವಿಭಕ್ತಾ:  
ಆತ್ಮತುಲ್ಯನಾಮಾನಿ ಯಥಾಭಾಗಂ ಜಮ್ಬೂದ್ವೀಪವರ್ಷಾಣಿ ಬ್ರಹ್ಮಜು:"  
ಭಾಗಂ ೪-೨-೨೧ | ಸಮುದ್ರಕ್ಕೆ ಉತ್ತರದ ಮತ್ತು  
ಹಿಮಾಚಲದ ದಕ್ಷಿಣದ ಭೂಭಾಗವು ಭಾರತವರ್ಷ  
ವಾಯಿತು. "उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् |  
वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र सन्तति:" ವಿಷ್ಣುಪುಂ  
೨-೩-೧ |



**ನಾಮ್ಯ ನಾಭ್ಯ (ಫಂ)** 1. ಮಹಾದೇವ, ಪರಶಿವ. "ನಮೋ ನಾಭಾಯ ನಾಮ್ಯಾಯ ನಮಃ ಕಡಕಡಾಯ ಚ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೨೯೦-೯೦೧ (ವಿಂ) 2. ನಾಭಿಗೆ ಹಿತವಾದ. ನಾಮಯೇ ಹಿತಮ್ "ಯತ್" (೪-೩-೪೪) ।

**ನಾಮ ನಾಮ (ಅವ್ಯಂ)** 1. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. ನಾಮ್ಯತೇ-ನೆನ — ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ಙ:" (೩-೨-೧೦೧) । "ಎವಂ ನಾಮಾಸ್ತು" । 2. ಕುತ್ಸನೆ, ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. "ಕೋ ನಾಮಾಯ ಸವಿತುರ್ದಯೇ ಸ್ವಾಪಮೇವಂ ವಿವಶ್ತೇ" । 3. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ. "ಹಿಮಾಲಯೋ ನಾಮ ನಗಾಧಿರಾಜಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೧ । 4. ಕ್ರೋಧ, ಕೋಪ. "ಮಮಾಪಿ ನಾಮ ದಶಾನನಸ್ಯ ಪರೇರಭಿಭವಃ" । 5. ವಿಸ್ಮಯ, ಅಶ್ಚರ್ಯ. "ಅನ್ಯಥಾ ನಾಮ ಗಿರಿಮಾರೋಹತಿ" । 6. ಮಿಥ್ಯೆ, ಸುಳ್ಳು. "ಅಹಂ ಚ ಭೀತೋ ನಾಮಾವಪ್ಲುತಃ" । 7. ಸ್ಮರಣೆ. 8. ವಿಕಲ್ಪ. 9. ಊಹೆ, ಸಂಭಾವನೆ. "ನಾಮ ಕೋಪೇಽಮೃತಗಮೇ ವಿಸ್ಮಯೇ ಸ್ಮರಣೇಽಪಿ ಚ । ಸಂಭಾವ್ಯಕುತ್ಸಾಪ್ರಾಕಾಶ್ಯವಿಕಲ್ಪೇಽಪಿ ಚ ದೃಶ್ಯತೇ" ಮೇದಿಂ ।

**ನಾಮಕರಣ ನಾಮಕರಣ (ನಂ)** ಶಿಶುವು ಹುಟ್ಟಿದನಂತರ ಅದಕ್ಕೆ ಹೆಸರಿಡುವುದು, ಯಾವುದಾದರೊಂದು ಹೆಸರಿಟ್ಟು ಕರೆಯುವುದು. ಇದು ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ನಡೆಯಬೇಕಾದ ಮೋಡಶ (ಹದಿನಾರು) ಸಂಸ್ಕಾರಗಳಲ್ಲೊಂದು. ನಾಮಃ ಕರಣಂ ಯತ್ರ । ಜನಿಸಿದ ಶಿಶುವಿಗೆ ಹತ್ತು ದಿನಗಳು ಕಳೆದು ಹನ್ನೊಂದನೆಯ ಅಥವಾ ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ದಿವಸ ನಾಮಕರಣ ಮಾಡಬೇಕು. "एकादशे द्वादशे वा अहनि पिता नाम कुर्यात्" ಶ್ರುತಿಃ । ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ "ಶರ್ಮ" ಎಂದೂ ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಗೆ "ವರ್ಮ" ಎಂದೂ ವೈಶ್ಯನಿಗೆ "ಗುಪ್ತ" ಎಂದೂ ಶೂದ್ರನಿಗೆ "ದಾಸ" ಎಂದೂ ಹೆಸರಿನ ಮುಂದೆ ಸೇರಿಸಬೇಕು. "शर्मैति ब्राह्मणस्योक्तं वर्मेति क्षत्रसंश्रयम् । गुप्तदासात्मकं नाम प्रशस्तं वैश्यशूद्रयोः" । ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ ಅಪ್ರಶಸ್ತವಾದ ಅಪಶಬ್ದದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಅಶುಭವಾದ ಜುಗುಪ್ಸಾವಹವಾದ ಹೆಸರುಗಳನ್ನು ಇಡಕೂಡದು. "नार्थहीनं नचाशस्तं नापशब्दयुतं तथा । नामाङ्गल्यं जुगुप्स्यं वा नाम कुर्यात् समाक्षरम्" ವಿಷ್ಣುಪುಂ । ಹನ್ನೊಂದನೆಯ ದಿವಸ ನಾಮಕರಣ ನಡೆಯದಿದ್ದರೆ ಶುಭದಿವಸ ಶುಭನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ನಾಮಕರಣ ನಡೆಯಬೇಕು. **ಶುಭ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು :** ಅಶ್ವಿನಿ, ರೋಹಿಣಿ, ಮೃಗಶಿರ, ಪುನರ್ವಸು, ಉತ್ತರಾಷ್ಣಿ, ಸ್ವಾತಿ, ಅನೂರಾಧಾ, ಉತ್ತರಾಷಾಢಾ, ಶ್ರವಣ, ಧನಿಷ್ಠಾ, ಶತಭಿಷ, ಉತ್ತರಾ ಭಾದ್ರಾ ಮತ್ತು ರೇವತಿ.

**ನಾಮಕರ್ಮನ್ ನಾಮಕರ್ಮನ್ (ನಂ)** ಹುಟ್ಟಿದ ಶಿಶುವಿಗೆ ಹೆಸರಿಡುವ ಒಂದು ಸಂಸ್ಕಾರ.

**ನಾಮಗ್ರಾಹನ್ ನಾಮಗ್ರಾಹನ್ (ಅವ್ಯಂ)** ಹೆಸರು ಹಿಡಿದು. ನಾಮ ಗೃಹೀತ್ವಾ — ನಾಮ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಣಮುಲ್" (೩-೪-೪೮) । "ನಾಮಗ್ರಾಹಂ ಕಪಿಭಿರಶನೇಃ ಸ್ತುತಮಾನಃ ಸಮಂತಾತ್" ಮೃದ್ವಿಂ ೬-೧೪೩ ।

**ನಾಮಚೌರ ನಾಮಚೌರ (ಫಂ)** ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ಹೆಸರನ್ನು ಕದಿಯುವವನು. ಒಬ್ಬನು ತನ್ನ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಗಾಗಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಪುರುಷನೊಬ್ಬನ ಹೆಸರನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವುದು ಚೌರಯ್ಯ ರೂಪವಾದ ಅಪರಾಧವಾಗುವುದು.

**ನಾಮದ್ವಾದಶಿ ನಾಮದ್ವಾದಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಪಾರ್ವತಿಯ ಹನ್ನೆರಡು ಹೆಸರುಗಳು. (1) ಗೌರಿ, (2) ಕಾಲಿ, (3) ಉಮಾ, (4) ಭದ್ರಾ, (5) ದುರ್ಗಾ, (6) ಕಾಂತಿಃ, (7) ಸರಸ್ವತೀ, (8) ಮಂಜುಲಾ, (9) ವೈಷ್ಣವೀ, (10) ಲಕ್ಷ್ಮೀಃ, (11) ಶಿವಾ ಮತ್ತು (12) ನಾರಾಯಣಿ — ಇವು ಪಾರ್ವತಿಯ ಹನ್ನೆರಡು ಹೆಸರುಗಳು. 2. ದುರ್ಗಾದೇವಿಯ ಹನ್ನೆರಡು ಹೆಸರುಗಳಿಂದ ನಡೆಸುವ ಪೂಜೆ.

**ನಾಮಧಾತು ನಾಮಧಾತು (ಫಂ)** ಸುಬಂತ್ ಪದಗಳ ಮುಂದೆ ಬರುವ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳಿಂದ ಸಿದ್ಧವಾದ ಧಾತು. ಪುತ್ರಮಾತಮನಃ ಇಚ್ಛತಿ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಸುಬಂತ್ವವಾದ ಪುತ್ರ ಪದಕ್ಕೆ "ಕೃಚ್" (೩-೧-೮) ಪ್ರತ್ಯಯವು "ಅ" ಕಾರಕ್ಕೆ "ಕಿ" ಕಾರವೂ ಬಂದು ಪುತ್ರೀಯ ಎಂದಾಗುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ "ಸನಾಥಂತಾ ಧಾತವಃ" (೩-೧-೩೨) ಎಂಬ ಸೂತ್ರದಿಂದ ಧಾತು ಸಂಜ್ಞೆ ಬಂದು ಇದು ನಾಮಧಾತುವಾಗುವುದು. ಪುತ್ರೀಯ ಎಂಬ ಈ ನಾಮಧಾತುವಿಗೆ ತಿಪ್ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು ಬಂದು ಪುತ್ರೀಯತಿ ಇತ್ಯಾದಿ ರೂಪಗಳಾಗುವುವು.

**ನಾಮಧಾರಕ ನಾಮಧಾರಕ (ವಿಂ)** ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ ಹೆಸರನ್ನು ಮಾತ್ರ ಹೊಂದಿರುವವನು. ಮನುಷ್ಯನು ತನ್ನ ಹೆಸರಿಗೆ ತಕ್ಕ ಕರ್ತವ್ಯಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸುತ್ತಿದ್ದರೆ ಅವನ ಹೆಸರು ಅರ್ಥವತ್ತಾಗುವುದು. ಕರ್ತವ್ಯ ವಿಹೀನನಾದವನ ಹೆಸರು ಅಪ್ರಯೋಜಕವಾಗಿ ಅವನು ಅಂತಹ ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ ಹೆಸರನ್ನು ಮಾತ್ರ ಹೊಂದಿದಂತಾಗುವುದು. ನಾಮಮಾತ್ರಂ ಧರತಿ ನ ತದರ್ಥಂ ಕರೋತಿ — ಧ್ವಂ (ಧಾರಣೆ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । ಕಾಷ್ಠಮಯವಾದ ಆನೆಯು ಯುದ್ಧಾದಿಕಾರ್ಯಗಳಿಗೆ ಉಪಯೋಗವಾಗದೆ ಕೇವಲ ಆನೆ ಎಂಬ ಹೆಸರನ್ನು ಹೊಂದಿರುವಂತೆ ಮೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡದಿರುವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನು ಕೇವಲ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನೆಂಬ ಸಂಜ್ಞೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವನೇ ಹೊರತು ಯಾವ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೂ ಅರ್ಹನಲ್ಲ.



“ಯಥಾ ಕಾಷ್ಠಮಯೋ ಹಸ್ತೀ ಯಥಾ ಚರ್ಮಮಯೋ ಮೃಗಃ | ಯಶ್ಚ ವಿಪ್ರೋ-  
ನಧೀಯಾನಸ್ತ್ರಯಸ್ತೇ ನಾಮ ಬಿಭ್ರತಿ” ಮನುಂ ೨-೧೫೭ | ಅಂತೆಯೇ  
ಅರ್ಥ (ಧನ) ವಿಹೀನನಾದ ಪುರುಷನೂ ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ  
ಯಾವ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೂ ಸಮರ್ಥನಾಗುವುದಿಲ್ಲ. “ದಂಷ್ಟಾ-  
ವಿರಹಿತಃ ಸರ್ಪೋ ಮದಹೀನೋ ಯಥಾ ಗಜಃ | ತಥಾಸರ್ಥೇನ ವಿಹೀನೋಽಪಿ  
ಪುರುಷೋ ನಾಮಧಾರಕಃ” ಪञ्चತಂ ೨-೧೧ |

**ನಾಮಧಾರಿನ್ ನಾಮಧಾರಿನ್ (ವಿಂ)** ಹೆಸರನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು, ಹೆಸರಿನಿಂದ ಕರೆಯಲ್ಪಡುವವನು. ನಾಮ ಧರತಿ  
— ಧೃತ್ (ಧಾರಣೆ). “ಣಿನಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) |

**ನಾಮಧೇಯ ನಾಮಧೇಯ (ನಂ)** ಹೆಸರು, ಅಭಿಧಾನ. ನಾಮನ್  
ಸ್ವಾರ್ಥ “ಧೇಯಃ” (ವಾಂ ೪-೪-೨೫) | “ಹ್ಯಯಂಗವೀನಮಾದಾಯ  
ಘೋಷವೃದ್ಧಾನುಪಸ್ಥಿತಾನು | ನಾಮಧೇಯಾನಿ ಪೃಚ್ಛಂತೌ ವನ್ಯಾನಾಂ  
ಮಾಗ್ಗಾಣಿನಾಮ್” ರಘುಂ ೧-೪೫ |

**ನಾಮನ್ ನಾಮನ್ (ನಂ)** 1. ಹೆಸರು, ಅಭಿಧಾನ, ಒಬ್ಬ  
ವ್ಯಕ್ತಿಯನ್ನು ಕರೆಯುವ ಅಥವಾ ಒಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು  
ಹೇಳುವ ಸಂಜ್ಞಾಶಬ್ದ. ನಮ್ಯತೇ ಅಭಿಧೀಯತೇ ಅರ್ಥೋಜೇನ—  
ಗಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) “ಮನಿನ್” (ತಂ ೪-೧೫೧)  
ನಿಪಾಂ | ನಾಮಪದಗಳು ಸತ್ತ್ವ (ದ್ರವ್ಯ) ಪ್ರಧಾನ  
ವಾದುವು. “ಸತ್ತ್ವಪ್ರಧಾನಾನಿ ನಾಮಾನಿ” ನಮನ್ಯಾಖ್ಯಾತಶಬ್ದೇ  
ಗುಣಭಾವೇನ ಇತಿ ನಾಮಾನಿ | ಯಾವ ಒಂದು ಶಬ್ದವನ್ನು  
ಉಚ್ಚರಿಸಿದ ಕೂಡಲೆ ಯಾವನೊಬ್ಬ ವ್ಯಕ್ತಿಯ ಅಥವಾ  
ಯಾವುದಾದರೊಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಬೋಧವಾಗುವುದೋ  
ಆ ಶಬ್ದವು “ನಾಮ” ವಾಗುವುದು. “ಶಬ್ದೇನೋಚ್ಚರಿಸಿತೇನೇಹ  
ಯೇನ ದ್ರವ್ಯಂ ಪ್ರತೀಯತೇ | ತದಕ್ಷರವಿಧೌ ಯುಕ್ತಂ ನಾಮೇತ್ಯಾಹುರ್ಮನೀ-  
ಷಿಣಃ” ನಿಹಂ | 2. ವಾಚಕಶಬ್ದ, ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ  
ಅಥವಾ ವ್ಯಕ್ತಿಯ ಅರ್ಥವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಬ್ದ. “ಹರೇನಾಮಿ  
ಹರೇನಾಮಿ ಹರೇನಾಮಿವ ಕೇವಲಮ್ | ಕಲೋ ನಾಸ್ತೀವ ನಾಸ್ತೀವ  
ನಾಸ್ತೀವ ಗತೀರನ್ಯಥಾ” | ಇದು ಪೌರಾಣಿಕಮತ.  
3. ಪ್ರಾತಿಪದಿಕರೂಪವಾದ ಒಂದು ಶಬ್ದ, ಅರ್ಥ  
ವತ್ತಾದ ಧಾತುಭಿನ್ನವಾದ ಯಾವ ಪ್ರತ್ಯಯವೂ ಸೇರ  
ದಿರುವ ಶಬ್ದರೂಪ. “ಘಟೋಸ್ತಿ” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಘಟ ಎಂಬ  
ಶಬ್ದರೂಪವು ಪ್ರಾತಿಪದಿಕ. ಇದು ಪಾಣಿನೀಯರ ಮತ.  
ನಾಮಪದವು (1) ರೂಢ, (2) ಲಕ್ಷಕ, (3) ಯೋಗರೂಢ  
ಮತ್ತು (4) ಯೌಗಿಕ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ಅವಯವ  
ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದೆ ಕೇವಲ ಸಮುದಾಯ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಅರ್ಥವು  
ಬೋಧವಾಗುವಲ್ಲಿ ಅಂತಹ ಪದವು **ರೂಢವು**. “ಗೌಃ”  
ಎಂಬಲ್ಲಿ “ಗಮೇರ್ತಃ” (ತಂ ೨-೬೮) ಸೂತ್ರದಿಂದ ವಿಹಿತ  
ವಾದ ಪ್ರತ್ಯಯಕ್ಕೆ ಯಾವ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿಯೂ ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದೆ  
ಯೌಗಿಕವಾಗುವುದಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ “ಗೌ” ಪದವು

ರೂಢವು. ಇದು ಪ್ರಕೃತಿ ಪ್ರತ್ಯಯ ಸಮುದಾಯದಿಂದ  
“ಹಸು” ಎಂಬ ಅರ್ಥವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವುದು. ಯಾವ  
ಪದವು ತನ್ನ ಮುಖ್ಯಾರ್ಥಕ್ಕೆ ಬಾಧೆಯುಂಟಾಗಿ ಅನ್ವಯ  
ವಿಲ್ಲದೆ ಮುಖ್ಯಾರ್ಥದ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಪ್ರಕೃತವಾದ  
ಮತ್ತೊಂದು ಅರ್ಥವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವುದೋ ಅದು  
**ಲಕ್ಷಕ**. “ಗಜ್ಞಾಃ ಘೋಃ” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಜಲಮಯವಾದ  
ಗಂಗೆಯಲ್ಲಿ ವಾಸವು ಅನುಪಪನ್ನವಾದುದರಿಂದ ಮುಖ್ಯ  
ಾರ್ಥಕ್ಕೆ ಬಾಧೆಯುಂಟಾಗಿ ತನ್ನ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ತನ್ನ  
ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ತೀರರೂಪವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಲಕ್ಷಕೆ  
ಯಿಂದ ಬೋಧಿಸುವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ “ಗಜ್ಞಾ” ಪದವು  
ಗಂಗಾತೀರರೂಪವಾದ ಅರ್ಥಕ್ಕೆ ಲಕ್ಷಕವಾಗುವುದು.

ಯೋಗ (ಅವಯವ ಶಕ್ತಿ) ಮತ್ತು ರೂಢ (ಸಮು-  
ದಾಯ ಶಕ್ತಿ) ಎರಡರಿಂದಲೂ ಅರ್ಥಬೋಧವಾಗುವಲ್ಲಿ  
ಆ ಪದವು “**ಯೋಗರೂಢ**”. “ಪಕ್ಷಜ” ಪದವು  
ಪಕ್ಷಾಜ್ಞಾಯತೆ ಎಂಬ ಅವಯವಶಕ್ತಿಯಿಂದಲೂ ಅದು  
ಕಮಲದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ರೂಢವಾದುದರಿಂದ ಸಮುದಾಯ  
ಶಕ್ತಿಯಿಂದಲೂ ಕಮಲ ರೂಪವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಬೋಧಿ-  
ಸುವುದರಿಂದ ಯೋಗರೂಢ. ಅವಯವ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ತನ್ನ  
ಮುಖ್ಯಾರ್ಥವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ ಪದವು **ಯೌಗಿಕ**.  
ತುಪಚ್ (ಪಾಕೇ) + “ಫ್ಯಲ್” ಎಂಬ ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಯಿಂದ  
ನಿಷ್ಪನ್ನವಾದ “ಪಾಕಕ” ಪದವು ಅವಯವಶಕ್ತಿಯಿಂದ  
ಪಾಕಕರ್ತ (ಬೇಯಿಸುವವನು, ಅಡಿಗೆಯವನು) ಎಂಬ  
ಮುಖ್ಯಾರ್ಥವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವುದರಿಂದ ಯೌಗಿಕ.

**ನಾಮನಾಮಿಕ ನಾಮನಾಮಿಕ (ಛಂ)** ಪರಮಾತ್ಮ, ಮಹಾ  
ವಿಷ್ಣು. ನಾಮಿನಿ ನಾಮೋ ನಮನಂ ಪ್ರಹ್ಲತಾಽಸ್ಯ | “ವೈಕುಣ್ಠ  
ಅಪರಾಜಿತ ಮಾನಸಿಕ ನಾವಮಿಕ ನಾಮನಾಮಿಕ ಪರಸ್ವಾಮಿನ್”  
ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೩೪೬-೪ |

**ನಾಮನಿರ್ವೇಶ ನಾಮನಿರ್ವೇಶ (ಛಂ)** ಹೆಸರು ಹಿಡಿದು ಹೇಳು-  
ವುದು. ನಾಮನಿರ್ವೇಶಃ |

**ನಾಮಪದ ನಾಮಪದ (ನಂ)** ಒಬ್ಬ ಮನುಷ್ಯನ ಅಥವಾ  
ವಸ್ತುವಿನ ಹೆಸರನ್ನು ಹೇಳುವ ಪದ.

**ನಾಮಮಾತ್ರ ನಾಮಮಾತ್ರ (ವಿಂ)** 1. ಹೆಸರನ್ನು ಮಾತ್ರ  
ಹೊಂದಿರುವ, ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ ಹೆಸರನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ,  
ಹೆಸರಿನ ಅರ್ಥಕ್ಕೆ ತಕ್ಕ ಕೆಲಸಮಾಡಲು ಅಸಮರ್ಥ  
ನಾದ. ನಾಮ ಸಂಜೈವ ಮಾತ್ರಾ ಯಸ್ಯ | (ನಂ) 2. ಹೆಸರು  
ಮಾತ್ರ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಹೆಸರಿನಿಂದ ಮಾತ್ರ.

**ನಾಮಮಾಲಾ ನಾಮಮಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಒಂದು ಕೋಶ,  
ಒಂದು ನಿಘಂಟು.



**ನಾಮಮುಕ್ತಾ ನಾನುಮುಕ್ತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಸರನ್ನು ಕೆತ್ತಿರುವ ಉಂಗುರ. ನಾಮಾಕ್ಷರಸ್ಯ ಮುಕ್ತಾ। "ಮೋಃ ಇಯಂ ನಾಮಮುಕ್ತಾ ಕೇನೋದಾತೇನ ತತ್ರಮವತ್ಯಾ ಹಸ್ತಾಭ್ಯಾಶಂ ಪ್ರಾಪಿತಾ" ಶಾಕುಂ ೬।

**ನಾಮಯಜ್ಞ ನಾಮಯಜ್ಞ** (ಪುಂ) ಹೆಸರಿಗೆ ಮಾತ್ರ ಮಾಡುವ ಯಾಗ, ದಂಭದಿಂದ ಕೀರ್ತಿಯನ್ನು ಪಡೆಯಲು ಮಾಡುವ ಯಜ್ಞ. ನಾಮಸಮ್ಮಾನ್ವಯಿ ಯಜ್ಞಃ। "ಆತ್ಮಸಮ್ಮಾನ್ವಿತಾಃ ಸ್ತಂಭಾಃ ಧನಮಾನಮದಾನ್ವಿತಾಃ। ಯಜಂತೇ ನಾಮಯಜ್ಞೇ ದಮ್ಭೇನಾವಿಧಿಪೂರ್ವಕಮ್" ಗೀತಾ ೧೬-೧೭।

**ನಾಮಲಿಂಗ ನಾಮಲಿಂಗ** (ನಂ) 1. ಶಬ್ದದ ಲಿಂಗ, ಶಬ್ದದ ಪುಂಲಿಂಗ, ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗ ಅಥವಾ ನಪುಂಸಕಲಿಂಗ, ಪುರುಷ ಸ್ತ್ರೀ ಮತ್ತು ನಪುಂಸಕಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಚಿಹ್ನೆ. ನಾಮ್ನೋ ಲಿಂಗಮ್। (ನಂ ದ್ವಿವಂ) 2. ಹೆಸರು ಮತ್ತು ಲಿಂಗ. ನಾಮ ಚ ಲಿಂಗಂ ಚ। "ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನಮ್" ಅಮಂ। "ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗಮಪಿ ಪುಂಲಿಂಗಂ ಕ್ಲಿಬಲಿಂಗಮಿತಿ ತ್ರಿಧಾ। ಶಬ್ದ-ಸಂಸ್ಕಾರಸಿದ್ಧಯಃ ಭಾಷಯಾ ನಾಮ ಭಿನ್ನತೇ"।

**ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನ ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನ** (ನಂ) ಹೆಸರು ಮತ್ತು ಲಿಂಗಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ (ಕೋಶ) ನಿಘಂಟು. ನಾಮಾನಿ ಲಿಂಗಾನಿ ಸ್ತ್ರೀಪುಂಪುಂಸಕಾನಿ ಅನುಶಿಷ್ಯಂತೇ ವಿವಿಚ್ಯ ಬೋಧಂತೇಽನ್ - ಅನು + ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)।

**ನಾಮಶೇಷ ನಾಮಶೇಷ** (ವಿಂ) ಹೆಸರು ಮಾತ್ರ ಉಳಿದಿರುವ, ಜೀವಿಸಿಲ್ಲದ, ಮೃತನಾದ. ನಾಮಮಾತ್ರಂ ಶೇಷೋಽಸ್ಯ।

**ನಾಮಾಖ್ಯಾತ ನಾಮಾಖ್ಯಾತ** (ವಿಂ) ಹೆಸರು ಮತ್ತು ಅಖ್ಯಾತ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳನ್ನು ಹೇಳುವ ಗ್ರಂಥದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ. ನಾಮ ಚ ಆಖ್ಯಾತಂ ಚ ನಾಮಾಖ್ಯಾತೇ, ನಾಮಾಖ್ಯಾತಯೋರ್ವ್ಯಾಖ್ಯಾನೋ ಗ್ರಂಥಃ "ಠಕ್" (೪-೩-೭೨)।

**ನಾಮಾಕ್ಷ ನಾಮಾಕ್ಷ** (ವಿಂ) ಹೆಸರಿನ ಗುರುತುಳ್ಳ, ಹೆಸರಿನ ಅಕ್ಷರಗಳಿಂದ ಅಂಕಿತವಾದ. ನಾಮ ನಾಮಾಕ್ಷರಮ್ ಅಕ್ಷೋ ಯಸ್ಯ। "ನಾಮಾಕ್ಷರಾವರ್ಣಶರಾಕ್ಷಿತಕೇತುಯಷ್ಟಿಮ್" ರಘುಂ ೧೨-೧೦೩।

**ನಾಮಾದೇಶ ನಾಮಾದೇಶ** (ಅವ್ಯಂ) ಹೆಸರನ್ನು ಹಿಡಿದು ಹೇಳಿ, ಒಬ್ಬನ ಹೆಸರನ್ನು ನಿರ್ದೇಶಿಸಿ ಕರೆದು. - ನಾಮ ಆದೇಶ್ಯ - ನಾಮನ್ + ಆ + ದೇಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಣಮುಲ್" (೩-೪-೫೮)।

**ನಾಮಾನುಶಾಸನ ನಾಮಾನುಶಾಸನ** (ನಂ) ಶಬ್ದಗಳ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಕೋಶ, ನಿಘಂಟು, ನಾಮಪದಗಳ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ವಿವರಿಸುವ ಕೋಶ. ನಾಮಾನಿ ಅನುಶಿಷ್ಯಂತೇಽನ್ - ಅನು + ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)।

**ನಾಮಾಪರಾಧ ನಾಮಾಪರಾಧ** (ಪುಂ) ಭಗವಂತನ ಮತ್ತು ಅವನ ಭಕ್ತರ ಹೆಸರನ್ನು ಹೇಳಿ ನಿಂದಿಸುವುದು, -ದೂಷಿಸುವುದು, ಇಲ್ಲದ ಸಲ್ಲದ ನಾನಾ ದೋಷಗಳನ್ನು ಹೇಳಿ ಅವಮಾನಗೊಳಿಸುವುದು. ನಾಮ್ನಿ ತದ್ವಿಷಯೇ ಅಪರಾಧಃ। "ಸತಾಂ ನಿಂದಾಂ ನಾಮ್ನಾಂ ಪರಮಪರಾಧಂ ವಿತನುತೇ ಯತಃ ಕ್ಷ್ಯಾತಿ ಯಾತಸ್ತಮುಪಹಸತೇ ಗರ್ಹಯತಿ ಚ। ತಥಾ ವಿಷ್ಣೋರಿಷ್ಟಂ ಯ ಇಹ ಗುಣನಾಮಾದಿ ಸಕಲಂ ಧಿಯಾ ಭಿನ್ನಂ ಪश्यೇತ್ ಸ ಕ್ಷಲು ಹರಿನಾಮಾ-ಹಿತಕರಃ" ಪಾಪಪುಂ।

**ನಾಮಾಪರಾಧಿನ್ ನಾಮಾಪರಾಧಿನ್** (ವಿಂ) ಭಗವದ್ಭಕ್ತರ ಹೆಸರನ್ನು ಹೇಳಿ ನಿಂದಿಸಿದ ಅಪರಾಧವುಳ್ಳವನು, ಅವರ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ದೋಷಗಳನ್ನು ಹೇಳಿ ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಿದ ಅಪರಾಧವುಳ್ಳವನು.

**ನಾಮಿಕ ನಾಮಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿರುವ. ನಾಮ್ನಿ ಭವಃ "ಠಕ್" (೪-೩-೭೨)। 2. ಹೆಸರಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.

**ನಾಮಿತ ನಾಮಿತ** (ವಿಂ) ಬಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಫುಲಾಂ ನಾಮ್ಯತಿ ವಾಯಸೋಽಪಿ ಹಿ ಲತಾಂ ಯಾ ನಾಮಿತಾ ಬಹಿಣಾ" ಮೃಚ್ಛಂ ೧-೩೨।

**ನಾಮ್ಯ ನಾಮ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಬಗ್ಗಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಬಗ್ಗಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ಬಗ್ಗಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ಞತ್" (೩-೧-೧೨೪)।

**ನಾಯ ನಾಯ** (ಪುಂ) 1. ಒಯ್ಯುವುದು, ಸಾಗಿಸುವುದು. ಣಿಚ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಘಕ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಉಪಾಯ. "ನಾಯಃ ಕೋಽನ್ ಸ ಯೇನ ಸ್ಯಾಂ ಬತಾಹಂ ವಿಗತಜ್ವರಃ" ಭट्टಿಂ ೬-೮೨। 3. ನೀತಿ. "ಯಾತ ಯುಯಂ ಯಮಶ್ರಾಯಂ ದಿಶಂ ನಾಯೇನ ದಕ್ಷಿಣಾಮ್" ಭट्टಿಂ ೭-೩೬। (ವಿಂ) 4. ಒಯ್ಯುವವನು, ಸಾಗಿಸುವವನು. ಣಿಚ್ ಕರ್ತಂ "ಞಃ" (೩-೧-೧೪೨)।

**ನಾಯಕ ನಾಯಕ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಧಾನ, ಮುಖ್ಯ, ಪ್ರಮುಖ, ಅಗ್ರಗಣ್ಯ. ನಯತಿ-ಣಿಚ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಫ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಪತಿ, ಗಂಡ. "ನಾಯಕಸ್ಯ ಶಯನಾದಹರ್ಮುಖೇ ನಿರ್ಗತಾ ಮುದಮದೀಕ್ಷ್ಯ ಸುಭ್ರವಾಮ್" ನೈಷಂ ೧೮-೬೭। 3. ಹಾರದ ಮಧ್ಯದ ಮಣಿ. "ತವಾಜ್ಞಹಾರೆ ಕಿಮೇತಿ ನಾಯಕಃ ಶಿಕ್ಷಾ-ಮಣಿಶ್ಚ ದ್ವಿಜರಾಡ್ವಿದೂಷಕಃ" ನೈಷಂ ೯-೧೧೮। 4. ಪ್ರಭು, ದೊರೆ. "ಬಹುತರಗುಣದರ್ಶನಾದಮ್ಯುಪೇತಾರ್ಪದೋಃ ಕೃತೀ ತವ ವರದ ಕರೋತು ಸುಪ್ರಾತಮಹ್ಲಾಮಯಂ ನಾಯಕಃ" ಮಾಘಂ ೧೧-೬೭। 5. (ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ) ಶೃಂಗಾರಾದಿರಸಗಳ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವಗಳಾದ ರತ್ನಾದಿಗಳಿಗೆ ಅಲಂಕಾರವಾದವನು. ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷ (ನಾಯಿಕಾ-ನಾಯಕ) ರಲ್ಲಿ ಪರಸ್ಪರ ಉತ್ಪನ್ನವಾಗುವ



ಪ್ರೇಮವೆಂಬ ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿಯು ರತಿಯೆನಿಸುವುದು. ಹೀಗೆಯೇ ವೀರರಸಸ್ಥಾಯಿಭಾವವಾದ ಉತ್ಸಾಹಕ್ಕೆ ಅಲಂಬನವಾದವನು ವೀರನಾಯಕ. ನಾಯಕನ ಲಕ್ಷಣ: "ತ್ಯಾಗಿ ಕೃತಿ ಕುಲೀನ: ಸುಶ್ರೀಕೋ ರೂಪಯೌವನೋತ್ಸಾಹಿ । ದಕ್ಷೋ-ನುರಕ್ತಲೋಕಸ್ತೇಜೋವೈದ್ಯಶೀಲವಾನ್ಮತಾ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೩೦ । ನಾಯಕನು (1) ಧೀರೋದಾತ್ತ:, (2) ಧೀರೋದ್ಭವ:, (3) ಧೀರ-ಲಲಿತ: ಮತ್ತು (4) ಧೀರಶಾಂತ: ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. "ಧೀರೋದಾತ್ತೋ ಧೀರೋದ್ಭವಸ್ತಥಾ ಧೀರಲಲಿತಃ । ಧೀರಪ್ರಶಾಂತ ಇತ್ಯಯಮುಕ್ತ: ಪ್ರಥಮಃಪುನಃ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೩೧ । [ವಿವರ ಗಳಿಗೆ ಆಯಾ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಈ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ನಾಯಕರೂ (1) ದಕ್ಷಿಣ:, (2) ಧೃಷ್ಟ:, (3) ಅನುಕೂಲ: ಮತ್ತು (4) ಶಠ: ಎಂಬ ನಾಲ್ಕು ಭೇದಗಳಿಂದ ಹದಿನಾರು ವಿಧವಾಗುವರು, "ಏಭಿರ್ದಕ್ಷಿಣಧೃಷ್ಟಾನುಕೂಲಶಠರೂಪಿಭಿಸ್ತು ಷೋಡಶಭಾ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೩೫ । ಈ ಎಲ್ಲಾ ನಾಯಕರೂ (1) ಉತ್ತಮ:, (2) ಮಧ್ಯಮ: ಮತ್ತು (3) ಅಧಮ: ಎಂಬ ಮೂರು ಭೇದಗಳಿಂದ ಒಟ್ಟು ನಲವತ್ತೆಂಟು ವಿಧವಾಗು ವರು. "ಏಷಾಂ ಚ ತ್ರೈವಿಧ್ಯಾದುತ್ತಮಮಧ್ಯಾಧಮತ್ವೇನ । ಉಕ್ತಾ ನಾಯಕಭೇದಾಶ್ಚತ್ವಾರಿಂಶತ್ತಥಾಷ್ಟೈ ಚ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೩೬ । 6. ಆದರ್ಶ, ಮಾದರಿ. "ರಾಮೋ ಹರಿ: ಕರೀ ಭೂಮ್ತಕಾರ: ಕರ್ತಾ ಚ ಚಂದ್ರಮಾ: । ತಸ್ಥಿವಾನ್ ಭಗವಾನಾತ್ಮಾ ದಶೈತೆ ಪುಂಸಿ ನಾಯಕಾ:" । (ವಿಂ) 7. ಒಯ್ಯುವವನು, ಮುಂದಕ್ಕೆ ಸಾಗಿಸುವವನು.

**ನಾಯಿಕಾ ನಾಯಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ.)** (ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ) 1. ಶೃಂಗಾರ ರಸದ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವವಾದ ರತಿಗೆ ಅಲಂಬನ (ಆಶ್ರಯ) ಛಾದ ಹೆಂಗಸು. ಣಿನ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । "ಡಾಪ್" (೪-೧-೪) । ನಾಯಕನ ಸಾಮಾನ್ಯ ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹೆಂಗಸು ನಾಯಿಕೆ. "ಅಥ ನಾಯಿಕಾ ತ್ರಿಭೇದಾ ಸ್ವಾನ್ಯಾ ಸಾಧಾರಣಿ ಸ್ತ್ರೀತಿ । ನಾಯಕಸಾಮಾನ್ಯಗುಣೈರ್ಭವತಿ ಯಥಾಸಂಭವೈರುಕ್ತಾ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೫೬ । ನಾಯಿಕೆಯು (1) ಸ್ವಸ್ತ್ರೀ, (2) ಅನ್ಯಸ್ತ್ರೀ ಮತ್ತು (3) ಸಾಧಾರಣಸ್ತ್ರೀ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ.

**ಸ್ವಸ್ತ್ರೀ**—ವಿನಯ ಮಜುತ್ವ ಮೊದಲಾದ ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ ಗೃಹಕೃತ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿರತಳಾದ ಪತಿವ್ರತೆಯು ಸ್ವಸ್ತ್ರೀ. ಇವಳು (1) ಮುಗ್ಧಾ, (2) ಮಧ್ಯಾ ಮತ್ತು (3) ಪ್ರಗಲ್ಭಾ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. "ವಿನಯಾರ್ಜವಾದಿಯುಕ್ತಾ ಗೃಹಕರ್ಮಪರಾ ಪತಿವ್ರತಾ । ಸಾಪಿ ಕಥಿತಾ ತ್ರಿಭೇದಾ ಮುಗ್ಧಾ ಮಧ್ಯಾ ಪ್ರಗಲ್ಭೇತಿ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೫೭ ।

**ಮುಗ್ಧಾ** — ಮೊದಲನೆಯದಾಗಿ ಹೊರಚಿಮ್ಮಿದ ಪ್ರಾಯ ಮತ್ತು ಕಾಮವಿಕಾರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮತ್ತು ನವಸಮಾ

ಗಮದಲ್ಲಿ ಲಜೆಯಿಂದ ಪ್ರತಿಕೂಲಳಾದ ತರುಣಿಯು "ಮುಗ್ಧಾ" ನಾಯಿಕೆ. "ಪ್ರಥಮಾವತೀರ್ಣಯೌವನಮದನ-ವಿಕಾರಾ ರತೌ ವಾಮಾ । ಕಥಿತಾ ಮುದುಷ್ಠ ಮಾನೇ ಸಮಧಿಕ-ಲಜ್ಜಾವತೀ ಮುಗ್ಧಾ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೫೮ ।

**ಮಧ್ಯಾ** — ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆದುಬಂದ ಪ್ರಾಯ: ಮತ್ತು ಮದನವಿಕಾರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ ವಿವಿಧವಾದ ಭಂಗಿಗಳಿಂದ ರತಿಕ್ರೀಡೆಯಲ್ಲಿ ಚತುರೆಯಾದವಳೂ ಸ್ವಲ್ಪ ಧೈರ್ಯದಿಂದ ಮಾತಾಡುವವಳೂ ಸಾಧಾರಣ ಲಜೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದವಳೂ ಆದ ಯುವತಿಯು "ಮಧ್ಯಾ" ನಾಯಿಕೆ. "ಮಧ್ಯಾ ವಿಚಿತ್ರಸುರತಾ ಪ್ರಕೃತಸ್ಮರಯೌವನಾ । ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾಪ್ರಗಲ್ಭಾವಚನಾ ಮಧ್ಯಮ ಕ್ರೀಡಿತಾ ಮತಾ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೫೯ ।

**ಪ್ರಗಲ್ಭಾ** — ಅತಿಶಯವಾದ ಕಾಮವಿಕಾರದಿಂದ ಮೈ ಮರೆತವಳೂ ತುಂಬಿದ ತಾರುಣ್ಯವುಳ್ಳವಳೂ ಸಕಲ ವಿಧ ರತಿಕ್ರೀಡೆಯಲ್ಲಿಯೂ ನಿಪುಣೆಯೂ ಸ್ತ್ರೀಸಹಜವಾದ ಲಜೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದವಳೂ ನಾಯಕನಲ್ಲಿ ಸಲಿಗೆಯುಳ್ಳವಳೂ ಆದ ಹೆಂಗಸು "ಪ್ರಗಲ್ಭಾ" ನಾಯಿಕೆ. "ಸ್ಮರಾನ್ವಾ ಗಾಢತಾರುಣ್ಯಾ ಸಮಸ್ತರತಕೋವಿದಾ । ಭಾವೋನ್ಮತಾ ದರಗ್ರೀಡಾ ಪ್ರಗಲ್ಭಾಕ್ರಾಂತನಾಯಿಕಾ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೬೦ । ಮಧ್ಯಾ ಪ್ರಗಲ್ಭೆಯಿಬ್ಬರೂ (1) ಧೀರಾ, (2) ಅಧೀರಾ ಮತ್ತು (3) ಧೀರಾಧೀರಾ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ಇದರಿಂದ (1) ಮಧ್ಯಾ ಧೀರಾ, (2) ಮಧ್ಯಾ ಅಧೀರಾ ಮತ್ತು (3) ಮಧ್ಯಾ ಧೀರಾಧೀರಾ, (4) ಪ್ರಗಲ್ಭಾ ಧೀರಾ, (5) ಪ್ರಗಲ್ಭಾ ಅಧೀರಾ ಮತ್ತು (6) ಪ್ರಗಲ್ಭಾ ಧೀರಾಧೀರಾ ಎಂದು ಆರು ವಿಧ. "ತೇ ಧೀರಾ ಚಾಪ್ಯಧೀರಾ ಚ ಧೀರಾಧೀರೇತಿ ಷಡ್ವಿಧೇ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೬೧ ।

**ಮಧ್ಯಾ ಧೀರಾ** — ಮುಗುಳುನಗೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ವಕ್ರೋಕ್ತ (ಶ್ಲೇಷ ಮತ್ತು ಕಾಕುಗಳಿಂದ ಅರ್ಥಾಂತರ ತೋರುವ ಮನಚುಚ್ಚುವ ಮಾತು) ಯಿಂದ ನಾಯಕನ ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಸಂತಾಪವುಂಟುಮಾಡುವವಳು "ಮಧ್ಯಾ ಧೀರಾ" ನಾಯಿಕೆ.

**ಮಧ್ಯಾ ಅಧೀರಾ** — ಕೋಪಗೊಂಡು ಕಠಿನವಾದ ಮಾತು ಗಳಿಂದ ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಸಂತಾಪವುಂಟುಮಾಡುವವಳು "ಮಧ್ಯಾ ಅಧೀರಾ" ನಾಯಿಕೆ.

**ಮಧ್ಯಾ ಧೀರಾಧೀರಾ** — ಪ್ರಿಯನ ಅಪರಾಧವನ್ನು ಕಂಡು ಹೇಳಿ ಮೂದಲಿಸುವ ಧೈರ್ಯ ಸಾಲದೆ ಕಣ್ಣೀರಿಟ್ಟು ಅತ್ತು ತನ್ನ ಅಸಮಾಧಾನವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವವಳು "ಮಧ್ಯಾ ಧೀರಾಧೀರಾ" ನಾಯಿಕೆ. "ಪ್ರಿಯಂ ಸೋಪ್ರಾಸವಕ್ರೋಕ್ತಯಾ ಮಧ್ಯಾ ಧೀರಾ ದಹೇದ್ರುಷಾ । ಧೀರಾಧೀರಾ ತು ಕ್ಷದಿತೇರಧೀರಾ ಪರಪ್ರೀತಿಭಿ:" ಸಾಂ ದಂ ೩-೬೨ । "ಬಾಲೇ, ನಾಥ, ವಿಮುಷ್ಠ



ಮಾನಿನಿ ಣ್, ರೋಷಮಯಾ ಕಿಂ ಕೃತಂ, ಕ್ಷೇದೋಽಸ್ಮಾಸು ನಮಃ-  
ಪರಾಧ್ಯತಿ ಭವಾನ್, ಸರ್ವೇಽಪರಾಧಾ ಮಯಿ। ತತ್ಕಿಂ ರೋದಿಷಿ  
ಗದ್ಗದೇನ ವಚಸಾ, ಕಸ್ಯಾಗ್ರತೋ ರಹತೇ, ನನ್ವೇತನ್ಮಮ, ಕಾ ತವಾಸ್ಮಿ,  
ದಯಿತಾ, ನಾಸ್ಮೀತ್ಯತೋ ರಹತೇ”।

**ಪ್ರಗಲ್ಭಾ ಧೀರಾ:** — ಕೋಪವನ್ನು ಒಳಗೇ ಅಡಗಿಸಿ  
ಕೊಂಡು ಹೊರಗೆ ಮಾತ್ರ ಅದರವನ್ನು ತೋರಿಸುತ್ತಾ  
ಸುರತಕ್ರೀಡೆಯಲ್ಲಿ ಉದಾಸೀನಳಾಗಿರುವವಳು “ಪ್ರಗಲ್ಭಾ  
ಧೀರಾ” ನಾಯಿಕೆ. “ಪ್ರಗಲ್ಭಾ ಯದಿ ಧೀರಾ ಸ್ಯಾತ್  
ಛತ್ರಕೋಪಾಕೃತಿಃ ಸ್ತದಾ। ತದಾಸ್ತೇ ಸುರತೇ ತತ್ರ ದರ್ಶಯನ್ಯಾದರಾನ್  
ಬಹಿಃ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೬೩।

**ಪ್ರಗಲ್ಭಾ ಅಧೀರಾ:** — ನಾಯಕನ ಅಪರಾಧವನ್ನು ಕಂಡು  
ಅವನನ್ನು ಹೆದರಿಸಿ ಹೊಡೆದು ಕೋಪವನ್ನು ತೋರಿಸಿಕೊಳ್ಳು-  
ವವಳು “ಪ್ರಗಲ್ಭಾ ಅಧೀರಾ” ನಾಯಿಕೆ.

**ಪ್ರಗಲ್ಭಾ ಧೀರಾಧೀರಾ:** — ಮುಗುಳುನಗೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ  
ಮಾತುಗಳಿಂದಲೇ ನಾಯಕನ ಮನಸ್ಸನ್ನು ನೋಯಿಸು-  
ವವಳು “ಪ್ರಗಲ್ಭಾಧೀರಾಧೀರಾ” ನಾಯಿಕೆ. “ಧೀರಾ-  
ಧೀರಾ ತು ಸೋಲ್ಕುಣ್ಣಭಾಷಿತಃ ಕ್ಷೇದಯತ್ಯಮುಮ್। ತರ್ಜಯೇತ್ತಾಡ್ಯೇದನ್ಯಾ  
ಪ್ರತ್ಯೇಕಂ ತಾ ಅಪಿ ದ್ವಿಧಾ। ಕನಿಷ್ಠಜ್ಯೇಷ್ಠರೂಪತ್ವಾನಾಶ್ರಯಕಪ್ರಣಯಂ  
ಪ್ರತಿ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೬೪। ಈ ಮೇಲಿನ ಅರುವಿಧ ನಾಯಿಕೆ  
ಯರೂ (1) ಕನಿಷ್ಠಾ ಮತ್ತು (2) ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ಭೇದದಿಂದ  
ಒಟ್ಟು ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧವಾಗುವರು. ಇವರೊಡನೆ ಮುಗ್ಧಾ  
ನಾಯಿಕೆಯೂ ಸೇರಿ ಸ್ವಸ್ತ್ರೀ ನಾಯಿಕೆಯು ಹದಿಮೂರು  
ವಿಧ. “ಮಧ್ಯಾಪ್ರಗಲ್ಭಯೋರ್ಭೇದಾಸ್ತದ್ವಾದಶ ಕೀರ್ತಿತಾಃ। ಮುಗ್ಧಾ  
ತ್ವೇಕೇವ ತೇನ ಸ್ಯುಃ ಸ್ವೀಯಾಭೇದಾಸ್ತ್ರಯೋದಶ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೬೫।

**ಅನ್ಯಸ್ತ್ರೀ** — ಪರಕೀಯ (ಅನ್ಯಸ್ತ್ರೀ) ನಾಯಿಕೆಯು  
(1) ಪರೋಹ ಮತ್ತು (2) ಕನ್ಯಕಾ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ.

**ಪರೋಹ** — ಉತ್ಸವಾದಿಗಳ ನಿಮಿತ್ತ ಪರಸ್ಥಳ ಯಾತ್ರೆ,  
ಮನೆಯ ಬಾಗಿಲಲ್ಲಿ ನಿಂತು ಬೀದಿಯಲ್ಲಿ ಹೋಗುತ್ತಿರುವ  
ವವರನ್ನೆಲ್ಲಾ ನೋಡುತ್ತಿರುವುದು, ಬೀದಿ ಬೀದಿಗಳಲ್ಲಿ  
ಅಲೆಯುವುದು, ಅಕ್ಕಪಕ್ಕದ ತರುಣರ ಮನೆ ಮನೆಗಳಿಗೂ  
ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದೆ ಹೋಗುವುದು ಇತ್ಯಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳ  
ವಳು “ಪರೋಹಾ” ನಾಯಿಕೆ. “ಯಾತ್ರಾದಿನಿರತಾನ್ಯೋಹ  
ಕುಲಟಾ ಗಲಿತತ್ರಪಾ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೬೬।

**ಕನ್ಯಕಾ** — ಮದುವೆಯಾಗದ ಸ್ತ್ರೀಸಹಜವಾದ ಲಜ್ಜೆ  
ಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ನವಯುವತಿಯು “ಕನ್ಯಾ” ನಾಯಿಕೆ.  
“ಕನ್ಯಾತ್ವಜಾತೋಪಯಮಾ ಸಲಜ್ಜಾ ನವಯೋವನಾ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೬೭।

**ಸಾಧಾರಣಿ** — ರತಕ್ರೀಡೆಯಲ್ಲಿ ಅತಿನಿಪುಣೆಯೂ  
ಚತುಃಪಕ್ಷಿ ಕೆಲೆಗಳಲ್ಲೂ ಚತುರೆಯೂ ಆಗಿರುವ ವೇಶ್ಯೆಯು  
“ಸಾಧಾರಣೀ” ನಾಯಿಕೆ. ಇವಳು ಕೇವಲ ಧನಾರ್ಜನೆ

ಯಲ್ಲೇ ನಿರತಳಾಗಿ ಗುಣಹೀನರನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸುವುದೂ ಇಲ್ಲ.  
ಗುಣಶಾಲಿಗಳನ್ನು ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರೀತಿಸುವುದೂ ಇಲ್ಲ. ಅವ-  
ರಿಂದ ಧನವನ್ನು ಸುಲಿಯಲು ಮಾತ್ರ ಪ್ರೀತಿಸುವವಳಂತೆ  
ನಟಿಸುತ್ತಾಳೆ. “ಧೀರಾ ಕಲಾಪ್ರಗಲ್ಭಾ ಸ್ಯಾದ್ವೇಶ್ಯಾ ಸಾಮಾನ್ಯ-  
ನಾಯಿಕಾ। ನಿರ್ಗುಣಾನಪಿ ನ ದ್ವೇಷಿತಿ ನ ರಜ್ಯತಿ ಗುಣಿಷ್ವಪಿ।  
ವಿತ್ತಮಾತ್ರಂ ಸಮಾಲೋಕಯ ಸಾ ರಾಗಂ ದರ್ಶಯೇದ್ಬಹಿಃ” ಸಾಂ ದಂ  
೩-೬೭, ೬೮। ಈ ಹದಿನಾರು ವಿಧ ನಾಯಿಕೆಯರೂ  
(1) ಸ್ವಾಧೀನಪತಿಕಾ, (2) ಕ್ಷಣಿಡಿತಾ, (3) ಅಭಿಸಾರಿಕಾ,  
(4) ಕಲಹಾಂತರಿತಾ, (5) ವಿಪ್ರಲಬ್ಧಾ, (6) ಪ್ರೋಷಿತಭರ್ತೃಕಾ,  
(7) ವಾಸಕಸಜ್ಜಾ ಮತ್ತು (8) ವಿರಹೋತ್ಕಂಠಿತಾ ಎಂಬ  
ಎಂಟು ಅವಸ್ಥಾ ಭೇದಗಳಿಂದ ಒಟ್ಟು ನೂರ ಇಪ್ಪತ್ತೆಂಟು  
(128) ವಿಧವಾಗುವರು. ಇವರೆಲ್ಲರೂ (1) उत्तमा,  
(2) मध्यमा ಮತ್ತು (3) अधमा ಭೇದಗಳಿಂದ ಒಟ್ಟು  
ಮುನ್ನೂರು ಎಂಬತ್ತನಾಲ್ಕು (384) ವಿಧವಾಗುವರು.  
“ಇತಿ ಸಾಷ್ಟಾವಿಂಶತಿಶತಮುತ್ತಮಮಧ್ಯಾಧಮಸ್ವರೂಪೇಣ। ಚತು-  
ರವಿಕಾಶೀತಿಯುತಂ ಶತತ್ರಯಂ ನಾಯಿಕಾಭೇದಾಃ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೮೭।  
ಮತ್ತೆ (1) ದಿವ್ಯಾ, (2) ಅದಿವ್ಯಾ ಮತ್ತು (3) ದಿವ್ಯಾದಿವ್ಯಾ  
ಎಂಬ ಮೂರು ಭೇದಗಳಿಂದಲೂ (1) उद्धता, (2) उदात्ता,  
(3) ललिता ಮತ್ತು (4) शान्तिका ಎಂಬ ನಾಲ್ಕು ಭೇದ  
ಗಳಿಂದಲೂ ಈ ಎಲ್ಲಾ ನಾಯಿಕೆಯರೂ (1) पद्मिनी,  
(2) चित्रिणी, (3) शङ्खिनी ಮತ್ತು (4) हस्तिनी ಎಂಬ  
ನಾಲ್ಕು ಭೇದಗಳಿಂದಲೂ ಅಸಂಖ್ಯಾತರಾಗುವರು. ಗ್ರಂಥ  
ವಿಸ್ತರ ಭಯದಿಂದ ಇಷ್ಟಕ್ಕೇ ನಿಲ್ಲಿಸಲಾಗಿದೆ. “ಇತರಾ  
ಅಪ್ಯಸಂಖ್ಯಾಸ್ತಾ ನೋಕ್ತಾ ವಿಶ್ವರಶಃಕ್ವಯಾ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೮೮।  
2. ಶ್ರೇಷ್ಠ ಹೆಂಗಸು, ಕುಲೀನ ಹೆಂಗಸು.

**ನಾಯನ ನಾಯನ** (ವಿಂ) ನಯನಸಂಬಂಧವಾದ, ಕಣ್ಣು  
ಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ನಯನಸ್ಯೇದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦)।

**ನಾರ ನಾರ** (ಪುಂ) 1. ಸದ್ಯಃ ಜನಿಸಿದ ಹಸುವಿನ ಕರು, ಆಗ  
ತಾನೆ ಹುಟ್ಟಿದ ಕರು. (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 2. ಜಲ, ನೀರು.  
“ಆಪೋ ನಾರಾ ಇತಿ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಆಪೋ ವೈ ನರಸೂನವಃ” ಮನುಂ ೧-೧೦।  
(ನಂ) 3. ಮನುಷ್ಯರ ಸಮೂಹ. ನರಾಣಾಂ ಸಮೂಹಃ  
“ಅನ್” (೪-೨-೩೭)। (ವಿಂ) 4. ನರಸಂಬಂಧವಾದ,  
ಮನುಷ್ಯಸಂಬಂಧವಾದ. “ಧೀರಾ ನಾರಕಪಾಲಕುಂಡಲವತೀಂ  
ವಿದ್ಯುಚ್ಛಟಾಂ ದೃಷ್ಟಿಭಿರ್ಮುಚ್ಛಂತೀಮ್” ಪ್ರಬೋಧಂ ೪-೧। ನರಸ್ಯೇದಮ್  
“ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦)। 5. ಮನುಷ್ಯನ ಧರ್ಮಕ್ಕೆ  
ವಿರುದ್ಧವಲ್ಲದ. ನರ “ಅನ್” (ವಾಂ ೪-೪-೪೯)।

**ನಾರಕ ನಾರಕ** (ಪುಂ) 1. ನರಕ. ನರಕ ಎವ “ಅನ್”  
(೪-೪-೩೮)। “ನಾಹಂ ವಂದೇ ತವ ಚರಣಯೋಽನ್ವಂದಮನ್ವಂದಹೇತೋ



ಕುम्ಭಿಪಾಕಂ ಗುರುಮಪಿ ಹರೆ ನಾರಕಂ ನಾಪನೆತುಮ್" ಮಂ ಮಾಂ ೪।  
2. ನರಕದಲ್ಲಿ ಯಾತನೆಯನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿರುವ ಜೀವ.  
"ಸತ್ವಾಸ್ತು ನಾರಕಾಃ" ಅಮಂ । (ವಿಂ) 3. ನರಕಸಂಬಂಧ  
ವಾದ. ನರಕಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ನಾರಕಪಾಲ ನಾರಕಪಾಲ** (ನಂ) ತಲೆಯೆಲುಬಿನ ಚಿಪ್ಪು.  
ನಾರಂ ಚ ತತ್ ಕಪಾಲಂ ಚ । "ಧೋರಾ ನಾರಕಪಾಲಕುಂಡಲವತೀ  
ವಿದ್ಯುಚ್ಚಟಾ ದೃಷ್ಟಿರ್ಮುಚ್ಚಂತೀ ವಿಕರಾಲಮೂರ್ತಿಮನಲಜ್ವಾಲಾ-  
ಪಿಶಾಚೈಃ ಕಚೈಃ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೪-೧।

**ನಾರಕಿನ್ ನಾರಕಿನ್** (ವಿಂ) ನರಕಯಾತನೆಯನ್ನು ಅನು  
ಭವಿಸುವ. ನರಕೋ ಭೋಗತಯಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫)।

**ನಾರಜ್ಞ ನಾರಜ್ಞ** (ಪುಂ) 1. ಕಿತ್ತಳೆಯ ಗಿಡ. ನೃ (ನಯೆ)  
"ಅಜ್ಞಚ್" ರಂ ಬಾಹುಂ । 2. ಹಿಪ್ಪಲಿಯ ರಸ. 3. ವಿಟ,  
ಕಾಮುಕ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ. 4. ಯಮಳ, ಅವಳಿ. 5. ಕೆಂಪು  
ಮೂಲಂಗಿ.

**ನಾರದ ನಾರದ** (ಪುಂ) 1. ನಾರದಮುನಿ, ದೇವಮುನಿ. ನಾರಂ  
ನರಸಮೂಹಂ ಏತಿ ಖಂಡಯತಿ ಕಲಹೇನ—ದೋ (ಅವಖಂಡನೆ)  
"ಕಃ" (೩-೨-೩)। ನಾರಂ ನರಸ್ಯ ಧರ್ಮ್ಯ ದದಾತಿ—ಓ ದಾನ್  
(ದಾನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)। ನಾರಿದಂ ನಾರಮ್ ಅಜ್ಞಾನಮ್, ತತ್  
ಏತಿ ಜ್ಞಾನೋಪದೇಶೇನ—ದೋ (ಅವಖಂಡನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)।  
ನಾರಂ ಪಾನೀಯಂ ದದಾತಿ ಪಿತೃಭ್ಯಃ ಏತಿ ವಾ । "ನಾರಂ ಪಾನೀಯ-  
ಮಿತೃಕ್ತಂ ತತ್ ಪಿತೃಭ್ಯಃ ಸದಾ ಭವಾನ್ । ದದಾತಿ ತೇನ ತೇ ನಾಮ  
ನಾರದೇತಿ ಭವಿಷ್ಯತಿ" । "ನಾರದಾಘಾಃ ಸುರರ್ಷಯಃ" ಅಮಂ ।  
2. ಸ್ವಾಯಂಭುವ ಮನ್ವಂತರದಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮನ ಹತ್ತು ಮಂದಿ  
ಮಾನಸ ಪುತ್ರರಲ್ಲೊಬ್ಬ. "ಮರೀಚಿರಶ್ವಾಙ್ಗಿರಸೌ ಪುಲಸ್ತಯಃ  
ಪುಲಹಃ ಕ್ರುತುಃ । ಭೃಗುರ್ವಸಿಷ್ಠೋ ದಕ್ಷಶ್ಚ ದಶಮಸ್ತತ್ರ ನಾರದಃ ।  
ಉತ್ಸಜ್ಞಾನಾರದೋ ಜಜ್ಞ ದಕ್ಷೋಽಂಗುಲಾತ್ ಸ್ವಯಮ್ಭುವಃ" भागं  
೩-೧೨। ಪುರಾಣ ಮತ್ತು ಇತಿಹಾಸಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾದ  
ಈ ಮುನಿಯು ಪರ್ವತಮುನಿಯು ಸೋದರಮಾವ.  
"ನಾರದೋ ಮಾತುಲಸ್ತತ್ರ ಭಾಗಿನೇಯಶ್ಚ ಪರ್ವತಃ । ತಾವುಭೌ ತಪಸೋ-  
ಪೇತಾವನೀತಲಚಾರಿಣೌ" भां शान्तिं ೨೯-೬। ಲೋಕ  
ದಲ್ಲಿ ತೊಂದರೆಗೆ ಸಿಲುಕಿ ಕಷ್ಟಪಡುತ್ತಿರುವವರೆಲ್ಲರಿಗೂ  
ನಿವಾರಣೋಪಾಯವನ್ನು ತೋರಿಸಿಕೊಟ್ಟು ಉಪಕಾರ  
ಮಾಡುತ್ತ ಅವರಿಗೆ ಮಂಗಳವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದೇ  
ಈ ಮುನಿಯ ಮುಖ್ಯ ಕಾರ್ಯವಾಗಿತ್ತು. ಇಂದ್ರಾದಿ  
ದೇವತೆಗಳ ಮತ್ತು ಬ್ರಹ್ಮ ವಿಷ್ಣು ಮಹೇಶ್ವರರ ಸಭೆ  
ಗಳಿಗೆ ಹೋಗಿ ಬರುವುದಲ್ಲದೆ ಭೂಲೋಕದಲ್ಲಿಯೂ  
ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಈ ಮುನಿಯು ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿದ್ದನು. ಸೃಷ್ಟಿ  
ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿಯುಕ್ತರಾಗಿದ್ದ ದಕ್ಷನ ಪುತ್ರರಾದ

ಹರ್ಯಶ್ವ ಶಬಲಾಶ್ವರಿಗೆ ಉಪದೇಶಮಾಡಿ ಅವರನ್ನು  
ಸೃಷ್ಟಿಯ ಕಾರ್ಯದಿಂದ ವಿಮುಖರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದುದ  
ರಿಂದ ನಾರದನಿಗೆ ದಕ್ಷನು ನಿಲ್ಲಲು ಎಲ್ಲಿಯೂ ನೆಲೆಯಿಲ್ಲ  
ದಿರುವಂತೆಯೂ ಕಲಹಪ್ರಿಯನಾಗಿರುವಂತೆಯೂ ಶಾಪ  
ಕೊಟ್ಟನು. ಇದರಿಂದ ನಾರದನು ತ್ರಿಲೋಕಸಂಚಾರಿ  
ಯಾದನು. "ತಾಂಶ್ಚಾಪಿ ನಷ್ಟಾನ್ ವಿಜ್ಞಾಯ ಪುತ್ರಾನ್ ದಕ್ಷಃ  
ಪ್ರಜಾಪತಿಃ । ಕ್ರೋಧಂ ಚಕ್ರೇ ಮಹಾಭಾಗೋ ನಾರದಂ ತಂ ಶಶಾಪ ಚ"  
विष्णुपुं ೧-೧೫-೧೦೧। "ತನ್ತುಕ್ತುನ ಯನ್ಮಸ್ತವಮಭದ್ರಮಚರಃ  
ಪುನಃ । ತಸ್ಮಾಲ್ಲೋಕೇಷು ತೇ ಮೂಢ ನ ಭವೇದ್ಭರತಃ ಪದಮ್" भागं  
೬-೫-೪೩। ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹರ್ಷಿಗೆ ಶ್ರೀರಾಮನ ಮಹಿಮೆ  
ಯನ್ನೂ ರಾಮಾಯಣ ಕಥೆಯನ್ನೂ ಬೋಧಿಸಿ  
ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ರಚಿಸುವಂತೆ ಹೇಳಿದನು. ದ್ರೌಪದೀ  
ಸ್ವಯಂವರವಾದನಂತರ ಪಾಂಡವರು ವಾರಣಾಸದಲ್ಲಿ  
ದ್ವೈಗ ನಾರದನು ಅಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ ಸುಂದೋಪಸುಂದರ  
ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳಿ ಐದು ಮಂದಿಯೂ ದ್ರೌಪದಿಯೊಡನೆ  
ಕ್ರಮವಾಗಿ ಒಂದೊಂದು ವರ್ಷಕಾಲ ಸಂಸಾರ ಮಾಡಿ  
ಕೊಂಡಿರುವಂತೆಯೂ ಆ ಕಟ್ಟುಪಾಡಿಗೆ ತಪ್ಪಿದರೆ ಒಂದು  
ವರ್ಷ ವನವಾಸಮಾಡುವಂತೆಯೂ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಮಾಡಿಸಿ  
ದನು. "ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರಾಮ್ಯನುಜ್ಞಾತಾ ಇಂದ್ರಪ್ರಸ್ಥಂ ಪ್ರವಿಷ್ಯ ತತ್ ।  
ರೆಮಿರೆ ಪುರುಷವ್ಯಾಘ್ರಾಃ ಕೃಷ್ಣಯಾ ಸಹ ಪಾಂಡವಾಃ । ಪ್ರಾಪ್ಯ  
ರಾಜ್ಯಂ ಮಹಾತೇಜಾಃ ಸತ್ಯಸಂಧೋ ಯುಧಿಷ್ಠಿರಃ । ಪಾಲಯಾಮಾಸ  
ಧರ್ಮೇಣ ಪೃಥಿವೀಂ ಭ್ರಾತೃಭಿಃ ಸಹ । .....ಆಯಯೌ ಧರ್ಮರಾಜಂ  
ತು ದ್ರಷ್ಟುಕಾಮೋಽಪಿ ನಾರದಃ । .....ತಮಾಗತಮೃಷಿಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ  
ಪ್ರತ್ಯುದ್ಗಮ್ಯಾಭಿವಾಙ್ಮ ಚ । ಆಸನಂ ರುಚಿರಂ ತಸ್ಮೈ ಪ್ರದದೌ ಸ  
ಯುಧಿಷ್ಠಿರಃ । ದೇವರ್ಷೇಽಪಿ ವಿಷ್ಣುಸ್ಯ ಸ್ವಯಮರ್ಹ್ಯ ಯಥಾವಿಧಿ ।  
ಪ್ರಾದಾಽಯುಧಿಷ್ಠಿರೋ ಧೀಮಾನ್ ರಾಜ್ಯಂ ತಸ್ಮೈ ನ್ಯವೇದಯತ್ । ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಯ  
ತು ತಾಂ ಪೂಜಾಮೃಷಿಃ ಪ್ರೀತಮನಾಸ್ತದಾ । .....ವಿವಿಕ್ತೇ  
ಪಾಂಡವಾನ್ ಸರ್ವಾನುवाच भगवानृषिः । पाञ्चाली भवतामेका  
ಧರ್ಮಪತ್ನೀ ಯಶಸ್ವಿನೀ । ಯಥಾ ವೋ ನಾತ್ರ ಭೇದಃ ಸ್ಯಾತ್ ತಥಾ  
ನೀತಿವಿಧೀಯತಾಂ । ಸುಂದೋಪಸುಂದೋ ಹಿ ಪುರಾ ಭ್ರಾತರೌ ಸಹಿತಾ  
ಬುಭೌ । ಆಸ್ತಾವವ್ಯಾವರ್ಣ್ಯೇಷಾಂ ತ್ರಿಷು ಲೋಕೇಷು ವಿಶ್ರುತೌ ।  
ತಲೋತ್ತಮಾಯಾಸ್ತೌ ಹೇತೋರನ್ಯೋನ್ಯಮಭಿಜಗ್ಮತುಃ । ರಕ್ಷಯತಾಂ ಸೌಹೃದಂ  
ತಸ್ಮಾದನ್ಯೋನ್ಯಪ್ರೀತಿಭಾವಕಮ್ । ....ಎವಮುಕ್ತಾ ಮಹಾತ್ಮಾನೋ  
ನಾರದೇನ ಮಹರ್ಷಿಣಾ । ಸಮಯಂ ಚಕ್ರೀರೇ ರಾಜಸ್ತೇಜ್ಯೋನ್ಯವಶ-  
ಮಾಗತಾಃ । ಸಮಕ್ಷಂ ತಸ್ಯ ದೇವರ್ಷೇನಾರಿದಸ್ಯಾಮಿತೌಜಸಃ । ಏಕೈಕಸ್ಯ  
ಗೃಹೇ ಕೃಷ್ಣಾ ವಸೇದ್ವರ್ಷಮಕಲ್ಮಷಾ । ದ್ರೌಪದಾ ನಃ ಸಹಾಸಿನಾನನ್ಯೋನ್ಯಂ  
ಯೋಽಭಿದರ್ಶಯೇತ್ । ಸ ನೋ ದ್ವಾದಶ ಮಾಸಾನಿ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ ವನೇ  
ವಸೇತ್" भां आदिं ೨೨೮-೨೩೨। ಅಶ್ವಪತಿರಾಜನ  
ಮಗಳಾದ ಸಾವಿತ್ರಿಯು ಸತ್ಯವಂತನನ್ನು ಮದುವೆಯಾದ



ವಿಷಯ ತಿಳಿದು ಒಂದು ವರ್ಷಕ್ಕೆ ಸರಿಯಾಗಿ ಅವನಿಗೆ ಅವಸಾನಕಾಲ ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗುವುದೆಂದು ತಿಳಿಯಪಡಿಸಿ ಸಾವಿತ್ರಿಯು ತಕ್ಕ ವ್ರತಾಚರಣೆಯ ಮೂಲಕ ತನ್ನ ಪತಿ ಯನ್ನು ಬದುಕಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಸೌಕರ್ಯವನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸಿ ಕೊಟ್ಟನು. "ಗಣಯನ್ತ್ಯಾಶ್ಚ ಸಾವಿತ್ರ್ಯಾ ದಿವಸೇ ದಿವಸೇ ಗತೇ। ಯದ್ವಾಕ್ಯಂ ನಾರದೇನೋಕ್ತಂ ವರ್ತತೇ ಹೃದಿ ನಿದ್ರಾಶಃ। ಚತುರ್ಥೇಹನಿ ಮರ್ತವ್ಯಮಿತಿ ಸಂಚಿಂತ್ಯ ಭಾಮಿನಿ। ವ್ರತಂ ತ್ರಿರಾತ್ರಮುದ್ದಿಷ್ಯ ದಿವಾರಾತ್ರಂ ಸ್ಥಿತಾಽಭವತ್। ತ್ರಯೋದಶ್ಯಾಂ ಚೋಪವಾಸಂ ಪ್ರತಿಪತ್ಸು ಚ ಪಾರಣಾಮ್। ಆಯುಷ್ಯಂ ವರ್ಧತೇ ಭರ್ತುಂಪ್ರೇತೇನಾನೇನ ಭಾರತ। .... ಅಸ್ತಂ ಗತೇ ಮಯಾಽಽದಿತೇ ಭೋಕ್ತವ್ಯಂ ಕೃತಕಾಮಯಾ। ಏಷ ಮೇ ಹೃದಿ ಸಂಕಲ್ಪಃ ಸಮಯಶ್ಚ ಕೃತೋ ಮಯಾ" ಭಾಂ ವನಂ ೨೯೭। ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಮಹಿಮೆಯನ್ನು ತಿಳಿಯಲು ನಾರದನು ದ್ವಾರಕೆಯಲ್ಲಿ ಹದಿನಾರು ಸಹಸ್ರ ಪತ್ನಿಯರೊಡನೆ ಸಂಸಾರ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿದ್ದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಮನೆಗೂ ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ ಹೋಗಿ ನೋಡಿದಾಗ ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ನಾರದನಿಗೆ ದರ್ಶನ ಕೊಟ್ಟು ತನ್ನ ಮಹಿಮೆಯನ್ನು ಪ್ರದರ್ಶಿಸಿದನು. "ನರಕಂ ನಿಹತಂ ಶ್ರುತ್ವಾ ತಥೋದಾಹಂ ಚ ಯೋಷಿತಾಮ್। ಕೃಷ್ಣೇನೇಕೇನ ಬಹ್ವಿನಾಂ ತದ್ವಿದ್ವಾಃ ಸ್ಮ ನಾರದಃ। ಚಿತ್ರಂ ಬತೇತದೇಕೇನ ವಪುಷಾ ಯುಗಪತ್ ಪೃಥಕ್। ಗೃಹೇಷು ದ್ವ್ಯಷ್ಟಸಾಹಸ್ರಂ ಸ್ತ್ರೀಯಃ ಏಕಃ ತದಾವಹತ್। ಇತ್ಯುತ್ಸುಕೋ ದ್ವಾರವತೀಂ ದೇವರ್ಷಿರ್ದ್ರಷ್ಟು- ಮಾಗಮತ್। ....ತತ್ರ ಷೋಡಶಭಿಃ ಸದ್ಭಸಹಸ್ರೈಃ ಸಮಲಂಕೃತಮ್। ವಿವೇಶೇಕತಮಂ ಶೌರೇಃ ಪತ್ನೀನಾಂ ಭವನಂ ಮಹತ್। ... ತಸ್ಮಿನ್ ಸಮಾನಗುಣರೂಪವಯಸ್ಸುವೇಷದಾಸೀಸಹಸ್ರಯುತಯಾನುಸವಂ ಗೃಹಿಷ್ಯಾ। ವಿಪ್ರೋ ದದರ್ಶ ಚಮರವ್ಯಜನೇನ ಕುಮದಾಂಜನೇನ ಸಾತ್ವತಪತಿಂ ಪರಿ- ಶ್ರೀಜಯನ್ತ್ಯಾ। ತತೋಽನ್ಯದಾವಿಶದ್ಗೃಹಂ ಕೃಷ್ಣಪತ್ನೀನಾಂ ಸ ನಾರದಃ। ಶೋಭಿಸ್ತಸ್ಯಾಙ್ಗ ಯೋಗಮಾಯಾವಿವಿತ್ಸಯಾ। ದೀವ್ಯಂತಮಕ್ಷಿಃ ತತ್ರಾಪಿ ಪ್ರಿಯಯಾ ಚೋದ್ರವೇನ ಚ। ಪೂಜಿತಃ ಪರಯಾ ಭಕ್ತಯಾ ಪ್ರತಿಯುತ್ಥಾನಾ- ಸನಾದಿಭಿಃ। ಪೃಷ್ಟಶ್ಚೇವಾವಿದುಷೇವಾಸೌ ಕದಾಪಿ ತೋ ಭವಾನಿತಿ। ....ಸ ತು ವಿस्ಮಿತಃ ತತ್ಕಾಲಾತ್ ತುಷ್ಣಿಮನ್ಯದಗಾತ್ ಗೃಹಮ್। ತತ್ರಾಪ್ಯಾಚಷ್ಟ ಗೋವಿಂದಂ ಲಾಲಯಂತಂ ಸುತಾನ್ ಶಿಶುನ್। ತತೋಽನ್ಯ- ಸ್ಮಿನ್ ಗೃಹೇಽಪಶ್ಯನ್ಮಜ್ಜನಾಯ ಕೃತೋದಮಮ್। ಜುಹ್ವಂತಂ ಚ ವಿತಾ- ನಾಗ್ನಿನ್ ಯಜಂತಂ ಪञ್ಚಭಿರ್ಮಂತ್ರೈಃ। ಭೋಜಯಂತಂ ದ್ವಿಜಾನ್ ಕ್ವಾಪಿ ಪುಂಜಾನಮವಶೇಷಿತಮ್। ಕ್ವಾಪಿ ಸಂಧ್ಯಾಮುಪಾಸೀನ್ ಜಪಂತಂ ಬ್ರಹ್ಮ ವಾಗ್ವತಮ್" ಇತ್ಯಾದಿ. ಭಾಗಂ ೧೦-೬೯। 2. ವೈವಸ್ವತ ಮನ್ವಂತರದಲ್ಲಿ ಕಶ್ಯಪ ಋಷಿಯಿಂದ ಮುನಿಯೆಂಬ ಪತ್ನಿ ಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ದೇವ ಗಂಧರ್ವ. "ಕಲಿಃ ಪञ್ಚ- ದಶಸ್ತೇಷಾಂ ನಾರದಶ್ಚೈವ ಷೋಡಶಃ। ಇತ್ಯೇತೇ ದೇವಗಂಧರ್ವಾಃ ಮೌನೇಯಾಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೬-೪೪। 3. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮಹರ್ಷಿಯ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ತಸ್ಯ ಪುತ್ರಾ ಮಹಾತ್ಮಮಾನೋ ಬ್ರಹ್ಮ-

ವಂಶವಿವರ್ಧನಾಃ। ತಪಸ್ವಿನೋ ಬ್ರಹ್ಮವಿದೋ ಗೋತ್ರಕರ್ತಾರಿ ಏವ ಚ। ....ಲೀಲಾಡ್ಯೋ ನಾರದಶ್ಚೈವ ತಥಾ ಕುರ್ಮಮುಖಃ ಸ್ಮೃತಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ ೭। 4. ಒಂದು ಪರ್ವತ.

**ನಾರದಪಂಚರಾತ್ರ ನಾರದಪಂಚರಾತ್ರ (ನಂ)** ನಾರದನುಷ್ಠ ಯಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಒಂದು ತಂತ್ರಗ್ರಂಥ. ಈ ಗ್ರಂಥ ದಲ್ಲಿ (1) ಅಭಿಗಮನ, (2) ಉಪಾದಾನ, (3) ಇಜ್ಯಾ, (4) ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯ ಮತ್ತು (5) ಯೋಗಗಳೆಂದು ಐದು ವಿಷಯಗಳು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. **ಅಭಿಗಮನ**— ದೇವಾಲಯದ ಮಾರ್ಗವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಗುಡಿಸಿ ಸಾರಿಸಿ ಅಲಂಕರಿಸುವುದು. **ಉಪಾದಾನ**—ಗಂಧ ಪುಷ್ಪ ಮೊದಲಾದ ಪೂಜಾಸಾಮಗ್ರಿಗಳನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸುವುದು. **ಇಜ್ಯಾ**—ದೇವರಪೂಜೆ. **ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯ**—ಮಂತ್ರಜಪ ಸ್ತೋತ್ರಪಠನ ಭಗವನ್ನಾಮಸಂಕೀರ್ತನ ಮತ್ತು ತತ್ತ್ವ ಶಾಸ್ತ್ರಾವಲೋಕನ. **ಯೋಗ**—ದೇವತಾನುಸಂಧಾನ.

**ನಾರದಶಿಕ್ಷಾ ನಾರದಶಿಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ವರ್ಣೋಚ್ಚಾರಣಾ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ನಾರದರಚಿತವಾದ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ.

**ನಾರದೀ ನಾರದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸ್ತ್ರೀರೂಪವನ್ನು ಪಡೆದ ನಾರದ. ನಾರದನು ಶ್ವೇತದ್ವೀಪಕ್ಕೆ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಅಲ್ಲಿ ಸೌಂದರ್ಯ ಭರಿತರಾದ ಅನೇಕ ತರುಣರನ್ನು ಕಂಡು ಆಶ್ಚರ್ಯಚಕಿತ ನಾದನು. ಮಾಯಾಸ್ವರೂಪವೆಂತಹುದೆಂದು ತಿಳಿಯಲು ಶ್ರೀವಿಷ್ಣುವನ್ನು ಕೇಳಲಾಗಿ ಶ್ರೀವಿಷ್ಣುವು ನಾರದನನ್ನು ಗರುಡನ ಮೇಲೆ ಕುಳ್ಳಿರಿಸಿಕೊಂಡು ಹೋಗಿ ಕನ್ಯಾಕುಬ್ಜದ ಸರೋವರದಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನಮಾಡಿಸಿದ ಮೇಲೆ ನಾರದನು ಮೋಹಿನೀ ರೂಪವನ್ನು ಪಡೆದನು. ಕನ್ಯಾಕುಬ್ಜದ ದೊರೆ ಯಾದ ತಾಲಧ್ವಜನು ನಾರದಿಯನ್ನು ಕರೆದೊಯ್ದು ಮದುವೆಯಾದನು. ನಾರದಿಯು ಇಪ್ಪತ್ತು ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪಡೆದಳು. ಶತ್ರುಗಳು ಬಂದು ತಾಲಧ್ವಜನನ್ನೂ ಅವನ ಮಕ್ಕಳನ್ನೂ ಸಂಹರಿಸಲು ನಾರದಿಯು ಶೋಕ ಸಂತಪ್ತಳಾದಾಗ ಶ್ರೀವಿಷ್ಣುವು ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದು ಪುಂಶೀರ್ಥ ದಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನಮಾಡಿಸಲಾಗಿ ನಾರದನು ತನ್ನ ಪೂರ್ವರೂಪ ವನ್ನು ಪಡೆದನು.

**ನಾರದೀಯ ನಾರದೀಯ (ವಿಂ)** 1. ನಾರದನಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿ ಸಿದ. 2. ನಾರದನಿಂದ ರಚಿತವಾದ.

**ನಾರದೀಯಪುರಾಣ ನಾರದೀಯಪುರಾಣ (ನಂ)** ನಾರದನಿಗೆ ಸನಕ ಸನಂದನ ಮೊದಲಾದವರು ಮಾಡಿದ ಉಪದೇಶ ರೂಪವಾದ ಒಂದು ಪುರಾಣ. ಇದರಲ್ಲಿ 25,000 ಗ್ರಂಥ ಗಳಿರುವುವು. ಈ ಪುರಾಣದಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಪಾದ್ಯ ವಿಷಯಗಳಿವು.



ಸೃಷ್ಟಿಯ ವರ್ಣನೆ. ನಾನಾಧರ್ಮಗಳ ವರ್ಣನೆ. ಮೋಕ್ಷ ಧರ್ಮದಲ್ಲಿ ಮೋಕ್ಷೋಪಾಯ ನಿರೂಪಣೆ, ವೇದಾಂಗಗಳು, ಶುಕ್ಲೋತ್ಪತ್ತಿ, ಪುರಾಣಲಕ್ಷಣ, ಚೈತ್ರ ಮೊದಲಾದ ಮಾಸಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಪದಾದಿ ತಿಥಿಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ ವ್ರತಗಳು ಮುಂತಾದ ವಿಷಯಗಳು ಪ್ರತಿಪಾದಿತವಾಗಿವೆ.

**ನಾರಸಿಂಹ ನಾರಸಿಂಹ** (ಪುಂ) ನರಸಿಂಹಪುರಾಣ, ನರಸಿಂಹಾ ವತಾರದ ಚರಿತ್ರೆಯನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವ ಒಂದು ಉಪ ಪುರಾಣ. ಇದರಲ್ಲಿ ಹದಿನೆಂಟು ಸಹಸ್ರ ಶ್ಲೋಕಗಳಿರು ವುಂಟು. "ಪಾಶ್ವ ಪುರಾಣೇ ಯತ್ಪ್ರೋಕ್ತಂ ನರಸಿಂಹೋಪವರ್ಣನಮ್ | ತತ್ತ್ವಾ- ಷ್ಟಾದಶಸಾಹಸ್ರಂ ನಾರಸಿಂಹಮಿಹೋಚ್ಯತೇ" ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ |

**ನಾರಸಿಂಹಕಲ್ಪ ನಾರಸಿಂಹಕಲ್ಪ** (ಪುಂ) ಚತುರ್ಮುಖ ಬ್ರಹ್ಮನ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಹದಿನಾರನೆಯ ದಿನ. ಬ್ರಹ್ಮನ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಮೂವತ್ತು ದಿನಗಳಿಗೂ ಒಂದೊಂದು ಕಲ್ಪವೆಂದು ಹೆಸರು. ಈ ಮೂವತ್ತು ಕಲ್ಪಗಳಲ್ಲಿ ನಾರಸಿಂಹಕಲ್ಪವು ಹದಿನಾರನೆಯದು. ಈಗ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ (ವೈವಸ್ವತ ಮನ್ವಂತರದ) ಚತುರ್ಮುಖನ ತಿಂಗಳಿನ ಹದಿನಾರನೆಯ ದಿನ ನರಸಿಂಹಾವತಾರ ನಡೆಯಿತು.

**ನಾರಾ ನಾರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಲ, ನೀರು. ನರಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | "ಆಪೋ ನಾರಾ ಇತಿ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಆಪೋ ವೈ ನರಸುನವಃ" ಮನುಂ ೧-೧೦ | ನರರೂಪಿಯಾದ ಪರಮಾತ್ಮನ ಅಪತ್ಯವೆಂದು ಪರಿಗಣಿಸಿರುವುದರಿಂದ ನೀರಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು.

**ನಾರಾಚ ನಾರಾಚ** (ಪುಂ) 1. ಲೋಹಮಯವಾದ ಬಾಣ. ನಾರಂ ನರಸಮೂಹಮಾಚಾಮತಿ— ಆ + ಚಮ್ (ಅದನೇ) "ಙಃ" (೩-೨-೧೦೧) | "ನಾರಾಚಕ್ಷೇಪಣೀಯಾದಮನಿಷ್ಠೇಷೋತ್ಪತ್ತಿತಾನಲಮ್" ರಘುಂ ೪-೭೭ | 2. ನೀರಿನ ಅನೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಛಿ-೭೬. 3. ಅಕ್ಕಸಾಲಿಗನ ತಕ್ಕಡಿ. "ನಾರಾಚೋ ಲೋಹಸಾಯಕೇ | ಜಲೇಭೇ ನಾರಾಚ್ಯೇಷಯಾಮ್" ಹೇಮಂ |

**ನಾರಾಚಿಕಾ ನಾರಾಚಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಕ್ಕಸಾಲಿಗನು ಚಿನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿ ತೂಗುವ ತಕ್ಕಡಿ. ನಾರಾಚಸ್ತದಾಕಾರೋಸ್ತಯಸ್ಯಾಃ "ಠ್" (೪-೨-೧೧೪) |

**ನಾರಾಯಣ ನಾರಾಯಣ** (ಪುಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಬ್ರಹ್ಮ. ನರಾಣಾಂ ಸಮೂಹೋ ನಾರಮ್, ತದಯನಮಸ್ಯ—ಣತ್ವಮ್ (೮-೪-೩) | ನಾರಾಃ ಔಯಂತೇನ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | ನರಾಜ್ಞಾತಾನಿ ತತ್ತ್ವಾನಿ ಅಯನಮಸ್ಯ ಇತಿ ವಾ | ತನ್ನಿಂದ ಉಂಟಾದ ತತ್ತ್ವಗಳೆಲ್ಲಕ್ಕೂ ತಾನೇ ಅಶ್ರಯನಾದುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ನಾರಾಯಣನು. ಇದರಿಂದ ನಾರಾಯಣನು ಸರ್ವವ್ಯಾಪಿಯಾಗಿರುವನು. "ನರಾ- ಜ್ಞಾತಾನಿ ತತ್ತ್ವಾನಿ ನಾರಾಣಿತಿ ವಿದುರ್ಬುಧಾಃ | ತಾನೈವಚಾಯನಂ

ತಸ್ಯ ತೇನ ನಾರಾಯಣಃ ಸ್ಮೃತಃ" | ಬ್ರಹ್ಮಸೃಷ್ಟಿಗೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಮಹಾಜಲೋಘಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಪರಬ್ರಹ್ಮನಿಗೆ ಅಪ್ಪ (ಜಲ) ಅಶ್ರಯವಾಗಿದ್ದುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ನಾರಾಯಣನು. ನರಃ ಅಕ್ಷಯಃ ನಿರ್ವಿಕಾರಃ ಪರಮಾತ್ಮಾ, ತಸ್ಮಾಜ್ಞಾತಾ ನಾರಾ ಆಪಃ ಅಸ್ಯ ಪರಮಾತ್ಮನೋ ಅಯನಮಿತಿ ಅಸೌ ನಾರಾಯಣಃ | "ಆಪೋ ನಾರಾ ಇತಿ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಆಪೋ ವೈ ನರಸುನವಃ | ತಾ ಯದಸ್ಥಾಯನಂ ಪೂರ್ವ ತೇನ ನಾರಾಯಣಃ ಸ್ಮೃತಃ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ ೧-೪-೬ | "ಜಹ್ನು- ನಾರಾಯಣೋ ನರಃ" ವಿಂ ಸಂ | ನರಾಃ ಸ್ವರೂಪಪ್ರವಾಹನೀತೃವಸ್ತುನಿ, ತೇಷಾಂ ಸಮೂಹಾ ನಾರಾಃ, ತೇ ಅಯನಮಾಶ್ರಯೋಽಸ್ಯ ತೇಷಾಮಯನಮಿತಿ ವಾ ನಾರಾಯಣಃ | "ನಾನ್ಯಃ ಪನ್ಥಾ ವಿವೃತೇಽಪ್ಯನಾಯ" | ನಾರಾಯಣನೇ ಪರಮಾತ್ಮನು, ನಾರಾಯಣನೇ ಪರಬ್ರಹ್ಮ. ಪರಮಾತ್ಮನು ಸರ್ವವ್ಯಾಪಿ. "ನಾರಾಯಣಪರಂ ಬ್ರಹ್ಮ ತತ್ತ್ವಂ ನಾರಾಯಣಃ ಪರಃ | ಯನ್ವ ಕಿಂಚಿಜ್ಜಗತ್ಯಸ್ಮಿನ್ ದೃಶ್ಯತೇ ಶ್ರೂಯತೇಽಪಿ ವಾ | ಅಂತರ್ದೇಹಿಶ್ಚ ತತ್ತ್ವಂ ವ್ಯಾಪ್ಯ ನಾರಾಯಣಃ ಸ್ಥಿತಃ" | "एको ह वै नारायण आसीत्" | "चक्षुश्च द्रष्टव्यं च नारायणः" | "अथ दिव्यो देव एको नारायणः" | ಈ ರೀತಿ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಸರ್ವದೇಶವ್ಯಾಪಿತ್ವ ಸರ್ವಾಂತರ್ಯಾಮಿತ್ವ ಸರ್ವಾತ್ಮಕತ್ವ ಮೊದಲಾದುವು ಪ್ರತಿಪಾದಿತವಾಗಿವೆ. ಮತ್ತು ಪ್ರತಿಶಾಪೆಯಲ್ಲೂ ಮೂರ್ತ್ಯಂತರವ್ಯಾವರ್ತಕ ವಾದ ಹೆಸರು ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ.

ಸಮಸ್ತ ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಸ್ಥಿತಿಲಯಗಳೆಲ್ಲಕ್ಕೂ ನಾರಾ ಯಣನೇ ಕಾರಣನು. ತಾನೊಬ್ಬನೇ ಬ್ರಹ್ಮ ವಿಷ್ಣು ಮಹೇಶ್ವರರೆಂಬ ನಾಮರೂಪಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿ ಈ ಕಾರ್ಯ ಗಳನ್ನು ನಡೆಸುವನು. "ಸೃಷ್ಟಿस्थित्यन्तकरणीं ब्रह्मविष्णु- शिवात्मिकाम् | स संज्ञां याति भगवानेक एव जनार्दनः" | ವಿಷ್ಣುಪುಂ ೧-೨-೬೬ |

ಬ್ರಹ್ಮಸೃಷ್ಟಿಗೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿದ್ದ ಸ್ಥೂಲ ಚೇತನಾಚೇತನ ಶರೀರಿಯಾದ ಪರಮಾತ್ಮನಿಂದ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತನಾಮರೂಪಾ ತ್ಮಕವಾದ ಜಗತ್ತು ಉತ್ಪನ್ನವಾಯಿತು. "असद्वा इदमग्र आसीत् | ततो वै सदजायत | तदात्मानं स्वयमकुरुत" | ತೇಂ ೩ಂ |

ಬ್ರಹ್ಮಾದಿ ಸ್ತಂಭಪರ್ಯಂತವಾದ ಈ ಜಗತ್ತು ಯಾರಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನವಾಯಿತೋ ಯಾರಿಂದ ಜೀವಿಸಿರು ವುದೋ ಮತ್ತು ಯಾರಿಂದ ಪ್ರಲಯ ಹೊಂದುವುದೋ ಅದೇ ಪರಬ್ರಹ್ಮ. "यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते | येन जातानि जीवन्ति | यत्प्रयन्त्यभिसंक्रान्ति | तद्विजि- ज्ञासस्व | तद्ब्रह्मेति" | ತೇಂ ೩ಂ | "यस्मादिदं जगदजायत यत्र तिष्ठत्यन्ते समस्तमिदमस्तमुपैति यत्र | तस्मै



ನಮಃ ಸದಸದಾದಿವಿಕಲ್ಪಶೂನ್ಯಚೇತನ್ಯಮಾತ್ರವಪುಷೇ ಪುರುಷೋತ್ತಮಾಯ”  
ವಿಷ್ಣುಪುಂ ೧-೧-೧।

ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಗೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಚತುರ್ಮುಖ, ಪರಿಶಿವ, ಭೂಮಿ, ಅಂತರಿಕ್ಷ, ನಕ್ಷತ್ರಗಳು, ಅಗ್ನಿ, ಚಂದ್ರ, ಸೂರ್ಯರು ಮೊದಲಾದವರಾರೂ ಇರಲಿಲ್ಲ. ಇವರೆಲ್ಲರ ಸೃಷ್ಟಿಗೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಏಕಾಕಿಯಾಗಿ ಧ್ಯಾನಾಸಕ್ತನಾಗಿದ್ದ ನಾರಾಯಣ ನಿಂದ ಒಬ್ಬ ಕನ್ಯೆಯ ಮತ್ತು ದಶೇಂದ್ರಿಯಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿ ಯಾಯಿತು. ಅನಂತರ ಮತ್ತೆ ಧ್ಯಾನಮಾಡಲು ಲಲಾಟ ದಿಂದ ಸ್ವೇದವು ಬಿದ್ದು ಆ ನೀರು ಹಿರಣ್ಮಯವಾದ ಅಂಡ ವಾಯಿತು. ಅದರಿಂದ ಚತುರ್ಮುಖನು ಜನಿಸಿದನು.

“एको ह वै नारायण आसीत् न ब्रह्मा नेशानो नेमे द्यावा-  
पृथिवी न नक्षत्राणि नापो नाग्निर्न सोमो न सूर्यः स  
एकाकी न रमेत तस्य ध्यानान्तस्थस्य एका कन्या  
दशेन्द्रियाणि....”। “अथ पुनरेव नारायणः सोऽज्यं  
कामं मनसा ध्यायत तस्य ध्यानान्तस्थस्य ललाटात् स्वेदोऽ-  
पतत् ता इमा आपः तद्विरण्मयमण्डमभवत् तत्र चतुर्मुखोऽ-  
जायत”।

ಮತ್ತೆ ಧ್ಯಾನಾಸಕ್ತನಾದ ನಾರಾಯಣನ ಲಲಾಟದಿಂದ ಸ್ವೇದಜಲವು ಬಿದ್ದು ಅದು ನೊರೆಯಾಯಿತು. ಅದರಿಂದ ಫಲಾಕ್ಷನಾದ ಪರಮೇಶ್ವರನು ಜನಿಸಿದನು. “अथ पुनरेव नारायणस्सोऽज्यं कामं मनसा ध्यायत तस्य ध्यानान्तस्थस्य ललाटात् स्वेदोऽपतत् स्वेदाद्बुद्बुदमभवत् बुद्बुदात् त्र्यक्षः शूलपाणिः पुरुषोऽजायत” महोप०।

ಅನಂದಸ್ವರೂಪನಾದ ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣನು ಮೊದಲು ದೇವ ಮನುಷ್ಯಾದಿ ರೂಪದಿಂದ ಅನೇಕ ನಾಮ ರೂಪಗಳನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಗಾಗಿ ಸಂಕಲ್ಪಿಸಿ ದನು. “सोऽकामयत। बहुस्यां प्रजायेयेति। स तपोऽ-  
तप्यत। स तपस्तप्त्वा। इदं सर्वमसृजत” ತೆಂ ೩೦।

ಚೇತನಾಚೇತನಾತ್ಮಕವಾದ ಸಕಲ ಜಗತ್ತೂ ಪರಮ ಪುರುಷನಾದ ನಾರಾಯಣನ ಶರೀರವಾಗಿದೆ. ಪರಮಾತ್ಮ ನಿಗೆ ಭೂಮಿಯೇ ಪಾದಗಳು. ಆಕಾಶವೇ ನಾಭಿ (ಹೊಕ್ಕುಳು). ವಾಯುವೇ ಉಸಿರು. ಚಂದ್ರ ಸೂರ್ಯರೇ ನೇತ್ರಗಳು. ದಿಕ್ಕುಗಳೇ ಕರ್ಣಗಳು. ಅಂತರಿಕ್ಷವೇ ಶಿರಸ್ಸು. ಅಗ್ನಿಯೇ ವದನ. ಸಮುದ್ರವೇ ವಾಸಸ್ಥಾನ. ಈ ರೀತಿ ಯಾದ ಪರಮಾತ್ಮನ ಶರೀರದೊಳಗೆ ಸಕಲ ಪ್ರಪಂಚವೂ ಅಡಗಿರುವುದು. “भूः पादौ यस्य नाभिर्विद्यदसुरनिलः चन्द्रसूर्या च नेत्रे कर्णावाशाः शिरो धौर्मुखमपि दहनो यस्य वास्तेयमग्निः। अन्तस्थं यस्य विश्वं सुरनरखगो

भोगिगन्धर्वदेत्यैश्चित्रं रंरम्यते तं त्रिभुवनवपुषं विष्णुमीशं नमामि”।

ಪರಮಪುರುಷನಾದ ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣನು ಸಮಷ್ಟಿ ಪುರುಷನೆನಿಸಿದ ಬ್ರಹ್ಮನನ್ನು ತನಗೆ ಶರೀರವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿ ಕೊಂಡು ಅವನಲ್ಲೇ ಅಂತರಾತ್ಮನಾಗಿ ಕಾಲಕರ್ಮ ಸ್ವಭಾವ ಗಳನ್ನನುಸರಿಸುತ್ತ ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಅದನ್ನು ಜೀವಸಹಿತವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದಾಗ ಆ ಅಂಡದಿಂದ ಸಾವಿರ ತೊಡೆಗಳು, ಸಾವಿರ ಕಾಲುಗಳು, ಸಾವಿರ ತೋಳುಗಳು ಮತ್ತು ಸಾವಿರ ಮುಖಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ಪುರುಷಾ ಕಾರವು ಹೊರಟಿತು. ಅವನೇ ಸರ್ವಾಂತರ್ಯಾಮಿಯಾದ ಪರಮಾತ್ಮನು. “वर्षपूगसहस्रान्ते तदण्डमुदकेशयम्। कालकर्मस्वभावस्थो जीवो जीवमजीवयत्॥ स एव पुरुष-  
स्तस्मादणं निर्भिद्य निर्गतः। सहस्रोर्वङ्घ्रिबाह्वक्षः सहस्रा-  
ननशीर्षवान्” भाग० २-५-३४, ५। “सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमि विश्वतो वृत्वा” श्रुतिः।

ಸಕಲ ಲೋಕಗಳೂ ಶರೀರವಾಗಿಲುಳ್ಳ ಪರಮಪುರುಷನ ಕಟಿಭಾಗದಿಂದ ಕೆಳಗಿನ ಅವಯವಗಳನ್ನು ಪಾತಾಳಾದಿ ಸಪ್ತ ಅಧೋಲೋಕಗಳನ್ನಾಗಿಯೂ ಜಘನಕ್ಕೆ ಮೇಲಿನ ಅವಯವಗಳನ್ನು ಸಪ್ತ ಊರ್ಧ್ವ ಲೋಕಗಳನ್ನಾಗಿಯೂ ಕಲ್ಪಿಸಿ ಧ್ಯಾನಮಾಡುವರು. “यस्येहावयवैर्लोकान् कल्प-  
यन्ति मनीषिणः। कट्यादिभिरयः सप्त सप्तोर्ध्वं जघना-  
दिभिः” भाग० २-५-३६। “भूलोकः कल्पितः पद्भ्यां भुवर्लोकोऽस्य नाभितः। हृदा स्वर्लोक उरसा महर्लोको महात्मनः। ग्रीवायां जनलोकश्च तपोलोकः स्तनद्वयात्। मूर्धभिः सत्यलोकस्तु ब्रह्मलोकः सनातनः। तत्कट्यां चातलं क्लृप्तमूर्ध्यां वितलं विभोः। जानुभ्यां सुतलं शुद्धं जङ्घाम्यां तु तलातलम्। महातलं तु गुल्फाम्यां प्रपदाम्यां रसातलम्। पातालं पादतलतः इति लोकमयः पुमान्” भाग० २-५-३८, ३९, ४०, ४१।

ವಿರಾಟ್ ಪುರುಷನ ವಿಭೂತಿಗಳು — ವಾಗ್ಗಿಂದ್ರಿಯಕ್ಕೂ ಅದರ ಅಧಿಷ್ಠಾನದೇವತೆಯಾದ ಅಗ್ನಿಗೂ ಪರಮ ಪುರುಷನ ವದನವೇ ಆಶ್ರಯ. ಹವ್ಯ ಕವ್ಯ ಮತ್ತು ಅಮೃತರೂಪವಾದ ಮೂರು ವಿಧವಾದ ಅನ್ನಗಳಲ್ಲಿರುವ ಷಡ್ರಸಗಳಿಗೂ ಮತ್ತು ರಸನೇಂದ್ರಿಯಕ್ಕೂ ಅದರ ಅಧಿದೇವತೆಯಾದ ವರುಣನಿಗೂ ಪರಮಪುರುಷನ ನಾಲಗೆಯೇ ಸ್ಥಾನ. ಸಕಲ ಜೀವರಾಶಿಗಳ ಪ್ರಾಣಗಳಿಗೂ ಅವುಗಳ ಅಧಿದೇವತೆಯಾದ ವಾಯುವಿಗೂ ಪರಮಾತ್ಮನ ನಾಸಾರಂಧ್ರ (ಮೂಗಿನ ಹೊಳ್ಳೆ) ಗಳೇ ಆಶ್ರಯ ಸ್ಥಾನ.



ಓಷಧಿಗಳಿಗೂ ಅಶ್ವಿನೀದೇವತೆಗಳಿಗೂ ಇಷ್ಟವಸ್ತುವಿನ ಪ್ರಾಪ್ತಿಯಿಂದಂಟಾಗುವ ಸಂತೋಷಕ್ಕೂ ಪರಮಾತ್ಮನ ಘ್ರಾಣೇಂದ್ರಿಯವೇ ಆಶ್ರಯಸ್ಥಾನ. ಶುಕ್ಲ ಕೃಷ್ಣಾದಿ ವರ್ಣಗಳಿಗೂ ತೇಜಸ್ಸಿಗೂ ಅವನ ನೇತ್ರೇಂದ್ರಿಯವೂ ದ್ಯುಲೋಕಕ್ಕೂ ಸೂರ್ಯನಿಗೂ ಅವನ ನೇತ್ರಗಳೂ ಆಕಾಶ ಮತ್ತು ಶಬ್ದಗಳಿಗೆ ಅವನ ಶ್ರೋತ್ರೇಂದ್ರಿಯವೂ ಲೋಕಕ್ಷೇಮಕರರಾದ ಇಂದ್ರಾದಿಲೋಕಪಾಲಕರಿಗೆ ಬಾಹುಗಳೂ ಭೂಭುವಃ ಸ್ವರ್ಲೋಕಗಳಿಗೆ ಪರಮಾತ್ಮನ ಮೂರಡಿಗಳೂ ಸಕಲಲೋಕಕ್ಷೇಮ ಅನಿಷ್ಟನಿವಾರಣೆ ಮತ್ತು ಇಷ್ಟಪ್ರಾಪ್ತಿಗೆ ಪರಮಪುರುಷನ ಪಾದವೂ ಆಶ್ರಯಸ್ಥಾನಗಳು. ಸಮಸ್ತ ನದಿಗಳಿಗೂ ಆತನ ನಾಡಿಗಳೂ ಪರ್ವತಗಳಿಗೆ ಅವನ ಅಸ್ಥಿ ಪಂಜರವೂ ಸ್ಥಾನವಾಗಿರುವುದು. ಧರ್ಮಕ್ಕೂ ಸನಕಾದಿಗಳಿಗೂ ರುದ್ರನಿಗೂ ಮಹತ್ತ್ವಕ್ಕೂ ಪರಮಪುರುಷನ ಮನಸ್ಸೇ ಆಶ್ರಯಸ್ಥಾನ. ಈ ರೀತಿ ಪರಮಪುರುಷನಾದ ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣನಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನವಾದ ಜಗತ್ತೆಲ್ಲವೂ ಅವನ ವಿಭೂತಿಗಳಾಗಿ ಅವನಿಗೆ ಶರೀರವಾಗಿರುವದರಿಂದ ಅವನಿಗಿಂತಲೂ ಅತಿರಿಕ್ತವಾದ ವಸ್ತುವು ಬೇರೆ ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲ. “ವಾಚಾಂ ವಹ್ನೇಮುಖಂ ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಚಂದಸಾಂ ಸಪ್ತ ಧಾತವಃ । ಹವ್ಯಕವ್ಯಾಮೃತಾಕ್ಷಾಣಾಂ ಜಿಹ್ವಾ ಸರ್ವರಸಸ್ಯ ಚ । ಸರ್ವಾಸುನಾಂ ಚ ವಾಯೋಽಶ್ವ ತಕ್ಷಾಸೇ ಪರಮಾಯನೇ । ಅಶ್ವಿನೋರೋಷಧೀನಾಂ ಚ ಧ್ರಾಣೋ ಮೋದಪ್ರಮೋದಯೋಃ । ರೂಪಾಣಾಂ ತೇಜಸಾಂ ಚಕ್ಷುಃ ದಿವಃ ಸೂರ್ಯಸ್ಯ ಚಾಕ್ಷಿಣಿ । ಕರ್ಣಾ ದಿಶಾಂ ಚ ತೀರ್ಥಿನಾಂ ಶ್ರೋತ್ರಮಾಕಾಶಶಬ್ದಯೋಃ । ಬಾಹ್ವೋ ಲೋಕಪಾಲಾನಾಂ ಪ್ರಾಯಶಃ ಕ್ಷೇಮಕರ್ಮಣಾಮ್ । ವಿಕ್ರಮೋ ಭೂಮಿವಃ ಸ್ವಾಕ್ಷ ಕ್ಷೇಮಸ್ಯ ಶರಣಸ್ಯ ಚ । ಸರ್ವಕಾಮವರಸ್ಯಾಪಿ ಹರೇಶ್ವರಣ ಆಸ್ಪದಮ್ । ನಾಡ್ಯೋ ನದನದೀನಾಂ ತು ಗೋತ್ರಾಣಾಮಸ್ಥಿಸಂಹತಿಃ । ಧರ್ಮಸ್ಯ ಮಮ ತುಮ್ಯಂ ಚ ಕುಮಾರಾಣಾಂ ಭವಸ್ಯ ಚ । ವಿಜ್ಞಾನಸ್ಯ ಚ ಸತ್ವಸ್ಯ ಪರಸ್ಯಾತ್ಮಾ ಪರಾಯಣಮ್ । ಸರ್ವಂ ಪುರುಷ ಏವೇದಂ ಭೂತಂ ಭವ್ಯಂ ಭವಚ್ಚ ಯತ್ । ತೇನೇದಮಾವೃತಂ ವಿಶ್ವಂ ವಿಸ್ತಿಸ್ತಿಮಧಿತಿಸ್ಥಿತಿಃ” ಭಾಗಂ ೨-೬ । “ಪುರುಷ ಏವೇದಗ್ಂ ಸರ್ವಮ್ । ಯದ್ಭೂತಂ ಯಚ್ಚ ಭವ್ಯಮ್” । ಸರ್ವಂ ಖಲ್ವಿದಂ ಬ್ರಹ್ಮ । ಅಯಮಾತ್ಮಾ ಬ್ರಹ್ಮ” ಶ್ರುತಿಃ ।

ನಾಭಿಯಿಂದ ಒಂದು ಗೇಣಳತೆಗೆ ಮೇಲೆ ನೆಲೆಸಿರುವ ನಮ್ಮ ಹೃದಯಕಮಲದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ ಆ ಪರಮಾತ್ಮನಿಂದಲೇ ಈ ಸಕಲ ಜಗತ್ತೂ ಅವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದು. “ಅಥೋ ನಿಷ್ಠಯಾ ವಿಸ್ತಸ್ಯಾಂ ತು ನಾಮ್ಯಾಮುಪರಿ ತಿಷ್ಠತಿ । ಹೃದಯಂ ತದ್ವಿಜಾನೀಯಾದಿಶ್ವಸ್ಯಾಯತನಂ ಮಹತ್” ಶ್ರುತಿಃ ।

ಜಗದ್ರಕ್ಷಣಾರ್ಥವಾಗಿ ಅನೇಕ ರೂಪಗಳನ್ನು ಕೈಗೊಂಡರೂ ಜೀವಾತ್ಮನ ವ್ಯಾಪಾರಗಳಂತೆ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಜಗದ್ವ್ಯಾಪಾರವು ಕರ್ಮಾಧೀನವಾದುದಲ್ಲ. ಪರಮಾತ್ಮನು

ಕೇವಲ ಜ್ಞಾನಸ್ವರೂಪನು. ಜನ್ಮಜರಾದಿಗಳಿಲ್ಲದವನಾದುದರಿಂದ ನಾಶರಹಿತನು ಮತ್ತು ನಿತ್ಯನು. ಅವನು ಅವಾಪ್ತಸಮಸ್ತಕಾಮನು. ಪ್ರಕೃತಿಸಂಬಂಧವಾದ ಯಾವ ಗುಣಗಳೂ ಅವನಲ್ಲಿಲ್ಲ. ಸದಾ ಏಕಸ್ವರೂಪನು. ಪರಬ್ರಹ್ಮ ಶಬ್ದವಾಚ್ಯನು. ಕಾಮ ಕ್ರೋಧ ಮೋಹಾದಿಗಳು ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲದುದರಿಂದ ನಿರ್ಮಲನು. “ತದ್ಬ್ರಹ್ಮ ಪರಮಂ ನಿಯಮಜಮಕ್ಷಯಮವ್ಯಯಮ್ । ಏಕಸ್ವರೂಪಂ ತು ಸದಾ ಹೇಯಾಭಾವಾನ್ವ ನಿರ್ಮಲಮ್” ವಿಷ್ಣುಪುಂ ।

ಸಮಸ್ತ ಜಗತ್ತಿಗೂ ನಿಮಿತ್ತಕಾರಣನೂ ಉಪಾದಾನಕಾರಣನೂ ಆಗಿರುವದರಿಂದ ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣನು ಸಕಲಕ್ಕೂ ಮೂಲಕಾರಣನು. “ನಮೋ ನಮಸ್ತೇಽಖಿಲಕಾರಣಾಯ ನಿಷ್ಕಾರಣಾಯಾದ್ಭೂತಕಾರಣಾಯ । ಸರ್ವಾಗಮಾನ್ಮನಾಮಹಾಣಂವಾಯ ನಮೋಽಖವರ್ಗಾಯ ಪರಾಯಣಾಯ” ಭಾಗಂ ೮-೩-೧೫ ।

ವಾಯುವು ಸ್ಥಾವರಜಂಘಮಾತ್ಮಕವಾದ ಸಮಸ್ತ ಭೂತಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಅವುಗಳನ್ನು ಕೆದರಿಸುವಂತೆ ಪರವಾಸುದೇವನಾದ ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣನು ಜೀವಾತ್ಮನಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಪಿಸಿ ಅವುಗಳಿಂದ ಕೆಲಸಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವನು. “ಯಥಾನಿಲಃ ಸ್ಥಾವರಜಙ್ಗಮಾನಾಮಾತ್ಮಸ್ವರೂಪೇಣ ನಿವಿಷ್ಟಃ ಕ್ಷೇತಃ । ಏವಂ ಪರೋ ಭಗವಾನ್ ವಾಸುದೇವಃ ಕ್ಷೇತ್ರಜಃ ಆತ್ಮೇದಮನುಪ್ರವಿಷ್ಟಃ” ಭಾಗಂ ೫-೧೧ ।

“ಯಮಂತಃ ಸಮುದ್ರೇ ಕವಯೋ ವಯಂತಿ” ಎಂಬ ಶ್ರುತಿಯಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಸಮುದ್ರಶಾಯಿತ್ವವೂ “ಯದೇಕಮವ್ಯಕ್ತಮನಂತರೂಪಂ ವಿಶ್ವಂ ಪುರಾಣಂ ತಮಸಃ ಪರಸ್ತಾತ್” ಎಂಬ ಶ್ರುತಿ ವಾಕ್ಯದಿಂದ ಅಜ್ಞಾನಕ್ಕಿಂತಲೂ ದೂರವರ್ತಿತ್ವವೂ “ಯಃ ಪ್ರಾಣಂ ವಿಹೃತಮೃತಾಸ್ತೇ ಭವಂತಿ” ಎಂಬ ವಾಕ್ಯದಿಂದ ಮೋಕ್ಷ ಪ್ರಾಪ್ತಿಹೇತುತ್ವವೂ “ವಿಶ್ವತಃಪ್ರಕೃತಃ ವಿಶ್ವತೋಮುಖಃ” ಇತ್ಯಾದಿ ವಾಕ್ಯಗಳಿಂದ ಸಹಸ್ರಾರ್ಥತ್ವ ಸಹಸ್ರಶೀರ್ಷತ್ವ ಮೊದಲಾದುವೂ ಸಿದ್ಧವು.

ಚಿದಚಿದಾತ್ಮಕವಾದ ಸಕಲಜಗತ್ತಿಗೂ ಪರಮಪುರುಷನೇ ಕಾರಣನು. ಪರಮಪುರುಷನಿಂದಲೇ ಎಲ್ಲವೂ ಪ್ರವರ್ತಿಸುವುದು ಎಂದು ಜ್ಞಾನಿಗಳು ಪರಮಾತ್ಮನ ಸ್ವಾಭಾವಿಕವಾದ ಐಶ್ವರ್ಯ ಸೌಹಾರ್ದ ಸೌಶೀಲ್ಯ ವಾತ್ಸಲ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಅನನ್ತಕಲ್ಯಾಣಗುಣಗಳನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಂಡು ಭಜಿಸುವರು. “ಅಹಂ ಸರ್ವಸ್ಯ ಪ್ರಭವಃ ಮತ್ತಃ ಸರ್ವಂ ಪ್ರವರ್ತತೇ । ಇತಿ ಮತ್ವಾ ಭಜಂತೇ ಮಾಂ ಬುದ್ಧಾ ಭಾವಸಮನ್ವಿತಾಃ” ಗೀತಾ ೧೦-೮ ।

ಯೋಗಮಾಯೆಯಿಂದ ಅವ್ಯತನಾದ ಪರಮಪುರುಷನನ್ನು ಯಾರೂ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಿ ಕಾಣಲಾರರು. ಮೂಢನಾದವನು ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು ಅಜನೆಯೆಂದೂ ಅವ್ಯಯನೆಂದೂ



ತಿಳಿಯಲಾರನು. "ನಾಹಂ ಪ್ರಕಾಶಃ ಸರ್ವಸ್ಯ ಯೋಗಮಾಯಾಸಮಾವೃತಃ |  
ಮೂಢೋಽಯಂ ನಾಭಿಜಾನಾತಿ ಲೋಕೋ ಮಾಮಜಮವ್ಯಯಮ್" ಗೀತಾ ೯-೨೩ |

ಪರಮಪುರುಷನಾದ ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣನು ತನಗೆ ಶರೀರಭೂತವಾದ ಮಹಾಮಾಯಾರೂಪವಾದ ಪ್ರಕೃತಿಯಿಂದ ಆ ಪ್ರಕೃತಿಗೆ ವಶವಾದ ಸಕಲಪ್ರಾಣಿವರ್ಗವನ್ನೂ ಸೃಷ್ಟಿಸುತ್ತಿರುವನು. ಕರ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಅಸಕ್ತನಾದ ಅವನನ್ನು ಆ ಕರ್ಮಗಳು ಬಂಧಿಸುವುದಿಲ್ಲ. ಸಕಲ ಭೂತಗಳಿಗೂ ಈಶ್ವರನಾಗಿರುವ ಮತ್ತು ಲೋಕ ಸಂರಕ್ಷಣಾರ್ಥವಾಗಿ ಮಾನುಷದೇಹವನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿದ ಪರಮಪುರುಷನ ಪರತ್ವವನ್ನು ಅರಿಯದ ಮೂಢರು ಅವನನ್ನು ತಿರಸ್ಕಾರ ಬುದ್ಧಿಯಿಂದ ಕಾಣುತ್ತಾರೆ. "ಪ್ರಕೃತಿಃ ಸ್ವಾಮಿವಕ್ಷ್ಯಮ್ಯ ವಿಸೃಜಾಮಿ ಪುನಃ ಪುನಃ | ಭೂತಗ್ರಾಮಮಿಮಂ ಕೃತ್ಸ್ನಮವಶಂ ಪ್ರಕೃತೇರ್ವಶಾತ್ | ನ ಚ ಮಾಂ ತಾನಿ ಕರ್ಮಣಿ ನಿಬಂಧಂತಿ ಧನಂಜಯ | ಉದಾಸೀನವದಾಸೀನಮಸಕ್ತಂ ತೇಷು ಕರ್ಮಸು | ಮಯಾಧ್ಯಕ್ಷೇಣ ಪ್ರಕೃತಿಃ ಸೂಯತೇ ಸಚರಾಚರಮ್ | ಹೇತುನಾನೇನ ಕೌಂತೇಯ ಜಗದ್ವಿಪರಿವರ್ತತೇ | ಅವಜಾನಂತಿ ಮಾಂ ಮೂಢಾ ಮಾನುಷಿಂ ತನುಮಾಶ್ರಿತಮ್ | ಪರಂ ಭಾವಮಜಾನಂತೋ ಮಮ ಭೂತಮಹೇಶ್ವರಮ್" ಗೀತಾ ೯ | "ಅಸ್ಮಾನ್ಮಾಯಿ ಸೃಜತೇ ವಿಶ್ವಮೇತತ್ ತಸ್ಮಿನ್ನಾನ್ಯೋ ಮಾಯಯಾ ಸನ್ನಿಹದಃ | ಮಾಯಾಂ ತು ಪ್ರಕೃತಿಂ ವಿಶ್ವಾತ್ ಮಾಯಿನಂ ತು ಮಹೇಶ್ವರಮ್" ಶ್ವೇತಾಂ ೩೫ |

ಅನೇಕಜನ್ಮಗಳಿಂದ ಆಚರಿಸಿದ ಪುಣ್ಯಕರ್ಮಗಳಿಂದ ಮೋಕ್ಷವಿರೋಧಿಯಾದ ಪಾಪಗಳನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡವರು ಸುಖದುಃಖಾದಿ ದ್ವಂದ್ವಗಳ ಮೋಹದಿಂದ ವಿಮುಕ್ತರಾಗಿ ಮೋಕ್ಷಪ್ರಾಪ್ತಿಗಾಗಿ ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು ಭಜಿಸುತ್ತಾರೆ. "ಯೇಷಾಮನ್ತಗತಂ ಪಾಪಂ ಜನಾಣಾಂ ಪುಣ್ಯಕರ್ಮಣಾಮ್ | ತೇ ದ್ವಂದ್ವಮೋಹನಿರ್ಮುಕ್ತಾಃ ಭಜಂತೇ ಮಾಂ ದೃಢವ್ರತಾಃ" ಗೀತಾ ೭-೨೭ |

ದೇವ ತಿರ್ಮುಕ್ತ ಮನುಷ್ಯ ಸ್ಥಾವರ ರೂಪವಾದ ಮತ್ತು ಜಾತಿ ಆಕಾರ ಸ್ವಭಾವ ಮತ್ತು ಜ್ಞಾನ ಇವುಗಳಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನ ಮತ್ತು ಅಪಕೃಷ್ಟವಾಗಿರುವ ಸಕಲ ಭೂತಗಳ ವಿಷಯದಲ್ಲಿಯೂ ಪರಮಾತ್ಮನು ಸಮಾನನು. ಜಾತ್ಯಾಕಾರಾದಿಗಳಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನ ಅಥವಾ ನಿತ್ಯವೆಂಬ ಭಾವವೂ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗಿಲ್ಲ. ಅವನಿಗೆ ದ್ವೇಷಿಯೂ ಮಿತ್ರನೂ ಯಾರೂ ಇಲ್ಲ. "ಸಮೋಹಂ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ನ ಮೇ ದ್ವೇಷೋಽಸ್ತಿ ನ ಪ್ರಿಯಃ" ಗೀತಾ ೯-೨೯ |

ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಬಹಳ ಕಷ್ಟಕಾರ್ಪಣ್ಯಗಳಿಗೆ ಸಿಲುಕಿ ನರಳುತ್ತಿರುವ ಆರ್ತನೂ ಪರತತ್ತ್ವ (ಪ್ರಕೃತಿವಿಮುಕ್ತ ಆತ್ಮ ಸ್ವರೂಪ)ವನ್ನು ತಿಳಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನೂ ಧನಾಪೇಕ್ಷಿಯೂ ಪರಮಾತ್ಮತತ್ತ್ವವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದಿರುವ ಜ್ಞಾನಿಯೂ ಆದ ಪುಣ್ಯಶಾಲಿಗಳು ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು ಸೇವಿಸುವರು. ಅವರಲ್ಲಿ ನಿರಂತರವಾಗಿ ಪರಮಭಕ್ತಿ

ಯಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನ ಕೃಪೆಯನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ ಜ್ಞಾನಿಯೇ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಪ್ರಿಯನಾದವನು. "ಚತುರ್ವಿಧಾ ಭಜಂತೇ ಮಾಂ ಜನಾಃ ಸುಕೃತಿನೋಽರ್ಜುನ | ಆರ್ತೋ ಜಿಜ್ಞಾಸುರರ್ಥಾಶೀ ಜ್ಞಾನೀ ಚ ಭರತರ್ಷಭ | ತೇಷಾಂ ಜ್ಞಾನೀ ನಿಯತಯುಕ್ತಃ ಏಕಭಕ್ತಿವಿಶಿಷ್ಟತೇ" ಗೀತಾ ೭ |

ವೇದಾಧ್ಯಯನ ತಪಸ್ಸು ದಾನ ಯಾಗ ಈ ಯಾವುದರಿಂದಲೂ ಆ ವಿರಾಟ್ಸ್ವರೂಪನಾದ ಪರಮಾತ್ಮನ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿಯಲೂ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರಿಸಲೂ ಸಾಧ್ಯವಾಗಲಾರದು. ಮನಃಶುದ್ಧಿಹೊಂದಿ ಅನನ್ಯವಾದ ಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಸೇವಿಸುವವರಿಗೆ ಮಾತ್ರ ಪರಮಾತ್ಮನ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿಯಲೂ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರಿಸಲೂ ಮೋಕ್ಷವನ್ನು ಹೊಂದಲೂ ಸಾಧ್ಯವು. "ನಾಹಂ ವೇದೇನ ತಪತಾ ನ ದಾನೇನ ನ ಚೇಜ್ಯಯಾ | ಶಕ್ಯಂ ಏವಂವಿಧೋ ದ್ರಷ್ಟುಂ ದೃಷ್ಟವಾನಸಿ ಮಾಂ ಯಥಾ || ಭಕ್ತ್ಯಾ ತ್ವನ್ಯಯಾ ಶಕ್ಯಃ ಅಹಮೇವಂವಿಧೋಽರ್ಜುನ | ಜಾತುಂ ದ್ರಷ್ಟುಂ ಚ ತತ್ತ್ವೇನ ಪ್ರವೇಷ್ಟುಂ ಚ ಪರಂತಪ" ಗೀತಾ ೧೧-೨೩, ೨೪ | "ನಾಯಮಾತ್ಮಾ ಪ್ರವಚನೇನ ಲಭ್ಯೋ ನ ಮೇಧಯಾ ನ ಬಹುನಾ ಶ್ರುತೇನ | ಯಮೇವೇಷ ವೃಣುತೇ ತೇನ ಲಭ್ಯಸ್ತಸ್ಯೇಷ ಆತ್ಮಾ ಬಿವೃಣುತೇ ತನ್ನಂ ಸ್ವಾಮ್" ಕಠಂ ೧-೨-೨೩ |

ಮನುಷ್ಯನು, ತಾನು ಪರವಾಸುದೇವನಿಗೆ ಶೇಷ ಭೂತನು, ತನ್ನ ಸ್ವರೂಪಸ್ಥಿತಿ ವ್ಯಾಪಾರಗಳೆಲ್ಲವೂ ಅವನ ಅಧೀನ ಮತ್ತು ಅಸಂಖ್ಯಾತ ಕಲ್ಯಾಣಗುಣಗಳಿಂದ ಅವನೇ ಪರತರನು ಎಂಬ ಜ್ಞಾನವನ್ನು ಅನೇಕ ಜನ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಪಾದಿಸಿ, ವಾಸುದೇವನೇ ಪರಮಪ್ರಾಪ್ಯನು ಮತ್ತು ಪ್ರಾಪಕನು ಎಂದು ತಿಳಿದು ಕೊನೆಗೆ ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು ಹೊಂದುತ್ತಾನೆ, ಅಂತಹವನು ವಿರಳ. "ಬಹುನಾಂ ಜನ್ಮನಾಮಂತೇ ಜ್ಞಾನವಾನ್ ಮಾಂ ಪ್ರಪದ್ಯತೇ | ವಾಸುದೇವಃ ಸರ್ವಮಿತಿ ಸ ಮಹಾತ್ಮಾ ಸುದುರಲಭಃ" ಗೀತಾ ೭-೧೯ |

ಪರವಾಸುದೇವನಾದ ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣನೇ ಪರಮ ಪ್ರಾಪ್ಯನೆಂದು ತಿಳಿದು ಪ್ರಯೋಜನಾಂತರಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದೆ ಸತತವೂ ಅವನನ್ನು ಪೂಜಿಸುತ್ತಾ ಅವನ ನಿರಂತರ ಸಾಯುಜ್ಯವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವರಿಗೆ ಅವನು ಅವನರಾ ವೃತ್ತಿರೂಪವಾದ ಮೋಕ್ಷಸಾಮ್ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸುವನು. "ಅನ್ಯಾಶ್ಚಿಂತಯಂತೋ ಮಾಂ ಯೇ ಜನಾಃ ಪರ್ಯುಪಾಸತೇ | ತೇಷಾಂ ನಿಯತಮಿಯುಕ್ತಾನಾಂ ಯೋಗಕ್ಷೇಮಂ ವಹಾಮ್ಯಹಮ್" ಗೀತಾ ೯-೨೨ |

ಸಮಸ್ತಭೂತಗಳಿಗೂ ಅಂತರಾತ್ಮನಾಗಿ ಅವುಗಳನ್ನು ಆಯಾ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ನಿಯಮಿಸುವವನು ಪರಮಾತ್ಮನೇ ಹೊರತು ಬೇರೆಯಾರಿಗೂ ಯಾವ ವಿಧದಲ್ಲೂ ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ. ಸಮಸ್ತಭೂತಗಳಿಗೂ ಅವನು ಸುಹೃತ್ತು. ಎಲ್ಲವೂ ಅವನ ಸ್ವರೂಪವಾದುದರಿಂದ ಸಮಸ್ತಭೂತಗಳೂ



ಅವನೇ ಎಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕು. “ಅಹಮಾತ್ಮೋದವಾಮಿಷಾಂ  
ಭೂತಾನಾಂ ಸುಹೃದೀಶ್ವರಃ । ಅಹಂ ಸರ್ವಾಣಿ ಭೂತಾನಿ ತेषಾಂ ಸ್ಥಿತ್ಯು-  
ದ್ಭವಾಪ್ಯಯಃ” ಭಾಗಂ ೧೧-೧೬ ।

ಮುಮುಕ್ಷುಗಳು ತಿಳಿಯಬೇಕಾಗಿರುವ ಅಕ್ಷರನೂ  
ಜಗತ್ತಿಗೆ ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ಆಧಾರನೂ ಅವ್ಯಯನೂ ಶಾಶ್ವತ  
ವಾದ ಧರ್ಮಗಳನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನೂ ಸನಾತನನಾದ  
ಪುರುಷನೂ ಆದವನು ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣನು. “ತವಕ್ಷರಂ  
ಪರಮಂ ವೇದಿತವ್ಯಂ ತವಸ್ಯ ವಿಶ್ವಸ್ಯ ಪರಂ ನಿಧಾನಮ್ ।  
ತವವ್ಯಯಃ ಶಾಶ್ವತಧರ್ಮಗೋಪ್ತಾ ಸನಾತನಸ್ತ್ವಂ ಪುರುಷೋ ಮತೋ ಮೇ”  
ಗೀತಾ ೧೧-೧೮ ।

ಪರಮಾತ್ಮನು ಅಚಿಂತ್ಯಸ್ವರೂಪನು. ಅವನ ಮಹಿ-  
ಮೆಯು ಇಷ್ಟೇ ಎಂದು ಹೇಳಲು ಯಾರಿಂದಲೂ ಸಾಧ್ಯ  
ವಿಲ್ಲ. ಸರ್ವಜ್ಞನಾದ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೂ ತನ್ನ ಮಹಿಮೆ  
ಯನ್ನು ಲೆಕ್ಕಹಾಕಿ ಎಣಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ. “ಯತೋ ವಾಚೋ  
ನಿವರ್ತಂತೇ । ಅಪ್ರಾಪ್ಯ ಮನಸಾ ಸಹ” ಶ್ರುತಿಃ । “ಸಂಖ್ಯಾಂ  
ಪರಮಾಣುನಾಂ ಕಾಲೇನ ಕ್ರಿಯತೇ ಮಯಾ । ನ ತಥಾ ಮೇ ವಿಭೂತೀನಾಂ  
ಸೃಜತೋಽಙ್ಗಾಣಿ ಕೋಟಿಶಃ” ಭಾಗಂ ೧೧-೧೬-೨೯ ।

ಸರ್ವಲೋಕಶರಣ್ಯನೂ ಆಶ್ರಿತವಾತ್ಸಲ್ಯೈಕಜಲ  
ಧಿಯೂ ಆದ ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣನು ಮೋಕ್ಷಪ್ರದನು  
ಮಾತ್ರವಲ್ಲದೆ ಅವನೇ ಶರಣ್ಯನೆಂದು ತಿಳಿದ ಅವನ  
ಭಕ್ತಕೋಟಿಗೆ ಆಯುಸ್ಸು ಆರೋಗ್ಯ ಐಶ್ವರ್ಯ ಮತ್ತು  
ಸಕಲ ಭೋಗಗಳನ್ನೂ ಅನುಗ್ರಹಿಸುವನು. “ಶರೀರಾರೋಗ್ಯ-  
ಮರ್ಯಾಶ್ಚ ಭೋಗಾಶ್ಚೇವಾನುಷ್ಠಾಂಜ್ಞಿಕಾನ್ । ದದಾತಿ ಧ್ಯಾಯತಾಂ ನಿತ್ಯ-  
ಮಪವರ್ಗಪ್ರದೋ ಹರಿಃ” ।

ಅನನ್ತಕಲ್ಯಾಣಗುಣಗಣಪರಿಪೂರ್ಣನೂ ಅಚಿಂತ್ಯ  
ಸ್ವರೂಪನೂ ಅಚಿಂತ್ಯಮಹಿಮನೂ ಆದ ಪರವಾಸುದೇವ  
ನಾದ ಜಗತ್ಪ್ರಭು ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣನಿಗೆ ಪರಮವೈರೋಮ  
ವೆಂಬ ಶ್ರೀವೈಕುಂಠವೇ ಆವಾಸಸ್ಥಾನ. ಅಲ್ಲಿ ಶ್ರೀಮಹಾ  
ಲಕ್ಷ್ಮೀಸಮೇತನಾಗಿ ಶೇಷಶಾಯಿಯಾಗಿ ಅನನ್ತ ಗರುಡ  
ವಿಷ್ಣುಕುಸೇನಾದಿ ನಿತ್ಯಮುಕ್ತರಿಂದಲೂ ಪರಮಭಕ್ತರಾದ  
ಭಾಗವತೋತ್ತಮರಿಂದಲೂ ಅನವರತವೂ ಸೇವಿಸಲ್ಪಡು-  
ತ್ತಿರುವನು. “ವೈಕುಂಠೇ ತು ಪರೇ ಲೋಕೇ ಶ್ರಿಯಾ ಸಾರ್ಥಂ ಜಗತ್ಪತಿಃ ।  
ಆಸ್ತೇ ವಿಷ್ಣುರಚಿಂತ್ಯಾತ್ಮಾ ಭಕ್ತೇರ್ಭಗವತೈಃ ಸಹ” । “ತಥಾ  
ಸಹಾಸೀನಮನಂತಭೋಗಿನಿ ಪ್ರಕೃಷ್ಟವಿಜ್ಞಾನಬಲಕಥಾಮನಿ । ಫಣಾ-  
ಮಣಿವ್ರಾತಮಯುಕ್ತಮಂಡಲಪ್ರಕಾಶಮಾನೋದರದಿವ್ಯಧಾಮನಿ” ಸ್ತೋ-  
ರಂ ।

ಧ್ಯಾನ ಶ್ಲೋಕ—“ಧ್ಯೇಯಃ ಸದಾ ಸವಿತುಮಂಡಲಮಧ್ಯವರ್ತೀ  
ನಾರಾಯಣಃ ಸರಸಿಜಾಸನಸಂನಿವಿಷ್ಟಃ । ಕೇಯೂರವಾನ್ ಮಕರಕುಂಡಲ-  
ವಾನ್ ಕಿರೀಟಿ ಹಾರಿ ಹಿರಣ್ಯವಪುಃ ಧೃತಶಕ್ತಚಕ್ರಃ” । “ಸರ್ವಂ

ಪಾದಂ ಪ್ರಸಾರ್ಯ ಶ್ರುತದ್ವರಿತಹರಂ ದಕ್ಷಿಣಂ ಕುಂಭಯಿತ್ವಾ ಜಾನುನ್ಯಾಧಾಯ  
ಸವ್ಯೇತರಮಿತರಭುಜಂ ನಾಗಭೋಗೇ ನಿಧಾಯ । ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಹುಧ್ಯೇನ  
ಪ್ರತಿಭಟಶಮನೇ ಧಾರಯನ್ ಶಕ್ತಚಕ್ರೇ ದೇವಿಭೂಷಾದಿಜುಷ್ಠೋ ಜನಯತು  
ಜಗತಾಂ ಶರ್ಮ ವೈಕುಂಠನಾಥಃ” ।

“ಶಾಂತಾಕಾರಂ ಭುಜಗಶಯನಂ ಪದ್ಮನಾಭಂ ಸುರೇಶಂ ವಿಶ್ವಾಕಾರಂ  
ಗಗನಸದೃಶಂ ಮೇಧವರ್ಣಂ ಶುಭಾಂಗಮ್ । ಲಕ್ಷ್ಮೀಕಾಂತಂ ಕಮಲನಯನಂ  
ಯೋಗಿಮಿಥ್ಯಾನಿಗಮ್ಯ ವಂದೇ ವಿಷ್ಣುಂ ಭವಭಯಹರಂ ಸರ್ವಲೋಕೇಕ-  
ನಾಥಮ್” ॥

“ಮೇಧಶ್ಯಾಮಂ ಪೀತಕೌಶೇಯವಾಸಂ ಶ್ರೀವತ್ಸಾಂಕ್ಷಂ ಕೌಸ್ತುಭೋ-  
ದ್ಭಾಸಿತಾಂಗಮ್ । ಪುಷ್ಪೋಪೇತಂ ಪುಂಡ್ರೀಕಾಯತಾಕ್ಷಂ ವಿಷ್ಣುಂ ವಂದೇ  
ಸರ್ವಲೋಕೇಕನಾಥಮ್” ।

ನಾರಾಯಣಕ್ಷೇತ್ರ ನಾರಾಯಣಕ್ಷೇತ್ರ (ನಂ) ಗಂಗಾತೀರದಲ್ಲಿ  
ರುವ ಒಂದು ಕ್ಷೇತ್ರ. ಗಂಗಾಪ್ರವಾಹಕ್ಕೆ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ  
ನಾಲ್ಕು ಹಸ್ತ ಪ್ರಮಾಣದ ದೂರದವರೆಗೂ ಇರುವ  
ಪ್ರದೇಶವು ನಾರಾಯಣಕ್ಷೇತ್ರ. “ಪ್ರವಾಹಮವಧಿಂ ಕೃತ್ವಾ  
ಯಾವದ್ವಸ್ತುಚತುಷ್ಟಯಮ್ । ತತ್ರ ನಾರಾಯಣಃಸ್ವಾಮಿ ನಾನ್ಯಃ ಸ್ವಾಮಿ  
ಕಥ್ಯತೇನ” ಬ್ರಹ್ಮಪುಂ ।

ನಾರಾಯಣಿ ನಾರಾಯಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಾರಾಯಣನ  
ಶಕ್ತಿ. ನಾರಾಯಣಸ್ಯೇಯಮ್ “ಅಣ್” (೪-೩-೧೨೦) । “ಯಶಸಾ  
ತೇಜಸಾ ರೂಪೇನಾರಾಯಣಸಮಾ ಗುಣೈಃ । ಶಕ್ತಿರ್ನಾರಾಯಣಸ್ಯೇಯಂ ತೇನ  
ನಾರಾಯಣಿ ಸ್ಮೃತಾ” ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ । 2. ಲಕ್ಷ್ಮೀ. “ನಾರಾಯಣಾ-  
ರ್ಥಿಜ್ಞಭೂತಾ ತೇನ ತುಲ್ಯಾ ಚ ತೇಜಸಾ । ತಥಾ ತಸ್ಯ ಶರೀರಸ್ಥಾ  
ತೇನ ನಾರಾಯಣಿ ಸ್ಮೃತಾ” । 3. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 4. ಶತಾವರೀ  
ಗಿಡ. “ಋಷ್ಯಪ್ರೋಕ್ತಾಮೀಶ್ವರೀನಾರಾಯಣ್ಯಃ ಶತಾವರೀ” ಅಮಂ ।

ನಾರಾಯಣೀಯ ನಾರಾಯಣೀಯಂ (ವಿಂ) 1. ನಾರಾಯಣ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. 2. ನಾರದ ಮತ್ತು ನಾರಾಯಣಿಯುಷಿ  
ಗಳ ಸಂವಾದ ರೂಪವಾದ ಒಂದು ಉಪಾಖ್ಯಾನ. “ನಾರದಸ್ಯ  
ಚ ಸಂವಾದಮುಷೇನಾರಾಯಣಸ್ಯ ಚ । ನಾರಾಯಣೀಯಮಾಖ್ಯಾನಮೇತತ್  
ಕಥಿತಂ ತವ” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ । 3. ಒಂದು ಉಪನಿಷತ್ತು.  
ಈ ನಾರಾಯಣೋಪನಿಷತ್ತು ಕೃಷ್ಣಯಜುರ್ವೇದಾನ್ತ  
ಗೀತವಾದ ಮೂವತ್ತೆರಡು (32) ಉಪನಿಷತ್ತುಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು.

ನಾರಿಕೇಲ ನಾರಿಕೇಲ (ಪುಂ) 1. ತೆಂಗಿನಮರ. ಕಿಲ (ಇವೇ  
ಕ್ರಿಡನೆ ಚ) ಭಾವೇ “ಛಲ್” (೩-೩-೧೮) । ನಾರ್ಯಾಃ ವನಿತಾಃ  
ಕೇಲ ಇವ ಕೇಲೋ ಯಸ್ಯ ಪೃಷೋಂ । (ನಂ) 2. ತೆಂಗಿನಕಾಯಿ.

ನಾರಿಕೇಲಕ್ಷೀರೀ ನಾರಿಕೇಲಕ್ಷೀರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಲ್ಲುಸಕ್ಕರೆ  
ಮತ್ತು ಹಸುವಿನ ತುಪ್ಪ ಕಲಸಿದ ತೆಂಗಿನಕಾಯಿನ ತುರಿ  
ಯನ್ನು ಹಸುವಿನ ಹಾಲಿನಲ್ಲಿ ಪಕ್ವಮಾಡಿದ ಒಂದು



ನಾರಿಕೇಲಪಾಕ. "ನಾರಿಕೇಲಂ ತನುಕೃತ್ಯ ಛಿನ್ನಂ ಪಯಸಿ ಗೋ:  
ಕ್ಷಿಪೇತ್ | ಸಿತಾಗರ್ವಾಜ್ಯಸಂಯುಕ್ತಂ ತತ್ಪಚ್ಛೇದನಾದ್ಗುಣಿನಾ" |  
ಇದರ ಗುಣ: ಶೀತಕರ, ಪುಷ್ಟಿಕರ, ಮಧುರವಾದುದು.  
ವೀರ್ಯವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು, ರಕ್ತಪಿತ್ತವಾಯುಹರ  
ವಾದುದು. "ನಾರಿಕೇಲೋದ್ಭವಾ ಕ್ಷೀರೀ ಸ್ನಿಗ್ಧಾ ಶೀತಾತಿ-  
ಪುಷ್ಪಿದಾ | ಗುರ್ವೀ ಸುಮಧುರಾ ವೃಷ್ಯಾ ರಕ್ತಪಿತ್ತಾನಿಲಾಪಹಾ"  
ಭಾವಪ್ರಂ | "ತೇ ನಾರಿಕೇಲಾಂತರಪ: ಪಿಬಂತ: " ಮಾಘಂ ೩-೮೧ |

ನಾರಿ ನಾರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮನುಷ್ಯಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು.  
ನೃ ಅಥವಾ ನರ ಜಾತಿಂ "ಜೀನ್" (ಗಂ ೪೪, ೪-೧-೨೩) |  
ವೃದ್ಧಿಶ್ಚ | "ನಾರೀಭಿರ್ಗುಣಧನಸ್ಥಲಾಹತಾನಾಮಾಸ್ಯಶ್ರೀವಿಜಿತ-  
ವಿಕಾಸಿವಾರಿಜಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೮-೪೭ | (1) ಪದ್ಮಿನಿ,  
(2) ಚಿತ್ರಣಿ, (3) ಶಕ್ಷಿಣಿ ಮತ್ತು (4) ಹಸ್ತಿಣಿ ಎಂದು  
ನಾಲ್ಕು ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸರಿರುವರು. "ಪದ್ಮಿನಿ ಚಿತ್ರಣಿ  
ಚೈವ ಶಕ್ಷಿಣಿ ಹಸ್ತಿಣಿ ತಯಾ | ಚತುರೋ ಜಾತಯೋ ನಾರ್ಯಾ ರತೌ  
ಜ್ಞೇಯಾ ವಿಶೇಷತ: " ರಸಮಂ | ಇವರಲ್ಲದೆ (1) ಸಾಘ್ವಿ,  
(2) ಭೋಗ್ಯಾ ಮತ್ತು (3) ಕುಲಟಾ ಎಂದು ಹೆಂಗಸು ಮತ್ತೆ  
ಮೂರು ವಿಧ. "ಯೋಷಿತಸ್ತ್ರಿವಿಧಾ ಬ್ರಹ್ಮಾನ್ ಗೃಹಿಣಿಂ ಮೂಢ-  
ಚೇತಸಾಮ್ | ಸಾಘ್ವಿ ಭೋಗ್ಯಾ ಚ ಕುಲಟಾ ತಾ: ಸರ್ವಾ: ಸ್ವಾರ್ಥ-  
ತತ್ಪರಾ: " ಬ್ರಹ್ಮವಂ |

(1) ಪರಲೋಕಭಯದಿಂದಲೂ ಯಶಸ್ಸಿಗಾಗಿಯೂ  
ಕಾಮದ ಸ್ನೇಹದಿಂದಲೂ ನಿರಂತರವೂ ಪತಿಯ ಸೇವೆ  
ಯನ್ನು ಮಾಡುವ ಹೆಂಗಸು "ಸಾಧ್ವಿ".

(2) ಯಾವಾಗಲೂ ಭೋಗವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತ ಪತಿ  
ಸೇವೆಯನ್ನು ಮಾಡುವವಳೂ ಅಲಂಕಾರ ಮತ್ತು ರಸ  
ಭೋಜನ ದೊರಕುವವರೆಗೆ ಮಾತ್ರ ಪತಿಗೆ ಅಧೀನಳಾಗಿರು  
ವವಳೂ ಆದ ಹೆಂಗಸು "ಭೋಗ್ಯಳು".

(3) ಕಪಟದಿಂದ ಪತಿಯ ಸೇವೆಯನ್ನು ಮಾಡುತ್ತ  
ಯಾವಾಗಲೂ ಕಾಮುಕಳಾಗಿ ಪರಪುರುಷನನ್ನೇ ಹುಡು  
ಕುತ್ತ ಹೊಸ ಹೊಸ ಜಾರಪುರುಷನನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತ  
ಈ ಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಮನೆಮನೆಗೂ ಅಲೆದಾಡುತ್ತ ಇರುವ  
ಹೆಂಗಸು "ಕುಲಟಿ" (ಸ್ತ್ರೀರಿಣ). 2. ಮೂರು  
ಗುರುವರ್ಣಗಳುಳ್ಳ ಭಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. "ಮೋ  
ನಾರಿ" ಕೃಂ ೨೦ |

ನಾರೀಕವಚ ನಾರೀಕವಚ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಅಶ್ವಕ  
ರಾಜನ ಮಗನಾದ ಮೂಲಕನೆಂಬ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. "ಅಶ್ವಕಾ-  
ನ್ಮೂಲಕೋ ಜಙ್ಘೇ ಯ: ಸ್ತ್ರೀಭಿ: ಪರಿರಕ್ಷಿತ: | ನಾರೀಕವಚ  
ಇತ್ಯುಕ್ತೋ ನಿ:ಕ್ಷತ್ರೇ ಮೂಲಕೋಭವತ್" ಭಾಗಂ ೧-೧-೪೦ | ಕ್ಷತ್ರಿಯ  
ನಿರ್ಮೂಲನಕ್ಕಾಗಿ ಹೊರಟಿದ್ದ ಪರಶುರಾಮನಿಗೆ ಹೆದರಿ

ಈ ರಾಜನು ಸ್ತ್ರೀವೇಷ ಧರಿಸಿ ಸ್ತ್ರೀಯರ ಮಧ್ಯೆ ಸೇರಿ  
ಕೊಂಡು ಅವರಿಂದ ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನಾದುದರಿಂದ ಇವನಿಗೆ  
ನಾರೀಕವಚನೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಸೂರ್ಯವಂಶದ  
ಮುಂದಿನ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಗೆ ಇವನೇ ಕಾರಣನಾದುದರಿಂದ  
ಇವನಿಗೆ "ಮೂಲಕ" ಎಂದೂ ಹೆಸರಾಯಿತು.

ನಾರೀಕೇಲ ನಾರೀಕೇಲ (ಪುಂ) ತೆಂಗಿನಮರ. ನಾರಿಕೇಲ —  
ಪೃಷಂ |

ನಾರೀತರಂಗ ನಾರೀತರಂಗಕ (ಪುಂ) ಕಾಮುಕ, ಸ್ತ್ರೀ  
ಲೋಲ, ಜಾರ. ನಾರೀ ತರಂಗಯತಿ — ತರಂಗ + ಗಿಚ್  
"ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | ಹೆಂಗಸರ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಚಂಚಲ  
ಗೊಳಿಸುವುದರಿಂದ ಜಾರನೆಗೆ ಈ ಹೆಸರು.

ನಾರೀದ್ವೇಷ ನಾರೀದ್ವೇಷಣ (ನಂ) ಹೆಂಗಸರ ಚಾರಿತ್ರ್ಯ  
ವನ್ನು ಕಡೆಸುವ ಪಾಪಕಾರ್ಯ. ಮದ್ಯಪಾನ, ದುರ್ಜನರ  
ಸಹವಾಸ, ಪತಿಯನ್ನು ಅಗಲಿ ದೂರದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ, ಮನೆ  
ಯಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲದೆ ಹೊರಗೇ ಅಲೆಯುತ್ತಿರುವುದು, ಅಕಾಲ  
ದಲ್ಲಿ ಮಲಗಿ ನಿದ್ರಿಸುವುದು ಮತ್ತು ಪರಗೃಹವಾಸ ಇವು  
ಆರೂ ಹೆಂಗಸರಿಗೆ ವ್ಯಭಿಚಾರದೋಷಗಳನ್ನು ಉಂಟು  
ಮಾಡುವುವು. "ಪಾನಂ ದುರ್ಜನಸಂಸರ್ಗ: ಪತ್ಯಾ ಚ ವಿರಹೋಽಪ್ಯನಮ್ |  
ಸ್ವಪ್ನೋನ್ಯಗೋಹವಾಸಶ್ಚ ನಾರೀಸಂದ್ವೇಷಣಾನಿ ಷಟ್" ಮನುಂ ೧-೧೩ |

ನಾರೀನಾಥ ನಾರೀನಾಥ (ವಿಂ) ಹೆಂಗಸೇ ಒಡೆಯಳಾಗಿ  
ಉಳ್ಳ. ನಾರೀ ನಾಥ: ಯಸ್ಯ | "ಕವಚಿದಪಿ ಗೃಹಂ ನಾರೀನಾಥಂ  
ನಿರೀಕ್ಷ್ಯ ವಿವರ್ಜಿತಮ್" ಮೃಚ್ಛಂ ೪-೩ |

ನಾರೀಮಯ ನಾರೀಮಯ (ವಿಂ) ಸ್ತ್ರೀಯರಿಂದ ತುಂಬಿದ,  
ಕೇವಲ ಹೆಂಗಸಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ನಾರೀರತ್ನ ನಾರೀರತ್ನ (ನಂ) ಉತ್ತಮ ಹೆಂಗಸು, ಶ್ರೇಷ್ಠ  
ಳಾದ ಹೆಂಗಸು.

ನಾರೀಷ್ಠ ನಾರೀಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಹೆಂಗಸರಿಗೆ ಪ್ರಿಯವಾದ,  
ಸ್ತ್ರೀಯರ ಪ್ರೀತಿಗೆ ಪಾತ್ರವಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಟಾ -ಷ್ಠಾ.  
2. ಮಲ್ಲಿಗೆ ಹೂವು.

ನಾರೀಶ ನಾರೀಶ್ವ (ವಿಂ) ಹೆಂಗಸರಲ್ಲೇ ಆಸಕ್ತಿ ತೋರುವ,  
ಸ್ತ್ರೀಲೋಲನಾದ, ಸ್ತ್ರೀಯರನ್ನೇ ಪ್ರೀತಿಸುವ.

ನಾರೀಯ ನಾರೀಯ (ಪುಂ) ಸತ್ಪ್ರಾಜ್ಞತನ ಮೊಮ್ಮಗ.

ನಾರ್ಯಜ್ಞ ನಾರ್ಯಜ್ಞ (ಪುಂ) 1. ನಾಗರಂಗೆ ವೃಕ್ಷ, ಹೇರಿಳ  
ಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಹೆಂಗಸರ ಅವಯವ.

ನಾಲ ನಾಲ (ನಂ) 1. ತಾವರೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ದಂಡ,  
ತಾವರೆ ಮೊದಲಾದ ಹೂವುಗಳ ಕಾವು, ವೃಂತ, ತೊಟ್ಟು.  
ನಲತಿ — ಣಲ (ಬನ್ಧ) "ಞ:" (೩-೧-೧೦೯) | "ಕಶ್ಚಿತ್



ಕರಾಮ್ಯಾಮುಪಗೃಹನಾಲಮಾಲೋಪತ್ರಾಭಿಹತದ್ವಿರೇಫಮ್" ರಘುಂ  
 ೬-೧೩. "ಹೇಮೇಶ್ವರಾ ವಿಕಚಕಮಲೆ: ಸ್ತಿಗ್ಧವೇಡ್ಯನಾಲೆ:"  
 ಮೇಘಂ ೨-೧೩. 2. ಹರಿದಳ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) - ಲಾ - ಲಾ.  
 3. ಕೊಳಾಯಿ, ಕೊಳವೆ, ದ್ರವವಸ್ತುವು ಪ್ರವಹಿಸಲಿವೆ  
 ಕೊಳಿಸುವಂತೆ ಒಳಗೆ ರಂಧ್ರವಿರುವ ಲೋಹ ಮೊದಲಾ  
 ದುವುಗಳ ನಳಕೆ. "ಯಥಾ ತೋರ್ಯಾನಸ್ತೋಯಂ ಯನ್ತ್ರನಾಲಾದಿಭಿ:  
 ಶನೇ:। ಆಪಿಬೇಯುಸ್ತಥಾ ವಾಯು ಪಿಬೇದೋಗಿ ಜಿತಶ್ರಮ:"।  
 ನಲತಿ ಜಲಾದಿ: ನಿಗಂಚ್ಚತನಯಾ - ನಲ ಕರಂ "ಘಬ್"।  
 4. ತಾವರೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ದಂಟು. "ಸ್ವರ್ಗಪಿಗಾಹೇಮ-  
 ಮೃಣಾಲಿನಿನಾ ನಾಲಾಮೃಣಾಲಾಗ್ರಭುಜೋ ಭವಾಮ:" ನೇಪಂ ೩-೧೭।  
 5. ಹೊಕ್ಕುಳು ಕುಡಿ. - ಲಿ - ಲೀ. 6. ಒಳಗೆ ಪೊಳಗಿ  
 ರುವ ಗಿಡಗಳ ದಂಟು. 7. ತರಕಾರಿಯ ಕಾವು.  
 8. ಅನೆಯ ಕಿವಿಯನ್ನು ಚುಚ್ಚುವ ಒಂದು ಆಯುಧ.  
 9. ಒಂದು ಘಳಿಗೆ. 10. ಕಮಲ, ಪದ್ಮ. 11. ಕೊಳಾಯಿ.  
 12. ಕೊಳಲು ವಾದ್ಯ. "ನಾಲಂ ಕಾಂಡೇ ಮೃಣಾಲೇ ಚ ನಾಲಿ  
 ಶಾಕಕಲಮ್ಬಯೋ:" ಹೇಮಂ। "ನಾಲಾ ನ ನಾ ಪದ್ಮದಂಡೇ ನಾಲಿ  
 ಶಾಕಕಲಮ್ಬಕೇ" ಮೇದಿಂ।

ನಾಲಾಯನಿ ನಾಲಾಯನೀ(ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೌದ್ಗಲ್ಯ ಮಹರ್ಷಿಯ  
 ಪತ್ನಿ. ಇದು ದ್ರೌಪದಿಯ ಹಿಂದಿನ ಜನ್ಮದ ಹೆಸರು.  
 ಇವಳಿಗೆ ಇಂದ್ರಸೇನೆಯೆಂದೂ ಹೆಸರು. ನಾಲಾಯನಿಯು  
 ಮೌದ್ಗಲ್ಯ ಮಹಿಯನ್ನು ಪತಿಯನ್ನಾಗಿ ಹೊಂದಿ ಬಹಳ  
 ಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಅವನ ಶುಶ್ರೂಷೆ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಳು. ಕುಷ್ಠ  
 ರೋಗಿಯಾಗಿದ್ದು ದುರ್ಗಂಧ ಶರೀರವುಳ್ಳವನೂ ಕ್ರೂರನೂ  
 ಬಹಳ ಕೋಪ ಸ್ವಭಾವದವನೂ ವಿಕಾರ ರೂಪವುಳ್ಳವನೂ  
 ಆದ ತನ್ನನ್ನು ಪ್ರೀತಿಸಿ ಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಮಾಡಿದ ಶುಶ್ರೂಷೆ  
 ಯಿಂದ ಸುಪ್ರೀತನಾದ ಮಹಿಯು ಇವಳ ಅಪೇಕ್ಷೆಯಂತೆ  
 ಐದು ಸುಂದರವಾದ ದೇಹಗಳನ್ನು ಧರಿಸಿ ಬಹಳಕಾಲ  
 ಇವಳೊಡನೆ ಕ್ರೀಡಿಸುತ್ತ ಇದ್ದನು. ಕೊನೆಗೆ ಮಹಿಯು  
 ಇದರಿಂದ ವೈರಾಗ್ಯ ಹೊಂದಿ ಇವಳನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿ ತಪಸ್ಸಿಗೆ  
 ಹೊರಡಲಾಗಿ ತನ್ನನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಹೋಗಿ ಕೂಡದೆಂದು ಕೇಳಿ  
 ಕೊಂಡಳು. ನನ್ನ ತಪಸ್ಸಿಗೆ ವಿಘ್ನವುಂಟುಮಾಡುತ್ತಿರು  
 ವುದರಿಂದ "ನೀನು ಭೂಲೋಕದಲ್ಲಿ ಪಾಂಚಾಲರಾಜನ  
 ಪುತ್ರಿಯಾಗಿ ಜನಿಸಿ ಐವರು ಪತಿಗಳೊಡನೆ ಸೌಖ್ಯವನ್ನನು  
 ಭವಿಸುವೆ" ಎಂದು ಹೇಳಿದನು. ಆಗ ನಾಲಾಯನಿಯು  
 ಮೌದ್ಗಲ್ಯನೊಡನೆ ಅನುಭವಿಸಿದ ಕಾಮಸೌಖ್ಯದಿಂದ ತೃಪ್ತಿ  
 ಹೊಂದದೆ ಪರಮೇಶ್ವರನನ್ನು ತಪಸ್ಸಿನಿಂದ ಸಂತೋಷ  
 ಗೊಳಿಸಿ "ಪತಿ ದೇಹಿ ಪತಿ ದೇಹಿ" ಎಂದು ಐದು ಸಲ  
 ಪರಮೇಶ್ವರನನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲಾಗಿ ಮುಂದಿನ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ  
 ಐವರು ಪತಿಗಳೊಡನೆ ಕೂಡಿ ಸುಖ ಸಂತೋಷಗಳನ್ನು

ಭವಿಸುವಂತೆ ಶಿವನು ವರವನ್ನತ್ತನು. ಇವಳ ಮರಣವು  
 ದಲ್ಲಿ ದ್ರೌಪದನ ಯಾಗಕುಂಡದಲ್ಲಿ ದ್ರೌಪದಿಯಾಗಿ  
 ಜನಿಸಿದಳು. ["ಪञ್ಚೇಂದ್ರೋಪಾಖ್ಯಾನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]  
 "ಇಂದ್ರಸೇನೆತಿ ವಿಖ್ಯಾತಾ ಪುರಾ ನಾಲಾಯನಿ ಶುಭಾ। ಮೌದ್ಗಲ್ಯ  
 ಪತಿಮಾಸಾಘ ಚವಾರ ವಿಗತಜ್ವರಾ। ಮೌದ್ಗಲ್ಯಸ್ಯ ಮಹರ್ಷಿ  
 ರಮಣಸ್ಯ ವೇ ತಯಾ। ಸಂವತ್ಸರಗಣಾ ರಾಜನ್ ವ್ಯತೀಯು: ಕ್ಷಣವ-  
 ತ್ತದಾ। ತತ: ಕದಾಚಿದ್ಧರ್ಮಾತ್ಮಾ ತೃಪ್ತ: ಕಾಮೈರ್ವ್ಯರಂಜಿತ।  
 उत्सर्ज स तां विप्र: सा तदा चापउद्भुवि।

ನಾಲಾಯನಿವಾಚ - ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಭಗವನ್ಮಹಾ ನ ಮಾಮುಲ್ಕಷ್ಟು-  
 ಮಹಿಸಿ। ಅವಿತೃಪ್ತಾಸ್ಮಿ ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷೆ ಕಾಮಾನಾಂ ಕಾಮಸೇವನಾತ್।

ಮೌದ್ಗಲ್ಯ: - "ಯಸ್ಮಾತ್ತ್ವಂ ಮಾಮನಿ:ಶಙ್ಕಾ ಹ್ಯವಕ್ತವ್ಯಂ  
 ಪ್ರಭಾಷಸೇ। ಆಚರಂತಿ ತಪೋವಿಘ್ನಂ ತಸ್ಮಾಚ್ಚಣ್ಣ ವಚೋ ಮಮ।  
 ಭವಿಷ್ಯಸಿ ನೃಲೋಕೇ ತ್ವಂ ರಾಜಪುತ್ರೀ ಯಶಸ್ವಿನೀ। ಪञ्चाल-  
 ರಾಜಸ್ಯ ಸುತಾ ದ್ರುಪದಸ್ಯ ಮಹಾತ್ಮನ:। ಭವಿತಾರಸ್ತತ್ರ ತವ  
 ಪತಯ: ಪञ्च विश्रुता:। ತೇ: ಸಾರ್ವ ಮಧುರಾಕಾರೇಶ್ವರಂ ರತಿ-  
 ಮವಾಪ್ಸ್ಯಸಿ। ಸೇವಂ ಶಪ್ತಾ ತು ವಿಮನಾ ವನಂ ಪ್ರಾಗಾಘಶಸ್ವಿನೀ।  
 भोगैरतृप्ता देवेशं तपसाराधयत्तदा। तीव्रेण तपसा  
 तस्यास्तुष्ट: पशुपति: स्वयम्। वरं प्रादात्तदा रुद्र:  
 सर्वलोकेश्वर: प्रभु:। भविष्यति परं जन्म भविष्यसि  
 वराङ्गना। भविष्यन्ति परं भद्रे पतय: पञ्च विश्रुता:।  
 पञ्चकृत्वस्त्वया चोक्त: पतिं देहीत्यहं पुन:। पञ्च ते  
 पतयो भद्रे भविष्यन्ति सुखावहा:" भा० आदि० ೨೧೩।

ನಾಲಿ ನಾಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾಡಿ, ಸಿರೆ, ಧಮನಿ. ನಾಲಯತಿ -  
 ಣಲ (ಬಂಧ) + ಣಿಕ್ "ಙ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭)।

ನಾಲಿಕ ನಾಲಿಕ (ಪುಂ) 1. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ, ತಾವರೆ. ನಾಲ-  
 ಮಸ್ತಸ್ಯ "ಠ್" (೪-೨-೧೧೪)। 2. ಮಹಿಷ, ಎಮ್ಮೆ.  
 ನಲ ಏವ ನಾಲ: ತೃಣವಿಶೇಷ: ಸ ಭೋಕ್ತವ್ಯತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಠ್"  
 (೪-೨-೧೧೪)। (ನಂ) 3. ಒಂದು ವಿಧ ಅಸ್ತ್ರ, ಬಾದೂಕ.  
 ನಾಲ: ಸಾಧನತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಠ್" (೪-೨-೧೧೪)। ಅಸ್ತ್ರವು  
 ಮಾನ್ರಿಕಮ್ (ಮೂಂತ್ರಿಕ) ಮತ್ತು ನಾಲಿಕಮ್ (ನಾಲಿಕ) ಎಂದು  
 ಎರಡು ವಿಧ. "ಅಸ್ತ್ರಂ ತು ದ್ವಿವಿಧಂ ಜ್ಞೇಯಂ ನಾಲಿಕಂ ಮಾನ್ರಿಕಂ  
 ತಥಾ। ಯದಾ ತು ಮಾನ್ರಿಕಂ ನಾಸ್ತಿ ನಾಲಿಕಂ ತತ್ರ ಧಾರಯೇತ್"  
 ಶುಕ್ರಣಿಂ। ಮಂತ್ರದಿಂದ ಪ್ರಯೋಜ್ಯವಾದ ಅಸ್ತ್ರವು  
 ಮೂಂತ್ರಿಕ. ನಾಲಿಗಳಲ್ಲಿ ಮಧು ಹೂಡಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸುವ  
 ಅಸ್ತ್ರವು ನಾಲಿಕ. ನಾಲಿಕಾಸ್ತ್ರವು ಬೃಹನ್ನಾಲಿಕ ಕ್ಷುದ್ರ  
 ನಾಲಿಕಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಫಿರಂಗಿಯು ಬೃಹನ್ನಾಲಿಕ  
 ವೆನಿಸುವುದು. ಬಂದೂಕ ಮೊದಲಾದುವು ಕ್ಷುದ್ರನಾಲಿಕ  
 ವೆನಿಸುವುವು. "ನಾಲಿಕಂ ದ್ವಿವಿಧಂ ಜ್ಞೇಯಂ ಬೃಹನ್ನಾಲಿಕಮೇದತ:"।



**ನಾಲಿಕಾ ನಾಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನೆಯ ಕಿವಿಯನ್ನು ಚುಚ್ಚುವ ಒಂದು ಆಯುಧ. "ಗಜಾಃ ಸಕೃತ್ತರತಲಲೋಲ-ನಾಲಿಕಾಹತಾಃ" ಮಾಘಂ ೧೭-೩೫. 2. ಕೊಳಲು ವಾದ್ಯ. 3. ತಾವರೆ ಹೂವಿನ ಕಾವು. 4. ಒಂದು ಘಳಿಗೆ.

**ನಾಲಿಕೇರ ನಾಲಿಕೇರ** (ಪುಂ) 1. ತೆಂಗಿನಮರ. ನಾರಿಕೇಲ: ರಲಯೋರಭೇದಃ. 2. ಒಂದು ದೇಶ. ಈ ದೇಶವು ಮಧ್ಯ ದೇಶಕ್ಕೆ ಆಗ್ನೇಯ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವುದು.

**ನಾಲಿಕೇಲ ನಾಲಿಕೇಲ** (ಪುಂ) ತೆಂಗಿನಮರ. ನಾಲಿಕೇರ— ಪುಷಂ ರಸ್ಯ ಲಃ.

**ನಾಲಿಜಜ್ಜ ನಾಲಿಜಂಘ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಬಕಪಕ್ಷಿ.

**ನಾಲಿ ನಾಲೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತರಕಾರಿಯ ಕಾವು, ತಿನ್ನಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ತರಕಾರಿಯ ತೊಟ್ಟು. 2. ಅನೆಯ ಕಿವಿಯನ್ನು ಚುಚ್ಚುವ ಒಂದು ಆಯುಧ. 3. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ. 4. ತಾವರೆಯ ದಂಟು. 5. ಕೊಳವೆ, ಕೊಳಾಯಿ. 6. ಕಹಳೆ ವಾದ್ಯ. 7. ಒಂದು ಘಳಿಗೆ. 8. ನಾಡಿ, ಸಿರೆ.

**ನಾಲಿಕ ನಾಲಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಹಗುರವಾಗಿ ಎಸೆಯುವಂತಹ ಈಟಿ. 2. ಬಾಣ. 3. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ. 4. ಎಳೆಯ ತಂತುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ತಾವರೆ ಹೂವಿನ ಕಾವು, ವೃಂತ, (ನಂ) 5. ಕಮಲಗಳ ಸಮೂಹ. (ವಿಂ) 6. ಸತ್ಯವಾದ, ನಿಜವಾದ. "ತನ್ನಾಲಿಕನಲೇ ಚಲೇತರಮನಾಃ ಸಾಮ್ಯಾನ್ಮನಾ-ಗಪ್ಯಮೃತ್" ನೆಪಂ ೧೨-೧೧೧.

**ನಾಲಿಕಿನಿ ನಾಲಿಕಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಮಲಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪ್ರದೇಶ, ಸರೋವರ. ನಾಲಿಕ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೩೫).

**ನಾವಮಿಕ ನಾವಮಿಕ** (ವಿಂ) ಒಂಬತ್ತನೆಯ.

**ನಾವಿಕ ನಾವಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಣಧಾರ, ಹಡಗನ್ನು ನಡೆಯಿಸುವವನು. ನಾವಾ ತರತಿ — ನೌ "ಠನ್" (೪-೪-೭). "ಮಹಾವಾತಸಮುದ್ರತಾಮಪರೀಕ್ಷಿತನಾವಿಕಾಮ್ | ಅನ್ಯನೌಪ್ರತಿಬದ್ಧಾಂ ವಾ ನೌಪೇಯಾನ್ವಾವಮಾತುರಾಮ್" ಕಾಮಂದಂ. 2. ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಸಂಚಾರ ಮಾಡುವವನು.

**ನಾವೋಪಜೀವನ ನಾವೋಪಜೀವನ** (ಪುಂ) ಹಡಗನ್ನು ನಡೆಯಿಸಿ ಜೀವನಮಾಡುವವನು. ನಾವಾ ಉಪಜೀವನಮಸ್ಯ | "ನಿಷಾದೋ ಮದ್ಗುರಂ ಸ್ತುತೇ ದಾಸಂ ನಾವೋಪಜೀವನಮ್" ಭಾಂ ಅನುಂ ೮೩-೨೧.

**ನಾವ್ಯ ನಾವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಹಡಗಿನಿಂದ ಹೋಗಿ ಸೇರಬೇಕಾದ ದೇಶ. ನಾವಾ ತಾರ್ಯಮ್ "ಯತ್" (೪-೪-೯೧). 2. ಹಡಗಿನಿಂದ ದಾಟಬಹುದಾದ ನದಿ. "ಮಹಾಪೃಥ್ವ್ಯಾನ್ಯುದಮ್ಭಾಸಿ

ನಾವ್ಯಾಃ ಸುಪ್ರತರಾ ನದೀಃ" ರಘುಂ ೪-೩೧. (ನಂ) 3. ಹೊಸ ದಾಗಿರುವಿಕೆ. ನವಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಘಬ್" (೪-೧-೧೨೪).

**ನಾಶ ನಾಶ** (ಪುಂ) 1. ಅದರ್ಶನ, ಮರೆಯಾಗುವುದು, ಕಾಣಿಸದಿರುವುದು. ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) ಭಾವೇ "ಘಬ್" (೩-೩-೧೮). "ಗತಾ ನಾಶಂ ತಾರಾ ಉಪಕೃತಮಸಾಧಾವಿವ ಜನೇ ವಿಯುಕ್ತಾಃ ಕಾಂತೇನ ಸ್ತ್ರಿಯ ಇವ ನ ರಾಜಂತಿ ಕಕುಮಃ" ಮೃಚ್ಛಂ ೪-೨೫. 2. ನಿಧನ, ಮರಣ. "ಅವಿದಿತ್ವಾಽಽಮನಃ ಶಕ್ತಿಂ ಪರಸ್ಯ ಚ ಸಮುತ್ಸುಕಃ | ಗುಚ್ಛನ್ನಭಿಮುಖೋ ನಾಶಂ ಯಾತಿ ವಹ್ನೌ ಪತಜ್ಜವತ್" ಪञ्ಚತಂ ೧-೩೫೪. 3. ಧ್ವಂಸ, ಅಳಿವು. "ಕೃತ್ರಿಮಂ ನಾಶಮಪ್ಯೇತಿ ವೇರಂ ದ್ರಾಕ್ ಕೃತ್ರಿಮೇಗುಣೇಃ" ಪञ್ಚತಂ ೨-೩೩. "ಕ್ರೋಧಾದ್ಭವತಿ ಸಂಮೋಹಃ ಸಂಮೋಹಾತ್ಸ್ಮೃತಿವಿಭ್ರಮಃ | ಸ್ಮೃತಿಭ್ರಂಶಾದ್ಬುದ್ಧಿನಾಶಃ ಬುದ್ಧಿನಾಶಾತ್ಪ್ರಣಶ್ಯತಿ" ಗೀತಾ ೨-೬೩. "ದಾನಂ ಭೋಗೋ ನಾಶಸ್ತಿಸ್ತೋ ಗತಯೋ ಭವಂತಿ ವಿಕೃತಸ್ಯ" 4. ಪಲಾಯನ, ಓಡಿಹೋಗುವುದು. 5. ಅನುಪಲಂಭ, ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಂದ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡದಿರುವುದು. "ನಾಶಃ ಪಲಾಯನೇಽಪಿ ಸ್ಯಾನಿಧನಾನುಪಲಂಭಯೋಃ" ಮೇದಿಂ. 6. (ಗಣಿತದಲ್ಲಿ) ಸಮಾಂಶಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಬಿಡುವುದು, ಪರಿಗಣಿಸದಿರುವುದು.

**ನಾಶಕ ನಾಶಕ** (ವಿಂ) ಧ್ವಂಸಮಾಡುವ, ಹಾಳುಮಾಡುವ, ನಾಶಪಡಿಸುವ. ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) + ಣಿच् "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩). "ಯೇ ಪರಸ್ವಾಪಹರ್ತಾರಃ ಪರಸ್ವಾನಾಂ ಚ ನಾಶಕಾಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ.

**ನಾಶನ ನಾಶನ** (ವಿಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸುವ, ಧ್ವಂಸಮಾಡುವ, ಹಾಳುಮಾಡುವ. ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪). "ತ್ರಿವಿಧಂ ನರಕಸ್ಯೇದಂ ದ್ವಾರಂ ನಾಶನಮಾತ್ಮನಃ" ಗೀತಾ ೧೬-೨೧. (ನಂ) 2. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು, ಧ್ವಂಸ ಮಾಡುವುದು. ಣಶ + ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

**ನಾಶನೀಯ ನಾಶನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 2. ನಾಶಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 3. ನಾಶಪಡಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 4. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) + ಣಿच् "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬). -ಯಿತವ್ಯಃ -ಯಿತವ್ಯಃ.

**ನಾಶಯತ್ ನಾಶಯತ್** (ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹಾಳುಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) + ಣಿच् "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬). -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

**ನಾಶಯಿತ್ ನಾಶಯಿತ್** (ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸುವ. ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) + ಣಿच् "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫). -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.



ನಾಶಿತ ನಾಶಿತ (ವಿಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಇಲ್ಲದಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102)। (ನಂ) 2. ನಾಶ, ಧ್ವಂಸ, ಅಳಿವು. ಣಶ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114)।

ನಾಶಿತವತ್ ನಾಶಿತವತ್ (ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸಿದವನು. ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತವತು:" (3-2-102)।

ನಾಶಿನ್ ನಾಶಿನ್ (ವಿಂ) ನಾಶಹೊಂದುವ, ಅಳಿದು ಹೋಗುವ. ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) "ಣಿನ್:" (3-1-134)।

"ಅನಾಶಿನೋಽಪ್ರಮೇಯಸ್ಯ ತಸ್ಮಾನ್ಮುಕ್ತಃ ಸ್ವ ಭಾರತ" ಗೀತಾ 2-18।

ನಾಶ್ಯ ನಾಶ್ಯ (ವಿಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) "ಯತ್" (3-1-124)। 2. ನಾಶಪಡಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ.

ನಾಶ್ಯಕ ನಾಶ್ಯಕ (ವಿಂ) ನಷ್ಟವಾದ ವಸ್ತುವಿನ ಯಜಮಾನ, ಕಳೆದುಹೋದ ಪದಾರ್ಥದ ಒಡೆಯ, ನಷ್ಟವಾದ ವಸ್ತುವನ್ನು ಹೊಂದಲು ಅರ್ಹನಾದ ಒಡೆಯ. ನಷ್ಟ ದ್ರವ್ಯಮರ್ಹತಿ — "ಶಕ್" (4-1-63)। "ಅಥ ಮೂಲಮನಾಹಾರ್ಯ ಪ್ರಕಾಶಕೃಷೋಧಿತಃ। ಅದೃಷ್ಟಯೋ ಮುಚ್ಯತೇ ರಾಜಾ ನಾಶ್ಯಕೋ ಲಭತೇ ಧನಮ್" ಮನು 6-202।

ನಾಸತ್ಯ ನಾಸತ್ಯ (ದ್ವಿಂ) ಅಶ್ವಿನೀ ಕುಮಾರರು. ನ ಸತ್ಯ ಯಯೋಃ ಅಸತ್ಯಯೋಃ ನಾಸತ್ಯಯೋಃ। ನಃ: ಪ್ರಕೃತಿಭಾವಃ (6-3-95)। ಹರಿವಂಶದಲ್ಲಿ ನಾಸತ್ಯಃ, ದತ್ತಃ ಎಂದು ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿ ಇಬ್ಬರನ್ನು ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ ಏಕವಚನ ಪ್ರಯೋಗವೂ ಉಂಟು. ಇಬ್ಬರೂ ಸೇರಿ ಅಶ್ವಿನೀಯರಾದರು. "ದೇವೌ ತಸ್ಯಾಮಜಾಯೇತಾಮಶ್ವಿನೌ ಭಿಷಜಾಂ ವರೌ। ನಾಸತ್ಯಶ್ಚೈವ ದತ್ತಶ್ಚ ಸ್ಮೃತೌ ತಾವಶ್ವಿನಾವುಭೌ" ಹರಿವಂಶಂ। "ನೌಭಾವಿಲಾಭಃ ಕಿಮ್ ದರ್ಪಕಶ್ಚ ಭವಂತಿ ನಾಸತ್ಯಯುತೌ ಭವಂತಃ" ನೆಪಂ 10-45। ಇಂದ್ರನು ಅಶ್ವಿನೀಕುಮಾರರ ಅದ್ಭುತ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ನೋಡಿ ಅವರಲ್ಲಿ ಆಯುರ್ವೇದವನ್ನು ಬೇಡಿದನು. ಇವರು ತಾವು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದ ಆಯುರ್ವೇದವನ್ನು ಇಂದ್ರನಿಗೆ ಹೇಳಿಕೊಟ್ಟರು. ಇಂದ್ರನು ಅಶ್ವಿನೀಯರ ಮೊದಲಾದವರಿಗೆ ಆಯುರ್ವೇದವನ್ನು ಬೋಧಿಸಿದನು. "ನಾಸತ್ಯೌ ಸತ್ಯಸಂಧೇನ ಶಕ್ರೇಣ ಕಿಲ ಯಾಚಿತೌ। ಆಯುರ್ವೇದಂ ಯಥಾಭಿತಂ ದದತುಃ ಶತಮನ್ಯವೇ॥ ನಾಸತ್ಯಾಭ್ಯಾಮಧೀತ್ಯೇಷಃ ಆಯುರ್ವೇದಂ ಶತಕ್ರತುಃ। ಅಭ್ಯಾಸಯಾಮಾಸ ಬಹುನಾತ್ರೇಯ-ಪ್ರಮುಖಾನ್ ಮುನೀನ್" ಭಾವಪ್ರಂ।

ನಾಸನ್ವಿ ನಾಸನ್ವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ತ್ರೀಯರ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ, ಭಗ, ಯೋನಿ. "ನಾಸನ್ವಿರಧರೋವಾಚ್ಯದೇಶಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ನಾಸಾ ನಾಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಾಸಿಕೆ, ಮೂಗು. ನಾಸತೇಜಯಾ — ಣಾಸೃ (ಶಬ್ದ) "ಘೃ" (3-3-121)। "ನಾಸಾದಸೀಯಾ

ತಿಲಪುಷ್ಪತುಲಾಂ ಜಗತ್ಪ್ರಯವ್ಯಸ್ತಶರತ್ರಯಸ್ಯ" ನೆಪಂ 9-36।

2. ದ್ವಾರದ ಮೇಲುಗಡೆಯ ಮರ. "ನಾಸಾ ತು ನಾಸಿಕಾಯಾಂ ಚ ದ್ವಾರೋರ್ಧ್ವದಾರುಣಿ ಸ್ವಿತ್ರಿಯಾಂ" ಮೇದಿಂ।

ನಾಸಾಗ್ರ ನಾಸಾಗ್ರ (ನಂ) ಮೂಗಿನ ತುದಿ. ನಾಸಾಯಾ ಅಗ್ರಮ್। ಫ್ರಾಣೇಂದ್ರಿಯವಿರುವ ಜಾಗ. "ಇಂದ್ರಿಯಂ ಗಂಧಗ್ರಾಹಕಂ ಖಾಣಮ್। ತನ್ವ ನಾಸಾಗ್ರವತಿ" ತಂ ಸಂ।

ನಾಸಾಚ್ಚಿದ್ರ ನಾಸಾಚ್ಚಿದ್ರ (ನಂ) ಮೂಗಿನ ಹೊಳ್ಳೆ.

ನಾಸಾದಾರ ನಾಸಾದಾರು (ನಂ) ದ್ವಾರದ ಮೇಲುಗಡೆ ಮುಂದಕ್ಕೆ ಚಾಚಿಕೊಂಡಿರುವ ಮರ. ನಾಸಾರ್ಥ ದಾರು।

ನಾಸಾನಾಹ ನಾಸಾನಾಹ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಮೂಗಿನ ರೋಗ.

ನಾಸಾಪುಟ ನಾಸಾಪುಟ (ಪುಂ) ಮೂಗಿನ ಹೊಳ್ಳೆ.

ನಾಸಾರ್ಥ ನಾಸಾರ್ಥ (ನಂ) ಮೂಗಿನ ಹೊಳ್ಳೆ.

ನಾಸಾವಂಶ ನಾಸಾವಂಶ (ಪುಂ) ಮೂಗಿನ ದಿಂಡು, ಮೂಗಿನ ಮೇಲುಭಾಗದ ಅಸ್ಥಿ, ದೋಣಿಯಂತಿರುವ ಮೂಗಿನ ಮಧ್ಯಭಾಗ. ನಾಸಾ ವಂಶ ಇವ।

ನಾಸಾವಿರೋಕ ನಾಸಾವಿರೋಕ (ಪುಂ) ಮೂಗಿನ ರಂಧ್ರ, ಮೂಗಿನ ಹೊಳ್ಳೆ. ನಾಸಾಯಾ ವಿರೋಕಃ। "ನಾಸಾವಿರೋಕ-ಪವನೋಲ್ಲಸಿತಂ ತನೀಯೋ ರೋಮಾಂಚತಾಮಿವ ಜಗಾಮ ರಜಃ ಪೃಥಿವ್ಯಾಃ" ಮಾಘಂ 4-44।

ನಾಸಾವಿವರ ನಾಸಾವಿವರ (ಪುಂ) ಮೂಗಿನ ಹೊಳ್ಳೆ, ಮೂಗಿನ ರಂಧ್ರ. ನಾಸಾಯಾ ವಿವರಃ।

ನಾಸಾವೇಧ ನಾಸಾವೇಧ (ಪುಂ) ಮೂಗು ಚುಚ್ಚಿ ರಂಧ್ರ ಮಾಡುವುದು, ಹೆಂಗಸರು ಮೂಗುತಿಯನ್ನು ಧರಿಸಲೂ ಎತ್ತುಗಳಿಗೆ ಮೂಗುದಾರ ಹಾಕುವುದಕ್ಕೂ ಮೂಗನ್ನು ಚುಚ್ಚುವುದು. ನಾಸಾಯಾ ವೇಧಃ।

ನಾಸಿಕಾಂಧಮ ನಾಸಿಕಾಂಧಮ (ವಿಂ) ಮೂಗಿನಿಂದ ಉದ್ಭವವನು, ಮೂಗಿನಿಂದ ಉದ್ಭವವನ್ನು ಮಾಡುವವನು. ನಾಸಿಕಾಂಧಮತಿ — ಧ್ಮಾ (ಶಬ್ದಾಗ್ನಿಸಂಯೋಗಯೋಃ) "ಲೌ" (3-2-29)। ಹ್ರಸ್ವಃ (6-3-66)। ಮುಃ (6-3-67)।

ನಾಸಿಕಾಂಧಯ ನಾಸಿಕಾಂಧಯ (ವಿಂ) ಮೂಗಿನಿಂದ ಕುಡಿಯುವವನು. ನಾಸಿಕಾಂಧಯತಿ ತತ್ಸತ್ಯಜಲಂ ಪಿಬತಿ — ಷಟ್ (ಪಾನೇ) "ಲೌ" (3-2-29)। ಹ್ರಸ್ವಃ (6-3-66)। ಮುಃ (6-3-67)।

ನಾಸಿಕಾ ನಾಸಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೂಗು. 2. ಫ್ರಾಣೇಂದ್ರಿಯ. ನಾಸತೇ ಶಬ್ದಾಯತೇ — ಣಾಸೃ (ಶಬ್ದ) "ಫ್ವಲ್" (3-1-133)। "ಶ್ರೋತ್ರಂ ತ್ವಕ್ ಚಕ್ಷುಷಿ ಜಿಹ್ವಾ ನಾಸಿಕಾ ಚೈವ ಪಂಚಮಿ। ಪಾಯುಪಥಂ ಹಸ್ತಾಪಾದಂ ವಾಕ್ ಚೈವ ದಶಮಿ



ಸ್ಮೃತಾ" ಮನುಂ ೨-೧೦। 3. ಆನೆಯ ಸೊಂಡಿಲು.

4. ದ್ವಾರದ ಮೇಲುಭಾಗದ ಮರ. 5. ಅಶ್ವಿನೀ ದೇವತೆ.

**ನಾಸಿಕಾಮಲ ನಾಸಿಕಾಮಲ** (ನಂ) ಮೂಗಿನಿಂದ ಹೊರಡುವ ದೇಹದೊಳಗಿನ ಕಶ್ಶಲ, ಸಿಂಬಳ. ನಾಸಿಕಾಯಾ ಮಲಮ್।

**ನಾಸಿಕಯ ನಾಸಿಕೈ** (ನಂ) 1. ಮೂಗು. ನಾಸಿಕಾ ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಛ್ಯಜ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪)। (ವಿಂ) 2. ಮೂಗಿನ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ. 3. ಮೂಗಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ. ನಾಸಿಕಾಯಾ ಅದ್ವರಭವಮ್ ನಾಸಿಕಯಾ ನಿವೃತ್ತಂ ವಾ "ಞ್" (೪-೨-೮೦)। 4. ಮೂಗಿನಲ್ಲಿರುವ. ನಾಸಿಕಾಯಾ ಭವಮ್ "ಯತ್" (೪-೨-೪೪)। (ಪುಂ ದ್ವಿವಂ) 5. ಅಶ್ವಿನೀಕುಮಾರರು, ದೇವವೈದ್ಯರು. "ನಾಸಿಕಯೌ ಯುಜೌ ದಸೌ ಗದಾಗದೌ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ನಾಸೀರ ನಾಸೀರ** (ನಂ) 1. ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ನಿಂತು ಹೋರಾಡುವ ಸೈನ್ಯ, ಸೇನಾಮುಖ. ನಾಸಾ ಶಬ್ದೇನ ಇತ್ಯೇ ಗಚ್ಛತಿ — ನಾಸ್ + ಇರ (ಗತೌ) "ಕಃ" (೩-೨-೪)। "ಉತ್ತರಾಸೀರ-ವಾಜಿವ್ರಜಸ್ತುರಜರಜೋರಾಜಿರಾಜಿಸ್ಥಳೀಷು" ನೈಷಂ ೧೨-೭೩। 2. ಅಗ್ರೇಸರ, ಮುಂದಾಳು. "ನಲಸ್ಯ ನಾಸೀರಸೃಜಾಂ ಮಹಿಭುಜಾಂ ಕಿರೀಟರತ್ನೇಃ ಪುನರುಕ್ತದೀಪಯಾ" ನೈಷಂ ೧೬-೪।

**ನಾಸ್ತಿ ನಾಸ್ತಿ** (ಅವ್ಯಂ) ಅಭಾವ, ಇಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನ ಅಸ್ತಿ। ನಶಬ್ದೇನ ಸಮಾಸಃ। ಅಸ್ತಿ ಎಂಬುದು ಒಂದು ವಿಭಕ್ತಿ ಪ್ರತಿರೂಪಕ ಅವ್ಯಯ. ನ ಶಬ್ದದೊಡನೆ ಸಮಾಸ ಬಂದು "ನಾಸ್ತಿ" ರೂಪವಾಗಿರುವುದು. ನಾಸ್ತಿಕೀರಾ। "ಅಸ್ತಿ ನಾಸ್ತಿ ನ ಜಾನಾತಿ ದೇಹಿ ದೇಹಿ ಪುನಃ ಪುನಃ"।

**ನಾಸ್ತಿಕ ನಾಸ್ತಿಕ** (ವಿಂ) ಈಶ್ವರನೂ ಪರಲೋಕವೂ ಇಲ್ಲವೆಂಬ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. ನಾಸ್ತಿ ಪರಲೋಕಃ ಇತಿ ಮತಿಯಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೬೦)। "ಯೋಜಮನ್ಯೇತ ತೇ ಮೂಲೇ ಹೇತುಶಾಸ್ತ್ರಾ-ಶ್ರಯಾದ್ವಿಜಃ। ಸ ಸಾಧುಭಿರ್ಬಹಿಷ್ಕಾರ್ಯೋ ನಾಸ್ತಿಕೋ ವೇದನಿಂದಕಃ" ಮನುಂ ೨-೧೧। ವೇದ ಅದೃಷ್ಟ ಈಶ್ವರ ಯಾವುದನ್ನೂ ನಂಬದಿರುವವರು ನಾಸ್ತಿಕರು. ಚಾರ್ವಾಕ ಮಾರ್ಕಂಡೇಯೋಗಾಚಾರ ಸೌತ್ರಾಂತಿಕ ವೈಶಾಖಿಕ ದಿಗಂಬರ ಇವರು ನಾಸ್ತಿಕರು.

**ನಾಸ್ತಿಕತಾ ನಾಸ್ತಿಕತಾ, -ರವ-ತ್ವಂ** (ಸ್ತ್ರೀಂ ನಂ) ಮಿಥ್ಯಾ ದೃಷ್ಟಿ, ವೇದ ಪರಲೋಕ ಈಶ್ವರ ಅದೃಷ್ಟ ಯಾವುದನ್ನೂ ನಂಬದಿರುವುದು. ನಾಸ್ತಿಕಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತ್ವತಲಿ" (೪-೧-೧೧೯)। ಪರಲೋಕವೂ ಈಶ್ವರನೂ ಇಲ್ಲವೆಂಬ ಜ್ಞಾನವು ಮಿಥ್ಯೆಯಾದುದರಿಂದ ನಾಸ್ತಿಕತೆಯು ಮಿಥ್ಯಾ ದೃಷ್ಟಿಯಾಯಿತು. ಕಾಮಕ್ರೋಧಗಳಿಂದ ಮನುಷ್ಯನ ಬುದ್ಧಿಯು ನಾಶವಾಗಿ ವಿವೇಕಶೂನ್ಯವಾಗುವನು. ಇದೇ

ಮೋಹವು. ಇದರಿಂದ ಧರ್ಮಾರ್ಥಗಳ ನಾಶವಾಗುವುದು. ಇದರಿಂದ ನಾಸ್ತಿಕತೆಯುಂಟಾಗುವುದು. ಮನುಷ್ಯನಲ್ಲಿ ದುರಾಚಾರವೂ ಉಂಟಾಗುವುದು. "ಪ್ರಜ್ಞಾನಾಶಾತ್ಮಕೋ ಮೋಹಃ ತಥಾ ಧರ್ಮಾರ್ಥನಾಶಕಃ। ತಸ್ಮಾನ್ನಾಸ್ತಿಕತಾ ಚೈವ ದುರಾಚಾರಶ್ಚ ಜಾಯತೇ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೧೨೩-೧೬।

**ನಾಸ್ತಿಕಯ ನಾಸ್ತಿಕೈ** (ನಂ) ಈಶ್ವರ ಮತ್ತು ಪರಲೋಕಗಳನ್ನು ನಂಬದಿರುವುದು. ನಾಸ್ತಿಕಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಛ್ಯಜ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ನಾಸ್ತಿಕಯಂ ವೇದನಿಂದಾಂ ಚ ದೇವತಾಂ ಚ ಕುತ್ಸನಮ್" ಮನುಂ ೪-೧೬೩।

**ನಾಸ್ತಿಮೂರ್ತಿ ನಾಸ್ತಿಮೂರ್ತಿ** (ವಿಂ) ಶೂರವಿಲ್ಲದ, ದೇಹವಿಲ್ಲದ, ರೂಪವಿಲ್ಲದ. ನಾಸ್ತಿ ಮೂರ್ತಿಯಸ್ಯ। ನಾಸ್ತೀತ್ಯವ್ಯಯಮ್ ಅಭಾವೇಶ್ಚ। "ನ ಮನ್ಮಥಸ್ತ್ವಂ ಸ ಹಿ ನಾಸ್ತಿಮೂರ್ತಿಃ ನ ಚಾಶ್ವಿನೇಯಃ ಸ ಹಿ ನಾಡ್ವಿತೀಯಃ" ನೈಷಂ ೮-೨೯।

**ನಾಸ್ತಿವಾದ ನಾಸ್ತಿವಾದ** (ಪುಂ) ಇಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳುವುದು. ಪರಲೋಕ ಈಶ್ವರ ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲವೆಂದು ವಾದಿಸುವುದು. ನಾಸ್ತಿ ಇತಿ ವಾದಃ।

**ನಾಸ್ಯ ನಾಸ್ಯ** (ನಂ) 1. ಎತ್ತುಗಳಿಗೆ ಹಾಕುವ ಮೂಗು ದಾರ. ನಾಸಾಯಾಂ ಭವಮ್ "ಯತ್" (೪-೨-೪೪)। "ತಿನ್ನನಾಸ್ಯೇ ಭಗವತ್ಯುಗೇ ತಿರ್ಯಕ್ ಪ್ರತಿಮುಖಾಗತೇ। ಅಕ್ಷಭಜ್ಞೇ ಚ ಯಾನಸ್ಯ ಚಕ್ರಭಜ್ಞೇ ತಥೈವ ಚ" ಮನುಂ ೮-೨೯೧। 2. ಮೂಗಿಗೆ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ. ನಾಸಾ ಚತುರರ್ಥ್ಯಾ "ಞ್" (೪-೨-೮೦)।

**ನಾಹ ನಾಹ** (ಪುಂ) 1. ಬಂಧನ, ಕಟ್ಟುವುದು. ನಹ (ಬಂಧನ) ಭಾವೇ "ಛ್ಯಜ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಹಕ್ಕಿ ಮತ್ತು ಮೃಗಗಳನ್ನು ಹಿಡಿಯುವ ಬಲೆ ಅಥವಾ ಬೋನು. 3. ಮಲ ಬದ್ಧತೆ, ಹೊಟ್ಟೆ ಕಟ್ಟುವುದು. "ನಾಹಸ್ತು ಬಂಧನೇ ಕೂಟೇ" ಮೇದಿಂ।

**ನಾಹಲ ನಾಹಲ** (ಪುಂ) ಮೈಚ್ಛ ಜನಾಂಗದವನು.

**ನಾಹುಷ ನಾಹುಷ** (ಪುಂ) ನಹುಷರಾಜನ ಮಗ ಯಯಾತಿ. ನಹುಷಸ್ಯಾಯ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಯಯಾತಿರ್ನಾಹುಷಃ ಸಮ್ರಾಟಾಸೀತ್ ಸತ್ಯಪರಾಕ್ರಮಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೯-೩೪।

**ನಾಹುಷಿ ನಾಹುಷಿ** (ಪುಂ) ನಹುಷರಾಜನ ಮಗ ಯಯಾತಿ. ನಹುಷಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಇಞ್" (೪-೧-೯೪)।

**ನಿ ನಿ** (ಅವ್ಯಂ) ಇದೊಂದು ಉಪಸರ್ಗ. ಇದು ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ ದೋಷಕವಾಗುವುದು. 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು, ರಾಶಿ. "ಜ್ವಾಲಾಕಣಾರುಣಕಾ ನಿಕರೇಣ ರೇಣಿಃ" ಮಾಘಂ ೪-೪೪। 2. ಅಧೋಭಾವ, ಕೆಳಮುಖವಾಗುವುದು. "ನಿಪತಿತಾಃ ಪರಿತಃ ಪಶಿಕವ್ರಜಾನುಪರಿ ತೇ ಪರಿತೇಪುರತೋ ಭೃಶಮ್" ಮಾಘಂ ೬-೬। 3. ಅತಿಶಯ, ಅಧಿಕ. ನಿಕಾಮಃ।



“ನಿಕಾಮತಪ್ತಾ ವಿವಿಧೇನ ವಹ್ನಿನಾ ನಮಶ್ಚರೇಣ್ಯನಸಂಭೃತೇನ  
ಸಾ” ಕುಮಾಂ ೪-೨೩. 4. ಅದೇಶ. ಅಪ್ಪಣ್, ಅಷ್ಟ್.  
“ಯಾವದ್ಭವತ್ಯಾಹಿತಸಾಯಕಸ್ಯ ಮತ್ಕಾರ್ಮುಕಸ್ಯಾಸ್ಯ ನಿರ್ದೇಶವರ್ತಿ”  
ಕುಮಾಂ ೩-೪. 5. ಕುಶಲತೆ, ಜಾಣತನ. “ವಯಸ್ಯ, ನಿಸರ್ಗ-  
ನಿಪುಣಾ: ಸ್ತ್ರೀಯ:” ಮಾಲಂ ೩. 6. ಬಂಧನ, ತಡೆ, ಅಂಕೆ,  
ಅಡ್ಡಿ. 7. ಸಮೀಪ. “ಹಿರಣ್ಯಕ: ನಿಕಟವರ್ತಿನಂ ಶರಸ್ತಮ್ಬಂ  
ಪ್ರವಿಷ್ಟ:” ಪञ्ಚತಂ ೨. 8. ನಿತ್ಯ, ಶಾಶ್ವತ, ಸ್ಥಿರ.  
9. ದರ್ಶನ, ತೋರಿಸುವುದು. ನಿರ್ದೇಶನಮ್. 10. ನಿವೃತ್ತಿ,  
ವಿಶ್ರಾಂತಿ, ನಿಲುಗಡೆ, ಬಿಡುವು. “ನಿರ್ವೃತ್ತಿತಂ ವೈರಜನೋಪ-  
ಮದಾತ್ ನ್ಯಸ್ತಂ ರಥೇ ಚಕ್ರಮುಪಾದದಾನ:” ಯಾದಂ ೨೩-೪೦. 11.  
ಆಶ್ರಯ, ರಕ್ಷಣಾಸ್ಥಾನ. ನಿಲಯ: 12. ಅಂತ  
ಭಾವ, ಒಳಗೆ ಸೇರಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 13. ಸಂಶಯ,  
ಸಂದೇಹ. 14. ವಿನ್ಯಾಸ. 15. ಎಸೆಯುವುದು.  
16. ಮೋಕ್ಷ. 17. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. “ನಿ ಸ್ಯಾತ್ಕೇಪೇ  
ಭೃಶಾರ್ಥೇ ಚ ನಿಯಾರ್ಥೇ ದಾನಕರ್ಮಣಿ. ಸಂತಿಧಾನೋಪರಮಯೋ:  
ಸಂಶಯಾಶ್ರಯರಾಶಿಷು. ಮೋಕ್ಷಂತಭವಿಷೋಮಾವೇ ಬಂಧನೇ ಕೌಶಲೇಽಪಿ  
ಚ” ಹೇಮಂ. 18. ನಿಷೇಧ.

**ನಿ:ಕ್ಷತ್ರಿಯ ನಿ:ಕ್ಷತ್ರಿಯ** (ವಿಂ) ಕ್ಷತ್ರಿಯರಿಲ್ಲದ, ಕ್ಷತ್ರಿಯ  
ಶೂನ್ಯವಾದ. ನಿರ್ಗತಾ: ಕ್ಷತ್ರಿಯಾ ಯಸ್ಮಾತ್.

**ನಿ:ಶಕ್ತ ನಿ:ಶಂಕ** (ವಿಂ) 1. ಸಂದೇಹವಿಲ್ಲದ. 2. ಭಯ  
ವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಾ ಶಕ್ತಾ ಸಂಶಯೋ ಭಯಂ ವಾ ಯಸ್ಮಾತ್. “ಭೋ  
ಭಗವನ್ ಇದಾನಿಂ ಸ್ವಪಿಹಿ ನಿ:ಶಕ್ತ: 1. ಅಸ್ಯೋಷಮಣಾ ಮೂಷಕಸ್ತೇ  
ಜಾಗರಣಂ ಸಂಪಾದಯತಿ” ಪञ್ಚತಂ ೨. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3.  
ಸಂದೇಹವಿಲ್ಲದ. “ಮಾಂ ಧನತಾ ಭವತಾಽಕಾರಿ ನಿ:ಶಕ್ತಂ  
ಪಾಪದೃಶನಾ” ಭಟ್ಟಂ ೬-೧೨೯. 4. ಭಯವಿಲ್ಲದ. “ನಿ:ಶಕ್ತ-  
ಮಡ್ಕುರಿತತಾಂ ರತಿವಲ್ಲಭಸ್ಯ ದೇವ: ಸ್ವಚಂದ್ರಕಿರಣಾಮೃತಸೇಚನೇನ”  
ನೇಷಂ ೧೧-೯೧.

**ನಿ:ಶಬ್ದ ನಿ:ಶಬ್ದ** (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದವಿಲ್ಲದ, ಸದ್ದಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತ:  
ಶಬ್ದೋ ಯಸ್ಮಾತ್. “ನಿ:ಶಬ್ದಂ ಕಾರಯಿತ್ವಾ ತತ್ ಸದ: ಪ್ರಾಹ  
ಮಹಾಮುನೇ” ಮಾರ್ಕಂ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 2. ಶಬ್ದವಿಲ್ಲದ,  
ಸದ್ದಿಲ್ಲದ.

**ನಿ:ಶರಣ್ಯ ನಿ:ಶರಣ್ಯ** (ವಿಂ) ರಕ್ಷಕನಿಲ್ಲದ, ಕಾಪಾಡುವವ  
ನಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತ: ಶರಣ್ಯೋ ಯಸ್ಮಾತ್. “ಭವದ್ವಿಯೋಗಾಚ್ಛಿದುರಾರ್ತಿ-  
ಧಾರಾಯಮಸ್ವಸುರ್ಮಜ್ಜತಿ ನಿ:ಶರಣ್ಯ:” ನೇಷಂ ೩-೧೧೩.

**ನಿ:ಶಲಾಕ ನಿ:ಶಲಾಕ** (ವಿಂ) ರಹಸ್ಯವಾದ, ನಿರ್ಜನವಾದ.  
ನಿರ್ಗತ: ಶಲಾಕಾಯಾ: 1. “ಗಿರಿಪೃಷ್ಠಂ ಸಮಾರುಹ್ಯ ಪ್ರಾಸಾದಂ ವಾ  
ರಹೋಗತ: 1. ಅರಣ್ಯೇ ನಿ:ಶಲಾಕೇ ವಾ ಮನ್ತ್ರಯೇದವಿಭಾವಿತ:”  
ಮನುಂ ೭-೧೪೭.

**ನಿ:ಶಲ್ಕ ನಿ:ಶಲ್ಕ** (ವಿಂ) 1. ತೊಗಟೆಯಿಲ್ಲದ. 2. ಮೈ  
ಮೇಲಿನ ಪೊಯಿಲ್ಲದ ಮೀನು.

**ನಿ:ಶಲ್ಯ ನಿ:ಶಲ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಬಾಣವಿಲ್ಲದ. 2. ಮುಳ್ಳು  
ಗಲ್ಲದ. 3. ಅಡ್ಡಿ ಆತಂಕಗಳಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಂ ಶಲ್ಯಂ ಯಸ್ಮಾತ್. 4.  
(ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 4. ಬಾಣವಿಲ್ಲದ. 5. ಅಡ್ಡಿಯಿಲ್ಲದ, ತಡೆ  
ಯಿಲ್ಲದ. 6. ಮುಳ್ಳುಗಳಿಲ್ಲದ.

**ನಿ:ಶಸ್ತ್ರ ನಿ:ಶಸ್ತ್ರ** (ವಿಂ) 1. ಶಸ್ತ್ರಗಳಿಲ್ಲದ. 2. ಆಯುಧ  
ಗಳಿಲ್ಲದ, ಮದ್ದು ಗುಂಡುಗಳಿಲ್ಲದ, ಬಂದೂಕ ಫಿರಂಗಿ  
ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಂ ಶಸ್ತ್ರಂ ಯಸ್ಮಾತ್.

**ನಿ:ಶಸ್ತ್ರೀಕರಣ ನಿ:ಶಸ್ತ್ರೀಕರಣ** (ನಂ) ಆಯುಧ ಮದ್ದು  
ಗುಂಡು ಫಿರಂಗಿಗಳಿಲ್ಲದೆ ಮಾಡುವುದು.

**ನಿ:ಶಸ್ತ್ರೀಕೃತ ನಿ:ಶಸ್ತ್ರೀಕೃತ** (ವಿಂ) ಆಯುಧ ಗುಂಡು  
ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಲ್ಲದೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ನಿ:ಶೂಕ ನಿ:ಶೂಕ** (ಪುಂ) ಉಬ್ಬಿಲ್ಲದ ಧಾನ್ಯ, ತೇಕ್ಷ್ಣವಾದ  
(ಚೂಪಾದ) ಅಗ್ರಭಾಗವಿಲ್ಲದ ಧಾನ್ಯ, ಮುಂಡಧಾನ್ಯ.  
ನಿರ್ಗತ: ಶೂಕೋಽಸ್ಮಾತ್.

**ನಿ:ಶೇಷ ನಿ:ಶೇಷ** (ವಿಂ) 1. ಶೇಷವಿಲ್ಲದ, ಸಮಗ್ರವಾದ,  
ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ. ನಿರ್ಗತ: ಶೇಷೋ ಯಸ್ಮಾತ್. ನಿಷ್ಕಾಂತಂ  
ಶೇಷಾತ್ ವಾ. “ಪಾರೆಪರಾರ್ಥಂ ಗಣಿತಂ ಯದಿ ಸ್ಯಾತ್ ಗಣೇಯನಿ:ಶೇಷ-  
ಗುಣೋಽಪಿ ಸ ಸ್ಯಾತ್” ನೇಷಂ ೩-೪೦. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 2.  
ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ, ಸಮಗ್ರವಾಗಿ, ಉಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದೆ. “ನಿ:ಶೇಷ-  
ಚ್ಯುತಚಂದನಂ ಸ್ತನತಟಂ ನಿರ್ಮುಟರಾಗೋಽಧರ:” ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ. 1.  
“ತಮಧ್ವರೇ ವಿಶ್ವಜಿತಿ ಕ್ಷಿತಿಶಂ ನಿ:ಶೇಷವಿಶ್ರಾಣಿತಕೋಶ-  
ಜಾತಮ್” ಗೃಂ ೪-೧.

**ನಿ:ಶೇಷತಾ ನಿ:ಶೇಷತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶೇಷವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಉಳಿಕೆ  
ಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಿ:ಶೇಷಸ್ಯ ಭಾವ: “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯).  
“ಏವಂ ಶತ್ರುನಿ:ಶೇಷತಾಂ ನೌತ್ವಾ ಭೂಯೋಽಪಿ ಮೇಧವರ್ಣ: ತದೇವ  
ಪಾದಪದ್ಧುಂ ಜಗಾಮ” ಪञ್ಚತಂ ೩.

**ನಿ:ಶೇಷಯತ್ ನಿ:ಶೇಷಯತ್** (ವಿಂ) ಶೇಷವಿಲ್ಲದೆ ಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ. ನಿಸ್ + ಶಿಷ (ಅಸರ್ವೋಪಯೋಗೇ) + ಣಿಕ್ “ಶತ್”  
(೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬). “ನೇಶಂ  
ತಮಿಸ್ರಮಣೇನ ವಿಲುಪ್ತತಾರಂ ನಿ:ಶೇಷಯತ್ರಯಮುದೇತಿ ಮಯ್ಯುಖಮಾಲೀ”  
ಯಾದಂ ೨೯-೪೭. -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

**ನಿ:ಶೇಷಯಿತ್ ನಿ:ಶೇಷಯಿತ್** (ವಿಂ) ಶೇಷವಿಲ್ಲದೆ ಮಾಡು  
ವವನು, ಶೂನ್ಯವಾಗಿ ಮಾಡುವವನು. ನಿಸ್ + ಶಿಷ  
(ಅಸರ್ವೋಪಯೋಗೇ) + ಣಿಕ್ “ತತ್” (೩-೧-೧೨೩). ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ  
“ಙೀಪ್” (೪-೧-೪). -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.



ನಿ:ಶೇಷಿತ ನಿ:ಶೇಷಿತ (ವಿಂ) 1. ಶೇಷವಿಲ್ಲದೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಶೂನ್ಯವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ನಿಸ್ + ಶಿಷ (ಅಸರ್ವೋಪಯೋಗ) + ಣಿವ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । "ನೂನಂ ಸದ್ಯ:ಫಲಾನಿ ನೌತಿ-ಶಾಸ್ತ್ರಾಣಿ, ಯತ್ವಯಾಽಽನುಕೂಲ್ಯೇನಾನುಪ್ರವಿಶ್ಯಾರಿಮದನ: ಸಪರಿವಾರೋ ನಿ:ಶೇಷಿತ:" ಪಠ್ಯತಂ ೩ । "ಭದ್ರ, ನಿ:ಶೇಷಿತಾಸ್ತೇ ರಿಪವ:" ಪಠ್ಯತಂ ೪ । 2. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಉಳಿಕೆ ಯಿಲ್ಲದೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು.

ನಿ:ಶೋಧ್ಯ ನಿ:ಶೋಧ್ಯ (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಶೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ನಿರ್ಮಲವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಕಶ್ಮಲವಿಲ್ಲದಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತಂ ಶೋಧ್ಯಮಸ್ಮಾತ್ । ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತಂ ಶೋಧ್ಯಾತ್ ಇತಿ ವಾ । "ನಿ:ಶೋಧ್ಯಮನವಸ್ಕರಮ್" ಅಮಂ ।

ನಿ:ಶ್ರಯಣಿ ನಿ:ಶ್ರಯಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳನ್ನು ಹತ್ತಲು ಸಾಧನವಾದ ಏಣಿ, ನಿಚ್ಚಣಿಗೆ. ನಿಶ್ಚಿತಂ ಶ್ರೀಯತೇ ಆಶ್ರೀಯತೇಜಯಾ—ಶ್ರಿನ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) ।

ನಿ:ಶ್ರಯಿಣಿ ನಿ:ಶ್ರಯಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಏಣಿ, ನಿಚ್ಚಣಿಗೆ. ನಿ:ಶ್ರಯತಿ—ಶ್ರಿನ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) । "ಙೋಪ್" (೪-೧-೫) ।

ನಿ:ಶ್ರೇಣಿ ನಿ:ಶ್ರೇಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮನೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಮೇಲೆ ಹತ್ತಲು ಸಾಧನವಾದ ಏಣಿ, ನಿಚ್ಚಣಿಗೆ. ನಿಶ್ಚಿತಾ ಶ್ರೇಣಿರತ್ನ । "ನಿ:ಶ್ರೇಣಿಃಸ್ವಧಿರೋಹಿಣಿ" ಅಮಂ । 2. ಖರ್ಚು ರದ ಮರ. "ನಿ:ಶ್ರೇಣಿಃಸ್ವಧಿರೋಹಿಣ್ಯಾಂ ಖರ್ಜುರೀಪಾದೇ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ । "ಚಕ್ರೇ ತ್ರಿದಿವನಿ:ಶ್ರೇಣಿ: ಸರಯೂರ್ನುಯಾಯಿ-ನಾಮ್" ರಘುಂ ೧೫-೧೦೦ ।

ನಿ:ಶ್ರೇಯಸ್ ನಿ:ಶ್ರೇಯಸ್ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ಮನುಷ್ಯ, ಉತ್ತಮ ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮನುಷ್ಯ. ನಿಶ್ಚಿತಂ ಶ್ರೇಯೋ ಯಸ್ಯ ।

ನಿ:ಶ್ರೇಯಸ ನಿ:ಶ್ರೇಯಸ್ (ಪುಂ) 1. ಶಂಕರ, ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಿಶಿವ. "ನಿ:ಶ್ರೇಯಸಂತು ಕಲ್ಯಾಣಮೋಕ್ಷಯೋ: ಶಕ್ತುರೇ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ । (ನಂ) 2. ಮೋಕ್ಷ, ಆತ್ಮಂತಿಕ ಸುಖ, ಶಾಶ್ವತ ವಾದ ಸುಖ. ನಿಶ್ಚಿತಂ ಶ್ರೇಯ:, ಅಜಂತೋ ನಿಪಾತಿತ: (೫-೪-೭೭) । "ನಿ:ಶ್ರೇಯಸಪ್ರತಿಪದೇನ ನಿಜೇನ ಧಾಮ್ನಾ" ಯಾದಂ ೧೯-೫೧ । 3. ಕಲ್ಯಾಣ, ಮಂಗಳ, ಶುಭ. "ಇದಂ ಭಾಗವತಂ ನಾಮ ಪುರಾಣಂ ಬ್ರಹ್ಮಸಮ್ಮಿತಮ್ । ಉತ್ತಮಶ್ಲೋಕಚರಿತಂ ಚಕಾರ ಭಗವಾನ್ ಶ್ರೀಃ । ನಿ:ಶ್ರೇಯಸಾಯ ಲೋಕಸ್ಯ ಧನ್ಯಂ ಸ್ವಸ್ತಿಯಯನಂ ಮಹತ್" ಭಾಗಂ ೧-೩-೪೦, ೧ ।

ನಿ:ಶ್ವಸತ್ ನಿ:ಶ್ವಸತ್ (ವಿಂ) ನಿಟ್ಟುಸಿರು ಬಿಡುತ್ತಿರುವ. ನಿಸ್ + ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ಸತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಗುರು

ನಿ:ಶ್ವಸತ್ರಯ ವಲಿಲಸದವಯುಧಪುರ್ವಚೋವಿಪಮ್" ಮಾಧಂ ೧೫-೬೨ ।

ನಿ:ಶ್ವಸಿತ ನಿ:ಶ್ವಸಿತ (ನಂ) ನಿಟ್ಟುಸಿರು, ಮೇಲಿನ ಉಸಿರು. ನಿಸ್ + ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) । "ಸ್ತನಕಂಘ್ರಿಕ್ರಿಯಾಲಕ್ಷ್ಯೇನ್ಯಸ್ತಂ ನಿ:ಶ್ವಸಿತೇರಿವ" ವಿಕ್ರಂ ೨-೧೮ ।

ನಿ:ಶ್ವಾಸ ನಿ:ಶ್ವಾಸ (ಪುಂ) ನಿಟ್ಟುಸಿರು, ವಾಯುವು ಮೂಗಿನಿಂದ ವೇಗವಾಗಿ ಹೊರಕ್ಕೆ ಬರುವುದು. ನಿಸ್ + ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮) । "ನಿ:ಶ್ವಾಸಧುಮೇ: ಸ್ಥಗಿತಾಂಶುಜಾಲಂ ಫಣಾವತಾಮುತ್ಫಣಮಂಡಲಾನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೬-೩೯ । "ಸಖೀಜನಪ್ರಯತ್ನಪ್ರತಿಪತ್ತಮುಚ್ಛಾವಿಚ್ಛೇದಸಮಯ-ಸಂಗಲಿತದೀರ್ಘನಿ:ಶ್ವಾಸಜನಿತಜೀವಿತಾಶಾ" ಮಾಲತೀಂ ೩ ।

ನಿ:ಷಮ ನಿ:ಷಮ (ಅವ್ಯಂ) 1. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ, ತೆಗಳುವುದು. 2. ಆಕ್ಷೇಪಿಸುವುದು. ನಿಗತಂ ಸಮಮತ್ರ । ಅವ್ಯಯಿಂ (೨-೧-೧೭) । ಷತ್ವಮ್ (೮-೩-೮೮) ।

ನಿ:ಸಂಶಯ ನಿ:ಸಂಶಯ (ವಿಂ) 1. ಸಂಶಯವಿಲ್ಲದೆ, ಸಂದೇಹವಿಲ್ಲದೆ. ನಿಗತಂ: ಸಂಶಯೋ ಯಸ್ಮಾತ್ । "ಕೃತೇ ನಿ:ಸಂಶಯೇ ಪಾಪೇ ನ ಭುಂಜಿತಾನುಪಸ್ಥಿತ:" । (ಅವ್ಯಂ) 2. ಸಂದೇಹವಿಲ್ಲದೆ, ಸಂಶಯವಿಲ್ಲದೆ.

ನಿ:ಸಂಜ್ಞ ನಿ:ಸಂಜ್ಞ (ವಿಂ) 1. ಸಂಗವಿಲ್ಲದೆ, ಕರ್ಮಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದೆ. ನಿಗತಂ: ಸಂಜ್ಞೋ ಯಸ್ಮಾತ್ । ಜೀವನಿಗಿರುವಂತೆ ಪುರುಷನಿಗೆ ಕರ್ಮಸಂಬಂಧವಿರುವುದಿಲ್ಲ. "ನಿ:ಸಂಜ್ಞ: ಪುರುಷ: ಕ್ರಿಯಾಸು ಸ ಕಯಂ ಕರ್ತೇತಿ ಸಂಭಾವ್ಯತೇ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೬-೧೯ । 2. ಕರ್ಮಫಲ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದೆ, ಕರ್ಮಫಲವನ್ನು ಆಪೇಕ್ಷಿಸದಿರುವ, ಆತ್ಮಪ್ರಯೋಜನಸಾಧನವಾದ ಕರ್ಮಫಲ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದೆ. "ಯಜ್ಞಾರ್ಥಾತ್ ಕರ್ಮಣೋಽನ್ಯತ್ರ ಲೋಕೋಽಯಂ ಕರ್ಮ-ಬಂಧನ: । ತದರ್ಥಂ ಕರ್ಮ ಕೌಂತೇಯ ಮುಕ್ತಸಂಜ್ಞ: ಸಮಾಚರ" ಗೀತಾ ೩-೯ । "ವೇದೋಕ್ತಮೇವ ಕುರ್ವಾಣೋ ನಿ:ಸಂಜ್ಞೋಽಪಿತಮೀಶ್ವರೇ" । 3. ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದೆ, ಬೇರೆಯಾಗಿರುವ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿಲ್ಲದೆ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 4. ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದೆ, ಸಹವಾಸವಿಲ್ಲದೆ. 5. ಕರ್ಮಫಲ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದೆ. 6. ಸೇರಿಕೊಂಡಿಲ್ಲದೆ.

ನಿ:ಸಂಚಾರ ನಿ:ಸಂಚಾರ (ಪುಂ) ಸಂಚಾರವಿಲ್ಲದಿರುವುದು, ಓಡಾಟವಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ನಿಗತಂ: ಸಂಚಾರ: । "ಅಹೋ ನಿಶೀಥನಿ:ಸಂಚಾರರಮಣೀಯತಾ ರಾಜಮಾರ್ಗಸ್ಯ" ಮಾಲತೀಂ ೭ ।

ನಿ:ಸಂಜ್ಞ ನಿ:ಸಂಜ್ಞ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಜ್ಞೆಯಿಲ್ಲದೆ, ಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದೆ. ಮೈಮೇಲೆ ಎಚ್ಚರಿಲ್ಲದೆ. ನಿಗತಂ: ಸಂಜ್ಞಾ ಯಸ್ಮಾತ್ । 2. ಮೈಮರೆತಿರುವ, ಅಹಂಕಾರದಿಂದ ವಿವೇಕಶೂನ್ಯವಾದ. "ಯದಾ-ಢ್ಯಾನಾಮಗ್ರೇ ದ್ರವಿಣಮದನಿ:ಸಂಜ್ಞಮನಸಾಂ ಕೃತಂ ಮಾನವೀತೇನಿಜಗುಣ-ಕಥಾಪಾತಕಮಪಿ" ಭರ್ತೃಂ ೩-೫ ।



ನಿ:ಸತ್ವ ನಿ:ಸತ್ತ್ವ (ವಿಂ) ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಂ ಸತ್ವಂ ಯಸ್ಮಾತ್. "ಕಯಂ ನಾಮಾತಿಭಿಷಣವಿಭಿಷಿಕಾ-ವಿಕಾರೇಷ್ಠಿಡಿತೃಪಕ್ರಾಂತಂ ಪಿಶಾಚೈಃ. ಅಹೋ ನಿ:ಸತ್ತ್ವಾ: ಸರ್ವೇ" ಮಾಲತೀಂ ೫.

ನಿ:ಸಂತತಿ ನಿ:ಸಂತತಿ (ವಿಂ) ಸಂತಾನವಿಲ್ಲದ, ಮಕ್ಕಳಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಾ ಸಂತತಿ: ಯಸ್ಮಾತ್. ಇದೇ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ನಿ:ಸಂತಾನ: ನಿ:ಸಂತಾನಃ.

ನಿ:ಸಂದಿಗ್ಧ ನಿ:ಸಂದಿಗ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಸಂದೇಹವಿಲ್ಲದ. ಸಂಶಯವಿಲ್ಲದ, ನಿಶ್ಚಯವಾದ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 2. ಸಂದೇಹವಿಲ್ಲದೆ, ಸಂಶಯವಿಲ್ಲದೆ, ನಿಶ್ಚಯವಾಗಿ.

ನಿ:ಸಂದೇಹ ನಿ:ಸಂದೇಹ (ವಿಂ) 1. ಸಂಶಯವಿಲ್ಲದ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 2. ಸಂಶಯವಿಲ್ಲದೆ.

ನಿ:ಸಪಲ ನಿ:ಸಪಲ (ವಿಂ) 1. ಶತ್ರುಗಳಿಲ್ಲದ. ದ್ವೇಷಿಗಳಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತ: ಸಪಲ: ಯಸ್ಮಾತ್. "ಘನಕಿರಣಕಲಾಪೋ ನಿ:ಸಪಲೋಽಸ್ಯ ಜಾತ:" ವಿಕ್ರಂ ೪-೨೨. 2. ಪ್ರತಿಸ್ಪರ್ಧಿಯಿಲ್ಲದ, ಎದುರಾಳಿಯಿಲ್ಲದ. "ऊर्जस्वलेन सुरभीरनु ನಿ:ಸಪಲಮ್". 3. ಪಾಲುದಾರರಿಲ್ಲದ.

ನಿ:ಸಂಬಾಧ ನಿ:ಸಂಬಾಧ (ವಿಂ) 1. ಗುಂಪಿಲ್ಲದ, ಸಂದರ್ಶಿಯಿಲ್ಲದ. 2. ಒಂಟಿಯಾದ, ಏಕಾಂತವಾಗಿರುವ. ನಿರ್ಗತಾ ಸಂಬಾಧಾ ಯಸ್ಮಾತ್.

ನಿ:ಸರಣ ನಿ:ಸರಣ (ನಂ) 1. ನಿರ್ಗಮನ, ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡುವುದು. ನಿರ್ + ಸೃ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). "ಗರ್ಭವಾಸೇ ಮಹದ್ದು:ಖಂ ದಶಮಾಸನಿವಾಸನಮ್. ತಥಾ ನಿ:ಸರಣೇ ದು:ಖಮ್". 2. ಮನೆಯ ಮುಂಭಾಗ. ನಿ:ಸರಣ್ಯೇನ — ನಿರ್ + ಸೃ (ಗತೌ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೬). 3. ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ. 4. ಮರಣ. 5. ಉಪಾಯ, ಯುಕ್ತಿ.

ನಿ:ಸರತ್ ನಿ:ಸರತ್ (ವಿಂ) ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡುತ್ತಿರುವ. ನಿರ್ + ಸೃ (ಗತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). -ಂತಿ-೨೬. "एतद्भीतारिनारी गिरिविलविगलदासरा नि:सरन्ती" ನೈಷಂ ೧೨-೨೮.

ನಿ:ಸಲಿಲ ನಿ:ಸಲಿಲ (ವಿಂ) ಜಲವಿಲ್ಲದ, ನೀರಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಂ ಸಲಿಲಂ ಯಸ್ಮಾತ್.

ನಿ:ಸಹ ನಿ:ಸಹ (ವಿಂ) 1. ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯವಿಲ್ಲದ. "अयि, विरम विरम। नि:सहा जातासि" ಮಾಲತೀಂ ೩. "उपशमयुपयान्तं नि:सहेऽङ्गेऽङ्गनानाम्" ಮಾಧಂ ೧೧-೧೭. 2. ಎದುರಿಸಲಾಗದ, ಪ್ರತಿಭಟಿಸಲಾಗದ.

ನಿ:ಸಹತಾ ನಿ:ಸಹತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಿ:ಸಹಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೫-೧-೧೧೯). "ತ್ವ:" (೫-೧-೧೧೯). ನಿ:ಸಹತ್ವಮ್ ನಿ:ಸಹತ್ವಮ್.

ನಿ:ಸಹಾಯ ನಿ:ಸಹಾಯ (ವಿಂ) ಸಹಾಯವಿಲ್ಲದ, ಬೆಂಬಲಿಗಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತ: ಸಹಾಯೋ ಯಸ್ಮಾತ್.

ನಿ:ಸಾರ ನಿ:ಸಾರ (ಪುಂ) 1. ಶಾಯೀಚಕ ವ್ಯಕ್ತ, ಕಾರಗಿಡ. (ವಿಂ) 2. ಸಾರವಿಲ್ಲದ, ಸತ್ತ್ವವಿಲ್ಲದ, ತಿರುಳಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತ: ಸಾರೋ ಯಸ್ಮಾತ್. "नि:सारस्य पदार्थस्य प्रायेणा-डम्बरो महान्". "जगत्सर्वं तु नि:सारमनित्यं दु:ख-भाजनम्। उत्पद्यते क्षणादेतत् क्षणादेतद्विपद्यते" ಕಾಲಿಕಾಪುಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಾ-೦೩. 3. ಬಾಳಗಿಡ.

ನಿ:ಸಾರತಾ ನಿ:ಸಾರತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಾರವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಸತ್ತ್ವವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಿ:ಸಾರಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೫-೧-೧೧೯). "विहाय नि:सारतयेव भूरुहान् पदं वनश्रीवनितासु सन्दधे" ಕಿರಾಂ ೮-೨೦. "ತ್ವ:" -ತ್ವಮ್ -ತ್ವಮ್. ಕಿರಾಂ ೧೧-೫೯.

ನಿ:ಸಾರಣ ನಿ:ಸಾರಣ (ನಂ) 1. ಹೊರಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸುವುದು. ನಿರ್ + ಸೃ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). 2. ಮನೆಯ ಮುಂಭಾಗ. ನಿ:ಸಾರಣೇನ — ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೬).

ನಿ:ಸಾರಿತ ನಿ:ಸಾರಿತ (ವಿಂ) ಹೊರಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ನಿರ್ + ಸೃ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). "एवं विमृश्य सविषादया तथा नि:सारितोऽसौ" ಪಂಚತಂ.

ನಿ:ಸಾರ್ಯಮಾಣ ನಿ:ಸಾರ್ಯಮಾಣ (ವಿಂ) ಹೊರಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿರ್ + ಸೃ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ ಕರಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪).

ನಿ:ಸೀಮನ್ ನಿ:ಸೀಮನ್ (ವಿಂ) ಎಲ್ಲೆಯಿಲ್ಲದ, ಅವಧಿಯಿಲ್ಲದ, ಅಪರಿಮಿತವಾದ, ಅಪಾರವಾದ. ನಿರ್ಗತಾ ಸೀಮಾ ಯಸ್ಮಾತ್. "साकेतजनपदजनितजङ्गमतदितरजन्तुजात-दिव्यगतिदानदर्शितनित्यनि:सीमवैभव" ರಘುಂ ಗಂ. "नि:सीमानन्दमासीदुपनिबदुपमातत्परीभूय भूय:" ನೈಷಂ ೧೧-೧೨೯.

ನಿ:ಸುತ್ರ ನಿ:ಸುತ್ರ (ವಿಂ) 1. ತಂತುವಿಲ್ಲದ, ದಾರವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಂ ಸುತ್ರಂ ಯಸ್ಮಾತ್. 2. ವ್ಯವಸ್ಥೆಯಿಲ್ಲದ, ಉಪಾಯ ತೋರದಿರುವ. "नि:सूत्रमास्ते घनपङ्कमसु मूर्तसु नाकीर्तिषु तन्निमग्नम्" ನೈಷಂ ೭-೬೯.



ನಿ:ಸ್ನೆಹ ನಿ:ಸ್ನೇಹ (ವಿಂ) 1. ಸ್ನೇಹವಿಲ್ಲದ, ಸಖ್ಯವಿಲ್ಲದ. 2. ಪ್ರೀತಿಯಿಲ್ಲದ, ವಿಶ್ವಾಸವಿಲ್ಲದ, "ಯದರ್ಥೇ ಸ್ವಕುಲಂ ತ್ಯಕ್ತಂ ಜೀವಿತಾರ್ಥಂ ಚ ಹಾರಿತಮ್ | ಸಾ ಮಾಂ ತ್ಯಜತಿ ನಿ:ಸ್ನೆಹಾ ಕ: ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ವಿಶ್ವೇಶೇಶ್ವರ: |" ಪञ್ಚತಂ ೪-೪೫ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಹಾ -ಹಾ. 3. ಅಗಮ್ಯದ.

ನಿ:ಸ್ಪೃಹ ನಿ:ಸ್ಪೃಹ (ವಿಂ) ಅಸೆಯಿಲ್ಲದವನು, ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದವನು, ಅಸೆಯನ್ನು ತೊರೆದಿರುವವನು. ನಿಗತಾ ಸ್ಪೃಹಾ ಯಸ್ಯ | "ವ್ರಜಂತಿ ಶತ್ರುನವಧುಯ ನಿ:ಸ್ಪೃಹಾ: ಶಮೇನ ಸಿದ್ಧಿ ಮುನಯೋ ನ ಭೂತ:" ಕಿರಾಂ ೧-೪೨ | "ನಿ:ಸ್ಪೃಹೋ ನಾಧಿಕಾರಿ ಸ್ಯಾತ್" ಪञ್ಚತಂ ೧-೧೭೫ |

ನಿ:ಸ್ಪೃಹತಾ ನಿ:ಸ್ಪೃಹತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಸೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಅಸೆಯನ್ನು ತೊರೆದಿರುವಿಕೆ. ನಿ:ಸ್ಪೃಹಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) | "ತ್ವ:" | -ತ್ವಮ್ -ತ್ವಮ್.

ನಿ:ಸ್ತವ ನಿ:ಸ್ತವ (ಪುಂ) ಅವಶೇಷ, ಉಳಿಕೆ. ನಿಗತ: ಸ್ತವ: | "ರಾಜನಿ ಸ್ಥಾಪ್ಯತೇ ಯೋರ್ಧ: ಪ್ರತ್ಯಹಂ ತೇನ ವಿಕ್ರಯ: | ಕ್ರಯೋ ವಾ ನಿ:ಸ್ತವಸ್ತಸ್ಮಾತ್ ವಣಿಜಾಂ ಲಾಭಕೃತ್ಸ್ಮತ:" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೨೫೧ | ರಾಜನು ಸ್ವದೇಶದಿಂದ ಪರದೇಶಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡುವ ಮತ್ತು ಪರದೇಶದಿಂದ ಅಮದು ಮಾಡಲ್ಪಡುವ ವಸ್ತುಗಳ ಬೆಲೆ, ಅವುಗಳ ಖರ್ಚು ಇತ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ಪರ್ಯಾಯೋಚಿಸಿ ಕ್ರಯ ವಿಕ್ರಯಗಳ ಬೆಲೆಗಳನ್ನು ನಿಗದಿಮಾಡಬೇಕು. ಅದರಂತೆ ವರ್ತಕರು ವ್ಯಾಪಾರಗಳನ್ನು ಮಾಡಬೇಕು. ಐದೈದು ದಿನಗಳಿಗೊಂದಾವೃತ್ತಿ ಅಥವಾ ಹದಿನೈದು ದಿನಗಳಿಗೊಂದಾವೃತ್ತಿ ಈ ರೀತಿ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸಿ ಬೆಲೆಯನ್ನು ರಾಜನು ವ್ಯವಸ್ಥೆಗೊಳಿಸಬೇಕು. "ಆಗಮಂ ನಿಗಮಂ ಸ್ಥಾನಂ ತಥಾ ವೃದ್ಧಿಕ್ಷಯಾವುಭೌ | ವಿಚಾರ್ಯ ಸರ್ವಪಣ್ಯಾನಾಂ ಕಾರಯೇತ್ಕರವಿಕ್ರಯೌ || ಪञ್ಚರಾತ್ರೆ ಪञ್ಚರಾತ್ರೆ ಪಕ್ಷೇ ಪಕ್ಷೇಷ್ಯವಾ ಗತೇ | ಕುಕ್ರೀತ ಚೈಶಾಂ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಮರ್ಥಸಂಸ್ಥಾಪನಂ ನೃಪ:" ಮನುಂ ೮-೪೦೧, ೨ | ರಾಜನಿಂದ ನಿಗದಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ದರಕ್ಕೆ ವಿಕ್ರಯಮಾಡಿದ ನಂತರ ಉಳಿಯುವುದೇ ವರ್ತಕನ ಉಭಾಂಶವಾಗುವುದು.

ನಿ:ಸ್ತಾವ ನಿ:ಸ್ತಾವ (ಪುಂ) 1. ಅನ್ನದ ಮೇಲಿನ ಗಂಜಿ. ನಿ:ಸ್ತಾವ್ಯತೇ - ನಿರ್ + ಸ್ತು (ಗತೌ) + ಣಿच् "ಘञ್" (೩-೩-೧೧೯) | 2. ವ್ಯಯ, ಖರ್ಚು. "ಬಹ್ವಾದಾನೋಽಪ-ನಿ:ಸ್ತಾವ: ಛ್ಯಾತ: ಪೂಜಿತದೇವತ: | ಇಪ್ಸಿತದ್ರವ್ಯಸಂಪೂರ್ಣ: ಹೃದ್ಯ-ಸ್ವಾಪ್ತೇ ರಿಚಿಷ್ಟಿತ:" ಕಾಮಂದಂ ೪-೬೨ |

ನಿ:ಸ್ವ ನಿ:ಸ್ವ (ವಿಂ) ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ಅಹಿಂಜನ, ಬಡವ. ನಿಗತ: ಸ್ವಮಸ್ಯ | "ನಿ:ಸ್ವೋ ವಶ್ವಿ ಶತಂ ಶತೀ ದಶಶತಂ ಲಕ್ಷಂ ಸಹಸ್ರಾಧಿಪೋ ಲಕ್ಷೇಶ: ತ್ವಿತಿಪಾಲತಾಂ ತ್ವಿತಿಪತಿಶ್ಚಕ್ರೇಶತಾಂ ವಾಚ್ಛತಿ" |

ನಿ:ಸ್ವತಾ ನಿ:ಸ್ವತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ಬಡತನ, ನಿ:ಸ್ವಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) | "ತ್ವ:" | -ತ್ವಮ್ -ತ್ವಮ್.

ನಿ:ಸ್ವನ ನಿ:ಸ್ವನ (ವಿಂ) ಶಬ್ದವಿಲ್ಲದ. ನಿಗತ: ಸ್ವನ: ಯಸ್ಮಾತ್ |

ನಿ:ಸ್ವಭಾವ ನಿ:ಸ್ವಭಾವ (ವಿಂ) ಸ್ವಭಾವಶೂನ್ಯವಾದ. ನಿಗತ: ಸ್ವಭಾವೋ ಯಸ್ಯ | ಬೌದ್ಧ ಮತದಲ್ಲಿ ವಸ್ತು ಸಾಮಾನ್ಯಕ್ಕೂ ಸ್ವಭಾವವೆಂಬುದು ಇಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ವಸ್ತುಗಳೆಲ್ಲವೂ ಸ್ವಭಾವಶೂನ್ಯವಾದುವು. "ಬುದ್ಧ್ಯಾ ವಿವಿಚ್ಯ-ಮಾನಾನಾಂ ಸ್ವಭಾವೋ ನಾವಧಾರ್ಯತೇ | ಅತೋ ನಿರಭಿಲಪ್ಯಾಸ್ತೇ ನಿ:ಸ್ವಭಾವಾಶ್ಚ ದರ್ಶಿತಾ:" |

ನಿಕಟ ನಿಕಟ (ವಿಂ) 1. ಸಮೀಪದ, ಹತ್ತಿರದ. ನಿ ಸಮೀಪೇ ಕಟತಿ - ಕಟೇ (ವರ್ಷಾವರಣಯೋ:) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಹಿರಣ್ಯಕ: ನಿಕಟವರ್ತಿನಂ ಶರಸ್ತಮ್ಬಂ ಪ್ರವಿಷ್ಟ:" ಪञ್ಚತಂ ೨ | (ಪುಂ) 2. ಹತ್ತಿರ, ಸಮೀಪ. "ನಾಪೇಕ್ಷತೇ ಸ್ಮ ನಿಕಟೋಪ-ಗತಾಂ ಕರಣುಮ್" ಮಾಧಂ ೪-೪೦ |

ನಿಕರ ನಿಕರ (ಪುಂ) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು, ರಾಶಿ. ನಿಕೀರ್ಯತೇ - ನಿ + ಕೃ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭) | "ನವವಿನಿರ್ದ್ರಜಪಾಕುಸುಮತ್ವಿಷಾಂ ಶ್ರುತಿಮತಾಂ ನಿಕರೇಣ ಮಹಾಶಮ-ನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೪-೮ | 2. ಸಾರ, ಸ್ಥಿರಾಂಶ. 3. ನ್ಯಾಯ ವಾಗಿ ಕೊಡಬೇಕಾದ ಧನ. 4. ನಿಧಿ, ಕುಬೇರನ ಬೊಕ್ಕಸ. "ನಿಕರೋ ನಿವಹೇ ಸಾರೆ ನ್ಯಾಯದೇಯಧನೇ ನಿಧೌ" ಮೇದಿಂ |

ನಿಕರ್ತನ ನಿಕರ್ತನ (ನಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸುವುದು. "ನಿಕರ್ತನ-ಮಿವಾತ್ಯುಗ್ರಂ ಲಾಙ್ಗುಲಸ್ಯ ಮಹಾಹರಿ:" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೧೭೧-೨೫ | 2. ಚೂರುಮಾಡುವುದು, ತುಂಡುಮಾಡುವುದು. ನಿ + ಕೃತೀ (ಹೇದನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | (ವಿಂ) 3. ಕತ್ತರಿಸುವ. 4. ತುಂಡುಮಾಡುವ. ನಿ + ಕೃತೀ ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) |

ನಿಕರ್ಷ ನಿಕರ್ಷ (ಪುಂ) ನ್ಯೂನತೆ, ಕೊರತೆ, ಕೆಳದರ್ಜೆ.

ನಿಕರ್ಷಣ ನಿಕರ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಪಟ್ಟಣದೊಳಗೆ ಅಥವಾ ಹೊರಗಡೆ ಇರುವ ಮೈದಾನ, ಅರಣ್ಯ ಬಯಲು. 2. ಉಳಿದೆ ಇರುವ ಜಮೀನು. 3. ಮನೆಯ ಮುಂಭಾಗದ ಅಂಗಳ. ನಿ ನಾಸ್ತಿ ಕರ್ಷಣಂ ಯಸ್ಯ |

ನಿಕಷ ನಿಕಷ (ಪುಂ) 1. ಬರೆಗಲ್ಲು, ಚಿನ್ನ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಉಜ್ಜಿ ಪರೀಕ್ಷಿಸುವ ಕಲ್ಲು. ನಿಕಷ್ಯತೇಶ್ಚ - ನಿ + ಕಷ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಘ:" (೩-೩-೧೧೯) | "ನಿಕಷೇ ಹೇಮರೇಷೇವ ಶ್ರೀರಾಸೀದನಪಾಯಿನಿ" ರಘುಂ ೧೭-೪೬ | 2. ಸಾಣೆಕಲ್ಲು, ಮಸೆಯುವ ಕಲ್ಲು. 3. ಉಜ್ಜುವುದು, ತಿಕ್ಕುವುದು.



“ಪಕ್ಷಿಷ್ಟದಃ ಫಲಸ್ಯೇವ ನಿಕಟೇನಾವಿಲಂ ಪಯಃ” ಮಾಲಂ ೨-೭। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -೪-೩೦. 4. ರಾಕ್ಷಸರ ತಾಯಿ. ನಿಕಟತಿ ಹಿನಸ್ತಿ — ನಿ + ಕಟ “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। ಇವಳು ಸುಮಾಲಿಯ ಮಗಳು. ವಿಶ್ವವಸ್ತಿನ ಪತ್ನಿ. “ನಿಕಟಃ ಶಾಣಫಲಕೇ ನಿಕಟಾ ಯತುಮಾತರಿ” ಮೇದಿಂ।

**ನಿಕಟಣ ನಿಕಟಣ** (ಪುಂ) 1. ಉಜ್ಜುವ ಕಲ್ಲು. 2. ಮಸೆಯುವ ಕಲ್ಲು. (ನಂ) 3. ಉಜ್ಜುವುದು. 4. ಮಸೆಯುವುದು.

**ನಿಕಟಾ ನಿಕಟಾ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ. ನಿ + ಕಟ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಆ” (೩-೪-೧೭೪)। “ಪಯೋಧಿಮಾಬದ್ಧವಲಜ್ಜಲಾವಿಲಂ ವಲಜ್ಜಯ ಲಕ್ಷಾಂ ನಿಕಟಾ ಹಿನಿಷ್ಯತಿ” ಮಾಘಂ ೧-೬೮। 2. ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ. “ನಿಕಟಾ-ಂತಿಕಮಧ್ಯಯೋಃ” ಮೇದಿಂ।

**ನಿಕಟಾತ್ಮಜ ನಿಕಟಾತ್ಮಜ** (ಪುಂ) ರಾಕ್ಷಸ. ನಿಕಟಾಯಾ ಆತ್ಮಜಃ।

**ನಿಕಟೋಪಲ ನಿಕಟೋಪಲ** (ಪುಂ) 1. ಸಾಣೆಕಲ್ಲು, ಮಸೆಯುವ ಕಲ್ಲು. 2. ಬರೆಗಲ್ಲು.

**ನಿಕಾಮ ನಿಕಾಮ** (ನಂ) 1. ಯಥೇಷ್ಟ, ಪರ್ಯಾಪ್ತ, ಅತಿಶಯ. ನಿ + ಕಮ (ಕಾಂತೌ) “ಘ” (೩-೩-೧೮)। (ಅವ್ಯಂ) 2. ಯಥೇಷ್ಟವಾಗಿ, ಅತಿಶಯವಾಗಿ, ಬಹಳವಾಗಿ. “ನಿಕಾಮಂ ಕಾಮಾಕ್ಷಿ ಸರಸಕದಲಿಗರ್ಭಸುಭಗಾ ಕಲಾಶೋಭಾ ಮುತಿಃ ಶಶಿನ ಇವ ನೇತ್ರೋತ್ಸವಕರೀ” ಮಾಲತೀಂ ೨-೩। 3. ನೆಮ್ಮದಿಯಾಗಿ, ಸುಖವಾಗಿ. ತೃಪ್ತಿಕರವಾಗಿ, ಸಮಾಧಾನದಿಂದ. “ತುರಗಾನುಧಾವನಕಂಡಿತಸಂವೇಃ ರಾತ್ರೌ ನಿಕಾಮಂ ಶಯಿತವ್ಯಮಪಿ ನಾಸ್ತಿ” ಶಾಕುಂ ೨। (ವಿಂ) 4. ಯಥೇಷ್ಟವಾದ, ಸಮೃದ್ಧವಾದ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ. “ಸೋತೋವಹಾಂ ಪಥಿ ನಿಕಾಮಜಲಾಮತೀಯ” ಶಾಕುಂ ೬-೧೬।

**ನಿಕಾಯ ನಿಕಾಯ** (ಪುಂ) 1. ಮನೆ, ವಾಸಸ್ಥಳ. ನಿಚೀಯತೇಶ್ವ — ನಿ + ಚಿ (ಚಯೇ) “ಘ” (೩-೩-೪೨)। ಆದೇ: ಕಷ್ಠ। “ದೇವಾನ್ ದೇವನಿಕಾಯಾಂ ಮಹರ್ಷಿಶ್ಚಾಮಿತೌಜಃ” ಮನುಂ ೧-೩೬। 2. ಸಮೂಹ, ಸಜಾತೀಯ ಅನೇಕ ವಸ್ತುಗಳ ಗುಂಪು. ನಿ + ಚಿ “ಘ” (೩-೩-೪೨)। “ನಿಮಜ್ಜತಸಕಲನಖನಿಕಾಯವಜ್ರಪಜ್ಜರಪ್ರಹಾರೋ ಮಾರಿತಶ್ಚ ಸ ದುಷ್ಠಶ್ಚಾಪದಮಹಾರಾಕ್ಷಸಃ” ಮಾಲತೀಂ ೭। 3. ಪಂಚಾತ್ಮ. 4. ಸಜಾತೀಯ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಸಮೂಹ. ಭಿಕ್ಷುನಿಕಾಯಃ। “ತಥಾ ದೇವನಿಕಾಯಾನಾಂ ಸೇಂದ್ರಾಣಾಂ ದಿವೀಕಸಾಮ್” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೨೨-೪೮। 5. ಲಕ್ಷ್ಯ. “ನಿಕಾಯಸ್ತು ಪುಮಾನ್ ಲಕ್ಷ್ಯೇ ಸಧಮಿಪ್ರಾಣಿಸಂಹತೌಃ ಸಮುಚ್ಚಯೇ ಸಂಹತಾನಾಂ ನಿಲಯೇ ಪರಮಾತ್ಮನಿ” ಮೇದಿಂ।

**ನಿಕಾಯ ನಿಕಾಯ** (ಪುಂ) ಗೃಹ, ಮನೆ. ವಾಸಸ್ಥಳ. ನಿಚೀಯತೇ ಧಾನ್ಯಾದಿಕಮಸ್ಮಿನ್ — ನಿ + ಚಿ (ಚಯೇ) ಅಧಿಂ “ಘ” ಆಯ್ ಧಾತ್ವಾದೇಃ ಕೃತ್ವಂ ಚ ನಿಪಾತ್ಯತೇ (೩-೧-೧೨೯)। “ನ ಪ್ರಣಾಯೋ ಜನಃ ಕಂಚಿತ್ ನಿಕಾಯಂ ತೇಽಧಿತಿಷ್ಠತಿ” ಭದ್ರಿಂ ೬-೬೬।

**ನಿಕಾರ ನಿಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ಪರಾಭವ, ಅವಮಾನ. ನಿ + ಕೃ (ಕರಣೇ) “ಘ” (೩-೩-೧೮)। “ಪುರಃಸರಾ ವಾಮವತಾಂ ಯಶೋಧನಾಃ ಸುದುಃಸಹಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ನಿಕಾರಮೀದೃಶಮ್” ಕಿರಾಂ ೧-೪೩। 2. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ತೂರಿ ರಾಶಿ ಹಾಕುವುದು, ಕಾಳುಗಳನ್ನು ರಾಶಿಗೆ ಎರಚುವುದು. “ನಿಕಾರಃ ಸ್ಯಾತ್ ಪರಿಭವೇ ಧಾನ್ಯ-ಸ್ಯೋತ್ಕೋಪಣೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ। 3. ನೀಚತನ, ಹಗೆ ಸಾಧಿಸುವುದು, ದ್ವೇಷ ಕಾರುವುದು. 4. ಬೆದರಿಕೆ, ಹೆದರಿಸುವುದು. 5. ಧಿಕ್ಕರಿಸುವುದು, ತೇಜೋವಧೆ ಮಾಡುವುದು. 6. ಅಪಕಾರ, ತೊಂದರೆ ಕೊಡುವುದು.

**ನಿಕಾರಣ ನಿಕಾರಣ** (ನಂ) ವಧೆ, ಕೊಲ್ಲುವುದು, ನಿ + ಕೃ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) + ಸ್ವಾರ್ಥೇ ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

**ನಿಕಾಶ ನಿಕಾಶ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. ನಿಕಾಶತೇ ಶೋಭತೇಜೇನ — ನಿ + ಕಾಶ (ದೀಪ್ತೌ) “ಘ” (೩-೩-೧೨೧)। 2. ಸಮೀಪ, ಹತ್ತಿರ. (ವಿಂ) 3. (ಸಮಾಸದ ಕೊನೆ ಯಲ್ಲಿ) ಸದೃಶವಾದ, ಸಮಾನವಾದ. “ವಿದ್ಯುತ್ಪುಂಜ-ನಿಕಾಶಕೇಶನಯನಭೂಷಮಶ್ರುಜಾಲಃ” ಮಾಲತೀಂ ೫-೧೩।

**ನಿಕಾಷ ನಿಕಾಷ** (ಪುಂ) ಕಷಣ, ಉಜ್ಜುವುದು. ನಿ + ಕಟ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಘ” (೩-೩-೧೮)। “ತೇಜೋಭಿಃ ಕನಕ-ನಿಕಾಷರಾಜಿಗೌರೇರಾಯಾಮಃ ಕ್ರಿಯತ ಇವ ಸ್ಮ ಸಾತಿರೇಕಃ” ಕಿರಾಂ ೭-೬।

**ನಿಕುಚ್ಛ ನಿಕುಚ್ಛ** (ಪುಂ) 1. (ಹಳೆಯ ಅಳತೆಯ) ಒಂದು ಸೊಲಿಗೆ, ಒಂದು ಪಾವಿನ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. ಒಂದು ಸೇರಿಸ ಹದಿನಾರನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. ನಿ + ಕು (ಕೌಟಿಲ್ಯೇ) “ಘ” (೩-೧-೧೩೩)। “ಅಸ್ತ್ರಿಯಾಮಾಡಕ-ದ್ರೋಣಿ ಖಾರಿ ವಾಹೋ ನಿಕುಚ್ಛಕಃ। ಕುಡವಃ ಪ್ರಸ್ಯ ಇತ್ಯಾದ್ಯಾಃ ಪರಿಮಾಣಾರ್ಥಕಾಃ ಪೃತ್ಯಕ್” ಅಮಂ 2. ನೀರುಹಬ್ಬ.

**ನಿಕುಜ್ಜ ನಿಕುಜ್ಜ** (ಪುಂ) 1. ಲತಾಗೃಹ, ಮೇಲೆ ಬಳ್ಳಿಗಳು ಹಬ್ಬಿ ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ ಪ್ರದೇಶ. ನಿತರಾಂ ಕೌ ಪೃಥಿವ್ಯಾಂ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) “ಙ” (೩-೨-೯೭)। ಪೃಷಂ। “ತಿರೋಹಿತಶ್ಚಾನಿಕುಜ್ಜರೋಷಸಃ ಸಮಸ್ತನುವಾನಾಃ ಸಹಸಾತಿರಿಕ್ತತಾಮ್” ಕಿರಾಂ ೧೪-೩೩। 2. ಮಹಡಿ ಮನೆಯ ಮಧ್ಯಭಾಗ. “ವಧಾನ್ ಸೌಧಾನಾಮಲಬುಘು ನಿಕುಜ್ಜೇಷು ಧನತಾಮಸೌ ಸಂಖ್ಯಾಶಙ್ಕಧವನಿರನಿಭುತಃ ಸ್ತೇ



ವಿವರತಿ" ಮಾಲತಿಂ ೨-೧೨। 3. ಕುಂಹರ, ದೊಡ್ಡ ಬಿಲ್ಲ, ನೆಲದೊಳಗಿನ ಪೊಳ್ಳು. "ಪರ್ಯಂತಭೂವರನಿಕ್ರಮಜವಿಜೃಂಭಣೇನ ಹೇರ್ಮಕಂಠರಸಿತಪ್ರತಿಮಾನಮೇತಿ" ಮಾಲತಿಂ ೧-೩।

**ನಿಕ್ರಮ ನಿಕುಂಭ** (ಪುಂ) 1. ಜಾಪಾಳದ ಗಿಡ. ಕುಂ ಭೂಮಿ ವಿಭವತಿ — ಭುಜ್ (ಭರಣೆ) "ಖಚ್" (೩-೨-೪೬)। ನಿಯತ: ಕುಂಭ:। "ನಿಕ್ರಮೋ ದಂತಿಕಾ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಶ್ರುದ್ಧುಮ್ಬರಪರ್ಯಪಿ" ಅಮಂ। 2. ಪರಶಿವನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ. "ಅವೇಹಿ ಮಾಂ ಕಿಂಕರಮಷ್ಟಮೂತ: ಕುಂಭೋದರಂ ನಾಮ ನಿಕ್ರಮಮಿತ್ರಮ್" ರಘುಂ ೨-೩೫। 3. ಸುಂದ ಮತ್ತೂ ಉಪಸುಂದರ ತಂದೆ. ಪ್ರಹ್ಲಾದನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ನಿಕ್ರಮೋ ನಾಮ ದೈತ್ಯೇಂದ್ರಸ್ತೇಜಸ್ವಿ ಬಲವಾನಭೂತ್। ತಸ್ಯ ಪುತ್ರೌ ಮಹಾವೀರ್ಯೌ ಜಾತೌ ಭೀಮಪರಾಕ್ರಮೌ। ಸುಂದೋಪಮುಂದೌ ದೈತ್ಯೇಂದ್ರೌ ದಾರುಣೌ ಕ್ರೂರಮಾನಸೌ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೨೯। 4. ಕುಂಭಕರ್ಣನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಸ ಕುಂಭಶ್ಚ ನಿಕ್ರಮಶ್ಚ ಕುಂಭಕರ್ಣಾತ್ಮಜಾವುಭೌ" ರಾಮಾಂ। 5. ಹರ್ಯಾಶ್ವ ರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಹರ್ಯಾಶ್ವಸ್ಯ ನಿಕ್ರಮೋಭೂತ್ ಧಾತ್ರ-ಧರ್ಮರತ: ಸದಾ" ಹರಿವಂ।

**ನಿಕ್ರಮಿತ ನಿಕುಂಭಿತ** (ನಂ) ನೃತ್ಯದಲ್ಲಿ ಅಭಿನಯಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ನೂರೆಂಟು ವಿಧ ಅಂಗಾಂಗಗಳ ಚೇಷ್ಟೆಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. "ಕರಣಾಂಗಾಂ ತು ಸರ್ವೇಷಾಂ ಸಾಮಾನ್ಯಂ ಲಕ್ಷಣಂ ತ್ವಿದಮ್। ಪ್ರಾಯೋ ವಾಮಕರೋ ವಕ್ಷ:ಸ್ಥಿತೋನ್ಯ: ಪುರತೋನ್ಯುಗ:। ಪಾದಾಭ್ಯಾಂ ಕರಣಂ ಜೇಯಂ ತದಿಹಾಷ್ಟೋತ್ತರಂ ಶತಮ್। ನಿಕ್ರಮಿತಂ ಪಾರ್ಶ್ವಕ್ರಾಂತಂ ಅತಿಕ್ರಾಂತಂ ವಿವರ್ತಕಮ್। ವಿಧುದ್ಭ್ರಾಂತಂ ಗಜಕ್ರೋಡಂ ಕ್ರಾಂತಂ ಚ ಗರ್ಹಪ್ಲುತಮ್" ಸಂ ದಾಂ।

**ನಿಕ್ರಮಿಲಾ ನಿಕುಂಭಿಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಂಕಾಪಟ್ಟಣದ ಪಶ್ಚಿಮದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ತೋಪು. 2. ಆ ತೋಪಿ ನಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ದೇವತೆ, ಮಹಾಕಾಳಿ, ಭದ್ರಕಾಳಿ. "ಮಾನುಷಂ ಮಾಂಸಮಾಸ್ವಾಹ ನೃತ್ಯಾಮೋಷ್ಯ ನಿಕ್ರಮಿಲಾಮ್" ರಾಮಾಂ। ಇಂದ್ರಜಿತ್ತು ಶತ್ರುಗಳ ವಿಜಯಕ್ಕಾಗಿ ನಿಕುಂಭಿಲಾ ಯಾಗ ಮಾಡತೊಡಗಿದ ಸ್ಥಳವಾದುದರಿಂದ ಈ ಪ್ರದೇಶಕ್ಕೆ ದೇವತೆಯ ಹೆಸರು ಬಂದಿತು. ಈ ಯಾಗದ ಸುಳಿವು ತಿಳಿದ ವಿಭೀಷಣನು ವಾಸರ ಸೈನ್ಯಗಳಿಂದ ಯಾಗಕ್ಕೆ ವಿಘ್ನ ವಂಟುಮಾಡಿಸಿ ಯಾಗವನ್ನು ಕೆಡಿಸಿದನು.

**ನಿಕ್ರಮಬ ನಿಕುಂಭ** (ನಂ) ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. ನಿಕ್ರಮತಿ — ನಿ + ಕುರ (ಶಬ್ದ) "ಅಮ್ಬಚ್" ಬಾಹುಂ। "ಕಿಂಚ ಉದಾಮಶಶಿಮಯುಖನಿಕ್ರಮಚುಮ್ಬಿತಪ್ರವೃತ್ತಿನಿಷ್ಯಂದಚಂದ್ರಮಣಿಹಾರ-ಧಾರಿಣಿ" ಮಾಲತಿಂ ೩।

**ನಿಕ್ರಮಿನಿಕಾ ನಿಕುಂಭಿನಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಿಪತನ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳುವುದು.

**ನಿಕ್ರಮ ನಿಕೂಲ** (ಪುಂ) ನರಮೇಧದಲ್ಲಿ ಪಶುವಿಶಸನಕ್ಕಾಗಿ ಏರ್ಪಟ್ಟಿರುವ ಒಂದು ಪ್ರದೇಶ.

**ನಿಕ್ರತ ನಿಕ್ರತ** (ವಿಂ) 1. ಪರಾಭವಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಪಮಾನ ಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಅಪಕಾರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ವಂಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೋಸಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಮೂರ್ಖ. 5. ನೀಚ, ಅಧಮ. ನಿಕ್ರಂತತಿ — ನಿ + ಕೃತಿ (ಛೇದನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೧-೧೩೫)। "ನಿಕ್ರತಂ ವಿಪ್ರಲಮ್ಬೇ ಸ್ಯಾತ್ ನೇಚೇ ವಿಪ್ರಕೃತೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ।

**ನಿಕ್ರತಿ ನಿಕ್ರತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭರ್ತ್ಸನ. ಹೆದರಿಸುವಿಕೆ. ನಿ + ಕೃತ್ (ಕರಣ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। 2. ತಿರಸ್ಕಾರ. ಅಪಮಾನ, ಪರಾಭವ. "ದೇವಸ್ಯ ಯೇನ ಪೃಥಿವೀತಲವಾಸವಸ್ಯ ಸಾಽಽಗ್ರಾಸನಾಪನಯಜಾ ನಿಕ್ರತಿರ್ನ ಸೋಢಾ" ಮುರಾಂ ೪-೧೧। 3. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. 4. ಮೂರ್ಖತನ, ಶೂನ್ಯ. 5. ಅಪಕಾರ, ತೊಂದರೆ ಕೊಡುವುದು. "ನ ಸಮಯ-ಪರೀಕ್ಷಣಂ ಕ್ಷಮಂ ತೇ ನಿಕ್ರತಿಪರೇಷು ಪರೇಷು ಭೂರಿದಾಮ್ನ:" ಕಿರಾಂ ೧-೪೫। 6. ದೈನ್ಯ, ಕಷ್ಟದ ಪರಿಸ್ಥಿತಿ, ದಯೆ ತೋರಿಸಬಹುದಾದ ಅವಸ್ಥೆ. "ನಿಕ್ರತಿಯಾಂ ಕಾಮಯೇ ನಾಹಂ ಸುಖಾನ್ಯುತ ಧನಾನಿ ವಾ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ। 7. ಮೋಸಮಾಡುವುದು, ವಂಚಿಸುವುದು. 8. ಅಷ್ಟವಸುಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. 9. ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ಬಡತನ.

**ನಿಕ್ರತ ನಿಕ್ರತ** (ವಿಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೀಳಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಕೃತಿ (ಛೇದನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ನಿಕ್ರತ-ಮತ್ತದ್ವಿಪಕ್ರಮಮಾಂಸೇ: ಸಂಪೃಕ್ತಮುಕ್ತೇರ್ಹರಯೋಽಪಾದೇ:" ಭಟ್ಟಿಂ ೧೧-೪೨। 2. ಬಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ತುಂಡುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ನಿಕ್ರಂತ ನಿಕ್ರಂತ** (ವಿಂ) ಕತ್ತರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸೀಳುತ್ತಿರುವ, ಭೇದಿಸುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಕೃತಿ (ಛೇದನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ನಿಕ್ರಂತನಮರ್ಮಾಣಿ ಕೃಕಚ ಇವ ಮನ್ಯು-ವಿರಮತಿ" ತಂ ರಾಂ ೪-೩।

**ನಿಕ್ರಂತನ ನಿಕ್ರಂತನ** (ನಂ) ಭೇದಿಸುವುದು, ಕತ್ತರಿಸುವುದು, ಕಡಿಯುವುದು. ನಿ + ಕೃತಿ (ಛೇದನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ವಿಜಾನತಾ ಭಾವಿ ಶಿರೋನಿಕ್ರಂತನಂ ಪ್ರಜೇನ ಶೋಕಾದಿವ್ರ ತಸ್ಯ ಮೌಲಿನಾ" ಕುಮಾಂ ೧೫-೨೮।

**ನಿಕ್ರಣ ನಿಕ್ರಣ** (ವಿಂ) 1. ಅಧಮ, ನೀಚ. ನಿಕ್ರಣ್ಯತೇ ಸ್ಮ — ನಿ + ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಹತ್ತಿರದ, ಸಮೀಪದ. (ನಂ) 3. ಸಮೀಪ, ಹತ್ತಿರ.

**ನಿಕೇಚಾಯ ನಿಕೇಚಾಯ** (ಪುಂ) ಪುನಃಪುನಃ ರಾಶಿ ಹಾಕುವುದು, ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಸೇರಿಸಿ ಗುಪ್ತೆ ಹಾಕುವುದು. ನಿ + ಚಿತ್ (ಚಯನೆ) + ಯಡ್; ಯಡೋ ಲುಕ್ "ಛ" (೩-೩-೧೮)।



**ನಿಕೇತ ನಿಶೇಠ** (ಪುಂ) ಗೃಹ, ವಾಸದ ಮನೆ. ನಿಕೇತಯತ್ರ—  
ನಿ+ಕಿತ (ನಿವಾಸೇ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ತತ್ತಸ್ಮಿನ್  
ವಿನಿಮಜ್ಜ್ಯಾ ಬಾಹುಜಭಟೇರಾರಮ್ಭಿರಮ್ಭಾಪರೀರಮ್ಭಾನಂದನಿಕೇತ-  
ನಂದನವನಕೊಡಾದರಾಡಮ್ಬರ:" ನೆಪಂ ೧೨-೧೨। "ಕ್ಷಿತಿನಿಭ:ಸುರ-  
ಲೋಕನಿವಾಸಿಭಿ: ಕೃತನಿಕೇತಮದೃಷ್ಟಪರಸ್ಪರೇ:" ಕಿರಾಂ ೪-೩।  
"ಅಧಿರೂಢಯಾ ನಿಜನಿಕೇತಮುಚ್ಚಕೇ:" ಮಾಘಂ ೧೩-೩೬।

**ನಿಕೇತನ ನಿಶೇಠನ** (ಪುಂ) 1. ಈರುಳ್ಳಿ. (ನಂ) 2. ಗೃಹ.  
ಮನೆ. ವಾಸಸ್ಥಳ. ನಿ+ಕಿತ (ನಿವಾಸೇ) ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೭)। "ಸಾ ರಾಮಣೀಯಕನಿಧೇರಧಿವೇತಾ ವಾ ಸೌಂದರ್ಯ-  
ಸಾರಸಮುದಾಯನಿಕೇತನಂ ವಾ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೪।

**ನಿಕೋಚಕ ನಿಶೇಠಚಕ** (ಪುಂ) 1. ಅಂಕೋಲೆಗಿಡ. ನಿಕುಚ್ಯತೇ  
—ನಿ+ಕುಚ (ಶಬ್ದೇತಾರೆ) "ಕುನ್" (೩ಂ ೪-೩೪)।  
"ಅಕ್ಷೋತೇ ತು ನಿಕೋಚಕ:" ಅಮಂ 1. (ನಂ) 2. ಅಂಕೋಲೆ  
ಹಣ್ಣು.

**ನಿಕೋಚನ ನಿಶೇಠಚನ** (ನಂ) ಸಂಕೋಚಮಾಡಿಕೊಳ್ಳು  
ವುದು, ಚಿಕ್ಕದಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ನಿ+ಕುಚ  
(ಸಂಕೋಚನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ಏತದ್ಗುಣ-  
ಶ್ರವಣಕಾಲವಿಜೃಂಭಮಾಣತಲೋಚನಾಞ್ಚಲನಿಕೋಚನಸೂಚಿತಸ್ಯ"  
ನೆಪಂ ೧೧-೭೧। "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮)। **ನಿಕೋಚ:**  
ನಿಶೇಠಚ.

**ನಿಕೋಠಕ ನಿಶೇಠಕ** (ಪುಂ) 1. ಅಂಕೋಲೆಗಿಡ. (ನಂ)  
2. ಅಂಕೋಲೆ ಹಣ್ಣು.

**ನಿಕ್ತ ನಿಕ್ತ** (ನಂ) 1. ಶುದ್ಧ ಮಾಡುವುದು, ತೊಳೆಯು  
ವುದು. ನಿಜಿರ್ (ಶೌಚಪೋಷಣಯೋ:) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:"  
(೩-೩-೧೧೪)। 2. ಪೋಷಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 3.  
ಶುದ್ಧಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ತೊಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟು. ನಿಜಿರ್ ಕರ್ಮಂ  
"ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೦೨)। 4. ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

**ನಿಕ್ತವತ್ ನಿಕ್ತವತ್** (ವಿಂ) 1. ಶುದ್ಧಮಾಡಿದವನು,  
ತೊಳೆದವನು. 2. ಪೋಷಿಸಿದವನು. ನಿಜಿರ್ (ಶೌಚ-  
ಪೋಷಣಯೋ:) "ಕ್ತವತ್:" (೩-೩-೧೦೨)।

**ನಿವವಣ ನಿಕ್ಷಣ** (ಪುಂ) 1. ಶಬ್ದ, ವೀಣೆ ಮೊದಲಾದುವು  
ಗಳ ನಾದ, —ಧ್ವನಿ. ನಿ+ವವಣ (ಶಬ್ದೇ) ವಾ "ಅಪ್"  
(೩-೩-೬೪)। 2. ಭೂಷಣಗಳ ಶಬ್ದ, ಒಡವೆಗಳ ಶಬ್ದ.  
"ವವಣೋ ವೀಣಾಃ ಚ" ಸೂತ್ರದಿಂದ ವೀಣೆಯ ಶಬ್ದದ  
ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ವಿಶಲ್ಪವಾಗಿ "ಅಪ್" ಬರುವುದು. ಏಕೆ  
"ಘಜ್" (೩-೩-೧೮)। —**ವವಣ:** —**ವವಣ:** "ವಾಣಿಗುಣೋ-  
ದಯತೃಣೀಕೃತಪಾಣಿವೀಣಾನಿವವಣಯಾ ಪುನರಭಾಣಿ ಮೃಗೇಕ್ಷಣಾ  
ಸಾ" ನೆಪಂ ೧೧-೮೨। ಅಗ್ನಿಪುರಾಣದ ಶಬ್ದಾನುಶಾಸನ

ದಲ್ಲಿ "ಭೂಷಣಾಂ ತು ಶಿಷ್ಟಿತಮ್। ವೀಣಾಃ ನಿವವಣ:  
ವವಣ:" ಎಂದಿರುವುದರಿಂದ ವೀಣಾನಾದದ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ  
ನಿವವಣ: ನಿವವಣ: ಎಂದೂ ಹೇಳಬಹುದು.

**ನಿಕ್ಷಿಪತ್ ನಿಕ್ಷಿಪತ್** (ವಿಂ) 1. ಅರ್ಪಿಸುತ್ತಿರುವ, ಒಪ್ಪಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. ನಿ+ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಶತ್" (೩-೩-೧೨೪)।  
"ಮಯಾಪಿ ಚೈನಾಂ ದೇವೀಹಸ್ತೇ ಸಗೌರವಂ ನಿಕ್ಷಿಪತಾ ಯುಕ್ತಮೇವಾ-  
ನುಷ್ಠಿತಮ್" ರತ್ನಾಂ ೧। 2. ಇಡುತ್ತಿರುವ, ಇರಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. 3. ಎಸೆಯುತ್ತಿರುವ, ಬಿಸಾಡುತ್ತಿರುವ.  
ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। —**ಕ್ಷಿಪತೀ** —**ಕ್ಷಿಪತೀ**.  
—**ಕ್ಷಿಪಂತೀ** —**ಕ್ಷಿಪಂತೀ**. "ಭರ್ತೃಷುಪಸಖಿ ನಿಕ್ಷಿಪತೀನಾಮಾತ್ಮನೋ  
ಮಧುಮದೋಮಿತಾನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೬೬।

**ನಿಕ್ಷಿಪಮಾಣ ನಿಕ್ಷಿಪಮಾಣ** (ವಿಂ) "ನಿಕ್ಷಿಪತ್" ಪದದ  
ಅರ್ಥ. ನಿ+ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಶಾನತ್" (೩-೩-೧೨೪)।

**ನಿಕ್ಷಿಪ್ತ ನಿಕ್ಷಿಪ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಅರ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಒಪ್ಪಿಸಿಗೆ  
ಒಪ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ನಿ+ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೦೨)।  
"ತತಸ್ತಯೋದ್ವೇಗವಿನೋದನಂ ಮಾಧವಪ್ರತಿಚ್ಛಂದಕಮಭಿಲಿಖಿತಂ  
ಲವ್ಜಿಕಯಾ ಮಂದಾರಿಕಾಹಸ್ತೇಽಥ ನಿಕ್ಷಿಪ್ತಂ ತಾವತ್" ಮಾಲತೀಂ  
೧। 2. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ನಿಕ್ಷಿಪ್ತಕರ್ತವ್ಯಭರಾ  
ಬಭೂವು: ಸತ್ವಾಧಿಕಾ ಸಾತ್ವತಯುಧನಾಥೇ" ಯಾದಂ ೨೩-೧೦।  
3. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟು, ಬಿಸಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು,  
ತಳ್ಳಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು, ಕೈಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಪರಿತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.  
5. ಒತ್ತೆ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟು. 6. ಭದ್ರವಾಗಿಟ್ಟಿರಲು ಒಬ್ಬನಲ್ಲಿ  
ಇಡಲ್ಪಟ್ಟು. 7. ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು (ಬಾಣ).

**ನಿಕ್ಷಿಪ್ಯಮಾಣ ನಿಕ್ಷಿಪ್ಯಮಾಣ** (ವಿಂ) 1. ಅರ್ಪಿಸಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ, ಒಪ್ಪಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ+ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ)  
ಕರ್ಮಂ "ಶಾನತ್" (೩-೩-೧೨೪)। 2. ಎಸೆಯಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ. 3. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 4. ಒತ್ತೆ  
ಇಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 5. ಭದ್ರತೆಗಾಗಿ ಇಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.  
6. ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ (ಬಾಣ). 7. ಇಡಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ.

**ನಿಕ್ಷುಭಾ ನಿಕ್ಷುಭಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ.  
2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಹೆಂಗಸು.

**ನಿಕ್ಷೇಪ ನಿಕ್ಷೇಪ** (ಪುಂ) 1. ಅರ್ಪಿಸುವುದು, ಒಬ್ಬನಲ್ಲಿ  
ಒಪ್ಪಿಸುವುದು. ನಿ+ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮)।  
2. ನಂಬಿಕೆಯಿಂದ ಒಬ್ಬನಲ್ಲಿ ವಸ್ತುವನ್ನು ಅಥವಾ ಹಣ  
ವನ್ನು ಕೊಟ್ಟಿಟ್ಟಿರುವುದು. ಇದು ಹದಿನೆಂಟು ವಿಧ  
ಯುಣಾದಾನಾದಿ ವ್ಯವಹಾರಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. "ತೇನಾಮಾ-  
ಮೃಣಾದಾನಂ ನಿಕ್ಷೇಪೋಽಸ್ವಾಮಿವಿಕ್ರಯ:" ಸಂಖ್ಯ ಚ ಸಮುತ್ಥಾನಂ



ದತ್ತಸ್ಯಾನಪಕರ್ಮ ಚ" ಮನು ೮-೪। "ಸ್ವದ್ರವ್ಯಂ ಯತ್ರ ವಿಸ್ತರ್ಮಾಧಿ-  
ಕ್ಷಿಪತ್ಯವಿಶಿಷ್ಟತಃ। ನಿಕ್ಷೇಪೋ ನಾಮ ತತ್ಪ್ರೋಕ್ತಂ ವ್ಯವಹಾರಪದಂ  
ಬುವಃ"। "ಪುನರ್ಗ್ರಹೀತುಂ ನಿಯಮಸ್ಥಯಾ ತಯಾ ದ್ವಯೇಽಪಿ ನಿಕ್ಷೇಪ  
ಛವಾಪಿತಂ ದ್ವಯಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೧೩। 3. ಒತ್ತೆಯಿಡುವುದು,  
ಗಿರವಿಡುವುದು. ಇದು ಏಳು ವಿಧ ದ್ರವ್ಯ ಸಂಪಾ  
ದನೆಯ ಮಾರ್ಗಗಳಲ್ಲೊಂದು. (1) ಗಾಂಧಿಕವ್ಯವಹಾರಃ,  
(2) ನಿಕ್ಷೇಪಪ್ರವೇಶಃ, (3) ಗೌಠಿಕಕರ್ಮ, (4) ಪರಿಚಿತಗ್ರಾಹಕಾ-  
ಗಮಃ, (5) ಮಿಥ್ಯಾಕ್ರಯಕಥನಮ್, (6) ಕೂತುಲಾಮಾನಮ್ ಮತ್ಯು  
(7) ದೇಶಾಂತರಾಡ್ವಾಂಶಾನಯನಮ್ ಇವು ಸಪ್ತ ವಿಧ ಧನ ಸಂಪಾ  
ದನೆಯ ಮಾರ್ಗಗಳು. "ನಿಕ್ಷೇಪೇ ಪತितೇ ಹರ್ಮ್ಯೇ ಶ್ರೇಣಿ ಸ್ತೌತಿ  
ಸ್ವದೇವತಾಮ್" ಪञ्ಚತಂ ೧-೧೪। 4. ಎಸೆಯುವುದು,  
ಬಿಸಾಡುವುದು. 5. ಇಡುವುದು, ಇರಿಸುವುದು. "ಅನ್ವೇ-  
ಷ್ಠವ್ಯಃ ಕನಕಸಿಕತಾಮುಷ್ಟಿನಿಕ್ಷೇಪಗೃಹೈಃ ಸಂಕ್ರೋಡಂತೇ ಮಣಿಭಿರಮರ-  
ಪ್ರಾರ್ಥಿತಾ ಯತ್ರ ಕನ್ಯಾಃ" ಮೇಘಂ ೨-೪। 6. ವರ್ಜಿಸುವುದು,  
ತೊರೆದುಬಿಡುವುದು.

**ನಿಕ್ಷೇಪಣ ನಿಕ್ಷೇಪಣ** (ನಂ) 1. ಇಡುವುದು, ಇರಿಸುವುದು.  
ನಿ + ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।  
"ಅಮೃತತಾಙ್ಗುಲನಕ್ಷಪ್ರಭಾಭಿನಿಕ್ಷೇಪಣಾದ್ರಾಗಮಿವೋದ್ಗರಂತೀ"  
ಕುಮಾಂ ೧-೩೩। 2. ಎಸೆಯುವುದು, ಬಿಸಾಡುವುದು.

**ನಿಕ್ಷೇಪ್ತ ನಿಕ್ಷೇಪ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಇಡುವವನು, ಇರಿಸು  
ವವನು. ನಿ + ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ತೃತ್" (೩-೧-೧೩೩)।  
2. ನಂಬಿಕೆಯಿಂದ ಒಬ್ಬನಲ್ಲಿ ವಸ್ತುವನ್ನು ಅಥವಾ ಧನ  
ವನ್ನು ಕೊಟ್ಟಿಟ್ಟಿರುವವನು. "ಯೋ ನಿಕ್ಷೇಪಂ ಯಾಚ್ಯಮಾನೋ  
ನಿಕ್ಷೇಪ್ತುನಂ ಪ್ರಯಚ್ಛತಿ। ಸ ಯಾಚ್ಯಃ ಪ್ರಾಡ್ವಿವಾಕೇನ ತನ್ನಿಕ್ಷೇಪ್ತು-  
ರಸನ್ನಿಧಿ" ಮನುಂ ೮-೧೮೧। 3. ಒತ್ತೆ ಇಡುವವನು,  
ಗಿರವಿ ಇಡುವವನು. 4. ಎಸೆಯುವವನು, ಬಿಸಾಡು  
ವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪)। -ಕ್ಷೇಪ್ತ-ನಿಕ್ಷೇಪ್ತಃ.

**ನಿ + ಖನು - ಅವದಾರಣೆ** (ಮಾಂ ಉಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)।  
1. ಭೂಮಿಯನ್ನು ಅಗೆದು ನೆಡು, ನೆಲವನ್ನು ತೋಡಿ  
ಇಡು. "ಖನು" ನೋಡಿ. ಪುಟ 886. "ನಿಖನಾನ  
ಜಯಸ್ತಮ್ಭಾನ್ ಗಜ್ಜಾಸೋತೋತ್ತರೇಃ ಸಃ" ರಘುಂ ೪-೩೬।  
2. ಒಳಕ್ಕೆ ಸೇರಿಸು. "ನಿಖನಾನಾಧಿಕಕ್ರೋಧಃ ಶರಂ ಸವ್ಯತರೇ  
ಭುಜೇ" ರಘುಂ ೧೨-೯೦।

**ನಿಖನತ್ ನಿಖನತ್** (ವಿಂ) 1. ನೆಲವನ್ನು ತೋಡಿ ನೆಡುತ್ತಿ  
ರುವವನು. 2. ಒಳಕ್ಕೆ ಸೇರಿಸುತ್ತಿರುವವನು. ನಿ + ಖನು (ಅವದಾರಣೆ)  
"ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)।  
-ಖನಂತಿ - ಖನಂತೀ. "ಶಾನತ್" (೩-೨-೧೨೪)। -ಖನ-  
ಮಾನಃ - ಖನಮಾನಃ.

**ನಿಖನನ ನಿಖನನ** (ನಂ) ಭೂಮಿಯನ್ನು ಅಗೆದು ನೆಡು  
ವುದು, ನೆಲವನ್ನು ತೋಡಿ ಇಡುವುದು. ನಿ + ಖನು  
(ಅವದಾರಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ಆಕ್ಷೇಪ-  
ಪೂರ್ವಿಕಾ ಹಿ ಪರಿಹಾರೋಕ್ತಿವಿವಕ್ಷಿತೇಽರ್ಥೈಃ ಸ್ಥೂಣಾನಿಖನನನ್ಯಾಯೇನ  
ದೃಢಾಂ ಬುದ್ಧಿಮುತ್ಪಾದಯತಿ" ಶಾಂ ಭಾಂ।

**ನಿಖನನೀಯ ನಿಖನನೀಯ** (ವಿಂ) ನೆಡಬೇಕಾದ, ನೆಲವನ್ನು  
ತೋಡಿ ಇಡಬೇಕಾದ. ನಿ + ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಅನೀಯರ್"  
(೩-೧-೯೬)। "ತವ್ಯಃ"। **ನಿಖನಿತವ್ಯಃ ನಿಖನಿತವ್ಯಃ**।  
**ನಿಖರ್ವ ನಿಖರ್ವ** (ನಂ) 1. ಹತ್ತು ಸಹಸ್ರ ಕೋಟಿ.  
(ವಿಂ) 2. ವಾಮನ, ಕುಳ್ಳು, ಗಿಡ್ಡ.

**ನಿಖಾತ ನಿಖಾತ** (ವಿಂ) 1. ನೆಡಲ್ಪಟ್ಟು, ನೆಲವನ್ನು ತೋಡಿ  
ಇಡಲ್ಪಟ್ಟು. ನಿ + ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ"  
(೩-೨-೧೦೨)। "ಜಲಾನಿ ಯಾ ತೀರನಿಖಾತಯುಪಾ ಬಹುಯೋಧ್ಯಾ-  
ಮನುರಾಜಧಾನೀಮ್" ರಘುಂ ೧೩-೬೧। 2. ನಾಟಲ್ಪಟ್ಟು,  
ಒಳಕ್ಕೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ತೌ ದಮ್ಪತೀ ಬಹು ವಿಲಪ್ಯ ಶಿಶೋಃ  
ಪ್ರಹರ್ತೃ ಶಲ್ಯಂ ನಿಖಾತಮುದಹಾರಯತಾಮುರಸ್ತಃ" ರಘುಂ ೯-೭೮।  
"ಗಾಢಂ ನಿಖಾತ ಇವ ಮೇ ಹೃದಯೇ ಕಟಾಕ್ಷಃ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೩೨।

**ನಿಖಾತವತ್ ನಿಖಾತವತ್** (ವಿಂ) 1. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ  
ನೆಟ್ಟವನು, ನೆಲವನ್ನು ತೋಡಿ ಇಟ್ಟವನು. ನಿ + ಖನು  
(ಅವದಾರಣೆ) "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

**ನಿಖಿಲ ನಿಖಿಲ** (ವಿಂ) ಸಮಸ್ತವಾದ, ಸಕಲ,  
ಪೂರ್ತಿ. ನಿವೃತ್ತಂ ಖಿಲಮಸ್ಯ। "ಪ್ರವಸತೇ ಭರತಾರ್ಜುನವನ್ಯವತ್  
ಸ್ಮೃತಿಧೃತೋಽಪಿ ನಲ ತ್ವಮಭೀಷ್ಟದಃ। ಸ್ವಗಮನಾಫಲತಾಂ ಯದಿ  
ಶಙ್ಕಸೇ ತದಫಲಂ ನಿಖಿಲಂ ಖಲು ಮಜ್ಜಲಮ್" ನೈಷಂ ೪-೧೩೪।

**ನಿಗಡ ನಿಗಡ** (ಪುಂ) 1. ಸರಪಳಿ. "ನಿಗಡಮಿವ ಚಕ್ಷು-  
ರಕ್ಷಿಪತ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೮೬। 2. ಸಂಕೋಲೆ, ಬೇಡಿ.  
ನಿಗಂತೋ ಗಡೋಽಸ್ಮಾತ್। 3. ಅನೆಯ ಕಾಲಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ  
ಕಬ್ಬಿಣದ ಸರಪಳಿ. "ಬದ್ಧಾಪರಾಣಿ ಪರಿತೋ ನಿಗಡಾನ್ಯಲಾವೀತ್  
ಸ್ವಾತನ್ಯಮುಜ್ಜ್ವಲಮವಾಪ ಕರೇಣುರಾಜಃ" ಮಾಘಂ ೪-೪೮।  
ಒಸ್ಯ ಲಃ। **ನಿಗಲಃ ನಿಗಲಃ** ಎಂದೂ ಆಗುವುದು.

**ನಿಗಡನ ನಿಗಡನ** (ನಂ) 1. ಸರಪಳಿಯಿಂದ ಕಟ್ಟುವುದು.  
2. ಬೇಡಿ ಹಾಕುವುದು. ನಿ + ಗಡ (ಸೇವನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೪)।

**ನಿಗಡಿತ ನಿಗಡಿತ** (ವಿಂ) 1. ಸರಪಳಿಯಿಂದ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟು.  
2. ಬೇಡಿ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು. ನಿಗಡೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ "ಇತತ್"  
(೪-೨-೩೬)।

**ನಿಗಣ ನಿಗಣ** (ಪುಂ) ಹೋಮದ ಧೂಮ, ಹೋಮಾಗ್ನಿಯ  
ಹೊಗೆ. "ಹೋಮಧೂಮಸ್ತು ನಿಗಣಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।



ನಿ + ಗದ - ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ (ಮಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) |  
ನಿಗದತಿ | ನಿಜಗಾದ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಮಾತಾಡು,  
ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೇಳು.

ನಿಗದ ನಿಗದ (ಛಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೇಳುವುದು, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ  
ಮಾತಾಡುವುದು. ನಿ + ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ವಾ  
“ಅಪ್” (3-3-64) | 2. ಹೇಳುವುದು, ಉಚ್ಚರಿಸು  
ವುದು. “ನಿಗಮಾಂತೇ ನಿಗದವ್ಯಾಖ್ಯಾತನಿಜವೇಭವಃ” ಯಾದಂ  
16-49 | 3. ಮಂತ್ರ. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಉಚ್ಚಸ್ವರದಿಂದ  
ಹೇಳುವ ಮಂತ್ರ. 4. ಜಪ. 5. ಅರ್ಥಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದೆ  
ಕೇವಲ ಬಾಯಿಪಾಠ ಮಾಡುವುದು. “ಯದಧೀತಮವಿಜ್ಞಾತಂ  
ನಿಗದೇನೈವ ಶಬ್ದತೇ” ನಿಋಂ |

ನಿಗದತ್ ನಿಗದತ್ (ವಿಂ) ಹೇಳುತ್ತಿರುವ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ  
ಮಾತಾಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ+ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಶತ್”  
(3-2-124) | “ದಂಪತ್ಯೋನಿಶಿ ಜಲ್ಪತೋಗೃಹಶುಕೇನಾಕಣಿತಂ  
ಯದ್ವಚಸ್ತತ್ಪ್ರಾತರ್ಗುಸನ್ನಿಧೌ ನಿಗದತಃ ಶ್ರುತ್ವೇವ ತಾರಂ ವಧುಃ”  
ಅಮಠಂ 16 |

ನಿಗದನ ನಿಗದನ (ನಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೇಳುವುದು, ಸ್ಪಷ್ಟ  
ವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವುದು. 2. ಹೇಳುವುದು, ಉಚ್ಚರಿಸು  
ವುದು. ನಿ+ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114) |

ನಿಗದಿತ ನಿಗದಿತ (ನಂ) 1. ಮಾತು, ಭಾಷಣ. ನಿ + ಗದ  
(ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (3-3-114) |  
(ವಿಂ) 2. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಗದ ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಃ”  
(3-2-102) |

ನಿಗದಿತವತ್ ನಿಗದಿತವತ್ (ವಿಂ) ಹೇಳಿದವನು. ಮಾತ  
ನಾಡಿದವನು. ನಿ + ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಕ್ತವತುಃ”  
(3-2-102) | “ಇತಿ ನಿಗದಿತವಂತಂ ರಾಘವಸ್ತಂ ಜಗಾದ  
ಬ್ರಜ ಭರತ ಗೃಹೀತ್ವಾ ಪಾದುಕೇ ತ್ವಂ ಮದೀಯೇ” ಭट्टಿಂ 3-46 |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೋಪ್” (4-1-6) | -ವತೀ -ವತೀ.

ನಿಗಂತವ್ಯ ನಿಗಂತವ್ಯ (ವಿಂ) ಅಧ್ಯಯನಮಾಡಬೇಕಾದ,  
ಕಲಿಯಬೇಕಾದ, ತಿಳಿಯಬೇಕಾದ. ನಿ + ಗಮ್ (ಗತೌ)  
“ತವ್ಯಃ” (3-1-96) | “ಆಽವಿವಿಕ್ತಿಸ್ತಾಯಾ ಬ್ರಹ್ಮ  
ನಿಗಂತವ್ಯಮಿತಿ ಹಾರೀತಃ” ಆಪಂ ಥಂ 1-4-13-11 |

ನಿಗಮ ನಿಗಮ (ಛಂ) 1. ವೇದ, ಅಮೃತ. ನಿಗಚ್ಛಂತ್ಯ-  
ನೆನ — ನಿ + ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಘಃ” (3-3-119) |  
ನಿಘಂ | “ನಿಗಮಕಲ್ಪತರೋಗಲಿತಂ ಫಲಂ ಶುಕಮುಖಾದಮೃತ-  
ದ್ರವಸಂಯುತಮ್” ಭಾಗಂ 1-1-3 | 2. ನಗರ, ಪಟ್ಟಣ.  
ನಿಗಚ್ಛಂತ್ಯತ್ರ — ನಿ + ಗಮ್ “ಘಃ” (3-3-119) |  
“ಪರಿಮಿತಫಲಸಂಗಾತ್ರಾಣಿ: ಕಿಂಪಚಾನಾ ನಿಗಮವಿಪಣಿಮಧ್ಯೇ

ನಿತ್ಯಮುಕ್ತಾನುಷಕ್ತಮ್” ದಯಾಶಂ | 3. ಉಪದೇಶ. “ಇತಿ  
ಸ್ವನಿಗಮಂ ಬ್ರಹ್ಮವೇತ್ಯ ಮದನುಷಿತಮ್ | ಅದಾನ್ಮೇ ಜ್ಞಾನಮೇಶ್ವರಂ  
ಸ್ವಸ್ಮಿನ್ ಭಾವೌಚ ಕೇಶವಃ” ಭಾಗಂ 1-4-39 | 4. ವರ್ತಕ,  
ವ್ಯಾಪಾರಿ. ನಿಗಮೇ ಭವಃ “ಅನ್” (4-3-43) | ಸಂಜ್ಞಾಪೂರ್ವ-  
ಕತ್ವಾತ್ ನ ವೃದ್ಧಿಃ | 5. ಅಂಗಡಿಬೀದಿ, ಮಾರುಕಟ್ಟೆ ಬೀದಿ.  
“ನಿಗಮೇಷ್ವರ್ಯನಂ ವರ್ಜಯೇತ್” ಆಪಂ ಥಂ 1-2-9-4 |  
6. ನಿಶ್ಚಯ, ನಿರ್ಧಾರ. “ತಸ್ಯಾ ಏವ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾಪ್ರಾಪ್ತೇ ಹೇತುಭಿಃ  
ದೃಷ್ಟಾಂತೋಪನಯನಿಗಮಃ ಸ್ಥಾಪನಾ” ಚರಕಂ | 7. ಮಾರ್ಗ,  
ದಾರಿ, ರಸ್ತೆ. “ನಿಗಮಾಃ ಪೂರ್ವಣಿಗಮೇದನಿಶ್ಚಯಾಧವಣಿವಪಥಾಃ”  
ಹೇಮಂ | 8. ನ್ಯಾಯಶಾಸ್ತ್ರ. 9. ವೇದಾರ್ಥಗಳನ್ನು  
ತಿಳಿಸುವ ಗ್ರಂಥ. “ಬುದ್ಧಿವೃದ್ಧಿಕರಾಣ್ಯಾಶು ಧನ್ಯಾನಿ ಚ  
ಹಿತಾನಿ ಚ | ನಿತ್ಯಂ ಶಾಸ್ತ್ರಾಪ್ಯವೇಕ್ಷತ ನಿಗಮಾಂಶ್ಚೈವ  
ವೈದಿಕಾನ್” ಮನುಂ 4-19 | 10. ವೇದವಾಕ್ಯ. 11. ವೇದ  
ದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ ಅಜ್ಞಾರೂಪವಾದ ಬೋಧನೆ, ವಿಧಿ.  
12. ಕ್ರಿಯಾವಿಕ್ರಯ ರೂಪವಾದ ವ್ಯಾಪಾರ, ವಾಣಿಜ್ಯ.  
13. ವರ್ತಕರ ತಂಡ, ವ್ಯಾಪಾರಿಗಳ ಗುಂಪು. 14.  
ಶಾಸ್ತ್ರಾಧ್ಯಯನದಿಂದ ಉಂಟಾದ ಜ್ಞಾನ.

ನಿಗಮನ ನಿಗಮನ (ನಂ) (ನ್ಯಾಯಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ವ್ಯಾಪ್ತಿ  
ವಿಶಿಷ್ಟ ಪಕ್ಷಧರ್ಮರೂಪವಾದ ಹೇತುನಿರೂಪಣ ಪೂರ್ವಕ  
ಸಾಧ್ಯವಿಶಿಷ್ಟ ಪಕ್ಷರೂಪವಾದ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾತವಾದ ಅರ್ಥ  
ವನ್ನು ಹೇಳುವುದು. ನಿಗಮ್ಯತೇ ಅನೇನ — ನಿ + ಗಮ್ (ಗತೌ)  
ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-119) | ಇದು ನ್ಯಾಯದ  
ಐದು ಅವಯವಗಳಲ್ಲೊಂದು. (1) ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ, (2) ಹೇತು,  
(3) ಉದಾಹರಣಮ್, (4) ಉಪನಯಃ ಮತ್ತು (5) ನಿಗಮನಮ್  
ಇವು ನ್ಯಾಯದ ಐದು ಅವಯವಗಳು. ಶಬ್ದೋನಿತ್ಯಃ  
(ಶಬ್ದವು ಅನಿತ್ಯವಾದುದು) ಎಂಬುದು ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. ಉತ್ಪತ್ತಿ-  
ಧರ್ಮಕತ್ವಾತ್ ಎಂಬುದು ಹೇತು. ಸ್ಥಾಲ್ಯಾದಿಧರ್ಮಯುತ್ಪತ್ತಿಧರ್ಮಕಂ  
ಅನಿತ್ಯಂ ದೃಢಮ್ ಎಂಬುದು ಉದಾಹರಣೆ. ಉತ್ಪತ್ತಿಧರ್ಮಕಃ  
ಶಬ್ದಃ ಎಂದು ಉಪನಯ, ಉತ್ಪತ್ತಿ ಧರ್ಮಕವಾದುದ  
ರಿಂದ ಶಬ್ದವು ಅನಿತ್ಯ. ಉತ್ಪತ್ತಿಧರ್ಮಕತ್ವಾದಿನಿತ್ಯಃ ಶಬ್ದಃ  
ಎಂದು ನಿಗಮನ. ಈ ರೀತಿ ವ್ಯಾಪ್ತಿವಿಶಿಷ್ಟವಾದ  
ಪಕ್ಷಧರ್ಮರೂಪಹೇತುಕಧನಪೂರ್ವಕ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾರೂಪ  
ವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಸಮರ್ಥಿಸಿರುವುದು ನಿಗಮನವಾಯಿತು.  
“ಹೇತುಪದೇಶಾತ್ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾಪ್ರಾಪ್ತೇ ಪುನರ್ವಚನಂ ನಿಗಮನಮ್” ಗೌಂ ಸೂಂ  
1-1-39 |

ನಿಗಮಾಂತ ನಿಗಮಾಂತ (ಛಂ) ವೇದಾಂತ, ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನ  
ಪ್ರದವಾದ ಉಪನಿಷತ್ತು. ನಿಗಮಸ್ಯ ಅಂತಃ | “ತೇಮ್ಯೋಽ-  
ಧಿಗಂತು ನಿಗಮಾಂತವಿಧಿಂ ವಾಲ್ಮೀಕಿಪಾರ್ಶ್ವಾದಿಹ ಪರ್ಯಮಿ”  
ಉಂ ರಾಂ 2-3 |



**ನಿಗರ ನಿಗರ** (ಪುಂ) ಉಟಮಾಡುವುದು, ತಿನ್ನುವುದು, ನುಂಗುವುದು. ನಿ + ಗೃ (ನಿಗರಣೆ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭)।

**ನಿಗರಣ ನಿಗರಣ** (ಪುಂ) 1. ಗಲ, ಗಂಟಲು, ಕೊರಲು. ನಿಗೀಯಂತೇನ — ನಿ + ಗೃ (ನಿಗರಣೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। 2. ಹೋಮದ ಧೂಮ. (ನಂ) 3. ತಿನ್ನುವುದು, ಉಟಮಾಡುವುದು, ನುಂಗುವುದು. ನಿ + ಗೃ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)।

**ನಿಗಲ ನಿಗಲ** (ಪುಂ) 1. ತಿನ್ನುವುದು, ನುಂಗುವುದು. ನಿ + ಗೃ (ನಿಗರಣೆ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭)। (ಪುಂ) 2. ಅನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಸರಪಳಿ. ನಿಗಲತಿ — ನಿ + ಗಲ (ಅದನೆ) "ಅಪ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಅನ್ದುಕೋ ನಿಗಲೋಽಸ್ಮಿ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ।

**ನಿಗಲನ ನಿಗಲನ** (ನಂ) ತಿನ್ನುವುದು, ನುಂಗುವುದು, ಉಟ ಮಾಡುವುದು. ನಿ + ಗಲ (ಅದನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)।

**ನಿಗಾದ ನಿಗಾದ** (ಪುಂ) ಹೇಳುವುದು. ನಿ + ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಪಕ್ಷೇ "ಘಬ್" (೩-೩-೧೮)।

**ನಿಗಾದನ ನಿಗಾದನ** (ನಂ) ಹೇಳಿಸುವುದು, ಮಾತಾಡಿಸುವುದು. ನಿ + ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)।

**ನಿಗಾದನೀಯ ನಿಗಾದನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಹೇಳಿಸಲ್ಪಡುವ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಮಾತಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ನಿ + ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। 2. ಮಾತಾಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. 3. ಮಾತಾಡಿಸಲು ಶಕ್ತನಾದ. 4. ಮಾತಾಡಿಸಬೇಕಾದ. "ತವ್ಯಃ"। -ಯಿತವ್ಯಃ -ಯಿತವ್ಯಃ.

**ನಿಗಾದಯತ್ ನಿಗಾದಯತ್** (ವಿಂ) ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಮಾತಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೇಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

**ನಿಗಾದಯಮಾನ ನಿಗಾದಯಮಾನ** (ವಿಂ) ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಮಾತಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೇಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಚ್ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)।

**ನಿಗಾದಿತ ನಿಗಾದಿತ** (ನಂ) 1. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಹೇಳಿಸುವುದು, ಮಾತಾಡಿಸುವುದು. ನಿ + ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಹೇಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಾತಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಗದ + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

**ನಿಗಾದಿತವತ್ ನಿಗಾದಿತವತ್** (ವಿಂ) ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಮಾತಾಡಿಸಿದವನು, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಹೇಳಿಸಿದವನು. ನಿ + ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ವತೀ -ವತೀ.

**ನಿಗಾಘ ನಿಗಾಘ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಹೇಳಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಹೇಳಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. 3. ಹೇಳಿಸಲು ಶಕ್ತನಾದ. ನಿ + ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಚ್ "ಘ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)। 4. ಹೇಳಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. 5. ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. ನಿ + ಗದ "ಘ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)। "ಮಯಾ ನಿಗಾಘಂ ಜಗತೀಪತೀನಾಂ ಗೌತ್ರಂ ಚರಿತ್ರಂ ಚ ವಿವಿತ್ರಮೇಷಾಮ್" ನೈಷಂ ೧೦-೮೯।

**ನಿಗಾರ ನಿಗಾರ** (ಪುಂ) ಭಕ್ಷಣ, ತಿನ್ನುವುದು, ನುಂಗುವುದು. ನಿ + ಗೃ (ನಿಗರಣೆ) "ಘಬ್" (೩-೩-೨೯)। ರಸ್ಯ "ಲಃ"। **ನಿಗಾಲಃ ನಿಗಾಲಃ** ಎಂದೂ ಆಗುವುದು. ನಿ + ಗಲ (ಅದನೆ) "ಘಬ್" (೩-೩-೧೮) ವಾ।

**ನಿಗಾರಕ ನಿಗಾರಕ** (ವಿಂ) ತಿನ್ನುವವನು, ನುಂಗುವವನು. ನಿ + ಗೃ (ನಿಗರಣೆ) "ಘಬ್" (೩-೧-೧೩೪)।

**ನಿಗಾಲ ನಿಗಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಕುದುರೆಯ ಕತ್ತಿನ ಸಮೀಪ ಭಾಗ. ನಿಗಲತೀನೇನ — ನಿ + ಗಲ (ಅದನೆ) "ಘಬ್" (೩-೩-೧೨೯)। \* "ಘಟಾಬನ್ಧಸಮೀಪಸ್ಥೋ ನಿಗಾಲಃ ಪರಿ-ಕೀರ್ತಿತಃ। ಅಧಸ್ತಾಂಚ ನಿಗಾಲಸ್ಯ ಗಲಮಾಹುರ್ಮನೀಷಿಣಃ"। 2. ತಿನ್ನುವುದು, ನುಂಗುವುದು. ನಿ + ಗಲ "ಘಬ್" (೩-೩-೧೮)।

**ನಿಗಾಲವತ್ ನಿಗಾಲವತ್** (ಪುಂ) ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. ನಿಗಾಲೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮನುಪ್" (೪-೨-೯೪)। ಮಸ್ಯ ವಃ (೮-೨-೯)।

**ನಿಗೀತ ನಿಗೀತ** (ವಿಂ) ಉಕ್ತವಾದ, ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. "ತಥಾ ಚ ಶ್ರುತಯೋ ಬಹ್ವಯೋ ನಿಗೀತಾ ನಿಗಮೇಷ್ವಪಿ" ಮನುಂ ೯-೧೯।

**ನಿಗೀರ್ಣ ನಿಗೀರ್ಣ** (ವಿಂ) 1. ನುಂಗಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಗೃ (ನಿಗರಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ತಮೋ ನಿಗೀರ್ಣಂ ಸಕೃದೇವ ಪುಂಸಾಮಾಸೀದತಾಮಾಶ್ರಮಹವ್ಯವಾಹಾಃ। ಇಹೀಷ-ಧಾದೀನಿ ಹವೀಷಿ ಭುಕ್ತ್ವಾ ಭೂಮಿಪಲಕ್ಷ್ಯಂ ಧ್ರುವಮುದಗಿರಂತಿ" ಯಾದಂ ೧೮-೪೯।

**ನಿಗು ನಿಗು** (ಪುಂ) 1. ಅಂಶಃಕರಣ, ಮನಸ್ಸು. ನಿಗೃಹ್ಯತೇ ಜಾಯತೇ ಪದಾರ್ಥೋನೇನ — ನಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಡುಃ" ಬಾಹುಂ ರಲೋಪಶ್ಚ। "ಅಂತಃಕರಣಂ ತು ಮನೋ ನಿಗುಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 2. ಕಶ್ಮಲ, ಕೊಳೆ. 3. ಮೂಲ, ಬುಡ. 4. ಚಿತ್ರ-ಕೆಲಸ.

**ನಿಗೃಹ ನಿಗೃಹ** (ನಂ) 1. ರಹಸ್ಯ, ಗುಟ್ಟು. (ವಿಂ) 2. ರಹಸ್ಯವಾದ, ಗುಟ್ಟಾಗಿರುವ, ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಗೋಚರವಲ್ಲದ.



ನಿ + ಗುಹ (ಸಂವರಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ನಲಿನಿ ನಿಗೂಡಸಲಿಲಾ ಚ ಯತ್ರ ಸಾ ಸ್ಥಲಮಿತ್ಯಃ ಪತತಿ ಯಾ ಸುಯೋಧನೇ" ಮಾಘಂ ೧೩-೫೯। "ತದ್ಗುಹಂ ಪ್ರತಿ ಚ ತೈರಪಹಾರಾ: ಸಂಖ್ಯಸೌಖ್ಯ-ಕಪಟೇನ ನಿಗೂಡಾ:" ನೈಷಂ ೫-೫೬। 3. ಗುಹ್ಯವಾದ, ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಚ್ಚಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಗುಹ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ನ ದೃಷ್ಟಿ: ಶೈಥಿಲ್ಯಂ ಮಿಲನ ಇತಿ ಚೇತೋ ದಹತಿ ಮೇ ನಿಗೂಡಾಂತ:ಕೋಪಾ ಕಠಿನಹೃದಯೇ ಸಂವೃತೀರಿಯಮ್" ಅಮರಂ ೧೪। (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 4. ರಹಸ್ಯವಾಗಿ, ಗುಟ್ಟಾಗಿ.

**ನಿಗೂಡಕ ನಿಗೂಡಕ** (ಪುಂ) ಕಾಡುಹೆಸರು. "ವನಮುಕ್ತಗೋ ತುಲರಕನಿಗೂಡಕಕುಲೀನಕಾ:" ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

**ನಿಗೂಹತ್ ನಿಗೂಹತ್** (ವಿಂ) ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡುತ್ತಿರುವ, ಮುಚ್ಚಿಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಗುಹ (ಸಂವರಣ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ದ್ವಿಧೇವ ಕೃತ್ವಾ ಹೃದಯಂ ನಿಗೂಹತ: ಸ್ಫುರನ್ನ-ಸಾಧೋವಿವೃಣೋತಿ ವಾಗಸಿ:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೧೨। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬)। -ಂತಿ -ಂತೀ.

**ನಿಗೂಹನ ನಿಗೂಹನ** (ನಂ) ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡುವುದು, ಬಚ್ಚಿಡುವುದು. ನಿ + ಗುಹ (ಸಂವರಣ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ನಿಗೂಹನೀಯ ನಿಗೂಹನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡಲ್ಪಡುವ, ಬಚ್ಚಿಡಲ್ಪಡುವ. 2. ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡಬೇಕಾದ, ಗುಟ್ಟಾಗಿಡಬೇಕಾದ. 3. ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಗುಟ್ಟಾಗಿಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ನಿ + ಗುಹ (ಸಂವರಣ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬)। -ಗೂಹಿತವ್ಯ: -ಗೂಹಿತವ್ಯಃ.

**ನಿಗೂಹಮಾನ ನಿಗೂಹಮಾನ** (ವಿಂ) ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡುತ್ತಿರುವ, ಮುಚ್ಚಿಡುತ್ತಿರುವ, ನಿ + ಗುಹ (ಸಂವರಣ) "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)।

**ನಿಗೂಹಯಮಾನ ನಿಗೂಹಯಮಾನ** (ವಿಂ) ರಹಸ್ಯವಾಗಿರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಗುಟ್ಟಾಗಿರಿಸುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಗುಹ (ಸಂವರಣ) + ಣಿಚ್ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)।

**ನಿಗೂಹಿತ ನಿಗೂಹಿತ** (ವಿಂ) ಬಚ್ಚಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಗುಟ್ಟಾಗಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಗುಹ (ಸಂವರಣ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

**ನಿಗೂಹಿತ ನಿಗೂಹಿತ** (ವಿಂ) 1. ನಿಗೂಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ದಂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಯದಿ ಮೇ ನಿಗೂಹಿತಾ: ಸ್ಯುಸ್ತವಯೇವ ಯದುನಂದನ" ಭಾಗಂ ೧೦-೫೮-೪೪। 2. ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೆರೆಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ದಮನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಲಘುಪ್ರಯತ್ನಂ ನಿಗೂಹಿತವೀರ್ಯಸ್ತ್ರಿ-

ಮಾರ್ಗಗಾವೇಗ ಇವೇಶ್ವರೇಣ" ಕಿರಾಂ ೧೭-೫। 5. ಒಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನೋಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ತಮಾರ್ಯಗೃಹ್ಯಂ ನಿಗೂಹಿತಧೇನುಮೆನುಷ್ಯವಾಚಾ ಮನುವಂಶಕೇತುಮ್" ರಘುಂ ೨-೩೩। 6. ನಿರೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಉದಾಸಿತಾರಂ ನಿಗೂಹಿತಮಾನಸೇಗೃಹಿತಮಧ್ಯಾತ್ಮ-ದೃಶಾ ಕಥಂಚನ" ಮಾಘಂ ೧-೩೩। 7. ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. 8. ವಾದದಲ್ಲಿ ಪರಾಜಯಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೋಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಛೋ, ನಿಗೂಹಿತೋಜಿಸಿ" ಉಂ ರಾಂ ೪। 9. ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಏವಮಾಲಿ ನಿಗೂಹಿತಸಾಧವಸಂ ಶಂಕರೋ ರಹಸಿ ಸೇವ್ಯತಾಮಿತಿ" ಕುಮಾರಂ ೮-೫।

**ನಿಗೂಹಿತವತ್ ನಿಗೂಹಿತವತ್** (ವಿಂ) 1. ತಡೆದವನು 2. ಅಡಗಿಸಿದವನು, ದಮನಮಾಡಿದವನು. 3. ವಾದದಲ್ಲಿ ಸೋಲಿಸಿದವನು. 4. ಸೆರೆಹಿಡಿದವನು, ಬಂಧಿಸಿದವನು. 5. ಪಿಡಿಸಿದವನು. 6. ಹಿಡಿದವನು, ಆಕ್ರಮಿಸಿದವನು. 7. ಶಿಕ್ಷಿಸಿದವನು. 8. ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಟ್ಟವನು. ನಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬)। -ವಂತಿ -ವಂತೀ.

**ನಿಗೂಹಿತಿ ನಿಗೂಹಿತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಿಗೂಹ, ದಂಡಿಸುವುದು, ಶಿಕ್ಷಿಸುವುದು. ನಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। "ಅನ್ಯಥಾ ತು ನಿಗೂಹಿತೀರಲಕ್ಷ್ಯಾ ರಾಜಭಾವತೃಪಿತೀರಿವ ಮೃತ್ಯು:" ಷಾದಂ ೨೧-೧೯।

**ನಿಗೂಹ್ಯ ನಿಗೂಹ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ವಿರೋಧಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಪಿಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಸೆರೆ ಹಿಡಿಯುತ್ತಿರುವ. 4. ಆಕ್ರಮಿಸುತ್ತಿರುವ. 5. ವಾದದಲ್ಲಿ ಸೋಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ಪರಾಜಯಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. 6. ದಂಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಶಿಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. 7. ಅಡಗಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಶಿಷ್ಯಪಾನವಿಧುರಾಸು ನಿಗೂಹ್ಯನ್ ಮಾನಮಾಶು ಶಿಶಿಲೀಕೃತಲಜ್ಜ:" ಕಿರಾಂ ೯-೪೨। 8. ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)। **ನಿಗೂಹ್ಯಾನ: ನಿಗೂಹ್ಯಾನ:**

**ನಿಗೂಹ್ಯ ನಿಗೂಹ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಸೋಲಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. 2. ತಡೆಯಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ, 3. ದಂಡಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. 4. ಆಕ್ರಮಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. 5. ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡಲ್ಪಡುವ. 6. ತಡೆಯಲ್ಪಡುವ. 7. ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. 8. ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಡುವ. ನಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನ) "ಕಯ್" (೩-೧-೧೧೯)।

**ನಿಗೂಹ್ಯಮಾಣ ನಿಗೂಹ್ಯಮಾಣ** (ವಿಂ) 1. ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ದಂಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ತತೋ ಭವದಪತ್ಯಕಾರಿಣು ಚಂದನದಾಸಪ್ರಭೃತಿಃ ನಿಗೂಹ್ಯಮಾಣೇಃ ಸ್ವದೋಷಾಶಂಕಯಾ ಅಪಕ್ರಮ್ಯ



ಮಲಯಕೇತುಮಾಶ್ರಿತಃ" ಮುद्रಾಂ ३। 2. ಸೋಲಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 3. ತಡೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 4. ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

**ನಿಗ್ರನ್ಯನ ನಿಗ್ರಂಥನ** (ನಂ) ಮಾರಣ, ಕೊಲ್ಲುವುದು.

ನಿ + ಗ್ರನ್ಯ (ಬಂಧನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (३-३-११५)।

**ನಿಗ್ರಹ ನಿಗ್ರಹ** (ಪುಂ) 1. ಹೆದರಿಸುವುದು, ಬೆದರಿಸುವುದು.

ನಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) "ಅಪ್" (३-३-५८)। "ನಿಗ್ರಹಃ ಸೀಮಿನ್ ಭರ್ತನೆ" ನಾನಾರ್ಥಂ। 2. ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಸ್ವಾಧೀನಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಚञ्चಲಂ ಹಿ ಮನಃ ಕೃಷ್ಣ ಪ್ರಮಾಥಿ ಬಲವದ್ಭೂಮ್।

ತಸ್ಯಾಹಂ ನಿಗ್ರಹಂ ಮನ್ಯೇ ವಾಯೋರಿವ ಸುದುಷ್ಕರಮ್" ಗೀತಾ ६-३४।

3. ನಿರೋಧಿಸುವುದು, ತಡೆಗಟ್ಟುವುದು. "ತಥೇಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ ದಹ್ಯಂತೇ ದೋಷಾಃ ಪ್ರಾಣಸ್ಯ ನಿಗ್ರಹಾತ್" ಮನುಂ ६-७१।

4. ಹಿಡಿಯುವುದು, ಆಕ್ರಮಿಸುವುದು. "ವೇಗಾದಹಂ ಪ್ರವಿಸ್ತುತಃ ಪವನಂ ನ ಕುನ್ಯಾಂ ತ್ವನ್ನಿಗ್ರಹೇ ತು ವರಗಾತ್ರಿ ನ ಮೇ ಪ್ರಯತ್ನಃ" ಮೃಚ್ಛಂ १-२२। 5. ಶಿಕ್ಷಿಸುವುದು, ದಂಡಿಸುವುದು. "ನಿಗ್ರಹಂ ಪ್ರಕೃತಿಗಾಂ ಚ ಕುರ್ಯಾದೋರ್ಬಲಸ್ಯ ಚ। ಉಪಸೇವತ ತಂ ನಿಯಂ ಸರ್ವಯತ್ನೇಗುಂ ಯಥಾ" ಮನುಂ ೭-१७५। "ನಿಗ್ರಹಾತ್ಸವಸುರಾಪ್ತಾನಾಂ

ವಧಾಂಚ ಧನದಾನುಜಃ" ರಘುಂ १२-५२। 6. ಬಂಧಿಸುವುದು, ಸೆರೆಹಿಡಿಯುವುದು, ಕಟ್ಟಿಹಾಕುವುದು. "ಯದಾಶ್ರೀಃ ಕರ್ಣದ್ವಯೋಧನಾಮ್ಯಾಂ ಬುದ್ಧಿ ಕೃತಾಂ ನಿಗ್ರಹೇ ಕೇಶವಸ್ಯ। ತಂ ಚಾತ್ಮಾನಂ

ಬಹುಭಾ ದರ್ಶಯಾನ್ ತದಾ ನಾಶಂಸೇ ವಿಜಯಾಯ ಸಂಜಯ" ಭಾಂ ಆದಿಂ १-२೦೦। 7. ದೂರಮಾಡುವುದು, ಓಡಿಸುವುದು, ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು, ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. "ಆದಿದೇಶಾಯ ಶತ್ರುಂ ತೇಷಾಂ ಕ್ಷೇಮಾಯ ರಾಘವಃ। ಕರಿಷ್ಯನ್ನಿವ ನಾಮಾಸ್ಯ ಯಥಾರ್ಥಮರಿನಿಗ್ರಹಾತ್" ರಘುಂ १५-६। 8. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ.

ಅಜುನನ ಪರಾಕ್ರಮವನ್ನು ಅಜ್ಞೇಕ್ಷಿಸದೆ ತನ್ನ ಸಾರಥ್ಯದ ವೈಚಿತ್ರ್ಯದಿಂದ ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸಿದುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು. ಅಜುನಪೌರೂಷನಿರಪೇಕ್ಷಣ ಸಾರಥ್ಯ-ವೈಚಿತ್ರ್ಯೇಣ ನಿಗ್ರಹಂತೇ ಶತ್ರುಃ। "ಯೇನ ಸಾರಥ್ಯವೈಚಿತ್ರ್ಯಾನಿ-ಗ್ರಹಂತೇಶ್ಚ ಶತ್ರುಃ। ಸ ನಿಗ್ರಹಃ ಸಮಾಖ್ಯಾತಃ ಸಪ್ತಾಣಃ ಶತ್ರು-ನಾಶಕಃ" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ। ಸರ್ವಂ ಪ್ರಲಯೇ ನಿಗ್ರಹಂತೀತಿ

ನಿಗ್ರಹಃ ಇತಿ ಶಾಂ ಭಾಂ। "ಪ್ರಗ್ರಹೋ ನಿಗ್ರಹೋ ವ್ಯಗ್ರಃ" ವಿಂ ಸಂ। 9. ರೋಗಕ್ಕೆ ಚಿಕಿತ್ಸೆ ಮಾಡುವುದು, ರೋಗವನ್ನು ತಡೆಯುವುದು. "ತೇಷಾಂ ಸಂಶೋಧನಸಂಶಮನಾಹಾರಾ-ಚಾರಾಃ ಸಮ್ಯಕ್ಪ್ರಯುಕ್ತಾ ನಿಗ್ರಹೇತವಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ १-२७।

10. ಪರಾಜಯ ಹೊಂದುವುದು, ನೈಯಾಯಿಕನು ವಾದದಲ್ಲಿ ದೋಷಯುಕ್ತವಾಗಿ ವಾದಿಸಿ ಸೋಲನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವುದು. "ಸಾಧ್ಯೇ ನಿಷ್ಪ್ರಿತಮನ್ವಯೇನ ಘಟಿತಂ ವಿಭ್ರತ್ ಸಪಕ್ಷೇ

ಸ್ಥಿತಿ ವಿವಾತ್ಯಂ ಚ ವಿಪಕ್ಷತೋ ಭವತಿ ಯತ್ ತತ್ಸಾಧನಂ ಸಿದ್ಧಯೇ। ಯತ್ಸಾಧ್ಯಂ ಸ್ವಯಮೇವ ತುಲ್ಯಮುಭಯೋಃ ಪಕ್ಷೇ ವಿರುದ್ಧಂ ಚ ಯತ್

ತಸ್ಯಾಜ್ಞೀಕರಣೇನ ವಾದಿನ ಇವ ಸ್ಯಾತ್ ಸ್ವಾಮಿನೋ ನಿಗ್ರಹಃ" ಮುद्रಾಂ ५-१೦। 11. ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ. 12. ಜುಗುಪ್ಸೆ, ಅಸಹ್ಯತೆ, ಅರಾಚಿ, ಇಷ್ಟವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 13. ಅಕ್ಷೇಪಿಸುವುದು, ತಪ್ಪಿಗಾಗಿ ತಿಳಿಸುವುದು.

**ನಿಗ್ರಹಣ ನಿಗ್ರಹಣ** (ನಂ) "ನಿಗ್ರಹ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ನಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (३-३-११५)।

**ನಿಗ್ರಹಣೀಯ ನಿಗ್ರಹಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ, ದಂಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಪರಾಜಯಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ, ಸೋಲಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಅಡಗಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಬಂಧಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಶಿಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ. 6. ಸೋಲಿಸಬೇಕಾದ. 7. ಅಡಗಿಸಬೇಕಾದ. 8. ಸೆರೆಹಿಡಿಯಬೇಕಾದ. ನಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ)

"ಅನೀಯರ್" (३-१-९६)। "ತವ್ಯಃ" (३-१-९६)। -ಗ್ರಹೀತವ್ಯಃ -ಗ್ರಹೀತವ್ಯಃ.

**ನಿಗ್ರಹಿತ ನಿಗ್ರಹೀತ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಶಿಕ್ಷಿಸುವವನು. 2. ಸೋಲಿಸುವವನು. 3. ತಡೆಯುವವನು. 4. ದಮನಮಾಡುವವನು, ಅಡಗಿಸುವವನು. 5. ಆಕ್ರಮಿಸುವವನು. 6. ಬಂಧಿಸುವವನು, ಸೆರೆಹಿಡಿಯುವವನು. ನಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) "ತೃತ್" (३-१-१३३)। "ನಿಗ್ರಹಿತಾ ಕಲೇರೇಷ

ಭುವೋ ಧರ್ಮಸ್ಯ ಕಾರಣಾತ್" ಭಾಗಂ १-१२-२६।

**ನಿಗ್ರಾಹ ನಿಗ್ರಾಹ** (ಪುಂ) ಅನಿಷ್ಟ, ಬಾಧೆ, ಓಡೆ, ತೊಂದರೆ. ನಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) "ಘತ್" (३-३-४५)। ಕೋಪದಿಂದ ಹೇಳುವ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಈ ಪದಪ್ರಯೋಗ.

"ಆಕ್ರೋಶೋ ಅವನ್ಯೋಗ್ರಹಃ" (३-३-४५)। "ಸಂದೃಷ್ಟಾಂ ತು ವೇದೇಹಾಂ ನಿಗ್ರಾಹೋ ವೋರ್ಯವಾನರೇ" ಭದ್ರಿಂ ೭-४३।

**ನಿಗ್ರಾಹಕ ನಿಗ್ರಾಹಕ** (ವಿಂ) 1. ಓಡಿಸುವವನು, ತೊಂದರೆಪಡಿಸುವವನು. ನಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) "ಘಲ್" (३-१-१३३)। 2. ಸೋಲಿಸುವವನು. 3. ತಿರಸ್ಕರಿಸುವವನು. 4. ಬಂಧಿಸುವವನು. 5. ತಡೆಯುವವನು. 6. ದಮನಮಾಡುವವನು.

**ನಿಗ್ರಾಹ್ಯ ನಿಗ್ರಾಹ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವವನು. 2. ಸೋಲಿಸಲ್ಪಡುವವನು. 3. ಓಡಿಸಲ್ಪಡುವವನು. 4. ಬಂಧಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ದಮನಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಅಡಗಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ತಡೆಯಲ್ಪಡುವ. ನಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ)

"ಘ್ಯತ್" (३-१-१२४)। "ನ ಪದಸ್ಯೇಂದ್ರನಿಗ್ರಾಹ್ಯಸ್ಯೇಂದ್ರ-ಲಜ್ಜಾಕರೀ ಶ್ರುತಿಃ" ಕಾವ್ಯಾಂ २-२७।



**ನಿಘ ನಿಘ (ಛಂ) 1.** ವಿಸ್ತಾರ ಮತ್ತು ಉದ್ದ (ಎತ್ತರ) ದಲ್ಲಿ ಸಮವಾಗಿರುವಿಕೆ. ನಿವಿಶಂಭಂ ಹನ್ಯತೇ ಜಾಯತೇ — ನಿ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತೃಃ) “ಅಪ್” (3-3-೮೭)। ಟಿಲೋಃ ಥತ್ವಂ ಚ ನಿಘಂ। (ವಿಂ) 2. ಅಗಲ ಮತ್ತು ಎತ್ತರ ದಲ್ಲಿ ಸಮವಾಗಿರುವ. ನಿಘಾ ವೃಕ್ಷಾಃ ಸಿಂ ಕೌಂ।

**ನಿಘಂಟು ನಿಘಂಟು (ಛಂ)** ಶಬ್ದಗಳ ಕೋಶ, ಏಕಾರ್ಥವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ ಪರ್ಯಾಯಶಬ್ದಗಳನ್ನೂ ಅನೇಕಾರ್ಥಗಳನ್ನು ಕೊಡುವ ಶಬ್ದಗಳನ್ನೂ ಒಂದೇ ಕಡೆ ಸೇರಿಸಿ ಅರ್ಥ ವಿವರಣೆ ಕೊಡುವ ಶಬ್ದಗಳ ಸಂಗ್ರಹ. ನಿ + ಘಟಿ (ಭಾಷಾಣಿ) + ಣಿಞ್ “ಕ್ರುಃ” (೩ಂ ೧-೩೭)। “ಅರ್ಥಾನ್ ನಿಘಂಟಯತ್ಯಸ್ಮಾತ್ ನಿಘಂಟುಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ”। ಲೋಕ ವ್ಯವಹಾರದಲ್ಲಿರುವ ಸಮಸ್ತಶಬ್ದಗಳೂ ವೇದಶಬ್ದಗಳಿಂದಲೇ ಒಂದು ಕಾಲಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಲೌಕಿಕ ಶಬ್ದಗಳಾಗಿ ಪರಿವರ್ತನೆ ಹೊಂದಿದುವು. ಈ ಲೌಕಿಕ ಶಬ್ದಗಳ ಅರ್ಥವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯಲು ವೇದಮಂತ್ರಗಳ ಅರ್ಥಜ್ಞಾನವುಂಟಾಗಬೇಕು. ಈ ವೇದಮಂತ್ರಗಳ ಅರ್ಥಪರಿಜ್ಞಾನವು ಬಹಳ ಕ್ಲಿಷ್ಟವಾಗಿ ಕಂಡುಬಂದುದರಿಂದ ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಬೇರ್ಪಡಿಸಿ ಒಂದು ಕಡೆ ಸಂಗ್ರಹಿಸಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಸಂಗ್ರಹಕ್ಕೆ ನಿಘಂಟು ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಅದುದರಿಂದ ನಿಘಂಟುಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಥಮತಃ ರಚಿತವಾದುದು ವೈದಿಕ ನಿಘಂಟು. ಯಾಸ್ಕರು ರಚಿಸಿದ ನಿರುಕ್ತವು ಈ ವೈದಿಕ ನಿಘಂಟುವಿನ ಭಾಷ್ಯ. “ತಮಿಸಂ ಸಮಾನ್ಯಾಂ ನಿಘಂಟವಃ ಕಲ್ಪಾಚಕ್ಷತೇ” ಎಂದು ಯಾಸ್ಕರು ನಿರುಕ್ತದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ ಯಾಸ್ಕರಿಗಿಂತಲೂ ಪೂರ್ವದಲ್ಲೇ ಈ ನಿಘಂಟು ರಚಿತವಾಗಿದ್ದಿತೆಂದು ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ. ಈ ವೈದಿಕ ನಿಘಂಟುವಿನಲ್ಲಿ ಐದು ಅಧ್ಯಾಯಗಳಿವೆ. (1) ನೆಘಂಟುಕಾಂಡಃ, (2) ನೆಗಮಕಾಂಡಃ ಮತ್ತು (3) ದೇವತಕಾಂಡಃ ಎಂದು ಮೂರು ಕಾಂಡಗಳಿವೆ. ನೈಘಂಟುಕ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಏಕಾರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಅನೇಕ ಶಬ್ದಗಳ ಗಣಗಳೂ ನೈಗಮಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಏಕಾರ್ಥವಾಚಕಗಳಾದ ಅನೇಕ ಬಿಡಿ ಶಬ್ದಗಳೂ ದೈವತ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ದೇವತೆಗಳ ಹೆಸರುಗಳೂ ಸಂಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. ಯಾಸ್ಕರು ಈ ನಿಘಂಟುವಿನ ಕ್ರಮದಲ್ಲೇ ನಾಮಪದಗಳು ಕ್ರಿಯಾಪದಗಳು ನಿಪಾತಗಳು ಏಕಾರ್ಥ ಮತ್ತು ಅನೇಕಾರ್ಥಗಳು ಇತ್ಯಾದಿ ವಿವರಣೆಯೊಡನೆ ಭಾಷ್ಯವನ್ನು ರಚಿಸಿ ಈ ಭಾಷ್ಯಕ್ಕೆ “ನಿರುಕ್ತ” ಎಂದು ಹೆಸರಿಟ್ಟಿದ್ದಾರೆ. ಈ ಎಲ್ಲಾ ವೈದಿಕ ಶಬ್ದಗಳಿಗೂ ಅರ್ಥವನ್ನು ನಿಶ್ಚಯಿಸಿ ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ ಇದು “ನಿರುಕ್ತ”ವಾಯಿತು. ನಿರೂಪಿತೇನೇನ ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಮ್। ಈ ನಿರುಕ್ತವು ವೇದಗಳ ಅರ್ಥ ಪರಿಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಸಹಾಯಕವಾಗಿದೆ.

ಹೀಗೆಯೇ ಲೌಕಿಕ ಶಬ್ದಗಳಿಗೂ ಅನೇಕ ವಿದ್ವಾಂಸರು ಅನೇಕ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ನಿಘಂಟುಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಶಬ್ದಗಳನ್ನು ವರ್ಗಗಳಾಗಿ ವಿಂಗಡಿಸಿ ಆಯಾ ವರ್ಗಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಪರ್ಯಾಯಶಬ್ದಗಳನ್ನು ಲಿಂಗನಿರ್ದೇಶದೊಡನೆ ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ರಚಿಸಿರುವುದು ಒಂದು ವಿಧ. ಅಮರಕೋಶಃ ಅಭಿಧಾನಚಿಂತಾಮಣಿಃ ಹಾರಾವಲಿಃ ತ್ರಿಕಾಂಡಶೇಷಃ ಕಲ್ಪದ್ರೂಕೋಶಃ ಇತ್ಯಾದಿ. ವರ್ಗಗಳ ಕ್ರಮವಿಲ್ಲದೆ “ಕ” ಕಾರಾದಿ ವರ್ಣಾಂತ ಅನೇಕಾರ್ಥ ಪದಗಳನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಕಂಕಮ್ ಕಡ್ವಿಕಮ್ ಕತ್ರಿಕಮ್ ಈ ರೀತಿ “ಹ” ಕಾರಾಂತ ಪರ್ಯಂತ ಲಿಂಗನಿರ್ದೇಶದೊಡನೆ ನಿಘಂಟುಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುವುದು ಒಂದು ವಿಧ. ಮೇದಿನಿಕೋಶಃ ವಿಶ್ವಪ್ರಕಾಶಃ ನಾನಾರ್ಥರತ್ನಮಾಲಾ ಅನೇಕಾರ್ಥಸಂಗ್ರಹಃ ಅನೇಕಾರ್ಥಸಮುಚ್ಚಯಃ ಇತ್ಯಾದಿ. ಪರ್ಯಾಯ ಪದಗಳ ವರ್ಗೀಕರಣ ಮತ್ತು ಅನೇಕಾರ್ಥ ಶಬ್ದಗಳ ಸಂಗ್ರಹ ಈ ರೀತಿ ಉಭಯಾತ್ಮಕವಾದ ನಿಘಂಟುಗಳನ್ನೂ ಕೆಲವು ವಿದ್ವಾಂಸರು ರಚಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಯಾದವಪ್ರಕಾಶರ ವೈಜಯಂತಿ ಮುಂತಾದುದು. ಇವೆಲ್ಲವೂ ಪ್ರಾಚೀನ ಪಂಡಿತರು ಅನುಸರಿಸಿರುವ ಕ್ರಮ. ಈ ಕಾಲದ ವ್ಯಾಸರಿಗೆ ಗಳಿಗೆ ಸೌಕರ್ಯವಾಗುವಂತೆ ಅಧುನಿಕ ಪಂಡಿತರು “ಅ” ಕಾರಾದಿ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಶಬ್ದಗಳನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಆಯಾ ದೇಶ ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿ ಅರ್ಥ ಮತ್ತು ಇತರ ಮುಖ್ಯ ವಿಷಯಗಳ ವಿವರಣೆಯೊಡನೆ ಶಬ್ದ ಕೋಶಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುತ್ತಾರೆ.

**ಸಂಸ್ಕೃತ-ಸಂಸ್ಕೃತ** — ಶಬ್ದಸ್ತೋಮಮಹಾನಿಧಿಃ ವಾಚಸ್ಪತ್ಯಮ್ ಶಬ್ದಕಲ್ಪದ್ರೂಮಃ ಶಬ್ದಾರ್ಥಕಲ್ಪತರಃ (ಸಂಸ್ಕೃತ-ಸಂಸ್ಕೃತ-ಅಂಧ್ರ) ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಸಂಸ್ಕೃತ-ಹಿಂದೀ**—ಪದ್ಯಚಂದ್ರಕೋಶಃ ಅಭಿಧಾನರಾಜೇಂದ್ರ-ಕೋಶಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಸಂಸ್ಕೃತ-ಇಂಗ್ಲಿಷ್** —

(1) *Sanskrita-English Dictionary*  
By V. S. Apte.

(2) *Sanskrita-English Dictionary*  
By Monier Williams.

(3) *Sanskrita-English Dictionary*  
By Macdonell.

**ಸಂಸ್ಕೃತ-ಅಂಧ್ರ ನಿಘಂಟು** —

**ಸಂಸ್ಕೃತ-ದ್ರಾವಿಡ ನಿಘಂಟು** —

**ಸಂಸ್ಕೃತ-ಗುಜರಾಟೀ ಶಬ್ದ ಕೋಶ** — ನರ್ಮದಾ ಶಂಕರಶಾಸ್ತ್ರಿ ರಚಿತ.

**ಸಂಸ್ಕೃತ-ಸಾರಸೀಕ ಪದಪ್ರಕಾಶ** — ಮಹಾಕವಿ ಕರ್ಣಪೂರ ವಿರಚಿತ. ಇತ್ಯಾದಿ ಅನೇಕ ನಿಘಂಟುಕಾರರು ನಾನಾರೀತಿಯಲ್ಲಿ ನಿಘಂಟುಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿ ಸಂಸ್ಕೃತ



ವ್ಯಾಸಂಗಕ್ಕೆ ಬಹುಮುಖವಾಗಿ ಉಪಕಾರಮಾಡಿರುತ್ತಾರೆ. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯವಾದ ಕೆಲವು ನಿಘಂಟುಗಳ ಮತ್ತು ಅವುಗಳ ನಿರ್ಮಾತೃಗಳ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಸಂಗ್ರಹವಾಗಿ ಈ ಕೆಳಗೆ ಕೊಡಲಾಗಿದೆ.

**ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನम्**—ಅಮರಸಿಂಹ ಕೃತ. ಶ್ರೀಕಾಂಡ ಉತ್ಪಲಿನೀ ಮೊದಲಾದ ನಾಮಮಾತ್ರ ತಂತ್ರಗಳನ್ನೂ ವ್ಯಾಡಿ ವರರುಚಿ ಮೊದಲಾದವರ ಲಿಂಗಮಾತ್ರ ತಂತ್ರಗಳನ್ನೂ ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಿ ರಚಿಸಿರುವುದರಿಂದ ಅಮರ ಸಿಂಹನು ಈ ಅಮರಕೋಶಕ್ಕೆ ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನम् ಎಂದು ಹೆಸರಿಟ್ಟು ಇದರಿಂದ ಈ ಕೋಶವು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಯಿತೆಂದು ಹೇಳಿರುತ್ತಾನೆ. “ಸಮಾಹೃತ್ಯಾನೃತ್ಯಾಣಿ ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತೇ: ಪ್ರತಿಸಂಕ್ಷೇಪತಃ। ಸಂಕ್ಷೇಪಮುಚ್ಯತೇ ವರ್ಗನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನಮ್” ಅಮಂ। ಇದರ ಮೊದಲನೆಯ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಸ್ವರ್ಗವರ್ಗ ಪೋಮವರ್ಗ ದಿಗ್ವರ್ಗ ಕಾಲವರ್ಗ ಧೀವರ್ಗ ವಾಗ್ವರ್ಗ ಶಬ್ದಾದಿವರ್ಗ ನಾಟ್ಯವರ್ಗ ಪಾತಾಳವರ್ಗ ಭೋಗಿವರ್ಗ ನರಕವರ್ಗ ಮತ್ತು ವಾರಿವರ್ಗಗಳಾಗಿಯೂ ದ್ವಿತೀಯ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಭೂವರ್ಗ ಪುರವರ್ಗ ಶೈಲವರ್ಗ ವನೌಷಧಿ ವರ್ಗ ಸಿಂಹಾದಿವರ್ಗ ಮನುಷ್ಯವರ್ಗ ಬ್ರಹ್ಮವರ್ಗ ಕ್ಷತ್ರಿಯವರ್ಗ ವೈಶ್ಯವರ್ಗ ಮತ್ತು ಶೂದ್ರವರ್ಗಗಳಾಗಿಯೂ ತೃತೀಯಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ವಿಶೇಷ್ಯನಿಘ್ನವರ್ಗ ಸಂಕೀರ್ಣ ವರ್ಗ ನಾನಾರ್ಥವರ್ಗ ನಾನಾರ್ಥಾವ್ಯಯವರ್ಗ ಅವ್ಯಯ ಮತ್ತು ಲಿಂಗಾದಿಸಂಗ್ರಹವರ್ಗಗಳಾಗಿಯೂ ವಿಂಗಡಿಸಿ ಆಯಾ ವರ್ಗಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಪಟ್ಟ ಪದಗಳನ್ನು ಲಿಂಗಾನು ಶಾಸನಪ್ರವರ್ತಕ ಶೇಖರಿಸಿರುತ್ತಾನೆ. ಅಮರಸಿಂಹನು ಬೌದ್ಧ ಮತಾನುಯಾಯಿ. ಇವನು ವಿಕ್ರಮಾದಿತ್ಯನ ಆಸ್ಥಾನ ದಲ್ಲಿದ್ದ ನವಮಣಿಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬನಾಗಿದ್ದನೆಂದು ಇತಿಹಾಸದಿಂದ ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ. ಇದರಿಂದ ಅಮರಸಿಂಹನು ಕ್ರಿ.ಶ. ಆರನೆಯ ಶತಮಾನಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹಿಂದಿನವನೆಂದು ಹೇಳ ಬಹುದು.

ಈ ಅಮರಕೋಶಕ್ಕೆ ಭಟ್ಟಕ್ಷೀರಸ್ವಾಮಿ ಸರ್ವಾನಂದ ಸುಭೂತಿಚಂದ್ರ ಬೃಹಸ್ಪತಿ ಭಾನುಜೇದೀಕ್ಷಿತ ನಾರಾಯಣ ಶರ್ಮ ಮುಂತಾದ ಅನೇಕ ವಿದ್ವಾಂಸರು ಸುಮಾರು ನಲವತ್ತಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚು ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರು ತ್ತಾರೆ.

**ತ್ರಿಕಾಂಡಶೇಖ:** — ಪುರುಷೋತ್ತಮದೇವವಿರಚಿತ. ಈ ನಿಘಂಟುಕಾರನು, ಅಮರಸಿಂಹನು ಅಮರಕೋಶದಲ್ಲಿ ಅಲಂಕಿತವೆಂದು ಬಿಟ್ಟಿರುವ ಪದಗಳು ಈಗ ಪ್ರಯೋಗ ದಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ಅವನ್ನು ಈ ಕೋಶದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸುವ ಪ್ರಯತ್ನವು ನಡೆದಿದೆಯೆಂದು ಗ್ರಂಥಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರು

ತ್ತಾನೆ. ಮತ್ತು ವರ್ಗಕ್ರಮ ನಾಮಲಿಂಗಗಳ ನಿರ್ದೇಶ ಪರಿಭಾಷೆಗಳು ಎಲ್ಲವೂ ಅಮರಕೋಶದಂತೆಯೇ ಇರುವು ದೆಂದೂ ತಿಳಿಸಿರುತ್ತಾನೆ. “ಅಲೌಕಿಕತ್ವಾದಮರಃ ಸ್ವಕೋಶೇ ನ ಯಾನಿ ನಾಮಾನಿ ಸಮುಲ್ಲೀಲೇಖಃ। ವಿಲೋಕ್ಯ ತೇರಪ್ಯಧುನಾ ಪ್ರಚಾರಮಯಂ ಪ್ರಯತಃ ಪುರುಷೋತ್ತಮಸ್ಯ। ವರ್ಗಕ್ರಮಸ್ತಥಾ ನಾಮ- ಲಿಂಗಯೋಸ್ತುಪದೇಶತಾ। ಪರಿಭಾಷಾದಿಕಂ ಸರ್ವಮತ್ರಾಪ್ಯಮರ- ಕೋಶವತ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ೨, ೩।

**ಹಾರಾವಲಿ** — ಪುರುಷೋತ್ತಮದೇವವಿರಚಿತ. ಅಭಿಧಾನ ಕೋಶಗಳು ಅನೇಕ ವಿದ್ವಾಂಸರಿಂದ ರಚಿತವಾಗಿ ದ್ದರೂ ಅವುಗಳೆಲ್ಲವೂ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ವಿಷಯಗಳ ವ್ಯವಹಾರಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದುವಾದುದರಿಂದ ಸಭೆಗಳಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲರಿಗೂ ವೈದಗ್ಧ್ಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಕೋಶವೊಂದನ್ನು ತಾನು ರಚಿಸುವುದಾಗಿ ಗ್ರಂಥಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಈ ಕವಿಯು ಹೇಳಿರು ತ್ತಾನೆ. “ಕಿಂ ನೈವ ಸಂತಿ ಸುಧಿಯಾಮಭಿಧಾನಕೋಶಾಃ ಕಿಂತು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಿಷಯವ್ಯವಹಾರಭಾಜಃ। ಗೋಷ್ಠಿಭಿ ವಾದಪರಮೋಹಕಲಾಸು ಕೇವಾ ಹಾರಾವಲಿ ನ ವಿವಿಧಾತಿ ವಿವಿಧಿಮಾನಮ್” ಹಾರಾಂ ೪।

ಪುರುಷೋತ್ತಮದೇವಕವಿಯು ಈ ಎರಡು ಕೋಶ ಗಳಲ್ಲದೆ “ವರ್ಣದೇಶನಾ” ಎಂಬ ಗ್ರಂಥವನ್ನೂ ಪಾಣಿನಿಯ ಅಷ್ಟಾಧ್ಯಾಯಿಗೆ “ಭಾಷಾವೃತ್ತಿಃ” ಎಂಬ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ವೊಂದನ್ನೂ ರಚಿಸಿರುತ್ತಾನೆ. ಮತ್ತು ಏಕಾಕ್ಷರಕೋಶ ಮತ್ತು ದ್ವಿರೂಪಕೋಶಗಳೆಂಬ ಎರಡು ಗ್ರಂಥಗಳೂ ಇವನಿಂದ ರಚಿತವೆಂದು ತಿಳಿಯಬರುವುದು.

**ಅನೇಕಾರ್ಥಸಮುಚ್ಚಯಃ** (ಶಾಸ್ತ್ರತಕೋಶಃ) — ಈ ಕೋಶವು ಶಾಸ್ತ್ರತಕವಿರಚಿತವಾದುದು. ಇತರ ಕೋಶಗಳಂತೆ ಈ ಕೋಶದಲ್ಲಿ ಯಾವುದೊಂದು ನಿಯಮವನ್ನೂ ಅನು ಸರಿಸಿಲ್ಲ. ಆದರೂ ಇದನ್ನು ಆರು ಭಾಗಗಳಾಗಿ ವಿಂಗಡಿಸಿ ಮೊದಲನೆಯ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಪೂರ್ಣಶ್ಲೋಕಗಳಿಂದಲೂ ಎರಡನೆಯ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಅರ್ಧಶ್ಲೋಕಗಳಿಂದಲೂ ಮೂರ ನೆಯ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಶ್ಲೋಕಪಾದದಿಂದಲೂ ಅರ್ಧವನ್ನು ವಿವರಿಸಿ ಈ ಮೂರು ಭಾಗಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಬಿಟ್ಟಿರುವ ಕೆಲವು ಶಬ್ದಗಳನ್ನು ನಾಲ್ಕನೆಯ ಭಾಗ (ಪರಿಶಿಷ್ಟ) ದಲ್ಲಿ “ಅಪಿ” ಶಬ್ದದ ಸಮುಚ್ಚಯದಿಂದ ಸೇರಿಸಿ ಅರ್ಧ ವಿವರಿಸಲಾಗಿದೆ. “ಅಪಿಶಬ್ದೇನ ಸಾಧ್ಯಂತೇ ಪೂರ್ವಾಚಾರ್ಯಾನುಸಾರತಃ। ವಿಸ್ಮೃತಾ ಯೇ ಪ್ರಮಾದೇನ ಕಥ್ಯಂತೇ ತೇಷುನಾ ಪುನಃ” ಎಂದು ನಾಲ್ಕನೆಯ ಭಾಗದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಕವಿಯು ಉಕ್ತಿಯಿರುವುದು. ಐದು ಮತ್ತು ಆರನೆಯ ಭಾಗಗಳಲ್ಲಿ ಅವ್ಯಯಶಬ್ದ ಗಳನ್ನು ಶ್ಲೋಕಾರ್ಥ ಮತ್ತು ಶ್ಲೋಕಪಾದಗಳಲ್ಲಿ ಕೊಡ ಲಾಗಿದೆ. “ಅಥಾವ್ಯಯಾ ನಿಬಂಧ್ಯಂತೇ ಶ್ಲೋಕಾರ್ಥೇನ ಸವಿಸ್ತರಮ್” ಎಂದು ಐದನೆಯ ಭಾಗದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲೂ “ಶ್ಲೋಕ-



ಪಾದೇರಿತೋ ವಕ್ಯೇ ಸ್ವಿತ್ ಸ್ವಾತ್ಪ್ರಶ್ನವಿಸ್ತಕ್ಯೋ:" ಎಂದು  
ಅರನೆಯ ಭಾಗದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲೂ ಕವಿಯು ಹೇಳಿರು  
ತ್ತಾನೆ. ಈ ಕವಿಯು ಸುಮಾರು ಅರನೆಯ ಶತಮಾನಕ್ಕೆ  
ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿದ್ದನೆಂದು ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ.

ಹಲಾಯುಧ, ವೈಜಯಂತಿ, ವಿಶ್ವಪ್ರಕಾಶ, ಮೇದಿನೀ  
ಕೋಶ ಮುಂತಾದ ಮುಖ್ಯ ಕೋಶಗಳ ವಿವರಕ್ಕೆ  
"ಅನುಬಂಧ:" ೨ ನೋಡಿ.

**ನಿರ್ವಹ ನಿರ್ವಹಣ** (ಪುಂ) ಉಜ್ಜ್ವಲವೆ, ತಿಕ್ಕುವೆ. ನಿ + ಷ್ಠ  
(ಸಂಭವೇ) "ಘ" (೩-೩-೧೮)। "ಅಖಿಲಂ ಹಿ ಹಿನಸ್ತಿ  
ಭವಂ ತರುಷಾನ್ತಾನಿರ್ವಹಜಾಲ:" ಕಿರಾಂ ೨-೫೧।

**ನಿರ್ವಹಣ ನಿರ್ವಹಣ** (ನಂ) 1. ಉಜ್ಜ್ವಲವೆ, ತಿಕ್ಕುವೆ.  
ನಿ+ಷ್ಠ (ಸಂಭವೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೫)। 2. ಅರೆಯು  
ವುದು, ಪುಡಿಮಾಡುವುದು. "ಯಥಾ ಹಿ ಕನಕಂ ಶುಭ್ರಂ  
ತಾಪಚ್ಛೇದನಿರ್ವಹಣಿ:" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ।

**ನಿರ್ವಹಣೀಯ ನಿರ್ವಹಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಉಜ್ಜಲ್ಪ  
ಡುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಕ್ಕಲ್ಪಡುವ. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಉಜ್ಜಲು  
ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಉಜ್ಜಬೇಕಾದ. ನಿ+ಷ್ಠ  
(ಸಂಭವೇ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬)।  
-ವರ್ಷಿತವ್ಯ: -ಘಟಿತವ್ಯ:।

**ನಿರ್ವಹತ ನಿರ್ವಹತ** (ವಿಂ) ಉಜ್ಜುತ್ತಿರುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ  
ತಿಕ್ಕುತ್ತಿರುವ. ನಿ+ಷ್ಠ (ಸಂಭವೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಂತಿ-ಘಟಿತ.

**ನಿರ್ವಹ್ಯ ನಿರ್ವಹ್ಯ** (ವಿಂ) ಉಜ್ಜಲ್ಪಡುವ, ತಿಕ್ಕಲ್ಪಡುವ.  
ನಿ + ಷ್ಠ (ಸಂಭವೇ) "ಞತ್" (೩-೧-೧೨೪)।

**ನಿರ್ವಹ ನಿರ್ವಹ** (ಪುಂ) 1. ಭೋಜನ, ಉಣ್ಣೆ. ನಿ + ಅದ  
(ಭಕ್ಷಣೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೬೦)। ಘಸ್ತು ಆದೇಶ: (೨-೪-೩೮)।  
"ಜಗ್ವಿಶ್ವಂ ಭೋಜನಮ್। ಜಮನಂ ಲೇಹ ಆಹಾರೋ ನಿರ್ವಹೋ ನ್ಯಾದ  
ಇತ್ಯಪಿ" ಅಮಂ। 2. ಆಹಾರವಸ್ತು.

**ನಿರ್ವಾತ ನಿರ್ವಾತ** (ಪುಂ) 1. ಏಟು, ಹೊಡೆತ. ನಿ + ಹನ  
(ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) ಭಾವೇ "ಘ" (೩-೩-೧೮)। ತಕಾರಾದೇಶ:  
(೭-೩-೩೨)। "ಜ್ಞಾನಿರ್ವಾತಕಠಿಣಾಙ್ಗುಲಿವೃಥಾ ಬಹ್ಯತಾ-  
ಮಮಯಾಚನಾಙ್ಗಲಿ:" ರಘುಂ ೧೧-೭೮। 2. ಒಂದು  
ಸ್ವರದಿಂದ ಇನ್ನೊಂದು ಸ್ವರವನ್ನು ನಿರೋಧಿಸುವುದು,  
ಉದಾತ್ತ ಮೊದಲಾದ ಸ್ವರವನ್ನು ತಡೆದು ಅನುದಾತ್ತ  
ಸ್ವರವನ್ನು ಹೇಳುವುದು. "ಉದಾತ್ತಾದಿಹನನಪೂರ್ವಕಮನುದಾತ್ತ-  
ಕರಣಂ ನಿರ್ವಾತ:" ಮನೋಂ। 3. ಅನುದಾತ್ತ ಸ್ವರ.  
"ಸಮಾನವಾಕ್ಯೇ ನಿರ್ವಾತಯುಷ್ಮದಸ್ಮದಾದೇಶಾಃ ವಕ್ತವ್ಯಾಃ"  
(ವಾಂ ೮-೧-೨೩)।

**ನಿರ್ವಾತಿ ನಿರ್ವಾತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಬ್ಬಿಣದ ಸುತ್ತಿಗೆ, ಚಮಚಿಗೆ.  
ನಿಹನ್ಯತೇಜಯಾ — ನಿ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಘ"  
(೩ಂ ೪-೧೨೪)।

**ನಿರ್ವಾಟ ನಿರ್ವಾಟ** (ನಂ) 1. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು. 2. ಘೋಷಣೆ,  
ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗಿ ಹೇಳುವುದು. ನಿ + ಷ್ಠಿರ್ (ಶಬ್ದೇ)  
"ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 3. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗಿ  
ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

**ನಿರ್ವಾಟ ನಿರ್ವಾಟ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಉಜ್ಜಲ್ಪಟ್ಟು. ನಿ+ಷ್ಠ  
(ಸಂಭವೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅರೆಯ  
ಲ್ಪಟ್ಟು, ಪುಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಅಡಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಶಕ್ತಿ  
ಕುಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ದಮನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. (ನಂ) 4. ಚೆನ್ನಾಗಿ  
ಉಜ್ಜುವೆ. 5. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪುಡಿಮಾಡುವೆ. ನಿ + ಷ್ಠ  
ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)।

**ನಿರ್ವಾಟ ನಿರ್ವಾಟ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಲಿನ ಗೊರಸು. 2. ಗರ್ದಭ,  
ಕತ್ತೆ. 3. ಹಂದಿ. 4. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. ನಿ + ಷ್ಠ  
(ಸಂಭವೇ) "ವನ್" (೩ಂ ೧-೧೫೧)। ನಿಪಾಂ।

**ನಿರ್ವಾತ ನಿರ್ವಾತ** (ಪುಂ) 1. ಅನರಣ್ಯರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.  
"ಅನರಣ್ಯಸುತೋ ನಿರ್ವಾತೋ ನಿರ್ವಾತಪುತ್ರೋ ಬಭೂವತು:" ಹರಿವಂಂ।  
(ವಿಂ) 2. ಒಬ್ಬನ ಅಧೀನದಲ್ಲಿರುವವನು, ಇನ್ನೊಬ್ಬ  
ನನ್ನು ಅಶ್ರಯಿಸಿರುವವನು. ನಿಹನ್ಯತೇ — ನಿ + ಹನ  
(ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಕ:" (ವಾಂ ೩-೩-೫೮)। "ನಿರ್ವಾತಸ್ಯ  
ಮೇ ಭರ್ತುನಿರ್ದೇಶರೋಕ್ಯಂ ದೇವಿ ಕ್ಷಮಸ್ವೇತಿ ಬಭೂವ ನಮ್ರ:" ರಘುಂ  
೧೪-೫೮। 3. ಗುಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಅಧಿಕ  
ಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ಪುನರ್ವಾದಿನಿರ್ವಾತಾಃ ಲಮ್ಯತೇ ಯತ್ಕಲಂ  
ಬುಧೇ:" ಸೂರ್ಯಸಿಂ ೩-೨೮। 4. ವಿಧೇಯ, ನಮ್ಮ, ಹೇಳಿ  
ದಂತೆ ನಡೆಯುವವನು.

**ನಿರ್ವಾತ ನಿರ್ವಾತ** (ವಿಂ) ಹೊಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಬಡಿಯು  
ತ್ತಿರುವ. ನಿ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
"ಬಾಹಂ ವಪುಷಿ ನಿರ್ವಾತಂ ಭವಿನಾಂ ನಿರ್ವಾತಾಂ ಮಿಥ:" ಕುಮಾಂ  
೧೬-೯। "ನಿರ್ವಾತ: ಪರಿನಿರ್ವಾತಂ ಮೃಗಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೩-೪೬।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಂತಿ-ಘಟಿತ.

**ನಿರ್ವಾತ ನಿರ್ವಾತ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪರಾಧೀನತೆ, ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಗೆ  
ಅಧೀನನಾಗಿರುವಿಕೆ. ನಿರ್ವಾತಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೫-೧-೧೧೯)।  
"ಶಿಷ್ಯಪಾನವಿಕ್ರೇಷು ವಧುನಾಂ ನಿರ್ವಾತಾಮುಪಗತೇಷು ವಪುಷು"  
ಕಿರಾಂ ೯-೭೩।

**ನಿರ್ವಾತ ನಿರ್ವಾತ** (ವಿಂ) 1. ಹೊಡೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದ.  
2. ಕೊಲ್ಲುವ ಸ್ವಭಾವದ. 3. ಸಂಹರಿಸಲು ಶಕ್ತನಾದ.  
ನಿ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಚಾನಶ್" (೩-೨-೧೨೯)।



“ನಿಷ್ಠಾನಂ ಶಾತ್ರವಾನ್ ರಾಮಂ ಕಥಂ ತ್ವಂ ನಾವಗच्छಸಿ” ಭट्टಿಂ  
೪-೮೧।

**ನಿಚಯ ನಿಚಯ** (ಪುಂ) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು, ರಾಶಿ.  
ನಿ + ಚಿ (ಚಯೇ) “ಅಚ್” (೩-೩-೪೬)। “ವಿಗಲಿತ-  
ಜಲಭಾರಶುಕ್ಲಮಾಸಾಂ ನಿಚಯ ಇವಾಮ್ಬುಮುಖಾ ನಗಾಧಿರಾಜಃ”  
ಕಿರಾಂ ೪-೩೭। 2. ನಿಶ್ಚಯ,

**ನಿಚಯಕ ನಿಚಯಕ** (ವಿಂ) ರಾಶಿ ಹಾಕುವುದರಲ್ಲಿ ಚತುರ  
ನಾದ, ಗುಡ್ಡೆ ಹಾಕುವುದರಲ್ಲಿ ನಿಪುಣನಾದ, ಒಟ್ಟು  
ಗೂಡಿಸುವುದರಲ್ಲಿ ಜಾಣನಾದ. ನಿಚಯೇ ಕುಶಲಃ “ಕನ್”  
(೪-೨-೬೪)।

**ನಿಚಯಿನ್ ನಿಚಯನ್** (ವಿಂ) ತುಂಬಿರುವ, ಸಮೃದ್ಧವಾದ,  
ಹೇರಳವಾದ. ನಿಚಯೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ—“ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೫)।  
“ನಿಚಯಿನಿ ಲವಲೀಲತಾವಿಕಾಸೇ ಜನಯತಿ ಲೋಧಸಮೀರಣೇ ಚ  
ಹರ್ಷಮ್” ಕಿರಾಂ ೧೦-೨೯।

**ನಿಚಾಯ ನಿಚಾಯ** (ಪುಂ) ಧಾನ್ಯದ ರಾಶಿ. ನಿ + ಚಿ (ಚಯೇ)  
“ಛನ್” (೩-೩-೨೦)। ತಪ್ಪುಲಾನಾಂ ನಿಚಾಯಃ  
ರಾಶಿಃ। ಏಕಸ್ತಪ್ಪುಲನಿಚಾಯಃ ಸಿಂ ಕೌಂ।

**ನಿಚಿಕಿ ನಿಚಿಕೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತಮವಾದ ಆಕಳು.

**ನಿಚಿತ ನಿಚಿತ** (ವಿಂ) 1. ರಾಶಿ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು, ಗುಡ್ಡೆ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ನಿ + ಚಿ (ಚಯೇ)  
“ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। 2. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ. “ಬಭೌ  
ಚಿರಂ ನಿಚಿತ ಇವಾಸೃಜಾಂ ಲವಃ” ಮಾಘಂ ೧೭-೧೪।  
3. ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟು. “ಅಶ್ವೇಂದ್ರಮಯುಖಖಂಡನಿಚಿತಂ ಪೀತಂ  
ನಿಶೀತೋತ್ಸವೇ ಯೇಲೀಲಾಪರೀರ್ಮದಾಯಿದಯಿತಾಗಣ್ಡುಷಶಂ ಮಧು”  
ಮಾಲತೀಂ ೮-೧೦। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತಾ-ತಾ. 4. ಒಂದು  
ನದಿ. “ಕೌಶಿಕೀಂ ತ್ರಿದಿವಾಂ ಕೃತ್ಯಾಂ ನಿಚಿತಾಂ ಲೋಹಿತಾರಣಿಮ್”  
ಭಾಂ ಭೀಷ್ಮಂ ೯-೧೮।

**ನಿಚಿಯಮಾನ ನಿಚೀಯಮಾನ** (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ  
ಹೊಂದಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ,  
ದೊಡ್ಡದಾಗಿ ಬೆಳೆಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಚಿ (ಚಯೇ)  
ಕರ್ಮಂ “ಶಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪)। “ನಿಚಿಯಮಾನೋ ನಾರೀಭಿ-  
ಮಾಲಿದ್ಯಕ್ಷತಾಡ್ಕುರೇ” ಭಾಗಂ ೧೦-೪೦-೪೦।

**ನಿಚುಲ ನಿಚುಲ** (ಪುಂ) 1. ನೀರು ಹಲಸಿನ ಗಿಡ. ನಿಚುಲತಿ  
—ನಿ + ಚುಲ (ಸಮುಚ್ಚ್ರಾಯೇ) “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೫)।  
2. ಮೇಲುಹೊದಿಕೆ. 3. ಹಾಸಿಗೆಯ ಮೇಲೆ ಹಾಸುವ  
ಬಟ್ಟೆ, ದುಪಟೆ. ನಿಚುಲಯತೇ—ನಿ + ಚುಲ “ಛನ್”  
(೩-೩-೧೯)। “ನಿಚುಲಸ್ತು ನಿಚುಲೇ ಸ್ಯಾದಿಜ್ಜಲಾಖ್ಯ-  
ಮಹೀಕ್ಷೇ” ಮೇದಿಂ।

**ನಿಚುಲಕ ನಿಚುಲಕ** (ನಂ) 1. ಮೇಲಿನ ಅಂಗಿ, ಹೆಂಗಸರ  
ಕುಪ್ಪಸದ ಆಕಾರದ ಕವಚ (ಅಂಗಿ). ನಿ + ಚುಲ “ಕುನ್”  
ಬಾಹುಂ। 2. ಮೇಲಿನ ಹೊದಿಕೆ.

**ನಿಚುಲಿತ ನಿಚುಲಿತ** (ವಿಂ) 1. ಹೊದಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಅಚ್ಚಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ನಿ + ಚುಲ (ಸಮುಚ್ಚ್ರಾಯೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)।  
“ಮೌಘ್ಯಾದಾಚ್ಛಮೋರ್ಧನಿಚುಲಿತಮಿವ ತಂ ಭೂಷಣಾಂ ಮಣಿನಾಮ್”  
ನೈಷಂ ೧೫-೮೨। 2. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟು, ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡಲ್ಪಟ್ಟು.  
“ಕುರ್ವಂತಿ ನಿಚುಲಿತಂ ಹಿಯಾ ಕಿಯತ್ಸೋಹದಾಹಿವೃತಸೋರಭಂ ಕಿಯತ್”  
ನೈಷಂ ೧೮-೪೨।

**ನಿಚೋಲ ನಿಚೋಲ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಲಿನ ಹೊದಿಕೆ, ಹಾಸಿಗೆಯ  
ಮೇಲೆ ಹಾಸುವ ದುಪಟೆ. ನಿ + ಚುಲ (ಸಮುಚ್ಚ್ರಾಯೇ) +  
ಞಿ “ಛನ್” (೩-೩-೧೯)। 2. ತೊಟ್ಟಲಿನ ಮೇಲೆ  
ಮುಚ್ಚುವ ಬಟ್ಟೆ, ತೊಟ್ಟಲಿನ ಸುತ್ತಲೂ ಕಟ್ಟುವ ಬಟ್ಟೆ.  
3. ಪೆಟ್ಟಿಗೆ. “ನಿಚೋಲಃ ಪ್ರಚ್ಛದಪಟೋ ನಿಚುಲಃ ಚೋತ್ತರಚ್ಛದಃ”  
ಅಮಿಂ ಚಿಂ।

**ನಿಚೋಲಕ ನಿಚೋಲಕ** (ಪುಂ) 1. ಹೆಂಗಸರ ಕುಪ್ಪಸದ  
ಆಕಾರದ ಕವಚ, ಮೇಲಿನ ಅಂಗಿ. ನಿಚುಲ ಇವ ಕಾಯತಿ—ಕಂ  
(ಶಬ್ದೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೪)। 2. ಪೆಟ್ಟಿಗೆ. “ನಿಚೋಲಕಃ  
ಸ್ಯಾತ್ ಕೂರ್ಪಾಸೋ ವಾರವಾಣಶ್ಚ ಕಚ್ಚುಕಃ” ಅಮಿಂ ಚಿಂ।

**ನಿಚ್ಛವಿ ನಿಚ್ಛವಿ** (ಪುಂ) ತೀರಭುಕ್ತ ದೇಶ, ತಿರ್ಹೂತವೆಂಬ  
ಒಂದು ಜಿಲ್ಲೆ. ನಿಚ್ಛವಿಯು “ಲಿಚ್ಛವಿ” ಪದದ ಅಪಭ್ರಂಶ.  
ತಿರ್ಹೂತವು “ತೀರಭುಕ್ತ” ಪದದ ಅಪಭ್ರಂಶ.

**ನಿಜ ನಿಜ** (ವಿಂ) 1. ತನ್ನದಾದ, ಸ್ವಕೀಯ. ನಿತರಾಂ  
ಜಾಯತೇ—ನಿ + ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) “ಜಃ” (೩-೨-೯೯)।  
“ಅಯಂ ನಿಜಃ ಪರೋ ವೇತಿ ಗಣನಾ ಲಘುಚೇತಸಾಮ್। ಉದಾರ-  
ಚರಿತಾನಾಂ ತು ವಸುಧೇವ ಕುಡುಂಬಕಮ್” ಪञ್ಚತಂ ೪-೩೮।  
“ನಿಜರಜಃ ಪಟವಾಸಮಿವಾಕಿರತ್ ಧೃತಪಟೋಪಮವಾರಿಮುಖಾಂ  
ದಿಶಾಮ್” ಮಾಘಂ ೬-೩೭। “ನಿಜಚ್ಛಾಯಾನುಕಾರಿಣಿ”  
ಯಾದಂ ೧೬-೧೨೨। 2. ನಿಸರ್ಗವಾದ, ಸ್ವಭಾವಸಿದ್ಧವಾದ.  
“ನಿಜೇನ ನೌತಂ ವಿಜಿತಾನ್ಯಗೌರವಂ ಗಂಭೀರತಾಂ ಧೈರ್ಯಗುಣೇನ ಭೂಯಸಾ”  
ಕಿರಾಂ ೧೪-೩೯। 3. ನಿತ್ಯವಾದ, ಸ್ಥಿರವಾದ, ಅಚಲ  
ವಾದ. “ನಿಜಂ ಸ್ವಕೀಯೇ ಚ ನಿಯತೇ ಚ” ಮೇದಿಂ।

**ನಿಜಪಕ್ಷ ನಿಜಪಕ್ಷ** (ಪುಂ) ತನ್ನ ಪಂಗಡ, ತನ್ನ ಕಕ್ಷೆ. ನಿಜಃ  
ಸ್ವಕೀಯಃ ಪಕ್ಷಃ।

**ನಿಜಸ್ವ ನಿಜಸ್ವ** (ನಂ) ಸ್ವಂತ ಆಸ್ತಿ, ಸ್ವಂತ ಸ್ವತ್ತು.

**ನಿಜಿಭಕ್ಷಾ ನಿಜಿಭಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಿಗ್ರಹಿಸುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ,  
ಶಿಕ್ಷಿಸುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ. ನಿ + ಭಹ (ಉಪಾದಾನೇ) + ಸನ್ “ಅಃ”  
(೩-೩-೧೦೨)।



**ನಿಜಿಘ್ನ ನಿಜಿಘ್ನ** (ವಿಂ) ನಿಗ್ರಹಿಸುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ  
ಯುಳ್ಳ, ಶಿಕ್ಷಿಸಲು ಇಷ್ಟವುಳ್ಳ. ನಿ+ಗ್ರಹ (उपादाने)+  
सन् "उः" (३-२-१६८)।

**ನಿಟಲ ನಿಟಲ** (ನಂ) 1. ಫಾಲ, ಹಣ. 2. ಅರಿಶನ.  
ನಿ + ಟಲ (वैकल्ये) "अच्" (३-१-१३४)। "ರಾಜಾ  
ನಿಟಲತತುಮ್ಬಿತನಿಜಚರಣಾಮ್ಬುಜೈಃ" ದಶಕುಂ। ನಿಟಲ  
ನಿಟಲ, ನಿಟಲ ನಿಟಲ ರೂಪಗಳೂ ಉಂಟು.

**ನಿಟಲಾಕ್ಷ ನಿಟಲಾಕ್ಷ** (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.  
ನಿಟಲೇ ಅಕ್ಷಿ ಅಸ್ಯ "अच्" (५-४-११३)। "ರೋಷಕ್ಷಣ  
ನಿಟಲಾಕ್ಷಣ ದೂರಿಕೃತಚೇತನೇ ಮಕರಕೇತನೇ" ದಶಕುಂ। ನಿಟಲಾಕ್ಷಃ  
ನಿಟಲಾಕ್ಷಃ, ನಿಟಲೇಕ್ಷಣಃ ನಿಟಲೇಕ್ಷಣಃ ಇತ್ಯಾದಿ ರೂಪ  
ಗಳೂ ಆಗುವುವು.

**ನಿಡಿನ ನಿಡೀನ** (ನಂ) ಆಹಾರವಸ್ತುವನ್ನು ನೋಡಿ ಪಕ್ಷಿ  
ಗಳು ಅದಕ್ಕಾಗಿ ಮೇಲಿನಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಹಾರುವುದು. ನಿಕೇ-  
ಡ್‌ನಿಮ್ — ಪೃಷೋಂ। ಪಕ್ಷಿಗಳ ನೂರ ಒಂದು ವಿಧ ಹಾರಾಟ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಇದು ಒಂದು ವಿಧ. ಪ್ರಡೀನಮ್ ತಡ್ಡೀನಮ್ ಅವಡೀನಮ್  
ಡೀನಮ್ ನಿಡೀನಮ್ ತಿಯೆಗಡೀನಮ್ ವಿಡೀನಮ್ ಪರಿಡೀನಮ್  
ಮುಂತಾದುವು ಪಕ್ಷಿಗಳ ಹಾರಾಟದ ಪ್ರಭೇದಗಳು.

**ನಿತಮ್ಬ ನಿತಂಬ** (ಪುಂ) 1. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಕಟಿಪಶ್ಚಾದ್ಯಾಗ,  
ಹೆಂಗಸರ ಪಿರೈ. ನಿತಮ್ಬತಿ—ನಿ+ತವಿ (गतौ) "अच्"  
(३-१-१३४)। "ತರ್ಣ್ಯಾಲಿಙ್ಗಿತಃ ಕಂಠೇ ನಿತಮ್ಬಸ್ಥಾನ-  
ಮಾಶ್ರಿತಃ"। 2. ಸೊಂಟ. "ಬ್ರಿಡಯಾ ಸಹ ವಿನಿವಿ ನಿತಮ್ಬಾ-  
ದಂಶುಕಂ ಶಿಶಿಲತಾಮುಪಪೇದೇ" ಕಿರಾಂ ९-४७। 3. ಪರ್ವತದ  
ತಪ್ಪಲು ಪ್ರದೇಶ. "ಸನಾಕವನಿತಂ ನಿತಮ್ಬರಚಿರಂ ಚಿರಂ  
ಸುನಿನದೇನದೇವತಮಮು" ಕಿರಾಂ ५-२७। 4. ನದಿಯ ತೀರ  
ಪ್ರದೇಶ. 5. ಹೆಗಲು, ಸ್ಕಂಧ. "ನಿತಮ್ಬಃ ಸ್ಕಂಧರೋಧಸೋಃ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಃ ಪಶ್ಚಾತ್ಕಟಾವದ್ರೇಃ ಕಟಕೇ ಕಟಿಮಾತ್ರಕೇ" ಮೇದಿಂ।

**ನಿತಮ್ಬಿನ್ ನಿತಂಬಿನ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಶಸ್ತಪಿರೈಗಳಿಂದ  
ಕೂಡಿದ. ನಿತಮ್ಬೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "इनिः" (५-२-११५)।  
"ಲೋಭ್ಯಮಾನನಯನಃಶಲಯಾಂಶುಕೇರ್ಮೇಖಲಾಗುಣಪದೇನಿತಮ್ಬಿಃ"  
ರಘುಂ १९-२६। "ಕಲತ್ರಭಾರೈಃ ಪುಲಿನಂ ನಿತಮ್ಬಿಃ"  
ಕಿರಾಂ ८-२९। (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಿತಮ್ಬಿನಿ ನಿತಂಬಿನೀ.  
2. ಪ್ರಶಸ್ತಪಿರೈಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹೆಂಗಸು. ಪ್ರಶಸ್ತೋ  
ನಿತಮ್ಬೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "इनिः" (५-२-११५)। "ಡೀಪ್"  
(४-१-५)। "ನಿತಮ್ಬಿನಿನಾ ಭುಷಮಾದಧೇ ಧೃತಿ ನಮಃ  
ಪ್ರಯಾಣಾದವನಿ ಪರಿಕ್ರಮಃ" ಕಿರಾಂ ८-३। 3. ಹೆಂಗಸು.

**ನಿತರಾಮ ನಿತರಾಮ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅತಿಶಯವಾಗಿ, ಅಧಿಕ  
ವಾಗಿ. ನಿ + ತರಪ್ "आमुः" (५-४-११)। "ಸದಃ

ಸ್ವಿಚ್ಛಯಮವಿರತೋತ್ಕಮ್ಪಲೋಲಾಙ್ಗುಲಿಕಃ ಪಾಣಿಲೇಖಾವಿಧಿಃ  
ನಿತರಾಂ ವರ್ತಂತೆ ಕಿಂ ಕರೋಮಿ" ಮಾಲತೀಂ १-३८।  
2. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ, ಸಮಗ್ರವಾಗಿ. "ಹೃದಿ ಲುಠಂತಿ ಕಲಾ  
ನಿತರಾಮಮವಿರಹಿಣಿವಿಧಪಕ್ಷುಕಲಕ್ಷಿತಾಃ" ನೈಷಂ ४-४७।

**ನಿತಲ ನಿತಲ** (ನಂ) ಸಪ್ತ ಪಾತಾಳಲೋಕಗಳಲ್ಲೊಂದು.  
ನಿಕ್ವುಲಂ ತಲಮಧೋಭಾಗಃ। "ಅತಲಂ ವಿತಲಂ ಚೈವ ನಿತಲಂ ಚ  
ಗಮಸ್ತಿಮತ್। ಮಾಹಾತ್ಯಂ ಸುತಲಂ ಚಾಪ್ರಥಮಂ ಪಾತಾಲಂ ಚಾಪಿ  
ಸಪ್ತಮಮ್" ವಿಷ್ಣುಪುಂ।

**ನಿತಾಂತ ನಿತಾಂತ** (ವಿಂ) 1. ಅತಿಶಯವಾದ, ಬಹಳ  
ಹೆಚ್ಚಾದ. ನಿತಾಮ್ಯತಿ ಸ್ಮ—ನಿ + ತಮ್ (काङ्क्षायाम्)  
कर्तुं "क्तः" (३-४-७२)। "ನಿರ್ದ್ರಾವಿನೋದಿತನಿತಾಂತ-  
ರತಿಕಲಮಾನಾಮಾಯಾಮಿಮಾಙ್ಗಲನಿನಾದವಿಬೋಧಿತಾನಾಮ್" ಕಿರಾಂ  
९-७५। (ಅವ್ಯಂ) 2. ಬಹಳವಾಗಿ, ಅತಿಶಯವಾಗಿ  
ಹೆಚ್ಚಾಗಿ. "ನಿತಾಂತಕಥಿನಾಂ ರಜಂ ಮಮ ನ ವೇದ ಸಾ ಮಾನಸೀಮ್"  
ವಿಕ್ರಂ २-११। "ನಿತಾಂತಮೋಘಾಕಿಲುಷಾ ದೃಗಂತಾಃ" ನೈಷಂ  
१०-४०।

**ನಿತ್ಯ ನಿತ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ. (ವಿಂ) 2. ಸಂತತವಾದ,  
ನಿರಂತರವಾದ, ಎಡೆಬಿಡದೆ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಯಾವಾ  
ಗಲೂ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ. ನಿಯತಂ ಭವಃ—ನಿ "त्यप्"  
(वा० ४-२-१०४)। "ವಿಜ್ಞಾಗುಣವೇದೇವ ನಿತ್ಯಾ ವೃತ್ತಿಃ  
ಸ್ವಯೋನಿಷು" ಮನುಂ २-२०६। 3. ನಿಯತವಾದ,  
ಕಟ್ಟಳೆಯ ಪ್ರಕಾರದ, ಐಚ್ಛಿಕವಲ್ಲದ, ಬಿಡದೆ ಅವಶ್ಯವಾಗಿ  
ಮಾಡಬೇಕಾದ (ನಿತ್ಯಕರ್ಮ). "ಅಹರಹಃ ಸಂಧ್ಯಾಮುಪಾ-  
ಸೀತ" ಎಂಬ ವಾಕ್ಯದಿಂದ ವಿಹಿತವಾದ ಸಂಧ್ಯಾವಂದ  
ನೆಯು ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಅವಶ್ಯ ಕರ್ತವ್ಯವಾದುದರಿಂದ ನಿತ್ಯ  
ಕರ್ಮವಾಯಿತು. ಅದನ್ನು ಆಚರಿಸದಿದ್ದರೆ ಪ್ರತ್ಯವಾಯು  
(ದೋಷ)ವುಂಟೆಂದು ಈ ವಿಧಿವಾಕ್ಯವು ಹೇಳುವುದು.  
ಗೃಹಸ್ಥನಿಗೆ ವಿಹಿತವಾದ ಕರ್ಮವು ನಿತ್ಯಮ್ ನೈಮಿತ್ತಿಕಮ್  
ಮತ್ತು ನಿತ್ಯನೈಮಿತ್ತಿಕಮ್ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ.  
ಸಂಧ್ಯಾವಂದನೆ, ಪಂಚಯಜ್ಞಗಳು, ಏಕಾದಶಿ ಉಪವಾಸ  
ಮುಂತಾದುವು ನಿತ್ಯಕರ್ಮಗಳು. ಮಕ್ಕಳ ಜಾತಕರ್ಮ  
ನಾಮಕರಣಾದಿಗಳು ನೈಮಿತ್ತಿಕ. ಪರ್ವಶ್ರಾದ್ಧ ಮೊದ  
ಲಾದುವು ನಿತ್ಯನೈಮಿತ್ತಿಕ. "ನಿತ್ಯಂ ನೈಮಿತ್ತಿಕಂ ಚೈವ  
ನಿತ್ಯನೈಮಿತ್ತಿಕಂ ತಥಾ। ಗೃಹಸ್ಥಸ್ಯ ತ್ರಿಧಾ ಕರ್ಮ ತನ್ನಿಶಾಮಯ  
ಪುತ್ರಕ। ಪञ्चयज्ञಾಶ್ರಿತಂ ನಿತ್ಯಂ ಯದೇತತ್ಕಥಿತಂ ತವ। ನೈಮಿತ್ತಿಕಂ  
ತಥಾ ಚಾನ್ಯತ್ ಪುತ್ರಜನ್ಮಕ್ರಿಯಾದಿಕಮ್। ನಿತ್ಯನೈಮಿತ್ತಿಕಂ  
ಜ್ಞೇಯಂ ಪರ್ವಶ್ರಾದ್ಧಾದಿ ಪಿಂಡಿತಃ" ಮಾರ್ಕಂ। 4. ಯಾವಾಗಲೂ  
ಇರುವ, ಉತ್ಪತ್ತಿ ಮತ್ತು ವಿನಾಶವಿಲ್ಲದ, ಸದಾತನವಾದ.  
ಯಥಾ—ವರ್ಣಾಃ, ಗಗನಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ। 5. ಶಾಶ್ವತವಾದ, ಸ್ಥಿರ



ವಾಗಿರುವ. "ದಮೋ ದಾನಂ ಕ್ಷಮಾ ಬುದ್ಧಿರ್ದೀರ್ಘತಿಸ್ತೇಜಃ उत्तमम् ।  
ನಿತ್ಯಾನ್ಯಾಸನ್ ಮಹಾಸತ್ವೇ ಶಾಂತನೀ ಪುರುಷರ್ಮಹೇ" ಭಾಂ ಆದಿಂ  
೧೦೭-೨। "ಶಾಶ್ವತಾನಶ್ವರೇ ನಿತ್ಯಂ ಧ್ರುವಮ್" ಅಭಿಂ ಚಿಂ ।  
"ನಿತ್ಯೌ ಸತತಶಾಶ್ವತೌ" ನಾನಾರ್ಥಂ । (ಅವ್ಯಂ) 6.  
ಯಾವಾಗಲೂ, ಸರ್ವಕಾಲದಲ್ಲಿಯೂ. "ತಂ ನಿತ್ಯಮನು-  
ರಕ್ತಾಸ್ಮಿ ಯಥಾ ಸೂರ್ಯ ಸುರ್ವಲಾ" ರಾಮಾಂ ।

**ನಿತ್ಯಕರ್ಮನ್ ನಿತ್ಯಕರ್ಮನ್** (ನಂ) ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಅವಶ್ಯ  
ವಾಗಿ ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯ. "ನಿತ್ಯ" ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.

**ನಿತ್ಯಕಾಲ ನಿತ್ಯಕಾಲ** (ಅವ್ಯಂ) ಯಾವಾಗಲೂ, ಸರ್ವ  
ಕಾಲದಲ್ಲಿಯೂ. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ವಿಪ್ರಸ್ತೀರ್ಥೇನ ನಿತ್ಯಕಾಲಮುಪ-  
ಸ್ಥೇತು" ಮನುಂ ೨-೫೮।

**ನಿತ್ಯಕಿಚ್ಛುರ ನಿತ್ಯಕಿಂಕರ** (ಛಂ) 1. ನಿತ್ಯಮುಕ್ತನಾಗಿ  
ಪರಮಾತ್ಮನ ನಿರವಧಿಕ ಕೈಂಕರ್ಯ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯವನ್ನು  
ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿರುವ ಜೀವ. ನಿತ್ಯ ಕಿಚ್ಛುರ: उत्तरावधि-  
रहितकैङ्कर्यसाम्राज्यवान् । 2. ಸರ್ವಕಾಲದಲ್ಲಿಯೂ  
ದಾಸ (ಸೇವಕ) ನಾಗಿರುವವನು.

**ನಿತ್ಯಕೃತ್ಯ ನಿತ್ಯಕೃತ್ಯ** (ನಂ) ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ  
ಕಾರ್ಯ, ಸಂಧ್ಯಾವಂದನೆ, ಪಂಚಯಜ್ಞಗಳು ಮುಂತಾದುವು.

**ನಿತ್ಯಕ್ಷೌರ ನಿತ್ಯಕ್ಷೌರ** (ನಂ) ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತಕಾಲ ಬಿಟ್ಟು  
ಮಾಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಕ್ಷೌರ, ಸೌಂದರ್ಯವೃದ್ಧಿಗಾಗಿ ನಡೆ  
ಯುವ ಕ್ಷೌರ. ಇಂತಹ ಕ್ಷೌರವು ಜೊಡಾಕರ್ಮಕ್ಕೆ ವಿಹಿತ  
ವಾದ ತಿಥಿ, ನಕ್ಷತ್ರ ಮತ್ತು ವಾರಗಳಲ್ಲಿ ನಡೆಯಬೇಕು.  
"ಚೂಡಾದಿತೇ ತಿಥಾವಕ್ಷೇ ಬುಧೇಂದ್ರೋದಿವಸೇ ನರಃ । ನಿತ್ಯಕ್ಷೌರಂ  
ಪ್ರಕುರ್ವೀತ ಜನ್ಮಮಾಸೇ ನ ತು ಕ್ವಚಿತ್" ।

**ನಿತ್ಯಗತಿ ನಿತ್ಯಗತಿ** (ಛಂ) ಯಾವಾಗಲೂ ಸಂಚರಿಸು  
ತ್ತಿರುವ ವಾಯು. ನಿತ್ಯ ಗತಿರಸ್ಯ । "ಯಥಾ ವಾಯುನಿತ್ಯಗತಿ-  
ರ್ಜಲದಾನ್ ಶತಶೋಮ್ಬರೇ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ।

**ನಿತ್ಯತ್ವ ನಿತ್ಯತ್ವ** (ನಂ) 1. ಶಾಶ್ವತವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಯಾವಾ  
ಗಲೂ ಇರುವಿಕೆ. 2. ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಎಡೆಬಿಡದೆ  
ಇರುವಿಕೆ.

**ನಿತ್ಯದಾ ನಿತ್ಯದಾ** (ಅವ್ಯಂ) ಯಾವಾಗಲೂ, ಸರ್ವಕಾಲ  
ದಲ್ಲಿಯೂ. ನಿತ್ಯ "ದಾ" । "त्वमग्ने सर्वभूतानामन्त-  
श्चरसि निತ್ಯದಾ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೫-೨೮ ।

**ನಿತ್ಯದಾನ ನಿತ್ಯದಾನ** (ನಂ) ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಮಾಡಬೇಕಾದ  
ದಾನ. ನಿತ್ಯಮ್, ನೈಮಿತ್ತಿಕಂ ಮತ್ತು ಕಾಮ್ಯಮ್ ಎಂದು  
ದಾನವು ಮೂರು ವಿಧ. ಪ್ರತಿಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದೆ ಪ್ರತಿ  
ದಿನವೂ ಮಾಡುವುದು ನಿತ್ಯದಾನ. "ನಿತ್ಯಂ ನೈಮಿತ್ತಿಕಂ

ಕಾಮ್ಯಂ ತ್ರಿವಿಧಂ ದಾನಮಿಷ್ಯತೇ । ಅಹನ್ಯಹನಿ ಯದ್ವಿಪ್ರ ! ದೀಯತೇ-  
ನುಪಕಾರಿಣೇ । ಅನುದಿಷ್ಯ ಫಲಂ ತತ್ಸ್ಯಾತ್ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ತು  
ನಿತ್ಯಕಮ್" ।

**ನಿತ್ಯನೈಮಿತ್ತಿಕ ನಿತ್ಯನೈಮಿತ್ತಿಕ** (ವಿಂ) ನಿತ್ಯವಾದ ಮತ್ತು  
ನೈಮಿತ್ತಿಕವೂ ಆದ ಕರ್ಮ, ಪರ್ವಶ್ರಾದ್ಧ ಮೊದಲಾದ  
ಕರ್ಮ. ಪರ್ವಕಾಲವು ನಿಮಿತ್ತವಾದುದರಿಂದ ಪರ್ವ  
ಶ್ರಾದ್ಧವು ನೈಮಿತ್ತಿಕ. ಅದು ಅವಶ್ಯಕರ್ತವ್ಯವಾದುದ  
ರಿಂದ ನಿತ್ಯ. ಅದುದರಿಂದ ಪರ್ವಶ್ರಾದ್ಧಾದಿಗಳು ನಿತ್ಯ  
ನೈಮಿತ್ತಿಕಗಳು. "ನಿತ್ಯನೈಮಿತ್ತಿಕಂ ಜ್ಞೇಯಂ ಪರ್ವಶ್ರಾದ್ಧಾದಿ  
ಪಿಂಡಿತೈಃ" ।

**ನಿತ್ಯಪುಷ್ಪ ನಿತ್ಯಪುಷ್ಪ** (ವಿಂ) 1. ಯಾವಾಗಲೂ ಸಮೃದ್ಧಿ  
ಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ, ಸರ್ವಕಾಲದಲ್ಲಿಯೂ ಪರಿಪೂರ್ಣ  
ವಾಗಿರುವ. ನಿತ್ಯ ಪುಷ್ಪಃ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪುಷ್ಪಾ -ಪುಷ್ಪಾ.  
2. ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿ. ವಿಭೂತಾದಿ ಗುಣಗಳಿಂದ ಸರ್ವದಾ  
ಪರಿಪೂರ್ಣವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಲಕ್ಷ್ಮಿಯು ನಿತ್ಯಪುಷ್ಪಳು.  
"ಗಂಧದ್ವಾರಾ ದುರಾಧರ್ಷಾ ನಿತ್ಯಪುಷ್ಪಾ ಕರೀಷಿಣಿಮ್" ಶ್ರುತಿಃ ।

**ನಿತ್ಯಪ್ರಲಯ ನಿತ್ಯಪ್ರಲಯ** (ಛಂ) ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಪ್ರಳಯ  
ಗಳಿಲ್ಲೊಂದು. ನಿತ್ಯ: ಪ್ರಲಯಃ । ನೈಮಿತ್ತಿಕಃ, ಪ್ರಾಕೃತಿಕಃ,  
ಆತ್ಮಾಂತಿಕಃ ಮತ್ತು ನಿತ್ಯಃ ಎಂದು ಪ್ರಳಯವು ನಾಲ್ಕು  
ವಿಧ. "ನೈಮಿತ್ತಿಕಃ ಪ್ರಾಕೃತಿಕಸ್ತಥೇವಾತ್ಮಾಂತಿಕೋ ದ್ವಿಜ ।  
ನಿತ್ಯಶ್ಚ ಸರ್ವಭೂತಾನಾಂ ಪ್ರಲಯೋಽಯಂ ಚತುರ್ವಿಧಃ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ  
೧-೭-೪೧ । ಬ್ರಹ್ಮಾದಿ ಸಮಸ್ತ ಶರೀರಗಳಲ್ಲೂ ಯಾವಾ  
ಗಲೂ ಪರಿಣಾಮವುಂಟಾಗುತ್ತಿರುವುದರಿಂದ ಪೂರ್ವಾವಸ್ಥೆ  
ಯನ್ನು ಬಿಡುವುದು ನಿತ್ಯಪ್ರಳಯ. ಉತ್ತರಾವಸ್ಥೆಯನ್ನು  
ಪಡೆಯುವುದು ನಿತ್ಯೋತ್ಪತ್ತಿ. ಅದುದರಿಂದ ನಿರಂತರ  
ವಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿ ಬೆಳೆಯುತ್ತಿರುವ ಸಮಸ್ತ ಭೂತಗಳಲ್ಲಿಯೂ  
ಹಗಲು ರಾತ್ರಿ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ ವಿನಾಶವೇ ನಿತ್ಯಪ್ರಳಯ.  
"ನಿತ್ಯಃ ಸದೇವ ಜಾತಾನಾಂ ಯೋ ವಿನಾಶೋ ದಿವಾನಿಶಮ್" ವಿಷ್ಣುಪುಂ  
೧-೭-೪೩ । "ನಿತ್ಯದಾ ಸರ್ವಭೂತಾನಾಂ ಬ್ರಹ್ಮಾದೀನಾಂ ಪರಂತಪ ।  
ಉತ್ಪತ್ತಿಪ್ರಲಯಾವೇಕೇ ಸೂಕ್ಷಮಜ್ಞಾಃ ಸಮ್ಪ್ರಚಕ್ಷತೇ" ಭಾಗಂ ೧೨-೪-೩೫ ।

**ನಿತ್ಯಮುಕ್ತ ನಿತ್ಯಮುಕ್ತ** (ಛಂ) 1. ಯಾವಾಗಲೂ ಪ್ರಕೃತಿ  
ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ ಶುದ್ಧಸತ್ತ್ವನಾದ ಪರಮಾತ್ಮ. ನಿತ್ಯ  
ಮುಕ್ತಃ । 2. ಸಂಸಾರ ಬಂಧನಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗದೆ ಅನವರತವೂ  
ಪರಮಾತ್ಮನ ಕೈಂಕರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾಗಿರುವ ಜೀವ.

**ನಿತ್ಯಯುಕ್ತ ನಿತ್ಯಯುಕ್ತ** (ವಿಂ) ಅನವರತವೂ ಪರಮಾತ್ಮ  
ನಲ್ಲಿಯೇ ನಿಷ್ಠೆಯುಳ್ಳವನು, ಜ್ಞಾನಿ. ನಿತ್ಯ ಯುಕ್ತಃ । ಜ್ಞಾನಿ  
ಯಾದವನಿಗೆ ಶುದ್ಧಾತ್ಮಾನುಭವರೂಪವಾದ ಜ್ಞಾನವು  
ನಿರಂತರವೂ ಇರುವುದರಿಂದ ನಿತ್ಯಯುಕ್ತನು. ಇತರರಿಗೆ



ಅಭೀಷ್ಟಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿಪರ್ಯಂತ ಮಾತ್ರ ಯೋಗವಿರು  
ವುದರಿಂದ ಅವರಲ್ಲಿ ನಿತ್ಯಯುಕ್ತನಾದ ಜ್ಞಾನಿಯೇ  
ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಪರಮಪ್ರಿಯನು. "ತೇಷಾಂ ಜ್ಞಾನಿ ನಿತ್ಯಯುಕ್ತಃ  
ಏಕಮಕ್ತಿವಿಶಿಷ್ಯತೇ। ಪ್ರಿಯೋ ಹಿ ಜ್ಞಾನಿನೋಽಪ್ಯಯಮಹಂ ಸ ಚ  
ಮಮ ಪ್ರಿಯಃ" ಗೀತಾ ೭-೧೭। "ತಸ್ಯಾಹಂ ಸುಲಭಃ ಪಾರ್ಥ ನಿತ್ಯ-  
ಯುಕ್ತಸ್ಯ ಯೋಗಿನಃ" ಗೀತಾ ೮-೧೪।

**ನಿತ್ಯಯೌವನ ನಿತ್ಯಯೌವನ (ವಿಂ)** 1. ಯಾವಾಗಲೂ  
ತಾರುಣ್ಯವುಳ್ಳವನು, ಎಂದೆಂದಿಗೂ ಪ್ರಾಯದವನಾಗಿರು  
ವವನು. ನಿತ್ಯಂ ಯೌವನಂ ಯಸ್ಯ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಯೌವನಾ-  
-ಯೌವನಾ. 2. ದ್ರೌಪದಿ. "ಪಾಂಚಾಲಿ ಪಾರ್ಥಿವೀ ಕೃಷ್ಣಾ  
ವೇದಿಜಾ ನಿತ್ಯಯೌವನಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। (ನಂ) 3. ಸರ್ವ  
ಕಾಲದಲ್ಲಿಯೂ ಇರುವ ಯೌವನ.

**ನಿತ್ಯವೈಕುಂಠ ನಿತ್ಯವೈಕುಂಠ (ಫಂ)** ಪರಮಪದ, ಮಹಾ  
ವಿಷ್ಣುವಿನ ಸ್ಥಾನ, ವೈಕುಂಠಲೋಕ. ನಿತ್ಯಃ ಸದಾತನಃ  
ವೈಕುಂಠಃ। ಈ ಲೋಕವು ಅಂತರಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಉರ್ಧ್ವಭಾಗದಲ್ಲಿ  
ರುವುದು. ಅನರ್ಘ್ಯರತ್ನರಾಶಿಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ  
ಈ ಲೋಕವು ಆಕಾಶದಷ್ಟೂ ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿರುವುದು.  
ಇಲ್ಲಿ ವನಮಾಲಿಯೂ ಚತುರ್ಭುಜನೂ ಆದ ಶ್ರೀ  
ಮಹಾವಿಷ್ಣುವು ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮೀ ಸರಸ್ವತೀ ಗಂಗಾ ತುಲಸೀ  
ಸಮೇತನಾಗಿಯೂ ಸುನಂದ ನಂದ ಕುಮುದಾದಿಗಳಿಂದಲೂ  
ಭಕ್ತಾಗ್ರೇಸರರಾದ ಭಾಗವತರಿಂದಲೂ ಸೇವಿಸಲ್ಪಡುವವ  
ನಾಗಿಯೂ ಭಕ್ತಾನುಗ್ರಹಕಾರಕನಾಗಿಯೂ ವಿರಾಜಿಸು  
ತ್ತಿರುವನು. "ವೈಕುಂಠೇ ತು ಪರೇ ಲೋಕೇ ಶ್ರಿಯಾ ಸಾರ್ಥಂ ಜಗತ್ಪತಿಃ।  
ಆಸ್ತೇ ವಿಷ್ಣುರಚಿಂತ್ಯಾತ್ಮಾ ಭಕ್ತೇಭಿರ್ಗವತೈಃ ಸಹ"। "ಋಷಿ  
ನಭಸಿ ಸಂವಿಷ್ಟೋ ನಿತ್ಯವೈಕುಂಠ ಏವ ಚ। ಆತ್ಮಾಕಾಶಸಮೋ  
ನಿತ್ಯೋ ವಿಸ್ತೃತಃ ಸ್ವಚ್ಛಂದೋ ಬಿಂಬವತ್। ಇಂದ್ರೇಚ್ಛಾಸಮುತ್ಪನ್ನೋ  
ನಿರಲಕ್ಷ್ಯಃ ನಿರಾಶ್ರಯಃ। ಆಕಾಶವತ್ ಸುವಿಸ್ತಾರಃ ಸಾಮೂಹ-  
ರತ್ನನಿರ್ಮಿತಃ। ತತ್ರ ನಾರಾಯಣಃ ಶ್ರೀಮಾನ್ ವನಮಾಲಿ ಚತುರ್ಭುಜಃ।  
ಲಕ್ಷ್ಮೀಸರಸ್ವತೀಗಜ್ಞಾತುಲಸೀಪತಿರೀಶ್ವರಃ। ಸುನಂದನಂದಕುಮು-  
ದಾರ್ಪದಾದಿಭಿರನ್ವಿತಃ। ಸರ್ವೇಶಃ ಸರ್ವಸಿದ್ಧಿಶೋ ಭಕ್ತಾನುಗ್ರಹ-  
ಕಾರಕಃ" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ।

**ನಿತ್ಯಶಸ್ ನಿತ್ಯಶಸ್ (ಅಖ್ಯಂ)** ಯಾವಾಗಲೂ, ಎಂದೆಂದಿಗೂ.  
ನಿತ್ಯ "ಶಸ್" (೪-೪-೪೩)। "ತೇಭ್ಯೋಽಧಿಗच्छೇದಿನಯಂ  
ವಿನಿರ್ಜಿತಾತ್ಮಾಪಿ ನಿತ್ಯಶಃ" ಮನುಂ ೭-೩೯।

**ನಿತ್ಯಸತ್ತ್ವಸ್ಯ ನಿತ್ಯಸತ್ತ್ವಸ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಸರ್ವದಾ ಸತ್ತ್ವ  
ಗುಣದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು, ರಜಸ್ಸು ಮತ್ತು ತಮೋಗುಣ  
ಗಳ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದೆ ಶುದ್ಧಸತ್ತ್ವದ ಪ್ರಾಚುರ್ಯವುಳ್ಳ  
ವನು. ನಿತ್ಯಂ ಸತ್ತ್ವೇ ಸತ್ತ್ವಗುಣೇ ತಿಷ್ಠತಿ-ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ)  
"ಕಃ" (೩-೨-೪)। "ನಿರ್ದಿಷ್ಟೋ ನಿತ್ಯಸತ್ತ್ವಸ್ಯೋ ನಿಯೋಗೋಮ

ಆತ್ಮವಾನ್" ಗೀತಾ ೨-೪೫। 2. ಯಾವಾಗಲೂ ಧೈರ್ಯ  
ಶಾಲಿಯಾಗಿರುವ. ನಿತ್ಯಂ ಸತ್ತ್ವೇ ಧೈರ್ಯೇ ತಿಷ್ಠತಿ-ಷ್ಠಾ "ಕಃ"।

**ನಿತ್ಯಸಮಾಸ ನಿತ್ಯಸಮಾಸ (ಫಂ)** ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ  
ಉಕ್ತವಾದ ಸಮಾಸಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ವಿಧ. ಮಹಿಕಾಢಾ ನಿಃ,  
ನ ಸುರಃ ಇತ್ಯಾದಿ ವಿಗ್ರಹ ವಾಕ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ವಿಭಕ್ತಿಗಳನ್ನು  
ಮಾತ್ರ ತೋರಿಸುವುದರಿಂದ ಸಮಸ್ತಪದದ ಅರ್ಥ  
ಬೋಧವಾಗದಿರುವುದರಿಂದ ನಿರ್ಮಾಪಕಃ ಅಸುರಃ ಎಂದು  
ನಿತ್ಯಸಮಾಸವಿರಬೇಕು.

**ನಿತ್ಯಹೋತೃ ನಿತ್ಯಹೋತೃ (ವಿಂ)** ಯಾವಾಗಲೂ ಹೋಮ  
ಮಾಡುವವನು, ಎಂದೆಂದಿಗೂ ಯಾಗ ಮಾಡುವವನು.

**ನಿತ್ಯಹೋಮ ನಿತ್ಯಹೋಮ (ಫಂ)** ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಮಾಡ  
ಬೇಕಾದ ಹೋಮ, ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರ, ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯ. ನಿತ್ಯಂ  
ಪ್ರತಿದಿನಂ ಕರ್ತವ್ಯಂ ಹೋಮಃ।

**ನಿತ್ಯಾ ನಿತ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮನಸಾದೇವಿ, ಕಶ್ಯಪನ ಮಗಳು,  
ಅನನ್ತನಾಗರಾಜನ ಸಹೋದರಿ, ಜರತ್ಕಾರು ಮಹರ್ಷಿಯ  
ಪತ್ನಿ, ಅಸ್ತಿತ್ವ ಮಹರ್ಷಿಯ ತಾಯಿ. 2. ಪಾರ್ವತಿ.

**ನಿತ್ಯಾನಧ್ಯಾಯ ನಿತ್ಯಾನಧ್ಯಾಯ (ಫಂ)** ವೇದಪಾಠಕ್ಕೆ  
ಸರ್ವಥಾ ನಿಷಿದ್ಧವಾದ ಕಾಲ,

**ನಿತ್ಯಾಭಿಯುಕ್ತ ನಿತ್ಯಾಭಿಯುಕ್ತ (ವಿಂ)** ಸರ್ವಕಾಲ  
ದಲ್ಲಿಯೂ ಅಸಕ್ತಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ, ಸರ್ವದಾ ನಿಷ್ಠೆ  
ಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವ. ನಿತ್ಯಂ ಸರ್ವದಾ ಅಭಿ ಸಮಂತಾತ್ ಯುಕ್ತಃ  
ಯೋ ವ್ಯಾಪೃತಃ। "ಅನನ್ಯಾಶ್ಚಿಂತಯಂತೋ ಮಾಂ ಯೇ ಜನಾಃ  
ಪರ್ಯುಪಾಸತೇ। ತೇಷಾಂ ನಿತ್ಯಾಭಿಯುಕ್ತಾನಾಂ ಯೋಗೋಮಂ ಬಹುಮಹಿಮ್"  
ಗೀತಾ ೯-೨೨।

**ನಿರ್ದಧತ್ ನಿರ್ದಧತ್ (ವಿಂ)** ಇಡುತ್ತಿರುವ, ಇರಿಸುತ್ತಿರುವ.  
ನಿ+ಙ್ ಧಾತ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ದಧತೀ -ದಧತೀ, "ಶಾನತ್"  
(೩-೨-೧೨೪)। -ದಧಾನಃ -ದಧಾನಃ. "ವಸಾನಃ ಕೌಪೀನಂ  
ಶಿರಸಿ ನಿರ್ದಧಾನೋಽಜ್ಜಲಿಪುಟಮ್" ಭರ್ತಂ ೩-೮೭।

**ನಿರ್ದರ್ಶನ ನಿರ್ದರ್ಶನ (ನಂ)** 1. ಉದಾಹರಣೆ, ದೃಷ್ಟಾಂತ.  
ನಿ+ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ನಿರ್ದರ್ಶನ-  
ಮಸಾರಾಣಾಂ ಲಘುಬಂಧುತುಂ ನರಃ" ಮಾಘಂ ೨-೫೦। (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ದರ್ಶನಾ -ದರ್ಶನಾ. 2. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ,  
ನಿರ್ದರ್ಶನಾಲಂಕಾರ. ಸಮಾನವಾದ ಎರಡು ವಾಕ್ಯಾರ್ಥ  
ಗಳಿಗೆ ಅಭೇದಾರೋಪವು ನಿರ್ದರ್ಶನಾಲಂಕಾರವಾಗುವುದು.  
ಇದರ ಉಕ್ತೆಣಃ "ವಾಕ್ಯಾರ್ಥಯೋಃ ಸದೃಶಯೋರೇಕಾರೋಪೋ  
ನಿರ್ದರ್ಶನಾ"। "ಯದ್ವಾತುಃ ಸೌಮ್ಯತಾ ಸೇಯಂ ಪೂರ್ಣೇಂದೋರಕಲಚ್ಛತಾ"।  
ಇಲ್ಲಿ ದಾನಮಾಡುವವನಲ್ಲಿ ಸೌಮ್ಯತ್ವ ಮತ್ತು ಪೂರ್ಣ



ಚಂದ್ರನಲ್ಲಿ ಕಳಂಕಶೂನ್ಯತ್ವರೂಪವಾದ ಎರಡು ವಾಕ್ಯಾರ್ಥಗಳಿಗೂ ಯತ್ ತತ್ ಶಬ್ದಗಳಿಂದ ಅಭೇದಾರೋಪವಿರುವುದರಿಂದ ನಿರ್ದರ್ಶನಾಲಂಕಾರ. ಇದು ವಾಕ್ಯಾರ್ಥವೃತ್ತಿ. ಒಂದು ಪದಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ಮತ್ತೊಂದರ ಧರ್ಮಾರೋಪವು ಪದಾರ್ಥವೃತ್ತಿನಿರ್ದರ್ಶನಾಲಂಕಾರ. “ತ್ವನ್ನೇತ್ರಯುಗಲಂ ಧತ್ತೇ ಲೀಲಾಂ ನಾಲಾಂಬುಜನಮನೋ:” ಇಲ್ಲಿ ನೇತ್ರಯುಗಲದಲ್ಲಿ ನೀಲೋತ್ಪಲದ ಲೀಲಾರೂಪವಾದ ಧರ್ಮಾರೋಪ ವರ್ಣಿತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಪದಾರ್ಥವೃತ್ತಿನಿರ್ದರ್ಶನಾಲಂಕಾರ. ಯಾವುದಾದರೊಂದು ವಿಶಿಷ್ಟವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ ಸದರ್ಥ ಅಥವಾ ಅಸದರ್ಥ ಬೋಧನೆ ಯಾಗುವಲ್ಲಿಯೂ ನಿರ್ದರ್ಶನಾಲಂಕಾರವಾಗುವುದು. “ಅಪರಾಂ ಬೋಧನಂ ಪ್ರಾಹು: ಕ್ರಿಯಾಸ್ತತ್ಸದರ್ಥಯೋ: ನಶ್ಯೇದ್ರಾಜವಿರೋಧಿತಿ ಕ್ಷೀಣಂ ಚಂದ್ರೋದಯೇ ತಮ: | ತದಯನ್ನೇವ ಸವಿತಾ ಪದ್ಮೇಷ್ವರಪಯತಿ ಶ್ರಿಯಮ್ | ವಿಭಾವಯನ್ ಸಮೃದ್ಧಿನಾಂ ಫಲಂ ಸುಹೃದನುಗ್ರಹ:” ಚಂದ್ರಾಂ | ಹೀಗೆ ನಿರ್ದರ್ಶನಾಲಂಕಾರ ಮೂರು ವಿಧ.

**ನಿರ್ದೇಶನೀಯ ನಿರ್ದರ್ಶನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಉದಾಹರಣೆ ಕೊಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ದೃಷ್ಟಾಂತ ಹೇಳಲು ಅರ್ಹವಾದ. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ನಿ + ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) “ಅನೀಯರ್” (3-1-96). “ಅನರ್ಥಮಾಂ ಹರಿನೀಲರತ್ನಂ ಲಕ್ಷ್ಮೀದೃಶಾ ನಿಯತನಿರ್ದೇಶನೀಯಮ್” ಯಾದಂ 18-106. “ತವ್ಯ:” | -ದರ್ಶಯಿತವ್ಯ: -ದರ್ಶಯಿತವ್ಯ:.

**ನಿರ್ದೇಶಯತ್ ನಿರ್ದರ್ಶಯತ್** (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ತೋರಿಸುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) + ಣಿಕ್ “ಶತ್” (3-2-124). “ಯುಗಪದಖಿಲಮಾದರೇಣ ಸಾಕ್ಷಾಧ್ಯವತಿಜನಸ್ಯ ನಿರ್ದೇಶಯನ್ ಮುಕುಂದ:” ಯಾದಂ 24-22.

**ನಿರ್ದೇಶಿತ ನಿರ್ದರ್ಶಿತ** (ವಿಂ) 1. ದೃಷ್ಟಾಂತ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಉದಾಹರಣೆಯಾಗಿ ಎತ್ತಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) “ಕ್ತ:” (3-2-102). “ನಿರ್ದೇಶಯಿ ಕನ್ಯಾಕಾಸ್ತತ್ರ ನಿರ್ದೇಶಿತಪರಸ್ಪರಾ: | ಅಮುರಾಭಿಜ್ಞಸುಭಗಾ ನಿವೀರಿವ ರತೇ: ಶುಭ:” ಯಾದಂ 16-136.

**ನಿರ್ದಾಘ ನಿರ್ದಾಘ** (ಪುಂ) 1. ಗ್ರೀಷ್ಮಕಾಲ. ಬೇಸಿಗೆಕಾಲ. ನಿದಾಘಂ ದಹತೇತ್ರ — ನಿ + ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣೇ) ಅಧಿಂ “ಘ” (3-3-121). “ಕಲಾಂತಜಲರುಹಲತಾ: ಸರಸೀವಿದಧೇ ನಿರ್ದಾಘ ಇವ ಸತ್ವಸಂಪಲವ:” ಕಿರಾಂ 12-41. 2. ಉಷ್ಣ, ಬಿಸಿ, ಕಾಪು. “ನಿರ್ದಾಘಮಿವ ಪರ್ಜನ್ಯೋ ನಿರಾಸೇ ಸಾತ್ಯಕಿ: ಪರಮ್” ಯಾದಂ 22-200. 3. ಸ್ವೇದೋದಕ, ಬೆವರು. “ನಿರ್ವಾಪಯಿಷ್ಯನ್ನಿವ ರೋಷತಪ್ತಂ ಪ್ರಸ್ನಾಪಯಾಮಾಸ ಮುಖಂ ನಿರ್ದಾಘ:” ಕಿರಾಂ 17-6. (ವಿಂ) 4. ಉಷ್ಣವಾದ, ಬಿಸಿಯಾದ.

**ನಿರ್ದಾಘಕರ ನಿರ್ದಾಘಕರ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ನಿರ್ದಾಘಾ: ತುಷ್ಣಾ: ಕರಾ: ಅಸ್ಯ | “ಖಗಪತಃ ಪವಿತ್ರಯನ್ಮಗ್ನಿಭಾನವೋ ಹರಿಭಗೇನನಿರ್ದಾಘಕರಾದ್ರಯ:” ಹಾರಾಂ | 2. ಅರ್ಹವ್ಯಕ್ತ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

**ನಿರ್ದಾಘಕಾಲ ನಿರ್ದಾಘಕಾಲ** (ಪುಂ) ಗ್ರೀಷ್ಮಯುತು, ಬೇಸಿಗೆ ಕಾಲ.

**ನಿರ್ದಾಘಧಾಮನ್ ನಿರ್ದಾಘಧಾಮನ್** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ನಿರ್ದಾಘಮುಷ್ಣಂ ಧಾಮ ಯಸ್ಯ | “ನಿರ್ದಾಘಧಾಮಾನಮಿವಾಧಿ-ದೀಪ್ತಿಮು ದಾ ವಿಕಾಸಂ ಮುನಿಮಮ್ಯುಪೇಯುಷಿ” ಮಾಘಂ 1-24. (ವಿಂ) 2. ಉಷ್ಣವಾದ ಕಿರಣಗಳುಳ್ಳ.

**ನಿರ್ದಾಘಾವಧಿ ನಿರ್ದಾಘಾವಧಿ** (ಪುಂ) ಗ್ರೀಷ್ಮಕಾಲ, ಗ್ರೀಷ್ಮಯುತು. ನಿರ್ದಾಘಸ್ಯ ಅವಧಿ: | “ಸಂಬಂಧತಾ ಕಾಮಿಜನೇಷು ದೋಷಾ: ಸರ್ವೇ ನಿರ್ದಾಘಾವಧಿನಾ ಪ್ರಮೃಷ್ಠಾ:” ರಘುಂ 16-42.

**ನಿರ್ದಾನ ನಿರ್ದಾನ** (ನಂ) 1. ಮುಖ್ಯಕಾರಣ, ಅಧಿಕಾರಣ, ಮೂಲಕಾರಣ. ನಿದಾಘಂ ದೀಯತೇಸ್ತಾಧಾರಣತಯಾ ಜನ್ಯತೇಜೇನ — ಡು ದಾಙ್ (ದಾನೇ) ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-117). “ಭೂತಭವ್ಯಭವದಾತ್ಮನ: ಪ್ರಭೋ ಯನ್ನಿದಾನಮಖಿಲಸ್ಯ ಶಾಶ್ವತಮ್” ಯಾದಂ 17-103. 2. ಕಾರಣ, ಹೇತು. 3. ಕರುವನ್ನು ಕಟ್ಟಿಹಾಕುವ ಹಗ್ಗ. 4. ಕಾರಣಕ್ಷಯ, ಕಾರಣನಾಶ. 5. (ವೈದ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ರೋಗದ ಕಾರಣ. 6. ಅಂತ್ಯ, ಕೊನೆ, ಅವಸಾನ. “ನಿರ್ದಾನಂ ಕಾರಣೇ ವತ್ಸದಾಮಾದಿಕಾರಣಕ್ಷಯೇ” ಮೇದಿಂ | 7. ಶುದ್ಧಿ. 8. ರೋಗನಿರ್ಣಯ. “ನಿರ್ದಾನಂ ಕಾರಣೇ ರೋಗನಿರ್ಣಯೇ ವತ್ಸದಾಮನಿ” ವಿಶ್ವಂ |

**ನಿರ್ದಾನಸ್ಥಾನ ನಿರ್ದಾನಸ್ಥಾನ** (ನಂ) ಹೇತುಲಕ್ಷಣ (ಕಾರಣದ ಸ್ವರೂಪ)ಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಪ್ರಕರಣ. ನಿರ್ದಾನಂ ಹೇತುಲಕ್ಷಣ-ನಿರ್ದೇಶ: ತಸ್ಯ ಸ್ಥಾನಮ್ | ಚರಕ ಮತ್ತು ಸುಶ್ರುತ ಸಂಹಿತೆಗಳಲ್ಲಿ ರೋಗಕಾರಣಗಳ ಲಕ್ಷಣಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಪ್ರಕರಣಕ್ಕೆ “ನಿರ್ದಾನಸ್ಥಾನ” ಎಂದು ಹೆಸರು. ಈ ಪ್ರಕರಣದಲ್ಲಿ ಸಕಲ ವ್ಯಾಧಿಗಳಿಗೂ ಕಾರಣಗಳನ್ನೂ ಮತ್ತು ಅವುಗಳ ಸ್ವರೂಪಗಳನ್ನೂ ತಿಳಿಸಲಾಗಿದೆ. “ವಾತವ್ಯಾಧಿಕ-ಮರ್ಶಾಸಿ ಸಾಶ್ಮರಿಸ್ತ್ರ ಭಗಂದರ: | ಕುಠಮೇಹೋದರಂ ಮೂತ್ರೋ ವಿವ್ರಧಿ: ಪರಿಸರ್ಪಣಮ್ | ಗ್ರಂಥಿವೃದ್ಧಿಕ್ಷುಧ್ರಶೂಕಭಗ್ನಾಶ್ಚ ಮುಖರೋಗಿಕಮ್ | ಹೇತುಲಕ್ಷಣನಿರ್ದೇಶಾನಿದಾನಾನಿತಿ ಷೋಡಶ” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ 3-13, 14. ಶರೀರದಲ್ಲಿ (1) ಪಾಣ, (2) ಅಪಾನ, (3) ಸಮಾನ, (4) ಉದಾನ ಮತ್ತು (5) ವಾನಗಳೆಂದು ಪಂಚ (5) ವಾಯುಗಳಿರುವುವು. “ಪ್ರಾಣೋದಾನೋ ಸಮಾನಾಶ್ಚ ವ್ಯಾನಶ್ಚಾಪಾನ ಏವ ಚ | ಸ್ಥಾನಸ್ಥಾ ಮಾರುತಾ: ಪञ्च ಯಾಪಯಂತಿ ಶರೀರೀಣಮ್” ಸುಶ್ರುತಂ ನಿರ್ದಾನಂ 1-12. ವಕ್ತ್ರ, ತಲೆ, ಎದೆ, ಕಂಠ ಮತ್ತು ಮೂಗುಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವುದು ಪಾಣ



ವಾಯು. ಈ ವಾಯುವು ಅನ್ನವು ಕಂಠದ ಒಳಕ್ಕೆ ಹೋಗುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ಮತ್ತು ಪ್ರಾಣಗಳನ್ನೂ ಆಶ್ರಯಿಸಿಕೊಂಡಿರುವುದು. ಇದು ಕೆಟ್ಟರೆ ಬಿಕ್ಕಳಿಕೆ ಶ್ವಾಸ ಮೊದಲಾದ ರೋಗಗಳು ಉಂಟಾಗುವುವು.

**ನಿರ್ದಿಷ್ಟ ನಿರ್ದಿಗ್ಧ (ವಿಂ)** 1. ರಾಶಿ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ದಿಹ (ಆಪಚಯೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಲೇಪನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಘಾ -ಗ್ಧಾ. 3. ಯಾಲಕ್ಕ.

**ನಿರ್ದಿಷ್ಟಿಕಾ ನಿರ್ದಿಗ್ಧಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹೆಗ್ಗುಳ್ಳದ ಗಿಡ. ನಿ + ದಿಹ (ಆಪಚಯೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಡಾಪ್" (೪-೧-೪)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೫-೩-೭೫)। "ನಿರ್ದಿಷ್ಟಿಕಾ ಸ್ಪೃಶಿ ವ್ಯಾಘ್ರಿ ಬೃಹತಿ ಕಂಠಕಾರಿಕಾ" ಅಮಂ।

**ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸತ್ ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸತ್ (ವಿಂ)** ತಿಳಿದ ವಿಷಯವನ್ನು ನಿರಂತರ ಧ್ಯಾನಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಧ್ಯೆ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಂತಿ -ಂತೀ.

**ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸನ ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸನ (ನಂ)** ತಿಳಿದುಕೊಂಡ ವಿಷಯವನ್ನು ನಿರಂತರವಾಗಿ ಅನುಸಂಧಾನ ಮಾಡುವುದು, ನಿರಂತರ ಭಾವನಾರೂಪವಾದ ಸ್ಮೃತಿ ಪರಂಪರೆ. ನಿ + ಧ್ಯೆ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) + ಸನ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। ಗುರುವಿನ ಮುಖದಿಂದ ಕೇಳಿ ತಿಳಿದುಕೊಂಡ ವಿಷಯವನ್ನು ಏಕಾಗ್ರತೆಯಿಂದ ನಿರಂತರವಾಗಿ ಮಾಡುವ ಅನುಸಂಧಾನಕ್ಕೆ ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸನವೆಂದು ಹೆಸರು. "ನಿರಂತರಂ ವಿಚಾರೋ ಯಃ ಶ್ರುತಾರ್ಥಸ್ಯ ಗುರೋಮುಖಾತ್। ತನ್ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸನಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ತನ್ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸನಂ ಲಭ್ಯತೇ"। "ತಾಂಭ್ಯಾಂ ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸನೇಷು ಚೇತಸಃ ಸ್ಥಾಪಿತಸ್ಯ ಯತ್। ಏಕತಾನತ್ವಮೇತದ್ವಿ ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸನಮುಚ್ಯತೇ" ಪञ್ಚದಂ।

**ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸನೀಯ ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ನಿರಂತರವಾಗಿ ಧ್ಯಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ನಿರಂತರವಾಗಿ ಧ್ಯಾನ ಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. ನಿ + ಧ್ಯೆ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) + ಸನ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬)।  
**ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸಿತವ್ಯಃ ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸಿತವ್ಯಃ (ನಂ)** "ಆತ್ಮಾ ವಾರೆ ದ್ರಷ್ಟವ್ಯಃ ಶ್ರೋತವ್ಯೋ ಮನ್ತವ್ಯೋ ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸಿತವ್ಯಃ" ಶ್ರುತಿಃ।

**ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸಿತ ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸಿತ (ನಂ)** 1. ಏಕಾಗ್ರತೆಯಿಂದ ಧ್ಯಾನಮಾಡುವುದು. ನಿ + ಧ್ಯೆ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) + ಸನ್ ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಏಕಾಗ್ರತೆಯಿಂದ ಧ್ಯಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಧ್ಯೆ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) + ಸನ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

**ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸಿತವತ್ ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸಿತವತ್ (ವಿಂ)** ಏಕಾಗ್ರತೆಯಿಂದ ನಿರಂತರವಾಗಿ ಧ್ಯಾನಮಾಡಿದವನು. ನಿ + ಧ್ಯೆ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) + ಸನ್ "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ವತೀ -ವತೀ.

**ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸ್ಯ ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸ್ಯ (ವಿಂ)** ನಿರಂತರವಾಗಿ ಏಕಾಗ್ರತೆಯಿಂದ ಧ್ಯಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ.

**ನಿ + ದಿಶ - ಅತಿಸರ್ಜನೆ (ತುಡಾಂ ತಮಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ)**। ಅಜ್ಞೆ ಮಾಡು, ಅಪ್ಪಣೆ ಮಾಡು.

**ನಿರ್ದೇಶ ನಿರ್ದೇಶ (ಪುಂ)** 1. ಅಜ್ಞೆ, ಅಪ್ಪಣೆ. ನಿ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಘಬ್" (೩-೩-೧೮)। "ಸುನಾಯಕನಿರ್ದೇಶ-ವಿಭ್ರಮೇರಪ್ರತಿತರವೇದನೋದಯಮ್" ನೈಷಂ ೧೮-೧೨೬। "ವಾಕ್ಯೇ-ನೇಯಂ ಸ್ಥಾಪಿತಾ ಸ್ವೇ ನಿರ್ದೇಶೇ ಸ್ಥಾನೇ ಪ್ರಾಣಾಃ ಕಾಮಿನಾಂ ದ್ವೈತಧೀನಾಃ" ಮಾಲಂ ೩-೧೪। 2. ಸಂಭಾಷಣೆ, ಮಾತಾಡುವುದು. 3. ಸಾಮಾನ್ಯ, ಹತ್ತಿರ. "ನಿರ್ದೇಶಃ ಶಾಸನೇಽಪಿ ಸ್ಯಾತ್ ಕಥನೋಪಾಂತಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ।

**ನಿರ್ದೇಶಕಾರಿನ್ ನಿರ್ದೇಶಕಾರಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಅಜ್ಞೆಯನ್ನು ಪಾಲಿಸುವವನು, ಅಪ್ಪಣೆಯಂತೆ ನಡೆಯುವವನು, ವಿಧೇಯ, ನಿರ್ದೇಶ ಕರೋತಿ - ಟು ಕೃತ್ (ಕರಣೇ) "ಞಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಭೃತ್ಯ, ಸೇವಕ. "ಪುರೋಪಕಂಠೋಪವನಂ ಕಿಲೇಕ್ಷಿತಾ ದಿರ್ದೇಶ ಯಾನಾಯ ನಿರ್ದೇಶಕಾರಿಣಃ" ನೈಷಂ ೧-೫೬। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಕಾರಿಣಿ -ಕಾರಿಣೀ.

**ನಿರ್ದೇಶಿನ್ ನಿರ್ದೇಶಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಅಜ್ಞೆ ಮಾಡುವವನು, ಅಪ್ಪಣೆ ಮಾಡುವವನು. ನಿ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಞಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಶಿನಿ -ಶಿನೀ. 2. ದಿಕ್ಕು, ದಿಶೆ.

**ನಿರ್ದೇಶ್ಯ ನಿರ್ದೇಶ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಅಜ್ಞೆ ಪಿಸಲ್ಪಡುವವನು. 2. ಅಜ್ಞೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದವನು. ನಿ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಞಿತ್" (೩-೧-೧೨೪)।

**ನಿರ್ದೇಶ್ಯ ನಿರ್ದೇಶ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಅಜ್ಞೆ ಪಿಸುವವನು, ಅಪ್ಪಣೆ ಮಾಡುವವನು. ನಿ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ತೃತ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। ನಿರ್ದೇಶ್ಯ ನಿರ್ದೇಶ್ಯ.

**ನಿರ್ದಾ ನಿರ್ದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸುಪ್ತಿ, ನಿದ್ರೆ. ನಿ + ದ್ರಾ (ಕುತ್ಸಾಯಾಂ ಗತೌ) "ಅಡ್" (೩-೩-೧೦೬)। ನಿರ್ದಿ (ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) "ರಕ್" (೩-೨-೧೭) ಇತಿ ವಾ। "ನಿರ್ದಾ ನಿರ್ದಾ ದಕ್ಷಿಣಾಂ ನಿರ್ದಾ ಹೃದೋಽಪಿ ಬಾಹ್ಯೇಂದ್ರಿಯಮಾನಮುದ್ರಿತಾತ್" ನೈಷಂ ೧-೪೦। ನಿದ್ರೆಯು ಕಾಲುಗೈರುದ್ರನ ಪತ್ನಿ. "ಕಾಲಾನಿರ್ದಾಪತ್ನಿ







ಐಶ್ವರ್ಯ. "ಸಂತೋಷ ಏವ ಪುರುಷಸ್ಯ ಪರಂ ನಿಧಾನಮ್" ಪೃಷ್ಠತಂ ೨-೧೫೯. 5. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹೂತಿಟ್ಟು ಧನ, ಯಾರ ದೆಂದು ತಿಳಿಯದ ಭೂಮಿಯೊಳಗಿರುವ ಧನ. "ನಿಧಾನ-ಗರ್ಭಾಮಿವ ಸಾಗರಾಂಬರಾಂ ಶಮಿಮಿವಾಮೃತರಲಿನಿಪಾವಕಾಮ್" ರಘುಂ ೩-೯೧.

**ನಿಧಾರಿನ್ ನಿಧಾರಿನ್** (ವಿಂ) ಧಾರಾಕಾರವಾಗಿ ಸುರಿಯು ತಿರುಳುವ. ನಿತರಾಂ ಧಾರಾಂ ಧಾರಾರೂಪಂ ಕರೋತಿ - ತತ್ಕರೋತಿಂ "ಣಿವ್". "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪). "ಪ್ರೀತ್ಯಾ ಮುಖಾಸಾರನಿಧಾರಿಣೇವ ತತೋಜ್ಜಗ್ರಾಹ ವಲೋಕನೇನ" ಕುಮಾಂ ೧೨-೨೮.

**ನಿಧಿ ನಿಧಿ** (ಪುಂ) 1. (ಕ) ಐಶ್ವರ್ಯ, ಸಂಪತ್ತು, ಬೆಂಕಿ, ಸ. ನಿತರಾಂ ದಧಾತಿ ಪೋಷಯತ್ಯನೇನ - ನಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣ-ಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕಿ:" (೩-೩-೧೨). (ಖ) ಪುಡಿವಟ್ಟು, ಅವಶ್ಯವಾದಾಗ ಉಪಯೋಗಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಅನುಕೂಲವಾದ ಧನ. 2. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಆಧಾರ, ಆಶ್ರಯ. "ಸದೋಪ-ಯೋಗೇಪಿ ಗುರುತ್ವಮಸ್ಯಯೋ ನಿಧಿಃ ಶ್ರುತೀನಾಂ ಧನಸಂಪದಾಮಿವ" ಮಾಘಂ ೧-೨೮. 3. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಆಪದ್ವನ-ವನ್ನಿಧೀಯತೇ ಇತಿ ನಿಧಿಃ. "ಯಃ ಸದಾಪದ್ವನಮಿವ ನಿಧೇಯತ್ವಾ-ನ್ನಿಧಿಃ ಸ್ಮೃತಃ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ. "ಸರ್ವಃ ಶರ್ವಃ ಶಿವಃ ಸ್ಥಾಣುಃ ಭೂತಾದಿನಿಧಿರವ್ಯಯಃ" ವಿಂ ಸಂ. 4. ಯಾರಿಗೂ ತಿಳಿಯದೆ ಭೂಮಿಯೊಳಗೆ ಹೂತಿಟ್ಟಿರುವ ಧನ. ಇಂತಹ ಧನವು ರಾಜನಿಗೆ ಲಭ್ಯವಾದರೆ ಅದರ ಅರ್ಧಭಾಗವನ್ನು ಬ್ರಾಹ್ಮಣರಿಗೆ ದಾನಮಾಡಿ ಉಳಿದುದನ್ನು ತನ್ನ ಬೆಂಕಿ, ಸಕ್ಕರೆ ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು. "ರಾಜಾ ಲಬ್ಧ್ವಾ ನಿಧಿಂ ದಧಾತ್ ದ್ವಿಜೇಮ್ಯೋರ್ವ ದ್ವಿಜಃ ಪುನಃ. ವಿಧಾನಶೇಷಮಾದಧಾತ್ ಸರ್ವಸ್ಯಾಸೌ ಪ್ರಭುರ್ಯತಃ. ಇತರೇಣ ನಿಧೌ ಲಬ್ಧ್ವಾ ರಾಜಾ ಷಷ್ಠಾಂಶಮಾಹರೇತ್. ಅನಿವೇದಿತವಿಜ್ಞಾತೌ ದಾಪ್ಯಸ್ತಂ ದಂಡಮೇವ ಚ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೩೪, ೩೫. ಭೂಮಿಯನ್ನು ಅಗೆದು ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ ಧನವು ನೂರಾರು ವರ್ಷ ಕಾಲ ಯಾರಿಗೂ ಗೊಳಿಸದಿರಬಹುದು. ಇಷ್ಟು ಕಾಲ ಕಳೆದು ದೊರೆತ ಹಣಕ್ಕೆ ರಾಜನು ಅಧಿಕಾರಿಯಾಗುವನು. "ನಿಧ್ಯಾಧಿಗಮೋ ರಾಜಧನಮ್" ಗೌತಮಘಂ ೧೦-೪೨. 5. ಕುಬೇರನ ಒಬ್ಬತ್ತು ವಿಧ ರತ್ನಗಳು. (1) ಮಹಾಪದ್ಮಃ, (2) ಪದ್ಮಃ, (3) ಶಕ್ತಃ, (4) ಮಕರಃ, (5) ಕಂಠಪಃ, (6) ಮುಕ್ತಃ, (7) ಕುಂದಃ, (8) ನೇಲಃ ಮತ್ತು (9) ಸರ್ವಃ ಇವು ಕುಬೇರನ ನವನಿಧಿಗಳು. "ನಿಧಿ-ಗಣಮುಖವಾಂತನಿಷ್ಕರಾಶಿಃ ಪ್ರಚಿತಗುಣಾ ಮಣಿಭಿಃ ಸ್ಯಮಂತ-ಕಾಶ್ಚಃ" ಯಾದಂ ೨೪-೫. 6. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. 7. ನಳಿಕೆಯೆಂಬ ಒಂದು ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ. 8. ವೇದ. 9. ಪೌರವ ವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. "ಕುಮುಜೇ ಪೃಥಿವೀಮೇನಾಂ

ದೃಷ್ಟಪಾಣಿರ್ಮಹಾಬಲಃ. ರಾಜಾಸನೇ ತತಃ ಸೋಽಪಿ ಸ್ಥಾಪಯಿತ್ವಾ ನಿಧಿಂ ಸುತಮ್".

**ನಿಧಿಗೋಪ ನಿಧಿಗೋಪ** (ಪುಂ) 1. ಅನೂಚಾನ, ಗುರುವಿನಲ್ಲಿ ಸಾಂಗವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು. ನಿಧಿಃ: ಶ್ರುತೀಣಾಂ ಶ್ರುಣುಮೂತೋ ವೇದಃ ತಂ ಗೋಪಾಯತಿ - ಗುಪ್ತ (ರಕ್ಷಣೇ) "ಅನ್" (೩-೨-೧). 2. ಧನವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವವನು, ಬೆಂಕಿ, ಸಕ್ಕರೆ ಕಾಪಾಡುವವನು. ನಿಧಿಂ ಧನಂ ಗೋಪಾಯತಿ.

**ನಿಧಿತ್ಸತ್ ನಿಧಿತ್ಸತ್** (ವಿಂ) ಇಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಇರಿಸಲು ಇಚ್ಛಿಸುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣ-ಪೋಷಣಯೋಃ) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). "ವಿವೃತೋರಬಾಹು-ಪರಿಧೇಣ ಸರಸಪದಂ ನಿಧಿತ್ಸತಾ" ಮಾಘಂ ೧೫-೫೭.

**ನಿಧಿತ್ಸಾ ನಿಧಿತ್ಸಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಇರಿಸಲು ಇಚ್ಛೆ. ನಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨).

**ನಿಧಿತ್ಸು ನಿಧಿತ್ಸು** (ವಿಂ) ಇಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಇರಿಸಲು ಇಚ್ಛಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮).

**ನಿಧಿನಾಥ ನಿಧಿನಾಥ** (ಪುಂ) ಕುಬೇರ, ಧನಾಧಿಪತಿ. ನಿಧಿನಾಂ ನಾಥಃ. ನಿಧಿಪತಿಃ ನಿಧೀಶಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ನಿಧುವನ ನಿಧುವನ** (ನಂ) 1. ಸುರತಕ್ರೀಡೆ, ಸ್ತ್ರೀಸಂಗ, ಸಂಭೋಗ. ನಿತರಾಂ ಧುವನಂ ಹಸ್ತಪಾದಾದಿಚಾಲನಮತ್ರ. "ಚಕ್ರತುನಿಧುವನೇಶ್ವರಾಮೃತೇಸ್ತತ್ರ ಸಾಧು ಮಧುಪಾನವಿಭ್ರಮಮ್" ನೈಷಂ ೧೮-೧೦೩. 2. ಕಂಪನ, ನಡುಕ. "ಭವೇನ್ನಿಧುವನಂ ಕಂಪೇ ಸುರತೇ ಚ ನಪುಂಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ. 3. ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ.

**ನಿಧೇಯ ನಿಧೇಯ** (ವಿಂ) 1. ಇಡಲ್ಪಡುವ, ಇರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಇಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಇಡಬೇಕಾದ. ನಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಯತ್" (೩-೧-೯೭).

**ನಿಧ್ಯಾತ ನಿಧ್ಯಾತ** (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಧ್ಯಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಏಕಾಗ್ರತೆಯಿಂದ ಧ್ಯಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿತರಾಂ ಧ್ಯಾತಃ.

**ನಿಧ್ಯಾತವತ್ ನಿಧ್ಯಾತವತ್** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಧ್ಯಾನ ಮಾಡಿದವನು. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡಿದವನು, ಜ್ಞಾನದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ನೋಡಿದವನು. ನಿ + ಧೈ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨). ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ತೀಪ್" (೪-೧-೬). -ವತೀ -ವತೀ.

**ನಿಧ್ಯಾತವ್ಯ ನಿಧ್ಯಾತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡಲ್ಪಡುವ, ಜ್ಞಾನದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ಅವಲೋಕಿಸಲ್ಪಡುವ. ನಿ + ಧೈ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬). 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ



ಧ್ಯಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ. "ಅನೀಯ" (೩-೧-೯೬) |  
-ಧ್ಯಾನೀಯ: -ಧ್ಯಾನೀಯ:

ನಿಧ್ಯಾನ ನಿಧ್ಯಾನ (ನಂ) ದರ್ಶನ, ನೋಡುವುದು. ನಿ+ಧ್ಯ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | "ನಿರ್ವಣನಂ ತು ನಿಧ್ಯಾನಂ ದರ್ಶನಾಲೋಕನೇಷಣಮ್" ಅಮಂ |

ನಿಧ್ಯಾಯತ್ ನಿಧ್ಯಾಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಜ್ಞಾನ ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ವೀಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ+ಧ್ಯ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ನಿಧ್ಯಾಯಂತ-ಸ್ವರಿತಮತರನ್ ದುಸ್ತರಾಂ ತಸ್ಯ ಮಾಯಾಮ್" ಧಾಂ ೨೪-೯೬ | 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಧ್ಯಾನಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

ನಿಧ್ವಜತ್ ನಿಧ್ವಜತ್ (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಧ್ವನಿಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ+ಧ್ವಜ (ಶಬ್ದ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | 2. ಗರ್ಜನೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ. "ನಿಧ್ವಜ-ಜ್ವಹಾರಿಭಾ ಭೇಜೇ ರಾಗರಸಾತ್ತಮ:" ಮಾಂ ೧೯-೩೪ |

ನಿಧ್ವಾನ ನಿಧ್ವಾನ (ಪುಂ) 1. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು. ನಿ+ಧ್ವನ (ಶಬ್ದ) "ಘ" (೩-೩-೧೮) | "ಮಂದಾನಿಲಾಪೂರಕೃತಂ ದಧಾನೋ ನಿಧ್ವಾನಮಶ್ರುಯತ ಪಾಂಚಜನ್ಯ:" ಮಾಂ ೩-೨೧ | 2. ಗರ್ಜನೆ, ಅನೆಯ ಕೂಗು.

ನಿನಿತ್ಯಾ ನಿನಿತ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾಶಹೊಂದಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨) |

ನಿನಿತ್ಯು ನಿನಿತ್ಯು (ವಿಂ) ನಾಶಹೊಂದಲು ಇಚ್ಛೆಯುಳ್ಳ. ತಮ್ಹುಮಿಚ್ಛು:—ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) + ಸನ್ "ಃ:" (೩-೨-೧೬೮) | "ಅಪಿಸ್ಪವಂಚ ಬನ್ಧುನಾಂ ನಿನಿತ್ಯು ವಿಕರಮ್ ಮುಹು:" ಭೃಂ ೪-೩೩ |

ನಿನವ ನಿನವ (ಪುಂ) 1. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು. ನಿ+ಞದ (ಅವ್ಯಕ್ತ ಶಬ್ದ) "ಅಪ್" (೩-೩-೬೪) | "ಕುಂಭಪೂರಣಭವ: ಪಟುರ್ದೇ-ರ್ದವಚಾರ ನಿನದೋಽಮಸಿ ತಸ್ಯಾ:" ರಘುಂ ೯-೭೩ | 2. ಭ್ರಮರದ ಧ್ವನಿ. 3. ರಥದ ಶಬ್ದ.

ನಿನತಿಷಾ ನಿನತಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನರ್ತನಮಾಡಲು ಇಚ್ಛೆ. ಕುಣಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ನತಿಸುಮಿಚ್ಛಾ—ನೃತಿ (ಗಾತ್ರ-ವಿಕ್ಷೇಪ) + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨) |

ನಿನತಿಷು ನಿನತಿಷು (ವಿಂ) ನರ್ತನಮಾಡಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ. ಕುಣಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ನತಿಸುಮಿಚ್ಛು:—ನೃತಿ (ಗಾತ್ರ-ವಿಕ್ಷೇಪ) + ಸನ್ "ಃ:" (೩-೨-೧೬೮) |

ನಿನಾದ ನಿನಾದ (ಪುಂ) 1. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು. ನಿ+ಞದ (ಅವ್ಯಕ್ತ ಶಬ್ದ) "ಘ" (೩-೩-೧೮) | "ಯುಗಾಂತವಾತಾಭಿಹತೇವ ಕುರ್ವತಿ ನಿನಾದಮಮೋನಿಧಿವಿಚಿಸಂಹತಿ:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೨೭ | 2. ಭ್ರಮರದ ಧ್ವನಿ, ದುಂಬಿಯ ರೋಷಾರ.

ನಿನಾದಿತ ನಿನಾದಿತ (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದದಿಂದ ತುಂಬಿದ, ಸದ್ದಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. ನಿನಾದೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತ್" (೫-೨-೩೬) | 2. ಶಬ್ದಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ+ಞದ+ಞಿತ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |

ನಿನಾದಿನ್ ನಿನಾದಿನ್ (ವಿಂ) ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಸದ್ದು ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ+ಞದ (ಅವ್ಯಕ್ತ ಶಬ್ದ) "ಞಿತಿ:" (೩-೧-೧೩೪) |

ನಿನಿನ್ದಿಷಾ ನಿನಿನ್ದಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೂಷಿಸಲು ಇಚ್ಛೆ. ತೆಗಳಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ನಿನ್ದಿಸುಮಿಚ್ಛಾ—ಞಿಡಿ (ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨) |

ನಿನಿನ್ದಿಷು ನಿನಿನ್ದಿಷು (ವಿಂ) ದೂಷಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ತೆಗಳಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ. ನಿನ್ದಿಸುಮಿಚ್ಛು:—ಞಿಡಿ (ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) + ಸನ್ "ಃ:" (೩-೨-೧೬೮) |

ನಿನಿಷತ್ ನಿನಿಷತ್ (ವಿಂ) ಒಯ್ಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಣಿತ್ (ಪ್ರಾಪಣ) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |

ನಿನಿಷಾ ನಿನಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಯ್ಯಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಸಾಗಿಸಲು ಇಚ್ಛೆ. ಣಿತ್ (ಪ್ರಾಪಣ) + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨) |

ನಿನಿಷು ನಿನಿಷು (ವಿಂ) ಒಯ್ಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು, ಸಾಗಿಸಲು ಇಚ್ಛಿಸುವವನು. ಣಿತ್ (ಪ್ರಾಪಣ) + ಸನ್ "ಃ:" (೩-೨-೧೬೮) | "ಮುನಿಮಭಿಮುಖತಾಂ ನಿನಿಷವೋ ಯಾ: ಸಮುಪಯಯು: ಕಮನೀಯತಾಗುಣೇನ" ಕಿರಾಂ ೧೦-೪೦ |

ನಿನ್ದಕ ನಿನ್ದಕ (ವಿಂ) ದೂಷಿಸುವವನು, ನಿಂದಿಸುವವನು. ನಿನ್ದತಿ—ಞಿಡಿ (ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) "ವು" (೩-೨-೧೪೬) | "ಪರಿವಾದಾತ್ ಖರೋ ಭವತಿ ಶ್ವಾ ವೈ ಭವತಿ ನಿನ್ದಕ:" ಮನುಂ ೨-೨೦೧ |

ನಿನ್ದತ್ ನಿನ್ದತ್ (ವಿಂ) ದೂಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ತೆಗಳುತ್ತಿರುವ. ಞಿಡಿ (ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ನಿನಿನ್ದ ತೇಷು ನಿನ್ದತ್ಸು ಸ್ತುವತ್ಸು ಸ್ತುತವಾನ್ ಕಿಮ್" ನೈಷಂ ೧೭-೬೫ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಂತಿ -ಂತಿ. "ಸಾ ನಿನ್ದಂತಿ ಸ್ವಾನಿ ಭಾಗ್ಯಾನಿ ಬಾಲಾ ಬಾಹುಕ್ಷೇಪಂ ಕನ್ದಿತುಂ ಚ ಪ್ರವೃತ್ತಾ" ಶಾಕುಂ ೫-೩೦ |

ನಿನ್ದನ ನಿನ್ದನ (ನಂ) ದೂಷಣ, ತೆಗಳುವುದು. ಞಿಡಿ (ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) |

ನಿನ್ದನೀಯ ನಿನ್ದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ದೂಷಿಸಲ್ಪಡುವ, ತೆಗಳಲ್ಪಡುವ. 2. ದೂಷಣಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ. ಞಿಡಿ (ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) "ಅನೀಯ" (೩-೧-೯೬) | "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) | ನಿನ್ದಿತವ್ಯ: ನಿಂದಿತವ್ಯ:



**ನಿನ್ದಾ ನಿಂದಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೂಷಣೆ, ತೆಗಳುವುದು. 2. ಅಕ್ಷೇಪಿಸುವುದು. ಣಿಡಿ (ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) "ಅ:" (3-3-103). "ಗುರೋರ್ಯ ಪರೀವಾದೋ ನಿನ್ದಾ ವಾಪಿ ಪ್ರವರ್ತತೇ | ಕರ್ಣಿ ತತ್ರ ಪಿಘಾತವ್ಯೋ ಗಂತವ್ಯಂ ವಾ ತತೋಽನ್ಯತ:" ಮನುಂ 2-200. 3. ತಿರಸ್ಕಾರ, ಧಿಕ್ಕಾರ. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). ನಿನ್ದನಮ್ ನಿಂದನಮ್.

**ನಿನ್ದಾಸ್ತುತಿ ನಿಂದಾಸ್ತುತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಿಂದೆಯ ವ್ಯಾಜದಿಂದ ಮಾಡುವ ಸ್ತುತಿ, ದೂಷಣೆಯ ನೆಪದಿಂದ ಹೊಗಳುವುದು. ನಿನ್ದಾವ್ಯಾಜೇನ ಸ್ತುತಿ: | ಇದು "ವ್ಯಾಜಸ್ತುತಿ" ಎಂಬ ಅಲಂಕಾರವಾಗುವುದು. "ಉಕ್ತವ್ಯಜಿಸ್ತುತಿರ್ನಿನ್ದಾಸ್ತುತಿಭ್ಯಾಂ ಸ್ತುತಿನಿನ್ದಯೋ:" | ಉದಾಂ "ಕ: ಸ್ವರ್ಧುನಿ ವಿವೇಕಸ್ತೇ ನಯಸೇ ಪಾಪಿನೋ ದಿವಮ್" ಚಂದ್ರಾಂ | ಗಂಗೆಯು ಪಾಪಾತ್ಮ ರನ್ನೂ ಸ್ವರ್ಗಕ್ಕೆ ಏರಿಸುವುದು ಎಂತಹ ವಿವೇಕ ಎಂಬ ನಿಂದಾವಚನದಿಂದ ಅಂತಹವರಿಗೂ ಸ್ವರ್ಗವನ್ನು ತೋರಿಸುವ ಗಂಗೆಯು ಪ್ರಭಾವವು ಅಸದೃಶವಾದುದೆಂಬ ಸ್ತುತಿಯು ತೋರುವುದು.

**ನಿನ್ದಿತ ನಿಂದಿತ** (ವಿಂ) 1. ದೂಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೆಗಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಣಿಡಿ (ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಅಥ ಮುಹುರ್ಬಹುನಿನ್ದಿತಚಂದ್ರಯಾ ಸ್ತುತವಿಧುನ್ತುರದಯಾ ಚ ತಯಾ ಮುಹು:" ನೆಪಂ 4-43. 2. ಅಕ್ಷೇಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಧಿಕ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಿಹಿತಸ್ಯಾನನ್ಯುಠಾನಾನಿನ್ದಿತಸ್ಯ ಚ ಸೇವನಾತ್ | ಅನಿಗ್ರಹಾಚ್ಚೇಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ ನರ: ಪತನಮುಚ್ಛತಿ" ಯಾಜ್ಞಂ 3-219.

**ನಿನ್ದಿನ್ ನಿಂದಿನ್** (ವಿಂ) ದೂಷಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ, ತೆಗಳುವ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. ಣಿಡಿ (ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) "ಗಿನಿ:" (3-2-98). "ದೇವಾನಾಂ ನಂದನೋ ದೇವೋ ನಂದನೋ ವೇದನಿನ್ದಿನ:" ಕಾವ್ಯಾಂ 3-93.

**ನಿಪಥ ನಿಪತ** (ಪುಂ) ಅಧ್ಯಯನ, ಕಂಠಪಾಠ. ನಿ + ಪಠ ವಾ "ಅಪ್" (3-3-64). ಪಕ್ಷೇ "ಘ" (3-3-18). ನಿಪಾಠ: ನಿಪಾತ:

**ನಿಪಠಿತ ನಿಪತಿತ** (ನಂ) 1. ಅಧ್ಯಯನ, ಕಂಠಪಾಠ ಮಾಡುವುದು, ಓದುವುದು. ನಿ + ಪಠ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114). (ವಿಂ) 2. ಕಂಠಪಾಠ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಪಠ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102).

**ನಿಪಠಿತಿನಿ ನಿಪತಿತಿನಿ** (ವಿಂ) ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು, ಕಂಠಪಾಠ ಮಾಡಿದವನು. ನಿಪಠಿತಮನೇನ "ಇನಿ:" (4-2-66).

**ನಿಪತತ್ ನಿಪತತ್** (ವಿಂ) 1. ಬೀಳುತ್ತಿರುವ. 2. ಮೇಲೆ ನಿಂದ ಇಳಿಯುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಶತ್" (3-2-124). "ನಿಪತತಾಪಿ ನ ಮಂದರಭೂಮತಾ ತ್ವಮುಖಾಂ ಶಶಲಾಞ್ಛನ ಚೂರ್ಣಿತ:" ನೆಪಂ 4-51. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಶೀಪ್" (4-1-6). -ಪತಂತಿ -ಪತಂತೀ.

**ನಿಪತನ ನಿಪತನ** (ನಂ) 1. ಮೇಲಿನಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳುವುದು. ನಿ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ಮೇಲಿನಿಂದ ಇಳಿಯುವುದು. 3. ಗರ್ಭಿಣಿಯ ಗರ್ಭ ಪಾತ. "ದೃಷ್ಟೇ ಶ್ರುತೇಽಪ್ಯಶಕ್ತುನೇ ಗೋಧಾಮತ್ಸಾಮಿಷಂ ವದೇದ್ಭುಕ್ತಮ್ | ಗರ್ಭಿಣ್ಯಾ ಗರ್ಭಸ್ಯ ಚ ನಿಪತನಮೇವಂ ಪ್ರಕಲ್ಪಯೇತ್ಪ್ರಶ್ನೇ" ಬೃಹತ್ಸಂ 41-35.

**ನಿಪತಿತ ನಿಪತಿತ** (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿದ, ಮೇಲಿನಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಪ್ರವಹಿಸಿದ. ನಿ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (3-4-92). "ಸಂಧ್ಯಾನ್ ನಿಪತಿತನಿರ್ಗರಾಸು ಮಂದ್ರ: ಸಮುಚ್ಛೇ-ತ್ಪ್ರತಿನಿನದೇರಧಿತೃಕಾಸು" ಕಿರಾಂ 6-22. 2. ಮೇಲಿನಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬಿದ್ದ. "ನಿಪತಿತಂ ವದನೇ ಕಥಮನ್ಯಥಾ ಬಲಿ-ಕರಸ್ತನಿಭಂ ನಿಜಮುಚ್ಛತಿ" ನೆಪಂ 4-64. 3. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಉದುರಿದ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬಿದ್ದ. "ಯದ್ವಿಚ್ಛಯಾ ನಿರಂತರನಿಪತಿತಾನಿ ವಿಕಸಿತಾನಿ ಕುಸುಮಾನ್ಯಾದಾಯ" ಮಾಲತೀಂ 1.

**ನಿಪಾಕ ನಿಪಾಕ** (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಕವಾಗುವುದು, ಮಾಗುವುದು, ಹಣ್ಣಾಗುವುದು. ನಿ + ಟ್ ಪಚ್ (ಪಾಕೇ) "ಘ" (3-3-18). 2. ಸ್ವೇದ, ಬೆವರು. 3. ದುಷ್ಕರ್ಮದ ಫಲ, ಪಾಪಕಾರ್ಯದ ಫಲ. "ನಿಪಾಕ: ಪಚನೇ ಸ್ವೇದಾ-ಸತ್ಕರ್ಮಫಲಯೋರಪಿ" ಹೇಮಂ |

**ನಿಪಾಠ ನಿಪಾಠ** (ಪುಂ) ಓದುವುದು, ಅಧ್ಯಯನ, ಕಂಠಪಾಠ. ನಿ + ಪಠ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಘ" (3-3-18).

**ನಿಪಾತ ನಿಪಾತ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳುವುದು, ಮೇಲಿನಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಧುಮುಕುವುದು. ನಿ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಘ" (3-3-18). "ವಿರಲಮಪಜಹಾರ ಬದ್ಧವಿನ್ದು: ಸರಜಸತಾ-ಮವನೇರಪಾಂ ನಿಪಾತ:" ಕಿರಾಂ 10-20. "ಸ್ಥಿತಾ: ಕ್ಷಣಂ ಪಶಮಸು ತಾಡಿಂತಾಘರಾ: ಪಯೋರೋತ್ಸೇಧನಿಪಾತಚೂರ್ಣಿತಾ:" ಕುಮಾಂ 4-24. 2. ನಾಶ, ಮರಣ. "ನಿಪಾತೋ ಭೂಮಿಲಾಮಶ್ವ ಮೃತ್ಯುರಪಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 3. ಬಾಣ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಪ್ರಯೋಗ, ಎಸೆಯುವುದು, ಬೀರುವುದು. "ಸ ಚ ತ್ವದೇಕೇಽ-ನಿಪಾತಸಾಘ್ಯೋ ಬ್ರಹ್ಮಾಙ್ಗಭೂರ್ಬ್ರಹ್ಮಾಣಿ ಯೋಜಿತಾತ್ಮಾ" ಕುಮಾಂ 3-14. 4. (ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ವರ್ಣಾಗಮ ವರ್ಣ ವ್ಯತ್ಯಾಸ ವರ್ಣವಿಕಾರ ಮತ್ತು ವರ್ಣಲೋಪಗಳಿಂದ ನಿಷ್ಪನ್ನವಾದ ಮತ್ತು ಯಾವ ಸೂತ್ರದಿಂದಲೂ ಅನಿಷ್ಪನ್ನ



ವಾದ ಶಬ್ದ, ಯಾಸ್ಕರು ವಿಂಗಡಿಸಿರುವ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಪದಗಳ ಸಮೂಹಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. “ತದ್ವಾನ್ಯೇತಾನಿ ಚತ್ವಾರಿ ಪದಜಾತಾನಿ ನಾಮಾಖ್ಯಾತೇ ಚೋಪಸರ್ಗನಿಪಾತಾಃ ತಾನಿಮಾನಿ ಭವಂತಿ” ನಿಠಂ ೧-೧-೮. ನಿಪತಂತಿ ಸ್ವಾವಯವವರ್ಣವಿನಾಶಾದಿನಾ ಅನ್ಯಥಾ ನಿಷ್ಪದಂತೇ—ನಿ+ಪಲ್ (ಗತೌ) (೩-೧-೧೪೦). “ಭವೇದ್ವರ್ಗಗಮಾಢಸಃ ಸಿಂಹೋ ವರ್ಣವಿಪರ್ಯಯಾತ್. ಗುಡೋತಮಾ ವರ್ಣ-ವಿಕೃತೇವರ್ಣಲೋಪೇ ಪೃಷೋದರಮ್”. “ಹನ್” ಧಾತುವಿಗೆ ಸಕ್ ಆಗಮ ಬಂದು ಹಸಃ ಎಂದೂ “ಹಿಸಿ” ಧಾತುವಿಗೆ ಅಚ್ ಪ್ರತ್ಯಯ ಬಂದು ವರ್ಣ ವಿಪರ್ಯಯದಿಂದ ಸಿಹಃ ಎಂದೂ ಗುಹಃ ಆತ್ಮಾ ಎಂಬಲ್ಲಿ ವರ್ಣವಿಕಾರ ಹೊಂದು ವುದರಿಂದ ಗುಡೋತಮಾ ಎಂದೂ ಪೃಷತ್ ಉದರಮ್ ಎಂಬಲ್ಲಿ ತ ಲೋಪ ಬಂದು ಪೃಷೋದರಮ್ ಎಂದೂ ರೂಪಗಳಾಗುವುವು. ಇಂತಹ ಪದಗಳು ಯಾವ ಅನುಶಾಸನದಿಂದಲೂ ನಿಷ್ಪನ್ನ ವಾಗದಿರುವುದರಿಂದ ನಿಪಾತಗಳು. 5. ಅನೇಕಾರ್ಥಗಳನ್ನು ಕೊಡುವ “ಚ” ಮೊದಲಾದ ಶಬ್ದ, ಚ ವಾ ಹ ಅಹ ಎವ ಎವಮ್ ನೂನಮ್ ಶಶ್ವತ್ ಭಯಸ್ ಕೂಪತ್ ಕುವಿತ್ ಕಂಚಿತ್ ಯತ್ರ ಇತ್ಯಾದಿ ಅವ್ಯಯಗಳು. ನಿಪತಂತಿ ಉಚ್ಚಾವಚೇಷ್ವರ್ಯೇಷು — ನಿ + ಪಲ್ (ಗತೌ) (೩-೧-೧೪೦). “ನಿಪಾತಾಃ ಉಚ್ಚಾವಚೇ-ಷ್ವರ್ಯೇಷು ನಿಪತಂತೀತಿ ಉಪಮಾರ್ಥೇ ವಾ ಕರ್ಮೋಪಸಂಗ್ರಹಾರ್ಥೇ ಪಾದಪೂರ್ಣಾರ್ಥೇ ವಾ” ನಿಠಂ ೧. “ಪ್ರಾಶ್ನೀಶ್ವರಾನಿಪಾತಾಃ” (೧-೪-೫೬). “ಚಾದಯೋಽಸತ್ವೇ” (೧-೪-೫೭). “ಪ್ರಾದಯಃ” (೧-೪-೫೮). ಮೊದಲಾದ ಸೂತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಶಬ್ದಗಳು ನಿಪಾತ ಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳವು. ಉಪಸರ್ಗಗಳಿಗೆ ಅರ್ಥದೋಷಕತ್ವ ವನ್ನೂ ಉಪಸರ್ಗವ್ಯತಿರಿಕ್ತವಾದ ನಿಪಾತಗಳಿಗೆ ದೋಷ ಕತ್ವ ಮತ್ತು ವಾಚಕತ್ವ ಎರಡನ್ನೂ ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುವರು.

**ನಿಪಾತನ ನಿಪಾತನ (ನಂ)** 1. ಎಸೆಯುವುದು, ಎತ್ತಿಹಾಕು ವುದು, ಮೇಲಿನಿಂದ ಹೊಡೆಯುವುದು. ನಿ + ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಗಿಚ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫). “ಅವಗುರ್ಯ ಚರೇಕ್ಷುಚ್ಚಮತಿಕುಚ್ಚ” ನಿಪಾತನೇ. ಕುಚ್ಚಾತಿಕುಚ್ಚೌ ಕುರ್ವಿತಿ ವಿಪ್ರಸ್ಯೋತ್ಪಾದ ಶೋಣಿತಮ್” ಮನುಂ ೧೧-೨೦೮. 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಸುವುದು, ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವುದು. 3. ಕೆಳಕ್ಕೆ ನೂಕು ವುದು. 4. ಸಂಹರಿಸುವುದು, ಕೊಲ್ಲುವುದು. “ಪರಿಚಯಂ ಚಲಲಕ್ಷ್ಯನಿಪಾತನೇ ಭಯರೂಪೋಽಪಿ ತದಿಚ್ಛಿತಬೋಧನಮ್” ರಘುಂ ೯-೪೯. 5. ವ್ಯಾಕರಣಲಕ್ಷಣಗಳಿಂದ ನಿಷ್ಪನ್ನವಾಗದ ಶಬ್ದಗಳ ಸಾಧನೆಯ ಒಂದು ಉಪಾಯ. ನಿಪಾತನೇನೆ—ನಿ+ಪಲ್ ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫). “ಯತ್ಲಕ್ಷಣೇ-ನಾನುತ್ಪನ್ನಂ ತತ್ಸರ್ವಂ ನಿಪಾತನಾತ್ಸಿದ್ಧಮ್” ಮಹಾಭಾಂ ೧.

**ನಿಪಾತನೀಯ ನಿಪಾತನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಲ್ಪ ಡುವ. 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಎಸೆಯಲ್ಪಡುವ. 3. ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಡುವ,

ಸಂಹರಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಕೊಲ್ಲಲು ಅರ್ಹವಾದ. ನಿ+ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಗಿಚ್ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೧೬). “ಶುಭೇತರಾಚಾರ-ವಿಪಕ್ವಿತ್ರಮಾಪದೋ ನಿಪಾತನೀಯಾ ಹಿ ಸತಾಮಸಾಧವಃ” ಮಾಘಂ ೧-೭೩.

**ನಿಪಾತಯತ್ ನಿಪಾತಯತ್ (ವಿಂ)** 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳು ತ್ತಿರುವ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಎಸೆಯು ತ್ತಿರುವ. 3. ಕೊಲ್ಲುತ್ತಿರುವ, ಸಂಹರಿಸುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಗಿಚ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬). —ಯಂತಿ—ಯಂತಿ.

**ನಿಪಾತಿಸ್ ನಿಪಾತಿಸ್ (ವಿಂ)** 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಕೆಡವಲ್ಪಟ್ಟು. ನಿ + ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಗಿಚ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨). “ನಿಪಾತಿಸುಹೃತ್ಸಾಮಿಪಿತೃವ್ಯಭಾತೃಮಾತು-ಲಮ್” ಮಾಘಂ ೧೧-೭೫. “ತಾಂಡವಂ ಗ್ರಾಹಯಾಮಾಸ ನಿಪಾತಿಸ-ಶಿರೋಧರಾನ್” ಯಾದಂ ೨೨-೧೦೬. 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಎಸೆಯ ಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟು, ಸಂಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ವ್ಯಾಕರಣ ಲಕ್ಷಣಗಳಿಂದ ನಿಷ್ಪನ್ನವಾಗದೆ ಉಪಾಯಾಂತರದಿಂದ ಸಾಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಶಬ್ದ. 5. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟು. “ನಯನಸಲಿಲ-ಚ್ಚಿತ್ತಾ ದೃಷ್ಟಿಃ ಸಖೀಷು ನಿಪಾತಿಸಾ” ಅಮರಂ ೨೦.

**ನಿಪಾತಿಸವತ್ ನಿಪಾತಿಸವತ್ (ವಿಂ)** 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಿ ದವನು, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಕೆಡವಿದವನು. ನಿ+ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಗಿಚ್ “ಕ್ತವತ್” (೩-೨-೧೦೨). 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಎಸೆದವನು. 3. ಸಂಹರಿಸಿದವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬). —ವಂತಿ—ವಂತಿ.

**ನಿಪಾತಿಸ್ ನಿಪಾತಿಸ್ (ವಿಂ)** 1. ಬೀಳುತ್ತಿರುವ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬಂದು ಸೇರುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಪಲ್ (ಗತೌ) “ಗಿನಿಃ” (೩-೧-೧೩೪). “ಅಲಿಭಿರಂಜನವಿಂದುಮನೋಹರಃ ಕುಸುಮ-ಪಕ್ತಿನಿಪಾತಿಭಿರಂಜಿತಃ” ರಘುಂ ೯-೪೧. 2. ನಾಶಪಡಿಸು ವ. ನಿ + ಪಲ್ + ಗಿಚ್ “ಗಿನಿಃ” (೩-೧-೧೩೪). “ಜ್ಯೋತಿರಿತ್ವನನಿಪಾತಿ ಭಾಸ್ಕರಾತ್ಸೂರ್ಯಕಾಂತ ಇವ ತಾಡ-ಕಾಂತಕಃ” ರಘುಂ ೧೧-೨೧.

**ನಿಪಾತಯಮಾನ್ ನಿಪಾತಯಮಾನ್ (ವಿಂ)** 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಡು ತ್ತಿರುವ. 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಎಸೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಕೊಲ್ಲ ಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಗಿಚ್ “ಶಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪). “ಪುನರಪಿ ತೇಷ್ವೇವ ತಥೈವ ವಿಷಮವಿಷಯಾ-ಜ್ಞಾಃ ನಿಪಾತಯಮಾನ್ ಮಾತ್ಮಾನಂ ನಾವಬುಧ್ಯಸೇ” ಪ್ರಬೋಧಂ ೬.

**ನಿಪಾನ್ ನಿಪಾನ್ (ನಂ)** 1. ಬಾವಿಯ ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿ ಪಶುಗಳು ನೀರು ಕುಡಿಯಲು ಏರ್ಪಡಿಸಿರುವ ನೀರಿನ ತೊಟ್ಟಿ. ನಿಯತ ಪಿಬಂತ್ಯಸ್ಮಿನ್ — ನಿ + ಪಾ (ಪಾನೇ) ಅಧಿಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫). “ಆಹಾವಾನ್ ನಿಪಾನ್ ಚ ಕುಪಾಪಾರ್ವಜಲಾ-



ಅಯ: "ವೇಜಂ 1. ಜಲಾಶಯ, ಕೊಳ, ನೀರಿನ ಮಡು.

"ಗಾಹಂತಾಂ ಮಹಿಷಾ ನಿಪಾನಸಲಿಲಂ ಶೃಂಗೈರ್ಮುಹುಸ್ತಾಡಿತಂ ಚಾಯಾಬದ್ಧ-  
ಕದಂಬಕಂ ಮೃಗಕುಲಂ ರೋಮನ್ಯಮಸ್ಯಸ್ಯತು" ಶಾಕುಂ ೨-೬।

3. ಬಾವಿ. 4. ಪಾನಮಾಡುವುದು, ಕುಡಿಯುವುದು.

5. ಹಾಲು ಕರೆಯುವ ಪಾತ್ರೆ, ಹಿಡಿಯಿರುವ ಮರದ  
ಅಥವಾ ಲೋಹದ ಪಾತ್ರೆ. "ಪಾರಿ ತು ದೋಹನಿ। ನಿಪಾನಂ  
ಸ್ತ್ರೀ ಗವಿ ತುಮ್ಬಾ ನಿಲಿಮ್ಪಾ ರೋಹಿಣಿ ಚ ಸಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ನಿಪೀಡನ ನಿಪೀಡನ (ನಂ)** 1. ಹಿಡಿಸುವುದು, ಹಿಂಸಿಸು  
ವುದು. ನಿ + ಪೀಡ (ಅವಗಾಹನೆ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೫)। "ನಿಪೀಡನಂ ಯನ್ನಿಬಿಡಂ ವಿಷಹೃತೇ ಮಯಾಽಪ್ಪ-  
ಸತ್ವೇನ ತವೈವ ತದ್ವಲಮ್" ಯಾದಂ ೧೪-೪೦। 2. ಹಿಂಡು

ವುದು, ಹಿಂಸುಕುವುದು, ಕಿವಿಚುವುದು. "ಘನಪುಲಕಪುಲೋಮಜಾ-  
ಕುಚಾಘ್ರದ್ರುತಪರೀರಮ್ಭನಿಪೀಡನಕ್ಷಮತ್ವಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೭೪।

3. ಅಪ್ಪುವುದು, (ಪರಸ್ಪರ) ತಿಕ್ಕಾಡುವುದು. "ನಿಪೀಡನಾ-  
ದಿವ ಮಿಥೋ ದಾನತೋಯಮನಾರತಮ್" ಮಾಘಂ ೧೯-೬೮। "ಯುಚ್"  
(೩-೩-೧೦೭)। -ಪೀಡನಾ -ಹಿಡಿಸು. "ಕೃತ್ವಾ ದೊನ-

ನಿಪೀಡನಾಂ ನಿಜಜನೇ ಬದ್ಧವಾ ವಚೋವಿಗ್ರಹಂ ನೆವಾಲೋಚ್ಯ  
ಗರೀಯಸೀರಪಿ ಚಿರಾದಾಮುಷ್ಮಿಕೀರ್ಯಾತಿನಾ:" ಸಾಂ ದಂ ೩।

**ನಿಪೀಡಯತ್ ನಿಪೀಡಯತ್ (ವಿಂ)** 1. ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಹಿಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಪೀಡ (ಅವಗಾಹನೆ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್"  
(೩-೨-೧೨೪)। 2. ಹಿಂಡುತ್ತಿರುವ, ಹಿಂಸುಕುತ್ತಿರುವ.  
3. ಉಜ್ಜುತ್ತಿರುವ, ತಿಕ್ಕುತ್ತಿರುವ, ಒತ್ತುತ್ತಿರುವ.

**ನಿಪೀಡಿತ ನಿಪೀಡಿತ (ವಿಂ)** 1. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ನಿ + ಪೀಡ (ಅವಗಾಹನೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:"  
(೩-೨-೧೦೨)। "ದೇವದಾನವಗಂಧರ್ವಾ ರಕ್ಷಾಸಿ ಪತಗೋರಗಾಃ।  
ತೇಽಪಿ ಭೋಗಾಯ ಕಲ್ಪಂತೇ ದೃಢೇನೈವ ನಿಪೀಡಿತಾಃ" ಮನುಂ  
೭-೨೩। 2. ಒತ್ತುಲ್ಪಟ್ಟ, ಅದುಮಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರವಿಕರ್ಷ-  
ನಿನಾದಮಿಶ್ರರಂಧ್ರಃ ಪದವಿಷ್ಟಮ್ಭನಿಪೀಡಿತಸ್ತದಾನೀಮ್" ಕಿರಾಂ  
೧೩-೧೬। 3. ಉಜ್ಜಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿಕ್ಕಲ್ಪಟ್ಟ. "ತಂ ಕರ್ಣಮುಷ್ಣ  
ನಿಪೀಡಿತಪಿವರಾಸಂ ಶಯ್ಯೋತ್ತರಚ್ಛದವಿಮರ್ದಕುಶಾಙ್ಗರಾಗಮ್"  
ರಘುಂ ೫-೬೫। 4. ನೋಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕ್ಲೇಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಶ್ರಮಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ತಪಸಾ ನಿಪೀಡಿತಕೃಶಾಸ್ಯ ವಿರಹಿತ-  
ಸಹಾಯಸಂಪದಃ" ಕಿರಾಂ ೧೨-೩೯। 5. ಹಿಂಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಹಿಂಸುಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಿವಿಚಲ್ಪಟ್ಟ.

**ನಿಪೀತ ನಿಪೀತ (ವಿಂ)** 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕುಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ.  
ನಿ + ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ನಿಯತಂ  
ಹೇತಯಸ್ತೇಷಾಂ ನಿಪೀತೇ ವಹ್ನಿವಾರಿಣಿ। ನಿರ್ದಯಃ ಶತ್ರುನಾರೀಣಾಂ  
ಚಿತ್ತೇಷು ನಯನೇಷು ಚ" ಯಾದಂ ೨೨-೮೭। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಮನದಟ್ಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿಪೀತದ್ವಾಲಪಿತ-

ಸ್ತತೋ ನಲಂ ವಿರಮಂಭರ್ತಾಗಮಯಾಂಬುವ ಸ:" ನೈಷಂ ೧೫-೧೧।

3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೀರಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಬಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಕ್ಷ ತವಕ್ಷಾಣಿ  
ನಿಪೀತಪೀತದರ್ಪಾಣಿ ಪಾಣಿಃ ಕ್ಷಲ್ಯ ಯಾಚತೇ ನ:" ನೈಷಂ ೮-೯೮।

**ನಿಪೀತವತ್ ನಿಪೀತವತ್ (ವಿಂ)** 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕುಡಿದವನು.  
ನಿ + ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ  
ಗ್ರಹಿಸಿಕೊಂಡವನು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮನದಟ್ಟು ಮಾಡಿಕೊಂಡ  
ವನು. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ಎಳೆದುಕೊಂಡವನು,  
ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡಿದವನು. (ಲಾಕ್ಷಂ)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಣಿಪ್"  
(೪-೧-೬)। -ವತೀ -ವತಿಃ. "ಯದ್ವಲ್ಲಸಿತವಿಭ್ರಮಾ ಬತ  
ನಿಪೀತವತ್ಯಃ ಪುರಾ ನವಪ್ರಣಯವಿಭ್ರಮಾಕುಲಿತಮಾಲತೀದೃಷ್ಟಯಃ"  
ಮಾಲತೀಂ ೯-೩೮।

**ನಿಪೀತಿ ನಿಪೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಕುಡಿಯುವುದು. 2. ಗ್ರಹಣ  
ಮಾಡುವುದು. 3. ನೋಡುವುದು. (ಲಾಕ್ಷಂ)।

**ನಿಪೀಯಮಾನ ನಿಪೀಯಮಾನ (ವಿಂ)** ಕುಡಿಯಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ, ಪಾನಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಪಾ (ಪಾನೇ)  
ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ನಿಪೀಯಮಾನಸ್ತಬಕಾ  
ಶಿಲೀಮುಖೈರಶೋಕಯಷ್ಟಿಶ್ಚಲಬಾಲಪಲ್ಲವಾ" ಕಿರಾಂ ೮-೬।  
"ಚಿತ್ರಾಯ ತತ್ರ ತವ ನೇತ್ರನಿಪೀಯಮಾನಃ" ನೈಷಂ ೧೧-೫೯।

**ನಿಪುಣ ನಿಪುಣ (ವಿಂ)** 1. ಸಮರ್ಥ, ಪ್ರವೀಣ, ಕುಶಲ,  
ಚತುರ. ನಿಪುಣತಿ - ನಿ + ಪುಣ (ಕರ್ಮಣಿ ಶುಭೇ) "ಕ:"  
(೩-೧-೧೩೫)। "ಇತಿ ಪ್ರಿಯಂ ಕಾಞ್ಚಿದುಪೇತುಮಿಚ್ಛತೀಂ  
ಪುರೋಜ್ಞುನಿನ್ಯೇ ನಿಪುಣಃ ಸಖೀಜನಃ" ಕಿರಾಂ ೮-೮। "ಶ್ರೀಹರ್ಷೋ  
ನಿಪುಣಃ ಕವಿಃ ಪರಿಪದಪ್ಯೇಷಾ ಗುಣಗ್ರಾಹಿಣಿ" ರತ್ನಾಂ ೧-೫।  
2. ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿ, ಜಾಣ, ಸೂಕ್ಷ್ಮಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. "ನಿಪುಣೈ-  
ರತಿಬಾಲವೃದ್ಧವಾಕ್ಯಂ ನ ಪರಿಗ್ರಾಹ್ಯಮಿತಿ ಖ್ಯವಂತಿ ಸಂತಃ"  
ಯಾದಂ ೧೫-೭೪। 3. ತಿಳಿದವನು, ಬಲ್ಲವನು, ವಿವೇಕ  
ಶಾಲಿ. "ಅಸದಪ್ಯದಃ ಸಹಿತುಮರ್ಹಸಿ ನಃ ಕವ ವನೇಚರಾಃ ಕವ  
ನಿಪುಣಾ ಯತಯಃ" ಕಿರಾಂ ೬-೩೭। (ಅವ್ಯಂ) 4. ಜಾಣತನ  
ದಿಂದ, ಬುದ್ಧಿವಂತಿಕೆಯಿಂದ. "ನಿಪುಣಮನ್ವಿಷ್ಯನ್ ಉಪಲಬ್ಧ-  
ವಾನ್"।

**ನಿಪುಣತಾ ನಿಪುಣತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಬುದ್ಧಿವಂತಿಕೆ, ಜಾಣತನ.  
ನಿಪುಣಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೫-೧-೧೧೯)। 2. ಸಾಮರ್ಥ್ಯ,  
ದಕ್ಷತೆ.

**ನಿಪೇಯ ನಿಪೇಯ (ವಿಂ)** 1. ಪಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ನಿ + ಪಾ  
(ಪಾನೇ) "ಯತ್" (೩-೧-೯೭)। 2. ಪಾನಮಾಡಲು  
ಅರ್ಹವಾದ. 3. ಪಾನಮಾಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ. (ಲಾಕ್ಷಂ)  
4. ನೋಡಲ್ಪಡುವ. 5. ನೋಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ.  
6. ನೋಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. "ಭವಂತು ತಾವತ್ತವ ಲೋಚ-  
ನಾಞ್ಚಲಾ ನಿಪೇಯನೇಪಾಲನುಪಾಲಪಾಲಯಃ" ನೈಷಂ ೧೨-೪೩।



ನಿಫಲಾ ನಿಫಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜ್ಯೋತಿಷ್ಯ ತೀಲತೆ, ಕಂಗೊಂಗಿ ಗಿಡ.

ನಿಬದ್ಧ ನಿಬದ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಅಥ ಯಾವದಪಿ येन निबद्धो न प्रभू विचलितुं बलिविन्ध्यौ" ನೆಪಂ 4-130. "ಪ್ರಿಯಾಂಶುಕಗ್ರನ್ಥಿನಿಬದ್ಧವಾಸಸಂ ತದಾ ಪುರೋಧಾ ವಿದಧೇ ವಿದರ್ಮಜಾಮ್" ನೆಪಂ 16-37. 2. ಉಂಟು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಶಾಂತಿ: ಕೃತಸ್ತಸ್ಯ ಭುಜ್ಜಗ್ರಶತ್ರುಯಸ್ಮಿನ್ ನಿಬದ್ಧಾನುಶಯಾ ಸದೇವ" ಮಾಲತೀಂ 3-1. 3. ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡಚಣೆ ಉಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಒಳಗೆ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಗ್ರಂಥ). 6. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಚ್ಚಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 7. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿಬದ್ಧನಿ:ಶ್ವಾಸವಿಕಂಪಿತಾಧರಾ ಲತಾ ಇವ ಪ್ರಸ್ಫುರಿತಕಪಲ್ಲವಾ:" ಕಿರಾಂ 4-15. 8. ಬೀರಲ್ಪಟ್ಟ, ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರಿಯೇಷರಾ ಯಂಚತಿ ವಾಚಮುಮುಖೀ ನಿಬದ್ಧದೃಷ್ಟಿ: ಶಿಥಿಲಾಕುಲೋಂಚಯಾ:" ಕಿರಾಂ 6-15.

ನಿಬध्यಮಾನ ನಿಬದ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ಬಂಧಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಕಟ್ಟಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಸಂಕೋಲೆಯಲ್ಲಿ ಸಿಕ್ಕಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನ್" (3-2-124). "ಅಕರ್ಮತನ್ತ್ರಸ್ಯ ಜಗಂತಿ ಕರ್ಮಭಿನಿಬध्यಮಾನಾನಿ ವಿಮುಂಚತ-ಸ್ತವ" ಯಾದಂ 14-42.

ನಿಬಂಧ ನಿಬಂಧ (ಪುಂ) 1. ವಾಯಿದೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಕೊಡುವುದಾಗಿ ಹೇಳಿದ ವಸ್ತು. ನಿ + ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಬಂ" (3-3-10). 2. ಕರಾರು, ನಿಯಮ. "ದತ್ತಾ ಭೂಮಿ ನಿಬಂಧಂ ವಾ ಕೃತ್ವಾ ಲೇಖ್ಯಂ ತು ಕಾರಯೇತ್" ಯಾಜ್ಞಂ 1-310. 3. ಭದ್ರಪಡಿಸುವ ಸಾಧನ, ಕಟ್ಟು. 4. ಶೃಂಖಲೆ, ಬಂಧನ, ಸಂಕೋಲೆ. "ದೇವೀ ಸಂಪದ್ವಿಮೋಕ್ಷಾಯ ನಿಬಂಧಾಯಾಸುರೀ ಮತಾ" ಗೀತಾ 16-5. 5. ಅಶಯ, ಉದ್ದೇಶ. 6. ಅಡ್ಡಿ, ತಡೆ, ಅಡಚಣೆ. 7. ಮೂತ್ರ ಕಟ್ಟುವುದು, ಮೂತ್ರವಿಸರ್ಜನೆಯಾಗದಿರುವುದು. 8. ಮೂಲಾಧಾರ, ಮೂಲವಸ್ತು. 9. ಗ್ರಂಥರಚನೆ. 10. ನಿಂಬವೃಕ್ಷ, ಬೇವಿನ ಮರ.

ನಿಬಂಧನ ನಿಬಂಧನ (ನಂ) 1. ಹೇತು, ಕಾರಣ. ನಿಬಂಧನೇನ —ನಿ+ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-110). "ಯೋ ಹಿ ಕಪೋಲಪಾಂಡುತಾದಿಚಿಹ್ನ: ಸೂಚಿತ: ಪ್ರಾಗನುರಾಗಸ್ತಸ್ಯಾ: ಕಾಮಾಭಿಷಂಭ: ಸೋಽಪಿ ತ್ವನ್ನಿಬಂಧನ ಇತಿ ವ್ಯಕ್ತಮೇತತ್" ಮಾಲತೀಂ 1. 2. ವೀಣೆಯ ತಂತಿಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಬರಣೆ. "ಉಪನಾಹೋ ನಿಬಂಧನಮ್" ಅಮಂ. 3. ಗ್ರಂಥರಚನೆ.

"ಅನುಸ್ಮರಪದನ್ಯಾಸಾ ಸದೃತಿ: ಸನ್ನಿಬಂಧನಾ" ಮಾಘಂ 2-112. 4. ಬಂಧನ, ಕಟ್ಟುವುದು. ನಿ + ಬಂಧ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114). 5. ತಡೆಯುವುದು, ಅಡ್ಡಿ ಮಾಡುವುದು. 6. ಕಟ್ಟಳೆ, ನಿಯಮ. 7. ಅವಾಸಸ್ಥಾನ, ಆಶ್ರಯ. "ಸಹಜವಿಲಾಸನಿಬಂಧನಂ ಶರೀರಮ್" ಮಾಲತೀಂ 2-6. 8. ರಚನೆ, ಜೋಡಣೆ. "ಸಂಸ್ಕಾರಪೂತೇನ ವರಂ ವರೇಣ್ಯಂ ವಧುಂ ಸುಖಗ್ರಾಹ್ಯನಿಬಂಧನೇನ" ಕುಮಾರಂ 9-90. 9. ಅಸರೆ, ಅಧಾರ. "ಆಶಾನಿಬಂಧನಂ ಜಾತಾ ಜೀವಲೋಕಸ್ಯ" ತಂ ರಾಂ 3. 10. ಅಧೀನತೆ, ಪರಾವಲಂಬನ. "ತನ್ಮೇ ದೀರ್ಘಾಕ್ಷಿ ಯೇ ಪ್ರಾಣಾಸ್ತೇ ತ್ವದಾಶಾನಿಬಂಧನಾ:" ಮಾಲಂ 4-14. (ವಿಂ) 11. ಬಂಧಿಸುವ, ಕಟ್ಟುವ. ನಿ + ಬಂಧ ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯು:" (3-1-134). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಿ -ನೀ. 12. ಬಂಧನ, ಕಟ್ಟು, ಸಂಕೋಲೆ.

ನಿಬಂಧನತಾ ನಿಬಂಧನತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೇತುಭಾವ, ಕಾರಣತ್ವ. ನಿಬಂಧನಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (4-1-119). "ದೇವೇ ನಿರನ್ವತೀ ನಿಬಂಧನತಾಂ ವಹಂತಿ ಹಂತ ಪ್ರಯಾಸಪರೂಪಾಣಿ ನ ಪೌರೂಪಾಣಿ" ನೆಪಂ 11-44.

ನಿಬಂಧ್ಯ ನಿಬಂಧ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಬಂಧಿಸುವವನು, ಕಟ್ಟುವವನು. ನಿ + ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ತೃಚ್" (3-1-133). 2. (ಗ್ರಂಥ) ರಚಿಸುವವನು.

ನಿಬರ್ಹಣ ನಿಬರ್ಹಣ (ನಂ) 1. ಕೊಲ್ಲುವುದು, ವಧಿಸುವುದು. ನಿ+ಬರ್ಹ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114). "ವಿಗರ್ಹಿತಂ ಧರ್ಮಧನೇನಿಬರ್ಹಣಂ ವಿಶಿಷ್ಯ ವಿಶ್ವಾಸಜುಷಾಂ ದ್ವಿಷಾಮಪಿ" ನೆಪಂ 1-131. (ವಿಂ) 2. ಕೊಲ್ಲುವ, ವಧಿಸುವ. 3. ನಾಶಪಡಿಸುವ. ನಿ + ಬರ್ಹ "ಲ್ಯು:" (3-1-134). "ಅನಪಾಯಿ ನಿಬರ್ಹಣಂ ದ್ವಿಷಾಂ ನ ತಿತಿಕಾಸಮಮಸ್ತಿ ಸಾಧನಮ್" ಕಿರಾಂ 2-43.

ನಿಬರ್ಹಣೀಯ ನಿಬರ್ಹಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ವಧಿಸಲ್ಪಡುವ, ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಡುವ. ನಿ + ಬರ್ಹ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96). 2. ವಧಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. "ನಿಯಮೇನ ಮಯಾ ನಿಬರ್ಹಣೀಯ: ಪರಮಂ ಲಾಭಮರಾತಿಭಜ್ಞಮಾಹು:" ಕಿರಾಂ 13-12. 3. ನಾಶಪಡಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ.

ನಿಬರ್ಹಿತ ನಿಬರ್ಹಿತ (ವಿಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ+ಬರ್ಹ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ವಿಲೋಕನೇನೈವ ತವಾಮುನಾ ಮುನೇ ಕೃತ: ಕೃತಾರ್ಥೋಽಸ್ಮಿ ನಿಬರ್ಹಿತಾಂಹಸಾ" ಮಾಘಂ 1-29. 2. ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ, ವಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿಗ್ನತ: ಪರಿನಿಬರ್ಹಿತಂ ಮೃಗಂ ವ್ರಿಡಿತವ್ಯಮಪಿ ತೇ ಸಚೇತಸ:" ಕಿರಾಂ 13-46.



**ನಿಬಿಡ ನಿಬಿಡ** (ನಂ) 1. ಮೂಗು ಬಗ್ಗಿರುವಿಕೆ, ಮೂಗು ನಾಟಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ. ನಿ ನಾಸಿಕಾಯಾ ನತೇರ್ಯೆ "ಬಿಡ್ಚ್" (೪-೨-೩೨)। (ವಿಂ) 2. ಸಾಂದ್ರವಾದ, ದಟ್ಟವಾದ, ನಿರಂತರವಾದ. "ಧನಪೌತ್ರವಿವಿಧಿಶಾಲಿಮೂಲ ನಿಬಿಡಕಂಧ-ನಿಕಾಪರಣವಪ್ರ:" ಕಿರಾಂ ೧೩-೩। 3. ದೃಢವಾದ, ಬಲವಾದ. "ಶನೇ: ಕೃತಪ್ರಾಣವಿಮುಕ್ತಿರೀಶ: ಪರ್ಯಜ್ಞವನ್ಯ ನಿಬಿಡಂ ಬಿಭೇದ" ಕುಮಾಂ ೩-೪೯। 4. ಅಧಿಕವಾದ, ಬಹಳವಾದ. "ಯದ್ವಿಭಾರ ನಿಬಿಡಂ ಜಡಭೂಯಮ್" ನೆಪಂ ೪-೬೧। (ಅವ್ಯಂ) 5. ಬಲವಾಗಿ, ದೃಢವಾಗಿ. 6. ಅಧಿಕವಾಗಿ. "ನಿವಿಸಿಮಿ ನಿಬಿಡಂ ಪುರಾಣತ್ ಪಾಣಿನಾಥ ಶಿಥಿಲೇನ ತತ್ಕರಮ್" ನೆಪಂ ೧೮-೨೮। 7. ಸಾಂದ್ರವಾಗಿ, ದಟ್ಟವಾಗಿ. "ನಿಬಿಡಾ ವೃಕ್ಷಾ ಇತಿ ತು ಉಪಮಾನಾತ್ ಇತ್ಯಾಹು:" ಸಿಂ ಕೌ।

**ನಿಬಿಡಿತ ನಿಬಿಡಿತ** (ವಿಂ) ದಟ್ಟವಾಗಿರುವ, ಸಾಂದ್ರವಾಗಿರುವ, ಒತ್ತಾಗಿರುವ. ನಿಬಿಡಿತಸ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತಚ್" (೪-೨-೩೬)। "ಯಾಚಕಶ್ರೇಣಿವರ್ಜನದ್ವಯಶೋನಿಬಿಡಿತವಿಡಸ್ತು ರತ್ನಾಚಲ:" ನೆಪಂ ೧೨-೬೭।

**ನಿಬಿರೀಸ ನಿಬಿರೀಸ** (ವಿಂ) "ನಿಬಿಡ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ನಿ ನಾಸಿಕಾಯಾ ನತೇರ್ಯೆ "ಬಿರೀಸಚ್" (೪-೨-೩೨)। "ಜಘನಮಲಘುಪಿವರೋ ಕೃತ್ಯಾದುರನಿಬಿರೀಸನಿತಮ್ಬಭಾರಖೇದಿ" ಮಾಘಂ ೭-೨೦।

**ನಿಭ ನಿಭ** (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಾಜ, ನೆಪ. ನಿ + ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೬)। "ತೃಪಾಮಪಾಕೃತ್ಯ ನಿಭಾನ್ವಿಭಾಲಯ ಕ್ಷಿತಿಕ್ಷಿತಂ ಮಾಲಯಮಾಲಯಂ ರುಚ:" ನೆಪಂ ೧೨-೪೩। (ವಿಂ) 2. ಸದೃಶವಾದ, ಸಮಾನವಾದ. ನಿಯತಂ ಭಾತಿ—ನಿ+ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೬)। ಈ ಪದವು ಸಮಾನದಲ್ಲಿ ಉತ್ತರ ಪದವಾಗಿದ್ದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಸದೃಶಾರ್ಥವಾಗುವುದು. "ಸುಹೃತ್ತರಪದೇ ತ್ವಮಿ। ನಿಭಸಂಕ್ಷಾಶನಿಕಾಶ-ಪ್ರತೀಕಾಶೋಪಮಾದಯ:" ಅಮಂ। "ಭುಕ್ತುಡಿಫಿಣಿನಿನಾದನಿಭ ನಿ:ಶ್ವಾಸಫೂಕೃತ:" ನೆಪಂ ೧೭-೨೦। "ನಿಭಸ್ತು ಕಥಿತೋ ವ್ಯಾಜೇ ಪುಲ್ಲಿಂಗ: ಸದೃಶೋ ತ್ರಿಪು" ಮೇದಿಂ।

**ನಿಭಾಲನ ನಿಭಾಲನ** (ನಂ) ವೀಕ್ಷಿಸುವುದು, ನೋಡುವುದು. ನಿ + ಭಲ (ಆಭಂಡನೆ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।

**ನಿಭಾಲಯತ್ ನಿಭಾಲಯತ್** (ವಿಂ) ನೋಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಭಲ (ಆಭಂಡನೆ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ -ಯಾಂತಿ. "ತಾಂ ದೇವತಾಮಿವ ಮುಖೇಂದ್ರವಸ್ತ್ರಪ್ರಸಾದಾಮಕ್ಷಣಾ ರಸಾದನಿಮಿಷೇಣ ನಿಭಾಲಯಂತಿಮ್" ನೆಪಂ ೧೧-೧।

**ನಿಭಾಲಿತ ನಿಭಾಲಿತ** (ವಿಂ) ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಭಲ (ಆಭಂಡನೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ನಮ್ರಯಾ-ಶುಕವಿಕರ್ಷಿಣಿ ಪ್ರಿಯೇ ವಕ್ತ್ರವಾತಹತದೀಪ್ತದೀಪಯಾ। ಮತುಮೋಲಿ-ಮಣಿದೀಪಿತಾಸ್ತಯಾ ವಿಷಮೇನ ಕಕುಭೋ ನಿಭಾಲಿತಾ:" ನೆಪಂ ೧೮-೮೪।

**ನಿಭೂತ ನಿಭೂತ** (ವಿಂ) 1. ಭಯಗೊಂಡಿರುವ, ಬಹಳ ಹೆದರಿದ. ನಿತರಾಂ ನಿಶ್ಚಲಂ ಭೂತ:। 2. ಕಳೆದುಹೋದ.

**ನಿಭೂತ ನಿಭೂತ** (ವಿಂ) 1. ನಿಗೂಢವಾದ, ರಹಸ್ಯವಾದ, ಗುಟ್ಟಾದ. ನಿ+ಭೂ (ಭರಣೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಚರಣಪತನಪ್ರತ್ಯಾಖ್ಯಾನಪ್ರಸಾದಪರಾಙ್ಮುಖೇ ನಿಭೂತಕಿತವಾಚಾರೆ-ತ್ಯುಕ್ತೇ ಕ್ಷಾ ಪರೂಕೃತೇ" ಅಮರಂ ೨೦। 2. ವಿನೋದನಾದ, ವಿಧೇಯನಾದ. "ನಿಭೂತೇರಪಿ ಪೂರ್ವಮೇಕಮತ್ಯಾದಿಹೃತಸ್ಯಾಥ ವಿರುದ್ಧವೇಷಿತಾನಿ" ಯಾದಂ ೧೪-೧೦೭। 3. ನಿಶ್ಚಲವಾದ, ಸದ್ವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರಶಾಂತವಾದ. 4. ನಿರ್ಜನವಾದ, ವಿವಿಕ್ತವಾದ. "ನಿಭೂತನಿಕುಂಜಗೃಹಂ ಗತಯಾ ನಿಶಿ ರಹಸಿ ನಿಲಿಯ ವಸಂತಮ್" ಗೀತಗೋಂ ೨। 5. ನೆಟ್ಟಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಅಸಹ್ಯವಾದ. "ತಯಾ ವ್ಯಾಹೃತಸಂದೇಶಾ ಸಾ ಬಭೌ ನಿಭೂತಾ ಪ್ರಿಯೇ" ಕುಮಾಂ ೬-೨। 6. ನಿಶ್ಚಲವಾದ, ಸ್ಥಿರವಾದ, ಚಲಿಸದಿರುವ. "ನಿಷ್ಕಮ್ಪವೃಕ್ಷಂ ನಿಭೂತದ್ವಿರೇಕಂ ಮುಕಾಂಡಜಂ ಶಾಂತಮೃಗಪ್ರಚಾರಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೪೨। 7. ಮೃದುವಾದ, ಸೌಮ್ಯವಾದ, ತೇಜಸ್ವಲ್ಲದ. "ನಿಭೂತವಿಶಿಖರಂ ಪುಷ್ಪಾಪ-ದಂಡೋಪಿ ವತೇ ಪ್ರಶಮಿತವಿಷವಹ್ನೇ: ಸಾಮ್ಯಮಾಶೀವಿಷಸ್ಯ" ಮಂ ವೀಂ ೩-೧೪। 8. ಮರೆಯಾಗಿರುವ, ಕಾಣಿಸದಿರುವ. "ನಿಭೂತಾ ನಿಭೂತೇಂದ್ರನಾ ತುಲಾಮುದಿತಾರ್ಕಣ ಸಮಾರೋಹ ತತ್" ರಘುಂ ೮-೧೪। 9. ಕಳೆದು ಹೋದಲ್ಪಟ್ಟ. 10. ತುಂಬಿರುವ. (ಅವ್ಯಂ) 11. ರಹಸ್ಯವಾಗಿ, ಗುಟ್ಟಾಗಿ. "ನಲಾಯ ವಾಲವ್ಯಜನಂ ವಿಧುನ್ವತೀ ದಮಸ್ಯ ದಾಸ್ಯಾ ನಿಭೂತಂ ಪದೇರ್ಪಿತಾತ್" ನೆಪಂ ೧೬-೪೨। 12. ನಿಶ್ಚಲವಾಗಿ, ಸದ್ವಿಲ್ಲದ, ಮಾತನಾಡದೆ. "ಸುತನು, ಯದಿ ಮದೀಯೇನ ವಚಸಾ ತವ ತೃಪಾ ವಿತನ್ಯತೇ ತದಯಮಹಂ ಸ್ಥಿತೋ ನಿಭೂತಮ್" ಕಾದಂ ೧೩೯।

**ನಿಭೂತಾತ್ಮನ್ ನಿಭೂತಾತ್ಮನ್** (ವಿಂ) ಸ್ಥಿರಚಿತ್ತನಾದ, ದೃಢ ಸಂಕಲ್ಪವುಳ್ಳ. ನಿಭೂತ: ಆತ್ಮಾ ಯಸ್ಯ।

**ನಿಮಗ್ನ ನಿಮಗ್ನ** (ವಿಂ) 1. ಮುಳುಗಿರುವ, ಮುಳುಗಡೆಯಾಗಿರುವ. ನಿ+ಗ್ಮ ಮಸ್ತೌ (ಶುಕ್ಲೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಮಣಿಜಾಲಮಂಭಸಿ ನಿಮಗ್ನಮಪಿ ಸ್ಫುರಿತಂ ಮನೋಗತಮಿವಾ-ಕೃತಯ:" ಕಿರಾಂ ೬-೯। 2. ಒಳಗಡೆ ಸೇರಿಹೋಗಿರುವ, ಒಳಗಡೆಯಲ್ಲಿ ಅಡಗಿರುವ. "ವಲ್ಮೀಕಾರ್ಥನಿಮಗ್ನಮುತಿರಸಾ ಸಂದೃಷ್ಟಸರ್ಪತ್ವಚಾ" ಶಾಕುಂ ೭-೧೧।



**ನಿಮಗ್ನವತ್ ನಿಮಗ್ನವತ್** (ವಿಂ) ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿ ದವನು, ನೀರಿನೊಳಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವವನು. ನಿ + ಟು ಮಸ್ತೋ (ಶುದ್ಧಿ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨)।

**ನಿಮಜ್ಜತ ನಿಮಜ್ಜತ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ನಾನಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಮುಳುಗುತ್ತಿರುವ, ನೀರಿನೊಳಗೆ ಮುಳುಗಡೆಯಾಗುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಟು ಮಸ್ತೋ (ಶುದ್ಧಿ) "ಶತೃ" (೩-೨-೧೨೪)। "ನಿಮಜ್ಜತೋಽಂತ ಭವಾಣಿವಾಂತಶ್ಚಿರಾಯ ಮೇ ಕೂಲಮಿವಾಸಿ ಲಬ್ಧ:" ಸ್ತೋಂ ೨೦ ೨೪। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಮಜ್ಜತೀ -ಮಜ್ಜತೀ. "ನಿಮಜ್ಜತೀನಾಂ ಶ್ವಸಿತೋದ್ವತಸ್ತನ: ಶ್ರಮೋ ನು ತಾಸಾಂ ಮದನೋ ನು ಪಪ್ರಥೇ" ಕಿರಾಂ ೮-೫೩।

**ನಿಮಜ್ಜತು ನಿಮಜ್ಜತು** (ಪುಂ) 1. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗುವುದು, ನೀರಿನೊಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು. ನಿ + ಟು ಮಸ್ತೋ (ಶುದ್ಧಿ) "ಅಶುಕ್" (೩-೩-೮೯)। 2. ಹಾಸಿಗೆಗೆ ಹೋಗುವುದು, ಹಾಸಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಮಲಗುವುದು. "ತಲ್ಪೇ ಕಾಂತಾಂತರೇ: ಸಾರ್ಥಂ ಮನ್ಯೇಹಂ ಧಿಙ್ ನಿಮಜ್ಜತುಮ್" ಭಟಿಂ ೫-೨೦।

**ನಿಮಜ್ಜನ ನಿಮಜ್ಜನ** (ನಂ) ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗುವುದು, ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿ ಸ್ನಾನಮಾಡುವುದು. ನಿ + ಟು ಮಸ್ತೋ (ಶುದ್ಧಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ವೀಕ್ಷ್ಯ ವ: ಖಲು ತನೂಮೃತಾದಾಂ ದೃಙ್ನಿಮಜ್ಜನಮುಪೇತಿ ಸುಧಾಯಾಮ್" ನೈಷಂ ೫-೯೪।

**ನಿಮಜ್ಜನೀಯ ನಿಮಜ್ಜನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ನಾನಮಾಡಲು ಅರ್ಹನಾದ. ನಿ + ಟು ಮಸ್ತೋ (ಶುದ್ಧಿ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। 2. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಮುಳುಗಿ ಸ್ನಾನಮಾಡಬೇಕಾದ.

**ನಿಮಜ್ಜಯತ್ ನಿಮಜ್ಜಯತ್** (ವಿಂ) ಮುಳುಗಿಸುತ್ತಿರುವ, ಒಳಗೆ ಅದುಮುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಟು ಮಸ್ತೋ (ಶುದ್ಧಿ) + ಣಿಕ್ "ಶತೃ" (೩-೨-೧೨೪)। "ಪ್ರಿಯಾ ಮನೋಭೂಶರ-ದಾವದಾಹೇ ದೇವೀಸ್ತವದರ್ಶನೇ ನಿಮಜ್ಜಯದ್ವಿ:" (ಲಾಕ್ಷಂ) ನೈಷಂ ೮-೮೮। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತೀ -ಯಂತೀ. "ಸ್ಥಿತಸ್ಯ ರಾತ್ರಾವಧಿಶಯ್ಯ ಶಯ್ಯಾಂ ಮೋಹೇ ಮನಸ್ತಸ್ಯ ನಿಮಜ್ಜ-ಯಂತೀ" ನೈಷಂ ೩-೧೦೮। (ಲಾಕ್ಷಂ)।

**ನಿಮಜ್ಜಯಮಾನ ನಿಮಜ್ಜಯಮಾನ** (ವಿಂ) ಮುಳುಗಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಟು ಮಸ್ತೋ (ಶುದ್ಧಿ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಜಗದೇತನ್ನಿರಾಲಮ್ಬ ಕಾಮಲೋಭಾದಿಭಿ-ಬಲಾತ್। ನಿಮಜ್ಜಯಮಾನಂ ನಿರಯೇ ರಾಜಾ ದಂಡೇನ ಧಾರ್ಯತೇ" ಕಾಮಂದಂ ೪೧।

**ನಿಮನ್ತ್ರಕ ನಿಮಂತ್ರಕ** (ವಿಂ) ಆಹ್ವಾನ ಕೊಡುವವನು, ಕರೆಯುವವನು. ನಿ + ಮತ್ರಿ (ಗುಪ್ತಭಾಷಣ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ನಿಮನ್ತ್ರಣ ನಿಮಂತ್ರಣ** (ನಂ) 1. ಆಹ್ವಾನ, ಕೊಡುವುದು, ಕರೆಯುವುದು. ನಿ + ಮತ್ರಿ (ಗುಪ್ತಭಾಷಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಶ್ರಾದ್ಧಭೋಜನಕ್ಕಾಗಿ ಕರೆಯುವುದು.

**ನಿಮನ್ತ್ರಿತ ನಿಮಂತ್ರಿತ** (ವಿಂ) 1. ಕರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಆಹ್ವಾನ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಮತ್ರಿ (ಗುಪ್ತಭಾಷಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ನಿಮನ್ತ್ರಿತಸ್ತೇನ ವಿಧೇಹನಾಥ: ಸ ಪ್ರಾಹಿಣೋದ-ಭ್ರಾತರಮಾತದೀಕ್ಷ:" ಮಂ ವೀಂ ೧-೯। 2. ಶ್ರಾದ್ಧಭೋಜನಕ್ಕಾಗಿ ಕರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿಮನ್ತ್ರಿತೋ ದ್ವಿಜ: ಪಿತ್ರೇ ನಿಯತಾತ್ಮಾ ಭವೇತ್ಸದಾ" ಮನುಂ ೩-೧೮೮। 3. ಮಂತ್ರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ನಿಮಯ ನಿಮಯ** (ಪುಂ) ಪರಿವರ್ತನೆ, ವಿನಿಮಯ, ಬದಲಾವಣೆ, ಒಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಮತ್ತೊಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು ಪಡೆಯುವುದು, ಅದಲು ಬದಲು. ನಿ + ಮೀಡ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಅಕ್" (೩-೩-೫೬)। ಮಾರಲು ಅರ್ಹವಲ್ಲದ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಮಾತ್ರ ವಿನಿಮಯ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು. "ಪಕ್ವೇನಾಮಸ್ಯ ನಿಮಯಂ ನ ಪ್ರಶಂಸಂತಿ ಸಾಧವ:। ನಿಮಯೇತ್ ಪಕ್ವಮಾಮೇನ ಭೋಜನಾರ್ಥಾಯ ಭಾರತ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೭೮-೭।

**ನಿಮಾತವ್ಯ ನಿಮಾತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಅಳಿಯಲ್ಪಡುವ. 2. ಅಳಿಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅಳಿಯಬೇಕಾದ. ನಿ + ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) ಕರ್ಮದೊ "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬)। "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। -ಮಾನೀಯ: -ವ್ಯನೀಯ:.

**ನಿಮಾನ ನಿಮಾನ** (ನಂ) 1. ಮೌಲ್ಯ, ಬೆಲೆ. ನಿ + ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಯವಾನಾಂ ದ್ವೌ ಭಾಗೌ ನಿಮಾನಮಸ್ಯೋದಶ್ವಿಙ್ಗಾಗಸ್ಯ" ಸಿಂ ಕೌಂ। 2. ಅಳತೆ. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ನಿಮಾನೀಯ ನಿಮಾನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಅಳಿಯಲ್ಪಡುವ. 2. ಅಳಿಯಬೇಕಾದ. 3. ಅಳಿಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ನಿ + ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) ಕರ್ಮದೊ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)।

**ನಿಮಿ ನಿಮಿ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಇಕ್ಷ್ವಾಕು ಮಹಾರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮಗ, ಇಕ್ಷ್ವಾಕುರಾಜನ ಅನೇಕ ಮಂದಿ ಪುತ್ರರಲ್ಲಿ ಹನ್ನೆರಡನೆಯವನು. "ಆಸೀದ್ರಾಜಾ ನಿಮಿನಿಮಿ ಇಕ್ಷ್ವಾಕುಣಾಂ ಮಹಾತ್ಮನಾಮ್। ಪುತ್ರೋ ದ್ವಾದಶಮೋ ವೀರ್ಯೋ ಧರ್ಮೋ ಚ ಪರಿನಿಷ್ಠಿತ:" ರಾಮಾಂ। ಈ ರಾಜನು ವೈಜಯಂತವೆಂಬ ಪಟ್ಟಣವನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿ ರಾಜ್ಯಪಾಲನ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದು ಒಂದು ದಿನ ವಸಿಷ್ಠರಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ ಯಜ್ಞ ಮಾಡಬೇಕೆಂಬ ತನ್ನ ಸಂಕಲ್ಪವನ್ನು ತಿಳಿಸಲಾಗಿ ಇಂದ್ರನ ಯಾಗವನ್ನು



ನಡೆಯಿಸಲು ಒಪ್ಪಿಕೊಂಡಿರುವುದರಿಂದ ಅದು ಮುಗಿದ ನಂತರ ಬರುವುದಾಗಿ ವಸಿಷ್ಠರು ಹೇಳಿದರು. ಅಷ್ಟರಲ್ಲಿ ನಿಮಿಯು ಗೌತಮನ ಮೂಲಕ ಯಾಗವನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ಯಾಗವು ಪೂರ್ತಿಯಾಗುವ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಇಂದ್ರನ ಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡಿಸಿ ವಸಿಷ್ಠರೂ ಬಂದರು. ನಿಮಿಯು ತನ್ನನ್ನು ತಿರಸ್ಕರಿಸಿ ಯಾಗ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದುದರಿಂದಲೂ ಆ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಹಗಲು ವೇಳೆಯಲ್ಲಿ ನಿದ್ರಿಸುತ್ತಿದ್ದುದರಿಂದಲೂ ವಸಿಷ್ಠರು ಕೋಪಗೊಂಡು ದೇಹತ್ಯಾಗ ಮಾಡುವಂತೆ ನಿಮಿಗೆ ಶಾಪವಿತ್ತರು. ನಿಮಿಯು ಈ ಶಾಪದಿಂದ ದೇಹತ್ಯಾಗ ಮಾಡಿದ ಬಳಿಕ ದೇಶವು ಆರಾಜಕವಾದುದನ್ನು ಕಂಡು ಪ್ರಜೆಗಳು ನಿಮಿಯ ಬಲತೋಳನ್ನು ಮಥನಮಾಡಿ ಅದರಿಂದ ಜನಿಸಿದ ಪುರುಷನಿಗೆ ವಿದೇಹ, ಮಿಥಿ: ಮತ್ತು ಜನಕ: ಎಂದು ಹೆಸರನ್ನಿಟ್ಟರು. ಮುಂದೆ ಈ ವಂಶದವರಿಗೆ ವಿದೇಹ, ಮೆಥಿಲ, ಜನಕ: ಎಂಬ ಹೆಸರಾದುವು. "ಯಸ್ಮಾತ್ವ-ಮನ್ಯಂ ವೃತವಾನ್ ಸಾಮವಜ್ಞಾಯ ಪಾರ್ಥಿವ। ಚೇತನೇನ ವಿನಾಭೂತೋ ದೇಹಸ್ತೇ ಪಾರ್ಥಿವೈಷ್ಯತಿ" ರಾಮಾಂ। ನನ್ನೊಡನೆ ಮಾತನ್ನೂ ಆಡದೆ ನನಗೆ ತಿಳಿಯದೆ ಶಾಪ ಕೊಟ್ಟದ್ದರಿಂದ ನೀನೂ ದೇಹತ್ಯಾಗಮಾಡೆಂದು ನಿಮಿಯೂ ವಸಿಷ್ಠರನ್ನು ಶಪಿಸಿದನು. ನಿಮಿಯ ಯಾಗಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ ಹವಿರ್ಭಾಗವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಲು ಬಂದ ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಕುರಿತು ಮುತ್ತಿಕ್ಕುಗಳು ಯಜಮಾನನಿಗೆ ವರವನ್ನು ಕೊಡಬೇಕೆಂದು ಕೇಳಿದರು. ನಿಮಿಯೂ ಪುನಃ ಶರೀರಗ್ರಹಣ ಮಾಡದೆ ಎಲ್ಲರ ಕಣ್ಣುಗಳಲ್ಲಿಯೂ ತಾನು ವಾಸಮಾಡುವಂತೆ ವರವನ್ನು ದೇವತೆಗಳಲ್ಲಿ ಕೇಳಿಕೊಂಡನು. ದೇವತೆಗಳೂ ಈ ವರವನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದರು. ಅನಂತರ ಸಕಲ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಕಣ್ಣುಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಉನ್ನೇಷ ನಿಮೇಷಗಳು ಪ್ರಾರಂಭವಾದುವು. "ಯಸ್ಮಾನ್ಮಾಸಂಭಾಷ್ಯಾಜಾನತ ಏವ ಶಯಾನಸ್ಯ ಶಾಪೋತ್ಸರ್ಗಮಸೌ ದೃಷ್ಟಗುರುಶ್ಚಕಾರ ತಸ್ಮಾತ್ತಸ್ಯಾಪಿ ದೇಹ: ಪತಿಷ್ಯತಿತಿ ಪ್ರತಿಶಾಪಂ ದತ್ವಾ ದೇಹಮತ್ಯಜತ್। ತಚ್ಚಾಪಾಚ್ಚ ಮಿತ್ರಾವರಣಯೋಸ್ತೇಜಸಿ ವಸಿಷ್ಠಚೇತ: ಪ್ರವಿಷ್ಟಮ್। ಯಜ್ಞಸಮಾಪ್ತೌ ಚ ಭಾಗಗ್ರಹಣಾಯ ದೇವಾನಾಗತಾನೃತ್ವಿಜ ಋಚು: ಯಜಮಾನಾಯ ವರೋ ದೀಯತಾಮಿತಿ। ದೇವೇಶ್ಚಂದಿತೋಽಸೌ ನಿಮಿರಾಹ ನಹ್ಯೇತಾದೃಗನ್ಯದ್ದು:ಖಮಸ್ತಿ ಯಚ್ಚರೀರಾತ್ಮನೋವಿಯೋಗೇ ಭವತಿ। ತದಹಮಿಚ್ಛಾಮಿ ಸಕಲಲೋಕ-ಲೋಚನೇಷು ವಸ್ತುಂ ನ ಪುನ: ಶರೀರಗ್ರಹಣಂ ಕರ್ತುಂ ಇತ್ಯೇವಮುಕ್ತೇ-ದೇವೇರಸಾವಶೇಷಭೂತಾನಾಂ ನೇತ್ರೇಷ್ವವತಾರಿತ:। ತತೌ ಭೂತಾನ್ಯುನ್ಮೇಷ-ನಿಮೇಷಂ ಚಕ್ರು:" ವಿಷ್ಣುಪುಂ ೪-೫। 2. ವತ್ತಾತ್ಮೇಯನ ಪುತ್ರ:

ನಿಮಿತ್ತ ನಿಮಿತ್ತ (ವಿಂ) 1. ಅಳಿಯಲ್ಲಟ್ಟ. ನಿ + ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಅಗಲ ಮತ್ತು

ಎತ್ತರಗಳಲ್ಲಿ ಸಮವಾಗಿರುವ. (ನಂ) 3. ಅಳತೆ. ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)।

ನಿಮಿತ್ತವತ್ ನಿಮಿತ್ತವತ್ (ವಿಂ) ಅಳಿದವನು, ಅಳತೆಮಾಡಿದವನು. ನಿ + ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨)।

ನಿಮಿತ್ತ ನಿಮಿತ್ತ (ನಂ) 1. ಹೇತು, ಕಾರಣ. ನಿ + ಮಿಮಿಡಾ (ಸ್ನೇಹನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೮೭)। "ಸ್ವೇಚ್ಛೋಪ-ಸರ್ಪಣಮಪಿ ಪ್ರತಿಮಾಭಿಮಾನೇ ಭೇದಭ್ರಮೇ ಪುನರಮಿಷು ನ ಮೇ ನಿಮಿತ್ತಮ್" ನೆಪಂ ೧೩-೪೨। 2. ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು, ಲಕ್ಷಣ. "ನಿಮಿತ್ತಂ ಹೇತುಲಕ್ಷಣಗೋ:" ಮೇದಿಂ। 3. ನೆಪ, ವ್ಯಾಜ. "ನಿಮಿತ್ತಮಾತ್ರಂ ಭವ ಸವ್ಯಸಾಚಿನ್" ಗೀತಾ ೧೧-೩೩। 4. ಶಕುನ, ಒಳ್ಳೆಯದನ್ನು ಅಥವಾ ಕೆಟ್ಟದ್ದನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಒಂದು ಘಟನೆ. "ನಿಮಿತ್ತಾನಿ ಚ ಪಶ್ಯಾಮಿ ವಿಪರೀತಾನಿ ಕೇಶವ" ಗೀತಾ ೧-೩೧। "ತಾಂ ಪುಣ್ಯದರ್ಶನಾ ದೃಷ್ಟಾ ನಿಮಿತ್ತಜಸ್ತಪೋನಿಧಿ:" ರಘುಂ ೧-೮೬। 5. ಲಕ್ಷ್ಯ, ಗುರಿ. "ನಿಮಿತ್ತಾದಪರಾಢ್ವೇಷೋರ್ಧಾನುಷ್ಕಸ್ಯೇವ ವಲಿತಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೨೭।

ನಿಮಿತ್ತಕಾರಣ ನಿಮಿತ್ತಕಾರಣ (ನಂ) (ನೈಯಾಯಿಕ ಮತದಲ್ಲಿ) ಮೂರು ವಿಧ ಕಾರಣಗಳಿಲ್ಲೊಂದು. (1) ಸಮವಾಯಿಕಾರಣಮ್, (2) ಅಸಮವಾಯಿಕಾರಣಮ್ ಮತ್ತು (3) ನಿಮಿತ್ತಕಾರಣಮ್ ಎಂದು ಕಾರಣವು ಮೂರು ವಿಧ. (1) ಸಮವಾಯಿ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ ಕಾರಣವು ಸಮವಾಯಿಕಾರಣ. ಉದಾ: "ತನ್ತವ: ಪಟಸ್ಯ"। ತಂತುಗಳಲ್ಲಿ ಸಮವಾಯಿಸಂಬಂಧದಿಂದ ಪಟಾತ್ಮಕ ಕಾರ್ಯವುಂಟುಮಾಡುವುದರಿಂದ ತಂತುಗಳು ಸಮವಾಯಿಕಾರಣ. (2) ಕಾರ್ಯದೊಡನೆ ಅಥವಾ ಕಾರಣದೊಡನೆ ಸಮವಾಯಿಸಂಬಂಧದಿಂದ ಇರುವ ಕಾರಣವು ಅಸಮವಾಯಿ ಕಾರಣ. ಉದಾ: "ತನ್ತುಸಂಯೋಗ: ಪಟಸ್ಯ, ತನ್ತುರೂಪಂ ಪಟಗತರೂಪಸ್ಯ ಚ"। ಕಾರಣವಾದ ತಂತುವಿನಲ್ಲಿ ಸಮವಾಯಿಸಂಬಂಧದಿಂದ ಇರುವ ತಂತು ಸಂಯೋಗವು ಪಟಾತ್ಮಕ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಕಾರಣ. ತಂತು ರೂಪವು ಸಮವಾಯಿಕಾರಣವಾದ ಪಟದೊಡನೆ ಇದ್ದು ಕಾರ್ಯವುಂಟುಮಾಡುವುದರಿಂದ ಪಟಗತರೂಪಕ್ಕೆ ಅಸಮವಾಯಿಕಾರಣ. (3) ಇವೆರಡಕ್ಕೂ ಭಿನ್ನವಾದ ಕಾರಣವು ನಿಮಿತ್ತಕಾರಣ. ಉದಾ: "ತುರಿವೇಮಾದಿಕಂ ಪಟಸ್ಯ"। ನೇಯಿಗೆಯವನು ಪಟ (ವಸ್ತ್ರ)ವನ್ನು ನೇಯಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಮಗ್ಗದ ಕೋಲು ಮೊದಲಾದುವು ಪಟಾತ್ಮಕ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಮವಾಯಿ ಮತ್ತು ಅಸಮವಾಯಿಕಾರಣಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನವಾದ ಕಾರಣವಾದುದರಿಂದ ನಿಮಿತ್ತ ಕಾರಣ.



**ನಿಮಿತ್ತಕೃತ್ ನಿಮಿತ್ತಕೃತ್** (ಪುಂ) ವಾಯಸ, ಕಾಗೆ. ನಿಮಿತ್ತ  
ಶಕುನಂ ಸ್ತೇನ ಕರೋತಿ — ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣ) “ವಿವ್”  
(೩-೨-೭೬)। ಕಾಗೆಯು ಶಬ್ದದಿಂದ ಶುಭಾಶುಭಗಳನ್ನು  
ಸೂಚಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ನಿಮಿತ್ತಜ್ಞ ನಿಮಿತ್ತಜ್ಞ** (ವಿಂ) ಶುಭ ಮತ್ತು ಅಶುಭ ಫಲ  
ಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಶಕುನಗಳನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ. ನಿಮಿತ್ತ  
ಜಾನಾತಿ — ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) “ಕ:” (೩-೨-೩)। “ತಾಂ  
ಪುಣ್ಯದರ್ಶನಾಂ ದೃಷ್ಟಾ ನಿಮಿತ್ತಜ್ಞಸ್ತಪೋನಿಧಿ:” ರಘುಂ ೧-೮೬।  
ಎವ ನಿಮಿತ್ತವಿತ್ ನಿಮಿತ್ತವಿತ್ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ನಿಮಿತ್ತಜ್ಞಾನ ನಿಮಿತ್ತಜ್ಞಾನ** (ನಂ) ಶುಭಾಶುಭ ಫಲ  
ಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಶಕುನಗಳ ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ನಿಮಿತ್ತಸ್ಯ  
ಶಕುನಸ್ಯ ಜ್ಞಾನಮ್।

**ನಿಮಿಮಾನ ನಿಮಿಮಾನ** (ವಿಂ) ಅಳಿಯುತ್ತಿರುವ. ನಿ +  
ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) “ಶಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪)।

**ನಿಮಿಷ ನಿಮಿಷ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ನಿಮಿಷತಿ  
ನಿಮಿಲಿತಾಕ್ಷೋ ಭವತಿ ತದ್ವಿರೋಧಿಷು — ತಾನ ಕಡಾಕ್ಷಯತಿ।  
“ಯೋಸೌ ಸತಾಂ ನೇಕ್ಷತೇ ಹಿ ನಿಮಿಷ: ಸ ವಿರೋಧಿನ:” ಇತಿ  
ನಿರುಕ್ತಿ:। ತನ್ನ ವಿರೋಧಿಗಳನ್ನು ಕಡೆಗಣ್ಣಿನಿಂದಲೂ  
ನೋಡುವುದಿಲ್ಲವಾದ್ದರಿಂದ ವಿಷ್ಣುವಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು.  
“ನಿಮಿಷೋನಿಮಿಷ: ಸ್ತಂಭಿ ವಾಚಸ್ಪತಿರ್ದಾರಣಿ:” ವಿಂ ಸಂ 1  
2. ಕಣ್ಣು ಮುಚ್ಚುವುದು. 3. ಕಣ್ಣು ಮುಚ್ಚಿ ತೆರೆಯು  
ವಷ್ಟು ಕಾಲ. “ಸಜ್ಯಂ ಚ ಚಕ್ರೇ ನಿಮಿಷಾಂತರೇಣ ಶರಾಂಶ್ಚ  
ಜಗ್ರಾಹ ದಶಾರ್ಧಸಂಖ್ಯಾನ್” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೦೩-೨೪। “ನಿಮೇಷ-  
ನಿಮಿಷೌ ನೇತ್ರಮೀಲನೇ ಕಾಲಭಿವ್ಯಪಿ” ಹೇಮಂ 1 4. ಒಂದು  
ವಿಧ ಕಣ್ಣಿನ ರೆಪ್ಪೆಯ ರೋಗ.

**ನಿಮಿಷತ್ ನಿಮಿಷತ್** (ವಿಂ) ಮುಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ,  
ಸಂಕೋಚ ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಮಿಷ (ಸ್ಪರ್ಧಾಯಾಮ್)  
“ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। “ವಿರಹತಪ್ತತದ್ಭಿವೇಶಿತಾ  
ಕಮಲಿನಿ ನಿಮಿಷದಲಮುಷ್ಠಿಮಿ:” ನೈಷಂ ೪-೩೨। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
“ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)। —ನಿಮಿಷಂತಿ — ಮಿಷಂತಿ.

**ನಿಮಿಷಿತ ನಿಮಿಷಿತ** (ನಂ) ಕಣ್ಣು ಮುಚ್ಚುವುದು,  
ನೇತ್ರ ನಿಮಿಲನ. ನಿ + ಮಿಷ (ಸ್ಪರ್ಧಾಯಾಮ್) “ಕ್ತ:”  
(೩-೩-೧೧೪)।

**ನಿಮಿಲತ್ ನಿಮಿಲತ್** (ವಿಂ) ಸಂಕೋಚಹೊಂದುತ್ತಿರುವ,  
ಮುಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಮಿಲ (ನಿಮೇಷಣ) “ಶತ್”  
(೩-೨-೧೨೪)। “ನಿಮಿಲದಾಕೇಕರಲೋಲಚಕ್ಷುಷಾಂ ಪ್ರಿಯೋಪಕಂಠಂ  
ಕೃತಗಾತ್ರವೇಪಥು:” ಕಿರಾಂ ೮-೪೩। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್”  
(೪-೧-೬)। —ಮಿಲಂತಿ — ಮಿಲಂತಿ.

**ನಿಮಿಲನ ನಿಮಿಲನ** (ನಂ) ಸಂಕೋಚ ಹೊಂದುವುದು,  
ಮುಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ನಿ + ಮಿಲ (ನಿಮೇಷಣ) ಭಾವ  
“ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪)। “ನಿಮಿಲನಸ್ಪಷ್ಟವಿಲೋಕನಾಮ್ಯಾಂ  
ಕದೃಶಿತಸ್ತಾ: ಕಲಯನ್ ಕಡಾಕ್ಷಿ:” ನೈಷಂ ೬-೨೨।

**ನಿಮಿಲಯತ್ ನಿಮಿಲಯತ್** (ವಿಂ) ಮುಚ್ಚಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಕಣ್ಣು ಮುಚ್ಚುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಮಿಲ  
(ನಿಮೇಷಣ) + ಣಿಚ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
“ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)। —ಮಿಲಯಂತಿ — ಮಿಲಯಂತಿ.

**ನಿಮಿಲಾ ನಿಮಿಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಣ್ಣು ಮುಚ್ಚುವುದು.  
2. ನಿವ್ರ. ನಿ + ಮಿಲ (ನಿಮೇಷಣ) “ಅ:” (೩-೩-೧೦೩)।

**ನಿಮಿಲಿತ ನಿಮಿಲಿತ** (ವಿಂ) ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಮಿಲ  
(ನಿಮೇಷಣ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)। “ನಿಮಿಲಿತಾಕ್ಷ: ಪರಯಾ  
ಭ್ರಮಂತ್ಯಾ ಸಂಘಟಮಾಸಾಧ್ಯ ಚಮಚ್ಚಕಾರ” ನೈಷಂ ೬-೧೩।

**ನಿಮಿಲಿತವತ್ ನಿಮಿಲಿತವತ್** (ವಿಂ) ಕಣ್ಣು ಮುಚ್ಚಿ  
ಕೊಂಡಿರುವ. ನಿ + ಮಿಲ (ನಿಮೇಷಣ) “ಕ್ತವತು:”  
(೩-೨-೧೦೨)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)। —ಮಿಲಿತವಂತಿ  
— ಮಿಲಿತವಂತಿ. “ಪಶ್ಯ ಭೀರು ನ ಮಯಾಪಿ ದೃಶ್ಯಸೇ ಯನ್ನಿ-  
ಮಿಲಿತವಂತಿ ದೃಶಾವಸಿ” ನೈಷಂ ೧೮-೮೯।

**ನಿಮೂಲ ನಿಮೂಲ** (ವಿಂ) ಬೇರಿಲ್ಲದ, ಮೂಲರಹಿತವಾದ,  
ಬುಡವಿಲ್ಲದ. ನಿವೃತ್ತಂ ಮೂಲಂ ಯಸ್ಯ। ನಿಮೂಲಕಾಂ ಕಠತಿ।

**ನಿಮೇಯ ನಿಮೇಯ** (ಪುಂ) 1. ವಿನಿಮಯ, ಬದಲಾವಣೆ,  
ಅದಲು ಬದಲು. (ವಿಂ) 2. ಅಳಿಯಲ್ಪಡುವ. 3. ಅಳಿ  
ಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 4. ಅಳಿಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. ನಿ +  
ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) “ಯತ್” (೩-೧-೯೭)।

**ನಿಮೇಷ ನಿಮೇಷ** (ಪುಂ) 1. ಕಣ್ಣು ಮುಚ್ಚುವುದು, ಕಣ್ಣು  
ರೆಪ್ಪೆಯಾದುವುದು, ಕಣ್ಣು ಮಿಟುಕಿಸುವುದು. ನಿ + ಮಿಷ  
(ಸ್ಪರ್ಧಾಯಾಮ್) ಭಾವ “ವಚ್” (೩-೩-೧೮)। “ಅಲಸ-  
ವಲಿತ: ಪ್ರೇಮಾದ್ರಾದ್ರೆಮ್ಹುಮುಕುಲೀಕೃತ: ಕ್ಷಣಮಭಿಮುಖೇಲಜ್ಜಾ-  
ಲೋಲನಿಮೇಷಪರಾಡ್‌ಮುಖ:” ಅಮರಂ ೪। 2. ಕಣ್ಣು ಮಿಟುಕಿಸು  
ವಷ್ಟು ಕಾಲ, ಒಂದು ಸಲ ರೆಪ್ಪೆಯಾಡಿಸುವಷ್ಟು ಕಾಲ.  
“ನಿಮೇಷನಿಮಿಷೌ ನೇತ್ರಮೀಲನೇ ಕಾಲಭಿವ್ಯಪಿ” ಹೇಮಂ 1 “ಯಥಾ  
ಯಥೇಹ ತ್ವದ್ವಿವೇಕ್ಷಯಾನಯಾ ನಿಮೇಷಮಪ್ಯೇಷ ಜನೋ ವಿಲಂಬತೇ” ನೈಷಂ  
೯-೨೦। “ಅಷ್ಟಾದಶನಿಮೇಷಾಸ್ತು ಕಾಷ್ಠಾ ತ್ರಿಶತು ತಾ: ಕಲಾ”  
ಅಮಂ 1

**ನಿಮೇಷಣ ನಿಮೇಷಣ** (ನಂ) ಕಣ್ಣು ಮುಚ್ಚುವುದು. ನಿ +  
ಮಿಷ (ಸ್ಪರ್ಧಾಯಾಮ್) ಭಾವ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪)।  
“ನಿಮೇಷಣೇನೈವ ಕಿಯಚ್ಚಿರಾಯುಷಾ ಜನೇಷು ಯನೋರೂಪಾದಿ ನಿರ್ಣಯ:”  
ನೈಷಂ ೧೬-೭೭।



**ನಿಮಿಷಕ ನಿಮಿಷಕರುಚ್** (ಪುಂ) ಖದ್ಯೋತ, ಮಿಂಚು ಹುಳ, ಮಿಣುಕು ಹುಳ. ನಿಮಿಷ ತತ್ಕಾಲಂ ವ್ಯಾಪ್ಯ ರೋಚತೆ — ರುಚ (ದೀಪ್ತೌ) “ಕಿವ್” (೩-೨-೭೬)। “ಛಾಂತೋನ್ಮೇಷಶ್ಚ ಖದ್ಯೋತೋ ಜ್ಯೋತಿರ್ಬಿಜಂ ನಿಮಿಷಕ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ನಿಮಿಷನಿಃಸ್ವ ನಿಮಿಷನಿಃಸ್ವ** (ವಿಂ) ಕಣ್ಣು ಮುಚ್ಚುಟ್ಟ ಎಲ್ಲದ, (ಕಣ್ಣಿನ) ರೆಪ್ಪೆಯಾದದಿರುವ. ನಿಮಿಷೇ ನಿಃಸ್ವಮ್। “ಅಮಸ್ತದಮ್ಯಾಸಭರಂ ವಿವೃಣ್ವತೇ ನಿಮಿಷನಿಃಸ್ವೇರಬುನಾಪಿ ಲೋಚನೇ” ನೈಷಂ ೧-೨೭।

**ನಿಮ್ನ ನಿಮ್ನ** (ವಿಂ) 1. ಗಂಭೀರವಾದ, ಅಳವಾದ. ನಿಮನತಿ — ಮ್ನಾ (ಅಮ್ಯಾಸೇ) “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೬)। “ಮಧ್ಯೇ ಕ್ಷಾಮಾ ಚಕಿತಹರಿಣಿಪ್ರೇಕ್ಷಣಾ ನಿಮ್ನನಾಭಿಃ” ಮೇಘಂ ೨-೧೯। 2. ತಗ್ಗಾಗಿರುವ, ಎತ್ತರವಿಲ್ಲದ. “ಸನಿಪತ್ಯ ಶನಕೇರಯ ನಿಮ್ನಾದನ್ವಕಾರಮುದವಾಪ ಸಮಾನಿ” ಕಿರಾಂ ೯-೧೧। “ಕ ಇಪ್ಸಿತಾರ್ಥಸ್ಥಿರನಿಶ್ಚಯಂ ಮನಃ ಪಯಶ್ಚ ನಿಮ್ನಾಭಿಮುಖಂ ಪ್ರತೀಪ-ಯೇತ್” ಕುಮಾಂ ೪-೪।

**ನಿಮ್ನಗಾ ನಿಮ್ನಗಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನದಿ, ಹೊಳೆ. ನಿಮ್ನ ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ಙಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)। “ಪ್ರಶ್ಯೋತನ್ಮದಸುರಭಿಣಿ ನಿಮ್ನಗಾಯಾಃ ಕ್ರಿಡಂತೋ ಗಜಪತಯಃ ಪಯಾಸಿ ಕೃತ್ವಾ” ಕಿರಾಂ ೭-೩೪। “ಉದಧೇರಿವ ನಿಮ್ನಗಾ-ಶತೇಷು” ರಘುಂ ೮-೮। (ವಿಂ) 2. ಕೆಳಮುಖವಾಗಿ ಹೋಗುವ.

**ನಿಮ್ನತಾ ನಿಮ್ನತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಳವಾಗಿರುವಿಕೆ. 2. ತಗ್ಗಾಗಿರುವಿಕೆ. ನಿಮ್ನಸ್ಯ ಭಾವಃ “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯)। “ತ್ವಃ” (೪-೧-೧೧೯)। ನಿಮ್ನತ್ವಮ್ ನಿಮ್ನತ್ವಮ್। “ಕಿರಾತಸೇನೈರಪಿಧಾಯ ರೇಚಿತಾ ಭುವಃ ಕ್ಷಣಂ ನಿಮ್ನತಯೇವ ಭೇಜಿರೆ” ಕಿರಾಂ ೧೪-೩೩।

**ನಿಮ್ನದೇಶ ನಿಮ್ನದೇಶ** (ಪುಂ) ತಗ್ಗುಪ್ರದೇಶ, ಹಳ್ಳವಾಗಿರುವ ಜಾಗ.

**ನಿಮ್ನೋತ್ತತ ನಿಮ್ನೋತ್ತತ** (ವಿಂ) ಹಳ್ಳತಿಟ್ಟಾಗಿರುವ, ತಗ್ಗು ಮತ್ತು ಎತ್ತರವಾಗಿರುವ. ನಿಮ್ನಶ್ಚ ಉತ್ತತ। “ನಿಪತ್ಯ ಚೋತ್ಪತ್ಯ ಚ ಲಕ್ಷಯಂತಿ ನಿಮ್ನೋತ್ತತಾನ್ ವರ್ಷವಿಭಾಗ-ದೇಶಾನ್” ಯಾದಂ ೧೮-೧೬।

**ನಿಮ್ಬ ನಿಂಬ** (ಪುಂ) 1. ಬೇವಿನ ಮರ. ನಿವಿ (ಸೇವನೆ) “ಅವ್” (೩-೧-೧೩೪)। ವಬಯೋರಭೇದಃ। (ನಂ) 2. ಬೇವಿನ ಎಲೆ ಕಾಯಿ ಹಣ್ಣು ಮುಂತಾದುದು. “ಭುಜ್ಜಾನಸ್ಯ ನವಂ ನಿಮ್ಬಂ ಪರಿವೇವಿಷತಿ ಮಧೌ। ಸಪತ್ನೀಷ್ವಪಿ ಮೇ ರಾಗಂ ಸಂಭಾವ್ಯ ಸ್ವರೂಪಃ ಸ್ಮರೇ” ನೈಷಂ ೨೦-೯೦।

**ನಿಮ್ಬತರು ನಿಂಬತರು** (ಪುಂ) 1. ಪಾರಿಜಾತ ವೃಕ್ಷ. ಮಂದಾರ ವೃಕ್ಷ. 2. ಬೇವಿನ ಮರ. ನಿಮ್ಬ ಇವ ನಿಮ್ಬಸಂಜ್ಞಕೌ ವಾ ತರುಃ। “ಪಾರಿಭದ್ರೇ ನಿಮ್ಬತರುಮಂದಾರಃ ಪಾರಿಜಾತಕಃ” ಅಮಂ।

**ನಿಮ್ಬತೇಲ ನಿಂಬತೇಲ** (ನಂ) ಬೇವಿನ ಎಣ್ಣೆ. ನಿಮ್ಬಸ್ಯ ತೇಲಮ್। “ಇದಂ ಚ ಪುರಾಣನಿಮ್ಬತೇಲಾಕ್ತಪರಿಭುಜ್ಯಮಾನರಸೋನಕ-ರಸಗಂಧಿಭಿಃ” ಮಾಲತೀಂ ೪।

**ನಿಮ್ಬಪಂಚಕ ನಿಂಬಪಂಚಕ** (ನಂ) ಬೇವಿನ ಮರದ ಐದು ವಸ್ತುಗಳು, ಬೇವಿನ — ಎಲೆ, — ತೊಗಟೆ, — ಹೂವು, — ಹಣ್ಣು, ಮತ್ತು — ಬೇರು.

**ನಿಮ್ಬಬೀಜ ನಿಂಬಬೀಜ** (ಪುಂ) ಹಾಳೆ ಗಿಡ.

**ನಿಮ್ಬ ನಿಂಬೂ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ನಿಂಬೆ ಗಿಡ. ನಿವಿ (ಸೇವನೆ) “ಙಃ” ಬಾಹುಂ।

**ನಿಮ್ಲೋಚ ನಿಮ್ಲೋಚ** (ಪುಂ) ಅಸ್ತಹೊಂದುವುದು. ನಿ + ಮ್ಲುಚ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ “ಘವ್” (೩-೩-೧೮)। “ಕೃಷ್ಣ-ಬ್ರೂಮಣಿನಿಮ್ಲೋಚೇ ಗೀರ್ಣೇಷ್ವಜಗರೇಣ ಹ। ಕಿನ್ತು ನಃ ಕುಶಲಂ ಬ್ರೂಯಾಂ ಗತಶ್ರೀಷು ಗೃಹೇಷ್ವಹಮ್” ಭಾಗಂ ೩-೨-೭।

**ನಿಮ್ಲೋಚನ ನಿಮ್ಲೋಚನ** (ನಂ) ಅಸ್ತಹೊಂದುವುದು, ಮರೆಯಾಗುವುದು. ನಿ + ಮ್ಲುಚ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪)।

**ನಿಮ್ಲೋಚನಿ ನಿಮ್ಲೋಚನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವರುಣನ ಪಟ್ಟಣ, ಸೂರ್ಯನು ಅಸ್ತನಾಗುವ ಪ್ರದೇಶ. ನಿಮ್ಲೋಚನ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೧೪)। “ಪಶ್ಚಾದ್ವಾರುಣಿ ನಿಮ್ಲೋಚನೀ ನಾಮ” ಭಾಗಂ ೪-೨೧-೯।

**ನಿಮ್ಲೋಚಿ ನಿಮ್ಲೋಚಿ** (ಪುಂ) ಯದುವಂಶದ ಭಜಮಾನ ರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

**ನಿಯಚ್ಛತ್ ನಿಯಚ್ಛತ್** (ವಿಂ) 1. ಅಜ್ಞೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಅಪ್ಪಣೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಯಮ (ಉಪರಮೇ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। “ತೇ ಚ ತೇನ ಗರುಡಂ ನಿಯಚ್ಛತಾ ಗಮ್ಯತಾಮಿತಿ ಗಂಭೀರಮೀರಿತಾಃ” ಯಾದಂ ೧೭-೧೩೦। 2. ಹತೋಟಿ ಯಲ್ಲಿಡುತ್ತಿರುವ, ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡುತ್ತಿರುವ.

**ನಿಯತ ನಿಯತ** (ವಿಂ) 1. ನಿಶ್ಚಿತವಾದ, ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಆಗುವ. ನಿ + ಯಮ (ಉಪರಮೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨)। “ನಿಯತಾ ಸ್ವರ್ಗಸೌಧಸ್ಯ ನಿಶ್ಚೇಣಿರಿವ ಶಾಶ್ವತೀ” ಯಾದಂ ೨೨-೧೯। 2. ನಿಯಮದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಪ್ರತಿವಸ್ತು ಕೈಗೊಂಡಿರುವ. “ವಶಿತಂ ಕ್ಷಿತೇರಯನಯಾವಿವೇಶ್ವರಂ ನಿಯಮೋ ಯಮಶ್ಚ ನಿಯತಂ ಯತಿ ತಥಾ” ಮಾಘಂ ೧೩-೨೩। 3. ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ, ಅಶ್ರಯ ಹೊಂದಿರುವ. “ವಾಚ್ಯರ್ಥಾ ನಿಯತಾಃ ಸರ್ವೇ ವಾಡ್ಮೂಲಾ ವಾಗ್ವಿನಿಃಸೃತಾಃ” ಮನುಂ ೪-೨೪೬।



4. ವಾಡಿಕೆಯಾಗಿ ಬಂದಿರುವ, ಸಂಪ್ರದಾಯವಾಗಿ ಬಂದಿರುವ. 5. ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವ, ಸತತವಾಗಿರುವ. "ಚಂದ್ರೇ ಲಕ್ಷ್ಮಿ: ಪ್ರಭಾ ಸೂರ್ಯ ಗತಿರ್ವಾಯಿ ಭುವಿ ಕ್ಷಮಾ | ಏತತ್ತು ನಿಯತಂ ಸರ್ವಂ ತ್ವಯಿ ಚಾನುತ್ತಮಂ ಯಶಃ" | 6. ಹತ್ತೊಂಟಿಯಲ್ಲಿರುವ, ಅಧೀನದಲ್ಲಿರುವ. 7. ಒಂದು ಮಿತಿಯುಳ್ಳ, ಪರಿಮಿತವಾಗಿರುವ. "ಬಾಣಾ: ಪञ್ಚ ಮನೋಭವಸ್ಯ ನಿಯತಾಸ್ತೇಷಾಮ-ಸಂಖ್ಯಾ ಜನ: ಪ್ರಾಯೋಽಸ್ಮದ್ವಿಧಿಃ ಏವ ಲಕ್ಷ್ಯ ಇತಿ ಯತ್ಲೋಕೇ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಗತಮ್" ರತ್ನಾಂ ೩-೩ | 8. ಅಸಕ್ತನಾದ. "ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ-ಮಾತ್ಮನೋ ರಕ್ಷನ್ ಸತ್ಯೇ ಚ ನಿಯತ: ಸದಾ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೪೨-೬೭ | 9. ಅಂಕಿಯಲ್ಲಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. 10. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. (ಅವ್ಯಂ) 11. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ, ಎಂದೆಂದಿಗೂ. "ಭೀಮಜಾಹ್ನಿ-ಜಿತ: ಸ್ತ್ರಿಯಾ ಹ್ರಿಯಾ ಮನ್ಮಥೋಽಪಿ ನಿಯತಂ ಸ ಲಜ್ಜಿತ:" ನೈಷಂ ೧೮-೩೬ | 12. ನಿಶ್ಚಯವಾಗಿ. "ಮುಖೇಂದ್ರಸಂಬಂಧ-ವಶಾತ್ಸುಖಾಜುಷ: ಸ್ಥಿರತ್ವಮುಹೇ ನಿಯತಂ ತದಾಯುಷ:" ನೈಷಂ ೧೫-೩೨ |

**ನಿಯತಭೋಜನ ನಿಯತಭೋಜನ (ವಿಂ)** ಆಹಾರದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ನಿಯಮದಿರುವ, ಮಿತವಾದ ಆಹಾರವನ್ನು ಸೇವಿಸುವ. ನಿಯತಂ ಪರಿಮಿತಂ ಭೋಜನಂ ಯಸ್ಯ |

**ನಿಯತವಿಭಕ್ತಿಕ ನಿಯತವಿಭಕ್ತಿ (ವಿಂ)** ಯಾವಾಗಲೂ ಒಂದೇ ವಿಭಕ್ತಿಯಲ್ಲಿರುವ, ವಿಗ್ರಹವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ವಿಭಕ್ತಿಯ ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದದಿರುವ (ಶಬ್ದ). ನಿಯತಾ ವಿಭಕ್ತಿಯಸ್ಯ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೫೪) | "ಏಕವಿಭಕ್ತಿವಿಭಕ್ತಿಪೂರ್ವನಿಪಾತೇ" (೧-೨-೪೪) | ಕೌಶಾಮ್ಬಾ: ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತ: ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತಂ ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತೇನ ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತಾಯ ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತಾತ್ ಈ ರೀತಿಯಾದ ವಿಗ್ರಹವಾಕ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಕ್ರಾಂತಾದ್ಯರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಪಂಚಮೀಸಮಾಸ ಬಂದು ನಿಷ್ಕೌಶಾಮ್ಬಿ: ನಿಷ್ಕೌಶಾಮ್ಬಿ ನಿಷ್ಕೌಶಾಮ್ಬಿನಾ ಇತ್ಯಾದಿಗಳಾಗುವುವು. ಇಲ್ಲಿ ಕೌಶಾಮ್ಬಿ ಶಬ್ದವೇ ವಿಗ್ರಹದಲ್ಲಿ ಪಂಚಮೀವಿಭಕ್ತಿ ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದದೆ ನಿಯತ ವಿಭಕ್ತಿ ವಾಯಿತು.

**ನಿಯತವ್ರತ ನಿಯತವ್ರತ (ವಿಂ)** ಸ್ಥಿರವಾದ ವ್ರತವನ್ನು ಕೈಗೊಂಡಿರುವ, ನಿಯಮಪೂರ್ವಕ ವ್ರತವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ. ನಿಯತಂ ವ್ರತಮಸ್ಯ |

**ನಿಯತಾತ್ಮನ್ ನಿಯತಾತ್ಮನ್ (ವಿಂ)** ಮನಸ್ಸನ್ನು ಅಧೀನದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವ. ನಿಯತ: ಆತ್ಮಾ ಯಸ್ಯ |

**ನಿಯತಾಪ್ತಿ ನಿಯತಾಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** (ಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿಗೆ) ಒದಗಿದ್ದ ಪ್ರತಿಬಂಧಕದ ಪರಿಹಾರವಾಗಿ ಫಲವು ಕೈಗೊಂಡು ಬರುವನೆ, ಒಂದು ಫಲವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿಕೈಗೊಂಡ ಕಾರ್ಯದ (ಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿಪರ್ಯಂತ ಸಂಭವಿಸುವ) ಪಂಚ ಅವಸ್ಥೆಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. ನಿಯತಾ ನಿಶ್ಚಿತಾ ಆಪ್ತಿ: | "ಅವಸ್ಥಾ: ಪञ್ಚ

ಕಾರ್ಯಸ್ಯ ಪ್ರಾರಂಭಸ್ಯ ಫಲಾರ್ಥಿಭಿ: " ಸಾಂ ದಂ ೬-೭೦ | (1) ಆರಂಭ: (2) ಯತ್ನ: (3) ಪ್ರಾಪ್ತ್ಯಾಶಾ, (4) ನಿಯತಾಪ್ತಿ: ಮತ್ತು (5) ಫಲಾಗಮ: ಇವು ಕಾರ್ಯದ ಐದು ಅವಸ್ಥೆಗಳು. ಇವು ನಾಲ್ಕುಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದುವು.

(1) "ಭವೇದಾರಂಭ ಔತ್ಸುಕ್ಯಂ ಯನ್ಮುಖ್ಯಫಲಸಿದ್ಧಯೇ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೭೧ | ಮುಖ್ಯಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿಗಾಗಿ ಉಂಟಾಗುವ ಔತ್ಸುಕ್ಯ (ಉತ್ಸಾಹ)ವು "ಆರಂಭ" ವೆಂಬ ಮೊದಲನೆಯ ಅವಸ್ಥೆ.

(2) "ಪ್ರಯತ್ನಸ್ತು ಫಲಾಪ್ತೌ ವ್ಯಾಪಾರೋಽತಿವಿರಾಜಿತ:" ಸಾಂ ದಂ ೬-೭೨ | ಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿಗಾಗಿ ನಡೆಯಿಸುವ ತ್ವರಿತವಾದ ವ್ಯಾಪಾರ: "ಪ್ರಯತ್ನ" ವೆಂಬ ಎರಡನೆಯ ಅವಸ್ಥೆ.

(3) "ಉಪಾಯಾಪಾಯಶಙ್ಕಾಮ್ಯಾಂ ಪ್ರಾಪ್ತ್ಯಾಶಾ ಪ್ರಾಪ್ತಿಸಂಭವ:" ಸಾಂ ದಂ ೬-೭೩ | ಉಪಾಯ ಮತ್ತು ಅಪಾಯದ ಶಂಕೆ ಇವುಗಳಿಂದ ಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿಯ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಸಂಶಯವು "ಪ್ರಾಪ್ತ್ಯಾಶಾ" ಎಂಬ ಮೂರನೆಯ ಅವಸ್ಥೆ.

(4) "ಅಪಾಯಾಭಾವತ: ಪ್ರಾಪ್ತಿನಿಯತಾಪ್ತಿಸ್ತು ನಿಶ್ಚಿತಾ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೭೪ | ಸಂಭವಿಸಿದ ಅಪಾಯದ (ಪ್ರತಿಬಂಧಕದ) ಪರಿಹಾರಪೂರ್ವಕ ಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿಯ ನಿಶ್ಚಯವು ನಾಲ್ಕನೆಯ "ನಿಯತಾಪ್ತಿ" ಎಂಬ ಅವಸ್ಥೆ.

(5) "ಸಾವಸ್ಥಾ ಫಲಯೋಗ: ಸ್ಯಾದ್ವ: ಸಮಗ್ರಫಲೋದಯ:" ಸಾಂ ದಂ ೬-೭೫ | ನಿರೀಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಸಂಪೂರ್ಣ ಫಲ ಪ್ರಾಪ್ತಿಯು "ಫಲಾಗಮ" ವೆಂಬ ಐದನೆಯ ಅವಸ್ಥೆ.

**ನಿಯತಾಶಿನ್ ನಿಯತಾಶಿನ್ (ವಿಂ)** ಮಿತವಾಗಿ ಊಟ ಮಾಡುವವನು, ಪರಿಮಿತವಾದ ಆಹಾರವನ್ನು ಸೇವಿಸುವವನು. ನಿಯತಮಶನಾತಿ - ಅಶ (ಭೋಜನ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮) |

**ನಿಯತಿ ನಿಯತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಭಾಗ್ಯ, ಅದೃಷ್ಟ. ನಿಯಮಿತನಯಾ - ನಿ + ಯಮ (ಉಪರಮೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪) | "ನಿಯತಂ ನಿಯತಾ ಪರವತ್ಯಶೇ ಕ: ಸಂವಿದಾನೋಽಪ್ಯನುಯೋಗಯೋಗ:" ನೈಷಂ ೬-೧೦೩ | 2. ನಿಯಮ, ವ್ರತ. "ನಿಯತಿನಿಯಮೇ ದೇವೇ" ಮೇದಿಂ | 3. ನಿಬಂಧ, ಕಟ್ಟುಪಾಡು. 4. ವಿಧಿ, ದೈವ. "ನಿಯತಿ: ಕೇನ ಲಕ್ಷ್ಯೇತ ನಿಜಚ್ಛಾಯಾನುಕಾರಿಣಿ" ಯಾದಂ ೧೬-೧೨೨ |

**ನಿಯತೇಂದ್ರಿಯ ನಿಯತೇಂದ್ರಿಯ (ವಿಂ)** ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ಹತ್ತೊಂಟಿಯಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವ, ಜಿತೇಂದ್ರಿಯನಾದ. ನಿಯತಾನಿ ಇಂದ್ರಿಯಾಣಿ ಯಸ್ಯ | "ಅವಭೃಥಪ್ರಯತೋ ನಿಯತೇಂದ್ರಿಯ: ಸುರಸಮಾಜಸಮಾಕ್ರಮಣೋಚಿತ:" ರಘುಂ ೯-೨೨ |



**ನಿಯಂತ್ರಣ ನಿಯಂತ್ರಣ** (ವಿಂ) 1. ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡಬೇಕಾದ, ಹತ್ತೊಂಟಿಯಲ್ಲಿಡಬೇಕಾದ. ನಿ + ಯಮ (ಉಪರಮೆ) "ತವ್ಯ:" (3-1-19). 2. ದಮನಮಾಡಬೇಕಾದ, ಅಡಗಿಸಬೇಕಾದ. "ನಿಯಂತ್ರಣಾ: ಸದಾ ರಾಜಾ ಪಾಪಾ ಯೇ ಸ್ಪುರ್ನರಾಧಿಪ" ಮಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೮೮-೧೯.

**ನಿಯಂತ್ರಣ ನಿಯಂತ್ರಣ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. ತತ್ತದ್ವಚಿನ್ ಪ್ರರೋಚಯನ್ ನಿಯಂತ್ರಣಿ. "ದೈವತೇಷು ಚ ಸರ್ವೇಷು ತತ್ತದಿಚ್ಛಾಂ ಪ್ರರೋಚಯನ್. ಮಂದಾಧಿಕಾರಿಣೋ ಯೋಷ್ಠೌ ನಿಯಂತ್ರಾ ಸ್ಯಾನ್ವಿ-ಯಂತ್ರಣಿ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ:। "ಅಪರಾಜಿತ: ಸರ್ವಸಹೋ ನಿಯಂತ್ರಾ ನಿಯಮೋ ಯಮ:" ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಭು, ಯಜಮಾನ, ದೊರೆ. ನಿ + ಯಮ (ಉಪರಮೆ) "ತವ್ಯ" (3-1-193). "ರೇಕ್ಷಾಮಾತ್ರಮಪಿ ಕ್ಷುಣ್ಣಾದಾಮನೋರ್ವರ್ಮನ: ಪರಮ್। ನ ವ್ಯತೀಯ: ಪ್ರಜಾಸ್ತಸ್ಯ ನಿಯಂತ್ರಣೇನಿವೃತ್ತಯ:" ರಘುಂ 1-19. 3. ಸಾರಥಿ, ರಥವನ್ನು ನಡೆಸುವವನು. "ವಸ್ತೌ ಸಮಾಸಕ್ತಕರೇಣುಸ್ತುಕ್ತತಾನಿನ್ವಯಂತರಿ ವ್ಯಾಕುಲಮುಕ್ತರಜ್ಜುಕೇ" ಮಾಘಂ 12-24. 4. ಶಿಕ್ಷಿಸುವವನು, ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡುವವನು, ಅಧೀನದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವವನು.

**ನಿಯಂತ್ರಣ ನಿಯಂತ್ರಣ** (ವಿಂ) 1. ನಿರೋಧಿಸುವವನು, ತಡೆಯುವವನು. 2. ಹತ್ತೊಂಟಿಯಲ್ಲಿಡುವವನು, ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡುವವನು, ಹಿಡಿದಲ್ಲಿಡುವವನು. ನಿ + ಯಮ (ಸಂಕೋಚ) + ಣಿಚ್ "ಫಲ್" (3-1-193).

**ನಿಯಂತ್ರಣ ನಿಯಂತ್ರಣ** (ನಂ) 1. ತಡೆ, ಬಿಗಿಹಿಡಿಯುವುದು, ನಿರೋಧಿಸುವುದು. ನಿ + ಯಮ (ಸಂಕೋಚ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡುವುದು, ಹತ್ತೊಂಟಿಯಲ್ಲಿಡುವುದು, ನಿರೋಧದಲ್ಲಿಡುವುದು, ಹಿಡಿದಲ್ಲಿಡುವುದು. "ಅನಿಯಂತ್ರಣಾನುಯೋಗೋ ನಾಮ ತಪಸ್ವಿಜನ:" ಶಾಕುಂ 1. "ಸ್ವರಾ: ಕಾಕವಾದಯ: ಉದಾತ್ತಾದಯೋ ವಾ ವ್ಯಂಜನ-ರೂಪಮೇವ ವಿಶೇಷಂ ಪ್ರತ್ಯಾಯಯಂತಿ, ನ ಖಲು ಪ್ರಕೃತೋಕ್ತಮನೇಕಾರ್ಥ-ಶಬ್ದಸ್ಯೇಕಾರ್ಥನಿಯಂತ್ರಣರೂಪಂ ವಿಶೇಷಮ್" ಸಾಂ ದಂ। "ಯುಚ್" (3-3-109). -ಯಂತ್ರಣ -ಯಂತ್ರಣ.

**ನಿಯಂತ್ರಣ ನಿಯಂತ್ರಣ** (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಯಮ (ಸಂಕೋಚ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). 2. ಹತ್ತೊಂಟಿಯಲ್ಲಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರೋಧದಲ್ಲಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಉ-ಮೇಕಸ್ಮಿನ್ಮುಖೇನಿಧಯಾ ನಿಯಂತ್ರಣಿತೇ ಯಾ ಶಬ್ದಾರ್ಥಸ್ಯಾನ್ಯಾರ್ಥಬುದ್ಧಿ-ಹೇತು: ಶಕ್ತಿ: ಸಾಮಿಧಾಮೂಲಾ ವ್ಯಂಜನಾ" ಸಾಂ ದಂ। "ಅನೇಕಾರ್ಥಸ್ಯ ಶಬ್ದಸ್ಯ ಸಂಯೋಗಾದೇನಿಯಂತ್ರಣಿತೇ" ಸಾಂ ದಂ। 3. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. "ಮೌರ್ವ್ಯಾ ಮೇಖಲಯಾ ನಿಯಂತ್ರಣಿತಮಧೋವಾಸಶ್ಚ ಮಾಂಜಿಷ್ಠಕಮ್" ಉಂ ರಾಂ 4-19.

**ನಿಯಮ ನಿಯಮ** (ಪುಂ) 1. ವೃತ್ತ, ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಕರ್ಮದ ಆಚರಣೆ, ಉಪವಾಸ ಮೊದಲಾದುದು. ನಿ + ಯಮ (ಉಪರಮೆ) "ಅಪ್" (3-3-63). "ಛಾಪೇದ್ವಗಸ್ಯ ಚ ನ ಕುತ್ರಚಿದಧ್ಯಗಾಯಿ ತಪ್ತಂ ಯಮೇನ ನಿಯಮೇನ ತಪೋಽಮನೇವ" ನೈಷಂ 13-16. 2. ನಿಯಂತ್ರಣ, ತಡೆ, ನಿರೋಧ, ಪ್ರತಿಬಂಧಿಸುವುದು. "ಪ್ರಿಯಪ್ರಾಪ್ತಾ ವೃತ್ತಿವಿನಯಮಧುರೋ ವಾಚಿ ನಿಯಮ: ಪ್ರಕೃತ್ಯಾ ಕಲ್ಯಾಣಿ ಮತಿರನವಗೀತ: ಪರಿಚಯ:" ಉಂ ರಾಂ 2-2. 3. ಅವಶ್ಯಕತೆ, ನಿರೋಧ, ಅಗತ್ಯವಾಗಿರುವಿಕೆ. "ಸಾಧನೇ ಹಿ ನಿಯಮೋಜ್ಯಜನಾನಾಂ ಯೋಗಿನಾಂ ತು ತಪ-ಸಾಖಿಲಸಿದ್ಧಿ:" ನೈಷಂ 4-3. 4. ವ್ಯವಹಾರದ ನಿಬಂಧನೆ, ಕಟ್ಟಳೆ, ಕಾನೂನು. 5. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. 6. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. "ಸಂವಿಧಾಗ್ನಿ: ಪ್ರತಿಜ್ಞಾನಂ ನಿಯಮಾಶ್ರವಸಂಶ್ರವಾ:" ಅಮಂ। 7. ನಿಶ್ಚಯ, ನಿರ್ಧಾರ. 8. ಪರ್ಯಾಯೋಚನೆ, ಸಲಹೆ ಕೇಳುವುದು, ಕೂಡಿ ಮಾತಾಡುವುದು. "ನಿಯಮೋ ಮನ್ತ್ರಣಾ-ಯಾಂಚ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾನಿಶ್ರವೇ ವ್ರತೇ" ಮೇದಿಂ। 9. ಪಳಗಿಸುವುದು. 10. ತಗ್ಗಿಸುವುದು, ಕಡಮೆಮಾಡುವುದು. 11. ಅಷ್ಟಾಂಗ ಯೋಗದ ಒಂದು ಭೇದ. "ಯಮನಿಯಮಾಸನಪ್ರಾಣಾಯಾಮ-ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರಧಾರಣಾಧ್ಯಾನಸಮಾಧಯೋಷ್ಠಾವಜ್ಞಾನಿ" ಪಾಂ ಯಂ ಸುಂ 2-29. ಶೌಚ, ಸಂತೋಷ, ತಪಸ್ಸು, ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯ ಮತ್ತು ಈಶ್ವರಪ್ರಣಿಧಾನ ಇವು ಐದೂ ನಿಯಮಗಳು. "ಶೌಚಸಂತೋಷತಪಃಸ್ವಾಧ್ಯಾಯೇಶ್ವರಪ್ರಣಿಧಾನಾನಿ ನಿಯಮಾ:" ಪಾಂ ಯಂ ಸುಂ 2-32. ತಪಸ್ಸು, ಸಂತೋಷ, ಆಸ್ತಿತ್ವ, ದಾನ, ಈಶ್ವರಪೂಜೆ, ಸಿದ್ಧಾಂತವಾಕ್ಯಶ್ರವಣ, ಹ್ರೀ, ಮತಿ, ಜಪ, ಮತ್ತು ಹೋಮ ಈ ಹತ್ತೂ ನಿಯಮಗಳು. "ತಪ: ಸಂತೋಷ ಆಸ್ತಿತ್ವಂ ದಾನಮೀಶ್ವರಪೂಜನಮ್। ಸಿದ್ಧಾಂತವಾಕ್ಯಶ್ರವಣಂ ಹ್ರೀಮತಿ ಚ ಜಪೋ ಹುತಮ್। ನಿಯಮಾ ದಶ ಸಂಪ್ರೋಕ್ತಾ ಯೋಗಶಾಸ್ತ್ರವಿಶಾರದೇ:" ಹಠಂ। 12. (ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಸಾಮಾನ್ಯಶಾಸ್ತ್ರದಿಂದ ವಿಹಿತವಾದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಸಂಕೋಚಪಡಿಸಿ ವಿಶೇಷಶಾಸ್ತ್ರದಿಂದ ವಿವಕ್ಷಿತ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಆ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ವಿಧಿಸುವುದು. "ನಸ್ತದ್ವಿತೀ" (6-4-144) ಸೂತ್ರದಿಂದ "ನ" ಕಾರಾಂತ ಪದಗಳ ಸಾಮಾನ್ಯಕ್ಕೂ ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ "ತಿ" ಲೋಪವು "ಅಹನ್" ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಟ ಮತ್ತು ಲ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು ಪರವಾದರೆ ಮಾತ್ರ ಬರುವುದೆಂದು "ಅಹ್ಲಷ್ಟಲೋಕೇ" (6-4-145). ಸೂತ್ರದಿಂದ ನಿಯಮ ಮಾಡಿ ವಿಹಿತವಾಗಿದೆ. 13. ವಿಷ್ಣು. ಪ್ರತಿಬಲಾ ನಿಯಮ್ಯಂತೇನ — ನಿ + ಯಮ ಕರಂ "ಅಪ್" (3-3-63). "ನಿಯಮ್ಯತೇ ಜಗದೇನ ನಿಯಮ: ಸ ಉದೀರಿತ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ:। "ಅತೀಂದ್ರ: ಸತ್ಯಗ್ರಹ: ಸರ್ಗೋ ಭೂತಾತ್ಮಾ ನಿಯಮೋ ಯಮ:" ವಿಂ ಸಂ।



ನಿಯಮಯತಿ — ನಿ + ಯಮ + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।  
ಸ್ವೇಷು ಸ್ವೇಷವಿಕಾರೇಷು ಪ್ರಜಾ ನಿಯಮಯತಿ ಇತಿ ವಾ ।

14. ಎರಡು ಕಡೆ ಸಂಭವಿಸುವ ಒಂದು ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಒಂದು ಕಡೆ ನಿಷೇಧಿಸಿ ಇನ್ನೊಂದರಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಹೇಳುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ಪರಿಸಂಖ್ಯೆಯೆಂದು ಹೆಸರು. "ಸ್ನೇಹಸ್ಯ: ಪ್ರದೀಪೇಶು ನ ಸ್ವಾಂತೇಶು ನತಭ್ರುವಾಮ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಶ್ಲೇಷಮೂಲವಾದ ಅಭೇದಾಧ್ಯವಸಾಯದಿಂದ "ಸ್ನೇಹ" (ಪದಕ್ಕೆ ತೈಲ ಮತ್ತು ಪ್ರೇಮ ಎಂಬ ಎರಡು ಅರ್ಥಗಳು) ಕ್ಷಯವನ್ನು ಸ್ತ್ರೀಯರ ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ನಿಷೇಧಿಸಿ ದೀಪದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ ಪರಿಸಂಖ್ಯಾರೂಪವಾದ ನಿಯಮವು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ.

**ನಿಯಮನ ನಿಯಮನ** (ನಂ) 1. ದಮನ ಮಾಡುವುದು, ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡುವುದು, ಅಡಗಿಸುವುದು. ನಿ + ಯಮ (ಉಪರಮೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) । "ಸಮತಯಾ ವಸುಕೃಷ್ಣಿ-ವಿಸರ್ಜನೇನಿಯಮನಾದಸತಾಂ ಚ ನರಾವಿಘ್ನ:" ರಘುಂ ೯-೬ । 2. ನಿರ್ಬಂಧದಲ್ಲಿಡುವುದು, ಹತೋಟಿಯಲ್ಲಿಡುವುದು. 3. ಆಜ್ಞೆ, ಅಪ್ಪಣೆ. 4. ಬಂಧನ, ಕಟ್ಟುವುದು. 5. ಬಲಾತ್ಕಾರ, ಬಲಪ್ರಯೋಗ, ನಿರ್ಬಂಧ. 6. ಒಂದು ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಒಂದು ಕಡೆ ನಿಷೇಧಿಸಿ ಇನ್ನೊಂದು ಕಡೆ ಹೇಳುವುದು. 7. ನಿರೋಧಿಸುವುದು, ತಡೆಯುವುದು. 8. ತಗ್ಗಿಸುವುದು, ಕಡಮೆಮಾಡುವುದು.

**ನಿಯಮನಿಷ್ಠ ನಿಯಮನಿಷ್ಠ** (ವಿಂ) 1. ವ್ರತವನ್ನು ಆಚರಿಸುವುದರಲ್ಲಿ ಕಟ್ಟುನಿಟ್ಟಾದ. 2. ಆಜ್ಞೆಯನ್ನು ಪಾಲಿಸುವುದರಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದ. ನಿಯಮೇ ನಿಷ್ಠ: । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಿಷ್ಠಾ -ನಿಷ್ಠಾ. ವ್ರತಾಚರಣೆ ಮತ್ತು ಆಜ್ಞಾಪಾಲನೆಯಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿ.

**ನಿಯಮಪತ್ರ ನಿಯಮಪತ್ರ** (ನಂ) 1. ಆಜ್ಞಾಪತ್ರ. 2. ಕರಾರು ಪತ್ರ, ಒಪ್ಪಂದದ ಪತ್ರ. ನಿಯಮೋಪೇತ ಪತ್ರम् ।

**ನಿಯಮಯತ್ ನಿಯಮಯತ್** (ವಿಂ) 1. ದಮನಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಅಡಗಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ನಿರ್ಬಂಧದಲ್ಲಿಡುತ್ತಿರುವ, ಹತೋಟಿಯಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಯಮ (ಉಪರಮೆ) + ಣಿಚ್ "ಕತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಅನುಪಹಿತ-ವಧುಜನಸ್ಯ ರಕ್ಷಾಂ ನಿಯಮಯತೋ ನಿಜಲಿಲಯಾ ಜಗಂತಿ" ಷಾದಂ ೨೪-೭೩ । 3. ಬಲಾತ್ಕಾರಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಬಂಧಿಸುತ್ತಿರುವ, ಕಟ್ಟುತ್ತಿರುವ. 5. ಆಜ್ಞೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 6. ತಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ನಿರೋಧಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

**ನಿಯಮಲಕ್ಷಣ ನಿಯಮಲಕ್ಷಣ** (ನಂ) 1. ಆಜ್ಞೆಯನ್ನು ಎಸಗಿ ನಡೆಯುವುದು. 2. ಒಪ್ಪಂದವನ್ನು ಮುರಿದು ನಡೆಯುವುದು. ನಿಯಮಸ್ಯ ಲಕ್ಷಣಮ್ ।

**ನಿಯಮವತ್ ನಿಯಮವತ್** (ವಿಂ) ಜಪ ಉಪವಾಸ ಮೊದಲಾದ ವ್ರತವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ. ನಿಯಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಃ" (೫-೨-೯೪) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ವಂತಿ -ವಂತಿ.

**ನಿಯಮವಿಧಿ ನಿಯಮವಿಧಿ** (ಫಂ) 1. ನಿತ್ಯಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನ, ಪ್ರತಿದಿನದ ಕರ್ತವ್ಯದ ಆಚರಣೆ. "ನಿಯಮವಿಧಿ-ಜಲಾನಾಂ ಬಹಿಷಾಂ ಚೋಪನೇಶಿ" ಕುಮಾಂ ೧-೬೦ । 2. ಅನೇಕ ಉಪಾಯಗಳಿಂದ ಒಂದು ಕಾರ್ಯವು ಸಾಧನೆಯಾಗುವಲ್ಲಿ ವಿಶೇಷ ಪ್ರಯೋಜನದ ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ಒಂದು ರೀತಿಯಿಂದ ಮಾತ್ರ ಅದನ್ನು ವಿಧಿಸುವುದು. ಬತ್ತವನ್ನು ಅಕ್ಕಿಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಲು ನಖಗಳಿಂದ ಹೊಟ್ಟನ್ನು ಬಿಡಿಸಬಹುದು. ಮತ್ತು ಒನಕೆಯಿಂದಲೂ ಕುಟ್ಟಿ ಅಕ್ಕಿಯನ್ನು ಮಾಡಬಹುದು. "ಶ್ರೀಹೀನವಹಂತಿ" ಎಂಬ ವಾಕ್ಯದಿಂದ ಯಾಗದ ಪುರೋಡಾಶಕ್ಕಾಗಿ ಬತ್ತವನ್ನು ಒನಕೆಯಿಂದಲೇ ಕುಟ್ಟಿ ಬೇಕೆಂದು ನಿಯಮಮಾಡಿ ವಿಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. ಅದೃಷ್ಟೋತ್ಪತ್ತಿಯು ಇಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಜನ.

**ನಿಯಮಿತ ನಿಯಮಿತ** (ವಿಂ) 1. ತಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಡಮೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಯಮ (ಉಪರಮೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । "ಗಿರಿಶಮುಪಚಾರ ಪ್ರತ್ಯಹಂ ಸಾ ಸುಕೇಶಿ ನಿಯಮಿತಪರಿಕ್ಷೇದಾ ತಚ್ಚಿರಶ್ಚಂದ್ರಪಾದೇ:" ಕುಮಾಂ ೧-೬೦ । 2. ಬಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಶ್ರೀಮದ್ವಿನಿಯಮಿತಕನ್ಧರಾಪರಾಂತೇ: ಸಂಸಕ್ತೇಗುಹವೇಶು ಸಾಙ್ಗಹಾರಮ್" ಕಿರಾಂ ೭-೩೭ । 3. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ದ್ವಿಗುಣಬಾಹುಧೃದಾವೇಷ್ಠನನಿಶ್ಚೇಷ್ಠ-ನಿಯಮಿತಾಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೭ । "ಕಿಂಚಿದ್ಭೂಮಿಜ್ಞಲಿಲಾ-ನಿಯಮಿತಜಲಧಿ ರಾಮಮನ್ವೇಷಯಾಮಿ" ಹನುಂ ನಾಂ । 4. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ನಿರ್ಧರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಮಿತಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಕೋಚಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕೃಚ್ಛ್ರೇಣಾಮೇಧ್ಯಮಧ್ಯೇ ನಿಯಮಿತತನುಭಿ: ಸ್ಥೀಯತೇ" ಭರ್ತಂ ೩-೩೭ ।

**ನಿಯಮೋಲ್ಲಕ್ಷಣ ನಿಯಮೋಲ್ಲಕ್ಷಣ** (ನಂ) "ನಿಯಮ-ಲಕ್ಷಣ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

**ನಿಯಮ್ಯ ನಿಯಮ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಲ್ಪಡುವ, ನಿರೋಧಿಸಲ್ಪಡುವ. ನಿ + ಯಮ (ಉಪರಮೆ) "ಯತ್" (೩-೧-೯೮) । 2. ಆಜ್ಞೆಗೆ ಒಳಪಟ್ಟಿರುವವನು. 3. ಒಬ್ಬನ ಅಧೀನದಲ್ಲಿರುವವನು. 4. ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ, ನಿಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಡುವ.



“ತ್ರಿಲೋಕನಾಥೇನ ಸದಾ ಮಖದ್ವಿಷಸ್ತ್ವಯಾ ನಿಯಮ್ಯಾ ನನು ದಿವ್ಯಚಕ್ಷುಷಾ” ರಘುಂ ೩-೪೫ | 5. ಮಿತಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ಕಟ್ಟಲ್ಪಡುವ. ಬಂಧಿಸಲ್ಪಡುವ.

**ನಿಯಾತನ ನಿಯಾತನ** (ನಂ) 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವುದು, ಕೆಡೆವುದು. ನಿ + ಯತ (ನಿಕಾರೋಪಸ್ಕಾರಯೋಃ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) | (ವಿಂ) 2. ಭಯಗ್ರಸ್ತನಾದ. ನಿತರಾ ಯಾತನಾ ಯತ್ರ |

**ನಿಯಾಮ ನಿಯಾಮ** (ವುಂ) ನಿಯಮ. ನಿ + ಯಮ (ಉಪರಮೇ) ಪಕ್ಷೇ “ಘವ್” (೩-೩-೬೩) |

**ನಿಯಾಮಕ ನಿಯಾಮಕ** (ವುಂ) 1. ಹಡಗು ನಡೆಸುವುದನ್ನು ಕಲಿಸುವವನು. ನಿ + ಯಮ (ಉಪರಮೇ) + ಣಿಚ್ “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) | (ವಿಂ) 2. ಅಜ್ಞೆಮಾಡುವವನು. 3. ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವವನು. 4. ನಿಗ್ರಹಿಸುವವನು. ಶಿಕ್ಷಿಸುವವನು. 5. ನಿರೋಧಿಸುವವನು, ತಡೆಯುವವನು. 6. ಮಿತಿಗೊಳಿಸುವವನು. 7. ಸಾರಥಿ, ರಥ ನಡೆಸುವವನು. 8. ಗುರು. 9. ಸಭ್ಯ, ಯೋಗ್ಯ.

**ನಿಯುಕ್ತ ನಿಯುಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಅಜ್ಞೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಅದೇಶ ಪಡೆದ. ನಿ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) | “ಸ್ವಕೇತುಕಲ್ಪನಾತ್ ಪೂರ್ವ ನಿಯುಕ್ತಂ ಹರಿಣಾ ಸ್ವಯಮ್ | ತಮೇವ ತಾದೃಶಾಕಾರಂ ತಮಮನ್ಯಂತ ಯಾದವಾಃ” ಯಾದಂ ೨೨-೪೭ | 2. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಂದು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿಯೋಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಂದು ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಡೆಸುವಂತೆ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. “ನಿಯುಕ್ತೋ ಯೋ ವಿಧಿ ಹಿತ್ವಾ ವರ್ತೇಯಾತಾಂ ತು ಕಾಮತಃ | ತಾವುಮೌ ಪತಿತೌ ಸ್ಯಾತಾಂ ಸ್ತುಷಾಗಗುಸ್ತಲ್ಪಗೌ” ಮನುಂ ೯-೬೩ | 3. ಅಧಿಕಾರದಲ್ಲಿ ನಿಯಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಅಶ್ವಸಥರ್ಮಾಣೋ ಹಿ ಮನುಷ್ಯಾಃ ನಿಯುಕ್ತಾಃ ಕರ್ಮಸು ವಿಕುರ್ವಂತೆ” ಅರ್ಯಶಾಂ ೨೭-೯ | 4. ಒಂದು ಕಛೇರಿಯ ನೌಕರ. 5. ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. “ಪ್ರೀತ್ಯಾ ನಿಯುಕ್ತಾಂಲಿಹತೀ ಸ್ತನನ್ಧಯಾನ್” ಮಾಧಂ ೧೨-೪೦ |

**ನಿಯುಕ್ತವತ್ ನಿಯುಕ್ತವತ್** (ವಿಂ) 1. ಅಪ್ಪಣೆಮಾಡಿದವನು. 2. ಅಧಿಕಾರದಲ್ಲಿ ನಿಯಮಿಸಿದವನು. 3. ಒಂದು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರೇರಿಸಿದವನು. ನಿ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) “ಕ್ತವತುಃ” (೩-೨-೧೦೨) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಕೀಪ್” (೪-೧-೬) | -ವತೀ -ವತೀ.

**ನಿಯುಕ್ತಿ ನಿಯುಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಜ್ಞೆ, ಅದೇಶ. 2. ಅಧಿಕಾರದಲ್ಲಿ ನಿಯಮಿಸುವುದು. 3. ಒಂದು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರೇರಿಸುವುದು, ಒಂದು ಕೆಲಸ ಮಾಡಲು ಹೇಳುವುದು. ನಿ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) |

**ನಿಯುಜ್ಯಮಾನ ನಿಯುಜ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಅಪ್ಪಣೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಅಜ್ಞೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಒಂದು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರೇರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಒಂದು ಕೆಲಸ ಮಾಡಲು ಹೇಳುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಯುಜ (ಸಮಾಧೌ) “ಶಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪) | “ನಿಯುಜ್ಯಮಾನೇನ ಪುರಃ ಕರ್ಮಣ್ಯತಿಗರೀಯಸಿ | ಆರೋಪ್ಯಮಾಣೋ-ಗುಣಂ ಭರ್ತೃ ಕಾರ್ಮಕಮಾನಮತ್” ಮಾಧಂ ೧೯-೯೧ | 3. ಒಂದು ಅಧಿಕಾರದಲ್ಲಿ ನೇಮಿಸುತ್ತಿರುವ.

**ನಿಯುಜ್ಜತ್ ನಿಯುಜ್ಜತ್** (ವಿಂ) 1. ಅಜ್ಞೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಅಧಿಕಾರದಲ್ಲಿ ನಿಯಮಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಒಂದು ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಪ್ರೇರಿಸುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) | “ಶಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪) | **ನಿಯುಜ್ಜಾನಃ ನಿಯುಜ್ಜಾನಃ**. “ಅನ್ಯಸ್ಮಿನ್ ಹಿ ನಿಯುಜ್ಜಾನಾ ಧರ್ಮ ಹನ್ಯುಃ ಸನಾತನಮ್” ಮನುಂ ೯-೬೪ |

**ನಿಯುತ ನಿಯುತ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ಲಕ್ಷ, 1,00,000 ಸಂಖ್ಯೆ. ನಿಯುತೇ ಬಹುಸಂಖ್ಯಾ ಪ್ರಾಪ್ಯತೇಜೇನ—ನಿ + ಯು (ಮಿಶ್ರಣೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) | “ಶತಂ ಸಹಸ್ರಮಯುತಂ ನಿಯುತಂ ಪ್ರಯುತಂ ಮತಮ್ | ಸ್ತ್ರೀಕೋಟಿರಬುದಮಿತಿ ಕ್ರಮಾದ್ಶತಗುಣೋತ್ತರಮ್” ರತ್ನಂ | 2. ಹತ್ತು ಲಕ್ಷ, 10,00,000 ಸಂಖ್ಯೆ. “ಏಕಂ ದಶ ಶತಂ ತ್ರೈವ ಸಹಸ್ರಮಯುತಂ ತಥಾ | ಲಕ್ಷಂ ಚ ನಿಯುತಂ ತ್ರೈವ ಕೋಟಿರಬುದ ಏವ ಚ | ವೃಂದಃ ಸರ್ವೋ ನಿಖರ್ವಶ್ಚ ಶತೃಪಶೌ ಚ ಸಾಗರಃ | ಅನ್ಯಂ ಮಖ್ಯಂ ಪರಾರ್ಥಂ ಚ ದಶಬೃಹದ್ವಾ ಯತೋತ್ತರಮ್” |

**ನಿಯುಡ್ ನಿಯುಡ್** (ನಂ) ದ್ವಂದ್ವಯುದ್ಧ, ಬಾಹುಯುದ್ಧ, ಕೈಕಾಳಗ. ನಿ + ಯುಧ (ಸಂಪ್ರಹಾರೇ) ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪) | “ನಿಯುಡ್ ಬಾಹುಯುಡ್” ಅಮಂ | “ನಿಯುಡ್ಚರ್ಯಾನಿಪುಣಿ ನಿಜಧನತುಃ” ಯಾದಂ ೧೪-೧೫ |

**ನಿಯೋಕ್ತವ್ಯ ನಿಯೋಕ್ತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ನೇಮಿಸಲ್ಪಡುವವನು, ಒಂದು ಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಗೊತ್ತುಮಾಡಲ್ಪಡುವವನು. ನಿ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬) | 2. ಇಡಲ್ಪಡುವ, ಇರಿಸಲ್ಪಡುವ. “ಸ್ಥಾನೇಷ್ವೇವ ನಿಯೋಕ್ತವ್ಯಾ ಭೃತ್ಯಾ-ಶ್ರಾಭರಣಾನಿ ಚ” ಪञ्ಚತಂ ೧-೭೮ | 3. ಅಕ್ಷೇಪಿಸಲ್ಪಡುವವನು, ಅಪರಾಧಕ್ಕೆ ಗುರಿಮಾಡಲ್ಪಡುವವನು. “ನ ಸ ರಾಜಾ ನಿಯೋಕ್ತವ್ಯೋ ನ ನಿಕ್ಷೇಪ್ತುಶ್ಚ ವನ್ಯುಭಿಃ” ಮನುಂ ೮-೧೮೬ | 4. ಒಂದು ಅಧಿಕಾರದಲ್ಲಿ ನೇಮಿಸಲ್ಪಡುವವನು. 5. ಸಹೋದರನ ಪತ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಪುತ್ರೋತ್ಪಾದನಕ್ಕಾಗಿ ನೇಮಿಸಲ್ಪಡುವ, ಪತಿಯ ಸಹೋದರನಿಂದ ಪುತ್ರೋತ್ಪಾದನೆಗಾಗಿ ನೇಮಿಸಲ್ಪಡುವ. “ನಾನ್ಯಸ್ಮಿನ್ ವಿಧವಾ ನಾರೀ ನಿಯೋಕ್ತವ್ಯಾ ದ್ವಿಜಾತಿभिಃ” ಮನುಂ ೯-೬೪ | “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) | -ಯೋಜನೀಯಃ -ಯೋಜನೀಯಃ.



**ನಿಯೋಕ್ತ ನಿಯೋಕ್ತೃ** (ವಿಂ) 1. ಆಜ್ಞೆ ಮಾಡುವವನು. ನಿ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಪ್ರೇರಿ ಸುವವನು. 3. ಪ್ರಯೋಗಿಸುವವನು. "ಉತ್ಕ್ರಾಂತಿದಾ ಕಮನ್ಯು ನ ಪ್ರತಿಭಾತಿ ಶಕ್ತಿಃ ಕೃಷ್ಣತ್ವಮಸ್ಯ ಚ ಪರೇಷು ಗದಾತ್ರಿಯೋಕ್ತುಃ" ನೈಷಂ ೧೩-೧೮। 4. ನೇಮಿಸುವವನು. 5. ಪ್ರಭು, ಯಜಮಾನ. "ಸ್ಥಾತುಂ ನಿಯೋಕ್ತುರ್ನ ಹಿ ಶಕ್ಯಮಗ್ರೇ ವಿನಾಶ್ಯ ರಕ್ಷ್ಯಂ ಸ್ವಯಮಕ್ಷತೇನ" ರಘುಂ ೨-೫೬। 6. ಒಂದು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಗೊತ್ತುಮಾಡುವವನು. 7. ಒಂದು ಅಧಿಕಾರದಲ್ಲಿ ನೇಮಿಸುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ತೃಪ್" (೪-೧-೫)। -ಕೃತ್ರಿ -ಕೃತ್ರಿ.

**ನಿಯೋಗ ನಿಯೋಗ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬನನ್ನು ಗೊತ್ತುಮಾಡುವುದು, ಒಂದು ಕೆಲಸ ನಿರ್ವಹಣೆಗಾಗಿ ಒಬ್ಬನನ್ನು ನೇಮಿಸುವುದು. ನಿ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ಘಕ್" (೩-೩-೧೮)। "ಅಲಘುನಿ ಬಹು ಮೇನಿರೇ ಚ ತಾಃ ಸ್ವ ಕುಲಿಶಭೃತಾ ವಿಹಿತಂ ಪದೇ ನಿಯೋಗಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೦-೧೬। 2. ಆಜ್ಞೆ, ಅಪ್ಪಣೆ. "ಧಾತುನಿಯೋಗಾದಿಹ ನೈಷಧೀಯಂ ಲೀಲಾಸರಃ ಸೇವಿತುರಾಗತೇಷು" ನೈಷಂ ೩-೧೮। 3. ನಿಜ, ನಿಶ್ಚಯ. "ತತ್ಸಿಫೇವೇ ನಿಯೋಗೇನ ಸ ವಿಕಲ್ಪಪರಾಡ್‌ಮುಖಃ" ರಘುಂ ೧೭-೪೯। 4. ಕಟ್ಟುವುದು. 5. ಪತಿಯಿಲ್ಲದ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಪುತ್ರೋತ್ಪಾದನೆಗಾಗಿ ಪತಿಯ ಸಹೋದರನನ್ನು ಗೊತ್ತುಮಾಡುವುದು. "ಅನಿವೃತ್ತಂ ನಿಯೋಗಾರ್ಥಂ ಪಶ್ಯಂತೋ ಧರ್ಮತಸ್ತಯೋಃ" ಮನುಂ ೯-೬೧। 6. ಅಧಿಕಾರ. 7. ದೈವ, ಅದೃಷ್ಟ.

**ನಿಯೋಗ್ಯ ನಿಯೋಗ್ಯ** (ವಿಂ) ಪ್ರಭು, ಯಜಮಾನ. ನಿ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ಘತ್" (೩-೧-೧೨೪)। ನಿಯೋಗಾಯ ಪ್ರಭವತಿ "ಕೃಪ್" (೩-೧-೧೨೧) ವಾ। "ಏತೇ ವಯಂ ನಿಯೋಜ್ಯಾ ನಿಯೋಜಯತು ನಿಯೋಗ್ಯಃ" ಪ್ರಶ್ನಂ ವಿಂ ೫।

**ನಿಯೋಜಕ ನಿಯೋಜಕ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೇರಿಸುವವನು, ಒಂದು ಕೆಲಸ ಮಾಡೆಂದು ಹೇಳುವವನು. ನಿ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ಘಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಆಜ್ಞೆ ಮಾಡುವವನು. 3. ಒಂದು ಅಧಿಕಾರದಲ್ಲಿ ನೇಮಿಸುವವನು. 4. ಒಂದು ಕಾರ್ಯದ ನಿರ್ವಹಣೆಗಾಗಿ ಗೊತ್ತುಮಾಡುವವನು.

**ನಿಯೋಜನ ನಿಯೋಜನ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ಅಧಿಕಾರದಲ್ಲಿ ನೇಮಿಸುವುದು. ನಿ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಒಂದು ಕಾರ್ಯದ ನಿರ್ವಹಣೆಗಾಗಿ ಗೊತ್ತುಮಾಡುವುದು. 3. ಒಂದು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. 4. ಕಟ್ಟುವುದು. 5. ಆಜ್ಞೆ ಮಾಡುವುದು. 6. ಸೇರಿಸುವುದು.

**ನಿಯೋಜಯತ್ ನಿಯೋಜಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಆಜ್ಞೆ ಮಾಡುವ. 2. ಒಂದು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗುವಂತೆ ಮಾಡುವ. 3. ಅಧಿಕಾರದಲ್ಲಿ ನೇಮಿಸುವ. 4. ಒಂದು ಕಾರ್ಯ ನಿರ್ವಹಣೆಗಾಗಿ ನೇಮಿಸುವ. ನಿ + ಯುಜ (ಸಂಯಮನೆ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।

**ನಿಯೋಜಯಿತವ್ಯ ನಿಯೋಜಯಿತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಆಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ನೇಮಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಒಂದು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 4. ಒಂದು ಕಾರ್ಯ ನಿರ್ವಹಣೆಗಾಗಿ ನೇಮಿಸಲ್ಪಡುವ. ನಿ + ಯುಜ (ಸಂಯಮನೆ) + ಣಿಚ್ "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬)। "ಏನಾಂ ತಸ್ಮೈ ದತ್ವಾ ದೇಶತ್ಯಾಗೇನ ಸಃ ನಿಯೋಜಯಿತವ್ಯಃ" ಪञ्ಚತಂ ೫।

**ನಿಯೋಜಿತ ನಿಯೋಜಿತ** (ವಿಂ) 1. ಆಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಆಜ್ಞೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ತದಭಿಕೇನ ಚಿಕಿತ್ಸಿತುರ್ಮಾಶು ತಾಂ ಮಖಭುಜಾಮಧಿಪೇನ ನಿಯೋಜಿತೌ" ನೈಷಂ ೪-೫। 2. ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಜ್ರಂ ಚ ಭೂಷಾಮಣಿಮूर्ತಿಧಾರಿ ನಿಯೋಜಿತಂ ತದ್‌ಛೃತಿಕಾರ್ಮುಕಂ ಚ" ನೈಷಂ ೭-೧೯। 3. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಂದು ಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಗೊತ್ತುಮಾಡಿ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಮಠತ್ವತೈವ ಪ್ರಹಿತೋಽಸಿ ನಿಶ್ಚಿತಂ ನಿಯೋಜಿತಃ" ಮುಖೇನ ತೇಜಸಾ" ನೈಷಂ ೯-೨೩। 4. ನಿಶ್ಚಿತವಾದ. 5. ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಜೋಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ನಿಯೋಜ್ಯ ನಿಯೋಜ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಸೇವಕ, ಆಳು. ನಿಯೋಕ್ತುಂ ಶಕ್ಯಃ - ನಿ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ಘ್ಯಃ" (೭-೩-೬೮)। ಕೃತ್ವಾಭಾವೋ ನಿಪಾತ್ಯತೇ। "ಸಿಞ್ಞಂತಿ ಕರ್ಮಸು ಮಹತ್ಸವಪಿ ಯನ್ನಿಯೋಜ್ಯಾಃ ಸಂಭಾವನಾಗುಣಮವೇಹಿ ತಮೀಶ್ವರಾಣಾಮ್" ಶಾಕುಂ ೭-೪। (ವಿಂ) 2. ಅಧಿಕಾರದಲ್ಲಿ ನೇಮಿಸಲ್ಪಡುವವನು. 3. ಒಂದು ಕಾರ್ಯನಿರ್ವಹಣೆಗಾಗಿ ನೇಮಿಸಲ್ಪಡುವವನು. 4. ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವವನು. "ಹಿತೇ ನಿಯೋಜ್ಯಃ ಖಲು ಭೂತಿ-ಮಿಚ್ಛತಾ ಸಹಾರ್ಥನಾಶೇನ ನೃಪೋಽನ್ಯಜೀವಿತಾ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೮। 5. ಜೋಡಿಸಲ್ಪಡುವ.

**ನಿಯೋದ್ಧ ನಿಯೋದ್ಧ** (ಪುಂ) 1. ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ. ನಿ + ಯುಜ (ಸಂಪ್ರಹಾರೇ) "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩)। (ವಿಂ) 2. ಬಾಹುಯುದ್ಧ ಮಾಡುವವನು, ಕೈಕಾಳಗ ಮಾಡುವವನು.

**ನಿರ್ ನಿರ್** (ಅವ್ಯಂ) ಇದೊಂದು ಉಪಸರ್ಗ. ಇದು ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ ದ್ಯೋತಕವಾಗುವುದು. 1. ನಿಶ್ಚಯ. ನೃ (ನಯೇ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೧೭೮)। ಇತ್ವಮ್ (೭-೩-೫೦)। "ನಿಶ್ಚಿತಮ್"। 2. ದಾಟುವುದು, ಅತಿಕ್ರಮಿಸುವುದು. "ನಿಷ್ಕೌಶಾಮ್ಬಿಃ"। 3. ವಿಯೋಗ, ಬೇರ್ಪಡುವುದು.



ಅಗಲುವುದು, ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದಿರುವುದು. "ನಿ:ಸಜ್ಜ:" 1. ಅಭಾವ, ಶೂನ್ಯ. "ಮನುಜಪಶುಭಿರ್ನಿರ್ಮಯಾದಿರ್ಭವದ್ವಿ-  
ರ್ದಾಯುಧಿ:" ವೇಣಿಂ ೩-೨೪. 5. ನಿಃಶೇಷ. 6. ನಿಷೇಧ.  
"ನಿರ್ನಿಶ್ಚಯೇ ಕ್ರಾಂತಾಽರ್ಥೇ ನಿಃಶೇಷಪ್ರತಿಷೇಧಯೋ:" ಹೇಮಂ. 1.  
7. ಅದೇಶ, ಅಪ್ಪಣೆ, ಆಜ್ಞೆ. "ನಿರ್ದಿಷ್ಟ ಬನ್ಧುನಿತ  
ಇತ್ಯುದೀರಿತಂ ದಮೇನ ಗತ್ವಾರ್ಥಪಥೇ ಕೃತಾರ್ಹಣಮ್" ನೆಪಂ ೧೬-೧೦. 1.  
ಇತ್ಯಾದಿ.

**ನಿರಂಶ ನಿರಂಶ (ವಿಂ)** 1. ಭಾಗವಿಲ್ಲದ, ಭಾಗಕ್ಕೆ ಅಧಿಕಾರ  
ವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತ: ಅಂಶಾತ್. "ನಿರಂಶೌ ಕಲಿಬಪತಿತೌ  
ಜಾತ್ಯನ್ವಬಧಿರೌ ತಥಾ" ಮನುಂ ೧-೨೦೧. 2. ಭಾಗವಿಲ್ಲದ,  
ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ. ಸೂರ್ಯನು ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವ ರಾಶಿ  
ಯಲ್ಲಿ ಮೂವತ್ತನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗವಾದ ಮೊದಲನೆಯ  
ಭಾಗವು ಅಂಶಶೂನ್ಯವಾದುದರಿಂದ ನಿರಂಶವಾಯಿತು.  
"ರಾಶಿ: ಪ್ರಥಮಭಾಗಸ್ಯ: ನಿರಂಶ: ಸೂರ್ಯ ಉಚ್ಯತೇ" 1.

**ನಿರಂಶುಕ ನಿರಂಶುಕ (ವಿಂ)** 1. ಅಂಶಗಳಿಲ್ಲದ, ಕಿರಣ  
ಗಳಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಾ ಅಂಶವೋ ಯಸ್ಮಾತ್. 2. ವಸ್ತುವಿಲ್ಲದ.  
ನಿರ್ಗತಾನಿ ಅಂಶುಕಾನಿ ಯಸ್ಮಾತ್. "ವರ್ಣಗೃಹಿಣಿಮಾಶಾಮಾಸಾ-  
ದಯಂತಮಮ್ ರುಚಿನಿವಯಸಿಚಯಾಂಶಾಂಶಭ್ರಂಶಕ್ರಮೇಣ ನಿರಂಶುಕಮ್"  
ನೆಪಂ ೧೯-೩. 1.

**ನಿರಕ್ಷ ನಿರಕ್ಷ (ವಿಂ)** ಅಕ್ಷಾಂಶವಿಲ್ಲದ ದೇಶ, ಅಕ್ಷದ  
ಉನ್ನತಿಯಿಲ್ಲದ ದೇಶ, ವಿಷುವಜ್ಯಾಯಿಯಿಲ್ಲದ ದೇಶ.  
ನಿರ್ಗತ: ಅಕ್ಷ: ತದ್ಭವತಿಯಸ್ಮಾತ್. "ಮೇರೋಽಭಯತೌ ಮಧ್ಯ  
ಧ್ರುವತಾರೆ ನಭ:ಸ್ಥಿತೇ. ನಿರಕ್ಷದೇಶಸಂಸ್ಥಾನಾಮುಭಯೇ ಕ್ಷಿತಿ-  
ಜಾಶ್ರಯೇ" ಸೂಂ ಸಿಂ ೧೨-೪೩. 1.

**ನಿರಗ್ನಿ ನಿರಗ್ನಿ (ಪುಂ)** ಶ್ರೇಷ್ಠ ಸ್ಮಾರ್ತ ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯವಿಲ್ಲದ  
ವಿಷ್ಣು. ನಿರ್ಗತೋಗ್ನಿಯಸ್ಮಾತ್.

**ನಿರಜ್ಜ ನಿರಂಕ (ವಿಂ)** 1. ಲಾಂಛನವಿಲ್ಲದ, ಗುರುತಿಲ್ಲದ.  
2. ಕಳಂಕವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತೋಜ್ಜೋ ಯಸ್ಯ. "ಶಶಭೃದ್ವಿತ್ತ-  
ನಿರಜ್ಜಭಿತ್ತಯ:" ನೆಪಂ ೨-೭೪. 1.

**ನಿರಜ್ಜುಕುಶ ನಿರಂಕುಶ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರತಿಬಂಧಕವಿಲ್ಲದ, ಅಡ್ಡಿ  
ಅಡಂಕಗಳಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತ: ಅಜ್ಜುಕುಶ ಇವ ಪ್ರತಿಬಂಧಕೋ ಯಸ್ಯ. 1.  
"ವಿನಯರುಚಯಸ್ತಸ್ಮಾತ್ ಸಂತ: ಸದೇವ ನಿರಜ್ಜುಕುಶಾ:" ಮುದ್ರಾಂ  
೩-೬. 2. ತಡೆಯಲಶಕ್ಯವಾದ, ಭಯವಿಲ್ಲದ. "ಜಗ-  
ತ್ಸನಾತನಗುರೌ ವಸಿಷ್ಠೇಪಿ ನಿರಜ್ಜುಕುಶ: 1. ವ್ಯಾಲದ್ವಿಪ ಇವಾ-  
ಸ್ಮಾಭಿರೂಪಕೃಷ್ಯೇವ ದಮ್ಯಸೇ" ಮಂ ವೀಂ ೩-೩೯. 1.

**ನಿರಜ್ಜುಕುಶತಾ ನಿರಂಕುಶತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಡ್ಡಿ ಅಡಂಕಗಳಿಲ್ಲ  
ದಿರುವಿಕೆ, ತಡೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಿರಜ್ಜುಕುಶಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್"  
(೪-೧-೧೧೯). 1. "ತ್ವ:" (೪-೧-೧೧೯). 1. -ಅಜ್ಜುಕುಶತ್ವಮ್  
-ಅಂಕುಶತ್ವಮ್.

**ನಿರಜ್ಜ ನಿರಂಕ (ನಂ)** 1. ರೂಪಕಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ,  
ನಿರವಯವ ರೂಪಕ. ನಿರ್ಗತಮಜ್ಜಂ ಯಸ್ಯ. 1. ರೂಪಕಾಲಂ  
ಕಾರವು ಪರಂಪರಿಸ್ಥಿತಮ್, ಸಾಜ್ಜಮ್ ಮತ್ತು ನಿರಜ್ಜಮ್ ಎಂದು  
ಮೂರು ವಿಧ. "ತತ್ಪರಂಪರಿಸ್ಥಿತಂ ಸಾಜ್ಜಂ ನಿರಜ್ಜಮಿತಿ ಚ  
ತ್ರಿಧಾ" ಸಾಂ ದಂ ೧೦-೨೮. 1. ಕೇವಲ ಉಪಮೇಯದಲ್ಲಿ  
ಉಪಮಾನತಾದಾತ್ಮ್ಯರೋಪವು, ನಿರವಯವರೂಪಕ.  
ಇದು ಮಾಲಾರೂಪ ಮತ್ತು ಕೇವಲಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ.  
"ನಿರಜ್ಜಂ ಕೇವಲಸ್ಯೇವ ರೂಪಂ ತದಪಿ ದ್ವಿಧಾ. 1. ಮಾಲಾಕೇವಲ-  
ರೂಪತ್ವಾತ್" ಸಾಂ ದಂ ೧೦-೩೨. 1.

**ನಿರಜ್ಜನ ನಿರಂಜನ (ಪುಂ)** 1. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.  
2. ಅಜ್ಞಾನಶೂನ್ಯನಾದ ಪರಮಾತ್ಮ. "ದೀರ್ಘರೋಮಾ ದೀರ್ಘ-  
ಭುಜೋ ದೀರ್ಘಬಾಹುನಿರಜ್ಜನ:" ಹರಿವಂ. 1. "ತದಾ ವಿದ್ವಾನ್  
ಪುಣ್ಯಪಾಪೇ ವಿಧುಯ ನಿರಜ್ಜನಂ ಪರಮಂ ಸಾಮ್ಯಮುಪೇತಿ" ಮುಂಡಕಂ. 1.  
3. ದೋಷರಹಿತವಾದ. 4. ಕಾಡಿಗೆ (ಕಜ್ಜಲ) ಯಿಲ್ಲದ.  
ನಿರ್ಗತಮಜ್ಜನಂ ಕಜ್ಜಲಂ ತದಿವ ಸಮಲಮಜ್ಜನಂ ವಾ ಯಸ್ಯ. 1.  
5. ಅಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಾ -ನಾ. 6.  
ಪೂರ್ಣಮೆ, ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ನಿರ್ಗತಮ್ ಅಜ್ಜನಮಿವಾನ್ವಹಾರೋ  
ಯತ್ರ. 7. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. "ನಿರಜ್ಜನೇ ಸಾಚಿವಿಲೋಕಿತಂ  
ದೃಶಾವಯಾವಕಂ ವೇಪಥುರೋಷಪಲ್ಲವಮ್" ಕಿರಾಂ ೮-೪೨. 1.

**ನಿರತ ನಿರತ (ವಿಂ)** 1. ಅಸಕ್ತನಾದ, ತತ್ಪರನಾದ, ಶ್ರದ್ಧೆ  
ಯುಳ್ಳ. ನಿ + ರಮ್ (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). 1.  
"ಶಿವಮಸ್ತು ಸರ್ವಜಗತಾಂ ಪರಹಿತನಿರತಾ ಭವಂತು ಭೂತಗಣಾ:"  
ಮಾಲತೀಂ ೧೦-೨೪. 1. 2. ಹವ್ಯಾಸವುಳ್ಳ. 3. ಪ್ರೀತಿ  
ಗೊಂಡ, ಸಂತೋಷಗೊಂಡ.

**ನಿರತಿ ನಿರತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಬಹಳ ಪ್ರೀತಿ, ಅತ್ಯಂತ ಪ್ರೇಮ.  
ನಿರತಾಂ ರತಿ: 1.

**ನಿರತಿಶಯ ನಿರತಿಶಯ (ವಿಂ)** 1. ಬಹಳ ಹೆಚ್ಚಾದ.  
ನಿರ್ಗತೋತಿಶಯೋ ಯಸ್ಮಾತ್. 2. ತನಗಿಂತಲೂ ಮಿಗಿಲಾದವ  
ನಿಲ್ಲದ. 3. ಮೀರದಿರುವ, ಮೇಲಾಗಿರುವ. "ನಿರತಿಶಯಂ  
ಗರಿಮಾಣಂ ತೇನ ಜನನ್ಯಾ: ಸ್ಮರಂತಿ ವಿಧಾಂಸ: 1. ಯತ್ಕಿಮಪಿ ವಹತಿ  
ಗರ್ಭಂ ಮಹತಾಮಪಿ ಯೋ ಗುರ್ಭವತಿ" ಪञ್ಚತಂ ೧-೩೧. 1.

**ನಿರತಿಯ ನಿರತಿಯ (ವಿಂ)** ಅಪಾಯವಿಲ್ಲದ, ನಾಶವಿಲ್ಲದ.  
ನಿರ್ಗತ: ಅತಿಯೋ ಯಸ್ಯ. 1. "ನಿರತಿಯಂ ಸಾಮ ನ ದಾನವಜಿತಂ  
ನ ಭೂರಿ ದಾನಂ ವಿರಹಯ್ಯ ಸತ್ಕಿಯಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೧೨. 1.

**ನಿರಧ್ವ ನಿರಧ್ವ (ವಿಂ)** ದಾರಿತಪ್ಪಿದ, ದಾರಿಯಿಂದ ಸರಿದ  
ರುವ, ದಾರಿ ಬಿಟ್ಟು ಹೋಗಿರುವ. ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತೋಧ್ವನ:  
"ಅಚ್" (೪-೪-೮೪). 1.

**ನಿರನುಕ್ರೋಶ ನಿರನುಕ್ರೋಶ (ವಿಂ)** ದಯೆಯಿಲ್ಲದವನು,  
ಕಲ್ಲಿದಯವನು. ನಿರ್ಗತ: ಅನುಕ್ರೋಶೋ ಯಸ್ಮಾತ್. 1. "ಮಯಾ



ಪುನರಲಜ್ಜಯಾ ನಿರನುಕ್ರೋಶಯಾ ಯುಂ ಪರಿಯುಕ್ತಾ:” ಮಾಲತೀಂ ೧೦।

**ನಿರನುಕ್ರೋಶತಾ ನಿರನುಕ್ರೋಶತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಯೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಕ್ರಿಯಾ. ನಿರನುಕ್ರೋಶಸ್ಯ ಭಾವ: “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯)।

**ನಿರನುಯೋಜ್ಯ ನಿರನುಯೋಜ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಸೇವಕನಿಲ್ಲದ. ನಿಗತೋನ್ಯುಯೋಜ್ಯ: ಸೇವಕೋ ಯಸ್ಮಾತ್. 2. ಪ್ರಶ್ನಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಿಲ್ಲದ, ಯಾವ ಅಪರಾಧವೂ ಇಲ್ಲದ.

**ನಿರನುರೋಧ ನಿರನುರೋಧ** (ವಿಂ) ಅನುಕೂಲವಾಗಿಲ್ಲದ, ಹೊಂದಿಕೊಂಡು ನಡೆಯದಿರುವ. ನಿಗತೋನ್ಯುರೋಧೋ ಯಸ್ಮಾತ್. “ಪ್ರಿಯೋ ಮನ್ಯುರ್ಜಾತಿಸ್ತವ ನಿರನುರೋಧೇ ನ ತು ವಯಮ್” ಅಮರಂ ೮೧।

**ನಿರಂತರ ನಿರಂತರ** (ವಿಂ) 1. ಸಾಂದ್ರವಾದ, ದಟ್ಟವಾದ, ಎಡೆಬಿಡದ. ನಿಗತಮಂತರಂ ಯಸ್ಮಾತ್. “ಹೃದಯಂ ನಿರಂತರ-ಬೃಹತ್ಕಠಿನಸ್ತನಮಂಢಲಾವರಣಮಪ್ಯಭಿದನ್” ಮಾಘಂ ೯-೬೬। 2. ಸಂತತವಾದ, ಎಡೆಬಿಡದ, ವಿರಾಮವಿಲ್ಲದ. “ಶಿಲಾಶಯಾಂ ತಾಮನಿಕೇತವಾಸಿನೀಂ ನಿರಂತರಾಸ್ವಂತರವಾತವೃಷ್ಟಿಪು” ಕುಮಾರಂ ೪-೨೪। 3. ವ್ಯತ್ಯಾಸವಿಲ್ಲದ, ಸಮಾನವಾದ, ಒಂದೇ ವಿಧವಾದ. 4. ವ್ಯವಧಾನವಿಲ್ಲದ, ಮಧ್ಯೆ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದ, ಬಿಡುವಿಲ್ಲದ. “ಪರಿತೋ ರುದ್ಧನಿರಂತರಾಮ್ಬರಾ:” ಮಾಘಂ ೭೬। (ಅವ್ಯಂ) -ರಮ್ -ರಮ್. 5. ವ್ಯವಧಾನವಿಲ್ಲದ, ಬಿಡುವಿಲ್ಲದ. “ಕೃತಾಪರಾಧಾನಪಿ ಯೋಷಿತ: ಪ್ರಿಯಾನ್ ಪರಿಪ್ವಜಂತೇ ಶಯನೇ ನಿರಂತರಮ್” ಋತುಸಂ. 6. ಸಾಂದ್ರವಾಗಿ, ದಟ್ಟವಾಗಿ, ನಿಬಿಡವಾಗಿ. “ತಸ್ಯ ಚ ಯದ್ವಿಚ್ಛಯಾ ನಿರಂತರನಿಪ-ತಿತಾನಿ ವಿಕಸಿತಾನಿ ಕುಸುಮಾನ್ಯಾದಾಯ” ಮಾಲತೀಂ ೧। 7. ಸಂತತವಾಗಿ, ಎಡೆಬಿಡದೆ, ವಿಚ್ಛಿತ್ತಿಯಿಲ್ಲದೆ. “ಆಗರ್ಭ-ನಿಗಮನಿರಂತರೋಪಾರುಢವಿಸ್ತಮ್ಭಸದೃಶಮ್” ಮಾಲತೀಂ ೬। 8. ವ್ಯತ್ಯಾಸವಿಲ್ಲದೆ, ಒಂದೇ ವಿಧವಾಗಿ.

**ನಿರಂತರಾಮ್ಯಾಸ ನಿರಂತರಾಭ್ಯಾಸ** (ಪುಂ) ಎಡೆಬಿಡದೆ ಅವ್ಯಕ್ತಿಮಾಡುವುದು, ವಿಚ್ಛಿತ್ತಿಯಿಲ್ಲದೆ ಓದುವುದು. ನಿರಂತರೋಽಮ್ಯಾಸ:। “ನಿರಂತರಾಮ್ಯಾಸದೃಢೀಕೃತಸ್ಯ ಸಸ್ನೆಹ-ಮೃತಪ್ರಥಿತಸ್ಯ ಜಂತೋ:” ಪ್ರಬೋಧಂ ೪-೨೬।

**ನಿರಂತರಾಲ ನಿರಂತರಾಲ** (ವಿಂ) ಮಧ್ಯೆ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದ, ಸ್ವಲ್ಪವೂ ಸ್ಥಳಾವಕಾಶವಿಲ್ಲದ. ನಿಗತಮಂತರಾಲಂ ಯಸ್ಮಾತ್. “ಏಕಕಶ್ಚಿರಮರೋಧಿ ಬಾಲಯಾ ತಲ್ಪಯನ್ತ್ರಣನಿರಂತರಾಲಯಾ” ನೈಷಂ ೧೮-೪೩।

**ನಿರನ್ವಯ ನಿರನ್ವಯ** (ವಿಂ) 1. ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ. ನಿಗತ: ಅನ್ವಯ: ಸಂಬಂಧೋ ಯಸ್ಮಾತ್. “ನಿರನ್ವಯೋನ್ಯಪಸರ: ಪ್ರಾಪ್ತ:

ಸ್ಯಾನ್ವೋರಕಿಲ್ವಿಷಮ್” ಮನುಂ ೮-೧೯೮। 2. ಸಂತತಿ ಯಿಲ್ಲದ, ಮಕ್ಕಳಿಲ್ಲದ. 3. ಹಿಂಬಾಲಕನಿಲ್ಲದ, ಪರಿವಾರವಿಲ್ಲದ, ಅನುಚರರಿಲ್ಲದ. “ಕಾ ತ್ವಮೇಕಾಕಿನಿ ಭೀರು ನಿರನ್ವಯ-ಜನೇ ವನೇ” ಭಟ್ಟಿಂ ೪-೬೬। 4. ಕಟ್ಟುಪಾಡಿಗೆ ಒಳಗಾಗದಿರುವ, ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ ಕಟ್ಟುಬೀಳದಿರುವ, ಯಜಮಾನನ ಸಮಕ್ಷದಲ್ಲಿ ನಡೆಯದಿರುವ. “ಸ್ಯಾತ್ಸಾಹಸಂ ತ್ವನ್ವಯವತ್ ಪ್ರಸಮಂ ಕರ್ಮ ಯತುತಮ್। ನಿರನ್ವಯಂ ಭವೇತ್ಸೇಯಂ ಹೃತ್ವಾಪವ್ಯಯತೇ ಚ ಯತ್” ಮನುಂ ೮-೩೩೨। 5. ಯಜಮಾನನ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ (ಚೇರ್ಯಂ). “ಪರಿಪೂತೇಷು ಧಾನ್ಯೇಷು ಶಾಕಮೂಲಫಲೇಷು ಚ। ನಿರನ್ವಯೇ ಶತಂ ದಣ्ड: ಸಾನ್ವಯೇಽರ್ಧಶತಂ ದಮ:” ಮನುಂ ೮-೩೩೧।

**ನಿರಪತ್ಯ ನಿರಪತ್ಯ** (ವಿಂ) ಸಂತಾನವಿಲ್ಲದ, ಮಕ್ಕಳಿಲ್ಲದ. ನಿಗತಮಪತ್ಯಂ ಯಸ್ಮಾತ್।

**ನಿರಪತ್ಯತಾ ನಿರಪತ್ಯತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಕ್ಕಳಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಿರಪತ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯)। “ತ್ವ:” (೪-೧-೧೧೯)। -ಅಪತ್ಯತ್ವಮ್ -ಅಪತ್ಯತ್ವಮ್.

**ನಿರಪತ್ರಪ ನಿರಪತ್ರಪ** (ವಿಂ) ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದ, ನಾಚಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತ: ಅಪತ್ರಪಾಯಾ:। “ತತೋ ಹಸನ್ ಸ ಭಗವಾನುರೇನಿರಪತ್ರಪ:। ಅನ್ವೀಯಮಾನಸ್ತರಸಾ ಕ್ರುದ್ಧೋ ಭೀತ: ಪರಾಪತತ್” ಭಾಗಂ ೩-೨೦-೨೪।

**ನಿರಪರಾಧ ನಿರಪರಾಧ** (ವಿಂ) ದೋಷವಿಲ್ಲದ, ತಪ್ಪಿಲ್ಲದ, ಯಾವ ಕಳಂಕವೂ ಇಲ್ಲದ. ನಿಗತೋಽಪರಾಧಾತ್।

**ನಿರಪಹ್ಲವ ನಿರಪಹ್ಲವ** (ವಿಂ) ಮರೆಮಾಚದಿರುವ, ಮುಚ್ಚಿಡದಿರುವ.

**ನಿರಪಾಯ ನಿರಪಾಯ** (ವಿಂ) 1. ಅಪಾಯವಿಲ್ಲದ, ನಾಶರಹಿತವಾದ, ಸ್ಥಿರವಾದ. ನಿಗತೋಽಪಾಯಾತ್। “ತಂ ಸಮೇತ್ಯ ನಿರಪಾಯತೇಜಸಂ ಸಪ್ತಸಪ್ತಮಿವ ತಾರಕಾಗ್ರಹೈ:” ಯಾದಂ ೧೭-೬೮। 2. ತೊಂದರೆಯಿಲ್ಲದ, ವಿಪತ್ತಿಲ್ಲದ. “ನಿಖಿಲಾನುಮತಾಂ ನೃಪೋ ವಿಧತ್ತೇ ನಿರಪಾಯಪ್ರಿಯಪಥ್ಯಭಾವಭವ್ಯಾಮ್” ಯಾದಂ ೧೪-೩೮। 3. ತಪ್ಪುಮಾಡದಿರುವ, ಮಜುಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿರುವ. (ಅವ್ಯಂ) 4. ಅಪಾಯವಿಲ್ಲದೆ, ನಾಶವಿಲ್ಲದೆ. 5. ತೊಂದರೆಯಿಲ್ಲದೆ, ವಿಪತ್ತಿಲ್ಲದೆ. “ಭದ್ರಮಸ್ತು ಭವತೇ ದಿವಸ್ಪತೇ ನಿರ್ಜರಾಶ್ಚ ನಿರಪಾಯಮಾಸತಾಮ್” ಯಾದಂ ೧೭-೧೨೪।

**ನಿರಪೇಕ್ಷ ನಿರಪೇಕ್ಷ** (ವಿಂ) 1. ಆಸಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ, ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ, ಆಸೆಯಿಲ್ಲದ. ನಿಗತಾ ಅಪೇಕ್ಷಾ ಯಸ್ಯ। “ಅಧ್ಯಾತ್ಮ-ರತಿರಾಸಿನೋ ನಿರಪೇಕ್ಷೋ ನಿರಾಮಿಷ:” ಮನುಂ ೬-೪೯। 2. ಆಸೆಯನ್ನು ತೊರೆದಿರುವ, ಆಸೆಯನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳದಿರುವ. “ತಾದೃಶಸ್ಯಾತ್ಮನಿರಪೇಕ್ಷವ್ಯವಸಾಯಿನ: ಕೃತಾಂತ-



ಕವಲೀಕ್ರಿಯಮಾಣಜೀವಿತಬಲಾತ್ಕಾರಪ್ರತ್ಯಾನಯನಗುರೂಪಕಾರಿಣಃ”  
ಮಾಲತೀಂ ೭। 3. ಪರಾಧೀನವಲ್ಲದ, ಸ್ವತಂತ್ರವಾದ.  
4. ಇತರರ ಆಶ್ರಯವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸದಿರುವ. “ನ್ಯಾಯ-  
ನಿರ್ಣಿತಸಾರತ್ವಾತ್ ನಿರಪೇಕ್ಷಮಿವಾಗಮೇ” ಕಿರಾಂ ೧೧-೩೯।  
5. ಗಮನಕೊಡದಿರುವ, ಅನಾದರದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಅಲಕ್ಷ್ಯ  
ದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 6. ಉದಾಸೀನ, ತಟಸ್ಥ. (ಅವ್ಯಂ)  
7. ಆಸಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದೆ. 8. ಆಸೆಯನ್ನು ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳದೆ.  
9. ಪರಾಧೀನತೆಯಿಲ್ಲದೆ. 10. ಇತರರ ಆಶ್ರಯವನ್ನು  
ಅಪೇಕ್ಷಿಸದೆ. 11. ಗಮನಕೊಡದೆ, ಅಲಕ್ಷ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿ.  
12. ತಟಸ್ಥನಾಗಿ, ಉದಾಸೀನನಾಗಿ.

**ನಿರಪೇಕ್ಷಾ ನಿರಪೇಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನಾದರ, ತಾತ್ಸಾರ,  
ಅಲಕ್ಷ್ಯ, ಆಸದ್ಭಾವ.

**ನಿರಪೇಕ್ಷಿತ ನಿರಪೇಕ್ಷಿತ** (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡದ.  
2. ಉಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ನಿರಭಿಭವ ನಿರಭಿಭವ** (ವಿಂ) ಅವಮಾನಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗದ,  
ತಿರಸ್ಕಾರಕ್ಕೆ ಗುರಿಯಾಗದ. ನಿರ್ಗತಃ ಅಭಿಭವಃ ಯಸ್ಮಾತ್।  
“ಅನುತ್ಸೇಕೋ ಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾ ನಿರಭಿಭವಸಾರಾಃ ಪರಕಥಾಃ” ಭರ್ತೃಂ  
೧-೪೭।

**ನಿರಭಿಮಾನ ನಿರಭಿಮಾನ** (ವಿಂ) ಅಹಂಕಾರವಿಲ್ಲದ,  
ನಿರ್ಗತೋಽಭಿಮಾನೋ ಯಸ್ಮಾತ್।

**ನಿರಭಿಲಾಷ ನಿರಭಿಲಾಷ** (ವಿಂ) ಇಚ್ಛೆಯಿಲ್ಲದ, ಆಸೆ  
ಯಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತೋಽಭಿಲಾಷೋ ಯಸ್ಯ। “ಸ್ವಸುಖನಿರಭಿಲಾಷಃ  
ಖಿನ್ನಸೇ ಲೋಕಹತೋಃ ಪ್ರತಿದಿನಮಥವಾ ತೇ ವೃತ್ತಿರೇವವಿಧೇವ”  
ಶಾಕುಂ ೪-೭।

**ನಿರಮಿತ್ರ ನಿರಮಿತ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಪಾಂಡುಪುತ್ರನಾದ ನಕುಲನ  
ಒಬ್ಬ ಮಗ. “ನಕುಲಸ್ತು ಚೈದಾಂ ರೇಣುಮತೀಂ ನಾಮ ಭಾರ್ಯಾ-  
ಮುದವಹತ್। ತಸ್ಯಾಂ ಪುತ್ರಂ ನಿರಮಿತ್ರಂ ನಾಮಾಜನಯತ್” ಭಾಂ  
ಆದಿಂ ೬೩-೭೮। (ವಿಂ) 2. ಶತ್ರುವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತೋಽ-  
ಮಿತ್ರೋ ಯಸ್ಯ।

**ನಿರಯ ನಿರಯ** (ಪುಂ) ಸರಕ. ನಿರ್ಗತೋಽಯಾತ್। “ಅವೇಕ್ಷೇತ  
ಗತೀರ್ನೃಣಾಂ ಕರ್ಮದೋಷಸಮುದ್ಭವಾಃ। ನಿರಯೇ ಚೈವ ಪತನಂ ಯಾತನಾಶ್ಚ  
ಯಮಧ್ಯೇ” ಮನುಂ ೬-೬೧।

**ನಿರಗಲ ನಿರಗಲ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತಿಬಂಧವಿಲ್ಲದ, ಅಡ್ಡಿ  
ಆತಂಕಗಳಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಮಗಲಮಿವ ಪ್ರತಿಬಂಧೋ ಯಸ್ಯ। “ಮರಣ-  
ಸಮಯೇ ತ್ಯಕ್ತಾಶ್ಚಕ್ರಂ ಪ್ರಲಾಪನಿರಗಲಪ್ರಕಟಿತನಿಜಸ್ನೆಹಃ ಸೌಖ್ಯಂ  
ಸಖಾ ಗುರ ಏವ ತೇ” ಮಾಲತೀಂ ೪-೨೬। (ಅವ್ಯಂ) 2.  
ತಡೆಯಿಲ್ಲದೆ, ಅಡ್ಡಿಯಿಲ್ಲದೆ.

**ನಿರರ್ಥ ನಿರರ್ಥ** (ವಿಂ) 1. ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತೋಽರ್ಥೋ ಯಸ್ಯ।  
2. ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ, ಫಲವಿಲ್ಲದ. 3. ಧನವಿಲ್ಲದ,  
ಬಡವನಾದ. “ನಿರರ್ಥಾ ಸಾಪ್ಯಮೂರ್ತತ್ವಾತ್ ಪುರುಷಸ್ಯ ಮಹೀಪತೇ”।

**ನಿರರ್ಥಕ ನಿರರ್ಥಕ** (ವಿಂ) 1. ಫಲವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರಯೋಜನ  
ವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತೋಽರ್ಥೋ ಯಸ್ಯ-ವಾ “ಕಪ್”। “ಪ್ರಸಾವೋ  
ನಿರ್ಫಲೋ ಯಸ್ಯ ಕ್ರೋಧಶ್ಚಾಪಿ ನಿರರ್ಥಕಃ” ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ  
೩೪-೨೨। 2. ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ. 3. ಪಾದ ಅಥವಾ  
ಪಾತ್ಯಪೂರ್ವಿಗಾಗಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸುವ ಚ ವೈ ತು ಹಿ  
ಇತ್ಯಾದಿ ವರ್ಣಗಳು. “ನಿರರ್ಥಕಂ ತು ಹೀತ್ಯಾದಿ ಪೂರ್ಣಕ-  
ಪ್ರಯೋಜನಮ್”।

**ನಿರವಕಾಶ ನಿರವಕಾಶ** (ವಿಂ) 1. ವಿರಾಮವಿಲ್ಲದ, ಬಿಡು  
ವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತೋಽವಕಾಶೋ ಯಸ್ಯ। 2. ಸ್ಥಳಾವಕಾಶವಿಲ್ಲದ,  
ಜಾಗವಿಲ್ಲದ, ಸ್ಥಾನವಿಲ್ಲದ. “ನ ದೋಷಂ ವಿವೇಷಾದಪಿ ನಿರವಕಾಶಂ  
ಗುಣಮಯೇ” ನೈಷಂ ೧೪-೯೬।

**ನಿರವಗ್ರಹ ನಿರವಗ್ರಹ** (ವಿಂ) 1. ಅಡ್ಡಿ ಆತಂಕಗಳಿಲ್ಲದ,  
ನಿರ್ಬಂಧವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಃ ಅವಗ್ರಹೋ ಯಸ್ಯ। “ಕೇचित್  
ಕ್ರೋಧಸಮಾವಿಷ್ಟಾ ಮದಾನ್ಧಾ ನಿರವಗ್ರಹಾಃ” ಭಾಂ ಭೀಷಮಂ  
೯೩-೩೯। 2. ಬರವಿಲ್ಲದ, ದುರ್ಭಿಕ್ಷುವಿಲ್ಲದ, ಅನಾವೃಷ್ಟಿಯ  
ತೊಂದರೆಯಿಲ್ಲದ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ತಡೆಯಿಲ್ಲದೆ, ಅಡ್ಡಿ  
ಆತಂಕಗಳಿಲ್ಲದೆ. “ನಿರವಗ್ರಹಂ ದಹತಿ ದೇವಮಿವ ದಾಸುಣೋ  
ವಿವಸ್ವಾನ್” ಮಾಲತೀಂ ೯।

**ನಿರವಧಿ ನಿರವಧಿ** (ವಿಂ) 1. ದೋಷರಹಿತವಾದ, ಉತ್ಕೃಷ್ಟ  
ವಾದ. ನಿರ್ಗತಮವಧಿಂ ದೋಷೋ ಯಸ್ಯ। “ಲಕ್ಷ್ಮೀನಿವಾಸ ನಿರವಧಿ-  
ಗುಣೈಕಸಿಂಧೋ ಸಂಸಾರಸಾಗರಸಮುತ್ಪರಣಂಕಪೋತ”। 2. ರಾಗ  
ದ್ವೇಷಾದಿಗಳಿಲ್ಲದ. 3. ಅಜ್ಞಾನತೂಷ್ಣನಾದ ಪರಮಾತ್ಮ.  
“ನಿರ್ಫಲಂ ನಿಷ್ಕ್ರಿಯಂ ಶಾಂತಂ ನಿರವಧಿಂ ನಿರಂಜನಮ್। ಅಮೃತಸ್ಯ  
ಪರಂ ಸೇತುಂ ದಗ್ಧೇನವನಮಿವಾನಲಮ್” ಇವೇತಾಂ ಉಪಂ ೧। 4. ಕರ್ಮ  
ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ. 5. ಹೇಯಗುಣವಿಲ್ಲದ.

**ನಿರವಧಿ ನಿರವಧಿ** (ವಿಂ) 1. ಅಂತ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಕೊನೆಯಿಲ್ಲದ.  
ನಿರ್ಗತಃ ಅವಧಿಃ ಯಸ್ಯ। “ಕಡುಸ್ತುಣಿಂ ಸಹ್ಯೋ ನಿರವಧಿರಯಂ  
ತು ಪ್ರವಿಲಯಃ” ಉಂ ರಾಂ ೩-೪೪। 2. ಎಲ್ಲೆಯಿಲ್ಲದ,  
ಮೇರೆಯಿಲ್ಲದ. 3. ಕಾಲದ ಮಿತಿಯಿಲ್ಲದ, ಸತತವಾದ,  
ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾದ. “ಮಹಾನಾಥಿವ್ಯಾಧಿನಿರವಧಿರಿದಾನಿಂ  
ಪ್ರಸರತು” ಮಾಲತೀಂ ೪-೩। “ಕಪ್”। -ಅವಧಿಕಃ  
-ಅವಧಿಕಃ.

**ನಿರವಯವ ನಿರವಯವ** (ವಿಂ) 1. ಅಂಗಗಳಿಲ್ಲದ, ಅವ  
ಯವಗಳಿಲ್ಲದ. (ಪರಮಾಣು, ಅಕಾಶ ಮೊದಲಾದುವು).  
2. ನಿರಾಕಾರನಾದ (ಬ್ರಹ್ಮ). ನಿರ್ಗತೋಽವಯವೋ ಯಸ್ಮಾತ್।



**ನಿರವಲಂಬ ನಿರವಲಂಬ** (ವಿಂ) 1. ಆಶ್ರಯವಿಲ್ಲದ, ಆಧಾರವಿಲ್ಲದ, ಆಸರೆಯಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತೋವಲಂಬೋ ಯಸ್ಮಾತ್ | 2. ಸಾಹಾಯ್ಯವಿಲ್ಲದ. ಇದೇ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ -**ಅವಲಂಬನಃ** -**ಅವಲಂಬನಃ**. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಆಶ್ರಯವಿಲ್ಲದೆ, ಆಧಾರವಿಲ್ಲದೆ. "ಉಪರಿ ನಿರವಲಂಬನಂ ಪ್ರಿಯಸ್ಯ ನ್ಯಪತದಥೋನ್ವತರೋ-  
ನ್ವಿಚಿಷಯಾ" ಮಾಘಂ ೭-೪೮ |

**ನಿರವಶೇಷ ನಿರವಶೇಷ** (ವಿಂ) 1. ಶೇಷವಿಲ್ಲದ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ. ನಿರ್ಗತೋವಶೇಷೋ ಯಸ್ಮಾತ್ | "ತತ್ಪ್ರಿಯಸಖಿ, ಯಥೇಶ ಭರ್ತುರೇಕಾಭಿನಿವೇಶೋ ನಿರವಶೇಷೋ ಹೃದಯಾದುದ್ರಿಯತೇ ತಥಾ ಕುರು" ಮಾಲತೀಂ ೭ | (ಅವ್ಯಂ) 2. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ, ಸಮಗ್ರವಾಗಿ. "ಸಾಮ್ಪ್ರತಂ ನಿರವಶೇಷಂ ಪೂರಿತಾಃ ಶ್ರೀಮಾಧವಸ್ಯ ಮನೋ-  
ರಥಾಃ" ಮಾಲತೀಂ ೧೦ |

**ನಿರವಸಾದ ನಿರವಸಾದ** (ವಿಂ) 1. ನಾಶವಿಲ್ಲದ, ಅಳಿವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತೋವಸಾದೋ ಯಸ್ಮಾತ್ | 2. ದಣವಿಲ್ಲದ, ಆಯಾಸವಿಲ್ಲದ. 3. ಪರಾಜಯವಿಲ್ಲದ, ಸೋಲಿಲ್ಲದ. 4. ಹರ್ಷಚಿತ್ತನಾದ, ನಗುಮುಖವುಳ್ಳ.

**ನಿರವಹಾಲಿಕಾ ನಿರವಹಾಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೇಲಿ, ಹೊರಾಪರಣ. ನಿರ್ + ಅವ + ಹಲ್ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | "ಠಾಪ್" | ಇತ್ವಮ್ |

**ನಿರವ್ಯಯ ನಿರವ್ಯಯ** (ವಿಂ) ನಾಶವಿಲ್ಲದ, ಶಾಶ್ವತವಾದ, ನಿತ್ಯವಾದ, ವ್ಯತ್ಯಾಸವನ್ನು ಹೊಂದದಿರುವ.

**ನಿರಶನ ನಿರಶನ** (ವಿಂ) 1. ಭೋಜನವಿಲ್ಲದ, ಊಟವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಮಶನಂ ಯಸ್ಮಾತ್ | "ಅಶಮಕ್ರುದ್ಧಾ ನಿರಶನಾ ದಶಪಂಚತಪಾಶ್ಚ ಯೇ" ಹರಿವಂಶಂ | (ಅವ್ಯಂ) 2. ಉಪವಾಸ, ಊಟಮಾಡದಿರುವಿಕೆ. ಅಶನಸ್ಯಾಭಾವಃ ಅವ್ಯಯಿಂ (೨-೧-೬) |

**ನಿರಸನ ನಿರಸನ** (ನಂ) 1. ಹೊರದೂಡುವುದು, ಅಟ್ಟುವುದು, ಓಡಿಸುವುದು. ನಿರ್ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | "ಸ ಪಿತುರ್ವಿಕ್ರಿಯಾ ದೃಷ್ಟಾ ರಾಜ್ಯಾನ್ನಿರಸನಂ ತಥಾ" ಭಾಂ ಆಶ್ವಂ ೪-೧೦ | 2. ಪ್ರತ್ಯಾಖ್ಯಾನ, ತಿರಸ್ಕಾರ. 3. ವಧೆ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. 4. ಉಗುಳುವುದು. "ನಿರಸನಂ ವಧೇ ಪ್ರತಿಕ್ಷೇಪೇ | ನಿಷ್ಠಿವನೇ" ಮೇದಿಂ | 5. ತ್ಯಜಿಸುವುದು. 6. ಎಸೆಯುವುದು. 7. ತೆಗೆದುಹಾಕುವುದು, ತಳ್ಳಿಹಾಕುವುದು. 8. (ಬಾಣ) ಪ್ರಯೋಗಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 9. ಓಡಿಸುವ, ಅಟ್ಟುವ, ಹೊರದೂಡುವ. ನಿರ್ + ಅಸು ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) | "ಪ್ರಿಯವಿಮಾನಿತಮಾನವತೀರಣಾಂ ನಿರಸನೇರಸನೇರವೃಥಾರ್ಥತಾ" ಮಾಘಂ ೬-೪೭ | 10. ತಿರಸ್ಕರಿಸುವ. 11. ತ್ಯಜಿಸುವ. 12. ಎಸೆಯುವ. 13. ಪ್ರಯೋಗಿಸುವ.

**ನಿರಸ್ತ ನಿರಸ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಪರಿತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರಾಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ನಿರೀಕ್ಷ್ಯ ಸಂರಂಭನಿರಸ್ತಧೈಯಂ ರಾಧೇಯಮಾರಾಧಿತಜಾಮದಗ್ನಯಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೨೧ | 2. ಅಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊರದೂಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕೌಲೀನಭೀತೇನ ಗೃಹಾನ್ನಿರಸ್ತಾ ನ ತೇನ ವೇದೇಹಸುತಾ ಮನಸ್ತಃ" ರಘುಂ ೧೪-೮೪ | 3. ಶೂನ್ಯವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬರಿದಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿರಸ್ತಪಾದಪೇ ದೇಶೇ ಏರಣ್ಡೋಽಪಿ ದ್ರುಮಾಯತೇ" ಹಿತಂ | 4. ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಬಾಣ). 5. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಮರ್ಷಿಣಾ ಕೃತ್ಯಮಿವ ಕ್ಷಮಾಶ್ರಯಂ ಮದೋದ್ಧತೇನೇವ ಹಿತಂ ಪ್ರಿಯಂ ವಚಃ | ಬಲೀಯಸಾ ತದ್ವಿಧಿನೇವ ಪೌರೂಢಂ ಬಲಂ ನಿರಸ್ತಂ ನ ರರಾಜ. ಜಿಣ್ಣುನಾ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೬೩ | 7. ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಡೆವಲ್ಪಟ್ಟ. "ದ್ವಂದ್ವಂತಿಮುಕ್ತಕೃತ್ಯ ನಿರಸ್ತಸಾದಿನಮ್" ಮಾಘಂ ೧೨-೨೨ | 8. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ದೀಪಿತಾರಂ ದಿನಾರಂಭೇ ನಿರಸ್ತಘ್ವಾಂತಸಂವಯಮ್" ಭದ್ರಿಂ ೭-೧೭ | 9. ಉಗಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. 10. ಪ್ರತಿಹತವಾದ. 11. ತ್ವರೆಯಿಂದ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ವೇಗವಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ (ಮಾತು).

**ನಿರಸ್ತವತ್ ನಿರಸ್ತವತ್** (ವಿಂ) 1. ಪರಿತ್ಯಜಿಸಿದವನು. ನಿರ್ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸಿದವನು. "ರಾಕ್ಷಸಾನ್ ವತ್ಯುಜ್ಞೇಷು ಪಿಣ್ಡೀಶ್ವರಾನ್ ನಿರಸ್ತವಾನ್" ಭದ್ರಿಂ ೫-೮೫ | 3. ಹೊರದೂಡಿದವನು, ಓಡಿಸಿದವನು. 4. (ಬಾಣ) ಪ್ರಯೋಗಿಸಿದವನು. 5. ಎಸೆದವನು. 6. ಹೋಗಲಾಡಿಸಿದವನು, ನಿವಾರಿಸಿದವನು. 7. ತಳ್ಳಿದವನು, ಕಡೆವಿದವನು. 8. ನಾಶಪಡಿಸಿದವನು. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -**ವತೀ** -**ವತೀ**.

**ನಿರಸ್ಯತ್ ನಿರಸ್ಯತ್** (ವಿಂ) 1. ತೆಗೆದುಹಾಕುತ್ತಿರುವ, ತಳ್ಳಿಹಾಕುತ್ತಿರುವ. ನಿರ್ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಹಿತಯಾ ಗಲಿತನಿವಿ ನಿರಸ್ಯತ್ತನ್ತರೀಯ-  
ಮವಲಂಬಿತಕಾಂಚಿ" ಕಿರಾಂ ೯-೪೮ | 2. ಬಿಡುತ್ತಿರುವ, ಪರಿತ್ಯಜಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಕಾರಣದ್ವಯಮಿದಂ ನಿರಸ್ಯತಃ ಪ್ರಾರ್ಥ-  
ನಾಧಿಕಬಲೇ ವಿಪತ್ಕಲಾ" ಕಿರಾಂ ೧೩-೬೧ | 3. ತ್ಯಜಿಸುತ್ತಿರುವ, ತಳ್ಳಿಹಾಕುತ್ತಿರುವ. 4. ನಾಶಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 5. ಹೊರದೂಡುತ್ತಿರುವ, ಹೊರಕ್ಕೆ ಅಟ್ಟುತ್ತಿರುವ. 6. ಎಸೆಯುತ್ತಿರುವ. 7. (ಬಾಣ) ಪ್ರಯೋಗಿಸುತ್ತಿರುವ. 8. ತಿರಸ್ಕರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -**ಅಸ್ಯಂತೀ** -**ಅಸ್ಯಂತೀ**.

**ನಿರಸ್ಥಿ ನಿರಸ್ಥಿ** (ನಂ) ಎಲುಬುಗಳಿಲ್ಲದ ಮಾಂಸ. ನಿರ್ಗತ-  
ಮಸ್ಥಿ ಯಸ್ಮಾತ್ | "ಮಾಂಸಂ ನಿರಸ್ಥಿ ಸುಸ್ವಿನ್ನಂ ಪುನರ್ದೃಢದಿ  
ವೃಣಿತಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ |



**ನಿರಸ್ಯಮಾನ ನಿರಸ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಇಲ್ಲದಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿರ್+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಿ" (೩-೨-೧೨೪)। "ಮನ್ಯೇ ತಸ್ಯ ನಿರಸ್ಯಮಾನಕಿರಣಸ್ಯೈಷಾ ಮುಖೇನೋದಗತಾ ಶ್ವಾಸಾಯಾಸಸಮಾ-ಕುಲಾಲಿಸರಣಿವ್ಯಾಜೇನ ಭೂಮಾವಲಿ" ಅಮರಂ ೧೬।

**ನಿರಹಿಡ್ಗಾರ ನಿರಹಂಕಾರ** (ವಿಂ) 1. ಅಹಂಕಾರವಿಲ್ಲದ. 2. ಅಭಿಮಾನವಿಲ್ಲದ, ಗರ್ವವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತೋಹಂಕಾರೋ ಯಸ್ಮಾತ್। "ನಿರ್ವೇರಾ ನಿರಹಿಡ್ಗಾರಾ ವಿಗತಕ್ರೋಧಮತ್ಸರಾಃ" ಭಾಂ ಆಶ್ರಮಂ ೩೪-೧೫।

**ನಿರಾಕರಣ ನಿರಾಕರಣ** (ನಂ) 1. ತಿರಸ್ಕರಿಸುವುದು. 2. ನಿವಾರಿಸುವುದು, ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು. ನಿರ್+ಆ+ಙ್ ಕೃ (ಕರಣ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 3. ಬಿಡುವುದು, ತ್ಯಜಿಸುವುದು. "ಆಪಾತ್ಯಸೇನಿಕನಿರಾಕರಣಾಕುಲೇನ" ಮಾಘಂ ೫-೧೫।

**ನಿರಾಕರಣೀಯ ನಿರಾಕರಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸಬೇಕಾದ. 3. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ನಿವಾರಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ನಿವಾರಿಸಬೇಕಾದ. 6. ನಿವಾರಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ನಿರ್+ಆ+ಙ್ ಕೃ (ಕರಣ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬)। "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೧೬)। -ಕರ್ಮವ್ಯಃ -ಕರ್ತವ್ಯಃ.

**ನಿರಾಕರಣಿಣಿ ನಿರಾಕರಣಿಣಿ** (ವಿಂ) 1. ತಿರಸ್ಕರಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ. 2. ನಿವಾರಣೆಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದ. ನಿರ್+ಆ+ಙ್ ಕೃ (ಕರಣ) "ಇಣ್ಣು" (೩-೨-೧೩೬)। "ನ ಚಾವದ್ಭರ್ತುರವರ್ಣಮಾರ್ಯಾ ನಿರಾಕರಣಿಣೋವೈಜಿನಾದೃತೇಽಪಿ" ರಘುಂ ೧೪-೫೭।

**ನಿರಾಕರ್ತೃ ನಿರಾಕರ್ತೃ** (ವಿಂ) 1. ತಿರಸ್ಕರಿಸುವ, ತ್ಯಜಿಸುವ. ನಿರ್+ಆ+ಙ್ ಕೃ (ಕರಣ) "ತೃ" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ನಿವಾರಿಸುವ, ಪರಿಹರಿಸುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡಿಪ್" (೪-೧-೫)। -ಕರ್ತೃ -ಕರ್ತೃ.

**ನಿರಾಕಾಡ್ಕ್ಷ ನಿರಾಕಾಡ್ಕ್ಷ** (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದಿರುವ, ಅಸೆಯಿಲ್ಲದಿರುವ. ನಿರ್ಗತಾ ಆಕಾಡ್ಕ್ಷಾ ಅಪೇಕ್ಷಾ ಯಸ್ಮಾತ್। 2. ಶಾಶ್ವತೋದವಂಶಗಳು ಇತರ ಪದಗಳ ಅವಶ್ಯಕತೆಯಿಲ್ಲದ. "ತೇಷಾಂ ವಾಕ್ಯಂ ನಿರಾಕಾಡ್ಕ್ಷಮ್" ಕಾತ್ಯಾಂ। ಯಾವತ್ ಪದವೃಂದಂ ನಿರಾಕಾಡ್ಕ್ಷಂ ಪೂರ್ವಪರಪಠಿತಪದಾಂತರಾಕಾಡ್ಕ್ಷಾ-ರಹಿತಮ್ ಇತಿ ವ್ಯಾಖ್ಯಾ।

**ನಿರಾಕಾರ ನಿರಾಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ರೂಪವಿಲ್ಲದ ಪರಮಾತ್ಮ, ದೇಹರೂಪವಾದ ಅಕಾರವಿಲ್ಲದ ಬ್ರಹ್ಮ. "ತೇಜಃಸ್ವರೂಪೋ ಭಗವಾನ್ ನಿರಾಕಾರೋ ನಿರಾಶ್ರಯಃ" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ। "ಸಾಕಾರಂ

ಚ ನಿರಾಕಾರಂ ಸಗುಣಂ ನಿರ್ಗುಣಂ ಪ್ರಭುಮ್। ಸರ್ವಾಧಾರಂ ಚ ಸರ್ವಂ ಚ ಸ್ವೇಚ್ಚಾರೂಪಂ ನಮಾಮ್ಯಹಮ್" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ। (ವಿಂ) 2. ಅಕಾರವಿಲ್ಲದ, ಅವಯವಗಳಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಃ ಆಕಾರಃ ಅವಯವೋ ಯಸ್ಮಾತ್।

**ನಿರಾಕುಲ ನಿರಾಕುಲ** (ವಿಂ) 1. ನೆಮ್ಮದಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಚಿಂತೆಯಿಲ್ಲದ, ಗಾಬರಿಯಿಲ್ಲದ. "ಮಹಾರಮ್ಭಾಃ ಕೃತಾಧಿಪಃ ತಿಷ್ಠಂತಿ ಚ ನಿರಾಕುಲಾಃ" ಮಾಘಂ ೨-೭೯। 2. ಸ್ಥಿರವಾದ, ನಿಶ್ಚಲವಾದ, ತತ್ಪರಿಸದಿರುವ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ನೆಮ್ಮದಿಯಿಂದ, ಚಿಂತೆಯಿಲ್ಲದೆ. 4. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ, ನಿಶ್ಚಲವಾಗಿ.

**ನಿರಾಕೃತ ನಿರಾಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಡೆಗಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿರಾಕೃತೇ ಯದುಭಿರೀತಿ ಪ್ರಕೋಪಿಭಿಃ ಸ್ಪಶೇ ಶನೇಗತವತಿ ತತ್ರ ವಿಧಿಷಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೭-೨೦। 2. ಹೊರದೂಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಹಿಷ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್+ಆ+ಙ್ ಕೃ (ಕರಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಉಗ್ರಮೃಶ್ಯೇನ ಸುಗ್ರೀವಸ್ತೇನ ಭ್ರಾತಾ ನಿರಾಕೃತಃ" ಭದ್ರಿಂ ೬-೧೦೦। 3. ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ನಿವಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪರಿಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ನಿರಾಕೃತಿ ನಿರಾಕೃತಿ** (ಪುಂ) 1. ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞಗಳನ್ನು ಮಾಡದವನು. "ಯಕ್ಷಮಿ ಚ ಪಶುಪಾಲಶ್ಚ ಪರಿವೇತ್ತಾ ನಿರಾಕೃತಿಃ" ಮನುಂ ೩-೧೫೪। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸುವುದು, ಉಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು. ನಿರ್+ಆ+ಙ್ ಕೃ (ಕರಣ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪)। 3. ತ್ಯಜಿಸುವುದು, ತ್ಯಜಿಸುವುದು. 4. ನಿವಾರಿಸುವುದು, ಪರಿಹರಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 5. ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡದವನು. ಆಕೃತೇರಧ್ಯಯನವೇಷ್ಠಾಯಾ ನಿರ್ಗತಃ। 6. ಅಕಾರವಿಲ್ಲದ, ರೂಪವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಾ ಆಕೃತೀರ್ಯಸ್ಮಾತ್।

**ನಿರಾಗಸ್ ನಿರಾಗಸ್** (ವಿಂ) ಅಪರೂಪವಿಲ್ಲದ, ತಪ್ಪಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಃ ಆಗಸಃ। "ಕಥಮೇಕಪದೇ ನಿರಾಗಸಂ ಜನಮಾಭಾಷ್ಯಮಿಮಂ ನ ಮನ್ಯಸೇ" ರಘುಂ ೮-೪೮। "ಮಯಿ ನಿರಾಗಸಿ ಕಾ ವದ ವಿಪ್ರತಾ" ನೈಷಂ ೪-೭೧।

**ನಿರಾತಡ್ಕ ನಿರಾತಡ್ಕ** (ವಿಂ) 1. ಅತಂಕವಿಲ್ಲದ, ಭಯವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಃ ಆತಡ್ಕೋ ಯಸ್ಮಾತ್। "ಪುರುಷಾಯುಷಜೀವಿನ್ಯೋ ನಿರಾತಡ್ಕಾ ನಿರೀತಯಃ" ರಘುಂ ೧-೬೩। 2. ವ್ಯಾಧಿಯಿಲ್ಲದ, ರೋಗವಿಲ್ಲದ. 3. ತಡೆಯಿಲ್ಲದ, ಅಡ್ಡಿಯಿಲ್ಲದ. "ನಿರಾತಡ್ಕಃ ಪಕ್ಷೇಷಿವ ಪಿಶಿತಕ್ಷಣಿಷು ನಿಪತನ್ನಸಿಗ್ನಾತ್ರಿಂಗಾತ್ ಸಪದಿ ಲವಶಸ್ತೇ ವಿಕಿರತು" ಮಾಲತೀಂ ೫-೩೪।

**ನಿರಾತಪ ನಿರಾತಪ** (ವಿಂ) 1. ಬಿಸಿಲ್ಲದ, ಸೂರ್ಯನ ತಾಪವಿಲ್ಲದ, ನೆರಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. ನಿರ್ಗತಃ ಆತಪೋ ಯಸ್ಮಾತ್। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಆತಪಾ -ಆತಪಾ. 2. ರಾತ್ರಿ.



**ನಿರಾದರ ನಿರಾದರ** (ವಿಂ) ಅದರವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರೀತಿಯಿಲ್ಲದ, ವಿಶ್ವಾಸವಿಲ್ಲದ. ನಿಗತ: ಆದರೋ ಯಸ್ಮಾತ್ |

**ನಿರಾದಿಷ್ಟ ನಿರಾದಿಷ್ಟ** (ವಿಂ) ಪೂರ್ತಿಯಾಗಿ ಸಂದಾಯ ಮಾಡಿದ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಪಾವತಿಮಾಡಿದ. ನಿರ್ + ಆ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | "ನಿರಾದಿಷ್ಟಧನಶ್ಚೇತು ಪ್ರತಿಮು: ಸ್ಯಾದಲಂಧನ: | ಸ್ವಧನಾದೇವ ತದ್ವಾನ್ನಿರಾದಿಷ್ಟ ಇತಿ ಸ್ಥಿತಿ:" ಮನುಂ ೮-೧೬೨ |

**ನಿರಾದೇಶ ನಿರಾದೇಶ** (ಪುಂ) (ಸಾಲವನ್ನು) ಪೂರ್ತಿಯಾಗಿ ಪಾವತಿಮಾಡುವುದು, ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಸಾಲವನ್ನು ತೀರಿಸುವುದು. ನಿರ್ + ಆ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ವಜ್" (೩-೩-೧೮) |

**ನಿರಾಧಾರ ನಿರಾಧಾರ** (ವಿಂ) ಆಧಾರವಿಲ್ಲದ, ಒತ್ತಾಸೆಯಿಲ್ಲದ, ಅವಲಂಬನವಿಲ್ಲದ, ಆಸರೆಯಿಲ್ಲದ. ನಿಗತ: ಆಧಾರೋ ಯಸ್ಮಾತ್ | "ನಿರಾಧಾರೋ ಹಾ ರೋದಿಮಿ ಕಥಯ ಕೆಪಾ-ಮಿಹ ಪುರ:" ಗಜ್ಜಾಲಂ |

**ನಿರಾಧಿ ನಿರಾಧಿ** (ವಿಂ) 1. ಮನೋವೃಥೆಯಿಲ್ಲದ. 2. ಕಳವಳವಿಲ್ಲದ, ಕಾಶರವಿಲ್ಲದ, ಆತಂಕವಿಲ್ಲದ.

**ನಿರಾನಂದ ನಿರಾನಂದ** (ವಿಂ) ಸಂತೋಷವಿಲ್ಲದ, ಉಲ್ಲಾಸವಿಲ್ಲದ. ನಿಗತ: ಆನಂದೋ ಯಸ್ಮಾತ್ | "ನಿರುತ್ತಾಹಂ ನಿರಾನಂದಂ ನಿರೀಯಿಮರಿನಂದನಮ್" ಹಿತೋಂ ೨-೭ |

**ನಿರಾಬಾಧ ನಿರಾಬಾಧ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತಿಬಂಧಕವಿಲ್ಲದ, ಅಡ್ಡಿ ಆತಂಕಗಳಿಲ್ಲದ. ನಿಗತ: ಆಬಾಧಾ ಯಸ್ಮಾತ್ | 2. ತೊಂದರೆಯಿಲ್ಲದ, ಹಿಂಸೆಯಿಲ್ಲದ. 3. ವೃಥೆಯಿಲ್ಲದ, ದುಃಖವಿಲ್ಲದ. (ಅನ್ಯಂ) 4. ಅಡ್ಡಿಯಿಲ್ಲದ, ತಡೆಯಿಲ್ಲದ. 5. ತೊಂದರೆಯಿಲ್ಲದ. "ನಾಥೇ ತ್ವಯಿ ನಿರಾಬಾಧಂ ತ್ರಿಲೋಕೀಂ ತ್ರಾತುಮಾಗತೇ" ಷಾಡಂ ೧೬-೨೬ |

**ನಿರಾಮಯ ನಿರಾಮಯ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಡುಮೇಕೆ. 2. ಸೂಕರ, ಪರಾಹ, ಹಂದಿ. (ವಿಂ) 3. ರೋಗವಿಲ್ಲದ, ಆರೋಗ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ನಿಗತ: ಆಮಯೋ ಯಸ್ಮಾತ್ | "ನಿರಾಮಯಾನಾಂ ಚಿತ್ರಂ ತು ಭುಕ್ತಮಥೈ ಪ್ರಕೀರ್ತಿಸಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬-೪೨೯ | 4. ತೊಂದರೆಯಿಲ್ಲದ, ಉಪದ್ರವವಿಲ್ಲದ.

**ನಿರಾಮಿಷ ನಿರಾಮಿಷ** (ವಿಂ) 1. ಆಸೆಯಿಲ್ಲದ, ಆಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ. "ಅಧ್ಯಾತ್ಮರತಿರಾಸೀನೋ ನಿರಪೇಕ್ಷೋ ನಿರಾಮಿಷ:" ಮನುಂ ೬-೪೯ | 2. ಮಾಂಸವಿಲ್ಲದ. "ಯಥಾಮಿಷೇ ಜಗ್ಮು-ರನಾಮಿಷಭ್ರಮಂ ನಿರಾಮಿಷೇ ಚಾಮಿಷಮೋಹಮುಹೀರೆ" ನೈಷಂ ೧೬-೮೧ | 3. ಸುಖಸಾಮಗ್ರಿಯಿಲ್ಲದ. 4. ಲಂಚದ ಆಸೆಯಿಲ್ಲದ. ನಿಗತ: ಮಾಮಿಷಂ ಮಾಂಸಾದಾಮಿಷಮಭಿಲಾಪೋ ವಾ ಯಸ್ಮಾತ್ |

**ನಿರಾಯ ನಿರಾಯ** (ವಿಂ) ಆದಾಯವಿಲ್ಲದ, ಸಂಪಾದನೆಯಿಲ್ಲದ.

**ನಿರಾಯತ ನಿರಾಯತ** (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಉದ್ವೇಗವಾದ, ದೀರ್ಘವಾದ. ನಿರಾಯತಮಾಯತ: | "ಮುಕ್ತೇಷು ರಜ್ಜುಷು ನಿರಾಯತಪೂರ್ವ-ಕಾಯಾ: ನಿಷ್ಕಮ್ಪಚಾಮರಶಿಖಾ ನಿಭೂತೋರ್ವಕರ್ಣಾ:" ಶಾಕುಂ ೧-೮ | 2. ಸಂಕುಚಿತವಾದ, ಅಡಕವಾಗಿರುವ.

**ನಿರಾಯತತ್ವ ನಿರಾಯತತ್ವ** (ನಂ) ಅಡಕವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಸಂಕುಚಿತವಾಗಿರುವಿಕೆ. ನಿರಾಯತಸ್ಯ ಭಾವ: "ತ್ವ:" (೪-೧-೧೧೯) | "ವಲಿವ್ಯಪಾಯಸ್ಫುಟರೋಮರಾಜಿನಾ ನಿರಾಯತತ್ವಾದುದರೇಣ ತಾಮ್ಯತಾ" ಕಿರಾಂ ೮-೧೭ |

**ನಿರಾಯತಿ ನಿರಾಯತಿ** (ವಿಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ಭವಿಷ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಕ್ಷಯಕಾಲವು ಸಮೀಪಿಸಿರುವ. ನಿರ್ ನಾಸ್ತಿ ಆಯತಿ: ಫಲಕಾಲೋ ಯಸ್ಯ | "ನಿಯತಾ ಲಘುತಾ ನಿರಾಯತೇರಗರೀಯಾಘ ಪದಂ ನೃಪಶ್ರಿಯ:" ಕಿರಾಂ ೨-೧೪ |

**ನಿರಾಯಾಸ ನಿರಾಯಾಸ** (ವಿಂ) ಆಯಾಸವಿಲ್ಲದ, ದಣವಿಲ್ಲದ.

**ನಿರಾಯುಧ ನಿರಾಯುಧ** (ವಿಂ) ಆಯುಧವಿಲ್ಲದ, ಆಯುಧವನ್ನು ಹಿಡಿಯದಿರುವ.

**ನಿರಾಲಂಬ ನಿರಾಲಂಬ** (ವಿಂ) 1. ಅವಲಂಬನವಿಲ್ಲದ, ಆಧಾರವಿಲ್ಲದ, ಆಸರೆಯಿಲ್ಲದ. ನಿಗತ: ಆಲಂಬ: ಯಸ್ಮಾತ್ | "ಎವಂ ಮಯಿ ನಿರಾಲಂಬೇ ಶಾಪಾತ್ ಶಿಥಿಲತಾಂ ಗತೇ" ಹರಿವಂ | 2. ಸ್ವತಂತ್ರನಾದ, ಒಬ್ಬನ ಆಶ್ರಯದಲ್ಲಿಲ್ಲದ. (ನಂ) 3. ಪ್ರಹ್ಲ. (ಅನ್ಯಂ) 4. ಆಶ್ರಯವಿಲ್ಲದ, ಆಸರೆಯಿಲ್ಲದ.

**ನಿರಾಲಯ ನಿರಾಲಯ** (ವಿಂ) ವಸತಿಯಿಲ್ಲದ, ಆಶ್ರಯವಿಲ್ಲದ. "ಠ್ಯಯೋಸ್ತಮಿತಸ್ಯ ಭಾಸ್ವತ: ಸ್ಥಲಿತಾ ಯತ್ರ ನಿರಾಲಯಾ: ಕಿಲ" ನೈಷಂ ೨-೯೦ |

**ನಿರಾಲೋಕ ನಿರಾಲೋಕ** (ವಿಂ) 1. ಬೆಳಕಿಲ್ಲದ, ಅಂಧಕಾರಮಯವಾದ. ನಿಗತ: ಆಲೋಕ: ಯಸ್ಮಾತ್ | "ಅಸಾರಂ ಸಂಸಾರಂ ಪರಿಮುಷಿತರತ್ನಂ ತ್ರಿಭುವನಂ ನಿರಾಲೋಕಂ ಲೋಕಂ ಮರಣಶೂಣಂ ಬಾನ್ಧವಜನಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೪-೩೦ | 2. ನೋಡದಿರುವ.

**ನಿರಾವರಣ ನಿರಾವರಣ** (ವಿಂ) 1. ಆವರಣವಿಲ್ಲದ, ಮೇಲು ಭಾವಣೆಯಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ ನಾಸ್ತಿ ಆವರಣಂ ಯಸ್ಯ | 2. ಮೇಲು ಹೊದಿಕೆಯಿಲ್ಲದ, ಅಚ್ಚಾದನವಿಲ್ಲದ.

**ನಿರಾವೃತಿ ನಿರಾವೃತಿ** (ವಿಂ) 1. ಆವರಣವಿಲ್ಲದ, ಮೇಲು ಭಾವಣೆಯಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ ನಾಸ್ತಿ ಆವೃತಿ: ಆವರಣಂ ಯಸ್ಯ | 2. ಮೇಲುಹೊದಿಕೆಯಿಲ್ಲದ, ಅಚ್ಚಾದನವಿಲ್ಲದ. "ಆವವಾರ ತದಧಾಮ್ಬರಾಜ್ವಲೈ: ಸಾ ನಿರಾವೃತಿರಿವ ತ್ರಿಪಾವೃತಾ" ನೈಷಂ ೧೮-೪೭ |



**ನಿರಾಶ ನಿರಾಶ** (ವಿಂ) 1. ಆಸೆಯಿಲ್ಲದ, ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಾ ಆಶಾ ಯಸ್ಮಾತ್. 2. ಆಸೆಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟಿರುವ, ಆಸೆಯನ್ನು ತೊರೆದಿರುವ. "ತತೋ ನಿರಾಶಃ ಪರಿಭಾವಯನ್ ಪರಾಮಯೇ ತಯಾತೋಷಿ ಸರೋಷಯೇವ ಸಃ" ನೈಷಂ ೧೬-೧೦೬. "ಮನೋ ಬಭುವೇಂದುಮತೀನಿರಾಶಮ್" ರಘುಂ ೬-೨.

**ನಿರಾಶತಾ ನಿರಾಶತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಸೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಆಸೆಯನ್ನು ತೊರೆದಿರುವಿಕೆ. ನಿರಾಶಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯). "ಗತೋ ವಿಶ್ವಯೋಡ್ವಯೇ ನಿರಾಶತಾಂ ಕರೋ ನಿರೋದ್ದುರ್ದಶತಿ ಸ್ಮ ಕೇವಲಮ್" ನೈಷಂ ೧-೧೨೪.

**ನಿರಾಶಿಸ್ ನಿರಾಶಿಸ್** (ವಿಂ) 1. ಆಸೆ-ಅಭಿಲಾಷೆ-ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಾ ಆಶಾಃ ಅಪೇಕ್ಷಾ ಯಸ್ಮಾತ್. "ಜಗಚ್ಛರಣ್ಯಸ್ಯ ನಿರಾಶಿಃ ಸತಃ ಕಿಮೇಭಿರಾಶೋಪಹತಾತ್ಮವೃತ್ತಿಭಿಃ" ಕುಮಾರಂ ೪-೭೬. 2. ಆಸೆಯನ್ನು ತೊರೆದಿರುವ.

**ನಿರಾಶ್ರಯ ನಿರಾಶ್ರಯ** (ವಿಂ) 1. ಅಶ್ರಯವಿಲ್ಲದ, ವಸತಿಯಿಲ್ಲದ, ಆಧಾರವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಃ ಆಶ್ರಯೋ ಯಸ್ಮಾತ್. "ಭವಾದೃಶಾಃ ಕೇವಲಕುರ್ವಂತೇ ರತಿ ನಿರಾಶ್ರಯಾ ಹಂತ ಹತಾ ಮನಸ್ವಿತಾ" ಕಿರಾಂ ೧-೪೩. 2. ಆಸೆಯಿಲ್ಲದ, ಒತ್ತಾಸೆಯಿಲ್ಲದ, ಅವಲಂಬನೆಯಿಲ್ಲದ.

**ನಿರಾಸ ನಿರಾಸ** (ಪುಂ) 1. ಓಡಿಸುವುದು, ಅಟ್ಟುವುದು, ಹೊರದೂಡುವುದು. ನಿರ್ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಛವ್" (೩-೩-೧೮). "ಸಮೇವ ಭೀಮಾ ವಿಧವೇ ಗಣಾನಾಂ ನಿರಾಸಂ ಪ್ರತಿಭಾಗುಣಸ್ಯ" ಕಿರಾಂ ೧೬-೨೭. (ವಿಂ) 2. ಹೊರದೂಡುವ, ಅಟ್ಟುವ, ಓಡಿಸುವ. ನಿರ್ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪).

**ನಿರಾಸಕ ನಿರಾಸಕ** (ವಿಂ) ಅಟ್ಟುವವನು, ಹೊರದೂಡುವವನು. ನಿರ್ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩). "ನಿರಾಸಕಸ್ಯಾಪಿ ನ ತಾವದ್ವತ್ಸಹೇ ಮಹೇಶ ಹಾತುಂ ತವ ಪಾದ-ಪಚ್ಛಜಮ್" ಸ್ತೋಂ ೨೦ ೨೬.

**ನಿರಾಸಿತ ನಿರಾಸಿತ** (ವಿಂ) ಅಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊರದೂಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ಏತಾವತಾ ಕಾಲೇನ ತ್ವಯಾ ಜಗತಾಮುಪದ್ರವೋ ನಿರಾಸಿತಃ" ಮಂ ವೀಂ ೭.

**ನಿರಾಸ್ಯ ನಿರಾಸ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಆಸೆಯಿಲ್ಲದ. 2. ಆಸೆಯಿಲ್ಲದ, ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಾ ಆಶಾ ಯಸ್ಮಾತ್.

**ನಿರಾಸ್ಯದ ನಿರಾಸ್ಯದ** (ವಿಂ) ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದ, ಎಡೆಯಿಲ್ಲದ, ಸ್ಥಾನವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಮಾಸ್ಯದಂ ಯಸ್ಮಾತ್. "ನಿರಾಸ್ಯದಂ ಪ್ರಶನಕುತುಹಲಿತ್ವಮಸ್ಮಾಸ್ವಧೀನಂ ಕಿಮು ನಿಃಸ್ಪೃಹಾಣಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೯.

**ನಿರಾಹಾರ ನಿರಾಹಾರ** (ಪುಂ) 1. ಉಪವಾಸ, ಉಪವಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ನಿವೃತ್ತಃ ಆಹಾರಃ. "ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪೋ ನಿರಾಹಾರಃ ಸರ್ವೇಷಾಂ ಶುದ್ಧಿಹೇತವಃ" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೩೧. (ನಂ) 2. ಆಹಾರದ ಅಭಾವ. (ವಿಂ) 3. ಆಹಾರವಿಲ್ಲದ, ಉಪವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಃ ಆಹಾರಃ ಯಸ್ಯ. "ನಿರಾಹಾರಾಃ ಸಖ್ಯಃ ಸತತರಸದಿತೋ-ಚ್ಛೂನನಯನಾಃ" ಅಮರಂ ೭.

**ನಿರೀತವರ ನಿರೀತವರ** (ವಿಂ) ನಿರ್ಗಮನದ ಸ್ವಭಾವದ, ಹೊರಡುವ ಸ್ವಭಾವದ. ನಿರ್ + ಇಣ್ (ಗತೌ) "ಕವರಪ್" (೩-೨-೧೬೩). "ಪ್ರಸಮಮಲಯಃ ಪಾಥೋಜಾಸ್ಯೇ ನಿವಿಶ್ಯ ನಿರೀತವರಾಃ" ನೈಷಂ ೧೯-೨೭.

**ನಿರ್ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ)** 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡು, ಎವೆಯಿಕ್ಕದೆ ನೋಡು. "ಯಾವದೇತಾನಿರೀಕ್ಷೇಽಹಂ ಯೋಡುಕಾಮಾನವಸ್ಥಿತಾನ್" ಗೀತಾ ೧-೨೨. 2. ದಿಟ್ಟಿಸಿ ನೋಡು, ಸರಿಯಾಗಿ ನೋಡು, ಗಮನಿಸು, ಜಾಗರೂಕತೆಯಿಂದ ನೋಡು. 3. ಎದುರು ನೋಡು. 4. ಹುಡುಕಿ ನೋಡು.

**ನಿರೀಕ್ಷಕ ನಿರೀಕ್ಷಕ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡುವವನು. 2. ಜಾಗರೂಕತೆಯಿಂದ ನೋಡುವವನು. 3. ಎದುರು ನೋಡುವವನು. ನಿರ್ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩). 4. ಹುಡುಕಿ ನೋಡುವವನು.

**ನಿರೀಕ್ಷಣ ನಿರೀಕ್ಷಣ** (ನಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡುವುದು, ಎವೆಯಿಕ್ಕದೆ ನೋಡುವುದು. ನಿರ್ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪). 2. ಜಾಗರೂಕತೆಯಿಂದ ನೋಡುವುದು, ದಿಟ್ಟಿಸಿ ನೋಡುವುದು. 3. ಬರುವವರನ್ನು ಎದುರು ನೋಡುವುದು. 4. ಹುಡುಕಿ ನೋಡುವುದು, ತಡೆಕಟ್ಟುವುದು. (ವಿಂ) 5. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡುವ. ನಿರೀಕ್ಷತೇ—ನಿರ್ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪). "ಪ್ರಾಣಾಪಾನೌ ಸನ್ನಿಹನ್ಯಾತ್ ಪೂರ್ವಕುಸ್ಥಕರೇಚಕಃ. ಯಾವನ್ಮನಸ್ತೀಜೇತ್ ಕಾಮಾನ್ ಸ್ವನಾಸಾಘ-ನಿರೀಕ್ಷಣಃ" ಭಾಗಂ ೭-೧೪-೩೨.

**ನಿರೀಕ್ಷಮಾಣ ನಿರೀಕ್ಷಮಾಣ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡುತ್ತಿರುವ. ನಿರ್ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) "ಶಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಸಖೀಜನಂ ಪ್ರಮಗುರುಕೃತಾದರಂ ನಿರೀಕ್ಷಮಾಣಾ ಇವ ನಮ್ರಮೃತಯಃ" ಕಿರಾಂ ೮-೧೧. 2. ಗಮನಿಸಿ ನೋಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಎದುರುನೋಡುತ್ತಿರುವ. 4. ದಿಟ್ಟಿಸಿ ನೋಡುತ್ತಿರುವ.

**ನಿರೀಕ್ಷಾ ನಿರೀಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡುವುದು. ನಿರ್ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩). 2. ಗಮನಿಸಿ ನೋಡುವುದು. 3. ದಿಟ್ಟಿಸಿ ನೋಡುವುದು. 4. ಎದುರು ನೋಡುವುದು.



**ನಿರೀಕ್ಷಿತ ನಿರೀಕ್ಷಿತ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟು. ನಿರ್+ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ನಿರೀಕ್ಷಿತಂ ಚಾಜ್ಞಮವೀಕ್ಷಿತಂ ಚ ದೃಶಾ ಪಿಬಂತಿ ರಮಸೇನ ತಸ್ಯ" ನೆಪಂ 6-12. 2. ದಿಟ್ಟಿಸಿ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟು. "ನಿರೀಯ ಭೂಪೇನ ನಿರೀಕ್ಷಿತಾನನಾ ಶಶಂಸ ಮೌಹೃತಿಕಸಂಸದಂಶಕಮ್" ನೆಪಂ 14-6. 3. ಹುಡುಕಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ಎದುರುನೋಡಲ್ಪಟ್ಟು. "ನಿರೀ-ಕ್ಷಿತೌ ಮಯಾ ಭದ್ರೇ ದಶ ವರ್ಷಾಣಿ ಪञ್ಚ ಚ" ಪञ್ಚತಂ 2-142.

**ನಿರೀಕ್ಷಿತವ್ಯ ನಿರೀಕ್ಷಿತವ್ಯ** (ವಿಂ) ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ನೋಡಬೇಕಾದ. ನಿರ್+ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ತವ್ಯ:" (3-1-96).

**ನಿರೀಕ್ಷ್ಯಮಾಣ ನಿರೀಕ್ಷ್ಯಮಾಣ** (ವಿಂ) 1. ನೋಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿರ್+ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಮ್" (3-2-124). "ನಿರೀಕ್ಷ್ಯಮಾಣಾ ಇವ ವಿಸ್ಮಯಾಕ್ತುಲೈಃ ಪಯೋಭಿರ್ಮೂಲಿತಪದ್ಮಲೋಚನೈಃ" ಕಿರಾಂ 4-3. 2. ಎದುರು ನೋಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರತಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

**ನಿರೀತಿ ನಿರೀತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಈತಿಬಾಧೆಯಿಲ್ಲದ, ಅತಿವೃಷ್ಟಿ ಅನಾವೃಷ್ಟಿ ಮೊದಲಾದ ಉಪದ್ರವವಿಲ್ಲದ. ನಿಗಂತಾ ಇತಿರ್ಯತ್ರ. "ಪುರುಷಾಯುಷಜೀವಿನ್ಯೋ ನಿರಾತಕ್ಷಾ ನಿರೀತಯಃ" ರಘುಂ 2-63.

**ನಿರೀಶ್ವರ ನಿರೀಶ್ವರ** (ವಿಂ) 1. ಈಶ್ವರನನ್ನು ಅಂಗೀಕರಿಸದಿರುವ (ಒಪ್ಪದಿರುವ) ಸಾಂಖ್ಯಮತಾನುಯಾಯಿ.

ಸಾಂಖ್ಯರಲ್ಲಿ ಸೇಶ್ವರಸಾಂಖ್ಯರು ನಿರೀಶ್ವರಸಾಂಖ್ಯರು ಎಂದು ಎರಡು ಭೇದ. ಏಕೇಶ್ವರವಾದಿಗಳು ಸೇಶ್ವರ ಸಾಂಖ್ಯರು. ಪ್ರವಾಹೇಶ್ವರವಾದಿಗಳು ನಿರೀಶ್ವರಸಾಂಖ್ಯರು. ಅಣಮಾದಿ ಸಿದ್ಧಿಯುಳ್ಳ ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿಯು ಕಲ್ಪಾದಿ ಯಲ್ಲಿ ವೇದಾದಿ ಆಗಮಗಳನ್ನು ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಿದುದರಿಂದ ಅವನು ಈಶ್ವರಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿರುವನು. ಇಂತಹ ಸಿದ್ಧ ಪುರುಷರು ಪ್ರತಿಕಲ್ಪದಲ್ಲೂ ಒಬ್ಬರು ಬರುವ ಕಾರಣ ಶಾಶ್ವತವಾದ ಒಬ್ಬ ಈಶ್ವರನಿಲ್ಲವೆಂದು ಸಿದ್ಧಾಂತವಾದುದರಿಂದ ಇವರು ನಿರೀಶ್ವರವಾದಿಗಳು ಮತ್ತು ಪ್ರವಾಹೇಶ್ವರವಾದಿಗಳು. ಶಾಶ್ವತವಾದ ಒಬ್ಬ ಈಶ್ವರನನ್ನು ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುವ ಪಾತಂಜಲಿಯೋಗಸಿದ್ಧಾಂತದವರು ಸೇಶ್ವರಸಾಂಖ್ಯರು. ಯೋಗದರ್ಶನದಲ್ಲಿ ಶ್ರೋತಸ್ಮಾರ್ತಕರ್ಮಗಳಿಂದ ಪರಮೇಶ್ವರ ಪ್ರೀತಿಯನ್ನೂ ಅನುಗ್ರಹವನ್ನೂ ಸಂಪಾದಿಸಬೇಕೆಂದು ಉಕ್ತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಈಶ್ವರಭಕ್ತಿಗೆ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯವುಂಟು. ಸಾಂಖ್ಯಶಾಸ್ತ್ರದಿಂದ ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿ ಯೋಗ ಶಾಸ್ತ್ರದಿಂದ ಭಕ್ತಿಪೂರ್ವಕ ಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನ ಮಾಡಿ ಮೋಕ್ಷವನ್ನು ಪಡೆಯಬೇಕೆಂಬ ಅಭಿಪ್ರಾಯದಿಂದ ಸಾಂಖ್ಯಯೋಗ

ಗಳನ್ನು ಕೂಡಿಸಿ ವ್ಯವಹರಿಸುತ್ತಾರೆ. 2. ಈಶ್ವರನಿಲ್ಲವೆಂಬ ವಾದ.

**ನಿರೀಷ ನಿರೀಷ** (ನಂ) ಈಚೆಲ್ಲದ ನೇಗಿಲು, ದಂಡವಿಲ್ಲದ ನೇಗಿಲು. ನಿಗಂತ: ಇಷಾಯಾಃ.

**ನಿರೀಹ ನಿರೀಹ** (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ, ಇಚ್ಛೆಯಿಲ್ಲದ, ಅಭಿಲಾಷೆಯಿಲ್ಲದ. ನಿಗಂತಾ ಇಹಾ यस್ಯ. 2. ಯಾವ ವ್ಯಾಪಾರವೂ ಇಲ್ಲದ, ಯಾವ ಕಾರ್ಯವೂ ಇಲ್ಲದ, "ಅಜಸ್ಯ ಗೃಹ್ಣತೋ ಜನ್ಮ ನಿರೀಹಸ್ಯ ಹತದ್ವಿಷಃ" ರಘುಂ 10-24.

**ನಿರೀಹಾ ನಿರೀಹಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಸೆಯಿಲ್ಲದಿರುವುದು, ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ನಿಗಂತಾ ಇಹಾ.

**ನಿರುಕ್ತ ನಿರುಕ್ತ** (ನಂ) 1. ಪದಗಳ ಅವಯವಾರ್ಥಗಳನ್ನು ಹೇಳುವುದು. ನಿರ್+ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114). 2. ವೈದಿಕ ಪದಗಳ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ನಿಶ್ಚಯಿಸಿ ಹೇಳುವ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ. ನಿ: ನಿಷ್ಪ್ರಯೇನ ಉಕ್ತಮ್, ನಿರುಕ್ಯತೇ ಅನೇನೇತಿ ವಾ. ನಿರುಕ್ತವು ಆರು ವೇದಾಂಗಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. ಇದು ವೇದಪುರುಷನ ಶ್ಲೋತ್ರರೂಪವಾದುದು. "ಛಂದಃ ಪಾದೌ ತು ವೇದಸ್ಯ ಹಸ್ತೌ ಕಲ್ಪಾಃ ಪಠ್ಯತೇ. ಜ್ಯೋತಿಷಾಮಯನಂ ಚಕ್ಷುರ್ನಿರುಕ್ತಂ ಶ್ರೋತ್ರಮುಚ್ಯತೇ. ಶಿಕ್ಷಾ ಗ್ರಾಣಂ ತು ವೇದಸ್ಯ ಮುಖಂ ವ್ಯಾಕರಣಂ ಸ್ಮೃತಮ್. ತಸ್ಮಾತ್ಸಾಂಕ್ಷಮಧೀತ್ಯೇವ ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕೇ ಮಹೀಯತೇ" ಪಾಂ ಶಿಂ 41-42. ನಿರುಕ್ತವು ಯಾಸ್ಕಮುನಿ ಪ್ರಣೀತವಾದುದು. ಇದು ವೈದಿಕ ಪದಗಳ ಅರ್ಥನಿರ್ವಚನಕ್ಕಾಗಿಯೇ ಹೊರಟಿರುವುದರಿಂದ ಇದರ ಅಧ್ಯಯನವು ಅತ್ಯವಶ್ಯವಾದುದು. ನಿರುಕ್ತವು ನಿಘಂಟು ಗ್ರಂಥಕ್ಕೆ ಭಾಷ್ಯರೂಪವಾಗಿರುವುದು. ಕ್ಲಿಷ್ಟವಾದ ಅನೇಕ ವೈದಿಕ ಶಬ್ದಗಳನ್ನೆಲ್ಲಾ ಪ್ರಥಕ್ಕಾಗಿ ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ರಚಿಸಿರುವ ಗ್ರಂಥವು ನಿಘಂಟುವೆಂಬ ಹೆಸರಿನಿಂದ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ. ಈ ಶಬ್ದಗಳ ಅರ್ಥನಿರ್ವಚನವು ನಿರುಕ್ತದಲ್ಲಿ ಮಾಡಲಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಇದು ವೇದಾಂಗವಾಯಿತು. ನಿಘಂಟುವಿನಲ್ಲಿ ಐದು ಅಧ್ಯಾಯಗಳೂ ಮೂರು ಕಾಂಡಗಳೂ ಇವೆ.

(1) ನೈಘಂಟುಕಾಂಡಃ, (2) ನೈಗಮಕಾಂಡಃ, (3) ದೈವತಕಾಂಡಃ.

"ತಮಿಮಂ ಸಮಾಮ್ನಾಯಂ ನಿಘಂಟವಃ ಇತ್ಯಾಚಕ್ಷತೇ" ನಿರುಂ 1-1-2. ಮುಗ್ಧೇದಭಾಷ್ಯದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ "ಪञ್ಚಾಧ್ಯಾಯ-ರೂಪಕಾಂಡತ್ರಯಾತ್ಮಕೇ ಏತಸ್ಮಿನ್ ಗ್ರಂಥೇ ಪರಿನಿರಪೇಕ್ಷಿತಯಾ ಪದಾರ್ಥ-ಸ್ಯೋಕ್ತವಾತ್ ತಸ್ಯ ಗ್ರಂಥಸ್ಯ ನಿರುಕ್ತತ್ವಮ್" | ತದ್ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಂ ಚ "ಸಮಾಮ್ನಾಯಃ ಸಮಾಮ್ನಾತಃ ಸ ವ್ಯಾಖ್ಯಾತವ್ಯಃ" ಎಂದು ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. "ವರ್ಣಗಮೋ ವರ್ಣವಿಪರ್ಯಯಶ್ಚ ದ್ವೌ ಚಾಪರೌ ವರ್ಣವಿಕಾರ-ನಾಶೌ | ಧಾತೋಸ್ತದರ್ಥಾತಿಶಯೇನ ಯೋಗಸ್ತದ್ಉಚ್ಯತೇ ಪञ್ಚವಿಧಂ ನಿರುಕ್ತಮ್" ಎಂದು ನಿರುಕ್ತವು ಐದು ವಿಧವಾಗಿ ಉಕ್ತ



ವಾಗಿದೆ. ಯಾಸ್ಕಮುನಿಯು ಶಬ್ದರಾಶಿಯನ್ನು (1) ನಾಮ-  
ಪದಾನಿ, (2) ಕ್ರಿಯಾಪದಾನಿ, (3) ಉಪಸರ್ಗಾಃ ಮತ್ತು  
(4) ನಿಪಾತಾಃ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧವಾಗಿ ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ.

“ತದಾನ್ಯೇತಾನಿ ಚತ್ವಾರಿ ಪದಜಾತಾನಿ ನಾಮಾಖ್ಯಾತೇ ಚೋಪಸರ್ಗ-  
ನಿಪಾತಾಃ ತಾನಿಮಾನಿ ಭವಂತಿ” ನಿರೂ. ೧-೧-೮.

**ನಿರುಕ್ತದಲ್ಲಿ ಬರುವ ವಿಚಾರಗಳು:** ನಾಮಪದ  
ಕ್ರಿಯಾಪದ ಉಪಸರ್ಗ ಮತ್ತು ನಿಪಾತಗಳ ಲಕ್ಷಣ, ಭಾವ  
ವಿಕಾರಲಕ್ಷಣ, ನಾಮಪದಗಳು ಧಾತುಜಗಳು ಎಂಬ  
ನಿರ್ಣಯ, ಮಂತ್ರಗಳ ಅರ್ಥವತ್ತ್ವ ಸ್ಥಾಪನೆ, ಮಂತ್ರಗಳ  
ದೇವತಾಪರಿಚ್ಛೇದ, ಅರ್ಥದ್ವೈಪ್ರಶಂಸೆ ಮತ್ತು ಅನರ್ಥದ್ವೈ  
ನಿಂದ, ನೈಘಂಟುಕ, ನೈಗಮ ಮತ್ತು ದೇವತಾಕಾಂಡಗಳ  
ವಿಭಾಗ, ನಿರ್ವಚನಕ್ರಮದ ಪ್ರತಿಪಾದನೆ ಇತ್ಯಾದಿ. ಎಲ್ಲಾ  
ನಾಮಪದಗಳೂ ಅಖ್ಯಾತಜನಗಳೆಂದು ಇವರ ಸಿದ್ಧಾಂತ.

“ಆಖ್ಯಾತಜಾನೀತಿ ಶಾಕಟಾಯನಃ ನೇರಕಸಮಯಶಃ” ನಿರೂ. ೧-೧೨-೨. ನೈಘಂಟುಕಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಏಕಾರ್ಥವಾಚಿಯಾದ  
ಅನೇಕ ಶಬ್ದಗಳ ಗಣಗಳು 69. ಒಟ್ಟು 1339 ಪದಗಳು.  
ನೈಗಮಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಏಕಪದಗಳು 278 ಪದಗಳು. ದೈವತ  
ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ 6 ಗಣಗಳು — ಒಟ್ಟು 151 ಪದಗಳು ಈ ರೀತಿ  
ವಿಂಗಡಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ನೈಘಂಟುಕಕಾಂಡದ ಗಣ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯವಾದ ಪದಗಳಿಗೂ ನೈಗಮ ಮತ್ತು ದೈವತ  
ಕಾಂಡಗಳ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಪದಕ್ಕೂ ನಿರ್ವಚನಮಾಡಿ  
ಮಂತ್ರಗಳ ಉದಾಹರಣೆಗಳನ್ನು ಕೊಡುವುದರ ಮೂಲಕ  
ನಿರುಕ್ತದಲ್ಲಿ ಅರ್ಥವಿವರಣೆ ಮಾಡಿರುತ್ತಾರೆ. ಯಾಸ್ಕ  
ಮುನಿಗಿಂತ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ನಿರುಕ್ತಕಾರರು ಇದ್ದರಾದ್ದು  
ಯಾಸ್ಕರು ಹೇಳಿರುವ ऐतिहासिकाः, व्याकरणाः, पूर्व  
याजिकाः, नैरुक्ताः ಎಂಬ ಮಾತುಗಳಿಂದ ತಿಳಿಯಬಹು  
ದಾಗಿದೆ. ಆದ್ರಾಢಿಃ, ಆದ್ರಾಢಿಃ, ಆದ್ರಾಢಿಃ, ಆದ್ರಾಢಿಃ, ಆದ್ರಾಢಿಃ  
ಕೌತ್ಸಃ, ಗಾರ್ಗ್ಯಃ, ಗಾಲವಃ, ಕೇಡಿಕಃ, ಶಾಲಕ್ಯಃ, ಶಾಕಪ್ಪಣಿಃ  
ಇತ್ಯಾದಿ ನಿರುಕ್ತಕಾರರ ಹೆಸರನ್ನು ನಾಮತಃ ನಿರ್ದೇಶಿಸಿರು  
ತ್ತಾರೆ. ವೇದಮಂತ್ರಗಳಿಗೆ ಅನುಪೂರ್ವಿಕೆಯೇ ಪ್ರಧಾನ  
ವಾದುದು, ಅರ್ಥವಲ್ಲ ಎಂಬ ವಾದವನ್ನು ನಿರಾಕರಿಸಿ  
ಯಾಸ್ಕರು ಲೋಕದಲ್ಲಿ ವ್ಯವಹಾರದಲ್ಲಿರುವ ಸಾಮಾನ್ಯ  
ಶಬ್ದಗಳನ್ನೇ ವೇದಮಂತ್ರಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಉಪಯೋಗಿಸಿರು  
ವುದರಿಂದ ವೇದಮಂತ್ರಗಳು ಅರ್ಥವತ್ತಾದುವು ಎಂದು  
ಸಿದ್ಧಾಂತ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. “अथर्वन्तः शब्दसामान्यात्”  
ನಿರೂ. ೧-೧೪-೧೦. ಆಯಾ ಪ್ರಕರಣಕ್ಕನುಗುಣವಾಗಿ  
ನಿರ್ದಿಷ್ಟವಾದ ಮಂತ್ರಗಳನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸಬೇಕೆಂದು  
ತೋರಿಸುವ ಪ್ರಾಹ್ಮಣಮಂತ್ರಗಳೂ ಅರ್ಥವತ್ತಾ  
ದುವು. ವಿವಾಹದಲ್ಲಿ ವಿನಿಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ಮಂತ್ರ

ದಲ್ಲಿ “ನೀವು (ದಂಪತಿಗಳು) ಇಬ್ಬರೂ ಈ ಮನೆಯಲ್ಲೇ  
ಸಂತೋಷದಿಂದಿರಿ. ನಿಮಗೆ ಯಾವಾಗಲೂ ವಿಯೋಗ  
ವಿಲ್ಲದಿರಲಿ. ಪೂರ್ಣಾಯುಸ್ಸನ್ನು ಹೊಂದಿ ಪುತ್ರ ಪೌತ್ರಾದಿ  
ಗಳೊಡನೆ ಕ್ರೀಡಿಸುತ್ತಿರಿ ಎಂಬ ಅಶೀರ್ವಚನ ಮಂತ್ರಕ್ಕೆ  
ಅರ್ಥವಿರುವುದು” ಎಂದು ಸಮಾಧಾನ ಹೇಳಿರುವರು.  
ಯಾಸ್ಕರು ಉಪಮಾಲಂಕಾರದ ಲಕ್ಷಣವನ್ನು ಹೇಳಿ “इति  
कर्मोपमा”, “इति भूतोपमा”, “इति रूपोपमा”,  
“इति सिद्धोपमा” ಇತ್ಯಾದಿ ಉಪಮಾಲಂಕಾರದ ಕೆಲವು  
ಪ್ರಭೇದಗಳನ್ನೂ ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ ವೇದಗಳಲ್ಲಿಯೂ  
ಅಲಂಕಾರಶಾಸ್ತ್ರವು ಪ್ರಾರಂಭಾವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿತ್ತೆಂದು ತಿಳಿಯ  
ಬಹುದಾಗಿದೆ. ಯಾಸ್ಕರ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸಮಾಜವು ವೇದದಲ್ಲಿ  
ಸಂಪೂರ್ಣ ನಂಬಿಕೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿತ್ತೆಂದೂ ವೇದವಿರುದ್ಧ  
ವಾದ ಜೈನ ಬೌದ್ಧ ಧರ್ಮಗಳ ಪ್ರಭಾವವಿರಲಿಲ್ಲವೆಂದೂ  
ನಿರುಕ್ತದಿಂದ ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ. ಆದರೆ ವೇದವಾಚ್ಯ  
ಯವು ಸರ್ವರಿಗೂ ಅರ್ಥವಾಗುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲವೆಂದೂ ತಿಳಿಯ  
ಬೇಕಾಗುವುದು. ಮಂತ್ರಬ್ರಾಹ್ಮಣಾತ್ಮಕವಾದ ಸಮಗ್ರ  
ವೇದರಾಶಿಯನ್ನು ಯಾಸ್ಕಮುನಿಯು ವಿಮರ್ಶಾತ್ಮಕ  
ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ನೋಡಿ ಅಂದಿನ ಕಾಲದ ಅಭಿಪ್ರಾಯಗಳನ್ನು  
ತಮ್ಮ ದೈವತಕಾಂಡದ ಪೀಠಿಕೆಯಲ್ಲಿ ನಿರೂಪಿಸಿರುತ್ತಾ  
ರಾದುದರಿಂದ ಪ್ರಾಚೀನವಾದ ವೈದಿಕ ಸಾಹಿತ್ಯದ ಇತಿ  
ಹಾಸದ ಅರಿವು ಭಾರತೀಯರಲ್ಲಿ ಆಗಿನಿಂದಲೂ ಇತ್ತೆಂದು  
ನಾವು ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ.

**ನಿರೂಪಣೆ ನಿರುಕ್ತಕೃತ್** (ಛಂ) ನಿರುಕ್ತ ಗ್ರಂಥವನ್ನು  
ಬರೆದ ಯಾಸ್ಕಮುನಿ.

**ನಿರೂಪಣೆ ನಿರುಕ್ತಜ** (ಛಂ) ಕ್ಷೇತ್ರಜ ಪುತ್ರ, ವಿಯೋಗವನ್ನು  
ಪಡೆದವನಿಂದ ಜನಿಸಿದ ಪುತ್ರ. ನಿರೂಪಣೆ ನಿರುಕ್ತಾತ್ ಜಾತಃ  
ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರಭಿ) “ಓಃ” (೩-೨-೯೮).

**ನಿರೂಪಣೆ ನಿರುಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಿರ್ವಚನ, ಪದಗಳ ಅವಯವ  
ವಾರ್ಥಗಳನ್ನು ಹೇಳುವುದು. ನಿರ್ + ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ)  
“ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪). “तदङ्गभोगावलिगायनीनां  
मध्ये निरुक्तिक्रमकृष्टितानाम्” ನೆಫಂ ೧೦-೧೦೬.  
2. ಅವಯವ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ನಾಮಪದಗಳಿಗೆ ಬೇರೊಂದು  
ಅರ್ಥವನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸುವುದು. ಇದು ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ  
ಒಂದು ಭೇದ. “निरुक्तियोगतो नाम्नामन्यार्थत्वप्रकल्प-  
नम्” ಚಂದ್ರಾಂ. 1. उदा:—“ईदृशैश्चरितैर्जनि सत्यं दोषा-  
करो भवान्”.

**ನಿರೂಪಣೆ ನಿರುಚ್ಚಾಸ** (ಛಂ) 1. ಉಸಿರಾಡದಿರುವಿಕೆ,  
ಶ್ವಾಸವನ್ನು ತಡೆದಿರುವಿಕೆ. ನಿಗತಃ: ಉಚ್ಚಾಸಃ. (ವಿಂ)  
2. ಉಸಿರಾಡದಿರುವ, ಉಸಿರು ಕಟ್ಟಿರುವ, “गणैरविच्छेद-



ನಿರ್ದಯಮಾನೌ ವನಂ ನಿರ್ದಯಾಸಮಿವಾಕುಲಾಕುಲಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೪-೩೨. 3. ಉಸಿರಾದಲೂ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದಷ್ಟು ಇಕ್ಕಟ್ಟಾದ. "ಉಪೇಯುಷೋ ವರ್ಮ ನಿರಂತರಾಭಿರಸೌ ನಿರ್ದಯಾಸ-ಮನೀಕಿನಿಮಿ:" ಮಾಘಂ ೩-೩೨.

**ನಿರ್ದಯಮಾನ ನಿರುಚ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿರ್ + ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪). "ನಿರ್ದಯಮಾನಂ ಪ್ರಶ್ನಂ ಚ ನೇಚ್ಛೇವಶ್ಚಾಪಿ ನಿಷ್ಪತೇತ್" ಮನುಂ ೮-೫೫.

**ನಿರ್ದಯನ ನಿರುಂಘನ** (ನಂ) ಪರಸ್ಪರ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಬದಲಾಯಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ನಿರ್ + ಉಚ್ಛಿ (ಉಚ್ಛೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). "ಸಾಂದ್ರಪ್ರಮೋದಾತ್ ಪುಲಕೋಪಗೂಢಃ ಸರ್ವಾಂಗ-ಸಂಪುಲ್ಲಸಹಸ್ರನೇತ್ರಃ. ತಸ್ಯೋತ್ತರೋಽಪಿ ನಿಜಾಮ್ಬರೇಣ ನಿರ್ದಯನಂ ಚಾರು ಚಕಾರ ಶಕ್ರಃ" ಕುಮಾರಂ ೧೩-೧೮.

**ನಿರ್ದಯನ ನಿರುತ್ತರ** (ವಿಂ) 1. ಉತ್ತರವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರತಿವಚನವಿಲ್ಲದ, ಬದಲು ಹೇಳದಿರುವ. ನಿಗತಮುಕ್ತರಂ ಪ್ರತಿವಚನಂ ಯಸ್ಯ. 2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಿಲ್ಲದ. ನಿಗತಃ: ಉತ್ತರಃ: ಶ್ರೇಷ್ಠಃ ಯತ್ರ.

**ನಿರ್ದಯನ ನಿರುತ್ಸವ** (ವಿಂ) ಉತ್ಸವವಿಲ್ಲದ, ಹಬ್ಬಗಳಿಲ್ಲದ. ನಿಗತಃ: ಉತ್ಸವಃ: ಯಸ್ಮಾತ್. "ಭೃತಿರಸ್ತಮಿತಾ ರತಿಶ್ಯುತಾ ವಿರತಂ ಗೇಯಮ್‌ನಿರ್ದಯನಃ" ರಘುಂ ೮-೬೬.

**ನಿರ್ದಯನ ನಿರುತ್ಸಾಹ** (ಪುಂ) 1. ಉತ್ಸಾಹವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಯಾವ ವಿಷಯದಲ್ಲೂ ಇಚ್ಛೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಿಗತಃ: ಉತ್ಸಾಹಃ. (ವಿಂ) 2. ಉತ್ಸಾಹವಿಲ್ಲದ. 3. ಸೋಮಾರಿಯಾದ, ಮೈಗಳ್ಳನಾದ. "ನಿರ್ದಯನಂ ನಿರಾನಂದಂ ನಿರ್ವಿವಿ-ಮರಿನಂದನಮ್" ಹಿತಂ ೨-೭.

**ನಿರ್ದಯನ ನಿರುತ್ಸುಕ** (ವಿಂ) ಬಹಳ ಉತ್ಸುಕನಾದ, ಇಷ್ಟವಾದುದನ್ನು ಪಡೆಯಲು ತವಕಪಡುವ. ನಿರತರಾಮತ್ಸುಕಃ. "ನಿರ್ದಯನಾನಾಮಭಿಯೋಗಭಾಜಾಂ ಸಮುತ್ಸುಕೇವಾಚ್ಛಮುಪೇತಿ ಸಿದ್ಧಿಃ" ಕಿರಾಂ ೩-೪೦.

**ನಿರ್ದಯನ ನಿರುತ್ಸೇಕ** (ವಿಂ) ಗರ್ವವಿಲ್ಲದ, ಅಹಂಕಾರವಿಲ್ಲದ.

**ನಿರ್ದಯನ ನಿರುದ್ಧ** (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಗಿಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಉದ್ಧಿ (ಆವರಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ಅವೇಷಿತಾನಾಯತವಲ್ಗಮಗ್ರೇ ತುರಗ್ಗಿಭಿರ್ಮಲನಿರ್ದಯವಾಹೈಃ" ಮಾಘಂ ೩-೩೦. 2. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡ್ಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿರ್ದಯವಿವಾಹಾಸಾರಪ್ರಸಾರಾ ಗಾ ಇವ ಬ್ರಜಮ್. ಉಪರ್ದಯಂತು ದಾಶಾರ್ಹಾಃ ಪುರೀ ಮಾಹಿಷ್ಮತೀ ದ್ವಿಷಃ" ಮಾಘಂ ೨-೬೪. 3. ತಡೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಳಗೇ ಅಡಗಿಸಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ.

"ನಿರ್ದಯಾಘೋದಯಸನ್ನಕಂಠಮುಖಾಚ್ಛ ಕುಚ್ಛಾದಿತಿ ರಾಜಪುತ್ರೀ" ಕಿರಾಂ ೩-೩೮. 4. ಅಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುತ್ತುವರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಗಣೇರವಿಚ್ಛೇದನಿರ್ದಯಮಾನೌ ವನಂ ನಿರ್ದಯಾಸಮಿವಾ-ಕುಲಾಕುಲಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೪-೩೨.

**ನಿರ್ದಯನ ನಿರುದ್ಧನತ್** (ವಿಂ) 1. ಬಿಗಿಹಿಡಿದವನು. 2. ತಡೆದವನು. 3. ಅಡಗಿಸಿಕೊಂಡವನು. 4. ಅಕ್ರಮಿಸಿದವನು. ನಿ + ಉದ್ಧಿ (ಆವರಣ) "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨).

**ನಿರ್ದಯನ ನಿರುದ್ಧನು** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಯತ್ನವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ಯಾವ ಕಾರ್ಯವೂ ಇಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 3. ಪ್ರಯತ್ನವಿಲ್ಲದ. 4. ಸೋಮಾರಿಯಾದ, ಯಾವ ಚಟುವಟಿಕೆಯೂ ಇಲ್ಲದ.

**ನಿರ್ದಯನ ನಿರುದ್ಧೋಗ** (ವಿಂ) "ನಿರ್ದಯನ" ನೋಡಿ.

**ನಿರ್ದಯನ ನಿರುದ್ಧೋಗಿನ್** (ವಿಂ) ಯಾವ ಕೆಲಸವೂ ಇಲ್ಲದ, ಯಾವ ಕಾರ್ಯಕಲಾಪವೂ ಇಲ್ಲದ. ನಿರ್ದಯೋಗ "ಛಿನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫).

**ನಿರ್ದಯನ ನಿರುದ್ಧೋಗ** (ಪುಂ) 1. ಗಾಬರಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಕಳವಳವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ಭಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಹೆದರಿಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ಅಸಮಾಧಾನವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಶಾಂತವಾಗಿರುವಿಕೆ. ನಿಗತಃ: ಉದ್ಧೋಗಃ.

**ನಿರ್ದಯಮಾನ ನಿರುದ್ಧಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡ್ಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಉದ್ಧಿ (ಆವರಣ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪). 2. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಗಿಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿರ್ದಯಮಾನಾ ಯದುಮಿಃ ಕಥಂಚಿನ್ಮುಹುರ್ದಯ-ಚ್ಚಿಕ್ಷಿಪುರಗ್ರಪಾದಾನ್" ಮಾಘಂ ೩-೨೯. 3. ಅಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿರ್ದಯಮಾನಂ ನಿಕರೇಣ ಭಾಸಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೬-೪೫. 4. ಒಳಗೇ ಅಡಗಿಸಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ತಡೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ.

**ನಿರ್ದಯನ ನಿರುಂಘತ** (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಅಡ್ಡಿಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಉದ್ಧಿ (ಆವರಣ) "ಶತುಃ" (೩-೨-೧೨೪). 2. ಅಕ್ರಮಿಸುತ್ತಿರುವ, ಆವರಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಛಾ ನಿರ್ದಯದತ್ತಿನಿಲಯನಾಂ ಧ್ವಾಂತಮುಖತಕರೇಣ ಪುರಸ್ತಾತ್" ಕಿರಾಂ ೯-೨೦. 3. ತಡೆದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಒಳಗೇ ಅಡಗಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. 4. ತಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಬಿಗಿಹಿಡಿಯುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಛಿಪ್" (೫-೧-೬).

**ನಿರ್ದಯನಿ - ರುಂಘತೀ**. "ವಿಪಾಣ್ಡು ಸಂಖ್ಯಾನಮಿವಾನಿಲೋದ್ಭುತಂ ನಿರ್ದಯನಿಃ ಸಪ್ತಪಲಾಶಜಂ ರಜಃ" ಕಿರಾಂ ೪-೨೮. "ಪ್ರಸಕ್ತ-ದಾವಾನಲಭೂಮಭೂಮಿ ನಿರ್ದಯನಿ ಧಾಮ ಸಹಸ್ರರಶ್ಮಿಃ" ಕಿರಾಂ ೯-೨೬.



**ನಿರ್ದಾನ್ ನಿರುಂಧಾನ** (ವಿಂ) 1. ತಡೆಗಟ್ಟುತ್ತಿರುವ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ನಿ+ಠ್ವಿರ್ (ಆವರಣ) "ಶಾನಿ" (3-2-124)। "ನಿರ್ದಾನ್ತಾಃ ಸತಾಂ ಮಾರ್ಗಂ ಭಜಯಂತಿ ಮಹಿಪತಿಮ್" ಕಾಮಂದಂ 4-12। 2. ಅಕ್ರಮಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅವರಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಬಿಗಿಹಿಡಿಯುತ್ತಿರುವ. 4. ಒಳಗೆ ಅಡಗಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ.

**ನಿರ್ದಾನ್ತರಿನ್ ನಿರುಪಕಾರಿನ್** (ವಿಂ) ಉಪಕಾರಮಾಡದಿರುವ. "ತುಲ್ಯರೂಪಮಸಿತೋತ್ಪಲಮಕ್ಷಣೋಃ ಕರ್ಣಗಂ ನಿರ್ದಾನ್ತರಿನ್ ವಿದಿತ್ವಾ" ಕಿರಾಂ 9-61।

**ನಿರ್ದಾನ್ತರಿನ್ ನಿರುಪಕ್ರಮ** (ವಿಂ) 1. ಚಿಕ್ಕತೆಯನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ, (ರೋಗ) ವಾಸಿಮಾಡಲಾಗದ. 2. ಪ್ರಾರಂಭಿಸದಿರುವ, ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಮೊದಲು ಮಾಡದಿರುವ.

**ನಿರ್ದಾನ್ತರಿನ್ ನಿರುಪದ್ರವ** (ವಿಂ) 1. ತೊಂದರೆಯಿಲ್ಲದ, ಹಿಂಸೆಯಿಲ್ಲದ. 2. ಅಪಾಯವಿಲ್ಲದ, ಹಿಂಸೆಯಿಲ್ಲದ. 3. ಅಪಾಯವಿಲ್ಲದ, ಯಾವ ವಿಧವಾದ ಕೆಡಕೂ ಇಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಃ: ಉಪದ್ರವಃ: ಯಸ್ಮಾತ್।

**ನಿರ್ದಾನ್ತರಿನ್ ನಿರುಪಧಿ** (ವಿಂ) 1. ಕಪಟವಿಲ್ಲದ, ಮೋಸವಿಲ್ಲದ, ವಂಚನೆಯಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಃ: ಉಪಧಿಃ: ಯಸ್ಮಾತ್। 2. ಅತಂಕವಿಲ್ಲದ, ನೆಮ್ಮದಿಯಿಂದಿರುವ. "ನಿರ್ದಾನ್ತರಿನ್ ನಿರುಪಧಿನಿಜಾವಸ್ಥಾಲಕ್ಷ್ಮಿ-ವಿಲಕ್ಷಣಮೀಕ್ಷಯತೇ" ನೆಪಂ 19-13। ವಾ "ಕಪ್" (4-8-144)। -ಉಪಧಿಃ: -ನಿರುಪಧಿಃ: "ನಿರುಪಧಿ-ನಿಜಪ್ರಭಾವಗಮಂ ಪರಿಪದಿ ವಿಶ್ವಪತಿಃ ಪ್ರಿಯಾಸಹಾಯಃ" ಯಾದಂ 24-41।

**ನಿರ್ದಾನ್ತರಿನ್ ನಿರುಪಪದ** (ವಿಂ) ಉಪಪದವಿಲ್ಲದ, ಹಿಂದೆಯಾವ ಪದವೂ ಇಲ್ಲದ (ಪದ). ನಿರ್ ನಾಸ್ತಿ ಉಪಪದಂ ಯಸ್ಯ। "ಕಥಂ ನಿರುಪಪದ ಏವ ಚಾಣಕ್ಯೋ ನ ಆರ್ಯಚಾಣಕಯ ಇತಿ" ಮುಡ್ರಾಂ 3।

**ನಿರ್ದಾನ್ತರಿನ್ ನಿರುಪಪ್ಲವ** (ವಿಂ) ತೊಂದರೆಯಿಲ್ಲದಿರುವ, ಬಾಧೆಯಿಲ್ಲದಿರುವ. ನಿರ್ಗತಃ: ಉಪಪ್ಲವೋ ಯಸ್ಮಾತ್। "ಪ್ರತಿ-ವಾತಿಣಿಂ ವಿಷಯಸಂಕ್ಷರಂತಿ ನಿರುಪಪ್ಲವಃ ಶಮಸುಖಾನುಭವಃ" ಕಿರಾಂ 6-21।

**ನಿರ್ದಾನ್ತರಿನ್ ನಿರುಪಮ** (ವಿಂ) ಅನ್ಯಾದೃಶವಾದ, ಹೋಲಿಕೆಯಿಲ್ಲದ, ಸಾಟಿಯಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಾ ಉಪಮಾ ಯಸ್ಮಾತ್।

**ನಿರ್ದಾನ್ತರಿನ್ ನಿರುಪಸರ್ಗ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರ ಪರಾ ಮೊದಲಾದ ಉಪಸರ್ಗದೊಡನೆ ಸೇರಿದ. 2. ಯಾವ ಪೀಡೆಯೂ ಇಲ್ಲದ, ಯಾವ ಉಪದ್ರವವೂ ಇಲ್ಲದ. 3. ಉತ್ಪಾತ ಮೊದಲಾದ ಯಾವ ಅಶುಭ ಸೂಚನೆಯೂ ಇಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಃ: ಉಪಸರ್ಗಃ: ಯಸ್ಮಾತ್।

**ನಿರ್ದಾನ್ತರಿನ್ ನಿರುಪಾಖ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ವರ್ಣಿಸಲು ಅಶಕ್ತವಾದ, ಹೊಗಳಲು ಸಾಧ್ಯವಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಾ ಉಪಾಖ್ಯಾ ಯಸ್ಮಾತ್। "ಪ್ರಾಪುಸ್ತಮೇಕಂ ನಿರ್ದಾನ್ತರಿನ್ ಬ್ರಹ್ಮೇವ ಚೇತಾಸಿ ಯತಃಪ್ರತಾನಾಮ್" ನೆಪಂ 3-3। 2. ವಾಸ್ತವವಾಗಿಲ್ಲದ, ಕಾಲ್ಪನಿಕ, ಸುಳ್ಳಾಗಿರುವ. (ನಂ) 3. ಅನಿರ್ವಚನೀಯವಾದ ಬೃಹತ್.

**ನಿರ್ದಾನ್ತರಿನ್ ನಿರುಪಾಧಿಕ** (ಅವ್ಯಂ) ಯಾವ ವಿಧವಾದ ಕಾರಣವೂ ಇಲ್ಲದ, ಯಾವ ನಿಮಿತ್ತವೂ ಇಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಃ: ಉಪಾಧಿಃ: ಯಸ್ಮಿನ್ ಕರ್ಮಣಿ। "ನಿರುಪಾಧಿಕಸಂಬಂಧಮೇನ ದ್ವಿಪತಾಜೇನ ನ ಭಾಷಣಪ್ರಸಜ್ಞಃ" ಯಾದಂ 14-61।

**ನಿರ್ದಾನ್ತರಿನ್ ನಿರುಪಾಯ** (ವಿಂ) ಉಪಾಯವಿಲ್ಲದ, ಯಾವ ವಿಧವಾದ ಯುಕ್ತಿಯೂ ಇಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಃ: ಉಪಾಯಃ: ಯಸ್ಮಾತ್। "ಉಚ್ಛಿದ್ಯಮಾನೋ ಬಲಿನಾ ನಿರುಪಾಯಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಃ" ಕಾಮಂದಂ।

**ನಿರ್ದಾನ್ತರಿನ್ ನಿರುಪಾಧ** (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆದುಬಂದಿರುವ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿರುವ. ನಿ + ಠ್ವಿ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡು-ಭವಿ ಚ) "ಕ್ತಃ" (3-8-62)। "ಬಾಲ್ಯಾತ್ ಪ್ರಭೃತ್ಯೇವ ನಿರುಪಾಧಸಂಯುತಃ ಸುಗ್ರೀವಮೇವ ಧ್ರುವಮಾಶ್ರಯತ" ಮಂ ಬಿಂ 4-9।

**ನಿರ್ದಾನ್ತರಿನ್ ನಿರುಪಾಧಲಕ್ಷಣ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿವಕ್ಷೆಗೆ ವಿಷಯವಾದ ಶಕ್ತಿಸಂಬಂಧರೂಪವಾದ ಲಕ್ಷಣ. "ಕರ್ಮಣಿ ಕುಶಲಃ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಕುಶಲ ಪದವು ಯೋಗಿಕವಾಗಿ ದರ್ಭೆಯನ್ನು ತರುವವನು ಎಂಬ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುದಾದರೂ ರೂಢಿಯಿಂದ ಪ್ರವೀಣ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ವೃದ್ಧವ್ಯವಹಾರವಿರುವ ಕಾರಣ ಇಲ್ಲಿ ಯಾವ ಪ್ರಯೋಜನವನ್ನೂ ಅಪೇಕ್ಷಿಸದೆ ಪ್ರವೀಣ ಎಂಬ ಅರ್ಥವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವುದರಿಂದ ಶಕ್ತಿಸಂಬಂಧರೂಪವಾದ ಲಕ್ಷಣ.

**ನಿರ್ದಾನ್ತರಿನ್ ನಿರುಪಾಧಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ, ಖ್ಯಾತಿ, ಹೆಸರುವಾಸಿ. ನಿ+ಠ್ವಿ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡುಭವಿ ಚ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)। "ಚತಸೃಷ್ವಪಿ ತೇ ವಿವೇಕಿನಿ ನೃಪ ವಿಶ್ವಾಸು ನಿರುಪಾಧಿಮಾಗತಾ" ಕಿರಾಂ 2-6।

**ನಿರ್ದಾನ್ತರಿನ್ ನಿರುಪಾಕ** (ವಿಂ) 1. ನಿರೂಪಣೆಮಾಡುವವನು, ವಿಷಯದ ನಿಜಸ್ವರೂಪವನ್ನು ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳುವವನು. ನಿ + ಕ್ವ (ಕೃಪಾಕ್ರಿಯಾಯಾಮ್) "ಠ್ವಲ್" (3-1-133)। 2. ಲಕ್ಷ್ಯವಿಟ್ಟು ನೋಡುವವನು, ಗಮನಿಸಿ ನೋಡುವವನು.

**ನಿರ್ದಾನ್ತರಿನ್ ನಿರುಪಾಣ** (ನಂ) 1. ವಿಚಾರ, ವಿಮರ್ಶೆ. ನಿ + ಕ್ವ (ಕೃಪಾಕ್ರಿಯಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ನೋಡುವುದು, ಗಮನಿಸುವುದು. 3. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ನಿಷ್ಕೃಷ್ಟ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳುವುದು. (ಸ್ತ್ರೀನಂ) 4. ನೇತ್ರ.



ಕಣ್ಣು. 5. ಎಕಾರ, "ನಿರೂಪಣಂ ತು ನ ಪುಮಾನ್ ವಿಲೋಚನ-  
ವಿಕಾರಯೋಃ" ನಾನಾರ್ಥರಂ ।

**ನಿರೂಪಣೀಯ ನಿರೂಪಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ವಿವರಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ವಿಚಾರಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ನಿ + ರೂಪ (ರೂಪಕ್ರಿಯಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) । 4. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡಬೇಕಾದ. 5. ಚೆನ್ನಾಗಿ ವಿವರಿಸಬೇಕಾದ. 6. ಚೆನ್ನಾಗಿ ವಿಚಾರಮಾಡಬೇಕಾದ. "ತವ್ಯಃ" (3-1-96) । -ಯಿತವ್ಯಃ -ಯಿತವ್ಯಃ.

**ನಿರೂಪಯತ್ ನಿರೂಪಯತ್** (ವಿಂ) 1. ವಿಚಾರಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ವಿಮರ್ಶಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ರೂಪ (ರೂಪಕ್ರಿಯಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124) । "ಅನುರೂಪಮಿಮಂ ನಿರೂಪಯತ್ರಯ ಸರ್ವೇಷುಪಿ ಪೂರ್ವಪಕ್ಷತಾಮ್" ನೈಷಂ 2-42 । 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡುತ್ತಿರುವ, ಗಮನಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ವಸ್ತುವಿನ ನಿಜಸ್ವರೂಪವನ್ನು ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳುತ್ತಿರುವ. "ಕಾವ್ಯದೋಷಾನ್ ನಿರೂಪಯನ್ ತಸ್ಯ ಪ್ರಾಯಮಿಕತ್ವಮುಪಾಧಯತಿ" ಸಾಂ ದಂ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (4-1-6) । -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

**ನಿರೂಪಿತ ನಿರೂಪಿತ** (ವಿಂ) 1. ವಿಚಾರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಮರ್ಶಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ರೂಪ (ರೂಪಕ್ರಿಯಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102) । 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಗಮನಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅನಂಜನಶೃಂಗಾರಾಚಾರ್ಯಸರ್ವಾಗಮೋಪ-  
ದೇಶನಿರ್ಮಿತವೇದಗ್ರಂಥಮುಘಮನೋಹರಾಃ ಮಯಾ ನ ನಿರೂಪಿತಾ ಏತಯೋ-  
ದೃಷ್ಟಿಸಂಭವಾಃ" ಮಾಲತೀಂ ೭ । 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸ್ತುತ್ಯಾ ಪುರಾಸ್ತಮಾಭಿರೂಪಾಸಿತೇನ ಪಿತಾಮಹೇನೆತಿ ನಿರೂಪಿತಂ ನಃ" ಕುಮಾಂ 12-47 ।

**ನಿರೂಪ್ಯಮಾಣ ನಿರೂಪ್ಯಮಾಣ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ರೂಪ (ರೂಪಕ್ರಿಯಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಶಾನ್" (3-2-124) । "ದೃಷ್ಟೇನೈವ ಮನೋ ಹೃತಂ ಧೃತಿಮುಷಾ ಪ್ರಾಣೇಶ್ವರೇಣಾಽಽ ಮೇ ತತ್ಕೇನಾತ್ರ ನಿರೂಪ್ಯಮಾಣನಿಪುಣೋ ಮಾನ-  
ಸ್ಸಮಾಧೀಯತಾಮ್" ಅಮರಂ ೮4 । 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 3. ವಿಮರ್ಶಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. "ಸಂಧಾನಮೇವಾಸ್ತು ಪರೇಣ ತಸ್ಮಾನ್ನಾನ್ಯೋಽನ್ಯುಪಾಯೋಽಸ್ತಿ ನಿರೂಪ್ಯ-  
ಮಾಣಃ" ಭट्टಿಂ 12-44 ।

**ನಿರೂಹ ನಿರೂಹ** (ಪುಂ) 1. ದೇಹದೊಳಗಿನ ದೋಷವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸಲು ಪ್ರಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ವಿಧ ಬಸ್ತಿ ಕ್ರಿಯೆ, ಪಿಚ್ಕಾರಿ. ನಿರ್ + ಊಹ (ವಿತರ್ಕೆ) ಕರಂ "ಘ್" (3-3-121) । "ಅನಾಯಾಂತಂ ಮುಹೂರ್ತಾನ್ತು ನಿರೂಹಂ ಶೋಧನೇ-  
ಹೇತ್ಯು । ತೀಕ್ಷ್ಣೇನಿರೂಹೈರ್ಮತಿಮಾನ್ ಕ್ಷಾರಮೃತ್ತಾಂಶಸಂಯುತೈಃ" ಸುಶ್ರುತಂ

ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ 3-17 । 2. ತರ್ಕ, ವಾದವಿವಾದ, ಚರ್ಚೆ. 3. ಅಧ್ಯಾಹಾರಪದಗಳಿಲ್ಲದ ವಾಕ್ಯ. 4. ನಿಶ್ಚಯ. "ನಿರೂಹೋ ವಸ್ತಿಮೇದೇ ಚ ಊಹಾನ್ಯೇ ಚ ನಿಶ್ಚಿತೇ" ಮೇದಿಂ । "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114) । ನಿರೂಹಣಮ್ ನಿರೂಹಣಮ್.

**ನಿರೂಹಿತಿ ನಿರೂಹಿತಿ** (ಪುಂ) 1. ಅಷ್ಟದಿಕ್ಪಾಲಕರಲ್ಲೊಬ್ಬ, ದಕ್ಷಿಣ-ಪಶ್ಚಿಮ ಮಧ್ಯಭಾಗದ ವಿದಿಕೆಯ ಅಧಿಪತಿ. ನಿಯತಾ ಕೃತಿಃ ಮಜ್ಜಲಂ ಯತ್ರ । "ಮೃಗವ್ಯಾಧಿಶ್ಚ ಸರ್ಪಶ್ಚ ನಿರೂಹಿತಿಶ್ಚ ಮಹಾಯಶಾಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ 69-2 । (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ದೇವಿ, ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ದೌರ್ಭಾಗ್ಯ. ನಿರೂಹಿತಾ ಕೃತೇಃ ಮಜ್ಜಲಾತ್ । 3. ಅಧರ್ಮನ ಪತ್ನಿ. (ವಿಂ) 4. ಉಪದ್ರವವಿಲ್ಲದ, ಯಾವ ತೊಂದರೆಯೂ ಇಲ್ಲದ.

**ನಿರೂಜಸ್ ನಿರೂಜಸ್** (ವಿಂ) ಅಂಶಸತ್ತ್ವವಿಲ್ಲದ, ಬಲವಿಲ್ಲದ, ದಿನವಾದ. ನಿರೂತಮೂಜಃ ಯಸ್ಮಾತ್ । "ಪ್ರಾಶು ನಿಃಶ್ವಸಿತಪೃಥವರೀ ವಾಡ್ನಾರದಸ್ಯ ನಿರಿಯಾಯ ನಿರೂಜಾಃ" ನೈಷಂ 4-40 ।

**ನಿರೂದ್ಧವ್ಯ ನಿರೂದ್ಧವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಕಾಪಾಡಲ್ಪಡುವ, ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. ನಿ + ರೂದ್ಧಿ (ಆವರಣ) "ತವ್ಯಃ" (3-1-96) । "ಆಶಯಾದ್ವೋದಪಾನಾಶ್ಚ ಪ್ರಭೂತಸಲಿಲಾಕರಾಃ । ನಿರೂದ್ಧವ್ಯಾಃ ಸದಾ ರಾಜಾ ಕ್ಷೀರಿಣಾಶ್ಚ ಮಹೀರಹಾಃ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೮6-14 । 2. ಬಂಧಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ತಡೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಡುವ, ಒಳಗೇ ಅಡಗಿಸಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಡುವ. 4. ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಡುವ, ಆವರಿಸಲ್ಪಡುವ. "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) । -ರೂದ್ಧನೀಯಃ -ರೂದ್ಧನೀಯಃ.

**ನಿರೋಧ ನಿರೋಧ** (ಪುಂ) 1. ತಡೆಯುವುದು, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವುದು. ನಿ + ರೂದ್ಧಿ (ಆವರಣ) "ಘ್" (3-3-121) । "ವಿಭೇದಮಂತಃ ಪದವಿನಿರೋಧಂ ವಿಧವಂಸನಂ ಚಾವಿದಿತಪ್ರಯೋಗಃ" ಕಿರಾಂ 17-27 । 2. ತಡೆಯುವುದು, ಬಿಗಿಹಿಡಿಯುವುದು. "ತೇಜೋನಿರೋಧಸಮತಾಽವಹಿತೇನ ಯತ್ರಾ ಸಮ್ಯಕ್ಕಕಶಾತ್ರಯ-  
ವಿಚಾರವತಾ ನಿಯುಕ್ತಃ" ಮಾಘಂ 4-10 । 3. ತಡೆಹಿಡಿಯುವುದು, ಒಳಗೆ ಅಡಗಿಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಹತೋಟಿಯಲ್ಲಿಡುವುದು. "ಅಂತಃಪರಾಣಾಂ ಮರುತಾಂ ನಿರೋಧಾನ್ವಿವಾತನಿಷ್ಕಮ್ಯಮಿವ ಪ್ರದೀಪಮ್" ಕುಮಾಂ 3-48 । "ಯೋಗಶ್ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿನಿರೋಧಃ" ಪಾಂ ಥೋಂ ಮುಂ । 4. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು, ನಿರ್ನಾಮಮಾಡುವುದು, ಪ್ರಳಯ. 5. ಬಂಧಿಸುವುದು, ಸೆರೆಹಿಡಿದು ನಿರ್ಬಂಧದಲ್ಲಿಡುವುದು. "ನಿರೋಧಸಿನ್ನಾವುಚಿತೋಪಚಾರಃ ಆನಂಚ ಸಸ್ತೇಹಮುಷಾನಿರೂದ್ಧೌ" ಯಾದಂ 20-93 । 6. ನಿಗ್ರಹಿಸುವುದು, ದಂಡಿಸುವುದು. "ಇಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ ನಿರೋಧೇನ ರಾಗದ್ವೇಷಭಯೇಣ ಚ । ಅಹಿಸಯಾ ಚ ಭೂತಾನಾಂ ಅಮೃತತ್ವಾಯ ಕಲ್ಪತೇ" ಮನುಂ 6-60 ।



**ನಿರೋಧಕ ನಿರೋಧಕ** (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯುವವನು, ಅಡ್ಡಿ ಪಡಿಸುವವನು. ನಿ + ರುಧಿರ್ (ಆವರಣ) "ಽವುಲ್" (3-1-133)। 2. ಬಂಧನದಲ್ಲಿಡುವವನು, ಸೆರೆಹಿಡಿದು ನಿರ್ಬಂಧದಲ್ಲಿಡುವವನು. 3. ನಾಶಪಡಿಸುವವನು. 4. ತಡೆ ಹಿಡಿಯುವವನು.

**ನಿರೋಧನ ನಿರೋಧನ** (ನಂ) 1. ತಡೆಯುವುದು, ಅಡ್ಡಿ ಪಡಿಸುವುದು, ಅಡಚಣೆಯುಂಟುಮಾಡುವುದು. ನಿ + ರುಧಿರ್ (ಆವರಣ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ಬಂಧನ ದಲ್ಲಿರಿಸುವುದು, ನಿರ್ಬಂಧದಲ್ಲಿಡುವುದು. 3. ನಿಗ್ರಹಿಸು ವುದು, ದಂಡಿಸುವುದು. 4. ತಡೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಹತೋಟಿ ಯಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವುದು.

**ನಿರ್ಗ ನಿರ್ಗ** (ಪುಂ) ದೇಶ, ಪ್ರದೇಶ, ಪ್ರಾಂತ. ನಿತರಾಂ ಗಚ್ಛತ್ಯತ್ರ — ನಿರ್ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಃ" (ವಾಂ 3-2-48)।

**ನಿರ್ಗಚ್ಛತ್ ನಿರ್ಗಚ್ಛತ್** (ವಿಂ) ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡುತ್ತಿರುವ, ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೋಗುತ್ತಿರುವ. ನಿರ್ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಶತ್" (3-2-124)। "ನಿರ್ಗಚ್ಛತಃ ಪ್ರವಿಶತಶ್ಚ ನಿಶಾಮಯಂತೋ ನಾಥ ತ್ವದೇಕಹೃದಯಾ ನ ಭಜಂತಿ ತಂದ್ರೀಮ್" ಯಾದಂ 19-4। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಢೀಪ್" (4-1-6)। -ಗಚ್ಛಂತಿ -ಗಚ್ಛಂತೀ.

**ನಿರ್ಗತ ನಿರ್ಗತ** (ವಿಂ) 1. ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಟಿರುವ, ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೋಗಿರುವ. ನಿರ್ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (3-4-92)। "ಗಣಾಧಿಪಾನಾಮವಿಧಾಯ ನಿರ್ಗತೈಃ ಪರಾಸುತಾಂ ಮರ್ಮವಿದಾರಣೇರಪಿ" ಕಿರಾಂ 14-44। 2. ಹೊರಟುಹೋದ.

**ನಿರ್ಗಂಧ ನಿರ್ಗಂಧ** (ವಿಂ) ವಾಸನೆಯಿಲ್ಲದ, ಪರಿಮಳವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಃ ಗಂಧಃ ಯಸ್ಮಾತ್। "ನಿರ್ಗಂಧಾ ಇವ ಕಿಂಶುಕಾಃ"।

**ನಿರ್ಗಮ ನಿರ್ಗಮ** (ಪುಂ) 1. ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು, ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡುವುದು. ನಿರ್ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಅಪ್" (3-3-44)। "ಅರ್ಧವರ್ಮನಿ ರುಣಿಸ್ತಿ ನ ಪೃಚ್ಛಾಂ ನಿರ್ಗಮೇನ ನ ಪರಿಶ್ರಮಯೇನಾಮ್" ನೆಪಂ 4-28। 2. ಹೊರಟುಹೋಗು ವುದು "ತೇನ ತಸ್ಯ ಮಧುನಿರ್ಗಮಾತ್ಮಕಃ" ರಘುಂ 19-46। 3. ದ್ವಾರ, ಬಾಗಿಲು. "ಅವಾಪ್ತನಿರ್ಗಮಃ ಪ್ರಯಯೌ" ಕಾದಂ।

**ನಿರ್ಗಮನ ನಿರ್ಗಮನ** (ನಂ) 1. ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು, ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡುವುದು. ನಿರ್ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ದ್ವಾರ, ಬಾಗಿಲು. ನಿರ್ + ಗಮ್ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-117)।

**ನಿರ್ಗಮಿತ ನಿರ್ಗಮಿತ** (ನಂ) 1. ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡುವುದು, ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು. ನಿರ್ + ಗಮ್ (ಗತೌ) + ಸ್ವಾರ್ಥ ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (3-3-114)। "ಇತ್ಯನಕ್ಷರಮವಾಚಿ ಧೃತಾಚ್ಯಾ ದೀರ್ಘನಿಃಶ್ವಸಿತನಿರ್ಗಮಿತೇನ" ನೆಪಂ 4-49।

(ವಿಂ) 2. ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಟಿರುವ, ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ರುವ. ನಿರ್ + ಗಮ್ ಕರಂ "ಕ್ತಃ" (3-4-92)। "ಆನಂದಜಾಶ್ರುಭಿರನುಸ್ರಿಯಮಾಣಮಾಗನ್ ಪ್ರಾಕ್ಷೋಕನಿರ್ಗಮಿತನೇತ್ರ- ಪಯಃಪ್ರವಾಹಾನ್" ನೆಪಂ 1-144।

**ನಿರ್ಗಲತ್ ನಿರ್ಗಲತ್** (ವಿಂ) ಸೋರುತ್ತಿರುವ, ಹೊರಕ್ಕೆ ಸುರಿಯುತ್ತಿರುವ. ನಿರ್ + ಗಲ (ಪ್ರಸವಣ) "ಶತ್" (3-2-124)।

**ನಿರ್ಗಲನ ನಿರ್ಗಲನ** (ನಂ) ಸ್ರವಿಸುವುದು, ಹೊರಕ್ಕೆ ಸೋರು ವುದು. ನಿರ್ + ಗಲ (ಪ್ರಸವಣ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

**ನಿರ್ಗಲಿತ ನಿರ್ಗಲಿತ** (ವಿಂ) ಹೊರಗೆ ಬಂದ, ಹೊರಗಡೆ ಸೋರಿಹೋದ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಸೋರಿಹೋದ. ನಿರ್ + ಗಲ (ಪ್ರಸವಣ) ಕರಂ "ಕ್ತಃ" (3-4-92)। "ಸ್ವಸ್ತಯಸ್ತು ತೇ ನಿರ್ಗಲಿತಾಮ್ಬುಗಮಂ ಶರದ್ಧನಂ ನಾದತಿ ಚಾತಕೋಽಪಿ" ರಘುಂ 4-19।

**ನಿರ್ಗುಣ ನಿರ್ಗುಣ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಬ್ರಹ್ಮ. ನಿರ್ಗತೌ ಗುಣೇಭ್ಯಃ। ಸತ್ತ್ವಾದಿ ಗುಣರಹಿತನಾದುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ನಿರ್ಗುಣನು. ಸತ್ತ್ವಾದಿ ಗುಣಗಳಿಗೆ ವಶ್ಯ ನಾಗದಿರುವುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ನಿರ್ಗುಣನು. "ಸತ್ತ್ವಾ- ದಯೋ ನ ಸಂತೀಶೋ ಯತ್ರ ಚ ಪ್ರಾಕೃತಾ ಗುಣಾಃ"। ಅತದ್ವಯತಯಾ ನಿರ್ಗತಃ ತತ್ಸಂಸ್ಪರ್ಶೋಽಪಿ ಅಸ್ಪೃಷ್ಠಃ। ಹೇಯಗುಣರಹಿತಃ। ಹೇಯ ಗುಣರಹಿತನಾದುದರಿಂದಲೂ ಪರಮಾತ್ಮನು ನಿರ್ಗುಣನು. ಇದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಪರಮಸ್ವತಂತ್ರನು. "ಅಣುಬೃಹತ್- ಕೃಶಃಸ್ಯೂಲೋ ಗುಣಭೃನ್ನಿರ್ಗುಣೋ ಮಹಾನ್" ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 2. ಶೂನ್ಯ ಧೈರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಗುಣಗಳಿಲ್ಲದವನು. ನಿರ್ಗತಾಃ ಗುಣಾಃ ಶೌರ್ಯಧೈರ್ಯಾದಯೋ ಯಸ್ಮಾತ್। "ನಿರ್ಗುಣಾನಪಿ ನಿಸರ್ಗಕಿಂಕರಾನ್ ಸ್ವೀಕುರ್ಣವ ಕೃಪಯಾ ಸ್ವಯಂವ ನಃ" ಯಾದಂ 19-120। 3. ಸೂತ್ರವಿಲ್ಲದ ಬಿಲ್ಲು.

**ನಿರ್ಗುಂಡಿ ನಿರ್ಗುಂಡೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಕ್ಕಿಗಿಡ. ನಿರ್ಗುಂಡಿತಿ— ನಿರ್ + ಗುಡ (ರಕ್ಷಾಯಾಮ್) "ಕಃ" (3-1-134)। ಪೃಷಂ। 2. ಕರಿಯ ಲಕ್ಕಿಗಿಡ. "ಸಿಂಧುವಾರೆಂದ್ರಸುರಸೌ ನಿರ್ಗುಂಡಿನ್ದ್ರಾಣಿ- ಕೇತ್ಯಪಿ"। "ಶೇಫಾಲಿಕಾ ತು ಸುಬಾಹಾ ನಿರ್ಗುಂಡಿ ನೀಲಿಕಾ ಚ ಸಾ" ಅಮಂ। 3. ತಾವರೆಯ ಗಡ್ಡೆ. "ನಿರ್ಗುಂಡಿ ಸಿಂಧು- ವಾರಕೇ। ನೀಲಶೇಫಾಲಿಕಾयां ಚ ಕರಹಾಡೇಽಪಿ ಕುತ್ರಚಿತ್" ವಿಶ್ವಂ। "ಸಮೂಲಫಲಪತ್ರಾयाಃ ನಿರ್ಗುಂಡಿಚಾಃ ಸ್ವರಸೇರ್ವತಮ್। ಸಿದ್ಧಂ ಪೀತ್ವಾ ಕ್ಷಯಕ್ಷೀಣೋ ನಿರ್ವ್ಯಾಧಿರ್ಮತಿ ದೇವವತ್" ಚಕ್ರದಂ।

**ನಿರ್ಗುಡ ನಿರ್ಗುಡ** (ಪುಂ) 1. ಮರದ ಪೊಟರೆ. ನಿರ್ನಿಶ್ರವೇನ ಗುಹ್ಯತೇ ಸಂವ್ರಿಯತೇತ್ರ — ನಿರ್ + ಗುಹ (ಸಂವರಣ) ಅಧಿಂ "ಕ್ತಃ" (3-4-96)। (ವಿಂ) 2. ಬಹಳ ಗೂಢವಾದ, ಬಹಳ ರಹಸ್ಯವಾದ. 3. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.



**ನಿರ್ಗುಹ ನಿರ್ಗುಹ** (ವಿಂ) ಮನೆಯಿಲ್ಲದವನು, ವಾಸಕ್ಕೆ ನೆಲೆಯಿಲ್ಲದವನು. ನಿರ್ಗತೋ ಗೃಹಾತ್ |

**ನಿರ್ಗುಹ ನಿರ್ಗುಹ** (ಪುಂ) 1. ಜೂಜುಗಾರ, ಜೂಜಾಟದವನು. ನಿರ್ಗತೋ ಗ್ರಂಥೇಮ್ಯಃ | 2. ಜೈನಭಿಕ್ಷು. 3. ಬೌದ್ಧ ಸಂನ್ಯಾಸಿ. (ವಿಂ) 4. ಮೂರ್ಖ. 5. ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. 6. ಪ್ರಾಪಂಚಿಕ ವ್ಯವಹಾರಗಳನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿ ಪರಮಾತ್ಮನ ಧ್ಯಾನದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದವನು, ವಿರಕ್ತ. "ಆತ್ಮಾರಾಮಾಶ್ರಮನುಯೋ ನಿರ್ಗುಹಾ ಅಪ್ಯುಕ್ತಮೇ | ಕುರ್ವಂತ್ಯಹೇತುಕೀ ಭಕ್ತಿಮಿತ್ಯಂ ಭೂತಗುಣೋ ಹರಿಃ" ಭಾಗಂ ೧-೭-೧೦ | "ನಿರ್ಗುಹೋ ಮಿಕ್ಷು-ಮುಖ್ಯೋಃ | ಶ್ರಮಣೇ ಚ" ಹೇಮಂ | "ನಿರ್ಗುಹೋ ನಗನಕೇಪಿ ಸ್ಯಾನ್ನಿಃಸ್ವಬಾಲಿಶಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ | ಜೈನಭಿಕ್ಷುವಿಗೆ ವಸ್ತ್ರ ಗ್ರಂಥಿಯಿಲ್ಲದುದರಿಂದ ನಿರ್ಗುಹಂ. ವಿರಕ್ತನಿಗೆ ಹೃದಯ ಗ್ರಂಥಿಯು ಭಗವತ್ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವಾದ ಕೂಡಲೆ ಶಿಥಿಲವಾಗುವುದರಿಂದ ನಿರ್ಗುಹಂ. "ಮಿಥ್ಯತೇ ಹೃದಯಗ್ರಂಥಿಃ | ಛಿದ್ರಂತೇ ಸರ್ವಸಂಶಯಾಃ | ಕ್ಷೀಯಂತೇ ಚಾಸ್ಯ ಕರ್ಮಾಣಿ ದೃಷ್ಟಿಃ ಏವಾತ್ಮನಿಶ್ವರೇ" ಭಾಗಂ ೧-೨-೨೨ | ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ" | -ಗ್ರಂಥಕಃ-  
1. ಫಲಶೂನ್ಯವಾದ. 2. ವಸ್ತ್ರವಿಲ್ಲದ, ದಿಗಂಬರನಾದ. 3. ಕ್ಷುಪಣಕ. "ನಿರ್ಗುಹಕಃ ಸ್ಯಾತ್ಕಷ್ಣಪಣೇ ನಿರ್ಗುಹೇಽಪ್ಯಪರಿಚ್ಛೇದೇ" ಮೇದಿಂ |

**ನಿರ್ಗುಹ ನಿರ್ಗುಹ** (ನಂ) ಮಾರಣ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. ನಿರ್ + ಗ್ರಹಿ (ಕೌಟಿಲೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |

**ನಿರ್ಗುಹ ನಿರ್ಗುಹ** (ಪುಂ) 1. ಜೈನಸಂನ್ಯಾಸಿ. (ವಿಂ) 2. ಜಾಣ, ಬುದ್ಧಿವಂತ. 3. ಗ್ರಂಥಿಯಿಲ್ಲದ ನಿರ್ಗತೋ ಗ್ರಾನ್ಥಿಯಸ್ಯ |

**ನಿರ್ಗುಹ ನಿರ್ಗುಹ** (ವಿಂ) ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಂದ ಅಥವಾ ಬುದ್ಧಿಯಿಂದ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ, ಬುದ್ಧಿಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಗ್ರಹಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ನಿರ್ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾಧಾನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) | "ಮಹಿಮ್ನಾಮೇತಸ್ಮಿನ್ವಿನಯಶಿಶಿರೋ ಮೌಢ್ಯ-ಮಸೃಣೋ ವಿದಗ್ಧೇನಿರ್ಗುಹೋ ನ ಪುನರವಿದಗ್ಧೇರತಿಶಯಃ" ಉಂ ರಾಂ ೪-೨೧ |

**ನಿರ್ಗುಹ ನಿರ್ಗುಹ** (ನಂ) 1. ಜನನಿಬಿಡವಾದ ಮಾರುಕಟ್ಟೆ, ಬಹಳ ಜನರಿಂದ ಸಾಂದ್ರವಾದ ಅಂಗಡಿಬೀದಿ. 2. ತೆರಿಗೆ ವಿಧಿಸದಿರುವ ಮಾರುಕಟ್ಟೆ, ಸುಂಕವಿಲ್ಲದ ಮಾರುಕಟ್ಟೆ. 3. ಹಡಗಿಗೆ ಸಾಮಾನು ತುಂಬಲು ಮತ್ತು ಹಡಗಿನಿಂದ ಸಾಮಾನು ಇಳಿಸಲು ಅನುಕೂಲವಾದ ಬಂದರಿನ ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿ ನೀರಿನೊಳಕ್ಕೆ ಚಾಚಿಕೊಂಡಿರುವ ಶಿಲಾನಿರ್ಮಿತವಾದ ಇಳಿದಾಣ. (ವಿಂ) 4. ಘಟವಿಲ್ಲದ ಪ್ರದೇಶ.

**ನಿರ್ಗುಹ ನಿರ್ಗುಹ** (ಪುಂ) 1. ನಿರ್ಬಂ, ಶಬ್ದಕೋಶ. 2. ಗ್ರಂಥಗಳ ಸಂಗ್ರಹ, ಗ್ರಂಥಗಳ ಪಟ್ಟಿ, ಗ್ರಂಥಗಳ ಸೂಚಿ.

**ನಿರ್ಗುಹ ನಿರ್ಗುಹ** (ಪುಂ) ವಾಯುವಿನಿಂದ ಹೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ ವಾಯುವು ಆಕಾಶದಿಂದ ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಬೀಳುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಶಬ್ದ. "ವಾಯುನಾಭಿಹತೇ ವಾಯೋ ಗಗನಾನ್ವ ಪತತ್ಯವಃ | ಪ್ರಚಂಡವೋರನಿರ್ಬಂಧೋ ನಿರ್ಗುಹಃ ಇತಿ ಕಥ್ಯತೇ" | "ನಿರ್ಗುಹಧೋಗಿರಿಶ್ಚಕ್ಷುಗಾತನೋ ಧನೋಽಂಬರಾಣಾ-ಕ್ರುಹರೋದರಮರೀಃ" ಕುಮಾಂ ೧೪-೨೨ | ಈ ರೀತಿ ವಾಯುವು ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಬೀಳುವುದು ಬಹಳ ಅನಿಷ್ಟ ಸೂಚಕ. ಈ ವಾಯುವು ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಬೀಳುವ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಪಕ್ಷಿಗಳೆಲ್ಲವೂ ಸೂರ್ಯನಿಗೆ ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ತಿರುಗಿಕೊಂಡು ಕೂಗಿಕೊಳ್ಳುವುವು. "ಪವನಃ ಪವನಾಭಿಹತೋ ಗಗನಾದವನೋ ಯದಾ ಸಮಾಪತತಿ | ಭವತಿ ತದಾ ನಿರ್ಗುಹಃ ಸ ಚ ಪಾಪೋ ದೀರ್ಘವಿಹಗರತಃ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೩೯-೧ | ಸಿಡಲಿನಂತೆ ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಬೀಳುವ ಈ ಘೋರವಾದ ಶಬ್ದವು ಸೂರ್ಯೋದಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದರೆ ನ್ಯಾಯಾಧೀಶರು, ರಾಜರು, ಧನಿಕರು, ಯೋಧರು, ಸ್ತ್ರೀಯರು, ವರ್ತಕರು ಮತ್ತು ವೇಶ್ಯೆಯರು ನಾಶಹೊಂದುವರು. ಹಗಲು ಮೊದಲನೆಯ ಯಾಮದಲ್ಲಾದರೆ ಮೇಕೆಗಳು, ಕುರಿಗಳು, ಶೂದ್ರರು ಮತ್ತು ಪೌರರು ಇವರಿಗೆ ಹಾನಿಯುಂಟು. ಎರಡನೆಯ ಯಾಮದಲ್ಲಾದರೆ ರಾಜಸೇವಕರು ಮತ್ತು ಬ್ರಾಹ್ಮಣರಿಗೆ ಪೀಡೆಯುಂಟು. ಮೂರನೆಯ ಯಾಮದಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದರೆ ವೈಶ್ಯರು ಮತ್ತು ಮೇಘಗಳಿಗೆ ಪೀಡೆ. ನಾಲ್ಕನೆಯ ಯಾಮದಲ್ಲಿ ಚೋರರಿಗೆ ಪೀಡೆ. ಸೂರ್ಯಾಸ್ತಮಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಬೀಳುವ ಈ ನಿರ್ಬಂತವು ನೀಚರನ್ನೂ ರಾತ್ರಿಯ ಮೊದಲನೆಯ ಯಾಮದಲ್ಲಿ ಸಸ್ಯಗಳನ್ನೂ ದ್ವಿತೀಯ ಯಾಮದಲ್ಲಿ ಪಿಶಾಚಿಗಳನ್ನೂ ಪೀಡಿಸುವುದು. ಮೂರನೆಯ ಯಾಮದಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದರೆ ಕುದುರೆ ಮತ್ತು ಆನೆಗಳಿಗೆ ಪೀಡೆ. ರಾತ್ರಿ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಯಾಮದಲ್ಲಿ ಈ ನಿರ್ಬಂತವು ಬಿದ್ದರೆ ಪಥಿಕರನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. "ಅಕೋದಯೇಽಧಿಕರಣಿಕನುಪಧನಿಯೋಽಜ್ಞಾನಾವಗಿ-ಗ್ವೇಶ್ಯಾಃ | ಆಪ್ರಹರಾಂಶೋಽವಿಕಮುಪಹನ್ಯಾಚ್ಛರಪೌರಾಂಶ್ಚ || ಆಮ-ಘಾಹ್ನಾದ್ರಾಜೋಪಸೇವಿನೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಂಶ್ಚ ಪಿಡಯತಿ | ವೈಶ್ಯಜಲದಾಂ ಸ್ತುತೀಯೇ ಚೋರಾನ್ ಪ್ರಹರೇ ಚತುರ್ಥೇ ತು || ಅಸ್ತಂ ಯಾತೇ ನೇಚಾನ್ ಪ್ರಥಮೇ ಯಾಮೇ ನಿಹಂತಿ ಸಸ್ಯಾನಿ | ರಾತ್ರೌ ದ್ವಿತೀಯಾಮೇ ಪಿಶಾಚ-ಸಂಭಾನ್ ನಿಪಿಡಯತಿ || ತುರಗಕರಿಣಸ್ತುತೀಯೇ ವಿನಿಹನ್ಯಾ-ಘಾಯಿನಶ್ಚತುರ್ಥೇ ಚ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೩೯-೨, ೩, ೪, ೫ |

**ನಿರ್ಗುಹ ನಿರ್ಗುಹ** (ನಂ) ಯಂತ್ರದಿಂದ ಮಾಡುವ ಒಂದು ವಿಧ ಚಿಕಿತ್ಸೆ.

**ನಿರ್ಬಂ ನಿರ್ಬಂ** (ವಿಂ) ದಯೆಯಿಲ್ಲದವನು, ಕನಿಕರವಿಲ್ಲದವನು. ನಿರ್ಗತಾ ಧೃಣಾ ಯಸ್ಮಾತ್ |



**ನಿರ್ವಿಂಶ ನಿರ್ವಿಂಶ** (ಪುಂ) 1. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು. ನಿರ್ + ಧುರ್ವಿ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಧು" (೩-೩-೧೮)। "ಸ್ತಿಗ್ಧಗಮ್ಭೀರ-ನಿರ್ವಿಂಶಮೇಕಂ ಸ್ಯಂದನಮಾಸ್ಥಿತೌ। ಪ್ರಾವೃಷ್ಯಂ ಪಯೋವಾಹಂ ವಿಶ್ವ-ದೇವತಾವಿವ" ರಘುಂ ೧-೩೬। (ವಿಂ) 2. ಶಬ್ದವಿಲ್ಲದ, ಸದ್ದಿಲ್ಲದ. "ಸನ್ನಿವ್ಯಮೇಂದ್ರಿಯಗ್ರಾಮಂ ನಿರ್ವಿಂಶಂ ನಿರ್ಜನೇ ವನೇ। ಕಾಯಮಮ್ಯಂತರಂ ಕೃತ್ಸನಮೇವಾಗ್ರಃ ಪರಿಚಿಂತಯೇತ್" ಭಾಂ ಆಶ್ವಂ ೨೦-೩೬।

**ನಿರ್ಜನ ನಿರ್ಜನ** (ವಿಂ) ಜನರಹಿತವಾದ, ವಿವಿಕ್ತವಾದ, ಏಕಾಂತವಾದ (ಪ್ರದೇಶ). ನಿರ್ಗತೌ ಜನೌ ಯಸ್ಮಾತ್। "ಸಸಚಿವ ಇವ ನಿರ್ಜನೇಽಪಿ ತಿಷ್ಠನ್ ಮುನಿರಪಿ ತುಲ್ಯಹವಿ-ಸ್ತ್ರಲೋಕಮರ್ತುಃ" ಕಿರಾಂ ೧೦-೧೪।

**ನಿರ್ಜಯ ನಿರ್ಜಯ** (ಪುಂ) ಜಯ, ಗೆಲ್ಲುವುದು. ನಿತರಾಂ ಜಯಃ। "ತಮಃಸುಹೃಚ್ಚಾಮರನಿರ್ಜಯಾಜಿತಾಃ ಸಿತಾ ವಮಂತಃ ಖಲು ಕೀರ್ತಿಮುಕ್ತಿಕಾಃ" ನೈಷಂ ೧೫-೨೩।

**ನಿರ್ಜರ ನಿರ್ಜರ** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. ನಿರ್ಗತಾ ಜರಾ ಯಸ್ಮಾತ್। "ಅಸ್ಮಿನ್ನಾಮ ತಯಾ ವೃತೇ ಸುಮನಸಃ ಸಂತೋಽಪಿ ಯನ್ನಿರ್ಜರಾ ಜಾತಾ ದುರ್ಮನಸೌ ನ ಸೌದುಮುಚಿತಾ ತೇಷಾಂ ತು ಸಾಜ್ಜೌಚಿತೀ" ನೈಷಂ ೧೫-೮೪। (ನಂ) 2. ಅಮೃತ. (ವಿಂ) 3. ಮುದಿತನ ವಿಲ್ಲದವನು, ಪ್ರಾಯದವನು, ತರುಣ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜರಾ -ಜರಾ. 4. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. 5. ಮುರೆಯೆಂಬ ಗಂದಿಗರ ದಿನಸು. "ನಿರ್ಜರಸ್ತು ಜರಾತ್ಯಕ್ತೇ ವಾಚ್ಯವನ್ನಿರ್ಜರಃ ಸುರೇ। ನಿರ್ಜರಾ ತು ಗಙ್ಗಾಂ ಸ್ಯಾತ್ತಾಲಪತ್ಯಾಮಪಿ ಕ್ವಚಿತ್" ವಿಶ್ವಂ।

**ನಿರ್ಜಲ ನಿರ್ಜಲ** (ವಿಂ) 1. ಜಲರಹಿತವಾದ, ನೀರಿಲ್ಲದ (ದೇಶ). ನಿರ್ಗತಂ ಜಲಂ ಯಸ್ಮಾತ್। 2. ನೀರು ಬೆರಕೆಯಿಲ್ಲದ (ಮೊಸರು). "ತಕ್ರಂ ಹೃದ್ಯದಶ್ವಿನ್ಮಥಿತಂ ಪಾದಮ್ಬವಧಾಂ ಮ್ಬುನಿರ್ಜಲಮ್" ಅಮಂ।

**ನಿರ್ಜಲಕಾದಶಿ ನಿರ್ಜಲಕಾದಶಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಶುಕ್ಲ ಏಕಾದಶಿ. "ವೃಷಸ್ಥೇ ಮಿಥುನಸ್ಥೇಽರ್ಕೇ ಶುಕ್ಲಾಹ್ನಿಕಾದಶಿ ಹಿ ಯಾ। ಜ್ಯೇಷ್ಠೇ ಮಾಸಿ ಪ್ರಯತ್ನೇನ ಸೌಪಾಸ್ಯಾ ಜಲವಾಜಿತಾ। ಸ್ನಾನೇ ಚಾಚಮನೇ ಚೈವ ವರ್ಜಯಿತ್ವೋದಕಂ ಬುಧಃ। ಉಪಯುಜ್ಜಿತ ನೈವಾನ್ಯ-ದ್ವತಭಜ್ಜೋಜ್ಯಥಾ ಭವೇತ್" ಪಾಶ್ವಪುಂ।

**ನಿರ್ಜಿತ ನಿರ್ಜಿತ** (ವಿಂ) ಜಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗೆಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್ + ಜಿ (ಜಯೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಸರೋಹಂ ತಸ್ಯ ದೃಶೇವ ನಿರ್ಜಿತಂ ಜಿತಾಃ ಸ್ಮಿತೇನೈವ ವಿಧೋರಪಿ ಶ್ರಿಯಃ" ನೈಷಂ ೧-೨೪। "ನಿರ್ಜಿತೇನ ಹರಿಣಾ ಹರಿಃ ಸ್ವಯಮ್" ಯಾದಂ ೧೭-೮೭।

**ನಿರ್ಜಿಹಾನ ನಿರ್ಜಿಹಾನ** (ವಿಂ) ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡುತ್ತಿರುವ, ನಿರ್ + ಆ ಹಾಡ್ (ಗತೌ) "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಕಾಪಿ ಪ್ರಮೋದಾಸ್ಕುಟನಿರ್ಜಿಹಾನವರ್ಣೇವ ಯಾ ಮಜ್ಜಲಗೀತಿರಾಸಾಮ್" ನೈಷಂ ೧೪-೫೧।

**ನಿರ್ಜಿಹ ನಿರ್ಜಿಹ** (ಪುಂ) 1. ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. ನಿರ್ ನಾಸ್ತಿ ಜಿಹ್ವಾ ಯಸ್ಯ। (ವಿಂ) 2. ನಾಲಗೆಯಿಲ್ಲದ. 3. ಹೊರಕ್ಕೆ ನೀಡಿದ ನಾಲಗೆಯುಳ್ಳ, ಬಾಯಿಂದ ಹೊರಗಡೆ ಹೊರಟ ನಾಲಗೆಯುಳ್ಳ. ನಿರ್ಗತಾ ಮುಖಾದ್ವಹಿರ್ಗತಾ ಜಿಹ್ವಾ ಯಸ್ಯ। "ನಿರ್ಜಿಹೈಶ್ಚ ಶ್ವಸದ್ವಿಶ್ಚ ಕೂಜದ್ವಿಶ್ಚ ಗತಾಸುಮಿಃ। ಹೃದೈಶ್ಚಾ ನರಶ್ರೇಷ್ಠ ನಾನಾಲ್ಪಧರೈಶ್ಚರಾ" ಭಾಂ ಭೀಷಂ ೮೯-೩೪।

**ನಿರ್ಜಿವ ನಿರ್ಜಿವ** (ವಿಂ) ಜೀವವಿಲ್ಲದ, ಜೀವಾತ್ಮನಿಲ್ಲದ (ಶರೀರ). ನಿರ್ಗತೌ ಜೀವೌ ಜೀವಾತ್ಮಾ ಯಸ್ಮಾತ್। "ವಾಜಿಭಿ-ಶ್ರಾಪಿ ನಿರ್ಜಿವೈಃ ಶ್ವಸದ್ವಿಃ ಶೋಣಿತೋಕ್ಷಿತೈಃ" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೪೯-೨೯।

**ನಿರ್ಜರ ನಿರ್ಜರ** (ಪುಂ) 1. ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ಹರಿಯುವ ಪ್ರವಾಹ, ಗಿರಿಸದಿ. ನಿರ್ + ಙ್ (ವಯೋಹಾನೌ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭)। "ಮನ್ಯಾ ನಗಃ ಸ ಭುಜಗಪ್ರಭುವೇಷ್ಠಘಟಿಲೇಖಾ-ವಲದ್ವಲನಿರ್ಜರವಾರಿಧಾರಃ" ನೈಷಂ ೧೧-೬೨। "ಪುಕ್ತ-ಸ್ತುಪಾರ್ಗಿಗಿರಿನಿರ್ಜರಾಣಾಮನೋಹಾಕಮ್ಪಿತಪುಷ್ಪಗಂಧಿ" ರಘುಂ ೨-೧೩। 2. ಸೂರ್ಯನ ಕುದುರೆ. 3. ಶುಷ್ಕಾಸಲ, ಹೊಟ್ಟಿನ ಬೆಂಕಿ. "ನಿರ್ಜರಸ್ತು ಸಹಸ್ರಾಂಶುತುರಜ್ಞೇ ತುಷಪಾವಕೇ" ಮೇದಿಂ।

**ನಿರ್ಜರಿಣಿ ನಿರ್ಜರಿಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನದಿ, ಹೊಳೆ. ನಿರ್ಜರಃ ಕಾರಣತ್ವೇನಾಸ್ತಯಸ್ಯಾಃ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫)। "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫)। ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ಹರಿದುಬಂದು ಮುಂದೆ ನದಿಯಾಗಿ ಪ್ರವಹಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಫಲಭರ-ಪರಿಣಾಮಶ್ಯಾಮಜಮ್ಬುನಿಕುಂಜಸ್ವಲನಮುಖರಭೂರಿಸ್ತೌತಸೌ ನಿರ್ಜ-ರಿಣಿಃ" ಮಂ ವೀಂ ೫-೪೦।

**ನಿರ್ಣಯ ನಿರ್ಣಯ** (ಪುಂ) 1. ನಿಶ್ಚಯ, ತೀರ್ಮಾನ, ನಿರ್ಧಾರ. ನಿರ್ + ಣಿ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬)। "ಅವಿತೃಪ್ತತಯಾ ತಥಾಪಿ ಮೇ ಹೃದಯಂ ನಿರ್ಣಯಮೇವ ಧಾವತಿ" ಕಿರಾಂ ೨-೨೯। "ಭವ ಹೃದಯ ಸಾಫಿಲಾಫಂ ಸಂಪ್ರತಿ ಸಂದೇಹ-ನಿರ್ಣಯೌ ಜಾತಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೨೪। 2. (ನ್ಯಾಯಮತದಲ್ಲಿ) ಸಂಶಯವಿರೋಧಿಯಾದ ನಿಶ್ಚಯಾತ್ಮಕಜ್ಞಾನ. ಈ ಜ್ಞಾನವು ವಿಶೇಷ ದರ್ಶನದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದು. ಇದು ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಮ್ ಮತ್ತು ಅನುಮಾನಮ್ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಔನ್ನತ್ಯ ಮಾತ್ರ ಸಾಮ್ಯದಿಂದ ಸ್ಥಾಪಿಸುವ ಗುಣವು ವಾ ಎಂಬ ಸಂಶಯ ವೃಂಟಾದಾಗ ಹಸ್ತಪಾದಾದಿ ವಿಶೇಷದರ್ಶನದಿಂದ ಗುಣ ಉಪಾಯಮ್ ಎಂಬ ಸಂಶಯ ವಿರೋಧಿ ಜ್ಞಾನವುಂಟಾಗುವುದು ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷನಿರ್ಣಯ. ವಿಷಯಮಾತ್ರ ದರ್ಶನದಿಂದ ಗೌರ್ವ ಗವಯಿ ವಾ ಎಂಬ ಸಂಶಯವೃಂಟಾದಾಗ ಸಾಸ್ಮಾ (ಗಂಗೆ ದೊಂಗಲು) ದರ್ಶನದಿಂದ ಗೌರವಾಯಮ್ ಎಂಬ ಸಂಶಯ ವಿರೋಧಿಯಾದ ಅವಧಾರಣಜ್ಞಾನವು ಅನುಮಾನ



ನಿರ್ಣಯ. 3. ವಿಮರ್ಶಪೂರ್ವಕ ಪ್ರಮಾಣಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನ. 4. (ಮಾಮಾಂಸಕ ಮತದಲ್ಲಿ) ಐದು ವಿಧ ಅಧಿಕರಣಾಂಗಗಳಿಲ್ಲದುದು. ವಿಷಯ; ವಿಷಯ; ಪೂರ್ವಪಕ್ಷ; उत्तर; ನಿರ್ಣಯ: ಇವು ಐದು ಅಧಿಕರಣಾಂಗಗಳು. 5. ನ್ಯಾಯಾಸ್ಥಾನದ ತೀರ್ಪು, ನ್ಯಾಯಮೂರ್ತಿಯು ಕೊಡುವ ಸತ್ಯ ತೀರ್ಮಾನ. "सर्वज्ञस्याप्येकाकिनो निर्णय-भ्युपगमो दोषाय" माल० १।

**ನಿರ್ಣಯನ ನಿರ್ಣಯನ** (ನಂ) "ನಿರ್ಣಯ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ನಿರ್ + ಣಿ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (३-३-११५)।

**ನಿರ್ಣಯಕ ನಿರ್ಣಯಕ** (ವಿಂ) ನಿರ್ಣಯವನ್ನು ಮಾಡುವ, ಒಂದು ರೀತಿಯಾಗಿ ವ್ಯವಸ್ಥೆಗೊಳಿಸುವ, ಬಗೆಹರಿಸುವ. ನಿರ್ + ಣಿ (ಪ್ರಾಪಣ) + ಣಿ "ಲ್ಯುಟ್" (३-३-११३)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಟಾಪ್" (४-१-४)। -ಯಿಕಾ -ಯಿಕಾ.

**ನಿರ್ಣಯಕ ನಿರ್ಣಯಕ** (ವಿಂ) 1. ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್ + ಣಿ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಕ್ತಃ" (३-२-१०२)। "तं धूपाख्यानकेशान्तं तोयनिर्णय-पाणयः। आकल्पसाधनैस्तैस्तैरुपसेदुः प्रसाधकाः" रघु० १७-२२। 2. ಕಳೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿವಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ (ಅಪವಾದ).

**ನಿರ್ಣಯಕ ನಿರ್ಣಯಕ** (ವಿಂ) ತೋರಿಸುವವನು, ಶುದ್ಧ ಮಾಡಿದವನು, ನಿರ್ + ಣಿ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಕ್ತವತುಃ" (३-२-१०२)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಟಾಪ್" (४-१-६)। -ವತಿ -ವತಿ.

**ನಿರ್ಣಯಕ ನಿರ್ಣಯಕ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶುದ್ಧ ಮಾಡುವವು, ತೋರಿಸುವವು. ನಿರ್ + ಣಿ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಕ್ತಾ" (३-३-९४)। 2. ಪರಿಹರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವು, ನಿವಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವು. "वृद्धातिक्रमसंभृतस्य महतो निर्णयक्ये पाप्मनः" म० वी० ४-२५।

**ನಿರ್ಣಯಕ ನಿರ್ಣಯಕ** (ವಿಂ) 1. ನಿರ್ಣಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೀರ್ಮಾನಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್ + ಣಿ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಕ್ತಃ" (३-२-१०२)। 2. ನಿರ್ಣಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "निर्णयितव्यवहारे तु प्रमाणमफलं भवेत्। लिखितं साक्षिणो वापि पूर्वमावेदितं न चेत्"। "न्यायनिर्णयितसारत्वान्निरपेक्षमिवागमे" किरा० ११-३९।

**ನಿರ್ಣಯಕ ನಿರ್ಣಯಕ** (ಪುಂ) 1. ತೋರಿಸುವವು, ಶುದ್ಧ ಮಾಡುವವು. ನಿರ್ + ಣಿ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಕ್ತಃ" (३-३-१८)। 2. ನಿವಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವು, ಪರಿಹರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವು, ಹೋಗಲಾಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವು, ಕಳೆದುಕೊಳ್ಳುವವು.

ವುದು. "दानेन वधनिर्णयं सपदिनामशवतुवन्" मनु० ११-१३९।

**ನಿರ್ಣಯಕ ನಿರ್ಣಯಕ** (ಪುಂ) 1. ರಜಕ, ಅಗಸ. ನಿರ್ + ಣಿ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಕ್ತಃ" (३-३-११३)। 2. ತೋರಿಸುವವನು, ಶುದ್ಧ ಮಾಡುವವನು.

**ನಿರ್ಣಯಕ ನಿರ್ಣಯಕ** (ನಂ) 1. ತೋರಿಸುವವು, ಶುದ್ಧ ಮಾಡುವವು. ನಿರ್ + ಣಿ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (३-३-११५)। 2. (ಪಾಪ) ಪರಿಹರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವು. 3. (ದೋಷ) ನಿವಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವು. 4. (ಅಪವಾದ) ಹೋಗಲಾಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವು.

**ನಿರ್ಣಯಕ ನಿರ್ಣಯಕ** (ವಿಂ) 1. ನಿರ್ಣಯಿಸುವವನು, ತೀರ್ಮಾನಿಸುವವನು. ನಿರ್ + ಣಿ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಕ್ತಃ" (३-३-११३)। 2. ನಿರ್ಣಯಿಸುವವನು, ನಿಶ್ಚಯಿಸುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಟಾಪ್" (४-१-५)। ನಿರ್ಣಯಕ ನಿರ್ಣಯಕ.

**ನಿರ್ಣಯಕ ನಿರ್ಣಯಕ** (ಪುಂ) 1. ತಿರಸ್ಕರಿಸುವವು, ಅಂಗೀಕರಿಸದೆ ಹಿಂತಿರುಗಿಸುವವು. ನಿರ್ + ಣಿ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಕ್ತಃ" (३-३-१८)। 2. ಕದಲಿಸುವವು. 3. ಹೊರಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವವು, ಹೊರಕ್ಕೆ ದಬ್ಬುವವು. 4. ಪರಿಹರಿಸುವವು, ದೂರಮಾಡುವವು. "ಲ್ಯುಟ್" (३-३-११५)। -ನೋದನಮ್ -ನೋದನಮ್.

**ನಿರ್ಣಯಕ ನಿರ್ಣಯಕ** (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್ + ದಹ (ಮಸ್ಮೀಕರಣ) "ಕ್ತಃ" (३-२-१०२)। "निजांशुनिर्दग्ध-मदङ्गमस्मभिर्मुधा विधुर्वञ्छति लाञ्छनोन्मृजाम्" नैष० ९-१४६।

**ನಿರ್ಣಯಕ ನಿರ್ಣಯಕ** (ವಿಂ) 1. ದಯೆಯಿಲ್ಲದವನು, ಕನಿಕರವಿಲ್ಲದವನು. 2. ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ. 3. ಮತ್ತೊಬ್ಬನಲ್ಲಿ ದೋಷವನ್ನು ಹೇಳಿ ಸಂತೋಷಪಡುವವನು. "निर्दस्तु दयाशून्ये कथितो निष्प्रयोजने। परापवादरक्ते च वाच्य-लिङ्गोऽप्यमिष्यते" मेदि०।

**ನಿರ್ಣಯಕ ನಿರ್ಣಯಕ** (ವಿಂ) ದಂಡಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದವನು, ಶಿಕ್ಷೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದವನು.

**ನಿರ್ಣಯಕ ನಿರ್ಣಯಕ** (ವಿಂ) 1. ದಯೆಯಿಲ್ಲದ, ಕನಿಕರವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಾ ದಯಾ ಯಸ್ಮಾತ್। "अस्याः पीनस्तनव्याप्ते हृदये-स्मासु निर्दये" नैष० २०-३५। 2. ದಯೆಗೆ ಅರ್ಹನಲ್ಲದ, ದಯೆಯಿಡಲು ಯೋಗ್ಯನಲ್ಲದ. "ज्ञातिसम्बन्धिभिस्त्वेते त्यक्तव्याः कृतलक्षणाः। निर्दया निनमस्कारास्तन्मनोरनु-शासनम्" मनु० ९-२३९। (अव्य०) 3. ದಯೆಯಿಲ್ಲದೆ, ಕನಿಕರವಿಲ್ಲದೆ. "न प्रहृतमलमस्मि निर्दयं विप्र इत्यभिभव-त्यपि त्वयि" रघु० ११-८४।



**ನಿರ್ದರ ನಿರ್ದರ** (ಪುಂ) 1. ಗಿರಿನದಿ, ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ಹರಿಯುವ ಪ್ರವಾಹ. (ನಂ) 2. ಸಾರ, ಸತ್ತ್ವ, ತಿರುಳು. 3. ಅತಿಶಯ. "ನಿರ್ದರ ನಿರ್ದರೇ ಸಾರೇಜ್ಯವತ್ ಕಠಿನೇಶ್ವರೇ" ಮೇದಿಂ. (ವಿಂ) 4. ಭಯವಿಲ್ಲದ. ನಿರಂತರ ದರೋ ಯಸ್ಮಾತ್. 5. ಕಠಿನವಾದ, ಕರ್ಕಶವಾದ. "ಧ್ಯಾನನಿರ್ದರಶೀಲೇನ ವಿನಿಶ್ಚಯಿಸಿತಧಾತುನಾ" ರಾಮಾಂ. 6. ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದ, ನಾಚಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. 7. ಮರುಕವಿಲ್ಲದ, ದಯೆಯಿಲ್ಲದ.

**ನಿರ್ದಲನ ನಿರ್ದಲನ** (ನಂ) ಸೀಳುವುದು, ಹೋಳುವುದು ವುದು, ತುಂಡುಮಾಡುವುದು.

**ನಿರ್ದಲಿತ ನಿರ್ದಲಿತ** (ವಿಂ) ಒಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೀಳಲ್ಪಟ್ಟ. "ದಾರುಣಸಮಾರಂಭದೇವದುರ್ವಿಲಾಸಪರಿಣಾಮದುಃಖನಿರ್ದಲಿತಮಾನಸಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೬.

**ನಿರ್ದಶ ನಿರ್ದಶ** (ವಿಂ) ಹತ್ತು ದಿನಗಳಿಗೂ ಮೀರಿದ, ಹತ್ತು ದಿನಗಳು ಕಳೆದಿರುವ. ನಿರಂತರ ದಶ ದಿನಾನಿ ಯಸ್ಯ.

**ನಿರ್ದಶನ ನಿರ್ದಶನ** (ವಿಂ) ದಂತವಿಲ್ಲದವನು, ಹಲ್ಲಿಲ್ಲದವನು. ನಿರಂತರ ದಶನಾ ಯಸ್ಯ.

**ನಿರ್ದಸ್ಯ ನಿರ್ದಸ್ಯ** (ವಿಂ) ಬೋರರಿಲ್ಲದ, ಕಳ್ಳರಿಲ್ಲದ. ನಿರಂತರ ದಸ್ಯುರಸ್ಮಾತ್. "ನಿರ್ದಸ್ಯುರಭವಲೋಕಃ" ರಾಮಾಂ.

**ನಿರ್ದಹನ ನಿರ್ದಹನ** (ಪುಂ) 1. ಗೇರುಮರ, ನಿದರಾ ದಹತಿ—ನಿರ್ + ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣ) "ಸ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪). (ವಿಂ) 2. ಬೆಂಕಿಯಿಲ್ಲದ. ನಿರಂತರ ದಹನೋ ಯಸ್ಮಾತ್. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ದಹನಿ —ದಹನೀ. 3. ಕುರಟಗೆ ಗಿಡ.

**ನಿರ್ದಾತು ನಿರ್ದಾತು** (ವಿಂ) 1. ಬೆನ್ನಾಗಿ ದಾನಮಾಡುವವನು, ಕೊಡುಗೆಯುಳ್ಳವನು. ನಿರ್ + ತು ದಾನ್ (ದಾನ) "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩). 2. ಬೆನ್ನಾಗಿ ಕತ್ತರಿಸುವವನು, ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡುವವನು. ನಿರ್ + ದೌ (ಅವಲಂಛನೆ) "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩). 3. ಬೆನ್ನಾಗಿ ತೋರಿಸುವವನು. ನಿರ್ + ದೈಪ್ (ಶೋಧನೆ) "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩). "ಯಥೋದ್ಧರತಿ ನಿರ್ದಾತಾ ಕಕ್ಷಂ ಧಾನ್ಯಂ ಚ ರಕ್ಷತಿ" ಮನುಂ ೭-೧೧೦.

**ನಿರ್ದಾರಿತ ನಿರ್ದಾರಿತ** (ವಿಂ) 1. ಸೀಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೋಳಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್ + ದೃ (ವಿದಾರಣ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). 2. ತೆರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕ್ರೋಧಾಕ್ರಾಂತಃ ಕೂರನಿರ್ದಾರಿತಾಕ್ಷಃ ಪ್ರೇಕ್ಷಾಂಚಕ್ರೇ ನೈವ ಕಿಂಚಿನ್ಮದಾನ್ಯಃ" ಮಾಘಂ ೧೮-೨೮.

**ನಿರ್ದಿಗ್ಧ ನಿರ್ದಿಗ್ಧ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಷ್ಠನಾದ, ಬಲಶಾಲಿಯಾದ. ನಿರ್ + ದಿಹ (ಉಪಚಯ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨). "ಅಥಾಸಲೋ ಬಲಿ. ನಿರ್ದಿಗ್ಧೋ ಮಾಸಲಶ್ಚೋಪಚಿತಃ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ.

2. ಲೇಪನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್ + ವಿಹ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨).

**ನಿರ್ದಿಶತ್ ನಿರ್ದಿಶತ್** (ವಿಂ) 1. ತೋರಿಸುತ್ತಿರುವ. ನಿರ್ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). 2. ನಮೂದಿಸಿ ಹೇಳುತ್ತಿರುವ, ತಪಶೀಲುವಾರಾಗಿ ತೋರಿಸುತ್ತಿರುವ.

**ನಿರ್ದಿಶ್ಯಮಾನ ನಿರ್ದಿಶ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ತೋರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿರ್ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪). 2. ವೈಯಕ್ತಿಕವಾಗಿ ತೋರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ತಪಶೀಲುವಾರಾಗಿ ತೋರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

**ನಿರ್ದಿಷ್ಟ ನಿರ್ದಿಷ್ಟ** (ವಿಂ) 1. ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಂ ಕುಲಪತಿನಾ ಸ ಪರ್ಣಶಾಲಾಮಧ್ಯಾಸ್ಯ ಪ್ರಯತಪರಿಗ್ರಹದ್ವಿतीयಃ" ರಘುಂ ೧-೯೫. 2. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ನಮೂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವೈಯಕ್ತಿಕವಾಗಿ ಸೂಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿರ್ದಿಷ್ಟವಿಷಯಂ ಕಿಂಚಿದ್ವಿಧಪಾತ್ತವಿಷಯಂ ತಥಾ" ಹರಿವಂ.

**ನಿರ್ದೇಶ ನಿರ್ದೇಶ** (ಪುಂ) 1. ತೋರಿಸುವುದು. ನಿರ್ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಶನ್" (೩-೩-೧೮). 2. ಆಜ್ಞೆ, ಆಪ್ತಕೆ. "ಯುಯಂ ವೈ ಧರ್ಮರಾಜಸ್ಯ ಯದಿ ನಿರ್ದೇಶಕಾರಿಣಃ" ಭಾಗಂ ೬-೧-೩೮. 3. ಕಥನ, ಹೇಳುವುದು. "ಓಂ ತತ್ಸದಿತು ನಿರ್ದೇಶಃ ಬ್ರಹ್ಮಣಸ್ತ್ರಿವಿಧಃ ಸ್ಮೃತಃ" ಗೀತಾ ೧೭-೨೩. ಶ್ರೀ ರಾಮಾನುಜ ಭಾಷ್ಯದಲ್ಲಿ "ನಿರ್ದೇಶ" ಪದಕ್ಕೆ ನಾಮವಾಚಕ ಶಬ್ದವೆಂದು ಅರ್ಥಮಾಡಲಾಗಿದೆ. 4. ಸಲಹೆ, ಉಪದೇಶ. 5. ವೇತನ, ಕೂಲಿ. "ಕಾಲಮೇವ ಪ್ರತೀಕ್ಷೇತ ನಿರ್ದೇಶಂ ಭೂತಕೋ ಯಥಾ". 6. ಪರಿಸರ, ಹತ್ತಿರ, ಸಾಮೀಪ್ಯ. (ವಿಂ) 7. ದೇಶ ದಿಂದ ಹೊರಟುಹೋದ. ನಿರಂತರ ದೇಶಾತ್.

**ನಿರ್ದೇಶಕ ನಿರ್ದೇಶಕ** (ವಿಂ) 1. ಆಜ್ಞೆಮಾಡುವವನು, ಆಪ್ತಕೆಮಾಡುವವನು. ನಿರ್ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಶ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩). 2. ತೋರಿಸುವವನು. 3. ಹೇಳುವವನು. 4. ಉಪದೇಶಿಸುವವನು. 5. ಸಲಹೆಗಾರ.

**ನಿರ್ದೇಷ್ಟ ನಿರ್ದೇಷ್ಟ** (ವಿಂ) 1. ಆಜ್ಞೆಮಾಡುವವನು, ಆಪ್ತಕೆಮಾಡುವವನು. ನಿರ್ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩). 2. ಉಪದೇಶಿಸುವವನು. 3. ತೋರಿಸುವವನು. 4. ಹೇಳುವವನು. 5. ಸಲಹೆ ಕೊಡುವವನು. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫). —ವೇದಿ —ದೇಶ್ಯ.

**ನಿರ್ದೋಷ ನಿರ್ದೋಷ** (ವಿಂ) ದೋಷರಹಿತವಾದ. ನಿರಂತರ ದೋಷೋ ಯಸ್ಮಾತ್. "ನಿರ್ದೋಷಂ ದರ್ಶಯಿತ್ವಾ ತು ಸದೋಷಂ ಯಃ ಪ್ರಯಚ್ಛತಿ. ಸ ಮೂಲ್ಯಾದ್ವಿಗುಣಂ ದಾಪ್ಯೋ ವಿನಯಂ ತಾವದೇವ ತು".



“ನಿರ್ದೋಷಮಪಿ ವಿಸ್ತಾರಂ ದೋಷಯೋಜಯತೇ ನೃಪಃ” ಪಂಚತಂ  
೨-೧೨೩।

**ನಿರ್ದಂಡ ನಿರ್ವೃಂದ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ದ್ವಂದ್ವರಹಿತನಾದ, ಸುಖ-  
ದುಃಖ ರೂಪವಾದ ದ್ವಂದ್ವವಿಲ್ಲದ, ತೀತ-ಉಷ್ಣ ರೂಪ  
ವಾದ ದ್ವಂದ್ವವಿಲ್ಲದ. 2. ಪುಣ್ಯ-ಪಾಪ ರೂಪವಾದ  
ಸಂಸಾರಿಕ ಸ್ವಭಾವದ ದ್ವಂದ್ವವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತೋ ದ್ವಂದ್ವಃ  
ಸಕಲಸಾಂಸಾರಿಕಸ್ವಭಾವಃ ಯಸ್ಮಾತ್ | “ತ್ರೈಗುಣ್ಯವಿಷಯಾ ವೇದಾ  
ನಿಸ್ತೈಗುಣ್ಯೋ ಭವಾರ್ಜುನ | ನಿರ್ದಂಡೋ ನಿಯತಸತ್ವಸ್ಥೋ ನಿಯೋಗಕ್ಷೇಮ  
ಆತ್ಮವಾನ್” ಗೀತಾ ೨-೪೫ | 3. ಎರಡಿಲ್ಲದ. 4. ಎರಡು  
ಪಕ್ಷಗಳಿಲ್ಲದ.

**ನಿರ್ಧನ ನಿರ್ಧನ** (ವಿಂ) ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. ನಿರ್ಧನಂ ಧನಂ  
ಯಸ್ಮಾತ್ | “ಅಕ್ರೋಧಂ ಶಿಕ್ಷಯಂತ್ಯನ್ಯಃ ಕ್ರೋಧನಾ ಯೇ ತಪೋಧನಾಃ |  
ನಿರ್ಧನಾಸ್ತೇ ಧನಾಯೇವ ಧಾತುವಾದೋಪದೇಶಿನಃ” ನೈಷಂ ೧೭-೮೦ |

**ನಿರ್ಧನತ್ವ ನಿರ್ಧನತ್ವ** (ನಂ) ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ಬಡತನ. ನಿರ್ಧನಸ್ಯ  
ಭಾವಃ “ತ್ವಃ” (೪-೧-೧೧೯) | “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯) |  
-ಧನತಾ -ಧನತಾ.

**ನಿರ್ಧಾರ ನಿರ್ಧಾರ** (ಪುಂ) ನಿಶ್ಚಯ, ತೀರ್ಮಾನ. ನಿರ್ಧಾರಯತೇ-  
ನೆನ - ನಿ + ಧೃಙ್ (ಅವस्थಾನೇ) “ಧೃನ್” (೩-೩-೧೨೧) |

**ನಿರ್ಧಾರಣ ನಿರ್ಧಾರಣ** (ನಂ) ನಿಶ್ಚಯ, ತೀರ್ಮಾನ,  
ನಿರ್ಧಾರಯತೇ - ನಿರ್ + ಧೃಙ್ (ಅವस्थಾನೇ) + ಣಿच् ಭಾವೇ  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) |

**ನಿರ್ಧಾರಣೀಯ ನಿರ್ಧಾರಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ನಿರ್ಧರಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ, ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ನಿಶ್ಚಯಿಸಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ, ತೀರ್ಮಾನ ಕೈಗೊಳ್ಳಲು ಅರ್ಹವಾದ. 3. ನಿಶ್ಚ  
ಯಿಸಬೇಕಾದ, ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ತೀರ್ಮಾನ ಮಾಡಬೇಕಾದ.  
ನಿರ್ + ಧೃಙ್ (ಅವस्थಾನೇ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) |  
“ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬) | ನಿರ್ಧಾರಿತವ್ಯಃ ನಿರ್ಧಾರಿತವ್ಯಃ |

**ನಿರ್ಧಾರಯಿತ್ವ ನಿರ್ಧಾರಯಿತ್ವ** (ವಿಂ) 1. ನಿಶ್ಚಯಿಸು  
ವವನು. 2. ತೀರ್ಮಾನ ಮಾಡುವವನು, ತೀರ್ಪು  
ಹೊಡುವವನು. ನಿರ್ + ಧೃಙ್ (ಅವस्थಾನೇ) “ತೃಚ್”  
(೩-೧-೧೩೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಜಿಪ್” (೪-೧-೫) | -ಧಾರಯಿತ್ರಿ  
-ಧಾರಯಿತ್ರಿ.

**ನಿರ್ಧಾರಿತ ನಿರ್ಧಾರಿತ** (ವಿಂ) ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರ್ಧಾರಯತೇ  
- ನಿರ್ + ಧೃಙ್ (ಅವस्थಾನೇ) + ಣಿच् ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಃ”  
(೩-೨-೧೦೨) | “ನಿರ್ಧಾರಿತೋಽರ್ಥೇ ಲೇಖನೇ ಖಲೂಕ್ತವಾ ಖಲು  
ವಾಚಿಕಮ್” ಮಾಘಂ ೨-೭೦ |

**ನಿರ್ಧಾರ್ಯ ನಿರ್ಧಾರ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಡುವ.  
ನಿರ್ + ಧೃ (ಧಾರಣೆ) “ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪) | 2. ಅವಶ್ಯ

ವಾಗಿ ನಿಶ್ಚಯಿಸಬೇಕಾದ. 3. ತೀರ್ಮಾನ ಕೈಗೊಳ್ಳಲು  
ಯೋಗ್ಯವಾದ. 4. ಹೆಚ್ಚು ಸತ್ತ್ವಶಾಲಿಯಾಗಿ ಕೆಲಸ  
ಮಾಡುವವನು. “ನಿರ್ಧಾರ್ಯಃ ಕರ್ಮಕರ್ತಾ ಚ ಸಂಪನ್ನಃ ಸತ್ವ-  
ಸಂಪದಾ” |

**ನಿರ್ಧೃತ ನಿರ್ಧೃತ** (ವಿಂ) ನಿರಾಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ನಿರ್ + ಧೃಙ್ (ಕಂಪನೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) | “ಚಿರಂ  
ಯುವಾಕೂತಶತೈಃ ಕೃತಾರ್ಥನಶ್ಚಿರಂ ಸರೋಽಜ್ಞಿತಯಾ ಚ ನಿರ್ಧೃತಃ”  
ನೈಷಂ ೧೬-೧೦೮ |

**ನಿರ್ಧೃತ ನಿರ್ಧೃತ** (ವಿಂ) 1. ನಿರಸನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತಳ್ಳಿ  
ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್ + ಧೃಙ್ (ಕಂಪನೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) |  
“ಕೇಶಾಕರ್ಷಣನಿರ್ಧೃತಗೌರವಾ ಮಾ ಗಮಿಷ್ಯಸಿ” | 2. ತ್ಯಜಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. “ಅನಾಪ್ತಪುಣ್ಯೋಪಚಯೈ-  
ರ್ಧುರಾಪಾ ಫಲಸ್ಯ ನಿರ್ಧೃತರಜಾಃ ಸವಿತ್ರಿ” ಕಿರಾಂ ೩-೫ |  
3. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಉತ್ಸೇವ-  
ನಿರ್ಧೃತಮಹೀರಹಂ ಛವೈರ್ಜನಾವರುದ್ಧೋದ್ಧತಸಿನ್ಧುರಂಹಸಾಮ್” ಮಾಘಂ  
೧೨-೫೩ | 4. ಅಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕದಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಜ್ಞಾನ-  
ನಿರ್ಧೃತಕಲ್ಮಷಾಃ” ಗೀತಾ ೪-೧೭ | 5. ಹೆದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
“ಪುರಾಹಂ ವಾಲಿನಾ ರಾಮ ರಾಜ್ಯಾತ್ ಸ್ವಾದವರೂಪಿತಃ |  
ಪರಾಘಾಣಿ ಚ ಸಂಶ್ರಾವ್ಯ ನಿರ್ಧೃತೋಽಸ್ಮಿ ಬಲೀಯಸಾ” ರಾಮಾಂ |  
6. ಖಂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 7. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್ಧೃತನಿಗಮಾಂ-  
ಸ್ತತ್ರ ನೈಗಮಾನಪರಾಂತಜಾನ್” ಯಾದಂ ೨೨-೯೮ |

**ನಿರ್ಧೃತ ನಿರ್ಧೃತ** (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ತೊಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ.  
ನಿರತಂ ಧೃತಮ್ | “ನಿರ್ಧೃತೇ ಸತಿ ಹರಿಚಂದ್ರನೇ ಜಲೋದರಾ-  
ಪಾಂಡೋಗತಪರಭಾಗಯಾಙ್ಗನಾಯಾಃ” ಮಾಘಂ ೮-೫೧ |

**ನಿರ್ನಿಮೇಷ ನಿರ್ನಿಮೇಷ** (ವಿಂ) ರಿಪೆಯಾದದಿರುವ, ಮಿಟುಕ  
ದಿರುವ. “ವ್ಯುತ್ಥಿತೇಷು ವಿಮುಕ್ತೇಷು ವಾ ಸ್ವಯಂ ನಿರ್ನಿಮೇಷನಯನೇಷು  
ನಾಕಿಞ್” ಯಾದಂ ೧೭-೪೧ |

**ನಿರ್ಬಂಧ ನಿರ್ಬಂಧ** (ಪುಂ) 1. ಒತ್ತಾಯಮಾಡುವುದು,  
ಅವಶ್ಯವೆಂದು ಹೇಳಿ ಪಟ್ಟುಹಿಡಿಯುವುದು. ನಿರ್ + ಬಂಧ  
(ಬಂಧನೆ) ಭಾವೇ “ಬಂ” (೩-೩-೧೮) | “ಅವಸ್ತುನಿರ್ಬಂಧಪರೇ  
ಕಥಂ ನು ತೇ ಕರೋಯಮಾಮುಕ್ತವಿವಾಹಕೌತುಕಃ” ಕುಮಾಂ ೫-೬೬ |  
2. ಅತಿಶಯವಾದ ಪ್ರಯತ್ನ. “ಕಪಾಲಕುಂಡಲಾಕೋಪದುರ್ಜಾತಿ-  
ಜನಿತಾಪದಃ | ವಯಮಮ್ಯದ್ಭುತಾಃ ಕುಂಭಾಶ್ಚಿರ್ಬಂಧಾದಾರ್ಯಯಾನಯಾ”  
ಮಾಲತೀಂ ೧೦-೧೯ |

**ನಿರ್ಬಾಧ ನಿರ್ಬಾಧ** (ವಿಂ) 1. ಅಡ್ಡಿ ಅತಂಕಗಳಿಲ್ಲದ,  
ಅಡಚಣೆಯಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಾ ಬಾಧಾ ಯಸ್ಮಾತ್ | 2. ಉಪದ್ರವ  
ವಿಲ್ಲದ, ಹಿಂಸೆಯಿಲ್ಲದ, ಪೀಡೆಯಿಲ್ಲದ. 3. ವಿವಿಕ್ತವಾದ,  
ಯಾರ ಸಂಪರ್ಕವೂ ಇಲ್ಲದ.



**ನಿರ್ಮಯ ನಿರ್ಭಯ** (ವಿಂ) 1. ಭಯವಿಲ್ಲದ, ಹೆದರಿಕೆಯಿಲ್ಲದ.

ನಿರ್ಗತಂ ಭಯಂ ಯಸ್ಮಾತ್. "ನಿರ್ಮಯಂ ತು ಭವೇದಸ್ಯ ರಾಷ್ಟ್ರಂ ಬಾಹು-  
ಬಲಾಶ್ರಿತಮ್" ಮನು. ೧-೨೫೫. 2. ಆತಂಕವಿಲ್ಲದ, ನೆಮ್ಮದಿ  
ಯಿಂದಿರುವ. "ವಿತಾನತಾಮಾತಪನಿರ್ಮಯಾಸ್ತದಾ ಪಟಚ್ಚಿದಾ-  
ಕಾಲಿಕಪುಷ್ಪಜಾಃ ಸ್ರಜಃ" ನೈಷಂ ೧೪-೧೪.

**ನಿರ್ಮರ ನಿರ್ಭರ** (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅಧಿಕವಾದ, ಬಹಳ  
ವಾದ. ನಿಃಶೇಷೇಣ ಭರೋ ಭರಣಂ ಯತ್ರ. "ಜಗುಃ ಪುಣ್ಯಶ್ಲೋಕಂ  
ಪ್ರತಿನೃಪತಯಃ ಕಿಂತು ವಿದಧುಃ ಸ್ವನಿಶ್ವಾಸೇರ್ಮಿಹೃದಯಮುದಯ-  
ನ್ನಿರ್ಮರದಯಮ್" ನೈಷಂ ೧೪-೧೬. 2. ಗುರುವಾದ, ಭಾರ  
ವಾದ. "ಅಲಘುಪ್ರಸಾರಿತವಿಲೋಚನಾಂಜಲಿದ್ವಿತಪಿತಮಾಧವ-  
ರಸೋಧನಿರ್ಮರಃ" ಮಾಘಂ ೧೩-೪೮. (ನಂ) 3. ಅತಿಶಯ,  
ಹೆಚ್ಚು, ಅಧಿಕ. (ಅವ್ಯಂ) 4. ಅತಿಶಯವಾಗಿ, ಅಧಿಕ  
ವಾಗಿ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ. "ಪ್ರಿಯಾವಿಯೋಗಾದ್ವಿಧುರೋಽಪಿ ನಿರ್ಮರಂ  
ಕುತೂಹಲಾಕ್ರಾಂತಮನಾ ಮನಾಗಮತ್" ನೈಷಂ ೧-೧೧೯.

**ನಿರ್ಮತ್ಸನ ನಿರ್ಭತ್ಸನ** (ನಂ) 1. ಹೆದರಿಸುವುದು, ಗದರಿಸಿ  
ಸುವುದು. ನಿತರಾಂ ಮತ್ಸನಮ್. "ಧೈರ್ಯಮಭಿನದುದಿತಂ  
ಶಿಶುನಾ ಜನನಿನಿರ್ಮತ್ಸನವಿವೃದ್ಧಮನ್ಯುನಾ" ಮಾಘಂ ೧೪-೮೭.  
2. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸುವುದು, ತಿರಸ್ಕರಿಸುವುದು.

**ನಿರ್ಮತ್ಸಯತ್ ನಿರ್ಭತ್ಸಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಹೆದರಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಬೆದರಿಸುತ್ತಿರುವ. ನಿರ್+ಮತ್ಸ (ತರ್ಜನೆ)+ ಣಿच् "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪).  
2. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ, ತಿರಸ್ಕರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬).  
-ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

**ನಿರ್ಮತ್ಸಿತ ನಿರ್ಭತ್ಸಿತ** (ವಿಂ) 1. ಹೆದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗದರಿಸಿ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್+ಮತ್ಸ (ತರ್ಜನೆ)+ ಣಿच् "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨).  
2. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಶೋಕ-  
ನಿರ್ಮತ್ಸಿತಪದ್ಮರಾಗಮಾಕೃಷ್ಟಹೇಮಚುತಿಕರ್ಣಿಕಾರಮ್" ಕುಮಾಂ  
೩-೪೩.

**ನಿರ್ಮಸ್ಮಿತ ನಿರ್ಭಸ್ಮಿತ** (ವಿಂ) ಭಸ್ಮರಹಿತವಾಗಿ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. "ಗಾಙ್ಗೋಷನಿರ್ಮಸ್ಮಿತಶಾಂಭುಕನ್ಧರಾಸವರ್ಣಮರ್ಣಃ  
ಕಥಮನ್ಯಥಾಸ್ಯ ತತ್" ಮಾಘಂ ೧೨-೬೯.

**ನಿರ್ಮಾಗ್ಯ ನಿರ್ಭಾಗ್ಯ** (ವಿಂ) ಅದೃಷ್ಟಹೀನ, ದುರದೃಷ್ಟ  
ದವನು. ನಿರ್ಗತಂ ಭಾಗ್ಯಂ ಯಸ್ಮಾತ್.

**ನಿರ್ಮಿತ್ರ ನಿರ್ಭಿನ್ನ** (ವಿಂ) 1. ಒಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೇಳಲ್ಪಟ್ಟ.  
ನಿರ್+ಮಿಡಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨).  
"ದಂತಾಘನಿರ್ಮಿತ್ರಪಯೋದಮುನ್ಮುಖಾಃ ಶಿಲೋಚ್ಚಯಾನಾರುಹುಮೇಹೀಯಸಃ"  
ಮಾಘಂ ೧೨-೪೭. 2. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊರಗೆ  
ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪರವೃದ್ಧಿಭಿರಾಹಿತವ್ಯಥಃ ಸ್ಫುಟನಿರ್ಮಿತ್ರ-  
ದುರಾಶಯೋಷಮಃ" ಮಾಘಂ ೧೬-೨೩.

**ನಿರ್ಮೌಕ ನಿರ್ಭೀಕ** (ವಿಂ) ಭಯವಿಲ್ಲದ, ಹೆದರಿಕೆಯಿಲ್ಲದ.

ನಿರ್ಗತಾ ಭೀರಸ್ಯ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೪೪).

**ನಿರ್ಮುಗ್ಧ ನಿರ್ಭುಗ್ಧ** (ವಿಂ) 1. ತಿರುಚಲ್ಪಟ್ಟ, ವಕ್ರವಾಗಿ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್+ಭೂಜಿ (ಕೌಡೀಲೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). 2. ಬಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಒತ್ತ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅದುಮಲ್ಪಟ್ಟ. "ಏಕೀಕೃತಸ್ತ್ವವಿ ನಿರ್ಭಿಕ್ತ  
ಇವಾವಪೀಡಯ ನಿರ್ಮುಗ್ಧನಿರ್ಮುಗ್ಧಕುಚ್ಚುಡಮಲಯಾನಯಾ ಮೇ" ಮಾಲತೀಂ  
೬-೧೨.

**ನಿರ್ಮೃತಿ ನಿರ್ಭೃತಿ** (ವಿಂ) ಕೊಲಿಯಿಲ್ಲದ, ಸಂಭವವಿಲ್ಲದ.  
ನಿರ್ಗತಾ ಮೃತೀರಸ್ಯ.

**ನಿರ್ಮೇದ ನಿರ್ಭೇದ** (ಪುಂ) 1. ಒಡೆಯುವುದು, ಸೇಳುವುದು.  
2. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವುದು, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತಿಳಿಸುವುದು.  
ನಿರ್+ಮಿಡಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಘ" (೩-೩-೧೮).  
"ಅಹೋ, ನಿರ್ಮೇದಾದೇತೇಽಪಿ ಮಾಲವಿಕಾಯಾಮಯಮುಪನ್ಯಾಸಃ ಶಾಕ್ಯಯತಿ"  
ಮಾಲಂ ೪.

**ನಿರ್ಮೇಷ ನಿರ್ಭೇಷ** (ವಿಂ) 1. ಸೇಳಲ್ಪಡುವ, ಒಡೆಯಲ್ಪ  
ಡುವ. 2. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೊರಗೆಡಹ  
ಲ್ಪಡುವ. ನಿರ್+ಮಿಡಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಘ" (೩-೩-೧೨೪).

**ನಿರ್ಮಕ್ಷಿಕ ನಿರ್ಮಕ್ಷಿಕ** (ವಿಂ) 1. ನೋಣಗಳಿಲ್ಲದ  
(ಪ್ರದೇಶ). 2. ನಿರ್ಜನ ಪ್ರದೇಶ, ಏಕಾಂತವಾದ ಸ್ಥಳ.  
ನಿರ್ಗತಾ ಮಕ್ಷಿಕಾ ಯಸ್ಮಾತ್. (ಅವ್ಯಂ) 3. ನೋಣಗಳಿಲ್ಲದಿರು  
ವುದು, ನೋಣಗಳ ಅಭಾವ. ಮಕ್ಷಿಕಾಯಾ ಅಮಾವಃ.  
ಅವ್ಯಯಿಂ. 4. ಜನರಿಲ್ಲದಿರುವುದು, ಮನುಷ್ಯರ ಅಭಾವಃ.  
"ಕೃತಂ ಭವತಾ ನಿರ್ಮಕ್ಷಿಕಮ್" ಶಾಕುಂ ೨.

**ನಿರ್ಮತ್ಸರ ನಿರ್ಮತ್ಸರ** (ವಿಂ) ಮಾತ್ಸರ್ಯವಿಲ್ಲದವನು,  
ಅಸೂಯೆಯಿಲ್ಲದವನು, ಹೊಟ್ಟೆಕಿಚ್ಚಿಲ್ಲದವನು. ನಿರ್ಗತೋ  
ಮತ್ಸರೋ ಯಸ್ಮಾತ್.

**ನಿರ್ಮಯತ್ ನಿರ್ಮಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಮಥನಮಾಡುತ್ತಿರುವ,  
ಕಡೆಯುತ್ತಿರುವ. ನಿರ್+ಮಥೆ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪).  
2. ಧ್ವಂಸಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ, ನಾಶಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ.

**ನಿರ್ಮಥನ ನಿರ್ಮಥನ** (ನಂ) 1. ಮಥನಮಾಡುವುದು,  
ಕಡೆಯುವುದು. ನಿರ್+ಮಥೆ (ವಿಲೋಡನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪).  
2. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು, ಧ್ವಂಸಗೊಳಿಸಂ  
ವುದು. "ವಿನಿವೃತ್ತಿಃ ಏಷ ವೀರಶತಃ ಪೃತನಾನಿರ್ಮಥನಾತ್ವಯೋ-  
ಪಹೃತಃ" ತಂ ರಾಂ ೪-೮. 3. ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಕಡೆಯು  
ವುದು. 4. ಮದ್ಯನ, ಉಜ್ವಲವಿಕೆ, ತಿಕ್ಕಾಟ. "ಪರಿಮಲಿತ-  
ಪಾಡಲಿಮುಕ್ತುನಿರ್ಮಥನಬಹುಲಪರಿಮಲೋತ್ಪಿಡಂ ....."



ಮಾಲತೀಂ ೩ | (ವಿಂ) 5. ಕಡೆಯುವ ಮಂತ್ರು. 6. ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಕಡೆಯುವ ಅರಣ. ನಿರ್ಮಯತೇಜೇನ — ನಿರ್ + ಮಥೆ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) |

**ನಿರ್ಮಯನೀಯ ನಿರ್ಮಾಂಕನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಕಡೆಯಲ್ಪಡುವ. 2. ಕಡೆಯಬೇಕಾದ. 3. ಕಡೆಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ನಾಶಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 6. ನಾಶಪಡಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ನಿರ್ + ಮಥೆ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) | —ಮಥಿತವ್ಯಮ್ — ಮಂಥಿತವ್ಯಮ್.

**ನಿರ್ಮಯಿತ ನಿರ್ಮಾಂಕಿತ (ವಿಂ)** 1. ಕಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರ್ + ಮಥೆ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ತೈಸ್ತೇರಸೌ ನಿರ್ಮಯಿತೌ ವಿಭೂತಸ್ತಾಂಕೋಮಿತೌ ಬನ್ಧನಪೀಡನಾಘೈ:" ಯಾದಂ ೧೮-೧೦೦ | 2. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ನಿರ್ಮಯಿತವತ್ ನಿರ್ಮಾಂಕಿತವತ್ (ವಿಂ)** 1. ಮೊಸರನ್ನು ಕಡೆದವನು. 2. ನಾಶಪಡಿಸಿದವನು. ನಿರ್ + ಮಥೆ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨) | 3. ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಕಡೆದವನು.

**ನಿರ್ಮಯ ನಿರ್ಮಾಂಕ (ವಿಂ)** 1. ಕಡೆಯಲ್ಪಡುವ. 2. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ಧ್ವಂಸಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. ನಿರ್ + ಮಥೆ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಪ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) |

**ನಿರ್ಮಯಮಾನ ನಿರ್ಮಾಂಕಮಾನ (ವಿಂ)** ಕಡೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿರ್ + ಮನ್ಯ (ವಿಲೋಡನೆ) ಕರಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ನಿರ್ಮಯಮಾನಾದುದಧೇರಭೃದ್ವಿಘಂ ಮಹೋಲ್ಬಣಂ ಹಾಲಹಲಾಹ್ಲಮಗ್ರತ:" ಭಾಗಂ ೮-೭-೧೭ |

**ನಿರ್ಮಯನ ನಿರ್ಮಾಂಕನ (ನಂ)** 1. ಮಂಥನಮಾಡುವುದು, ಮೊಸರು ಕಡೆಯುವುದು. ನಿರ್ + ಮನ್ಯ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | "ಯಾನಿ, ಯಾನಿಹ ಗೀತಾನಿ ತದ್ವಾಲಚರಿತಾನಿ ಚ | ದಧಿನಿರ್ಮಯನೇ ಕಾಲೇ ಸ್ಮರಂತಿ ತಾನ್ಯಗಾಯತ" ಭಾಗಂ ೧೦-೯-೨ | 2. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. 3. ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಕಡೆಯುವುದು. (ವಿಂ) 4. ಮೊಸರು ಕಡೆಯುವ ಮಂತ್ರು. 5. ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಕಡೆಯುವ ಅರಣ. ನಿರ್ + ಮನ್ಯ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) |

**ನಿರ್ಮಯನೀಯ ನಿರ್ಮಾಂಕನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಕಡೆಯಲ್ಪಡುವ. 2. ಕಡೆಯಬೇಕಾದ. 3. ಕಡೆಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ನಾಶಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 6. ನಾಶಪಡಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ನಿರ್ + ಮನ್ಯ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) | —ಮನ್ಯಿತವ್ಯಮ್ — ಮಂಥಿತವ್ಯಮ್.

**ನಿರ್ಮಯ ನಿರ್ಮಾಂಕ (ವಿಂ)** 1. ಕಡೆಯಲ್ಪಡುವ. ನಿರ್ + ಮನ್ಯ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಪ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) | 2. ಕಡೆಯ ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಉತ್ಪಾದಿಸುವ (ಅರಣ). 3. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ.

**ನಿರ್ಮಯ ನಿರ್ಮಾಂಕ (ವಿಂ)** ಕೋಪವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಮಯ ಮನ್ಯು: ಯಸ್ಮಾತ್ | "ನ ನಿರ್ಮಯು: ಕ್ಷತ್ರಿಯೋಸ್ತಿ ಲೋಕೇ ನಿವಂಚನ ಸ್ಮೃತಮ್" ಭಾಂ ವನಂ ೨೭-೩೬ |

**ನಿರ್ಮಮ ನಿರ್ಮಮ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರಪಂಚದ ವ್ಯವಹಾರವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿರುವ, ಪ್ರಪಂಚದ ಸಂಬಂಧವನ್ನು ಬಿಟ್ಟಿರುವ. ನಿರ್ಮಮ ಮಮತಾ ಯಸ್ಯ | ಮಮೇತೇತದವ್ಯಯಂ ಮಮತಾವಾಚಿ | "ಮಾರುತಿ: ಸಾಗರಂ ತೀರ್ಣ: ಸಂಸಾರಮಿವ ನಿರ್ಮಮ:" ರಘುಂ ೧೨-೬೦ | "ನಿರಾಶೀನಿರ್ಮಮೋ ಭೂತ್ವಾ ಯುಧ್ಯಸ್ವ ವಿಗತಜ್ವರ:" ಗೀತಾ ೩-೩೦ | 2. ನಿಃಸ್ಪೃಹನಾದ, ಆಸೆಯನ್ನು ತೊರೆದಿರುವ. "ನಿರ್ಮಮೇ ನಿರ್ಮಮೋಽಪ್ಯು ಮಧುರಾಂ ಮಧುರಾಕೃತಿ:" ರಘುಂ ೧೫-೩೦ |

**ನಿರ್ಮಯಾ ನಿರ್ಮಯಾರ್ಥ (ವಿಂ)** 1. ಮರ್ಯಾದೆಯಿಲ್ಲದ, ಗಂಭೀರವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಮಯ ಮರ್ಯಾದಾ: | "ಕೃತಮನುಮತಂ ದೃಷ್ಟಂ ವಾ ಯೇರಿದಂ ಗುರುಪಾತಕಂ ಮನುಜಪಶುಭಿನಿರ್ಮಯಾದಿ-ಭವದ್ವಿರುದಾಯುಧೈ:" ವೇಣೀಂ ೩-೨೪ | 2. ಅವಿಧೇಯ. 3. ಎಲ್ಲೆಯಿಲ್ಲದ, ಗಡಿಯಿಲ್ಲದ.

**ನಿರ್ಮಲ ನಿರ್ಮಲ (ವಿಂ)** 1. ಸ್ವಚ್ಛವಾದ, ಕಶ್ಮಲವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಮಲ ಮಲೋ ಯಸ್ಮಾತ್ | "ವಿರೇಜಿರೇ ತನ್ವಿಕುರೋತ್ತರಾ: ಕಿರಾ: ಕ್ಷಣಂ ಗಲಗ್ನಿನಿರ್ಮಲವಾರಿವಿಪ್ರುಷಾಮ್" ನೈಷಂ ೧೫-೨೩ | 2. ದೋಷವಿಲ್ಲದ, ಕಳಂಕವಿಲ್ಲದ. "ಸಂಭೂತೋಪಕರಣೇನ ನಿರ್ಮಲಾಂ ಕರ್ತುಮಿಷ್ಟಮಭಿವಾಂಞಿತಾ ಮಯಾ" ಮಾಘಂ ೧೪-೭ | 3. ರಾಗದ್ವೇಷಾದಿ ದೋಷವಿಲ್ಲದ. "ಮನಸ್ತು ಸುಖದು:ಖಾನಾಂ ಮಹತಾಂ ಕಾರಣಂ ದ್ವಿಜ | ಜಾತೇ ತು ನಿರ್ಮಲೇ ಹ್ಯಸ್ಮಿನ್ ಸರ್ವಂ ಭವತಿ ನಿರ್ಮಲಮ್" ದೇವೀಭಾಂ | 4. ಪ್ರಕಾಶವಾದ, ಮಾಲಿನ್ಯವಿಲ್ಲದ. "ಅಗಸ್ತ್ಯಭಾಸಾ ದಿಶಿ ನಿರ್ಮಲತ್ವಿಷಿ" ನೈಷಂ ೯-೫೭ | 5. ಶುದ್ಧವಾದ, ಕಪಟವಿಲ್ಲದ. "ಇತ್ಯನಾವಿಲಮನೋಜಯಾ ಗಿರಾ ನಿರ್ಮಲಾಂ ನಿಜದಯಾಮಿವೋದ್ರಮನ್" ಯಾದಂ ೧೭-೧೨೯ | 6. ಪಾಪವಿಲ್ಲದ. "ನಿರ್ಮಲಾ: ಸ್ವಗಮಾಯಾಂತಿ ಸಂತ: ಸುಕೃತಿನೋ ಯಥಾ" ಮನುಂ ೮-೩೧೮ | (ನಂ) 7. ನಿರ್ಮಾಲ್ಯ. 8. ಅಭೃಕ, ಕಾಗೆಬಂಗಾರ.

**ನಿರ್ಮಲೀಕರಣ ನಿರ್ಮಲೀಕರಣ (ನಂ)** 1. ಶುದ್ಧವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. 2. ಸ್ವಚ್ಛವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. 3. ದೋಷವಿಲ್ಲದಂತೆ ಮಾಡುವುದು. 4. ಪ್ರಕಾಶವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು.



**ನಿರ್ಮಲೀಕೃತ ನಿರ್ಮಲೀಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ಶುದ್ಧವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ದೋಷವಿಲ್ಲದಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸ್ವಚ್ಛವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಪ್ರಕಾಶವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ನಿರ್ಮಲೀಮಸ ನಿರ್ಮಲೀಮಸ** (ವಿಂ) 1. ಕಶ್ಮಲವಿಲ್ಲದ. 2. ಶುದ್ಧವಾದ, ಪವಿತ್ರವಾದ. "ಪ್ರಾಜ್ಯಮಾಜ್ಯಮಸಕೃಷ್ಣಕೃತಂ ನಿರ್ಮಲೀಮಸಮಲಿಡ ಪಾವಕಃ" ಮಾಘಂ ೧೪-೨೫.

**ನಿರ್ಮಲೋಪಲ ನಿರ್ಮಲೋಪಲ** (ಪುಂ) ಸ್ವಚ್ಛಕಶಿಲೆ.

**ನಿರ್ಮಶಕ ನಿರ್ಮಶಕ** (ವಿಂ) ಸೊಕ್ಕಿಗಲ್ಲದ (ದೇಶ). ನಿರ್ಮತೋ ಮಶಕೋ ಯಸ್ಮಾತ್.

**ನಿರ್ಮಾನುಷ ನಿರ್ಮಾನುಷ** (ವಿಂ) ಮನುಷ್ಯರಿಲ್ಲದ (ದೇಶ), ಜನರಿಲ್ಲದ (ಪ್ರದೇಶ). ನಿರ್ಮತೋ ಮಾನುಷೋ ಯಸ್ಮಾತ್, ನಿರ್ ನಾಸ್ತಿ ಮಾನುಷೋ ಯತ್ರ ವಾ.

**ನಿರ್ಮಾಣ ನಿರ್ಮಾಣ** (ನಂ) 1. ಮಾಡುವುದು. 2. ರಚಿಸುವುದು. ನಿರ್ + ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). "ಯದೇತೇಽಸಂಜ್ಞತಾ ಭಾವಾ ಭೂತೇಂದ್ರಿಯಮನೋಗುಣಾಃ. ಯದಾಯತನ-ನಿರ್ಮಾಣೇ ನ ಶೇಕುಬ್ರಹ್ಮಾವಿತ್ತಮ" ಭಾಗಂ ೨-೫-೩೨. "ಫಲತು ನಿರ್ಮಾಣರಮಣೀಯತಾ" ಮಾಲತೀಂ ೧. 3. ಸೃಷ್ಟಿಸುವುದು. "ನಿರ್ಮಾಣಮೇವ ಹಿ ತದಾ ತವ ಲಾಲನೀಯಂ ಮಾ ಪೂತನಾತ್ವಮುಪಗಾಃ ಶಿವತಾತಿರೇವ" ಮಾಲತೀಂ ೯-೫೧. 4. ತಯಾರಿಸುವುದು. "ಅಲಂಭಿ ತುಙ್ಗಾಸನಸಂನಿವೇಶಾದಪೂರ್ವನಿರ್ಮಾಣವಿದಗ್ಧಯಾದರಃ" ನೈಷಂ ೧೫-೧೨. 5. ಬೆಳೆವಣಿಗೆ. "ಅಯಮಪ್ರಾಪ್ತನಿರ್ಮಾಣಃ" ರಾಮಾಂ. (ವಿಂ) 6. ನಿರ್ಮಿತವಾದ, ಉತ್ಪಾದಿತ. ನಿರ್ + ಮಾಡ್ ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩).

**ನಿರ್ಮಾತೃ ನಿರ್ಮಾತೃ** (ವಿಂ) 1. ಮಾಡುವವನು. ನಿರ್ + ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ತೃತ್" (೩-೧-೧೩೩). 2. (ಗ್ರಂಥ ಮೊದಲಾದವನ್ನು) ರಚಿಸುವವನು. 3. (ಮನೆ ಮೊದಲಾದವನ್ನು) ಕಟ್ಟುವವನು. 4. ಸೃಷ್ಟಿಸುವವನು. 5. ತಯಾರಿಸುವವನು. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫). -ಮಾತೃ-ಮಾತೃ.

**ನಿರ್ಮಾಥ ನಿರ್ಮಾಥ** (ಪುಂ) ಧ್ವಂಸಮಾಡುವುದು, ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. ನಿರ್ + ಮಥೆ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಥನ್" (೩-೩-೧೧೬). "ಬ್ರಹ್ಮಾಕ್ಷಯಾ ನಿಖಿಲಭುವನಸ್ತೋಮನಿರ್ಮಾಥಯೋಗಃ" ಮಂ ವೀಂ ೨-೨೫.

**ನಿರ್ಮಾಲ್ಯ ನಿರ್ಮಾಲ್ಯ** (ನಂ) 1. ದೇವರಿಗೆ ಧರಿಸಿ ವಿಸರ್ಜಿಸಿದ ಪುಷ್ಪ ಮೊದಲಾದವು, ಪೂಜಾನಂತರ ದೇವರಿಂದ ತೆಗೆದ ಪುಷ್ಪ. ನಿರ್ + ಮಲ್ (ಧಾರಣೆ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪). "ಅರ್ವಾಕ್ ವಿಸರ್ಜನಾದ್ಭವ್ಯಂ ನೈವೇದ್ಯಂ ಸರ್ವಮುಚ್ಯತೇ. ವಿಸರ್ಜಿತೇ ಜಗನ್ನಾಥೇ ನಿರ್ಮಾಲ್ಯಂ ಭವತಿ ಕ್ಷಣಾತ್" 2. ಉಪಯೋಗಿಸಿ

ತೆಗೆದುಹಾಕಿದ ಪುಷ್ಪ. "ಅಸ್ಯಾಕ್ಷಿಜಲಮಭಿ ಭೂಷಣೈಶ್ಚುನಾ-ಮಜ್ಜೇಭ್ಯೋ ಗುರುಭಿರಮಜ್ಜಿ ಲಜ್ಜಯೇವ. ನಿರ್ಮಾಲ್ಯೇಷ ಮಗುತೇ-ವಧೀರಿತಾನಾಮಪ್ಯುಚ್ಛೇರ್ಭವತಿ ಲಘೀಯಸಾಂ ಹಿ ಧಾಪ್ತಂ" ಮಾಘಂ ೬-೬೦. 3. ಉಳಿಕೆ, ಉಚ್ಚಿಷ್ಠ.

**ನಿರ್ಮಿತ ನಿರ್ಮಿತ** (ವಿಂ) 1. ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್ + ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ಆಸ್ಯಂ ಶೀತಮಯುಕ್ತ-ಮಂಡಲಗುಣಾನಾಕೃಷ್ಯ ತೇ ನಿರ್ಮಿತಂ ಶಕ್ತೇ ಸುಂದರಿ ಶರ್ವರೀಪರಿವೃಡ-ಸ್ತೇನೇಷ ದೋಷಾಕರಃ" ನೈಷಂ ೨೨-೧೪೫. "ತ್ವಷ್ಟಾ ನವಂ ನಿರ್ಮಿತಮಾತಪತ್ರಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೪೧. 2. ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಆಪ್ತಕಾಮ ಸೃಜಸಿ ತ್ರಿಜಗತ್ಕಿಂ ಕಿಂ ಭಿನತಿಸಿ ಯದಿ ನಿರ್ಮಿತಮೇವ" ನೈಷಂ ೨೧-೧೦೫. 3. ರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಯುವಾನಮಾಲೋಕ್ಯ ವಿದಗ್ಧಶಿಲಯಾ ಸ್ವಪಾಣಿಪಾಶೋರುಹನಾಲನಿರ್ಮಿತಃ" ನೈಷಂ ೧೬-೫೯. 4. ಉಂಟು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ತಮಿಮಂ ಕುರು ದಕ್ಷಿಣೇತರಂ ಚರಣಂ ನಿರ್ಮಿತ-ರಾಗಮೇಹಿ ಮೇ" ಕುಮಾಂ ೪-೧೯. 5. ರಚನೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ (ಗ್ರಂಥ). 6. ಕಲ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 7. ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ (ಮನೆ ಮುಂತಾದವು). 8. ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, "ಭಜತೇ ಖಲು ಷಣ್ಮುಖಂ ಶಿಖೀ ಚಿಕುರೇನಿರ್ಮಿತಬಹ್ಗರ್ಹಣಃ" ನೈಷಂ ೨-೩೩.

**ನಿರ್ಮಿತ ನಿರ್ಮಿತ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಾಡುವುದು, ತಯಾರಿಸುವುದು. ನಿರ್ + ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪). "ಜಾತಂ ಶಾತಕ್ರತವ್ಯಾಂ ಹರಿತಿ ವಿಹರತಃ ಕಾಕತಾಲೀಯಮಸ್ಯಾ-ಮಸ್ಯಾಮತ್ವಂಕಮತ್ಯಸ್ಥಿತಸಕಲಕಲಾನಿರ್ಮಿತೇನಿರ್ಮಲಸ್ಯ" ನೈಷಂ ೨೨-೧೩೯. 2. (ಗ್ರಂಥ ಮೊದಲಾದವನ್ನು) ರಚಿಸುವುದು. 3. ಸೃಷ್ಟಿಸುವುದು. 4. ಕಲ್ಪಿಸುವುದು. 5. ಉಂಟುಮಾಡುವುದು, ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡುವುದು.

**ನಿರ್ಮಿಯಮಾಣ ನಿರ್ಮಿಯಮಾಣ** (ವಿಂ) ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿರ್ + ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನತ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಮುಹೂರ್ತಮಾತ್ರಹೃದಯ-ವಿನಿಹಿತನಿರ್ಮಿಯಮಾಣವಲ್ಲಭಸಮಾಗಮಾ" ಮಾಲತೀಂ ೩.

**ನಿರ್ಮುಕ್ತ ನಿರ್ಮುಕ್ತ** (ಪುಂ) 1. ಪರೆಬಿಟ್ಟ ಸರ್ಪ, ಸೋಲೆಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟ ಹಾವು. ನಿರ್ + ಮುಕ್ತ (ಮೋಕ್ಷಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ನಿರ್ಮುಕ್ತಶೇಖರಗನಿವಿಶೇಷೇನಿಕೇತನೇಹ್ರ-ಮಿತಾಂತರಿಕ್ಷಮ್" ಯಾದಂ ೧೬-೧೨೩. (ವಿಂ) 2. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಹಿಮನಿರ್ಮುಕ್ತಯೋರ್ಯೋ ಚಿತ್ರಾಚಂದ್ರಮಸೋರಿವ" ರಘುಂ ೧-೪೬. 3. ಬಿಡುಗಡೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಂಧನದಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಪ್ರಾಪಂಚಿಕಸಂಬಂಧವನ್ನು ಬಿಟ್ಟಿರುವ. "ನಿರ್ಮುಕ್ತಸ್ತಯಕ್ತಸಂಜ್ಞೇ ಸ್ಯಾನ್ಮುಕ್ತಕಂಚುಕಭೋಗಿನಿ" ಮೇದಿಂ. "ನಿರ್ಮುಕ್ತಾಃ ಸರ್ವಸಂಜ್ಞಯೇ ಕೃತಾತಮಾನೋ ಯತ್ರತಾಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೫೯-೫೨.



**ನಿರ್ಮುಕ್ತಿ ನಿರ್ಮುಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಿಡುಗಡೆ. 2. ಸಂಸಾರ ಪಾಶದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಹೊಂದುವುದು. ನಿರ್ + ಮುಕ್ತ (ಮೋಕ್ಷಣ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)।

**ನಿರ್ಮುಟ ನಿರ್ಮುಟ** (ಪುಂ) 1. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. 2. ಜೋರ, ಕಳ್ಳ. 3. ವಸಸ್ಪತಿ, ಹೂವಿಲ್ಲದೆ ಫಲ ಬಿಡುವ ವೃಕ್ಷ. 4. ತೆರಿಗೆಯಿಲ್ಲದ ಮಾರುಕಟ್ಟೆ.

**ನಿರ್ಮೂಲ ನಿರ್ಮೂಲ** (ವಿಂ) 1. ಬುಡವಿಲ್ಲದ, ಆಧಾರ ವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತ ಮೂಲಮಾಧಾರೋ यस್ಯ। 2. ಬೇರಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತ ಮೂಲ ಬುಧನೋ यस್ಯ। "ಆರುಹ್ಯ ವೃಕ್ಷಾನಿರ್ಮೂಲಾನ್ ಗಜಃ ಪರಿರೂಜನ್ಶಿವ" ಭಾಂ. ಉದ್ಯೋಗಂ 94-೮। (ಅವ್ಯಂ) 3. ಬುಡವಿಲ್ಲದೆ, ಆಧಾರವಿಲ್ಲದೆ. "ನಿಃಶ್ವಾಸಾ ವದನ್ ದಹಂತಿ ಹೃದಯಂ ನಿರ್ಮೂಲಮುನ್ಮಥ್ಯತೇ ನಿद्रಾ ನೇತಿ ನ ದೃಶ್ಯತೇ ಪ್ರಿಯಮುಖಂ ನಕ್ತದಿವಂ ರುಚತೇ" ಅಮರಂ 92।

**ನಿರ್ಮೂಲನ ನಿರ್ಮೂಲನ** (ನಂ) 1. ಬುಡಸಹಿತ ಕೆತ್ತುಹಾಕು ವುದು. 2. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. "ಕದಾ ಶಂಭೋ ಭವಿಷ್ಯಾಮಿ ಕರ್ಮನಿರ್ಮೂಲನಕ್ಷಮಃ" ಭರ್ತಂ 3-೮9।

**ನಿರ್ಮುಟ ನಿರ್ಮುಟ** (ವಿಂ) ಜಿನ್ನಾಗಿ ತೊಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಜಿನ್ನಾಗಿ ಬರೆಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿಃ ನಿಃಶೇಷಂ ಮೃಟಃ। "ನಿಃಶೇಷಚ್ಯುತ-ಚಂದನಂ ಸ್ತನತಟಂ ನಿರ್ಮುಟರಾಗೋಘರೋ ನೇತ್ರೇ ದೂರಮನಂಜನೇ ಪುಲಕಿತಾ ತನ್ವೀ ತವೇಯಂ ತನುಃ" ಸಾಂ. ದಂ. 2।

**ನಿರ್ಮೋಕ ನಿರ್ಮೋಕ** (ಪುಂ) 1. ಬಿಡುಗಡೆ ಹೊಂದಿಸುವುದು. ನಿರ್ + ಮುಕ್ತ (ಮೋಕ್ಷಣ) "ಘ್" (3-3-1೮)। 2. ಹಾವಿನ ಪರೆ, ಹಾವಿನ ಸೋಲೆ. ಕರ್ಮಣಿ "ಘ್" (3-3-19)। "ಸ್ತನೋತ್ತರೀಯಾಣಿ ಭವಂತಿ ಸಜ್ಜಾನ್ನಿರ್ಮೋಕ-ಪ್ರದಾಃ ಫಣಿಭಿವಿಮುಕ್ತಾಃ" ರಘುಂ 16-17। 3. ಜಮ್, ತೋಗಲು. "ಮೃಗನಿರ್ಮೋಕವಸನಾಶ್ಚೀರವಲ್ಕಲವಾಸಸಃ" ಭಾಂ. ಅನುಂ 141-100। 4. ಯುದ್ಧಕವಚ. 5. ಆಕಾಶ. "ನಿರ್ಮೋಕೋ ಮೋಚನೇ ವ್ಯೋಮಿನಿ ಸನ್ನಾಹೇ ಸರ್ಪಕಚ್ಚುಕೇ" ಮೇದಿಂ. 6. ಸಾವರ್ಣಮನುವಿನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ನಿರ್ಮೋಕವಿರಜ-ಸ್ಕಾಢಾಃ ಸಾವರ್ಣಸ್ತನಯಾ ನೃಪ" ಭಾಗಂ ೮-13-6।

**ನಿರ್ಮೋಕ್ಷ ನಿರ್ಮೋಕ್ಷ** (ಪುಂ) ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ ಮೋಕ್ಷ, ವಿಮೋಚನೆ, ಬಿಡುಗಡೆ. ನಿತರಾಂ ಮೋಕ್ಷಃ। "ನ ಚೋಪಲೇಭೇ ಪೂರ್ವಾಮೃಗನಿರ್ಮೋಕ್ಷಸಾಧನಮ್" ರಘುಂ 10-2।

**ನಿರ್ಮೋಚನ ನಿರ್ಮೋಚನ** (ನಂ) ಬಿಡುಗಡೆಮಾಡಿಸುವುದು. ನಿತರಾಂ ಮೋಚನಮ್ — ನಿರ್ + ಮುಕ್ತ (ಮೋಕ್ಷಣ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

**ನಿರ್ಮೋಹ ನಿರ್ಮೋಹ** (ಪುಂ) 1. ರೈವತ ಮನುವಿನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. (ವಿಂ) 2. ಮೋಹವಿಲ್ಲದ, ಭ್ರಾಂತಿಯಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತೋ ಮೋಹೋ ಯಸ್ಮಾತ್।

**ನಿರ್ಯತ್ ನಿರ್ಯತ್** (ವಿಂ) ಹೊರಡುತ್ತಿರುವ, ಹೊರಗೆ ಬರುತ್ತಿರುವ. ನಿರ್ + ಇಙ್ (ಗತೌ) "ಶತ್" (3-2-124)। "ಅಸ್ಮಿನ್ ಮೃದುವಸನಗರ್ಭತದೀಯರನ್ಧ್ರನಿರ್ಯತ್ಸವನಶ್ರುತಿಸುಖಾದಿವ ನೋತ್ಸಹಂತೇ" ಮಾಘಂ 4-43। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-6)। -ಯತೀ -ಯತೀ. "ವರ್ಗಾದಿಗವಾಂ ಹುಂಕೃತಿಚಾರು ನಿರ್ಯತೀಮರಿ-ಮಂಧೋರೇಕ್ಷತ ಗೋಮತಲ್ಲಿಕಾಮ್" ಮಾಘಂ 12-41।

**ನಿರ್ಯನ್ತ್ರಣ ನಿರ್ಯನ್ತ್ರಣ** (ನಂ) 1. ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ, ನಿರ್ಬಂಧ ವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ನಿರ್ಬಂಧವಿಲ್ಲದ, ಅಡ್ಡಿ ಅತಂಕ ಗಳಿಲ್ಲದ, ಸ್ವತಂತ್ರ.

**ನಿರ್ಯಾಣ ನಿರ್ಯಾಣ** (ನಂ) 1. ಅನೇಯ ಕಡೆಗಣ್ಣು. ನಿರ್ಯಾತೃನೇನ — ನಿರ್ + ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। "ಅಪಾಙ್ಗದೇಶೋ ನಿರ್ಯಾಣಮ್" ಅಮಂ. "ಪ್ರತ್ಯನ್ಯದಂತಿ ನಿಶಿತಾಙ್ಕುಶದೂರಭಿನ್ನನಿರ್ಯಾಣನಿರ್ಯದಸೃಜಂ ಚಲಿತಂ ನಿಷಾದೀ" ಮಾಘಂ 4-41। 2. ಹಾಲು ಕರೆಯುವಾಗ ಹಸುವಿನ ಕಾಲಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ. "ಅಮ್ಯಾಜತೋಽಮ್ಯಾಗತತೂರ್ಣತರ್ಣಕಾ-ನ್ನಿರ್ಯಾಣಹಸ್ತಸ್ಯ ಪುರೋ ದುಘುಕ್ಷತಃ" ಮಾಘಂ 12-41। 3. ಮೋಕ್ಷ. 4. ಮರಣ. 5. ನಿರ್ಗಮನ, ಹೊರಗೆ ಹೊರಡುವುದು. "ನಿರ್ಯಾಣಿ ನಿರ್ಗಮೇ ಮೋಕ್ಷಗಜಾಪಾಙ್ಗಪ್ರದೇಶಯೋಃ" ಹೇಮಂ. 1।

**ನಿರ್ಯಾತ್ ನಿರ್ಯಾತ್** (ವಿಂ) ಹೊರಡುತ್ತಿರುವ, ಹೋಗು ತ್ತಿರುವ. ನಿರ್ + ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಶತ್" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-6)। -ಂತೀ -ಂತೀ. "ನಿರ್ಯಾಂತೀ ಮನ್ವಮೃತಿ ಜಪತಿ ಮಯಿ ಮತಿ ನ್ಯಸ್ಯ ಮಯೇವ ಭಕ್ತಃ" ನೆಪಂ 14-90।

**ನಿರ್ಯಾತ ನಿರ್ಯಾತ** (ನಂ) 1. ಹೊರಗೆ ಹೊರಡುವುದು. ನಿರ್ + ಯಾ ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-3-114)। (ವಿಂ) 2. ಹೊರಗೆ ಹೊರಟಿರುವ. ನಿರ್ + ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಕ್ತಃ" (3-4-92)। "ಶಯೋಪಾಂತನಿವಿಷ್ಟಸಸ್ಥಿತಸಖೀನೇತ್ರೋತ್ಸವಾ-ನಂದಿತೋ ನಿರ್ಯಾತಃ ಶನಕೇರಲೀಕವಚನೋಪನ್ಯಾಸಮಾಲೀಜನಃ" ಅಮರಂ 27।

**ನಿರ್ಯಾತನ ನಿರ್ಯಾತನ** (ನಂ) 1. ದ್ವೇಷವನ್ನು ತೀರಿಸಿ ಕೊಳ್ಳುವುದು. ನಿರ್ + ಯತ (ನಿಕಾರೋಪಸ್ಕಾರಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ದಾನ. 3. ಇಟ್ಟು ಕೊಂಡಿದ್ದ ವಸ್ತುವನ್ನು ಅದರ ಯಜಮಾನನಿಗೆ ಹಿಂತಿರುಗಿ ಸುವುದು. 4. ಸಾಲ ತೀರಿಸುವುದು. 5. ಮಾರಣ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. "ನಿರ್ಯಾತನಂ ವೈರಶುಡ್ಧೌ ದಾನೇ ನ್ಯಾಸಾರ್ಪಣೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ. 1।



**ನಿರ್ಯಾತಿ ನಿಯೋಫತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊರಡುವುದು.

2. ಮರಣ. ನಿರ್+ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-18)।

**ನಿರ್ಯಾತಿಸ್ತ ನಿಯೋಫತಿ** (ವಿಂ) ಹಿಂತಿರುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಇಟ್ಟು.

ಕೊಂಡಿದ್ದು ಅದರ ಯಜಮಾನನಿಗೆ ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟು.

ನಿರ್+ಯತ (ನಿಕಾರೋಪಸ್ಕಾರಯೋಃ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

"ನಿರ್ಯಾತಿಸ್ತಮಿದಂ ಭುಯಃ ತ್ವಜ್ಜನನ್ಯೇ ಮಯಾ ಸ್ವಯಮ್ | ಶ್ರವಣಾ-

ಭರಣದ್ವಂದ್ವಂ ಶೀತಲಾರ್ಕಯುಗಪ್ರಭಮ್" ಯಾದಂ 16-126।

**ನಿರ್ಯಾಮಿ ನಿಯೋಫಮ್** (ಪುಂ) ನಾವಿಕ, ಅಂಬಿಗ. "ಪೊತವಾಹೋ

ನಿಯಾಮಕಃ | ನಿರ್ಯಾಮಃ" ಅಮಿಂ ಚಿಂ |

**ನಿರ್ಯಾಸಿ ನಿಯೋಫಸಃ** (ಪುಂ) 1. ಮರದ ಹಾಲು, ಮರದ

ರಸ. ನಿರ್+ಯಸು (ಪ್ರಯತ್ನೇ) "ಘಃ" (3-3-18)।

"ಸೇವ್ಯಮಾನೋ ಸುಖಸ್ಪರ್ಶಃ ಶಾಲನಿರ್ಯಾಸಗಂಧಿಭಿಃ" ರಘುಂ

1-36। 2. ಕಷಾಯರಸ. 3. ಸ್ತವಿಸುವ ಜಲ,

ಸೋರುವ ನೀರು. 4. ಸಾರ, ಸ್ಥಿರಾಂಶ. "ಅವಕಿರತಿ

ನಿತಾಂತಂ ಕಾಂತಿನಿರ್ಯಾಸಮ್" ಮಾಘಂ 11-62।

**ನಿರ್ಯುಹಿ ನಿಯೋಫಹಃ** (ಪುಂ) 1. ದ್ವಾರ, ಬಾಗಿಲು. ನಿರ್+

ಊಹ (ವಿತರ್ಕೇ) "ಕಃ" (3-1-134)। ಪೃಷಂ |

2. ಕೇಶಪಾಶದ ಮೇಲೆ ಧರಿಸಿದ ಹೂವಿನ ಸರ.

3. ಕಷಾಯರಸ. 4. ಗಜದಂತ, ಮನೆಯ ಗೋಡೆಯಲ್ಲಿ

ಬಟ್ಟೆ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ತೂಗುಹಾಕಲು (ಇಡಲು)

ಹೊಡೆದಿರುವ ಅಸೆಯ ಕೊಂಬುಗಳಂತಿರುವ ಗೂಟ.

5. ನಿಯೋಫಸ, ಮರದ ರಸ. 6. ಚಾವಣಿ ಮೊದಲಾ

ದುವುಗಳ ಮೇಲೆ ಶಂಕುವಿನಂತೆ ತುದಿಯುಳ್ಳ ಅಲಂಕಾರದ

ಸಣ್ಣ ಗೋಪುರ. "ನಿರ್ಯುಹಃ ಶಿಖರೇ ದ್ವಾರೆ ನಿರ್ಯಾಸೇ ನಾಗ-

ದಂತಕೇ" ಮೇದಿಂ | "ದ್ವಾರ್ಯಾಪಿಡೇ ಕ್ವಾಥರಸೇ ನಿರ್ಯುಹೋ ನಾಗ-

ದಂತಕೇ" ಅಮಂ | "ರತಾಂತರೇ ಯತ್ರ ಗೃಹಾಂತರೇಷು ವಿತರ್ದಿನಿರ್ಯುಹ-

ವಿಡತ್ಕುನೀಡಃ" ಮಾಘಂ 3-55।

**ನಿರ್ಲಕ್ಷಣ ನಿರ್ಲಕ್ಷ್ಯಣ** (ವಿಂ) 1. ಶುಭಲಕ್ಷಣವಿಲ್ಲದ.

ನಿರ್ಗತಂ ಲಕ್ಷಣಂ ಯಸ್ಮಾತ್ | 2. ಯಾವ ಚಿಹ್ನೆಯೂ ಇಲ್ಲದ,

ಯಾವುದೊಂದು ಗುರುತೂ ಇಲ್ಲದ.

**ನಿರ್ಲಜ್ಜ ನಿರ್ಲಜ್ಜ** (ವಿಂ) ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದ, ನಾಚಿಕೆಯಿಲ್ಲದ.

ನಿರ್ಗತಾ ಲಜ್ಜಾ ಯಸ್ಮಾತ್ |

**ನಿರ್ಲಿಪ್ತ ನಿರ್ಲಿಪ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಲೇಪನ ಮಾಡಲ್ಪಡದ,

ಬಳಿಯಲ್ಪಡದ. ನಿರ್+ಲಿಪ (ಅಪದೇಹೇ) "ಕ್ತಃ"

(3-2-102)। 2. ಮಲಿನಮಾಡಲ್ಪಡದ, ಮಾಸಲ್ಪಡದ.

3. ತಟಸ್ಥನಾದ, ಉದಾಸೀನನಾದ, ಯಾವ ಪಕ್ಷವನ್ನೂ

ಸೇರದಿರುವ, ಯಾವ ಸಂಬಂಧವನ್ನೂ ಹೊಂದದಿರುವ.

"ನಿರ್ಘಾತಿಶ್ಚ ನಿರ್ಲಿಪ್ತೋ ನಿರೋಹೋ ನಿಧನಾಂತಕಃ" |

**ನಿರ್ಲಿನ್ ನಿಯೋಫನ** (ವಿಂ) ಕೆತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಛೇದನ ಮಾಡ

ಲ್ಪಟ್ಟು. ನಿರ್+ಲಿನ್ (ಛೇದನೇ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

"ನಿರ್ಲಿನ್ಲಿಲೋಪವನಾಮಪಸ್ಯದ್ಧುಃಸಂಚರೀಭೂತವಿಮಾನಮಾರ್ಗಮ್"

ಕುಮಾರಂ 13-35।

**ನಿರ್ಲಿಖನ ನಿರ್ಲಿಖನ** (ನಂ) 1. ಕೊಳೆ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು

ತೆಗೆಯುವುದು, ಕೊಳೆಯನ್ನು ಉಜ್ಜಿ ತೆಗೆಯುವುದು.

ನಿರ್+ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

(ವಿಂ) 2. ಕೊಳೆಯನ್ನು ತೆಗೆಯುವ ಕುಂಚ ಮೊದಲಾ

ದುದು. ನಿರ್+ಲಿಖ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-116)।

"ಜಿಹ್ವಾನಿರ್ಲಿಖನಂ ರೋಪ್ಯಂ ಸೌವರ್ಣಂ ವಾಕ್ಸಮೇವ ಚ" ಸುಶ್ರುತಂ

ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ 28-15।

**ನಿರ್ಲೇಪ ನಿರ್ಲೇಪ** (ನಂ) 1. ಕಮಲ, ತಾವರೆ. "ವಿಸಪ್ರಸೂನಂ

ರಾಜೀವಂ ನಿರ್ಲೇಪಂ ವಿಸನಾಮಿಜಮ್" ವೈಜಂ | (ವಿಂ) 2.

ದೋಷರಹಿತವಾದ, ಪವಿತ್ರವಾದ. 3. ಕಳಂಕವಿಲ್ಲದ.

4. ಮಾಲಿನವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತೋ ಲೇಪೋ ಯಸ್ಮಾತ್ | "ನಿರ್ಲೇಪಂ

ಕಾಂಚನಂ ಭಾಂಡಮದ್ವಿರೇವ ವಿಶುಷ್ಯತಿ" ಮನುಂ 4-112।

**ನಿರ್ವಕ್ತವ್ಯ ನಿರ್ವಕ್ತವ್ಯ** (ವಿಂ) ಅವಯವಾರ್ಥ ಹೇಳಿ

ವಿವರಿಸಲ್ಪಡುವ. ನಿರ್+ವಕ್ (ಪರಿಭಾಷಣೇ) "ತವ್ಯಃ"

(3-1-96) | ನಿರ್ವಚನೀಯಮ್ ನಿರ್ವಾಚ್ಯಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ ಇದೇ

ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ.

**ನಿರ್ವಚನ ನಿರ್ವಚನ** (ನಂ) 1. ಪದಗಳ ಅವಯವಾರ್ಥ

ವನ್ನು ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳುವುದು. ನಿರ್+ವಕ್ (ಪರಿಭಾಷಣೇ)

ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) | 2. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ. "ನ

ನಿರ್ಮನ್ಯುಃ ಕ್ಷತ್ರಿಯೋಸ್ತಿ ಲೋಕೇ ನಿರ್ವಚನಂ ಸ್ಮೃತಮ್" ಭಾಂ ವನಂ

29-36 | (ವಿಂ) 3. ಪ್ರತಿವಚನವಿಲ್ಲದ, ಉತ್ತರ

ವಿಲ್ಲದ. "ಯेषಾಂ ತಟಾಕಾನಿ ಮಹೋದಕಾನಿ ವಾಪ್ಯಶ್ಚ ಕ್ಷುಪಾಶ್ಚ

ಪ್ರತಿಶ್ರಯಾಶ್ಚ | ಅನ್ಯಸ್ಯ ದಾನಂ ಮಧುರಾ ಚ ವಾಣಿ ಯಸ್ಯ ತೇ

ನಿರ್ವಚನಾ ಭವಂತಿ" ಭಾಂ ವನಂ 20-3-40 | (ಅವ್ಯಂ)

4. ಮೌನವಾಗಿ, ಮಾತನಾಡದೆ. "ಸಾ ರಜ್ಜಯಿತ್ವಾ ಚರಣೌ

ಕೃತಾಶೀರ್ಮಾಲೀನಾಂ ತಾಂ ನಿರ್ವಚನಂ ಜಘಾನ" ಕುಮಾರಂ 7-19 |

**ನಿರ್ವಣ ನಿರ್ವಣ** (ವಿಂ) ವನದಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೋಗಿರುವ,

ಅರಣ್ಯವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಹೋಗಿರುವ. ನಿರ್ವಾಂತೋ ವನಾತ್ |

ಅಸಂಜ್ಞಾಯಾಮಪಿ ಣತ್ವಮ್ (6-4-4) | "ನಿರ್ವಣೋ ವ್ಯವೃತ್ತೇ ವ್ಯಾಘ್ರೋ

ನಿರ್ವಾಘ್ರಂ ಛಿಂತತೇ ವನಮ್" ಭಾಂ ಅಧ್ಯಾಯಂ 29-57 |

**ನಿರ್ವಪಣ ನಿರ್ವಪಣ** (ನಂ) 1. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. ನಿರ್+ಫ

ವಪ್ (ವಿಜಯಂತಾನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-1-114) |

2. ನಿವೇದನೆ, ಸಮರ್ಪಣೆ, ಆಹುತಿ, ಬಲಿ. 3. ವರ

ಮೊದಲಾದುದನ್ನು ನೀಡುವುದು, ಅನುಗ್ರಹಿಸುವುದು.



“ವಿಹಾಪನಂ ನಿರ್ವಪಣಂ ಸ್ಪರ್ಶನಂ ಪ್ರತಿಪಾಕನಮ್” ವೇಜಂ ।

4. ಪಾರ್ವಣಶ್ರಾದ್ಧದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಓಡಪ್ರದಾನ.

“ಅನಯೇವಾವೃತಾ ಕಾರ್ಯ ಪಿಂಡನಿರ್ವಪಣಂ ಸುತೇ” ಮನುಂ ೩-೨೪೮ ।

**ನಿರ್ವರ ನಿರ್ವರ** (ವಿಂ) 1. ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದ, ನಾಚಿಕೆಯಿಲ್ಲದ.

ನಿಗತೋ ವರೋ यस್ಯ । 2. ಭಯವಿಲ್ಲದ, ಹೆದರಿಕೆಯಿಲ್ಲದ.

3. ಸಾರಭೂತವಾದ. 4. ಕಠಿನವಾದ. “ನಿರ್ವರಂ ತು

ಗತತ್ರಪೇ । ಕಠಿಣೇ ನಿರ್ಮಯೇ ಸಾರೆ” ಹೇಮಂ ।

**ನಿರ್ವರ್ಣನ ನಿರ್ವರ್ಣನ** (ನಂ) 1. ದರ್ಶನ, ನೋಡುವುದು.

ನಿರ್ + ವರ್ಣ + ಣಿच् ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।

2. ಜ್ಞಾನಿ ಗಮನಿಸುವುದು, ಸೂಕ್ಷ್ಮರೀತಿಯಲ್ಲಿ ನೋಡು

ವುದು. “ನಿರ್ವರ್ಣನಂ ತು ನಿಧ್ಯಾನಂ ದರ್ಶನಾಲೋಕನೇಕ್ಷಣಮ್” ಅಮಂ ।

**ನಿರ್ವರ್ತಕ ನಿರ್ವರ್ತಕ** (ವಿಂ) ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನೆರವೇರಿಸು

ವವನು, ಕೆಲಸವನ್ನು ಪೂರ್ತಿಗೊಳಿಸುವವನು. ನಿರ್ + ವೃತು

(ವರ್ತನೆ) “ಫ್ಲುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) ।

**ನಿರ್ವರ್ತನ ನಿರ್ವರ್ತನ** (ನಂ) ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನೆರವೇರಿಸು

ವುದು, ಕೆಲಸವನ್ನು ಪೂರ್ತಿಯಾಗಿ ನಡೆಸುವುದು. ನಿರ್ + ವೃತು

(ವರ್ತನೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।

**ನಿರ್ವರ್ತನೀಯ ನಿರ್ವರ್ತನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ನೆರವೇರಿಸ

ಲ್ಪಡುವ, ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. ನಿರ್ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ)

“ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । 2. ನೆರವೇರಿಸಬೇಕಾದ,

ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ. “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬) ।

-ತೀತವ್ಯಃ - ತೀತವ್ಯಃ ।

**ನಿರ್ವರ್ತಿಸ ನಿರ್ವರ್ತಿಸ** (ವಿಂ) ನೆರವೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪೂರ್ತಿ

ಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಃ”

(೩-೨-೧೦೨) । “ಪ್ರಣತಭರತಮಕುಟತಟಪಟಿತಪಾಡುಕಾಗ್ರಾ-

ಮಿಷೇಕನಿರ್ವರ್ತಿಸರ್ವಲೋಕಯೋಗಕ್ಷೇಮ” ರಘುಂ ೧೦ । “ನಿರ್ವರ್ತಿಸ-

ಮಹಾರ್ಗಗುರುಹುಮಾನಃ” ಮಾಲತೀಂ ೮ ।

**ನಿರ್ವರ್ತಿಸ ನಿರ್ವರ್ತಿಸ** (ವಿಂ) 1. ನೆರವೇರಿಸಲ್ಪಡುವ,

ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ನಿರ್ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ)

“ಫ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪) । (ನಂ) 2. (ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರ

ದಲ್ಲಿ) ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಕರ್ಮಗಳಲ್ಲೊಂದು. “ಕರ್ಮನ್”

ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ನಿರ್ವಹಣ ನಿರ್ವಹಣ** (ನಂ) 1. ನಿಭಾಯಿಸುವುದು, ನಿರ್ವ

ಹಿಸುವುದು, ಶ್ರಮದಿಂದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಕೊನೆಮುಟ್ಟಿಸು

ವುದು, ವಿಘ್ನಗಳನ್ನು ದಾಟಿ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಡೆಸಿಕೊಂಡು

ಹೋಗುವುದು. ನಿರ್ + वह (ಪ್ರಾಪಣೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್”

(೩-೩-೧೧೫) । “ಕಾರ್ಕಶ್ಯಂ ಗಮಿತೇಽಪಿ ಚೇತಸಿ ತನು

ರೋಮಾಶ್ವಮಾಲಮ್ಬತೇ ದೃಷ್ಟೇ ನಿರ್ವಹಣಂ ಭವಿಷ್ಯತಿ ಕಥಂ ಮಾನಸ್ಯ

ತಸ್ಮಿನ್ ಜನೇ” ಅಮರಂ ೨೮ । 2. ಸಮಾಪ್ತಿ, ಕೊನೆ.

“ಯಾನ್ತಿ ನಿರ್ವಹಣಮಸ್ಯ ಸಂಸ್ಕೃತಿಕಲೇಶನಾಟಕವಿಡಂಬನಾವಿಧೇಃ”

ಮಾಘಂ ೧೪-೬೩ । 3. ನಾಟಕ ಮೊದಲಾದ ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯ

ಗಳಲ್ಲಿ ಇರಬೇಕಾದ ಪಂಚಸಂಧಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಈ ಸಂಧಿ

ಯಲ್ಲಿ ಮುಖಾದಿ ಸಂಧಿಗಳಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಕಥಾಭಾಗ

ಗಳು ಒಂದುಗೂಡಿ ಮುಖ್ಯ ಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿಯೊಡನೆ ಕಥೆಯು

ಸಮಾಪ್ತವಾಗುವುದು. “ಬೀಜವಂತೋ ಮುಖಾದಿರ್ಯಾ

ವಿಪ್ರಕೀರ್ಣಾ ಯಾಯಥಮ್ । ಏಕಾರ್ಥಮುಪನೀಯಂತೇ ಯತ್ರ ನಿರ್ವಹಣಂ

ಹಿ ತತ್” ದಶಕಂ ೧-೪೮ । “ತತ್ ಕಿಂ ನಿಮಿತ್ತಮೇತತ್

ಕುಕವಿಕೃತನಾಟಕಸ್ಯೇವ ಅನ್ಯನ್ಮುಖೇ ಅನ್ಯತ್ ನಿರ್ವಹಣೇ ಇತಿ”

ಮುद्रಾಂ ೬ ।

**ನಿರ್ವಾಚ್ಯ ನಿರ್ವಾಚ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಅವಯವಾರ್ಥ ಹೇಳಿ

ವಿವರಿಸಲ್ಪಡುವ. ನಿರ್ + ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) “ಫ್ಯತ್”

(೩-೧-೧೨೪) । 2. ದೋಷವಿಲ್ಲದ, ನಿಂದೆಗೆ ಅರ್ಹನಲ್ಲದ.

“ಸಖೀಘ್ರ ನಿರ್ವಾಚ್ಯಮಘಾಢ್ಯದ್ವೈಪಿತಂ ಪ್ರಿಯಾಕ್ಷುಸಂಘೇಷಮವಾಪ

ಮಾನಿನಿ” ಕಿರಾಂ ೮-೪೮ । 3. ಹೇಳಲು ಅರ್ಹನಲ್ಲದ.

**ನಿರ್ವಾಣ ನಿರ್ವಾಣ** (ನಂ) 1. ಸೌಖ್ಯ, ಆನಂದ, ಸಂತೋಷ.

ನಿರ್ + ವಾ (ಗತಿಗನ್ಧನಯೋಃ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) ।

“ಕುರ್ವಂತಿ ಚಾಮುತ್ಪತ್ತಂತಃ ಸ್ಮರಾರ್ತಸ್ವಲೋಕಸ್ತ್ರೀಗಾತ್ರನಿರ್ವಾಣಮತ್ರ”

ಮಾಘಂ ೪-೨೩ । 2. ಶಾಂತಿ, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ನೆಮ್ಮದಿ.

“ನಿರ್ವಾಣಂ ಸಮುಪಗಮೇನ ಯಚ್ಛತೇ ತೇ ಬೀಜಾನಾಂ ಪ್ರಭವ ನಮೋಽಸ್ತು

ಜೀವನಾಯ” ಕಿರಾಂ ೧೮-೩೯ । 3. ವಿನಾಶ, ಅಳಿವು.

“ಪುಂಸಾಮಲಂಧನಿರ್ವಾಣಜ್ಞಾನದೀಪಮಯಾತ್ಮನಾಮ್” ನೆಪಂ ೧೭-೩೧ ।

4. (ದೀವವು) ನಂದಿಹೋಗುವುದು, (ಬೆಂಕಿಯು) ಆರಿ

ಹೋಗುವುದು. “ಮನಸ್ವೀ ಪ್ರಿಯತೇ ಕಾಸಂ ಕಾರ್ಪಣ್ಯಂ ನ ತು

ಗಚ್ಛತಿ । ಅಪಿ ನಿರ್ವಾಣಮಾಪ್ನೋತಿ ನಾನಲೋ ಯಾತಿ ಸ್ಥಿತತಾಮ್”

ಹಿತೋ ೧-೧೩೩ । 5. ಶಾಶ್ವತವಾದ ಆನಂದ, ಎಂದೆಂದಿಗೂ

ಇರುವ ಪರಮ ಸುಖ, ಮೋಕ್ಷ. “ನಿರ್ವಾಣಮಪಿ ಮನ್ಯೇಽ-

ಹಮಂತರಾಯಂ ಜಯಪ್ರಿಯಃ” ಕಿರಾಂ ೧೧-೬೯ । 6. (ಬೌದ್ಧ

ಮತದಲ್ಲಿ) ದೇಹಾತ್ಮವಿನಾಶ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ ಅಳಿವು.

7. ಸಂಗಮ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು. 8. ಗಜಸ್ನಾನ,

ಆನೆಯು ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಇಳಿದು ಮಾಡುವ ಸ್ನಾನ. “ಅಸ್ತುತದಮಿ-

ವಾಲಾನಮನಿರ್ವಾಣಸ್ಯ ದಂತಿನಃ” ರಘುಂ ೧-೭೧ । 9. ನಿಧನ,

ಮರಣ. 10. ವಿರಾಮ, ನಿಲುಗಡೆ, ಬಿಡುವು, “ನಿರ್ವಾಣ-

ಮಸ್ತಂಗಮನೇ ನಿರ್ವೃತೋ ಗಜಮಜ್ಜನೇ । ಸತ್ಸಮೇಽಪ್ಯಪದಗೋ ಚ”

ಮೇಧಿಂ । 11. ಸೂರ್ಯನು ಅಸ್ತವಾಗುವುದು. (ವಿಂ)

12. ಆರಿಹೋದ, ನಂದಿಹೋದ, ಶಾಂತವಾದ (ಬೆಂಕಿ).

“ನಿರ್ವಾಣವೇರದಹನಾಃ ಪ್ರಶಮಾದರೀಣಾಂ ನಂದಂತು ಪಾಂಡುತನಯಾಃ

ಸಹ ಮಾಧವೇನ” ವೇಣೀಂ ೧-೭ । 13. ನಾಶಹೊಂದಿದ,



ಮರೆಯಾದ. 14. ಮೃತನಾದ. 15. ಅಸ್ತವನ್ನು ಹೊಂದಿದ. 16. ಮೋಕ್ಷಹೊಂದಿದ, ಸಂಸಾರಬಂಧನ ದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಹೊಂದಿದ. 17. ಶಾಂತವಾದ. ಸ್ತಬ್ಧ ವಾದ, ನಿಶ್ಚಲವಾದ. 18. ನಿಶ್ಚಲವಾದ.

**ನಿರ್ವಾಣಿನ್ ನಿರ್ವಾಣಿನ್** (ಪುಂ) ಜೈನ ತೀರ್ಥಂಕರ ರಲ್ಲೊಬ್ಬರು.

**ನಿರ್ವಾಣಿ ನಿರ್ವಾಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೈನರ ಶಾಸನದೇವತೆ, ಜಿನಶಾಸನದ ಅಧಿಷ್ಠಾತ್ಯ ದೇವತೆ. "ಕಂದರ್ಪಿ ನಿರ್ವಾಣಿ ಬಲಾ ಧಾರಿಣಿ ಧರಣಪ್ರಿಯಾ" ಅಶ್ವಿಂ ಚಿಂ.

**ನಿರ್ವಾತ ನಿರ್ವಾತ** (ಪುಂ) 1. ಹೊರಟುಹೋದ ಗಾಳಿ. ನಿರ್ಗತೋ ವಾತಃ. (ವಿಂ) 2. ಗಾಳಿಯಿಲ್ಲದ (ಪ್ರದೇಶ), ಗಾಳಿ ಬೀಸದಂತೆ ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ (ಜಾಗ). ನಿರ್ಗತೋ ವಾತೋ ಯಸ್ಮಾತ್. "ಪೊತೋ ದುಸ್ತರವಾರಿರಾಶಿತರಣೋ ದೀಪೋಽಪ್ಪ-ಕಾರಾಗಮೇ ನಿರ್ವಾತಿ ವ್ಯಜನಂ ಮದಾನ್ವಕರಿಣಾಂ ದರ್ಪಾಪಶಾನ್ತ್ಯೇ ಸೃಣಿಃ" ಹಿತೋಂ ೨-೧೬೫.

**ನಿರ್ವಾದಿ ನಿರ್ವಾದ** (ಪುಂ) 1. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. ನಿರ್+ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ವತ್" (೩-೩-೧೮). 2. ಅಪವಾದ. "ಕಿಮಾತ್ಮನಿರ್ವಾದಿಕಥಾಮುಪೇಕ್ಷೇ ಜಾಯಾಮದೋಷಾಮುತ ಸಂತ್ಯಜಾಮಿ" ರಘುಂ ೧೪-೩೪. 3. ವಿವಾದದ ನಿರ್ಣಯ, ವಾಗ್ವಾದದಲ್ಲಿ ಅಂಗೀಕೃತವಾದ ನಿರ್ಣಯ. ನಿತರಾಂ ವಾದಃ. (ಅವ್ಯಂ) 4. ವಾದಾಭಾವ, ವಾದವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

**ನಿರ್ವಾಪ ನಿರ್ವಾಪ** (ಪುಂ) 1. ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು, ಅಳಿಸುವುದು. ನಿರ್+ಛ್ ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನೇ) "ವತ್" (೩-೩-೧೮). "ಸ್ವಕಾಮಸಂಮೋಹಮಹಾನ್ವಕಾರನಿರ್ವಾಪ-ಮಿಚ್ಛತ್ರಿವ ದೀಪಿಕಾಮಿಃ" ನೆಪಂ ೧೪-೬೩. 2. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. 3. ಪಿತ್ತಗಲಿಗೆ ಮಾಡುವ ತರ್ಪಣ.

**ನಿರ್ವಾಪಿಣ ನಿರ್ವಾಪಿಣ** (ನಂ) 1. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. ನಿರ್+ಛ್ ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನೇ)+ಞಿಚ್ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫). 2. ಮಾರಣ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. 3. ದೀಪ ಅಥವಾ ಬೆಂಕಿ ಯನ್ನು ಆರಿಸುವುದು, -ಶಾಂತಗೊಳಿಸುವುದು, -ನಂದಿಸು ವುದು. "ದೀಪನಿರ್ವಾಪಿಣಾತ್ಪುಸಃ ಕೂಷ್ಮಾಂಡಚ್ಛೇದನಾತ್ ಸ್ತ್ರೀಯಃ". 4. ಮೈ ಉರಿತವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು. "ದಾಹ-ಪಾಕಜ್ವರವತಾಂ ಕಾರ್ಯಂ ನಿರ್ವಾಪಿಣಂ ಭವೇತ್" ಸುಶ್ರುತಂ. 5. ಹಸಿವು ಅಥವಾ ಬಾಯಾರಿಕೆಯನ್ನು ಶಮನಮಾಡು ವುದು. 6. ದುಃಖ ಅಥವಾ ಕಷ್ಟವನ್ನು ಕಡಮೆಮಾಡು ವುದು, -ಹಗುರಮಾಡುವುದು, -ಶಗ್ಗಿಸುವುದು. "ಕರ್ತ-ವ್ಯಾನಿ ಸ್ವಲ್ಪ ದುಃಖತೈಃ ದುಃಖನಿರ್ವಾಪಿಣಾನಿ" ತಂ ರಾಂ ೩.

**ನಿರ್ವಾಪಯತ್ ನಿರ್ವಾಪಯತ್** (ವಿಂ) 1. ದಾನಮಾಡಿಸು ತ್ತಿರುವ. ನಿರ್+ಛ್ ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನೇ)+ಞಿಚ್ "ಶತ್"

(೩-೨-೧೨೪). 2. ಕೊಲ್ಲುತ್ತಿರುವ. 3. ದೀಪ ಅಥವಾ ಬೆಂಕಿಯನ್ನು ಆರಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ದೇಹದ ಉರಿತವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 5. ಹಸಿವು ಅಥವಾ ಬಾಯಾರಿಕೆ ಯನ್ನು ಶಮನಮಾಡುತ್ತಿರುವ. "ಕ್ಷುಧಂ ಚ ನಿರ್ವಾಪಯತಾ ತೃಷಂ ಚ ಸ್ವಾದೀಯಸಾಽಪ್ಯಾ ಗಮಿತಃ ಸುಖಂ ತೈಃ" ನೆಪಂ ೮-೮೭. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೩-೧-೬) -ಯಂತಿ-ಯಸ್ತೀ.

**ನಿರ್ವಾಪಯಿತ್ ನಿರ್ವಾಪಯಿತ್** (ವಿಂ) 1. ದಾನಮಾಡಿಸುವ. ನಿರ್+ಛ್ ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನೇ)+ಞಿಚ್ "ತತ್" (೩-೧-೧೩೩). 2. ಕೊಲ್ಲುವ. 3. ದೇಹದ ಉರಿತ ಅಥವಾ ತಾಪವನ್ನು ಕಡಮೆಮಾಡುವ, -ಶಮನಗೊಳಿಸುವ. "ಸ್ಮರ ಏವ ತಾಪಹೇತುರ್ನಿರ್ವಾಪಯಿತಾ ಸ ಏವ ಮೇ ಜಾತಃ" ಶಾಕ್ರುಂ ೩-೯. 4. ದೀಪ ಅಥವಾ ಬೆಂಕಿಯನ್ನು ಆರಿಸುವ. 5. ಹಸಿವು ಅಥವಾ ಬಾಯಾರಿಕೆ ಯನ್ನು ಶಮನಮಾಡುವ. 6. ದುಃಖ ಅಥವಾ ಕಷ್ಟ ವನ್ನು ಕಡಮೆಮಾಡುವ, -ಹಗುರಮಾಡುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೫) -ಯಿತ್ರಿ-ಯಿತ್ರಿ.

**ನಿರ್ವಾಪಿತ ನಿರ್ವಾಪಿತ** (ವಿಂ) 1. ಕೊಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್+ಛ್ ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನೇ)+ಞಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). 2. ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಆರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಬೆಂಕಿ, ದೀಪ). 4. ಕಡಮೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ (ದುಃಖ, ಕಷ್ಟ). 5. ಶಮನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ (ಹಸಿವು, ಬಾಯಾರಿಕೆ, ಮೈ ಉರಿತ, ದೇಹದ ತಾಪ). "ದಗ್ಧಂ ಚಿರಾಯ ಮಲಯಾನಿಲಚಂದ್ರಪಾದೇಃ ನಿರ್ವಾಪಿತಂ ತು ಪರಿರಮ್ಯ ವಪುನ್ ನಾಮ" ಮಾಲತೀಂ ೮-೪. 6. ಸಂತೋಷ ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅನಂದವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿರ್ವಾಪಿತಃ ಕನಕಕ್ರೂರಮುಖೋಜ್ಜಿತೇನ ವಂಶಾಭಿಷೇಕವಿಧಿನಾ ಶಿಶಿರೇಣ ಗಮಃ" ರಘುಂ ೧೯-೫೬.

**ನಿರ್ವಾಪಿ ನಿರ್ವಾಪಿ** (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಬಲದಿಂದ ಕೊಡಿ ಭಯವಿಲ್ಲದೆ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು. ನಿರ್ ನಿಶ್ಚಯೇನ ತ್ರಿಯತೇ -ವತ್ (ವರಣೆ) "ಪ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪). 2. ಎದುರಿಸ ಲಾಗದ, ತಡೆಯಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ.

**ನಿರ್ವಾಸಿನ್ ನಿರ್ವಾಸಿನ್** (ನಂ) 1. ಬಹಿಷ್ಕಾರ, ದೇಶದಿಂದ ಹೊರದೂಡುವುದು, ಒಂದು ಸ್ಥಳದಿಂದ ಬಲಾತ್ಕಾರವಾಗಿ ಹೊರಡಿಸಿಬಿಡುವುದು. ನಿರ್+ವಸ (ನಿವಾಸೇ)+ಞಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫). "ನಿರ್ವಾಸಿನ್ ಚ ನಗರಾತ್ ಪ್ರವ್ರಜ್ಯಾ ಚ ಪರಂತಪಃ. ನಾನಾವಿಧಾನಾಂ ದುಃಖಾನಾಮಾಸೋಽಸ್ಮಿ ಜನಾದೇನ" ಭಾಂ ತತ್ತ್ವೋಗಂ ೯೦-೫೮. 2. ಪರದೇಶದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವುದು. 3. ಅಟ್ಟುವುದು, ಓಡಿಸುವುದು. 4. ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ಓಡಿಸುವುದು. "ನಿರ್ವಾಸಿನ್ ಹಿಸನೆ ಸ್ಯಾತ್ ನಗರಾದೇವಹಿಂಸಿತೌ" ಮೇದಿಂ.



**ನಿರ್ವಾಸನೀಯ ನಿರ್ವಾಸನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ದೇಶಭ್ರಷ್ಟನಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಅಟ್ಟಲ್ಪಡುವ.

**ನಿರ್ವಾಸಯತ್ ನಿರ್ವಾಸಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಬಹಿಷ್ಕರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೊರದೂಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಅಟ್ಟುತ್ತಿರುವ, ಓಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಿರುವ, ಓಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ನಿರ್ + ವಸ (ನಿವಾಸೇ) + ಣಿच् "ಶತ್" (3-1-124) | ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (4-1-6) | -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

**ನಿರ್ವಾಸಿತ ನಿರ್ವಾಸಿತ** (ವಿಂ) 1. ದೇಶದಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊರದೂಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಹಿಷ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್ + ವಸ (ನಿವಾಸೇ) + ಣಿच् "ಕ್ತ:" (3-2-102) | "ನಿರ್ವಾಸಿತಾಪ್ಯೇವಮತಸ್ತ್ವಯಾಹಂ ತಪಸ್ವಿಸಾಮಾನ್ಯಮವೇಕ್ಷಣೀಯಾ" ರಘುಂ 18-69 | 2. ಅಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಗೋವರ್ಧನಾಚಲಕಲಾಪಿಚಯಪ್ರಚಾರನಿರ್ವಾಸಿತಾಹಿನಿ ಧನೇ ಸುರಭಿ-ಪ್ರಸುನೇ" ನೆಪಂ 11-109 |

**ನಿರ್ವಾಸ್ಯ ನಿರ್ವಾಸ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಬಹಿಷ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಗಡೀಪಾರುಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ದೇಶದಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಬಹಿಷ್ಕರಿಸಬೇಕಾದ, ಗಡೀಪಾರುಮಾಡಬೇಕಾದ. ನಿರ್ + ವಸ (ನಿವಾಸೇ) + ಣಿच् "ಞತ್" (3-1-124) | 3. ಅಟ್ಟಲ್ಪಡುವ, ಓಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಓಡಿಸಬೇಕಾದ. "ಅಪುತ್ರಾ ಯೋಷಿತಶ್ಚೇಷಾಂ ಭರ್ತವ್ಯಾ: ಸಾಧುವೃತ್ತಯ: | ನಿರ್ವಾಸ್ಯಾ ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣ್ಯ: ಪ್ರತಿಕೂಲಾಸ್ತಥೈವ ಚ" ಯಾಜ್ಞಂ 2-182 | ನಿರ್ + ವಸ + ಣಿच् "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) | -ವಾಸನೀಯ: -ವಾಸನೀಯ: | "ತವ್ಯ:" (3-1-96) | -ವಾಸಿತವ್ಯ: -ವಾಸಿತವ್ಯ: |

**ನಿರ್ವಾಸ್ಯಮಾನ ನಿರ್ವಾಸ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಹೊರಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಬಹಿಷ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಗಡೀಪಾರುಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿರ್ + ವಸ (ನಿವಾಸೇ) + ಣಿच् ಕರ್ಮಂ "ಶಾನच्" (3-2-124) | 2. ಅಟ್ಟಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಓಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. "ನಿರ್ವಾಸ್ಯಮಾನಮಪಿ ತಂ ಪರಿವಾರಯೇಯುಸ್ತಸ್ಮಾತ್ಪರಪ್ರಭುತಯ: ಪುರ ಏವ ಚಿಂತ್ಯಾ:" ಮಂ ಬಿಂ 4-6 |

**ನಿರ್ವಾಹ ನಿರ್ವಾಹ** (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸುವುದು, ಕೆಲಸವನ್ನು ಕೊನೆಮುಟ್ಟಿಸುವುದು. ನಿರ್ + वह (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಘಜ್" (3-3-16) | 2. ಒಂದು ಗುರಿಯನ್ನು ಹಿಡಿದು ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಸಾಧಿಸುವುದು. "ಕಿಂತ್ವಜ್ಞೀಕೃತಮುತ್ಸೃಜನ್ ಕೃಪಣವತ್ ಶಲಾಘ್ಯೋ ಜನೋ ಲಜ್ಜತೇ ನಿರ್ವಾಹ: ಪ್ರತಿಪನ್ನವಸ್ತುಷು ಸತಾಮೇತದ್ವಿ ಗೋವ್ರತಮ್" ಮುರಾಂ 2-16 | 3. ಒಂದು ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನೆರವೇರಿಸುವುದು.

**ನಿರ್ವಾಹಕ ನಿರ್ವಾಹಕ** (ವಿಂ) 1. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಸಾಧಿಸುವವನು. 2. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಕೊನೆಮುಟ್ಟಿಸುವವನು. 3. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನೆರವೇರಿಸುವವನು. ನಿರ್ + वह (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಘಜ್" (3-3-16) |

**ನಿರ್ವಾಹ್ಯ ನಿರ್ವಾಹ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ನೆರವೇರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಸಾಧಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. ನಿರ್ + वह (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಞತ್" (3-1-124) |

**ನಿರ್ವಿಕಲ್ಪ ನಿರ್ವಿಕಲ್ಪ** (ವಿಂ) 1. ಏಕಲ್ಪವಿಲ್ಲದ, ಪಕ್ಷಾಂತರವಿಲ್ಲದ. ನಿಗಂತೋ ವಿಕಲ್ಪೋ ಪಕ್ಷಾಂತರಾವಕಾಶೋ ಯಸ್ಮಾತ್ | 2. ಭ್ರಾಂತಿಯಿಲ್ಲದ, ಸಂಶಯವಿಲ್ಲದ. 3. ಜ್ಞಾತೃ ಮತ್ತು ಜ್ಞೇಯಗಳ ಭೇದತೋರದೆ ಚಿತ್ತವು ಧ್ಯೇಯವಸ್ತುವಿನಲ್ಲೇ ಲಯಹೊಂದುವುದು. ಇದು ಸಮಾಧಿಯ ಒಂದು ಭೇದ. "ಆತ್ಮಾರಾಮಾ ವಿಹಿತರತಯೋ ನಿರ್ವಿಕಲ್ಪೇ ಸಮಾಧೌ" ವೇಣೀಂ 1-23 |

**ನಿರ್ವಿಕಾರ ನಿರ್ವಿಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ಯಾವ ವಿಧವಾದ ವಿಕಾರವನ್ನೂ ಹೊಂದದಿರುವ ಪರಮಾತ್ಮ. ನಿಗಂತೋ ವಿಕಾರ: ಪ್ರಕೃತೇರನ್ಯಥಾಭಾವ: ಯಸ್ಮಾತ್ | (ವಿಂ) 2. ವಿಕಾರವನ್ನು ಹೊಂದದಿರುವ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು. "ಸಿದ್ಧಚಸಿದ್ಧಚೋ-ನಿರ್ವಿಕಾರ: ಕರ್ತಾ ಸಾತ್ವಿಕ ಉಚ್ಯತೇ" ಗೀತಾ 18-26 |

**ನಿರ್ವಿಘ್ನ ನಿರ್ವಿಘ್ನ** (ವಿಂ) 1. ವಿಘ್ನವಿಲ್ಲದ, ಅಡ್ಡಿ ಆತಂಕಗಳಿಲ್ಲದ. ನಿಗಂತೋ ವಿಘ್ನೋ ಯಸ್ಮಾತ್ | "ವಿಲಕ್ಷಿಣಾತ್ಯಾಮ್ಭಸಾ ವಸ್ತ್ರಂ ಜನಪ್ರವ್ರಜಿತೀಕೃತೇ | ಸಹ್ಯೌ ಸಕ್ಷೌಮಭಾವೇಽಪಿ ನಿರ್ವಿಘ್ನ-ಸ್ತನದರ್ಶನೇ" ನೆಪಂ 20-129 | (ಅವ್ಯಂ) 2. ವಿಘ್ನವಿಲ್ಲದೆ, ತಡೆಯಿಲ್ಲದೆ, ಅಡ್ಡಿಯಿಲ್ಲದೆ.

**ನಿರ್ವಿಚಾರ ನಿರ್ವಿಚಾರ** (ವಿಂ) 1. ವಿಮರ್ಶೆಯಿಲ್ಲದ, ವಿವೇಚನೆಯಿಲ್ಲದ, ಪರ್ಯಾಲೋಚನೆಯಿಲ್ಲದ. ನಿಗಂತೋ ವಿಚಾರೋ ಯಸ್ಮಾತ್ | (ಅವ್ಯಂ) 2. ಆಲೋಚನೆ ಮಾಡದೆ, ವಿವೇಚನೆಯಿಲ್ಲದೆ.

**ನಿರ್ವಿಚಿಕಿತ್ಸ ನಿರ್ವಿಚಿಕಿತ್ಸ** (ವಿಂ) ಸಂದೇಹವಿಲ್ಲದ, ಸಂಶಯವಿಲ್ಲದ. ನಿಗಂತಾ ವಿಚಿಕಿತ್ಸಾ ಸಂಶಯೋ ಯಸ್ಮಾತ್ |

**ನಿರ್ವಿಚೇಷ ನಿರ್ವಿಚೇಷ** (ವಿಂ) ಶರೀರದ ವ್ಯಾಪಾರವಿಲ್ಲದ, ಹಸ್ತಪಾದಾದಿಗಳ ಯಾವ ಕೆಲಸವೂ ಇಲ್ಲದ, ಕೈಕಾಲುಗಳನ್ನೂ ಆಡಿಸದಿರುವ. ನಿರ್ ನಾಸ್ತಿ ವಿಚೇಷಾ ಯಸ್ಯ | "ಸ ಲಾಙ್ಗಲಾಕರ್ಷಣನಿರ್ವಿಚೇಷಾನ್ ನಿಷಿಷ್ಯ ನಾಗಾನ್ನಿಷವ-ಪ್ರಮಾಣಾನ್" ಯಾದಂ 20-43 |

**ನಿರ್ವಿಚೇಷಿತ ನಿರ್ವಿಚೇಷಿತ** (ನಂ) 1. ಯಾವ ವ್ಯಾಪಾರವೂ ಇಲ್ಲದಿರುವುದು, ಕರಚರಣಾದಿಗಳ ಕೆಲಸವಿಲ್ಲದಿರುವುದು. (ವಿಂ) 2. ಹಸ್ತಪಾದಾದಿಗಳ ಯಾವ ಕೆಲಸವೂ



ಇಲ್ಲದಿರುವ, ಶರೀರವ್ಯಾಪಾರವಿಲ್ಲದ. "ವಿಪಕ್ಷಾನ್  
ಭೂತಸ್ತತ್ರ ಕುರ್ವತಾ ನಿವಿಚೇಷಿತಾನ್" ಯಾದಂ ೨೨-೧೫೭.

**ನಿವಿಣ್ಣ ನಿರ್ವಿಣ್ಣ** (ವಿಂ) 1. ಖೇದಗೊಂಡ, ಮನನೊಂದಿ  
ರುವ. ನಿರ್ + ವಿಡ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨).  
ಣತ್ವಮ್ (ವಾಂ ೮-೪-೨೯). "ಯಸ್ಯಾಸ್ತೇ ಪಿಶುನೋಪದೇಶವಚನೇ-  
ಮನಿಸ್ತಿಭೂಮಿ ಗತೇ ನಿವಿಣ್ಣೋಽನುನಯಂ ಪ್ರತಿ ಪ್ರಿಯತಮೋ  
ಮಧ್ಯಸ್ಥತಾಮೇಷ್ಯತಿ" ಅಮರಂ ೫. 2. ವೈರಾಗ್ಯ  
ಹೊಂದಿರುವ.

**ನಿವಿನೋದ ನಿರ್ವಿನೋದ** (ವಿಂ) ಮನೋರಂಜನೆಯ  
ಆಟಪಾಟಗಳಿಲ್ಲದ, ವಿಶ್ರಾಂತಿಗಾಗಿ ಕ್ರೀಡೆಗಳನ್ನು ಏರ್ಪಡಿಸ  
ದಿರುವ. ನಿರ್ಗತೋ ವಿನೋದೋ ಕ್ರೀಡಾದಿ: ಯಸ್ಮಾತ್. "ಸವ್ಯಾ-  
ಪಾರಾಮಹನಿ ನ ತಥಾ ಪಿಡಯೇನ್ಮದ್ವಿಯೋಗ: ಶಕ್ತೇ ರಾತ್ರೀ ಗುಸ್ತರಶುಚಂ  
ನಿವಿನೋದಾಂ ಸಖೀ ತೇ" ಮೇಘಂ ೨-೨೫.

**ನಿವಿನ್ಧ್ಯ ನಿರ್ವಿನ್ಧ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ವಿಂದ್ಯಪರ್ವತದಿಂದ  
ಹೊರಟಿರುವ. ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತೋ ವಿನ್ಧ್ಯಾತ್. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನ್ಧ್ಯಾ  
-ನ್ಧ್ಯಾ. 2. ನಿರ್ವಿನ್ಧ್ಯಾನದಿ. "ನಿವಿನ್ಧ್ಯಾಯಾ: ಪಥಿ ಭವ  
ರಸಾಮ್ಯಂತರ: ಸನ್ನಿಪತ್ಯ ಸ್ತ್ರೀಣಾಮಾಹಂ ಪ್ರಣಯವಚನಂ ವಿಭ್ರಮೋ ಹಿ  
ಪ್ರಿಯೇಷು" ಮೇಘಂ ೧-೨೮.

**ನಿವಿಮರ್ಶ ನಿರ್ವಿಮರ್ಶ** (ವಿಂ) 1. ವಿಮರ್ಶೆಯಿಲ್ಲದ,  
ಪರ್ಯಾಲೋಚನೆಯಿಲ್ಲದ, ವಿವೇಚನೆಯಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ ನಾಸ್ತಿ  
ವಿಮರ್ಶೋ ವಿವೇಚನಂ ಯಸ್ಯ. 2. ವಿಮರ್ಶಸಂಧಿಯಿಲ್ಲದ  
(ಒಂದು ರೂಪಕ), ನಾಲ್ಕು ಅಂಕಗಳೂ ವಿಮರ್ಶ ಸಂಧಿಯು  
ಇಲ್ಲದೆಯೂ ಇರುವ (ಡಿಮೆವೆಂಬ ರೂಪಕ). "ಚತುರಕ್ಷ-  
ಶ್ಚತು:ಸಂಧಿನಿವಿಮರ್ಶೋ ಡಿಮ: ಸ್ಮೃತ:" ದಶರೂಂ ೩-೬೦.

**ನಿವಿರತಿ ನಿರ್ವಿರತಿ** (ವಿಂ) 1. ವೈರಾಗ್ಯವಿಲ್ಲದ, ವಿಷಯ  
ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ. ನಿರ್ ನಾಸ್ತಿ ವಿರತಿವೈರಾಗ್ಯಂ ಯಸ್ಯ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ವೈರಾಗ್ಯವಿಲ್ಲದೆ, ಅನುರಾಗದಿಂದ ಕೂಡಿ,  
ವಿಷಯಾಭಿಲಾಷೆಯಿಂದ ಕೂಡಿ. "ನಿವಿರತಃ ನಿವಿರತಿ  
ಕಾಶಿನಿವಾಸಿ ಭೋಗಾನ್ಮಿಮಾಂಸ ನಮಃ ಚ ಮಿಥೋ ಮಿಥುನಂ  
ಯಚ್ಚೇತಸ್ಮ" ನೈಷಂ ೧೧-೧೧೮.

**ನಿವಿವರ ನಿರ್ವಿವರ** (ವಿಂ) ಅವಕಾಶರಹಿತವಾದ, ಸಂದು  
ಗಳಿಲ್ಲದ, ದಟ್ಟವಾಗಿರುವ. ನಿರ್ ನಾಸ್ತಿ ವಿವರೋ ಯಸ್ಯ.

**ನಿವಿವರತಾ ನಿರ್ವಿವರತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಾಂದ್ರವಾಗಿರುವಿಕೆ,  
ದಟ್ಟವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಮಧ್ಯೆ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. "ಘಟತೇ  
ಹಿ ಸಂಹತತಯಾ ಜನಿತಾಮಿದಮೇವ ನಿವಿವರತಾಂ ದಧತೋ:"  
ಮಾಘಂ ೯-೪೪.

**ನಿವಿವಾದ ನಿರ್ವಿವಾದ** (ವಿಂ) ವಿವಾದಕ್ಕೆ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದ,  
ಚರ್ಚೆಗೆ ಎಡೆಯಿಲ್ಲದ, ವಿವಾದಾಸ್ಪದವಲ್ಲದ.

**ನಿವಿವೇಕ ನಿರ್ವಿವೇಕ** (ವಿಂ) ವಿವೇಚನೆಯಿಲ್ಲದ, ವಿಮರ್ಶೆ  
ಯಿಲ್ಲದೆ ಕೆಲಸಮಾಡುವ, ಯೋಚಿಸದೆ ಕೆಲಸಮಾಡುವ.  
ನಿರ್ ನಾಸ್ತಿ ವಿವೇಕೋ ಯಸ್ಯ.

**ನಿವಿಶತ್ಕ ನಿರ್ವಿಶತ್ಕ** (ವಿಂ) 1. ಸಂಶಯವಿಲ್ಲದ, ಸಂದೇಹ  
ವಿಲ್ಲದ. 2. ಭಯವಿಲ್ಲದ. "ಯಸ್ಮಿನ್ ಕೃತ್ಯಂ ಸಮಾವೇಶ್ಯ  
ನಿವಿಶತ್ಕೇನ ಚೇತಸಾ. ಆಸ್ಯತೇ, ಸೇವಕ: ಸ ಸ್ಯಾತ್ ಕಲತ್ರಮಿವ  
ಚಾಪರಮ್" ಪञ್ಚತಂ ೧-೧೪. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಭಯವಿಲ್ಲದೆ,  
ಹೆದರಿಕೆಯಿಲ್ಲದೆ. "ತಸ್ಮಿನ್ನನೇನ ಸಹ ನಿವಿಶ ನಿವಿಶತ್ಕ  
ವೃಂದಾವನೇ ವನವಿಹಾರಕುತೂಹಲಾನಿ" ನೈಷಂ ೧೧-೧೦೭.

**ನಿವಿಶತ್ ನಿರ್ವಿಶತ್** (ವಿಂ) 1. ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿರುವವನು.  
ನಿರ್+ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). "ನಿಜ-  
ಮಗಮದಗಾರಂ ನಿವಿಶನ್ ಪ್ರೇಯಸೀನಾಂ ಸ್ಮರಶರಶಯಿತಾನಾಂ ಮಂದ-  
ಮಮ್ಯುತ್ಥಿತಾನಿ" ಯಾದಂ ೧೮-೧೩೪. 2. ಮದುವೆಯಾಗು  
ವವನು, ವಿವಾಹಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವವನು. "ಜ್ಯೇಷ್ಠೇ ನಿವಿಶೇ  
ಕನೀಯಾನ್ ನಿವಿಶನ್ ಪರಿವೇತ್ತಾ ಭವತಿ" ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೬). -ವಿಶಂತಿ -ವಿಶಂತೀ.

**ನಿವಿಶೇಷ ನಿರ್ವಿಶೇಷ** (ವಿಂ) 1. ವಿಶೇಷವಿಲ್ಲದ, ವ್ಯತ್ಯಾಸ  
ವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತೋ ವಿಶೇಷೋ ಯಸ್ಯ. "ವಯಮಿಹ ಪರಿತುಷ್ಟಾ  
ವತ್ಕಲೇಸ್ತ್ವಂ ದುಕುಲೈ: ಸಮ ಇಹ ಪರಿತೋಷೋ ನಿವಿಶೇಷೋ ವಿಶೇಷ:"  
ಭರ್ತಂ ೩-೫೩. (ಅವ್ಯಂ) 2. ವ್ಯತ್ಯಾಸವಿಲ್ಲದೆ, ಸಮಾನ  
ವಾಗಿ, ಹೆಚ್ಚು ಕಡಮೆಯಿಲ್ಲದೆ. "ಆಧಾರವನ್ಧಪ್ರಮುಖೇ:  
ಪ್ರಯತೇ: ಸಂವಾಹಿತಾನಾಂ ಸುತನಿವಿಶೇಷಮ್" ರಘುಂ ೫-೬.

**ನಿವಿಷಯ ನಿರ್ವಿಷಯ** (ವಿಂ) 1. ವಾಸಮಾಡಲು ಒಂದು  
ಸ್ಥಾನವಿಲ್ಲದ, ದೇಶದಿಂದ ಹೊರದೂಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಗಡೀಪಾರು  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ವಿಷಯಾಭಿಲಾಷೆಯಿಲ್ಲದ.

**ನಿವಿಷಯೀಕೃತ ನಿರ್ವಿಷಯೀಕೃತ** (ವಿಂ) ದೇಶದಿಂದ  
ಹೊರಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗಡೀಪಾರುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ನಿವಿಷಾಣ ನಿರ್ವಿಷಾಣ** (ವಿಂ) ವಿಷಾಣರಹಿತವಾದ,  
ಕೊಂಬುಗಳಿಲ್ಲದ.

**ನಿವಿಷ್ಟ ನಿರ್ವಿಷ್ಟ** (ವಿಂ) 1. ಉಪಭೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅನು  
ಭವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್+ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).  
"ಪಯೋಧರೈ: ಪುಣ್ಯಜನಾಙ್ಗನಾನಾಂ ನಿವಿಷ್ಟಹೇಮಾಮ್ಬುಜರೇಣು ಯಸ್ಯಾ:"  
ರಘುಂ ೧೩-೬೦. 2. ಪ್ರವೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ವೇತನ  
ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೂಲಿ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ವಿವಾಹ ಮಾಡಿ  
ಕೊಂಡವನು. "ಜ್ಯೇಷ್ಠೇ ನಿವಿಷ್ಟೇ ಕನೀಯಾತ್ ನಿವಿಶನ್  
ಪರಿವೇತ್ತಾ ಭವತಿ".

**ನಿವೀರ ನಿರ್ವೀರ** (ವಿಂ) 1. ವೀರರಿಲ್ಲದ, ಪರಾಕ್ರಮಶಾಲಿ  
ಗಳಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತೋ ವೀರೋ ಯಸ್ಮಾತ್. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವೀರಾ -ವೀರಾ.



2. ಪತಿ ಮತ್ತು ಮಕ್ಕಳು ಇಲ್ಲದ ಹೆಣ್ಣು. "ನಿರ್ವಿಂ  
ನಿಷ್ಪತಿಸುತಾ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ ।

**ನಿರ್ವಿಂ ನಿರ್ವಿಂಯ್ಯ (ಪುಂ)** 1. ದುರ್ಬಲನಾದ ಮನುಷ್ಯ,  
ಬಡಕಲು ಮನುಷ್ಯ. ನಿರ್ಗತಂ ವೀಯಂ ಯಸ್ಮಾತ್ । (ವಿಂ) 2.  
ಸ್ವಲ್ಪವಿಲ್ಲದ, ಶಕ್ತಿ ಕುಂದಿದ. "ನಿರ್ವಿಂ ಗುರುಶಾಪಭಾಷಿತ-  
ವಶಾತ್ ಕಿಂ ಮೇ ತವೇವಾಯುಷಂ ಸಂಪ್ರತ್ಯೇವ ಭಯಾದ್ವಿಹಾಯ ಸಮರಂ  
ಪ್ರಾಪ್ತೋಽಸ್ಮಿ ಕಿಂ ತ್ವಂ ಯಥಾ" ವೇಣಿಂ ೩-೩೫ ।

**ನಿರ್ವಿಂ ನಿರ್ವಿಂಯ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಸುಖ ಹೊಂದಿದ, ಸುಖವನ್ನು  
ಅನುಭವಿಸಿದ. ನಿರ್+ವೃ (ವರಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) ।  
"ಹ್ರೀಣಮೇವ ಪೃಥು ಸಸ್ಮರಂ ಕಿಯತ್ ಕಲಾಂತಮೇವ ಬಹು ನಿರ್ವಿಂ  
ಮನಾಕ್ । ಕಾಂತವೇತಸಿ ತದೀಯಮಾನನಂ ತತ್ತದಾಲಭತ ಲಕ್ಷ-  
ಮಾದರಾತ್" ನೆಪಂ ೧೮-೧೨೨ । 2. ಅರಿಹೋದ, ನಂದಿ  
ಹೋದ, ಶಾಂತವಾದ. "ತೀರ್ಣಂ ಭೀಷಮಹೋದಧೌ ಕಯಮಪಿ  
ದ್ರೋಣಾನಲೇ ನಿರ್ವಿಂ ಕರ್ಣಾಶಿವಿಷಭೋಗಿನಿ ಪ್ರಶಮಿತೇ ಶಲ್ಯೇ ಚ  
ಯಾತೇ ದಿವಮ್" ವೇಣಿಂ ೬-೧ । 3. ದಾಸ್ಯದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ  
ಹೊಂದಿದ, ಬಂಧನದಿಂದ ಮುಕ್ತನಾದ, ಸ್ವತಂತ್ರನಾದ.  
4. ಮೋಕ್ಷ ಹೊಂದಿದ.

**ನಿರ್ವಿಂ ನಿರ್ವಿಂಯ್ಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸುಖ, ಸಂತೋಷ, ಆನಂದ.  
ನಿರ್+ವೃ (ವರಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) । "ಸರ್ವತು-  
ನಿರ್ವಿಂತಿಕರೇ ನಿವಸಸ್ತುಪೇತಿ ನ ದ್ವಂದ್ವುಃಖಮಿಹ ಕಿಂಚಿದ-  
ಕಿಂಚಿದನೋಽಪಿ" ಮಾಘಂ ೪-೬೪ । "ನಿರ್ವಿಂತಿಹಿ ಮನಸೋ  
ಮದಹೇತುಃ" ಮಾಘಂ ೧೦-೨೮ । 2. ಶಾಂತಿ, ನೆಮ್ಮದಿ.  
"ನ ಜಾತು ಬಾಲಾ ಲಮತೇ ಸ್ಮ ನಿರ್ವಿಂತಿ ತುಷಾರಸಂಘಾತಶಿಲಾತಲ-  
ಪಿ" ಕುಮಾರಂ ೫-೫೫ । 3. ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ, ಸಂಸಾರ  
ಪಾಶದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ. 4. ಮೃತ್ಯು. "ಶಿವಂ ನಿಃಶ್ರೇಯಸಂ  
ಶ್ರೇಯಃ ನಿರ್ವಿಂಶಂ ಬ್ರಹ್ಮ ನಿರ್ವಿಂತಿಃ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ । "ಅಥ  
ನಿರ್ವಿಂತಿಃ । ಮೋಕ್ಷೇ ಮೃತ್ಯೋ ಸುಖೇ ಸೌಖ್ಯೇ" ಹೇಮಂ ।  
5. ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ, ದಾಸ್ಯದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ.

**ನಿರ್ವಿಂತಿಮತ್ ನಿರ್ವಿಂತಿಮತ್ (ವಿಂ)** 1. ನೆಮ್ಮದಿಯಿಂದ  
ಕೂಡಿದ. ನಿರ್ವಿಂತಿ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪) । "ದತ್ತಾತ್ಮಜಾಂ  
ಮವತು ನಿರ್ವಿಂತಿಮಾನಮಾತ್ಯಃ" ಮಾಲತೀಂ ೨-೮ । 2. ಸಂತೋಷ  
ದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

**ನಿರ್ವಿಂತಿ ನಿರ್ವಿಂತಿ (ವಿಂ)** 1. ನೆರವೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್+ವೃ (ವರಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।  
"ನಿರ್ವಿಂತಿಪರ್ಜನ್ಯಜಲಾಭಿಷೇಕಾ ಪ್ರಫುಲ್ಲಕಾಶಾ ವಸುಧೇವ ರೇಜೆ"  
ಕುಮಾರಂ ೭-೧೧ । 2. ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊನೆ  
ಮುಟ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ನೆರವೇರಿದ. "ತಥಾ ಮನ್ಯೇ ಮನೋರಥ-  
ನಿರ್ವಿಂತಿಮಾಗಮಾವೇತಾವಿತಿ" ಮಾಲತೀಂ ೪ । 4. ನಿಷ್ಪನ್ನ

ವಾದ, ಉಂಟಾದ, ಸಿದ್ಧವಾದ. "ನಿರ್ವಿಂತಿಃ ಫಲೇಗ್ರಹಿಣಿಮವರಃ  
ದಧಿಷ್ಠಾ ದಾವಾಗ್ನಿನಃ" ಮಾಲತೀಂ ೯-೩೯ ।

**ನಿರ್ವಿಂತಿ ನಿರ್ವಿಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ನಿಷ್ಪತ್ತಿ, ಉಂಟಾಗುವುದು.  
ನಿರ್+ವೃ (ವರಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೯೪) । 2. ಕಾರ್ಯವು  
ಸಮಾಪ್ತಿ ಹೊಂದುವುದು, ಕೊನೆ ಮುಟ್ಟುವುದು.  
3. ಈಡೇರುವುದು, ಕೈಗೊಡುವುದು. "ಕರ್ಮಣಾಂ ಫಲ-  
ನಿರ್ವಿಂತಿ ಶಂಸ ನಸ್ತತ್ತ್ವತಃ ಪರಾಮ್" ಮನುಂ ೧೨-೧ ।  
4. ನೆರವೇರುವುದು, ನಡೆಯುವುದು. (ವಿಂ) 5. ಜೀವ  
ನೋಪಾಯವಿಲ್ಲದ.

**ನಿರ್ವಿಂ ನಿರ್ವಿಂಯ್ಯ (ಪುಂ)** 1. ತೇಜೋವಧೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳು  
ವುದು, ವೈರಾಗ್ಯದಿಂದ ತನ್ನನ್ನೇ ಅವಮಾನಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳು  
ವುದು, ದೇಹಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ಕೀಳುಭಾವನೆ ಹುಟ್ಟುವುದು,  
ವೈರಾಗ್ಯ. ಇದು 33 ವೈಭಿಚಾರಿ ಭಾವಗಳಲ್ಲೊಂದು.  
ನಿರ್+ವಿ (ಜ್ಞಾನ) "ವೃ" (೩-೩-೧೮) । "ತತ್ತ್ವ-  
ಜ್ಞಾನಾಪದೀರ್ಷ್ಯಾದೇನಿರ್ವಿಂದಃಸ್ವಾವಮಾನನಮ್" ಸಾಂ ೬೦ ೩-೧೪೨ ।  
"ಯದಾ ತೇ ಮೋಹಕಲಿಲಂ ಬುದ್ಧಿವ್ಯಂತಿತರಿಷ್ಯತಿ । ತದಾ ಗಂತಾಸಿ  
ನಿರ್ವಿಂದಂ ಶ್ರೋತವ್ಯಸ್ಯ ಶ್ರುತಸ್ಯ ಚ" ಗೀತಾ ೨-೫೨ । 2. ಖೇದ  
ದಿಂದ ಎದೆಗುಂದುವುದು, ನಿರಾಶನಾಗುವುದು. "ದಾರಿದ್ರ್ಯಾ  
ದ್ವಿಮೇತಿ ಹ್ರೀಪರಿಗತಃ ಪ್ರಭ್ರಮ್ಯತೇ ತೇಜಸೋ ನಿರ್ವಿಂದಃ ಪರಿಭೂಯತೇ  
ಪರಿಭವಾನ್ನಿರ್ವಿಂದಮಾಪದತೇ" ಮೃಚ್ಛಂ ೧-೧೪ । 3. ಬೇಸರಿಕೆ.  
4. ಖೇದ, ದುಃಖ. "ಅನಿರ್ವಿಂದಃ ಸದಾ ಕಾರ್ಯಃ ನಿರ್ವಿಂದಾಢಿ  
ಕ್ರುತಃ ಸುಖಮ್" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೧೫೨-೫೧ । (ವಿಂ) 5.  
ವೇದರಹಿತನಾದ, ವೇದಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ.

**ನಿರ್ವಿಂಶ ನಿರ್ವಿಂಶ (ಪುಂ)** 1. ಭೋಗ, ಅನುಭವಿಸುವುದು.  
ನಿರ್+ವಿ (ಪ್ರವೇಶನ) "ವೃ" (೩-೩-೧೮) । "ತತ್ಸೌಖ-  
ಶಾಯನಿಕಸುರಗಣೇನ ಸಾಧಂ ನಿರ್ವಿಂಶಯೋಗಮುಪಯಾಮ ನಿರೀಕ್ಷಣೇಸ್ತೇ"  
ಯಾದಂ ೧೯-೭೬ । 2. ವೇತನ, ಸಂಬಳ, ಕೂಲಿ. 3. ಪ್ರಜ್ಞೆ  
ತಪ್ಪುವುದು, ಜ್ಞಾನ ಹೋಗುವುದು. "ನಿರ್ವಿಂಶಸ್ತು ಪುಮಾನ್  
ಮೋಗೇ ವೇತನೇ ಮೃಣ್ಮಣೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ । 4. ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ,  
ಪಾಪ ಪರಿಹಾರಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 5. ವಿವಾಹ,  
ಮದುವೆ. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । -ವೇಶನಮ್  
-ವೇಶನಮ್.

**ನಿರ್ವಿಂಶನೀಯ ನಿರ್ವಿಂಶನೀಯ (ವಿಂ)** ಅನುಭವಿಸಲ್ಪಡುವ.  
ನಿರ್+ವಿ (ಪ್ರವೇಶನ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) ।  
"ನಿರ್ವಿಂಶನೀಯಸ್ಸವಿಶೇಷಮಾಸೀನ್ನೇದೀಯಸಾಂ ನೇತ್ರಚಕೋರವೃಂದಃ"  
ಯಾದಂ ೧೩-೧೯ ।

**ನಿರ್ವಿಂಶನ ನಿರ್ವಿಂಶನ (ನಂ)** ನೇಯ್ಗೆಯಲ್ಲಿ ಹಾಸು ಎಳೆ  
ಗಳ ನಡುವೆ ಹೊಕ್ಕು, ಎಳೆಗಳನ್ನು ಹಾಯಿಸುವ ಲಾಳಿ.  
ನಿತ್ತರಾಂ ವೇಶನಮತ್ರ ।



**ನಿರ್ವ್ಯಯನ ನಿರ್ವ್ಯಯನ** (ನಂ) 1. ಬಿಲ್ಲ, ಛಿಲ್ಲ, ತೂತು, ರಂಧ್ರ. ನಿಷ್ಪ್ರಯೇನ ವ್ಯಯನಂ ಮಯ ಚಲನಂ ವಾ ಯತ್ರ | 2. ಅತಿ ಯಾದ ನೋವು. ನಿತರಾಂ ವ್ಯಯನಮ್ | (ವಿಂ) 3. ವೃಥೆ ಯಿಲ್ಲದ, ನೋವಿಲ್ಲದ. ನಿಗತಂ ವ್ಯಯನಂ ಯಸ್ಮಾತ್ | ನಿಗತಂ ವ್ಯಯನಾತ್ ಇತಿ ವಾ | “ಉಚ್ವೇಸ್ತು ತಚ್ಚಿತ್ರಮಮುಷ್ಯ ಭಗನಸ್ಯಾ-ಲೋಕಯತೇ ನಿರ್ವ್ಯಯನಂ ಯದಂತಃ” ನೆಪಂ ೭-೬೮ |

**ನಿರ್ವ್ಯಯ ನಿರ್ವ್ಯಯ** (ವಿಂ) ವೃಥೆಯಿಲ್ಲದ, ಖರ್ಚಿಲ್ಲದ, ಅಕ್ಷಯವಾದ. ನಾಸ್ತಿ ವ್ಯಯೋ ಯಸ್ಯ | “ಆಸ್ತೇ ನಿರ್ವ್ಯಯ-ರತ್ನಸಂಪದುದಯೋದಯಃ ಕಥಂ ಯಾಚಕಶ್ರೇಣಿವರ್ಜನದುರ್ಯಶೋನಿಬಿಡಿತ-ಬ್ರಿಡಸ್ತು ರತ್ನಾಚಲಃ” ನೆಪಂ ೧೨-೬೭ |

**ನಿರ್ವ್ಯಯೇಷ ನಿರ್ವ್ಯಯೇಷ** (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ, ಆಸೆಯಿಲ್ಲದ, ನಿಃಸ್ಪೃಹನಾದ. ನಿಗತಾ ವ್ಯಯೇಷಾ ಯಸ್ಮಾತ್ | “ತಸ್ಯಾಪನೋದಾಯ ಫಲಪ್ರವೃತ್ತಾವುಪಸ್ಥಿತಾಯಾಮಪಿ ನಿರ್ವ್ಯಯೇಷಃ” ರಘುಂ ೧೪-೩೯ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವ್ಯಯೇಷಾ -ವ್ಯಯೇಷಾ. 2. ನಿಃಸ್ಪೃಹತೆ, ಆಸೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಂತೆ.

**ನಿರ್ವ್ಯಯಿ ನಿರ್ವ್ಯಯಿ** (ವಿಂ) 1. ಕಪಟವಿಲ್ಲದ, ಮುಚ್ಚು ಮರೆಯಿಲ್ಲದ, ಯಥಾರ್ಥವಾದಿಯಾದ. ನಿಗತೋ ವ್ಯಯಿಃ ಕಪಟೋ ಯಸ್ಮಾತ್ | 2. ನಿಜವಾದ, ಕೃತಕವಲ್ಲದ, ಅಪ್ಪಟವಾದ, ಚೋಕ್ತವಾದ. “ನಿರ್ವ್ಯಯಿಸಂಜ್ಞೇನ ನಿಶಾಮಯಂತಿ” ಯಾದಂ ೧೩-೪೮ | 3. ಬೂಟಾಟಕಿಯಿಲ್ಲದ, ಅಪಾಧಭೂತಿತನ ವಿಲ್ಲದ. 4. ನಿಮಿತ್ತವಿಲ್ಲದ, ಕಾರಣವಿಲ್ಲದ. “ಸರ್ವಪುರುಷಾತಿ-ಶಾಯಿ ನಿರ್ವ್ಯಯಿಮೂಜಿತಂ ತೇಜಃ” ಮಾಲತೀಂ ೮ | (ಅವ್ಯಂ) 5. ಕಪಟವಿಲ್ಲದೆ. 6. ಕೃತಕವಲ್ಲದೆ, ನಿಜವಾಗಿ, ಸ್ವಭಾವವಾಗಿ. “ಸ ವೈಜಯಂತ್ಯಾದಿವಿಭಾವಶಾಲಿ ನಿರ್ವ್ಯಯಿನಿಷ್ಪನ್ನನಿಜಾನು-ಭಾವಃ” ಯಾದಂ ೧೩-೮ | 7. ಬೂಟಾಟಕಿಯಿಲ್ಲದೆ. 8. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದೆ.

**ನಿರ್ವ್ಯಯಾರ ನಿರ್ವ್ಯಯಾರ** (ವಿಂ) 1. ವ್ಯಾಪಾರವಿಲ್ಲದ, ಕೆಲಸವಿಲ್ಲದ. 2. ಚಲನೆಯಿಲ್ಲದ. 3. ಯಾವುದೂ ಉದ್ಯೋಗವಿಲ್ಲದ. ನಿಗತೋ ವ್ಯಾಯಾರೋ ಯಸ್ಮಾತ್ | “ತಂ ದಧನಮೈಯಿಲಿಕಪ್ಪನಿರ್ವ್ಯಯಾರೇಣ ಬಾಹುನಾ” ರಘುಂ ೧೪-೪೬ |

**ನಿರ್ವ್ಯಥ ನಿರ್ವ್ಯಥ** (ವಿಂ) 1. ಸಾಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮಾಪ್ತ, ಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿರ್ + ವಿ + वह (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) | “ಅವದಾನಂ ತು ಯತ್ಕರ್ಮ ನಿರ್ವ್ಯಥಮತಿ-ಶೋಮನಮ್” | 2. ಬೆಳೆದುಬಂದಿರುವ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿದ. “ಇಲಾಖ್ಯಾನ್ವಯೇತಿ ನಯನೋತ್ಸವಕಾರಿಣೀತಿ ನಿರ್ವ್ಯಥಸೌಹೃದರಸೇತಿ ಗುಣೋಜ್ಜ್ವಲೇತಿ” ಮಾಲತೀಂ ೬-೧೭ | 3. ತೃಪ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. “ತ್ಯಕ್ತೇ ನಿರ್ವ್ಯಥ ಉಚ್ಯತೇ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 4. ನೆರವೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಡೆಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ನಿರ್ವ್ಯಥೋ ಮಗವತ್ಯಾಃ

ಸಂಭಾವನಾಭಾರೋ ಬುದ್ಧರಕ್ಷಿತಯಾ” ಮಾಲತೀಂ ೮ | 5. ಸ್ಥಿರ ವಾದ, ಬದಲಾಯಿಸಲಾಗದ, ತಪ್ಪಿಸಲಾಗದ. “ಸ್ತ್ರೀಣಾ ಪತಿಪುತ್ರಾದಿಧನೇ ನ ನಿರ್ವ್ಯಥಂ ಸ್ವತ್ವಮ್ ಪುಂಸಾಂ ತು ತನ್ನಿರ್ವ್ಯಥಂ ಯಥೇಷ್ಟವಿನಿಯೋಗಾರ್ಹತ್ವಾತ್” |

**ನಿರ್ವ್ಯಥ ನಿರ್ವ್ಯಥ** (ಪುಂ) 1. “ನಿರ್ವ್ಯಥ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ನಿರ್ವ್ಯಥ ಪುಂಸಂ | “ದ್ವಾರತೋರಣನಿರ್ವ್ಯಥವಜಸಂವಾಹಸೋಮಿನಾ” ಭಾಂ ವನಂ ೧೬೧-೪೬ | (ವಿಂ) 2. ವ್ಯಾಹರವಿಲ್ಲದ ಸೈನ್ಯ, ವ್ಯಾಹರಚನೆಯಿಲ್ಲದ ಸೇನೆ.

**ನಿರ್ಹರಣ ನಿರ್ಹರಣ** (ನಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. ನಿರ್ + ಹ್ರ (ಹರಣೆ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪) | “ತಸ್ಮಾತ್ಕವಿಃ ಕತಂವ್ಯ ಕರ್ಮಣಾಂ ತ್ರಿಗುಣಾತ್ಮನಾಮ್ | ಬೀಜನಿರ್ಹರಣಮ್” ಭಾಗಂ ೭-೭-೨೮ | 2. ಹೊರಕ್ಕೆ ಎಳೆಯುವುದು, ಬಲವಂತ ದಿಂದ ಹೊರದೂಡುವುದು. “ಶರದ್ವಸಂತಪ್ರಾವೃದ್ಸು ಪ್ರಕು-ಪಿತಾನಾಂ ದೋಷಾಣಾಂ ನಿರ್ಹರಣಮ್” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೬-೧೨ |

**ನಿರ್ಹಾದಿ ನಿರ್ಹಾದಿ** (ಪುಂ) ಶಬ್ದ, ಸದ್ಬುದ್ಧಿ, ಧ್ವನಿ. ನಿರ್ + ಹ್ರಾದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) “ಷಟ್” (೩-೩-೧೮) | “ಸಾರಸೆಃ ಕಲನಿರ್ಹಾದಿಃ ಕ್ವಚಿದುನ್ನಮಿತಾನನಿ” ರಘುಂ ೧-೪೧ |

**ನಿರ್ಹಾದಿನ್ ನಿರ್ಹಾದಿನ್** (ವಿಂ) ಶಬ್ದದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಸದ್ಬುದ್ಧಿಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ನಿರ್ಹಾದಿಃ ಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪) | “ಪ್ರವೃತ್ತಿನಿರ್ಹಾದಿವಿಭೂಷಣಾರವಃ” ಕಿರಾಂ ೮-೩ |

**ನಿಲಯ ನಿಲಯ** (ಪುಂ) 1. ಗೃಹ, ಮನೆ. ನಿಲೀಯತೇಽ — ನಿ + ಲೀಡ್ (ಶ್ಲೇಷಣೆ) “ಷಃ” (೩-೩-೧೧೯) | “ನಿಲಯೇಷು ನಕ್ತಮಸಿತಾಶ್ಮನಾಂ ಚಯೇವಿಸಿನಿವಿಧುಪರಿಭವಸ್ಕುಟಾಂಗಸಃ” ಮಾಘಂ ೧೩-೪೪ | 2. ಸ್ಥಾನ. “ಇತ್ಯಾಲೇಪುರನುಪ್ರತೀಕ-ನಿಲಯಾಲಕ್ಷಾರಸಾರಶ್ರಿಯಾ” ನೆಪಂ ೧೪-೯೨ | 3. ವಾಸ ಸ್ಥಾನ. “ಭವನ್ಮನಸ್ಕಾರಲಬೋದ್ಗಮೇನ ಕ್ರಮೇಲಕಾನಾಂ ನಿಲಯಃ ಪುರೇವ” ನೆಪಂ ೧೪-೮೪ | 4. ಹಕ್ಕಿಗಳ ಗೂಡು. “ನಿಲಯಾಯ ಸಾಕ್ಷಿನಿ ಇವಾಹ್ವಯತೇ ದದುರಾಕುಲಾಃ ಖಗಕುಲಾನಿ ಗಿರಃ” ಮಾಘಂ ೯-೪ | 5. ಅಸ್ತಮಯ, ಅಸ್ತಮನ್ನು ಹೊಂದುವುದು. “ಸಂವಾರಪೂತಾನಿ ದಿಗಂತರಾಣಿ ಕೃತ್ವಾ ದಿನಾಂತೇ ನಿಲಯಾಯ ಗಂತುಮ್” ರಘುಂ ೨-೧೪ | 6. ಮರೆಯಾಗುವುದು, ಅದೃಶ್ಯ ವಾಗುವುದು. 7. ಮಹಾಪ್ರಳಯ.

**ನಿಲಯನ ನಿಲಯನ** (ನಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಗೂಡು, ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಆವಾಸಸ್ಥಾನ. ನಿಲೀಯಂತೇಽ — ನಿ + ಲೀಡ್ (ಸಂಶ್ಲೇಷಣೆ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭) | 2. ಅಶ್ರಯಸ್ಥಾನ. “ಸಾದೃಶ್ಯಂ ನಿಲಯನನಿಷ್ಪ್ರಕಂಪಪಕ್ಷಿ-ರಾಜಮುರ್ಜಲನಿಧಿಶಾಖಿಭಿರ್ನಗೇಂದ್ರೈಃ” ಕಿರಾಂ ೭-೨೦ |

**ನಿಲಯಿನ್ ನಿಲಯಿನ್** (ವಿಂ) ವಾಸಮಾಡುವ. ನಿಲೀಯತೇ — ನಿ + ಲೀಡ್ (ಸಂಶ್ಲೇಷಣೆ) “ಞಿನಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) |



“ಗಂಧಸ್ಥಲಾಘವಗಲನ್ಮದೋದಕದ್ರವದ್ರುಮಸ್ಕನ್ವನಿಲಾಯಿನೋಜಲಯಃ”

ಮಾಘಂ ೧೨-೬೪।

**ನಿಲಿಮ್ಪ ನಿಲಿಂಪ** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. ನಿ+ಲಿಪ (ಉಪದೇಹ)

“ಶಾಃ” (೩-೧-೧೩೮)। ಮುಗಾಮಃ (೭-೧-೫೯)। “ದೇವಾ  
ನಿಲಿಮ್ಪಾ ಮಠತೋ ಗೋವಾಣಾ ವಾಯುನಾಃ ಸುರಾಃ” ವೈಜಂ।

(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಿಮ್ಪಾ-ಲಿಂಪಾ. 2. ಗೋವು, ಆಕಳು, ಹಸು.

“ಸ್ತ್ರೀ ಗವೀ ತುಮ್ಬಾ ನಿಲಿಮ್ಪಾ ರೋಹಿಣಿ ಚ ಸಾ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕಃ”। -ಲಿಮ್ಪಿಕಾ-ಲಿಂಪಿಕಾ.

**ನಿಲಿನ ನಿಲೀನ** (ವಿಂ) ಪೂರ್ತಿಯಾಗಿ ಬೆರೆತಿರುವ,

ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಇನ್ನೊಂದು ವಸ್ತುವಿನೊಳಗೆ ಸೇರಿ  
ಕೊಂಡಿರುವ. ನಿತರಾಂ ಲೀನಃ। “ವನಾನಿ ತೋಯಾನಿ ಚ

ನೇತ್ರಕಲ್ಪೈಃ ಪುಷ್ಪೈಃ ಸರೋಜೈಶ್ಚ ನಿಲಿನಮೃಜ್ಜೈಃ” ಭಟ್ಟಿಂ ೨-೫।

**ನಿವಪನ ನಿವಪನ** (ನಂ) 1. ಒಡ್ಡುಗಳಿಗೆ ಮಾಡುವ ದಾನ.

ನಿ + ಡು ವಪ್ (ಬಿಜಸಂತಾನೇ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

“ಅಸ್ಮಾತ್ಪರಂ ಬತ ಯಥಾಶ್ರುತಿ ಸಂಭೂತಾನಿ ಕೋ ನಃ ಕುಲೇ ನಿವಪ-  
ನಾನಿ ನಿಯಚ್ಛತೀತಿ” ಶಾಕುಂ ೬-೨೫। 2. ಬೀಜವನ್ನು  
ಬಿತ್ತುವುದು.

**ನಿವರ್ತಕ ನಿವರ್ತಕ** (ವಿಂ) 1. ಹಿಂತಿರುಗಿಸುವವನು.

ನಿ+ವೃತು (ವರ್ತನೆ) “ಫ್ಲುಲ್” (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಹಿಂದಕ್ಕೆ

ಕಳುಹಿಸುವವನು. 3. ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸುವವನು.

**ನಿವರ್ತನ ನಿವರ್ತನ** (ನಂ) 1. ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು, ಒಳಕ್ಕೆ

ಬಾರದಂತೆ ತಡೆಯುವುದು. ನಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಣಿಚ್

“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। ಸೇತುವು ಕ್ಷೇಯಃ ಮತ್ತು

ವನ್ಯಃ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ನೀರನ್ನು ಶೇಖರಿಸಿ ಬಿಡಲು

ನಿರ್ಮಾಣವಾಗುವುದು ಖೇಯವೆನಿಸುವುದು. ನೀರು

ಬಾರದಂತೆ ತಡೆಯಲು ಕಟ್ಟುವುದು ಮಂಧ್ಯವೆನಿಸುವುದು.

“ಸೇತುಶ್ಚ ದ್ವಿವಿಧೋ ಜ್ಞೇಯಃ ಕ್ಷೇಯೋ ವನ್ಯಸ್ತಥೈವ ಚ। ತೋಪ್ರವರ್ತ-  
ನಾತ್ ಜ್ಞೇಯಃ ವನ್ಯಃ ಸ್ಯಾತ್ತನ್ನಿವರ್ತನಾತ್” ಮಿತಾಂ। 2.

ಹಿಂತಿರುಗಿಸುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ

ಬರಮಾಡುವುದು. “ಘನ ಘಟಯಿತು ತಂ ನಿಃಸ್ನೇಹಂ ಯ

ಏವ ನಿವರ್ತನೇ” ಅಮರಂ ೩೨। 3. ಮಾಡಿದ ಉಪಕಾರ

ಅಥವಾ ಅಪಕಾರವನ್ನು ಹಿಂತಿರುಗಿಸುವುದು, ಪ್ರತ್ಯುಪ

ಕಾರ ಅಥವಾ ಪ್ರತೀಕಾರ ಮಾಡುವುದು.

“ವಿನಿಪಾತನಿವರ್ತನಕ್ಷಮಂ ಮತಮಾಲಂಬನಮಾತ್ಮಪೋಷಮ್”

ಕಿರಾಂ ೨-೧೩। 4. ತೊಡಗಿದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡದೆ

ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು, ಕಾರ್ಯದಿಂದ ಹಿಂಜರಿದು ನಿಲ್ಲುವುದು.

“ವಿಜ್ಞಾನಂ ಹೃದಯಂ ಚಿತ್ತಂ ಮನೋ ಬುದ್ಧಿಶ್ಚ ತತ್ಸಮಮ್। ಅನೇನಾತ್ಮಾ

ಕರೋತಿಹ ಪ್ರವರ್ತನನಿವರ್ತನೇ” ಕಾಮಂದಂ ೧-೩೧। 5. ಹಿಂದಕ್ಕೆ

ಬರುವುದು, ಹಿಂತಿರುಗುವುದು. 6. ಮೂರು ರಜ್ಜುಗಳ

ಅಥವಾ 576 ಅಂಗುಲಗಳ ಅಳತೆ. “ನಿವರ್ತನಂ ತು ತಿಸೃಭಿ

ರಜ್ಜುಭಿರ್ಬಲಿಷಂ ಚ ತತ್” ವೈಜಂ।

**ನಿವರ್ತನೀಯ ನಿವರ್ತನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಹಿಂತಿರುಗಿಸಲ್ಪಡುವ.

2. ಹಿಂತಿರುಗಿಸಬೇಕಾದ. ನಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) “ಅನೀಯರ್”

(೩-೧-೯೬)। 3. ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ತಡೆದು

ನಿಲ್ಲಿಸಬೇಕಾದ. “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬)। -ವರ್ತಿತವ್ಯಃ

-ವರ್ತಿತವ್ಯಃ. ನಿ + ವೃತು + ಣಿಚ್ “ತವ್ಯಃ” -ವರ್ತಯಿತವ್ಯಃ

-ವರ್ತಯಿತವ್ಯಃ.

**ನಿವರ್ತಮಾನ ನಿವರ್ತಮಾನ** (ವಿಂ) ಹಿಂತಿರುಗುತ್ತಿರುವ,

ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) “ಶಾನಚ್”

(೩-೨-೧೨೪)।

**ನಿವರ್ತಯತ್ ನಿವರ್ತಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಹಿಂತಿರುಗಿಸುತ್ತಿರುವ,

ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸುತ್ತಿರುವ.

ನಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಣಿಚ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)।

ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

“ಅವೋಚದೇನ ಗಗನಸ್ಪೃಶಾ ರಘುಃ ಸ್ವರೇಣ ಧೀರೇಣ ನಿವರ್ತಯನ್ನಿವ”

ರಘುಂ ೩-೪೩।

**ನಿವರ್ತಿಸ ನಿವರ್ತಿಸ** 1. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ

ಒಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟು. ನಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತಃ”

(೩-೨-೧೦೨)। “ಪ್ರಹಾರಮುಚ್ಛಿಪಿಗಮೇ ರಥಸ್ಥಾ ಯನ್ತುನುಪಾಲಮ್ಯ

ನಿವರ್ತಿಸಾಶ್ವಾನ” ರಘುಂ ೭-೪೪। 2. ಹಿಂತಿರುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

“ನಿವರ್ತಿಸಂ ವೇರಿಜನೋಪಮದಾತ್ ನ್ಯಸ್ತಂ ರಥೇ ಚಕ್ರಮುಪಾದದಾನಃ”

ಯಾದಂ ೨೩-೪೦। 3. ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

**ನಿವರ್ತಿಸ್ ನಿವರ್ತಿಸ್** (ವಿಂ) 1. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತಿರುಗಿದ,

ಪರಾಜ್ಞುಖವಾದ. ನಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) “ಞಿನಿಃ”

(೩-೧-೧೩೪)। “ಯಯೌ ಕಟಾಕ್ಷಃ ಸಹಸಾ ನಿವರ್ತಿಸಾ ತದೀಕ್ಷಣೇ-  
ನಾರ್ಥಪಥೇ ಸಮಾಗಮಮ್” ನೈಷಂ ೧೬-೧೨೩। 2. ತೊಡಗಿದ

ಕಾರ್ಯದಿಂದ ಹಿಂಜರಿದು ನಿಂತಿರುವ,

**ನಿವರ್ತಿಸ್ ನಿವರ್ತಿಸ್** (ವಿಂ) 1. ಹಿಂತಿರುಗಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ

ಕರೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಡುವ. ನಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) “ಞಿತ್”

(೩-೧-೧೨೪)। “ತ್ವಯೇಕಸತ್ಯಾ ತನುತಾಪಶಕ್ತ್ಯಾ ತತೋ

ನಿವರ್ತಿಸ್ ನ ಮನಃ ಕಥಂಚನ” ನೈಷಂ ೯-೫೫। 2. ತಡೆಯು

ಲ್ಪಡುವ, ನಿವಾರಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪರಿಹರಿಸಲ್ಪಡುವ, “ನಿವರ್ತಿಸ್

ಧರ್ಮಶಲ್ಯೇಽಸ್ಮಿನ್ ನಿರ್ದಾನೇ ಸರ್ವಪಾಪಮನಾಂ” ಯಾದಂ ೧೬-೪೭।

**ನಿಲ್ವಯನಿ ನಿಲ್ವಯನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಾವಿನ ಸೋಲೆ.

“ಸರ್ಪಾಚರಸ್ತು ನಿರ್ಮೋಕಃ ಕಚ್ಚುಕೋ ನಿಲ್ವಯನೀಪಿ” ವೈಜಂ।

**ನಿವಸತ್ ನಿವಸತ್** (ವಿಂ) ವಾಸಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ+ವಸ

(ನಿವಾಸೇ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್”



(೪-೧-೬) 1. -ವಸಂತಿ -ವಸಂತಿ. "ಸರ್ವತುನಿವೃತ್ತಿಕರೇ  
ನಿವಸನ್ತುಪೇತಿ ನ ದ್ವಂದ್ವಃಖಮಿಹ ಕಿञ्चಿದಕಿञ್ಚನೋಽಪಿ"  
ಮಾಘಂ ೪-೬೪।

ನಿವಸತಿ ನಿವಸತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೃಹ, ಮನೆ. ನಿ + ವಸ  
(ನಿವಾಸೇ) ಅಧಿಂ "ಅತಿ:" (ತಂ ೪-೬೦)।

ನಿವಸಥ ನಿವಸಥ (ಪುಂ) ಗ್ರಾಮ, ಹಳ್ಳಿ. ನಿ + ವಸ  
(ನಿವಾಸೇ) ಅಧಿಂ "ಅಥ:" (ತಂ ೩-೧೧೩)। "ಗ್ರಾಮಃ  
ಪರ್ಯುಪಸಂನಿಮ್ಯಃ ಪ್ರತೇಶ್ವ ವಸಥಃ ಪರಃ" ವೈಜಂ।

ನಿವಸನ ನಿವಸನ (ನಂ) 1. ಗೃಹ, ಮನೆ. ನಿ + ವಸ  
(ನಿವಾಸೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। 2. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ.  
ನಿ + ವಸ (ಆಚ್ಛಾದನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ಪ್ರಾಪ್ಯ  
ನಾಭಿನದಮಜ್ಜನಮಾಶು ಪ್ರಸ್ಥಿತಂ ನಿವಸನಗ್ರಹಣಾಯ" ಮಾಘಂ  
೧೦-೬೦। "ಶಯ್ಯಂ ನಿವಸನಂ ಸದ್ರ ಬುಂದಿರಂ ವೇಶಮ ಮಂದಿರಮ್"  
ವೈಜಂ।

ನಿವಸಿತ ನಿವಸಿತ (ವಿಂ) ಧರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
ನಿ + ವಸ (ಆಚ್ಛಾದನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।  
"ತೇಸ್ತೇಶ್ವಾಡುಭಿರಜಯಾ ಕಿಲ ತಯಾ ವೃತ್ತೇ ರತಿವ್ಯತ್ಯಯೇ ಲಜ್ಜಾ-  
ಮನ್ಯರಯಾ ತಯಾ ನಿವಸಿತೇ ಭ್ರಾನ್ತಯಾ ಮದಿಯಾಂಶುಕೇ" ಅಮರಂ  
ಪರಿಶಿಂ ೧೪೭।

ನಿವಹ ನಿವಹ (ಪುಂ) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. ನಿದರಾಮುಹ್ಯತೇ  
—ನಿ + ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಘ:" (೩-೩-೧೧೮)। "ಸಿತಾ-  
ಮ್ಬುಜಾನಾಂ ನಿವಹಸ್ಯ ಯಶ್ಚಲಾಢಭಾವಲಿಷ್ಯಾಮಲಿತೋದರಶ್ರಿಯಮ್"  
ನೈಷಂ ೧-೧೧೦। 2. ಸಪ್ತವಾಯುಗಳಲ್ಲೊಂದು, "ನಿವಹೋ  
ಯತ್ರ ವಾತೇಶಃ ಕೇಷಾಂಚಿನ್ನ ಸುಖಪ್ರದಃ। ನ ಪ್ರಚಂಡೋ ನ ಚ ಮೃದುಃ  
ಪ್ರಮಾದೀ ಚ ಪ್ರಭಂಜನಃ"।

ನಿವಾಕು ನಿವಾಕು (ವಿಂ) ಮಾತಿಲ್ಲದ, ಮಾತನಾಡದ.

ನಿವಾತ ನಿವಾತ (ಪುಂ) 1. ಆಶ್ರಯ, ಶರಣಾಗೃಹ, ರಕ್ಷಣ  
ಸ್ಥಾನ, ತೊಂದರೆಯಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಮನೆ. ನಿದರಾಂ  
ವಾತಿ ಗಂಚತ್ಯತ್ರ—ನಿ + ವಾ (ಗತಿಗಂಧನಯೋಃ) ಅಧಿಂ  
"ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೬)। 2. ಗಾಳಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
"ನಿವಾತಸ್ತಿಮಿತಾಂ ವೇಲಾಂ ಚಂದ್ರೋದಯ ಇವೋದಧೇ:" ರಘುಂ  
೧೨-೩೬। 3. ವಾಸಸ್ಥಾನ, ಗೃಹ, ಮನೆ. 4. ಗಾಳಿ  
ಯಿಲ್ಲದ ಜಾಗ. "ಅಂತಃಪರಾಣಾಂ ಮರುತಾಂ ನಿರೋಧಾನಿವಾತ-  
ನಿಷ್ಕಮ್ಯಮಿವ ಪ್ರದೀಪಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೪೮। (ವಿಂ) 5.  
ರಂಧ್ರಗಳಿಲ್ಲದ, ಗಾಳಿಯು ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದ,  
ದೃಢವಾದ, ಶಸ್ತ್ರಗಳಿಗೂ ಅಭೇದ್ಯವಾದ. "ಉಪಾಹಿತೈವೈವುಷಿ  
ನಿವಾತವರ್ಮಭಿಃ ಸ್ಫುರನ್ಮಣಿಪ್ರಸೃತಮರೀಚಿಸೂಚಿಭಿಃ" ಮಾಘಂ  
೧೭-೫೧। 6. ಗಾಳಿಯಿಲ್ಲದ, ಗಾಳಿಯು ಆಡದಿರುವ,

"ಅಪಿತಸ್ತಿಮಿತದೀಪದೃಷ್ಟಯೋ ಗರ್ಭವೇಶಮಸು ನಿವಾತಕೃಷಿಭು"  
ರಘುಂ ೧೯-೪೨।

ನಿವಾತಕವಚ ನಿವಾತಕವಚ (ಪುಂ) ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವಿನ  
ಮೊಮ್ಮಕ್ಕಳು. ಪ್ರಹ್ಲಾದನ ತಮ್ಮನಾದ ಸಂಹ್ರಾದನ  
ಮಕ್ಕಳು. ನಿವಾತಂ ಶಸ್ತ್ರಾಭೇದಂ ಕವಚಂ ಯೇಷಾಮ್। [ಇವರೆಲ್ಲರೂ  
ಬಟ್ಟುಗೂಡಿ ಇಂದ್ರಾದಿಗಳನ್ನು ಖೇಡಿಸುತ್ತಾ ಅವರಿಂದ  
ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಸಮುದ್ರದೊಳಗೆ ಅವಿತುಕೊಳ್ಳು  
ತ್ತಿದ್ದರು. ವನವಾಸ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಅರ್ಜುನನು ತಪಸ್ಸಿ  
ನಿಂದ ಪಾಶುಪತಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಪಡೆದನಂತರ ಇಂದ್ರನೊಡನೆ  
ಸ್ವರ್ಗಲೋಕಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಅಲ್ಲೇ ಕೆಲವು ಕಾಲ ವಾಸವಾಗಿ  
ದ್ದನು. ಆಗ ಇಂದ್ರನ ಆಜ್ಞೆಯಂತೆ ಅರ್ಜುನನು  
ಈ ನಿವಾತಕವಚರನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದನು.] ಭಾಂ ವನಂ ೧೭೨।

ನಿವಾನ್ಯಾ ನಿವಾನ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತನ್ನ ಕರು ಮೃತವಾಗಿ ಬೇರೆ  
ಕರುವಿನಿಂದ ಉಣಿಸಿ ಹಾಲು ಕರೆಯಲ್ಪಡುವ ಹಸು.

ನಿವಾಪ ನಿವಾಪ (ಪುಂ) 1. ಪಿತ್ತಗಳಿಗೆ ಮಾಡುವ ದಾನ,  
ಉದಕದಾನ, ತರ್ಪಣ. ನ್ಯುಪ್ರತೇ — ನಿ + ಡುವಪ್ (ವಿಜ-  
ಸಂತಾನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೧೯)। "ತ್ವಂ ಪುಂಡರೀಕ-  
ಮುಖವಂಧುತಯಾ ನಿರಸ್ತಮೇಕೋ ನಿವಾಪಸಾಲಿಲಂ ಪಿಬಸೀತ್ಯಯುಕ್ತಮ್"  
ಮಾಲತೀಂ ೯-೪೦। 2. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. 3. ಬೀಜ,  
ಬಿತ್ತನೆಯ ಕಾಳು. 4. ಕ್ಷೇತ್ರ, ಭೂಮಿ.

ನಿವಾರ ನಿವಾರ (ಪುಂ) 1. ನಿವಾರಣ, ತಡೆಯುವುದು.  
ನಿ + ವೃ (ವರಣೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೧೮)। 2. ಅಡ್ಡಿ  
ಪಡಿಸುವುದು, ತಪ್ಪಿಸುವುದು. 3. ನಿಷೇಧಿಸುವುದು.

ನಿವಾರಣ ನಿವಾರಣ (ನಂ) 1. ತಡೆಯುವುದು, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸು  
ವುದು, ತಪ್ಪಿಸುವುದು. ನಿ + ವೃ (ವರಣೇ) + ಣಿಕ್  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಆಸ್ವಾದವದ್ವಿಃ ಕಬಲೈಸ್ತೃಣಾಂ  
ಕಂಠ್ಯನೇದೇಶನಿವಾರಣೇಶ್ವ" ರಘುಂ ೨-೫। 2. ಪ್ರತಿಬಂಧಿಸು  
ವುದು, ನಿಷೇಧಿಸುವುದು. 3. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು, ಹೋಗ  
ಲಾಡಿಸುವುದು. "ಸುರಾಲಯಶ್ರೀವಿಪದಾಂ ನಿವಾರಣಂ ಸುರಾರಿ-  
ಸಂಪತ್ಪರಿತಾಪಕಾರಣಮ್" ಕುಮಾಂ ೧೪-೩। (ವಿಂ) 4.  
ತಡೆಯುವ, ತಪ್ಪಿಸುವ. 5. ನಿಷೇಧಿಸುವ. 6. ನಾಶ  
ಪಡಿಸುವ. ನಿ + ವೃ (ವರಣೇ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯು:"  
(೩-೧-೧೩೪)।

ನಿವಾರಣೀಯ ನಿವಾರಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ, ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ನಾಶಪಡಿಸ  
ಬೇಕಾದ, ಹೋಗಲಾಡಿಸಬೇಕಾದ. 3. ತಡೆಯಲ್ಪಡುವ,  
ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ತಡೆಯಬೇಕಾದ, ತಪ್ಪಿಸಬೇಕಾದ.  
5. ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ನಿಷೇಧಿಸಬೇಕಾದ. ನಿ + ವೃ



(ವರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯ್" (೩-೧-೧೬) । "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೬) । -ವಾರಯಿತವ್ಯ: -ವಾರಯಿತವ್ಯಃ.

**ನಿವಾರಯತ್ ನಿವಾರಯತ್** (ವಿಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೋಗಲಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ವೃಜ್ (ವರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಗತೇ: ಪರೇಷಾಮವಿಭಾವನೀಯತಾಂ ನಿವಾರಯದ್ವಿವಿಪದಂ ವಿದೂರಗೈ:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೫೨ । 2. ತಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ತಪ್ಪಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ನಿಷೇಧಿಸುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರತಿಬಂಧಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ. "ಕೌಮಾರಗಂಧಿನಿ ನಿವಾರಯಂತಿ ವೃತ್ತಾನಿ ರೋಮಾವಲಿವೇಶ-ಚಿಹ್ನಾ" ನೈಷಂ ೬-೩೮ । "ಉವಾಚ ಮೇನಾ ಪರಿರಮ್ಯ ವಕ್ಷಸಾ ನಿವಾರಯಂತಿ ಮಹತೋ ಮುನಿವ್ರತಾತ್" ಕುಮಾಂ ೫-೩ ।

**ನಿವಾರಿತ ನಿವಾರಿತ** (ವಿಂ) 1. ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರತಿಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ವೃಜ್ (ವರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । "ನಿವಾರಿತಾಸ್ತೇನ ಮಹೀತಲೇಽಖಿಲೇ ನಿರೀತಿ-ಮಾವಂ ಗಮಿತೇಽತಿವೃಷ್ಟಯ:" ನೈಷಂ ೧-೧೧ । 2. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ತಪ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಬೃಹಜ್ಜಘನಸೇತುನಿವಾರಿತಾನಿ" ಮಾಘಂ ೫-೨೯ । 3. ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿವಾರಿತಾಶಾವಿತತಿ-ಸ್ತದಾಙ್ಗೀತ್ ನಮಃಸ್ಥಲೀ ನಾಕಿಭಿರಪ್ಯದೃಶ್ಯಾ" ಯಾದಂ ೨೦-೨೫ ।

**ನಿವಾರಿತವತ್ ನಿವಾರಿತವತ್** (ವಿಂ) 1. ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸಿದ, ತಪ್ಪಿಸಿದ. 2. ನಾಶಪಡಿಸಿದ. 3. ನಿಷೇಧಿಸಿದ. ನಿ + ವೃಜ್ (ವರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ವಂತಿ -ವಂತೀ.

**ನಿವಾರ್ಯ ನಿವಾರ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಲ್ಪಡುವ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ. "ಅಪ್ರಾಕೃತಸ್ಯಾಹವದುರ್ಮದಸ್ಯ ನಿವಾರ್ಯಮಸ್ಯಾಸ್ತ್ರಬಲೇನ ವೀಯಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೬-೨೪ । 3. ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಡುವ. ನಿ + ವೃಜ್ (ವರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಯತ್" (೩-೧-೧೭) ।

**ನಿವಾರ್ಯಮಾಣ ನಿವಾರ್ಯಮಾಣ** (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ವೃಜ್ (ವರಣೆ) + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ನಿವಾರ್ಯ-ಮಾಣೇರಭಿತೋಽನುಯಾಯಿಭಿ:" ಕುಮಾಂ ೧೫-೨೯ । 2. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 3. ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರತಿಬಂಧಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

**ನಿವಾಸ ನಿವಾಸ** (ಕುಂ) 1. ಇರುವುದು, ವಾಸಮಾಡುವುದು. ನಿ + ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ವಕ್" (೩-೩-೧೨೧) । "ವಾರಾಣಸೀ

ನಿವಿಶತೇ ನ ವಸುಂಧರಾಯಾಂ ತತ್ರ ಸ್ಥಿತೀಮಂಸಭುಜಾಂ ಭುವನೇ ನಿವಾಸ:" ನೈಷಂ ೧೧-೧೧೬ । 2. ಗೃಹ, ಮನೆ. "ಪ್ರಾಸಾದ-ಶೋಭಾತಿಶಯಾಲ್ಯುಭಿ: ಪಥಿ ಪ್ರಭೋನಿವಾಸಾ: ಪಟವೇಶಮಭಿವಂಭು:" ಮಾಘಂ ೧೨-೬೩ । "ತತ್ರ ತತ್ರ ಪ್ರಜಾನಾಂ ಹಿ ನಿವಾಸಂ ಸಮರೋಚಯತ್" ವಿಷ್ಣುಪುಂ । 3. ಅಶ್ರಯಸ್ಥಾನ, ವಾಸಸ್ಥಾನ. "ಭಗನೋ ನಿವಾಸೋಽಯಮಿಹಾಸ್ಯ ಪುಷ್ಪ: ಸದಾ ನತೋ ಯೇನ ವಿಷಾಣಿನಾಗ:" ಮಾಘಂ ೪-೬೩ । "ಗತಿರ್ಮರ್ತಾ ಪ್ರಭು: ಸಾಕ್ಷೀ ನಿವಾಸ: ಶರಣಂ ಸುಹೃತ್" ಗೀತಾ ೯-೧೮ । 4. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. "ನಮಶ್ಚರ್ಮನಿವಾಸಾಯ ನಮಸ್ತೇ ಪೀತವಾಸಸೇ" ಹರಿವಂ ।

**ನಿವಾಸನ ನಿವಾಸನ** (ನಂ) ವಾಸಮಾಡಿಸುವುದು, ಇರುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು.

**ನಿವಾಸಿತಾ ನಿವಾಸಿತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾಸಮಾಡುವಿಕೆ. ನಿವಾಸಿನೋ ಭಾವ: "ತಲ್" (೫-೧-೧೧೯) । "ಆಜನ್ಮನ: ಸಹ ನಿವಾಸಿತಯಾ ಮಯೇವ ಮಾತು: ಪಯೋಧರಪಯೋಽಪಿ ಸಮ ನಿಪೀಯ" ಮಾಲತೀಂ ೯-೪೦ ।

**ನಿವಾಸಿನ್ ನಿವಾಸಿನ್** (ವಿಂ) 1. ವಾಸಮಾಡುವ. ನಿ + ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) । "ಕ್ಷಿತಿತನಮ: ಸುರಲೋಕನಿವಾಸಿಭಿ: ಕೃತನಿಕೇತಮದೃಷ್ಟಪರಸ್ಪರೈ:" ಕಿರಾಂ ೫-೩ । 2. ಒಕ್ಕಲಾಗಿರುವ, ನೆಲೆಸಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) । -ವಾಸಿನೀ -ವಾಸಿನೀ.

**ನಿವಿವಿಕ್ಷತ್ ನಿವಿವಿಕ್ಷತ್** (ವಿಂ) 1. ಕೂಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೇ) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಇಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ.

**ನಿವಿವಿಕ್ಷಾ ನಿವಿವಿಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೂಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ನಿ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೇ) + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨) । 2. ಇಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಇರಿಸಲು ಇಚ್ಛೆ. 3. ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. 4. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ.

**ನಿವಿವಿಕ್ಷು ನಿವಿವಿಕ್ಷು** (ವಿಂ) 1. ಕೂಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ನಿ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೇ) + ಸನ್ "ಃ:" (೩-೨-೧೬೮) । 2. ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. 3. ಇರಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. 4. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ಇಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ.

**ನಿವಿವೃತ್ತತ್ ನಿವಿವೃತ್ತತ್** (ವಿಂ) 1. ಹಿಂತಿರುಗಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೇ) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಮುನೀಶುದಹನಾತಪ್ತಾನ್ ಲಜ್ಜಯಾ ನಿವಿವೃತ್ತತ:" ಕಿರಾಂ ೧೫-೩೦ । 2. ತಡೆಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ.



**ನಿವಿವೃತ್ತಾ ನಿವಿವೃತ್ತ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಿಂತಿರುಗಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ನಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೩-೧೦೨) 2. ತಡೆಯಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ.

**ನಿವಿವೃತ್ಸು ನಿವಿವೃತ್ಸು** (ವಿಂ) 1. ಹಿಂತಿರುಗಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ ಸುವ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ನಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮) 2. ತಡೆಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ.

**ನಿ + ವಿಶ - ಪ್ರವೇಶನೆ** (ತುಡಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) 1. "ನೇವಿಶ:" (೧-೩-೧೭) ಇತ್ಯಾತ್ಮನೇಪದಮ್. ನಿವಿಶತೇ. ನಿವಿವಿಶೇ. ನಿವೇಷಾ ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಇಡು, ಇರಿಸು. "ತತಃ ಪ್ರಿಯೋಪಾತ್ತರಸೇಽಧರೋಽಠೇ ನಿವೇಶ್ಯ ದಧ್ಮೌ ಜಲಜಂ ಕುಮಾರ:" ರಘುಂ ೧೬-೩೭. 2. ಕೊಡು, ಕುಳಿತುಕೊಡು. "ಸ ಕಾಞ್ಚನೇ ಯತ್ರ ಮುನೇನುಜಯಾ ನವಾಮ್ಬುದಶ್ಯಾಮವಪುರ್ಯವಿಕ್ಷತ" ಮಾಘಂ ೧-೧೯. 3. (ಬುದ್ಧಿಯನ್ನು) ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲಿಸು, ನಿಶ್ಚಲವಾಗಿ ನಿಲ್ಲಿಸು. "ಮಯೇವ ಮನ ಆಧತ್ಸವ ಮಯಿ ಬುದ್ಧಿ ನಿವೇಶ್ಯ" ಗೀತಾ ೧೨-೮. 4. ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ ಒಂದು ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಕುಳಿರಿಸು. "ಸ ನಿವೇಶ್ಯ ಕುಶಾವತ್ಯಾಂ ರಿಪುನಾಗಾಡ್ಕುಶಂ ಕುಶಮ್" ರಘುಂ ೧೫-೧೭. 5. ಕಾಗದದ ಮೇಲೆ ಗುರುತಿಸು, ಕಾಗದದಲ್ಲಿ ತೋರ್ಪಡಿಸು. "ತುಲ್ಯಾನುರಾಗ-ಪಿಶುನಂ ಲಲಿತಾರ್ಥಬಂಧಂ ಪತ್ರೇ ನಿವೇಶಿತಮುದಾಹರಣಂ ಪ್ರಿಯಾಯಾ:" ವಿಕ್ರಂ ೨-೧೩. 6. ಪ್ರವೇಶಿಸು. "ತತಃ ವಾವೃತ್ಯಮಾನಾಽಸೌ ರಾಮಶಾಲಾಂ ನ್ಯವಿಕ್ಷತ" ಭट्टಿಂ ೪-೨೮. 7. ಮದುವೆ ಯಾಗು. "ನಿವೇಶ: ಪುಂಸಿ ವಿನ್ಯಾಸೇ ಶಿಬಿರೋದ್ರಾಹಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ. 8. ಬೀಡುಮಾಡು, ಶಿಬಿರದಲ್ಲಿ ಇಳಿಸು. "ಕುಶ-ಧ್ವಜಸ್ತಾನಿ ಚಲಧ್ವಜಾನಿ. ನಿವೇಶಯಾಮಾಸ ಬಲಿ ಬಲಾನಿ" ರಘುಂ ೧೬-೩೭.

**ನಿವಿವೃತ್ತ ನಿವಿವೃತ್ತ್ಯಾ** (ವಿಂ) 1. ಕುಳಿತುಕೊಂಡಿರುವ. ನಿ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) 1. "ತಯೋಃ ಸಮಾನೀಯ ವರಾಸನಂ ಮುದಾ ನಿವಿವೃತ್ತಯೋಸ್ತತ್ರ ಮಹಾತ್ಮನೋಸ್ತಯೋ:" ಭಾಗಂ ೧೦-೮೫-೩೬. 2. ಬೀಡುಬಿಟ್ಟಿರುವ, ಶಿಬಿರದಲ್ಲಿ ಇಳಿದು ಕೊಂಡಿರುವ. "ನಿವಿವೃತ್ತಮುದಧೇ: ಕುಲೇ ತಂ ಪ್ರಪೇದೇ ವಿಮಿಷಣ:" ರಘುಂ ೧೨-೬೮. 3. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ಇಟ್ಟಿರುವ, ನಿಶ್ಚಲವಾಗಿ ಇರಿಸಿರುವ, ಏಕಾಗ್ರತೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಭವಂತಿ ಸಾಮ್ಯೇಽಪಿ ನಿವಿವೃತ್ತೇತಸಾಂ ವಪುರ್ವಿಶೇಷೇವತಿಗೋರವಾ: ಕ್ರಿಯಾ:" ಕುಮಾಂ ೫-೩೧. 4. ಪ್ರವೇಶಿಸಿರುವ, ಒಳಗೆ ಹೋಗಿರುವ. "ಉಡುಗಣಪರಿವಾರೋ ನಾಯಕೋಽಪ್ಯೋಷಧಿನಾಮಮೃತಮಯಶರೀರ: ಕಾಂತಿಯುಕ್ತೋಽಪಿ ಚಂದ್ರ: ಭವತಿ ವಿಕಲಮूर्ತಿ: ಮಂಡಲಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ಭಾನೋಃ ಪರಸದನನಿವಿವೃತ್ತ: ಕೋ ಲಘುತ್ವಂ ನ ಯಾತಿ" ಉಡುಂ.

5. ಇರುವ. "ಕೋಸಲೋ ನಾಮ ಮುದಿತ: ಸ್ಫೋತೋ ಜನಪದೋ ಮಹಾನ್. ನಿವಿವೃತ್ತ: ಸರಯುತೀರೇ ಪ್ರಭೂತಧನಧಾನ್ಯವಾನ್" ರಾಮಾಂ.

**ನಿವಿವೃತ್ತ ನಿವಿವೃತ್ತ** (ನಂ) 1. ಕಂಠದಲ್ಲಿ ಲಂಬಿಸುವಂತೆ ಧರಿಸಿದ ಯಜ್ಞೋಪವೀತ. ನಿವಿವೃತ್ತೇ ಸಮ - ವ್ಯೇಖ್ಯ (ಸಂವರಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) 1. ಸಂಪ್ರಸಾರಣಮ್ (೬-೧-೧೫) 2. ಹೊದೆಯಲ್ಪಟ್ಟ ವಸ್ತು.

**ನಿವಿವೃತ್ತಿನ್ ನಿವಿವೃತ್ತಿನ್** (ವಿಂ) ಕಂಠದಲ್ಲಿ ಲಂಬಿಸುವಂತೆ ಯಜ್ಞೋಪವೀತವನ್ನು ಧರಿಸಿದ. ನಿವಿವೃತ್ತಮಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫) 1. "ಕೃತೋಪವಿತೋ ದೇವೇಭ್ಯ: ನಿವಿವೃತ್ತಿ ಚ ಭವೇತ್ತತ: ಮನುಷ್ಯಾಸ್ತರ್ಪಯೇದ್ಭಕ್ತ್ಯಾ ಋಷಿಪುತ್ರಾನ್ ಋಷಿ-ಸ್ತಥಾ" 1.

**ನಿವೃತ್ತ ನಿವೃತ್ತ** (ನಂ) 1. ಉತ್ತರೀಯ, ಹೊದೆಯುವ ವಸ್ತು. ನಿ + ವೃತ್ (ವರಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) 1. (ವಿಂ) 2. ಧರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊದೆಯಲ್ಪಟ್ಟ.

**ನಿವೃತ್ತ ನಿವೃತ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಹಿಂತಿರುಗಿದ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ನಡೆದ. ನಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) 1. "ನಿವೃತ್ತೇ ಭರತೇ ಭೀಮಾನವೀರಾಮಸ್ತಪೋವನಮ್" ಭट्टಿಂ ೪-೧. 2. ನಿಂತು ಹೋದ, ದೂರವಾದ, ಅದೃಶ್ಯವಾದ. "ನಿವೃತ್ತೇ ಸದ್ಭಾವೇ ಜನ ಇವ ಜನೇ ಗಂಚತಿ ಪುರ:" ಅಮರಂ ೪೩. 1. "ನಿವೃತ್ತ-ವೃತ್ತೋಪಯೋಧರವಲಮ: ಪ್ರವೃತ್ತಿನಿಹ್ನಾದಿವಿಭೂಷಣಾರವ:" ಕಿರಾಂ ೮-೩. 3. ಕೊನೆಗೊಂಡ, ಅವಸಾನಹೊಂದಿದ. "ನ ದ್ವೇಷಿ ಸಂಪ್ರವೃತ್ತಾನಿ ನ ನಿವೃತ್ತಾನಿ ಕಾಡ್ಕತಿ" ಗೀತಾ ೧೪-೨೨. 4. ಹಿಮ್ಮೆಟ್ಟಿದ, ಹಿಂಜರಿದುಹೋದ, ಪರಾಜಯವಿನಾದ. "ದಾಂತಸ್ತ್ರಿಷವಣಸ್ತಾಯೀ ನಿವೃತ್ತಶ್ಚ ಪ್ರತಿಗ್ರಹಾತ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೪೮. 5. ವಿಮುಖನಾದ, ಅಸಕ್ತಿಯನ್ನು ತೋರಿಸಿದ. "ಗಾಂಧರ್ವಮಸ್ತ್ರಂ ಕುಸುಮಾಸ್ತ್ರಕಾಂತ: ಪ್ರಸ್ವಾಪನಂ ಸ್ವಪ್ನನಿವೃತ್ತಲೌಲ್ಯ:" ರಘುಂ ೭-೬೧. 6. ದೂರಕ್ಕೆ ಸರಿದ, ದೂರದಲ್ಲಿ ನಿಂತ. "ಏನೋ ನಿವೃತ್ತೇಂದ್ರಿಯವೃತ್ತಿರೇನಂ ಜಗಾದ ಭೂಯೋ ಜಗದೇಕನಾಥ:" ರಘುಂ ೫-೨೩. 7. ತ್ಯಜಿಸಿದ, ತೊರೆದ, ಬಿಟ್ಟಿರುವ. "ಅನಿವೃತ್ತಮಾಂಸಾನಾಮೇವಂ ಕಲ್ಪಂ ವ್ಯಾಹರಂತಿ ಕೇಚಿತ್. ನಿವೃತ್ತಮಾಂಸಸ್ತು ತತ್ರಭವಾನ್ ಜನಕ:" ೩೦ ರಾಂ ೪. (ನಂ) 8. ಹಿಂತಿರುಗುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ನಡೆಯುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು. ನಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) 1. 9. ಅಭಾವ. 10. ದೂರವಾಗುವುದು, ಅದೃಶ್ಯವಾಗುವುದು, ಅಗೋಚರವಾಗುವುದು. 11. ಕೊನೆಗೊಳ್ಳುವುದು. 12. ಹಿಮ್ಮೆಟ್ಟುವುದು, ಹಿಂಜರಿಯುವುದು. 13. ದೂರಕ್ಕೆ ಸರಿಯುವುದು. 14. ತ್ಯಜಿಸುವುದು, ತೊರೆಯುವುದು. 15. ನಿವೃತ್ತಿಪೂರ್ವಕವಾದ ಕರ್ಮ (ಧರ್ಮ). "ಪ್ರವೃತ್ತಂ ಚ



ನಿವೃತ್ತಂ ಚ ದ್ವಿವಿಧಂ ಕರ್ಮ ವೈದಿಕಮ್ |-- ಸರ್ಗಾದೌ ಸೃಜತಾ ಸ್ಮೃತಃ  
ಬ್ರಹ್ಮಣಾ ವೇದರೂಪಿಣಾ" ಹೇಮಾದ್ರಿಂ |

**ನಿವೃತ್ತಾತ್ಮನ್ ನಿವೃತ್ತಾತ್ಮನ್** (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು, ಪರಮಾತ್ಮ. ನಿವೃತ್ತಾ: ನಿವೃತ್ತವರ್ತಿಗಳಿಗೊಪ್ಪಾತ್ಮಾನೋಪ್ಯಾ. "ಅನಿವೃತ್ತಿ-  
ನಿವೃತ್ತಾತ್ಮಾ ಸಂಕ್ಷೇಪ್ತಾ ಕ್ಷೇಮಕುಚ್ಚಿವ:" ವಿಂ ಸಂ |  
(ವಿಂ) 2. ವಿಷಯಾಭಿಲಾಷೆಯನ್ನು ತೊರೆದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ.  
ನಿವೃತ್ತ: ವಿಷಯೇಭ್ಯ: ಉಪರತ: ಆತ್ಮಾ ಯಸ್ಯ |

**ನಿವೃತ್ತಿ ನಿವೃತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಿಂತಿರುಗುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ  
ನಡೆಯುವುದು. ನಿ+ವೃತ್ತ (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94).  
"ನಿಜಾದನುಬ್ರಜ್ಯ ಸ ಮಂಡಲಾವಧೇನಲಂ ನಿವೃತ್ತೌ ಚಡುಲಾಪತಾಂ  
ಗತ:" ನೈಷಂ 16-117. 2. ಅಂತ್ಯವಾಗುವುದು,  
ಅವಸಾನಗೊಳ್ಳುವುದು, ಕೊನೆಯಾಗುವುದು. "ನಿವೃತ್ತಿ  
ಮೇಷ್ಯಂತಿ ಪರಂ ದುರ್ದುರಸ್ತವಯೇವ ಮಾತ: ಸುತಶೋಕಸಾಗರ:" ನೈಷಂ  
1-136. 3. ನಾಶಗೊಳ್ಳುವುದು, ಅಗೋಚರವಾಗು  
ವುದು, ಕಳೆದುಹೋಗುವುದು. "ಉಪಲಾಭವತೀ ದಿವ್ಯಚ್ಯುತಂ  
ವಿವಶಾ ಶಾಪನಿವೃತ್ತಿಕಾರಣಮ್" ರಘುಂ 6-62. 4. ಹಿಂದಕ್ಕೆ  
ಸರಿಯುವುದು, ಹಿಂಜರಿಯುವುದು. "ಪ್ರಾಣಾಘಾತಾನಿವೃತ್ತಿ:  
ಪರಧನಹರಣಂ ಸಂಯಮ: ಸತ್ಯವಾಕ್ಯಮ್" ಭರ್ತುಂ 1-44. 5.  
ಜಗತ್ತಿನ ವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ ದೂರವಾಗುವುದು,  
ಪ್ರಾಪಂಚಿಕ ವ್ಯವಹಾರವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸುವುದು. 6. ವಿರಾಮ  
ಹೊಂದುವುದು, ವಿಶ್ರಾಂತಿ ಹೊಂದುವುದು, 7. ತ್ಯಜಿಸು  
ವುದು, ತೊರೆಯುವುದು. ಇದು ದ್ವೇಷದಿಂದ ಉಂಟಾ  
ಗುವ ಒಂದು ಗುಣ. ದುಃಖದ ನಿವೃತ್ತಿಗೆ ದುಃಖ  
ದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ದ್ವೇಷವು ಕಾರಣವಾಗುವುದರಿಂದ  
ನಿವೃತ್ತಿಯು ದುಃಖದ್ವೇಷದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದು. ನಿವೃತ್ತಿ  
ಪ್ರತಿ ಫಲಗತದ್ವೇಷೋ ದ್ವಿಷ್ಟಸಾಧನತಾಜ್ಞಾನಂ ಚ ಕಾರಣಮ್ |  
"ನಿವೃತ್ತಿस्तು ಭವೇದ್ವೇಷಾದ್ವಿಷ್ಟಸಾಧನತಾ ಧಿವಿ:" ಭಾಷಾಪಂ  
141. 8. ಅಭಾವ. "ವ್ಯಾಪಕನಿವೃತ್ತೌ ವ್ಯಾಪ್ಯನಿವೃತ್ತೇ-  
ರಾವಶ್ಯಕತ್ವಾತ್" | "ವಿಪಕ್ಷ: ಸಾಧ್ಯಧರ್ಮನಿವೃತ್ತಿಮಾನ್" |

**ನಿವೇದನ ನಿವೇದನ** (ನಂ) 1. ಒಪ್ಪಿಸುವುದು, ಸಮರ್ಪಿಸು  
ವುದು. ನಿ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್"  
(3-3-114). "ಶ್ರವಣಂ ಕೀರ್ತನಂ ವಿಷ್ಣೋ: ಸ್ಮರಣಂ  
ಪಾದಸೇವನಮ್ | ಅರ್ಚನಂ ವಂದನಂ ದಾಸ್ಯಂ ಸರ್ವಮಾತ್ಮನಿವೇದನಮ್"  
ಭಾಗಂ 9-4-23. 2. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸುವುದು, ಅರಿಕೆ ಮಾಡು  
ವುದು. "ನಿವೇದನಮಿಹಾಸ್ಮಾಕಮಂಶೋ ನಿರ್ವಹಣಂ ತ್ವಯಿ" ಯಾದಂ  
16-47. 3. ತಿಳಿಸುವುದು, ಸೂಚಿಸುವುದು. "ವ್ಯಸ್ಯಯಾ-  
ಕೂತವಿದಾ ದಮಸ್ವಸು: ಸ್ಮಿತಂ ವಿತಲ್ಯಾಭಿದಧೇಶ್ಚ ಭಾರತೀ |  
ಇತ: ಪರೇಷಾಮಪಿ ಪಶ್ಯ ಯಾಚತಾಂ ಭವನ್ಮುಖೇನ ಸ್ವನಿವೇದನ-  
ತ್ವರಾಮ್" ನೈಷಂ 12-49 |

**ನಿವೇದನೀಯ ನಿವೇದನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಒಪ್ಪಿಸಲ್ಪಡುವ,  
ಸಮರ್ಪಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಒಪ್ಪಿಸಬೇಕಾದ, ಸಮರ್ಪಿಸ  
ಬೇಕಾದ. 3. ತಿಳಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ತಿಳಿಸಬೇಕಾದ.  
5. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸಬೇಕಾದ. ನಿ+  
ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96). "ತವ್ಯ:"  
(3-1-96). -ವೇದಿತವ್ಯಮ್ -ವೇದಿತವ್ಯಮ್.

**ನಿವೇದಯತ್ ನಿವೇದಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಸಮರ್ಪಿಸುತ್ತಿರುವ.  
ನಿ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124).  
2. ತಿಳಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸೂಚಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಸ್ಪಷ್ಟಂ ಬಹಿ:  
ಸ್ಥಿತವತೇಷು ನಿವೇದಯಂತಶ್ಚೇಷ್ಠಾವಿಶೇಷಮನುಜೀವಿಜನಾಯ  
ರಾಜಾಮ್" ಮಾಘಂ 4-67. 3. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಅರಿಕೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಹೇಳುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್"  
(4-1-6). -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ. "ಪ್ರಥಮೇವ ಶಾರ್ದೂಲನಕ್ಷರಾ-  
ಲಂಕೃತಸ್ಯ ಮಕರಂದಸ್ಯ ಮೋಹವಿಚ್ಛೇದಂ ನಿವೇದಯಂತ್ಯಾ ಭಗವತ್ಯಾ  
ನಿಯುಕ್ತೇನ ಭವತಾ ಮಾಲತ್ಯಾ ಸಮಂ ಜೀವಿತೇನ ಹೃದಯಂ ಪ್ರಸಾದೀ-  
ಕೃತಮ್" ಮಾಲತೀಂ 6 |

**ನಿವೇದಯಿತ್ ನಿವೇದಯಿತ್** (ವಿಂ) 1. ಸಮರ್ಪಿಸುವ,  
ಒಪ್ಪಿಸುವ. ನಿ+ವಿದ (ಜ್ಞಾನ)+ಣಿಚ್ "ತೃತ್" (3-1-133).  
2. ತಿಳಿಸುವ. 3. ಸೂಚಿಸುವ. 4. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸುವ,  
ಅರಿಕೆಮಾಡುವ, ಹೇಳುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-4).  
-ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

**ನಿವೇದಿತ ನಿವೇದಿತ** (ವಿಂ) 1. ಸಮರ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಪ್ಪಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ವಿದ + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102).  
"ಮಯಾ ನಿವೇದಿತಂ ಭಕ್ತ್ಯಾ ಗೃಹಾಣ ಪರಮೇಶ್ವರಿ" | 2. ತಿಳಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. "ತೇನ ಕಿಲ ಮಾಧವಪ್ರಿಯವಯಸ್ಯೇನ  
ಮಕರಂದೇನ ಸಕಲೋ ಮದನೋದಾನವೃತ್ತಾಂತೋ ಭಗವತ್ಯೇ ನಿವೇದಿತ:"  
ಮಾಲತೀಂ 2. 3. ಸೂಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕಸ್ಯಾಪಿ ಕೋಽಪಿತಿ  
ನಿವೇದಿತಂ ಚ ಧಾತ್ರೇಯಿಕಾಯಾಶ್ಚತುರಂ ವಚಶ್ಚ" ಮಾಲತೀಂ  
1-36. 4. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅರಿಕೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
(ನಂ) 5. ವಿಜ್ಞಾಪನೆ, ಅರಿಕೆ. "ತವ ಸಮಂತಿಮೇವ  
ಕೇವಲಾಮಧಿಗಂತುಂ ಧಿಗಿದಂ ನಿವೇದಿತಮ್" ನೈಷಂ 2-48. 6.  
ಸೂಚಿಸುವುದು, ತಿಳಿಸುವುದು. 7. ಹೇಳುವುದು.  
8. ಸಮರ್ಪಿಸುವುದು, ಒಪ್ಪಿಸುವುದು. ನಿ+ವಿದ ಭಾವೇ  
"ಕ್ತ:" (3-3-114) |

**ನಿವೇದ್ಯ ನಿವೇದ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಅರ್ಪಿಸಲ್ಪಡುವ. ನಿ + ವಿದ  
(ಜ್ಞಾನ) "ಪ್ಯತ್" (3-1-124). "ತಲಿತಲಿಕಿತ-  
ಪರ್ಪಟಾಭಮಿಂದುಂ ವಿತರ ನಿವೇದ್ಯಮುಪಾಸ್ವ ಪಂಚಬಾಣಮ್" ನೈಷಂ  
22-147. 2. ಅರ್ಪಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. "ಕರ್ಣಿ



ಕಿಮಸ್ಯಾ ರತಿತತ್ಪತ್ಯಾ ನಿವೇಶನಪೂರ್ವಿ ವಿಧಿಶಿಲ್ಪಮೀದೃಕ್" ನೆಪಂ ೭-೬೧। 3. ತಿಳಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹೇಳಲ್ಪಡುವ.

4. ತಿಳಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ, ಹೇಳಲು ಅರ್ಹವಾದ.

5. ಸೂಚಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ಸೂಚಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ.

7. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಡುವ. 8. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ.

**ನಿವೇಶನ ನಿವೇಶನಮಾನ (ವಿಂ)** 1. ತೋರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಹೇಳಿ ತಿಳಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ವಿಡ (ಜ್ಞಾನೇ) + ಣಿಚ್ "ಶಾನಚ್" (3-2-124)। "ನಿವೇಶನವನಪಾಲಪಾಣಿನಾ ವ್ಯಲೋಕಯತುಕಾನನಕಾಮನೀಯಕಮ್" ನೆಪಂ 1-೭೬। 2. ಅರ್ಪಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 3. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 4. ಸೂಚಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

**ನಿವೇಶ ನಿವೇಶ (ಪುಂ)** 1. ಪ್ರವೇಶ. ನಿ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) ಭಾವೇ "ಘ್" (3-3-12)। 2. ಇಡುವುದು, ಇರಿಸುವುದು. "ಗೌರವಂ ವ್ಯಧಿತ ವಾಗಧಿದೇವ್ಯಾಃ ಶ್ರೀಗೃಹೋರ್ವನಿಜಕಂಠ-ನಿವೇಶಾತ್" ನೆಪಂ 21-೪೦। 3. ಕೊಡುವುದು, ಕುಳಿತು ಕೊಳ್ಳುವುದು. "ನಿವೇಶದೇಶಾತತಘತಪಕ್ಷಃ ಪಪಾತ ಭೂಮಿಪುಷ್ಪಮಿಹಂಸಃ" ನೆಪಂ 3-1। 4. ಮದುವೆಯಾಗುವುದು, ಜೀವಿತವನ್ನು ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ಒಂದು ನೆಲೆಯಲ್ಲಿಡುವುದು. "ತತೋ ನಿವೇಶಾಯ ತದಾ ಸ ವಿಪ್ರಃ ಸಂಶಿತವ್ರತಃ। ಮಹಿಂ ಚಾರ ದಾರಾರ್ಥಿಂ ನ ಚ ದಾರಾನವಿಂದತ" ಭಾಂ ಆದಿಂ 14-1। 5. ಗೃಹ, ಮನೆ. ನಿ + ವಿಶ ಅಧಿಂ "ಘ್" (3-3-121)। "ಭೂಷಂ ದದರ್ಶಾಶ್ರಮಮಂಢಪೋಪಮಾಃ ಸಪುಷ್ಪಹಾಸಾಃ ಸ ನಿವೇಶವೀರಃ" ಕಿರಾಂ 4-19। 6. ಶಿಬಿರ, ಠಾಣ, ಬೀಡು. "ಭೂಮತುಃ ಸಮಧಿಕಮಾದಧೇ ತದೋರ್ವ್ಯಾಃ ಶ್ರೀಮತಾಂ ಹರಿಸಖವಾಹಿನಿನಿವೇಶಃ" ಕಿರಾಂ ೭-೨೭। 7. (ಎಸಾರವಾದ) ಕ್ಷೇತ್ರ, (ವಿಶಾಲವಾದ) ಪ್ರದೇಶ, ಹೊರರೇಖೆ. "ನವಾತಪಾಲೋಹಿತಮಾಹಿತಂ ಮುಹುರ್ಮಹಾನಿವೇಶೋ ಪರಿತಃ ಪಯೋಧರೋ" ಕಿರಾಂ 4-೮। 8. ಸಣ್ಣ ಪಟ್ಟಣ. "ನಿವಾಸಃ ಸಂನ್ಯವಿನ್ಯಾಸೇ ನ್ಯಾಸೇ ದ್ರಙ್ಗವಿವಾಹಯೋಃ" ಹೇಮಂ।

**ನಿವೇಶನ ನಿವೇಶನ (ನಂ)** 1. ಇಡುವುದು, ಇರಿಸುವುದು. ನಿ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)। "ರಮ್ಯೇಷು ಹರ್ಮ್ಯೇಷು ನಿವೇಶನೇನ ಸಪರ್ಯಯಾ ಕುಣ್ಡಿನನಾಕನಾಥಃ" ನೆಪಂ 10-27। 2. ಪ್ರವೇಶ. 3. ಸ್ಥಿತಿ, ಇರುವಿಕೆ. 4. ಗೃಹ, ಮನೆ. ನಿ + ವಿಶ ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)। "ಸ್ತ್ರಿಯೋಪಸುಯುತಃ ಸೋಽಥ ಪ್ರಾಪ್ಯಾಯೋಧ್ಯಾಂ ಸುದರ್ಶನಃ। ಸಮಾನ್ಯ ಸರ್ವಲೋಕಾಂಶ್ಚ ಯಯಿ ರಾಜಾ ನಿವೇಶನಮ್" ದೇವಿಭಾಂ। 5. ಗೃಹ ನಿರ್ಮಾಣದ ಸ್ಥಳ, ಮನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಜಾಗ. 6. ನಗರ, ಪಟ್ಟಣ. "ಯೋ ಹಿ ವಂಶಂ ಸಮುತ್ಪಾದ್ಯ ಪಾಥಿವಸ್ಯ ನಿವೇಶನೇ। ನ ವಿಧತ್ತೇ ನೃಪಂ ತತ್ರ ನರಕಂ ಸ ಹಿ ಗಚ್ಛತಿ" ರಾಮಾಂ। (ವಿಂ)

7. ಪ್ರವೇಶಿಸುವ. ನಿ + ವಿಶ "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134)। "ಆಕಾಶೇಽವಸ್ಥಿತಃ ಶಬ್ದಃ ಸರ್ವಶ್ರುತನಿವೇಶನಃ" ಹರಿವಂ।

**ನಿವೇಶನೀಯ ನಿವೇಶನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಇಡಲ್ಪಡುವ, ಇರಿಸಲ್ಪಡುವ. ನಿ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। 2. ಇಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. 3. ಇಡಬೇಕಾದ. "ತವ್ಯಃ" (3-1-96)। -ವೇಷವ್ಯಮ್ -ವೇಷ್ಯಮ್ -ವ್ಯಮ್.

**ನಿವೇಶಯತ್ ನಿವೇಶಯಾತ್ (ವಿಂ)** ಇಡುತ್ತಿರುವ, ಇರಿಸುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124)। "ಶನೇರಪೂರ್ಣಪ್ರತಿಕಾರಪೇಲವೇ ನಿವೇಶಯಂತಂ ನಯನೇ ಬಲೋದಧೌ" ಕಿರಾಂ 14-36। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (4-1-6)। -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

**ನಿವೇಶಿತ ನಿವೇಶಿತ (ವಿಂ)** 1. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "ಯದೃಶೋ ಮಯಿ ನಿವೇಶಿತಮೇತನ್ನಿಷ್ಕಯೋಽಸ್ತು ಕತಮಸ್ತು ತದೀಯಃ" ನೆಪಂ 4-90। 2. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನೆಲೆಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಪ್ರವೇಶಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ನಿವೇಶಯ ನಿವೇಶಯ (ವಿಂ)** 1. ಇಡಲ್ಪಡುವ, ಇರಿಸಲ್ಪಡುವ. ನಿ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಘ್" (3-1-124)। 2. ಇಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. "ತದಿಯಂ ಪುಃ ಪ್ರಕಾಶಾರ್ಥಂ ನಿವೇಶಯಾ ಮಯಿ ಸುಬ್ರತ" ಹರಿವಂ। 3. ವಿವಾಹಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲು ಅರ್ಹನಾದ. "ಭವಾನಿವೇಶಯಃ ಪ್ರಥಮಂ ತತೋಽಯಂ ಭೀಮೋ ಮಹಾಬಾಹುರಚಿನ್ಯಕರ್ಮಾ" ಭಾಂ ಆದಿಂ 20-6-೮। 4. ಕುಳಿರಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಕುಳಿರಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. 6. ತೋರಿಸಲ್ಪಡುವ. 7. ತೋರಿಸಬೇಕಾದ. "ಅವಶ್ಯಂ ರಾಜಪಿಂಡಸ್ತೇನಿವೇಶಯ ಇತಿ ಮೇ ಮತಿಃ" ಭಾಂ ವನಂ 36-16।

**ನಿಶ್ ನಿಶ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಠಾತಿ. ನಿಶ್ಚಯಾಂ ಶಯತಿ ತನೂಕರೋತಿ ವ್ಯಾಪಾರಾನ್-ನಿ + ಶೋ (ತನೂಕರಣೇ) "ಕಃ" (3-1-136)। ಪುಷಂ। "ಸಾ ಹಿ ಯಾ ನಿಶಿ ಪುನರಿದನೋದಯಂ ವಾಙ್ಮತಿ ಸ್ಮ ಪತಿಕೇಲಿಲಜ್ಜಿತಾ" ನೆಪಂ 1೮-44। 2. ಅರಿಶಿನ.

**ನಿಶಠ ನಿಶಠ (ಪುಂ)** ಬಲರಾಮನ ಒಬ್ಬ ಪುತ್ರ, ರೇವತಿಯ ಮಗ. "ಬಲದೇವೋಽಪಿ ರೇವತಿಯಾ ನಿಶಠೋಽಮುಕೌ ಪುತ್ರಾವಜನಯತ್" ವಿಷ್ಣುಪುಂ।

**ನಿಶಮನ ನಿಶಮನ (ನಂ)** 1. ನೋಟ, ನೋಡುವುದು. ನಿ + ಶಮ (ಆಲೋಚನೆ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)। 2. ಶ್ರವಣ, ಕೇಳುವುದು. "ನಿಶಮನಮುಕ್ತಂ ದೃಷ್ಟೌ ಶ್ರುತೌ" ಮೇದಿಂ।

**ನಿಶಮಯತ್ ನಿಶಮಯಾತ್ (ವಿಂ)** 1. ನೋಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಶಮ (ಆಲೋಚನೆ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124)।



2. ಶ್ರವಣಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಕೇಳುತ್ತಿರುವ. “ಸತತಂ  
ನಿಶಾಮಯಂತು ತಸ್ಯ ಯಃ ಪ್ರಯಾಂತಿ ಮುದಮಸ್ಯ ಸೂರಯಃ” ಕಿರಾಂ  
೧೩-೪೭.

**ನಿಶಾಮಿತ ನಿಶಾಮಿತ (ವಿಂ)** 1. ಶ್ರುತವಾದ, ಕೇಳಲ್ಪಟ್ಟ.  
ನಿ + ಶಮ (ಆಲೋಚನೆ) + ಣಿच् “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨).  
“ಕಥಂ ಸವಿನಯನಿಶಾಮಿತಗೃಹಿವಚನೋ ವಿಸರ್ಜಿತಾಶೇಷಸದೃಶ-  
ದಾರಕ ಇತೋಽಭಿಮುಖಮಪಸರತಿ ಏವ ಸ ವತ್ಸಃ” ಉಂ ರಾಂ ೪.  
2. ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ನಿಶಾ ನಿಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ರಾತ್ರಿ. ನಿದ್ರಾಂ ಶಯತಿ ತನೂಕರೋತಿ  
ವ್ಯಾಪಾರಾನ್—ನಿ+ಶೋ (ತನೂಕರಣ) “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೬).  
“ವಿಹಾಯ ಸರ್ವಾನ್ ವೃಣುತೇ ಸ್ಮ ಕಿಂ ನ ಸಾ ನಿಶಾಪಿ ಶೀತಾಂಶುಮನೇನ  
ಹೇತುನಾ” ನೈಷಂ ೯-೪೮. 2. ಮರದರಿತನ. 3. ಅರಿತನ.  
“ನಿಶಾ ದಾರುಹರಿದ್ರಾಯಾಂ ಸ್ಯಾತ್ ತ್ರಿಯಾಮಾಹರಿದ್ರಯೋಃ” ಮೇದಿಂ.

**ನಿಶಾಕರ ನಿಶಾಕರ (ಪುಂ)** 1. ಚಂದ್ರ. ನಿಶಾಂ ಕರೋತಿ—  
ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣ) “ಠಃ” (೩-೨-೨೧). “ಘನಸಂವೃತಯಾ-  
ಮ್ಬುಧಾಗಮೇ ಕುಮುದೇನೇವ ನಿಶಾಕರತ್ವಿಷಾ” ನೈಷಂ ೨-೪೬.  
2. ಮಹಾದೇವ, ಪರಶಿವ. ನಿಶಾಕರಃ (ಶಿರಸಿ) ಅಸ್ತಿ—  
“ಅಚ್” (೪-೨-೧೨೭). “ಇತಿಹಾಸಃ ಸಕಲ್ಪಶ್ಚ ಗೌತಮೋಽಪ್ಯ  
ನಿಶಾಕರಃ” ಭಾಂ ಅನುಂ ೪೮-೭೮. 3. ಕಂಕುಟ, ಕೋಟಿ. 4. ಕಪೂರ.

**ನಿಶಾಲ್ಯಾ ನಿಶಾಲ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹರಿದ್ರೆ, ಅರಿತನ. ನಿಶಾಲ್ಯಾ  
ಆಲ್ಯಾಽಸ್ಯಾಃ.

**ನಿಶಾಚರ ನಿಶಾಚರ (ಪುಂ)** 1. ರಾಕ್ಷಸ. ನಿಶಾಲ್ಯಾಂ ಚರತಿ—  
ಚರ (ಗತೌ) “ಠಃ” (೩-೨-೧೬). “ಅಚಿರಾಙ್ಗಜ್ವಭಿರ್ಭಾಗಂ  
ಕಲ್ಪಿತಂ ವಿಧಿವತ್ಪುನಃ. ಮಾಯಾವಿಭಿರನಾಲಿಡಮಾದಾಸ್ಯಧ್ವೇ  
ನಿಶಾಚರೈಃ” ರಘುಂ ೧೦-೪೫. 2. ಜಂಬುಕ, ನರಿ.  
3. ಭೂಕ, ಗೂಬೆ. 4. ಸರ್ಪ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ “ಙೀಪ್”  
(೪-೧-೬೩). -ಚರೀ-ಚರೀ. ರಾಕ್ಷಸ. “ರಾಮಮನ್ಮಥಶರೇಣ  
ತಾಡಿತಾ ದುಃಸಹೇನ ಹೃದಯೇ ನಿಶಾಚರೀ” ರಘುಂ ೧೧-೨೦.  
(ವಿಂ) 5. ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. “ಮನ್ಯೇ ಸ ಏವ  
ಮದನಸ್ಯ ನಿಶಾಚರಸ್ಯ” ಯಾದಂ ೧೯-೨೧. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಟಿತ್ವಾತ್  
“ಙೀಪ್” (೪-೧-೧೫). -ಚರೀ-ಚರೀ. 6. ವೈಭವಾರಿಣಿ, ಸ್ವರಾಜ.

**ನಿಶಾಚರನಾಥ ನಿಶಾಚರನಾಥ, -ಪತಿ -ಪತಿ (ಪುಂ)**  
1. ರಾಕ್ಷಸರ ದೊರೆ, ರಾವಣ. ನಿಶಾಚರಾಣಾಂ ನಾಥಃ  
ಪತಿರ್ವಾ. 2. ಪ್ರಮಥಾಣಗಳ ಒಡೆಯನಾದ ಪರಮೇಶ್ವರ.  
ನಿಶಾಚರಾಣಾಂ ಪ್ರಮಥಾಣಾಂ ನಾಥಃ ಪತಿರ್ವಾ. “ತತೋ ಹರೋ ಜಟಿ  
ಸ್ಥಾಣುನಿಶಾಚರಪತಿಃ ಶಿವಃ” ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ.

**ನಿಶಾಜಲ ನಿಶಾಜಲ (ನಂ)** ಹಿಮ, ಮಂಜು.

**ನಿಶಾಟ ನಿಶಾಟ (ಪುಂ)** 1. ಭೂಕ, ಗೂಬೆ. ನಿಶಾಯಾಮತಿ  
—ಅಟ (ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪). 2. ರಾಕ್ಷಸ.  
“ಸಗೌರವಂ ದತ್ತಪಥೋ ನಿಶಾಟೇರಕ್ಷಿಪ್ತ ಶಿಲಾಗ್ರಮಿವೇಂದ್ರಶತ್ರುಮ್”  
ಮಹಿಂ ೧೨-೮. (ವಿಂ) 3. ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ.

**ನಿಶಾಟನ ನಿಶಾಟನ (ಪುಂ)** 1. ಭೂಕ, ಗೂಬೆ. ನಿಶಾಯಾ-  
ಮತಿ—ಅಟ (ಗತೌ) “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪).  
(ವಿಂ) 2. ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ.

**ನಿಶಾತ ನಿಶಾತ (ವಿಂ)** ಸಾಣೆಹಿಡಿದು ಹರಿತವಾಗಿ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಶೋ (ತನೂಕರಣ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨).  
ಇತ್ವಾಭಾವೇ ರೂಪಮ್. “ನಿಶಾತರೋದ್ರೇಷು ವಿಕಾಸತಾಂ ಗತೈಃ  
ಪ್ರದೀಪಯದ್ವಿಃ ಕಕುಭಾಮಿವಾಂತರಮ್” ಕಿರಾಂ ೧೪-೩೦.

**ನಿಶಾತ್ಯಯ ನಿಶಾತ್ಯಯ (ಪುಂ)** 1. ರಾತ್ರಿಯ ಕೊನೆಯ  
ಕಾಲ. ನಿಶಾಯಾ ಅತ್ಯಯಃ. “ಪ್ರಾರ್ಥಯಂತ ಶಯನೋತ್ಥಿತಂ  
ಪ್ರಿಯಾಸ್ತಂ ನಿಶಾತ್ಯಯವಿಸರ್ಗಚುಮ್ಬನಮ್” ರಘುಂ ೧೯-೨೯.  
2. ಪ್ರಾತಃಕಾಲ.

**ನಿಶಾದಿ ನಿಶಾದಿ (ಪುಂ)** ಸಾಯಂ ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲ. ನಿಶಾಯಾ  
ಆದಿಃ.

**ನಿಶಾನ ನಿಶಾನ (ನಂ)** ಸಾಣೆಹಿಡಿದು ಹರಿತವಾಗಿ ಮಾಡು  
ವುದು. ನಿ + ಶೋ (ತನೂಕರಣ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫).  
“ತೇಷಾಂ ನಿಶಾನಾರ್ಥಂ ಲಕ್ಷಣಶಿಲಾ ಮಾಘವರ್ಣಾ ಭಾರಾಸಂಸ್ಥಾಪನಾರ್ಥಂ  
ಶಾಲ್ಮಲೀಫಲಕಮಿತಿ” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೯-೧೩.

**ನಿಶಾನಾಥ ನಿಶಾನಾಥ (ಪುಂ)** 1. ಚಂದ್ರ. ನಿಶಾಯಾ  
ನಾಥಃ. “ಅಷ್ಟಮಸ್ಥೇ ನಿಶಾನಾಥೇ ಕಣ್ಡಕೈಃ ಪಾಪವರ್ಜಿತಃ.  
ಪ್ರವಾಸೀ ಸುಖಮಾಪ್ನೋತಿ ಸೌಮ್ಯೈರ್ಲಭಿಸಮನ್ವಿತಃ” 2. ಕಪೂರ.

**ನಿಶಾಂತ ನಿಶಾಂತ (ನಂ)** 1. ಗೃಹ, ಮನೆ. ನಿದ್ರಾಂ ಶಯಂತಿ  
ವಿಶ್ರಮಂತೇಽನ್—ನಿ + ಶಮ (ಆಲೋಚನೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨).  
“ತಸ್ಯಾಃ ಸ ರಾಜೋಪಪದಂ ನಿಶಾಂತಂ ಕಾಮೀವ ಕಾಂತಾಹೃದಯಂ  
ಪ್ರವಿಶ್ಯ” ರಘುಂ ೧೬-೪೦. 2. ಉಷ್ಣಕಾಲ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲ.  
“ವಸನಮಪಿ ನಿಶಾಂತೇ ನೇಷ್ಯತೇ ತತ್ಪ್ರದಾತುಂ ರಥಚರಣವಿಶಾಲ-  
ಶ್ರೋಣಿಲೋಕ್ಷಣೇನ” ಮಾಘಂ ೧೧-೨೩. (ವಿಂ) 3. ಬಹಳ  
ಶಾಂತನಾದ. ನಿಶಾಂತಂ ಶಾಂತಃ. “ನಿಶಾಂತಂ ತ್ರಿಪು ಶಾಂತೇ  
ಸ್ಯಾತ್ ಕಲಿಬಂ ತು ಭವನೋಪಸೌಃ” ಮೇದಿಂ.

**ನಿಶಾನ್ಯ ನಿಶಾನ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಇರುಳುಕುರುಡೆ, ರಾತ್ರಿ  
ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕಣ್ಣು ಕಾಣಿಸದವನು. ನಿಶಾಯಾಮನ್ಯಃ. ಸಿಂಹ  
ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನಿರುವಾಗ ಸಿಂಹಲಗ್ನದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿ  
ದವನು ನಿಶಾನ್ಯನಾಗುವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನ್ಯಾ -ನ್ಯಾ.  
2. ಮುಳ್ಳುಗಸೆ ಗಿಡ.



ನಿಶಾಪತಿ ನಿಶಾಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ನಿಶಾಪತಿ: ಪತಿ:।

“ಪ್ರತಿಮಾಸಮಸೌ ನಿಶಾಪತಿ: ಸ್ವಗ ಸಂಗಚ್ಛತಿ ತದ್ವಿನಾಧಿಪಮ್”

ನೃಪಂ ೨-೪೮। 2. ಕರ್ಪೂರ.

ನಿಶಾಪುತ್ರ ನಿಶಾಪುತ್ರ (ಪುಂ) ಅನ್ವರಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ ನಕ್ಷತ್ರ ಮೊದಲಾದುವು.

ನಿಶಾಪುಷ್ಪ ನಿಶಾಪುಷ್ಪ (ನಂ) ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಅರಳುವ ಬೀಜ ನೈದಿಲೆ. ನಿಶಾಪುಷ್ಪಾತಿ — ಪುಷ್ಪ (ವಿಕಸನೆ) “ಅವ್” (೩-೧-೧೩೪)।

ನಿಶಾಬಲ ನಿಶಾಬಲ (ಪುಂ) ರಾತ್ರಿಕಾಲದಲ್ಲಿ ಬಲವುಳ್ಳ ಮೇಷಾದಿ ರಾಶಿಗಳು. ಮೇಷ ವೃಷಭ ಮಿಥುನ ಕರ್ಕಾಟಕ ಧನುಸ್ಸು ಮತ್ತು ಮಕರ ರಾಶಿಗಳು ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಬಲವುಳ್ಳವು.

ನಿಶಾಮಣಿ ನಿಶಾಮಣಿ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ನಿಶಾಪಾ ಮಣಿರಿವ।

ನಿಶಾಮನ ನಿಶಾಮನ (ನಂ) 1. ದರ್ಶನ, ನೋಟ.

ನಿ+ಶಮ (ಆಲೋಚನೆ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

2. ಆಲೋಚಿಸುವುದು. 3. ಶ್ರವಣ, ಕೇಳುವುದು.

“ನಿಶಾಮನಂ ದರ್ಶನೇ ಸ್ವಾದಾಲೋಚನೇ ಚ ನ ದ್ವಯೋ:” ಮೇದಿಂ।

ನಿಶಾಮಯತ್ ನಿಶಾಮಯತ್ (ವಿಂ) ನೋಡುತ್ತಿರುವ.

ನಿ+ಶಮ (ಆಲೋಚನೆ) + ಣಿಚ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)।

ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬)। —ಯಂತಿ —ಯಸ್ತಿ.

“ನಿರ್ವ್ಯಾಜಿಸಂಕ್ಲೇನ ನಿಶಾಮಯಂತಿ” ಯಾದಂ ೧೩-೪೮।

ನಿಶಾಮುಖ ನಿಶಾಮುಖ (ನಂ) ರಾತ್ರಿಯ ಪ್ರಾರಂಭಕಾಲ, ಸಾಯಂಕಾಲ. ನಿಶಾಪಾ ಮುಖಮ್।

ನಿಶಾಮೃಗ ನಿಶಾಮೃಗ (ಪುಂ) ಜಂಬುಕ, ನರಿ. ನಿಶಾಚರೋ

ಮೃಗ:। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬೩)। —ಮೃಗೀ

—ಮೃಗೀ.

ನಿಶಾರಣ ನಿಶಾರಣ (ನಂ) ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ಕೊಲ್ಲುವುದು.

ನಿ + ಶ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

ನಿಶಾರತ್ನ ನಿಶಾರತ್ನ (ನಂ) ಚಂದ್ರ. ನಿಶಾಪಾ ರತ್ನಮಿವ।

ನಿಶಾವಸಾನ ನಿಶಾವಸಾನ (ನಂ) ರಾತ್ರಿಯ ಕೊನೆಯ

ಕಾಲ. ನಿಶಾಪಾ ಅವಸಾನಮ್। “ನಿಶಾವಸಾನೇ ಶ್ರುತತಾಂತ್ರ-

ಚೂಡವಾಗ್ಯಥಾ ರಥಾಙ್ಗಸ್ತಪನಂ ವೃತಾದರ:” ನೃಪಂ ೧೫-೧೧।

ನಿಶಾವಿಹಾರ ನಿಶಾವಿಹಾರ (ಪುಂ) ರಾಕ್ಷಸ. ನಿಶಾಪಾ

ವಿಹಾರೋಜ್ಯ। “ಇತ್ಯಂ ಪ್ರವಾದಂ ಯುಧಿ ಸಂಪ್ರಹಾರಂ ಪ್ರಚಕ್ರಮ್

ರಾಮನಿಶಾವಿಹಾರೀ” ಮೃದಿಂ ೨-೩೬।

ನಿಶಾವೇದಿನ್ ನಿಶಾವೇದಿನ್ (ಪುಂ) ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ.

ನಿಶಾಂ ತನ್ಮಾನಂ ವೇದಯತಿ — ನಿ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) + ಣಿಚ್

“ಣಿತಿ:” (೩-೧-೧೩೪)।

ನಿಶಾಹ್ವಾ ನಿಶಾಹ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರಿಶನ. ನಿಶಾಪಾ ಹಾಹ್ವಾ

ಯಸ್ಯಾ:।

ನಿಶಿತ ನಿಶಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಾಂಕೇತಿಕದಲ್ಲಿ ಉಜ್ಜ್ವಲವಾಗಿ, ಹರಿತ

ವಾದ. ನಿ + ಶಿ (ತನುಕರಣ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)।

“ನಿಶಿತಾಸಿರತೋಮೀಕೋ ನ್ಯೇಜತೇಷ್ವರಣಾ ಕ್ವಾ” ಕಿರಾಂ

೧೫-೨೨। 2. ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ, ಚೂಪವಾದ. “ಪ್ರವಿಷ್ಯ

ಹಿ ಧ್ವನಂತಿ ಶತಾಸ್ತಥಾವಿಧಾನಸಂವೃತಾಙ್ಗಾನಿಶಿತಾ ಇವೇಷವ:”

ಕಿರಾಂ ೧-೩೦। (ನಂ) 3. ಲೋಹ, ಕಬ್ಬಿಣ.

ನಿಶೀಯ ನಿಶೀಯ (ಪುಂ) 1. ಅರ್ಧರಾತ್ರಿ. ನಿಶೀಯೇಷ್ವರ —

ನಿ + ಶೀಙ್ (ಸ್ವಪ್ನ) “ಯಕ್” (೩-೨-೯)। “ಅಹೋ

ನಿಶೀಯನಿ:ಸಂಚಾರರಮಣೀಯತಾ ರಾಜಮಾಗಸ್ಯ” ಮಾಲತೀಂ ೭।

2. ರಾತ್ರಿ. “ನಿಶೀಯದೀಪಾ: ಸಹಸಾ ಹತತ್ವಿಷೋ ಬಭೂವುರಾಲೇಖ್ಯ-

ಸಮರ್ಪಿತಾ ಇವ” ರಘುಂ ೩-೧೫।

ನಿಶೀಯಿನಿ ನಿಶೀಯಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾತ್ರಿ. ನಿಶೀಯೋಜ್ಯ-

ಸ್ಯಾಮ್ “ಇನಿ:” (೫-೨-೧೧೫)। “ಯಸ್ಯ ಕೀರ್ತಿ-

ರವದಾಯತಿ ಸ್ಮ ಸಾ ಕಾರ್ತಿಕೀರ್ತಿಥಿನಿಶೀಯಿನಿ ಸ್ವಸಾ”

ನೃಪಂ ೧೮-೨೨।

ನಿಶೀಯಿನಿನಾಥ ನಿಶೀಯಿನಿನಾಥ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ.

ನಿಶೀಯಿನಿಯಾ ನಾಥ:। 2. ಕರ್ಪೂರ.

ನಿಶುಂಭ ನಿಶುಂಭ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಅಸುರ, ಕಶ್ಯಪನಿಗೆ

ಧನುವಿನಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಮಗ. ಶುಂಭನೆಂಬುವವನು

ಇವನ ಅಣ್ಣ. [ಶುಂಭ ನಿಶುಂಭರಿಬ್ಬರೂ ಬೃಹ್ಮನಿಂದ,

ಅಯೋನಿಜೆಯಾದ ಕನ್ಯೆಯಲ್ಲದೆ ಮತ್ತಾರಿಂದಲೂ ತಮಗೆ

ಮರಣ ಕೂಡದೆಂಬ ವರವನ್ನು ಪಡೆದು ಲೋಕವನ್ನು

ಪೀಡಿಸುತ್ತಿದ್ದರು. ದೇವತೆಗಳ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಂತೆ ಆದಿ

ಶಕ್ತಿಯ ದೇಹದಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಂದ ಕೌಶಿಕಿಯೆಂಬ ಕನ್ಯೆ

ಯೊಡನೆ ಇವರು ಯುದ್ಧಮಾಡಿ ಅವಳಿಂದ ಹತರಾದರು.]

ದೇವಿಭಾಂ। 2. ವಧೆ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. 3. ಹಿಂಸಿಸುವುದು,

ಪೀಡಿಸುವುದು. ನಿ + ಶುಂಭ (ಶೋಭಾ) “ಘ”

(೩-೩-೧೮)। 4. ಮುರಿಯುವುದು, ಬಗ್ಗಿ ಸುವುದು.

“ಪ್ರಾಗಪ್ರಾಪ್ತನಿಶುಂಭಶಾಂಭವಧನುರ್ದೇಹಾಕ್ರಿಯಾವಿಭವತ್” ಮಂ

ವಿಂ ೨-೩೩।

ನಿಶುಂಭನ ನಿಶುಂಭನ (ನಂ) ವಧೆ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. ನಿ +

ಶುಂಭ (ಶೋಭಾ) ಭಾವಿ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

ನಿಶ್ವಪ್ರವ ನಿಶ್ವಪ್ರವ (ವಿಂ) ನಿಶ್ವಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮತ್ತು

ಶೇಖರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, —ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿಶ್ವಿತಂ ಚ ಪ್ರಚಿತಂ

ಚ —ನಿಶ್ವಿತಶಬ್ದಸ್ಯ ನಿಶ್ವಾದೇಶ: ಪ್ರಚಿತಶಬ್ದಸ್ಯ ಪ್ರಚಾದೇಶ:

(೨-೧-೭೨)।



**ನಿಶ್ವಯ ನಿಶ್ಚಯ** (ಪುಂ) 1. ನಿರ್ಣಯ, ನಿಷ್ಕರ್ಷೆ, ಗೊತ್ತುವಳಿ. ನಿಸ್ + ಚಿನ್ (ಚಯೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೮)। "ಕ ಇಪ್ಸಿತಾರ್ಥಸ್ಥಿರನಿಶ್ವಯಂ ಮನಃ ಪಯಶ್ಚ ನಿಮ್ನಾಮಿಮುಖಂ ಪ್ರತಿಪಯೇತ್" ಕುಮಾಂ ೪-೪। 2. ತೀರ್ಮಾನ, ಇತ್ಯರ್ಥ. "ವ್ಯವಾಪ್ತಿಯಪ್ರಾಪ್ತಿವಿಧಾತನಿಶ್ವಯಾತ್" ನೈಷಂ ೧-೮೭। 3. ಸಂಶಯ ನಿವಾರಣೆ, ಸಂಶಯಪರಿಚ್ಛೇದ. 4. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ವರ್ಣನೀಯವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಉಪಮಾನವಸ್ತುವಿನ ನಿಷೇಧಪೂರ್ವಕ ಉಪಮೇಯ ಸ್ಥಾಪನೆಯು ನಿಶ್ಚಯಾಲಂಕಾರ. "ಅನ್ಯನ್ನಿಷಿದ್ಧ್ಯ ಪ್ರಕೃತ-ಸ್ಥಾಪನಂ ನಿಶ್ವಯಃ ಪುನಃ" ಸಾಂ ದಂ ೧೦-೩೯। "ವದನಮಿದಂ ನ ಸರೋಜಂ ನಯನೇ ನಂದಿವರೇ ಆತೇ। ಇಹ ಸವಿಧೇ ಮುಖದೃಶೋ ಭರಮುತಾ ಕಿಂ ಪರಿಭ್ರಮಸಿ" ಇಲ್ಲಿ ಸರೋಜವನ್ನೂ ಇಂದಿವರವನ್ನೂ ನಿಷೇಧಿಸಿ ವದನ ಮತ್ತು ನಯನ ರೂಪವಾದ ಉಪಮೇಯಗಳ ಸ್ಥಾಪನೆಯಿರುವುದರಿಂದ ನಿಶ್ಚಯಾಲಂಕಾರ.

**ನಿಶ್ವರ ನಿಶ್ಚರ** (ಪುಂ) ಹನ್ನೊಂದನೆಯ ಮನ್ವಂತರದ ಸಪ್ತರ್ಷಿಗಳಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ಋಷಿ. "ಅಕ್ಷಿರಾಶ್ವೋದಧಿಷ್ಣಿಷ್ಠಾ ಪೌಲಸ್ತ್ಯೋ ನಿಶ್ವರಸ್ತಥಾ। ಪುಲಹಶ್ಚಾಗ್ನಿತೇಜಾಶ್ಚ ಭಾವ್ಯಾಃ ಸಪ್ತ ಮಹರ್ಷಯಃ" ಹರಿವಂ ೧।

**ನಿಶ್ವಲ ನಿಶ್ಚಲ** (ವಿಂ) 1. ಚಲಿಸದಿರುವ, ಒಂದೇ ಕಡೆ ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವ. ನಿಸ್ + ಚಲ (ಕಂಪನೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಚಲನೆಯಿಲ್ಲದ, ದೃಢವಾದ, ವಿಕ್ಷೇಪ ಹೊಂದದಿರುವ. "ಶ್ರುತಿವಿಪ್ರತಿಪನ್ನಾ ತೇ ಯದಾ ಸ್ಥಾಸ್ಯತಿ ನಿಶ್ವಲಾ। ಸಮಾಧಾವಚಲಾ ಬುದ್ಧಿಃ ಸದಾ ಯೋಗಮವಾಪ್ಸ್ಯಸಿ" ಗೀತಾ ೨-೪೩। 3. ಸಂಚರಿಸದೆ ನಿಂತಿರುವ, ಅಲ್ಲಾಡದಿರುವ. "ಉತ್ತಮಿತನಿಶ್ವಲಮುಖಾವಯವಸ್ವಚ್ಛಂದವಿಲಸಿತಂ" ಮಾಲತೀಂ ೯। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ-ಲಾ. 4. ಭೂಮಿ.

**ನಿಶ್ವಾಯಕ ನಿಶ್ಚಾಯಕ** (ವಿಂ) ನಿರ್ಣಯಮಾಡುವ ತೀರ್ಮಾನ ಕೊಡುವ, ಇತ್ಯರ್ಥಪಡಿಸುವ. ನಿಸ್ + ಚಿನ್ (ಚಯೇ) "ಞ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ನಿಶ್ವಾರಕ ನಿಶ್ಚಾರಕ** (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ನಿಸ್ + ಚರ (ಗತೌ) "ಞ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಮಲವಿಸರ್ಜನೆ. (ವಿಂ) 3. ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ ನಡೆಯುವವನು, ಸ್ವಚ್ಛಂದ. "ನಿಶ್ವಾರಕಃ ಪುರೀಷಸ್ಯ ಜ್ಞೇಯೇ ಸ್ವೇರೇ ಸಮೀ ಣೇ" ಮೇದಿಂ ೧। 4. ಚಾರನಿಲ್ಲದ, ದೂತನಿಲ್ಲದ. 5. ಸಂಚಾರವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಃ ಚಾರೋ ಯಸ್ಮಾತ್ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೪೪)।

**ನಿಶ್ವಿತ ನಿಶ್ಚಿತ** (ವಿಂ) 1. ನಿರ್ಧರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿಸ್ + ಚಿನ್ (ಚಯೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಇತಿ ನಿಶ್ವಿತಪ್ರಿಯತಮಾಗತಯಃ ಸಿತದೀಪಿತಾವುದಯವತ್ಯಬಲಾಃ"

ಮಾಘಂ ೧-೪೩। 2. ಇತ್ಯರ್ಥಮಾಡಿದ, ತೀರ್ಮಾನ ಮಾಡಿದ. "ಅರಾವಣಮರಾಮಂ ವಾ ಜಗದ್ವೇತಿ ನಿಶ್ವಿತಃ" ರಘುಂ ೧೨-೮೩। 3. ನಿಷ್ಕರ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಯಾತುಂ ನಿಶ್ವಿತ-ಚೇತಸಿ ಪ್ರಿಯತಮೇ ಸರ್ವೇ ಸಮಂ ಪ್ರಸ್ಥಿತಾಃ" ಅಮರಂ ೩೪। (ನಂ) 4. ನಿಶ್ಚಯ, ಇತ್ಯರ್ಥ, ತೀರ್ಮಾನ. (ಅವ್ಯಂ) 5. ನಿಶ್ಚಯವಾಗಿ, ಸಂದೇಹವಿಲ್ಲದೆ. "ಮಸ್ತವತೇವ ಪ್ರಹಿತೋಽಸಿ ನಿಶ್ವಿತಮ್" ನೈಷಂ ೧-೨೩।

**ನಿಶ್ವಿತ ನಿಶ್ಚಿತ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಿಶ್ಚಯ, ನಿರ್ಣಯ, ನಿಷ್ಕರ್ಷೆ. ನಿಸ್ + ಚಿನ್ (ಚಯೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। 2. ತೀರ್ಮಾನ, ಇತ್ಯರ್ಥ.

**ನಿಶ್ವಂತ ನಿಶ್ಚಂತ** (ವಿಂ) ಚಿಂತೆಯಿಲ್ಲದ, ಯೋಚನೆಯಿಲ್ಲದ, ನಿರ್ಗತಾ ಚಿಂತಾ ಯಸ್ಮಾತ್। "ನಿಶ್ವಂತೋ ಧೀರಲಲಿತಃ ಕಲಾಸಕ್ತಃ ಸುಖೋ ಮೃದುಃ" ದಶಕಂ ೧। "ಸ್ವಂ ಕರ್ಮ ಕಾರಯನ್ತಾಸ್ತೇ ನಿಶ್ವಂತೋ ಯಾ ಜ್ಞಪ್ತವಜಃ" ಭದ್ರಂ ೮-೪೮।

**ನಿಶ್ಚೇತನ ನಿಶ್ಚೇತನ** (ವಿಂ) ಪ್ರಜ್ಞೆಯಿಲ್ಲದ, ಮೈಮೇಲೆ ಎಚ್ಚರವಿಲ್ಲದ. "ಕಥಮಾವಿಭೂತಮತ್ಪರಿಷ್ವಜ್ಞೋತ್ಕಂಠ ಏವ ನಿಶ್ಚೇತನಃ ಸಂವೃತಃ" ಮಾಲತೀಂ ೯।

**ನಿಶ್ಚೇಷ್ಠ ನಿಶ್ಚೇಷ್ಠ** (ವಿಂ) 1. ಚಲನೆಯಿಲ್ಲದ, ಸಂಚರಿಸದಿರುವ. 2. ಕೆಲಸವಿಲ್ಲದ, ಶರೀರವ್ಯಾಪಾರವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಾ ಚೇಷ್ಠಾ ವ್ಯಾಪಾರಃ ಯಸ್ಮಾತ್। (ಅವ್ಯಂ) 3. ಚಲನೆಯಿಲ್ಲದೆ. 4. ಶಾರೀರ ವ್ಯಾಪಾರವಿಲ್ಲದೆ. "ದ್ವಿಗುಣಬಾಹುದೃಷಾಪೇಷ್ಠನ-ನಿಶ್ಚೇಷ್ಠನಿಯಮಿತಾಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೭।

**ನಿಶ್ಚಯನ ನಿಶ್ಚಯನ** (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ. 2. ವೈವಸ್ವತ ಮನ್ವಂತರದ ಸಪ್ತರ್ಷಿಗಳಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ಋಷಿ. (ವಿಂ) 3. ಚ್ಯುತಿಯಿಲ್ಲದ, ನಾಶವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಂ ಚಯನಂ ಚ್ಯುತಿಯಸ್ಯ।

**ನಿಶ್ಚಯೋತ್ತಮ ನಿಶ್ಚಯೋತ್ತಮ** (ವಿಂ) ಸ್ತುತಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸೋರುತ್ತಿರುವ. ನಿಸ್ + ಇಚ್ಯುತಿರ್ (ಕ್ಷರಣೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಇಚ್ಯೋತ್ತಮೀ. "ನಿಶ್ಚಯೋತ್ತಮೀ ನಾಗರಾಜಸ್ಯ ಜಜ್ಞೇ ದಾನಸ್ಯಾಹೋ ಲೋಹಿತಸ್ಯೇವ ಧಾರಾ" ಮಾಘಂ ೧೮-೪೨।

**ನಿಶ್ವೇಣಿ ನಿಶ್ವೇಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಿಚ್ಛೇಣಿ, ಎಣಿ. ನಿಯತಾ ಶ್ವೇಣಿರತ್ರ। "ಚಕ್ರೇ ತ್ರಿದಿವನಿಶ್ವೇಣಿಃ ಸರಯೂರನುಯಾಯಿನಾಮ್" ರಘುಂ ೧೪-೧೦೦। "ನಿಯತಾ ಸ್ವರ್ಗಸೌಧಸ್ಯ ನಿಶ್ವೇಣಿರಿವ ಶಾಶ್ವತೀ" ಯಾದಂ ೨೨-೧೯।

**ನಿಶ್ವೇಯಸ ನಿಶ್ವೇಯಸ** (ನಂ) ಮುಕ್ತಿ, ಮೋಕ್ಷ. ನಿಶ್ವಿತಂ ಶ್ವೇಯಃ ನಿಶ್ವೇಯಸಮ್। "ಅಚ್" ನಿಪಾಂ (೪-೪-೭೭)। "ನಿಶ್ವೇಯಸಪ್ರತಿಪದೇನ ನಿಜೇನ ಧಾಮ್ನಾ ವಿಶ್ವಂ ಸಮಾಧಿರಿವ ದರ್ಶಯತೇ ವಿವಸ್ವಾನ್" ಯಾದಂ ೧೯-೪೧।



**ನಿಷಕ್ತ ನಿಷಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ನಿತ್ಯಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ. ನಿ + ಷಕ್ತ (ಸಕ್ತ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ಭದ್ರಾ ಹ್ಯेषಾಂ ವಾವಿ ಲಕ್ಷ್ಮೀನಿಪ್ರಕ್ತಾ ನೇತೇ ವಾಚಂ ವಿಪ್ಲುತಾರ್ಥಾ ವದಂತಿ" ತಂ ರಾಂ ೪-೧೮। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿತಮ್ಬಿನಿ-ಮಿಚ್ಛಸಿ ಮುಕ್ತಲಜ್ಜಾಂ ಕಂಠೇ ಸ್ವಯಂಭ್ರಾಹನಿಷಕ್ತಬಾಹುಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೭। 3. ಒಂದರೊಳಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿಸಿರುವ. "ಆತ್ಮಾನಮಾಸನ್ನಗಣೋಪನೀತೇ ಖಜ್ಜೇ ನಿಷಕ್ತಪ್ರತಿಮಂ ದದಶ" ಕುಮಾಂ ೭-೩೬।

**ನಿಷಜ್ಞ ನಿಷಜ್ಞ** (ಪುಂ) 1. ಬತ್ತಳೆ, ಬಾಣಗಳನ್ನಿಡುವ ಕೋಶ, ಮೂಡಿಗೆ, ನಿದ್ರಾಂ ಸಜ್ಜಿಸಿ ಶರಾ ಅತ್ರ—ನಿ + ಷಜ್ಞ (ಸಜ್ಜೆ) ಅಧಿಂ "ಜ್ಞ" (೩-೩-೧೨೧)। "ಅಗ್ರಹೀನ್ಮ ಸಶರಂ ಧನುಃಜ್ಞಾಮಾಸ ನೃಜ್ಞತನಿಷಜ್ಞಮನಜ್ಞಃ" ಮಾಘಂ ೧೦-೩೪। 2. ನಿತ್ಯಸಂಬಂಧ, ಯಾವಾಗಲೂ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವಿಕೆ. ನಿ + ಷಜ್ಞ ಭಾವೇ "ಜ್ಞ" (೩-೩-೧೮)। 3. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. "ನಿಷಜ್ಞಸ್ತುಣಖಜ್ಞಯೋಃ" ಹೇಮಂ।

**ನಿಷಜ್ಞಿನ್ ನಿಷಂಗೆನ್** (ವಿಂ) 1. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವ. ನಿದ್ರಾಂ ಸಜ್ಜಿಸಿ—ನಿ + ಷಜ್ಞ (ಸಜ್ಜೆ) "ಜ್ಞಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)। "ಸಂಸರ್ಪಿಮಿಃ ಪಯಸಿ ಗೈರಿಕ-ರೇಪುರಾಗೈರ್ಮೋಜಗರ್ಭರಜಸಾಽಜ್ಞನಿಷಜ್ಞಿಣಾ ಚ" ಮಾಘಂ ೪-೩೯। 2. ಧನುಸ್ಸನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ. ನಿಷಜ್ಞೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಜ್ಞಿನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫)। 3. ಬತ್ತಳೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. "ರಥಿ ನಿಷಜ್ಞಿ ಕವಚಿ ಧನುಃಮಾನ್ ದೃಢಃ ಸ ರಾಜನ್ಯಕಮೇಕವೀರಃ" ರಘುಂ ೭-೫೬। 4. ಖಡ್ಗ ಧರಿಸಿರುವ, ಕತ್ತಿ ಹಿಡಿದಿರುವ.

**ನಿಷಣ್ಣ ನಿಷಣ್ಣ** (ವಿಂ) 1. ಇರುವ, ಕುಳಿತಿರುವ. ನಿ + ಷಡ್ (ವಿಶರಣಗತ್ಯವಸಾದನೇಷು) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ದದೃಶುರಿವ ಸುರಾಜ್ಞನಾ ನಿಷಣ್ಣಂ ಸಶರಮನಜ್ಞಮಶೋಕಪಲ್ಲವೇಷು" ಕಿರಾಂ ೧೦-೩೨। 2. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕೂಡಿ ಕೊಂಡಿರುವ. "ಭೃಗುಮತಿಶಯಸ್ವೇದಸಂಪದೇವ ಸ್ತನಯುಗಲೈರಿತ-ರೇತರಂ ನಿಷಣ್ಣಂ" ಮಾಘಂ ೭-೬೫। 3. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ರಹಸ್ತ್ವ-ದುತ್ಸಜ್ಞನಿಷಣ್ಣಮೂರ್ಧಾ" ರಘುಂ ೧೩-೩೫।

**ನಿಷದ್ಯಾ ನಿಷದ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಂಗಡಿ. ನಿಷಿದಿನ್ಯಸ್ಯಾಂ ಜನಾಃ—ನಿ + ಷಡ್ (ವಿಶರಣಗತ್ಯವಸಾದನೇಷು) "ಕೃಪ್" (೩-೩-೯೯)। "ಕೇಚಿದ್ಗುರ್ಮಿತೃ ಸಂಯನ್ನಿಷದ್ಯಾಂ ಕ್ರೀಣಂತಿ ಸ್ಮ ಪ್ರಾಣಮೂರ್ಯೈಶಾಸಿ" ಮಾಘಂ ೧೮-೧೫। 2. ಮಾರು ಕಟ್ಟಿ, ಧಾನ್ಯ ವಸ್ತ್ರ ಮೊದಲಾದುವುಗಳನ್ನು ಮಾರುವ ಪೇಟೆ. 3. ಸಣ್ಣ ಮಂಚ. "ನಿಷದ್ಯಾ ಖಡ್ವಿಕಾಸಂದಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ನಿಷದ್ವರ ನಿಷದ್ವರ** (ಪುಂ) ಪಂಚ, ಕರ್ದಮ, ಕೆಸರು. ನಿಷಿ-ದಂತಿ ನಿಷಣ್ಣಾ ಭವಂತಿ ಜನಾ ಅತ್ರ—ನಿ + ಷಡ್ (ವಿಶರಣ-ಗತ್ಯವಸಾದನೇಷು) "ವರಚ್" (೩ಂ ೨-೧೨೩)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವರೀ -ವರೀ. ರಾತ್ರಿ.

**ನಿಷಧ ನಿಷಧ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಪರ್ವತ. ನಿಷಿದತಿ—ನಿ + ಷಡ್ (ವಿಶರಣಾದಿ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಪೃಥಂ। ಈ ಪರ್ವತವು ಇಲಾವೃತಖಂಡಕ್ಕೆ ದಕ್ಷಿಣ ದಲ್ಲಿರುವುದು. ಹತ್ತು ಸಹಸ್ರ ಯೋಜನ ಎತ್ತರವುಳ್ಳದ್ದು ಮತ್ತು ಎರಡು ಸಹಸ್ರ ಯೋಜನ ವಿಸ್ತಾರವುಳ್ಳದ್ದು. "ಎವಂ ದಕ್ಷಿಣೇನೇಲಾವೃತಂ ನಿಷಧೋ ಹೇಮಕೂಟೋ ಹಿಮಾಲಯ ಇತಿ ಪ್ರಾಗಾ-ಯತಾ ಯಥಾ ನೋಲಾದಯೋಽಯುತಯೋಜನೋತ್ಸೇಧಾ ಹರಿವರ್ಷಕಿಂಪುರುಷ-ಭಾರತಾನಾಂ ಯಥಾಸಂಖ್ಯಮ್" ಭಾಗಂ ೪-೧೬-೯)। 2. ಸೂರ್ಯ ವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಶ್ರೀರಾಮನ ಪುತ್ರನಾದ ಕುಶನ ಪೌತ್ರ, ಕುಶನ ಮಗನಾದ ಅತಿಥಿರಾಜನ ಮಗ. "ಸ ನೇಷ-ಧಸ್ಯಾರ್ಥಪತೇಃ ಸುತಾಯಾಮುತ್ಪಾದಯಾಮಾಸ ನಿಷಿದ್ವಶತ್ರುಃ। ಅನೂನಸಾರಂ ನಿಷಧಾನ್ವಗೇಂದ್ರಾತ್ ಪುತ್ರಂ ಯಮಾಹುರ್ನಿಷಧಾಖ್ಯಮೇವ" ರಘುಂ ೧೮-೧। (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 3. ನಿಷಧದೇಶ. "ನಿಷಧೇಷು ಮಹೀಪಾಲೋ ವೀರಸೇನ ಇತಿ ಶ್ರುತಃ" ಭಾಂ ವನಂ ೪೯-೬೦। 4. ನಿಷಧ ದೇಶದ ದೊರೆಗಳು. (ವಿಂ) 5. ಕೆಲವೆಂದಾದ, ಗಟ್ಟಿಯಾದ. "ನಿಷಧಃ ಕಠಿಣೇ ದೇಶೇ ತದ್ರಾಜೇ ಪರ್ವತಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ।

**ನಿಷಧೇಂದ್ರ ನಿಷಧೇಂದ್ರ, -ಕೃಷ್ಣ -ಕೃಷ್ಣ** (ಪುಂ) ನಿಷಧ ದೇಶದ ದೊರೆ, ನಳಚಕ್ರವರ್ತಿ.

**ನಿಷಾದ ನಿಷಾದ** (ಪುಂ) 1. ಬೇಡರವನು, ಮೃಗಗಳ ಬೇಟೆ ಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ನಿಷಿದತಿ ಪಾಪಮಸ್ಮಿನ್—ನಿ + ಷಡ್ (ವಿಶರಣಗತ್ಯವಸಾದನೇಷು) "ಜ್ಞ" (೩-೩-೧೨೧)। "ನಿಷಾದವಿಧಾನ್ವಜದರ್ಶನೋತ್ಪಲೋಕ್ತವಮಾಪದತ ಯಸ್ಯ ಶೋಕಃ" ರಘುಂ ೧೪-೭೦। 2. ಬೆಸ್ತರವನು, ಮತ್ಸ್ಯಗಳನ್ನು ಹಿಡಿದು ಜೀವಿಸುವವನು. 3. ನಿಮ್ಮರ್ವಕ್ಕೆ ಸೇರಿದವನು, ಮೈಜ್ಞ. "ದಾಸೇರಕಃ ಸಪದಿ ಸಂವಲಿತಂ ನಿಷಾದೇಃ" ಮಾಘಂ ೪-೬೬। 4. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಂದ ಶೂದ್ರಕನ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು. ಇವನಿಗೆ ಪಾರಶವನೆಂದೂ ಹೆಸರು. "ನಿಷಾದಃ ಶೂದ್ರಕನ್ಯಾयां (ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾತ್) ಯಃ ಪಾರಶವ ಉಚ್ಯತೇ" ಮನುಂ ೧೦-೮। 5. ಸಪ್ತಸ್ವರಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಸ್ವರ, ತಂತಿಯಿಂದಲೂ ಕಂಠದಿಂದಲೂ ಹೊರಡುವ ಸಪ್ತ ಸ್ವರಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. ನಿಷಿದಂತಿ ಷಡ್ಜಾದಯಃ ಸ್ವರಾ ಯತ್ರ। ಇದು ಅನೆಯ ಗರ್ಜನೆಯಂತೆ ಗಂಭೀರವಾಗಿ ಹೊರಡುವ ಒಂದು ಸ್ವರ. "ವೈವತಂ ಹೇಷತೇ ವಾಜಿ ನಿಷಾದಂ ಭೃಹತೇ ಗಜಃ" ಅಮಂ। ನಿಷಿದತಿ ಮನೋಽಸ್ಮಿನ್—ನಿ + ಷಡ್ (ವಿಶರಣಾದಿ) "ಜ್ಞ" (೩-೩-೧೨೧) ಇತಿ ವಾ। "ನಾದಂ ನಿಷಾದಮಧುರಂ"



ತತಮುಜ್ಜಗಾರ" ನೆಪಂ ೨೧-೧೨೭। -ದೀ -ದೀ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। "ನಿಷಾದೀ ದೃಶುರ್ದೇವಾಂ  
ಪಂಚಪುತ್ರಾಮನಾಗಸಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೬೨-೯।

**ನಿಷಾದವತ್ ನಿಷಾದವತ್** (ಪುಂ) 1. ನಿಷಾದಸ್ವರ.  
ನಿಷಾದೋಽಪ್ಯಸ್ಯ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪)। "ಏಜಮಧ್ಯಮ-  
ಗಾಂಧಾರೋ ಋಷಭೋ ಧೇವತಸ್ತಥಾ। ಪಂಚಮಶ್ವಾಪಿ ವಿಜ್ಞೇಯಸ್ತಥಾ  
ಚಾಪಿ ನಿಷಾದವಾನ್"। (ವಿಂ) 2. ನಿಷಾದಸ್ವರದಿಂದ  
ಕೂಡಿದ.

**ನಿಷಾದಿತ ನಿಷಾದಿತ** (ವಿಂ) ಕುಳ್ಳಿರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೂಡುವಂತೆ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಷದ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ"  
(೩-೨-೧೦೨)। "ಅಹೋ ನಿಷಾದಿತಾ ಗಜವಘ್ನಃ" ಮಾಲತೀಂ ೬।

**ನಿಷಾದಿನ್ ನಿಷಾದಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಹಸ್ತವಕ್, ಮಾವಟಗ.  
ನಿಷಾದಿತ್ಯವಶ್ಯಮ್—ನಿ + ಷದ್ (ವಿಶರಣಾದಿಘು) ಆವಶ್ಯಕೇ  
"ಣಿನಿಃ" (೩-೩-೧೭೦)। "ಪ್ರಚೋದಿತಾಃ ಪರಿಚಿತ-  
ಯನ್ತುಕರ್ಮಭಿನಿಷಾದಿಭಿರ್ವಿದಿತಯತಾಃ ಕುಶಕ್ರಿಯೈಃ" ಮಾಘಂ  
೧೭-೩೫। (ವಿಂ) 2. ಕುಳಿತಿರುವ. ನಿ + ಷದ್  
"ಣಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)। "ಆತಪಾತ್ಯಯಸಂಕ್ಷಿಪ್ತನಿವಾರಾಸು  
ನಿಷಾದಿಭಿಃ" ರಘುಂ ೧-೫೨। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)।  
-ದಿನಿ -ದೀ. "ಇಕ್ಷುಂಚಾಯನಿಷಾದಿನ್ಯಸ್ತಸ್ಯ ಗೋಪ್ತುರ್ಗುಣೋ-  
ದಯಮ್" ರಘುಂ ೪-೨೦।

**ನಿಷಿಕ್ತ ನಿಷಿಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಎರಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಿಮುಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಸಿಂಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಷಿಕ್ (ಕ್ಷರಣೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।  
2. ಸುರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಎರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
"ಸಂಯುಗೇ ಸಾಂಯುಗೀನಂ ತಮುಛತಂ ಪ್ರಸಹೇತ ಕಃ। ಅಂಶಾದೃತೇ  
ನಿಷಿಕ್ತಸ್ಯ ನೀಲಲೋಹಿತರೇತಸಃ" ಕುಮಾರಂ ೨-೫೭।

**ನಿಷಿಂಚತ್ ನಿಷಿಂಚತ್** (ವಿಂ) 1. ಸುರಿಯುತ್ತಿರುವ,  
ಸೇಚನೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಷಿಕ್ (ಕ್ಷರಣೇ) "ಶತ್"  
(೩-೨-೧೨೪)। "ತಮಚ್ಛಮಾರೋಪ್ಯ ಶರೀರಯೋಗಜೈಃ ಸುಷೇ-  
ನಿಷಿಂಚಂತಮಿವಾಮೃತಂ ತ್ವಚಿ" ರಘುಂ ೩-೨೬। 2. ತುಂಬು  
ತಿರುವ, ಪುಷ್ಟವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. "ನಿಷಿಂಚ-  
ನ್ಮಾಘವೀಂ ಲಕ್ಷ್ಮೀಂ ಲತಾಂ ಕೌಂದೀಂ ಚ ಲಾಸಯನ್" ವಿಕ್ರಂ ೨-೪।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಂತಿ -ಂತೀ.

**ನಿಷಿದ್ಧ ನಿಷಿದ್ಧ** (ವಿಂ) 1. ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೇಡವೆಂದು  
ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡ್ಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಷಿಧ (ಗತ್ಯಾಮ್)  
"ಕ್ತಃ" (೩-೨-೨೦೨)। "ಠಾ ನಿಷಿದ್ಧಾಲಿಜನಾಂ ಯದೇನಾಂ  
ಶಾಪಾದಿತ್ಯಾಂ ಕಲಯಾಂಚಕಾರ" ನೆಪಂ ೩-೧೨। 2. ತಡೆಯ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಪ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರಾಮೀಣೈಃ  
ಪುನರಶ್ವಗಸ್ಯ ವಸತಿಗ್ರಾಮಿ ನಿಷಿದ್ಧಾ ಯಥಾ" ಅಮರಂ ೧೩।

3. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬರದಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ (ಸೋಲಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ). "ಸ ನೇಷಧಸ್ಥಾರ್ಥಪತೇಃ ಸುತಾಯಾಮುತ್ಪಾದಯಾಮಾಸ  
ನಿಷಿದ್ಧಶಾಸ್ತ್ರಃ" ರಘುಂ ೧೮-೧। 4. ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಕೂಡದೆಂದು ಹೇಳಿ ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿಷಿದ್ಧೋ ಭಾಷಮಾಣಸ್ತು  
ಸುವರ್ಣಂ ದಂಢಮಹತಿ" ಮನುಂ ೮-೩೬೧।

**ನಿಷಿಧ್ಯಮಾನ ನಿಷಿಧ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಷಿಧ್ (ಶಾಸ್ತ್ರೇ ಮಾಜ್ಞಲ್ಯೇ ಚ) ಕರ್ಮಂ  
"ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)। 2. ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ,  
ಬೇಡವೆಂದು ಹೇಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಕೂಡದೆಂದು ಹೇಳ  
ಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 4. ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಅಡಚಣೆ  
ಯುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 5. ಬರದಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ, ತಪ್ಪಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. "ನಿಷಿಧ್ಯಮಾನಾಹನಿ  
ಸನ್ಧ್ಯಯಾಪಿ ರಾತ್ರಿಪ್ರತೀಹಾರಪದೇಽಧಿಕಾರಮ್" ನೆಪಂ ೨೨-೬।

**ನಿಷಿದತ್ ನಿಷಿದತ್** (ವಿಂ) 1. ನಿಂತಿರುವ. ನಿ + ಷದ್  
(ವಿಶರಣಾದೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ತಸ್ಯ ಭುವಿ  
ಬಹುತಿಥಾಸ್ತಿಥಯಃ ಪ್ರತಿಜಗಮುರೇಕಚರಣಂ ನಿಷಿದತಃ" ಕಿರಾಂ  
೧೨-೨। 2. ಕುಳಿತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)।  
-ಂತಿ -ಂತೀ.

**ನಿಷದತ್ ನಿಷದತ್** (ವಿಂ) 1. ಕೊಲ್ಲುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಷದ್  
(ಕ್ಷರಣೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। 2. ನಾಶಪಡಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಂತಿ -ಂತೀ.

**ನಿಷದನ ನಿಷದನ** (ನಂ) 1. ಕೊಲ್ಲುವುದು. ನಿ + ಷದ್  
(ಕ್ಷರಣೇ) ಮಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ನಾಶಪಡಿಸು  
ವುದು. (ವಿಂ) 3. ಕೊಲ್ಲುವ. 4. ನಾಶಪಡಿಸುವ.

**ನಿಷದಿತ ನಿಷದಿತ** (ವಿಂ) 1. ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಷದ್  
(ಕ್ಷರಣೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ನಿಷೇಕ ನಿಷೇಕ** (ಪುಂ) 1. ಚಿಮುಕಿಸುವುದು, ಸಿಂಪಿಸು  
ವುದು, ಎರಚುವುದು. ನಿ + ಷಿಕ್ (ಕ್ಷರಣೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಸೋರುವುದು, ಸ್ಪರ್ಶಿಸುವುದು. "ನನು  
ತೈಲನಿಷೇಕಬಿಂದುನಾ ಸಹ ದೀಪಾಚಿರಪಿತಿ ಮೇದಿನೀಮ್" ರಘುಂ  
೮-೩೮। 3. ಗರ್ಭಧಾನ, ಗರ್ಭಕೋಶದಲ್ಲಿ ವೀರ್ಯ  
ವನ್ನು ಇಡುವುದು. "ನಿಷೇಕಾದಿನಿ ಕರ್ಮಾಣಿ ಯಃ ಕರೋತಿ  
ಯಥಾವಿಧಿ। ಸಂಭಾವಯತಿ ಚಾನ್ಮನ ಸ ವಿಪ್ರೋ ಗುರುಚ್ಯತೇ"  
ಮನುಂ ೨-೧೪೨। 4. ಗರ್ಭ. "ಪ್ರಜಾನಿಷೇಕಂ ಮಯಿ ವರ್ತಮಾನಂ  
ಸುನೋರುಧ್ಯಾಯತ ಚೇತಸೇತಿ" ರಘುಂ ೧೪-೬೦। (ನಂ) 5.  
ವೀರ್ಯ, ರೇತಸ್ಸು. "ದೂರಾದಾವಸಥಾನ್ಮೂತ್ರಂ ದೂರಾದಾವ-  
ಸೇಚನಮ್। ಉಚ್ಚಿಷ್ಟಾನ್ನನಿಷೇಕಂ ಚ ದೂರಾದೇವ ಸಮಾಚರೇತ್"  
ಮನುಂ ೪-೧೫೧।



ನಿವೇಕಾದಿಕೃತ್ ನಿವೇಕಾದಿಕೃತ್ (ಫಂ) ನಿವೇಕಾದಿಕರ್ಮ (ಗರ್ಭಾಧಾನ, ಸೀಮಂತ ಮೊದಲಾದುವು)ಗಳನ್ನು ಮಾಡಿದ ತಂದೆ. ನಿವೇಕಾದಿ ಗರ್ಭಾಧಾನಾದಿಕಂ ಕರೋತಿ — ತ್ವ ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ವಿವ್” (೩-೨-೭೬)। “ಸ್ಯಾನಿವೇಕಾದಿ-ಕೃತ್ಗುರುಃ” ಅಮಂ ।

ನಿವೇಕವ್ಯ ನಿವೇಕವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸಂಪಿಸಲ್ಪಡುವ, ಚಿಮುಕಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಚಿಮುಕಿಸಬೇಕಾದ. ನಿ + ವಿವ (ಕರಣ) ಕರ್ಮದಿ “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬) ।

ನಿವೇಕತ್ ನಿವೇಕತ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂಪಿಸುವ, ಚಿಮುಕಿಸುವ. ನಿ + ವಿವ (ಕರಣ) “ತೃತ್” (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಗರ್ಭಾಧಾನ ಮಾಡುವ, ಗರ್ಭಕೋಶದಲ್ಲಿ ವೀರ್ಯವನ್ನು ಇಡುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ತೀಪ್” (೪-೧-೪)। —ಕೃತ್-ಕ್ರೀ-

ನಿವೇಕನ ನಿವೇಕನ (ನಂ) 1. ಸಂಪಿಸುವುದು, ಸೇಚನೆ ಮಾಡುವುದು, ಚಿಮುಕಿಸುವುದು. ನಿ + ವಿವ (ಕರಣ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಎರೆಯುವುದು, ಸುರಿಯುವುದು, ಹೊಯ್ಯುವುದು.

ನಿವೇಕ್ಯ ನಿವೇಕ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸೇಚನೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಸಂಪಿಸಲ್ಪಡುವ, ಚಿಮುಕಿಸಲ್ಪಡುವ. ನಿ + ವಿವ (ಕರಣ) “ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪)। 2. ಸೇಚನೆಮಾಡಬೇಕಾದ, ಚಿಮುಕಿಸಬೇಕಾದ.

ನಿವೇದಿವಸ್ ನಿವೇದಿವಸ್ (ವಿಂ) ಕಾಳಿತಿರುವ. ನಿ + ವದ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) “ವಸುಃ” (೩-೨-೧೪೮)। “भवतಃ ಸ್ಮರತಾಂ ಸದಾಸನೇ ಜಯಿನಿ ಬ್ರಹ್ಮಮಯೇ ನಿವೇದುಷಾಮ್” ಕಿರಾಂ ೧೮-೩೮। ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ತೀಪ್” (೪-೧-೬)। ನಿವೇದುಷಾಮ್ ನಿವೇದುಷೀವಸ್. “ಸ್ಥಿತಃ ಸ್ಥಿತಾಮುನ್ವಲಿತಃ ಪ್ರಯಾತಾಂ ನಿವೇದುಷಿಮಾಸನಬನ್ಧವಿರಃ” ರಘುಂ ೨-೬।

ನಿವೇದವ್ಯ ನಿವೇದವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಲ್ಪಡುವ, ಬೇಡವೆಂದು ಅಡ್ಡಿಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ನಿ + ವಿವ (ಶಾಸ್ತ್ರೇ ಮಾಙ್ಗಲ್ಯೇ ಚ) “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬)। 2. ತಡೆಯಬೇಕಾದ. 3. ಕೂಡದೆಂದು ತಡೆಯಲ್ಪಡುವ. 4. ಕೂಡದೆಂದು ತಡೆಯಬೇಕಾದ. 5. ತಪ್ಪಿಸಲ್ಪಡುವ, ಬರದಂತೆ ಅಡ್ಡಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 6. ತಪ್ಪಿಸಬೇಕಾದ, ಬರದಂತೆ ಮಾಡಬೇಕಾದ. 7. ನಿವಾರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 8. ನಿವಾರಿಸಬೇಕಾದ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಅಟ್ಟಿ ಕಳುಹಿಸಬೇಕಾದ. ಇತ್ಯಕ್ಷೇ ನಿವೇದಿತವ್ಯಃ ನಿವೇದಿತವ್ಯಃ.

ನಿವೇದ್ ನಿವೇದ್ (ವಿಂ) 1. ತಡಗಟ್ಟುವವನು, ಬರದಂತೆ ಮಾಡುವವನು, ಅಟ್ಟಿ ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಹಿಡಿಸುವವನು. ನಿ + ವಿವ (ಶಾಸ್ತ್ರೇ ಮಾಙ್ಗಲ್ಯೇ ಚ) “ತೃತ್” (೩-೧-೧೩೩) ।

“ಕೃತ್ಯಾಯ ದೇವಾರಿಪತೇ: ಪ್ರವೃತ್ತೌ ತ್ರಿಷಾಂ ನಿವೇದಾ ನಿವೇಕಪ್ರಾಣಮ್” ನೆಪಂ ೬-೧। 2. ಅಡ್ಡಿಮಾಡುವವನು, ಬೇಡವೆಂದು ಹೇಳುವವನು. 3. ಕೂಡದೆಂದು ತಡೆಯುವವನು. 4. ತಪ್ಪಿಸುವವನು, ನಿವಾರಿಸುವವನು. 5. ಅಡ್ಡಿಗಟ್ಟುವವನು, ಅಡಚಣೆಯುಂಟುಮಾಡುವವನು.

ನಿವೇಧ ನಿವೇಧ (ಫಂ) 1. ತಡೆಯುವುದು, ಬೇಡವೆಂದು ಅಡ್ಡಿ ಮಾಡುವುದು. ನಿ + ವಿವ (ಗತ್ಯಾಮ್) “ವತ್” (೩-೩-೧೮)। 2. ತಡೆಯುವುದು, ಕೂಡದೆಂದು ಹೇಳುವುದು. 3. ತಡೆಯುವುದು, ತಪ್ಪಿಸುವುದು, ಅಡ್ಡಿಗಟ್ಟುವುದು. 4. ನಿವಾರಿಸುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಅಟ್ಟಿ ಕಳುಹಿಸುವುದು.

ನಿವೇಧಕ ನಿವೇಧಕ (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯುವವನು, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವವನು. 2. ನಿವಾರಿಸುವವನು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಅಟ್ಟುವವನು. 3. ಬೇಡವೆಂದು ತಡೆಯುವವನು. 4. ಕೂಡದೆಂದು ತಡೆಯುವವನು. ನಿ + ವಿವ (ಗತ್ಯಾಮ್) “ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩)।

ನಿವೇಧತ್ ನಿವೇಧತ್ (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಅಡ್ಡಿಯುಂಟುಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ವಿವ (ಶಾಸ್ತ್ರೇ ಮಾಙ್ಗಲ್ಯೇ ಚ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। “ನಿವೇಧನಿವೇಧಾನ್ ಗಂತು ವಿಧನಃ ಸಂಜಘಟೇ ಧನಃ” ನೆಪಂ ೧೭-೧೬೦। 2. ತಪ್ಪಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಬೇಡವೆಂದು ತಡೆಯುತ್ತಿರುವ. 4. ಕೂಡದೆಂದು ತಡೆಯುತ್ತಿರುವ. 5. ಬರದಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ತೀಪ್” (೪-೧-೬)। —ಕ್ರೀ-ಕ್ರೀ-

ನಿವೇಧನ ನಿವೇಧನ (ನಂ) 1. ತಡೆಯುವುದು. 2. ತಪ್ಪಿಸುವುದು. 3. ಬೇಡವೆಂದು ಹೇಳುವುದು. 4. ಕೂಡದೆಂದು ಹೇಳುವುದು. ನಿ + ವಿವ (ಗತ್ಯಾಮ್) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪)। 5. ನಿವಾರಿಸುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಅಟ್ಟುವುದು. 6. ಅಡ್ಡಿಗಟ್ಟುವುದು, ಅಡಚಣೆಯುಂಟುಮಾಡುವುದು.

ನಿವೇಧ್ಯ ನಿವೇಧ್ಯ (ವಿಂ) 1. ನಿವೇಧಿಸಲ್ಪಡುವ, ತಡೆಯಲ್ಪಡುವ. ನಿ + ವಿವ (ಶಾಸ್ತ್ರೇ ಮಾಙ್ಗಲ್ಯೇ ಚ) “ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪)। 2. ನಿವೇಧಿಸಬೇಕಾದ, ತಡೆಯಬೇಕಾದ. 3. ನಿವಾರಿಸಲ್ಪಡುವ, ತಪ್ಪಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ನಿವಾರಿಸಬೇಕಾದ, ತಪ್ಪಿಸಬೇಕಾದ. 5. ಅಡ್ಡಿಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಅಡಚಣೆಯುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 6. ಬೇಡವೆಂದು ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. 7. ಬೇಡವೆಂದು ಹೇಳಬೇಕಾದ. 8. ಅಟ್ಟಿ ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 9. ಅಟ್ಟಿ ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಬೇಕಾದ.

ನಿವೇವಣ ನಿವೇವಣ (ನಂ) 1. ಸೇವಿಸುವುದು, ಉಪಚರಿಸುವುದು. ನಿ + ವೇ (ಸೇವಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪)।



2. ನಡಸುವುದು, ನಿರ್ವಹಿಸುವುದು, ಆಚರಿಸುವುದು.  
3. ಉಪಯೋಗಿಸುವುದು. 4. ಗೌರವಿಸುವುದು. 5.  
ಪೂಜಿಸುವುದು. 6. ಅನುಭವಿಸುವುದು.

**ನಿಘೇವಣೀಯ ನಿಷೇವಣೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಸೇವಿಸಲ್ಪಡುವ, ಉಪಚರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಸೇವಿಸಬೇಕಾದ, ಉಪಚರಿಸಬೇಕಾದ. ನಿ + ಷೇ (ಸೇವನೆ) "ಅನೀಯ್" (೩-೧-೯೬).  
3. ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಉಪಯೋಗಿಸಬೇಕಾದ. 5. ನಿರ್ವಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ನಿರ್ವಹಿಸಬೇಕಾದ, ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ. 7. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಡುವ. 8. ಗೌರವಿಸಬೇಕಾದ. 9. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ. 10. ಪೂಜಿಸಬೇಕಾದ. 11. ಅನುಭವಿಸಲ್ಪಡುವ. 12. ಅನುಭವಿಸಬೇಕಾದ. "ಅನಿಮೇಷನಿಘೇವಣೀಯಮಘೋರಜಹೃದೌವನಮಾವಿರಸ್ತು ಚಿತ್ತೇ" ಗೋಪಾಲವಿಂ. "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬). -ಷೇವಿತವ್ಯ:-ಷೇವಿತವ್ಯಃ.

**ನಿಘೇವಮಾಣ ನಿಷೇವನಮಾಣ (ವಿಂ)** 1. ಸೇವಿಸುತ್ತಿರುವ, ಉಪಚರಿಸುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಷೇ (ಸೇವನೆ) "ಶಾನಿ" (೩-೨-೧೨೪). 2. ನಡಸುತ್ತಿರುವ, ನಿರ್ವಹಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಉಪಯೋಗಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಗೌರವಿಸುತ್ತಿರುವ. 5. ಪೂಜಿಸುತ್ತಿರುವ. 6. ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿರುವ.

**ನಿಘೇವಿತ ನಿಷೇವಿತ (ನಂ)** 1. ಉಪಯೋಗಿಸುವುದು. ನಿ + ಷೇ (ಸೇವನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪). "ಮನ್ತ್ರ ಪೂತಮನುಪ್ಪಲವಂ ಹವಿರ್ಯಜುಕಪರಿಷನ್ನಿಘೇವಿತಮ್" ಯಾದಂ ೧೭-೧೨೬. 2. ಅನುಭವಿಸುವುದು. 3. ಗೌರವಿಸುವುದು. 4. ಪೂಜಿಸುವುದು. 5. ನಿರ್ವಹಿಸುವುದು, ನಡಸುವುದು. 6. ಸೇವಿಸುವುದು, ಉಪಚರಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 7. ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಷೇ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೧). "ವಿಷತಾಂ ನಿಘೇವಿತಮಪಕ್ರಿಯಾ ಸಮುಪೇತಿ ಸರ್ವಮಿತಿ ಸತ್ಯಮದ:" ಮಾಘಂ ೯-೬೮. 8. ನಡಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಆಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 9. ಸೇವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 10. ಅನುಭವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 11. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 12. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ನಿಘೇವಿತು ನಿಷೇವಿತು (ವಿಂ)** 1. ಉಪಯೋಗಿಸುವವನು. 2. ಅನುಭವಿಸುವವನು. 3. ಪೂಜಿಸುವವನು. 4. ಗೌರವಿಸುವವನು. 5. ನಡಸುವವನು, ಆಚರಿಸುವವನು. 6. ಉಪಚರಿಸುವವನು. ನಿ + ಷೇ (ಸೇವನೆ) "ತೃ" (೩-೧-೧೩೩). ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ -ವಿತ್ತಿ -ವಿತ್ತಿಃ.

**ನಿಘೇವ್ಯ ನಿಷೇವ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಅನುಭವಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಉಪಚರಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಡುವ. ನಿ + ಷೇ (ಸೇವನೆ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪).

**ನಿಘೇವ್ಯಮಾಣ ನಿಷೇವ್ಯಮಾಣ (ವಿಂ)** 1. ಉಪಚರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಸೇವಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಷೇ (ಸೇವನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಿ" (೩-೨-೧೨೪). "ನಿಘೇವ್ಯಮಾಣೇನ ಶಿವೇ-ಮಂಹಿರ್ದಿರಧ್ಯಾಸ್ಯಮಾನಾ ಹರಿಣಾ ಚಿರಾಯ" ಮಾಘಂ ೩-೬೨. 2. ಅನುಭವಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. "ಪ್ರೇಯೋಭಿಃ ಸಹ ಸರಸೀ ನಿಘೇವ್ಯಮಾಣಾ ರಕ್ತವಂ ವ್ಯಧಿತ ವಧೂದೃಶಾಂ ಸುರಾ ಚ" ಮಾಘಂ ೮-೫೨. 3. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 4. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 5. ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 6. ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

**ನಿಷ್ಕ ನಿಷ್ಕ (ಪುಂ)** 1. ನೂರಂಟು ಸುವರ್ಣಗಳ ತೂಕ. (16 ಮಾಷಗಳ ತೂಕ 1 ಸುವರ್ಣ. 108 ಸುವರ್ಣ ತೂಕ ಒಂದು ನಿಷ್ಕ). ನಿ + ಷಡ್ (ವಿಶಾರಣಾದೌ) "ಕನ್" ಟಿಲೋಪಶ್ಚ (೩-೩-೪೫). ನಿಷ್ಕಯೇನ ಕಾಯತಿ-ಕೇ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೬) ಇತಿ ವಾ. 2. ಒಂದು ಸುವರ್ಣ ನಾಣ್ಯ, ದೀನಾರವೆಂಬ ಒಂದು ನಾಣ್ಯ. 3. ಹದಿನಾರು ಅದ್ಯಮಾಷಗಳ ತೂಕ. (5 ಗುಲಗಂಜಿ ತೂಕ ಒಂದು ಮಾಷ). "ನಿಷ್ಕಮಸ್ತ್ರೀ ಸಾಠಹೇಮಶತಂ ದಿನಾರಕರ್ಷಯೋ:" ಮೇದಿಂ. 4. ಒಂದು ಸುವರ್ಣಾಭರಣ, ಎದೆಯಲ್ಲಿ ಧರಿಸುವ ಒಂದು ಅಭರಣ. "ಜಯಾಶಾ ಯತ್ರ ಚಾಸ್ಮಾಕಂ ಪ್ರತಿಧಾತೋತ್ಥಿತಾರ್ಚಿಷಾ. ಹರಿಚಕ್ರೇಣ ತೇನಾಸ್ಯ ಕಂಠೇ ನಿಷ್ಕಮಿವಾಪತತ್" ಕುಮಾರಂ ೨-೪೯. 5. ಒಂದು ಪಲ, ನಾಲ್ಕು ಕರ್ಷಗಳ ತೂಕ. (16 ಅದ್ಯಮಾಷಗಳ ತೂಕ 1 ಕರ್ಷ). 6. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. "ವಕ್ಷೋಲಂಕರಣೇ ಹೇಮಮಾತ್ರೇ ಹೇಮಪಲೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ. "ನಿಲಿಲಯೇ ತಸ್ಯ ದೋರ್ಮಧ್ಯೇ ನಿಷ್ಕಾಭರಣವರ್ಷಮಾ" ಯಾದಂ ೧೬-೩೩.

**ನಿಷ್ಕಂಟಕ ನಿಷ್ಕಂಟಕ (ವಿಂ)** 1. ಮುಳ್ಳುಗಳಿಲ್ಲದ. ನಿಗತ: ಕಂಟಕೋ ಯಸ್ಮಾತ್. 2. ಉಪದ್ರವವಿಲ್ಲದ, ತೊಂದರೆಯಿಲ್ಲದ. 3. ಶತ್ರುಗಳಿಲ್ಲದ, ಹಿಡಿಸುವವರಿಲ್ಲದ. "ರಾಜ್ಯಂ ನಿಷ್ಕಂಟಕಂ ಕೃತ್ವಾ ಭೋಜಯೇ ಮೇದಿನೀಂ ಪುನ:" ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೮-೨೯.

**ನಿಷ್ಕಂಠ ನಿಷ್ಕಂಠ (ಪುಂ)** ವಲಸೆ ಗಿಡ.

**ನಿಷ್ಕಪಟ ನಿಷ್ಕಪಟ (ವಿಂ)** ಕಪಟವಿಲ್ಲದ, ಮೋಸವಿಲ್ಲದ, ವಂಚನೆಯಿಲ್ಲದ, ಪ್ರಾಮಾಣಿಕವಾದ. ನಿಗತ: ಕಪಟೋ ಯಸ್ಮಾತ್.

**ನಿಷ್ಕಮ್ಯ ನಿಷ್ಕಮ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಚಲಿಸದಿರುವ, ಅಲ್ಲಾಡದಿರುವ. ನಿಗತ: ಕಮ್ಪೋ ಯಸ್ಮಾತ್. "ನಿಷ್ಕಮ್ಯವೃಕ್ಷಂ ನಿಭೃತ-ದ್ವಿರೇಕಂ ಮೂಕಾಢ್ಯಂ ಶಾಂತಮೃಗಪ್ರಚಾರಮ್" ಕುಮಾರಂ ೩-೪೨. 2. ನಡುಕವಿಲ್ಲದ. "ನಿವಾತನಿಷ್ಕಮ್ಯಮಿವ ಪ್ರದೀಪಮ್"



ಕುಮಾಂ ೩-೪೮। “ನಿವಾತನಿಷ್ಕರ್ಮಮಿವಾಪಗಾಪತಿಮ್”  
ಕಿರಾಂ ೧೪-೩೭।

ನಿಷ್ಕರಣ ನಿಷ್ಕರಣ (ವಿಂ) ದಯೆಯಿಲ್ಲದ, ಕನಿಕರವಿಲ್ಲದ.  
ನಿಗತಾ ಕರುಣಾ ಯಸ್ಮಾತ್। “ಹಾ ತಾತ ನಿಷ್ಕರಣ, ಏಷ  
ಇದಾನಿ ತೇ ನರೇಂದ್ರಚಿತ್ತಾರಾಧನೋಪಕರಣಂ ಜನೋ ವಿಪದ್ಯತೇ”  
ಮಾಲತೀಂ ೫। “ಕಮಲಾನಿಲಯಸ್ತ್ವಯಾ ದಯಾಲುಃ ಕರುಣೆ  
ನಿಷ್ಕರಣಾ ನಿರೂಪಣೆ ತ್ವಮ್” ದಯಾಶಂ।

ನಿಷ್ಕರಣತಾ ನಿಷ್ಕರಣತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಯೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
ಕನಿಕರವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಿಷ್ಕರಣಸ್ಯ ಭಾವಃ “ತಲ್”  
(೪-೧-೧೧೯)। “ನಿವ್ಯುಹಂ ಚ ನಿಷ್ಕರಣತಯಾ ತಾತಸ್ಯ  
ಕಾಪಾಲಿಕತ್ವಮ್” ಮಾಲತೀಂ ೪।

ನಿಷ್ಕರ್ಷ ನಿಷ್ಕರ್ಷ (ಪುಂ) 1. ನಿಶ್ಚಯ, ನಿರ್ಧಾರ. ನಿಸ್ +  
ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) “ಘಬ್” (೩-೩-೧೮)। 2. ಸ್ವರೂಪ  
ಪರಿಚ್ಛೇದ, ಸಾರವಾದುದು ಇಷ್ಟು ಎಂದು ತೀರ್ಮಾನ.  
“ಏತದ್ವಿದಂತೋ ವಿಧ್ವಾಂಸಸ್ತ್ರಯೋನಿಷ್ಕರ್ಷಮನ್ವಹಮ್। ಕ್ರಮತಃ ಪೂರ್ವ-  
ಮಸ್ಯಸ್ಯ ಪಶ್ಚಾದ್ವೇದಮಧೀಯತೇ” ಮನುಂ ೪-೧೨೫। 3. ಅರ್ಹಿ  
ಸುವುದು, ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಸೆಳೆಯುವುದು. (ನಂ)  
4. ತೆರಿಗೆಗಾಗಿ ಪ್ರಜೆಗಳನ್ನು ಪೀಡಿಸುವುದು. “ಅನುಕರ್ಷ  
ಚ ನಿಷ್ಕರ್ಷಂ ವ್ಯಾಧಿಪಾವಕಮುಚ್ಚನಮ್” ಮಾಂ ಸಭಾಂ ೧೩-೧೪।

ನಿಷ್ಕರ್ಷಣ ನಿಷ್ಕರ್ಷಣ (ನಂ) ಸೆಳೆಯುವುದು, ಎಳೆಯು-  
ವುದು, ಎಳೆದುಹಾಕುವುದು. ನಿಸ್ + ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ)  
ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। “ಬ್ರಾಹ್ಮಮಸ್ತ್ರಂ ಪ್ರಿಯಾಶೋಕ-  
ಶಲ್ಯನಿಷ್ಕರ್ಷಣಿಷಧಮ್” ರಘುಂ ೧೨-೯೭।

ನಿಷ್ಕಲ ನಿಷ್ಕಲ (ವಿಂ) 1. ನಿರವಯವ, ಅವಯವ  
ಗಳಿಲ್ಲದ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ. ನಿಗತಾ ಕಲಾ ಯಸ್ಮಾತ್।  
“ನಿಷ್ಕಲಂ ನಿಷ್ಕರಿಯಂ ಶಾಂತಂ ನಿರವಯವಂ ನಿರಂಜನಮ್। ಅಮೃತಸ್ಯ  
ಪರಂ ಸೇತುಂ ದಾಘೇನನಮಿವಾನಲಮ್” ಶ್ವೇತಾಂ ೩೫ಂ। 2. ಕಲೆ  
ಗಳಿಲ್ಲದ, ಭಾಗಗಳಿಲ್ಲದ. 3. ನಿರಸವಾದ, ಶುಷ್ಕವಾದ,  
ಸಾರವಿಲ್ಲದ. 4. ಗಳಿತವಾದ, ಶಿಥಿಲವಾದ, ಕ್ಷೀಣವಾದ,  
ಇಂದ್ರಿಯಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ. “ದೃಶ್ಯಂತೇ ನಿಷ್ಕಲಾಃ ಶಾಂತಾಃ  
ಪ್ರಹೀಣಾಃ ಸ್ವಸ್ವಕರ್ಮಭಿಃ” ಮಾಂ ವನಂ ೨೧೩-೧೦।  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಲಾ -ಕಲಾ. -ಲೀ -ಲೀ. 5. ವೃದ್ಧ  
ಹೆಂಗಸು, ಮುಟ್ಟು ನಿಂತುಹೋದ ಹೆಂಗಸು.

ನಿಷ್ಕಲಜ್ಞ ನಿಷ್ಕಲಜ್ಞ (ವಿಂ) 1. ಕಳಂಕವಿಲ್ಲದ, ದೋಷ  
ವಿಲ್ಲದ, ಶುದ್ಧವಾದ. ನಿಗತಃ ಕಲಜ್ಞೋ ಯಸ್ಮಾತ್। 2. ಚಿಹ್ನೆ  
ಯಿಲ್ಲದ, ಗುರುತಿಲ್ಲದ.

ನಿಷ್ಕಲಮಘ ನಿಷ್ಕಲಮಘ (ವಿಂ) ದೋಷವಿಲ್ಲದ, ಶುದ್ಧ  
ವಾದ.

ನಿಷ್ಕಲಾಯ ನಿಷ್ಕಲಾಯ (ವಿಂ) 1. ಚಿತ್ರದೋಷವಿಲ್ಲದ.  
ಶುದ್ಧವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ನಿಗತಃ ಕಲಾಯಃ ರಾಗೋಪಾಶಿವೋಪಃ  
ಯಸ್ಮಾತ್। (ಪುಂ) 2. ಉತ್ಸರ್ಜನಕಾಲದ ಒಬ್ಬ ಜನ  
ದೇವ.

ನಿಷ್ಕಾಮ ನಿಷ್ಕಾಮ (ವಿಂ) 1. ಯಾವ ಫಲದ ಉದ್ದೇಶವೂ  
ಇಲ್ಲದ, ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ, ಕೋರಿಕೆಯಿಲ್ಲದ, ಯಾವುದರ  
ಆಸೆಯೂ ಇಲ್ಲದ. ನಿಗತಃ ಕಾಮೋಽಭಿಲಾಷೋ ಯಸ್ಮಾತ್।  
“ಇಹ ಚಾಮುತ್ರ ವಾ ಕಾಮ್ಯಂ ಪ್ರವೃತ್ತಂ ಕರ್ಮ ಕೀರ್ತಯತೇ। ನಿಷ್ಕಾಮಂ  
ಜ್ಞಾನಪೂರ್ವಂತು ನಿವೃತ್ತಮುಪದಿಶ್ಯತೇ” ಮನುಂ ೧೨-೮೯।  
2. ಪ್ರಾಪಂಚಿಕ ಆಸೆಯನ್ನು ತೊರೆದಿರುವ. (ಅವ್ಯಂ)  
-ಮಮ್ -ಮಮಃ. 3. ಯಾವ ಫಲದ ಉದ್ದೇಶವೂ ಇಲ್ಲದ.  
4. ಪ್ರಾಪಂಚಿಕ ಸೌಖ್ಯದಲ್ಲಿ ಇಷ್ಟವಿಲ್ಲದ.

ನಿಷ್ಕಾಮಕರ್ಮನ್ ನಿಷ್ಕಾಮಕರ್ಮನ್ (ನಂ) ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆ  
ಯಿಲ್ಲದೆ ಮಾಡುವ ಕರ್ಮ.

ನಿಷ್ಕಾರಣ ನಿಷ್ಕಾರಣ (ವಿಂ) 1. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದ, ನಿಮಿತ್ತ  
ವಿಲ್ಲದ. ನಿಗತಂ ಕಾರಣಂ ಯಸ್ಯ। “...ಪೀವರಭುಜಸ್ತಮ್ಭೇನ  
ಸಂಭಾವಿತಾ ನಿಷ್ಕಾರಣಬಾಂಧವೇನ ಸಕಲಭುವನೇಕಸಾರನಿಜ-  
ದೇಹೋಪಹಾರಸಾಹಸಂ ಕೃತ್ವಾ ಪರಿರಕ್ಷಿತಾಸ್ಮಿ” ಮಾಲತೀಂ ೭।  
2. ಯಾವ ಉದ್ದೇಶವೂ ಇಲ್ಲದ, ಯಾವ ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯೂ  
ಇಲ್ಲದ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದ. 4. ಉದ್ದೇಶ  
ವಿಲ್ಲದ.

ನಿಷ್ಕಾಲಕ ನಿಷ್ಕಾಲಕ (ಪುಂ) 1. ಪಾಪಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ  
ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪಪಡುವವನು, -ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ ಮಾಡಿ  
ಕೊಳ್ಳುವವನು, ಮಾಡಿದ ತಪ್ಪನ್ನು ತಿದ್ದಿಕೊಳ್ಳಲು ಕ್ಷಾರ  
ಮಾಡಿಸಿಕೊಂಡು ದೇಹಕ್ಕೆ ತುಪ್ಪವನ್ನು ಲೇಪನಮಾಡಿ  
ಕೊಳ್ಳುವವನು. ನಿಷ್ಕಾಲಯತಿ -ನಿಸ್ + ಕಾಲಿ “ಞ್ವಲ್”  
(೩-೧-೧೩೩)। “ನಿಷ್ಕಾಲಕೋ ಭೃತಾಭ್ಯಕ್ತಸ್ತಪ್ತಾಂ ಶೂರ್ಮಿ  
ಪರಿವಜ್ಯ ಮರಣಾತ್ಪೂತೋ ಭವತಿ” ಇತಿ ವಸಿಷ್ಠಃ।

ನಿಷ್ಕಾಸನ ನಿಷ್ಕಾಸನ (ನಂ) ಹೊರಗೆ ಕಳುಹಿಸುವುದು,  
ಹೊರಗೆ ಅಟ್ಟುವುದು, ಹೊರದೂಡುವುದು. ನಿಸ್ + ಕಸ  
(ಗತೌ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। ಭಾವೇ “ಘಬ್”  
(೩-೩-೧೮)। -ಕಾಸಃ -ಕಾಸಃ.

ನಿಷ್ಕಾಸನೀಯ ನಿಷ್ಕಾಸನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಹೊರಗೆ  
ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹೊರಗೆ ಅಟ್ಟಲ್ಪಡುವ, ಹೊರದೂಡ-  
ಲ್ಪಡುವ. ನಿಸ್ + ಕಸ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ “ಅನೀಯರ್”  
(೩-೧-೯೬)। 2. ಹೊರಗೆ ಕಳುಹಿಸಬೇಕಾದ, ಹೊರ  
ದೂಡಬೇಕಾದ. “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬)। -ಸಿತವ್ಯಃ  
-ಸಿತವ್ಯಃ.



ನಿಷ್ಕಾಸಯತ್ ನಿಷ್ಕಾಸಯತ್ (ವಿಂ) ಹೊರಗೆ ಅಟ್ಟು ತ್ತಿರುವ, ಹೊರದೊಡುತ್ತಿರುವ.

ನಿಷ್ಕಾಸಿತ ನಿಷ್ಕಾಸಿತ (ವಿಂ) 1. ಹೊರಗೆ ಅಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊರದೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿಸ್ + ಕಸ (ಗತೌ) + ಣಿच् "ಕ್ತ:" (3-2-102) + 2. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಅಧಿಕಾರಿಯಾಗಿ ನೇಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿಷ್ಕಾಸಿತೋ ನಿಗಮಿತೇಷ್ಯಾಹಿತೇಷ್ವಿಹಿತೇಷಿ ಚ" ಮೇದಿಂ.

ನಿಷ್ಕಾಸ್ಯ ನಿಷ್ಕಾಸ್ಯ (ವಿಂ) ಹೊರಗೆ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹೊರದೊಡಲ್ಪಡುವ. ನಿಸ್ + ಕಸ (ಗತೌ) + ಣಿच् "ಯತ್" (3-1-124).

ನಿಷ್ಕಾಸ್ಯಮಾನ ನಿಷ್ಕಾಸ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ಹೊರಗೆ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಹೊರಗೆ ಅಟ್ಟಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಹೊರಗೆ ಓಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿಸ್ + ಕಸ (ಗತೌ) + ಣಿच् ಕಮಂ "ಶಾನ್" (3-2-124).

ನಿಷ್ಕಿಚ್ಛನ ನಿಷ್ಕಿಚ್ಛನ (ವಿಂ) 1. ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲದ, ಕೊಂಚವೂ ಇಲ್ಲದ. ನಿಗಂತಂ ಕಿಚನ ಯಸ್ಮಾತ್. "ಪ್ರಜ್ಞಾನಂ ಶೌಚಮೇವಾತ್ರ ಶರೀರಸ್ಯ ವಿಶೇಷತಃ. ತಥಾ ನಿಷ್ಕಿಚ್ಛನತ್ವಂ ಚ ಮನಸಶ್ಚ ಪ್ರಸನ್ನತಾ" ಮಾಂ ಅನುಂ. 2. ದರಿದ್ರ, ಬಡವ.

ನಿಷ್ಕುಟ ನಿಷ್ಕುಟ (ಪುಂ) 1. ಮನೆಯ ಕೈತೋಟ, ಮನೆಯ ಉದ್ಯಾನವನ. ನಿಸ್ + ಕುಟ (ಕೌಟಿಲ್ಯೇ) "ಕ:" (3-1-136). "ನೂನಮಸ್ಯ ಮಣಿಭೂತಾ ಸಹಂ ಸ್ಥಾಪನಂ ನಿಜನಿವೇಶನಿಷ್ಕುಟೇ" ಯಾದಂ 17-40. 2. ಕಪಾಟ, ಕದ. 3. ಕೇದಾರ, ಗದ್ದೆ. "ನಿಷ್ಕುಟಸ್ತು ಗೃಹೋದಾನೇ ಸ್ಯಾತ್ ಕೇದಾರಕಪಾಟಯೋ" ಮೇದಿಂ.

ನಿಷ್ಕುಟಿ ನಿಷ್ಕುಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೊಡ್ಡ ಯಾಲಕ್ಕಿ. ನಿಗಂತಾ ಕುಟಿ: ಕೌಟಿಲ್ಯಂ ಯಸ್ಯಾ: | ವಾ "ಙೀಃ" (ಗಂ 4-1-44). -ಕುಟಿ -ಕುಟೀ. "ಪೃಥ್ವೀಕಾ ಚಂದ್ರಬಾಲೇಲಾನಿಷ್ಕುಟಿಬಂಹುಲಾ" ಅಮಂ.

ನಿಷ್ಕುಷಿತ ನಿಷ್ಕುಷಿತ (ವಿಂ) ಹರಿದುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಖಂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಎಳೆದು ತುಂಡುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿಸ್ + ಕುಷ (ನಿಷ್ಕರ್ಷೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಉಪಾಂತಯೋನಿಷ್ಕುಷಿತಂ ವಿಹೃತ್ಪ್ರಾಕ್ಷಿಪ್ಯ ತೇಭ್ಯ: ಪಿಶಿತಪ್ರಿಯಾಪಿ" ರಘುಂ 9-40.

ನಿಷ್ಕುಹ ನಿಷ್ಕುಹ (ಪುಂ) ಮರದ ಪೊಟರೆ. ನಿಶ್ರಯೇನ ಕುಹಯತೆ -ಕುಹ (ವಿಸ್ಮಾಪನೇ) "ಅಚ್" (3-1-134). "ನಿಷ್ಕುಹ: ಕೋಟರಂ ವಾ ನಾ" ಅಮಂ.

ನಿಷ್ಕುತ ನಿಷ್ಕುತ (ವಿಂ) 1. ಮಾಡಿದ ಅಪರಾಧಕ್ಕಾಗಿ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ ಮಾಡಿಕೊಂಡವನು. ನಿಸ್ + ತು ಕೃತ್

(ಕರಣೇ) "ಕ್ತ:" (3-4-92). 2. ಹೊರದೊಡಲ್ಪಟ್ಟವನು, ಹೊರಕ್ಕೆ ಅಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟವನು, ಬಹಿಷ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನು.

ನಿಷ್ಕೃತಿ ನಿಷ್ಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ, ಪಾಪವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ. ನಿಸ್ + ತು ಕೃತ್ (ಕರಣೇ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94). "ಏಷಾ ಪಾಪಕೃತಾಮೃತಾ ಚತುರ್ಣಾಮಪಿ ನಿಷ್ಕೃತಿ: | ಪತಿಸ್ತೇ: ಸಂಪ್ರಯುಕ್ತಾನಾಮಿಮಾ: ಶೃಣುತ ನಿಷ್ಕೃತೀ:" ಮನುಂ 11-179. 2. ಸಾಲ ತೀರಿಸುವುದು. "ಯಂ ಮಾತಾಪಿತರೌ ಕಲೇಶಂ ಸಹೇತೇ ಸಂಭವೇ ನೃಣಾಮ್ | ನ ತಸ್ಯ ನಿಷ್ಕೃತಿ: ಶಕ್ಯಾ ಕರ್ತುಂ ವರ್ಷಶತೇರಪಿ" ಮನುಂ 2-227. 3. ವಿಮೋಚನೆ, ಬಿಡುಗಡೆ, ಪಾರಾಗುವುದು. 4. ಪೂರ್ವ ಸ್ಥಿತಿಗೆ ತರುವುದು, ಮೊದಲಿನ ಆರೋಗ್ಯವನ್ನು ಪಡೆಯುವುದು.

ನಿಷ್ಕೃಷ್ಣ ನಿಷ್ಕೃಷ್ಣ (ವಿಂ) 1. ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಷ್ಕರ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಎಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೆಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ತೆಗೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಾರವಾದ. ನಿಸ್ + ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102).

ನಿಷ್ಕೋಷ ನಿಷ್ಕೋಷ (ಪುಂ) ಒಳಗಿನಿಂದ ಎಳೆಯುವುದು, ಸೆಳೆಯುವುದು. ನಿಸ್ + ಕುಷ (ನಿಷ್ಕರ್ಷೇ) "ಕೃತ್" (3-3-14). "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114). -ಕೋಷಣಮ್ -ಕೋಷಣಮ್.

ನಿಷ್ಕೋಷಣಕ ನಿಷ್ಕೋಷಣಕ (ನಂ) ಹಲ್ಲುಗಳ ಸಂದು ಗಳಲ್ಲಿರುವ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಹಾಕುವುದು. "ದಂತಸ್ಯ ನಿಷ್ಕೋಷಣಕೇನ ನಿಯಂ ಕರ್ಣಸ್ಯ ಕಣ್ವಯನಕೇನ ವಾಽಪಿ" ಪಂಚತಂ 1-77.

ನಿಷ್ಕೋಷಣೀಯ ನಿಷ್ಕೋಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಒಳಗಿನಿಂದ ಸೆಳೆಯಲ್ಪಡುವ, ಎಳೆಯಲ್ಪಡುವ. ನಿಸ್ + ಕುಷ (ನಿಷ್ಕರ್ಷೇ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96). 2. ಸೆಳೆಯಬೇಕಾದ, ಒಳಗಿನಿಂದ ಕಿತ್ತು ಎಳೆಯಬೇಕಾದ. "ತವ್ಯ:" (3-1-96). -ಕೋಷಿತವ್ಯ: -ಕೋಷಿತವ್ಯ:.

ನಿಷ್ಕೌಶಾಮ್ಬಿ ನಿಷ್ಕೌಶಾಮ್ಬಿ (ವಿಂ) ಕೌಶಾಂಬೀ ನಗರದಿಂದ ಹೊರಟಿರುವ. ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತ: ಕೌಶಾಮ್ಬಾ: (ವಾಂ 1-4-99).

ನಿಷ್ಕ್ರಮ ನಿಷ್ಕ್ರಮ (ಪುಂ) 1. ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡುವುದು, ಹೊರಗಡೆ ಹೋಗುವುದು. ನಿಸ್ + ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಕೃತ್" (3-3-14). 2. ಬುದ್ಧಿಶಕ್ತಿ, ಬುದ್ಧಿಯ ಗುಣ. "ವಿಶಕ್ತಿನಿಷ್ಕ್ರಮ:" ಅಮಂ. "ವಿಗುಣ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ. 3. (ಶಿಶುವು) ಹುಟ್ಟಿದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಶಿಶುವನ್ನು ಹೊರಗಡೆ ಕರೆತರುವುದು. ಶಿಶುವಿಗೆ ಇದೊಂದು ಸಂಸ್ಕಾರ. ಶಿಶುವನ್ನು ನಾಲ್ಕನೆಯ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಮನೆಯ ಹೊರಗಡೆ



ಕರೆತಂದು ಸೂರ್ಯದರ್ಶನ ಮಾಡಿಸುವುದು ಪದ್ಧತಿ.  
“ಅಹನ್ಯೇಕಾದಶೋ ನಾಮ ಚತುರ್ಥೇ ಮಾಸಿ ನಿಷ್ಕಮಃ” ಯಾಜ್ಞಂ  
೧-೧೨। 4. ದುಷ್ಕುಲ. ನಿಸ್ + ಕಮು ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೫)। -ಕಮಣಮ್ -ಕ್ರಮಣಮ್. “ಗೃಹಾ-  
ನಿಷ್ಕರಣಂ ಸುತೇಷ್ವತುರ್ಥೇ ಮಾಸಿ ಕಾರಯೇತ್। ಯಾತ್ರೋಕ್ತೇ ಸಮಯೇ  
ಮಾಸಿ ತೃತೀಯೇ ದ್ವಾದಶೋಹನಿ”। ಎಂದು ಮೂರನೆಯ  
ಶೃಂಗದಲ್ಲಿಯೂ ನಿಷ್ಕ್ರಮಣವು ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ.

**ನಿಷ್ಕಯ ನಿಷ್ಕ್ರಯ (ಪುಂ)** 1. ಬದಲಾವಣೆಯ ವಸ್ತು,  
ಸಮಾನವಾದ ಬೆಲೆಯುಳ್ಳ ವಸ್ತುವಿನಿಂದ (ವಸ್ತುವನ್ನು  
ಕೊಟ್ಟು) ಬದಲಾಯಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ದ್ರವ್ಯ, ವಿನಿಮಯ  
ದ್ರವ್ಯ. ನಿಷ್ಕರೀಯತೆ ಪ್ರತ್ಯಾಹ್ವಯತೇಜೇನ - ನಿಸ್ + ಡು ಕ್ರಿಜ್  
(ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯ) “ಅಚ್” (೩-೩-೫೬)। “ಯದೃಶೋ ಮಯಿ  
ನಿವೇಶಿತಮೇತನ್ನಿಷ್ಕಯೋಸ್ತು ಕತಮಸ್ತು ತದೀಯಃ” ನೈಷಂ ೫-೯೦।  
2. ಪ್ರತಿಫಲ, ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರ ರೂಪವಾದ ಕಾರ್ಯಾ-  
ಜರಣೆ. “ತಸತ್ಪುಷಾರಾದಿಸುತಾಸಸಂಭ್ರಮಸ್ವಯಂಭೂತಲೇಖಸುಖೇನ  
ನಿಷ್ಕಯಮ್” ಮಾಘಂ ೧-೫೦। 3. ವೇತನ, ಕೂಲಿ. “ಭರಣ್ಯಂ  
ಭರಣಂ ಭರ್ಮ ವೇತನಂ ನಿಷ್ಕಯೋ ಭೃತಿಃ” ವೈಜಂ 1. 4. ಎಕ್ರಿಯ,  
ಮಾರುವುದು. “ನ ನಿಷ್ಕಯವಿಸರ್ಗಾಮ್ಯಾಂ ಭರ್ತುರ್ಭಾರ್ಯಾ ವಿಮುಚ್ಯತೇ”  
ಮನುಂ ೯-೪೬। 5. ವಿನಿಮಯ, ಬದಲಾವಣೆ, ಒಂದು  
ವಸ್ತುವನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಅದಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದ ಬೆಲೆಯುಳ್ಳ  
ವಸ್ತುವನ್ನು ಕೊಳ್ಳುವುದು. 6. ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. 7. ನಿರ್ಗ-  
ಮನ, ಹೊರಡುವುದು.

**ನಿಷ್ಕಯಣ ನಿಷ್ಕ್ರಯಣ (ನಂ)** 1. ವಸ್ತುವನ್ನು ಕೊಟ್ಟು  
ಅದಕ್ಕೆ ಸಮವಾದ ಬೆಲೆಯುಳ್ಳ ವಸ್ತುವನ್ನು ಪಡೆಯು-  
ವುದು, ವಿನಿಮಯ, ಬದಲಾವಣೆ. 2. ಒಂದು ವಸ್ತು-  
ವನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಅದಕ್ಕೆ ಸಮವಾಗಿ ಬದಲಾಯಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ  
ವಸ್ತು, ವಿನಿಮಯ ದ್ರವ್ಯ.

**ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತ ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತ (ವಿಂ)** 1. ಮನೆಯಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ  
ಹೊರಟಿರುವ. ನಿಸ್ + ಕಮು (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ) “ಕ್ತಃ”  
(೩-೪-೭೨)। “ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತೇ ಮಯಿ ಕಲ್ಯಾಣಿ ಯಥಾ ಸನ್ನಿಹಿತೇ-  
ನಘೇ। ನಾತಿಥಿಸ್ತೇಷ್ವಮಂತವ್ಯಃ ಪ್ರಮಾಣಂ ಯದ್ವಹಂ ತವ” ಭಾಂ  
ಅನುಂ ೨-೬೨। 2. ಹೊರಗಡೆ ಹೊರಟಿರುವ. “ಅಭ್ಯಾಸಿತೇ  
ವಯಸ್ಥಾಯ ಭವತಾ ಮಹತಾ ಹೃದಿ। ಸ್ತನಾವಂತರಸಮಾಂತೀ  
ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತೀ ಬ್ರೂಹೇ ಬಹಿಃ” ನೈಷಂ ೨೦-೪೮। 3. (ನಾಟಕ  
ದಲ್ಲಿ) ರಂಗಸ್ಥಳದಿಂದ ಹೊರಟವನು, ರಂಗಸ್ಥಳವನ್ನು  
ಬಿಟ್ಟು ಹೊರಟವನು. “ಇತಿ ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತಾಃ ಸರ್ವೇ”।

**ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತಿ ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹೊರಗಡೆ ಹೊರಡು-  
ವುದು. ನಿಸ್ + ಕಮು (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪)।

**ನಿಷ್ಕ್ರಾಮತ್ ನಿಷ್ಕ್ರಾಮತ್ (ವಿಂ)** ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೋಗು-  
ತ್ತಿರುವ, ಹೊರಗಡೆ ಬರುತ್ತಿರುವ. ನಿಸ್ + ಕಮು (ಪಾದ-  
ವಿಕ್ಷೇಪ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಜಿಪ್”  
(೪-೧-೬)। -ಕ್ರಾಮಂತೀ -ಕ್ರಾವಃಸ್ತೀ. “ತತಸ್ತು ಏಕಸ್ಮಾತ್  
ಭಿತ್ತಿಚ್ಛಿಡ್ವಾದ್ಗೃಹೀತಮಕ್ತಾವಯವಾಂ ನಿಷ್ಕ್ರಾಮಂತೀಂ ಪಿಪಿಲಿಕಾ-  
ಪಚ್ಛಿಮವಲೋಕಯ...” ಮುद्रಾಂ ೨।

**ನಿಷ್ಕ್ರಿಯ ನಿಷ್ಕ್ರಿಯ (ವಿಂ)** ಕೆಲಸವಿಲ್ಲದ, ಯಾವ ಕಾರ್ಯ-  
ವನ್ನೂ ಮಾಡದ. ನಿರ್ಗತಾ ಕ್ರಿಯಾ ಯಸ್ಮಾತ್।

**ನಿಷ್ಕ್ರಿಯತ್ವ ನಿಷ್ಕ್ರಿಯತ್ವ (ನಂ)** ಕೆಲಸವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ,  
ಯಾವ ಕಾರ್ಯವನ್ನೂ ಮಾಡದಿರುವಿಕೆ. ನಿಷ್ಕ್ರಿಯಸ್ಯ  
ಭಾವಃ “ತ್ವಃ” (೫-೧-೧೧೯)। “ಸಬ್ರಿಡಮಂದೈರಿವ  
ನಿಷ್ಕ್ರಿಯತ್ವಾನ್ಮಾತೃಯಂಸ್ತೇರವಭಾಸಮಾನಃ” ಕಿರಾಂ ೩-೪೬।

**ನಿಷ್ಠಾಪ ನಿಷ್ಠಾಪ (ಪುಂ)** ಬಿಸುಪು, ಒಳ್ಳೆಯ ಕಾವು.  
ನಿಃಶೇಷೇಣ ತಾಪಃ। “ನಿಷ್ಠಾಪಸ್ವಿವದಸ್ಥನಃ ಕ್ವಥನಪರಿ-  
ಗಲ್ಮದಸಃ ಪ್ರತಿಕಾಯಾನ್” ಮಾಲತೀಂ ೫-೧೭।

**ನಿಷ್ಠ ನಿಷ್ಠ (ವಿಂ)** 1. ಇರುವ, ನೆಲೆಸಿರುವ. ನಿತರಾಂ ನಿಷ್ಠತಿ  
- ನಿ + ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೬)।  
2. ಶ್ರದ್ಧೆಯುಳ್ಳ, ನಂಬಿಕೆಯುಳ್ಳ. (ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ  
ಈ ಪದವು ಸಮಾಸಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ ಬರುವುದು.)

**ನಿಷ್ಠಾ ನಿಷ್ಠಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ನಂಬಿಕೆ, ಶ್ರದ್ಧೆ, ವಿಶ್ವಾಸ.  
ನಿ + ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) “ಅಙ್” (೩-೩-೧೦೬)।  
“ಲೋಕೇಽಸ್ಮಿನ್ ದ್ವಿವಿಧಾ ನಿಷ್ಠಾ ಪುರಾ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಮಯಾಜನಃ।  
ಜ್ಞಾನಯೋಗೇನ ಸಾಂಖ್ಯಾನಾಂ ಕರ್ಮಯೋಗೇನ ಯೋಗಿನಾಮ್” ಗೀತಾ ೩-೩।  
2. ಕಾರ್ಯಸಾಧನೆ, ನೆರವೇರುವಿಕೆ, ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ,  
ನಿಷ್ಪತ್ತಿ. “ಪಾಣಿಗ್ರಹಣಿಕಾ ಮನ್ತ್ರಾ ನಿಯತಂ ದಾರಲಕ್ಷಣಮ್।  
ತೇಷಾಂ ನಿಷ್ಠಾ ತು ವಿಜ್ಞೇಯಾ ವಿವಿಧಾಃ ಸಪ್ತಮೇ ಪದೇ” ಮನುಂ  
೮-೨೨೭। 3. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ನಿಷ್ಠೀಯತೇ ಶುಭಾಶ್ರಯ-  
ಭೂತೇಽಸ್ಮಿನ್ ಅರ್ಥಿಭಿಃ। ನಿ + ಷ್ಠಾ ಅಧಿಂ “ಅಙ್”  
(೩-೩-೧೦೬)। “ನಿಷ್ಠಾ ಶಾಂತಿಃ ಪರಾಯಣಮ್” ವಿಂ ಸಂ 1।  
4. ಕೊನೆ, ಸಮಾಪ್ತಿ. “ನಿಷ್ಠಾಂ ಗತೇ ದತ್ತಿಮಸಮ್ಯತೋಽ  
ವಿಹಿತ್ರಿಮೇ ಕರ್ಮಣಿ ರಾಜಪತ್ಯಃ” ಭದ್ರಿಂ ೧-೧೩। 5. ನಾಶ,  
ಮರಣ. 6. (ನಾಟಕದಲ್ಲಿ) ಕೊನೆಯ ಸಂಧಿ, ನಿರ್ವಹಣ  
ಸಂಧಿ. ಮುಖ ಸಂಧಿಯಲ್ಲಿ ಉಪಕ್ಷಿಪ್ತವಾದ ಪ್ರಧಾನ  
ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಕಾರಣಭೂತವಾದ ಅನೇಕ ಪ್ರಕರಣಗಳು  
ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಒಟ್ಟುಗೂಡಿ (ಏಕವಾಕ್ಯತೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿ)  
ಮುಖ್ಯಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿಯೊಡನೆ ಕಥೆಯು ಸಮಾಪ್ತಿ  
ಹೊಂದುವುದರಿಂದ ನಿರ್ವಹಣಸಂಧಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು.  
“ನಿಷ್ಠಾ ನಿರ್ವಹಣೇ ಸಮೇ” ಅಮಂ 1. 7. ಯಾವನೆ, ಬೇಡಿಕೆ.



8. ನಿಶ್ಚಯ, ಅವಧಾರಣ. "ಛಾಣಂ ಜಿಹ್ವಾ ಚ ಚಕ್ಷುಷ್ವ ತ್ವಕ್ಶ್ರೋತ್ರಂ ಮನ ಏವ ಚ | ನ ನಿಷ್ಠಾಮಧಿಗच्छಂತಿ ಬುದ್ಧಿಸ್ತಾ-  
ಮಧಿಗच्छಂತಿ" ಭಾ. ಆಶ್ವ. ೨೩-೧೨ | 9. ಭಕ್ತಿ, ವಿಶ್ವಾಸ. 10. ಸ್ಥಿರಸ್ಥಿತಿ, ದೃಢತೆ, ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನೆಲೆಸಿರುವಿಕೆ. "ಮನೋ ನಿಷ್ಠಾಶುನ್ಯಂ ಭ್ರಮತಿ ಚ ಕಿಮಪ್ಯಾಲಿಖತಿ ಚ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೩೪ | 11. ಧಾತುಗಳ ಮುಂದೆ ಸೇರಿಸುವ ಕೃತ್ ಪ್ರತ್ಯಯ, ಕ್ತ: ಮತ್ತು ಕ್ತವತು: ಎಂಬ ಪ್ರತ್ಯಯ. "ಕ್ತವತು ನಿಷ್ಠಾ" (೧-೧-೨೬) | 12. ಸ್ಥಿತಿ, ಇರುವಿಕೆ. ನಿಷ್ಠಾನ ನಿಷ್ಠಾಸ (ನಂ) ಮಜ್ಜಗೇಪಳದ್ವಯ, ಚಟ್ಟಿ ಮೊದಲಾದ ವ್ಯಂಜನ. ನಿಷ್ಠೀಯತೇಜ-ನಿ+ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | "ಸ್ಯಾಂತೇಮನಂ ತು ನಿಷ್ಠಾನಮ್" ಅಮಂ |

ನಿಷ್ಠಾಪಿತ ನಿಷ್ಠಾಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಸರಿಯಾದ ಜಾಗಕ್ಕೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುರಕ್ಷಿತಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ನಿಹತ-  
ನಿಷ್ಠೇಷಿತನಿಷ್ಠಾಪಿತಾಶೇಷಜನನಿವಹ:" ಮಾಲತೀಂ ೩ | 2. ಸೂಕ್ತಮುರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸದಬದಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿವ್ಯೂಹ-  
ವಿಷಮವ್ಯವಸಾಯನಿಷ್ಠಾಪಿತಪ್ರಚಂಡಪಾಪಿಣಿಡದೋಡಸಾಹಸ:" ಮಾಲತೀಂ ೬ |

ನಿಷ್ಠಿತ ನಿಷ್ಠಿತ (ವಿಂ) 1. ನಂಬಿಕೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಶ್ರದ್ಧೆಯುಳ್ಳ. ನಿಷ್ಠಾಸ್ಯ ಸಂಜ್ಞಾತ: "ಇತಕ್" (೪-೨-೩೬) | 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೆಲೆಸಿರುವ, ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವ. ನಿ + ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | "ದೇವದ್ವಿಷಾಂ ನಿಗಮ-  
ವರ್ಮನಿ ನಿಷ್ಠಿತಾನಾಂ ಪೂರ್ವಮೇನ ವಿಹಿತಾಭಿರದೃಶ್ಯಮೃತಿ:" ಭಾಗಂ ೨-೭-೩೭ | 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದಿರುವ, ಪರಿಣಿತನಾದ. "ರಕ್ಷಿತಾ ಸ್ವಸ್ಯ ಧರ್ಮಸ್ಯ ಸ್ವಜನಸ್ಯ ಚ ರಕ್ಷಿತಾ |  
ವೇದವೇದಾಂಗತತ್ವಜ್ಞೋ ಭನುರ್ವೇದೇ ಚ ನಿಷ್ಠಿತ:" ರಾಮಾಂ |

ನಿಷ್ಠೀವನ ನಿಷ್ಠೀವನ (ನಂ) ಉಗುಳುವುದು. ನಿ + ಠಿವು (ನಿರಸನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | ಪೃಷಂ | "ವಾಂತಂ ನಿಷ್ಠೀವನಂ ಚೈವ ಕುರ್ವತೇ ಚಾಸ್ಯ ಸನ್ನಿಧೌ" ಭಾಂ |

ನಿಷ್ಠುರ ನಿಷ್ಠುರ (ನಂ) 1. ಕಠಿಣವಾದ ಮಾತು, ಬಿರುಸಾದ ಮಾತು, ಒರಟಾದ ಮಾತು. ನಿ + ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಊರ್" (೩-೧-೪೧) | 2. ಅಶ್ಲೀಲವಾದ ಮಾತು, ಜುಗುಪ್ಸೆಯುಂಟುಮಾಡುವ ಮಾತು. (ವಿಂ) 3. ಕಠಿಣವಾದ, ಗಟ್ಟಿಯಾದ, ಕರ್ಕಶವಾದ. "ಉತ್ತಮಾದಂ ಧನ್ವಿಮಿ-  
ನಿಷ್ಠುರಾಣಿ ಸ್ಥೂಲಾನ್ಯುಚ್ಚೇರ್ಮಣಿಡಲತ್ವಂ ದಧಂತಿ" ಭಾ. ೧೮-೯ | 4. ಕಠಿಣಹೃದಯವುಳ್ಳವನು, ಕಲ್ಲಿದಯವನು. "ಯ: ಪೃಷ್ಠಂ ಯುಧಿ ದರ್ಶಯತೀರಿಮತಶ್ರೇಣಿಷು ಯೋ ವಕ್ರತಾಮಸ್ಮಿನ್ನೇವ ವಿಭತಿ

ಯಶ್ಚ ಕಿರತಿ ಕ್ಷೂರವನಿ ನಿಷ್ಠುರ:" ನೈಷಂ ೧೨-೯೭ | 5. ಕ್ರೂರವಾದ, ದಯೆಯಿಲ್ಲದ. "ತಥಾಪಿ ಸಸ್ತ್ರವ್ಯವಹಾರ-  
ನಿಷ್ಠುರೇ ವಿಪಕ್ಷಭಾವೇ ಚಿರಮಸ್ಯ ತಸ್ಯುಷ:" ರಘುಂ ೩-೬೨ | 6. ತಿರಸ್ಕರಿಸುವ, ಧಿಕ್ಕರಿಸುವ, ನಿಂದಿಸುವ. (ಅವ್ಯಂ) 7. ಕಠಿಣವಾಗಿ, ಒರಟಾಗಿ. "ಮಕರಂದೇನ ನಿಷ್ಠುರಂ ಪ್ರತಿಹತೋ  
ಜಾಮಾತಾ" ಮಾಲತೀಂ ೭ | 8. ದಯೆಯಿಲ್ಲದ. 9. ಕ್ರೂರವಾಗಿ.

ನಿಷ್ಠುರತಾ ನಿಷ್ಠುರತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಠಿಣತೆ, ಒರಟಾಗಿರುವಿಕೆ. 2. ಕ್ರೂರವಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ಧಿಕ್ಕರಿಸುವಿಕೆ. 4. ದಯೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಿಷ್ಠುರಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) | "ತವ:" (೪-೧-೧೧೯) | -ರತ್ವಮ್ -ರತ್ವಮ್.

ನಿಷ್ಠೇವ ನಿಷ್ಠೇವ (ಪುಂ) ಉಗುಳುವುದು. ನಿ + ಠಿವು (ನಿರಸನೆ) ಭಾವೇ "ಘ" (೩-೩-೧೮) |

ನಿಷ್ಠೇವನ ನಿಷ್ಠೇವನ (ನಂ) ಉಗುಳುವುದು. ನಿ + ಠಿವು (ನಿರಸನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |

ನಿಷ್ಠಯ ನಿಷ್ಠಯ (ವಿಂ) 1. ಉಗಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಾಯಿಂದ ಹೊರಡುಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಠಿವು (ನಿರಸನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ಊ" (೬-೪-೧೯) | "ತಾರಾಮಯಂ  
ಬೀಜಮುಜಾದಸೀಯಂ ಕಾಲೇನ ನಿಷ್ಠಯಮಿವಾಸ್ಥಿಯುತಮ್" ನೈಷಂ ೨೨-೧೪ | 2. ಹೊರಕ್ಕೆ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊರಕ್ಕೆ ಚೆಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಙ್ಗುಲಿನಿಷ್ಠಯಮಿವೋರ್ಧ್ವಮುಚ್ಚೇಸ್ತ್ರಿಸ್ತೋತಸ:  
ಸಂತತಧಾರಮಮ್:" ಭಾ. ೩-೧೦ |

ನಿಷ್ಠಾ ನಿಷ್ಠಾ (ವಿಂ) ಕುಶಲ, ಜಾಣ, ಸಮರ್ಥ. ನಿ + ಣಾ (ಶೌಚೇ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೬) | "ಅಪುಜನ್ ವಿಷ್ಠರ-  
ಪಾಪಮಾಲಯೇರಾತಿಥ್ಯನಿಷ್ಠಾ ವನವಾಸಿಮುಖ್ಯಾ:" ಭಟ್ಟಿಂ ೨-೨೬ |

ನಿಷ್ಠಾತ ನಿಷ್ಠಾತ (ವಿಂ) 1. ಕುಶಲ, ನಿಪುಣ, ಸಮರ್ಥ. ನಿ + ಣಾ (ಶೌಚೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | "ನಿಷ್ಠಾತಶ್ಚ  
ಸಮಾಗಮೋಪಿ ವಿಹಿತಸ್ತ್ವತ್ಪ್ರೇಯಸ: ಕಾಂತಯಾ" ಮಾಲತೀಂ ೧೦-೨೪ | 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದವನು, ನುರಿತವನು, ಪ್ರವೀಣ. "ಕುತೋಪತ್ಯಸ್ತೇಹ: ಕುಟಿಲನಯನಿಷ್ಠಾತಮನಸಾಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೨-೭ |

ನಿಷ್ಪಕ್ವ ನಿಷ್ಪಕ್ವ (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪಕ್ವವಾಗಿರುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪಚನವಾಗಿರುವ. ನಿತಾಂತಂ ಪಕ್ವಮ್ |

ನಿಷ್ಪತ್ತ ನಿಷ್ಪತ್ತ (ವಿಂ) 1. ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಅಯಮರವಿವರೇಮ್ಯಶ್ಚಾತಕೇನಿಷ್ಪತ್ತಿಹರಿರಿಭಿರಚಿರಭಾಸಾಂ  
ತೇಜಸಾ ಚಾನುಲಿಪ್ತೇ:" ಶಾಕುಂ ೭-೭ | 2. ಹೊರಡಲು ಪ್ರಯತ್ನಪಡುತ್ತಿರುವ. "ತುಕ್ತಗೇಹಗಮನಾಯ ನಿಷ್ಪತ್ತನ್



ಪುಷ್ಪಕೇತುರಿಹ ಧುಷ್ಯತೇ ಧ್ರುವಮ್" ಯಾದಂ ೧೭-೧೬। 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೀಳುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಪತಂತಿ -ಸತಸ್ತು॥

**ನಿಷ್ಪತ್ತನ ನಿಷ್ಪತ್ತನ** (ನಂ) ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡುವುದು, ಹೊರಗಡೆ ಬರುವುದು. ನಿಸ್ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ನಿಷ್ಪತ್ತಿಣ್ಣು ನಿಷ್ಪತ್ತಿಷ್ಣು** (ವಿಂ) ಹೊರಡುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ ಸ್ವಭಾವದ. "ಇಂದ್ರಿಯಾಣಿ ಪ್ರಮಾಣಿನಿ ಬುದ್ಧಯಾ ಸಂಯಮ್ಯ ಯತತಃ। ಸರ್ವತೋ ನಿಷ್ಪತ್ತಿಣ್ಣುನಿ ಪಿತಾ ಬಾಲಾನಿವಾತ್ಮಜಾನ್" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೨೫೬-೩।

**ನಿಷ್ಪತ್ತಿ ನಿಷ್ಪತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟುವುದು. ನಿಸ್ + ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪)। 2. ಧಾತು ಪ್ರತ್ಯಯಗಳ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಶಬ್ದಸಿದ್ಧಿ. ರಮಂತೇ ಯೋಗಿನೋಸ್ಮಿನ್ ಇತಿ ರಾಮಃ। ಇಲ್ಲಿ ರಮು ಧಾತುವಿಗೆ "ಫಲ್" ಪ್ರತ್ಯಯದ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ರಾಮ ಶಬ್ದದ ನಿಷ್ಪತ್ತಿ ಯಾಗಿರುವುದು. 3. ನಾದದ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಅವಸ್ಥೆಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. ಆರಮ್ಭಃ ಘಟಃ ಪರಿಚಯಃ ಮತ್ತು ನಿಷ್ಪತ್ತಿಃ ಎಂದು ನಾದದ ಅವಸ್ಥೆಗಳು ನಾಲ್ಕು.

(1) ಪ್ರಾಣಾಯಾಮದ ಬಲದಿಂದ ಅನಾಹತ ಚಕ್ರದಲ್ಲಿರುವ ಬ್ರಹ್ಮಗ್ರಂಥಿಯು ಒಡೆದು ಶೂನ್ಯವಾದ ಹೃದಯಾಕಾಶದಲ್ಲಿ ಆನಂದಜನಕವಾದ ಶಿಂಜಿತ ಸಮಾನವಾದ ಒಂದು ವಿಚಿತ್ರವಾದ ಧ್ವನಿಯು ಕೇಳಿಬರುವುದು. ಇದು ನಾದದ ಅರಂಭಾವಸ್ಥೆ. ಈ ಅವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ಹೃದಯಾಕಾಶ ವಿಶುದ್ಧಾಕಾಶ ಮತ್ತು ಭ್ರೂಮಧ್ಯಾಕಾಶಗಳನ್ನು ಯೋಗಿಗಳು ಶೂನ್ಯ ಅತಿಶೂನ್ಯ ಮತ್ತು ಮಹಾಶೂನ್ಯಗಳೆಂದು ವ್ಯವಹರಿಸುವರು. ಪ್ರಾಣವಾಯುವಿನಿಂದ ಹೃದಯವು ತುಂಬಿ ಪೂರ್ಣ ಆನಂದವುಂಟಾದಾಗ ರೂಪರಾವಣ್ಯಬಲ ಸಂಪನ್ನನಾಗಿಯೂ ತೇಜಸ್ವಿಯಾಗಿಯೂ ಸೌಗಂಧ್ಯಯುಕ್ತನಾಗಿಯೂ ರೋಗರಹಿತನಾಗಿಯೂ ಆಗುವನು. "ಬ್ರಹ್ಮಗ್ರಂಥೇಭವೇದೋ ಹ್ಯಾನಂದಃ ಶೂನ್ಯಸಮ್ಮವಃ। ವಿಚಿತ್ರಃ ಕ್ವಣಕೋ ದೇಹೋನಾಹತಃ ಶ್ರೂಯತೇ ಛವಿನಿಃ॥ ದಿವ್ಯದೇಹಶ್ಚ ತೇಜಸ್ವೀ ದಿವ್ಯಗಂಧಸ್ತವರೋಗವಾನ್। ಸಂಪೂರ್ಣಹೃದಯಶೂನ್ಯ ಆರಮ್ಭೋ ಯೋಗವಾನ್ ಭವೇತ್" ಹಠಂ ೭೦, ೭೧।

(2) ಎರಡನೆಯದಾದ ಘಟಾವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಣವಾಯುವು ಅಪಾನ ಮತ್ತು ನಾದಬಿಂದುಗಳನ್ನು ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಿ ಕಂಠಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಮಧ್ಯಚಕ್ರವನ್ನು ಸೇರುವುದು. ಅಲ್ಲಿ ಜೀವಾತ್ಮ-ಪರಮಾತ್ಮರೊಡನೆ ಸೇರುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ "ಘಟಾವಸ್ಥೆ" ಯೆಂದು ಹೆಸರು. ಈ ಅವಸ್ಥೆ

ಯಲ್ಲಿ ಯೋಗಿಯು ಸ್ಥಿರಾಸನೆಯಲ್ಲಿ ನಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಒಳ್ಳೆ ಜ್ಞಾನಸಂಪನ್ನನಾಗಿಯೂ ರೂಪರಾವಣ್ಯಧಿಕೃದಿಂದ ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಸಮಾನನಾಗಿಯೂ ಆಗುವನು. "ದ್ವಿತೀಯಾಂ ಘಟೀಕೃತ್ಯ ವಾಯುರ್ಭವತಿ ಮಧ್ಯಗಃ। ದೃಢಾಸನೋ ಭವೇದ್ರೋಗೀ ಜ್ಞಾನೀ ದೇವತಮಸ್ತದಾ" ಹಠಂ ೪-೭೨। "ಪ್ರಾಣಾಪಾನೋ ನಾದವಿನ್ದು ಜೀವಾತ್ಮಪರಮಾತ್ಮನೋಃ। ಮಿಲಿತ್ವಾ ಘಟತೇ ಯಸ್ಮಾತ್ತಸ್ಮಾತ್ಸ ಘಟ ಋಚ್ಯತೇ" ರಾಜಯೋಗಃ। ಘಟಾವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ, ಬ್ರಹ್ಮಗ್ರಂಥಿಯು ಭೇದಾನಂತರ ಕಂಠಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿರುವ ವಿಷ್ಣುಗ್ರಂಥಿಯು ಭೇದದಿಂದ ಅನೇಕ ನಾದಗಳ ಸಂಪುರ್ಣದಿಂದ ಬ್ರಹ್ಮಾನಂದಸೂಚಕವಾದ ಭೇರೀನಾದವುಂಟಾಗುವುದು. "ವಿಷ್ಣುಗ್ರಂಥೇಸ್ತತೋ ಭೇದಾತ್ ಪರಮಾನಂದಸೂಚಕಃ। ಅತಿಸ್ಥೂನ್ಯೇ ವಿಮರ್ಶಶ್ಚ ಭೇರೀಶಬ್ದಸ್ತದಾ ಭವೇತ್" ಹಠಂ ೪-೭೩।

(3) ಮೂರನೆಯದಾದ ಪರಿಚಯಾವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ರುದ್ರಗ್ರಂಥಿಯನ್ನು ಭೇದಿಸಿ ಭ್ರೂಮಧ್ಯಾಕಾಶದಲ್ಲಿ ಮಧ್ಯಳೆಯ ಧ್ವನಿಯಂತೆ ಒಂದು ನಾದವುಂಟಾಗುವುದು. ಆಗ ಪ್ರಾಣವಾಯುವು ಅಣಮಾದಿ ಸಕಲ ಸಿದ್ಧಿಗೂ ಸ್ಥಾನವಾದ ಭ್ರೂಮಧ್ಯಾಕಾಶವನ್ನು ಸೇರುವುದು. ಆಗ ಅಂತಃಕರಣ ಜನ್ಯವಾದ ಆನಂದವನ್ನು ಜಯಿಸಿ ಸ್ವಾಭಾವಿಕಾನಂದದ ಅವಿರ್ಭಾವವಾಗುವುದು. ಅದರಿಂದ ವಾತಪಿತ್ತಕಫದೋಷಗಳಿಂದ ಸಂಭವಿಸುವ ವೇದನೆ, ಜರೆ (ಮುಪ್ಪು) ವ್ಯಾಧಿ ಕ್ಷುತ್ತು (ಹಸಿವು) ನಿದ್ರೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ವರ್ಜಿತನಾಗುವನು. "ತೃತೀಯಾಂ ತು ವಿಜ್ಞೇಯೋ ವಿಹಾಯೋ-ಮರ್ದಲಛವಿನಿಃ। ಮಹಾಶೂನ್ಯಂ ತದಾ ಯಾತಿ ಸರ್ವಸಿದ್ಧಿಸಮಾಶ್ರಯಮ್॥ ಚಿತ್ತಾನಂದಂ ತದಾ ಜಿತ್ವಾ ಸಹಜಾನಂದಸಮ್ಮವಃ। ದೋಷದುಃಖಜರಾವ್ಯಾಧಿಕ್ಷುಭಾನಿರ್ದ್ರಾವಿರ್ವಿಜಿತಃ॥ ಕ್ಷುಧ್ರಗ್ರಂಥಿ ಯದಾ ಭಿತ್ವಾ ಶರವಿಂಶತಿಗತೋನಿಲಃ" ಹಠಂ ೪-೭೪, ೭೫, ೭೬।

(4) ನಾಲ್ಕನೆಯದಾದ ನಿಷ್ಪತ್ತಿವಸ್ಥೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮಾನಂದವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ವೇಣುನಾದವೂ ವೀಣಾ ನಾದವೂ ಕೇಳಿಬರುವುದು. ಈ ನಿಷ್ಪತ್ತಿವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ಚಿತ್ತವು ಒಂದೇ ವಿಷಯದೊಡನೆ ಏಕೀಭವಿಸುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ರಾಜಯೋಗವೆಂದು ಹೆಸರು. ಅಂದರೆ ಚಿತ್ತೈಕಾಗ್ರ್ಯವೇ ರಾಜಯೋಗ. ಈ ರಾಜಯೋಗದಲ್ಲಿ ನಾದಾನುಸಂಧಾನಪರನಾದ ಯೋಗಿಯು ಸೃಷ್ಟಿಸಂಹಾರ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡಲು ಶಕ್ತನಾಗುವುದರಿಂದ ಈಶ್ವರನಿಗೆ ಸಮಾನನಾಗುವನು. ಈ ಅವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ಯೋಗಿಗೆ ಮುಕ್ತಿಯು ಸಿದ್ಧಿಸಿದರೂ ಅಥವಾ ಸಿದ್ಧಿಸದಿದ್ದರೂ ನಿರಂತರ ಮತ್ತು ಶಾಶ್ವತವಾದ ಬ್ರಹ್ಮಾನಂದವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವನು. "ನಿಷ್ಪತ್ತೌ ಕ್ವಣವಃ ಶಬ್ದಃ ಕ್ವಣದ್ವಿಗಾ-ಕ್ವಣೋ ಭವೇತ್॥ ಏಕೀಭೂತಂ ತದಾ ಚಿತ್ತಂ ರಾಜಯೋಗಾಭಿಧಾನಕಮ್॥



ಸೃಷ್ಟಿಸಂಹಾರಕರ್ತೃಯೋಗೀಶ್ವರಸಮೋ ಭವೇತ್ || ಅಸ್ತು ವಾ ಮಾಸ್ತು  
ವಾ ಸಿದ್ಧಿರವೇಶ್ವರವಾಣಿಷಿತಂ ಸುಖಮ್" ಹಠಂ ೪-೭೬, ೭೭, ೭೮ |

**ನಿಷ್ಪತ್ರ ನಿಷ್ಪತ್ತಿ** (ವಿಂ) 1. ಒಂದು ಪಾರ್ಶ್ವದಿಂದ ಮೈ  
ಯೊಳಕ್ಕೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಮತ್ತೊಂದು ಪಾರ್ಶ್ವದಿಂದ  
ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡುತ್ತಿರುವ ಬಾಣದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮೈಗೆ,  
ನಿಗತಮನ್ಯಪಾರ್ಶ್ವೇನ ನಿಃಸೃತಂ ಪತ್ರಂ ಯಸ್ಯ | 2. ಎಲೆಗಳಲ್ಲದ.  
3. ಗರಿಗಳಲ್ಲದ.

**ನಿಷ್ಪತ್ರಾಕೃತ ನಿಷ್ಪತ್ತಾಕೃತ** (ವಿಂ) ಒಂದು ಕಡೆಯಿಂದ  
ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಮತ್ತೊಂದು ಕಡೆಯಿಂದ ಹೊರಡುವುದರಿಂದ  
ಬಹಳ ನೋವುಂಟುಮಾಡುವ (ಬಾಣ). "ಶಶಿಸುಲ್ಕಾಘವಂ  
ತಸ್ಯ ನಿಷ್ಪತ್ರಾಕೃತಸಾಯಕಮ್" ಯಾದಂ ೧೬-೯೦ |

**ನಿಷ್ಪದ ನಿಷ್ಪದ** (ವಿಂ) 1. ಕಾಲುಗಳಲ್ಲದವನು. ನಿಗತಂ  
ಪದಂ ಪಾದೋ ಯಸ್ಯ | 2. ಕಾಲು (ಚಕ್ರ)ಗಳಲ್ಲದ ವಾಹನ.  
ಹಡಗು ಮೊದಲಾದುದು. "ನೌಕಾಘಂ ನಿಷ್ಪದಂ ಯಾನಂ ತಸ್ಯ  
ಲಕ್ಷಣಮುಚ್ಯತೇ | ಅಶ್ವಾದಿಕಂ ತು ಯದಾನಂ ಸ್ಥಲೇ ಸರ್ವಂ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿ-  
ತಮ್ | ಜಲೇ ನೌಕೇವ ಯಾನಂ ಸ್ಯಾದತಸ್ತಾಂ ಯತನೋ ವಹೇತ್" |  
3. ಸ್ಥಾನವಿಲ್ಲದ, ಆಶ್ರಯವಿಲ್ಲದ. "ನಿಷ್ಪದಸ್ಯ ಕಲೇ-  
ಸ್ತತ್ರ ಸ್ಥಾನದಾನಾದಿಭೀತಕಮ್ | ಕಲಿದ್ರುಮಃ ಪರಂ ನಾಸೀದಾಸೀ-  
ತ್ಕಲ್ಪದ್ರುಮೋಽಪಿ ಸಃ" ನೈಷಂ ೧೭-೨೧೩ |

**ನಿಃಸ್ಪಂದ ನಿಃಸ್ಪಂದ** } (ವಿಂ) ಸ್ಪಂದನವಿಲ್ಲದ, ಚಲನೆ  
ನಿಷ್ಪಂದ ನಿಃಸ್ಪಂದ } ಯಿಲ್ಲದ. ನಿಗತಃ ಸ್ಪಂದೋ ಸ್ಪಂದನಂ ಯಸ್ಯ | "ಮೆಥಿಲೀತನಯೋ-  
ದಗೀತನಿಃಸ್ಪಂದಮೃಗಮಾಶ್ರಮಮ್" ರಘುಂ ೧೪-೩೭ |

**ನಿಷ್ಪಂದೀಕೃತ ನಿಷ್ಪಂದೀಕೃತ** (ವಿಂ) ಚಲನೆಯಿಲ್ಲದೆ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಲುಗಾಡದಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿಷ್ಪಂದೀಕೃತ-  
ಪದ್ಮಪುಷ್ಪನಯನಂ ನಷ್ಟಕಪಾಪಾಸರಮ್" ಮೃಚ್ಛಂ ೪-೨೪ |

**ನಿಷ್ಪನ್ನ ನಿಷ್ಪನ್ನ** (ವಿಂ) 1. ಹುಟ್ಟಿದ, ಉತ್ಪತ್ತಿಹೊಂದಿದ.  
ನಿಃ + ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | 2. ಸಮಾಪ್ತಿ  
ಹೊಂದಿದ. 3. ಸಿದ್ಧವಾದ. "ನಿಷ್ಪಾಪತ್ವಂ ಫಲಂ ವಿಧಿ  
ತೀರ್ಥಸ್ಯ ಮುನಿಸತ್ತಮ | ಕೃಷೇಃ ಫಲಂ ಯಥಾ ಲೋಕೇ ನಿಷ್ಪನ್ನಾತ್ರಸ್ಯ  
ಮಕ್ಷಣಮ್" |

**ನಿಷ್ಪರಿಗ್ರಹ ನಿಷ್ಪರಿಗ್ರಹ** (ವಿಂ) 1. ಪತ್ತೇ ಪುತ್ರ ಪರಿಜನ  
ರಾರೂ ಇಲ್ಲದ ಸಂನ್ಯಾಸಿ. ನಿಗತಃ ಪರಿಗ್ರಹಃ ಯಸ್ಯ |  
"ಆತ್ಮನೈವಾತ್ಮಾನಮಾಧಾಯ ನಿವೃತ್ತೋ ನಿಷ್ಪರಿಗ್ರಹಃ" | (ವಿಂ)  
2. ವಿಷಯಾಭಿಲಾಷೆಯಿಲ್ಲದ. "ಏತಾವತ್ ಸಂಸಾರಂ, ನ  
ನಿಷ್ಪರಿಗ್ರಹಂ ಸ್ಥಾನಪರಿಭ್ರಂಶಃ ಪಿಡಯಿಷ್ಯತಿ" ಮುद्रಾಂ ೨ |

**ನಿಷ್ಪಾದಕ ನಿಷ್ಪಾದಕ** (ವಿಂ) ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡುವವನು,  
ತಯಾರಿಸುವವನು. ನಿಃ + ಪದ (ಗತೌ) + ಗಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ"  
(೩-೧-೧೩೪) |

**ನಿಷ್ಪಾದನ ನಿಷ್ಪಾದನ** (ನಂ) 1. ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡುವುದು,  
ತಯಾರಿಸುವುದು. ನಿಃ + ಪದ (ಗತೌ) + ಗಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ"  
(೩-೩-೧೧೪) | 2. ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸುವುದು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
"ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭) | -ಪಾದನಾ - ಪಾದನಾ.

**ನಿಷ್ಪಾದನೀಯ ನಿಷ್ಪಾದನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡ  
ಲ್ಪಡುವ, ತಯಾರಿಸಲ್ಪಡುವ. ನಿಃ + ಪದ (ಗತೌ) +  
ಗಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) | 2. ತಯಾರಿಸ  
ಬೇಕಾದ. "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೧೬) | -ದಯಿತವ್ಯಃ  
-ದಯಿತವ್ಯಃ.

**ನಿಷ್ಪಾದಿತ ನಿಷ್ಪಾದಿತ** (ವಿಂ) 1. ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ನಿ + ಪದ (ಗತೌ) + ಗಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |  
2. ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಸಾಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಮಯಾ ನಿಷ್ಪಾದಿತಂ ಹ್ಯತ್ರ ದೇವಕಾರ್ಯಮಶೇಷತಃ"  
ಭಾಗಂ ೧೧-೮-೨ |

**ನಿಷ್ಪಾನ ನಿಷ್ಪಾನ** (ನಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕುಡಿಯುವುದು. ನಿಃ +  
ಪಾ (ಪಾನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೩-೧೧೪) |

**ನಿಷ್ಪಾವ ನಿಷ್ಪಾವ** (ವಿಂ) 1. ಮೊರದ ಗಾಳಿ, ಕೊರಗದ  
ಗಾಳಿ. ನಿಷ್ಪುಯತೇ ತುಷಾಘನಯೇನ ಶೋಧಯತೇಜೇನ - ನಿಃ + ಪೂ  
(ಪವನೇ) ಕರಂ "ಘ" (೩-೩-೧೨೧) | ಧಾನ್ಯವನ್ನು  
ಮೊರದಲ್ಲಿ ತೂರಿ ಹೊಟ್ಟನ್ನು ಬೇರ್ಪಡಿಸಬೇಕು.  
2. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ತೂರಿ ಹೊಟ್ಟನ್ನು ಬೇರ್ಪಡಿಸುವುದು.  
ನಿಃ + ಪೂ ಭಾವೇ "ಘ" (೩-೩-೧೮) | 3. ರಾಜ  
ಮಾಷ, ಅವರೆ. 4. ಜಳ್ಳು ತೆನೆ.

**ನಿಷ್ಪಿಷ್ಟ ನಿಷ್ಪಿಷ್ಟ** (ವಿಂ) 1. ಪುಡಿಯಾಗಿರುವ, ಚೂರ್ಣ  
ವಾಗಿರುವ. ಪಿಷ್ಟ (ಸಂಚೂರ್ಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) |  
"ಶೌಲೋಪಶಲ್ಯನಿಪತದ್ರವ್ಯೇನೇಮಿಚಾರಾನಿಷ್ಪಿಷ್ಟನಿಷ್ಠುರಶಿಲಾತಲ-  
ಚೂರ್ಣಗರ್ಭಃ" ಮಾಘಂ ೪-೮ | 2. ಅರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ನುಣ್ಣಗೆ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
"ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾದ್ರಿಸದಾಽಪ್ಯರ್ಥೇ ನಿಷ್ಪಿಷ್ಟಃ ಕೋಣಮುಚ್ಚಸನ್"  
ಭದ್ರಂ ೬-೧೨೦ | 4. ಉಜ್ಜಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿಕ್ಕಲ್ಪಟ್ಟ.

**ನಿಷ್ಪೀಡನ ನಿಷ್ಪೀಡನ** (ನಂ) 1. ಹಿಂಡುವುದು, ಹಿಂಸುಕು  
ವುದು. ನಿಃ + ಪಿಡ (ಅವಗಾಹನೇ) + ಗಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಃ"  
(೩-೩-೧೧೪) | 2. ಅದುಮುವುದು, ಒತ್ತುವುದು.  
"ಶ್ವಸದಸಿತಮುಜ್ಜಭೋಗಾಙ್ಗದ್ರವ್ಯನಿಷ್ಪೀಡನೋತ್ಕುಲಕುಲ-  
ತ್ಕಣಾಪಿಠನಿರ್ದಿಷ್ಟಜ್ಯೋತಿರಜ್ಜುಮಮಾಣಂ . . . ." ಮಾಲತೀಂ  
೪-೨೩ | 3. ಪೀಡಿಸುವುದು, ಹಿಂಸಿಸುವುದು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
"ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭) | -ಪಿಡನಾ - ಪೀಡನಾ. "ಸಾರಮ್ಭಂ  
ಚಲತಾ ಕರೇಣ ನಿವಿಡಾಂ ನಿಷ್ಪೀಡನಾಂ ಲಮ್ಬಿತಃ" ನೈಷಂ ೧೯-೪೭ |



ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂಸುತಿರುವ, ಹಿಂಸುತಿರುವ. ನಿಸ್ + ಪಿಡ (ಅವಗಾಹನೆ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124)। 2. ಹಿಂಸುತಿರುವ, ಹಿಂಸುತಿರುವ. 3. ಅದುಮುತಿರುವ, ಒತ್ತುತಿರುವ, ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಕಿಪ್" (4-1-6)। -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ (ವಿಂ) ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಪಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕುಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟು. ನಿಸ್ + ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ಕಾಂತಿಮಕರಂದರಸಂಪ್ರೀತಿಯಾಂ ನಿಹಾರಮಾನ್ ಚಪಕಂ ನಿರ್ದಾತಿ ಸಂಖ್ಯಾ" ಯಾದಂ 19-24।

ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ (ಪುಂ) ಪುಲಕವಿಲ್ಲದ ಧಾನ್ಯ, ಜಳ್ಳು ಹೊಟ್ಟುಗಳಿಲ್ಲದ ಧಾನ್ಯ. ನಿಗತಂ ಪುಲಕೋ ಯಸ್ಯ।

ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ (ಪುಂ) 1. ಚೂರ್ಣಮಾಡುವುದು, ಪುಡಿಯಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ನಿಸ್ + ಪಿಷ (ಸಂಚೂರ್ಣನೆ) "ಘ" (3-3-18)। "ದೋನಿಷ್ಪಾದಯತ್ವಿಂಶತ್ಸಂಚಯದಲಕ್ಟಾಲ್ಮುನ್ಮಥನತಃ" ಮಾಲತೀಂ 6-9। 2. ಅರೆಯುವುದು, ನುಣ್ಣುಗೆ ಮಾಡುವುದು, 3. ಹಿಂಸುತಿರುವುದು, ಹಿಂಸುತಿರುವುದು, 4. ಉಜ್ಜುವುದು, ತಿಕ್ಕುವುದು.

ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ (ನಂ) 1. ಪುಡಿಯಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. 2. ಹಿಂಸುತಿರುವುದು. 3. ಅರೆಯುವುದು, 4. ಉಜ್ಜುವುದು, ತಿಕ್ಕುವುದು. "ನಾರಾಚಕ್ಷೇಪಣಿಯಾಶ್ಮನಿಷ್ಪಾದಯತ್ಪಿತೃತಾನಲಮ್" ರಘುಂ 4-99।

ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಪುಡಿಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಚೂರ್ಣವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ನಿಸ್ + ಪಿಷ್ಠ (ಸಂಚೂರ್ಣನೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "ನಿಹತನಿಷ್ಪಾದಯತ್ನಿಷ್ಠಾಪಿತಾಶೇಷಜನನಿವಹಃ" ಮಾಲತೀಂ 3। 2. ಹಿಂಸುತಿರುವಲ್ಪಟ್ಟು, ಹಿಂಸುತಿರುವಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಅರೆಯಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ಉಜ್ಜಲ್ಪಟ್ಟು, ತಿಕ್ಕಲ್ಪಟ್ಟು.

ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ (ವಿಂ) ನಿಶ್ಚಲವಾದ, ಅಲುಗಾಡದ, ಚಲಿಸದಿರುವ. ನಿಗತಃ ಪ್ರಕಮ್ಪೋ ಯಸ್ಯ। "ಸಾದೃಶ್ಯಂ ನಿಲಯನ-ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ಪಕ್ಷರಾಜಮ್ಬುಜಲನಿಧಿಶಾಯಿಭಿರ್ನಿಗೇಂದ್ರಃ" ಕಿರಾಂ 9-20।

ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆಯಿಲ್ಲದ, ನಿಷ್ಕಾರಣೋಪಾಯವಿಲ್ಲದ. ನಿಗತಾ ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಾ ಯಸ್ಯ। 2. ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆಯಿಲ್ಲದ, ಪ್ರತಿಫಲವಿಲ್ಲದ.

ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತಿಬಿಂಬವಿಲ್ಲದ, ಶತ್ರುಗಳಿಲ್ಲದ, ಎದುರಾಳಿಗಳಿಲ್ಲದ. ನಿಗತಃ ಪ್ರತಿಬಿಂಬೀ ಯತ್ರ। "ಕಪ್" (4-4-144)। "ನಿಷ್ಪಾದಯತ್-

ದ್ವಂದ್ವಿಕಂ ಸ್ವರ್ಗಸುಖಮಾಸ್ವಾಹಿತಾಂ ಸುರಃ" ಯಾದಂ 19-120। 2. ಅಸದೃಶವಾದ, ಸರಿಸಮಾನವಿಲ್ಲದ.

ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಯಾದ ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಅರಿವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಿಗತಾ ಪ್ರತಿಪತ್ತಿಃ ಸಮ್ಯಗ್ಜ್ಞಾನಮ್। "ಕಥಂ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ಪ್ರತೀಕೃತ್ಯಾ-ಯಾನ್ಯತಃ ಪ್ರವೃತ್ತಃ" ಮಾಲತೀಂ 9। (ವಿಂ) 2. ಗೌರವವಿಲ್ಲದ, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಲ್ಲದ. 3. ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದ, ಸಂಯಾದ ಅರಿವಿಲ್ಲದ.

ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ (ವಿಂ) ಪ್ರತಿಭೆಯಿಲ್ಲದ, ಪ್ರತ್ಯುತ್ಪನ್ನಮತಿಯಿಲ್ಲದ, ಮಂದಪ್ರಜ್ಞನಾದ. ನಿಗತಾ ಪ್ರತಿಭಾ ಯಸ್ಯ।

ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ (ವಿಂ) ಅಸದೃಶವಾದ, ಅನುಪಮವಾದ, ಅತಿಶಯವಾದ. "ತೌ ಪರಸ್ಪರಜಿಗಿಷಯೋಽತೌ ವೀಕ್ಷ್ಯ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ವಿರೈವೈವಮೌ" ಯಾದಂ 19-94।

ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ (ವಿಂ) 1. ನಿವಾರಣೋಪಾಯವಿಲ್ಲದ, ತಡೆಗಟ್ಟಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ. ನಿಗತಃ ಪ್ರತೀಕಾರೋ ಯಸ್ಯ। "ಸರ್ವಥಾ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ಪ್ರತೀಕಾರೇಯಮಾಪದ್ವಪಸ್ಥಿತಾ" ಕಾದಂ 1। 2. ವಾಸಿಮಾಡಲಾಗದ, ಗುಣಪಡಿಸಲಾಗದ.

ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ (ವಿಂ) ಅಡ್ಡಿಯಿಲ್ಲದ, ತಡೆಯಿಲ್ಲದ, ವಿಘ್ನವಿಲ್ಲದ. ನಿಗತಃ ಪ್ರತ್ಯುಹೋ ಯಸ್ಯ। "ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ಪ್ರಿಯಸಖಿ ಯದಾ ದುಃಸಹಾಃ ಸಂಬಂಧುಃ ಮೋಹೋದಾಮವ್ಯಸನಗುರವೋ ಮನ್ಮಥೋನ್ಮಾದವೇಗಾಃ" ಮಾಲತೀಂ 9-49।

ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಕಾಂತಿಯಿಲ್ಲದ, ತೇಜಸ್ವಿಯಿಲ್ಲದ, ಕಳೆಗುಂದಿದ. ನಿಗತಾ ಪ್ರಮಾ ಯಸ್ಯ। "ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ಪ್ರಿಯಾಸ ಭೂಮತಾಂ ಭೂಮಶೇಷ ಇವ ಭೂಮಕೇತನಃ" ರಘುಂ 11-61। 2. ಕತ್ತಲೆ ಕವಿದಿರುವ, ಮಸುಕಾಗಿರುವ. ಮಬ್ಬಾಗಿರುವ.

ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಅಳತೆಯಿಲ್ಲದ, ಅತಿ ದೊಡ್ಡದಾದ. ನಿಗತಂ ಪ್ರಮಾಣಂ ಯಸ್ಯ। "ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ಪ್ರಿಯಾಸ ಶನ್ ಲಿಲಿಪ್ತವಿಪುರ್ಣವಮ್" ರಾಮಾಂ 1। 2. ಆಧಾರವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರಮಾಣವಚನವಿಲ್ಲದ.

ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ, ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಬಾರದ. ನಿಗತಂ ಪ್ರಯೋಜನಂ ಯಸ್ಯ। 2. ಉದ್ದೇಶವಿಲ್ಲದ, ಗುರಿಯಿಲ್ಲದ. 3. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದ. (ಅವ್ಯಂ) 4. ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ, ಫಲವಿಲ್ಲದ. 5. ಉದ್ದೇಶವಿಲ್ಲದ. 6. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದ. "ಅಲಮನೇನ ಪ್ರಶ್ನಯೇಣ, ನ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ಪ್ರಯೋಜನಮಧಿಕಾರವಂತಃ ಪ್ರಭುಮಿರಾಹುಯಂತೆ" ಮುದ್ರಾಂ 3।

ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ ನಿಷ್ಪಾದಯತ್ (ನಂ) ಹೊಸ ಬಟ್ಟೆ, ನೂತನ ವಸ್ತ್ರ, ಒಗೆಯದಿರುವ ಬಟ್ಟೆ. ನಿಗತಾ ಪ್ರವಾಣಿ ತನ್ತುವಾಯ



ಶಲಾಕಾಽಸ್ಮಾತ್। “ಅನಾಹತಂ ನಿಫ್ರವಾಣಿ ತನ್ವಕಂ ಚ  
ನವಾಮ್ಬರೆ” ಅಮಂ।

**ನಿರ್ಫಲ ನಿಷ್ಕಲ** (ವಿಂ) 1. ಫಲವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರಯೋಜನ  
ವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಂ ಫಲಂ ಯಸ್ಮಾತ್। “ನಿರಗಮದಭಿರಾಡುಮಾ-  
ದೃತಾನಾಂ ಭವತಿ ಮಹತ್ಸು ನ ನಿರ್ಫಲಃ ಪ್ರಯಾಸಃ” ಮಾಘಂ ೭-೧।  
2. ವ್ಯರ್ಥವಾದ, ನಿರ್ವರ್ಥಕವಾದ, ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಬಾರದ.  
“ಕೇ ವಾ ನ ಸ್ಯುಃ ಪರಿಭವಪದಂ ನಿರ್ಫಲಾರಮ್ಭಯತಾಃ” ಮೇಘಂ  
೧-೫೪। “ಕಾಷ್ಠಾಃ ಶೂನ್ಯಾ ನಿರ್ಫಲಾನಿನ್ದ್ರಿಯಾಣಿ” ಮಾಲತೀಂ  
೧-೩೭। 3. ಫಲಶೂನ್ಯವಾದ, ಕಾಯಿ ಹಣ್ಣು ಬಿಡೆ  
ದಿರುವ (ಮರ, ಗಿಡ ಮೊದಲಾದುದು). 4. ತಿರುಳಿಲ್ಲದ  
(ಧಾನ್ಯ), ಜಳ್ಳುಧಾನ್ಯ. “ಪಲಾಲೋಸ್ತ್ರೀ ಸ ನಿರ್ಫಲಃ”  
ಅಮಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಫಲಾ-ಫಲಾ. ಮುಟ್ಟು ನಿಂತು  
ಹೋದ ಹೆಂಗಸು, ವೃದ್ಧ ಹೆಂಗಸು.

**ನಿರ್ಫಲ ನಿಷ್ಕಂದ** (ಪುಂ) 1. ಸ್ವವಿಸ್ಮಯವು, ಸೋರು  
ವುದು. ನಿ + ಸ್ಯನ್ದ (ಪ್ರಸವಣೆ) “ಛಕ್” (೩-೩-೧೮)।  
“ಉತ್ತರಾಲಕಮಲಾಕರಮಾಕರಂದನಿರ್ಫಲಸಂವಲಿತಮಾಸಲಗಂಧ-  
ಬಂಧುಃ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೩। 2. ದ್ರವ, ರಸ. “ಶಿಶಿರ-  
ಕಡ್ಕುಕಾಯಃ ಸ್ಥಾಯತೇ ಸಲ್ಲಕೀನಾಮಿಭದಲಿತವಿಕೀರ್ಣಗ್ರನ್ಥಿ-  
ನಿರ್ಫಲಗಂಧಃ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೬। 3. ಪ್ರವಾಹ, ಹೊನಲು.  
“ಗಜ್ಜಾಸರಖೋಜಲಮುಣತಪ್ತಂ ಹಿಮಾದ್ರಿನಿರ್ಫಲ ಇವಾವತೀರ್ಣಃ”  
ರಘುಂ ೧೪-೩।

**ನಿರ್ಫಲನಿಷ್ಕಂದಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ವವಿಸ್ಮಯವು, ಸೋರು  
ವುದು. ನಿ + ಸ್ಯನ್ದ (ಪ್ರಸವಣೆ) “ಶಾನಚ್”  
(೩-೨-೧೨೪)। “ಪ್ರವಲಿತಕರಿಕೃತಿಪರ್ಯಂತಚ್ಚಕ್ಷಣಾಘಾತ-  
ಮಿಗ್ಧೇಂದ್ರನಿರ್ಫಲಮಾನಾಮೃತಶ್ಚಯೋತಂ...” ಮಾಲತೀಂ ೫-೨೩।  
2. ಹರಿಯುತ್ತಿರುವ.

**ನಿರ್ಫಲನಿಷ್ಕಂದಿನ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ವವಿಸ್ಮಯವು, ಸೋರುವು.  
ನಿ + ಸ್ಯನ್ದ (ಪ್ರಸವಣೆ) “ಗಿಣಿಃ” (೩-೧-೧೩೪)।  
2. ಸುರಿಸುವ. “ಖಜ್ಜಾಹಿತವ್ಯಸ್ತಸ್ಕಂಧಕಬಂಧರಂಧರಧಿರ-  
ಪ್ರಾಗ್ಭಾರನಿರ್ಫಲನಿಷ್ಕಂದಿನಾ” ಮಾಲತೀಂ ೫-೨೯। 3. ಪ್ರವಹಿ  
ಸುವ, ಹರಿಯುವ.

**ನಿಸ್ ನಿರ್ಫ** (ಅವ್ಯಂ) ಇದೊಂದು ಉಪಸರ್ಗ. ಈ ಉಪ  
ಸರ್ಗವು ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ ದ್ಯೋತಕವಾಗುವುದು:  
1. ನಿಶ್ಚಯ, ನಿಜ, ದಿಟ. 2. ಸಾಕಲ್ಯ, ಸಮಗ್ರತೆ,  
ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ನಿಷೇಧ. 4. ಅತೀತವಾದ,  
ಅತಿಕ್ರಮಿಸಿದ, ಕಳೆದುಹೋದ. “ನಿಸ್ ನಿಷೇಧೇ ಚ ನಿಶ್ಚಯೇ।  
ಸಾಕಲ್ಯಾತಿತಯೋಃ” ಮೇದಿಂ।

**ನಿಸರ್ಗ ನಿರ್ಫ** (ಪುಂ) 1. ಸ್ವಭಾವ, ಪ್ರಕೃತಿ. ನಿ + ಸೃಜ  
(ವಿಸರ್ಗ) “ಛಕ್” (೩-೩-೧೮)। “ನಿಸರ್ಗಸಂಸ್ಕಾರವಿನೀತ

ಇತ್ಯಸೌ ನೃಪೇಣ ಚಕ್ರೇ ಯುವರಾಜಶಬ್ದಮಾಕ್” ರಘುಂ ೩-೩೫।  
2. ಸರ್ಗ, ಸೃಷ್ಟಿ. 3. ರೂಪ, ಸ್ವರೂಪ. 4. ದಾನ,  
ಕೊಡುಗೆ. “ನ ತ್ವೇವಾಥೌ ಸೋಪಕಾರೇ ಕೌಸೀದಿಂ ವೃದ್ಧಿಮಾನ್ಯುಯಾತ್।  
ನ ಚಾಧೇಃ ಕಾಲಸಂರೋಧಾನಿಸರ್ಗೋಽಸ್ತಿ ನ ವಿಕ್ರಯಃ” ಮನುಂ  
೮-೧೪೩।

**ನಿಸರ್ಗಜ ನಿರ್ಫಜ** (ವಿಂ) ಸಹಜವಾದ, ಸ್ವಭಾವಸಿದ್ಧ  
ವಾದ, ಹುಟ್ಟಿನಿಂದ ಬಂದ. ನಿಸರ್ಗಜಜಾಯತೇ — ಜನಿ  
(ಪ್ರಾಡುಭವಿ) “ಛಕ್” (೩-೨-೧೮)।

**ನಿಸರ್ಗತಸ್ ನಿರ್ಫತಸ್** (ಅವ್ಯಂ) ಸ್ವಭಾವವಾಗಿ, ಸಹಜ  
ವಾಗಿ. ನಿಸರ್ಗ “ತಸಿಃ” (ವಾಂ ೫-೪-೪೪)। “ಉಪಕೃತ್ಯ  
ನಿಸರ್ಗತಃ ಪರೇಷಾಮುಪರೋಧಂ ನ ಹಿ ಕುರ್ವತೇ ಮಹಾಂತಃ” ಮಾಘಂ  
೨೦-೭೫।

**ನಿಸರ್ಗನಿಪುಣ ನಿರ್ಫನಿಪುಣ** (ವಿಂ) ಸ್ವಭಾವವಾಗಿ ಬುದ್ಧಿ  
ವಂತನಾದ, ಹುಟ್ಟಿನಿಂದಲೇ ಜಾಣನಾದ. ನಿಸರ್ಗೇನ ನಿಪುಣಃ।  
“ನಿಸರ್ಗನಿಪುಣಾಃ ಸ್ತ್ರೀಯಃ” ಮಾಲಂ ೩।

**ನಿಸರ್ಗಶಾಲಿನ ನಿರ್ಫಶಾಲೀನ** (ವಿಂ) ಸ್ವಭಾವ  
ವಾಗಿಯೇ ವಿನೀತನಾದ, ಸ್ವಭಾವವಾಗಿಯೇ ದಿಟ್ಟತನ  
ವಿಲ್ಲದ. ನಿಸರ್ಗೇನ ಶಾಲೀನಃ। “ನಿಸರ್ಗಶಾಲೀನಃ ಸ್ತ್ರೀಜನಃ”  
ಮಾಲಂ ೪।

**ನಿಸರ್ಗಸಿದ್ಧ ನಿರ್ಫಸಿದ್ಧ** (ವಿಂ) ಸ್ವಭಾವವಾಗಿಯೇ ಸಿದ್ಧ  
ವಾದ, ಹುಟ್ಟಿನಿಂದಲೇ ಬಂದಿರುವ. “ರಾಗೋ ನಲಿನ್ಯಾ ಹಿ  
ನಿಸರ್ಗಸಿದ್ಧಃ ತತ್ರ ಭ್ರಮತ್ಯೇವ ವೃಥಾ ಷಡ್ಭಿಃ” ಭರ್ತುಂ  
೨-೪೭।

**ನಿಸ್ಸೃಷ್ಟ ನಿಷ್ಕೃಷ್ಟ** (ವಿಂ) 1. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ನಿ + ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। “ನ  
ಸ್ವಾಮಿನಾ ನಿಸ್ಸೃಷ್ಟೋಽಪಿ ಶೂದ್ರೋ ದಾಸ್ಯಾನ್ಮುಚ್ಯತೇ” ಮನುಂ  
೮-೪೧೪। 2. ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ, ನೀಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ತೆಗೆದು  
ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ವಜಾಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ನಿಸ್ಸೃಷ್ಟಾರ್ಥ ನಿಷ್ಕೃಷ್ಟಾರ್ಥ** (ಪುಂ) 1. ಮೂರು ವಿಧ ದೂತ  
ರಲ್ಲೊಬ್ಬ, ನಾಯಕನಾಯಕರ ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು  
ಜೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದು ಸ್ವಬುದ್ಧಿಯಿಂದಲೇ ಅವರಿಗೆ ಉತ್ತರ  
ಕೊಡುತ್ತ ಇಬ್ಬರ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಸುಗಮವಾಗಿ ನಡೆಸಿ  
ಕೊಡುವವನು ನಿಷ್ಕೃಷ್ಟಾರ್ಥ ದೂತನು. ನಿಸ್ಸೃಷ್ಟಃ ನಿಕ್ಷಿಪ್ತಃ  
ಅರ್ಥಃ ಕಾರ್ಯಮಾರೋಽಸ್ಮಿನ್। “ಉಭಯೋರ್ಭವಿಮುಕ್ತೀಯ ಸ್ವಯಂ ವದತಿ  
ಚೋತ್ತರಮ್। ಸುನಿಲಪ್ತಂ ಕುಸ್ತೇ ಕಾರ್ಯಂ ನಿಸ್ಸೃಷ್ಟಾರ್ಥಸ್ತು ಸ  
ಸ್ಮೃತಃ” ಸಾಂ ೬೦ ೩-೪೭। 2. ರಾಜಕೀಯ ವ್ಯವಹಾರ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಅಮಾತ್ಯನ ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೂತನು  
ನಿಷ್ಕೃಷ್ಟಾರ್ಥನು. “ಅಮಾತ್ಯಸಂಪದೋಪೇತೋ ನಿಸ್ಸೃಷ್ಟಾರ್ಥಃ”।



ನಿರ್ದೇಶ ನಿರ್ದೇಶ (ವಿಂ) ತತ್ತ್ವವಾಗಿಲ್ಲದ, ವಾಸ್ತವ ಸ್ವರೂಪವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ದೇಶ ತತ್ತ್ವವಾಸ್ತವ ರೂಪ ಸ್ವರೂಪ ವಾ ಯಸ್ಯ ।

ನಿರ್ದೇಶ ನಿರ್ದೇಶ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ವರೂಪವಿಲ್ಲದ ಹೆಂಗುಸು. ನಿರ್ದೇಶ ಸ್ತ್ರೀಂ ಯಸ್ಯಾಃ, ವಾ "ತೀರ್" (೪-೧-೪೪) ।

ನಿರ್ದೇಶ ನಿರ್ದೇಶ (ವಿಂ) ಸಂತಾನವಿಲ್ಲದ, ಮಕ್ಕಳಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ದೇಶ: ತನ್ತು: ಯಸ್ಯ ।

ನಿರ್ದೇಶ ನಿರ್ದೇಶ (ವಿಂ) 1. ಸೋಮಾರಿತನವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ದೇಶ ತನ್ತ್ರಾ ಯಸ್ಯ । 2. ನಿರ್ದೇಶವಿಲ್ಲದ, ತೋಡಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. 3. ಆಯಾಸವಿಲ್ಲದ, ದಣವಿಲ್ಲದ.

ನಿರ್ದೇಶ ನಿರ್ದೇಶ (ವಿಂ) 1. ಸೋಮಾರಿತನವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ದೇಶ ತನ್ದಿರಾಲಸ್ಯ ಯಸ್ಯ । 2. ತೋಡಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. 3. ಆಯಾಸವಿಲ್ಲದ.

ನಿರ್ದೇಶ ನಿರ್ದೇಶ (ವಿಂ) 1. ಸೋಮಾರಿತನವಿಲ್ಲದ. 2. ತೋಡಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. 3. ಆಯಾಸವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ದೇಶ: ತನ್ತ್ರಾ: ।

ನಿರ್ದೇಶ ನಿರ್ದೇಶ (ವಿಂ) 1. ಕತ್ತಲೆಯಿಲ್ಲದ, ಅಂಧ ಕಾರವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ದೇಶ ತಮ: ಯಸ್ಮಾತ್ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೪೪) । 2. ಪಾಪರಹಿತವಾದ, ದೋಷವಿಲ್ಲದ. "ತಸ್ಯ ದ್ವಿತೀಯ-ಹರಿವಿಕರಮನಿರ್ದೇಶಕಂ ವಾಯೋರಮಂ ಪರಿವಹಸ್ಯ ವದಂತಿ ಮಾಗಮ್" ಶಾಕುಂ ೭-೬ । 3. ಶೋಕರಹಿತವಾದ.

ನಿರ್ದೇಶ ನಿರ್ದೇಶ (ನಂ) 1. ದಾಟುವುದು. ನಿರ್ದೇಶ + ತ್ (ಫಲನತರಣಯೋಃ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) । 2. ತೀರವನ್ನು ಮುಟ್ಟುವುದು, ದಡವನ್ನು ಸೇರುವುದು. 3. ಅಪಾಯದಿಂದ ಪಾರಾಗುವುದು, ಅಪಾಯದಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 4. ಉಪಾಯ, ಅಪಾಯದಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಮಾರ್ಗ. ನಿರ್ದೇಶಯಂತೇ ಅನೇನ — ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) । "ಸ್ಯಾನಿರ್ದೇಶಮುಪಾಯೇ ನಿರ್ದೇಶೇ ತರಣೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ । 5. ಪೂರ್ಣಗೊಳಿಸುವುದು, ಕೊನೆಮುಟ್ಟುವುದು.

ನಿರ್ದೇಶ ನಿರ್ದೇಶ (ನಂ) ವಧಿಸುವುದು, ಕೊಲ್ಲುವುದು. ನಿರ್ದೇಶ + ತ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) । "ನಿರ್ದೇಶಂ ನಿರ್ದೇಶನಂ ಕ್ಷಣನಂ ಪರಿವರ್ಜನಮ್" ಅಮಂ ।

ನಿರ್ದೇಶ ನಿರ್ದೇಶ (ವಿಂ) 1. ಅಡಿಯಿಲ್ಲದ, ತಳಭಾಗವಿಲ್ಲದ. 2. ವರ್ತುಲವಾದ, ಗುಂಡಾಗಿರುವ. ನಿರ್ದೇಶ ತಲಂ ಯಸ್ಯ । "ಕಣ್ತಸ್ಯ ತಸ್ಯಾಃ ಸ್ತನಬನ್ಧುರಸ್ಯ ಮುಕ್ತಾಕಲಾಪಸ್ಯ ಚ ನಿರ್ದೇಶಸ್ಯ" ಕುಮಾಂ ೧-೪೨ । 3. ಚಲಿಸುವ, ಅಲುಗಾಡುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ಲಾ — ಲಾ. ಚೆಂಡು, ವರ್ತುಲವಾದ ವಸ್ತು.

ನಿರ್ದೇಶ ನಿರ್ದೇಶ (ಫಂ) 1. ದಾಟುವುದು, ಆಚೆದಡ ಮುಟ್ಟುವುದು. ನಿರ್ದೇಶ + ತ್ (ಫಲನತರಣಯೋಃ) "ಘಬ್" (೩-೩-೧೧೮) । 2. ಪೂರ್ಣಗೊಳಿಸುವುದು, ಕೊನೆಮುಟ್ಟುವುದು. 3. ಕಷ್ಟದಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಅಪಾಯದಿಂದ ಪಾರಾಗುವುದು. "ನಿರ್ದೇಶಬಿಜಮಿದಮೇವ ಕುಶೋದರೀಣಾಂ ಯನ್ಮಾಘವ ತ್ವಮಸಿ ಸಂಪ್ರತಿ ಕರ್ಣಧಾರ:" ತದ್ಗಂ । 4. ಸಾಲತೀರಿಸುವುದು, ಬುಣವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವುದು. "ಗೃಹೀತರಾಜವೇತನಸ್ಯ ನಿರ್ದೇಶ: ಕೃತ:" ಹಿತೋಂ ೩ । 5. ಉಪಾಯ. 6. ಹಾಯ್ದುಹೋಗುವುದು, ಕೊನೆಯನ್ನು ಮುಟ್ಟುವುದು. "ಸಂಸಾರ ತವ ನಿರ್ದೇಶಪದವಿ ನ ದವೀಯಸಿ" ಮತಂ ೨-೩೩ । 7. ಬಿಡುಗಡೆ ಹೊಂದುವುದು, ವಿಮೋಚನೆ ಪಡೆಯುವುದು.

ನಿರ್ದೇಶ ನಿರ್ದೇಶ (ವಿಂ) 1. ದಾಟಿಸುವವನು, ದಡ ಸೇರಿಸುವವನು. ನಿರ್ದೇಶ + ತ್ (ಫಲನತರಣಯೋಃ) "ಘಬ್" (೩-೩-೧೩೩) । 2. ಬಿಡಿಸುವವನು, ವಿಮೋಚನೆಮಾಡಿಸುವವನು. 3. ಸಾಲ ತೀರಿಸುವವನು, ಬುಣದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿಸುವವನು. 4. ಅಪಾಯದಿಂದ ತಪ್ಪಿಸುವವನು. 5. ಕೊನೆಮುಟ್ಟಿಸುವವನು.

ನಿರ್ದೇಶ ನಿರ್ದೇಶ (ನಂ) 1. ದಾಟಿಸುವುದು, ಆಚೆದಡ ಮುಟ್ಟಿಸುವುದು. ನಿರ್ದೇಶ + ತ್ (ಫಲನತರಣಯೋಃ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) । 2. ದಡ ಮುಟ್ಟಿಸುವುದು, ಹೊಳೆ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ದಾಟಿಸುವುದು, 3. ಸಂಸಾರ ಬಂಧನದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿಸುವುದು. 4. ಸಾಲ ತೀರಿಸುವುದು. 5. ಅಪಾಯದಿಂದ ತಪ್ಪಿಸುವುದು. 6. ಕೊನೆ ಮುಟ್ಟಿಸುವುದು.

ನಿರ್ದೇಶ ನಿರ್ದೇಶ (ವಿಂ) "ನಿರ್ದೇಶಕ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ನಿರ್ದೇಶ + ತ್ (ಫಲನತರಣಯೋಃ) + ಣಿಕ್ "ತುಕ್" (೩-೩-೧೩೩) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ತೀರ್" (೪-೧-೪೪) । —ಯಿತ್ರಿ —ಯಿತ್ರಿ.

ನಿರ್ದೇಶ ನಿರ್ದೇಶ (ವಿಂ) 1. ದಾಟಲ್ಪಟ್ಟು. ನಿರ್ದೇಶ + ತ್ (ಫಲನತರಣಯೋಃ) "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೦೨) । 2. ನೆರವೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಈಡೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಪೂರೈಸಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ದಾನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ತೊಂದರೆಯಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಅಪಾಯದಿಂದ ಪಾರುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. 5. ಸಾಲ ತೀರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಸಾಲದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು.

ನಿರ್ದೇಶ ನಿರ್ದೇಶ (ವಿಂ) 1. ಹೊಟ್ಟು ತೆಗೆಯಲ್ಪಟ್ಟು ಧಾನ್ಯ ಮೊದಲಾದುದು. ನಿರ್ದೇಶ: ತುಃ ಯಸ್ಮಾತ್ । 2. ದೋಷವಿಲ್ಲದ. "ಗುಣೇರೀಣೇಶ್ವರಯಾಸ್ತನಿರ್ದೇಶಮ್" ನೈಷಂ ೧೪-೮ ।



ನಿಸ್ತುಷಕೋರ ನಿಸ್ತುಷಕೋರ (ಪುಂ) ಗೋಧಿ.

ನಿಸ್ತುಷರತ್ನ ನಿಸ್ತುಷರತ್ನ (ನಂ) ಸ್ಪಟಿಕಶಿಲೆಯ ಹರಳು.

ನಿಸ್ತುಷೀಕೃತ ನಿಸ್ತುಷೀಕೃತ (ವಿಂ) ಹೊಟ್ಟು ತೆಗೆಯಲ್ಪಟ್ಟು, ಹೊಟ್ಟೆಯಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ನಿಸ್ + ತುಷ + ಕೃತ್  
“ಞಿವ್” (೪-೪-೪೦)। “ಔ” (೭-೪-೩೨)। “ಕ್ತಃ”  
(೩-೨-೧೦೨)।

ನಿಸ್ತೇಜಸ್ ನಿಸ್ತೇಜಸ್ (ವಿಂ) 1. ತೇಜಸ್ವಿಯಾದ, ತೇಜಸ್ವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡ, ಕಳೆಗುಂದಿದ. ನಿಗತಂ ತೇಜಃ ಯಸ್ಮಾತ್।  
2. ವೀರ್ಯವಿಲ್ಲದ, ದುರ್ಬಲವಾದ, ಸತ್ತವಿಲ್ಲದ.  
“ಇದಂ ಕವಚಮಜ್ಞಾತ್ವಾ ಕವಚಾನ್ಯ ಪಠೇತ್ ಯಃ। ಸರ್ವಂ ತಸ್ಯ ವೃಥಾ ದೇವಿ ನಿಸ್ತೇಜೋ ನ ಚ ವೃದ್ಧಿದಮ್”। 3. ಧೈರ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಉತ್ಸಾಹವಿಲ್ಲದ, ಮಂಕಾಗಿರುವ.

ನಿಸ್ತೋದ ನಿಸ್ತೋದ (ಪುಂ) ಚುಚ್ಚುವುದು, ಯಾತನೆ, ಕುಟುಕುವುದು. ನಿಸ್ + ತುಡ (ವ್ಯಯೇ) ಭಾವೇ “ಛ”  
(೩-೩-೧೮)। “ಮಜ್ಜಕಸ್ಯೇತ್ಯಪಶುಕ್ತಾ ಪವಂಮದೋಽಸ್ಯಿನಿಸ್ತೋದೋಽಸ್ಥಿಶೂನ್ಯತಾ ಚ” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೧೪-೯। ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್”  
(೩-೩-೧೧೪)। -ತೋದನಮ್ -ತೋದನಮ್. “ಪಾರ್ವಮಜ್ಞೋ ಗುಡಬಸ್ತಿನಿಸ್ತೋದನಮ್” ಸುಶ್ರುತಂ।

ನಿಸ್ತ್ರಪ ನಿಸ್ತ್ರಪ (ವಿಂ) ನಾಚಿಕೆಯಿಲ್ಲದ, ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದ.  
“ಇದಂಭಂಡಸಖಿ ಕಾಪಿ ನಿಸ್ತ್ರಪಾ ನ ಮನಾಗಪಿ” ನೈಷಂ  
೨೦-೧೪೦।

ನಿಸ್ತ್ರಿಶ ನಿಸ್ತ್ರಿಶ (ಪುಂ) 1. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. ನಿಗತಸ್ತ್ರಿಶತೋಽಙ್ಗುಲಿಮ್ಯಃ “ಡಕ್” (ವಾಂ ೪-೪-೭೩)। “ಪರನಿಸ್ತ್ರಿಶಶ-  
ನಿರ್ಲನಕರವಾಲಾಃ ಪದಾತಯಃ” ಮಾಘಂ ೧೯-೪೪। (ವಿಂ) 2.  
ದಯೆಯಿಲ್ಲದ, ಕನಿಕರವಿಲ್ಲದ, ಕ್ರೂರ. “ಮನ್ಯುರ್ದುಃಸಹ ಏವ  
ಯತ್ಯುಪಶಮಂ ನೋ ಸಾನ್ವವಾದೇಃ ಸ್ಫುಟಂ ಹೇ ನಿಸ್ತ್ರಿಶ ವಿಮುಕ್ತ-  
ಕಂಠಕರುಣಂ ತಾವತ್ಸಖಿ ರೋದಿತು” ಅಮರಂ ೬। 3. ಮೂವತ್ತು  
ಕೊಂಟ ಹೆಚ್ಚಾದ.

ನಿಸ್ತ್ರಿಶಿನ್ ನಿಸ್ತ್ರಿಶಿನ್ (ವಿಂ) ಖಡ್ಗಧಾರಿ, ಕತ್ತಿ  
ಯನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವವನು. ನಿಸ್ತ್ರಿಶೋಽಸ್ಯಸ್ಯ “ಔನಿಃ”  
(೪-೨-೧೧೪)।

ನಿಸ್ತ್ರೇಗುಣ್ಯ ನಿಸ್ತ್ರೇಗುಣ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸತ್ತ್ವರಜಸ್ಸಮೋ  
ರೂಪವಾದ ಗುಣತ್ರಯದ ಕಾರ್ಯವಾದ ಸಂಸಾರದಿಂದ  
ದೂರವಾದ. ತ್ರಯೋ ಗುಣಾಸ್ತ್ರೇಗುಣ್ಯಮ್ — ತತ್ಕಾರ್ಯಂ ಸಂಸಾರಃ —  
ನಿಗತಃ ತ್ರೇಗುಣ್ಯಾತ್ ಸಂಸಾರಾತ್ ತತ್ಕಾರ್ಯಮ್: ಕಾಮಾದಿಮ್ಯೋ  
ವಾ। 2. ಸತ್ತ್ವರಜಸ್ಸಮೋಗುಣಗಳ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ.  
“ತ್ರೇಗುಣ್ಯವಿಷಯಾ ವೇದಾ ನಿಸ್ತ್ರೇಗುಣ್ಯೋ ಭವಾರ್ಜುನ” ಗೀತಾ  
೨-೪೪।

ನಿಸ್ತೇಹ ನಿಸ್ತೇಹ (ವಿಂ) 1. ಸ್ನೇಹವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರೇಮ  
ವಿಲ್ಲದ. 2. ಎಣ್ಣೆಯಿಲ್ಲದ. ನಿಗತಃ ಸ್ತೇಹಃ ಪ್ರೇಮ ತೇಲಂ ವಾ  
ಯಸ್ಯ।

ನಿಸ್ಪಂದ ನಿಸ್ಪಂದ (ವಿಂ) ಚಲನೆಯಿಲ್ಲದ. ನಿಗತಃ ಸ್ಪಂದೋ  
ಯಸ್ಯ। “ಸೂಕ್ತೇ ವನೇ ನೇಷವಕೇಶಪಾಶೇ ನಿಪತ್ಯ ನಿಸ್ಪಂದ-  
ತರೀಭವದ್ಭ್ರಾಮ್। ತಸ್ಯಾನುಬಂಧಂ ನ ವಿಮೋಚ್ಯ ಗಂತುಮಪಾರಿ-  
ತಲೋಚನಸಂಜ್ಞನಾಮ್ಯಾಂ” ನೈಷಂ ೮-೧೩।

ನಿಸ್ಪಂದ ನಿಸ್ಪಂದ (ಪುಂ) 1. ತೊಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಸೋರುವುದು, ಸ್ತವಿಸುವುದು. ನಿ + ಸ್ಪಂದ್ (ಪ್ರಸವಣೇ) “ಛ”  
(೩-೩-೧೮)। ವಾಚತ್ವಮ್ (೮-೩-೭೨)। ನಿಷ್ಯಂದಃ ನಿಸ್ಪಂದಃ  
“ತೋಯಾವಾರಪಯಾಶ್ಚ ವಲ್ಕಲಶಿಖಾನಿಷ್ಯಂದರೇಖಾಕ್ಷಿತಾಃ” ಶಾಕುಂ  
೧-೧೩। (ವಿಂ) 2. ಸ್ತವಿಸುವ, ಸೋರುವ. ನಿ + ಸ್ಪಂದ್  
ಕರ್ತಂ “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ತದ್ಭಜನಿಸ್ಪಂದಜಲೇನ  
ಲೋಚನೇ ಪ್ರಮೃಜ್ಯ ಪುಣ್ಯೇನ ಪುರಸ್ಕೃತಃ ಸತಾಮ್” ರಘುಂ ೩-೪೧।  
3. ಪ್ರವಾಹ. 4. ಮರದ ಹಾಲು. “ಸಲ್ಲಕೀನಾಮಿ-  
ದಲಿತವಿಕೋಣಗ್ರನ್ಥಿನಿಷ್ಯಂದಗಂಧಃ” ಮಾಲತೀಂ ೯-೬।

ನಿಸ್ಪಂದಿನ್ ನಿಸ್ಪಂದಿನ್ (ವಿಂ) ಸ್ತವಿಸುವ, ಸೋರುವ.  
ನಿ + ಸ್ಪಂದ್ (ಪ್ರಸವಣೇ) “ಞಿಃ” (೩-೧-೧೩೪)।  
“ಸಾಯಂ ಶಶಾಂಕುಕಿರಣಾಹತಚಂದ್ರಕಾಂತನಿಸ್ಪಂದಿನೀರನಿಕರೇಣ  
ಕೃತಾಮಿಷೇಕಃ” ಮಾಘಂ ೪-೪೮।

ನಿಸ್ಸಾವ ನಿಸ್ಸಾವ (ಪುಂ) ಅನ್ನದ ಕೆನೆ. ನಿ + ಸ್ವ (ಗತೌ)  
“ಛ” (೩-೩-೧೯)।

ನಿಸ್ವನ ನಿಸ್ವನ (ಪುಂ) ಶಬ್ದ. ನಿ + ಸ್ವನ (ಶಬ್ದೇ) ವಾ  
“ಅಪ್” (೩-೩-೬೪)। ಪಕ್ಷೇ “ಛ” (೩-೩-೧೮)।  
ನಿಸ್ವಾನಃ ನಿಸ್ವಾನಃ. “ವೃಷಾಣಾಂ ನಿಸ್ವಾನೋ ಡಿಂಡಿಮಾನಾಮ್”  
ಮಾಘಂ ೧೮-೧೦। “ವಾಯುಂ ಕೃತ್ವಾಥ ವಾಜಾಮ್ಯಾಂ ಪುಣ್ಣೇ ವೈವಸ್ವತಂ  
ಯಮಮ್। ವಿಶ್ವತ್ ಕೃತ್ವಾಥ ನಿಸ್ವಾನಂ ಮೇಠಂ ಕೃತ್ವಾಥ ವೈ  
ಧ್ವಜಮ್” ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೨೦೩-೭೭।

ನಿಹತ ನಿಹತ (ವಿಂ) 1. ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟು, ವಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.  
ನಿ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। “ಸಹ  
ಭೃತ್ಯಗಣಃ ಸಮಿತ್ರವಗ್ನಿ ನಿಹತೇ ಚೇದಿಪತೌ ನಿವೃತ್ತಸೇವಾಃ” ಯಾದಂ  
೧೪-೧೨೮। 2. ಹೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

ನಿಹನನ ನಿಹನನ (ನಂ) 1. ಕೊಲ್ಲುವುದು. ನಿ + ಹನ  
(ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪)। 2. ನಾಶಪಡಿಸು  
ವುದು. 3. ಹೊಡೆಯುವುದು.

ನಿಹಂತವ್ಯ ನಿಹಂತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕೊಲ್ಲಬೇಕಾದ. ನಿ + ಹನ  
(ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬)। 2. ನಾಶಪಡಿಸ  
ಬೇಕಾದ. 3. ಹೊಡೆಯಲ್ಪಡುವ. 4. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ.



**ನಿಹನ್ತ ನಿಹಂತ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಕೊಲ್ಲುವವನು. ನಿ + ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ತು" (3-1-133). 2. ನಾಶಪಡಿಸುವವನು. "ನಿಹಂತಾ ವೈರಕಾರಾಣಾಂ ಸತಾಂ ಬಹುಕರಃ ಸದಾ | ಪಾರಶ್ವಾಧಿಕರಾಮಸ್ಯ ಶಕ್ತೇರಂತಕರೋ ರಣೇ" ಭಟಿಂ 4-98. 3. ಹೊಡೆಯುವವನು. (ಪುಂ) 4. ಮಹಾದೇವ, ಪರಶಿವ. "ಭಗಹಾರಿ ನಿಹಂತಾ ಚ ಕಾಲೋ ಬ್ರಹ್ಮಾ ಪಿತಾಮಹಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ 49-96. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಹಿಂ" (4-1-5). -ಹನ್ತೀ -ಹಂತ್ರಿ.

**ನಿಹನ್ಯಮಾನ ನಿಹನ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಹೊಡೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಿ + ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) ಕರ್ಮಂ "ಜ್ಞಾನ" (3-2-124). "ಯುಗಾಂತದಮ್ಬೋಲಿನಿಪಾತಮಿಷಣಃ ನಿಹನ್ಯಮಾನಂ ನಿಜಮುಷ್ಠಿಮುಧಗರಃ" ಯಾದಂ 14-21. 2. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

**ನಿಹಾಕಾ ನಿಹಾಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಹಲ್ಲಿ. ನಿಃರುಡ. ನಿಯತಂ ಜಹಾತಿ ಭುವಮ್—ನಿ+ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) "ಕನ್" (ಛಂ 3-44). "ನಿಹಾಕಾ ಗೋಷಿಕಾ ಸಮೇ" ಅಮಂ.

**ನಿಹಿಸನ ನಿಹಿಸನ** (ನಂ) ಕೊಲ್ಲುವುದು. ನಿ + ಹಿಸಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114).

**ನಿಹಿತ ನಿಹಿತ** (ವಿಂ) 1. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಹು ಧಾಕ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಕ್ತಃ" (3-2-102). "ತೇರ್ವೀನಿಹಿತಚಲತ್ಪದಂ ಪ್ರವೇಶೇ" ಮಾಧಂ 6-1. "ತದೀಯಮೂಲೇ ನಿಹಿತಂ ದ್ವಿತೀಯವದ್ಧ್ರುವಂ ದಧೇ ಕಚ್ಚುಣಮಾಲವಾಲತಾಮ್" ನೆಪಂ 14-68. "ದೇವೀ ವಃ ಪರಿತೋಷಿತೇತಿ ನಿಹಿತಾಮಂತಃಪುರೀಮಿಃ ಪುರಃ" ನೆಪಂ 29-64. 2. ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಇತ್ಯುಕ್ತವತ್ಯಾ ನಿಹಿತಾದರೇಣ ಭೇಷ್ಯಾ ಗೃಹೀತಾ ಮಧವತ್ಪ್ರಸಾದಃ" ನೆಪಂ 6-86.

**ನಿಹೀನ ನಿಹೀನ** (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಮಟ್ಟದ, ಕೆಳದರ್ಜೆಯ. ನಿತರಾಂ ಹೀನಃ. 2. ನೀಚ, ನಿಕ್ಕಷ್ಟ, ಅಧಮ. "ನಿಹೀನಃ ಪರಿಕ್ಲಿಶಯಂತಿ ಸಮುಪೇಕ್ಷಂತಿ ಮಾಂ ಕಥಮ್" ಭಾಂ ವನಂ 12-121.

**ನಿಹ್ಲವ ನಿಹ್ಲವ** (ಪುಂ) 1. ಅಪಲಾವ, ವಾಸ್ತವವಾದ ವಿಷಯವನ್ನು ಅಲ್ಲವೆಂದು ಮರೆಮಾಚುವುದು. ನಿ+ಹ್ಲವ್ (ಅಪನಯನೇ) "ಅಪ್" (3-3-49). "ನಿಹ್ಲವೇ ಭಾವಿತೋ ದಶಾಧನಂ ರಾಜೇ ಚ ತತ್ಸಮಮ್" ಯಾಜ್ಞಂ 2-11. 2. ಶಾರ್ಟ, ಮೂರ್ಖತನ. 3. ಅವಿಶ್ವಾಸ, ಸಂಶಯ, ಅಪನಂಬಿಕೆ. "ನಿಹ್ಲವಃ ಸ್ವಾದವಿಶ್ವಾಸೇ ಪ್ರಲಾಪೇ ನಿಹ್ಲವಾವಪಿ" ಹೇಮಂ.

**ನಿಹ್ಲತ ನಿಹ್ಲತ** (ವಿಂ) 1. ಅಪಲಾವಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಲ್ಲವೆಂದು ಮುಚ್ಚಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರೆಮಾಚಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ+ಹ್ಲವ್ (ಅಪನಯನೇ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102). "ಸ್ವಂ ನಿಹ್ಲತೇ ಶಿತಿಮಚಿಹ್ಲಮಮುಷ್ಯ ರಾಗೈಃ" ನೆಪಂ 22-136. 2. ನಿರಾಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಹಮಹನ್ಯವಲೋಕಯಿತಾಸ್ಮಿ ತೇ ಪುನರರ್ಹಂತಿ-ನಿಹ್ಲತದರ್ಶತಾಮ್" ನೆಪಂ 4-44.

**ನಿಹ್ಲತಿ ನಿಹ್ಲತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಪಲಾವಮಾಡುವುದು, ಮರೆಮಾಚುವುದು, ಅಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳಿ ಮುಚ್ಚಿಡುವುದು. ನಿ+ಹ್ಲವ್ (ಅಪನಯನೇ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94). "ಧನ್ಯೋ ಹನ್ಯತ ಏವ ನಿಹ್ಲತಿಪರಃ ಪ್ರೇಯಾನ್ ರುದತ್ಯಾ ಹಸನ್" ಅಮಂ 9. 2. ನಿರಾಕರಿಸುವುದು.

**ನಿಹಾರ ನಿಹಾರ** (ಪುಂ) ತಿರಸ್ಕಾರ, ಅವಮಾನ.

**ನಿಹಾಶ ನಿಹಾಶ** (ವಿಂ) 1. (ಇದು ಉತ್ತರಪದವಾದಾಗ) ಸದೃಶವಾದ, ಸಮಾನವಾದ. ನಿ + ಹಾಶ್ (ದೀಪ್ತೌ) "ಅಚ್" (3-1-134). ದೀರ್ಘಃ (6-3-123). "ಆಕಾಶ-ನಿಹಾಶತಟಾಂ ತೀರವಾನೀರಸಂಕುಲಾಮ್" ಭಾಂ ವನಂ 184-184. (ಪುಂ) 2. ನಿಶ್ಚಯ. "ನಿಹಾಶೋ ನಿಶ್ಚಯೇ ತುಲಯೇ" ಮೇದಿಂ.

**ನಿಚ ನೀಚ** (ವಿಂ) 1. ಕುಬ್ಜ, ಕುಳ್ಳ, ಗಿಡ್ಡ. ನಿಕ್ರುಷ್ಠಾಮ್ ಇತಿ ಶೋಭಾಂ ಚಿನೋತಿ—ಚಿವ್ (ಚಯನೇ) "ಹಃ" (3-2-102). "ಪ್ರಾಪ್ತೇನ ನಿಚಾನಪಿ ಮೇದಿನಿಭೂತೋ ಜನಃ ಸಮೇನೈವ ಪಥಾಧಿರೋಹತಿ" ಮಾಧಂ 12-46. 2. ಕೆಳಗಡೆ ಇರುವ, ಕೆಳಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ. "ಶುಚಿ ದೇಶೇ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪ್ಯ ಸ್ಥಿರಮಾಸನಮಾತ್ಮನಃ | ನಾತ್ಯುಚ್ಛ್ರಿತಂ ನಾತಿನೀಚಂ ಚೇಲಾಜಿನಕುಶೋತ್ತರಮ್" ಗೀತಾಂ 6-11. 3. ತಗ್ಗಾದ (ಶಬ್ದ), ಮೆಲ್ಲನೆಯ (ಧ್ವನಿ). 4. ಅಧಮ, ಅಸಭ್ಯ, ಕೆಳದರ್ಜೆಯ ಮನುಷ್ಯ. "ದೇವಾದವಾಪ್ತವಿಭವಸ್ಯ ಗುಣಾಧಿಷ್ಠಾಸ್ಯ ನೀಚಸ್ಯ ಗೋಚರಗತಃ ಸುಖಮಾಸ್ಯತೇ ಕಃ" ಭರ್ತುಂ 1-48. 5. ಕೆಳದರ್ಜೆಯ, ಬೆಲೆಯಿಲ್ಲದ, ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಬಾರದ. 6. ತಗ್ಗಾದ (ಪ್ರದೇಶ). "ನೀಚಃ ಪಾಮರೇ ವಾಸನೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ. 7. ಗ್ರಹಗಳ ಉಚ್ಚಸ್ಥಾನದಿಂದ 7ನೆಯ ಸ್ಥಾನ.

**ನಿಚಕೇಸ್ ನೀಚಕೈಸ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಕೆಳಗೆ, ಕೆಳಕ್ಕೆ. 2. ಮೆಲ್ಲಗೆ. 3. ಮೆಲ್ಲನೆಯ ಧ್ವನಿಯಲ್ಲಿ. 4. ಕುಳ್ಳ, ಗಿಡ್ಡ.

**ನಿಚಗ ನೀಚಗ** (ಪುಂ) 1. ಉಚ್ಚಸ್ಥಾನದಿಂದ 7ನೇ ಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಹೋಗಿರುವ ಗ್ರಹ. ನೀಚಂ ನೀಚಸ್ಥಾನಂ ಗच्छತಿ—ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಹಃ" (ವಾಂ 3-2-48). (ವಿಂ) 2. ಕೆಳಮುಖವಾಗಿ ಹೋಗುವ (ಜಲ). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಗಾ -ಗಾ. 3. ಕೆಳಮುಖವಾಗಿ ಹರಿಯುವ ನದಿ. 4. ನೀಚವುರುಪನೊಡನೆ ಹೋಗುವ ಹೆಗ್ಗುಸು.



ನಿಚಗೃಹ ನೀಚಗೃಹ (ನಂ) ಸೂರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹಗಳಿಗೆ ತಮ್ಮ ಉಚ್ಚಸ್ಥಾನದಿಂದ 7 ನೆಯ ಸ್ಥಾನ (ರಾಶಿ).

| ಗ್ರಹ  | ಉಚ್ಚರಾಶಿ | ನೀಚರಾಶಿ |
|-------|----------|---------|
| ರವಿ   | ಮೇಷ      | ತುಲಾ    |
| ಚಂದ್ರ | ವೃಷಭ     | ವೃಶ್ಚಿಕ |
| ಕುಜ   | ಮಕರ      | ಕರ್ಕಟಕ  |
| ಬುಧ   | ಕನ್ಯಾ    | ಮಿಥುನ   |
| ಗುರು  | ಕರ್ಕಟಕ   | ಮಕರ     |
| ಶುಕ್ರ | ಮಿಥುನ    | ಕನ್ಯಾ   |
| ಶನಿ   | ತುಲಾ     | ಮೇಷ     |
| ರಾಹು  | ಮಿಥುನ    | ಧನುಸ್ಸು |
| ಕೇತು  | ಧನುಸ್ಸು  | ಮಿಥುನ   |

ನಿಚತಾ ನೀಚತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೆಳಮಟ್ಟ, ಕೆಳದರ್ಜೆ, ಕೆಳಮೆಯ ಅಂತಸ್ಸು. "ಅಪಹಾಯ ತುಙ್ಗಮಪಿ ಮಾನಮುಚಿತ-ಮವಲಮ್ಬಯ ನೀಚತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೧೯. 2. ಕುಳುಗಿರುವಿಕೆ, ಮೋಟಾಗಿರುವಿಕೆ. "ಕುಙ್ಜಾ ನೀಚತಯೇವ ಯಾಂತಿ ಶನಕೇರಾತ್ಮೇಕ್ಷಣಾಶಾಕ್ಷಿನಃ" ರತ್ನಾಂ ೨-೩. ನೀಚಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯). "ತ್ವಃ" (೪-೧-೧೧೯). -ತ್ವಮ್ -ತ್ವಮ್.

ನಿಚಪಥ ನೀಚಪಥ (ಪುಂ) ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯುವ ಮಾರ್ಗ.

ನಿಚಭೋಜ್ಯ ನೀಚಭೋಜ್ಯ (ಪುಂ) ಕೆಳದರ್ಜೆಯ ಮನುಷ್ಯರ ಅಹಾರ. ನಿಚಭೋಜ್ಯಃ.

ನಿಚಾ ನೀಚಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತಮವಾದ ಹಸು, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಅಕ್ಕಳು.

ನಿಚೇಸ್ ನೀಚೈಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಕೆಳಭಾಗ, ತಗ್ಗು ಪ್ರದೇಶ. ನಿ + ಚಿ (ಚಯೇ) "ಡೇಸಿಃ" (೩೦ ೪-೧೩). "ನಿಚೇ-ಗಂಚ್ಛತ್ಯುಪರಿ ಚ ದಶಾ ಚಕ್ರೇನಿಕ್ರಮೇಣ" ಮೇಘಂ ೨-೪೬. 2. ಮೆಲ್ಲಗೆ, ನಿಧಾನವಾಗಿ. "ನಿಚೇವಾಸ್ಥಿತ್ಯುಪಜಿಗಮಿಷೋದೇವ-ಪೂರ್ವ ಗಿರಿತೇ" ಮೇಘಂ ೧-೪೨. 3. ಒಂದು ಬೆಟ್ಟ. "ನಿಚೇ-ರಾಹ್ಯಂ ಗಿರಿಮಧಿವಸೇಸ್ತತ್ರ ವಿಶ್ರಾಮಹೇತೋಃ" ಮೇಘಂ ೧-೨೪. 4. ಮೆಲ್ಲನೆಯ ಧ್ವನಿಯಲ್ಲಿ. "ನಿಚೇಃ ಶಂಸ ಹೃದಿ ಸ್ಥಿತೋ ಹಿ ನನು ಮೇ ಪ್ರಾಣೇಶ್ವರಃ ಶ್ರೋಷ್ಯತಿ" ಅಮರಂ ೭೦. 5. ಕುಳ್ಳು, ಗಿಡ್ಡ, ವಾಮನ. 6. ನಮ್ರನಾಗಿ, ವಿಧೇಯನಾಗಿ. "ಪ್ರವೇಶ್ಯ ಚೈನ ಪುರಮಗ್ರಯಾಯಿ ನೀಚೇಸ್ತಥೋಪಾಚರದಪಿತಶ್ರೀಃ" ರಘುಂ ೪-೬೨.

ನಿಡ ನೀಡ (ಪುಂ) 1. ಹಕ್ಕುಗಳ ಗೂಡು. ನಿತರಾಮ್ ಇಡತೇ - ನಿ + ಇಡ (ಸ್ತುತೌ) "ಘಃ" (೩-೩-೧೯). "ವೀರಪ್ರೀಡಕಪೋತಕೂಜಿತಮನುಕ್ರಂದನ್ಯಧಃ ಕುಕುಭಾಃ" ಮಾಲತೀಂ ೯-೭. 2. ಆಶ್ರಯಸ್ಥಾನ, ವಿಶ್ರಾಂತಿಸ್ಥಾನ. "ಅಬಲಸ್ವ-ಕುಲಾಶಿನೋ ಸೌಖ್ಯಾಭಿಜನಿಡ್ವಮಪಿಡಿನಃ ಖಗಾನ್" ನೈಷಂ ೨-೧೦.

ನಿಡಕ ನೀಡಕ (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕು. ನೀಡೆ ಕಾಯತಿ - ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೪). 2. ಹಕ್ಕುಗಳ ಗೂಡು.

ನಿಡಜ ನೀಡಜ (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕು. ನೀಡೆ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುಮವಿ) "ಜಃ" (೩-೨-೯೭).

ನಿಡೋದ್ಭವ ನೀಡೋದ್ಭವ (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕು. ನೀಡೆ ಉದ್ಭವತಿ - ಉದ್ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭). "ಶೃಗ್ವಲಾನಿಬದ್ಧನಿಡೋದ್ಭವವಿಭ್ರಮಂ ಯುವಾ" ನೈಷಂ ೧೬-೬೩.

ನೀತಿ ನೀತಿ (ವಿಂ) 1. ಒಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟ, ತರಲ್ಪಟ್ಟ. ನೀತಿ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ್ತಿಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ನೀತಿಸ್ತ್ರಲೋಕಪತಿನಾ ನಿಜರಾಜಧಾನಿ ಭುಯಃ ಪ್ರಜಾತ ಇವ ಪೌರಜನೇಃ ಪ್ರತೀತಃ" ಯಾದಂ ೨೦-೯೮. 2. ಹೊಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಟ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ನ ನೀತಿಮನ್ಯೇನ ನತಿ ಕದಾಚಿತ್ಕರ್ಣಾಂತಿಕಪ್ರಾಪ್ತಗುಣಂ ಕ್ರಿಯಾಸು" ಮಾಘಂ ೩-೨೦. "ನಿಜೇನ ನೀತಂ ವಿಜಿತಾನ್ಯ-ಗೌರವಂ ಗಮೀರತಾಂ ಧೈರ್ಯಗುಣೇನ ಭುಯಸಾ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೩೯. 3. ಕೆಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ನೀತಾನ್ಯಮನಿ ಮಠಚತ್ವರಶೂನ್ಯದೇವಾಗಾರೆಷು ಮೂರ್ಖಮುಖರೇಃ ಸಹ ವಾಸರಾಣಿ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೬-೧೨.

ನೀತಿ ನೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊಂದಿಸುವುದು, ತಲುಪಿಸುವುದು, ಮುಟ್ಟಿಸುವುದು. ನೀತಿ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪). 2. ಮಾರ್ಗದರ್ಶನ, ನೇತೃತ್ವ, ಕಾರ್ಯವಿಧಾನವನ್ನು ತೋರಿಸಿಕೊಡುವುದು. 3. ನಡತೆ, ವರ್ತನೆ, ನಡವಳಿಕೆ. 4. ನಯ, ವಿನಯ, ಸಭ್ಯತೆ. ನೀಯಂತೆ ಸಂಲಮ್ಯಂತೆ ಉಪಾಯಾದಯಃ ಐಹಿಕಾಮುಷ್ಮಿಕಾರ್ಥಾ ವಾಸ್ಯಾಂ ಅನಯಾ ವಾ-ನೀತಿ ಅಧಿಂ ಕರಂ ವಾ ಕ್ತಿನ್. 5. ವಿವೇಕದಿಂದ ಕೂಡಿದ ವರ್ತನೆ, ನ್ಯಾಯವಾದ ವರ್ತನೆ. "ಕಾಲೇ ಖಲು ಸಮಾರಂಭಾಃ ಕೇಲಂ ಬದ್ಧಂತಿ ನೀತಯಃ" ರಘುಂ ೧೨-೬೯. "ಆಜಿವಂ ಹಿ ಕುಟಿಲೇಷು ನ ನೀತಿಃ" ನೈಷಂ ೪-೧೦೩. 6. ಕಾರ್ಯದ ವ್ಯವಸ್ಥೆ, ಯೋಜನೆ, ಕಾರ್ಯ ನಡೆಯುವ ವಿವರ. "ಅದ್ವಾಂತಃ ಖಲು ಸರ್ವಥಾಸ್ಯ ಮದನಾಯಾಸಪ್ರಬಂಧಸ್ಯ ಮೇ ಕಲ್ಯಾಣಂ ವಿದಧಾತು ವಾ ಭಗವತೀ-ನೀತಿವಿಪರ್ಯಂತು ವಾ" ಮಾಲತೀಂ ೬-೩. 7. ರಾಜ್ಯಾಡಳಿತ ಶಾಸ್ತ್ರ, ರಾಜಕೀಯ ವ್ಯವಹಾರದ ತತ್ತ್ವ, ರಾಜತಂತ್ರ. "ಆತ್ಮೋದಯಃ ಪರಜ್ಞಾನಿಃ ದ್ವಯಂ ನೀತಿರೀತೀಯತೀ" ಮಾಘಂ ೨-೩೦. "ನೀತಿರಾಪದಿ ಯದಗಮ್ಯಃ ಪರಸ್ತನ್ಮಾನಿನೋ ಹ್ಲಿಯೇ" ಮಾಘಂ ೨-೬೧. ನೀತಿಯನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ ಗ್ರಂಥಗಳಿಂದ ಮನುಷ್ಯನು ಧರ್ಮಾರ್ಥಮ್, ನಯ, ವಿವೇಕ, ಕಾರ್ಯನಿರ್ವಾಹದಲ್ಲಿ ಚಾತುರ್ಯ, ರಾಜ್ಯಾಡಳಿತನೈಪುಣ್ಯ ಮುಂತಾದ ಅನೇಕ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಾವೀಣ್ಯ ಪಡೆದು ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಆದರ್ಶಪ್ರಾಯನಾಗಿ ಬಹುದು. ನೀತಿಯನ್ನು ತನ್ನ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸಿ



ಕೊಂಡು ಲೋಕಕ್ಕೂ ಮಾರ್ಗದರ್ಶನ ಮಾಡಿ ಜನತೆಯ ಜೀವನವನ್ನು ಸುಖಮಯವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಬಹುದು.

ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರು, ಬೃಹಸ್ಪತ್ಯಾಚಾರ್ಯರು, ಕಾಮಂದಕಿ, ಚಾಣಕ್ಯ ಮುಂತಾದವರಿಂದ ಪ್ರಜಾಕ್ಷೇಮಕ್ಕಾಗಿ ರಚಿತವಾದ ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರಗ್ರಂಥಗಳು ಜನತೆಗೆ ಬೋಧಪ್ರದವಾಗಿವೆ. "ನಯಸ್ಯ ವಿನಯೋ ಮೂಲಂ ವಿನಯಃ ಶಾಸ್ತ್ರನಿಶ್ಚಯಃ | ವಿನಯೋ ಹಿಂದ್ರಿಯಜಯಃ ತದ್ವಕ್ತಂ ಶಾಸ್ತ್ರಮಿच्छತಿ" | ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರದ ಅಧ್ಯಯನದಿಂದ ಮನುಷ್ಯನ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಕೆಳಗೆ ಕಂಡಂತೆ ಕರ್ತವ್ಯ ಮತ್ತು ಅಕರ್ತವ್ಯಗಳ ವಿವೇಕವುಂಟಾಗುವುದು. "ಶುಚಿತಾಸ್ತಿಕವ್ಯಪುತಾತ್ಮಾ ಪೂಜಯೇದೇವತಾಂ ಸದಾ | ದೇವತಾವದ್ಗುರುಜನಮಾತ್ಮವಚ್ಚ ಸುಹೃಜನಮ್ | ಪ್ರಣಿಪಾತೇನ ಹಿ ಗುರಂ ಸತೋಽಮೃಶಾನುಚೇಷ್ಟಿತೈಃ | ಕುರ್ವೀತಾಭಿಮುಖಾನ್ ಭೃತ್ಯಃ ದೇವಾನ್ ಸತ್ಕೃತಕರ್ಮಣಾ | ಸದ್ಭಾವೇನ ಹರೇನಿಮಿತ್ರಂ ಸಂಭ್ರಮೇಣ ಚ ಬಾಂಧವಾನ್ | ಸ್ತ್ರೀಭೃತ್ಯಾನ್ ಪ್ರೇಮದಾನಾಭ್ಯಾಂ ದಾಕ್ಷಿಣ್ಯೇನೇತರಂ ಜನಮ್ | ಅನಿಂದಾ ಪರಕೃತ್ಯೇಷು ಸ್ವಧರ್ಮಪರಿಪಾಲನಮ್ | ಕೃಪಣೇಷು ದಯಾಲುತ್ವಂ ಸರ್ವತ್ರ ಮಧುರಾ ಗಿರಃ | ಪ್ರಾಣೇರಪ್ಯುಪಕಾರಿತ್ವಂ ಮಿತ್ರಾಭ್ಯಾಭಿಚಾರಿಣಿ | ಗೃಹಾಗತೇ ಪರಿಷ್ವಜ್ಞಃ ಶಕ್ತ್ಯಾ ದಾನಂ ಸಹಿಷ್ಣುತಾ | ಸ್ವಸಮೃದ್ಧಿಷ್ವನುತ್ಸೇಕಃ ಪರವೃದ್ಧಿಷ್ವಮತ್ಸರಃ | ಪರೋಪತಾಪಿ ವಚನಂ ಮೌನವ್ರತಚರಿಷ್ಣುನಾ" ಅಗ್ನಿಪುಂ |

**ನೀತಿಧೋಷ ನೀತಿಘೋಷ** (ಪುಂ) ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ರಥ. ನೀತ್ಯಾತ್ಮಕೋ ಧೋಷೋ ಯತ್ರ | "ನಂದಿಧೋಷೋಽರ್ಜುನರಥೋ ನೀತಿಧೋಷಸ್ತು ಗೀಷ್ಪತೇಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ನೀತಿಜ್ಞ ನೀತಿಜ್ಞ** (ವಿಂ) ನೀತಿಯನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ನೀತಿ ಕುಶಲನು. ನೀತಿ ಜಾನಾತಿ - ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) |

**ನೀತಿಮತ್ ನೀತಿಮತ್** (ವಿಂ) ನೀತಿಯುಕ್ತ, ನೀತಿಯನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದು ಅದನ್ನು ಅನುಷ್ಠಾನದಲ್ಲಿ ತಂದುಕೊಂಡಿರುವವನು. ನೀತಿಃ ಪ್ರಾಶಸ್ತ್ಯೇನಾಸ್ತ್ಯಸ್ಯ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) | -ಮತೀ -ಮತೀ |

**ನೀತಿವ್ಯತಿಕ್ರಮ ನೀತಿವ್ಯತಿಕ್ರಮ** (ಪುಂ) ನೀತಿಯನ್ನು ಮೀರಿ ನಡೆಯುವುದು, ನೀತಿಯ ಉಲ್ಲಂಘನೆ. ನೀತಿಃ ವ್ಯತಿಕ್ರಮಃ |

**ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರ ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರ** (ನಂ) ನೀತಿಯನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ, ಶುಕ್ರನೀತಿ, ಬಾಹ್ಯಸ್ಪತ್ಯ ನೀತಿ, ಕಾಮಂದಕೀಯ ನೀತಿ ಮುಂತಾದ ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರ. "ಭಾರ್ಗವೋ ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರಂ ತು ಜಗಾದ ಜಗತೋ ಹಿತಮ್" ಭಾಂ |

**ನೀಧ್ರ ನೀಧ್ರ** (ನಂ) 1. ಮನೆಯ ಸೂರು, ಮನೆಯ ಹೊದಿಕೆ (ಮೇಲುಭಾವಣ)ಯ ತುದಿಯ ಭಾಗ. ನಿತರಾಮ್

ಇನ್ವೇ - ಖಿ ಇನ್ವೀ (ದೀಪ್ತೀ) "ರಕ್" (೩ಂ ೨-೧೩) | ನಿತರಾಂ ಧ್ರಿಯತೇ - ನಿ + ಧೃಙ್ (ಅವಸ್ಥಾನೇ) "ಕಃ" (ಬಾಂ ೩-೨-೪) ವಾ | 2. ಅರಣ್ಯ, ಕಾಡು. 3. ಚಂದ್ರ. 4. ರೇವತೀ ನಕ್ಷತ್ರ. 5. ನೇಮಿ, ಚಕ್ರದ ಅಂಚು. "ನೀಧ್ರಂ ನೇಮೌ ವಲೀಕೇಂದ್ರೋರೇವತೀಭೇ ಚ ಕಾನನೇ" ವಿಶ್ವಂ | "ನೀಧ್ರಂ ಎಂದೂ ಪಾಠಾನ್ತರವಿರುವುದು. "ವಲೀಕನೀಧ್ರೇ (ವೇ) ಪಟಲಪ್ರಾಂತೇ" ಅಮಂ | "ಹರಿನ್ಮಣಿಸ್ಯಾಮತೃಣಾಭಿರಾಮೈಗೃಹಾಣಿ ನೀಧ್ರೇರಿವ ಯತ್ರ ರೇಜುಃ" ಮಾಘಂ ೩-೪೯ |

**ನೀಪ ನೀಪ** (ಪುಂ) 1. ಕದಂಬವೃಕ್ಷ. ಇದನ್ನು ಕೆಲವರು ಈಜಲು ವರವೆನ್ನುವರು. ಗೋ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಪಃ" (೩ಂ ೩-೨೩) | "ಅಂಸಲಮ್ಬಿಕುಟಜಾರ್ಜುನಸ್ರಜಸ್ತಸ್ಯ ನೀಪ-ರಜಸಾಙ್ಗರಾಗಿಣಃ" ರಘುಂ ೧೯-೩೭ | 2. ಕೆಂಪು ದಾಸಿ ವಾಳದ ಗಿಡ. 3. ನೀಲಿ ಅಶೋಕವೃಕ್ಷ. 4. ರಾಜರ ಒಂದು ವಂಶ. "ನೀಪಾನ್ವಯಃ ಪಾರ್ಥಿವ ಣ ಪೃತ್ವಾ ಗುಣೈರ್ಮಾಶ್ರಿತೃ ಪರಸ್ಪರೇಣ" ರಘುಂ ೬-೪೬ | 5. ಬೆಟ್ಟದ ಕೆಳ ಪ್ರದೇಶ.

**ನೀಯಮಾನ ನೀಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಒಯ್ಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಸಾಗಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ತರಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಗೋ (ಪ್ರಾಪಣೆ) + ಗಿಚ್ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಬಮೌ ಬಲೌಘಃ ಶಶಿನೋದಿತೇನ ವೇಲಾಮುದನ್ವಾನಿವ ನೀಯಮಾನಃ" ರಘುಂ ೧೬-೨೭ | 2. ಹೊಂದಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಈಡುಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. "ಪರಿತಃ ಪ್ರಸಮೇನ ನೀಯಮಾನಃ ಶರವರ್ಷೇರವಸಾಯಮಾಶ್ರಯಾಶಃ" ಮಾಘಂ ೨೦-೭೨ |

**ನೀರ ನೀರ** (ನಂ) ಜಲ, ನೀರು. ಗೋ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ರಕ್" (೩ಂ ೨-೧೩) | ನಿರ್ಗತಂ ರಾತ್ ಅಗ್ನೇಃ ಇತಿ ವಾ | "ಅಗ್ನೇ-ರಾಪಃ" ಶ್ರುತಿಃ | ನಿರ್ಗತೋ ರೋಽಗ್ನಿರಯಸ್ಮಾತ್ ಇತಿ ವಾ | "ಅದ್ಭುತೋಽಗ್ನಿರ್ಬ್ರಹ್ಮಾಣಃ ಕ್ಷತ್ರಮ್" ಸ್ಮೃತಿಃ | "ಏಕತ್ರ ಸ್ಫಟಿಕ-ತದಾಂಶುಭಿನ್ನನೀರಾ ನೀಲಾಶ್ಮದೃತಿಭಿದುರಾಶ್ಮಸೋಽಪರತ್ರ" ಮಾಘಂ ೪-೨೬ | ಕುಡಿಯಲು ಕೊಳದ ನೀರು ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದುದು. "ವಾಪ್ಯುಙ್ಗವಂ ತತ್ಪ್ರವದಂತಿ ಧೀರಾ ನೀರಂ ಸಮಾಸೇನ ನಿಗದತೇಽತ್ರ | ಯತ್ ಶ್ರೀಮತಾಂ ಚೈವ ಮಹಾಯತೀನಾಂ ಬಲಪ್ರದಂ ಪಥ್ಯತರಂ ಪ್ರದಿಷ್ಟಮ್" | ತೆಗೆದಿಟ್ಟ ನೀರು ಮಾರನೆಯ ದಿನಕ್ಕೆ ಶುದ್ಧವಲ್ಲ. "ತ್ಯಜೇ-ತ್ಯಯುಷಿತಂ ಪುಷ್ಯಂ ತ್ಯಜೇತ್ ಪರ್ಯುಷಿತಂ ಜಲಮ್ | ಗಜ್ಞಾತೋಯಂ ಚ ತುಲಸೀ ಪವಿತ್ರಂ ಸರ್ವದಾ ಸ್ಮೃತಮ್" ಅದರ ಗಂಗಾನದಿಯ ಜಲವು ಸರ್ವದಾ ಶುದ್ಧವಾದುದು.

**ನೀರಕ್ತ ನೀರಕ್ತ** (ವಿಂ) ಬಣ್ಣವಿಲ್ಲದ, ಬಣ್ಣವು ಹೋಗಿರುವ (ವಸ್ತು). "ನೀರಕ್ತ ವಸನಮಪಾಕೃತೋಽಙ್ಗರಾಗಃ" ಮಾಘಂ ೮-೬೧ |



**ನೀರಜ ನೀರಜ** (ನಂ) 1. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ, ತಾವರೆ. ನೀರ  
ಜಾಯತೆ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) “ಹ:” (೩-೨-೯೭)।  
“ಜಗದತುರ್ನಿಹಿತೇ ಹೃದಿ ನೀರಜೇ ದವಯುಕ್ತುಃಪಲನೇನ ಪೃಥುಸ್ತನಿಮ್”  
ನೇಷಂ ೪-೩೦। 2. ಚಂಗಲು ಕೋಷ್ಠ. “ನೀರಜಂ ಕುಠ-  
ಪಯೋ:” ಮೇದಿಂ। 3. ಮುಕ್ತಾಫಲ, ಮುತ್ತು. (ವಿಂ)  
4. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

**ನೀರಜಸ್ ನೀರಜಸ್** (ವಿಂ) 1. ರಜಸ್ವಿಲ್ಲದ, ಧೂಳಿಲ್ಲದ  
(ಪ್ರದೇಶ). 2. ಪರಾಗವಿಲ್ಲದ. 3. ರಜೋಗುಣ  
ವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಂ ರಜ: ಧೂಲಿ: ಪರಾಗ: ರಜೋಗುಣೋ ವಾ ಯಸ್ಯ।  
“ನೀರಜಸ್ತಮಸಾ ಸತ್ವಶುದ್ಧಿರ್ನಿ:ಸ್ಪೃಹತಾ ಶಮ:” ಯಾಜ್ಞಂ  
೩-೧೫೯। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ಮುಟ್ಟು ನಿಂತುಹೋಗಿರುವ  
ಹೆಂಗುಸು.

**ನೀರಜಸ್ಕ ನೀರಜಸ್ಕ** (ವಿಂ) 1. ಧೂಳಿಲ್ಲದ. 2. ಪರಾಗ  
ವಿಲ್ಲದ. 3. ರಜೋಗುಣವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತಂ ರಜೋ ಧೂಲಿ:  
ಪರಾಗ: ರಜೋಗುಣೋ ವಾ ಯಸ್ಯ। ವಾ “ಕಪ್” (೪-೪-೧೫೪)।  
“ನೀರಜಸ್ಕೇ ಸದಾನಂದೇ ಪದೇ ಚಾಹಂ ನಿವೇಶಿತ:” ಪ್ರಬೋಧಂ ೬-೩೨।

**ನೀರಜಾಕ್ಷ ನೀರಜಾಕ್ಷ** (ವಿಂ) ಕಮಲದಂತೆ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ.  
ನೀರಜೇ ಇವ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯ “ಷವ್” (೪-೪-೧೧೩)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಛಿಪ್” (೪-೧-೪೧)। —ಜಾಪಿ — ಜಾಪಿ ೯.  
“ಕೌಶೇಯಂ ವ್ರಜದಪಿ ಗಾಢತಾಮ್ರಜಂ ಸಸಂಸೇ ವಿಗಲಿತನಿವಿ  
ನೀರಜಾಕ್ಷಾ:” ಮಾಘಂ ೮-೬।

**ನೀರಜಾತ ನೀರಜಾತ** (ವಿಂ) ನೀರಿನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಅನ್ನ  
ಮೊದಲಾದುದು. ನೀರಾತ್ ಜಲಾತ್ ಜಾಯತೆ — ಜನಿ  
(ಪ್ರಾಡುಭವಿ) “ಕ್ತ:” (೩-೩-೧೭೪)। “ಅನ್ನಂ ಚಾಪಿ  
ಪ್ರಮವತಿ ಪಾನೀಯಾತ್ ಕುರಸ್ತಮ। ನೀರಜಾತೇನ (ಅನ್ನೇನ)  
ರಹಿತಂ ನ ಕಿಂಚಿತ್ ಸಂಪ್ರವರ್ತತೆ” ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೦೨-೧೧।

**ನೀರದ ನೀರದ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ನೀರಂ ದದಾತಿ  
— ಡು ಧಾನ್ (ದಾನೇ) “ಕ:” (೩-೨-೩)। “ಲಕ್ಷ್ಮೀಭೂತೋ-  
ಮ್ಭೋಧಿತಠಾಧಿವಾಸಾನ್ ಧುಮಾನಸೀ ನೀರದನೀಲಭಾಸ:” ಮಾಘಂ  
೩-೭೧। “ನೀಲಚ್ಚವಿರಸೌ ರೇಜೇ ಕೇಶವಚ್ಚಲನೀರದ:”  
ಮಾಘಂ ೧೯-೯೬। 2. ಮುಸ್ತಕ, ಕೊನ್ನಾರಿ ಗೆಡ್ಡೆ.

**ನೀರದಿನ್ ನೀರದಿನ್** (ವಿಂ) ಮೇಘದೊಡನೆ ಕೂಡಿರುವ.  
ನೀರದೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೫)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಛಿಪ್”  
(೪-೧-೫)। —ದಿನಿ — ದಿನೀ. “ಕವಚಿದಿವೇಂದ್ರಗಜಾಜಿನ-  
ಕಂಚುಕಾ: ಶರದಿ ನೀರದಿನೀಯದವೋ ದಿಶ:” ಮಾಘಂ ೬-೫೧।

**ನೀರಧರ ನೀರಧರ** (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ. ನೀರಸ್ಯ ಧರ:।  
“ನವನೀಲನೀರಧರಧೀರಗಜಿತಕ್ಷಣಬದ್ಧಕುಡ್ಮಲಕದಂಬದಂಬರಮ್”  
ಉಂ ರಾಂ ೬-೧೭।

**ನೀರಧಿ ನೀರಧಿ** (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ನೀರಾಣಿ ಧೀಯಂತೆ  
ಅತ್ರ — ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ: ) “ಕಿ:” (೩-೩-೯೩)।  
“ಆಸ್ಯೇನ ಸ ಸ್ಮರತು ನೀರಧಿಮನ್ಯನೋತ್ಯಂ ಸ್ವಚ್ಛಂದಮಿಂದುಮಪಿ  
ಸುಂದರಿ ಮಂದರಾದ್ರಿ:” ನೇಷಂ ೧೧-೬೩।

**ನೀರನಿಧಿ ನೀರನಿಧಿ** (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ನೀರಾಣಿ  
ನಿಧೀಯಂತೆ — ನಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ: ) “ಕಿ:”  
(೩-೩-೯೨)। “ಪಾರೆಜಲಂ ನೀರನಿಧೇರಪಯನ್ಮುರಾರಿರಾನೀಲ-  
ಪಲಾಶರಾಶಿ:” ಮಾಘಂ ೩-೭೦।

**ನೀರನಿಲಯ ನೀರನಿಲಯ** (ವಿಂ) ಜಲದಲ್ಲಿರುವ, ನೀರಿನಲ್ಲಿ  
ವಾಸವಾಗಿರುವ. ನೀರಂ ನಿಲಯೋ ಯಸ್ಯ। “ತಲ್ಲೇಶೇರಧುನಾಪಿ  
ನೀರನಿಲಯೇರಮ್ಭೋಜಮಾರಮ್ಯತೆ” ನೇಷಂ ೨೨-೧೪೨।

**ನೀರಂಧ್ರ ನೀರಂಧ್ರ** (ವಿಂ) 1. ಸಾಂದ್ರವಾದ, ದಟ್ಟವಾದ  
ನಿಬಿಡವಾದ. ನಿರ್ಗತಂ ರಂಧ್ರಂ ಚಿದ್ರಮಸ್ಯ। “ನೀರಂಧ್ರಂ ಪಥಿಷು  
ರಜೋ ರಥಾಙ್ಗನುನ್ ಪರ್ಯಸ್ಯನ್ನವಸಲಿಲಾರುಣಂ ಬಹಂತಿ” ಕಿರಾಂ  
೭-೨೫। 2. ಎಡೆಬಿಡದಿರುವ, ಸೇರಿದಂತೆ ಇರುವ.  
3. ರಂಧ್ರವಿಲ್ಲದ, ಛಿದ್ರವಿಲ್ಲದ.

**ನೀರಂಧ್ರತ ನೀರಂಧ್ರತ** (ವಿಂ) 1. ಸಾಂದ್ರವಾಗಿರುವ,  
ದಟ್ಟವಾಗಿರುವ. ನೀರಂಧ್ರೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತ: “ಇತಚ್”  
(೪-೨-೩೬)। 2. ನಿರಂತರವಾಗಿರುವ, ಮಧ್ಯೆ ಮಧ್ಯೆ  
ವಿಲ್ಲದ, ಅನುಸೂತವಾದ. “ಶ್ರುತ: ಸ ದೃಷ್ಟಶ್ಚ ಹರಿತ್ಸು  
ಮೋಹಾತ್ ಧ್ಯಾತ: ಸ ನೀರಂಧ್ರತಬುದ್ಧಿಧಾರಮ್” ನೇಷಂ ೩-೮೨।

**ನೀರಪ್ರಿಯ ನೀರಪ್ರಿಯ** (ಪುಂ) ಜಲವೇತಸ, ನೀರುಹಬ್ಬಿ  
ಗಿಡ. ನೀರಂ ಪ್ರಿಯಮಸ್ಯ।

**ನೀರರಾಶಿ ನೀರರಾಶಿ** (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ನೀರಾಣಾಂ  
ರಾಶಿಯಂತ್ರ। “ಉಚಿತಸ್ವಪನೋಽಪಿ ನೀರರಾಶೌ ಸ್ವಬಲಾಮ್ಭೋನಿಧಿ-  
ಮಧ್ಯಗಸ್ತದಾನಿಮ್” ಮಾಘಂ ೨೦-೩೬। 2. ನೀರಿನ ರಾಶಿ.

**ನೀರರೂ ನೀರರೂ** (ನಂ) 1. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ, ತಾವರೆ.  
ನೀರೇ ರೋಹತಿ — ರೂ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡುಭವಿ ಚ) “ಕ:”  
(೩-೧-೧೩೬)। “ನೀಲನೀರರೂಮಾಲಯಮಯಿ ಸ ನ್ಯಸ್ಯ ತಸ್ಯ  
ಗಲನಾಲವಿಮುಷಾಮ್” ನೇಷಂ ೨೧-೩೬। (ವಿಂ) 2. ನೀರಿನಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟಿದ.

**ನೀರವ ನೀರವ** (ವಿಂ) ಶಬ್ದವಿಲ್ಲದ, ಸದ್ದಿಲ್ಲದ.

**ನೀರಸ ನೀರಸ** (ಪುಂ) 1. ದಾಳಿಂಬಿಗಿಡ. ನಿದರಾಂ ರಸೋ ಯತ್ರ।  
(ವಿಂ) 2. ರಸವಿಲ್ಲದ, ಶುಷ್ಕವಾದ, ಒಣಗಿರುವ. ನಿರ್ಗತೋ  
ರಸ: ಯಸ್ಮಾತ್। 3. ಶೃಂಗಾರಾದಿ ರಸವಿಲ್ಲದ. ನಿರ್ಗತೋ  
ರಸ: ಶೃಂಗಾರಾದಿ: ಯಸ್ಮಾತ್। “ಅಲಂಭಫಲೇನೀರಸಂ ಮಮ ವಿಧಾಯ  
ತಸ್ಮಿನ್ ಜನೇ ಸಮಾಗಮನೋರಥಂ ಭವತು ಪಂಚಬಾಣ: ಕೃತೀ”  
ವಿಕ್ರಂ ೨-೧೧।



ನೀಲಙ್ಗು ನೀಲಂಗು (ಪುಂ) 1. ಕ್ರಿಮಿ, ಹುಳಿ. ನಿದ್ರಾಂ  
 ಲಕ್ಷಣಿ—ಲಗಿ (ಗತೌ) “ಕ್ರು.” (ಛಂ ೧-೩೬)।  
 “ನೀಲಙ್ಗುಸ್ತು ಕ್ರಿಮಿ:” ಅಮಂ। 2. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ.  
 3. ಜಂಬುಕ, ನರಿ.



ನೀಲತರ ನೀಲತರು (ಪುಂ) 1. ನಾರಿಕೇಳವೃಕ್ಷ, ತೆಂಗಿನ ಮರ. 2. ಕಪ್ಪುಬಣ್ಣದ ಮರ. ನೀಲ: ತರು: |

ನೀಲತಾಲ ನೀಲತಾಲ (ಪುಂ) 1. ತಮಾಲವೃಕ್ಷ, ಹೊಂಗೆ ಮರ. 2. ಕಿರುತಾಳೆ.

ನೀಲಧವಜ ನೀಲಧ್ವಜ (ಪುಂ) 1. ತಾಳವೃಕ್ಷ. 2. ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಮಾಹಿಷ್ಮತಿಯ ರಾಜ.

ನೀಲನಲಿನ ನೀಲನಲಿನ (ನಂ) ನೀಲಕಮಲ.

ನೀಲನಿಗುಂಡಿ ನೀಲನಿಗುಂಡೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರಿಯ ಲಕ್ಕಿ ಗಿಡ.

ನೀಲಪಕ್ಷು ನೀಲಪಂಕ (ನಂ) ಅಂಧಕಾರ, ಕತ್ತಲೆ. ನೀಲ ಪಕ್ಷು ಇವ. "ತಮಸಂ ತು ನಿಶಾವರ್ಮ ನೀಲಪಕ್ಷು ರಜೋಬಲಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ನೀಲಪತ್ರ ನೀಲಪತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಕರಿ ಹೊನ್ನೆಮರ. 2. ದಾಳಿಂಬೆ ಗಿಡ. (ನಂ) 3. ನೀಲೋತ್ಪಲ, ಕನ್ನೆದಿಲೆ. ನೀಲಂ ಪತ್ರಂ ಪರ್ಣಂ ಪುಷ್ಪದಲಂ ವಾ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 4. ಕರಿಯ ಎಲೆಗಳುಳ್ಳ. ನೀಲಂ ಪತ್ರಂ ಯಸ್ಯ |

ನೀಲಪಿಚ್ಛ ನೀಲಪಿಚ್ಛ (ಪುಂ) ಕಪ್ಪು ಪುಕ್ಕದ ಶೃಂಗವೃಕ್ಷ, ಡೇಗೆ, ಗಿಡುಗ. ನೀಲಂ ಪಿಚ್ಛಂ ಯಸ್ಯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ "ಜಿಷ್" (೪-೧-೬೩) | -ಪಿಚ್ಛಿ -ಪಿಚ್ಛೀ.

ನೀಲಪೀತ ನೀಲಪೀತ (ವಿಂ) ಕಪ್ಪು ಹಳದಿ ಬೆರೆತ ಗಾಢ ಹಸುರು ಬಣ್ಣ.

ನೀಲಪುನರ್ನವಾ ನೀಲಪುನರ್ನವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀಲಿ ಹೂವಿನ ಕೊಮ್ಮೆಗಿಡ.

ನೀಲಪುಷ್ಪ ನೀಲಪುಷ್ಪ (ನಂ) 1. ಮಾಚಿಪತ್ರೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪ್ಪಾ -ಪ್ಪಾ. 2. ವಿಷ್ಣು ಕ್ರಾಂತಿ ಗಿಡ.

ನೀಲಫಲಾ ನೀಲಫಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರಿಳೆಮರ, ಜಂಬೂ ವೃಕ್ಷ. ನೀಲಂ ಫಲಂ ಯಸ್ಯ |

ನೀಲಭೃಂಗರಾಜ ನೀಲಭೃಂಗರಾಜ (ಪುಂ) ಕರಿಯ ಕಂಗೊಂಗಿ ಗಿಡ.

ನೀಲಮಕ್ಷಿಕಾ ನೀಲಮಕ್ಷಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀಲಿಬಣ್ಣದ ನೋಣ.

ನೀಲಮಣಿ ನೀಲಮಣಿ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರನೀಲಮಣಿ. "ನೃಪನೀಲಮಣಿಗೃಹ್ಣಿಷಾಮುಪವೇಶ್ಯತ್ರ ಭಯೇನ ಭಾಸ್ವತ:" ನೈಷಂ ೨-೭೫ | ಇಂದ್ರನೀಲಮಣಿಯನ್ನು ಶನಿಗ್ರಹದ ಪ್ರೀತ್ಯರ್ಥವಾಗಿ ದಾನಮಾಡಬೇಕು ಮತ್ತು ಧರಿಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು. "ಧಾರ್ಯಮಾಣಸ್ಯ ಯೇ ದೃಷ್ಟಾ: ಪದ್ಮರಾಗಮಣೇರ್ಗುಣಾ: | ಧಾರಣಾ-ದಿಂದ್ರನೀಲಸ್ಯ ತಾನೇವಾಪ್ನೋತಿ ಮಾನವ:" | 2. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. 3. ನವರತ್ನಗಳಲ್ಲೊಂದು.

ನೀಲಮಾಣಿಕ್ಯ ನೀಲಮಾಣಿಕ್ಯ (ನಂ) ನೀಲರತ್ನ, ನವವಿಧ ರತ್ನಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಸ್ವಬದ್ಧಯಾ ಕಣಿಹಯೇವ ನೀಲಮಾಣಿಕ್ಯ-ಮಯಾ ಕುತುಕೇನ ಗೌರೀ:" ಕುಮಾಂ ೧೨-೧೪ |

ನೀಲಮಾಧವ ನೀಲಮಾಧವ (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ, ವಾಸುದೇವ, ವಿಷ್ಣು. ನೀಲೋ ನೀಲವರ್ಣೋ ಮಾಧವ: | "ಪ್ರೇಷಿತೋಽಹಂ ಹರಿಂ ದ್ರಷ್ಟುಂ ಮಂಚಸ್ಥಂ ನೀಲಮಾಧವಮ್" ಸ್ಕಾಂದಂ |

ನೀಲಮಾಘ ನೀಲಮಾಘ (ಪುಂ) ಉದ್ದು.

ನೀಲರಾಜಿ ನೀಲರಾಜಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಂಧಕಾರ, ಕತ್ತಲೆ. "ನಿಶಾಶಶಾಙ್ಕುತನೀಲರಾಜಯ:" ಋತುಸಂ |

ನೀಲಲೋಹ ನೀಲಲೋಹ (ನಂ) ಕಬ್ಬಿಣ.

ನೀಲರತ್ನ ನೀಲರತ್ನ (ನಂ) ನವರತ್ನಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ನೀಲ ಮಣಿ.

ನೀಲಲೋಹಿತ ನೀಲಲೋಹಿತ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾದೇವ, ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ನೀಲಾಂಜನೋ ಲೋಹಿತಾಃ ಕಂಠೇ ಜಟಾಸು ಚ | "ಸಂಯುಗೇ ಸಾಂಯುಗೀನಂ ತಮುಘತಂ ಪ್ರಸಹೇತ ಕ:" | ಅಂಶಾದೃತೇ ನಿಷಿಕ್ತಸ್ಯ ನೀಲಲೋಹಿತರೇತಸ:" ಕುಮಾಂ ೩-೫೭ | 2 ನೀಲಿ ಮತ್ತು ಕೆಂಪು ಬೆರೆತ ಬಣ್ಣ. (ವಿಂ) 3. ನೀಲಿ ಮತ್ತು ಕೆಂಪು ಮಿಶ್ರವಾದ ಬಣ್ಣದ.

ನೀಲವರ್ಣ ನೀಲವರ್ಣ (ಪುಂ) 1. ನೀಲಿಬಣ್ಣ. (ವಿಂ) 2. ನೀಲಿಬಣ್ಣದ. -ವರ್ಣಾ -ವರ್ಣಾ. 3. ನೀಲಿಗಿಡ.

ನೀಲವಾಸಸ್ ನೀಲವಾಸಸ್ (ಪುಂ) 1. ಬಲರಾಮ. 2. ಶನಿ ದೇವ. ನೀಲಂ ವಾಸೋ ಯಸ್ಯ | "ನೀಲವಾಸಾ: ಏಕಕುಂಡಲೋ ಹಲಕುಕುಡಿ ಕೃತಸುಭಗಸುಂದರಭುಜೋ ಭಗವಾನ್ ಮಾಹೇಂದ್ರೋ ವಾರಣೇಂದ್ರ ಇವ ಕಾಂಚನೀ ಕಕ್ಷಾಮುದಾರಲೀಲೋ ವಿಭರ್ತಿ" ಭಾಗಂ ೫-೨೫-೭ | (ವಿಂ) 3. ನೀಲವಸ್ತ್ರವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ. एवं ನೀಲವಸನ: ನೀಲವಸ್ತ್ರ: ಇತ್ಯಾದಿ.

ನೀಲಶೀರ್ಷ ನೀಲಶೀರ್ಷ (ಪುಂ) ಕಪ್ಪು ಮುಖದ ಕಪಿ.

ನೀಲಾ ನೀಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೀಲಿಬಣ್ಣದ ನೋಣ. 2. ನೀಲಿ ಕೊಮ್ಮೆಗಿಡ. 3. ನೀಲಿಗಿಡ.

ನೀಲಾಕ್ಷ ನೀಲಾಕ್ಷ (ಪುಂ) ಹಂಸಪಕ್ಷಿ.

ನೀಲಾಂಜ ನೀಲಾಂಜ (ಪುಂ) 1. ಸಾರಸಪಕ್ಷಿ, ನೀರುಹಕ್ಕಿ. ನೀಲಮಂಜಂ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಕಪ್ಪು ಮೈಯುಳ್ಳ.

ನೀಲಾಂಜನ ನೀಲಾಂಜನ (ನಂ) ಸೌವೀರಾಂಜನ.

ನೀಲಾಂಜನಾ ನೀಲಾಂಜನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸು. 2. ಒಂದು ನದಿ. 3. ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು. "ನೀಲಾಂಜನಾಃ ಪರೋಭೇದೇ ಸರಿಕ್ಷೇದೇ ಚ ವಿಚ್ಛಿತಿ" ಮೇದಿಂ |



ನೀಲಾಂಬರ ನೀಲಾಂಬರ (ಪುಂ) 1. ಬಲರಾಮ. 2. ಶನಿ ದೇವ. ನೀಲಾಂಬರಂ ಯಸ್ಯ। (ನಂ) 3. ನೀಲವಸ್ತ್ರ. (ವಿಂ) 4. ನೀಲಬಣ್ಣದ ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ.

ನೀಲಾಂಬ ನೀಲಾಂಬ (ನಂ) ನೀಲಕಮಲ.

ನೀಲಾಂಬುಜ ನೀಲಾಂಬುಜ (ನಂ) ನೀಲಕಮಲ. ನೀಲ-ಮಂಬುಜಮ್।

ನೀಲಾಂಬುಜನ್ಮನ್ ನೀಲಾಂಬುಜನ್ಮನ್ (ನಂ) ನೀಲೋ ತ್ವಲ, ಕನ್ನೆದಿಲೆ. ನೀಲವರ್ಣಯುಕ್ತಮಂಬುಜನ್ಮ।

ನೀಲಾಂಬ ನೀಲಾಂಬಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರಿಯ ಹೂವಿನ ಗೋರಂಟಿ.

ನೀಲಾಶೀ ನೀಲಾಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರಿಯ ಲಕ್ಕಿಗಿಡ. ನೀಲ ನೀಲವರ್ಣಮನ್ತುತೆ — ಅಶ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) “ಅನ್” (೩-೨-೧)। ಗೋರಾಂ “ಙೀಷ್” (೪-೧-೪೧)।

ನೀಲಾಶಮನ್ ನೀಲಾಶಮನ್ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರನೀಲಮಣಿ, ನೀಲ: ಅಶಮಾ। “एकत्र स्फटिकतटांशुभिन्ननीरा नीलाशमद्युति-मिदुराश्मसोऽपरत्र” ಮಾಘಂ ೪-೨೬।

ನೀಲಾಸನ ನೀಲಾಸನ (ಪುಂ) ಕರಿ ಹೊನ್ನೆಮರ. ನೀಲಾಸನ ಅಸನಶ್ಚ।

ನೀಲಿಕಾ ನೀಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕರಿಯ ಲಕ್ಕಿಗಿಡ. 2. ನೀಲಿ ಗಿಡ. 3. ಕಣ್ಣಿನ ಒಂದು ರೋಗ. “ನೀಲಿಕಾ ನೀಲಿನಿ-ಕ್ಷುರೋಗಶೋಫಾಲಿಕಾಸು ಚ” ಮೇದಿಂ।

ನೀಲಿಜ್ಜಿ ನೀಲಿಂಗೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾನಾವಿಧ ಕೃಮಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಭೂಮಿ. “कचङ्गला तु नीलिङ्गी भूर्ना-जन्तुसंयुता” ವೈಜಂ।

ನೀಲಿನ್ ನೀಲಿನ್ (ವಿಂ) ನೀಲಿಬಣ್ಣದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಹೆಚ್ಚು ನೀಲಿಬಣ್ಣದ. ನೀಲೋ ಭೂಮ್ನಾಸ್ತಸ್ಯ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪)।

ನೀಲಿನಿ ನೀಲಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀಲಿಗಿಡ. ನೀಲೋ ವರ್ಣಾ-ಸ್ತಸ್ಯಾ: “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪)।

ನೀಲಿಮನ್ ನೀಲಿಮನ್ (ಪುಂ) ನೀಲಿಬಣ್ಣ. ನೀಲಸ್ಯ ಭಾವ: “इमनिच्” (೪-೧-೧೨೩)। “प्रारम्भेऽपि त्रियामा तरुणयति निजं नीलिमानं वनेषु” ಮಾಲತೀಂ ೪-೬।

ನೀಲಿ ನೀಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೀಲಿಗಿಡ. ನೀಲ “ಙೀಷ್” (ವಾಂ ೪-೧-೪೨)। 2. ನೀಲಿಬಣ್ಣದ ನೋಣ. 3. ಒಂದು ರೋಗ.

ನೀಲಿರಾಗ ನೀಲಿರಾಗ (ಪುಂ) 1. ದೃಢವಾದ ಪ್ರೇಮ, ನೀಲಿಬಣ್ಣದಂತೆ ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದದಿರುವ (ಸ್ಥಿರವಾದ) ಪ್ರೇಮ. (ವಿಂ) 2. ದೃಢವಾದ ಪ್ರೇಮವುಳ್ಳ. “नीली-रागः स्थिरप्रेमा” ವೈಜಂ।

ನೀಲಿರೋಗ ನೀಲಿರೋಗ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಕಣ್ಣಿನ ರೋಗ.

ನೀಲೋತ್ಪಲ ನೀಲೋತ್ಪಲ (ನಂ) ಕನ್ನೆದಿಲೆ ಹೂವು. ನೀಲೋತ್ಪಲಮ್। “नालेनास्तु त्वदक्षिप्रतिफलनभिदा तत्र नीलोत्पलानाम्” ನೈಷಂ ೧೨-೧೦೩।

ನೀಲೋಪಲ ನೀಲೋಪಲ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರನೀಲ ಶಿಲೆ. ನೀಲ-ಶ್ರಾಸಿ ಉಪಲಶ್ಚ। “नीलोपलस्यूतविचित्रधातुमसौ गिरि रैवतकं ददर्श” ಮಾಘಂ ೪-೧।

ನೀವರ ನೀವರ (ಪುಂ) 1. ಯತಿ, ಸಂನ್ಯಾಸಿ. ಣಿವ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಫ್ವರಚ್” (ತಂ ೩-೧)। “नीवरः परिव्राट्” ಸಿಂ ಕೌಂ। 2. ವರ್ತಕ, ವ್ಯಾಪಾರಿ. 3. ವಾಸಮಾಡುವವನು. “स्यान्नीवरो वाणिजके वास्तव्ये च पुमानयम्” ಮೇದಿಂ।

ನೀವಾಕ ನೀವಾಕ (ಪುಂ) ಧಾನ್ಯದ ಕೊರತೆಯ ನಿಮಿತ್ತ ಕೊಳ್ಳುವವರ ಪೈಪೋಟಿ. “नीवाकस्तु प्रयामः स्यात्” ಅಮಂ।

ನೀವಾರ ನೀವಾರ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ತೃಣಧಾನ್ಯ. ನಿವ್ರಿಯಂತೆ — ವೃವ್ (ವರಣೆ) “घव्” (೩-೩-೪೮)। “नीवाराः शुकरार्भकोटरमुखभ्रष्टास्तरुणामघः” ಶಾಕುಂ ೧-೧೩।

ನೀವಿ(ವಿ) ನೀವಿ(ವಿ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವರ್ತಕರ ಮೂಲ ಧನ, ಬಂಡವಾಳ. ನಿತರಾಮಿನ್ವತಿ — ಇವಿ (ಪ್ರೇರಣೆ) “इन्” (ತಂ ೪-೧೨೦) ವಾ “ಙೀಷ್” (ಗಂ ೪-೧-೪೪)। “अमुद्राभङ्गसुभगा नीवीरिव रतेः शुभः” ಯಾದಂ ೧೬-೧೩೬। 2. ಹೆಂಗಸರು ಸೊಂಟದಲ್ಲಿ ಹಾಕುವ ಸೀರೆಯ ಗಂಟು. “प्रापि तेन भृशमुच्छसिताभिर्नीत्रिभिः सपदि बन्धनमोक्षः” ಮಾಘಂ ೧೦-೪೧। “नीविमर्धमुकुली-कृतदृष्ट्या” ಮಾಘಂ ೧೦-೬೪। “कान्ते तल्पमुपागते विगलिता नीवी स्वयं बन्धनात्” ಅಮಹಂ ೧೦೧।

ನೀವ ನೀವ (ನಂ) “ನೀವ್” ಪದದ ಅರ್ಥ.

ನೀವತ್ ನೀವತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜನಪದ, ದೇಶ, ಜನರು ವಾಸ ಮಾಡುವ ಸ್ಥಾನ. ನಿಯತ ವರ್ತಿಸುತ್ತ — ವೃತು (ವರ್ತನೆ) “क्विप्” (೩-೨-೧೭೮)। ದೀರ್ಘ: (೬-೩-೧೧೬)। “सरसीः परिशीलितुं मया गमिकर्मीकृतनैकनीवृता” ನೈಷಂ ೨-೪೦।

ನೀಶಾರ ನೀಶಾರ (ಪುಂ) ಹಿಮ ಮತ್ತು ಗಾಳಿಯನ್ನು ತಡೆಯುವ ಮೇಲು ಹೊದಿಕೆ. ನಿತರಾಂ ಶೀಯಂತೆ ಹಿಮಾನಿಲಾ: ಯತ್ರ — ಶ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “घव्” (ವಾಂ ೩-೩-೨೧)। ದೀರ್ಘ: (೬-೩-೧೨೨)।



ನಿಹಾರ ನಿಹಾರ (ಪುಂ) ಹಿಮ, ಮಂಜು. ನಿಹಿಯತೆ  
— ನಿ + ಹ್ರ (ಹರಣೆ) “ಘ” (೩-೩-೧೯)। “ನಿಹಾರ-  
ಜಾಲಮಲಿನ: ಪುನರುಕ್ತಸಾಂದ್ರಾ: ಕುರ್ವನ್ ವಜ್ರಜನವಿಲೋಚನಪಕ್ಷಮ-  
ಮಾಲಾ:” ಮಾಘಂ ೪-೧೧।

ನು ಸು (ಅವ್ಯಂ) 1. ವಿತರ್ಕ, ಸಂಶಯ, ಸಂದೇಹ. ನುದತಿ  
— ಗುಡ (ಪ್ರೇರಣೆ) “ಙು:” (೩-೨-೧೮೦)। “ಸ್ವಪ್ನೋ  
ನು ಮಾಯಾ ನು ಮತಿಭ್ರಮೋ ನು ಕ್ಲಿಷ್ಟಂ ನು ತಾವತ್ಕಲಮೇವ ಪುಷ್ಯಮ್”  
ಶಾಕುಂ ೬-೧೦। 2. ವಿಹಲ್ಪ, ಪಕ್ಷಾಂತರ. “ಕಿ ನು  
ಗರ್ಹಾಮ್ಯಥಾತ್ಮಾನಮಥ ಭೀಷಂ ದುರಾಸದಮ್” ಭಾಗಂ ಉದ್ಯೋಗಂ  
೧೭೪-೨೯। 3. ಅನುನಯ, ಪ್ರಾರ್ಥನೆ. 4. ಅಪಮಾನ, ಅಪಮಾನ.  
5. ಅದೇಶ, ಅಜ್ಞೆ. 6. ಪೃಶ್ನ. “ಕೋ ನು  
ಭೀಷಂ ಯುಧಾ ಜೇತುಮ್ಸಹೇತ ಮಹೀಪತಿ:” ಭಾಗಂ ಉದ್ಯೋಗಂ  
೧೭೪-೩೬। 7. ಹೇತು, ಕಾರಣ. 8. ಅಪದೇಶ, ವ್ಯಾಜ, ನೆಪ.  
9. ಅತೀತ. “ನು ವಿತರ್ಕಾಪಮಾನಯೋ: ವಿಕಲ್ಪಾನು-  
ನಯಾತೀತೇ ಪ್ರಶ್ನೇ ಹೇತುಪದೇಶಯೋ:” ಮೇದಿಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 10.  
ಸ್ಮೃತಿ, ಹೊಗಳಿಕೆ.

ನುತ ಸುತ (ವಿಂ) 1. ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಗು (ಸ್ತುತೌ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)। “ತಂ  
ವೇದಶಾಸ್ತ್ರಪರಿನಿಷ್ಠಿತಶುದ್ಧಬುದ್ಧಿ ಚರ್ಮಿವರಂ ಸುರಮುನಿನ್ದ್ರನುತಂ  
ಕವೀಂದ್ರಮ್”। 2. ಶ್ಲಾಘಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊಂಡಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ನುತಿ ಸುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ತೋತ್ರ, ಹೊಗಳಿಕೆ. ಗು (ಸ್ತುತೌ)  
“ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪)। 2. ಪ್ರಶಂಸೆ, ಕೊಂಡಾಟ, ಶ್ಲಾಘನೆ.

ನುತ ಸುತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ನೂಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಗುಡ (ಪ್ರೇರಣೆ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)। ವಾ  
ನತ್ವಮ್ (೮-೨-೪೬)। ನುತ: ಸುತ: “ಪ್ರಸಹ್ಯ ತೇಜೋಮಿ-  
ರಸಂಹೃತಾ ಗತೇರದಸ್ತ್ವಯಾ ನುತಮನುತಮಂ ತಮ:” ಮಾಘಂ ೧-೨೭।  
2. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ನುದತ್ ಸುದತ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೇರಿಸುತ್ತಿರುವ, 2. ತಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ನೂಕುತ್ತಿರುವ. ಗುಡ (ಪ್ರೇರಣೆ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)।  
3. ಹೋಗಲಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)।  
—ವತ್ತಿ—ದಂತಿ, —ವತ್ತಿ—ದಂತಿ. “ಆತ್ಮಾಪರಾಧಂ ನುದತೀಂ  
ಚಿರಾಯ” ರಘುಂ ೧೬-೮೪।

ನುಷಮಾನ ಸುಷಮಾನ (ವಿಂ) 1. ತಳ್ಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ನೂಕಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಗುಡ (ಪ್ರೇರಣೆ) ಕರ್ಮಂ “ಶಾನಚ್”  
(೩-೨-೧೨೪)। “ನೃಪ: ಪುರ:ಸ್ಥೇ: ಪ್ರತಿಬದ್ಧವರ್ತಮಾ ಪಶ್ಚಾತ್ತನೇ:  
ಕಷ್ಠನ ನುಷಮಾನ:” ನೈಷಂ ೧೦-೬। 2. ಎಸೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

ನುನುಸ್ತಾ ನುನುತ್ಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಳ್ಳಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ನೂಕಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಗುಡ (ಪ್ರೇರಣೆ) + ಸನ್ “ಅ:” (೩-೩-೧೦೨)।  
2. ಎಸೆಯಲು ಇಚ್ಛೆ.

ನುನುತ್ಸು ನುನುತ್ಸು (ವಿಂ) 1. ತಳ್ಳುಹಾಕಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. 2. ನೂಕಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. ಗುಡ (ಪ್ರೇರಣೆ) + ಸನ್ “ಃ:”  
(೩-೨-೧೬೮)। “ಯದವಾದಿಷಮಪ್ರಿಯಂ ತವ ಪ್ರಿಯಮಾಧಾಯ  
ನುನುತ್ಸುರಸ್ಮಿ ತತ್” ನೈಷಂ ೨-೧೧। 3. ಎಸೆಯಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ.

ನು ನೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ಮೃತಿ, ಹೊಗಳಿಕೆ. ನು (ಸ್ತುತೌ) “ಕಿವಪ್”  
(ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮)।

ನೂತನ ನೂತನ (ವಿಂ) ಹೊಸದಾದ. ನವ ಎವ ಸ್ವಾರ್ಥ  
“ತನಪ್” (ವಾಂ ೪-೪-೨೪)। ನವಸ್ಯ ನು ಆದೇಶಶ್ಚ।  
“ತದಭಿನಯಮಿವಾವಲಿರ್ವನಾನಾಮತನುತ ನೂತನಪಲ್ಲವಾಙ್ಗುಲಿಮಿ:”  
ಮಾಘಂ ೭-೨೪।

ನೂತ ನೂತ (ವಿಂ) ನವೀನವಾದ, ಹೊಸದಾದ. ನವ ಎವ  
ಸ್ವಾರ್ಥ “ಲಪ್” ನವಸ್ಯ ನು ಆದೇಶಶ್ಚ (ವಾಂ ೪-೪-೨೪)।

ನೂದ ನೂದ (ಪುಂ) ಹೂವರಚಿ ಮರ, ಬ್ರಹ್ಮದಾರು ವೃಕ್ಷ.

ನೂನಮ್ ನೂನಮ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾಪಾಚಕವಾದ ಒಂದು ಶಬ್ದ. ನು ಒನಯತಿ ಒನ (ಪರಿಹಾಣೆ) “ಅಮ್”।  
“ಜಗತಿ ಸುಮನಸಸ್ತದಾದಿ ನೂನಂ ದಧತಿ ಪರಿಸ್ಕುಟಮರ್ಯತೋ-  
ಮಿಧಾನಮ್” ಮಾಘಂ ೭-೨೮। “ಮನ್ಯೇ ಶಕ್ತೇ ಧ್ರುವಂ ಪ್ರಾಯೋ  
ನೂನಮಿತ್ಯೇವಮಾದಯ:। ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾವ್ಯಂಜಕಾ: ಶಬ್ದಾ: ಇವ  
ಶಬ್ದೋಪಿ ತಾದೃಶ:”। 2. ತರ್ಕ, ಊಹೆ. “ನೂನಮತ್ರಭವತ: ಶರಾಕೃತಿಂ  
ಸರ್ವಥಾಯಮನುಯಾತಿ ಸಾಯಕ:” ಕಿರಾಂ ೧೩-೪೪। 3. ನಿಶ್ಚಯ. “ನೂನಂ  
ಜನೇನ ಪುರುಷೇ ಮಹತಿ ಪ್ರಯುಕ್ತಮಾಗ: ಪರಂ ತದನುರೂಪಫಲಂ ಪ್ರಸೂತೇ”  
ಚಂ ರಾಂ। 4. ಪಾಕಪೂರಣಕ್ಕಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವ ಪದ. 5. ಸ್ಮರಣೆ, ನೆನಪು.  
“ನೂನಂ ತು ನಿಶ್ಚಿತೇ ತರ್ಕೇ ಸ್ಮರಣೇ ವಾಕ್ಯಪೂರಣೇ” ಮೇದಿಂ।

ನೂಪುರ ನೂಪುರ (ಪುಂ) ಕಾಲಿನ ತೊಡುಗೆ, ಕಾಲುದಿಗ, ಕಾಲ್ಕಡಗ, ಕಾಲಿನ ಗೊಲುಸು. ನುಪಿ ಪುರತಿ—ಪುರ (ಅಗ್ರಗಮನೆ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೪)। “ಅನೇನ ತನುಮಧ್ಯಯಾ  
ಮುಖರನುಪುರಾರಾವಿಣಾ ನವಾಮ್ಬುರುಹಕೋಮಲೇನ ಚರಣೇನ ಸಂಭಾವಿತ:”  
ಮಾಲಂ ೩-೧೭। “ಧ್ವನಿರಗವಿವರೇಷು ನೂಪುರಾಣಾಮ್” ಕಿರಾಂ ೧೦-೪।

ನು ನೃ (ಪುಂ) 1. ಮನುಷ್ಯ, ಪುರುಷ, ಗಂಡಸು. ಗಿಣಿ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಋ:” (೩ಂ ೨-೧೦೦)। “ವೀಕ್ಷಣೇಽಪಿ  
ಸಭೃಣಾಸಿ ನೃಣಾಂ ಕಿಂ ಯಾಸಿ ನ ತ್ವಮಪಿ ಸಾರ್ಥಗುಣೇನ” ನೈಷಂ



೪-೪೪ | 2. ಪುಂಲಿಂಗ ಸೂಚಕ ಪದ. "ಹೇತುರ್ನಾ ಕಾರಣಂ ಬೀಜಮ್" ಅಮಂ |

ನೃಕಪಾಲ ನೃಕಪಾಲ (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯನ ತಲೆಬುರುಡೆ.

ನೃಕೇಸರಿನ್ ನೃಕೇಸರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ನೃಸಿಂಹ, ನರಸಿಂಹ, ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಒಂದು ಅವತಾರ. ನಾ ಚಾಸೀ ಕೇಸರೀ ಚ | 2. ಪುರುಷಶ್ರೇಷ್ಠ, ಉತ್ತಮಪುರುಷ. ನಾ ಕೇಸರೀವ |

ನೃಗ ನೃಗ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ವೈವಸ್ವತ ಮನುವಿನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. [ಈ ದೊರೆಯು ಅನೇಕ ಗೋವುಗಳನ್ನು ದಾನ ಮಾಡಿದವನು. ಒಂದು ದಿನ ಈ ರಾಜನು ದಾನಮಾಡಿದ್ದ ಒಂದು ಗೋವು ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಂಡು ಬಂದು ಮತ್ತೆ ಇವನ ಗೋವುಗಳ ಗುಂಪಿನೊಡನೆ ಸೇರಿತು. ಅದನ್ನು ಗುರುತಿಸದೆ ಆ ಗೋವನ್ನೇ ನೃಗನು ಮತ್ತೊಬ್ಬ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ದಾನ ಮಾಡಿದನು. ಹಿಂದೆ ದಾನವಾಗಿ ಪಡೆದಿದ್ದ ಗೋವನ್ನು ಬ್ರಾಹ್ಮಣನು ಹುಡುಕುತ್ತ ಎರಡನೆಯ ಸಲ ದಾನ ತೆಗೆದು ಕೊಂಡ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಅದನ್ನು ಗುರುತಿಸಿ ಕೇಳಲಾಗಿ ನೃಗನು ತನಗೆ ದಾನಮಾಡಿದುದಾಗಿ ಅವನು ಹೇಳಿದನು. ಇಬ್ಬರೂ ರಾಜನಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಲು ಇವರಿಗೆ ನ್ಯಾಯ ದೊರಕಲಿಲ್ಲ. ರಾಜನು ಕಾಲವಶನಾದಾಗ ಅವನ ದತ್ತಾಪಹಾರದ ಕಾರಣದಿಂದ ಕೃಕಲಾಸ ಜನ್ಮವು ಪ್ರಾಪ್ತವಾಯಿತು. ಮುಂದೆ ಕೃಷ್ಣಾವತಾರದಲ್ಲಿ ರಾಜನಿಗೆ ಆ ಜನ್ಮವಿಮೋಚನೆಯಾಯಿತು.] भाग० १०-६४ |

ನೃಜ್ಜ ನೃಂಗ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಸಣ್ಣ ನಗರ. 2. ಸಣ್ಣ ಗ್ರಾಮ.

ನೃಚಕ್ಷಸ್ ನೃಚಕ್ಷಸ್ (ಪುಂ) ರಾಕ್ಷಸ.

ನೃಚಕ್ಷುಸ್ ನೃಚಕ್ಷುಸ್ (ಪುಂ) ಸುನೀಥ ರಾಜನ ಮಗ. "सुनीथस्तस्य भविता नृचक्षुर्यत् सुखी नलः" भाग० ९-२२-४१ |

ನೃತಾ ನೃತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಂಸ್ತ್ವ, ಪುರುಷತ್ವ. ನು: ಭಾವ: "तल्" (५-१-११९) | "अविनमस्र रराज वृथोच्चकै-रनृतया नृतया वनपादपः" माघ० ६-१० |

ನೃತಿ ನೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನರ್ತನ, ಕುಣಿತ. ನೃತಿ (ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪ) "इन्" (उ० ४-११९) | 2. ಕೃಮಿ, ಹುಳ. "नृतिः स्यान्नर्तने कृमौ" हेम० |

ನೃತ್ತ ನೃತ್ತ (ನಂ) ನರ್ತನ, ಕುಣಿತ. ನೃತಿ (ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪ) "क्तः" (३-३-११४) | "नाथभक्तिपरिष्कार्या नृत्त-लीलामिव स्पृशन्" याद० १६-६३ | "नृत्तादस्याः स्थित-मतितरां कान्तमृज्वायताधम्" माल० २-६ |

ನೃತ್ತಜ ನೃತ್ತಜ್ಜ (ವಿಂ) ನೃತ್ಯಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಬಲ್ಲವನು. ನೃತ್ ಜಾನಾತಿ—ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "कः" (३-१-११५) |

"नृत्तज्ञसस्यप्रवराङ्गनानां धनुष्करक्षत्रतपस्विना च" बृहत्सं० ५-७३ |

ನೃತ್ಯ ನೃತ್ಯ (ನಂ) ನರ್ತನ, ಕುಣಿತ. ನೃತಿ (ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪ) "क्यप्" (३-१-११०) | ನೃತ್ಯ ಮತ್ತು ನೃತ್ಯಗಳೆರಡರಲ್ಲೂ ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪವು ಸಮಾನವಾದರೂ ಅನುಕರಣಾತ್ಮಕವೂ ಭಾವಾಶ್ರಯವೂ ಆದ ನೃತ್ಯಕ್ಕಿಂತಲೂ ಕೇವಲ ತಾಲಲಯಾಶ್ರಯವಾದ ನೃತ್ಯವು ಭಿನ್ನವಾದುದು. "गात्र-विक्षेपार्थत्वे समानेऽपि अनुकारात्मकत्वेन नृत्तादन्य-सृत्यम्" | "अन्यद्वावाश्रयं नृत्यं नृत्तं ताललया-श्रितम्" दशरू० १-९ | "सुखश्रवा मङ्गलतूर्यनिस्वनाः प्रमोदनृत्यैः सह वारयोषिताम्" रघु० ३-१९ | ನೃತ್ಯ ಮತ್ತು ನೃತ್ಯಗಳೆರಡೂ ಲಾಸ್ಯ ಮತ್ತು ತಾಂಡವಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಸುಕುಮಾರವಾದ ನೃತ್ಯ ಮತ್ತು ನೃತ್ಯಗಳು ಲಾಸ್ಯ. ಉದ್ದತವಾದ ನೃತ್ಯ ಮತ್ತು ನೃತ್ಯಗಳು ತಾಂಡವ. "मधुरोद्धतभेदेन तद्वयं द्विविधं पुनः । लास्यताण्डवरूपेण नाटकाद्युपकारकम्" दशरू० १-१० | ರಸಾಶ್ರಯವಾದ ನಾಟ್ಯವು ಇವೆರಡಕ್ಕಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನವಾದುದು.

ನೃತ್ಯತ್ ನೃತ್ಯತ್ (ವಿಂ) ನರ್ತನಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಕುಣಿದಾಡುತ್ತಿರುವ. ನೃತಿ (ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪ) "शत्" (३-२-१२४) | "यत्र वैणरववैणवस्वरं कृतं रूपवनीपिकालिनाम् । कङ्क-णालिकलहैश्च नृत्यतां कुञ्जितं सुरतकूजितं तयोः" नेष० १८-१७ | स्त्रियां "डीप्" (४-१-६) | -न्ती -न्ति० |

ನೃತ್ಯಪ್ರಿಯ ನೃತ್ಯಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) 1. ನಟರಾಜ, ಮಹಾದೇವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ನೃತ್ಯಂ ಪ್ರಿಯಮಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ನೃತ್ಯವು ಪ್ರಿಯವಾಗಿರುವ.

ನೃತ್ಯಶಾಲಾ ನೃತ್ಯಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನರ್ತನವನ್ನು ಕಲಿಸುವ ಶಾಲೆ, ನಾಟ್ಯಗೃಹ.

ನೃತ್ಯಸ್ಥಾನ ನೃತ್ಯಸ್ಥಾನ (ನಂ) ನರ್ತನಸ್ಥಾನ, ರಂಗಸ್ಥಳ; ನೃತ್ಯಸ್ಯ ಸ್ಥಾನಮ್ |

ನೃದ್ಗುಂ ನೃದ್ಗುರ್ಗ (ನಂ) ನಾಲ್ಕು ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲೂ ಆನೆ ಕುದುರೆ ರಥಗಳಿಂದಲೂ ಬಹುಮಂದಿ ಪದಾತಿ (ಕಾಲಾಳು) ಗಳಿಂದಲೂ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ದುರ್ಗ. ರಾಜನು ವಾಸ ಮಾಡುವ ರಾಜಧಾನಿಯು ಶತ್ರುಗಳಿಗೆ ಅಭೇದ್ಯವಾಗಿ ಈ ರೀತಿಯ ದುರ್ಗಗಳಿಂದ ಆವೃತವಾಗಿರಬೇಕು. "धन्वदुर्गं महीदुर्गं मन्दुर्गं वाक्षमेव वा । नृदुर्गं गिरिदुर्गं वा



ಸಮಾಶ್ರಿತೃ ವಸೇತುರೀಮ್" ಮನುಂ ೭-೭೦ | ನೃದುರ್ಗವು  
ಅರು ವಿಧ ದುರ್ಗಗಳಲ್ಲೊಂದು.

**ನೃದೇವ ನೃದೇವ** (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ನೃಣಾಂ ದೇವಃ | ನಾ  
ದೇವ ಇವ ವಾ | "ಅಮಲಾನಮಾಲಾವಿಪುಲಾತಪತ್ರದೇವಾ ನೃದೇವಾಶ್ಚ  
ಮಿದಾಂ ನ ಭೇಜುಃ" ನೈಷಂ ೧೦-೩೩ |

**ನೃಧರ್ಮನ್ ನೃಧರ್ಮನ್** (ಪುಂ) ಕುಬೇರ. ನುಃ ಮನುಷ್ಯಸ್ಯೇವ  
ಧರ್ಮೋಽಸ್ಯ "ಅನಿಶ್" (೪-೪-೧೨೪) |

**ನೃನಮನ ನೃನಮನ** (ವಿಂ) ಮನುಷ್ಯರಿಂದ ನಮಸ್ಕರಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ ದೇವತೆ ಮೊದಲಾದವರು. ನೃಭಿನಮ್ಯತೇ - ಣಮ  
(ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩) |

**ನೃಪ ನೃಪ** (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ, ಪ್ರಜೆಗಳನ್ನು ಕಾಪಾಡು  
ವವನು. ನೃನ್ ಪಾತಿ - ಪಾ (ರಕ್ಷಣೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) |  
ನಾಲ್ಕು ಯೋಜನ ವಿಸ್ತಾರದ ಪ್ರದೇಶಕ್ಕೆ ಅಧಿಕಾರಿಯಾದ  
ವನು ನೃಪನು. ಅದಕ್ಕೆ ನೂರರಷ್ಟು ವಿಸ್ತಾರದ ಪ್ರದೇಶ  
ವನ್ನು ಆಳುವವನು ಮಂಡಲೇಶ್ವರನು. ಅದಕ್ಕಿಂತಲೂ  
ಹತ್ತರಷ್ಟು ಅಧಿಕವಾದವನು ರಾಜೇಂದ್ರನು. "ಚತುರ್ಯೋಜನ-  
ಪರ್ಯಂತಮಧಿಕಾರೋ ನೃಪಸ್ಯ ಚ | ಯೋ ರಾಜಾ ತಚ್ಚತುರ್ಗುಣಃ ಸ ಏವ  
ಮಂಡಲೇಶ್ವರಃ | ತಸ್ಮಾದ್ವಿಗುಣೋ ರಾಜಾ ರಾಜೇಂದ್ರಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ"  
ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ | ಆದರೆ ಎಲ್ಲಾ ರಾಜರಲ್ಲೂ ನೃಪಪದಪ್ರಯೋ  
ಗವು ಕಂಡುಬರುವುದು. "ಕ್ರಿಯಾಸು ಯುಕ್ತೇನೃಪ ಚಾರಚಕ್ಷುಷೋ  
ನ ವಚ್ಚನೀಯಾಃ ಪ್ರಭವೋಽನುಜೀವಿಭಿಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೪ |  
"ಯಿಯಾಸತಸ್ತಸ್ಯ ನೃಪಸ್ಯ ಜಗ್ಗಿರೇ ಪ್ರಶಸ್ತವಸ್ತುನಿ ತದೇವ  
ಯೌವತಮ್" ನೈಷಂ ೧೪-೭೬ | 2. ಹದಿನಾರು ಸಂಖ್ಯೆ. ಮಹಾ  
ಭಾರತದಲ್ಲಿ ಹದಿನಾರೇ ಮಂದಿ ರಾಜರುಗಳ ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ  
ವನ್ನು ವರ್ಣಿಸಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಪದಕ್ಕೆ ಹದಿನಾರು ಸಂಖ್ಯೆ  
ಯಲ್ಲಿ ಸಂಕೇತ. "ಭುವಿ ನೃಪಮಿತಹಸ್ತೇಶ್ವಜ್ಜಲಗ್ನಂ ತದಗ್ರಮ್"  
ಲೀಲಾಂ |

**ನೃಪಕಂದ ನೃಪಕಂದ** (ಪುಂ) ರಾಜಪಲಾಂಡು, ರಾಜೀರುಳ್ಳಿ.  
ಕಂದಾನಾಂ ನೃಪಃ ಶ್ರೇಷ್ಠಃ | ರಾಜದಂತಾದಿಂ (೨-೨-೩೧) ಪರಿನಿಂ |

**ನೃಪಗೃಹ ನೃಪಗೃಹ** (ನಂ) ರಾಜನ ಅರಮನೆ, ರಾಜನ  
ವಾಸಸ್ಥಾನ. ನೃಪಸ್ಯ ಗೃಹಮ್ | ರಾಜಗೃಹದ ಲಕ್ಷಣಃ  
ರಾಜನ ಅರಮನೆಯು 108 ಮೊಳಗಳ ಅಗಲವುಳ್ಳ  
ದ್ದಾಗಿಯೂ 135 ಮೊಳಗಳ ಉದ್ದವುಳ್ಳದ್ದಾಗಿಯೂ  
ಇರಬೇಕು. "ಉತ್ತಮಮಂಡಾಮ್ಯಧಿಕಂ ಹಸ್ತಶತಂ ನೃಪಗೃಹಂ ಪೃಥುತ್ವೇನ |  
ಅಷ್ಟಾಷ್ಟೋನಾನ್ಯೇವಂ ಪಞ್ಚ ಸಪಾದಾನಿ ದೈರ್ಘ್ಯೇಣ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೪-೩-೪ |  
ಅರಮನೆಯ ಮಧ್ಯಭಾಗದಲ್ಲಿ ಸಭಾಭವನವಿರಬೇಕು.  
ಗೋಶಾಲೆ ಅಶ್ವಶಾಲೆ ಮತ್ತು ಗಜಶಾಲೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರ  
ಬೇಕು. ಬಾವಿ ಕೊಳ ಮತ್ತು ಜಲಯಂತ್ರಗಳ ಸೌಕರ್ಯ

ವನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸಿರಬೇಕು. ನಾಲ್ಕು ಕಡೆಗಳಲ್ಲೂ ಸಮ  
ವಾಗಿಯೂ ದಕ್ಷಿಣ ಭಾಗವು ಎತ್ತರವಾಗಿಯೂ ಉತ್ತರ  
ಭಾಗವು ತಗ್ಗಾಗಿಯೂ ಇರಬೇಕು. ಶಸ್ತ್ರಾಸ್ತ್ರಧಾರಿಗಳಿಂದ  
ಸುರಕ್ಷಿತವಾದ ಪ್ರಾಕಾರವು ರಚಿತವಾಗಿರಬೇಕು. ಅರ  
ಮನೆಯ ನಾಲ್ಕು ಕಡೆಯ ದ್ವಾರಗಳೂ ಯಾವುದ ಸರದಿ  
ಪ್ರಕಾರ ಬದಲಾಯಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ದ್ವಾರಪಾಲಕರಿಂದ  
ಸುರಕ್ಷಿತವಾಗಿರಬೇಕು. ವಸ್ತ್ರಕ್ಷಾಲನ ಸ್ನಾನ ಮುಂತಾದ  
ಕಾರ್ಯಗಳಿಗಾಗಿ ಪೂರ್ವಭಾಗದಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನಕಲ್ಪನೆಯಿರ  
ಬೇಕು. ಧಾನ್ಯ ಸಂಗ್ರಹಕ್ಕಾಗಿ ದ್ವಾರಪಾಲಕರಿಗಾಗಿ ದಾಸೀ  
ಮತ್ತು ಸೇವಕರಿಗಾಗಿ ದಕ್ಷಿಣದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ವಸತಿಯನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸ  
ಬೇಕು. ಇತ್ಯಾದಿ. "ರಾಜಗೃಹಂ ಸಭಾಮಧ್ಯಂ ಗವಾಶ್ವಗಜ-  
ಶಾಲಿಕಮ್ | ಪ್ರಶಸ್ತವಾಪೀಕೃಪಾದಿಜಲಯನ್ತ್ರಃ ಸುಶೋಭಿತಮ್ |  
ಸರ್ವತಃ ಸ್ಯಾತ್ ಸಮಭುಜಂ ದಕ್ಷಿಣೋಚ್ಚಮುದङ್ಗನತಮ್ | ಶಸ್ತ್ರಾಸ್ತ್ರ-  
ಧಾರಿಭಿರ್ಯುಕ್ತಪ್ರಾಕಾರಂ ಸುಷ್ಠುಯನ್ತ್ರಕಮ್ | ಚತುರ್ಮಿಃ ಪಞ್ಚಮಿಃ  
ಷಡ್ಭಿರ್ಮಿಮಿಕೈಃ ಪರಿವರ್ತಕೈಃ | ವಸ್ತ್ರಾದಿಮಾರ್ಜನಾರ್ಥಂ ಚ ಸ್ನಾನಾರ್ಥಂ  
ಯಜನಾರ್ಥಕಮ್ | ಭೋಜನಾರ್ಥಂ ಚ ಪಾಕಾರ್ಥಂ ಪೂರ್ವಸ್ಯಾಂ ಕಲ್ಪಯೇತ್  
ಗೃಹಮ್ | ಧಾನ್ಯಾರ್ಥಂ ದ್ವಾರಪಾಲಾರ್ಥಂ ದಾಸೀದಾಸಾರ್ಥಮೇವ ಚ |  
ಉತ್ಸರ್ಗಾರ್ಥಂ ಗೃಹಾನ್ ಕುರ್ಯಾತ್ ದಕ್ಷಿಣಸ್ಯಾಮನುಕ್ರಮಾತ್" ಇತ್ಯಾದಿ  
ಶುಕ್ರನೀತಿಪರಿಶಿಷ್ಟಮ್ | एवं ನೃಪಭವನಮ್ ನೃಪಮಂದಿರಮ್  
ಇತ್ಯಾದಿ.

**ನೃಪಜಯ ನೃಪಜಯ** (ಪುಂ) ಪೂರುವಂಶದ ಒಬ್ಬ  
ದೊರೆ. "ನೃಪಜಯೋ ಬಹುರಥಃ ಇತ್ಯೇತೇ ಪೌರವಾಃ ಸ್ಮೃತಾಃ"  
ಹರಿವಂ |

**ನೃಪತಿ ನೃಪತಿ** (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ನೃನ್ ಪಾತಿ - ಪಾ  
(ರಕ್ಷಣೇ) "ತಿತಿಃ" (೩ಂ ೪-೪೭) | "ನೆತ್ರವ್ರಜಾಃ  
ಪೌರಜನಸ್ಯ ತಸ್ಮಿನ್ ವಿಹಾಯ ಸರ್ವಾನ್ ನೃಪತೀನ್ ನಿಪೇತುಃ"  
ರಘುಂ ೬-೭ | 2. ಕ್ಷತ್ರಿಯ. "ವಿಪ್ರಸ್ಯ ತ್ರಿಘ್ನಿ ವರ್ಣೈಃ  
ನೃಪತೇರ್ವರ್ಣಯೋರ್ದ್ವಯೋಃ | ವೈಶ್ಯಸ್ಯ ವರ್ಣಂ ಚೈಕಸ್ಮಿನ್ ಪಡೇತೇಽಪಸದಾಃ  
ಸ್ಮೃತಾಃ" ಮನುಂ ೧೦-೧೦ |

**ನೃಪದ್ರುಮ ನೃಪದ್ರುಮ** (ಪುಂ) ರಾಜವೃಕ್ಷ, ಕೆಳಗಿಡ. ನೃಪ-  
ಸ್ಯಾದನೋ ದ್ರುಮಃ |

**ನೃಪಪ್ರಿಯ ನೃಪಪ್ರಿಯ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಬಗೆಯ ಬಿದಿರು.  
2. ರಾಜೀರುಳ್ಳಿ. (ವಿಂ) 3. ರಾಜನಿಗೆ ಪ್ರೀತಿಪಾತ್ರ  
ನಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪ್ರಿಯಾ -ಪ್ರಿಯಾ. 4. ಕೇತಕೀ ವೃಕ್ಷ,  
ತಾಳೆಗಿಡ.

**ನೃಪಲಕ್ಷಮನ್ ನೃಪಲಕ್ಷ್ಮಣ್** (ನಂ) ರಾಜನ ಚಿಹ್ನೆ, ರಾಜ  
ಲಕ್ಷಣವಾದ ಛತ್ರ, ಚಾಮರ ಧನುಸ್ಸು ಮುಂತಾದುದು.  
ನೃಪಸ್ಯ ಲಕ್ಷಮ್ |



ನೃಪಲಿಂಗಧರ ನೃಪಲಿಂಗಧರ (ವಿಂ) ರಾಜವೇಷವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವವನು. “ನಿಜಗ್ರಾಹಿಜಸಾ ವೀರ: ಕಲಿ ದಿಗ್ವಿಜಯೇ ಕ್ವಚಿತ್ | ನೃಪಲಿಂಗಧರಂ ಶ್ಲೋಕಂ” ಭಾಗಂ |

ನೃಪಶಾಸನ ನೃಪಶಾಸನ (ನಂ) ರಾಜನ ಆಜ್ಞೆ, ದೊರೆಯ ಆದೇಶ. ನೃಪಸ್ಯ ಶಾಸನಮ್ | ರಾಜನು ಪ್ರಜೆಗಳು ಮತ್ತು ಇತರರ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಆಜ್ಞೆ. [ವಿವರಕ್ಕೆ, “ರಾಜಶಾಸನ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ನೃಪಶು ನೃಪಶು (ಫಂ) 1. ಮೂರ್ಖ, ಪಶುಗಳಂತೆ ತಿಳಿವಳಿಕೆ ಯಿಲ್ಲದವನು. ನಾ ಪಶುರಿವ | “ಕೃಷ್ಣಾ ಯೇನ ಶಿರೋಹೇ ನೃಪಶುನಾ ಪಾಶ್ವಾಲರಾಜಾತ್ಮಜಾ” ವೇಣಿಂ 3-49 | 2. ಪುರುಷ ಪಶು. ನಾ ಚಾಸೌ ಪಶುಶ್ಚ |

ನೃಪಸಭ ನೃಪಸಭ (ನಂ) ಅನೇಕ ರಾಜರ ಸಭೆ. ನೃಪಾಣಾಂ ಸಭಾ ನೃಪಸಕತ್ವಮ್ (2-8-23) |

ನೃಪಸುತ ನೃಪಸುತ, -ಸುನು -ಸೂನು (ಫಂ) 1. ರಾಜ ಪುತ್ರ, ರಾಜಕುಮಾರ. ನೃಪಸ್ಯ ಸುತ: ಸುನುರ್ವ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸುತಾ -ಸುತಾ. 2. ರಾಜಕುಮಾರಿ. 3. ಮೂಗಿಲಿ.

ನೃಪಾಂಶ ನೃಪಾಂಶ (ಫಂ) 1. ರಾಜನ ಭಾಗ, ಕಂದಾಯದ ರೂಪದಲ್ಲಿ ಕೊಡಬೇಕಾದ ರಾಜನ ಪಾಲಾ. ನೃಪಸ್ಯ ರಾಜ: ಅಂಶ: | 2. ರಾಜಪುತ್ರ, ರಾಜನ ಮಗ.

ನೃಪಾತ್ಮಜ ನೃಪಾತ್ಮಜ (ಫಂ) ರಾಜನ ಮಗ, ರಾಜ ಕುಮಾರ. ನೃಪಸ್ಯಾತ್ಮಜ: | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಆತ್ಮಜಾ -ಆತ್ಮಜಾ. ರಾಜಕುಮಾರಿ.

ನೃಪಾಧಿವರ ನೃಪಾಧಿವರ (ಫಂ) ರಾಜನು ಮಾಡಬೇಕಾದ ರಾಜಸೂಯ ಯಾಗ. ನೃಪಕರ್ತವ್ಯೋಧಿವರ: |

ನೃಪಾನ್ವ ನೃಪಾನ್ವ (ನಂ) ರಾಜಸಂಬಂಧವಾದ ಅನ್ನ. ರಾಜೋನ್ವಮ್ |

ನೃಪಾಭೀರ ನೃಪಾಭೀರ (ನಂ) ರಾಜನ ಭೋಜನ ಸಮಯ ವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಒಂದು ವಾದ್ಯ. ನೃಪಮಭೀರಯತಿ-ಅಭಿ+ ಇರ (ಗತೌ) “ಕ:” (3-1-135) |

ನೃಪಾಮಯ ನೃಪಾಮಯ (ಫಂ) ರಾಜಯಕ್ಷ್ಮರೋಗ, ಕ್ಷಯ ರೋಗ. ಅಮಯಾನಾಂ ನೃಪ: ರಾಜದಂತಾದಿಂ ಪೂರ್ವನಿಪಾತ: |

ನೃಪಾಲ ನೃಪಾಲ (ಫಂ) ರಾಜ. ದೊರೆ. ನೃನ್ ಪಾಲಯತಿ- ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಕ್ “ಅನ್” (3-2-1) | “ಭವಂತು ತಾವತ್ತವ ಲೋಚನಾಂಚಲಾ ನಿಪೇಯನೇಪಾಲನೃಪಾಲಪಾಲಯ:” ನೈಷಂ 12-43 |

ನೃಪಾಸನ ನೃಪಾಸನ (ನಂ) ರಾಜನ ಸಿಂಹಾಸನ. ನೃಪಸ್ಯಾಸ- ನಮ್ | “ಯಮಸ್ಯಾಪಿಚ್ಚಕ್ಷಿತಪತ್ರನೇತ್ರೋ ಸಿಂಹಾಸನಾಶಾಂ ಪರಿಹೃತ್ಯ ದ್ವರಾತ್” ಭಾಗಂ 3-1-26 |

ನೃಪಾಹ್ವಯ ನೃಪಾಹ್ವಯ (ಫಂ) ರಾಜೀರುಳ್ಳಿ.

ನೃಮಿಥುನ ನೃಮಿಥುನ (ನಂ) ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ಜೋಡಿ.

ನೃಮೇಧ ನೃಮೇಧ (ಫಂ) ನರಮೇಧ, ನರಯಜ್ಞ.

ನೃಯಜ ನೃಯಜ್ಞ (ಫಂ) ಗೃಹಸ್ಥನು ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಮಾಡ ಬೇಕಾದ ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ಅತಿಥಿ ಪೂಜಾರೂಪವಾದ ಯಜ್ಞ. ನು: ಯಜ್ಞ: | (1) ಋಷಿ ಯಜ್ಞ, (2) ದೇವಯಜ್ಞ, (3) ಭೂತಯಜ್ಞ, (4) ನೈರಯಜ್ಞ ಮತ್ತು (5) ಪಿತೃಯಜ್ಞ ಇವು ಪಂಚ ಮಹಾಯಜ್ಞಗಳು. “ಋಷಿಯಜ್ಞಂ ದೇವಯಜ್ಞಂ ಭೂತಯಜ್ಞಂ ಪಿತೃಯಜ್ಞಂ ನೈರಯಜ್ಞಂ ಚ ಯಥಾಶಕ್ತಿ ನ ಹಾಪಯೇತ್” ಗಾಂ 4-21 | ಮೇದಾಧ್ಯಯನವು ಋಷಿಯಜ್ಞ. ತರ್ಪಣವು ಪಿತೃಯಜ್ಞ. ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯವು ದೇವಯಜ್ಞ. ಬಲಿದಾನವು ಭೂತಯಜ್ಞ. ಅತಿಥಿ ಸತ್ಕಾರವು ನೈರಯಜ್ಞ.

ನೃವಾಹನ ನೃವಾಹನ (ಫಂ) ಮನುಷ್ಯನೇ ವಾಹನವಾಗಿ ಉಳ್ಳ ಕುಬೇರ. ನಾ ವಾಹನಮಸ್ಯ |

ನೃಶಂಸ ನೃಶಂಸ (ವಿಂ) ಘಾತಕ, ಕೊರ. ಇತರರಿಗೆ ತೊಂದರೆಯುಂಟುಮಾಡುವವನು. ನನ್ ಶಂಸತಿ-ಶಂಸು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಅನ್” (3-2-1) | “ಯೇ ನೃಶಂಸಾ ದುರಾತ್ಮಾನ: ಪ್ರಾಣಿನಾಂ ಪ್ರಾಣನಾಶಕಾ: | ತದ್ವೇಜನೀಯಾ ಭೂತಾನಾಂ ವ್ಯಾಲಾ ಇವ ಮವಂತಿ ತೇ” ಪಂಚತಂ 3-135 |

ನೃಷದ್ ನೃಷದ್ (ಫಂ) ಪರಮಾತ್ಮ. ನರಿ ಸಿದ್ಧಿತಿ ಅಂತರ್ಯಾಮಿ- ತಯಾ-ಷದ್ಲ್ (ವಿಶರಣಗತ್ಯವಸಾದನೇಷು) “ಕ್ವಿಪ್” (3-2-61) |

ನೃಸಿಂಹ ನೃಸಿಂಹ (ಫಂ) 1. ಮನುಷ್ಯ ಮತ್ತು ಸಿಂಹದ ಆಕಾರವನ್ನು ಹೊಂದಿದ ಪರಮಾತ್ಮನ ಒಂದು ಅವತಾರ. ನಾ ಚಾಸೌ ಸಿಂಹಶ್ಚ | “ನರಸಿಂಹ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ. “ಸದಾಂಕ್ಷತಾಭಿವ್ರಜನೇನ ವಿಭ್ರತಾ ನೃಸಿಂಹ ಸೇಹಿಮತನುಂ ತನುಂ ತವಯಾ” ಮಾಘಂ 1-49 | 2. ಪುರುಷಶ್ರೇಷ್ಠ.

ನೃಸಿಂಹಚತುರ್ದಶಿ ನೃಸಿಂಹಚತುರ್ದಶಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೈಶಾಖ ಶುಕ್ಲ ಚತುರ್ದಶಿ, ಮಹಾವಿಷ್ಣುವು ನೃಸಿಂಹ ರೂಪದಿಂದ ಅವತರಿಸಿದ ದಿನ. ನೃಸಿಂಹಸ್ಯಾವಿರ್ಭವದಿನಂ ಚತುರ್ದಶಿ | “ವೈಶಾಖೇ ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷೋ ಚ ಚತುರ್ದಶ್ಯಾಂ ಮಹಾತಿಥಿ | ಸಾಯಂ ಪ್ರಹ್ಲಾದಧಿವ್ಯಾಕಾರಮಸಹಿಷ್ಣು: ಪರೋ ಹರಿ: | ಸದ್ಯ: ಕಡಕಟಾ- ಶಬ್ದವಿಷ್ಮಾಪಿತಸಭಾಜನ: | ಲೀಲಯಾಸ್ತಮ್ಭಗಭಿಂತಾದುಙ್ಗತ: ಶಬ್ದಭಿಷಣ: | ನೃಹರೇರವತಾರಾತ್ತಾಂ ಯತ್ತತ: ಸಮುಪೋಷಯೇತ್ | ಮಹಾಪುಣ್ಯತಮಾಯಾಚ್ಚ ಸಾಯಂ ವಿಷ್ಣುಂ ಪ್ರಪೂಜಯೇತ್” |

ನೃಸಿಂಹಪುರಾಣ ನೃಸಿಂಹಪುರಾಣ (ನಂ) ಹದಿನೈದು ಉಪ ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲೊಂದು.



ನುಸೇನ(ನಾ) ನೃಸೇನ(ನಾ) (ಸ್ತ್ರೀನಂ) ಮನುಷ್ಯರ ಸೇನೆ.  
ನೃಣಾಂ ಸೇನಾ । ವಾ ಕಲಿಬತ್ವಮ್ (೨-೪-೨೫) ।

ನುಸೋಮ ನೃಸೋಮ (ಪುಂ) ಪುರುಷಶ್ರೇಷ್ಠ, ಉತ್ತಮ  
ಪುರುಷ. ನಾ ಸೋಮ ಇವ । “ತಥೇತೃಪಸ್ಪೃಶ್ಯ ಪಯಃ ಪವಿತ್ರಂ  
ಸೋಮೋದ್ಭವಾಯಾಃ ಸರಿತೋ ನುಸೋಮಃ” ರಘುಂ ೫-೫೯ ।

ನುಹರಿ ನೃಹರಿ (ಪುಂ) ನರಸಿಂಹಾವತಾರವೆತ್ತಿದ ಮಹಾ  
ವಿಷ್ಣು. ನಾ ಚಾಸೌ ಹರಿಶ್ಚ । “ತಂ ಮನ್ಯಮಾನೋ ನಿಜವೀರ್ಯ-  
ಶಕ್ತಿಕೃತಂ ತದಸ್ತಮುಕ್ತೋ ನುಹರಿ ಮಹಾಸುರಃ” ಭಾಗಂ ೭-೮-೨೭ ।

ನೆಜಕ ನೇಜಕ (ಪುಂ) 1. ರಜಕ, ಅಗಸ. ನಿಜಿರ್ (ಶೌಚ-  
ಪೋಷಣಯೋಃ) “ಫಲ್” (೩-೧-೧೩೩) । “ಶಾಲ್ಮಲೀಫಲಕೇ  
ಶ್ಲಕ್ಷಣೇ ನೇನಿಜ್ಯಾನ್ವೇಜಕಃ ಶನಃ । ನ ಚ ವಾಸಾಂಸಿ ವಾಸೋಭಿ-  
ನಿಹೀರೆತ್ ನ ಚ ವಾಸಯೇತ್” ಮನುಂ ೮-೩೯೬ । (ವಿಂ)  
2. ಬಟ್ಟೆ ಒಗೆಯುವವನು.

ನೆಜನ ನೇಜನ (ನಂ) 1. ಬಟ್ಟೆ ಒಗೆಯುವುದು. 2. ಶುಚಿ  
ಯಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ನಿಜಿರ್ (ಶೌಚಪೋಷಣಯೋಃ)  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । 3. ಅಗಸನ ಮನೆ. ನಿಜಿರ್  
ಅಧಿಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭) ।

ನೆತಿಕರ್ಮ ನೇತಿಕರ್ಮ (ನಂ) ಹಠಯೋಗದ ಒಂದು ಭೇದ.  
ವಿತಸ್ತಿಪ್ರಮಾಣದ ಗಂಟಿಲ್ಲದೆ ಸುಸ್ಥಿಗೃಹದ ದಾರವನ್ನು  
ಒಂದು ನಾಸಾರಂಧ್ರದೊಳಗೆ ಹಾಕಿ ಬಾಯಿಮೂಲಕ  
ಹೊರಕ್ಕೆ ತೆಗೆಯಬೇಕು. ಮೂಗಿನೊಳಕ್ಕೆ ಹಾಕಿದ ದಾರ  
ವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅಡಿಸಿದರೆ ಒಳಗಿರುವ ಕಫ ಮೊದಲಾದ  
ಕಶ್ಮಲವೆಲ್ಲ ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಂದು ತಲೆಯು ಶುದ್ಧವಾಗುವುದು.  
“ಸೂತ್ರಂ ವಿತಸ್ತಿ ಸುಸ್ಥಿಗಂ ನಾಸಾನಾಲೇ ಪ್ರವೇಶಯೇತ್ । ಮುಕ್ತಾ-  
ಗ್ನಿಗಮಯೇಚ್ಛೇಷಾ ನೇತಿಃ ಸಿದ್ಧೇರ್ನಿಗದ್ಯತೇ” ಹಠಂ ೨-೨೯ ।  
ಇದರಿಂದ ಕಪಾಲಶುದ್ಧಿಯುಂಟಾಗುವುದಲ್ಲದೆ ದಿವ್ಯದೃಷ್ಟಿ  
ಯುಂಟಾಗಿ ಸ್ಕಂಧಸಂಧಿಯ ಸಕಲ ರೋಗಗಳೂ ನಿವಾರಣೆ  
ಹೊಂದುವುವು. “ಕಪಾಲಶೌಧಿನಿ ಚೈವ ದಿವ್ಯದೃಷ್ಟಿ-  
ಪ್ರದಾಯಿನಿ । ಜನ್ಮಧ್ವಜಾತರೋಗೌಘಂ ನೇತಿರಾಶು ನಿಹಂತಿ ಚ”  
ಹಠಂ ೨-೩೦ ।

ನೆತು ನೇತು (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ನಯತಿ ತಚ್ಛಿಲೋ ನಿರ್ವಹತಿ  
ನಿಯುಕ್ತಂ ಕರೋತಿ—ಗಿಂ (ಪ್ರಾಪಣೇ) “ತನ್” (೩-೨-೧೩೫) ।  
“ಭಕ್ತೇನಿಯುಕ್ತಂ ಯತ್ಕರ್ಮ ನೇತಾ ತತ್ಕರಣಾದಪಿ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ ।  
“ನ್ಯಾಯೋ ನೇತಾ ಸಮೀರಣಃ” ವಿಂ ಸಂ । 2. ಒಡೆಯ, ಪ್ರಭು,  
ಯಜಮಾನ, ಸ್ವಾಮಿ. ಗಿಂ “ತು” (೩-೧-೧೩೩) ।  
“ಸ ರಾಜಾ ಪುರುಷೋ ದಂಡಃ ಸ ನೇತಾ ಶಾಸಿತಾ ಚ ಸಃ ।  
ಚತುರ್ಗಮಾಶ್ರಮಾಣಾಂ ಚ ಧರ್ಮಸ್ಯ ಪ್ರತಿಭುಃ ಸ್ಮೃತಃ” ಮನುಂ ೭-೧೭ ।  
3. ನಾಯಕ, ಅಳುವವನು, ದೊರೆ. “ನೇತಾರಿಲೋಕೇ

ಕರೋತಿ ಯದ್ವತ್ತತಚ್ಛಕಾರಾಸ್ಯ ಶರೇಷು ಶಮ್ಭುಃ” ಕಿರಾಂ  
೧೭-೨೭ । “ಆಸಂಪ್ರೋಷಯೋ ನೇತುರ್ನಿತ್ಯಮಸ್ತೇಹದೀಪಿಕಾಃ”  
ರಘುಂ ೪-೭೫ । 4. ಮುಂದಾಳು, ಮಾರ್ಗದರ್ಶನ ಮಾಡು-  
ವವನು, ಗುಂಪಿನ ಯಜಮಾನ. “ರಸಸ್ಯೈಕಸ್ಯ ಭೃಂಸ-  
ಸ್ತಥಾ ನೇತುರ್ಮಹಿಭೃತಃ” ಮಾಘಂ ೨-೮೭ । 5. ಕಾರ್ಯ  
ನಿರ್ವಾಹಕ, ಕಾರ್ಯ ನಡೆಸುವವನು. “ದ್ರವ್ಯಂ ಜಿಗೀಷು-  
ಮಧಿಗಮ್ಯ ಜಡಾತ್ಮನೋಽಪಿ ನೇತುರ್ಯಶಸ್ವಿನಿ ಪದೇ ನಿಯತಾ  
ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ” ಮೃದಾಂ ೭-೧೪ । 6. ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಕಥಾನಾಯಕ.  
“ತ್ಯಾಗೀ ಕೃತೀ ಕುಲೀನಃ ಸುಶ್ರೀಕೋ ರೂಪಯಿವನೋತ್ಸಾಹೀ ।  
ದಕ್ಷೋನ್ಮುರಕ್ತಲೋಕಃ ತೇಜೋವೈದಧ್ಯಶೀಲವಾನ್ವೇತಾ” ಸಾಂ ೬೦  
೩-೩೦ । (ವಿಂ) 7. ಒಯ್ಯುವವನು, ಕರೆದುಕೊಂಡು  
ಹೋಗುವವನು, ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಹೋಗುವವನು. “ನೆತ್ರಾ  
ನೀತಾಃ ಸತತಗತಿನಾ ಯದ್ವಿಮಾನಾಗ್ರಭೂಮೀರಾಲೇಖ್ಯಾನಾಂ ನವಜಲ-  
ಕಗೈರ್ದೋಷಮುತ್ಪಾದ್ಯ ಸಃ” ಮೇಘಂ ೨-೬ । ನಕ್ಷತ್ರಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ನೇತು  
ವದಕ್ಕೆ ಬಹುವ್ರೀಹಿಯಲ್ಲಿ “ಅಪ್” (ವಾಂ ೫-೪-೧೧೫)  
ಬರುವುದು. ಮೃಗೋ ನೇತಾ ಯಾಸಾಂ ತಾಃ ಮೃಗನೆತ್ರಾ ರಾತ್ರಯಃ ।  
ಎವಂ ಪುಣ್ಯನೆತ್ರಾಃ । ಇತ್ಯಾದಿ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೫) ।  
ನೆತ್ರೀ ನೇತ್ರೀ.

ನೆತ್ರ ನೇತ್ರ (ನಂ) 1. ಲೋಚನ, ನಯನ, ಕಣ್ಣು.  
ನೀಯತೇಜೇನ—ಗಿಂ (ಪ್ರಾಪಣೇ) “ಙ್” (೩-೨-೧೮೨) ।  
“ನೆತ್ರಾಣಾಂ ಮದಶ್ಚಿರಕ್ಷತೇವ ತಸ್ಯೋ ಚಕ್ಷುಷ್ಯಃ ಕ್ಷಲು ಮಹತಾಂ  
ಪರೇರಲಕ್ಷ್ಯಃ” ಮಾಘಂ ೮-೫೭ । 2. ಮೊಸರು ಕಡೆಯುವ  
ಹಗ್ಗ. 3. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. “ವಿಸ್ತಾರಿತಃ ಕುಂಜರಕರ್ಣ-  
ತಾಲೇನೇತ್ರಕಮೇಣೋಪರೋವ ಸೂರ್ಯಮ್” ರಘುಂ ೭-೩೯ । “ವಾಸಃ  
ಪರಂ ನೇತ್ರಮಹಂ ನ ನೇತ್ರಂ ಕಿಮು ತ್ವಮಾಲಿಂಗಯ ತನ್ಮಯಾಪಿ” ನೈಷಂ  
೭-೮ । 4. ಮರದ ಬುಡ. 5. ರಥ, ಗಾಡಿ. 6. ಒಚ್ಚಕಾರಿ,  
ಬಸ್ತಿ, ಮಲನಾಲದೊಳಕ್ಕೆ ದ್ರವ ವಸ್ತುವನ್ನು ಬಿಡುವ  
ಕೊಳವೆ. 7. ಎರಡು ಸಂಖ್ಯೆ. (ಪುಂ) 8. ನಾಯಕ,  
ಯಜಮಾನ, ಮುಂದಾಳು. 9. ನಕ್ಷತ್ರ. “ನೆತ್ರೋ ನೇತರಿ”  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । (ವಿಂ) 10. ಒಯ್ಯುವವನು, ಮುಂದೆ  
ಸಾಗಿಸುವವನು, (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೇತ್ರೀ ನೇತ್ರೀ 11. ನಾಡಿ, ನರ.  
12. ನದಿ, ಹೊಳೆ. 13. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. “ನೆತ್ರಂ ವಸ್ತ್ರೇ ಮಥೋಗುಣೇ ।  
ಮೂಲಾಕ್ಷಿಣೇತುಷು” ಹೇಮಂ । “ನೆತ್ರಂ ಮಧಿಗುಣೇ ವಸ್ತ್ರಮೇದೇ ಮೂಲೇ  
ದ್ರುಮಸ್ಯ ಚ । ರಥೇ ಚಕ್ಷುಷಿ ನದ್ಯಾಂ ಚ ನೇತ್ರೀ ನಾಡ್ಯಾಂ ಚ ಯೋಷಿತಿ”  
ಮೇದಿಂ ।

ನೆತ್ರಕೋಶ ನೇತ್ರಕೋಶ (ಪುಂ) ಕಣ್ಣುಗುಡ್ಡ.

ನೆತ್ರಚ್ಛದ ನೇತ್ರಚ್ಛದ (ಪುಂ) ಕಣ್ಣಿನ ರೆಪ್ಪೆ. ನೇತ್ರೇ ಚಾಪತೇಜೇನ  
—ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ) + ನಿಚ್ “ಛಃ” (೩-೩-೧೧೮) ।



ನೆತ್ರಪರ್ಯಂತ ನೇತ್ರಪರ್ಯಂತ (ಪುಂ) 1. ಕಣ್ಣಿನ ತುದಿ, ಕಡೆಗಣ್ಣು. ನೆತ್ರಯೋ: ಪರ್ಯಂತ:। (ವಿಂ) 2. ಕಣ್ಣಿನವರೆಗೂ ಇರುವ.

ನೆತ್ರಪಾಕ ನೇತ್ರಪಾಕ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ನೇತ್ರರೋಗ.

ನೆತ್ರಪಿಂಡ ನೇತ್ರಪಿಂಡ (ಪುಂ) ಕಣ್ಣಿನ ಗುಡ್ಡೆ. ನೆತ್ರಸ್ಯ ಪಿಂಡ:।

ನೆತ್ರಬಂಧ ನೇತ್ರಬಂಧ (ಪುಂ) ಹಿಂದುಗಡೆಯಿಂದ ಬಂದು ತಿಳಿಯದಂತೆ ಕಣ್ಣು ಮುಚ್ಚಿ ಆಡುವ ಕಣ್ಣುಮುಚ್ಚಾಳೆ ಅಥ. ನೆತ್ರಯೋರ್ಬಂಧ:। "ಅಸ್ಪೃಶ್ಯನೆತ್ರಬಂಧಾಢಿ: ಕ್ವಚಿನ್ಮಗ-ಖಗೇಹ್ಯಾ" भाग० १०-१८-१४।

ನೆತ್ರಮಲ ನೇತ್ರಮಲ (ನಂ) ಕಣ್ಣಿನ ಪಿಸುರು. ನೆತ್ರಯೋರ್ಮಲಮ್।

ನೆತ್ರಯೋನಿ ನೇತ್ರಯೋನಿ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ನೆತ್ರಮತ್ತಿನೇತ್ರ-ಮುತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನಂ यस्य। 2. ಇಂದ್ರ. ನೆತ್ರಾಪಿ ಯೋನಯ ಇವಾಸ್ಯ।

ನೆತ್ರರಂಜನ ನೇತ್ರರಂಜನ (ನಂ) ಕಾಡಿಗೆ, ಕಣ್ಣಿನ ಕಪ್ಪು. ನೆತ್ರೇ ರಂಜಯೇನ — ರಂಜ (ರಾಗೇ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (३-३-११७)।

ನೆತ್ರರಂಜ ನೇತ್ರರಂಜ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೇತ್ರರೋಗ.

ನೆತ್ರರೋಗ ನೇತ್ರರೋಗ (ಪುಂ) ಕಣ್ಣಿಗೆ ಬರುವ ರೋಗ.

ನೆತ್ರೋ(ಲೋ)ಮನ್ ನೇತ್ರೋ(ಲೋ)ಮನ್ (ನಂ) ಕಣ್ಣಿನ ರೆಪ್ಪೆಯ ಕೂದಲು. ನೆತ್ರಸ್ಯ ರೋಮ ಲೋಮ ವಾ।

ನೆತ್ರವಸ್ತ್ರ ನೇತ್ರವಸ್ತ್ರ (ನಂ) ಕಣ್ಣಿನ ರೆಪ್ಪೆ. ನೆತ್ರಯೋ: ವಸ್ತ್ರ-ಮಿವ।

ನೆತ್ರವಿಷ್ ನೇತ್ರವಿಷ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಣ್ಣಿನ ಮಲ, ಕಣ್ಣಿನ ಪಿಸುರು.

ನೆತ್ರವಿಷ ನೇತ್ರವಿಷ (ಪುಂ) ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ನೆತ್ರೇ ವಿಷ-ಯಸ್ಯ। "ದೃಷ್ಟಿನಿ:ಶ್ವಾಸವಿಷಾ: ಸರ್ಪಾ:" सुश्रुत०। "आशी-विषान् नेत्रविषान् कोपयेन्न च पण्डित:" भा० सभा०।

ನೆತ್ರಸ್ತಂಭ ನೇತ್ರಸ್ತಂಭ (ಪುಂ) ಕೂರವಾಗಿ ನೋಡುತ್ತ ಕಣ್ಣನ್ನು ಮುಚ್ಚದೆ ತೆರೆದುಕೊಂಡಿರುವುದು. ನೆತ್ರಯೋ: ಸ್ತಂಭ:।

ನೆತ್ರಾಂತ ನೇತ್ರಾಂತ (ಪುಂ) ಕಣ್ಣಿನ ಕೊನೆಯ ಭಾಗ, ಕಡೆ ಗಣ್ಣು. ನೆತ್ರಯೋರಂತ:।

ನೆತ್ರಾಭಿಷ್ಯಂದ ನೇತ್ರಾಭಿಷ್ಯಂದ (ಪುಂ) ಕಣ್ಣೆರಡು ಸೋರು ವುದು, ಒಂದು ವಿಧ ನೇತ್ರರೋಗ. ನೆತ್ರಯೋರಭಿಷ್ಯಂದ:। ಇದೊಂದು ಸಾಂಕ್ರಾಮಿಕ (ಅಂಟು) ರೋಗ. ಪದೇ ಪದೇ ಪರಸ್ಪರ ಅಂಗಸ್ಪರ್ಶ, ಒಬ್ಬನ ಉಸಿರನ್ನು ಇನ್ನೊಬ್ಬನು ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕುಳಿತು ಊಟಮಾಡುವುದು ಒಂದೇ ಹಾಸಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಮಲಗುವುದು ಒಂದೇ ಆಸನದಲ್ಲಿ

ಕೂಡುವುದು ಮುಂತಾದವುಗಳಿಂದ ಕುಷ್ಠ, ಜ್ವರ, ಶೋಭೆ (ಊತ) ನೇತ್ರಾಭಿಷ್ಯಂದ ಮುಂತಾದ ರೋಗಗಳು ಅಂಟು ವುವು. "प्रसङ्गात् गात्रसंस्पर्शात् निःश्वासात् सह-भोजनात्। सह शय्यासनान्चापि वस्त्रमाल्यानुलेपनात्। कुष्ठं ज्वरश्च शोथश्च नेत्राभिष्यन्द एव च। औपसर्गिक-रोगाश्च संक्रामन्ति नराक्षरम्" सुश्रुत०।

ನೆತ್ರಾಮಯ ನೇತ್ರಾಮಯ (ಪುಂ) ನೇತ್ರರೋಗ.

ನೆತ್ರಾಂಬು ನೇತ್ರಾಂಬು (ನಂ) ಕಣ್ಣೆರು.

ನೆತ್ರೀ ನೇತ್ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನದಿ, ಹೊಳೆ. 2. ನಾಡಿ, ನರ. 3. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. ಣಿವ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಫ್ಲನ್" (३-२-१८२)। "ಡಿಷ್" (४-१-४१)। 4. ಒಯ್ಯುವ ಹೆಂಗುಸು. ನೆತ್ "ಡಿಪ್" (४-१-५)।

ನೆದಿಷ್ಠ ನೇದಿಷ್ಠ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ. ಅತಿಶಯೇನಾಂತಿಕ: "इष्टन्" (५-३-५५)। ನೇದಾदेश: (५-३-६३)।

ನೆದೀಯಸ್ ನೇದೀಯಸ್ (ವಿಂ) ಅತ್ಯಂತ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ, ಬಹಳ ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರುವ. ಅತಿಶಯೇನಾಂತಿಕ: "ईयसुन्" (५-३-५७)। ನೇದಾदेश: (५-३-६३)। "निर्वेशनीय: सविशेषमासीन्नेदीयसां नेत्रचकोरवृन्दै:" याद० १३-१९। स्त्रियां "डीप्" (४-१-६)। -यसी-यसि०. "नेदीयसीं तव निशम्य विभातनान्दीम्" याद० १९-१०।

ನೆಪ ನೇಪ (ಪುಂ) 1. ಪುರೋಹಿತ. (ನಂ) 2. ಜಲ, ನೀರು.

ನೆಪಥ್ಯ ನೇಪಥ್ಯ (ನಂ) 1. ಅಲಂಕಾರ, ಭೂಷಣ, ಆಭರಣ, ಒಡವೆ. ನೆ: ನೇತಾ, ತಸ್ಯ ಪಥ್ಯಮ್। "तेषां महार्हासन-संस्थितानामुदारनेपथ्यभृतां स मध्ये" रघु० ६-६। 2. ಆಭರಣಗಳನ್ನು ತೊಡುವುದು, ವೇಷ ಹಾಕಿಕೊಳ್ಳು ವುದು. "निर्नाभिकोशेयमुपात्तबाणमभ्यङ्गनेपथ्यमल-कार" कुमा० ७-७। 3. ರಂಗಭೂಮಿಯ ಹಿಂಭಾಗ, ಪರದೆಯ ಒಳಭಾಗ, ಪಾತ್ರಗಳಿಗೆ ವೇಷ ಭೂಷಣಾದಿಗಳ ಕಾರ್ಯದ ಮತ್ತು ಕುಶಿಲವ (ಗಾಯಕ) ರು ಕೂಡುವ ಸ್ಥಳ. "कुशीलवकुटुम्बस्य स्थली नेपथ्यमिष्यते"।

ನೆಪಾಲ ನೇಪಾಲ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ದೇಶ. ಈ ದೇಶವು ನಮ್ಮ ಭಾರತರಾಷ್ಟ್ರಕ್ಕೆ ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವುದು. (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 2. ನೇಪಾಲ ದೇಶದ ಜನರು. (ನಂ) 3. ತಾಮ್ರ ರೋಹ.

ನೆಪಾಲಜಾ ನೇಪಾಲಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೇಪಾಲ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಂಜಿರಿ.



ನೇಪಾಲಿಕಾ ನೇಪಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೆಣಶಿಲೆ.

ನೇಮ ನೇಮ (ಪುಂ) 1. ಕಾಲ. ಸಮಯ. 2. ಅವಧಿ. ಗಡು.

3. ಹಳ್ಳ, ಗುಳಿ. 4. ಪ್ರಕಾರ. ಸುತ್ತುಗೋಡೆ.

5. ಕಪಟ, ಮೋಸ, ವಂಚನೆ. 6. ಅರ್ಧ, ಒಂದು ಭಾಗ.

“ನೇಮಸ್ತವೈ ಪ್ರಾಕಾರಗತಯೋಃ | ಅವಧೌ ಕೇತವೇ ಕಾಲೇ” ಹೇಮಂ |

“ಸಪ್ತಲೋಕಿನಿರ್ವಾಹಕೋರಕಿತನೇಮಕಟಾಕ್ಷಲೀಲಾಮ್” ಶ್ರೀಸ್ತುತಿಃ |

ನೇಮಿ ನೇಮಿ (ಪುಂ) 1. ರಥದ ಚಕ್ರದ ಅಂಚು. ನಯತಿ

ರಥಮ್—ಗಿಜ್ (ಪ್ರಾಪಣ) “ಮಿಃ” (ತಂ ೪-೪೩) |

“ನೀರ್ವೇಗಚ್ಛತ್ಯುಪರಿ ಚ ದಶಾ ಚಕ್ರನೇಮಿಕ್ರಮೇಣ” ಮೇಘಂ ೨-೪೬ |

2. ತಿನಿಶವೃಕ್ಷ, ನೆಮ್ಮಿಗಿಡೆ. 3. ಬಾವಿಯಿಂದ ನೀರನ್ನು

ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆಯಲು ಹಾಕಿರುವ ರಾಟೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾ

“ಜಿಃ” (ಗಂ ೪-೧-೪೫) | -ಮಿ-ವಿ. 4. ಬಾವಿಯ

ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಸಮಸ್ಥಳ.

ನೇಮಿಶ ನೇಮಿಶ (ನಂ) ನೈಮಿಶವೆಂಬ ಒಂದು ಅರಣ್ಯ.

ನೇಮಿಃ ಶೀಯತೇತ್ರ—ಶ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಅಧಿಂ “ಡಃ” ಬಾಹುಂ |

ನೇಯಾರ್ಥತಾ ನೇಯಾರ್ಥತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರೂಢಿ ಪ್ರಯೋಜನ

ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲದೆ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಲಕ್ಷ್ಯಾರ್ಥವನ್ನು ಹೇಳುವುದು.

ನೇಯಃ ನ್ಯಾಯರಾಹಿತೀನ ಸ್ವೇಚ್ಛಯಾ ಕಲ್ಪನೀಯೋರ್ಥೋ ಯಸ್ಯ, ತಸ್ಯ

ಭಾವಃ—“ತಲ್” (೫-೧-೧೧೯) | “ಕಮಲೇ ಚರಣಾಘಾತಂ

ಮುಖಂ ಸುಮುಖಿ ತೇಷ್ಕರೋತ್” ಸಾಂ ದಂ | ಇಲ್ಲಿ ಚರಣಾಘಾತ

ಪದದಿಂದ ಜಯರೂಪವಾದ ಅರ್ಥವು ಲಕ್ಷಣಾವೃತ್ತಿ

ಯಿಂದ ಲಭ್ಯವಾಗುವುದು. ಆದರೆ ರೂಢಿ ಪ್ರಯೋಜನ

ಗಳು ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ನೇಯಾರ್ಥರೂಪ

ದೋಷವಿರುವುದು.

ನೆಷ್ಟ ನೇಷ್ಟ (ವಿಂ) 1. ಇಷ್ಟವಲ್ಲದ. 2. ಒಳ್ಳೆಯದಲ್ಲದ.

ನ ಇಷ್ಟಃ | “ಅತಿಕಕ್ರುದಾಃ ಕೃಶದೇಹಾ ನೇಷ್ಟಾ ಹೀನಾಧಿಕಾ-

ಕ್ಷಯಶ್ಚ (ಗಾವಃ)” ಬೃಹತ್ಸಂ ೬೧-೪ |

ನೆಷ್ಟು ನೇಷ್ಟು (ಪುಂ) ಮಣ್ಣಿನ ಹೆಂಟೆ. “ಯಥಾ ಮಹಾರ್ಣವೇ

ಕ್ಷಿಪ್ತಃ ಕ್ಷಿಪ್ರಂ ನೇಷ್ಟುವಿನಶ್ಯತಿ” ಭಾಂ ಅನುಂ |

ನೇಸ್ವ ನೈಸ್ವ (ನಂ) ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ಬಡತನ. ನಿಃಸ್ವಸ್ಯ ಭಾವಃ

“ಅನ್” (೫-೧-೧೩೦) |

ನೇಸ್ವಯ ನೈಸ್ವಯ (ನಂ) ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ಬಡತನ. ನಿಃಸ್ವಸ್ಯ

ಭಾವಃ “ಽನ್” (೫-೧-೧೨೪) |

ನೈಕ ನೈಕ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ನ ಏಕಃ | ಮಾಯೆಯಿಂದ

ಅನೇಕ ರೂಪಗಳನ್ನು ತಾಳುವುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ

ಈ ಹೆಸರು. “ನೈಕಸ್ತು ಮಾಯಾಜನೇಕರೂಪತ್ವಾತ್ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ”

ಇತಿ ನಿರ್ಣಯಃ | “ಏಕೋ ನೈಕಃ ಸ ವಃ ಕಃ ಕಿಮ್” ವಿಂ ಸಂ |

(ವಿಂ) 2. ಅನೇಕ, ಬಹಳ.

ನೈಕಚರ ನೈಕಚರ (ವಿಂ) ಒಂಟಿಯಾಗಿ ಸಂಚರಿಸದಿರುವ.

ಅನೇಕರ ಗುಂಪಿನಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ. ನೈಕಃ ಚರತಿ |

ನೈಕಟಿಕ ನೈಕಟಿಕ (ವಿಂ) ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ.

ನಿಕಟೇ ವಸತಿ — “ಠಕ್” (೪-೪-೨೩) | “ಪರ್ವದ್ವಲಾನ್ ಮಹಾ-

ಬ್ರಹ್ಮರಾಟ್ ನೈಕಟಿಕಾಶ್ರಮಾನ್” ಭಟ್ಟಿಂ ೪-೧೨ |

ನೈಕಟ್ಯ ನೈಕಟ್ಯ (ನಂ) ಹತ್ತಿರ, ಸಮೀಪ್ಯ. ನಿಕಟಸ್ಯ

ಭಾವಃ “ಽನ್” (೫-೧-೧೨೪) | “ವಾಧತೇ ತತ್ತ್ವ ನೈಕಟ್ಯಾತ್

ಸರ್ವಂ ಸ ಮಗಧೇಶ್ವರಃ” ಕಥಾಸಂ |

ನೈಕದ ನೈಕದ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ನೈಕಾನಿ

ಅನೇಕಾನಿ ದದಾತಿ, ತಾದೃಶ್ಯಃ ಅಸಹಜೇಯಮಾಲಾಂಜನವಾಸಃ-

ಪ್ರಭೃತಿಬ್ರಹ್ಮಾಲಂಕಾರದಾಯಿನ್ಯೋ ಮುಕ್ತಾಭ್ಯುತ್ಥಾನವಿದೋ ದಿವ್ಯಾಪ್ಸ-

ರಸಃ ಸಂತಯಸ್ಯ | “ಬ್ರಹ್ಮಾಲಂಕಾರದಾಯಿನ್ಯೋ ಮುಕ್ತೇಶ್ವರೇ ಪರೇ

ಪದೇ | ದಿವ್ಯಾಶ್ವಾಪ್ಸರಸೋ ಯಸ್ಯ ನೈಕದಃ ಸ ಚ ಕಥ್ಯತೇ” ಇತಿ

ನಿರ್ಣಯಃ | “ಸುಖದೋ ನೈಕದೋಽಪ್ರಜಃ” ವಿಂ ಸಂ |

ನೈಕಧಾ ನೈಕಧಾ (ಅವ್ಯಂ) ಅನೇಕ ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ. ನೈಕ

ಪ್ರಕಾರೇ “ಧಾ” (೫-೩-೪೨) | “ಶೀರ್ಷಯೋಃ ಪತಿತಾ ವೃಕ್ಷಾ

ವಿಭಿಧುರ್ನೈಕಧಾ ತಯೋಃ” ಭಾಂ ವನಂ |

ನೈಕಭೇದ ನೈಕಭೇದ (ವಿಂ) ಅನೇಕ ಪ್ರಕಾರವಾದ. ನ ಏಕೋ

ಭೇದೋಽನ್ |

ನೈಕಮಾಯ ನೈಕಮಾಯ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ.

ನೈಕಾಃ ಮಾಯಾಃ ಮುಗಧಶಿಶುರೂಪಾರಿಮಿತಜಗನ್ನಿಗರಣನಿರಾಲಂಬ-

ನೈಕೋದಕವಟದಲಶಯನಾದನೇಕಾಶ್ಚರ್ಯಾಣಿ ಅಸ್ಯ | “ಮುಗಧಾರ್ಭಕತ್ವ-

ರೂಪೇಣ ಜಗನ್ನಿರ್ಭರಣಾದಪಿ | ವಟೇಕಪತ್ರಶಯನಾತ್ ನಿರಾಲಂಬಜಲೇ

ಮುಹುಃ | ಅನಂತಾಶ್ಚರ್ಯಸಂಯುಕ್ತೋ ನೈಕಮಾಯಸ್ತು ಸಃ ಸ್ಮೃತಃ” ಇತಿ

ನಿರ್ಣಯಃ | “ಯುಗಾದಿಕ್ರುದ್ಧಗಾವರ್ತೋ ನೈಕಮಾಯೋ ಮಹಾಶನಃ”

ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ಅನೇಕ ಪ್ರಕಾರವಾದ ಕಪಟ

ವ್ಯಾಪಾರವುಳ್ಳ.

ನೈಕರೂಪ ನೈಕರೂಪ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ನೈಕ

ರೂಪಂ ಯಸ್ಯ | ನೈಕಾನಿ ಅನೇಕಾನಿ ತತ್ತ್ವತ್ಸರ್ವಪ್ರತೀತಿಯೋಗ್ಯಾನಿ

ರೂಪಾಣ್ಯಸ್ಯ | “ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನಜ್ಞಾನಯೋಗ್ಯಂ ರೂಪಂ ಯಸ್ಯ ವಿಶೇಷತಃ |

ನೈಕರೂಪಃ ಸಮುದ್ರಿಷ್ಟಃ ಸರ್ವಪ್ರತ್ಯಯಗೋಚರಃ” ಇತಿ ನಿರ್ಣಯಃ |

“ನೈಕರೂಪೋ ಬೃಹದ್ವಿಷ್ಟಃ ಶಿಪಿವಿಷ್ಟಃ ಪ್ರಕಾಶನಃ” ವಿಂ ಸಂ |

(ವಿಂ) 2. ಅನೇಕ ರೂಪಗಳುಳ್ಳ.

ನೈಕವಿಧ ನೈಕವಿಧ (ವಿಂ) ಅನೇಕ ರೀತಿಯು, ಅನೇಕ

ಪ್ರಕಾರದ. “ಬಾಲೇಶ್ವರಾಧರೀತನೈಕವಿಧಪ್ರವಾಲೇ” ನೈಷಂ

೧೧-೧೦೪ |

ನೈಕಶೃಂಗ ನೈಕಶೃಂಗ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ನೈಕಾನಿ

ಶೃಂಗಾಣ್ಯಸ್ಯ | ಬುದ್ಧಿಯೋಗಃ ಸಾರಥ್ಯಮ್ ಅನಾಯುಧಗ್ರಹಣವ್ಯಾಜಃ



ಪ್ರಾಪ್ತಕಾಲೇ ತದ್ಗ್ರಹಣಂ चेति बहूनि वैरिबाधकान्यस्य  
शृङ्गाणि। "प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रः नैकशृङ्गो गदाग्रजः"  
वि० सं०।

**ನೈಕಾತ್ಮನ್ ನೈಕಾತ್ಮನ್** (ವಿಂ) ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ನೈಕ:  
ಆತ್ಮಾ ಸ್ವರೂಪಸ್ಯ। ಸರ್ಗಾದಿಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ತನ್ನ  
ವಿಭೂತಿಯಿಂದ ಅನೇಕ ರೂಪಗಳನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವುದರಿಂದ  
ಈ ಹೆಸರು. "ನೈಕಾತ್ಮಾನೇಕರೂಪತ್ವಾತ್ ಸರ್ಗಾದಿಪು ವಿಭೂತಿभिः"  
इति निरुक्तिः। "नैकात्मा नैककर्मकृत्" वि० सं०।  
"तदैक्षत बहुस्यां प्रजायेयेति" श्रुतिः।

**ನೈಗಮ ನೈಗಮ** (ವಿಂ) 1. ಉಪನಿಷತ್ತು, ವೇದಾಂತ, ಬ್ರಹ್ಮ  
ಪ್ರತಿಪಾದಕವಾದ ವೇದದ ಒಂದು ಭಾಗ. ನಿಗಮ ಏವ  
ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮)। 2. ವರ್ತಕ, ಕ್ರಯ  
ವಿಕ್ರಯಗಳಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ನಿಗಮೇ ಭವ: "ಅನ್"  
(೪-೩-೪೩)। "निर्धूतनिगमास्तत्र नैगमानपरान्तजान्"  
याद० २२-९८। 3 ನಯ, ನೀತಿ. 4. ಪೌರ, ನಗರ  
ದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವವನು. 5. ಉಪಾಯ. 6. ವೈದಿಕ  
ನಿಘಂಟುವಿನ ಒಂದು ಭಾಗ. "आद्यं नैघण्टुकं काण्डं  
द्वितीयं नैगमं तथा"। ನೈಗಮಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಏಕಾರ್ಥವಾಚಿ  
ಯಾದ ಅನೇಕ ಶಬ್ದಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಲಾಗಿದೆ. (ವಿಂ) 7.  
ವೇದಸಂಬಂಧವಾದ. "नैगमः स्यादुपनिषद्विजोनगिरेऽपि  
च" मेदि०।

**ನೈಗಮಿಕ ನೈಗಮಿಕ** (ವಿಂ) ವೇದದಲ್ಲಿರುವ, ವೇದದಲ್ಲಿ  
ವಿವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ.

**ನೈಘಂಟುಕ ನೈಘಂಟುಕ** (ನಂ) ಯಾಸ್ಮಿನ್ ನಿರುಕ್ತದಲ್ಲಿ  
ಪರ್ಯಾಯಶಬ್ದಗಳಿಗೆ ಅರ್ಥವಿವರಣೆ ಕೊಟ್ಟಿರುವ ಭಾಗ,  
ನಿರುಕ್ತದ ಮೊದಲನೆಯ ಮೂರು ಅಧ್ಯಾಯಗಳಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ನಿಘಂಟುಗ್ರಂಥದ ಮೊದಲನೆಯ ಕಾಂಡ.

**ನೈಚಿಕಿ ನೈಚಿಕೀ** (ಸ್ತೀಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಆಕಳು,  
ಉತ್ತಮಜಾತಿಗೆ ಸೇರಿದ ಹಸು. ನೈಚೈಶ್ವರತಿ — "ಠಕ್"  
(೪-೪-೮)।

**ನೈಜ ನೈಜ** (ವಿಂ) ತನ್ನದಾದ, ತನ್ನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ನಿಜ-  
ಸ್ಯದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ನೈತ್ಯ ನೈತ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ನಿತ್ಯಕರ್ಮ, ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಆಚರಿ  
ಸಲು ವಿಹಿತವಾದ ಕರ್ಮ. ನೈತ್ಯ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್"  
(೪-೪-೩೮)। 2. ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಕೊಡಲ್ಪಡುವ. ನೈತ್ಯ  
ದೀಯತೆ "ಅನ್" (೪-೧-೯೭)।

**ನೈತ್ಯಕ ನೈತ್ಯಕ** (ವಿಂ) ನಿತ್ಯಕರ್ಮ, ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಆಚರಿಸ  
ಬೇಕಾದ ಜಪ, ತಪಸ್ಸು, ಯಾಗ ಮುಂತಾದುದು. ನೈತ್ಯ

ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"। "नैत्यके नास्त्यनध्यायः ब्रह्मसूत्रं  
हि तत्स्मृतम्" मनु० २-१०६।

**ನೈದಾಘ ನೈದಾಘ** (ವಿಂ) ನಿದಾಘಸಂಬಂಧವಾದ, ಗ್ರೀಷ್ಮ  
ಯುತುಸಂಬಂಧವಾದ. ನಿದಾಘಸ್ಯದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।  
"हन्ता पुरां भूरि पृषत्कवर्षं निरास नैदाघ इवम्बु मेघः"  
किरा० १७-३२।

**ನೈದಾಘಿಕ ನೈದಾಘಿಕ** (ವಿಂ) ಗ್ರೀಷ್ಮತುಫವಿನಲ್ಲಿರುವ,  
ಗ್ರೀಷ್ಮತುಫವಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ನಿದಾಘೇ ಭವ: "ಠಕ್"  
(೪-೩-೧೧)।

**ನೈದಾನ ನೈದಾನ** (ವಿಂ) ನಿದಾನವನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ಕಾರಣ  
ವನ್ನು ಅರಿತವನು. ನಿದಾನಂ ವೇದ "ಅನ್" (೪-೨-೪೯)।

**ನೈದಾನಿಕ ನೈದಾನಿಕ** (ವಿಂ) 1. ರೋಗದ ಕಾರಣವನ್ನು  
ತಿಳಿದವನು. 2. ರೋಗದ ಕಾರಣವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಗ್ರಂಥ  
ವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು. ನಿದಾನಂ ರೋಗಕಾರಣಂ ವೇದ  
तत्प्रतिपादकग्रन्थमधीते वा "ಠಕ್" (೪-೨-೪೯)।

**ನೈದೇಶಿಕ ನೈದೇಶಿಕ** (ವಿಂ) ಸೇವಕ, ಅಜ್ಞೆಯಂತೆ ನಡೆಯು  
ವವನು, ಹೇಳಿದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವವನು.

**ನೈದ್ರ ನೈದ್ರ** (ವಿಂ) ನಿದ್ರೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ, ನಿದ್ರೆಯ  
ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಬಂದ. ನಿದ್ರಾಯಾ ಆಗತ: "ಅನ್"  
(೪-೩-೭೪)। "गच्छतः स्म मधुकंदमौ विभोर्यस्य  
नैद्रमुखविघ्नतां क्षणम्" माघ० १४-६८।

**ನೈಧನ ನೈಧನ** (ನಂ) 1. ಮರಣ, ನಿಧನ. ನಿಧನ ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಅನ್" (೪-೪-೩೮)। 2. ನೈಧನ ತಾರೆ. 3. ನಿಧನ  
ಸ್ಥಾನ, ಲಗ್ನದಿಂದ ಎಂಟನೆಯ ಸ್ಥಾನ. "शुद्धैर्द्वಾದशकेन्द्र-  
नैधनगृहैः पापैस्त्रिषण्ठायागैः" बृहत्सं ९८-१७।

**ನೈಪಾಲ ನೈಪಾಲ** (ವಿಂ) 1. ನೈಪಾಲ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ  
ಬೇವಿನಮರ. 2. ಮೆಣಶಿಲೆ. ನೈಪಾಲೇ ಭವ: ನೈಪಾಲಸ್ಯದಂ  
ವಾ "ಅನ್"। (ಸ್ತೀಂ) -ಲೀ-ಲೀ. 3. ನವಮಲ್ಲಿಕೆ,  
ಹೆಜ್ಜಾಜಿಗಿಡ. 4. ಕರಿಯ ಲಕ್ಕಿಗಿಡ. 5. ನೀಲಿಗಿಡ.

**ನೈಪಾಲಿಕ ನೈಪಾಲಿಕ** (ನಂ) ತಾಮ್ರಲೋಹ. ನೈಪಾಲೇ ಭವ:  
"ಠಕ್"।

**ನೈಪುಣ ನೈಪುಣ** (ನಂ) ಕುಶಲತೆ, ಜಾಣತನ. ನಿಪುಣಸ್ಯ  
ಕರ್ಮ ಭಾವೋ ವಾ "ಅನ್" (೪-೧-೧೩೦)। "प्रकटान्यपि  
नैपुणं महत्परवाच्यानि चिराय गोपितुम्" माघ० १६-३०।

**ನೈಪುಣ್ಯ ನೈಪುಣ್ಯ** (ನಂ) 1. ಕುಶಲತೆ, ಜಾಣತನ. 2. ಜಾಣನ  
ಕೆಲಸ. ನಿಪುಣಸ್ಯ ಭಾವ: ಕರ್ಮ ವಾ "ಫ್ಯಕ್" (೪-೧-೧೨೪)।

**ನೈಮಾಲ್ಯ ನೈಮಾಲ್ಯ** (ನಂ) ಗುಟ್ಟಾಗಿಡುವುದು, ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡು  
ವುದು, ಮುಚ್ಚಿಡುವುದು. ನಿಮಾಲ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ಫ್ಯಕ್"



(೪-೧-೧೨೪) । “ಕೇನಚಿತ್ತಾರಣೇನ ಮಯಾ ನೈಮಿತ್ಯ-  
ಮವಲಮ್ಬಿತಮ್” ಮಾಲಂ ೪ ।

**ನೇಮಿತ್ತ ನೈಮಿತ್ತ (ವಿಂ)** 1. ನಿಮಿತ್ತಸಂಬಂಧವಾದ,  
ಶುನದಲ್ಲಿ ಕಂಡುಬರುವ. 2. ನಿಮಿತ್ತಶಾಸ್ತ್ರಗ್ರಂಥದ  
ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ. ನಿಮಿತ್ತೇ ಭವಃ ನಿಮಿತ್ತಸೂಚಕಗ್ರಂಥವ್ಯಾಖ್ಯಾನೋ ವಾ  
“ಅಣ್” (೪-೩-೭೩) ।

**ನೇಮಿತ್ತಿಕ ನೈಮಿತ್ತಿಕ (ವಿಂ)** 1. ನಿಮಿತ್ತವನ್ನು ತಿಳಿ  
ದವನು. 2. ನಿಮಿತ್ತಶಾಸ್ತ್ರಗ್ರಂಥದ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡು  
ವವನು. ನಿಮಿತ್ತಂ ವೇತ್ತಿ ತತ್ರತಿಪಾದಕಗ್ರಂಥಮವೇತಿ ವಾ “ಠಕ್”  
(೪-೨-೬೦) । 3. ಒಂದು ಕಾರಣದಿಂದ ಬಂದ, ಕಾರಣ  
ವನ್ನು ಅಶ್ರಯಿಸಿ ಬಂದ. “ನಿಮಿತ್ತನೇಮಿತ್ತಿಕಯೋರಯಂ ಕ್ರಮಃ  
ತವ ಪ್ರಸಾದಸ್ಯ ಪುರಸ್ತು ಸಂಪದಃ” ಶಾಕ್ತಂ ೭-೩೦ । 4. ಒಂದು  
ಕಾರಣವನ್ನು ಅಶ್ರಯಿಸಿ ಬಂದ ಕರ್ಮ. ಸ್ನಾನ,  
ದಾನ, ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ ಮುಂತಾದುವು. ಗೃಹಸ್ಥಾನವು  
ನೈಮಿತ್ತಿಕ. ಪಾಪಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ದಾನವು  
ನೈಮಿತ್ತಿಕ. ರಜಸ್ವಲಾದಿ ಸ್ವರ್ಶ, ಅಬುದ್ಧಿಕ್ಯತ ಪಾಪ  
ಕಾರ್ಯ ಮುಂತಾದ ಕಾರಣಗಳಿಂದ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ  
ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತವು ನೈಮಿತ್ತಿಕ. “ನಿಮಿತ್ತಮಾತ್ರಮಾಶ್ರಿತೃ ಯೋ  
ಽಭಿಮಃ ಸಂಪ್ರವರ್ತತೇ । ನೇಮಿತ್ತಿಕಃ ಸ ವಿಜ್ಞೇಯಃ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ-  
ವಿಧಿಯಂಥಾ” ।

**ನೇಮಿತ್ತಿಕಪ್ರಲಯ ನೈಮಿತ್ತಿಕಪ್ರಲಯ (ವುಂ)** ಬ್ರಹ್ಮನ  
ಒಂದು ಹಗಲಿನ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಸಂಭವಿಸುವ ಪ್ರಳಯ,  
ಒಂದು ಸಾವಿರ ಚತುರ್ಯುಗಗಳ ಅನಂತರ ಉಂಟಾಗುವ  
ಪ್ರಳಯ. ಪ್ರಳಯವು ನಿತ್ಯ ನೈಮಿತ್ತಿಕ ಪ್ರಾಕೃತ ಮತ್ತು  
ಆತ್ಮಂತಿಕಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ.

ಪರಮಾತ್ಮನು ಒಂದು ಸಾವಿರ ಚತುರ್ಯುಗಗಳು  
ಕಳೆದನಂತರ ರುದ್ರರೂಪದಿಂದ ಸಕಲ ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನೂ  
ತನ್ನೊಳಗೆ ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವನು. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಒಂದು  
ನೂರು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಅನಾವೃಷ್ಟಿಯುಂಟಾಗಿ ಸಸ್ಯ  
ಗಳೆಲ್ಲವೂ ಸತ್ತಹೀನವಾಗಿ ಪ್ರಾಣಿಗಳೆಲ್ಲವೂ ತತ್ತರಿಸಿ  
ಹೋಗುವುವು. ಆಗ ಸೂರ್ಯನ ಏಳು ರಶ್ಮಿಗಳೆಲ್ಲಾ  
ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿರುವ ಸಮಸ್ತ ಜಲರಾಶಿಗಳನ್ನೂ  
ಪಾನಮಾಡುವನು. ಇದರಿಂದ ಭೂಮಿಯೆಲ್ಲವೂ ನೀರಸ  
ವಾಗುವುದು. ಸಕಲ ನದಿಗಳ ಸಮುದ್ರಗಳ ಮತ್ತು ಕೆರೆ  
ವೊದಲಾದ ಸಮಸ್ತ ಜಲಾಶಯಗಳ ನೀರನ್ನೂ ಎಳೆದು  
ಕೊಂಡು ಆ ಏಳು ಸೂರ್ಯರಶ್ಮಿಗಳು ಏಳು ಸೂರ್ಯ  
ರೂಪವನ್ನು ಹೊಂದಿ ಮೂರು ಲೋಕಗಳನ್ನೂ ದಹಿಸು  
ವುವು. ಈ ಸೂರ್ಯರಿಂದ ದಗ್ಧವಾದ ಮೂರು ಲೋಕ  
ಗಳೂ ಅಂಬರೀಷ (ಹುರಿಯುವ ಬಾಣಲೆ) ದಂತಾಗುವುವು.

ಈ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಅಧಿಕಾರವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡ ಮನ್ವಾದಿ  
ಗಳು ಜನಲೋಕವನ್ನು ಸೇರುವರು. ಹೀಗೆ ರುದ್ರರೂಪಿ  
ಯಾದ ವಿಷ್ಣುವು ಜಗತ್ತೆಲ್ಲವನ್ನೂ ದಹಿಸಿ ತನ್ನ ನಿಶ್ವಾಸ  
ದಿಂದ ಮೇಘಗಳನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸುವನು. ಈ ಮೇಘಗಳೆಲ್ಲವೂ  
ಭಯಂಕರವಾಗಿ ಸಿಡಿಲು ಗುಡುಗುಗಳ ಸಮೇತ ನೂರು  
ವರ್ಷಗಳು ಸತತವಾಗಿ ಮಳೆಯನ್ನು ಸುರಿಸಿ ಪ್ರಳಯಾಗಿ  
ಯನ್ನು ಶಾಂತಗೊಳಿಸುವುವು. ಆಗ ಜಗತ್ತೆಲ್ಲವೂ  
ಜಲಮಯವಾಗುವುದು. ಮತ್ತೆ ವಿಷ್ಣುವಿನ ನಿಶ್ವಾಸದಿಂದ  
ಹೊರಟ ವಾಯುವು ಆ ಮೇಘಗಳನ್ನೆಲ್ಲಾ ಚದುರಿಸಿ  
ಒಂದು ನೂರು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಸತತವಾಗಿ ಬೀಸುವುದು.  
ಅನಂತರ ಆ ವಾಯುವನ್ನು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಪಾನಮಾಡಿ  
ಮಹಾವಿಷ್ಣುವು ಏಕಾಕಾರವಾದ ಆ ಮಹಾಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ  
ಶೇಷಶಾಯಿಯಾಗಿ ಜನಲೋಕವಾಸಿಗಳಾದ ಸನಕಾದಿ  
ಮಹರ್ಷಿಗಳಿಂದ ಸ್ತುತಿಸಲ್ಪಡುತ್ತ ಯೋಗನಿದ್ರೆಯಲ್ಲಿ  
ಮಗ್ನನಾಗಿರುವನು. ಇದು ನೈಮಿತ್ತಿಕ ಪ್ರಳಯ.

“ಚತುರ್ಯುಗಸಹಸ್ರಾಂತೇ ಕ್ಷೀಣಪ್ರಾಯೇ ಮಹಿತಲೇ । ಅನಾವೃಷ್ಟಿ-  
ರತಿವೋಗ್ರಾ ಜಾಯತೇ ಶತವಾರ್ಷಿಕೀ । ತತಃ ಯಾನ್ಯಲ್ಪಸಾರಾಣಿ  
ತಾನಿ ಸತ್ವಾನ್ಯಶ್ಚೇತಃ । ಕ್ಷಯಂ ಯಾನ್ತಿ ಮುನಿಶ್ರೇಷ್ಠ ಪಾರ್ಥಿವಾ-  
ನ್ಯನುಪೀಡನಾತ್ । ತತಃ ಸ ಭಗವಾನ್ ವಿಷ್ಣುರ್ದ್ರೂಪಧರೋಽಖ್ಯಯಃ ।  
ಕ್ಷಯಾಯ ಯತತೇ ಕರ್ತುಮಾತ್ಮಸ್ಥಾಃ ಸಕಲಾಃ ಪ್ರಜಾಃ । ತತಃ ಸ  
ಭಗವಾನ್ ವಿಷ್ಣುರ್ಮಾನಿಃ ಸಪ್ತಸು ರಕ್ಷಿಷುಃ । ಸ್ಥಿತಃ ಪಿಬತ್ಯ-  
ಶೇಷಾಣಿ ಜಲಾನಿ ಮುನಿಸತ್ತಮ । ಸಮುದ್ರಾನ್ ಸರಿತಃ ಶೈಲಾನ್  
ನದೀಃ ಪ್ರಸ್ರವಣಾನಿ ಚ । ಪಾತಾಲೇಷು ಚ ಯತ್ತಯಂ ತತ್ಸರ್ವಂ ನಯತಿ  
ಕ್ಷಯಮ್ । ತತಸ್ತಸ್ಯಾನ್ಯುಭಾವೇನ ತೋಹಾರೋಪಬೃಹಿತಾಃ । ತ ಎವ  
ರಕ್ಷಮಯಃ ಸಪ್ತ ಜಾಯಂತೇ ಸಪ್ತ ಭಾಸ್ಕರಾಃ । ಅಥವಚೋರ್ವಂ ಚ  
ತೇ ದೀಪ್ತಾಸ್ತತಃ ಸಪ್ತ ದಿವಾಕರಾಃ । ದಹನ್ಯಶೇಷಂ ತ್ರೈಲೋಕ್ಯಂ  
ಸಪಾತಾಲತಲಂ ದ್ವಿಜ । ತತಃ ಕಾಲಾಗ್ನಿರ್ದ್ರೋಸೋ ಭೂತ್ವಾ  
ಸರ್ವಹರೋಜನಃ । ಶೇಷಾಹಿಷ್ವಾಸಸಂಭೂತಃ ಪಾತಾಲಾನಿ ದಹನ್ಯಥಃ ।  
ಅಮ್ಬರೀಷಮಿವಾಭಾತಿ ತ್ರೈಲೋಕ್ಯಮಖಿಲಂ ತದಾ । ಜ್ವಾಲಾವತ್-  
ಪರೀವಾರಮುಪಕ್ಷೀಣಚರಾಚರಮ್ । ತತಸ್ತಾಪಪರೀತಾಸ್ತು ಲೋಕದ್ವಯ-  
ನಿವಾಸಿನಃ । ಹೃತಾಧಿಕಾರಾ ಗಚ್ಛಂತಿ ಮಹಲೋಕಂ ಮಹಾಮುನೇ ।  
ತಸ್ಮಾದಪಿ ಮಹಾತಾಪತಪ್ತಾಃ ಲೋಕಾತ್ತತಃ ಪರಮ್ । ಗಚ್ಛಂತಿ  
ಜನಲೋಕಂ ತೇ ದಶಾವೃತ್ಯಾ ಪರೇಷಿಣಃ । ತತಃ ದಗ್ಧ್ವಾ ಜಗತ್ಸರ್ವಂ  
ರ್ದ್ವರೂಪಿ ಜನಾರ್ದನಃ । ಮುಕ್ತಿನಿಃಶ್ವಾಸಜಾನ್ ಮೇಧಾನ್ ಕರೋತಿ  
ಮುನಿಸತ್ತಮ । ತತಃ ಗಜಕುಲಪ್ರಖ್ಯಾಸ್ತದಿತ್ವಂತೋಽತಿನಾದಿನಃ ।  
ಉತ್ಥಿಷ್ಠಂತಿ ತದಾ ವ್ಯೋಮ್ನಿ ಧೋರಾಃ ಸಂವರ್ತಕಾ ಧನಾಃ । ಹಾಹಾರಾಃ  
ಮಹಾಕಾಯಾಃ ಪೂರ್ಯಂತಿ ನಭಃಸ್ಥಲಮ್ । ವರ್ಷಂತಸ್ತೇ ಮಹಾಸಾರಾ-  
ಸ್ತಮಗ್ನಿಮತಿಭೇರವಮ್ । ಶಮಯನ್ತ್ಯಖಿಲಂ ವಿಪ್ರ ತ್ರೈಲೋಕ್ಯಾಂತ-  
ರಧಿಷ್ಠಿತಮ್ । ನಷ್ಟೇ ಚಾಗ್ನೌ ಚ ಸತತಂ ವರ್ಷಮಾಣಾಹ-



ಹನಿಷಾಮ್। ಪ್ಲಾವಯಂತಿ ಜಗತ್ಸರ್ವಮಂಭಿಮುನಿಸತ್ತಮ।  
ಅನ್ವಕಾರೀಕೃತೇ ಲೋಕೇ ನಷ್ಟೇ ಸ್ಥಾವರಜಙ್ಗಮೇ। ವರ್ಷಂತಿ ತೇ  
ಮಹಾಮೇಘಾ ವರ್ಷಾಣಾಮಧಿಕಂ ಶತಮ್। एवं भवति कल्पान्ते  
समस्तं मुनिसत्तम। वासुदेवस्य माहात्म्यात् नित्यस्य  
परमात्मनः। मुखनिःश्वासजो विष्णोर्वायुस्तान् जलदां-  
स्ततः। नाशयन् वाति मैत्रेय वर्षाणामपरं शतम्।  
सर्वभूतमयोऽचिन्त्यो भगवान् भूतभावनः। अनादिरादि-  
विश्वस्य पीत्वा वायुमशेषतः। एकार्णवे ततस्तस्मिन्  
शेषशय्यागतः प्रभुः। ब्रह्मरूपधरः शेते भगवानादिकृद्धरिः।  
जनलोकगतैः सिद्धैः सनकाद्यैरभिष्टुतः। आत्ममायामयीं  
दिव्यां योगनिद्रां समास्थितः। एष नैमित्तिको नाम मैत्रेय  
प्रतिसञ्चरः। निमित्तं तत्र यच्छेते ब्रह्मरूपधरो हरिः”  
विष्णುಪುಂ ೬-೩, ೪।

**ನೇಮಿಶಾರಣ್ಯ ನೈಮಿಶಾರಣ್ಯ** (ನಂ) ನಿಮಿಶವೆಂಬ ಒಂದು  
ಅರಣ್ಯ. ನಿಮಿಶಮೇವ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಅನ್” (೪-೪-೩೮)।

**ನೇಮೇಯ ನೈಮೇಯ** (ಪುಂ) ಬದಲಾಯಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು,  
ಅದಲು ಬದಲು ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ನಿ+ಮೇಙ್ (ಪ್ರಣಿ-  
ದಾನೇ) “ಯತ್” (೩-೧-೯೭)।

**ನೇಮಿಪ್ರೋವ ನೈಯಗ್ರೋಧ** (ನಂ) ನೈಯಗ್ರೋಧ ಫಲ, ಅಲದ  
ಹಣ್ಣು, ಮೊದಲಾದುದು. ನ್ಯಮಿಪ್ರೋವಸ್ಯ ವಿಕಾರ: “ಅನ್”  
(೪-೩-೧೬೪)। ಲೇಜಾಗಮ: (೭-೩-೩)।

**ನೇಮಿತ್ಯ ನೈಯತ್ಯ** (ನಂ) ನಿಯಮನ, ಹತೋಟಿಯಲ್ಲಿಡು  
ವುದು, ತಡೆಹಿಡಿಯುವುದು.

**ನೇಮಿಕ ನೈಯಮಿಕ** (ವಿಂ) ನಿಯಮದಿಂದ ಪ್ರಾಪ್ತ  
ವಾದ, ವಿಧಿಯಿಂದ ಬಂದ, ಕಟ್ಟುಪಾಡಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ.  
ನಿಯಮಾದಾಗತ: “ಠಕ್” (೪-೩-೭೪)।

**ನೇಮಾಚಿಕ ನೈಯಾಯಿಕ** (ಪುಂ) ನ್ಯಾಯವನ್ನು ತಿಳಿದವನು,  
ನ್ಯಾಯಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನಮಾಡುವವನು. ನ್ಯಾಯ  
ನ್ಯಾಯಶಾಸ್ತ್ರಂ ವೇತ್ತಿ ಅಪೀತೇ ವಾ “ಠಕ್” (೪-೨-೬೦)।  
ಲೇಜಾಗಮ: (೭-೩-೩)।

**ನೇರಂತರೈ ನೈರಂತರ್ಯ** (ನಂ) 1. ಎಡೆಬಿಡದಿರುವಿಕೆ, ಸೇರಿ  
ಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ, ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿರುವಿಕೆ. ನಿರಂತರಸ್ಯ ಭಾವ:  
“ಽಯನ್” (೪-೧-೧೨೪)। (ಅಭ್ಯಂ) 2. ಎಡೆಬಿಡದೆ,  
ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ. “ನೇರಂತರೈಚ್ಛಿನ್ನದೇಹಾಂತರಾಲಂ ದುಃಖಸ್ಯ  
ಜ್ವಾಲಿನಾ ವಾಶಿತೇನ” ಮಾಘಂ ೧೮-೭೬।

**ನೇರಪೇಕ್ಷೈ ನೈರಪೇಕ್ಷೈ** (ನಂ) ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ,  
ಅಸೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಿರಪೇಕ್ಷಸ್ಯ ಭಾವ: “ಽಯನ್”  
(೪-೧-೧೨೪)।

**ನೇರಯಿಕ ನೈರಯಿಕ** (ವಿಂ) ನೆರಕದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡು  
ವವನು.

**ನೇರಾಶ್ಯ ನೈರಾಶ್ಯ** (ನಂ) ಪ್ರತ್ಯಾಶೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಯಾವ  
ಆಶೆಯೂ ಇಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಭರವಸೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಿರಾ-  
ಶಸ್ಯ ಭಾವ: “ಽಯನ್” (೪-೧-೧೨೪)। “ನೇರಾಶ್ಯಕಾತರ-  
ಧಿಯೋ ಹರಿಣೇಕ್ಷಣಾಯಾ: ಶ್ರುತ್ವಾ ನಿಕಾಮಕರಣಂ ಚ ಮನೋಹರಂ ಚ”  
ಮಾಲತೀಂ ೬-೮।

**ನೇರಕ್ತ ನೈರುಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ನಿರುಕ್ತದಲ್ಲಿ ಬರುವ, ನಿರುಕ್ತ  
ದಲ್ಲಿರುವ. 2. ನಿರುಕ್ತದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಗ್ರಂಥ. ನಿರುಕ್ತಸ್ಯ  
ವ್ಯಾಖ್ಯಾನೋ ಗ್ರಂಥ: ತತ್ರ ಭವೋ ವಾ “ಅನ್” (೪-೩-೭೩)।  
3. ನಿರುಕ್ತವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. 4. ನಿರುಕ್ತವನ್ನು  
ಅಧ್ಯಯನಮಾಡುವವನು. ನಿರುಕ್ತಂ ವೇತ್ತಯಿತಿ ವಾ “ಅನ್”  
(೪-೨-೬೦)। “ತೇವಿಚ್ಛೋ ಹೇತುಕಸ್ತರ್ಕೋ ನೇರಕ್ತೋ ಧರ್ಮಪಾಠಕ:।  
ತ್ರಯಶ್ಚಾಶ್ರಮಿಣ: ಪೂರ್ವೇ ಪರಿಷತ್ಸಾಧ್ಯಾಶಾವರಾ” ಮನುಂ ೧೨-೧೧೧।

**ನೇರಕ್ತಿಕ ನೈರುಕ್ತಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಪದಗಳ ನಿರ್ವಚನವನ್ನು  
ತಿಳಿದವನು. 2. ನಿರುಕ್ತ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನಮಾಡು  
ವವನು. ನಿರುಕ್ತಂ ವೇತ್ತಿ ತದ್ಗ್ರಂಥಮಪೀತೇ ವಾ “ಠಕ್”  
(೪-೨-೬೦)।

**ನೇಶ್ವರತ ನೈರ್ಯುತ** (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ. ನಿಶ್ವರತೇರಪತ್ಯಮ  
“ಅನ್” (೪-೧-೯೨)। “ಮುಕ್ತಾವಯವಲೂನಾಂ ತಾಂ ನೇಶ್ವರತಾ  
ಯತುರೋ ದಧು:। ರಾಮಾಭಿಯಾಯಿನಾಂ ತೇಷಾಂ ತದೇವಾಭೂದಮಜ್ಜಲಮ್”  
ರಘುಂ ೧೨-೪೩। 2. ನಿರ್ಯುತಿ ದಿಕ್ಕಿನ ಅಧಿಪತಿ.  
(ವಿಂ) 3. ರಾಕ್ಷಸಸಂಬಂಧವಾದ. ನಿಶ್ವರತೇರಿದಮ್ “ಅನ್”  
(೪-೩-೧೨೦)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಛೀಪ್” (೪-೧-೧೫)। ನೇಶ್ವರತೀ.  
4. ನಿರ್ಯುತಿ ದಿಕ್ಕು, ದಕ್ಷಿಣ-ಪಶ್ಚಿಮ  
ದಿಕ್ಕುಗಳ ಮಧ್ಯದ ವಿಧಿಕ್ಕು. 5. ರಾಕ್ಷಸರ ಶಕ್ತಿ.  
(ನಂ) 6. ಮೂಲ ನಕ್ಷತ್ರ.

**ನೇಗುಣೈ ನೈಗುಣೈ** (ನಂ) 1. ಗುಣವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
2. ಸತ್ತ್ವರಜಸ್ತಮೋಗುಣಗಳಿಂದ ತೂನ್ಯವಾಗಿರುವಿಕೆ.  
ನಿಗುಣಸ್ಯ ಭಾವ: “ಽಯನ್” (೪-೧-೧೨೪)।

**ನೇಗುಣೈ ನೈಘುಣೈ** (ನಂ) ದಯೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಕನಿಕರ  
ವಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ನಿಗುಣಸ್ಯ ಭಾವ: “ಽಯನ್” (೪-೧-೧೨೪)।

**ನೇರ್ಮಲೈ ನೈರ್ಮಲೈ** (ನಂ) 1. ನಿರ್ಮಲವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಕಶ್ಮಲ  
ವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಶುದ್ಧವಾಗಿರುವಿಕೆ. ನಿರ್ಮಲಸ್ಯ ಭಾವ: “ಽಯನ್”  
(೪-೧-೧೨೪)। 2. ದೋಷವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ವಿಷಯ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ವೈರಾಗ್ಯ. “ವಿಷಯೇಷ್ವತಿಸಂರಾಗೋ  
ಮಾನಸೋ ಮಲ ಉಚ್ಯತೇ। ತೇಷ್ವೇವ ಹಿ ವಿರಾಗಸ್ತು ನೇರ್ಮಲೈ  
ಸಮುದಾಹೃತಮ್”।



ನೇಲಂಜ ನೈಲಂಜ (ನಂ) ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ನಾಚಿಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ನಿಲಂಜಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಞ್" (೪-೧-೧೨೪)।

ನೇಲಯ ನೈಲಯ (ನಂ) ಕಪ್ಪಾಗಿರುವಿಕೆ, ನೀಲವಾಗಿರುವಿಕೆ. ನೀಲಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಞ್" (೪-೧-೧೨೪)।

ನೇವೇದ್ಯ ನೈವೇದ್ಯ (ನಂ) ನಿವೇದನಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ವಸ್ತು. ದೇವರಿಗೆ ಅರ್ಪಿಸುವ ಹವಿಸ್ಸು ಹಣ್ಣು ಕಾಯಿ ಮೊದಲಾದುದು. ನಿ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) + ಣಿच् "ಯತ್" (೩-೧-೯೭)। "ನಿವೇದನೀಯಂ ದ್ರವ್ಯಂತು ನೇವೇದ್ಯಮಿತಿ ಕथ್ಯತೇ"।

ನೇವೇಶಿಕ ನೈವೇಶಿಕ (ನಂ) ಮದುವೆಗಾಗಿ ಕೊಡುವ ವಸ್ತು, ವಿವಾಹಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ವಸ್ತು. ನಿವೇಶಾಯ ವಿವಾಹಾಯ ಹಿತಮ್ "ಠಕ್"। "ನೇವೇಶಿಕಂ ಸ್ವರ್ಣಧುಯಿ ದತ್ವಾ ಸ್ವರ್ಗಂ ಮಹೀಯತೇ" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೨೧೦।

ನೇಶ ನೈಶ (ವಿಂ) 1. ರಾತ್ರಿಸಂಬಂಧವಾದ. ನಿಶಾಯಾ ಇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಉಚ್ಛೇತುಂ ಪ್ರಭವತಿ ಯಃ ಸಪ್ತಸಪ್ತಿಸ್ತನ್ನೇಶಂ ತಿಮಿರಮಪಾಕರೋತಿ ಚಂದ್ರಃ" ಮಾಘಂ ೬-೩೦। 2. ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಭವಿಸಿದ, ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ನಿಶಾಯಾ ಭವಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೪)। "ಕರದಶನಚಿಹ್ನಂ ನೇಶಮಜ್ಞೇಜ್ಯನಾರೀಜನಿತಮಿತಿ ಸರೋಪಮೀರ್ಷಯಾ ಶಬ್ದಮಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೩೭। 3. ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ. "ಠಕ್" (೪-೩-೧೧)। ನೇಶಿಕಮ್ ನೈಶಿಕಮ್. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಕೀ-ಕೇ. "ನೃಣಾಮಕೃತಚೂಡಾನಾಂ ವಿಶುದ್ಧಿನೇಶಿಕೀ ಸ್ಮೃತಾ" ಮನುಂ ೫-೬೭।

ನೇಶ್ವಲಯ ನೈಶ್ವಲಯ (ನಂ) ಚಲಿಸದಿರುವಿಕೆ, ಅಲುಗಾಡದಿರುವಿಕೆ. ನಿಶ್ವಲಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಞ್" (೪-೧-೧೨೪)।

ನೇಷಧ ನೈಷಧ (ಪುಂ) 1. ನಿಷಧದೇಶದ ದೊರೆ. ನಿಷಧಾ-ನಾಮಯಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಜನೇನ ಯುನಃ ಸ್ತುವತಾ ತದಾಸ್ಪದೇ ನಿರ್ದರ್ಶನಂ ನೇಷಧಮಪೇಚಯತ್" ನೇಷಂ ೧-೩೬। "ಸ ನೇಷಧಸ್ಯಾರ್ಥಪತೇಃ ಸುತಾಯಾಮುತ್ಪಾದಯಾಮಾಸ ನಿಷಿದೃಶನ್" ರಘುಂ ೧೮-೧। 2. ನೆಳಚ್ಚೆವರ್ತಿ. "ದದಶಂ ಪಶ್ಯಾಮಿವ ನೇಷಧಃ ಪ್ರಿಯಾಮಥಾಶ್ರಿತೋದ್ಗ್ರೀವಿಕಮುನತೇಗೃಹೈಃ" ನೇಷಂ ೧೬-೧೨೨। (ನಂ) 3. ಶ್ರೀಹರ್ಷಕವಿ ವಿರಚಿತವಾದ ನೆಳಚ್ಚೆವರ್ತಿಯ ಚರಿತ್ರೆ ರೂಪವಾದ ಒಂದು ಮಹಾಕಾವ್ಯ.

ನೇಷಧೀಯ ನೈಷಧೀಯ (ವಿಂ) ನೆಳಸಂಬಂಧವಾದ. ನೇಷಧ-ಸ್ಯಾಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೨-೧೨೪)। "ಸಸ್ಮಾರ ಸಸ್ಮರಮತಿಃ ಪ್ರತಿ ನೇಷಧೀಯಂ ತತ್ರಾಮರಾಲಯಮರಾಲಮರಾಲಕೇಶಿ" ನೇಷಂ ೧೩-೪೦।

ನೇಷಧ್ಯ ನೈಷಧ್ಯ (ಪುಂ) 1. ನಿಷಧದೇಶದ ದೊರೆ. ನಿಷಧಾನಾಂ ರಾಜಾ "ಞ್" (೪-೧-೧೭೦)। 2. ನಿಷಧರಾಜನ ಮಗ. ನಿಷಧಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಞ್" (೪-೧-೧೭೦)।

ನೇಷಾದ ನೈಷಾದ (ಪುಂ) ಬೇಡರವನ ಮಗ. ನಿಷಾದಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ ಪುಮಾನ್ "ಅಞ್" (೪-೧-೧೦೪)।

ನೇಷಕರ್ಮ್ಯ ನೈಷ್ಕರ್ಮ್ಯ (ನಂ) 1. ಕೆಲಸಮಾಡದಿರುವುದು, ಯಾವ ಕಾರ್ಯವನ್ನೂ ಮಾಡದೆ ಸೋಮಾರಿಯಾಗಿರುವುದು. ನಿಷ್ಕರ್ಮಣಿ ಭಾವ: "ಽಞ್" (೪-೧-೧೨೪)। 2. ವಿಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸದಿರುವುದು, ನಿಷ್ಕ್ರಿಯನಾಗಿರುವುದು, ಜ್ಞಾನನಿಷ್ಠೆ, ಕರ್ಮಯೋಗವನ್ನು ದಾಟುವುದು. ನಿಷ್ಕರ್ಮಿ ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತಕರ್ಮಯೋಗಃ ತಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಞ್" (೪-೧-೧೨೪)। ಕರ್ಮಗಳ ಅನುಷ್ಠಾನವು ಜ್ಞಾನನಿಷ್ಠೆಗೆ ಉಪಾಯವಾದುದರಿಂದ ನೈಷ್ಕರ್ಮ್ಯ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಕರ್ಮಯೋಗವನ್ನು ದಾಟುವುದೆಂದರ್ಥ. "ನ ಕರ್ಮಣಾಮನಾರಮ್ಭಾನ್ನೇಷಕರ್ಮ್ಯ ಪುರುಷೋಽನುತೇ" ಗೀತಾ ೩-೪।

ನೇಷಕಶತಿಕ ನೈಷ್ಕಶತಿಕ (ವಿಂ) ನೂರು ನಿಷ್ಕಗಳುಳ್ಳವನು. ನಿಷ್ಕಶತಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಠಕ್" (೪-೨-೧೧೯)।

ಎವಂ ನೇಷಕಸಹಸ್ರಿಕ: ನೈಷ್ಕಸಹಸ್ರಿಕಃ.

ನೇಷಿಕ ನೈಷ್ಕಿಕ (ಪುಂ) 1. ಟಂಕಸಾಲೆಯ ಅಧಿಕಾರಿ. ನಿಷ್ಕೇ ಹೇಮಿನಿ ನಿಯುಕ್ತ: "ಠಕ್" (೪-೪-೬೯)। 2. ಒಂದು ನಿಷ್ಕ (ನಾಣ್ಯ)ದಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿಷ್ಕೇಣ ಕ್ರೀತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೨೦)।

ನೇಷಕಮಣ ನೈಷ್ಕಮಣ (ವಿಂ) 1. ಹೊಸದಾಗಿ ಜನಿಸಿದ ಶಿಶುವನ್ನು ಮನೆಯಿಂದ ಹೊರಗಡೆ (ವಿಹಿತವಾದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ) ಕರೆತರುವಾಗ ಕೊಡುವ ವಸ್ತು. 2. ಈ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ. ನಿಷ್ಕಮಣಿ ದೀಯತೇ "ಅಞ್" (೪-೧-೯೭)।

ನೇಷಿಕ ನೈಷ್ಕಿಕ (ವಿಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಯಾಗಿ ಯಾವ ಜ್ಞೇವಮೂ ಗುರುಕುಲದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವವನು. ನಿಷ್ಠಾ ವಿಹತೇಜಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೨-೧೧೬)। "ಅಗೃಹಸದ್ಭಾವಮಿತಿ-ಜ್ಞಿತಜ್ಞಯಾ ನಿವೇದಿತೋ ನೇಷಿಕಸುಂದರಸ್ತಯಾ" ಕುಮಾರಂ ೫-೬೨। "ಸೃಷ್ಟವಾನ್ ಪರಮೇಶ್ಠಿ ಯಂ ನೇಷಿಕಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಣಮ್" ನೇಷಂ ೧೭-೧೧೬। 2. ಕೊನೆಯದಾದ, ಅಂತಿಮವಾದ. "ವಿದಧೇ ವಿಧಿಮಸ್ಯ ನೇಷಿಕಂ ಯತಿಭಿಃ ಸಾರ್ಥಮನಗ್ನಿಮಗ್ನಿಚಿತ್" ರಘುಂ ೮-೨೫।

ನೇಸರ್ಗಿಕ ನೈಸರ್ಗಿಕ (ವಿಂ) ಸ್ವಭಾವಸಿದ್ಧವಾದ, ಸ್ವಭಾವವಾಗಿ ಬಂದ. ನಿಸರ್ಗಾದಾಗತಃ "ಠಕ್" (೪-೩-೭೪)। "ರೂಪಂ ತದೋಜಸ್ವಿ ತದೇವ ವೀರ್ಯಂ ತದೇವ ನೇಸರ್ಗಿಕಮುಪ್ಪತತ್ವಮ್" ರಘುಂ ೫-೩೭। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಕೀ-ಕೇ. "ನೇಸರ್ಗಿಕೀ ಸುರಭಿಣಃ ಕುಸುಮಸ್ಯ ಸಿದ್ಧ್ಯ ಮ್ನಿಹಿ ಸ್ಥಿತಿನಿ ಚರಣೈರವತಾಡನಾನಿ" ಮಾಲತೀಂ ೯-೪೯।



ನೇತ್ರಶಿಕ್ಷಕ ನೈಸ್ರಂಶಿಕ (ವಿಂ) ಖಡ್ಗಧಾರಿ, ಕತ್ತಿ ಹಿಡಿದು ಯುದ್ಧಮಾಡುವವನು. ನಿಶ್ಚಿಂತ: ಪ್ರಹರಣಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೫೭)।

ನೋ ನೋ (ಅವ್ಯಂ) ಅಭಾವ. ಗಹ (ಬನ್ಧನೆ) "ಙೋ"।  
"ಅಶ್ರದ್ಧಯಾ ಹುತಂ ದತ್ತಂ ತಪಸ್ತಪ್ತಂ ಕೃತಂ ಚ ಯತ್।  
ಅಸದಿತುಚ್ಯತೇ ಪಾಠ್ಯ ನ ಚ ತತ್ಪ್ರೇತ ನೋಽಹ" ಗೀತಾ  
೧೭-೨೮।

ನೋಚೇತ್ ನೋಚೇತ್ (ಅವ್ಯಂ) ಇಲ್ಲದಿದ್ದರೆ. ನೋ ಚ ಚೇತ್‌ಚ।  
ನೋದನ ನೋದನ (ನಂ) 1. ಪ್ರೇರಣೆ, ಬಲವಂತಪಡಿಸು  
ವುದು. ಗುದ (ಪ್ರೇರಣೆ)+ಗಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)।  
2. ಮುಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವುದು, ನೂಕುವುದು, ದೂಡುವುದು.

ನೋದನೀಯ ನೋದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ಮುಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಡುವ, ನೂಕಲ್ಪಡುವ. ಗುದ  
(ಪ್ರೇರಣೆ)+ಗಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। 3. ಮುಂದಕ್ಕೆ  
ತಳ್ಳಬೇಕಾದ. "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬)। -ಯಿತವ್ಯ:  
-ಯಿತವ್ಯ:

ನೋದಯತ್ ನೋದಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೇರಿಸುತ್ತಿರುವ.  
2. ತಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಮುಂದೆ ಹೋಗುವಂತೆ ಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ. ಗುದ (ಪ್ರೇರಣೆ)+ಗಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ. "ಶಾನಚ್"  
(೩-೨-೧೨೪)। -ಯಮಾನ: -ಯಮಾನ:

ನೋದಯಿತ್ ನೋದಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೇರಿಸುವವನು,  
ಬಲವಂತಪಡಿಸುವವನು. ಗುದ (ಪ್ರೇರಣೆ)+ಗಿಚ್ "ತುಚ್"  
(೩-೧-೧೩೩)। "ಸಮೀರಣೋ ನೋದಯಿತಾ ಭವೇತಿ ವ್ಯಾಧಿಸ್ಯತೇ  
ಕೇನ ಹುತಾಶನಸ್ಯ" ಕುಮಾಂ ೩-೨೧। 2. ತಳ್ಳುವವನು.  
ಮುಂದಕ್ಕೆ ನೂಕುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫)।  
-ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ:

ನೋದಿತ ನೋದಿತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಗುದ (ಪ್ರೇರಣೆ)  
+ಗಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಮುನಯಸ್ತತೋಽಭಿಮುಖಮೇತ  
ನಯನವಿನಿಮೇಷನೋದಿತಾ:" ಕಿರಾಂ ೧೨-೨೫। 2. ಮುಂದಕ್ಕೆ  
ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ನೂಕಲ್ಪಟ್ಟ.

ನೋಧಾ ನೋಧಾ (ಅವ್ಯಂ) ಒಂಬತ್ತು ವಿಧವಾಗಿ, ಒಂಬತ್ತು  
ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ. ನವ "ಧಾ" (೫-೩-೪೨)। ಪೃಷಂ।  
"ನೋಧಾ ವಿಧಾಯ ರೂಪಂ ಸ್ವಂ ಸರ್ವಸಂಕಲ್ಪವಿದ್ ವಿಭು:" ಭಾಗಂ  
೩-೨೩-೪೭।

ನೋಪಸ್ಥಾತ್ ನೋಪಸ್ಥಾತ್ಯ (ವಿಂ) ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬರದೆ  
ಇರುವವನು, ದೂರದಲ್ಲೇ ಇರುವವನು. ನ ಉಪಸ್ಥಾತಾ।  
"ಅನ್ಯವಾದೀ ಕ್ರಿಯಾಕ್ಷೇಪಿ ನೋಪಸ್ಥಾತಾ ನಿರತ್ತರ:"।

ನೌ ನೌ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೌಕೆ, ಹಡಗು. ನುಣ್ತೆ-ಗುದ (ಪ್ರೇರಣೆ)  
"ಙೋ:" (೩ಂ ೨-೬೫)। 2. ದೋಣ. ನದಿ ಮೊದಲಾ  
ದುವುಗಳ ನೀರನ್ನು ದಾಟುವ ಸಾಧನ. "ನಾವಾ ಸ್ಮರ:  
ಕಿ ಹರಮೀತಿಗುಪ್ತೇ ಪಯೋಧರೇ ಕ್ಷೇಲತಿ ಕುಮ್ಭ ಎವ" ನೈಫಂ  
೬-೬೬।

ನೌಕರ್ಣಧಾರ ನೌಕರ್ಣಧಾರ (ಪುಂ) 1. ಹಡಗನ್ನು ನಡೆಸು  
ವವನು. ನಾವ: ಕರ್ಣಂ ಧಾರಯತಿ - ಧೃ (ಧಾರಣೆ) + ಗಿಚ್  
"ಅಣ್" (೩-೨-೧)। 2. ದೋಣ ನಡೆಸುವವನು, ಅಂಬಿಗ.  
ನೌಕಾ ನೌಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೌಕೆ, ಹಡಗು. ನೌ ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಕ:"। 2. ದೋಣ.

ನೌಕಾಡಂಡ ನೌಕಾಡಂಡ (ಪುಂ) ದೋಣ ನಡೆಸುವ ಹುಟ್ಟು  
ಗೋಲು. ನೌಕಾಯಾ ಡಂಡ:

ನೌಚರ ನೌಚರ (ವಿಂ) ಹಡಗಿನಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವವನು. ನಾವಿ  
ಚರತಿ-ಚರ (ಗತೌ) "ಠ:" (೩-೨-೧೬)। "ಯಾದೋನಾಥ:  
ಶಿವಜಲಪಥ: ಕರ್ಮಣೋ ನೌಚರಾಣಾಮ್" ರಘುಂ ೧೭-೮೧।

ನೌತಾರ್ಯ ನೌತಾರ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹಡಗಿನಿಂದ ದಾಟಿ  
ಲ್ಪಡುವ. ನಾವಾ ತಾರ್ಯಮ್। 2. ದೋಣಿಯಿಂದ ದಾಟಿ  
ಲ್ಪಡುವ ಹೊಳೆ ಮೊದಲಾದುದು.

ನೌಯಾನ ನೌಯಾನ (ನಂ) 1. ಸಮುದ್ರಯಾನ, ಹಡಗಿನಲ್ಲಿ  
ಮಾಡುವ ಸಮುದ್ರದ ಪ್ರಯಾಣ. ನಾವಾ ಯಾನಮ್।  
2. ದೋಣಿಯಿಂದ ನದಿಯ ಅಚ್ಚಿದಡಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು.

ನೌಯಾನ್ ನೌಯಾನ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹಡಗಿನಲ್ಲಿ ಸಮುದ್ರ  
ಪ್ರಯಾಣ ಮಾಡುವವನು. ನಾವಾ ಯಾತಿ-ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ)  
"ಗಿಣಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ದೋಣಿಯಲ್ಲಿ ನದಿ  
ಯನ್ನು ದಾಟುವವನು.

ನ್ಯಕಾರ ನ್ಯಕಾರ (ಪುಂ) 1. ತಿರಸ್ಕಾರ. ಅವಮಾನ.  
ನ್ಯಕ್+ಕೃಜ್ (ಕರಣೆ) "ವಬ್" (೩-೩-೧೮)। "ನ್ಯಕಾರೋ  
ಹ್ಯಯಮೇವ ಮೇ ಯದರಯ: ತತ್ರಾಪ್ಯಸೌ ತಾಪಸ: ಸೋಽಪ್ಯತ್ರೇವ ನಿಹಂತಿ  
ರಾಕ್ಷಸಕುಲಂ ಜೀವತ್ಯಹೋ ರಾವಣ:" ಸಾಂ ದಂ। 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ  
ಮಾಡುವುದು. "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। -ಕರಣಮ್  
-ಕರಣಮ್. "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। -ಕೃತಿ: -ಕೃತಿ:

ನ್ಯಕ್ಷ ನ್ಯಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಪರಶುರಾಮ. 2. ಮಹಿಷ, ಎಮ್ಮೆ.  
(ನಂ) 3. ಕಾತ್ಯಾಯಣ. ಸಂಪೂರ್ಣತೆ. (ವಿಂ) 4. ನಿಕ್ಕಷ್ಟ,  
ಅಧಮ.

ನ್ಯಾಭಾವ ನ್ಯಾಭಾವ (ಪುಂ) 1. ಅವಮಾನ, ತೇಜೋವಧೆ.  
2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬರುವುದು, ಕೆಳದರ್ಜೆಗೆ ಬರುವುದು, ಅಧೀನ  
ವಾಗುವುದು. ನ್ಯಕ್ + ಭೃ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ವಬ್"  
(೩-೩-೨೪)।



**ನ್ಯಾಭಾವಿತ ನ್ಯಾಗ್ರಾಪಿತ (ವಿಂ)** 1. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಇನ್ನೊಂದಕ್ಕೆ ಅಧೀನವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನ್ಯಕ್ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

**ನ್ಯಗ್ರೋಧ ನ್ಯಗ್ರೋಧ (ಪುಂ)** 1. ವಟವೃಕ್ಷ, ಅಲದ ಮರ. ನ್ಯಕ್ ಣ್ಣಡಿ - ಣ್ಣಿರ್ (ಆವರಣ) "ಅಣ್" (3-2-1)। "ಸಿಕ್ತೋ ಹಂತ ಸ ಏಷ ಮೆಥಿಲಸುತಾಬಾಘೋದಕೋತ್ಪಾದಕೇನ್ಯಗ್ರೋಧ-ಕ್ಷರಿತೇಜಂತಾ ರಚಯಿತುಂ ಕ್ಷೀರೇನಿಷಾದಾಹತಃ" ಚಂ ರಾಂ।

2. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ನ್ಯಗ್ಮತೇರಥಾಕೃತಾಂಜಲಿಭಿಃ ರುಹ್ಯತೇ ಸ್ವಪ್ರಸಾದೋನ್ಮುಖ್ಯೇನ ವ್ಯವಸ್ಥಾಪ್ಯತೇ। "ನ್ಯಗ್ಮತೇಃ ಪ್ರಣತಃ ಸ್ವಾನುಗ್ರಹೋನ್ಮುಖ್ಯೇನ ರುಹ್ಯತೇ। ಯೋ ವ್ಯವಸ್ಥಾಪ್ಯತೇ ನಿಯಮಂ ನ್ಯಗ್ರೋಧಃ ಸ ತದಾಹತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ। "ನ್ಯಗ್ರೋಧೋದ್ವಿಂಬರೋಽಶ್ವತ್ಥಃ" ವಿಂ ಸಂ। 3. ಒಂದು ಮಾರು, ನಾಲ್ಕು ಮೊಳೆಗಳ ಉದ್ದದಳತೆ, ನೀಡಿದ ಎರಡು ತೋಳುಗಳ ಅಳತೆ. 4. ಶಮೀವೃಕ್ಷ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) - ಖೀ - ಧೀ. 5. ಇಲಿಯಾಲದ ಮರ.

**ನ್ಯಗ್ರೋಧಪರಿಮಂಡಲ ನ್ಯಗ್ರೋಧಪರಿಮಂಡಲ (ಪುಂ)** ಮಾರುದ್ದದ ಮನುಷ್ಯ, ನಾಲ್ಕು ಮೊಳೆಗಳ ಎತ್ತರದ ಮನುಷ್ಯ. ನ್ಯಗ್ರೋಧಃ ವ್ಯಾಮಃ ಪರಿಮಂಡಲಂ ಯಸ್ಯ।

**ನ್ಯಡ್ಕು ನ್ಯಂಕು (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. ನಿತರಾಮಂಚತಿ - ನಿ + ಅಂಚು (ಗತೌ) "ಃ" (3-1-10)। ಕುತ್ವಮ್ (3-3-43)। "ಸದ್ವಿ ಹತನ್ಯಡ್ಕುಭಿರಸ್ತದಿಗ್ಧಂ ವ್ಯಾಘ್ರಃ ಪದಂ ತೇಷು ವಿಧೀಯತೇ ಮೇ" ರಘುಂ 16-15। 2. ಒಬ್ಬ ಯುಷ್ಮಿ.

**ನ್ಯಚ್ಚ ನ್ಯಂಚ್ (ವಿಂ)** 1. ಕೆಳಗಡೆಗೆ ಹೋಗುವ. 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬಗ್ಗಿರುವ. ನ್ಯಚ್ಚತಿ - ನಿ + ಅಂಚು (ಗತೌ) "ಕ್ವಿನ್" (3-2-49)। 3. ಕೆಳಗಡೆಯ, ಕೆಳಭಾಗದ. 4. ಕಾತ್ಯಾಯಣಿ, ಸಂಪೂರ್ಣತೆ. "ನ್ಯಚ್ಚ ನಿಮ್ನೇ ನೀಚಕಾತ್ಯಾಯಣಿಃ" ಹೇಮಂ। 5. ನೀಚ, ಅಧಮ.

**ನ್ಯಚ್ಚನ ನ್ಯಂಚನ (ನಂ)** 1. ಬಗ್ಗುವುದು. ನಿತರಾಮಂಚನಮ್। 2. ಕೆಳಗೆ ಇರುವುದು.

**ನ್ಯಚ್ಚಿತ ನ್ಯಂಚಿತ (ವಿಂ)** ಕೆಳಗೆ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಅಂಚು (ಗತೌ ಕ್ಷೇಪಣಂ ಚ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

**ನ್ಯಬ್ದ ನ್ಯಬ್ದ (ನಂ)** ಹತ್ತು ಅರ್ಬುದಗಳು, ಒಂದು ನೂರು ಕೋಟಿ ಸಂಖ್ಯೆ. (ಒಂದು ಅರ್ಬುದ ಹತ್ತು ಕೋಟಿ). "ಪ್ರಯುತಂ ಚಾರ್ಬುದಂ ಚ ನ್ಯಬ್ದಂ ಚ ಸಮುದ್ರಶ್ಚ"।

**ನ್ಯಸ್ತ ನ್ಯಸ್ತ (ವಿಂ)** 1. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೆಳಗೆ ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣಂ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "ನ್ಯಸ್ತ-ಶುಲ್ಕಬಲಿಚಿತ್ರತಲಾಭಿಃ ತುಲ್ಯತಾ ವಸತಿವೇಶಮಹಿಭಿಃ"

ಕಿರಾಂ 9-29। 2. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಬಾಣ). 3. ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ನ್ಯಸ್ತಶಸ್ತ್ರ-ಪರಿಕರ್ಮಣಾಮಸೌ ನಿಷ್ಕೃತಿತ್ವದ್ವಪಸತ್ತಿರೇವ ನಃ" ಯಾದಂ 10-115। 4. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಿತ್ರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ನ್ಯಸ್ತಾಕ್ಷರಾ ಧಾತುರಸೇನ ಯತ್ರ ಭೂರ್ಜತ್ವಚಃ ಕುಂಜರವಿನ್ದುಶೋಭಾಃ" ಕುಮಾಂ 1-6।

**ನ್ಯಾದ ನ್ಯಾದ (ಪುಂ)** ಆಹಾರ, ಊಟ.

**ನ್ಯಾಯ ನ್ಯಾಯ (ಪುಂ)** 1. ಉಪಾಯ, ಕ್ರಮ, ರೀತಿ. ನಿ + ಇಣ್ (ಗತೌ) ಕರಂ "ಘ್" (3-3-122)। "ಅರ್ಥಾತ್ಮಿಕಂ ತ್ರಿಭಿರ್ನಿರ್ಯಯಿಃ ನಿಗೃಹ್ಣೀಯಾತ್ ಪ್ರಯತ್ನತಃ" ಮನುಂ 6-310। 2. ಯೋಗ್ಯವಾದ ನಡವಳಿಕೆ, ಒಪ್ಪು, ಔಚಿತ್ಯ. ನಿ + ಇಣ್ "ಘ್" (3-3-122)। 3. ನಿಯಮ, ಕಟ್ಟಳೆ. "ನಿಕ್ಷಿಪ್ಯಾಯಾಚಿಪಂ ಯತ್ತಾ ನ್ಯಾಯಾತ್ ತಾಮ್ಬೂಲಕಾಲಿಕಾಃ" ನೈಷಂ 20-22। 4. ನ್ಯಾಯಶಾಸ್ತ್ರ, ಪದಾರ್ಥಗಳನ್ನು ನಿರೂಪಣಮಾಡುವ ಶಾಸ್ತ್ರ. 5. ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ ಹೇತುಃ ತದಾಹರಣಮ್ ತಪನಯಃ ಮತ್ತಾ ನಿಗಮನಮ್ ಎಂಬ ಐದು ಅವಯವಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವ ತಾರ್ಕಿಕರ ವಾದಸರಣಿ. 6. ಪ್ರಾಮಾಣಿಕತೆ, ನೀತಿ, ಧರ್ಮ. ನಿ + ಇಣ್ "ಘ್" (3-3-122)। "ಯಾನ್ತಿ ನ್ಯಾಯಪ್ರವೃತ್ತಸ್ಯ ತಿರ್ಯಂಚೋಽಪಿ ಸಹಾಯತಾಮ್"। 7. ನ್ಯಾಯಾಲಯದ ತೀರ್ಪು. 8. ಕಾನೂನಿನ ನಡವಳಿಕೆ, ಕಾನೂನಿನ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮ. 9. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಯುಕ್ತಕಾರಿ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ನಿ + ಇಣ್ "ಘ್" (3-3-30)। "ನ್ಯಾಯೋ ಹಿ ಯುಕ್ತಕಾರಿತ್ವಾತ್ ಭಕ್ತೇಷ್ವೇವ ವಿಶೇಷತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ। "ಅಗ್ರಣೀಗ್ರಾಮಿಣಿಃ ಶ್ರೀಮಾನ್ ನ್ಯಾಯೋ ನೇತಾ ಸಮೀರಣಃ" ವಿಂ ಸಂ। 10. ತಕ್ಕಂತೆ ಯೋಚಿಸಿದ ವಿವರಣೆ, ಸಮಂಜಸ ವಾದ ದೃಷ್ಟಾಂತದೊಡನೆ ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸುವುದು, ಲೋಕ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ ದೃಷ್ಟಾಂತಗಳಿಂದ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ವಿವರವಾಗಿ ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸುವ ಕೆಲವು ನ್ಯಾಯಗಳನ್ನು ಈ ಕೆಳಗೆ ಕೊಡಲಾಗಿದೆ.

(1) ಅಜಾಕೃಪಾಣೀಯನ್ಯಾಯಃ:-ಆಕಸ್ಮಿಕವಾಗಿ ತೊಂದರೆಗಳು ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗುವ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯವು ಪ್ರವರ್ತಿಸುವುದು. ಆಕಸ್ಮಿಕವಾದ ಅಜಾಗಮನಕಾಲಕ್ಕೆ ಸರಿಯಾಗಿ ಕೈಪಾಣಿಪತನ ಸಂಭವಿಸುವಂತೆ ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ಆಕಸ್ಮಿಕವಾಗಿ ಅನಿಷ್ಟ ಸಂಭವಿಸುವ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯವನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸುವರು. ಇದು "ಕಾಕತಾಲೀಯ" ನ್ಯಾಯಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದುದು.

(2) ಅನ್ವಕೃಪಪತನನ್ಯಾಯಃ:-ಹಿರಿಯರು ಸರಿಯಾದ ಮಾರ್ಗವನ್ನು ತಿಳಿಸಿದರೂ ಕುರುಡನು ಅದನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬೇರೆ ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಹೋಗಿ ಬಾವಿಗೆ ಬೀಳುವಂತೆ ಶಾಸ್ತ್ರ



ಗಳು ಸರಿಯಾದ ಮಾರ್ಗವನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸುತ್ತಿದ್ದರೂ ಮನುಷ್ಯನು ದುರ್ಮಾರ್ಗಪ್ರವೃತ್ತನಾಗಿ ಅಧಃಪತನವನ್ನು ಹೊಂದುತ್ತಾನೆ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯವು ಪ್ರವರ್ತಿಸುವುದು.

(3) ಅನ್ವಯರಸಾನುಸಾರಾನ್ವಯಃ—ಒಬ್ಬ ಅಂಧನು ಹೇಳಿದುದನ್ನು ಇನ್ನೊಬ್ಬ ಅಂಧನು ಕೇಳಿ ನಂಬುವುದು, ಅದನ್ನು ಅವನಿಂದ ಮತ್ತೊಬ್ಬ ಅಂಧನು ಕೇಳಿ ನಂಬುವುದು ಹೀಗೆ ಈ ನಂಬಿಕೆಯು ಅಂಧರಲ್ಲಿ ಬೇರೂರುವಂತೆ ಅಜ್ಞಾನದ ಅಜ್ಞಾನಿಗೆ ಅವನಿಂದ ಮತ್ತೊಬ್ಬ ಅಜ್ಞಾನಿಗೆ ಹೀಗೆ ಅಜ್ಞಾನ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿ ವಿಷಯವು ಶಾಶ್ವತವಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವುದು ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯವು ಪ್ರವರ್ತಿಸುವುದು. ಇದು “ಗತಾನುಗತಿಕ” ನ್ಯಾಯಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದುದು.

(4) ಅಕ್ ಕೇವಲಮ್ ವಿವೇಕೇ ಕಿಮರ್ಥಂ ಪರಿಣತಂ—ಅರ್ಥವ್ಯಕ್ತದಲ್ಲೇ ಮಧುವು ದೊರಕುವಾಗ ಪ್ರಯತ್ನವೆಲ್ಲಾ ಪರ್ವತಕ್ಕೇ ಹೋಗಬೇಕು. ಕೇವಲ ಜ್ಞಾನಾರ್ಜನೆ ಯಿಂದಲೇ ಪುರುಷಾರ್ಥಸಿದ್ಧಿಯುಂಟಾಗುವಾಗ ಆಯಾಸ ಸಾಧ್ಯವಾದ ಕರ್ಮಗಳ ಆಚರಣೆ ಏಕೆ? ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯವು ಪ್ರವರ್ತಿಸುವುದು.

(5) ಅರ್ಥಜರತೀಯನ್ವಯಃ—“ಅರ್ಥಜರತೀಯ” ಪದದಲ್ಲಿ ಇದರ ವಿವರಣೆ ನೋಡಿ.

(6) ಅಶೋಕವನಿಕಾನ್ವಯಃ—ಅಶೋಕವನಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದರಿಂದ ಅಲ್ಲಿ ಉತ್ಕೃಷ್ಟ ವೃಕ್ಷಜ್ವಾಲೆಯ ಮತ್ತು ಪುಷ್ಪ ಸೌರಭ್ಯಾದಿ ಲಾಭವಿರುವ ಕಾರಣ ಬೇರೆ ಕಡೆಗೆ ಹೋಗುವ ಆಸೆಯು ಹೇಗೆ ಉಂಟಾಗುವುದಿಲ್ಲವೋ ಹಾಗೆ ತನ್ನ ಅಭೀಷ್ಟ ಲಾಭ ಹೊಂದುವ ಸನ್ನಿವೇಶವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬೇರೆ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಇಚ್ಛೆಯುಂಟಾಗುವುದಿಲ್ಲವೆಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯದ ಪ್ರವೃತ್ತಿ.

(7) ಆಕಾಶಮುಢಿಹನನನ್ವಯಃ—ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಮುಷ್ಟಿಯನ್ನು ಕುಟ್ಟುವುದರಿಂದ ಯಾವ ಪ್ರಯೋಜನವೂ ಉಂಟಾಗದಿರುವಂತೆ ಮನುಷ್ಯನು ತನಗೆ ಅಸಾಧ್ಯವಾದ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಎಷ್ಟು ಗುದ್ದಾಡಿದರೂ ವ್ಯರ್ಥವೆಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯವು ಹೊರಟಿದೆ.

(8) ಏಕಸಮ್ಬಂಧಿಜ್ಞಾನಮಪರಸಮ್ಬಂಧಿಸ್ಮಾರಕಮಿತಿ ನ್ಯಾಯಃ—ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ದರ್ಶನದಿಂದ ಅದಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ವಿಷಯವೂ ಸ್ಮರಣೆಗೆ ಬರುವುದು. ಆನೆಯನ್ನು ನೋಡಿದಾಗ ಅದರ ಸಂಬಂಧವಾದ ಮಾವಟಗಿನ ನೆನಪು ಬರುವಂತೆ ಒಂದು ಶಬ್ದಜ್ಞಾನದಿಂದ ಆ ಶಬ್ದವಾಚ್ಯವಾದ ಅರ್ಥದ ಸ್ಮರಣೆಯೂ ಉಂಟಾಗುವುದೆಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯದ ಪ್ರವೃತ್ತಿ.

(9) ಕಾಕತಾಲೀಯನ್ವಯಃ—ಅಕಸ್ಮಿಕವಾದ ಇಷ್ಟಪ್ರಾಪ್ತಿ ಮತ್ತು ಅನಿಷ್ಟಪ್ರಾಪ್ತಿಗಳ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯ ಹೊರಟಿರುವುದು. ಕಾಗೆಯು ಹೋಗುತ್ತಿರುವಾಗ ಅಕಸ್ಮಾತ್ ತಾಳೆಫಲದ ಪತನದಿಂದ ಅದಕ್ಕೆ ಇಷ್ಟವಾದ ವಸ್ತುವಿನ ಲಾಭವುಂಟಾಗುವಂತೆ ಮನುಷ್ಯನು ನಿರೀಕ್ಷಿಸದೆ ಇರುವಾಗ ಅಕಸ್ಮಾತ್ ಅವನ ಇಷ್ಟಸಿದ್ಧಿಯುಂಟಾಗುವುದು ಎಂಬ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯಕ್ಕೆ ಪ್ರವೃತ್ತಿ. ಈ ರೀತಿ ಇಷ್ಟಸಿದ್ಧಿಯು ಕಾಕತಾಲೀಯ.

(10) ಕಾಕಾಕ್ಷಿಗೋಲಕನ್ವಯಃ—ಕಾಗೆಯು ದೃಷ್ಟಿಯು ಎರಡು ಕಣ್ಣುಗುಡ್ಡೆಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಸಂಚರಿಸುತ್ತ ಎರಡು ಕಣ್ಣುಗಳ ನೋಟಕ್ಕೂ ಉಪಯೋಗವಾಗುವಂತೆ ಒಂದು ಪದಾರ್ಥಕ್ಕೆ ಎರಡು ಕಡೆ ಸಂಬಂಧ ವಿವಕ್ಷೆಯುಂಟು ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯವು ಪ್ರವರ್ತಿಸುವುದು.

(11) ಕ್ಷಯಮಾತ್ಮಕನ್ವಯಃ—ಒಂದು ಸಣ್ಣ ಬಾವಿಯಲ್ಲಿರುವ ಮಂಡೂಕವು ತಾನಿರುವಷ್ಟೇ ಪ್ರದೇಶವು ಪ್ರಪಂಚವೆಂದು ತಿಳಿದಿರುವಂತೆ ಮನುಷ್ಯನು ತಾನು ಪಡೆದಿರುವುದಕ್ಕಿಂತ ಪ್ರಪಂಚಜ್ಞಾನವು ಬೇರೊಂದಿಲ್ಲ ಎಂದು ಹೇಳುವುದೂ ತಾನು ತಿಳಿದಿರುವುದೇ ಸಿದ್ಧಾಂತ, ಅದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬೇರೆ ಮತತತ್ತ್ವವಿಲ್ಲವೆಂದೂ ಮತಾಂತರಜ್ಞಾನಶೂನ್ಯನು ಹೇಳುವುದು ಅವಿವೇಕದ ಫಲವೆಂದು ಹೇಳುವ ಕಡೆ ಈ ನ್ಯಾಯ ಹೇಳುವರು.

(12) ಕ್ಷಯಮಾತ್ಮಕನ್ವಯಃ—ಬಾವಿಯಿಂದ ನೀರನ್ನು ಎಳೆಯಲು ಘಟಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟಿ ಬಾವಿಯೊಳಕ್ಕೆ ಬಿಡುವರು. ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ನೀರು ತುಂಬಿಕೊಂಡು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಬರುವಾಗ ಪೂರ್ಣವಾಗಿಯೂ ಮತ್ತೆ ಕೆಲವು ಘಟಗಳು ಮೇಲೆ ನೀರನ್ನು ಸುರಿದು ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬರುವಾಗ ಬರಿದಾಗಿಯೂ ಇರುವುವು. ಇವು ನೀರನ್ನು ತುಂಬಿಕೊಂಡು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಬರುವಾಗ ಮೊದಲು ತುಂಬಿದ್ದ ಘಟಗಳು ಬರಿದಾಗಿ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬರುವುವು. ಹೀಗೆಯೇ ಮನುಷ್ಯನ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ಕಾಲ ಸಂಪತ್ತು, ಕೆಲವು ಕಾಲ ದಾರಿದ್ರ್ಯ, ಕೆಲವು ಕಾಲ ಸೌಖ್ಯ, ನಂತರ ಕಷ್ಟ ಈ ರೀತಿ ಏರುಪೇರುಗಳು ಸಂಭವಿಸುವುದರಿಂದ ಮನುಷ್ಯನು ಸಂಪತ್ತು ಬಂದಾಗ ಗರ್ವಪಡಕೂಡದು ಮತ್ತು ಕಷ್ಟದಿಂದ ನರಳುತ್ತಿರುವ ದರಿದ್ರನನ್ನು ತಿರಸ್ಕಾರದಿಂದ ಕಾಣಕೂಡದು ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯವು ಪ್ರವರ್ತಿಸುವುದು. “आपद्गतं हससि किं द्रविणान्ध मूढ लक्ष्मीः स्थिरा न भवतीति किमत्र चित्रम्। एतान् प्रपश्यसि घटान् जलयन्त्रचक्रे रिक्ता भवन्ति भरिता भरिताश्च रिक्ताः” ।



(13) ಗೋವಿಶೇಷವಾದರೂ ಗೋಪದದ ಮುಂದೆ ಈ ಪದದ ಪ್ರಯೋಗವು ಬಲೀವರ್ಧವೂ ಗೋ ಜಾತಿಗೆ ಸೇರಿದ್ದೆಂದೂ ಅದು ದುರ್ದಮ್ಯವೆಂದೂ ಹೇಳಲು ಈ ರೀತಿ ಸಾಮಾನ್ಯ ವಿಶೇಷ ಪ್ರಯೋಗವಿರುವುದು. ಹೀಗೆಯೇ ಸಾಮಾನ್ಯ ವಿಶೇಷರೂಪವಾದ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯವನ್ನು ಹೇಳಲು ವಿಶೇಷವಸ್ತುವೋಧಕ ಪದಪ್ರಯೋಗವು ಎಂದು ಹೇಳುವಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯಕ್ಕೆ ಪ್ರವೃತ್ತಿ.

(14) ದಾತಾಪುನ್ಯಾಯ:—ಅಪೂಪಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟಿರುವ ದಂಡಕ್ಕೆ ಇಲಿಯು ಹತ್ತಿ ದಂಡವನ್ನೇ ಭಕ್ಷಿಸಿತು ಎಂಬ ಅರ್ಥದಿಂದ ಅದರಲ್ಲಿದ್ದ ಅಪೂಪಗಳನ್ನೂ ಭಕ್ಷಿಸಿತು ಎಂಬ ಅರ್ಥವು ತಾನಾಗಿಯೇ ತೋರುವಂತೆ ದುಷ್ಕರವಾದ ಕಾರ್ಯವು ಸಿದ್ಧಿಸುವಲ್ಲಿ ಸುಕರವಾದ ಕಾರ್ಯವೂ ಸಿದ್ಧಿಸುವುದೆಂಬ ಅರ್ಥಕ್ಕೆ ಸ್ವತಃ ಪ್ರತೀತಿಯುಂಟಾಗುವುದು ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯಕ್ಕೆ ಪ್ರವೃತ್ತಿ.

(15) ದೇಹಲೀದೀಪನ್ಯಾಯ:—ದೇಹಳಿಯ (ಹೊಸ್ತಿಲ) ಲ್ಲಿ ಇಟ್ಟಿರುವ ದೀಪವು ಒಳಗಡೆ ಮತ್ತು ಹೊರಗಡೆ ಎರಡು ಕಡೆಗೂ ಬೆಳಕನ್ನು ಕೊಡುವಂತೆ ಎರಡು ಪದಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯುಕ್ತವಾದ ಒಂದು ಪದದ ಅರ್ಥವು ಎರಡೂ ಪದಗಳಿಗೂ ಅನ್ವಯಿಸುವುದೆಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯದ ಪ್ರಯೋಗ. “ಅಸ್ತ್ರೇಣಾಪಿ ಹಿ ಬದ್ಧಸ್ಯ ಭಯಂ ಮಮ ನ ಜಾಯತೇ | ಪಿತಾಮಹಮಹೇಂದ್ರಾಭ್ಯಾಂ ರಕ್ಷಿತಸ್ಯಾನಿಲೇನ ಚ” ಇಲ್ಲಿ “ರಕ್ಷಿತಸ್ಯ” ಪದವು ಹಿಂದಿನ ಮತ್ತು ಮುಂದಿನ ಎರಡು ಪದಗಳಿಗೂ ಅನ್ವಯಿಸುವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ “ದೇಹಳೀದೀಪನ್ಯಾಯ” ಪ್ರವರ್ತಿಸುವುದು. ಇದು “ಕಾಕಾಕ್ಷಿಗೋಲಕ” ನ್ಯಾಯಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದುದು.

(16) ಪಕ್ಷಪ್ರಕಾಶನನ್ಯಾಯ:—ಬೇಕೆಂದು ಕೆಸರನ್ನು ತುಳಿದು ಅದನ್ನು ತೊಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದಕ್ಕಿಂತ ಕೆಸರನ್ನು ತುಳಿಯದಿರುವುದೇ ಒಳ್ಳೆಯದು. ಹೀಗೆ ತೊಂದರೆಯುಂಟಾಗುವುದೆಂದು ತಿಳಿದೂ ಆ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಿ ತೊಂದರೆಯ ಪರಿಹಾರೋಪಾಯ ಹುಡುಕುವುದು ಮೂರ್ಖತನ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯ. “ಪ್ರಕಾಶನಾದ್ವಿ ಪಕ್ಷಸ್ಯ ದ್ವರಾದಸ್ಪರ್ಶನಂ ವರಮ್” |

(17) ಬಿಜಾಹ್ತುರನ್ಯಾಯ:—ಬೀಜವು ಅಂಕುರೋತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣವೇ ಅಥವಾ ಅಂಕುರವು ಬೀಜೋತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣವೇ ಈ ರೀತಿ ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಶ್ರಯ ದೋಷವು ಸಂಭವಿಸುವುದು. ಹೀಗೆಯೇ ಪ್ರಾಕೃತ ಕರ್ಮಗಳಿಂದ ಶರೀರಪ್ರಾಪ್ತಿಯೇ ಅಥವಾ ಶರೀರವನ್ನು ಪಡೆಯುವುದರಿಂದ ಕರ್ಮಗಳೇ ಎಂದು ಇಲ್ಲಿಯೂ ಈ ದೋಷವು ತೋರುವುದು. ಎರಡೂ

ಅನಾದಿಯೆಂದು ಹೇಳುವುದರಿಂದ ಈ ದೋಷ ಪರಿಹಾರ: ಇಂತಹ ಪ್ರಸಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯಕ್ಕೆ ಪ್ರವೃತ್ತಿ. “ನ ಚ ಕರ್ಮಾಂತರೇಣ ಶರೀರಂ ಸಂಭವತಿ | ನ ಚ ಶರೀರಮಂತರೇಣ ಕರ್ಮ ಸಂಭವತಿ ಇತಿ ಇತರೇತರಾಶ್ರಯತ್ವಪ್ರಸಂಗಃ | ಅನಾದಿತ್ವೇ ತು ಬಿಜಾಹ್ತುರನ್ಯಾಯೇನೋಪಪತ್ತೇನ ಕಶ್ಚಿದ್ವಿಧೋ ಭವತಿ” |

(18) ಮಿಶ್ರುಪಾದಪ್ರಸರಣನ್ಯಾಯ:—ಭಿಕ್ಷುಕನು ಒಬ್ಬ ಧನಿಕನ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಉಣ್ಣಿ ವಸ್ತ್ರ ವಾಸ ಮೊದಲಾದ ಸೌಕರ್ಯಗಳನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸುವ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ಮೊದಲು ಭಿಕ್ಷೆಯ ಯಾಚನೆ ಅನಂತರ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲಲು ಸ್ವಲ್ಪ ಸ್ಥಳಾವಕಾಶ ಪಡೆದು ಯಜಮಾನನ ಪ್ರೀತಿವಿಶ್ವಾಸಗಳನ್ನು ಕ್ರಮೇಣ ಗಳಿಸಿ ಸರ್ವಸ್ವವನ್ನೂ ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಳ್ಳುವಂತೆ ಸ್ವಲ್ಪ ಮಾತ್ರ ಫಲದ ನೆಪದಿಂದ ಪ್ರವರ್ತಿಸಿ ಕ್ರಮೇಣ ಸರ್ವಾಭಿಷ್ಠಗಳನ್ನೂ ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವನ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯಕ್ಕೆ ಪ್ರವೃತ್ತಿ.

(19) ವರಮಣ ಕಪಿತ: ಸ್ವಾ ಮಯೂರಾತ್:—ನಾಳೆ ದೊರಕುವುದೆಂದು ಪ್ರೀಕ್ಷಿಸುವ ಮಯೂರಕ್ಕಿಂತಲೂ ಈ ದಿನ ದೊರೆತ ಕಪೋತವೇ ಶ್ರೇಷ್ಠ. ನಾಳೆ ಇದಕ್ಕಿಂತಲೂ ವಿಶೇಷವಾದ ಫಲವು ದೊರಕುವುದೆಂಬ ಪ್ರೀಕ್ಷೆಯಿಂದ ಈ ದಿನ ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗಿರುವ ಸಾಮಾನ್ಯಫಲವನ್ನು ಕೈಬಿಡುವುದು ಬುದ್ಧಿವಂತನ ಲಕ್ಷಣವಲ್ಲ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯಕ್ಕೆ ಪ್ರವೃತ್ತಿ.

(20) ಸ್ವಚಿಕಿಡಾಹನ್ಯಾಯ:—ಸೂಜಿಯನ್ನು ತಯಾರಿಸಲು ಅಲ್ಪಕಾಲ ಮತ್ತು ಅಲ್ಪಪ್ರಯತ್ನ ಸಾಕು. ಕಟಾಹವನ್ನು ತಯಾರಿಸಲು ಹೆಚ್ಚು ಕಾಲ ಮತ್ತು ಪ್ರಯತ್ನಗಳು ಬೇಕಾಗುವುವು. ಅದುದರಿಂದ ಅಲ್ಪಪ್ರಯತ್ನಸಾಧ್ಯವಾದ ಸೂಜಿಯ ನಿರ್ಮಾಣಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮೊದಲು ಕೈಗೊಂಡು ಅನಂತರ ಕಟಾಹಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಮನುಷ್ಯನು ತೊಡಗುವನು. ಹೀಗೆಯೇ ಅಲ್ಪಪ್ರಯತ್ನ ಸಾಧ್ಯವಾದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮೊದಲುಮಾಡಿ ಅನಂತರ ಹೆಚ್ಚು ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ನಡೆಯಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಕೈಗೊಳ್ಳಬೇಕೆಂದು ಹೇಳುವ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈ ನ್ಯಾಯವು ಹೊರಟಿದೆ.

ನ್ಯಾಯಪಥ ನ್ಯಾಯಪಥ (೪೦) ಮೀಮಾಂಸಾಶಾಸ್ತ್ರ. ನ್ಯಾಯೋಪೇತ: ಪನ್ಥಾ: |

ನ್ಯಾಯವಾಚಿನ್ ನ್ಯಾಯವರ್ತಿಸ್ (ವಿಂ) ನ್ಯಾಯಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವವನು. ಯೋಗ್ಯವಾದ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ವ್ಯವಹರಿಸುವವನು.

ನ್ಯಾಯವಾಚಿನ್ ನ್ಯಾಯವಾದಿಸ್ (ವಿಂ) ವಕೀಲ, ನ್ಯಾಯವನ್ನು ಹಿಡಿದು ವಾದಿಸುವವನು.



**ನ್ಯಾಯವೃತ್ತ ನ್ಯಾಯವೃತ್ತ** (ನಂ) 1. ನ್ಯಾಯವಾಗಿ ನಡೆಸುವ ವ್ಯವಹಾರ: ನ್ಯಾಯೋಪೇತ ವೃತ್ತಮ್ | (ವಿಂ) 2. ನ್ಯಾಯವಾದ ವ್ಯವಹಾರ ನಡೆಸುವವನು.

**ನ್ಯಾಯವೃತ್ತಿ ನ್ಯಾಯವೃತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನ್ಯಾಯಮಾರ್ಗದಿಂದ ನಡೆಸುವ ವ್ಯವಹಾರ. 2. ನ್ಯಾಯವಾಗಿ ವಾದಿಸುವ ವಕೀಲನ ಜೀವನ.

**ನ್ಯಾಯಿನ್ ನ್ಯಾಯಿನ್** (ವಿಂ) ನ್ಯಾಯವಂತ.

**ನ್ಯಾಯ್ಯ ನ್ಯಾಯ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ನ್ಯಾಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ನ್ಯಾಯಾದನಪೇತ: | "ನ್ಯಾಯ್ಯಾತ್ಪಥ: ಪ್ರವಿಚಲಂತಿ ಪಥಂ ನ ಧೀರಾ:" ಭರ್ತೃಂ | 2. ನ್ಯಾಯಸಿದ್ಧವಾದ, ನ್ಯಾಯಪ್ರಾಪ್ತವಾದ. ನ್ಯಾಯಾದಾಗತ: | 3. ನ್ಯಾಯದಲ್ಲಿರುವ. ನ್ಯಾಯೇ ಭವ: "ಯತ್" (೪-೩-೪೪) | "ದೇವಾಶ್ಚೇತಾನ್ ಸಮೇತ್ಯೋಚುರ್ನ್ಯಾಯಿನ್ ವ: ಶಿಶುರುಕ್ತವಾನ್" ಮನುಂ ೨-೧೪೨ |

**ನ್ಯಾಸ ನ್ಯಾಸ** (ಪುಂ) 1. ಇಡುವುದು, ಇರಿಸುವುದು. ನಿ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) ಭಾವೇ "ಏ" (೩-೩-೧೮) | "ತಸ್ಯಾ: ಸ್ವರನ್ಯಾಸಪವಿತ್ರಪಾಂಸುಮಪಾಂಸುಲಾನಾಂ ಧುರಿ ಕೀರ್ತನೀಯಾ" ರಘುಂ ೨-೨ | "ನಮಯನ್ ಸಾರಗುಣಿಭಿ: ಪಾದನ್ಯಾಸೇವಸುನ್ಧರಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೬-೪೦ | 2. ನಿಕ್ಷೇಪ, ಕೇಳಿದಾಗ ಕೊಡಲು ಹೇಳಿ ಒಬ್ಬನಲ್ಲಿ ಇಡುವ ವಸ್ತು. ನಿ + ಅಸು ಕರ್ಮಂ "ಏ" (೩-೩-೧೯) | "ಅರ್ಥೋ ಹಿ ಕನ್ಯಾ ಪರಕೀಯ ಏವ ತಾಮಘ ಸಂಪ್ರೇಷ್ಯ ಪರಿಗ್ರಹೀತು: | ಜಾತೋ ಮಮಾಯಂ ವಿಶದ: ಪ್ರಕಾಶಂ ಪ್ರತ್ಯಪಿತನ್ಯಾಸ ಇವಾಂತರಾತ್ಮಾ" ಶಾಕುಂ ೪-೨೧ | 3. ತ್ಯಾಗ, ವರ್ಜನ, ತೊರೆದುಬಿಡುವುದು. "ಕಾಮ್ಯಾನಾಂ ಕರ್ಮಣಾಂ ನ್ಯಾಸಂ ಸನ್ಯಾಸಂ ಕವಯೋ ವಿಧು:" ಗೀತಾ ೧೮-೨ | 4. ಅರ್ಪಣ, ಸಮರ್ಪಿಸುವುದು, ಒಪ್ಪಿಸುವುದು. 5. ಶರೀರದ ಅಂಗಗಳಲ್ಲಿ ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಮಾಡುವ ಮಂತ್ರೋಚ್ಚಾರಣ ರೂಪವಾದ ಕಾರ್ಯ. ಅಙ್ಗನ್ಯಾಸ:, ಕರನ್ಯಾಸ: | 6. ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ. "ಅನುತ್ಸುಕ್ತಪದನ್ಯಾಸಾ ಸದ್ವೃತ್ತಿ: ಸನ್ನಿಬಂಧನಾ | ಶಬ್ದವಿವೇಕ ನೋ ಭಾತಿ ರಾಜನೀತಿರಪಸ್ಪಶಾ" ಮಾಘಂ ೨-೧೧೨ |

**ನ್ಯಾಸಿನ್ ನ್ಯಾಸಿನ್** (ವಿಂ) 1. ತ್ಯಾಗಮಾಡುವವನು, ಬಿಟ್ಟುಬಿಡುವವನು. 2. ಸಂನ್ಯಾಸಿ, ಸರ್ವಸಂಗ ಪರಿತ್ಯಾಗ

ಮಾಡಿದ ಯತಿ. ನಿ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಜಿನಿ:" (೩-೨-೭೮) |

**ನ್ಯುಕ್ತ ನ್ಯುಕ್ತ** (ವಿಂ) ಪಿತ್ತಗಳನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ (ತರ್ಪಣ). ನಿ + ಙು ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |

**ನ್ಯುಪ್ಯಮಾನ ನ್ಯುಪ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) ಪಿತ್ತಗಳಿಗೆ ಕೊಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ (ಜಲತರ್ಪಣ). ನಿ + ಙು ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ನ್ಯುಪ್ಯಮಾನಜಲಯೋಗಿತಲಿಘಿ: ಸ ದ್ವಿರುಕ್ತಕರಕಾಲತಲೋಽಭೂತ್" ನೈಷಂ ೨೧-೨೦ |

**ನ್ಯುಜ್ಜ ನ್ಯುಜ್ಜ** (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಮರಂಗ ವೃಕ್ಷ, ಕಡಾರದ ಗಿಡ, ಒಂದು ಜಾತಿಯ ನಿಂಬೆಗಿಡ. ನಿ + ಙಜ (ಆಜೇವ) "ಏ" (೩-೩-೧೮) | 2. ದರ್ಭದಿಂದ ಮಾಡಿದ ಯಾಗದ ಒಂದು ಪಾತ್ರೆ. (ವಿಂ) 3. ಕುಬ್ಜ, ವಾಮನ, ಗಿಡ್ಡ, ಕುಳ್ಳು. 4. ಬೆನ್ನುನ್ನು ಬಗ್ಗಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ ಗೂನ, ಬಗ್ಗಿದ ಬೆನ್ನುಳ್ಳವನು. 5. ಕೆಳಮುಖವಾದ, ಅಧೋಮುಖವಾದ. "ಋರ್ವಿಪಿತನ್ಯುಜ್ಜಕಡಾಹಕಲ್ಪೇ ಯದ್ವಿಧೋಽಪಿ ದಿನಾಧಿಪೇನ" ನೈಷಂ ೨೨-೩೧ | "ನ್ಯುಜ್ಜಂ ಕುಜ್ಜೇ ಕರ್ಮರಂಜೇ ನ್ಯುಜ್ಜೋ ವ್ಯಾಧಾವಧೋಮುಖೇ" ವೈಜಂ | "ನ್ಯುಜ್ಜ: ಕುಜ್ಜೇ ಕುಶ-ಸುಚಿ" ಹೇಮಂ | (ನಂ) 6. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ನಿಂಬೆಹಣ್ಣು, ಕಡಾರದ ಹಣ್ಣು.

**ನ್ಯೂನ ನ್ಯೂನ** (ವಿಂ) 1. ಗಹೀತವಾದ, ತುಚ್ಛವಾದ, ನೀಚವಾದ. ನಿ + ಙನ (ಪರಿಹಾಣ) "ಅ" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ಕಡಮೆಯಾದ, ಕೊರತೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಸಮಗ್ರವಲ್ಲದ. "ನಾನ್ಯದನ್ಯೇನ ಸಂಸೃಷ್ಟರೂಪಂ ವಿಕ್ರಯಮರ್ಹತಿ | ನ ಚಾಸಾರಂ ನ ಚ ನ್ಯೂನಂ ನ ದೂರೇ ನ ತಿರೋಹಿತಮ್" ಮನುಂ ೮-೨೦೩ |

**ನ್ಯೋಕ್ಸ್ ನ್ಯೋಕ್ಸ್** (ವಿಂ) ಶಾಶ್ವತವಾದ ವಾಸಸ್ಥಾನವುಳ್ಳವನು.

**ನ್ಯೋಜಸ್ ನ್ಯೋಜಸ್** (ವಿಂ) ವಕ್ರವಾದ, ಕುಟಲವಾದ. ನಿ + ಙಜ (ಆಜೇವ) "ಅಸುನ್" (೩ಂ ೪-೧೮೮) |

**ನೃಸಿಂಹಾಲಿನ್ ನೃಸಿಂಹಾಲಿನ್** (ಪುಂ) ನರಾಸ್ಥಿ ಮಾಲೆಯನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಶಿವ. ನೃಸಿಂಹಾಲಿನ್ ಅಸ್ಯಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೬) |

ಇತಿ "ನ" ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್ |

**"ನಾರಾಯಣ" ಪದಪರಿಶಿಷ್ಟಮ್**

2. ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿಮರ. 3. ಸದ್ಯ: ಹುಟ್ಟಿದ ಜಂತು. 4. ಜಲ, ನೀರು. 5. ಸದಾಶಿವ. 6. ಮಹಾಪದ್ಮ. 7. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. 8. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. 9. ಚತುರ್ಮುಖ. 10. ಚಂದ್ರ. 11. ಹಿಮಾಲಯ. 12. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. 13. ಕಪಿತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಬೇಲದ

ಮರ. 14. ಜಯ. 15. ನೀರಿನ ಸುಳಿ. 16. ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. (ನಂ) 17. ಮಂಗಳ, ಶುಭ. 18. ಅಶ್ವಮೇಧ ಯಾಗ ಮಾಡಿದವನು. ಶಬ್ದಾರ್ಥಕಲ್ಪತರ: |

**"ನಾರಾಯಣಿ" ಪದಪರಿಶಿಷ್ಟಮ್**

5. ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಬೆಳದಿಂಗಳು. 6. ಸರಸ್ವತಿ. 7. ಗೋಪುತ್ಸ್ಯ, 8. ಪಟ್ಟದ ರಾಣಿ. 9. ಗಂಗಾನದಿ. ಶಬ್ದಾರ್ಥಕಲ್ಪತರ: |



# ಪ

ಪ ಪ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ "ಪ" ವರ್ಗದ ಮೊದಲನೆಯ ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಂತರಸ್ವಪ್ರಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಓಷ್ಠಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಅಲ್ಪಪ್ರಾಣವರ್ಣ. "ಕಾದಯೋ ಮಾವಸಾನಾಃ ಸಮರ್ಶಾಃ" "ಸ್ಪೃಷ್ಟಂ ಪ್ರಯತನಂ ಸ್ಪರ್ಶಿನಾಮ್" "ಉಪ್ಪಧಮಾನೀಯಾ-ನಾಮೋಷ್ಠಿ" ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ಪ ಪ (ಪುಂ) 1. ಧನಾಧಿಪತಿ, ಕುಬೇರ. ಪಾತಿ—ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಙ:" ಬಾಹುಂ । 2. ಪವನ, ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಪಾತಯತಿ ವೃಕ್ಷಾನ್ — ಪಲ್ (ಗತೌ) ಅಂತರ್ಗಿನ್ "ಙ:" । 3. ಪರ್ಣ, ಎಲೆ. ಪತತಿ ವೃಕ್ಷಾತ್ — ಪಲ್ "ಙ:" । 4. ಪಾನ, ಕುಡಿಯುವುದು. ಪೀಯತೆ । 5. ಪಶ್ಚಿಮದಿಕ್ಕು. 6. ಅಂಡ, ತತ್ತಿ, ಮೊಟ್ಟೆ. 7. ಪ್ರಾಕಾರ. 8. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. 9. ಕೌಸ್ತುಭಮಣಿ. 10. ಶುಭಲಗ್ನ. 11. ರಣ, ಯುದ್ಧ. 12. ಶೈಲ, ಬೆಟ್ಟ. (ನಂ) 13. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. (ವಿಂ) 14. ಕುಡಿಯುವವನು. 15. ರಕ್ಷಕ, ಕಾಪಾಡುವವನು. [ಇದು ಸಮಾಸದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಬರುವುದು.] ದ್ವಿಪ: ನೃಪ: ಇತ್ಯಾದಿ. 16. ಪವಿತ್ರವಾದ, ಪರಿಶುದ್ಧವಾದ. "ಪ: ಕ್ವಬೇರ: ಸಮಾಖ್ಯಾತ: ಪಶ್ಚಿಮೇ ಚ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತ: । ಪವನೇ ಪ: ಸಮಾಖ್ಯಾತ: ಪ: ಸ್ಯಾತ್ ಪಾನೇ ಚ ಪಾತರಿ" ಏಕಾಂ । "ಪೌ ನಾ ವಾತಾಙ್ಡಪುತೇಷು ಪಾನೇ ಪಾತರಿ ಕೀರ್ತಿತ:" ಮೇದಿಂ । "ಪ: ಪುಮಾನ್ ಪವನೇ ಶೇಲೇ ಪ್ರಾಕಾರೇ ಕೌಸ್ತುಭೇ ರಣೇ । ಶುಭ-ಲಗ್ನೇಷು ಪಂ ಕಲಿಬೇ ಹೇಮಿನಿ" ನಾನಾರ್ಥರಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾ ಪಾ. 17. ನೀರಿನ ಧಾರೆ. 18. ಅಮೃತ. 19. ಸಂಮತಿ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. "ಸ್ತ್ರೀಲಿಜ್ಜೇ ತ್ವಮ್ಬುಧಾರಾಯಾಂ ಸುಧಾಯಾಂ ಸಂಮತೌ ಚ ಪಾ" ನಾನಾರ್ಥರಂ ।

ಪಕಾರ ಪಕಾರ (ಪುಂ) "ಪ" ವರ್ಣ. ಪ "ಕಾರ:" (೩-೩-೧೦೮) ।

ಪಕಕಣ ಪಕಕಣ (ಪುಂ) ಬೇಡರ ಮನೆಗಳಿರುವ ಗ್ರಾಮ, ಬೇಡರ ಹಳ್ಳಿ. ಪಕಂತಿ — ಟು ಪಚ್ (ಪಾಕೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೧೭೮) । ಕಣಂತಿ — ಕಣ (ಶಬ್ದೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । ಪಚ: ಕಣಾ: ಯತ್ರ ಪಕಕಣ: । ಬೇಯಿಸಿ ತಿನ್ನುವುದು ಜಗಳವಾಡುವುದು ಇವೇ ಪ್ರಧಾನವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಪಕಕಣ: ಶಬರಾಲಯ:" ಅಮಂ ।

ಪಕ್ತಿ ಪಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಾಕ, ಅಡಿಗೆ, ಬೇಯಿಸುವುದು. ಟುಪಚ್ (ಪಾಕೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) । 2. ಗೌರವ, ಮರ್ಯಾದೆ. "ಪಕ್ತಿಗೌರವಪಾಕಯೋ:" ಹೇಮಂ । 3. ಪಕ್ವ

ವಾಗುವುದು, ಹಣ್ಣಾಗುವುದು. 4. ಪರಿಣಾಮ ಹೊಂದುವುದು. 5. ಜೀರ್ಣವಾಗುವುದು, ಅರಗುವುದು.

ಪಕ್ತಿಕಾ ಪಕ್ತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಳಿಯ ಸಾಸವೆ. "ಶತ: ಸಿದ್ಧಾರ್ಥ-ತೊಡಕೌ । ಪಕ್ತಿಕಾ ತ್ರಿಷ್ಟುಭಾ ಚಾಸ್ಮಿನ್ ಗೌರೇ" ವೈಜಂ ।

ಪಕ್ತಿಶೂಲ ಪಕ್ತಿಶೂಲ (ನಂ) ಅಹಾರವು ಜೀರ್ಣವಾಗುವ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಉದರಶೂಲೆ, ಪರಿಣಾಮಶೂಲೆ, ಹೊಟ್ಟೆನೋವು. ಪಕ್ತೌ ಅನ್ನಪರಿಣಾಮಕಾಲೇ ಶೂಲಮ್ ।

ಪಕ್ತ್ ಪಕ್ತ್ (ವಿಂ) ಅಡಿಗೆಮಾಡುವವನು, ಬೇಯಿಸುವವನು. ಟು ಪಚ್ (ಪಾಕೇ) "ತಚ್" (೩-೧-೧೩೩) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ತೌಪ್" (೪-೧-೪) । -ಕತ್ರೊ -ಕ್ತೌ ।

ಪಕ್ತಿಮ ಪಕ್ತಿಮ (ವಿಂ) 1. ಪಾಕದಿಂದ ಸಿದ್ಧವಾದ. ಟು ಪಚ್ (ಪಾಕೇ) "ಕ್ತಿಮ:" (೩-೩-೮೮) । "ಮಮ್" (೪-೪-೨೦) । 2. ಹಣ್ಣಾಗಿರುವ, ಪಕ್ವವಾದ, ಮಾಗಿರುವ.

ಪಕ್ವ ಪಕ್ವ (ವಿಂ) 1. ಪರಿಣತವಾದ. ಕಾಲವಶದಿಂದ ಹಣ್ಣಾಗಿರುವ. ಪಚ್ಯತೇ ಸಮ — ಟು ಪಚ್ (ಪಾಕೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । "ವ:" (೮-೨-೪೨) । 2. ಪಾಕಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸಂಪೂರ್ಣತೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿದ, ನೈಪುಣ್ಯವನ್ನು ಹೊಂದಿದ. 4. ವಿನಾಶದ ಅಂಚನ್ನು ಮುಟ್ಟಿರುವ. "ಪಕ್ವಂ ಪರಿಣತೇಽಪಿ ಸ್ಯಾಧ್ವಿನಾಶಾ-ಭಿಮುಖೇ ತ್ರಿಷು" ಮೇದಿಂ । 5. ಹುರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಷ್ಟಂ ಪಕ್ವಂ ವಿನಾಮ್ಬುನಾ" ವೈಜಂ । 6. ಕಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕುಡಿಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕರಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಶೀನಂ ಸ್ಥಾನಂ ಶೃತಂ ಪಕ್ವಂ ವಿಲೀನಂ ವಿಧೃತಂ ದೃತಮ್" ವೈಜಂ । 7. ಜೀರ್ಣವಾದ, ಅರಗಿದ. (ನಂ) 8. ಕಾಯಿಸಿದ ಹಾಲಿನಿಂದ ಮಾಡಿದ ಮೊಸರು. "ಪಕ್ವಂ ಸ್ಯಾತ್ ಸಂಜ್ಞಾತಂ ಪಯಸ: ಶೃತಾತ್" ವೈಜಂ । 9. ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಅನ್ನ, -ಅಹಾರ. 10. ಬೇಯಿಸುವುದು. ಪಚ್ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" ।

ಪಕ್ವಕೃತ್ ಪಕ್ವಕೃತ್ (ಪುಂ) ಅಡಿಗೆ ಮಾಡುವವನು. ಪಕ್ವಂ ಕರೋತಿ — ಟು ಕೃತ್ (ಕರಣೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬) ।

ಪಕ್ವರಸ ಪಕ್ವರಸ (ಪುಂ) ಮದ್ಯ.

ಪಕ್ವವಾರಿ ಪಕ್ವವಾರಿ (ನಂ) ಗಂಜಿ, ಅಂಬಲಿ.

ಪಕ್ವಾನ್ನ ಪಕ್ವಾನ್ನ (ನಂ) ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಅನ್ನ, ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಅಕ್ಕಿ ಮೊದಲಾದ ಅಹಾರಧಾನ್ಯ. ಪಕ್ವಮನ್ನಮ್ ।

ಪಕ್ವಾಧಾನ ಪಕ್ವಾಧಾನ (ನಂ) ಹೊಟ್ಟೆ, ಅಹಾರವು ಜೀರ್ಣವಾಗುವ ನಾಭಿಯ ಕೆಳಭಾಗ. ಪಕ್ವಸ್ಯಾಧಾನಮ್ ।



ಪಕ್ವಾಶಯ ಪಕ್ವಾಶಯ (ಪುಂ) ಹೊಟ್ಟೆ, ತಿಂದ ಆಹಾರವು  
 ಜೀರ್ಣವಾಗುವ ಭಾಗ (ಸ್ಥಳ), ನಾಭಿಯ ಕೆಳಗಿನ ಭಾಗ.  
 ಪಕ್ವಮ್ ಆಮಾದಿಕಮ್ ಆಶೇತೇಽತ್ರ — ಆ + ಶೀಙ್ (ಸ್ವಪ್ನೆ)  
 “ಅಚ್” (೩-೩-೪೬) । “ಪಕ್ವಾಶಯಸ್ತ್ವಘೋ ನಾಭೇರ್ದ್ವ-  
 ಮಾಮಾಶಯಃ ಸ್ಮೃತಃ” ।

ಪಕ್ಷ ಪಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಪಾರ್ಶ್ವ, ಮಗ್ಗಲು. ಪಕ್ಷ (ಪರಿಗ್ರಹ) "ಘ್" (೩-೩-೧೯)। "ಶಯ್ಯಾಂ ಜಹತ್ಯುಭಯಪಕ್ಷವಿನೀತಿನಿಧ್ರಾಃ ಸ್ತಮ್ಬೇರಮಾಮುಖರಶೃಂಗಲಕರ್ಷಣಸ್ತೇ" ರಘುಂ ೪-೭೨। 2. ಪಕ್ಷಿ ಗಳ ರೆಕ್ಕೆ, ಹಕ್ಕಿಗಳ ಗಿರಿ. "ಅಥಾವಲಮ್ಬ್ಯ ಕ್ಷಣಮೇಕಪಾದಿಕಾಂ ತದಾ ನಿದದ್ರಾವುಪಪ್ತವಲಂ ಖಗಃ। ಸ ತಿರ್ಯಗಾವಜಿತಕನ್ಧರಃ ಶಿರಃ ಪಿಥಾಯ ಪಕ್ಷೇಣ ರತಿಕಲಮಾಲಸಃ" ನೆಪಂ ೧-೧೨೧। 3. ಬಾಣದ ಗಿರಿ. "ಭಿತ್ತವಾ ಧೋನಾಮಾಯಸೇನಾವಿವಕ್ಷಃ ಸ್ಥೂರಿ-ಪೃಷ್ಠೋ ಗಾಘ್ರಪಕ್ಷೇಣ ವಿಧ್ವಃ" ಮಾಘಂ ೧೮-೨೨। 4. ಕೇಶ ಪಾಶ, ಕೇಶಸಮೂಹ. "ಪಾಶಃ ಪಕ್ಷಶ್ಚ ಹಸ್ತಶ್ಚ ಕಲಾ-ಪಾರ್ಥಿಃ ಕಚಾತ್ಪರೇ" ಅಮಂ। 5. ಮಾಸದ ಅರ್ಧಭಾಗ, ತಿಂಗಳಿನಲ್ಲಿ ಹದಿನೈದು ದಿನಗಳನ್ನೊಳಗೊಂಡ ಒಂದು ಭಾಗ, ಅರ್ಧಭಾಗ ಶುಕ್ಲ ಪಕ್ಷ. ಇನ್ನರ್ಧಭಾಗ ಕೃಷ್ಣ ಪಕ್ಷ. ಈ ರೀತಿ ಮಾಸದಲ್ಲಿ ಎರಡು ಪಕ್ಷಗಳು. ಪಕ್ಷಯತೆ ಪರಿಗೃಹ್ಯತೆ ದೇವ-ಪಿತೃಕಾರ್ಯಾಯ - ಪಕ್ಷ (ಪರಿಗ್ರಹ) "ಘ್" (೩-೩-೧೯)। "ಪಕ್ಷಸ್ತೇ ದಶ ಪञ್ಚ ಚ। ಪಕ್ಷೌ ಪೂರ್ವಾಪರೌ ಶುಕ್ಲಕೃಷ್ಣೌ" ಅಮಂ। "ಪಿಶ್ಯೇ ರಾತ್ರಯಹನೀ ಮಾಸಃ ಪ್ರವಿಭಾಗಸ್ತು ಪಕ್ಷಯೋಃ" ಮನುಂ ೧-೬೬। "ಸೀತಾ ವೃದ್ಧಿ ಸಮಾಯಾತಿ ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷ ಇವೌಡುರಾಡ್" ಪञ್ಚತಂ ೧-೧೦೧। 6. ಒಂದು ಪಂಗಡ, ಒಂದು ಗುಂಪು, ಕಕ್ಷಿ. "ಸಹಜಚಾಪಲದೋಷಸಮುದ್ರತಶ್ಚಲಿತ-ದುರ್ಬಲಪಕ್ಷಪರಿಗ್ರಹಃ" ಮಾಘಂ ೨-೧೧೭। 7. ಸಂದೇಹದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಸಾಧ್ಯವುಳ್ಳ ವಸ್ತು. "ಪರ್ವತೌ ವಹ್ನಿಮಾನ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪರ್ವತೌ ವಹ್ನಿಮಾನ್ ನ ವಾ ಎಂಬ ಸಂದೇಹವಿರುವುದರಿಂದ ವಹ್ನಿಮತ್ವ ರೂಪಸಾಧ್ಯವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಸಂದೇಹದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪರ್ವತವು ಪಕ್ಷವಾಗುವುದು. "ಸಂದಿಗ್ಧ-ಸಾಧ್ಯವಾನ್ ಪಕ್ಷಃ" ತಂ ಸಂ। 8. ವಿರೋಧ, ಹಗೆತನ. 9. ಹಾಗೆ ಭಾವಿಸುವುದು, ಹಾಗೆ ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವುದು, ವಿಕಲ್ಪವಾಗಿ ತಿಳಿಯುವುದು. 10. ಪ್ರಮೇಯದ ವಿಷಯ ದಲ್ಲಿ ವಾದ ಮಾಡುವಾಗ ತರ್ಕಬದ್ಧವಾಗಿ ಒಂದು ವಿಷಯ ಕುರಿತು ಮಾತನಾಡುವುದು. ಇದು ಪೂರ್ವಪಕ್ಷಃ उत्तरಪಕ್ಷಃ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ದೋಷನಿರೂಪಣೆ ಮಾಡಿ ಹೇಳುವುದು ಪೂರ್ವಪಕ್ಷ, ದೋಷವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸಿ ಸಿದ್ಧಾಂತಮಾಡುವುದು ಉತ್ತರಪಕ್ಷ. 11. ಕುಲ, ವಂಶ, ಸಂತತಿ. "ಕಿಂ ಕ್ಷಂದಸಿ ದುರಾಕ್ಷಂದ ಸ್ವಪಕ್ಷಕ್ಷಯಕಾರಕಃ। ಸ್ವಪಕ್ಷಸ್ಯ ಕ್ಷಯೇ ಜಾತೇ ಕೌ ನಸ್ತ್ರಾತಾ ಭವಿಷ್ಯತಿ" ಪञ್ಚತಂ ೪-೩೧।

12. ಬಲ, ಶಕ್ತಿ. 13. ಸಾಹಾಯ್ಯ, ಒಪ್ಪಾಸೆ.  
14. ಭಿಕ್ಷು, ಗೋಡೆ. 15. ಪಕ್ಕದ ಬಾಗಿಲು, ಪಾರ್ಶ್ವ  
ದ್ವಾರ. 16. ಒಲೆಯ ರಂಧ್ರ, ಒಲೆಯ ಸಂದು. 17.  
ಸಾಮಾನ್ಯ. 18. ಗೆಳೆಯ, ಮಿತ್ರ. “ಪಕ್ಷ: ಪಾರ್ಶ್ವಗಸ್ತ-  
ಸಾಧ್ಯಸಹಾಯಬಲಭಿತ್ತಿಷು । ಪಾರ್ಶ್ವದ್ವಾರೆ ವಿರೋಧೋಪಮಾಸೇ ಚುಲ್ಲ-  
ವಿಲೇಖಂತಿಕೇ” ವೈಜಂ. 19. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. 20. ರಾಜನ  
ಅನೆ. 21. ಪಾರ್ಶ್ವಗ್ರಾಹ, ಹನ್ನೆರಡು ಮಂದಿ ರಾಜರ  
ಲ್ಲೊಬ್ಬ, ವಿಜಯಯಾತ್ರೆಗಾಗಿ ಹೊರಟ ರಾಜನ ಹಿಂಭಾಗ  
ದಲ್ಲಿರುವ ರಾಜ. 22. ಸೈನ್ಯ. 23. ಶುದ್ಧಿ. 24. ದೇಹ.  
25. ಅವಯವ, ಅಂಗ. 26. ಗೃಹ, ಮನೆ. 27. ವರ್ಗ,  
ಸಮೂಹ. 28. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಒಂದು ಪಾರ್ಶ್ವ.  
“ಪಕ್ಷ: ಸಹಾಯಗರುದಂತಿಕಸಾಧ್ಯಭಿತ್ತಿಮಿತ್ರೇಷು ಚುಲ್ಲವಿವರೇ  
ನೃಪಕುಂಜರೇ ಚ । ಬೃಂದೇ ಕಚಾದುಪರಿ ಮಾಸದಲೇ ಚ ಪಕ್ಷದ್ವಾರೆ  
ಬಲೇ ಚ ಗಜಪಾರ್ಶ್ವವಿರೋಧಯೋಷ್ಚ” ನಾನಾರ್ಥರಂ ।

ಪಕ್ಷಕ ಪಕ್ಷಕ (ಪುಂ) 1. ಪಾರ್ಶ್ವದ ಬಾಗಿಲು, ಪಕ್ಕದ ಬಾಗಿಲು. ಪಕ್ಷ ಇವ "ಕನ್" (೪-೩-೯೬) । 2. ಒಂದು ಪಾರ್ಶ್ವ, ಒಂದು ಪಕ್ಕ. "ಅಥ ಪಾರ್ಶ್ವಂ ಚ ಪಕ್ಷದ್ವಾರಂ ಚ ಪಕ್ಷಕಃ" ನಾನಾರ್ಥರಂ । "ಗಜಪತಿಮಧಿರೋಹಃ ಪಕ್ಷಕವ್ಯತ್ಯಯೇನ" ಮಾಧಂ ೧೧-೭ । 3. ಪಕ್ಕದ ಕೊಠಡಿ. ಒಂದು ಪಕ್ಕದ ಕೊಠಡಿ. "ಪಕ್ಷಶಾಲಾ ತು ಪಕ್ಷಕಃ" ವೈಜಂ ।

**ಪಕ್ಷಚರ ಪಕ್ಷಿ ಚರ** (೪ಂ) 1. ಚಂದ್ರ. 2. ಒಂಟಿಯಾಗಿ  
ಸಂಚರಿಸುವ ಅನೆ, ಒಂಟಿ ಸಲಗ. "ಅಥ ಪಕ್ಷಚರಶ್ಚಂದ್ರೇ  
ಫಲಕಾರಿಗಜೇಷು ಚ" ಮೊದಿಂ. 3. ಗುಂಪಿನಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಿ  
ಕೊಂಡ ಅನೆ. 4. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. "ಯುಷ್ಮತ್ಪಕ್ಷೇ ಪಕ್ಷಚರ  
ಏಕಚರವಿಧೇ | ಖಗೇ ಚ" ನಾನಾರ್ಥರಂ |

ಪಕ್ಷಾಚ್ಛದ್ ಲಕ್ಷ್ಯಂ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. ಪಕ್ಷಂ ಚಿಂತಿ  
 —ಚಿದಿರ್ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) “ವಿವ್” (3-2-36)। “ಕ್ರುದ್ವೇಪಿ  
 ಪಕ್ಷಾಚ್ಛದಿ ವೃತ್ತಶಾಸ್ತ್ರಾವೇದನಾಂ ಕುಲಿಶಕಲಾನಾಮ್” ಕುಮಾಂ  
 1-20। (ವಿಂ) 2. ರೆಕ್ಕೆಯನ್ನು ಕತ್ತರಿಸುವ.

पक्षज ङङ्गुळ (पुं०) ङङ्गुळ. पक्षे शुक्लपक्षे जायते —  
जनी (प्रादुर्भावे) "ङ." (३-२-९७) ।

ಪಕ್ಷತಿ ಪಕ್ಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಕ್ಷದ ಮೂಲ, ರಕ್ಷೆಯ ಬುಡ.  
 ಪಕ್ಷಸ್ಯ ಮೂಲಮ್ "ತಿ:" (೪-೨-೨೪)। "ಕರಯನ್ತ್ರಣ-  
 ದನ್ತುರಾಂತರೇ ವ್ಯಲಿಖ್ಯಚ್ಚಪುಟೇನ ಪಕ್ಷತೀ" ನೈಷಂ ೨-೨।  
 2. ಪಕ್ಷದ ಪ್ರಾರಂಭದ ದಿನ. ಪ್ರತಿಪತ್ತು, ಪಾಡ್.  
 "ಪ್ರತಿಪತ್ ಪಕ್ಷತಿರ್ಜಯಾ ಗಣ್ಯಮೂಲೇಽಪಿ ಪಕ್ಷತಿ:" ಶಾಶ್ವಂ।

ಪಕ್ಷದ್ವಾರ ಪಕ್ಕದ್ವಾರ (ನಂ) ಪಾರ್ಶ್ವದ ಬಾಗಿಲು, ಪಕ್ಕದ ಬಾಗಿಲು. ಪಕ್ಷ ಪಾರ್ಶ್ವ ದ್ವಾರಮ್.



**ಪಕ್ಷಧರ ಪಕ್ಷಧರ (ಪುಂ)** 1. ಚಂದ್ರ. ಧರತಿ — ಭೂ (ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | ಪಕ್ಷಸ್ಯ ಧರಃ | 2. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. (ವಿಂ) 3. ಒಂದು ಪಕ್ಷವನ್ನು ಹಿಡಿದ ವನು, ಒಂದು ಗುಂಪಿಗೆ ಸೇರಿದವನು. 4. ರೆಕ್ಕೆಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ.

**ಪಕ್ಷಪಾತ ಪಕ್ಷಪಾತ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ಪಕ್ಷವನ್ನು ಹಿಡಿಯುವುದು, ಒಂದು ಗುಂಪನ್ನು ಸೇರುವುದು. ಪಕ್ಷ ಪಾತಃ | 2. ಅಸಕ್ತಿ, ಅಭಿಮಾನ. "ಅಸಕ್ತಮಾರಾಧಯತೋ ಯಥಾಯಂ ವಿಭಜ್ಯ ಮಕ್ತಯಾ ಸಮಪಕ್ಷಪಾತಯಾ" ಕಿರಾಂ ೧-೧೧ | 3. ಪ್ರೀತಿ, ಪ್ರೇಮ, ವಿಶ್ವಾಸ. "ವೀತಸ್ಪೃಹಾಣಾಮಪಿ ಮುಕ್ತಿ-ಭಾಜಾಂ ಭವಂತಿ ಮನ್ಯೇಷು ಹಿ ಪಕ್ಷಪಾತಃ" ಕಿರಾಂ ೩-೧೨ | 4. ನ್ಯಾಯವಲ್ಲದ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬನಿಗಾಗಲಿ ಒಂದು ಪಂಗಡಕ್ಕಾಗಲಿ ಸಾಹಾಯ್ಯಮಾಡುವ ಬುದ್ಧಿ. "ಪಕ್ಷಪಾತ-ಮತ್ರ ದೇವಿ ಮನ್ಯತೇ" ಮಾಲಂ ೧ | 5. ರೆಕ್ಕೆಗಳು ಬೀಳುವುದು, ಗರಿಗಳು ಉದುರುವುದು.

**ಪಕ್ಷಪಾತಿತಾ ಪಕ್ಷಪಾತಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಒಂದು ಪಕ್ಷವನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸುವುದು, ಒಂದು ಗುಂಪನ್ನು ಸೇರುವುದು. ಪಕ್ಷಪಾತಿನೋ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) | 2. ಒಬ್ಬನಿಗಾಗಲಿ ಒಂದು ಗುಂಪಿಗಾಗಲಿ ಸಾಹಾಯ್ಯಮಾಡುವ ಬುದ್ಧಿ. 3. ಸ್ನೇಹ, ಪ್ರೀತಿ, ವಿಶ್ವಾಸ. 4. ರೆಕ್ಕೆಗಳಿಂದ ಹಾರಾಡುವಿಕೆ. "ನ ಪರಂ ಪಥಿ ಪಕ್ಷಪಾತಿತಾನವಲಂಬೇ ಕಿಮು ಮಾದೃಶೇಽಪಿ ಸಾ" ನೈಷಂ ೨-೪೨ |

**ಪಕ್ಷಪಾತಿನ್ ಪಕ್ಷಪಾತಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಒಂದು ಪಕ್ಷವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ, ಒಂದು ಗುಂಪನ್ನು ಸೇರಿರುವ. 2. ಒಂದು ಗುಂಪಿನಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವಾಸವಿಟ್ಟಿರುವ, ಒಂದು ಪಕ್ಷಕ್ಕೆ ಸಾಹಾಯ್ಯ ಮಾಡುವ. "ಸರ್ವಥಾ ಪಾಣ್ಡವಪಕ್ಷಪಾತಿನೋ ದೇವಾಃ" ವೇಣೀಂ ೩ |

**ಪಕ್ಷಪಾಲಿ ಪಕ್ಷಪಾಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ರಹಸ್ಯವಾದ ಬಾಗಿಲು, ಗುಟ್ಟಾದ ಬಾಗಿಲು, ದಿಡ್ಡಿಬಾಗಿಲು.

**ಪಕ್ಷಭಾಗ ಪಕ್ಷಭಾಗ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ಪಾರ್ಶ್ವ. 2. ಅನೆಯ ಪಕ್ಕ, ಅನೆಯ ಒಂದು ಪಾರ್ಶ್ವಭಾಗ. ಪಕ್ಷಸ್ಯ ಭಾಗಃ |

**ಪಕ್ಷಮೂಲ ಪಕ್ಷಮೂಲ (ನಂ)** 1. ಶುಕ್ಲ ಮತ್ತು ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷಗಳ ಪ್ರಾರಂಭದ ದಿವಸ. 2. ರೆಕ್ಕೆಗಳ ಬುಡ, ಹಕ್ಕಿ ಗರಿಗಳ ಬುಡ.

**ಪಕ್ಷವಾಹನ ಪಕ್ಷವಾಹನ (ಪುಂ)** ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಪಕ್ಷೌ ವಾಹನ-ಮಿವಾಸ್ಯ |

**ಪಕ್ಷಸಂಧಿ ಪಕ್ಷಸಂಧಿ (ಪುಂ)** ಎರಡು ಪಕ್ಷಗಳ ಸಂಧಿಕಾಲ, ಶುಕ್ಲ ಮತ್ತು ಕೃಷ್ಣ ಪಕ್ಷಗಳು ಸೇರುವ ಕಾಲ.

**ಪಕ್ಷಾಘಾತ ಪಕ್ಷಾಘಾತ (ಪುಂ)** ಒಂದು ವಿಧ ವಾತರೋಗ, ಪಾರ್ಶ್ವವಾಯು ರೋಗ.

**ಪಕ್ಷಾಂತ ಪಕ್ಷಾಂತ (ಪುಂ)** ಪಕ್ಷದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಬರುವ 1. ಹುಣ್ಣಿಮೆ. 2. ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ. ಪಕ್ಷಸ್ಯಾಂತೋ ಯತ್ರ | 3. ಪಕ್ಷದ ಕೊನೆ. ಪಕ್ಷಸ್ಯಾಂತಃ |

**ಪಕ್ಷಾಂತರ ಪಕ್ಷಾಂತರ (ನಂ)** 1. ಬೇರೆ ಪಂಗಡ, ಬೇರೆ ಗುಂಪು. 2. ಇನ್ನೊಂದು ಪಾರ್ಶ್ವ. 3. ವಾದದ ಇನ್ನೊಂದು ದೃಷ್ಟಿ, ವಾದದ ಇನ್ನೊಂದು ಮುಖ. ಅನ್ಯಃ ಪಕ್ಷಃ |

**ಪಕ್ಷಿಣಿ ಪಕ್ಷಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಇಂದಿನ ಮತ್ತು ನಾಳೆಯ ಎರಡು ಹಗಲುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ರಾತ್ರಿ. ಪಕ್ಷಿಣ್ಯೌ ದಿವಸೌ ಯಸ್ಯಾಃ ಸ್ತಃ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) | "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪) | "ಆಗಾಮಿವರ್ತಮಾನಾಹರ್ಯುಕ್ತಾಯಾಂ ನಿಶಿ ಪಕ್ಷಿಣಿ" ಅಮಂ | 2. ಹೆಣ್ಣು ಹಕ್ಕಿ.

**ಪಕ್ಷಿನ್ ಪಕ್ಷಿನ್ (ಪುಂ)** ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಪಕ್ಷಾವಸ್ಯ ಸ್ತಃ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) | "ಯೇ ಪಕ್ಷಿಣಃ ಪ್ರಥಮಮಂಬುನಿಧಿ ಗತಾಸ್ತೇ ಯೇಪಿನ್ದ್ರಪಾಣಿತುಲಿತಾಯುಃಪಕ್ಷಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೩೧ |

**ಪಕ್ಷಿಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿ ಮತ್ತು ಅವುಗಳ ಸಂತಾನಃ**

(1) ಕಶ್ಯಪನ ಪತ್ನಿಯರಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬಳಾದ ವಿನತಾದೇವಿಗೆ ಅರುಣ ಮತ್ತು ಗರುಡ (ಗರುತ್ಮಾನ್) ಎಂಬ ಇಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳು.

ಅರುಣನ ಪತ್ನಿಯಾದ ಶ್ವೇನಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಪಾತಿ ಮತ್ತು ಜಟಾಯು ಎಂಬ ಇಬ್ಬರು ಜನಿಸಿದರು.

ಸಂಪಾತಿಯ ಸಂತಾನ ಗೃಧ್ರಗಳು

ಜಟಾಯುವಿನ ಸಂತಾನ ಕಾಗೆಗಳು

(2) ಗರುತ್ಮಂತನ ಪತ್ನಿಯರು ಭಾಸೀ ಕ್ರೌಂಚೀ ಶುನೀ ಶುಕೀ ಮತ್ತು ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರೀ ಎಂಬ ಐದು ಮಂದಿ.

ಶುನಿಯ ಮಕ್ಕಳು

ತ್ರಿಶಿಖಿ

6

ಸುನೇತ್ರ

ಸುಮುಖಿ

ಸುನಸ

ಸುರೂಪ ಮತ್ತು

ಸುಪರ್ವ

ಭಾಸಿಯ ಮಕ್ಕಳು

ಉಲೂಕ

6

ಕಾಗೆ

ಕುಕ್ಕುಟ

ಮಯೂರ

ಗುಬ್ಬಿಟ್ಟಿ

ಪಾರಿವಾಳ ಮತ್ತು

ತಿತ್ತಿರಿ



ಕೌಂಟಿಯ ಮಕ್ಕಳು

4

ಖಡ್ಗಮೃಗ

ಕುರವಕ

ಸಾರಸ ಮತ್ತು

ಬಕ

ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರಿಯ ಮಕ್ಕಳು

ಕಲಹಂಸ

ಕಪ್ಪುಕಾಲಿನ ಮತ್ತು

ಕಪ್ಪು ಕೊಕ್ಕುಳ್ಳ

ಹಂಸ

(ಧಾರ್ತರಾಷ್ಟ್ರ)

ಚಕ್ರವಾಕ ಶೈನ

ಮತ್ತು ಇತರ

ಜಲಚರಗಳು

ಶುಕಿಯ ಮಕ್ಕಳು

ಶುಕ ಜಾತಿಯ

ಪಕ್ಷಿಗಳು

ಇತ್ಯಾದಿ ಇನ್ನೂ ಅನೇಕ ಪಕ್ಷಿಗಳ ಸಂತತಿಗಳು ಇವರಿಂದ ಜನಿಸಿ ಮುಂದೆ ಅನಂತಾನಂತ ಕೋಟಿ ಸಂಖ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಗೊಂಡಿವೆ. (ವಿಂ) 2. ರೆಕ್ಕೆಗಳುಳ್ಳ.

**ಪಕ್ಷಿರಾಜ್ ಪಕ್ಷಿರಾಜ್** (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿಗಳಿಗೆಲ್ಲಾ ರಾಜನಾದ ಗರುಡ. ಪಕ್ಷಿಃ ರಾಜತೇ—ರಾಜ್ (ದೀಪ್ತ) "ವಿವಿ" (3-2-61)। "ನಿಜಕೇತುಶಿರಃಶ್ರಿತಃ ಸುಪರ್ಣಾದೃದಪ್ತಃ ತಾನಿ ಪಕ್ಷಿರಾಜಾಮ್" ಮಾಘಂ 20-42।

**ಪಕ್ಷಿರಾಜ ಪಕ್ಷಿರಾಜ** (ಪುಂ) ಎಲ್ಲಾ ಪಕ್ಷಿಗಳ ಜಾತಿಗೂ ಒಡೆಯನಾದ ಗರುಡ. ಪಕ್ಷಿಣಾಂ ರಾಜಾ "ರಾಜ್" (4-4-91)।

**ಗರುಡನಿಗೆ ಪಕ್ಷಿರಾಜತ್ವಪ್ರಾಪ್ತಿ:** ಕಶ್ಯಪನು ಪುತ್ರಾರ್ಥಿಯಾಗಿ ಯಾಗ ಮಾಡಲು ಯತ್ನಿಸಿದಾಗ ಇಂದ್ರ ಮತ್ತು ಮಹರ್ಷಿಗಳೆಲ್ಲರೂ ಯಾಗಕ್ಕಾಗಿ ಬೇಕಾದ ಅನೇಕ ಉಪಕರಣಗಳನ್ನು ಒದಗಿಸಿಕೊಡಲು ಬಂದರು. ತನ್ನೊಡನೆ ಬರುತ್ತಿದ್ದ ವಾಲಖಿಲ್ಯಮುಷಿಗಳನ್ನು ನೋಡಿ ಇಂದ್ರನು ಅಪಹಾಸ್ಯಮಾಡಲು ಮುಷಿಗಳು ಕ್ರೂರರಾಗಿ ಬೇರೊಬ್ಬ ಇಂದ್ರನನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಲು ಉಗ್ರವಾದ ಕಾರ್ಯವೊಂದನ್ನು ಕೈಗೊಂಡರು. ಇದರಿಂದ ಭೀತನಾದ ಇಂದ್ರನು ಕಶ್ಯಪರಲ್ಲಿ ಮೊರೆಯಿಡಲು ಕಶ್ಯಪರು ವಾಲಖಿಲ್ಯರನ್ನು ಸಮಾಧಾನಗೊಳಿಸಿ ಅವರ ಕರ್ಮಚರಣೆಯಿಂದ ಜನಿಸುವ ಪುತ್ರನು ಪಕ್ಷಿಜಾತಿಗಳಿಗೆಲ್ಲಾ ರಾಜನಾಗಲಿ ಎಂದು ಹೇಳಿದನು. ಕಶ್ಯಪಪತ್ನಿಯಾದ ವಿನತಾದೇವಿಯಲ್ಲಿ ಮಹಾ ಪರಾಕ್ರಮಶಾಲಿಗಳಾದ ಅರುಣ ಮತ್ತು ಗರುಡ ಎಂಬ ಇಬ್ಬರು ಪುತ್ರರು ಜನಿಸಿದರು. ಅರುಣನು ಸೂರ್ಯನ ಸಾರಥಿಯಾದನು. ಕಶ್ಯಪನು ಗರುಡನನ್ನು ಪಕ್ಷಿರಾಜನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ ನಡೆಸಿದನು. ಭಾಂ ಆದಿಂ 31।

**ಪಕ್ಷಿಸಿಂಹ ಪಕ್ಷಿಸಿಂಹ** (ಪುಂ) ಗರುಡ. ಪಕ್ಷಿ ಸಿಂಹ ಇವ।

**ಪಕ್ಷಿನ್ದ್ರ ಪಕ್ಷಿನ್ದ್ರ**, -ದೈಶ -ಈಶ (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. ಪಕ್ಷಿರಾಜ. 2. ವಿಷ್ಣು. "ಪಕ್ಷಿಶೋ ಗರುಡೇ ವಿಷ್ಣೋ" ಹೇಮಂ। "ಪ್ರಮಂಜನ ಇವಾಮ್ಬೋದಾನ್ ಪಕ್ಷಿನ್ದ್ರ ಇವ ಪಕ್ಷಿಗಾನ್" ಯಾದಂ 22-131।

**ಪಕ್ಷಮನ್ ಪಕ್ಷಮನ್** (ನಂ) 1. ರೆಪ್ಪೆಯ ಕೂದಲು, ಕಣ್ಣಿನ ಕೂದಲು. ಪಕ್ಷ (ಪರಿಗ್ರಹೇ) "ಮನಿನ್" (30-4-144)। "ಮಧಮಂದವಿಗಲತ್ರಪಮಿಷ್ವಕ್ಷುರ್ಮಿಷಿತಪಕ್ಷಮ ದಧತ್ಯಾ" ಮಾಘಂ 10-17। 2. ಪದ್ಮ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಕೇಸರ. ಕಂಜಲ್ಕ. 3. ಹಕ್ಕಿಗಳ ರೆಕ್ಕೆ. 4. ಹೂವುಗಳ ದಳ. 5. ದಾರದ ತೆಳುವಾದ ಭಾಗ. "ಪಕ್ಷಮಾಽಕ್ಷಿಲೋಮಿ ತನ್ವಾದಿಸ್ಪಕ್ಷಮಾಂಶೇ ಕುಸುಮಂಚ್ಛದೆ। ಗರುತ್ಕಿಂಜಲ್ಕಯೋಶ್ವಾಪಿ" ಹೇಮಂ। 6. ಹೊಗೆಯ ಗೂಡು.

**ಪಕ್ಷಮಾಲಾ ಪಕ್ಷಮಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೇತ್ರರೋಮಪುಕ್ತಿ, ರೆಪ್ಪೆಕೂದಲಿನ ಸಾಲು. ಪಕ್ಷಮಣಿ ಮಾಲಾ। "ಇತಿ ವದತಿ ಸಖಿಜನೇ ನಿಮಿಲದ್ವಿಗುಣಿತಸಾಂದ್ರತರಾಕ್ಷಿಪಕ್ಷಮಾಲಾ" ಮಾಘಂ 9-43।

**ಪಕ್ಷಮಲ ಪಕ್ಷಮಲ** (ವಿಂ) 1. ಸುಂದರವಾದ ರೆಪ್ಪೆಯ ಕೂದಲಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪಕ್ಷಮಾಲ್ಯಾಸ್ತಿ "ಲಕ್" (4-2-97)। "ಮುಖಮಂಸವಿವರ್ತಿ ಪಕ್ಷಮಲಾಕ್ಷ್ಯಾಃ ಕಥಮಪ್ಯುಗ್ರಮಿತಂ ನ ಚುಮ್ಬಿತಂ ತು" ಶಾಕುಂ 3-22। 2. ಲೋಮಮಯವಾದ, ಕೂದಲಿನಿಂದ ತುಂಬಿದ. "ಅಸ್ಮಿನ್ನಸೌ ಮೃದಿತಪಕ್ಷಮಲರಲ್ಲಕಾಙ್ಗಃ" ಮಾಘಂ 4-61।

**ಪಕ್ಷ ಪಂಕ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಸರು, ಕೊಚ್ಚೆ, ಬದಿ. ಪಚ್ಯತೇ—ಪಚಿ (ವಿಸ್ತಾರೇ) ಕರ್ಮಂ "ಪಚ್" (3-3-19)। "ಕಥಮೇತ್ಯ ಮತಿವಿಪರ್ಯಯಂ ಕರಿಣಿ ಪಕ್ಷಮಿವಾವಸೀದತಿ" ಕಿರಾಂ 2-6। 2. ಪಾಪ. ಪಚ್ಯತೇಜೇನ ದುಃಖಮ್—ಪಚಿ ಕರಂ "ಪಚ್" (3-3-121)।

**ಪಕ್ಷಕವಟ ಪಂಕಕವಟ** (ಪುಂ) ನೀರಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕೆಸರು. "ತುಲುಕೋ ಧನಜಮ್ಬಾಲೇ ದಲಾಡಧೇ ಪಕ್ಷಕವಟಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಪಕ್ಷಕೃತ ಪಂಕಕೃತ** (ಪುಂ) ಸೂಕರ, ಹಂದಿ. ಪಕ್ಷ ಕೃತಃ—ಕೃತ (ವಿಹಾರೇ) "ಅಕ್" (3-1-134)।

**ಪಕ್ಷಜ ಪಂಕಜ** (ನಂ) 1. ಪದ್ಮ, ತಾವರೆ, ಕಮಲ. ಪಕ್ಷ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಜಃ" (3-2-97)। "ನವಪಲಾಶಪಲಾಶವನಂ ಪುರಃ ಸ್ಫುಟಪರಾಗಪರಾಗತಪಕ್ಷಜಮ್" ಮಾಘಂ 6-2। [ಕಪ್ಪೆ ಮೊದಲಾದುವು ಕೆಸರಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದರೂ "ಕಮಲ" ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಇದು ಯೋಗ ರೂಢ.] 2. ಸಾರಸ ಪಕ್ಷಿ.



ಪಟ್ಟಜನ್ಮನ್ ಪಂಕಜನ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ, ತಾವರೆ. ಪಟ್ಟೆ ಜನ್ಮಾಸ್ಯ | 2. ಸಾರಸ ಪಕ್ಷಿ.

ಪಟ್ಟಜನಾಭ ಪಂಕಜನಾಭ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಪಟ್ಟಜ ನಾಭೋ ಯಸ್ಯ | "ಸುತೋಽಭವತ್ ಪಟ್ಟಜನಾಭಕಲ್ಪಃ ಕೃತ್ಸನಸ್ಯ ನಾಭಿ-  
ನೃಪಮಂಡಲಸ್ಯ" ರಘುಂ ೧೮-೨೦ |

ಪಟ್ಟಜಿನಿ ಪಂಕಜಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಮಲಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇಶ, ಸರೋವರ. ಪಟ್ಟಜ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೩೪) | 2. ಕಮಲ ಲತೆ. "ಅಲಿಕುಲಮಲಕಾಕೃತಿ ಪ್ರಪೇದೇ ನಲಿನ-  
ಮುಖಾಂತವಿಸರ್ಪಿ ಪಟ್ಟಜಿನ್ಯಾ:" ಕಿರಾಂ ೧೦-೩೩ | 3. ಕಮಲ ಗಳ ಸಮೂಹ.

ಪಟ್ಟತಾ ಪಂಕತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಸರಾಗಿರುವಿಕೆ, ಬದಿಯಾಗಿರು ವುದು. ಪಟ್ಟಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) | "ಅನೀತ್ವಾ  
ಪಟ್ಟತಾಂ ಧೂಲಿಮುದಕಂ ನಾವತಿಷ್ಠತೆ" ಮಾಘಂ ೨-೩೪ |

ಪಟ್ಟಪೇಷಮ್ ಪಂಕಜೇಷಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಕೆಸರಿನಿಂದ ಅರೆದು, ಕೆಸರಿನಿಂದ ಉಚ್ಚ. ಪಟ್ಟೇನ ಪಿನಿಷ್ಠಿ - ಪಿಲ್ಲ (ಸಂಚೂರ್ಣನೆ)  
"ಗಮುಲ್" (೩-೪-೩೮) | "ಭೀಮಂ ಭೂಮಿ ಲೋಲಮಾನಂ ಸರೋಃ  
ಪಾದೇನಾಸುಕ್ತಪಟ್ಟಪೇಷಂ ಪಿಪೇಷ" ಮಾಘಂ ೧೮-೪೫ |

ಪಟ್ಟಮಂಟಪಕ ಪಂಕಮಂಡೂಕ (ಪುಂ) ಕಪ್ಪೆಚಿಪ್ಪು. ಪಟ್ಟ ಮಂಟಪ ಇವ |

ಪಟ್ಟಾರ ಪಂಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಶೈವಾಲ, ಪಾಚಿ. ಪಟ್ಟಮುಚ್ಛತಿ -  
ಋ (ಗತೌ) "ಅಙ್" (೩-೨-೧) | 2. ಅಣೆಕಟ್ಟು, ಅಡ್ಡಕಟ್ಟೆ. 3. ಸೋಪಾನ, ಹಂತ, ಮೆಟ್ಟಿಲು. 4. ಜಲ ಕುಬ್ಜಕ ಪುಷ್ಪ. "ಪಟ್ಟಾರ: ಶೈವಲೇ ಸೇತೌ ಸೋಪಾನೇ ಜಲಕುಬ್ಜಕೇ"  
ವಿಶ್ವಂ |

ಪಟ್ಟಿಲ ಪಂಕಿಲ (ವಿಂ) ಕೆಸರಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪಟ್ಟೋಸ್ತಸ್ಯಸ್ಯ  
"ಇಲಕ್" (೪-೨-೧೦೦) | "ಪರಸ್ಪರಂ ಪರಿಕುಪಿತಸ್ಯ  
ಪಿಪತ: ಕ್ಷತೋಮಿಕಾಕನಕಪರಾಗಪಟ್ಟಿಲಮ್" ಮಾಘಂ ೧೭-೮ |

ಪಟ್ಟೇರುಹ ಪಂಕೇರುಹ (ನಂ) ಕಮಲ, ಪದ್ಮ, ತಾವರೆ. ಪಟ್ಟೇ ರೋಹಿತಿ -  
ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೬) | ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಅಲಕ್ (೬-೩-೧೪) | "ಸಮಾಪಯ ಪ್ರಾವೃಷಮಶ್ರು-  
ವಿಪ್ರುಷಾಂ ಸ್ಮಿತೇನ ವಿಶ್ರಾಣಯ ಕೌಮುದೀಮುದ: | ದೃಶಾವಿತ: ಕ್ಷೇಲತು  
ಖಂಜನದ್ವಯಿ ವಿಕಾಸಿ ಪಟ್ಟೇರುಹಮಸ್ತು ತೇ ಮುಖಮ್" ನೆಪಂ ೧-೧೨೨ |

ಪಟ್ಟೇಶಯ ಪಂಕೇಶಯ (ವಿಂ) ಕೆಸರಿನಲ್ಲಿರುವ, ಕೆಸರಿನಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ. ಪಟ್ಟೇ ಶೇತೆ - ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಅಕ್" (೩-೨-೧೪) |

ಪಟ್ಟಿ ಪಟ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶ್ರೇಣಿ, ಸಾಲು. ಪಟ್ಟಿ (ವಿಸ್ತಾರೇ)  
"ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೭೪) | "ಆಸ್ಥಿತ: ಸ್ಥಗಿತವಾರಿದ-

ಪಟ್ಟಿಯಾ ಸಂಖ್ಯಯಾ ಗಗನಪಶ್ಚಿಮಭಾಗ:" ಕಿರಾಂ ೧-೪೦ | 2. ಒಂದೇ ಜಾತಿಯ ವಸ್ತುಗಳ ಸಾಲು. 3. ಒಂದೇ ಗುಂಪಿಗೆ ಸೇರಿದ ಜನರ ಸಾಲು. 4. ಹತ್ತು ಸಂಖ್ಯೆ. 5. ಐದು ಅಕ್ಷರಗಳ ಪಾದವುಳ್ಳ ಒಂದು ಛಂದಸ್ಸು, -ವೃತ್ತ. "ಮೌಗಿತಿ ಪಟ್ಟಿ:" ಕುಂ ೨೦ | ಭಗಣ ಮತ್ತು ಗುರುದ್ವಯ ಪ್ರತಿಪಾದದಲ್ಲಿಯೂ ಇರುವುದು. "ಪಟ್ಟಿ" ವೃತ್ತ. 6. ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರದಲ್ಲಿ ಹತ್ತನೆಯ ಛಂದಸ್ಸು. "ಗಾಯತ್ರಿಗಣಗುರುದ್ವಯ ಬೃಹತಿ ಪಟ್ಟಿರೆವ ಚ" ಕುಂ ೨೦ |

ಪಟ್ಟಿಕಣ್ಡಕ ಪಟ್ಟಿಕಂಟಕ (ವಿಂ) ಪಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಲು ಅರ್ಹತೆಯಿಲ್ಲದವನು. ಪಟ್ಟಿಕೌ ಕಣ್ಡಕ ಇವ |

ಪಟ್ಟಿಕಣ್ಡ ಪಟ್ಟಿಕಂಠ, -ಕಂಠರ -ಕಂಠರ (ಪುಂ) ರಾವಣ. ಪಟ್ಟಿಕಂಠಾಕಕಣ್ಡಾ: ಕಂಠರಾ ವಾ ಅಸ್ಯ |

ಪಟ್ಟಿದೂಷಕ ಪಟ್ಟಿದೂಷಕ (ಪುಂ) ಪಟ್ಟಿಯಲ್ಲಿ ಕೊಡಲು ಅನರ್ಹನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ಪತಿತ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಪಟ್ಟಿ ದೂಷಯತಿ - ದುಷ (ವೈಕಲ್ಯೇ) + ಣಿಕ್ "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | ಪಟ್ಟಿಗೆ ಅನರ್ಹರಾದವರು - ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. ಶಿಶುಹತ್ಯೆ ಮಾಡಿದವನು. ಭೂಣ ಹತ್ಯೆಗೆ ಕಾರಣನಾದವನು. ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡದವನು. ಬಡ್ಡಿಯ ಹಣದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಆತನಾಯಿ. ವಿಷ ಪ್ರಯೋಗ ಮಾಡುವವನು. ತಾಯಿತಂದೆಗಳಿಗೆ ಅವಿಧೇಯ ನಾಗಿ ಅವರೊಡನೆ ಜಗಳವಾಡುವವನು. ಮಿತ್ರದ್ರೋಹಿ ಮುಂತಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣರು ಪಟ್ಟಿಗೆ ಅನರ್ಹರಾದವರು.

ಪಟ್ಟಿಪಾವನ ಪಟ್ಟಿಪಾವನ (ಪುಂ) ಪಟ್ಟಿಯನ್ನು ಪವಿತ್ರಗೊಳಿಸುವವನು, ಪಟ್ಟಿಯಲ್ಲಿ ಕೊಡಲು ಅರ್ಹ ನಾದವನು. ಪಟ್ಟಿ ಪಾವಯತಿ - ಪೂ (ಪವನೇ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) | ಸಾಂಗವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿ ದವನೂ ಪಂಚಾಗ್ನಿ ಉಪಾಸಕನೂ ಪಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವ ಅರ್ಹತೆಯುಳ್ಳವನು. "ತತ್ರ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾ: ಕೇಚಿತ್ತೆತ್ತಿರೀಯಾ: ಪಟ್ಟಿಪಾವನಾ: ಕಾಶ್ಯಪಾ: ಪಂಚಾಗ್ನಯ:" ಮಾಲತೀಂ ೧ | "ವೇದಾರ್ಥವಿತ್ ಪ್ರವಕ್ತಾ ಚ ಸಹಸ್ರದ: | ಶತಾಯುಶ್ಚೈವ ವಿಜ್ಞೇಯಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾ: ಪಟ್ಟಿಪಾವನಾ:" ಮನುಂ ೩-೧೮೬ |

ಪಟ್ಟಿರಥ ಪಟ್ಟಿರಥ (ಪುಂ) ದಶರಥ. ಪಟ್ಟಿರಥ ದಶಸು ದಿಕ್ಸು ರಥೋ ಯಸ್ಯ | ದಶರಥನು ದಶದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲೂ ಅಪ್ರತಿ ಹತವಾಗಿ ರಥವನ್ನು ಬಿಡುತ್ತಿದ್ದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ಪಟ್ಟು ಪಂಗು (ವಿಂ) 1. ಸಂಚರಿಸಲು ಕಾಲಿಲ್ಲದವನು, ಹೆಳವ. ಪನ (ಸ್ತುತೌ) "ಗು:" ಬಾಹುಂ | "ಸಾಹಸ್ರೇರಪಿ ಪಟ್ಟುಗುಙ್ಗಿಭಿರಭಿವ್ಯಕ್ತೀಭವನ್ಮಾನುಮಾನ್" ನೆಪಂ ೪-೧೩೬ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙ್" (೪-೧-೬೮) | 2. ಶನಿಗ್ರಹ.



**ಪಙ್ಗುಲ ಪಂಗುಲ** (ಪುಂ) ಬೆಳ್ಳಿಯಂತೆ ಹೊಳಪುಳ್ಳ ಕುದುರೆ. "ಪೀಯೂಷವರ್ಣೋ ಸೇರಾಹಃ ಪಙ್ಗುಲಃ ಸಿತಕಾಚಸಃ" ವೈಜಂ.

**ಪಚತ ಪಚತ** (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಡು ಪಚಪ್ (ಪಾಕೆ) "ಅತಚ್" (ತಂ ೩-೧೧೦). "ಪಚತೋಽಗ್ನಿಃ" ಸಿಂ ಕೌಂ. 2. ಸೂರ್ಯ. 3. ಇಂದ್ರ.

**ಪಚತಭೃಜತಾ ಪಚತಭೃಜತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಡಿಗೆಮಾಡಿರಿ ಮತ್ತು ಹುರಿಯಿರಿ ಎಂದು ಯಾವಾಗಲೂ ಅಪ್ಪಣೆ ಮಾಡುವ ಕೆಲಸ. ಪಚತ ಭೃಜತ ಇತಿ ಸತತಂ ಯತ್ರಾಭಿಧೀಯತೆ ಸಾ ಪಚತಭೃಜತಾ. ಸತತಕ್ರಿಯೆಯು ತೋರುವ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ತಿಜನ್ನಗಳಿಗೆ ಪರಸ್ಪರ ಸಮಾಸ ಬರುವುದು. (ಗಂ ೨-೧-೭೧)।

**ಪಚನ ಪಚನ** (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಡು ಪಚಪ್ (ಪಾಕೆ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪). (ನಂ) 2. ಅಡಿಗೆಮಾಡುವಿಕೆ, ಬೇಯಿಸುವಿಕೆ. ಡು ಪಚಪ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫). 3. ಕುಂಬಾರನ ಅವಿಗೆ, ಕುಂಬಾರನು ಮಾಡಿಕೆ ಬೇಯಿಸುವ ಒಲೆ. ಡು ಪಚಪ್ ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭). "ಕುಮ್ಮಕಾರಃ ಕುಲಾಲೋಽಸ್ಯ ಪಚನಂ ಪಾಕಮಂಡಲಮ್" ವೈಜಂ. (ವಿಂ) 4. ಅಡಿಗೆ ಮಾಡುವ, ಬೇಯಿಸುವ (ಪಾತ್ರೆ). ಡು ಪಚಪ್ ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭)।

**ಪಚಪ್ರಕುಟಾ ಪಚಪ್ರಕುಟಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಡಿಗೆಮಾಡು ಕತ್ತರಿಸು ಎಂದು ಯಾವಾಗಲೂ ಹೇಳುವ ಕಾರ್ಯ. ಪಚ ಪ್ರಕುಟ ಇತ್ಯುಚ್ಯತೆ ಯಸ್ಯಾಂ ಕ್ರಿಯಾಯಾಮ್।

**ಪಚಮ್ಪಚಾ ಪಚಂಪಚಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುರದರಿತಿನ. ಅರ್ಥ ಪಚತಿ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಪೃಷಂ.

**ಪಚಾ ಪಚಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಡಿಗೆಮಾಡುವುದು, ಬೇಯಿಸುವುದು. ಡು ಪಚಪ್ (ಪಾಕೆ) "ಅಡ್" (೩-೩-೧೦೪)। "ರನ್ವನಂ ಪಚನಂ ಪಚಾ" ವೈಜಂ.

**ಪಚಿ ಪಚಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಡು ಪಚಪ್ (ಪಾಕೆ) "ಇನ್" (ತಂ ೪-೧೧೭)। 2. ಹಸಿವು. "ಬುಭುಕ್ಷೇಚ್ಚಾಶನಾಯಾ ಭುಜ್ಜಿಘತ್ಸಾಶಿಶಿಷಾ ಪಚಿಃ" ವೈಜಂ.

**ಪಚೇಲಿಮ ಪಚೇಲಿಮ** (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 2. ಸೂರ್ಯ. ಡು ಪಚಪ್ (ಪಾಕೆ) ಕರಂ "ಎಲಿಮಚ್" (ತಂ ೪-೩೭)। "ಪಚೇಲಿಮೋ ವಹ್ನಿರವ್ಯೋಃ" ಸಿಂ ಕೌಂ. (ವಿಂ) 3. ಫಲೋನ್ಮುಖವಾದ, ಫಲವನ್ನು ಕೊಡಲು ಹೊರಬರುವ. ಸ್ವಯಮೇವ ಪಚ್ಯತೆ — ಡು ಪಚಪ್ (ಪಾಕೆ) "ಕೇಲಿಮರ್" (ವಾಂ ೩-೧-೯೬)। "ತಾತಾನುತರ್ಪಣಪಚೇಲಿಮಭಾಗಧೇಯಾಂ ಭಾಗೀರಥಿಂ ಭಗವತೀಂ ಶರಣಂ ಭಜಾಮಃ" ಚಂ ರಾಂ. 4. ಪಕ್ಷವಾಗಿರುವ,

ಹಣ್ಣಾಗಿರುವ. "ಸ ವಾರನಾರೀಕುಚಸಂಚಿತೋಪಮಂ ದದರ್ಶ ಮಾಲೂರಫಲಂ ಪಚೇಲಿಮಮ್" ನೆಫಂ ೧-೬೪।

**ಪಚೇಲುಕ ಪಚೇಲುಕ** (ಪುಂ) ಸೂದ, ಅಡಿಗೆಯವನು.

**ಪಚ್ಯ ಪಚ್ಯ** (ವಿಂ) ಪಕ್ಷವಾಗಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ತಾನಾ ಗಿಯೇ ಹಣ್ಣಾಗಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಡು ಪಚಪ್ (ಪಾಕೆ) ಕರ್ಮಕರಂ "ಕ್ಯಪ್" (೩-೧-೧೧೪)। ನಿಪಾಂ. "ಸುಖೇನ ಲಭ್ಯಾ ದಧತಃ ಕೃಷಿವಲೇರಕುಷ್ಠಪಚ್ಯಾ ಇವ ಸಸ್ಯಸಂಪದಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೧೭।

**ಪಜ್ಜ ಪಜ್ಜ** (ಪುಂ) ತುರಿಯ ವರ್ಣದವನು ಪಜ್ಜಾಂ ಜಾಯತೆ — ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಜಃ" (೩-೨-೯೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ "ಜಿಷ್" (೪-೧-೬೩)। ಪಜ್ಜಿ ಪಜ್ಜಿಃ.

**ಪಂಚಕ ಪಂಚಕ** (ನಂ) 1. ಐದರ ಗುಂಪು, ಐದು ವಸ್ತುಗಳ ಸಮೂಹ. ಪಂಚನ್ "ಕಃ" (೫-೧-೫೮)। "ಮನಸಿ-ಶಯಮಹಾಸ್ತ್ರಮನ್ಯಥಾಽಸ್ಮಿ ನ ಕುಸುಮಪಂಚಕಮಪ್ಯಲಂ ವಿಸೌಡುಮ್" ಮಾಘಂ ೭-೨। 2. ಐದು. ಪಂಚೈವ ಸ್ವಾರ್ಥ ಸಂಜ್ಞಾಯಾಂ "ಕಃ" (೫-೧-೫೮)। (ವಿಂ) 3. ಐದರಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಪಂಚಮಿಃ ಕ್ರೀತಮ್ "ಕನ್" (೫-೧-೨೨)। 4. ಐದರಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಐದು ಸಂಖ್ಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. 5. ಐದು ಭಾಗಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. 6. ಐದು ಕಾಲಿಯುಳ್ಳ. 7. ಐದು ನಾಣ್ಯಗಳ ಬೆಲೆಯುಳ್ಳ. ಪಂಚ ಅಂಶೋ ಭೃತಿಃ ವಸ್ತುಂ ವಾಽಸ್ಯ "ಕನ್" (೫-೧-೫೬)। 8. ಐದು ಬಡ್ಡಿ ಆಯ (ಉತ್ಪತ್ತಿ) ಲಾಭ ಶುಲ್ಕ (ತೆರಿಗೆ) ಮತ್ತು ಉಪದಾ (ಕಾಣಿಕೆ) ಕೊಡಲ್ಪಡುವ. ಪಂಚ ಅಸ್ಮೇ ಅಸ್ಮಿನ್ ವಾ ವೃದ್ಧಿಃ ಆಯಃ ಲಾಭಃ ಶುಲ್ಕಮ್ ಉಪದಾ ವಾ ದೀಯತೆ "ಕನ್" (೫-೧-೪೭)। 9. (ಜ್ಯೋತಿಃಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಮೃತ್ಯು ಅಗ್ನಿ ರಾಜ ಬೋರ ಮತ್ತು ರೋಗಗಳೆಂಬ ಐದು ದೋಷಗಳ ಗುಂಪು. ಆಯಾ ದಿನದ ತಿಥಿ ವಾರ ನಕ್ಷತ್ರ ಮತ್ತು ಲಗ್ನಗಳ ಸಂಖ್ಯೆಗಳನ್ನು ಒಟ್ಟು ಗೂಡಿಸಿ ಒಂಬತ್ತರಿಂದ ಭಾಗಿಸಿದಾಗ

|       |            |        |
|-------|------------|--------|
| ಶೇಷವು | ಒಂದು ಬಂದರೆ | ಮೃತ್ಯು |
| "     | ಎರಡು       | ಅಗ್ನಿ  |
| "     | ನಾಲ್ಕು     | ರಾಜ    |
| "     | ಆರು        | ಬೋರ    |
| "     | ಎಂಟು       | ರೋಗ    |

ಪಂಚಕವೆಂದು ಐದು ಭಾಗಗಳಾಗಿ ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ "ಪಂಚಕ"ವೆಂದು ಹೆಸರು. 10. ಧನಿಷ್ಠಾ ಪಂಚಕ. ಧನಿಷ್ಠ ಶತಭಿಷಕ್ ಪೂರ್ವಾಭಾದ್ರೇಯಾಽಽಮೃತರಾಭಾದ್ರೇಯಾಽಽಮೃತರೇವತಿ ಇವು ಐದು ಧನಿಷ್ಠಾ ಪಂಚಕ. 11. ಸಾಂಖ್ಯ ದರ್ಶನದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೈದು ತತ್ತ್ವಗಳ ಐದು ಪಂಚಕ (ಭಾಗಗಳು) (1) ಭೂತಪಂಚಕ (ಪೃಥಿವಿ ಜಲ



ತೇಜಸ್ಸು ವಾಯು ಮತ್ತು ಆಕಾಶ). (2) ತನ್ಮಾತ್ರ ಪಂಚಕ (ಶಬ್ದತನ್ಮಾತ್ರ ಸ್ಪರ್ಶತನ್ಮಾತ್ರ ರೂಪತನ್ಮಾತ್ರ ರಸತನ್ಮಾತ್ರ ಮತ್ತು ಗಂಧತನ್ಮಾತ್ರ). (3) ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯ ಪಂಚಕ. (ಚಕ್ಷುಸ್ಸು ಶ್ರೋತ್ರ ಘ್ರಾಣ ರಸನ ಮತ್ತು ತ್ವಕ್ಯು). (4) ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಪಂಚಕ (ವಾಕ್ಯು ಪಾಣಿ ಪಾದ ಪಾಯು ಮತ್ತು ಉಪಸ್ಥ). (5) ಅವಶಿಷ್ಟ ಪಂಚಕ (ಪ್ರಕೃತಿ ಮಹತ್ ಅಹಂಕಾರ ಮನಸ್ಸು ಮತ್ತು ಜೀವಾತ್ಮ).

**ಪೌಕರ್ಮನ್ ಪಂಚಕರ್ಮನ್** (ನಂ) ವೈದ್ಯನು ಮಾಡುವ ಐದು ವಿಧ ಚಿಕಿತ್ಸೆ. ಪೌಕರ್ಮನ್ ಕರ್ಮಣಾಂ ಸಮಾಹಾರ: 1.

1. ವಮನ (ವಾಂತಿಮಾಡಿಸುವುದು)
2. ರೇಚನ (ಭೇದಿಮಾಡಿಸುವುದು)
3. ನಸ್ಯ (ಮೂಗಿನಿಂದ ಮಾಡುವ ಸ್ನೇಹನಕ್ರಿಯೆ)
4. ನಿರೂಹ (ಪಿಚಕಾರಿ—ಎಣ್ಣೆಯಿಲ್ಲದ ಬಸ್ತಿಕ್ರಿಯೆ)
5. ಅನುವಾಸನ (ಪಿಚಕಾರಿ—ಎಣ್ಣೆಸಹಿತ ಬಸ್ತಿಕ್ರಿಯೆ).

**ಪೌಕರ್ಮನ್ ಪಂಚಕೋಲ** (ನಂ) ಐದು ಮೂಲಿಕೆಗಳಿಂದ ತಯಾರಿಸುವ ಒಂದು ಔಷಧ. ಹಿಪ್ಪಲಿ ಚವ್ಯ ಚಿತ್ರ ಮೂಲ ಮೋಡಿ ಮತ್ತು ಶುಂಠಿ ಇವುಗಳ ಕಷಾಯವನ್ನು ಜೇನುತುಪ್ಪ ಸೇರಿಸಿ ಸೇವಿಸಿದರೆ ಕಫ ಮತ್ತು ವಾತರೋಗ ನಿವಾರಣೆಯಾಗುವುದು.

**ಪೌಕರ್ಮನ್ ಪಂಚಕೋಶ** (ಛಂ) ಜೀವನಿಗೆ ಆಚ್ಛಾದಕವಾದ ದೇಹ ಮೊದಲಾದ ಐದು ಕೋಶಗಳು.

1. ಅನ್ನಮಯಕೋಶ (ಸ್ಥೂಲಶರೀರ)
2. ಪ್ರಾಣಮಯಕೋಶ
3. ಮನೋಮಯಕೋಶ
4. ವಿಜ್ಞಾನಮಯಕೋಶ ಮತ್ತು
5. ಅನಂದಮಯಕೋಶ (ಇದೇ ಮುಕ್ತಿ ಅಥವಾ ಮೋಕ್ಷ).

ಈ ದೇಹವು ಅನ್ನದಿಂದಲೇ ಬದುಕಿರುವುದರಿಂದ ಇದು **ಅನ್ನಮಯಕೋಶ**. “ದೆಹೋಽಯಮಗ್ರಭವನೋಽಗ್ರಮಯಸ್ತು ಕೋಶಾಶ್ಚಾತ್ರೇನ ಜೀವತಿ ವಿನಶ್ಯತಿ ತದ್ವಿಹೀನ: 1. ತ್ವಕ್ಚರ್ಮಮಾಂಸ-ರಧಿರಾಸ್ಥಿಪುರೀಷರಾಶಿನಾಯಿ ಸ್ವಯಂ ಭವಿತುಮರ್ಹತಿ ನಿದ್ರಾಶುದ್ಧ:”.

ಐದು ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪ್ರಾಣವು **ಪ್ರಾಣಮಯಕೋಶ**. “ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯೈ: ಪೌಕರ್ಮಿರಾಶ್ಚಿತೋಽಂ ಪ್ರಾಣೋ ಭವೇತ್ ಪ್ರಾಣಮಯಸ್ತು ಕೋಶ:”.

ಐದು ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯಗಳು ಮತ್ತು ಮನಸ್ಸು **ಮನೋಮಯಕೋಶ**. ಇದು ನಾನು ನನ್ನದು ಎಂಬ ಭಾವ ವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದು. “ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯಾಣಿ ಚ ಮನಶ್ಚ ಮನೋಮಯ: ಸ್ಯಾತ್ ಕೋಶೋ ಮಮಾಹಮಿತಿ ಬುದ್ಧಿವಿಕಲ್ಪಹೇತು:”.

ಪುರುಷನ ಸಂಸಾರಬಂಧನಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದುದು **ವಿಜ್ಞಾನಮಯಕೋಶ**. “ವಿಜ್ಞಾನಮಯಕೋಶಸ್ತು ಪುನ: ಸಂಸಾರಕಾರಣಮ್” 1. ಇತ್ಯಾದಿ ವಿವರಗಳಿಗೆ ವಿವೇಚಕೋಡಾ ಮಂಜಯಲ್ಲಿ ನೋಡುವುದು.

**ಪೌಕರ್ಮನ್ ಪಂಚಗವ** (ನಂ) ಐದು ಗೋವುಗಳ ಗುಂಪು. ಪೌಕರ್ಮನ್ ಗವಾಂ ಸಮಾಹಾರ: “ಽಽಽ” (4-4-92) 1.

**ಪೌಕರ್ಮನ್ ಪಂಚಗವಧನ** (ವಿಂ) ಐದು ಗೋವುಗಳ ರೂಪವಾದ ಧನವುಳ್ಳವನು. ಪೌಕರ್ಮನ್ ಗಾವೋ ಧನಮಸ್ಯ 1.

**ಪೌಕರ್ಮನ್ ಪಂಚಗವ್ಯ** (ನಂ) ಗೋಸಂಬಂಧವಾದ ಐದು ವಸ್ತುಗಳು. ಗೋವಿಕಾರ: “ಯತ್” (4-3-160) 1.

(1) ಹಾಲು (2) ಮೊಸರು (3) ತುಪ್ಪ (4) ಗೋಮೂತ್ರ ಮತ್ತು (5) ಗೋಮಯ (ಸಗಣಿ) ಇವು ಪಂಚಗವ್ಯಗಳು. ಪಂಚಗವ್ಯಪ್ರಾಶನದಿಂದ ಆರೋಗ್ಯ ಐಶ್ವರ್ಯ ಸಕಲ ಪಾಪನಿವೃತ್ತಿ ಮತ್ತು ಸಕಲ ಇಷ್ಟಸಿದ್ಧಿಯುಂಟಾಗುವುದು.

**ಪೌಕರ್ಮನ್ ಪಂಚಗು** (ವಿಂ) ಐದು ಗೋವುಗಳನ್ನು ಕೊಟ್ಟು (ಕ್ರಯಕ್ಕೆ) ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಪೌಕರ್ಮಿ: ಗೋಮಿ: ಕ್ರಿತಮ್ “ಽಽಽ” (4-1-39) 1. ಠನಿ ಲೋಪ: (4-1-28) 1. ಹ್ರಸ್ವ: (1-2-48) 1.

**ಪೌಕರ್ಮನ್ ಪಂಚಗುಣ** (ಛಂ ೧೦ ೧೦) 1. ಪೃಥಿವಿ ಮೊದಲಾದ ಪಂಚಮಹಾಭೂತಗಳ ಪಂಚಗುಣಗಳು—ರೂಪ ರಸ ಗಂಧ ಸ್ಪರ್ಶ ಮತ್ತು ಶಬ್ದ. (ವಿಂ) 2. ಐದರಷ್ಟಾದ, ಐದರಿಂದ ಗುಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಐದು ಪ್ರಕಾರವಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಗುಣಿ —ಗುಣೀ. 4. ಪೃಥಿವಿ, ಭೂಮಿ.

**ಪೌಕರ್ಮನ್ ಪಂಚಗುಪ್ತ** (ಛಂ) 1. ಐದು ಅಂಗಗಳು ಗೂಢ ವಾಗಿರುವ ಕಮಠ, ಅಮೆ. ಕೈಕಾಲುಗಳು ಮತ್ತು ತಲೆ ಇವು ಐದೂ ಆಮೆಯ ಚಿಪ್ಪಿನೊಳಗೇ ಅಡಗಿದ್ದು ಗೂಢ ವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. 2. ಚಾರ್ವಾಕಮಠ, ಲೋಕಾಯತ ದರ್ಶನ. “ಲೋಕಾಯತೇ ಕಂಠೇ ಚ ಪೌಕರ್ಮನ್: ಸ್ಮೃತೌ ಬೃಧಿ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1.

**ಪೌಕರ್ಮನ್ ಪಂಚಚತ್ವಾರಿಂಶ** (ವಿಂ) ನಲವತ್ತೈದ ನೆಯ. ಪೌಕರ್ಮನ್ ಪಂಚಚತ್ವಾರಿಂಶತ: ಪೂರ್ಣ: “ಽಽಽ” (4-2-48) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಽಽಽ” (4-1-14) 1. —ಚತ್ವಾರಿಂಶತಿ —ಚತ್ವಾರಿಂಶತಿ.

**ಪೌಕರ್ಮನ್ ಪಂಚಚತ್ವಾರಿಂಶತ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಲವ ತ್ತೈದು. ಪೌಕರ್ಮನ್ ಪಂಚಚತ್ವಾರಿಂಶತ್ 1.

**ಪೌಕರ್ಮನ್ ಪಂಚಚತ್ವಾರಿಂಶತ್ತಮ** (ವಿಂ) ನಲವತ್ತೈದನೆಯ. ಪೌಕರ್ಮನ್ ಪಂಚಚತ್ವಾರಿಂಶತ: ಪೂರ್ಣ: — ೧೦ “ತಮಽ” (4-2-46) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಽಽಽ” (4-1-14) 1. —ತಮಿ —ತಮಿ.



**ಪಂಚಚಾಮರ ಪಂಚಚಾಮರ** (ಪುಂ) ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಹದಿನಾರನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಲಘು ಮತ್ತು ಗುರು ವರ್ಣಗಳು (ಲಘು ಗುರು ಲಘು ಗುರು) ಈ ರೀತಿಯಾಗಿ ನಿರಂತರವೂ ಪ್ರತಿ ಪಾದದಲ್ಲೂ ಇರುವ ಒಂದು ವೃತ್ತ. "ಲಘುಗುರಿನಿರಂತರಂ ಯದಾ ಸ ಪಂಚ-ಚಾಮರಃ" ವುಂ ೨೦ |

**ಪಂಚಜನ ಪಂಚಜನ** (ಪುಂ) 1. ಮನುಷ್ಯ. ಪಂಚಭಿಃ ಭೂತೈಃ ಜನ್ಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತಭಿಃ) "ಛನ್" (೩-೩-೧೯) | 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ವೈಶ್ಯ ಶೂದ್ರ ಮತ್ತು ರಥಕಾರ (ಬಡಗಿ) ಈ ಐವರು. 3. ಮನುಷ್ಯನಂತಿರುವ ದೇವತೆ ಮೊದಲಾದವರು. 4. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. ಈತನು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ ನಿಂದ ಹತನಾದನು.

**ಪಂಚಜನೀನ ಪಂಚಜನೀನ** (ವಿಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ವೈಶ್ಯ ಶೂದ್ರ ಮತ್ತು ರಥಕಾರ ಈ ಐವರಿಗೂ ಹಿತವಾದ. ಪಂಚಜನೇಮ್ಯೋ ಹಿತಮ್ "ಃ" (ವಾಂ ೪-೧-೯) |

**ಪಂಚತ್ ಪಂಚತ್** (ಪುಂ) ಐದು ಸಂಖ್ಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಐದು ಪರಿಮಾಣವುಳ್ಳ. ಪಂಚ ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ ಪಂಚತ್ ನಿಪಾಂ (೪-೧-೬೦) |

**ಪಂಚತಕ್ಷ ಪಂಚತಕ್ಷ** (ನಂ) ಐವರು ಬಡಗಿಯರ ಗುಂಪು. ಪಂಚಾನಾಂ ತಕ್ಷಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ ಅನೌ ನಲೌಪಶ್ಚ (ವಾಂ ೨-೪-೧೭) | ಸ್ತ್ರೀತ್ವಾಭಾವಪಕ್ಷೇ ರೂಪಮ್ | ಸ್ತ್ರೀತ್ವಪಕ್ಷೇ ದ್ವಿಗೌಃ (೪-೧-೨೧) | ಇತಿ "ಙೀಪ್" | -ತಕ್ಷಿ -ತಕ್ಷೀ.

**ಪಂಚತತ್ವ ಪಂಚತತ್ವ** (ನಂ) ಪೃಥಿವಿ ಅಪ್ಪು ತೇಜಸ್ಸು ವಾಯು ಮತ್ತು ಆಕಾಶಗಳೆಂಬ ಐದು ತತ್ತ್ವಗಳು. ಪಂಚಾನಾಂ ತತ್ತ್ವಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ |

**ಪಂಚತನ್ತ್ರ ಪಂಚತನ್ತ್ರ** (ನಂ) ಒಂದು ನೀತಿಗ್ರಂಥ.

**ಪಂಚತನ್ಮಾತ್ರ ಪಂಚತನ್ಮಾತ್ರ** (ನಂ) ರೂಪ ರಸ ಗಂಧ ಸ್ಪರ್ಶ ಮತ್ತು ಶಬ್ದ ರೂಪವಾದ ಐದು ತನ್ಮಾತ್ರಗಳು. [ಎವರಕ್ಕೆ "ತನ್ಮಾತ್ರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]

**ಪಂಚತಪ ಪಂಚತಪ** (ಪುಂ) ಪಂಚಾಗ್ನಿ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿಂತು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುವವನು.

**ಪಂಚತಪಸ್ ಪಂಚತಪಸ್** (ವಿಂ) ಐದು ಅಗ್ನಿಗಳ ಮಧ್ಯೆ ನಿಂತು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುವವನು. ಪಂಚಾಗ್ನಿಸಾಧ್ಯಂ ತಪೋ ಯಸ್ಯ | ನಾಲ್ಕು ಕಡೆಗಳಲ್ಲೂ ಅಗ್ನಿ ನೆತ್ತಿಯ ಮೇಲೆ ಸೂರ್ಯ ಈ ಮಧ್ಯೆ ನಿಂತು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುವುದು ಬಹಳ ಉಗ್ರವಾದುದು. "ತೇಜಸ್ವಿಮಧ್ಯೆ ತೇಜಸ್ವಿ ದವೀಯಾನಪಿ ಗಂಧತೇ | ಪಂಚಮಃ ಪಂಚತಪಸ್ತಪನೋ ಜಾತವೇದಸಾಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೪೧ |

**ಪಂಚತಪ ಪಂಚತಪ** (ವಿಂ) ಐದು ಅವಯವಗಳುಳ್ಳ. ಪಂಚ ಅವಯವಾಃ ಯಸ್ಯ "ತಪಃ" (೪-೨-೪೨) |

**ಪಂಚತಾ ಪಂಚತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮರಣ, ಸಾವು. 2. ಶರೀರಕ್ಕೆ ಆರಂಭವಾದ ಪಂಚಮಹಾಭೂತಗಳು ಶರೀರನಾಶ ನಂತರ ಅವುಗಳ ಭಾವವನ್ನು ಹೊಂದುವಿಕೆ. ಪಂಚಾನಾಂ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) | "ಪಂಚತಾ ಪಂಚಭಾವೇ ಸ್ಯಾತ್ ಮರಣೇಽಪಿ ಚ ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ | "ಪಂಚತಾಪತ್ರಮುನಿ-ಕುಮಾರಕಸಂಜೀವನಾಮೃತ" ರಘುಂ ೨೦ |

**ಪಂಚತೀಕ್ಷ್ಣ ಪಂಚತೀಕ್ಷ್ಣ** (ನಂ) ಬೇವು ನೆಲ್ಲಿ ಅಡುಸೋಗೆ ಪಟೋಲ ಮತ್ತು ಹೆಣ್ಣುಳ್ಳಗಳು. ಪಂಚಗುಣಿತಂ ತೀಕ್ಷ್ಣಮ್ | "ನಿಮ್ಬಾಮೃತಾ ವೃಷಪಟಾಲನಿರಿದಿಗ್ವಿಕಾಶ್ಚ" ಚಕ್ರದತ್ತಃ |

**ಪಂಚದಶ ಪಂಚದಶ** (ವಿಂ) 1. ಹದಿನೈದನೆಯ. ಪಂಚ ದಶಾನಾಂ ಪೂರ್ಣಃ "ಙತ್" (೪-೨-೪೮) | ಸ್ಥಿರಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೪) | -ದಶೀ -ದಶೀ. 2. ಹುಣ್ಣಿಮೆ. 3. ಅಮಾ ವಾಸ್ಯೆ.

**ಪಂಚದಶನ್ ಪಂಚದಶನ್** (ವಿಂ) 1. ಹದಿನೈದು. ಪಂಚಾದಿಕಾ ದಶ | 2. ಹದಿನೈದು ಸಂಖ್ಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ.

**ಪಂಚದಶಾಹ ಪಂಚದಶಾಹ** (ಪುಂ) ಹದಿನೈದು ದಿವಸ. ಪಂಚದಶಗುಣಿತಮಹಃ |

**ಪಂಚದಶಾಹಿಕ ಪಂಚದಶಾಹಿಕ** (ವಿಂ) ಹದಿನೈದು ದಿವಸ ಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡಬಹುದಾದ. ಪಂಚದಶಾಹಃ ಸಾಧ್ಯತಯಾಸ್ತಸ್ಯ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೪) |

**ಪಂಚದೀರ್ಘ ಪಂಚದೀರ್ಘ** (ವಿಂ) ಐದು ಭಾಗಗಳು ದೀರ್ಘ ವಾಗಿ ಉಳ್ಳ (ಮಹಾ) ಪುರುಷ. ಪಂಚಸು ಅವಯವೇಷು ದೀರ್ಘಃ | (ಮಹಾಪುರುಷಲಕ್ಷಣದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪುರುಷನಿಗೆ ಐದು ಅವಯವಗಳು ದೀರ್ಘವಾಗಿರುವುವು). [ಎವರಕ್ಕೆ "ಪಂಚ-ಶಲಕ್ಷಣ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಪಂಚಧಾ ಪಂಚಧಾ** (ಅವ್ಯಂ) ಐದು ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ.

**ಪಂಚನ್ ಪಂಚನ್** (ವಿಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಐದು, ಐದು ಸಂಖ್ಯೆ. "ಕಿಮಹಿ ನೃಪಾಃ ಸಮಮಮಿಮಿರೂಪತಿಸುತಃ ಪಂಚಭಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೪-೬೩ | 2. ಐದು ಸಂಖ್ಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ.

**ಪಂಚನಖ ಪಂಚನಖ** (ಪುಂ) 1. ಗಜ, ಆನೆ. 2. ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ. ಪಂಚ ನಖಾ ಯಸ್ಯ | "ಗಜಕೂರ್ಮೌ ಪಂಚನಖೌ" ನಾನಾರ್ಥರಂ | 3. ವ್ಯಾಘ್ರ, ಹುಲಿ. 4. ಮುಳ್ಳುಹಂದಿ. 5. ನೀರುಡ, ದೊಡ್ಡಜಾತಿಯ ಹಲ್ಲಿ. 6. ಖಡ್ಗವೃಗ. 7. ಮೊಲ. "ಶ್ವಾವಿಧಂ ಶಲ್ಯಕಂ ಗೋಧಾಂ ಕ್ಷುಣ್ಣಕೂರ್ಮ-ಶಶಾಂಸ್ತಥಾ | ಭಕ್ಷ್ಯಾನ್ ಪಂಚನಖೇವಾಹುರನುಷ್ಠಾಂಶ್ಚೈಕತೋದತಃ" ಮನುಂ ೪-೧೮ |



**ಪೌನವ ಪಂಚನದ (ನಂ) 1.** ಐದು ನದಿಗಳು. ಪೌನಾಂ ನದೀನಾಂ ಸಮಾಹಾರ: "ಅಚ್" (ವಾಂ ೪-೪-೭೫)। (೪ಂ) 2. ಐದು ನದಿಗಳುಳ್ಳ ದೇಶ, ಈಗಿನ ಪಂಜಾಬ ದೇಶ. ಪೌನ ನದಿ: ಸತ್ಯತ್ರ "ಅಚ್"। ಶತದ್ರು, ವಿಪಾಶಾ, ಇರಾವತೀ, ಚಂದ್ರಭಾಗಾ ಮತ್ತು ವಿತಸ್ತಾ ಈ ಐದು ನದಿಗಳೂ ಪಂಜಾಬ ದೇಶದಲ್ಲಿರುವವು. ಈಗಿನ ಪಂಜಾಬ ದೇಶವು ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಮದ್ರದೇಶವಾಗಿತ್ತು. (೪ಂ ೪ಂ ೪ಂ) 3. ಈ ದೇಶದ ಜನರು.

**ಪೌನವತ ಪಂಚನವತ (ವಿಂ) ತೊಂಬತ್ತೆದನೆಯ.** ಪೌನವತ: ಪೂರ್ಣ: "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ನವತಿ-ನವತೀ.

**ಪೌನವತಿ ಪಂಚನವತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೊಂಬತ್ತೆದು.** ಪೌನಾ-ಧಿಕಾ ನವತಿ:।

**ಪೌನವತಿಸಮ ಪಂಚನವತಿಸಮ (ವಿಂ) ತೊಂಬತ್ತೆದ ನೆಯ.** ಪೌನವತ: ಪೂರ್ಣ: -ವಾ "ತಮಟ್" (೪-೨-೫೬)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ತಮಿ-ತಮಿ.

**ಪೌನಿನ್ವ ಪಂಚನಿಂಬ (ನಂ) ಬೇವಿನಮರದ ಐದು ಪದಾರ್ಥಗಳು.** ಬೇವಿನ (1) ಹೂವು, (2) ಬೇರು, (3) ತೊಗಟೆ, (4) ಹಣ್ಣು ಮತ್ತು (5) ಎಲೆ ಇವು ಪಂಚನಿಂಬಗಳು.

**ಪೌನಪೌನಾಶ ಪಂಚಪಂಚಾಶ (ವಿಂ) ಐವತ್ತೆದನೆಯ.** ಪೌನಪೌನಾಶತ: ಪೂರ್ಣ: "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಪೌನಾಶಿ-ಪಂಚಾಶೀ.

**ಪೌನಪೌನಾಶತ್ ಪಂಚಪಂಚಾಶತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಐವತ್ತೆದು.** ಪೌನಾಧಿಕಾ ಪೌನಾಶತ್.

**ಪೌನಪೌನಾಶತ್ತಮ ಪಂಚಪಂಚಾಶತ್ತಮ (ವಿಂ) ಐವತ್ತೆದ ನೆಯ.** ಪೌನಪೌನಾಶತ: ಪೂರ್ಣ:-ವಾ "ತಮಟ್" (೪-೨-೫೬)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ತಮಿ-ತಮಿ.

**ಪೌನಪವನ್ ಪಂಚಪರ್ವನ್ (ನಂ) ಐದು ಪರ್ವದಿನಗಳು** -ಅಷ್ಟಮಿ, ಚತುರ್ದಶಿ, ಪೂರ್ಣಿಮೆ, ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ ಮತ್ತು ಸಂಕ್ರಮಣಗಳು ಪಂಚಪರ್ವಗಳು.

**ಪೌನಪಿತೃ ಪಂಚಹಿತೃ (೪ಂ ೪ಂ ೪ಂ) ಐವರು ತಂದೆಗಳು,** ಜನಕ ಮತ್ತು ಇತರ ನಾಲ್ವರು. ಈ ನಾಲ್ವರೂ ತಂದೆಗೆ ಸಮಾನರು. **ಐದು ವಿಧ ತಂದೆಗಳು:** (1) ಜನಕ, (2) ಉಪನಯನ ಮಾಡಿದ ಆಚಾರ್ಯ, (3) ವಿದ್ಯಾದಾನ ಮಾಡಿದ ಗುರು, (4) ಅನ್ನದಾನ ಮಾಡಿದವನು ಮತ್ತು (5) ಭಯದಿಂದ ರಕ್ಷಿಸಿದವನು. "ಜನಕಃ ಪಿತೃನೇತಾ ಚ ಯಶ್ಚ ವಿಧಾಂ ಪ್ರಯಂಚತಿ। ಅನ್ನದಾತಾ ಭಯಾತಾ ಪೌನೇತಾ ಪಿತರ: ಸ್ಮೃತಾ:"।

**ಪೌನಪ್ರಾಣ ಪಂಚಪ್ರಾಣ (೪ಂ ೪ಂ ೪ಂ) ದೇಹದೊಳಗಿರುವ ಐದು ಪ್ರಾಣವಾಯುಗಳು.** (1) ಪ್ರಾಣ, (2) ಅಪಾನ, (3) ಸಮಾನ, (4) ಉದಾನ ಮತ್ತು (5) ವ್ಯಾನ ಇವು ಪಂಚಪ್ರಾಣ ವಾಯುಗಳು. ಪ್ರಾಣವಾಯುವು ಹೃದಯ ದಲ್ಲಿಯೂ ಅಪಾನವಾಯುವು ಗುದಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿಯೂ ಸಮಾನವಾಯುವು ನಾಭಿಯಲ್ಲೂ ಉದಾನವಾಯುವು ಕಂಠ ದೇಶದಲ್ಲೂ ವ್ಯಾನವಾಯುವು ಶರೀರದ ಎಲ್ಲಾ ಭಾಗ ಗಳಲ್ಲೂ ಇರುವುದು. ಪ್ರಾಣವಾಯುವು ಅನ್ನವು ಒಳಗೆ ಹೋಗಿ ಸೇರುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ಅಪಾನವಾಯುವು ಮಲ ಮೂತ್ರಾದಿಗಳ ವಿಸರ್ಜನೆಮಾಡಿಸುವುದು. ಸಮಾನ ವಾಯುವು ಆಹಾರವನ್ನು ಪಚನಮಾಡಿಸುವುದು. ಉದಾನ ವಾಯುವು ವಾಗ್ವ್ಯಾಪಾರ ಮಾಡಿಸುವುದು. ವ್ಯಾನ ವಾಯುವು ದರ್ಶನಾನುಕೂಲವಾದ ನಿಮೇಷವ್ಯಾಪಾರ ಮಾಡಿಸುವುದು. "ಹೃದಿ ಪ್ರಾಣೋ ಗುಡೆಪಾನ: ಸಮಾನೋ ನಾಭಿ-ಸಂಸ್ಥಿತ:। ಉದಾನ: ಕಂಠದೇಶಸ್ಥೋ ವ್ಯಾನ: ಸರ್ವಶರೀರಗ:"। "ಅಗ್ನಿಪ್ರವೇಶನಮ್ ಮೃತ್ಯುತ್ಸರ್ಗೋಽನ್ವಿಪಾಚನಮ್। ಭಾಷಣಾದಿ-ನಿಮೇಷಾದಿ ತದ್ವಿಪಾಚಾರಾ: ಕ್ರಮಾದಮಿ"।

**ಪೌನಬಾಣ ಪಂಚಬಾಣ (೪ಂ) 1.** ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ಪೌನ ಬಾಣಾ: "ಯದಕ್ರಮಂ ವಿಕರಮಶಕ್ತಿಸಾಮ್ಯಾದುಪಾಚರದ್-ಬಾವಪಿ ಪೌನಬಾಣ:" ನೆಪಂ ೮-೪। 2. ಮನ್ಮಥನ ಐದು ಬಾಣಗಳು. (1) ಅರವಿಂದ, (2) ಅಶೋಕ, (3) ಚೂತ, (4) ನವಮಲ್ಲಿಕೆ ಮತ್ತು (5) ನೀಲೋತ್ಪಲ ಇವು ಮನ್ಮಥನ ಐದು ಬಾಣಗಳು. ಸಂವೋಹನ ಉನ್ಮಾದನ ಶೋಷಣ ತಾಪನ ಮತ್ತು ಸ್ತಂಭನಗಳೆಂದು ಈ ಬಾಣಗಳ ಹೆಸರು.

**ಪೌನಬಾಹು ಪಂಚಬಾಹು (೪ಂ) ಈಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ.**

**ಪೌನಭದ್ರ ಪಂಚಭದ್ರ (೪ಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕುದುರೆ.** ಐದು ಅಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಶುಭ ಚಿಹ್ನೆಗಳುಳ್ಳ ಕುದುರೆ. ಎದೆ ಬೆನ್ನು ಮುಖ ಮತ್ತು ಎರಡು ಪಾಶ್ವರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಶುಭಲಕ್ಷಣ ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕುದುರೆಗೆ ಪಂಚಭದ್ರವೆಂದು ಹೆಸರು. ಸ್ತ್ರಿಯಾ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। -ಮದ್ರಿ-ಭದ್ರೀ. "ಪೌನಭದ್ರಸ್ತು ಹೃತ್ಪುಂಡ್ರಮುಖಪಾಶ್ವೇಷು ಪುಷ್ಪಿತ:"।

**ಪೌನಭೂತ ಪಂಚಭೂತ (ನಂ ೪ಂ ೪ಂ) ಪಂಚಮಹಾಭೂತ ಗಳು.** ಪೃಥ್ವಿ (ಭೂಮಿ) ಅಪ್ (ಜಲ) ತೇಜಸ್ಸು (ಅಗ್ನಿ) ವಾಯು (ಗಾಳಿ) ಮತ್ತು ಆಕಾಶ ಇವು ಪಂಚಮಹಾಭೂತ ಗಳು. ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಈ ಪಂಚಮಹಾಭೂತಗಳ ಗುಣಗಳು: (1) ಅಸ್ಥಿ ಮಾಂಸ ನಖ ನಾಡಿ (ನರ) ಮತ್ತು ತ್ವಕ್ (ಚರ್ಮ) ಇವು ಪೃಥ್ವಿಯ ಗುಣಗಳು, (2) ಮಲ ಮೂತ್ರ ಶುಕ್ರ (ರೇತಸ್ಸು) ಶ್ಲೇಷ್ಮ (ಕಫ)



ಶೋಣಿತ (ರಕ್ತ) ಇವು ಅಪ್ ಗುಣಗಳು. (3) ಹ್ಯಾಸ್ ನಿರ್ದೈ ಕ್ಷುತ್ (ಹಸಿವು) ಭ್ರಾಂತಿ ಮತ್ತು ಅಲಸ್ಯ (ಸೋಮಾರಿತನ) ಇವು ತೇಜಸ್ವಿನ ಗುಣಗಳು. (4) ಧಾರಣ ಚಾಲನ ಕ್ಷೇಪ ಸಂಕೋಚ ಮತ್ತು ಪ್ರಸರಣ ಇವು ವಾಯು ವಿನ ಗುಣಗಳು. (5) ಕಾಮ ಕ್ರೋಧ ಲೋಭ ತ್ರಪಾ (ಲಜ್ಜೆ) ಮತ್ತು ಮೋಹ ಇವು ಆಕಾಶಭೂತದ ಗುಣಗಳು. "ಅಸ್ಥಿಮಾಸಂ ನಕ್ಷತ್ವೇವ ನಾಡೀ ತ್ವಕ್ವೇತಿ ಪೞಮಿ । ಪೞವಿ ಪೞಗುಣಾ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನೇನ ಭಾಷಿತಮ್ ॥ ಮಲಂ ಮೂತ್ರಂ ತಥಾ ಶುಕ್ರಂ ಶ್ಲೇಷ್ಮಾ ಶೋಣಿತಮೇವ ಚ । ತಯಂ ಪೞಗುಣಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನೇನ ಭಾಷಿತಮ್ ॥ ಹಾಸೋ ನಿद्रಾ ಕ್ಷುಧಾ ಚೈವ ಭ್ರಾಂತಿ-ರಾಲಸ್ಯಮೇವ ಚ । ತೇಜಃ ಪೞಗುಣಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನೇನ ಭಾಷಿತಮ್ ॥ ಧಾರಣಂ ಚಾಲನಂ ಕ್ಷೇಪಃ ಸಂಕೋಚಃ ಪ್ರಸರಸ್ತಥಾ । ವಾಯುಃ ಪೞಗುಣಃ ಪ್ರೋಕ್ತಃ ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನೇನ ಭಾಷಿತಮ್ ॥ ಕಾಮಃ ಕ್ರೋಧಸ್ತಥಾ ಲೋಭಃ ತ್ರಪಾ ಮೋಹಃ ಪೞಮಃ । ನಭಃ ಪೞಗುಣಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನೇನ ಭಾಷಿತಮ್" ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನತನ್ತ್ರಮ್ । ಪಂಚ ಮಹಾಭೂತತತ್ತ್ವ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು:—

ಪೞಧೀತತ್ತ್ವದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು: ಅನೂರಾಧಾ, ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ಉತ್ತರಾಷಾಢಾ ಶ್ರವಣ ಧನಿಷ್ಠಾ ಅಭಿಜಿತ್ ಮತ್ತು ರೇವತಿ.

ಅಪ್ತತ್ತ್ವದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು: ರೋಹಿಣಿ ಆರ್ಧ್ರಾ ಅಶ್ಲೇಷಾ ಮೂಲ ಪೂರ್ವಾಷಾಢಾ ಮತ್ತು ಉತ್ತರಾ ಭಾದ್ರಾ.

ತೇಜಸ್ತತ್ತ್ವದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು: ಭರಣಿ ಕೃತ್ತಿಕಾ ಪುಷ್ಯ ಮೇಷಾ ಪೂರ್ವಫಲ್ಗುಣಿ ಸ್ವಾತಿ ಮತ್ತು ಪೂರ್ವಾ ಭಾದ್ರಾ.

ವಾಯುತತ್ತ್ವದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು: ಅಶ್ವಿನಿ ಮೃಗ ಶೀರ್ಷ ಪುನರ್ವಸು ಹಸ್ತ ಚಿತ್ತಾ ಉತ್ತರಫಲ್ಗುಣಿ ಮತ್ತು ವಿಶಾಖಾ. "ಧನಿಷ್ಠಾ ರೇವತೀ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾನುರಾಧಾ ಶ್ರವಣಾ ತಥಾ । ಅಭಿಜಿಂಜ್ಞೋತ್ತರಾಷಾಢಾ ಪೞವೀತತ್ತ್ವಮುದಾಹೃತಮ್ ॥ ಪೂರ್ವಾಷಾಢಾ ತಥಾಶ್ಲೇಷಾ ಮೂಲಾದ್ರಾ ಚೈವ ರೋಹಿಣಿ । ಪರಭಾಷಪದಾ ತಯಂ ಆಪಸ್ತತ್ತ್ವವನ್ತವಿಭಿಷ್ಠದಮ್ । ಭರಣಿ ಕೃತ್ತಿಕಾ ಪುಷ್ಯಾ ಮಥಾ ಪೂರ್ವಾ ಚ ಫಲ್ಗುಣಿ । ಪೂರ್ವಭಾಷಪದಾ ಸ್ವಾತಿ ತೇಜಸ್ತತ್ತ್ವಮಿತಿ ಪ್ರಿಯೇ । ವಿಶಾಖೋತ್ತರಫಲ್ಗುಣ್ಯೋ ಹಸ್ತಾ ಚಿತ್ತಾ ಪುನರ್ವಸುಃ । ಅಶ್ವಿನಿ ಮೃಗಶಿರ್ಷಾ ಚ ವಾಯುತತ್ತ್ವಮುದಾಹೃತಮ್" ಸೂಕ್ಸ್ಮಸ್ವರೋದಯಃ ।

ಪೞಮ ಪಂಚಮ (ಪುಂ) 1. (ಸಂಗೀತಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಒಂದು ಸ್ವರ. ಕೋಕಿಲದ ಧ್ವನಿಯಂತೆ ಹೊರಡುವ ಏಳನೆಯ ಸ್ವರ. "ಪಿಕ್: ಕೂಜತಿ ಪೞಮಮ್" । ನಾಭಿ ಮೊದಲಾದ ಐದು ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸಿ ಐದನೆಯ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಸೇರು ವುದರಿಂದ ಇದು ಪಂಚಮಸ್ವರವಾಯಿತು. "ವಾಯುಃ ಸಮುದಗತೋ

ನಾಭೇರೋಹಿತಕೞಮೂರ್ಧಸು । ವಿಚರನ್ ಪೞಮಸ್ಥಾನಪ್ರಾಪ್ತ್ಯಾ ಪೞಮ ಉಚ್ಯತೇ" । "ಶ್ರುತಿಸಮಧಿಕಮುಚ್ಚೈಃ ಪೞಮಂ ಪಿಡಯಂತಃ ಸತತಮೞಮಹೀನಂ ಭಿನ್ನಕೀಕೃತ್ಯ ಪಙ್ಗಮಮ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೧ । 2. ಒಂದು ರಾಗ. "ಸಮಾಜ ಏವಾಲಪಿತಾಸು ವೈಣಿಕೈರ್ಮುಚ್ಚಂ ಯತ್ಪೞಮಮುಚ್ಚನಾಸು ಚ" ನೈಷಂ ೧-೫೨ । (ನಂ) 3. ಮೃಧುನ. (ವಿಂ) 4. ಐದನೆಯ. ಪೞಾನಾಂ ಪೂರಣಃ "ಙಟ್" (೫-೨-೪೮) । ಙಟೋ ಮಙಾಗಮಃ (೫-೨-೪೯) । "ಪೞಮಃ ಪೞಚತುಪಸ್ತಪನೋ ಜಾತವೇದಸಾಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೫೧ । 5. ಜಾಣ, ಸಮರ್ಥ. 6. ಮನೋಹರವಾದ, ಸುಂದರ ವಾದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙಿಪ್" (೪-೧-೧೫) । -ಮಿ-ಮಿ. 7. ದ್ರೌಪದಿ. "ಪೞಮಃ ಸುಂದರೇ ದಕ್ಷೇ ಪೞಾನಾಮಪಿ ಪೂರಣೇ । ರಾಗಭೇದೇ ಪೞಮಿ ತು ದ್ರೌಪದ್ಯಾಮ್" ಹೇಮಂ । 8. ಪಂಚದ ಐದನೆಯ ತಿಥಿ.

ಪೞಮಕಾರ ಪಂಚಮಕಾರ (ನಂ) ಮಕಾರವು ಮೊದಲು ಬರುವ ಮದ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಐದು. ಪೞಮ ಮಕಾರಾ ಯತ್ರ । "ಮಥಂ ಮಾಸಂ ತಥಾ ಮತ್ಸಯಃ ಮುಢಾ ಮೆಥುನಮೇವ ಚ । ಪೞಮತತ್ತ್ವ-ಮಿದಂ ದೇವಿ ನಿರ್ವಾಣಮುಕ್ತಿಹೇತವೇ । ಮಕಾರಪೞಮಕಂ ದೇವಿ ದೇವಾ-ನಾಮಪಿ ದುರ್ಲಭಮ್" ಗುಪ್ತಸಾಧನತನ್ತ್ರಮ್ ।

ಪೞಮಹಾಪಾತಕ ಪಂಚಮಹಾಪಾತಕ (ನಂ) ಐದು ಮಹಾ ಪಾಪಕೃತ್ಯಗಳು. ಪೞಪ್ರಕಾರಂ ಮಹಾಪಾತಕಮ್ । (1) ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯೆ (2) ಸುರಾಪಾನ (3) ಸ್ತ್ರೀಯ (ಕಳ್ಳತನ) (4) ಗುರುಪತ್ನೀ ಗಮನ ಮತ್ತು (5) ಅಂತಹ ಪಾಪಕೃತ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡಿ ದವರ ಸಹವಾಸ. ಇವು ಐದು ಮಹಾಪಾತಕಗಳು. "ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯಾ ಸುರಾಪಾನಂ ಸ್ತೇಯಂ ಗುರ್ವಜ್ಞನಾಗಮಃ । ಮಹಾಂತಿ ಪಾತಕಾನ್ಯಾಹುಃ ಸಂಸರ್ಗಾಪಿ ತೈಃ ಸಹ" ಮನುಂ ೧೧-೫೪ ।

ಪೞಮಹಾಯಜ್ಞ ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞ (ಪುಂ) ಗೃಹಸ್ಥನು ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ ಐದು ಮಹಾಯಜ್ಞಗಳು. (1) ಬ್ರಹ್ಮಯಜ್ಞ (2) ದೇವಯಜ್ಞ, (3) ಪಿತೃಯಜ್ಞ (4) ಭೂತಯಜ್ಞ ಮತ್ತು (5) ಮನುಷ್ಯಯಜ್ಞ. ಅಧ್ಯಾಪನವು ಬ್ರಹ್ಮಯಜ್ಞ. ಹೋಮ (ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯ) ದೇವಯಜ್ಞ. ತರ್ಪಣವು ಪಿತೃಯಜ್ಞ. ಬಲಿಕಾರ್ಯವು ಭೂತಯಜ್ಞ. ಅತಿಥಿಸತ್ಕಾರವು ಮನುಷ್ಯಯಜ್ಞ.

"ಅಧ್ಯಾಪನಂ ಬ್ರಹ್ಮಯಜ್ಞಃ ಪಿತೃಯಜ್ಞಸ್ತು ತರ್ಪಣಮ್ । ಹೋಮೋ ದೈವೋ ಬಲಿರ್ಮಾತೌ ನೃತ್ಯಜ್ಞೋಽತಿಥಿಪೂಜನಮ್" ಮನುಂ ೩-೭೦ ।

ಪೞಮಾಸ್ಯ ಪಂಚಮಾಸ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಕೋಗಿಲೆ. ಪೞಮಃ ಸ್ವರಃ ಆಸ್ಯೇ ಯಸ್ಯ । ಕೋಗಿಲೆಯು ಪಂಚಮಸ್ವರದಲ್ಲಿ ಕೂಗುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಪಿಕ್: ಕೂಜತಿ ಪೞಮಮ್" ।



2. ಐದು ತಿಂಗಳು ಕಳೆದಿರುವ, ಐದು ತಿಂಗಳಾಗಿರುವ.  
ಪೌರ್ಮಿ ಮಾತಾ: ಸ್ಮೃತಾ: "ಯಃ" (೪-೧-೮೨)।

**ಪೌರ್ಮಿ ಪಂಚಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಶುಕ್ಲ ಮತ್ತು ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷ  
ಗಳ ಐದನೆಯ ತಿಥಿ. 2. ದ್ರಾವಿಡಿ, ಪಾಂಡವರ ಪತ್ನಿ.  
ಪೌರ್ಮಿ ಪತ್ನಿನ್ ಮಿನೋತಿ — ಟು ಮಿನ್ (ಪ್ರಕೃಪಣ) "ವಿವಃ"।  
"ಪೌರ್ಮಿ ಪಾಂಡವಸ್ತ್ರಿಯಾಂ" ವಿಶ್ವಂ। 3. ಪಂಚಮಿ  
ವಿಭಕ್ತಿ.

**ಪೌರ್ಮಿ ಪಂಚಮುಖ (ಪುಂ)** 1. ಈಶ್ವರ, ಪರಶಿವ,  
ಮಹಾದೇವ. ಪೌರ್ಮಿ ಮುಖಾನ್ಯಸ್ಯ। ಈಶ್ವರನ ಐದು  
ಮುಖಗಳ ಹೆಸರು ಮತ್ತು ಅವುಗಳ ವರ್ಣ :

| ದಿಕ್ಕು        | ಮುಖದ ಹೆಸರು | ವರ್ಣ       |
|---------------|------------|------------|
| ಪೂರ್ವ         | ತತ್ಪರುಷ    | ರಕ್ತ       |
| ದಕ್ಷಿಣ        | ಅಭೋರ       | ಕೃಷ್ಣ      |
| ಪಶ್ಚಿಮ        | ಸದೋಜಾತ     | ಶುಕ್ಲ      |
| ಉತ್ತರ         | ವಾಮದೇವ     | ಪೀತ        |
| ಉರ್ಧ್ವ (ಮಧ್ಯ) | ಈಶಾನ       | ಮಿಶ್ರ ವರ್ಣ |

"ಪಶ್ಚಿಮೇ ತು ಮುಖೇ ಸದೌ ವಾಮದೇವಸ್ತುತೀತರೇ। ಪೂರ್ವೇ ತತ್ಪರುಷಂ  
ವಿಶ್ವಾದಧೋರಂ ಚಾಪಿ ದಕ್ಷಿಣೇ॥ ಇಶಾನ: ಪೌರ್ಮಿ ಮಧ್ಯೆ  
ಸರ್ವಭಾಮುಪರಿಸ್ಥಿತ:। ಆತೇ ಪೌರ್ಮಿಮುಖಾ ವತ್ಸ ಪಾಪಜ್ಞಾ ಗ್ರಹ-  
ನಾಶನಾ:॥ ಸದೌಜಾತೋ ಭವೇಚ್ಛುಕಲೋ ವಾಮದೇವಸ್ತು ಪೀತಕ:।  
ರಕ್ತಸ್ತತ್ಪರುಷೋ ಜಯೋಧೋರ: ಕೃಷ್ಣ: ಸ ಆವ ಚ। ಇಶಾನ:  
ಪಶ್ಚಿಮಸ್ತೇಷಾಂ ಸರ್ವವರ್ಣಸಮನ್ವಿತ: " ದೇವೀಪುಂ। 2. ಸಿಂಹ,  
ಪೌರ್ಮಿ ವಿಸ್ತೃತ ಮುಖಮಸ್ಯ। 3. ವ್ಯಾಘ್ರ, ಹುಲಿ. 4. ರುದ್ರಾಕ್ಷ.

**ಪೌರ್ಮಿ ಪಂಚಮುದ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಆವಾಹನೀ ಮೊದ  
ಲಾದ ಐದು ಮುದ್ರೆಗಳು, ದೇವರ ಪೂಜಾಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ಮಾಡಬೇಕಾದ ಐದು ವಿಧ ಹಸ್ತಪ್ರದರ್ಶನ. (1) ಪುಷ್ಪ  
ಗಳಿಂದ ತುಂಬಿದ ಅಂಜಲಿಯು **ಆವಾಹನೀ** ಮುದ್ರೆ.  
(2) ಕೆಳಮುಖವಾದ ಅಂಜಲಿಯು **ಸ್ಮಾ ಪನೀ** ಮುದ್ರೆ.  
(3) ಮೇಲುಮುಖವಾದ ಅಂಗುಷ್ಠಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ  
ಮುಷ್ಟಿಬಂಧವು **ಸನ್ನಿಧಾಪನೀ** ಮುದ್ರೆ. (4) ಅಂಗುಷ್ಠ  
ಗಳನ್ನು ಒಳಗಡೆ ಸೇರಿಸಿದ ಮುಷ್ಟಿಬಂಧವು **ಸಂಜೋಧನೀ**  
ಮುದ್ರೆ. (5) ಮೇಲುಮುಖವಾದ ಮುಷ್ಟಿಯ ಜೋಡ  
ಣೆಯು **ಸಂಮುಖೀಕರಣ** ಮುದ್ರೆ. ಇವು ಪೂಜಾ  
ಕಾಲದ ಪಂಚಮುದ್ರೆಗಳು. "ಸಮ್ಯಕ್ ಪ್ರಪೂರಿತ: ಪುಷ್ಪ:  
ಕರಾಘ್ಯಾಂ ಕಲ್ಪಿತೋಜ್ಜಾಲಿ:। ಆವಾಹನೀ ಸಮಾಖ್ಯಾತಾ ಮುದ್ರಾ  
ದೇಶಿಕಸತ್ತಮೇ:॥ ಅಧೋಮುಖೀ ತ್ವಯಿಂ ಚೇತ್ ಸ್ಯಾತ್ ಸ್ಥಾಪನೀ  
ಮುದ್ರಿಕಾ ಭವೇತ್। ತ್ವಚ್ಛಿರತಾಙ್ಗುಲಮುಷ್ಠಿಘೋಸ್ತು ಸಂಯೋಗಾತ್  
ಸನ್ನಿಧಾಪನೀ। ಅಂತ: ಪ್ರವೇಶಿತಾಙ್ಗುಲಾ ಸೇವ ಸಂಬೋಧನೀ ಮತಾ॥  
ಉತ್ತಾನಮುಷ್ಟಿಯಗಲಾ ಸಂಮುಖೀಕರಣಾ ಮತಾ " ಪೂಜಾಪ್ರದೀಪ:।

**ಪೌರ್ಮಿ ಪಂಚಮೂತ್ರ (ನಂ)** ಗೋವು ಆಡು ಮೇಷ  
(ಕುರಿ) ಮಹಿಷ (ಎಮ್ಮೆ) ಮತ್ತು ಗರ್ದಭ (ಕತ್ತೆ) ಇವು  
ಗಳ ಮೂತ್ರ. ಪೌರ್ಮಿಪ್ರಕಾರ ಮೂತ್ರಂ।

**ಪೌರ್ಮಿ ಪಂಚಯಾಮ (ಪುಂ)** ದಿವಸ, ಹಗಲು. ಪೌರ್ಮಿ  
ಯಾಮಾ: ಯತ್ರ। ಎಂಟು ಯಾಮಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ದಿನದಲ್ಲಿ  
ಮೂರು ಯಾಮಗಳು ರಾತ್ರಿಗೆ ಸೇರುವುವು. ಅದರಿಂದ  
ರಾತ್ರಿಗೆ "ತ್ರಿಯಾಮಾ" ಎಂದು ಹೆಸರು. ಉಳಿದ ಐದು  
ಯಾಮಗಳು ಹಗಲಿಗೆ ಸೇರುವುವು.

**ಪೌರ್ಮಿ ಪಂಚರಾತ್ರಿ (ನಂ)** 1. ಐದು ರಾತ್ರಿಗಳು.  
ಪೌರ್ಮಿ ರಾತ್ರಿಣಾಂ ಸಮಾಹಾರ: "ಅಚ್" (೪-೪-೮೭)।  
2. ಐದು ವಿಧ ಜ್ಞಾನಗಳನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸುವ ಒಂದು  
ಗ್ರಂಥ. ಪೌರ್ಮಿರಾತ್ರಿಣಿ ಜ್ಞಾನಾನಿ ಯತ್ರ। "ರಾತ್ರಿಂ ಚ  
ಜ್ಞಾನವಚನಂ ಜ್ಞಾನಂ ಪೌರ್ಮಿವಿಧಂ ಸ್ಮೃತಮ್। ತೇನೇದಂ ಪೌರ್ಮಿರಾತ್ರಿಂ ಚ  
ಪ್ರವದಂತಿ ಮನೀಷಿಣ: "।

**ಪೌರ್ಮಿ ಪಂಚಲಕ್ಷಣ (ನಂ)** 1. ಪುರಾಣ. ಪೌರ್ಮಿ  
ಸರ್ಗಾದಿನಿ ಲಕ್ಷಣಾನ್ಯತ್ರ। "ಸರ್ಗಶ್ಚ ಪ್ರತಿಸರ್ಗಶ್ಚ ವಂಶೋ  
ಮನ್ವಂತರಾಣಿ ಚ। ವಂಶಾನುಚರಿತಂ ಚೇತಿ ಲಕ್ಷಣಾನಾಂ ತು  
ಪೌರ್ಮಿಕಮ್"। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಕ್ಷಣಿ-ಲಕ್ಷಣೇ. 2. ವ್ಯಾಖ್ಯೆ  
ಸ್ವರೂಪ ಪಂಚಕ. ಪೌರ್ಮಿ ರಾತ್ರಿಣಾಂ ಸಮಾಹಾರ: "ಛೀಪ್"  
(೪-೧-೨೧)। ವ್ಯಾಖ್ಯೆಯ ಪಂಚಲಕ್ಷಣಗಳನ್ನು ಪ್ರತಿ  
ಪಾದಿಸುವ ಗ್ರಂಥವು ಪಂಚಲಕ್ಷಣೇ.

**ಪೌರ್ಮಿ ಪಂಚಲವಣ (ನಂ)** ಐದು ವಿಧ ಉಪ್ಪು.  
ಕಾಚಕ ಸೈಂಧವ ಸಾಮುದ್ರ ವಿಡ ಮತ್ತು ಸೌವರ್ಚಲ  
ಗಳೆಂದು ಉಪ್ಪು ಐದು ವಿಧ.

**ಪೌರ್ಮಿ ಪಂಚಲಾಂಗಲಕ (ನಂ)** ಒಂದು ಮಹಾ  
ದಾನ, ಐದು ನೇಗಿಲುಗಳಿಂದ ಉಳಬಹುದಾದ ಜಮೀನಿನ  
ದಾನ. ಒಂದು ಜಿಲ್ಲೆಯ ಮುಖ್ಯಪಟ್ಟಣ ಅಥವಾ ಅದಕ್ಕೂ  
ಚಿಕ್ಕದಾದ ತಾಲ್ಲೂಕುಮುಖ್ಯನಗರ ಧಾನ್ಯಸಮೃದ್ಧ  
ವಾದ ಗ್ರಾಮ ಅಥವಾ ಐದು ಏರುಗಳ ಉಳುವೆಯುಳ್ಳ  
ಭೂಮಿ ಇವುಗಳ ದಾನವು ಮಹಾದಾನ. ಭೂಮಿ ದಾನ  
ಮಾಡಿದರೆ ದೃಢವಾದ ಮರದಿಂದ ಮಾಡಿದ ಐದು  
ನೇಗಿಲುಗಳನ್ನೂ ಕೊಂಬುಗಳಿಗೆ ಸುವರ್ಣದ ಹನಸು  
(ಶೃಂಗಾಭರಣ)ಗಳಿಂದಲೂ ಬಾಲಗಳಿಗೆ ಮುಕ್ತಾಭರಣ  
ಗಳಿಂದಲೂ ಕಾಲುಗೊರಸುಗಳಿಗೆ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಕೆವಚ  
ಗಳಿಂದಲೂ ಕೆಂಪು ರೇಷ್ಮೆ ವಸ್ತ್ರಗಳಿಂದಲೂ ಗಂಧ ಪುಷ್ಪ  
ಗಳಿಂದಲೂ ಅಲಂಕೃತವಾದ ಹತ್ತು ಉತ್ತಮಲಕ್ಷಣ  
ದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಎತ್ತುಗಳನ್ನೂ ಸರ್ವೋಪಕರಣಗಳೊಡನೆ  
ಕೊಡಬೇಕು. ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ।



**ಪಂಚಲೋಹ ಪಂಚಲೋಹ** (ನಂ) ಐದು ಲೋಹಗಳು. ಸುವರ್ಣ ಬೆಳ್ಳಿ ತಾಮ್ರ ತವರ ಮತ್ತು ಸೀಸ ಇವು ಪಂಚ ಲೋಹಗಳು.

**ಪಂಚವಕ್ತ್ರ ಪಂಚವಕ್ತ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಈಶ್ವರ, ಪರಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. ಪಂಚ ವಕ್ತ್ರಾಪ್ಯಸ್ಯ। [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಪಂಚಮುಖ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ಸಿಂಹ. ಪಂಚ ವಿಶಾಲಂ ವಕ್ತ್ರಮಸ್ಯ। "ವೇಲಾಚಲಾದರ್ಮಕಪಂಚವಕ್ತ್ರಾನ್ ವಿಹೃತ್ಪಾತೇನ ಜಿಘೃಷ್ಮಾಣಾನ್" ಯಾದಂ ೧೮-೮೬। 3. ವ್ಯಾಘ್ರ. ಹುಲಿ. 4. ರುದ್ರಾಕ್ಷ. "ಪಂಚಪೂರ್ವಸ್ತು ವಕ್ತ್ರಸ್ಯ ವ್ಯಾಘ್ರೇ ಸಿಂಹೇ ಹರೇ" ವೈಜಂ।

**ಪಂಚವಟಿ ಪಂಚವಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಟ ಮೊದಲಾದ ಐದು ವೃಕ್ಷಗಳು. ಪಂಚಾನಾಂ ವಟಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರ: "ತೃಪ್" (೪-೧-೨೧)। ಅಶ್ವತ್ಥ (ಅರಳಿಮರ) ಜಿಲ್ವ ಮಟ (ಅಲದ ಮರ) ಧಾತ್ರೀ (ನೆಲ್ಲಿಮರ) ಅಶೋಕ (ಕೆಂಪು ಚೆನ್ನದೆಲೆ ಗಿಡ) ಇವು ಮಟಾದಿ ಪಂಚವೃಕ್ಷಗಳು. ಈ ಐದು ವೃಕ್ಷಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಕುಳಿತು ಮಾಡುವ ತಪಸ್ಸು ಸಿದ್ಧಿಪ್ರದವಾದುದು. 2. ದಂಡಕಾರಣ್ಯರ ಒಂದು ಭಾಗ, ಶ್ರೀರಾಮನು ಸೀತಾ ಲಕ್ಷ್ಮಣರೊಡನೆ ಕೆಲಕಾಲ ವಾಸಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಒಂದು ಕ್ಷೇತ್ರ. ಈಗ ಇಲ್ಲಿ "ನಾಸಿಕೆ" ಎಂಬ ಊರಾಗಿರುವುದು. ಈ ಪಂಚವಟಿ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣನಿಂದ ಶೂರ್ಪಣಖೆಯ ನಾಸಿಕಾ ಭೇದನವಾದುದರಿಂದ ಈ ಊರಿಗೆ ನಾಸಿಕೆಯೆಂದು ಹೆಸರಾಗಿದೆ. "ಪಂಚವಟಯಾಂ ತತಃ ರಾಮಃ ಶಾಸನಾತ್ ಕುಂಭ-ಜನ್ಮನಃ। ಅನಪೊಡಸ್ಥಿತಿಸ್ತಸ್ಯಾ ವಿಂಧ್ಯಾದ್ರಿಃ ಪ್ರಕೃತಾವಿವ" ರಘುಂ ೧೨-೩೧।

**ಪಂಚವರ್ಗ ಪಂಚವರ್ಗ** (ಪುಂ) ರಾಜನ ಚಾರಪಂಚಕ, ಸ್ವ-ಪರ ರಾಷ್ಟ್ರಗಳ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ರಾಜನು ನಿಯಮಿಸುವ ಐದು ಮಂದಿ ಗುರುತುಪಡಿಸಿದವರು. (1) ಕಾಪಟಿಕ: (2) ಉದಾಸ್ಥಿತ: (3) ಗೃಹಪತಿ: (4) ವೈದೇಹಿಕ: ಮತ್ತು (5) ತಾಪಸ: ಇವರು ಐದು ವಿಧ ಗುರುತುಪಡಿಸಿದವರು. ಪಂಚಾನಾಂ ಚಾರಾಣಾಂ ವರ್ಗ:। [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಉದಾಸ್ಥಿತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಪಂಚವರ್ಷದೇಶೀಯ ಪಂಚವರ್ಷದೇಶೀಯ** (ವಿಂ) ಸುಮಾರು ಐದು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸುಳ್ಳ. ಇಷ್ಟನ್ಯೂನಪಂಚವರ್ಷವಾನ್ — ಪಂಚವರ್ಷ "ದೇಶೀಯರ್" (೪-೩-೬೭)।

**ಪಂಚವಾಯು ಪಂಚವಾಯು** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ಶರೀರದೊಳಗಿನ ಪಂಚಪ್ರಾಣವಾಯುಗಳು. ಪ್ರಾಣ ಅಪಾನ ಸಮಾನ ಉದಾನ ಮತ್ತು ವ್ಯಾನ ಇವು ಪಂಚವಾಯುಗಳು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಪಂಚಪ್ರಾಣ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಪಂಚವಾರ್ಷಿಕ ಪಂಚವಾರ್ಷಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಐದು ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ನಡೆದ, ಐದು ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ನೆರವೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪಂಚಮಿ: ವರ್ಷ: ನಿವೃತ್ತ: "ಠಕ್" (೪-೧-೭೯)। ತತ್ತರ-ಪದವೃದ್ಧಿ: (೭-೩-೧೬)। 2. ಐದು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಗೌರವಿಸಿ ಕೆಲಸಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಐದು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಕೂಲಿಕೊಟ್ಟು ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಐದು ವರ್ಷಗಳು ಕಳೆದ. ಪಂಚವರ್ಷಿನ್ ಅಪೀಷ್ಠ: ಭೂತ: ಭೂತೋ ವಾ "ಠಕ್" (೪-೧-೮೦)। ತತ್ತರಪದವೃದ್ಧಿ: (೭-೩-೧೬)। ಭವಿಷ್ಯತ್ಕಾಲದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಉತ್ತರಪದಕ್ಕೆ ವೃದ್ಧಿ ಬರುವುದಿಲ್ಲ. ದ್ವಿವರ್ಷಿಕ: ತ್ರಿವರ್ಷಿಕ: ಪಾಂಚವರ್ಷಿಕ: ಇತ್ಯಾದಿ ರೂಪಗಳಾಗುವುವು.

**ಪಂಚವಿಂಶ ಪಂಚವಿಂಶ** (ವಿಂ) ಇಪ್ಪತ್ತೆರನೆಯ. ಪಂಚ-ವಿಂಶತೆ: ಪೂರ್ಣ: "ಛಡ್" (೪-೨-೪೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ತೃಪ್" (೪-೧-೧೪)। -ವಿಂಶಿ -ವಿಂಶೀ.

**ಪಂಚವಿಂಶತಿ ಪಂಚವಿಂಶತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಪ್ಪತ್ತೆರನು. ಪಂಚ-ವಿಂಶತಿ ವಿಂಶತಿ:।

**ಪಂಚವಿಂಶತೀತಮ ಪಂಚವಿಂಶತೀತಮ** (ವಿಂ) ಇಪ್ಪತ್ತೆರನೆಯ. ಪಂಚವಿಂಶತಿ "ಛಡ್" (೪-೨-೪೮)। ಛಡ: "ತಮಡ್" ಆಗಮ: (೪-೨-೪೬)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ತೃಪ್" (೪-೧-೧೪)। -ವಿಂಶತೀತಮಿ -ವಿಂಶತೀತಮಿ.

**ಪಂಚವೃತ್ತಿ ಪಂಚವೃತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಮಾಣ ವಿಷಯವು ವಿಕಲ್ಪ ನಿರ್ದಾ ಮತ್ತು ಸ್ಮೃತಿ ರೂಪವಾದ ಐದು ವೃತ್ತಿಗಳು. 2. ಪ್ರಾಣ ಅಪಾನ ಉದಾನ ಸಮಾನ ಮತ್ತು ವ್ಯಾನನ ರೂಪ ವ್ಯಾಪಾರಗಳುಳ್ಳ ಶರೀರದೊಳಗಿನ ಪ್ರಾಣವಾಯು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಪಂಚಪ್ರಾಣ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಪಂಚಶರ ಪಂಚಶರ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ಪಂಚ-ಶರ: ಬಾಣಾ: ಅಸ್ಯ। "ಶಾಪಾವಸಾನೇ ಪ್ರತಿಪನ್ನಮೂರ್ತೇರ್ಯಾಚಿರೇ ಪಂಚಶರಸ್ಯ ಸೇವಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೯೨। 2. ಮನ್ಮಥನ ಐದು ಬಾಣಗಳು.

**ಪಂಚಶಾಖ ಪಂಚಶಾಖ** (ಪುಂ) 1. ಹಸ್ತ, ಕೈ. ಪಂಚ-ಶಾಖಾ ಇವಾನ್ಯುಲಯೋ ಯಸ್ಯ। 2. ಗಜ, ಆನೆ. (ನಂ) 3. ಐದು ಶಾಖೆಗಳು. ಪಂಚಾನಾಂ ಶಾಖಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರ:।

**ಪಂಚಷ ಪಂಚಷ** (ವಿಂ ಬಂ ವಂ) ಐದು ಅಥವಾ ಆರು. ಪಂಚ ವಾ ಷಡ್ವಾ। "ತ್ವಚ: ಸಮುತ್ಥಾರ್ಯ ದಲಾನಿ ರೀತ್ಯಾ ಸೋಚಾತ್ವಚ: ಪಂಚಷಪಾಟನಾಯಾಮ್" ನೈಷಂ ೭-೩೧।

**ಪಂಚಸಂಸ್ಕಾರ ಪಂಚಸಂಸ್ಕಾರ** (ಪುಂ) ವೈಷ್ಣವರಿಗೆ ನಡೆಯ ಬೇಕಾದ ಐದು ವಿಧ ಸಂಸ್ಕಾರಗಳು. ತಾಪ: ಪುಂಡ್ರ: ನಾಮ ಮಂತ್ರ ಮತ್ತು ಯಾಗ ಇವು ಐದು ಸಂಸ್ಕಾರ



ಗಳು. ತಪ್ಪಸುರ್ದರ್ಶನ ಮತ್ತು ಪಾಂಚಜನ್ಯಧಾರಣ (ಅಂಕನ)ವು ತಾಪ. ಉರ್ಧ್ವಪುಂಡ್ರಧಾರಣವು ಪುಂಡ್ರ. ಆಚಾರ್ಯರಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ದಾಸಾಂತ ನಾಮಕರಣವು ನಾಮ. ಆಚಾರ್ಯರಿಂದ ಮಂತ್ರೋಪದೇಶ ನಡೆಯುವುದು ಮಂತ್ರ. ಆಚಾರ್ಯರಿಂದ ಅನುಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ದೇವತಾ ಪೂಜಾಧಿಕಾರವು ಯಾಗ. "ತಾಪ: ಪುಂಡ್ರಸ್ತಥಾ ನಾಮ ಮನ್ತ್ರೋ ಯಾಗಶ್ಚ ಪಂಚಮ:" |

**ಪಂಚಸುಗನ್ಧಿಕ ಪಂಚಸುಗಂಧಿಕ (ನಂ)** ಕರ್ಪೂರ ತಕ್ಕೋಲಕ ವೃಕ್ಷದ ಪರಿಮಳದ್ರವ್ಯ ಲವಂಗಕುಸುಮ ಗುವಾಕ ಮತ್ತು ಜಾಯಿಕಾಯಿ ಇವುಗಳ ಸಮಭಾಗಗಳಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಒಂದು ಸುಗಂಧ ವಸ್ತು.

**ಪಂಚಸುನಾ ಪಂಚಸೂನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಐದು ಹಿಂಸಾ ಸ್ಥಾನಗಳು. ಪಂಚ ಸುನಾ: | ಗೃಹಸ್ಥನಿಗೆ ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಪಾಪಹೇತುವಾದುವು (ಈ ಐದು) ಒಲೆ ಅರೆಯುವ ಕಲ್ಲು ಗೃಹಕೃತ್ಯಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ ವಸ್ತುಗಳು ಒರಳು ನೀರಿನ ಕಲಶ. ಇವುಗಳ ಉಪಯೋಗಕಾಲದಲ್ಲಾಗುವ ಪ್ರಾಣವಧೆಯು ಪಾಪಹೇತುವಾಗುವುದು. "ಪಂಚ ಸುನಾ ಗೃಹಸ್ಥಸ್ಯ ಚುಲ್ಕಿ ಪೇಷಯುಪಸ್ಕರ: | ಕಂಡನಿ ಚೋದಕ್ರಮಶ್ಚಾ ಬध्यತೇ ಯಾಸ್ತು ವಾಹಯನ್" ಮನುಂ ೩-೬೮ | ಈ ಪಾಪನಿವಾರಣೆಗಾಗಿ ಗೃಹಸ್ಥನಿಗೆ ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞಗಳು ವಿಹಿತವಾಗಿವೆ. ["ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಪಂಚಾಂಶ ಪಂಚಾಂಶ (ಛಂ)** 1. ಐದನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. ಪಂಚಮೌಷಾ: | 2. ಮೂವತ್ತು ಭಾಗಗಳುಳ್ಳ ರಾಶಿಯ ಐದನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ.

**ಪಂಚಾಕ್ಷರ ಪಂಚಾಕ್ಷರ (ಛಂ)** 1. ಐದು ಅಕ್ಷರಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಮಂತ್ರ. ಪಂಚ ಅಕ್ಷರಾಣಿ ಯತ್ರ | 2. ಪ್ರಣವ. ಪ್ರಣವವು ಅಕಾರ: ಉಕಾರ: ಮಕಾರ: ನಾದ: ಬಿಂದು: ಈ ಐದರಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ಪಂಚಾನಿ ಪಂಚಾಗ್ನಿ (ಛಂ)** 1. ದಕ್ಷಿಣ (ಅನ್ವಾಹಾರ್ಯ ಪಚನ) ಗಾರ್ಹಪತ್ಯ ಆಹವನೀಯ ಸಭ್ಯ ಮತ್ತು ಅವಸಥ್ಯಗಳೆಂದು ಯಾಗಾಗ್ನಿಗಳು ಐದು. (ವಿಂ) 2. ಈ ಅಗ್ನಿಗಳಿಂದ ವಿಹಿತವಾದ ಕರ್ಮಾಚರಣೆಯುಳ್ಳವನು, -ವಿಹಿತವಾದ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಮಾಡುವವನು. ಪಂಚ ಅಗ್ನಯೋ ಯಸ್ಯ | 3. ನಾಲ್ಕು ಕಡೆಗಳಲ್ಲೂ ಅಗ್ನಿ ನೆತ್ತಿಯ ಮೇಲೆ ಸೂರ್ಯ ಈ ರೀತಿಯಿರುವ ಪಂಚತೇಜಸ್ವಿಗಳು.

**ಪಂಚಾತ್ಮಿಕ ಪಂಚಾಗ್ನಿಕ (ನಂ)** ಐದು ಅಗ್ನಿಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಮಾಡುವ ತಪಸ್ಸು. ಪಂಚ ಅಗ್ನಯೋ ಯತ್ರ |

**ಪಂಚಾಕ್ಷ ಪಂಚಾಂಗ (ಛಂ)** 1. ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ. ಪಂಚ ಅಕ್ಷಾನಿ ಯಸ್ಯ | 2. ಐದು ಅಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಶುಭಲಕ್ಷಣಗಳುಳ್ಳ ಪಂಚಭದ್ರವೆಂಬ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕುದುರೆ. 3. ತೋಳುಗಳು ಮಂಡಿಗಳು ಶಿರಸ್ಸು ವಕ್ಷಸ್ಸು ಮತ್ತು ನೇತ್ರ ಈ ಐದು ಅಂಗಗಳಿಗೂ ಭೂಸ್ಪರ್ಶವಾಗುವಂತೆ ಮಾಡುವ ಪ್ರಣಾಮ "ವಾಹುಮ್ಯಾಂ ಚೈವ ಜಾನುಮ್ಯಾಂ ಶಿರಸಾ ವಕ್ಷಸಾ ದೃಶಾ | ಪಂಚಾಕ್ಷೋಽಯಂ ಪ್ರಣಾಮ: ಸ್ಯಾತ್" ತನ್ತ್ರಸಾಂ | 4. ಒಂದು ಮರದ ಐದು ಭಾಗಗಳು. ತ್ವಕ್ಕು (ತೋಗಟ) ಪರ್ಣ (ಎಲೆ) ಪುಷ್ಪ ಬೇರು ಮತ್ತು ಫಲ ಇವು ಮರದ ಐದು ಭಾಗಗಳು. 5. ಪಂಚಾಂಗ, ಪ್ರತಿ ದಿನದ ತಿಥಿ ವಾರ ನಕ್ಷತ್ರ ಯೋಗ ಮತ್ತು ಕರಣ ಇವು ಜ್ಯೋತಿಷದ ಐದು ಅಂಗಗಳು. "ತಿಥಿರ್ವಾರಶ್ಚ ನಕ್ಷತ್ರಂ ಯೋಗ: ಕರಣಮೇವ ಚ | ಪಂಚಾಕ್ಷಮೇತದ್ವಿಷ್ಟಮ್" |

**ಪಂಚಾಕ್ಷಗುಪ್ತ ಪಂಚಾಂಗಗುಪ್ತ (ಛಂ)** ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ. ಪಂಚಾಕ್ಷಾನಿ ಗುಪ್ತಾನ್ಯಸ್ಯ | ಎರಡು ಕಾಲುಗಳು ಎರಡು ಕೈಗಳು ಮತ್ತು ತಲೆ ಇವುಗಳನ್ನು ತನಗೆ ಇಷ್ಟಬಂದಾಗ ಚಿಪ್ಪಿನೊಳಕ್ಕೆ ಎಳೆದುಕೊಂಡು ರಕ್ಷಣೆಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಜಾತಿಂ "ತೀರ್ಥ" (೪-೧-೬೩) | -ಕ್ಷೀ -ಗೀ.

**ಪಂಚಾಕ್ಷಗುಪ್ತ ಪಂಚಾಂಗಶುದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪಂಚಾಂಗಗಳ ದೋಷವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಶುದ್ಧ (ಯೋಗ್ಯ) ವಾದ ತಿಥಿ ವಾರ ನಕ್ಷತ್ರ ಯೋಗ ಮತ್ತು ಕರಣ ಇವುಗಳು ಇರುವಿಕೆ. ಶುಭ ಕಾರ್ಯಗಳಿಗೆ ಪಂಚಾಂಗಶುದ್ಧಿ ತಾರಾಬಲ ಚಂದ್ರಬಲಗಳಿರುವ ದಿವಸವೂ ಗುರು ಶುಕ್ರರು ಅಸ್ತವಾಗದಿರುವಾಗ ಶುದ್ಧವಾದ ಲಗ್ನವೂ ಪ್ರಶಸ್ತ.

**ಪಂಚಾಕ್ಷಗುಲ ಪಂಚಾಂಗುಲ (ಛಂ)** ಎರಡವುಳ್ಳ ಹರಳುಗಿಡ. ಪಂಚ ಅಕ್ಷಗುಲಯ ಇವ ಪತ್ರಾಣಿ ಅಸ್ಯ "ಅಕ್ಷ" (೪-೪-೮೬) | ಈ ಮರದ ಅವಯವಗಳು ಅಂಗುಲಿಯಂತಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ಮರದ ಅರ್ಧದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಈ "ಅಕ್ಷ" ಪ್ರತ್ಯಯ ಬರುವುದು.

**ಪಂಚಾಕ್ಷಗುಲಿ ಪಂಚಾಂಗುಲಿ (ಛಂ)** ಹಸ್ತ, ಕೈ. ಪಂಚ ಅಕ್ಷಗುಲಯೋಽಸ್ಯ |

**ಪಂಚಾಜ ಪಂಚಾಜ (ನಂ)** ಅಡಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ ಐದು ವಸ್ತುಗಳು. ಅಜಾಯಾ ವಿಕಾರ: "ಅಜ್" (೪-೩-೧೪೪) | ಪಂಚಭಿರ್ಗುಣಿತಮಾಜಮ್ | ಪುರೀಷ (ಹಿಕ್ಕಿ) ಮೂತ್ರ ಹಾಲು ಮೊಸರು ಮತ್ತು ತುಪ್ಪ ಇವು ಅಡಿನ ಐದು ಪದಾರ್ಥಗಳು.

**ಪಂಚಾತ್ಮಕ ಪಂಚಾತ್ಮಕ (ನಂ)** ಪಂಚಭೂತಗಳಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನವಾದ ಶರೀರ. ಪಂಚ ಆತ್ಮಾ ಆಕಾಶಾದಯ: ಯಸ್ಯ "ಕಪ್" |



ಪೌನನ ಪಂಚಾನನ (೧೦) 1. ಪರಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. ಪಂಚ ಆನನಾನ್ಯಸ್ಯ | 2. ಸಿಂಹ. ಪಂಚ ವಿಶಾಲಮಾನನ-ಮಸ್ಯ | 3. ಸಿಂಹರಾಶಿ. 4. ರುದ್ರಾಕ್ಷ.

ಪೌನಮೃತ ಪಂಚಾಮೃತ (ನಂ) 1. ಹಾಲು ಮೊಸರು ತುಪ್ಪ ಸಕ್ಕರೆ ಮತ್ತು ಜೇನುತುಪ್ಪಗಳೆಂಬ ಐದು ಸಿಂಹ ಪದಾರ್ಥಗಳು. ಪಂಚಾನಾಮಮೃತಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರ: | “ದ್ರುಗಂ ಚ ಶಕರಾ ಚೈವ ಧೃತಂ ದಧಿ ತಥಾ ಮಧು | ಪಂಚಾಮೃತಮಿದಂ ಪ್ರೋಕ್ತಮ್” | 2. ಪಂಚಮಹಾಭೂತಗಳು. ನ ಚ್ರಿಯಂತೆ ನಾತ್ಯಂತಂ ವಿನಶ್ಯಂತಿ ಕಾರ್ಯಕಾರಣರೂಪೇಣ ಸರ್ವದಾಜ್ವಲ್ಯಾನಾತ್ ಇತಿ ಅಮೃತಾನಿ | ಪಂಚ ಅಮೃತಾನಿ | “ನಾಡೀನಾಮುದಯ-ಕ್ರಮೇಣ ಜಗತ: ಪಂಚಾಮೃತಾಕರ್ಷಣಾತ್” ಮಾಲತೀಂ ೪-೨ |

ಪೌನಮಾಯ ಪಂಚಾಮಾಯ (೧೦) ಪರಮೇಶ್ವರನ ಪಂಚ ಮುಖಗಳಿಂದ ಹೊರಟ ಆಮಾಯಸದೃಶವಾದ ಐದು ಶಾಸ್ತ್ರಗಳು. “ಪೂರ್ವಮಾಯ: ಶಬ್ದರೂಪೋ ದಕ್ಷಿಣ: ಕರ್ಣರೂಪಕ: | ಪಶ್ಚಿಮ: ಪ್ರಶ್ನರೂಪ: ಸ್ಯಾತ್ ಉತ್ತರಂ ಚೋತ್ತರಸ್ತಥಾ | ಊರ್ವಮಾಯ-ಸ್ತತ್ವಬೋಧ: ಕೇವಲಾನುಭವಾತ್ಮಕ:” ಶೇಖರವಚನಮ್ |

ಪೌನಾಯತನಿ ಪಂಚಾಯತನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಪಾಸ್ಯರಾದ ಗಣಪತಿ ಪಾರ್ವತಿ ಈಶ್ವರ ಅಚ್ಯುತ ಮತ್ತು ಅದಿತ್ಯರೆಂಬ ಐದು ದೇವತೆಗಳು. ಪಂಚಾನಾಮಾಯತನಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರ: |

ಈ ಐದು ದೇವತೆಗಳನ್ನೂ ಪೂಜಿಸುವವರು ಯಾವ ದಿನದಲ್ಲಿ ಯಾರನ್ನೂ ಪೂಜಿಸುವರೋ ಅವರನ್ನು ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಉಳಿದವರನ್ನು ಆಯಾ ಕ್ರಮದಲ್ಲೂ ಇಟ್ಟು ಪೂಜಿಸಬೇಕು.

ಗಣಪತಿ ಪಂಚಾಯತನ:

|             |         |
|-------------|---------|
| ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ   | ಗಣಪತಿ   |
| ಈಶಾನ್ಯದಲ್ಲಿ | ಕೇಶವ    |
| ಆಗ್ನೇಯದಲ್ಲಿ | ಈಶ್ವರ   |
| ನೈಋತ್ಯದಲ್ಲಿ | ಸೂರ್ಯ   |
| ವಾಯವ್ಯದಲ್ಲಿ | ಪಾರ್ವತಿ |

ಪಾರ್ವತಿ ಪಂಚಾಯತನ:

|             |         |
|-------------|---------|
| ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ   | ಪಾರ್ವತಿ |
| ಈಶಾನ್ಯದಲ್ಲಿ | ಅಚ್ಯುತ  |
| ಆಗ್ನೇಯದಲ್ಲಿ | ಈಶ್ವರ   |
| ನೈಋತ್ಯದಲ್ಲಿ | ಗಣಪತಿ   |
| ವಾಯವ್ಯದಲ್ಲಿ | ಸೂರ್ಯ   |

ಶಿವ ಪಂಚಾಯತನ:

|             |       |
|-------------|-------|
| ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ   | ಈಶ್ವರ |
| ಈಶಾನ್ಯದಲ್ಲಿ | ಕೇಶವ  |

|             |         |
|-------------|---------|
| ಆಗ್ನೇಯದಲ್ಲಿ | ಸೂರ್ಯ   |
| ನೈಋತ್ಯದಲ್ಲಿ | ಗಣಪತಿ   |
| ವಾಯವ್ಯದಲ್ಲಿ | ಪಾರ್ವತಿ |

ವಿಷ್ಣು ಪಂಚಾಯತನ:

|             |         |
|-------------|---------|
| ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ   | ಕೇಶವ    |
| ಈಶಾನ್ಯದಲ್ಲಿ | ಈಶ್ವರ   |
| ಆಗ್ನೇಯದಲ್ಲಿ | ಗಣಪತಿ   |
| ನೈಋತ್ಯದಲ್ಲಿ | ಸೂರ್ಯ   |
| ವಾಯವ್ಯದಲ್ಲಿ | ಪಾರ್ವತಿ |

ಸೂರ್ಯ ಪಂಚಾಯತನ:

|             |         |
|-------------|---------|
| ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ   | ಸೂರ್ಯ   |
| ಈಶಾನ್ಯದಲ್ಲಿ | ಈಶ್ವರ   |
| ಆಗ್ನೇಯದಲ್ಲಿ | ಗಣಪತಿ   |
| ನೈಋತ್ಯದಲ್ಲಿ | ವಿಷ್ಣು  |
| ವಾಯವ್ಯದಲ್ಲಿ | ಪಾರ್ವತಿ |

ಪೌನಾಯುಧ ಪಂಚಾಯುಧ (ನಂ) 1. ವಿಷ್ಣುವಿನ ಐದು ಆಯುಧಗಳು. ಪಂಚ ಆಯುಧಾನಿ | ಶಾಸ್ತ್ರ: ಚಕ್ರಮ್ ಗದಾ ಖಡ್ಗ: ಶಾಸ್ತ್ರಮ್ ಇವು ಐದು ಆಯುಧಗಳು. “ಶಾಸ್ತ್ರೋ ಲಕ್ಷ್ಮೀಪತೇ: ಪಾಂಚಜನ್ಯ: ಚಕ್ರಂ ಸುಧರ್ಮನಮ್ | ಕೌಮೋದಕೀ ಗದಾ ಖಡ್ಗೋ ನಂದಕ: ಕೌಸ್ತುಭೋ ಮಣಿ: | ಚಾಪ: ಶಾಸ್ತ್ರಮ್ ಮುರಾರೇ:” ಅಮಂ | 2. ಮನ್ಮಥನ ಐದು ಬಾಣಗಳು. (೧೦) 3. ವಿಷ್ಣು. 4. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ.

ಪೌನಾರಿ ಪಂಚಾರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚತುರಂಗದ ಅಟದ ಹಲಗೆ.

ಪೌನಾಲ ಪಂಚಾಲ (೧೦ ಬಂ ಬಂ) 1. ಪಂಚಾಲದೇಶ.

ಪಚಿ (ವಿಸ್ತಾರಕರಣ) “ಕಾಲನ್” (೨೦ ೧-೧೧೫) |

2. ಪಂಚಾಲದೇಶದ ದೊರೆಗಳು. ಪಂಚಾಲಾನಾಂ ರಾಜಾನ್:

“ಅಖ್” (೪-೧-೧೬೬) | ಬಹುತ್ವೇ ಅಖೋ ಲುಕ್ (೨-೪-೬೨) |

ಏಕತ್ವೇ ಪಾಂಚಾಲ: |

ಪೌನಾಲಿಕಾ ಪಂಚಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುತ್ಥಳಿಕೆ, ಬಟ್ಟೆ ದಂತ

ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಬೊಂಬೆ. ಪೌನಾಮಿ-

ವರ್ಣೇತ್ಯತೇ — ಅಲ “ಖನ್” (೩-೩-೧೯) | ಸ್ವಾರ್ಥ

“ಕನ್” | “ಪಂಚಾಲಿಕಾ ಪುತ್ರಿಕಾ ಸ್ಯಾತ್ಪದಂತಾದಿಮಿ:

ಕೃತಾ” ಅಮಂ |

ಪೌನಾಲಿ ಪಂಚಾಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುತ್ಥಳಿಕೆ, ವಸ್ತ್ರ ದಂತ

ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಬೊಂಬೆ.

ಪೌನಾವಯವ ಪಂಚಾವಯವ (೧೦) ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ ಹೇತು

ಉದಾಹರಣ ಉಪನಯ ಮತ್ತು ನಿಗಮಗಳೆಂಬ ಐದು

ಭಾಗಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ತಾರ್ಕಿಕರ ವಾದ. ಪಂಚ ಅವಯವಾ

ಯಸ್ಯ |



ಪಂಚಾಶ ಪಂಚಾಶ (ವಿಂ) ಐವತ್ತನೆಯ. ಪಂಚಾಶತ: ಪೂರ್ಣ: "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೨-೨೪)। ಪಂಚಾಶಿ ಪಂಚಾಶಿ.

ಪಂಚಾಶತ್ ಪಂಚಾಶತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಐವತ್ತು. ಪಂಚ ದಶತ: ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯಾ: "ಶತ್" ಪ್ರತ್ಯಯ: ಪ್ರಕೃತೇ: ಪಂಚಾ-  
ದೇಶಾ ನಿಪಾಂ (೪-೨-೪೯)। (ವಿಂ) 2. ಐವತ್ತು ಪರಿಮಾಣವುಳ್ಳ, ಐವತ್ತರಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಪಂಚಾಶತ್ತಮ ಪಂಚಾಶತ್ತಮ (ವಿಂ) ಐವತ್ತನೆಯ. ಪಂಚಾಶತ: ಪೂರ್ಣ: "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮)। ಡಟ್: ವಾ  
ತಮಡಾಗಮ: (೪-೨-೬೬)। ಪಕ್ಷೇ ಪಂಚಾಶ:। ಸ್ತ್ರಿಯಾ  
"ಡೀಪ್" (೪-೨-೨೪)। -ತಮಿ -ತಮಿ.

ಪಂಚಾಶಿನ್ ಪಂಚಾಶಿನ್ (ವಿಂ) ಐವತ್ತರಿಂದ ಕೂಡಿರುವ, ಪಂಚಾಶೀತಿ ಪಂಚಾಶೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎಂಬತ್ತೈದು. ಪಂಚಾ-  
ಧಿಕಾ ಅಶೀತಿ:।

ಪಂಚಾಸ್ಯ ಪಂಚಾಸ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಮೃಗಗಳ ರಾಜನಾದ ಸಿಂಹ. ಪಂಚ ವಿಸ್ತೀರ್ಣಮಾಸ್ಯ ಅಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಟಾಪ್" (೪-೨-೪)।  
2. ಸಿಂಹರಾಶಿ. 3. ಈಶ್ವರ, ಪರಶಿವ, ಪರಮಾತ್ಮ. ಪಂಚ ಆಸ್ಯಾನ್ಯಸ್ಯ। 4. ರುದ್ರಾಕ್ಷ. (ವಿಂ) 5. ಐದು ಮುಖಗಳುಳ್ಳ.

ಪಂಚೀಕರಣ ಪಂಚೀಕರಣ (ನಂ) ಪಂಚಭೂತಗಳನ್ನೂ ಕೆಲವು ಭಾಗಮಾಡಿ ಅವುಗಳ ಮಿಶ್ರಣಮಾಡುವುದು. ಅಪಂಚ ಪಂಚಾತ್ಮಕಾನಿ ಕ್ರಿಯಂತೇಜೇನ - ಪಂಚನ್ + ಕೃ ಕೃ (ಕರಣಂ) ಚಿವ: ಮಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೨೨೪)। ದೀರ್ಘ: (೪-೪-೨೬)। ಪಂಚಭೂತಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದೊಂದನ್ನೂ ಸಮವಾಗಿ ಎರಡೆರಡು ಭಾಗಮಾಡಿ ಆ ಹತ್ತು ಭಾಗಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ಐದು ಭಾಗಗಳನ್ನೂ ಪ್ರತ್ಯೇಕ ನಾಲ್ಕು ಭಾಗಮಾಡಿ ಆ ನಾಲ್ಕು ಭಾಗಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡನೆಯ ಅರ್ಧ ಭಾಗವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಉಳಿದ ಭಾಗಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸುವುದು ಪಂಚೀಕರಣ. "ದ್ವಿಧಾ ವಿಧಾಯ ಚೈಕೈಕಂ ಚತುರ್ಥಾ ಪ್ರಥಮಂ ಪುನ:। ಸ್ವಸ್ವೇತರದ್ವಿತೀಯಾಶೈರ್ಯೋಜನಾತ್ ಪಂಚ ಪಂಚ ತೇ" ವೇದಾಂತಸಾರ:।

ಪಂಚೀಕೃತ ಪಂಚೀಕೃತ (ವಿಂ) ಒಂದೊಂದನ್ನೂ ಭಾಗಗಳಾಗಿ ಮಾಡಿ ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಪಂಚಭೂತಗಳು).

ಪಂಚೇಂದ್ರ ಪಂಚೇಂದ್ರ (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) ಐವರು ಇಂದ್ರರು. ಪಂಚ ಇಂದ್ರಾ:।

ಪಂಚೇಂದ್ರೋಪಾಖ್ಯಾನ: ಇಂದ್ರನು ದೇವತೆಗಳ ಸತ್ತವರನ್ನು ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಗಂಗಾನದಿಯಲ್ಲಿ ಅಳುತ್ತಾ ಸ್ನಾನಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಒಬ್ಬ ಯುವತಿಯನ್ನು ಕಂಡು ಅವಳ

ವಿಷಯ ವಿಚಾರಿಸಲಾಗಿ ಅವಳು ಇಂದ್ರನನ್ನು ಒಂದು ಪರ್ವತದ ಶಿಖರಕ್ಕೆ ಕರೆದೊಯ್ದಳು. ಅಲ್ಲಿದ್ದ ಪರಮೇಶ್ವರನು ತನ್ನನ್ನು ಗೌರವಿಸಲಿಲ್ಲವೆಂದು ಇಂದ್ರನು ಕುಪಿತನಾದನು. ಪರಮೇಶ್ವರನ ಓರೆನೋಟದಿಂದ ಇಂದ್ರನು ನಿಶ್ಚಲನಾಗಿ ನಿಂತುಬಿಟ್ಟನು. ಪರಮೇಶ್ವರನ ಆಜ್ಞೆಯಂತೆ ಇಂದ್ರನನ್ನು ಕರೆತರಲು ಹೋದ ತರುಣಿಯ ಸ್ಪರ್ಶದಿಂದ ಇಂದ್ರನು ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬಿದ್ದನು. ಆಗ ಈಶ್ವರನು ಇವನಂತೆಯೇ ಗರ್ವಿತರಾಗಿ ಶಿಕ್ಷೆಯನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತ ಗುಹೆಯಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದಿದ್ದ ಇನ್ನೂ ನಾಲ್ವರು ಇಂದ್ರನನ್ನು ತೋರಿಸಲು ಅವರನ್ನು ನೋಡಿ ಭೀತನಾದ ಇಂದ್ರನು ಪರಮೇಶ್ವರನಲ್ಲಿ ಕ್ಷಮೆ ಬೇಡುವನು. ಪ್ರಸನ್ನನಾದ ಪರಮೇಶ್ವರನು "ನೀವೆಲ್ಲರೂ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಮನುಷ್ಯರಾಗಿ ಜನಿಸಿ ಅತಿಶಯ ಪರಾಕ್ರಮದಿಂದ ಯಶಸ್ವಿಗಳಾಗಿ ಜಗತ್ತಿಗೆಲ್ಲಾ ಆಶ್ಚರ್ಯವುಂಟುಮಾಡುವಿರಿ. ಈ ತರುಣಿಯೇ ನಿಮ್ಮ ಐವರಿಗೂ ಪತ್ನಿಯಾಗುವಳು" ಎಂದು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದನು. ಈ ಐವರೂ ಮುಂದೆ ಪಂಚಪಾಂಡವರಾಗಿಯೂ ಈ ತರುಣಿಯು ದ್ರೌಪದಿಯಾಗಿಯೂ ಹುಟ್ಟಿದರು. ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೨೪।

ಪಂಚೇಂದ್ರಿಯ ಪಂಚೇಂದ್ರಿಯ (ನಂ) ಐದು ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಗಳು ಮತ್ತು ಐದು ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯಗಳು.

ಪಂಚೇಷು ಪಂಚೇಷು (ಪುಂ) 1. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ಪಂಚ ಇಷವೋಽಸ್ಯ। "ತ್ವಾಮುಚ್ಚಕೇಸ್ತಾಪಯತಾ ನೃಪಂ ಚ ಪಂಚೇಷುಣಿವಾಜನಿ ಯೋಜನೇಯಮ್" ನೈಷಂ ೩-೨೦೦। 2. ಮನ್ಮಥನ ಐದು ಬಾಣಗಳು. "ಅರವಿಂದಮಶೋಕಂ ಚ ಚೂತಂ ಚ ನವಮಲ್ಲಿಕಾ। ನೋಲೋಪಲಂ ಚ ಪಂಚೇತೇ ಪಂಚಬಾಣಸ್ಯ ಸಾಯಕಾ:" ಅಮಂ।

ಪಂಚೋಪಚಾರ ಪಂಚೋಪಚಾರ (ಪುಂ) ದೇವರ ಪೂಜಾ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಪಿಸುವ ಗಂಧ ಪುಷ್ಪ ಧೂಪ ದೀಪ ಮತ್ತು ನೈವೇದ್ಯಗಳೆಂಬ ಐದು ಉಪಚಾರಗಳು.

ಪಂಚೋಷ್ಮನ್ ಪಂಚೋಷ್ಮನ್ (ಪುಂ) ದೇಹದಲ್ಲಿ ಆಹಾರವನ್ನು ಪಚನಮಾಡುವ ಐದು ಅಗ್ನಿಗಳು. ಪಂಚ ಋಷಾಣ:। "ಭೂಮಾಪ್ಯಾಗ್ನೇಯವಾಯವ್ಯಾ: ಪಂಚೋಷ್ಮಾಣ: ಸನಾಭಸಾ:। ಪಂಚಾ-  
ಹಾರಗುಣಾನ್ ಸ್ವಾನ್ ಸ್ವಾನ್ ಪಾರ್ಥಿವಾದೀನ್ ಪಚಂತ್ಯನ್। ಪಾರ್ಥಿವಾ: ಪಾರ್ಥಿವಾನೇವ ಶೇಷಾ: ಶೇಷಾಂಶದೇಹಗಾನ್" ಸಾರಕೌಮುದಿ।

ಪಂಜರ ಪಂಜರ (ಪುಂ ನಂ) 1. ದೇಹದೊಳಗಿನ ಮೂಳೆಗಳ ಸಮೂಹ, ಎಲುಬಿನ ಗೂಡು. ಪಜಿ (ಆವರಣಂ) "ಅರನ್" ಬಾಹುಂ। (ನಂ) 2. ಹಕ್ಕಿಗಳ ಬೋನು. "ಶುಕ್ ಪಂಜರಬಂಧಸ್ತೇ ಮಧುರಾಣಾಂ ಗಿರಾಂ ಫಲಮ್"। 3. ಕಲಿಯುಗ.



**ಪಜ್ಜಿಕಾ ಪಂಚಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಒಂದು ಗ್ರಂಥದ ಸಾರವತ್ತಾದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ, ಪ್ರಮಾಣಪುರಸ್ಕರವಾದ ವಿವರಣೆ. 2. ಪ್ರತಿದಿನದ ಆಯವ್ಯಯಗಳನ್ನು ನಿರ್ದೇಶಿಸುವ ಲೆಕ್ಕದ ಪುಸ್ತಕ. 3. ತಿಥಿ ವಾರ ನಕ್ಷತ್ರ ಯೋಗ ಮತ್ತು ಕರಣಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಪಂಚಾಂಗ.

**ಪಜ್ಜಿಕಾರಕ ಪಂಚಿಕಾರಕ (ಪುಂ)** ಕಾಯಸ್ಥ ಪಂಗಡದವನು. ಪಜ್ಜಿಮಾಯವ್ಯಯಸೂಚಕಪತ್ರಂ करोति।

**ಪಂಜಿ ಪಂಚೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಪಂಚಾಂಗ. "ದೇವಜವಕ್ತ್ರೇಣ ಶೃಣೋತಿ ಪಂಜಿಂ ಶತ್ರುಕ್ಷಯಂ ಯಾತಿ ಶಶಿವ ಕೃಷ್ಣಂ". 2. ನೂಲನ್ನು ತೆಗೆಯಲು ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಿದ ಹತ್ತಿಯ ಹಂಚಿ, ನೂಲು ತೆಗೆಯಲು ಅನುಕೂಲಿಸುವಂತೆ ಬಿಡಿಸಿ ಹದ ಮಾಡಿದ ಹತ್ತಿಯ ಹಂಚಿ. 3. ಆಯವ್ಯಯಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಪತ್ರ.

**ಪಂಜೀಕರ ಪಂಚೀಕರ (ಪುಂ)** ಕಾಯಸ್ಥ ಪಂಗಡದವನು. ಪಂಜಿಮಾಯವ್ಯಯಸೂಚಕಪತ್ರಂ करोति—कृक् "टः" (३-२-२०)।

**ಪಟ ಪಟಿ (ಪುಂ)** 1. ಪ್ರಿಯಾಲವೃಕ್ಷ, ಮೊರಟೆಗಿಡ. (ಪುಂ) 2. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. ಪಟ (ಗತೌ) "अच्" (३-१-१३४)। "अयं पटः सूत्रदरिद्रतां गतो ह्ययं पटश्चिद्रशतैरलङ्कृतः। अयं पटः प्रावरितुं न शक्यते ह्ययं पटः संवृत एव शोभते" मृच्छं २-१०। 3. ಚಿತ್ರಗಳನ್ನು ಬರೆಯುವ ಬಟ್ಟೆ. 4. ಉತ್ತಮದರ್ಜೆಯ ಬಟ್ಟೆ. 5. ಮೇಲಿನ ಅಚ್ಚಾದನ, ಛಾವಣಿ. ಲಿಂಗತ್ರಯದಲ್ಲೂ ಇದರ ಪ್ರಯೋಗವುಂಟು. "त्रिलिङ्ग्यां तु क्वचिच्छुङ्गा कलशी कन्दरी दरी। पेटी पुटी पटी वाटी कवाटी पिटका वटी" वैज०। "प्रसारयन्ति कुशलाश्वित्रां वाचं पटीमिव" माघ० २-७४। 6. ಜವನಿಕೆ, ತೆರೆ, ಪರದೆ. 7. ಪ್ರಮಾದವಚನ, ಅಜ್ಞಾನದ ಮಾತು. 8. ದೋಷ, ತಪ್ಪು. 9. ಪುರಸ್ಕಾರ, ಗೌರವ. "पटः प्रियालवृक्षे च सुचले च पुरस्कृतौ। पटः प्रमादवचनदोषयोरप्युदाहृतः" विश्व०।

**ಪಟಕ ಪಟಿಕ (ನಂ)** ಶಿಬಿರ, ತಾಣ, ದಂಡು ಇಳಿಯುವ ಜಾಗ. ಪಟೇನ ಛದನೇನ ಕಾಯತಿ—कै (शब्दे) "कः" (३-२-३)।

**ಪಟಕಾರ ಪಟಿಕಾರ (ಪುಂ)** ತಂತುವಾಯ, ನೇಯ್ಗೆಯ ವನು, ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ನೇಯುವವನು. ಪಟಂ करोति—कृक् (करणे) "अण्" (३-२-१)।

**ಪಟಕುಟಿ ಪಟಿಕುಟೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಡೇರೆ, ವಸ್ತ್ರಗೃಹ, ಗುಡಾರ, ಪಟನಿಮಿತಾ ಕುಟಿ।

**ಪಟಗೃಹ ಪಟಿಗೃಹ, -ಮಂಡಪ -ಮಂಡಪ, -ವೇಷಮನ್ -ವೇಶ್ಮನ್ (ನಂ)** ಡೇರೆ, ವಸ್ತ್ರಗೃಹ, ಗುಡಾರ. "प्रासादशोभातिशयालुभिः पथि प्रभोनिवासाः पटवेशमभिर्बभूवुः" माघ० १२-६३। "उन्नम्रताम्रपटमण्डपमण्डितं तत्" माघ० ५-६८।

**ಪಟಚ್ಚರ ಪಟಿಚ್ಚರ (ನಂ)** 1. ಹಳೆಯ ಬಟ್ಟೆ, ಬಂದಿ ಬಟ್ಟೆ. ಭೂತಪೂರ್ವ ಪಟತ್—भूतपूर्वे "चरट्" (५-३-५३)। "पटच्चरं जीर्णवस्त्रम्" अम०। (पुं) 2. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ. "पटच्चरः पटच्चोरः" वैज०। 3. ಮಧ್ಯದೇಶದ ಒಂದು ಪ್ರಾಂತ್ಯ. "पटच्चरादयश्चान्ये मध्यदेशस्य नीवृतः" वैज०।

**ಪಟಚ್ಚೋರ ಪಟಿಚ್ಚೋರ (ಪುಂ)** ತಸ್ಕರ, ಕಳ್ಳ. "पटच्चरः पटच्चोरः" वैज०।

**ಪಟಲ ಪಟಿಲ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು, ರಾಶಿ. ಪಟಂ विस्तारं लाति—ला (आदाने) "कः" (३-२-३)। "भूयते स्म सुमनः सुमनःस्रग्दामधौमपटले पटलेन" नैष० २१-२२। "रथाङ्गपाणेः पटलेन रोचिषाम्" माघ० १-२१। (नं) 2. ಗೂಡೆ, ಮಕರಿ, ಬುಟ್ಟಿ. 3. ಪರಿವಾರ, ಪರಿಜನ. 4. ತಿಲಕ, ಸಂಗಾತಿ, ಮೈಮೇಲಿನ ಕಪ್ಪು ಚುಕ್ಕಿ. 5. ಒಂದು ನೇತ್ರರೋಗ, ಕಣ್ಣಿನ ಪೊರೆ. 6. ಛಾವಣಿ, ಮನೆಯ ಮೇಲಿನ ಹೊದಿಕೆ. "विनमित-पटलाग्रं दृश्यते जीर्णकुडचम्" मुद्रा० ३-१५। "अथ पटलं पिटके च परिच्छदे। छदिर्दृग्गोगतिलके क्लीबं वृन्दे पुनर्नना" मेदि०। स्त्रियां पटली पटली. (पुं नं) 7. ಒಂದು ಅಧ್ಯಾಯ, ಪರಿಚ್ಛೇದ.

**ಪಟವಾಪ ಪಟಿನಾಪ (ಪುಂ)** ಡೇರೆ, ವಸ್ತ್ರಗೃಹ, ಗುಡಾರ.

**ಪಟವಾಸ ಪಟಿನಾಸ (ಪುಂ)** 1. ಡೇರೆ, ವಸ್ತ್ರಗೃಹ, ಗುಡಾರ. ಪಟನಿಮಿತಃ वासः। 2. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. "निजरजः पटवासमिवाकिरद्वृतपटोपमवारिमुचां दिशाम्" माघ० ६-३७। 3. ವಸ್ತ್ರಗಳಿಗೆ ವಾಸನೆ ಕೊಡುವ ಸುವಾಸನೆಯ ಪುಡಿ. ಪಟಂ वासयति—वास (उपसेवायाम्) + णिच् "अण्" (३-२-१)। "अस्मिन् प्रकीर्णपटवासकृतान्धकारे" रत्ना० १-१२। स्वार्थे "कन्" (५-४-५)। -वासकः—वासकः।

**ಪಟಹ ಪಟಿಹ (ಪುಂ ನಂ)** 1. ತಮಟೆ. ಪಟ ಇತಿ शब्दं जहाति—ओहाक् (त्यागे) "कः" (३-२-३)। "यियासतस्तस्य महीधररुग्मभिदापटीयान् पटहप्रणादः" माघ० ३-२४। 2. ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಬಾರಿಸಲ್ಪಡುವ ನಗಾರಿ, ಭೇರಿ.



"ಅवलोकनाय सुरविद्विषां द्विषः पटहप्रणादविहितोप-  
हृतयः" माघ० १३-३०। 3. ಪಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ.

"पटहो वाद्य आरम्भे" हेम०।

पटि षड्, -डि-टी (स्त्री०) ನಯವಾದ ವಸ್ತು.  
पट "इन्" (उ० ४-११७)। "प्रसारयन्ति कुशाला-  
श्रित्रां वाचं पटीमिव" माघ० २-७४।

पटिमन् षडिमन् (पुं०) ಪಟುವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಜಾಣತನ,  
ದಕ್ಷತೆ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. पटोर्भावः "इमनिच्" (५-१-१२२)।

पटिष्ठ षडिष् (वि०) ಅತ್ಯಂತ ನಿಪುಣ, ಬಹಳ ಜಾಣ  
ನಾದ. अतिशयेन पटुः "इठन्" (५-३-५५)।

पटीयस् षडೀयस् (वि०) ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಪಟು  
ವಾದವನೊಬ್ಬ. अयमनयोरतिशयेन पटुः "ईयसुन्"  
(५-३-५७)। "दधौ पटीयान् समयं नयन्नयं दिनेश्वर-  
श्रीरुदयं दिने दिने" नैष० १-१७। स्त्रियां "डीप्"  
(४-१-६)। -यसी-यसी. "कृष्णापि शुद्धेरधिकं  
विधातृभिर्विहन्तुमहांसि जलैः पटीयसी" माघ० १२-६७।

पटीर षडೀर (पुं०) 1. ಮೂಲಂಗಿ ಗೆಡ್ಡೆ. 2. ಚಂದನ  
ವೃಕ್ಷ, ಗಂಧದ ಮರ. पट (गती) "ईरन्" (उ० ४-३०)।  
"पटीरस्कन्धविषयाः तत्र तेषां भुजङ्गमाः" याद०  
२२-१९८। 3. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. 4. ಉದರ, ಹೊಟ್ಟೆ.  
5. ಗದ್ದೆ, ಕಂದಾರ. 6. ಬಿದಿನ ಸಾರ. 7. ಜಲ್ಲಡಿ,  
ಬಂದರಿ. 8. ಮೊಂಡೆ. "पटीरस्तु मूलके। केदारे वेणुसारे  
च वरिदे। तितउन्यपि" मेदि०। (वि०) 9. ಉನ್ನತವಾದ,  
ಎತ್ತರವಾದ. 10. ರಮಣೀಯವಾದ, ಸುಂದರವಾದ.

पटु षडु (पुं०) 1. ಕಹಿ ಪಡವಲಗಿಡೆ. पाटयति — पट  
(गती) + णिच् "उः" पटिरादेशश्च (उ० १-१८)।  
"पटोलस्तिककः पटुः" अम०। 2. ಹಾಗಲಗಿಡೆ.  
(न०) 3. ಸೈಂಧವ ಲವಣ. 4. ಮಣ್ಣಿನಿಂದ ತೆಗೆದ  
ಉಪ್ಪು. 5. ಅಳಿಂಬೆ, ನಾಯಿಕೊಡೆ. "पटुर्दक्षे च  
नीरोगे चतुरेष्वप्यभिधेयवत्। पटोले तु पुमान् क्लीबे  
छत्रालवणयोरपि" मेदि०। (वि०) 6. ಜಾಣನಾದ,  
ನಿಪುಣನಾದ. "अनुभवन्नवदोलमृतस्रवं पटुरपि प्रिय-  
कण्ठजिघृक्षया" रघु० १-४६। 7. ಸಮರ್ಥ, ಶಕ್ತ.  
"नुनुदे तनुकण्डु पण्डितः पटुचञ्चूपुटकोटिकुट्टनैः" नैष०  
२-४। 8. ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ, ಹರಿತವಾದ, ಚೂಪಾಗಿರುವ.  
"पटुर्धारावाही नव इव चिरेणापि हि न मे निकृन्तन्  
मर्माणि क्रकच इव मन्युर्विरमति" उ० रा० ४-३।  
9. ಸ್ಫುಟವಾದ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ. "उषसि स गजयूथकर्ण-

तालैः पटुपटहध्वनिभिर्विनीतनिद्रः" रघु० ९-७१।

10. ಯೋಗ್ಯ, ಯುಕ್ತ, ಉಚಿತ. "स्मर्तुमधिगतगुण-  
स्मरणाः पटवो न दोषमखिलं खलूत्तमाः" माघ० १५-४३।

11. ವಾಗ್ಮಿ, ವಾಚಾಳ, ವಾಕ್ಚತುರ. 12. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ  
ಮಾಡಾಡುವ. "तदर्थमध्याप्य जनेन तद्वने शुका विमुक्ताः  
पटवस्तमस्तुवन्" नैष० १-१०३। 13. ಕಠಿನವಾದ,  
ಗಟ್ಟಿಯಾದ. 14. ರೋಗದಿಂದ ಮುಕ್ತನಾದ, ಆರೋಗ್ಯ  
ಮೊಂದಿರುವ. 15. ಕಪಟೋಪಾಯವುಳ್ಳ, ವಂಚಕ,  
ಧೂರ್ತ. 16. ಶೂರ, ಧೀರ, ಪರಾಕ್ರಮಿ. 17. ಚಟು  
ವಟಿಕೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಚೂಟಿಯಾಗಿರುವ. 18.

ದುರ್ಭಾಷೆಯಾಡುವ, ಬಿರುಸಾಗಿ ನುಡಿಯುವ. स्त्रियां  
वा "डीप्" (४-१-४४)। पट्वी षड्वी, पटुः षडुः।  
पटुकल्प षडुकल्प (वि०) ಸಮರ್ಥನಂತಿರುವ, ಅಷ್ಟು  
ಚತುರನಲ್ಲದ. ईषदूनः पटुः "कल्पप्" (५-३-६७)।  
देश्यः देशीयर च। पटुदेश्यः षडुदेश्यः, पटुदेशीयः  
षडुदेशीयः।

पटुत्व षडुत्व (न०) 1. ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಶಕ್ತಿ. पटोर्भावः  
"त्वः" (५-१-११९)। "नारावं व्यतनुत मेखलाकलापः  
कस्मिन् वा सजलगुणे गिरां पटुत्वम्" माघ० ८-४५।  
2. ನೈಪುಣ್ಯ, ಜಾಣತನ, ಕುಶಲತೆ. 3. ಚಟುವಟಿಕೆ,  
ಕಾರ್ಯಶಕ್ತಿ. "तल्" (५-१-११९)। पटुता षडुता.  
"अङ्गानि प्रसभं त्यजन्ति पटुतामाज्ञाविधेयानि मे"  
मुद्रा० ३-१।

पटुपर्णी षडुपर्ण (स्त्री०) ಘಂಟಾಮಣಿಸೊಪ್ಪು,  
ಕಂಕೋಷ್ಠ. पटूनि पर्णान्यस्य। जाति० "डीष्"  
(४-१-६३)।

पटुरूप षडुरुप (वि०) 1. ಬಹಳ ದಕ್ಷನಾದ, ಬಹಳ  
ಸಮರ್ಥನಾದ. 2. ಬಹಳ ನಿಪುಣನಾದ, ಬಹಳ ಕುಶಲ  
ನಾದ. प्रशस्तः पटुः "रूपप्" (५-३-६६)।

पटोल षडोले (पुं०) ಕಹಿ ಪಡವಲಗಿಡೆ. पटति — पट  
(गती) "कोलच्" (उ० १-६६)। "पटोलस्तिककः  
पटुः" अम०।

पटोलिका षडोलीका (स्त्री०) ಜೋಡ್ಡೀಲತೆ,  
ಪಡವಲಗಿಡೆ.

पटोली षडोली (स्त्री०) ಕಹಿ ಪಡವಲಗಿಡೆ.

पटु षडु (पुं०) 1. ಅರೆಯುವ ಕಲ್ಲು. पट (गती)  
"तः" बाह्र०। (न०) 2. ರಾಜಶಾಸನ, ಕಂದಾಯದ  
ಪಟ್ಟಿ. 3. ನಗರ, ಪಟ್ಟಣ. 4. ಪೀಠ, ಆಸನ.



5. ಚತುಷ್ಟಯ, ನಾಲ್ಕು ರಸ್ತೆಗಳು ಸೇರುವ ಜಾಗ.  
6. ಗಾಯಕ್ಕೆ ಕಟ್ಟುವ ಪಟ್ಟಿ. "ಪट: ಪೇಷಣಪಾಪಾಣೇ  
ವ್ರಣಾದಿನಾಂ ಚ ಬಂಧನೇ | ಚತುಷ್ಪಥೇ ತು ರಾಜಾದಿಶಾಸನಾನಂತರ-  
ಪೀಠಯೋ:" ಸೇದಿಂ. 7. ಮಕುಟ, ಕಿರೀಟ, ಟೋಪಿ.  
"ನಿವೃತ್ತಜಾಮ್ಬೂನದಪದ್ಮಶೋಭೇ ನ್ಯಸ್ತಂ ಲಲಾಟೇ ತಿಲಕಂ ದಧಾನ:"  
ರಘುಂ ೧೮-೪೪. 8. ಸಿಂಹಾಸನ. 9. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ.  
"ತ್ರಾಸಾರ್ತಾ ಋತ್ವಿಜೋಽಪಲಗಣಹೂತೋಽಪಿ ಪಟಾ: ಪತಂತಿ"  
ರತ್ನಾಂ ೧-೩. 10. ಉತ್ತರೀಯ, ಹೊದೆಯುವ ವಸ್ತ್ರ.  
11. ನೇತ್ರ, ಕಣ್ಣು. 12. ಸಾಣ ಕಲ್ಲು. 13. ರೇಷ್ಮೆ  
ವಸ್ತ್ರ. "ಪದ್ಮೋ ನೇತ್ರೇಽಪಿ ಶಾಣೇ ಸ್ಯಾತ್" ವೈಜಂ. 14. ಫಲಕ,  
ಹಲಗೆಯಂತೆ ಅಗಲವಾಗಿರುವ ವಸ್ತು. "ಏಷಾ ಮೇ  
ಮನೋರಥಪ್ರಿಯತಮಾ ಸಕುಸುಮಾಸ್ತರಣಂ ಶಿಲಾಪದ್ಮಮಧಿಶಯಾನಾ  
ಸಖೀಭ್ಯಾಮನ್ವಾಸ್ಯತೇ" ಶಾಕುಂ ೩.

**ಪದ್ಮದೇವಿ ಪಟ್ಟಿದೇವೀ, -ಮಹಿಷಿ -ಮಹಿಷೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)**  
ಪಟ್ಟಿ ಮಹಿಷಿ, ಪಟ್ಟಾಭಿಷಿಕ್ತಳಾದ ರಾಣಿ. ಪದ್ಮೆ ಸಿಂಹಾಸನೇ  
ಸ್ಥಿತಾ ದೇವಿ ಮಹಿಷಿ ವಾ |

**ಪದ್ಮಣ ಪಟ್ಟಣ (ನಂ)** 1. ಪ್ರಧಾನವಾದ ನಗರ, ಜಿಲ್ಲೆಯ  
ಮುಖ್ಯ ನಗರ. ಪಟಂತಿ ಜನಾ ಅತ್ರ - ಪಟ (ಗತೌ)  
"ತತನ್" ಬಾಹುಂ. 2. ಸಣ್ಣ ಹಳ್ಳಿ, ಚಿಕ್ಕ ಗ್ರಾಮ.  
"ಗ್ರಾಮಾ: ಕ್ಷುದ್ರಾ: ಪರೇ ಕ್ರಮಾತ್ | ಸ್ಯು: ಕರ್ವೆಂ ಕಾರ್ವೆಂ ಕಾರ್ವೆಂ  
ನುಂಗಪದ್ಮಣೇ | ಕರ್ವೆಂಸ್ತ್ರೀ ದ್ರೋಣಮುಖಂ ಪದ್ಮಣಂ ಪುಟಭೇದನಮ್"  
ವೈಜಂ.

**ಪದ್ಮಬಂಧ ಪಟ್ಟಬಂಧ (ಪುಂ)** ಪತಿಯು ಜೀವಿಸಿರುವಾಗ  
ಒಬ್ಬ ಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಂದ ಜನಿಸಿದ ಮಗ. "ಪತ್ನೀ  
ಜೀವತಿ ಕುಂಡೋಽಸೌ" | "ಕ್ಷತ್ರಕುಂಡ: ಪದ್ಮಬಂಧ:" ವೈಜಂ.

**ಪದ್ಮಸ ಪಟ್ಟಸ (ಪುಂ)** ಯುದ್ಧದ ಕೊಡಲಿ, ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ  
ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಹರಿತವಾದ ಆಯುಧ. "ಪದ್ಮಸೋ  
ಲೋಹದಂಡೋ ಯ: ತೀಕ್ಷ್ಣಧಾರ: ಕುರೋಪಮ:" ವೈಜಂ.

**ಪದ್ಮಿಕಾ ಪಟ್ಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕೆಂಪು ಅರಗಿನ ಗಿಡ.

**ಪದ್ಮಿ ಪಟ್ಟೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಕೆಂಪು ಅರಗಿನ ಗಿಡ. 2. ಬೈತಲೆಯ  
ಬೊಟ್ಟು, ತಲೆಯಿಂದ ನೆತ್ತಿಯವರೆಗೆ ಇಳಿಜಿಟ್ಟಿರುವ  
ಒಂದು ಲಠಾಟದ ಅಭರಣ. "ಪದ್ಮಿ ಲಲಾಟಿಕಾ"  
ಹೇಮಂ.

**ಪಠತ್ ಪಠತ್ (ವಿಂ)** 1. ಓದುತ್ತಿರುವ. ಪಠ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ  
ವಾಚಿ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಇತ್ಯೇತನ್ಮಾನವಂ ಶಾಸ್ತ್ರಂ  
ಭೃಗುಪ್ರೋಕ್ತಂ ಪಠನ್ ದ್ವಿಜ:" ಮನುಂ ೧೨-೧೨೬. 2. ಹೇಳು  
ತ್ತಿರುವ. "ಪಠತಾಂ ವಂದಿವೃಂದಾನಾಂ ಪ್ರವೀರಾ ವಿಕ್ರಮಾವಲಿಮ್"  
ಕುಮಾಂ ೧೬-೪.

**ಪಠನ ಪಠನ (ನಂ)** 1. ಓದುವುದು. ಪಠ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ  
ವಾಚಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡು  
ವುದು, ಮನದಟ್ಟಾಗುವಂತೆ ಓದುವುದು. 3. ಹೇಳು  
ವುದು, ಬಾಯಿಂದ ಉಚ್ಚಾರಮಾಡುವುದು. "ಭೂತಪ್ರೇತ-  
ಪಿಶಾಚಾನಾಂ ಪಠನಾದೇವ ನಾಶನಮ್" ಮಾರ್ಕಂ.

**ಪಠನೀಯ ಪಠನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಓದಲ್ಪಡುವ. 2. ಓದ  
ಬೇಕಾದ. ಪಠ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) |  
"ತವ್ಯ:" | ಪಠಿತವ್ಯಮ್ ಪಠಿತವ್ಯಮ್.

**ಪಠಿತ ಪಠಿತ (ವಿಂ)** 1. ಓದಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ.  
3. ಅಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪಠ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" |

**ಪಠಯ ಪಠಯ (ವಿಂ)** 1. ಓದಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ಅಭ್ಯಾಸ  
ಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಪಠ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಯತ್"  
(೩-೩-೧೧೩) |

**ಪಠಯಮಾನ ಪಠಯಮಾನ (ವಿಂ)** 1. ಓದಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 2.  
ಹೇಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪಠ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಕರ್ಮಂ  
"ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) | 3. ಅಭ್ಯಾಸಮಾಡಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ.

**ಪಣ ಪಣ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ಕರ್ಷದ ತೂಕವುಳ್ಳ ತಾಮ್ರದ  
ನಾಣ್ಯ. ಪಣ್ಯತೇ - ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರೇ ಸ್ತುತೌ ಚ) "ಅಪ್"  
(೩-೩-೬೬) | ಐದು ಗುಲಗಂಜಿಗಳ ತೂಕ ಒಂದು  
ಅಧ್ಯಮಾಪಕ. ಹದಿನಾರು ಅಧ್ಯಮಾಪಕಗಳ ತೂಕ ಒಂದು  
ಕರ್ಷ. ಒಂದು ಕರ್ಷ ತೂಕದ ಬೆಳ್ಳಿಯ ನಾಣ್ಯವು  
ಕಾರ್ಷಿಕ. ಅದೇ ತೂಕದ ತಾಮ್ರದ ನಾಣ್ಯವು ಪಣ್ಣಿ.  
"ಕಾರ್ಷಿಕೇ ತಾಮ್ರಿಕೇ ಪಣ:" ಅಮಂ. 2. ಎಂಬತ್ತು  
ಕವಡೆಗಳ ಬೆಲೆಯ ಒಂದು ನಾಣ್ಯ. "ವರಾಟಕಾನಾಂ ದಶಕದ್ವಯಂ  
ಯತ್ ಸಾ ಕಾರ್ಷಿಕಾ ತಾಽಪ್ ಪಣಶ್ಚತಸ್ರ:" ಲೀಲಾಂ. 3. ಸಂಬಳ,  
ಕೂಲಿ, ವೇತನ. 4. ಕರಾರು, ಒಪ್ಪಂದ, ಪರತ್ನ.  
"ಸಂಧಿ ಕರೋತು ಭವತಾಂ ನೃಪತಿ: ಪಣೇನ" ವೇಣೀಂ ೧-೧೫ |  
5. ದ್ಯೂತ, ಜೂಜು. 6. ಮೂಲ್ಯ, ಬೆಲೆ. 7. ಧನ,  
ಐಶ್ವರ್ಯ. 8. ಜೂಜಿನಲ್ಲಿ ಪಂದ್ಯವಾಗಿಡುವ ವಸ್ತು.  
9. ವ್ಯವಹಾರ, ವ್ಯಾಪಾರ. 10. ವ್ಯಾಪಾರದ ಸರಕು.  
11. ಗೃಹ, ಮನೆ. 12. ವಿಷ್ಣು. ಪಣ ಕರ್ಮಂ "ಅಕ್"  
(೩-೧-೧೩೪) | ಪಣತಿ ಸರ್ವೇಷಾಂ ಸ್ವಾಮ್ಯದಾಸ್ಯವ್ಯತಿಹಾರೇಣ  
ವ್ಯವಹರತಿ ಇತಿ ಪಣ: | "ಸ್ವಾಮ್ಯದಾಸ್ಯವ್ಯತಿಹಾರವ್ಯವಹಾರಾತ್  
ಪಣ: ಸ್ಮೃತ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: | "ಪ್ರಾಣದ: ಪ್ರಣವ: ಪಣ:"  
ವಿಂ ಸಂ. | "ಗಲಹೇ ಮಾನೇ ವರಾಟಾನಾಂ ಮೂಲ್ಯೇ ಕಾರ್ಷಿಪಣೇ ಧನೇ |  
ಛೂತೇ ವಿಕ್ರಯಶಾಕಾದೇವೈದ್ಮುಷ್ಠಿ ಭೃತೌ ಪಣ: | ಪಣ: ಸ್ವಾಧ್ಯವ-  
ಹಾರೇಽಪಿ" ಶಾಶ್ವಂ. 13. ಪಗಡೆಯಾಟ. 14. ವಿಕ್ರಯ.



ಮಾರಾಟ. 15. ಅಂಗಡಿ, ಮಾರಾಟದ ಸ್ಥಳ. 16. ಸಾರಾಯಿ ತೆಗೆಯುವವನು, ಭಟ್ಟಿ ಇಳಿಸುವವನು. 17. ಒಂದು ಮುಖ್ಯ. (ವಿಂ) 18. ವರ್ತಕ, ಮಾರಾಟಗಾರ, ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಗಳನ್ನು ಮಾಡುವವನು.

**ಪಣ್ಯಗ್ರಂಥ ಪಣ್ಯಗ್ರಂಥಿ** (ಪುಂ) ಆಪಣ, ಅಂಗಡಿ, ವಸ್ತುಗಳ ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯ ಸ್ಥಳ. ಪಣ್ಯಸ್ಯ ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಾದೇ: ಗ್ರಂಥಿರವ. "ಸರ್ವದ್ರಜ್ಞ: ಪಣ್ಯಗ್ರಂಥಿ:" ಹಾರಾಂ.

**ಪಣನ ಪಣನ** (ನಂ) 1. ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯ ಮೊದಲಾದ ವ್ಯವಹಾರ, ಕೊಳ್ಳುವುದು ಮಾರುವುದು ಮೊದಲಾದ ವ್ಯಾಪಾರ. 2. ಹೊಗಳುವುದು, ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡುವುದು. ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರೇ ಸ್ತುತೌ ಚ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-115). 3. ಜೂಜಿನಲ್ಲಿ ಪಂದ್ಯ ಕಟ್ಟುವುದು.

**ಪಣಬಂಧ ಪಣಬಂಧ** (ಪುಂ) ಕರಾರು, ಸಂಧಿಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಒಪ್ಪಂದಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಪಣ್ಯಸ್ಯ ಬಂಧ: "ನಯ ಇವ ಪಣಬಂಧವ್ಯಕ್ತಯೋಗರೂಪಾಯಿ:" ರಘುಂ 10-66.

**ಪಣವ ಪಣವ** (ಪುಂ) 1. ಮದ್ದಳೆ. ಪಣಂ ವ್ಯವಹಾರಂ ವಾತಿ — ವಾ (ಗತಿಗಂಧನಯೋ:) "ಕ:" (3-2-3). "ದ್ರುತಮಧ್ವನಶ್ಚುಪರಿಪಾಣಿವೃತ್ತಯ: ಪಣವಾ ಇವಾಶ್ವಚರಣಕ್ಷತಾ ಭುವ:" ಮಾಘಂ 13-5. 2. ಅನೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಹೆಗಲು. "ಗಜಸ್ಕಂಧೇಽಪಿ ಪಣವ:" ವೈಜಂ.

**ಪಣಸ ಪಣಸ** (ಪುಂ) ಮಾರಾಟದ ವಸ್ತು. ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರೇ) "ಅಸಚ್" (3-3-113). "ಪಣಸ: ಪಣ್ಯದ್ರವ್ಯಮ್" ಸಿಂ ಕೌಂ.

**ಪಣಸ್ತ್ರೀ ಪಣಸ್ತ್ರೀ, -ಅಙ್ಗನಾ -ಅಂಗನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೇಶ್ಯ, ಸೂಳೆ.

**ಪಣಾಯಾ ಪಣಾಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯವ್ಯವಹಾರ. ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರೇ ಸ್ತುತೌ ಚ) + ಆಯ: (3-1-24). ಭಾವೇ "ಅ:" (3-3-102). 2. ಸ್ತುತಿ, ಹೊಗಳಿಕೆ. 3. ದೂತ, ಜೂಜು.

**ಪಣಾಯಿತ ಪಣಾಯಿತ** (ವಿಂ) 1. ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ತೋತ್ರ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರೇ ಸ್ತುತೌ ಚ) + ವಾ ಆಯ: (3-1-31) "ಕ್ತ:" (3-2-102). ಪಕ್ಷ ಪಣಿತಮ್ ಪಣಿತಮ್. 2. ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಮಾರಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪಣಿ ಪಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಂಗಡಿಬೀದಿ. ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರೇ) "ಇನ್" (3-4-113). 2. ಕೃಪಣ, ಜಿಪುಣ, ಜೀನ.

**ಪಣಿಕ ಪಣಿಕ** (ಪುಂ) ವರ್ತಕನ ಮನೆ. "ಚಂದ್ರಶಾಲಾ ಶಿರೋಗೃಹಮ್ ಪಣಿಕಸ್ತು ವಣಿಗಗೃಹಮ್" ವೈಜಂ.

**ಪಣಿತ ಪಣಿತ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರೇ ಸ್ತುತೌ ಚ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). ವಾ ಆಯ: (3-1-31). ಪಣಾಯಿತ: ಪಣಾಯಿತಃ. 2. ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಮಾರಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪಣಿತವ್ಯ ಪಣಿತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಮಾರಲು ಅರ್ಹವಾದ, ಮಾರಾಟಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ಮಾರಲ್ಪಡುವ, ವಿಕ್ರಯಿಸಲ್ಪಡುವ ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರೇ) "ತವ್ಯ:" (3-1-96). "ವಿಕ್ರಯಂ ಪಣಿತವ್ಯಂ ಚ ಪಣ್ಯಂ" ವೈಜಂ.

**ಪಣಿತೃ ಪಣಿತೃ** (ವಿಂ) ವರ್ತಕ, ಕ್ರಯ ಮತ್ತು ವಿಕ್ರಯಗಳ ವ್ಯವಹಾರ ಮಾಡುವವನು. ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರೇ) "ತೃಚ್" (3-1-133). "ಪಣಿತಾ ನ ಜನಾರವೈರವೈದಪಿ ಗುಜ್ಜಂತಮಲಿ ಮಲಿಮಿಸಮ್" ನೈಷಂ 2-92.

**ಪಣಡ ಪಂಡ** (ಪುಂ ನಂ) 1. ಪಂಡೆ, ನಪುಂಸಕ. ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರೇ) "ಡ:" (3-1-111). "ಕಲಿಬ: ಪಣಡಪಂಡೋ ನಪುಂಸಕಮ್" ವೈಜಂ. (ವಿಂ) 2. ಬಾಲ ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪಣಡಸ್ತು ಛಿನ್ನಪುಚ್ಚಕ:" ವೈಜಂ.

**ಪಣಡಾ ಪಂಡಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬುದ್ಧಿ, ಜ್ಞಾನ. ಪಡಿ (ಗತೌ) "ಅ:" (3-3-103). "ಪಣಡ: ಪಣಡೇ ಧಿಯಿ ಸ್ತ್ರೀ ಸ್ಯಾತ್" ಮೇದಿಂ.

**ಪಣಿತ ಪಂಡಿತ** (ಪುಂ) 1. ವಿದ್ವಾಂಸ, ಬಲ್ಲೆಯ ಜ್ಞಾನ ಸಂಪನ್ನ, ಬುದ್ಧಿವಂತ. ಪಣಡಾ ಅಸ್ಯ ಸಂಜಾತಾ "ಇತಚ್" (4-2-36). "ವಿದ್ಯಾವಿನಯಸಂಪನ್ನೇ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ಗವಿ ಹಸ್ತಿನಿ. ಶುನಿ ಚೈವ ಶ್ವಪಾಕೇ ಚ ಪಣಿತಾ: ಸಮದರ್ಶಿನ:" ಗೀತಾ 4-18. "ಮಾತೃವತ್ಪರದಾರೆಣು ಪರದ್ರವ್ಯೇಣು ಲೋಪವತ್. ಆತ್ಮವತ್ ಸರ್ವಭೂತಾನಿ ಯೋ ಜಾನಾತಿ ಸ ಪಣಿತ:" (ವಿಂ) 2. ಪ್ರವೀಣ, ನಿಷ್ಣಾತ, ಕುಶಲ. "ರತಿವೃತ್ತಿಪದೇಷು ಕೌಕಿಲಾಂ ಮಧುರಾಲಾಪನಿಸರ್ಗಪಣಿತಾಮ್" ಕುಮಾಂ 4-16. 3. ಜಾಣ, ನಿಪುಣ. 4. ಧೂಪದ ಪುಡಿ, ಲೋಬಾನ. "ಪಣಿತ: ಸಿಹ್ಲಕೇ ಕವೌ" ಮೇದಿಂ.

**ಪಣಿತಮನ್ಯ ಪಂಡಿತಮನ್ಯ** (ವಿಂ) ತನ್ನನ್ನು ಪಂಡಿತನೆಂದು ತಿಳಿದುಕೊಂಡಿರುವ, ತಾನು ಪಂಡಿತನೆಂದು ಅಭಿಮಾನವುಳ್ಳ. ಪಣಿತಮಾತ್ಮಾನಂ ಮನ್ಯತೇ — ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಖ:" (3-2-63). "ಗಿಣಿ:" (3-2-62). ಪಣಿತಮಾನಿ ಪಂಡಿತಮಾನೀ. "ಮೂರ್ಖಾ: ಪಣಿತಮಾನಿನ:"

**ಪಣಿತಮನ್ ಪಂಡಿತಮನ್** (ಪುಂ) 1. ಪಾಂಡಿತ್ಯ, ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. 2. ಜಾಣತನ. 3. ಪ್ರಾವೀಣ್ಯ, ಕುಶಲತೆ. ಪಣಿತಸ್ಯ ಭಾವ: "ಇಮನಿಚ್" (4-1-123).

**ಪಣ್ಯಕ ಪಂಡ್ಯಕ** (ಪುಂ) ಪಂಗು, ಹೆಳವ, ಕುಂಟ.



**ಪುಷ್ಯ ಪಟ್ಯ** (ನಂ) 1. ವಿಕ್ರಯಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ ವಸ್ತು, ಮಾರಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಪದಾರ್ಥ. ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರ) "ಯತ್" ನಿಪಾಂ (೩-೧-೧೦೧)। "ಸ್ತುತಿ" ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ "ಪುಷ್ಯ" (೩-೧-೧೨೪)। ಪಾಪ್ಯಮ್ ಎಂದಾಗುವುದು. "ಪೂರ್ವಭಾಸೇ ವಿಪಣಿಸ್ಥಪಯ್ಯಾ ಸರ್ವಾಜ್ಞನದ್ವಾಭರಣೇವ ನಾರೀ" ರಘುಂ ೧೬-೪೧। (ಪುಂ) 2. ಮೌಲ್ಯ, ಬೆಲೆ, ಕ್ರಯ. (ವಿಂ) 3. ವ್ಯವಹರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. "ಮಹತಾ ಪುಷ್ಯಪುಷ್ಯೇನ ಕೀರ್ತಯ ಕಾಯನೌಸ್ತವಯಾ"।

**ಪುಷ್ಯಸ್ತ್ರೀ ಪಟ್ಯಸ್ತ್ರೀ**, -ಅಜ್ಞನಾ -ಅಂಗನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇಶ್ಯ, ಸೂಳೆ. "ಯ: ಪುಷ್ಯಸ್ತ್ರೀರತಿಪರಿಮಲೋದ್ಗಾರಿಭಿರ್ನಗಿರಾಣಾಮ್" ಮೇಘಂ ೨೫।

**ಪುಷ್ಯವೀಥಿ ಪಟ್ಯವೀಥಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಂಗಡಿಯ ಬೀದಿ, ಕ್ರಯ ವಿಕ್ರಯಗಳ ಸ್ಥಳ. "ಅನ್ತಸಾಯಮಭಿವಿಲೇಪನಾಪಣಕಮೀರಜ-ಪುಷ್ಯವೀಥಯ:" ನೈಷಂ ೨-೨೦।

**ಪುಷ್ಯಶಾಲಾ ಪಟ್ಯಶಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಂಗಡಿ, ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಗಳ ಸ್ಥಳ.

**ಪುಷ್ಯಾಜಿರ ಪಟ್ಯಾಜಿರ** (ನಂ) ವ್ಯಾಪಾರದ ಸ್ಥಳ, ಮಾರುಕಟ್ಟೆ.

**ಪುಷ್ಯಾಜೀವ ಪಟ್ಯಾಜೀವ** (ಪುಂ) ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಗಳಿಂದ ಜೀವಿಸುವ ವರ್ತಕ. ಪುಷ್ಯಮಾಜೀವೋ ಯಸ್ಯ।

**ಪುಷ್ಯಾಜೀವಕ ಪಟ್ಯಾಜೀವಕ** (ನಂ) ಅಂಗಡಿ, ವ್ಯಾಪಾರ ಸ್ಥಳ. ಪುಷ್ಯಾಜೀವೇನ ಕಾಯತಿ — ಕೇ (ಶಬ್ದ) "ಕ:" (೩-೨-೪)।

**ಪತ ಪಟ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಷ್ಠವಾದ. 2. ಹಾರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿಹೋಗುವ. 3. ಹಾರಿ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯುವ. ಪತತಿ — ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। (ಪುಂ) 4. ರೆಕ್ಕೆ, ಗರಿ. 5. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳುವುದು.

**ಪತಗ ಪಟಗ** (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಪತ: ಉಪತತಿ: ಸನ್ ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಙ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)। ಪತೇನ ಪಕ್ಷೇಣ ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ "ಙ:" ವಾ। "ತಮೂಮಿಲೋಲೈ: ಪತಗಗ್ರಹಾನ್ವಪ್ ನ್ಯವಾರಯದ್ವಾರಿಹೈ: ಕರೇರಿವ" ನೈಷಂ ೧-೧೨೬।

**ಪತಗರಾಜ ಪಟಗರಾಜ**, -ರಾಜ -ರಾಜ (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿರಾಜ, ಗರೂಡ. "ವಿಪ್ರಂ ಪುರಾ ಪತಗರಾಜಿವ ನಿರ್ಜಗಾರ" ಮಾಘಂ ೫-೬೬।

**ಪತಜ್ಞ ಪಟಂಜ** (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಅಜ್ಞಚ್" (ಛಂ ೧-೧೧೬)। "ಉಪೇತಪಾದ್ವಿಶ್ರರಣೇನ ಮೌನಿನಾ ನೃಪ: ಪತಜ್ಞಂ ಸಮವತ್ ಪಾಣಿನಾ" ನೈಷಂ ೧-೧೨೪। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಂ" (೪-೧-೬೩)। 2. ಸೂರ್ಯ. "ಪತತ್ಪತಜ್ಞ-

ಪ್ರತಿಮಸ್ತಪೋನಿಧಿ: ಪುರೋಸ್ಯ ಯಾವನ್ನ ಭುವಿ ವ್ಯಲೀಯತ" ಮಾಘಂ ೧-೧೨। 3. ಶಲಭ, "ಕಾಮಸ್ತು ಬಾಣಾವಸರಂ ಪ್ರತೀಕ್ಷ್ಯ ಪತಜ್ಞವದ್ವಹ್ನಿಮುಖಂ ತ್ರಿವಿಕ್ಷು:" ಕುಮಾರಂ ೩-೬೪। 4. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯುವ ಬತ್ತ ಮೊದಲಾದ ಧಾನ್ಯ. 5. ಪಾದರಸ. 6. ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಜಾತಿಯ ಒಂದು ಹಕ್ಕಿ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಋಷ್ಯಾಯನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 7. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. "ಪತಜ್ಞ: ಶಲಭೇ ಶಾಲಿಪ್ರಭೇದೇ ಪಕ್ಷಿಸೂರ್ಯಯೋ:" ಮೇದಿಂ। 8. ಮಾರ್ಜಾರ. "ಪತಜ್ಞ: ಶಲಭೇ ಶಾಲೌ ಮಾರ್ಜಾರಿಣ್ಯೌ ರವೌ ಖಗೇ" ವೈಜಂ। 9. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ.

**ಪತಜ್ಞಿಕಾ ಪಟಂಜಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಟ್ಯ ಪಟಂಜದ ಹುಳ. ಪತಜ್ಞ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೫-೩-೭೫)।

**ಪತಜ್ಜಲಿ ಪಟಂಜಲಿ** (ಪುಂ) 1. ಯೋಗಸೂತ್ರಗಳನ್ನು ಬರೆದ ಒಬ್ಬ ಋಷಿ. 2. ಪಾಣಿನಿಯ ವ್ಯಾಕರಣಸೂತ್ರಗಳಿಗೆ ಮಹಾಭಾಷ್ಯ ಬರೆದ ಒಬ್ಬ ಮಹರ್ಷಿ. ಪತನ್ ಅಜ್ಜಲಿ: ಯಸ್ಮಿನ್। ಒಬ್ಬ ಋಷಿಯಿಂದಲೇ ಈ ಎರಡು ಗ್ರಂಥಗಳೂ ರಚಿತವಾದುವೆಂದು ಕೆಲವರ ಮತ. ಈ ಎರಡು ಗ್ರಂಥಗಳೂ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಋಷಿಗಳಿಂದ ರಚಿತವಾದುವೆಂದು ಮತ್ತೆ ಕೆಲವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

**ಪತತ್ ಪಟತ್** (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಪತತಿ — ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಪತತಾಂ ಪರಿತ: ಪರಿ-ಸ್ಕುರಜ್ಞಿ: ಪರಿಪಿಡ್ಧೀಕೃತದಿಕ್ಮುಖೈರ್ಮಯುಖೈ:" ಮಾಘಂ ೨-೫೫। (ವಿಂ) 2. ಓಡುತ್ತಿರುವ, ಮೇಗವಾಗಿ ಹೋಗುತ್ತಿರುವ. "ಪ್ರತಿಪಾದಪೂರಿತದಿಗಂತರ: ಪತನ್ ಪುರಗೋಪುರಂ ಪ್ರತಿ ಸ ಸೈನ್ಯ-ಸಾಗರ:" ಮಾಘಂ ೧೩-೨೭। 3. ಎದುರಿಗೆ ಬರುತ್ತಿರುವ. "ಪುರ: ಪತತ್ಪರವಲರೇಣುಮಾಲಿನಿಮಲಕ್ಷಯದ್ವಿಶಮಭಿಧೂಮಿತಾ-ಮಿವ" ಮಾಘಂ ೧೭-೪೧। 4. ಪ್ರವೇಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ಒಳಕ್ಕೆ ನುಗ್ಗುತ್ತಿರುವ, ಬೀಳುತ್ತಿರುವ. "ಮಾನಿನ್ಯಾ ವಪುಷಿ ಪತನ್ನಿಸರ್ಗಮಂದೋ ಭಿಂದಾನೋ ಹೃದಯಮಸಾಹಿ ನೋದವಜ:" ಮಾಘಂ ೮-೩೯। 5. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯುತ್ತಿರುವ. "ಪತತ್ಪತಜ್ಞ-ಪ್ರತಿಮಸ್ತಪೋನಿಧಿ: ಪುರೋಸ್ಯ ಯಾವನ್ನ ಭುವಿ ವ್ಯಲೀಯತ" ಮಾಘಂ ೧-೧೨। "ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಂ" (೪-೧-೬)। ಪತಂತೀ ಪಟಂತೀ. "ಆಲೋಕಯಾಮಾಸ ಹರಿ: ಪತಂತೀರ್ನದೀ: ಸ್ಮೃತಿ-ವೇದಮಿವಾಮ್ಬುರಾಶಿಮ್" ಮಾಘಂ ೩-೭೫।

**ಪತತ್ರ ಪಟತ್ರ** (ನಂ) 1. ಎಹನ. ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಅತ್ರನ್" (ಛಂ ೩-೧೦೫)। 2. ಗಗನ, ಅಕಾಶ. "ಪತತ್ರಂ ಖೇ ಗಹಯಪಿ" ವೈಜಂ। 3. ಪರ್ಣ, ಪತ್ರ, ಎಲೆ. "ಪರ್ಣಂ ವಹ್ಮ ಪತತ್ರಂ ಚ" ವೈಜಂ।



ಪತತ್ರಿ ಪತತ್ರಿ (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಅತ್ರಿನ್" (ಉಂ ೪-೬೯)। "ವಿವಿಷ್ಟಿರಪತತ್ರಯಃ" ಅಮಂ।

ಪತತ್ರ ಪತತ್ರ (ನಂ) ರೆಕ್ಕಿ, ಗಂ. ಪತಾತ್ ತ್ರಾಯತೇ — ತ್ರಂಙ್ (ಪಾಲನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)। "ಯೇನ ಮೇ ಪೂರ್ವಮದ್ರೀಣಾಂ ಪಕ್ಷಚ್ಛೇದಃ ಪ್ರಜಾತ್ಯಯೇ। ಕೃತೌ ನಿವಿಶತಾಂ ಭಾರೇಃ ಪತತ್ರೈಃ ಪತತಾಂ ಭುವಿ" ಭಾಗಂ ೮-೧೧-೩೪।

ಪತತ್ರಿನ್ ಪತತ್ರಿನ್ (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಪತತ್ರಮಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫)। "ಪದಂ ಸಹೇತ ಭರಮಸ್ಯ ಪೇಲದಂ ಶಿರೀಷಪುಷ್ಪಂ ನ ಪುನಃ ಪತತ್ರಿಣಃ" ಕುಮಾಂ ೪-೪।

ಪತದ್ಗ್ರಹ ಪತದ್ಗ್ರಹ (ಪುಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಸುರಿಯುವ ನೀರನ್ನು ತುಂಬಿಕೊಳ್ಳುವ ಪಾತ್ರೆ. "ಪತದ್ಗ್ರಹೇ ತಿಷ್ಠತಿ ಕ್ವಮಶೇಲೇ ಧರ್ಮದ್ರವೇರಾತ್ಮಮುಪಾಚ್ಯಮಾನಃ" ಯಾದಂ ೧೮-೪೨। 2. ಪಿಂಕದಾನಿ, ಉಗುಳುವ ಬಟ್ಟಲು. ಗೃಹ್ಣಾತಿ — ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಪತತೌ ಗ್ರಹಃ। ಪತನ್ತ ಗೃಹ್ಣಾತಿ — ಗ್ರಹ "ಅಞ್" (೩-೨-೧)। -ಗ್ರಾಹಃ -ಗ್ರಾಹಃ.

ಪತದ್ಗ್ರಹ ಪತದ್ಗ್ರಹ (ಪುಂ) ಶೈನ, ಗಿಡಗ ಹಕ್ಕಿ.

ಪತನ ಪತನ (ನಂ) 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳುವುದು. 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯುವುದು. ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಪತನೋದತತಾರಕಾನುಕಾರಿ ಶಲಭೋ ವಹ್ನಿಮಿವಾಸಸಾದ ವೇದಃ" ಯಾದಂ ೧೪-೧೧೪। 3. ಅವನತಿ, ಅಳಿವು, ನಾಶ. "ಗ್ರಹಾಧೀನಾ ನರೇಂದ್ರಾಣಾಮುಚ್ಛ್ರಾಯಾಃ ಪತನಾನಿ ಚ" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೩೦೮। 4. ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾರ್ಗದಿಂದ ಜಾರುವುದು, ಕೆಟ್ಟದಾರಿಗೆ ಇಳಿಯುವುದು. "ಪತನಂ ಸತ್ಪಥಾದ್ಭ್ರಂಶಃ" ವೇಜಂ। 5. ಪರ್ಣ, ಪತ್ರ, ಎಲೆ. "ಛದಸ್ತು ಛದನಂ ಪತ್ರಂ ಪಲಾಶಂ ಪತನಂ ದಲಮ್" ವೇಜಂ।

ಪತಯಾಲು ಪತಯಾಲು (ವಿಂ) ಬೀಳುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಪತಯತಿ—ಪತ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಆಲ್ಯುಟ್" (೩-೨-೧೫೮)।

ಪತಸ ಪತಸ (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಅಸಚ್" (ಉಂ ೩-೧೧೭)।

ಪತಾಕ ಪತಾಕ (ಪುಂ) ಹೆಬ್ಬೆರಳನ್ನು ಮಡಿಸಿಕೊಂಡು ಉಡಿದ ಬೆರಳುಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಹಾಚಿದ ಹಸ್ತ. "ಪತಾಕಃ ಕುಚ್ಚಿತಾಂಗುಲೈಃ ಸಂಶಿಲಿಷ್ಠಪ್ರಸೃತಾಂಗುಲೈಃ" ವೇಜಂ।

ಪತಾಕಾ ಪತಾಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತ್ರಿಕೋಣಾಕಾರದ ಬಾವುಟ. ಪತಯತೇನಯಾ — ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಆಕಃ" (ಉಂ ೪-೧೪) ನಿಪಾಂ। "ರಮ್ಯಾ ಇತಿ ಪ್ರಾಪ್ತವತೀಃ ಪತಾಕಾ ರಾಗಂ ವಿವಿಕ್ತಾ ಇತಿ ವರ್ಧಯಂತೀಃ" ಮಾಧಂ ೩-೫೩। ತ್ರಿಕೋಣಾಕಾರವಾದುದು ಪತಾಕೆ. ಚತುಷ್ಕೋಣಾಕಾರವಾದುದು ಧ್ವಜ. "ತ್ರಿಕೋಣಾ ವೈ ಪತಾಕಾ ಸ್ಯುಃ ಚತುಷ್ಕೋಣಾ

ಧ್ವಜಾಃ ಸ್ಮೃತಾಃ"। 2. ಶುಭ, ಮಂಗಳ, ಸೌಭಾಗ್ಯ. 3. ನಾಟಕದ ಒಂದು ಅಂಗ. ["ಪತಾಕಾಸ್ಥಾನಕ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಪತಾಕಾಸ್ಥಾನಕ ಪತಾಕಾಸ್ಥಾನಕ (ನಂ) ಒಂದು ಪ್ರಯೋಜನಕ್ಕಾಗಿ ನಿರೀಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವಾಗ ಅಥವಾ ಚಿಂತಿಸುತ್ತಿರುವಾಗ ಅನಿರೀಕ್ಷಿತ ಕಾರಣದಿಂದ ಆ ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದ ವಿಷಯದ ಘಟನೆ. "ಯತ್ರಾರ್ಥೇ ಚಿಂತಿತೇಽನ್ಯಸ್ಮಿನ್ ತಲ್ಲಿಙ್ಗೋಽನ್ಯಃ ಪ್ರಯುಜ್ಯತೇ। ಆಗಮ್ತುಕೇನ ಭಾವೇನ ಪತಾಕಾಸ್ಥಾನಕಂ ತು ತತ್" ಸಾಂ ೬೦ ೬-೪೫। ರತ್ನಾವಳಿಯಲ್ಲಿ—ವಾಸವದತ್ತಾವೇಷದಿಂದ ಸಂಕೇತಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಸಾಗರಿಕೆಯು ವಾಸವದತ್ತೆಯ ಭಯದಿಂದ ಕಂಠಕ್ಕೆ ಪಾಶವನ್ನು ಸುತ್ತಿ ಮರಣಪ್ರಯತ್ನ ನಡೆಸುತ್ತಿರುವಲ್ಲಿ ರಾಜನು ಹೋಗಿ ವಾಸವದತ್ತೆಯನ್ನು ತಿಳಿದು ಕಂಠಪಾಶವನ್ನು ಬಿಚ್ಚುತ್ತಾನೆ. ಆಗ ಸಾಗರಿಕೆಯೆಂದು ತಿಳಿದನಂತರ ವಾಸವದತ್ತೆಯಲ್ಲಿ ನಿರೀಕ್ಷಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಸೌಖ್ಯಾನುಭವವು ಸಾಗರಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ "ಪತಾಕಾಸ್ಥಾನಕ" ರೂಪವಾದ ಅಂಗವು ಪ್ರತಿಪಾದಿತವಾಗಿದೆ.

ಪತಾಕಿನ್ ಪತಾಕಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಬಾವುಟವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವವನು. ಪತಾಕಾಸ್ಥಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೬)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಕಿನಿ-ಕಿನೀ. (ಪುಂ) 2. ಬಾವುಟವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ರಥ. "ಕ್ಷಿತಿರೇಣುಕೇತು-ವಸನಾಃ ಪತಾಕಿನ್ಃ" ಮಾಧಂ ೧೩-೪।

ಪತಾಕಿನಿ ಪತಾಕಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೇನೆ, ದಂಡು. ಪತಾಕಾಸ್ಥಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೬)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। "ರಥವತ್ಸರಜೋಽನ್ಯಸ್ಯ ಕುತ ಏವ ಪತಾಕಿನಿಮ್" ರಘುಂ ೪-೮೨।

ಪತಿ ಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಯಜಮಾನ, ಗಂಡ. ಪಾತಿ — ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಙತಿಃ" (ಉಂ ೪-೫೭)। "ಪತ್ಯುಃ ಶಿರಶ್ಚಂದ್ರ-ಕಲಾಮನೇನ ಸ್ಪೃಶೇತಿ ಸತ್ಯಾ ಪರಿಹಾಸಪೂರ್ವಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೧೯। 2. ಸ್ವಾಮಿ, ಒಡೆಯ. "ತದಾಪ್ರಭುತ್ಯೇವ ವಿಮುಕ್ತಸಙ್ಗಃ ಪತಿಃ ಪಶುನಾಮಪರಿಗ್ರಹೋಭೂತ್" ಕುಮಾಂ ೧-೫೩। 3. ಯಜಮಾನ, ಒಡೆಯ. 4. ನಾಯಕ, ಅಧಿಪತಿ, ಪ್ರಭು. "ಗ್ರಾಮಸ್ಯಾಧಿಪತಿ ಕುರ್ಯಾದ್ಗ್ರಾಮಪತಿ ತಥಾ। ವಿಶತೀಶಂ ಶತೇಶಂ ಚ ಸಹಸ್ರ-ಪತಿಮೇವ ಚ" ಮನುಂ ೭-೧೧೫।

ಪತಿವರಾ ಪತಿವರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಾನಾಗಿಯೇ ಪತಿಯನ್ನು ವರಿಸುವ ಕನ್ಯೆ, ತಾನಾಗಿಯೇ ಗಂಡನನ್ನು ಹುಡುಕುವ ಕನ್ಯೆ. ಪತಿ ವೃಣೋತಿ — ವೃಜ್ (ವರಣೆ) "ವಜ್" (೩-೨-೪೬)। "ವಿವೇಶ ಮಂಚಾಂತರರಾಜಮಾರ್ಗ ಪತಿವರಾ ಕಲ್ಪವಿವಾಹವೇಶಾ" ರಘುಂ ೬-೧೦।



1. ಅನುಸರಿಸು, ಹಿಂಬಾಲಿಸು, ಹಿಂದೆ ಓಡಿಹೋಗು.  
 “ಶ್ರೀವಾಮಜ್ಞಾಭಿರಾಮಂ ಮುಹುರನುಪತತಿ ಸ್ಯಂದನೇ ಬದ್ಧದೃಷ್ಟಿ:”



ಶಾಕುಂ ೧-೭. 2. ಹಿಡಿ, ಅವಲಂಬಿಸು, ಅಶ್ರಯಿಸು. "ನ ಯತ್ರ ಪ್ರತ್ಯಾಶಾಮನುಪತತಿ ನೋ ವಾ ರಹಯತಿ" ಮಾಲತೀಂ ೯-೮.

(2) ಅಭಿ + ಪಲ್ = ಅಭಿಪತತಿ. ಅಭಿಪಪಾತ. ಅಭಿಪತನ್. ಅಭಿಪತನಮ್. ಅಭಿಪಾತಃ. 1. ಸಮೀಪಿಸು, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಹೋಗು. "ಚರಣಮಭಿಪಪಾತ ಪದ್ಮದಾಲಿ ಧೃತನವ-ಲೋಹಿತಪಕ್ಷಜಾಭಿಶಕ್ಷಾ" ಕಿರಾಂ ೧೦-೪೨. 2. ಮೇಲೆ ಬೀಳು, ಅಕ್ರಮಣ ಮಾಡು. "ಯಂತಾ ಗಜಸ್ಯಾಭ್ಯಪತದ್-ಗಜಸ್ಯಂ ತುಲ್ಯಪ್ರತಿಧ್ವಂಛಿ ಬಭೂವ ಯುದ್ಧಮ್" ರಘುಂ ೭-೩೭. 3. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗು, ಹಿಂಬರಿ, ಹಿಮ್ಮೆಟ್ಟು. "ಅಭಿ-ಪತಿತುಮನಾ ಲಘುತ್ವಭೀತೇರಭವದಮುಷ್ಠತಿ ವಲ್ಲಭೇತಿಗುರ್ವಿ" ಮಾಘಂ ೭-೫೧.

(3) ಅಭಿ + ಆ + ಪಲ್ = ಅಭ್ಯಾಪತತಿ. ಅಭ್ಯಾಪತನ್. ಅಭ್ಯಾಪತನಮ್. ಎದುರಿಗೆ ಬಾ, ಎದುರು ಕಡೆಯಿಂದ ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಾ. "ಅಭ್ಯಾಪತಂತಮಸುರಾಧಿಪಮೀಶಪುತ್ರೋ ದುರ್ವಿ-ಬಾಹುವಿಭವಂ ಸುರಸೇನಿಕೇಸ್ತಮ್" ಕುಮಾಂ ೧೭-೪೯.

(4) ಅವ + ಪಲ್ = ಅವಪತತಿ. ಅವಪಾತಃ. ಅವಪತಿತಃ. 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳು, ಮೇಲಿನಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿ. "ಇಯೇನಾವಪಾತ-ಚಕಿತಾನನವತಿಕೇವ" ಮಾಲತೀಂ ೮-೮. 2. ಕುಸಿದು ಬೀಳು, ಕೆಳಗೆ ಬೀಳು. "ಜಲಂ ಕೂಲಾವಪಾತೇನ ಪ್ರಸನ್ನಂ ಕಲುಷಾ-ಯತೆ" ಮೃಚ್ಛಂ ೯-೨೪.

(4a) ಅವ + ಪಲ್ + ಣಿಚ್ = ಅವಪಾತನಮ್. ಅವಪಾತಿಸ್. ಕೆಡೆವು, ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳು, ಕೆಳಕ್ಕೆ ನೂಕು. "ಅಭಿವಾತೇ ತಥಾ ಛೇದೇ ಭೇದೇ ಕುಡಯಾವಪಾತನೇ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೨೨೩.

(5) ಆ + ಪಲ್ = ಆಪತತಿ. ಆಪತನ್. ಆಪತಿಸ್. 1. ಬಾ, ಎದುರಾಗಿ ಬಾ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಾ, ಅದರ ಕಡೆಗೆ ಬಾ. "ಆಪತನ್ನಪಸರನ್ನಪಿ ಭೇಜೇ ಗ್ರಾಹ್ಯತಾಮಿವ ಚ ದುಃಪ್ರಹತಾಂ ಚ" ಯಾದಂ ೨೧-೫೩. 2. ಅಕ್ರಮಿಸು, ಮೇಲೆ ಬೀಳು, ಧಾಳಿಮಾಡು. "ಉದಾಯುಧಾನಾಪತತಸ್ತಾನ್ ದೃಪ್ತಾನ್ ಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯ ರಾಘವಃ" ರಘುಂ ೧೨-೪೪. 3. ಸಂಭವಿಸು, ಆಗು. "ಅಹೋ, ಕಥಮಿದಮಾಪತಿಸಮ್?" ಉಂ ರಾಂ ೨.

(6) ಉತ್ + ಪಲ್ = ಉತ್ಪತತಿ. ಉತ್ಪತನಮ್. ಉತ್ಪತಿಸ್. 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿಹೋಗು. "ಲೋಕತಃ ಸ್ವಗರಥೇನ ಮಧ್ಯಮಾದುತ್ಪತಂತಮವನಮ್ಯ ಮಾಧವಮ್" ಯಾದಂ ೧೭-೩. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಬಾ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೊರಡು, ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಾ. "ಮಾತೃಜನಕೈಃ ಸಹಸೋತ್ಪತದ್ವಿಭಿನ್ನಾನ್ ದ್ವಿವಾ ಪಶ್ಯ ಸಮು-ದ್ರ-ಫೇನಮ್" ರಘುಂ ೧೩-೧೧. 3. ಚಿಮ್ಮು, ಪುಟವೇಳು, ಹಾರು. "ಪಾತಿಸೋಪಿ ಕರಾಘಾತೇಽಉತ್ಪತತೀವ ಕಂದುಕಃ" 4. ಉದ್ಭವಿಸು, ಉತ್ಪತ್ತಿಹೊಂದು, ಹುಟ್ಟು. "ನಾರಾಚಕ್ಷೇಪಣಿಯಾಶಮ-ನಿಷ್ಪೇಷೋತ್ಪತಿಸ್ತಾನಲಮ್" ರಘುಂ ೪-೭೭.

(7) ನಿ + ಪಲ್ = ನಿಪತತಿ. ನಿಪಪಾತ. ನಿಪತನ್. ನಿಪತನಮ್. ನಿಪತಿಸ್. 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳು, ಮೇಲಿನಿಂದ ಬೀಳು. "ನಿಪತತಾಪಿ ನ ಮಂದರಭೂಮತಾ ತ್ವಮುದಯಿ ಶಶಲಾಂಞನ ಚೂರ್ಣಿತಃ" ನೈಷಂ ೪-೫೧. 2. ತಲುಪು, ಸೇರು, ಪ್ರವೇಶಿಸು. "ತ್ವಯೇವ ನಿಪತನ್ಯೋಘಾ ಜಾಹ್ನವೀಯಾ ಇವಾಣಿವೇ" ರಘುಂ ೧೦-೨೬. 3. ಮೇಲೆ ಬೀಳು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿ ಬೀಳು. "ಸಿಂಹಃ ಶಿಶುರಪಿ ನಿಪತತಿ ಮದಮಲಿನಕಪೋಲಭಿತ್ತಿಷು ಗಜೇಷು" ಭರ್ತುಂ ೧-೩೦. 4. ಬಂದು ಕೂಡು, ಕುಳಿತುಕೊಂಡು, ಬಂದು ಜಾಗದಲ್ಲಿ ಬಂದು ಸೇರು. "ಅರ್ಯಾಹಿತಂ ಪೂರ್ವಂ ನಿಪತತಿ" 5. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿದು ಬಾ, "ನಿಪತಂತಿ ಧಾರ್ತರಾಷ್ಟ್ರಾಃ ಕಾಲ-ವಶಾನ್ಮೇದಿನಿಪೃಷ್ಠೇ" ವೇಣೀಂ ೧-೬.

(8) ಪರಾ + ಪಲ್ = ಪರಾಪತತಿ. ಪರಾಪತನ್. ಪರಾ-ಪತನಮ್. ಬರುವುದು, ಬಂದು ಸೇರುವುದು, ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬರುವುದು, ಎದುರಿಗೆ ಬರುವುದು. "ದಿವಾಪಿ ತಾರಾಸ್ತರ-ಲಾಸ್ತರಸ್ವಿನಿಃ ಪರಾಪತಂತಿಃ ಪರಿತೋಷ್ಯ ವಾಹಿನಿಃ" ಕುಮಾಂ ೧೫-೧೯.

(9) ಪ್ರ + ಪಲ್ = ಪ್ರಪತತಿ. ಪ್ರಪತನ್. ಪ್ರಪತಿಸ್. 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರು, ಹಾರಿಹೋಗು. 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳು, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಧುಮುಕು. "ಮೃದ್ಧಿನ್ ಗಜ್ಜಾಪ್ರಪಾತೇನ ಧೌತಪಾದಾಂಭಸಾ ಚ ವಃ" ಕುಮಾಂ ೬-೫೭. 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬಿದ್ದು ನಮಸ್ಕರಿಸು.

(10) ಪ್ರ + ನಿ + ಪಲ್ = ಪ್ರಣಿಪತತಿ. ಪ್ರಣಿಪತನಮ್. ಪ್ರಣಿಪತನ್. ನಮಸ್ಕರಿಸು. "ಪ್ರಣಿಪತ್ಯ ಸುರಾಸ್ತಸ್ಮೈ ಶಮಯಿತ್ರೇ ಸುರದ್ವಿಷಾಮ್" ರಘುಂ ೧೦-೧೫. "ತಸ್ಯಾಃ ಸಖೀಭ್ಯಾಂ ಪ್ರಣಿಪಾತ-ಪೂರ್ವಂ ಸ್ವಹಸ್ತಲೂನಃ ಶಿಶಿರಾತ್ಯಯಸ್ಯ" ಕುಮಾಂ ೩-೬೧.

ಪತೇರ ಪತೇರ (ಪುಂ) 1. ಗರ್ತ, ಹಳ್ಳ, ಗುಳಿ. 2. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. "ಗರ್ತಃ ಪತೇರೋ ಭೂಷಭ್ರಮವಖಾತೋಜ್ವಲೋಜ್ವಾಧಿಃ" ವೈಜಂ. 3. ಅಡಕ ಪರಿಮಾಣ, ಒಂದು ಕೊಳಗದ ಅಳತೆ. (ವಿಂ) 4. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವ. 5. ಹೋಗುವವನು. ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಆರಕ್" (ಉಂ ೧-೫೮).

ಪತ್ತನ ಪತ್ತನ (ನಂ) 1. ನಗರ, ಜಿಲ್ಲೆಯ ಮುಖ್ಯಪಟ್ಟಣ. ಪತಂತಿ ಜನಾ ಅತ್ರ — ಪಲ್ (ಗತೌ) "ತತನ್" (ಉಂ ೩-೧೫೦). "ಪತ್ತನೇ ವಿಜಯಾನೇಽಪಿ ಗ್ರಾಮೇ ರತ್ನಪರೀಕ್ಷಾ" ಮಾಲಂ ೧. 2. ಮೃದಂಗ, ಮದ್ದಳೆ.

ಪತ್ತನಾಧಿಕಾರಿನ್ ಪತ್ತನಾಧಿಕಾರಿನ್ (ಪುಂ) ಜಿಲ್ಲೆಯ ಅಧಿಕಾರಿ, ಜಿಲ್ಲೆಯ ಮುಖ್ಯ ಪಟ್ಟಣದಲ್ಲಿರುವ ಮುಖ್ಯಾಧಿಕಾರಿ.



**ಗತಿ ಪತ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಸೇನೆ, ಕಾಲಾಳು, ಕಾಲ್ಪಲ. ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿವ್" (೩-೩-೧೭೪)। "ರಥವಾಜಿಪತ್ತಿಕರಿಣಿ-ಸಮಾಕುಲಂ ತದನೀಕಯೋಃ ಸಮಗತ ದ್ವಯಂ ಮಿಥಃ" ಮಾಘಂ ೧೩-೧೭। 2. ವೀರ, ಶೂರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಗಮನ. 4. ಸೇನೆಯ ಒಂದು ಪ್ರಭೇದ, ಒಂದು ರಥ ಒಂದು ಗಜ ಮೂರು ಅಶ್ವಗಳು ಮತ್ತು ಐದು ಕಾಲಾಳುಗಳುಳ್ಳ ಸೇನೆಯ ಒಂದು ಗುಂಪು. "एको रथो गजश्चैको नराः पञ्च पदातयः। त्रयश्च तुरगास्तज्जैः पत्तिरित्यभिधीयते" भा० आदि० ೨-೧೯। 5. ತೋಳು ಕೆನ್ನ ಸ್ತನ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಮೇಲೆ ಬರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ ಚಿತ್ರ. "पत्तिस्तु पत्रकं लेखा बाहुगण्डस्तनादिषु" वंज०। 6. ಐವತ್ತೈದು ಮನುಷ್ಯಸೇನೆಯ ಒಂದು ಗುಂಪು. "नराणां पञ्चपञ्चाश-देषा पत्तिर्विधीयते" भा० उद्योग०।

**ಪತ್ರ ಪತ್ರ** (ನಂ) 1. ಎಲೆ, ದಳ, ಪರ್ಣ. ಪತತಿ - ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಪ್ತನ್" (೩-೪-೧೫೯)। "मदोद्धताः प्रत्यनिलं विचेरुर्वनस्थलीर्मर्मरपत्रमोक्षाः" कुमा० ೩-೩೧। 2. ರೆಕ್ಕೆ, ಗರಿ. "सद्यः प्रबालोद्गमचारपत्रे नीते समाप्ति नवचूतबाणे" कुमा० ೩-೨೭। 3. ಬರೆಯುವ ಕಾಗದ. 4. ಬರೆದ ಕಾಗದ, ಕ್ಷೇಮ ಸಮಾಚಾರದ ಕಾಗದ. 5. ವ್ಯವಹಾರದ ಕಾಗದ: (1) ಆಧಾರ ಪತ್ರ, (2) ಭೋಗ್ಯ ಪತ್ರ, (3) ಕ್ರಯ ಪತ್ರ, (4) ದಾನ ಪತ್ರ ಇತ್ಯಾದಿ. "विवादेऽन्विष्यते पत्रं तदभावे च साक्षिणः। साक्ष्य-भावात्ततो दिव्यं प्रवदन्ति मनीषिणः" पञ्चत० ೧-೪೩೬। 6. ಹೊವಿನ ದಳ. "पत्रान्तलग्नैर्जलबिन्दुजालैराकृष्ट-मुक्ताफलजालशोभम्" कुमा० ೭-೮೯। 7. ವಾಹನ. "दिशः पपात पत्रेण वेगनिष्कम्पकेतुना" रघु० ೧೫-೪೮। 8. ಬಾಣದ ಗರಿ. 9. ಮನುಷ್ಯನ ಮುಖ ಮೊದಲಾದ ಅಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಕಸೂರಿ ಚಂದನ ಮೊದಲಾದ ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯದಿಂದ ಬರೆಯುವ ಚಿತ್ರ. "अन्यत्र कालागुरुदत्तपत्रा भक्तिर्भुवश्चन्दनकल्पितेव" रघु० ೧೩-೫೫।

**ಪತ್ರಕ ಪತ್ರಕ** (ನಂ) 1. ಎಲೆ, ಪರ್ಣ. 2. ಮನುಷ್ಯನ ಮೈಮೇಲೆ ಬರೆಯುವ ಚಿತ್ರ.

**ಪತ್ರಪರಶು ಪತ್ರಪರಶು** (ಪುಂ) ಅಕ್ಕಸಾಲಿಗನು ಚೆನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿ ಗಳನ್ನು ಕತ್ತರಿಸುವ ಸಾಧನ, ಬಾಣ. ಪತ್ರಮಿವ ಪರಶುಃ। "वृश्चनः पत्रपराशुः" अम०।

**ಪತ್ರಪಾಲಿ ಪತ್ರಪಾಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕತ್ತರಿ. ಪತ್ರಾಕಾರಾ ಪಾಲಿರಗ್ರಂ ಯಸ್ಯಾಃ।

**ಪತ್ರಪಾಶಾ ಪತ್ರಪಾಶಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೈತಲೆಯ ಬೊಟ್ಟು. ಪಾಶಸಮೂಹಃ ಪಾಶಾ - ಪತ್ರಮಿವ ಪಾಶಾ। "पत्रपाशा ललाटिका" अम०।

**ಪತ್ರಭಂಗ ಪತ್ರಭಂಗ** (ಪುಂ) ಸ್ತನ ಕೆನ್ನ ಮೊದಲಾದ ಸ್ಥಳ ಗಳಲ್ಲಿ ಕಸೂರಿ ಚಂದನ ಮುಂತಾದುವುಗಳಿಂದ ರಚಿತವಾದ (ಬರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ) ಚಿತ್ರ. ಪತ್ರಾಕಾರಃ ಭಂಗಃ।

**ಪತ್ರರಥ ಪತ್ರರಥ** (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಪತ್ರಂ ಪಕ್ಷೋ ರಥ ಇವ ಯಸ್ಯ। "व्यर्थीकृतं पत्ररथेन तेन तथाऽवसाय व्यवसाय-मस्याः" नैष० ೩-೬। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ "डीष्" (೪-೧-೬೩)। -ರಥಿ -ರಥೀ.

**ಪತ್ರಲತಾ ಪತ್ರಲತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪತ್ರಾಕಾರದ ತಿಲಕ. ಪತ್ರಾಕಾರಾ ಲತಾ ಯತ್ರ।

**ಪತ್ರಲೇಖಾ ಪತ್ರಲೇಖಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ತ್ರೀಯರ ಅಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಬರೆಯುವ ಚಿತ್ರ. ಪತ್ರಾಕಾರಾ ಲೇಖಾ। "कस्याश्चिमुख-मनुषीतपत्रलेखम्" माघ० ೮-೫೬।

**ಪತ್ರವಾಹ ಪತ್ರವಾಹ** (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಪತ್ರಂ ವಹತಿ - ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "अण्" (೩-೨-೧)। "उत्क्रान्ताना-मामिषायोपरिष्ठात् अध्याकाशं बभ्रमुः पत्रवाहाः" माघ० ೧೮-೭೩। 2. ಬಾಣ. "प्रमुखेऽभिहताश्च पत्र-वाहाः प्रसभं माघवमुक्तवत्सदन्तैः" माघ० ೨೦-೨೫। (ವಿಂ) 3. ಕಾಗದವನ್ನು ಒಯ್ಯುವವನು.

**ಪತ್ರವಿಶೇಷಕ ಪತ್ರವಿಶೇಷಕ** (ನಂ) ಪತ್ರಭಂಗ, ಪತ್ರ ರಚನೆ. ಪತ್ರಮಿವ ವಿಶೇಷೋ ಯತ್ರ। "कप्" (೫-೪-೧೫೪)। "स्वेदोद्गमः किपुरुषाङ्गनानां चक्रे पदं पत्रविशेषकेषु" कुमा० ೩-೩೩।

**ಪತ್ರವೇಷ ಪತ್ರವೇಷ** (ಪುಂ) ತಾಟಂಕ, ಒಲೆ. ಪತ್ರಮಿವ ವೇಷಯತೆ - ವೇಷ (ವೇಷಣೆ) "घव्" (೩-೩-೧೯)। "उद्धन्धकेशश्चुतपत्रलेखो विश्लेषि मुक्ताफलपत्रवेष्टः" रघु० ೧೬-೬೭।

**ಪತ್ರಶಾಕ ಪತ್ರಶಾಕ** (ನಂ) ಪತ್ರರೂಪವಾದ ತರಕಾರಿ, ಸೊಪ್ಪು. ಪತ್ರಾತ್ಮಕಂ ಶಾಕಮ್।

**ಪತ್ರಶ್ರೇಷ್ಠ ಪತ್ರಶ್ರೇಷ್ಠ** (ಪುಂ) ಬಿಲ್ಲುಪತ್ರ ಮರ. ಪತ್ರಂ ಶ್ರೇಷ್ಠಂ ಯಸ್ಯ।

**ಪತ್ರಸುಚಿ ಪತ್ರಸುಚಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಳ್ಳು, ಕಂಚಕ.

**ಪತ್ರಾಖ್ಯ ಪತ್ರಾಖ್ಯ** (ನಂ) ತಾಳೀಸಪತ್ರೆ, ಪತ್ರೇತ್ಯಾಖ್ಯಾ ಯಸ್ಯ।

**ಪತ್ರಾಂಗ ಪತ್ರಾಂಗ** (ನಂ) 1. ಕೆಂಪುಚಂದನ. 2. ಭೂರ್ಜ ವೃಕ್ಷ, ಭುಜಪತ್ರೆ ಗಿಡ. ಪತ್ರಮಿವಾಂಗಮಸ್ಯ।



ಪತ್ರಿಕಾಗುಲಿ ಪತ್ರಿಕಾಗುಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೈಮೇಲೆ ಬರೆಯುವ ಚಿತ್ರ. ಪತ್ರಿಕಾಗುಲಿ: ಅಡ್ಡಗುಲಿವ್ಯಾಪಾರ: ।

ಪತ್ರಿಕಾಜನ ಪತ್ರಿಕಾಜನ (ನಂ) ಮಸಿ, ಶಾಯಿ. ಪತ್ರ-  
ಮಜ್ಯತೇಜೇನ — ಅಜ್ಜ (ವ್ಯಕ್ತಿಯಾದ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೭) ।

ಪತ್ರಿಕಾಚ ಪತ್ರಿಕಾಚ (ನಂ) ಹಿಪ್ಪಲಿ ಬೇರು. ಪತ್ರಿಕಾಚಮ್ ।  
ಪತ್ರಿಕಾವಲಿ ಪತ್ರಿಕಾವಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪತ್ರಿಕಾಚ, ಮೈ  
ಮೇಲೆ ಬರೆಯುವ ಚಿತ್ರ. 2. ಎಲೆಗಳ ನಾಲು.

ಪತ್ರಿಕಾ ಪತ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬರೆಯುವ ಕಾಗದ.  
2. ಬರೆದ ಕಾಗದ, ಕ್ಷೇಮಸಮಾಚಾರದ ಕಾಗದ. 3. ವ್ಯವ  
ಹಾರದ ಪತ್ರಿಕಾ.

ಪತ್ರಿಕಾ ಪತ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಿರಿಯ ನಾದಿನಿ, ಪತ್ರಿಕಾ  
ತಂಗಿ. "ಕನಿಷ್ಠಾ ಸ್ವಾಲಿಕಾ ಹಾಲಿ ಪತ್ರಿಕಾ ಕೆಲಿ-  
ಕುಚ್ಚಿಕಾ" ವೆಂಜಂ । 2. ಚಿಗುರು, ಮೊಳಕೆ.

ಪತ್ರಿಕಾ ಪತ್ರಿಕಾ (ಪುಂ) 1. ಪತ್ರಿಕಾ, ಹಕ್ಕಿ. ಪತ್ರಮಸ್ತಸ್ಯ  
"ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) । "ತಂ ಕುರಪ್ರಶಕಲೀಕೃತಂ ಕೃತೀ  
ಪತ್ರಿಕಾಂ ವ್ಯಮಜದಾಶ್ರಮಾಹಿ:" ರಘುಂ ೧೧-೨೯ । 2. ಶರ,  
ಬಾಣ. "ಧ್ರುವಂ ಪ್ರಣಾಶ: ಪ್ರಹಿತಸ್ಯ ಪತ್ರಿಕಾ: ಶಿಲೋಚ್ಚಯೇ  
ತಸ್ಯ ವಿಮಾರ್ಗಂ ನಯ:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೯ । 3. ಶೃಂಗ,  
ಗಿಡುಗೆ ಹಕ್ಕಿ, ಡೇಗೆ. "ನಮಸಿ ಮಹಸಾಂ ಧ್ವಾಂತಧ್ವಾಂಶ-  
ಪ್ರಮಾಪಣಪತ್ರಿಕಾಮಿಹ ವಿಹರಣಿ: ಶ್ಯೇನಂಪಾತಾಂ ರವೇರವಧಾರಯನ್"  
ನೇಷಂ ೧೯-೧೨ । 4. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. 5. ವೃಕ್ಷ, ಮರ.  
ಪತ್ರಿಕಾ ಪರ್ವತಸ್ಯ ಸಂತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) ।  
6. ರಥ. 7. ರಥಿಕ. "ಪತ್ರಿಕಾ ಕಾಣಡೆ ಕ್ಷಗೇ ದ್ರುಮೇ । ರಥೇಂದ್ರೀ  
ರಥಿಕೇ ಶ್ಯೇನೇ" ಹೇಮಂ । (ವಿಂ) 8. ಕಾಗದಗಳುಳ್ಳ.  
9. ರೆಕ್ಕೆಗಳುಳ್ಳ, ಗಡಿಗಳುಳ್ಳ. "ಜಹಾರ ಚಾನ್ಯೇನ ಮಯೂರ-  
ಪತ್ರಿಕಾ ಶರೇಣ ಶಕ್ರಸ್ಯ ಮಹಾಶನಿಷ್ವಜಮ್" ರಘುಂ ೩-೫೬ ।  
10. ಎಲೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಪತ್ರಿಕಾ ಪತ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲಿಪಿ, ಬರವಣಿಗೆ.

ಪತ್ರಿಕಾ ಪತ್ರಿಕಾ (ನಂ) 1. ತೊಳೆದ ರೇಷ್ಮೆ ಬಟ್ಟೆ,  
ಪಟ್ಟವಸ್ತ್ರ. ಪತ್ರಿಕಾಪತ್ರಾ ಕರ್ಣಿ ಸಾಧನತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಅಚ್"  
(೪-೨-೧೨೭) । (ಪುಂ) 2. ಹೆಮ್ಮರ. "ಪತ್ರಿಕಾಂ ಧೌತಕೌಶೇಯೇ  
ಕಲಿಬ್ ಸ್ಯಾಂಚೋಣಕೇ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ ।

ಪತ್ರಿಕಾ ಪತ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮದುವೆಯಾದ ಹೆಂಡತಿ, ಮದುವೆ  
ಯಾಗಿ ಪತಿಯ ಯಜ್ಞಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಪಾಲುಗೊಳ್ಳುವ  
ಹೆಂಗಸು. ಪತಿ ಯಜ್ಞಸಂಬಂಧ "ನ:" (೪-೧-೩೩) ।  
"ತತ್ತದ್ಭೂಮಿಪತಿ: ಪತ್ನೀ ದರ್ಶಯನ್ ಪ್ರಿಯದರ್ಶನ:" ರಘುಂ ೧-೪೭ ।  
"ಆಕೀರ್ಣಮೃಷಿಪತ್ನೀನಾಮುಡಜದ್ವಾರರೋಧಿಮಿ:" ರಘುಂ ೧-೫೦ ।

"ಪತ್ನೀಮೂಲಂ ಗೃಹಂ ಪುಂಸಾಂ ಯದಿ ಕ್ಷುದೋನುಬತ್ತಿನಿ । ಗೃಹಾಶ್ರಮಸಮಂ  
ನಾಸ್ತಿ ಯದಿ ಮಾರ್ಯಾ ವಶಾನುಗಾ" ।

ಪತ್ನಾಟ ಪತ್ನಾಟಿ (ಪಂ) ಪತ್ನಿಯ ಗೃಹ. ಪತ್ನಿ ಅಡ್ಡಪತ್ರ  
— ಅಡ (ಗತೌ) "ಪತ್ನಿ" (೩-೩-೧೨೧) ।

ಪತ್ನ ಪತ್ನಿ (ಪುಂ) ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. (ಅಕಾರಾಂತ:) ಪತ್ನಪತ್ರ  
— ಪತ್ನಿ (ಗತೌ) ಪತ್ನಿ "ಕ:" (೩-೩-೫೮) । "ವಾಡ:  
ಪತ್ನಿ ಮಾರ್ಗಶ್ಚ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಪತ್ನ ಪತ್ನಿ (ವಿಂ) ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಕುಳಿತನಾದವನು, ದಾರಿ  
ಯನ್ನು ತಿಳಿದವನು. ಪತ್ನಿ ಕುಶಲ: "ವುನ್" (೪-೨-೬೩) ।

ಪತ್ನ ಪತ್ನಿ (ವಿಂ) ನಡೆಯುವವನು, ಹೋಗುವವನು.  
ಪತ್ನಿ (ಗತೌ) "ಶತ್ರು" (೩-೨-೧೨೪) ।

ಪತ್ನ ಪತ್ನಿ (ವಿಂ) ದಾರಿ ನಡೆಯುವವನು, ಪ್ರಯಾಣಿಕ,  
ದಾರಿಗ. ಪತ್ನಾಂ ಗಂಚತಿ—ಪತ್ನಿ "ಪ್ಕನ್" (೪-೧-೭೫) ।  
"ಮಧುಕರೇರಪವಾದಕರೇರಿವ ಸ್ಮೃತಿಭುವ: ಪತ್ನಿಕಾ ಹರಿಣಾ ಇವ"  
ಮಾಘಂ ೬-೯ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೪೧) । ಪತ್ನಿಕಾ  
ಪತ್ನಿಕಾ.

ಪತ್ನಿಕಾ ಪತ್ನಿಕಾ ಪತ್ನಿಕಾ ಪತ್ನಿಕಾ (ಪುಂ) ಪ್ರಯಾಣಿಕರ  
ಗುಂಪು. ಪತ್ನಿಕಾಂ ಸಂಘಾತ: ।

ಪತ್ನಿ ಪತ್ನಿ (ಪುಂ) ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. ಪತ್ನಿಯೇನ—ಪತ್ನಿ  
(ಗತೌ) "ಇನಿ:" ಪತ್ನಿ: ಅಂತಾದೇಶಶ್ಚ (ತಂ ೪-೧೨) ।  
"ಪತ್ನಾಂ ಮಾಶು ವಿಜಹಿಹಿ ಪುರ: ಸ್ತನೌ ತೇ ಪಶ್ಯನ್ ಪ್ರತಿಧ್ವಿರದ-  
ಕುಂಭವಿಶಿಷ್ಟೇತಾ:" ಮಾಘಂ ೫-೩೪ । "ಪತ್ನಾಂ ಪಥ:  
ಪ್ರವಿಚಲಂತಿ ಪದಂ ನ ಧೀರಾ:" ಭರ್ತಂ ೨-೮೩ । ಸಮಾಸದ  
ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಪತ್ನಿ ಶಬ್ದವು "ಪತ್ನಿ:" ಎಂದು ಅಕಾರಾಂತ  
ವಾಗುವುದು. "ತೌಯಾಧಾರಪಥಾಶ್ಚ ವಲ್ಕಲಶಿಖಾನಿಷ್ಯಂದ-  
ರೇಖಾಶ್ಚಿತಾ:" ಶಾಕುಂ ೧-೧೩ । "ಉತ್ತೋರಣಂ ರಾಜಪಥಂ  
ಪ್ರಪೇದೇ" ಕುಮಾರಂ ೭-೬೩ ।

ಪತ್ನಿ ಪತ್ನಿ (ವಿಂ) ಪರಸ್ಪರಕ್ಕೆ ಹೊರಟಿರುವ ಪ್ರಯಾ  
ಣಿಕ, ದಾರಿಗ. ದಾರಿ ನಡೆಯುವವನು. ಪತ್ನಿ (ಗತೌ)  
"ಇಲಕ್" (ತಂ ೧-೫೭) ।

ಪತ್ನಿವಾಹಕ ಪತ್ನಿವಾಹಕ (ವಿಂ) 1. ಕೂರ. 2. ಮೂಟೆ  
ಹೊರುವವನು, ಭಾರ ಹೊರುವ ಕೂಲಿಯಾಳು. 3. ಬೇಟೆ  
ಗಾರ. ಪತ್ನಾಂ ವಾಹಯತಿ — ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) + ಣಿಕ್  
"ವುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

ಪತ್ನ ಪತ್ನಿ (ನಂ) 1. ಹಿಡ. 2. ಅರೋಗ್ಯ. ಪತ್ನಾಂ ಪೇತ:  
"ಯತ್" (೪-೪-೯೨) । "ಉತ್ತಿಷ್ಠಮಾನಸ್ತು ಪರೋ ನೋಪೇಕ್ಷಯ:  
ಪತ್ನಮಿಚ್ಛತಾ" ಮಾಘಂ ೨-೧೦ । (ವಿಂ) 3. ಮಾರ್ಗ  
ವನ್ನು ಬಿಡದಿರುವ, ದಾರಿತಪ್ಪಿ ನಡೆಯದಿರುವ. 4. ಮಾರ್ಗ



ದಲ್ಲಿ ಸಾಧುವಾದ, ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಒಳ್ಳೆಯದಾಗಿರುವ. ಪಥಿ  
ಸಾಧು: "ಯತ್" (೪-೪-೯೮)। 5. ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿರುವ,  
ದಾರಿಯಲ್ಲಿರುವ. ಪಥಿ ಭವ: "ಯತ್" (೪-೧-೪೪)।  
6. ಹಿತವಾದ. 7. ಆರೋಗ್ಯಕರವಾದ.

**ಪಠ್ಯಾ ಪಠ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹರೀತಕೀ ವೃಕ್ಷ, ಅಳಲೆ ಗಿಡ.  
ಪಠ್ಯಾಜಪೇತಾ "ಯತ್" (೪-೪-೯೨)। 2. ಆರ್ಯಾವೃತ್ತದ  
ಒಂದು ಭೇದ. ಆರ್ಯಾವೃತ್ತದ ಪೂರ್ವಾರ್ಧ ಮತ್ತು  
ಉತ್ತರಾರ್ಧಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ಮೂರು ಗಣಗಳಿಗೆ  
ಒಂದು ಪಾದವು ನಿಲ್ಲುವಂತಾದರೆ "ಪಠ್ಯಾರ್ಯಾ" ವೃತ್ತ  
ವಾಗುವುದು. "ತ್ರಿವಿಂಶಕೇಷು ಪಾದೋ ದಲಯೋರಾಕ್ಷೇಷು ದೃಶ್ಯತೇ  
ಯಸ್ಯಾ:। ಪಠ್ಯೇತಿ ನಾಮ ತಸ್ಯಾ: ಛಂದೋವಿಧಿ: ಸಮಾಖ್ಯಾತಮ್"  
ವೃಂ ೨೦।

**ಪಠ್ಯಾಪಠ್ಯ ಪಠ್ಯಾಪಠ್ಯ** (ನಂ) ರೋಗಿಗಳಿಗೆ ಹಿತವಾದ  
ಮತ್ತು ಅಹಿತಕರ ವಸ್ತುಗಳು. ಪಠ್ಯಂ ಚ ಅಪಠ್ಯಂ ಚ ಅನಯೋ:  
ಸಮಾಹಾರ:।

**ಪಠ್ಯಾವಕ್ತ್ರ ಪಠ್ಯಾವಕ್ತ್ರ** (ನಂ) ಅನುಷ್ಠುಪ್ ಛಂದಸ್ಸಿನ  
ಒಂದು ಭೇದ, ಯುಗ್ಮ ಪಾದಗಳಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಅಕ್ಷರದ  
ಮುಂದೆ "ಜ" ಗಣವಿದ್ದರೆ "ಪಠ್ಯಾವಕ್ತ್ರ" ವೃತ್ತವಾಗು  
ವುದು. ಅಯುಗ್ಮ (1 ಮತ್ತು 3 ನೆಯ) ಪಾದಗಳಲ್ಲಿ  
"ವಕ್ತ್ರ" ವೃತ್ತದ ಲಕ್ಷಣವಿರಬೇಕು. "ಯುಜೋಜನ ಸರಿದ್ಭುತು:  
ಪಠ್ಯಾವಕ್ತ್ರಂ ಪ್ರಕೀರ್ತಿಸಮ್" ವೃಂ ೨೦।

**ಪದ್ ಪದ್** (ಪುಂ) ಪಾದ, ಚರಣ, ಕಾಲು. ಪದ್ಯತೇ — ಪದ  
(ಗತೌ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೧೭೮)। "ಪದಭೃಗ್ವಿಶ್ವರಣೋಽ-  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಅಮಂ। "ಪದ್" ಪದವು ಪಾದ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ.  
"ಪದ್ವಿಮಾಸ್" (೬-೧-೬೩) ಸೂತ್ರದಿಂದ ವಿಹಿತವಾದ  
"ಪದ್" ಅದೇಶವೆಂದು ಕೆಲವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

**ಪದ - ಗತೌ** (ದಿವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ)। ಪದ್ಯತೇ ಪದ್ಯತೇ  
ಪದ್ಯಂತೇ। ಪೇದೇ ಪೇದಾತೇ ಪೇದಿರೇ। ಪತ್ತಾ ಪತ್ತಾರೌ ಪತ್ತಾರ:।  
ಪತ್ತಾಸೇ। ಪತ್ತಾಹೇ। ಪತ್ಸ್ಯತೇ। ಪದ್ಯತಾಮ್। ಅಪದ್ಯತ।  
ಇತ್ಯಾದಿ. ಹೊಂದು, ಪಡೆ, ಗಳಿಸು. "ಜ್ಯೋತಿಷಾಮಾಧಿಪತ್ಯಂ  
ಚ ಪ್ರಭಾವಂ ಚಾಪ್ಯಪದ್ಯತ" ಭಾಂ। ಹೊಂದು, ಸೇರು, ತಲುಪು.  
**ಕರ್ಮಣಿ:**—ಪದ್ಯತೇ। ಪೇದೇ। ಇತ್ಯಾದಿ. ಮೇಲಿನ ರೂಪ  
ಗಳಂತಾಗುವುವು.

**ಪಿತ್ತಿ:**—ಪಾದಯತಿ, -ತೇ। ಪಾದಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ,  
-ಬಭೂವ, -ಆಸ। ಪಾದಯಿತಾ। -ಸಿ, -ಸೇ। -ಹೇ। ಪಾದಯತು,  
ತಾಮ್। ಅಪಾದಯತ್, -ತ। ಪಾದಯೇತ್, -ತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಪಿತ್ತಿ:**—ಪಿತ್ತಿಸ್ತೇ। ಪಿತ್ತಿಸ್ತಾಂ ಚಕ್ರೇ। ಪಿತ್ತಿಸ್ತಾ। ಪಿತ್ತಿಸ್ಥಿತೇ।  
ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತ್ಯು:**—ಪತ್ತವ್ಯಮ್। ಪದನೀಯಮ್। ಪಾಡಮ್। ಪನ್ನ:।  
ಪನ್ನವಾನ್, -ವತೀ। ಪದ್ಯಮಾನ್:। ಪತ್ತುಮ್। ಪನ್ನಮ್। ಪದನಮ್।  
ಪತ್ವಾ। ಪ್ರಪದ್ಯ। ಪಾದಪಾದಮ್।

**ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಈ ಧಾತುವಿಗೆ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:**

(1) ಆ + ಪದ = ಆಪದ್ಯತೇ। ಆಪೇದೇ। ಆಪದ್ಯಮಾನ್:।  
ಆಪಾದಿ। ಆಪದ್ಯತ। 1. ಸಂಭವಿಸು, ಉಂಟಾಗು, ಆಗು.  
"ನಿಷಾದವಿಧಾಂಜದರ್ಶನೋತ್ಥ: ಶಲೋಕತ್ವಮಾಪದ್ಯತ ಯಸ್ಯ  
ಶೋಕ:" ರಘುಂ ೧೪-೭೦। 2. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬಾ. "ಎಷ  
ರಾವಣಿರಾಪಾದಿ ವಾನರಾಣಾಂ ಭಯಚ್ಛರ:" ಭट्टಿಂ ೧೪-೮೯।  
3. ತೊಂದರೆಗೊಳಗಾಗು, ಕಷ್ಟಪಡು.

(2) ಉ + ಪದ = ಉಪದ್ಯತೇ। ಉಪಾದಿ। ಉಪದ್ವಿ:।  
ಉಪದ್ವಿ:। 1. ಹುಟ್ಟು, ಉತ್ಪತ್ತಿಹೊಂದು. "ಉಪದ್ಯಂತೇ  
ವಿಲೀಯಂತೇ ದರಿದ್ರಾಣಾಂ ಮನೋರಥಾ:"। "ಉಪದ್ಯತೇ ಮಮ ತು  
ಕೋಽಪಿ ಸಮಾನಧರ್ಮಾ ಕಾಲೋಹ್ಯಯಂ ನಿರವಧಿವಿಪುಲಾ ಚ ಪೃಥ್ವಿ"  
ಮಾಲತೀಂ ೧-೮। 2. ಸಂಭವಿಸು, ಸಂಭವಿಸು. "ಮಮ  
ತಾವದ್ವಿಪನ್ನಾವಸರಮರ್ಥಿತ್ವಂ ಶ್ರೀಯತಾಮ್" ಮಾಲಂ ೩।

(3) ಪ್ರತಿ + ಉ + ಪದ = ಪ್ರತಿಯುಪದ್ಯತೇ। ಪ್ರತಿಯುಪದ್ವಿ:।  
1. ಬೇಗಉಂಟಾಗು, ಬೇಗಉತ್ಪತ್ತಿಹೊಂದು. "ಪ್ರತಿಯುಪದ್ವಿ-  
ಮತಿರ್ಧಿಮಾನ್ ವ್ಯವಸಾಯಿ ವಿಶಾರದ:। ಸತ್ಯಧರ್ಮಪರೋ ಯಶ್ಚ  
ಸ ಭಿಷಕ್ಪಾದ ಉಚ್ಯತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೩೪। 2. ಮತ್ತೆ  
ಹುಟ್ಟು, ಪುನಃ ಉತ್ಪತ್ತಿಹೊಂದು.

(4) ವಿ + ಉ + ಪದ = ವಿಯುಪದ್ಯತೇ। ವಿಯುಪದ್ವಿ:।  
ವಿಯುಪದ್ವಿ:। 1. ಪದನಿಷ್ಪತ್ತಿ, ಶಬ್ದರೂಪಸಾಧನೆ.  
2. ಪಾಂಡಿತ್ಯ, ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. "ವಿಯುಪದ್ವಿರಾವಿಜಿತ-  
ಕ್ರೋವಿದಾಪಿ ನ ರಜನಾಯ ಕ್ರಮತೇ ಜಡಾನಾಮ್" ವಿಂ ದಂ ಚಂ।

(5) ಉಪ + ಪದ = ಉಪದ್ಯತೇ। ಉಪೇದೇ। ಉಪದ್ವಿ:।  
ಉಪದ್ವಿ:। 1. ಹೊಂದು, ಸೇರು, ತಲುಪು. "ಶಿಸಿರತರ-  
ವಾತೇರಾಪ್ಯಾಯಿತಶರೀರ: ಕಥಂಚಿದಪ್ಯುತ್ಥಾಯ ಯಮುನಾತಟಮುಪೇದೇ"  
ಪञ್ಚತಂ ೧। 2. ಸಂಭವಿಸು, ದೊರಕು. "ತ್ವದನ್ಯ:  
ಸಂಶಯಸ್ಯಾಸ್ಯ ಚ್ಛೇತ್ತಾ ನ ಹ್ಯುಪದ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೬-೩೯।  
3. ಆಗು, ಸಾಧ್ಯವಾಗು. "ಕರ್ತವ್ಯಂ ವೋ ನ ಪಶ್ಯಾಮಿ  
ಸ್ಯಾನ್ವೇತ್ಕಿ ನೋಪದ್ಯತೇ" ಕುಮಾಂ ೬-೬೧। 4. ಅನುರೂಪ  
ವಾಗು, ಯೋಗ್ಯವಾಗಿ ಆಗು, ತಕ್ಕಂತೆ ಆಗು. "ಮಾ  
ಕ್ಲೇಬ್ಯಂ ಗಚ್ಛ ಕೌಂತೇಯ ನೇತತ್ವಯುಪದ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೨-೩।

(6) ಅಭಿ + ಉಪ + ಪದ = ಅಭಿಯುಪದ್ಯತೇ। ಅಭಿಯುಪದ್ವಿ:।  
1. ಅನುಗ್ರಹಿಸು, ಕೃಪೆತೋರು. "ತಪ: ಕೃಷಾಮಭಿಯುಪ-  
ದ್ವಿಪತ್ಸ್ಯತೇ ಸಖೀಂ ವೃಷೇವ ಸೀತಾಂ ತದವಗ್ರಹತಾಮ್" ಕುಮಾಂ



೪-೬೧. 2. ರಕ್ಷಿಸು, ಕಾಪಾಡು. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಮೃತಪತ್ನೌ  
ವ ಶಪಥಂ ನಾಸ್ತಿ ಪಾತಕಮ್" ಮನುಂ ೮-೧೧೨.

(7) ನಿಃ+ಪದ=ನಿಃಪದ್ಯತೇ. ನಿಃಪತ್ತಿಃ. ನಿಃಪನ್ನಃ.

1. ಹುಟ್ಟು, ಉತ್ಪತ್ತಿ ಹೊಂದು. "ನಿಃಪದ್ಯಂತೇ ಚ ಸಸ್ಯಾನಿ  
ಯಥೋಪ್ತಾನಿ ವಿಶಾಂ ಪೃಥಕ್" ಮನುಂ ೧-೨೪೭. 2. ಸಿದ್ಧ  
ರೂಪವನ್ನು ಹೊಂದು, ಪರಿನಿಷ್ಕೃತ ರೂಪವನ್ನು ಹೊಂದು.  
ಪದನಿಃಪತ್ತಿಃ: ಶಬ್ದನಿಃಪತ್ತಿಃ. 3. ಪರಿಣತಿ ಹೊಂದು,  
ಪಕ್ಕಾವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹೊಂದು. "ಕಥಮಪ್ಯಮ್ಭಸಾಮಂತರಾ-  
ನಿಃಪತ್ತೇ: ಪ್ರತೀಕ್ಷತೇ" ಕುಮಾಂ ೨-೩೭.

(8) ಪ್ರ+ಪದ=ಪ್ರಪದ್ಯತೇ. ಪ್ರಪೇದ. ಪ್ರಪತ್ತಿಃ. ಪ್ರಪನ್ನಃ.

1. ಹೊಂದು, ಸೇರು. "ಸತೀ ಸತೀ ಯೋಗವಿಸೃಷ್ಟದೇಹಾ ತಾಂ  
ಜನ್ಮನೇ ಶೇಲವಧುಂ ಪ್ರಪೇದೇ" ಕುಮಾಂ ೧-೨೧. 2. ಹೊಂದು,  
ಪಡೆ, ಗಳಿಸು. "ಸ್ಫುರತ್ಪ್ರಭಾಮಂಡಲಮಧ್ಯವತಿ ಕಾಂತಂ ವಪುರ್ಯಮ-  
ಚರಂ ಪ್ರಪೇದೇ" ರಘುಂ ೪-೬೧. 3. ಸೇರು, ತಲುಪು. "ಕೌತ್ಸಃ  
ಪ್ರಪೇದೇ ವರತನ್ತುಶಿಷ್ಯಃ" ರಘುಂ ೪-೧. 4. ಅಭಿಪ್ರಾಯ  
ಪಡೆ, ಕಾರ್ಯ ಕೈಗೊಳ್ಳಲು ಉದ್ದೇಶಿಸು. "ಪಶ್ಯಾಮೋ  
ಮಯಿ ಕಿಂ ಪ್ರಪದ್ಯತೇ ಇತಿ ಸ್ಥೇಯಂ ಮಯಾಲಮ್ಬಿತಮ್" ಅಮರಂ ೨೪. 5. ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಆಶ್ರಯ ಹೊಂದು, ಶರಣು ಹೊಂದು.  
"ಭೂತ್ವಾ ಶರಣ್ಯಾ ಶರಣಾರ್ಥಮನ್ಯಂ ಕಥಂ ಪ್ರಪತ್ಸ್ಯೇ ತ್ವಯಿ ದೀಪ್ಯಮಾನೇ"  
ರಘುಂ ೧೪-೬೪. "ಶಿಷ್ಯಸ್ತೇಷಾಂ ಶಾಧಿ ಮಾಂ ತ್ವಾಂ ಪ್ರಪನ್ನಮ್"  
ಗೀತಾ ೨-೭.

(9) ಪ್ರತಿ+ಪದ=ಪ್ರತಿಪದ್ಯತೇ. ಪ್ರತಿಪತ್ತಿಃ. ಪ್ರತಿಪನ್ನಃ.

ಪ್ರತಿಪದ್ಯ. 1. ಅಭಿಪ್ರಾಯಪಡೆ, ಉದ್ದೇಶಿಸು. "ವಾಹತಕ,  
ಕಿಂ ಪ್ರತಿಪದ್ಯತೇ ವೇದರ್ಮಃ?" ಮಾಲಂ ೧. 2. ಹೊಂದು,  
ಪಡೆ. "ಸ ರಾಜ್ಯಂ ಗುಣಾ ದತ್ತಂ ಪ್ರತಿಪದ್ಯಾಧಿಕಂ ಬಭೌ"  
ರಘುಂ ೪-೧. 3. ಸ್ವೀಕರಿಸು, ಅಂಗೀಕರಿಸು. "ತದ್ವನು-  
ಗ್ರಹಣಮೇವ ರಾಘವಃ ಪ್ರತ್ಯಪದ್ಯತ ಸಮರ್ಥಮುತ್ತರಮ್" ರಘುಂ ೧೧-೭೯. 4. ಆಶ್ರಯಿಸು, ಸೇರು. "ಉಮಾಮುಖಂ ತು ಪ್ರತಿಪದ್ಯ ಲೋಲಾ  
ದ್ವಿಸಂಶ್ರಯಾಂ ಪ್ರೀತಿಮವಾಪ ಲಕ್ಷ್ಮೀಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೪೩. 5. ಸ್ವೀಕರಿಸು, ತೆಗೆದುಕೊ. "ಪ್ರತಿಪತ್ತುಮಜ್ಞಃ ಪಠತೇ ಚ  
ನ ತವ ನೃಪಯೋಗ್ಯಮರ್ಹಣಮ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೨೨. 6. ಪ್ರಮಾಣ  
ದಿಂದ ಸ್ಥಿರಪಡಿಸು, ಸತ್ಯದಿಂದ ಸ್ಥಾಪಿಸು, ನಿರ್ದೋಷದಿಂದ  
ಸಿದ್ಧಪಡಿಸು. "ಉಕ್ತಮೇವಾರ್ಥಮುದಾಹರಣೇನ ಪ್ರತಿಪಾದಯತಿ". 7. ಕೊಡು, ದಾನಮಾಡು. "ಗುಣವತೇ ವರಾಯ ಕನ್ಯಾ  
ಪ್ರತಿಪಾದನೀಯಾ" ಶಾಕುಂ ೪. "ಅಶ್ವಿಮ್ಯಃ ಪ್ರತಿಪಾದ್ಯಮಾನ-  
ಮನಿಶಂ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ ವೃದ್ಧಿ ಪರಾಮ್" ಭರ್ತುಂ ೨-೧೬. 8. ಗ್ರಹಿಸು,  
ಹಿಡಿದುಕೊ, ಮುಟ್ಟಿಯಿಂದ ಹಿಡಿ. "ರಥಂ ಸುಮನ್ವಪ್ರತಿಪನ್ನ-  
ರವಿಮಾರೋಪ್ಯ ವೇದೇಹಸುತಾಂ ಪ್ರತಸ್ಥೇ" ರಘುಂ ೧೪-೪೭.

9. ಅಂಗೀಕರಿಸು, ಒಪ್ಪು, ಸಮ್ಮತಿಸು. "ಕಾರ್ಯಂ ತ್ವಯಾ ನಃ  
ಪ್ರತಿಪನ್ನಕಲ್ಪಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೧೪. "ನಿರ್ವಾಹಃ ಪ್ರತಿಪನ್ನವಸ್ತುಷು  
ಸತಾಮೇತದ್ವಿ ಗೋತ್ರವ್ರತಮ್" ಮುದ್ರಾಂ ೨-೧೮.

(10) ವಿ+ಪ್ರತಿ+ಪದ=ವಿಪ್ರತಿಪದ್ಯತೇ. ವಿಪ್ರತಿಪತ್ತಿಃ.

ತತ್ತ್ವವನ್ನು ತಿಳಿಯಲಾಗದೆ ಸಂಶಯಪಡೆ. ಪರ್ವತೋ  
ವಹ್ನಿಮಾನ್ ಪರ್ವತೋ ವಹ್ನಿಭಾವವಾನ್ ಇತಿ ವಾದಿಪ್ರತಿವಾದಿನೋ-  
ವದಿನ ಮಧ್ಯಸ್ಥಸ್ಯ ತತ್ತ್ವಾವधारणे ವಿಪ್ರತಿಪತ್ತಿಃ."

(11) ವಿ + ಪದ = ವಿಪದ್ಯತೇ. ವಿಪನ್ನಃ. 1. ಮೃತಿ

ಹೊಂದು, ಮರಣ ಹೊಂದು. "ಹಾ ತಾತ ಏಷ ತೇ ನರೇಂದ್ರ-  
ಚಿತ್ತಾರಾಧನೋಪಕರಣಂ ಜನೋ ವಿಪದ್ಯತೇ" ಮಾಲತೀಂ ೪. 2. ತೊಂದರೆಯಾಗು. "ಸ ಬಂಧುರ್ಯೋ ವಿಪನ್ನಾನಾಮಾಪ-  
ದುದ್ಧರಣಕ್ಷಮಃ" ಹಿತೋಂ.

(12) ಸಮ್ + ಪದ = ಸಂಪದ್ಯತೇ. ಸಂಪತ್ಸ್ಯತೇ. ಸಂಪತ್.

ಸಂಪತ್ತಿಃ. "ಸಂಪತ್ಸ್ಯತೇ ವಃ ಕಾಮೋಷ್ಯಂ ಕಾಲಃ ಕಶ್ಚಿತ್  
ಪ್ರತೀಕ್ಷ್ಯತಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೨-೪೪.

ಪದ ಪಡೆ (ನಂ) 1. ವ್ಯವಸಾಯ, ಉದ್ಯೋಗ. ಪದ (ಗತೌ)

"ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). 2. ತ್ರಾಣ, ರಕ್ಷಣೆ. 3. ಸ್ಥಾನ.  
ಜಾಗ. "ದಶೈ ಪದಂ ವ್ಯೋಮಿನಿ ಸುರಾರಿವಾಹಿನೀರ್ಮಯುರ್ಯೇತನ್ಯನಿ-  
ವಾರಿತಾತಪಾ" ಕುಮಾಂ ೧೪-೧೪. "ಅವಿವೇಕಃ ಪರಮಾಪದಾಂ  
ಪದಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೩೦. 4. ವಸ್ತು. "ಅನಾರತಂ ತೇನ  
ಪದೇಷು ಲಮ್ಬಿತಾ ವಿಭಜ್ಯ ಸಮ್ಯಗ್ವಿನಿಯೋಗಸತ್ಕ್ರಿಯಾಃ" ಕಿರಾಂ  
೧-೧೪. 5. ಪಾದ, ಚರಣ, ಕಾಲು. "ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ ತ್ವರಾಂ  
ವ್ರಜ ಪದೇಃ ಸ್ವಲಿತೈರಯಂ ತೇ ಖೇದಂ ಗಮಿಷ್ಯತಿ ಗುಹ್ನಿತರಾಂ  
ನಿತಮ್ಬಃ" ರತ್ನಾಂ ೨-೧೬. 6. ಕಾಲಿನ ಹೆಜ್ಜೆ, ಕಾಲಿನ  
ಆಡಿ. "ದರ್ಭಾಙ್ಕುರೇಣ ಚರಣಃ ಕ್ಷತ ಇತ್ಯಕಾಂಡೇ ತನ್ವೀ ಸ್ಥಿತಾ  
ಕತಿಚಿದೇವ ಪದಾನಿ ಗತ್ವಾ" ಶಾಕುಂ ೨-೧೨. 7. ಪಾದ  
ನಾಸ, ಕಾಲಡಿಯಿಟ್ಟು ನಡೆಯುವುದು. "ಆರದ್ವಜ-  
ಶ್ಚತುರ್ಲಿಂಗಪಾತಮುಚ್ಚೇಶ್ವರಂ ಚಕಾರ ಪದಮರ್ಧಪುಲಾಯಿತೇನ"  
ಮಾಘಂ ೪-೧೦. 8. ಹೆಜ್ಜೆಯಿಟ್ಟು ಜಾಗ, ಹೆಜ್ಜೆಯ  
ಗುರುತು. "ಪದಂ ತುಷಾರಸ್ತುತಿಧೌತರಕ್ತಂ ಯಸ್ಮಿನ್ನದ್ಭೂತಾಪಿ  
ಹತದ್ವಿಪಾನಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೬. 9. ಅಧಿಕಾರ, ಗೌರವ  
ಸ್ಥಾನ. "ಯಾನ್ತ್ಯೇವಂ ಗೃಹಿಣಿಪದಂ ಯುವತಯೋ ವಾಮಾಃ ಕುಲಸ್ಯಾಧಯಃ"  
ಶಾಕುಂ ೪-೧೭. 10. ಗುರುತು, ಚೆಹ್ನೆ. "ವಾಮಶ್ರಾಸ್ಯಾಃ  
ಕರೂಪದೇಮನ್ಯಮಾನೋ ಮದೀಯಮುಕ್ತಾಜಾಲಂ ಚಿರಪರಿಚಿತಂ  
ತ್ಯಾಜಿತೋ ದೇವಗತ್ಯಾ" ಮೇಘಂ ೨-೩೩. 11. ಪಾಜ, ನೆಪ.  
"ದ್ರುತತರಪದಪಾತಮಾಪಪಾತ ಪ್ರಿಯಮಿತಿ ಕೋಪಪದೇನ ಕಾಪಿ  
ಸಖ್ಯಾ" ಮಾಘಂ ೭-೧೪. 12. ಕಾರಣ. "ವಸ್ತುಕೇಕಮಪಿಹ  
ವಾಙ್ಮಿತಫಲಪ್ರಾಪ್ತೇಃ ಪದಂ ಕಿಂ ಪುನಃ" ರತ್ನಾಂ ೧-೪.



13. ವಾಸಸ್ಥಾನ. "ನಿಯತಾ ಲಘುತಾ ನಿರಾಯತೇರಮರೀಯಾನ್  
ನ ಪದಂ ನೃಪಶ್ರಿಯಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೧೪। 14. ಪದವಿ,  
ಅಧಿಕಾರಸ್ಥಾನ. "ಕೇನಾಮ್ಯಸುಯಾ ಪದಕಾಡ್ಧಿಕ್ಷಿಣಾ ತೇ ನಿತಾಂತ-  
ದೀರ್ಘಜನಿತಾ ತಪೋಭಿಃ" ಕುಮಾಂ ೩-೪। 15. ವಾಕ್ಯ.  
"ತ್ವಾಮುಕ್ತಕಾಂತಾವಿರಚಿತಪದಂ ಮನ್ಮುಖೇನೇದಮಾಹ" ಮೇಘಂ ೨-೪೦।  
16. ಗೋಚರ, ವಿಷಯ. "ಪದಂ ದೃಶಃ ಸ್ಯಾಃ ಕಥಮೀಶ  
ಮಾದೃಶಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೩೭। 17. ಸಾಯಕ, ಬಾಣ.  
18. ಕಿರಣ. 19. ಒಳಗಿನ ಪ್ರದೇಶ, ಅಂತರ. ಅವಕಾಶ.  
"ಪದಂ ಸ್ಥಾನೇ ಶರೇ ತ್ರಾಣೇ ಪಾದಾಡ್ಧೇ ಪಾದಚಿಹ್ನಯೋಃ। ಶಂಘೇ-  
ವಸ್ತುವಾಕ್ಯೇಷು ವ್ಯವಸಾಯಾಪದೇಶಯೋಃ" ವೈಜಂ ೧। 20. ಶ್ಲೋಕದ  
ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ, ಒಂದು ಪಾದ. "ಶ್ಲೋಕಪಾದಃ  
ಪದಂ ಕೇचित್ಸುಪ್ತಿದಂತಮಥಾಪರೇ। ಪರೇವಾಂತರವಾಕ್ಯೈಕಸ್ವರೂಪಂ  
ಪದಮುಚಿರೇ" ನಾಟಕಪ್ರದೀಪಃ। 21. ವೇದವಾಕ್ಯಗಳ ಪದ  
ಗಳನ್ನು ಬಿಡಿಸಿ ಹೇಳುವುದು. 22. ಸುಬಂತ್, ಮತ್ತು  
ತಿಜನ್ತ್ ರೂಪಗಳು. "ಸುಪ್ತಿದಂತಂ ಪದಮ್" (೧-೪-೧೪)।  
ಪ್ರಯೋಗಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ ಅರ್ಥವತ್ತಾದ ವರ್ಣಗಳು  
ಪದವಾಗುವುದು. "ವರ್ಣಾಃ ಪದಂ ಪ್ರಯೋಗಾರ್ಹಿನಿವೃತ್ತಿಕಾರ್ಥ-  
ಬೋಧಕಾಃ" ಸಾಂ ೬೦ ೨-೨। "ಪದಂ ವ್ಯಾಜಾಡ್ಧಿಕ್ಷಿತಚ್ಚಿಹ್ನ-  
ಸ್ಥಾನತ್ರಾಣಾಂಶುಲಕ್ಷಮಸು। ವ್ಯವಸಾಯೇ ಸುಪ್ತಿದಂತೇ ಸಾಯಕೇ  
ವಸ್ತುವಾಕ್ಯಯೋಃ" ನಾನಾರ್ಥರಂ ೧। ಪದವು ನಾಮ ಅಥವಾ  
ಉಪಸರ್ಗ ಮತ್ತು ನಿಪಾತಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ.  
ನಾಮಪದವು (1) ರೂಢ (2) ಲಕ್ಷಕ (3) ಯೋಗರೂಢ  
ಮತ್ತು (4) ಯೌಗಿಕಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. [ವಿವರಕ್ಕೆ  
"ನಾಮನ್" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ತಿಜನ್ತ್ ಪದವು ಅಥವಾ  
ವೆನಿಸುವುದು. ಕರೋತಿ ಪಚತಿ ಇತ್ಯಾದಿ. ಲಘುಶಬ್ದೇದುಃಖಂ।  
ಪ್ರ ಪರಾ ಅಪ ಸಮ್ ಇತ್ಯಾದಿಗಳು ಉಪಸರ್ಗಗಳು. ಅದ್ರವ್ಯ  
ವಾಚಕ ಚಾದಿ ಗಳು ನಿಪಾತಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ ಪದಗಳು, ಲಿಂಗ  
ಸಂಖ್ಯಾ ಮತ್ತು ಕಾರಕಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದುದು ದ್ರವ್ಯ.  
ಚಾದಿಗಳು ಅದ್ರವ್ಯ ವಾಚಕಗಳು. ನೈಯಾಯಿಕರು ಮುಖ್ಯ  
ಮತ್ತು ಗೌಣಗಳೆಂದು ಪದವನ್ನು ಎರಡು ವಿಧವಾಗಿ  
ಹೇಳುವರು. ಮುಖ್ಯಪದವು ಯೌಗಿಕ ರೂಢ ಯೋಗ  
ರೂಢ ಮತ್ತು ಯೌಗಿಕರೂಢಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ.  
ಪಾಚಕ ಮೊದಲಾದುದು ಯೌಗಿಕ. ಗೌಃ ಮಂಡಪಮ್ ಮೊದ-  
ಲಾದುವು ರೂಢ. ಪಕ್ಷಜ ಮೊದಲಾದುದು ಯೋಗರೂಢ.  
ತದ್ವಿದ ಮೊದಲಾದುದು ಯೌಗಿಕರೂಢ. ಅಲಂಕಾರಿಕರು  
ವಾಚಕ ಲಕ್ಷಕ ಮತ್ತು ವೈಜಯಿಕಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ  
ವಾಗಿ ಹೇಳುತ್ತಾರೆ.

ಪದಕ ಪದಕ (ಪುಂ) 1. ವೇದದ ಪದಪಾಠವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ  
ಮಾಡುವವನು. 2. ಪದಪಾಠವನ್ನು ತಿಳಿದವನು.

ಪದಮಾಪೀತೇ ವೇದ ವಾ "ವುನ್" (೪-೨-೬೧)। 3. ಕಂಠಾಭರಣ,  
ಅಡ್ಡಿ ಗೆ ಮತ್ತು ಸರಗಳಿಗೆ ಹಾಕುವ ಪದಕ.

ಪದಕ್ರಮಕ ಪದಕ್ರಮಕ (ಪುಂ) ವೇದದ ಪದ ಮತ್ತು ಕ್ರಮ  
ಪಾಠಗಳನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವ ಮತ್ತು ತಿಳಿದಿರು-  
ವವನು. ಪದಕ್ರಮಾ ವೇತ್ಯಾಪೀತೇ ವಾ "ವುನ್" (೪-೨-೬೧)।

ಪದಗ ಪದಗ (ಪುಂ) ಪದಾತಿ, ಕಾಲಾಳು. ಪಾದಾಭ್ಯಾಂ ಗಚ್ಛತಿ  
— ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಡಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)। ಪಾದಸ್ಯ  
"ಪದ" ಆದೇಶಃ (೬-೩-೪೨)।

ಪದಚ್ಛೇದ ಪದಚ್ಛೇದ (ಪುಂ) ಪದಗಳನ್ನು ಬಿಡಿಸುವುದು,  
ಪದಗಳನ್ನು ಬೇರ್ಪಡಿಸುವುದು.

ಪದಚ್ಯುತ ಪದಚ್ಯುತ (ವಿಂ) ಅಧಿಕಾರ ಸ್ಥಾನದಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ  
ಇಳಿದವನು, ಪದಾತ್ ಚ್ಯುತಃ।

ಪದನ್ಯಾಸ ಪದನ್ಯಾಸ (ಪುಂ) 1. ಪಾದನಿಕ್ಷೇಪ, ಕಾಲಡಿ  
ಯನ್ನಿಡುವುದು, ಹೆಜ್ಜೆಯಿಡುವುದು. 2. ವಾಕ್ಯಗಳನ್ನು  
ಬರೆಯುವುದು.

ಪದಪಡ್ಧಿ ಪದಪಡ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಲಿನ ಹೆಜ್ಜೆಗಳ  
ಸಾಲು. ಪದಾನಾಂ ಪಡ್ಧಿಃ। "ದ್ವಾರೇಸ್ಯ ಪಾಂಡುಸಿಕತೇ  
ಪದಪಡ್ಧಿರ್ದೇಶಯತೇಽಭಿನವಾ" ಶಾಕುಂ ೩-೪। 2. ಪದಗಳ  
ಸಾಲು, ಪದಗಳ ಅನುಪೂರ್ವ. "ಅನುಪಮಶಮದೀಪ್ತತಾ-  
ಗರೀಯಾನ್ ಕೃತಪದಪಡ್ಧಿರಥವರ್ಣೇವ ವೇದಃ" ಕಿರಾಂ ೧೦-೧೦।

ಪದಪಾಠ ಪದಪಾಠ (ಪುಂ) ವೇದಮಂತ್ರಗಳ ಪದಗಳನ್ನು  
ಬಿಡಿಸಿ ಹೇಳುವ ಗ್ರಂಥ.

ಪದಭಜನ ಪದಭಂಜನ (ನಂ) ನಿರುಕ್ತ ಗ್ರಂಥ.

ಪದಮಂಜರೀ ಪದಮಂಜರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹರದತ್ತ ಎರಚಿತ  
ವಾದ ಒಂದು ವ್ಯಾಕರಣ ಗ್ರಂಥ.

ಪದರಥಿ ಪದರಥಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಪ್ಪಲಿ, ಪಾದರಕ್ಷೆ.

ಪದವಿ ಪದವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. ಪದವೀಜನಯಾ  
— ಪದ (ಗತೌ) "ಅವಿಃ"। ವಾ "ಡೀಃ" (ಗಂ ೪-೧-೪೪)।  
ಪಕ್ಷೇ -ವಿಃ-ವಿಃ. "ಉತ್ಸೃಷ್ಟಲೀಲಾಗತಿರಾಗವಾಕ್ಸಾದಲಕ್ಷಕಾಕ್ಷಾ  
ಪದವಿಂ ತತಾನ" ಕುಮಾಂ ೭-೪೮। 2. ಅಧಿಕಾರಸ್ಥಾನ.  
3. ಸದಾಚಾರ, ಸದ್ವರ್ತನೆ, ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆ.

ಪದಾಂತಿ ಪದಾಂತಿ (ನಂ) ಕಾಲು ಮತ್ತು ಮಂಡಿಗಳು.  
ಪಾದೌ ಚ ಅಂತಿವಂತೌ ಚ "ಅಚ್" ಪಾದಸ್ಯ ಪದ್ಮಾವಶ್ರ ನಿಪಾಂ  
(೪-೪-೭೭)।

ಪದಾಜಿ ಪದಾಜಿ (ಪುಂ) 1. ಪದಾತಿ, ಕಾಲಾಳು, ಕಾಲ್ಪಲ.  
ಪಾದಾಭ್ಯಾಮಜತಿ — ಅಜ (ಗತಿಕೋಪಣಯೋಃ) "ಇಙ್" (ಉಂ  
೪-೧-೩೧)। ಪಾದಸ್ಯ "ಪದ" ಆದೇಶಃ (೬-೩-೪೨)।  
2. ಯುದ್ಧ. 3. ರಸ್ತೆ. "ಪದಾಜಿಯುಧಿ ಮಾರ್ಗಂ ಚ" ವೈಜಂ ೧।



**ಪದಾತಿ ಪದಾತಿ** (ಪುಂ) ಕಾಲಾಳು, ಕಾಲ್ಪುಲ. ಪಾದಾಭ್ಯಾಮತತಿ  
—ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೆ) “ಇನ್” (ತಂ ೪-೧೩೧) ।  
ಪಾದಸ್ಯ “ಪದ” ಆದೇಶ: (೬-೩-೪೨) । “ಪತಿ: ಪದಾತಿ  
ರಥಿನಂ ರಥೇಶ: ತುರಗ್ಗಸಾದೀ ತುರಗಾಧಿರೂಢಮ್” ರಘುಂ ೭-೩೭ ।  
“ಆಲಾಪೇರಿವ ಗಾಂಧರ್ವಮದೀಪಿತ ಪದಾತಿभि:” ಮಾಘಂ ೧೯-೪೭ ।

**ಪದಾತಿಕ ಪದಾತಿಕ** (ಪುಂ) ಕಾಲಾಳು, ಕಾಲ್ಪುಲ. ಪದಾತಿ  
ಸ್ವಾರ್ಥೆ “ಕ:” ।

**ಪದಾರ ಪದಾರ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಲಿನ ಧೂಳು. 2. ಕಾಲಿನ  
ಮೇಲುಭಾಗ. “ಪದಾರ: ಪಾದಧೂಲೌ ಸ್ಥಾತ್ ಪಾದಾಲಿನ್ದೇಽಪಿ  
ಪುಸ್ಯಯಮ್” ಮೇದಿಂ ।

**ಪದಾರ್ಥ ಪದಾರ್ಥ** (ಪುಂ) ಶಬ್ದದಿಂದ ಹೇಳಲ್ಪಡುವ ವಸ್ತು,  
—ದ್ರವ್ಯ ಮೊದಲಾದುದು. ಪದಸ್ಯಾರ್ಥ: । ಜಾತಿ ಆಕೃತಿ  
ಮತ್ತು ವ್ಯಕ್ತಿ ಈ ಮೂರೂ ಸೇರಿ ಪದಾರ್ಥವೆನಿಸುವುದು.  
“ಘಟಮಾನಯ” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಘಟತ್ವಾತ್ಮಕ ಜಾತಿ ಕಂಬುಗ್ರೀವಾದಿ  
ಆಕೃತಿ ತದ್ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಒಂದು ವ್ಯಕ್ತಿವಿಶೇಷವು ಘಟ  
ಪದದ ಅರ್ಥ. ಪದಾರ್ಥವು ಭಾವ: ಮತ್ತು ಅಭಾವ:  
ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಭಾವ ಪದಾರ್ಥಗಳು (1) ದ್ರವ್ಯಮ್  
(2) ಗುಣ: (3) ಕರ್ಮ (4) ಸಾಮಾನ್ಯಮ್ (5) ವಿಶೇಷ: ಮತ್ತು  
(6) ಸಮವಾಯ: ಎಂದು ಆರು ವಿಧ. ಅಭಾವ ಪದಾರ್ಥಗಳು  
(1) ಪ್ರಾಗಭಾವ: (2) ಪ್ರಧ್ವಂಸಾಭಾವ: (3) ಅತ್ಯಂತಾಭಾವ:  
ಮತ್ತು (4) ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಭಾವ: ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ಇದು  
ತಾರ್ಕಿಕರ ಮತ.

ಅದ್ವೈತ ಸಿದ್ಧಾಂತದಲ್ಲಿ ತತ್ವಮ್ (ಚಿತ್) ಮತ್ತು  
ಅತತ್ವಮ್ (ಅಚಿತ್) ಎಂದು ಪದಾರ್ಥವು ಎರಡು ವಿಧ.  
ಯಾವ ಕಾಲದಲ್ಲಿಯೂ ಬಾಧೆಯಿಲ್ಲದ ಮತ್ತು ನಿವೃತ್ತಿ  
ಯಿಲ್ಲದ ಶಾಶ್ವತ ಬ್ರಹ್ಮನು ತತ್ತ್ವ. ಇವನು ಜ್ಞಾನಾನಂದ  
ಸ್ವರೂಪನು. ನಿತ್ಯ ಶುದ್ಧ ಬುದ್ಧ ಮುಕ್ತಸ್ವರೂಪನು.  
ಎಲ್ಲಾ ವಿಧದಲ್ಲಿಯೂ ಇದಕ್ಕೆ ವ್ಯತಿರಿಕ್ತವಾದುದು ಅತತ್ತ್ವ.  
ಇದು ಅನಿರ್ವಾಚ್ಯ ಮತ್ತು ಅತ್ಯಂತಾಸತ್ ಎಂದು ಎರಡು  
ವಿಧ. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾದ ಗವಾಶ್ವಘಟಪಟಾದಿಗಳು ಅನಿ  
ರ್ವಾಚ್ಯ. ಶಶಶೃಂಗ ಕೂರ್ಮರೋಮ ಮೊದಲಾದುವು  
ಅತ್ಯಂತಾಸತ್ ಪದಾರ್ಥ.

ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತ ಸಿದ್ಧಾಂತದಲ್ಲಿ ಚಿತ್ ಅಚಿತ್ ಮತ್ತು  
ईश्वर: ಎಂದು ಪದಾರ್ಥಗಳು ಮೂರು.

ದ್ವೈತ ಸಿದ್ಧಾಂತದಲ್ಲಿ ಸ್ವತನ್ತ್ರ: ಮತ್ತು ಪರತನ್ತ್ರ:  
ಎಂದು ಪದಾರ್ಥಗಳು ಎರಡು.

ಶೈವದರ್ಶನದಲ್ಲಿ (1) ಪತಿ: (2) ಪಶು: ಮತ್ತು  
(3) ಪಾಶ: ಎಂದು ಪದಾರ್ಥಗಳು ಮೂರು. “ಕೇವನ

ಮಾಹೇಶ್ವರಾ: ಕರ್ಮಾದಿಸಾಪೇಕ್ಷ: ಪರಮೇಶ್ವರ: ಕಾರಣಾಮಿತಿ ಪಕ್ಷಂ  
ಕಕ್ಷೀಕುರ್ವಾಣಾ: ಪಕ್ಷಾಂತರಮುಪಕ್ಷಿಪಂತಿ ಪತಿಪಶುಪಾಶಮೇದಾಸ್ತ್ರಯ:  
ಪದಾರ್ಥಾ:” ಇತಿ । “ತ್ರಿಪದಾರ್ಥ ಚತುಷ್ಟಾದಂ ಮಾಹಾತನ್ತ್ರಂ  
ಜಗದ್ಗುರು: । ಸೂತ್ರೇಣೈಕೇನ ಸಂಕ್ಷಿಪ್ಯ ಪ್ರಾಹ ವಿಶ್ವರತ: ಪುನ:”  
ಸಂ ೬೦ ಸಂ ।

ವೈಶೇಷಿಕದರ್ಶನಕಾರರು (1) ದ್ರವ್ಯಮ್ (2) ಗುಣ:  
(3) ಕರ್ಮ (4) ಸಾಮಾನ್ಯಮ್ (5) ವಿಶೇಷ: ಮತ್ತು (6)  
ಸಮವಾಯ: ಎಂದು ಆರು ಪದಾರ್ಥಗಳು ಎಂದು ಹೇಳು  
ತ್ತಾರೆ.

ಸಾಂಖ್ಯ ಮತ್ತು ಸಾತಂಜಲ ದರ್ಶನಕಾರರು  
(1) ದ್ರವ್ಯಮ್ (2) ಗುಣ: (3) ಕರ್ಮ ಮತ್ತು (4) ಸಾಮಾನ್ಯಮ್  
ಎಂದು ಪದಾರ್ಥಗಳು ನಾಲ್ಕು ಮಾತ್ರ ಎಂದು ಹೇಳು  
ತ್ತಾರೆ.

ಸಾಂಭಾಕರ ಮತದಲ್ಲಿ (1) ದ್ರವ್ಯಮ್ (2) ಗುಣ:  
(3) ಕರ್ಮ (4) ಸಾಮಾನ್ಯಮ್ (5) ಸಹ್ಯಾ (6) ಸಮವಾಯ:  
(7) ಸಾದೃಶ್ಯಮ್ ಮತ್ತು (8) ಶಕ್ತಿ: ಎಂದು ಎಂಟು ಪದಾರ್ಥ  
ಗಳನ್ನು ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುತ್ತಾರೆ.

**ಪದಾಲಿಕ ಪದಾಲಿಕ** (ಪುಂ) ಕಾಲಿನ ಮೇಲುಭಾಗ. ಪದಸ್ಯ  
ಅಲಿಕಮಿವ ।

**ಪದಿಕ ಪದಿಕ** (ಪುಂ) ಪದಾತಿ, ಕಾಲಾಳು. ಪಾದಾಭ್ಯಾಂ  
ಚರತಿ—“ಠನ್” (೪-೪-೧೦) । ಪಾದಸ್ಯ ಪದ್ಮಾಬ:  
(ವಾಂ ೬-೩-೪೩) ।

**ಪದ್ಗ ಪದ್ಗ** (ಪುಂ) ಪದಾತಿ, ಕಾಲಾಳು. ಪದ್ಮಾಂ ಗಚ್ಛತಿ—  
ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ಠ:” (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) ।

**ಪದ್ಧತಿ ಪದ್ಧತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. ಪಾದಾಭ್ಯಾಂ  
ಹತಿ:—ಪಾದಸ್ಯ ಪದ್ಮಾಬ: (೬-೩-೪೪) । “ಪಥ: ಶ್ರುತೇ-  
ದಂಶಯಿತಾರ ईश्वरा ಮಲೀಮಸಾಮಾದದತೇ ನ ಪದ್ಧತಿಮ್” ರಘುಂ  
೩-೪೬ । 2. ಪಜ್ಜೆ, ಸಾಲು, ಶ್ರೇಣಿ. “ಪದ್ಧತಿ:  
ಪಙ್ಕ್ತಿವರ್ಮನೋ:” ಮೇದಿಂ ।

**ಪದ್ಧಿಮ ಪದ್ಧಿಮ** (ನಂ) ಕಾಲು ಶೀತವಾಗಿರುವುದು, ಕಾಲು  
ತಣ್ಣಗಿರುವುದು. ಪಾದಸ್ಯ ಹಿಮಮ್—ಪಾದಸ್ಯ ಪದ್ಮಾಬ:  
(೬-೩-೪೪) ।

**ಪದ ಪದ** (ಪುಂ) 1. ಕಮಲ, ತಾವರೆ. ಪದ್ಯತೇ—ಪದ  
(ಗತೌ) “ಮನ್” (ತಂ ೧-೧೩೭) । “ಅಧಾರಿ ಪದ್ಯೇ  
ತದಙ್ಗಿಣಾ ಧೃಣಾ ಕ್ವ ತಚ್ಛಯಚ್ಛಾಯಲಬೋಽಪಿ ಪಲ್ಲವೇ”  
ನೈಷಂ ೧-೨೦ । (ನಂ) 2. ಆನೆಯ ಮುಖ ಮತ್ತು  
ಸೊಂಡಿಲುಗಳ ಮೇಲೆ ಇರುವ ಬಣ್ಣ ಬಣ್ಣದ ಚುಕ್ಕಿಗಳು.  
3. ಸೇನೆಗಳ ಒಂದು ವ್ಯೂಹ, ಪದ್ಮಾಕಾರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲಿಸುವ



ಸೇನೆಗಳ ಒಂದು ಗುಂಪು. "ಪದ್ವೇನ ಚೈವ ವ್ಯುಹೇನ ನಿವಿಶೇತ ಸದಾ ಸ್ವಯಮ್" ಮನುಂ ೭-೧೮೮. 4. ದೇಹದೊಳಗಿರುವ ನಾಡಿ, ಚಕ್ರರೂಪವಾದ ಕಮಲ, ಬ್ರಹ್ಮರಂಧ್ರದಲ್ಲಿರುವ ಸಹಸ್ರದಳಾತ್ಮಕವಾದ ಕಮಲ. "ಕಣ್ಣೆ ಸ್ಯಾತ್ ಷೋಡಶದಲಂ ಭ್ರೂವ್ಯಂಘ್ರೀತಿಸಂಮಿತಮ್ | ಸಹಸ್ರದಲಮಾಖ್ಯಾತಂ ಬ್ರಹ್ಮರಂಧ್ರೇ ತು ಪಕ್ಷ್ಮಜಮ್" | 5. ಕುಬೇರನ ನವನಿಧಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. 6. ಒಂದು ಸಂಖ್ಯೆ, 100000000000000000000 7. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. "ಪದ್ಮ: ಸ್ಯಾತ್ ಪನ್ನಗೇ ವ್ಯುಹೇ ನಿಧಿ ಸಂಖ್ಯಾಂತರೇಷ್ಟಜೇ | ಪದ್ಮಕೇ ಬಿಂದುಜಾಲೇಽಪಿ" ವಿಶ್ವಂ | 8. ಹಳದಿ ಕಪ್ಪು ಮತ್ತು ಬಿಳುಪು ಇವುಗಳ ಮಿಶ್ರವರ್ಣ. 9. ಮೈಮೇಲಿನ ಕಪ್ಪು ಮಚ್ಚೆ, ಸಂಗಾತಿಯೆಂಬ ಕಪ್ಪು ಚುಕ್ಕೆ. 10. ಒಂದು ವಿಧ ರತಿಬಂಧ.

**ಪದ್ಯಕ ಪದ್ಮಕ (ನಂ)** 1. ಆನೆಯ ಮುಖ ಮತ್ತು ಸೊಂಡಿಲುಗಳ ಮೇಲಿರುವ ಹೂವಿನ ಆಕಾರದ ಗುರುತು. 2. ಪದ್ಮಾಕಾರದಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲಿಸಿರುವ ಸೈನ್ಯದ ಗುಂಪು. ಪದ್ಮಮಿವ "ಕನ್" (೪-೩-೯೬) | 3. ಒಂದು ಮೂಲಕೆ.

**ಪದ್ಯಕರ ಪದ್ಮಕರ (ಪುಂ)** 1. ಪದ್ಮವನ್ನು ಹಸ್ತದಲ್ಲಿ ಧರಿಸಿರುವ ವಿಷ್ಣು. ಪದ್ಮ ಕರೇಷ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಕೈಯಲ್ಲಿ ಕಮಲವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ.

**ಪದ್ಯಕಂದ ಪದ್ಮಕಂದ (ಪುಂ)** ತಾವರೆಯ ಗಡ್ಡೆ.

**ಪದ್ಯಕಿನ್ ಪದ್ಮಕಿನ್ (ಪುಂ)** ಗಜ, ಆನೆ.

**ಪದ್ಯಚಾರಿಣಿ ಪದ್ಮಚಾರಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಬೆಟ್ಟದಾವರೆ, ಅಂತರದಾವರೆ.

**ಪದ್ಯಜ ಪದ್ಮಜ (ಪುಂ)** 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಪದ್ಮಾ-ಜ್ಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತಭವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೯೮) | ೨. ಕಮಲದಿಂದ ಉಂಟಾದ. ೩. ಕಮಲದಿಂದ ಉಂಟಾದ.

**ಪದ್ಯತನ್ತು ಪದ್ಮತಂತು (ಪುಂ)** ತಾವರೆ ದಂಟಿನ ನಾರು, ತಾವರೆ ದಂಟಿನ ಸಣ್ಣ ಎಳೆ.

**ಪದ್ಯನಾಭ ಪದ್ಮನಾಭ (ಪುಂ)** ವಿಷ್ಣು. ಪದ್ಮ ನಾಭಿ ಯಸ್ಯ | "ಅವ್" (೪-೪-೭೫) | "ಪದ್ಮನಾಭೋಽರಿವಿಂದಾಕ್ಷ: ಪದ್ಮಗರ್ಭ: ಶರೀರಭೃತ್" ವಿಂ ಸಂ | "ಪದ್ಮನಾಭಚರಣಾಕ್ಷಿತಾಶಮಸು ಪ್ರಾಪ್ತವತ್ಸವಮೃತವಿಪ್ರುಷೋ ನವಾ:" ಕುಮಾಂ ೮-೨೩ |

**ಪದ್ಯನಾಲ ಪದ್ಮನಾಲ (ನಂ)** ತಾವರೆಯ ದಂಟು.

**ಪದ್ಯನೇತ್ರ ಪದ್ಮನೇತ್ರ (ವಿಂ)** ಕಮಲದಂತೆ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ. ಪದ್ಮಮಿವ ನೇತ್ರಂ ಯಸ್ಯ |

**ಪದ್ಯಪತ್ರ ಪದ್ಮಪತ್ರ (ನಂ)** 1. ತಾವರೆಯ ದಳ. 2. ನೆಲ ದಾವರೆಯ ಗಡ್ಡೆ.

**ಪದ್ಯಪಾಣಿ ಪದ್ಮಪಾಣಿ (ಪುಂ)** 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. 2. ಬುದ್ಧದೇವ. 3. ಸೂರ್ಯ. 4. ವಿಷ್ಣು. ಪದ್ಮ ಪಾಣಿ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 5. ಕಮಲವನ್ನು ಕೈಯಲ್ಲಿ ಹಿಡಿದಿರುವ.

**ಪದ್ಯಪುರಾಣ ಪದ್ಮಪುರಾಣ (ನಂ)** ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಅಷ್ಟಾದಶ ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲೊಂದು.

ಈ ಪುರಾಣದಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಪಾದಿತವಾಗಿರುವ ವಿಷಯ : ಪುಲಸ್ತ್ಯಮುಖಿಯು ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯರಿಗೆ ಸೃಷ್ಟ್ಯಾದಿ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ಇತಿಹಾಸ ಮತ್ತು ಆಖ್ಯಾನಗಳೊಡನೆ ಹೇಳಿದ ಧರ್ಮಗಳು, ಪುಷ್ಕರದ ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ, ಬ್ರಹ್ಮ ಯಜ್ಞಕ್ರಮ ವೇದಪಾಠಲಕ್ಷಣ ದಾನಗಳ ವಿಷಯ ಪಾರ್ವತಿಯ ಕಲ್ಯಾಣ ತಾರಕಾಸುರವೃತ್ತಾಂತ ಇತ್ಯಾದಿ ಅನೇಕ ವಿಷಯಗಳು ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿ ಪ್ರತಿಪಾದಿತವಾಗಿವೆ.

**ಪದ್ಯಪ್ರಿಯಾ ಪದ್ಮಪ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಜರತ್ತಾರು ಮಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿ, ಮನಸಾದೇವಿ. 2. ಲಕ್ಷ್ಮಿ.

**ಪದ್ಯಬಂಧು ಪದ್ಮಬಂಧು (ಪುಂ)** 1. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. ಪದ್ಮಸ್ಯ ಬಂಧು: | 2. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 3. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. 4. ಹಗಲು.

**ಪದ್ಯಭೂ, -ಯೋನಿ -ಯೋನಿ (ಪುಂ)** ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಪದ್ಮಾತ್ ವಿಷ್ಣುನಾಭಿಕಮಲಾತ್ ಭವತಿ — ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೧೭೯) | ಪದ್ಮಂ ಯೋನಿರಸ್ಯ | **ಪದ್ಯಮುಖ ಪದ್ಮಮುಖ (ವಿಂ)** ಕಮಲದಂತೆ ಮುಖವುಳ್ಳ. ಪದ್ಮಮಿವ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫೪) | -ಮುಖಿ -ಮುಖೀ. "ಚಿತ್ತೇ ಮಮೈಕ: ಸಕಲತ್ರಿಲೋಕೀಸಾರೋ ನಿಧಿ: ಪದ್ಮಮುಖ: ಸ ಏವ" ನೆಪಂ ೩-೮೧ |

**ಪದ್ಯಯೋನಿ ಪದ್ಮಯೋನಿ (ಪುಂ)** ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ.

**ಪದ್ಯರಾಗ ಪದ್ಮರಾಗ (ಪುಂ)** ಕೆಂಪು, ಮಾಣಿಕ್ಯ. ಕೆಂಪುಬಣ್ಣದ ಮಣಿ. ಪದ್ಮಸ್ಯೇವ ರಾಗೋಽಸ್ಯ | "ಅಶೋಕನಿಭಂತ್ಸಿತ-ಪದ್ಮರಾಗಮಾಕೃಷ್ಣಹೇಮದ್ಯುತಿಕರ್ಣಿಕಾರಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೫೩ | "ಪದ್ಮರಾಗದಲತವಿಠಾ" ಮಾಘಂ ೨-೨೯ |

**ಪದ್ಯರೇಖಾ ಪದ್ಮರೇಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಂಗೈಯಲ್ಲಿರುವ ಪದ್ಮಾಕಾರದ ಗೆರೆ. ಪದ್ಮಾಕಾರಾ ರೇಖಾ | ಪದ್ಮರೇಖೆಯು ಧನಲಾಭ ವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವುದು.

**ಪದ್ಯಲಾಙ್ಛನ ಪದ್ಮಲಾಙ್ಛನ (ಪುಂ)** 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. 2. ಸೂರ್ಯ. 3. ಕುಬೇರ. ಪದ್ಮ ಲಾಙ್ಛನಂ ಯಸ್ಯ | 4. ರಾಜ, ದೊರೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾಙ್ಛನಾ -ಲಾಙ್ಛನಾ. 5. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. 6. ಸರಸ್ವತಿ. 7. ತಾರೆ. "ಸ್ಯಾತ್ಪದ್ಮಲಾಙ್ಛನೋ ಲೋಕೇಶ್ವರೇ ಬ್ರಹ್ಮಣಿ ಭಾಸ್ಕರೇ | ಧನದೇ



ಚ ಸ್ತ್ರೀಯಾ ತಾರಾಲಕ್ಷ್ಮೀವಾಗ್ಧೇವತಾಸು ಚ" ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ)

8. ಪದ್ಮರೇಖೆಯುಳ್ಳ.

ಪದ್ಯವಾಸಿ ಪದ್ಮನಾಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲಕ್ಷ್ಮಿ. ಪದ್ಯವಾಸಿಯಾಃ ।

ಪದ್ಮಾ ಪದ್ಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. ಪದ್ಯಮಸ್ಯಸ್ಯಾಃ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) । "ಪದ್ಮಾ ಪದ್ಮಾತಪತ್ರೇಣ ಭೇಜೆ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯ-ದೀಕ್ಷಿತಮ್" ರಘುಂ ೪-೫ । 2. ಲವಂಗ. 3. ಬೆಟ್ಟದಾವರೆ. 4. ಮನಸಾದೇವಿ. 5. ಬೃಹದ್ರಥರಾಜನ ಮಗಳು. 6. ಕಲ್ಪಿದೇವನ ಪತ್ನಿ. 7. ಪಂಜಿಕೆ, ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ, ಟೀಕೆ. "ಪದ್ಯೋತ್ತರೀ ಪದ್ಯಕೇ ವ್ಯುಹನಿವಿಸಂಖ್ಯಾಂತರೇಷ್ವಜೇ । ನಾ ನಾಗೇ ಸ್ತ್ರೀ ಫಜ್ಜಿಕಾಶ್ರೀಚಾರತೀಪನ್ನಗೀಷು ಚ" ಮೇದಿಂ । 7. ಭಾರಂಗಿ ಗಿಡ. "ಹಜ್ಜಿಕಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಿ ಪದ್ಮಾ" ಅಮಂ ।

ಪದ್ಮಾಕರ ಪದ್ಮಾಕರ (ಪುಂ) 1. ತಾವರೆ ಹೂವುಗಳಿಂದ ತುಂಬಿದ ಕೆರೆ ಮುಂತಾದ ಜಲಾಶಯ. 2. ಸರೋವರ. ಪದ್ಮಾನಾಮಾಕರಃ । 3. ಕಮಲ ವನ. "ಪದ್ಮಾಕರಾಣಾಂ ಪರಿಷನ್ನಿವೇಶಂ" ಯಾದಂ ೧೨-೪ ।

ಪದ್ಮಾಕ್ಷ ಪದ್ಮಾಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಪದ್ಮಮಿವಾಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯ "ಷಕ್" (೪-೪-೧೧೩) । (ನಂ) 2. ತಾವರೆಯ ಬೀಜ. (ವಿಂ) 3. ತಾವರೆಯಂತೆ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಡೋ" (೪-೧-೪೧) । -ಕ್ಷಿ -ಕ್ಷೀ.

ಪದ್ಮಾಟ ಪದ್ಮಾಟ (ಪುಂ) ಚಕ್ರಮರ್ಧ ವೃಕ್ಷ, ತಗಜೆ ಗಿಡ. ಪದ್ಮಮಿವಾಟತಿ - ಅಟ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।

ಪದ್ಮಾಲಯ ಪದ್ಮಾಲಯ (ಪುಂ) 1. ಬೃಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಪದ್ಮಮಾಲಯೋ ಯಸ್ಯ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. -ಆಲಯಾ -ಅಲಯಾ. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. ಪದ್ಮಮಾಲಯೋ ಯಸ್ಯಾಃ । 3. ಲವಂಗ.

ಪದ್ಮಾವತೀ ಪದ್ಮಾವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. ಪದ್ಮಮಸ್ಯಾ ಅಸ್ತಿ "ಮತುಃ" (೪-೨-೧೪) । ಮಸ್ಯ ವಃ (೮-೨-೯) । ಸಂಜ್ಞಾयां ದೀರ್ಘಃ । 2. ವಿದರ್ಭ (ಈಗಿನ ಬೀರಾರ) ದೇಶದ ಒಂದು ನಗರ. "ಮನ್ವಿಣಾ ದೇವರಾತೇನ ಮಾಧವಂ ಪುತ್ರಮಾನ್ವೀಕ್ಷಿಕೀಶ್ರವಣಾಯ ಕುಣ್ಡಿನಪುರಾದಿಮಾಂ ಪದ್ಮಾವತೀಂ ಪ್ರಹಿಂವತಾ ಸುವಿಹಿತಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೧ । 3. ಒಂದು ನದಿ. 4. ಬೆಟ್ಟದಾವರೆ ಗಿಡ. 5. ಜರತ್ತಾರು ಋಷಿಯ ಪತ್ನಿ ಮನಸಾದೇವಿ.

ಪದ್ಮಾಸನ ಪದ್ಮಾಸನ (ಪುಂ) 1. ಬೃಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಪದ್ಮಮಾಸನಂ ಯಸ್ಯ । 2. ಪದ್ಮರೂಪವಾದ ಆಸನ. "ಪ್ರಣ-ಮತುಸ್ತೌ ಪಿತರೌ ಪ್ರಜಾಢಾಂ ಪದ್ಮಾಸನಸ್ಥಾಯ ಪಿತಾಮಹಾಯ" ಕುಮಾಂ ೭-೮೬ । 3. ಯೋಗಾಗವಾದ ಒಂದು ಆಸನ. ಎಡಮಂಡಿಯ ಮೇಲೆ ಬಲಗಾಲನ್ನೂ ಬಲಮಂಡಿಯ ಮೇಲೆ ಎಡಗಾಲನ್ನೂ ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ಎರಡು ಕೈಗಳನ್ನೂ

ಹಿಂಭಾಗದಿಂದ ತಂದು ಅಂಗುಷ್ಠಗಳನ್ನು ಭದ್ರವಾಗಿ ಹಿಡಿದುಕೊಂಡು ಗಲ್ಲ (ಚಿಬುಕ) ವನ್ನು ಎದೆಯ ಮೇಲೆ ಇಟ್ಟು ನಾಸಾಗ್ರವನ್ನು ನೋಡುತ್ತ ಕೂಡುವುದು ಪದ್ಮಾಸನ. "ವಾಮೋರೂಪರಿ ದಕ್ಷಿಣಂ ಚ ಚರಣಂ ಸಂಸ್ಥಾಪ್ಯ ವಾಮಂ ತಥಾ ದಕ್ಷೋರೂಪರಿ ಪಶ್ಚಿಮೇನ ವಿಧಿನಾ ಧೃತ್ವಾ ಕರಾಭ್ಯಾಂ ದೃಢಮ್ । ಅಡ್ಗುಣ್ಣೌ ಹೃದಯೇ ನಿಧಾಯ ಚಿವುಕಂ ನಾಸಾಗ್ರಮಾಲೋಕಯೇ-ದೇತದ್ವಾಧಿವಿನಾಶಕಾರಿ ಯಮಿನಾಂ ಪದ್ಮಾಸನಂ ಪ್ರೋಚ್ಯತೇ" ಹಠಂ ೧-೪೪ । 4. ದೇವತಾರ್ಚನೆಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕೂಡುವ ಒಂದು ಆಸನ. "ಅಹಮೂಲೇ ವಾಮಪಾದಂ ಪುನಸ್ತು ದಕ್ಷಿಣಂ ಪದಮ್ । ವಾಮೋರೌ ಸ್ಥಾಪಯಿತ್ವಾ ತು ಪದ್ಮಾಸನಮಿತಿ ಸ್ಮೃತಮ್" ।

ಪದ್ಮಿನ್ ಪದ್ಮಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಗಜ, ಆನೆ. ಪದ್ಮಂ ಬಿಂದುಜಾಲ-ಮಸ್ಯಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) । 2. ವಿಷ್ಣು. "ಪದ್ಮಿ ಪದ್ಮಿನಿಭೇಷಣಃ" ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ) 3. ಕಮಲವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ.

ಪದ್ಮಿನೀ ಪದ್ಮಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. ಪದ್ಮಮಸ್ಯಾ ಅಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) । "ಕೋ" (೪-೧-೫) । 2. ಕಮಲಗಳ ಸಮೂಹ. 3. ಕಮಲಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇಶ, ಸರೋವರ. ಪದ್ಮಾನಿ ಸನ್ಯತ್ರ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೩೫) । 4. ಕಮಲ ಲತೆ, ತಾವರೆ ಬಳ್ಳಿ. "ಪದ್ಮಿನೀ ಯೋಷಿದಂತರೇ । ಅಜ್ಞೇಽಜ್ಞಿನ್ಯಾಂ ಸರಸ್ಯಾಂ ಚ" ಹೇಮಂ । "ಸಕಮಲಮುಖಹಾಸಂ ವೀಕ್ಷಿತಃ ಪದ್ಮಿನೀಭಿಃ" ಮಾಧಂ ೧೧-೪೭ । 5. ಪದ್ಮಿನೀ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು. ಸ್ತ್ರೀಯರಲ್ಲಿ ಚಿತ್ರಣೇ ಹಸ್ತಿನೀ ಶಂಖಿನೀ ಮತ್ತು ಪದ್ಮಿನೀ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ಕಮಲ ದಂತೆ ನೇತ್ರಗಳೂ ಚಿಕ್ಕದಾದ ಮೂಗಿನ ಹೊಳ್ಳೆಗಳೂ ನಿಬಿಡವಾದ ಸ್ತನಗಳೂ ದೀರ್ಘವೂ ರಮಣೀಯವೂ ಆದ ಕೇಶಪಾಶವೂ ಕೃಶ (ತೆಳು)ವಾದ ದೇಹವೂ ಮೃದುವಾದ ಸವಿನುಡಿಯೂ ಸಂಗೀತ ವಾದ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಅಭಿರುಚಿಯೂ ಕಮಲದಂತೆ ಸೌಗಂಧ್ಯವೂ ಇರುವ ಹೆಂಗಸು ಪದ್ಮಿನೀ ಜಾತಿಯವಳು. "ಭವತಿ ಕಮಲನೆತ್ರಾ ನಾಸಿಕಾಕ್ಷುರ್ದರನ್ಧ್ರಾ ಅವಿರಲಕುಚಯುಗ್ಮಾ ದೀರ್ಘಕೇಶಿ ಕೃಶಾಕ್ಷಿ । ಮೃದುವಚನಸುಶೀಲಾ ಗೀತವಾಧಾನುರಕ್ತಾ ಸಕಲತನುಸುವೇಶಾ ಪದ್ಮಿನೀ ಪದ್ಯಗನ್ಧಾ" ರತಿಮಂ ।

ಪದ್ಮಿನೀಕಾಂತ ಪದ್ಮಿನೀಕಾಂತ, -ವಲ್ಲಭ -ವಲ್ಲಭ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ.

ಪದ್ಮೋದ್ಭವ ಪದ್ಮೋದ್ಭವ (ಪುಂ) 1. ಬೃಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಪದ್ಮಮುಢ್ಢವೋಽಸ್ಯ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಉದ್ಭವಾ -ಉದ್ಭವಾ. 2. ಮನಸಾದೇವಿ, ಜರತ್ತಾರು ಋಷಿಯ ಪತ್ನಿ.



**ಪದ್ಯ ಪದ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮನ ಪಾದಗಳಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ವರ್ಣದವನು. (ನಂ) 2. ಶ್ಲೋಕ, ನಾಲ್ಕು ಪಾದಗಳುಳ್ಳ ಛಂದೋಬದ್ಧವಾದ ಪಾಠ್ಯ. ಪಾದಾ: ಸಂತ್ಯಸ್ಯ "ಯಪ್" (ವಾಂ ೪-೨-೧೨೦)। 3. ತೇವದ ಮಣ್ಣು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಒಣಗಿದಿರುವ ಕೆಸರು. ಪದಮಸ್ಮಿನ್ ದೃಶ್ಯತೇ "ಯತ್" (೪-೪-೮೭)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಛಾ ದ್ಯಾ. 4. ನುರುಜು ಕಲ್ಲುಳ್ಳ ನೆಲ. ಪಾದೌ ವಿಧ್ಯತಿ-ಪಾದ "ಯತ್" (೪-೪-೮೩)। ಪಾದಸ್ಯ ಪದ್ಮಾವ: (೬-೩-೪೩)। 5. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. ಪಾದಾಯ ಹಿತಾ "ಯತ್" (೪-೧-೬)। ಪದಸ್ಯ ಪದ್ಮಾವ: (೬-೩-೪೩)।

**ಪದ್ರ ಪದ್ರ** (ಪುಂ) ಗ್ರಾಮ, ಹಳ್ಳಿ. ಪದ್ರತೇ ಗಚ್ಛತ್ಯತ್ರ - ಪದ (ಗತೌ) "ರಕ್" (ತಂ ೨-೧೩)। ಪದ್ರೋ ಗ್ರಾಮ: ಸಿಂ ಕೌಂ। **ಪದ್ರಥ ಪದ್ರಥ** (ಪುಂ) ಪಾದಚಾರಿ, ಪಾದಗಳಿಂದ ಸಂಚರಿಸುವವನು. ಪದ್ ರಥ ಇವ ಯಸ್ಯ।

**ಪದ್ವ ಪದ್ವ** (ಪುಂ) 1. ಭೂಲೋಕ. 2. ರಥ. 3. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. ಪದ (ಗತೌ) "ವನ್" (ತಂ ೧-೧೫೧)। ನಿಪಾಂ।

**ಪದ್ವನ್ ಪದ್ವನ್** (ಪುಂ) ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. ಪದ್ರತೇ ಗಮ್ಯತೇ ಯತ್ರ - ಪದ (ಗತೌ) "ವನಿಪ್" (ತಂ ೪-೧೧೨)। ಪದ್ಮಾ ಪನ್ಥಾ: ಸಿಂ ಕೌಂ।

**ಪನಸ ಪನಸ** (ಪುಂ) 1. ಹಲಸಿನ ಮರ. ಪನಾಮ್ಯತೇ ಸ್ತುತೇ - ಪನ (ವ್ಯವಹಾರೇ ಸ್ತುತೌ ಚ) "ಅಸಕ್" (ತಂ ೩-೧೧೭)। 2. ಕಂಟಕ, ಮುಳ್ಳು. 3. ಒಬ್ಬ ವಾನರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ಒಂದು ರೋಗ, ಉರಿಬಾವು. "ಪನಸ: ಕಪಿಠಿಗಿಭದೋ:। ಕಂಟಕೇ ಕಂಟಕಿಫಲೇ" ಹೇಮಂ। (ನಂ) 5. ಹಲಸಿನ ಹಣ್ಣು. "ಪನಸ: ಕಂಟಕಿಫಲೇ ಕಂಟಕೇ ವಾನರಾಂತರೇ। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ರೋಗಪ್ರಭೇದೇ ಸ್ಯಾತ್" ಮೇದಿಂ। ಮೇದಿನೀಕೋಶದಲ್ಲಿ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗ ವೆಂದು ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ.

**ಪನ್ಯಕ ಪಂಥಕ** (ವಿಂ) ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಪಥಿ ಜಾತ:-ಪಥಿನ್ "ವುನ್" (೪-೩-೨೯)। ಪನ್ಯಾದೇಶಾಃ।

**ಪನ್ನ ಪನ್ನ** (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬಿದ್ದ, ಜಾರಿಬಿದ್ದ, ಕಳಚಿದ. ಪನ್ನತೇ - ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। (ನಂ) 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯುವುದು, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳುವುದು.

**ಪನ್ನಗ ಪನ್ನಗ** (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಪನ್ನಂ ಪತ್ತಿತಂ ಗಚ್ಛತಿ - ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ತ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)। "ಸ ದದರ್ಶ ಪತಙ್ಗಪುಷ್ಪವೌ ವಿಟಪಚ್ಛತ್ತರಕ್ಷುಪನ್ನಗಮ್" ನೆಱಂ ೨-೩೭। (ನಂ) 2. ಸೀಸಲೋಹ.

**ಪನ್ನಗಾರಿ ಪನ್ನಗಾರಿ** (ಪುಂ) ಗರಾಡ. ಪನ್ನಗಸ್ಯ ಅರಿ:। "ಕಣಾವತಸ್ತ್ರಾಸಯಿತುಂ ರಸಾಯಾಸ್ತಲಂ ವಿವಕ್ಷನ್ನಿವ ಪನ್ನಗಾರಿ:" ಮಾಘಂ ೩-೨೩।

**ಪನ್ನಗಾಶನ ಪನ್ನಗಾಶನ** (ಪುಂ) ಗರಾಡ. ಪನ್ನಗ: ಅಶನಮಸ್ಯ। **ಪನ್ನದ್ವಾ ಪನ್ನದ್ವಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೋಗಲಿನ ಪಾದರಕ್ಷೆ, ಚರ್ಮದ ಚಪ್ಪಲಿ. ಪದಿ ನದ್ವಾ।

**ಪನ್ನಧ್ರಿ ಪನ್ನಂಧ್ರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಪ್ಪಲಿ, ಪಾದರಕ್ಷೆ.

**ಪಪಿ ಪಪಿ** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಪಾತಿ ಲೋಕಮ್ - ಪಾ (ರಕ್ಷಣೇ) "ಕಿ:" ದ್ವಿತ್ವಂ ಚ (೩-೨-೧೭೧)।

**ಪಪಿ ಪಪೀ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಚಂದ್ರ. ಪಾತಿ ಲೋಕಮ್ - ಪಾ (ರಕ್ಷಣೇ) "ಕಿ:" ದ್ವಿತ್ವಂ ಚ (ತಂ ೩-೧೫೯)। "ಪಪಿ: ಸ್ಯಾತ್ಸೋಮಸೂರ್ಯಯೋ:" ಸಿಂ ಕೌಂ।

**ಪಪು ಪಪು** (ಪುಂ) ಪಾಲಕ, ರಕ್ಷಕ. ಪಾ (ರಕ್ಷಣೇ) "ಕು:" ದ್ವಿತ್ವಂ ಚ (ತಂ ೧-೨೨)।

**ಪಮ್ಪಾ ಪಂಪಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಸರೋವರ, ಮುಷ್ಯಮೂಕದ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಸರಸ್ಸು. "ಸ ತಾಂ ಸತಾಂ ಬುದ್ಧಿಮಿವ ಪ್ರಸನ್ನಾಂ ಪಮ್ಪಾಂ ವಿಯೋಗಜ್ವರಜಾತಕಮ್:" ಚಂ ರಾಂ।

**ಪಯಸ್ ಪಯಸ್** (ನಂ) 1. ಕ್ಷೀರ, ಹಾಲು. ಪೀಯತೇ - ಪಿಡ್ (ಪಾನೇ) "ಅಸುನ್" (ತಂ ೪-೧೮೯)। "ದುಗ್ಧವಾ ಪಯ: ಪತ್ರಪುಟೇ ಮದೀಯಂ ಪುತ್ರೋಪಭುಜ್ಞೇವೇತಿ ತಮಾದಿದೇಶ" ರಘುಂ ೨-೩೫। 2. ಜಲ, ನೀರು. "ನೆದೀಯೋ ಜಿತಮಿತಿ ಲಜ್ಜಯೇವ ತಾಸಾ-ಮಾಲೋಲೇ ಪಯಸಿ ಮಹೋತ್ಪಲಂ ಮಮಜ್ಜ" ಮಾಘಂ ೮-೪೮। 3. ಅನ್ನ, ಆಹಾರ.

**ಪಯಸ್ಯ ಪಯಸ್ಸ** (ವಿಂ) 1. ಹಾಲಿನ ವಿಕಾರ, ಹಾಲಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ. (ಮೊಸರು ಬೆಣ್ಣೆ ಮುಂತಾದುವು.) ಪಯಸೋ ವಿಕಾರ: "ಯತ್" (೪-೩-೧೬೦)। 2. ಹಾಲಿಗೆ ಹಿತವಾದ. ಪಯಸೇ ಹಿತಮ್ "ಯತ್" (೪-೧-೫)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸ್ಯಾ -ಸ್ಯಾ. 3. ಹಾಲುತುಂಬಿಸಿದ ಗಿಡ. 4. ಕುದಿಯಿಸಿ ಮೊಸರು ಬೆರಸಿದ ಬಿಸಿ ಹಾಲು. "ಪಯಸ್ಯಾ ಚ ಕ್ಷೀರಶರ:" ವೇಜಂ। 5. ಘಂಟಾಮಣಿ ಸೂಪ್ತ, ಕಂಕೋಷ್ಠ.

**ಪಯಸ್ವತ್ ಪಯಸ್ವತ್** (ವಿಂ) 1. ನೀರಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪಯೋಸ್ತಸ್ಯ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪)। ಮಸ್ಯ ವ: (೮-೨-೯)। 2. ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ ಹಾಲಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ.

**ಪಯಸ್ವಲ ಪಯಸ್ವಲ** (ವಿಂ) 1. ನೀರಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಜಲ ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ. ಪಯಸ್ "ವಲಕ್" (ವಾಂ ೪-೨-೧೧೨)। 2. ಹೆಚ್ಚು ಹಾಲಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. (ಪುಂ) 3. ಅಡು, ಮೇಕೆ.



**ಪಯಸ್ವಿನ್ ಪಯಸ್ವಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಹಾಲಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. 2. ಜಲದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪಯೋಽಸ್ಮಾಸ್ತಿ—ಪಯಸ್ “ವಿನಿ:” (೪-೨-೧೨೧). ಸ್ವಿನ್ಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪). —ಸ್ವಿನಿ —ಸ್ವಿನೀ. 3. ಧೇನು, ಹಸು. “ಪ್ರದಕ್ಷಿಣೀಕೃತ್ಯ ಪಯಸ್ವಿನಿಂ ತಾಂ ಸುದಕ್ಷಿಣಾ ಸಾಕ್ಷತಪಾತ್ರಹಸ್ತಾ” ರಘುಂ ೨-೨೧. 4. ನದಿ, ಹೊಳೆ. 5. ಗಂಗಾನದಿ. “ಪರಾಪರಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿ: ಪಾಚನಿ ಚ ಪಯಸ್ವಿನಿ” ಕಾಶೀಖಂ. 6. ರಾತ್ರಿ. “ಪಯಸ್ವಿನಿ ನದೀಧೇನ್ವೋವಿಭಾವಯಾ ಚ ಯೋಷಿತಿ” ಮೇದಿಂ. 7. ಕರಿ ನೆಲಗುಂಬಳ. 8. ಅಡು. 9. ಸೀಹಾಲ ಸೊಪ್ಪು.

**ಪಯೋಗಲ ಪಯೋಗಲ** (ಪುಂ) 1. ಮಂಜನ ಗಡ್ಡೆ. ಪಯೋ ಗಾಲಯತೇ—ಗಲ (ಅವಲಸನೆ) + ಣಿಚ್ “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪). 2. ದ್ವೀಪ. ಪಯೋ ಗಲತಿ—ಗಲ (ಅದನೆ) “ಅಚ್”.

**ಪಯೋಘನ ಪಯೋಘನ** (ಪುಂ) ಮಂಜನಗಡ್ಡೆ.

**ಪಯೋಜನ್ಮನ್ ಪಯೋಜನ್ಮನ್** (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಪಯಸೋ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಮಾತ್. 2. ಮುಸ್ತಕ, ಕೊನ್ನಾರಿ.

**ಪಯೋದ ಪಯೋದ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಪಯೋ ದದಾತಿ—ಡು ದಾಚ್ (ದಾನೆ) “ಕ:” (೩-೨-೩). “ಕಾಂತಾನಾಂ ಬಹುಮತಿಮಾಯು: ಪಯೋದಾ ನಾಲ್ಪೀಯಾನ್ ಬಹು ಸುಕೃತಂ ಹಿನಸ್ತಿ ದೋಷ:” ಕಿರಾಂ ೭-೧೫. 2. ಕೊನ್ನಾರಿ ಗಡ್ಡೆ, ಭದ್ರ ಮುಸ್ತೆ.

**ಪಯೋಧರ ಪಯೋಧರ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಧರತಿ —ಧೃಚ್ (ಧಾರಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪). ಪಯಸೋ ಜಲಸ್ಯ ಧರ: “ನವಾನಧೋಽವೋ ಬೃಹತ: ಪಯೋಧರಾನ್ ಸಮೂಹ-ಕರ್ಪುರಪರಾಗಪಾಣ್ಡುರಮ್” ಮಾಘಂ ೧-೪. 2. ಕುಚ್ಚೆ, ಸ್ತನ. “ಆವಿರ್ಭವದ್ವನಪಯೋಧರಬಾಹುಮೂಲಾ ಸಾತೋದರೀ ಯುವದ್ವಾಂ ಕ್ಷಣ-ಮುತ್ಸವೋಽಮೃತ್” ಮಾಘಂ ೪-೨೩. 3. ಮುಸ್ತಕ, ಕೊನ್ನಾರಿ ಗಡ್ಡೆ. 4. ತೆಂಗಿನ ಮರ. 5. ಬೆನ್ನೆಲುಬು. 6. ಹಸು ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಕೆಚ್ಚಲು. “ಪಯೋಧರೋಭೂತಚತು: ಸಮುದ್ರಾಂ ಜುಗೋಪ ಗೋರೂಪಧರಾಮಿವೋವಿಂ” ರಘುಂ ೨-೩. 7. ಕೋಶಕಾರ, ನಿಘಂಟುಕಾರ. “ಪಯೋಧರ: ಕೋಶಕಾರೇ ನಾರಿಕೇಲೇ ಸ್ತನೇಽಪಿ ಚ | ಕಶೇರುಮೇಧಯೋ: ಪುಸಿ” ಮೇದಿಂ.

**ಪಯೋಘಸ್ ಪಯೋಘಸ್** (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಪಯೋ ದದಾತಿ—ಡು ಧಾಚ್ (ಧಾರಣೆ) “ಅಸುನ್” (೩ಂ ೪-೧೮೮). 2. ಜಲಾಶಯ, ನೀರನ್ನು ಶೇಖರಿಸಿಡುವ ಕೆರೆ ಕೊಳ ಕಟ್ಟಿ ಮೊದಲಾದುವು.

**ಪಯೋಧಿ ಪಯೋಧಿ** (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಪಯೋ ಧೀಯತೇ—ಡು ಧಾಚ್ (ಧಾರಣೆ) “ಕಿ:” (೩-೩-೯೩). “ತೇನಾಮ್ಭಸಾಂ ಸಾರಮಯ: ಪಯೋಧೇಧೇ ಮಣಿರ್ದೀಧಿತಿರ್ದೀಪಿ-

ತಾಶ:” ಮಾಘಂ ೩-೯. “ತಾನ್ಯೇಕದೇಶಾನ್ವಿಭೂತಂ ಪಯೋಧಿ: ಸೋಽ-ಮ್ಭಾಸಿ ಮೇಧಾನ್ ಪಿಬತೋ ದದಶಂ” ಮಾಘಂ ೩-೭೪.

**ಪಯೋನಿಧಿ ಪಯೋನಿಧಿ** (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಪಯಾಸಿ ನಿಧೀಯಂತೇ—ನಿ + ಡು ಧಾಚ್ (ಧಾರಣೆ) “ಕಿ:” (೩-೩-೯೩). “ಯುಗಕ್ಷಯಕ್ಷಣನಿರವಗ್ರಹೇ ಜಗತ್ ಪಯೋನಿಧೇರ್ಜಲ ಇವ ಮಗ್ನಮಾಬಭೌ” ಮಾಘಂ ೧೭-೬೦. “ತಥಾ ನ ತಾಪಾಯ ಪಯೋನಿಧೀನಾಮ್” ನೈಷಂ ೮-೮೧.

**ಪಯೋಮುಚ್ ಪಯೋಮುಚ್** (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಪಯೋ ಮುಚ್ಛತಿ—ಮುಚ್ಛ (ಮೋಕ್ಷಣ) “ಕಿವಿಪ್” (೩-೨-೭೬). “ಶನೈ: ಶನೈರಪಚಿತಪಕ್ಷುಭಾರಿಕಾ: ಪಯೋಮುಚ: ಪ್ರಯಯುರಪೇತ-ವೃಷ್ಟಯ:” ಮಾಘಂ ೧೭-೬೩.

**ಪಯೋವಾಹ ಪಯೋವಾಹ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಪಯೋ ಜಲಂ वहति—ವಹ (ಪ್ರಾಪಣ) “ಅಞ್” (೩-೨-೧). “ಪ್ರಾವೃಣೇಭ್ಯ ಪಯೋವಾಹಂ ವಿಶ್ವದೇವತಾವಿವ” ರಘುಂ ೧-೩೬. 2. ಮುಸ್ತಕ, ಕೊನ್ನಾರಿ ಗಡ್ಡೆ.

**ಪಯೋವ್ರತ ಪಯೋವ್ರತ** (ನಂ) 1. ಹಾಲನ್ನು ಮಾತ್ರ ಕುಡಿದು ಮಾಡುವ ಒಂದು (ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತರೂಪವಾದ) ವ್ರತ. ವ್ಯವಸಾಯ ಮಾಡಿದ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದ ಪೈರು ಗಳನ್ನು ಮತ್ತು ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ತಾನಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿ ಬೆಳೆದಿರುವ ಪೈರುಗಳನ್ನು ಉದ್ದೇಶ (ಪ್ರಯೋಜನ) ವಿಲ್ಲದೆ ಕೊಯ್ದರೆ ಪಯೋವ್ರತವನ್ನು ಮಾಡಿ ಒಂದು ದಿನ ಗೋವನ್ನು ಕಾಯ್ದು ಬರಬೇಕು. (ವಿಂ) 2. ಪಯಸ್ಸೇ ವ್ರತವಾಗಿ ಉಳ್ಳವನು. “ಕೃಷ್ಣಜಾನಾಮೋಷಧೀನಾಂ ಜಾತಾನಾಂ ಚ ಸ್ವಯಂ ವನೇ | ವೃಥಾಲಬ್ಧೋಽನುಗಚ್ಛೇದ್ಗಾಂ ದಿನಮೇಕಂ ಪಯೋವ್ರತ:” ಮನುಂ ೧೧-೧೪೪.

**ಪಯೋಣಿ ಪಯೋಷ್ಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ನದಿ, ಒಂದು ಹೊಳೆ. ಇದು ವಿಂಧ್ಯಪರ್ವತಕ್ಕೆ ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ದಕ್ಷಿಣ ಕೋಸಲದಲ್ಲಿರುವುದು.

**ಪರ ಪರ** (ಪುಂ) 1. ಶತ್ರು, ಹಗೆ, ವೈರಿ. ಪಿಪತಿ ರೋಷಮ್ —ಪ (ಪಾಲನಪೂರಣಯೋ: ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪). “ನ ಸಮಯಪರೀಕ್ಷಣಂ ಕ್ಷಮಂ ತೇ ನಿಕೃತಿಪರೇಷು ಪರೇಷು ಭೂರಿದಾಮ್ನ:” ಕಿರಾಂ ೧-೪೫. “ಉತ್ತಿಷ್ಠಮಾನಸ್ತು ಪರೋ ನೋಪೇಕ್ಷ್ಯ: ಪಂಥ-ಮಿಚ್ಛತಾ” ಮಾಘಂ ೨-೧೦. 2. ಬ್ರಹ್ಮನ ಆಯುಸ್ಸು. 360 ಕಲ್ಪಗಳು ಕಳೆದರೆ ಬ್ರಹ್ಮನ ಒಂದು ವರ್ಷ. ಅಂತಹ 100 ವರ್ಷಗಳು ಬ್ರಹ್ಮನ ಆಯುಸ್ಸು. ಇದಕ್ಕೆ “ಪರ” ಎಂದು ಹೆಸರು. “ತೀರ್ಣಿ ಕಲ್ಪಶತಾನಿ ಸ್ಯು: ತಥಾ ಷಷ್ಠಿ-ದ್ವಿಜೋತ್ತಮಾ: | ಬ್ರಹ್ಮಣ: ಕಥಿತಂ ವರ್ಷಂ ಪರಾಕ್ಯಂ ತತ್ತ್ವ ತತ್ಪದಮ್” ಕೂಂಪುಂ. (ವಿಂ) 3. ಅನ್ಯ, ಇತರ, ಬೇರೆಯವನು.



“ಪರಸ್ಥ ಮರ್ಮವಿಧಮುಜ್ಜತಾಂ ನಿಜಂ ದ್ವಿಜಿಹ್ವತಾದೋಷಮಜಿಹ್ವ-  
ಗಾಮಿಮಿ:” ಮಾಘಂ ೧-೬೩. 4. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮ  
ವಾದ, ಉತ್ಕೃಷ್ಟವಾದ. “ಅಲಭತ ಪರಾಂ ಬುದ್ಧಿಂ ಷष्ठಿ ದಿನೇ  
ನವಯೌವನಂ ಸ ಕಿಲ ಸಕಲಂ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಶಸ್ತ್ರಂ ವಿವೇದ ವಿಭುರ್ಯಾ”  
ಕುಮಾರಂ ೧೧-೫೦. 5. ದೂರದ, ದೂರದಲ್ಲಿರುವ.  
6. ಅದರ ಮುಂದಿನ, ಅದರ ಅಚ್ಚಿ ಇರುವ. “ಅರೇನಂತರಂ  
ಮಿತ್ರಮುದಾಸೀನಂ ತಯೋ: ಪರಮ್” ಮನುಂ ೭-೧೫೮. 7.  
ಮುಂದಿನ, ಅನಂತರದ. “ರಮ್ಯಾಂ ರಘುಪ್ರತಿನಿಧಿ: ಸ ನವೋಪ-  
ಕಾರ್ಯಾ ವಾಲ್ಯಾತ್ಪರಾಮಿವ ದಶಾಂ ಮದನೋಽಧ್ಯುವಾಸ” ರಘುಂ  
೫-೬೩. 8. ದೊಡ್ಡದಾದ, ಎಲ್ಲಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹಿರಿಯದಾದ,  
ಸರ್ವಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. “ಪರತೋಽಪಿ ಪರಶ್ಚಾಸಿ ವಿಧಾತಾ  
ವೇದಸಾಮಪಿ” ಕುಮಾರಂ ೨-೧೪. 9. ಹೆಚ್ಚಿನದಾದ, ಮಿಗಿ  
ಲಾದ. “ಇಂದ್ರಿಯಾಣಿ ಪರಾಽಪ್ಯಾಹುರಿಂದ್ರಿಯೇಭ್ಯ: ಪರಂ ಮನ: |  
ಮನಸಸ್ತು ಪರಾಬುದ್ಧಿ: ಯೋ ಬುದ್ಧಿ: ಪರತಸ್ತು ಸ:” ಗೀತಾ ೩-೪೨. |  
“ಇಂದ್ರಿಯೇಭ್ಯ: ಪರಾಹುರ್ಯಾ: ಅರ್ಥೇಭ್ಯಾಶ್ಚ ಪರಂ ಮನ: | ಮನಸಸ್ತು  
ಪರಾಬುದ್ಧಿ: ಬುದ್ಧೇರಾತ್ಮಾ ಮಹಾನ್ ಪರ: | ಮಹತ: ಪರಮವ್ಯಕ್ತ-  
ಮವ್ಯಕ್ತಾತ್ಪುರುಷ: ಪರ: | ಪುರುಷಾನ್ ಪರಂ ಕಿಂಚಿತ್ ಸಾ ಕಾಷ್ಠಾ  
ಸಾ ಪರಾ ಗತಿ:” ಕಠಂ. 10. ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ.  
“ತದವ ತೇ ವನ್ಯಫಲಾಶಿನ: ಪರಂ ಪರೇತಿ ಕಾರ್ಷ್ಯ ಯಶಸಾ ಸಮಂ  
ವಪು:” ಕಿರಾಂ ೧-೩೯. 11. (ಸಮಾಸದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ)  
ಅಸಕ್ತನಾದ, ತತ್ಪರನಾದ, ಶ್ರದ್ಧೆಯುಳ್ಳ. “ಸೇವಾಪರಾ:  
ಶಿವಸುರೇಶಕೃಶಾನುಭರ್ಮರಕ್ಷೋಽಂಬುನಾಥಪವಮಾನಭನಾಭಿನಾಥಾ:” |  
“ಇತ್ಯಾಪ್ರಸಾದಾದಸ್ಯಾಸ್ತ್ವಂ ಪರಿಚರ್ಯಾಪಿರೋ ಭವ” ರಘುಂ ೧-೯೧. |  
(ನಂ) 12. ಬೃಹತ್, ಪರಮಾತ್ಮ. 13. ಸಾಮಾನ್ಯ  
ವೆಂಬ ಪದಾರ್ಥದ ಎರಡು ಭೇದಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಪರಮ್  
ಮತ್ತು ಅಪರಮ್ ಎಂದು ಸಾಮಾನ್ಯವು ಎರಡು ವಿಧ.  
ಪರವು ಅಧಿಕ ದೇಶವೃತ್ತಿ (ವ್ಯಾಪಕ). ಅಪರವು ನ್ಯೂನ  
ದೇಶವೃತ್ತಿ (ವ್ಯಾಪ್ಯ). “ಸಾಮಾನ್ಯಂ ದ್ವಿವಿಧಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಪರಂ  
ಚಾಪರಮೇವ ಚ” ಭಾಷಾಪಂ. 14. ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ.  
(ಅವ್ಯಂ) 15. ಅನಂತರ, ಬಳಿಕ, ಮುಂದೆ. “ಭಾಗ್ಯಾ-  
ಯತ್ತಮತ: ಪರಂ ನ ಕ್ಷಲಂ ತದಾಚ್ಯಂ ವಧುವನ್ಯುಭಿ:” ಶಾಕುಂ  
೪-೧೬. “ಮತ್ಪರಂ ದುರ್ಲಭಂ ಮತ್ವಾ ನುನಮಾವಜಿತಂ ಮಯಾ”  
ರಘುಂ ೧-೬೭. 16. ಅತ್ಯಂತವಾಗಿ, ಬಹಳವಾಗಿ. “ಅನ್ವರ್ಥ-  
ಸಂಜ್ಞೇವ ಪರಂ ತ್ರಿಮಾರ್ಗಗಾ ಯಾವಸಂಖ್ಯೇ: ಪಥಿಮಿಶ್ಚಮೂರಸೌ”  
ಮಾಘಂ ೧೨-೨೩. 17. ಅದರ. 18. ಬೇರೆ ರೀತಿಯಾಗಿ.  
19. ಅಧಿಕವಾಗಿ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ, ಮಿಗಿಲಾಗಿ. “ರೇಖಾಮಾತ್ರಮಪಿ  
ಕ್ಷುಣ್ಣಾದಾಮನೋರ್ವತ್ಮನ: ಪರಮ್” ರಘುಂ ೧-೧೭.

ಪರ:ಶತ ಪರ:ಶತ (ನಂ) 1. ನೂರಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚು.  
(ವಿಂ) 2. ನೂರಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚಾದ. ಶತಾತ್ ಪರೇ.

“ಆಲೋಕಯಾಮಾಸ ಹರಿರ್ಮಹೀಧರಾನಧಿಶ್ರಯಂತೀಗಂಜತಾ: ಪರ:  
ಶತಾ:” ಮಾಘಂ ೧೨-೫೦.

ಪರ:ಸಹಸ್ರ ಪರ:ಸಹಸ್ರ (ನಂ) 1. ಸಾವಿರಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚು.  
(ವಿಂ) 2. ಸಾವಿರಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚಾದ. “ಬ್ರಹ್ಮಾದಯೋ  
ಬ್ರಹ್ಮಹಿತಾಯ ತಪ್ತ್ವಾ ಪರ:ಸಹಸ್ರಂ ಶರದಾಂ ತಪಾಸಿ” ತಂ ರಾಂ  
೧-೧೫.

ಪರಕ ಪರಕ (ವಿಂ) ಮುಂದಿನ, ಅನಂತರದ. ಪರ ಸ್ವರ್ಥ  
“ಕ:” | “ಷष्ठಿ ದ್ವಿತೀಯಲಾಂತ್ರೆ ಪರಕೇ ಮುಖಲಾಂತ್ರೆ ಸ  
ಯತಿಪದನಿಯಮ:” ವೃಂ ೨೦.

ಪರಕಲತ್ರ ಪರಕಲತ್ರ (ನಂ) ಪರಪುರುಷನ ಪತ್ನಿ. “ಅನಿ-  
ವರ್ಣನೀಯಂ ಪರಕಲತ್ರಮ್” ಶಾಕುಂ.

ಪರಕೀಯ ಪರಕೀಯ (ವಿಂ) ಇತರನ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
ಇನ್ನೊಬ್ಬನದಾದ. ಪರಸ್ಯೇದಮ್ “ಛ:” (೪-೨-೧೩೮). |  
ಕುಗಾಗಮಶ್ಚ (ಗಂ ೪-೨-೧೩೮). “ಅರ್ಥೋ ಹಿ ಕನ್ಯಾ  
ಪರಕೀಯ ಏವ ತಾಮಘ ಸಂಪ್ರೇಷ್ಯ ಪರಿಗ್ರಹೀತು:” ಶಾಕುಂ ೪-೨೧. |  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಯಾ -ಯಾ. ನಾಯಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ,  
ಅನ್ಯಸ್ತ್ರೀ. ಪರಪುರುಷನಲ್ಲಿ ಅನುರಕ್ತಳಾಗಿ ಅದನ್ನು  
ಹೊರಗೆ ತೋರಿಸಿಕೊಳ್ಳದಿರುವ ಹೆಂಗಸು.

ಪರಕ್ಷೇತ್ರ ಪರಕ್ಷೇತ್ರ (ನಂ) 1. ಪರಸ್ತ್ರೀ, ಇತರನ ಪತ್ನಿ.  
2. ಇತರನ ಭೂಮಿ, ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ನೆಲ. ಪರಸ್ಯ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ |  
“ವೃಷಾಪೇಹಿ ಪರಕ್ಷೇತ್ರಾದಾಯಾತಿ ಕ್ಷೇತ್ರಪಾಲಕ:” ಚಂದ್ರಾಂ. | “ತೌ  
ತು ಜಾತೌ ಪರಕ್ಷೇತ್ರೇ ಪ್ರಾಣಿನೌ ಪ್ರೇತ್ಯ ಚೇಹ ಚ” ಮನುಂ ೩-೧೭೫.

ಪರಗಾಮಿನ್ ಪರಗಾಮಿನ್ (ವಿಂ) 1. ವಿಶೇಷಣ, ವಾಚ್ಯ  
ಲಿಂಗ, ವಿಶೇಷ್ಯಕ್ಕೆ ಅಧೀನವಾದ (ಶಬ್ದ). ಪರಂ ವಾಚ್ಯಂ  
ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ಗಿತಿ:” (೩-೧-೧೩೪). |  
2. ಇನ್ನೊಬ್ಬನನ್ನು ಸೇರುವ.

ಪರಗ್ರಾನ್ಥಿ ಪರಗ್ರಾನ್ಥಿ (ಪುಂ) ಅಂಗಾಲಿಪವರ್, ಬೆರಳುಗಳ  
ಗಿಣ್ಣು.

ಪರಚಕ್ರ ಪರಚಕ್ರ (ನಂ) 1. ಪರರಾಷ್ಟ್ರ, ಶತ್ರುರಾಷ್ಟ್ರ.  
2. ಶತ್ರುಸೈನ್ಯ. 3. ಶತ್ರುವಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ ಈತಿ  
ಬಾಧೆ.

ಪರಚ್ಛಂದ ಪರಚ್ಛಂದ (ವಿಂ) ಪರಾಧೀನ. ಪರಸ್ಯ ಛಂದೋ  
ಯತ್ರ |

ಪರಚ್ಛಿದ್ರ ಪರಚ್ಛಿದ್ರ (ನಂ) 1. ಇನ್ನೊಬ್ಬನಲ್ಲಿರುವ  
ದೋಷ, ಇತರನಲ್ಲಿರುವ ಕುಂದು. 2. ಇತರನಲ್ಲಿರುವ  
ಅಪರಾಧ.

ಪರಜಾತ ಪರಜಾತ (ಪುಂ) 1. ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಂದ ಜನಿಸಿದ  
ಕುಂಡ (ಗಂಡನು ಬದುಕಿರುವಾಗ ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿ



ದವನು). ಗೋಳಕೆ (ಗಂಡನು ತೀರಿದನಂತರ ಇನ್ನೊಬ್ಬ ನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವನು) ಮೊದಲಾದ ಪುತ್ರ. 2. ಕೋಗಿಲೆ. ಪರೇಣ ಜಾತಃ। (ವಿಂ) 3. ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಂದ ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನು.

**ಪರಜಿತ ಪರಜಿತ** (ಪುಂ) 1. ಕೋಗಿಲೆ. ಪರೇಣ ಜಿತಃ ಪರಪುಷ್ಪತ್ವಾತ್। (ವಿಂ) 2. ಇತರರಿಂದ ಜಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪರಜ್ಜ ಪರಂಜ** (ಪುಂ) 1. ತೈಲಯಂತ್ರ, ಎಣ್ಣೆಯ ಗಿರಣಿ, ಎಣ್ಣೆಯ ಗಣಿ. 2. ಕತ್ತಿಯ ಅಲಗು, ಅಸಿಧಾರ. 3. ಫೇನ, ನೋರೆ. “ಪರಜ್ಜಸ್ತೇಲಯನ್ತ್ರೇ ಸ್ಯಾತ್ ಕುರಿಕಾಫಲ-ಫೇನಯಃ” ಮೇದಿಂ।

**ಪರಜ್ಜಯ ಪರಂಜಯ** (ಪುಂ) 1. ವರುಣ. ಪರಾಂ ಪಶ್ಚಿಮಾಂ ದಿಶಂ ಜಯತಿ ಸ್ವಾಮಿತ್ವೇನ—ಜಿ (ಜಯೆ) “ಖಚ್” (3-2-46)। ಮುಗಾಗಮಃ (6-3-67)। 2. ಶತ್ರುವನ್ನು ಜಯಿಸುವ ದೊರೆ. ಪರಂ ಶತ್ರುಂ ಜಯತಿ—ಜಿ “ಖಚ್”।

**ಪರತನ್ತ್ರ ಪರತಂತ್ರ** (ವಿಂ) 1. ಪರಾಧೀನ, ಇತರನಿಗೆ ಅಧೀನನಾದ, ಇತರನನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿರುವ. ಪರಸ್ತನ್ತ್ರಂ ಪ್ರಧಾನಂ ಯಸ್ಯ। “ಪರತನ್ತ್ರಃ ಪರಾಧೀನಃ ಪರವಾಶಾಶ್ವವಾನಪಿ” ಅಮಂ। (ನಂ) 2. ಪರಕೀಯ ಶಾಸ್ತ್ರ. ಪರಸ್ಯ ತನ್ತ್ರಮ್। 3. ಉತ್ತಮವಾದ ಶಾಸ್ತ್ರ. ಪರಮುತ್ಕೃಷ್ಟಂ ತನ್ತ್ರಮ್।

**ಪರತಸ್ ಪರತಸ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಂದ. ಪರ “ತಸಿಲ್” (4-3-9)। 2. ಶತ್ರುವಿನ ದೆಸೆಯಿಂದ, ಹಗೆಯಿಂದ. “ಯದಾತ್ಯ ರಾಜನ್ಯಕುಮಾರ ತತ್ತಥಾ ಯಶಸ್ತು ರಕ್ಷಯಂ ಪರತೋ ಯಶೋಧನಃ” ರಘುಂ 3-48। 3. ಮುಂದೆ, ಅಚ್ಚೆ. 4. ಅಮೇಲೆ, ಅನಂತರ, ತರುವಾಯ. “ಮನಸಸ್ತು ಪರಾ ಬುದ್ಧಿಃ ಯೋ ಬುದ್ಧಿಃ ಪರತಸ್ತು ಸಃ” ಗೀತಾ 3-42।

**ಪರತಾಪನ ಪರತಾಪನ** (ವಿಂ) ಇತರನನ್ನು ಖೇಡಿಸುವ, ಇತರನಿಗೆ ತೊಂದರೆ ಕೊಡುವ. ಪರಂ ತಾಪಯತಿ—ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಃ” (3-1-134)।

**ಪರತ್ರ ಪರತ್ರ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಬೇರೆ ಕಡೆ, ಬೇರೆ ಜಾಗದಲ್ಲಿ. 2. ಬೇರೆ ಲೋಕದಲ್ಲಿ, ಸ್ವರ್ಗ ಮೊದಲಾದ ಇತರ ಲೋಕದಲ್ಲಿ, ಪರಲೋಕದಲ್ಲಿ. ಪರ “ತ್ರಲ್” (4-3-10)। 3. ಬೇರೆ ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ, ಬೇರೆ ಮನುಷ್ಯನಲ್ಲಿ. “ಪರತ್ರ ಸಾಧ್ಯೇತಿಶಯಸ್ಥಿರವಸೇಃ” ಯಾದಂ 14-46। “ಸಂತತಿಃ ಶುಭವಂಶ್ಯಾ ಹಿ ಪರಶ್ರೇಹ ಚ ಶರ್ಮಣೇ” ರಘುಂ 1-69।

**ಪರತ್ವ ಪರತ್ವ** (ನಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ, ಉತ್ಕೃಷ್ಟತೆ, ಸರ್ವೋತ್ತಮತ್ವ. ಪರಸ್ಯ ಮಾವಃ “ತ್ವಃ” (4-1-119)। “ಪರತ್ವ-ಮಾಧ್ಯಂ ಪ್ರತಿಪನ್ನಪದ್ಧುಗುಣಃ” ಯಾದಂ 14-94।

**ಪರದಾರ ಪರದಾರ** (ಪುಂ ಕಂ ವಂ) ಇತರನ ಪತ್ನಿ, ಪರಸ್ತ್ರೀ. ಪರಸ್ಯ ದಾರಾಃ। “ಪರದಾರೆಷು ಜಾಯೇತೆ ದ್ವೌ ಸುತೌ ಕುಣ್ಡಗೋಲಕೌ” ಮನುಂ 3-134।

**ಪರದಾರಿನ್ ಪರದಾರಿನ್** (ವಿಂ) ಜಾರ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿ, ಪರಸ್ತ್ರೀಸಂಗ ಮಾಡುವವನು.

**ಪರದುಃಖ ಪರದುಃಖ** (ನಂ) ಇತರರ ಕಷ್ಟ, ಬೇರೆಯವರಿಗೆ ಉಂಟಾದ ತೊಂದರೆ. ಪರೇಷಾಂ ದುಃಖಮ್। “ಮಹದಪಿ ಪರದುಃಖಂ ಶೀತಲಂ ಸಮ್ಯಗಾಹುಃ ಪ್ರಣಯಮಗಣಯಿತ್ವಾ ಯನ್ಮಮಾಪದಗತಸ್ಯ” ವಿಕ್ರಂ 4-23।

**ಪರದೇಶ ಪರದೇಶ** (ಪುಂ) ತಾನು ವಾಸಮಾಡುವುದಕ್ಕಿಂತ ಬೇರೆ ದೇಶ.

**ಪರದೇವತಾ ಪರದೇವತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪರಬ್ರಹ್ಮ.

**ಪರದೇಶಿನ್ ಪರದೇಶಿನ್** (ವಿಂ) ಇತರ ದೇಶದವನು, ಬೇರೆ ದೇಶದವನು.

**ಪರದೇಶಿನ್ ಪರದೇಶಿನ್** (ವಿಂ) ಇತರರನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸುವವನು, ಇತರರಲ್ಲಿ ಅಸೂಯೆಯಿಂದ ದೋಷವನ್ನು ಹೇಳುವವನು. ಪರಾನ್ ದೇಶಿನ್—ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) “ಣಿಞಿಃ” (3-2-38)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಡೀಪ್” (4-1-5)। —ದ್ವೇಷಿಣಿ—ದ್ವೇಷಿಣೀ.

**ಪರಧನ ಪರಧನ** (ನಂ) ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ಹಣ, ಇತರನ ಆಸ್ತಿ.

**ಪರಧರ್ಮ ಪರಧರ್ಮ** (ಪುಂ) 1. ಬೇರೆಯವರು ಅಚರಿಸುವ ಧರ್ಮ, ತನಗೆ ವಿಹಿತವಾದ ಧರ್ಮಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದ ಧರ್ಮ. (ಅಜಾರ ವ್ಯವಹಾರಗಳು.) ಪರೇಷಾಂ ಧರ್ಮಃ। “ಸ್ವಧರ್ಮೋ ನಿಧನಂ ಶ್ರೇಯಃ ಪರಧರ್ಮೋ ಭಯಾವಹಃ” ಗೀತಾ 3-35। “ವರಂ ಸ್ವಧರ್ಮೋ ವಿಗುಣಃ ನ ಪಾರುಕಯಃ ಸ್ವನುಷ್ಠಿತಃ। ಪರಧರ್ಮೇಣ ಜೀವನ್ ಹಿ ಸದಾಃ ಪತತಿ ಜಾತೀತಃ” ಮನ್ಮಂ 10-93। 2. ಉತ್ಕೃಷ್ಟವಾದ ಧರ್ಮ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಧರ್ಮ. ಪರಃ ಶ್ರೇಷ್ಠಃ ಧರ್ಮಃ।

**ಪರನಿಪಾತ ಪರನಿಪಾತ** (ಪುಂ) ವಿಗ್ರಹವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ಪೂರ್ವ ಪದವಾಗಿರುವುದನ್ನು ಸಮಾಸದಲ್ಲಿ ಕೊನೆಯ ಪದವಾಗಿ ಹೇಳುವುದು. ದಂತಾನಾಂ ರಾಜಾ ರಾಜದಂತಃ। ಪೂರ್ವ ಭೂತಃ ಭೂತಪೂರ್ವಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಪರಂತಪ ಪರಂತಪ** (ವಿಂ) 1. ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಖೇಡಿಸುವ, ವೈರಿಗಳಿಗೆ ತೊಂದರೆಯುಂಟುಮಾಡುವ. ಪರಾನ್ ಶತ್ರುನ್ ತಾಪಯತಿ—ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) + ಣಿಚ್ “ಖಚ್” (3-2-39)। ಹ್ರಸ್ವಃ (6-4-94)। ಮುಗಾಗಮಃ (6-3-67)। (ಪುಂ) 2. ತಾಪಸಮನುಷಿನ್ ಒಬ್ಬ ಮಗ.



ಪರಪಕ್ಷ ಪರಪಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ಪಂಗಡ. 2. ಶತ್ರುಪಕ್ಷ, ಶತ್ರುಗಳ ಗುಂಪು.

ಪರಪದ ಪರಪದ(ನಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಸ್ಥಾನ. 2. ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ.

ಪರಪಿಂಡಾದ ಪರಪಿಂಡಾದ (ಪುಂ) ಪರಾನ್ನವನ್ನು ಉಂಡು ಜೀವಿಸುವವನು. ಪರಸ್ಯ ಪಿಂಡಮತ್ರಮಿತಿ — ಅದ (ಭಕ್ಷಣ) "ಅನ್" (೩-೨-೧)।

ಪರಪುಷ್ಪ ಪರಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಮ ಪುರುಷ, ವಿಷ್ಣು. 2. ಉಪನಾಯಕ, ಉಪಪತಿ. 3. ಅಪರಿಚಿತ ಮನುಷ್ಯ.

ಪರಪುಷ್ಪ ಪರಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಕೋಗಿಲೆ. ಪರೇಣ ಕಾಕೇನ ಪುಷ್ಪಃ | ಕೋಗಿಲೆಗೆ ತಾನು ಹಾಕಿದ ಮೊಟ್ಟೆಯನ್ನು ಪೋಷಿಸಿ ಒಡೆಯಲು ತಿಳಿಯದೆ ಅದನ್ನು ಕಾಗೆಯು ಗೂಡಿನಲ್ಲಿಡುವುದು. ಕಾಗೆಯು ತನ್ನ ಮೊಟ್ಟೆಯನ್ನು ಭ್ರಾಂತಿಯಿಂದ ಅದನ್ನು ಒಡೆದು ಪೋಷಿಸುವುದು. ವಸಂತಕಾಲ ಬಂದಾಗ ಕೋಗಿಲೆಯ ಸ್ವರವನ್ನು ಕೇಳಿದ ಕಾಗೆಯು ಆ ಮರಿಯನ್ನು ಹೊರಕ್ಕೆ ಓಡಿಸುವುದು. "ವಸಂತಕಾಲೇ ಸಂಪ್ರಾಪ್ತೇ ಕಾಕಃ ಕಾಕಃ ಪಿಕಃ ಪಿಕಃ" | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪುಷ್ಪಾ -ಪುಷ್ಪಾ. ಹೆಣ್ಣು ಕೋಗಿಲೆ. "ಪ್ರಿಯಸಖಿಸದೃಶಂ ಪ್ರತಿಬೋಧಿತಾಃ ಕಿಮಪಿ ಕಾಮ್ಯಗಿರಾ ಪರಪುಷ್ಪಯಾ" ಮಾಧಂ ೬-೮ | (ವಿಂ) 2. ಇತರರಿಂದ ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪರಪೂರ್ವ ಪರಪೂರ್ವ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೊದಲಿನ ಗಂಡನನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬೇರೊಬ್ಬನನ್ನು ಮದುವೆಯಾದ ಹೆಂಗಸು, ಎರಡನೆಯ ಸಲ ಮದುವೆಯಾದವಳು. ಪರಃ ಇತರಃ ಪೂರ್ವಂ ಯಸ್ಯಾಃ | "ಪತಿ ಹಿತವಾಪಕೃಷ್ಣಂ ಸ್ವಮುಕ್ತುಷ್ಣಂ ಯಾ ನಿಷೇವತೇ | ನಿಂದೈವ ಸಾ ಭವೇಲೋಕೇ ಪರಪೂರ್ವೇತಿ ಚೋಚ್ಯತೇ" ಮನುಂ ೫-೧೬೩ |

ಪರಪ್ರೇಷ್ಯ ಪರಪ್ರೇಷ್ಯ (ಪುಂ) ಸೇವಕ, ಅಳು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪ್ರೇಷ್ಯಾ -ಪ್ರೇಷ್ಯಾ. ಸೇವಕಿ.

ಪರಬ್ರಹ್ಮನ್ ಪರಬ್ರಹ್ಮನ್ (ನಂ) ಪರಮಾತ್ಮ. ಪರಂ ಚ ತತ್ ಬ್ರಹ್ಮ ಚ |

ಪರಭಾಗ ಪರಭಾಗ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠ ಗುಣ, ಉತ್ತಮವಾದ ಯೋಗ್ಯತೆ, ಉತ್ಕೃಷ್ಟ. ಪರಸ್ಯ ಉತ್ಕೃಷ್ಟಸ್ಯ ಭಾಗಃ | "ದೂರಧಿಗಮಃ ಪರಭಾಗೋ ಯಾವತ್ಪುರುಷೇಣ ಸಾಹಸಂ ನ ಕೃತಮ್" ಪञ्ಚತಂ ೫-೩೪ | 2. ಅಧಿಕ, ಅತಿಶಯ, ಹೆಚ್ಚು. "ತಾರೇ-ಬಂಭುವೇ ಪರಮಾಗಲಾಭತಃ ಪರಿಸ್ಕುಡೇಸ್ತೇಷು ತುರಗ್ಗ್ರಹೇಪಿತೈಃ" ಮಾಧಂ ೧೨-೧೫ | 3. ಕೊನೆಯ ಭಾಗ, ಶೇಷ, ಉಳಿಕೆ. 4. ಹಿಂಭಾಗ, ಪಶ್ಚಾದ್ಭಾಗ. "ದಂತವಾಸಸಿ ಸಮಾನಗುಣಶ್ರೀಃ ಸಮುಕ್ತೋಪಿ ಪರಭಾಗಮವಾಪ" ಮಾಧಂ ೧೦-೮೬ | 5. ಇತರನ ಭಾಗ, ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ಪಾಲ.

ಪರಭಾಷಾ ಪರಭಾಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನ್ಯರ ಭಾಷೆ, ಪರದೇಶೀಯರ ಭಾಷೆ.

ಪರಭುಕ್ತ ಪರಭುಕ್ತ (ವಿಂ) ಇತರರಿಂದ ಅನುಭವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರೇಣ ಭುಕ್ತಮ್ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಭುಕ್ತಾ -ಭುಕ್ತಾ. ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಂದ ಅನುಭವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಹೆಂಗಸು. "ಪರಭುಕ್ತಾಂ ಚ ಕಾಂತಾಂ ಚ ಯೋ ಭುಕ್ತೇ ಸ ನರಾಧಮಃ | ಸ ಪಚ್ಯತೇ ಕಾಲಸೂತ್ರೇ ಯಾವಚ್ಚಂದ್ರದಿವಾಕರೌ" ಬ್ರಹ್ಮವಂ |

ಪರಭೃತ್ ಪರಭೃತ್ (ಪುಂ) ವಾಯಸ, ಕಾಗೆ. ಪರಂ ಕೋಕಿಲ-ಸುತಂ (ಸ್ವಪುತ್ರಧಿಯಾ) ವಿಭತಿ-ಓ ಭುಜ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧) |

ಪರಭೃತ್ ಪರಭೃತ್ (ಪುಂ) 1. ಕೋಗಿಲೆ. ಪರೇಣ ಕಾಕೇನ ಭೃತಃ ಪೋಷಿತಃ | "ಪರಭೃತಯುವತೀನಾಂ ಸಮ್ಯಗಾಯಾತಿ ಗಾತುಂ ನ ತವ ತರುಣಿ ವಾಣೀಗಂ ಸುಧಾಸಿಂಧುವೇಣಿ" ನೆಪಂ ೨೧-೧೫೬ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಭೃತಾ -ಭೃತಾ. ಹೆಣ್ಣು ಕೋಗಿಲೆ. "ಚೂತಯಪಿ-ರಿವಾಭ್ಯಾಶೇ ಮಧೌ ಪರಭೃತೋನ್ಮುಖಿ" ಕುಮಾಂ ೬-೨ | (ವಿಂ) 2. ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಂದ ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪರಮ ಪರಮ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. (ವಿಂ) 2. ಉತ್ಕೃಷ್ಟವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. ಪರಂ ಉತ್ಕೃಷ್ಟಂ ಮಾತಿ-ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | "ಸರ್ವಥಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಃ ಪೂಜ್ಯಾಃ ಪರಮಂ ದೇವತಂ ಹಿ ತತ್" ಮನುಂ ೯-೩೧೯ | 3. ಪ್ರಧಾನ, ಮುಖ್ಯ. 4. ಮೊದಲನೆಯ. 5. ಶ್ರೇಷ್ಠ ಶರವಾದ. ಅದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಉತ್ತಮವಾದ. "ನ ಮನ್ಯೇ ವಾಣಿಜ್ಯಾತ್ ಕಿಮಪಿ ಪರಮಂ ವರ್ತನಮಿಹ" ಪञ್ಚತಂ ೧-೧೧ | 6. ಮೇಲಾದ, ಉಚ್ಚತಮವಾದ, ಸರ್ವಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. "ವೇದೋದಿತಂ ಸ್ವಕಂ ಕರ್ಮ ತಿತ್ಯಂ ಕುರ್ಯಾದತಂದ್ರಿತಃ | ತದ್ವಿ ಕುರ್ವನ್ ಯಥಾಶಕ್ತಿ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ ಪರಮಾಂ ಗತಿಮ್" ಮನುಂ ೪-೧೪ | (ಅವ್ಯಂ) 7. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. "ತತಃ ಪರಮಮಿತ್ಯುಕ್ತ್ವಾ ಪ್ರತಸ್ಥೇ ಮುನಿಮಂಡಲಮ್" ಕುಮಾಂ ೬-೩೫ | 8. ಅನುಜ್ಞೆ. 9. ಅತಿಯಾಗಿ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ. "ಪರಮಂ ಸ್ಯಾದನುಜ್ಞಾತೇಽಪ್ಯವ್ಯಯಂ ಪರಮಃ ಪರೇ | ಪರಮಂ ಸ್ಯಾತ್ ಪ್ರಧಾನಾದೋರೋಕ್ಷಾರೇಽಪಿ ತಥೋಚ್ಯತೇ" ವಿಶ್ವಂ |

ಪರಮಪು(ಪು)ಷ್ಪ ಪರಮಪು(ಪು)ಷ್ಪ (ಪುಂ) ಪುರುಷ ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ವಿಷ್ಣು, ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣ. ಪರಮಶ್ವಾಸೌ ಪು(ಪು)ಷ್ಪಶ್ಚ |

ಪರಮಪಿ ಪರಮಪಿ (ಪುಂ) ಉತ್ತಮ ಜ್ಞಾನಸಂಪನ್ನನಾದ ಮುನಿ, ಪರಮಾತ್ಮನ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿದ ಮುನಿ. ಪರಮಶ್ವಾಸೌ ಪಿಷ್ಠಶ್ಚ | "ಪಿಷ್ಠಿಹಿಸಾಗತೌ ಧಾತುಃ ವಿಶ್ವಾ-ಸತ್ಯತಪಃಶ್ರುತೈಃ | ಏವ ಸನ್ನಿವಯೋ ಯಸ್ಮಾತ್ ಬ್ರಹ್ಮಣಶ್ಚ



ತತಸ್ತ್ವೃಣಿಃ | ನಿವೃತ್ತಿಸಮಕಾಲಂತು ಬೃಹದಾ ವ್ಯಕ್ತಿಮೃಷಿಶ್ವ-  
ಯಮ್ | ಕೃಷತೇ ಪರಮಂ ಯಸ್ಮಾತ್ಪರಮೃಷಿಶ್ವತಃ ಸ್ಮೃತಃ”  
ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ |

**ಪರಮಹಂಸ ಪರಮಹಂಸ (ಫಂ)** ಉತ್ತಮಯೋಗಿ, ಇಂದ್ರಿಯ  
ಗಳನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸಿ ತನ್ನ ಅಧೀನದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ತಪೋ  
ನಿರತನಾದ ಸಂನ್ಯಾಸಿ. ಕುಟೀಚಕ, ಬಹೂದಕ, ಹಂಸ  
ಮತ್ತು ಪರಮಹಂಸರೆಂಬ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಸಂನ್ಯಾಸಿಗಳಲ್ಲಿ  
ಪರಮಹಂಸನೇ ಉತ್ತಮನು. ಪರಮಹಂಸಃ ಆತ್ಮಾ ಯಸ್ಯ |  
ಕೋಪತಾಪಗಳನ್ನು ತೊರೆದು ಸುಖದುಃಖಾದಿ ದ್ವಂದ್ವ  
ಗಳನ್ನು ಸಮನಾಗಿ ಭಾವಿಸಿ ಶುದ್ಧಮನಸ್ಸಿನಿಂದ ಪ್ರಾಣ  
ಧಾರಣೆಗಾಗಿ ಮಾತ್ರ ಕ್ಷೇಪಕಾಲದಲ್ಲಿ ಭಿಕ್ಷಾಟನೆ  
ಮಾಡುತ್ತ ಶೂನ್ಯಗೃಹದೇವಾಲಯ ವ್ಯಕ್ತಮೂಲ ನದೀ  
ತೀರ ಪರ್ವತದ ಗುಹೆ ಮೊದಲಾದ ವಿವಿಕ್ತ ಪ್ರದೇಶ  
ಗಳಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುತ್ತ ಅಹಂಕಾರ ಮಮಕಾರ ಶೂನ್ಯ  
ನಾಗಿ ಸರ್ವದಾ ಪ್ರಣವವನ್ನು ಜಪಿಸುತ್ತ ಶುಭಾಶುಭ  
ಕರ್ಮಗಳ ನಿರ್ಮೂಲನಕ್ಕಾಗಿ ಸಂನ್ಯಾಸದಿಂದ ದೇಹವನ್ನು  
ತ್ಯಜಿಸಲು ಯತ್ನಿಸುವವನು ಪರಮಹಂಸನು. “ಪ್ರಣವಾ-  
ಶಾಸ್ತ್ರಯೋ ವೇದಾಃ ಪ್ರಣವೇ ಪರ್ಯವಸ್ಥಿತಾಃ | ತಸ್ಮಾತ್ಪ್ರಣವಮೇವೈಕಂ  
ಪರಮಹಂಸಃ ಸದಾ ಜಪೇತ್ | ವಿವಿಕ್ತದೇಶಮಾಶ್ರಿತ್ಯ ಸುಖಾಸೀನಃ  
ಸಮಾಹಿತಃ | ಯಥಾಶಕ್ತಿ ಸಮಾಧಿಸ್ಥಃ ಭವೇತ್ ಸನ್ಯಾಸಿನಾಂ  
ವರಃ” ಸ್ಮೃತಸಂ |

**ಪರಮಾಣು ಪರಮಾಣು (ಫಂ)** 1. ಅತಿಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ಕಣ,  
ಬಹಳ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ಅಂಶ. ಬಹಳ ಸಣ್ಣದಾದ ರೇಣು  
(ಧೂಳು). ಪರಮಾಣುಸೌ ಅಣುಶ್ಚ | ಮನೆಯ ಹೆಚ್ಚಿನ  
ಅಥವಾ ಬೇರೆ ಯಾವುದಾದರೂ ಕಿಟಕಿ (ಗವಾಕ್ಷ) ಮೊದ  
ಲಾದುವುಗಳ ಸಂದಿನಿಂದ ಬೀಳುವ ಸೂರ್ಯಕಿರಣಗಳಲ್ಲಿ  
ಕಾಣುವ (ಸಂಚರಿಸುವ) ಅತಿ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ಧೂಳಿನ  
ಅರನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗವು ಪರಮಾಣು. “ಜಾಲಸೂರ್ಯ-  
ಮರೀಚಿಸ್ಥಂ ಯತ್ಸೂಕ್ಷಮಂ ದೃಶ್ಯತೇ ರಜಃ | ತಸ್ಯ ಷಷ್ಠತಮೋ ಭಾಗಃ  
ಪರಮಾಣುಃ ಸ ಉಚ್ಯತೇ” | “ಪರಗುಣಪರಮಾಣುನ್ ಪವಂತೀಕೃತ್ಯ  
ನಿತ್ಯಂ ನಿಜಹೃದಿ ವಿಕಸಂತಃ ಕ್ಷಯಾಪಯಂತಃ ಕಿಯಂತಃ” ಭೃಂ  
೧-೭೦ | ಎರಡು ಪರಮಾಣುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದ್ರವ್ಯವು  
ದ್ವ್ಯಣುಕವಾಗುವುದು. ಹೀಗೆಯೇ ತ್ರ್ಯಣುಕಾದಿ ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡ  
ಪರ್ಯಂತ ಎಲ್ಲಕ್ಕೂ ಮೂಲಕಾರಣವಾದುದು ಪರ  
ಮಾಣು. ಆದರೆ ಪರಮಾಣುವಿಗೆ ಕಾರಣವಾದುದು  
ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲ. ಪೃಥಿವಿ, ಅಪ್ಪು, ತೇಜಸ್ಸು ಮತ್ತು  
ವಾಯುಗಳೆಂಬ ನಾಲ್ಕು ಭೂತಗಳ ಅತಿ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ  
ದ್ರವ್ಯವು ಪರಮಾಣು. ಇದು ನಿತ್ಯ ಮತ್ತು ಅವಯವ

ಶೂನ್ಯವಾದುದು. ಇದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದುದು  
ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲ. ಇದು ಅತೀಂದ್ರಿಯ. ಈ ಪರಮಾಣು  
ಗಳಿಂದಲೇ ಪರಮಾತ್ಮನು ದ್ವ್ಯಣುಕ ತ್ರ್ಯಣುಕಾದಿ ಕ್ರಮ  
ದಿಂದ ಸ್ಥೂಲ ಪೃಥ್ವೀ ಜಲ ತೇಜಸ್ಸು ಮತ್ತು ವಾಯು  
ಗಳನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸುವನು. 2. ಅತಿ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ಕಾಲ,  
ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲಕ್ಕಿಂತಲೂ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ಭಾಗ, ಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ಯಾವುದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಕೆಳಗಿನ ವಿಭಾಗವಿಲ್ಲವೋ ಅದು  
(ಪರಮಾಣು ಕಾಲ). ಸೂರ್ಯಗತಿಯ ಮೇಲೆ ಕಾಲಗತಿ  
ಯಲ್ಲಿಯೂ ಸ್ಥೂಲಸೂಕ್ಷ್ಮ ವಿಭಾಗಗಳುಂಟು. ಸೂರ್ಯನು  
ಒಂದು ಪರಮಾಣು ಪ್ರದೇಶವನ್ನು ದಾಟುವಷ್ಟು ಕಾಲವು  
ಪರಮಾಣುಕಾಲ. ಸೂರ್ಯನು ದ್ವಾದಶರಾಶಿ ಸ್ವರೂಪ  
ವಾದ ಈ ಲೋಕವನ್ನು ದಾಟುವಷ್ಟು ಕಾಲವು (ಒಂದು  
ಸಂವತ್ಸರ) ಮಹಾಕಾಲವೆನಿಸುವುದು. “ಸ ಕಾಲಃ ಪರಮಾಣುರ್ವಿ  
ಯೋ ಭುಕ್ತೇ ಮರಮಾಣುತಾಮ್ | ಸತೋಽವಿಶೇಷಭುಗ್ಯಸ್ತು ಸ ಕಾಲಃ  
ಪರಮೋ ಮಹಾನ್” ಭಾಗಂ ೩-೧೧-೪ |

**ಪರಮಾಣುಜ್ಞಕ ಪರಮಾಣುಂಗಳ (ಫಂ)** ವಿಷ್ಣು,  
ಸರ್ವೇಶ್ವರ. ಪರಮಾಣುಜ್ಞಕಂ ಯಸ್ಯ | ಸಕಲ ಜಗತ್ತನ್ನೂ  
ಸೃಷ್ಟಿಸುವ ಈಶ್ವರನಿಗೆ ಪರಮಾಣುಗಳೆಲ್ಲವೂ ಅಂಗವಾಗಿರು  
ವುವು.

**ಪರಮಾತ್ಮನ್ ಪರಮಾತ್ಮನ್ (ಫಂ)** ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಬ್ರಹ್ಮ.  
ಪರಮಾತ್ಮಸೌ ಆತ್ಮಾ ಚ | “ಪರಮಾತ್ಮಾ ಪರಂ ಬ್ರಹ್ಮ ನಿರ್ಗುಣಂ  
ಪ್ರಕೃತೇ ಪರಃ | ಕಾರಣಂ ಕಾರಣಾನಾಂ ಚ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣೋ ಭಗವಾನ್  
ಸ್ವಯಮ್” ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ | “ಪೂತಾತ್ಮಾ ಪರಮಾತ್ಮಾ ಚ ಮುಕ್ತಾನಾಂ  
ಪರಮಾ ಗತಿಃ” ವಿಂ ಸಂ | ಸಕಲ ಜೀವರೂಪರಮಾತ್ಮ  
(ಈಶ್ವರ)ನಿಂದ ಆತ್ಮವಂತರು. ಪರಮಾತ್ಮನು (ಈಶ್ವರನು)  
ಯಾರಿಂದಲೂ ಆತ್ಮವಂತನಲ್ಲ. ಇದರಿಂದ ಈಶ್ವರನು  
ಪರಮಾತ್ಮನು. “ಯೇನ ಭೂತಾನ್ಯಾತ್ಮವಂತಿ ನಾಯಮನ್ಯೇನ  
ಚಾತ್ಮವಾನ್ | ಅತೋಹ್ಯಾತ್ಮೇಶ್ವರತ್ವಾನ್ವ ಪರಮಾತ್ಮಾ ಪ್ರಕೀರ್ತತಃ”  
ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ | “ನ ದೈವಂ ಕೇಶವಾತ್ಪರಮ್” | “ಪರಃ ಪರಾಣಾಂ  
ಪರಮಃ ಪರಮಾತ್ಮಾತ್ಮಸಂಸ್ಥಿತಃ” ವಿಷ್ಣುಪುಂ | “ನ ತ್ವತ್ಸಮೋಽ-  
ಸ್ಯಮ್ಯಧಿಕಃ ಕುತೋಽನ್ಯಃ” ಗೀತಾ ೧೧-೪೩ | “ಮತ್ತಃ ಪರತರಂ  
ನಾನ್ಯತ್ ಕಿಂಚಿದಸ್ತಿ” ಗೀತಾ ೭-೭ | “ಯಸ್ಮಾತ್ಪರಂ  
ನಾಪರಮಸ್ತಿ ಕಿಂಚಿತ್ ಯಸ್ಮಾನ್ನಾಣೀಯೋ ನ ಜ್ಯಾಯೋಽಸ್ತಿ  
ಕಿಂಚಿತ್” ಶ್ವೇತಾಂ ತಪಂ ೩-೯ | ಸ್ವರೂಪ ಗುಣರೂಪ  
ಮತ್ತು ಐಶ್ವರ್ಯಾದಿಗಳಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನವಾದಂತಲೂ  
ಉತ್ಪನ್ನವೂ ಆತ್ಮಾಂತರರಹಿತವೂ ಅದುದರಿಂದ  
ಈಶ್ವರನು ಪರಮಾತ್ಮನು. “ನ ಚ ಯೋಗವಿಧೇನೈತರಃ  
ಸ್ಥಿರವಿರಾಪರಮಾತ್ಮದರ್ಶನಾತ್” ರಘುಂ ೮-೨೨ |



**ಪರಮಾರ್ಥ ಪರಮಾರ್ಥೈತ (ಫಂ)** ಪರಮಾರ್ಥ, ವಿಷ್ಣು. ಪರಮಮಾರ್ಥೈತ ಯಸ್ಯ | ಪರಮ: ಅದ್ವೈತೋ ವಾ | ಪರಮಾರ್ಥೈತನು ಚಿದಚಿದ್ವೈತಶಿಷ್ಟನಾಗಿ ಒಬ್ಬನೇ ಆಗಿರುವುದರಿಂದ ಅದ್ವೈತನು. ಪರಮನಾದ ಅದ್ವೈತನು ಪರಮಾರ್ಥೈತನು.

**ಪರಮಾನಂದ ಪರಮಾನಂದ (ಫಂ)** 1. ಸರ್ವೋತ್ಕೃಷ್ಟವಾದ ಅನಂದಸ್ವರೂಪನಾದ ಪರಮಾರ್ಥ. ಪರಮ: ಸರ್ವೋತ್ಕೃಷ್ಟ: ಆನಂದ: | 2. ಅನಂದಯುಕ್ತನಾದ ಪರಮಾರ್ಥ.

**ಪರಮಾನ್ನ ಪರಮಾನ್ನ (ನಂ)** ಪಾಯಸ, ಕ್ಷೀರಾನ್ನ, ಕ್ಷೀರದಲ್ಲಿ ಪಕ್ವವಾದ ಅನ್ನ. ಪರಮಂ ಚ ತದನ್ನಂ ಚ |

**ಪರಮಾಯುಸ್ ಪರಮಾಯುಸ್ (ನಂ)** ಮನುಷ್ಯ ಮತ್ತು ತೀರ್ಥಾಚಾರಿ ಪ್ರಾಣಿಗಳು ಜೀವಿಸುವ ಕಾಲ, ಮನುಷ್ಯಾದಿಗಳಿಗೆ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ ಪರಮಾವಧಿ ಜೀವಿತದ ಕಾಲ. ಪರಮಮ್ ಆಯು: |

ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ಪರಮಾವಧಿ

ಜೀವಿತಕಾಲ 125 ವರ್ಷ ಮತ್ತು 5 ದಿನಗಳು

|                         |    |            |
|-------------------------|----|------------|
| ಅನೆಗೂ                   | "  | "          |
| ಕುದುರೆಗೆ                | .. | 32 ವರ್ಷಗಳು |
| ಕತ್ತೆ ಮತ್ತು ಒಂಟೆಗಳಿಗೆ.. | 25 | "          |
| ಹಸು ಮತ್ತು ಎಮ್ಮೆಗಳಿಗೆ..  | 24 | "          |
| ನಾಯಿಗೆ                  | .. | 12 "       |
| ಜಿಂಕೆ, ಹಂದಿ, ಆಡು, ಕುರಿ  |    |            |

ಮುಂತಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳಿಗೆ 16 "

"ಶತಂ ವರ್ಷಾಣಿ ವಿಶತ್ಯಾ ನಿಶಾಭಿ: ಪಂಚಾಭಿ: ಸಹ | ಪರಮಾಯುರಿದಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ನರಾಣಾಂ ಕರಿಣಾಮಿಹ || ಅಂದಾ ದ್ವಾತ್ರಿಶದಶಾನಾಂ ಶುನಾಂ ದ್ವಾದಶವತ್ಸರಾ: | ಪಂಚವಿಂಶತಿವರ್ಷಾಣಿ ಕ್ಷೀರಸ್ಯ ಕರಭಸ್ಯ ಚ | ಚತುರ್ವಿಂಶತಿವರ್ಷಾಣಾಂ ವೃಷಸ್ಯ ಮಹಿಷಸ್ಯ ಚ | ಮೃಗಶೂಕರಬಸ್ತಾದಿಪಶುನಾಂ ಷಡ್ದಶಾನ್ವಿತಾ: " ||

**ಪರಮಾರ್ಥ ಪರಮಾರ್ಥ (ಫಂ)** 1. ಪರಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನ. ಪರಮಶ್ರೇಷ್ಠವರ್ತಮಾನ. "ಇದಂ ಹಿ ತತ್ವಂ ಪರಮಾರ್ಥಭಾಜಾಮಯಂ ಹಿ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಪುರುಷ: ಪುರಾಣ: " ಮಂ ವೀಂ ೭-೨ | 2. ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ. ಪರಮ: ಮುಖ್ಯ: ಅರ್ಥ: ಪ್ರಯೋಜನಮ್ | 3. ಸುಖ. 4. ಯಥಾರ್ಥ, ನಿಜ, ಸ್ವಲ್ಪವೂ ಸುಳ್ಳಿನ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ ಸತ್ಯ. "ಪರಿಹಾಸವಿಜೃಂಭಿತಂ ಸತ್ವೇ ಪರಮಾರ್ಥೇನ ನ ಗೃಹ್ಯತಾಂ ವಚ: " ಶಾಕುಂ ೨-೧೮ | 5. ಉತ್ತಮವಾದ ವಸ್ತು. 6. ಉತ್ತಮವಾದ ಐಶ್ವರ್ಯ.

**ಪರಮಾರ್ಥತಸ್ ಪರಮಾರ್ಥತಸ್ (ಅವ್ಯಂ)** ನಿಜವಾಗಿ, ಯಥಾರ್ಥವಾಗಿ, ಸತ್ಯವಾಗಿ. ಪರಮಾರ್ಥ "ತಸಿ: " (ವಾಂ ೪-೪೪) | "ವಿಕಾರಂ ಕ್ಷಲು ಪರಮಾರ್ಥತೋಜ್ಞಾತ್ವಾನಾ-ರಮ್ಭ: ಪ್ರತೀಕಾರಸ್ಯ " ಶಾಕುಂ ೩ |

**ಪರಮಿಕಾ ಪರಮಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅತಿಶಯವಾದ. "ಮುಧಂ ಪರಮಿಕಾಂ ಲೇಖೇ ನನಂದ ಚ ನರಾಧಿಪ: " ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೩೩-೨೬ |

**ಪರಮೈತ ಪರಮೈತ (ಫಂ)** ಪಾಯಸ, ಕಾಗೆ. ಪರಮೈತ ಮೈತುರಸ್ಯ | ಕಾಗೆಗಳಿಗೆ ಯಾವ ರೋಗದಿಂದಲೂ ಸಾವಿಲ್ಲ. ಮನುಷ್ಯನಿಂದ ಅಥವಾ ಇತರ ಆಘಾತದಿಂದ ಮಾತ್ರ ಇದಕ್ಕೆ ಸಾವು.

**ಪರಮೇಶ ಪರಮೇಶ (ಫಂ)** ಪರಮಾರ್ಥ.

**ಪರಮೇಶ್ವರ ಪರಮೇಶ್ವರ (ಫಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾರ್ಥ. 2. ಪರಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. "ಶೂಲಿ ದಕ್ಷಾಧ್ವರಾರಾತಿ: ಕಾಮಾರಿ: ಪರಮೇಶ್ವರ: " ವೈಜಂ | 3. ಇಂದ್ರ. 4. ಸಾರ್ವಭೌಮ, ಚಕ್ರವರ್ತಿ.

**ಪರಮೇಷ್ಠಿನ್ ಪರಮೇಷ್ಠಿನ್ (ಫಂ)** 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಪರಮೇ ಷ್ಯೋಮನಿ ಬ್ರಹ್ಮಪದೇ ತಿಷ್ಠತಿ - ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಇನಿ: " (ತಂ ೪-೧೦) | ಪತ್ವಮ್ (ವಾಂ ೮-೩-೯೭) | ಅಲುಕ್ (೬-೩-೧೪) | "ಮನ್ವಂತರಾಪ್ಯಪುಂಶ್ಯಾನಿ ಸರ್ಗ: ಸಂಹಾರ ಏವ ಚ | ಕ್ರೋಡನಿವೃತ್ತತ್ ಕುಸ್ತೇ ಪರಮೇಷ್ಠಿ ಪುನ: ಪುನ: " ಮನುಂ ೧-೮೦ | 2. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾರ್ಥ. "ಯಥೇವ ಇಲಾಘ್ಯತೇ ಗಜ್ಞಾ ಪಾದೇನ ಪರಮೇಷ್ಠಿನ್: | ಪ್ರಭವೇಣ ದ್ವಿತೀಯೇನ ತಥೈವೋಚ್ಚಿ-ರಸಾ ತ್ವಯಾ " ಕುಮಾಂ ೬-೭೦ | "ಭೂತಾರ್ಥವ್ಯಾಹೃತಿ: ಸಾ ಹಿ ನ ಸ್ತುತಿ: ಪರಮೇಷ್ಠಿನ್: " ರಘುಂ ೧೦-೩೩ | 3. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.

**ಪರಮ್ಪರ ಪರಂಪರ (ಫಂ)** 1. ಪ್ರಪೌತ್ರನ ಮಗ, ಮರಿ ಮಗನ ಮಗ. 2. ಮರಿಮಗನ ಮೊಮ್ಮಗ, ಪ್ರಪೌತ್ರನ ಮೊಮ್ಮಗ. "ನಪ್ತಾರೋ ಪೌತ್ರದೌಹಿತ್ರೋ ಪ್ರತಿನಪ್ತಾ ಪ್ರಪೌತ್ರಕ: | ಪರಮ್ಪರಸ್ತು ತತ್ಪುತ್ರ: ತತ್ಪುತ್ರೋಪಿ ಪರಮ್ಪರ: " ವೈಜಂ | 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. "ಮೃಗಭೇದೇ ಚ ಪುತ್ರಸ್ಯ ಪ್ರಪೌತ್ರೇ ಚ ಪರಮ್ಪರ: " ಶಾಶ್ವಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪರಾ -ಪರಂ. 4. ವಂಶ, ಸಂತಾನ, ಕುಲ. 5. ಅನುಕ್ರಮ, ಪರ್ಯಾಯ, ಒಂದಾದ ಮೇಲೆ ಒಂದು ಬರುವಿಕೆ. "ಮಹತೀಯಂ ಕ್ಷತ್ವನರ್ಥ-ಪರಮ್ಪರಾ " ಕಾದಂ | 6. ಹಿಂಸೆ, ಪೀಡೆ, ತೊಂದರೆ. 7. ಪಜ್ಜೆ, ಸಾಲು. "ತೋಯಾಂತರಭಾಸ್ಕರಾಲಿವ ರೇಜೆ ಮುನಿಪರಮ್ಪರಾ " ಕುಮಾಂ ೬-೪೯ | "ಪರಮ್ಪರೋ ಮೃಗಭೇದೇ ಪ್ರಪೌತ್ರೇ ತನಯಸ್ಯ ಚ | ಪರಮ್ಪರಾ ಪರಿಪಾಟಯಾಂ ಹಿಸಾಸಂತಾನಯೋರಪಿ " ಮೇದಿಂ |

**ಪರಮ್ಪರಾಕ ಪರಂಪರಾಕ (ನಂ)** ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಪಶುವಧೆ. ಪರಂ ಪರ: ಶ್ರೇಷ್ಠ: ಆಕೋಽಸ್ಮಾತ್ |



**ಪರಮ್ಪರೀಣ ಪರಂಪರೀಣ** (ವಿಂ) ಪರಂಪರೆಯಾಗಿ ಪಾಪ್ಪ ವಾದ, ವಂಶಕ್ರಮದಿಂದ ಬಂದ. ಪರಾಂಶ್ಚ ಪರತರಾಂಶ್ಚ ಅನುಭವತಿ "ಃ" (೪-೨-೧೦) । ಪ್ರಕೃತೇ: ಪರಮ್ಪರಭಾವೋ ನಿಪಾತ್ಯತೇ । "ಲಕ್ಷ್ಮಿಂ ಪರಮ್ಪರೀಣಾಂ ತ್ವಂ ಪುತ್ರಪೌತ್ರಿಣತಾಂ ನಯ" ಖಡ್ಗಂ ೪-೧೫ ।

**ಪರಲೋಕ ಪರಲೋಕ** (ಪುಂ) ಮುಂದಿನ ಲೋಕ, ಉರ್ಧ್ವ ಲೋಕ, ಸ್ವರ್ಗಾದಿ ಲೋಕ.

**ಪರವತ್ ಪರವತ್** (ವಿಂ) 1. ಪರತಂತ್ರ, ಪರಾಧೀನ, ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ಆಶ್ರಯದಲ್ಲಿರುವ. ಪರ: ಸ್ವಾಮಿ ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪) । "ತವ ಶಾಸನಮಾಶು ಭೂಪತಿ: ಪರವಾನಃ ಯತಸ್ತ್ವಯೇವ ಸ:" ಮಾಘಂ ೧೬-೪ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) । -ವತೀ -ವತೀ. "ಜಾನೇ ತಪಸೋ ವೀರ್ಯ ಸಾ ಬಾಲಾ ಪರವತೀತಿ ಮೇ ವಿವಿದಿತಮ್" ಶಾಕುಂ ೩-೧ । 2. ಇತರನ ಪ್ರಭಾವಕ್ಕೆ ಒಳಪಟ್ಟ, ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ನೈತಿಕ ಬಲದಿಂದ ಜಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪರವಶ ಪರವಶ** (ವಿಂ) ಪರತಂತ್ರ, ಪರಾಧೀನ. ಪರಸ್ಯ ವಶ: ।

**ಪರವಾಣಿ ಪರವಾಣಿ** (ಪುಂ) 1. ನ್ಯಾಯಾಧೀಶ, ಧರ್ಮಾಧ್ಯಕ್ಷ. 2. ಸಂವತ್ಸರ. "ಪರವಾಣಿ: ಪುಮಾನ್ ಧರ್ಮಾಧ್ಯಕ್ಷ-ವತ್ಸರಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ ।

**ಪರವಾದ ಪರವಾದ** (ಪುಂ) ಅಪವಾದ.

**ಪರಶ ಪರಶ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಮಣ. ಸ್ಫುಶತಿ - ಪೃಷಂ । ತನ್ನ ಸ್ಪರ್ಶಮಾತ್ರದಿಂದ ಇತರ ಲೋಹಗಳನ್ನು ಸ್ಪರ್ಶ ವಾಗಿ ಮಾಡುವ ಒಂದು ರತ್ನ.

**ಪರಶಘ ಪರಶಘ** (ವಿಂ) ಕೊಡಲಿಗೆ ಹಿತವಾದ. ಪರಶಾವೇ ಹಿತಮ್ ।

**ಪರಶು ಪರಶು** (ಪುಂ) 1. ಕೊಡಲಿ, ಮರವನ್ನು ಕಡಿಯುವ ಒಂದು ಆಯುಧ. ಪರಾನ್ ಶೃಣಾತಿ - ಶ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕು:" (ತಂ ೧-೩೩) । ಟಿಲೋಪಶ್ಚ । "ತಗ್ರೇಣ ಭೋಸ್ತವ ತಪಸ್ತಪಸಾ ದಹಾಮಿ ಪಕ್ಷಾಂತರೇ ಚ ಸದೃಶಂ ಪರಶು: ಕರೋತು" ಮಂ ವೀಂ ೩-೪೪ । 2. ಆಯುಧ, ಶಸ್ತ್ರ. 3. ಟಂಕಣ ಕಾರ, ಬಿಳಿಗಾರ, ಶಸ್ತ್ರಕಾರ. "ಪರಶು: ಶಸ್ತ್ರಕಣ್ಡಕ: ಶಸ್ತ್ರಕ್ಷಾರೋ ಮಹಾಬಲ:" ವೈಜಂ ।

**ಪರಶುಧರ ಪರಶುಧರ** (ಪುಂ) 1. ಪರಶುರಾಮ. ಜಮದಗ್ನಿ ಮುಷಿಯ ಮಗ, ವಿಷ್ಣುವಿನ ಒಂದು (ಆವೇಶ) ಅವತಾರ. ಧರತಿ - ಧೃತ್ (ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । ಪರಶೋಧರ: । 2. ಗಣಪತಿ. (ವಿಂ) 3. ಕೊಡಲಿಯನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ.

**ಪರಶುರಾಮ ಪರಶುರಾಮ** (ಪುಂ) ಜಮದಗ್ನಿ ಮುಷಿಯ ಮಗನು ವಿಷ್ಣುವಿನ (ಆವೇಶ) ಅವತಾರ. ಪರಶುಧರೋ ರಾಮ: । ವಿಷ್ಣುವು ಈ ಅವತಾರವನ್ನೆತ್ತಿ ರಾಜ್ಯಮದಿಂದ ದೃಷ್ಟ ರಾಗಿದ್ದ ದುಷ್ಟಕ್ಷತ್ರಿಯರೊಡನೆ ಇಪ್ಪತ್ತೊಂದು ಸಲ ಯುದ್ಧಮಾಡಿ ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಸಂಹರಿಸಿದನು. ಇದು ವಿಷ್ಣುವಿನ ಹದಿನಾರನೆಯ ಅವತಾರ. "ಅವತಾರೆ ಷೋಡಶಮೇ ಪಶ್ಯನ್ ಬ್ರಹ್ಮದ್ರಹೋ ನೃಪಾನ್ । ತ್ರಿಸಪ್ತಕೃತ್ವ: ಕುಪಿತೋ ನಿ: -ಕ್ಷತ್ರಾಮಕರೋನ್ಮಹೀಮ್" ಭಾಗಂ ೧-೩-೨೦ । ಪರಶುರಾಮನು ತಂದೆಯ ಆಜ್ಞೆಯಂತೆ ತನ್ನ ತಾಯಿ ರೇಣುಕೆಯ ಶಿರಸ್ಸನ್ನು ಕಡಿದು ಮತ್ತೆ ತಂದೆಯ ವರದಿಂದ ತಾಯಿಯನ್ನು ಬದುಕಿಸಿದನು. ಒಂದು ದಿನ ಕಾರ್ತವೀರ್ಯಾರ್ಜುನನು ಜಮದಗ್ನಿಯ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಬಂದು ಆತನ ಹೋಮಧೇನು ವನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿಕೊಂಡು ಹೋಗಲು ಪರಶುರಾಮನು ಆತನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಮಾಡಿ ಸಂಹರಿಸಿದನು. ಇದರಿಂದ ಕುಪಿತರಾದ ಆತನ ಮಕ್ಕಳು ಪರಶುರಾಮನಿಲ್ಲದಿದ್ದಾಗ ಜಮದಗ್ನಿಯ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಬಂದು ಆತನನ್ನು ಕೊಂದರು. ಇದನ್ನು ತಿಳಿದ ಪರಶುರಾಮನು ಕ್ರೂರನಾಗಿ ಇಪ್ಪತ್ತೊಂದು ಸಲ ಯುದ್ಧಮಾಡಿ ಕ್ಷತ್ರಿಯಕುಲವನ್ನೇ ನಿರ್ಮೂಲ ಮಾಡಿ ಭೂಮಿಯನ್ನು ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರು ಮಾಡಿದನು. ಕರ್ಣನು ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ವೇಷದಿಂದ ಪರಶು ರಾಮನಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ ಅಸ್ತ್ರವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿತನು. ಈ ಮೋಸವನ್ನು ಅರಿತು ಪರಶುರಾಮನು ಕರ್ಣನ ಬಾಣಗಳು ಫಲಿಸದಿರಲೆಂದು ಶಾಪವಿತ್ತನು. ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರು ಪರಶುರಾಮನಲ್ಲಿ ಅಸ್ತ್ರವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸಮಾಡಿದರು. ಪರಶು ರಾಮನು ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗ ಮಾಡಿ ಭೂಮಿಯನ್ನೆಲ್ಲಾ ಕಶ್ಯಪನಿಗೆ ದಾನಮಾಡಿದನು. ಪರಶುರಾಮನು ಶ್ರೀರಾಮ ನಿಂದ ಪರಾಜಿತನಾದನು. ಈತನು ಏಳು ಮಂದಿ ಪಿರಂಜೀವಿಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. "ಅಶ್ವತ್ಥಾಮಾ ಬಲಿಷ್ಠಸಿಂ ಹನುಮಾಂಶ್ಚ ವಿಭೀಷಣ: । ಕೃಪ: ಪರಶುರಾಮಶ್ಚ ಸಪ್ತೇತಿ ಸ್ಥಿರಜೀವಿನ:" ॥

**ಪರಶುವನ ಪರಶುವನ** (ನಂ) ಒಂದು ನರಕ.

**ಪರಶ್ವಧ ಪರಶ್ವಧ** (ಪುಂ) ಕೊಡಲಿ, ಮರವನ್ನು ಕಡಿಯುವ ಒಂದು ಆಯುಧ. ಪರಸ್ಯ ಶ್ವಯನಮ್ - ಟು ಆಶ್ವಿ (ವೃದ್ಧಯೋ: ) "ಡ:" (ವಾಂ ೩-೨-೧೦೨) । ಪರಶ್ವಧ - ಧತ್ (೧ಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩) । "ಧಾರಾ ಸಿತಾಂ ರಾಮ-ಪರಶ್ವಧಸ್ಯ ಸಂಭಾವಯತ್ಯುತ್ಪಲಪತ್ರಸಾರಾಮ್" ರಘುಂ ೬-೪೨ ।

**ಪರಶ್ವಸ್ ಪರಶ್ವಸ್** (ಅವ್ಯಂ) ನಾಳೆಯ ಮುಂದಿನ ದಿನ, ನಾಳೆದ್ದು. ಪರ:ಶ್ವಸ್ ಪೃಷಂ ।



**ಪರಸಂಜಕ ಪರಸಂಜಕ (ಪುಂ)** ಜೀವಾತ್ಮ. ಪರ: ಸಂಜಾ  
ಅಸ್ಯ "ಕಪ್" (೪-೪-೧೪೪) ।

**ಪರಸವರ್ಣ ಪರಸವರ್ಣ (ಪುಂ)** ಮುಂದಿನ ವರ್ಣಕ್ಕೆ ಸಮಾನ  
ವಾದ ವರ್ಣ. ಪರೇಣ ಸಮಾನೋ ವರ್ಣ: ।

**ಪರಸ್ತಾತ್ ಪರಸ್ತಾತ್ (ಅವ್ಯಂ)** 1. ಅಂತೆ, ಅದರಿಂದ  
ಮುಂದೆ, ಅದಕ್ಕೆ ಅನಂತರ, ಅದರ ಬಳಿಕ. ಪರ ವಾ  
"ಅಸ್ತಾತಿ:" (೪-೩-೨೯) । 2. ಅನಂತರ, ಬಳಿಕ,  
ತರುವಾಯ. "ತತ್ಪರಸ್ತಾದವಗಮ್ಯತೇ" ಶಾಕ್ರಂ ೧ ।

**ಪರಸ್ತ್ರೀ ಪರಸ್ತ್ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪರಪುರುಷನ ಪತ್ನಿ, ಇನ್ನೊಬ್ಬನ  
ಹೆಂಡತಿ.

**ಪರಸ್ಪರ ಪರಸ್ಪರ (ವಿಂ)** 1. ಅನೊಂದೊಬ್ಬನಾದ, ಒಬ್ಬನಿ  
ಗೊಬ್ಬನ. "ಪರಸ್ಪರಪ್ರಾಪ್ತಿನಿರಾಶಯೋರ್ವರಂ ಶರೀರನಾಶೋಽಪಿ  
ಸಮಾನುರಾಗಯೋ:" ಮಾಲಂ ೩-೧೪ । "ಪರಸ್ಪರಾಕ್ಷಿಸಾದೃಶ್ಯ-  
ಮದೂರೋಜ್ಜಿತವರ್ತಮಸು" ರಘುಂ ೧-೪೦ । (ಅವ್ಯಂ) 2.  
ಅನೊಂದೊಬ್ಬನಾಗಿ. "ಪರಸ್ಪರೇಣ ವಿಜ್ಞಾತಸ್ತೇಷುಪಾಯನಪಾಣಿಭು"  
ರಘುಂ ೪-೭೯ । "ಪರಿಫುಲ್ಲಗಂಧಪುಲಕಾ: ಪರಸ್ಪರಂ ಪರಿರೆಭಿರೆ  
ಕುಕುರವೋರವಸ್ತ್ರಯ:" ಮಾಧಂ ೧೩-೧೬ ।

**ಪರಸ್ಮೈಪದ ಪರಸ್ಮೈಪದ (ನಂ)** ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ  
ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಪದ, ಮಾಡುವ ಕ್ರಿಯೆಯ ಫಲವು  
ಇತರನಿಗೆ ಸೇರಿದುದೆಂದು ಹೇಳುವ ಪದ. ಪರಸ್ಮೈ ಪದಮ್  
"ಅಲುಕ್" (೬-೩-೮) । "ಶೇಷಾತ್ಕರ್ತರಿ ಪರಸ್ಮೈಪದಮ್"  
(೧-೩-೭೮) ।

**ಪರಾ ಪರಾ (ಅವ್ಯಂ)** ನಾಮಪದ ಮತ್ತು ಕ್ರಿಯಾಪದಗಳ  
ಹಿಂದೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವ ಒಂದು ಉಪಸರ್ಗ. ಇದು ಈ ಕೆಳಗಿನ  
ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ ದ್ಯೋತಕವಾಗುವುದು. 1. ಪ್ರಾತಿಲೋಮ್ಯ,  
ವ್ಯತ್ಯಾಸ, ಒಂದು ಮುಂದಾಗುವುದು. 2. ಪ್ರಾಧಾನ್ಯ,  
ಮುಖ್ಯತೆ. 3. ವಧೆ, ಕೊಲ್ಲುವುದು, ನಾಶಪಡಿಸುವುದು.  
"ಪರಾಹತಶ್ವಸ್ತಶಿಖೇ ಶಿಖಾವತೋ ವಪುಷ್ಯವಿಕ್ಷಿಪ್ತಸಮಿಡ್ಧ-  
ತೇಜಸಿ" ಕಿರಾಂ ೧೬-೪೬ । 4. ಗಮನ, ಹೋಗುವುದು,  
ನಡೆಯುವುದು. 5. ಆಶ್ರಯ, ಅವಲಂಬನೆ. 6. ಸೋಲು  
ವುದು. "ಪರಾಭವಂ ತಸ್ಯ ಮಹಾಸುರಸ್ಯ" । 7. ಹಿಂತಿರುಗುವುದು.  
ಪರಾವೃತ್ತ: । 8. ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ, ಬಿಡುಗಡೆ. 9. ಅವ  
ಮಾನ. ಪರಾಭೂತ: । "ಪರಾಭವೋಽಪ್ಯುತ್ಸವ ಏವ ಮಾನಿನಾಮ್"  
ಕಿರಾಂ ೧-೪೧ । 10. ಹೊಡೆಯುವುದು, ತಾಕುವುದು.  
"ಅವಾಪ್ತಕಿಂಜಲ್ಕವಿಭೇದಮುಚ್ಚಕವಿವೃತ್ತಪಾಣಿನಪರಾಹತಂ ಪಯ:"  
ಕಿರಾಂ ೪-೪ । ಇತ್ಯಾದಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 11. ನಾಭಿರೂಪ  
ವಾದ ಮೂಲಾಧಾರದಿಂದ ಮೊದಲು ಹುಟ್ಟಿದ  
ನಾದರೂಪವಾದ ವರ್ಣ. "ಮೂಲಾಧಾರಾತ್ ಪ್ರಥಮಮುದಿತೋ

ಯಸ್ತು ತಾರ: ಪರಾಹ್ಯ:" ಅಲಂ ಕೌಸ್ತುಂ । ಅತ್ಯಂತ  
ಬುದ್ಧಿಯೊಡನೆ ಸೇರಿ ಬಾಹ್ಯವಿಷಯಗಳನ್ನು ಗ್ರಹಿಸಿ  
ಅದನ್ನು ಹೇಳಲು ಶಬ್ದೋಚ್ಚಾರಣೆಗಾಗಿ ಯತ್ನಿಸುವನು.  
ಈ ಶಬ್ದೋಚ್ಚಾರಣೆಗೆ ಮೂಲಾಧಾರದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ  
ನಾದ ಮೊದಲಾಗಿ ಅರ್ಥಬೋಧಕಶಬ್ದನಿಷ್ಪತ್ತಿಯವರೆಗೆ  
ಪರಾ ಪಶ್ಯಂತಿ ಮಧ್ಯಮಾ ಮತ್ತು ವೇಷರೀ ಎಂಬ ನಾಲ್ಕು  
ಅವಸ್ಥೆಗಳುಂಟು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಪಶ್ಯಂತಿ" ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.] 12. ಗಂಗಾನದಿ.

**ಪರಾಕ ಪರಾಕ (ಪುಂ)** ಹನ್ನೆರಡು ದಿನಗಳು ಉಪವಾಸವಿದ್ದು  
ಮಾಡುವ ಒಂದು ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತರೂಪವಾದ ವ್ರತ.  
"ಯತಾತ್ಮನೋಽಪ್ರಮತ್ತಸ್ಯ ಛಾದಶಾಹಮಭೋಜನಮ್ । ಪರಾಕೋ ನಾಮ  
ಕುಚ್ಛ್ರೋಷ್ಯಂ ಸರ್ವಪಾಪಾಪನೋದನ." ಮನುಂ ೧೧-೨೧೪ ।

**ಪರಾಕಾರ ಪರಾಕಾರ (ಪುಂ)** ಧಿಕ್ಕಾರ, ತಿಗಳಿಕೆ, "ಪರಾಕಾರಸ್ತು  
ಧಿಕ್ಕ್ರಿಯಾ" ವೇಜಂ ।

**ಪರಾಕ್ರಮ ಪರಾಕ್ರಮ (ಪುಂ)** ಬಲ, ಶಕ್ತಿ, ಶರೀರಸಾಮರ್ಥ್ಯ.  
ಪರಾ + ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಘಙ್" (೩-೩-೧೨೧) ।  
"ನಿರೀಕ್ಷಿತುಂ ವಿಯತಿ ಸಮೇತ್ಯ ಕೌತುಕಾತ್ ಪರಾಕ್ರಮಂ ಸಮರಮುಕ್ತೇ  
ಮಹಿಭೃತಾಮ್" ಮಾಧಂ ೧೭-೬೨ ।

**ಪರಾಗ ಪರಾಗ (ಪುಂ)** 1. ರೇಣು, ಧೂಳಿ. ಪರಾ ಗಂಚ್ಛತಿ  
—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಡ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) । "ಪ್ರತಾಪೋಽಗ್ರೇ  
ತತ: ಶಬ್ದ: ಪರಾಗಸ್ತದನಂತರಮ್" ರಘುಂ ೪-೩೦ ।  
2. ಹೂವಿನ ಧೂಳಿ, ಪುಷ್ಪದ ರೇಣು. "ನವಪಲಾಶ-  
ಪಲಾಶವನಂ ಪುರ: ಸ್ಫುಟಪರಾಗಪರಾಗತಪಕ್ಷಜಮ್" ಮಾಧಂ ೬-೨ ।  
3. ಚೂರ್ಣ, ಪುಡಿ. "ನವಾನಘೋಽವೋ ಬೃಹತ: ಪಯೋಧರಾನ್  
ಸಮೂಹಕರ್ಪೂರಪರಾಗಪಾಂಡುರಮ್" ಮಾಧಂ ೧-೪ । 4. ಸ್ನಾನೀಯ  
ಚೂರ್ಣ, ಸ್ನಾನವಾದ ಮೇಲೆ ಮೈಗೆ ಪೂಸುವ ಸುವಾಸ  
ನೆಯ ಪುಡಿ. 5. ಚಂದನ. 6. ಉಪರಾಗ, ಸೂರ್ಯ  
ಚಂದ್ರರ ಗ್ರಹಣ. 7. ಯಶಸ್ಸು, ಕೀರ್ತಿ. 8. ಒಂದು  
ಪರ್ವತ. "ಪರಾಗ: ಸುಮನೋರೇಣೌ ಭೂಲಿಸ್ನಾನೀಯಯೋರಪಿ ।  
ಗಿರಿಪ್ರಭೇದೇ ವಿಖ್ಯಾತಾವುಪರಾಗೇ ಚ ಚಂದ್ರನೇ" ಮೇದಿಂ ವಿಶ್ವಂ ।  
9. ಬಿದಿರು. "ಭವೇತ್ಪರಾಗ: ಸ್ನಾನೀಯೇ ವೇಣೌ ರೇಣೌ ಚ ಕೌಸುಮೇ"  
ನಾನಾಶಂಕರಂ । 10. ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವುದು.

**ಪರಾಗತ ಪರಾಗತ (ವಿಂ)** 1. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ, ಆವೃತವಾದ,  
ಸುತ್ತುವರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಾ + ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:"  
(೩-೨-೧೦೨) । "ನವಪಲಾಶಪಲಾಶವನಂ ಪುರ: ಸ್ಫುಟಪರಾಗ-  
ಪರಾಗತಪಕ್ಷಜಮ್" ಮಾಧಂ ೬-೨ । 2. ಹಿಂತಿರುಗಿದ.  
ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಬಂದ, "ವತ್ಸ, ಸಾವಧಾನೋ ಭವ । ಪರಾಗತಸ್ತೇ  
ಪ್ರತಿವೀರ:" ತಂ ರಾಂ ೪ ।



ಪರಾಗವತ್ ಪರಾಗವತ್ (ವಿಂ) ಪರಾಗದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಮಕರಂದಸಹಿತವಾದ, ಪುಷ್ಪದ ಧೂಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿರುವ. ಪರಾಗೋಸ್ತಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ವತೀ -ವತೀ.

ಪರಾಗಿನ್ ಪರಾಗಿನ್ (ವಿಂ) ಮಕರಂದದಿಂದ ಕೂಡಿರುವ, ಹೂವಿನ ಧೂಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪರಾಗೋಸ್ತಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) | ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | -ಗಿಣಿ -ಗಿಣಿ. "ಇದಮಪಾಸ್ಯ ವಿರಾಗಿ ಪರಾಗಿಣೀರಲಿಕದಂಬಕ-ಮಮ್ಬುರುಹಾ ತತೀ:" ಮಾಘಂ ೬-೧೧ |

ಪರಾಙ್ಮುಖ ಪರಾಙ್ಮುಖ (ವಿಂ) 1. ವಿಮುಖ, ಹಿಮ್ಮುಖ ವುಳ್ಳ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತಿರುಗಿಕೊಂಡಿರುವ. ಪರಾ ಅಚ್ಚತಿ — ಅಚ್ಚು (ಗತಿಪೂಜನಯೋ:) "ವಿವನ್" (೩-೨-೫೯) | ಪರಾಕ್ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ | "ಪ್ರಣಯಕೋಪಭೂತೋಪಿ ಪರಾಙ್ಮುಖಾಃ ಸಪದಿ ವಾರಿಧರಾರವಭೀರವ:" ಮಾಘಂ ೬-೩೮ | ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | "ವಿಗ್ರಹಾಚ್ಚ ಶಯನೇ ಪರಾಙ್ಮುಖೀನಿನೀತು-ಮಬಲಾಃ ಸ ತತ್ವರೇ" ರಘುಂ ೧೯-೩೮ | 2. ವಿಮುಖ, ಪ್ರತಿಹಾಸ. "ತನುರಪಿ ನ ತೇ ದೋಷೋಸ್ತಮಾಕಂ ವಿಧಿಸ್ತು ಪರಾಙ್ಮುಖ:" ಅಮರಂ ೩೦ | 3. ವಿರುದ್ಧ ನಡವಳಿಕೆಯುಳ್ಳ, ಇಷ್ಟವಿಲ್ಲದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ದ್ವೇಷದ ಮನೋಭಾವವುಳ್ಳ. "ಮಾತುರ್ನ ಕೇವಲಂ ಸ್ವಸ್ಯಾಃ ಶ್ರಿಯೋಸ್ತಾಸೀತ್ಪರಾಙ್ಮುಖ:" ರಘುಂ ೧೨-೧೩ | 4. ಅಲಕ್ಷ್ಯ, ಗಣನೆಗೆ ತಂದುಕೊಳ್ಳದ, ತಿರಸ್ಕಾರದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. "ದೇವಾತ್ಸರ್ಗದಿವ್ಯತ್ವಂ ಮರ್ತ್ಯ-ವಾಸ್ತವಾಪರಾಙ್ಮುಖ:" ರಘುಂ ೧೦-೪೩ | 5. ತಪ್ಪಿಸುವ, ಬಿಟ್ಟುಬಿಡುವ, ತೊರೆದುಬಿಡುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" -ಮುಖಿ -ಮುಖಿ. "ಪ್ರಾಢೇಣ ಸಾಮಗ್ರ್ಯವಿಧೌ ಗುಣಾನಾಂ ಪರಾಙ್ಮುಖಿ ವಿಶ್ವಸೃಜಃ ಪ್ರವೃತ್ತಿ:" ಕುಮಾರಂ ೩-೨೮ |

ಪರಾಚ್ ಪರಾಚ್ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂತಿರುಗಿಕೊಂಡ, ಮುಖ ವನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಮಾಡಿಕೊಂಡ, ಹಿಂದುಮುಂದಾದ. ಪರಾ ಅಚ್ಚತಿ—ಅಚ್ಚು (ಗತಿಪೂಜನಯೋ:) "ವಿವನ್" (೩-೨-೫೯) | "ಆತ್ಮೀಯಾಸ್ತೇ ಯೇ ಪರಾಚ್ಛಃ ಪುರಸ್ತಾದಮ್ಯಾವರ್ತೀ ಸಮುಖೋ ಯಃ ಪರೋಸ್ತೀ" ಮಾಘಂ ೧೮-೧೮ | 2. ವಿರುದ್ಧವಾದ, ಪ್ರತಿ ಕೂಲವಾದ. 3. ಬೇರೆ ಕಡೆಗೆ ತಿರುಗಿದ. 4. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ. 5. ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕಿನ. 6. ಪಶ್ಚಿಮ ದೇಶದ. 7. ಮುಂದಿನ ಕಾಲದ. (ಅವ್ಯಂ) 8. ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕಿನ ಕಡೆಗೆ. 9. ಪಶ್ಚಿಮ ದೇಶದ ಕಡೆಗೆ. 10. ಮುಂದಿನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಅಕಾಲದ ನಂತರ. "ತದಕ್ಪ್ರತ್ಯಕ್ಪರಾಗವಾಕ್ ಪ್ರಾಕ್ ಚ ತಿರ್ಯಗವಾಗಪಾಕ್ | ವಿಷ್ವಕ್ ಚೈವಮುದೀಚಿನಪ್ರಮುಖಾಃ ಸ್ಯುರ್ಯಾಕ್ರಮಮ್ | ದಿಗ್ದೇಶಕಾಲವಚನಮುದಗಾದಿಕಮವ್ಯಯಮ್ | ದಿಗ್ದೇಶಕಾಲಸಂಬಂಧಿಪದಾರ್ಥವಿಧೇಯವತ್" ವೆಂಜಂ |

ಪರಾಚಿತ ಪರಾಚಿತ (ವಿಂ) ಸೇವಕ, ಆಳು. ಪರೇರಾಚಿತಃ — ಆ + ಚಿತ್ (ಚಯನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ಪರಾಚಿತಪರಾಸ್ಕಂದಪರಜಾತಪರಾಚಿತಾಃ" ಅಮಂ |

ಪರಾಚೀನ ಪರಾಚೀನ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂತಿರುಗಿದ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಮುಖಮಾಡಿದ. ಪರಾ ಅಚ್ಚತಿ — ಅಚ್ಚು (ಗತಿಪೂಜನಯೋ:) "ಕ್ತ:" (೪-೪-೮) | 2. ಪಶ್ಚಿಮ ದೇಶದಲ್ಲಿರುವ.

ಪರಾಜಯ ಪರಾಜಯ (ಪುಂ) ಅಪಜಯ, ಸೋಲು. ಪರಾ + ಜಿ (ಜಯೇ) "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬) | "ವಿಷ್ಠಪತ್ರಯ-ಪರಾಜಯಸ್ಥಿರಾಂ ರಾವಣಾಶ್ರಯಮಪಿ ವ್ಯಕಂಪಯತ್" ರಘುಂ ೧೧-೧೯ |

ಪರಾಜಿತ ಪರಾಜಿತ (ವಿಂ) ಸೋಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗೆಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಾ + ಜಿ (ಜಯೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |

ಪರಾಙ್ಜ ಪರಾಙ್ಜ (ಪುಂ) 1. ಎಣ್ಣೆ ಗಾಣ. 2. ನೊರೆ. 3. ಕತ್ತಿಯ ಅಲಗು, ಅಸಿಧಾರೆ.

ಪರಾಣ್ ಪರಾಣ್ (ವಿಂ) ಪ್ರಾಣಸಹಿತನಾದ, ಜೀವದಿಂದ ಕೂಡಿರುವ. ಪರಾ+ಅನ (ಪ್ರಾಣನೇ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬) | ಣತ್ವಮ್ (೮-೪-೨೦) |

ಪರಾಽಪರ ಪರಾಽಪರ (ಪುಂ) ಪರಮಾಸುದೇವ, ಪರಮಾತ್ಮ. ಪರಾತ್ ಶ್ರೇಷ್ಠಾದಪಿ ಪರಃ ಶ್ರೇಷ್ಠಃ | "ಮಹತಃ ಪರಮವ್ಯಕ್ತ-ಮವ್ಯಕ್ತಾತ್ ಪುರುಷಃ ಪರಃ | ಪುರುಷಾನ್ನಪರಂ ಕಿಂಚಿತ್ ಸಾ ಕಾಷ್ಠಾ ಸಾ ಪರಾ ಗತಿಃ" ಕಠಂ |

ಪರಾತ್ಮನ್ ಪರಾತ್ಮನ್ (ಪುಂ) ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಬ್ರಹ್ಮ.

ಪರಾದನ ಪರಾದನ (ಪುಂ) ಪಾರಸೀ ದೇಶದ ಕುದುರೆ.

ಪರಾಧೀನ ಪರಾಧೀನ (ವಿಂ) 1. ಪರತಂತ್ರ, ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ಅಧೀನದಲ್ಲಿರುವ, ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ಆಸರೆಯಲ್ಲಿರುವ. ಪರಸ್ಯ ಅಧೀನಃ | 2. ಇನ್ನೊಬ್ಬನನ್ನವಲಂಬಿಸಿರುವ, ಇನ್ನೊಂದು ವಸ್ತುವಿಗೆ ಅಧೀನವಾಗಿರುವ. "ಹಿಸಾಪ್ರಾಢಾಂ ಪರಾಧೀನಾಂ ಕೃಷಿ ಯತ್ನೇನ ವರ್ಜಯೇತ್" ಮನುಂ ೧೦-೮೩ |

ಪರಾಙ್ನ ಪರಾಙ್ನ (ನಂ) 1. ಇತರನ ಅನ್ನ, ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ಮನೆಯ ಅನ್ನ. ಪರಸ್ಯ ಅನ್ನಮ್ | "ಕಷ್ಟಾತ್ ಕಷ್ಟತರಂ ಕಿಂ ಪರಗೃಹಾಸಃ ಪರಾಙ್ನಂ ಚ" | ಪರಾಙ್ನವನ್ನು ತಿಂದು ಜೀವಿಸುವವನಿಗೆ ಮಂತ್ರಸಿದ್ಧಿಯಿಲ್ಲ. "ಜಿಹ್ವಾ ದಗ್ಧಾ ಪರಾಙ್ನೇನ ಕರೌ ದಗ್ಧೌ ಪ್ರತಿಗ್ರಹಾತ್ | ಮನೌ ದಗ್ಧಂ ಪರಸ್ತ್ರೀಭಿಃ ಕಥಂ ಸಿದ್ಧಿವರಾನನೇ" | ತೀರ್ಥಯಾತ್ರೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಪರಾಙ್ನ ಭೋಜನವು ಕೂಡದು. "ಛೋಡಶಾಂಶಂ ಸ ಲಭತೇ ಯಃ ಪರಾಙ್ನೇನ ಗಂಚತಿ | ಅರ್ಧಂ ತೀರ್ಥಕಲಂ ತಸ್ಯ ಯಃ ಪ್ರಸಂಜ್ಞೇನ ಗಂಚತಿ" | ಗುರು ಸೋದರಮಾವ ಮಾವ (ಶ್ವಶುರ) ತಂದೆ ಮತ್ತೆ ಮಗ ಇವರ ಅನ್ನವು ಪರಾಙ್ನವಲ್ಲ. "ಗುರ್ವನ್



ಮಾತುಲಾಂ ವ ಶ್ವಶುರಾಂ ತಥೈವ ಚ । ಪಿತುಃ ಪುತ್ರಸ್ಯ ಚೈವಾನ್  
ನ ಪರಾಭಾವಮಿತಿ ಸ್ಮೃತಿಃ" । (ವಿಂ) 2. ಪರಾಭವವನ್ನು  
ತಂದು ಜೀವಿಸುವ.

**ಪರಾಭವ ಪರಾಭವ** (ಪುಂ) 1. ಸೋಲಾ, ಅಪಜಯ.  
ಪರಾ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭) ।  
"ಪರೇರಪ್ಯಾಸಿತವೀರ್ಯಸಂಪದಾಂ ಪರಾಭವೋಽಪ್ಯುತ್ಸವಃ ಪರಮಾನಾಮ್"  
ಕಿರಾಂ ೧-೪೧ । 2. ಅವಮಾನ, ಅವಮಾನ.

**ಪರಾಮರ್ಶ ಪರಾಮರ್ಶ** (ಪುಂ) 1. ವಿಮರ್ಶ, ವಿವೇಚನೆ.  
ಪರಾ + ಮೃಶ (ಆಮರ್ಶನೆ) । ಭಾವೇ "ಘ" (೩-೩-೧೮) ।  
2. ಯುಕ್ತಿ, ಉಪಾಯ. 3. ಅಡ್ಡಿ, ಆತಂಕ, ತಡೆ.  
"ತಪಃಪರಾಮರ್ಶವಿವೃದ್ಧಮನ್ಯೋಭ್ರಮಜ್ಞದುಃಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯಮುಖಸ್ಯ ತಸ್ಯ"  
ಕುಮಾಂ ೩-೭೧ । 4. ಸ್ಪರ್ಶ, ಮುಟ್ಟುವಿಕೆ. 5. ಸಾಧ್ಯ  
ಸಮಾನಾಧಿಕರಣವಾದ ಪಕ್ಷವು ಹೇತುವಿನಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು  
ದೇಂಬ ಜ್ಞಾನ, ವಿಷಯವು ಸರಿಯಾದ ಹೇತುವಿನಿಂದ  
ಕೂಡಿರುವುದೆಂಬ ತಿಳಿವಳಿಕೆ. "ವ್ಯಾಪ್ತಿವಿಶಿಷ್ಟಪಕ್ಷಧರ್ಮತಾ-  
ಜ್ಞಾನಂ ಪರಾಮರ್ಶಃ" ತಂ ಸಂ । ಈ ಜ್ಞಾನವೇ ಅನುಮಿತಿಗೆ  
ಕಾರಣ. "ವಹ್ನಿವ್ಯಾಪ್ಯವಾನಯಂ ಪವಂತಃ" ಎಂಬ ಜ್ಞಾನದಿಂದ  
ಮಾತ್ರ ಅನುಮಿತಿಯುಂಟಾಗಲಾರದು. ಅನುಮಿತಿಗೆ  
ವ್ಯಾಪ್ತಿವಿಶಿಷ್ಟಪಕ್ಷ ಧರ್ಮತಾ ಜ್ಞಾನವು ಅವಶ್ಯವಾದುದು.  
ಮಹಾನಸಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ಧೂಮವನ್ನು ಕಂಡು "ವಹ್ನಿವ್ಯಾಪ್ಯೋ  
ಧೂಮಃ" ಎಂಬ ಜ್ಞಾನವುಂಟಾದರೆ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿಯೂ  
ಧೂಮವನ್ನು ಕಂಡಾಗ ಪವಂತೋ ವಹ್ನಿಮಾನ್ ಧೂಮಾತ್ ಎಂಬ  
ಅನುಮಿತಿಯುಂಟಾಗುವುದು. ಈ ಅನುಮಿತಿಗೆ "ವಹ್ನಿ-  
ವ್ಯಾಪ್ಯಧೂಮವಾನಯಮ್" ಎಂಬ ಪರಾಮರ್ಶವೇ ಕಾರಣ.  
6. ಮೇಲೆ ಬೀಳುವುದು, ಧಾಳಿಮಾಡುವುದು, ಆಕ್ರಮಣ  
ಮಾಡುವುದು.

**ಪರಾಮರ್ಶನ ಪರಾಮರ್ಶನ** (ನಂ) 1. ಆಲೋಚಿಸುವುದು,  
ವಿಮರ್ಶಮಾಡುವುದು, ವಿವೇಚನೆಮಾಡಿ ನೋಡುವುದು.  
ಪರಾ + ಮೃಶ (ಆಮರ್ಶನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।  
2. ಜ್ಞಾಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ನೆನಪುಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

**ಪರಾಮೃಶತ್ ಪರಾಮೃಶತ್** (ವಿಂ) 1. ಸ್ಪರ್ಶಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ, ಮುಟ್ಟುತ್ತಿರುವ. ಪರಾ + ಮೃಶ (ಆಮರ್ಶನೆ)  
"ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಪರಾಮೃಶನ್ ಹರ್ಷಜಡೇನ ಪಾಣಿನಾ  
ತದೀಯಮಜ್ಞಂ ಕುಲಿಶವ್ರಣಾಜ್ಞಿತಮ್" ರಘುಂ ೩-೬೮ । 2. ಅಡ್ಡಿ  
ಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ತಡೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ವಿಮರ್ಶ  
ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ವಿವೇಚನೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಆಲೋಚಿಸಿ  
ನೋಡುತ್ತಿರುವ. "ದಶಾನನಾಯೋಧನಕೇಲಿಕಿಡ್ಕರಂ ಪರಾಮೃಶ-  
ವೃಕ್ಷಪತಿ ಪರಃ ಪುಮಾನ್" ಯಾದಂ ೧೪-೨೨ । 4. ಧಾಳಿ

ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಮೇಲೆ ಬೀಳುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೬) । -**ಆಮೃಶಂತಿ** -**ಆಮೃಶಂತಿ**. "ಪರಾಮೃಶಂತಿ  
ವಿತತಾನ ಕಾಚಿತ್ ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಾಂ ಪಾಣಿನಖಾಂಶುಜಾಲೈಃ" ಯಾದಂ  
೨೩-೪೧ ।

**ಪರಾಮೃಷ್ಣ ಪರಾಮೃಷ್ಣ** (ವಿಂ) 1. ಆಲೋಚಿಸಿ ನೋಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಮರ್ಶಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಾ + ಮೃಶ (ಆಮರ್ಶನೆ)  
"ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಧಾಳಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸ್ಪರ್ಶ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕೇಶವೃಂದೇ ಪರಾಮೃಷ್ಣಾ  
ಚಾಣಕ್ಯೇನೇವ ದ್ರೌಪದೀ" ಮೃಚ್ಛಂ ೧-೩೯ । 4. ಅಡ್ಡಿಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಂದರೆಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪರಾಯಣ ಪರಾಯಣ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ.  
ಸಮಾಧಿಮತಾಂ ಪರಮ್ ಅತಿಶಯಿತಂ ಅಯನಂ ಅವ್ಯವಹಿತಪ್ರಾಪಿಕಾ  
ಭಕ್ತಿರಸ್ಮಾತ್ । "ಯಸ್ಮಾತ್ ಪರಮಾ ಭಕ್ತಿಃ ಚರಮಪ್ರಾಪಿಕಾ  
ಮತಾ । ತಸ್ಮಾತ್ಪರಾಯಣ ಇತಿ ಸ್ಮೃತೋಽಪ್ಯುಕ್ತಾಃ" ತತ್ಸಮಃ ।  
ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । "ನಿಷ್ಠಾ ಶಾಂತಿಃ ಪರಾಯಣಃ" ವಿಂಸಂ ।  
(ನಂ) 2. ಭಕ್ತಿ, ಶ್ರದ್ಧೆ, ಅತಿಶಯವಾದ ಆಸಕ್ತಿ.  
3. ಒಳ್ಳೆಯ ಆಶ್ರಯ, ಒಳ್ಳೆಯ ಆಸರೆ. (ವಿಂ) 4.  
ಹೆಚ್ಚು ಆಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳ, ಶ್ರದ್ಧೆಯುಳ್ಳ. 5. ಹೆಚ್ಚು  
ಅಭಿಲಾಷೆಯುಳ್ಳ. "ಪ್ರಭುಧನಪರಾಯಣಃ ಸತತದುಃಖತಿಃ  
ಸಜ್ಜನಃ" ಭರ್ತಂ ೧-೪೫ । 6. ಇಷ್ಟವಾದ, ಪ್ರಿಯವಾದ.

**ಪರಾಯತ್ತ ಪರಾಯತ್ತ** (ವಿಂ) ಪರಾಧೀನ, ಪರಾಶ್ರಯ  
ವುಳ್ಳ, ಇತರರನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿರುವ. ಪರೇಷಾಮಾಯತ್ತಃ ।  
"ಪರಾರ್ಥೇವೇತ್ ಸ್ವಾರ್ಥಾದಿಭಿರ್ಮತತರೋ ಹಂತ ಪರವಾನ್ ಪರಾಯತ್ತಃ  
ಪ್ರೀತಃ ಕಥಮಿವ ರಸಂ ವೇತ್ ಪುರುಷಃ" ಮುद्रಾಂ ೩-೪ ।

**ಪರಾರಿ ಪರಾರಿ** (ಅವ್ಯಂ) ಪೂರ್ವತರ ಸಂವತ್ಸರ, ಹಿಂದಿನ  
ಎರಡನೆಯ ವರ್ಷ, ಹಿಂದಿನ ವರ್ಷಕ್ಕೆ ಮೊದಲಿನ ವರ್ಷ.  
ಪೂರ್ವತರ ಪರಭಾವಃ ಆರೀ ಚ ನಿಪಾಂ (೪-೩-೨೨) ।  
"ಅತೀತಾನಂತರೇ ವರ್ಷೇ ಪರಾರಿ" ವೈಜಂ ।

**ಪರಾರಿಕಾ ಪರಾರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಈರುಳ್ಳಿ.  
"ಲಗುನಂ ದೀರ್ಘಪತ್ರಮ್ ಪಿಚ್ಛನದ್ಧಃ ಮಹೌಷಧಃ ಫಠುಃ ಪಲಾಂಡಃ  
ಲತಾಕಃ ಪರಾರಿಕಾ ಗೃಜನಃ ಯವನೇಷ್ಠಃ" ಎಂದು ಈರುಳ್ಳಿ  
ಯಲ್ಲಿ ಹತ್ತು ಜಾತಿಯಿರುವುದು.

**ಪರಾರ್ಥ ಪರಾರ್ಥ** (ಪುಂ) 1. ಇತರನ ಪ್ರಯೋಜನ,  
ಇತರನಿಗಾಗುವ ಪ್ರಯೋಜನ. ಪರಸ್ಯಾರ್ಥಃ । "ಏತೇ ಸತ್ಪುರುಷಾಃ  
ಪರಾರ್ಥವಿಹತಾಃ ಸ್ವಾರ್ಥಾನ್ ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ ಯೇ" ಭರ್ತಂ ೧-೬೪ ।  
"ಸ್ವಾರ್ಥೋ ಯಸ್ಯ ಪರಾರ್ಥ ಏವ ಸ ಪುಮಾನೇಕಃ ಸತ್ತಾಮಗ್ರಣಿಃ" ।  
"ತಥಾಹಿ ಸರ್ವೇ ತಸ್ಯಾಸನ್ ಪರಾರ್ಥಕಫಲಾ ಗುಣಾಃ" ರಘುಂ  
೧-೨೯ । (ವಿಂ) 2. ಇತರನ ಪ್ರಯೋಜನವೇ ಕಾರಣ



ವಾಗಿ ಉಳ್ಳ, ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ಕಾರ್ಯವೇ ನಿಮಿತ್ತವಾಗಿ ಉಳ್ಳ, ಪರ: ಅರ್ಥ: ತ್ವೇಷ್ಯೋ ಯಸ್ಯ | (ಅವ್ಯಂ) 3. ಇತರನಿಗಾಗಿ, ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಗಾಗಿ, ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ಪ್ರಯೋಜನಕ್ಕಾಗಿ.

**ಪರಾರ್ಥ ಪರಾರ್ಥ (ನಂ)** 1. ಇನ್ನೊಂದು ಭಾಗ, ಎರಡನೆಯ ಅರ್ಧಭಾಗ. "ದಿನಸ್ಯ ಪೂರ್ವಾರ್ಥಪರಾರ್ಥಭಿನ್ನಾ ಛಾಯೇವ ಮೇತ್ರಿ ಖಲಸಜ್ಜನಾನಾಮ್" ಮತುಂ ೨-೬೦ | 2. ಒಂದು ದೊಡ್ಡ ಸಂಖ್ಯೆ. "ಅಥ ಪರೇ ದಶಗುಣೋತ್ತರಾಃ | ಶತಂ ಸಹಸ್ರಮಯುತಂ ನಿಯುತಂ ಪ್ರಯುತಾಬ್ದೇ | ನ್ಯಬ್ದಂ ಬೃಂದಸರ್ವಂ ಚ ನಿಖರ್ವಂ ಶಕ್ಷಮಮ್ಬಜಮ್ | ಸಮುದ್ರೋ ಮಧ್ಯಮಂತಂ ಚ ಪರಾರ್ಥಂ ಚ ಯಥಾಕ್ರಮಮ್" ವೈಜಂ | ಮುಂದಿನ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಸಂಖ್ಯೆಯೂ ಹತ್ತರಷ್ಟು ಹೆಚ್ಚಾಗುವುದು.

|          |                        |
|----------|------------------------|
| ಶತಮ್     | 100 × 10               |
| ಸಹಸ್ರಮ್  | 1000 × 10              |
| ಅಯುತಮ್   | 10000 × 10             |
| ನಿಯುತಮ್  | 100000 × 10            |
| ಪ್ರಯುತಮ್ | 1000000 × 10           |
| ಅಬ್ದಮ್   | 10000000 × 10          |
| ನ್ಯಬ್ದಮ್ | 100000000 × 10         |
| ಬೃಂದಮ್   | 1000000000 × 10        |
| ಖರ್ವಮ್   | 10000000000 × 10       |
| ನಿಖರ್ವಮ್ | 100000000000 × 10      |
| ಶಕ್ಷಮ್   | 1000000000000 × 10     |
| ಅಮ್ಬಜಮ್  | 10000000000000 × 10    |
| ಸಮುದ್ರಃ  | 100000000000000 × 10   |
| ಮಧ್ಯಮ್   | 1000000000000000 × 10  |
| ಅಂತಮ್    | 10000000000000000 × 10 |
| ಪರಾರ್ಥಮ್ | 100000000000000000     |

3. ಬ್ರಹ್ಮನ ಆಯುಃಪ್ರಮಾಣದ ಎರಡನೆಯ ಅರ್ಧ (ಉತ್ತರಾರ್ಧ). ಪರಸ್ಯ ಬ್ರಹ್ಮಣಃ ಆಯುಃಪೂರ್ಣಮ್ |

**ಪರಾರ್ಥ ಪರಾರ್ಥ (ವಿಂ)** 1. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. ಪರಸ್ಮಿನ್ನರ್ಥ ಭವಃ "ಯತ್" (೪-೩-೫) | "ಆಬದ್ಧಪ್ರಚುರಪರಾರ್ಥ-ಕಿಕಿಣಿಂಕೋ ರಾಮಾಣಾಮನವರತೋದಗಾಹಭಾಜಾಮ್" ಮಾಘಂ ೮-೪೫ | 2. ಅಧಿಕವೆಲ್ಲದ, ಹೆಚ್ಚು ಬೆಲೆಬಾಳುವ. "ಯತಃ ಪರಾರ್ಥಾನಿ ಭೂತಾನ್ಯನುತಃ" ಮಾಘಂ ೪-೧೧ | 3. ಸುಂದರವಾದ. "ಪರಾರ್ಥವರ್ಣಾಸ್ತಿರಣೋಪಪನ್ನಮ್" ರಘುಂ ೬-೪ |

**ಪರಾವರ ಪರಾವರ (ವಿಂ)** 1. ಅತ್ಯಂತ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. ಪರಸ್ಮಾದಪ್ಯವರಃ | 2. ಒಂದಿನ ಮತ್ತು ಮುಂದಿನ. 3. ಮೇಲಿನ ಮತ್ತು ಕೆಳಗಿನ. 4. ದೂರದ ಮತ್ತು

ಸಮೀಪದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಅವರಾ -ಅವರಾ. 5. ಒಂದು ವಿದ್ಯೆ.

**ಪರಾವರ ಪರಾವರ (ಪುಂ)** 1. ಹಿಂತಿರುಗುವಿಕೆ. 2. ವಿನಿಮಯ, ಬದಲಾವಣೆ. ಪರಾ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ವಿ" (೩-೩-೧೮) |

**ಪರಾವಹ ಪರಾವಹ (ಪುಂ)** ಸಪ್ತವಿಧ ವಾಯುಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಪರಾ ವಹತಿ - ವಹ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | (1) ಆವಹಃ (2) ಪ್ರವಹಃ (3) ವಿವಹಃ (4) ಪರಾವಹಃ (5) ಸಂವಹಃ (6) ಉದ್ವಹಃ ಮತ್ತು (7) ಪರಿವಹಃ ಇವು ಸಪ್ತವಾಯುಗಳು. ಪರಾವಹವಾಯುವು ಪರಿವಹವಾಯುವಿನ ಮೇಲಾಗಡೆಯಿರುವುದು.

**ಪರಾವಿಹ ಪರಾವಿಹ (ಪುಂ)** ಕುಬೇರ. ಪರಾ + ವಿಹ (ತಾಡನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

**ಪರಾವೃತ್ತ ಪರಾವೃತ್ತ (ವಿಂ)** 1. ಹಿಂತಿರುಗಿದ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಹೋದ. ಪರಾ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೨೨) | 2. ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದಿದ, ವಿನಿಮಯದಿಂದ ಬಂದಿರುವ.

**ಪರಾವೃತ್ತಿ ಪರಾವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಹಿಂತಿರುಗುವಿಕೆ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗುವಿಕೆ. ಪರಾ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪) | 2. ವಿನಿಮಯ, ಬದಲಾವಣೆ.

**ಪರಾಶರ ಪರಾಶರ (ಪುಂ)** ಒಬ್ಬ ಮಹರ್ಷಿ, ವ್ಯಾಸ ಮಹರ್ಷಿಯ ತಂದೆ, ಒಬ್ಬ ಸ್ತೋತ್ರಕಾರರು. ಪರಾಶರ ಸ್ತೋತ್ರಿಯು ಈ ಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ವಿರಚಿತವಾದುದು.

**ಪರಾಶರಾತ್ಮಜ ಪರಾಶರಾತ್ಮಜ (ಪುಂ)** ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ. ಪರಾಶರಸ್ಯಾತ್ಮಜಃ |

**ಪರಾಶ್ರಯ ಪರಾಶ್ರಯ (ಪುಂ)** 1. ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ಆಸರೆ, ಇತರನ ಅವಲಂಬನೆ. 2. ಶತ್ರುವಿನ ಆಶ್ರಯ. ಪರಸ್ಯಾಶ್ರಯಃ | (ವಿಂ) 3. ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ಆಶ್ರಯದಲ್ಲಿರುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಆಶ್ರಯಾ -ಆಶ್ರಯಾ. ಮತ್ತೊಂದು ಮರವನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿ ಬೆಳೆಯುವ ಲತೆ, ಬಳ್ಳಿ.

**ಪರಾಸ ಪರಾಸ (ನಂ)** ತವರ. "ರಕ್ಷಂ ವಕ್ಷಂ ತಪು ಕ್ಷಿಂ ಮೃದ್ವಂ ನಾಗಜೀವನಮ್ | ಪರಾಸಂ ಸಿಂಹಲಂ ಜ್ಯೇಷ್ಠಮ್" ವೈಜಂ |

**ಪರಾಸನ ಪರಾಸನ (ನಂ)** ಸಂಹರಿಸುವುದು, ಕೊಲ್ಲುವುದು. ಪರಾ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |

**ಪರಾಸು ಪರಾಸು (ವಿಂ)** ಮರಣಹೊಂದಿದ, ಗತಿಸಿಹೋದ. ಪರಾಗತಾಃ ಅಸವೌ ಯಸ್ಯ |

**ಪರಾಸ್ತ ಪರಾಸ್ತ (ವಿಂ)** 1. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಸಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಾ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪರಾಸ್ತವಸುಧಾ ಸುಧಾಧಿವಸತಿ"



ಕಿರಾಂ ೪-೨೭ | 3. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಳ್ಳಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ.  
“ಇತಿ ಯದ್ವಕ್ತು ತದಪಿ ಪರಾಸ್ತಮ್” |

**ಪರಾಸ್ಕಂದನ ಪರಾಸ್ಕಂದನ** (ನಂ) 1. ಇತರರ ಮೇಲೆ  
ಬೀಳುವುದು, ಇತರರನ್ನು ಮುತ್ತಿಗೆ ಹಾಕುವುದು.  
2. ಇತರರನ್ನು ತಿರಸ್ಕರಿಸುವುದು.

**ಪರಾಸ್ಕಂದಿನ್ ಪರಾಸ್ಕಂದಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಇತರರ ಮೇಲೆ  
ಬೀಳುವ ಸ್ವಭಾವವು. (ಪುಂ) 2. ಜೋರ, ಕಳ್ಳ, ಪರಾನ್  
ಆಸ್ಕಂದಿತು ಶಿಲಮಸ್ಯ — ಪರ + ಆ + ಸ್ಕಂದಿರ್ (ಗತಿ-  
ಶೋಷಣಯೋಃ) “ಣಿನಿ:” (೩-೨-೭೮) | “ಪ್ರತಿರೋಧಿ-  
ಪರಾಸ್ಕಂದಿಪಾಟಂಚರಮಲಿಮ್ಲುಚಾ:” ಅಮಂ | 3. ಇತರರನ್ನು  
ತಿರಸ್ಕರಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ.

**ಪರಾಹ ಪರಾಹ** (ಪುಂ) ಮಾರನೆಯ ದಿನ, ಮರುದಿನವು.  
ಪರಮ್ ಅಹ: “ಠ್” (೪-೪-೯೧) |

**ಪರಾಹತ ಪರಾಹತ** (ವಿಂ) ಹೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಗಾಯ  
ಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಾ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ)  
“ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) | “ಪರಾಹತವಸ್ತಶಿಖೆ ಶಿಷಾವತೌ  
ವಪುಷ್ಯಧಿಕ್ಷಿಪ್ತಸಮಿದ್ಧತೇಜಸಿ” ಕಿರಾಂ ೧೬-೪೬ |

**ಪರಾಹ್ನ ಪರಾಹ್ನ** (ಪುಂ) ಹಗಲಿನ ಉತ್ತರಾರ್ಧ. ಪರ: ಅಹ್ನ:  
“ಠ್” (೪-೪-೮೮) | ಣತ್ವಮ್ (೮-೪-೭) |

**ಪರಿ ಪರಿ** (ಅವ್ಯಂ) ನಾಮಪದಗಳ ಮತ್ತು ಕ್ರಿಯಾಪದಗಳ  
ಹಿಂದೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವ ಒಂದು ಉಪಸರ್ಗ. ಇದು ಈ ಕೆಳಗಿನ  
ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ ದ್ಯೋತಕವಾಗಿರುವುದು. 1. ಸುತ್ತಲೂ,  
ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ. “ಶುಕ್ಲಮಯುಖನಿಚಯ: ಪರಿವಿತ್ತಮುತಿ:”  
ಕಿರಾಂ ೪-೪೨ | 2. ವರ್ಷವು, ವಿನಾ, ಹೊರತು.  
“ಪರಿವಿಷ್ಣು” — ವಿಷ್ಣು ವರ್ಜಯಿತ್ವಾ ಇತ್ಯರ್ಥ: | “ಪರಿ  
ತ್ರಿಗತಾತಿ” | 3. ಇತ್ಯಂಭೂತಾಖ್ಯಾನ, ಪ್ರಕಾರವನ್ನು  
ಹೇಳುವುದು, ರೀತಿಯನ್ನು ಹೇಳುವುದು. “ಭಕ್ತೌ ವಿಷ್ಣು  
ಪ್ರತಿ ಪರ್ಯನು ವಾ” | 4. ಭಾಗ. “ಲಕ್ಷ್ಮೀಹರಿ ಪ್ರತಿ ಪರಿ  
ಅನು ವಾ” | 5. ದೋಷಕಥನ, ದೋಷವನ್ನು ಹೇಳು  
ವುದು. “ಅನಿನ್ದ: ಪೌಲಸ್ತಯೌ ವ್ರಜತಿ ಪರಿವಾದೌ ಮಯಿ  
ಪುನ:” ಮಂ ವೀಂ ೪-೨೮ | 6. ಅಲಂಕಾರ, ಭೂಷಣ.  
“ಪರಿಷ್ಕೃತಾಂ ಕಾಚನತೋರಣೇಸ್ತಾಂ ವಲಗುವಜಾಂ ವಂದನದಾಮ-  
ಚಿತ್ರಾಮ್” ಯಾದಂ ೧೩-೪೧ | 7. ಅಲಿಂಗನ: “ವನಪುಲಕ-  
ಪುಲೋಮಜಾಕುಚಾಶ್ರುತಪರಿರಮ್ಭನಿಪಿಡನಕ್ಷಮತ್ವಮ್” ಮಾಘಂ  
೧-೭೪ | 8. ವೀಕ್ಷಾ. “ವೃಕ್ಷಂ ವೃಕ್ಷಂ ಪ್ರತಿ ಪರಿ ಅನು  
ವಾ ಸಿಂಚತಿ” | 9. ಲಕ್ಷಣ, ಸೂಚನೆ, ಚಿಹ್ನೆ. “ವೃಕ್ಷಂ  
ಪ್ರತಿ ಪರಿ ಅನು ವಾ ವಿದ್ಯೋತತೇ ವಿದ್ಯುತ್” | 10. ಪಾಟಿ,  
ಹರಡುವಿಕೆ. 11. ವಂಚನೆ, ಮೋಸ. 12. ವ್ಯಾಧಿ,

ರೋಗ. 13. ಪೂಜೆ. 14. ಶೋಕ, ದುಃಖ. “ಶಶಂಸ  
ಸೀತಾಪರಿವೇದನಾಂತಮನುಷ್ಠಿತಂ ಶಾಸನಮಗ್ರಜಸ್ಯ” ರಘುಂ ೧೪-೮೩ |  
15. ನಿರಸನೆ, ತಳ್ಳಿಹಾಕುವುದು. “ಪರಿ ಸ್ಯಾತ್ ಸರ್ವತೋಭಾವ-  
ಲಕ್ಷಣಾದಿಷು ಭೂಷಣೇ | ಅಲಿಂಜನೇ ವಚನೇ ಚ” ನಾನಾರ್ಥರಂ |  
“ಪರಿ ಸ್ಯಾತ್ಸರ್ವತೋಭಾವೇ ವರ್ಜನೇ ವ್ಯಾಧಿಶೋಕಯೋಃ | ಇತ್ಯಂಭೂತಾ-  
ಖ್ಯಾನಭಾಗವೀಪ್ಸಾಲಿಂಜನಲಕ್ಷಣೇ | ದೋಷಾಖ್ಯಾನೇ ನಿರಸನೇ  
ಪೂಜಾವ್ಯಾಪ್ತಯೋಶ್ಚ ಭೂಷಣೇ” ಮೇದಿಂ |

**ಪರಿಕಥಾ ಪರಿಕಥಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಲ್ಪಿತಕಥೆ, ಕಟ್ಟುಕಥೆ, ಕಲ್ಪಿತ  
ಪುರುಷನ ಚರಿತ್ರೆ ಮತ್ತು ಸಾಹಸಕೃತ್ಯಗಳನ್ನು ಹೇಳುವ  
ಕಥೆ. “ಅಥ ವಾಡ್ಮಯಮೇದಾ: ಸ್ಯು: ಚಮ್ಪು: ಖಂಡಕಥಾ ಕಥಾ |  
ಆಖ್ಯಾಯಿಕಾ ಪರಿಕಥಾ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಪರಿಕರ ಪರಿಕರ** (ಪುಂ) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು, ರಾಶಿ.  
ಪರಿ + ಕೃ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) “ಅಪ್” (೩-೩-೪೭) | “ಸಂಧ್ಯಾ-  
ಕೃಷ್ಣಾವಶಿಷ್ಠಸ್ವಕರಪರಿಕರ: ಸ್ಪಷ್ಟಹೇಮಾರಪಚ್ಚಿ:” ರತ್ನಾಂ  
೩-೪ | 2. ಪರಿವಾರ, ಪರಿಜನ. 3. ಕಟ್ಟುಬಂಧ, ನಡುಕಟ್ಟು.  
“ಅಹಿಪರಿಕರಭಾಜೌ ಭಾಸ್ಮನೇರಜ್ಜರಾಗೇರಧಿಗತಧವಲಿಮ್ನ:  
ಶೂಲಪಾಣೇರಭಿಖ್ಯಾಮ್” ಮಾಘಂ ೪-೬೪ | 4. ತಪಸ್ವಿಯು  
ನಡುವನ್ನು ಬಳಸಿ ಮಂಡಿಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟುವ ಬಟ್ಟೆ.  
5. ವಿವೇಚನೆ, ವಿಮರ್ಶಿಸುವುದು. 6. ಪರ್ಯಂಕ, ಮಂಚ.  
7. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. 8. ಸಹಾಯಕ, ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ  
ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು. “ಭವತ್ಪರಿಕರ: ಸಂಕ್ಷೇಪಂ ಪರ್ಯಂಕ-  
ಪರಿವಾರಯೋಃ | ಪ್ರಗಾಢಗಾತ್ರಿಕಾಬಂಧೇ ಸಮಾರಮ್ಭವಿವೇಕಯೋಃ”  
ಮೇದಿಂ | 9. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ, ಅಭಿಪ್ರಾಯ  
ಗರ್ಭಿತವಾದ ವಿಶೇಷಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ಅಲಂಕಾರ.  
ಲಕ್ಷಣ: “ಅಲಂಕಾರ: ಪರಿಕರ: ಸಾಂಭಿಪ್ರಾಯೇ ವಿಶೇಷಣೇ” |  
ಉದಾ: “ಸುಧಾಂಶುಕಲಿತೋತ್ತಮಸ್ತಾಪಂ ಹರತು ವ: ಶಿವ:”  
ಚಂದ್ರಾಂ | 10. ರೂಪಕಗಳಲ್ಲಿ ಮುಖಸಂಧಿಯ ಒಂದು  
ಅಂಗ. ಕಾವ್ಯಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯ ಫಲಕ್ಕೆ ಕಾರಣ (ಬೀಜ)  
ಭೂತವಾದ ರಶ್ಮಿ ಉತ್ಸಾಹಾದಿಗಳು ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ  
ಸಮುತ್ತನ್ನವಾಗಿ ಅದು ಮುಂದಕ್ಕೆ ಇನ್ನೂ ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದು  
ವುದು “ಪರಿಕರ” ವೆನಿಸುವುದು. “ಸಮುತ್ಪತ್ತಾರ್ಥಬಾಹುಲ್ಯಂ  
ಜೇಯ: ಪರಿಕರ: ಪುನ:” ಸಾಂ ದಂ ೬-೮೩ |

**ಪರಿಕರ್ತ ಪರಿಕರ್ತ** (ಪುಂ) ಅಣ್ಣನಿಗೆ ಮದುವೆಯಾಗದಿರು  
ವಾಗ ತಮ್ಮನಿಗೆ ಮದುವೆಯಾದಿಸುವವನು, ಅಣ್ಣನಿಗಿಂತ  
ಮುಂಚೆ ತಮ್ಮನಿಗೆ ಮದುವೆ ಮಾಡಿಸುವ ಪುರೋಹಿತ.  
“ಜ್ಯೇಷ್ಠೇ ಅನಿವಿಷ್ಠೇ ಕನೀಯಾನ್ ನಿವಿಷಾನ್ ಪರಿವೇತ್ತಾ ಭವತಿ  
ಪರಿವಿಶ್ನೋ ಜ್ಯೇಷ್ಠ: ಪರಿವೇದನೀಯಾ ಕನ್ಯಾ ಪರಿದಾಯಿ ದಾತಾ  
ಪರಿಕರ್ತಾ ಯಾಜಕ: ತೇ ಸರ್ವೇ ಪತಿತಾ:” ಹಾರೀತ: |



ಪರಿಕರ್ಮನ್ ಪರಿಕರ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ಅಲಂಕಾರ, ಶೃಂಗಾರ.

ಪರಿ + ಕೃ (ಕರಣ) "ಮನಿನ್" (ತಂ ೪-೧೪೫)।

"ಯಾವತ್ತ ಕೃತಾಚಾರಪರಿಕರ್ಮಾಣಿಂ ಪಶ್ಯಾಮಿ" ಶಾಕುಂ ೨।

2. ಅಂಗಾಸಂಸ್ಕಾರ, ವಾಸನೆಪ್ರದಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಮೈಗೆ ಹಚ್ಚಿ ಸೊಗಸುಮಾಡುವುದು. ಪರಿಮಲವರ್ಜನಾರ್ಥಿ ಕ್ರಿಯಾ

ಪರಿಕರ್ಮ ಸ್ನಾನೋದ್ವರ್ತನಾದಿ। "ಪರಿಕರ್ಮಾಂಗಸಂಸ್ಕಾರಃ" ಅಮಂ 1.

3. ಚಿತ್ತಶುದ್ಧಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಉಪಾಯ, ಮನಸ್ಸನ್ನು ಶುದ್ಧಗೊಳಿಸುವ ಮೈತ್ರಿ ಮೊದಲಾದ ಚಿತ್ತವೈತ್ರಿ.

ಮೈತ್ರಿ ಕರುಣಾ ಮುದಿತಾ ಮತ್ತು ಉಪೇಕ್ಷಾ ಎಂದು ಚಿತ್ತ ಪ್ರಸಾದವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಮನೋಧರ್ಮಗಳು ನಾಲ್ಕು.

ಚಿತ್ತೈಕ್ಯಾಗ್ರ ಹೊಂದಿರುವ ಯೋಗಿಗಳಿಗೆ ಮಹಾತ್ಮರಲ್ಲಿ ಮೈತ್ರಿಯೂ ದುಃಖಿತಪ್ರಾರಾದದಲ್ಲಿ ಕರುಣೆಯೂ ಸುಖಿಗಳ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮುದಿತೆ (ಅನುಮೋದನೆ)ಯೂ

ಪಾಪಾತ್ಮರ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ (ಔದಾಸೀನ್ಯ) ಉಪೇಕ್ಷೆಯೂ ಉಂಟಾಗುವುದು. "ಮೈತ್ಯಾದಿಚಿತ್ತಪರಿಕರ್ಮವಿದೋ ವಿಧಾಯ

ಕ್ಲೇಶಪ್ರಹಾಣಮಿಹ ಲಬ್ಧಸಬಿಜಯೋಗಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೫೫।

4. ಪೂಜೆ, ಸೇವೆ, ಶುಶ್ರೂಷೆ. (ವಿಂ) 5. ಪರಿಚಾರಕ, ಸೇವಕ, ಅಳು. ಪರಿತಃ ಕರ್ಮಸ್ಯ।

ಪರಿಕರ್ಮಿನ್ ಪರಿಕರ್ಮಿನ್ (ವಿಂ) ಪರಿಚಾರಕ, ಸೇವಕ, ಅಳು. ಪರಿಕರ್ಮಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೬)।

ಪರಿಕರ್ಮ ಪರಿಕರ್ಮ (ಪುಂ) ಎಳೆಯುವುದು, ಸೆಳೆಯುವುದು. ಪರಿ + ಕೃ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಛನ್" (೩-೩-೧೮)।

ಪರಿಕರ್ಮಣ ಪರಿಕರ್ಮಣ (ನಂ) ಎಳೆಯುವುದು, ಸೆಳೆಯುವುದು. ಪರಿ + ಕೃ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಪರಿಕಲ್ಪಿತ ಪರಿಕಲ್ಪಿತ (ನಂ) 1. ಗ್ರಹಿಸುವುದು, ತಿಳಿಯುವುದು. (ವಿಂ) 2. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪರಿಕಲ್ಪನ ಪರಿಕಲ್ಪನ (ನಂ) ವಂಚನೆ, ಮೋಸ.

ಪರಿಕಲ್ಪನ ಪರಿಕಲ್ಪನ (ನಂ) 1. ಏರ್ಪಡಿಸುವುದು, ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಮಾಡುವುದು, ಸಜ್ಜುಗೊಳಿಸುವುದು. ಪರಿ + ಕೃ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

2. ನಿಶ್ಚಯಿಸುವುದು, ನಿಗದಿ ಮಾಡುವುದು, ಗೊತ್ತುಮಾಡುವುದು. 3. ಹವಣಿಸುವುದು, ಒದಗಿಸುವುದು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಲ್ಪನಾ -ಕಲ್ಪನಾ.

"ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯಾದತಿಪೋಷಸ್ಯ ಭವತೋ ದೃಷ್ಟಾರಿದರ್ಪಚ್ಛಿದಃ ಪಶ್ಯಂತಾನ್ ಪರಿಕಲ್ಪನಾವ್ಯತಿಕರಪ್ರೋಚ್ಛನವಂಶಾನ್ ಗಜಾನ್" ಮುದ್ರಾಂ ೭-೧೫।

4. ಸೃಷ್ಟಿಸುವುದು, ಹುಟ್ಟಿಸಿ ಹೇಳುವುದು.

ಪರಿಕಲ್ಪಿತ ಪರಿಕಲ್ಪಿತ (ವಿಂ) 1. ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗೊತ್ತುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ಕೃ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

2. ಕಲ್ಪಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸಜ್ಜುಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

4. ಒದಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹವಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

"ಚಿತ್ರೇ ನಿವೇಶ್ಯ ಪರಿಕಲ್ಪಿತಸತ್ವಯೋಗಾ ರೂಪೋಚ್ಚಯೇನ ಮನಸಾ ವಿಧಿನಾ ಕೃತಾ ನು" ಶಾಕುಂ ೨-೯।

ಪರಿಕೋಣ ಪರಿಕೋಣ (ವಿಂ) ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡಿರುವ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವ. ಪರಿ + ಕೃ (ವಿಕ್ಷೇಪ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)।

"ಪರಿಕೋಣಮುಚಿತಭುಜಸ್ಯ ಭುವನವಿವರೇ ದುರಾಸದಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೨-೧೧।

ಪರಿಕೋತನ ಪರಿಕೋತನ (ನಂ) ಹೇಳುವುದು. ಪರಿ + ಕೃತ (ಸಂಶಬ್ದನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಪರಿಕೋತನ ಪರಿಕೋತನ (ವಿಂ) ಉಕ್ತವಾದ, ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ಕೃತ (ಸಂಶಬ್ದನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

"ಮೋಹಾತ್ತಸ್ಯ ಪರಿಯಾಗಸ್ತಾಮಸಃ ಪರಿಕೋತನಃ" ಗೀತಾ ೧೮-೭।

ಪರಿಕುಪಿತ ಪರಿಕುಪಿತ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ಕೋಪಗೊಂಡಿರುವ. ಪರಿ + ಕುಪ (ಕ್ರೋಧ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)।

"ಪರಸ್ಪರಂ ಪರಿಕುಪಿತಸ್ಯ ಪಿಷತಃ ಕ್ಷತೋಮಿಕಾ ಕನಕಪರಾಗಪಿಕ್ಷುಲಮ್" ಮಾಘಂ ೧೭-೮।

"ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨)। -ಕುಪಿತವತ್ -ಕುಪಿತವತ್. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ವತೀ -ವತೀ.

ಪರಿಕುಪ್ಯತ್ ಪರಿಕುಪ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ಕೋಪಗೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಹೆಚ್ಚು ಕೋಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ + ಕುಪ (ಕ್ರೋಧ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।

ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಕುಪ್ಯಂತೀ -ಕುಪ್ಯಂತೀ.

ಪರಿಕೋಪನ ಪರಿಕೋಪನ (ನಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಕೋಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಪರಿ + ಕುಪ (ಕ್ರೋಧ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

(ವಿಂ) 2. ಹೆಚ್ಚು ಕೋಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ. ಪರಿ + ಕುಪ "ಯುಕ್" (೩-೨-೧೫೧)।

ಪರಿಕೋಪನೀಯ ಪರಿಕೋಪನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಕೋಪಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹೆಚ್ಚು ಕೋಪವಂಟುಮಾಡಲ್ಪಡುವ.

ಪರಿ + ಕುಪ (ಕ್ರೋಧ) + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬)। -ಕೋಪನೀಯಃ -ಕೋಪನೀಯಃ.

2. ಹೆಚ್ಚು ಕೋಪವಂಟುಮಾಡಲು ಶಕ್ತನಾದ.

ಪರಿಕ್ರಮ ಪರಿಕ್ರಮ (ಪುಂ) 1. ನಡೆಯುವುದು, ಮುಂದೆ ಸಾಗುವುದು. ಪರಿ + ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ) "ಛನ್" (೩-೩-೧೮)।

ನ ಬೃದ್ಧಿಃ (೭-೩-೩೪)। "ದ್ರುತಪದಮಭಿಯಾತುಮಿಚ್ಛಂತೀನಾಂ ಗಗನಪರಿಕ್ರಮಲಾಭವೇನ ತಾಸಾಂ" ಕಿರಾಂ ೧೦-೨।

2. ಸುಖ



ವಾಗಿ ತಿರುಗಾಡುವುದು, ವಿಹಾರಾರ್ಥವಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವುದು. 3. ಸುತ್ತಲೂ ಓಡಾಡುವುದು, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯೂ ಸಂಚರಿಸುವುದು. 4. ಪ್ರದಕ್ಷಿಣೆ ಮಾಡುವುದು. "ಪರಿಕ್ರಮಃ ಪರ್ಯವರತಃ ದೇವಃ" ಧಾತಂ ೧೩-೧೨. "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). -ಕ್ರಮಣಮ್ -ಕ್ರಮಣಮ್.

**ಪರಿಕ್ರಮ ಪರಿಕ್ರಮ** (ಪುಂ) 1. ವಿವಿಮಯ, ಬದಲಾವಣೆ. ಪರಿ + ಕ್ರಮ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯೇ) "ಅಕ್" (೩-೩-೫೬). 2. ಕೊಂಡುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಕೊಳ್ಳುವುದು. 3. ಹಣವನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಕ್ಲಪ್ತಕಾಲಕ್ಕೆ ಬಾಡಿಗೆಗೆ ಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಶಿಷ್ಟಸ್ಯ ಪ್ರತಿರಕ್ಷಾರ್ಥಂ ಪರಿಕ್ರಮಃ ತದಾಹತಃ" ಹಿತಂ ೪-೧೨೨. "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). -ಕ್ರಯಣಮ್ -ಕ್ರಯಣಮ್.

**ಪರಿಕ್ರಮ(ಮ್ಯ)ತ್ ಪರಿಕ್ರಮ(ಮ್ಯ)ತ್** (ವಿಂ) 1. ಸುತ್ತಲೂ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಓಡಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ + ಕ್ರಮ್ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). 2. ವಿಹಾರಾರ್ಥವಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಮುಂದೆ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). -ಕ್ರಮಂತಿ, -ಕ್ರಮಂತಿ.

**ಪರಿಕ್ರಮಾ ಪರಿಕ್ರಮಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸುತ್ತಲೂ ಸಂಚರಿಸುವುದು, ಸುತ್ತಲೂ ಬೇರೆ ಹಾಕುವುದು ಅಥವಾ ಕಂದಕ ತೋಡುವುದು. ಪರಿ + ಕ್ರಮ್ (ಕರಣೇ) "ಶಃ" (೩-೩-೧೦೦). 2. ಸುತ್ತಲೂ ಬೇರೆ ಹಾಕುವುದು ಅಥವಾ ಕಂದಕ ತೋಡುವುದು.

**ಪರಿಕ್ರೀಣಾ ಪರಿಕ್ರೀಣಾ** (ವಿಂ) 1. ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಕೊಳ್ಳುವ. 2. ವಿವಿಮಯ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ, ಬದಲಾವಣೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ. ಪರಿ + ಕ್ರಮ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯೇ) "ಶಾನ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಕೃತೇನೋಪಕೃತಂ ವಾಯೋಃ ಪರಿಕ್ರೀಣಾನ್-ಮುತ್ಥಿತಮ್" ಭೃಂ ೮-೮. 3. ಕ್ಲಪ್ತಕಾಲಕ್ಕೆ ಬಾಡಿಗೆಗೆ ಕೊಳ್ಳುವವನು.

**ಪರಿಕ್ರೀತ ಪರಿಕ್ರೀತ** (ವಿಂ) 1. ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ಕ್ರಮ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ಸಂಭೋಗಾಯ ಪರಿಕ್ರೀತಃ ಕರ್ತಾಸ್ಮಿ ತವ ನಾಪ್ರಿಯಮ್" ಭೃಂ ೮-೭೮. 2. ಬಾಡಿಗೆಗೆ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೆಲವು ಕಾಲದ ಮಟ್ಟಿಗೆ ಬಾಡಿಗೆಗೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. "ಶತೇನ ಶತಾಯಾ ವಾ ಪರಿಕ್ರೀತಃ" ಸಿಂ ಕೌಂ. 3. ವಿವಿಮಯ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಬದಲಾವಣೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪರಿಕ್ರಮ ಪರಿಕ್ರಮ** (ಪುಂ) ಹೆಚ್ಚು ಬಳಲಿಕೆ, ಹೆಚ್ಚು ಆಯಾಸ. ಪರಿ + ಕ್ರಮ್ (ಗ್ಲಾನಿ) "ವಕ್" (೩-೩-೧೮). "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). -ಕ್ರಮಣಮ್ -ಕ್ರಮಣಮ್.

**ಪರಿಕ್ರಾಂತ ಪರಿಕ್ರಾಂತ** (ವಿಂ) ಬಹಳ ಬಳಲಿರುವ, ಹೆಚ್ಚು ಆಯಾಸಗೊಂಡಿರುವ. ಪರಿ + ಕ್ರಮ್ (ಗ್ಲಾನಿ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨). "ದ್ರಾಘೀಯಸಾ ವಯೋಜಿತಃ ಪರಿಕ್ರಾಂತಃ ಕಿಲಾಪ್ನವಾ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೨.

**ಪರಿಕ್ರಾಂತ ಪರಿಕ್ರಾಂತ** (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ತೊಂದರೆ ಅನುಭವಿಸಿದ, ಹೆಚ್ಚು ಕಷ್ಟಪಟ್ಟಿರುವ. ಪರಿ + ಕ್ರಮ್ (ವಿವಾಧನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨). ಇಡಭಾವೇ -ಕ್ರಾಂತಃ -ಕ್ರಾಂತಃ.

**ಪರಿಕ್ರಾಂತ ಪರಿಕ್ರಾಂತ** (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ತೊಂದರೆಪಡುತ್ತಿರುವ, ಬಹಳ ಕಷ್ಟಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ + ಕ್ರಮ್ (ವಿವಾಧನೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). -ಕ್ರಾಂತಂತಿ -ಕ್ರಾಂತಂತಿ.

**ಪರಿಕ್ರಾಂತ ಪರಿಕ್ರಾಂತ** (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ಪರಿತಾಪ ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಹೆಚ್ಚು ದುಃಖವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ + ಕ್ರಮ್ (ಉಪತಾಪೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). -ಕ್ರಾಂತಂತಿ -ಕ್ರಾಂತಂತಿ.

**ಪರಿಕ್ರಾಂತ ಪರಿಕ್ರಾಂತ** (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ತೊಂದರೆಯನ್ನು ಅನುಭವಿಸಿದ, ಪರಿ + ಕ್ರಮ್ (ವಿವಾಧನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨).

**ಪರಿಕ್ರೇದ ಪರಿಕ್ರೇದ** (ಪುಂ) ತೇವ, ಒದ್ದೆ. ಪರಿ + ಕ್ರಮ್ (ಆದೋಭಾವೇ) "ವಕ್" (೩-೩-೧೮).

**ಪರಿಕ್ರೇಶ ಪರಿಕ್ರೇಶ** (ಪುಂ) ಹೆಚ್ಚು ತೊಂದರೆ, ಹೆಚ್ಚು ಕಷ್ಟ. ಪರಿ + ಕ್ರಮ್ (ವಿವಾಧನೇ) "ವಕ್" (೩-೩-೧೮). "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). -ಕ್ರೇಶನಮ್ -ಕ್ರೇಶನಮ್.

**ಪರಿಕ್ರವಣತ್ ಪರಿಕ್ರವಣತ್** (ವಿಂ) ಕೂಗುತ್ತಿರುವ, ಶಬ್ದ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. "ಪರಿಕ್ರವಣಸಾರಸಪಕ್ತಿಮೇಖಲಃ" ಕಿರಾಂ ೮-೯.

**ಪರಿಕ್ರತ ಪರಿಕ್ರತ** (ವಿಂ) ಗಾಯಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ಕ್ರಮ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ಕುಶಾಡ್ಕುರಾದಾನಪರಿಕ್ರತಾಙ್ಗುಲಿಃ ಕೃತೋಷ್ಣಸೂತ್ರಪ್ರಣಯಿ ತಯಾ ಕರಃ" ಕುಮಾಂ ೫-೧೧.

**ಪರಿಕ್ರಯ ಪರಿಕ್ರಯ** (ಪುಂ) ಕಡಮೆಯಾಗುವುದು, ಅವನತಿ ಹೊಂದುವುದು, ನಾಶಹೊಂದುವುದು. ಪರಿ + ಕ್ರಮ್ (ಕ್ರಯೇ) "ಅಕ್" (೩-೩-೫೬). "ನ ಮಹಾನಪಿ ಭೃತಿಮಿಚ್ಛತಾ ಫಲಸಂಪತ್ಪ್ರದಣಃ ಪರಿಕ್ರಯಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೮.

**ಪರಿಕ್ರಾಮ ಪರಿಕ್ರಾಮ** (ಪುಂ) ಒಣಗಿರುವ, ಬತ್ತಿಹೋಗಿರುವ, ಸೊರಗಿಹೋಗಿರುವ. ಪರಿ + ಕ್ರಮ್ (ಕ್ರಯೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨). ತಕಾರಸ್ಯ ಮಃ (೮-೨-೫೩).



**ಪರಿಕ್ಷಿತ ಪರಿಕ್ಷಿತ (ಫಂ)** 1. ಅಭಿಮನ್ಯುವಿನ ಪುತ್ರ, ಜನಮೇಜಯರಾಜನ ತಂದೆ, ಅರ್ಜುನನ ಮೊಮ್ಮಗ. ಪರಿಕ್ಷಿಣ ಕೀರ್ತಿ — ಕ್ಷಿ "ಕ್ಷಿಪ್" (೩-೨-೨೬) । ಪರಿ ಸರ್ವತೋಭಾವೇನ ಕೀರ್ತಯತೇ ಹನ್ಯತೇ ದುರಿತಂ ಯೇನ ವಾ । ಕುರುವಂಶವು ಪರಿಕ್ಷಿಣವಾಗಿದ್ದಾಗ ಈತನು ಜನಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ಈ ವಿಷಯವನ್ನು ಮೊದಲೇ ಒಬ್ಬ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನು ಹೇಳಿದ್ದನು. "ವಿರಾಟಸ್ಯ ಸುತಾಂ ಪೂರ್ವ ಸ್ತುತಾಂ ಗಾಣಡಿವಚ್ಛವನಃ । ಉಪಲಾಖ್ಯಗತಾಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ವ್ರತವಾನ್ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋಽಬ್ರವಿತ್ । ಪರಿ-ಕ್ಷಿಣೇಷು ಕುರುಷು ಪುತ್ರಸ್ತವ ಭವಿಷ್ಯತಿ । ಉತವಸ್ಯ ಪರಿಕ್ಷಿತವಂ ಗಮಿಸ್ಯಸ್ಯ ಭವಿಷ್ಯತಿ" ಭಾಂ ಸೌಪ್ತಿಕಂ ೧೬-೨, ೩ । ಪರಿಕ್ಷಿತು ಧರ್ಮರಾಜನ ರಾಜ್ಯಭಾರಾನಂತರ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯಾದನು. ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರದ ಯುದ್ಧವು ಮುಗಿದನಂತರ ಅಭಿಮನ್ಯುವತ್ತಿಯಾದ ಉತ್ತರೇಯ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಈತನು ಜನಿಸಿದನು. ಈತನು ಗರ್ಭದಲ್ಲಿದ್ದಾಗಲೇ ಕುರುವಂಶದ ನಾಶದಿಂದ ಕೋಪಗೊಂಡ ಅಶ್ವತ್ಥಾಮನ ಬ್ರಹ್ಮಾಸ್ತ್ರದಿಂದ ಹತನಾಗಿದ್ದರೂ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಮಹಿಮೆಯಿಂದ ಬದುಕಿದನು. ಒಬ್ಬ ವೃಷನು ರಾಜವೇಷವನ್ನು ಧರಿಸಿ ಒಂದು ಗೋವನ್ನೂ ಒಂದು ವೃಷಭವನ್ನೂ ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಿದ್ದುದನ್ನು ಕಂಡು ಈ ಪರಿಕ್ಷಿತು, ಗೋವು ಭೂದೇವಿಯೆಂದೂ ವೃಷಭವು ಧರ್ಮಪುರುಷನೆಂದೂ ಇವರನ್ನು ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಿದ್ದವನು ಕಲಿಪುರುಷನೆಂದೂ ತಿಳಿದು ದಂಡಿಸಲಾಗಿ ಕಲಿಯು ಶರಣಾಗತನಾಗಿ ಓಡಿಹೋದನು. ಪರಿಕ್ಷಿತು ಧರ್ಮಾತ್ಮನಾಗಿಯೂ ನೀತಿವಂತನಾಗಿಯೂ ಇದ್ದರೂ ಒಂದು ಸಲ ಇವನ ದೌರ್ಭಾಗ್ಯದಿಂದ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಬೇಟೆಗಾಗಿ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಸಮಾಧಿಸ್ಥನಾಗಿದ್ದ ಶಮೀಕಮಹರ್ಷಿಯು ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ತನ್ನನ್ನು ಮಾತನಾಡಿಸಿ ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನು ಕಾರಣದಿಂದ ಕೋಪಗೊಂಡು ಆ ಋಷಿಯ ಕೊಠಳಿಗೆ ಒಂದು ಸತ್ತ ಹಾವನ್ನು ಮಾಲೆಯಾಗಿ ಹಾಕಿ ಹೊರಟುಹೋದನು. ಸ್ವಲ್ಪ ಸಮಯದಲ್ಲೇ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದ ಋಷಿಯ ಪುತ್ರನಾದ ಶೃಂಗಿಯು ಇದನ್ನು ಕಂಡು "ಬ್ರಾಹ್ಮಣವಂಶಕ್ಕೆ ಅವಮಾನ ಮಾಡಿದ ಈ ಪಾಪಿಯು ಏಳುದಿನಗಳೊಳಗೆ ಸರ್ಪದಂಶನಿಂದ ಮರಣಹೊಂದಲಿ" ಎಂದು ಶಾಪವಿತ್ತನು. ಸಮಾಧಿಯಿಂದ ಜಾಗೃತಿಗೊಂಡ ಶಮೀಕಋಷಿಯು ತನ್ನ ಮಗನ ಈ ಅವಿವೇಕಕ್ಕಾಗಿ ಚಿಂತಿಸಿ ತನ್ನ ಶಿಷ್ಯನ ಮೂಲಕ ಪರಿಕ್ಷಿತ್ತಿಗೆ ಜಾಗರೂಕತೆ ಹೇಳಿಕಳುಹಿಸಿದನು. ಪರಿಕ್ಷಿತು ತನ್ನ ಈ ನೀಚಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ದುಃಖಪಟ್ಟು ಪುತ್ರನಾದ ಜನಮೇಜಯನನ್ನು ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿರಿಸಿ ಸರ್ಪಗಳಿಗೆ ದುರ್ಗಮವಾದ ಒಂದು ಮನೆಯನ್ನು ಸಮುದ್ರದೊಳಗೆ ನಿರ್ಮಿಸಿ ವ್ಯಾಸಪುತ್ರನಾದ ಶುಕಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಶ್ರೀಮದ್ಭಾಗವತ

ಕಥೆಯನ್ನು ಶ್ರವಣಮಾಡಿದನು. ಏಳನೆಯ ದಿನ ಇವನನ್ನು ಸಂದರ್ಶಿಸಲು ಬಂದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣರು ತಂದುಕೊಟ್ಟ ಫಲವನ್ನು ಅಭ್ರಾಣ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಅದರೊಳಗೆ ಸೇರಿ ಕೊಂಡಿದ್ದ ತಕ್ಷಕನು ಇವನನ್ನು ಕಚ್ಚಲಾಗಿ ಪರಿಕ್ಷಿತು ಅಸು ವನ್ನು ನೀಗಿದನು. ಮಹಾಭಾರತಯುದ್ಧಾನಂತರ ಮೂವತ್ತಾರು ವರ್ಷಗಳು ಕಳೆದು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ನಿಯೋಗವಾಗಲಾಗಿ ಪಾಂಡವರೂ ಮಹಾಪ್ರಸ್ಥಾನ ಮಾಡಿದರು. ಪರಿಕ್ಷಿತು ತನ್ನ ಮೂವತ್ತಾರನೆಯ ವರ್ಷ ರಾಜ್ಯ ಸ್ವೀಕಾರ ಮಾಡಿ ಅರವತ್ತು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ರಾಜ್ಯವಾಳಿ ತನ್ನ ತೊಂಬತ್ತಾರನೆಯ ವರ್ಷದಲ್ಲಿ ದೇಹವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದನು. 2. ಚಂದ್ರವಂಶದ ಅನಶುಷನ ಮಗ. 3. ಚಂದ್ರವಂಶದ ಅವಿಕ್ಷತರಾಜನ ಮಗ. 4. ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. ಮಂಡೂಕರಾಜನ ಮಗಳಾದ ಸುಶೋಭನೆಯು ಈತನ ಪತ್ನಿ. ಶಲ ದಲ ಮತ್ತು ಬಲರೇಂಬ ಮೂವರು ಈತನ ಪುತ್ರರು.

**ಪರಿಕ್ಷಿತ ಪರಿಕ್ಷಿತ (ವಿಂ)** 1. ಸುತ್ತುವರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ಕ್ಷಿಪು (ನಿರಸನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । "ಗಜ್ಞಾಸೌತಃ ಪರಿಕ್ಷಿತಂ ವಪ್ರಾಂತರ್ಜ್ವಲಿತೌಷಧಿ" ಕುಮಾಂ ೬-೩೮ । 2. ಸುತ್ತಲೂ ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಸಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸುತ್ತಲೂ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಧಿಕ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪರಿ-ಕ್ಷಿತಂ ತು ಧಿಕ್ಕೃತೇ" ನಾನಾರ್ಥಂ ।

**ಪರಿಕ್ಷಿಣ ಪರಿಕ್ಷಿಣ (ವಿಂ)** ಕ್ಷಯಹೊಂದಿದ, ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಕಳೆದುಕೊಂಡ, ದರಿದ್ರನಾದ. ಪರಿ + ಕ್ಷಿ (ಕೀರ್ತಿ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೨೨) । "ಪರಿಕ್ಷಿಣಃ ಕಶ್ಚಿತ್ ಸ್ಪೃಹಯತಿ ಯವಾನ್ ಪ್ರಸೃತಯೇ ಸ ಪಶ್ಚಾತ್ಸಂಪೂರ್ಣಃ ಕಲಯತಿ ಧರಿಸ್ತೌ ತೃಣಸಮಾಂ" ಮತೃಂ ೧-೩೬ ।

**ಪರೀಕ್ಷ ಪರೀಕ್ಷ (ಫಂ)** 1. ಸುತ್ತಲೂ ಚೆಲ್ಲುವುದು, ಸುತ್ತಲೂ ಎರಚುವುದು. 2. ಸುತ್ತಲೂ ಬಿಸಾಡುವುದು. ಪರಿ + ಕ್ಷಿಪು (ನಿರಸನೆ) "ಛ" (೩-೩-೧೮) । 3. ಪರಿಧಿ, ಮಂಡಲ, ವರ್ತುಲಾಕಾರವಾಗಿ ಸುತ್ತುವರೆಯುವುದು. "ಮಹಾಣವಪರೀಕ್ಷಂ ಲಕ್ಷ್ಮಾಃ ಪರಿಕ್ಷಾಲಕ್ಷ್ಮಂ" ರಘುಂ ೧೨-೬೬ । 4. ಇಂದ್ರಿಯ. ಪರಿತಃ ಕ್ಷಿಪ್ಯತೇ ವಿಷಯವಾಸನಯಾ ಜೀವಾತ್ಮಾ ಯೇನ — ಪರಿ + ಕ್ಷಿಪು ಕರಂ "ಛ" (೩-೩-೧೨೧) । "಼ಕಾದಶಪರೀಕ್ಷಂ ಮನೋವ್ಯಾಕರಣಾತ್ಮಕಂ" ಭಾಂ ಆಶ್ವಂ ೩೭-೨ ।

**ಪರೀಕ್ಷೆಪಿನ್ ಪರೀಕ್ಷೆಪಿನ್ (ವಿಂ)** ಸುತ್ತುಲೂ ಎರಚುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಸುತ್ತುಲೂ ಚೆಲ್ಲುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಪರಿ + ಕ್ಷಿಪು (ನಿರಸನೆ) "ಪಿನ್" (೩-೨-೧೪೨) । "ತ್ಯಾಗಿನಂ ಸುಖ-ದುಃಖಸ್ಯ ಪರೀಕ್ಷೆಪ್ಯಭಸಾಮೃತಃ" ಮೃತ್ವಿಂ ೭-೧೦ ।



ಪರಿಖಾ ಪರಿಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೋಟಿಯ ಸುತ್ತಲೂ ತೋಡುವ ಕಂದಕ, ಶತ್ರುಗಳು ಪ್ರವೇಶಿಸಲಾಗದಂತೆ ಕೋಟಿಯ ಸುತ್ತಲೂ ನೀರು ತುಂಬಿದ ಹಳ್ಳ. ಪರಿತಃ

ಖನ್ಯತೇ—ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) “ಡಃ” (೩-೨-೧೦೨)। “ಮಹಾರ್ಣವಪರಿಕ್ಷೇಪ ಲಕ್ಷ್ಮಾಣಾಃ ಪರಿಖಾಲಘುಮ್” ರಘುಂ ೧೨-೬೬।

ಪರಿಖೀಕೃತ ಪರಿಖೀಕೃತ (ವಿಂ) ಕಂದಕವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪರಿಖಾ: ಪರಿಖಾ: ಸಂಪದಮಾನಾ: ಕೃತಾ: “ಚ್ವಿಃ” (೪-೪-೪೦)। ದೊರ್ಬ: (೭-೪-೩೨)। “ಸವೇಲಾವಪ್ರವಲಯಾಂ ಪರಿಖೀಕೃತ-ಸಾಗರಾಮ್” ರಘುಂ ೧-೩೦।

ಪರಿಖಿನ್ನ ಪರಿಖಿನ್ನ (ವಿಂ) ಅಯಾಸಗೊಂಡ, ಬಳಲಿದ. ಪರಿ + ಖಿದ (ದೈನ್ಯ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨)।

ಪರಿಖೇದ ಪರಿಖೇದ (ಪುಂ) ಅಯಾಸ, ದಣಿವು, ಬಳಲಿಕೆ. ಪರಿ + ಖಿದ (ದೈನ್ಯ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮)। “ಗಿರಿಶಮುಪ-ಚಾರ ಪ್ರತ್ಯಹಂ ಸಾ ಸುಕೇಶಿ ನಿಯಮಿತಪರಿಖೇದಾ ತಚ್ಚಿರಶ್ಚಂದ್ರ-ಪಾದೇಃ” ಕುಮಾರಂ ೧-೬೦।

ಪರಿಖೇದಿತ ಪರಿಖೇದಿತ (ವಿಂ) 1. ಖೇಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನೋಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಂದರೆಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ಖಿದ (ದೈನ್ಯ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। “ಪರಿಖೇದಿತ ವಿದ್ಯವೀರಃ ಪರಿಪೀತಾಮಲನಿಶ್ಚರಾಮಮಸಃ” ಭಟ್ಟಂ ೧೦-೨೯। 2. ಅಯಾಸಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪರಿಗಣನ ಪರಿಗಣನ (ನಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಎಣಿಸುವಿಕೆ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಎಣಿಸುವುದು. ಪರಿ + ಗಣ (ಸಂಖ್ಯಾನೆ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಯುಚ್” (೩-೩-೧೦೭)। -ನಾ-ನಾ. “ಶ್ರೇಣಿಭೂತಾಃ ಪರಿಗಣನಯಾ ನಿರ್ದಿಶಂತೋ ಬಲಾಕಾಃ” ಮೇಘಂ 1. ಎಣಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸುವುದು, ಎಶೇಷ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಹೇಳುವುದು.

ಪರಿಗಣಿತ ಪರಿಗಣಿತ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಎಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ಗಣ (ಸಂಖ್ಯಾನೆ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಎಣಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗಣ್ಯನಾಗಿ ಎಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಎಶೇಷ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪರಿಗತ ಪರಿಗತ (ವಿಂ) 1. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ, ಸುತ್ತುಲೂ ಹರಡಿರುವ. ಪರಿ + ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨)। “ವಿಶದಪ್ರಭಾಪರಿಗತಂ ವಿವಿಭಾವುದಯಾಚಲವ್ಯವಹಿತೇಂದ್ರವಪುಃ” ಮಾಘಂ ೧-೨೬। 2. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. “ಪ್ರಥಮಪರಿಗತಾರ್ಥಸ್ತಂ ರಘುಃ ಸನ್ನಿವೃತ್ತಂ ವಿಜಯಿನಮಭಿನಂದ್ಯ ಶಲಾಘ್ಯಜಾಯಾಸಮೇತಮ್” ರಘುಂ ೭-೭೧। 3. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ಗಮ್ ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। 4. ನೆನೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ಮರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಬಾಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಖೇಡಿಸ

ಲ್ಪಟ್ಟ. “ಅಪಿ ಸ್ಥಾಣುವದಾಸೀನಃ ಕುಪ್ಯನ್ ಪರಿಗತಃ ಕ್ಷುಧಾ” ಪञ्ಚತಂ ೧-೪೦। 6. ಸುತ್ತುವರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುತ್ತುಲೂ ವ್ಯಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುತ್ತುಗಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. “ಜಲನಿವಿಡಿತ-ವಸ್ತ್ರವ್ಯಕ್ತನಿಮ್ನೋತ್ತತಾಃ ಪರಿಗತತಟಭೂಮಿಃ ಸ್ನಾನಮಾತ್ರೋ-ತ್ಥಿತಾಃ” ಮಾಲತೀಂ ೪-೧೦।

ಪರಿಗದಿತ ಪರಿಗದಿತ (ನಂ) ಹೆಚ್ಚು ಮಾತನಾಡುವುದು. ಪರಿ + ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪)।

ಪರಿಗಲ್ಪ ಪರಿಗಲ್ಪ (ವಿಂ) ಸ್ತವಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸೋರು ತ್ತಿರುವ. ಪರಿ + ಗಲ್ (ಪ್ರಸವಣೆ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। “ನಿಷ್ಠಾಪಸ್ವಿವದಸ್ಥನಃ ಕವಯನಪರಿಗಲ್ಪಮೇದಸಃ ಪ್ರೇತಕಾಯಾನ್” ಮಾಲತೀಂ ೪-೧೭।

ಪರಿಗಲಿತ ಪರಿಗಲಿತ (ವಿಂ) ಸ್ತವಿಸಿದ, ಸೋರಿದ. ಪರಿ + ಗಲ್ (ಪ್ರಸವಣೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨)। “ಮದಾಮ್ಭಸಾ ಪರಿಗಲಿತೇನ ಸಪ್ತಧಾ ಗಜಾನ್ ಜನಃ ಶಮಿತರಜಶ್ಚಯಾನಧಃ” ಮಾಘಂ ೧೭-೬೮।

ಪರಿಗ್ರಹಣ ಪರಿಗ್ರಹಣ (ನಂ) ಅತಿಯಾಗಿ ನಿಂದಿಸುವುದು, ಬಹಳ ಬಯ್ಯುವುದು. ಪರಿ + ಗ್ರಹ (ನಿಂದನೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

ಪರಿಗೃಹ ಪರಿಗೃಹ (ವಿಂ) 1. ಬಚ್ಚಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಅತ್ಯಂತ ರಹಸ್ಯವಾದ, ಬಹಳ ಗುಟ್ಟಾದ. ಪರಿ + ಗೃಹ (ಸಂವರಣೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। 2. ತಿಳಿಯಲು ಬಹಳ ಕಷ್ಟವಾದ, ಬಹಳ ಗಹನವಾದ.

ಪರಿಗೃಹಿತ ಪರಿಗೃಹಿತ (ವಿಂ) 1. ಸ್ವೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೆಗೆದು ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಡಿದು ನಿಲ್ಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. “ನಾಭಿಹೃದೇ ಪರಿಗೃಹಿತರಯಾಣಿ ನಿಮ್ನೇಃ ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಬೃಹಜ್ಜಘನ-ಸೇತುನಿವಾರಿತಾನಿ” ಮಾಘಂ ೪-೨೯। 3. ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅನುಗ್ರಹ ತೋರಿ ತನ್ನದಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. “ಅತಿ-ಮಾತ್ರಮಾಸುರತ್ವಂ ಪುಷ್ಯತಿ ಭಾನೋಃ ಪರಿಗ್ರಹಾದನಲಃ। ಅಧಿಗಚ್ಛತಿ ಮಹಿಮಾನ್ ಚಂದ್ರೋಽಪಿ ನಿಶಾಪರಿಗೃಹಿತಃ” ಮಾಲಂ ೧-೧೩।

ಪರಿಗ್ರಹಾ ಪರಿಗ್ರಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮದುವೆಯಾದ ಪತ್ನಿ.

ಪರಿಗ್ರಹ ಪರಿಗ್ರಹ (ಪುಂ) 1. ಸ್ವೀಕಾರ, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಪರಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) “ಅಪ್” (೩-೩-೪೮)। “ಇಕ್ಷ್ವಾಕು-ವಂಶಗುರವೇ ಪ್ರಯತಃ ಪ್ರಣಮ್ಯ ಸ ಆತರಂ ಭರತಮರ್ಚ್ಯಪರಿಗ್ರಹಾಂತೆ” ರಘುಂ ೧೩-೭೦। 2. ಪತ್ನಿ, ಹೆಂಡತಿ, ಭಾರ್ಯೆ. “ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಂ ಕುಲಪತಿನಾ ಸ ಪರ್ಣಶಾಲಾಮರ್ಚ್ಯಾಸ್ಯ ಪ್ರಯತಪರಿಗ್ರಹದ್ವಿतीयಃ” ರಘುಂ ೧-೯೫। 3. ಪರಿಜನ, ಸೇವಕ, ಆಳು. 4. ಅನುಗ್ರಹ ತೋರಿ ಅಂಗೀಕರಿಸುವುದು. “ಕುಮುದತೀವೇಂದ್ರಪರಿಗ್ರಹೇಣ



ಜ್ಯೋತ್ಸನೋತ್ಸವಂ ದುರ್ಲಭಮಮ್ಬುಜಿನ್ಯಾ" ನೆಪಂ ೪-೪೫ | 5. ಗ್ರಹಣ, ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಅನಯದಾಸನರಜ್ಜುಪರಿಗ್ರಹೇ ಮುಜಲತಾಂ ಜಲತಾಮಬಲಾಜನ:" ರಘುಂ ೯-೪೬ | 6. ಶಾಪ. ಬೈಗಳು. 7. ಪಡೆಯುವುದು, ಸ್ವೀಕರಿಸುವುದು, ತನ್ನದಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಅಸಂಶಯಂ ಕ್ಷತ್ರಪರಿಗ್ರಹಕ್ಷಮಾ ಯದಾರ್ಯಮಸ್ಯಾಮಭಿಲಾಷಿ ಮೇ ಮನ:" ಶಾಕುಂ ೧-೧೯ | 8. ರಾಹು ಕೇತುಗಳಿಂದ ಚಂದ್ರ ಸೂರ್ಯರ ಗ್ರಹಣ. 9. ಮೌಲ್ಯ, ಬೆಲೆ. 10. ಸಂಸಾರ ಐಶ್ವರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಸಕಲ ಭೋಗೋಪಕರಣ. "ನಿರಾಶೀಯ-ತಚಿತ್ತಾತ್ಮಾ ತ್ಯಕ್ತಸರ್ವಪರಿಗ್ರಹ:" ಗೀತಾ ೪-೨೧ | 11. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಮ್ಮತಿ. 12. ಅನುಕೂಲವಾದ ಮನೋಭಾವ, ಪ್ರೀತಿ ವಿಶ್ವಾಸಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. "ನಮೋ ವ: ಪರಮಾಸ್ತ್ರೇಮ್ಯೋ ಧನ್ಯಾ: ಸ್ಮೋ ವ: ಪರಿಗ್ರಹಾತ್" ತಂ ರಾಂ ೭-೧೧ | 13. ಹೊಂದುವುದು. "ಭಾವಸಾಧವಸ. ಪರಿಗ್ರಹಾದಭೂತ್ ಕಾಮದೋಹದಮನೋಹರಂ ವಪು:" ಕುಮಾಂ ೮-೧ | 14. ಧರಿಸುವುದು, ಧಾರಣೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಲೋಕೇನ ಮಾವಿ ಪಿತುರೇವ ತುಲ್ಯ: ಸಂಭಾವಿತೋ ಮೌಲಿಪರಿಗ್ರಹಾತ್ಸ:" ರಘುಂ ೧೮-೩೮ | 15. ಸಾಧನ, ಉಪಕರಣ. "ಅಜಿನ-ದೃಢಭೃತಂ ಕುಶಮೇಖಲಾಂ ಯತಗಿರಂ ಮೃಗಶೃಂಗಪರಿಗ್ರಹಾಮ್" ರಘುಂ ೯-೨೧ | 16. ಶಪಥ, ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. 17. ಮೂಲ, ಬುಡ. 18. ಸೇನೆಯ ಹಿಂಭಾಗ. 19. ಅನುಗ್ರಹ, ದಯೆ. 20. ಕೈಗೊಳ್ಳುವುದು, (ಕಾರ್ಯವನ್ನು) ಕೈಗೆ ತೆಗೆದು ಕೊಳ್ಳುವುದು. 21. ರಾಹು ಕೇತುಗಳಿಂದ ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟು ಚಂದ್ರಸೂರ್ಯರು. 22. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ, ನಾರಾಯಣ. ಪರಿತೋ ಗ್ರಹ: ಸ್ವಸಂಬಂಧಿಪೌರಜಾನಪದ-ತತ್ಸಂಬಂಧಿನಾಂ ದ್ವಾರ್ವಾದಿನಾಮಪಿ ಪರಮಪದಪ್ರಾಪ್ನಾತ್ ಗ್ರಹಣಮ್ ಅಸ್ಯ | "ಇಹಾಮುತ್ರ ಸಮಂ ಸರ್ವಗ್ರಹಣಾತ್ ಸ್ವಾತ್ಪರಿಗ್ರಹ:" ಇತಿ ನಿರ್ವಹಿತ: | "ಋತು: ಸುದರ್ಶನ: ಕಾಲ: ಪರಮೇಶ್ಠಿ ಪರಿಗ್ರಹ:" ವಿಂ ಸಂ | "ಪತ್ನಿ ಪರಿಜನಾದಾನಮೂಲಶಾಪಾ: ಪರಿಗ್ರಹಾ:" ಅಮಂ | "ಪತ್ನಿಸ್ವೀಕಾರಶಪಥಮಲ್ಯೇಷ್ವಪಿ ಪರಿಗ್ರಹ:" ವೈಜಂ | 23. ಅನುಗ್ರಹ, ದಯೆ. "ಅತಿಮಾತ್ರಭಾಸುರತ್ವಂ ಪುಷ್ಯತಿ ಭಾನೋ: ಪರಿಗ್ರಹಾದನಲ:" ಮಾಲಂ ೧-೧೩ | (ವಿಂ) 24. ಸ್ವೀಕರಿಸಿದ ವಸ್ತು, ತಾನು ಪಡೆದ ಪದಾರ್ಥ, ತಾನು ಸಂಪಾದಿಸಿದ ವಸ್ತು. "ಸುರಪತಿಮಪಿ ಶ್ವಾ ಪಾರ್ಶ್ವಸ್ಥಂ ವಲೋಕಯ ನ ಶಕ್ಯತೇ ನ ಹಿ ಗಣಯತಿ ಕ್ಷುದ್ರೋ ಜನ್ತು: ಪರಿಗ್ರಹಫಲ್ಗುತಾಮ್" ಭರ್ತಂ ೧-೯ | "ಪರಿಗ್ರಹೋಪರಕ್ತೌ ತು ಗ್ರಸ್ತಾಕೇಂದ್ರೋ:" ವೈಜಂ |

**ಪರಿಗ್ರಹಣ ಪರಿಗ್ರಹಣ** (ನಂ) 1. ಸುತ್ತಲೂ ಹಿಡಿದು ಕೊಳ್ಳುವುದು. ಪರಿತೋ ಗ್ರಹಣಮ್ | 2. ಮೇಲೆ ಮುಚ್ಚುವುದು, ಸುತ್ತಲೂ ಹೊದಿಸುವುದು.

**ಪರಿಗ್ರಹಿತ ಪರಿಗ್ರಹಿತ** (ಪುಂ) 1. ಪತಿ, ಗಂಡ, ಯಜಮಾನ. "ಅಥೌ ಹಿ ಕನ್ಯಾ ಪರಕೀಯ ಏವ ತಾಮಃ ಸಂಪ್ರೇಷ್ಯ ಪರಿಗ್ರಹಿತು:" ಶಾಕುಂ ೪-೨೧ | 2. ದತ್ತುತಂದೆ, ಸ್ವೀಕಾರ ಪಡೆದ ತಂದೆ. ಪರಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ತತ್" (೩-೧-೧೩೩) |

**ಪರಿಗ್ರಾಹ ಪರಿಗ್ರಾಹ** (ಪುಂ) ಯಾಗದ ಒಂದು ವೇದಿಯ ಸ್ವೀಕಾರ. ಪರಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಘ" (೩-೩-೪೭) |  
 उत्तर: परिग्राहः । स्फुट्येन वेदे: स्वीकरणम् सि० कौ० |

**ಪರಿಗ್ರ ಪರಿಗ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಕಬ್ಬಿಣದ ಹಿಡಿ ಹಾಕಿದ ಮರದ ದೊಲ, ಕಬ್ಬಿಣದ ಕಟ್ಟುಹಾಕಿದ ದೊಡ್ಡ ದೊಣ್ಣೆ. ಪರಿಗ್ರಹ್ಯತೇ ಅನೇನ — ಪರಿ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಅ" ಧಾದೇಶಾಃ (೩-೩-೮೪) | "ನಿಕುಂಭೋ ವಾನರೇಂದ್ರಸ್ಯ ಪ್ರಾಹೇಷಿತ್ ಪರಿಗ್ರಂ ತತ: | ಹನುಮಾಂಪ್ರಾಪತಂತಂ ತಮಭಾಕ್ಷೀದ್ಭೂಗಿಮಿಷಣಮ್" ಭट्टಿಂ ೧೫-೧೨೧ | 2. ಅಗಲ, ಅಡ್ಡಮರ. "ಭಾರ್ಗವಸ್ಯ ಸುಕೃತೋಽಪಿ ಸೋಮವತ್ಸರ್ವಗಮಗಂಪರಿಗ್ರೋ ದುರತ್ಯಯ:" ರಘುಂ ೧೧-೮೮ | 3. ಕಬ್ಬಿಣದ ಗದೆ. 4. ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ಕೊಲ್ಲುವುದು. 5. ಕುಂಭ, ಕಲಶ, ಬಿಂದಿಗೆ. 6. ವಿಷ್ಣುಭ ಮೊದಲಾದ ಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಯೋಗ. 7. ಗೋಪುರ. 8. ಪ್ರಾಕಾರ 9. ಗಾಜಿನ ಹೂಜಿ. "ಪರಿಗ್ರೋ ಯೋಗಭೇದೇಽನ್ವವಿಶೇಷೇಽಂಗಲ-ಧಾತಯೋ:" ಮೇದಿಂ |

**ಪರಿಗ್ರಾತ ಪರಿಗ್ರಾತ** (ಪುಂ) 1. ಕಬ್ಬಿಣದ ಕಟ್ಟುಹಾಕಿದ ದೊಡ್ಡ ದೊಣ್ಣೆ. ಪರಿಗ್ರಹ್ಯತೇ ಅನೇನ — ಪರಿ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಘ" (೩-೩-೧೨೧) | 2. ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ಕೊಲ್ಲುವುದು.

**ಪರಿಗ್ರಾತನ ಪರಿಗ್ರಾತನ** (ಪುಂ) 1. ಕಬ್ಬಿಣದ ಕಟ್ಟುಹಾಕಿದ ದೊಡ್ಡ ದೊಣ್ಣೆ. ಪರಿ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) | (ನಂ) 2. ಸುತ್ತಲೂ ಹೊದಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 3. ಸುತ್ತಲೂ ಹೊದಿಸುವವನು.

**ಪರಿಗ್ರಾತ ಪರಿಗ್ರಾತ** (ಪುಂ) 1. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು. 2. ಅವಾಚ್ಯ ಶಬ್ದ, ಅಯೋಗ್ಯವಾದ ಮಾತು. 3. ಗುಡುಗು, ಮೇಘ ಗರ್ಜನೆ. "ಪರಿಗ್ರಾತೋ ನಿನಾದೇ ಸ್ಯಾದವಾಚ್ಯೇ ಜಲದಧ್ವನಿ" ಮೇದಿಂ |

**ಪರಿಚಯ ಪರಿಚಯ** (ಪುಂ) 1. ಅಭ್ಯಾಸ. ಪರಿ + ಚಿ (ಚಯೇ) "ಅ" (೩-೩-೫೬) | "ಪರಿಚಯಂ ಚಲಲಕ್ಷ-ನಿಪಾತನೇ ಭಯರೂಪೋಽಶ್ಚ ತದಿಚ್ಛಿತಬೋಧನಮ್" ರಘುಂ ೯-೪೯ | "ಹೇತು: ಪರಿಚಯಸ್ಯೇಯಂ ವಕ್ತುಗುಣನಿಕೇವ ಸಾ" ಮಾಘಂ ೨-೭೫ | 2. ಹೆಚ್ಚು ಸಲಿಗೆ, ಹೆಚ್ಚು ಸಂಬಂಧವಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಅತಿಪರಿಚಯಾದವಜ್ಞಾ ಸಂತತಗಮನಾದನಾದರೋ ಭವತಿ" |



3. ಹಿಂದೆ ನೋಡಿದ ಗುರುತು. 4. ಹೆಚ್ಚು ಕಾಲ ಪಳಗಿರುವುದು, ಬಹಳ ಬಳಕೆಯಾಗಿರುವುದು. "ನ ಪರಿಚಯೋ ಮಲಿನಾತ್ಮನಾಂ ಪ್ರಧಾನಮ್" ಮಾಘಂ ೭-೬೧. 5. ಶೇಖರಿ ಸಿದುವುದು, ಕೂಡಿಹಾಕುವುದು, ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವುದು. 6. ಗಾಢವಾದ ಸ್ನೇಹ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆದುಬಂದಿರುವ ಸ್ನೇಹ. "ತದಿಹ ಸುವದನಾಃ ತಾತ ಮತಃ ಪರಸ್ಮಾತ್ ಪರಿಚಯಕರುಣಾಃ ಸರ್ವಥಾ ಮಾ ವಿರಂಸಿಃ" ಮಾಲತೀಂ ೬-೧೬. 7. ನಾದದ ನಾಲ್ಕು ಅವಸ್ಥೆಗಳಲ್ಲೊಂದು. ["ನಿಷ್ಪತ್ತಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಪರಿಚರ ಪರಿಚರ (ಪುಂ)** 1. ಸೇವಕ, ಆಳು. ಪರಿತಃ ಚರತಿ — ಚರ (ಗತಿಮಕ್ಷಣಯೋಃ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). 2. ಸೈನ್ಯದ ಸುತ್ತಲೂ ಇರುವ ಕಾವಲುಗಾರ, ಯುದ್ಧ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ರಥ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಶತ್ರುಗಳ ಧಾಳಿಯಿಂದ ರಕ್ಷಿಸುವವನು. 3. ಅಂಗರಕ್ಷಕ. (ವಿಂ) 4. ಸುತ್ತಲೂ ಸಂಚರಿಸುವ. ಉಪಚಾರಮಾಡಲು ನೈಪುಣ್ಯ, ದಕ್ಷತೆ, ಯಜಮಾನನಲ್ಲಿ ಅನುರಾಗ, ತ್ರಿಕರಣ ಶುದ್ಧಿ ಇವು ಪರಿಚರನ ಮುಖ್ಯ ಗುಣಗಳು. "ಉಪಚಾರಜ್ಞತಾ ದಾಕ್ಷಯಮನುರಾಗಶ್ಚ ಭರ್ತರಿ. ಶೌಚಂ ಚೇತಿ ಚತುರ್ಥಂ ಗುಣಃ ಪರಿಚರೇ ಜನೇ" ।

**ಪರಿಚರಣ ಪರಿಚರಣ (ನಂ)** ಶುಶ್ರೂಷೆ, ಸೇವೆ. ಪರಿ+ಚರ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). "ಪರಿಚರಣಫಲಂ ಪ್ರಭುಃ ಪ್ರಯಚ್ಛನ್ ಅಮಿತಗುಣಾಭಿರಂಸ್ತ ವಲ್ಲಭಾಭಿಃ" ಯಾದಂ ೨೪-೧.

**ಪರಿಚರತ್ ಪರಿಚರತ್ (ವಿಂ)** ಉಪಚಾರ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಶುಶ್ರೂಷೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ+ಚರ (ಗತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

**ಪರಿಚರಯಾ ಪರಿಚರಯಾಮಾಣ (ವಿಂ)** ಶುಶ್ರೂಷೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಸೇವಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ+ಚರ (ಗತೌ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ನಿವೃತ್ತರಾಗೈಃ ಪರಿಚರಯಾಣೋ ನಾಥಃ ಸ್ವಯಂ ನಾಕನಿಕೇತನಾನಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೮-೫೪ ।

**ಪರಿಚರಯಾ ಪರಿಚರಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸೇವೆ, ಶುಶ್ರೂಷೆ. ಪರಿ+ಚರ (ಗತಿಮಕ್ಷಣಯೋಃ) "ಶಃ" ಯಕ್ ಚ ನಿಪಾಂ (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೧) । "ಇತ್ಯಾಪ್ರಸಾದಾಽಸ್ಯಾಸ್ತ್ವಂ ಪರಿಚರಯಾಪಿರೋ ಭವ" ರಘುಂ ೧-೯೧. 2. ಪೂಜೆ. "ಗ್ರಹಿತುಮಾರ್ಯಾನ್ ಪರಿಚರಯಾ ಮುಹೂರ್ತಾನುಭಾವಾ ಹಿ ನಿತಾಂತಮರ್ಥಿನಃ" ಮಾಘಂ ೧-೧೭ ।

**ಪರಿಚಲತ್ ಪರಿಚಲತ್ (ವಿಂ)** ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೋಗುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ+ಚಲ (ಕಂಪನೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಪರಿಚಲತೋ ಬಲಾನುಜಬಲಸ್ಯ ಪುರಃ ಸತತಂ ಧೃತಶ್ರಿಯಃ"

ಮಾಘಂ ೩-೮೨ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಚಲಂತೀ -ಚಲಂತೀ ।

**ಪರಿಚಲನ ಪರಿಚಲನ (ನಂ)** ಮುಂದೆ ಹೋಗುವುದು, ಮುಂದೆ ಸಾಗುವುದು. ಪರಿ+ಚಲ (ಕಂಪನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

**ಪರಿಚಲಿತ ಪರಿಚಲಿತ (ವಿಂ)** ಮುಂದೆ ಹೊರಟಿರುವ, ಮುಂದೆ ಸಾಗಿರುವ. ಪರಿ+ಚಲ (ಕಂಪನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) ।

**ಪರಿಚಾಯ ಪರಿಚಾಯ (ಪುಂ)** ಮೂರು ಯಜ್ಞಾಗ್ನಿಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. ಪರಿಚಯತೇ — ಪರಿ+ಚಿ (ಚಯನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಞತ್" (೩-೧-೧೩೧) । ಆಯಾ ದೇಶಾಶ್ಚ ನಿಪಾಂ । ಪರಿಚಾಯಃ ಉಪಚಾಯಃ ಮತ್ತು ಸಮೂಹಃ ಎಂದು ಅಗ್ನಿಯ ಹೆಸರು ಮೂರು. "ಸಮೂಹಂ ಚಿನ್ವಿತ ಪಶುಕಾಮಃ । ಪರಿಚಾಯಂ ಚಿನ್ವಿತ ಗ್ರಾಮಕಾಮಃ" ತೈತ್ತಿರೀಯೇ ।

**ಪರಿಚಾರ ಪರಿಚಾರ (ಪುಂ)** ಸೇವೆ, ಶುಶ್ರೂಷೆ. ಪರಿ+ಚರ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಛತ್" (೩-೩-೧೮) ।

**ಪರಿಚಾರಕ ಪರಿಚಾರಕ (ಪುಂ)** ಸೇವಕ, ಆಳು. ಪರಿಚರತಿ — ಪರಿ+ಚರ (ಗತೌ) "ಛಲ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ತತ್ರಾತ್ಮಭೂತೈಃ ಕಾಲೋರಹಾರೈಃ ಪರಿಚಾರಕೈಃ । ಸುಪರೀಕ್ಷಿತ-ಮಗ್ನಾಽಽಮಗ್ನಾನ್ಮನ್ತ್ರೈವಿಷಾಪಹೈಃ" ಮನುಂ ೭-೨೧೭ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛಾಪ್" (೪-೧-೪) । -ಚಾರಿಕಾ -ಚಾರಿಕಾ. ಸೇವಕ, ಹೆಣ್ಣು ಆಳು. "ದೃಢಾ ಮಮ ತ್ವತ್ಕುಚಯೋಃ ಕಠೋರಯೋ-ರಸ್ತದೀಯಂ ಪರಿಚಾರಿಕೋಚಿತಾ" ನೈಷಂ ೯-೧೧೬ ।

**ಪರಿಚಾರ್ಯ ಪರಿಚಾರ್ಯ (ವಿಂ)** ಸೇವಿಸಲ್ಪಡುವವನು. ಪರಿಚಾರಯತೇಜಸೋ — ಪರಿ+ಚರ ಕರ್ಮಂ "ಞತ್" (೩-೧-೧೨೪) ।

**ಪರಿಚಾಲನ ಪರಿಚಾಲನ (ನಂ)** ಚಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು, ಮುಂದೆ ಹೋಗುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ಪರಿ+ಚಲ (ಕಂಪನೇ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

**ಪರಿಚಾಲಯತ್ ಪರಿಚಾಲಯತ್ (ವಿಂ)** ಮುಂದೆ ನಡೆಸುತ್ತಿರುವ, ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ+ಚಲ (ಕಂಪನೇ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಚಾಲಯಂತೀ -ಚಾಲಯಂತೀ ।

**ಪರಿಚಾಲಿತ ಪರಿಚಾಲಿತ (ವಿಂ)** ಮುಂದೆ ನಡೆಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಂದೆ ಹೋಗುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ+ಚಲ (ಕಂಪನೇ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।

**ಪರಿಚಿತ ಪರಿಚಿತ (ವಿಂ)** 1. ಹೆಚ್ಚು ಪಳಗಿರುವ, ಹೆಚ್ಚು ಕಾಲ ಪಳಗಿದ. ಪರಿ+ಚಿ (ಚಯನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) । "ತಥಾಪಿ ದಂಶಶ್ಚ ತ್ಪರಿಚಿತವಿವಿಕ್ತೇನ ಮನಸಾ ಜನಾಕೀರ್ಣ ಮನ್ಯೇ"



ಹುತವಹಪರಿತಂ ಗೃಹಮಿವ" ಶಾಕುಂ ೪-೧೦. 2. ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಪರಿ + ಚಿತ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). 3. ಅಭ್ಯಾಸಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಅನೇಕಾವೃತ್ತಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. "ಯಥಾ ಪುರಾ ಪರಿಚಿತದಾಹವಾಪ್ತಯಾ" ಮಾಘಂ ೧೭-೧೦. 4. ಗುರುತಾಗಿರುವ, ಹಿಂದಿನಿಂದ ತಿಳಿದಿರುವ. "ಪರಿಚಿತಮಾಗಚ್ಛಂತಂ ಗ್ರಾಹಕಮುಕ್ತಕಠಯಾ ವಲೋಕಯಾಸಿ. ಹೃಷ್ಯತಿ ತದ್ವನಲುಘೋ ಯದ್ವತ್ಪುತ್ರೇಣ ಜಾತೇನ" ಪञ्ಚತಂ ೧-೧೬. 5. ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಣಯವುಳ್ಳ, ಅಧಿಕವಾದ ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ. "ಪರಿಚಿತ-ಪರಿಚುಂಬನಾಭಿಯೋಗಾದಪಗತಕುಡ್ಡಕುಮರೇಣುಭಿಃ ಕಪೋಲೆ:" ಮಾಘಂ ೭-೬೩.

**ಪರಿವಿತಿ ಪರಿಚಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** "ಪರಿಚಯ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ಪರಿ + ಚಿತ್ (ಚಯೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪).

**ಪರಿವಿತ್ತನ ಪರಿಚಿಂತನ (ನಂ)** ಆಲೋಚಿಸುವುದು. ಪರಿ + ಚಿತಿ (ಸ್ಮೃತ್ಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪).

**ಪರಿವಿತ್ತನೀಯ ಪರಿಚಿಂತನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಯೋಚಿಸಿ ನೋಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಯೋಚಿಸಿ ನೋಡಬೇಕಾದ.

**ಪರಿವಿತ್ತಿತ ಪರಿಚಿಂತಿತ (ವಿಂ)** ಆಲೋಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಯೋಚಿಸಿ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಪರಿ + ಚಿತಿ (ಸ್ಮೃತ್ಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).

**ಪರಿಚುಂಬನ ಪರಿಚುಂಬನ (ನಂ)** ಚುಂಬಿಸುವುದು, ಮುದ್ದಾಡುವುದು, ಪ್ರೀತಿ ಮತ್ತು ಗೌರವ ತೋರಿಸಲು ಮತ್ತು ಕೊಡುವುದು. ಪರಿ + ಚುಬಿ (ವಕ್ತ್ರಸಂಯೋಗೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪). "ಪರಿವಿತ್ತಪರಿಚುಂಬನಾಭಿಯೋಗಾದಪಗತ-ಕುಡ್ಡಕುಮರೇಣುಭಿಃ ಕಪೋಲೆ:" ಮಾಘಂ ೭-೬೩.

**ಪರಿಚುಂಬನೀಯ ಪರಿಚುಂಬನೀಯ (ವಿಂ)** ಚುಂಬಿಸಲ್ಪಡುವ, ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಮತ್ತು ಕೊಡಲ್ಪಡುವ. ಪರಿ + ಚುಬಿ (ವಕ್ತ್ರಸಂಯೋಗೇ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬).

**ಪರಿಚುಂಬಿತ ಪರಿಚುಂಬಿತ (ವಿಂ)** ಚುಂಬಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಮತ್ತು ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಪರಿ + ಚುಬಿ (ವಕ್ತ್ರಸಂಯೋಗೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).

**ಪರಿಚ್ಛದ ಪರಿಚ್ಛದ (ಪುಂ)** 1. ಉಪಕರಣ, ಸಾಮಗ್ರಿ (ಹೊರ ಗಣ ಅಂಗ; ಛತ್ರ ಚಾಮರ ಮುಂತಾದುದು). ಪರಿಚ್ಛಾದತೇ-ಜೇನ — ಪರಿ + ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಛ:" (೩-೩-೧೧೮). "ಸೇನಾ ಪರಿಚ್ಛದಸ್ತಸ್ಯ ದ್ವಯಮೇವಾರ್ಯಸಾಧನಮ್" ರಘುಂ ೧-೧೯. 2. ಅಚ್ಚಾದನ, ಹೊದಿಕೆ. 3. ವಸ್ತ್ರ ಒಡವೆ ಮುಂತಾದ ಅಲಂಕಾರ. "ಶಾಖಾವಸಕ್ತಕಮನೀಯ-ಪರಿಚ್ಛದಾನಾಮವ್ಯವ್ರಮಾತುರವಧೂಜನಸೇವಿತಾನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೭-೪೦. 4. ಪರಿಚ್ಛನ, ಸೇವಕ, ಅಳು. "ನರಪತಿರತಿ-

ವಾಹ್ಯಾಂಬಭೂವ ಕ್ವಚಿದಸಮೇತಪರಿಚ್ಛದಸ್ತ್ರಿಯಾಮಾಮ್" ರಘುಂ ೯-೭೦. 5. ಅಸ್ತಿ, ಧೇನು ಧಾನ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಐಶ್ವರ್ಯ. "ವಿವಾಸ್ಯೋ ವಾ ಭವೇದ್ರಾಷ್ಟ್ರಾತ್ಸದ್ರವ್ಯಃ ಸಪರಿಚ್ಛದಃ" ಮನುಂ ೯-೨೪೧. 6. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಂದ ಶಬರ ಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು. "ವಿಪ್ರಾದಾವೃತಮುಗ್ರಸ್ತ್ರೀ ನಿಷಾದಿಪು ಮನೋಜವಮ್. ಚಂಡಾಲಿ ತು ಶ್ವಚಂಡಾಲಂ ಶಬರೀ ತು ಪರಿಚ್ಛದಮ್" ವೇಜಂ.

**ಪರಿಚ್ಛಿತ್ತಿ ಪರಿಚ್ಛಿತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ನಿರ್ಣಯ, ನಿಶ್ಚಯ, ನಿರ್ಧಾರ. ಪರಿ + ಛಿದಿರ್ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪). 2. ತಪ್ಪು ಒಪ್ಪುಗಳನ್ನು ನಿರ್ಣಯಿಸಿ ಬೇರ್ಪಡಿಸುವುದು.

**ಪರಿಚ್ಛಿತ್ತ ಪರಿಚ್ಛಿತ್ತ (ವಿಂ)** 1. ಇಷ್ಟೇ ಎಂದು ಅಳಿಯ ಲ್ಪಟ್ಟು, ಇಯತ್ನಯ ಅವಧಿಯುಳ್ಳ. ಪರಿ + ಛಿದಿರ್ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). "ಪರಿಚ್ಛಿತ್ತ-ಪ್ರಭಾವಧಿನಂ ಮಯಾ ನ ಚ ವಿಷ್ಣುನಾ" ಕುಮಾಂ ೨-೪೮. 2. ತಪ್ಪು ಒಪ್ಪುಗಳನ್ನು ನಿರ್ಣಯಿಸಿ ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ನಿರ್ಣಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

**ಪರಿಚ್ಛೇದ ಪರಿಚ್ಛೇದ (ಪುಂ)** 1. ನಿರ್ಣಯ, ನಿಶ್ಚಯ, ನಿರ್ಧಾರ. ಪರಿ + ಛಿದಿರ್ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ಛಬ್" (೩-೩-೧೮). ಇವನು ಇಂತಹವನು ಇದು ಇಂತಹುದು ಎಂಬ ನಿಶ್ಚಯ ಜ್ಞಾನವು ಪರಿಚ್ಛೇದವೆನಿಸುವುದು. "ಪರಿಚ್ಛೇದಾತೀತಃ ಸಕಲವಚನಾನಾಮವಿಷಯಃ ಪುನರ್ಜನ್ಮನ್ಯಸ್ಮಿನ್ ಅನುಭವಪಥಂ ಯೋ ನ ಗತವಾನ್" ಮಾಲತೀಂ ೧-೩೩. 2. ವಿಮರ್ಶೆ, ವಿವೇಚನೆ, ಸರಿಯಾಗಿ ಆಲೋಚಿಸುವುದು. "ಪರಿಚ್ಛೇದೋ ಹಿ ಪಾಂಡಿತ್ಯಂ ಯದಾಪನ್ನಾ ವಿಪತ್ತಯಃ. ಅಪರಿಚ್ಛೇದಕರ್ತೃಣಾಂ ವಿಪದಃ ಸ್ಯುಃ ಪದೇ ಪದೇ" ಹಿತಂ ೧-೧೪೮. 3. ಸೀಮೆ, ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ. 4. ಅವಧಿ, ಇಷ್ಟು ಎಂದು ಮಿತಿ. "ರಾಜಾ — ಅಲಮಲಂ ಪರಿಚ್ಛೇದೇನ" ಮಾಲಂ ೨. 5. ಗ್ರಂಥದ ಭಾಗ. ಇದರಂತೆಯೇ ಉಚ್ಛಾಸಃ ಅಧ್ಯಾಯಃ ಪಟಲಃ ಅಕ್ಷಃ ಕಾಂಡಃ ಪರ್ವ ಸ್ತಬಕಃ ತರಙ್ಗಃ ಮುಂತಾದುವು. 6. ಅಳತೆ, ಪರಿಮಾಣ.

**ಪರಿಚ್ಛೇದ ಪರಿಚ್ಛೇದ (ವಿಂ)** 1. ನಿಶ್ಚಯಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 2. ನಿರ್ಧರಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ನಿರ್ಣಯಿಸಲು ಶಕ್ತವಾದ. ಪರಿ + ಛಿದಿರ್ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) ಕರ್ಮದೊ "ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪). 4. ಇಷ್ಟೇ ಎಂದು ಮಿತಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ, ಇಷ್ಟು ಎಂದು ಅಳತೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. "ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷೋಷ್ಯ-ಪರಿಚ್ಛೇದೋ ಮಹ್ಯಾದಿರ್ಮಹಿಮಾ ತವ" ರಘುಂ ೧೦-೨೮.

**ಪರಿಚ್ಯುತ ಪರಿಚ್ಯುತ (ವಿಂ)** ಕೆಳಗೆ ಬಿದ್ದಿರುವ, ಜಾರಿ ಬಿದ್ದಿರುವ. ಪರಿ + ಚ್ಯುತ್ (ಗತೀ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨).



“परिच्युतस्तत्कुचकुम्भमध्यात् किं शोषमायासि मृणाल-  
हार” रत्ना० २-१४।

**परिच्युति ಪರಿಚ್ಯುತಿ** (ಸ್ತ್ರೀ०) ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುವಿಕೆ, ಕೈಚಾರಿ  
ಬೀಳುವುದು. ಪರಿ+ಚ್ಯುತ್ (ಗತೌ) “ಕ್ತಿನ್” (३-३-९४)।

**परिजन ಪರಿಜನ** (ಪುಂ०) 1. ಸೇವಕ, ಅಳು. ಪರಿಗತೌ  
ಜನಃ। “ಯಾನಾಜ್ಜನಃ ಪರಿಜನೇರವತಾರ್ಯಮಾಣಾ ರಾಜ್ಞೀನೇರಾಪ-  
ನಯನಾಕುಲಸೌವಿದಲ್ಲಾಃ” ಮಾಧ० ५-१७। 2. ಸೇವಕರ  
ಸಮೂಹ. “ಪರಿಜನಶ್ಚ ಯಥಾವ್ಯಾಪಾರಂ ರಾಜಾನಮಭಿತಃ  
ಸ್ಥಿತಃ” ಮಾಲ० १।

**परिज्ञात ಪರಿಜ್ಞಾತ** (ವಿಂ०) ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟು. ಪರಿ  
+ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) “ಕ್ತಃ” (३-३-१०२)। “ತಪಸ್ವಿಭಿಃ  
ಕೇಶ್ರಿತ್ ಪರಿಜ್ಞಾತೋಽಸ್ಮಿ” ಶಾಕು० २।

**परिज्ञान ಪರಿಜ್ಞಾನ** (ನಂ०) ಸೂಕ್ಷ್ಮಜ್ಞಾನ. ಕೂಲಂಕಷ  
ವಾದ ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ಪರಿ+ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) “ಲ್ಯುಟ್”  
(३-३-११५)।

**परिज्ञेय ಪರಿಜ್ಞೇಯ** (ವಿಂ०) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ.  
2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿ  
ಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಪರಿ+ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) “ಯತ್”  
(३-१-९७)। ಆತಃ ಇತ್ (६-४-६५)।

**परिज्वन् ಪರಿಜ್ವನ್** (ಪುಂ०) 1. ಚಂದ್ರ. 2. ಯಾಜ್ಞಿಕ.  
ಯಜ್ಞಮಾಡಿಸುವ ಪುರೋಹಿತ. 3. ಪರಿಚಾರಕ. “ಪರಿಜ್ವಾ  
ತು ಪುಮಾನಿಂದೌ ಯಾಜ್ಞಿಕೇ ಪರಿಚಾರಕೇ” ಮೇದಿ०।

**परिज्वलत् ಪರಿಜ್ವಲತ್** (ವಿಂ०) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೊಳೆಯು  
ತ್ತಿರುವ, ತೇಜಃಶಾಲಿಯಾದ. ಪರಿ+ಜ್ವಲ (ದೀಪ್ತೌ)  
“ಶತ್” (३-२-१२४)। “ಪರಿಜ್ವಲಂತಂ ನಿವೃತ್ತಾಯ ಭೂತಾಂ  
ದಹಂತಮಾಶಾ ಇವ ಜಾತವೇದಸಮ್” ಕಿರಾ० १४-३५।

**परिडीन ಪರಿಡಿನ್** (ನಂ०) ಪಕ್ಷಿಗಳ ಹಾರಾಟದ ಒಂದು  
ಭೇದ. [“ಕ್ಷಗಗತಿ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**परिणत ಪರಿಣತ** (ಪುಂ०) 1. ಅಡ್ಡಲಾಗಿ ಕೊಂಬುಗಳಿಂದ  
ಹೊಡೆಯುವ ಆನೆ. ಪರಿ+ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) “ಕ್ತಃ”  
(३-४-७२)। “ತಿರ್ಯಗ್ದಂತಪ್ರಹಾರಸ್ತು ಗಜಃ ಪರಿಣತೌ ಮತಃ”।

“ಸತತಮಸುಮತಾಮಗ್ಮ್ಯರೂಪಾಃ ಪರಿಣತದಿವಕರಿಕಾಸ್ತಡಿ-  
ವಿರ್ಭತಿ” ಮಾಧ० ४-२९। (ವಿಂ०) 2. ಪಕ್ವವಾಗಿರುವ,  
ಹಣ್ಣಾಗಿರುವ. “ತ್ವಯ್ಯಾಸನ್ನೇ ಪರಿಣತಫಲಶ್ಯಾಮಜಮ್ಬುವನಾಂತಾಃ  
ಸಂಪತ್ಸ್ಯಂತೇ ಕತಿಪಯದಿನಸ್ಥಾಯಿಹಂಸಾ ದಶಾರ್ಣಾಃ” ಮೇಧ० १-२३।

3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ವಿಶ್ಲೇಷಿಸಲಾಗಿದೆ, ಪರಿಪಕ್ವವಾದ, ಸಂಪೂರ್ಣತೆ  
ಪಡೆದ. “ಶಬ್ದಬ್ರಹ್ಮವಿದಃ ಕವೇಃ ಪರಿಣತಪ್ರಜ್ಞಸ್ಯ ವಾಣಿ-  
ಮಿಮಾಮ್” ತಂ ರಾ० ७-२१। 4. ಹಳೆಯದಾದ, ಇಳಿಮುಖ

ವಾದ. “ಪರಿಣತಂ ವಯಃ”। 5. ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದಿದ,  
ಬೇರೆ ರೂಪವನ್ನು ಹೊಂದಿದ. “ಪ್ರವೇಶಾನಂತರಂ ಚ ಕಾನನೋ-  
ಪಾಂತವರ್ತಿಸಿತಾಭಾವೇನ ಪರಿಣತಮಸ್ಯಾ ರೂಪಮ್” ವಿಕ್ರಂ  
४। 6. ಪರಿಪೂರ್ಣವಾದ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆದು ಅಭಿವೃದ್ಧಿ  
ಹೊಂದಿದ. “ನಿವೇಕ್ಷಯಾವಃ ಪರಿಣತಶರಚ್ಚಂದ್ರಿಕಾಸು ಕಪಾಸು”  
ಮೇಧ० २-४७। 7. ಸಮಾಪ್ತವಾಗಿದ್ದ, ಕೊನೆ ಮುಟ್ಟಿದ.  
8. ಜೀರ್ಣವಾದ, ಅರಗಿದ. 9. ನಿಪುಣ, ನಿಷ್ಣಾತ,  
ಸಂಪೂರ್ಣ ಜ್ಞಾನ ಪಡೆದವನು. 10. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬಗ್ಗಿರುವ,  
ಕೆಳಮುಖವಾಗಿರುವ. 11. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬಲಿತಿರುವ, ಎಳೆಯ  
ದಲ್ಲದ. “ಪರಿಣತಶರಕಾಣ्डಾ ಪಾಂಡುಭಿರ್ಗಂಧಭಾಗೈಃ” ಮಾಧ०  
११-३०।

**परिणति ಪರಿಣತಿ** (ಸ್ತ್ರೀ०) 1. ಪರಿಪೂರ್ಣತೆ, ಸಂಪೂರ್ಣತೆ.  
ಪರಿ+ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) “ಕ್ತಿನ್” (३-३-९४)। “ಪ್ರಭುತ್ವಸ್ಯೋ-  
ತ್ಕರ್ಷಾತ್ಪರಿಣತಿವಿಶುದ್ಧೇಶ್ಚ ತಪಸಾಮ್” ಮಂ ವೀ० २-१५।  
2. ಪರಿಣಾಮ, ಕಾರ್ಯದ ಫಲ. “ಸಮಾನಪ್ರೇಮಾಣಂ ಜನ-  
ಮಸುಲಮಂ ಪ್ರಾರ್ಥಿತವತೌ ವಿಧೌ ವಾಮಾರಮ್ಭೇ ಮಮ ಸಮುಚಿತೇಷಾ  
ಪರಿಣತಿಃ” ಮಾಲತೀ० ४-४। 3. ಕೊನೆ, ಅಂತ್ಯ, ಸಮಾಪ್ತಿ,  
ಪರಿಪಾಕಾವಸ್ಥೆ. “ಪರಿಣತಿರಮಣೀಯಾಃ ಪ್ರೀತಯಸ್ತ್ವದ್ವಿಧಾನಾ-  
ಮಹಮಪಿ ತವ ಮಾನ್ಯಾ ಹೇತುಭಿಃಸ್ತೇಶ್ಚ ತೇಶ್ಚ” ಮಾಲತೀ० ६-१६।  
4. ಜರಾವಸ್ಥೆ, ಮುಪ್ಪು, ಮುದಿತನ. “ಅಭವದ್ಗತಃ  
ಪರಿಣತಿಃ ಶಿಥಿಲಃ ಪರಿಮಂದಸೂರ್ಯನಯನೌ ದಿವಸಃ” ಮಾಧ०  
९-३। 5. ಆಹಾರ ಜೀರ್ಣವಾಗುವುದು, ಆಹಾರದ ಪಚನ.  
6. ಪರಿಪಕ್ವವಾಗುವುದು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹಣ್ಣಾಗುವುದು. 7.  
ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬಲಿಯುವುದು. 8. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬಗ್ಗುವುದು.  
9. ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದುವುದು, ರೂಪಾಂತರ ಹೊಂದು  
ವುದು. “ಪರಿಣತಿಮಿತಿ ರಾತ್ರೇರ್ಮಗಿಧಾ ಮಾಧವಾಯ” ಮಾಧ०  
११-११।

**परिणद्ध ಪರಿಣದ್ಧ** (ವಿಂ०) 1. ಸುತ್ತಲೂ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟು.  
ಪರಿ+ಣಹ (ಬಂಧನೆ) “ಕ್ತಃ” (३-२-१०२)। “ಸ ಜಯತಿ  
ಪರಿಣದ್ಧಃ ಶಕ್ತಿಮಿಃ ಶಕ್ತಿನಾಥಃ” ಮಾಲತೀ० ५-१।  
2. ವಿಶಾಲವಾದ, ಅಗಲವಾದ. “ಯುವಾ ಯುಗವ್ಯಾಯತಬಾಹು-  
ರಸಲಃ ಕಪಾಟವಕ್ಷಾಃ ಪರಿಣದ್ಧಕಂಠರಃ” ರಘು० ३-३४।

**परिणमत् ಪರಿಣಮತ್** (ವಿಂ०) 1. ಉಂಟಾಗುವ, ಸಿದ್ಧಿ  
ಸುವ. ಪರಿ+ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) “ಶತ್” (३-२-१२४)।  
“ಯೋಗಿನಾಂ ಪರಿಣಮನ್ ವಿಮುಕ್ತಯೇ ಕೇನ ನಾಸ್ತು ವಿನಯಃ ಸತಾಂ  
ಪ್ರಿಯಃ” ಕಿರಾ० १३-४४। 2. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದು  
ತ್ತಿರುವ, ಬಲಿಯುತ್ತಿರುವ, ಬೆಳೆಯುತ್ತಿರುವ. “ಪರಿಣಮ-  
ದಹಗಿಮ್ನಃ ಪಕ್ಷುಜಾರಾಘಕೋಶಾನ್” ಯಾದ೦ १९-७७।  
3. ಪಕ್ವವಾಗುತ್ತಿರುವ, ಹಣ್ಣಾಗುತ್ತಿರುವ. 4. ಬದಲಾವಣೆ



ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ, ರೂಪಾಂತರ ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ.  
5. ಪರಿಪೂರ್ಣತೆ ಪಡೆಯುತ್ತಿರುವ.

**ಪರಿಣಯ ಪರಿಣಯ (ಪುಂ)** ವಿವಾಹ, ಮದುವೆ. ಪರಿ + ಣಿ (ಪ್ರಾಪ್ತೇ) ಭಾವೇ "ಅಚ್" (೩-೩-೪೬)। "ತಸ್ಮಿನ್ ಸಂಯಮಿನಾಮಾಘೇ ಜಾತೇ ಪರಿಣಯೋನ್ಮುಖೇ। ಜಹುಃ ಪರಿಗ್ರಹವಿಡಾಂ ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯಾಸ್ತಪಸ್ವಿನಃ" ಕುಮಾರಂ ೬-೩೪।

**ಪರಿಣಯನ ಪರಿಣಯನ (ನಂ)** ವಿವಾಹ, ಮದುವೆ. ಪರಿ + ಣಿ (ಪ್ರಾಪ್ತೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ಅವನಿತನಯಭಿತಾನ್ ಪ್ರೀಣಯನ್ನಾದಿತೇಯಾನ್ ಪರಿಣಯನವಿಲಮ್ಬಂ ಪದ್ಮನಾಭಃ ಪ್ರಸೇಹೇ" ಯಾದಂ ೧೬-೧೪೪।

**ಪರಿಣಹನ ಪರಿಣಹನ (ನಂ)** ಸುತ್ತಲೂ ಕಟ್ಟುವುದು, ಪರಿ + ಣಹ (ಬಂಧನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।

**ಪರಿಣಾಮ ಪರಿಣಾಮ (ಪುಂ)** 1. ಬದಲಾವಣೆ, ರೂಪಾಂತರ ಹೊಂದುವುದು, ವಸ್ತುವಿನ ಪೂರ್ವದ ಗುಣ ಹೋಗಿ ಬೇರೆ ಗುಣದ ಉತ್ಪತ್ತಿ. ಪರಿ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। ಮೃದಃ ಪರಿಣಾಮೋ ಘಟಃ। ಪಯಸಃ ಪರಿಣಾಮೋ ದಧಿಃ। 2. ಕಾರ್ಯದ ಕೊನೆಯ ಅವಸ್ಥೆ, ಫಲಕಾಲ. "ಪರಿಣಾಮಸುಖೇ ಗರೀಯಸಿ ವ್ಯಥಕೇಽಸ್ಮಿನ್ ವಚಸಿ ಕತೌಜಸಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೪। 3. ಪರಿಪಕ್ವವಾಗುವುದು, ಬಲಿಯುವುದು. "ಽಪಂತಿ ಸಸ್ಯಂ ಪರಿಣಾಮರಮ್ಯತಾ ನದೀರನೌದ್ರಸ್ಯಮಪಕ್ವತಾಂ ಮಹೀ" ಕಿರಾಂ ೪-೨೨। 4. ಪಕ್ವವಾಗುವುದು, ಹಣ್ಣಾಗುವುದು. "ಫಲಭರಪರಿಣಾಮದಯಾಮಜಮ್ಬಿನಿಕುಂಜಸ್ವಲನತನು-ತರಜ್ಞಾಮುತರೇಣ ಸ್ತವಂತಿಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೪। 5. ಮುಪ್ಪು, ಮುದಿತನ. "ಗುಣವತ್ಸುತರೋಪಿತಶ್ರಿಯಃ ಪರಿಣಾಮೇ ಹಿ ದಿಲೀಪ-ವಂಶಜಾಃ" ರಘುಂ ೮-೧೧। 6. ಕೊನೆ, ಅಂತ್ಯ. "ಪ್ರಚ್ಛಾಯ-ಮುಲಭನಿಧಾಃ ದಿವಸಾಃ ಪರಿಣಾಮರಮಣೀಯಾಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೩। 7. ಅಹಾರವು ಜೀರ್ಣವಾಗುವ ಕಾಲ, ತಿಂದ ಅಹಾರವು ಪಚನವಾಗುವ ಅವಸ್ಥೆ. "ಹಿತಂ ಚ ಪರಿಣಾಮೇ ಯತ್ತದಾಘಂ ಭೂತಿಮಿಚ್ಛತಾ" ಪञ्ಚತಂ ೪-೨೩। 8. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ, ಪರಿಣಾಮಾಲಂಕಾರ. ಉಪಮಾನವಸ್ತುವನ್ನು ಉಪಮೇಯರೂಪದಿಂದ ಪ್ರಕೃತಕಾರ್ಯೋಪಯೋಗಿಯಾಗಿ ವರ್ಣಿಸುವುದು ಪರಿಣಾಮಾಲಂಕಾರ. "ಪರಿಣಾಮಃ ಕ್ರಿಯಾರ್ಥೇಽಪೇಕ್ಷಯಿ ವಿಷಯಾತ್ಮನಾ" ಚಂದ್ರಾಂ।

**ಉದಾ :** "ಪ್ರಸನ್ನೇನ ದೃಗ್ಜನೇನ ವೀಕ್ಷತೇ ಮದಿರೇಕ್ಷಣಾ" ಇಲ್ಲಿ ಅಪೇಕ್ಷಿತನವಾದ ಅಬ್ಬಕ್ಕಿ ವೀಕ್ಷಣಕರ್ತೃತ್ವವು ಅಸಂಭವವಾದುದರಿಂದ ಉಪಮೇಯಭೂತವಾದ ದೃಕ್ ರೂಪದಿಂದ ಪರಿಣಾಮವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ ವೀಕ್ಷಣಕಾರ್ಯೋಪಯೋಗಿಯಾಗಿ ವರ್ಣಿತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಪರಿಣಾಮಾಲಂಕಾರ.

**ಪರಿಣಾಮದರ್ಶಿನ್ ಪರಿಣಾಮದರ್ಶಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರಯತ್ನದ ಫಲವನ್ನು ನೋಡುವ, ನಡೆಸಿದ ಕಾರ್ಯದ ಫಲವನ್ನು ಕಾಣುವ. ಪರಿಣಾಮಂ ಪश्यತಿ — ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣಂ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ದೂರದೃಷ್ಟಿಯುಳ್ಳ, ವಿಚಾರವರ.

**ಪರಿಣಾಮಶೂಲ ಪರಿಣಾಮಶೂಲ (ಪುಂ)** ಒಂದು ವಿಧ ಹೊಟ್ಟೆನೋವು, ನೋವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಒಂದು ವಿಧ ವಾತರೋಗ. ಪರಿಣಾಮೇ ಶೂಲಮ್ ಯಸ್ಯ। ಅಹಾರವು ಜೀರ್ಣವಾಗುವ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ವಾತರೋಷದಿಂದ ಸಂಭವಿಸುವ ಈ ವ್ಯಾಧಿಗೆ ಪರಿಣಾಮಶೂಲವೆಂದು ಹೆಸರು. "ಸ್ವೇನಿದಾನೇಃ ಪ್ರಕುಪಿತೋ ವಾಯುಃ ಸನ್ನಿಹಿತೋ ಯದಾ। ಕಫಪಿತ್ತೇ ಸಮಾವೃತ್ಯ ಶೂಲಕಾರಿ ಭವೇದ್ವಲಿ"। "ಭುಕ್ತೇ ಜೀಯಂತಿ ಯಚ್ಛೂಲಂ ತದೇವ ಪರಿಣಾಮಜಮ್"।

**ಪರಿಣಾಮಿನ್ ಪರಿಣಾಮಿನ್ (ವಿಂ)** ಪರಿಣಾಮ ಹೊಂದುವ, ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದುವ, ರೂಪಾಂತರ ಹೊಂದುವ. ಪರಿ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)।

**ಪರಿಣಾಯ ಪರಿಣಾಯ (ಪುಂ)** ಪಗಡೆಕಾಯನ್ನು ನಡೆಸುವುದು. ಪರಿತೋ ವಾಮದಕ್ಷಿಣತೋ ನಯನಮ್ — ಣಿ (ಪ್ರಾಪ್ತೇ) "ಘ್" (೩-೩-೩೭)। "ಪರಿಣಾಯಸ್ತು ಶಾರೀಣಾಂ ಸಮಂತಾ-ನ್ಯಯನೇಽಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಅಮಂ।

**ಪರಿಣಾಯಕ ಪರಿಣಾಯಕ (ಪುಂ)** ಪತಿ, ಗಂಡ. ಪರಿ + ಣಿ (ಪ್ರಾಪ್ತೇ) "ಫ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಅನುದೇಹಮಾಗತವತಃ ಪ್ರತಿಮಾಂ ಪರಿಣಾಯಕಸ್ಯ ಗುರುಮುಢಹತಾ" ಮಾಘಂ ೯-೭೩।

**ಪರಿಣಾಹ ಪರಿಣಾಹ (ಪುಂ)** ವೈಶಾಲ್ಯ, ವಿಸ್ತಾರ, ಅಗಲ. ಪರಿ + ಣಹ (ಬಂಧನೇ) (೩-೩-೧೧೪)। "ಅತಿಶಯಪರಿತಾಪ-ಗ್ಲಾಪಿತಾಙ್ಗಥಾ ಯಾಸ್ಯಾಃ ಸ್ತನಯುಗಪರಿಣಾಹಂ ಮಂಡಲಾಭ್ಯಾಂ ಬ್ರವೀತಿ" ರತ್ನಾಂ ೨-೧೩।

**ಪರಿಣಾಹವತ್ ಪರಿಣಾಹವತ್ (ವಿಂ)** ವಿಶಾಲವಾದ, ವಿಸ್ತಾರವಾದ, ಅಗಲವಾದ. ಪರಿಣಾಹೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ ವಾ "ಮತುಃ" (೪-೨-೧೩೬)। "ಅತಿಶಯಪರಿಣಾಹವಾನ್ವಿತೇನೇ ಬಹುತರಮಪಿತರಲ್ಪಕಿಂಕಿಣೀಕಃ" ಮಾಘಂ ೭-೪। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ವತೀ -ವತಿಃ.

**ಪರಿಣಾಹಿನ್ ಪರಿಣಾಹಿನ್ (ವಿಂ)** ವಿಶಾಲವಾದ, ವಿಸ್ತಾರವಾದ, ಅಗಲವಾದ. ಪರಿಣಾಹೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪)। "ತರ್ಮೂರ್ಯುಗೇನ ಸುಂದರೀ ಕಿಮ್ ರಮ್ಯಾಂ ಪರಿಣಾಹಿನಾ ಪರಮ್" ನೈಷಂ ೨-೩೭। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪)। ಪರಿಣಾಹಿನಿ ಪರಿಣಾಹಿನೀ.



**ಪರಿಣಿಸಕ ಪರಿಣಿಸಕ** (ವಿಂ) 1. ಭಕ್ಷಿಸುವ, ತಿನ್ನುವ. ಪರಿ + ಗಿಸಿ (ಚುಮ್ಬನೆ) "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಕುನಾಂತಪ್ರೇಕ್ಷಣಃ ಪಾಪಃ ಫಲಾನಾಂ ಪರಿಣಿಸಕಃ" ಭಟಿಂ ೯-೧೦೬। 2. ಚುಂಬಿಸುವವನು.

**ಪರಿಣಿಸನ ಪರಿಣಿಸನ** (ನಂ) 1. ಭಕ್ಷಿಸುವುದು, ತಿನ್ನುವುದು. 2. ಚುಂಬಿಸುವುದು. ಪರಿ + ಗಿಸಿ (ಚುಮ್ಬನೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ಪರಿಣಿನಸಾ ಪರಿಣಿನಸಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೊಂಬುಗಳಿಂದ ಅಡ್ಡಲಾಗಿ ಹೊಡೆಯುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ, ತಿರ್ಯಕ್ದಂತ ಪ್ರಹಾರದ ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಒಂದು ಪಾರ್ಶ್ವದಿಂದ ತನ್ನ ಕೊಂಬುಗಳಿಂದ ಹೊಡೆಯುವುದು, ಮಣ್ಣಿನ ಗುಡ್ಡೆಯನ್ನು ಗುದ್ದಿ ತೋಡುವುದು ಇತ್ಯಾದಿ ಅನೇಯ ಸ್ವಭಾವ. ಪರಿ + ಗಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ ಚ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨)।

**ಪರಿಣಿನಸು ಪರಿಣಿನಸು** (ವಿಂ) ಕೊಂಬಿನಿಂದ ತಿರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಹೊಡೆಯುವ ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, (ಅನೇ). ಪರಿ + ಗಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ ಚ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮)। "ಸ್ತಾಂಬರಮಃ ಪರಿಣಿನಸುರಸಾವುಪೇತಿ ಪಿಙ್ಗುರಗದತ ಸಸಂಭ್ರಮಮೇವ ಕಾಚಿತ್" ಮಾಘಂ ೫-೩೪।

**ಪರಿಣೀತ ಪರಿಣೀತ** (ವಿಂ) ಮದುವೆಯಾದವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಣೀತಾ -ಣೀತಾ. ಮದುವೆಯಾದ ಹೆಂಗಸು.

**ಪರಿಣೇತ್ ಪರಿಣೇತ್** (ಪುಂ) 1. ಪತಿ, ಗಂಡ. ಪರಿ + ಣೀತ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ತೃತ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಸ ಏವ ವೇಶಃ ಪರಿಣೇತುರಿಷ್ಟಂ ಭಾವಾಂತರಂ ತಸ್ಯ ವಿಮೋಃ ಪ್ರಪೇದೇ" ಕುಮಾರಂ ೭-೩೧। (ವಿಂ) 2. ಮದುವೆಯಾಗುವವನು. 3. ಕರೆದು ಕೊಂಡು ಹೋಗುವವನು, ಒಯ್ಯುವವನು.

**ಪರಿಣೇಯ ಪರಿಣೇಯ** (ವಿಂ) 1. ಸುತ್ತಲೂ ಒಯ್ಯಲ್ಪಡುವ. 2. ಸುತ್ತಲೂ ಒಯ್ಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಸುತ್ತಲೂ ಒಯ್ಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಪರಿ + ಣೀತ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೭)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಣೇಯಾ -ಣೇಯಾ. 4. ವಿವಾಹಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯಳಾದ ಕನ್ಯೆ.

**ಪರಿತಪ್ತ ಪರಿತಪ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಕಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಸಿಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ತಪ (ದಾಹೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ದುಃಖಗೊಂಡ, ಖೇದಗೊಂಡ. "ಪರಿತಪ್ತಃ ಏವ ನೋತ್ತಮಃ ಪರಿತಪ್ತೋಽಪ್ಯಪರಃ ಸುಸಂವೃತಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೬-೨೩।

**ಪರಿತಪ್ತ ಪರಿತಪ್ತ** (ವಿಂ) 1. ತೃಪ್ತಿಗೊಳಿಸುವ, ಪರಿ + ತಪ (ಪ್ರೀಣನೆ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)। "ಆತಪ್ತ-ಜೀವಿತಪುನಃ ಪರಿತಪ್ತೋಽಯಂ ಸಂಜೀವನೌಷಧಿರಸೌ ಹೃದಿ ನು ಪ್ರಸಕ್ತಃ" ಉಂ ರಾಂ ೩-೧೧। (ನಂ) 2. ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸುವುದು.

**ಪರಿತಸ್ ಪರಿತಸ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ, ಸುತ್ತಲೂ. ಪರಿ "ತಸಿಲ್" (೫-೩-೯)। ಈ ಪದದ ಯೋಗವಿದ್ದಲ್ಲಿ ದ್ವಿತೀಯಾವಿಧಕ್ಕೆ ಬರುವುದು. "ಪರಿತಶ್ಚ ಧೌತಮುಕ್ತರೂಪವಿಲಸದಹಿಮಾಂಶುಮಂಜಲಾಃ। ತೇನುರತನುವಪುಃ ಪೃಥಿವೀ ಸ್ಫುಟಲಕ್ಷಯತೇಜಸ ಇವಾತ್ಮಜಾಃ ಶ್ರಿಯಃ" ಮಾಘಂ ೧೫-೭೮। 2. ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ, (ಅದರ) ಕಡೆಗೆ, (ಅದರ) ದಿಕ್ಕಿಗೆ. "ಚಮರಾನ್ ಪರಿತಃ ಪ್ರವರ್ತಿತಾಶ್ಚಃ ಕವಚಿದಾಕರ್ಣಂ ವಿಕೃಷ್ಟಭಲ್ಲವರ್ಷಿ" ರघುಂ ೯-೬೬। 3. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ. "ಪರಿತೋಽಂತಿಕೇ ಸರ್ವತೋಽರ್ಥೇ" ವೇಜಂ।

**ಪರಿತಾಪ ಪರಿತಾಪ** (ಪುಂ) 1. ಉಷ್ಣತೆ, ಬಿಸಿ, ಕಾವು. ಪರಿ + ತಪ (ಸಂತಾಪೆ) ಕರಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ಅನುಭವತಿ ಹಿ ಮೂರ್ಛಾ ಪಾದಪಸ್ತೀವ್ರಮುಷ್ಣಂ ಶಮಯತಿ ಪರಿತಾಪಂ ಛಾಯಯಾ ಸಂಶ್ರಿತಾನಾಮ್" ಶಾಕುಂ ೫-೭। 2. ನೋವು, ಜೇನು. "ತಯಾ ಸಾರಜ್ಞಾಕ್ಷಯಾ ತ್ವಮಸಿ ನ ಕದಾಚಿದ್ವಿರಹಿತಂ ಪ್ರಸಕ್ತೇ ನಿರ್ವಾಣೇ ಹೃದಯ ಪರಿತಾಪಂ ವಹಸಿ ಕಿಮ್" ಮಾಲಂ ೩-೨। 3. ಶೋಕ, ದುಃಖ, ವಿಲಾಪ. 4. ಭಯ. 5. ನರಕ. ಪರಿ + ತಪ ಅಧಿಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ಪರಿತಾಪಸ್ತು ಪುನಿ ಸ್ಥಾದ್ಧುಃಖೇ ಚ ನರಕಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ।

**ಪರಿತಾಪಿನ್ ಪರಿತಾಪಿನ್** (ವಿಂ) 1. ತಾಪವುಂಟುಮಾಡುವ, ಹೆಚ್ಚು ಕಾವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಪರಿ + ತಪ (ಸಂತಾಪೆ) "ಗಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮)। 2. ದುಃಖವುಂಟುಮಾಡುವ, ನೋವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದ. "ಆಪಾತರಮ್ಯಾ ವಿಷಯಾಃ ಪರ್ಯಂತಪರಿತಾಪಿನಃ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೧೨। 3. ಹೆಚ್ಚು ಸಂತಾಪವುಳ್ಳ, ಅಧಿಕವಾದ ಉಷ್ಣತೆಯುಳ್ಳ. ಪರಿತಾಪೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫)। "ವಿನಿಹಿತಂ ಪರಿತಾಪಿನಿ ಚಂದನಂ ಹೃದಿ ತಯಾ ಧೃತಬುದ್ಬುದಮಾಬಮೌ" ನೈಷಂ ೪-೨೮।

**ಪರಿತುಷ್ಟ ಪರಿತುಷ್ಟ** (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಗೊಂಡ, ತೃಪ್ತಿ ಹೊಂದಿದ. ಪರಿ + ತುಷ (ತುಷ್ಟಿ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ವಯಮಿಹ ಪರಿತುಷ್ಟಾ ವಲ್ಕಲೇಸ್ತ್ವಂ ದುಕೂಲಃ ಸಮ ಇಹ ಪರಿತೋಷೋ ನಿರ್ವಿಶೇಷೋ ವಿಶೇಷಃ" ಭತುಂ ೩-೫೩। 2. ಅನಂದಪಟ್ಟ, ಹರ್ಷ ಹೊಂದಿದ.

**ಪರಿತುಷ್ಟಿ ಪರಿತುಷ್ಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂತೋಷ, ತೃಪ್ತಿ. ಪರಿ + ತುಷ (ತುಷ್ಟಿ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। 2. ಅನಂದ, ಹರ್ಷ.

**ಪರಿತುಷ್ಣ ಪರಿತುಷ್ಣ** (ಅವ್ಯಂ) ಜಾಗ್ರತೆಯಾಗಿ, ಶೀಘ್ರವಾಗಿ. "ಯುಧಾಜಿತಃ ಕೃತಪರಿತುಷ್ಣವೀಜನಮ್" ಮಾಘಂ ೧೭-೬।

**ಪರಿತೋಷ ಪರಿತೋಷ** (ಪುಂ) 1. ಸಂತೋಷ, ತೃಪ್ತಿ. ಪರಿ + ತುಷ (ತುಷ್ಟಿ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ಸಮ ಇಹ



ಪರಿತೋಷಿ ನಿವಿಶೇಷೋ ವಿಶೇಷಃ" ಭರ್ತೃಂ ೩-೪೩. 2. ಅನಂದ, ಹರ್ಷ. "ಭವತ್ಸಂಭಾವನೋತ್ಥಾಯ ಪರಿತೋಷಾಯ ಮುಂಚಂತೆ" ಕುಮಾಂ ೬-೪೯.

**ಪರಿತೋಷಣ ಪರಿತೋಷಣ** (ವಿಂ) 1. ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸುವ. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವ. ಪರಿ + ತುಷ (ತುಷ್ಟೌ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪). 2. ಅಹ್ಲಾದವುಂಟುಮಾಡುವ. ಅನಂದ ಪಡಿಸುವ. "ಸಂಜೀವನಶ್ಚ ಮನಸಃ ಪರಿತೋಷಣಶ್ಚ" ಉಂ ರಾಂ ೩-೧೨.

**ಪರಿತೋಷಣೀಯ ಪರಿತೋಷಣೀಯ** (ವಿಂ) ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸಬೇಕಾದ, ಸಂತೋಷಪಡಿಸಬೇಕಾದ. ಪರಿ + ತುಷ (ತುಷ್ಟೌ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬).

**ಪರಿತೋಷಯತ್ ಪರಿತೋಷಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷ ಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಅನಂದಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ + ತುಷ (ತುಷ್ಟೌ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬). -ತೋಷಯಂತಿ -ತೋಷಯಂತೀ.

**ಪರಿತೋಷಯಿತ್ ಪರಿತೋಷಯಿತ್** (ವಿಂ) 1. ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸುವವನು, ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವವನು. ಪರಿ + ತುಷ (ತುಷ್ಟೌ) + ಣಿಕ್ "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩). 2. ಅನಂದವುಂಟುಮಾಡುವವನು, ಅಹ್ಲಾದವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವವನು. "ಪರಿತೋಷಯಿತಾ ನ ಕಷ್ಠನ ಸ್ವಗತೋ ಯಸ್ಯ ಗುಣೋಽಸ್ತಿ ದೇಹಿನಃ" ಮಾಘಂ ೧೬-೨೮. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫). -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

**ಪರಿತೋಷಿತ ಪರಿತೋಷಿತ** (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ತುಷ (ತುಷ್ಟೌ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ಪರಿತೋಷಿತಭಾವುಕಃ ಸ್ವವೃತ್ತಯಾ ಶ್ರುತೀಲಕ್ಷ್ಯಾಂ ಮಹತೀಂ ಪ್ರಿಯಾಮವಿಂದತ್" ಯಾದಂ ೧೫-೩. 2. ಅನಂದವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪರಿತೃಪ್ತ ಪರಿತೃಪ್ತ** (ವಿಂ) 1. ತೃಪ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ತ್ಯಜ (ಹಾನೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ಪರಿತೃಪ್ತಂ ತೇನ ತ್ವಮಸಿ ಸುತಶೋಕಾನ್ ತು ಭಯಾತ್ ವಿಮೋಕ್ಷಯೇ ಶಸ್ತ್ರ ತ್ವಾಮಹಮಪಿ ಯತಃ ಸ್ವಸ್ತಿ ಭವತೇ" ವೇಣೀಂ ೩-೧೯. 2. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಬಾಣ).

**ಪರಿತ್ಯಜತ್ ಪರಿತ್ಯಜತ್** (ವಿಂ) ತೃಪ್ತಿಸುತ್ತಿರುವ, ಬಿಡುತ್ತಿರುವ, ತೊರೆಯುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ + ತ್ಯಜ (ಹಾನೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪).

**ಪರಿತ್ಯಜನ ಪರಿತ್ಯಜನ** (ನಂ) ತೃಪ್ತಿಸುವುದು, ತೊರೆದುದು ಬಿಡುವುದು. ಪರಿ + ತ್ಯಜ (ಹಾನೌ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫).

**ಪರಿತ್ಯಾಗ ಪರಿತ್ಯಾಗ** (ಪುಂ) ತೃಪ್ತಿಸುವುದು, ತೊರೆದುದು ಬಿಡುವುದು. ಪರಿ + ತ್ಯಜ (ಹಾನೌ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮). "ಗುರೋರಪ್ಯಬಲಿಪ್ತಸ್ಯ ಕಾರ್ಯಾಕಾರ್ಯಮಜಾನತಃ. ಉತ್ಪಥಂ ಪ್ರತಿಪನ್ನಸ್ಯ ಪರಿತ್ಯಾಗೋ ವಿಧೀಯತೇ" |

**ಪರಿತ್ಯಾಜ್ಯ ಪರಿತ್ಯಾಜ್ಯ** (ವಿಂ) ಬಿಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ವರ್ಜಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಪರಿ + ತ್ಯಜ (ಹಾನೌ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೨೪).

**ಪರಿತ್ರಸ್ತ ಪರಿತ್ರಸ್ತ** (ವಿಂ) ಹೆದರಿದ, ಅಂಜಿದ, ಭಯಗೊಂಡ. ಪರಿ + ತ್ರಸಿ (ಉದ್ವೇಗ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨). "ವ್ಯರಮತ್ ಪ್ರಧನಾಘಸ್ತಾತ್ ಪರಿತ್ರಸ್ತಃ ಸಹಸ್ರದೃಕ್" ಭಟಿಂ ೮-೫೩.

**ಪರಿತ್ರಾಣ ಪರಿತ್ರಾಣ** (ನಂ) 1. ರಕ್ಷಣೆ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರುಮಾಡುವುದು. ಪರಿ + ತ್ರೆಡ್ (ಪಾಲನೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫). "ಪರಿತ್ರಾಣಾಯ ಸಾಧುನಾಂ ವಿನಾಶಾಯ ಚ ದುಷ್ಕೃತಾಮ್ | ಧರ್ಮಸಂಸ್ಥಾಪನಾರ್ಥಾಯ ಸಂಭವಾಮಿ ಯುಗೇ ಯುಗೇ" ಗೀತಾ ೪-೮. 2. ಆಸರೆ, ಮರೆ. ಪರಿ + ತ್ರೆಡ್ (ಪಾಲನೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭). "ಪರಿತ್ರಾಣಮವಿವಿಧಂತಿ ಜಾನಕೀ ಜೀವಿತಂ ತ್ಯಜೇತ್" ರಾಮಾಂ.

**ಪರಿತ್ರಾಣಿ ಪರಿತ್ರಾಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರಾಮೆ ಬಳ್ಳಿ. "ಪರಿತ್ರಾಣ್ಯಾಂ ತ್ರಾಯಮಾಣಾ ತ್ರಾಯಂತಿ ಬಲಭದ್ರಿಕಾ" ವೇಜಂ.

**ಪರಿತ್ರಾತ ಪರಿತ್ರಾತ** (ವಿಂ) ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ತ್ರೆಡ್ (ಪಾಲನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨).

**ಪರಿತ್ರಾತೃ ಪರಿತ್ರಾತೃ** (ವಿಂ) ರಕ್ಷಿಸುವವನು, ಕಷ್ಟದಿಂದ ತೃಪ್ತಿಸುವವನು. ಪರಿ + ತ್ರೆಡ್ (ಪಾಲನೆ) "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩).

**ಪರಿದಂಶ ಪರಿದಂಶ** (ಪುಂ) ಯುದ್ಧಕವಚ, ಕಾಲಿನಿಂದ ತಲೆಯವರೆಗೂ ಮುಚ್ಚುವ ಕವಚ.

**ಪರಿದಂಶಿತ ಪರಿದಂಶಿತ** (ವಿಂ) ಯುದ್ಧಕವಚವನ್ನು ತೊಟ್ಟಿರುವ. ಪರಿದಂಶೋಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ "ಇತಕ್" (೫-೨-೩೬).

**ಪರಿದರ್ಶನ ಪರಿದರ್ಶನ** (ನಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಯೋಚಿಸಿ ನೋಡುವುದು, ವಿವೇಚನೆಯಿಂದ ನೋಡುವುದು.

**ಪರಿದಾನ ಪರಿದಾನ** (ನಂ) 1. ವಸ್ತುವಿನ ಬದಲಾವಣೆ, ಒಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಬೇರೊಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು ಪಡೆಯುವುದು. ಪರಿ + ದಾ (ದಾನ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫). 2. ಪ್ರತ್ಯರ್ಪಣ, ತನ್ನಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬನು ಇಟ್ಟಿದ್ದ ವಸ್ತುವನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕೊಡುವುದು.

**ಪರಿವಾಚಿನ್ ಪರಿವಾಚಿನ್** (ಪುಂ) ಅಣ್ಣನು ಮದುವೆಯಾಗದಿರುವಾಗ ತಮ್ಮನಿಗೆ ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಮದುವೆ ಮಾಡುವ ತಂದೆ. ಪರಿತ್ಯಾಜ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ದದಾತಿ - ಪರಿ + ದಾ



ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಗಿರಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। "ಜ್ಯೇಷ್ಠೇರ್ನಿವಿಷ್ಟೇ ಕನಿಯಾನ್ ನಿವಿಶನ್ ಪರಿವೇತ್ತಾ ಭವತಿ ಪರಿವಿಶ್ನೋ ಜ್ಯೇಷ್ಠ: ಪರಿವೇದನೀಯಾ ಕನ್ಯಾ ಪರಿದಾಯಿ ದಾತಾ ಪರಿಕರ್ತಾ ಯಾಜಕಸ್ತೇ ಸರ್ವೇ ಪತಿತಾ:" ಹಾರೀತ:।

**ಪರಿವಿಪಿತ ಪರಿವೇಷಿತ** (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಪರಿ + ದಿಪಿ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿच् "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಪರಿವಿಪಿತದೀರ್ಘಕಾಷ್ಠಮುಚ್ಚೇಸ್ತರ್ದಿಶ್ವಮುಪೋಷ ಜಾತವೇದಾ:" ಮಾಧಂ ೨೦-೬೧।

**ಪರಿವೃಷ್ಟ ಪರಿವೃಷ್ಟ** (ವಿಂ) 1. ಸುತ್ತಲೂ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಪರಿ + ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಯೋಚಿಸಿ ನಿರ್ಣಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ವಿವೇಚನೆಯಿಂದ ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ಪರಿವೃಷ್ಟ-ಪರಾವರಸ್ತಮೀಪದ್ವಿನಯನ್ ವಿಣ್ಣುಪದೀಸುತೋ ಬಭಾಷೆ" ಯಾದಂ ೧೪-೪೪।

**ಪರಿವೇವಕ ಪರಿವೇವಕ** (ವಿಂ) ಅಳುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಪರಿ + ದಿವು (ಪರಿಕೂಜನೆ) + ಣಿच् "ವು" (೩-೨-೧೪೭)। "ಕಥಂಚಿತ್ಪರಿವೇವಕ:" ಭट्टಿಂ ೭-೧೩।

**ಪರಿವೇವನ ಪರಿವೇವನ** (ನಂ) ಪ್ರಲಾಪ, ಗೋಳಾಟ. ಪರಿ + ದಿವು (ಪರಿಕೂಜನೆ) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ಪರಿವೇವನಂ ಪಾಙ್ಚಾಲ್ಯಾ: ವಾಸುದೇವಸ್ಯ ಸನ್ನಿಧೌ। ಆಶ್ವಾಸ-ನಶ್ಚ ಕೃಷ್ಣಸ್ಯ ದು:ಖಾರ್ತಾಯಾ: ಪ್ರಕೀರ್ತಿಸ್ತಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧-೧೪೩। ಪರಿ + ದಿವು + ಣಿच् "ಯುಕ್" (೩-೩-೧೦೭)। -ವೇವನಾ -ವೇವನಾ. "ಅವ್ಯಕ್ತಾದೀನಿ ಭೂತಾನಿ ವ್ಯಕ್ತ-ಮಧ್ಯಾನಿ ಭಾರತ। ಅವ್ಯಕ್ತನಿಧನಾನ್ಯೇವ ತತ್ರ ಕಾ ಪರಿವೇವನಾ" ಗೀತಾ ೨-೨೮।

**ಪರಿವೇವಿತ ಪರಿವೇವಿತ** (ನಂ) ಅಳುವುದು, ಪ್ರಲಾಪ. ಪರಿ + ದಿವು (ಪರಿಕೂಜನೆ) + ಣಿच् ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। "ವ್ಯರ್ಥಾಃ ಪ್ರಯಪ್ರಾಪ್ತಿವಿಧಾತನಿಶ್ಚಯಾನ್ಮೃದ್ವಿನಿ ದ್ವನಾ ಪರಿವೇವಿತಾನಿ ಸಾ:" ನೆಪಂ ೯-೮೭।

**ಪರಿವೇವಿನ್ ಪರಿವೇವಿನ್** (ವಿಂ) ಅಳುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಪರಿ + ದಿವು (ಪರಿಕೂಜನೆ) + ಣಿच् "ವಿನ್ಯುನ್" (೩-೨-೧೪೨)। "ಕುವಂತಿ ಪರಿಸಾರಿಣ್ಯೋ ವಿವೃತ: ಪರಿವೇವಿನಮ್" ಭट्टಿಂ ೭-೭।

**ಪರಿಧಾನ ಪರಿಧಾನ** (ನಂ) 1. ಉಡುವ ಬಟ್ಟೆ, ಹೊಕ್ಕಳು ನಿಂದ ಕೆಳಗೆ ಧರಿಸುವ ವಸ್ತ್ರ. ಪರಿಧೀಯತೆ — ಪರಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩)। "ನಿಶಾಂತನಾರೀಪರಿಧಾನಧೂನನಸ್ಕುಟಾಗಸಾಪ್ಯೂರ್ಣ ಲೋಲಚಕ್ಷುಷ:" ಮಾಧಂ ೧-೬೧। 2. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. "ವೀಕ್ಷ್ಯ ರಂತುಮನಸ:

ಸುರನಾರೀರಾತ್ತಚಿತ್ರಪರಿಧಾನವಿಭೂಷಾ:" ಕಿರಾಂ ೯-೧। 3. ವಸ್ತ್ರವನ್ನು ಉಡುವುದು, ಧರಿಸುವುದು. 4. ಅಭರಣಗಳನ್ನು ತೊಡುವುದು.

**ಪರಿಧಾನೀಯ ಪರಿಧಾನೀಯ** (ವಿಂ) ಉಡುವ ವಸ್ತ್ರ, ಉಡಲು ಅರ್ಹವಾದ ವಸ್ತ್ರ. ಪರಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣ-ಪೋಷಣಯೋ:) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)।

**ಪರಿಧಾಯ ಪರಿಧಾಯ** (ಪುಂ) 1. ಪರಿಜನ, ಸೇವಕ, ಅಳು. ಪರಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಧಾನ್" (೩-೩-೧೧೧)। 2. ಜಲಸ್ಥಾನ, ಜಲಾಶಯ, ನೀರು ಶೇಖರಿಸುವ ಸ್ಥಳ. 3. ಪಿರೆ, ನಿತಂಬ. ಜಲಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಬದಲಾಗಿ ಜನಸ್ಥಾನ ವೆಂದೂ ಕೆಲವು ಕೋಶಕಾರರು ಹೇಳುವರು.

**ಪರಿಧಿ ಪರಿಧಿ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರ ಸುತ್ತಲೂ ಗುಂಡಾಗಿ ಕಾಣುವ ಪ್ರಭೆ. ಪರಿಧೀಯತೇಜೇನ — ಪರಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಕಿ:" (೩-೩-೧೧೨)। "ಮುಖ-ವಿಧುಮದಸೀಯಂ ಸೇವಿತುಂ ಲಂಬಮಾನ: ಶಶಿಪರಿಧಿರಿವಿವಿಚ್ಛೇಮಂಢಲ-ಸ್ತೇನ ತೇನ" ನೆಪಂ ೨-೧೦೮। 2. ಯಾಗಾಗ್ನಿಯ ಸುತ್ತಲೂ ಇಡುವ ಪಲಾಶ (ಮುತ್ತುಗ) ಮೊದಲಾದ ಸಮಿತ್ತು. 3. ಯಜ್ಞದ ಪಶುವನ್ನು ಕಟ್ಟಲು ನೆಡುವ ಪಲಾಶ ಮೊದಲಾದ ಮರದ ಕಂಬ. 4. ಪ್ರಾಕಾರ, ಸುತ್ತುಗೋಡೆ. 5. ಬೇಲಿ. "ಪರಿಧಿಯಂಜಿಯೇ ಕಾಷ್ಠೇ ಪ್ರಾಕಾರೇ ಪರಿವೇಷಣೇ" ವೈಜಂ। "ಪರಿಧಿಯಂಜಿಯತರೋ: ಶಾಖಾಯಾಮುಪಸೂರ್ಯಕೇ" ಅಮಂ। (ನಂ) 6. ಧರಿಸುವ ವಸ್ತ್ರ. ಪರಿ + ಧಾನ್ ಕರ್ಮಂ "ಕಿ:"। "ಮೇಘಶ್ಯಾಮ: ಕನಕಪರಿಧಿ: ಕರ್ಣವಿವಿಧೋತವಿವಿಧುರ್ಮಾಧನ ಭ್ರಾಜ-ದ್ವಿಲುಲಿತಕಚ: ಸಗಧರೋ ರಕ್ತನೇತ್ರ:" ಭಾಗಂ ೮-೭-೧೭।

**ಪರಿಧಿಸ್ಥ ಪರಿಧಿಸ್ಥ** (ಪುಂ) 1. ಸೈನ್ಯದ ಸುತ್ತಲೂ ಇರುವ ಕಾವಲುಗಾರ, ಪಹರೆಯವನು. ಪರಿಧೌ ತಿಷ್ಠತಿ — ಪರಿ + ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಕ:" (೩-೨-೪)। 2. ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ರಾಜನ ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಸುತ್ತಲೂ ನಿಲ್ಲುವ ಸೈನ್ಯ.

**ಪರಿಧೂಸರ ಪರಿಧೂಸರ** (ವಿಂ) 1. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ನರೆ ತಿರುವ, ಬೂದಿಬಣ್ಣದ. ಪರಿತೋ ಧೂಸರ:। 2. ಮಲಿನವಾದ. "ವಸನೇ ಪರಿಧೂಸರೇ ವಸಾನಾ ನಿಯಮಕ್ಷಾಮಮುಖೀ ಧೃತಕೇವಿಣಿ:" ಶಾಕುಂ ೭-೨೧।

**ಪರಿಧೇಯ ಪರಿಧೇಯ** (ನಂ) ಉಡುವ ವಸ್ತ್ರ, ಅಧೋ ವಸ್ತ್ರ. ಪರಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಯತ್" (೩-೧-೯೭)।

**ಪರಿನಿಷ್ಠಾ ಪರಿನಿಷ್ಠಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಪೂರ್ಣ ಜ್ಞಾನ, ನಿಷ್ಕೃಷ್ಟವಾದ ಜ್ಞಾನ. ಪರಿ + ನಿ + ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಅಡ್" (೩-೩-೧೦೬)। 2. ಕೊನೆ, ಸಮಾಪ್ತಿ.



**परिनिष्ठापित** **ಪರಿನಿಷ್ಠಾಪಿತ** (वि०) ಸಂಪೂರ್ಣಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪೂರ್ತಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. परि + नि + ष्ठा (गति-निवृत्तौ) + णिच् "क्तः" (३-२-१०२)। "निवृत्त-चौलकर्मणोस्तयोस्त्रयीवर्जमितरास्तिस्रो विद्याः सावधानेन परिनिष्ठापिताः" उ० रा० २।

**परिनिष्ठित** **ಪರಿನಿಷ್ಠಿತ** (वि०) ಕೊನೆಯ ಘಟ್ಟವನ್ನು ಮುಟ್ಟಿರುವ, ಸಂಪೂರ್ಣತೆಯನ್ನು ಪಡೆದ, ಪರಿಷ್ಕೃತವಾದ ಒಂದು ಆಕಾರವನ್ನು ಹೊಂದಿದ. परिनिष्ठास्य संजातः "इतच्" (५-२-३६)। "अपरिनिष्ठितस्योपदेशस्य प्रकाशनमन्यायम्" माल० १।

**परिन्यास** **ಪರಿನ್ಯಾಸ** (पुं०) ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯಫಲಕ್ಕೆ ಮೂಲಭೂತವಾದ ಬೀಜವು ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿ ಬೆಳೆದು ಬಂದುದರ ಸೂಚನೆ. ಇದು ಮುಖಸಂಧಿಯ ಒಂದು ಅಂಗ. "तन्निष्पत्तिः परिन्यासः" सा० द० ६-८४।

**परिपक्व** **ಪರಿಪಕ್ವ** (वि०) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾಗಿರುವ. परि + डु पचष् (पाके) "क्तः" (३-२-१०२)। "प्रफुल्ललोध्रः परिपक्वशालिः" ऋतुसं० ४-१। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪಚನವಾಗಿರುವ (ಅನ್ನ). 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟ (ರೊಟ್ಟಿ). 4. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಉಳಲ್ಪಟ್ಟ (ಭೂಮಿ). 5. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬಲಿತಿರುವ, ಪೂರ್ತಿ ಯಾಗಿ ಬೆಳೆವಣಿಗೆ ಹೊಂದಿದ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ವಿಕಾಸಹೊಂದಿದ (ಬುದ್ಧಿ). 6. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಜೀರ್ಣವಾದ (ಆಹಾರ).

**परिपण** **ಪರಿಪಣ** (न०) ಮೂಲಧನ, ಬಂಡವಾಳ. परि + पण (व्यवहारे स्तुतौ च) "घः" (३-३-११८)। "नीवी परिपणं मूलधनम्" अम०।

**परिपणन** **ಪರಿಪಣನ** (न०) ಜೂಜಿನಲ್ಲಿ ಒತ್ತೆ ಇಡುವುದು, ಪಂದ್ಯವಾಗಿ ಇಡುವುದು. परि + पण (व्यवहारे स्तुतौ च) "ल्युट्" (३-३-११५)।

**परिपणित** **ಪರಿಪಣಿತ** (वि०) ಜೂಜಿನಲ್ಲಿ ಒತ್ತೆ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಂದ್ಯವಾಗಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. परि + पण (व्यवहारे स्तुतौ च) "क्तः" (३-२-१०२)। "सततमनभिभाषणं मया ते परिपणितं भवतीमनाययन्त्या" माघ० ७-९।

**परिपत्** **ಪರಿಪತ್** (पुं०) ಪಂಕ, ಕೆಸರು. "दारिपत्यपरि-पत्पङ्कचिकिलाश्च निषद्वरः" वेंज०।

**परिपतत्** **ಪರಿಪತತ್** (वि०) ಧಾವಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸುತ್ತಲೂ ಹಾರಾಡುತ್ತಿರುವ. परि + पल् (गती) "शतृ" (३-२-१२४)। "आसाकुलः परिपतत्परितो निकेतान्" माघ० ५-२६। स्त्रियां "डीप्" (४-१-६)। -पतन्ती

-ಪತನ್ತೀ. "दधति परिपतन्त्यो जालवातायनेभ्यः" माघ० ११-५०।

**परिपतन** **ಪರಿಪತನ** (न०) ಸುತ್ತಲೂ ಹಾರಾಡುವುದು. परि + पल् (गती) "ल्युट्" (३-३-११५)।

**परिपन्थ** **ಪರಿಪಂಥ** (पुं०) ವೈರಿ, ಹಗೆ, ಶತ್ರು. पन्थानं वर्जयित्वा तिष्ठति—परि + पथि (गती) "अच्" (३-१-१३४)। पन्थादेशः निपा०।

**परिपन्थक** **ಪರಿಪಂಥಕ** (पुं०) ವೈರಿ, ಹಗೆ, ಶತ್ರು. परिपन्थयति—परि + पथि (गती) "ण्वल्" (३-१-१३३)। "हतो दुर्योधनः पापो राज्यस्य परिपन्थकः" भा० सौप्तिक० १६-२७।

**परिपन्थिन्** **ಪರಿಪಂಥಿನ್** (पुं०) ವೈರಿ, ಹಗೆ, ಶತ್ರು. परि दोषास्थाने पन्थयितुं शीलः—परि + पथि (गती) + णिच् "णिनिः" (३-२-७८)।

**परिपवन** **ಪರಿಪವನ** (पुं०) ಒಂದರಿ, ಜಲ್ಲಡಿ. परिपूयते-नेन—परि + पूज् (पवने) कर० "ल्युट्" (३-३-११७)।

**परिपश्यत्** **ಪರಿಪಶ್ಯತ್** (वि०) ಸುತ್ತಲೂ ನೋಡುತ್ತಿರುವ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ನೋಡುತ್ತಿರುವ. परि + दृशिर् (प्रेक्षणे) "शतृ" (३-२-१२४)। "कामनीयक-मधःकृतकामं काममक्षिभिरवेक्ष्य तदीयम्" नैष० ५-६४।

**परिपाक** **ಪರಿಪಾಕ** (पुं०) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೇಯುವಿಕೆ. परि + डु पचष् (पाके) "घञ्" (३-३-१८)। "इत्य-द्भुतं केवलवह्निपक्वमांसेन मत्स्यः परिपाकमेति" भावप्र०। 2. ನೈಪುಣ್ಯ, ಜಾಣತನ. "वीक्ष्य तस्य विनये परिपाकं पाकशासनपदं स्पृशतोऽपि" नैष० ५-२०। 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಜೀರ್ಣವಾಗುವುದು, ಅರಗುವುದು. 4. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬಲಿಯುವುದು, ಮಾಗುವುದು, ಹಣ್ಣಾಗುವುದು. "परिपाकपिशङ्गलतारजसा रोधश्चकास्ति कपिशं गलता" माघ० ४-४८। 5. ಫಲಶಾಲಿ, "त्वमशकनुवन्नशुभकर्म-निरत परिपाकदारुणम्" माघ० १५-३१। 6. ಕಾರ್ಯಾಢ್ಯ ಫಲ, ಯಶಸ್ವಿ ಪರಿಣಾಮ. "क्षमायाः स क्षेत्रं गुणमणि-गणानामपि खनिः प्रपन्नानां मूर्तः सुकृतपरिपाको जनि-मताम्" म० वी० ८-३३। उपसर्गस्य वा दीर्घः (६-३-१२२)। **परीपाकः** -**ಪರಿಪಾಕಃ**. "सुचरित परीपाकात्प्राप्तश्चिरस्य समागमः" म० वी० ४-२८।

**परिपाटल** **ಪರಿಪಾಟಲ** (वि०) ಮಾಸಲು ಕೆಂಪುಬಣ್ಣದ. "परिपाटलाब्जदलचारुणासकृच्चलिताङ्गुलीकिसलयेन पाणिना" माघ० १३-४२।



**ಪರಿಪಾಡಿ ಪರಿಪಾಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನುಕ್ರಮ, ಒಂದಾದ ಮೇಲೊಂದು, ಒಂದು ಕ್ರಮ. ಪರಿ+ಪಟ (ಗತೌ)+ಣಿच् "ಃ" (೩-೪-೧೩೯). 2. ಪ್ರಕಾರ, ರೀತಿ.

**ಪರಿಪಾಠ ಪರಿಪಾಠ** (ಪುಂ) ತಪಸೀಲು, ಸಂಪೂರ್ಣ ವಿವರ.

**ಪರಿಪಾಶ್ವ ಪರಿಪಾಶ್ವ** (ನಂ) ಸಮೀಪ, ಹತ್ತಿರ. "ಅಯೋ ವಯಸ್ಯಾಂ ಪರಿಪಾಶ್ವವರ್ತಿनीಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೪೧.

**ಪರಿಪಾಲನ ಪರಿಪಾಲನ** (ನಂ) 1. ಪಾಲಿಸುವುದು, ಕಾಪಾಡುವುದು, ಪರಿ+ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ)+ಣಿच् ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪). "ಔತುಕಯಮಾತ್ರಮವಸಾಯಯತಿ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ಕ್ಲಿಷ್ಣಾತಿ ಲಬ್ಧಪರಿಪಾಲನವೃತ್ತಿರೇನಮ್" ಶಾಕುಂ ೪-೬. 2. ಪೋಷಿಸುವುದು. "ಉತ್ಪಾದನಮಪತ್ಯಸ್ಯ ಜಾತಸ್ಯ ಪರಿಪಾಲನಮ್" ಮನುಂ ೯-೨೭.

**ಪರಿಪಾಲನೀಯ ಪರಿಪಾಲನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಪಾಲಿಸಲ್ಪಡುವ, ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪರಿ+ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ)+ಣಿच् "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). 2. ಪಾಲಿಸಬೇಕಾದ, ಕಾಪಾಡಬೇಕಾದ. 3. ಪಾಲಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಕಾಪಾಡಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬). -ಪಾಲಯಿತವ್ಯ:-ಕಾಲಯಿತವ್ಯಃ.

**ಪರಿಪಾಲಯತ್ ಪರಿಪಾಲಯತ್** (ವಿಂ) ಪಾಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ರಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ+ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ)+ಣಿच् "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). -ಯಂತಿ -ಯಂತು.

**ಪರಿಪಾಲಯಿತ್ ಪರಿಪಾಲಯಿತ್** (ವಿಂ) ಕಾಪಾಡುವವನು. ಪರಿ+ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ)+ಣಿच् "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪). -ಯಿತ್ರಿ-ಯಿತ್ರಿ.

**ಪರಿಪಾಲಿತ ಪರಿಪಾಲಿತ** (ವಿಂ) 1. ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ+ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ)+ಣಿच् "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). "ಶಿರಸಾ ವಿಧೃತಾ ನಿಯಂ ಸ್ನೇಹೇನ ಪರಿಪಾಲಿತಾ: ಕೇಶಾ ಅಪಿ ವಿರಜ್ಯಂತೇ ನಿ:ಸ್ನೇಹಾ: ಕಿ ನ ಸೇವಕಾ:" ಪञ್ಚತಂ ೧-೯೦. 2. ಕಾಪಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪರಿಪಿಷ್ಟಕ ಪರಿಪಿಷ್ಟಕ** (ನಂ) ಸೀಸಲೋಹ. ಪರಿ+ಪಿಷ್ಟ (ಸಂಚ್ಛರ್ಣನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೧೦೨). ಸಂಜ್ಞಾयां "ಕನ್".

**ಪರಿಪೀತ ಪರಿಪೀತ** (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕುಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿಪೀಯತೇ—ಪರಿ+ಪಾ (ಪಾನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). ಇತ್ವಮ್ (೩-೪-೬೬). "ಪರಿಪೀತಭೂಮವರ್ತಿರಪಸ್ಪೃಶ್ಯ ಚ ಗೃಹಿತತಾಮ್ಬೂಲ:" ಕಾದಂ.

**ಪರಿಪುಜ್ಯಮಾನ ಪರಿಪುಜ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) ಒಂದು ಗುಪ್ತೆಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಎಲ್ಲಾ ಸೇರಿ ಒಂದು ರಾಶಿ

ಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ+ಪಿಜಿ (ಹಿಸಾ-ಬಲಾದಾನನಿಕೇತನೇಷು) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನ್ತಚ್" (೩-೨-೧೨೪).

"ವಪುಷಾ ಪುರಾಣಪುರುಷ: ಪುರ: ಕ್ಷಿತೌ ಪರಿಪುಜ್ಯಮಾನಪೃಥುಹಾರ-ಯಷ್ಟಿನಾ. ಭುವನೇನತೋಽಪಿ ವಿಹಿತಾತ್ಮಗೌರವ: ಪ್ರಣನಾಮ ನಾಮ ತನಯಂ ಪಿತೃಷ್ವಸು:" ಮಾಘಂ ೧೩-೮.

**ಪರಿಪೂತ ಪರಿಪೂತ** (ವಿಂ) 1. ಬಹಳುತುಡ್ಡವಾದ. ಪರಿ+ಪೂ (ಪವನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). "ರೇವತೀವದನೋಽಕ್ಷಿಪ್ತ-ಪರಿಪೂತಪುಟೇ ದೃಶೌ" ಮಾಘಂ ೨-೧೬. 2. ತೂರಿದ ಧಾನ್ಯ, ತೂರಿದ ನಂತರ ರಾಶಿಹಾಕಿದ ಧಾನ್ಯ.

**ಪರಿಪೂಜನ ಪರಿಪೂಜನ** (ನಂ) ಪೂಜಿಸುವುದು, ಆರಾಧಿಸುವುದು. ಪರಿ+ಪೂಜ (ಪೂಜನೆ)+ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪).

**ಪರಿಪೂಜಿತ ಪರಿಪೂಜಿತ** (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪೂಜೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಆರಾಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ+ಪೂಜ (ಪೂಜನೆ)+ಣಿच् "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).

**ಪರಿಪೂರಣ ಪರಿಪೂರಣ** (ನಂ) ತುಂಬುವುದು. ಪರಿ+ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪). "ತ್ವಕ್ಸಾರರಂಧ್ರ-ಪರಿಪೂರಣಲಬ್ಧಗೀತಿರಸ್ಮಿನ್ನಸೌ ಮೃದಿತಪಕ್ಷ್ಮಲರಲ್ಲಕಾಙ್ಗ:" ಮಾಘಂ ೪-೬೧.

**ಪರಿಪೂರಯತ್ ಪರಿಪೂರಯತ್** (ವಿಂ) ತುಂಬುತ್ತಿರುವ, ಪೂರ್ತಿಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ+ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೆ)+ಣಿच् "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). -ಪೂರಯಂತಿ -ಪೂರಯಂತು.

**ಪರಿಪೂರಿತ ಪರಿಪೂರಿತ** (ವಿಂ) ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ+ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೆ)+ಣಿच् "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). "ಋಣೋ-ರೋಧ:ಪರಿಪೂರಿತಾಂಭಸ: ಸಮಸ್ಥಲೀಕೃತ್ಯ ಪುರಾತನೀನದೀ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೬೦.

**ಪರಿಪೂರಿತವತ್ ಪರಿಪೂರಿತವತ್** (ವಿಂ) ತುಂಬಿದವನು, ಭರ್ತಿಮಾಡಿದವನು. ಪರಿ+ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೆ)+ಣಿच् "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨).

**ಪರಿಪೂರಿನ್ ಪರಿಪೂರಿನ್** (ವಿಂ) ತುಂಬುವವನು, ಭರ್ತಿ ಮಾಡುವವನು. ಪರಿ+ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೆ)+ಣಿच् "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪). "ಪ್ರಾಪೇ ರೂಪಿ ಪುರಾಽರೇಪಾ: ಪರಿಪೂರಿ ಪರ: ಪರ:" ಮಾಘಂ ೧೯-೯೪.

**ಪರಿಪೂರ್ಣ ಪರಿಪೂರ್ಣ** (ವಿಂ) 1. ತುಂಬಿರುವ, ಭರ್ತಿಯಾಗಿರುವ. ಪರಿ+ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). "ಠಚಿಮಿಂದುದಲೇ ಕರೋತ್ಯಜ: ಪರಿಪೂರ್ಣೇಂದುರಚಿರ್ಮಹೀಪತಿ:" ಮಾಘಂ ೧೬-೭೧. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟ, ಭರ್ತಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ+ಪೂರಿ+ಣಿच् "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).



**ಪರಿಪೂರ್ಣತಾ ಪರಿಪೂರ್ಣತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತುಂಬಿರುವಿಕೆ, ಭರ್ತಿ  
ಯಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪರಿಪೂರ್ಣಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯).  
"ತ್ವ:" (೪-೧-೧೧೯). -ಪೂರ್ಣತ್ವಮ್ -ಪೂರ್ಣತ್ವಮ್.  
"ದೃಶ್ಯತೇ ಪರಿಪೂರ್ಣತ್ವಂ ಮುಖಚಂದ್ರಸ್ಯ ತೇ ಸಖಿ" ಉಕ್ತಃ.

**ಪರಿಪೂರ್ತಿ ಪರಿಪೂರ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತುಂಬಿರುವಿಕೆ, ಭರ್ತಿಯಾಗಿರು  
ವಿಕೆ. ಪರಿ+ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯತೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪).

**ಪರಿಪೇಲವ ಪರಿಪೇಲವ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ  
ಕೊನ್ನಾರಿ ಗೆಡ್ಡೆ, ಕೊಪ್ಪುಬಣ್ಣದ ಕೊನ್ನಾರಿ. ಪರಿತ: ಪೇಲವಂ  
ಮೃತುತಾ ಯಸ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಬಹಳ ಕೋಮಲವಾದ.

**ಪರಿಪೋಷಣ ಪರಿಪೋಷಣ** (ನಂ) ಕಾಪಾಡುವುದು, ಸಾಕು  
ವುದು. ಪರಿ+ಪುಷ (ಪುಷ್ಟೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

**ಪರಿಪೋಷಣೀಯ ಪರಿಪೋಷಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ  
ಸಾಕಬೇಕಾದ. 2. ಸಾಕಲ್ಪಡುವ. ಪರಿ+ಪುಷ (ಪುಷ್ಟೌ)  
"ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). "ಆದೌ ನ ವಾ ಪ್ರಣಯಿನಾಂ  
ಪ್ರಣಯೋ ವಿಧೇಯ: ದತ್ತೋಽಥವಾ ಪ್ರತಿದಿನಂ ಪರಿಪೋಷಣೀಯ:"  
ಪञ್ಚತಂ ೧-೨೬೮.

**ಪರಿಪೋಷಯತ್ ಪರಿಪೋಷಯತ್** (ವಿಂ) ಕಾಪಾಡುತ್ತಿರುವ,  
ಸಾಕುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ+ಪುಷ (ಪುಷ್ಟೌ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್"  
(೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬).  
-ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

**ಪರಿಪ್ರಶ್ನ ಪರಿಪ್ರಶ್ನ** (ಪುಂ) ಯುಕ್ತವಾಗಿ ಪ್ರಶ್ನೆಮಾಡು  
ವುದು, ವಿಚಾರಪೂರ್ವಕ ಯೋಗ್ಯರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಶ್ನೆಮಾಡು  
ವುದು. ಪರಿತ: ಪ್ರಶ್ನ: "ತದ್ವಿಧಿ ಪ್ರಣಿಪಾತೇನ ಪರಿಪ್ರಶ್ನೇನ  
ಸೇವಯಾ" ಗೀತಾ ೪-೩೪.

**ಪರಿಪ್ಲವ ಪರಿಪ್ಲವ** (ಪುಂ) 1. ತೇಲುವುದು, ಈಡುವುದು.  
ಪರಿ+ಪ್ಲವ್ (ಗತೌ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭). 2. ಪ್ರವಾಹ,  
ನೆರೆ. 3. ದೋಣಿ, ಹರಿಗೋಲು. (ವಿಂ) 4. ಚಂಚಲವಾದ,  
ಅಲುಗಾಡುತ್ತಿರುವ. 5. ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸಂಚರಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. "ಮತ್ಕುಣಾವಿವ ಪುರಾ ಪರಿಪ್ಲವೌ ಸಿಂಧುನಾಥಸಯನೇ  
ನಿಷೇದುಃ" ಮಾಘಂ ೧೪-೬೮. 6. ತೇಲುತ್ತಿರುವ, ಈಡಾಡು  
ತ್ತಿರುವ. ಪರಿ+ಪ್ಲವ್ "ಅಪ್" (೩-೧-೧೩೪).

**ಪರಿಪ್ಲುತ ಪರಿಪ್ಲುತ** (ವಿಂ) 1. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿರುವ,  
ಪ್ರವಾಹಕ್ಕೆ ಸಿಕ್ಕಿರುವ. ಪರಿ+ಪ್ಲವ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:"  
(೩-೪-೭೨). 2. ಸಹಿಸಲಶಕ್ತವಾದ ಕಷ್ಟದಲ್ಲಿ ಸಿಲುಕಿ  
ರುವ, ಕಷ್ಟದಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿರುವ. 3. ಒದ್ದೆಯಾಗಿರುವ,  
ತೇವವಾಗಿರುವ, ನೆನೆದಿರುವ. 4. ಸ್ನಾನಮಾಡಿದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಪ್ಲುತಾ -ಪ್ಲುತಾ. 5. ಮದ್ಯ. 6. ಮೈಥುನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ವೇದನೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಯೋನಿ.

**ಪರಿಪ್ಲುಷ ಪರಿಪ್ಲುಷ** (ವಿಂ) ದಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಪರಿ+ಪ್ಲುಷ (ದಾಹೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).

**ಪರಿಬಹ್ ಪರಿಬಹ್** (ಪುಂ) 1. ಸೇವಕ, ಅನುಚರ, ಆಳು,  
ಪರಿಜನ. ಪರಿ+ಬಹ್ (ಪ್ರಾಧಾನ್ಯೇ) "ಅಪ್" (೩-೧-೧೩೪).  
"ಇಯಂ ಪ್ರಚುರಪರಿಬಹ್ಯಾ ಭವತ್ಯಾ ಸಂವರ್ಧಯತಾಂ" ದಶಕುಂ. 2.  
ರಾಜಯೋಗ್ಯವಾದ ವಸ್ತು, ಭತ್ತ, ಚಾಮರ ಮೊದ  
ಲಾದುದು. ಪರಿ+ಬಹ್ ಕರ್ಮಂ "ಘಪ್" (೩-೩-೧೧೯). 3. ಮನೆಯ  
ಉಪಕರಣಗಳು, ಕುರ್ಚಿ ಬೆಂಚು ಮೇಜು  
ಮೊದಲಾದುವು.

**ಪರಿಬಹಣ ಪರಿಬಹಣ** (ನಂ) 1. ಭೂಷಣ, ಒಡವೆ.  
2. ಪೂಜೆ, ಸೇವೆ. 3. ಬೆಳವಣಿಗೆ, ಪರಿ+ಬಹ್ (ವೃದ್ಧಿ)  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

**ಪರಿಬಹವತ್ ಪರಿಬಹವತ್** (ವಿಂ) 1. ಸೇವಕರೊಡನೆ  
ಕೂಡಿದ. 2. ಭತ್ತ, ಚಾಮರಾದಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. 3. ಕುರ್ಚಿ  
ಬೆಂಚು ಮೇಜು ಮೊದಲಾದ ಗೃಹೋಪಕರಣಗಳಿಂದ  
ಕೂಡಿರುವ. ಪರಿಬಹೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪).  
"ವೇಶಮಾನಿ ರಾಮ: ಪರಿಬಹಂತಿ ವಿಶ್ರಾಂತ್ಯ ಸೌಹಾರ್ದನಿಧಿ:  
ಸುಹೃದ್ಭಯ:" ರಘುಂ ೧೪-೧೫.

**ಪರಿಬೃಡ ಪರಿಬೃಡ** (ಪುಂ) 1. ಅಧಿಪತಿ, ಯಜಮಾನ, ಸ್ವಾಮಿ,  
ಪ್ರಭು. ಪರಿ+ಬೃಹ ಬೃಹಿ (ವೃದ್ಧಿ) "ಕ್ತ:" 1. ನಿಷ್ಠಾ-  
ತಕಾರಸ್ಯ ಟಕಾರ: ಹಕಾರಸ್ಯ ಲೋಪಶ್ಚ ನಿಪಾಂ (೭-೨-೨೯).  
"ಕಿಂ ಭುವ: ಪರಿಬೃಡಾ ನ ವಿವೃಡು ತತ್ರ ತಾಮುಪಗತಾ ವಿವದಂತೆ"  
ನೈಷಂ ೫-೪೨. 2. ರಾಜ, ದೊರೆ.

**ಪರಿಭವ ಪರಿಭವ** (ಪುಂ) 1. ಅವಮಾನ, ಮುಖಭಂಗ.  
ಪರಿ+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭). "ಪರಾಕ್ರಮ:  
ಪರಿಭವೇ ವೈಯಾತ್ಯಂ ಸುರತೇಶ್ವಿವ" ಮಾಘಂ ೨-೪೪. 2.  
ತಿರಸ್ಕಾರ, ಅಗೌರವ, ಅವಮರ್ಯಾದೆ. 3. ಯಯದ್ಧ  
ದಲ್ಲಾಗುವ ಸೋಲು, ಉತ್ಸಾಹಭಂಗ. 4. ಸುತ್ತಲೂ  
ಇರುವುದು.

**ಪರಿಭವನ ಪರಿಭವನ** (ವಂ) ಅವಮಾನಪಡುವುದು,  
ತಿರಸ್ಕಾರ ಹೊಂದುವುದು. ಪರಿ+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) ಭಾವೆ  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

**ಪರಿಭವನೀಯ ಪರಿಭವನೀಯ** (ವಿಂ) ಅವಮಾನಪಡಲು  
ಯೋಗ್ಯನಾದವನು. ಪರಿ+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಅನೀಯರ್"  
(೩-೧-೯೬). "ದೇವಿ, ನ ಮಾಂ ಸಮಾನವಿಧಯಾ ಪರಿಭವ-  
ನೀಯಮವಗಾಂತುಮಹಂಸಿ" ಮಾಲಂ ೧.

**ಪರಿಭವಿನ್ ಪರಿಭವಿನ್** (ವಿಂ) ಅವಮಾನಗೊಳಿಸುವ  
ಸ್ವಭಾವದ. ಪರಿ+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಇನಿ:" (೩-೨-೧೫೭).



“परपरिभवि तेजस्तन्वतामाशु कर्तुं प्रभवति हि विपक्षो-  
च्छेदमग्रेसरोऽपि” माघ० ११-२५।

**परिभाव षठ्ठी** (पुं०) अवमान, मूर्खता.  
परि + भू (सत्तायाम्) “घञ्” (३-३-५५)। “अस्य  
वनशून इवापचितिः परिभाव एव भवतां भुवोऽधिपाः”  
माघ० १५-३४। उपसर्गस्य वा दीर्घः (६-३-१२२)।  
परोभावः षठ्ठीवत्।

**परिभावना षठ्ठी** (स्त्री०) अलोक्यमान, अलोक्यमान, ध्यानमाಡುವುದು. परि + भू (सत्ता-  
याम्) + णिच् “युच्” (३-३-१०७)। “अनेकसंवत्सराति-  
क्रमेऽपि प्रतिक्षणपरिभावनास्पष्टनिर्भासः प्रत्यग्र इव  
न मे दारुणो दुःखसंवेगः प्रशाम्यति” उ० रा० ४।

**परिभावित षठ्ठी** (वि०) 1. गणನೆಗೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. परि + भू (सत्तायाम्) +  
णिच् “क्तः” (३-२-१०२)। 2. अवमानगोಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**परिभाविन् षठ्ठी** (वि०) 1. अवमानगोಳಿಸುವ, ತಿರಸ್ಕರಿಸುವ. परि + भू (सत्तायाम्) “णिनिः”  
(३-१-१३४)। स्त्रियां “ङीप्” (४-१-५)। -भाविनी  
-षठ्ठी. “आः अतिथिपरिभाविनि” शाकु० ४।  
2. ವಿರೋಧಿಸುವ, ಉಲ್ಲಂಘಿಸುವ. “वैद्ययत्नपरिभाविनं  
गदम्” रघु० १९-५३।

**परिभावुक षठ्ठी** (वि०) ತಿರಸ್ಕರಿಸುವ. परि + भू  
(सत्तायाम्) “उकञ्” (३-२-१५४)। “सवितुः  
परिभावुकैर्मरीचीनचिराम्यक्तमतङ्गजाङ्गभाभिः” माघ०  
२०-६९।

**परिभाषण षठ्ठी** (न०) 1. ನಿಂದಾಪೂರ್ವಕ, ವಾಗ್ದಂಡನೆ, ಅಕ್ಷೇಪಣೆ, ತಪ್ಪು ಹೊರಿಸಿ ಎಚ್ಚರಿಸುವುದು.  
परि + भाष (व्यक्तायां वाचि) “ल्युट्” (३-३-११५)।  
2. ನಿಯಮ, ಕಟ್ಟಳೆ. “परिभाषणं सनिन्दोपालम्भे  
नियमेऽपि च” मेदि०।

**परिभाषा षठ्ठी** (ಸ್ತ್ರಿ०) 1. ಮಾತು, ಭಾಷಣ, ಸಂವಾದ. परि + भाष (व्यक्तायां वाचि) “अः”  
(३-३-१०३)। 2. निಂದಾಪೂರ್ವಕ ಕೋಪದ ಮಾತು.  
3. ಟೀಕೆ, ವಿವರಣೆ, ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸುವಿಕೆ. 4. ಅವಯವಾರ್ಥ  
ವಿಲ್ಲದೆ ಸಮುದಾಯಾರ್ಥದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಸಂಜ್ಞೆ,  
-ಸಂಕೇತ. 5. ಶಾಸ್ತ್ರಕಾರರ ಒಂದು ಸಂಕೇತ, ಸಂಪೂರ್ಣ  
ಶಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೂ ಅನ್ವಯಿಸುವ ವಿವರಣಾಪೂರ್ವಕವಾದ ಒಂದು  
ನಿಯಮ. “अनियमे नियमकारिणी परिभाषा”।

“इको गुणवृद्धी” (१-१-३) ಇತ್ಯಾದಿ. ಗುಣವೃದ್ಧಿ  
ಶಬ್ದಗಳಿಂದ ಗುಣವೃದ್ಧಿಗಳನ್ನು ವಿಧಿಸುವ ಕಡೆ ಇಕಃ ಎಂಬ  
ಷಷ್ಠ್ಯಂತಪದವು ಉಪಸ್ಥಿತವಾಗುವುದು ಇತ್ಯಾದಿ  
ನಿಯಮಗಳು ಸಂಪೂರ್ಣಶಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೂ ಅನ್ವಯಿಸುವುದ  
ರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ “परिभाषा” ಎಂದು ಹೆಸರು. “परिभाषा-  
ह्येकदेशे स्थित्वा सर्वशास्त्रमभिज्वलयति दीपवत्” इति  
भाष्यकारः। “परितो व्यापृतां भाषां परिभाषां प्रचक्षते”।  
“प्रमितः प्रमिताक्षरापि सर्व विषयं व्याप्तवती गता  
प्रतिष्ठाम्। न खलु प्रतिहन्यते कुतश्चित् परिभाषेव  
गरीयसी यदाज्ञा” माघ० १६-८०।

**परिभुक्त षठ्ठी** (वि०) ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅನು  
ಭವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. परि + भुज (परिपालनाभ्यवहारयोः)  
“क्तः” (३-२-१०२)। “तदवितथमवादीर्यन्मम त्वं  
प्रियेति प्रियजनपरिभुक्तं यदुकूलं दधानः” माघ०  
११-३३।

**परिभूत षठ्ठी** (वि०) ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅವಮಾನ  
ಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. परि + भू (सत्तायाम्) “क्तः”  
(३-२-१०२)। “परिभूतं सुखरहितं कुलटापुत्रं च  
पापनिरतं च। जनयति नक्षत्रपतिः क्षितिस्तुतदृष्टो ज्ञपे  
शूरम्” सारा० २३-८१।

**परिभूति षठ्ठी** (ಸ್ತ್ರಿ०) 1. ಅನಾದರ, ತಿರಸ್ಕಾರ.  
2. ಅವಮಾನ, ಅಗೌರವ. परि + भू (सत्तायाम्)  
“क्तिन्” (३-३-९४)।

**परिभूयमान षठ्ठी** (वि०) ಅವಮಾನ  
ಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. परि + भू “शानच्” (३-२-१२४)।  
“परित्रायेथां मामनेन दुर्विनीतेन दुष्टमधುकरेण परिभूय-  
मानाम्” शाकु० १।

**परिभोग षठ्ठी** (ಪುಂ०) 1. ಸುಖ, ಸಂತೋಷಾನುಭವ.  
2. ಸಂಭೋಗ, ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ಸಂಗಮ. परि + भुज  
(परिपालनाभ्यवहारयोः) “घञ्” (३-३-१८)। “स  
सैन्यपरिभोगेन गजदानसुगन्धिना” रघु० ४-४५।  
“दर्पणेषु परिभोगदर्शिनीर्नर्मपूर्वमनुपृष्ठसंस्थितः” रघु०  
१९-२८।

**परिभ्रंश षठ्ठी** (ಪುಂ०) ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳುವುದು, ಮೇಲಿ  
ನಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳುವುದು. परि + भ्रंश (अवसंसने)  
“घञ्” (३-३-१८)। भावे “ल्युट्” (३-३-११५)।  
-भ्रंशनम् -ಭ್ರಂಶನಮ್. “नलस्य नृपते राज्यात्परि-  
भ्रंशनम्”।



**परिभ्रम ಪರಿಭ್ರಮ** (ಪುಂ) 1. ತಿರುಗಾಡುವುದು, ಸುತ್ತುವುದು, ಅಲೆದಾಡುವುದು. परि + भ्रमु (चलने) "घञ्" (३-३-१८)। 2. ಭ್ರಾನ್ತಿ, ಮೋಹ, ತಪ್ಪು ತಿಳಿವಳಿಕೆ. 3. ಸುತ್ತಲೂ ತಿರುಗುವುದು.

**परिभ्रमण ಪರಿಭ್ರಮಣ** (ನಂ) 1. ತಿರುಗಾಡುವುದು, ಸುತ್ತುವುದು, ಅಲೆದಾಡುವುದು. परि + भ्रमु (चलने) भावे "ल्युट्" (३-३-११५)। 2. ಸುತ್ತಲೂ ತಿರುಗುವುದು.

**परिभ्रमत् ಪರಿಭ್ರಮತ್** (ವಿಂ) 1. ತಿರುಗಾಡುತ್ತಿರುವ, ಅಲೆದಾಡುತ್ತಿರುವ, परि + भ्रमु (चलने) "शतृ" (३-२-१२४)। "परिभ्रमल्लೋहितचन्दनोचितः पदाति-रन्तर्गिरि रेणुरूपितः" किरा० १-३४। 2. ಸುತ್ತಲೂ ತಿರುಗುತ್ತಿರುವ. स्त्रियां "ङीप्" (४-१-६)। -भ्रमन्ती -ಭ್ರಮನ್ತಿ. "नृणां करम्बितमुदामुदयन्मृगाङ्कशङ्कां सृजत्वनघजङ्घि परिभ्रमन्त्याः" नैष० ११-४४।

**परिमण्डल ಪರಿಮಂಡಲ** (ನಂ) 1. ಗೋಳ, ಮಂಡಲ. परि सर्वतो मण्डलम्। (वि०) 2. ವರ್ತುಲಾಕಾರದ, ಗುಂಡಾಗಿರುವ. 3. ಪರಮಾಣು ಪರಿಮಾಣದ, ಪರಮಾಣುವಿನ ಗಾತ್ರದ.

**परिमण्डलित ಪರಿಮಂಡಲಿತ** (ವಿಂ) ಗುಂಡಾಗಿರುವ, ವರ್ತುಲಾಕಾರವಾಗಿರುವ. परिमण्डलमस्य सञ्जातम् "इतच्" (५-२-३६)। "अस्मिन्नखण्डपरिमण्डलितोरुमूर्तिरध्यास्यते मधुभिदा भुजगाधिराजः" नैष० ११-४१।

**परिमन्थर ಪರಿಮಂಥರ** (ವಿಂ) ಬಹಳ ನಿಧಾನವಾದ, ಮಂದಗತಿಯುಳ್ಳ. "परिमन्थराभिरलघूभरादधिवेश्म पत्युरुपचारविधौ" माघ० ९-७८।

**परिमन्द ಪರಿಮಂದ** (ವಿಂ) 1. ಮಂದವಾದ, ಬಹಳ ಮಂಕಾಗಿರುವ, ಮಬ್ಬಾಗಿರುವ, ಮಸುಕಾಗಿರುವ, ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಕಾಣುವ. परितो मन्दः। "अभवद्गतः परिणति शिथिलः परिमन्दसूर्यनयनो दिवसः" माघ० ९-३। 2. ಬಹಳ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ, ಬಹಳ ತೆಳುವಾದ. (अव्य०) 3. ಬಹಳ ನಿಧಾನವಾಗಿ. 4. ಸಣ್ಣದಾಗಿ, ಅಲ್ಪವಾಗಿ, ಕೊಂಚವಾಗಿ. "कलया तुषारकिरणस्य पुरः परिमन्द-भिन्नतिमिरौघजटम्" माघ० ९-२७।

**परिमर ಪರಿಮರ** (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. परिम्रियन्ते-स्मिन्-परि + मृड् (प्राणत्यागे) "घः" (३-३-११८)। "तद्ब्रह्मणः परिमर इत्युपासीत" तै० उ०। 2. ಪುಳಯ,

ನಾಶ. 3. ಸಂಗ್ರಾಮ, ಯುದ್ಧ. "पुनर्द्वीविशोऽपि प्रकुपितकृतान्तोत्सवकरश्चिरात् क्षत्रस्यास्तु प्रलय इव घोरः परिमरः" म० वी० ३-४१। 4. ಮಾಯೆ.

**परिमदं ಪರಿಮರ್ದ** (ಪಂ) 1. ಉಜ್ಜುವುದು, ತಿಕ್ಕುವುದು. 2. ಅರೆಯುವುದು. 3. ಪುಡಿಮಾಡುವುದು. 4. ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ಪೀಡಿಸುವುದು. 5. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. 6. ಹಿಂಸುಕುವುದು, ಕಿವುಚುವುದು. परि + मृद (क्षोदे) "घञ्" (३-३-१८)। भावे "ल्युट्" (३-३-११५)। -मर्दनम् -ಮರ್ದನಮ್.

**परिमर्श पರಿಮರ್ಶ** (ಪುಂ) 1. ಸ್ಪರ್ಶ, ಮುಟ್ಟುವುದು. परि + स्पृश (संस्पर्शने) "घञ्" (३-३-१९)। "गृह-पङ्क्तयश्चिरमतीयिरे जनैः तमसीव हस्तपरिमर्शसूचिताः" माघ० १३-५३। 2. ವಿಮರ್ಶೆ, ವಿವೇಚನೆ.

**परिमर्ष पರಿಮರ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಅಸೂಯೆ. 2. ಕ್ರೋಧ, ಕೋಪ.

**परिमल ಪರಿಮಲ** (ಪುಂ) 1. ಸುಗಂಧ, ಸುವಾಸನೆ. परि + मल (धारणे) "घञ्" (३-३-१९)। "यः पण्यस्त्रीरतिपरिमलोद्गारिभिर्नागराणाम्" मेघ० १-२५। 2. ಸಂಭೋಗಕಾಲದಲ್ಲಿ ಅಲಿಂಗನಾದಿಗಳಿಂದ ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ವಾಸನೆ. "परिमलरुचिराभि-न्यंकृतास्तु प्रभाते युवतिभिरुपभोगाग्रीरुचः पुष्प-मालाः" माघ० ११-२७। "नवपरिमलगन्धः केन शक्यो वरीतुम्" माघ० ११-३४। 3. ಗಂಧದ್ರವ್ಯಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಅರೆಯುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ವಾಸನೆ. "विमर्दोत्थे परिमलो गन्धे जनमनोहरे" अम०। 4. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯ ವ್ಯಾಪ್ತಿ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಇರುವ ಸಂಬಂಧ. 5. ಮೈಥುನ, ಸಂಭೋಗ. "अथ परिमलजामवाप्य लक्ष्मीमवयवदीपितमण्डनश्रियस्ताः" किरा० १०-१। 6. ಅರೆಯುವುದು. "परिमलो विमर्दोत्थहृद्यगन्धे विमर्दने" हेम०। 7. ಪಂಡಿತರ ಸಮೂಹ, ವಿದ್ವಜ್ಞನರ ಗೋಷ್ಠಿ.

**परिमलित ಪರಿಮಲಿತ** (ವಿಂ) 1. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ. 2. ವಾಸನೆ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. परिमलोऽस्य सञ्जातः "इतच्" (५-२-३६)। "ब्रजति रजनिरेषा तन्मयूखाङ्गरागैः परिमलितमनिन्दैरम्बरान्तं वहन्ती" माघ० ११-२१। 3. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಕೊಳೆಯಿಂದ ಕೊಡಿದ, ಮಲಿನವಾದ. "रजस्वलाः परिमलिताम्बर-स्रजः" माघ० १७-६१।



**परिमाण ಪರಿಮಾಣ (ನಂ)** 1. ಅಳತೆ, ಕಾಲದ ಪ್ರದೇಶದ ವಸ್ತುವಿನ ಶಕ್ತಿಯ ಅಥವಾ ಯೋಗ್ಯತೆಯ ಮಾನ (ಅಳತೆ). ಪರಿಮೀಯತೇಜೇನ — ಪರಿ + ಮಾ (ಮಾನೇ) ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-119)। “ಮಾನವ್ಯವಹಾರಕಾರಣಂ ಪರಿ-ಮಾಣಮ್” ತಂ ಸಂ।

**ಕಾಲಪರಿमाणಮ್** — “ಸ್ವಕಾಲಪರಿमाणೇನ ವ್ಯಸ್ತರಾವಿ-ದಿವಸ್ಯ ತೇ” ಕುಮಾಂ 2-8। **ವಸ್ತುಪರಿमाणಮ್** — “ತಸರೆಣ-ವೋಷ್ಟಿ ವಿಜ್ಞೇಯಾ ಲಿಕ್ಷಿಕಾ ಪರಿಮಾಣತಃ” ಮನುಂ 6-133। “ಅಸ್ತ್ರಿಯಾಮಾಡಕದ್ರೋಣಿ ಖಾರಿ ವಾಹೋ ನಿಕುಚಕಃ। ಕುಡವಃ ಪ್ರಸ್ಯ ಇತ್ಯಾದಿಃ ಪರಿಮಾಣಾರ್ಥಕಾಃ ಪೃಥಕ್” ಅಮಂ।

**ಶಕ್ತೇಃ ಯೋಗ್ಯತಾಯಾಶ್ಚ ಪರಿಮಾಣಮ್** — “ಸದ್ವಃ ಪರಾತ್ಮ-ಪರಿಮಾಣವಿವೇಕಮೂಢಃ ಕಃ ಶಾಲಭೇನ ವಿಧಿನಾ ಲಭತಾಂ ವಿನಾಶಮ್” ಮುದ್ರಾಂ 1-10। 2. ಸಂಖ್ಯೆ. 3. ತೂಕ. 4. ಮೆಳು, ಬೆಲೆ, ಕಿಮ್ಮತ್ತು.

**ಪರಿಮಾರ್ಗ ಪರಿಮಾರ್ಗ (ಪುಂ)** 1. ಸ್ಪರ್ಶ, ಮುಟ್ಟುವುದು. ಪರಿ + ಮೃಜ (ಶುದ್ಧಿ) “ಘ” (3-3-118)। “ಪ್ರಿಯಕರ-ಪರಿಮಾರ್ಗಾದಿಜ್ಞಾನಾಂ ಯದಾಮೃತ್ ಪುನರಧಿಕತರೇವ ಸ್ವೇದತಯೋ-ದಯಶ್ರೀಃ” ಮಾಘಂ 9-94। 2. ಅನ್ವೇಷಣ, ಹುಡುಕುವುದು. 3. ಬಟ್ಟೆ ಕಾಗದ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಒರಸುವುದು, ತೊಡೆಯುವುದು. “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-119)। —**ಮಾರ್ಗಣಮ್** —**ಮಾರ್ಗಣಮ್**, ಅನ್ವೇಷಣ, ಹುಡುಕುವುದು.

**ಪರಿಮಾರ್ಗ ಪರಿಮಾರ್ಗ (ವಿಂ)** 1. ಶುದ್ಧಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ತಾರಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪರಿ + ಮೃಜ (ಶುದ್ಧಿ) ವಾ “ಘ” (3-3-118)।

**ಪರಿಮಾರ್ಜನ ಪರಿಮಾರ್ಜನ (ನಂ)** 1. ತಾರಿಸುವುದು. 2. ಒರಸುವುದು. ಪರಿ + ಮೃಜ (ಶುದ್ಧಿ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-119)। 3. ಮಧುಮಸ್ತಕವೆಂಬ ಒಂದು ವಿಧ ಭಕ್ಷ್ಯ.

**ಪರಿಮಿತ ಪರಿಮಿತ (ವಿಂ)** 1. ಮಿತವಾದ, ಹೆಚ್ಚಲ್ಲದ, ಇಷ್ಟೆಂದು ಕಲ್ಪವಾದ, ಒಂದು ಅವಧಿಯುಳ್ಳ, ಅಲ್ಪವಾದ. ಪರಿ + ಮಾ (ಮಾನೇ) “ಕ್ತಃ” (3-2-102)। “ದ್ರವಿಣಂ ಪರಿಮಿತಮಧಿಕವ್ಯಯಿನಂ ಜನಮಾಕುಲಿಕುಸ್ತೇ। ಕ್ಷೀಣಾ-ಶ್ಚಲಮಿವ ಪೀನಸ್ತನಜಘನಾಯನಃ ಕುಲಿನಾಯಾಃ” ಝಡಃ। 2. ಯುಕ್ತವಾದ. 3. ಅಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ತೂಗಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪರಿಮಿತಕಥ ಪರಿಮಿತಕಥ (ವಿಂ)** ಹೆಚ್ಚು ಮಾತಾಡದಿರುವ, ಮಿತವಾದ ಮಾತುಳ್ಳ. ಪರಿಮಿತಾ ಕಥಾ ಯಸ್ಯ। “ತಂ ಜಾನೀಥಾಃ ಪರಿಮಿತಕಥಾಂ ಜೀವಿತಂ ಮೇ ದ್ವಿತೀಯಮ್” ಮೇಘಂ 2-20।

**ಪರಿಮಿಲನ ಪರಿಮಿಲನ (ನಂ)** ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯ ಸಂಬಂಧ. ಪರಿ + ಮಿಲ (ಶ್ಲೇಷಣೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-119)। “ಪರಿಮಿಲನಂ ಪೀನಸ್ತನಜಘನಸಂಗಾಧುಭಯತಸ್ತನೋರ್ಮಧ್ಯಸ್ಥಾಂತಃ ಪರಿಮಿಲನಮಪ್ರಾಪ್ಯ ಹರಿತಮ್” ರತ್ನಾಂ 2-12।

**ಪರಿಮಿಲಿತ ಪರಿಮಿಲಿತ (ವಿಂ)** ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ. ಪರಿ + ಮಿಲ (ಶ್ಲೇಷಣೆ) “ಕ್ತಃ” (3-4-92)।

**ಪರಿಮಿಲನ ಪರಿಮಿಲನ (ನಂ)** ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮುಚ್ಚುವುದು, ಕಣ್ಣು ರೆಪ್ಪೆಯನ್ನು ಮುಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಪರಿ + ಮಿಲ (ನಿಮೇಷಣೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-119)।

**ಪರಿಮಿಲಿತ ಪರಿಮಿಲಿತ (ವಿಂ)** ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮುಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ಮಿಲ (ನಿಮೇಷಣೆ) “ಕ್ತಃ” (3-2-102)। “ಸಸ್ಮಾರ ಬಾರಣಪತಿಃ ಪರಿಮಿಲಿತಾಕ್ಷಮ್” ಮಾಘಂ 4-40।

**ಪರಿಮೂ ಪರಿಮೂ (ವಿಂ)** ಮೂರ್ಛನಾದ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. ಪರಿ + ಮೂ (ವೈಚಿತ್ಯ) “ಕ್ತಃ” (3-4-92)। “ಛದ್ವಗಂವಶ್ಯಃ ಪರಿಮೂಬಂಧುಃ ಕ್ಷಿಣ್ಣಮಿತ್ರೋ ವಿಗುಣೈರಪೇತಃ” ಭದ್ರಿಂ 12-39।

**ಪರಿಮೃಗ ಪರಿಮೃಗ (ವಿಂ)** ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ, ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪರಿ + ಮೃಗ (ಅನ್ವೇಷಣೆ) + ಣಿच् “ಯತ್” (3-1-99)। “ನಿಲಿಷ್ಠಾತ್ಮಭೃತ್ಯಃ ಪರಿಮೃಗಸಂಪನ್ಮಾನಿ ಯತೇತಾಪಿ ಸಸಂಶಯೇಷ್ಠೇ” ಭದ್ರಿಂ 12-44।

**ಪರಿಮೃಜ ಪರಿಮೃಜ (ವಿಂ)** 1. ಶುದ್ಧಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ತಾರಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪರಿ + ಮೃಜ (ಶುದ್ಧಿ) “ಕೃಪ್” (3-1-113)।

**ಪರಿಮೃದಿತ ಪರಿಮೃದಿತ (ವಿಂ)** 1. ತುಳಿದುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಾಲಿನಿಂದ ಉಜ್ಜಿ ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ಮೃದ (ಕ್ಷೋಧೆ) “ಕ್ತಃ” (3-2-102)। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹಿಂಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಸುಕಲ್ಪಟ್ಟ. “ಪರಿಮೃದಿತಮೃಣಾಲಿಮಲಾನಮಜ್ಜಂ ಪ್ರವೃತ್ತಿಃ ಕಥಮಪಿ ಪರಿವಾರಪ್ರಾರ್ಥನಾಭಿಃ ಕ್ರಿಯಾಸು” ಮಾಲತೀಂ 1-24।

**ಪರಿಮೃಶತ್ ಪರಿಮೃಶತ್ (ವಿಂ)** ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡಿ ಸಜ್ಜುಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ + ಮೃಶ (ಆಮರ್ಶನೆ) “ಶತ್” (3-2-124)। “ಸ ಏಷ ಪುರತೋ ಯಾತಾ ಪ್ರಾಜಃ ಪರಿಮೃಶನ್ ಪಥಃ” ಯಾದಂ 22-46।

**ಪರಿಮೃಷ್ಠ ಪರಿಮೃಷ್ಠ (ವಿಂ)** 1. ಮುಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ಪರ್ಶಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ಮೃಶ (ಆಮರ್ಶನೆ) “ಕ್ತಃ” (3-2-102)। “ಕಿಂ ತಾತಸ್ಯ ದುರಾತ್ಮನಾ ಪ್ರಮೃಷ್ಠಮು-ಚ್ಛಿರಃ?” ವೇಣೀಂ 3। 2. ಪಾಪವಾದ, ಅವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಉಪಮಾಂ ಯಾವರುಣದೀಧಿತಿಭಿಃ ಪರಿಮೃಷ್ಠಮುರ್ಧನಿ



तमालतरौ" किरा० ६-२३। ३. तैलैयुल्लुಟ್ಟ, ಶುದ್ಧವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

परिमृष्यत् ಪರಿಮೃಷ್ಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಕೊಪಗೊಳ್ಳು ತಿರುವ. 2. ಅಸೂಯೆ ಪಡುತಿರುವ. परि + मृष (तितिक्षायाम्) "शतृ" (३-२-१२४)। "मघोने परिमृष्यन्तमारमन्तं परं स्मरे" भट्टि० ८-५२।

परिमेय ಪರಿಮೇಯ (ವಿಂ) 1. ಪರಿಮಿತವಾದ, ಅಲ್ಪವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿಲ್ಲದ. परिमीयते—परि + माङ् (माने) "यत्" (३-२-९७)। "मा भूदाश्रमपीडेति परिमेय-पुरःसरौ" रघु० १-३७। 2. ಅಳೆಯಲ್ಪಡುವ. 3. ಅಳೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.

परिमोक्ष ಪರಿಮೋಕ್ಷ (ಪುಂ) ತೆಗೆದುಹಾಕುವುದು, ತೆಗೆದು ಬಿಡುವುದು. परि + मुच् (मोक्षणे) "प्रायो विषाण-परिमोक्षलघूत्तमाङ्गान्" रघु० १-६२।

परिमोषक ಪರಿಮೋಷಕ (ವಿಂ) ಕದಿಯುವವನು, ಚೋರ, ಕಳ್ಳ.

परिमोषिन् ಪರಿಮೋಷಿನ್ (ವಿಂ) ಕದಿಯುವ ಸ್ವಭಾವದ. परि + मुष (स्तेये) "णिनिः" (३-२-८)।

परिमोह्यमाण ಪರಿಮೋಹಯಮಾಣ (ವಿಂ) ಮೋಹಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ, ಮಂಕುಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. परि + मुह (वैचित्ये) + णिच् "शानच्" (३-२-१२४)। "परिमोह्यमाणेन शिक्षालाघवलीलया" किरा० १५-३६।

परिमोहिन् ಪರಿಮೋಹಿನ್ (ವಿಂ) ಮೋಹದ ಸ್ವಭಾವದ, ಮಂಕುಸ್ವಭಾವದ. परिमुह्यति—परि + मुह (वैचित्ये) "घिनुण्" (३-२-१४२)। "परिमोहिणा परिजनेन कथमपि चिरादुपाहृतम्" माघ० १५-७६। स्त्रियां "डीप्" (४-१-६)। -मोहिनी-मोहनी. "भवत्यपाये परिमोहिनी मतिः" किरा० १४-१९।

परिम्लान ಪರಿಮ್ಲಾನ (ವಿಂ) 1. ಬಾಡಿರುವ, ಕಳೆಗುಂದಿರುವ, ಕಂದಿಹೋಗಿರುವ. परि+म्ल (हर्षक्षये) "क्तः" (३-४-७२)। "परिम्लानं पीनस्तनजघनसंगादुभयतस्तनोर्मध्यस्यान्तः परिमिलनमप्राप्य हरितम्" रत्ना० २-१२। 2. ಮಂಕಾಗಿರುವ, ಬಳಲಿರುವ, ಅಲಸ, ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಅಸಮರ್ಥನಾದ. 3. ದುರ್ಬಲವಾದ, ಬಲಹೀನವಾದ.

परिरक्षक ಪರಿರಕ್ಷಕ (ವಿಂ) 1. ಕಾಪಾಡುವವನು. 2. ಕಾವಲುಗಾರ. परि + रक्ष (पालने) "ण्वल्" (३-१-१३३)।

परिरक्षण ಪರಿರಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ರಕ್ಷಿಸುವುದು, ಕಾಪಾಡುವುದು. परि + रक्ष (पालने) "ल्युट्" (३-३-११५)। "ब्राह्मं प्राप्तेन संस्कारं क्षत्रियेण यथाविधि। सर्वस्यास्य यथान्यायं कर्तव्यं परिरक्षणम्" मनु० ७-२। 2. ಪ್ರತಿರಕ್ಷಿಸುವುದು, ಕಾಯುವುದು. "न समयपरिरक्षणं क्षमं ते निवृत्तिपरेषु परेषु भूरिघाम्नः" किरा० १-४५। परि + रक्ष "अः" (३-३-१०३)। -रक्षा-रक्ष्.

परिरक्षित ಪರಿರಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) ಕಾಪಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. परि + रक्ष (पालने) "क्तः" (३-२-१०२)। "अपि कापुरुषो मार्गे द्वितीयः क्षेमकारकः। कर्कटेन द्वितीयेन जीवितं परिरक्षितम्" पञ्चत० ५-९७।

परिरक्षितृ ಪರಿರಕ್ಷಿತೃ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಿಸುವವನು, ಕಾಪಾಡುವವನು. परि + रक्ष (पालने) "तृच्" (३-१-१३३)। स्त्रियां "डीप्" (४-१-५)। -रक्षित्री-रक्षित्री.

परिरटन ಪರಿರಟನ (ನಂ) ಹಕ್ಕಿಗಳು ಕೂಗುವುದು, ಶಬ್ದ ಮಾಡುವುದು, ಹಕ್ಕಿಗಳು ಮಾತಾಡುವುದು. परि + रट (परिभाषणे) "ल्युट्" (३-३-११५)।

परिरब्ध ಪರಿರಬ್ಧ (ವಿಂ) ಅಲಿಂಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. परि + रभ (राभस्ये) "क्तः" (३-२-१०२)। "संजहार सहसा परिरब्धप्रेयसीषु विरहय्य विरोधम्" माघ० १०-४४।

परिरम्भ ಪರಿರಂಭ (ಪುಂ) ಅಲಿಂಗನ, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ತಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುವುದು. परि + रभ (राभस्ये) "घञ्" (३-३-१८)। "वपुस्त्वलिप्त परिरम्भसुखव्यवधानभीरुकतया न वधूः" माघ० ९-५१। भावे "ल्युट्" (३-३-११५)। -रम्भणम्-रंभणम्. "यत्प्राप्तौ मम परिरम्भणाभिलाषात्" उ० रा० ५-१८। घञि बहुलं दीर्घः (६-३-१२२)। परीरम्भः ಪರೀರಂಭಃ.

परिरम्भिन् ಪರಿರಂಭಿನ್ (ವಿಂ) ಅಪ್ಪಿಕೊಂಡಿರುವ, ಅಲಿಂಗಿಸಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವ. परिरम्भोऽस्यास्ति "इनिः" (५-२-११५)। "यूनि गाढपरिरम्भिणि वस्त्रकनोपमम्बुववृषे यदनेन" माघ० १०-४९।

परिराटिन् ಪರಿರಾಟಿನ್ (ವಿಂ) ಶಬ್ದಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಕೂಗಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಚಿಲಿಪಿಲಿ ಗುಟ್ಟುವ ಸ್ವಭಾವದ. परि + रट (परिभाषणे) "घिनुण्" (३-२-१४२)। "अभ्याघातिभिरामिश्राश्चातकैः परिराटिभिः" भट्टि० ७-७।



**ಪರಲಘು ಪರಿಲಘು (ವಿಂ)** 1. ಬಹಳ ತೆಳ್ಳಗಿರುವ, ತೆಳ್ಳೆಯಾಗಿರುವ, ಗುರುತ್ವರೂಪವಾದ ದೋಷವಿಲ್ಲದ. "ಖಿನ್ನ: ಖಿನ್ನ: ಶಿಖರೀಷು ಪದಂ ನ್ಯಸ್ಯ ಗಂತಾಸಿ ಯತ್ರ ಕ್ಷಿಣ: ಕ್ಷಿಣ: ಪರಲಘು ಪಯ: ಸ್ತೋತಸಾಂ ಚೋಪಭುಜ್ಯ" ಮೇಘಂ ೧-೧೩. 2. ಹಗುರವಾಗಿರುವ (ವಸ್ತು ಮುಂತಾದುದು). 3. ಬಹಳ ಚಿಕ್ಕದಾಗಿರುವ, ಬಹಳ ಸಣ್ಣದಾದ. "ಮನೋ ಮೇ ಸಮೋಹ-ಸ್ಥಿರಮಪಿ ಹರತ್ಯೇಷ ಬಲವಾನಯೋಧಾತುಂ ಯದ್ವತ್ಪರಲಘುರಯಸ್ಕಾಂತ-ಶಕಲ:" ತಂ ರಾಂ ೪-೨೧.

**ಪರಲಿಖಿತ ಪರಿಲಿಖಿತ (ವಿಂ)** ಸುತ್ತಲೂ ಬರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಯೋಗಾರ್ಥ ಸುತ್ತಲೂ ರೂಪರೇಖೆ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪರಲೀನ ಪರಿಲೀನ (ವಿಂ)** ಸುತ್ತಲೂ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. "ಆದುವಾವ ಪರಲೀನವಿಹ್ನಾ ಯಾಮಿನೀಮರುದಪಾಂ ವನರಾಜಿ:" ಕಿರಾಂ ೯-೩೧.

**ಪರಲುಪ್ತ ಪರಿಲುಪ್ತ (ವಿಂ)** 1. ನಾಶವಾದ, ಕಳೆದು ಹೋದ. ಪರಿ + ಲುಪ (ವಿಮೋಹನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). "ಹರಸ್ತು ಕಿಂಚಿತ್ಪರಲುಪ್ತವೈಶ್ವಾನ್ರೋದಯಾರಮ್ಭ ಇವಾಮ್ಬುರಾಶಿ:" ಕುಮಾಂ ೩-೬೭. 2. ಕಡಮೆಯಾದ, ಕೊರೆಯಾಗಿರುವ.

**ಪರಲುಲಿತ ಪರಿಲುಲಿತ (ವಿಂ)** ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ತಿಕ್ಕಾಡಿದ, ಪರಸ್ಪರ ಉಜ್ಜಾಡಿದ.

**ಪರಲೇಖ ಪರಿಲೇಖ (ಪುಂ)** ಸುತ್ತಲೂ ಬರೆಯುವ ರೂಪ ರೇಖೆ, ಚಿತ್ರಕಾರರು ಮೊದಲು ಹಾಕಿಕೊಳ್ಳುವ ಒಂದು ಆಕಾರದ ಸುತ್ತಿಗೆರೆ, ಮೊರರೇಖೆ. ಪರಿತೋ ಲೇಖ:

**ಪರಲೇಖನ ಪರಿಲೇಖನ (ನಂ)** ಹೊರರೇಖೆ ಹಾಕುವುದು, ಸುತ್ತಿಗೆರೆ ಬರೆಯುವುದು. ಪರಿ+ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

**ಪರಲೋಲಿತ ಪರಿಲೋಲಿತ (ವಿಂ)** ಪರಸ್ಪರ ತಿಕ್ಕಾಡು ವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ಲುಲ (ವಿಮರ್ದನೆ) + ಣಿच् "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). "ವಿಭೂತಕೇಶಾ: ಪರಲೋಲಿತಸ್ರಜ: ಸುರಾಜ್ಞಾನಾನಾಂ ಪ್ರವಿಲುಪ್ತಚಂದನಾ:" ಕಿರಾಂ ೮-೩೩.

**ಪರಿವತ್ಸರ ಪರಿವತ್ಸರ (ಪುಂ)** ಸಂವತ್ಸರ, ಸಂಪೂರ್ಣ ಒಂದು ವರ್ಷ. "ದೇವ್ಯಾ ಶೂನ್ಯಸ್ಯ ಜಗತೋ ದ್ವಾದಶ: ಪರಿವತ್ಸರ:" ತಂ ರಾಂ ೪-೨೧.

**ಪರಿವಂದನ ಪರಿವಂದನ (ನಂ)** 1. ಪ್ರಣಾಮ, ನಮಸ್ಕಾರ. 2. ಸ್ತುತಿ, ಹೊಗಳಿಕೆ. ಪರಿ+ವದಿ (ಅಭಿವಾದನಸ್ತುತ್ಯೋ:) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

**ಪರಿವಂದಿತ ಪರಿವಂದಿತ (ವಿಂ)** 1. ನಮಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ+ವದಿ (ಅಭಿವಾದನಸ್ತುತ್ಯೋ:) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). 2. ಸ್ತುತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊಂಡಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

"ಕೃತವೃತ್ತಿ ಪರಿವಂದಿತೇನೋಚ್ಚಕೇಗಣಪತಿಭಿರಭಿನ್ನರೋಮೋದಗಮ:" ಕಿರಾಂ ೧೮-೨೧.

**ಪರಿವರ್ಜನ ಪರಿವರ್ಜನ (ನಂ)** 1. ತ್ಯಜಿಸುವುದು, ಬಿಡುವುದು, ತೊರೆದುಬಿಡುವುದು. ಪರಿ + ವೃಜಿ (ವರ್ಜನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). "ವಿಪರ್ಯಯೋ ಯೇನ ಕೃತ: ಸ್ವಪಿತ್ರೋ-ಸ್ತಸ್ಯೋಪಪತ್ನೀಪರಿವರ್ಜನಂ ಕಿಮ್" ತ್ವರಾಂ: 1. ಸಂಹರಿಸುವುದು, ಕೊಲ್ಲುವುದು.

**ಪರಿವರ್ಜನೀಯ ಪರಿವರ್ಜನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ತ್ಯಜಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ತ್ಯಜಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಪರಿ + ವೃಜಿ (ವರ್ಜನೆ) + ಣಿच् "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬). -ವರ್ಜಿತವ್ಯ: -ವರ್ಜಿತವ್ಯ:.

**ಪರಿವರ್ಜಿತ ಪರಿವರ್ಜಿತ (ವಿಂ)** ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, -ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ವೃಜಿ (ವರ್ಜನೆ) + ಣಿच् "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). "ಪರ್ಜನ್ಯಸ್ಯ ಯಥಾ ಧಾರಾ ಯಥಾ ಚ ದಿವಿ ತಾರಕಾ: ಸಿಕತಾರೆಣವೋ ಯದ್ವತ್ ಸಂಖ್ಯಯಾ ಪರಿ-ವರ್ಜಿತಾ:" ಪञ್ಚತಂ ೨-೬೫.

**ಪರಿವರ್ತ ಪರಿವರ್ತ (ಪುಂ)** 1. ವಿನಿಮಯ, ಬದಲಾವಣೆ. ಪರಿ+ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮). "ಕ್ರೋಧೋಪಭೋಗ-ಮನುಭೂಯ ಸರಿತ್ಮಹೇಭಾವನ್ಯೋನ್ಯವಸ್ತ್ರಪರಿವರ್ತಮಿವ ವ್ಯಧತ್ತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೫-೩೯. 2. ಕೊನೆ, ಅವಸಾನ, ಸಮಾಪ್ತಿ. "ಜನೇಸ್ತದಾ ಯುಗಪರಿವರ್ತವಾಯುಭಿ: ವಿವರ್ತಿತಾ ಗಿರಿಪತಯ: ಪ್ರತೀಯಿರೆ" ಮಾಘಂ ೧೭-೧೨. 3. ಮಾರ್ಪಾಡು, ಬದಲಾವಣೆ, ವ್ಯತ್ಯಾಸ. "ಬುದ್ಧರಕ್ಷಿತಾವಚನವಿವರ್ತಿತಾವೇಗವ್ಯತಿಕರ-ವಿಸಂಸ್ಥುಲಮಂ ಜೀವಲೋಕಪರಿವರ್ತಮನುಭವಾಮಿ" ಮಾಲತೀಂ ೭. 4. ಆವೃತ್ತಿ, ತಿರುಗಿ ಬರುವುದು, ಮತ್ತೆ ಬರುವುದು. 5. ಯುಗದ ಕೊನೆ, ಪ್ರಳಯ, ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶ. "ಪರಿವರ್ತ-ಹೃತಾಶನಪ್ರದೀಪ್ತಂ ವದನಂ ತಸ್ಯ ಕೃಪಾ ವಿಜೃಂಭಮಾಣಮ್" ಯಾದಂ ೧೫-೧೦೦. 6. ಪಲಾಯನ, ಹಿಮ್ಮೆಟ್ಟಿ, ಓಡುವುದು. 7. ಕೂರ್ಮರಾಜ, ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಎರಡನೆಯ ಅವತಾರ. "ಪರಿವರ್ತಸ್ತು ಕೂರ್ಮರಾಜೇ ಪಲಾಯನೇ. ಯುಗಾಂತೇ ವಿನಿಮಯೇ ಚ" ಹೇಮಂ. 8. ರಾಶಿಚಕ್ರದಲ್ಲಿ ಗ್ರಹಗಳು ಸ್ವಸ್ಥಾನದಿಂದ ಹೊರಟು ಪುನಃ ಸ್ವಸ್ಥಾನವನ್ನು ಸೇರುವುದು. 9. ಒಂದು ಸಂವತ್ಸರ, ಒಂದು ವರ್ಷ. "ಪರಿವರ್ತೋ ಜಗನ್ನಾಶೋ ನಿಮಯೋಽದೇ ಪರಿಭ್ರಮೇ" ವೈಜಂ. "ಪರಿವರ್ತೋ ವಿನಿಮಯೇ ಸ್ವಾತಕಲ್ಪಾಂತೇ ಪರಿಭ್ರಮೇ" ನಾನಾರ್ಥರಂ.

**ಪರಿವರ್ತನ ಪರಿವರ್ತನ (ನಂ)** 1. ಬದಲಾವಣೆ, ವಿನಿಮಯ, ಒಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಅದಕ್ಕೆ ಬದಲಾಗಿ



ಮತ್ತೊಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು ಪಡೆಯುವುದು. ಪರಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಅಕ್ಷಮಕ್ಷ-ಪರಿವರ್ತನೋಚಿತೇ ತಸ್ಯ ನಿನ್ಯತುರಶನ್ಯತಾಮುಖೇ। ವಲ್ಲಕೀ ಚ ಹೃದಯಜ್ಞಮಸ್ವನಾ ವಲ್ಗುವಾಗಪಿ ಚ ವಾಮಲೋಚನಾ" ರಘುಂ ೧೯-೧೩। 2. ಉಂಠನ, ಹೊರಳಾಡುವುದು. "ಅಪಶಕ್ಷ-ಮಕ್ಷಪರಿವರ್ತನೋಚಿತಾಶ್ಚಲಿತಾಃ ಪುರಃ ಪತಿಮುಪೇತುಮಾತ್ಮಜಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೪೭। 3. ಮಾರ್ಪಾಡು, ಬದಲಾವಣೆ. "ಅಥ ತೇಷಾಮೇಕತಮೋ ವೇಷಪರಿವರ್ತನಂ ವಿಧಾಯ ಸಂಮುಖೋ ಭೂತ್ವಾಪಾಮಾರ್ಗೇಣ ತಮಾಹಿತಾಗ್ನಿಮುಖೇ" ಪञ्ಚತಂ ೩। 4. ಕಾಲದ ಕೊನೆ. 5. ರಾಜ್ಯವಿಪ್ಲವ. 6. ಸುತ್ತಲೂ ತಿರುಗುವಿಕೆ. 7. ಹಿಂತಿರುಗುವಿಕೆ, ಪುನಃ ಸ್ವಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಬಂದು ಸೇರುವುದು. 8. ಹಿಮ್ಮುಖವಾಗಿ ತಿರುಗಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

**ಪರಿವರ್ತಮಾನ ಪರಿವರ್ತಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಸುತ್ತುತ್ತಿರುವ, ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಸಪ್ತಪಿಹಸ್ತಾಬಚಿತಾವಶೇಷಾಪ್ಯಥೋ ವಿವ-ಸ್ವಾನ್ ಪರಿವರ್ತಮಾನಃ" ಕುಮಾರಂ ೧-೧೬। 2. ಅತ್ತಿತ್ತ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅಲೆದಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತಿರುಗುತ್ತಿರುವ, ಹಿಮ್ಮುಖವಾಗುತ್ತಿರುವ. 4. ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ. 5. ಹೊರಳಾಡುತ್ತಿರುವ. 6. ಮತ್ತೆ ಸ್ವಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಬಂದು ಸೇರುತ್ತಿರುವ.

**ಪರಿವರ್ತಿತ ಪರಿವರ್ತಿತ** (ವಿಂ) 1. ಬದಲಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿನಿಮಯ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಪರಿವರ್ತಿತಾಮ್ಬರಯುಗಾಃ ಸಮಾಪತ್ತನ್ ವಲಯೀಕೃತಶ್ರವಣಪೂರಕಾಃ ಸ್ತ್ರೀಯಃ" ಮಾಘಂ ೧೩-೩೨। 2. ಹಿಮ್ಮುಖವಾಗಿ ತಿರುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪರಿವರ್ತಿತಕನ್ಧರಂ ಭಯೇನ ಸ್ಮಿತಫುಲ್ಲಾಳರಪಲ್ಲವಂ ಸ್ಮರಾಮಿ" ಗೋಪಾಲವಿಂ। 3. ಮಾರ್ಪಾಡು, ಬದಲಾವಣೆ. 4. ಸುತ್ತಲೂ ತಿರುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಹಿಮ್ಮೆಟ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪರಿವರ್ತಿನ್ ಪರಿವರ್ತಿನ್** (ವಿಂ) 1. ತಿರುಗುತ್ತಿರುವ, ಸುತ್ತುತ್ತಿರುವ. ಪರಿವರ್ತನೆ — ಪರಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಞಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)। "ಉದಕಞಿ ಕಂಠಪರಿವರ್ತಿಕಲ್ ಸ್ವರಶನ್ಯಗಾಂಪರಯಾಽಪರಯಾ" ಮಾಘಂ ೯-೫೪। 2. ಪುನಃ ಪುನಃ ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗುವ, ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಬಂದೊದಗುವ. "ಪರಿವರ್ತಿತಿನಿ ಸಂಸಾರೇ ಮೃತಃ ಕೋ ವಾ ನ ಜಾಯತೇ" ಪञ್ಚತಂ ೧-೨೭। 3. ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ, ಮಾರ್ಪಾಡು ತಿರುಗುವ. 4. ಮತ್ತೆ ಸ್ವಸ್ಥಾನವನ್ನು ಸೇರುತ್ತಿರುವ. 5. ವಿನಿಮಯ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ವಸ್ತು ಬದಲಾವಣೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 6. ಹಿಮ್ಮೆಟ್ಟುತ್ತಿರುವ. 7. ಹೊರ

ಳಾಡುತ್ತಿರುವ. 8. ಸುತ್ತಾಡುತ್ತ ಇರುವವನು. "ತದ್ವಾವತ್ ಪಾರ್ಶ್ವಪರಿವರ್ತೀ ಭವಾಮಿ" ವಿಕ್ರಂ ೨। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ವರ್ತಿನಿ -ವರ್ತಿನೀ.

**ಪರಿವರ್ಧನ ಪರಿವರ್ಧನ** (ನಂ) 1. ದೊಡ್ಡದಾಗಿ ಬೆಳೆಯುವುದು. ಪರಿ + ವೃಧು (ವೃದ್ಧಿ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಅಧಿಕವಾಗುವುದು, ಹೆಚ್ಚುವುದು. 3. ದೊಡ್ಡದಾಗಿ ಬೆಳೆಸುವುದು. 4. ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು, ಅಧಿಕಪಡಿಸುವುದು. ಪರಿ + ವೃಧು + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। (ವಿಂ) 5. ಬೆಳೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದ. 6. ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಪರಿ + ವೃಧು "ಯುಕ್" (೩-೨-೧೪೯)।

**ಪರಿವರ್ಧನೀಯ ಪರಿವರ್ಧನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ದೊಡ್ಡದಾಗಿ ಬೆಳೆಸಲ್ಪಡುವ. 2. ದೊಡ್ಡದಾಗಿ ಬೆಳೆಸಬೇಕಾದ. 3. ದೊಡ್ಡದಾಗಿ ಬೆಳೆಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಪರಿ + ವೃಧು (ವೃದ್ಧಿ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। 4. ಅಧಿಕಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಹೆಚ್ಚಿಸಬೇಕಾದ. 6. ಹೆಚ್ಚಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.

**ಪರಿವರ್ಧಮಾನ ಪರಿವರ್ಧಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಬೆಳೆಯುತ್ತಿರುವ, ದೊಡ್ಡದಾಗುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ + ವೃಧು (ವೃದ್ಧಿ) "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ದಿನೇ ದಿನೇ ಸಾ ಪರಿವರ್ಧಮಾನಾ ಲಂಛೋದಯಾ ಚಾನ್ದ್ರಮಸೀವ ಲೇಖಾ" ಕುಮಾರಂ ೧-೨೫। 2. ಹೆಚ್ಚುತ್ತಿರುವ, ಅಧಿಕವಾಗುತ್ತಿರುವ.

**ಪರಿವರ್ಧಿತ ಪರಿವರ್ಧಿತ** (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಧಿಕಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ವೃಧು (ವೃದ್ಧಿ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ದೊಡ್ಡದಾಗಿ ಬೆಳೆಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪರಿವಸಥ ಪರಿವಸಥ** (ಪುಂ) ಗ್ರಾಮ, ಊರು, ಹಳ್ಳಿ.

**ಪರಿವಹ ಪರಿವಹ** (ಪುಂ) ಸಪ್ತವಿಧ ವಾಯುಗಳಲ್ಲೊಂದು. ["ಆವಹ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. ಇದು ಐದನೆಯದಾದ "ಸುವಹ" ವಾಯುವಿನ ಮೇಲುಭಾಗದಲ್ಲಿರುವುದು. "ಭವಾಯುರಾವಹ ಇಹ ಪ್ರವಹಸ್ತದ್ಧವ್ವಃ ಸ್ಯಾದುಹಸ್ತದನ್ತು ಸಂವಹ-ಸಂಜಕಶ್ಚ। ಅನ್ಯಸ್ತತೋಪಿ ಸುವಹಃ ಪರಿಪೂರ್ವಕೋಽಸ್ಮಾತ್ ವಾಹಃ ಪರಾವಹ ಇಮೇ ಪವನಾಃ ಪ್ರಸಿದ್ಧಾಃ" ಸಿದ್ಧಾಂತಶಿಂ। "ತಸ್ಯ ದ್ವಿತೀಯಹರಿವಿಕ್ರಮನಿಷ್ಟಮಸ್ಕಂ ವಾಯೋರಿಮಂ ಪರಿವಹಸ್ಯ ವದಂತಿ ಮಾರ್ಗಮ್" ಶಾಕುಂ ೭-೬।

**ಪರಿವಾದ ಪರಿವಾದ** (ಪುಂ) 1. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ, ತಿಗಳಿಕೆ. ಪರಿ ಸರ್ವತೋ ದೋಷೋದ್ಘಾಟನೆನ ವಾದಃ—ಪರಿ + ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಃ ವಾಚಿ) "ಘನ್" (೩-೩-೧೮)। "ದೇವ, ಅಯಮೇವ ಪ್ರಥಮಂ ಮಯಿ ಪರಿವಾದಕರಃ" ಮಾಲಂ ೧। 2. ಅಪವಾದ, ಅಪಹೀರ್ತಿ, ಅಪಯಶಸ್ಸು, ಕಳಂಕ. "ತಾಮೇಕಭಾರ್ಯಾ ಪರಿವಾದಭೀರೋಃ



ಸಾಧ್ಯಮಪಿ ತ್ಯಕ್ತವತೋ ನೃಪಸ್ಯ" ರಘುಂ ೧೪-೮೬। 3. ದೋಷಾರೋಪಣೆ, ತಪ್ಪು ಹೊರಿಸುವುದು. "ಪರಿವಾಹ-ಬಹಲದೋಷಾನ್ಯ ಯಸ್ಯ ರಕ್ಷಾಂ ಪರಿಹರಾಮಿ" ಮೃಚ್ಛಂ ೩-೩೦। 4. ವೀಣಾದಂಡ, ವೀಣೆಯನ್ನು ನುಡಿಸುವ ಒಂದು ವಸ್ತು. ವಾ ದೀರ್ಘ: (೬-೩-೧೨೨)। ಪರಿವಾಹ: ಪರಿವಾಹ: "ಪರಿವಾಹಸ್ತು ನಿಂದಾयां ವೀಣಾವಾದನವಸ್ತುನಿ" ಹೇಮಂ।

**ಪರಿವಾಹಕ ಪರಿವಾಹಕ** (ವಿಂ) 1. ದೋಷವನ್ನು ಅರೋಪಿಸುವವನು, ತಪ್ಪು ಹೊರಿಸುವವನು. ಪರಿ + ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಕ್ "ವುಕ್" (೩-೨-೧೪೬)। 2. ನಿಂದಿಸುವವನು, ತಿಳುವ ಸ್ವಭಾವದವನು.

**ಪರಿವಾಹಿನ್ ಪರಿವಾಹಿನ್** (ವಿಂ) 1. ನಿಂದಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದವನು, ತಿಳುವ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. ಪರಿ + ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ವಿನ್ಯು" (೩-೨-೧೪೨)। "ಶಿಖಿನ್: ಪರಿವಾಹಿನ್:" ಭೃಂ ೭-೮। 2. ದೋಷಾರೋಪಣೆ ಮಾಡುವವನು, ತಪ್ಪು ಹೊರಿಸುವವನು. 3. ಅಪವಾದವುಳ್ಳವನು. ಪರಿವಾಹೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡಿಪ್" (೪-೧-೫)। -ವಾಹಿನಿ -ವಾಹಿನೀ.

**ಪರಿವಾಹಿನಿ ಪರಿವಾಹಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಏಳು ತಂತಿಗಳುಳ್ಳ ವೀಣೆ. ಪರಿವದತಿ - ಪರಿ + ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಣಿನಿ:" (೩-೨-೭೮)। "ವಿಪಂಚಿ ಸಾ ತು ತನ್ತ್ರೀಭಿ: ಸಪ್ತಭಿ: ಪರಿವಾಹಿನೀ" ಅಮಂ। "ಕಲಯತಾ ವಚಸ: ಪರಿವಾಹಿನೀಸ್ವರಜಿತಾ ರಜಿತಾ ವಶಮಾಯು:" ಮಾಘಂ ೬-೯। 2. ಅಪವಾದವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು.

**ಪರಿವಾಪ ಪರಿವಾಪ** (ಪುಂ) 1. ಜಲಸ್ಥಾನ, ಜಲಾಶಯ. 2. ಅಲವಾಲ, ಮರಗಿಡಗಳ ಬುಡದಲ್ಲಿ ನೀರು ನಿಲ್ಲಲು ಮಾಡಿರುವ ಪಾತಿ. 3. ಪರಿಚಾರಕ, ಸೇವಕ, ಆಳು. ಪರಿ + ವಪ್ + ಣಿಕ್ "ವಪ್" (೩-೩-೧೨೧)। 4. ಮುಂಡನ, ಕ್ಷೌರ. 5. ಬೀಜಬಿತ್ತುವುದು. ಪರಿ + ಡು ವಪ್ (ಬೀಜ-ಸಂತಾನೇ) "ವಪ್" (೩-೩-೧೮)। 6. ಭತ್ತಚಾಮರಾದಿ ವಸ್ತು. "ಪರಿವಾಪಸ್ತು ಪರ್ಯುತೌ ಜಲಸ್ಥಾನೇ ಪರಿಚ್ಛದೇ" ಮೇದಿಂ।

**ಪರಿವಾಪನ ಪರಿವಾಪನ** (ನಂ) ಮುಂಡನ, ಭದ್ರಾಕರಣ, ಕ್ಷೌರ. ಪರಿ + ಡು ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನೇ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ಪರಿವಾಪಿತ ಪರಿವಾಪಿತ** (ವಿಂ) ಕ್ಷೌರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ಡು ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನೇ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಮುಂಡಿತಂ ಪರಿವಾಪಿತಮ್" ಅಮಂ।

**ಪರಿವಾರ ಪರಿವಾರ** (ಪುಂ) 1. ಪರಿಜನ, ಸೇವಕ, ಆಳು. ಪರಿವ್ರಿಯತೇಜೇನ - ಪರಿ + ವ್ರ (ವರಣೇ) "ವ್ರ" (೩-೩-೧೨೧)।

"ಮನುಷ್ಯವಾಹ್ಯಂ ಚತುರಸ್ರಯಾನಮಧ್ಯಾಸ್ಯ ಕನ್ಯಾ ಪರಿವಾರಶೋಭಿ" ರಘುಂ ೬-೧೦। 2. ಕತ್ತಿಯ ಒರೆ. ಕತ್ತಿಯ ಗವಸಣಿಗೆ. "ಪರಿವಾರಾತ್ ಪೃಥಕ್ ಚಕ್ರೇ ಕ್ಷಣ್ಣಶ್ಚಾತ್ಮಾ ಚ ಕೇನಚಿತ್" ಮಾಘಂ ೧೯-೪೯। 3. ಉತ್ತರಿಯ, ಹೊದೆಯುವ ವಸ್ತು. 4. ಭತ್ತಚಾಮರಾದಿ ಗೌರವವಸ್ತು. "ಪರಿವಾರ: ಪ್ರಾವಾರೇಽಪಿ" ವೈಜಂ। "ಪರಿವಾರ: ಪರಿಜನೇ ಕ್ಷಣ್ಣಕೋಶೇ ಪರಿಚ್ಛದೇ" ಮೇದಿಂ। ವಾ ದೀರ್ಘ: (೬-೩-೧೨೨)। ಪರಿವಾರ: ಪರಿವಾರ:

**ಪರಿವಾರಣ ಪರಿವಾರಣ** (ನಂ) 1. ಹೊದಿಕೆ. 2. ಪರಿಚಾರಕ, ಸೇವಕ, ಆಳು.

**ಪರಿವಾರಿತ ಪರಿವಾರಿತ** (ವಿಂ) 1. ಸುತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುತ್ತಲೂ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ವ್ರ (ವರಣೇ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ವಹತಿ ಗಿರಿಯಂ ವಿಲಂಬಿ-ವಿಲಂಬಿಪರಿವಾರಿತವಾರಣೇಂದ್ರಲೀಲಾಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೨೦। 2. ಸುತ್ತಲೂ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪರಿವಾರಿತ: ಪರಿತ ಕೃಷ್ಣಗಣೇ-ಸ್ತಿಮಿರೌಪರಾಕ್ಷಸಕುಲಂ ವಿಭಿದೇ" ಮಾಘಂ ೯-೩೧।

**ಪರಿವಾಹ ಪರಿವಾಹ** (ಪುಂ) 1. ಕೆರೆಯ ಕೋಡಿ, ಹೆಚ್ಚಾದ ನೀರು ಕೆರೆಯಿಂದ ಹೊರಗೆ ಹೋಗಲು ಮಾಡಿರುವ ದಾರಿ, ಜಲ ನಿರ್ಗಮನ ಮಾರ್ಗ. ಪರಿ + वह (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ವಹ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ಪ್ರಲಯೋಲ್ಲಸಿತಸ್ಯ ವಾರಿಧೇ: ಪರಿವಾಹೋ ಜಗತ: ಕರೋತಿ ಕಿಮ್" ಮಾಘಂ ೧೬-೫೧। 2. ಕೆರೆಯಿಂದ ಹೆಚ್ಚಾದ ನೀರು ಹೊರಗೆ ಹೋಗುವುದು, ಹೆಚ್ಚಾದ ಕೆರೆಯ ನೀರು ಹೊರಗೆ ಹರಿಯುವುದು. ಪರಿ + वह ಭಾವೇ "ವಹ್" (೩-೩-೧೮)। ವಾ ದೀರ್ಘ: (೬-೩-೧೨೨)। ಪರಿವಾಹ: ಪರಿವಾಹ: "ಪೂರೋಪಿಡೇ ತದಾಕಸ್ಯ ಪರಿವಾಹ: ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಾ" ತಂ ರಾಂ ೩-೨೯। 3. ರಾಜನಿಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ವಸ್ತು. "ಪರಿವಾಹೋ ಜಲೋಚ್ಛಾಸೇ ಮಹಿಮಾಂವಯವಸ್ತುನಿ" ಮೇದಿಂ।

**ಪರಿವಾಹಿತ ಪರಿವಾಹಿತ** (ವಿಂ) ಜಲನಿರ್ಗಮನಮಾರ್ಗವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿವಾಹ "ಇತ್" (೪-೨-೩೬)। "ಮದನರಸಮಹೀನಪೂರ್ಣನಾಭಿಹೃದಪರಿವಾಹಿತರೋಮರಾಜಯಸ್ತಾ:" ಮಾಘಂ ೭-೨೩।

**ಪರಿವಿತ್ತ ಪರಿವಿತ್ತ** (ಪುಂ) ತಮ್ಮನು ಪಡುವೆ ಮಾಡಿ ಕೊಂಡರೂ ಪಡುವೆಯಾಗದ ಅಣ್ಣ. ಪರಿ + ವಿದ (ವಿಚಾರಣೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। ನಿಷ್ಠಾತಸ್ಯ ವಾ ನ: (೮-೨-೫೬)। -ವಿತ್ತ: -ವಿತ್ತ: ಪರಿ + ವಿದ್ (ಲಾಭೇ) "ಕ್ತಿಕ್" (೩-೩-೧೭೪)। -ವಿತ್ತಿ: -ವಿತ್ತಿ: "ಪರಿವಿತ್ತಾಽ-ನುಜೇಜ್ಞೇ ಕೃತದಾರಪರಿಗ್ರಹ: ಪರಿವಿತ್ತಸ್ತು ತಜ್ಜಯಾನ್ ಪರಿವಿತ್ತಿ: ಕುರೀ ಚ ಸ:" ವೈಜಂ। ["ಪರಿವಿತ್ತ" ಪದದಲ್ಲಿ



ನೋಡಿ]. "ದಾರಾಗ್ನಿಹೋತ್ರಸಂಯೋಗಂ ಕುರುತೇ ಯೋಜ್ಯೇ ಸ್ಥಿತೇ |

ಪರಿವೇತ್ತಾ ಸ ವಿಜ್ಞೇಯಃ ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು ಪೂರ್ವಜಃ" ಮನುಂ ೩-೧೭೧ |

**ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು** (ವಿಂ) ಅಣ್ಣನಿಗಿಂತಲೂ ಮುಂಚೆ ಮದುವೆಯಾಗುವವನು. ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು ಜ್ಯೇಷ್ಠಂ ಭ್ರಾತರಂ ವಿವರಿಸ್ತು ಭಾರ್ಯಾದಿಕಂ ಲಬಹತೇ - ಪರಿ + ವಿವರಿಸ್ತು (ಲಾಭೇ) "ಶತ" (೩-೨-೧೨೪) |

**ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು** (ವಿಂ) 1. ಅವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಸುತ್ತು ಗಟ್ಟಿಪಟ್ಟು. ಪರಿ + ವೀ (ಗತಿವ್ಯಾಪ್ತಾದೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಕೃತಾಸ್ಪದಾ ಭೂಮಿಭೃತಾಂ ಸಹಸ್ರೇಽದನ್ವ-ದ್ಭಃ ಪರಿವಿವರಿಸ್ತುಮಿತಿಃ" ಮಾಘಂ ೩-೩೪ | 2. ಸುತ್ತುಲೂ ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಹರಡಿರುವ. ಕೃತಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | "ಪರಿವಿವರಿಸ್ತುಮಿತಿಃ ಸ್ತುತಿರಿದನ್ವ-ದ್ಭಃ ಸುತ್ತುಲೂ" ಕಿರಾಂ ೧೨-೧೮ |

**ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು** (ವಿಂ) 1. ಸುತ್ತುಲೂ, ಅವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು - ಪರಿ + ವೀ (ಆವರಣೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಅನುಭಾವವಿಶೇಷಾತ್ ಸೇನಾಪರಿವಿವರಿಸ್ತು" ರಘುಂ ೧-೩೭ | 2. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ, ಸುತ್ತುಲೂ ಹರಡಿರುವ.

**ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುತ್ತುವರೆಯುವುದು, ಸುತ್ತು ಗಟ್ಟಿಪಡುವುದು. ಪರಿ + ವೀ (ವರಣೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) |

**ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು** (ವಿಂ) 1. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತಿರುಗಿದ ಹಿಮ್ಮುಖವಾದ. ಪರಿ + ವೀ (ವರಣೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | "ಕಥಮಪಿ ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು ನಿರ್ದಯಾನ್ವಾ ಕಿಲ ಸ್ತ್ರೀ ಮುಕ್ತುಲಿತನಯನೇ-ವಾಶಿಲಿಪ್ಯತಿ ಪ್ರಾಣನಾಥಮ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೯ | 2. ಬದಲಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ವಿನಿಮಯಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಸುತ್ತುಗಟ್ಟಿ ಲ್ಪಟ್ಟು.

**ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿನಿಮಯ, ಬದಲಾವಣೆ. ಪರಿ + ವೀ (ವರಣೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | 2. ಸುತ್ತು ವುದು, ತಿರುಗುವುದು. 3. ಸುತ್ತುವರೆಯುವುದು, ಸುತ್ತು ಗಟ್ಟಿಪಡುವುದು. 4. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತಿರುಗುವುದು, ಹಿಮ್ಮುಖ ವಾಗುವುದು. "ಅಭಜತ ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು ಸಾಥ ಪರ್ಯಸ್ತಹಸ್ತಾ ರಜನಿರವನತೇಂದ್ರಜ್ಜಯಾಧೋಮುಖೀವ" ಮಾಘಂ ೧೦-೯೧ | 5. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಅಲ್ಪ ಮತ್ತು ಅಧಿಕ ವಸ್ತುಗಳ ಪರಸ್ಪರವಿನಿಮಯ (ಬದಲಾವಣೆ) ವರ್ಣನೆಯು "ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು" ಅಲಂಕಾರವಾಗುವುದು. ಅಲ್ಪ ವಸ್ತು ವ್ಯಯದಿಂದ ಅಧಿಕವಸ್ತುಲಾಭ, ಅಧಿಕವ್ಯಯದಿಂದ ಅಲ್ಪವಸ್ತುಲಾಭ ಸಮವ್ಯಯದಿಂದ ಸಮವಸ್ತುಲಾಭ ವರ್ಣನೆಯಿರುವಲ್ಲಿ ಈ ಅಲಂಕಾರ. "ಪರಿವಿವರಿಸ್ತುವಿನಿಮಯೋ

ನ್ಯುನಾಭ್ಯಾಧಿ ಪರ್ಯೋಮಯಃ" ಚಂದ್ರಾಂ | "ಜಗ್ರಾಹೈಕಂ ಶರಂ ಮುಕ್ತವ್ ಕಡಾಕ್ಷಾನ್ ಸ ರಿಪುಶ್ರಿಯಾಮ್" ಒಂದೇ ಬಾಣಪ್ರಯೋಗದಿಂದ ಶತ್ರು (ರಾಜ) ಲಕ್ಷ್ಮಿಯ ಕಟಾಕ್ಷಗಳ ಪ್ರಾಪ್ತಿವರ್ಣನೆಯಿರುವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ "ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು" ಎಂಬ ಅಲಂಕಾರವು. "ದತ್ವಾ ಕಡಾಕ್ಷಮೇಣಾಕ್ಷೀ ಜಗ್ರಾಹ ಹೃದಯಂ ಮಮ | ಮಯಾ ತು ಹೃದಯಂ ದತ್ವಾ ಗೃಹೀತೌ ಮದನಜ್ವರಃ" ಸಾಂ ೬೦ | ಇಲ್ಲಿ ಸಮ ಮತ್ತು ನ್ಯೂನ ವಸ್ತುಗಳ ವಿನಿಮಯವು ವರ್ಣಿತವಾಗಿದೆ. 6. ಬದಲಾಗುವುದು, ಪ್ರತಿಯಾಗುವುದು, ಒಂದಕ್ಕೆ ಬದಲಾಗಿ ಮತ್ತೊಂದನ್ನು ಸೇರಿಸುವುದು. ಸಮಾನವಾದ ಅರ್ಥವುಳ್ಳ ಭಿನ್ನವಾದ ಅನುಪೂರ್ವಿಯ ಶಬ್ದಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸುವುದು ಪರಿವಿವರಿಸ್ತುಯಾಗುವುದು. ಜಲಧಿ ಪದದಲ್ಲಿರುವ ಜಲ ಪದದ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ತೋ ನೀರ ಮುಂತಾದ ಪದಗಳ ಬದಲಾವಣೆಯು ಶಬ್ದಪರಿವಿವರಿಸ್ತುಯೆನಿಸುವುದು. ತೋಧಿಃ ನೋಧಿಃ ಇತ್ಯಾದಿ ಪದಗಳು ಅರ್ಥ ವ್ಯತ್ಯಾಸವಿಲ್ಲದೆ ಜಲಧಿ ಪದದ ಅರ್ಥವನ್ನೇ ಕೊಡುವುವು. ಇದಕ್ಕೆ "ಪರಿವಿವರಿಸ್ತುಸಹಃ" ಎಂಬ ಅರ್ಥ.

**ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬೆಳವಣಿಗೆ, ದೊಡ್ಡ ದಾಗುವುದು. 2. ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವುದು, ಹೆಚ್ಚುವುದು, ಅಧಿಕವಾಗುವುದು. ಪರಿ + ವೀ (ವೃದ್ಧೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) |

**ಪರಿವೇತ್ತ ಪರಿವೇತ್ತ** (ವಿಂ) ಅಣ್ಣನಿಗಿಂತ ಮೊದಲು ಮದುವೆಯಾದ ತಮ್ಮ. ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು ಜ್ಯೇಷ್ಠಂ ಭ್ರಾತರಂ ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು ಭಾರ್ಯಾ ಲಬಹತೇ - ಪರಿ + ವಿವರಿಸ್ತು (ಲಾಭೇ) "ಶತ" (೩-೨-೧೨೪) | "ಪರಿವೇತ್ತಾನುಜೋನ್ಮತೇ ಜ್ಯೇಷ್ಠೇ ದಾರಪರಿವಿವರಿಸ್ತು" ಅಮಂ | "ಪರಿವೇತ್ತಾರಮಾತ್ಮಾನಂ ಮೇನೇ ಸ್ವೀಕರಣಾದ್ಭುವಃ" ರಘುಂ ೧೨-೧೬ | [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಪರಿವೇತ್ತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].

**ಪರಿವೇದನ ಪರಿವೇದನ** (ನಂ) 1. ಅಣ್ಣನಿಗಿಂತ ಮೊದಲು ತಮ್ಮನು ಮದುವೆಯಾಗುವುದು. ಪರಿ + ವಿವರಿಸ್ತು (ಲಾಭೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | ಅಣ್ಣನು ನಪುಂಸಕನಾಗಿದ್ದರೆ ದೇಶಾಂತರದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿದ್ದರೆ ಪತಿತನಾಗಿದ್ದರೆ ಭಿಕ್ಷಾಟನೆ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದರೆ ಮತ್ತು ಯೋಗದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾಗಿದ್ದರೆ ಇಂತಹ ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲಿ ಪರಿವೇದನ ದೋಷವಿಲ್ಲ, "ಕಲಿವೇ ದೇಶಾಂತರಗತೇ ಪತಿತೇ ಮಿಶ್ರಕೇಽಪಿ ಚ | ಯೋಗಶಾಸ್ತ್ರಾಭಿವ್ಯಕ್ತೇ ಚ ನ ದೋಷಃ ಪರಿವೇದನೇ" ಉದಾಹರಣಂ | 2. ಸಂಪೂರ್ಣ ಜ್ಞಾನ, ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲೂ ಸರಿಯಾದ ತಿಳಿವಳಿಕೆ. "ಸ ಹಿ ಧರ್ಮಃ ಸುಪರ್ಯಾಪ್ತೌ ಬ್ರಹ್ಮಣಃ ಪರಿವೇದನೇ | ನ ಶಕ್ಯಂ ತನ್ಮಯಾ ಭೂಯಸ್ತಥಾ ವಕ್ತುಮಶೇಷತಃ" ಭಾಂ ಆಶ್ವಂ ೧೭-೧೨ | 3. ಲಾಭ ಸಂಪಾದನೆ. 4. ಅಗ್ನಾಧಾನ. "ಪರಿವಿವರಿಸ್ತು-



ತಾನುಜೇನುಹೆ ಪರಿವೇದನಮೇವ ಚ "ಮನುಂ ೧೧-೬೦ 5. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ವ್ಯಾಪ್ತವಾಗಿರುವುದು. 6. ವೇದನೆ, ನೋವು.

**ಪರಿವೇದನೀಯಾ ಪರಿವೇದನೀಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಣ್ಣನಿಗಿಂತ ಮುಂಚೆ ಮದುವೆಯಾದ ತಮ್ಮನ ಹೆಂಡತಿ. ಪರಿವಿಧತೆ— ಪರಿ + ವಿಧ್ಲ್ (ಲಾಭ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) 1.

**ಪರಿವೇದಿನಿ ಪರಿವೇದಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಣ್ಣನಿಗಿಂತ ಮುಂಚೆ ಮದುವೆಯಾದ ತಮ್ಮನ ಹೆಂಡತಿ. ಪರಿವೇದೋಸ್ಯಾ ಅಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) 1. "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪) 1.

**ಪರಿವೇಶ ಪರಿವೇಶ (ಪುಂ)** ಪರಿಧಿ, ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರ ಸುತ್ತಲೂ ಕಾಣಿಸುವ ವರ್ತುಲಾಕಾರದ ಪ್ರಭೆ. ಪರಿತೊ ವಿಶತಿ—ಪರಿ+ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) 1. "ವಾತೇನ ಮಂಡಲಿಭೂತಾ: ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರಮಸೌ: ಕರಾ: 1. ಮಾಲಾಭಾ ವ್ಯೋಮ್ನಿ ತನುತೇ ಪರಿವೇಶ: ಪ್ರಕೀರ್ತಿತ:" 1.

**ಪರಿವೇಷ ಪರಿವೇಷ (ಪುಂ)** 1. ಪರಿಧಿ, ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರ ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡಿರುವ ವರ್ತುಲಾಕಾರದ ಪ್ರಭೆ. ಪರಿತೊ ವಿಷ್ಯತೆ—ಪರಿ+ವಿಷ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಘಬ್" (೩-೩-೧೮) 1. "ಲಕ್ಷ್ಯತೇ ಸ್ಮ ತದನಂತರಂ ರವಿಬೃಹದ್ಭೀಮಪರಿವೇಷಮಂಡಲ:" ರಘುಂ ೧೧-೪೯ 1. "ಸಮ್ಮುಚ್ಚಿತಾ ರವಿಬೃಹದ್ಭೀಮಪರಿವೇಷಮಂಡಲಿಭೂತಾ: 1. ನಾನಾವರ್ಣಾಕೃತಯಸ್ತನ್ವಶ್ರೇ ವ್ಯೋಮ್ನಿ ಪರಿವೇಷಾ:" ಬೃಹತ್ಸಂ ೩೪-೧ 1. 2. ಮಂಡಲ, ವೃತ್ತರೇಖೆ, ಗುಂಡಗಿರುವ ಗೆರೆ. "ಚಂದ್ರಾಕೃತಿನಿ ಗಜಮಂಡಲಿಕಾಭಿರುಚ್ಚೇರ್ಣಿಲಾಭ-ಪಙ್ಕ್ತಿಸ್ತರಿವೇಷಮಿವಾಧಿಜಗ್ಮು:" ಮಾಘಂ ೪-೪೨ 1. 3. ಊಟ ಬಡಿಸುವುದು. 4. ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರ ಬಿಂಬ. 5. ಒಂದು ವಲಯದ ಸುತ್ತಳತೆ. 6. ಎರಡು ರಜ್ಜುವಿನ ಅಳತೆ, 384 ಅಂಗುಲಗಳ ಅಳತೆ. "ಕಿಷ್ಕು: ಸ್ಯಾದವಟೋ ಹಸ್ತಶ್ಚತು-ವಿಂಶತಿರಡ್ಗುಲಾ: 1. ಅಷ್ಟಹಸ್ತಾ ತು ರಜ್ಜು: ಸ್ಯಾತ್ ಪರಿವೇಷೋ ದ್ವಿರಜ್ಜುಕ:" ವೇಜಂ 1.

**ಪರಿವೇಷಕ ಪರಿವೇಷಕ (ಪುಂ)** 1. ಊಟ ಬಡಿಸುವವನು. ಪರಿವೇಷತಿ—ಪರಿ+ವಿಷು (ಸೇವನೆ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) 1. "ಘನೇರಮಿಷಾಂ ಪರಿವೇಷಕೇಜನೇರವಿಷಿ ವರ್ಷೋಪಲಗೋಲಕಾವಲಿ" ನೈಷಂ ೧೬-೧೦೦ 1. 2. ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರ ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡಿರುವ ಮಂಡಲಾಕಾರದ ಪ್ರಭೆ. "ಗಜಚ್ಚಾಯಾಪ್ಯಥಾ-ಕೇಂದ್ರೋ: ಪರಿಧಿ: ಪರಿವೇಷಕ:" ವೇಜಂ 1. 3. ಸುತ್ತುಗಟ್ಟುವ.

**ಪರಿವೇಷಣ ಪರಿವೇಷಣ (ನಂ)** 1. ಊಟ ಬಡಿಸುವುದು. ಪರಿ+ವಿಷು (ಸೇವನೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) 1. "ಪರಿ-ವೇಷಣಂ ವರ್ಧನಂ ಚ ಪ್ರತೀಕ್ಷಾ ಪತತೋಗ್ರಹ:" ವೇಜಂ 1. 2. ಸುತ್ತು ಗಟ್ಟುವುದು. 3. ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರ ಸುತ್ತಲೂ ಕಿರಣಗಳು ಹರಡುವುದು. 4. ಒಂದು ಮಂಡಲದ ಸುತ್ತಳತೆ.

**ಪರಿವೇಷಿಕಾ ಪರಿವೇಷಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಊಟ ಬಡಿಸುವ ಹೆಂಗಸು. ಪರಿವೇಷತಿ—ಪರಿ + ವಿಷು (ಸೇವನೆ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪) 1. ಈ ಹೆಂಗಸಿನ ಅಕ್ಕಣ: ಸ್ನಾನಮಾಡಿ ಶುಭ್ರವಸ್ತ್ರವನ್ನು ಉಟ್ಟು ದೇಹಕ್ಕೆ ಸುಗಂಧಪುಡಿಯು ಲೇಪನಮಾಡಿ ನೋಡಲು ಸುಂದರಿಯಾಗಿಯೂ ಸುವಾಸನೆಯು ಪುಷ್ಪ ಗಳನ್ನು ಮುಡಿದುಕೊಂಡು ಬಾಯಿಂದ ಕರ್ಪೂರಾದಿ ಸೌರಭವನ್ನು ಹೊರಹೊಮ್ಮಿಸುತ್ತ ಮಂದಹಾಸಯುಕ್ತ ಛಾಗಿಯೂ ಇರುವ ಹೆಂಗಸು ರಾಜನಿಗೆ ಪರಿವೇಷಣ ಮಾಡಬೇಕು. "ಸ್ನಾತಾ ವಿಶುದ್ಧವಸನಾ ನವಧೂಪಿತಾಙ್ಗಿ ಕರ್ಪೂರಸಾರಭಮುಖಿ ನಯನಾಭಿರಾಮಾ 1. ಬಿಂಬಾಧರಾ ಶಿರಸಿ ಬದ್ಧಸುಗಂಧಪುಷ್ಪಾ ಮಂದಸ್ಮಿತಾ ಕ್ಷಿತಿಭೃತಾಂ ಪರಿವೇಷಿಕಾ ಸ್ಯಾತ್" 1. "ನಿರೀಕ್ಷ್ಯ ರಮ್ಯಾ: ಪರಿವೇಷಿಕಾ ಧ್ರುವಮ್" ನೈಷಂ ೧೬-೧೦೪ 1.

**ಪರಿವೇಷ್ಠನ ಪರಿವೇಷ್ಠನ (ನಂ)** 1. ಸುತ್ತುಗಟ್ಟುವುದು, ಅವರಿಸುವುದು. ಪರಿ + ವೇಷ್ಠ (ವೇಷ್ಠನೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) 1. 2. ಗಾಯಕ್ಕೆ ಪಟ್ಟಿ ಕಟ್ಟುವುದು.

**ಪರಿವೇಷ್ಠಿತ ಪರಿವೇಷ್ಠಿತ (ವಿಂ)** ಸುತ್ತಲೂ ಅವರಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟು, ಸುತ್ತುಗಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟು. ಪರಿ + ವೇಷ್ಠ (ವೇಷ್ಠನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) 1. "ಪರಿವೇಷ್ಠಿತಮೂರ್ತಯಶ್ಚ ಮೂಲಾ-ದುರಗೇರಾಶಿರಸ: ಸರತನಪುಷ್ಪೇ:" ಮಾಘಂ ೨೦-೪೯ 1.

**ಪರಿವೇಷ್ಠ ಪರಿವೇಷ್ಠ (ಪುಂ)** ಊಟ ಬಡಿಸುವವನು. "ಮಠತ: ಪರಿವೇಷ್ಠಾರೋ ಮಠತಸ್ಯಾವಸನ್ ಗೃಹೇ" ಔತಂ ಬ್ರಾಂ 1.

**ಪರಿವ್ಯಾಧ ಪರಿವ್ಯಾಧ (ಪುಂ)** 1. ನೀರುಹಚ್ಚಿ ಗಿಡ. 2. ಬೆಟ್ಟಕಣಗಿಲೆ ಗಿಡ. ಪರಿವಿಧ್ಯತೆ—ಪರಿ + ವ್ಯಾಧ (ತಾಡನೆ) "ಘಬ್" (೩-೩-೧೯) 1. "ಪರಿವ್ಯಾಧಸ್ತು ಪುಸಿ ಸ್ಯಾದೇತಸೇ ಚ ದ್ರುಮೋತ್ಪಲೇ" ಮೇದಿಂ 1.

**ಪರಿವ್ರಜ್ಯಾ ಪರಿವ್ರಜ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸಂನ್ಯಾಸ, ಸರ್ವಸಂಗ ಪರಿತ್ಯಾಗ, ವೈರಾಗ್ಯದಿಂದ ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುವುದರಲ್ಲಿ ನಿಷ್ಠೆ. ಪರಿ + ವ್ರಜ (ಗತೌ) "ಕ್ಯಪ್" (೩-೩-೯೮) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪) 1. 2. ಅತ್ತಿತ್ತ ತಿರುಗುವುದು, ಅಲ್ಲಿಂದಿಲ್ಲಿಗೆ ಅಲೆಯುವುದು. "ವಾಸಾಂಸಿ ಮೃತವೇಲಾನಿ ಭಿನ್ನಭಾಂಡೇಷು ಭೋಜನಮ್ 1. ಕಾಣ್ಯಾಸಮಲಕ್ಷ್ಮಾರ: ಪರಿವ್ರಜ್ಯಾ ಚ ನಿಯತಾ:" ಮನುಂ ೧೦-೪೨ 1.

**ಪರಿವ್ರಾಜ್ ಪರಿವ್ರಾಜ್ (ಪುಂ)** ಸಂನ್ಯಾಸಿ, ಭಿಕ್ಷು, ಸರ್ವಸಂಗ ಪರಿತ್ಯಾಗಮಾಡಿ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿರುವವನು. ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ ಸರ್ವಂ ವ್ರಜತಿ—ಪರಿ + ವ್ರಜ (ಗತೌ) "ಕ್ವಿಪ್" ದೀರ್ಘ (೩ಂ ೨-೪೯) 1.



**ಪರಿವಾಜಕ ಪರಿವಾಜಕ** (ಪುಂ) ಸಂನ್ಯಾಸಿ, ಭಿಕ್ಷು, ತುರಿ ಯಾಶ್ರಮದಲ್ಲಿರುವವನು. ಪರಿ+ವಜ (ಗತೌ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಸ ಪರಿವಾಜಕಚ್ಚವಾ ಮಹಾಕಾಯಶಿರೋ-ಧರಃ। ಪ್ರತಿಪೇದೇ ಸ್ವಕಂ ರೂಪಂ ರಾವಣೋ ರಾಕ್ಷಸಾಧಿಪಃ" ರಾಮಾಂ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಪರಿವಾಜಿಕಾ ಪರಿವಾಜಿಕಾ.

**ಪರಿಶಿಷ್ಟನೀಯ ಪರಿಶಿಷ್ಟನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಸಂಶಯಪಡಲು ಅಸ್ಪದನಾದವನು, ವಿಶ್ವಾಸವಿಡಲು ಅರ್ಹನಲ್ಲದವನು, ನಂಬಿರಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದವನು. ಪರಿ+ಶಕಿ (ಶಿಕ್ಷಾಯಾಮ್) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬)। "ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಸುಚಿಂತಿತಮಪಿ ಪ್ರತಿ-ಚಿಂತನೀಯಮಾರಾಧಿತೋಽಪಿ ನೃಪತಿಃ ಪರಿಶಿಷ್ಟನೀಯಃ। ಅಹ್ಲೆ ಸ್ಥಿತಾಪಿ ಯುವತಿಃ ಪರಿರಕ್ಷಣೀಯಾ ಶಾಸ್ತ್ರೇ ನೃಪೇ ಚ ಯುವತೌ ಚ ಕುತೋ ವಶಿತ್ವಮ್" ಉದ್ಭಟಃ। "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೧೬)। -ಶಿಕ್ಷಿತವ್ಯಃ -ಶಂಕಿತವ್ಯಃ. 2. ಭಯಪಡಲು ಅಸ್ಪದ ನಾದವನು.

**ಪರಿಶಿಷ್ಟಮಾನ ಪರಿಶಿಷ್ಟಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಸಂಶಯಪಡು ತ್ತಿರುವವನು. ಪರಿ+ಶಕಿ (ಶಿಕ್ಷಾಯಾಮ್) "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)। 2. ಹೆದರುತ್ತಿರುವ.

**ಪರಿಶಿಷ್ಟಿತ ಪರಿಶಿಷ್ಟಿತ** (ವಿಂ) 1. ಸಂದೇಹಪಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ+ಶಕಿ (ಶಿಕ್ಷಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಹೆದರಿದ, ಭಯಗೊಂಡ. "ಚರತಃ ಕಿಲ ದುಶ್ಚರಂ ತಪಃ ತೃಣಬಿಂದುಃ ಪರಿಶಿಷ್ಟಿತಃ ಪುರಾ" ಝಂ ೭-೭೯।

**ಪರಿಶಿಷ್ಟ ಪರಿಶಿಷ್ಟ** (ನಂ) 1. ಉಳಿದಿರುವ ಗ್ರಂಥಭಾಗ, ಗ್ರಂಥದಲ್ಲಿ ಸೇರದೆ ಬಿಟ್ಟುಹೋಗಿರುವ ಉಳಿದ ಭಾಗ. ಪರಿತಃ ಶಿಷ್ಟಮ್ — ಪರಿ+ಶಿಷ (ಅಸರ್ವೋಪಯೋಗೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। ಛಾಂದೋಗ್ಯಪರಿಶಿಷ್ಟಮ್, ಗೋಖಿಲಪರಿಶಿಷ್ಟಮ್, ಆಶ್ವಲಾಯನಗೃಹ್ಯಪರಿಶಿಷ್ಟಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ. (ವಿಂ) 2. ಅವಶಿಷ್ಟವಾದ, ಉಳಿದಿರುವ, ಮಿಕ್ಕಿರುವ.

**ಪರಿಶೀಲನ ಪರಿಶೀಲನ** (ನಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ವಿಮರ್ಶಿಸು ವುದು, ಸರಿಯಾಗಿ ವಿಚಾರಮಾಡಿ ನೋಡುವುದು. ಪರಿ+ಶೀಲ (ಸಮಾಧೌ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಸ್ಪರ್ಶ ಮಾಡುವುದು, ಮುಟ್ಟುವುದು. "ಲಲಿತಲವಂಗಲತಾ-ಪರಿಶೀಲನಕೋಮಲಮಲಯಸಮೀರೇ" ಗೀತಗೋಂ ೧।

**ಪರಿಶುದ್ಧ ಪರಿಶುದ್ಧ** (ವಿಂ) 1. ಶುದ್ಧವಾದ, ಪವಿತ್ರವಾದ, ದೋಷರಹಿತವಾದ. ಪರಿ+ಶುಧ (ಶೌಚೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ಸುಕ್ತಃ ಪರಿಶುದ್ಧ ಆಗಮಃ ಕ್ರುತೇ ದೀಪ ಇವಾರ್ಥದರ್ಶನಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೩೩। 2. ಸಾಲ ತೀರಿಸಿ ಬಿಡುಗಡೆ ಹೊಂದಿದ. 3. ಶುಚಿಯಾದ, ಕಲ್ಮಷವಿಲ್ಲದ. 4. ತಿಳಿಯಾದ, ಕಶ್ಮಲವಿಲ್ಲದ. 5. ಅಪರಾಧವಿಲ್ಲದ.

**ಪರಿಶುದ್ಧಿ ಪರಿಶುದ್ಧಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೋಷವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಕಳಂಕವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಪರಿ+ಶುಧ (ಶೌಚೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। 2. ಶುಚಿ, ನೈರ್ಮಲ್ಯ. 3. ಅಪರಾಧ ವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 4. ಋಣವಿಮೋಚನೆ. 5. ಪವಿತ್ರ ವಾಗಿರುವಿಕೆ.

**ಪರಿಶುಷ್ಕ ಪರಿಶುಷ್ಕ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಒಣಗಿರುವ. ಪರಿ+ಶುಷ (ಶೋಷಣೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ಕಃ" (೮-೨-೫೧)। 2. ಬಾಡಿರುವ. 3. ಬತ್ತಿಹೋಗಿರುವ, ತೇವವಿಲ್ಲದ. (ನಂ) 4. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಬೇಯಿಸಿ ಶುಷ್ಪ ಜೀರಿಗೆ ಮಸಾಲೆ ಹಾಕಿದ ಮಾಂಸ. "ಪರಿಶುಷ್ಕಂ ಪುನರ್ಧತೇ। ಸಿಕ್ತವಾ ಮಾಂಸಂ ಮೃದ್ವಣಾಮ್ಬುಪಕ್ವಂ ಯುಕ್ತಂ ಕಣಾದಿಭಿಃ" ವೈಜಂ।

**ಪರಿಶುಷ್ಯತ್ ಪರಿಶುಷ್ಯತ್** (ವಿಂ) ಒಣಗುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ+ಶುಷ (ಶೋಷಣೇ) "ಶ್ತುತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಚಿರಮಪಿ ಕಲಿತಾನ್ಯಪಾರಯಂತ್ಯಾ ಪರಿಗದಿತುಂ ಪರಿಶುಷ್ಯತಾ ಮುಕ್ತೇನ" ಕಿರಾಂ ೧೦-೪೮।

**ಪರಿಶೋಷ ಪರಿಶೋಷ** (ಪುಂ) ಉಳಿಕೆ, ಶೇಷ. ಪರಿ+ಶಿಷ (ಅಸರ್ವೋಪಯೋಗೇ) "ಘನ್" (೩-೩-೧೮)। "ಪರಿಶೋಷಂ ನ ನಾಮಾಪಿ ಸ್ಥಾಪಯಿಷ್ಯತಿ ತೇ ವಿಮುಃ" ಭट्टಿಂ ೮-೯೧।

**ಪರಿಶೋಧನ ಪರಿಶೋಧನ** (ನಂ) 1. ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು, ದೋಷರಹಿತವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು, ತಪ್ಪುಗಳನ್ನು ತಿದ್ದಿ ಸರಿಪಡಿಸುವುದು. ಪರಿ+ಶುಧ (ಶೌಚೇ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು, ನಿರ್ಮಲವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. 3. ಸಾಲದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡುವುದು, ಋಣ ವಿಮೋಚನೆ.

**ಪರಿಶೋಧನೀಯ ಪರಿಶೋಧನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಪ್ಪು ತಿದ್ದಬೇಕಾದ. 2. ನಿರ್ಮಲವಾಗಿ ಮಾಡ ಬೇಕಾದ.

**ಪರಿಶೋಧಿತ ಪರಿಶೋಧಿತ** (ವಿಂ) 1. ತಪ್ಪುಗಳನ್ನು ತಿದ್ದಿ ಸರಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ದೋಷರಹಿತವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ+ಶುಧ (ಶೌಚೇ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ನಿರ್ಮಲವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಋಣದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪರಿಶೋಷ ಪರಿಶೋಷ** (ಪುಂ) ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಒಣಗು ವುದು. ಪರಿ+ಶುಷ (ಶೋಷಣೇ) "ಘನ್" (೩-೩-೧೮)। "ವಾಯ್ವರ್ಕಪರಿಪೀತಾಮ್ಬುಧಿಪರಿಮಲಾನಪಕ್ವಜಃ। ತಡಾಗ ಇವ ಕಾಲೇನ ಪರಿಶೋಷಂ ಗಮಿಷ್ಯತಿ" ರಾಮಾಂ। "ನ ಸ್ಮ ನಯತಿ ಪರಿಶೋಷಮಃ ಸುಸಹಂ ಬಭೂವ ನ ಚ ಸಿದ್ಧತಾಪಸೈಃ" ಕಿರಾಂ ೧೨-೧೬।



**ಪರಿಶೋಷಣ ಪರಿಶೋಷಣ** (ನಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಒಣಗುವುದು, ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಒಣಗುವಿಕೆ. ಪರಿ + ಶುಷ (ಶೋಷಣ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಒಣಗಿಸುವಿಕೆ. ಪರಿ + ಶುಷ + ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) ।

**ಪರಿಶೋಷಣೀಯ ಪರಿಶೋಷಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಒಣಗಿಸಬೇಕಾದ. ಪರಿ + ಶುಷ (ಶೋಷಣ) + ಣಿच् "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) । "ತವ್ಯ:" (3-1-96) । -ಶೋಷಯಿತವ್ಯ: -ಶೋಷಯಿತವ್ಯ: 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಒಣಗಬೇಕಾದ. ಪರಿ + ಶುಷ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) । "ತವ್ಯ:" (3-1-96) । -ಶೋಷಯ: -ಶೋಷಯ: 2.

**ಪರಿಶ್ರಮ ಪರಿಶ್ರಮ** (ಪುಂ) 1. ಆಯಾಸ, ದಣವು, ಬಳಲಿಕೆ. ಪರಿ + ಶ್ರಮ್ (ತಪಸಿ ಖೇದೇ ಚ) "ಘ್" (3-3-114) । "ಸ ಮನ್ಯರಾವಲಿಗತಪೀವರಸ್ತನಿ: ಪರಿಶ್ರಮಕಲಾಂತವಿಲೋಚನೋತ್ಪಲಾ:" ಕಿರಾಂ 4-17 । 2. ದುಡಿಮೆ, ಮಿತಿಮೀರಿದ ಕೆಲಸ, ಕಠಿಣವಾದ ವ್ಯಾಸಂಗ, ಸತತವಾದ ಅಭ್ಯಾಸ. "ಆಯೇ ಕೃತಪರಿಶ್ರಮೋಽಸ್ಮಿ ಚತು:ಪೃಷ್ಠಞ್ಜೇ ಜ್ಯೋತಿ:ಶಾಸ್ತ್ರೇ" ಮುद्रಾಂ 1 ।

**ಪರಿಶ್ರಯ ಪರಿಶ್ರಯ** (ಪುಂ) 1. ಸಭೆ, ಒಟ್ಟಾಗಿ ಸೇರುವುದು. ಪರಿ + ಶ್ರಿನ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಅಚ್" (3-3-114) । 2. ಆಶ್ರಯ, ಶರಣಾಲಯ. ಪರಿ + ಶ್ರಿನ್ ಭಾವೇ "ಅಚ್" ।

**ಪರಿಶ್ರಯಣ ಪರಿಶ್ರಯಣ** (ನಂ) 1. ಸಭೆ ಸೇರುವುದು. 2. ಸುತ್ತುಗಟ್ಟುವುದು. ಪರಿ + ಶ್ರಿನ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) ।

**ಪರಿಶ್ರಾಂತ ಪರಿಶ್ರಾಂತ** (ವಿಂ) ದಣದಿರುವ, ಬಳಲಿರುವ, ಆಯಾಸಗೊಂಡಿರುವ. ಪರಿ + ಶ್ರಮ್ (ತಪಸಿ ಖೇದೇ ಚ) "ಕ್ತ:" (3-4-72) । "ಪರಿಶ್ರಾಂತೋ ವಯ:ಸ್ಥಶ್ಚ ಪೃಷ್ಠಿವರ್ಷೋ ಜರಾನ್ವಿತ: । ಕ್ಷುಧಿತ: ಸ ಮಹಾರಣ್ಯೇ ದದರ್ಶ ಮುನಿಸತ್ತಮಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ 49-26 । "ವೃಕ್ಷಸೇವನಾದೇವ ಪರಿಶ್ರಾಂತಾ-ಮತ್ರಭವತೀಂ ಲಕ್ಷ್ಯೇ" ಶಾಕುಂ 1 ।

**ಪರಿಶ್ರಾಂತಿ ಪರಿಶ್ರಾಂತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಯಾಸ, ದಣವು, ಬಳಲಿಕೆ. ಪರಿ + ಶ್ರಮ್ (ತಪಸಿ ಖೇದೇ ಚ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94) । "ಕಥಯತಿ ಪರಿಶ್ರಾಂತಿ ರಾತ್ರೀತಮಸ್ಸಹ-ಯುಧ್ವನಾಮ್" ನೈಷಂ 19-4 ।

**ಪರಿಶ್ಲೇಷ ಪರಿಶ್ಲೇಷ** (ಪುಂ) ಅಲಿಂಗನೆ, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಪರಿ + ಲಿಷ (ಆಲಿಂಜನೇ) "ಘ್" (3-3-114) ।

**ಪರಿಷದ್ ಪರಿಷದ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಭೆ, ಗೋಷ್ಠಿ, ಜನರು ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು. ಪರಿತ: ಸಿದ್ಧಂತಸ್ಯಾಮ್—ಪರಿ + ಪದ್ (ವಿಶರಣಗತ್ಯವಸಾದನೇಷು) "ಕ್ವಿಪ್" (ವಾಂ 3-3-94) । "ವटुपरिषदं पुण्यश्रीक: श्रियैव सभाजयन्" उ० रा०

4-19 । 2. ಧರ್ಮ ಸಭೆ, ವಿದ್ವಜ್ಜನರು ಸೇರಿ ಧರ್ಮ ನಿರ್ಣಯ ಮಾಡುವ ಸಭೆ. "ಪರಿಷದಿಯಮೃಷೀಣಾಮತ್ರ ವೀರೋ ಯುಧಾಜಿತಸಹ ನೃಪತಿರಮಾತ್ಯೇರೋಮಪಾದಶ್ಚ ವೃದ್ಧ:" ಮಂ ವೀಂ 3-4 । 3. ನಾಟಕ ನೋಡಲು ಉಪನ್ಯಾಸಾದಿಗಳನ್ನು ಕೇಳಲು ಸೇರುವ ಜನರ ಗುಂಪು. "ಅಭಿರೂಪಮೃಷಿಷ್ಠಾ ಪರಿಷದಿಯಮ್" ಶಾಕುಂ 1 । "ಶ್ರೀಹರ್ಷೋ ನಿಪುಣ: ಕವಿ: ಪರಿಷ-ದಯೇಷಾ ಗುಣಗ್ರಾಹಿಣಿ" ರತ್ನಾಂ 1 ।

**ಪರಿಷದ ಪರಿಷದ** (ಪುಂ) ಅನುಚರ, ಸೇವಕ. ಪರಿತ: ಸಿದ್ಧಂತಿ — ಪದ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) "ಅಚ್" (3-1-134) ।

**ಪರಿಷದ್ವಲ ಪರಿಷದ್ವಲ** (ಪುಂ) ಸಭೆಯಲ್ಲಿರುವವನು, ಸದಸ್ಯ. ಪರಿಷದಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ವಲಚ್" (4-2-112) । ವಖಯೋರಭೇದ: । "ಪರಿಷದ್ವಲಾನ್ ಮಹಾಬ್ರಹ್ಮರಾಟ್ ನೈಕಟಿಕಾಶ್ರಮಾನ್" ಭट्टಿಂ 4-12 ।

**ಪರಿಷಿಕ್ತ ಪರಿಷಿಕ್ತ** (ವಿಂ) ಸುತ್ತಲೂ ಸೇಚನೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುತ್ತಲೂ ಸಿಂಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ಪಿಚ (ಕ್ಷರಣೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) । "ಕೃತದಾಹಮುದ್ವಿಪ: ಶಿಕ್ಷಾಭಿ: ಪರಿಷಿಕ್ತಂ ಮಹುರಮ್ಭಸಾ ನವೇನ" ಮಾವಂ 20-94 ।

**ಪರಿಷೇಕ ಪರಿಷೇಕ** (ಪುಂ) ಸುತ್ತಲೂ ಸಿಂಪಡಿಸುವುದು, ಸುತ್ತಲೂ ಸೇಚನೆಮಾಡುವುದು. ಪರಿ + ಪಿಚ (ಕ್ಷರಣೇ) "ಘ್" (3-3-114) । ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । -ಪೇಚನಮ್ — ಪೇಚನಮ್ ।

**ಪರಿಷೇಚಕ ಪರಿಷೇಚಕ** (ವಿಂ) ಸುತ್ತಲೂ ನೀರು ಸುರಿಯುವವನು, ಸುತ್ತಲೂ ನೀರು ಚಿಮುಕಿಸುವವನು. ಪರಿ + ಪಿಚ (ಕ್ಷರಣೇ) "ಫ್ವಲ್" (3-1-133) ।

**ಪರಿಷ್ಕಣ ಪರಿಷ್ಕಣ** (ವಿಂ) ಇತರರಿಂದ ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಇತರರಿಂದ ಸಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ಸ್ಕಂದಿರ್ (ಗತಿಶೋಷಣಯೋ:) "ಕ್ತ:" (3-2-102) । ನಿಷ್ಠಾತಕಾರಸ್ಯ ನಿಷ್ಠಾಪೂರ್ವಸ್ಯ ದಕಾರಸ್ಯ ಚ ನ: (6-2-42) । ವಾ ಷತ್ವಮ್ (6-3-94) । ಷತ್ವಪಕ್ಷೇ ಣತ್ವಮ್ । ಷತ್ವಾಭಾವೇ ಪರಿಷ್ಕಣ: ಪರಿಷ್ಕಣ: ।

**ಪರಿಷ್ಕನ್ವ ಪರಿಷ್ಕನ್ವ** (ವಿಂ) ಇತರರಿಂದ ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿಷ್ಕಣತೇ — ಪರಿ + ಸ್ಕಂದಿರ್ (ಗತಿಶೋಷಣಯೋ:) "ಘ್" (3-3-114) । ವಾ ಷತ್ವಮ್ (6-3-94) । ಷತ್ವಾಭಾವೇ ಪರಿಷ್ಕನ್ವ: ಪರಿಷ್ಕನ್ವ: ।

**ಪರಿಷ್ಕರಣ ಪರಿಷ್ಕರಣ** (ನಂ) 1. ಅಲಂಕರಿಸುವುದು. 2. ಉತ್ತಮಪಡಿಸುವುದು. 3. ಸಂಸ್ಕಾರದಿಂದ ಶುದ್ಧ ಮಾಡುವುದು.

**ಪರಿಷ್ಕೃತ ಪರಿಷ್ಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ಅಲಂಕರಿಸುವವನು. 2. ಸೊಬಗನ್ನು ಕೊಡುವವನು. 3. ಶುದ್ಧ ಮಾಡುವವನು.



**ಪರಿಷ್ಕಾರ ಪರಿಷ್ಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ಅಲಂಕಾರ. ಭೂಷಣ. ಒಡವೆ. ಪರಿಕ್ರಿಯತೇಜನ — ಪರಿ + ಙ್ ಕೃ (ಕರಣ) “ಘ” (3-3-19) | ಸುಡಾಗಮ: (6-1-137) | ಪತ್ವಮ್ (6-3-90) | 2. ಸಂಸ್ಕಾರದಿಂದ ಆಗುವ ಶುದ್ಧಿ. 3. ಗಂಧ ತೈಲಾದಿಗಳಿಂದ ಒಂದು ವಸ್ತುವಿಗೆ ವಾಸನೆ ಕೊಡುವುದು. 4. ಬೇರೆ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸುವುದರಿಂದ ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಶ್ರೇಷ್ಠತೆಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದು. ಬೇರೆ ವಸ್ತುಗಳ ಯೋಜನೆಯಿಂದ ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ರಾಮಣೀಯಕತೆ (ಸೊಬಗು) ಆಸ್ವಾದ್ಯತೆ ಮುಂತಾದ ಗುಣಗಳನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದು.

**ಪರಿಷ್ಕುರ್ವತ್ ಪರಿಷ್ಕುರ್ವತ್** (ವಿಂ) 1. ಅಲಂಕರಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಬೇರೆ ವಸ್ತುವಿನ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಉತ್ತಮ ಗುಣವನ್ನು ಹೊಂದಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಮಂತ್ರಾದಿ ಸಂಸ್ಕಾರದಿಂದ ಶುದ್ಧಮಾಡುತ್ತಿರುವ.

**ಪರಿಷ್ಕೃತ ಪರಿಷ್ಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಶೃಂಗರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ಙ್ ಕೃ (ಕರಣ) “ಕ್ತ:” (3-2-102) | ಸುಡ್ (6-1-137) | ಪತ್ವಮ್ (6-3-90) | “ಜ್ಞೇ ನಿವೇಶನ-ವಿಭಾಗಪರಿಷ್ಕೃತಾನಾಂ ಲಕ್ಷ್ಮಿ: ಪುರೋಪವನಜಾ ವನಪಾದಪಾನಾಮ್” ಕಿರಾಂ 9-40 | 2. ಸಂಸ್ಕಾರದಿಂದ ಶುದ್ಧಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಬೇರೆ ವಸ್ತುಗಳ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಉತ್ತಮಗುಣವುಳ್ಳದ್ದಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪರಿಷ್ಕೃತಿ ಪರಿಷ್ಕೃತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) “ಪರಿಷ್ಕಾರ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ಪರಿ + ಙ್ ಕೃ (ಕರಣ) “ಕ್ತಿನ್” (3-3-94) | “ಪರಿಷ್ಕೃತಿ ಭಾರತವರ್ಷಸಿಂಹ:” ಯಾದಂ 16-33 |

**ಪರಿಕ್ರಿಯಮಾಣ ಪರಿಷ್ಕೃಯಮಾಣ** (ವಿಂ) 1. ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಶೃಂಗರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ + ಙ್ ಕೃ (ಕರಣ) ಕರ್ಮಂ “ಶಾನಚ್” (3-2-124) | 2. ಸಂಸ್ಕಾರದಿಂದ ಶುದ್ಧಿಯುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಬೇರೆ ವಸ್ತುಗಳ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಶ್ರೇಷ್ಠಗುಣವುಳ್ಳದ್ದಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

**ಪರಿಕ್ಷಯಾ ಪರಿಕ್ಷಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಲಂಕರಿಸುವುದು. “ಪರಿಕ್ಷಯಾಮಾದ್ರಿಯತೇವ ಭಾವ:” ಯಾದಂ 13-43 | 2. ಸಂಸ್ಕಾರದಿಂದ ಶುದ್ಧಗೊಳಿಸುವುದು. 3. ಉತ್ತಮ ಗುಣವುಂಟುಮಾಡುವುದು. ಪರಿ + ಙ್ ಕೃ (ಕರಣ) “ಶ:” (3-3-100) | ಸುಡ್ (6-1-137) | ಪತ್ವಮ್ (6-3-90) |

**ಪರಿಷ್ವಕ್ತ ಪರಿಷ್ವಕ್ತ** (ವಿಂ) ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಭಿಷೇಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ + ಷ್ವಜ (ಪರಿಷ್ವಜ್ಞೆ) “ಕ್ತ:” (3-2-102) | ಪತ್ವಮ್ (6-3-90) |

**ಪರಿಷ್ವಜ್ಞ ಪರಿಷ್ವಜ್ಞ** (ಪುಂ) 1. ಅಲಂಕನ, ಅಭಿಷೇಕಿಸುವುದು. ಪರಿ + ಷ್ವಜ (ಪರಿಷ್ವಜ್ಞೆ) “ಘ” (3-3-18) | “ಅಜ್ಞದಪ್ರಮುಖಾನಾಂ ಹರಿಣಾಂ ರಾಮದರ್ಶನಮ್ | ಹನುಮತ: ಪರಿಷ್ವಜ್ಞೋ ರಾಘವೇಣ ಮಾತುನಾ” ರಾಮಾಂ | “ವ್ಯೋಮನ: ಪರಿಷ್ವಜ್ಞಮಿವಾಪ್ರಪಾದ:” ಕಿರಾಂ 16-19 | 2. ಸಂಶ್ಲೇಷ, ಸಂಸರ್ಗ, ಸ್ಪರ್ಶ. “ಅದರ್ಶನೇ ದರ್ಶನಮಾತ್ರಕಾಮಾ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಪರಿಷ್ವಜ್ಞಸುಖಕಲೋಲಾ | ಅಲಿಂಗಿತಾಃ ಪುನರಾಯತಾಭ್ಯಾ-ಮಾಶಾಸ್ಮಹೇ ವಿಗ್ರಹಯೋರಭೇದಮ್” ಭರ್ತಂ 2-22 |

**ಪರಿಷ್ವಜಮಾನ ಪರಿಷ್ವಜಮಾನ** (ವಿಂ) ಅಲಂಕರಿಸುತ್ತಿರುವ, ತಬ್ಬಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ + ಷ್ವಜ (ಪರಿಷ್ವಜ್ಞೆ) “ಶಾನಚ್” (3-2-124) |

**ಪರಿಷ್ವಜ್ಯಮಾನ ಪರಿಷ್ವಜ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ತಬ್ಬಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ + ಷ್ವಜ (ಪರಿಷ್ವಜ್ಞೆ) ಕರ್ಮಂ “ಶಾನಚ್” (3-2-124) |

**ಪರಿಷ್ವಜನ ಪರಿಷ್ವಜನ** (ನಂ) ಅಲಂಕನ, ಅಭಿಷೇಕಿಸುವುದು. ಪರಿ + ಷ್ವಜ (ಪರಿಷ್ವಜ್ಞೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114) |

**ಪರಿಷ್ವಜನೀಯ ಪರಿಷ್ವಜನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಅಲಂಕರಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 3. ಅಲಂಕರಿಸಬೇಕಾದ. ಪರಿ + ಷ್ವಜ (ಪರಿಷ್ವಜ್ಞೆ) “ಅನೀಯರ್” (3-1-96) | “ತವ್ಯ:” (3-1-96) | -ಷ್ವಜ್ಞಕೃತ್ಯಮ್ -ಷ್ವಜ್ಞಕೃತ್ಯಮ್.

**ಪರಿಸಂವತ್ಸರ ಪರಿಸಂವತ್ಸರ** (ವಿಂ) ಒಂದು ಸಂವತ್ಸರ ಕಳೆದಿರುವ, ಒಂದು ವರ್ಷಕಾಲ ಕಳೆದುಹೋಗಿರುವ. ಪರಿಗತೋ ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತೋ ಸಂವತ್ಸರೋ ಯಸ್ಯ | “ರಾಜತ್ವಿಕಸ್ನಾತಕ-ಗುರುನ್ ಪ್ರಿಯಶ್ವಶುರಮಾತುಲಾನ್ | ಅಹೇನ್ಮಧುಪರ್ಕೇಣ ಪರಿಸಂವತ್ಸರಾನ್ ಪುನ:” ಮನುಂ 3-119 |

**ಪರಿಸಂಖ್ಯಾ ಪರಿಸಂಖ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಟ್ಟು ಸಂಖ್ಯೆ, ಮೊತ್ತ, ಸಂಪೂರ್ಣ ಸಂಖ್ಯೆ. ಪರಿ + ಸಂ + ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಯನೇ) ಭಾವೇ “ಅಡ್” (3-3-106) | “ವಿತ್ತಸ್ಯ ವಿಧಾಪರಿ-ಸಂಖ್ಯಯಾ ಮೇ ಕೋಟಿಶ್ವತಸ್ತೋ ದಶ ಚಾಹರೆತಿ” ರಘುಂ 4-21 | 2. ಗಣನೆ, ಎಣಿಕೆ. 3. ನಿಯಮ, ನಿಯಮಪೂರ್ವಕ ವಿಧಿ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯೂ ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ ಶಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೆ ಒಂದು ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಮಾಡುವ ನಿಯಮ. “ತತ್ರ ಚಾನ್ಯತ್ರ ಚ ಪ್ರಾಪ್ತೌ ಪರಿಸಂಖ್ಯೇತಿ ಕಥ್ಯತೇ” | “ಪಂಚ ಪಂಚನಖಾ ಭಕ್ಷಯಾ:” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪಂಚನಖಗಳುಳ್ಳ ಎಲ್ಲಾ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಭಕ್ಷಣವೂ ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗುವುದರಿಂದ ಪಂಚನಖಗಳುಳ್ಳ ಐದು ಮಾತ್ರ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಭಕ್ಷಣವು ನಿಯಮಪೂರ್ವಕ



ವಿಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. ಮತ್ತು ಐದು ಪಂಚನಖ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ನ್ನುಳಿದು ಬೇರೆ ಪಂಚನಖ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಭಕ್ಷಣವೂ ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. 4. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಒಂದು ವಸ್ತು (ವಿಷಯ) ವನ್ನು ಒಂದು ಕಡೆ ನಿಷೇಧಿಸಿ ಅದನ್ನು ಮತ್ತೊಂದು ಕಡೆ ನಿಯಂತ್ರಿಸಿ ಹೇಳುವುದು "ಪರಿಸಂಖ್ಯಾ" ಅಲಂಕಾರವಾಗುವುದು. "ಪರಿಸಂಖ್ಯಾ ನಿರ್ವಿಧ್ಯಕಮೇಕಸ್ಮಿನ್ ವಸ್ತುಯನ್ವಯಮ್" ಚಂದ್ರಾಂ । उदा: "स्नेहक्षयः प्रदीपेषु न स्वान्तेषु नतभ्रवाम्" । ಇಲ್ಲಿ ತೈಲ ಮತ್ತು ಪ್ರೇಮಾರ್ಥಕ ಸ್ನೇಹ ಪದದ ಶ್ಲೇಷಮೂಲಕ ಅಭೇದಾಧ್ಯವಸಾಯದಿಂದ ಸ್ನೇಹನಾಶವು ಸ್ತ್ರೀಯರ ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ದೀಪದಲ್ಲಿ ನಿಯಂತ್ರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದರಿಂದ ಪರಿಸಂಖ್ಯಾ ಲಂಕಾರ.

**ಪರಿಸಂಖ್ಯಾತ ಪರಿಸಂಖ್ಯಾತ (ವಿಂ)** 1. ಎಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ನಿಯಮಪೂರ್ವಕ ವಿಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಪರಿ + ಸಮ್ + ಕ್ಷ್ಯಾ (ಪ್ರಕರ್ತನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) । 3. ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಪರಿಗಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿಶೇಷವಾಗಿ ನಿರ್ದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

**ಪರಿಸಂಖ್ಯಾನ ಪರಿಸಂಖ್ಯಾನ (ನಂ)** 1. ಎಣಿಸುವುದು. 2. ನಿಯಮಪೂರ್ವಕ ವಿಧಿಸುವುದು. ಪರಿ + ಸಮ್ + ಕ್ಷ್ಯಾ (ಪ್ರಕರ್ತನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) ।

**ಪರಿಸಂಖ್ಯರ ಪರಿಸಂಖ್ಯರ (ಪುಂ)** ಪ್ರಳಯಕಾಲ. ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶದಕಾಲ.

**ಪರಿಸಮಾಪನ ಪರಿಸಮಾಪನ (ನಂ)** ಪೂರ್ತಿಗೊಳಿಸುವುದು, ಕೊನೆಗೊಳಿಸುವುದು. ಪರಿ + ಸಮ್ + ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) ।

**ಪರಿಸಮಾಪಿತ ಪರಿಸಮಾಪಿತ (ವಿಂ)** ಮುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಪೂರ್ತಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಕೊನೆಮುಟ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಪರಿ + ಸಮ್ + ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102) ।

**ಪರಿಸಮಾಪ್ತ ಪರಿಸಮಾಪ್ತ (ವಿಂ)** 1. ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ, ಪೂರ್ತಿಯಾದ, ಕೊನೆಮುಟ್ಟಿದ. ಪರಿ + ಸಮ್ + ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತ:" (3-4-92) । 2. ಒಳಗೆ ಸೇರಿ ಕೊಂಡಿರುವ, ಒಳಗೆ ಅಡಕವಾಗಿರುವ. "त्वयि तु परिसमाप्तं बन्धुकृत्यं प्रजानाम्" ಶಾಕುಂ 4-6 ।

**ಪರಿಸಮಾಪ್ತಿ ಪರಿಸಮಾಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪೂರ್ತಿಯಾಗುವುದು, ಕೊನೆಗೊಳುವುದು. ಪರಿ + ಸಮ್ + ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-114) ।

**ಪರಿಸಮೂಹನ ಪರಿಸಮೂಹನ (ನಂ)** 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಿ ರಾಶಿಹಾಕುವುದು. 2. ಯಾಗ ಮೊದಲಾದ ಅಗ್ನಿ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಮಂತ್ರವಿಲ್ಲದೆ ಮಾಡುವ (ತೂಷ್ಣೀಂ) ಸಮಿತ್ತುಗಳ

ಆಧಾನ. 3. ಅಗ್ನಿಯ ಸುತ್ತಲೂ ಬಿದ್ದಿರುವ ದರ್ಭೆ ಮತ್ತು ಸಮಿತ್ತುಗಳನ್ನು ಅಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಹಾಕುವುದು. ಪರಿ + ಸಮ್ + ಊಹ (ವಿತರ್ಕ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । 4. ಯಾಗಾಗ್ನಿಯ ಸುತ್ತಲೂ (ನೀರಿನಿಂದ) ಮಾಡುವ ಪರಿಷೇಷನ.

**ಪರಿಸರ ಪರಿಸರ (ಪುಂ)** 1. ಗ್ರಾಮ ನಗರ ನದಿ ಮತ್ತು ಬೆಟ್ಟಗಳ ಸಮೀಪ ಪ್ರದೇಶ, ಇವುಗಳ ಅಂಚು. ಪರಿ + ಸ್ಮ (ಗತೌ) "ಅಪ್" (3-3-49) । "ಪರಿಸರವಿಷಯೇಷು ಲೋಕಮುಕ್ತಾ: ಹರಿತತೃಣೋದ್ಗಮಶಕ್ತ್ಯಾ ಮೃಗೈಃ" ಕಿರಾಂ 4-38 । 2. ವಿಧಿ, ದೈವ, ಅದೃಷ್ಟ. 3. ಮೃತ್ಯು. "भवेत्परिसरो मृत्यौ विधावपि च पुंस्यम्" ಮೇದಿಂ । "पारिसरः प्रान्तभूदेवयोर्मृतौ" ಹೇಮಂ ।

**ಪರಿಸರ್ಪ ಪರಿಸರ್ಪ (ಪುಂ)** 1. ಸುತ್ತಲೂ ಸಂಚರಿಸುವುದು, ಸುತ್ತಲೂ ಓಡಾಡುವುದು. ಪರಿ + ಸ್ಮ (ಗತೌ) "ಘಙ್" (3-3-114) । 2. ಸುತ್ತೂಗಟ್ಟುವುದು. 3. ನಷ್ಟವಾದ ಇಷ್ಟವಸ್ತುವನ್ನು ಹುಡುಕುವುದು. ರೂಪಕಗಳಲ್ಲಿ ಇದು ಪ್ರತಿಮುಖಿಸಂಧಿಯ ಒಂದು ಅಂಗ, "इष्टनष्टानुसरणं परिसर्पश्च कथ्यते" ಸಾಂ ದಂ 6-90 । "अस्मिन् वेतसपरिक्षिप्ते लतामण्डपे संनिहितया तया भवितव्यम् । तथाहि—अभ्युन्नता पुरस्तादवगाढा जघनगौरवात् पश्चात् । द्वारेऽस्य पाण्डुसिकते पदपङ्क्तिर्दृश्यतेऽभिनवा । यावद्विद-पान्तरेणावलोकयामि" ಶಾಕುಂ 3 ।

**ಪರಿಸರ್ಪಣ ಪರಿಸರ್ಪಣ (ನಂ)** "ಪರಿಸರ್ಪ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಪರಿ + ಸ್ಮ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । "भुजग इव गतौ गिरिः स्थिरत्वे पतगपते: परिसर्पणे च तुल्यः" ಮೃಚ್ಛಂ 3-21 ।

**ಪರಿಸಾನ್ವನ ಪರಿಸಾನ್ವನ (ನಂ)** ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸುವುದು, ಮಧುರವಾದ ಪ್ರೀತಿಯ ಮಾತುಗಳಿಂದ ಒಲಿಸುವುದು. ಪರಿ + ಸಾನ್ವ (ಸಾಮಪ್ರಯೋಗ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । "निर्धूतवीतमपि वासकमुल्ललन्तं यन्ता क्रमेण परिसान्वनतजंनाभिः" ಮಾಘಂ 4-49 ।

**ಪರಿಸರ್ಯ ಪರಿಸರ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಸಂಚರಿಸುವುದು, ಸುತ್ತಲೂ ಓಡಾಡುವುದು. ಪರಿ + ಸ್ಮ (ಗತೌ) "ಶ:" ಯಕ್ ಚ ನಿಪಾಂ (ವಾಂ 3-3-101) ।

**ಪರಿಸಾರ ಪರಿಸಾರ (ಪುಂ)** ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಸಂಚರಿಸುವುದು. ಪರಿ + ಸ್ಮ (ಗತೌ) "ಘಙ್" (3-3-114) ।

**ಪರಿಸಾರಕ ಪರಿಸಾರಕ (ವಿಂ)** ಸುತ್ತಲೂ ಸಂಚರಿಸುವವನು, ಸುತ್ತಲೂ ಪ್ರದಕ್ಷಿಣೆ ಮಾಡುವವನು. ಪರಿ + ಸ್ಮ (ಗತೌ) "ಫ್ಲುಲ್" (3-1-133) ।



**ಪರಿಸ್ಕಂದ ಪರಿಸ್ಕಂದ** (ಪುಂ) 1. ಪರಿಚಾರಕ, ಸೇವಕ, ಆಳು. "ದಾಸೇ ಭೃತ್ಯಃ ಪರಿಸ್ಕಂದಃ ಪರಜಾತಃ ಪರೇಧಿತಃ" ವೈಜಂ. (ವಿಂ) 2. "ಪರಿಸ್ಕಂದ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ಪರಿಸ್ಕನ್ನ ಪರಿಸ್ಕನ್ನ** (ವಿಂ) "ಪರಿಸ್ಕಣ್ಣ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ಪರಿಸ್ತರಣ ಪರಿಸ್ತರಣ** (ನಂ) 1. ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡುವುದು, ಸುತ್ತಲೂ ಹಾಸುವುದು. ಪರಿ + ಸ್ತೃ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ಮುಚ್ಚಳ, ಹೊದಿಕೆ. ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

**ಪರಿಸ್ತರಣೀಯ ಪರಿಸ್ತರಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡಬೇಕಾದ, ಸುತ್ತಲೂ ಹಾಸಬೇಕಾದ. 2. ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡಲ್ಪಡುವ. ಪರಿ + ಸ್ತೃ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96). 3. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಡುವ. 4. ಮುಚ್ಚಬೇಕಾದ. "ತವ್ಯಃ" (3-1-96). -ಸ್ತರಣೀಯಃ -ಸ್ತರಿತವ್ಯಃ.

**ಪರಿಸ್ತೀರ್ಣ ಪರಿಸ್ತೀರ್ಣ** (ವಿಂ) 1. ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟು. ಪರಿ + ಸ್ತೃ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102).

**ಪರಿಸ್ತೃಣತ್ ಪರಿಸ್ತೃಣತ್** (ವಿಂ) 1. ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಮುಚ್ಚುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ + ಸ್ತೃ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) "ಶತ್" (3-2-124). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-6). -ಸ್ತೃಣತೀ -ಸ್ತೃಣತೀ. "ಶಾನತ್" (3-2-124). -ಸ್ತೃಣಾನಃ -ಸ್ತೃಣಾನಃ.

**ಪರಿಸ್ತೋಮ ಪರಿಸ್ತೋಮ** (ಪುಂ) ಅನೆಯ ಮೇಲೆ ಹೊದಿಸುವ ರತ್ನಕಂಠಿ. ಪರಿಸ್ತೃಯತೇ - ಪರಿ + ಸ್ತೃ (ಸ್ತುತೌ) "ಮನ್" (3-1-139). "ಪ್ರವೇಷ್ಯಾಸ್ತರಣಂ ವರ್ಣಃ ಪರಿ-ಸ್ತೋಮಃ ಕುಶೋ ದ್ವಯಃ" ಅಮಂ.

**ಪರಿಸ್ಪಂದ ಪರಿಸ್ಪಂದ** (ಪುಂ) 1. ಗಂಧ ಪುಷ್ಪ ತಾಯ್ತುಲ ವಸ್ತು ಅಭರಣ ಮೊದಲಾದ ಅಲಂಕಾರಗಳಲ್ಲಿ ಸಂತೋಷ ಪುಂಜಾಗುವಂತೆ ಮಾಡುವ ಕುಶಲಕಾರ್ಯ. ಪರಿ + ಸ್ಪದಿ (ಕಿಷ್ಕಿಂಚಲನೆ) ಭಾವೇ "ಘ್" (3-3-114). "ರಚನಾ ಸ್ಯಾತ್ಪರಿಸ್ಪಂದಃ" ಅಮಂ. 2. ಪರಿಜನ, ಸೇವಕ, ಆಳು. "ಪರಿವಾರಃ ಪರಿಜನಃ ಪರಿಸ್ಪಂದಃ ಪರಿಗ್ರಹಃ" ವೈಜಂ. 3. ಸುತ್ತಲೂ ಸ್ವಲ್ಪ ಅಲುಗಾಡುವುದು.

**ಪರಿಸ್ಪಂದನ ಪರಿಸ್ಪಂದನ** (ನಂ) 1. ಗಂಧ ಪುಷ್ಪ ವಸ್ತಾದಿ ಗಳಿಂದ ಸಂತೋಷಪುಂಜಾಗುವಂತೆ ಅಲಂಕರಿಸುವುದು. ಪರಿ + ಸ್ಪದಿ (ಕಿಷ್ಕಿಂಚಲನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಅಲುಗಾಡುವುದು, -ಚಲಿಸುವುದು. 3. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಅದಿರುವುದು.

**ಪರಿಸ್ಪಂದಮಾನ ಪರಿಸ್ಪಂದಮಾನ** (ವಿಂ) ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಅಲುಗಾಡುತ್ತಿರುವ, ಸುತ್ತಲೂ ಸ್ವಲ್ಪ ಕಂಪಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ + ಸ್ಪದಿ (ಕಿಷ್ಕಿಂಚಲನೆ) "ಶಾನತ್" (3-2-124).

**ಪರಿಸ್ಕುಟ ಪರಿಸ್ಕುಟ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿರುವ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಕಾಣಿಸುವ. 2. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತೋರುವ. ಪರಿತಃ ಸ್ಕುಟಮ್. "ಜಗತಿ ಸುಮನಸ್ತದಾದಿ ನೂನಂ ದಧತಿ ಪರಿಸ್ಕುಟ-ಮಯಂತೋಽಭಿಧಾನಮ್" ಮಾಘಂ 9-28. 3. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಕೇಳಿಸುವ. "ತಾರೇವಂಭವೇ ಪರಭಾಗಲಾಭತಃ ಪರಿಸ್ಕುಟೇಸ್ತೇಷು ತುರಂಗಹೇಷಿತಃ" ಮಾಘಂ 12-14.

**ಪರಿಸ್ಕುರಣ ಪರಿಸ್ಕುರಣ** (ನಂ) ಚಿಮ್ಮುವಿಕೆ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಚಲಿಸುವಿಕೆ. ಪರಿ + ಸ್ಕುರ (ಸ್ಕುರಣೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

**ಪರಿಸ್ಕುರತ್ ಪರಿಸ್ಕುರತ್** (ವಿಂ) 1. ಚಿಮ್ಮುತ್ತಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ + ಸ್ಕುರ (ಸ್ಕುರಣೇ) "ಶತ್" (4-1-6). "ಸಮುಲ್ಲಸತ್ಪ್ರಾಸಮಹೋಮಿಮಾಲಂ ಪರಿ-ಸ್ಕುರಚ್ಚಾಮರಫೇನಪಙ್ಕ್ತಿ" ಕಿರಾಂ 16-4. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹರಡುತ್ತಿರುವ. "ಪರಿಸ್ಕುರಣ್ಣಪುರಚಿತ್ರಭಾನುಪ್ರಕಾಶನಿರ್ಭೂತ-ತಮೋಽನುಷ್ಠಾಮ್" ಹಯಗ್ರಂ. 3. ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ. "ಹಸಿತುಂ ಪರೇಣ ಪರಿತಃ ಪರಿಸ್ಕುರ-ತ್ಕರವಾಲಕೋಮಲಕವಾವುಪೇಕ್ಷಿತಃ" ಮಾಘಂ 13-60. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-6). -ಸ್ಕುರಂತೀ -ಸ್ಕುರಂತೀ. "ಪರಿಸ್ಕು-ರಂತಯಾಃ ಕ್ಷಿತಿಪದ್ಮಮಧ್ಯೇ ಪಾರ್ವೇಷು ಹೇಮಾಚಲಕರ್ಣಿಕಾಯಾಃ" ಯಾದಂ 14-9.

**ಪರಿಸ್ಕುರಿತ ಪರಿಸ್ಕುರಿತ** (ನಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವಿಕೆ, ಚಿಮ್ಮುವಿಕೆ. ಪರಿ + ಸ್ಕುರ (ಸ್ಕುರಣೇ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-3-114). "ಸ ತತಾರ ಸೇಕತವತೀರಭಿತಃ ಶಫರೀ-ಪರಿಸ್ಕುರಿತಚಾರುದೃಶಃ" ಕಿರಾಂ 6-16. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹರಡುವಿಕೆ. 3. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವಿಕೆ, ಹೊಳೆಯುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 4. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಚಿಮ್ಮಿದ. 5. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹರಡಿದ. 6. ಪ್ರಕಾಶಿಸಿದ, ಹೊಳೆದ. 7. ನಡುಗಿದ, ಕಂಪಿಸಿದ, ಬೇಗ ಬೇಗ ಅದಿದ. "ವಸ್ತೇಕಹಾಯನಕುರಜ್ಜವಿಲೋದೃಷ್ಟಃ ತಸ್ಯಾಃ ಪರಿಸ್ಕುರಿತಗರ್ಭಭರಾಲಸಾಯಾಃ" ಉಂ ರಾಂ 3-28.

**ಪರಿಸ್ಪಂದ ಪರಿಸ್ಪಂದ** (ಪುಂ) ಸೋರುವುದು, ಸ್ಪಂದಿಸುವುದು. ಪರಿ + ಸ್ಪಂದ (ಪ್ರಲವಣೇ) "ಘ್" (3-3-114).

**ಪರಿಸ್ಪವ ಪರಿಸ್ಪವ** (ಪುಂ) ಸ್ಪಂದಿಸುವುದು, ಸೋರುವುದು, ಜನುಗುವುದು. ಪರಿ + ಸ್ಪ (ಗತೌ) "ಅಪ್" (3-3-49).

**ಪರಿಸ್ಪಾವ ಪರಿಸ್ಪಾವ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರವಾಹ, ಹರಿಯುವುದು. ಪರಿ + ಸ್ಪ (ಗತೌ) "ಘ್" (3-3-114). 2. ಸೋರು.



ವುದು, ಜಿನುಗುವುದು. 3. ದೇಹದ ರಸವು ಹೊರಗೆ ಹೊರಡುವುದು. ಇದೊಂದು ವ್ಯಾಧಿ.

**ಪರಿಶ್ಲಾವಣ ಪರಿಸ್ತಾವಣ (ನಂ)** 1. ಕಾಫಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳನ್ನು ಶೋಧಿಸುವುದು. 2. ಕಾಫಿಯ ಕಪಾಯ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಶೋಧಿಸುವ ಪಾತ್ರೆ.

**ಪರಿಶ್ಲಾವಿನ್ ಪರಿಸ್ತಾವಿನಿ (ವಿಂ)** 1. ಸ್ತವಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸೋರುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ + ಸ್ತು (ಗತೌ) "ಣಿनि:" (3-1-134). 2. ಭಗಂದರ ರೋಗದ ಒಂದು ಭೇದ.

**ಪರಿಸ್ತುತ್ ಪರಿಸ್ತುತ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮದ್ಯ, ಸುರೆ, ಹೆಂಡ. ಪರಿ + ಸ್ತು (ಗತೌ) "ವಿವ್" (3-2-96). 2. ಸುರಿಯುವುದು, ಸೋರುವುದು, ಜಿನುಗುವುದು. ಪರಿ + ಸ್ತು "ವಿವ್" (ವಾಂ 3-3-94). 3. ಸೋರುತ್ತಿರುವ, ಜಿನುಗುತ್ತಿರುವ.

**ಪರಿಸ್ತುತ ಪರಿಸ್ತುತ (ವಿಂ)** 1. ಸುತ್ತಲೂ ಸ್ತವಿಸಿದ, ಸುತ್ತಲೂ ಸೋರಿದ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಜಿನುಗಿದ. ಪರಿ + ಸ್ತು (ಗತೌ) " : " (3-4-92). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸ್ತುತಾ -ಸ್ತುತಾ. 2. ಮದ್ಯ, ಸುರೆ, ಹೆಂಡ, "ಪರಿಸ್ತುತಾ ಸ್ತ್ರೀ ವಾಙ್ಮನಾ ಸ್ಯಾನ್ನೇ ಸ್ಯಾದಭಿಧೇಯವತ್" ಮೇದಿಂ.

**ಪರಿಹರಣ ಪರಿಹರಣ (ನಂ)** 1. ಪರಿಹರಿಸುವಿಕೆ, ತಪ್ಪಿಸುವುದು, ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು. ಪರಿ + ಹ್ರ (ಹರಣೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ವರ್ಜಿಸುವುದು, ತೊರೆದುಬಿಡುವುದು, ಬಿಟ್ಟುಬಿಡುವುದು, ತ್ಯಜಿಸುವುದು. 3. ಪ್ರತಿವಾದಿಯ ವಾದ (ಅಕ್ಷೇಪ) ವನ್ನು ಸರಿಯಾದ ಪ್ರಮಾಣದಿಂದ ತಪ್ಪೆಂದು ಸ್ಥಿರಪಡಿಸುವುದು.

**ಪರಿಹರಣೀಯ ಪರಿಹರಣೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಪರಿಹರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಪರಿಹರಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಪರಿಹರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಪರಿ + ಹ್ರ (ಹರಣೇ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96). 4. ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ತ್ಯಜಿಸಬೇಕಾದ. 6. ತ್ಯಜಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 7. ಸರಿಯಲ್ಲವೆಂದು ನಿರಸನಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 8. ನಿರಸನಮಾಡಬೇಕಾದ. 9. ತಳ್ಳಿಹಾಕಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ (ಅಕ್ಷೇಪ). "ತವ್ಯ:" (3-1-96). -ಹತವ್ಯ: -ಹರ್ತವ್ಯ.

**ಪರಿಹರತ್ ಪರಿಹರತ (ವಿಂ)** 1. ಪರಿಹರಿಸುತ್ತಿರುವ, ತಪ್ಪಿಸುತ್ತಿರುವ, ದೂರಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ + ಹ್ರ (ಹರಣೇ) "ಶತ್" (3-2-124). 2. ತ್ಯಜಿಸುತ್ತಿರುವ, ಬಿಟ್ಟುಹೋಗುತ್ತಿರುವ, ವರ್ಜಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಶುಲ್ಕಸ್ಥಾನಂ ಪರಿಹರಣಕಾಲೇ ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಿ. ಮಿಥ್ಯಾವಾದಿ ಚ ಸಂಖ್ಯಾನೇ ದಾಪ್ಯೋಷಗುಣಮಲಯಮ್" ಮನುಂ 6-400. 3. ದೋಷ

ವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅಕ್ಷೇಪವನ್ನು ತಳ್ಳಿಹಾಕುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಡೀಪ್" (4-1-6). -ಹರಂತಿ -ಹರಂತಿ. "ಶಾನಚ್" (3-2-124). -ಹರಮಾಣ: -ಹರಮಾಣ.

**ಪರಿಹಾನಿ ಪರಿಹಾನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕ್ಷಯ. ಕ್ಷೇಣಾವಸ್ಥೆ. ಪರಿ + ಅ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) "ನಿ:" (ವಾಂ 3-3-94). "ರಾಜಯಕ್ಷಮಪರಿಹಾನಿರಾಯಯಿ ಕಾಮಯಾನಸಮವಸ್ಥಯಾ ತುಲಾಮ್" ರಘುಂ 19-40.

**ಪರಿ(ರೀ)ಹಾರ ಪರಿ(ರೀ)ಹಾರ (ಪುಂ)** 1. ವರ್ಜಿಸುವುದು, ತ್ಯಜಿಸುವುದು, ತೊರೆದುಬಿಡುವುದು. ಪರಿ + ಹ್ರ (ಹರಣೇ) "ಘ್" (3-3-124). ವಾ ದೀರ್ಘ: (6-3-122). "ದ್ವಂತ್ಸಸ್ಯ ಪ್ರಭೋರನ್ಯತ್ಪರಿಹಾರಾತ್ ನ ಭೇಷಜಮ್" ರಾಜತಂ. 2. ತಪ್ಪಿಸುವುದು, ದೂರಮಾಡುವುದು, ನಿವಾರಿಸುವುದು. 3. ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡುವುದು, ಮರೆಮಾಚುವುದು, ಗುಟ್ಟಾಗಿಡುವುದು. "ಕಥಮಿದಾನಿಮಾತ್ಮಾನಂ ನಿವೇದಯಾಮಿ. ಕಥಂ ವಾತ್ಮನ: ಪರಿಹಾರಂ ಕರೋಮಿ" ಶಾಕುಂ 1. 4. ಪ್ರತಿವಾದಿಯ ಅಕ್ಷೇಪವನ್ನು ತಳ್ಳಿಹಾಕುವುದು, ದೋಷವನ್ನು ನಿರಸನಮಾಡುವುದು. 5. ಉರಿಸ ಹೊರಗಿರುವ ವಿಶಾಲವಾದ ಪ್ರದೇಶ, ಜನತೆಗೆ ಸೇರಿದ ವಿಸ್ತಾರವಾದ ಭೂಮಿ, ಗೋಮಾಳ. "ಧನ್ಯು:ಶತಂ ಪರಿಹಾರೋ ಗ್ರಾಮಸ್ಯ ಸ್ವಾತ್ಸಮಂತತ:" ಮನುಂ 6-239. 6. ವಿನಾಯಿತಿ, ತೆರಿಗೆಯಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ. "ಜಿತ್ವಾ ಸಂಪೂಜಯೇವೇವಾನ್ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಂಶ್ಚೇವ ಧಾರ್ಮಿಕಾನ್. ಪ್ರದಕ್ಷಾತ್ ಪರಿಹಾರಾಂಶ್ಚ ಖ್ಯಾಪಯೇದಭಯಾನಿ ಚ" ಮನುಂ 9-201. 7. ಅವಜ್ಞೆ, ಅನಾದರ, ತಿರಸ್ಕಾರ.

**ಪರಿಹಾರ್ಯ ಪರಿಹಾರ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ನಿವಾರಿಸಲ್ಪಡುವ, ತಪ್ಪಿಸಲ್ಪಡುವ, ಪರಿಹರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ನಿವಾರಿಸಬೇಕಾದ, ಪರಿಹರಿಸಬೇಕಾದ. 3. ನಿವಾರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಪರಿಹರಿಸಲು ತಕ್ಕದಾದ. 4. ನಿವಾರಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಪರಿ + ಹ್ರ (ಹರಣೇ) "ಘ್ಯತ್" (3-1-124). 5. ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಡುವ, ವರ್ಜಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ತ್ಯಜಿಸಬೇಕಾದ, 7. ತ್ಯಜಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 8. ತ್ಯಜಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. "ಸಖೇ ನ ಪರಿಹಾರ್ಯೇ ವಸ್ತುನಿ ಪೌರವಾಣಾಂ ಮನ: ಪ್ರವರ್ತತೇ" ಶಾಕುಂ 2.

**ಪರಿ(ರೀ)ಹಾಸ ಪರಿ(ರೀ)ಹಾಸ (ಪುಂ)** 1. ಹಾಸ್ಯಮಾಡುವುದು, ಅಣಕಿಸುವುದು, ಗೇಲಿ ಮಾಡುವುದು. ಪರಿ + ಹಸೆ (ಹಸನೇ) "ಘ್" (3-3-124). ವಾ ದೀರ್ಘ: (6-3-122). "ಪರಿವರ್ತೆ ನ ಕುರ್ವಿತ ಪರಿಹಾಸಾಶ್ಚ ಪುತ್ರಕ" ಮಾರ್ಕಂ. 2. ವಿನೋದ, ತಮಾಷೆ. "ಪರಿಹಾಸವಿಜ್ಞಾಪಿತಂ ಸಖೇ ಪರಮಾರ್ಥೇನ ನ ಗೃಹ್ಯತಾಂ ವಚ:" ಶಾಕುಂ 2-12.



“ಪರಿಹಾಸಾಶ್ಚಿತ್ರಾಃ ಸತತಮಭವನ್ಯೇನ ಭವತಃ ಸ್ವಸುಃ ಶ್ಲಾಘ್ಯೋ  
ಭರ್ತಾ ಕ್ವ ನು ಖಲು ಸ ತೇ ಮಾತುಲ ಗತಃ” ವೇಣೀಂ ೩-೧೬।

**ಪರಿಹೋಗ ಪರಿಹೋಗ** (ವಿಂ) ಕ್ಷೀಣವಾದ, ಕಡಮೆಯಾದ.

“ಪರಿಹೋಗಾಯುಷಿ ನ ಪ್ರವರ್ತಿತವ್ಯಮ್” ಯಾದಂ ೧೪-೮೦।

**ಪರಿಹೃತ ಪರಿಹೃತ** (ವಿಂ) 1. ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವರ್ಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ+ಹೃ (ಹರಣೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)।

“ಪೀತಶೀಘ್ರಮಧುರೇಮಿಶ್ರುನಾನಾಮಾನನೈಃ ಪರಿಹೃತಂ ಚಪಕಾಂತಃ”  
ಮಾಘಂ ೧೦-೧೧। 2. ತಪ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿವಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ದೂರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಮರೆಮಾಚಲ್ಪಟ್ಟ, ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ನಿರಸನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತಳ್ಳಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪರಿಹೃತಿ ಪರಿಹೃತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) “ಪರಿಹಾರ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ಪರಿ + ಹೃ (ಹರಣೇ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೨೪)।

**ಪರೀಕ್ಷಕ ಪರೀಕ್ಷಕ** (ವಿಂ) 1. ಪರೀಕ್ಷಿಸುವವನು, ಶೋಧಿಸುವವನು, ಗುಣದೋಷಗಳನ್ನು ಪರಿಶೀಲಿಸುವವನು. ಪರಿತಃ ಇಕ್ಷತೇ — ಪರಿ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩)। 2. ವಿವೇಚನೆ ಮಾಡುವವನು ವಿಮರ್ಶೆ ಮಾಡುವವನು. “ಸ್ಥಿತಿ ಸಮೀಕ್ಷಯಿಷ್ಯಥಾ ಪರೀಕ್ಷಕಃ ಕರೋತ್ಯವಗ್ರೋಹತಂ ಪೃಥಗ್ಜನಮ್” ಕಿರಾಂ ೧೪-೨೪। 3. ಸುತ್ತಲೂ ನೋಡುವವನು. 4. ತನಿಖೆ ಮಾಡುವವನು.

**ಪರೀಕ್ಷಣ ಪರೀಕ್ಷಣ** (ನಂ) 1. ವಿಚಾರಮಾಡುವುದು, ವಿಮರ್ಶಿಸಿ ನೋಡುವುದು. 2. ಶೋಧಿಸುವುದು, ಗುಣದೋಷಗಳನ್ನು ಪರಿಶೀಲಿಸುವುದು. ಪರಿ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪)। “ಹಿಮೋಪಮಾ ತಸ್ಯ ಪರೀಕ್ಷಣಕ್ಷಣೇ ಸತೀಷು ವೃತ್ತಿಃ ಶತಶೋ ನಿರೂಪಿತಾ” ನೈಷಂ ೯-೪೪। “ನಿಃಶ್ರೇಯಸಂ ಕರ್ಮಣಾಂ ಚ ಗುಣದೋಷಪರೀಕ್ಷಣಮ್” ಮನುಂ ೧-೧೧೭। 3. ಸುತ್ತಲೂ ನೋಡುವುದು. 4. ತನಿಖೆ ಮಾಡುವುದು. “ಸುಖಮಾವಿಷಯೇ ಪರೀಕ್ಷಣೇ ನಿಖಿಲಂ ಪದಮ-ಭಾಜಿ ತನ್ಮುಖಾತ್” ನೈಷಂ ೨-೨೭।

**ಪರೀಕ್ಷಾ ಪರೀಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶೋಧನೆ, ಗುಣದೋಷಗಳ ಪರಿಶೀಲನೆ. ಪರಿ+ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) “ಅಃ” (೩-೩-೧೦೩)। “ವಿದ್ಯಮಾನೇಽಪಿ ಪತ್ತನೇ ಗ್ರಾಮೇ ರತ್ನಪರೀಕ್ಷಾ” ಮಾಲಂ ೧। 2. ಪ್ರಮಾಣ ಮಾಡಿಸುವುದು, ಸತ್ಯಾಂಶವನ್ನು ತಿಳಿಯಲು ಅಗ್ನಿ ಜಲ ಮುಂತಾದುವುಗಳನ್ನು ಮುಟ್ಟಿಸಿ ಹೇಳಿಸುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ದಿವ್ಯ ಪರೀಕ್ಷೆಯೆಂದು ಹೆಸರು. “ವಿವಾದೇ-ನ್ವಿಷ್ಯತೇ ಪತ್ರಂ ತದಭಾವೇಽಪಿ ಸಾಕ್ಷಿಣಃ। ಸಾಕ್ಷ್ಯಭಾವಾತ್ತತೋ ದಿವ್ಯಂ ಪ್ರವದಂತಿ ಮನೀಷಿಣಃ” ಪञ्ಚತಂ ೧-೪೩೬।

**ಪರೀಕ್ಷಿತ ಪರೀಕ್ಷಿತ** (ವಿಂ) 1. ಪರೀಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಚಾರ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ+ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)।

2. ಶೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗುಣದೋಷಗಳ ವಿಮರ್ಶೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. “ತಂ ವಿಷ್ಮಿತಂ ವೇನುಕವಾಚ ಸಾಧೋ ಮಾಯಾಂ ಮಯೋದ್ಭಾವ್ಯ ಪರೀಕ್ಷಿತೋಽಸಿ” ರಘುಂ ೨-೬೨। 3. ತನಿಖೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಚಾರಣೆ ನಡೆಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪರೀಕ್ಷ್ಯ ಪರೀಕ್ಷ್ಯ** (ವಿಂ) ಪರೀಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವವನು. ಪರಿ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) “ಫ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪)।

**ಪರೀತ ಪರೀತ** (ವಿಂ) 1. ಸುತ್ತಲೂ ಅವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಳಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ. ಪರಿ+ಇಙ್ (ಗತೌ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। “ತಥಾಪಿಢಂ ಶಾಶ್ವತ್ಪರಿಚಿತವಿವಿಕ್ತೇನ ಮನಸಾ ಜನಾಕೀರ್ಣಂ ಮನ್ಯೇ ಹೃತವಹಪರೀತಂ ಗೃಹ್ಮಿವ” ಶಾಕುಂ ೪-೯। 2. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ, ಕೂಡಿಕೊಂಡಿರುವ. “ಪರೀತಮುಕ್ತಾವಜಯೇ ಜಯಾಶ್ರಿಯಾ ನದಂತ-ಮುಚ್ಛೈಃ ಕ್ಷತಸಿಂಧುರೋಧಸಮ್” ಕಿರಾಂ ೪-೧೧। 3. ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಪರೀತಃ ಕಾಲೇನ ಜ್ವಲಯಸಿ ಪುನಃ ಕ್ರೋಧದಹನಮ್” ಮುದ್ರಾಂ ೩-೩೦। 4. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯೂ ಹೋಗಿರುವ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯೂ ಸುತ್ತಿ ಬಂದಿರುವ. ಕರ್ತಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨)।

**ಪರೀಪ್ಸಾ ಪರೀಪ್ಸಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊಂದಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಪಡೆಯಲು ಆಸೆ. ಪರಿ + ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) + ಸನ್ “ಅಃ” (೩-೩-೧೦೨)। ಇತ್ (೭-೪-೪೪)। 2. ತಿಳಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಅರಿಯಲು ಆಸೆ.

**ಪರೀಪ್ಸು ಪರೀಪ್ಸು** (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, ಪಡೆಯಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. ಪರಿ + ಇಙ್ (ಗತೌ) + ಸನ್ “ಅಃ” (೩-೨-೧೬೮)। 2. ರಕ್ಷಿಸಲು ಇಚ್ಛೆಯುಳ್ಳ. “ಇಮಾಂ ಪರೀಪ್ಸುರ್ಜುಜಿತೀ ಪರಾಭಿಭವಕಾತರಾಮ್” ಮಾಲಂ ೪-೧೧। 3. ತಿಳಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, ಅರಿತುಕೊಳ್ಳಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ. “ಹೇತುಂ ತದಭ್ಯಾಗಮನೇ ಪರೀಪ್ಸುಃ ಸುಖೋಪವಿಷ್ಟಂ ಮುನಿಮಾ-ಬಭಾಷೇ” ಕಿರಾಂ ೩-೪।

**ಪರೀಭಾವ ಪರೀಭಾವ** (ಪುಂ) “ಪರಿಭವ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ವಾ ದೀರ್ಘಃ (೬-೩-೧೨೨)।

**ಪರೀರಣ ಪರೀರಣ** (ಪುಂ) 1. ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ, ಪರಿ+ರಣ (ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। 2. ದಂಡ, ಕೋಲು, 3. ಪಟ್ಟಿವಸ್ತ್ರ, ರೇಷ್ಮೆವಸ್ತ್ರ. “ಪರೀರಣಃ ಸ್ಯಾತ್ ಕಮಠೇ ದಣ್ಡೇ ಚ ಪದ್ಮಶಾಟಕೇ” ಮೇದಿಂ।

**ಪರೀರಮ್ಭ ಪರೀರಂಭ** (ಪುಂ) ಅಲಿಂಗನ, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುವುದು ಪರಿ + ರಮ (ರಾಮಸ್ಯೇ) “ಛಃ” (೩-೩-೧೮)। ವಾ ದೀರ್ಘಃ (೬-೩-೧೨೨)।

**ಪರೀವರ್ತ ಪರೀವರ್ತ** (ಪುಂ) “ಪರಿವರ್ತ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ವಾ ದೀರ್ಘಃ (೬-೩-೧೨೨)।







**ಪರೋಕ್ಷ ಪರೋಕ್ಷ (ಪುಂ)** 1. ತಪಸ್ವಿ, ಪರೋಕ್ಷಜ್ಞಾನವುಳ್ಳ ಸಂನ್ಯಾಸಿ. ಪರೋಕ್ಷ ಶ್ರುತ್ಯಾಪ್ತವಾಕ್ಯಶ್ರವಣಜನ್ಯ ಜ್ಞಾನಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) 1. 2. ಯಯಾತಿಯ ಪುತ್ರನಾದ ಅನುವಿನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. "ಅನೋ: ಸಮಾನರಶ್ಚಕ್ಷು: ಪರೋಕ್ಷಾಃ ಸುತಾಸ್ತ್ರಯ:" ಭಾಗಂ ೧-೨೩-೧. (ನಂ) 3. ಎದುರಿಗೆ ಇಲ್ಲದಿರುವುದು, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸದಂತೆ ದೂರದಲ್ಲಿರುವುದು. ಅಕ್ಷಣೋ: ಪರಮ್. ಪರಶಬ್ದಸ್ಯ ಆಕಾರಾದೇಶ: ನಿಪಾಂ. 1. ಪ್ರಯೋಗತುರಿಂದ್ರಿಯಾಗೋಚರತ್ವಮ್. ಪರೋಕ್ಷೇ ಲಿಟ್ (೩-೨-೧೧೫). ಇದು ದ್ವಿತೀಯಾ ಮತ್ತು ಸಪ್ತಮಿ ವಿಭಕ್ತೃಭಗಗಳಲ್ಲಿ ಕ್ರಿಯಾವಿಶೇಷಣವಾಗಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವುದು. "ನೋದಾ-ಹರೇದಸ್ಯ ನಾಮ ಪರೋಕ್ಷಮಪಿ ಕೇವಲಮ್" ಮನುಂ ೨-೧೯೯. "ಪರೋಕ್ಷೇ ಕಾರ್ಯಹಂತಾರಂ ಪ್ರತೀಕ್ಷೇ ಪ್ರಿಯವಾದಿನಮ್. ವರ್ಜಯೇತ್ತಾದೃಶಂ ಮಿತ್ರಂ ವಿಷಕುಸ್ಥಂ ಪಯೋಮುಕ್ತಮ್" ಚಾಣಕ್ಯಂ. 1. (ಅವ್ಯಂ) 4. ಅಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಜ್ಞಾನ, ಶ್ರುತಿ ಮತ್ತು ಅಪ್ರವಚನಶ್ರವಣ ಇವುಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಜ್ಞಾನ. (ವಿಂ) 5. ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಗೋಚರವಲ್ಲದ, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸದಿರುವ, ಎದುರಿಗೆ ಇಲ್ಲದಿರುವ, ಉಪಸ್ಥಿತವಲ್ಲದ, "ಸ್ಥಾನೇ ವೃತಾ ಭೂಪತಿಮಿ: ಪರೋಕ್ಷ: ಸ್ವಯಂವರಂ ಸಾಧುಮಮಸ್ತ ಭೋಜ್ಯಾ" ರಘುಂ ೭-೧೩. 6. ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಸಿಲುಕದ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಗೂ ಎಟುಕದ, ಸ್ವಲ್ಪವೂ ಪರಿಚಯವಿಲ್ಲದ. "ಕವ ವಯಂ ಕವ ಪರೋಕ್ಷಮನ್ಮಥೋ ಮೃಗಶಾವೇ: ಸಮಮೇಧಿತೋ ಜನ:" ಶಾಕುಂ ೨-೧೮.

**ಪರೋಕ್ಷಾರ್ಥ ಪರೋಕ್ಷಾರ್ಥ (ಪುಂ)** ಕಣ್ಣೆದುರಿಗೆ ಇಲ್ಲದ ವಿಷಯ, ದೂರದಲ್ಲಿರುವ ಅಥವಾ ಮರೆಯಲ್ಲಿರುವ. ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಗೋಚರವಲ್ಲದ ವಿಷಯ.

**ಪರೋಡಾ ಪರೋಡಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪರಕೀಯ ನಾಯಿಕೆಯ ಒಂದು ಭೇದ. ಪರಕೀಯ ನಾಯಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಪರೋಡಾ ಮತ್ತು ಕನ್ಯಕಾ ಎಂದು ಎರಡು ಭೇದ. ಲಜ್ಜೆಯನ್ನು ತೊರೆದು ಉತ್ಸವಾದಿ ವ್ಯಾಜದಿಂದ ಬೀದಿಗಳಲ್ಲಿ ತಿರುಗುತ್ತ ಮನೆ ಮನೆಗೂ ಹೋಗಿ ಪರಪುರುಷರ ಸಂಬಂಧವಿಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವ ನಾಯಿಕೆಯು ಪರೋಡಾ. ಪರೋಡಾ. "ಯಾತ್ರಾದಿ-ನಿರತಾನ್ಯೋಡಾ ಕುಲಟಾ ಗಲಿತತ್ರಪಾ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೬೬. ಇವಳು ತನ್ನ ಪತಿಯಲ್ಲಿ ಅನುರಕ್ತಳಾಗಿರದೆ ಪರಪುರುಷರ ಸಂಬಂಧವಿಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವ ನಾಯಿಕೆ.

**ಪರೋಪಕಾರ ಪರೋಪಕಾರ (ಪುಂ)** ಇತರರಿಗೆ ಮಾಡುವ ಸಹಾಯ. ಪರೋಪಕಾರ: "ಪರೋಪಕಾರ: ಪುಣ್ಯಾಯ ಪಾಪಾಯ ಪರಪೀಡನಮ್" 1. "ಪರೋಪಕಾರ: ಕರ್ತವ್ಯ: ಪ್ರಾಣಿ: ಕಂಠಗತೇರಪಿ" 1. "ಶ್ರೀಖಂಡಕ್ಷುಣ್ಡಮಲಯಾಚಲ: ಕಿ ಪರೋಪಕಾರಾಯ ಸತಾಂ ವಿಭೂತಯ:" 1.

**ಪರೋಪಕಾರಿನ್ ಪರೋಪಕಾರಿನ್ (ವಿಂ)** ಇತರರಿಗೆ ಉಪಕಾರ ಮಾಡುವವನು, ಇತರರಿಗೆ ಹಿತವಾದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವವನು.

**ಪರೋರಜಸ್ ಪರೋರಜಸ್ (ವಿಂ)** 1. ರಜೋಗುಣ ಕಾರ್ಯವಾದ ಸಕಲ ದೋಷಗಳಿಂದ ದೂರನಾಗಿರುವ. ರಜಸ: ಪರ: 1. ಬಾಹುಂ ಸಮಾಸ: 1. ಪೃಷೋಂ. "ಅಕ್ಷರಂ ತೇ ಜ್ಯೋತಿ: ಪ್ರಕಾಶ್ಯತಾಮ್. ಸ ತ್ವಾಂ ಪುನಾತು ದೇವ: ಪರೋರಜಸಾಂ ಯ ಏಷ ತಪತಿ" ತಂರಾಂ ೪. 2. ಮುಕ್ತಿಹೊಂದಿದ.

**ಪರೋವರೀಣ ಪರೋವರೀಣ (ವಿಂ)** ಉತ್ಕೃಷ್ಟ ಮತ್ತು ನಿತ್ಯವ್ಯವಹಾರಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವ. ಪರಾಂಶ್ರವರಾಂಶ್ರ ಅನುಭವತಿ "ಃ" ಅವರಸ್ಯ ತ್ವಂ ಚ (೪-೨-೧೦) 1.

**ಪರೋವರೀಯಸ್ ಪರೋವರೀಯಸ್ (ಪುಂ)** 1. ಪರಮ ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ಪರಮಾತ್ಮ. ಪರಶ್ಚ ವರೀಯಾಂಶ್ರ ನಿಪಾಂ. 1. 2. ಪರಮಾನಂದ, ಬ್ರಹ್ಮಾನಂದ.

**ಪರೋಣಿ ಪರೋಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಜಿಡೆ. ಪರ: ಶತ್ರುಣೋ ಯಸ್ಯಾ: 1.

**ಪರ್ಕಟಿ ಪರ್ಕಟಿ, -ಟಿ-ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪ್ಲಕ್ಷವೃಕ್ಷ, ಜುಲಿ ಗಿಡ. ಪೃಚ್ಯತೇ-ಪೃಚಿ (ಸಂಪರ್ಕೇ) "ಕಟ:" ಬಾಹುಂ. 1. ಬಹ್ವಾದಿಂ ವಾ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೪೫) 1.

**ಪರ್ಕಟಿನ್ ಪರ್ಕಟಿನ್ (ಪುಂ)** ಪ್ಲಕ್ಷವೃಕ್ಷ, ಜುಲಿಗಿಡ.

**ಪರ್ಜನಿ ಪರ್ಜನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮರದರಿಶನ.

**ಪರ್ಜನ್ಯ ಪರ್ಜನ್ಯ (ಪುಂ)** 1. ಇಂದ್ರ. ಪೃಷ್ಠ (ಸೇವನೆ) "ಅನ್ಯ:" ಷಕಾರಸ್ಯ ಜಶ್ಚ (ತಂ ೩-೧೦೩) 1. 2. ಮೇಘ, ಮೋಡ. "ಪ್ರವೃಡ್ಛ ಇವ ಪರ್ಜನ್ಯ: ಸಾರಜ್ಞೇರಭಿನಂದಿತ:" ರಘುಂ ೧೭-೧೫. 3. ಮಳೆ. "ಅನ್ಯಾದ್ಭವಂತಿ ಭೂತಾನಿ ಪರ್ಜನ್ಯಾದನ್ಯಸಂಭವ:" ಗೀತಾ ೩-೧೪. 4. ಗುಡುಗುತ್ತಿರುವ ಮೋಡ. 5. ಮೇಘದ ಶಬ್ದ. "ಪರ್ಜನ್ಯೋ ಮೇಘಶಬ್ದೇಽಪಿ ಧ್ವನದಮ್ಬುದಶಕ್ಯಯೋ:" ಮೇದಿಂ. 1. 6. ವಿಷ್ಣು. "ಸ್ವತತ್ವಜ್ಞಾನದಾನೇನ ನಿದ್ರಾಂ ತಾಪತ್ರಯಾಪಹಾ. ಪರ್ಜನ್ಯ: ಸ ಸಮಾಖ್ಯಾತ:" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: 1. "ಪರ್ಜನ್ಯ: ಪಾವನೋಽನಿಲ:" ವಿಂ ಸಂ. 1.

**ಪರ್ಣ ಪರ್ಣ (ಪುಂ)** 1. ಕಿಂಶುಕ ವೃಕ್ಷ, ಪಲಾಶ ವೃಕ್ಷ, ಮುತ್ತುಗದ ಮರ. ಪೃ (ಪಾಲನಪೂರಣಯೋ:) "ನ:" (ತಂ ೩-೬) 1. (ನಂ) 2. ಪತ್ರ, ಎಲೆ. "ಸ್ವಯಂ ವಿಶೀರ್ಣ-ದ್ರೂಪರ್ಣವೃತ್ತಿತಾ ಪರಾ ಹಿ ಕಾಷ್ಠಾ ತಪಸಸ್ತಯಾ ಪುನ:" ಕುಮಾಂ ೫-೨೮. 3. ಗಂಧ, ರಂಧ್ರ. 4. ವೀಳ್ಯದಲೆ, "ಅನಿವಾಯ ಮುಖೇ ಪರ್ಣ ಪೂಗಂ ಸ್ವಾದಯತೇ ನರ:" 1. ಮತಿಭ್ರಂಶೋ ದರಿದ್ರ: ಸ್ಯಾದಂತೇ ನ ಸ್ಮರತೇ ಹರಿಮ್" ರಾಜನಿಂ. 1. "ಪರ್ಣ ಪತ್ರಂ ಕಿಂಶುಕೇ ನಾ" ಮೇದಿಂ. 1.



**ಪರ್ಣಕಾರ ಪರ್ಣಕಾರ** (ಪುಂ) ವೀಳ್ಯದಲೆಯನ್ನು ಬೆಳೆದು ಮಾರಿ ಜೀವಿಸುವವನು. ಪರ್ಣ ಕರೋತಿ उत्पादयति — ತು ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ಅನ್” (೩-೨-೧) ।

**ಪರ್ಣಕುಟಿ ಪರ್ಣಕುಟೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪರ್ಣಶಾಲೆ, ಎಲೆಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಗುಡಿಸಲು. ಪರ್ಣನಿರ್ಮಿತಾ ಕುಟಿ ।

**ಪರ್ಣಭೋಜನ ಪರ್ಣಭೋಜನ** (ಪುಂ) 1. ಅಡು, ಮೇಕೆ. ಪರ್ಣ ಭುಜ್ವತೇ — ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಭ್ಯವಹಾರಯೋಃ) “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪) । (ನಂ) 2. ಎಲೆಯಲ್ಲಿ ಊಟಮಾಡುವುದು. ಪರ್ಣ ಭೋಜನಮ್ । (ವಿಂ) 3. ಎಲೆಯಲ್ಲಿ ಊಟ ಮಾಡುವ. ಪರ್ಣ ಭೋಜನಂ यस್ಯ ।

**ಪರ್ಣಮುಕ್ ಪರ್ಣಮುಚ್** (ಪುಂ) ಮರಗಿಡಗಳಲ್ಲಿ ಎಲೆ ಬಿಡುವ ಕಾಲ, ಮರ ಬಿಗಿರುವ ಕಾಲ, ಶಿಶಿರ ಋತು. ಪರ್ಣಾನಿ ಮುಚ್ಚತೀತ್ — ಮುಚ್ (ಮೋಕ್ಷಣ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬) ।

**ಪರ್ಣಲ ಪರ್ಣಲ** (ವಿಂ) ಪರ್ಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಎಲೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪರ್ಣಾನಿ ಸಂತ್ಯತ್ರ-ವಾ “ಲ್” (೪-೨-೯೭) । ಪಕ್ಷೆ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪) । -ವಾನ್ -ವಾನ್.

**ಪರ್ಣಲತಾ ಪರ್ಣಲತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಾಂಬೂಲಿ ಲತೆ, ವೀಳ್ಯದಲೆಯ ಬಳ್ಳಿ. ಪರ್ಣಪ್ರಧಾನಾ ಲತಾ ।

**ಪರ್ಣವೀಟಿಕಾ ಪರ್ಣವೀಟಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಡಕೆಯನ್ನಿಟ್ಟು ಮಾಡಿಸಿ ಸುತ್ತಿದ ವೀಳ್ಯದಲೆ (ಬೀಡಾ). ಪರ್ಣಸ್ಯ ವೀಟಿಕಾ ।

**ಪರ್ಣಶಯ್ಯಾ ಪರ್ಣಶಯ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎಲೆಗಳಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಹಾಸಿಗೆ. ಪರ್ಣರಚಿತಾ ಶಯ್ಯಾ ।

**ಪರ್ಣಶಾಲಾ ಪರ್ಣಶಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎಲೆಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಮನೆ, ತಪಸ್ವಿಗಳು ವಾಸಮಾಡುವ ಕುಟೀರ. ಪರ್ಣ-ರಚಿತಾ ಶಾಲಾ । “ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಂ ಕುಲಪತಿನಾ ಸ ಪರ್ಣಶಾಲಾ-ಮಧ್ಯಾಸ್ಯ ಪ್ರಯತಪರಿಸ್ಥಿತಿಃ” ರಘುಂ ೧-೯೫ ।

**ಪರ್ಣಸ ಪರ್ಣಸ** (ವಿಂ) ಎಲೆಗೆ ಸಮೀಪ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. ಪರ್ಣಸ್ಯಾದ್ವರಭವಮ್ — ಪರ್ಣ “ಸಃ” (೪-೨-೮೦) ।

**ಪರ್ಣಾದಿ ಪರ್ಣಾದಿ** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. [ಇವನು ವಿದರ್ಭಾಧಿಪತಿಯಾದ ಭೀಮರಾಜನ ಅಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿದ್ದನು. ನಳನ ಎರಹದಿಂದ ದಮಯಂತಿಯು ವಿದರ್ಭವನ್ನು ಸೇರಿದ ನಂತರ ನಳನನ್ನು ಹುಡುಕಲು ಪರ್ಣಾದಿನನ್ನು ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಕಳುಹಿಸಿದಳು. “ವಿಶ್ರಾಂತಂ ತು ತತಃ ಪಶ್ಚಾತ್ ಪರ್ಣಾದಿಂ ದ್ವಿಜ-ಸತ್ತಮಮ್ । ಅರ್ಚಯಾಮಾಸ ವಂದಿರ್ಮಿ ಧನೇನಾತಿವ ಭಾಮಿನಿ । ನಲೇ ವೇಹಾಗತೇ ವಿಪ್ರ ಭೂಯಿ ದಾಸ್ಯಾಮಿ ತೇ ವಸು । ಯದ್ವತ್ಸಾಹಿಂ ಸಮೇಷ್ಯಾಮಿ ಶೀಘ್ರಮೇವ ದ್ವಿಜೋತ್ತಮ” ಭಾಂ ವನಂ ೬೮-೧೯, ೨೦ । (ವಿಂ) 2. ಎಲೆಯನ್ನು ತಿನ್ನುವ. ಪರ್ಣಾನ್ಯತಿ — ಅದ (ಮಕ್ಷಣ) “ಅನ್” (೩-೨-೧) ।

**ಪರ್ಣಾಶನ ಪರ್ಣಾಶನ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಕೆ, ಮೇಕೆ. ಪರ್ಣ-ನ್ಯಶನಾತಿ — ಅಶ (ಭೋಜನ) “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪) । (ವಿಂ) 2. ಎಲೆಯನ್ನು ತಿನ್ನುವ.

**ಪರ್ಣಸಿ ಪರ್ಣಸಿ** (ಪುಂ) ತುಲಸಿ. ಪರ್ಣಾನ್ಯಸ್ಯತಿ — ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಪರ್ಣಿನ್ ಪರ್ಣಿನ್** (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಪರ್ಣಾನ್ಯಸ್ಯ ಸಂತಿ — “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೫) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪರ್ಣಿನಿ ಪರ್ಣಿನೀ. 2. ಕಾಡುದ್ದಿನ ಗಿಡ.

**ಪರ್ಣಿಲ ಪರ್ಣಿಲ** (ವಿಂ) ಎಲೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪರ್ಣ “ಇಲ್” (೪-೨-೧೦೦) । ಪಿಚ್ಚಾದಿ ಗಣ ಪಾಠದಲ್ಲಿ ಈ ಪದವು ಸೇರಿಲ್ಲ. ಸಿಧ್ಧಾದಿಗಣದಲ್ಲಿ ಸೇರಿರುವುದರಿಂದ ಪರ್ಣಲಃ ಪರ್ಣಲಃ ಎಂಬ ಪ್ರಯೋಗವು ಸಾಧುವಾದುದು.

**ಪರ್ಣಿಡಜ ಪರ್ಣಿಡಜ** (ನಂ) ಪರ್ಣಶಾಲೆ, ಎಲೆಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಗೃಹ (ಗುಡಿಸಲು). ಪರ್ಣನಿರ್ಮಿತಮ್ ಉಡಜಮ್ ।

**ಪರ್ದೆ - ಕುತಿಸಿತೆ** ಶಬ್ದ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸಂ) । ಪರ್ದೆತೆ । ಪರ್ದೆ । ಪರ್ದಿತಾ । ಪರ್ದಿಷ್ಯತೆ । ಪರ್ದಿತಾಮ್ । ಅಪರ್ದಿಷ್ಠ । ಅಪರ್ದಿಷ್ಯತ । ಇತ್ಯಾದಿ. ಕೆಟ್ಟು ಶಬ್ದಮಾಡು, ಅಪಾನ ವಾಯುವನ್ನು ಬಿಡು.

**ಪರ್ದೆ ಪರ್ದೆ** (ಪುಂ) 1. ಕೇಶಪಾಶ, ಜುಟ್ಟು. 2. ಅಪಾನ ವಾಯುವಿನ ಶಬ್ದ. ಪರ್ದೆ (ಕುತಿಸಿತೆ ಶಬ್ದ) “ದಃ” ಬಾಹುಂ । “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) । -ಪರ್ದೆನಮ್ -ಪರ್ದೆನಮ್.

**ಪರ್ದೆ ಪರ್ದೆ** (ನಂ) 1. ಗೃಹ, ಮನೆ. 2. ಹೊಸದಾದ ಹಸಿ ಹುಲ್ಲು, ಎಳೆಯ ಹುಲ್ಲು. ಪ (ಪಾಲನಪೂರಣಯೋಃ) “ಪಃ” (೩ಂ ೩-೨೮) । ನಿಪಾಂ । (ಪುಂ) 3. ಹೆಳವರು ಸಂಚರಿ ಸಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಚಕ್ರವಿರುವ ಒಳ. “ಯೇನ ಪೀಠೇನ ಪಙ್ಗವಶ್ಚರಂತಿ ಸ ಪರ್ದಃ” ಸಿಂ ಕೌಂ (೪-೪-೧೦) ।

**ಪರ್ದೆ ಪರ್ದೆ** (ಪುಂ) 1. ಹಪ್ಪಳ. ಪರ್ದೆ (ಗತೀ) “ಅಡನ್” (೩ಂ ೪-೮೧) । ಮೇದಿನೀ ಕೋಶದಲ್ಲಿ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗವಾಗಿ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. 2. ಒಂದು ಟಿಪ್ಪಣಿ. “ಪರ್ದೆ ಪಿಠಭೇದೇ ಸ್ಯಾತ್ ಪರ್ದೆ ಭೇಜಾಂತರೇ” ಮೇದಿಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪರ್ದೆ ಪರ್ದೆ.

**ಪರ್ದೆ ಪರ್ದೆ** (ಪುಂ) ಕಿರಿಯ ಶಿವನಿ ಮರ. ತೇಗದ ಮರವೆಂದು ಕೆಲವರು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಪರ್ದೆ ಇವ ದ್ವಮಃ ।

**ಪರ್ದೆ ಪರ್ದೆ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 3. ಜಲಾಶಯ, ನೀರನ್ನು ಶೇಖರಿಸಿಡುವ ಕೆರೆ ಮೊದಲಾದುದು. ಪಿಪತಿ-ಪ (ಪಾಲನಪೂರಣಯೋಃ) “ಇಕನ್” (೩ಂ ೪-೨೦) ।



**ಪರ್ವೀಣ ಪರ್ವೀಣ** (ಪುಂ) ಎಲೆಯ ನರ, ಎಲೆಯ ನಾಡಿ.

**ಪರ್ವಿಕ ಪರ್ವಿಕ** (ಪುಂ) ಚಕ್ರವಿರುವ ಪೀಠದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ ಹೆಳವ. ಪರ್ವಣಿ ಚರತಿ — “ಠನ್” (೪-೪-೧೦)। “ಯೇನ ಪೀಠೇನ ಪಙ್ಗವಶ್ಚರಂತಿ ಸ ಪರ್ವಃ” ಸಿಂ ಕೌಂ ।

**ಪರ್ಯತ್ನ ಪರ್ಯತ್ನ** (ಪುಂ) 1. ಮಂಚ. ಪರಿತೋಷ್ಕೃತೇ— ಅಕಿ (ಲಕ್ಷಣ) “ಘ” (೩-೩-೧೯)। “ಅಥೋಪವಿಷ್ಠಂ ರಾಜಾನಂ ಪರ್ಯತ್ನೇ ಜ್ವಲನಪ್ರಭೇ” ಭಾಂ ವನಂ ೨೪೮-೮ । 2. ವಿರಾಸನ, ಯೋಗಾಸನದ ಒಂದು ಭೇದ, ದಕ್ಷಿಣ ಪಾದವನ್ನು ಎಡತೊಡೆಯ ಮೇಲೆಯೂ ಬಲತೊಡೆಯನ್ನು ವಾಮಪಾದದ ಮೇಲೆಯೂ ಇಟ್ಟು ಕೂಡುವುದು ವಿರಾಸನ. “ಏಕಪಾದಂ ತಥೈಕಸ್ಮಿನ್ವಿನ್ಯಸೇದ್ವರಣಿ ಸ್ಥಿತಮ್ । ಇತರಸ್ಮಿನ್ಸ್ತಥಾ ಚೋ ವೀರಾಸನಮಿತಿರೀತಮ್” ಹಠಂ । “ಪರ್ಯತ್ನಬಂಧಸ್ಥಿರಪೂರ್ವಕಾಯಮೃಜ್ವಾಯತಂ ಸನಮಿತೋಭಯಾಸಮ್” ಕುಮಾಂ ೩-೪೫ ।

**ಪರ್ಯತ್ನಬಂಧ ಪರ್ಯತ್ನಬಂಧ** (ಪುಂ) ಬೆನ್ನು ಮತ್ತು ಮಂಡಿಗಳನ್ನು ಬಳಸಿ ಬರುವಂತೆ ವಸ್ತ್ರವನ್ನು ಸುತ್ತಿ ಕಟ್ಟುವುದು, ವಸ್ತ್ರ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಬೆನ್ನು ತೊಡೆ ಮಂಡಿಗಳನ್ನು ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಿ ಕಟ್ಟುವುದು. “ಶನೈಃ ಕೃತಪ್ರಾಣವಿಮುಕ್ತಿ-ರೀಶಃ ಪರ್ಯತ್ನಬಂಧಂ ನಿವಿಡಂ ವಿಭೇದ” ಕುಮಾಂ ೩-೫೯ । -ಬಂಧನಮ್ -ಬಂಧನಮ್.

**ಪರ್ಯಚ್ಛ ಪರ್ಯಚ್ಛ** (ವಿಂ) ಸುತ್ತಲೂ ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ನಿರ್ಮಲವಾದ, ಪರಿತೋಷ್ಠಮ್ । “ಪರ್ಯಚ್ಛೇ ಸರಸಿ ಹೃತೇಶುಕೇ ಪಯೋಮಿಃ” ಮಾಘಂ ೮-೪೬ ।

**ಪರ್ಯತ್ ಪರ್ಯತ್** (ವಿಂ) ಸುತ್ತಾಡುತ್ತಿರುವ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ + ಅಟ (ಗತೌ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । “ಭೂತೋಭೂತಃ ಸವಿಧನಗರೀ-ರಥ್ಯಯಾ ಪರ್ಯತ್ನಮ್” ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೮ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ಅಡಂತಿ - ಅಟಂತಿ.

**ಪರ್ಯಟನ ಪರ್ಯಟನ** (ನಂ) ಸುತ್ತಾಡುವುದು, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಸಂಚರಿಸುವುದು. ಪರಿತೋಟನಮ್ — ಪರಿ + ಅಟ (ಗತೌ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) । ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪) । -ಅಡಿತಮ್ - ಅಟಿತಮ್. “ಭೂಮಿಃ ಪರ್ಯಟನಂ ಪುಣ್ಯಂ ತೀರ್ಥಕ್ಷೇತ್ರನಿಷೇವಣಿಃ” ಭಾಗಂ ೯-೭-೧೮ ।

**ಪರ್ಯಟನೀಯ ಪರ್ಯಟನೀಯ** (ವಿಂ) ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಸಂಚರಿಸಬೇಕಾದ. ಪರಿ + ಅಟ (ಗತೌ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬) । -ಅಡಿತವ್ಯಮ್ - ಅಟಿತವ್ಯಮ್.

**ಪರ್ಯಟಿತ ಪರ್ಯಟಿತ** (ನಂ) 1. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಸಂಚರಿಸುವುದು. ಪರಿ + ಅಟ (ಗತೌ) ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪) । (ವಿಂ) 2. ಸುತ್ತಾಡಿದ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಸಂಚರಿಸಿದ. ಪರಿ + ಅಟ ಕರ್ತಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) । ಕರ್ತಂ “ಕ್ತವತುಃ” (೩-೨-೧೦೨) । -ಅಡಿತವಾನ್ - ಅಟಿತವಾನ್.

**ಪರ್ಯನುಯೋಗ ಪರ್ಯನುಯೋಗ** (ಪುಂ) ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವ ಅಸೆಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಪ್ರಶ್ನೆ. ಪರಿತೋನುಯೋಗಃ । ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿದು ಅದನ್ನು ಖಂಡಿಸುವ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ಮಾಡುವ ಪ್ರಶ್ನೆಯು ಪರ್ಯನುಯೋಗ.

**ಪರ್ಯನುಯೋಜ್ಯ ಪರ್ಯನುಯೋಜ್ಯ** (ವಿಂ) ವಾದದಲ್ಲಿ ನಿಗೃಹೀತ (ಪರಾಜಿತ) ನಾಗಿರುವೆಯೆಂದು ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಪ್ರಶ್ನಿಸಲ್ಪಡುವವನು. ಪರಿ + ಅನು + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) ಕರ್ಮಂ “ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪) ।

**ಪರ್ಯನುಯೋಜ್ಯೋಪೇಕ್ಷಣ ಪರ್ಯನುಯೋಜ್ಯೋಪೇಕ್ಷಣ** (ನಂ) ನಿಗ್ರಹಸ್ಥಾನವನ್ನು ಹೊಂದಿದ್ದರೂ ನಿಗ್ರಹದ ವಿಷಯವನ್ನು ನಿಗೃಹೀತನಿಗೆ ತಿಳಿಸದೆ ಉಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದಿರುವುದು. ನಿಗ್ರಹಸ್ಥಾನಂ ಪ್ರಾಪ್ತವತೋನಿಗ್ರಹಃ ನಿಗ್ರಹಸ್ಥಾನಾನು-ಕ್ಷಾಪನಮ್ ಉಪೇಕ್ಷಣಮ್ ।

**ಪರ್ಯಂತ ಪರ್ಯಂತ** (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ ಸಮುದ್ರ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ. ಪರಿಗತೋಂತಮ್ । “ಪರ್ಯಂತೋ ಲಭ್ಯತೇ ಭೂಮಿಃ ಸಮುದ್ರಸ್ಯ ಗಿರೇರಪಿ । ನ ಕಥಂಚಿತ್ ಮಹೀಪಸ್ಯ ಚಿತ್ತಾಂತಃ ಕೇನಚಿತ್ ಕವಚಿತ್” । 2. ಪಾರ್ಶ್ವ, ಸಮೀಪ ಭಾಗ. “ಪರ್ಯಂತಾಶ್ರಯಿಭಿನಿಜಸ್ಯ ಸದೃಶಂ ನಾಮನಃ ಕಿರಾತೈಃ ಕೃತಮ್” ರತ್ನಾಂ ೨-೩ । 3. ಅಂಚು, ಕೊನೆ. “ಆಭಾತಿ ಪರ್ಯಂತವನಂ ವಿದ್ವರಾತ್ ಮೇಧಾಂತರಾಲಕ್ಷ್ಯಮಿವೇಂದ್ರವಿಂಬಮ್” ರಘುಂ ೧೩-೩೮ ।

**ಪರ್ಯಂತಭೂ ಪರ್ಯಂತಭೂ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗ್ರಾಮ ನಗರಗಳ ಸುತ್ತ ಭೂಮಿ, ಸಮೀಪಪ್ರದೇಶ. ಪರ್ಯಂತಸ್ಯ ಭೂಃ ।

**ಪರ್ಯಂತಿಕಾ ಪರ್ಯಂತಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ಗುಣಗಳ ನಾಶ. “ನಿವೃತ್ತಿ ವ್ಯೋಮಮುದ್ಗರಃ । ಪರ್ಯಂತಿಕಾ ಗುಣಭ್ರಂಶಃ” ಹಾರಾಂ ।

**ಪರ್ಯಯ ಪರ್ಯಯ** (ಪುಂ) 1. ಕ್ರಮವನ್ನು ಮೀರಿ ನಡೆಯುವುದು, ನಿಯಮವನ್ನು ಉಲ್ಲಂಘಿಸುವುದು, ಶಾಸ್ತ್ರಮಾರ್ಗದ ಮತ್ತು ಲೋಕಮಾರ್ಗಗಳನ್ನು ಅತಿಕ್ರಮಿಸಿ ನಡೆಯುವುದು. ಪರಿ + ಇನ್ (ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೩-೫೬) । 2. ಮುಗಿಯುವುದು, ಕೊನೆಗೊಳ್ಳುವುದು, ಅಂತ್ಯ. “ಯತ್ಕುಲಿಜ್ಞಾನ್ಯತವಃ ಸ್ವಯಮೇವತುಂಪರ್ಯಯಃ” ಮನುಂ ೧-೩೦



**ಪರ್ಯವಸಾನ ಪರ್ಯವಸಾನ** (ನಂ) 1. ಕೊನೆ, ಅಂತ್ಯ. ಪರಿ+ಅವ+ಛೋ (ಅಂತಕರ್ಮಣಿ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ನಿಶ್ಚಯ, ಅರ್ಥಾವಧಾರಣ.

**ಪರ್ಯವಸಿತ ಪರ್ಯವಸಿತ** (ವಿಂ) 1. ಪೂರ್ವಾಪರಪರ್ಯವಸಿತವೆಂಬುದರಿಂದ ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ+ಅವ+ಛೋ (ಅಂತಕರ್ಮಣಿ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). 2. ನಿಷ್ಕೃಷ್ಟವಾದ, ತೀರ್ಮಾನವಾದ, ಕೊನೆಯಮಟ್ಟವನ್ನು ಮುಟ್ಟಿದ.

**ಪರ್ಯವಸ್ಥಾ ಪರ್ಯವಸ್ಥಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿರೋಧಿಸುವುದು, ಪ್ರತಿಭಟಿಸುವುದು. ಪರಿ+ಅವ+ಛಾ (ಗತಿनिवृत्तौ) "ಅಙ್" (3-3-106). 2. ತಡೆಯೊಡ್ಡುವುದು, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವುದು. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). -ಅವಸ್ಥಾನಮ್ -ಅವಸ್ಥಾನಮ್.

**ಪರ್ಯವಸ್ಥಾತ್ ಪರ್ಯವಸ್ಥಾತ್** (ವಿಂ) 1. ವಿರೋಧಿಸುವವನು, ಪ್ರತಿಭಟಿಸುವವನು. ಪರಿ+ಅವ+ಛಾ (ಗತಿनिवृत्ತौ) "ತುಚ್" (3-1-133). 2. ತಡೆಯುವವನು, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವವನು, ಆತಂಕಪಡಿಸುವವನು. "ಅಂತಕ: ಪರ್ಯವಸ್ಥಾತ್ ಜನ್ಮಿನ: ಸಂತತಾಪದ: | ಇತಿ ತ್ಯಾಜ್ಯೇ ಭವೇ ಭವ್ಯೋ ಮುಕ್ತಾವುತಿಷ್ಠತೇ ಜನ:" ಕಿರಾಂ 11-13. 3. ವೈರಿ, ಹಗೆ, ಶತ್ರು.

**ಪರ್ಯವಸ್ಥಿತ ಪರ್ಯವಸ್ಥಿತ** (ವಿಂ) ಮತ್ತೆ ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಂತಿರುವ, ಪುನಃ ನೆಲೆಗೊಂಡಿರುವ. ಪರಿ+ಅವ+ಛಾ (ಗತಿनिवृत्ತौ) "ಕ್ತ:" (3-4-92). "ಸೌಮ್ಯದೃಷ್ಟಿರ-ಕರೋತುಧಾಭುಜ: ಪರ್ಯವಸ್ಥಿತಘೃತೀನ್ ಪರ: ಪುಮಾನ್" ಯಾದಂ 19-129.

**ಪರ್ಯಶ್ರು ಪರ್ಯಶ್ರು** (ವಿಂ) ಕಣ್ಣೀರು ತುಂಬಿದ, ಕಂಬನಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪರಿಗತಮ್ ಅಶ್ರು ಯಸ್ಯ | "ತುಷಾರಲೇಖಾ-ಕುಲಿತೋಪಲಾಭೇ ಪರ್ಯಶ್ರುಣಿ ಮಜ್ಜಲಮಜ್ಜಲಭೀರು:" ಕಿರಾಂ 3-36.

**ಪರ್ಯಸನ ಪರ್ಯಸನ** (ನಂ) 1. ಎಸೆಯುವುದು, ಬಿಸಾಡುವುದು. ಪರಿ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ಕಳುಹಿಸುವುದು, ಹೊರದೂಡುವುದು. 3. ಸುತ್ತಲೂ ಇಡುವುದು.

**ಪರ್ಯಸ್ತ ಪರ್ಯಸ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಸಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಸುತ್ತಲೂ ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಬಾಣ ಮುಂತಾದುದು). 3. ಸುತ್ತಲೂ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪರಿ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). 4. ಅತ್ತಿತ್ತ ಚಲ್ಲಾಪಿಲ್ಲಿಯಾಗಿ ಬಿದ್ದಿರುವ. "ಭಗವದ್ಭೇದೇರಾತಪತ್ರಾಣಿ ಭೂಮಿ ಪರ್ಯಸ್ತಾನಿ ಪ್ರೌಢಚಂದ್ರದ್ವಿತೀನಿ" ಮಾಧಂ 16-63. 5. ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡಿರುವ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ.

"ತತೋನ್ಮುಕ್ಯಾದ್ವಿಶದಸ್ಯ ತಸ್ಯಾಸ್ತಾನ್ಮಾಃ ಪರ್ಯಸ್ತಃ ಸ್ಮಿತಸ್ಯ" ಕುಮಾಂ 1-44. 6. ಸುತ್ತಲೂ ಒಟ್ಟು, ಸುತ್ತಲೂ ಅವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 7. ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ. 8. ಜಾರಿಬಿದ್ದ. "ಪರ್ಯಸ್ತಂ ತು ಹತೇ ಸ್ವಸ್ತೇ" ಹೇಮಂ |

**ಪರ್ಯಸ್ತಿ ಪರ್ಯಸ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂಚ. ಪರ್ಯಸ್ಯತೇ ಶರೀರಂ ಯತ್ರ - ಪರಿ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94).

**ಪರ್ಯಸ್ಯತ್ ಪರ್ಯಸ್ಯತ್** (ವಿಂ) ಹರಡುತ್ತಿರುವ, ಸುತ್ತಲೂ ವ್ಯಾಪಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪರಿ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಶತ್" (3-2-124). "ಪರ್ಯಸ್ಯನ್ನಿವ ನಿಚಯ: ಸಹಸ್ರಸಂಖ್ಯಾಮ್" ಕಿರಾಂ 4-34.

**ಪರ್ಯಾಕುಲ ಪರ್ಯಾಕುಲ** (ವಿಂ) 1. ಕದಡಿಹೋಗಿರುವ, ಬಗ್ಗಿಡವಾದ, ಕಲಕಿರುವ (ನೀರು ಮೊದಲಾದುದು). ಪರಿ+ಆ+ಕುಲ (ಸಂಸ್ಥಾನೇ ಬಂಧುಃ) "ಕ:" (3-1-134). 2. ಕೆದರಿರುವ, ಚೆದರಿರುವ, ಹರಡಿರುವ. "ಸ್ವಸ್ತಂ ಕರ್ಣಶಿರೀಷರೋಧಿ ವದನೇ ಧರ್ಮಾಭಿಮತಾಂ ಜಾಲಕಂ ಬಂಧೇ ಸಂಸಿನಿ ಚೈಕಹಸ್ತಯಮಿತಾ: ಪರ್ಯಾಕುಲಾ ಮೂರ್ಖಜಾ:" ಶಾಕುಂ 1-26. 3. ಗಾಬರಿಗೊಂಡಿರುವ. ದಿಗಿಲುಪಟ್ಟಿರುವ. "ಆರ್ಯ, ಅನೇನ ಆರಾಧ್ಯಕವೃತ್ತಾಂತೇನ ಪರ್ಯಾಕುಲಾ: ಸಮ:" ಶಾಕುಂ 1. 4. ತುಂಬಿರುವ, ನೆರೆದಿರುವ.

**ಪರ್ಯಾಣ ಪರ್ಯಾಣ** (ನಂ) ಕುದುರೆಯ ಬೆನ್ನಿನ ಮೇಲೆ ಹಾಕುವ ಜೀನು. ಪರಿ+ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). ಪೃಷೋಂ |

**ಪರ್ಯಾಪ್ತ ಪರ್ಯಾಪ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಸಾಕಷ್ಟು, ಸಾಕಾಗುವ, ಯಥೇಷ್ಟವಾದ. ಪರಿ+ಆಪ್ಲ್ಯ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತ:" (3-4-92). "ಯಾವತೇಷಾಂ ಸಮಾಪ್ಯೇರನ್ಯಜ್ಞಾ: ಪರ್ಯಾಪ್ತದಕ್ಷಿಣಾ:" ರಘುಂ 19-19. 2. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪರ್ಯಾಪ್ತಸಪ್ತಭುವನಾಭಯದಕ್ಷಿಣಾನಿ ಪುಷ್ಪಾನಿ ತಾತಚರಿತಾನ್ಯಪಿ ಯೋ ನ ವೇದ" ಉಂ ರಾಂ 4-33. 3. ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ, ಸಮಗ್ರವಾದ. "ಶರತ್ಪ್ರಮೃಷ್ಠಾಮ್ಬು-ಧರೋಪರೋಧ: ಶಶೀವ ಪರ್ಯಾಪ್ತಕಲೋ ನಲಿನ್ಯಾ:" ರಘುಂ 6-44. 4. ದಕ್ಷ, ಶಕ್ತ, ಸಮರ್ಥ. "ಪರ್ಯಾಪ್ತೋಽಸಿ ಪ್ರಜಾ: ಪಾತು-ಮೌದಾಸೀನ್ಯೇನ ವರ್ತಿಸುಮ್" ರಘುಂ 10-25. 5. ಬಹಳ, ತುಂಬ, ತುಂಬಿತುಳುಕುವ. "ಪರ್ಯಾಪ್ತಪುಷ್ಪಸ್ತಬಕಸ್ತನಾಮ್ಯ: ಸ್ಫುರತ್ಪ್ರವಾಲೌಠಮನೋಹರಾಮ್ಯ:" ಕುಮಾಂ 3-39. (ನಂ) 6. ತೃಪ್ತಿ. 7. ನಿವಾರಣ. "ಪರ್ಯಾಪ್ತಿಂ ತು ಯಥೇಷ್ಠೇ ಸ್ಯಾತ್ ತೃಪ್ತೌ ಶಕ್ತೇ ನಿವಾರಣೇ" ವಿಶ್ವಂ | (ಅವ್ಯಂ) 8. ಸಾಕಾಗುವಷ್ಟು, ತೃಪ್ತಿಯಾಗುವಷ್ಟು. "ಪ್ರಿಯಾಪೀತಾದಮ್ಯಧಿಕಂ ತಪೋವನಮೃಗ: ಪರ್ಯಾಪ್ತಮಾಚಾಮತಿ" ಉಂ ರಾಂ 4-1.



**पर्याप्ति ಪರ್ಯಾಪ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊಂದುವುದು, ಪಡೆಯುವುದು, ಸಂಪಾದಿಸುವುದು. परि + आप्ल (व्याप्तौ) भावे "क्तिन्" (३-३-९४)। 2. ರಕ್ಷಿಸುವುದು, ಕಾಪಾಡುವುದು. 3. ಸಮೃದ್ಧಿ, ತುಂಬಿರುವಿಕೆ. 4. ಸಮಾಪ್ತಿ, ಕೊನೆ. 5. ದಕ್ಷತೆ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. "वातुरद्भुतनिर्माण-पर्याप्तिमिव रूपिणीम्" कथासं०। 6. ತೃಪ್ತಿ. "नास्ति व्यसनिनां वत्स भुवि पर्याप्तये धनम्" कथासं०। 7. ಸ್ವರೂಪ ಸಂಬಂಧ ವಿಶೇಷ. अयमेको घटः इमौ द्वौ घटौ इत्यादिप्रतीतिसाक्षिकः स्वरूपसम्बन्धविशेषः।

**पर्याय ಪರ್ಯಾಯ** (ಪುಂ) 1. ಕ್ರಮ, ಒಂದಾದ ಮೇಲೆ ಮತ್ತೊಂದು ಬರುವುದು. परि + इण् (गतौ) "घञ्" (३-३-३८)। "पर्यायसेवामुत्सृज्य पुष्पसंभारतत्पराः" कुमा० २-३६। 2. ರೀತಿ, ಪ್ರಕಾರ. 3. ಸಮಾನಾರ್ಥ ವುಳ್ಳ ಶಬ್ದ. 4. ಅವಸರ, ಸಮಯ, ಅವಕಾಶ. 5. ನಿರ್ಮಾಣ, ತಯಾರಿಸುವುದು. 6. ಪದಾರ್ಥಗಳ ಗುಣ, ದ್ರವ್ಯಧರ್ಮ. 7. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ, ಪರ್ಯಾಯಾಲಂಕಾರ. ಒಂದು ವಸ್ತುವು ಕ್ರಮವಾಗಿ (ಒಂದಾದಮೇಲೊಂದರಂತೆ) ಅನೇಕ ಆಶ್ರಯಗಳನ್ನು ಪಡೆಯುವಂತೆ ವರ್ಣಿಸುವುದು "ಪರ್ಯಾಯ" ಅಲಂಕಾರ. "पर्यायो यदि पर्यायेणैकस्यानेकसंश्रयः"। उदा: "पञ्चं मुक्त्वा गता चन्द्रं कामिनीवदनोपमा" ಇಲ್ಲಿ ಕಾಮಿನೀವದನಸಾದೃಶ್ಯವು ಪದ್ಮವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬಳಕೆ ಚಂದ್ರನನ್ನು ಸೇರಿತು ಎಂದು ಅನೇಕ ಆಶ್ರಯಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿದಂತೆ ವರ್ಣಿತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಪರ್ಯಾಯಾ ಲಂಕಾರ. ಅನೇಕ ವಸ್ತುಗಳಿಗೆ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಒಂದೇ ಆಶ್ರಯದ ವರ್ಣನೆಯೂ ಪರ್ಯಾಯಾಲಂಕಾರವಾಗು ವುದು.

**पर्यायशयन ಪರ್ಯಾಯಶಯನ** (ನಂ) ಪಹರೆಯವರು ಯಾವುದ ಸರದಿಯಂತೆ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಮಲಗುವುದು. पर्यायेण क्रमेण शयनम्।

**पर्यायोक्त ಪರ್ಯಾಯೋಕ್ತ** (ನಂ) ಪರ್ಯಾಯೋಕ್ತಾ ಲಂಕಾರ, ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. पर्यायेण उक्तम्। ಒಂದು ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಗಮ್ಯವಾಗುವ ಅರ್ಥವನ್ನು ಪ್ರಕಾ ರಾಂತರದಿಂದ ವರ್ಣಿಸುವುದು "ಪರ್ಯಾಯೋಕ್ತ" ಎಂಬ ಅಲಂಕಾರ. "पर्यायोक्तं हि गम्यस्य वचो भङ्गचन्त-राश्रयम्"। उदा: "नमस्तस्मै कृतौ येन मुधा राहुवधूकुचौ" ಇಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಮೀಪತಿ ರೂಪದಿಂದ ಗಮ್ಯನಾಗುವ ವಾಸುದೇವನು ರಾಹುವಧೂಪ್ತನಗಳ ವೈಯರ್ಥ್ಯಕಾರಿ

ಯಾಗಿ ಪ್ರಕಾರಾಂತರದಿಂದ ವರ್ಣಿತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಪರ್ಯಾಯೋಕ್ತಾ ಲಂಕಾರ.

**पर्यालोचन ಪರ್ಯಾಲೋಚನ** (ನಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ವಿವೇಚನೆ ಮಾಡುವುದು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಎಚ್ಚರಿಕೆಯಿಂದ ಪರಿಶೀಲಿಸುವುದು. परि + आ + लोच् (दर्शने) "ल्यट्" (३-३-११५)।

**पर्यास ಪರ್ಯಾಸ** (ಪುಂ) 1. ಪರಿವರ್ತನೆ, ಬದಲಾವಣೆ, परि + असु (क्षेपे) "घञ्" (३-३-१८)। "पर्यासं परिमाणञ्च गति चन्द्रार्कयोरपि" मार्क०। 2. ಪತನ, ಬೀಳುವುದು. 3. ಹನನ, ಹೊಡೆಯುವುದು, ಕೊಲ್ಲುವುದು.

**पर्युक्षण ಪರ್ಯುಕ್ಷಣ** (ನಂ) ಸೇಚನೆ, ನೀರು ಮೊದ ಲಾದುವನ್ನು ಚಿಮುಕಿಸುವುದು. परितः उक्षणम्—परि + उक्ष (सेचने) "ल्युट्" (३-३-११५)।

**पर्युत्सुक ಪರ್ಯುತ್ಸುಕ** (ವಿಂ) 1. ಇಷ್ಟವಾದುದನ್ನು ಹೊಂದಲು ಆಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳ. परि + उद् + षु (प्रस-वैश्रययोः) "क्वप्" (३-२-७६)। संज्ञायां "कन्" (५-३-७५)। "पर्युत्सುकां कथयसि प्रियदर्शनां तामाति न पश्यसि पुरुरवसस्तदर्शम्" विक्र० २-१५। 2. ಚಿಂತಾ ಕ್ರಾಂತನಾದ, ಮಹತ್ತರವಾದ ಚಿಂತೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. "मुहूर्तं प्रकृतिगम्भीरोऽपि पर्युत्सुकनयन आसीत्" शाकु० ६। "रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान् पर्युत्सुकी-भवति यत्सुखितोऽपि जन्तुः" शाकु० ५-२।

**पर्युदञ्चन ಪರ್ಯುದಂಚನ** (ನಂ) 1. ಋಣ, ಸಾಲ परितः उदञ्च्यते — परि + उद् + अञ्चु (गतौ) "ल्युट्" (३-३-११३)। "स्यादृणं पर्युदञ्चनम्" अम०। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವುದು. भावे "ल्युट्" (३-३-११५)।

**पर्युवस्त ಪರ್ಯುವಸ್ತ** (ವಿಂ) 1. ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಡೆಯ ಲ್ಪಟ್ಟ. परि + उद् + असु (क्षेपणे) "क्तः" (३-२-१०२)। 2. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ.

**पर्युदास ಪರ್ಯುದಾಸ** (ಪುಂ) 1. ನಿವಾರಣ, ನಿಷೇಧ, ತಡೆಯುವುದು. परि + उद् + असु (क्षेपणे) "घञ्" (३-३-१)। 2. ವಾಕ್ಯದ ಉತ್ತರ ಪದದೊಡನೆ "नञ्"ಗೆ ಅನ್ವಯವಿದ್ದೂ ವಿಧಿಗೆ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯವೂ ಪ್ರತಿಷೇಧಕ್ಕೆ ಅಪ್ರಾಧಾನ್ಯವೂ ಇರುವಿಕೆ. "प्रधानत्वं विधेर्यत्र प्रतिषेधेऽ-प्रधानता। पर्युदासः स विज्ञेयः यत्रोत्तरपदेन नञ्" सा० ६०।

**पर्युपासक ಪರ್ಯುಪಾಸಕ** (ವಿಂ) ಆರಾಧಕ, ಪೂಜಿಸು ವವನು. परि + उप + आस (उपवेशने) "ष्वाल्" (३-१-१३३)।



**ಪರ್ಯಾಸನ ಪರ್ಯಾಸನ** (ನಂ) 1. ಪೂಜೆ. 2. ಗೌರವ, ಮರ್ಯಾದೆ. 3. ಸೇವೆ, ಶುಶ್ರೂಷೆ. ಪರಿ+ಆಪ+ಆಸ (ಆಪವೇಶನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

**ಪರ್ಯಾಸಿತ ಪರ್ಯಾಸಿತ** (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸುವವನು. 2. ಸೇವೆ ಮಾಡುವವನು, ಶುಶ್ರೂಷೆ ಮಾಡುವವನು. ಪರಿ + ಆಪ + ಆಸ (ಆಪವೇಶನೆ) "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಆಪಾಸಿತ್ರಿ-ಉಪಾಸಿತ್ರಿ. "ಗಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) । -ಆಪಾಸಿನ್-ಉಪಾಸಿನ್.

**ಪರ್ಯುಪ್ತಿ ಪರ್ಯುಪ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿತ್ತನೆಯ ಕಾರ್ಯ, ಬೀಜ ವನ್ನು ಬಿತ್ತುವುದು. ಪರಿ + ಉಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) ।

**ಪರ್ಯುಪಿತ ಪರ್ಯುಪಿತ** (ವಿಂ) ಹಳೆಯದಾದ, ಹೊಸದಲ್ಲದ. ಪರಿ + ವಸ (ನಿವಾಸ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) । ನಿಯತ ವಾದ ಕಾಲವನ್ನು ಮೀರಿರುವುದು ಪರ್ಯುಪಿತವಾಗುವುದು. ಅನ್ನ ಪುಷ್ಪ ಮೊದಲಾದುವು ಒಂದು ರಾತ್ರಿ ಕಳೆದರೆ ಮಾರನೆಯ ದಿನ ಪರ್ಯುಪಿತವಾಗುವುದು. ಪರ್ಯುಪಿತ ವಾದುದು ಪೂಜಾದಿಗಳಿಗೆ ನಿಷಿದ್ಧ. "ಯಾತಯಾಂ ಗತರಸಂ ಪೂತಿಪರ್ಯುಪಿತಂ ಚ ಯತ್" ಗೀತಾ ೧೭-೧೦ । ಕ್ರಮಿಕೆಟಾದಿ ಗಳಿಂದ ದೂಷಿತವಾಗದ ಹೊಸ ಪುಷ್ಪಗಳು ದೇವತಾರ್ಚನೆಗೆ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದುದು. "ಅಪರ್ಯುಪಿತನಿಶ್ಚಿದ್ರೇ: ಪ್ರಾಕೃತೇಜಂತು-ವಜಿತೇ: । ಸ್ವೀಯಾರಾಮೋಽಭವೇವಾಪಿ ಪುಷ್ಪ: ಸಂಪೂಜಯೇದ್ವರಿಮ್" । ಪದ್ಮ ಕಲ್ಪಾ ರ ತುಳಸಿ ಇವುಗಳಿಗೆ ಪರ್ಯುಪಿತ ದೋಷವಿಲ್ಲ.

**ಪರ್ಯೇಷಣ ಪರ್ಯೇಷಣ** (ನಂ) ಅನ್ವೇಷಣ, ಹುಡುಕುವುದು.

**ಪರ್ಯೇಷಣಾ ಪರ್ಯೇಷಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಪದಾರ್ಥಗಳ ಪರೀಕ್ಷೆ, ಶಾಸ್ತ್ರಾಧಾರದಿಂದ ವಸ್ತುಗಳ ವಿಮರ್ಶೆ. ಪರಿತ: ಶಾಸ್ತ್ರಾದಿನಾ ಷಣಾ । 2. ಅನ್ವೇಷಣ, ಹುಡುಕುವುದು, ಧರ್ಮಾದಿಗಳ ವಿಮರ್ಶೆ. ಪರಿ + ಷ (ಗತಿಯ) ವಾ "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭) । ಪಕ್ಷೆ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) । ಪರ್ಯೇಷಿ: ಪರ್ಯೇಷಿ.

**ಪರ್ಯೇಹಿ ಪರ್ಯೇಹಿ** (ವಿಂ) ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವ. ಪರಿ + ಇಹ (ವೇಷಯಾಮ್) "ಇನ್" (೩-೪-೧೧೭) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀನ್" (೪-೧-೭೩) । -ಹೀ-ಹೀ.

**ಪರ್ವಕ ಪರ್ವಕ** (ನಂ) ಮಂಡಿಯ ಕೆಲಸ, ಮಂಡಿಯ ಸಂದು. ಪರ್ವಣಾ ಕಾಯಾಂತ — ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕ:" (೩-೨-೪) ।

**ಪರ್ವಗಾಮಿನ್ ಪರ್ವಗಾಮಿನ್** (ಪುಂ) ನಿಷಿದ್ಧವಾದ ಪರ್ವದಿನ ಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ತ್ರೀಸಂಗ ಮಾಡುವವನು. ಪರ್ವಣಿ ಗಂಚತಿ — ಗಮ್ಲ (ಗತಿಯ) "ಗಿನಿ:" (೩-೨-೭೮) ।

**ಪರ್ವಣ ಪರ್ವಣ** (ವಿಂ) 1. ಪೂರ್ತಿಮಾಡುವ, ತುಂಬುವ. ಪರ್ವ (ಪೂರ್ಣ) ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) । -ಣಿ-ಣೀ. 2. ಪೂರ್ಣಮೆ, ಹುಣ್ಣಿಮೆ, 3. ಸಂಧಿವಾತ, ಸಂದುಗಳ ರೋಗ.

**ಪರ್ವಣಿಕಾ ಪರ್ವಣಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಧಿವಾತ, ಸಂದುಗಳ ರೋಗ. ಪರ್ವಣಿ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:" ।

**ಪರ್ವಣಿ ಪರ್ವಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೂರ್ಣಮೆ, ಹುಣ್ಣಿಮೆ. "ಚಂದ್ರಸ್ಯೇವೋದಯೇ ಪ್ರಾಪ್ತೇ ಪರ್ವಣ್ಯಾಂ ಸರಿತಾಂ ಪತಿ:" ಹರಿವಂ । 2. ಸಂಧಿವಾತ, ಸಂದುಗಳ ವ್ಯಾಧಿ.

**ಪರ್ವತ ಪರ್ವತ** (ಪುಂ) 1. ಗಿರಿ, ಬೆಟ್ಟ. ಪರ್ವತಿ — ಪರ್ವ (ಪೂರ್ಣ) "ಅತಚ್" (೩-೩-೧೧೦) । "ಪರ್ಯುಪಿ ತರ್ಣಕಪದಂ ಪರ್ವತಂ ಸಿಕತಾಮಯಮ್ । ಪಾತಾಲಂ ಚ ಸ್ಥಳೀಪೃಷ್ಠಂ ಪ್ರೇಕ್ಷತಾಮಿತ-ವಿಕ್ರಮ:" ಯಾದಂ ೨೨-೫೯ । 2. ಕಲ್ಲು ಬಂಡೆ. 3. ಒಬ್ಬ ದೇವರ್ಷಿ. ನಾರದ ಮಹರ್ಷಿಯ ಸೋದರಳಿಯ. "ನಾರದ: ಪರ್ವತಶ್ಚೈವ ದ್ವಾವೃಷಿ ಲೋಕಸತ್ತಮೌ । ಮಾತುಲೋ ಭಾಗಿನೇಯಶ್ಚ ದೇವಲೋಕಾದಿಹಾಗತೌ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೨೯-೫ । 4. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. 5. ಒಂದು ವಿಧ ಶಾಕ. 6. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. "ಪರ್ವತ: ಪಾದಪೇ ಪುಸಿ ಶಾಕಮತ್ಸ್ಯಪ್ರಭೇದಯೋ: । ದೇವ-ಮುನ್ಯಂತರೇ ಶೇಲೇ ಪ್ರಪಾತೋ ನಿಕ್ಷೇರೇ ತಡೇ" ಮೇದಿಂ । 7. ಸಪ್ತ (7) ಸಂಖ್ಯೆ.

**ಪರ್ವತಜ ಪರ್ವತಜ** (ವಿಂ) ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಪರ್ವತೇ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುರ್ಮವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೯೭) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜಾ-ಜಾ. 1. ಪರ್ವತ ಪುತ್ರಿ, ಪಾರ್ವತೀದೇವಿ, ಗೌರಿ, 2. ನದಿ, ಹೊಳೆ.

**ಪರ್ವತಕಾಕ ಪರ್ವತಕಾಕ** (ಪುಂ) ಕಾಗೆ ಜಾತಿಯ ಒಂದು ಹಕ್ಕಿ, ಡೊಂಬ ಕಾಗೆ.

**ಪರ್ವತರಾಜ್ ಪರ್ವತರಾಜ್** (ಪುಂ) ಪರ್ವತಗಳ ರಾಜನಾದ ಹಿಮಾಲಯ. ಪರ್ವತೇ ರಾಜತೇ—ರಾಜ (ದೀಪ್ತ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೬೧) । ಪರ್ವತಾನಾಂ ರಾಜಾ "ಟಚ್" (೫-೪-೯೧) । -ರಾಜ: -ರಾಜಾ.

**ಪರ್ವತಾತ್ಮಜ ಪರ್ವತಾತ್ಮಜ** (ಪುಂ) ಪರ್ವತ ಪುತ್ರ, ಮೈನಾಕ ಪರ್ವತ.

**ಪರ್ವತಾತ್ಮಜಾ ಪರ್ವತಾತ್ಮಜಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾರ್ವತೀದೇವಿ, ಗೌರಿ, ಪರ್ವತ ಪುತ್ರಿ. ಪರ್ವತಸ್ಯಾತ್ಮಜಾ ।

**ಪರ್ವತಾರಿ ಪರ್ವತಾರಿ** (ಪುಂ) ಮಹೇಂದ್ರ. ಪರ್ವತಾನಾಂ ಗಿರಿಣಾಂ (ತತ್ಪಕ್ಷಾನ್ವೇದಕತ್ವಾತ್) ಅರಿ: । ಪರ್ವತಗಳ ರೆಕ್ಕೆಗಳನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಇಂದ್ರನು ಪರ್ವತಗಳ ಶತ್ರು.

**ಪರ್ವನ್ ಪರ್ವನ್** (ನಂ) 1. ಉತ್ಸವ, ಹಬ್ಬ. ಪ (ಪೂರ್ಣ) "ವನಿಪ್" (೩-೪-೧೧೨) । 2. ಗ್ರಂಥಿ, ಗಂಟು, ಗೆಣ್ಣು.



“ಸಾ ವಕ್ರನಖಧಾರಿಣ್ಯಾ ವೇಣುಕರ್ಕಶಪರ್ವಯಾ” ರಘುಂ ೧೨-೪೧ |

3. ಗ್ರಂಥದ ಭಾಗ. 4. ಪಂಚ ಪರ್ವಕಾಲಗಳು, ಅಷ್ಟಮಿ, ಚತುರ್ದಶಿ, ಪೂರ್ಣಿಮೆ, ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ ಮತ್ತು ಸಂಕ್ರಮಣ.

ಇವು ಐದೂ ಪರ್ವಕಾಲಗಳು. 5. ಮೆಟ್ಟಿಲು, ಹಂತ.

“ಸೋಪಾನಪರ್ವಾಣಿ ವಿಮುಚ್ಚದಮ್ಭಃ” ರಘುಂ ೧೬-೪೬ |

6. ಹುಣ್ಣಿಮೆ ಅಥವಾ ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ ಪ್ರತಿಪತ್ತಿ (ಪಾಡ್ಯ)

ಗಳ ಸಂಧಿಕಾಲ. “ಭ್ರಾತಃ ಪರ್ವಣಿ ಪಶ್ಯ ದಾನವಪತಿಃ

ಶಿರ್ಷವಿಶೇಷಾಕೃತಿಃ” ಭರ್ತುಂ ೧-೨೬ | 7. ಪ್ರಸ್ತಾವ.

8. ಒಂದು ಲಕ್ಷಣ. 9. ಅಂಶ, ಒಂದು ಭಾಗ. “ಪವ

ಕಲಿಬಂ ಮಹೇ ಗ್ರನ್ಥೌ ಪ್ರಸ್ತಾವೇ ಲಕ್ಷಣಾಂತರೇ | ದರ್ಶಪ್ರತಿಪದೋಃ

ಸಂಧೌ ವಿಭುತ್ವಪ್ರಭೃತಿಷ್ವಪಿ” ಮೇದಿಂ | 10. ಸೂರ್ಯ

ಚಂದ್ರರ ಗ್ರಹಣ. 11. ಅಯನ ಸಂಕ್ರಾಂತಿ.

**ಪರ್ಮಮಲಾ ಪರ್ವಮೂಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಳಿ ಗಂಟೆ. ಪರ್ವಣಿ  
ಪರ್ವಣಿ ಮೂಲಂ ಯಸ್ಯಾಃ |

**ಪರ್ಮಯೋನಿ ಪರ್ವಯೋನಿ** (ಪುಂ) ಗೆಣ್ಣುಗಳಲ್ಲಿ ಮೊಳಕೆ  
ಹೊರಡುವ ಕಬ್ಬು ಮೊದಲಾದವು. ಪರ್ವ ಗ್ರನ್ಥಿಃ ಯೋನಿ-  
ಹೃತ್ಯತಿರ್ಥಾನಂ ಯಸ್ಯ |

**ಪರ್ಮಸಂಧಿ ಪರ್ವಸಂಧಿ** (ಪುಂ) ಹುಣ್ಣಿಮೆ-ಪಾಡ್ಯ ಮತ್ತು  
ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ-ಪಾಡ್ಯಗಳ ಸಂಧಿಕಾಲ. ಪರ್ವಣೋಃ ಸಂಧಿಃ |

“ಸ ಪರ್ಮಸಂಧಿಃ ಪ್ರತಿಪತ್ಯುಚ್ಚದಶಯೋರ್ಯದಂತರಮ್” ಅಮಂ |

**ಪಶು ಪರ್ತು** (ಪುಂ) 1. ಆಯುಧ, ಶಸ್ತ್ರ. ಸ್ಪೃಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೆ)  
“ಶುನ್” ಪೃ ಆದೇಶಶ್ಚ (ಉಂ ೪-೨೭) | 2. ಪರಶು, ಕೊಡಲಿ.

**ಪಶುಕಾ ಪರ್ತುಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಕ್ಕೆ ಎಲುವು. ಪಶುರಿವ  
“ಕನ್” (೪-೩-೯೬) | “ಪಾಶ್ವಾಸ್ಥಿನಿ ತು ಪಶುಕಾ” ಅಮಂ |

**ಪಶುಪಾಣಿ ಪರ್ತುಪಾಣಿ** (ಪುಂ) 1. ಗಣಪತಿ, ವಿನಾಯಕ.  
2. ಪರಶುರಾಮ. ಪಶುಃ ಪಾಣಾವಸ್ಯ |

**ಪಶುರಾಮ ಪರ್ತುರಾಮ** (ಪುಂ) ಪರಶುರಾಮ. ಪಶುಸಹಿತೋ  
ರಾಮಃ |

**ಪಶ್ವಂಥ ಪರ್ತುಧ** (ಪುಂ) ಪರಶ್ವಧ, ಕುಠಾರ, ಕೊಡಲಿ. ಪರಶ್ವಂಥ  
ಪೃಣಂ |

**ಪಲ ಪಲ** (ನಂ) 1. ನಾಲ್ಕು ಕರ್ಷಗಳ ತೂಕ.  
5 ಗುಲಗಂಜಿಗಳ ತೂಕ .. 1 ಅದ್ಯಮಾಷಕ  
16 ಅದ್ಯಮಾಷಕಗಳು .. 1 ಕರ್ಷ  
4 ಕರ್ಷಗಳ ತೂಕ .. 1 ಪಲ.

2. ಪಲಲ, ಮಾಂಸ. “ಪಲಮುನ್ಯಾನಮಾಂಸಯೋಃ” ಮೇದಿಂ |

**ಪಲಗಂಡ ಪಲಗಂಡ** (ವಿಂ) ಇಟ್ಟಿಗೆ ಮತ್ತು ಗಾರೆ ಕೆಲಸ  
ದವನು, ಸುಣ್ಣ ಬಳಿಯುವವನು. “ಪಲಗಂಡೋ ಲೇಪಕಃ”  
ವೈಜಂ | “ಪಲಗಂಡಸ್ತು ಸುಧಾಜೀವಿ ಚ ಲೇಪಕಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಪಲಕ್ಷುಷ ಪಲಂಕಷ** (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ. ಪಲಂ ಕರ್ಷತಿ—ಕರ್ಷ  
(ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಖಚ್” ಬಾಹುಂ | “ಮು” (೬-೩-೬೭) |  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಕರ್ಷಾ—ಕಷಾ. 2. ನೆಗ್ಗಿಲು ಗಿಡ. 3. ಸಣ್ಣ  
ರಾಶಿ. 4. ಕಿಂಶುಕವೃಕ್ಷ, ಮುತ್ತಗದ ಮರ. 5. ಗುಗ್ಗುಳ  
ಗಿಡ. 6. ಅರಗು. “ಪಲಕ್ಷುಷಾ ಗೋಕ್ಷುರಕೇ ರಾಸ್ತಾ ಗುಗ್ಗುಲು-  
ಕಿಶುಕೇ | ಮುಂಡೀರೀ (?) ಲಾಕ್ಷಯೋಶ್ಚ ಸ್ತ್ರೀ ರಾಕ್ಷಸೇ ತು  
ಪಲಕ್ಷುಷಃ” ಮೇದಿಂ |

**ಪಲಪ್ರಿಯ ಪಲಪ್ರಿಯ** (ಪುಂ) ರಾಕ್ಷಸ.

**ಪಲಲ ಪಲಲ** (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ. ಪಲಂ ಮಾಸಂ ಲಾತಿ — ಲಾ  
(ಆದಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೩) | (ನಂ) 2. ಮಾಂಸ,  
ಬಾಡು. ಪಲ (ಗತೌ) “ಕಲಃ” (ಉಂ ೧-೧೦೬) |  
3. ತಿಲಜೂರ್ಣ, ಎಳ್ಳಿನ ಪುಡಿ. 4. ಪಂಕ, ಕೆಸರು.  
“ಪಲಲಂ ತಿಲಚೂರ್ಣಂ ಚ ಪಕ್ಷೇ ಮಾಸೇ ನಪುಂಸಕಮ್ | ತಾ ರಾಕ್ಷಸೇ”  
ಮೇದಿಂ | 5. ಪಿತ್ತಧಾತು. “ಮಾಯುಃ ಪಲಾಗ್ನಿಃ ಪಲಲಂ  
ಜ್ವರಃ ಸ್ಯಾತ್” ಹಾರಾಂ |

**ಪಲಲಜ್ವರ ಪಲಲಜ್ವರ** (ಪುಂ) 1. ಪಿತ್ತಧಾತು. ಪಲಲಂ  
ಜ್ವರಯತಿ | 2. ಪಿತ್ತಜ್ವರ.

**ಪಲಾಶ ಪಲಾಶ** (ಪುಂ) 1. ಕಿಂಶುಕವೃಕ್ಷ, ಮುತ್ತಗದ ಮರ.  
ಪ್ರಶಸ್ತಾನಿ ಪಲಾಶಾನಿ ಸಂತ್ಯಸ್ಯ “ಅಚ್” (೪-೨-೧೨೭) |  
“ನವಪಲಾಶಪಲಾಶವನಂ ಪುರಃ ಸ್ಫುಟಪರಾಗಪರಾಗತಪಕ್ಷಜಮ್”  
ಮಾಘಂ ೬-೨ | 2. ರಾಕ್ಷಸ. ಪಲಂ ಮಾಸಮ್ ಅಶನಾತಿ — ಅಶ  
(ಭೋಜನೆ) “ಅಣ್” (೩-೨-೧) | 3. ಕಚೋರ. “ಕಚೋರೋಽಪಿ  
ಪಲಾಶಃ” ಅಮಂ | (ನಂ) 4. ಪರ್ಣ, ಎಲೆ. “ಚಲತ್ಪಲಾ-  
ಶಾಂತರಗೋಚರಾಸ್ತರೋಸ್ತುಪಾರಮುತೇರಿವ ನಕ್ತಮಂಶವಃ” ಮಾಘಂ  
೧-೨೧ | (ವಿಂ) 5. ಹಸುರುಬಣ್ಣದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್”  
(೪-೧-೬೩) | ಪಲಾಶೋ ಪಲಾಶೀಃ |

**ಪಲಾಶಿನ್ ಪಲಾಶಿನ್** (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಪಲಾಶಾನಿ  
ಸಂತ್ಯಸ್ಯ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪) | “ನೀತೇ ಪಲಾಶಿನ್ಯುಚಿತೇ  
ಶರೀರವದ್ಗಜಾಂತಕೇನಾಂತಮದಾಂತಕರ್ಮಣಾ” ಮಾಘಂ ೧೨-೪೪ |  
(ವಿಂ) 2. ಎಲೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್”  
(೪-೧-೪) | —ಶಿನೀ —ಶಿನೀಃ |

**ಪಲಾಶಿಲ ಪಲಾಶಿಲ** (ವಿಂ) ಪಲಾಶವೃಕ್ಷಕ್ಕೆ ಕೊಂಡದೂರ  
ದಲ್ಲಿರುವ. ಪಲಾಶಸ್ಯಾದೂರಭವಃ “ಫಲಃ” (೪-೨-೮೦) |

**ಪಲಿಕವಿ ಪಲಿಕವಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನರತ ಕೂದಲುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು,  
ವೃದ್ಧ ಹೆಂಗಸು. ಪಲಿತಮಸ್ಯಸ್ಯಾಃ “ಅಚ್” (೪-೨-೧೨೭) |  
ತಕಾರಸ್ಯ ಕನಾದೇಶಃ (ವಾಂ ೪-೧-೩೯) | “ಡೀಪ್”  
(೪-೧-೪) | “ವೃದ್ಧಾ ಪಲಿಕವಿ” ಅಮಂ | 2. ಮೊದಲ  
ಬಾರಿಗೆ ಗರ್ಭಿಣಿಯಾಗುವ ಹೆಂಗಸು. “ಪಲಿಕವಿ ಬಾಲಗರ್ಭಿಣಿ”  
ವೈಜಂ |



**ಪಲಿತ ಪಲಿತ (ನಂ)** 1. ಮುಟ್ಟಿನಿಂದ ಕೂದಲಿನಲ್ಲಿ ಆಗುವ ಬಿಳುಪು, ಕೂದಲು ನೆರವು. ಪಲ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಮೆಣಸು. "ಮರಿಚಂ ಪಲಿತಂ ಕ್ಯಾಮಂ ವೇಲವಂ ಪೇಲವಂ ಕಡು" ವೈಜಂ। 3. ಕರ್ದಮ, ಕೆಸರು. 4. ತಾಪ, ಬಿಸಿ, ಉಷ್ಣತೆ. 5. ಸಾಂಖ್ಯಾಣ. 6. ಕೇಶ ಪಾಶ. "ಪಲಿತಂ ಶೇಲಜೇ ತಾಪೇ ಕೇಶಪಾಶೇ ಚ ಕರ್ಮೇ" ಮೇದಿಂ। 7. ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಧಾತು ವ್ಯತ್ಯಾಸದಿಂದ ಕೂದಲು ನೆರವು. "ಕ್ರೋಧಶೋಕಶ್ರಮಕೃತಃ ಶರೀರೋಷ್ಮಾ ಶಿರೋಗತಃ। ಪಿತ್ತಂ ಚ ಕೇಶಾನ್ ಪಚತಿ ಪಲಿತಂ ತೇನ ಜಾಯತೇ"। "ಆಸನ್ ವ್ಯೋಮದಿಶ-ಸ್ತುಲಃ ಪಲಿತೇರಿವ ಪಾಂಡುರಾಃ" ಕುಮಾಂ ೧೬-೬। (ವಿಂ) 8. ನೆರೆಕೂದಲುಳ್ಳ. ಪಲಿತಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭)।

**ಪಲಿತಂಕರಣ ಪಲಿತಂಕರಣ (ವಿಂ)** ಮುದಿಯಾಗದಿರುವುದನ್ನು ಮುದಿಯಾಗಿ ಮಾಡುವ ಸಾಧನ. ಅಪಲಿತಂ ಪಲಿತಂ ಕರೋತೀನೇನ—ಙುಕ್ (ಕರಣ) ಕರಂ "ಉನ್" (೩-೨-೪೬)।

**ಪಲಿತಮಭಿವಿಣ್ಣು ಪಲಿತಂಭವಿಷ್ಣು (ವಿಂ)** ಮುದಿಯಾಗದೇ ಇರುವುದು ಮುದಿಯಾಗುವ. ಅಪಲಿತಃ ಪಲಿತೋ ಭವತಿ—ಭೂ "ಖಿಣ್ಣುಚ್" (೨-೨-೪೭)। "ಖುಕ್" (೩-೨-೪೭)।  
-ಭಾವುಕಃ -ಭಾವುಕಃ.

**ಪಲಿತಿನ ಪಲಿತನ್ (ವಿಂ)** ನೆರೆಕೂದಲುಳ್ಳ. ಪಲಿತ-ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪)।

**ಪಲ್ಯಜ್ಜ ಪಲ್ಯಂಕ (ಪುಂ)** ಮಂಚ. ಪರಿಗತೋಽಜ್ಜ್ ಯಸ್ಯ। ರಸ್ಯ ಲಃ। "ಪಲ್ಯಜ್ಜವಿಗಲಿತಹಾರಚಾರಿಭಿಃ ಸ್ವೈಃ" ಮಾಘಂ ೮-೯।

**ಪಲ್ಯಯನ ಪಲ್ಯಯನ (ನಂ)** ಕುದುರೆಯ ಜೇನು.

**ಪಲ್ಲ ಪಲ್ಲ (ಪುಂ)** 1. ಕುಸುಲ, ಉಗ್ರಾಣ, ಧಾನ್ಯದ ಶೇಖರಣೆಯ ಜಾಗ. ಪದ ಲಾತಿ — ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)। 2. ಗೃಹ, ಮನೆ.

**ಪಲ್ಲವ ಪಲ್ಲವ (ಪುಂ)** 1. ಕೆಸಲಯ, ಚಿಗುರು. ಪಲ್ಲವಾ ಲಯತೇ—ಲೂವ (ಹೇದನೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭)। "ಲೋಲೋಠ-ಮೌಷ್ಟ್ರಕಮುದ್ರಮುಖಂ ತರುಣಾಮಭ್ರಲಿಹಾನಿ ಲಿಲಿಹೇ ನವಪಲ್ಲ-ವಾನಿ" ಮಾಘಂ ೪-೬೪। 2. ಮುಂಗೈ, ತೋಳಿನ ತುದಿ. 3. ಹೆಚ್ಚು ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಹರಡಿರುವಿಕೆ. "ಪಲ್ಲವಂ ತ್ವಸ್ತ್ರೀ ಪ್ರಕೋಢೇಽಪ್ಯತಿವಿಸ್ತೃತೇ" ವೈಜಂ। 4. ವಿಟ, ಕಾಮುಕ. "ವೇಶ್ಯಾಪತೌ ಪಿಡ್ಗಕುಮ್ಮಭುಜಙ್ಗವಿಡಪಲ್ಲವಾಃ" ವೈಜಂ। 5. ರೆಂಬೆ, ಕೊಂಬೆ. 6. ಬಲ, ಶಕ್ತಿ. 7. ಲಾಕ್ಷಾರಸದ ಕೆಂಪು. 8. ಶೃಂಗಾರ. "ಪಲ್ಲವೋಸ್ತ್ರೀ ಕಿಸಲಯೇ ವಿಡಪೇ ವಿಸ್ತರೇ ಬಲೇ। ಶೃಂಗಾರೇಽಲಕ್ತಕರಾಗೇ ಚ" ಮೇದಿಂ।

**ಪಲ್ಲವಕ ಪಲ್ಲವಕ (ಪುಂ)** 1. ವಿಟ, ಜಾರಪುರುಷ. 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. (ಪುಂ) 3. ಕೆಸಲಯ.

ಚಿಗುರು. 4. ಅಶೋಕ ವೃಕ್ಷ. "ಪಿಡ್ಗಃ ಪಲ್ಲವಕೋ ವಿಡಃ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

**ಪಲ್ಲವಿಕ ಪಲ್ಲವಿಕ (ಪುಂ)** ಜಾರಪುರುಷ, ವಿಟ.

**ಪಲ್ಲವಿತ ಪಲ್ಲವಿತ (ವಿಂ)** 1. ಚಿಗುರಿರುವ, ಚಿಗುರು ಹೊರಟಿರುವ. ಪಲ್ಲವೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ "ಇತಚ್" (೪-೨-೩೬)। "ಪ್ರಿಯಾಸು ಬಾಲಾಸುರತಕ್ಷಮಾಸು ಚ ದ್ವಿಪತ್ರಿತಂ ಪಲ್ಲವಿತಂ ಚ ಬಿಭ್ರತಮ್" ನೈಷಂ ೧-೧೧೮। 2. ಅಗಲವಾದ, ವಿಸ್ತಾರ ವಾದ. 3. ಅರಗಿನ ರಸದಿಂದ ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಲಾಕ್ಷಾರಸದ ಲೇಪನದಿಂದ ಕೆಂಪಾಗಿರುವ.

**ಪಲ್ಲವಿನ್ ಪಲ್ಲವಿನ್ (ಪುಂ)** ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಪಲ್ಲವೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪)।

**ಪಲ್ಲಿ (ಪಲ್ಲಿ) ಪಲ್ಲಿ (ಪಲ್ಲಿ) (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸಣ್ಣ ಹಳ್ಳಿ, ಚಿಕ್ಕ ಗ್ರಾಮ. 2. ಗೃಹ, ಮನೆ. 3. ಗುಡಿಸಲು, ಕುಟೀರ. ಪಲ್ಲ (ಗತೌ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭)। ವಾ "ಡೀಪ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೪)। "ಪಲ್ಲಯಲ್ಪಗ್ರಾಮಕುಟಯೋಃ ಸ್ತ್ರೀ ಪಲ್ಲಃ ಸ್ಥೂಲಕುಸುಲಕೇ" ಮೇದಿಂ। 4. ಹಳ್ಳಿ, ಗೃಹ. ಪಲ್ಲಿ ಗೃಹಮಾಶ್ರಯ-ತ್ವೇನಾಸ್ತಿಸ್ಯಾಃ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭)। ಗೌರಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧)। "ಮಾಣಿಕ್ಯಾ ಭಿತ್ತಿಕಾ ಪಲ್ಲಿ ಕುಡಯಮತ್ಸ್ಯೋ ಗೃಹೋಲಿಕಾ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

**ಪಲ್ವ ಪಲ್ವ (ನಂ)** ಸಣ್ಣ ಕೊಳ, ಚಿಕ್ಕ ಜಲಾಶಯ. ಪಲ್ಯತೇ—ಪಲ (ಗತೌ) "ವಲಚ್" (೩ಂ ೪-೧೦೭)। ಪಿಬನ್ತ್ಯಸ್ಮಿನ್—ಪಾ (ಪಾನೇ) "ವಲಚ್" ಲಗಾಗಮೋ ನಿಪಾಂ (೩ಂ ೪-೧೦೭) ವಾ। "ಪಯೋಽಖಿಲಕ್ಷಮೀಮುಷಿ ಕೇಲಿಪಲ್ವಲೇ ರಿರಿಸುಹಂಸೀ ಕಲನಾದಸಾದರಮ್" ನೈಷಂ ೧-೧೧೭।

**ಪವ ಪವ (ಪುಂ)** 1. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ತೂರುವುದು. ಪೂವ್ (ಪವನೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭)। 2. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 3. ಶುದ್ಧ ಮಾಡುವುದು, ಪವಿತ್ರಗೊಳಿಸುವುದು.

**ಪವನ ಪವನ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. ಪೂವ್ (ಪವನೇ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)। ಸರ್ವದಾ ಸರ್ವತ್ರ ಸ್ವಭಾವಾದೇವ ಪವತಿ। "ಸದಾ ಸ್ವಯಂತು ಸರ್ವತ್ರ ಪ್ರವಾಹ ಇತಿ ನಿಯತಃ। ಪವನಃ ಪ್ರವಹತಿ ಯಃ ಕಥ್ಯತೇ ವೇಗೋ ಮನುಃ" ಇತಿ ನಿರ್ವಹಿಃ। "ಪವನಃ ಪಾವನೋ-ನಲಃ" ವಿಂ ಸಂ। 2. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಪುನಾತಿ—ಪೂವ್ (ಪವನೇ) "ಯುಚ್" (೩ಂ ೨-೭೮)। "ಉಪವನಪವನಾನುಪಾತ-ದಕ್ಷೇರಲಿಭಿರಲಾಭಿ ಯದಜ್ಞನಾಗಣಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೭-೨೭। 3. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ತೂರುವುದು. (ನಂ) 4. ಆವಿಗ, ಕುಂಬಾರನು ಮಡಕೆಗಳನ್ನು ಬೇಯಿಸುವ ಜಾಗ. ಪುನಾತ್ಯತ್ರ—ಪೂವ್ (ಪವನೇ) ಅಭಿಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭)। 5. ಜಲ, ನೀರು. ಪೂವ್ ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ಪವನಂ



ಕುम्ಭಕಾರಸ್ಯ ಪಾಕಸ್ಥಾನೇ ನಪುಸಕಮ್ । ನಿಷ್ಪಾದಮರುತೋಃ ಪುಂಸಿ”  
ಮೇದಿಂ । 6. ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು, ಪವಿತ್ರಗೊಳಿಸುವುದು.  
ಪೂಜ್ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।

ಪವನತನಯ ಪವನತನಯ, -ಸುತ-ಸುತ, -ಸುನು-ಸೂನು  
(ಪುಂ) ವಾಯುಪುತ್ರ—(1) ಭೀಮಸೇನ. (2) ಅಂಜನೇಯ.  
(3) ಅಗ್ನಿ.

ಪವನವ್ಯಾಧಿ ಪವನವ್ಯಾಧಿ (ಪುಂ) ಉದ್ದವ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ  
ಒಬ್ಬ ಮಿತ್ರ ಮತ್ತು ಮಂತ್ರಿ. ಪವನ: ವಾತರೋಗೋ ವ್ಯಾಧಿರಸ್ಯ ।

“ಪ್ರಾಪಯನ್ ಪವನವ್ಯಾಧೇಗಿರಮುತ್ತರಪಕ್ಷತಾಮ್” ಮಾಧಂ ೨-೧೫ ।

ಪವನಾತ್ಮಜ ಪವನಾತ್ಮಜ (ಪುಂ) ವಾಯುಪುತ್ರ—(1)  
ಅಂಜನೇಯ. (2) ಭೀಮಸೇನ. (3) ಅಗ್ನಿ. “ವಾಯೋ-  
ರಗ್ನಿ:” ತೇಂ ೩೦ ।

ಪವನಾಶ ಪವನಾಶ (ಪುಂ) ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಪವನಮನಾತಿ—  
ಅಶ (ಭೋಜನೆ) “ಅಣ್” (೩-೨-೧) ।

ಪವನಾಶನ ಪವನಾಶನ (ಪುಂ) ಸರ್ಪ, ಹಾವು.

ಪವನಾಶನಾಶ ಪವನಾಶನಾಶ (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. 2.  
ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಪವನಾಶನಮನಾತಿ—ಅಶ (ಭೋಜನೆ)  
“ಅಣ್” (೩-೨-೧) ।

ಪವಮಾನ ಪವಮಾನ (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಪವತೇ—ಪೂಜ್  
(ಪವನೇ) “ಶಾನನ್” (೩-೨-೧೨೮) । ಮುಗಾಗಮ: (೭-೨-೮೨) ।

ಪವಮಾನತನಯ ಪವಮಾನತನಯ, -ಪುತ್ರ-ಪುತ್ರ, -ಸುತ  
-ಸುತ, -ಸುನು-ಸೂನು (ಪುಂ) ವಾಯುಪುತ್ರ—  
(1) ಅಂಜನೇಯ. (2) ಭೀಮಸೇನ. (3) ಅಗ್ನಿ.

ಪವಮಾನಾತ್ಮಜ ಪವಮಾನಾತ್ಮಜ (ಪುಂ) ವಾಯುಪುತ್ರ—  
(1) ಅಂಜನೇಯ. (2) ಭೀಮಸೇನ. (3) ಅಗ್ನಿ. “ಪವಮಾ-  
ನಾತ್ಮಜೋ ವಹ್ನಿಹವ್ಯವಾಹನ ಉಚ್ಯತೇ” । “ವಾಯೋರಗ್ನಿ:”  
ಶ್ರುತಿ: ।

ಪವಾರು ಪವಾರು (ಪುಂ) ಹಾಗಲಗಿಡ. “ಪವಾರು: ಕಾರವೇಲ್ಲೋಸ್ತೌ”  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಪವಿ ಪವಿ (ಪುಂ) 1. ವಜ್ರಾಯುಧ. ಪೂಜ್ (ಪವನೇ) “ಃ”  
(೩-೪-೧೩೮) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ವಾಕ್ಕು, ಮಾತು.

ಪವಿತ ಪವಿತ (ನಂ) 1. ಮರಿಚ, ಮೆಣಸು. (ವಿಂ) 2.  
ಪವಿತ್ರವಾದ, ಪರಿಶುದ್ಧವಾದ. ಪೂಜ್ (ಪವನೇ) “ಕ್ತ:”  
(೩-೪-೭೨) । ವಾ ಇಡಾಗಮ: (೭-೨-೫೧) । ಪಕ್ಷೇ ಪೂತ: ।  
“ತತ್ರ ಮನ್ತ್ರಪವಿತಂ ಹವಿ: ಕೃತಾವಶನತೋ ನ ವಪುರೇವ ಕೇವಲಮ್”  
ಮಾಧಂ ೧೪-೨೬ ।

ಪವಿತ್ರ ಪವಿತ್ರ (ನಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಪೂಜ್  
(ಪವನೇ) “ಃ” (೩-೪-೧೩೮) । ಗುಣವಿಭವರೂಪ-

ನಿರೂಪಕಸೋಪಾನೇನ ತನ್ವಿರೂಪ್ಯಸ್ವರೂಪಮನುಪ್ರವಿಶತಿ । “ಪವಿತ್ರಂ  
ಮಜ್ಜಲಂ ಪರಮ್” ವಿಂಸಂ । 2. ಹೋಮದಲ್ಲಿ ಅಜ್ಞವನ್ನು  
ಶುದ್ಧಮಾಡುವ ಎರಡು ದರ್ಭೆಗಳು. (ದರ್ಭೆಯ ಎರಡು  
ಅಗ್ರಗಳು) ಪೂಜೆ ಆಜ್ಯಮನೇನ — ಪೂಜ್ (ಪವನೇ) “ಃ”  
(೩ಂ ೪-೧೩೮) । 3. ವೈದಿಕ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಅನಾಮಿಕಾ  
ಬೆರಳಿಗೆ ಹಾಕಿಕೊಳ್ಳಬೇಕಾದ ದರ್ಭೆಯ ಅಥವಾ ಸ್ಪರ್ಶದ  
ಉಗುರ. 4. ಯಜ್ಞೋಪವೀತ. 5. ತಾಮ್ರಲೋಹ.  
6. ವೃಷ್ಟಿ, ಮಳೆ. 7. ಜಲ, ನೀರು. 8. ಅಜ್ಞ, ಫುತ,  
ತುಪ್ಪ. (ವಿಂ) 9. ಪರಿಶುದ್ಧವಾದ. “ತೃಣಿ ಶ್ರಾದ್ಧೇ  
ಪವಿತ್ರಾಣಿ ದೌಹಿತ್ರ: ಕೃತಪಸ್ತಿಕಾ:” ಮನುಂ ೩-೨೩೫ ।  
“ತೃಣಿ ದೇವಾ: ಪವಿತ್ರಾಣಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾನಾಮಕಲ್ಪಯನ್ । ಅದೃಷ್ಟ-  
ಮದ್ವಿನಿರ್ಗುಣಕಂ ಯಜ್ಞ ವಾಚಾ ಪ್ರಶಸ್ಯತೇ” ಮನುಂ ೫-೧೨೭ ।  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತ್ರಾ-ತ್ಯಾ. 10. ಶುಲಸಿಗಿಡ. 11. ಹಂದ್ರ,  
ಅರಿಶಿನ. 12. ಒಂದು ನದಿ.

ಪವಿತ್ರಕ ಪವಿತ್ರಕ (ಪುಂ) 1. “ಪವಿತ್ರ” ಪದದ ಅರ್ಥ.  
2. ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿಮರ. 3. ಅತ್ತಿಮರ. 4. ಕುಶ,  
ದರ್ಭೆ. 5. ಮೀನುಬಲೆಯ ದಾರ. “ಶಣಸುತ್ರಂ ಪವಿತ್ರಕಮ್”  
ಅಮಂ ।

ಪಶವ್ಯ ಪಶವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಪಶುವಿಗೆ ಹಿತವಾದ, ಪಶುವಿಗೆ  
ತಕ್ಕದಾದ. ಪಶವೇ ಹಿತಮ್ “ಯತ್” (೫-೧-೫) । “ರಮ್ಯಂ  
ಪಶವ್ಯಮಾಜೀವ್ಯಂ ಜಾಙ್ಗಲಂ ದೇಶಮಾವಸೇತ್” ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೩೨೧ ।  
2. ಪಶುವಿಗೆ ಸಂಬಂಧಪಟ್ಟ, ಪಶುಸಂಬಂಧವಾದ.

ಪಶು ಪಶು (ಪುಂ) 1. ಗೋವು, ಆಕಳು, ಹಸು. ಸರ್ವಮವಿ-  
ಶೇಷೇಣ ಪಶ್ಯತಿ—ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) “ಕ್ರು:” (೩ಂ ೧-೨೭) ।  
ಪಶ್ಯಾದೇಶಶ್ಚ । “ಪ್ರಜಾಪತಿರ್ಹಿ ವೈಶ್ಯಾಯ ಸೃಷ್ಟ್ವಾ ಪರಿದದೇ  
ಪಶುನ್” ಮನುಂ ೧-೩೨೭ । 2. ಪ್ರಾಣಿ, ಜನ್ತುಸಾಮಾನ್ಯ.  
ಪಶುಗಳು ಗ್ರಾಮ್ಯ ಮತ್ತು ಅರಣ್ಯಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ.  
[“ಆರಣ್ಯ” ಮತ್ತು “ಗ್ರಾಮ್ಯಪಶು” ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]  
3. ಪ್ರಮಥ ಗಣ. 4. ದೇವತೆ. 5. ಛಾಗ, ಆಡು,  
ಮೇಕೆ. 6. ಅಗ್ನಿ. 7. ಯಜ್ಞ, ಯಾಗ. (ಅವ್ಯಂ)  
8. ದರ್ಶನ, ನೋಟ. 9. ಜೀವ, ಜೀವಾತ್ಮ. “ನಿವಹಾ:  
ಪಶವೋ ನಾಥ ತ್ವದೇಕಾಧೀನಮುಕ್ತಯ:” ಯಾದಂ ೧೬-೧೧೮ ।  
ಏನೂ ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದ ಮನುಷ್ಯನ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಈ  
ಪಶುಪದಪ್ರಯೋಗವಿರುವುದು. ನೃಪಶು: ನರಪಶು: ಇತ್ಯಾದಿ.  
“ವಿದ್ಯಾವಿಹೀನ: ಪಶು:” ।

ಪಶುಚರ್ಯಾ ಪಶುಚರ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಶುವಿನಂತೆ ಲಜ್ಜೆಯನ್ನು  
ತೋರಿಸುವ ಮಾಡುವ ವ್ಯವಹಾರ. ಪಶೋರಿವ ಚರ್ಯಾ ।

ಪಶುದೇವತಾ ಪಶುದೇವತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಶುವಿನ ಅಧಿಪತ್ಯ  
ದೇವತೆ.



**ಪಶುಧರ್ಮ ಪಶುಧರ್ಮ** (ಪುಂ) ಪಶುವಿನ ವ್ಯವಹಾರ, ಲಜ್ಜೆಯನ್ನು ತೊರೆದು ಸ್ವಚ್ಛೆಯಂತೆ ನಡೆಸುವ ಪಶುವಿಗೆ ಸಮಾನವಾದ ವ್ಯವಹಾರ. ಪಶುನಾಮಿವ ಯಥೇಷ್ಠಮೆಥುನಾದಿರೂಪೋ-  
ಧರ್ಮಃ | “ಅಯಂ ದ್ವಿಜೇಹಿ ವಿವಿಧಿಃ ಪಶುಧರ್ಮೋ ವಿಗೃಹಿತಃ”  
ಮನುಂ ೧-೬೬ |

**ಪಶುನಾಥ ಪಶುನಾಥ** (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮಾತ್ಮ. ಪಶುನಾ-  
ನಾಥಃ |

**ಪಶುಪ ಪಶುಪ** (ವಿಂ) 1. ಪಶುಗಳನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನು.  
ಪಶುನ್ ಪಾತಿ — ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) “ಕಃ” (೩-೨-೩) |  
2. ಪಶುಗಳ ಒಡೆಯ.

**ಪಶುಪತಿ ಪಶುಪತಿ** (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮಾತ್ಮ,  
ಮಹಾದೇವ. ಪಶುನಾಂ ಜೀವಾನಾಂ ಪತಿಃ | “ಪಶುಪತಿರಪಿ  
ತಾನ್ಯಹಾನಿ ಕೃಚ್ಛಾತ್” ಕುಮಾಂ ೬-೯೫ | 2. ಪಶುವಿನ  
ಯಜಮಾನ, ಪಶುವಿನ ಒಡೆಯ.

**ಪಶುಪಾಲ ಪಶುಪಾಲ** (ವಿಂ) ಗೋಪಾಲಕ, ಗೊಲ್ಲ, ದನ  
ಕಾಯುವವನು. ಪಶುನ್ ಪಾಲಯತಿ — ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) +  
ಗಿಚ್ “ಅನ್” (೩-೨-೧) | “ಯಸ್ಮಿಂ ಚ ಪಶುಪಾಲಶ್ಚ  
ಪರಿವೇತ್ತಾ ನಿರಾಕೃತಿಃ | ಬ್ರಹ್ಮದ್ವಿತ್ಯುಪರಿವಿತ್ತಿಶ್ಚ ಗಣಾಭ್ಯಂತರ  
ಏವ ಚ” ಮನುಂ ೩-೧೫೪ | ಪಶು + ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) +  
ಗಿಚ್ “ಫಲ್” (೩-೧-೧೩೪) | —ಪಾಲಕಃ — ಪಾಲಕಃ.

**ಪಶುಪಾಲನ ಪಶುಪಾಲನ** (ನಂ) ಪಶುಗಳನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವುದು,  
ಪಶುಗಳನ್ನು ಪೋಷಿಸುವುದು. ಪಶುನಾಂ ಪಾಲನಮ್ |

**ಪಶುಪಾಶ ಪಶುಪಾಶ** (ಪುಂ) 1. ಪಶುಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವ  
ಹಗ್ಗ. ಪಾಶಯತೇಜೇನ — ಪಾಶ (ಬಂಧನೆ) “ಭಜ್” (೩-೩-೧೨೧) |  
ಪಶುನಾಂ ಪಾಶಃ | 2. ಜೀವಾತ್ಮನ ಬಂಧನ.

**ಪಶುಪಾಶಕ ಪಶುಪಾಶಕ** (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಸುರತ ಬಂಧ.  
“ಸ್ತ್ರೀಯಮಾನತಪ್ತವಾನ್ ಪಶುಪಾಶಕಃ” ರತಿಮಂ |

**ಪಶುಮಾರಮ್ ಪಶುಮಾರಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಪಶುವನ್ನು ಕೊಲ್ಲು  
ವಂತೆ, ಪಶುವನ್ನು ಹಿಂಸಿಸುವಂತೆ. ಪಶುಮಿವ ಮಾರಯಿತ್ವಾ —  
ಮೃಡ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೆ) “ಗಮುಲ್” (೩-೪-೪೬) | “ಪ್ರಗೃಹ್ಯ  
ತರಸಾ ದೋಮ್ಯಾಂ ಪಶುಮಾರಮಮಾರಯತ್” ಭಾಂ ವನಂ ೧೧-೬೩ |

**ಪಶುರಜ್ಜು ಪಶುರಜ್ಜು** (ಪುಂ) ಪಶುಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟಿಹಾಕುವ  
ಹಗ್ಗ.

**ಪಶುರಾಜ ಪಶುರಾಜ** (ಪುಂ) ಪಶು (ಮೃಗ)ಗಳಿಗೆ ರಾಜ  
ನಾದ ಸಿಂಹ. ಪಶುನಾಂ ರಾಜಾ “ರಜ್” (೪-೪-೧೧) |

**ಪಶ್ವಾತ್ ಪಶ್ವಾತ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಹಿಂಭಾಗ. ಅಪರ “ಆತಿಃ”  
ಪಶ್ವಾಭಾವಶ್ಚ (೪-೩-೩೨) | 2. ಹಿಂಭಾಗದಿಂದ, ಹಿಂದೆಗಡೆ

ಯಿಂದ. “ಪಶ್ವಾತ್ ಪಶ್ವಾತ್ ಪುರುಷಮಾಧಾಯ ರಕ್ಷಿಣೌ ಚ” ಶಾಕುಂ ೬ |  
3. ಹಿಂಭಾಗದಲ್ಲಿ, ಹಿಂದೆಗಡೆಯಲ್ಲಿ. “ಪುರಃಸ್ಥಿತೇ ಗೋಪ್ತಾರಿ  
ವಿಶ್ವಹೇತೌ ಪಶ್ವಾದವಸ್ಥಾಯಿನಿ ತತ್ಪ್ರವರ್ತಯೇ” ಯಾದಂ ೨೩-೨೩ |  
4. ಅನಂತರ, ಬಳಿಕ, ತರುವಾಯ. “ಧೌತಾಪಾಜ್ಜಂ ಹರಶಶಿ-  
ಕಾ ಪಾವಕೇಸ್ತಂ ಮಯೂರಂ ಪಶ್ವಾದದಿಗ್ರಹಣಗುರಿಭಿರ್ಗಜಿತೇನೇತೇಯಾಃ”  
ಮೇಘಂ ೧-೪೪ | 5. ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕು. 6. ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕು  
ನಿಂದ. 7. ಪಶ್ಚಿಮದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ. 8. ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ. 9. ಅಧಿಕಾರ.  
“ಪಶ್ವಾತ್ಪ್ರತಿಚ್ಯಾಂ ಚರಮೇಷ್ಯಾಧಿಕಾರೇಽಪಿ ದೃಶ್ಯತೇ” ಮೇದಿಂ |

**ಪಶ್ವಾತ್ಕೃತ ಪಶ್ವಾತ್ಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು,  
2. ತಳ್ಳಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು. “ತಯಾ ತು ತಸ್ಯಾರ್ಥಶರೀರಭಾಜಾ  
ಪಶ್ವಾತ್ಕೃತಾಃ ಸ್ನಿಗ್ಧಜನಾಶಿಷೋಽಪಿ” ಕುಮಾಂ ೭-೨೮ |

**ಪಶ್ವಾತ್ತನ ಪಶ್ವಾತ್ತನ** (ವಿಂ) ಹಿಂಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ, ಹಿಂದೆ  
ಗಡೆ ನಡೆದುಬರುತ್ತಿರುವ. ಪಶ್ವಾತ್ತನ್ವತಿ ಗಮನಾದಿನಿ —  
ತನು (ವಿಸ್ತಾರ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) | “ನೃಪಃ ಪುರಃಸ್ಥಃ  
ಪ್ರತಿಬದ್ಧವತ್ಸರ್ಮಾ ಪಶ್ವಾತ್ತನಃ ಕಶ್ಚನನುಚ್ಛಮಾನಃ” ನೈಷಂ ೧೦-೬ |  
“ಅಗ್ರಾದಿಪಶ್ವಾಡ್ಧಿಮಚ್” (ವಾಂ ೪-೩-೨೩) ವಾರ್ತಿಕದಿಂದ  
ಪಶ್ವಾತ್ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ “ಡಿಮಚ್” ಪ್ರತ್ಯಯ ವಿಧಿಸಿರುವುದರಿಂದ  
“ಸಾಯಿವಿರಂ....” (೪-೩-೨೩) ಸೂತ್ರದಿಂದ “ಠ್ಯು”  
ಪ್ರತ್ಯಯ ಬರುವಂತಿಲ್ಲ. ಅದುದರಿಂದ ತನು ಧಾತುವಿಗೆ  
“ಅಚ್” ಪ್ರತ್ಯಯ ವಿಧಿಸಿ ಪಶ್ವಾತ್ತನ ರೂಪ ನಿಷ್ಪನ್ನವಾಗ  
ಬೇಕು.

**ಪಶ್ವಾತ್ತಾಪ ಪಶ್ವಾತ್ತಾಪ** (ಪುಂ) ಅನಂತರ ವಿಷಾದಪಡು  
ವುದು, ತಪ್ಪು ಕಾರ್ಯ ಮಾಡಿ ತರುವಾಯ ಅದಕ್ಕಾಗಿ  
ಮರುಗುವುದು. ಪಶ್ವಾತ್ ಅನಂತರಮ್ ತಾಪಃ | “ಪಶ್ವಾತ್ತಾಪೋ  
ನಿರಾಹಾರಃ ಸರ್ವೇಷಾಂ ಶುದ್ಧಿಹೇತವಃ” ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೩೧ |

**ಪಶ್ವಾರ್ಥ ಪಶ್ವಾರ್ಥ** (ಪುಂ) ಹಿಂದಿನ ಅರ್ಧಭಾಗ, ಶರೀರದ  
ಹಿಂಭಾಗ. ಅಪರಪಶ್ವಾಸಾರ್ವಾರ್ಥ — ಅಪರಸ್ಯ ಪಶ್ವಾರ್ಥಃ  
(೨-೧-೫೮) | “ಪಶ್ವಾರ್ಥೇನ ಪ್ರವಿಷ್ಟಃ ಶರಪತನಭಯಾದ್ಭಯಸಾ  
ಪೂರ್ವಕಾಯಮ್” ಶಾಕುಂ ೧-೭ |

**ಪಶ್ಚಿಮ ಪಶ್ಚಿಮ** (ವಿಂ) 1. ಹಿಂಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ, ಹಿಂದೆಗಡೆ  
ಯಿರುವ. ಪಶ್ವಾತ್ಪಶ್ಚಿಮಃ “ಡಿಮಚ್” (ವಾಂ ೪-೩-೨೩) |  
2. ಅನಂತರದ, ಮುಂದಿನ, ಎರಡನೆಯ. “ಪೂರ್ವಾ ಸಂಖ್ಯಾಂ  
ಜಪಂಸ್ತಿಷ್ಠತೇಶಮೇನೋ ವ್ಯಪೋಹತಿ | ಪಶ್ಚಿಮಾಂ ತು ಸಮಾಸೀನೋ  
ಮಲಂ ಹಂತಿ ದಿವ್ಯಾಕೃತಮ್” ಮನುಂ ೨-೧೦೨ | (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
—ಮಾ —ಮಾಃ ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕು. “ಮಲಯಕುಹರಜೋಭಿರ್ಮುಷಯನ್  
ಪಶ್ಚಿಮಾಶಾಮ್” ಮಾಘಂ ೧೧-೧೪ |

**ಪಶ್ಚಿಮರಾತ್ರ ಪಶ್ಚಿಮರಾತ್ರ** (ಪುಂ) ರಾತ್ರಿಯ ಉತ್ತರ ಭಾಗ,  
ರಾತ್ರಿಯ ಉತ್ತರಾರ್ಧ. ಪಶ್ಚಿಮಂ ರಾತ್ರಿಃ, ಏಕದೇಶಿಸಮಾಸಃ |







ಪಸ್ತಂ ಪಾಂಶು (ನಂ) ಗುಣ, ಮನ.

ಪಾ - ಪಾನೇ (ಸ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) ।

ಲಟ್— ಪಿಬತಿ ಪಿಬತಃ ಪಿಬಂತಿ ।

ಪಿಬಸಿ ಪಿಬಥಃ ಪಿಬಥ ।

ಪಿಬಾಮಿ ಪಿಬಾವಃ ಪಿಬಾಮಃ ।

ಲಿಟ್— ಪಪೌ ಪಪತುಃ ಪಪುಃ ।

ಪಪಿಥ } ಪಪಥುಃ ಪಪ ।

ಪಪೌ ಪಪಿವ ಪಪಿಮ ।

ಲುಟ್— ಪಾತಾ ಪಾತಾರೌ ಪಾತಾರಃ ।

ಲೃಟ್— ಪಾಸ್ಯತಿ ಪಾಸ್ಯತಃ ಪಾಸ್ಯಂತಿ ।

ಲोट्— ಪಿಬತು } ಪಿಬತಾಮ್ ಪಿಬಂತು ।

ಪಿಬ } ಪಿಬತಮ್ ಪಿಬತ ।

ಪಿಬಾತಿ ಪಿಬಾವ ಪಿಬಾಮ ।

ಲङ्— ಅಪಿಬತ್ ಅಪಿಬತಾಮ್ ಅಪಿಬನ್ ।

ವಿधिलिङ्—पिबेत् पिबेताम् पिबेयुः ।

आशीलिङ्—पेयात् पेयास्ताम् पेयासुः ।

लुङ्— अपात् अपाताम् अपुः ।

लृङ्— अपास्यत् अपास्यताम् अपास्यन् ।

1. ಕುಡಿ, ಪಾನಮಾಡು. "ಮಧು ದ್ವಿರೇಫಃ ಕುಸುಮೈಕಪಾತ್ರೇ

ಪಪೌ ಪ್ರಿಯಾಂ ಸ್ವಾಮನುವರ್ತಮಾನಃ" ಕುಮಾಂ ೩-೩೬ । 2.

ಪಾಂಶುಮಾ, ಮುಂತ್ರಿಡು. "ಕರೌ ವ್ಯಾಧುನ್ವತ್ಯಾಃ ಪಿಬಸಿ

ರತಿಸರ್ವಸ್ವಮಧರಮ್" ಶಾಕುಂ ೧-೨೦ । 3. ಅದರ ಕಡೆ

ನೋಡು, ಅ ಕಡೆ ನೋಡು. "ವಸಿಷ್ಠಧೇನೋರನುಯಾಯಿನಂ

ತಮಾವರ್ತಮಾನಂ ವನಿತಾ ವನಾಂತಾತ್ । ಪಪೌ ನಿಮೇಶಾಲಸಪಕ್ಷಮ-

ಪಙ್ಕ್ತಿರೂಪಿತಾಭ್ಯಾಮಿವ ಲೋಚನಾಭ್ಯಾಮ್" ರಘುಂ ೨-೧೯ ।

ಕರ್ಮಣಿಃ—ಪೀಯತೇ । ಪಪೇ । ಪಾಯಿತಾ, ಪಾತಾ । ಪಾಯಿಷ್ಯತೇ,

ಪಾಸ್ಯತೇ । ಪೀಯತಾಮ್ । ಅಪೀಯತ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗಿಣಿಃ—ಪಾಯಯತಿ । ಪಾಯಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ,

-ಆಸ । ಪಾಯಯಿತಾ । ಪಾಯಯಿಷ್ಯತಿ । ಪಾಯಯತು । ಆಪಾಯಯತ್ ।

ಇತ್ಯಾದಿ.

ಘಂತಾತ್ ಕರ್ಮಣಿಃ—ಪಾಯಯತೇ । ಪಾಯಯಾಂ -ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ,

-ಆಸೇ । ಪಾಯಯಿತಾ, ಪಾಯಿತಾ । ಪಾಯಯಿಷ್ಯತೇ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿಃ—ಪಿಪಾಸತಿ । ಪಿಪಾಸಾಂ ಚಕಾರ । ಪಿಪಾಸಿತಾ ।

ಪಿಪಾಸಿಷ್ಯತಿ । ಪಿಪಾಸತು । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸುಃ—ಪಾತವ್ಯಮ್ । ಪಾನೀಯಮ್ । ಪೇಯಮ್ । ಪೀತಮ್ ।

ಪೀತವಾನ್ । ಪಿಬನ್, ಪಿಬಂತಿ । ಪಾತುಮ್ । ಪೀತಮ್ । ಪಾನಮ್ ।

ಪೀತ್ವಾ । ನಿಪಾಯ । ನಿಪೀಯ ಎಂಬುದು ಪೀಡ್ (ಪಾನೇ) ಧಾತುವಿನ ಲೃಬಂತ ರೂಪ.

ಘಂತಾತ್ ಕೃತ್ಸುಃ—ಪಾಯಯಿತವ್ಯಃ । ಪಾಯನೀಯಃ । ಪಾಯ್ಯಃ ।

ಪಾಯಿತಃ । ಪಾಯಿತವಾನ್, -ವಂತಿ । ಪಾಯಯನ್, -ಯಂತಿ ।

ಪಾಯಯಮಾನಃ । ಪಾಯಯಿತುಮ್ । ಪಾಯಿತಮ್ । ಪಾಯನಮ್ ।

ಪಾಯಯಿತ್ವಾ । ನಿಪಾಯ್ಯ ।

ಪಾ - ರಕ್ಷಣೇ (ಅದಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) ।

ಪಾತಿ ಪಾತಃ ಪಾಂತಿ

ಪಾಸಿ ಪಾಥಃ ಪಾಥ ।

ಪಪೌ ಪಪತುಃ ಪಪುಃ ।

ಪಪಿಥ } ಪಪಥುಃ ಪಪ ।

ಪಪೌ ಪಪಿವ ಪಪಿಮ ।

ಪಾತಾ ಪಾತಾರೌ ಪಾತಾರಃ ।

ಪಾಸ್ಯತಿ ಪಾಸ್ಯತಃ ಪಾಸ್ಯಂತಿ

ಪಾತು } ಪಾತಾಮ್ ಪಾಂತು ।

ಪಾತಾತ್ } ಪಾತಮ್ ಪಾತ ।

ಪಾನಿ ಪಾವ ಪಾಮ ।

ಅಪಾತ್ ಅಪಾತಾಮ್ ಅಪುಃ ।

ಪಾಪಾತ್ ಪಾಪಾತಾಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ.

1. ರಕ್ಷಿಸು, ಕಾಪಾಡು. "ಸಿದ್ಧಾ ನದೋರ್ಜಿಶ್ವನೌ ಶ್ರೋದಿತಿ-

ರದಿತಿಸುತಾ ಮಾತರಶ್ಚಣ್ಡಿಕಾಘಾ ವೇದಾಸ್ತೀರ್ಥಾನಿ ಯಜ್ಞಾ

ಗಣವಸುಮುನಯಃ ಪಾಂತು ನಿದ್ಯಂ ಗ್ರಹಾಶ್ಚ" ಪञ्चतಂ ೧ ।

"ಪ್ರಜಾಃ ಪ್ರಜಾನಾಥ ಪಿತೇವ ಪಾಸಿ" ರಘುಂ ೨-೪೮ ।

ಕರ್ಮಣಿಃ—ಪಾಯತೇ । ಪಾಯತಾಮ್ । ಅಪಾಯತ । ಪಾಯತ

ಇತ್ಯಾದಿ. ಉಳಿದೆಲ್ಲ ರೂಪಗಳೂ ಪಾ (ಪಾನೇ) ಧಾತುವಿನ

ರೂಪಗಳಂತೆ.

ಕೃತ್ಸುಃ—ಪಾತವ್ಯಮ್ । ಪಾನೀಯಮ್ । ಪೇಯಃ । ಪಾತಃ । ಪಾನ್ ।

ಪಾತಮ್ । ಪಾನಮ್ । ಪಾತ್ವಾ । ಇತ್ಯಾದಿ ರೂಪಗಳಾಗುವವು.

ಗಿಣಿಃ—ಪಾಲಯತಿ, -ತೇ । ಇತ್ಯಾದಿ.

2. ಪ್ರತಿಕ್ಷಿಸು, ನಿರೀಕ್ಷಿಸು. "ಅತ್ರೋಪವಿಷ್ಯ ಮಹರ್ತಮಾರ್ಯಃ

ಪಾಲಯತು ಕೃಣ್ಣಾಗಮನಮ್" ವೇಣಿಂ ೧ । 3. ಅಳು, ಅಡಳಿತ

ನಡೆಸು.

ಪಾಂಶು(ಸು) ಪಾಂಶು(ಸು) (ಪುಂ) 1. ಧೂಳು, ಮಣ್ಣು

ಹುಡಿ. ಪಶಿ(ಸಿ) (ನಾಶನೇ) "ಕುಃ" ದೀರ್ಘಶ್ಚ (ಽಂ

೧-೨೭) । "ಕ್ಷುಣ್ಣಃ ಕ್ಷಣಂ ಯದುಬಲೈರ್ದಿವಮಾತಿತಾಂಸುಃ ಪಾಂಸುರ್ದಿಶಾಂ

ಮುಖಮತುತ್ಯಯದ್ವಿತ್ಯತೋದ್ರೇಃ" ಮಾಧಂ ೫-೧೧ । 2. ಗೊಬ್ಬರ



ಬೆಳೆಯುವ ಜಮೀನಿಗೆ ಹಾಕಲು ಕೂಡಿಸಿಡುವ ತೊಪ್ಪೆಯ ಗುಪ್ತೆ. "ಪಾಸುಧೂಲಿ ಚ ಶಸ್ಯಾರ್ಥಚಿರಸಂಚಿತಗೋಮಯೇ" ಮೇದಿಂ.

**ಪಾಶು(ಸು)ಕೂಲ ಪಾಂಶು(ಸು)ಕೂಲ (ನಂ)** ಯಾರೊಬ್ಬರ ಹೆಸರನ್ನೂ ನಮೂದಿಸದೆ ಹೊರಡಿಸುವ ಶಾಸನ, -ಆಜ್ಞೆ. "ಶಾಸನಂ ಧರ್ಮಕೀಲಃ ಸ್ಯಾತ್ ಮುಕ್ತಿಃ ಶೂದ್ರಶಾಸನಮ್ | ಪದ್ಮಾಲಿಕಾ ಕಲ್ಪತಕೀಲಾ ಪಾಶುಕೂಲಂ ನ ಕಸ್ಯಚಿತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಪಾಶು(ಸು)ಕ್ಷಾರ ಪಾಂಶು(ಸು)ಕ್ಷಾರ (ನಂ)** ಕ್ಷಾರಲವಣ. **ಪಾಶು(ಸು)ಚತ್ತರ ಪಾಂಶು(ಸು)ಚತ್ತರ (ನಂ)** ಅಲಿಕ್ಕಲ್ಲು, ಮುಗಿಲ್ಲಲ್ಲು.

**ಪಾಶು(ಸು)ಚಾಮರ ಪಾಂಶು(ಸು)ಚಾಮರ (ಪುಂ)** 1. ಗರಿಕೆ ಹುಲ್ಲಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ತೀರಪ್ರದೇಶ, ಗರಿಕೆಹುಲ್ಲು ಬೆಳೆದಿರುವ ದಡೆ. 2. ಪ್ರಶಂಸೆ, ಹೊಗಳಿಕೆ. 3. ಧೂಳಿನ ರಾಶಿ. 4. ಒಣಗಿದ ಎಲೆಗಳ ಶಬ್ದ, ತರಗಲೆಗಳ ಮರ್ಮರ ಶಬ್ದ. 5. ಬಟ್ಟೆಗಳಿಗೆ ವಾಸನೆ ಕಟ್ಟುವ ದ್ರವ್ಯ. "ಸ್ಯಾತ್ ಪಾಶುಚಾಮರಃ ಪುಸಿ ದ್ವರ್ವಾಂಚಿತತದಿಭುವಿ | ವರ್ಷಾಪಕೇ ಪ್ರಶಂಸಾಪುರೋದೌ ಖಲಿಗುಣ್ಣಕೇ" ಮೇದಿಂ.

**ಪಾಶು(ಸು)ಮದನ ಪಾಂಶು(ಸು)ಮದನ (ಪುಂ)** ಮರಗಿಡಗಳ ಬುಡದಲ್ಲಿ ನೀರು ನಿಲ್ಲಲು ಮಾಡುವ ಪಾತಿ.

**ಪಾಶು(ಸು)ರ ಪಾಂಶು(ಸು)ರ (ಪುಂ)** 1. ಕಾಡುನೋಣ. ಪಾಶುರಸ್ಯಾಸ್ತಿ - ಪಾಶು "ರಃ" (ವಾಂ ೪-೨-೧೦೭) | "ಪಾಶುರೋ ದಂಶಕಃ ಸ್ಮೃತಃ" ಹಾರಾಂ. 2. ಹೆಳವ, ಕುಂಟ. "ಪಾಶುರಃ ಪಿಠಸರ್ಪಿ ಸ್ಯಾತ್" ಹಾರಾಂ.

**ಪಾಶು(ಸು)ಲ ಪಾಂಶು(ಸು)ಲ (ಪುಂ)** 1. ವೈಭವಾರಿ, ಪರಸ್ತ್ರೀಲೋಲನಾದ ಪುರುಷ. 2. ಪರಮೇಶ್ವರನ ಒಂದು ಆಯುಧ. ತುದಿಯಲ್ಲಿ ತಲೆಬುರುಡೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ತ್ರಿಶೂಲ. "ಪಾಸುಲಃ ಪುಂಶ್ಚಲೇ ಶಮ್ಭೋಃ ಕದಾಚ್ಚೇ ಸ್ವಯಂತಿ-ಭುವೋಃ" ಮೇದಿಂ. (ವಿಂ) 3. ಧೂಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಧೂಳಿನಿಂದ ತುಂಬಿದ. ಪಾಶು(ಸು)ರಸ್ಯಸ್ಯ "ಲಃ" (೪-೨-೧೭) | "ಪರಿಪಾಣ್ಡುರ್ದುಪಾಸುಲಕಪಾಲಮಾನನಂ ದಧತಿ ಮನೋಹರತರತ್ವಮಾಗತಾ" ಮಾಲತೀಂ ೨-೪ | 4. ದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ದೋಷದೂಷಿತನಾದ, ಅಪರಿಶುದ್ಧನಾದ. "ದಾರತ್ಯಾಗೀ ಭವಾಮ್ಯಾಹೋ ಪರಸ್ತ್ರೀಸ್ಪರ್ಶಪಾಸುಲಃ" ಶಾಕ್ರಂ ೪-೨೯ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ-ಲಾ. 5. ಭೂಮಿ. 6. ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ತಿರುಗುವ ಹೆಂಗಸು, ವೈಭವಾರಿಣಿ. "ಸ್ವೇರಿಣಿ ಪಾಸುಲಾ" ಅಮಂ.

**ಪಾಕ ಪಾಕ (ಪುಂ)** 1. ಅಡಿಗೆ, ಅನ್ನ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಬೇಯಿಸುವುದು. ಡುಪಚಪ್ (ಪಾಕೇ) "ಛ" (೩-೩-೧೮) |

2. ಶಿಶು, ಮಗು, ಮರಿ. ಪಿಬತಿ ಸ್ತನಮ್ - ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕನ್" (೩ಂ ೪-೪೩) | "ಪೋತಃ ಪಾಕೋಽಂಕೋ ಡಿಂಬಃ" ಅಮಂ. 3. ಮಾಗುವುದು, ಹಣ್ಣಾಗುವುದು. "ಕಾಂಪಿಲ್ಯಕ-ಪ್ರಸವಪಾಟಲಗುಣ್ಣಪಾಲಿಪಾಕಾಣಸ್ಕುಟಿತದಾಡಿಮಕಾಂತಿವಕ್ತವಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೯-೩೧ | 4. (ಇಟ್ಟಿಗೆ, ಸುಣ್ಣಕಲ್ಲು ಮೊದಲಾದುವನ್ನು) ಸುಡುವುದು. 5. ಬೇಯಿಸುವುದು, 6. ಆಹಾರವು ಜೀರ್ಣವಾಗುವುದು. 7. ಫಲ, ಅಭೀಷ್ಟ ಸಿದ್ಧಿ, ಕಾರ್ಯವು ಕೈಗೊಡುವುದು. "ಆಶೀರ್ವಿರೇಧಯಾಮಾಸುಃ ಪುರಃಪಾಕಾಭಿ-ರಮ್ಬಿಕಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೬-೯೦ | 8. ಒಬ್ಬ ದೈತ್ಯ. ಇಂದ್ರನಿಂದ ಹತನಾದ ಒಬ್ಬ ಅಸುರ. 9. ಧಾನ್ಯ, ಕಾಳು. "ನಿವಾರಪಾಕಾದಿಕಙ್ಗರೀಯೇರಾಮುಚ್ಯತೇ ಜಾನಪದೇನ ಕಚ್ಚಿತ್" ರಘುಂ ೪-೯ | 10. (ಬುದ್ಧಿ) ಪೂರ್ತಿಯಾಗಿ ಬೆಳೆಯುವುದು, ಬಲಿಯುವುದು, ಪ್ರಾವೀಣ್ಯಹೊಂದುವುದು, ಪರಿಣತಿ ಹೊಂದುವುದು. 11. ಮುಖ್ಯನಿಂದ ತಲೆಯ ಕೂದಲು ನರೆಯುವುದು. 12. ಘೂಕ, ಗೂಬೆ. 13. ಒಳಕುರು, ಹೊಟ್ಟೆಯೊಳಗೆ ಕೀವು ತುಂಬಿದ ಕುರು. 14. ಭೀತಿ, ಭಯ. 15. ಮಾಡಿದ ಪ್ರಯತ್ನದ ಬೆಳವಣಿಗೆ.

**ಪಾಕಜ ಪಾಕಜ (ಪುಂ)** 1. ಕಾಚಲವಣ. ಪಾಕಾಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಜಃ" (೩-೨-೯೭) | 2. ಆಹಾರವು ಜೀರ್ಣವಾಗುವ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಪರಿಣಾಮಶೂಲೆಯೆಂಬ ಒಂದು ಉದರ ರೋಗ. ಪಾಕೇ ಪಾಕಕಾಲೇ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ "ಜಃ" (೩-೨-೯೭) | (ವಿಂ) 3. ಪಾಕದಿಂದ ಉಂಟಾದ.

**ಪಾಕಪಾತ್ರ ಪಾಕಪಾತ್ರ, -ಭಾಂಡ -ಭಾಂಡ (ನಂ)** ಅಡಿಗೆಯ ಪಾತ್ರೆ, ಅನ್ನ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಬೇಯಿಸುವ ಪಾತ್ರೆ.

**ಪಾಕಲ ಪಾಕಲ (ಪುಂ)** 1. ಆನೆಯ ಜ್ವರ. "ಪಾಕಲಂ ಕುಠ-ಭೇಷಜ್ಯೇ ಪುಸಿ ಸ್ಯಾತ್ ಕುಂಜರಜ್ವರೇ" ಮೇದಿಂ. (ನಂ) 2. ಚಂಗಲುಕೋಷ್ಠ.

**ಪಾಕಶಾಲಾ ಪಾಕಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಡಿಗೆಯ ಮನೆ, ಮಹಾನಸ.

**ಪಾಕಶಾಸನ ಪಾಕಶಾಸನ (ಪುಂ)** ಇಂದ್ರ, ಪಾಕ ದೈತ್ಯನನ್ನು ಶಿಕ್ಷಿಸಿದ ದೇವೇಂದ್ರ. ಪಾಕಂ ಶಾಸಯತಿ - ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟಿ) + ಣಿಚ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) | "ತತ್ರ ನಿಶ್ಚಿತ ಕಂದರ್ಮಗಮತ್ಪಾಕಶಾಸನಃ" ಕುಮಾಂ ೨-೬೩ |

**ಪಾಕಶಾಸಿನಿ ಪಾಕಶಾಸಿನಿ (ಪುಂ)** ಇಂದ್ರನ ಮಗ - (1) ಜಯನ್ತ. (2) ಅರ್ಜುನ. (3) ವಾಲಿ. ಪಾಕಶಾಸನಸ್ಯ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಇನ್" (೪-೧-೯೪) |

**ಪಾಕಸ್ಥಾನ ಪಾಕಸ್ಥಾನ (ನಂ)** ಮಹಾನಸ, ಅಡಿಗೆಯಮನೆ, ಪಾಕಶಾಲೆ. ಪಾಕಸ್ಯ ಸ್ಥಾನಮ್ |



**ಪಾಕಾರಿ ಪಾಕಾರಿ** (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ, ದೇವತೆಗಳ ಒಡೆಯ, ಪಾಕದೈತೃನ ಶತ್ರು. ಪಾಕಸ್ಯ ಅರಿ: 1. ಬಿಳಿ ಚಿನ್ನ. ಪಾಕಮೃಚ್ಛತಿ — ಕ್ಷ (ಗತೌ) “ಃ” (3-1-136) 1.

**ಪಾಕುಕ ಪಾಕುಕ** (ಪುಂ) ಪಾಚಕ, ಅಡಿಗೆಯವನು. ಡು ಪಚಃ (ಪಾಕೇ) “ಃ” (3-2-31) 1.

**ಪಾಕಯ ಪಾಕಯ** (ಪುಂ) 1. ಯವಕ್ಷಾರ. (ನಂ) 2. ಅಟ್ಟುಪ್ಪು. (ವಿಂ) 3. ಬೇಯಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಬೇಯಿಸಬೇಕಾದ. ಡು ಪಚಃ (ಪಾಕೇ) “ಃ” (3-1-124) 1.

**ಪಾಕ್ಷಿಕ ಪಾಕ್ಷಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ತಿಂಗಳಿನ 15 ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಬರುವ. ಪಕ್ಷೇ ಭವ: “ಃ” (4-3-62) 1. 2. ಒಂದು ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ಒಂದು ಪಂಗಡದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ಒಂದು ಕಕ್ಷಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. 3. ಸಂಶಯ ಗ್ರಸ್ತವಾದ ಒಂದು ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ವಿಕಲ್ಪದ ಒಂದು ಪಕ್ಷಕ್ಕೆ ಮಾತ್ರ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.

**ಪಾಖಂಡ ಪಾಖಂಡ** (ಪುಂ) ಪೇದಧರ್ಮವನ್ನು ಖಂಡಿಸುವ ನಾಸ್ತಿಕ ಮತದವನು. ಪಾ ಖಂಡಯತಿ — ಖಡಿ (ಭೇದನೆ) + ಣಿच् “ಅಚ್” (3-1-134) 1. “ಪಾಲನಾಚ್ಚ ತ್ರಯಿವರ್ಮ: ಪಾಶಬ್ದೇನ ನಿಗದ್ಯತೇ | ತಂ ಖಂಡಯಂತಿ ಯೇ ಯಸ್ಮಾತ್ಪಾಖಂಡಾಸ್ತೇನ ಹೇತುನಾ” 1.

**ಪಾಗಲ ಪಾಗಲ** (ವಿಂ) ಮದ್ಯಪಾನ ಮಾಡಿದವನಂತೆ ಉನ್ಮತ್ತನಾದವನು, ಹುಚ್ಚು ಹಿಡಿದವನು. ಪಿಬತಿ ಸುರಾಮ್ — ಪಾ (ಪಾನೇ) “ಕಿವಪ್” (3-2-136) 1. ಪಾ: ಸ ಇವ ಗಾಲಯತೇ ಸ್ವಲತಿ — ಗಲ (ಪ್ರಸವಣೇ) ಣಿच् “ಅಚ್” (3-1-134) 1. “ಪಾಗಲಾಯಾಜ್ಞಹೀನಾಯ ಚಾನ್ಧಾಯ ಬಧಿರಾಯ ಚ | ಜಡಾಯ ಚೈವ ಮೂರ್ಖಾಯ ಕಲಿಬತುಲ್ಯಾಯ ಪಾಪಿನೇ | ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯಾಂ ಲಭೇತಸೋಪಿ ಯ: ಸ್ವಕನ್ಯಾಂ ದದಾತಿ ಚ” ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ 1.

**ಪಾಡ್ತ ಪಾಜ್ತ** (ನಂ) 1. ಪಂಚಕ, ಪಂಚ (ಐದು) ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳದ್ದು. ಗಾಯತ್ರಿ ಮೊದಲಾದ ಛಂದಸ್ಸುಗಳಲ್ಲಿ ಪಂಜ್ವಿಯು ಐದನೆಯದಾದುದರಿಂದ ಅದರ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಪಾಡ್ತ ಪದಕ್ಕೆ ಐದು ಎಂದು ಅರ್ಥ. ಪಡ್ತಿಸಂಖ್ಯಾ ಅಸ್ತಯಸ್ಯ “ಅಚ್” (4-2-126) 1. ಪೃಥಿವೀ ಅಂತರಿಕ್ಷಮ್ ಛಲೋಕ: ದಿಕ್ ಮತ್ತು ಅವಾಂತರದಿಶ: ಇವು ಲೋಕ ಪಾಜ್ತ. ಅಗ್ನಿ: ವಾಯು: ಆದಿತ್ಯ: ಚಂದ್ರಮಾ: ಮತ್ತು ನಕ್ಷತ್ರಾಣಿ ಇವು ದೇವತಾಪಾಜ್ತ. ಆಪ: ಅಪಧಯ: ವನಸ್ಪತಯ: ಆಕಾಶ: ಮತ್ತು ಆತ್ಮಾ ಇವು ಭೂತ ಪಾಜ್ತ. ಇವೆಲ್ಲವೂ ಅಧಿಭೂತ ಪಾಜ್ತಗಳು.

ಪ್ರಾಣ: ವ್ಯಾನ: ಅಪಾನ: ತದಾನ: ಮತ್ತು ಸಮಾನ: ಇವು ನಾಯುಪಾಜ್ತ. ಚಕ್ಷು: ಶ್ರೋತ್ರಮ್ ಮನ: ವಾಕ್ ಮತ್ತು

ತ್ವಕ್ ಇವು ಇಂದ್ರಿಯಪಾಜ್ತ. ಚರ್ಮ ಮಾंसಮ್ ರಕ್ತಮ್ ಅಸ್ಥಿ ಮತ್ತು ಮಜ್ಜಾ ಇವು ಧಾತುಪಾಜ್ತ. ಇವೆಲ್ಲವೂ ಅಧ್ಯಾತ್ಮಪಾಜ್ತಗಳು ಮತ್ತು ಬಾಹ್ಯಪಾಜ್ತಗಳು. “ಪಂಚಪದಾ ಪಡ್ತಿಕ: ಪಾಡ್ತೋ ಯಜ್ಞ:” ಎಂಬ ಶ್ರುತಿಯಿಂದ ಯಜ್ಞವೂ ಪಾಜ್ತ. ಶಾಂ ಭಾಂ 1.

ಅಧಿಭೂತಗಳಲ್ಲಿ ಪೃಥಿವೀ ಮೊದಲಾದ ಪಂಚಕ ಮೊದಲನೆಯದು. ಅಗ್ನಿ ಮೊದಲಾದುದು ದ್ವಿತೀಯ ಪಂಚಕ. ಅಪ್ ಮೊದಲಾದುದು ತೃತೀಯ ಪಂಚಕ.

ಅಧ್ಯಾತ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಣ ಮೊದಲಾದುದು ಪ್ರಥಮ ಪಂಚಕ. ಚಕ್ಷುಸ್ ಮೊದಲಾದುದು ದ್ವಿತೀಯ ಪಂಚಕ. ಚರ್ಮ ಮೊದಲಾದುದು ತೃತೀಯ ಪಂಚಕ. ಈ ಆರು ಪಂಚಕಗಳೂ ಪಂಚಾಕ್ಷರಾ ಪಡ್ತಿಕ: ಎಂದು ಪಂಚಸಂಖ್ಯೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದರಿಂದ ಪಾಜ್ತಗಳು. ರಜ್ಞರಾಂ ಭಾಂ 1.

“ಪಂಚಸಂಖ್ಯಾಯೋಗಾತ್ ನ ಕೇವಲಂ ಪಡ್ತಿಕಿಚ್ಛಂದ:ಸಂಪಾದನಮ್ ಪತ್ನಿಯಜಮಾನದೇವಮಾನುಷವಿತ್ತೈ: ಪಂಚಭಿ: ಸಂಪಾದ್ಯತೇ ಇತಿ ಯಜ್ಞತ್ವಸಂಪಾದನಮಪಿ ಕರ್ತುಂ ಶಕ್ಯತೇ” ಆನಂದಗಿರಿಟೀಕಾ | (ವಿಂ) 2. ಪಂಜ್ವಿಯಲ್ಲಿರುವ, ಒಂದೇ ಸಾಲಿನಲ್ಲಿರುವ. ಪಡ್ತೋ ಭವ: “ಅಡ್” (4-1-66) 1. 3. ಪಂಜ್ವಿಗೆ ಅರ್ಹನಾದ, ಪಂಜ್ವಿಯಲ್ಲಿ ಸೇರಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ, “ಅಪಾಡ್ತ-ದಾನೇ ಯೋ ದಾತುರ್ಭವತ್ಯುರ್ವ್ವ ಫಲೋದಯ: | ದೇವೇ ಹವಿಷಿ ಪಿಶ್ಯೇ ವಾ ತತ್ಪ್ರವಕ್ಷ್ಯಾಮ್ಯಶೇಷತ:” ಮನುಂ 3-169 1.

**ಪಾಡ್ತೇಯ ಪಾಜ್ತೇಯ** (ವಿಂ) ಪಂಜ್ವಿಗೆ ಸೇರಲು ಅರ್ಹನಾದ, ಪಂಜ್ವಿಯಲ್ಲಿ ಕೂಡಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. “ಅಪಾಡ್ತೇಯ-ಯದನ್ಯೇಶ್ಚ ತದ್ವೇ ರಕ್ಷಾಂಸಿ ಭುಂಜತೇ” ಮನುಂ 3-171 1.

**ಪಾಡ್ತಪ ಪಾಜ್ತ** (ವಿಂ) ಪಂಜ್ವಿಗೆ ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಪಂಜ್ವಿಯಲ್ಲಿರಲು ಅರ್ಹನಾದ. “ಅಪಾಡ್ತಪೋ ಯಾವತ: ಪಾಡ್ತಪಾನ್ ಭುಂಜಾನಾನನುಪಶ್ಯತಿ” ಮನುಂ 3-176 1.

**ಪಾಚಕ ಪಾಚಕ** (ಪುಂ) 1. ಅಡಿಗೆಯವನು, ಅಡಿಗೆಯೇ ಜೀವಿಕೆಯಾಗಿ ಉಳ್ಳವನು. ಡು ಪಚಃ (ಪಾಕೇ) “ಃ” (3-1-136) 1. 2. ಅಡಿಗೆ ಮಾಡುವವನು. 3. ಅಹಾರವನ್ನು ಜೀರ್ಣಮಾಡುವ ಜಾತರಾಗ್ನಿ. 4. ಪಿತ್ತಧಾತು. “ಪಾಚಕಂ ರಂಜಕಂ ಚಾಪಿ ಸಾಧಕಾಲೋಚಕೇ ತಥಾ | ಭಾಜ-ಕಂವೇತಿ ಪಿತ್ತಸ್ಯ ನಾಮಾನಿ ಸ್ಥಾನಭೇದತ:” ಭಾವಪ್ರಂ 1.

**ಪಾಚನ ಪಾಚನ** (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ. ಪಾಚ್ಯತೇಜೇನ — ಡು ಪಚಃ (ಪಾಕೇ) + ಣಿच् ಕರಂ “ಃ” (3-2-116) 1. 2. ಕೆಂಪು ಹರಳು ಗಿಡ. (ನಂ) 3. ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ, ಪಾಪಕ್ಷಯವುಂಟುಮಾಡುವ ಒಂದು ಕಾರ್ಯ. 4. ದೋಷ



ವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ ಒಂದು ವಸ್ತು. (ವಿಂ) 5. ಪಾಕ ಮಾಡಿಸುವ. ಪಚ್ + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (3-1-134)।

**ಪಾಚ್ಯ ಸಾಂಚ್ಯ** (ವಿಂ) ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಬೇಯಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. ಡು ಪಚ್ (ಪಾಕೆ) ಕರ್ಮಂ "ಘ್" (3-1-124)। ನ ಕೃತ್ವಮ್ (9-3-64)।

**ಪಾಚ್ಚಜನ್ಯ ಸಾಂಚ್ಚಜನ್ಯ** (ಫಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಶಂಖ. ಪಚ್ಚಜನೇ ದೇವೇ ಭವ: "ಯ್" (ವಾಂ 8-3-48)। "ದೈವತಾಮಥ ದೈವಾನಾಂ ಧ್ವನಿಋಕ್ಮಪಯನ್ ದಿವಮ್ | ಪಾಚ್ಚಜನ್ಯ-ಪ್ರಣಾಡೇನ ಪರ್ಯಭೂತ ಭೂಯಸಾ" ಯಾದಂ 16-23। 2. ಅಗ್ನಿ. 3. ಜಂಬುಹುಲ್ಲು.

**ಪಾಚ್ಚಜನ್ಯಧರ ಸಾಂಚ್ಚಜನ್ಯಧರ** (ಫಂ) ವಿಷ್ಣು. ಪಾಚ್ಚ-ಜನ್ಯಸ್ಯ ಧರ:-ಧೃ (ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (3-1-134)।

**ಪಾಚ್ಚದಶ ಸಾಂಚ್ಚದಶ** (ವಿಂ) ತಿಂಗಳಿನ ಹದಿನೈದನೆಯ ದಿನದಲ್ಲಿ ಬರುವ, ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ದಿನದಲ್ಲಿರುವ. ಪಚ್ಚದಶ್ಯಾಂ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಾಂ ಭವ: "ಅಘ್" (8-3-16)।

**ಪಾಚ್ಚಭೌತಿಕ ಸಾಂಚ್ಚಭೌತಿಕ** (ವಿಂ) ಪೃಥಿವೀ ಮೊದಲಾದ ಪಂಚಭೂತಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದ ಶರೀರ ಮುಂತಾದುದು. ಪಚ್ಚಮ್ಯೋ ಭೂತೇಷು ಆಗತ: "ಠಕ್" (8-3-94)।

**ಪಾಚ್ಚವರ್ಷಿಕ ಸಾಂಚ್ಚವರ್ಷಿಕ** (ವಿಂ) ಮುಂದಿನ ಐದು ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ, ಐದು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಆಗ ಬೇಕಾದ. ಪಚ್ಚ ವರ್ಷಾ: ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (4-1-49)।

**ಪಾಚ್ಚಶಬ್ದಿಕ ಸಾಂಚ್ಚಶಬ್ದಿಕ** (ನಂ) ಐದು ವಿಧ ಶಬ್ದಗಳಿಂದ ನಡೆಯುವ ವಾದ್ಯ. ಪಚ್ಚಭಿ: ಶಬ್ದೇ: ನಿವೃತ್ತಮ್ — "ಠಕ್" (4-1-99)। (1) ಅಂಗಜ, (2) ಚರ್ಮಜ, (3) ತಂತ್ರಜ, (4) ಕಾಂಸ್ಯಜ ಮತ್ತು (5) ಪುಷ್ಪತಂತ್ರಗಳಿಂದ ಶಬ್ದವು ಐದು ವಿಧ. "ಅಜ್ಞಜಂ ಚರ್ಮಜಂ ಚೈವ ತನ್ತ್ರಜಂ ಕಾಂಸ್ಯಜಂ ತಥಾ | ಫುಕ್ತುತಂ ಚೇತಿ ಮುನಿಭಿ: ಕಥಿತಂ ಪಾಚ್ಚಶಬ್ದಿಕಮ್" ಸ್ಕಾಂದಂ।

**ಪಾಚ್ಚಾರ್ಥಿಕ ಸಾಂಚ್ಚಾರ್ಥಿಕ** (ಫಂ) 1. ಪಾಶುಪತ ಮತ. ಪಚ್ಚ ಅರ್ಥಾ: ಕೃತ್ಯಾನಿ ಪಾಶಾ ವಾ ಯತ್ರ | (ವಿಂ) 2. ಪಾಶು ಮತಾನುಯಾಯಿ.

**ಪಾಚ್ಚಾಲ ಸಾಂಚ್ಚಾಲ** (ಫಂ) 1. ಪಂಚಾಲ ದೇಶದ ದೊರೆ. ಪಚ್ಚಾಲಾನಾಂ ರಾಜಾ "ಅಘ್" (ವಾಂ 8-1-166)। (ಫಂ ಬಂವಂ) 2. ಪಂಚಾಲ ದೇಶದ ಜನರು. "ಪಾಚ್ಚಾಲಾ-ಶ್ಚೈವ ಮತ್ಸ್ಯಾಶ್ಚ ಶೂರಸೇನಾ: ಪಟಚ್ಚರಾ:" ಭಾಂ ವಿರಾಂ। 3. ಪಂಚಾಲ ದೇಶ. ಪಚ್ಚಭಿ: ಪ್ರಧಾನನದೀಭಿ: ಅಲತಿ—ಅಲ (ಭೂಷಣಪರ್ಯಾಪ್ತವಾರಣೆ) "ಅಚ್" (3-1-134)। ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಅಘ್"। ಪಂಚಾಲ ದೇಶವು ಹಿಮಾಲಯದಿಂದ

ಚರ್ಮಣ್ಣತೀ ನದಿಯವರೆಗೂ ದೆಹಲಿಗೆ ವಾಯವ್ಯ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವುದು. ಇದು ದಕ್ಷಿಣ ಮತ್ತು ಉತ್ತರ ಪಂಚಾಲಗಳೆಂದು ಎರಡು ಭಾಗ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು ಗಂಗಾ ನದಿಯಿಂದ ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. ದಕ್ಷಿಣಪಂಚಾಲವು ದ್ರುಪದರಾಜನ ರಾಜ್ಯ. ಇದರ ರಾಜಧಾನಿ ಕಂಪಿಲ್ಯ. ದಕ್ಷಿಣಪಂಚಾಲವು ಗಂಗಾ ನದಿಯ ದಕ್ಷಿಣ ತೀರದಿಂದ ಚರ್ಮಣ್ಣತೀ ನದಿಯ ವರೆಗೂ ಉತ್ತರಪಂಚಾಲವು ಗಂಗಾನದಿಯಿಂದ ಹಿಮಾಲಯದವರೆಗೂ ಹರಡಿರುವುದು. (ನಂ) 4. ಶಾಸ್ತ್ರ. ಪಚ್ಚಾನಾಂ ವಿಷಯಾಗಾಮನಯತೋನವಗತಾನಾಂ ಪ್ರಕಾಶನಾಯಾಲಮಿತಿ ಪಚ್ಚಾಲಂ ಶಾಸ್ತ್ರಮ್-ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಅಘ್"। "ಪ್ರವೃತ್ತಂ ಚ ನಿವೃತ್ತಂ ಚ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಪಚ್ಚಾಲಸಂಜ್ಞಕಮ್"। (ವಿಂ) 5. ಪಂಚಾಲ ದೇಶದಲ್ಲಿರುವ, -ದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಪಚ್ಚಾಲೇ ಭವ: "ಅಘ್" (8-3-43)।

**ಪಾಚ್ಚಾಲಿಕಾ ಸಾಂಚ್ಚಾಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುತ್ರಳಿಕೆ, ವಸ್ತ್ರ ಅಥವಾ ದಂತದಿಂದ ತಯಾರಿಸಿದ ಬೊಂಬೆ. ಪಾಚ್ಚಾಲಿಕಾ ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕನ್" ಹ್ರಸ್ವ: "ಠಾಪ್"ಚ | "ಸ್ತನ್ಯತ್ಯಾಗಾತ್ರಭೃತಿ ಸುಮುಖೀ ದಂತಪಾಚ್ಚಾಲಿಕೇವ" ಮಾಲತೀಂ 10-4।

**ಪಾಚ್ಚಾಲೀ ಸಾಂಚ್ಚಾಲೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪುತ್ರಳಿಕೆ, ವಸ್ತ್ರ ದಂತ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಮಾಡಿದ ಬೊಂಬೆ. ಪಚ್ಚಭಿ-ವರ್ಣೇರಲ್ಯತೇ — ಅಲ "ಘಜ್" (3-3-19)। "ಡೀಪ್" (8-1-41)। 2. ದ್ರೌಪದಿ, ಪಂಚಾಲರಾಜನ ಪುತ್ರಿ. ಪಾಚ್ಚಾಲೇ ಭವಾ "ಅಘ್" (8-3-43)। "ಡೀಪ್" (8-1-14)। "ಪಾಚ್ಚಾಲಯಾ ಮಮ ದುರ್ಯೋಪಜನಿತಸ್ತೀರ್ಣೋ ನಿಕಾರಾಣವ:" ವೇಣೀಂ 6-44।

**ಪಾಡ್ ಸಾಟ್ಯ** (ಅವ್ಯಂ) ಸಂಬೋಧನೆ. "ಸಂಬೋಧನೆ ನನ್ಯು ಪಾಡ್ ಪಾಡ್ ಹೇ ಹೇ ಭೋ ಅಜ್ಞ ಹಂತಿ ಚ" ವೇಂಂ।

**ಪಾಡಕ ಸಾಟಿಕ** (ಫಂ) 1. ತಟ, ದಡ, ತೀರಪ್ರದೇಶ. ಪಾಡಯತಿ—ಪಡ (ಭಾಷಾರ್ಥೆ) + ಣಿಚ್ "ಫ್ವಲ್" (3-1-133)। 2. ಒಂದು ಹಳ್ಳಿಯ ಒಂದು ಭಾಗ. 3. ಪಗಡೆಯಾಟದಲ್ಲಿ ಕಾಯಿಗಳನ್ನು ನಡೆಸುವುದು. 4. ಒಂದು ವಿಧ ವಾದ್ಯ. 5. ಮಹಾಕಿಷ್ಕು. 6. ಮೂಲದ್ರವ್ಯವು ಕಡಮೆಯಾಗುವಿಕೆ. "ಪಾಡಕೋ ರೋಷಸಿ ಗ್ರಾಮೈಕದೇಶೋಕ್ಷಾದಿಚಾಲನೆ | ವಾಘಭೇದೇ ಮಹಾಕಿಷ್ಕೌ ಮೂಲ್ಯಾಪಚಯೇಷಿ ಚ" ಹೇಮಂ। (ವಿಂ) 7. ಭೇದಿಸುವ, ಸೀಳುವ, ಕತ್ತರಿಸುವ, ತುಂಡುಮಾಡುವ.

**ಪಾಡ್ಚರ ಸಾಟಿಚ್ಚರ** (ಫಂ) ಚೋರ, ಕಳ್ಳ, ತಸ್ಮರ. ಪಾಡಯನ್ ಚಿಹ್ನದ್ ಚರತಿ — ಚರ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (3-1-134)। ಪೃಷಂ। "ಮನ್ವಿನ್, ಕುಲಿಂಜಸಾಹಸಿಕತ್ವಂ ಕಿಲೇತಸ್ಯ ಪಾಪ-ಪಾಡ್ಚರಸ್ಯ" ಪ್ರಶ್ನಂ ವಿಂ।



ಪಾಟನ ಪಾಟನ (ನಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸುವುದು, ಛೇದಿಸುವುದು, ತುಂಡುಮಾಡುವುದು. ಪಟ (ಪಾಟನ) + ಪಿಚ್ "ಲ್ವಟ್" (3-2-114). "ಬಸ್ವಿಬಕ್ಷಂ ಕವಾ ಕೃತ್ವಾ ಕಾಡ್ಗುಲ-ಚ್ಚೇದನಂ ತಯಾ | ಪಾಟನೇ ಕರ್ಣಶೃಂಗಾಣಾಂ ಮಾಸಾರ್ಥಂ ತು ಕವಾನ್ ಪಿವೇತ್" | 2. ಛೇದಿಸುವುದು, ಎರಡು ಹೋಳು ಮಾಡುವುದು. ಪಿಚ್ "ಲ್ವಟ್" (4-1-4). -ನಾ -ನಾ.

ಪಾಟನೀಯ ಪಾಟನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಛೇದಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪಟ (ಪಾಟನ) + ಪಿಚ್ "ಕನೀಯ್" (3-1-96). 2. ಕತ್ತರಿಸದೇಕಾದ, ತುಂಡುಮಾಡದೇಕಾದ. 3. ಸೀಳಲ್ಪಡುವ. 4. ಸೀಳದೇಕಾದ. 5. ಚುಚ್ಚಿ ರಂಧ್ರ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 6. ರಂಧ್ರ ಮಾಡದೇಕಾದ. "ಕವಾ" (3-1-96). -ಪಿತೃ: -ಯಿತೃ:.

ಪಾಟಯತ್ ಪಾಟಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಛೇದಿಸುತ್ತಿರುವ, ತುಂಡುಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪಟ (ಪಾಟನ) + ಪಿಚ್ "ಕವ" (3-2-124). 2. ಚುಚ್ಚುತ್ತಿರುವ, ಚುಚ್ಚಿ ರಂಧ್ರಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಛೇದಿಸುತ್ತಿರುವ, ಎರಡು ಭಾಗ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಎರಡು ಹೋಳು ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪಿಚ್ "ಕವ" (4-1-6). -ಕನೀ -ಯಾ.

ಪಾಟಯಿತ್ ಪಾಟಯಿತ್ (ವಿಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸುವವನು, ತುಂಡುಮಾಡುವವನು. ಪಟ (ಪಾಟನ) + ಪಿಚ್ "ಕವ" (3-1-133). 2. ಎರಡು ಭಾಗಮಾಡುವವನು, ಎರಡು ಹೋಳುಮಾಡುವವನು. 3. ಚುಚ್ಚಿ ರಂಧ್ರ ಮಾಡುವವನು. ಪಿಚ್ "ಕವ" (4-1-4). -ಕನೀ -ಯಿತ್.

ಪಾಟಲ ಪಾಟಲ (ಪುಂ) 1. ಬಿಳುಪು ಮತ್ತು ಕೆಂಪು ಬೆರೆತ ಮಿಶ್ರವರ್ಣ. ಪಟ (ಪಾಟನ) + ಪಿಚ್ "ಕಲ:" (3-1-106). "ಕಪಾಲಪಾಟಲಾದೇಶಿ ಬಬ್ಬು ರವುಚೇಷ್ಠಿತಮ್" ರಘುಂ 4-68. 2. ಕೆಂಪು ಬತ್ತ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ -ಲಾ, -ಕಿ -ಲಿ. 3. ಹಸುರು ಪಾದರಿ ಗಿಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ -ಲಾ, -ಕಮ್ -ಲಮ್. 4. ಹಸುರು ಪಾದರಿಹೂವು. "ಪಾಟಲಸಂಸರ್ಗಸುರಗಿವನವಾತಾ:" ಶಾಕುಂ 1-3. "ಪಾಟಲಾ ಪಾಟಲಿ ಸ್ತ್ರೀ ಸ್ವಾಹಸ್ಯ ಪುಣ್ಯ ಪುನನಂ ನಾ" ಮೇದಿಂ. (ವಿಂ) 5. ಬಿಳುಪು ಮತ್ತು ಕೆಂಪು ಬೆರೆತ ಮಿಶ್ರವರ್ಣ. "ಕಂಠಾಪಿಮಿ-ಬೆಹಲಪಾಟಲವಾತುರಾಣಿ:" ಮಾಘಂ 4-21. "ವಾಸ್ತುಶಾಸ್ತ್ರೇ ಪುಮಾನ್ ಸ್ವೇತರಕ್ತವರ್ಣೇಷು ವಾಚ್ಯವತ್" ಮೇದಿಂ.

ಪಾಟಲಾ ಪಾಟಲಾ, -ಲಿ -ಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಸುರು ಪಾದರಿ ಗಿಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಪಾದರಿ ಹೂವು. "ಸ ಪಾಟಲಾಃ ಸ್ವವಕಂ ಪ್ರಕಮ್ಪಿತ:" ನೆಪಂ 1-24.

ಪಾಟಲಾಕತೀ ಪಾಟಲಾಕತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

ಪಾಟಲಿಪುತ್ರ ಪಾಟಲಿಪುತ್ರ (ನಂ) ಮಗಧ ದೇಶದ ರಾಜ ಧಾನಿ ಇದರ ಪೂರ್ವದ ಹೆಸರು ಕುಸುಮಪುತ್ರ. ಈಗ ಇದು ಪಾಟನ ಎಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ. ಇದು ಮಗಧ ದೇಶದ ದೊರೆಯಾಗಿದ್ದ ಅಜಾತಕತ್ಸುಮಿವ ರಾಜಧಾನಿ. ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಗಿರಿವೃಕ್ಷವು ಮಗಧ ದೇಶದ ರಾಜಧಾನಿಯಾಗಿದ್ದು ಅನಂತರ ಪಾಟಲಿಪುತ್ರವು ರಾಜಧಾನಿಯಾಯಿತು. ಕಾಲ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಮಗಧ ದೇಶವನ್ನು ಪೆಂದರು ಆಳುತ್ತಿದ್ದರು. ಅನಂತರ ಚಾಣಕ್ಯನ ತಂತ್ರದಿಂದ ನಂದರ ಅಸಹನೆ ಮತ್ತು ದ್ವೇಷಕ್ಕೆ ಗುರಿಯಾಗಿದ್ದ ಚಂದ್ರಗುಪ್ತನು ಇದರ ರಾಜ ನಾದನು. "ಅಯೇ! ಕಶ್ಯಪವೃತ್ತಕೌಮುದೀಮಹೋತ್ಸವಂ ಕುಸುಮಪುರಂ ಪಸ್ಯಾಮಿ? ಇವ ತ್ವಯಾ ಬಸ್ಮಹವನಾತ್ ವಾಘೋವಿತ: ಕುಸುಮಪುರೇ ಕೌಮುದೀಮಹೋತ್ಸವ:" ಮೃದಾಂ 3. ಈ ಪಾಟಲಿಪುತ್ರದಲ್ಲಿ ನಂದರ್ಶನ ರಾಜನು ರಾಜ್ಯವಾಳುತ್ತಿದ್ದಾಗ ರಾಜಸುಮಾರ ರಿಗೆ ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಬೋಧಿಸಲು ವಿಷ್ಣುಕರ್ಮಸಂಬ ಪಂಡಿತನೊಬ್ಬನು ಪಂಡಿತಂತ್ರ ಮತ್ತು ಹಿತೋಪದೇಶ ಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದನು.

ಪಾಟಲಿಮನ್ ಪಾಟಲಿಮನ್ (ಪುಂ) ಬಿಳುಪು ಮತ್ತು ಕೆಂಪು ಬೆರೆತ ಮಿಶ್ರವರ್ಣ. ಪಾಟಲಸ್ಯ ಪಾಟಲ: "ಇಮನಿಚ್" (4-1-122).

ಪಾಟಲ್ಯಾ ಪಾಟಲ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಸುರು ಪಾದರಿ ಹೂವಿನ ರಾಶಿ. ಪಾಟಲಸ್ಯ ಸಮೂಹ "ಕ:" (4-2-49).

ಪಾಟವ ಪಾಟವ (ನಂ) 1. ಪಾಣತನ, ನೈಫುಡ್, ದಕ್ಷಿಣ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. ಪಟೋಮಿ: "ಕವ" (4-1-131). "ಪಾಟವಂ ಸಸ್ಮತೋತ್ತಿಪ್ತ" ಹಿತೋಂ. 2. ಲವಲವಿಕೆ, ಚುರುಕಾಗಿರುವಿಕೆ. "ಹೀವಿಮೋಹವಿರಹಾದುಪಲೇಖೇ ಪಾಟವಂ ನು ಹೃದಯಂ ನು ವಭೂವಿ:" ಕಿರಾಂ 1-44. 3. ಕೆಂಪು. 4. ಅರೋಗ್ಯ.

ಪಾಟವಿಕ ಪಾಟವಿಕ (ವಿಂ) 1. ಪಟುವಾಗಿರುವ, ಚುರುಕಾಗಿರುವ, ಲವಲವಿಕೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪಾಟವಮಸ್ತವಸ್ಯ "ಕಮ್" (4-2-114). "ರಘೇ ರಘಸನಿಮಿತ್ರದ್ವಿಪಾಟವಿಕಾಸಿನಿ" ಮಾಘಂ 1-46. 2. ಧೂರ್ತ, ಮಂಚೆ, ಮೋಸಗಾರ. "ಪಟು: ಪಾಟವಿಕೋ ಭೂತ: ಸ್ವಯ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 3. ಕೆಂಪು, ಸುಮರ್ಣ. 4. ಅರೋಗ್ಯಶಾಲಿ.

ಪಾಟಿತ ಪಾಟಿತ (ವಿಂ) 1. ಸೀಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಎರಡು ಭಾಗ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪಟ (ಪಾಟನ) + ಪಿಚ್ "ಕ:" (3-2-102). 2. ಚುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಚುಚ್ಚಿ ರಂಧ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಗಾಸಿಪಾ-ಮನ್ಯುಪದಂ ಸಮಸ್ಪೃಶ್ವತ್ಸಂಪಾಟಿತತಲೇನ ಪಾಪಿನಾ" ರಘುಂ 1-31. 3. ಕೆಂಪು ಕೊರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ (ಗೋಡೆ). "ಅನ್ಯಾಸು ವಿವಿತಿಪ್ತು



ಮಯಾ ನಿಶಿ - ಪಾಟಿತಾಸು ಕ್ಷಾರಕ್ಷತಾಸು ವಿಷಮಾಸು ಚ ಕಲ್ಪನಾಸು" ಮೃಚ್ಛಂ ೩-೧೪ | 4. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ತುಂಡು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು.

**ಪಾಟೀರ ಪಾಟೀರ** (ಪುಂ) 1. ಚಂದನ, ಗಂಧ. ಪಟೀರ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಋ" (೪-೪-೩೮) | "ಪಾಟೀರದ್ರುಮವರ್ಣನೇನ ಕವಿಭಿರ್ಮೃತೇ ದಿನಂ ನಿಯತೇ" | 2. ಮೂಲಂಗಿ ಗೆಡ್ಡೆ. 3. ಅರ. 4. ಜಲ್ಲಡೆ, ಒಂದರಿ. 5. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 6. ಕ್ಷೇತ್ರ, ಜಮೀನು, ವ್ಯವಸಾಯದ ಭೂಮಿ. 7. ಬಿದಿರಿನ ರಸ. 8. ಕೆಟ್ಟ ಗಾಳಿಯ ಸೇವನೆಯಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಜ್ವರ. "ಪಾಟೀರೋ ಮೂಲಕೇ ವಜ್ರೇ ತಿತತೌ ವಾಂತಿಕೇಽಮ್ಬುಧೇ | ಕೇದಾರೇ ವೇಣುಸಾರೇ ಚ" ಹೇಮಂ |

**ಪಾಟ್ಯ ಪಾಟ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಛೇದಿಸಲ್ಪಡುವ, ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪಟ + ಗಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಯತ್" (೩-೧-೯೭) | 2. ಸೀಳಲ್ಪಡುವ, ಎರಡು ಭಾಗವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ.

**ಪಾಠ ಪಾಠ** (ಪುಂ) 1. ಶಾಸ್ತ್ರಾಭ್ಯಾಸ, ವೇದಾಧ್ಯಯನ. ಪಠ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ "ಘ" (೩-೩-೧೮) | 2. ಪ್ರವಚನ ಮಾಡುವುದು, ಬೋಧಿಸುವುದು, ಅಧ್ಯಾಪನ, ಓದಿಸುವುದು. ಪಠ + ಗಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೩-೪೬) | ಪ್ರವಚನಸಮಯದಲ್ಲಿ ಶಿಕ್ಷಕನಲ್ಲಿ ಸಂಭವಿಸಬಹುದಾದ 18 ವಿಧ ದೋಷಗಳು: (1) ಶಿಕ್ಷಿತಮ್, (2) ಭೀತಮ್, (3) ತದ್ಭುಷ್ಠಮ್, (4) ಅವ್ಯಕ್ತಮ್, (5) ಅನುನಾಸಿಕಮ್, (6) ವಿಶ್ವರಮ್, (7) ವಿರಸಮ್, (8) ವಿಶಿಲಿಷ್ಠಮ್, (9) ವಿಸಮಾಹಿತಮ್, (10) ಕಾಕಸ್ವರಮ್, (11) ನಿರಸಿತಮ್, (12) ಸ್ಥಾನವಿವರ್ಜಿತಮ್, (13) ವ್ಯಾಕುಲಮ್, (14) ತಾಲಹೀತಮ್, (15) ಸಗೀತಮ್, (16) ಸಶಿರ:ಕಂಪಮ್, (17) ಅಲ್ಪಕಂಠಮ್ ಮತ್ತು (18) ಅನರ್ಥಕಮ್ ಮಾರ್ಕಂ | 3. ಓದಬೇಕಾದ ಗ್ರಂಥಭಾಗ. ಪಠಯತೇ - ಪಠ ಕರ್ಮಂ "ಘ" (೩-೩-೧೯) |

**ಪಾಠಕ ಪಾಠಕ** (ವಿಂ) 1. ಓದುವವನು, ಅಧ್ಯಾಸಮಾಡುವವನು, ಕಲಿಯುವವನು. ಪಠ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಞ್" (೩-೧-೧೩೩) | 2. ಪಠನಮಾಡುವವನು, ಇತಿಹಾಸ ಪುರಾಣ ಕಾವ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ಓದುವವನು. 3. ಅಧ್ಯಾಪಕ, ಪಾಠ ಹೇಳುವವನು, ಪ್ರವಚನಮಾಡುವವನು. ಪಠ + ಗಿಚ್ "ಞ್" (೩-೧-೧೩೩) |

**ಪಾಠಚ್ಛೇದ ಪಾಠಚ್ಛೇದ** (ಪುಂ) 1. ಪಾಠದ ವಿರಾಮ, ಪ್ರವಚನದ ನಿಲುಕಡೆ, ಓದುವಾಗ ಅಲ್ಲಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು, ಓದುವಾಗ ಮಧ್ಯೆ ಮಧ್ಯೆ ಅವಕಾಶ ಕೊಡುವುದು. ಪಾಠಸ್ಯ ಚ್ಛೇದ: | 2. ಮಧ್ಯೆ ಮಧ್ಯೆ ಬಿಡಿಸಿ ಓದುವುದು.

**ಪಾಠದೋಷ ಪಾಠದೋಷ** (ಪುಂ) ತಪ್ಪಾಗಿ ಓದುವುದು.

**ಪಾಠನ ಪಾಠನ** (ನಂ) ಪ್ರವಚನಮಾಡುವುದು, ಬೋಧಿಸುವುದು, ಶಿಕ್ಷಣ, ಕಲಿಸುವುದು, ಓದಿಸುವುದು. ಪಠ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಗಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |

**ಪಾಠಶಾಲಾ ಪಾಠಶಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿದ್ಯಾಲಯ, ವಿದ್ಯಾಶಾಲೆ, ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿಯುವ ಸ್ಥಳ, ಶಿಕ್ಷಣಶಾಲೆ.

**ಪಾಠಾ ಪಾಠಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗುರುಶುಂಠಿ. "ಪಾಠಾಂಬುಷಾ ವಿವೃತಕರ್ಣಿ ಸ್ಥಾಪನಿ ಶ್ರೇಯಸಿ ಶಿವಾ" ಅಮಂ |

**ಪಾಠಿತ ಪಾಠಿತ** (ವಿಂ) ಪ್ರವಚನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಕಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಓದಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಪಠ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಗಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ವಿಷ್ಣುಶರ್ಮಣಾಪಿ ತದರ್ಥಂ ಪञ್ಚ-ತನ್ತ್ರಾಣಿ ರಚಯಿತ್ವಾ ಪಾಠಿತಾಸ್ತೇ ರಾಜಪುತ್ರಾ:" ಪञ್ಚತಂ |

**ಪಾಠಿನ್ ಪಾಠಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಓದುವವನು, ಅಧ್ಯಾಸಮಾಡುವವನು, ಕಲಿಯುವವನು. ಪಠ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿದವನು, ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸವನ್ನು ಮುಗಿಸಿದವನು.

**ಪಾಠಿನ ಪಾಠಿನ** (ಪುಂ) 1. ಪಾಠಕ, ಪುರಾಣಾದಿಗಳನ್ನು ಪಠನಮಾಡುವವನು. 2. ಗುಗ್ಗುಳದ ಗಿಡ. 3. ಸಾವಿರ ಕೋರೆಹಲ್ಲುಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. "ಪಾಠಿನೋ ಮೀನಭೇದೇ ಸ್ವಾತ್ಮಾಠಕೇ ಗುಗ್ಗುಲದ್ರುಮೇ" ಮೇದಿಂ | "ಅವಾಪ್ತ-ಕಿಂಜಲ್ಕವಿಭೇದಮುಚ್ಚಕಂ: ವಿವೃತಪಾಠಿನಪರಾಹತಂ ಪಥ:" ಕಿರಾಂ ೪-೪ |

**ಪಾಠ್ಯ ಪಾಠ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಬೇಕಾದ, ಓದಬೇಕಾದ. 2. ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಓದಲ್ಪಡುವ. ಪಠ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಕರ್ಮಂ "ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) |

**ಪಾಣ ಪಾಣ** (ಪುಂ) 1. ಪಾಣಿ, ಹಸ್ತ, ಕೈ. ಪಣ್ಯತೇಜೇನ - ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರೇ ಸ್ತುತೌ ಚ) ಕರಂ "ಘ" (೩-೩-೧೧೭) | 2. ಪಣ, ಪಂದ್ಯ, ಪಂತ, ಬಾಜಿ. ಪಣ ಭಾವೇ "ಘ" (೩-೩-೧೮) | "ದೀವ್ಯಾಮಹೇ ಪಾರ್ಥಿವ ಮಾ ವಿಶಿಷ್ಟಾಂ ಕುಸ್ಥವ ಪಾಣಂ ಚ ಚಿರಂವ ಮಾ ಕೃತಾ:" ಮಾಂ ಸಭಾಂ ೮೪-೮ |

**ಪಾಣಿ ಪಾಣಿ** (ಪುಂ) 1. ಹಸ್ತ, ಕೈ. ಪಣಾಯಂತ್ಯತೇನ - ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರೇ ಸ್ತುತೌ ಚ) + ಆಯ: "ಇನ್" ಆಯಸ್ಯ ಲುಕ್ ಚ (೩ಂ ೪-೧೩೨) | "ದಂತಾಲಿಕಾಧರಣಿನಿಖಲಪಾಣಿಯುಗ್ಮಮರ್ಥೋ-ದಿತೌ ಹರೀರಿವೋದಯಶೀಲಮರ್ಘ:" ಮಾಘಂ ೪-೪೬ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಅಂಗಡಿಬೀದಿ, ಮಾರುಕಟ್ಟೆ.

**ಪಾಣಿಕಚ್ಛಪಿಕಾ ಪಾಣಿಕಚ್ಛಪಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೂರ್ಮ ಮುದ್ರೆ.

**ಪಾಣಿಗೃಹೀತೌ ಪಾಣಿಗೃಹೀತೌ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭಾರ್ಯೆ, ಧರ್ಮಪತ್ನಿ, ಮದುವೆಯಾದ ಹೆಂಡತಿ. ಪಾಣಿ: ಗೃಹೀತೌ



ಯಸ್ಯಾ: "ಛಿಃ" (ವಾಂ ೪-೧-೪೨)। ಪಾಣಿಗೃಹೀತೌ ಭಾರ್ಯಾಂ ಪಾಣಿಗೃಹೀತಾನ್ಯಾ ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ಪಾಣಿಗ್ರಹ ಪಾಣಿಗ್ರಹ (ಪುಂ) ವಿವಾಹ, ಮದುವೆ. ಪಾಣಿ-  
ಗೃಹೀತೇತ್ — ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಅಫ್" (೩-೩-೪೮) ।

ಪಾಣಿಗ್ರಹಣ ಪಾಣಿಗ್ರಹಣ (ನಂ) ವಿವಾಹ, ಮದುವೆ.  
ಪಾಣಿಗೃಹೀತೇತ್ — ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) । "ಪ್ರಯುಕ್ತಪಾಣಿಗ್ರಹಣಂ ಯದನ್ಯದ್ವಿಧವರಂ ಪುಷ್ಯತಿ ಕಾಂತಿಮಗ್ರಭಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೭೮ ।

ಪಾಣಿಗ್ರಹಣಿಕ ಪಾಣಿಗ್ರಹಣಿಕ (ವಿಂ) ವಿವಾಹಸಂಬಂಧ  
ವಾದ (ಮಂತ್ರ). ಪಾಣಿಗ್ರಹಣಂ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯) । "ಪಾಣಿಗ್ರಹಣಿಕಾ ಮನ್ತ್ರಾ ನಿಯತಂ ದಾರ-  
ಲಕ್ಷಣಮ್ । ತೇಷಾಂ ನಿಷ್ಠಾ ತು ವಿಜ್ಞೇಯಾ ವಿವಿಧಾಃ ಸಪ್ತಮೇ ಪದೇ"   
ಮನುಂ ೮-೨೨೭ ।

ಪಾಣಿಗ್ರಹೀತ್ ಪಾಣಿಗ್ರಹೀತ್ಯ (ಪುಂ) ಪತಿ, ಗಂಡ, ಮದುವೆ  
ಯಾದವನು, ಮದುವಣ. ಪಾಣಿ ಗೃಹೀತಿ — ಗ್ರಹ  
(ಉಪಾದಾನೇ) "ತುತ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

ಪಾಣಿಗ್ರಾಹ ಪಾಣಿಗ್ರಾಹ (ಪುಂ) ಪತಿ, ಮದುವೆಯಾದ  
ಗಂಡ. ಪಾಣಿ ಗೃಹೀತಿ — ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಅಫ್" (೩-೨-೧) । "ಬಾಲ್ಯೇ ಪಿತುರ್ಬಂಶೇ ತಿಷ್ಠೇತ್ಪಾಣಿಗ್ರಾಹಸ್ಯ ಬೌವನೇ"   
ಮನುಂ ೮-೧೪೮ ।

ಪಾಣಿಘ ಪಾಣಿಘ (ವಿಂ) 1. ಕೈಯಿಂದ ಹೊಡೆಯುವವನು.  
ಪಾಣಿನಾ ಹಂತಿ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತೃಯೋಃ) "ಟಕ್" ಟಿಲೋಪಃ  
ಘಟಂ ಚ ನಿಪಾಂ (೩-೨-೪೪) । 2. ಕೈಯಿಂದ ಮೃದಂಗ  
ಮೊದಲಾದ ವಾದ್ಯಗಳನ್ನು ಬಾರಿಸುವವನು.

ಪಾಣಿಜ ಪಾಣಿಜ (ಪುಂ) ನಖ, ಉಗುರು. ಪಾಣಿ ಜಾಯತೇ—  
ಜನಿ (ಪ್ರಾದುಮಿ) "ಙ್" (೩-೨-೯೭) ।

ಪಾಣಿತಲ ಪಾಣಿತಲ (ನಂ) ಹಸ್ತ, ಅಂಗೈ.

ಪಾಣಿನ ಪಾಣಿನ (ಪುಂ) ಪಾಣಿಯೆಂಬ ಮುನಿಯ ಮಗ,  
ಪಾಣಿನಿಮುನಿ. ಪಾಣಿನೋ ಮುನೇರಪತ್ಯಮ್ "ಅಫ್" (೪-೧-೯೨) ।  
ನ ಟಿಲೋಪಃ (೬-೪-೧೬೪) ।

ಪಾಣಿನಿ ಪಾಣಿನಿ (ಪುಂ) ಪಾಣಿನಿ ಮುನಿ, ಪರಮೇಶ್ವರನ  
ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ಚತುರ್ದಶ ಸೂತ್ರಗಳನ್ನು (ಅಕ್ಷರ ಸಮಾ  
ಮ್ನಾಯವನ್ನು) ಪಡೆದು ಸಮಗ್ರ ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು  
ರಚಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಮುನಿ. ಪಾಣಿನೋ ಬೃಹಾಪತ್ಯಮ್ "ಙ್" (೪-೧-೯೪) । "ಯೇನಾಕ್ಷರಸಮಾನ್ಯಾಯಮಧಿಗಮ್ಯ ಮಹೇಶ್ವರಾತ್ ।  
ಕೃತ್ವಂ ವ್ಯಾಕರಣಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ತಸ್ಮೈ ಪಾಣಿನಯೇ ನಮಃ" । ಈ  
ಮುನಿಯು ಅಷ್ಟಾಧ್ಯಾಯೀಸೂತ್ರಪಾಠಃ ಗಣಪಾಠಃ ಛಾತುಪಾಠಃ  
ಲಿಂಗಾನುಶಾಸನಮ್ ಮತ್ತು ಶಿಕ್ಷಾ ಎಂಬ ಐದು ಗ್ರಂಥ  
ಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುವನು.

ಪಾಣಿನೀಯ ಪಾಣಿನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಪಾಣಿನಿಯಲ್ಲಿ ಭಕ್ತಿ  
ಯುಳ್ಳ ಶಿಷ್ಯರು. ಪಾಣಿನೋ ಭಕ್ತಿರಸ್ಯ "ಙ್" (೪-೨-೧೧೪) ।  
"ಅಕೃತವ್ಯುಹಾಃ ಪಾಣಿನೀಯಾಃ" ಪರಿಂ ೪೭ । 2. ಪಾಣಿನಿ  
ಯಿಂದ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಪಾಣಿನಿನಾ ಪ್ರೋಕ್ತಮ್ "ಙ್" (೪-೩-೧೦೧) । 3. ಪಾಣಿನಿ ಮುನಿಯಿಂದ ಮೊದಲು  
ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಪಾಣಿನಿನಾ ಉಪಜ್ಞಾತಮ್ "ಙ್" (೪-೩-೧೧೪) ।  
4. ಪಾಣಿನಿಸಂಬಂಧವಾದ. ಪಾಣಿನೇರಿದಮ್ "ಙ್" (೪-೨-೧೧೪) ।

ಪಾಣಿನ್ಯಮ ಪಾಣಿನ್ಯಮ (ವಿಂ) ಕೈಯಿಂದ ಶಬ್ದ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಡುವ, ಹಸ್ತತಾಡನದಿಂದ ಶಬ್ದ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ (ದಾರಿ).  
ಅಂಧಕಾರದಿಂದ ಅವ್ಯತವಾದ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ದುಷ್ಟ ಪ್ರಾಣಿ  
ಗಳನ್ನು ಅಟ್ಟಲು ಕೈಗಳನ್ನು ಹೊಡೆದು ಶಬ್ದಮಾಡುವ  
ದುಂಬು. ಪಾಣಯೋ ಧ್ಮಾಯಂತೇ ಅಸ್ಮಿನ್ — ಪಾಣಿ + ಧ್ಮಾ  
(ಶಬ್ದಾಮಿಸಂಯೋಗಯೋಃ) "ಙ್" (೩-೨-೩೭) । ನಿಪಾಂ ।

ಪಾಣಿಪಾದ ಪಾಣಿಪಾದ (ನಂ) ಕೈಗಳು ಮತ್ತು ಕಾಲು  
ಗಳು. ಪಾಣ್ಯೋಃ ಪಾದಯೋಃ ಸಮಾಹಾರಃ । ಏಕವಕ್ಷಾವಃ  
(೨-೪-೨) ।

ಪಾಣಿಪಿಡನ ಪಾಣಿಪಿಡನ (ನಂ) 1. ಪಾಣಿಗ್ರಹಣ,  
ವಿವಾಹ, ಮದುವೆ. ಪಾಣಿಃ ಪಿಡಯತೇತ್ — ಪಿಡ (ಅವಗಾಹನೇ)  
ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) । "ಪಾಣಿಪಿಡನವಿಧೇರನಂತರಂ  
ಶೇಲರಾಜದುಹಿತುಹರಂ ಪ್ರತಿ । ಭಾವಸಾಧ್ಯಸಪರಿಗ್ರಹಾದಮೃತ್  
ಕಾಮದೋಹದಮನೋಹರಂ ವಪುಃ" ಕುಮಾಂ ೮-೧ । 2. ಕೈಯಿಂದ  
ಕೈಯನ್ನು ಹಿಡಿಸುವುದು. ಪಾಣಿಃ ಪಿಡನಮ್ ।

ಪಾಣಿಬಂಧ ಪಾಣಿಬಂಧ (ಪುಂ) ವಿವಾಹ, ಮದುವೆ. ಪಾಣಿ-  
ಬಂಧಯತೇತ್ — ಬಂಧ (ಬಂಧನೇ) "ಘಃ" (೩-೩-೧೨೧) ।

ಪಾಣಿಬುಜ್ ಪಾಣಿಬುಜ್ (ಪುಂ) ಉದುಂಬರ ವೃಕ್ಷ, ಅತ್ತಿ  
ಮರ.

ಪಾಣಿರುಹ ಪಾಣಿರುಹ (ಪುಂ) ನಖ, ಉಗುರು. ಪಾಣಿ  
ರೋಹತಿ — ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೪) ।

ಪಾಣಿವಾದ ಪಾಣಿವಾದ (ಪುಂ) 1. ಕೈಗಳನ್ನು ತುಟ್ಟುವವನು,  
ಕೈ ತಟ್ಟಿ ಶಬ್ದಮಾಡುವವನು. 2. ಕೈಗಳಿಂದ ಮೃದಂಗ  
ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ವಾದಿಸುವವನು.

ಪಾಣಿಸರ್ಗ್ಯಾ ಪಾಣಿಸರ್ಗ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಜ್ಜು, ಹಗ್ಗ. ಪಾಣಿಭ್ಯಾಂ  
ಸೃಜಯತೇಸ್ತೌ — ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗೇ) "ಞತ್" (ವಾಂ ೩-೧-೧೨೨) ।  
ಪಾಣಿಸರ್ಗ್ಯಾ ರಜ್ಜುಃ ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ಪಾಣೀಕರಣ ಪಾಣೀಕರಣ (ನಂ) ವಿವಾಹ, ಮದುವೆ.  
ಪಾಣಿ ಕ್ರಿಯತೇತ್ ಅಸ್ಮಿನ್ — ಕೃಃ ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) ।



ಪಾಂಡರ ಪಾಂಡರ (ಪಂ) 1. ಮರುಮೆ ವೃಕ್ಷ, ಮಂಗಾರಿ ಗಡ. 2. ಶ್ವೇತವರ್ಣ. 3. ಒಂದು ಪರ್ವತ. (ವಿಂ) 4. ಶ್ವೇತವರ್ಣದ, ಬಿಳುಪಾದ. ಪಾಂಡರ: ಸ್ವೇತವರ್ಣಾತ್ಯಸ್ಯ. (ನಂ) 5. ಗೃಹಕ ಧಾತು. 6. ಕುಂದಪುಷ್ಪ, ಮೊಲ್ಲೆ ಹೂವು.

ಪಾಂಡವ ಪಾಂಡವ (ಪಂ) ಪಾಂಡುರಾಜನ ಪುತ್ರರಾದ (1) ಧರ್ಮರಾಜ, (2) ಭೀಮ, (3) ಅರ್ಜುನ, (4) ನಕುಲ ಮತ್ತು (5) ಸಹದೇವ. ಪಾಂಡೋಪನಯನ "ಬಬ್" (೪-೨-೭೧)। "ಯ: ಸ ಕೌರವ್ಯದಾಯಾದ: ಪಾಂಡುನಾಮಿ ನರಾಧಿಪ: | ಕಾಮಭೋಗಾನ್ ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ ಶತಸೃಜ್ಜಮಿತೋ ಗತ: | ಬಹುಚಯಂವ್ರತಸ್ತಸ್ಯ ತಸ್ಯ ದಿವ್ಯೇನ ಹೇತುನಾ | ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರ್ಮಾದಯಂ ಪುತ್ರಸ್ತತ್ರ ಜಾತೋ ಗೃಹಿಣಿರ: | ತಥೇನಂ ಬಲಿನಾಂ ಶ್ರೇಷ್ಠಂ ತಸ್ಯ ರಾಜೋ ಮಹಾತ್ಮನ: | ಮಾತರಿಶ್ವಾ ದದೌ ಪುತ್ರಂ ಭೀಮಂ ನಾಮ ಮಹಾಬಲಮ್ | ಪುರಂದರಾದಯಂ ಬ್ರಹ್ಮ ಕುನ್ತುಕಾಂ ಸತ್ಯಪರಾಕ್ರಮ: | ಯಸ್ಯ ಕೀರ್ತಿಮಹೇಶ್ವಾಸಾನ್ ಸರ್ವಾನಭಿಮವಿಧ್ಯತಿ | ಯೋ ತು ಮಾದ್ರೀ ಮಹೇಶ್ವಾಸಾವಸೂತ ಪುಸ್ತೋತ್ತಮೋ | ಬ್ರಹ್ಮಿಣ್ಯಾಂ ಪುಸ್ತವ್ಯಾಘ್ರಾವಿಮೋ ತಾವಪಿ ತಿಷ್ಠತ: " ಮಾಂ. ಆದಿಂ ೧೩೫। "ಬಜ್ರತಾಂ ಪಾಂಡವ: ಸ್ವರ್ಮಮವತ್ವಿನ್ದ್ರ: ತಪತ್ವಿನ್ದ್ರ:" ಮಾಂ. ೨-೬೫।

ಪಾಂಡವೀಯ ಪಾಂಡವೀಯ (ವಿಂ) ಪಾಂಡವರ ಸಂಬಂಧ ವಾದ. ಪಾಂಡವಾನಾಮಿದಮ್ "ಛ:" (೪-೨-೧೧೪)।

ಪಾಂಡವೇಯ ಪಾಂಡವೇಯ (ಪಂ) ಪಾಂಡವರು, ಪಾಂಡು ರಾಜನ ಪತ್ನಿಯರಾದ ಕುಂತೀ ಮತ್ತು ಮಾದ್ರೀಪುತ್ರರು. ಪಾಂಡೋರಿಯ ಪಾಂಡವೀ ಕುಂತೀ ಮಾದ್ರೀ ಚ, ತಯೋರಪತ್ನೀನಿ "ಛಕ್" (೪-೧-೧೨೦)। "ಯದಾಶ್ರಯಂ ಚಾಪಮೇವ ಸಂಕ್ಷೇಪೇ ಸ್ವಯಂ ಮೃತ್ಯುಂ ವಿಹಿತಂ ಧಾರ್ಮಿಕೇಶ | ತನ್ವಾಹ್ನಾಪು: ಪಾಂಡವೇಯಾ: ಪ್ರಹೃಷ್ಠಾ- ಸ್ತದಾ ನಾಶಿಸೇ ವಿಜಯಾಸಂಜಯ" ಮಾಂ. ಆದಿಂ ೧-೨೦೭।

ಪಾಂಡಿತ್ಯ ಪಾಂಡಿತ್ಯ (ನಂ) 1. ಜ್ಞಾನ, ವಿದ್ವತ್ತು. ಪಾಂಡಿತಸ್ಯ ಭಾವ: "ಪ್ಯಬ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ಯತ್ ಪ್ರೌಢಿತ್ವಮುದಾರತಾ ಚ ಕವಸಾಂ ಯನ್ವಾಶಂತೋ ಬೌರವಂ ತನ್ವೇದಸ್ತಿ ತತಸ್ತದೇವ ಭಮಕಂ ಪಾಂಡಿತ್ಯವೇದಗ್ರಹಯೋ:" ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೦। 2. ಪಾಂಡುತನ, ಕೌಶಲ್ಯ, ಚತುರತೆ, ಪ್ರಾವೀಣ್ಯ.

ಪಾಂಡು ಪಾಂಡು (ಪಂ) 1. ಪಾಂಡುಮಹಾರಾಜ, ಪಾಂಡವರ ತಂದೆ, ಶಂಕುರಾಜನ ಪುತ್ರನಾದ ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯನ ಪತ್ನಿ ಅಂಜಲಿಕೆಯಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಜನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಪುತ್ರ. ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯನು ಸಂತಾನವಿಲ್ಲದೆ ಸ್ವರ್ಗಸ್ಥನಾದನು. ತಾಯಿಯಾದ ಸತ್ಯವತಿಯು ಅವನ ಸಂತತಿ ಮುಂದು ಬೆಳೆಯಬೇಕೆಂಬ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯನ್ನು ಕರೆದು ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯನ ಪತ್ನಿ ಅಂಜಲಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಪುತ್ರೋತ್ಪಾದನಾಗಾಗಿ ಅಜ್ಞಾಪಿಸಲು ವ್ಯಾಸರಿಂದ ಅವಳಲ್ಲಿ ಪಾಂಡುವು ಜನಿಸಿದನು. "ಸಾಧ ಕೃಪಾಪನಂ ಚಿನ್ತಯಾಮಾಸ |

ಸೌಖ್ಯತ: ಸ್ಥಿತ: ಕಿಂ ಕರವಾಬೀತಿ | ಸತ್ಯವತ್ಯುವಾಚ ಭಾತಾ ತೇಜಪತ್ಯ ಏವ ಸ್ವರ್ಮತ: ತಸ್ಯಾಶ್ಚ ಪುತ್ರಮುತ್ಪಾದಯೇತಿ | ಸ ಪರಮಿತೃವಾಚ ಸ ತತ್ರ ತ್ರಿನ್ ಪುತ್ರಾನ್ಮುತ್ಪಾದಯಾಮಾಸ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರಂ ಪಾಂಡುಂ ವಿದುರಂ ಚೇತಿ" ಮಾಂ. ಆದಿಂ ೬೩-೫೭। ಪಾಂಡು ರಾಜನು ಕುಂತಿ ಮತ್ತು ಮಾದ್ರೀ ಇಬ್ಬರನ್ನೂ ಮದುವೆ ಯಾದನು. ಒಂದು ದಿನ ಇವನು ಮಾದ್ರೀಯೊಡನೆ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಬೇಟೆಗಾಗಿ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಕಂದಮನೆಂಬ ಋಷಿಯು ಮೃಗ ರೂಪದಿಂದ ತನ್ನ ಪತ್ನಿಯೊಡನೆ ವಿಹರಿಸುತ್ತಿರಲು ಮೃಗದ ಭ್ರಾಂತಿಯಿಂದ ಗಂಡುಮೃಗವನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದನು. ಆ ಮೃಗವು ಕೂಡಲೆ ಕಂದಮ ಋಷಿಯ ರೂಪವನ್ನು ಹೊಂದಿ "ಸ್ತ್ರೀಸಂಗಮದಿಂದ ನಿನಗೂ ಇದೇ ಗತಿ ಬರಲಿ" ಎಂದು ಶಪಿಸಿತು. ಅದರಿಂದ ದು:ಖಿತನಾದ ಪಾಂಡುವು ನಗರ ವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿ ಶತಶೃಂಗ ಪರ್ವತದ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ತಪಸ್ಸು ವೇಷದಿಂದ ವಾಸಮಾಡುತ್ತಿದ್ದು ಸಂತತಿ ವಿಜೃಂಭವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿದ ಪುತ್ರೋತ್ಪಾದನಾಗಾಗಿ ಪತ್ನಿಯನ್ನು ಪೋಷಿಸಿ ಹಿಡಿದನು. ಕುಂತಿಯು ದುರ್ವಾಸಮಹರ್ಷಿಯ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ಪಡೆದಿದ್ದ ಮಂತ್ರವನ್ನು ಜಪಿಸಿ ಯಮಧರ್ಮ ರಾಯನಿಂದ ಧರ್ಮರಾಜನನ್ನೂ, ವಾಯುದೇವರಿಂದ ಭೀಮಸೇನನನ್ನೂ, ಇಂದ್ರನಿಂದ ಅರ್ಜುನನನ್ನೂ ಪಡೆದಳು. ಆ ಮಂತ್ರದ ಮಹಿಮೆಯಿಂದ ಮಾದ್ರಿಯೂ ಅಶ್ವಿನೀ ದೇವತೆಗಳ ಮೂಲಕ ನಕುಲ ಸಹದೇವರೊಬ್ಬರೂ ಅವಳ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪಡೆದಳು. ಒಮ್ಮೆ ಪಾಂಡುವು ಮೋಹಪರವಶನಾಗಿ ಮಾದ್ರಿಯೊಡನೆ ವಿಹರಿಸಿ ಕಂದಮನ ಶಾಪದಂತೆ ಕಾಲವಶ ನಾದನು. ಮಾಂ. ಆದಿಂ ೬೩। 2. ಬಿಳಿಯ ಬಣ್ಣ. (ವಿಂ) 3. ಬಿಳುಪಾದ, ಬಿಳಿಯ ಬಣ್ಣವುಳ್ಳ. "ಯಮ- ಪರದಿಶೋಕ್ತೇ ಮುಂಚಿತಿ ಸಸ್ತಹಸ್ತ: ಶಿಸಿಪಿಪುರಿವ ಪಾಂಡು ಮ್ಲಾನಮಾತ್ಮನಾನ್ವಿನ್ದು:" ಮಾಂ. ೧೧-೨೨। 4. ಪಾಂಡು ರೋಗ, ಕಾಮಾಲರೋಗ. (ಪಂ. ಬಂ. ಬಂ) 5. ಪಾಂಡು ದೇಶ.

ಪಾಂಡುಕಮ್ಬಲ ಪಾಂಡುಕಂಬಲ (ಪಂ) 1. ಬಿಳಿ ಉಣ್ಣೆಯ ಕಂಬಳ, ನಯಗಂಬಳ. ಪಾಂಡುಕಮ್ಬಲ: ಕಮ್ಬಲ: 2. ಕಾಖ ವಾದ ಮೇಲುಹೊದಿಕೆ. 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕಿಲೆ. "ಸ್ಮಾತ್ ಪಾಂಡುಕಮ್ಬಲ: ಸ್ವೇತಪ್ರಾಚಾರಗ್ರಾವಮೇದಯೋ:" ಮೇದಿಂ. 4. ಅನೆಯ ಮೇಲೆ ಅಲಂಕಾರಕ್ಕಾಗಿ ಹೊದಿಸುವ ರತ್ನ ಗಂಬಳ.

ಪಾಂಡುಕಮ್ಬಲಿನ್ ಪಾಂಡುಕಂಬಲಿನ್ (ವಿಂ) ಶ್ವೇತ ಕಂಬಳಿಯಿಂದ ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ರಥ, ಬಿಳಿಯ ಕಂಬಳ ಯನ್ನು ಹೊದಿಸಿದ ರಥ. ಪಾಂಡುಕಮ್ಬಲೇನ ಪರಿವೃತೋ ರಥ: "ಇವಿ:" (೪-೨-೧೧)।



**ಪಾಣ್ಡುಪುತ್ರ ಪಾಂಡುಪುತ್ರ** (ಪಂ.) ಪಾಂಡುರಾಜನ ಮಕ್ಕಳು, ಧರ್ಮರಾಜ ಧೀಮ ಉರ್ದು ನಕುಲ ಮತ್ತು ಸಹದೇವ ರಾಯ ಏವರು ಪಾಂಡವರು.

**ಪಾಣ್ಡುಪುತ್ರ ಪಾಂಡುಪುತ್ರ** (ವಿಂ.) ಪಾಂಡುರಾಜನ ಮಕ್ಕಳು. ಪಾಣ್ಡು ಪುತ್ರ ಯಸ್ಯ.

**ಪಾಣ್ಡುರ ಪಾಂಡುರ** (ಪಂ.) 1. ಬಿಳುಪು ಮತ್ತು ಹಳದಿ ಬೆರೆತ ಮಿಶ್ರವರ್ಣ. 2. ಬಿಳುಪು, ಬಿಳಿಯ ಬಣ್ಣ. (ನಂ.) 3. ಕಾಮಾಲೆ ವ್ಯಾಧಿ. 4. ಶಿಶ್ನರೋಗ. (ವಿಂ.) 5. ಬಿಳುಪಾದ, ಬಿಳಿಯ ಬಣ್ಣದ. "ರದಮಜಿ ಕೆಂಟಮಜಿತ: ಸ್ವನಾದಪನಿರಪಾಣ್ಡುರಸರೋವರಾ" ಮಾಘಂ ೧-೩೦. 6. ಹಳದಿ ಮತ್ತು ಬಿಳುಪು ಬೆರೆತ ಮಿಶ್ರವರ್ಣದ.

**ಪಾಣ್ಡುರಿತ ಪಾಂಡುರಿತ** (ವಿಂ.) ಬೆಳ್ಳಗಾಗಿರುವ. ಪಾಣ್ಡುರೋಪ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತಃ" (೪-೨-೩೬). "ಬ್ರಾಹ್ಮಣದ್ವಂದ್ವ-ಚಮುಸಮುತ್ಪತ್ತಿರೇಣುಮಿ: ಪಾಣ್ಡುರಿತಾ ಮುಖ್ಯಾ:" ನೆಪಂ ೧೦-೯.

**ಪಾಣ್ಡುರೋಗ ಪಾಂಡುರೋಗ** (ಪಂ.) ಕಾಮಾಲೆ ವ್ಯಾಧಿ, ಪಿತ್ತಪಲನಗೆ ಅವಶ್ಯವಿಲ್ಲದೆ ದೇಹವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಹಳದಿ ಬಣ್ಣಕ್ಕೆ ತಿರುಗಿಸುವ ಒಂದು ವ್ಯಾಧಿ. ಈ ಕಾಮಾಲೆ ವ್ಯಾಧಿಯು ವಾತ, ಪಿತ್ತ, ಮತ್ತು ಕಫದೋಷಗಳಿಂದ ಪೃಥಕ್ಕಾಗಿ ಮೂರು ವಿಧ. ಎಲ್ಲ ದೋಷಗಳ ಮೇಳನ ದಿಂದ ಒಂದು ವಿಧ. ಈ ರೀತಿ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ಈ ವ್ಯಾಧಿ ಯಲ್ಲಿ ವಾತಾದಿ ದೋಷದಿಂದ ಕೃಷ್ಣ ಪಿತ್ತ ಮತ್ತು ಶುಕ್ಲ ವರ್ಣಗಳು ಉಂಟಾದರೂ ಪಾಂಡುರೋಗವು ಅಧಿಕ ವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಪಾಂಡುರೋಗವೆಂದು ಇದಕ್ಕೆ ಹೆಸರು. "ಪಾಣ್ಡುರೋಗೋಽರ್ಥವಿಧ: ಪ್ರಕಿಂಚ: ಪೃಥಕ್ ಸಮಸ್ತೈರಂಗೈಶ್ಚ ದೋಃ. ಸರ್ವೈಶ್ಚ ಚೇತೇಷ್ವಿಹ ಪಾಣ್ಡುರೋಗೋ ಯತೋಽಧಿಕೋಽಪಿ ಪಾಣ್ಡುರೋಗ:" ಸುಶ್ರುತಂ ೨೨-೪೪.

**ಪಾಣ್ಡುಲೇಷ ಪಾಂಡುಲೇಷ** (ಪಂ.) ಸರಿಯಾದ ಚಿತ್ರ ಬರೆಯುವ ಮೊದಲು ಸ್ಥೂಲವಾಗಿ ಸೀಮೆಸುಣ್ಣದಿಂದ ಬರೆಯುವ ರೂಪರೇಖೆಯ ಚಿತ್ರ, ಅಕ್ಕಿ ಸೂಚಕ ಸ್ಥೂಲ ರೂಪದ ಚಿತ್ರ. ಈ ಚಿತ್ರ (ನಕ್ಷೆ) ವನ್ನು ಮೊದಲು ಹಲಗೆಯ ಅಥವಾ ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಬರೆದು ಸರಿಯಾದ ರೂಪ ವನ್ನು ಹೊಂದಿದ ಬಳಿಕ ಕಾಗದದ ಮೇಲೆ ಬರೆಯಬೇಕು. "ಪಾಣ್ಡುಲೇಷೇನ ಫಲಕೇ ಭೂಮಿ ವಾ ಪ್ರಥಮಂ ಲಿಖೇತ್. ತನಾಧಿಕಂ ತು ಸಂಶೋಷ್ಯ ಪಶ್ಚಾತ್ಯತ್ರ ನಿವೇಶಯೇತ್" ವ್ಯಾಸ:.

**ಪಾಣ್ಡುಕರ ಪಾಂಡುಕರ** (ಸ್ತಂ.) ಒಂದು ವಿಧ ಪ್ರಮೇಹ ರೋಗ.

**ಪಾಣ್ಡು ಪಾಂಡು** (ಪಂ.) 1. ಪಾಂಡುರೋಗದ ವಿವಾಸ. 2. ಪಾಂಡುರೋಗದ ದೊರೆ. ಪಾಣ್ಡು: ದೇಶೋಽಧಿವನೋಽಪ್ಯ

ತಸ್ಯ ರಾಜಾ ವಾ "ಕೃಷ್ಣ" (ವಾಂ ೪-೧-೧೬೬). "ತಸ್ಯಾಽಪಿ ರಾಜಾ: ಪಾಣ್ಡುರಾ: ಪ್ರತಾಪಂ ನ ವಿವೇಹೀರೆ" ರಘುಂ ೪-೪೯. "ಪಾಣ್ಡುರೋಽಪಿ ಸಾಪಿತಲಂಬಹಾರ: ಕಲ್ಪತಾಜ್ಞರಾಜೋ ಹರಿಕಂದ-ನೆನ" ರಘುಂ ೬-೬೦.

**ಪಾಣ್ಡುಕವಾಟ ಪಾಂಡುಕವಾಟ** (ಪಂ.) ಮುತ್ತುಗಳು ಸಿಕ್ಕುವ ಒಂದು ಪ್ರದೇಶ, ಮುತ್ತುಗಳ ಆಕರ ಪ್ರದೇಶ.

**ಪಾತ್ ಪಾತ್** (ವಿಂ.) ರಕ್ಷಿಸುವ, ಕಾಪಾಡುವ. ಪಾ (ರಕ್ಷಣ) "ಕೃತ್" (೩-೨-೧೨೪).

**ಪಾತ ಪಾತ** (ಪಂ.) 1. ಇಳಿಯುವುದು, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬರುವುದು. ಪಲ್ (ಪತ) ಭಾವ "ಪ" (೩-೩-೧೮). 2. ದೀಳು ವುದು. "ಕೃತ್ವಾ ಪುನರ್ವಾತಮುಚ್ಚೇಮೈಶ್ಚಮು: ಮಾಘಂ ೪-೨೩. ದೃಷ್ಟಿಪಾತ:, ಬಹುಪಾತ:, ಚರಣಪಾತ: 3. ನಾಶ, ಅಳಿವು. "ಬಾಸೀನಮಾಸತ್ರಾಸರೀರಪಾತಸ್ತ್ರಿವಿಂಶತ್ಕಂ ಸಂಭವಿನಂ ದಕ್ಷ" ಕುಶಾಂ ೩-೪೪. 4. ರಾಹು. 5. ಸಂಭವಿಸುವುದು, ಬಿಡುವುದು, ಬಿಡುವುದು, ಆಗುವುದು, ಘಟನೆ. (ವಿಂ.) 6. ದೀಳುವುದು. ಪಲ್ "ಪ:" (೩-೧-೧೪೦). 7. ರಕ್ಷಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟು, ಕಾಪಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಪಾ(ರಕ್ಷಣ) "ಕ:" (೩-೨-೧೦೨).

**ಪಾತಕ ಪಾತಕ** (ನಂ.) ಪಾಪ, ನರಕ್ಕೆ ತಕ್ಕುವ ಅಪಾಯ. ಪಾತಕಿ-ಪಲ್ (ಪತ) + ಪಿಚ್ "ಪಲ್" (೩-೧-೧೩೩). "ಬಹುಹತ್ಯಾ ಸುರಾಪಾನಂ ಸ್ತೇಷಂ ಮುಖ್ಯಜನಾಗಮ: ಮಹಾನ್ತಿ ಪಾತಕಾನ್ವಹು: ಸಂಸಂಪ್ರಾಪಿ ತೇ: ಸಹ" ಮನುಂ ೧೧-೪೪. ಎಂದು ಎಂದು ವಿಧ ಮಹಾಪಾತಕಗಳು ಉಕ್ತವಾಗಿವೆ.

**ಪಾತಕಿನ್ ಪಾತಕಿನ್** (ವಿಂ.) ಮಹಾಪಾಪ ಮಾಡಿದವನು. ಪಾತಕಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪). ಸ್ತ್ರಿವಾ "ಕೋಪ್" (೪-೧-೪). ಪಾತಕಿನೋ ಪಾತಕಿಣಿ "ದ್ವೌ ಮೃಶಾ ಪಾತಕಿನೋ ಮನೋರಥಾ: ಕಪಂ ಪೃಶ್ನ ವಾಮಪಿ ವಿಪ್ರಲೇಖೀರೆ" ನೆಪಂ ೯-೯೧.

**ಪಾತಜ್ಞ ಪಾತಜ್ಞ** (ಪಂ.) ಸೂರ್ಯನ ಪುತ್ರ. 1. ಶುದ್ಧವ. 2. ಕರ್ಷ. 3. ಸುಗ್ರೀವ. 4. ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. 5. ವೈಷ್ಣವತಮನು. ಪತಜ್ಞಸ್ಯ ಸೂರ್ಯಸ್ಯ ಅಪತ್ಯಂ ಗುಮಾನ್ "ಇನ್" (೪-೧-೯೪).

**ಪಾತಜ್ವಲ ಪಾತಜ್ವಲ** (ನಂ.) 1. ಪತಂಜಲಿ ಮಹರ್ಷಿ ಯಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಮಹಾಭಾಷ್ಯ, ಪಾಣಿನಿಯ ಅಷ್ಟಾ ಧ್ಯಾಯಿ ಸೂತ್ರಗಳಿಗೆ ಬರೆದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ. ಪತಜ್ವಲಿನಾ ಪ್ರೋಕ್ತಮ್ "ವಚ್". 2. ಪತಂಜಲಿ ಮಹರ್ಷಿ ಪ್ರದೇಶ ವಾದ ಯೋಗ ಶಾಸ್ತ್ರ, ಯೋಗ ದರ್ಶನ.

**ಪಾತನ ಪಾತನ** (ನಂ.) 1. ದೀಳಿಸುವುದು, ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವುದು. ಪಲ್ (ಪತ) + ಪಿಚ್ ಭಾವ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪).



(ವಿಂ) 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವ, ಕೆಳಗೆ ಬೀಳಿಸುವ. ಪಲ್ (ಗತೌ) ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) ।

ಪಾತನೀಯ ಸಾತನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಡುವ, ಕೆಳಗೆ ಬೀಳಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯ್" (೩-೧-೧೬) । 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಬೇಕಾದ, ಕೆಡವಬೇಕಾದ. "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೬) । -ಯಿತವ್ಯ: -ಯಿತವ್ಯ: ।

ಪಾತಯತ್ ಸಾತಯತ್ (ವಿಂ) ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಕೆಳಗೆ ಬೀಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ: ।

ಪಾತವ್ಯ ಸಾತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಪಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಕುಡಿಯಲ್ಪಡುವ. 2. ಪಾನಮಾಡಬೇಕಾದ, ಕುಡಿಯಬೇಕಾದ. 3. ಕುಡಿಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಪಾ (ಪಾನೇ) ಕರ್ಮದೌ "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೬) । 4. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. ಕಾಪಾಡಲ್ಪಡುವ. 5. ರಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ. 6. ರಕ್ಷಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಪಾ (ರಕ್ಷಣೇ) ಕರ್ಮದೌ "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೬) । ತಪಯತ್ "ಅನೀಯ್" (೩-೧-೧೬) । ಪಾನೀಯಮ್ ಸಾತನೀಯಮ್ ।

ಪಾತಾಲ ಸಾತಾಲ (ನಂ) 1. ಅಧೋಭುವನ, ಕೆಳಗಿನ ಲೋಕ, ಪಾತಾಲ ಲೋಕ, ನಾಗಲೋಕ. ಪತತ್ಯಸ್ಮಿನ್ ಅರ್ಥಮೇ - ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಆಲಕ್" (೩-೧-೧೩೪) । ಪಾತಾಲಲೋಕವು ಭೂಲೋಕಕ್ಕೆ ಕೆಳಗಿರುವ ಸಪ್ತ ಅಧೋಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ಕೊನೆಯದು. ["ಚತುರ್ದಶಭುವನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ಪಾತಾಲಂ ಚ ಸ್ಥಳೀಪೃಥ್ವಂ ಪ್ರೇಕ್ಷತಾಮಿತ-ವಿಕ್ರಮ:" ಯಾದಂ ೨೨-೫೧ । 2. ಎವರ, ಹಳ್ಳ, ಗುಳ, ಗುಂಡಿ. 3. ಬಡಬಾಗಿ. "ಪಾತಾಲಂ ನಾಗಾಲೋಕೇ ಸ್ಯಾದ್ವಿವರೇ ಬಡಬಾನಲೇ" ಮೇದಿಂ । 4. 361 ಸಂಖ್ಯೆ.

ಪಾತಾಲಕೇತು ಸಾತಾಲಕೇತು (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ.

ಪಾತಾಲಗರುಡೋ ಸಾತಾಲಗರುಡೋ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಮೃತಬಳ್ಳಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಲತೆ.

ಪಾತಾಲನಿಲಯ ಸಾತಾಲನಿಲಯ, -ನಿವಾಸಿನ್ -ನಿವಾಸಿನ್ (ಪುಂ) 1. ದೈತ್ಯ, ಅಸುರ. 2. ಸರ್ಪ.

ಪಾತಾಲೋಕ್ ಸಾತಾಲೋಕ್ (ಪುಂ) 1. ದೈತ್ಯ, ಅಸುರ. 2. ಸರ್ಪ.

ಪಾತಿ ಸಾತಿ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಭು, ಒಡೆಯ, ಯಜಮಾನ. ಪಾತಿ ರಕ್ಷತಿ - ಪಾ (ರಕ್ಷಣೇ) "ಅತಿ:" (೩-೧-೫) । 2. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. 3. ಪತಿ, ಗಂಡ.

ಪಾತಿತ ಸಾತಿತ (ವಿಂ) ಕೆಳಗೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೀಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೆಡವಲ್ಪಟ್ಟ. ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) ।

"ಪಾತಿತೇಷು ವಿಮತೇಷ್ವಿತಿ ನಾಮ ಪ್ರಾಪ್ಯ ಯಾದವಪುರಂ ಪರಮೇಷ್ಠಿ" ಯಾದಂ ೨೧-೩೭ ।

ಪಾತಿತವತ್ ಸಾತಿತವತ್ (ವಿಂ) ಕೆಳಗೆ ತಳ್ಳಿದವನು. ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತವತ್:" (೩-೨-೧೦೨) ।

ಪಾತಿಯ ಸಾತಿಯ (ನಂ) ಪತಿತನ ಭಾವ, ಪಾತಿಭ್ರಷ್ಟನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪತಿತಸ್ಯ ಭಾವ: "ಘ್ನ" (೫-೧-೧೨೪) ।

ಪಾತೀಲಿ ಸಾತೀಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಲೆ. 2. ವಸತಿ, ಹಂಗು. ಪತಿ: ಭರ್ತಾ ಪಕ್ಷಿ ವಾ ಲೀಯತೇಽ - ಲೀಡ್ (ಸಂಶ್ಲೇಷಣೆ) "ಹ:" । ಗೌರಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧) । 3. ಮೃತ್ಪಾತ್ರ, ಮಣ್ಣಿನ ಪಾತ್ರೆ. "ಪಾತೀಲಿ ವಾಗುರಾಂ ಸ್ಯಾನ್ವಾರಿಪಾತ್ರ-ಪ್ರಭೇದಯೋ:" ಮೇದಿಂ ।

ಪಾತಿವ್ರತ ಸಾತಿವ್ರತ (ನಂ) ಪತಿಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ, ಪತಿವ್ರತೆಯಾಗಿರುವಿಕೆ, ಪತಿಯ ಸೇವೆಯೇ ಮುಖ್ಯ ವ್ರತವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪತಿ: ಲಕ್ಷಣಯಾ ಪತಿವ್ರತಾ ವ್ರತಮಸ್ಯಾ: ಪತಿವ್ರತಾ - ಪತಿವ್ರತಾಯಾ ಭಾವ: "ಘ್ನ" (೫-೧-೧೨೪) ।

ಪಾತುಕ ಸಾತುಕ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಪಾತ, ಬಿಟ್ಟು ಹೋಗುವ ಪ್ರದೇಶ. 2. ನೀರು ಅನೇ. "ಪಾತುಕ: ಪತಯಾಲೋ ಸ್ಯಾತ್ ಪ್ರಪಾತಜಲಹಸ್ತಿನೋ:" ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ) 3. ಒಂದು ಬೀಳುವ ಸ್ಥಳವಾದ, ಒಂದು ಮುಕ್ತಿಕೊಳ್ಳುವ ಸ್ಥಳವಾದ. ಪಲ್ (ಗತೌ) "ತಕ್" (೩-೨-೧೫೪) । "ತದ್ಭ್ರಮದ್ವಿಷ್ಯ ಸುಗಂಧಿ ಪಾತುಕಾ: ಶಿಲೀಮುಖಾಲಿ: ಕುಸುಮಾದ್ಗುಣಸ್ಪೃಶ:" ನೈಷಂ ೧-೧೩ । 4. ಒಂದು ಸೇರುವ. "ಉತ್ಪತ್ತಿಮಸ್ತಿ ಪದಮೇವ ನ ಮತ್ಪದಾನಾಮರ್ಯೋಽಪಿ ನಾರ್ಥಪುನರಕ್ತಿಷು ಪಾತುಕಾನಾಮ್" ನೈಷಂ ೧೧-೩೬ ।

ಪಾತು ಸಾತು (ವಿಂ) 1. ಕಾಪಾಡುವವನು, ರಕ್ಷಿಸುವವನು. ಪಾ (ರಕ್ಷಣೇ) "ತಕ್" (೩-೧-೧೩೩) । "ಸಂಹಾರಕರ್ತು: ಸಂಹರ್ತಾ ಪಾತು: ಪಾತಾ ಪರಾತ್ಪರ:" ಬ್ರಹ್ಮವೆಂ । 2. ಪಾನ ಮಾಡುವ, ಕುಡಿಯುವ. 3. ಪಾನಮಾಡುವ, (ಲಾಕ್ಷಂ) ನೋಡುವ. ಪಾ (ಪಾನೇ) "ತಕ್" (೩-೧-೧೩೩) । "ಪಾತುರ್ದೇಶಾಲೇಖ್ಯಮಯಿ ನೃಪಸ್ಯ ತ್ವಾಮಾದರಾದಸ್ತನಿಮಿಲಯಾಸ್ತೇ" ನೈಷಂ ೩-೧೦೪ ।

ಪಾತು ಸಾತು (ಪುಂ) ಗ್ರೀಷ್ಮರ್ತು. "ಶುಚಿರೂಪಾಗಮ: ಪಾತು ಉಣ್ಣ ಕರ್ಮಾಪಿ" ವೆಂಜಂ ।

ಪಾತು ಸಾತು (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಬೀಳಿಸಲ್ಪಡುವ, ಕೆಳಗೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಡುವ. ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಘ್ನ" (೩-೧-೧೨೪) । 2. ಕೆಳಗೆ ತಳ್ಳಬೇಕಾದ, ಕೆಡವಬೇಕಾದ.

ಪಾತ್ರ ಸಾತ್ರ (ನಂ) 1. ಅಡಿಗೆಯ ಪಾತ್ರೆ 2. ಬಿಂದಿಗೆ. 3. ಕುಡಿಯುವ ಪಾತ್ರೆ, ಮೊದಲಾದವು. ಪಿಬತ್ಯನೇನ



— ಪಾ (ಪಾನೆ) “ಫ್ಲನ್” (ಽಂ ೪-೧೫೯)। “ಸ ಮೃಗಮೇ  
ವೀತಹಿರಮಯತ್ವಾತ್ ಪಾತ್ರೇ ನಿಧಾಯಾರ್ಥಮನರ್ಥಶೀಲಃ” ರಘುಂ  
೪-೨೧ 4. ನದಿಯ ಎರಡು ದಡಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ.  
ಹೊಳೆಯ ನೀರು ಹರಿಯುವ ಪ್ರದೇಶ. 5. ನೀರು ನಿಲ್ಲಲು  
ಯೋಗ್ಯವಾದ ಕೆರೆ ಕೊಳ ಮುಂತಾದುವುಗಳ ಒಳ ಅಂಗಣ.  
6. ವಿದ್ಯಾವಿನಯಸಂಪನ್ನನಾದ ಯೋಗ್ಯಬ್ರಾಹ್ಮಣ.  
“ದಾತವ್ಯಂ ಪ್ರತ್ಯಹಂ ಪಾತ್ರೇ ನಿಮಿತ್ತೇಷು ವಿಶೇಷತಃ। ಯಾಚಿತೇನಾಪಿ  
ದಾತವ್ಯಂ ಶ್ರದ್ಧಾಪೂತಂ ಸ್ವಶಕ್ತಿಃ” ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೨೦೩ 7.  
ಪರ್ಣ, ಎಲೆ. 8. ರಾಜಾಮಾತೃ. ರಾಜನ ಮಂತ್ರಿ.  
9. ಯಜ್ಞದಲ್ಲಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಪಾತ್ರೆ. “ಪಾತ್ರಂ ಸ್ತುವಾದೌ  
ಪರ್ಣಂ ಚ ಭಾಜನೇ ರಾಜಮನ್ತ್ರಿಣಿ। ತೋರದ್ವಯಾಂತರೇ ಯೋಗ್ಯೇ”  
ಮೇದಿಂ 10. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿಗೆ ಆಧಾರವಾದ  
ಮತ್ತೊಂದು ವಸ್ತು. ಆಧಾರ ವಸ್ತು. ಪಾತಿ ರಕ್ಷತಾರ್ಥಮ್।  
“ಪಾತ್ರವಿಶೇಷೇ ನ್ಯಸ್ತಂ ಗುಣಾಂತರಂ ವ್ರಜತಿ ಶಿಲ್ಪಮಾಧಾತುಃ”  
ಮಾಲಂ ೧-೬ 11. ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ಅಭಿನಯಿಸುವ ನಟ.  
“ಅಹಮಸ್ಯಾಂ ಕಾಲಿದಾಸಗ್ರಥಿತವಸ್ತುನಾ ನವೇನ ತ್ರೋತಕೇನ  
ಉಪಸ್ಥಾಸ್ಯೇ। ತದ್ವಚನಾಂ ಪಾತ್ರವರ್ಗಃ ಸ್ವೇಷು ಸ್ವೇಷು ಪಾಠೇಷು  
ಅವಹಿತೈರವಿತೃಷಮ್ ಐತಿ” ಬಿಕ್ರಂ 1

**ಪಾತ್ರಟ ಪಾತ್ರಟಿ** (ಪಂ) 1. ಕರ್ಪಟ, ಕಂಬುಳಿ, ಉಣ್ಣೆಯ  
ಬಟ್ಟೆ. (ವಿಂ) 2. ಕೃತವಾಗಿರುವ, ತಕ್ಕಾಗಿರುವ. “ಪಾತ್ರಟಃ  
ಕರ್ಪಟೇ ಪುನಿ ಕೃಶೇ ಸ್ವಾದಿಭಿರೇವತ್” ಮೇದಿಂ 1

**ಪಾತ್ರಟೀರ ಪಾತ್ರಟೀರ** (ಪಂ) 1. ಯೋಗ್ಯವಾದ ಕೆಲಸ  
ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ನಡೆಸುವ ಮಂತ್ರಿ. 2. ಲೋಹ ಪಾತ್ರೆ,  
ಕಬ್ಬಿಣದ ಪಾತ್ರೆ. 3. ಕಂಚಿನ ಪಾತ್ರೆ. 4. ಬೆಳ್ಳಿಯ ಪಾತ್ರೆ.  
5. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 6. ನಾಸಾಮಲ, ಮೂಗಿನಿಂದ ಹೊರಡುವ  
ಸಿಂಹಳ. “ಪಾತ್ರಟೀರಸ್ತು ಪುಲಿಂಗೋ ಯುಕ್ತವ್ಯಾಪಾರಮನ್ತ್ರಿಣಿ।  
ಲೋಹಕಾಂಸ್ಯರಜತಪಾತ್ರೇ ಸಿಂಹಾಣಿ ಪಾವಕೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ 1

**ಪಾತ್ರಸಾತ್ ಪಾತ್ರಸಾತ್** (ಅಖ್ಯಂ) ಯೋಗ್ಯನಾದ ಮನುಷ್ಯ  
ನಿಗೆ ಅಧೀನನಾಗಿ, ಯೋಗ್ಯಪುರುಷನ ವಶನಾಗಿ.

**ಪಾತ್ರಾಸಾದನ ಪಾತ್ರಾಸಾದನ** (ನಂ) ಯಜ್ಞ ಪಾತ್ರೆಗಳನ್ನು  
ಯೂಗ ಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ದರ್ಭೆಯ ಮೇಲೆ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಇಡುವುದು.

**ಪಾತ್ರಿನ್ ಪಾತ್ರಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಪಾತ್ರೆಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು.  
2. ಯೋಗ್ಯರಾದ ಮನುಷ್ಯರನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು.

**ಪಾತ್ರಿಯ ಪಾತ್ರಿಯ** (ವಿಂ) ಭೋಜನ ಕೂಟದಲ್ಲಿ ಸೇರಲು  
ಯೋಗ್ಯನಾದವನು. ಪಾತ್ರಂ ಭೋಜನಪಾತ್ರಮೇತಿ “ಘಃ”  
(೪-೧-೬೮) 1. ಪಕ್ಷಿ “ಯತ್” 1. ಪಾತ್ರಿಯ ಪಾತ್ರಿಯ.

**ಪಾತ್ರಿಕೃತ ಪಾತ್ರಿಕೃತ** (ವಿಂ) ಯೋಗ್ಯನಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ  
ವನು. ಅಪಾತ್ರಂ ಪಾತ್ರಂ ಕೃತಃ। “ಮುಷ್ಠಂ ಪ್ರತಿಗ್ರಾಹ್ಯತಾ ಸ್ವಮರ್ಥ  
ಪಾತ್ರಿಕೃತೋ ದಸ್ಯುರಿವಾಸಿ ಯೇನ” ಶಾಕುಂ ೪-೨೦ 1

**ಪಾತ್ರಿಮೃತ ಪಾತ್ರಿಮೃತ** (ವಿಂ) ಯೋಗ್ಯನಾಗಿ ಆಗಿರುವ.  
**ಪಾತ್ರೇಬಹುಲ ಪಾತ್ರೇಬಹುಲ** (ವಿಂ) ಕಾರ್ಯದ ಸಮಯ  
ದಲ್ಲಿ ಬರದೆ ಉಂಟಾದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ  
ಬಂದು ಸೇರುವ ಸ್ವಾರ್ಥಪರರು. ಪಾತ್ರೇ ಭೋಜನಪಾತ್ರೇ ನಿಹಿತೇ  
ಬಹುಲಿಮೃತಾಃ ನ ತು ಕಾರ್ಯೇ। ನಿಪಾಂ (೨-೧-೪೮) 1

**ಪಾತ್ರೇಸಮಿತ ಪಾತ್ರೇಸಮಿತ** (ವಿಂ) ಉಂಟಾದ ಸಮಯ  
ದಲ್ಲೇ ಬರುವ, ಕಾರ್ಯಮಾಡುವುದರಲ್ಲಿ ಅಸಮರ್ಥರಾಗಿ  
ಭೋಜನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಬರುವ, ಸ್ವಾರ್ಥಪರರಾದ.  
ಪಾತ್ರೇ ಭೋಜನಪಾತ್ರೇ ನಿಹಿತೇ ಏವ ಸಮಿತಾಃ ಸಂಜ್ಞತಾಃ ನ ತು  
ಕಾರ್ಯೇ। ನಿಪಾಂ (೨-೧-೪೮) 1

**ಪಾತ್ರ ಪಾತ್ರ** (ಪಂ) 1. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. 2. ಅಗ್ನಿ. (ನಂ)  
3. ಜಲ, ನೀರು. ಪಾತಿ ರಕ್ಷತಿ—ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) “ಫುಟ್”  
(ಽಂ ೪-೨೦೩) 1. ನಿಪಾಂ 1. “ಪಾತ್ರೋಕ್ಷಣೌ ಜಲೇ ಕಲಿಬಮ್”  
ಮೇದಿಂ 1

**ಪಾತ್ರಸ್ ಪಾತ್ರಸ್** (ನಂ) 1. ಜಲ, ನೀರು. ಪಾತಿ ರಕ್ಷತಿ—  
ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) “ಅಸುನ್” ಫುಟ್ ಚ (ಽಂ ೪-೨೦೩) :  
2. ಅನ್ನ, ಆಹಾರ. (ಽಂ ೪-೨೦೪) 1

**ಪಾತ್ರಕ ಪಾತ್ರಕ** (ಪಂ) ಪಾತ್ರಕನ ಮಗ, ದಾರಿ ನಡೆಯುವ  
ವನನ ಮಗ. ಪಾತ್ರಕಸ್ಯಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ “ಅಣ್” (೪-೧-೧೧೨)।  
ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಕೀಪ್” (೪-೧-೧೫) 1. ಪಾತ್ರಕೀ ಪಾತ್ರಕೀ.

**ಪಾತ್ರಿಸ್ ಪಾತ್ರಿಸ್** (ಪಂ) 1. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ.  
2. ಚಂದ್ರ. 3. ಸೂರ್ಯ. “ಪಾತ್ರೀಷಿ ಸ್ವರ್ಗಚಂದ್ರಾರ್ಕಾಃ”  
ವೇಜಂ 1. 4. ಸಮುದ್ರ. 5. ನೇತ್ರ, ಕಣ್ಣು.

**ಪಾತ್ರೇಯ ಪಾತ್ರೇಯ** (ನಂ) ಬುತ್ತಿ, ಪ್ರಯಾಣ ಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ದಾರಿಯ ಉಂಟಾಗಿ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ ಆಹಾರ ವಸ್ತು.  
ಪಾತ್ರೇಯಾ “ಫುಟ್” (೪-೪-೧೦೭) 1. “ಮನಃಪ್ರಸಾದಾಂಜಲಿನಾ  
ನಿಕಾಮಂ ಜಗ್ರಾಹ ಪಾತ್ರೇಯಮಿವೇಂದ್ರಸುನುಃ” ಕಿರಾಂ ೩-೩೭ 1

**ಪಾತ್ರೋ ಪಾತ್ರೋ** (ನಂ) ಪದ್ಮ, ಕಮಲ, ತಾವರೆ.  
ಪಾತ್ರೋ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಮವಿ) “ಫಃ” (೩-೨-೯೭) 1

**ಪಾತ್ರೋದ ಪಾತ್ರೋದ** (ಪಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಪಾತ್ರೋ  
ದದಾತಿ—ಫುಟ್ ದಾತ್ (ದಾನೆ) “ಕಃ” (೩-೨-೩) 1. “ಪಾತ್ರೋದಂ  
ನಿಜಕೇಲಿಸೌಖ್ಯಶಿಖರಾದಾರಣ್ಯ ಯತ್ಕಾಮಿನಿ” ನೈಷಂ ೨-೧೦೪ 1  
2. ಕೊನ್ನಾರಿ ಗೆಡ್ಡೆ, ಮುಸ್ತಕ.

**ಪಾತ್ರೋದ ಪಾತ್ರೋದ** (ಪಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ.  
ಪಾತ್ರೋದ ಧರಃ 1. 2. ಕೊನ್ನಾರಿ ಗೆಡ್ಡೆ, ಮುಸ್ತಕ.



ಪಾದದ್ವಹ ಪಾದದ್ವಹ (ಕುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ವಾತರೋಗ.  
 ಪಿತ್ತರೋಗದಿಂದ ಕೂಡಿದ ವಾತಸಂಚಾರದಿಂದ ಉಂಟು  
 ಗುವ ಉರಿವಾಯು. ಪಾದೋ ದಹತಿ — ದಹ (ಮಸ್ಯಕರಣ)



“ಬಳ್” (೩-೨-೧)। ಈ ವಾತಸಂಹಾರದಿಂದ ಕಾಲಿ ನಲ್ಲಿ ಉರಿತವುಂಟಾಗುವುದು. ನಡೆಯುವಾಗ ಇದರ ಬಾಧೆಯು ಅಧಿಕವಾಗುವುದು. “ಪಾದಯೋ ಕುಸ್ತೇ ದಾಹಂ ಪಿತ್ತಾಸುಕ್ಸಹಿತೋಽನಿಲಃ। ವಿಶೇಷತಃ ಸ್ವಲ್ಪಮತಃ ಪಾದದಾಹಂ ತಮಾದಿಶೇತ್” ಸುಶ್ರುತಂ ನಿರ್ದಾನಂ ೧-೮೦।

ಪಾದನ್ಯಾಸ ಪಾದನಾಸ (ಪುಂ) ಕಾಲಿನ ಹೆಜ್ಜೆಯಿಡುವುದು, ಕಾಲಿನ ಅಡಿಯಿಡುವುದು. ಪಾದಸ್ಯ ನ್ಯಾಸಃ। “ಬಜ್ರೇಂತ- ನಿಹಿತವಚನೇಃ ಸ್ವಚಿತಃ ಸಮ್ಯಗ್ಭವಃ ಪಾದನ್ಯಾಸೋ ಲಯಮನುಗತ- ಸ್ತನ್ಮಯತ್ವಂ ರಸೇಷು” ಮಾಲಂ ೨-೮।

ಪಾದಪ ಪಾದಪ (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಪಾದೇನ ಮೂಲೇನ ಪಿಬತಿ — ಪಾ (ಪಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೩)। “ಅನುಮವತಿ ಹಿ ಮೂರ್ಘಾ ಪಾದಪಸ್ತೀವಮುಷ್ಣಂ ಶಮಯತಿ ಪರಿತಾಪಂ ಛಾಯಯಾ ಸಂಶ್ರಿತಾನಾಮ್” ಶಾಕುಂ ೪-೭। 2. ಪಾದಪೀಠ. 3. ಅದ್ವಿ, ಬೆಟ್ಟ. “ಪಾದಪಃ ಪಾದಪೀಠೇಽದೌ” ಮೇದಿಂ।

ಪಾದಪರೂ ಪಾದಪರೂಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬದನೆ ಗಿಡ. ಪಾದಪಂ ರೋಹತಿ — ರೂ (ಬೀಜವನ್ಮಾದಿ) “ಕಃ” (೩-೨-೩)।

ಪಾದಪಾ ಪಾದಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾದರಕ್ಷೆ, ಚಪ್ಪಲಿ.

ಪಾದಪಾಶ ಪಾದಪಾಶ (ಪುಂ) 1. ಕುದುರೆಯ ಕಾಲಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ. ಪಾದಸ್ಯ ಪಾಶಃ। “ದಾಮಾಂಜನಂ ಪಾದಪಾಶೋ ನಾಸಾರಂಜುಸ್ತು ಲಾಲಿಕಾ” ವೇಜಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ಪಾಶೋ — ಪಾಶೀ. 2. ಲತೆ, ಬಳ್ಳಿ. 3. ಸರಪಳಿ, ಸುಕೋಲೆ. 4. ಬಾಪೆ, ಮಂದಲಿಗೆ.

ಪಾದಪೀಠ ಪಾದಪೀಠ (ನಂ) ಕಾಲುಗಳನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವ ವಜ್ರ. ಪಾದಸ್ಯ ಪೀಠಮ್। “ವಿತಾನಸಹಿತಂ ತತ್ರ ಮೇಜೇ ಪೆತೃಕಮಾಸನಮ್। ಚೂಡಾಮಣಿಮಿಸ್ಪೃಷ್ಟಪಾದಪೀಠಂ ಮಹೀಕ್ಷಿತಾಮ್” ರಘುಂ ೧೭-೨೮।

ಪಾದಪೂರಣ ಪಾದಪೂರಣ (ನಂ) 1. ಶ್ಲೋಕದ ಪಾದವನ್ನು ಪೂರ್ತಿಮಾಡುವುದು. 2. ಶ್ಲೋಕವನ್ನು ಅರ್ಧವಿಲ್ಲದ ಪದಗಳಿಂದ ತುಂಬಿ ಪೂರ್ತಿಮಾಡುವುದು. ಚ ವೇ ತು ಹಿ ಇತ್ಯಾದಿ ಪದಗಳಿಂದ ಶ್ಲೋಕ ಪಾದಗಳನ್ನು ತುಂಬಿ ಪೂರ್ತಿ ಮಾಡುವುದು. “ಚಾನ್ವಾಕಯೇ ಸಮಾಹರೇಽಪ್ಯನ್ಯೋನ್ವಾಯೇ ಸಮುಂಜಯೇ। ಪಕ್ಷಾಂತರೇ ತಥಾ ಪಾದಪೂರಣಂ” ಮೇದಿಂ। “ತು ಪಾದಪೂರಣಂ ಮೇದೇ” ಮೇದಿಂ। “ವೇ ಸ್ಯಾತ್ಸಮ್ಬೋಧನೇ ಪಾದಪೂರಣಂ” ಮೇದಿಂ। “ಹಿ ಪಾದಪೂರಣಂ ಹೇತೌ” ಮೇದಿಂ।

ಪಾದಪ್ರಕ್ಷಾಲನ ಪಾದಪ್ರಕ್ಷಾಲನ (ನಂ) 1. ಕಾಲು ತೊಳೆದು ಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಪಾದಯೋಃ ಪ್ರಕ್ಷಾಲನಮ್। 2. ಕಾಲು ತೊಳೆಯುವ ನೀರು. ಪಾದೋ ಪ್ರಕ್ಷಾಲಯೇತೇಜೇನ — ಕ್ಷಾಲ (ಶೌಚ- ಕರ್ಮಣಿ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)। “ಪಾದಪ್ರಕ್ಷಾಲನಂ ಮೇವ-

ಜನಕಂ ಸುಪವಿತ್ರಕಮ್। ಅಲಕ್ಷ್ಮೀಕಲಿಹೃನ್ವೇವಮಾಭುಷೋ ಹಿತಕಾರಿ ಚ” ರಾಜನಿಂ।

ಪಾದಪ್ರಹಾರ ಪಾದಪ್ರಹಾರ (ಪುಂ) ಕಾಲಿನ ಏಟು, ಕಾಲಿ ನಿಂದ ಒದೆಯುವುದು.

ಪಾದಬಂಧ ಪಾದಬಂಧ (ಪುಂ) 1. ಸರಪಳಿ, ಹಸು ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಕಾಲುಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ. ಪಾದೋ ಬಂಧೇತೇ ಅನೇನ — ಬಂಧ (ಬಂಧನೇ) “ಬಳ್” (೩-೩-೧೨೧)। 2. ಬೇಡಿ, ಸುಕೋಲೆ.

ಪಾದಬಂಧನ ಪಾದಬಂಧನ (ನಂ) 1. ಹಸು ಎಮ್ಮೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಕಾಲು ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ. ಪಾದೋ ಬಂಧೇತೇಜೇನ — ಬಂಧ (ಬಂಧನೇ) ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)। 2. ಪಶುಗಳ ಕಾಲುಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವುದು. ಪಾದಯೋಃ ಬಂಧನಮ್।

ಪಾದಭಾಗ ಪಾದಭಾಗ (ಪುಂ) ಕಾಲುಭಾಗ, ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ.

ಪಾದಮೂಲ ಪಾದಮೂಲ (ನಂ) 1. ಕಾಲಿನ ತಳಭಾಗ, ಕಾಲಿನ ಅಡಿ, ಅಂಗುಲು. ಪಾದಯೋಃ ಮೂಲಮ್। “ಸಾ ಪಾದಮೂಲೇ ಕಂಕೆಯಾ ಮನ್ವರಾ ನಿಪಪಾತ ಹ” ರಾಮಾಂ। 2. ಹಿರಿಯರನ್ನು ಕುರಿತು ಆಡುವ ಮರ್ಯಾದೆಯ ಮಾತು. “ನಿಷ್ಕಿಲ- ಮುನತಲರತ್ನಮಿತಿ ಕೃತ್ವಾ ದೇವಪಾದಮೂಲಮಾದಾಯಾಗತಾಹ- ಮಿಂಚಾಮಿ ದೇವದರ್ಶನಸುಖಮನುಭವಿತುಮ್” ಕಾದಂ।

ಪಾದರಕ್ಷ ಪಾದರಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಚಪ್ಪಲಿ, ಜೋಡು. ಪಾದಂ ರಕ್ಷತಿ — ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೇ) “ಬಳ್” (೩-೨-೧)। 2. ರಥದ ಚಕ್ರಗಳನ್ನು ಕಾಪಾಡುವ ಕಬ್ಬಿಣದ ಪಟ್ಟಿ.

ಪಾದರಕ್ಷಣ ಪಾದರಕ್ಷಣ (ನಂ) ಕಾಲನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವುದು, ಕೆಲ್ಲು ಮುಳ್ಳು ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಕಾಲುಗಳನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವುದು. ಪಾದಸ್ಯ ರಕ್ಷಣಮ್।

ಪಾದರಕ್ಷಿಣಿ ಪಾದರಕ್ಷಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾದುಕೆ, ಚಪ್ಪಲಿ, ಪಾದರಕ್ಷೆ.

ಪಾದರಜಸ್ ಪಾದರಜಸ್ (ನಂ) ಪಾದದ ಧೂಳು.

ಪಾದರಜ್ಜು ಪಾದರಜ್ಜು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಕಾಲಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ.

ಪಾದರಥಿ ಪಾದರಥೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾದುಕೆ, ಚಪ್ಪಲಿ. ಕುದ್ರೋ ರಥಃ ರಥಿ, ಪಾದಯೋಃ ರಥೀವ। “ಪತ್ತನ್ಮಿ ಪಾದವಿರಜಾಃ ಕೋಶಿ ಪಾದರಥಿ ಮೇಕ್ತ್” ಹಾರಾಂ।

ಪಾದರೋಹ ಪಾದರೋಹ (ಪುಂ) ವಟುವೃಕ್ಷ, ಅಲದ ಮರ.

ಪಾದವಂದನ ಪಾದವಂದನ (ನಂ) ಕಾಲಿಗೆ ಎರಗಿ ನಮಸ್ಕಾರ ಮಾಡುವುದು, ಕಾಲಿನ ಮೇಲೆ ತಲೆಯಿಟ್ಟು ಮಾಡುವ



ನಮಸ್ಕಾರ. ಪಾದಯೋರ್ವಂದನಮ್ | "ಕುರ್ಯಾತ್ ಸ್ವಪುರಯೋಃ ಪಾದವಂದನಂ  
ಭರ್ತೃತತ್ಪರಾ" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೮೩ | ಹಿರಿಯರ ಪಾದಗಳನ್ನು  
ಹಿಡಿದು ನಮಸ್ಕರಿಸಬೇಕು. ಆದರೆ ಯುವತಿಯಾಗಿರುವ  
ಗುರುಪತ್ನಿಯ ಪಾದವಂದನವು ನಿಷಿದ್ಧ. "ಗುರುಪತ್ನೀ ತು  
ಯುವತಿಃ ನಾಭಿವಾಚೇಹ ಪಾದಯೋಃ | ಪೂರ್ಣವಿಂಶತಿವರ್ಷೇಣ ಗುಣದೌಷಿ  
ವಿಜಾನತಾ" ಮನುಂ ೨-೨೧೨ |

**ಪಾದವಲ್ಮೀಕಿ ಪಾದವಲ್ಮೀಕಿ** (ನಂ) ಅನೇಕಾಲು ರೋಗ  
ಕಾಲು ಗಜಚರ್ಮದಂತೆ ದಟ್ಟವಾಗಿ ಉದುವ ಒಂದು  
ರೋಗ. ಪಾದೇ ವಲ್ಮೀಕಿಮಿವ |

**ಪಾದವಿಕ ಪಾದವಿಕ** (ವಿಂ) ಪಥಿಕ, ದಾರಿ ನಡೆಯುವವನು.  
ಪದವೀ ಧಾವತಿ — "ಠಕ್" (೪-೪-೩೭) |

**ಪಾದವಿರಜಸ್ ಪಾದವಿರಜಸ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾದರಕ್ಷೆ, ಚಪ್ಪಲಿ.  
ಪಾದೋ ವಿರಜಾಃ ಕ್ರಿಯತೇಜಯಾ | "ಪನ್ನಂಧ್ರೀ ಪಾದವಿರಜಾಃ  
ಕೋಶೀ ಪಾದರಯಿ ಭವೇತ್" ಹಾರಾಂ |

**ಪಾದಶಾಖಾ ಪಾದಶಾಖಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಲುಬೆರಳು. ಪಾದಸ್ಯ  
ಶಾಖೇವ |

**ಪಾದಶಿಲ ಪಾದಶಿಲ** (ಪುಂ) ಪರ್ವತದ ಸುತ್ತಲೂ ಇರುವ  
ಸಣ್ಣ ಗುಡ್ಡಗಳು. ಪಾದರೂಪಃ ಶಿಲಃ |

**ಪಾದಶಿಖ ಪಾದಶಿಖ** (ಪುಂ) ಕಾಲಿನ ಊತ, ಕಾಲು  
ಉದುವುದು. ಪಾದಸ್ಯ ಶಿಖಃ |

**ಪಾದಶಿಖ ಪಾದಶಿಖ** (ನಂ) ಪಾದಪ್ರಕ್ಷಾಲನ, ಕಾಲುಗಳನ್ನು  
ತೊಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಪಾದಯೋಃ ಶಿಖಮ್ |

**ಪಾದಸ್ಕೂಟ ಪಾದಸ್ಕೂಟ** (ಪುಂ) ಕಾಲು ಒಡೆಯುವ  
ರೋಗ, ಕಾಲು ಒಡೆದು ರಕ್ತ ಕೀವು ಸುರಿಯುವ ಕುಷ್ಠ  
ರೋಗ. ಪಾದಃ ಸ್ಕೂಟತನೇನ — ಸ್ಕೂಟ (ವಿಶೀರ್ಣನ) "ಘಬ್"  
(೩-೩-೧೨೧) |

**ಪಾದಹರ್ಷ ಪಾದಹರ್ಷ** (ಪುಂ) ಕಾಲಿನ ಹೆಜ್ಜೆಯ ಮೇಲೆ  
ಹೆಚ್ಚು ಭಾರ ಬಿಡುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಕಾಲು ಜೋವು,  
ಕಾಲು ಮರವಡಿಸುವುದು. ಪಾದಸ್ಯ ಹರ್ಷಃ | "ಹೃಷ್ಯತಶ್ಚರಣಿ  
ಯಸ್ಯ ಭವತಶ್ಚ ಪ್ರಸುಪ್ತವತ್ | ಪಾದಹರ್ಷಃ ಸ ವಿಜ್ಞೇಯಃ ಕಫವಾತ-  
ಪ್ರಕೋಪಜಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ನಿಧಾನಂ ೧-೮೧ |

**ಪಾದಾಕುಲಕ ಪಾದಾಕುಲಕ** (ನಂ) ಮಾತ್ರಾವೃತ್ತದ  
ಒಂದು ಭೇದ. ಮಾತ್ರಾಸಮಕ ವಿಶ್ಲೋಕ ವಾನವಾಸಿಶಾ  
ಮತ್ತು ಚಿತ್ರಾವೃತ್ತಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವುದಾದರೂ ಎರಡು  
ಮೂರು ಅಥವಾ ನಾಲ್ಕು ವೃತ್ತಗಳ (ಯಥಾ ಸಂಭವ)  
ಪಾದಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದಾದರೆ (ಪಾದಗಳಲ್ಲಿ ಅಕ್ಷರಗಳು  
ಹೆಚ್ಚು ಕಡಮೆಯಾಗಿರಬಹುದಾದುದರಿಂದ) ವೃತ್ತ ಪರಿ  
ಮಾಣವು ನಿಯತವಾಗಿಲ್ಲದ "ಪಾದಾಕುಲಕ" ವೃತ್ತ

ವಾಗುವುದು. "ಯದತೀತವಿವಿಧಶುಭಲಕ್ಷಣಯುತಮಾತ್ರಾ-  
ಸಮಾದಿಪಾದಃ ಕಥಿತಮ್ | ಅನಿಯತವೃತ್ತಪರಿಮಾಣಯುತಂ ಪ್ರಥಿತಂ  
ಜಗತ್ಸು ಚ ಪಾದಾಕುಲಕಮ್" ವೃಂ ೨೦ |

**ಪಾದಾಘ ಪಾದಾಘ** (ನಂ) ಕಾಲಿನ ತುದಿ.

**ಪಾದಾಙ್ಗದ ಪಾದಾಙ್ಗದ** (ನಂ) ನೂಪುರ, ಕಾಲಿನ ತೊಡುಗೆ,  
ಕಾಲಿನ ಆಭರಣ, ಗೊಲಸು ಗೆಜ್ಜೆ ಮುಂತಾದುವು. ಪಾದ-  
ಸ್ಯಾಙ್ಗದಮಿವ | ಗೌರಾಂ "ಙೀಘ್" (೪-೧-೪೧) | ಪಾದಾಙ್ಗದಿ  
ಪಾದಾಙ್ಗದಿ. "ಪಾದಾಙ್ಗದಿ ಹಂಸಕಃ ಸ್ಯಾತ್" ಹಾರಾಂ |

**ಪಾದಾತ್ ಪಾದಾತ್** (ಪುಂ) 1. ಪದಾತಿ, ಕಾಲಾಳು, ಕಾಲು  
ಬಲ. ಪಾದಾಮ್ಯಾಮತತಿ—ಅತ (ಸಾತತ್ಯಮನೇ) "ವಿವಪ್"  
(೩-೨-೭೬) | (ವಿಂ) 2. ಕಾಲಿನಿಂದ ಸಂಚರಿಸುವವನು.  
ನಡೆದು ಹೋಗುವವನು.

**ಪಾದಾತ್ ಪಾದಾತ್** (ನಂ) ಪದಾತಿಗಳ ಸಮೂಹ, ಕಾಲಾಳು  
ಗಳ ಗುಂಪು, ಕಾಲುಬಲ (ಸೈನ್ಯ)ದ ತಂಡ. ಪದಾತಿ  
"ಅಘ್" (೪-೨-೩೮) | "ದೀರ್ಘಾಸ್ತಿಯಮ್ವೇಜಯಂತೀಸದೃಶಃ  
ಪಾದಾತಾನಾಂ ಶ್ರೇಜಿರೇ ಸ್ವಙ್ಗಲೇಖಾಃ" ಮಾಘಂ ೧೮-೪ |

**ಪಾದಾತಿ ಪಾದಾತಿ, -ತಿಕ -ತಿಕ** (ಪುಂ) ಕಾಲಾಳು,  
ಕಾಲುಬಲ.

**ಪಾದಾಂಬು ಪಾದಾಂಬು** (ನಂ) ಮಜ್ಜೆಗೆ, ನಾಲ್ಕನೆಯ  
ಒಂದು ಭಾಗ ನೀರು ಬೆರಸಿ ಕಡೆದ ಮೊಸರು. ಪಾದಮಾಂಬು  
ಯಸ್ಯ | "ತಕ್ರಂ ಹ್ಯುದಶ್ಚಿನ್ಮಥಿತಂ ಪಾದಾಮ್ಬವಧಾಮ್ಬು ನಿರ್ಜಲಮ್"  
ಅಮಂ |

**ಪಾದಾಲಿನ್ದಿ ಪಾದಾಲಿನ್ದಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೆಕ್ಕೆ, ಹಡಗು. ಪಾದ  
ಇವಾಲಿನ್ದೋ ಯಸ್ಯಾಃ | ಗೌರಾಂ "ಙೀಘ್" (೪-೧-೪೧) |  
"ಪಾದಾಲಿನ್ದಿ ತರಣಾ ನೋಸ್ತರಣಿಸ್ತಾರಣಿಸ್ತಾರಿಃ" ಹಾರಾಂ |

**ಪಾದಾವರ್ತ ಪಾದಾವರ್ತ** (ಪುಂ) ಏತ, ಬಾವಿಯಿಂದ ನೀರನ್ನು  
ಎತ್ತಲು ಕಾಲಿನಿಂದ ತಿರುಗಿಸಲ್ಪಡುವ ಚಕ್ರ. ಪಾದಾಮ್ಯಾ-  
ಮಾವರ್ತತೇ—ಆ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಘಬ್" (೩-೩-೧೨೧) |  
"ಉದ್ವಿಟಿಕಂ ಘಟಿಯನ್ತ್ರಂ ಪಾದಾವರ್ತೋಽರಘಟಕಃ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ |

**ಪಾದಾವಿಕ ಪಾದಾವಿಕ** (ಪುಂ) ಪದಾತಿ, ಕಾಲಾಳು, ಕಾಲು  
ಬಲ (ಸೈನ್ಯ). ಪಾದೇನಾವೋ ರಕ್ಷಣಮ್ | ತತ್ರ ನಿಯುಕ್ತಃ "ಠಕ್"  
(೪-೪-೬೯) |

**ಪಾದಿಕ ಪಾದಿಕ** (ವಿಂ) 1. ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗದಿಂದ  
ಜೀವಿಸುವವನು. ಪಾದೇನ ಚತುರ್ಥಶಿನೇ ಜೀವತಿ "ಠಕ್"  
(೪-೪-೧೨) | 2. ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗದಷ್ಟು  
ಪರಿಮಾಣವುಳ್ಳ. ಪಾದಃ ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ | "ಷಟ್ತ್ರಿಶ-  
ದಾಂದಿಕಂ ಚಯ ಗುರೋ ತ್ರೈವೇದಿಕಂ ವ್ರತಮ್ | ತದಧಿಕಂ ಪಾದಿಕಂ ವಾ  
ಗ್ರಹಣಾಂತಿಕಮೇವ ವಾ" ಮನುಂ ೩-೧ |



**ಪಾದಿನ್ ಪಾದಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಚರಣಾಂಕುಳು, ಕಾಲುಗಂಕುಳು. ಪಾದೌ ಚರಣೌ ಸ್ತೌಷ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। 2. ನಾಲ್ಕು ನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ಪಾದ-ಶ್ರುತೃಯಾಶಿ ಗ್ರಾಹ್ಯತ್ವೇನಾಸ್ತೃತೃಯಾಶಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। "ಸರ್ವೇಷಾಮಧಿನೋ ಮುಖ್ಯಾಸ್ತದರ್ಶನಾಧಿನೋಽಪರೇ। ತೃತೀಯಿನ್-ಸ್ತೃತೃಯಾಂಶಾಶ್ಚತುರ್ಥಾಶಾಶ್ಚ ಪಾದಿನ್:" ಮನುಂ ೮-೨೧೦।

**ಪಾದುಕ ಪಾದುಕ** (ವಿಂ) 1. ನಡೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಪದ (ಗತೌ) "ಉಕ್ತ" (೩-೨-೧೫೪)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ-ಕಾ. 2. ಪಾದುಕೆ, ಪಾದರಕ್ಷೆ. 3. ಜನರು ಸಂಚರಿಸುವ ದೊಡ್ಡ ರಸ್ತೆಯಲ್ಲಿ ಒಳಗೆ ಮುಳ್ಳು ಹಾಕಿ ಮರಳಿನಿಂದ ಮುಚ್ಚಿ ಲ್ಲಿಟ್ಟು ಹಳ್ಳಿ, -ಗುಳಿ. "ಪಾದುಕಾ ಕಷ್ಟಕೀ ಗತೆ: ಪಾಂಸುಚ್ಚಿತ್ರೋ ಮಹಾಪಥೇ" ವೇಜಂ। ಪದ್ವತೇಜನಯಾ -ಪದ (ಗತೌ) "ಕ:" (೩-೧-೭೫)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"। ಹ್ರಸ್ವ: (೭-೪-೧೩)। "ಇತಿ ನಿಗದಿತವನ್ತಂ ರಾಘವಸ್ತಂ ಜಗಾದ ವ್ರಜ ಭರತ ಗೃಹ್ಣತ್ವಾ ಪಾದುಕೇ ತ್ವಂ ಮದೀಯೇ। ಚ್ಯುತನಿಃಶ್ವಿಲವಿಶಾಙ್ಕ: ಪೂಜ್ಯಮಾನೋ ಜನೌಘ: ಸಕಲಮುಖರಾಜ್ಯಂ ಕಾರಯಾಸ್ಮನ್ಮತೇನ" ಭದ್ರಿಂ ೩-೫೬।

**ಪಾದುಕಾಕಾರ ಪಾದುಕಾಕಾರ** (ಪುಂ) ಚಪ್ಪಲಿ ತಯಾರಿಸುವವನು.

**ಪಾದ್ ಪಾದ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾದರಕ್ಷೆ, ಚಪ್ಪಲಿ. ಪದ್ವತೇಜನಯಾ -ಪದ (ಗತೌ) "ಕ:" (೩-೧-೮೫)।

**ಪಾದೋದಕ ಪಾದೋದಕ** (ನಂ) 1. ಪಾದಪ್ರಕ್ಷಾಳನದ ನೀರು, ಕಾಲು ತೊಳೆದ ನೀರು. 2. ಹಿರಿಯರ ಮತ್ತು ಪರಮ ಪೂಜ್ಯರೆನಿಸಿದವರ ಪಾದಗಳನ್ನು ತೊಳೆದ ನೀರು, ಪಾದಾರ್ಪಣೆ. ಹಿರಿಯರ ಚರಣಗಳನ್ನು ತೊಳೆದ ನೀರನ್ನು ಪೂಜ್ಯಭಾವನೆಯಿಂದ ಪವಿತ್ರವಾದುದೆಂದು ಸ್ವೀಕರಿಸುವ ಸಂಪ್ರದಾಯ. ಪಾದಪ್ರಕ್ಷಾಲನಜಾತಮುದಕಮ್। "ಹೃದಿ ರುಪಂ ಮುಖೇ ನಾಮ ನೇವೈವಮುದರೇ ಹರೇ:। ಪಾದೋದಕಶ್ಚ ನಿರ್ಮಲೈ ಮಸ್ತಕೇ ಯಸ್ಯ ಸೌಜನ್ಯುತ:" ಪಾಪಂ ೮-೧೫।

**ಪಾದೋದರ ಪಾದೋದರ** (ಪುಂ) ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಪಾದ: ಉದರೇ ಯಸ್ಯ।

**ಪಾಪ ಪಾಪ** (ನಂ) 1. ಪಾದಪ್ರಕ್ಷಾಳನಕ್ಕಾಗಿ ಕೊಡುವ ನೀರು. ಪಾದಾರ್ಪಣಮ್ "ಯತ್" (೪-೪-೨೫)। "ನಾರೀಣಾಮಥ ಸರಸೌ ಸರ್ಪೇನಹಸ್ತಾ ಪ್ರೀತ್ಯೇವ ವ್ಯತನುತ ಪಾಪಮೂರ್ಮಹಸ್ತೆ:" ಮಾಘಂ ೮-೧೫। (ವಿಂ) 2. ನಾಲ್ಕು ನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗವನ್ನು ಹೊಂದಲು ಅರ್ಹನಾದವನು. ಪಾದಂ ಚತುರ್ಥಾಶಿಮಹತಿ "ಯತ್" (೪-೧-೬೬)।

**ಪಾನ ಪಾನ** (ಪುಂ) 1. ಮದ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವವನು. ಪೀಯತೇ ಯಸ್ಮಾತ್ -ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಲ್ಯುಟ್"। 2. ನೀಶ್ವಾಸ, ನಿಶ್ವಾಸ.

೩. ಪಾಯತೇಜೇನ -ಪಾ (ರಕ್ಷಣೇ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ನಿಶ್ವಾಸ: ಪಾನ ಏತನ:" ವೇಜಂ। 3. ದ್ರವವೆಂದರ್ಥವನ್ನು ಕುಡಿಯುವುದು. "ಪಾನಪೌತನವ-ಯಾವಕರಾಗಂ ಸುಭ್ರವೋ ನಿಮೃತಚುಮ್ಬನದಕ್ಷಾ:" ಮಾಘಂ ೧೦-೨೬। 4. ಕುಡಿಯುವ ಪಾತ್ರೆ. ಪಿಬತ್ಯೇನ -ಪಾ (ಪಾನೇ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। 5. ರಕ್ಷಣೆ, ಕಾಪಾಡುವುದು. ಪಾ (ರಕ್ಷಣೇ) ಮಾತೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 6. ಕಾಲು, ಕೊಳ ಮೊದಲಾದ ಜಲವಿರುವ ಪ್ರದೇಶ. ಪೀಯತೇ ಪಶು-ಪಕ್ಷಾದಿಭಿರತ್ರ -ಪಾ (ಪಾನೇ) ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। 7. ಜಲ, ನೀರು. ಪೀಯತೇ -ಪಾ (ಪಾನೇ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩)। (ವಿಂ) 8. ಪಾನಮಾಡುವವನು. 9. ರಕ್ಷಿಸುವವನು. ಪಿಬತಿ ರಕ್ಷತಿ ವಾ -ಪಾ (ಪಾನೇ, ರಕ್ಷಣೇ) ಕರಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)।

**ಪಾನಕ ಪಾನಕ** (ನಂ) ಕುಡಿಯಬಹುದಾದ ದ್ರವವನ್ನು, ಹಾಲು, ನೀರು ಮುಂತಾದುದು, ಹುಳಿ ಅಥವಾ ನಿಂಬೆ ಹಣ್ಣಿನ ರಸದಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ ಪಾನೀಯ.

**ಪಾನಗೋಷ್ಠಿ ಪಾನಗೋಷ್ಠಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮದ್ಯಪಾನ ಮಾಡುವವರ ಸಭೆ, ಕುಡಿಯುವವರು ಒಟ್ಟುಗೂಡುವುದು, ಮದ್ಯ ಕುಡಿಯುವವರ ಗುಂಪು.

**ಪಾನಪ ಪಾನಪ** (ವಿಂ) ಮದ್ಯವನ್ನು ಕುಡಿಯುವವನು. ಹೆಂಡಗುಡುಕ. ಪಾನಂ ಮದ್ಯಾದಿಪೇಯಂ ಪಿಬತಿ -ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩)।

**ಪಾನಪಾತ್ರ ಪಾನಪಾತ್ರ** (ನಂ) ಕುಡಿಯುವ ಪಾತ್ರೆ, ಮದ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಪಾನೀಯವನ್ನು ಕುಡಿಯುವ ಪಾತ್ರೆ. ಪಾನಸ್ಯ ಪೇಯಸ್ಯ ಮದ್ಯಾದೇ: ಪಾತ್ರಮ್।

**ಪಾನಭೂಮಿ ಪಾನಭೂಮಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಡಿಯುವ ಜಾಗ. ಮದ್ಯ ಪಾನ ಮಾಡುವ ಸ್ಥಳ. ಪಾನಸ್ಯ ಭೂಮಿ:। "ಛಾಣಕಾಂತ-ಮಧುಗಂಧಕರ್ಷಿಣಿ: ಪಾನಭೂಮಿರಚನಾ: ಪ್ರಿಯಾಸಖ:" ರಘುಂ ೧೯-೧೧।

**ಪಾನಶೌಂಡ ಪಾನಶೌಂಡ** (ವಿಂ) ಮದ್ಯವನ್ನು ಕುಡಿಯುವುದರಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಥನಾದವನು.

**ಪಾನೀಯ ಪಾನೀಯ** (ನಂ) 1. ಜಲ, ನೀರು. ಪೀಯತೇ -ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। "ಪಾನೀಯಂ ಪ್ರಾಣಿನ: ಪ್ರಾಣಾ: ಪಾನೀಯಂ ಪಾವನಂ ಮಹತ್। ಪಾನೀಯಸ್ಯ ಪ್ರದಾನೇನ ತೃಪ್ತಿ-ರ್ಭವತಿ ಶಾಶ್ವತೀ"। (ವಿಂ) 2. ಕುಡಿಯಲ್ಪಡುವ. 3. ಕುಡಿಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ರಕ್ಷಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 6. ಕುಡಿಯಬೇಕಾದ. 7. ರಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ. ಪಾ (ಪಾನೇ ರಕ್ಷಣೇ ವಾ) ಕರ್ಮದೌ "ಅನೀಯರ್"।



**ಪಾನೀಯನುಕ್ತ ಹಾನೀಯನಕುಲ (ಪಂ.)** ನೀರುಬೆಕ್ಕು, ಜಲಮಾರ್ಜಿತ. “उदस्तु जलमार्जरः पानीयनकुलो वसी” अमि० चि० ।

**ಪಾನೀಯಶಾಲಾ ಹಾನೀಯಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮದ್ಯ ಮಾರುವ ಮನೆ, ಹೆಂಡದ ಅಂಗಡಿ. 2. ಮದ್ಯ ಕುಡಿಯುವ ಮನೆ. ಪೀಯತೇಷ್ಯಾಮ್—ಪಾ (ಪಾನೇ) ಅಧಿಂ “ಬನೀಯರ್” (3-1-96) । ಪಾನೀಯಾ ಶಾಲಾ । ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕ.” । -ಶಾಸ್ತಿಕಾ -ಕಾಲಿಕಾ.

**ಪಾನ್ಯ ಹಾಂಫ (ವಿಂ)** 1. ಪಥಿಕ, ಯಾತ್ರಿಗೆ ಹೋಗುವವನು, ದಾರಿ ಪಡೆಯುವವನು, ದಾರಿಗ. ಪನ್ಯಾನಂ ನಿಯಂ ಗಚ್ಛತಿ—“ಬ.” (4-1-96) । “यथा निदाघसमये सूर्याक्षिपरिपीडितः । पान्यो याति बलं दृष्ट्वा त्वारितं तत्पिपासया” हरिवಂ० । 2. ವಿಯೋಗ, ಪ್ರವಾಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ಪತ್ನಿಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ದೂರವಾಗಿರುವವನು. “इतीव पान्यान् शपतः पिबन् द्विजान् सखेदमैक्षिष्ट स लोहितेक्षणां” नैष० 1-90 ।

**ಪಾಪ ಹಾಪ (ನಂ)** 1. ನಡೆವಾಣೆ, ಕಾರಣವಾದ ಅಪರಾಧ ಮತ್ತು ದುರಾಚಾರ. ಹಿಂಸೆ. ಪಾತಿ ಅಸ್ಮಾದಾತ್ಮಾನಮ್—ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) “ಪ.” (3-3-23) । “दृढमक्तिरिति ज्येष्ठे राज्ञत्तृष्णापराधमुखः । मातुः पापस्य भरतः प्रायश्चित्तमिवाकरोत्” रघु० 12-19 । “पापं पापाः कथयत कथं शीघ्रराज्ञेः पितुर्म” वेगो० 3-4 । (ವಿಂ) 2. ಪಾಪ, ಪಾಪಾತ್ಮ, ಪಾಪಕಾರ್ಯವನ್ನೆಸಗಿದವನು, ಪಾಪದ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಪಾಪಮಸ್ತಾಸ್ತಿ “ಬ.” (4-2-120) । “सुहृन्मित्रार्थदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु । साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते” गीता 6-9 । 3. ಮಂಚೆ, ಘಾತಕ, ಕ್ರೂರಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವವನು. “नृक्षसो धातुकः क्रूरः पापः” अम० । ಪಾಪವು ಕಾಯಿಕ ವಾಚಿಕ ಮತ್ತು ಮಾನಸಿಕಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ.

(1) ಪ್ರಾಣಹಿಂಸೆ, ಕಳ್ಳತನ, ಪರಸ್ಪ್ರೀದೋಷಣ (ವ್ಯಭಿಚಾರ) ಇವು ಕಾಯಿಕ ಪಾಪ. “प्राणमितापनं स्तैन्यं परदारमथापि वा । त्रीणि पापानि कायेन सर्वतः परिवर्जयेत्” भा० शान्ति० ।

(2) ಕೆಟ್ಟಮಾತಾಡುವುದು, ಇತರರ ಮನ ನೋಯುವಂತೆ ಕಡಿನವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವುದು, ಬಾಡಿಕೊರತನ, ಸುಳ್ಳು ಹೇಳುವುದು ಇತ್ಯಾದಿ ವಾಚಿಕ ಪಾಪ. “असत्प्रलापं पापं पेशुन्वमनृतं उवा । चत्वारि वाचा राजेन्द्र न बलेन न चित्तयेत्” 10 शान्ति० ।

(3) ಪರಸ್ಪತ್ತನ್ನು ಅಪಹರಿಸುವುದು ಮಂಚೆ ದ್ವೇಷ ಇತ್ಯಾದಿ ಮಾನಸಿಕ ಪಾಪ. “अनभिर्या परस्वेषु सर्वसत्त्वेषु सौहृदम् । कर्मणां फलमस्तीति त्रिविधं मनसाचरेत्” भा० शान्ति० ।

**ಪಾಪಕೃತ್ ಹಾಪಕೃತ್ (ವಿಂ)** ಪಾಪಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಿದವನು. ಪಾಪ ಕೃತವಾನ್ । “पापकृन्मुच्यते पापात् तथा दानेन चापदि” ।

**ಪಾಪಗ್ರಹ ಹಾಪಗ್ರಹ (ಪಂ)** ತೊಂದರೆ ಕೊಡುವ ಗ್ರಹ, ಓಡಿಸುವ ಗ್ರಹ—ಕ್ಷೇಣಚಂದ್ರ, ಕುಜ, ರಾಹು, ಶನಿ ಇವರೊಡನೆ ಸೇರಿದ ಬುಧ ಮತ್ತು ರವಿ ಇವರು ಪಾಪ ಗ್ರಹಗಳು. “अघनिन्दुः कुजो राहुः अनिस्तैर्युत इन्दुजः । रविः पापग्रहश्चैते शुभाश्रान्ये प्रकीर्तिताः” ।

**ಪಾಪಧನ ಹಾಪಧನ (ಪಂ)** 1. ತಿಲ, ಎಳ್ಳು. ಪಾಪಂ ಹಂತಿ—ಹನ (ಹಿಸಾಖ್ಯಾಃ) “ಟಕ್” (3-2-43) । ತಿಲದಾನದಿಂದ ಪಾಪ ಪರಿಹಾರವಾಗುವುದು. (ವಿಂ) 2. ಪಾಪವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ.

**ಪಾಪವೇಲಿ ಹಾಪವೇಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಗುರು ಶುಂಠಿ. “एका-प्लीला पापवेली प्राचीना वनतित्तिका” अम० ।

**ಪಾಪನಾಶನ ಹಾಪನಾಶನ (ಪಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. ಪಾಪಂ ತದುಪಲದ್ಯಂ ಬಾಹ್ಯಾಮ್ಯಂತರಕ್ಷತ್ರಂ ನಾಶಯತಿ—ಪಶ (ಅದರ್ಶನೆ) + ಷಿಕ್ “ಲ್ಯುಃ” (3-1-134) । “देवकीतनयत्वेऽपि प्रपन्नानां विशेषतः । बाह्यान्तःशत्रुसंहारी यः स स्यात् पापनाशनः” इति निरुक्तः । (ನಂ) 2. ಪಾಪವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. ಪಾಪಸ್ಯ ನಾಶನಮ್ । 3. ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ, ಪಾಪವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವ ಒಂದು ಕಾರ್ಯ. ಪಾಪಂ ನಾಶಯತ್ವನೇನ—ಪಶ + ಷಿಕ್ ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (3-2-110) । (ವಿಂ) 4. ಪಾಪವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವ. ಪಾಪಂ ನಾಶಯತಿ—ಪಶ (ಅದರ್ಶನೆ) ಷಿಕ್ “ಲ್ಯುಃ” (3-1-134) ।

**ಪಾಪಪತಿ ಹಾಪಪತಿ (ಪಂ)** ಉಪಪತಿ, ಜಾರ, ಮಿಂಡ. ಪಾಪಜನಕಃ ಪತಿಃ ।

**ಪಾಪಫಲ ಹಾಪಫಲ (ನಂ)** ಪಾಪದ ಫಲ, ದುಷ್ಕಾರ್ಯದ ಫಲ.

**ಪಾಪಭಾಜ್ ಹಾಪಭಾಜ್ (ವಿಂ)** ಪಾಪವನ್ನು ಹೊಂದುವ, ಪಾಪವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸುವ. ಪಾಪಂ ಭಜತೇ—ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) “ನಿವಪ್” (3-2-96) । “न केवलं यो महतोऽपभाषते शृणोति तस्मादपि यः स पापभाक्” कुमा० 4-43 ।

**ಪಾಪಮುಕ್ತ ಹಾಪಮುಕ್ತ (ವಿಂ)** ಪಾಪದಿಂದ ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪಾಪಾನ್ಮುಕ್ತಃ । “यः समः सर्वभूतेषु बितात्मा शान्तमानसः ।



ಸ ಪಾಪೇಶ್ಯೋ ವಿಮುಚ್ಯತ ಜ್ಞಾನವಾನ್ ಸ ಚ ವೇದವಿತ್”  
ವರಾಹಪುಂ ।

ಪಾಪಮುಕ್ತಿ ಪಾಪಮುಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾಪದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ.  
ಪಾಪಾನ್ಮುಕ್ತಿ: ।

ಪಾಪಯೋನಿ ಪಾಪಯೋನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತೀರ್ಥಕ್ಷೇತ್ರಗಳ  
ಯೋನಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವಿಕೆ, ನಿತ್ಯವಾದ ಜನ್ಮ. ಪಾಪಾ  
ನಿನ್ವಾ ಯೋನಿ: । (ವಿಂ) 2. ಪಾಪಕರ್ಮದಿಂದ ಉಂಟಾದ  
ಜನ್ಮವುಳ್ಳ, ತೀರ್ಥಕ್ಷೇತ್ರಗಳ ಯೋನಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ.  
ಪಾಪಹೇತುಕಾ ಯೋನಿಯು. “ಮಹಾಪಾತಕಜಾನ್ ಧೋರಾಶ್ವರಾನ್  
ಪ್ರಾಪ್ಯ ದಾರುಣಾನ್ । ಕರ್ಮಸಂಪ್ರಾಪ್ತಾಂತೇ ಮಹಾಪಾತಕಿನಸ್ತಿವಹ ॥  
ಮೃಗಾಶ್ವಸುಕರೋಷ್ಠಾಣಾಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಹಾ ಯೋನಿಮುಚ್ಛತಿ । ಸರಪುಷ್ಕಸ-  
ವೇಣಾಂ ಸುರಾಪೋ ನಾತ್ರ ಸಂಸಯ: । ಕೃಮಿಕೀಟಪತೃತ್ವಂ ಸ್ವರ್ಣ-  
ಹಾರಿ ಸಮಾನುಯಾತ್ । ತೃಣಗುಲ್ಮಲತಾತ್ವಂ ಚ ಕ್ರಮಸ್ತೋ ಮುಕ್ತಸ್ಥಿರ:”  
ಶಾಸ್ತ್ರಂ ೩-೨೦-೬-೮ । [ಎವಂಶ್ಚ “ಅಥಮ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಪಾಪರೋಗ ಪಾಪರೋಗ (ಪುಂ) ಪಾಪಕೃತ್ಯಗಳಿಂದ  
ಜನ್ಮಾಂತರದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ರೋಗ, ವೈದ್ಯ ಚಿಕಿತ್ಸೆಗೂ  
ಅಡಗದ ಕರ್ಮವ್ಯಾಧಿ. [ಈ ವ್ಯಾಧಿಗಳು ಅನುಭವ  
ದಿಂದಲೇ ನಿವೃತ್ತಿ ಹೊಂದಬೇಕು. ಪಾಪಕರ್ಮಗಳಿಗೆ  
ಅನುಗುಣವಾದ ನರಕವಾಸ ಮತ್ತು ತೀರ್ಥಕ್ಷೇತ್ರ  
ಗಳಾದ ಬಳಿಕ ಮನುಷ್ಯ ಜನ್ಮ ಪಡೆದು ಅನುಭವಿಸಬೇಕಾದ  
ಅನೇಕ ವ್ಯಾಧಿಗಳಲ್ಲಿ ಕರ್ಮವ್ಯಾಧಿಗಳೂ ಉಂಟು.] ಮಹಾ  
ಪಾತಕಿಯು ಕುಷ್ಠರೋಗಿಯಾಗುವನು. ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯೆ ಮಾಡಿ  
ದವನು ಕ್ಷಯರೋಗಿಯಾಗುವನು. ಸ್ವರ್ಣವನ್ನು ಕದಿಯು  
ವವನು ಕುನಖಿಯಾಗುತ್ತಾನೆ. ಧಾನ್ಯಚೋರನು ಅಂಗ  
ಹೀನನಾಗುತ್ತಾನೆ. ವಸ್ತ್ರಚೋರನು ಶ್ವೇತ ರೋಗವನ್ನು  
ಅನುಭವಿಸುತ್ತಾನೆ. ಆಶ್ವಾಪಹಾರಕನು ಕುಂಟನಾಗಿ ಹುಟ್ಟು  
ತ್ತಾನೆ. ಇತ್ಯಾದಿ ಅನೇಕ ಕಷ್ಟದಾಯಕ ವ್ಯಾಧಿಗಳನ್ನು  
ಪಾಪಿಯು ಅನುಭವಿಸಬೇಕಾಗುವುದು.

ಪಾಪರೋಗಿನ್ ಪಾಪರೋಗಿನ್ (ವಿಂ) ಪಾಪಕೃತ್ಯದ ಫಲ  
ವಾದ ರೋಗಗಳನ್ನುಳ್ಳವನು. ಪಾಪರೋಗಿನ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:”  
(೪-೨-೧೧೫) ।

ಪಾಪದ್ವಿ ಪಾಪದ್ವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬೇಟೆ. ಪಾಪಾನಾಮೃದ್ವಿತ್ರ ।  
2. ಪಾಪದ ವೃದ್ಧಿ, ಪಾಪವು ಹೆಚ್ಚುವಿಕೆ. ಪಾಪಾನಾಮೃದ್ವಿ:  
ಸಮೃದ್ಧಿ: ।

ಪಾಪಶಮನ ಪಾಪಶಮನ (ನಂ) 1. ಪಾಪವನ್ನು ಕಡೆಮೆ  
ಮಾಡುವುದು. ಪಾಪಸ್ಯ ಶಮನಮ್ । (ವಿಂ) 2. ಪಾಪ  
ವನ್ನು ಕಡೆಮೆಮಾಡುವ. ಪಾಪಂ ಶಮಯತಿ—ಶಮು (ಉಪಶಮೇ)  
“ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಪಾಪಹನ್ ಪಾಪಹನ್ (ವಿಂ) ಪಾಪವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ.  
ಪಾಪಂ ಹನ್ತಿ—ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತಯೋ: ) “ವಿವಪ್” (೩-೨-೮೭) ।  
“ಉಪದನಿಯಮಸ್ಯ ಪ್ರಾಪ್ತಿಕವಾಮಿಪ್ರಾಪ್ತೇ” “ವಿವಪ್” । “ಯತ್ರ  
ಶ್ಯಾಮೋ ಲೋಹಿತಾಕ್ಷೋ ದೃಷ್ಟಶ್ಚರತಿ ಪಾಪಹಾ । ಪ್ರಜಾಸ್ತತ್ರ ನ  
ಮುಹ್ಯಂತಿ ನೇತಾ ಚೇತ್ಸಾಧು ಪಶ್ಯತಿ” ಮನುಂ ೭-೨೫ ।

ಪಾಪಾತ್ಮನ್ ಪಾಪಾತ್ಮನ್ (ವಿಂ) ಪಾಪದಿಂದ ಕೂಡಿದ  
(ಜೀವ). ಪಾಪಾತ್ಮನ: ಆತ್ಮಾ ।

ಪಾಪಿನ್ ಪಾಪಿನ್ (ವಿಂ) ಪಾಪದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪಾಪ-  
ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೫) ।

ಪಾಪಿಷ್ಠ ಪಾಪಿಷ್ಠ (ವಿಂ) ಎಲ್ಲರಿಗಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚು ಪಾಪಿ  
ಯಾದ, ಅಧಿಕ ಪಾಪ ಮಾಡಿದ. ಅತಿಶಯೇನ ಪಾಪಿ—  
“ಇಷ್ಠನ್” (೪-೩-೫೫) ।

ಪಾಪೀಯಸ್ ಪಾಪೀಯಸ್ (ವಿಂ) ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಪಾಪಿ  
ಯಾದ ಒಬ್ಬ. ಅಧಮನಯೋರತಿಶಯೇನ ಪಾಪಿ “ಇಯಸುನ್”  
(೪-೩-೫೭) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ತೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ಯಸೀ.

ಪಾಪಮನ್ ಪಾಪಮನ್ (ಪುಂ) ಪಾಪ, ಪಾಪಕ. ಆಪ್ನೋತಿ  
ವ್ಯಾಪ್ನೋತಿ ಲೋಕಾನ್—ವ್ಯಾಪ್ನು (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) “ಮನಿನ್” (೩ಂ  
೪-೧೫೦) । ನಿಪಾಂ । “ಪಾಪಮನಾಂ ತಮಸಿ ಪಾತಯಿತುಣಾ-  
ಮಾತ್ಮನೋರ್ಮವಿರಾಜಪದಸ್ಥಮ್” ಶಾಕಂ ೨೧-೨೦ ।

ಪಾಪಮನ್ ಪಾಪಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಗಂಧಕ. ಪಾಪ ಹನ್ತಿ—ಹನ್  
(ಹಿಸಾಗತಯೋ: ) “ಟಕ್” (೩-೨-೫೩) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2.  
ಕುಟುಕರೋಹಿಣಿ.

ಪಾಪಮನ್ ಪಾಪಮನ್ (ನಂ) ಕಷ್ಟ, ಚರ್ಮರೋಗ. ಪಾಪಮನ್ಯುಕ್ತಮ್  
—ಪಿ (ಶೋಷಣೆ) “ಮನಿನ್” (೩ಂ ೪-೧೪೫) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ  
ಮತ್ತಂತತ್ವಾತ್ ವಾ “ಟಾಪ್” (೪-೧-೧೩) । ಪಾಮಾ ಪಾಮಾ.  
“ಪಾಮ ಪಾಮಾ ವಿಚರ್ಚಿಕಾ” ಅಮಂ ।

ಪಾಪಮನ್ ಪಾಪಮನ್ (ವಿಂ) ಕಷ್ಟಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಕಷ್ಟ ಹಿಡಿ  
ದಿರುವ. ಚರ್ಮರೋಗವುಳ್ಳ. ಪಾಮಾಸ್ತಯಸ್ಯ “ನ:”  
(೪-೨-೧೦೦) ।

ಪಾಮರ ಪಾಮರ (ವಿಂ) 1. ಅಜ್ಞ, ಮೂರ್ಖ, ಏನೇನೂ  
ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು. ಪಾಪಿತಿ ಪಾ: ಧಮ: ಪ್ರಿಯತೇಜೇನ—  
ಮೃಡ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೇ) “ವ:” (೩-೩-೧೧೮) । 2. ನೀಚ,  
ಅಸಭ್ಯ, ಅಸಂಸ್ಕೃತ. “ಪಾಮರೋ ಮೂರ್ಖನೀಚಯೋ:” ಮೇದಿಂ ।  
“ದ್ವಾರಾತ್ ಪಾಮರಫೂತಕೃತೇ: ಶ್ರುತಿಪಥಪ್ರಾಪ್ತೇ: ಪ್ರಬುದ್ಧಸ್ತವಮೃದ್ವಾಢಿ  
ನಿಶ್ಚರವಾರಿಮಿ: ಸಹಮನಾ: ಶ್ವಶ್ರೇ ನಿಮಜ್ಜನ್ನಿವ” ರಾಜತಂ  
೧-೩೭೮ । 3. ಕಷ್ಟಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದವನು ಕಷ್ಟ ಹಿಡಿ  
ದವನು. ಪಾಮ ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ರ:” (೪-೨-೮೦) ।  
4. ದುಷ್ಟ, ದುರ್ಜನ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಪಾಮರೀ ಪಾಮರೀ.



**ಪಾಸಾರಿ ಸಾಮಾಂಶಿ** (ಪುಂ) ಗಂಧಕ. ಪಾಮೋರ್ತಿ:।  
“ಗಂಧಾಶ್ಮಾ ಶುಲ್ಬಪಾಮಾಕುಠಾರಿಗಾನ್ವಿಕಗಾನ್ವಿಕೌ” ಅಭಿಂ  
ಚಿಂ ।

**ಪಾಯನ ಸಾಯನ** (ನಂ) ಕುಡಿಸುವುದು, ಕುಡಿಯುವಂತೆ  
ಮಾಡುವುದು. ಪಾ (ಪಾನೇ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।

**ಪಾಯನೀಯ ಸಾಯನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಕುಡಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ಕುಡಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. 3. ಕುಡಿಸಬೇಕಾದ, ಪಾನ  
ಮಾಡಿಸಬೇಕಾದ. ಪಾ (ಪಾನೇ) + ಣಿಚ್ “ಅನೀಯರ್”  
(೩-೧-೧೬) । “ತವ್ಯ:” (೩-೧-೧೬) । ಪಾಯಪಿತವ್ಯ:  
ಸಾಯಯಿತವ್ಯ: ।

**ಪಾಯಯತ್ ಸಾಯಯತ್** (ವಿಂ) ಕುಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಪಾನ  
ಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪಾ (ಪಾನೇ) + ಣಿಚ್ “ಯತ್”  
(೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ವಂತಿ  
-ಯಂತಿ. “ಸಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪) । -ಯಮಾನ:  
-ಯಯಮಾನ: ।

**ಪಾಯಸ ಸಾಯಸ** (ಪುಂ) 1. ಕ್ಷೀರಾನ್ನ, ಕ್ಷೀರದಲ್ಲಿ ಪಕ್ವವಾದ  
ಅನ್ನ, ಹಾಲಿನಲ್ಲಿ ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಅನ್ನ. ಪಯಸಿ ಸಂಸ್ಕೃತಮ್  
“ಅನ್” (೪-೨-೧೬) । “ಸಂವತ್ಸರಂ ತು ಗವ್ಯೇನ ಪಯಸಾ  
ಪಾಯಸೇನ ಚ” ಮನುಂ ೩-೨೭೧ । 2. ಲೋಬಾನ, ತುರುಷ್ಕ  
ದೇಶದ ಒಂದು ವಾಸನಾದ್ರವ್ಯ. “ಪಾಯಸಸ್ತು ಕಲಿಬೃಂಸಾ:  
ಶ್ರೀವಾಸಪರಮಾಪ್ರಯೋ:” ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ) 3. ಹಾಲಿನಿಂದ  
ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ವಸ್ತು. ಪಯಸೌ ವಿಕಾರ: “ಅನ್”  
(೪-೩-೧೩೪) ।

**ಪಾಯಿಕ ಸಾಯಿಕ** (ಪುಂ) ಪದಾತಿ, ಕಾಲಾಕು.

**ಪಾಯಿತ ಸಾಯಿತ** (ನಂ) 1. ಕುಡಿಸುವುದು, ಪಾನಮಾಡಿಸು  
ವುದು. ಪಾ (ಪಾನೇ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತ:” (೩-೩-೧೧೪) ।  
(ವಿಂ) 2. ಕುಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಾನಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪಾ + ಣಿಚ್  
“ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) ।

**ಪಾಯಿತವತ್ ಸಾಯಿತವತ್** (ವಿಂ) ಕುಡಿಸಿದವನು, ಪಾನ  
ಮಾಡಿಸಿದವನು. ಪಾ (ಪಾನೇ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತವತು:”  
(೩-೨-೧೦೨) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ವಂತಿ  
-ವಂತಿ.

**ಪಾಯಿನ್ ಸಾಯಿನ್** (ನಂ) ಕುಡಿಯುವವನು, ಪಾನಮಾಡು  
ವವನು. ಪಾ (ಪಾನೇ) “ಣಿನಿ:” (೩-೨-೭೮) ।

**ಪಾಯು ಸಾಯು** (ವಿಂ) 1. ಗುದ, ಅಸನದ್ವಾರ, ಅಪಾನ  
ವಾಯು ಹೊರಡುವ ಮಾರ್ಗ. ಪಾತಿ ಮಲನಿಸಾರಣೇನ  
ರಕ್ಷತಿ—ಪಾ (ರಕ್ಷಣೇ) “ಅನ್” (೩-೧-೧) । 2. ಒಂದು  
ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯ. [“ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಪಾಯ್ಯ ಸಾಯ್ಯ** (ನಂ) 1. ಪರಿವರಣ, ಅಳತೆ. ಮೀಯತೇಜೇನ  
—ಮಾ (ಮಾನೇ) “ಯತ್” ವಾತ್ವಾದೇ: ಪತ್ವಂ ಚ ನಿಪಾಂ  
(೩-೧-೧೨೯) । 2. ಪಾನೀಯ, ಜಲ, ನೀರು. 3.  
ಕುಡಿಯುವುದು, ಪಾನಮಾಡುವುದು. (ವಿಂ) 4. ನಿಂದೆಗೆ  
ಅರ್ಹನಾದ, ನೀಚ, ಅಧಮ. 5. ಕುಡಿಸಲ್ಪಡುವ.  
6. ಕುಡಿಸಬೇಕಾದ, ಪಾನಮಾಡಿಸಬೇಕಾದ. 7. ಪಾನ  
ಮಾಡಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. “ಛೃತಂ ಚ ಪಾಯ್ಯ: ಸ ನರ: ಸುಜಿಗ್ಞಂ  
ಸ್ನಿಗ್ಧಂ ವಿರೇಚ್ಯ: ಸ ಯಥೋಪದೇಶಮ್” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೧೭-೩೦ ।

**ಪಾರ ಸಾರ** (ನಂ) 1. ಹೊಳೆಯು ಅಥವಾ ಸಮುದ್ರದ  
ಎದುರು ದಡ. ಪಾರ್ಯತೇ ತರಣಮತ್ರ — ಪಾರ (ಕರ್ಮಸಮಾಪ್ತೌ)  
“ವಬ್” (೩-೩-೧೨೧) । “ಪಾರೆಜಲಂ ನೇರನಿಧೇರಪಶ್ಯ-  
ನ್ಮುರಾರಿರಾನೀಲಪಲಾಶರಾಶಿ:” ಮಾಘಂ ೩-೭೦ । “ನಾದಾ-  
ವ್ಯೇಸ್ತು ಪರಂ ಪಾರಂ ನ ಜಾನಾತಿ ಸರಸ್ವತೀ । ಅಥಾಪಿ ಮಂಜನ-  
ಭಯಾನ್ ತುಮ್ಮಿಂ ಬಹತಿ ವಕ್ಷಸಿ” । (ಪುಂ) 2. ಪ್ರಾಂತ್ಯ  
ಭಾಗ, ಕೊನೆಯ ಭಾಗ. “ತೇಜಸ್ವೀ ರಿಪುಹತಬಂಧು: ಸಪಾರಂ  
ಬಾಹುಮ್ಯಾಂ ವ್ರಜತಿ ಛೃತಾಯುಷ್ಕಲವಾಮ್ಯಾಮ್” ವೇಣೀಂ ೩-೨೭ ।  
3. ಅಚ್ಚಿನ ಪ್ರದೇಶ, ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಅಥವಾ ಪ್ರದೇಶದ  
ಹೊರಭಾಗ. “ಸ ಹಿ ದೇವ: ಪರಂ ಜ್ಯೋತಿಸ್ತಮ: ಪಾರೆ  
ವ್ಯವಸ್ಥಿತಮ್” ಕುಮಾರಂ ೨-೫೮ । 4. ಪಾದರಸ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
ಪಾರಾ ಸಾರಾ. 5. ಒಂದು ನದಿ.

**ಪಾರಕ ಸಾರಕ** (ವಿಂ) 1. ಪಾಲಿಸುವವನು, ಕಾಪಾಡು  
ವವನು. ಪೃ (ಪಾಲನಪೂರಣಯೋ: ) “ಞ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) ।  
2. ಪೂರ್ತಿಮಾಡುವ. 3. ಪ್ರೀತಿಯುಂಟುಮಾಡುವ.

**ಪಾರಕ್ಯ ಸಾರಕ್ಯ** (ನಂ) 1. ಪರಲೋಕಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದ  
ಕಾರ್ಯ, ಪರಲೋಕಕ್ಕೆ ಹಿತವಾದ ಕರ್ಮ. ಪರಸ್ಮೆ ಲೋಕಾಯ  
ಹಿತಮ್ । (ವಿಂ) 2. ಪರಕೀಯ, ಇತರರಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.  
ಪರಸ್ಯೇದಮ್ । “ವರಂ ಸ್ವರ್ಧಮೌ ವಿಗುಣೌ ನ ಪಾರಕ್ಯ: ಸ್ವನುಷ್ಠಿತ: ।  
ಪರಧರ್ಮಂ ಜೀವನ್ ಹಿ ಸದ್ವ: ಪತತಿ ಜಾತಿ:” ಮನುಂ ೧೦-೯೭ ।

**ಪಾರಗ ಸಾರಗ** (ವಿಂ) 1. ಪಾರವನ್ನು ತಲುಪುವ, ಅಚ್ಚಿ  
ದಡವನ್ನು ಮುಟ್ಟುವ. ಪಾರಂ ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ಲ (ಗತೌ)  
“ಡ:” (೩-೨-೪೮) । 2. ಕೊನೆಯ ಭಾಗವನ್ನು ಮುಟ್ಟಿ  
ರುವ, ಒಂದು ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಸಂಪೂರ್ಣ ಜ್ಞಾನವನ್ನು  
ಪಡೆದಿರುವ. “ಮೃಗಯಾ ನ ವಿಗೀಯತೇ ನೃಪೇರಪಿ ಧರ್ಮಾಽಮ-  
ಮರ್ಮಪಾರಗ:” ನೈಷಂ ೨-೯ । 3. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಸಮಾಪ್ತಿ  
ಗೊಳಿಸುವ, ಕಾರ್ಯದ ಕೊನೆಯನ್ನು ಮುಟ್ಟುವ.

**ಪಾರಗತ ಸಾರಗತ** (ವಿಂ) 1. ಕೊನೆಯನ್ನು ಮುಟ್ಟಿದ.  
2. ಅಚ್ಚಿ ದಡವನ್ನು ತಲುಪಿದ. 3. ಸಂಪೂರ್ಣ ತಿಳಿವಳಿಕೆ  
ಯನ್ನು ಪಡೆದಿರುವ. ಪಾರಂ ಗತ: ।



**ಪಾರಗಾಮಿನ್ ಪಾರಗಾಮಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಕೊನೆಯನ್ನು ಮುಟ್ಟುವ. 2. ಅಡೆ ದಡವನ್ನು ತಲುಪುವ. ಪಾರ ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಗಿಣಿ:” (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಪಾರಣ ಪಾರಣ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಪಾರಯತಿ — ಪಾರ (ಕರ್ಮಸಮಾಪ್ತೌ) + ಗಿಣಿ “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪) । (ನಂ) 2. ಪ್ರತಿಸಮಾಪ್ತಿಯ ನಂತರ ಮಾಡುವ ಭೋಜನ. ಪಾರ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಯುಚ್” (೩-೩-೧೦೭) । —ಗಾ-ಣಾ. 3. ಭೋಜನ, ಊಟ. “ಬಭೂವ ತಸ್ಯಾ: ಕಿಲ ಪಾರಣಾವಿಧಿ: ನ ವೃಕ್ಷವೃತ್ತಿವ್ಯತಿರಿಕ್ತ-ಸಾಧನ:” ಕುಮಾಂ ೪-೨೨ ।

**ಪಾರತ(ವ) ಪಾರತ(ದ)** (ಪುಂ) ಪಾದರಸ. ಪಾರಂ ತನೋತಿ —ತನ್ (ವಿಸ್ತಾರೇ) “ಫ:” (ವಾಂ ೩-೨-೧೦೧) । ಪೃಷ್ಠಂ । ಪಾರಂ ದದಾತಿ — ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) “ಕ:” (೩-೨-೩) ವಾ । ಪರಮೇಶ್ವರನ ದೇಹದಿಂದ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದ ರೇತಸ್ಸು ಪಾದರಸವಾಯಿತು. “ಶಿವಾಜ್ಞಾತ್ ಪ್ರಚ್ಯುತಂ ರೇತ: ಪತಿಸಂ ಪರಣೋತಲೇ । ತದ್ಗ್ರಹಸಾರಜಾತವಾಚ್ಛುಕಲಮಚ್ಛಮಮೂಚ್ಚ ತತ್ । ಕ್ಷೇತ್ರಭೇದೇನ ವಿಜ್ಞೇಯಂ ಶಿವವೀರ್ಯಂ ಚತುರ್ವಿಧಮ್ । ಶ್ವೇತಂ ರಕ್ತಂ ತಥಾ ಪಿಂಶಂ ಕೃಷ್ಣಂ ತತ್ಸು ಭವೇತ್ ಕ್ರಮಾತ್ ” ।

**ಪಾರತನ್ಯ ಪಾರತಂತ್ಯ** (ನಂ) ಪರಾಧೀನತೆ. ಇನ್ನೊಬ್ಬರ ಆಶ್ರಯದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ. ಪರತನ್ತ್ರಸ್ಯ ಭಾವ: “ಏನ್” (೪-೧-೧೨೪) ।

**ಪಾರತ್ರಿಕ ಪಾರತ್ರಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಪರಲೋಕಕ್ಕೆ ಹಿತವಾದ. 2. ಪರಲೋಕದಲ್ಲಿರುವ, ಪರಲೋಕದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ. ಪರತ್ರ ಭವಮ್ “ಠ್” (ವಾಂ ೪-೩-೬೦) ।

**ಪಾರದ ಪಾರದ** (ಪುಂ) ಪಾದರಸ, ರಸಧಾತು. ಪಾರಂ ದದಾತಿ — ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) “ಕ:” (೩-೨-೩) । [“ಪಾರತ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] “ಪಾರದ: ಸಕಲರೋಗನಾಶಕ: ಷಡ್ರಸೋ ನಿಖಿಲಯೋಗವಾಹಕ:” ।

**ಪಾರದಾರಿಕ ಪಾರದಾರಿಕ** (ವಿಂ) ಪರಸ್ಪರಸಂಗ ಮಾಡುವವನು, ವ್ಯಭಿಚಾರಿ. ಪರದಾರಾನ್ ಗಚ್ಛತಿ — “ಠ್” (ವಾಂ ೭-೩-೭) । “ಪಾರದಾರಿಕವಿಲಾಸಸಾಹಸಂ ದೇವಭರ್ತು-ರ್ದದಿಕ್ಷು ಮಿತಿಷು” ನೆಪಂ ೧೮-೨೧ ।

**ಪಾರದಾರ್ಯ ಪಾರದಾರ್ಯ** (ನಂ) ಪರಸ್ಪರಗಮನ, ವ್ಯಭಿಚಾರ. ಪರಸ್ಯ ದಾರಾ: ದಾರಾ ಯಸ್ಯ ಪರದಾರ್ಯ: ತಸ್ಯ ಕರ್ಮ “ಏನ್” (೪-೧-೧೨೪) । “ಭೃತಾದಧ್ಯಯನಾದಾನಂ ಭೃತಕಾ-ಧ್ಯಯನಂ ತಥಾ । ಪಾರಿದಾರ್ಯ ಪಾರಿವಿತ್ಯಂ ವಾಘ್ವಿಧ್ಯಂ ಲವಣಾಕ್ರಿಯಾ” ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೨೩೫ ।

**ಪಾರದೃಶನ್ ಪಾರದೃಶನ್** (ವಿಂ) ಕೊನೆಯನ್ನು ಕಂಡಿರುವ. ಕೊನೆಯನ್ನು ಮುಟ್ಟಿರುವ, ಸಂಪೂರ್ಣ ಜ್ಞಾನವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿದ. ಪಾರಂ ದೃಶವಾನ್ — ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) “ಕವನಿಪ್” (೩-೨-೯೪) । “ಅನಾಕೃಷ್ಣಸ್ಯ ವಿಷಯ: ವಿಜ್ಞಾನಾಂ ಪಾರದೃಶನ:” ರಘುಂ ೧-೨೩ । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಙೀಪ್” ರಶ್ಮಾಂತಾ ದೇಶ: (೪-೧-೭) । —ದೃಶಿಣಿ-ದೃಶಿಣಿ.

**ಪಾರದೇಶ್ಯ ಪಾರದೇಶ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಪರದೇಶದಲ್ಲಿರುವ, ಪರದೇಶದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಪ. ದೇಶೇ ಭವಮ್ । 2. ಪರದೇಶದಿಂದ ಬಂದಿರುವ, ಬೇರೆ ದೇಶದಿಂದ ಲಭ್ಯವಾದ. “ದಶಕಂ ಪಾರದೇಶ್ಯೇ ತು ಯ: ಸಚ: ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಿ” ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೨೫೨ ।

**ಪಾರಮಾಥಿಕ ಪಾರಮಾರ್ಥಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಪರಮಾರ್ಥವೇ ಪ್ರಯೋಜನವಾಗಿ ಉಳ್ಳ, ಪರಲೋಕದ ಧರ್ಮಕ್ಕೆ ಅನುಕೂಲವಾದ, ಶ್ರೇಯೋಸಾಧನೆಯೇ ಫಲವಾಗಿ ಉಳ್ಳ. ಪರಮಾರ್ಥ: ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ “ಠ್” (೪-೧-೧೦೯) । 2. ಪರಮಾರ್ಥಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ನಿಜವಾದ ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. 3. ವಾಸ್ತವವಾದ ಸಂಗತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ನಿಜವಾದ ವಿಷಯವನ್ನೊಳಗೊಂಡಿರುವ. “ಗತಾನುಗತಿಕೋ ಲೋಕೋ ನ ಲೋಕ: ಪಾರಮಾರ್ಥಿಕ:” । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೧೫) । ಪಾರಮಾರ್ಥಿಕೋ ಪಾರಮಾರ್ಥಿಕಃ.

**ಪಾರಮಾರ್ಥ್ಯ ಪಾರಮಾರ್ಥ್ಯ** (ನಂ) ಪರಮಾರ್ಥದ ಭಾವ, ವಸ್ತುಸ್ಥಿತಿಯಿಂದಿರುವಿಕೆ, ನಿಜವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪರಮಾರ್ಥಸ್ಯ ಭಾವ: “ಏನ್” (೪-೧-೧೨೪) ।

**ಪಾರಮೇಷ್ಠ್ಯ ಪಾರಮೇಷ್ಠ್ಯ** (ನಂ) 1. ಸರ್ವಶ್ರೇಷ್ಠತೆ, ಪರಮೇಶ್ವರತೆ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ. 2. ಬ್ರಹ್ಮಪಟ್ಟ, ಚತುರ್ಮುಖನ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ. ಪರಮೇ ವ್ಯೋಮನಿ ಚಿದಾ-ಕಾಶೇ ಬ್ರಹ್ಮಪದೇ ವಾ ತಿಷ್ಠತಿ — ಪರಮ + ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) “ಙಿಣಿ:” (೩ಂ ೪-೧೦) । “ಅಲುಕ್” (೬-೩-೧೪) । ಪರಮೇಷ್ಠಿನೋ ಭಾವ: “ಏನ್” (೪-೧-೧೨೪) । “ನ ಪಾರಮೇಷ್ಠ್ಯಂ ನ ಮಹೇಂದ್ರಧಿಷ್ಠಯಂ ನ ಸಾರ್ವಭೌಮಂ ನ ರಸಾಧಿಪತ್ಯಮ್ । ನ ಯೋಗಸಿದ್ಧಿರಪುನರ್ಭವಂ ವಾ ಮರ್ಯಪಿತಾತ್ಮೇಚ್ಛತಿ ಮದ್ವಿನಾನ್ಯತ್” ಭಾಗಂ ೧೧-೧೪-೧೪ ।

**ಪಾರಂಪರ್ಯ ಪಾರಂಪರ್ಯ** (ನಂ) ಪರಂಪರೆ, ಕುಲಕ್ರಮ, ವಂಶಕ್ರಮ. ಪರಂಪರಾ ಸ್ವಾರ್ಥೇ “ಏನ್” (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪) ।

**ಪಾರಂಪರಿಯಪದೇಶ ಪಾರಂಪರಿಯಪದೇಶ** (ಪುಂ) ಪ್ರಾಚೀನ ಕಾಲದಿಂದ ಪರಂಪರೆಯಾಗಿ ಬಂದಿರುವ ಮಾತು, ಹಿಂದಿನ ಕಾಲದಿಂದ ಜನರ ಬಾಯಿಂದ ಬಂದಿರುವ ಹೇಳಿಕೆ, ಐತಿಹ್ಯ. ಪಾರಂಪರಿಯ ಗುರುಜನಪರಂಪರೆಯಾ ಪ್ರಾಪ್ತ: ಉಪದೇಶ: । “ಈ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಮಹಾಮಹಿಮಾನ್ವಿತರಾದ ದೊಡ್ಡ ಯೋಗಿ



ಯೊಬ್ಬರು ಅದೃಶ್ಯರಾಗಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿರುವರು" ಇತ್ಯಾದಿ ಹಿಂದಿನ ಕಾಲದಿಂದಲೂ ಕವಿಯಿಂದ ಕವಿಗೆ ಬಂದ ಮಾತು ಪಾರಂಪರ್ಯೋಪದೇಶವೆನಿಸುವುದು.

**ಪಾರಲೋಕಿಕ ಪಾರಲೋಕಿಕ (ವಿಂ)** 1. ಪರಲೋಕ ಸಂಬಂಧ ವಾದ, ಪರಲೋಕದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ. ಪರಲೋಕ ಭವಮ್ "ಠ್" (ವಾಂ ೪-೩-೬೦). ತಮಯಪದವೃದ್ಧಿ: (೭-೩-೨೦). "ದಾನಪಾತ್ರಮಥಮರ್ಷಮಿಹೇಕಗ್ರಾಹಿ ಕೋಟಿಗುಣಿತಂ ದಿವಿ ದಾಯಿ" ನೆಪಂ ೪-೨೨. 2. ಪರಲೋಕಕ್ಕೆ ಹಿತವಾದ, ಪರಲೋಕಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದ. "ವರ್ಮ ಏಕೋ ಮನುಷ್ಯಾಣಾಂ ಸಹಾಯ: ಪಾರಲೋಕಿಕ:" ಭಾಂ. ಅನುಂ ೧೭೩-೨.

**ಪಾರವತ ಪಾರವತ (ಪುಂ)** ಪಾರಾವತ, ಕರ್ಪೂತಪಕ್ಷಿ. ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ. ಪಾರಾವತ ಪೃಷೋಂ. "ಪಾರವತ: ಪಾರವತೋ ಜಯ ಸ್ಯಾಜ್ಜರಸಾ ಸಹ" ಶಬ್ದಭೇದಂ.

**ಪಾರವಶ್ಯ ಪಾರವಶ್ಯ (ನಂ)** ಪಾರತಂತ್ರ್ಯ ಪರಾಧೀನತೆ. ಇತರರ ಅಧೀನದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ. ಪರವಶಸ್ಯ ಭಾವ: "ಅಶ್" (೪-೨-೨೨೪).

**ಪಾರಶವ ಪಾರಶವ (ಪುಂ)** 1. ಮದುವೆಯಾದ ಶುದ್ಧ ಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಂದ ಜನಿಸಿದ ನಿಷಾದನೆಯ ಸಂಕರ ಹಾಕಿಯವನು. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಽಪ್ಯಕನ್ಯಾಯಾಮಬ್ಧತೋ ನಾಮ ಜಾಸತೇ. ನಿಷಾದ: ಶುದ್ಧಕನ್ಯಾಯಾಂ ವ: ಪಾರಶವ ಉಚ್ಯತೇ" ಮನುಂ ೧೦-೮. 2. ಪರಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು. 3. ಶುದ್ಧ, ಆಯುಧ. (ವಿಂ) 4. ಪರಿಶುದ್ಧ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಕೊಡಲಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಪರಶೋರಿದಮ್ "ಅಶ್" (೪-೩-೨೨೦). "ಪಾರಶವ: ಪುಷಾನ್. ಪರಸ್ತ್ರೀತನಯೇ ಶಸ್ತ್ರೇ ದ್ವಿಜಾತ್ ಶುದ್ಧಾ-ಸುತೇಪಿ ವ" ವೇದಿಂ.

**ಪಾರಶ್ವಾಹಿಕ ಪಾರಶ್ವಾಹಿಕ (ಪುಂ)** ಕೊಡಲಿಯೇ ಆಯುಧ ವಾಗಿ ಉಳ್ಳ, ಕೊಡಲಿಯನ್ನು ಹಿಡಿದು ಯುದ್ಧಮಾಡುವ. ಪರಶಾಹ: ಪ್ರಹರಣಮಸ್ಯ "ಠ್" (೪-೪-೪೮).

**ಪಾರಸೀಕ ಪಾರಸೀಕ (ಪುಂ)** 1. ಪಾರಸೀದೇಶದ ಕುದುರೆ. (ಪುಂ. ಬಂ. ಬಂ.) 2. ಪಾರಸೀ ದೇಶ. 3. ಪಾರಸೀ ದೇಶದ ದೊರೆಗಳು. 4. ಪಾರಸೀ ದೇಶದ ಜನರು. "ಪಾರಸೀಕಾ-ಸ್ತತೋ ಚೇತು ಪ್ರತಸ್ಯೇ ಸ್ವಲವತ್ಮನಾ" ರಘುಂ ೪-೬೦.

**ಪಾರಸ್ಕರ ಪಾರಸ್ಕರ (ಪುಂ)** ಗೃಹ್ಯಸೂತ್ರವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಮುಖ್ಯ ಪಾರ್ ಕರೋತಿ—"ಕುಟ್" ನಿಷಾಂ (೬-೨-೨೪೭).

**ಪಾರಸ್ವಂಶ ಪಾರಸ್ವಂಶ (ಪುಂ)** ಪರಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು, ಪಾರಸ್ವಂಶವೆಂದ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಪರಸ್ತ್ರೀಯಾ ಪುತ್ರಮ್ "ಠ್" (೪-೨-೨೨೦). ಇವಶಾಪೇಶ: (೪-೨-೨೨೬). ತಮಯಪದವೃದ್ಧಿ: (೭-೩-೨೦). ಸ್ವಿವಾಂ "ಕೀಪ್" (೪-೨-೨೪). ಕೀವಾಂ - ಸ್ತ್ರೀ, ಕೀವಾಂ.

**ಪಾರಸ್ಯಕುಲೀನ ಪಾರಸ್ಯಕುಲೀನ (ಪುಂ)** ಪರಗೃಹದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು, ಬೇರೆ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು, ದತ್ತಪುತ್ರ. ಪರಸ್ಯ ಕುಲೇ ಭವ: "ಅಶ್" (೪-೪-೨೯). ಗಣ ಪರಸ್ಯಕುಲೇತಿ ಪಾಠಾತ್ ಅಲ್ಪಕ್.

**ಪಾರಾಯಣ ಪಾರಾಯಣ (ನಂ)** 1. ಆದಿಯಿಂದ ಕೊನೆಯ ವರೆಗೂ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಓದುವುದು, ಸಂಪೂರ್ಣ ಗ್ರಂಥ ವನ್ನು ಓದುವುದು. ಪಾರಂ ಸಮಾಪ್ತಿಮಯತೇಜೇನ—ಅಶ್ (ಗತೀ) "ಅಶ್" (೩-೩-೨೨೭). "ಬೃಹಸ್ಪತಿರಿಂದ್ರಾಯ ದಿವ್ಯ ವರ್ಷಸಹಸ್ರಂ ಅಪಾರಾಯಣಂ ಜಯಿ. ನಾಂತಂ ಜಯಾಮ". 2. ಪುರಾಣ ಪಾಠ, ಪುರಾಣವನ್ನು ಓದುವುದು. "ವರಯೇ-ದ್-ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ನಾಂತಂ ಪಾರಾಯಣಕೃತೇ ತದಾ" ದೇವೀಭಾಂ. 3. ಮೇದದ ಪಠನ.

**ಪಾರಾಯಣಿಕ ಪಾರಾಯಣಿಕ (ಪುಂ)** ಪಾರಾಯಣಮಾಡು ವವನು. ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಪೂರ್ತಿಯಾಗಿ ಓದುವವನು, ಮೇದ ಇತಿಹಾಸ ಪುರಾಣಾದಿ ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು ಸಂಪೂರ್ಣ ಓದಿ ಮುಗಿಸುವವನು. (ಶಿಷ್ಯ) ಪಾರಾಯಣಂ ವರ್ತಯತಿ ವೇದಾಧ್ಯಯನಮ್ ವಾವರ್ತಯತಿ "ಠ್" (೪-೨-೭೨). ತಾವ:.

**ಪಾರಾವತ ಪಾರಾವತ (ಪುಂ)** ಕರ್ಪೂತ ಪಕ್ಷಿ. ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ. ಪಾರೆ ಪವಂತನಾದಿಪರಪಾರೆ ಆಪತತಿ—ಪಾರ+ವಾ+ ಪಲ್ (ಗತೀ) "ಅಶ್" (೩-೨-೨೨೪). ಪೃಷೋಂ ಪರವ ವ: . ಪರಂ ಜೀವಮವತಿ ೪ರಾತ್ ಸತ್ರೋ: ಅಹಕ್ಕುರಾದಾ ಜಾನೋಪದೇಶದ್ವಾರಾ ಅವತಿ—ಅವ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಅಶ್" (೩-೨-೨೨೪). ಪರಾವನ್ ತತ್ವಜ್ಞ: , ತಸ್ಯಾಯಮ್ "ಅಶ್" (೪-೩-೨೨೦). "ತಾಂ ಕಸ್ಯಾಂ-ಚಿದ್ಭವನವಲಮೋ ಸುಪ್ತಪಾರಾವತಾಯಾಮ್" ಮೇವಂ ೧-೩೮. ಇಷ್ಟತ್ರನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಉಪದೇಷ್ಠಗಳಲ್ಲಿ ಪಾರಾವತವೂ ಒಂದು ಎಂದು ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ.

ಇಷ್ಟತ್ರನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಗುರುಗಳು: (1) ಪೃಥಿವಿ (2) ವಾಯು (3) ಆಕಾಶ (4) ಜಲ (5) ಚಂದ್ರ (6) ಅಗ್ನಿ (7) ಸೂರ್ಯ (8) ಪಾರಿವಾಳ (9) ಹೆಬ್ಬಾವು (10) ಸಮುದ್ರ (11) ಪತಂಗ (12) ಜೇನುಹುಳು (13) ಆನೆ (14) ಬೇಡರು (15) ಜಿಂಕೆ (16) ಮೀನು (17) ಮೇಕೆ (18) ಕುರರ ಪಕ್ಷಿ (19) ಸಣ್ಣ ಮಗು (20) ಒಬ್ಬ ಕನ್ಯೆ (21) ಲೋಹಕಾರ (22) ಸರ್ಪ (23) ಬೇಡರ ಹುಳು ಮತ್ತು (24) ಭ್ರಮರ.

ಈ ಇಷ್ಟತ್ರನಾಲ್ಕು ಗುರುಗಳಿಂದ ಕಲಿಯ ಬೇಕಾದ ಗುಣಗಳು:

ಪೃಥಿವಿಯಿಂದ:—ಎಂತಹ ಕಷ್ಟ ಬಂದರೂ ಭೂಮಿ ಯಂತೆ ತಾಳ್ಮೆಯಿಂದ ನಿಶ್ಚಲವಾಗಿ ಇರಬೇಕಾದ ಕ್ಷಮಾ



ಗುಣವನ್ನೂ ಮತ್ತು ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಇರುವ ಪರ್ವತಗಳೂ ವೃಕ್ಷಗಳೂ ಪರಾರ್ಥಕ್ಕಾಗಿಯೇ ಇರುವಂತೆ ಮನುಷ್ಯನ ಜನ್ಮ ಕರ್ಮಗಳೆಲ್ಲವೂ ಪರೋಪಕಾರಕ್ಕಾಗಿಯೇ ಎಂಬ ಬುದ್ಧಿಯನ್ನೂ ಪ್ರತಿವಿಯಿಂದ ಕಲಿಯಬೇಕು.

**ವಾಯುವಿನಿಂದ:**—ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆಗೆ ಆಹಾರ ಮಾತ್ರ ಸಾಕು. ಇಂದ್ರಿಯ ತೃಪ್ತಿಯು ಅದಕ್ಕೆ ಬೇಕಾಗಿಲ್ಲ. ಅದರಂತೆ ಯೋಗಿಗೆ ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆಗೆ ಬೇಕಾದ ಆಹಾರವೇ ಸಾಕೆಂದೂ ಶಬ್ದಾದಿ ವಿಷಯಗಳಿಗಾಗಿ ದುಡಿಯಬಾರದೆಂದೂ ಪ್ರಾಣವಾಯುವಿನಿಂದ ತಿಳಿಯಬೇಕು.

ಚಂದನ ಅಗ್ನಿ ಮುಂತಾದ ಶೀತೋಷ್ಣ ವಸ್ತುಗಳ ಮೇಲೆ ಬೀಸಿದ ಹೊರಗಿನ ವಾಯುವು ಆ ಗುಣಗಳನ್ನು ತನ್ನಲ್ಲಿ ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳದಿರುವಂತೆ ಪ್ರಿಯಾಪ್ರಿಯಗಳಾದ ವಿಷಯಗಳಿಂದ ತೋರಿಬರುವ ಸುಖದುಃಖಗಳನ್ನು ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಅಂಟಿಸಿಕೊಳ್ಳದೆ ದೇವಮನುಷ್ಯಾದಿ ಶರೀರಗಳಲ್ಲಿ ತಾನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿದ್ದರೂ ತನ್ನನ್ನು ದೇಹವಿಲಕ್ಷಣವಾದ ಆತ್ಮವೆಂದೇ ಹೊರಗಿನ ವಾಯುವಿನಿಂದ ತಿಳಿಯಬೇಕು.

**ಆಕಾಶದಿಂದ:**—ಆಕಾಶವು ಎಲ್ಲಾ ವಸ್ತುಗಳ ಒಳಗೂ ಹೊರಗೂ ವ್ಯಾಪಿಸಿದ್ದು ಆ ವಸ್ತುಗಳ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದಿರುವಂತೆ ಪರಮಾತ್ಮನು ಬ್ರಹ್ಮಾತ್ಮಕವಾದ ಸಮಸ್ತ ಚರಾಚರ ವಸ್ತುಗಳ ಒಳಗೂ ಹೊರಗೂ ನಿರುತ್ತರವಾಗಿ ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವನೆಂಬುದನ್ನು ಆಕಾಶದಿಂದ ತಿಳಿಯಬೇಕು.

**ಜಲದಿಂದ:**—ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಸ್ವಚ್ಛತೆಯೂ ಸ್ಥಿಗ್ಧತೆಯೂ ಮಾಧುರ್ಯವೂ ಇದ್ದು ದರ್ಶನ ಸ್ಪರ್ಶ ಸಂಕೀರ್ತನಾದಿಗಳಿಂದ ಲೋಕವನ್ನು ಪವಿತ್ರಗೊಳಿಸುವಂತೆ ಯೋಗಿಯಾದವನು ಸ್ವಚ್ಛಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನಾಗಿಯೂ ಸಕಲ ಪ್ರಾಣಿಗಳಲ್ಲೂ ಸ್ನೇಹವನ್ನು ಪ್ರದರ್ಶಿಸುವವನಾಗಿಯೂ ಮಧುರ ಭಾಷಿಯಾಗಿಯೂ ಇದ್ದು ದರ್ಶನ ಸ್ಪರ್ಶನಾದಿಗಳಿಂದ ಇತರರನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸುತ್ತಿರಬೇಕೆಂಬುದನ್ನು ಜಲದಿಂದ ಕಲಿಯಬೇಕು.

**ಚಂದ್ರನಿಂದ:**—ಚಂದ್ರನ ಕಲೆಗಳಿಗೆ ಸಂಭವಿಸುವ ವೃದ್ಧಿ ಕ್ಷಯಗಳು ಚಂದ್ರನಿಗಿಲ್ಲವೆಂಬುದನ್ನು ನೋಡಿ ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ಕಾಲಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ನಡೆಯಬೇಕಾಗಿರುವ ನಿಷೇಧಾದಿ ಸಂಸ್ಕಾರಗಳೆಲ್ಲವೂ ಅವನ ದೇಹಕ್ಕೆ ಮಾತ್ರವೆಂದೂ ಆತ್ಮನಿಗಿಲ್ಲವೆಂದೂ ಚಂದ್ರನಿಂದ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಬೇಕು.

**ಅಗ್ನಿಯಿಂದ:**—ಅಗ್ನಿಯು ತೇಜಸ್ಸಿನಿಂದ ಜ್ವಲಿಸುತ್ತ ಸರ್ವವನ್ನೂ ಭಕ್ಷಿಸುತ್ತಿದ್ದರೂ ಶುದ್ಧವೆನಿಸಿಕೊಂಡಿರು

ವಂತೆ ಯೋಗಿಯು ಜ್ಞಾನ ತಪಸ್ಸುಗಳಿಂದ ತೇಜಸ್ವಿಯಾಗಿ ಆಹಾರದಲ್ಲಿ ಭೇದವೇನಿಸದೆ ಉದರಭರಣ ಮಾತ್ರದಿಂದ ತೃಪ್ತನಾಗಿ ಶುದ್ಧಮನಸ್ಕನಾಗಿರಬೇಕೆಂಬುದನ್ನೂ ಅಗ್ನಿಯು ತನಗೆ ಆಶ್ರಯವಾದ ಕಾಷ್ಠ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಲ್ಲಿ ಸೇರಿ ಆಯಾ ವಸ್ತುಗಳ ವಕ್ರತ್ವ ಋಜುತ್ವ ಮೊದಲಾದ ಆಕಾರದಿಂದಲೇ ತೋರುವಂತೆ ಪರಮಾತ್ಮನೂ ಮಾಯೆಯಿಂದ ಚಿದಚಿದಾತ್ಮಕಗಳಾದ ಪ್ರಪಂಚದಲ್ಲಿ ಸೇರಿದ್ದು ಆಯಾ ದೇವಮನುಷ್ಯಾದಿ ರೂಪದಿಂದಲೇ ತೋರುತ್ತಿರುವನೆಂಬುದನ್ನೂ ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ತಿಳಿಯಬೇಕು.

**ಸೂರ್ಯನಿಂದ:**—ಸೂರ್ಯನು ತನ್ನ ಕಿರಣಗಳಿಂದ ಸಮುದ್ರದ ನೀರನ್ನು ಆಕರ್ಷಿಸಿಕೊಂಡರೂ ಸ್ವಾರ್ಥಕ್ಕಲ್ಲದೆ ಪರಾರ್ಥವಾಗಿ ಕಾಲಕಾಲಕ್ಕೆ ಮಳೆಯು ರೂಪದಿಂದ ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಚೆಲ್ಲುವಂತೆ ಯೋಗಿಯೂ ತಾನು ಸಂಪಾದಿಸಿದ ಭೋಗ್ಯವಸ್ತುಗಳೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಪರಾರ್ಥವಾಗಿ ತ್ಯಾಗಮಾಡಬೇಕೆಂಬುದನ್ನು ಸೂರ್ಯನಿಂದ ತಿಳಿಯಬೇಕು.

**ಕಪೋತ (ಪಾರಿನಾಳ) ದಿಂದ:**—ಕಪೋತದಂಪತಿಗಳೆರಡು ತಮ್ಮ ಮರಿಗಳನ್ನು ಬಹಳ ಪಾತ್ಸಲ್ಯದಿಂದ ಪ್ರೀತಿಸುತ್ತ ಅವುಗಳನ್ನು ನೋಡಿ ಆನಂದಿಸುತ್ತಿದ್ದು ಒಂದು ದಿನ ಆಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಗೂಡಿನಿಂದ ಹೊರಟು ಅಲೆದಾಡುತ್ತ ಬರುವುದರೊಳಗೆ ಬೇಟೆಗಾಗಿ ಒಂದೆ ಬೇಡನು ಎರಡು ಮರಿಗಳನ್ನೂ ಬಲೆಯೊಳಕ್ಕೆ ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ತಾಯಿಹಕ್ಕಿಯೂ ಅದರ ಪ್ರೇಮದಿಂದ ತಾನೂ ಅದರೊಳಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿತು. ಅದನ್ನು ನೋಡಿ ತಾಳಲಾರದೆ ದುಃಖದಿಂದ ಗಂಡುಹಕ್ಕಿಯೂ ಬಲೆಯೊಳಗೆ ಸೇರಿಕೊಳ್ಳಲು ಬೇಡನು ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಹೊರಟನು. ಹೀಗೆಯೇ ಸಂಸಾರಿಯಾದವನು ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ಜಯಿಸದೆ ಸುಖದುಃಖಾದಿ ದ್ವಂದ್ವಗಳಿಗೆ ಸಿಲುಕಿ ಕುಟುಂಬ ಪೋಷಣೆಗಾಗಿಯೇ ಕಷ್ಟ ಪಡುತ್ತ ಪತ್ನೀಪುತ್ರಾದಿಗಳೊಡನೆ ಅಪಾರ ದುಃಖಕ್ಕೆ ಗುರಿಯಾಗುವನೆಂಬ ವಿಷಯವನ್ನು ಕಪೋತದಿಂದ ಕಲಿತುಕೊಳ್ಳಬೇಕು.

**ಹೆಬ್ಬಾವಿನಿಂದ:**—ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ಸುಖದುಃಖಗಳೆರಡೂ ಕರ್ಮಾನುಸಾರವಾಗಿ ಅನಪೇಕ್ಷಿತವಾಗಿಯೇ ಸಂಭವಿಸುವುವು. ಆದುದರಿಂದ ವಿವೇಕಿಯಾದವನು ಸುಖವನ್ನೂ ದುಃಖದಂತೆಯೇ ಭಾವಿಸಿ ಅದರಲ್ಲಿ ವಿಮುಖನಾಗಿರಬೇಕು. ತನಗೆ ದೈವಲಬ್ಧವಾದ ಆಹಾರದಿಂದಲೇ ದೇಹಧಾರಣ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತ, ತಾನಾಗಿ ಲಬ್ಧವಾದ



ಆಹಾರದಿಂದಲೇ ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಹೆಬ್ಬಾವಿ (ಅಜಗರ) ನಂತೆ ಯಾವ ಸೌಖ್ಯವನ್ನೂ ಆಪೇಕ್ಷಿಸದೆ ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನ ಸಂಪಾದನೆಯಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ನಿರತನಾಗಿರಬೇಕೆಂಬುದನ್ನು ಹೆಬ್ಬಾವಿ (ಅಜಗರ) ನಿಂದ ತಿಳಿಯಬೇಕು.

**ಸಮುದ್ರದಿಂದ:**—ಸಮುದ್ರವು ಮಳೆಗಾಲದಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ನದೀಪ್ರವಾಹಗಳಿಂದ ತುಂಬಿದ್ದರೂ ಉಕ್ಕಿಬರದಿರುವಂತೆ ಬೇಸಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಬತ್ತಿಹೋಗದಿರುವಂತೆ ಯೋಗಿಯಾದವನೂ ತನಗೆ ಆತೀತಯವಾದ ಭಾಗ್ಯವು ಲಭಿಸಿದಾಗ ಹಿಗ್ಗದೆಯೂ ಅದಿಲ್ಲದಾಗ ಕುಗ್ಗದೆಯೂ ಇರಬೇಕೆಂಬುದನ್ನು ಸಮುದ್ರದಿಂದ ತಿಳಿಯಬೇಕು.

**ಪತಂಗದಿಂದ:**—ಮನುಷ್ಯನು ತನ್ನನ್ನು ಮರುಳುಗೊಳಿಸುವ ಸ್ತ್ರೀರೂಪವನ್ನು ನೋಡಿ ತನ್ನ ಭೋಗ್ಯವಸ್ತುವೆಂದು ತಿಳಿದು ಅದಕ್ಕೆ ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದಾಗ ತಾನು ಅಂಥ ಕೂಪದಲ್ಲಿ ಮುಳುಗುವನೆಂಬುದನ್ನು, ಅಗ್ನಿಜ್ವಾಲೆಯು ತನಗೆ ಭೋಗ್ಯವಸ್ತುವೆಂದು ತಿಳಿದು ಅದರಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದು ಸಾಯುವ ಪತಂಗದಿಂದ ಕಲಿಯಬೇಕು.

**ಜೇನುಹುಳದಿಂದ:**—ಜೇನುಹುಳಗಳು ಪುಷ್ಪಗಳಿಗೆ ಸ್ವಲ್ಪವೂ ನೋವುಂಟುಮಾಡದೆ ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ವಲ್ಪ ಮಾತ್ರ ಮಕರಂದವನ್ನು ಗ್ರಹಿಸಿ ಬೇರೆ ಪುಷ್ಪದ ಕಡೆ ಹೋಗುವಂತೆ ಯೋಗಿಯೂ ಬೇರೊಬ್ಬರಿಗೆ ತೊಂದರೆಯುಂಟಾಗದಂತೆ ಅಲ್ಲಲ್ಲಿ ಲಭಿಸಿದ ಅಲ್ಪಸ್ವಲ್ಪ ಆಹಾರವನ್ನು ಮಾತ್ರ ತನ್ನ ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆಗಾಗಿ ಸಂಗ್ರಹಿಸುತ್ತ ಕಾಲಯಾಪನೆ ಮಾಡಬೇಕೆಂಬುದನ್ನೂ ಒಂದೇ ಪುಷ್ಪದಲ್ಲಿ ನಿಂತ ಜೇನುಹುಳವು ಅದು ಮುಕುಳಿತವಾದಾಗ ಅದರಲ್ಲಿ ಸಿಕ್ಕಿಬೀಳುವಂತೆ ಯೋಗಿಯೂ ಒಂದೇ ಕಡೆ ನಿಂತರೆ ಮೋಹಪಾಶಬದ್ಧನಾಗಿ ಕೆಡುವನೆಂಬುದನ್ನೂ ಜೇನುಹುಳದಿಂದ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಬೇಕು.

**ಅನೆಯಿಂದ:**—ಕಾಡಾನೆಗಳು ಸೊಪ್ಪು ಮತ್ತು ಹುಲ್ಲುಗಳಿಂದ ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ ಹಳ್ಳದ ಮೇಲೆ ಮರದಿಂದ ತಯಾರಿಸಿ ನಿಲ್ಲಿಸಿರುವ ಹೆಣ್ಣಾನೆಯನ್ನು ನೋಡಿ ಅದರ ಅನೆಯಿಂದ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ ಹಳ್ಳಕ್ಕೆ ಬಿದ್ದು ಸಿಕ್ಕಿಕೊಳ್ಳುವಂತೆ ಯೋಗಿಯೂ ಸ್ತ್ರೀರೂಪದ ಬೊಂಬೆಯನ್ನು ನೋಡಿದರೂ ಸ್ವರ್ಥಮಾಡಿದರೂ ಮೋಹಪಾಶಕ್ಕೆ ಸಿಲುಕಿ ಹಳ್ಳಕ್ಕೆ ಬೀಳುವನೆಂಬುದನ್ನು ಅನೆಯಿಂದ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಬಹುದು.

**ಜೇಡನಿಂದ:**—ಜೇನುಹುಳಗಳು ಕಷ್ಟಪಟ್ಟು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿಟ್ಟ ಜೇನನ್ನು ಜೇಡನು ಉಪಾಯದಿಂದ ಅಪಹರಿಸಿ

ಕೊಂಡು ಹೋಗುವಂತೆ ಮನುಷ್ಯನು ಆತ್ಮಸೆಯಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಿ ತಾನೂ ಅನುಭವಿಸದೆ ದಾನವನ್ನೂ ಮಾಡದೆ ಕೂಡಿಟ್ಟ ಹಣವು ಇತರರ ಪಾಲಾಗುವುದೆಂದು ಜೇಡನ ದೃಷ್ಟಾಂತದಿಂದ ತಿಳಿಯಬೇಕು.

**ಜಿಂಕೆಯಿಂದ:**—ಜಿಂಕೆಯು ಬೇಟೆಗಾರನ ಗಾನದ ಧ್ವನಿಗೆ ಮರುಳಾಗಿ ಅವನ ಕೈಗೆ ಸಿಕ್ಕಿ ಆಸುವನ್ನು ನೀಗುವಂತೆ ಯೋಗಿಯು ಭಗವದ್ವಿಷಯವಲ್ಲದ ಗ್ರಾಮ್ಯ ಸಂಗೀತಕ್ಕೆ ಗಮನ ಕೊಟ್ಟಲ್ಲಿ ಏನಾಶ ಹೊಂದುತ್ತಾನೆ ಎಂಬ ವಿಷಯವನ್ನು ಜಿಂಕೆಯಿಂದ ಕಲಿಯಬೇಕು.

**ವಿಾನಿನಿಂದ:**—ವಿಾನು ಗಾಳಕ್ಕೆ ಚುಚ್ಚಿರುವ ವಸ್ತುವನ್ನು ಕಚ್ಚಲು ಹೋಗಿ ಬೆಸ್ತನ ಕೈಗೆ ಸಿಕ್ಕಿ ಸಾಯುವಂತೆ ಯೋಗಿಯು ಜಿಹ್ವಾಚಾಪಲ್ಯದಿಂದ ಆತ್ಮವಿನಾಶ ಹೊಂದುತ್ತಾನೆ ಎಂಬ ಅಂಶವನ್ನು ವಿಾನಿನಿಂದ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ಮನುಷ್ಯನು ಮೊದಲು ರಸನೇಂದ್ರಿಯವನ್ನು ಜಯಿಸಿದಲ್ಲಿ ಇತರ ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ಜಯಿಸಿದಂತೆಯೇ ಆಗುವುದು.

**ವೇಶ್ಯೆಯಿಂದ:**—ವೇಶ್ಯೆಯಾದವಳು ಸಾಮಾನ್ಯಜನರಿಂದ ತನಗೆ ಬೇಕಾದಷ್ಟು ದ್ರವ್ಯವು ಲಭಿಸುವುದಿಲ್ಲವೆಂದು ತಿಳಿದು ಬಂದ ಪುರುಷರೆಲ್ಲರನ್ನೂ ತಿರಸ್ಕರಿಸಿ ಹೆಚ್ಚು ಹಣವನ್ನು ಕೊಡುವವನು ಬರುವನೆಂದು ಪ್ರೀತಿಸುತ್ತ ನಿದ್ರಾಹಾರಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಕುಳಿತಿರಲು ಅಂತಹವನು ಬರದಿದ್ದಾಗ ಚಿಂತಾಕ್ರಾಂತಳಾಗಿ ನಿರ್ವೇದ ಹೊಂದಿ ದ್ರವ್ಯಸೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ ಚಿಂತೆಯಿಂದ ಮುಂದೆ ಕ್ಷೇಮಕರವಾದ ವೈರಾಗ್ಯವನ್ನು ಹೊಂದುವಂತೆ ಮನುಷ್ಯನು ಹೆಚ್ಚು ಆಶೆಪಟ್ಟು ಕೊನೆಗೆ ದುಃಖಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗುವನೆಂಬ ವಿಚಾರವನ್ನು ವೇಶ್ಯೆಯಿಂದ ತಿಳಿಯಬೇಕು.

**ಕುರರ (ಕುರನ) ಪಕ್ಷಿಯಿಂದ:**—ಯಾವುದಾದರೂ ಒಂದು ವಸ್ತುವು ತನ್ನದೆಂಬ ಆಸೆಯಿಂದ ಅದನ್ನು ಪಡೆಯುವುದೂ ಮತ್ತು ಅದನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವುದೂ ದುಃಖಕ್ಕೆ ಕಾರಣವೆಂಬ ವಿಷಯವನ್ನು, ಕೊಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಮಾಂಸದ ತುಂಡನ್ನು ಕಚ್ಚಿಕೊಂಡು ಅದನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವ ಭಯದಿಂದ ಪೇಚಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಕುರರ ಪಕ್ಷಿಯಿಂದ ಗಿಡುಗ ಹಕ್ಕಿಯೊಂದು ಬಂದು ಮಾಂಸದ ತುಂಡನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿಕೊಂಡು ಹೋದಾಗ ಅದನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವ ಭಯವಿಲ್ಲದೆ ಸುಖದಿಂದಿದ್ದ ಕುರರ ಪಕ್ಷಿಯಿಂದ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಬಹುದು.

**ಸಣ್ಣ ಮಗುವಿನಿಂದ:**—ಸಣ್ಣ ಮಗುವಿಗೆ ಮಾನಾಪಮಾನಗಳ ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲ. ಸಂಸಾರದ ಯೋಚನೆಯಿಲ್ಲ.



ಆತ್ಮಪೋಷಣೆಯ ಚಿಂತೆಯಂತೂ ಇಲ್ಲವೇ ಇಲ್ಲ. ಪರಮಾತ್ಮ ಧ್ಯಾನಾಸಕ್ತನಾದ ಯೋಗಿಯೂ ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ದೃಷ್ಟಿಯಿಡದೆ ನಿತ್ಯಾನಂದವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವನೆಂಬ ವಿಷಯವನ್ನು ಸಣ್ಣಮಗುವಿನಿಂದ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಬಹುದು.

**ಕನ್ಯೆಯಿಂದ:**—ತನ್ನನ್ನು ವರಿಸಲು ಬರುವ ಯಾರಿಗೂ ತನ್ನ ಬಡತನವು ತಿಳಿಯಬಾರದೆಂಬ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಬತ್ತವನ್ನು ಕುಟ್ಟುತ್ತಿದ್ದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಕೈಗಳಲ್ಲಿ ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಬಳೆಗಳೆಲ್ಲವನ್ನೂ ತೆಗೆದುಹಾಕಿ ಲಕ್ಷಣಕ್ಕೆ ಒಂದೊಂದು ಬಳೆಯನ್ನು ಮಾತ್ರ ಉಳಿಸಿಕೊಂಡು ಸ್ವಲ್ಪವೂ ಶಬ್ದವಿಲ್ಲದೆ ಬತ್ತವನ್ನು ಕುಟ್ಟುತ್ತಿದ್ದ ಕನ್ಯೆಯಿಂದ ಮನುಷ್ಯನು ಏಕಾಂಗಿ ಯಾಗಿದ್ದಾಗ ಯಾವ ರೀತಿಯ ಕಲಹಕ್ಕೂ ವಾದವಿವಾದಗಳಿಗೂ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದೆ ಪರಮಾತ್ಮ ಧ್ಯಾನವು ಸುಗಮವಾಗಿ ನಡೆಯುವುದೆಂಬ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಯಬಹುದು.

**ಲೋಹಕಾರ (ಬಾಣಗಾರ) ನಿಂದ:**—ಬಾಣಗಾರ (ಬಾಣವನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವ)ನು ಬಾಣದ ಅಲಿಗೆ ಹದವನ್ನು ಕೊಡುತ್ತಿರುವಾಗ ಏಕಾಗ್ರತೆಯಿಂದ ಅದರಲ್ಲೇ ಮಗ್ನನಾಗಿ ಯಾರನ್ನೂ ತಲೆಯೆತ್ತಿ ನೋಡದೆ ಕೆಲಸ ಮಾಡುತ್ತಿರುವಂತೆ ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲೇ ನೆಟ್ಟ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ ಯೋಗಿಯೂ ಯಾವ ಬಾಹ್ಯವಿಷಯಗಳನ್ನೂ ಗಮನಿಸಲಾರನೆಂಬ ವಿಷಯವನ್ನು ಬಾಣಗಾರನಿಂದ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಬಹುದು.

**ಸರ್ಪದಿಂದ:**—ಯೋಗಿಯಾದವನು ಜನರ ಗುಂಪಿನಲ್ಲಿ ಸೇರದೆ ಏಕಾಂಗಿಯಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಾ ಗವಿಗಳಲ್ಲಿ ಏಕಾಂತವಾಗಿ ಧ್ಯಾನಮಾಡುತ್ತಿರಬೇಕೆಂಬುದನ್ನೂ ಹೋದ ಕಡೆ ಸಾಧುಗಳ ಗೃಹಗಳಲ್ಲಿದ್ದುಕೊಂಡು ನಿದ್ರಾಹಾರಗಳನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸಬೇಕೆಂಬುದನ್ನೂ, ಬೇರೆ ಪ್ರಾಣಿಗಳು ಕಟ್ಟಿದ ಗೂಡಿನಲ್ಲಿ ಸೇರಿಕೊಂಡು ಯಾವ ಜನರ ಗುಂಪಿಗೂ ಸೇರದೆ ಸುಖವಾಗಿರುವ ಸರ್ಪದಿಂದ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಬಹುದು.

**ಜೇಡರಹುಳದಿಂದ:**—ಪರಮಾತ್ಮನು ತನ್ನ ಸಂಕಲ್ಪರೂಪವಾದ ಮಾಯೆಯಿಂದ ಸೃಷ್ಟಿಸಿದ ಜಗತ್ತೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಪ್ರಳಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕಾಲರೂಪವಾದ ತನ್ನ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಉಪಸಂಹರಿಸಿ ತನ್ನಲ್ಲಿಯೇ ಅಡಗಿಸಿ ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ತಾನೊಬ್ಬನೇ ನಿಲ್ಲುವನು ಎಂಬ ವಿಷಯವನ್ನು, ತನ್ನ ಹೃದಯದಿಂದಲೇ ದಾರವನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿ ಬಲೆಯಂತೆ ಅದನ್ನು ನಾನಾ ಕಡೆಗೂ ಹರಡಿ ತಾನು ಅದರಲ್ಲಿ ವಿಹರಿಸುತ್ತಿದ್ದು ಮತ್ತೆ ಆ ದಾರವನ್ನು ತನ್ನಲ್ಲಿಯೇ

ಅಡಗಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಊರ್ಣನಾಭಿ (ಜೇಡರಹುಳ) ಯಿಂದ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಬೇಕು.

**ಭ್ರಮರದಿಂದ:**—ಕಣಜಹುಳವು ತನ್ನ ಆಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಬೇರೆ ಹುಳವನ್ನು ತಂದು ತನ್ನ ಗೂಡಿನಲ್ಲಿಟ್ಟಾಗ ಆ ಹುಳವು ಭಯದಿಂದ ಆ ಕಣಜದ ಹುಳವನ್ನೇ ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಚಿಂತಿಸುತ್ತ ಕೊನೆಗೆ ತಾನೂ ಆ ಕಣಜದ ರೂಪವನ್ನೇ ಹೊಂದುವಂತೆ ಜೀವನು ಸರ್ವದಾ ಬ್ರಹ್ಮಧ್ಯಾನದಲ್ಲೇ ಇರುತ್ತ ಕೊನೆಗೆ ಬ್ರಹ್ಮಸಾರೂಪ್ಯವನ್ನೇ ಹೊಂದುವನೆಂಬ ವಿಷಯವನ್ನು ಭ್ರಮರ (ಕಣಜ) ದಿಂದ ತಿಳಿಯಬಹುದು.

**ಪಾರಾವತಾಙ್ಗಿ ಪಾರಾವತಾಂಘ್ರಿ (ಛಂ) ಕಂಗೊಂಗಿಡ,** ಜ್ಯೋತಿಷ್ಠತಿಲತೆ. ಪಾರಾವತ ಇವ ಅಙ್ಗಿ: ಮೂಲಮಸ್ಯ |

**ಪಾರಾವಾರ ಪಾರಾವಾರ (ಛಂ) 1.** ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಪಾರಮವಾರಂ ಚ ಅಸ್ತಮಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) | ಪಾರಮಾ-ವೃಣೋತಿ—ಆ + ವೃಣ್ (ವರಣ) "ಅಣ್" (೩-೨-೧) ವಾ | "ಪಾರಾವಾರಪಯೋವಿಶೋಷಣಕಲಾಪಾರೀಣಕಾಲಾನಲಜ್ವಾಲಾ ಜಾಲಂ" ದಶಾವಂ | (ದ್ವಿವಂ) 2. ಎಂಡು ಕಡೆಯ ತೀರಗಳು, ಅಚ್ಚಿನ ಮತ್ತು ಈಚಿನ ದಡಗಳು. ಪಾರಂ ಚ ಅವಾರಂ ಚ |

**ಪಾರಾವಾರೀಣ ಪಾರಾವಾರೀಣ (ವಿಂ) 1.** ಅಚ್ಚೆ ದಡವನ್ನೂ ಈಚಿನ ದಡವನ್ನೂ ತಲುಪುವವನು. ಪಾರಮವಾರಂ ಚ ಗಂಜತಿ — "ಃ" (ವಾಂ ೪-೨-೧೩) | 2. ಸಮುದ್ರವನ್ನು ಸೇರುವವನು. ಪಾರಾವಾರಂ ಗಾಮಿ — "ಃ" (೪-೨-೧೧) |

**ಪಾರಾಶರ ಪಾರಾಶರ (ಛಂ) 1.** ವೇದವ್ಯಾಸ, ಬಾದರಾಯಣ, ಪರಾಶರಮಹರ್ಷಿಯ ಪುತ್ರ. ಪರಾಶರಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಅಣ್" (೪-೧-೧೧೪) | 2. ಪರಾಶರಮಹರ್ಷಿಪ್ರಣೀತವಾದ ಧರ್ಮ (ಸ್ತೂತಿ) ಸಂಹಿತೆ. "ಕೃತೇ ತು ಮಾನವೋ ಧರ್ಮಸ್ತೇತಾಃ ಗೀತಮಃ ಸ್ಮೃತಃ | ಛಾಪರೇ ಶಕ್ತಲಿಖಿತಃ ಕಲೋ ಪಾರಾಶರಃ ಸ್ಮೃತಃ" | (ನಂ) 3. ಪರಾಶರಮಹರ್ಷಿಪ್ರಣೀತವಾದ ಭಿಕ್ಷುಪೂತ್ರ. ಪರಾಶರೇಣ ಕೃತಮ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೧೬) | (ವಿಂ) 4. ಪರಾಶರಮಹರ್ಷಿ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಪರಾಶರ-ಸ್ಯಾಯಮ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೨೦) |

**ಪಾರಾಶರಿ ಪಾರಾಶರಿ (ಛಂ) 1.** ಪರಾಶರಮಹರ್ಷಿಯ ಪುತ್ರ, ವೇದವ್ಯಾಸಯುಷಿ. ಪರಾಶರಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಇನ್" (೪-೧-೯೫) | 2. ಶುಕಮಹರ್ಷಿ.

**ಪಾರಾಶರಿನ್ ಪಾರಾಶರಿನ್ (ಛಂ) ಭಿಕ್ಷು, ಸಂನ್ಯಾಸಿ.** ಪಾರಾಶರೇಣ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಮಿಕ್ಷುಸುಖಮವೀತೇ — "ಗಿಣಿ:" (೪-೩-೧೧೦) |



ಪಾರಾಶರ್ಯ ಪಾರಾಶರ್ಯ (ಪುಂ) ವೇದವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ,  
ಬಾದರಾಯಣಮುಖ್ಯ, ಪರಾಶರಮಹರ್ಷಿಯ ಪುತ್ರ.

ಪರಾಶರಸ್ಯಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಯಜ್" (೪-೧-೧೦೫) ।

ಪಾರಿ ಪಾರಿ (ನಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನ. 2. ಸಮುದ್ರ.

ಪಾರಿಕರ್ಮಿಕ ಪಾರಿಕರ್ಮಿಕ (ವಿಂ) ಅಲಂಕಾರಕಾರ್ಯ  
ದಲ್ಲಿ ನಿಯುಕ್ತನಾದವನು. ಪಾರಿಕರ್ಮಣಿ ನಿಯುಕ್ತ: "ಠಕ್" (೪-೪-೬೯) ।

ಪಾರಿಕಾಡ್ಕಿನ್ ಪಾರಿಕಾಡ್ಕಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಯತಿ,  
ಸಂನ್ಯಾಸಿ. 2. ತಪಸ್ವಿ. ಪಾರಿ ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನಮ್, ತತ್ ಕಾಡ್ಕತಿ  
— ಕಾಕ್ಷಿ (ಕಾಡ್ಕಾಯಾಮ್) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮) ।

"ತಪಸ್ವೀ ತಾಪಸ: ಪಾರಿಕಾಡ್ಕೀ" ಅಮಂ ।

ಪಾರಿಖ ಪಾರಿಖ (ವಿಂ) ಕಂದಕದಲ್ಲಿರುವ ಪರಿಖಾಯಾ ಭವ:  
"ಅಣ್" (೪-೨-೧೧೦) ।

ಪಾರಿಖೇಯಿ ಪಾರಿಖೇಯಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಂದಕಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ ಭೂಮಿ. ಪರಿಖಾ: ಸ್ಯಾ ಅಸ್ತಿ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೭) ।

ಪಾರಿಗ್ರಾಮಿಕ ಪಾರಿಗ್ರಾಮಿಕ (ವಿಂ) ಗ್ರಾಮದ ಸುತ್ತಲೂ  
ಇರುವ. ಪರಿ + ಗ್ರಾಮ "ಠಕ್" (೪-೩-೬೧) ।

ಪಾರಿಜಾತ ಪಾರಿಜಾತ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರನ ಉದ್ಯಾನ (ನಂದನ)  
ವನದಲ್ಲಿರುವ ಐದು ದೇವತೆಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. ಪಂಚ  
ದೇವತೆಗಳು: (1) ಮಂದಾ: (2) ಪಾರಿಜಾತ:  
(3) ಸಂತಾನ: (4) ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷ: ಮತ್ತು (5) ಹರಿಚಂದನಂ.  
"ತತೋಭವತ್ ಪಾರಿಜಾತ: ಸುರಲೋಕವಿಭೂಷಣಮ್" ಭಾಗಂ  
೮-೮-೬ । ಇದು ಅವ್ಯಯವಾದ ಸಮುದ್ರ  
ದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿ ಬಂದಿತು.

ಪಾರಿಣಾಯ ಪಾರಿಣಾಯ (ನಂ) ವಿವಾಹಕಾಲದಲ್ಲಿ ಪಡೆದ  
ಸ್ತ್ರೀಧನ. ಪರಿಣಯೇ ತತ್ಕಾಲೇ ಲಬ್ಧಮ್ "ಷ್ಯಜ್" ಬಾಹುಂ ।  
"ಮಾತು: ಪಾರಿಣಾಯಂ ಸ್ತ್ರೀಯೋ ವಿಭಜೇತ್" ।

ಪಾರಿಣಾಹ ಪಾರಿಣಾಹ (ನಂ) ಮನೆಯಲ್ಲಿರುವ ಅಭರಣ  
ಶಯನ ಆಸನ ಮೊದಲಾದ ಗೃಹೋಪಕರಣಗಳು. "ಅಥಸ್ಯ  
ಸಂಗ್ರಹೇ ಚೈನಾಂ ವ್ಯಯೇ ಚೈವ ನಿಯೋಜಯೇತ್ । ಶೌಚೇ ಧರ್ಮೋತ್ತಮಕೃತ್ಯಾಂ  
ಚ ಪಾರಿಣಾಹಸ್ಯ ವೇಕ್ಷಣೇ" ಮನುಂ ೯-೧೧ ।

ಪಾರಿತಥ್ಯಾ ಪಾರಿತಥ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಂಗಸರು ತಲೆಯಲ್ಲಿ  
ಧರಿಸಿರುವ ಜಡೆಬಿಲ್ಲೆ. ಪರಿತ: ತಥಾಭೂತಾ ಪರಿತಥ್ಯಾ —  
ಪರಿತಥೇವ "ಷ್ಯಜ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪) । "ವಾಲಪಾಶ್ಯಾ  
ಪಾರಿತಥ್ಯಾ" ಅಮಂ ।

ಪಾರಿತೋಷಿಕ ಪಾರಿತೋಷಿಕ (ನಂ) ಸಂತೋಷಕ್ಕಾಗಿ  
ಅಥವಾ ಸಂತೋಷದಿಂದ ಬಂದ ಧನ ಅಥವಾ ವಸ್ತು.  
ಪರಿತೋಷ: ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯) । "ನ

ಕದಾಚಿತ್ ಪ್ರಿಯವಚನಂ ನಿಷ್ಕಲೀಕೃತಂ ಮಯಾ, ತದ್ಗೃಹ್ಯತಾಂ  
ಪಾರಿತೋಷಿಕಮ್" ಮೃಚ್ಛಂ ೫ ।

ಪಾರಿಪನ್ಥಿಕ ಪಾರಿಪನ್ಥಿಕ (ಪುಂ) 1. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ.  
ಪನ್ಥಾನಂ ವರ್ಜಯಿತ್ವಾ ವ್ಯಾಪ್ಯ ವಾ ತಿಷ್ಠತಿ — ಪರಿಪನ್ಥಮ್  
ಅವ್ಯಯಂ । ಪರಿಪನ್ಥಂ ತಿಷ್ಠತಿ ಹಂತಿ ವಾ "ಠಕ್"  
(೪-೪-೩೬) । (ವಿಂ) 2. ದಾರಿ ಬಿಟ್ಟು ಹೋಗಿರುವ,  
ತಪ್ಪು ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಹೋಗಿರುವ.

ಪಾರಿಪಾಟಕ ಪಾರಿಪಾಟಕ (ನಂ) ಪರಿಪಾಟಯ ಭಾವ,  
ಒಂದು ಕೃಮವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪರಿಪಾಟಕಾ ಭಾವ: "ಷ್ಯಜ್"  
(೪-೧-೧೨೪) ।

ಪಾರಿಪಾತ್ರ ಪಾರಿಪಾತ್ರ (ಪುಂ) ಸಪ್ತಕುಲಪರ್ವತಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು. "ಮಹೇಂದ್ರೋ ಮಲಯ: ಸಹ್ಯ: ಶುಕ್ತಿಮಾನುಷಪರ್ವತ: ।  
ವಿಂಧ್ಯಶ್ಚ ಪಾರಿಪಾತ್ರಶ್ಚ ಸಪ್ತೇವಾತ್ರ ಕುಲಾಚಲಾ:" । ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಕನ್" । — ಪಾತ್ರಕ: — ಪಾತ್ರಕ:

ಪಾರಿಪಾಶ್ವಿಕ ಪಾರಿಪಾಶ್ವಿಕ (ಪುಂ) 1. ನಾಟಕದಲ್ಲಿ  
ಸೂತ್ರಧಾರನಿಗೆ ಸಹಾಯಕನಾಗಿರುವ ಅವನ ಅನುಚರ.  
2. ಸೇವಕ, ಅಳು. ಪರಿಪಾಶ್ವಂ ವರ್ತತೇ "ಠಕ್" (೪-೪-೨೯) ।  
ಸೂತ್ರಧಾರಸದೃಶತ್ವಾತ್ ಸ್ಥಾಪಕೋಽಪಿ ಸೂತ್ರಧಾರ ಉಚ್ಯತೇ । ತಸ್ಯಾನ್-  
ುಚರ: ಪಾರಿಪಾಶ್ವಿಕ: । "ನದೀ ವಿದೂಷಕೋ ವಾಪಿ ಪಾರಿಪಾಶ್ವಿಕ  
ಏವ ವಾ । ಸೂತ್ರಧಾರೆಣ ಸಹಿತಾ: ಸಂಲಾಪಂ ಯತ್ರ ಕುರ್ವತೇ" ಸಾಂ  
ದಂ ೬-೩೧ । "ತತ್ಕಿಮಿತಿ ಪಾರಿಪಾಶ್ವಿಕ, ನಾರಘಯಸಿ  
ಕುಶೀಲವೇ: ಸಹ ಸಂಗೀತಕಮೇಲಕಮ್" ವೇಣೀಂ ।

ಪಾರಿಪ್ಲವ ಪಾರಿಪ್ಲವ (ವಿಂ) 1. ಚಿಂಚಲವಾದ, ಚಲಿಸುವ.  
ಪರಿ + ಪ್ಲವ್ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಅಣ್" (೪-೪-೩೮) । "ತಯೋಪಚಾರಾಙ್ಗಲಿಖಿತಗ್ರಹಸ್ತಯಾ  
ನನಂದ ಪಾರಿಪ್ಲವೇನೈವಾ ನೃಪ:" ರಘುಂ ೩-೧೧ । "ಉಪಾಂತ-  
ವಾನೀರವನೋಪಗುಣಾನ್ಯಾಲಕ್ಷ್ಯಪಾರಿಪ್ಲವಸಾರಸಾನಿ" ರಘುಂ  
೧೩-೩೦ । 2. ಗಲಿಬಿಲಿಯಾದ, ದಿಕ್ಕು ತೋರದಂತೆ  
ಆಗಿರುವ, ತಬ್ಬಿಬ್ಬಾದ, ದಿಗ್ಭ್ರಮೆಹೊಂದಿದ. "ಹಾ ಹಾ  
ದೇವಿ ಕಿಮುತ್ಪಥೇಮಮ ಮನ: ಪಾರಿಪ್ಲವಂ ಧಾವತಿ" ಉಂ ರಾಂ  
೪-೨೨ । (ನಂ) 3. ನೆಮ್ಮದಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಚಿಂತೆ  
ಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. "ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಮವ್ಯಾಜಂ ವ್ರಜತು ಮಯಿ  
ಪಾರಿಪ್ಲವಧುರಾ ವಿಧಿ: ಸ್ಥೇಯಂ ಧತ್ತಾಂ ಭವತು ಕೃತಕೃತ್ಯಶ್ಚ  
ಮದನ:" ಮಾಲತೀಂ ೪-೩ । (ಪುಂ) 4. ನೀರಿನ ಮೇಲೆ  
ಸಂಚರಿಸುವ ಹಕ್ಕಿ. "ಪಾರಿಪ್ಲವಶತೈರ್ಜುಷ್ಠಾ ಬಹಿಕ್ರೋಶ  
ನಿನಾದಿತಾ" ರಾಮಾಂ ।

ಪಾರಿಭ್ರ ಪಾರಿಭ್ರ (ಪುಂ) 1. ಮಂದಾರವೃಕ್ಷ, ಪಾರಿಜಾತದ  
ಗಿಡ. ಪಾರಿ ಪಾರಂ ಗತಂ ಭದ್ರಮಸ್ಯ । ಪರಿಭದ್ರ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಣ್"



(೪-೪-೩೮) ವಾ। 2. ನಿಂಬತರು, ಬೇವಿನ ಮರ.  
3. ದೇವದಾರು ವೃಕ್ಷ. "ಪಾರಿಭ್ರಕಸ್ತು ನಿಂಬದ್ರೋ ಮಂದಾರೇ  
ದೇವದಾರುಣಿ" ಮೇದಿಂ। 4. ಸರಳದೇವದಾರು. (ನಂ) 5.  
ಚಂಗಲಾಕೋಷ.

ಪಾರಿಭ್ರಕ ಪಾರಿಭ್ರಕ (ಪುಂ) ದೇವದಾರು ವೃಕ್ಷ.

ಪಾರಿಭ್ರಕ ಪಾರಿಭ್ರಕ (ನಂ) 1. ಚಂಗಲಾಕೋಷ.  
ಪರಿಭಾವೇ ವ್ಯಾಧಿಸಮನೇ ಸಾಧು: "ಯತ್" (೪-೪-೯೮)।  
ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮)। "ವ್ಯಾಧಿ: ಕುಷ್ಠಂ  
ಪಾರಿಭ್ರಕಂ ವ್ಯಾಪ್ಯಂ ಪಾಕಲಮುತ್ಪಲಮ್" ಅಮಂ। 2. ಆಧಾರ,  
ಹೆಣ್ಣು, ಜಾಮಿನು.

ಪಾರಿಭ್ರಕ ಪಾರಿಭ್ರಕ (ನಂ) ಅವಯವಾರ್ಥವಿಲ್ಲದೆ  
ಸಮುದಾಯಾರ್ಥದಲ್ಲಿರುವ ಸಂಕೇತ ಪದ. ಪರಿಭಾಷಾ  
ಆಧುನಿಕಸಂಕೇತ: ತತ ಆಗತಮ್। ಗುಣ: ವೃದ್ಧಿ: ನದಿ  
ಮೊದಲಾದ ಸಂಜ್ಞಾವಾಚಕಪದಗಳಿಗೆ ಅವಯವಾರ್ಥ  
ವಿಲ್ಲದೆ ಅವು ಆಯಾ ಸಂಜ್ಞೆಗಳನ್ನು ಮಾತ್ರ ಸಂಕೇತದಿಂದ  
ಬೋಧಿಸುವುದರಿಂದ ಪಾರಿಭ್ರಕ ಪದಗಳು.

ಪಾರಿಮಾಂಡಲ್ಯ ಪಾರಿಮಾಂಡಲ್ಯ (ನಂ) ಪರಮಾಣುವಿನ  
ಪರಿಮಾಣ. ಪರಿತೋ ಮಂಡಲಂ ಯಸ್ಯ ಪರಮಾಣು: ಪರಿಮಾಂಡಲಸ್ಯ  
ಭಾವ: "ಽನ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ಪಾರಿಮಾಂಡಲ್ಯಮಿತ್ತಾನಾಂ  
ಕಾರಣತ್ವಮದಾಹತಮ್" ಭಾಷಾಪಂ।

ಪಾರಿಮುಖಿಕ ಪಾರಿಮುಖಿಕ (ವಿಂ) ಮುಖಕ್ಕೆ ಎದುರಾಗಿ  
ನಿಂತಿರುವ. ಪರಿಮುಖಂ ವರ್ತತೆ "ಠಕ್" (೪-೪-೨೯)।

ಪಾರಿಮುಖ್ಯ ಪಾರಿಮುಖ್ಯ (ನಂ) ಎದುರಾಗಿರುವಿಕೆ,  
ಮುಖಕ್ಕೆ ಸಮಾಪದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ.

ಪಾರಿಯಾತ್ರ ಪಾರಿಯಾತ್ರ (ಪುಂ) ಸಪ್ತಕುಲಪರ್ವತಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು.

ಪಾರಿಯಾನಿಕ ಪಾರಿಯಾನಿಕ (ಪುಂ) ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ (ರಸ್ತೆ  
ಯಲ್ಲಿ) ಸಂಚರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ರಥ. ಪರಿಯಾನಂ  
ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯)।

ಪಾರಿರಕ್ಷಕ ಪಾರಿರಕ್ಷಕ (ಪುಂ) ತಾಪಸ, ತಪಸ್ವಿ, ಮುನಿ.  
ಪರಿರಕ್ಷತಿ ಆತ್ಮಾನಮ್—ಪರಿ + ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಽನ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಪಾರಿವಿತ್ಯ ಪಾರಿವಿತ್ಯ (ನಂ) ತಮ್ಮನು ಮದುವೆಯಾದರೂ  
ಅಣ್ಣನು ಮದುವೆಯಾಗದಿರುವಿಕೆ. ಪರಿವಿತ್ತ: ಭಾವ:  
"ಽನ್" (೪-೧-೧೨೪)।

ಪಾರಿವ್ಯಾಧ ಪಾರಿವ್ಯಾಧ (ಪುಂ) 1. ಬೆಟ್ಟಗಳಿಗಿಂತ ಗಿಡ.  
2. ವೇತಸವೃಕ್ಷ, ಹಬ್ಬಿಗಿಡ. "ಪಾರಿವ್ಯಾಧಸ್ತು ಪುಸಿ  
ಸ್ಯಾಡ್ವೇತಸೇ ಚ ದ್ರುಮೋತ್ಪಲೇ" ಮೇದಿಂ।

ಪಾರಿಷದ ಪಾರಿಷದ (ಪುಂ) 1. ಸಭಿಕ, ಸಭೆಯಲ್ಲಿರುವವನು.

ಪರಿಷದಿ ಸಾಧು: "ಞ:" (೪-೪-೧೦೧)। "ಶಙ್ಕುಕರ್ಣಮುಖಾ:  
ಸರ್ವೇ ದಿವ್ಯಾ: ಪಾರಿಷದಾಸ್ತಥಾ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೧೦-೩೫।

(ವಿಂ) 2. ಸಭೆಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಪರಿಷತ್ಸಂಬಂಧವಾದ.  
ಪರಿಷದ ಇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೩)।

ಪಾರಿಷದಕ ಪಾರಿಷದಕ (ವಿಂ) ಸಭೆಯಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪರಿಷದಾ ಕೃತಮ್ "ವುನ್" (೪-೩-೧೧೮)।

ಪಾರಿಷದ ಪಾರಿಷದ (ಪುಂ) ಸಭಿಕ, ಸಭೆಯಲ್ಲಿರುವವನು.

ಪರಿಷದಿ ಸಾಧು: "ಞ:" (೪-೪-೧೦೧)।

ಪಾರಿಹಾರಿಕ ಪಾರಿಹಾರಿಕ (ವಿಂ) ಪರಿಹಾರವನ್ನು

ಕೊಡುವವನು, ಪರಿಹರಿಸುವವನು. ಪರಿಹಾರೇ ಸಾಧು:  
"ಠಕ್" (೪-೪-೧೦೨)।

ಪಾರಿಹಾರ್ಯ ಪಾರಿಹಾರ್ಯ (ಪುಂ) ವಲಯ, ಬಳೆ. ಪರಿಹರಿಸುವ

—ಹುನ್ (ಹರಣೆ) "ಽನ್" (೩-೩-೧೧೯)। ಪರಿಹಾರ:।  
ಸ್ವಾರ್ಥ "ಽನ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪)। "ಆವಾಪಕ:  
ಪಾರಿಹಾರ್ಯ: ಕಡಕೋ ವಲಯೋಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಅಮಂ।

ಪಾರಿ ಪಾರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜಲಪ್ರವಾಹ, ಹೊನಲು. ಪಾ

(ಪಾನೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (ವಾಂ ೩-೩-೧೪)। ತಾಂ ರಾತಿ—ರಾ  
(ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪೧)।

2. ನೀರು ಕುಡಿಯುವ ಪಾತ್ರೆ, ಗಿಂಡಿ, ಲೋಟ, ಬಟ್ಟಲು  
ಮುಂತಾದುವು. 3. ಆನೆಯ ಕಾಲಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ.

"ಪಾರಿ ಪೂರೇ ಚ ಕರ್ಕರ್ಯಾ ಪಾದರಜ್ಜೌ ಚ ದಂತಿನ:" ಮೇದಿಂ।

4. ಹಾಲು ಕರೆಯುವ ಪಾತ್ರೆ. "ಪ್ರೀತ್ಯಾ ನಿಯುಕ್ತಾಂಲಿಹತೀ  
ಸ್ತನಂಧಯಾಸ್ನಿಗೃಹ್ಯ ಪಾರಿಮುಖೇನ ಜಾನುನೋ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೪೦।

ಪಾರೀಣ ಪಾರೀಣ (ವಿಂ) 1. ದಡವನ್ನು ಮುಟ್ಟುವ, ತೀರ

ವನ್ನು ತಲುಪುವ. ಪಾರಂ ಗಾಮಿ "ಫಲ್" (೪-೨-೧೧)।  
2. ಕೊನೆ ಮುಟ್ಟುವ, ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸುವ.

ಪಾರೀಂದ್ರ ಪಾರೀಂದ್ರ (ಪುಂ) ಸಿಂಹ, ಮೃಗರಾಜ. "ಕಂಠೀರ-

ವಸ್ತು ಪಾರೀಂದ್ರ:" ಹಾರಾಂ।

ಪಾರೀರಣ ಪಾರೀರಣ (ಪುಂ) 1. ಕಮಠ, ಅಮೆ. ಪಾರ್ಯ

ರಣತಿ—ರಣ (ಶಬ್ದ) "ಅನ್" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ದಂಡ,  
ಕೋಲು. 3. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. "ಪಾರೀರಣ: ಸ್ಯಾತ್ ಕಮಠೇ  
ದಣ್ಡೇ ಚ ಪದ್ಮಶಾಠಕೇ" ವಿಶ್ವಂ।

ಪಾರು ಪಾರು (ಪುಂ) 1. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. 2. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ.

ಪಿಬತಿ ಜಲಮ್—ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಃ:" (ತಂ ೪-೧೦೧)  
ಬಾಹುಂ ಪಿಬತೇರಪಿ।

ಪಾರು ಪಾರು (ಪುಂ) 1. ಬೃಹಸ್ಪತಿ. 2. ಕಠಿನತೆ,

ಕೂರತನ. ಪರಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽನ್" (೪-೧-೧೨೪)।



3. ಕಠಿನವಾದ ಮಾತು, ಬಿರುಸಾದ ಮಾತು, ಅಪ್ರಿಯ ವಾದ ಮಾತು. ಇದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ವಾಕ್ಯವು ಮಾಪಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. "ಪಾರುಷ್ಯಮನೃತಂ ಚೈವ ಪೈಶುನ್ಯಂ चापि सर्वशः। असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम्"। "ಪಾರುಷ್ಯ ಪರೂಪತ್ವೇ च दुर्वाक्ये पुंसि गीष्पती" ಮೇದಿಂ।

**ಪಾರೇಗ್ಜ್ಞಮ್ ಪಾರೇಗ್ಗಂಗಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಗಂಗಾನದಿಯ ಅಚ್ಚಿನ ದಡದಲ್ಲಿ, ಗಂಗಾನದಿಯ ಎದುರು ತೀರದಲ್ಲಿ. ಗಜ್ಜಾಯಾ: ಪಾರೆ—ಅವ್ಯಯಿಂ (೨-೧-೧೮)। ಏವಮ್ ಪಾರೆಜಲಮ್ ಪಾರೆಸಮುದ್ರಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಪಾರೋಕ್ಷ್ಯ ಪಾರೋಕ್ಷ್ಯ** (ನಂ) ರಹಸ್ಯ, ಗುಟ್ಟು. ಪರೋಕ್ಷಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಪ್ಯಕ್" (೪-೧-೧೨೪)।

**ಪಾರ್ಶ್ವ ಪಾರ್ಶ್ವ** (ನಂ) 1. ಭೂಳು. 2. ಭಸ್ಮ, ಬೂದಿ. ಪಾದೇನ ಷಡತೇ—ಷಡ (ಚೇಷ್ಟಾಯಾಮ್) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಪೃಷೋಂ।

**ಪಾರ್ಶ್ವ ಪಾರ್ಶ್ವ** (ಪುಂ) ಪೃಥ್ವಿಯ (ಕುಂತಿಯ) ಮಗ— 1. ಧರ್ಮರಾಜ. 2. ಭೀಮ. 3. ಅರ್ಜುನ. ಪೃಥ್ವಿಯಾ ಅಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಅಙ್" (೪-೧-೧೧೨)। "ಪ್ರಿಯೇಬು ಯೈ: ಪಾರ್ಶ್ವ ವಿನೋಪಪತ್ತೇವಿಚಿಂತಯಮಾನೈ: ಕಲಮಮೇತಿ ಚೇತ:" ಕಿರಾಂ ೩-೪೨। "ಯಿಯಕ್ಷಮಾಣೇನಾಹುತ: ಪಾರ್ಶ್ವೇನಾಥ ದ್ವಿಷನ್ ಮುರಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೧। 4. ಅರ್ಜುನ ವೃಕ್ಷ, ಕೆಂಪು ಮತ್ತಿಮರ.

**ಪಾರ್ಶ್ವಕ ಪಾರ್ಶ್ವಕ** (ನಂ) ಬೇರೆಯಾಗಿರುವಿಕೆ, ಪ್ರತ್ಯೇಕ ವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪೃಥಕ್ ಭಾವೇ "ಽಪ್ಯಕ್" (೪-೧-೧೨೪)।

**ಪಾರ್ಶ್ವ ಪಾರ್ಶ್ವ** (ನಂ) 1. ಅಗಲವಾಗಿರುವಿಕೆ, ವಿಸ್ತಾರ ವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪೃಥೋರ್ಭಾವ: "ಅಙ್" (೪-೧-೧೨೨)। (ವಿಂ) 2. ಪೃಥುಚಕ್ರವರ್ತಿ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಪೃಥೋರಯಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। ಪಾರ್ಶ್ವಕ ಪಾರ್ಶ್ವಕೀ.

**ಪಾರ್ಶ್ವಸಾರಥಿ ಪಾರ್ಶ್ವಸಾರಥಿ** (ಪುಂ) ಅರ್ಜುನನಿಗೆ ಸಾರಥಿ ಯಾಗಿದ್ದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಪಾರ್ಶ್ವಸ್ಯ ಸಾರಥಿ:

**ಪಾರ್ಶ್ವ ಪಾರ್ಶ್ವ** (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ, ಪೃಥ್ವಿಯ ಒಡೆಯ. ಪೃಥ್ವಿಯಾ ಇಶ್ವರ: "ಅಙ್" (೪-೧-೪೨)। "ದಿತ್ಸಯಾ ದದಪಿ ಪಾರ್ಶ್ವೋರ್ಜಿನಂ ಗುಣ್ಯಗುಣ್ಯ ಇತಿ ನ ವ್ಯಜಿ-ಗಣತ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೪೭। 2. ಒಂದು ಸಂವತ್ಸರದ ಹೆಸರು, ಪ್ರಭವ ಮೊದಲಾದ ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಹತ್ತೊಂಬತ್ತನೆಯ ಸಂವತ್ಸರ. (ನಂ) 3. ಮೃತ್ಯುಾತ್ಮ, ಮೃಣ್ಮನ ಪಾತ್ಮ. ಪೃಥ್ವಿಯಾ ವಿಕಾರ: "ಅಙ್" (೪-೩-೧೩೪)। (ವಿಂ) 4. ಭೂಮಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಪೃಥ್ವಿಯಾ ಇದಮ್

"ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ವಿರಕ್ತಸಂಧ್ಯಾಕಪಿಶಂ ಪುರ-ಸ್ತಾಘತೋ ರಜ: ಪಾರ್ಶ್ವಮುಜ್ಜಿಹೀತೇ" ರಘುಂ ೧೩-೬೪।

**ಪಾರ್ಶ್ವ ಪಾರ್ಶ್ವ**

**ಪಾರ್ಶ್ವ ಪಾರ್ಶ್ವ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೂಮಿಯ ಸಂತಾನ, ಭೂಮಿಯ ಪುತ್ರಿ, ಸೀತಾದೇವಿ. ಪೃಥ್ವಿಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಅಙ್" "ಅಙ್" (ವಾಂ ೪-೧-೮೫) ವಾ। ಅ ಪ್ರತ್ಯಯೇ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪)। ಅಙ್ ಪ್ರತ್ಯಯೇ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। "ಪಾರ್ಶ್ವಮುದವಹದ್ರಘ್ನಹೋ ಲಕ್ಷ್ಮಣಸ್ತದನುಜಾಮಯೋಮಿಲಾಮ್" ರಘುಂ ೧೧-೪೪।

**ಪಾರ್ಶ್ವ ಪಾರ್ಶ್ವ** (ಪುಂ) 1. ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. 2. ಕ್ಷಯ ರೋಗ. 3. ಅನ್ನದ ಅಗಳು. 4. ಭಸ್ಮ, ಬೂದಿ. 5. ಕದಂಬಪುಷ್ಪದ ಕೇಸರ. "ಪಾರ್ಶ್ವೋ ಮಸ್ಮನಿ ಯಮೇ ಜರಾತೇ ನೋಪಕೇಸರೇ। ಕ್ಷಯರೋಗೇ ಭಕ್ತಸಿವಕಥೇ" ಹೇಮಂ।

**ಪಾರ್ಶ್ವ ಪಾರ್ಶ್ವ** (ನಂ) 1. ಅಮಾವಾಸ್ಯೆಯ ದಿನ ಮಾಡುವ ಶ್ರಾದ್ಧ. ಪರ್ವಣಿ ಕ್ರಿಯತೇ—ಪರ್ವನ್ "ಅಙ್" (೪-೨-೯೨)। (ವಿಂ) 2. ಪರ್ವಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ.

**ಪಾರ್ಶ್ವ ಪಾರ್ಶ್ವ** (ವಿಂ) ಪರ್ವತಸಂಬಂಧವಾದ. ಪರ್ವತಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಯಾವತ್ ಪೃಥ್ವಿಯಾಂ ವಿಹಿತಂ ಗವಾಶ್ವಂ ಸಹಾರಣೈ: ಪಶುಭಿ: ಪಾರ್ಶ್ವತೈಶ್ಚ" ಭಾಂ ಆದಿಂ।

**ಪಾರ್ಶ್ವ ಪಾರ್ಶ್ವ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪರ್ವತರಾಜನ ಪುತ್ರಿ, ಗೌರಿ. ಪರ್ವತಸ್ಯಾಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ "ಅಙ್" (೪-೧-೯೨)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। "ಲೀಲಾಕಮಲಪತ್ರಾಣಿ ಗಣಯಾಮಾಸ ಪಾರ್ಶ್ವತೀ" ಕುಮಾಂ ೬-೮೪।

**ಪಾರ್ಶ್ವನಂದನ ಪಾರ್ಶ್ವನಂದನ** (ಪುಂ) ಪಟ್ಟಾಬಿ, ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಸ್ಕಂದ. ಪಾರ್ಶ್ವತಯಾ: ನಂದನ:। "ಪಾರ್ಶ್ವನಂದನ: ಸ್ಕಂದ:" ಅಮಂ। ಏವಂ—ಪುತ್ರ: ಪುತ್ರ:, —ಸುತ: —ಸುತ:, —ಸುನು: —ಸುನು:। ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಪಾರ್ಶ್ವ ಪಾರ್ಶ್ವ** (ವಿಂ) ಪರ್ವಕಾಲದಲ್ಲಿರುವ, ಪೂರ್ಣ ಮೆಯು ದಿನದಲ್ಲಿರುವ. ಪರ್ವಣಿ ಭವ: "ಠಕ್"। "ನ ಶಾರದ: ಪಾರ್ಶ್ವಕಶರ್ವರೀಶ್ವರ:" ನೈಷಂ ೧-೨೦।

**ಪಾರ್ಶ್ವ ಪಾರ್ಶ್ವ** (ವಿಂ) 1. ಪರಶುಧಾರಿಯಾದ, ಕೊಡ ಲಿಯೇ ಆಯುಧವಾಗಿರುವ. ಪಶು: ಪ್ರಹರಣಮಸ್ಯ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೧೭)। 2. ಆಯುಧಧಾರಿಯಾದ, ಆಯುಧ ವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ.

**ಪಾರ್ಶ್ವ ಪಾರ್ಶ್ವ** (ಪುಂ) 1. ದೇಹದ ಎರಡು ಪಕ್ಕಗಳು, ಕಡ್ಡುಗಳ ಕೆಳಭಾಗಗಳು. ಸ್ಪೃಶ್ಯತೇ—ಸ್ಪೃಶ (ಸ್ಪೃಶ್ನೇ) "ಇವಙ್" ಪೃ ಇತ್ಯಾದೇಶಶ್ಚ (೩ಂ ೪-೨೭)। ವೃದ್ಧಿ: (೭-೨-೧೧೫)। 2. ಸಮೀಪ, ಹತ್ತಿರ. "ಏವಂವಾದಿನಿ ದೇವರ್ಷಿ ಪಾಶ್ವ



ಪಿತುರಖೋಮುಖಿ । ಲೀಲಾಕಮಲಪತ್ರಾಣಿ ಗಣಯಾಮಾಸ ಪಾರ್ವತೀ ”  
ಕುಮಾಂ ೬-೮೪ । “ ಧೃಷ್ಠ: ಪಾರ್ವೇ ಭವತಿ ಚ ವಸನ್ ದೂರತೋಽಪ್ಯ-  
ಪ್ರಗಲ್ಭ: ” ಭರ್ತುಂ ೧-೪೭ । (ನಂ) 3. ಪಕ್ಕಲುಬುಗಳ  
ಸಮೂಹ. ಪರ್ಶುನಾಂ ಸಮೂಹ: “ ಣಸ್ ” (ವಾಂ ೪-೨-೪೩) ।  
4. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ವೇಲ್ವೆ, ಪಕ್ಕ, ಮಗ್ಗಲು.  
“ ಪಿಠರಂ ಜ್ವಲದತಿಮಾತ್ರಂ ನಿಜಪಾರ್ವತೀವ ದಹತೀತರಾಮ್ ”  
ಪಂಚತಂ ೧-೩೫೩ । 5. ಪಕ್ಕದ ಅಂಚಿನ ಸಮೀಪ ಭಾಗ.  
“ ಪಾರ್ಶ್ವ ಕಕ್ಷಾಧರೇ ಚಕ್ರೋಪಾಂತೇ ಪರ್ಶುಗಣೇಽಪಿ ಚ ” ಮೇದಿಂ ।  
(ಪುಂ) 6. ಜನದೇವ, ಇಪ್ಪತ್ತಮೂರನೆಯ ತೀರ್ಥಂಕರರು.

**ಪಾರ್ಶ್ವಕ ಸಾರ್ಥಕ** (ಪುಂ) ಮೋಸದಿಂದ ಹಣವನ್ನು  
ಸಂಪಾದಿಸುವವನು, ವಂಚಕ. “ ಕುಸ್ಮತ್ಯಾ ವಿಮವಾನ್ವೇಷಿ  
ಪಾರ್ಶ್ವಕ: ಸನ್ಧಿಜೀವಕ: ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । ಪಾರ್ಶ್ವನಾನ್ವಿಚ್ಛತಿ  
“ ಕನ್ ” (೪-೨-೭೫) ।

**ಪಾರ್ಶ್ವಗ ಸಾರ್ಥಕ** (ಪುಂ) 1. ಅನುಚರ, ಸೇವಕ, ಆಳು.  
ಪಾರ್ಶ್ವ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ (ಗತೌ) “ ಟ: ” (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) ।  
“ ವ್ಯಾಧಿದೇಶ ಗಣಶೋಷ ಪಾರ್ಶ್ವಗಾನ್ ಕಾರ್ಮುಕಾಭಿಹರಣಾಯ  
ಮೆಥಿಲ: ” ರಘುಂ ೧೧-೪೩ । (ವಿಂ) 2. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ  
ಸಂಚರಿಸುವವನು. 3. ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿರುವವನು.

**ಪಾರ್ಶ್ವಚರ ಸಾರ್ಥಕ** (ಪುಂ) 1. ಅನುಚರ, ಸೇವಕ, ಆಳು.  
(ವಿಂ) 2. ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿರುವವನು. 3. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ  
ಸಂಚರಿಸುವವನು. ಪಾರ್ಶ್ವ ಚರತಿ — ಚರ (ಗತೌ) “ ಟ: ”  
(೩-೨-೧೬) । “ ತಸ್ಯೆ ಪ್ರತಿಶ್ರುತ್ಯ ರಘುಪ್ರವೀರಸ್ತದೀಪ್ಸಿತಂ  
ಪಾರ್ಶ್ವಚರಾನುಯಾತ: ” ರಘುಂ ೧೪-೨೯ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ ಡಿಪ್ ”  
(೪-೧-೧೫) । -ಚರೀ-ಚರೀ.

**ಪಾರ್ಶ್ವತಸ್ ಸಾರ್ಥಕ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪಕ್ಕದಿಂದ. 2. ಪಕ್ಕ  
ದಲ್ಲಿ. 3. ಸಮೀಪದಿಂದ. 4. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ. ಪಾರ್ಶ್ವ  
“ ತಸಿ: ” (ವಾಂ ೫-೪-೪೪) । “ ಮಿತ್ರಕಾರ್ಯಮಪದಿಶ್ಯ  
ಪಾರ್ಶ್ವತ: ಪ್ರಸ್ಥಿತಂ ತಮನವಸ್ಥಿತಂ ಪ್ರಿಯಾ: ” ರಘುಂ ೧೯-೩೧ ।

**ಪಾರ್ಶ್ವತೀಯ ಸಾರ್ಥಕ** (ವಿಂ) 1. ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿರುವ.  
2. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ. ಪಾರ್ಶ್ವತೋ ಭವ: “ ಟ: ” (ವಾಂ  
೪-೨-೧೩೮) ।

**ಪಾರ್ಶ್ವದ ಸಾರ್ಥಕ** (ಪುಂ) ಅನುಚರ, ಸೇವಕ, ಆಳು. ಪಾರ್ಶ್ವ  
ದದಾತಿ — ಡು ದಾಮ್ (ದಾನೇ) “ ಕ: ” (೩-೨-೩) ।

**ಪಾರ್ಶ್ವನಾಥ ಸಾರ್ಥಕ** (ಪುಂ) ಜೈನರ ಗುರು.

**ಪಾರ್ಶ್ವಭಾಗ ಸಾರ್ಥಕ** (ಪುಂ) ಅನೆಯ ಪಕ್ಕ. ಪಾರ್ಶ್ವಸ್ಯ  
ಭಾಗ: । “ ಪಕ್ಷಭಾಗ: ಪಾರ್ಶ್ವಭಾಗ: ” ಅಮಂ ।

**ಪಾರ್ಶ್ವಶೂಲ ಸಾರ್ಥಕ** (ಪುಂ) ಪಕ್ಕೆಯ ನೋವು. ಪಾರ್ಶ್ವ  
ಜಾತ: ಶೂಲ: । ಈ ರೋಗವು ಕಫ ಮತ್ತು ವಾತ ದೋಷ

ದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದು. ಉದರದ ಒಂದು ಪಾರ್ಶ್ವದಲ್ಲಿ  
ರುವ ಕಫವು ವಾಯುವನ್ನು ತಡೆಯುವುದರಿಂದ ಹೊಟ್ಟೆ  
ಯಲ್ಲಿ ಗುಡಗುಡ ಶಬ್ದವುಂಟಾಗುವುದು. ಸೂಜಿಯಂತೆ  
ಜುಜ್ಜಲು ಅರಂಭವಾಗಿ ಉಚ್ಚಾಸಕ್ಕೆ ತೊಂದರೆಯುಂಟಾ  
ಗುವುದು. ಈ ಬಾಧೆಯಿಂದ ಆಹಾರದಲ್ಲಿ ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿರುವು  
ದಿಲ್ಲ. ನಿದ್ರೆಯೂ ಬರುವುದಿಲ್ಲ. ಇದು ಪಾರ್ಶ್ವಶೂಲ  
ವೆಂಬ ಒಂದು ವ್ಯಾಧಿ. “ ಕ್ಷಣಾದಿ ಮಾರ್ತಂ ಶಲೇಷಾ ಕುಕ್ಷಿಪಾರ್ಶ್ವ-  
ವ್ಯವಸ್ಥಿತ: । ಸ ಸಂಕುಟ: ಕರೋತ್ಯಾಶು ಧ್ವಾನಂ ಗುಡಗುಡಾಯನಮ್ ।  
ಸೂಚಿಭಿರೀವ ನಿस्तೋದ: ಕುಚ್ಛೋಚ್ಛಾಸೀ ತದಾ ನರ: । ನಾಶಂ  
ವಾಚ್ಛತಿ ನೋ ನಿद्रಾಮುಪೇತ್ಯತಿ ನಿಪೀಡಿತ: । ಪಾರ್ಶ್ವಶೂಲ: ಸ  
ವಿಜ್ಞೇಯ: ಕಫಾನಿಲಸಮುದ್ಭವ: ” ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರತಂ ೪೨-೧೧೭,  
೧೮, ೧೯ ।

**ಪಾರ್ಶ್ವಾಸ್ಥಿ ಸಾರ್ಥಕ** (ನಂ) ಪಕ್ಕೆಯ ಎಲುಬು.  
ಪಾರ್ಶ್ವಸ್ಯ ಅಸ್ಥಿ ।

**ಪಾರ್ಶ್ವಕ ಸಾರ್ಥಕ** (ವಿಂ) ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿರುವವನು,  
ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರುವವನು. ಪಾರ್ಶ್ವ ಭವ: ।

**ಪಾರ್ಶ್ವ ಸಾರ್ಥಕ** (ವಿಂ) 1. ಚಿತ್ರವುಗ ಸಂಬಂಧವಾದ,  
ಬಿಳಿ ಚುಕ್ಕಿಯಿರುವ ಜಿಂಕೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಪೃಷ್ಠತಸ್ಯೇದಮ್  
“ ಅನ್ ” (೪-೩-೧೨೦) । “ ಷಮಾಸಾಂಕ್ಷಾಗಮಾಸೇನ ಪಾರ್ಶ್ವತೇನ  
ಚ ಸಪ್ತ ವೈ । ಅಷ್ಟಾವೇಣಸ್ಯ ಮಾಸೇನ ರೋರೇಣ ನವೈವ ತು ” ಮನುಂ  
೩-೨೬೯ । (ಪುಂ) 2. ದ್ರುಪದ ರಾಜ. 3. ಧೃಷ್ಟದ್ಯುಮ್ನ.  
[ಇದು ಮನೆತನದ ಹೆಸರು.] (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತೀ-ತೀ.  
ದ್ರೂಪದಿ.

**ಪಾರ್ಶ್ವ ಸಾರ್ಥಕ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪರಿಷತ್, ಸಭೆ. ಪರಿಷತ್  
ಪೃಷ್ಠಂ ।

**ಪಾರ್ಶ್ವ ಸಾರ್ಥಕ** (ವಿಂ) ಸಭೆ, ಸಭಿಕ, ಸಭೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದ  
ವನು. ಪಾರ್ಶ್ವದಿ ಸಾಧು: “ ಣ: ” (೪-೪-೧೦೧) । (ಯೋಗ-  
ವಿಭಾಗಾತ್) “ ಣ್ಯ: ” ಪಾರ್ಶ್ವ: ಸಾರ್ಥಕದ್ಭ್ಯ:.

**ಪಾರ್ಶ್ವದ ಸಾರ್ಥಕ** (ಪುಂ) ಬಿಂದುವಿನ ಒಂದು ಭಾಗ  
ದಲ್ಲಿರುವ. ಪೃಷ್ಠದಂಶ ಭವ: “ ಅನ್ ” (೪-೧-೮೬) ।

**ಪಾರ್ಶ್ವದ ಸಾರ್ಥಕ** (ವಿಂ) 1. ವಾಯುಸಂಬಂಧವಾದ.  
ಪೃಷ್ಠದಸ್ಯ ವಾಯೋರಿದಮ್ “ ಅನ್ ” (೪-೩-೧೨೦) ।  
2. ಪೃಷ್ಠದ ರಾಜನ ಸಂಬಂಧವಾದ.

**ಪಾರ್ಣಿ ಸಾರ್ಥಕ** (ಪುಂ) 1. ಹಿಮ್ಮಡಿ, ಕಾಲಿನ ಗಂಟುಗಳ  
ಕೆಳಭಾಗ. ಪೃಷ್ಠತೇಜೇನ — ಪೃಷ್ಠ (ಸೇವನೆ) “ ನಿ: ” ವೃದ್ಧಿಶ್ಚ  
(೩ಂ ೪-೫೨) । ನಿಪಾಂ । “ ಉಜಯತ್ಯಹ್ನಗುಲಿಪಾರ್ಣಿ-  
ಮಾಗಾನ್ಮಾಗೆ ಶಿಲೀಮೂತಹಿಮೇಽಪಿ ಯತ್ರ ” ಕುಮಾಂ ೧-೧೧ ।  
2. ಹಿಂಭಾಗ. “ ಸ ಗುಪ್ತಮೂಲಪ್ರತ್ಯಂತ: ಶುದ್ಧಪಾರ್ಣಿರಯಾನ್ವಿತ: ”



ರಘುಂ ೪-೨೬। 3. ಸೈನ್ಯದ ಹಿಂಭಾಗ. 4. ಜಯಿಸುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 5. ಹುಚ್ಚು ಹಿಡಿದ ಹೆಂಗಸು. "ಪಾರ್ಣಿ: ಸ್ಯಾದುನ್ಮದಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ದ್ವಯೋ: ಸೈನ್ಯಪೃಷ್ಠೆ ಪಾದಗ್ರನ್ಯ-ಧರೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ। 6. ಕುಂತಿ.

**ಪಾರ್ಣಿಗ್ರಾಹ ಪಾಸ್ವಿಗ್ರಾಹ** (ಪುಂ) ಹಿಂಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ ಶತ್ರು, ಬೆನ್ನುಹತ್ತಿ ಬಂದ ಶತ್ರು. ಪಾರ್ಣಿ ಸೈನ್ಯಪೃಷ್ಠೆ ಗೃಹ್ಣಾತಿ—ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) "ಅನ್" (೩-೨-೧)। "ಯಾತವ್ಯ-ಪಾರ್ಣಿಗ್ರಾಹಾದಿಮಾಲಾಯಾಮಧಿಕೃತಿ:" ಮಾಘಂ ೨-೯೨।

**ಪಾರ್ಣಿಘಾತ ಪಾಸ್ವಿಘಾತ** (ಪುಂ) ಹಿಂಗಾಲಿನ ಹೊಡೆತ, ಹಿಮ್ಮಡಿಯಿಂದ ಹೊಡೆಯುವುದು. "ಆಸ್ಕನ್ಯ ವೇಗೇನ ವಿಮುಕ್ತನಾದ: ಕ್ಷಿತಿಂ ವಿಧುನ್ವನ್ನಿವ ಪಾರ್ಣಿಘಾತೈ:" ಕಿರಾಂ ೧೭-೪೦।

**ಪಾರ್ಣಿತ್ರ ಪಾಸ್ವಿತ್ರ** (ನಂ) ಹಿಂಗಾವಲು ಸೈನ್ಯ, ಹಿಂಭಾಗ ದಲ್ಲಿ ರಕ್ಷಿಸುವ ಸೈನ್ಯ. ಪಾರ್ಣಿ ತ್ರಾಯತೇ — ತ್ರೈಡ್ (ಪಾಲನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩)।

**ಪಾರ್ಣಿವಾಹ ಪಾಸ್ವಿವಾಹ** (ಪುಂ) ಹಿಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ಸೈನ್ಯದ ಉಸ್ತುವಾರಿ ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಅಧಿಕಾರಿ. ಪಾರ್ಣಿ ವಹತಿ — ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಅನ್" (೩-೨-೧)।

**ಪಾಲ - ರಕ್ಷಣೆ** (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ)। ಪಾಲಯತಿ — ತೇ ಪಾಲಯಾಮಾಸ। ಅಪಿಪಲತ್, —ತ ಇತ್ಯಾದಿ. ರಕ್ಷಿಸು, ಕಾಪಾಡು.

**ಪಾಲ ಪಾಲ** (ವಿಂ) 1. ರಕ್ಷಣೆ, ಕಾಪಾಡುವವನು. ಪಾಲಯತಿ — ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಪ್ರಲೀನಭೂಪಾಲಮಪಿ ಸ್ಥಿರಾಯತಿ ಪ್ರಶಾಸದಾವಾರಿಧಿ ಮಂಡಲಂ ಭುವ:" ಕಿರಾಂ ೧-೨೩। 2. ಪಶುಪಾಲಕ, ಗೋಪಾಲಕ, ದನ ಕಾಯುವವನು. "ದಿವಾ ವಕ್ತವ್ಯತಾ ಪಾಲೇ ರಾತ್ರೀ ಸ್ವಾಮಿನಿ ತದಗ್ರಹೇ। ಯೋಗಕ್ಷೇಮೇಽನ್ಯಥಾ ಚೇತ್ತು ಪಾಲೋ ವಕ್ತವ್ಯತಾ-ಮಿಯಾತ್" ಮನುಂ ೮-೨೩೦। (ಪುಂ) 3. ಪೀಕದಾನಿ, ಪಡೆಗ, ತಾಂಬೂಲವನ್ನು ಅಗಿದು ರಸವನ್ನು ಉಗುಳುವ ಬಟ್ಟಲು. 4. ರಕ್ಷಣೆ, ಕಾಪಾಡುವುದು.

**ಪಾಲಕ ಪಾಲಕ** (ವಿಂ) 1. ರಕ್ಷಿಸುವವನು, ಕಾಪಾಡು ವವನು. ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। (ಪುಂ) 2. ರಾಜ, ದೊರೆ. 3. ಅಶ್ವರಕ್ಷಕ, ಕುದುರೆಯನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನು. 4. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ.

**ಪಾಲಕಾಪ್ಯ ಪಾಲಕಾಪ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಮುಷಿ. ಈ ಮುಷಿ ಯಿಂದ ಗಜಾಶ್ವಾದಿಲಕ್ಷಣಗ್ರಂಥವು ರಚಿತವಾಗಿದೆ. (ನಂ) 2. ಅನೆ ಕುದುರೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಲಕ್ಷಣಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಗ್ರಂಥ.

**ಪಾಲನ ಪಾಲನ** (ಪುಂ) ನಾಯಿಕೊಡೆ, ಭಕ್ತಿಯ ಆಕಾರ ದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಗಿಡ.

**ಪಾಲಜ್ಞ ಪಾಲಂಜ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಗಿಡಗದ ಹಕ್ಕಿ. (ನಂ) 2. ಒಂದು ವಿಧ ಗುದ್ದಿಗರ ದ್ರವ್ಯ.

**ಪಾಲನ ಪಾಲನ** (ನಂ) 1. ರಕ್ಷಿಸುವುದು, ಕಾಪಾಡುವುದು. ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ಸೃಷ್ಟೋ ನೃಪೋ ಹಿ ವಿಪ್ರಾಣಾಂ ಪಾಲನೇ ದುಷ್ಟನಿಗ್ರಹೇ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೪೩-೧೨। 2. ಸದ್ಯಃ ಕರು ಹಾಕಿದ (ಪ್ರಸೂಯಿದ) ಹಸುವಿನ ಹಾಲು. ಪಾಲಯತೇಜೇನ — ಪಾಲ + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। (ವಿಂ) 3. ರಕ್ಷಿಸುವ, ಕಾಪಾಡುವ. ಪಾಲ + ಣಿಚ್ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೪)। ಪಾಲನೀ ಪಾಲನೀ. "ಶ್ರಿಯ: ಕುರುಣಾಮಧಿಪಸ್ಯ ಪಾಲನೀಂ ಪ್ರಜಾಸು ವೃತ್ತಿ ಯಮಯುಕ್ತ ವೇದಿತುಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೧।

**ಪಾಲನೀಯ ಪಾಲನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ, ಕಾಪಾಡ ಲ್ಪಡುವ. ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೧೬)। 2. ರಕ್ಷಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 3. ರಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ. "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೧೬)। —ಯಿತವ್ಯ: —ಯಿತವ್ಯ:.

**ಪಾಲಯತ್ ಪಾಲಯತ್** (ವಿಂ) ಕಾಪಾಡುತ್ತಿರುವ, ರಕ್ಷಿಸು ತ್ತಿರುವ. ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಪುತನಾಸಾಗರೋಧೇನ ಪಾಲಯನ್ ಸಾಗರಾಂಬರಾಮ್" ಯಾದಂ ೨೨-೬೬। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬)। —ಯಂತೀ —ಯಂತೀ. "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)। —ಮಾನ: —ಮಾನ:.

**ಪಾಲಯಿತ್ ಪಾಲಯಿತ್** (ವಿಂ) ರಕ್ಷಿಸುವವನು, ಕಾಪಾಡು ವವನು. ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ತಸ್ಮಿನ್ ಕ್ಷಣೇ ಪಾಲಯಿತು: ಪ್ರಜಾನಾಮುತ್ಪತ್ಯತ: ಸಿಂಹನಿಪಾತ-ಮುಗ್ರಮ್" ರಘುಂ ೨-೬೦। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೪)। —ಯಿತ್ರಿ —ಯಿತ್ರಿ.

**ಪಾಲಲ ಪಾಲಲ** (ವಿಂ) ಎಳ್ಳಿನ ಪುಡಿಯಿಂದ ತಯಾರಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟ. ಪಾಲಲಸ್ಯ ತಿಲಚೂರ್ಣಸ್ಯ ವಿಕಾರ: "ಅನ್" (೪-೩-೧೩೪)।

**ಪಾಲಾಶ ಪಾಲಾಶ** (ಪುಂ) 1. ಹಸುರು ಬಣ್ಣ. ಪಾಲಾಶಸ್ಯ ಪತ್ರಸ್ಯಾಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। (ವಿಂ) 2. ಹಸುರು ಬಣ್ಣದ. 3. ಪಲಾಶವೃಕ್ಷದ ಅವಯವ, ಮುತ್ತುಗದ ಮರದ ರೆಂಬೆ ಕೋಲು ಎಲೆ ಮೊದಲಾದುವು. ಪಾಲಾಶಸ್ಯ ಅವಯವ: ವಿಕಾರೋ ವಾ "ಅನ್" (೪-೩-೧೩೪)। "ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ಬೆಲ್ವಪಾಲಾಶೋ ಕ್ಷತ್ರಿಯೋ ವಾಟಸ್ತಾದಿರೋ। ಪೆಲವೀದುಂಬರೋ ವಂಶಯೋ ದೃಢಾನರ್ಹಂತಿ ಧರ್ಮತ:" ಮನುಂ ೨-೪೪।



ಪಾಲಾಶಕ ಹಾಲಾಶಕ (ಪುಂ) ಪಲಾಶವೃಕ್ಷದ ಸಮೀಪ ಪೃಥೇಕ. ಪಲಾಶಸ್ಯಾದೂರಗವೋ ದೇಶ:—ಪಲಾಶ "ಕಕ್" (೪-೨-೮೦) ।

ಪಾಲಿ ಹಾಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಂಚು, ತುಡಿ. ಪಾಲಯತಿ—ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಚಿನ್ "ಃ" (೨-೪-೧೩೯) । ವಾ "ಙೀಪ್" (೩-೪-೧-೪೫) । -ತೀ-೦೬. "ಕಾಪಿಲ್ಯಕಪ್ರಸವಪಾಟಕ-ಬಹುಪಾಲಿ:" ಮಾಲತೀಂ ೯-೩೧ । 2. ಪಜ್ಜಿ, ಸಾಲು, ಶ್ರೇಣಿ. "ವಿಪುಲಪುಲಕಪಾಲಿ:" ಗೀತಗೋಂ । 3. ಜಿಹ್ವೆ, ಗುರುತು. 4. ಕಿವಿಯ ಆಗ್ರಧಾನ್, ಕಿವಿಯ ತುಡಿ, ಕಿವಿಯ ಹಾಲೆ. "ಯಸ್ಯ ಪಾಲಿಪ್ರಮಾಣಿ ಕರ್ಣಸ್ಯ ನ ಮೇದಿಹಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸ್ತುತಂ । 5. ಲಂಚು, ಕತ್ತಿ ಮೊದಲಾದವುಗಳ ಅಂಗದ ವಿಷಯ. 6. ಹೇಮ. 7. ವಿಸ್ತಾರದ ಬೆಳೆಯುವ ಹೆಂಗಸು. 8. ಪ್ರಕಾಶ, ಹೊಗಳಿಕೆ. 9. ಸೇತುವೆ. 10. ಉತ್ಸಾಹ ತೊಡೆ. 11. ಪೆಟ್ಟು, ಒಂದು ಬಳಸಿದ ಅಳತೆ. (ಇದು ಪೂರ್ವಕಾಲದ ಒಂದು ಅಳತೆ). 12. ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಶಿಷ್ಯನಿಗೆ ಉಪಾಧ್ಯಾಯನು ಕಲ್ಪಿಸುವ ಉಪದೇಶವಾದುದು. "ಪಾಲಿಯುಕಾಪಿಪ್ರಜ್ಞಾತಿಶು" ಬಾಲ್ಯಸಮಯದಿಂದ ಪ್ರಾಣಿ ಸೇತು ಕಲ್ಪಿತವೋಚನೇ । ಪ್ರಸಂಗ-ಕರ್ಣವತವೋಚನಕ್ಕೆ ಪ್ರಸಂಗವಿಹೀನಃ" ಹೇಮಂ ।

ಪಾಲಿಕಾ ಹಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. "ಪಾಲಿ" ಎಂಬ ಅರ್ಥ. ಪಾಲಿ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:" । 2. ರಕ್ಷಿಸುವವಳು, ಕಾಪಾಡುವವಳು.

ಪಾಲಿತ ಹಾಲಿತ (ವಿಂ) 1. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಾಪಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಚಿನ್ "ಕ:" (೩-೨-೧೦೨) । "ಯ ಯೋಗಮುಖೇನ ಪಾಲಿತಾ ನಗರೀ ಮಜ್ಜುರಸೌ ಪರಾಜಿತಾ" ನೆಪಂ ೨-೭೩ । (ಪುಂ) 2. ಕಾಪಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ವ್ಯಕ್ತಿ, ಕಾರಿದ.

ಪಾಲಿತ್ಯ ಹಾಲಿತ್ಯ (ನಂ) ಕೂದಲು ನಯವಾದುದು, ಮುಚ್ಚಿ ನಯ ಕೂದಲು ಬೆಚ್ಚುಗಾರವಾದುದು. ಪಾಲಿತ್ಯ ಸ್ವಾರ್ಥ: "ಪಲ್" (೪-೧-೧೨೪) ।

ಪಾಲಿನ್ ಹಾಲಿನ್ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಿಸುವವನು, ಕಾಪಾಡುವವನು. ಪಾಲಯತಿ—ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಚಿನ್ "ಚಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) ।

ಪಾಲಿಂದಿ ಹಾಲಿಂದಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಿವಿಯ ಕಿವಿ ಮಂಡ. ಪಾಲಯತಿ—ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಚಿನ್ "ಕಿಂದಿನ್" ಬಾಹುಂ । "ಸಾಮಾಪಾಲಿಂದಿ ತು ಸುಪೇಷಿಕಾ" ಯಮಂ ।

ಪಾವಕ ಹಾವಕ (ಪುಂ) 1. ಆಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಪುನಾತಿ—ಪೂ (ಪವನ) "ಪ್ವ" (೩-೧-೧೩೩) । "ವಿಹಾಯ ಕ್ಷಮೀಪತಿ-ಕಸ್ಯ ಕಾಮುಕಂ ಬಟಾಪರ: ಸನ್ ಜ್ಞುಧಿಹ ಪಾವಕಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೪೪ । 2. ಚಿತ್ರವೃಕ್ಷ, ಚಿತ್ರಮೂಲದ ಗಿಡ.

3. ವಿದ್ಯುಕ್ತವೆ ಆಗ್ನಿ, ಮುಜೆವ ಆಗ್ನಿ, ಸಿಡಿಲು. 4. ಸೂರ್ಯ, ಸದ್ವರ್ತನೆ, ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆ. 5. ನೆಲಗಿಡ. 6. ಮೂರು ಸುತ್ತು. 7. ಆಗ್ನಿ ದೇವತೆ. 8. ಗಿರು ಮರ. 9. ವಾಯುವಿಳುಗ. 10. ವರುಣ. "ಪಾವಕೋನಿ ಸಕಚಾರೆ ವಹಿಮನ್ಯೇ ಚ ಚಿತ್ರಕೇ । ಪಲ್ಯಾತಕೇ ವಿಡ್ವೇ" ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ) 11. ಪವಿತ್ರವಾಗಿ ಮಾಡುವವನು, ಶುದ್ಧ ಮಾಡುವವನು.

ಪಾವಕಾಶವ ಹಾವಕಾಶವ (ಪುಂ) ಪಾರ್ಶ್ವಿಕೆಯ, ಪಕ್ಕಾಗ, ಕುಮಾರಸ್ವಾಮಿ.

ಪಾವಕಿ ಹಾವಕಿ (ಪುಂ) ಪಾರ್ಶ್ವಿಕೆಯ, ಪಕ್ಕಾಗ, ಪಾವಕಸ್ವಾ-ಪತ್ಯಮ್ "ಃ" (೪-೧-೧೫) ।

ಪಾವನ ಹಾವನ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಪಾವಯತಿ ಪವನ—ಪೂ (ಪವನ) + ಚಿನ್ "ಪ್ವ:" (೩-೧-೧೩೪) । "ಪಾವನ: ಪಾವಯತೀಶ: ಪವನಂ ಸಂವತ: ಸದಾ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ: । "ಪಾವನ: ಸಂವತೋಕಾನಾಂ ತಮೇವ ಸಮನದನ" ರಾಮಾಂ । "ಪುನ-ಪವನಮತ್ರಾಪ: ಪವನ: ಪಾವನೋಜಿತ:" ವಿಂ ಸಂ । 2. ಅಧ್ಯಾಸ. 3. ರೋದಾವ, ತುರುಷ ದೇಶದ ವಾಸವಾದವು. 4. ಆಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 5. ಪಾದಮಾಸ ಮಹರ್ಷಿ. 6. ಹಳದಿ ಗಾಳದ ಸೊಪ್ಪು. (ನಂ) 7. ರುದ್ರಾಕ್ಷ. 8. ಪೆಟ್ಟು ಕೊಡು. 9. ಚಿತ್ರವೃಕ್ಷ, ಹರಕು ಗಿಡ. 10. ಜಲ, ನೀರು. 11. ಪಾಯುಶ್ಚಿತ್ರ. 12. ಗೋಮಯ, ಹಸುವಿನ ಸೊಡೆ. "ಪಾವನಂ ತು ಚಲೇ ಕೃತ್ವೇ ನಾ ವ್ಯಾಸೇ ಪಾವಕೇ ತ್ರಿಪು" ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ) 13. ಶುದ್ಧಮಾಡುವ, ಪವಿತ್ರಗೊಳಿಸುವ. "ಪಾದಾಸ್ತಾಮಸಿತೋ ನಿಷಣ್ಣಹರಿಷಾ ಪೋರೀಪುರೋ: ಪಾವನಾ:" ಶಾಕುಂ ೬-೧೦ । 14. ಪವಿತ್ರವಾದ, ಪರಿಶುದ್ಧವಾದ. "ನವೋದಾಮ್ಯಂತರಸಮೃತ್ತಾನಲಂ ತಪೋವನಂ ತನ್ನ-ವಶುವ ಪಾವನಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೧೦ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾವನಿ ಹಾವನಿ. ಕರಂ "ಪ್ವ" (೩-೧-೧೩೩) । "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫) । 15. ಅಳತೆ ಗಿಡ. 16. ಹಸಿ, ಅಳಕು. 17. ಗೋಮಯ. 18. ತುರಿ.

ಪಾವನಪ್ವನಿ ಹಾವನಪ್ವನಿ (ಪುಂ) 1. ಕಂಠ. ಪಾವನೋ ಪ್ವನಿರಸ್ಯ । (ವಿಂ) 2. ಪವಿತ್ರ ಶುದ್ಧವಾದ ಕೂದಿ.

ಪಾಶ ಹಾಶ (ಪುಂ) 1. ರಜ್ಜು, ಹಗ್ಗ. ಪಶ್ಯತೇ ಬಂಧನೇನ—ಪಶ (ಬಂಧನ) ಕರಂ "ಪಶ್" (೩-೧-೧೨೧) । 2. ಬಂಧನ, ಹೆಚ್ಚು. "ಪಾದಾಕೃಷ್ಣವತವಿವರಪಾಶಹಸಂವಾತಪಾಶ:" ಶಾಕುಂ ೧-೨೯ । 3. ವರುಣನ ಆಯುಧ. "ಪಿ ಚಾಪಮರಿಡುರ್ವಾರ: ಪಾಶೋ ಪಾಶ: ಪ್ರವೇಶತ: । ಮನ್ವೇಷ ಹೃದಯೀಸ್ಯ ಪಶಿನೋ ದೇವ-ಮಾಪಿತ:" ಕುಮಾಂ ೨-೨೧ । 4. ಮೃಗ ಪಕ್ಷಿ ಮೊದಲಾದವು.







“ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪) 2. ಮೂತ್ರ ರೋಗವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ ಒಂದು ಮೂಲಿಕೆ. “ಗಿಣಿ:” (೩-೧-೧೩೪) 1. -ಮೇದಿನ್ -ಫೇದಿನ್.

ಪಿಕ್ ಪಿಕ್ (ಪುಂ) ಕೋಗಿಲೆ. ಅಪಿ ಕಾಯತಿ - ಕೆ (ಶಬ್ದ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೬) 1. “ವಷ್ಟಿ ಭಾಗುರಿ:” ಇತಿ ಅಪೇರಕಾರಲೋಪ: 1. “ಪಿಕಾಕ್ಷೇನೇ ಶೃಣ್ವತಿ ಭೃಗುಹೃತೇದೇಶಾಮುದಾಚ್ಛೇದನೇ ವಿಯೋಗಿನಾಮ್” ನೆಪಂ ೧-೮೮. ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಹೀಪ್” (೪-೧-೬೩) 1. -ಕೊ -ಕೇ.

ಪಿಕ್‌ಬನ್ಧು ಪಿಕ್‌ಬನ್ಧು (ಪುಂ) ಚೂತ ವೃಕ್ಷ, ಮಾವಿನ ಮರ. ಪಿಕ್‌ಸ್ಯ ಬನ್ಧು: 1. “ಪಿಕ್‌ಬನ್ಧುಸ್ತು ಚೂತ: ಸ್ಯಾತ್ ಸ್ತ್ರೀಪ್ರಿಯ: ಪಟಪದಾತಿಶಿ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1.

ಪಿಕಾಕ್ಷ ಪಿಕ್‌ಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಕಪಿಲೆ ಹಿಟ್ಟು ಎಂಬ ಒಂದು ಔಷಧ. (ವಿಂ) 2. ಕೋಗಿಲೆಯಂತೆ ಕೆಂಪು ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳವನು.

ಪಿಕಾನಂದ ಪಿಕ್‌ನಂದ (ಪುಂ) ವಸಂತ ಋತು. ಪಿಕ್‌ಮಾನಂದಯತಿ - ಆ + ಟು ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) + ಗಿಚ್ “ಅಣ್” (೩-೨-೧) 1.

ಪಿಕ್‌ಕ್ಷಣ ಪಿಕ್‌ಕ್ಷಣ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೋಗಿಲೆಯ ಕಣ್ಣುಗಳಂತೆ ಕೆಂಪು ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ ಹೆಣ್ಣು. ಪಿಕ್‌ಸ್ಯೇವ ಲಕ್ಷಣಂ ಯಸ್ಯಾ: 1.

ಪಿಕ್‌ಕ ಪಿಕ್‌ಕ (ಪುಂ) 1. ಅನೆಯ ಮರಿ. 2. ಪ್ರಾಯದ ಅನೆ.

ಪಿಕ್ಲ ಪಿಂಗ (ಪುಂ) 1. ಪಿಂಗಲ ವರ್ಣ, ಕಂದು ಹಳದಿ ಬಣ್ಣ. ಪಿಜಿ (ವರ್ಣ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) 1. “ಶಕ್ಷಾಂತರಬಾತಿ ವಲೋಚನಂ ಯದಂತನಿವಿಷ್ಟಾಮಲಪಿಕ್ಲತಾರಮ್” ಕುಮಾಂ ೭-೩೩. 2. ಮೂಷಿಕ. ಇಲಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕ್ಷಾ -ಕ್ಷಾ. 3. ಗೋರೋಚನ. 4. ಇಂಗು. 5. ಪಾರ್ವತಿ. 6. ಅರಿಶಿನ. -ಕ್ಷಿ -ಕ್ಷಿ. 7. ಶಮೀವೃಕ್ಷ. (ನಂ) 8. ಮರಿ, ಶಾವಕ. “ಪಿಕ್ಲಿ ಶಮ್ಯಾ ಪಿಕ್ಲಾ ಹಿಡ್‌ಗುನಾಡಯೋರೋಚನೋಮಯೋ: 1. ಪಿಕ್ಲ ಬಾಲಕೇ ಪಿಕ್ಲೇ” ಹೇಮಂ 1. “ಪಿಕ್ಲಿ ಶಮ್ಯಾ ಪಿಕ್ಲೇ ನಾ” ಮೇದಿಂ 1. 9. ಕಂದು ಹಳದಿ ಬಣ್ಣದ.

ಪಿಕ್ಲಜಟ ಪಿಂಗಜಟ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಪಿಕ್ಲಾ ಜಟಾ ಅಸ್ಯ 1.

ಪಿಕ್ಲಲ ಪಿಂಗಲ (ಪುಂ) 1. ಕಂದು ಹಳದಿ ಬಣ್ಣ. ಪಿಕ್ಲಜತಿ - ಪಿಜಿ (ವರ್ಣ) “ಕಲಚ್” (೩-೧-೧೦೬) 1. 2. ರುದ್ರ. 3. ಸೂರ್ಯನ ಪಾರ್ಶ್ವದಲ್ಲಿರುವ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ. 4. ಒಂದು ಸರ್ಪ. 5. ಕುಬೇರನ ನವನಿಧಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. 6. ಅಗ್ನಿ. 7. ಕಪಿ. 8. ಪಿಂಗಲಾಚಾರ್ಯರು, ಛಂದ: ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಬರೆದ ಒಬ್ಬ ಮುನಿ. “ಪಿಕ್ಲಲಾದಿಭಿರಾಚಾರ್ಯ-

ಯದುಕ್ತಂ ಲೌಕಿಕಂ ದ್ವಿಧಾ 1. ಮಾತೃವರ್ಣವಿಭೇದೇನ ಚಂದಸ್ತದಿಹ ಕಥ್ಯತೇ” ವೃಂ 1. (ವಿಂ) 9. ಕಂದು ಹಳದಿ ಬಣ್ಣದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ -ಲಾ. 10. ಕುಮುದದಿಗ್ಗಜದ ಪತ್ನಿ. 11. ಒಬ್ಬ ವೇಶ್ಯ. 12. ದೇಹದೊಳಗಿನ ಒಂದು ನಾಡಿ. “ಪಿಕ್ಲಲ: ಕಪಿಲೇ ವಹ್ನಿ ಸ್ತೇರ್ಕಪರಿಪಾಶ್ವಕೇ 1. ಕಪಿ ಮುನೌ ನಿಧೇಭೇದೇ ಪಿಕ್ಲಲಾ ಕುಮುದಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” ಹೇಮಂ 1. ಪಿಂಗಲಾ ನಾಡಿಯು ದೇಹದಲ್ಲಿರುವ ಪ್ರಧಾನವಾದ ಹತ್ತು ನಾಡಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. (1) ಇಡಾ (2) ಪಿಕ್ಲಲಾ (3) ಸುಷುಮ್ನಾ (4) ಗಾಂಧಾರಿ (5) ಹಸ್ತಿಜಿಹ್ವಾ (6) ಪೂಷಾ (7) ಯಶಸ್ವಿನಿ (8) ಅಲಮ್ಬುಷಾ (9) ಕುಹು: ಮತ್ತು (10) ಶಕ್ಷಿನಿ ಇವು ಹತ್ತು ಪ್ರಧಾನನಾಡಿಗಳು. “ಪ್ರಧಾನಾ: ಪ್ರಾಣವಾಹಿನ್ಯೋ ಭೂಯಸ್ತತ್ರ ದಶ ಸ್ಮೃತಾ: 1. ಇಡಾ ಚ ಪಿಕ್ಲಲಾ ಚೈವ ಸುಷುಮ್ನಾ ಚ ತೃತೀಯಿಕಾ 1. ಗಾಂಧಾರಿ ಹಸ್ತಿಜಿಹ್ವಾ ಚ ಪೂಷಾ ಚೈವ ಯಶಸ್ವಿನಿ 1. ಅಲಮ್ಬುಷಾ ಕುಹುಶ್ಚೈವ ಶಕ್ಷಿನಿ ಚ ದಶ ಸ್ಮೃತಾ:” 1. ದೇಹದೊಳಗೆ ನಾಭಿಕಮಲವು ದಶನಾಡ್ಯಾತ್ಮಕವಾಗಿರುವುದು. ಇಡಾ ಮತ್ತು ಪಿಂಗಲಾ ನಾಡಿಗಳ ಮಧ್ಯೆ ದಲ್ಲಿ ಸುಷುಮ್ನಾ ನಾಡಿಯಿರುವುದು. “ಏವಂ ನಾಭೀಮಯಂ ಚಕ್ರಂ ವಿಜ್ಞೇಯಂ ಶಕ್ತಿಚಕ್ರಕೇ 1. ಇಡಾಯಾ: ಪಿಕ್ಲಲಾಯಾಶ್ಚ ಮಧ್ಯೇ ಯಾ ಸಾ ಸುಷುಮ್ನಿಕಾ” 1. ಬ್ರಹ್ಮವಿಷ್ಣುಶಿವಾತ್ಮಕವಾಗಿರುವ ಈ ನಾಡಿಯು ಸತ್ತ್ವರಜಸ್ಸಮೋಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು. “ಇಯಂ ಚ ತ್ರಿಗುಣಾ ಜ್ಞೇಯಾ ಬ್ರಹ್ಮವಿಷ್ಣುಶಿವಾತ್ಮಿಕಾ”

ಪಿಕ್ಲಲಲೋಹ ಪಿಂಗಲಲೋಹ (ನಂ) ಹಿತ್ತಾಳೆ.

ಪಿಕ್ಲಲಿಕಾ ಪಿಂಗಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಕಪಕ್ಷಿ.

ಪಿಕ್ಲಸಾರ ಪಿಂಗಸಾರ (ಪುಂ) ಹರಿದಳ. ಪಿಕ್ಲಮೇವ ಸಾರೋಜ್ಯ 1.

ಪಿಕ್ಲಸ್ಫಟಿಕ ಪಿಂಗಸ್ಫಟಿಕ (ಪುಂ) ಗೋಮೇದಕ ಮಣ.

ಪಿಕ್ಲ ಪಿಂಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) “ಪಿಕ್ಲ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಪಿಕ್ಲಕ್ಷ ಪಿಂಗಾಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಪಿಕ್ಲೇ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯ 1. (ವಿಂ) 2. ಹಳದಿ ಬಣ್ಣದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ.

ಪಿಕ್ಲಿ ಪಿಂಗೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಮೀವೃಕ್ಷ.

ಪಿಕ್ಲಕ್ಷಣ ಪಿಂಗೀಕ್ಷಣ (ಪುಂ) ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಮಹಾದೇವ.

ಪಿಚ್ಛ ಪಿಚ್ಛಂಡ (ಪುಂ) 1. ಉದರ, ಹೊಟ್ಟೆ. ಅಪಿ ಚಮತ್ಯಸ್ಯಮ್ - ಚಮು (ಅದನೆ) “ಹ:” (೩-೧-೧೧೧) 1. “ವಷ್ಟಿ ಭಾಗುರೀರಲೋಪಮವಾಪ್ಯೋರೂಪಸರ್ಗಯೋ:” ಇತ್ಯಕಾರಲೋಪ: 1. 2. ಪಶುವಿನ ಅವಯವ. “ಪಿಚ್ಛಂಡ ಉದರೇ ಪಶೋರವಯವೇ ಪುಮಾನ್” ಮೇದಿಂ 1.



ಪಿವಾಡಕ ವಿಷಂಡಕ (ವಿಂ) ತನ್ನ ಹೊಟ್ಟೆಯನ್ನು ತುಂಬಿ  
ಹೊಳ್ಳುವವನು, ಇತರ ಸಂಪಾದನೆಯಿಂದ ಜೀವಿಸು  
ವವನು, ಸ್ವಾರ್ಥಿವರು. ಪಿವಾಡ ಕೃತ: "ಕನ್"  
(೪-೨-೬೪) ।

पिचण्डिल पिचंडी (वि०) दंड कर्त्तव्यम्  
 यम् पिचण्ड वा "इलच्" (५-२-११०)। पञ्च  
 इतिना मत्तु च। इति—पिचण्डो (न), ल्—  
 पिचण्डिकः, मत्तु—पिचण्डवान्।

**പിന്തുടർച്ച (പു.) കട്ടിയുണ്ട്.**

पिचु पिछु (पुं०) 1. कवचम्, कच्छम्, हुण्डम् (पाके)  
 “उः” बाहु० । पृषो० । 2. ऊनम् विधु कवचं रक्षा०  
 3. ऊनम् धातुः । 4. ऊनम् कच्छं, कवचम् अण्  
 मसकृत् लोट्, 1/4 डल । 5. ऊनम् अण् ।  
 “पिचुर्ना कृष्णभेदे च कश्चै त्रिलोचनान्तरे” मेदि० ।

ಪಿಚ್ಛಮದ ಪಿಚ್ಛಮಂಥ (ಗಂ.) ಪಿಚ್ಛಮಂಥ. ಪಿಚ್ಛಮಂಥ  
 ಮಂದಪ್ರತಿ—ಮಂದ + ಪಿಚ್ಛ "ವಚ್" (೩-೨) ।

पिचुमर्दे पिचुमर्द (पुं०) धीरान् मरु पिचु  
मर्दयति — मृद (श्लोदे) + पिच् "क्" (३-२१) ।  
"सायं कथंचिद्विज्ञितैः पिचुमर्दपत्रैः" भाष० ५-६६।

पिचुल ઠમ્ભ (પં.) 1. ઠમ્ભાં 2. ઠમ્ભાડ.  
 પિચુ નૂલં સત્તિ—ભા (વાચને) “ક” (૩-૨-૩)।  
 3. ઠમ્ભાડાં ઠાડ. “પિચુભો શ્વાનુકેષ્પિ સ્વાદિન્વલે  
 વલવાયસે” મેદિ.।

पिचवट षष्ठ्युक्ति (पुं०) 1. बटवट, बटवट नैवट,  
 टैवट, पिचव (कुट्टने) "बटव" (उ० ४-८१) ।  
 (न०) 2. बटवट, बटवट 3. बटवट "पिचवटो नेत्रसेमे  
 स्वात् क्लीबं सीसकरङ्गयोः" मेदि० ।

पिच्छ भिक्षु (पुं०) 1. मलिनगरी. 2. मलिन वृक्षः.  
 पिच्छ (कुट्टने) "बन्" (३-१-१३४)। "समयलघु-  
 निवृत्तिपिच्छदाम्नः शिखरशिखाः त्रिसिक्केसरानमृष्य"  
 माष० ४५०। (पुं०) 3. बाल. (स्त्री०) - बाल-  
 -क्या. 4. राशि. गुण्य. 5. बालगण्ड मयद  
 लोभ. 6. कंदुर्गुण कालिन् रक्षण. 7. समुद्र.  
 8. मेष, बर. 9. मेष, नाल. 10. बाल  
 गण्ड. 11. लघुद क. 12. कालिन् विष् "पिच्छ  
 पुन्यच्छटा कोत्रमोचात्रात्मनिवेष्यके। यक्षान्भूतगण्डे च  
 पङ्क्त्यावत्तपदायये। स्त्रियां पुंसि तु लङ्गुले न द्वयोर्वहं  
 चटयोः" मेदि०।

ಪಿತ್ತಲಾಣ ಪಿಪ್ಪಲಾಣ (ಪಂ) ವೈನಪುಕ್ಕ, ಡೇಗೆ, ಗಡಗ.

ಪಿಂಚಿತ ಪಿಚ್ಚಿ (ಪುಂ) 1. ಕನ್ನಡ ಹೆಸರು. 2. ಸಾಂಪ್ರದಾಯಿಕ ಹೆಸರು. 3. ಪಿಂಚಾ "ಇಲಾ" (೪-೨-೧೦೦)। (ವಿಂ) 3. ಕೈಯಿಂದ ಹಾಕುವ, ಬಿಡುವ ಕೂಡಿದೆ. 4. ಹೆಸರಿನಿಂದ ಕೂಡಿದೆ. "ತರುಣ ಸರ್ವಪನ್ನಾಕಂ ನವೋದನಂ ಪಿಂಚಿತಾನಿ ಚ ದಧೌನಿ। ಅಲ್ಪವ್ಯಯೇನ ಸುಂದರೀ ಶಾಂಭವನೋ ಮೃಷ್ಟಮಸ್ತಾತಿ" ವೃಂ ೧೦। 5. ತಿಳಿಯುವ ಕೂಡಿದೆ. 6. ಹೆಸರಿನಿಂದ. "ಪನ್ನಾಂಬುನಾ ರಾಜಪತ್ನೀ ಹಿ ಪಿಂಚಿತೇ ಕ್ವಚಿದ್ಬುಧೇರಪ್ಯಪಥೇನ ಮಮತೇ" ನೆಪಂ ೧-೨೬। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -೨೨-೨೩. 7. ಅನುಗತ. 8. ಬಿಡುವ ಕೂಡಿದೆ. 9. ಕೊಡುವ ಕೂಡಿದೆ. 10. ಅನುಗತ.

પિચ્છ મંથ (વ.) “પિચ્છ” શબ્દ ઉદ્ભ. પિચ્છ  
પથો. ।

ಪಿತ್ತ ಪಿಂಜ (ಕುಂ) 1. ಪಂದ್ರ. 2. ಕರ್ಪೂರ. 3. ವಧ. ಕೊಲ್ಲುವುದು. ಪಿವಿ (ಹಿಸಾಮ್) + ಪಿನ್ "ವನ್" (3-3-46)। (ನಂ) 4. ಬಲ, ಹತ್ತಿ. (ವಿಂ) 5. ಹಸದಿ ಬಣ್ಣ. 6. ಕಸವಣಗೊಂಡ, ವೆಮ್ಮದಿಯಿಲ್ಲದ. (ಸ್ವೀಂ) ಪಿತ್ತಾ ಪಿಂಜಾ. 7. ತೂಲ, ಹತ್ತಿ. 8. ಹಂದ್ರ, ಅರಿವಿನ. 9. ಹಿಂಸೆ 10. ರಾಶಿ, ಗುಂಪು.

పిఠాబట్ట మింజుట (౪౦) నోక్రమల, కణ్ణవడిలో, కణ్ణవ  
పిఠురు.

ಪಿತ್ತನ ಪಿಂಜನ (ನಂ) 1. ಹತ್ತಿಯನ್ನು ಬಿಡಿಸಿ ಶುದ್ಧ  
ಮಾಡುವ (ಬಿಲ್ಲಿನ ಅಂಚಿನ) ಯಂತ್ರ ಪಿವಿ (ಹಿಷಾ-  
ಯ್ಯ) ಕರಂ "ಲ್ಹಡ್" (೩-೩-೧೧೦) 2. ಹತ್ತಿಯನ್ನು  
ಬಿಡಿಸಿ ಶುದ್ಧ ಮಾಡುವುದು.

ಪಿತ್ತರ ಮಿಂಚರ (ನಂ) 1. ಹೃದಯ. 2. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ.  
 ಪಿತ್ತಂ ಪಿತ್ತವಶಂ ರಸಿ—ರ (ದಾನ) "ಕ:" (೩-೨-೩).  
 3. ಪುಷ್ಪ, ಗಂಧ. (ಪುಂ) 4. ಕಂದುಹಸಿ ಬಣ್ಣ.  
 5. ಹಸಿ ಬಣ್ಣ. (ನಿಂ) 6. ಹಸಿ ಬಣ್ಣ. 7. ಕಂದು  
 ಹಸಿ ಬಣ್ಣ.

ಪಿಞ್ಚಲ ಮಂಜಲ (೪೦) 1. ಬಹುಮಾನ ಹರಿಯುವ  
 ಧೂಳಿ. ಪಿಜಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್)+ಪಿಜ್ "ಕಲಜ್" ಬಾಹ್ಯಂ।  
 (ನಂ) 2. ಹರಿದಾಸ. 3. ದರ್ಶಿ ಹುಲ್ಲು.

ਪਿੰਡਵਾਲ ਮੰਡਲ (੨੦) ਸ਼੍ਰੇਣੀ, ਘੋੜ.

ಪಿಞ್ಜಿಕಾ ಪಿಂಜಿಕಾ (ಸ್ತಂ.) ದಾರವನ್ನು ಎಳೆಯಲು  
ಮಾಡಿರುವ ಹತ್ತಿಯ ಪಿಂಜಿ. ಪಿವಿ (ಪಾಪಾರ್ವಿ) + ನಿನ್  
“ಪ್ವುತ್” (೩-೧-೧೩೩)। “ಪಿಞ್ಜಿಕಾ ತುಲನಾಲಿಕಾ”  
ವಿಕಾಢಂ।



ಪಿಂಡು ಪಿಂಡು (ಪುಂ) ಕರ್ಣಮಲ, ಕಿವಿಯ ಗುಳ್ಳೆ.

ಪಿಜಿ (ಹಿಸಾಪಾ) "ಕಪ್" ಬಾಹುಂ.

ಪಿಂಡೆ ಪಿಂಡೆ (ಪುಂ) ಪೆತ್ತಮಲ, ಕಣ್ಣಿನ ಕಿವಿಯ.

ಪಿಂಡೆ ಪುಂ.

ಪಿಂಡೋಲಾ ಪಿಂಡೋಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಂಗೆಲೆಯ ಕು.

ಪಿಡ ಪಿಡ (ಪುಂ) 1. ಪೆಟ್ಟಿಗೆ 2. ಬುಟ್ಟಿ (ನಂ) 3.

ಗೃಹ, ಮನೆ

ಪಿಡಕ ಪಿಡಕ (ಪುಂ) 1. ಪೆಟ್ಟಿಗೆ 2. ಬಿದಿಯ ಮೊದ

ಲಾದವುಗಳಿಂದ ಮಾಡಿದ ಬುಟ್ಟಿ ಮಕ್ಕರಿ ಮುಂತಾದವು.

ಪೆಡತಿ—ಪಿಡ (ಸಂಭಾತೆ) "ಕಪ್" (ನಂ ೨-೨೨)।

(ಪುಂ) ಪೆಡಿಂ. (ಪಿಂ) 3. ಹೊಪ್ಪೆ, ಹೊಪ್ಪೆ. ಕಪಂ.

"ಪಿಡಸೋಪಿರ ಪಿಡಕ: ಸಂಕುತ:".

ಪಿಡಕಾ ಪಿಡಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಿಡಕಾ ಸಮೂಹ, ಬುಟ್ಟಿ

ಗಳ ರಾಶಿ. ಪಿಡಕಾ ಸಮೂಹ: "ಕ:" (೪-೨-೪೯)।

ಪಿಡರ ಪಿಡರ (ಪುಂ) 1. ಮೃತಪಾತ್ರೆ, ಮಡಕೆ, ಅನ್ನ

ಬೇಯಿಸುವ ಮಡ್ಡಿನ ಪಾತ್ರೆ. ಪಿಡ (ಕಪ್) "ಕ:"

(೩-೧-೧೩೪)। ಪಿಡ ರಾತಿ—ರಾ (ದಾನೆ) "ಕ:"

(೩-೨-೩)। 2. ಮನೆಯ ಮಹಾದ್ವಾರದ ಹತ್ತಿರ

ನಿರ್ಮಿಸಿರುವ ಕಾವಲುಗಾರನ ಮನೆ (ನಂ) 3. ಕೊಪ್ಪಾರಿ

ಗಡ್ಡೆ. 4. ಮೊದಲು ಕಡೆಯುವ ಕೋಲು, ಮುತ್ತು.

"ಪಿಡರ: ಸ್ವಾತ್ವಾ ನಾ ಕಲಿಂ ಮಸ್ತಾಮನಾದಕಯೋ:" ಪೆಡಿಂ.

(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರೋ-ರೇ. 5. ಅನ್ನ ಬೇಯಿಸುವ ಪಾತ್ರೆ.

ಪಿಡಕ ಪಿಡಕ (ಪುಂ) 1. ಸ್ಥೂಲಕ, ಹೊಪ್ಪೆ. ಪಿಡಕತಿ—

ಪಿಡ (ಕವಗಾಹನೆ) + ಪಿಕ್ "ಪುಕ್" (೩-೧-೧೩೩)।

(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ-ಕಾ. 2. ಮೊದಲ, ಸಣ್ಣ ಗುಳ್ಳೆ.

3. ಕುರು, ಗುಳ್ಳೆ.

ಪಿಡ ಪಿಡ (ಪುಂ) 1. ಬೋಳ, ಬಾಣಂತಿ ಬೋಳ.

2. ಲಾಮಂಡದ ಬೇರು, ಉಡೇರ. ಪಿಡಕತಿ—ಪಿಡಿ

(ಸಂಭಾತೆ) "ಕಪ್" (೩-೧-೧೩೪)। 3. ದೇಹ, ಕಿರೀ.

"ಏಕಾಂತವಿಷ್ವಸಿಷು ಮದ್ವಿಧಾನಾಂ ಪಿಡೇಷನಾಸ್ವಾ ಸತು

ಖೌತಿಕಾನಾಮ್" ರಘುಂ ೨-೪೭। 4. ಕೂಳ, ಗೂಳ.

ಅಹಾರದ ತುತ್ತು. "ಸ ನ್ಯಸ್ತಸಸ್ತೋ ಹರವೇ ಸ್ವದೇಹಪಾನಾಕ್

ಪಿಡಮಿವಾಮಿಷಸ್ಯ" ರಘುಂ ೨-೪೯। 5. ಅಹಾರ, ಉಡ.

"ಕ: ಕೌಪಿ ಕಾಶೋ ಮವತ್ಯಾ: ಪಿಡಪಾತವೇಶಾಂ ವಿಸೃಜ್ಯ

ಗಾಲ್ತೀಮನುಬಂತಮಾನಾಃ:" ಗಾಲ್ತೀಂ ೩। 6. ದೇಹದ

ಒಂದು ಭಾಗ, ಕಣ್ಣಿನ ಹಿಂಭಾಗ, ಕಾಲ್ಕಿಲದ ಮೀನ

ಮಂಡ ಭಾಗ. 7. ಮನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. 8. ಒಂದು

ಗೋಳ, ಉಡೆ, ದುಂಡಾದ ವಸ್ತು. 9. ರಾಶಿ, ಗುಂಪು.

"ಪ್ರಶಾಂತಿ ಗೀತಾ ಹಿಮಪಿಂಡಾಪುರಾ:" ಪಾಪಂ ೧೨-೬೮।

10. ಲೋಬಾ. 11. ಜಪಾಪುಷ್ಪ, ದಾಸಿವಾಳದ ಹೂವು.

12. ಪಿಕ್ಕಿಗಳಿಗೆ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಕೊಡುವ ಅನ್ನದ ಉಂಡ.

ಪಿಕ್ಕಿಗಳ ಪಿಕ್ಕಿಗಳ ಅನ್ನವು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಮಾಡುವ

ಹಿಂಡಾ. "ನ್ಯುಪ ಪಿಂಡಾಂತರತಾಸ್ತು ಪ್ರಶತೋ ವಿಧಿ-

ಪುಂಕಮ್। ತೇಷು ದರ್ಶಯಂತಿ ಹಸ್ತಂ ನಿಮ್ಜಾಲ್ಯೇಷಮಾಪಿನಮ್"

ಮನುಂ ೩-೨೧೬। 13. ಅನೆಯ ಕುಂಭಾಕ್ಷ. 14. ಮುಂಜೆ.

(ನಂ) 15. ಬೇವನೋವಾಯ. 16. ಸೈವ್ಯ. 17. ಲೋಹ.

ಕದ್ದಿಣ್ಣ. (ಪಿಂ) 18. ಸಾಂದ್ರವಾದ, ದಟ್ಟವಾದ.

19. ಭವವಾದ, ಗಟ್ಟಿಯಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಿಂಡೋ ಪಿಂಡೋ.

20. ಸೋರೆಗಡ್ಡೆ, ಸಿಹಿಸೋರೆ. 21. ವಿಜ್ಞಾನದ ಮರ.

22. ಅಶೋಕವೃಕ್ಷ. 23. ಮಂಗಾರಗಡ್ಡೆ. 24. ಕಣ್ಣಿನ

ಹಿಂಭಾಗ. "ಪಿಂಡೋ ಬೋಲೆ ಬಲೆ ಸಾಂದ್ರೇ ದೇಹಾಪಾರೇಕದೇಶಯೋ:।

ದೇಹಾಪಾರೇ ನಿವಾಪೇ ಚ ಬೋಲಿಸಿಹಕಬೋರಪಿ। ಬೋಲಿಸಿಹೇ ಚ

ಪುಂಸಿ ಸ್ವಾತ್ ಕಲಿಂವಮಾಬಿವನಾಪಸೋ:। ಪಿಂಡೋ ತು ಪಿಂಡೋತಪರೇ-

ಕಾಬಸವರೇದಯೋ:" ಪೆಡಿಂ। "ಪಿಂಡಂ ತು ಕೇಮಂಕದೇಶೋ

ಜೀವನಾಪಸೋ:। ಬಲೆ ಸಾಂದ್ರೇ ಪಿಂಡಕಲಾಬಸವರೇದಯೋ:

ಚ" ಹೇಮಂ। ಈ ರೀತಿ ಕೋಶಗಳಲ್ಲಿ ಭಿನ್ನ ರೀತಿಗಳಲ್ಲಿ

ಉಕ್ತವಾಗಿವೆ.

ಪಿಡಕ ಪಿಡಕ (ಪುಂ) 1. ಲೋಬಾ, ಒಂದು ವಾಸವಾ

ದ್ರವ್ಯ. 2. ಬೋಳ, ಬಾಣಂತಿ ಬೋಳ. 3. ಗೋಳ,

ದುಂಡಾದ ವಸ್ತು. 4. ಕೂಳ, ಗೂಳ. (ಪುಂ) 5.

ಪಿಂಡಾ. 6. ಅಲೂಗಡ್ಡೆ.

ಪಿಡಕಾ ಪಿಡಕಾ (ಪುಂ) ಅಲೂಗಡ್ಡೆ. ಪಿಡಕಾ:

ಕದ:

ಪಿಡಕಾ ಪಿಡಕಾ (ಪುಂ) ಮದುವಾಗಿ ಮುದ್ದು

ಯಾಗಿರುವ ವಿಜ್ಞಾನ. ಪಿಡಕಾ ಪಿಡಕಾ:

ಪಿಡಕಾ ಪಿಡಕಾ (ಪುಂ) ಮದುವಾಗಿ ಮುದ್ದು

ಯಾಗಿರುವ ವಿಜ್ಞಾನ. ಪಿಡಕಾ ಪಿಡಕಾ:

ಪಿಡಕಾ ಪಿಡಕಾ (ಪುಂ) ಮದುವಾಗಿ ಮುದ್ದು

ಯಾಗಿರುವ ವಿಜ್ಞಾನ. ಪಿಡಕಾ ಪಿಡಕಾ:

ಪಿಡಕಾ ಪಿಡಕಾ (ಪುಂ) ಮದುವಾಗಿ ಮುದ್ದು

ಯಾಗಿರುವ ವಿಜ್ಞಾನ. ಪಿಡಕಾ ಪಿಡಕಾ:

ಪಿಡಕಾ ಪಿಡಕಾ (ಪುಂ) ಮದುವಾಗಿ ಮುದ್ದು

ಯಾಗಿರುವ ವಿಜ್ಞಾನ. ಪಿಡಕಾ ಪಿಡಕಾ:

ಪಿಡಕಾ ಪಿಡಕಾ (ಪುಂ) ಮದುವಾಗಿ ಮುದ್ದು

ಯಾಗಿರುವ ವಿಜ್ಞಾನ. ಪಿಡಕಾ ಪಿಡಕಾ:

ಪಿಡಕಾ ಪಿಡಕಾ (ಪುಂ) ಮದುವಾಗಿ ಮುದ್ದು



ಪಿಂಡವಾತ್ ಪಿಂಡವಾತ್ಯ (ಪುಂ) "ಪಿಂಡ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ಪಿಂಡ ದದಾತಿ — ಡು ದಾತ್ (ದಾನೇ) "ತುತ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಪಿಂಡಪಾದ ಪಿಂಡಪಾದ (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. ಪಿಂಡ ಇವ ಪಾದೋಷ್ಯ |

ಪಿಂಡಪಿತೃಯಜ ಪಿಂಡಪಿತೃಯಜ್ಜ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ (ಸಪತ್ನೀಕ) ಗೃಹಸ್ಥನು ಮಾಡುವ ಪಿಂಡದಾನ ರೂಪವಾದ (ಪಿತೃ) ಯಜ್ಞ.

ಪಿಂಡಪುಷ್ಪ ಪಿಂಡಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಅಶೋಕ ವೃಕ್ಷ. ಪಿಂಡ ಇವ ಪುಷ್ಪ ಪುಷ್ಪಗುಚ್ಛೋ ಯಸ್ಯ | (ನಂ) 2. ಅಶೋಕ ಪುಷ್ಪ.

ಪಿಂಡಫಲಾ ಪಿಂಡಫಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಹಿಸೋರೆ.

ಪಿಂಡಬೀಜಕ ಪಿಂಡಬೀಜಕ (ಪುಂ) ಬೆಟ್ಟಗಣಗಿಲೆ ಗಿಡ.

ಪಿಂಡಮುಸ್ತಾ ಪಿಂಡಮುಸ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೊನ್ನಾರಿಯ ಒಂದು ಭೇದ.

ಪಿಂಡಮೂಲ ಪಿಂಡಮೂಲ (ನಂ) ಮೂಲಗಿಯ ಜಾತಿಗೆ ಸೇರಿದ ಕೆಂಪುಗಡ್ಡೆಯ ಒಂದು ಗಿಡ, ಕೆಂಪು ಮೂಲಗಿ.

ಪಿಂಡಲ ಪಿಂಡಲ (ಪುಂ) ಸೇತುವೆ.

ಪಿಂಡಸ ಪಿಂಡಸ (ಪುಂ) ಪರಾನ್ನದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು; ಭಿಕ್ಷುಕ.

ಪಿಂಡಾ ಪಿಂಡಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉಕ್ಕು. 2. ಕಸ್ತೂರಿ.

ಪಿಂಡಾತ ಪಿಂಡಾತ (ಪುಂ) ಲೋಬಾನ, ಒಂದು ವಾಸನಾ ದ್ರವ್ಯ.

ಪಿಂಡಾಭ್ರ ಪಿಂಡಾಭ್ರ (ನಂ) ಮೇಘದ ಜಲದಿಂದ ಉಂಟಾದ ಹಿಮದ ಗಡ್ಡೆ.

ಪಿಂಡಾಯಸ ಪಿಂಡಾಯಸ (ನಂ) ಉಕ್ಕು.

ಪಿಂಡಾರ ಪಿಂಡಾರ (ಪುಂ) 1. ಗೋಪಾಲಕ. 2. ಎಮ್ಮೆ ಗಳನ್ನು ಸಾಕುವವನು. 3. ದ್ರೂಮ, ಮರ. 4. ಕ್ಷಪಣಕ, ಬಾದ್ಧಸಂನ್ಯಾಸಿ. "ಪಿಂಡಾರ: ಕೃಷ್ಣಂ ಗೋಪಂ ಮಹಿಷಾರಕ್ಷಕಂ ದ್ವಮೇ" ಮೇದಿಂ |

ಪಿಂಡಾಲ್ ಪಿಂಡಾಲ್ (ಪುಂ) 1. ಅಲೂಗಡ್ಡೆ, ಪಿಂಡಾಕಾರದ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಗಡ್ಡೆ. ಪಿಂಡಾಕಾರ: ಬಾಲ್ಯ: | 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಅವ್ಯುತ್ಕೃಷ್ಟ.

ಪಿಂಡ ಪಿಂಡಿ, -ಪಿಂಡಿ-ಪಿಂಡಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಥದ ಚಕ್ರದ ನಾಭಿ, -ಚಕ್ರದ ತುಂಬು. 2. ಕಣಕಾಲಿನ ಹಿಂಭಾಗ. ಕಾಲ್ಪೀಲದ ಮೀನಖಂಡ ಭಾಗ. 3. ಪೀಠ. 4. ಅಶೋಕ ವೃಕ್ಷ. 5. ಸೋರೆಗಿಡ, ಸಿಹಿಸೋರೆ. 6. ದೇವರ ವಿಗ್ರಹದ ಪಾದಪೀಠ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:" | ಪಿಂಡಿಕಾ ಪಿಂಡಿಕಾ.

ಪಿಂಡಿತ ಪಿಂಡಿತ (ವಿಂ) 1. ಮುಂಡಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಗೋಳಾಕಾರವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪಿಂಡಿ (ಸಜ್ಜಾತೇ) "ಕ:" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಟ್ಟಾಗಿ ಸೇರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. "ಶ್ರುತಮಾರ್ಯಮ್ಯಾಂ ಭಗವತ್ಯಾ ದವನಮ್? | ಏಷ ಪಿಂಡಿತಾರ್ಥಂ ಉಪದೇಶದರ್ಶನೇನ ನಿರ್ಣಯ ಇತಿ" ಮಾಲಂ ೧ | 3. ಗುಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಎಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಲೆಕ್ಕ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. (ಪುಂ) 5. ಲೋಬಾನ, ಒಂದು ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯ.

ಪಿಂಡಿಲ ಪಿಂಡಿಲ (ಪುಂ) 1. ಸೇತುವೆ. (ವಿಂ) 2. ಗಣಕ, ಲೆಕ್ಕಾಚಾರ ಮಾಡುವವನು. 3. ಜನ್ಮಕಾಲದ ತಿಥಿ ನಕ್ಷತ್ರಾದಿಗಳ ಪ್ರಮಾಣಗಳನ್ನು ಲೆಕ್ಕಮಾಡಿ ನಿರ್ಣಯಿಸುವವನು. (ವಿಂ) 4. ಗಣಿತಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಪ್ರವೀಣನಾದವನು.

ಪಿಂಡೀಕೃತ ಪಿಂಡೀಕೃತ (ವಿಂ) ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಟ್ಟಾಗಿ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪಿಂಡೀತಕ ಪಿಂಡೀತಕ (ಪುಂ) 1. ಮಂಗಳರೆ ಗಿಡ. 2. ಸಂದೀ ಬಟ್ಟಲು ಗಿಡ.

ಪಿಂಡೀಮೃತ ಪಿಂಡೀಮೃತ (ವಿಂ) ಒಟ್ಟಾಗಿ ಸೇರಿರುವ, ಒಂದು ರಾಶಿಯಾಗಿರುವ.

ಪಿಂಡೀರ ಪಿಂಡೀರ (ಪುಂ) 1. ದಾಳಿಂಬೆ ಗಿಡ. ಪಿಂಡ ಪಿಂಡೀಕಾರಂ ಫಲಮೀರಯತಿ — ಲೀರ (ಗತೌ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) | 2. ಸಮುದ್ರದ ನೋರೆ. (ವಿಂ) 3. ತೇವವಿಲ್ಲದ, ನೀರಸ ವಾದ, ಒಣಗಿರುವ.

ಪಿಂಡೀಶೂರ ಪಿಂಡೀಶೂರ (ವಿಂ) ಉಂಟಾದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಶೂರನಾದ, ಉಂಟದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಪ್ರವೀಣನಾದ. ಪಿಂಡಿಚಾ ಪಿಂಡಿಚಾಪಾರ ಏವ ಶೂರ: (ನಾನ್ಯತ್ರ) | ತನ್ನ ಮನೆಯಲ್ಲಿದ್ದುಕೊಂಡು ಪ್ರತಾವವನ್ನು ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳುವ ಹೇಡಿಯ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಈ ಪದಪ್ರಯೋಗ. "ರಾಕ್ಷಸಾನ್ ವತ್ಯಜ್ಞೇಷು ಪಿಂಡೀಶೂರಾನ್ ನಿರಸ್ತವಾನ್" ಭಟಿಂ ೪-೮೪ |

ಪಿಂಡೋಲಿ ಪಿಂಡೋಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಚ್ಚಿಷ್ಟ, ಉಂಟಮಾಡಿ ಉಳಿದ ವಸ್ತು, ಉಂಡು ಮಿಕ್ಕಿದ್ದು.

ಪಿಷ್ಯಾಕ ಪಿಷ್ಯಾಕ (ಪುಂ) 1. ಎಳ್ಳು ಮೊದಲಾದ ಬೀಜ ಗಳಿಂದ ಎಣ್ಣೆ ತೆಗೆದಮೇಲೆ ಉಳಿಯುವ ಹಿಂಡಿ. ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರೇ) "ಆಕ:" (೩ಂ ೪-೧೪) | ನಿಪಾಂ | 2. ಇಂಗು. 3. ಕೇಸರಿ. 4. ಲೋಬಾನ. "ಪಿಷ್ಯಾಕೋಷ್ಠಿ ತಿಲಕಲ್ಕೇ ಹಿಡ್ಗುಬಾಹ್ಲಿಕಸಿಹ್ಲಕೇ" ಮೇದಿಂ |

ಪಿತಾಮಹ ಪಿತಾಮಹ (ಪುಂ) 1. ತಾತ, ತಂದೆಯ ತಂದೆ. ಪಿತು: ಪಿತಾ — ಪಿತು "ಪಿತಾಮಹ" (ವಾಂ ೪-೨-೩೬) | ಪಿತಾಮಹ ಪಿತು | ಪಿತ್ವಾತ್ ಗೌರಾಂ "ಪಿತ್" (೪-೧-೪೧)



ಪಿತಾಮಹಿ ಪಿತಾಮಹಿ. ಅಜ್ಜ, ತಂದೆಯ ತಾಯಿ.  
2. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಪಿತೃಣಾಂ ಮರೀಚ್ಯಾದೀನಾಂ ಪಿತು-  
ಗಣಾನಾಂ ಪಿತಾ. 3. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.

ಪತು ಪಿತ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಜನಕ, ತಂದೆ. ಪಾತಿ ರಕ್ಷತಿ — ಪಾ  
(ರಕ್ಷಣೆ) "ತುಚ್" (ತಂ ೨-೧೫). ನಿಪಾಂ. ತಂದೆ  
ಯಾದವನು ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಪೂಜ್ಯನು. ತಂದೆಯ ಅನುಗ್ರಹ  
ದಿಂದ ವಾತ್ಸಲ್ಯದಿಂದ ಪುತ್ರನಾದವನು ಪ್ರಪಂಚದಲ್ಲಿ ಸಕಲ  
ವ್ಯವಹಾರಗಳನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವನು. ತಂದೆಯು ಯಾವಾ  
ಗಲೂ ಪುತ್ರನ ರಕ್ಷಣೆಯೇ ಧೈಯವುಳ್ಳವನಾದುದರಿಂದ  
ಪಿತಾ ಎನಿಸಿಕೊಂಡನು. ಅದುದರಿಂದ ಪುತ್ರನಾದವನು  
ತಂದೆಯ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಪೂಜ್ಯ ಮನೋಭಾವವುಳ್ಳವನಾಗಿರ  
ಬೇಕು. "ಮಾನ್ಯಃ ಪೂಜ್ಯಃ ಸರ್ವೇಭ್ಯಃ ಸರ್ವೇಷಾಂ ಜನಕೋ ಭವೇತ್ |  
ಅಹೋ ತಸ್ಯ ಪ್ರಸಾದೇನ ಸರ್ವಾನ್ ಪಶ್ಯತಿ ಮಾನವಃ | ಜನಕೋ  
ಜನ್ಮದಾತಾ ಚ ರಕ್ಷಣಾಂ ಪಿತಾ ನೃಣಾಂ | ತಾತೋ ವಿಸ್ತೀರ್ಣ-  
ಕರಣಾತ್ ಕಲಯಾ ಸ ಪ್ರಜಾಪತಿಃ" | ತಂದೆಯು ಹನ್ನೊಂದು  
ಮಂದಿ ಗುರುಗಳ ಪಂಚೋತ್ತಮ್ಯಲ್ಲಿ ಸೇರಿದವನು.

ಹನ್ನೊಂದು ಮಂದಿ ಗುರುಗಳು: (1) ಉಪಾಧ್ಯಾಯ:  
(2) ಪಿತಾ (ಜನಕ ತಂದೆ) (3) ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಪಿತಾ (4) ಮಹೀಪತಿ:  
(5) ಮಾತುಲ: (ಸೋದರಮಾವ) (6) ಇವಶ್ವರ: (ಪತ್ನಿಯ  
ತಂದೆ) (7) ತಾತಾ (ಅಪತ್ನಿಯಲ್ಲಿ ರಕ್ಷಿಸಿದವನು)  
(8) ಮಾತಾಮಹ: (ತಾಯಿಯ ತಂದೆ) (9) ಪಿತಾಮಹ:  
(ತಂದೆಯ ತಂದೆ) (10) ಬಂಧು: ಮತ್ತು (11) ಜ್ಯೇಷ್ಠಪಿತೃಬ್ಯ:  
(ತಂದೆಯ ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರ) ಇವರೆಲ್ಲರಲ್ಲಿಯೂ  
ಗುರುತ್ವವನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ಜನಕ ತಂದೆಗಿಂತಲೂ  
ಮಂತ್ರೋಪದೇಶ ಮಾಡಿದ ಪಿತೃವಿನಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಗೌರವ  
ದಿಂದಿರಬೇಕು. "ಉತ್ಪಾದಕಬ್ರಹ್ಮದಾತೃಗೌರೀಯಾನ್ ಬ್ರಹ್ಮದ: ಪಿತಾ |  
ತಸ್ಮಾನ್ಮನ್ಯೇತ ಸತತಂ ಪಿತುರಪ್ಯಧಿಕಂ ಗುರ್ಮ್" ತನ್ಮಸಾಂ |

ಪಂಚ (ಐದು ಮಂದಿ) ಪಿತ್ಯಗಳು: (1) ಅಜ್ಞದಾತಾ  
(ಅನ್ನ ಹಾಕಿ ಪೋಷಿಸಿದವನು) (2) ಭಯತಾತಾ (ಭಯದಿಂದ  
ರಕ್ಷಿಸಿದವನು) (3) ವಿಜ್ಞಾಪ್ರದಾತಾ (ವಿದ್ಯೆ ಕಲಿಸಿದವನು)  
(4) ಜನಕ: (ಜನಕ ತಂದೆ) ಮತ್ತು (5) ಉಪನೇತಾ  
(ಬ್ರಹ್ಮೋಪದೇಶ ಮಾಡಿದವನು) ಇವರು ಪಂಚಪಿತ್ಯ  
ಗಳು.

ತಾಯಿಯೊಡನೆ ತಂದೆಯನ್ನೂ ಸೇರಿಸಿ ಹೇಳುವಾಗ  
ತಂದೆಯನ್ನು ಹೇಳುವ ಪಿತು ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಎಕಲ್ಪವಾಗಿ ಏಕಶೇಷ  
ವುಂಟಾಗಿ ಪಿತರೋ ಎಂದಾಗುವುದು. ಮಾತಾ ಚ ಪಿತಾ ಚ  
ಪಿತರೌ | ಮಾತಾಪಿತರೌ ಮಾತರಪಿತರೌ ಎಂದೂ ರೂಪವಾಗು  
ವುದು. (೧-೨-೭೦) ಮತ್ತು (೬-೩-೩೨) | "ಜಗತ:

ಪಿತರೌ ವಂದೇ ಪಾರ್ವತೀಪರಮೇಶ್ವರೌ" ರಘುಂ ೧-೧ | "ಪಿತು:  
ಪ್ರಯತ್ನಾತ್ ಸ ಸಮಗ್ರಸಂಪದಃ ಶುಭಃ ಶರೀರಾವಯವೈರ್ದಿನೇ ದಿನೇ |  
ಪುಪುಷ ವೃದ್ಧಿ ಹರಿದಶ್ವದೀಪಿತೇರನುಪ್ರವೇಶಾದಿವ ಬಾಲಚಂದ್ರಮಾಃ"  
ರಘುಂ ೩-೨೨ | (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 2. ವಂಶದ ಹಿರಿಯರು,  
ಪಿತಾಮಹ (ತಂದೆಯ ತಂದೆ), ಪ್ರ ಪಿತಾಮಹ (ತಂದೆಯ  
ತಾತ) ಮೊದಲಾದವರು. "ಶೃಣಾಭಿಧಾನಾತ್ ಸ್ವಯಮೇವ  
ಕೇವಲಂ ತದಾ ಪಿತೃಣಾಂ ಮುಮುಚೇ ಸ ಬಂಧನಾತ್" ರಘುಂ ೩-೨೦ |  
3. ಪಿತ್ಯದೇವತೆಗಳು. ಇವರು ದೇವತೆಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು  
ಗುಂಪಿನವರು. ಚಂದ್ರಲೋಕಕ್ಕೆ ಮೇಲೆ ಇವರು ವಾಸ  
ಮಾಡುವುದರಿಂದ ಆ ಲೋಕಕ್ಕೆ "ಪಿತ್ಯಲೋಕ" ಎಂದು  
ಹೆಸರು. "ಪಿತೃಲೋಕ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಪಿತೃಕ ಪಿತ್ಯಕ (ವಿಂ) ತಂದೆಯಿಂದ ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ, ತಂದೆಯ  
ಕ್ರಮದಿಂದ ಬಂದ. ಪಿತುರಾಗತಮ್ — ಪಿತೃಕಮ್ ಪೃಷಂ |  
"ಪೇತ್ರಂ ಚ ಪಿತೃಕಂ ಚಾಪಿ ಪಿತ್ರಂ ಚ ಪಿತುರಾಗತಮ್" |

ಪಿತೃಕಮನ್ ಪಿತ್ಯಕರ್ಮಣಿ, -ಕಾರ್ಯಮ್ -ಕಾರ್ಯಮ್  
(ನಂ) -ಕ್ರಿಯಾ -ಕ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುತ್ರನು ಪಿತ್ಯಗಳಿಗೆ  
ಮಾಡಬೇಕಾದ ಶ್ರಾದ್ಧ ತರ್ಪಣ ಮೊದಲಾದ ಕರ್ಮ.  
ಪಿತೃನುಹಿಸ್ಯ ಕ್ರಿಯಮಾಣಂ ಕರ್ಮ | "ಸ್ವಧಾಕಾರ: ಪರಾಹಾಶಿ:  
ಸರ್ವೇಷು ಪಿತೃಕಮಸ್ತು" ಮನುಂ ೩-೨೫೨ |

ಪಿತೃಕಲ್ಪ ಪಿತ್ಯಕಲ್ಪ (ವಿಂ) 1. ತಂದೆಗೆ ಸಮಾನನಾದ.  
ईषदून: ಪಿತಾ "ಕಲ್ಪ" (೪-೩-೬೭) | (ಪುಂ) 2.  
ಚತುರ್ಮುಖನ ಈಗ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ ತಿಂಗಳ ಮೂವತ್ತ  
ನೆಯ ದಿನವಾದ ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ.

ಪಿತೃಕುಲ್ಯಾ ಪಿತ್ಯಕುಲ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಲಯ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟಿ ಹರಿಯುವ ಒಂದು ನದಿ.

ಪಿತೃತಿಥಿ ಪಿತ್ಯತಿಥಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ.

ಪಿತೃತೀರ್ಥ ಪಿತ್ಯತೀರ್ಥ (ನಂ) 1. ಗಯಾಕ್ಷೇತ್ರ. ಪಿತೃಪ್ರಿಯ  
ತೀರ್ಥಮ್ | 2. ಅಂಗುಷ್ಠ ಮತ್ತು ತರ್ಜನೀ ಬೆರಳುಗಳ  
ಮಧ್ಯೆ ಪಿತ್ಯಗಳನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಬಿಡುವ ತೀರ್ಥ. "ಅಂತ-  
ರಾತ್ಮಗುಣದೇಶಿನ್ಯೋ: ಪಿತೃಣಾಂ ತೀರ್ಥಮುತ್ತಮಮ್" ಕೂಂಪುಂ |

ಪಿತೃದಾನ ಪಿತ್ಯದಾನ (ನಂ) ಪಿತ್ಯಗಳನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ  
ಮಾಡುವ ಅನ್ನದಾನ ವಸ್ತುದಾನ ಮತ್ತು ಜಲತರ್ಪಣ  
ಮೊದಲಾದುವು. ಪಿತ್ರೇ ದಾನಮ್ |

ಪಿತೃದಿನ ಪಿತ್ಯದಿನ (ನಂ) ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ.

ಪಿತೃಪಕ್ಷ ಪಿತ್ಯಪಕ್ಷ (ಪುಂ) ಕನ್ಯಾಮಾಸದ ಕೃಷ್ಣ ಪಕ್ಷ.  
ಪಿತೃಪ್ರಿಯ: ಪಕ್ಷ: |

ಪಿತೃಪತಿ ಪಿತ್ಯಪತಿ (ಪುಂ) ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. ಪಿತೃಣಾಂ  
ಪತಿ: | "ತ್ವಂ ಬ್ರಹ್ಮಾ ಹರೀರಜಸಂಜಿತಸ್ತ್ವಮಿन्द्रೋ ವित्तेश:







ಧಾತುವಿಗೆ ಯಕ್ಕತ್ತು (ಉದರದ ಬಲಗಡೆಯಿರುವ ದೊಡ್ಡ ಮಾಂಸಗ್ರಂಥಿ) ಪ್ಲೀಹ (ಉದರದ ಎಡಭಾಗದಲ್ಲಿ ಅನ್ನ ಕೋಶದ ಹಿಂದೆ ಇರುವ ಮಾಂಸಗ್ರಂಥಿ) ಹೃದಯ ದೃಷ್ಟಿ ತ್ವಕ್ ಇವೂ ಆಶ್ರಯಸ್ಥಾನಗಳು. “ಪಿತ್ತಸ್ಯ ಯಕ್ಕತ್-ಪ್ಲಿಹಾನೌ ಹೃದಯಂ ದೃಷ್ಟಿಃ ತ್ವಕ್ ಪೂರ್ವೋಕ್ತಂ ಚ ಸ್ಥಾನಾನಿ” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೨೧-೭. (1) ಪಾಚಕಮ್ (2) ರಜ್ಜಕಮ್ (3) ಸಾಧಕಮ್ (4) ಆಲೋಚಕಮ್ ಮತ್ತು (5) ಭ್ರಾಜಕಮ್ ಎಂದು ಶರೀರದ ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವ ಪಿತ್ತದ ಹೆಸರು ಐದು.

ಪಕ್ಷ ಮತ್ತು ಆಮಾಶಯಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಇರುವ ಪಿತ್ತ ಧಾತುವು ಅಶಿತ, ಖಾದಿತ, ಲೀಢ ಮತ್ತು ಪೀತಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ಆಹಾರವನ್ನು ಪಚನಮಾಡಿ ದೋಷ ರಸ ಮೂತ್ರ ಮತ್ತು ಪುರೀಷಗಳನ್ನು ಬೇರ್ಪಡಿಸುವುದು. ಅಲ್ಲೇ ಇರುವ ಈ ಪಿತ್ತಧಾತುವು ತನ್ನ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಉಳಿದ ಪಿತ್ತಸ್ಥಾನಗಳಿಗೂ ತನ್ನ ಪ್ರಭಾವವನ್ನು ಬೀರುವುದು. ಈ ಪಿತ್ತಧಾತುವಿಗೆ “ಪಾಚಕ” ಎಂದು ಹೆಸರು. ಯಕ್ಕತ್ತು ಮತ್ತು ಪ್ಲೀಹಗಳಲ್ಲಿರುವ ಪಿತ್ತಕ್ಕೆ “ರಂಜಕ” ಎಂದು ಹೆಸರು. ಹೃದಯಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿರುವ ಪಿತ್ತಕ್ಕೆ “ಸಾಧಕ” ಎಂದು ಸಂಜ್ಞೆ. ದೃಷ್ಟಿಯಲ್ಲಿರುವ ಪಿತ್ತವು “ಆಲೋಚಕ” ಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳದ್ದು. ತ್ವಕ್ (ಚರ್ಮ) ಗತವಾದ ಪಿತ್ತಕ್ಕೆ “ಭ್ರಾಜಕ” ಎಂಬ ಸಂಜ್ಞೆ. “ತನ್ವಾತ್ಪ್ರಾಣೇನ ವಿಶೇಷೇಣ ಪಕ್ವಾಮಾಶಯಮಧ್ಯಸ್ಥಂ ಪಿತ್ತಂ ಚತುರ್ವಿಧಮನ್ನಪಾನಂ ಪಚತಿ, ವಿವೇಚಯತಿ ಚ ದೋಷಸಮೂಹಪುರೀಷಾಣಿ, ತತ್ರಸ್ಯಮೇವ ಚಾತ್ಮ-ಶಕ್ತಿಯಾ ಶೇಷಾಣಾಂ ಪಿತ್ತಸ್ಥಾನಾನಾಂ ಶರೀರಸ್ಯ ಚಾಗ್ನಿ-ಕರ್ಮಣಾಽನುಗ್ರಹಂ ಕರೋತಿ, ತಸ್ಮಿನ್ ಪಿತ್ತೇ ಪಾಚಕೋಽಗ್ನಿರೀತಿ ಸಂಜ್ಞಾ; ಯತ್ನು ಯಕ್ಕತ್ಪ್ಲಿಹೋಃ ಪಿತ್ತಂ ತಸ್ಮಿನ್ ರಜ್ಜಕೋಽಗ್ನಿರೀತಿ ಸಂಜ್ಞಾ; ಯತ್ಪಿತ್ತಂ ಹೃದಯಸ್ಥಂ ತಸ್ಮಿನ್ ಸಾಧಕೋಽಗ್ನಿ-ರೀತಿ ಸಂಜ್ಞಾ; ಯದ್ವೃಷ್ಟ್ಯಾಂ ಪಿತ್ತಂ ತಸ್ಮಿನ್ ಆಲೋಚಕೋಽಗ್ನಿರೀತಿ ಸಂಜ್ಞಾ; ಯತ್ನು ತ್ವಚಿ ಪಿತ್ತಂ ತಸ್ಮಿನ್ ಭ್ರಾಜಕೋಽಗ್ನಿರೀತಿ ಸಂಜ್ಞಾ” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೨೧-೧೦.

**ಪಿತ್ತಜ್ವರ ಪಿತ್ತಜ್ವರ** (ವಿಂ) ಪಿತ್ತವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವ. ಪಿತ್ತಂ ಹಂತಿ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತಿಯು) “ಹಕ್” (೩-೨-೫೩). (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ಧ್ವನಿ — ಘ್ರೀ. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ.

**ಪಿತ್ತಜ್ವರ ಪಿತ್ತಜ್ವರ** (ಪುಂ) ಪಿತ್ತದೋಷದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಜ್ವರ. ಪಿತ್ತನಿಮಿತ್ತಕೋ ಜ್ವರಃ. **ಪಿತ್ತಜ್ವರ ಲಕ್ಷಣ**: ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ವೇಗ ಅತಿಸಾರ ಅಲ್ಪನಿದ್ರೆ ವಾಂತಿ ಕೆಂಪು ತುಟಿ ನಾಸಿಕೆ (ಮೂಗು) ಬಾಯಿ ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಬೆವರುವುದು ಮೈ ಉರಿತ ಬಾಯಾರಿಕೆ ನೇತ್ರಮಲಮೂತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಹಳದಿಬಣ್ಣ ತಲೆ ಸುತ್ತುವುದು ಇವು ಪಿತ್ತ ಜ್ವರಲಕ್ಷಣ.

“ವಿಗಸ್ತೀಕ್ಷ್ಣೋಽತಿಸಾರಶ್ಚ ನಿರ್ದ್ರಾಲ್ಪತ್ವಂ ತಥಾ ವಮಿಃ. ಕಾಂಠೀಠ-ಮುಖನಾಸಾನಾಂ ಪಾಕಃ ಸ್ವೇದಶ್ಚ ಜಾಯತೇ. ಪ್ರಲಾಪಃ ಕಟುತಾ ವಕ್ತ್ರೇ ಮೂರ್ಛಾ ದಾಹೋ ಮದಸ್ತುಷಾ. ಪೀತವಿಷಮೂತ್ರೇಶ್ವರತ್ವಂ ಪೈತ್ತಿಕೇ ಭ್ರಮ ಏವ ಚ” ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರತಂ ೩೯-೩೧, ೩೨.

**ಪಿತ್ತಲ ಪಿತ್ತಲ** (ನಂ) 1. ಉಪಧಾತುಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ಹಿತ್ತಾಳೆ. ಪಿತ್ತಂ ತದ್ವರ್ಣಂ ಲಾತಿ — ಲಾ (ಆದಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೩). (ವಿಂ) 2. ಪಿತ್ತವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಹೊಂದಿರುವ. ಪಿತ್ತ “ಲಕ್” (೪-೨-೯೭). (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ಲಾ — ಲಾ. 3. ನೀರುಹಿಪ್ಪಲಿ.

**ಪಿತ್ತಾಭಿಷ್ಯಂದ ಪಿತ್ತಾಭಿಷ್ಯಂದ** (ಪುಂ) ಪಿತ್ತದ ಅಧಿಕ ದಿಂದ ನೇತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ನೀರು ಸೋರುವುದು, ಒಂದು ವಿಧ ನೇತ್ರರೋಗ. ಪಿತ್ತಾಭಿಷ್ಯಂದಃ.

**ಪಿತ್ತಾರಿ ಪಿತ್ತಾರಿ** (ಪುಂ) 1. ಅರಗು. 2. ಒಂದು ಮೂಲಿಕೆ, ಭಾರಂಗಿ, ಬರ್ಬರ.

**ಪಿತ್ತಾ ಪಿತ್ತಾ** (ನಂ) 1. ಪಿತ್ತತೀರ್ಥ, ಪಿತ್ತಗಳನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಆಯುವ ಮತ್ತು ತರ್ಜನಿಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಬಿಡುವ ತೀರ್ಥ. ಪಿತರೋ ದೇವತಾ ಅಸ್ಯ “ಯತ್” (೪-೨-೩೧). “ಕಾಯಮದ್ಗುಲಿ-ಮೂಲೇಷ್ಠೇ ದೇವಂ ಪಿತ್ತಂ ತಯೋರಥಃ” ಮನುಂ ೨-೫೯. 2. ಮಧು. (ಪುಂ) 3. ಮಾಘಮಾಸ. 4. ಹಿರಿಯ ಸಹೋದರ. 5. ಮಾಷ, ಉದ್ದು. (ವಿಂ) 6. ಪಿತ್ತಸಂವೃದ್ಧವಾದ. ತಂದೆಯಿಂದ ಬಂದ, ತಂದೆಯಿಂದ ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ. ಪಿತ್ತು-ರಾಗತಮ್ “ಯತ್” (೪-೩-೭೯). “ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಏವ ತು ಗೃಹ್ಣೀಯಾತ್ ಪಿತ್ತಂ ಧನಮಶೇಷತಃ. ಶೇಷಾಸ್ತಮುಪಜೀವೀತ್ಯುಃ ಯಥೈವ ಪಿತರಂ ತಥಾ” ಮನುಂ ೯-೧೦೫. 7. ಶ್ರಾದ್ಧಕ್ಕೆ ಅರ್ಪವಾದ. “ಕಫಘ್ನಂ ಖಡ್ಗಿಪಿಶಿತಂ ಕಫಾಯಮನಿಲಾಪಹಮ್. ಪಿತ್ತಂ ಪವಿತ್ರಮಾಯುಷ್ಯಂ ವದ್ಮಮೃತಂ ವಿರೂಷಣಮ್” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬-೧೦೩.

**ಪಿತ್ತಾ ಪಿತ್ತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೌರ್ಣಮಾಸ. ಹುಣ್ಣಿಮೆ. 2. ಮುಖಾನ್ವಕ್ಷತ್ರ. ಪಿತರೋ ದೇವತಾ ಅಸ್ಯಾಃ — ಪಿತ್ತ “ಯತ್” (೪-೨-೩೧).

**ಪಿತ್ತಸತ್ ಪಿತ್ತಸತ್** (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಪತಿಸುಮಿಚ್ಛತಿ — ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಸನ್ “ಸತ್” (೩-೨-೧೨೪). (ವಿಂ) 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯಲು ಆಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ.

**ಪಿತ್ತಸಲ ಪಿತ್ತಸಲ** (ವಿಂ) ರಸ್ತೆ, ದಾರಿ, ಮಾರ್ಗ. ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಸನ್ “ಕಲಃ” ಬಾಹುಂ.

**ಪಿತ್ತಜ್ವರ ಪಿತ್ತಜ್ವರ** (ವಿಂ) ಮುಚ್ಚುತ್ತಿರುವ, ಅಜ್ಞಾದಿಸು ತಿರುವ. ಅಪಿ+ಡುಭಾನ್ (ಧಾರಣೆ) “ಸತ್” (೩-೨-೧೨೪). ಅಪೇರಲೋಪಃ. “ಶಾನಕ್” (೩-೨-೧೨೪). —ದಧಾನ್:



-ದಧಾನಃ. "ಪಿಪಧಾನಮನ್ವಗುಪಗಮ್ಯ ದೃಶಿ ಬ್ರುವತೇ ಜನಾಯ ವದ ಕೋಽಯಮಿತಿ" ಮಾಘಂ ೯-೭೬।

**ಪಿಪಾತವ್ಯ ಪಿಪಾತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಡುವ, 2. ಮುಚ್ಚಬೇಕಾದ, ಮರೆಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಡುವ, ಮುಚ್ಚಬೇಕಾದ, ಮರೆಮಾಡಬೇಕಾದ. ಅಪಿ + ಡುಘಾನ್ (ಧಾರಣೆ) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬)। ಅಪೇರಲೋಪಃ। "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। ಪಿಪಾತವ್ಯಮ್ ಪಿಪಾತವ್ಯಮ್.

**ಪಿಪಾತ ಪಿಪಾತ** (ನಂ) 1. ಅಚ್ಚಾದನ, ಮುಚ್ಚುವುದು. ಅಪಿ + ಧಾನ್ (ಧಾರಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। ಅಪೇರಲೋಪಃ। 2. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಡುವ, ಮುಚ್ಚಬೇಕಾದ, ತಟ್ಟು. ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)।

**ಪಿಪಾತಕ ಪಿಪಾತಕ** (ನಂ) ಅಪಿಪಾತಕ, ಕತ್ತಿಯ ಬರೆ.

**ಪಿಪಾತ ಪಿಪಾತ** (ವಿಂ) ಮುಚ್ಚಲ್ಪಡುವ, ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಡುವ.

**ಪಿಪಾತ ಪಿಪಾತ** (ವಿಂ) 1. ಕವಚ ತೊಟ್ಟಿರುವವನು. ಅಪಿ ನಹತೇ ಸಮ — ಣಹ (ಬಂಧನ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಗಂಟುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸಖಿ ಅನಸೂಯೆ, ಅತಿಪಿಪಾತಕೇನ ವಲಕಲೇನ ಪ್ರಿಯವದಯಾ ನಿಯನ್ವಿತಾಸ್ಮಿ। ಶಿಶಿಲಯ ತಾವದೇತತ್" ಶಾಕುಂ ೧। 3. ಧರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಯದಸ್ಥಿಭಿರ್ನಿರ್ಮಿತವಂಶವಂಶ-ಸ್ಥೂಣಂ ತ್ವಚಾ ರೋಮನಕ್ಷಿಃ ಪಿಪಾತಮ್" ಭಾಗಂ ೧೧-೮-೩೩। "ಅರಾನ್ವಿಧಿಃ ಕೇನಪಿಪಾತಮಾಸಃ" ಮಾಘಂ ೩-೩೯।

**ಪಿಪಾತ ಪಿಪಾತ** (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವನ ಧನುಸ್ಸು, ಪರಮೇಶ್ವರನ ಬಿಲ್ಲು. ಪಾತಿ — ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಆಕಃ" (೩-೪-೧೫)। ನಿಪಾಂ। "ದೃಪ್ತಾನ್ವಕಪ್ರಾಣಹರಂ ಪಿಪಾತಂ ಮಹಾಸುರಸ್ತ್ರೀವಿಧವಾತ್ವಹೇತುಮ್" ಕುಮಾರಂ ೧೨-೧೯। 2. ಶೂಲಾಯುಧ, ಈಶ್ವರನ ತ್ರಿಶೂಲ. 3. ಧೂಳಿನ ಸುರಿಮಳೆ. "ಪಿಪಾತೋಽಸ್ತ್ರೀ ರುದ್ರಾಪಿ ಪಾಂಶುರ್ವತ್ಪಿಶೂಲಯೋಃ" ಮೇದಿಂ।

**ಪಿಪಾತಪಾಣಿ ಪಿಪಾತಪಾಣಿ** (ಪುಂ) ಪಿಪಾತವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ ಪರಮೇಶ್ವರ. ಪಿಪಾತಂ ಪಾಣೌ ಯಸ್ಯ। "ಕುರ್ಯಾ ಹರಸ್ಯಾಪಿ ಪಿಪಾತಪಾಣೇರ್ಯಚ್ಯುತಿ ಕೇ ಮಮ ಭವಿನೋಽನ್ಯೇ" ಕುಮಾರಂ ೩-೧೦।

**ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್** (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. ಪಿಪಾತಃ ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫)। "ಸ ಭೂಮಿರೂಪಃ ಶಿವ ಇತ್ಯುದೀಯತೇ ನ ಸಂತಿ ಯಾಥಾರ್ಥವಿದಃ ಪಿಪಾತಕಿನ್ಃ" ಕುಮಾರಂ ೪-೭೭।

**ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಪಾತಿ-ಮಿಚ್ಛತಿ — ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।

(ವಿಂ) 2. ಕೆಳಗೆ ಇಳಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಇಡಭಾವೇ ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್.

**ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಳಗೆ ಇಳಿಯುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಇಳಿಯುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಪಾತಿ-ಮಿಚ್ಛತಿ — ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨)। ಇಡಭಾವೇ ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್.

**ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಇಳಿಯಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ. ಪಾತಿ-ಮಿಚ್ಛತಿ — ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮)। (ಪುಂ) 2. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಇಡಭಾವೇ ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್.

**ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್** (ವಿಂ) ಕುಡಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಪಾತಿ-ಮಿಚ್ಛತಿ — ಪಾ (ಪಾನೇ) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಗ್ರಾಮ್ಯಾನಪಶ್ಯತ್ ಕಪಿಶಂ ಪಿಪಾತಕಿನ್ಃ ಸ್ವಗೋತ್ರಸಂಕೀರ್ತನಭಾವಿ-ತಾತ್ಮನಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೩೮। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್.

**ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಯಾರಿಕೆ. ಪಾತಿ-ಮಿಚ್ಛತಿ — ಪಾ (ಪಾನೇ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨)।

**ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್** (ವಿಂ) ಬಾಯಾರಿಕೆಯುಳ್ಳವನು, ನೀರನ್ನು ಕುಡಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. ಪಾ (ಪಾನೇ) + ಸನ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)।

**ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್** (ವಿಂ) ಬಾಯಾರಿಕೆಯುಳ್ಳವನು. ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ — "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫)।

**ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಬಾಯಾರಿಕೆಯುಳ್ಳವನು, ನೀರುಕುಡಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. ಪಾತಿ-ಮಿಚ್ಛತಿ — ಪಾ (ಪಾನೇ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮)। 2. ಕುಡಿಯಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ, ಪಾನಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. "ಅಮ್ಬುಜಾಕ್ಷಿ-ಸಂವಾದಪೀಯೂಷಪಿಪಾಸವಸ್ತೇ" ನೈಷಂ ೬-೩।

**ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್** (ಪುಂ) ಇರುವ. ಅಪಿಪಾತಕಿನ್ — ಅಪಿ + ಪಿಲ (ಪ್ರತಿಷ್ಠಮ್) "ಪಿಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಅಪೇರಲೋಪಃ।

**ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ಇರುವ. ಪಿಪಾತಕಿನ್ "ಪಿಲ್" (೪-೧-೪)।

**ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ಇರುವ. ಅಪಿಪಾತಕಿನ್ — ಅಪಿ + ಪಿಲ (ಪ್ರತಿಷ್ಠಮ್) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಗೌರಾಂ "ಛಿಲ್" (೪-೧-೪೧)।

**ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಣ್ಯಮರ. ಪಿಪಾತಕಿನ್ ಜಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭)। "ಕ್ಷಾತ್ರ-ಕ್ರಮಾತ್ ಪಿಪಾತಕಿನ್ಯಯೋಃ ಪಲಾಶದೃಷ್ಟಾದೃತಪಾಣಿರಾಸೀತ್"



ವಂ ರಾಂ 1. ಬಂಧನರೂಪವಾದ ಅಡ್ಡಿ ಆತಂಕಗಳಲ್ಲದೆ ಇರುವ ಪಕ್ಷ. (ನಂ) 3. ಜಲ, ನೀರು. 4. ಬಟ್ಟೆಯ ತುಂಡು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಿ -ಲೀ. 5. ಹಿಪ್ಪಲಿ.

ಪಿಪ್ಪಲಕ ಪಿಪ್ಪಲಕ (ನಂ) ಪ್ಲೀಯರ ಮೊಲೆ ತೊಟ್ಟು.

ಪಿಪ್ಪಲಿ ಪಿಪ್ಪಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಪ್ಪಲಿ ಗಿಡ. ಪಿಪ್ಪಲಿ-ಪ (ಪಾಲನಪೂರ್ಣಾಂ:) "ಅಲಕ್" ಬಾಹುಂ. ಪೃಷಂ. ಗೌರಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧). "ಪಿಪ್ಪಲಂ ಸಲಿಲೇ ವಸ್ತ್ರಚ್ಛೇದೇ ಚ ನಾ ಸರೌ. ನಿರಗಲೇ ಪಕ್ಷಿಭೇದೇ ಕಣಾಂ ಪಿಪ್ಪಲಾ ಮತಾ" ಮೇದಿಂ.

ಪಿಪ್ಪಲಿಮೂಲ ಪಿಪ್ಪಲಿಮೂಲ (ನಂ) ಹಿಪ್ಪಲಿ. ಪಿಪ್ಪಲಾ ಇವ ಮೂಲಮಸ್ಯ.

ಪಿಪ್ಪಿಕಾ ಪಿಪ್ಪಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದನ್ತಮಲ, ಹಲ್ಲಿನ ಕೊಳೆ. "ದ್ವಿಪಿಕಾ ದ್ವಿಪಿಕಾ ಜೇಹ್ನಂ ಕ್ಷುಲಕಂ ಪಿಪ್ಪಿಕಾ ಪುನಃ. ದನ್ತಂ ಕಾಣಂ ತು ಪಿಪ್ಪಿಷ್ಠಃ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ.

ಪಿಪ್ಪು ಪಿಪ್ಪು (ಪುಂ) ಹುಟ್ಟುಮುಚ್ಚಿ, ಹುಟ್ಟಿದಾಗಿನಿಂದ ಮೈಯಲ್ಲಿರುವ ಕಪ್ಪು ಮುಚ್ಚಿ. ಅಪಿ ಪ್ಲವೇತ - ಪ್ಲಡ್ (ಗತೌ) "ಛು:" (ವಾಂ ೩-೨-೧೮೦). "ಜಡುಲಃ ಕಾಲಕಃ ಪಿಪ್ಪುಃ ತಿಲಕಸ್ತಿಲಕಾಲಕಾಃ" ಅಮಂ.

ಪಿಪ್ಪತ್ ಪಿಪ್ಪತ್ (ವಿಂ) 1. ಕುಡಿಯುತ್ತಿರುವ, ಪಾನಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). "ತೇನ ಸ್ವಹಸ್ತಾಜಿತಮೇಕಗ್ರೀರಃ ಪಿಪ್ಪತ್ಯಶೋ ಮೂರ್ತಮಿವಾಭಾಸೇ" ರಘುಂ ೭-೬೩. "ಪಿಪ್ಪತ್ ಸ ತಸ್ಯಾಃ ಸ್ತನಯೋಃ ಸುಷೋಂ ಕ್ಷಣಕ್ಷಣಂ ಸಾಧು ಸಮೇಷಮಾನಃ" ಕುಮಾಂ ೧೧-೨. 2. ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಮೋಡುತ್ತಿರುವ. "ನಿವಾತಪ್ರಸಸ್ತಿಮಿತೇನ ಚಕ್ಷುಷಾ ನೃಪಸ್ಯ ಕಾಂತಂ ಪಿಪ್ಪತ್ ಸುತಾನಮ್" ರಘುಂ ೩-೧೭. 3. ಅಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಕೀಳುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬). ಪಿಪ್ಪಂತಿ ಪಿಪ್ಪಂತಿ. "ಸಮೇಕದೃಶ್ಯಂ ನಮನಃ ಪಿಪ್ಪಂತಯೋ ನಾರ್ಯೋ ನ ಜಾಮುಃ ವಿಷಯಾಂತರಾಣಿ" ಕುಮಾಂ ೭-೬೪.

ಪಿಪ್ಪು ಪಿಪ್ಪು (ಪುಂ) ಗೋನು ಮರ.

ಪಿಪ್ಪು ಪಿಪ್ಪು (ನಂ) 1. ರೋಗದಿಂದ ನೀರು ಸೋರುವ ಕಣ್ಣು. (ವಿಂ) 2. ನೀರು ಸೋರುವ ಕಣ್ಣುಳ್ಳವನು. ಕಿಲಿನ್ "ಲಃ" ಪಿಪ್ಪು ಆದೇಶಃ (ವಾಂ ೪-೨-೩೩). "ಸ್ಯುಃ ಕಿಲಿನ್ವಾಕ್ಯೇ ಚುಲಿಚಿಲಿಪಿಪ್ಪುಃ ಕಿಲಿನ್ವಾಕ್ಯೇ ಚಾಪ್ಯಮಿ" ಅಮಂ.

ಪಿಪ್ಪುಕಾ ಪಿಪ್ಪುಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ಆನೆ.

ಪಿಪ್ಪು ಪಿಪ್ಪು (ಪುಂ) 1. ಒಂಗಳವರ್ಣ, ಹಳದಿ ಬಣ್ಣ. ಪಿಪ್ಪ (ಅವಯವೇ) "ಅಜ್ಜಕ್" (೩ಂ ೧-೧೧೮). (ವಿಂ) 2. ಹಳದಿ, ಬಣ್ಣದ. "ಪಿಪ್ಪುಮೌಜ್ಜಿಯುಜಮರ್ಜುತಚ್ಚಿವಿ

ವಸಾನಮೇಣಾಜಿನಮಜ್ಜನವೃತ್ತಿ" ಮಾಘಂ ೧-೬. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" -ಜ್ಜಿ -ಗೀ. "ಮಧ್ಯೇ ಸಮುದ್ರಂ ಕುಕುಮಃ ಪಿಪ್ಪುಜ್ಜೀರ್ಯಾ ಕುರ್ವಂತಿ ಕಾಚ್ಚನವಪ್ರಭಾಸಾ" ಮಾಘಂ ೩-೩೩.

ಪಿಪ್ಪುಜ್ಜಿತ ಪಿಪ್ಪುಜ್ಜಿತ (ವಿಂ) ಹಳದಿಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

"ರೋಚಿಷ್ಣುಕಾಚ್ಚನವಾಂಶುಪಿಪ್ಪುಜ್ಜಿತಾಶಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೨೦.

ಪಿಪ್ಪುಜ್ಜಿಲಾ ಪಿಪ್ಪುಜ್ಜಿಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಪ್ಪುಜ್ಜಿ.

ಪಿಪ್ಪುಚ ಪಿಪ್ಪುಚ (ಪುಂ) ದೇವಯೋನಿಗಳ ಒಂದು ಭೇದ. ದೇವತೆಗಳೇ ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನವಾಗಿ ಉಳ್ಳವರ ಒಂದು ಗುಂಪು. ಪಿಪ್ಪುಚಮಸ್ತಾತಿ - ಅಶ (ಭೋಜನೇ) "ಅನ್" (೩-೨-೧). ಪೃಷಂ. "ಯಕ್ಷರಕ್ಷಾಃ ಪಿಪ್ಪುಚಾಂಶ್ಚ ಗಂಧರ್ವಾಃ ಪರಸೋಽಸುರಾನ್. ನಾಗಾನ್ ಸರ್ಪಾನ್ ಸುಪರ್ಣಾನ್ ಪಿತೃಣಾಂ ಚ ಪೃಥಗ್ಗಣಾನ್" ಮನುಂ ೧-೩೭. ಕುಬೇರ ಮತ್ತೂ ಅವನ ಅನುಚರರು ಯಕ್ಷರು. ರಾವಣ ಮೊದಲಾದವರು ರಾಕ್ಷಸರು. ಅವರಿಗಿಂತಲೂ ಕೆಳಮಟ್ಟದವರಾದ ಮಾಂಸಾಹಾರಿಗಳಾದ ಮರು ದೇಶವಾಸಿಗಳು ಪಿಪ್ಪುಚರು. ಚಿತ್ರರಥ ಮೊದಲಾದವರು ಗಂಧರ್ವರು. ಉರ್ವಶಿ ಮೇನಕೆ ರಂಭಿ ಮೊದಲಾದವರು ಅಪ್ಸರಸ್ಸುಗಳು. ವಿರೋಚನ ಬಲಿ ಮೊದಲಾದವರು ಅಸುರರು. ತಕ್ಷಕ ವಾಸುಕಿ ಮೊದಲಾದವರು ನಾಗರು. ಹೆಬ್ಬಾವು ನೀರುಹಾವು ಮೊದಲಾದವು ಸರ್ಪಗಳು. ಗರುಡಾದಿಗಳು ಸುಪರ್ಣರು. ಅಜ್ಞಪಾದಿಗಳು ಪಿತೃಗಳಿಗೆ ಸೇರಿದವರು.

ಪಿಪ್ಪುಚಕ ಪಿಪ್ಪುಚಕ (ವಿಂ) ಪಿಪ್ಪುಚಗಳನ್ನು ಓಡಿಸುವುದರಲ್ಲಿ ಕುಶಲನಾದ. ಪಿಪ್ಪುಚ ತನ್ನಿವಾರಣೆ ಕುಶಲಃ "ಕನ್" (೪-೨-೬೪).

ಪಿಪ್ಪುಚಕಿನ್ ಪಿಪ್ಪುಚಕಿನ್ (ಪುಂ) ಕುಬೇರ.

ಪಿಪ್ಪುಚದ್ರು ಪಿಪ್ಪುಚದ್ರು (ಪುಂ) ಪಿಪ್ಪುಚಗಳಿಗೆ ಪ್ರಿಯವಾದ ಮರ, ಶಾಖೋಟಕ ವೃಕ್ಷ. ಪಿಪ್ಪುಚಪ್ರಿಯಃ ದ್ರುಃ.

ಪಿಪ್ಪುಚಸಭ ಪಿಪ್ಪುಚಸಭ (ನಂ) ಪಿಪ್ಪುಚಗಳ ಸಭೆ. ಪಿಪ್ಪುಚಾನಾಂ ಸಭಾ. ನಪುಂಸಕತ್ವಮ್ (೨-೪-೨೩).

ಪಿಪ್ಪುಚಿ ಪಿಪ್ಪುಚಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ಪಿಪ್ಪುಚಿ. ಪಿಪ್ಪುಚ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩).

ಪಿಪ್ಪು ಪಿಪ್ಪು (ನಂ) ಮಾಂಸ. ಪಿಪ್ಪು-ಪಿಪ್ಪು (ಅವಯವೇ) "ಇತನ್" (೩ಂ ೩-೧೪). "ನಿರಾತಕ್ಷಃ ಪಕ್ಷಿವಿವ ಪಿಪ್ಪುಪಿಪ್ಪುಣ್ಣೇ ನಿಪತನ್ನಸಿರ್ಗಾತ್ರಂಗಾತ್ರಂ ಸಪದಿ ಲವಶಸ್ತೇ ವಿಕಿರತು" ಮಾಲತೀಂ ೪-೩೪. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತಾ -ತಾ, -ತೀ -ತೀ. ಜಟಾಮಾಂಸ.

ಪಿಪ್ಪುಪಿಪ್ಪು ಪಿಪ್ಪುಪಿಪ್ಪು (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ. ಪಿಪ್ಪುಪಿಪ್ಪು ಮಾಂಸ ಭುಕ್ತೇ - ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಭ್ಯವಹಾರಯೋಃ) "ನಿವಪ್"



(೩-೨-೭೬) । "ಪಿಶಿತಭುಜಂ ಭುಜಭಾರಹೀನಮೇನಮ್" ।  
 ಚಂ ರಾಂ । (ವಿಂ) 2. ಮಾಂಸವನ್ನು ತಿನ್ನುವವನು.

ಪಿಶಿತಾಶನ ಪಿಶಿತಾಶನ (ಪುಂ) ಾಕ್ಷಸ. ಪಿಶಿತಮಶನಂ  
 यस್ಯ । "ಛಾಯಾಶ್ವರಂತಿ ಬಹುಧಾ ಭಯಮಾದಧಾನಾಃ ಸಂಖ್ಯಾ-  
 ಪಯೋದಕಪಿಶಾಃ ಪಿಶಿತಾಶನಾನಾಮ್" ಶಾಕುಂ ೩-೨೪ ।

ಪಿಶಿತಾಶಿನ್ ಪಿಶಿತಾಶಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಾಕ್ಷಸ. ಪಿಶಿತ-  
 ಮಶನಾತಿ — ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೭೮) ।  
 "ಪಿಶಿತಾಶಿನಾಮನುದಿನಂ ಸ್ಫುಟತಾಂ ಸ್ಫುಟತಾಂ ಜಗಾಮ ಪರಿವಿಹ್ನ-  
 ಲತಾ" ಮಹಿಂ ೧೦-೮ । (ವಿಂ) 2. ಮಾಂಸವನ್ನು  
 ತಿನ್ನುವ.

ಪಿಶಿ ಪಿಶಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಟಾಮಾಂಸಿ.

ಪಿಶುನ ಪಿಶುನ (ಪುಂ) 1. ನಾರದ. 2. ಕಾಗೆ, ವಾಯಸ.  
 ಪಿಶತಿ — ಪಿಶ (ಅವಯವ) "ಉನನ್" (೩-೨-೫೫) ।  
 (ನಂ) 3. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. (ವಿಂ) 4. ಸೂಚಿಸುವ,  
 ತಿಳಿಸುವ. "ಶತ್ರುಣಾಮನಿಶಂ ವಿನಾಶಪಿಶುನಃ ಕ್ರುದ್ಧಸ್ಯ ಚೈವ  
 ಪ್ರತಿ" ಮಾಘಂ ೧-೭೫ । 5. ದುರ್ಜನ, ಚಾಡಿಕೋರ,  
 ಪರಸ್ಪರ ಭೇದವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವವನು. "ಕೋಽಪ್ಯೇವ ಏವ  
 ಪಿಶುನೋಸ್ತಯಮನುಷ್ಯಧರ್ಮಾ ಕರ್ಣೋಽಪರಂ ಸ್ಪೃಶತಿ ಹತಿಃ ಪರಂ ಸಮೂಲಮ್"  
 ಪञ्ಚತಂ ೧-೩೨೮ । 6. ನೆನಪನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ಸ್ಮರಣೆಗೆ  
 ತರುವ. "ಬ್ರಹ್ಮಾವರ್ತಂ ಜನಪದಮಥ ಚ್ಛಾಯಯಾ ಗಾಹಮಾನಃ  
 ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಕ್ಷೇತ್ರಪ್ರಧನಪಿಶುನಂ ಕೋರವಂ ತದ್ಭಜೇತಾಃ" ಮೇಘಂ ೧-೪೮ ।  
 7. ಕ್ರೂರನಾದವನು, ದಯೆಯಿಲ್ಲದವನು. 8. ನೀಚ.  
 9. ಮೂರ್ಖ.

ಪಿಷ್ಠ ಪಿಷ್ಠ (ನಂ) 1. ಹಿಟ್ಟು, ಬೀಸಿ ನುಣ್ಣಗೆ ಮಾಡಿದ  
 ಧಾನ್ಯದ ಪುಡಿ. ಪಿಷ್ಯತೇ ಸ್ಮ — ಪಿಷ್ಠ (ಸಂಚೂರ್ಣ) "ಕ್ತಃ"  
 (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಅಕ್ಕಿ ಗೋಧಿ ರಾಗಿ ಮುಂತಾದುವು  
 ಗಳ ಹಿಟ್ಟಿನಿಂದ ಮಾಡಿದ ಅಹಾರ ಅಥವಾ ಹಿಟ್ಟು.  
 "ಅನ್ನಾದಷ್ಟಗುಣಂ ಪಿಷ್ಠಂ ಪಿಷ್ಠಾದಷ್ಟಗುಣಂ ಪಯಃ । ಪಯಸೋಷ್ಟಗುಣಂ  
 ಮಾಸಂ ಮಾಸಾದಷ್ಟಗುಣಂ ವೃತಮ್ । ವೃತಾದಷ್ಟಗುಣಂ ತೈಲಂ ಮರ್ದನಾನ್  
 ಚ ಭಕ್ಷಣಾತ್" । (ವಿಂ) 3. ಪುಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಅರೆಯ  
 ಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕೃತ್ವಾ ತಾಂಶ್ರಣಕಾನ್ ಪಿಷ್ಠಾನ್ ಗೃಹೀತ್ವಾ ಜಲ-  
 ಕುಮ್ಮಿಕಾನ್" ಕಥಾಸಂ ।

ಪಿಷ್ಠಕ ಪಿಷ್ಠಕ (ಪುಂ) 1. ಹಿಟ್ಟಿನಿಂದ ಮಾಡಿದ ರೊಟ್ಟಿ.  
 ಪಿಷ್ಠಸ್ಯ ವಿಕಾರಃ — ಸಂಜಾಯಾಂ "ಕನ್" (೪-೩-೧೪೭) ।  
 2. ಒಂದು ವಿಧ ನೇತ್ರರೋಗ. "ಪಿಷ್ಠಕೋ ವೃತಪೂಪಾದೌ  
 ನೇತ್ರರೋಗಾಂತರೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ । (ನಂ) 3. ಎಳ್ಳಿನ  
 ಪುಡಿ. ಪಿಷ್ಠಮಿವ ಪ್ರತಿಕ್ರತಿಃ — ಇವಾರ್ಥ "ಕನ್"  
 (೫-೩-೯೬) ।

ಪಿಷ್ಠಪ ಪಿಷ್ಠಪ (ಪುಂ) ಭುವನ, ಲೋಕ. ವಿಶನ್ಯತ್ರ —  
 ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಕಪನ್" ಆದೇಃ ವಕಾರಸ್ಯ ಪಕಾರಶ್ಚ ನಿಪಾಂ  
 (೩ಂ ೩-೧೪೫) ।

ಪಿಷ್ಠಪಚನ ಪಿಷ್ಠಪಚನ (ನಂ) ಹಿಟ್ಟನ್ನು ಬೇಯಿಸುವ  
 ಪಾತ್ರೆ. ಪಚ್ಯತೇಽತ್ರ — ಡು ಪಚ್ (ಪಾಕೆ) "ಲ್ಯುಟ್"  
 (೩-೩-೧೧೭) । ಪಿಷ್ಠಸ್ಯ ಪಚನಮ್ ।

ಪಿಷ್ಠಪೂರ ಪಿಷ್ಠಪೂರ (ಪುಂ) ಕಡಲೆ ಹಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ತುಪ್ಪದಿಂದ  
 ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಭಕ್ಷ್ಯ, ಮೈಸೂರುಪಾಕ. ಪಿಷ್ಠಃ ಪೂಯತೇ —  
 ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಅಪ್" ।

ಪಿಷ್ಠವರ್ತಿ ಪಿಷ್ಠವರ್ತಿ (ಪುಂ) ಕಡಲೆ ಹೆಸರು ಮೊದ  
 ಲಾದುವುಗಳ ಹಿಟ್ಟು. ಪಿಷ್ಠಂ ವರ್ತಯತಿ — ವೃತು (ವರ್ತನೆ) +  
 ಣಿच् "ಃ" (೩ಂ ೪-೧೩೯) ।

ಪಿಷ್ಠಸೋರಭ ಪಿಷ್ಠಸೋರಭ (ನಂ) ಚಂದನ, ಗಂಧ. ಪಿಷ್ಠಸ್ಯೇವ  
 ಸೋರಭಮಸ್ಯ ।

ಪಿಷ್ಠಾತ ಪಿಷ್ಠಾತ (ಪುಂ) ವಾಸನೆಯ ಚೂರ್ಣ, ವಸ್ತುಗಳಿಗೆ  
 ವಾಸನೆ ಕಟ್ಟುವ ಸುವಾಸನೆಯ ಪುಡಿ. ಪಿಷ್ಠಮತತಿ — ಅತ  
 (ಸಾತತ್ಯಗಮನೆ) "ಅಣ್" (೩-೨-೧) । "ಪಿಷ್ಠಾತಃ  
 ಪಟವಾಸಕಃ" ಅಮಂ ।

ಪಿಹಿತ ಪಿಹಿತ (ವಿಂ) 1. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಚ್ಚಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
 ಅಪಿಧೀಯತೇ — ಡು ಧಾಜ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕ್ತಃ"  
 (೩-೨-೧೦೨) । "ಅಪ್ರಭೂತಮತನೀಯಸಿ ತನ್ವೀ ಕಾಶ್ವಿಧಾಮಿನಿ  
 ಪಿಹಿತೈಕತರೋ" ಮಾಘಂ ೧೦-೮೩ । 2. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ,  
 ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಋಷೇ ಪಿಹಿತಾಹಿಮದ್ಯುತಿರ್ಯಾವಿಶಿಷ್ಣ-  
 ರನ್ತರಿತಾ ಚ್ಯುತಾ ಧರಿತ್ರಿ" ಮಾಘಂ ೨೦-೧೫ ।

ಪಿಠ ಪಿಠ (ನಂ) ಕೂಡುವ ಅಸನ. ಪಿಠನ್ಯತ್ರ — ಪಿಠ  
 (ಹಿಸಾಸಂಕ್ಲೇಶನಯೋಃ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೨೧) । "ಗಿರೇ-  
 ಸ್ತದಿತ್ವಾನಿವ ತಾವದುಚ್ಚಕೇಜೇನ ಪಿಠಾದುದತಿಷ್ಠದಚ್ಯುತಃ"  
 ಮಾಘಂ ೧-೧೨ । "ಪಿಠಂ ದತ್ವಾ ಸಾಧವೇಽಭ್ಯಾಗತಾಯ ಆನೀಯಾಪಃ  
 ಪರಿನಿರ್ನಿಜ್ಯ ಪಾದೌ । ಸುಖಂ ಪೃಷ್ಠಾ ಪ್ರತಿವೇಶಾತ್ಮಸಂಸ್ಥಾಂ ತತೋ  
 ದದಾದನ್ನಮವೇಕ್ಷ್ಯ ವೀರಃ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೩೮-೨ । "ಧಾತು-  
 ಪಾಪಾಣಕಾಂಶ್ಚ ಪಿಠಸ್ತ್ರಿವಿಧಃ ಉಚ್ಯತೇ । ಧಾತವಶ್ಚ ಶಿಲಾಶ್ಚೇವ  
 ಕಾಂಶ್ಚಾನಿ ವಿವಿಧಾನಿ ಚ" ಎಂದು ಪಿಠ ಪದಕ್ಕೆ ಪುಲಿಂಗ  
 ದಲ್ಲೂ ಪ್ರಯೋಗವಿದೆ. ಪಿಠವು ಧಾತು (ಲೋಹ)  
 ಪಾಪಾಣ (ಶಿಲೆ) ಮತ್ತು ಕಾಷ್ಠ (ದಾರು) ಮಯಗಳೆಂದು  
 ಮೂರು ವಿಧ.

ಪಿಠಕೇಲಿ ಪಿಠಕೇಲಿ (ಪುಂ) ಪಿಠಮರ್ಧನೆಯ ನಾಯಕ ;  
 ಸಹಾಯಪುರುಷ, ನಾಯಕನನ್ನು ಹೊಗಳುತ್ತಾ ಅವನ  
 ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಸಹಾಯಕನಾಗಿದ್ದುಕೊಂಡು ಪ್ರಯೋಜನ



ಪಡೆಯುವ ಪರೋಪಜೀವಿಯಾದ ಪುರುಷ. ಪಿಠೆ ಆಸನೆ  
ಕೇಲಿರ್ಮದಿರಸ್ಯ ।

**ಪಿಠನ್ಯಾಸ ಪೀಠನ್ಯಾಸ** (ಪುಂ) ಆಧಾರಶಕ್ತಿ ಪ್ರಕೃತಿ ಮೊದ  
ಲಾದ ಪೀಠದೇವತೆಗಳನ್ನು ಪ್ರಣವಪೂರ್ವಕ ಧ್ಯಾನಿಸಿ  
ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ನ್ಯಾಸ.

**ಪಿಠಮದ ಪೀಠಮರ್ಧ** (ಪುಂ) ನಾಯಕನ ಸಹಾಯಕ  
ರಲ್ಲೊಬ್ಬ. ನಾಯಕನ ದೀರ್ಘಕಾಲದ ವ್ಯಾಪಾರಗಳಲ್ಲಿ  
ಅವನಿಗೆ ಸಹಾಯಕನಾಗಿರುವ ನಾಯಕನ ಗುಣಗಳಿಗಿಂತಲೂ  
ಕಡಮೆ ಗುಣಗಳುಳ್ಳ ಪುರುಷ. "ದ್ವಾನುವರ್ತಿನಿ ಸ್ಯಾತ್ ತಸ್ಯ  
ಪ್ರಾಸಜ್ಜಿಕೇತಿವೃತ್ತೇ ತು । ಕಿಂಚಿತ್ತದ್ಗುಣಹೀನಃ ಸಹಾಯ ಎವಾಸ್ಯ  
ಪಿಠಮರ್ದಾಸ್ಯಃ" ಸಾಂದಂ ೩-೩೯ ।

**ಪಿಠಸರ್ಪ ಪೀಠಸರ್ಪ** (ವಿಂ) ಪೀಠದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ಮುಂದೆ  
ಸಾಗುವವನು, ಹೆಳವ, ನಡೆಯಲು ಕಾಲಿಲ್ಲದವನು. ಪಿಠೇನ  
ಸರ್ಪತಿ-ಸೃಷ್ಟಿ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ಗಿಣಿಃ"  
(೩-೧-೧೩೪) । -ಸರ್ಪಿ -ಸರ್ಪಿಃ.

**ಪಿಠಿ ಪೀಠೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಸನ.

**ಪಿಠಿಕೃತ ಪೀಠೀಕೃತ** (ವಿಂ) ಆಸನವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪಿಠನ ಪೀಠನ** (ನಂ) 1. ಮರ್ಧನ, ಹಿಂಸುಕುವುದು. ಪಿಠ  
(ಅವಗಾಹನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । "ಪೂರ್ವಾಪಿಠನೌ  
ಚಕ್ರೇ ಸ ಸಖಿಷು ಪ್ರಿಯಾಸ್ತನೌ" ನೆಪಂ ೨೦-೧೪೫ । "ಸುಭ್ರವಾ-  
ಮಧಿ ಪಯೋಧರಪಿಠಂ ಪಿಠನೇಸ್ತುತಿತವತ್ಯಪಿ ಪತ್ಯುಃ" ಮಾಘಂ  
೧೦-೮೭ । 2. ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ಪೀಡಿಸುವುದು. "ಪರಸ್ಯ  
ಪಿಠನಂ ಕುರ್ವನ್ ಸ್ವಾರ್ಥಸಿದ್ಧಿಂ ಚ ಪಿಠಿತಃ । ಗೃಹಬುದ್ಧಿಂ ಲಕ್ಷಯೇತ  
ವನೇ ಚತುರಕೋ ಯಥಾ" ಪञ्ಚತಂ ೧-೩೯೯ । 3. ಒತ್ತಡ,  
ಬಲವಾಗಿ ಒತ್ತುವಿಕೆ, ಬಲವಾಗಿ ಅಡುಮುವುದು. "ಮಮಾಪಿ  
ದೃಢಪಿಠನೇರಪಿ ನ ತೃಪ್ತರಾಲಿಙ್ಗನೇಃ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೩೮ ।  
4. ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಗ್ರಹಣ. "ಪಾಣಿಪಿಠನವಿಧೇ-  
ರನಂತರಂ ಶೈಲರಾಜದ್ವಹಿತುರ್ಹರಂ ಪ್ರತಿ" ಕುಮಾರಂ ೮-೧ । 5. ನಾಶ  
ಪಡಿಸುವುದು, ಇಲ್ಲದಂತೆ ಮಾಡುವುದು. 6. ಉದಾಸೀನ  
ನಾಗಿ ಕಾಣುವುದು. 7. ತಳ್ಳಿಹಾಕುವುದು, ಕೈಬಿಡುವುದು.  
(ವಿಂ) 8. ಹಿಂಸಿಸುವ, ಪೀಡಿಸುವ. "ಪಿಠನಾನಿ ಚ  
ಸರ್ವಾಣಿ ವ್ಯಸನಾನಿ ತಥೈವ ಚ" ಮನುಂ ೧-೨೯೯ ।

**ಪಿಡಯತ್ ಪೀಡಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಮರ್ಧಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಹಿಂಸುಕುತ್ತಿರುವ, ಹಿಂಡುತ್ತಿರುವ. ಪಿಡ (ಅವಗಾಹನೆ) +  
ಗಿಣಿ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಲಭೇತ ಸಿಕತಾಸು ತೇಲಮಪಿ  
ಯತ್ತತಃ ಪಿಡಯನ್" ಭರ್ತಂ ೧-೫ । 2. ನಾಶಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ.  
"ಆತ್ಮನ್ಯಂತರ್ದೇಶೇ ಭೂಯಃ ಕಾಲಂ ಕಾಲೇನ ಪಿಡಯನ್" ಮನುಂ ೧-೫೧ ।  
3. ಬಲವಾಗಿ ಒತ್ತುತ್ತಿರುವ, ಅಡುಮುತ್ತಿರುವ. 4. ಶಬ್ದ

ಕೇಳಿಸದಂತೆ ಕಿವಿಯನ್ನು ಮುಚ್ಚುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೬) । "ಕರ್ಣೌ ಪಿಡಯತೀ ಸಹ್ಯಾ ವೀಕ್ಷ್ಯ ನೇತ್ರಾಸಿತೋತ್ಪಲೇ"  
ನೆಪಂ ೨೦-೯೮ । 5. ತಳ್ಳಿಹಾಕುತ್ತಿರುವ, ಕೈಬಿಡುತ್ತಿರುವ.  
"ಶ್ರುತಿಸಮಧಿಕಮುಚ್ಚೈಃ ಪञ್ಚಮಂ ಪಿಡಯಂತಃ ಸತತಮೃಷಭಹೀನಂ  
ಭಿನ್ನಕೀಕೃತ್ಯ ಷಡ್ಜಮ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೧ ।

**ಪಿಡಾ ಪೀಡಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಿಂಸೆ, ತೊಂದರೆ. ಪಿಡ  
(ಅವಗಾಹನೆ) "ಅಡ್" (೩-೩-೧೦೪) । "ಮಾ ಭೂದಾಶ್ರಮ-  
ಪಿಡೇತಿ ಪರಿಮೇಯಪುರಃಸರೋ" ರಘುಂ ೧-೩೭ । 2. ನೋವು,  
ಬಾಧೆ. "ಮೂಢಗ್ರಾಹಣಾತ್ಮನೋ ಯತ್ಪಿಡಯಾ ಕ್ರಿಯತೇ ತಪಃ ।  
ಪರಸ್ಯೋತ್ಸಾದನಾರ್ಥಂ ವಾ ತತ್ತಾಮಸಮುದಾಹುತಮ್" ಗೀತಾ ೧೭-೧೯ ।  
3. ದುಃಖ, ವ್ಯಸನ, ಕಷ್ಟ. ಪೀಡಾವಿಶೇಷವಾದ ಈ  
ದುಃಖವು (1) ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕಮ್ (2) ಆಧಿದೈವಿಕಮ್ ಮತ್ತು  
(3) ಆಧಿಭೌತಿಕಮ್ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ["ಆಧಿ-  
ದೈವಿಕ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 4. ಕೃಪೆ, ದಯೆ. 5. ಸರಳ  
ದೇವದಾರು. 6. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. 7. ಕಸ, ಧೂಳಿ.  
8. ತಲೆಗೆ ಮುಡಿಸುವ ಹೂವಿನ ಸರ. "ಪಿಡಾ ಕೃಪಾಶಿರೋ-  
ಮಾಲಾಽಪಮರ್ದಸರಲದ್ವಯಮೇದಿಂ ।

**ಪಿಡಿತ ಪೀಡಿತ** (ವಿಂ) 1. ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಂದರೆಪಡಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಪಿಡ (ಅವಗಾಹನೆ) + ಗಿಣಿ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।  
"ನಾವಿನೀತೇತ್ರೇಜದ್ವಯಃ ನ ಚ ಕ್ಷುದ್ವ್ಯಾಧಿಪಿಡಿತಃ" ಮನುಂ ೪-೬೭ ।  
2. ಹಿಂಸುಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಒತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಿವುಚಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಲ್ಲಭೇನ  
ಪರಿಸಂಭವಿಷಿತೌ ಪ್ರೇಯಸಿಹೃದಿ ಕುಚಾವವಾಪತುಃ" ನೆಪಂ ೧೮-೯೭ ।  
3. ಹಿಂಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರ್ಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕುಚೋ ದೋಷಾಂಜ್ಞಿತಾ-  
ವಸ್ಯಾಃ ಪಿಡಿತೌ ವ್ರಣಿತೌ ತಥಾ" ನೆಪಂ ೨೦-೪೯ ।  
4. ನೋವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸೌಜನ್ಯಮಾನ್ಯ ಹಿಮವಂತ-  
ಮಾತ್ಮಭೂರಾತ್ಮಜಾವಿರಹದ್ವುಃಪಿಡಿತಮ್" ಕುಮಾರಂ ೮-೨೧ ।  
5. ಗ್ರಹಣಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. "ನ  
ಪ್ರಮಾಣೀಕೃತಃ ಪಾಣಿಬಾಲ್ಯೇ ಬಾಲೇನ ಪಿಡಿತಃ । ನಾಹಂ ನ ಜನಕೋ  
ನಾಗಿನಿರ್ನ ತು ವೃತ್ತಿರ್ನ ಸಂತತಿಃ" ಉಂ ರಾಂ ೭-೫ । 6. ಗಾಯ  
ವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಉದಧೀರೀವ ಮನ್ಯೇನ ಪಿಡಿತಸ್ಯ  
ಸಮುತ್ಥಿತಃ । ದೃಢಲಗ್ನೇರಿವೋತ್ಪತ್ತಿ ದೀಪ್ತಂ ಶೋಣಿತವಿನ್ದುಭಿಃ"  
ಯಾದಂ ೧೬-೫ ।

**ಪಿಡನ್ ಪೀಡಿಸ್** (ವಿಂ) ಪೀಡಿಸುವ, ಹಿಂಸಿಸುವ. ಪಿಡಯತಿ  
— ಪಿಡ (ಅವಗಾಹನೆ) + ಗಿಣಿ "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೭೮) ।  
"ನಿಜನಿಡದ್ರುಮಪಿಡಿನಃ ಸ್ವಗಾನ್" ನೆಪಂ ೨-೧೦ ।

**ಪಿಡಚಮಾನ ಪೀಡ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಪೀಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ,  
ತೊಂದರೆಪಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪಿಡ (ಅವಗಾಹನೆ) ಕರ್ಮಂ  
"ಶಾನಿ" (೩-೨-೧೨೪) । "ಚಾಡತಸ್ಕರದ್ವೃತ್ತೇಸ್ತಥಾ



ಸಾಹಸಿಕಾದಿಮಿ: 1. ಪಿಡಚಮಾನಾ: ಪ್ರಜಾ ರಕ್ಷಾ: ಕೂಡ್‌ಚ್ಚಾ-  
ದಿಮಿಸ್ತಯಾ" ಪೌತಂ 1-304. 2. ನೋಯಿಸಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ, ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

**ಪೀತ ಪೀತ (ಪುಂ)** 1. ಪೀತವರ್ಣ, ಹಳದಿ ಬಣ್ಣ. ಪಿಬತಿ  
ವರ್ಣಾಂತರಮ್ — ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕ್ತ:" (ತಂ 3-69) ।  
ಬಾಹುಂ । 2. ಕುಂಕುಮ ಬಣ್ಣ. (ನಂ) 3. ಪಾನಮಾಡು  
ವುದು, ಕುಡಿಯುವುದು. ಪಾ (ಪಾನೇ) ಮಾವೇ "ಕ್ತ:"  
(3-3-114) । 4. ಹರಿದಳ. 5. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ.  
(ವಿಂ) 6. ಪಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕುಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಪಾ (ಪಾನೇ)  
ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102) । "ಪೀತಶಿಘ್ರಮಧುರೈರ್ಮಿಥುನಾನಾ-  
ಮಾನನೈ: ಪರಿಹೃತಂ ಚಪಕಾಂತ:" ಮಾಘಂ 10-11 । 7. ಹಳದಿ  
ಬಣ್ಣದ. "ಮೇಘೋ ಜಲಾರ್ಧಮಹಿಷೋದರಭೃಜ್ಞನಿಲೋ ವಿಜೃಂಭಾ-  
ರಚಿತಪೀತಪದೋತ್ತರೀಯ:" ಮೃತ್ತಂ 4-2 । 8. ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ  
ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ನ ಲಕ್ಷಿತೋ ರಕ್ಷಿಮಶೈರ್ದಾಮ್ಯಾಂ ಪೀತೋಽಸಿ  
ತನ್ವಾ ಜಿತಪುಷ್ಪಧನ್ವಾ" ನೈಷಂ 6-20 ।

**ಪೀತಕ ಪೀತಕ (ಪುಂ)** 1. ನಂದಿವೃಕ್ಷ, 2. ಅಶೋಕವೃಕ್ಷ.  
(ನಂ) 3. ಹರಿದಳ. 4. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. ಪೀತ "ಕನ್"  
(4-8-29) । ಪೀತೇನ ಪೀತವರ್ಣೇನ ಕಾಯತಿ — ಕೆ (ಶಬ್ದೇ)  
"ಕ:" (3-2-3) । 5. ಹಿತ್ತಾಳೆ. 6. ಮಧು,  
ಜೇನುತುಪ್ಪ. 7. ಅಗುರು.

**ಪೀತಕಂದ ಪೀತಕಂದ (ಪುಂ)** ಕೆಂಪುಮೂಲಂಗಿ, ಕಿತ್ತಳೆ  
ಬಣ್ಣದ ಬೇರು ಗೆಡ್ಡೆಯುಳ್ಳ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೂಲಂಗಿ.

**ಪೀತಕರವೀರ ಪೀತಕರವೀರ (ಪುಂ)** ಹಳದಿಯ ಗನ್ನೇರಳೆ  
ವೃಕ್ಷ. ಪೀತ: ಕರವೀರ: ।

**ಪೀತಕಾವೇರ ಪೀತಕಾವೇರ (ನಂ)** 1. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ.  
ಪೀತಂ ಕಾವೇರಂ ಕುತಿಸಿತಾಜ್ಞಮಪಿ ಯಸ್ಮಾತ್ । 2. ಹಿತ್ತಾಳೆ  
ಲೋಹ. "ಪೀತಕಾವೇರಮಿತ್ಯೇತತ್ ಕುಡ್‌ಕುಮೇ ಪಿತ್ತಲೇಽಪಿ ಚ"  
ಮೇದಿಂ ।

**ಪೀತಕಾಠ ಪೀತಕಾಠ (ನಂ)** ಹಳದಿ ಚಂದನ. ಪೀತಂ  
ಕಾಠಮ್ ।

**ಪೀತಚಂಪಕ ಪೀತಚಂಪಕ (ಪುಂ)** ದೀಪ. ಪೀತ: ಚಂಪಕ  
ಐವ ।

**ಪೀತತಾ ಪೀತತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹಳದಿಯ ಬಣ್ಣ.

**ಪೀತತುಂಡ ಪೀತತುಂಡ (ಪುಂ)** ಕಾರಂಡವ ಪಕ್ಷಿ.

**ಪೀತದಾರ ಪೀತದಾರು (ನಂ)** ಸರಳ ದೇವದಾರು.

**ಪೀತದ್ರುಗಾ ಪೀತದ್ರುಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹಾಲು ಕರೆಯಲು  
ಬಂಧನಕ್ಕೆ ಒಳಪಡಿಸಿರುವ ಹಸು. ಪೀತಂ ದ್ರುಗಂ ಯಸ್ಯಾ: ।

**ಪೀತದ್ರು ಪೀತದ್ರು (ಪುಂ)** ಮಂದರಿತನ, ದಾರುಹರಿದ್ರೆ.  
"ದಾರ್ವಿ ದಾರುಹರಿದ್ರಾ ಚ ಪರ್ಜನ್ಯಾ ಪರ್ಜನೀತಿ ಚ । ಪೀತದ್ರುಶ್ಚ  
ಹರಿದ್ರುಶ್ಚ ಪೀತದಾಕುಪೀತಕಮ್" ।

**ಪೀತನ ಪೀತನ (ನಂ)** 1. ಹರಿಹಳ, ಹರಿದಳ. 2. ಕುಂಕುಮ  
ಕೇಸರಿ. 3. ದೇವದಾರು ವೃಕ್ಷ. (ಪುಂ) 4. ಅಮ್ರಾಂತ  
ವೃಕ್ಷ, ಅಮಟಮರ. ಪೀತಂ ಕರೋತಿ — ಪೀತ + ಣಿಕ್  
"ಲ್ಯು:" (3-1-134) । "ಪೀತನಂ ಪೀತದಾಕುಪಿ । ಕುಡ್‌ಕುಮೇ  
ಹರಿತಾಲೇ ಚ ಪುಮಾನಾಮ್ರಾತಕೇ ಮತ:" ಮೇದಿಂ ।

**ಪೀತನಕ ಪೀತನಕ (ಪುಂ)** ಅಮ್ರಾಂತ ವೃಕ್ಷ, ಅಮಟಮರ.  
**ಪೀತನೀಲ ಪೀತನೀಲ (ಪುಂ)** ಹಳದಿ ನೀಲಿಬಣ್ಣ ಬೆರೆತ  
ಹಸುರು ಬಣ್ಣ.

**ಪೀತಪಾಡ ಪೀತಪಾಡಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮೈನಾ ಎಂಬ ಒಂದು  
ಜಾತಿಯ ಪಕ್ಷಿ. ಪೀತೌ ಪಾದೌ ಯಸ್ಯಾ: ।

**ಪೀತಪುಷ್ಪ ಪೀತಪುಷ್ಪ (ಪುಂ)** 1. ಚಂಪಕವೃಕ್ಷ, ಸಂಪಿಗೆಮರ.  
ಪೀತಂ ಪುಷ್ಪಂ ಯಸ್ಯ । 2. ಕಣಗಿಲೆ ಗಿಡ. (ನಂ) 3. ಕುಂಬಳದ  
ಗಿಡ. "ಕೂಷ್ಮಾಂಡಂ ಸ್ವಾತ್ ಪುಷ್ಪಫಲಂ ಪೀತಪುಷ್ಪಂ ಬೃಹತ್‌ಫಲಮ್"  
ಭಾವಪ್ರಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ಪುಷ್ಪಾ — ಪುಷ್ಪಾ. 4. ಹಾವುಮೆಣ್ಣೆ.  
5. ತೋಗರಿಗಿಡ.

**ಪೀತಭೃಂಗರಾಜ ಪೀತಭೃಂಗರಾಜ (ಪುಂ)** ಗಡಗದ ಸೊಪ್ಪು.

**ಪೀತಮಣಿ ಪೀತಮಣಿ (ಪುಂ)** ಪುಷ್ಪರಾಗ. ಪೀತೌ ಮಣಿ: ।

**ಪೀತಮೂಲಕ ಪೀತಮೂಲಕ (ನಂ)** ಕೆಂಪುಮೂಲಂಗಿ, ಕಿತ್ತಳೆ  
ಬಣ್ಣದ ಗೆಡ್ಡೆಯುಳ್ಳ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೂಲಂಗಿ. ಪೀತಂ  
ಮೂಲಮಸ್ಯ "ಕಪ್" (4-8-144) ।

**ಪೀತರಕ್ತ ಪೀತರಕ್ತ (ಪುಂ)** 1. ಹಳದಿ ಮತ್ತು ಕೆಂಪು ಬೆರೆತ  
ಬಣ್ಣ. (ನಂ) 2. ಪುಷ್ಪರಾಗ.

**ಪೀತರಾಗ ಪೀತರಾಗ (ಪುಂ)** 1. ಪೀತವರ್ಣ, ಹಳದಿಬಣ್ಣ.  
(ನಂ) 2. ಜೇನುಮೇಣ. 3. ತಾವರೆ ಹೂವಿನ ಕುಸುರು.  
(ವಿಂ) 4. ಹಳದಿ ಬಣ್ಣದ.

**ಪೀತರೋಹಿಣಿ ಪೀತರೋಹಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗಂಭಾರಿಗಿಡ,  
ಶೀವನೆಯ ಮರ.

**ಪೀತಲ ಪೀತಲ (ಪುಂ)** 1. ಹಳದಿಬಣ್ಣ. ಪೀತಂ ಲಾತಿ-ಲಾ  
(ಆದಾನೇ) "ಕ:" (3-2-3) । (ವಿಂ) 2. ಹಳದಿಬಣ್ಣದ.  
(ನಂ) 3. ಹಿತ್ತಾಳೆ.

**ಪೀತಲಕ ಪೀತಲಕ (ನಂ)** ಹಿತ್ತಾಳೆ. ಪೀತಲೇನ ಪೀತವರ್ಣೇನ  
ಕಾಯತಿ — ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ:" (3-2-3) ।

**ಪೀತಲೋಹ ಪೀತಲೋಹ (ನಂ)** ಹಿತ್ತಾಳೆ. ಪೀತಂ ಲೋಹಮ್ ।



ಪಿತ್ತವಾಸಸ್ ಪೀತವಾಸಸ್ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠ. ಪಿತ್ತಂ  
ವಾಸೋ यस್ಯ । (ವಿಂ) 2. ಹಳದಿ ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ಉಟ್ಟಿ-  
ರುವ. “ಯಃ ಸ ಚಕ್ರಗದಾಪಾಣಿಃ ಪಿತ್ತವಾಸಾಃ ಶಿತಿಪ್ರಭಃ”  
ಭಾಂ ಆದಿಂ ।

ಪಿತ್ತವೃಕ್ಷ ಪೀತವೃಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಸರಳವೃಕ್ಷ. 2. ಹೆಮ್ಮರ,  
ತಿಗಡುಮರ.

ಪಿತ್ತಸಾರ ಪೀತಸಾರ (ಪುಂ) 1. ಗಂಧದ ಮರ. 2.  
ಗೋಮೇದಕ ಮಣಿ.

ಪಿತ್ತಸಾಲಕ ಪೀತಸಾಲಕ (ಪುಂ) ಹೊನ್ನೆಮರ.

ಪಿತ್ತಸ್ಫಟಿಕ ಪೀತಸ್ಫಟಿಕ (ಪುಂ) ಪುಷ್ಪರಾಗ.

ಪಿತ್ತಹರಿತ ಪೀತಹರಿತ (ಪುಂ) ಹಳದಿ ಮತ್ತು ಹಸುರು  
ಬೆರೆತ ಬಣ್ಣ.

ಪಿತ್ತಾ ಪೀತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹರಿದ್ರೆ, ಅರಿಶಿನ. ಪಿತ್ತೋ ವರ್ಣೋ-  
ಸ್ತಸ್ಯಾಃ “ಅಚ್” (೪-೨-೧೨೭) ।

ಪಿತ್ತಾಂವಿ ಪೀತಾಂವಿ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರವನ್ನು ಪಾನಮಾಡಿದ  
ಅಗ್ನಿ ಮಹರ್ಷಿ. ಪಿತ್ತೋಂವಿಃ ಯೇನ ।

ಪಿತ್ತಾಂಬರ ಪೀತಾಂಬರ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಪಿತ್ತಮಂಬರಂ  
ವಸ್ತ್ರಂ ಯಸ್ಯ । 2. ಶೈಲೂಷ, ನಟ. (ವಿಂ) 3. ಹಳದಿ  
ವಸ್ತ್ರವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ.

ಪಿತ್ತಾರುಣ ಪೀತಾರುಣ (ಪುಂ) ಹಳದಿ ಕೆಂಪು ಬೆರೆತ ಬಣ್ಣ.

ಪಿತ್ತಾಶಮನ್ ಪೀತಾಶಮನ್ (ಪುಂ) ಪುಷ್ಪರಾಗ ಮಣಿ. ಪಿತ್ತಃ  
ಅಶಮಾ ।

ಪಿತ್ತಿ ಪೀತಿ (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. ಪಾ (ಪಾನೇ) “ಕ್ತಿನ್”  
(೩-೩-೧೭೪) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಪಾನ, ಕುಡಿಯುವುದು.  
ಪಾ (ಪಾನೇ) ಭಾವೇ “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೧೪) । “ಪಿತ್ತಿರ್ನಾಶ್ವೇ  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಪಾನೇ” ಮೇದಿಂ । 3. ಆನೆಯ ಸೊಂಡಿಲು. ಪಿತ್ತೇ-  
ಜಯಾ—ಕರಂ “ಕ್ತಿನ್” ।

ಪಿತ್ತಿಕಾ ಪೀತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರದರಿಶಿನ. ಪಿತ್ತೋ ವರ್ಣೋ-  
ಸ್ತಸ್ಯಾಃ “ಕನ್” (೪-೨-೧೧೫) ।

ಪಿತ್ತಿನ್ ಪೀತಿನ್ (ಪುಂ) ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ.

ಪಿತ್ತು ಪೀತು (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಅಗ್ನಿ. ಪಾ (ಪಾನೇ)  
“ತುನ್” (೩ಂ ೧-೭೧) । 3. ಯೂಥಪತಿ, ಸಲಗ.

ಪಿತ್ತ ಪೀಥ (ಪುಂ) 1. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. 2. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ.  
ಪಾ (ಪಾನಿ) “ಥಕ್” (೩ಂ ೨-೭) । ಇತ್ವಮ್ (೬-೪-೬೬) ।  
3. ಕಾಲ, ಸಮಯ. (ನಂ) 4. ಘೃತ, ತುಪ್ಪ. 5. ಜಲ,  
ನೀರು. ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಪಿತ್ತಿ ಪೀಥಿ (ಪುಂ) ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ.

ಪಿನ್ನ ಪೀನ (ವಿಂ) 1. ಬಲಿಷ್ಠವಾದ, ಬಲಶಾಲಿಯಾದ. ಅಂ-  
ಪ್ಯಾಯಿ (ವೃದ್ಧಿ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) । ನಿಷ್ಕಾಂತಸ್ಯ ನಃ  
(೮-೨-೪೫) । “ಪರಿಣತಕಠೋರಪುಷ್ಕರಗರ್ಭಂ ಪಿನ್ನಮಸೃಣ-  
ಸುಕ್ತುಮಾರಃ” ೩ಂ ರಾಂ ೬-೧೩ । 2. ದಪ್ಪವಾಗಿರುವ, ಸ್ಥೂಲ  
ವಾಗಿರುವ, ಪುಷ್ಪವಾಗಿರುವ. “ಮುಹುರೀತರಕರಾಹಿತೇನ  
ಪಿನ್ನಸ್ತನತರೋಧಿ ತಿರೋದಧೇಂಶುಕೇನ” ಮಾಘಂ ೭-೩೨ ।

ಪಿನ್ನಸ ಪೀನಸ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಮೂಗಿನ ರೋಗ. ಪಿನ್ನಂ  
ಜನಂ ಸ್ಯತಿ ನಾಶಯತಿ—ಘೋ (ಅಂತರ್ಮಣಿ) “ಕಃ”  
(೩-೨-೩) । ಈ ರೋಗಕ್ಕೆ “ಪ್ರತಿಶಯಾಃ” ಎಂದೂ  
ಹೆಸರು. ಪೀನಸ ರೋಗವು (1) ವಾತಜಃ (2) ಪಿತ್ತಜಃ  
ಮತ್ತು (3) ಕಫಜಃ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ.

ವಾತಜ ಪೀನಸ ಲಕ್ಷಣಃ ಮೂಗಿನ ಹೊಳ್ಳೆಗಳು  
ವಾಯುವಿನಿಂದ ತುಂಬಿರುವಂತೆ ಮತ್ತು ಧೂಳಿನಿಂದ  
ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟಂತೆ ಆಗುವುದಲ್ಲದೆ ಮೂಗಿನಲ್ಲಿ ಸ್ವಲ್ಪ ಸ್ವಲ್ಪ  
ವಾಗಿ ನೀರು ಸೋರಲು ಪ್ರಾರಂಭವಾಗುವುದು. ಕಂಠ  
ದವಡೆ ಮತ್ತು ತುಟಿಗಳು ಒಣಗುವುವು. ಹಣೆಯ ಮೂಳೆ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಯಾತನೆಯೂ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಕಂಠದ ಶಕ್ತಿ  
ಕುಂಠಿತವಾಗಿ ಸ್ವರವೂ ಸರಿಯಾಗಿ ಹೊರಡಲಾರದು.  
“ಆನದ್ವಾ ಪಿಹಿತಾ ನಾಸಾ ತನ್ಮುಖಾವಪ್ರವರ್ತಿತಿನಿ । ಗಲತಾಲ್ವೋಷ-  
ಶೋಷಶ್ಚ ನಿಸ್ತೋದಃ ಶಾಹ್ವಯೋಸ್ತಥಾ । ಸ್ವರೋಪಘಾತಶ್ಚ ಭವೇತ್  
ಪ್ರತಿಶಯಾಽಽನಿಲಾತ್ಮಕೇ” ಸುಶ್ರುತಂ ೨೪-೬ ।

ಪಿತ್ತ ಪೀನಸ ಲಕ್ಷಣಃ ಪಿತ್ತ ಪೀನಸದಲ್ಲಿ ಮೂಗಿನಿಂದ  
ಬಿಸಿಯಾದ ಹಳದಿಬಣ್ಣದ ದ್ರವವು ಸ್ರವಿಸುವುದು.  
ದೇಹವು ಕೃಶವಾಗುವುದು, ರಕ್ತ ಕಡಮೆಯಾಗಿ ಬಿಳುಪೇರು  
ವುದು. ಬಾಯಾರಿಕೆಯಿಂದ ಪೀಡಿತನಾಗುವನು. ಹೊಗೆ  
ಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಬೆಂಕಿಯು ಹೊರಡುವಂತೆ ಮೂಗಿನಿಂದ  
ಬಿಸಿಯ ಉಸಿರು ಹೊರಡುವುದು. “ಉಷ್ಣಃ ಸಪಿತ್ತಕಃ  
ಸ್ರಾವೋ ಗ್ರಾಣಾತ್ ಸ್ರವತಿ ಪೈತ್ತಿಕೇ । ಕೃಶೋತಿಪಾಣ್ಡುಃ ಸಂತಪ್ತೋ  
ಭವೇತ್ಪಿಣ್ಣಾನಿಪಿಡಿತಃ । ಸಧೂಂ ಸಹಸಾ ವಹ್ನಿ ವಮತೀವ ಚ  
ಮಾನವಃ” ಸುಶ್ರುತಂ ೨೪-೭, ೮ ।

ಕಫಜ ಪೀನಸ ಲಕ್ಷಣಃ ಕಫಜ ಪೀನಸದಲ್ಲಿ ಪದೇ  
ಪದೇ ಮೂಗಿನಿಂದ ಬಿಳುಪಾದ ಶೀತಕಫವು ಸ್ರವಿಸುವುದು.  
ಕಣ್ಣು ಊದುವುದು. ಕಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಬಿಳುಪೇರಿ ಎಲ್ಲವೂ ಬೆಳ್ಳಗೆ  
ಕಾಣಿಸುವುದು. ತಲೆ ಮುಖಗಳು ಭಾರವಾಗುವುವು. ತಲೆ  
ಕಂಠ ತುಟಿ ಮತ್ತು ದವಡೆಗಳಲ್ಲಿ ಬಹಳ ನವೆಯುಂಟಾಗು  
ವುದು. “ಕಫಃ ಕಫಕೃತೇ ಗ್ರಾಣಾಶ್ಚಕ್ಷುಃ ಶೀತಃ ಸರ್ವೇನ್ಮುಹಃ ।  
ಶುಕ್ಲಾವಭಾಸಃ ಶೂನಾಕ್ಷಃ ಭವೇದ್ಗುರುಶಿರೋಮುಖಃ । ಶಿರೋ-  
ಗಲೀಷಿತಾಲೂನಾಂ ಕಂಠಜ್ವರಮತೀವ ಚ” ಸುಶ್ರುತಂ ೨೪-೯, ೧೦ ।



**ಪೊನಸ ರೋಗಕ್ಕೆ ಕಾರಣ:** ಅತಿಯಾದ ಸ್ತ್ರೀ ಸಂಗಮ ಹೊಗೆ ಧೂಳು ಇವು ಮೂಗಿನ ಮೂಲಕ ತಲೆಯನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದರಿಂದ ತಲೆಯಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಹಿಂಸೆ ಮೂಲಮೂತ್ರಗಳನ್ನು ಹೆಚ್ಚುಕಾಲ ತಡೆಯುವುದು ಇತ್ಯಾದಿ ಪೊನಸರೋಗಕ್ಕೆ ಕಾರಣಗಳು. "ನಾರೀಪ್ರಸಂಗ್ಗ: ಶಿರಸೋಽಭಿತಾಪ: ಧೂಮೋ ರಜ: ಶೀತಮತಿಪ್ರತಾಪ: | ಸಂಧಾರಣಂ ಮೃತಪುರೀಷಯೋಶ್ಚ ಸದ್ಯ: ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಯನಿದಾನಮುಕ್ತಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ 24-4 |

**ಪೊನಸಾ ಪೊನಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸೌತೆಗಿಡ. ಪೊನ ಸ್ಯತಿ — ಷಿ (ಅಂತಕರ್ಮಣಿ) "ಕ:" (3-2-96) |

**ಪೊನಸಿನ್ ಪೊನಸಿನ್ (ವಿಂ)** ಪೊನಸ ರೋಗವುಳ್ಳವನು. ಪೊನಸೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114) | "ವಿಲಕ್ಷಣನ: ಪಾಚನದೀಪನೀಯೇಽಪಾಚರೆತ್ ಪೊನಸಿನಂ ಯಥಾವತ್ | ಬಹುದ್ರವೇರ್ವಾತ-ಕಫೋಪಸೃಷ್ಟಂ ಪ್ರಚ್ಛೇದಯೇತ್ ಪೊನಸಿನಂ ವಯಸ್ಥಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ 24 |

**ಪೊನಾಹ ಪೊನಾಹ (ಪುಂ)** ಬಾವಿಯ ಕಟ್ಟೆ. ಇಟ್ಟಿಗೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಬಾವಿಯ ಮುಖಭಾಗ.

**ಪೊನೋಘ್ನಿ ಪೊನೋಘ್ನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದಪ್ಪವಾದ ಕೆಚ್ಚಲುಳ್ಳ ಹಸು. ಪೊನಮೂಘೋಽಸ್ಯಾ: | ಅಧಂತಸ್ಯ ಅನಡಾದೇಶ: (4-4-131) | "ಡೀಪ್" (4-1-24) |

**ಪೊಯ ಪೊಯ (ಪುಂ)** 1. ಕಾಲ, ಸಮಯ. ಪಿಬತಿ — ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕ್ರು:" ಯುಗಾಗಮಶ್ಚ ನಿಪಾಂ (30 1-37) | 2. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. 3. ವಾಯು, ಕಾಗೆ.

**ಪೊಯುಷ ಪೊಯುಷ (ನಂ)** 1. ಅಮೃತ. ಪಿಯ್ಯತೇ — ಪಿಯ (ಸೌತ್ರಘಾತು:) "ಅಪನ್" (30 4-96) | "ಪೊಯುಷಧಾರಾ-ಧರಾಭಿರಂತಸ್ತಾಸಾಂ ರಸೋದನ್ವತಿ ಮಜ್ಜಯಾಮ:" ನೈಷಂ 3-42 | 2. ಕ್ಷೀರ, ಹಾಲು. (ಪುನಂ) 3. ಕರು ಹಾಕಿದ ಏಳು ದಿನ ಗಳೊಳಗಿನ ಹಸುವಿನ ಹಾಲು. "ಸ್ಯಾತ್ಪೇಯುಷಂ ಚ ಪೊಯುಷಂ ನವಕ್ಷೀರೇಽಮೃತೇಽಪಿ ಚ" ಹಾರಾಂ | "ನವಸೂತಗವೀದ್ಧುಃ ಪೊಯುಷ-ಮಮೃತೇಽಪಿ ಚ" ನಾನಾರ್ಥಂ | "ಪೊಯುಷೋಽಭಿನವಂ ಪಯ:" ಅಮಂ |

**ಪೊಯುಷಭುಜ್ ಪೊಯುಷಭುಜ್ (ಪುಂ)** ದೇವತೆ. ಪೊಯುಷ ಭುಜ್ಕತೇ — ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ:) "ಕ್ವಿಪ್" (3-2-96) | "ಠ್ಯೋ ಠ್ಯೋಽಭಿಜಿತಕಾಶ್ವನಿಭಿಸ್ತಥಾಸಿ ಪೊಯುಷಭುಜಾಂ ಸನಾಭಿ:" ನೈಷಂ 6-26 |

**ಪೊಯುಷಮಯುಷ ಪೊಯುಷಮಯುಷ (ಪುಂ)** ಅಮೃತ ಮಯ ಕಿರಣಗಳುಳ್ಳ ಚಂದ್ರ. ಪೊಯುಷಮಯಾ ಮಯುಷಾ ಅಸ್ಯ | "ಆಲೋಕತೃಪ್ತೀಕೃತಲೋಕ ಯಸ್ತ್ವಾಮಸೂತ ಪೊಯುಷಮಯುಷಮೇನಮ್" ನೈಷಂ 6-30 |

**ಪೊಯುಷಮಹಸ್ ಪೊಯುಷಮಹಸ್ (ಪುಂ)** 1. ಚಂದ್ರ. 2. ಕರ್ಪೂರ. ಪೊಯುಷಮಿವ ಆಹ್ಲಾದಕಂ ಮಹೋ ಯಸ್ಯ |

**ಪೊಯುಷವರ್ಷ ಪೊಯುಷವರ್ಷ (ಪುಂ)** 1. ಚಂದ್ರ. 2. ಕರ್ಪೂರ. 3. ಚಂದ್ರಾಯೋಕಮೆಂಬ ಅಲಂಕಾರ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಕವಿ. "ಉಲ್ಲಾಸಾಯ ವಿಚಾರವೀಚಿ-ನಿಚಯಾಲಕ್ಷಾರವಾರಾನಿಧೇಶ್ವರಾದ್ರಾಲೋಕಮಮ್ ಸ್ವಯಂ ವಿತನುತೇ ಪೊಯುಷವರ್ಷ: ಕೃತೀ" ಚಂದ್ರಾಂ |

**ಪೊಲಕ ಪೊಲಕ (ಪುಂ)** 1. ಕಟ್ಟಿರುವೆ. ಉದ್ದವಾದ ಕಪ್ಪು ಇರುವೆ. (ವಿಂ) 2. ತಡೆಗಟ್ಟುವವನು. ಪೊಲ (ಪ್ರತಿಷ್ಠಮ್) "ಪ್ವಲ್" (3-1-133) |

**ಪೊಲು ಪೊಲು (ಪುಂ)** 1. ಕುಸುಮ, ಪುಷ್ಪ. ಪೊಲತಿ ಪ್ರತಿಷ್ಠ-ಮ್ನಾತಿ — ಪೊಲ (ಪ್ರತಿಷ್ಠಮ್) "ಕ್ರು:" (30 1-37) | 2. ಗೋನುಮರ. 3. ಪರಮಾಣು. 4. ಗಜ, ಆನೆ. 5. ಅಸ್ಥಿಮಂಡ, ಎಲುಬುಗಳ ರಾಶಿ. 6. ತಾಳವೃಕ್ಷದ ಕಾಂಡ. 7. ಕೃಮಿ, ಹುಳ. 8. ಶರ, ಬಾಣ. (ನಂ) 9. ಗೋನುಹಣ್ಣು.

**ಪೊಲುಪತ್ರ ಪೊಲುಪತ್ರ (ಪುಂ)** ಕುರಟಗೆ ಗಿಡ.

**ಪೊಲುಪರ್ಣಿ ಪೊಲುಪರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಕುರಟಗೆ ಗಿಡ. 2. ತೊಂಡೆಗಿಡ. "ಪೊಲುಪರ್ಣಿ ಬಿಮ್ಬಿಕಾಯಾಂ ಮೂರ್ವಾಯಾಮೋಪಧಿ-ಮಿಧಿ" ಮೇದಿಂ |

**ಪೊವನ್ ಪೊವನ್ (ವಿಂ)** 1. ಸ್ಥೂಲವಾದ, ಪುಷ್ಪವಾದ, ದಪ್ಪವಾದ. 2. ಬಲಿಷ್ಠ, ಬಲಶಾಲಿ. ಪೈಡ್ (ವೃದ್ಧಿ) "ಕ್ವನಿಪ್" (30 4-114) | ಸಂಪ್ರಸಾರಣಶ್ಚ | "ಕಲ್ಲೋಲ-ಜಾಲಚಲನೋಪನತೇನ ಪೊವಾ ಜೀವಾತುನಾನವರತೇನ ಪಯೋರಸೇನ" ನೈಷಂ 11-41 |

**ಪೊವರ ಪೊವರ (ವಿಂ)** 1. ಸ್ಥೂಲವಾದ, ದಪ್ಪವಾದ, ಪರಿಪುಷ್ಪವಾದ. ಪೈಡ್ (ವೃದ್ಧಿ) "ಪ್ವರಕ್" (30 3-1) | "ತಂ ಕರ್ಣಮೂಷಣನಿಪಿಡಿತಪೊವರಾಸಂ ಶಯೋತ್ತರಚ್ಛದವಿಮರ್ದ-ಕುಶಾಙ್ಗರಾಗಮ್" ರಘುಂ 4-64 | (ಪುಂ) 2. ತಾಮಸ ಮನ್ವಂತರದ ಸಪ್ತರ್ಷಿಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ ಮುಷಿ. 3. ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ. "ಪೊವರ: ಕಚ್ಛಪೇ ಸ್ಥೂಲೇ" ಮೇದಿಂ |

**ಪೊವರಸ್ತನಿ ಪೊವರಸ್ತನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ದೊಡ್ಡ ಕೆಚ್ಚಲುಳ್ಳ ಹಸು. 2. ಸ್ಥೂಲವಾದ ಸ್ತನಗಳುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಪೊವರೋ ಸ್ತನೋ ಯಸ್ಯಾ: | "ಪಯೋಧರೇಣೋರಸಿ ಕಾಚಿದ್ಧುಮನಾ: ಪ್ರಿಯಂ ಜಘಾನೋತ್ತರಪೊವರಸ್ತನಿ" ಕಿರಾಂ 6-19 |

**ಪೊವರಾ ಪೊವರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಅಶ್ವಗಂಧಿ ಗಿಡ. 2. ಶತಾವರೀ ಗಿಡ. 3. ಸ್ಥೂಲವಾದ ಹೆಂಗಸು.



ವಿವರ ಪೀಠಿಕೆ (ಸ್ತಂಭ) 1. ಶತಾವಧಿ ಗಿಡ. 2. ಅಕ್ಕಿ, ಹಸು.

ವಿವಾ ಪೀಠಿಕೆ (ಸ್ತಂಭ) ಜಲ, ನೀರು.

ಪುಯೋಗ ಪುಂಯೋಗ (ಪುಂ) 1. ಪುರುಷನ ಸಂಬಂಧ, ಹೆಂಗಸಿಗೆ ಪುರುಷನೊಡನೆ ಉಂಟಾಗುವ (ಮೈಥುನ ರೂಪವಾದ) ಸಂಬಂಧ. 2. ಪುರುಷನಿಗೂ ಹೆಂಗಸಿಗೂ ಇರುವ ಪತಿ-ಪತ್ನೀರೂಪವಾದ ಸಂಬಂಧ. "ಪುಯೋಗಾದಾಖ್ಯಾಯಾಮ್" ಪಾಂ. ಸುಂ ೪-೧-೪೮. ಪತಿಪತ್ನೀರೂಪವಾದ ಈ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಗೋಷ್ಠಿ ಪತ್ನಿ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಪುರುಷವಾಚಕವಾದ ಗೋಷ್ಠಿ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ "ಛೇ" ಪ್ರತ್ಯಯ ವಿಹಿತವಾಗಿ ಗೋಷ್ಠಿ ಸ್ತ್ರೀ ಗೋಷ್ಠಿ ಎಂದು ರೂಪವಾಗುವುದು.

ಪುರಾಣಿ ಪುಂರಾಶಿ (ಪುಂ) ಪುರುಷಗ್ರಹವು ಅಧಿಪತಿಯಾಗಿರುವ ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ ರಾಶಿಗಳು. ಕುಜ ರವಿ ಮತ್ತು ಗುರು ಇವರು ಅಧಿಪತಿಗಳಾದ ಮೇಷ ಸಿಂಹ ವೃಶ್ಚಿಕ ಧನುಸ್ಸು ಮತ್ತು ಮೀನರಾಶಿಗಳು ಪುಂರಾಶಿಗಳು.

ಪುಲಿಂಗ ಪುಂಲಿಂಗ (ನಂ) 1. ಪುರುಷನ ಚಿಹ್ನೆ, ಪುರುಷನ ಗುರುತು, ಪುರುಷನ ಲಕ್ಷಣ. ಪುಂಸಿ ಲಿಂಗಮ್. (ಪುಂ) 2. ಪುರುಷನನ್ನು ಹೇಳುವ ಶಬ್ದ, ಪುಂಲಿಂಗ ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಶಬ್ದ. ಪುಂಸಿ ಲಿಂಗಮಸ್ಯ. (ವಿಂ) 3. ಪುರುಷನ ಚಿಹ್ನೆಯುಳ್ಳ. "ಪುಲಿಂಗಾ ಇವ ನಾರ್ಯಸ್ತು ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗಾಃ ಪುರುಷಾಭವನ್" ಮಾಂ. ಶಾಲ್ಯಂ.

ಪುಂವತ್ ಪುಂವತ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪುರುಷನಂತೆ, ಗಂಡನಂತೆ. ಪುಂಸಿ ತುಲ್ಯಮ್ "ವತಿಃ" (೪-೧-೧೧೪). "ತತೋ ನೃಪಾಣಾಂ ಶ್ರುತವೃತ್ತವಂಶಾ ಪುಂವತ್ಪ್ರಗಲ್ಭಾ ಪ್ರತಿಹಾರರಕ್ಷಿ" ರಘುಂ. ೬-೨೦. 2. ಪುಂವಾಚಕಶಬ್ದದಂತೆ, ಪುರುಷವಾಚಕಶಬ್ದದಂತೆ, ಪುರುಷನನ್ನು ಹೇಳುವ ಶಬ್ದದಂತೆ. "ಸ್ತ್ರೀಯಾಃ ಪುಂವತ್ ಭಾಷಿತಪುಂಸ್ಕಾದನುತ್" ಪಾಂ. ಸುಂ. ೬-೩-೩೪.

ಪುಂವತ್ ಪುಂವತ್ (ಪುಂ) 1. ಗಂಡುಕರು, ಹೋರಿಗರು. ಪುಂವತ್ಪ್ರಾಸೌ ವತ್ಸಾಃ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವತ್ಸಾ -ವತ್ಸಾ. 2. ಗಂಡುಕರುವುಳ್ಳ ಹಸು.

ಪುಂವತ್ ಪುಂವತ್ (ಪುಂ) 1. ಎತ್ತು, ಹೋರಿ. 2. ಮೂಗಿಲಿ.

ಪುಂವತ್ ಪುಂವತ್ (ಪುಂ) 1. ಪುರುಷನ ಮೇಷ. (ವಿಂ) 2. ಪುರುಷನಂತೆ ಉಟ್ಟು ತೊಟ್ಟಿರುವ.

ಪುಂವತ್ ಪುಂವತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಲಟೆ, ಹಾದರಗಿತ್ತಿ, ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ಮನೆಮನೆಗೂ ತಿರುಗುತ್ತಿರುವ ಹೆಂಗಸು. ಪುಂಸಿ ಭರ್ತುಃ ಸಕಾಶಾತ್ ಚಲತಿ - ಚಲ (ಕಂಪನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). ಗೌರಾಂ "ಛೇ" (೪-೧-೪೧). "ಚಿಕಿತ್ಸಾ-ಕಾತರಕ್ರುದ್ಧಪುಂವತ್ಪ್ರೀತವಿವಿಧಾಮ್" ಯಾಜ್ಞಂ. ೧-೧೬೨.

ಕುಲಟೆಯ ನಡೆನುಡಿಗಳಲ್ಲಿರುವ ಮೋಷಗಳು : ಇವಳ ಸಹವಾಸ ಮಾಡಿ ಇವಳನ್ನು ನಂಬಿದವನು ಸರ್ವ ನಾಶವನ್ನು ಹೊಂದುವನು. ಅವನು ಸಂಪಾದಿಸಿದ ಕೀರ್ತಿಯು ನಾಶವಾಗುವುದಲ್ಲದೆ ಧರ್ಮಭ್ರಷ್ಟನಾಗುವನು. ಕುಲದಿಂದ ಹೊರಗಾಗುವನು. ಇವಳು ಇಷ್ಟನಾದ ಮತ್ತೊಬ್ಬನಲ್ಲಿ ಮೋಹಗೊಂಡು ಮೊದಲಿನವನನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಓಡುವುದರಿಂದ ಇವಳನ್ನು ಸೇರಿದವನು ಉಭಯತ್ರ ಭ್ರಷ್ಟನಾಗುವನು. ತನ್ನ ಪತಿ, ತಂದೆ, ತಾಯಿ, ಮಗ ಬಂಧು ಇವರೆಲ್ಲರನ್ನೂ ವಂಚಿಸಿ ಹೋಗುವಷ್ಟು ಚಪಲ ಚಿತ್ತಳು ಮತ್ತು ಕ್ರೂರ ಹೃದಯವುಳ್ಳವಳು. "ಪುಂವತ್ ಯೋ ಹಿ ವಿಶ್ವಸ್ತೋ ವಿಧಿನಾ ಸ ವಿವಿಧವಿತಃ. ಬಹಿಷ್ಕೃತಶ್ಚ ಯಶಾಃ ಧರ್ಮೇಣ ಸ್ವಕುಲೇನ ಚ. ಬಾಂಧವ್ಯಂ ನೂತನಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ವಿನಶ್ಯತಿ ಪುರಾತನಮ್. ದೇವೇ ಕರ್ಮಣಿ ಪೇತ್ರೇ ಚ ಪುತ್ರೇ ಬಂಧುಃ ಚ ಭರ್ತರಿ. ದಾಸ್ಯಂ ಪುಂವತ್ಪ್ರೀತವಿವಿಧಾಮ್. ಪ್ರಾಣಾಧಿಕಂ ರತಿಜ್ಞಂ ಸಾಮೃತದೃಷ್ಟಾ ಹಿ ಪುಂವತ್. ರತ್ನಪ್ರದ ರತ್ನವಿಜ್ಞಂ ವಿವಿಧವಿತಃ ಹಿ ಪಶ್ಯತಿ".

ಪುಂವತ್ ಪುಂವತ್ (ನಂ) ಪುರುಷನ ಲಕ್ಷಣವಾದ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ. ಪುಂಸಿ: ಪುರುಷಸ್ಯ ಚಿಹ್ನಮ್.

ಪುಂಸ್ ಪುಂಸ್ (ಪುಂ) ಪುರುಷ, ಗಂಡಸು. ಪಾತಿ - ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಛೇ" (೩-೧-೧೩೪). ಪುಮಾನ್ ಪುಮಾಸೌ ಪುಮಾಸಿ. "ತಾಮಗೌರವಭೇದೇನ ಮುನೀಶ್ವರಾಪಶ್ಯದೋಶವರಃ. ಸ್ತ್ರೀ ಪುಮಾನಿತ್ಯನಾಸ್ಯೇಷಾ ವೃತ್ತಿ ಹಿ ಮಹಿತಂ ಸತಾಂ" ಕುಮಾಂ. ೬-೧೨.

ಪುಂವತ್ ಪುಂವತ್ (ನಂ) 1. ಸ್ತ್ರೀಯು ಗರ್ಭಧರಿಸಿದಾಗ ಪುತ್ರಸಂತಾನದ ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ನಡೆಯುವ ಒಂದು ಸಂಸ್ಕಾರ. ಪುಮಾಸಿ ಸುತೇನೇನ - ಷಟ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭವಿಮೋಚನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪). "ಯಥಾಕ್ರಮಂ ಪುಂವತ್ಪ್ರೀತವಿವಿಧಾಮ್: ಕ್ರಿಯಾಃ ಭೃತೇಶ್ಚ ಧೀರಃ ಸದೃಶೀರ್ವ್ಯವತ್ತ ಸಃ" ರಘುಂ. ೩-೧೦. 2. ಕ್ಷೀರ, ಹಾಲು. ಪುಮಾಸಿಮಿವ ಸುತೇ ಪುರುಷವತ್ ಜನಯತ್ಯನೇನ - ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್". ಗರ್ಭವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವುದು ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತೋರಿದಾಗ ಮೂರನೆಯ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಪುಂವತ್ಪ್ರೀತವಿವಿಧಾಮ್ ನಡೆಯುವುದು.

ಪುಂವತ್ ಪುಂವತ್ (ಪುಂ) ಗಂಡು ಕೋಗಿಲೆ. ಪುಮಾನ್ ಕೋಕಿಲಃ. "ಚೂತಾಡ್ಕುರಾಸ್ವಾದಕಥಾಯಕಂಠಃ ಪುಂವತ್ಪ್ರೀತವಿವಿಧಾಮ್ ಯನ್ಮಧುರಂ ಚುಕುಜ್" ಕುಮಾಂ. ೩-೩೨.

ಪುಂವತ್ ಪುಂವತ್ (ನಂ) 1. ಪುರುಷತ್ವ, ಗಂಡುತನ. ಪುಂಸಿ: ಪುರುಷಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತ್ವಃ" (೪-೧-೧೧೪). "ಯತ್ನಾತ್ಪರೀಕ್ಷಿತಃ ಪುಂವತ್ ಯುವಾ ಧೀಮಾನ್ ಜನಪ್ರಿಯಃ" ಯಾಜ್ಞಂ. ೧-೪೪. 2. ವೀರ್ಯ, ಶುಕ್ರಧಾತು.



**ಪುಕಸ ಪುಕ್ತಸ (ಪುಂ)** 1. ನಿಷಾದನಿಂದ ಶೂದ್ರ ಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಮಿಶ್ರ ಜಾತಿಯವನು. "ಜಾತೋ ನಿಷಾದಾ-  
ಚ್ಛದ್ರಾಯಾಂ ಜಾತ್ಯಾ ಭವತಿ ಪುಕಸಃ" ಮನುಂ ೧೦-೧೮ |  
ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಪುಕಸೋ ಪುಕ್ತಸೀ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಕೋರಕ,  
ಮೊಗ್ಗು. 3. ನೀಲಗಿಡ.

**ಪುಕ್ತ ಪುಂಜ (ಪುಂ)** 1. ಬಾಣದ ಮೂಲಭಾಗ. ಪುಮಾಂಸ  
ಖನತಿ - ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಙಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೧೦೧) |  
"ಸಕ್ತಾಙ್ಗುಲಿಃ ಸಾಯಕಪುಡ್ಘ ಏವ ಚಿತ್ರಾಪಿತಾರಮ್ಭ ಇವಾವ-  
ತಸ್ಥೇ" ರಘುಂ ೨-೩೧ | 2. ಗಿಡಗ ಹಕ್ಕಿ.

**ಪುಕ್ತ ಪುಂಗ (ಪುಂ)** ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು, ರಾಶಿ.

**ಪುಕ್ತವ ಪುಂಗವ (ಪುಂ)** 1. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. ಪುಮಾನ್ ಗೌಃ  
"ದಕ್" (೪-೪-೧೨) | "ರೋಮೋದ್ಗಮಃ ಪ್ರಾದುರಭುದುಮಾಯಾಃ  
ಸ್ವಿಷ್ಠಾಙ್ಗುಲಿಃ ಪುಕ್ತವಕೇತುರಾಸೀತ್" ಕುಮಾಂ ೭-೭೭ |  
(ವಿಂ) 2. (ಉತ್ತರಪದವಾದಾಗ) ಶ್ರೇಷ್ಠ, ಉತ್ತಮ.  
"ಯದುಪುಕ್ತವಸೂರ್ಯಸನ್ನಿಧಾನೇ ಶಿಶುಪಾಲಃ ಪ್ರತಿಸೂರ್ಯವತ್ಪ್ರದೀಪ್ತಃ"  
ಛಾಂ ೧೪-೧೧೬ |

**ಪುಂಚ ಪುಚ್ಚ (ಪುಂ)** 1. ಬಾಲ, ಲಾಂಗೂಲ. "ಪುಂಚ-  
ಭಾಷ್ಠಕೀವರಾಣಿಙ್" (೩-೧-೨೦) ಇತಿ ನಿಪಾತನಾತ್ಸಾಧುಃ |  
"ಪಶ್ಚಾತ್ಪುಂಚಂ ಬಹತಿ ವಿಪುಲಂ ತಚ್ಚ ಭೂನೋತ್ಯಜಸ್ರಮ್" ತಂ ರಾಂ  
೪-೨೬ | 2. ಹಿಂಭಾಗ, ಹಿಂದಿನ ಅವಯವ.

**ಪುಂಚಕಾಟಕ ಪುಚ್ಚಕಂಟಕ (ಪುಂ)** (ಬಾಲದಲ್ಲಿ ಮುಳ್ಳು  
ರುವ) ವೃಶ್ಚಿಕ, ಚೇಳು.

**ಪುಂಚಾಟ ಪುಚ್ಚಟ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಬೆರಳುಗಳಿಂದ ಚೆಟಕಿ ಹಾಕು  
ವುದು.

**ಪುಂಚಿನ್ ಪುಚ್ಚಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಬಾಲವುಳ್ಳ, ಬಾಲ ಹೊಂದಿ  
ರುವ. ಪುಂಚೋಸ್ತಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) | (ಪುಂ)  
2. ಅರ್ಧವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 3. ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ.

**ಪುಂಜ ಪುಂಜ (ಪುಂ)** ರಾಶಿ, ಸಮೂಹ, ಧಾನ್ಯ ಮೊದ  
ಲಾದುವುಗಳ ಗುಂಪು (ಗುಡ್ಡೆ). ಪಿಜಿ (ಹಿಸಾಬಲಾದಾನ-  
ನಿಕೇತನೇಷು) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | ಪೃಷಂ | "ಕ್ಷೀರೋದ-  
ವೇಲೇವ ಸರ್ಪೇನಪುಂಜಾ ಪರ್ಯಾಪ್ತಚಂದ್ರೇವ ಶರತ್ಪ್ರಿಯಾಮಾ" ಕುಮಾಂ  
೭-೨೬ |

**ಪುಟ ಪುಟ (ಪುಂ)** 1. ಎಲೆಯಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಪಾನ  
ಪಾತ್ರೆ, ದೊನ್ನೆ. ಪುಟ (ಸಂಶ್ಲೇಷಣೆ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೪) |  
"ಹುಂಭವಾ ಪಯಃ ಪತ್ರಪುಟೇ ಮದೀಯಂ ಪುತ್ರೋಪಭುಜ್ಞೇವೇತಿ ತಮಾದಿದೇಶ"  
ರಘುಂ ೨-೬೪ | 2. ಕುಳಿಯಾಗಿರುವ ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಪೊಳ್ಳಾಗಿ  
ರುವ ಮಧ್ಯಭಾಗ. "ಬದ್ಧಪಲ್ಲವಪುಟಾಂಜಲಿಹ್ರಮಂ ದರ್ಶನೋ-  
ನ್ಮುಖಮುಗಂ ತಪೋವನಮ್" ರಘುಂ ೧೧-೨೩ | 3. ಯಾವುದು

ದಾದರೂ ವಸ್ತುವನ್ನು ಒಳಗೊಳ್ಳುವ ಅಗಲವಾದ ಪಾತ್ರೆ,  
-ಸಂಪುಟ. 4. ಕುದುರೆಕಾಲಿನ ಗೋರಸು. (ಪುಂ) 5.  
ನಗರ, ಪಟ್ಟಣ. "ಸ್ಥಾನೀಯಂ ನಗರಂ ಪುಟಃ" ವೈಜಂ | (ನಂ)  
6. ಜಾಯಿಕಾಯಿ. 7. ಔಷಧ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಪಾಕ  
ಮಾಡುವ ಲೋಹದ ಅಥವಾ ಮೃತ್ಪಾತ್ರೆ. 8. ಚಿನ್ನ  
ಬೆಳ್ಳಿ ಮೊದಲಾದ ಲೋಹಗಳನ್ನು ಪುಟಕ್ಕೆ ಹಾಕಲು  
ಬಳಸುವ ಮೂಷಿ. 9, ಪುಸ್ತಕ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ  
ಹಾಳೆಯ ಒಂದು ಪಕ್ಕ. (ವಿಂ) 10. ಹೊದಿಕೆಯ  
ಸಾಧನ, ಮುಚ್ಚಳದ ತಟ್ಟೆ ಮೊದಲಾದುದು.

**ಪುಟ ಪುಟಕ (ನಂ)** 1. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ, ತಾವರೆಹೂವು.  
ಪುಟ ಇವ ಕಾಯತಿ - ಕೈ (ಶಬ್ದ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) |  
2. "ಪುಟ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಪುಟ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ" |

**ಪುಟಗ್ರೀವ ಪುಟಗ್ರೀವ (ಪುಂ)** 1. ತಾಮ್ರಲೋಹದ ತಂಬಿಗೆ.  
-ಚೊಯು. 2, ಮೊಸರು ಕಡೆಯುವ ಪಾತ್ರೆ. ಪುಟಮಿವ  
ಗ್ರೀವಾ ಅಸ್ಯ |

**ಪುಟಪಾಕ ಪುಟಪಾಕ (ಪುಂ)** 1. ಸಂಪುಟದ ಒಳಗೆ ಇರುವ  
ಔಷಧದ ಪಾಕ, ಪಾತ್ರೆಯೊಳಗೆ ಔಷಧವನ್ನು ಕಾಯಿಸು  
ವುದು, -ಕುದಿಸುವುದು. ಪುಟೇನ ಪಾಕಃ | "ಅಂತರ್ಮಿತ್ರೋ  
ಗಮೀರತ್ವಾದಂತಗೃಹಣವ್ಯಥಃ | ಪುಟಪಾಕಪ್ರತೀಕಾಶೋ ರಾಮಸ್ಯ  
ಕರುಣೋ ರಸಃ" ತಂ ರಾಂ ೩-೧ | ಹೂಜಿಯಾಕಾರದ ಪಾತ್ರೆ  
ಯಲ್ಲಿ ಔಷಧವನ್ನಿಟ್ಟು ಅದರ ಬಾಯನ್ನು ತೇವದ ಮಣ್ಣಿನಿಂದ  
ಮುಚ್ಚಿ ಅದರ ದ್ರವಾಂಶವೆಲ್ಲಾ ಹೋಗಿ ಭಸ್ಮ  
ವಾಗುವವರೆಗೂ ಕಾಯಿಸುವುದು ಪುಟಪಾಕ. 2. ಚಿನ್ನ  
ಬೆಳ್ಳಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಮೂಷಿಯಲ್ಲಿಟ್ಟು ಚೊಕ್ಕಮಾಡು  
ವುದು.

**ಪುಟಭೇದ ಪುಟಭೇದ (ಪುಂ)** 1. ನದಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ  
ವಕ್ರಗತಿ, ಹೊಳೆಯು ವಕ್ರವಾಗಿ ಹರಿಯುವುದು. 2.  
ಆತೋದ್ಯ, ವೀಣೆ ಮೊದಲಾದ ತಂತೀವಾದ್ಯ ಮದ್ದಳೆ  
ಮೊದಲಾದ ಚರ್ಮವಾದ್ಯ ಕೊಳಲು (ಏಳುಂಗೋವಿ)  
ಮೊದಲಾದ ವೇಣುವಾದ್ಯ ತಾಳ ಮೊದಲಾದ ಕಂಚಿನ  
ವಾದ್ಯ ಈ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ವಾದ್ಯಗಳು. 3. ನಗರ,  
ಪಟ್ಟಣ. "ಪುಟಭೇದೋ ನದೀವಕ್ರಪತ್ತನಾತೋದಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ |  
4. ಉನ್ಮೀಲನ, ತೆರೆಯುವುದು. "ಪುಟಭೇದೋ ಲಲಾಟಸ್ಥ-  
ನೀಲಲೋಹಿತಚಕ್ಷುಃ" ತಂ ರಾಂ ೬-೩ |

**ಪುಟಭೇದನ ಪುಟಭೇದನ (ನಂ)** ಪಟ್ಟಣ, ನಗರ. ಪುಟಾನಿ  
ಪಾತ್ರಾಣಿ ಮಿಥಂತೇಷ್ವ - ಮಿಥಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಯುಚ್" (ತಂ ೨-೭೯) |  
"ಉಪರೂಪಮಾನಮಿವ ಭೂಮತಾಂ ಬಲೈಃ ಪುಟಭೇದನಂ  
ದನುಸುತಾರಿರಕ್ಷತ" ಮಾಘಂ ೧೩-೨೬ |



ಪುಟಿಕಾ ಪುಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಾಲಕ್ಕಿ. ಪುಟಮಸ್ತಯಸ್ಯಾ:  
“ಠನ್” (೪-೨-೧೧೫) ।

ಪುಟಿತ ಪುಟಿತ (ನಂ) 1. ಹಸ್ತಪುಟ, ಅಂಗೈ. ಪುಟಂ ಸಂಜಾತ-  
ಮಸ್ಯ “ಇತಚ್” (೪-೨-೩೬) । (ವಿಂ) 2. ಹೊಲೆಯ  
ಲುಟ್ಟು, ಹೊಲಿಗೆ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಭೇದಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ನೀಳ  
ಲ್ಪಟ್ಟು. “ಪುಟಿತಂ ಸ್ಯಾದ್ವಸ್ತಪುಟೆ ಪಾಟಿತಸ್ಯುತಯೋರಪಿ” ಮೇದಿಂ ।

ಪುಟಿ ಪುಟೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೌಪೀನ, ಲಂಗೋಟಿ. ಪುಟ  
(ಸಂಸ್ಥಾಪನೆ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೫) । ಗೌರಾಂ “ಕೌಪಿ”  
(೪-೧-೪೧) । 2. ಎಲೆಯಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ದೊನ್ನೆ.

ಪುಟೊಜ ಪುಟೋಟಿಜ (ನಂ) ಶ್ವೇತಚ್ಚತ್ರ, ಬಿಳಿಯ ಕೊಡೆ.  
ಪುಟಂ ಸಂಶಿಲಪ್ತಮುಟಜಮಿವ ।

ಪುಟೊಕ ಪುಟೋಕ (ಪುಂ) ತೆಂಗಿನಮರ. ಪುಟೆ ಪಾತ್ರಮಧ್ಯೆ  
ಉದಕಂ ಯಸ್ಯ ।

ಪುಂಡರೀಕ ಪುಂಡರೀಕ (ನಂ) 1. ಶ್ವೇತಕಮಲ, ಬಿಳಿದಾವರೆ  
ಪುಣ (ಕರ್ಮಣಿ ಶುಭೇ) “ಇಕನ್” ತಸ್ಯ ಸ್ವಾಗಮ: ಧಾತೋ:  
ಉಗಾಗಮಶ್ಚ ನಿಪಾಂ (೩ಂ ೪-೨೦) । “ಅವಕಿರತಿ ನಿತಾಂತಂ  
ಕಾಂತಿನಿರ್ಯಾಸಮಂದೇಕ್ಷುತನವಜಲಪಾಂಡು ಪುಂಡರೀಕೋದರೇಷು” ಮಾಂ ೧-೬೨ । 2. ಬಿಳಿಯ ಕೊಡೆ, ಬಿಳಿಯ ಭತ್ತಿ. 3. ಒಂದು  
ಜಿಷ್ಠ. (ಪುಂ) 4. ಅಗ್ನೇಯ ದಿಕ್ಕಿನ ದಿಗ್ಗಜ. “ತೇನ  
ದ್ವಿಪಾನಾಮಿವ ಪುಂಡರೀಕೋ ರಾಜಾಮಜಯೋಜನಿ ಪುಂಡರೀಕ:”  
ರಘುಂ ೧೮-೮ । 5. ಬಿಳುಪು, ಶ್ವೇತವರ್ಣ. 6. ವ್ಯಾಘ್ರ,  
ಹುಲಿ. 7. ಒಂದು ಸರ್ಪ. 8. ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನ  
ವೆಂಚದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. “ರಾಜಾಮಜಯೋಜನಿ ಪುಂಡರೀಕ:”  
ರಘುಂ ೧೮-೮ । 9. ಒಂದು ಧಾನ್ಯ. 10. ಗಜದ್ವಾರ,  
ಅನೆಗೆ ಬರುವ ಜ್ವರ. 11. ಒಂದು ಯಾಗ. “ಅಶ್ವಮೇಧೋ  
ರಾಜಸೂಯ: ಪುಂಡರೀಕೋಽಥ ಗೋಸವ: । ಏತೇರಪಿ ಮಹಾಯಜ್ಞೇರಿಷ್ಟಂ  
ತೇ ಭೂರಿದಕ್ಷಿಣೈ:” ಮಾಂ । 12. ಕಮಂಡಲು, ಜಲಪಾತ್ರೆ.  
13. ಒಬ್ಬ ನಿಘಂಟುಕಾರ. 14. ಒಂದು ವಿಧ ಕುಷ್ಠ  
ರೋಗ.

ಪುಂಡರೀಕಾಕ್ಷ ಪುಂಡರೀಕಾಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣು.  
ಪುಂಡರೀಕೇ ಇವ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಅಸ್ಯ “ಷಚ್” (೪-೪-೧೧೩) ।  
ಪುಂಡರೀಕಂ ಹೃದಯಕಮಲಂ ಧಾಮ ವಾಸಸ್ಥಾನಂ ತತ್ರ ಸನ್ನಪಿ ಅಕ್ಷ:  
ನ ಕ್ಷೀಯತೇ ಹನ್ಯತೇ ವಾ ಇತಿ ಪುಂಡರೀಕಾಕ್ಷ: । “ನಾಸ್ಯ ಜರಯೇ-  
ತಜ್ಜೀಯತಿ ನ ವವೇನಾಸ್ಯ ಹನ್ಯತೇ ಇತಿ” ಶ್ರುತಿ: । “ಪುಂಡರೀಕಂ  
ಪರಂ ಧಾಮ ನಿಯಮಕ್ಷಯಮವ್ಯಯಮ್ । ತದ್ಭವಾನ್ ಪುಂಡರೀಕಾಕ್ಷ:”  
ಮಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೬೯-೬ । ನಿತ್ಯವೈಕುಂಠವಾಸಿಗಳಿಗೆ ದೃಷ್ಟಿ  
ಭೂತನಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು.  
“ದಿವೀವ ಚಕ್ಷುರಾತತಮ್” ಪುಂ ಸುಂ । “ಪುಂಡರೀಕಂ ಪರಂ ಧಾಮ

ನಿಯಮಕ್ಷಯಮವ್ಯಯಮ್ । ತದ್ಭವಾನ್ ಪುಂಡರೀಕಾಕ್ಷ  
ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ:” ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ: । “ಅಮೋಘ: ಪುಂಡರೀಕಾಕ್ಷ:”  
ವಿಂ ಸಂ । ಪುಂಡರೀಕಂ ಲೋಕಾತ್ಮಕಮ್ ಅಕ್ಷತಿ ವ್ಯಾಪ್ನೋತಿ—  
ಅಕ್ಷ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) “ಅಣ್” (೩-೨-೧) ಇತಿ ವಾ ।  
“ವಿಲೋಚನೇ ವಿಭ್ರದಧಿಶ್ಚಿತಶಿಣಿ ಸ ಪುಂಡರೀಕಾಕ್ಷ ಇತಿ  
ಸ್ಫುಟೋಽಭವತ್” ಮಾಂ ೧-೨೪ । 2. ನೀರುಕೋಳಿ, ಕಡಲ  
ಹೆದ್ದು. “ಉಕ್ತೋಽ: ಪುಂಡರೀಕಾಕ್ಷೋ ಮೇಧರಾವೋಽಮ್ಬುಕುಕುಟಿ”  
ಚರಕಂ ।

ಪುಂಡರೀಯಕ ಪುಂಡರೀಯಕ (ನಂ) 1. ಸ್ಥಲಪದ್ಮ, ನೆಲ  
ದಾವರೆ. 2. ಬಿಳಿನೈದಲಿ ಗೆಡ್ಡೆ.

ಪುಂಡರ್ಯ ಪುಂಡರ್ಯ (ನಂ) 1. ಬಿಳಿನೈದಲಿ ಗೆಡ್ಡೆ. 2. ಸ್ಥಲ  
ಪದ್ಮ, ನೆಲದಾವರೆ.

ಪುಂಡ್ ಪುಂಡ್ (ಪುಂ) 1. ಪಟಾಪಟಿ ಕಬ್ಬು, ಉದ್ದುದ್ದದ ಕೆಂಪು  
ಹಳದಿ ಪಟ್ಟಿಗಳಿರುವ ಕಬ್ಬು. ಪುಂಡ್ಯಂತೇ—ಪುಡಿ (ಖಂಡನೆ)  
“ರಕ್” (೩ಂ ೨-೧೩) । 2. ಒಬ್ಬ ದೈತ್ಯ. 3. ಪದ್ಮ,  
ಕಮಲ. 4. ಕಾಡಿರುವಂತಿಗೆ. 5. ಶ್ವೇತಕಮಲ, ಬಿಳಿ  
ತಾವರೆ. 6. ಚಿತ್ರ. 7. ಕ್ರಮಿ. 8. ಪಂಥದ (ಒಂದು  
ಧರ್ಮದ) ಗುರುತು, ಮತವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಹಣೆಯ  
ಮೇಲೆ ಇರುವ ಒಂದು ಚಿಹ್ನೆ, ಕರ್ವ್ಯಪುಂಡ್: ತಿರ್ಯಕ್ಪುಂಡ್:  
ಇತ್ಯಾದಿ. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 9. ಒಂದು ದೇಶ. “ಪ್ರಾಂಜ್ಯೋತಿ-  
ಷಾಶ್ಚ ಪುಂಡ್ರಾಶ್ಚ ವಿಧೇಹಾಸ್ತಾ ಅಲಿಪ್ತಕಾ:” ।

ಪುಂಡ್ಕ ಪುಂಡ್ಕ (ಪುಂ) 1. ಕಾಡಿರುವಂತಿಗೆ ಗಿಡ. ಪುಂಡ್ಕ  
ಇವ ಪ್ರತಿಕೃತಿ: “ಕನ್” (೪-೩-೯೬) । 2. ಪಟಾಪಟಿ  
ಕಬ್ಬು. ಪುಂಡ್ಕ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” । 3. ತಿಲಕವೃಕ್ಷ. 4. ಅಶ್ವದ  
ಮೈಮೇಲಿನ ಚಿಹ್ನೆ. ಈ ಚಿಹ್ನೆಯು ಅಶ್ವಗಳ ಶುಭಾಶುಭ  
ಲಕ್ಷಣವನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು.

ಪುಣ್ಯ ಪುಣ್ಯ (ನಂ) 1. ಶುಭವಾದ ಅದೃಷ್ಟಿ ಕರ್ಮ, ಸುಕೃತ,  
ಧರ್ಮ. ಪೂ (ಪವನೇ) “ಯತ್” ಷ್ವಾಗಮ: ಹ್ರಸ್ವಶ್ಚ  
(೩ಂ ೪-೧೫) । “ಪುಣ್ಯೇ ಮನ: ಕಸ್ಯ ಮನೇರಪಿ ಸ್ಯಾತ್ಪ್ರಮಾಣ-  
ಮಾಸ್ತೇ ಯದಧೇಽಪಿ ಧಾವತ್” ನೇಷಂ ೮-೧೭ । “ಅತ್ಯುತ್ಕಟೇ:  
ಪುಣ್ಯಪಾಪೇರಿಹೈವ ಫಲಮಶ್ನುತೇ” ಹಿತೋ ೧-೮೩ । “ಲೋಕಾಂತರ-  
ಸುಖಂ ಪುಣ್ಯಂ ತಪೋದಾನಸಮುದ್ಭವಮ್” ರಘುಂ ೧-೬೯ । 2. ಒಳ್ಳೆಯ  
ಕಾರ್ಯ, ಶ್ರೇಯಸ್ಕರವಾದ ಕೆಲಸ. (ವಿಂ) 3. ಪರಿಶುದ್ಧ  
ವಾದ, ಪವಿತ್ರವಾದ. “ಯಕ್ಷಶ್ಚಕ್ರೇ ಜವಕಸನಯಾಸ್ನಾನಪುಣ್ಯೋದ-  
ಕೇಷು” ಮೇಘಂ ೧-೧ । 4. ಒಳ್ಳೆಯ, ಶ್ರೇಯಸ್ಕರವಾದ.  
5. ಶುಭಕರವಾದ, ಶುಭಸೂಚಕವಾದ, ಮಂಗಳಕರವಾದ.  
“ನಾಮಧೇಯಂ ದಶಮ್ಯಾಂ ತು ದ್ವಾದಶ್ಯಾಂ ವಾಸ್ಯ ಕಾರಯೇತ್ । ಪುಣ್ಯೇ ತಿಥೌ  
ಮೂರ್ತೇ ವಾ ನಕ್ಷತ್ರೇ ವಾ ಗುಣಾನ್ವಿತೇ” ಮನುಂ ೨-೩೦ ।



6. ಸುಗಂಧವಾದ. 7. ಸುಂದರವಾದ, ರಮ್ಯವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ. "ಪ್ರಾಪ್ತಾ: ಕುಚ್ಛಾದೃಷ್ಯಶೃಂಗೋಪಚಾರೈ: ಪುಣ್ಯಶ್ರೀಕಾ: ಕೋಸಲೇಂದ್ರೇಣ ಪುತ್ರಾ:" ಮಂ ವೀಂ ೧-೨೪ | (ಪುಂ) 8. ವಿಷ್ಣು. ಪುನಾತಿ ಪಾತಕಿನೋಽಪಿ | "ಪುಣ್ಯೋ ಯೋಸೌ ಪಾತಕಿಪಾವನ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: | "ಪುಣ್: ಪೂರ್ವಿತಾ ಪುಣ್ಯ:" ವಿಂ ಸಂ |

**ಪುಣ್ಯಕ ಪುಣ್ಯಕ** (ನಂ) ಪುಣ್ಯಸಂಪಾದನಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ವ್ರತ ಉಪವಾಸ ಮೊದಲಾದುವು.

**ಪುಣ್ಯಕರ್ಮನ್ ಪುಣ್ಯಕರ್ಮನ್** (ನಂ) ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯ, ಶ್ರೇಯಸ್ಸನ್ನಂಟುಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ.

**ಪುಣ್ಯಕರತ ಪುಣ್ಯಕವ್ರತ** (ನಂ) ಉತ್ತಮ ಪತಿಯ ಮತ್ತು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಂತಹ ಪುತ್ರನ ಪ್ರಾಪ್ತಿಗಾಗಿ ಸ್ತ್ರೀಯರು ಮಾಡುವ ಒಂದು ವ್ರತ.

**ಪುಣ್ಯಕಾಲ ಪುಣ್ಯಕಾಲ** (ಪುಂ) ಪುಣ್ಯಕರವಾದ ಸಮಯ, ಪುಣ್ಯಸಂಪಾದನೆಯ ಕಾಲ.

**ಪುಣ್ಯಕೀರ್ತನ ಪುಣ್ಯಕೀರ್ತನ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಪುಣ್ಯ ಪುಣ್ಯಜನಕ ಕೀರ್ತನಂ ಯಸ್ಯ | "ಪುಣ್ಯಶ್ರವಣಕೀರ್ತನ:" ವಿಂ ಸಂ | (ನಂ) 2. ಪುಣ್ಯಚರಿತ್ರೆಯನ್ನು ಹೇಳುವುದು, ಪುಣ್ಯಕಥೆಗಳನ್ನು ಹೇಳುವುದು.

**ಪುಣ್ಯಕೃತ್ ಪುಣ್ಯಕೃತ್** (ವಿಂ) ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವವನು, ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡುವವನು. ಪುಣ್ಯ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃಜ್ (ಕರಣಂ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೮೯) | "ಪುಣ್ಯಕೃಚ್ಛಾಡುಕಾರಸ್ತೇ ಕಿಂಚ್ಛರ: ಸುರತೇಽಪಿ ಕ:" ಭೃಂ ೪-೬೮ |

**ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ** (ನಂ) 1. ಪವಿತ್ರವಾದ ಕ್ಷೇತ್ರ, ಯಾತ್ರಾಸ್ಥಳ. 2. ಪುಣ್ಯಭೂಮಿ.

**ಪುಣ್ಯಗಂಧ ಪುಣ್ಯಗಂಧ** (ಪುಂ) ಚಂಪಕವೃಕ್ಷ, ಸಂಖಿ ಮರ.

**ಪುಣ್ಯಜನ ಪುಣ್ಯಜನ** (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ. ಪುಣ್ಯ: ವಿರೋಧ-ಲಕ್ಷಣಯಾ ಪಾಪಿ ಜನ: | "ಸರ್ಪೈ: ಪುಣ್ಯಜನೇಶ್ವರೈವ ವೀರಭಿ: ಪರ್ವತೈಸ್ತಥಾ" ಹರಿವಂ | 2. ಯಕ್ಷ. "ಪಯೋಧರೈ: ಪುಣ್ಯ-ಜನಾಙ್ಗನಾನಾಂ ನಿರ್ವಿಷ್ಟಹೇಮಾಂಬುಜರೇಣುಯಸ್ಯಾ:" ರಘುಂ ೧೩-೬೦ | 3. ಸತ್ತುರೊಪ. "ಅಥ ಪುಣ್ಯಜನೋ ಯಕ್ಷೋ ರಾಕ್ಷಸೇ ಸಜ್ಜನೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ |

**ಪುಣ್ಯಜನೇಶ್ವರ ಪುಣ್ಯಜನೇಶ್ವರ** (ಪುಂ) ಯಕ್ಷರಾಜನಾದ ಕುಂಬೇರ. ಪುಣ್ಯಜನಾನಾಂ ಯಕ್ಷಾಣಾಮೀಶ್ವರ: |

**ಪುಣ್ಯದರ್ಶನ ಪುಣ್ಯದರ್ಶನ** (ಪುಂ) 1. ಚಾಪಪಕ್ಷಿ, ಹಂಗನ ಹಕ್ಕಿ. ಪುಣ್ಯ ಶುಭಜನಕ ದರ್ಶನಂ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ನೋಡಿದ ಮಾತ್ರದಿಂದಲೇ ಪುಣ್ಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವವನು. "ತಾಂ ಪುಣ್ಯದರ್ಶನಾಂ ದೃಷ್ಟಾ ನಿಮಿತ್ತಜಸ್ತಪೋನಿಧಿ:" ರಘುಂ ೧-೮೬ |

**ಪುಣ್ಯಪುರುಷ ಪುಣ್ಯಪುರುಷ** (ಪುಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ಮನುಷ್ಯ, ಧರ್ಮಶ್ರದ್ಧೆಯುಳ್ಳ ಮನುಷ್ಯ, ಶ್ರದ್ಧಾಭಕ್ತಿಗಳುಳ್ಳ ಮನುಷ್ಯ.

**ಪುಣ್ಯಫಲ ಪುಣ್ಯಫಲ** (ನಂ) 1. ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಿದ ಫಲ, ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಯಿಂದ ಬಂದ ಫಲ. ಪುಣ್ಯಜನ್ಯಂ ಫಲಮ್ | (ಪುಂ) 2. ಮರಗಳ ಗುಂಪು, ಮರಗಳ ತೋಪು.

**ಪುಣ್ಯಭಾಜ್ ಪುಣ್ಯಭಾಜ್** (ವಿಂ) ಪುಣ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಿದವನು, ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಿದವನು. ಪುಣ್ಯಂ ಭಜತಿ - ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಫಿವ:" (೩-೨-೬೨) |

**ಪುಣ್ಯಭೂ ಪುಣ್ಯಭೂ**, -ಭೂಮಿ -ಭೂಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಣ್ಯವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಡುವ ಭೂಮಿ, ಪುಣ್ಯವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ ದೇಶ, ಆರ್ಯಾವರ್ತ ದೇಶ, ಮಿಥ್ಯ ಮತ್ತು ಹಿಮಾಲಯಗಳ ಮಧ್ಯದೇಶ. "ಆರ್ಯಾವರ್ತ: ಪುಣ್ಯಭೂಮಿರ್ಮಯಂ ವಿದ್ಯಹಿಮಾಗಯೋ:" ಅಮಂ |

**ಪುಣ್ಯಲಕ್ಷಣ ಪುಣ್ಯಲಕ್ಷಣ** (ನಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ಲಕ್ಷಣ, ಉತ್ತಮ ಭಾಗ್ಯದ ಲಕ್ಷಣ. ಪುಣ್ಯಂ ಲಕ್ಷಣಮ್ | (ವಿಂ) 2. ಉತ್ತಮ ಅದೃಷ್ಟದ ಲಕ್ಷಣಗಳುಳ್ಳ, ಭಾಗ್ಯದ ಲಕ್ಷಣಗಳುಳ್ಳ. ಪುಣ್ಯಾನಿ ಲಕ್ಷಣಾನಿ ಯಸ್ಯ | "ನಿವರ್ತಯಾಸ್ಮಾದಸದೀಪಿತಾನ್ಮನ: ಕ್ವ ತದ್ವಿಧಸ್ತ್ವಂ ಕ್ವ ಚ ಪುಣ್ಯಲಕ್ಷಣಾ" ಕುಮಾಂ ೪-೨೩ |

**ಪುಣ್ಯವತ್ ಪುಣ್ಯವತ್** (ವಿಂ) ಪುಣ್ಯವಂತ, ಧರ್ಮಕಾರ್ಯ ಮಾಡಿ ಪುಣ್ಯ ಸಂಪಾದಿಸಿದವನು. ಪುಣ್ಯಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪) | "ಋರ್ವಂ ಮಿತ್ವಾ ಪ್ರತಿಠಂತೇ ಪ್ರಾಣಾ: ಪುಣ್ಯವತಾಂ ನೃಪ | ಮಧ್ಯತೋ ಮಧ್ಯಪುಣ್ಯಾನಾಮಧೋ ದುಷ್ಕೃತಕರ್ಮಣಾಮ್" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೩೦೩-೨೭ |

**ಪುಣ್ಯಶ್ಲೋಕ ಪುಣ್ಯಶ್ಲೋಕ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಪುಣ್ಯ: ಪುಣ್ಯದಾಯಕ: ಶ್ಲೋಕೋ ಯಶ: ಚರಿತ್ರಂ ವಾ ಯಸ್ಯ | 2. ಯುಧಿಷ್ಠಿರ, ಧರ್ಮರಾಜ. "ಸಂಪ್ರಸ್ಥಿತೇ ದ್ವಾರಕಾಯಾಂ ಜಿಣ್ಣಿ ಬನ್ಧುದಿಧಕ್ಷಯಾ | ಜ್ಞಾತುಂ ಚ ಪುಣ್ಯಶ್ಲೋಕಸ್ಯ ಕೃಷ್ಣಸ್ಯ ಚ ವಿಚೇಷಿತಮ್" ಭಾಗಂ ೧-೧೪-೧ | 3. ನಳಚಕ್ರವರ್ತಿ. "ಪುಣ್ಯಶ್ಲೋಕಸ್ಯ ವೈ ಸೂತೋ ವಾಣ್ಯೈ ಇತಿ ವಿಶ್ರುತ:" ಭಾಂ ವನಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಶ್ಲೋಕಾ -ಶ್ಲೋಕಾ. 4. ದ್ರೌಪದಿ. 5. ಸೀತಾ ದೇವಿ. "ಪುಣ್ಯಶ್ಲೋಕೋ ನಲೋ ರಾಜಾ ಪುಣ್ಯಶ್ಲೋಕೋ ಧುಧಿಠಿರ: | ಪುಣ್ಯಶ್ಲೋಕಾ ಚ ವೇದೇಹಿ ಪುಣ್ಯಶ್ಲೋಕೋ ಜನಾರ್ದನ:" | (ವಿಂ) 6. ಪುಣ್ಯಕರವಾದ ಕೀರ್ತಿಯನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿದ.

**ಪುಣ್ಯಸ್ಥಾನ ಪುಣ್ಯಸ್ಥಾನ** (ನಂ) 1. ಪವಿತ್ರವಾದ ಸ್ಥಾನ 2. ಲಗ್ನದಿಂದ ಒಂಬತ್ತನೆಯ ಸ್ಥಾನ.



ಗುಣ್ಯ ಪುಣ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತುಲಸಿ. ಪುಯತೇಜಯಾ — ಪೂ (ಪವನೇ) “ಯತ್” ಣುಕ್ ಹ್ರಸ್ವಶ್ಚ (೩೦ ೪-೧೪) 2. ಪುಣ್ಯ ವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಹೆಂಗಸು.

ಗುಣ್ಯಾತ್ಮನ್ ಪುಣ್ಯಾತ್ಮನ್ (ವಿಂ) ಪುಣ್ಯಸ್ವಭಾವದವನು, ಧರ್ಮದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. ಗುಣ್ಯ ಆತ್ಮಾ ಸ್ವಭಾವೋ ಯಸ್ಯ |

ಗುಣ್ಯಾಹ ಪುಣ್ಯಾಹ (ನಂ) ಪುಣ್ಯದಿವಸ, ಶುಭದಿವಸ. ಗುಣ್ಯಶ್ಚ ತದಹಶ್ಚ “ಽಽಽ” (೪-೪-೧೧) | “ಗುಣ್ಯಾಹಂ ವ್ರಜ ಮಜ್ಜಲಂ ಸುದಿವಸಃ ಪ್ರಾತಃ ಪ್ರಯಾತಸ್ಯ ತೇ” ಅಮೃಂ ೬೧ |

ಗುಣ್ಯಾಹವಾಚನ ಪುಣ್ಯಾಹವಾಚನ (ನಂ) ದೇವತಾಕಾರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲಿ ಶುಭಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿಗಾಗಿ ಪುಣ್ಯಾಹಶಬ್ದೋಚ್ಚಾರ ಮಾಡಿಸುವುದು. ಗುಣ್ಯಾಹಸ್ಯ ವಾಚನಮ್ | “ಗುಣ್ಯಾಹವಾಚನಂ ದೇವೇ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ವಿಧೀಯತೇ | ಏತದೇವ ನಿರೋಕ್ಷಾರಂ ಕುರ್ಯಾತ್ ಕ್ಷತ್ರಿಯವೇಶ್ಯಯೋಃ | ಉಪಾಂಶು ಚ ತಥಾ ವಂಶ್ಯೇ ಶುಭೇ ಸ್ವಸ್ತಿ ಪ್ರಯೋಜಯೇತ್” |

ಗುತ್ ಪುತ್ (ನಂ) ನರಕಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ವಿಭಾಗ.

ಗುತ್ ಪುತ್ (ನಂ) ಗಮನ, ಚಲನೆ.

ಗುತ್ಲ ಪುತ್ಲ (ಪುಂ) ವಿಗ್ರಹ, ಪ್ರತಿಮೆ, ಮೂರ್ತಿ. ಗುತ್ಲ ಗಮನಂ ಲಾತಿ ಅನ್ಯಸ್ಮಾತ್ — ಲಾ (ಆದಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೩) | ಸಂಜ್ಞಾಂ “ಕನ್” | ಗುತ್ಲಕಃ ಪುತ್ಲಕಃ.

ಗುತ್ಲಿಕಾ ಪುತ್ಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಣ್ಣು ಹುಲ್ಲು ಕಡ್ಡಿ ಶಿಲೆ ಮುಂತಾದುವುಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ವಿಗ್ರಹ, —ಪ್ರತಿಮೆ. ಗುತ್ಲಿಕಾ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” |

ಗುತ್ಲಿಕಾ ಪುತ್ಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಣ್ಣು ಹುಲ್ಲು ಕಲ್ಲು ಕಡ್ಡಿ ಮುಂತಾದುವುಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ವಿಗ್ರಹ, —ಪ್ರತಿಮೆ. ಗುತ್ಲ ಗಮನಂ ಲಾತಿ ಅನ್ಯಾಶ್ರಯೇಣ — ಲಾ (ಆದಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೩) | “ಙೀಃ” (೪-೧-೪೧) |

ಗುತ್ಲಿಕಾ ಪುತ್ಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಪತಂಗದ ಹುಳ. ಗುತ್ಲ ಗಮನಮಸ್ಯಸ್ಯಾಃ “ಠನ್” (೪-೨-೧೧೪) | 2. ಗೆದ್ದಲು ಹುಳ, ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಇರುವೆ. “ಧರ್ಮ ಶನೇಃ ಸಂಚಿನ್ಯಾತ್ ವಲ್ಮೀಕಿಮಿವ ಗುತ್ಲಿಕಾಃ | ಪರಲೋಕಸಹಾಯಾರ್ಥ ಸರ್ವಭೂತಾನ್ಯ-ಪಿಡಯನ್” ಮನುಂ ೪-೨೩೮ |

ಗುತ್ಲ ಪುತ್ಲ (ಪುಂ) ಮಗ. ಗುತ್ಲಾತಿ ಪಿತ್ರಾದಿನ್ — ಪೂ (ಪವನೇ) “ಕಃ” ಹ್ರಸ್ವಶ್ಚ (೩೦ ೪-೧೪) | ಗುತ್ಲಾನ್ಮನೋ ನರಕಾತ್ ತ್ರಾಯತೇ — ತ್ರೈಙ್ (ಪಾಲನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೪) ಇತಿ ವಾ | “ಗುತ್ಲಾನ್ಮನೋ ನರಕಾತ್ ಸ್ಮಾತ್ ತ್ರಾಯತೇ ಪಿತರಂ ಸುತಃ | ತಸ್ಮಾತ್ ಗುತ್ಲ ಇತಿ ಪ್ರೋಕ್ತಃ ಸ್ವಯಮೇವ ಸ್ವಯಮ್ಬವಾ” ಮನುಂ ೯-೧೩೮ | ಗುತ್ಲಸಂತಾನವಿಲ್ಲದವನಿಗೆ “ಗುತ್” ನರಕಪ್ರಾಪ್ತಿಯಾಗು

ವುದರಿಂದ ಪುತ್ರನು ಜನಿಸಿ ಪಿತ್ರಗಳನ್ನು ಆ ನರಕದಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಿ ರಕ್ಷಿಸುವನು. ಆದುದರಿಂದ ಇವನಿಗೆ “ಗುತ್ಲ” ಎಂಬ ಹೆಸರು.

ಗುತ್ಲರು 12 ವಿಧಃ (1) ಅರಿಸಃ (2) ಕ್ಷೇತ್ರಜಃ (3) ದತ್ತಃ (4) ಕೃತ್ರಿಮಃ (5) ಗೃಹೋತ್ಪನ್ನಃ (6) ಅಪವಿಡ್ಧಃ (7) ಕಾನೀನಃ (8) ಸಹೋದಃ (9) ಕ್ಷೇತ್ರಃ (10) ಪೌನರ್ಮವಃ (11) ಸ್ವಯಂದತ್ತಃ ಮತ್ತು (12) ಶೌದ್ರಃ ಇವರು ದ್ವಾದಶ ವಿಧ ಗುತ್ಲರು.

(1) ವಿವಾಹ ಸಂಸ್ಕಾರ ಹೊಂದಿದ ತನ್ನ ಪತ್ನಿಯಲ್ಲಿ ತಾನು ಪಡೆದ ಗುತ್ಲನು ಔರಸನು. “ಸ್ವಕ್ಷೇತ್ರೇ ಸಂಸ್ಕೃತಾಯಾಂ ತು ಸ್ವಯಮುತ್ಪಾದಯೇದ್ವಿ ಯಮ್ | ತಮೌರಸಂ ವಿಜಾನೀಯಾತ್ಪುತ್ರಂ ಪ್ರಥಮ-ಕಲ್ಪಿತಮ್” ಮನುಂ ೯-೧೬೬ |

(2) ನಪುಂಸಕನ ಅಥವಾ ವ್ಯಾಧಿಪೀಡಿತನ ಪತ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಅಥವಾ ಪತಿಯು ಮೃತನಾದನಂತರ ಅವನ ಪತ್ನಿಯಲ್ಲಿ ನಿಯೋಗದಿಂದ ಜನಿಸಿದವನು ಕ್ಷೇತ್ರಜನು. “ಯಸ್ತಲ್ಪಜಃ ಪ್ರಮೀತಸ್ಯ ಕಲಿಬಸ್ಯ ವ್ಯಾಧಿತಸ್ಯ ವಾ | ಸ್ವಧರ್ಮೇಣ ನಿಯುಕ್ತಾಯಾಂ ಸ ಗುತ್ಲಃ ಕ್ಷೇತ್ರಜಃ ಸ್ಮೃತಃ” ಮನುಂ ೯-೧೬೭ |

(3) ಗುತ್ಲಸಂತಾನವಿಲ್ಲದವನಿಗೆ ಅವತಾಳದಲ್ಲಿ ಧಾರೆ ಯೆರೆದು ತಾಯಿತಂದೆಗಳು ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಕೊಡುವ ಗುತ್ಲನು ದತ್ತಗುತ್ಲ. “ಮಾತಾ ಪಿತಾ ವಾ ದತ್ತಾತಾಂ ಯಮದ್ವಿಃ ಪುತ್ರಮಾಪದಿ | ಸದೃಶಂ ಪ್ರೀತಿಸಂಯುಕ್ತಂ ಸ ಜೇಯೋ ದತ್ತಿಮಃ ಸುತಃ” ಮನುಂ ೯-೧೬೮ |

(4) ತಾಯಿ ತಂದೆಗಳ ಉಪಚಾರದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿ ಅವರ ಪಾರಲೋಕಿಕಾದಿ ಕ್ರಿಯೆಗಳಲ್ಲಿ ಶ್ರದ್ಧೆ ಇತ್ಯಾದಿ ಗುತ್ಲಗುಣೋಪೇತನಾದ ಒಬ್ಬನನ್ನು ಮಗನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡರೆ ಅವನು ಕೃತ್ರಿಮಗುತ್ಲ. “ಸದೃಶಂ ತು ಪ್ರಕುರ್ಯಾಚಿ ಗುಣದೋಷ-ವಿಚಕ್ಷಣಮ್ | ಗುತ್ಲಂ ಗುತ್ಲಗುಣೈಶ್ಚ ಯುಕ್ತಂ ಸ ವಿಜೇಯಶ್ಚ ಕೃತ್ರಿಮಃ” ಮನುಂ ೯-೧೬೯ |

(5) ಮನೆಯಲ್ಲೇ ಇರುವ ಪತ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಯಾರ ಸಂಬಂಧ ದಿಂದಲೋ ಗೂಢವಾಗಿ ಜನಿಸಿದ ಮತ್ತು ಯಾರಿಂದ ಜನಿಸಿದವನು ಎಂದೂ ತಿಳಿಯಲಾಗದ ಗುತ್ಲನು ಗೂಢೋತ್ಪನ್ನನು. “ಉತ್ಪದ್ಯತೇ ಗೃಹೇ ಯಸ್ಯ ನ ಚ ಜಾಣೀತ ಕಸ್ಯ ಸಃ | ಸ ಗೃಹೇ ಗೂಢ ಉತ್ಪನ್ನಸ್ತಸ್ಯ ಸ್ಯಾಚಸ್ಯ ತಲ್ಪಜಃ” ಮನುಂ ೯-೧೭೦ |

(6) ತಾಯಿತಂದೆಗಳಿಂದ ಪರಿತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮಗನನ್ನು ಗುತ್ಲನನ್ನಾಗಿ ಸ್ವೀಕರಿಸಿದರೆ ಅವನು ಅಪವಿಡ್ಧನು. “ಮಾತಾಪಿತೃಭ್ಯಾಮುತ್ಸೃಷ್ಟಂ ತಯೋರನ್ಯತರೇಣ ವಾ | ತಂ ಗುತ್ಲಂ ಪರಿಗೃಹ್ಣೀಯಾದಪವಿಡ್ಧಃ ಸ ಉಚ್ಯತೇ” ಮನುಂ ೯-೧೭೧ |

(7) ತಂದೆಯ ಮನೆಯಲ್ಲಿರುವಾಗ ಮಗಳ ಕನ್ಯಾವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ರಹಸ್ಯ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಜನಿಸಿದವನು ಕಾನೀನನು.



“ಪಿತೃವೇಶಮನಿ ಕನ್ಯಾ ತು ಯಂ ಪುತ್ರಂ ಜನयेद्रहः । तं कानीनं  
बदेन्नाम्ना वोढुः कन्यासमुद्भवम्” मनु० ९-१७२ ।

(8) ಗರ್ಭಿಣಿಯಾಗಿರುವುದನ್ನು ತಿಳಿದೂ ಅಥವಾ  
ತಿಳಿಯದೆ ಮದುವೆಯಾದ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಜನಿಸುವ ಪುತ್ರನು  
ಯಜಮಾನನಿಗೆ ಸಹೋದರಪುತ್ರನು. “या गर्भिणी  
संस्क्रियते ज्ञाताज्ञातापि वा सती । वोढुः स गर्भो भवति  
सहोदर इति चोच्यते” मनु० ९-१७३ ।

(9) ಪುತ್ರಸಂತಾನವಿಲ್ಲದವನು ಜನಕತಾಯಿತಂದೆಗಳಿಂದ  
ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಪಡೆದ ಮಗನು ಅವನಿಗೆ ಕ್ರೇತಕಪುತ್ರ  
ನಾಗುವನು. “क्रीणीयाद्यस्त्वपत्यार्थं मातापित्रोर्यमन्ति-  
कात् । स कीतकः सुतस्तस्य सदृशोऽसदृशोऽपि वा”  
मनु० ९-१७४ ।

(10) ಪತಿಯಿಂದ ಪರಿತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟವಳೂ ಅಥವಾ  
ವಿಧವೆಯಾದವಳೂ ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ಮತ್ತೊಬ್ಬನನ್ನು  
ಮದುವೆಯಾಗಿ ಪಡೆಯುವ ಮಗನು ಅವನಿಗೆ ಪೌನ  
ರ್ಭವನು. “या पत्या वा परित्यक्ता विधवा वा  
स्वयेच्छया । उत्पादयेत्पुनर्भूत्वा स पौनर्भव उच्यते”  
मनु० ९-१७५ ।

(11) ಮಾತಾಪಿತೃಗಳಿಲ್ಲದವನಾಗಿ ಅಥವಾ ಅವರಿಂದ  
ಕಾರಣವಿಲ್ಲದೆ ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನಾಗಿ ತನ್ನನ್ನು ತಾನಾಗಿಯೇ  
ಯಾವನಿಗಾದರೂ ದಾನಮಾಡಿಕೊಂಡರೆ ಅವನಿಗೆ ಅವನು  
ಸ್ವಯಂದತ್ತಪುತ್ರನಾಗುತ್ತಾನೆ. “मातापितृविहीनो  
यस्यैकतो वा स्यादकारणात् । आत्मानं स्पर्शयेद्यस्मै  
स्वयंदत्तस्तु स स्मृतः” मनु० ९-१७७ ।

(12) ಏಪ್ರಮ ಶೂದ್ರಸ್ತ್ರೀಯೊಡನೆ ಕಾಮತ್ಯಕ್ತಿಯಾಗಿ  
ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿ ಅವಳಲ್ಲಿ ಪಡೆಯುವ ಪುತ್ರನು ಶೂದ್ರ.  
“यं ब्राह्मणस्तु शूद्रायां कामादुत्पादयेत्सुतम् । स पारयन्नेव  
शवः तस्मात्पारशवः स्मृतः” मनु० ९-१७८ ।

“ऋणानुबन्धरूपेण पशुपत्नीसुतादयः” ಎಂಬಂತೆ  
ಜನ್ಮಾಂತರ ಋಣವನ್ನು ತೀರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಮತ್ತು ತೀರಿ  
ಸಲು ಪುತ್ರನಾಗಿ ಹುಟ್ಟುವನು. ಹೀಗೆಯೇ ಪತ್ನಿ ತಾಯಿ  
ತಂದೆ ಸೇವಕರು ಸ್ತ್ರೀಯರು ಮಿತ್ರರು ಸ್ವಜನ ಮತ್ತು  
ಬಾಂಧವರೂ ಈ ಸಂಬಂಧ ಕಲ್ಪಿಸಿಕೊಂಡು ಬಂದು ಸೇರು  
ತ್ತಾರೆ. ಇವರೆಲ್ಲರೂ (1) ಋಣಸಂಬಂಧಿ (2) ನ್ಯಾಸಾಪಹಾರಕ:  
(3) ರಿಪು: ಮತ್ತು (4) ಪ್ರಿಯ: ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧವಾಗಿ  
ಹುಟ್ಟುತ್ತಾರೆ. “ऋणसम्बन्धिनः केचित् केचिन्त्यासाप-  
हारकाः । रिपवश्च प्रियाश्चेति स्वकर्मवशवर्तिनः ।  
भेदश्चतुर्भिर्जायन्ते पुत्रा मित्राः स्त्रियस्तथा । भार्या पिता

च माता च भृत्याः स्वजनबान्धवाः । स्वेन स्वेन हि  
जायन्ते सम्बन्धेन महीतले” ।

ಋಣವನ್ನು ಪಡೆದೂ ಅದನ್ನು ತೀರಿಸದೆ ಮೃತನಾದರೆ  
ಅವನಿಗೆ ಪುತ್ರನಾಗಿ ಸಹೋದರನಾಗಿ ತಂದೆ ಅಥವಾ  
ಮಿತ್ರನಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿ ಅವನ ಋಣವನ್ನು ತೀರಿಸಬೇಕು.  
ಮಿತ್ರಭಾವದಿಂದಿದ್ದು ಅವರ ಋಣವನ್ನು ತೀರಿಸುವ  
ಪುತ್ರನು ಋಣಸಂಬಂಧಿ ಪುತ್ರನು. “ऋणं यस्य  
गृहीत्वा यः प्रयाति मरणं किल । अन्नदाता सुतो भूत्वा  
भ्राता वाथ पिता प्रियः । मित्ररूपेण वर्तते अन्तर्दष्टः  
सदव सः” । ತಾಯಿತಂದೆಗಳು ಸಂಪಾದಿಸಿಟ್ಟಿದ್ದ ದ್ರವ್ಯ  
ವನ್ನು ಅಪಹರಿಸುವವನು ನ್ಯಾಸಾಪಹಾರಕನು.

रिपुपुत्रलक्षणम् : ಜನ್ಮಾಂತರದ ದ್ವೇಷವನ್ನು ತೀರಿಸಿ  
ಕೊಳ್ಳುವ ವ್ಯಾಜದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವವನು ರಿಪುಪುತ್ರನು.  
ಇವನು ಬಾಲ್ಯದಲ್ಲಿ ಯಾವಾಗಲೂ ನಿಷ್ಕರವಾಗಿ ಮಾತ  
ನಾಡುತ್ತ ಶತ್ರುವಿನಂತೆಯೇ ವರ್ತಿಸುತ್ತಾನೆ. ವಿನೋದದ  
ಮಾತನಾಡುತ್ತಲೇ ತಾಯಿತಂದೆಗಳನ್ನು ಹೊಡೆಯುತ್ತಾನೆ.  
ಹೊಡೆದೂ ನಗುತ್ತಾ ಘನ ಬಿಟ್ಟು ಹೊರಡುತ್ತಾನೆ,  
ಮತ್ತೆ ಮನೆಗೆ ಬಂಧು ಕೋಪದಿಂದ ಮಾತನಾಡುತ್ತ  
ತನ್ನ ಜನ್ಮಾಂತರದ ದ್ವೇಷವನ್ನು ತೀರಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ.  
“बाल्ये वयसि संप्राप्ते रिपुवद्वर्तते सदा । पितरं मातरं  
चैव क्रोडमानो हि ताडयेत् । ताडयित्वा प्रयात्येवं  
प्रहस्यैवं पुनः पुनः । पुनरायाति तं तत्र पितरं मातरं  
पुनः । स क्रोधो वर्तते नित्यं वैरकर्मणि सर्वदा । प्रयात्येवं  
स दुष्टात्मा पूर्ववैरानुभावतः” ।

प्रियपुत्रलक्षणम् : ಪ್ರೀತಿಪಾತ್ರನಾದ ಪುತ್ರನು ಬಾಲ್ಯ  
ದಿಂದಲೇ ತನ್ನ ಆಟಪಾಟಾದಿಗಳಿಂದ ತಾಯಿತಂದೆಗಳನ್ನು  
ಸಂತೋಷಪಡಿಸುತ್ತಾ ವಯಸ್ಸು ಪ್ರಾಪ್ತವಾದನಂತರ  
ಅವರಿಗೆ ಹಿತವಾದ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡುತ್ತ ಭಕ್ತಿ  
ಯಿಂದ ಅವರ ಶುಶ್ರೂಷೆ ಮಾಡುತ್ತ ಮುಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ  
ಅವರನ್ನು ಸಲಹುವವನು ಪ್ರಿಯಪುತ್ರನು. “जातमात्रः  
प्रियं कुर्याद्बाल्ये नटनक्रीडनैः । वयः प्राप्य प्रियं कुर्यान्माता-  
पित्रोरनन्तरम् । भक्त्या सन्तोषयेन्नित्यं तावुभौ परि-  
पालयेत् । स्नेहेन वचसा चैव प्रियसम्भाषणेन च” ।

सत्पुत्रलक्षणम् : ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯನಿರತನೂ ಸತ್ಕರ್ಮನುಡಿಯು  
ವುದು ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತನೂ  
ಜ್ಞಾನಸಂಪನ್ನನೂ ಬುದ್ಧಿವಂತನೂ ವಾಕ್ಯತುರನೂ ಸಕಲ  
ಕಾರ್ಯನಿರ್ವಹಣೆಯಲ್ಲೂ ಧೈರ್ಯಶಾಲಿಯೂ ಮೇದಾ  
ಧೈರ್ಯನ ತತ್ಪರನೂ ದೇವತಾಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಶ್ರದ್ಧೆಯುಳ್ಳ



ವನೂ ಶಮದಮಾದಿ ಗುಣಸಂಪನ್ನನೂ ತಾಯಿ ತಂದೆ  
ಗಳಿಗೆ ಹಿತಕರನೂ ಸ್ವಜನರ ಪ್ರೀತಿವಿಶ್ವಾಸಗಳನ್ನು  
ಗಳಿಸಿದವನೂ ಸತ್ಪುತ್ರನೆನಿಸುವನು. “ಪುಣ್ಯಪ್ರಸಕ್ತೋ  
ಯಸ್ಯಾತ್ಮಾ ಸತ್ಯಧರ್ಮರತಃ ಸದಾ | ಬುದ್ಧಿಮಾನ್ ಜ್ಞಾನಸಂಪನ್ನ-  
ಸ್ತಪಸ್ವಿ ವಾಗ್ವಿದಾಂ ವರಃ | ಸರ್ವಕರ್ಮಸು ಸನ್ ಧೀರೋ ವೇದಾಧ್ಯಯನ-  
ತತ್ಪರಃ | ವಿಷ್ಣುಧ್ಯಾನಪರೋ ನಿಯಂ ಶಾಂತೋ ದಾಂತಃ ಸುಹೃತ್  
ಸದಾ | ಪಿತೃಮಾತೃಪರೋ ನಿಯಂ ಸರ್ವಸ್ವಜನವತ್ಸಲಃ | ಏವಂ ಗುಣಃ  
ಸುಸಂಯುಕ್ತಃ ಸುಪುತ್ರಃ ಸುಖದಾಯಕಃ” ಪಾಪ್ಯಪುಂ |

**ಪುತ್ರಕ ಪುತ್ರಕ** (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. ಪುತ್ರ ಸ್ವಾರ್ಥ  
“ಕನ್” | 2. ಸಣ್ಣಮಗು. 3. ಕರುಣೆಯಿಂದ ಕರೆಯು  
ಲ್ಪಡುವ ಮಗ. ಪುತ್ರ-ಅನುಕರ್ಮಾಪಾಂ “ಕನ್” (೪-೩-೭೬) |  
“ತಥಾಪಿ ದುಃಖಂ ನ ಭವಾನ್ ಕರ್ತುಮರ್ಹತಿ ಪುತ್ರಕ | ಯಸ್ಯ ಯಾವತ್  
ಸ ತೇನೈವ ಸ್ವೇನ ತುಷ್ಠಿತಿ ಮಾನವಃ” ವಿಷ್ಣುಪುಂ | 4. ಶರಭ  
ಮೃಗ, ಎರಡು ತಲೆ ಮತ್ತು ಎಂಟು ಕಾಲುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ  
ಒಂದು ಮೃಗ. 5. ಧೂರ್ತ, ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ.  
6. ಒಂದು ಪರ್ವತ. 7. ಒಂದು ವೃಕ್ಷ. 8. ಪತಂಗದ  
ಹುಳಿ. 9. ವಸ್ತ್ರದಂತೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತ  
ವಾದ ಬೊಂಬೆ. “ಮಂದಾಕಿನೀಸಂಕತವೇದಿಕಾಭಿಃ ಸಾ ಕನ್ದುಕೇಃ  
ಕೃತ್ರಿಮಪುತ್ರಕೇಶ್ಚ” ಕುಮಾಂ ೧-೨೯ |

**ಪುತ್ರಕಾ ಪುತ್ರಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುತ್ರಿ, ಮಗಳು. ಪುತ್ರೀ  
ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” | “ಟಾಪ್” (೪-೧-೪) | ಕಾತ್ಪೂರ್ವಸ್ಯೇಕಾರಸ್ಯ  
ವಾ ಅಕಾರಃ (ವಾಂ ೭-೩-೪೫) | ಪಕ್ಷೇ ಪುತ್ರಕಾ ಪುತ್ರಿಕಾ.  
ಪುತ್ರ ಇವ ಕಾಯತಿ—ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೩) |  
ಇತಿ ವಾ | ಔದಸ ಪುತ್ರನಿಲ್ಲದವನು ತನ್ನ ಪುತ್ರಿಯನ್ನು  
ಮಗನೆಂದು ಭಾವಿಸಿ ಇವಳಲ್ಲಿ ಜನಿಸುವ ಪುತ್ರನು ತನಗೆ  
ಮಗನಾಗಬೇಕೆಂದು ವಿವಾಹ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಅಳಿಯನಿಗೆ  
ಹೇಳಿ ಕನ್ಯಾದಾನ ಮಾಡುತ್ತಾನೆ. “ಅಪುತ್ರೋಜ್ಞೇನ ವಿಧಿನಾ  
ಸುತಾಂ ಕುರ್ವಂತಿ ಪುತ್ರೀಕಾಮ್ | ಯದಪತ್ಯಂ ಭವೇದಸ್ಯಾಂ ತನ್ಮಮ  
ಸ್ಯಾತ್ಸ್ವಧಾರಕಮ್” | “ಅಭ್ರಾತೃಕಾಂ ಪ್ರದಾಸ್ಯಾಮಿ ತುಮ್ಯ  
ಕನ್ಯಾಮಲಂಕೃತಾಮ್ | ಅಸ್ಯಾಂ ಯೋ ಜಾಯತೇ ಪುತ್ರಃ ಸ ಮೇ ಪುತ್ರೋ  
ಭವೇದಿತಿ” ಮನುಂ ೯-೧೨೭ |

**ಪುತ್ರಕಾಮ ಪುತ್ರಕಾಮ** (ವಿಂ) ಮಗನಾಗಬೇಕೆಂದು  
ಆಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. ಪುತ್ರಕಾಮಯತೆ—ಕಮ್ (ಕಾಂತಿ) + ಣಿಚ್  
“ಅನ್” (೩-೨-೧) | “ಪುತ್ರಕಾಮಸ್ತು ಪುತ್ರಾನ್ ವೈ ಧನಕಾಮೋ  
ಧನಾನಿ ಚ” |

**ಪುತ್ರಕಾಮ್ಯಾ ಪುತ್ರಕಾಮ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುತ್ರನಾಗಬೇಕೆಂಬ  
ಆಪೇಕ್ಷೆ, ಮಗನಾಗಬೇಕೆಂಬ ಆಸೆ. ಪುತ್ರಮಾತಮನಃ ಇಚ್ಛತಿ  
—ಪುತ್ರ “ಕಾಮ್ಯಚ್” (೩-೧-೯) | ಭಾವೇ “ಅಃ”  
(೩-೩-೧೦೨) | “ಅಥಾಮ್ಯರ್ಯ ವಿಧಾತಾರಂ ಪ್ರಯಯಿ ಪುತ್ರ-

ಕಾಮ್ಯಯಾ | ತೌ ದಂಪತೌ ವಸಿಷ್ಠಸ್ಯ ಗುರೋರ್ಜಗ್ಮತುರಾಶ್ರಮಮ್”  
ರಘುಂ ೧-೩೫ |

**ಪುತ್ರಕೃತಕ ಪುತ್ರಕೃತಕ** (ಪುಂ) ಕೃತ್ರಿಮ ಪುತ್ರ, ಮಗನೆಂಬ  
ಭಾವನೆಯಿಂದ ತಾಯಿತಂದೆಗಳ ಪ್ರೀತಿಗೆ ಪಾತ್ರನಾದ  
ಪುತ್ರ. ಕೃತಕಃ ಪುತ್ರಃ | ಪರಿನಿಪಾತಃ | “ಶ್ಯಾಮಾಕಮುಷ್ಠಿ-  
ಪರಿವಿಧಿತಕೋ ಜಹಾತಿ ಸೌಜ್ಯಂ ನ ಪುತ್ರಕೃತಕಃ ಪದವೀಂ ಮೃಗಸ್ತೇ”  
ಶಾಕುಂ ೪-೧೩ |

**ಪುತ್ರಜೀವ ಪುತ್ರಜೀವ** (ಪುಂ) ಗರ್ಭವನ್ನು ಕಾಪಾಡುವ  
ಒಂದು ವೃಕ್ಷ. ಕುಮಾರಜೀವಃ ಗರ್ಭಜೀವಃ ಸುತಜೀವಃ ಇತ್ಯಾದಿ  
ಈ ಮರದ ಹೆಸರು. ಪುತ್ರಂ ಗರ್ಭಂ ಜೀವಯತಿ—ಜೀವ  
(ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ “ಅನ್” (೩-೨-೧) | “ಫಲ್”  
(೩-೧-೧೩೩) | —ಜೀವಕಃ—ಜೀವಕಃ. ದ್ವಿತೀಯಾಯಾ ಅಲೂಕ್ |  
—ಪುತ್ರಜೀವಕಃ ಪುತ್ರಂಜೀವಕಃ. “ಅನೇನೈವ ವಿಧಾನೇನ ಪುತ್ರ-  
ಜೀವಕಜಂ ರಸಮ್ | ಪ್ರಯುಜ್ಜಿತ ಮಿಷಕ್ ಪ್ರಾಜಃ ಕಾಲಸಾತ್ಮ-  
ವಿಭಾಗವಿತ್” ಸುಶ್ರುತಂ |

**ಪುತ್ರಪೌತ್ರ ಪುತ್ರಪೌತ್ರ** (ನಂ) ಮಕ್ಕಳು ಮತ್ತು ಮೊಮ್ಮಕ್ಕಳು.  
ಪುತ್ರಾಶ್ಚ ಪೌತ್ರಾಶ್ಚ ಷಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ—ಏಕವಕ್ಷಾವಃ  
(೨-೪-೧೧) |

**ಪುತ್ರಪೌತ್ರಿಣ ಪುತ್ರಪೌತ್ರಿಣ** (ವಿಂ) ಪುತ್ರಪೌತ್ರ  
ಪರಂಪರೆಯಾಗಿ ಬಂದ, ಪುತ್ರಪೌತ್ರರಾದಿಯಾಗಿ ಅನುಭವಿ  
ಸುವ. ಪುತ್ರಾನ್ ಪೌತ್ರಾನ್ಶ್ಚಾನುಭವತಿ—“ಃ” (೪-೨-೧೦) |  
“ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯) | —ಪೌತ್ರಿಣತಾ—ಪೌತ್ರಿಣತಾ.  
ಪುತ್ರಪೌತ್ರ ಪರಂಪರೆಯಾಗಿ ಅನುಭವಿಸುವಿಕೆ. “ಲಕ್ಷ್ಮೀಂ  
ಪರಸ್ಪರೀಣಾಂ ತ್ವಂ ಪುತ್ರಪೌತ್ರಿಣತಾಂ ನಯ” ಮೃದ್ವಿಂ ೪-೧೫ |

**ಪುತ್ರಭಾವ ಪುತ್ರಭಾವ** (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರನ ಭಾವ, ಪುತ್ರತ್ವ,  
ಮಗನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪುತ್ರಸ್ಯ ಭಾವಃ | 2. ಜಾತಕದಲ್ಲಿ ಲಗ್ನ  
ದಿಂದ ಐದನೆಯ ಸ್ಥಾನ, ಜಾತಕದಲ್ಲಿ ಪುತ್ರಸಂತಾನ  
ವಿಷಯವನ್ನು ನೋಡಬೇಕಾದ ಪಂಚಮಸ್ಥಾನ.

**ಪುತ್ರವಲ ಪುತ್ರವಲ** (ವಿಂ) ಪುತ್ರನುಳ್ಳವನು, ಪುತ್ರ  
ಸಂತಾನವುಳ್ಳವನು. ಪುತ್ರೋಽಸ್ತಸ್ಯ “ವಲಚ್” (ವಾಂ  
೪-೨-೧೧೨) |

**ಪುತ್ರಶ್ಲೋ ಪುತ್ರಶ್ಲೋ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಲಮುರಿ ಗಿಡ,  
ಕುರುಟಿಗೆ ಗಿಡ.



ಪುತ್ರಸು ಪುತ್ರಸೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪ್ರಸವಿಸುವ ಹೆಂಗಸು, ತಾಯಿಯಾಗುವ ಹೆಂಗಸು. ಪುತ್ರ ಸುತೆ — ಪುತ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭವಿಮೋಚನೆ) “ವಿವ್” (೩-೨-೬೧) ।

ಪುತ್ರಾನ್ನಾದ ಪುತ್ರಾನ್ನಾದ (ಪುಂ) 1. ಕುಟೀಚಕನೆಂಬ ಸಂನ್ಯಾಸಿ, ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಸಂನ್ಯಾಸಿಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. ಪುತ್ರಸ್ಯಾನ್ಮ-ಮತ್ತಿ-ಅದ (ಮಕ್ಷಣ) “ಅನ್” (೩-೨-೧) । [“ಕುಟೀಚಕ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] (ವಿಂ) 2. ಮಗನ ಅನ್ನವನ್ನು ತಿಂದು ಜೀವಿಸುವವನು.

ಪುತ್ರಾಥಿನ್ ಪುತ್ರಾರ್ಥಿನ್ (ವಿಂ) ಪುತ್ರನನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಪುತ್ರಸಂತಾನವನ್ನು ಬೇಡುವವನು. ಪುತ್ರಮರ್ಯತೇ — ಅಥ (उपयाच्यायाम्) “णिनि:” (೩-೧-೧೩೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪) । -ಅಥಿನಿ - ಅರ್ಥಿನೀ.

ಪುತ್ರೀಕಾ ಪುತ್ರೀಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪುತ್ರ. ಮಗಳು. ಪುತ್ರ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” । “ಟಾಪ್” (೪-೧-೪) । ತಿನ: ಇವರ್ಣಸ್ಯ ಅಕಾರಾಭಾವೇ ರೂಪಮ್ । ಅಕಾರೇ ಪುತ್ರೀಕಾ ಪುತ್ರೀಕಾ. 2. ಔರಸ ಪುತ್ರನಿಲ್ಲದವನು ಮಗನೆಂದು ಭಾವಿಸುವ ಪುತ್ರೀ. [“ಪುತ್ರೀಕಾ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 3. ವಸ್ತ್ರ ದಂತ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಬೊಂಬೆ. ಪುತ್ರೀವ ಪ್ರತಿಕ್ರೂತಿ-ರಸ್ಯಾ: — ಪುತ್ರೀ “ಕನ್” (೪-೩-೧೬) ।

ಪುತ್ರೀಕಾಪುತ್ರ ಪುತ್ರೀಕಾಪುತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರೀರೂಪ ನಾದ ಪುತ್ರ. 2. ಮಗನೆಂದು ಭಾವಿಸಲ್ಪಡುವ ಪುತ್ರಿಯ ಮಗ, ದೌಹಿತೃ. ಪುತ್ರೀಕೇವ ಪುತ್ರ: ಪುತ್ರೀಕಾಯಾ: ಪುತ್ರೋ ವಾ ।

ಪುತ್ರೀನ್ ಪುತ್ರೀನ್ (ಪುಂ) ಪುತ್ರಸಂತಾನವುಳ್ಳವನು. ಪುತ್ರೋ-ಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ — “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೫) । “ಇತ್ಯಾಪ್ರಸಾದಾ-ದಸ್ಯಾಸ್ತ್ವಂ ಪರಿಚರ್ಯಾಪರೋ ಭವ । ಅವಿಘ್ನಮಸ್ತು ತೇ ಸ್ವೇಯಾ: ಪಿತೇವ ಧುರ ಪುತ್ರೀಣಾಮ್” ರಘುಂ ೧-೯೧ । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪) । ಪುತ್ರೀಣಿ ಪುತ್ರೀಣೀ.

ಪುತ್ರೀ ಪುತ್ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಗಳು. ಪುತ್ರ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪೧) ।

ಪುತ್ರೀಕೃತ ಪುತ್ರೀಕೃತ (ವಿಂ) ಮಗನಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಗನಾಗಿ ಭಾವಿಸಿ ಸ್ವೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪುತ್ರ+ಡುಕ್ರ (ಕರಣ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) । “ನ್ವಿ:” (೪-೪-೪೦) । “ಅಮುಂ ಪುರ: ಪಶ್ಯಸಿ ದೇವದಾಹಂ ಪುತ್ರೀಕೃತೋಽಸೌ ವೃಷಭವಜೇನ” ರಘುಂ ೨-೩೬ ।

ಪುತ್ರೀಯ ಪುತ್ರೀಯ (ವಿಂ) 1. ಪುತ್ರಸಂಬಂಧವಾದ. ಪುತ್ರಸ್ಯೇದಮ್ “ಛ:” (೪-೨-೧೧೪) । 2. ಪುತ್ರಸಂತಾನವು ಕಾರಣವಾಗಿರುವ, ಪುತ್ರನ ನಿಮಿತ್ತವಾದ. ಪುತ್ರಸ್ಯ ನಿಮಿತ್ತಮ್

ಸಂಯೋಗೋ ವಾ “ಛ:” (೪-೧-೪೦) । “ಋಷ್ಯಶೃಂಗಾದಯಸ್ತಸ್ಯ ಸಂತ: ಸಂತಾನಕಾಡ್ವಿಷಣ: । ಆರೇಭಿರೇ ಜಿತಾತ್ಮಾನ: ಪುತ್ರೀಯಾಮಿಷ್ಟಿಮೃತ್ವಿಜ:” ರಘುಂ ೧೦-೪ ।

ಪುತ್ರೇಷಿ ಪುತ್ರೇಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುತ್ರಸಂತಾನಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಯಾಗ. ಪುತ್ರನಿಮಿತ್ತಿಕಾ ಇಷ್ಟಿ: । “ಗೃಹೀತ್ವಾ ಪञ्चवर्षीयं ಪುತ್ರೇಷಿ ಪ್ರಥಮಂ ಚರೇತ್” ॥

ಪುತ್ರೇಷಣಾ ಪುತ್ರೇಷಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುತ್ರನ ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಮಗ ನಾಗಬೇಕೆಂಬ ಆಸೆ.

ಪುತ್ರೋ ಪುತ್ರೋ (ಪುಂ ದ್ವಿವಂ) ಮಗಳು ಮತ್ತು ಮಗ, ಪುತ್ರಿ ಮತ್ತು ಪುತ್ರ. ಪುತ್ರೀ ಚ ಪುತ್ರಶ್ಚ ಪುತ್ರೋ — ಏಕಗಣ: (೧-೨-೬೭) ।

ಪುತ್ರೈ ಪುತ್ರೈ (ವಿಂ) ಪುತ್ರಸಂತಾನವು ಕಾರಣವಾಗಿರುವ, ಪುತ್ರನ ನಿಮಿತ್ತವಾದ. ಪುತ್ರನ ಸಂಬಂಧವುಳ್ಳ, ಪುತ್ರನ ಉತ್ಪತ್ತಿ ಸೂಚಕವಾದ. ಪುತ್ರಸ್ಯ ನಿಮಿತ್ತಂ ಸಂಯೋಗ ಉತ್ಪಾತೋ ವಾ “ಯತ್” (೪-೧-೪೦) ।

ಪುದ್ಗಲ ಪುದ್ಗಲ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಪಂಚಕ್ಕೆ ಮೂಲಕಾರಣ ವಾಗಿರುವ ದ್ರವ್ಯ, ಪರಮಾಣು. ಪೂರ್ಯಂತೇ ಗಲಂತಿ ಚೇತಿ ಪುದ್ಗಲಾ: । ದೇಹದ ವೃದ್ಧಿ ಮತ್ತು ಹ್ರಾಸಗಳಿಗೆ ಕಾರಣ ವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಪುದ್ಗಲವು ಪರಮಾಣು. “ಪೂರ್ಣಾದ್ಗಲ-ನಾದೇಹೇ ಪುದ್ಗಲಾ: ಪರಮಾಣವ:” । 2. ದೇಹ, ಶರೀರ, ಪೂರ್ಣಾತ್ ಪುತ್ ಗಲನಾತ್ ಗಲ:, ಪುಚ್ಚಾಸೌ ಗಲಶ್ಚ । ವೃದ್ಧಿ ಮತ್ತು ಹ್ರಾಸಗಳು ಇರುವುದರಿಂದ ದೇಹವು ಪುದ್ಗಲ. 3. ಜೀವ, ಆತ್ಮ. (ವಿಂ) 4. ಸುಂದರವಾದ ಆಕಾರವುಳ್ಳ.

ಪುನತ್ ಪುನತ್ (ವಿಂ) ಪವಿತ್ರವಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಪರಿಶುದ್ಧವಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪೂ (ಪವನೇ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ತೀ -ತೀ. “ತ್ವತ್ಕೀರ್ತಿ: ಪುನತೀ ಪುನಸ್ತ್ರಿಭುವನಂ ಶುಭ್ರಾದ್ಯಾದೇಶನಾತ್” ನೈಷಂ ೪-೧೩೫ ।

ಪುನಃ(೨) ಪುನಃ(೨) (ಅವ್ಯಂ) 1. ಮತ್ತೆ, ಒಂದು ಸಲ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ. ಮರಳಿ, ತಿರುಗಿ. ಪನಾಪ್ಯತೇ — ಪನ (ಸ್ತುತೌ) “ಅರ್” ಛತ್ವಂ ಚ ಬಾಹುಂ । “ನಿವಾರ್ಯತಾಮಾಲಿ ಕಿಮಪ್ಯಯಂ ವಟು: ಪುನರ್ವಿವಶ್ಚು: ಸ್ಫುರಿತೋತ್ತರಾಧರ:” ಕುಮಾಂ ೪-೮೩ । “ಊರ್ವ್ ಪ್ರಾಣಾ ಹ್ಯುತ್ಕ್ರಮಂತಿ ಯುನ: ಸ್ಥವಿರ ಆಪ್ಯತಿ । ಪ್ರತ್ಯುತ್ಥಾನಾಭಿವಾದಾಭ್ಯಾಂ ಪುನಸ್ತಾನು ಪ್ರತಿಪದ್ಯತೇ” ಮನುಂ ೨-೧೨೦ । 2. ಅದರ, ಪಕ್ಷಾಂತದಲ್ಲಿ. “ಭೂತಾನುಕರ್ಮಾ ತವ ಚೇದಿಯಂ ಗೌರೇಕಾ ಭವೇತ್ಸವಸ್ತಿಮತೀ ತ್ವದಂತೇ । ಜೀವನ್ ಪುನ: ಶಶ್ವದುಪಪ್ಲವೇಮ್ಯ: ಪ್ರಜಾ: ಪ್ರಜಾನಾಥ ಪಿತೇವ ಪಾಸಿ” ರಘುಂ ೨-೪೮ ।



ಪುನಃ ಪುನಃ ಪುನಃ ಪುನಃ (ಅವ್ಯಂ) ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ, ಬಾರಿ ಬಾರಿಗೆ. ವೀಷಾಢಾಂ ದ್ವಿರ್ಭಾವಿಃ | "ಪುನಃ ಪುನಃ ಕಾಚನ ಕೃವಂತಿ ಕಚ್ಚಟಾಧಿಯಾ ಧುಪಜಘಮಸಂಯಮಮ್" ನೆಪಂ ೧೪-೩೦ |

ಪುನಃ ಪುನಾ ಪುನಃ ಪುನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ನದಿ.

ಪುನಃ ಸಂಸ್ಕಾರ ಪುನಃ ಸಂಸ್ಕಾರ (ಪುಂ) ಉಪನಯನ ಮೊದಲಾದ ಸಂಸ್ಕಾರಗಳನ್ನು ಮತ್ತೆ ಮಾಡುವುದು.

ಪುನರಾಗತ ಪುನರಾಗತ (ವಿಂ) ಮತ್ತೆ ಬಂದವನು.

ಪುನರಾಗಮನ ಪುನರಾಗಮನ (ನಂ) ಮತ್ತೆ ಬರುವುದು, ಎರಡನೆಯ ಸಲ ಬರುವುದು.

ಪುನರಾಧಾನ ಪುನರಾಧಾನ (ನಂ) ದ್ವಿತೀಯ ವಿವಾಹವಾದ ನಂತರ ಮಾಡುವ ಅಗ್ನಿಸಂಧಾನ. "ಪುನರಾರಕ್ರಿಯಾ ಕುರ್ಯಾತ್ ಪುನರಾಧಾನಮೇವ ಚ" ಮನುಂ ೪-೧೬೮ |

ಪುನರಾವರ್ತ ಪುನರಾವರ್ತ (ಪುಂ) 1. ಮತ್ತೆ ಹಿಂತಿರುಗಿ ಬರುವುದು. 2. ಮತ್ತೆ ಹುಟ್ಟುವುದು, ಪುನರ್ಜನ್ಮ.

ಪುನರಾವರ್ತಿನ್ ಪುನರಾವರ್ತಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಮತ್ತೆ ಹಿಂತಿರುಗಿ ಬರುವ. 2. ಮತ್ತೆ ಹುಟ್ಟುವ, ಪುನರ್ಜನ್ಮ ಹೊಂದುವ. ಪುನರಾವರ್ತತೆ - ಆ + ವೃತ್ತ (ವರ್ತನೆ) "ಗಿರಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮) | "ಆಬ್ರಹ್ಮಭುವನಾಲ್ಲೋಕಾಃ ಪುನರಾವರ್ತಿನೋಽಜುನ್" ಗೀತಾ ೮-೧೬ |

ಪುನರುಕ್ತ ಪುನರುಕ್ತ (ನಂ) 1. ಒಂದು ಪದದಿಂದ ಅರ್ಥವಾಚ್ಯದಿಂದ ಹೇಳಿದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಬೇರೆ ಪದದಿಂದ ಅರ್ಥವಾಚ್ಯದಿಂದ ಮತ್ತೆ ಹೇಳುವುದು. 2. ಒಂದು ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸಿದ ಪದವನ್ನು ಅದೇ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಮತ್ತೆ ಪ್ರಯೋಗಿಸುವುದು. ಇದೊಂದು ಕಾವ್ಯದೋಷ. ಇದು ಪದದೋಷ ಮತ್ತು ವಾಕ್ಯದೋಷಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. "ರತೀಲಿಲಾಶ್ರಮಂ ಮಿಂತೆ ಸಲೀಲಮನಿಲೋ ಬಹನ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ "ಲಿಲಾ" ಪದವು ಪುನರುಕ್ತವಾಯಿತು. "ಸಹಸಾ ವಿದವೀತ ನ ಕ್ರಿಯಾಮವಿವೇಕಃ ಪರಮಾಪದಾಂ ಪದಮ್ | ವೃಣುತೇ ಹಿ ವಿಮೃಶ್ಯ-ಕಾರಿಣಂ ಗುಣಲಕ್ಷಣಾಃ ಸ್ವಯಮೇವ ಸಂಪದಃ" ಇಲ್ಲಿ ದ್ವಿತೀಯ ಪಾದದ ಅರ್ಥವೇ ಉತ್ತರಾರ್ಧದಲ್ಲಿ ವೈಪರೀತ್ಯದಿಂದ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಅರ್ಥವು ಪುನರುಕ್ತವಾಯಿತು. (ವಿಂ) 2. ಮತ್ತೆ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು.

ಪುನರುಕ್ತಜನ್ಮನ್ ಪುನರುಕ್ತಜನ್ಮನ್ (ಪುಂ) ವಿಪ್ರ, ಪ್ರಥಮ ಮರ್ಣದಮನು. ಪುನರುಕ್ತಂ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ | ವಿಪ್ರನಿಗೆ ಉಪನಯನ ಸಂಸ್ಕಾರದಿಂದ ದ್ವಿತೀಯ ಜನ್ಮವುಂಟಾಗುವುದೆಂದು ಉಕ್ತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ಇದರಿಂದ ವಿಪ್ರನಿಗೆ "ದ್ವಿಜಾತಿ" ಎಂದು ಹೆಸರು. "ಮಾತುರಗ್ರೇಷ್ಠಿಜನನಂ ದ್ವಿತೀಯಂ ಮೌಞ್ಜಿಬಂಧನೇ" ಮನುಂ ೨-೧೬೯ |

ಪುನರುಕ್ತವದಾಭಾಸ ಪುನರುಕ್ತವದಾಭಾಸ (ಪುಂ) ಮೇಲು ನೋಟಕ್ಕೆ ಪುನರುಕ್ತವೆಂದು ತೋರುವ ಒಂದು ಅಲಂಕಾರ. ಪುನರುಕ್ತವದಾಭಾಸತೆ ಜಾಯತೇ | ಪುನರುಕ್ತಸ್ಯೇವ ಆಭಾಸೋ ಜ್ಞಾನಮ್ ಇತಿ ವಾ | ಒಂದೇ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಶಬ್ದಗಳ ಪ್ರಯೋಗದಿಂದ ಅರ್ಥವು ಪುನರುಕ್ತವಾದಂತೆ ತೋರಿ ಪರ್ಯವಸಾನದಲ್ಲಿ ಆ ಪದಗಳಿಗೆ ಅರ್ಥಾಂತರ ಹೇಳುವುದರಿಂದ ಪುನರುಕ್ತದೋಷಕ್ಕೆ ಪರಿಹಾರವುಂಟಾಗುವುದರಿಂದ ಅಲ್ಲಿ "ಪುನರುಕ್ತವದಾಭಾಸಃ" ಎಂಬ ಅಲಂಕಾರ. "ಆಪಾತತೋ ಯದರ್ಥಸ್ಯ ಪೌನರುಕ್ತೇನ ಭಾಸನಮ್ | ಪುನರುಕ್ತವದಾಭಾಸಃ ಸ ಭಿನ್ನಾಕಾರಶಬ್ದಗಃ" ಸಾಂಧಂ ೧೦-೨ | "ಭುಜ್ಜ್ಞಕುಂಡಲಿ ವ್ಯಕ್ತಶಶಿಶುಶ್ರಾಂಶುಶೀತಗುಃ ಜಗನ್ಯಪಿ ಸದಾಪಾಯಾದವ್ಯಾಚ್ಛೇತೋ-ಹರಃ ಶಿವಃ" ಸಾಂಧಂ ೧ | ಭುಜ್ಜ್ಞಕುಂಡಲಿ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಸರ್ಪವಾಚಕವಾದ ಎರಡು ಪದಗಳ ಪ್ರಯೋಗದಿಂದ ಪುನರುಕ್ತದಂತೆ ತೋರಿದರೂ ಭುಜ್ಜ್ಞ ರೂಪವಾದ ಕುಂಡಲವುಳ್ಳವನೆಂದು ಹೇಳಿ ಪರಿಹಾರ. ಹೀಗೆಯೇ "ಶಶಿಶುಶ್ರಾಂಶು" ಮತ್ತು "ಪಾಯಾದವ್ಯಾತ್" ಎಂಬಲ್ಲಿಯೂ ದೋಷವು ಅಪಾತತಃ ತೋರಿ ಅಪಾಯಾದವ್ಯಾತ್ ಎಂದು ಅರ್ಥ ಹೇಳುವುದರಿಂದ ಪರಿಹಾರ.

ಪುನರುಪಪತ್ತಿ ಪುನರುಪಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪುನಃ ಜನ್ಮ ಪಡೆಯುವುದು, ಮತ್ತೆ ಹುಟ್ಟುವುದು. 2. ಮತ್ತೆ ಉತ್ಪತ್ತಿಯಾಗುವುದು, ಮತ್ತೆ ತಯಾರಾಗುವುದು.

ಪುನರುಪಗಮ ಪುನರುಪಗಮ (ಪುಂ) 1. ಹಿಂತಿರುಗಿ ಬರುವುದು, ಮತ್ತೆ ಬರುವುದು. ಪುನಃ ಉಪಗಮಃ | 2. ಮತ್ತೆ ಅಂಗೀಕರಿಸುವುದು, ಪುನಃ ಒಪ್ಪಿಗೆ ಕೊಡುವುದು. "ಕವಾಯೋ-ಧ್ಯಾಯಾಃ ಪುನರುಪಗಮೋ ದಂಡಕಾಢಾಂ ವನೇ ವಃ" ತಂ ರಾಂ ೨-೧೩ |

ಪುನರುಕ್ತ ಪುನರುಕ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎರಡನೇ ಸಲ ವಿವಾಹವಾದ ಸ್ತ್ರೀ, ಮತ್ತೆ ಮದುವೆಯಾದ ಹೆಂಗಸು.

ಪುನರುಜನ್ಮನ್ ಪುನರುಜನ್ಮನ್ (ನಂ) ಪುನಃ ಜನ್ಮ ಪಡೆಯುವುದು, ಮತ್ತೆ ಹುಟ್ಟುವುದು. ಪುನಃ ಭೂಯಃ ಜನ್ಮ | "ಮಾಮುಪೇತ್ಯ ತು ಕೌಂತೇಯ ಪುನರುಜನ್ಮ ನ ವಿಶ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೮-೧೬ | "ಪುನರುಜನ್ಮನ್ಯಸ್ಮಿನ್ ಅನುಭವಪಥಂ ಯೋ ನ ಗತವಾನ್" ಮಾಲಸೀಂ ೧-೩೩ |

ಪುನರುಜತಿ ಪುನರುಜತಿ (ವಿಂ) ಮತ್ತೆ ಹುಟ್ಟಿ ಬಂದವನು.

ಪುನರುನವ ಪುನರುನವ (ಪುಂ) ನವ, ಉಗುರು. ಪುನರುನವಃ | ಎಷ್ಟು ಸಲ ಉಗುರನ್ನು ತೆಗೆದರೂ ಅದು ಮತ್ತೆ ಹುಟ್ಟಿ ಹೊಸದಾಗಿ ತೋರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ಪುನರುನವಾ ಪುನರುನವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೊಮ್ಮೆಗಿಡ. ಪುನಃ ನುಯತೇ-ಗು (ಸ್ತುತೌ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭) |



**ಪುನರ್ಭವ ಪುನರ್ಭವ (ಪುಂ)** 1. ನಖ, ಉಗುರು. ಪುನ: ಭವತಿ - ಭೂ "ಅವ್" (೩-೧-೧೩೪), 2. ಮತ್ತೆ ಹುಟ್ಟುವುದು, ಜನ್ಮಾಂತರ ಪಡೆಯುವುದು. ಪುನ: + ಭೂ ಭಾವೇ "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭)। "ಮಮಾಪಿ ಚ ಕಪಯತು ನೋಲೋಹಿತ: ಪುನರ್ಭವಂ ಪರಿಗತಶಕ್ತಿರಾತ್ಮಮ್:" ಶಾಕುಂ ೭-೩೪।

**ಪುನರ್ಭವ ಪುನರ್ಭವ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಎರಡನೇ ಸಲ ಮದುವೆಯಾದವಳು, ಮತ್ತೆ ಮದುವೆಯಾದ ಹೆಂಗಸು. ಪುನರ್ಭವತಿ - ಭೂ "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೭೬)। "ಪುನರ್ಭವದಿಧಿಷ್ಠಾ ರ್ಹಿ:" ಅಮಂ । ಪರಪೂರ್ವದ (ಮೊದಲು ಒಬ್ಬನನ್ನು ಮದುವೆಯಾದ) ಹೆಂಗಸರು ಏಳು ವಿಧ. ಅವರಲ್ಲಿ ಪುನರ್ಭವ: ಎಂಬ ಹೆಂಗಸು ಮೂರು ವಿಧ. (1) ಮದುವೆಯಾಗಿ ಕನ್ಯಾವಸ್ಥೆಯಲ್ಲೇ ವಿತಂತುವಾಗಿ ಋತುಮತಿಯಾಗಿರದಿದ್ದರೆ ಪುನರ್ವಿವಾಹಕ್ಕೆ ಅರ್ಹಳಾಗುವವಳು ಮೊದಲನೆಯವಳು. (2) ವ್ಯಭಿಜಾರಾದಿ ದೋಷದೂಷಿತಳಾದ ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ಕಾಲದೇಶ ಧರ್ಮಗಳನ್ನು ಯೋಚಿಸಿ ತಾಯಿ ತಂದೆಗಳು ಮತ್ತೊಬ್ಬನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು ಮದುವೆಮಾಡಿದರೆ ಅವಳು ಎರಡನೆಯವಳು. (3) ವಿತಂತುವಾದ ಹೆಂಗಸಿಗೆ ಪತಿಯ ಸಹೋದರರು ಯಾರೂ ಇಲ್ಲದೆ ಬಂಧುಗಳು ಅವಳನ್ನು ಸರ್ವಣನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು ಮದುವೆಯಾದರೆ ಅವಳು ಮೂರನೆಯವಳು. "ಪರಪೂರ್ವಾ:ಸ್ತ್ರೀಯಸ್ತವನ್ಯಾ: ಸಪ್ತ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಯಾಕ್ರಮಮ್ । ಪುನರ್ಭವ: ಸ್ತ್ರೀವಿಧಾ ತಾಸಾಂ ಸ್ವೇರಿಣಿ ತು ಚತುರ್ವಿಧಾ । ಕನ್ಯೇವಾಕ್ಷತಯೋನಿರ್ಯಾ ಪಾಣಿಗ್ರಹಣದೃಷಿತಾ । ಪುನರ್ಭವ: ಪ್ರಥಮಾ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಪುನ: ಸಂಸ್ಕಾರ-ಕರ್ಮಣಾ ॥ ದೇಶಧರ್ಮಾನಿವೇಕ್ಷಯ ಸ್ತ್ರೀ ಗುಣಿರ್ಯಾ ಪ್ರದೀಯತೇ । ಉತ್ಪನ್ನಸಾಹಸಾನ್ಯಸ್ಮೈ ಸಾ ದ್ವಿತೀಯಾ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ ॥ ಅಸತ್ಸು ದೇವರೇಷು ಸ್ತ್ರೀ ಬಾನ್ಧವೇರ್ಯಾ ಪ್ರದೀಯತೇ । ಸರ್ವಣಿಯ ಸಪಿಂಡಾಯ ಸಾ ತೃತೀಯಾ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ" ॥ (ವಿಂ) 2. ಎರಡನೆಯ ಸಲ ಹುಟ್ಟಿದ.

**ಪುನರ್ವಸು ಪುನರ್ವಸು (ಪುಂ)** 1. ಎಷ್ಟು. ಪುನ: ವಸತಿ ಬ್ರಹ್ಮಾದಿ ದೇವೇಷು ಅಂತರಾತ್ಮತಯಾ ವಸತಿ - ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ಉ:" (೩-೧-೧೦)। "ಬ್ರಹ್ಮಾದಿಷ್ವಪಿ ದೇವೇಷು ಅಂತರಾತ್ಮ-ತಯಾ ಚ ಯ: । ಪುನರ್ನಿವಸನಾನ್ವಿತಂ ಪುನರ್ವಸುರ್ದಾಹತ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । "ಅನೃಷೋ ವಿಜಯೋ ಜೇತಾ ವಿಶ್ವಯೋನಿ: ಪುನರ್ವಸು:" ವಿಂ ಸಂ । 2. ಕಾತ್ಯಾಯನ ಮುನಿ. 3. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 4. ಪುನರ್ವಸು ನಕ್ಷತ್ರ, ಅಶ್ವಿನಿ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಏಕನೆಯದು. ಇದು ಅದಿತಿ ದೇವತಾಕವಾದ ನಕ್ಷತ್ರ. ಇದರ ಮೊದಲ ಮೂರು ಪಾದಗಳು ಮಿಥುನರಾಶಿಗೂ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಪಾದವು ಕರ್ಕಾಟಕ ರಾಶಿಗೂ ಸೇರುವುವು. ಈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು ಮಿತ್ರಸಂಪತ್ತಿಯುಳ್ಳವನು. ಶಾಸ್ತ್ರಾಭ್ಯಾಸದಲ್ಲಿ

ಅಭಿರುಚಿಯುಳ್ಳವನು. ಉತ್ತಮ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. ಅಲಂಕಾರ ಪ್ರಿಯನು, ದಾನಶಾಲಿ. ಪರಾಕ್ರಮ ಶಾಲಿ. ರಾಜನ ವರ್ಚಸ್ಸುಳ್ಳವನು. "ಪ್ರಭೂತಮಿತ್ರ: ಕೃತ-ಶಾಸ್ತ್ರಯತ: ಸದ್ರತನಕಾಮಿ ವರಭೂಷಣಾಡ್ಯ: । ದಾತಾ ಪ್ರತಾಪಿ ವಸುಧಾಧಿಪಶ್ರೀ: ಪುನರ್ವಸೌ ಯಸ್ಯ ಭವೇತ್ಪ್ರಸೂತಿ:" । ಪುನರ್ವಸು ನಕ್ಷತ್ರವು ನಾಮಕರಣ, ಅನ್ನಪ್ರಾಶನ, ಚೌಳ, ಡೋಲಾ ರೋಹಣ, ನೂತನ ವಸ್ತ್ರಧಾರಣ, ಕರ್ಣವೇಧನ, ಅಕ್ಷರಾ ಭ್ಯಾಸ, ವಿದ್ಯಾರಂಭ, ಉಪನಯನ, ವಿವಾಹ, ಮಂತ್ರಾ ರಂಭ, ಗೃಹಾರಂಭ, ಗೃಹಪ್ರವೇಶ, ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯ, ಉಳುವೆ, ಧಾನ್ಯ ಸಂಗ್ರಹ, ಅಭರಣಧಾರಣ, ಔಷಧ ಸೇವನೆ, ಶುಭಪ್ರಯಾಣ ಈ ಶುಭಕಾರ್ಯಗಳಿಗೆ ಪ್ರಶಸ್ತ. ಪುನರ್ವಸು ನಕ್ಷತ್ರದ ಹೆಸರುಗಳು: ಪುನರ್ವಸು, ಆದಿತಿ, ದೇವಮಾತಾ, ಆದಿತ್ಯಮ್ । ಇದಕ್ಕೆ ದ್ವಿವಚನಾಂತ ಪ್ರಯೋಗವೂ ಉಂಟು. "ತೌ ವಿದೇಹನಗರೀನಿವಾಸಿನಾಂ ಗಾಂ ಗತಾವಿವ ದಿವ: ಪುನರ್ವಸು" ರಘುಂ ೧೧-೩೬ ।

**ಪುನಾನ್ ಪುನಾನ್ (ವಿಂ)** ಪವಿತ್ರವಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಪರಿಶುದ್ಧವಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪೂ (ಪವನೇ) "ಶಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಪುನಾನ್ ಪವನೋದ್ಭೂತೈರ್ಮೇರಾಹುತಿಗನ್ಧಿಮಿ:" ರಘುಂ ೧-೪೩ ।

**ಪುನಾಗ ಪುನಾಗ (ಪುಂ)** 1. ಪುನಾಗವೃಕ್ಷ, ಸುರಗಿಮರ. ಪುಮಾನ್ ನಾಗ ಇವ । 2. ಪುರುಷಶ್ರೇಷ್ಠ. 3. ಜಾಯಿ ಕಾಯಿ. 4. ಬಿಳಿ ನೈದಿಲೆ. 5. ಬಿಳಿ ಸರ್ಪ. "ಪುನಾಗೋ ದ್ರುಮಪುಂಶ್ರೇಷ್ಠಿ" ನಾನಾರ್ಥರಂ । "ಪುನಾಗ: ಪುರುಷಶ್ರೇಷ್ಠಃ ಪಾಂಡುನಾಗಃ ಸಿತೋತ್ಪಲಃ । ಜಾತೀಫಲಃ ಚ ಪುನಾಗ:" ವಿಶ್ವಂ ।

**ಪುನಾಡ(ಡ) ಪುನಾಟಿ(ಡ) (ಪುಂ)** ಚಕ್ರಮರ್ಧ ವೃಕ್ಷ, ತಗಚಿಗಿಡ.

**ಪುನಾಮನ್ ಪುನಾಮನ್ (ಪುಂ)** ಪುತ್ ಎಂಬ ನರಕ.

**ಪುನಾಮನರಕ ಪುನಾಮನರಕ (ಪುಂ)** ಪುತ್ ಎಂಬ ಒಂದು ನರಕ. ಪುದಿತಿ ನಾಮ ಯಸ್ಯ ಪುನಾಮಾ, ಪುನಾಮಾ ಚಾಸೌ ನರಕಶ್ಚ । ಹದಿನಾರು ವಿಧ ಪಾಪಾತ್ಮಕಗಳಿಂದ ಈ ನರಕ ಪ್ರಾಪ್ತಿಯಾಗುವುದು. ಪರಸ್ತ್ರೀಗಮನ, ಪಾಪಾತ್ಮರ ಸೇವೆ, ಸಕಲ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಕ್ರೌರ್ಯವರ್ತನೆ ಇವುಗಳಿಂದ ಮೊದಲನೆಯ ನರಕ. "ಪರದಾರಾಭಿಗಮನಂ ಪಪಾನಾಂ ಚೋಪ ಸೇವನಮ್ । ಪಾರುಷ್ಯಂ ಸರ್ವಭೂತಾನಾಂ ಪ್ರಥಮಂ ನರಕಂ ಸ್ಮೃತಮ್" । ಹೆಣ್ಣುಗಳನ್ನು ಕದಿಯುವುದು, ಫಲವೃಕ್ಷಗಳನ್ನು ಕಡಿಯುವುದು, ಮರಗಳನ್ನು ಕಡಿಯುವುದು ಇವುಗಳಿಂದ ದ್ವಿತೀಯ ನರಕ. "ಫಲಸ್ತೇಯಂ ಮಹಾಪಾಪಂ ಫಲಾಹಸ್ಯ ಚ ಪಾಡನಮ್ । ಪಾಡನಂ ವೃಕ್ಷಜಾತೀನಾಂ ದ್ವಿತೀಯಂ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಮ್" ॥ ನಿಷಿದ್ಧ



ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ದ್ವೇಷ, ಅವಧ್ಯನ ವಧೆ, ಕಾರಣವಿಲ್ಲದೆ ವಿವಾದ ಮಾಡುವುದು ಇವುಗಳಿಂದ ತೃತೀಯ ನರಕ. “ವರ್ಜ್ಯಾದಾನಂ ತಥಾ ದ್ವಿಷ್ಟಮವ್ಯವಧವನ್ವನಮ್ | ವಿವಾದಿತ್ವಮಹೇತ್ಯು ತೃತೀಯಂ ನರಕಂ ಸ್ಮೃತಮ್” | ಎಲ್ಲಾ ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನು ಹೆದರಿಸುವುದು, ಮನುಷ್ಯನ ಅಸ್ತಿಗೆ ಹಾನಿ ಯುಂಟುಮಾಡುವುದು, ತನ್ನ ಧರ್ಮದಿಂದ ಭ್ರಷ್ಟನಾಗುವುದು ಇವುಗಳಿಂದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ನರಕ. “ಭಯದಂ ಸರ್ವ- ಸತ್ವಾನಾಂ ನರಭೂತಿವಿನಾಶನಮ್ | ಭ್ರಂಶನಂ ನಿಜಧರ್ಮಿಣಾಂ ಚತುರ್ಥ ನರಕಂ ಸ್ಮೃತಮ್” | ಇತ್ಯಾದಿ. ಮುಂದಕ್ಕೆ ವಾಮನಪುರಾಣ 58ನೆಯ ಅಧ್ಯಾಯ ನೋಡಿ. ಈ ನರಕದಿಂದ ಉದ್ಧಾರ ಮಾಡುವವನು ಮಗನಾದುದರಿಂದ ಅವನಿಗೆ “ಪುತ್ರ:” ಎಂದು ಹೆಸರು. “ಪುತ್ರಾಮ ನರಕಂ ಧೋರಂ ವಿನಾಶಂ ಪ್ರಾಹ ಸರ್ವತ: | ಏತಸ್ಮಾತ್ ಕಾರಣಾತ್ ಸಾಧ್ಯಸ್ತತ: ಪುತ್ರೋ ನಿಗದಿತೇ” ||

**ಪುಷ್ಪತ್ ಪುಪುಷತ್** (ವಿಂ) ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಹೊಟ್ಟಿನಿಂದ ಬೇರ್ಪಡಿಸಿ ಶುದ್ಧಮಾಡಲು ಇಚ್ಛಿಸುತ್ತಿರುವ, ಧಾನ್ಯವನ್ನು ತೂರಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪವಿತುಮಿಚ್ಛನ್—ಪೂ (ಪವನ) + ಸನ್ “ಶತ್” (3-2-124) | “ತ್ವಂ ಸಮೀರಣ ಇವ ಪ್ರತೀಕ್ಷಿತ: ಕರ್ಷಕೇಣ ವಲಜಾನ್ ಪುಷ್ಪತಾ” ಮಾಘಂ 14-9 | “ಶಾನಚ್” (3-2-124) | **ಪುಷ್ಪಮಾಣ: ಪುಪುಷಮಾಣಾ:**

**ಪುಷ್ಪಾ ಪುಪುಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಹೊಟ್ಟಿನಿಂದ ಬೇರ್ಪಡಿಸಿ ಶುದ್ಧಮಾಡುವ ಇಚ್ಛೆ, ಧಾನ್ಯವನ್ನು ತೂರುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಪವಿತುಮಿಚ್ಛಾ—ಪೂ (ಪವನ) + ಸನ್ “ಅ:” (3-3-102) |

**ಪುಷ್ಪ ಪುಪುಷು** (ವಿಂ) ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಹೊಟ್ಟಿನಿಂದ ಬೇರ್ಪಡಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಧಾನ್ಯವನ್ನು ತೂರಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಪವಿತುಮಿಚ್ಛು:—ಪೂ (ಪವನ) + ಸನ್ “ಃ” (3-2-166) |

**ಪುಷ್ಪು ಪುಪ್ಪುಸ** (ಪುಂ) ಬೀಜಕೋಶ, ಪದ್ಮಬೀಜವಿರುವ ಕಾಯಿ, ತಾವರೆಕಾಯಿ.

**ಪುಮನುಜಾ ಪುಮನುಜಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುರುಷನು ಹುಟ್ಟಿದನಂತರ ಹುಟ್ಟುವ ಕನ್ಯೆ, ತಂಗಿ.

**ಪುಮಪತ್ಯ ಪುಮಪತ್ಯ** (ನಂ) ಪುರುಷಸಂತಾನ, ಗಂಡು ಮಗು. ಪುರುಷಮಪತ್ಯಮ್ |

**ಪುರ:ಸರ ಪುರ:ಸರ** (ವಿಂ) 1. ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವ, ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ಹೋಗುವ. ಪುರ: ಸರತಿ—ಸ (ಗತೌ) “ಃ” (3-2-118) | “ಆವಿಷ್ಕೃತೋಽಹುರಪುರ:ಸರ ಏಕತೋಷ್ಕ:” ಶಾಕುಂ 4-1 | (ಪುಂ) 2. ಮುಂದಾಳು, ಯಜಮಾನ. “ಪುರ:ಸರಾ ಧಾಮವತಾಂ ಯಶೋಧನಾ: ಸುದು:ಸಹಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ನಿಕಾರಮಿ- ದೃಶಮ್” ಕಿರಾಂ 1-43 | 3. ಅನುಚರ, ಸೇವಕ.

“ಮಾಭೂದಾಶ್ರಮಪೀಡೇತಿ ಪರಿಮೇಯಪುರ:ಸರೌ” ರಘುಂ 1-39 | 4. (ಸಮಾಸದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ) ಮುಂದಾಗಿರುವ, ಮೊದಲನೆಯವನಾಗಿರುವ. (ಅವ್ಯಂ) 5. ಪೂರ್ವಕ, ಮುಂದಾಗಿ. “ಪ್ರಣಾಮಪುರ:ಸರಂ ವಿಜ್ಞಾಪಯತಿ” |

**ಪುರ ಪುರ** (ನಂ) 1. ನಗರ, ಪಟ್ಟಣ. ಪುರ (ಅಗ್ರಗಮನ) “ಕ:” (3-1-134) | “ಪುರೇ ತಾವಂತಮೇವಾಸ್ಯ ಕರೋತಿ ರವಿರಾತಪಮ್” ಕುಮಾಂ 2-33 | “ಸದರ್ಶವ: ಪುರೇಽಸ್ಯ ವಾಸ್ತವ್ಯ- ಕುಡುಮ್ಬಿತಾಂ ಯಯು:” ಮಾಘಂ 1-66 | “ಪುರಮಥ ಗಮಯಿತ್ವಾ ಭೂಷಿತಂ ಯಾದವಾಗ್ರಚೈ: ಶತಸಮಾಧಿಕಸಂಖ್ಯಂ ಷೋಡಶಸ್ತ್ರೀಸಹಸ್ರಮ್” ಯಾದಂ 16-144 | 2. ದೇಹ, ಶರೀರ. 3. ಗೃಹ, ಮನೆ. 4. ಪಾಟಲಿಪುತ್ರನಗರ. “ಪುರಂ ನಪುಂಸಕಂ ಗೇಹೇ ದೇಹೇ ಪಾಟಲಿಪುತ್ರಯೋ:” | 5. ಮನೆಯ ಮಹಡಿ, ಉಪ್ಪರಿಗೆ. 6. ಶಾಖಾನಗರ, ಉಪನಗರ, ನಗರದ ಬಡಾವಣೆ. “ಅನ್ಯತ್ಯು ಯನ್ಮೂಲನಗರಾತ್ ಪುರಮ್ | ತಚ್ಛಾಖಾನಗರಮ್” ಅಮಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 7. ಅನೇಕ ಮಾರುಕಟ್ಟೆ (ವ್ಯಾಪಾರ ಸ್ಥಳ)ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಊರು, —ಮುಖ್ಯ ಗ್ರಾಮ. 8. ಕುಸುಮದ ಮೊಗ್ಗಿನ ಮೇಲಿರುವ ಹೊದಿಕೆ. (ಪುಂ) 9. ಗುಗ್ಗುಳ ಗಡೆ. 10. ಹಳದಿ ಗೋರಂಟಿ. (ವಿಂ) 11. ಪೂರ್ಣ ವಾದ, ತುಂಬಿರುವ.

**ಪುರಗ ಪುರಗ** (ವಿಂ) ನಗರಕ್ಕೆ ಹೋಗುವವನು. ಪುರಂ ಗच्छति — ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಃ” (ವಾಂ 3-2-48) |

**ಪುರಜಿತ್ ಪುರಜಿತ್** (ಪುಂ) ತ್ರಿಪುರ ಶತ್ರುವಾದ (ತ್ರಿಪುರಾಸುರ ನನ್ನು ಜಯಿಸಿದ) ಪರಮೇಶ್ವರ. ಪುರಂ ತ್ರಿಪುರಾಸುರಂ ಜಿತವಾನ್ — ಜಿ (ಜಯ) “ಕಿವಿಪ್” (3-2-96) |

**ಪುರಜ್ಜನ ಪುರಂಜನ** (ಪುಂ) ಜೀವ. ಪುರಂ ದೇಹರೂಪಂ ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಜನಯತಿ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭಾವಿ) “ಃ” ಬಾಹುಂ | “ಪುರಂ ಪುರಜ್ಜನಂ ವಿಜ್ಞಾತ್ ಯದ್ವಚನಕ್ಯಾತ್ಮನ: ಪುರಮ್ | ಏಕದ್ವಿತ್ರಿ- ಚತುಷ್ಪಾದಂ ಬಹುಪಾದಮಪಾದಕಮ್” ಭಾಗಂ 4-29-2 |

**ಪುರಜ್ಜನಿ ಪುರಂಜನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬುದ್ಧಿ. ಪುರಜ್ಜನ “ಹಿಪ್” (4-1-41) |

**ಪುರಣ ಪುರಣ** (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು.

**ಪುರತದಿ ಪುರತದೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗ್ರಾಮ, ಹಳ್ಳಿ.

**ಪುರತಸ್ ಪುರತಸ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಮುಂದುಗಡೆ, ಮುಂಭಾಗ ದಲ್ಲಿ. ಪುರತಿ ಅಗ್ರೇ ಗच्छति—ಪುರ (ಅಗ್ರಗಮನ) “ಅತಸುಚ್” ಬಾಹುಂ | “ಅಲಭಂತ ಕ್ಷಣಾತ್ತೇಷಾಂ ಪುರತ: ಪರಿಕೃಷ್ಣಿನ್: | ಧನುಷಾ ನಮತಾ ಸ್ವಗಂ ವಪುಷಾ ಚ ವಸುಧರಾಮ್” ಯಾದಂ 22-22 | 2. ಮೊದಲು, ಆದಿಯಲ್ಲಿ. “ಇಯಂ ಚ ತೇಜ್ಯಾ ಪುರತೌ ವಿಡಂಬತಾ” ಕುಮಾಂ 4-90 | 3. ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ.



**ಪುರಹಾರ ಪುರದ್ವಾರ (ನಂ)** ಗೋಪುರ, ನಗರದ ಪ್ರವೇಶ ದ್ವಾರ. ಪುರಸ್ಯ ದ್ವಾರಮ್ |

**ಪುರದ್ವಿಷ್ ಪುರದ್ವಿಷ್ (ಪುಂ)** ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.

**ಪುರಂದರ ಪುರಂದರ (ಪುಂ)** 1. ಇಂದ್ರ, ಈ ವೈವಸ್ವತ ಮನ್ವಂತರದ ಇಂದ್ರ. ಪುರ: ಶತ್ರುಗಳ ದಾರಯತಿ—ದ್ (ವಿದಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಖಚ್" (೩-೨-೪೧) | ನಿಪಾಂ (೬-೩-೬೯) | "ಪುರಂದರಪ್ರತ್ಯುಪರೋಧಜಾತಂ ವ್ಯಯೋಜಯನ್ ವಿಸ್ಮಯಮಾದಿತೇಯಾ:" ಯಾದಂ ೨೦-೩೪ | 2. ವಿಷ್ಣು. ಪುರಾಣಿ ಅಸುರಪುರಾಣಿ ತದ್ವಿಫಲಕ್ಷ್ಯಾಣಿ ಆಧಿದೈವಿಕಾನಿ ಅಸುರಪಿಶಾಚಾನಿ ದಾರಯತಿ | "ಪುರಂದರ ಇತಿ ಖ್ಯಾತಸ್ತ್ರಿಪುರಾಣಾಂ ವಿದಾರಣಾತ್" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: | "ವಾಸುದೇವೋ ಬೃಹದ್ಬಾನುರಾದಿದೇವ: ಪುರಂದರ:" ವಿಂ ಸಂ | 3. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 4. ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ನಕ್ಷತ್ರ. ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ನಕ್ಷತ್ರವು ಇಂದ್ರದೇವತಾಕವಾದುದು. 5. ಜೋರ, ಕಳ್ಳ. ಪುರಂ ಗೃಹಂ ದಾರಯತಿ—ದ್ + ಣಿಚ್ "ಖಚ್" |

**ಪುರಂದರಾ ಪುರಂದರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗಂಗಾನದಿ.

**ಪುರಂದ್ರಿ(ಽಪ್ರೀ) ಪುರಂದ್ರಿ(ಧ್ರೀ) (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕುಟುಂಬವತಿ ಯಾದ ಹೆಂಗಸು, ಪತಿ ಪುತ್ರರೊಡನೆ ಕೂಡಿರುವ ಹೆಂಗಸು. ಪುರಂ ಗೃಹಂ ದಾರಯತಿ—ಧ್ (ಧಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಖಚ್" (೩-೨-೪೬) | ಗೌರಾಂ "ಜಿಷ್" (೪-೧-೪೧) | ವಾ ಹ್ರಸ್ವ: | ಪೃಷಂ | "ಪ್ರಾಯೇಣೈವಂವಿಧೇ ಕಾರ್ಯೇ ಪುರಂದ್ರಿಣಾಂ ಪ್ರಗಲ್ಬತಾ" ಕುಮಾಂ ೬-೩೨ | "ತೌ ಸ್ನಾತಕೈರ್ಬಂಧುಮತಾ ಚ ರಾಜಾ ಪುರಂದ್ರಿಮಿಶ್ರ ಕ್ರಮಶ: ಪ್ರಯುಕ್ತಮ್ | ಕನ್ಯಾಕುಮಾರೌ ಕನಕಾಸನಸ್ಥೌ ಆದ್ರ್ವಿಕ್ಷಿತಾರೋಪಣಮನ್ವಭೂತಾಮ್" ರಘುಂ ೭-೨೮ |

**ಪುರಪಾಲ ಪುರಪಾಲ (ಪುಂ)** 1. ನಗರಾಡಳಿತವನ್ನು ನಡೆಸುವ ಅಧಿಕಾರಿ, ಪೌರಸೌಲಭ್ಯಗಳನ್ನು ಒದಗಿಸಿ ರಕ್ಷಿಸುವ ಅಧಿಕಾರಿ. ಪುರಂ ನಗರಂ ದೇಹಂ ವಾ ಪಾಲಯತಿ—ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಅಞ್" (೩-೨-೧) | 2. ದೇಹವನ್ನು ಕಾಪಾಡುವ ಜೀವಾತ್ಮ.

**ಪುರಭಿದ್ ಪುರಭಿದ್ (ಪುಂ)** ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಪುರಾಣಿ ಅಸುರಪುರಾಣಿ ಭಿನತ್ತಿ—ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಖಿವಪ್" (೩-೨-೭೬) |

**ಪುರರಕ್ಷಕ ಪುರರಕ್ಷಕ (ಪುಂ)** ಕಳ್ಳಕಾಕರಿಂದ ನಗರವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವ ಪೊಲೀಸು ದಳ.

**ಪುರವಾಸಿನ್ ಪುರವಾಸಿನ್ (ವಿಂ)** ನಗರದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವವನು, ಪೌರ.

**ಪುರಶಾಸನ ಪುರಶಾಸನ (ಪುಂ)** ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. "ನೃಪಸ್ತು ಪುರಸ್ತಾತ್ ಪುರಶಾಸನಸ್ಯ" ಕುಮಾಂ ೭-೩೦ |

**ಪುರಶ್ವರಣ ಪುರಶ್ವರಣ (ನಂ)** 1. ಮೊದಲು ಆಚರಿಸುವುದು, ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ನಡೆಸುವುದು, ಮಂತ್ರಜಪ ಹೋಮ ತರ್ಪಣ ಅಭಿಷೇಕ ಮತ್ತು ಬ್ರಾಹ್ಮಣಭೋಜನ ರೂಪವಾದ ಪಂಚ ಅಂಗಗಳ ಆಚರಣೆ. ಪುರ: ಅಗ್ರತ: ಚರಣಮ್ ಪಚ್ಚಾಹ್ನಿಕಮಾಚರಣಮ್ | ಸ್ವೇಷ್ಟದೇವತೆಯ ಮಂತ್ರಸಿದ್ಧಿಗಾಗಿ ಮೊದಲು ಈ ಕರ್ಮಾಚರಣೆಯಾಗಬೇಕು. "ಗುರೋರಾಜಾಂ ಸಮಾಧಾಯ ಶುದ್ಧಾಂತ:ಕರಣೋ ನರ: | ತತ: ಪುರಸ್ಕ್ರಿಯಾಂ ಕುರ್ಯಾನ್ಮನ್ತ್ರ-ಸಂಸಿದ್ಧಿಕಾಮ್ಯಯಾ | ಜೀವಹೀನೋ ಯಥಾ ದೇಹಿ ಸರ್ವಕರ್ಮಸು ನ ಕ್ಷಮ: | ಪುರಶ್ವರಣಹೀನೋಽಪಿ ತಥಾ ಮನ್ತ್ರ: ಪ್ರಕೀರ್ತಿತ: | ತಸ್ಮಾದಾದೌ ಸ್ವಯಂ ಕುರ್ಯಾತ್ ಗುಹಂ ವಾ ಕಾರಯೇದ್ವಿಧಃ:" ಯೋಗಿನಿಹೃದಯಮ್ | 2. ಮಂತ್ರಸಿದ್ಧಿಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಸಾಧನೆ, ಮಂತ್ರಸಿದ್ಧಿ ಪಡೆಯಲು ದೇವತಾಧ್ಯಾನಪೂರ್ವಕ ಮಾಡುವ ಮಂತ್ರಜಪ, ಮಂತ್ರವನ್ನು ಪುನಃ ಪುನಃ (ಸಿದ್ಧಿಯಾಗುವವರೆಗೂ) ಉಚ್ಚರಿಸುವುದು.

**ಪುರಶ್ವರಣೆಗೆ ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ ಸ್ಥಳ:** ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ, ನದೀತೀರ ಗುಹೆ ಪರ್ವತದ ಶಿಖರ ತೀರ್ಥಪ್ರದೇಶಗಳು ನದಿಗಳ ಸಂಗಮಸ್ಥಳ ಶುದ್ಧವಾದ ಅರಣ್ಯ ಜನಸಂಪರ್ಕ ವಿಲ್ಲದ ಉದ್ಯಾನ ಬಿಲ್ವವೃಕ್ಷದ ತಳ ಪರ್ವತದ ತಟಪ್ರದೇಶ ಮುಂತಾದುವು ಪ್ರಶಸ್ತವಾದುವು. ಯೋಗಿನಿಹೃದಯಮ್ |

**ಪುರಶ್ಚವ ಪುರಶ್ಚವ (ಪುಂ)** ಕುಶ, ದರ್ಭೆಹುಲ್ಲು.

**ಪುರಸ್ ಪುರಸ್ (ಅವ್ಯಂ)** 1. ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ, ಮುಂದುಗಡೆ. ಪೂರ್ವ "ಅಸಿ:" ಪುರ್ ಆದೇಶಶ್ಚ (೪-೩-೩೯) | "ಪುರ: ಸ್ಥಿತೇ ಗೋಪ್ತರಿ ವಿಶ್ವಹೇತೌ ಪಶ್ಚಾದವಸ್ಥಾಯಿನಿ ತತ್ಪ್ರವರ್ತಯೇ" ಯಾದಂ ೨೩-೨೩ | 2. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕು. 3. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕು ನಿಂದ. 4. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ. 5. ಪೂರ್ವದೇಶ. 6. ಪೂರ್ವದೇಶದಿಂದ. 7. ಪೂರ್ವದೇಶದಲ್ಲಿ. 8. ಪೂರ್ವಕಾಲ. 9. ಪೂರ್ವಕಾಲದಿಂದ. 10. ಪೂರ್ವಕಾಲದಲ್ಲಿ. "ದಿಕ್ಪುಷ್ಕಮ್ಯ: ಸಪ್ತಮಿಪಚ್ಚಮಿಪ್ರಥಮಾಭ್ಯೌ ದಿಗ್ದೇಶಕಾಲೇಷ್ವಸ್ತಾತಿ:" (೪-೩-೨೭) | "ಪೂರ್ವಾಧರಾವರಾಣಾಮಸಿ ಪುರವಶ್ಚೇಷಾಮ್" (೪-೩-೩೯) | ಏಮ್ಯೋಸ್ತಾತ್ಯಥೇ "ಅಸಿ:" | 11. ಮೊದಲು, ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ. "ನಿಮಿತ್ತನೈಮಿತ್ತಕಯೋರಯಂ ಕ್ರಮ: ತವ ಪ್ರಸಾದಸ್ಯ ಪುರಸ್ತು ಸಂಪದ:" ಶಾಕುಂ ೭-೩೦ |

**ಪುರಸಂಸ್ಕಾರ ಪುರಸಂಸ್ಕಾರ (ಪುಂ)** 1. ನಗರಾಲಂಕಾರ, ಪಟ್ಟಣದ ಶೃಂಗಾರ. 2. ಜೀರ್ಣವಾದ ನಗರದ ಉದ್ಧಾರ ಕಾರ್ಯ. ಪುರಸ್ಯ ಸಂಸ್ಕಾರ: |

**ಪುರಸ್ಕರಣ ಪುರಸ್ಕರಣ (ನಂ)** 1. ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ಇಡುವುದು. 2. ಗೌರವಿಸುವುದು, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ಕಾಣುವುದು. 3. ಸ್ವೀಕಾರ, ಅಂಗೀಕಾರ. 4. ಸೇಚನೆ, ಚಿಮುಕಿಸುವುದು. ಪುರಸ್+ಡ್ವಿಜ್ (ಕರಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |



**ಪುರಸ್ಕರಣೀಯ ಪುರಸ್ಕರಣೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಗೌರವಿಸಬೇಕಾದ, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ನೋಡಬೇಕಾದ. 3. ಗೌರವಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ. 4. ಸ್ವೀಕಾರಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ. ಪುರಸ್ + ಡುಕ್ತಾ (ಕರಣ) "ಅನೀಯ್" (3-1-96)। "ತವ್ಯ:" (3-1-96) ಪುರಸ್ಕರಣೀಯ: ಪುರಸ್ಕರಣೀಯ.

**ಪುರಸ್ಕಾರ ಪುರಸ್ಕಾರ (ಫಂ)** 1. ಗೌರವಿಸುವುದು, ಪೂಜಿಸುವುದು. ಪುರಸ್ + ಡುಕ್ತಾ (ಕರಣ) "ವಾ" (3-3-16)। 2. ಸುಳ್ಳು ಆಪಾದನೆಮಾಡುವುದು, ಸುಳ್ಳು ಚಾಡಿ ಹೇಳುವುದು. 3. ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ಇಡುವುದು. 4. ಸ್ವೀಕಾರ, ಅಂಗೀಕರಿಸುವುದು. 5. ಸೇಚನೆ, ಸಿಂಪಡಿಸುವುದು, ಚಿಮುಕಿಸುವುದು. "ಶಾ:" (3-3-100)। -ಕ್ರಿಯಾ -ಕ್ರಿಯಾ.

**ಪುರಸ್ಕೃತ ಪುರಸ್ಕೃತ (ವಿಂ)** 1. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ಕಾಣಲ್ಪಟ್ಟ. "ಋಷಿನ್ ವಿಸೃಜ್ಯ ಯಜ್ಞಾಂತೇ ಸುಹೃದಶ್ಚ ಪುರಸ್ಕೃತಾನ್" ರಘುಂ 14-66। 2. ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಯೇನ ಪೂರ್ವಮುದಯೇ ಪುರಸ್ಕೃತಾ ನಾನುಯಾಸ್ಯತಿ ಕಥಂ ತಮಾಪದಿ" ಕುಮಾರಂ 6-44। 3. ಸುಳ್ಳು ಚಾಡಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ತಪ್ಪು ಆಪಾದನೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಸ್ವೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಚಿಮುಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪುರ: ಕ್ರಿಯತೇ ಸ್ಮ - ಪುರಸ್ + ಡುಕ್ತಾ (ಕರಣ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

**ಪುರಸ್ತಾತ್ ಪುರಸ್ತಾತ್ (ಅವ್ಯಂ)** 1. ಮುಂದುಗಡೆ, ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ಪೂರ್ವ "ಅಸ್ತಾತಿ:" (4-3-29)। ಪ್ರಕೃತೇ: ಪುರಸ್ ಆದೇಶ: (4-3-40)। "ದಿವ್ಯಾತಾಮಪಿ ಕೃತವಿಸ್ಮಯಾಂ ಪುರಸ್ತಾದಮ್ಭಸ್ತ: ಸ್ಫುರದರವಿನ್ದಚಾರುಹಸ್ತಾಮ್" ಮಾಘಂ 6-64। 2. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕು. 3. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನಿಂದ. 4. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ. 5. ಪೂರ್ವದೇಶ. 6. ಪೂರ್ವದೇಶದಿಂದ. 7. ಪೂರ್ವದೇಶದಲ್ಲಿ. 8. ಪೂರ್ವಕಾಲ. 9. ಪೂರ್ವಕಾಲದಿಂದ. 10. ಪೂರ್ವಕಾಲದಲ್ಲಿ.

**ಪುರಾ ಪುರಾ (ಅವ್ಯಂ)** 1. ಮೊದಲು, ಪೂರ್ವಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಹಿಂದೆ ಒಂದು ದಿನ. ಪುರ (ಅಗ್ರಗಮನ) "ಕಾ" ಬಾಹುಂ। "ಪುರಾ ಶಕ್ರಮುಪಸ್ಥಾಯ ತವೋವಿ ಪ್ರತಿ ಯಾಸ್ಯತ:। ಆಸೀತ್ ಕಲ್ಪತರಕ್ಷಾಸಾಮಾಶ್ರಿತಾ ಸುರಭಿ: ಪಥಿ" ರಘುಂ 1-94। 2. ಶೀಘ್ರಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಮುಂದಿನ ಬಹಳ ಸಮೀಪದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಭವಿಷ್ಯಕಾಲದಲ್ಲಿ. "ರಥೇನಾನುಧಾತಸ್ತಿಮಿತಗತಿನಾ ತೀರ್ಣಜಲವಿ: ಪುರಾ ಸಪ್ತದ್ವಿಪಾಂ ಜಯತಿ ವಸುಧಾಮಪ್ರತಿರಥ:" ಶಾಕುಂ 9-33। 3. ಮೊದಲು, ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ. 4. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ. 5. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ. 6. ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ

ಕೆಲಸಮಾಡುವಿಕೆ. 7. ಅತೀತಕಾಲ, ಕಳೆದುಹೋದ ಕಾಲ. 8. ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ, ಮೊದಲು, ಹಿಂದೆ. "ಇದಂ ಸರ್ವಂ ಪುರಾ ಸೃಷ್ಟೇಕಮೇವಾದ್ವಿತೀಯಕಮ್। ಸದೇವಾಸೀತ್ತಾಮರೂಪೇ ನಾಸ್ತಾಮಿತ್ಯಾ-ರಣೇವಚ:" ಪञ्चದಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 9. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕು. ಪುರ (ಅಗ್ರಗಮನ) "ಕ:" (3-1-134)। "ಛಾಪ್" (4-1-4)। 10. ಒಂದು ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ.

**ಪುರಾಕಥಾ ಪುರಾಕಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ನಡೆದ ಕಥೆ.

**ಪುರಾಕೃತ ಪುರಾಕೃತ (ವಿಂ)** ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪುರಾ ಪೂರ್ವಸ್ಥಿನ್ ಕಾಲೇ ಕೃತಮ್। ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ ಪುಣ್ಯ ಪಾಪಕಾರ್ಯಗಳು. "ನೂನಂ ಮೇ ಸುಚರಿತಪ್ರತಿಬಂಧಕಂ ಪುರಾಕೃತಂ ತೇಷು ದಿವಸೇಷು ಪರಿಣಾಮಮುಕ್ತಮಾಸೀದೇನ ಸಾನುಕ್ರೋಶೋಽಪ್ಯಾಯಪುತ್ರೋ ಮಯಿ ವಿರಸ: ಸಂವೃತ:" ಶಾಕುಂ 9।

**ಪುರಾಣ ಪುರಾಣ (ವಿಂ)** 1. ಪುರಾತನವಾದ, ಹಿಂದಿನ ಕಾಲದ, ಹಳೆಯದಾದ. ಪುರಾ ಭವಮ್ - ಪುರಾ "ಠಪುಲ್" (4-3-23)। "ಉದ್ವೇಲ್ಲಂತಿ ಪುರಾಣರೋಹಿತರಹಸ್ಕಂಧೇಷು ಕುಂಭಿನಸಾ:" ತಂ ರಾಂ 2-29। "ಪುರಾಣಮಿತ್ಯೇವ ನ ಸಾಧು ಸರ್ವಮ್" ಮಾಲಂ 1-2। 2. ಅನಾದಿಕಾಲದ, ಬಹಳ ಪ್ರಾಚೀನವಾದ. 3. ಅನಾದಿಕಾಲದ್ದಾದರೂ ಹೊಸದಾಗಿರುವ. "ಅಜೋ ನಿದ್ರಾ: ಶಾಶ್ವತೋಽಯಂ ಪುರಾಣ: ನ ಹನ್ಯತೇ ಹನ್ಯಮಾನೇ ಶರೀರೇ" ಗೀತಾ 2-20। ಪುರಾಪಿ ನವ:। ರಾಂ ಭಾಂ, ಶಾಂ ಭಾಂ। ಪುರಂ ದೇಹಮ್ ಅಣತಿ ಇತಿ ಪುರಾಣ: ಇತಿ ಆನಂ ತಿಂ ಭಾಂ। (ನಂ) 4. "ಇತಿಹಾಸಪುರಾಣಾಮ್ಯಾಂ ವೇದಂ ಸಮುಪಬೃಹಯತ್" ಎಂಬ ವಚನಾನುಸಾರ ವೇದದಲ್ಲಿ ವರ್ಣಿತವಾದ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಲೋಕಕ್ಕೆ ಬೋಧಿಸಲು ಅನೇಕ ಮಹರ್ಷಿಗಳಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಗ್ರಂಥ. ವೇದವ್ಯಾಸರೊಬ್ಬರಿಂದಲೇ ಹದಿನೆಂಟು ಮಹಾಪುರಾಣಗಳೂ ಇತರ ಮಹರ್ಷಿಗಳಿಂದ ಹದಿನೆಂಟು ಉಪಪುರಾಣಗಳೂ ರಚಿತವಾದುವೆಂದು ಕೆಲವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

ಈ ಮಹಾಪುರಾಣಗಳು ಹದಿನೆಂಟು. ಇವುಗಳ ಗ್ರಂಥ ಸಂಖ್ಯೆ ಒಟ್ಟು 400000. [ಎವರಕ್ಕೆ "ಅಷ್ಟಾದಶಪುರಾಣ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ. ಅದರಲ್ಲಿ ಗರುಡಪುರಾಣದ ಗ್ರಂಥ ಸಂಖ್ಯೆಯು 19,000ಕ್ಕೆ ಬದಲಾಗಿ 980 ಎಂದು ಬಿದ್ದಿರುವುದು ಪ್ರಾಮಾದಿಕ. ದಯೆಯಿಟ್ಟು ಅದನ್ನು ತಿದ್ದಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು.] ಪುರಾ ನಿಯತೇ ಇತಿ ಪುರಾಣಮ್। ಪ್ರಳಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ಶತಕೋಟಿ ಗ್ರಂಥ ಪರಿಮಿತವಾದ ಪುರಾಣರಾಶಿಯು ದಗ್ಧವಾಗಲು ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನಿಂದ ಚತುರ್ಮುಖನಿಗೆ ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿತು. ಕಾಲಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಇವು ಶಿಥಿಲವಾಗಲು ಮಹಾವಿಷ್ಣುವು ಒಂದೊಂದು ಚತುರ್ಯುಗದ ದ್ವಾಪರ



ಯುಗದಲ್ಲೂ ವ್ಯಾಸರೂಪದಿಂದ ಅವತರಿಸಿ ಇವನ್ನು ನಾಲ್ಕು ಲಕ್ಷ ಗ್ರಂಥಕ್ಕೆ ಇಳಿಸಿ ಪ್ರಚಾರಪಡಿಸಿರುವನು. ಪುರಾಣವು ಸರ್ಗ: ಪ್ರತಿಸರ್ಗ: ವಂಶ: ಮನ್ವಂತರಮ್ ಮತ್ತು ವಂಶಾನುಚರಿತಮ್ ಎಂಬ ಐದು ಲಕ್ಷಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು. "ನಿಸ್ತಾರಾಯ ತು ಲೋಕಾನಾಂ ಸ್ವಯಂ ನಾರಾಯಣ: ಪ್ರಮು: | ವ್ಯಾಸ-ರೂಪೇಣ ಕೃತವಾನ್ ಪುರಾಣಾನಿ ಮಹೀತಲೇ" ಪೃಷ್ಠಂ | ಈ ಹದಿನೆಂಟು ಪುರಾಣಗಳನ್ನೂ ಸಾತ್ವಿಕ ರಾಜಸ ಮತ್ತು ತಾಮಸಗಳೆಂದು ಮೂರು ಮಾರ್ಗಗಳಾಗಿ ವಿಂಗಡಿಸಿರುತ್ತಾರೆ.

(1) ವಿಷ್ಣುಪುರಾಣ ನಾರದಪುರಾಣ ಶ್ರೀಭಾಗವತ ಗರುಡಪುರಾಣ ಪಾದ್ಮಪುರಾಣ ಮತ್ತು ಪರಾಹಪುರಾಣಗಳು ಸಾತ್ವಿಕಪುರಾಣಗಳು. "ವೇಣವಂ ನಾರದೀಯಂ ಚ ತಥಾ ಭಾಗವತಂ ಶುಭಮ್ | ಗಾರುಡಶ್ಚ ತಥಾ ಪಾಶಂ ವಾರಾಹಂ ಶುಭದರ್ಶನೇ | ಸಾತ್ವಿಕಾನಿ ಪುರಾಣಾನಿ ವಿಜ್ಞೇಯಾನಿ ಶುಭಾನಿ ವೆ" |

(2) ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡಪುರಾಣ, ಬ್ರಹ್ಮವೈವರ್ತ, ಮಾರ್ಕಂಡೇಯ ಭವಿಷ್ಯ ವಾಮನ ಮತ್ತು ಬ್ರಾಹ್ಮಪುರಾಣಗಳು ರಾಜಸಪುರಾಣಗಳು. "ಬ್ರಹ್ಮಾಣಂ ಬ್ರಹ್ಮವೈವರ್ಮ ಮಾರ್ಕಂಡೇಯಂ ತಥೈವ ಚ | ಭವಿಷ್ಯಂ ವಾಮನಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ರಾಜಸಾನಿ ನಿಬೋಧತ" |

(3) ಮತ್ಸ್ಯಪುರಾಣ ಕೌರ್ಮ ಲೈಂಗ ಶೈವ ಸ್ಕಾಂದ ಅಗ್ನೇಯ ಇವು ಆರೂ ತಾಮಸಪುರಾಣಗಳು. "ಮಾತ್ಸ್ಯಂ ಕೌರ್ಮಂ ತಥಾ ಲೈಂಗಮ್ ಶೈವಂ ಸ್ಕಾಂದಂ ತಥೈವ ಚ | ಆಗ್ನೇಯಶ್ಚ ಷಡೇತಾನಿ ತಾಮಸಾನಿ ನಿಬೋಧತ" | [ಈ ಅಷ್ಟಾದಶ (ಹದಿನೆಂಟು) ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಪಾದಿತವಾಗಿರುವ ವಿಷಯಗಳ ವಿವರಕ್ಕೆ ಆಯಾ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

5. ಪ್ರಾಚೀನಕಾಲದ ಚರಿತ್ರೆ, ಐತಿಹ್ಯ. 6. ವೇದ. (ಪುಂ)  
7. ಒಂದು ಬಗೆಯ ನಾಣ್ಯ, ಕರ್ಷತೂಕದ ಬೆಳ್ಳಿಯ ನಾಣ್ಯ.  
8. ಎಂಬತ್ತು ಕವಡೆಗಳ ಬೆಲೆಯ ಒಂದು ನಾಣ್ಯ.

**ಪುರಾಣಗ ಪುರಾಣಗ (ಪುಂ)** 1. ಬ್ರಹ್ಮ. ಪುರಾಣೇಗೀಯತೇ—ಗೆ (ಶಬ್ದೇ) ಧವರ್ಯೆ "ಕ:" (ವಾಂ 3-3-44) | ಪುರಾಣಂ ವೇದಂ ಗಾಯತಿ ಇತಿ ವಾ | ಗೇ "ಕ:" (3-2-3) | (ವಿಂ) 2. ಪುರಾಣವನ್ನು ಹೇಳುವವನು, ಪುರಾಣಿಕ.

**ಪುರಾಣಪುರುಷ ಪುರಾಣಪುರುಷ (ಪುಂ)** 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಪುರಾಣ: ಉಪಸ್ತುತ: ಪುರುಷ: ಪುರಾಣ: ಪುರುಷ: ಇತಿ ವಾ | "ಪುರಾಣಪುರುಷೋ ನಂದಾತ್ಮಜ: ಶ್ರೀವತ್ಸಲಾಂಘ್ರನ:" | "ವಪುಷಾ ಪುರಾಣಪುರುಷ: ಪುರ: ಕ್ಷಿತೌ ಪರಿಪುಂಜ್ಯಮಾನಪೃಶುಹಾರಯಷ್ಠಿನಾ" | ಮಾಧಂ 13-21 | 2. ವೃದ್ಧ, ಮುದುಕ.

**ಪುರಾತನ ಪುರಾತನ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರಾಚೀನವಾದ, ಹಳೆಯದಾದ. ಪುರಾ ಭವ:—ಪುರಾ "ಠ್ಯು:" ತುಡಾಗಮಶ್ಚ (4-3-23) | "ಸ ಏವಾಯಂ ಮಯಾ ತೇಜಃ ಯೋಗ: ಪ್ರೋಕ್ತ: ಪುರಾತನ:" ಗೀತಾ

4-3 | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (4-1-14) | -ತನಿ-ತನೀ. "ಸಮಸ್ಥಲೀಕೃತ್ಯ ಪುರಾತನೀನದೀ:" | ಮಾಧಂ 12-60 | 2. ವೃದ್ಧ, ಹಳೆಯಕಾಲದವನು. "ಪುರಾತನಾ: ಪುರಾವಿದ್ಧಿ-ರ್ಥಿತಾರ ಇತಿ ಕೀರ್ತಿತಾ:" | ಕುಮಾಂ 6-9 | (ಪುಂ) 3. ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಪ್ರತಿಕಲ್ಪಂ ವಿಧಾಪ್ರದೋತನಾತ್ ಏವಮೇವ ಪುರಾ ಪೂರ್ವಂ ಭವತಿ ಇತಿ ಪುರಾತನ: | "ವಿಧಾಪ್ರದೋತನಾಽಪ್ಯೋಸೀ ಪ್ರತಿಕಲ್ಪಂ ಪುರಾತನ:" | ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ್ತಿ: | "ಉತ್ತರೋ ಗೋಪತಿ-ಗೋಪ್ತಾ ಜ್ಞಾನಗಮ್ಯ: ಪುರಾತನ:" | ವಿಂ ಸಂ |

**ಪುರಾಧಿಪ ಪುರಾಧಿಪ, -ಅಧ್ಯಕ್ಷ -ಅಧ್ಯಕ್ಷ (ಪುಂ)** ನಗರಾಡಳಿತದ ಅಧಿಕಾರಿ, ಪೌರ ಸೌಲಭ್ಯಗಳನ್ನಂಟು ಮಾಡುವ ಅಧಿಕಾರಿ.

**ಪುರಾಸತಿ ಪುರಾಸತಿ (ಪುಂ)** ತ್ರಿಪುರಶತೃವಾದ ಪರಮೇಶ್ವರ. ಪುರಾಣಾಮರಾತಿ: | ಏವಂ ಪುರಾರಿ: ಪುರಾಸತಿ: | ಪುರಾರಿಪು: ಪುರಂಪು: ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಪುರಾವಸು ಪುರಾವಸು (ಪುಂ)** ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯ, ಪೂರ್ವ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಅಷ್ಟಾವಸುಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬನಾಗಿದ್ದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ಪುರಾ ಉತ್ಪತ್ತಿ: ಪ್ರಾಕ್ ವಸು: |

**ಪುರಾವಿದ್ ಪುರಾವಿದ್ (ವಿಂ)** ಪೂರ್ವಕಾಲದ ಚರಿತ್ರೆಯನ್ನು ಬಲ್ಲವನು. ಪುರಾ ಪುರಾವೃತ್ತಂ ವೇತ್ತಿ—ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (3-2-61) | "ತದಪ್ಯವಾಕೀರ್ಣಮತ: ಪ್ರಿಯವದಾಂ ವದಂತ್ಯ-ಪರ್ಣೇತಿ ಚ ತಾಂ ಪುರಾವಿದ:" | ಕುಮಾಂ 4-24 |

**ಪುರಾವೃತ್ತ ಪುರಾವೃತ್ತ (ನಂ)** ಇತಿಹಾಸ, ಪೂರ್ವಕಥೆ, ಹಿಂದಿನ ಚರಿತ್ರೆ. ಪುರಾ ವೃತ್ತಮ್ | "ಪುರಾವೃತ್ತೋದ್ಗಾರೇರಪಿ ಚ ಕಥಿತಾ ಕಾರ್ಯಪದವಿ" | ಮಾಲತಿಂ 2-13 |

**ಪುರಿ ಪುರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ನಗರ. 2. ನದಿ. 3. ರಾಜ, ದೊರೆ.

**ಪುರೀ ಪುರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ನಗರ, ಪಟ್ಟಣ. ಪುರತಿ—ಪುರ (ಅಗ್ರಗಮನೇ) "ಕ:" (3-1-134) | ಗೌರಾಂ "ಜಿಪ್" (4-1-41) | "ಏರಾವತಮಥಾರುಹ ಸ್ವೇತಾದ್ರಿಮಿವ ಜಙ್ಗಮಮ್ | ಪುರೀ ದ್ವಾರವತೀ ಶೋರೇರಾಜಗಾಮ ಪುರಂದರ:" | ಯಾದಂ 16-1 | 2. ದೇಹ, ಶರೀರ.

**ಪುರೀತತ್ ಪುರೀತತ್ (ಪುಂ)** ಕರುಣೆ, ಹೃದಯದ ಕೆಳಗೆ ಜಠರದ ಕೊನೆಯಿಂದ ಗುದದ್ವಾರದವರೆಗೆ ಇರುವ ಅನ್ನ ನಾಳದ ಭಾಗ. ಪುರೀ ದೇಹಂ ತನೋತಿ—ತನ್ (ವಿಸ್ತಾರೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (3-2-66) |

**ಪುರೀಮೋಹ ಪುರೀಮೋಹ (ಪುಂ)** ದತ್ತೂರಿ ಗಿಡ. ಪುರೀ ಶರೀರಂ ಮೋಹಯತಿ—ಮುಹ (ವೈಚಿತ್ಯೇ) + ಣಿಚ್ "ಅನ್" (3-2-1) |



**ಪುರೀಷ ಪುರೀಷ** (ನಂ) ಮಲ, ಅಮೇಧ್ಯ. ಪಿಪತ್ತಿ ಶರೀರಮ್—ಪ (ಪಾಲನಪೂರಣಯೋಃ) “ಇಷನ್” (೩೦ ೪-೨೭)। “ಮದ್ವೇಮ್ನೇಃ” ಪುರೀಷವಾ ಷ್ಠಿವನೇಃ ಪೂಯಶೋಣಿತೇಃ। ಸಂಸ್ಪೃಷ್ಟಂ ನೈವ ಶುಚ್ಯತ ಪುನಃ ಪಾಕೇನ ಮೃಷ್ಟಯಮ್” ಮನುಂ ೪-೧೨೩।

**ಪುರೀಷಣ ಪುರೀಷಣ** (ಪುಂ) 1. ಮಲ, ಅಮೇಧ್ಯ. ಪುರ್ಯಾಃ ಶರೀರಾತ್ ಇಷ್ಯತೇ—ಇಷ (ಗತಿಹಿಸಾದಶನೇಷು) ಕರ್ಮಂ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೩)। 2. ಮಲವಿಸರ್ಜನೆ. “ಉಚ್ಚಾರಸ್ತು ಪುರೀಷಣಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಪುರೀಷಮ ಪುರೀಷಮ** (ಪುಂ) ಮಾಷ, ಉದ್ದು. ಪುರೀಷ ಮಿಮೀತೇ—ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ ಶಬ್ದೇ ಚ) “ಕಃ” (೩-೨-೩)। “ಮೂಲಃ ಪುರೀಷಮೋ ಮಾಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಪುರೀಷೋತ್ಸರ್ಗ ಪುರೀಷೋತ್ಸರ್ಗ** (ಪುಂ) ಮಲವಿಸರ್ಜನೆ. ಪುರೀಷಸ್ಯ ಉತ್ಸರ್ಗಃ। ಪುರೀಷೋತ್ಸರ್ಗನಿಯಮಃ—ಹಗಲಲ್ಲಿ ಮೂರು ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಉತ್ತರಾಭಿಮುಖವಾಗಿಯೂ ರಾತ್ರಿಕಾಲದಲ್ಲಿ ದಕ್ಷಿಣಾಭಿಮುಖವಾಗಿಯೂ ಕುಳಿತು ಮಲಮೂತ್ರ ವಿಸರ್ಜನೆ ಮಾಡಬೇಕು. ಪೂರ್ವಾಹ್ನದಲ್ಲಿ ಪಶ್ಚಿಮಾಭಿಮುಖವಾಗಿಯೂ ಅಪರಾಹ್ನದಲ್ಲಿ ಪೂರ್ವಾಭಿಮುಖವಾಗಿಯೂ ಕುಳಿತು ವಿಸರ್ಜಿಸಬೇಕು. “ಉದತ್ಸರ್ಗ-ಸ್ತ್ರಿಸನ್ಯಾಸು ದಿವಸೇ ಚ ಯದಾ ನಿಶಿಃ। ದಕ್ಷಿಣಾಭಿಮುಖ ಉತ್ಸರ್ಗಂ ಕುರ್ಯಿನ್ಮತ್ರಪುರೀಷಯೋಃ॥ ಪೂರ್ವಾಹ್ನೇ ಮನುಜಃ ಕುರ್ಯಾತ್ ಪಶ್ಚಿಮಾಭಿಮುಖೋಽಥವಾ। ಅಪರಾಹ್ನೇ ಪೂರ್ವಮುಖೋ ಮತ್ತಗ್ನಯಃ ವಿಸರ್ಜನಮ್॥

ದೇವಾಲಯ ವೃಕ್ಷಮೂಲ ಜಲ ನದಿ ಮತ್ತು ಬಾವಿಗಳಿಗೆ ಹೋಗುವ ದಾರಿ ಕೊಳ ದನದ ಕೊಟ್ಟಿಗೆ ನೀರಿನ ಸಮೀಪ ಹುಲ್ಲು ಬೆಳೆದಿರುವ ಪ್ರದೇಶ ಪೈರು ಬೆಳೆದಿರುವ ಹೊಲಗದ್ದೆಗಳು ಧಾನ್ಯಗಳನ್ನು ಒಕ್ಕುವ ಕಣ ಪುಷ್ಪೋದ್ಯಾನ ನಾಲ್ಕು ರಸ್ತೆಗಳು ಸೇರುವ ಜಾಗ ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಮಲ ಮೂತ್ರ ವಿಸರ್ಜನೆ ಕೂಡದು.

**ಪುರು ಪುರು** (ಪುಂ) 1. ಸ್ವರ್ಗಲೋಕ, ದೇವಲೋಕ. ಪಿಪತ್ತಿ ಪುಯಂತೇ ವಾ—ಪ (ಪಾಲನಪೂರಣಯೋಃ) “ಕ್ರುಃ” (೩೦ ೧-೨೪)। ಉತ್ವಮ್ (೭-೧-೧೦೨)। 2. ಮಕರಂದ, ಪುಷ್ಪಗಳ ಪರಾಗ. 3. ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. 4. ಚಾಕ್ಷುಷಮನುವಿನ ಒಬ್ಬ ಪುತ್ರ. “ಉರುಪುಷತಃ ಪುನಃ ಪ್ರಮುಖಾಃ ಸುಮಹಾಬಲಾಃ। ಚಾಕ್ಷುಷಸ್ಯ ಮನೋಃ ಪುತ್ರಾಃ ಪೃಥಿವೀಪತಯೋಽಭವನ್” ಮಾರ್ಕಂ 1. 5. ಒಂದು ಪರ್ವತ. “ಪವತಃ ಪುರುಷಾಃ ಯತ್ರ ಜಾತಃ ಪುರುಷಾಃ” ಭಾಂ 1. 6. ಶರೀರ, ದೇಹ. “ಪುರುಷಂ ಶರೀರೇಽಸ್ಮಿನ್ ಶಯನಾತ್ಪುರುಷೋ ಹರಿಃ। ಶಕಾರಸ್ಯ ಷಕಾರೋಽಯಂ ವ್ಯತ್ಯಯೇನ ಪ್ರಯುಜ್ಯತೇ”॥ (ವಿಂ) 7. ಪ್ರಚುರವಾದ, ಬಹಳವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ.

“ಪುರುಷಿತಗುಣವಚ್ಚವಚ್ಚಪುರುಷಕುಟುಂಬಿತಃ” ನೈಷಂ ೧೧-೪। (ಅವ್ಯಂ) 8. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ, ಬಹಳವಾಗಿ.

**ಪುರುಷುತ್ಸ ಪುರುಷುತ್ಸ** (ಪುಂ) ಮಾಧಾತ್ಯ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಪುತ್ರ.

**ಪುರುಜಿತ್ ಪುರುಜಿತ್** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಪುರುನ್ ಬಹುನ್ ಲೋಕದೀನಗುಣಶಾತ್ರವಾನ್ ಸತ್ಯ-ದಾನ-ಶುಶ್ರೂಷಾ-ಶರಾಸನೇಃ ಜಯತಿ—ಜಿ (ಜಯೇ) “ವಿವಪ್” (೩-೨-೬೧)। “ಸತ್ಯೇನ ಲೋಕಾನ್ ಜಯತಿ ದೀನಾನ್ ದಾನೇನ ರಾಘವಃ। ಗುರುನ್ ಶುಶ್ರೂಷಯಾ ವೀರೋ ಧನುಷಾ ಯುಧಿ ಶಾತ್ರವಾನ್” ರಾಮಾಂ 1. ಸತ್ಯಸಂಧತೆಯಿಂದ ಶ್ರೀರಾಮನು ಲೋಕವನ್ನು ಜಯಿಸಿದನು. ಹಾಗೆಯೇ ದೀನರನ್ನು ದಾನದಿಂದಲೂ ಗುರುಗಳನ್ನು ಶುಶ್ರೂಷೆ (ಸೇವೆ) ಯಿಂದಲೂ ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಧನುಸ್ಸಿನಿಂದಲೂ ಜಯಿಸಿದನಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. “ಲೋಕಾನ್ ದೀನಾನ್ ಗುರುನ್ ಶತ್ರುನ್ ಸತ್ಯದಾನಾನುವರ್ತನೇಃ। ಧನುಷಾ ಜಿತವಾನ್ ಯಶ್ಚ ಪುರುಜಿತ್ ಸಃ ಸ್ಮೃತೌ ಬೃಧೇಃ” ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ। “ಸೋಮಪಾಃ-ಮೃತಪಃ ಸೋಮಃ ಪುರುಜಿತ್ ಪುರುಷತಮಃ” ವಿಂಸಂ 1.

**ಪುರು ಪುರು** (ನಂ) ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ.

**ಪುರುಷಕ ಪುರುಷಕ** (ಪುಂ) ಹಂಸ. ಪುರುಷೋ ದಂಶಾಃ ಗರ್ಹತಿ ಯಸ್ಯ—“ಕಪ್”।

**ಪುರುಷ ಪುರುಷ** (ಪುಂ) 1. ಮನುಷ್ಯ. ಪುರುಷಿ—ಪುರು (ಅಗ್ರ-ಗಮನೇ) “ಕುಷನ್” (೩೦ ೪-೭೪)। “ಪುರುಷಾಣಾಂ ಕುಲೀನಾನಾಂ ನಾರೀಣಾಂ ಚ ವಿಶೇಷತಃ। ಮುಖ್ಯಾನಾಂ ಚೈವ ರತ್ನಾನಾಂ ಹರಣಂ ವಧಮರ್ಹತಿ” ಮನುಂ ೮-೩೨೩। ಪುರುಷನ ಲಕ್ಷಣಃ ಸತ್ವಾತ್ಮದಲ್ಲಿ ದಾನಮಾಡುವವನು ಗುಣದಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳವನು ಪರಿಜನರೊಡನೆ ಕೂಡಿ ಸೌಖ್ಯಪಡುವವನು ಶಾಸ್ತ್ರ ಪರಿಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಅಪ್ರತಿಹತನಾಗಿ ಹೋರಾಡುವವನು ಈ ಐದು ಗುಣಗಳುಳ್ಳವನು ಪುರುಷನು. ಪುರುಷನು ಜಿತೇಂದ್ರಿಯನಾಗಿರಬೇಕು. “ಸಾ ಶ್ರೀರ್ಯಾ ನ ಮದಂ ಕುರ್ಯಾತ್ ಸ ಸುಖಿ ತೃಣಯೋಜ್ಜಿತಃ। ತನ್ಮಿತ್ರಂ ಯತ್ರ ವಿಶ್ವಾಸಃ ಪುರುಷಃ ಸ ಜಿತೇಂದ್ರಿಯಃ”। 2. ಗಂಡಸು. “ಶಕುನಾದಿವ ಮಾರ್ಗವರ್ತಿभिಃ ಪುರುಷಾದುದ್ವಿಜಿತವ್ಯಮಿದೃಶಃ” ಮಾಘಂ ೧೬-೧೯। 3. ಆತ್ಮ, ಜೀವ. ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಕ್ಷರಃ ಮತ್ತು ಅಕ್ಷರಃ ಎಂಬ ಇಬ್ಬರು ಪುರುಷರು ಪ್ರಸಿದ್ಧರು. “ಛಾವಿಮೌ ಪುರುಷೌ ಲೋಕೇ ಕ್ಷರಾಕ್ಷರಾಕ್ಷರ ಉಚ್ಯತೇ” ಗೀತಾ ೧೫-೧೬। ಎಕಾರ ಹೊಂದುವ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ ಪ್ರಕೃತಿಯೊಡನೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ ಸಮಸ್ತಪ್ರಾಣಿಗಳು ಕ್ಷರಪುರುಷರು. ಅಚಿತ್ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದೆ ಸ್ವಸ್ವರೂಪದಿಂದಿರುವ ಮುಕ್ತಾತ್ಮರು ಅಕ್ಷರ



ಪುರುಷರು. ಪ್ರಕೃತಿಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದಲೂ ಮತ್ತು ಪ್ರಕೃತಿಪರಿಣಾಮ ವಿಶೇಷವಾದ ದೇಹದ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದಲೂ ಅಕ್ಷರನು ಕೂಟಸ್ಥನೆನ್ನಲ್ಪಡುವನು. "ಕ್ಷರಶಬ್ದನಿರ್ದಿಷ್ಟ: ಪುರುಷ: ಕ್ಷರಣಸ್ವರ್ಮಾಚಿತ್ತಸಂಸ್ಥಿತಸರ್ವಭೂತಾನಿ | ಅಕ್ಷರಶಬ್ದನಿರ್ದಿಷ್ಟ: ಕೂಟಸ್ಥ: ಅಚಿತ್ತಸಂಸ್ಥಿತವಿವಿಕ್ತ: ಸ್ವೇನ ರೂಪೇಣಾವಸ್ಥಿತೋ ಮುಕ್ತಾತ್ಮಾ" ಇತಿ ರಾಂ ಭಾಂ | ವಿನಾಶಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ ಸಮಸ್ತಕಾರ್ಯಾಂತಿಯು ಕ್ಷರಪುರುಷ ಅನೇಕ ಸಂಸಾರಜೀವರ ಕಾಮಕರ್ಮಾದಿ ಸಂಸ್ಕಾರಕ್ಕೆ ಆಶ್ರಯಭೂತವಾದ ಭಗವಂತನ ಮಾಯಾಶಕ್ತಿಯು ಅಕ್ಷರ ಪುರುಷ. "ಕ್ಷರಶ್ಚ ಕರತೀತಿ ಕ್ಷರ: ವಿನಾಶೀ ಇತಿ ಏಕೋ ರಾಶಿ:; ಅಪರ: ಪುರುಷ: ಅಕ್ಷರ: ತದ್ವಿಪರೀತ:; ಭಗವತ: ಮಾಯಾಶಕ್ತಿ:; ಕ್ಷರಾತ್ಮಸ್ಯ ಪುರುಷಸ್ಯ ಉತ್ಪತ್ತಿಬೀಜಂ ಅನೇಕ-ಸಂಸಾರಿಜನ್ತುಕಾಮಕರ್ಮಾದಿಸಂಸ್ಕಾರಾಶ್ರಯ: ಅಕ್ಷರ: ಪುರುಷ: | ಕೂಟಸ್ಥ: ಕೂಟ: ರಾಶಿರಿವ ಸ್ಥಿತ: | ಅಥವಾ ಕೂಟ: ಮಾಯಾ, ಅನೇಕಮಾಯಾವಚ್ಚನಾದಿಪ್ರಕಾರೇಣ ಸ್ಥಿತ: ಕೂಟಸ್ಥ:; ಸಂಸಾರ-ಬೀಜಾನಂತ್ಯಾತ್ ನ ಕರತಿ ಇತಿ ಅಕ್ಷರ: ಉಚ್ಯತೇ" ಇತಿ ಶಾಂ ಭಾಂ | ಬ್ರಹ್ಮಾದಿಯಾಗಿ ಸಮಸ್ತಪ್ರಾಣಿಗಳೂ ಕ್ಷರ ಪುರುಷರು. ಪ್ರಕೃತಿಯು (ಪ್ರಧಾನ) ಅಕ್ಷರ (ಕೂಟಸ್ಥ) ಪುರುಷ. "ಕ್ಷರಭೂತಾನಿ ಬ್ರಹ್ಮಾದಿನಿ | ಕೂಟಸ್ಥಾ ಪ್ರಕೃತಿ: | "ಪ್ರಜಾಪತಿಪ್ರಮುಖಾ: ಸರ್ವಜೀವಾ: ಕ್ಷರೋಷ್ಣರ: ಪುರುಷೋ ವೈ ಪ್ರಧಾನಮ್ | ತದ್ವತ್ಸಮಂ ಚಾನ್ಯಮುದಾಹರಂತಿ ಜಾಲಾಜಾಲಂ ಮಾತ-ರಿಶ್ವಾನಮೇಕಮ್" ಇತಿ ಆನಂ ತೀಂ ಭಾಂ | 4. ವಿಷ್ಣು. ಪುರುಷ ಬಹು ಸನೋತಿ ದದಾತಿ—ಷಣ್ಣು (ದಾನೇ) "ಓ:" (3-2-100) | ಮುಕ್ತೇಮ್ಯ: ವಾಡ್ಮನಸಾಪರಿಚ್ಛೇದಗುಣವಿಭವ-ಸ್ವಾನುಭವಂ ದದಾತಿ ಭಗವಾನ್ ಇತ್ಯರ್ಥ: | "ಮುಕ್ತೇಮ್ಯ: ಸ್ವಾತ್ಮ-ವರ್ಯಂತದಾನಾತ್ ಪುರುಷ ಇರಿತ:" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: | "ಅವ್ಯಯ: ಪುರುಷ: ಸಾಕ್ಷಿ" ವಿಂ ಸಂ | ಪುರಿ ಹೃದಯಗುಹಾಃ ಶೇತೇ ಇತಿ ಪುರುಷ: | "ಪುರಿಶಯಂ ಪುರುಷಮೀಕ್ಷತೇ" ಶ್ರುತಿ: | "ಪರಾತ್ಪರಂ ಪುರಿಶಯಂ ಪುರುಷಮ್" | ಪುರಿ ಶರೀರೇ ಶೇತೇ ಇತಿ ಪುರುಷ: ಇತಿ ವಾ | "ಪುರಸ್ತೇ ಶರೀರೇಸ್ಥಿಮನ್ ಶಯನಾತ್ ಪುರುಷೋ ಹರಿ:" ಬೃಹದಾಂ | 5. ಸಾಂಖ್ಯರು ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುವ ಜೀವಾತ್ಮ, ಒಂದು ತತ್ತ್ವ. ಸುಖದುಃಖ ಮೋಹಮಯ ಪ್ರಪಂಚದಲ್ಲಿ ಪುರುಷನ ಸಾನ್ನಿಧ್ಯವೇ ಅಧಿಷ್ಠಾನ. ಸರ್ವಲೋಕ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ ಸುಖದುಃಖಗಳನ್ನು ಅನುಕೂಲವಾಗಿಯೂ ಪ್ರತಿಕೂಲವಾಗಿಯೂ ತಿಳಿಯುವವನೆಂಬ ಇರಬೇಕಾದುದರಿಂದ ಜೀವಾತ್ಮನೆಂಬ ಪುರುಷನನ್ನು ಇವರು ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುವರು. ಈ ಪುರುಷನು ಯಾವುದಕ್ಕೂ ಪ್ರಕೃತಿಯೂ ಅಲ್ಲ. ಯಾವುದರ ವಿಕೃತಿಯೂ ಅಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ಅನುಭವಾತ್ಮಕ. "ನ ಪ್ರಕೃತಿನಂ ವಿಕೃತಿ: ಪುರುಷ:" ಸಾಂ

ಕಾಂ | 6. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. "ಯಾಮ್ಯಾಯಾವ್ಯಕ್ತ-ರೂಪಾಯ ಸದ್ವೃತ್ತೇ ಶಕ್ತುರಾಯ ಚ | ಕ್ಷಮ್ಯಾಯ ಹರಿಕೇಶಾಯ ಸ್ಥಾಣವೇ ಪುರುಷಾಯ ಚ" ಭಾಂ ಆಶ್ವಂ 6-15 | 7. ಪುರುಷ ಗ್ರಹಗಳು, ರವಿ, ಮಂಗಳ ಮತ್ತು ಬೃಹಸ್ಪತಿ ಗ್ರಹಗಳು. 8. ಪುರುಷ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು, ಮೃಗಶಿರ್ಷ ಪುನರ್ವಸು ಪುಷ್ಯ ಹಸ್ತ ಮೂಲ ಮತ್ತು ಶ್ರವಣ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು. 9. ಪುನ್ನಾಗ ವೃಕ್ಷ, ಸುರಗಿ ಮರ. 10. ಒಬ್ಬ ಮನುಷ್ಯನ ಎತ್ತರದ ಅಳತೆ. ದ್ವಿ ಪುರುಷಿ ಪ್ರಮಾಣಮಸ್ಯಾ: ದ್ವಿಪುರುಷಿ ದ್ವಿಪುರುಷಾ ವಾ ಪರಿಕ್ಷಾ | 11. (ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಕ್ರಿಯಾಪದಗಳ ಪ್ರಥಮ ಮಧ್ಯಮ ಮತ್ತು ಉತ್ತಮ ಪುರುಷಗಳು.

ಪ್ರಥಮಪುಂ — ಭವತಿ ಭವತ: ಭವಂತಿ |

ಮಧ್ಯಮಪುಂ — ಭವಸಿ ಭವಥ: ಭವಥ |

ಉತ್ತಮಪುಂ — ಭವಾಮಿ ಭವಾವ: ಭವಾಮ: |

12. ಕುದುರೆಯು ಮನುಷ್ಯನಂತೆ ಹಿಂದಿನ ಎರಡು ಕಾಲುಗಳನ್ನೂ ಊರಿ ನಿಲ್ಲುವುದು.

ಪುರುಷಕ ಪುರುಷಕ (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯನಂತೆ ಕುದುರೆಯು ಹಿಂದಿನ ಎರಡು ಕಾಲುಗಳನ್ನು ಊರಿ ಮೇಲು ಮುಖವಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವುದು. "ಪರಿಚಮೇನಾಪ್ರಪಾದೇನ ಭುವಿ ಸ್ಥಿತವಾಗ್ರ-ಪಾದಯೋ: | ಋವಪ್ರೇರಣಯಾ ಸ್ಥಾನಮಶ್ವಾನಾಂ ಪುರುಷ: ಸ್ಮೃತ:" | ಪುರುಷ ಏವ ಪುರುಷಕ: | "ಸ್ತೋಕೇನ ನಾಕ್ರಮತ ವಲ್ಲಭಪಾಲಮುಚ್ಛೇ: ಶ್ರೀವೃಕ್ಷಕೀ ಪುರುಷಕೋನಮಿತಾಪ್ರಕಾಯ:" ಮಾಧಂ 4-46 |

ಪುರುಷಕಾರ ಪುರುಷಕಾರ (ಪುಂ) ಪುರುಷನ ಪ್ರಯತ್ನ, ಮನುಷ್ಯನು ನಡೆಸುವ ಕಾರ್ಯ. ಪುರುಷಸ್ಯ ಕಾರ: ಕರಣಮ್ | "ಅಕೃಶಮಕೃಶಲಕ್ಷ್ಮೀಶ್ಚೇತಸಾಶಿಸಿತಂ ಸ ಸ್ವಮಿವ ಪುರುಷಕಾರಂ ಶೈಲಮಮ್ಯಾಸಸಾದ" ಕಿರಾಂ 4-42 | "ದೇವೇ ಪುರುಷಕಾರೇ ಚ ಕರ್ಮಸಿದ್ಧಿವ್ಯವಸ್ಥಿತಾ" ಯಾಜ್ಞಂ 1-389 |

ಪುರುಷಕುಂಜರ ಪುರುಷಕುಂಜರ (ಪುಂ) ಪುರುಷಶ್ರೇಷ್ಠ. ಪುರುಷೇಷು ಕುಂಜರ: ಶ್ರೇಷ್ಠ: |

ಪುರುಷತಾ ಪುರುಷತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುರುಷತ್ವ, ಪುರುಷನ ಭಾವ, ಪುರುಷನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪುರುಷಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (4-1-119) | "ತವ:" | ಪುರುಷತ್ವಮ್ ಪುರುಷತ್ವಮ್.

ಪುರುಷತ್ರಾ ಪುರುಷತ್ರಾ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪುರುಷನನ್ನು. 2. ಪುರುಷನಲ್ಲಿ. ಪುರುಷ "ತ್ರಾ" (4-8-46) |

ಪುರುಷದಕ್ಷ ಪುರುಷದಕ್ಷ (ವಿಂ) ಒಂದು ಪುರುಷನಿಗೆ ಮಾಣದ, ಒಂದು ಆಳಿನ ಪ್ರಮಾಣದ, ಒಬ್ಬ ಪುರುಷನ ಪ್ರಮಾಣದ. ಪುರುಷ: ಪ್ರಮಾಣಮಸ್ಯ "ದಕ್ಷ" (4-2-39) | ಏವಂ ಪುರುಷದ್ವಯಸಮ್ ಪುರುಷದ್ವಯಸಮ್.

ಪುರುಷರ್ಮ ಪುರುಷರ್ಮ (ಪುಂ) ಪುರುಷಶ್ರೇಷ್ಠ. ಪುರುಷೇಷು ಪುರುಷರ್ಮ: ಶ್ರೇಷ್ಠ: |



**ಪುರುಷನಾಮ ಪುರುಷನಾಗ, -ಪುಣ್ಣವ -ಪುಂಗವ (ಪುಂ.)**  
ಪುರುಷಶ್ರೇಷ್ಠ.

**ಪುರುಷವಾಹ ಪುರುಷನಾಹ (ಪುಂ.)** 1. ಕುಬೇರ. ಪುರುಷೇಣ  
ನರೇಣ ಉಚಿತೇ—ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ವಹ” (೩-೩-೧೯)।  
2. ವಿಷ್ಣು ವಿನ ವಾಹನ ಗರುಡ. ಪುರುಷಂ ವಿಷ್ಣುಂ ವಹತಿ—ವಹ  
(ಪ್ರಾಪಣೆ) “ವಹ” (೩-೨-೧)।

**ಪುರುಷವ್ಯಾಘ್ರ ಪುರುಷವ್ಯಾಘ್ರ (ಪುಂ.)** ಪುರುಷಶ್ರೇಷ್ಠ.  
ಪುರುಷೋ ವ್ಯಾಘ್ರ ಇವ ಪುರುಷೇಷು ವ್ಯಾಘ್ರಃ ಶ್ರೇಷ್ಠೋ ವಾ। “ಎವಂ ತೇ  
ಪುರುಷವ್ಯಾಘ್ರಾಃ ಪಾಂಡವಾ ಯುದ್ಧನಂದಿನಃ” ಭಾಂ।

**ಪುರುಷಶಾರ್ದೂಲ ಪುರುಷಶಾರ್ದೂಲ, -ಸಿಂಹ -ಸಿಂಹ(ಪುಂ.)**  
ಪುರುಷಶ್ರೇಷ್ಠ. ಪುರುಷೇಷು ಶಾರ್ದೂಲಃ ಸಿಂಹೋ ವಾ ಶ್ರೇಷ್ಠಃ।

**ಪುರುಷಸೂಕ್ತ ಪುರುಷಸೂಕ್ತ (ನಂ.)** ಪರಮಪುರುಷನ ಸ್ವರೂಪ  
ಮನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ಸೂಕ್ತ. ಪುರುಷಸ್ಯ ಪರಮಪುರುಷ  
ಸ್ವರೂಪಸ್ಯ ಪ್ರತಿಪಾದಕಂ ಸೂಕ್ತಮ್।

**ಪುರುಷಾದ್ ಪುರುಷಾದ್ (ಪುಂ.)** ರಾಕ್ಷಸ.

**ಪುರುಷಾದ ಪುರುಷಾದ (ಪುಂ.)** ಮನುಷ್ಯನನ್ನು ತಿನ್ನುವ ರಾಕ್ಷಸ.  
ಪುರುಷಮತ್ತಿ—ಅದ (ಭಕ್ಷಣೆ) “ಅಹ” (೩-೨-೧)।

**ಪುರುಷಾಘ ಪುರುಷಾಘ (ಪುಂ.)** 1. ವಿಷ್ಣು. ಪುರುಷಾಣಾಂ ಪುರುಷೇಷು  
ವಾ ಆಘಃ। 2. ಜನದೇವ.

**ಪುರುಷಾಧಿಕಾರ ಪುರುಷಾಧಿಕಾರ (ಪುಂ.)** 1. ಮನುಷ್ಯನ  
ಅಧಿಕಾರ, ಮನುಷ್ಯನ ಕರ್ತವ್ಯಕ್ಕೋಳಪಟ್ಟ ಒಂದು ಧರ್ಮ.  
2. ಮನುಷ್ಯನ ಯೋಗ್ಯತೆಯ ಗಣನೆ, ಪುರುಷನ ಅರ್ಹ  
ತೆಯ ಎಣಿಕೆ. ಪುರುಷಃ ಅಧಿಕೃತೀತೇಜೇನ—ಅಧಿ + ಡುಕ್ತು  
(ಕರಣೆ) ಕರಂ “ವಹ” (೩-೩-೧೨೧)। “ಸಂಸತ್ಸು ಜಾತೇ  
ಪುರುಷಾಧಿಕಾರೇ ನ ಪೂರಣಿ ತಂ ಸಮುಪೇತಿ ಸಂಖ್ಯಾ” ಕಿರಾಂ ೩-೪೧।

**ಪುರುಷಾಘಮ ಪುರುಷಾಘಮ (ಪುಂ.)** ನೀಚಪುರುಷ, ಕೆಳ  
ದರ್ಜೆಯ ಮನುಷ್ಯ. ಪುರುಷೇಷು ಅಘಮಃ ನಿಕ್ಷುಪ್ತಃ। “ನಾಥೇ  
ನಃ ಪುರುಷೋತ್ತಮೇ ತ್ರಿಜಗತಾಮೇಕಾಧಿಪೇ ಚೇತಸಾ ಸೇವ್ಯೇ ಸ್ವಸ್ಯ  
ಪದಸ್ಯ ದಾತರಿಸುರೇ ನಾರಾಯಣೇ ತಿಷ್ಠತಿ। ಯಂ ಕಶ್ಚಿತ್ಪುರುಷಾಘಮಂ  
ಕೃತಿಪಯಶ್ರಾಮೇಶಮಲ್ಪಾರ್ಥದಂ ಸೇವಾಯೈ ಮೃಗಯಾಮಹೇ ನರಮಹೋ ಮುಕ್ತಾ  
ವರಾಕಾ ವಯಮ್” ಮುಂ ಮಾಂ।

**ಪುರುಷಾಯುಷ ಪುರುಷಾಯುಷ (ನಂ.)** ಮನುಷ್ಯನ ಆಯುಸ್ಸು,  
ಪುರುಷನ ಜೀವಿತಕಾಲ. ಪುರುಷಸ್ಯಾಯುಃ “ಅಹ” (೪-೪-೭೭)।  
ನಿಪಾಂ। “ಪುರುಷಾಯುಷಜೀವಿನ್ಯೋ ನಿರಾತಕ್ಷಾ ನಿರೀತಯಃ।  
ಯನ್ಮದೀಯಾಃ ಪ್ರಜಾಸ್ತಸ್ಯ ಹೇತುಸ್ತ್ವದ್ಬ್ರಹ್ಮಾವರ್ತಸಮ್” ರಘುಂ ೧-೬೩।

**ಪುರುಷಾರ್ಥ ಪುರುಷಾರ್ಥ (ಪುಂ.)** 1. ಪುರುಷನ ಪ್ರಯೋಜನ,  
ಪುರುಷನಿಗೆ ಇಷ್ಟವಾದ ಭೋಗಾಪವರ್ಗರೂಪವಾದ  
ನಿಷಯ, ಮನುಷ್ಯನು ಜೀವಿತಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸಾಧಿಸಬೇಕಾದ

ನಿಷಯ. ಪುರುಷಸ್ಯ ಅರ್ಥಃ ಭೋಗಾಪವರ್ಗರೂಪಂ ಪ್ರಯೋಜನಮ್।  
ಪುರುಷಾರ್ಥವು ಧರ್ಮ ಅರ್ಥ ಕಾಮ ಮತ್ತು ಮೋಕ್ಷ  
ಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. “ವರ್ಮಾಶಿಕಾಮಮೋಕ್ಷಾಶ್ಚ ಪುರುಷಾರ್ಥಾಃ  
ಉದಾಹೃತಾಃ” ಅಗ್ನಿಪುಂ। “ಏತಚ್ಚತುರ್ವಿಧಂ ವಿद्याತ್ ಪುರುಷಾರ್ಥ-  
ಪ್ರಯೋಜನಮ್। ಅಸ್ಯ ನಿಯಮನುಷ್ಠಾನಂ ಸಮ್ಯಕ್ ಕುರ್ಯಾದಿತದ್ವಿತಃ”  
ಮನುಂ ೭-೧೦೦। “ತ್ವಾಮಾಮನಂತಿ ಪ್ರಕೃತಿ ಪುರುಷಾರ್ಥಪ್ರವರ್ತಿ-  
ನೀಮ್” ಕುಮಾಂ ೨-೧೩। 2. ಪುರುಷಕಾರ, ಮನುಷ್ಯ  
ಪ್ರಯತ್ನ. “ದೇವಂ ಪುರುಷಕಾರೇಣ ಕೋ ವಶ್ಯಯಿತುಮಹಂತಿ। ದೇವಮೇವ  
ಪರಂ ಮನ್ಯೇ ಪುರುಷಾರ್ಥೋ ನಿರರ್ಯಕಃ” ಭಾಂ ವನಂ ೧೭೯-೨೭।

**ಪುರುಷಾಶಿನ್ ಪುರುಷಾಶಿನ್ (ಪುಂ.)** ನರಭಕ್ಷಕ, ರಾಕ್ಷಸ.  
ಪುರುಷಮಶನಾತಿ—ಅಶ (ಭೋಜನೆ) “ಅಶಿನ್” (೩-೧-೧೩೪)।

**ಪುರುಷೋತ್ತಮ ಪುರುಷೋತ್ತಮ (ಪುಂ.)** 1. ವಿಷ್ಣು,  
ನಾರಾಯಣ. ಪುರುಷೇಷು ಪುರುಷೇಷು ವಾ ಉತ್ತಮಃ। ಪ್ರಕೃತಿ  
ಬದ್ಧ ಮುಕ್ತ ನಿತ್ಯಗಿಂತಲೂ ಶ್ರೇಷ್ಠನು. “ವದಾದಿ-  
ಪುರುಷೇಷು ಯೋಹ್ಯತುಕ್ತುಃ ಪುರುಷೋತ್ತಮಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ।  
“ನಾರಸಿಂಹಪುಃ ಶ್ರೀಮಾನ್ ಕೇಶವಃ ಪುರುಷೋತ್ತಮಃ” ವಿಂ ಸಂ।  
ಪುರು ಸನೋತಿ ಎಂಬ ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಯಿಂದ ಬಹುಪ್ರದರಾದವರಲ್ಲಿ  
ಉತ್ತಮನಾದವನು ಎಂದು ಅರ್ಥ. ಕ್ಷರಪುರುಷಾತೀತ  
ನಾಗಿಯೂ ಮುಕ್ತರಾದ ಅಕ್ಷರಪುರುಷಗಿಂತಲೂ  
ಉತ್ತಮನಾಗಿಯೂ ಇರುವುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು  
ಪುರುಷೋತ್ತಮನು. ಬದ್ಧನಿಗಿಂತಲೂ ಮುಕ್ತನು,  
ಉತ್ಕೃಷ್ಟನು. ಮುಕ್ತನಿಗಿಂತಲೂ ಪರಮಾತ್ಮನು ಉತ್ಕೃಷ್ಟ  
ತಮನಾದುದರಿಂದ ಪುರುಷೋತ್ತಮನು, “ಯಸ್ಮಾತ್ಕರ-  
ಮತೀತೋಽಹಮಕ್ಷರಾದಪಿ ಚೋತ್ತಮಃ। ಅತೋಽಸ್ಮಿ ಲೋಕೇ ವೇದೇ  
ಚ ಪ್ರಥಿತಃ ಪುರುಷೋತ್ತಮಃ” ಗೀತಾ ೧೪-೧೮। 2. ಪುರುಷ  
ಶ್ರೇಷ್ಠ, ಉತ್ತಮಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪುರುಷ.  
“ಅಧಿಗಮ್ಯ ಜಗತ್ಯಧೀಶ್ವರಾದಯ ಮುಕ್ತಿ ಪುರುಷೋತ್ತಮಾತ್ತತಃ”  
ನೇಪಂ ೨-೧।

**ಪುರುಷೋತ್ತಮ ಪುರುಷೋತ್ತಮ (ಪುಂ.)** ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ.  
ಪುರುಷ ಮಹತ್ಸು ಸ್ವಗುಣಾಮೃತಾದಿವಿಪಿಪಾಸುಷು ಹನುಮದಾದಿಷು ಸತ್ತಮಃ  
ಅಸ್ತಿತ್ವತಮಃ। ಪರಮಾತ್ಮನ ಗುಣಾಮೃತವಾನಾಸಕ್ತ  
ರಾದ ಹನುಮದಾದಿ ಮಹಾತ್ಮರಲ್ಲಿ ವಿಶೇಷರೀತಿಯ  
ಅಸ್ತಿತ್ವವಿರುವುದರಿಂದ ಪುರುಷೋತ್ತಮನು. “ಮಹತ್ಸ್ವಸ್ತಿ-  
ತಮತ್ವಾದಿಂ ಹ್ಯಾಜ್ಜನೇಯಾದಿಷು ಸ್ವಯಮ್। ಪುರುಷೋತ್ತಮ ಆಖ್ಯಾತಃ”  
ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ। “ಸೋಮಪೋಽಮೃತಪಃ ಸೋಮಃ ಪುರುಷೋತ್ತಮಃ”  
ವಿಂ ಸಂ।

**ಪುರುಹ ಪುರುಹ (ವಿಂ.)** ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ, ಬಹಳವಾದ.  
ಪುರು ಪ್ರಚುರಂ ಹಂತಿ ಗಂಠತಿ—ಹನ (ಹಿಸಾಗತಿಯೆ) “ಹಃ”  
(೩-೨-೧೦೧)। ಬಾಹುಂ “ಹಃ”। ಪುರುಹಃ ಪುರುಹಃ.



**ಪುರುಹುತ ಪುರುಹೂತ** (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ, ದೇವತೆಗಳ ಒಡೆಯ.

ಪುರು ಪ್ರಚುರಂ ಹುತಮಾಹ್ವಾನಂ ಯಜ್ಞೇಷ್ವಸ್ಯ | “ತಂ ಲೋಕಪಾಲಾಃ

ಪುರುಹುತಮುಖ್ಯಾಃ ಶ್ರೀಲಕ್ಷಣೋತ್ಸರ್ಗವಿನೀತವೇಷಾಃ” ಕುಮಾಂ ೭-೪೫ |

“ಪುರುಹುತಾದಯಂ ಜಜ್ಞೇ ಕುನ್ತ್ಯಾಮೇವ ಧನಂಜಯಃ” ಭಾಂ ಆದಿಂ |

(ವಿಂ) 2. ಬಹುಜನರಿಂದ ಕರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪುರುಹುತಿ ಪುರುಹೂತಿ** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಪುರವೋ ಹುತಯೋ

ನಾಮಾನ್ಯಸ್ಯ | “ನಮಸ್ತೇ ಯಜ್ಞವೀರ್ಯಾಯ ವಯಸೇ ತತಃ ತೇ ನಮಃ |

ನಮಸ್ತೇ ಹ್ಯಸ್ತಚಕ್ರಾಯ ನಮಃ ಸುಪುರುಹುತಯೇ” ಭಾಗಂ ೬-೯-೩೧ |

**ಪುರುರವಸ್ ಪುರುರವಸ್** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರವಂಶದ ಒಬ್ಬ

ದೊರೆ, ಚಂದ್ರನ ಪುತ್ರನಾದ ಬುಧನಿಂದ ಇಳಿಯಲು

ವವಳಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು. ಪುರೋ ಪವಂತೇ ರೋತಿ — ಪುರು + ರ

(ಶಬ್ದ) “ಅಸಿಃ” ಪುರುಷಶಬ್ದದ ದೀರ್ಘಶ್ಚ ನಿಪಾಂ (ತಂ

೪-೨೩೧) | “ಪವಂತಶ್ಚ ಪುರುನಾಮ ಯತ್ರ ಜಜ್ಞೇ ಪುರುರವಾಃ”

ಭಾಂ ವನಂ ೧೦-೨೨ | ಮಿತ್ರಾವರುಣರ ಶಾಪದಿಂದ

ಭೂಮಿಗೆ ಬಂದ ಉರ್ವಶಿಯನ್ನು ಇವನು ಮದುವೆಯಾಗಿ

ಆಯು ಧೀಮಂತ ಅಮಾವಸು ದೃಢಾಯು ವನಾಯು

ಮತ್ತು ಶತಾಯುಗಳೆಂಬ ಆರು ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪಡೆ

ದನು. [ವಿವರಕ್ಕೆ “ತರ್ವಣಿ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಪುರೋಗ ಪುರೋಗ** (ವಿಂ) 1. ಅಗ್ರಗಣ್ಯ, ಮುಂದೆ ನಡೆಯು

ವವನು, ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ಹೋಗುವವನು. ಪುರಃ ಗಚ್ಛತಿ

—ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಹಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) | “ಜ್ಯಾಘಾತರೇಖೆ

ಸುಮುಜೋ ಭುಜಾಮ್ಯಾಂ ಬಿಭರ್ತಿ ಯಶ್ಚಾಪಮೃತಾಂ ಪುರೋಗಃ” ರಘುಂ

೬-೫೫ | 2. ಪ್ರಧಾನ, ಮುಖ್ಯ.

**ಪುರೋಗತಿ ಪುರೋಗತಿ** (ಪುಂ) 1. ಶ್ವಾನ, ನಾಯಿ. ಪುರಃ

ಅಗ್ರೇ ಗತಿಃ ಗಮನಮಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ

ಹೋಗುವವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಮುಂದೆ ಹೋಗುವುದು.

**ಪುರೋಗಮ ಪುರೋಗಮ** (ವಿಂ) 1. ಅಗ್ರೇಸರ, ಮುಂದೆ

ಹೋಗುವವನು. ಪುರಃ ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಅಚ್”

(೩-೧-೧೩೪) | “ಗಿಣಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) | —ಗಾಮಿ

—ಗಾಮಿ. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಧಾನ, ಮುಖ್ಯ. “ಯಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ

ಪಾರ್ಥಿವಾಃ ಸರ್ವೇ ದುರ್ಯೋಧನಪುರೋಗಮಾಃ | ನಿವರ್ತಿಷ್ಯಂತಿ ಸನ್ತ್ರಸ್ತಾಃ

ಸಿಂಹಂ ಕ್ಷುಧ್ರಮೃಗಾ ಯಥಾ” ಭಾಂ ಭೀಷಂ ೧೯-೧೦ |

**ಪುರೋಚನ ಪುರೋಚನ** (ಪುಂ) ದುರ್ಯೋಧನನ ಒಬ್ಬ

ಮಂತ್ರಿ. ಈತನು ಪಾಂಡವರ ನಿರ್ಮೂಲನಕ್ಕಾಗಿ

ದುರ್ಯೋಧನನ ಪ್ರೇರಣೆಯಂತೆ ಇಂದ್ರಪ್ರಸ್ಥದಲ್ಲಿ ಅರಗಿನ

ಮನೆಯೊಂದನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿ ಅದರಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿದ್ದನು.

ವಿದುರನ ಮೂಲಕ ಈ ಸುಲವನ್ನು ತಿಳಿದ ಭೀಮನು ತನ್ನ

ತಾಯಿ ಮತ್ತು ಸಹೋದರರನ್ನು ಹೊರಕ್ಕೆ ಸಾಗಿಸಿ ಅರಗಿನ

ಮನೆಗೆ ಬೆಂಕಿಯಿಡಲಾಗಿ ಪುರೋಚನನು ಅಲ್ಲಿಯೇ ಅಗ್ನಿಗೆ

ಬಲಿಯಾದನು.

**ಪುರೋಜನ್ಮನ್ ಪುರೋಜನ್ಮನ್** (ಪುಂ) 1. ಅಣ್ಣ, ಹಿರಿಯ

ಸಹೋದರ. ಪುರೋ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಮೊದಲು

ಹುಟ್ಟಿದವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಅಕ್ಕ, ಹಿರಿಯ ಸಹೋದರಿ.

ವಾ “ಛಾಪ್” (೪-೧-೧೩) | ಪುರೋಜನ್ಮಾ —ಜನ್ಮಾನೌ

—ಜನ್ಮಾನಃ | —ಜನ್ಮಾ —ಜನ್ಮೇ —ಜನ್ಮಾಃ |

**ಪುರೋಡಿ ಪುರೋಡಿ** (ಪುಂ) ಎಲೆಗಳ ಶಬ್ದ. ಪುರಃ ಅದತಿ—ಅದ

(ಗತೌ) “ಇನ್” (ತಂ ೪-೧೧೭) |

**ಪುರೋಡಾಶ ಪುರೋಡಾಶ** (ಪುಂ) ಹವಿಸ್ಸು. ಯಾಗದಲ್ಲಿ

ಹೋಮಸಾಧನ ದ್ರವ್ಯ. ಪುರೋಡಾಶ ದಾಹ್ಯತೇ—ದಾಶ್ (ದಾನೇ)

ಕರ್ಮಂ “ಛಾಪ್” (೩-೩-೧೨೧) |

**ಪುರೋಡಾಶೀಯ ಪುರೋಡಾಶೀಯ** (ವಿಂ) ಹವಿಸ್ಸಿಗೆ ಯೋಗ್ಯ

ವಾದ.

**ಪುರೋಡಾಶ್ಯ ಪುರೋಡಾಶ್ಯ** (ವಿಂ) ಹವಿಸ್ಸಿಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ.

ಪುರೋಡಾಶಾಯ ಹಿತಮ್ “ಛಾಪ್” (೫-೧-೪) | “ಆಮಿಷೀಯಂ

ದಧಿಕ್ಷೀರಂ ಪುರೋಡಾಶ್ಯಂ ತಥೌಷಧಮ್” ಮಹಿಂ ೫-೧೨ |

**ಪುರೋಧಸ್ ಪುರೋಧಸ್** (ಪುಂ) ಪುರೋಹಿತ. ಪುರೋಡಾಶ ದಧಾತಿ

ಮಜ್ಜಲಮ್ — ಪುರಸ್ + ಡು ಛಾಪ್ (ವಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಅಸಿಃ”

(ತಂ ೪-೨೩೦) | “ಸ ಜಾತಕರ್ಮಣ್ಯಖಿಲೇ ತಪಸ್ವಿನಾ

ತಪೋವನಾದೇತ್ಯ ಪುರೋಧಸಾ ಕೃತೇ” ರಘುಂ ೩-೧೮ | “ಕೃತಾಶಿಷಂ

ಕೃಷ್ಣಗೃಹೇಶ್ವರೀಂ ತಾಂ ಪುರೋಧಸಾ ಪುಣ್ಯಮನೋರಥೇನ” ಯಾದಂ

೧೩-೯೮ |

**ಪುರೋಭಾಗ ಪುರೋಭಾಗ** (ಪುಂ) ದೋಷವನ್ನು ಹುಡುಕುವ,

ತಪ್ಪನ್ನು ಕಂಡುಹಿಡಿಯುವ. “ಪ್ರಾಯಃ ಸಮಾನವಿದ್ಯಾಃ

ಪರಸ್ಪರಯಶಃ ಪುರೋಭಾಗಾಃ” ಮಾಲಂ ೧-೨೦ |

**ಪುರೋಭಾಗಿನ್ ಪುರೋಭಾಗಿನ್** (ವಿಂ) 1. ದೋಷವನ್ನೇ

ಪ್ರಧಾನವಾಗಿ ನೋಡುವವನು, ದೋಷವನ್ನು ಮಾತ್ರ

ಹುಡುಕಿ ನೋಡುವವನು. ಪುರಃ ಪೂರ್ವಮೇವ ಭಜತೇ — ಭಜ

(ಸೇವಾಯಾಮ್) “ಛಿನ್ಯು” (೩-೨-೧೪೨) | “ಕುಪಿತೋಽಪಿ

ಸ ಯತ್ರೇನಾಂ ನ್ಯವಧಿರಾಗಮೋಹಿತಃ | ತೇನೈವಾಗಾತ್ ಪುರೋಭಾಗಿ-

ವಿತರ್ಕಾತ್ ಕ್ಷುಪಾತ್ರತಾಮ್” ರಾಜತಂ | 2. ಮೊದಲನೆಯ

ಭಾಗವನ್ನು ಹೊಂದುವವನು.

**ಪುರೋಮಾಸ್ತ ಪುರೋಮಾಸ್ತ**, —ವಾತ —ವಾತ (ಪುಂ)

1. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನ ಗಾಳಿ. ಪೂರ್ವೋ ಮಾಸ್ತಃ ವಾತೋ ವಾ —

ಪೂರ್ವಶಬ್ದಸ್ಯ ಪುರ್ ಆದೇಶಃ “ಅಸಿಃ” ಚ (೫-೩-೩೯) |

“ಕೋಟರಮಕಾಲವೃಷ್ಟಯಾ ಪ್ರಬಲಪುರೋವಾತಯಾ ಗಮಿತೇ” ಮಾಲಂ

೪-೨ | 2. ಎದುರಿಗೆ ಬೀಸುವ ಗಾಳಿ.



**ಪುರೋವಚನ ಪುರೋವರ್ತನ** (ನಂ) ಮೊದಲಮಾತು, ಮುನ್ನುಡಿ, ಆಗ್ರಲೇಖನ, ಗ್ರಂಥಪರಿಚಯ ಮಾಡಿಸುವ ಲೇಖನ.

**ಪುರೋವರ್ತನ್ ಪುರೋವರ್ತನ** (ವಿಂ) ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ, ಎದುರಿಗಿರುವ. ಪುರ: ವರ್ತೇ - ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಗಿರಿ:" (೩-೧-೧೩೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೫) | -ವರ್ತಿನಿ -ವರ್ತನೀ. "ತಾಂ ಹತುಂ ವಿಬುಧದ್ವಿಷೋಽಪಿ ಹಿ ನ ಮೇ ಶಕ್ತಾ: ಪುರೋವರ್ತಿನೀಮ್" ವಿಕ್ರಂ ೪-೯ |

**ಪುರೋವಾತ ಪುರೋವಾತ** (ಪುಂ) ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ಬೀಸುವ ಗಾಳಿ, ಎದುರಿಗೆ ಬೀಸುವ ಗಾಳಿ. ಪುರೋವರ್ತಿ ವಾತ: | "ಆಲೋಕಯತಿ ಪಯೋದಾನ್ ಪ್ರಬಲಪುರೋವಾತನರ್ತಿಸಿಕ್ಷಾಢ:" ವಿಕ್ರಂ ೪-೧೮ |

**ಪುರೋಹಿತ ಪುರೋಹಿತ** (ಪುಂ) ದೇವತಾಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಮುಂದೆನಿಂತು ವೈದಿಕ ಕೆಲಸ ಮಾಡಿಸುವವನು. ಪುರೋ ಧೀಯತೇ ಸ್ಮ-ಋಷಾಃ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ಇತ್ಯಂ ವಿವಿಜ್ಞೇನ ಪುರೋಹಿತೇನ ಪ್ರಯುಕ್ತಪಾಞಿಗ್ರಹಣೋಪಚಾರೋ" ಕುಸಾಂ ೭-೮೬ | "ವೇದವೇದಾಙ್ಗತತ್ವಜ್ಞೋ ಜಪಹೋಮಪರಾಯಣ: | ಆಶೀರ್ವಾದವಚೋಯುಕ್ತ ಏವ ರಾಜಪುರೋಹಿತ:" | "ಪುರೋಹಿತೋ ಹಿತೋ ವೇದಸ್ಮೃತಿಜ್ಞ: ಸತ್ಯವಾಕ್ ಶುಚಿ: | ಬ್ರಹ್ಮಾಣ್ಯೋ ವಿಮಲಾಚಾರ: ಪ್ರತಿಕರ್ತೃಪಿದಾಮೃತ:" | ಬ್ರಹ್ಮನು ವೇದಾಜ್ಞವಾದ ಮತ್ತು ಅಷ್ಟಾಜ್ಞಗಳುಳ್ಳ, ಆಯುರ್ವೇದವನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸಿದನು. ಈ ವೇದಾಜ್ಞವಾದ ಆಯುರ್ವೇದವನ್ನು ತಿಳಿದ ವೈದ್ಯನಿ ಗಿಂತಲೂ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದ ಪುರೋಹಿತನು ಶ್ರೇಷ್ಠ ನಾದುದರಿಂದ ವೈದ್ಯನು ಪುರೋಹಿತನ ಹಿತವಚನದಂತೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳಬೇಕು. "ಬ್ರಹ್ಮಾ ವೇದಾಙ್ಗಮಷ್ಟಾಙ್ಗಮಾಯುರ್ವೇದ-ಮಭಾಷತ | ಪುರೋಹಿತಮತೇ ತಸ್ಮಾದ್ವತೇತೆ ಭಿಷಗಾತ್ಮವಾನ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೩೪-೯ |

**ಪುರೋಹಿತ್ ಪುರೋಹಿತ್** (ವಿಂ) ಪಟ್ಟಣದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವವನು, ನಗರದಲ್ಲಿರುವವನು. ಪುರಮೋಹಿತ್ಯಸ್ಯ | "ನ್ಯವರ್ತಿ ದೃಷ್ಟಿಪ್ರಕರೇ: ಪುರೋಹಿಸಾಮನುಜಙ್ಗಮಸುಮಾಜವನ್ವುಭಿ:" ನೆಪಂ ೧-೭೫ |

**ಪುಲ ಪುಲ** (ಪುಂ) 1. ಪುಲಕ, ರೋಮಾಂಚ, ಮೈಮುಳ್ಳೆಗಳು ವುದು. ಪುಲ (ಮಹತ್ವೇ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫) | (ವಿಂ) 2. ಮಹತ್ವಾದ, ದೊಡ್ಡದಾದ, ವಿಸ್ತಾರವಾದ. "ಪುಲ: ಸ್ಯಾತ್ ಪುಲಕೇ ಪುಸಿ ವಿಪುಲೇಽಪ್ಯನ್ಯಲಿಙ್ಗಕ:" ಮೇದಿಂ |

**ಪುಲಕ ಪುಲಕ** (ಪುಂ) 1. ಸಂತೋಷ ಅಥವಾ ಭಯದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ರೋಮಾಂಚ, -ಮೈಮುಳ್ಳೆಗಳು ವುದು. ಪುಲ ಸ್ವಾಯೆ "ಕನ್" | "ವಿಸ್ತೃತ್ವಂ ಪರಿವೃತ್ಯ ಜಾತಪುಲಕಾ-

ಮಾಲೋಕ್ಯ ಗಂಧಸ್ಥಳೀಂ ಲಜ್ಜಾನ್ಮಮುಖೀ ಪ್ರಿಯೇಣ ಹಸತಾ ಬಾಲಾ ಚಿರಂ ಚುಮ್ಬಿತಾ" | 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕೃಮಿ. 3. ರತ್ನದ ದೋಷ. 4. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಶಿಲೆ. 5. ಹರಿದಳ. 6. ಅನೆಗೆ ಅಹಾರವಾಗಿ ಕೊಡುವ ಅನ್ನದ ಉಂಡೆ. 7. ಒಬ್ಬ ಗಂಧರ್ವ. 8. ತುಚ್ಛ ಧಾನ್ಯ, ಜಳ್ಳು ಧಾನ್ಯ. "ಪುಲಕ: ಕೃಮಿಪ್ರಭೇದೇ ಪ್ರಸ್ತರಭೇದೇ ಚ ಮಣಿದೋಷೇ | ರೋಮಾಂಚೇ ಹರಿತಾಲೇ ಗಜಾನ್ಮಪಿಂಡೇ ಚ ಗಂಧವೇ" ಮೇದಿಂ |

**ಪುಲಕಿತ ಪುಲಕಿತ** (ವಿಂ) ರೋಮಾಂಚವುಂಟಾಗಿರುವ, ಮುಳ್ಳುಕೊಡಲಿದ್ದಿರುವ. "ಪುಲಕಿತವಪುಷಾಂ ಸವೇಪಥುನಾಂ ಧನರಸಭಾವಿತಘರ್ಮವಿಂದುಭಾಜಾಮ್" ಧಾದಂ ೨೪-೭೪ |

**ಪುಲಕಿನ್ ಪುಲಕಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಕದಂಬವೃಕ್ಷ. (ವಿಂ) 2. ರೋಮಾಂಚದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪುಲಕೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫) | "ಪುಲಕಿನಿ ಕುಚಕುಡ್ಮಲೇ ಪರಸ್ಯಾ:" ಧಾದಂ ೨೪-೫೧ |

**ಪುಲಸ್ತಿ ಪುಲಸ್ತಿ** (ಪುಂ) ಪುಲಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿ, ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಾನಸಪುತ್ರ.

**ಪುಲಸ್ತಯ ಪುಲಸ್ತಯ** (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮನ ಆರುಮಂದಿ ಮಾನಸ ಪುತ್ರರಲ್ಲೊಬ್ಬ ಮಹರ್ಷಿ. "ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಮಾನಸಾ: ಪುತ್ರಾ ವಿವಿಧಾ: ಷಷ್ಠಮಹರ್ಷಯ: | ಮರೀಚಿರಶ್ಯಙ್ಗಿರಸೀ ಪುಲಸ್ತಯ: ಪುಲಹ: ಕರು:" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೬-೧೦ | ಕರ್ಮಮ ಪ್ರಪಾಪತಿಯ ಪುತ್ರಿಯಾದ ಹವಿರ್ಭುಕ್ ಎಂಬುವಳು ಪುಲಸ್ತ್ಯ ಮಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿ. ಪುಲಸ್ತ್ಯ ಮಹರ್ಷಿಯ ಮತ್ತೊಬ್ಬ ಪತ್ನಿಯಾದ ಗೋ (ಇಲಬಿಲಾ) ಎಂಬುವವಳಲ್ಲಿ ವೈಶ್ರವಣ ನೆಂಬ ಪುತ್ರನು ಜನಿಸಿದನು. ಇವನೇ ಕುಬೇರ. ವೈಶ್ರವಣನು ತಂದೆಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬ್ರಹ್ಮನಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ ಸೇರಲು ಬ್ರಹ್ಮನು ಇವನಿಗೆ ಅಮರತ್ವ ಧನೇಶತ್ವ ಯೋಕ ಪಾಲತ್ವ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದನು. ಇದ ರಿಂದ ಕುಪಿತನಾದ ಪುಲಸ್ತ್ಯನು ಪ್ರತೀಕಾರಕ್ಕಾಗಿ ತನ್ನ ದೇಹದಿಂದ ಮತ್ತೊಂದು ದೇಹವನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದನು. ಅವನೇ ವಿಶ್ರವಸ್ಸು. ತಂದೆಯು ಕೋಪಗೊಂಡುದನ್ನು ತಿಳಿದ ಕುಬೇರನು ಅವನ ಅನುಗ್ರಹಕ್ಕಾಗಿ ಯತ್ನಿಸಿ ಮೂವರು ರಾಕ್ಷಸ ಸ್ತ್ರೀಯರನ್ನು ಅವನ ಶುಶ್ರೂಷೆಗಾಗಿ ಕಳುಹಿಸಿಕೊಟ್ಟನು. ಅವರು ವಿಶ್ರವಸ್ಸನ್ನು ನೃತ್ಯ ಗೀತೆಗಳಿಂದ ಸಂತೋಷಗೊಳಿಸುತ್ತಿರಲು ಅದರಿಂದ ಸುಪ್ರೀತ ನಾದ ವಿಶ್ರವಸ್ಸು ಅವರಿಗೆ ವರವನ್ನು ನೀಡಲು ಪುಷ್ಪೋತ್ಪಟೆಯೆಂಬುವವಳಲ್ಲಿ ರಾವಣ ಕುಂಭಕರ್ಣರೂ ಮಾಲಿನಿಯಲ್ಲಿ ವಿಭೀಷಣನೂ ರಾಕೆಯಲ್ಲಿ ಖರ ಮತ್ತು ಶೂರ್ಪಣಖೆಯೂ ಜನಿಸಿದರು. "ಪುಲಸ್ತಯಸ್ಯ ತು ಯ:



ಕ್ರೋಧಾತ್ ಅರ್ಧದೇಹೋಽಮವನ್ಮುನಿಃ। ವಿಶ್ವವಾ ನಾಮ ಸಕ್ರೋಧಃ ಸ  
ವೈಶ್ವವಣಮೇಷತಃ। ಬುಬುಧೇ ತಂ ತು ಸಕ್ರೋಧಂ ಪಿತರಂ ರಾಕ್ಷಸೇಶ್ವರಃ।  
ಕುಬೇರಸ್ತತ್ಪ್ರಸಾದಾರ್ಥಂ ಯತೇ ಸ್ಮ ಸದಾ ನೃಪಃ। ರಾಕ್ಷಸೀಃ ಪ್ರದದೌ  
ತಿಷ್ಠಃ ಪಿತುರ್ವೈ ಪರಿಚಾರಿಕಾಃ। ತಾಃ ಸದಾ ತಂ ಮಹಾತ್ಮಮಾಂ  
ಸಂತೋಷಯಿತುಮುಚ್ಛತಾಃ। ಋಷಿಃ ಮರತಶಾದ್ಲ ನೃತ್ಯಗೀತ-  
ವಿಶಾರದಾಃ। ಸ ತಾಸಾಂ ಮಗವಾಸ್ತುಷ್ಠೋ ಮಹಾತ್ಮಾ ಪ್ರದದೌ  
ವರಾನ್। ಪುಷ್ಪೋತ್ಕಟಾಃ ಜಜ್ಞಾತೇ ದ್ವೌ ಪುತ್ರೌ ರಾಕ್ಷಸೇಶ್ವರೌ।  
ಕುಂಭಕರ್ಣದಶಗ್ರೀವೌ ಬಲೇನಾಪ್ರತಿಮೌ ಭುವಿ। ಮಾಲಿನಿ ಜನಯಾ-  
ಮಾಸ ಪುತ್ರಮೇಕಂ ವಿಭೀಷಣಮ್। ರಾಕಾಃ ಮಿಥುನಂ ಜಜ್ಞೇ ಕರಃ  
ಶೂರ್ಪಣಖಾ ತಥಾ” ಮಾಂ ವನಂ ೨೭೬-೧-೮।

**ಪುಲಹ ಪುಲಹ (ಪುಂ)** ಬ್ರಹ್ಮನ ಆರು ಮಂದಿ ಮಾನವಪುತ್ರ  
ರಲ್ಲೊಬ್ಬ ಮಹರ್ಷಿ. “ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಮಾನಸಾಃ ಪುತ್ರಾ ವಿದಿತಾಃ  
ಷಷ್ಠಮಹರ್ಷಯಃ। ಮರೀಚಿರವ್ಯಜ್ಞಿರಸೌ ಪುಲಸ್ತಯಃ ಪುಲಹಃ ಕ್ರುತುಃ”  
ಮಾಂ ಆದಿಂ ೬೬-೧೦।

**ಪುಲಾಕ ಪುಲಾಕ (ಪುಂ)** 1. ಅನ್ನದ ಅಂಕು. ಪುಲ (ಮಹತ್ವೇ)  
“ವಿವ್” (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮)। ಪುಲಮಕತಿ — ಅಕ  
(ಕುಟಿಲಾಃ ಗತೌ) “ಅನ್” (೩-೨-೧)। ಪಾಲಯತಿ—ಪುಲ  
(ಮಹತ್ವೇ) + ಜಿಕ್ “ಆಕಃ” ನಿಪಾಂ (೩ಂ ೪-೧೪) ಇತಿ  
ವಾ। 2. ತುಚ್ಛ ಧಾನ್ಯ, ತಿರುಳಿಲ್ಲದ ಧಾನ್ಯ. “ಪುಲಾಕಾಶ್ಚೈವ  
ಘಾನ್ಯಾನಾಂ ಜಿರ್ಣಾಶ್ಚೈವ ಪರಿಚ್ಛದಾಃ” ಮನುಂ ೧೦-೧೨೦।  
3. ಸಂಕ್ಷೇಪ, ಸಂಗ್ರಹ. “ಪುಲಾಕಸ್ತುಚ್ಛಘಾನ್ಯೇ ಸ್ಯಾತ್  
ಸಂಕ್ಷೇಪೇ ಭಕ್ತಸಿಂಹಕೇ” ಮೇದಿಂ। “ಅವೇಮಿ ಹಂಸಾವಲಯೋ ವಲಕ್ಷಾ-  
ಸ್ವಿತ್ಕಾಂತಿಕೀರ್ತೇಶ್ವರಪಲಾಃ ಪುಲಾಕಾಃ” ನೈಷಂ ೮-೩೫।

**ಪುಲಾಯಿತ ಪುಲಾಯಿತ (ನಂ)** ಕುದುರೆಯ ನಾಗಾಲೋಟದ  
ಒಂದು ಭೇದ. ಪುಲ (ಮಹತ್ವೇ) “ಕೃಚ್” (೩-೧-೧೦)।  
“ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪)।

**ಪುಲಿನ ಪುಲಿನ (ನಂ)** 1. ಮರಳು. 2. ಹರಿಯುವ ನೀರು  
ಇಳಿದ ನಂತರ ಉಂಟಾದ ನದಿಯ ಅಂತ್ಯ ಪ್ರದೇಶ. ಪುಲ  
(ಮಹತ್ವೇ) “ಇನ್” (೩ಂ ೨-೩೫)। “ರಥಾತ್ಸ ಯನ್ತ್ರಾ  
ನಿಗೃಹಿತವಾಹಾತಾಂ ಭ್ರಾತೃಜಾಃ ಪುಲಿನೇಶ್ವತಾರ್ಯ” ರಘುಂ  
೧೪-೫೨। 3. ದ್ವೀಪ, ನೀರಿನಿಂದ ಆವೃತವಾದ ಪ್ರದೇಶ.

**ಪುಲಿಂದ ಪುಲಿಂದ (ಪುಂ)** 1. ಮ್ಲೇಚ್ಛಜಾತಿಯ ಒಂದು  
ಭೇದ. ಪುಲ (ಮಹತ್ವೇ) “ಕಿನ್ದಿಕ್” (೩ಂ ೪-೮೫)।  
2. ಮ್ಲೇಚ್ಛಜಾತಿಯವನು. “ವನ್ಯಃ ಪುಲಿಂದೇರಿವ ವಾನರೇಸ್ತಾಃ  
ವಿಲಕ್ಷ್ಯಂತಃ ಉಚಾನಲತಾ ಮದೀಯಾಃ” ರಘುಂ ೧೬-೧೯। (ಪುಂ  
ವಂ ವಂ) 3. ಪುಲಿಂದ ದೇಶ.

**ಪುಲೋಮಜಾ ಪುಲೋಮಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪುಲೋಮನೆಂಬ  
ದೈತನ ಮಗಳು ಶಚೀದೇವಿ. ಪುಲೋಮನು ಜಾಯತೆ — ಜನಿ

(ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) “ಓಃ” (೩-೨-೯೮)। ಪುಲೋಮನೆಂಬ  
ಮುನಿಯ ಪುತ್ರಿ ಶಚೀದೇವಿ. ಅಮರಸುಖಾ। “ಪುಲೋಮಜಾ-  
ಲೋಚನತೀಕ್ಷ್ಣಕಂಠಕೆಃ” ನೈಷಂ ೯-೫೩।

**ಪುಲೋಮಜಿತ್ ಪುಲೋಮಜಿತ್ (ಪುಂ)** ಪುಲೋಮ ದೈತ  
ನನ್ನು ಜಯಿಸಿದ ಇಂದ್ರ. ಪುಲೋಮನು ಜಯತಿ — ಜಿ (ಜಯೇ)  
“ವಿವ್” (೩-೨-೬೧)।

**ಪುಲೋಮನ್ ಪುಲೋಮನ್ (ಪುಂ)** 1. ಒಬ್ಬ ಮುಷಿ. ಈ  
ಮುಷಿಯು ಶಚೀದೇವಿಯ ತಂದೆಯೆಂದು ಕೆಲವರು.  
2. ಒಬ್ಬ ದಾನವ. ಈತನ ಮಗಳೇ ಶಚೀದೇವಿಯೆಂದು  
ಮತ್ತೆ ಕೆಲವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. 3. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. ಈತನು  
ಭೃಗುಮಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿ ಪುಲೋಮೆಯನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿ  
ದನು.

**ಪುಲೋಮಾ ಪುಲೋಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಭೃಗುಮಹರ್ಷಿಯ  
ಪತ್ನಿ. “ಭೃಗೋಃ ಸುದಯಿತಾ ಮಾಯಾ ಪುಲೋಮೇತ್ಯಮಿವಿಶ್ರುತಾ”  
ಮಾಂ ಆದಿಂ ೫-೧೩। 2. ಒಬ್ಬ ದೈತನ ಪತ್ನಿ. ಇವಳ  
ಮಕ್ಕಳು ಪುಲೋಮರು.

**ಪುಲಕಸ ಪುಲಕಸ (ಪುಂ)** ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ  
ಜನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು.

**ಪುಷಿತ ಪುಷಿತ (ವಿಂ)** 1. ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಾಕಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಪುಷ (ಪುಷ್ಠಿ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। 2. ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಬಲವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಶಕ್ತಿಯುತವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಬೆಳೆಸಲ್ಪಟ್ಟ, ದೊಡ್ಡ  
ದಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. (ನಂ) 5. ಪೋಷಿಸುವುದು, ಸಾಕು  
ವುದು. 6. ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವುದು, ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು. ಪುಷ  
ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪)।

**ಪುಷ್ಕರ ಪುಷ್ಕರ (ಪುಂ)** 1. ಪುಷ್ಕರ ದ್ವೀಪ. ಇದು ಸಪ್ತ  
ದ್ವೀಪಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಪುಷ (ಪುಷ್ಠಿ) “ಕರನ್” (೩ಂ ೪-೪)।  
“ಸ್ವಾದ್ದೇಕೇನೋದಧಿನಾ ಪುಷ್ಕರಃ ಪರಿಭಾವಿತಃ। ತಸ್ಮಿನ್  
ದ್ವೀಪೇ ಮಹಾವೃಕ್ಷೋ ನ್ಯಗ್ರೋಧೋಽಮರಪೂಜಿತಃ। ತಸ್ಮಿನ್ನಿವಸತಿ  
ಬ್ರಹ್ಮಾ ವಿಶ್ವಾತ್ಮಾ ವಿಶ್ವಭಾವನಃ” ಕೂಂಪುಂ। 2. ಪುಷ್ಕರ  
ದ್ವೀಪದ ರಾಜ. 3. ಪುಷ್ಕರ ದ್ವೀಪದ ರಾಜನ ರಥ.  
“ದ್ವೀಪೇ ಶುಭೇ ಪುಷ್ಕಜನೇಹಪೇತೇ ಉವಾಸ ರಾಜಾ ಸ ತು ಪುಷ್ಕರಸ್ಥಃ।  
ತೇನೈವ ನಾಮ್ನಾ ಸ ತು ಪುಷ್ಕರೋಽಪಿ ಸದೋಚ್ಯತೇ ದೇವಗಣೈಃ ಸಸಿದ್ಧೈಃ।  
ತೇನೈವ ಯಾನೇನ ತಥಾಂಬುಜೇನ ಬಭೂವ ನಾಮ್ನಾ ತಮಥಾಹ್ವಯಂತಿ”।  
ಅಗ್ನಿಪುಂ। 4. ಪುಷ್ಕರ ತೀರ್ಥ, ಒಂದು ಸರೋವರ.  
5. ಒಂದು ಮೇಘ. “ತದೀಯಾಸ್ತೋದೇಶ್ವರ ಪುಷ್ಕರಾವತಂಕಾದಿಭುಃ।  
ಅಭ್ಯಸ್ಯಂತಿ ತದಾಘಾತಂ ನಿಜಿತೇರಾವತಾ ಗಜಾಃ” ಕುಮಾಂ  
೨-೫೦। 6. ಕೂರಗ್ರಹಗಳ (ರವಿ, ಕುಜ ಮತ್ತೆ



ಶನ) ವಾರಗಳು ಭದ್ರಾ (ದ್ವಿತೀಯಾ ಸಪ್ತಮಿ ಮತ್ತು ದ್ವಾದಶೀ) ತಿಥಿಗಳು ಮತ್ತು ಭಗ್ನನಕ್ಷತ್ರಗಳು (ಕೃತ್ತಿಕಾ ಪುನರ್ವಸು ಉತ್ತರಾಷ್ಣಾ ನೀ ವಿಶಾಖಾ ಉತ್ತರಾಷಾಢಾ ಮತ್ತು ಪೂರ್ವಾಷಾಢಾ) ಇವುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ಅಶುಭಯೋಗ. 7. ಸಾರಸ ಪಕ್ಷಿ. 8. ಒಂದು ರೋಗ. 9. ನಳಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಸಹೋದರ. 10. ಪುಷ್ಕರದ್ವೀಪದ ಒಂದು ಪರ್ವತ. 11. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಸರ್ಪ. 12. ವರುಣನ ಪುತ್ರ. (ನಂ) 13. ಜಲ, ನೀರು. 14. ತಾವರೆ, ಕಮಲ, ಪದ್ಮ. "ವಿದಲಪುಷ್ಕರಾಕೀರ್ಣಿ: ಪತಂಜಲಕುಲಾ-ಕುಲಾ:" ಮಾಘಂ ೧೯-೨೭. 15. ಆನೆಯ ಸೊಂಡಿಲಿನ ತುದಿ. "ಆಲೋಲಪುಷ್ಕರಮುಖೋಲ್ಲಸಿತೇರಭೀಷಣಮುಕ್ತಾಂಬುರ-ಮಿತೋ ವಪುರ್ಮುಖೇ:" ಮಾಘಂ ೪-೩೦. 16. ಮೃದಂಗ ನಗಾರಿ ಮೊದಲಾದ ವಾದ್ಯಗಳ ಮುಖಭಾಗ. "ನದಾಕ್ಷಿ: ಸ್ನಿಗ್ಧಗಮ್ಮಿರಂ ತುರ್ಯೇರಾಹತಪುಷ್ಕರೇ:" ರವುಂ ೧೭-೧೧. 17. ಆಕಾಶ, ಅಂತರಿಕ್ಷ. 18. ಚಂಗಲುಕೋಷ್ಠ. 19. ಕತ್ತಿಯ ಅಲುಗು. "ಕ್ರೋಧೇನಾನ್ಧಾ: ಪ್ರಾವಿಶನ್ ಪುಷ್ಕರಾಣಿ" ಮಾಘಂ ೧೮-೧೭. 20. ಕತ್ತಿಯ ಒರೆ. 21. ಕಾಂಡ, ಮರದ ದೂಲ. 22. ನಕ್ಷತ್ರ. 23. ಯುದ್ಧ. 24. ಮದ, ಉನ್ಮಾದ. "ಪುಷ್ಕರಂ ಕ್ಷೇಮಪ್ರದಯೋ: ತುರ್ಯವಕ್ತ್ರೇ ಕ್ಷಣ್ಡಫಲೇ ಹಸ್ತಿಹಸ್ತಾಂಗ್ರಕಾಂಡಯೋ: ಕುಣ್ಡೋಷಧೇ ದ್ವೀಪತೀರ್ಥಭೇದಯೋಶ್ಚ ನಪುಂಸಕಮ್ | ನಾ ರೋಗನಾಗವಿಹಗನುಪಭೇದೇ ವಾರುಣೌ" ಮೇದಿಂ | "ಪುಷ್ಕರಮಮ್ಬುನಿ ಕ್ಷೇ ಭೇ ಯುಧಿ ವಾಚಮುಕ್ತೇ ಮದೇಽಸಿಧಾರಾಯಾಮ್ | ದ್ವೀಪೇ ಭೇಷಜಭೇದೇ ಸಾರಸತೀರ್ಥಾಹಿಕರೀಕರಾಗ್ರೇಷು" ನಾನಾರ್ಥರಂ |

ಪುಷ್ಕರತೀರ್ಥ ಪುಷ್ಕರತೀರ್ಥ (ನಂ) ಒಂದು ಪುಣ್ಯತೀರ್ಥ, ಒಂದು ಯಾತ್ರಾಸ್ಥಳ.

ಪುಷ್ಕರನಾಭ ಪುಷ್ಕರನಾಭ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಪುಷ್ಕರಂ ಪದ್ಮ ನಾಭೌ ಯಸ್ಯ |

ಪುಷ್ಕರಮಾಲಿನ್ ಪುಷ್ಕರಮಾಲಿನ್ (ವಿಂ) ಕಮಲಮಾಲೆ ಯನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ.

ಪುಷ್ಕರಮೂಲ ಪುಷ್ಕರಮೂಲ (ನಂ) ಚಂಗಲುಕೋಷ್ಠದ ಬೇರು.

ಪುಷ್ಕರಾಕ್ಷ ಪುಷ್ಕರಾಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಪುಷ್ಕರೇ ಇವ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯ "ಅಕ್ಷ" (೪-೪-೭೬) | "ಸತಾಂ ಪ್ರಸಾದವರ್ಷೇಣ ಪೋಷಕೇ ಯಸ್ಯ ಚಾಕ್ಷಿಣಿ | ಪುಷ್ಕರಾಕ್ಷ: ಸ ವಿಜ್ಞೇಯ:" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ: | "ಪುಷ್ಕರಾಕ್ಷೋ ಮಹಾಮನಾ:" ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ಕಮಲದಂತೆ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ.

ಪುಷ್ಕರಾಶ್ಯ ಪುಷ್ಕರಾಶ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಸಾರಸಪಕ್ಷಿ. 2. ಚಂಗಲು ಕೋಷ್ಠ. ಪುಷ್ಕರಾಶ್ಯಾ ಯಸ್ಯ |

ಪುಷ್ಕರಾವರ್ತಕ ಪುಷ್ಕರಾವರ್ತಕ (ಪುಂ) ಒಂದು ಮೋಘ. ಪುಷ್ಕರಂ ಜಲಂ ಆವರ್ತಯತಿ - ಆ + ವೃತು + ಣಿಕ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |

ಪುಷ್ಕರಾಕ್ಷ ಪುಷ್ಕರಾಕ್ಷ (ಪುಂ) ಸಾರಸ ಪಕ್ಷಿ, ನೀರುಹಕ್ಕಿ. ಪುಷ್ಕರಾಶ್ಯಾ ಯಸ್ಯ |

ಪುಷ್ಕರಿಣಿ ಪುಷ್ಕರಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸರಸ್ಸು, ಕೊಳ. ಪುಷ್ಕರಾಣಿ ಪದ್ಮಾನಿ ಸಂತ್ಯಸ್ಯಾಮ್ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೩೪) | 2. ನೆಲತಾವರೆ. 3. ಚಂಗಲುಕೋಷ್ಠದ ಬೇರು. ಪುಷ್ಕರ-ವದಾಕ್ಷತಿರಸ್ಯಾ: - ಪುಷ್ಕರ "ಇನಿ:" | "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪) | 4. ಹೆಣ್ಣು ಆನೆ. ಪುಷ್ಕರಂ ಸ್ತುಷ್ಠಾದೃಢ: ಅಸ್ಯಸ್ಯಾ: "ಇನಿ:" | "ಡೀಪ್" | 5. ತಾವರೆಯ ಬಳ್ಳಿ. 6. ಚಾಕ್ಷುಷಮನುವಿನ ಪತ್ನಿ.

ಪುಷ್ಕರಿನ್ ಪುಷ್ಕರಿನ್ (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. ಪುಷ್ಕರಂ ಸ್ತುಷ್ಠಾಘ-ಮಸ್ಯಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೩೪) |

ಪುಷ್ಕಲ ಪುಷ್ಕಲ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯಮಂಡದ ಭರತನ ಮಗ. "ಸ ತಕ್ಷಪುಷ್ಕಲೋ ಪುತ್ರೋ ರಾಜಧಾನ್ಯೋಸ್ತದಾಶ್ಯಯೋ: | ಅಮಿ-ಶಿಚ್ಯಾಮಿಷೇಕಾಹ್ನೋ ರಾಮಾಂತಿಕಮಗಾತ್ಯುನ:" ರವುಂ ೧೪-೮೯ | (ನಂ) 2. ನಾಲ್ಕು ಗ್ರಾಸ (ಕಬಳ)ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಭಕ್ಷಿ. 3. ಎಂಟು ಕುಂಚಿಗಳ ಅಳತೆ.

ಎಂಟು ಮುಷ್ಟಿ (ಹಿಡಿ)ಗಳು .. 1 ಕುಂಚಿ

ಎಂಟು ಕುಂಚಿಗಳು .. 1 ಪುಷ್ಕಲ

4. ಭರತನ ಮಗನಾದ ಪುಷ್ಕಲನ ರಾಜಧಾನಿ. (ವಿಂ) 5. ಹೇರಳವಾದ, ಸಮೃದ್ಧವಾದ. ಪುಷ (ಪುಷ್ಕಲ) "ಕಲ:" (೩ಂ ೪-೪) | "ಉದರಂತಿ ಪ್ರಜಾ: ಸರ್ವಾಸ್ತಪ ಆಸ್ಥಾಯ ಪುಷ್ಕಲಮ್" ಭಾಂ | "ಪುಷ್ಕಲಾಭಿರಪಿ ಪುಷ್ಪವೃಷ್ಟಿಮಿ:" ಯಾದಂ ೧೭-೩ | 6. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ.

ಪುಷ್ಕಲಕ ಪುಷ್ಕಲಕ (ಪುಂ) 1. ಕಸ್ತೂರಿಮೃಗ. 2. ಕ್ಷಮಣಕ, ಜೈನಭಿಕ್ಷು. 3. ಮರದ ಅಥವಾ ರೋಹದ ಬೆಣೆ.

ಪುಷ್ಕ ಪುಷ್ಕ (ವಿಂ) 1. ಸಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪುಷ (ಪುಷ್ಕಲ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ಯದಾ ಮನ್ಯೇತ ಭಾವೇನ ಹೃಷ್ಠಂ ಪುಷ್ಠಂ ಬಲಂ ಸ್ವಕಮ್ | ಪರಸ್ಯ ವಿಪರೀತಶ್ಚ ತದಾ ಯಾದ್ರಿಪುಂ ಪ್ರತಿ" ಮನುಂ ೭-೧೭೧ | 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವ, ಬಲಶಾಲಿಯಾದ. 3. ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ, ಸಮಗ್ರವಾದ, ಕೊರತೆಯಿಲ್ಲದ. ಪುಷ ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | (ಪುಂ) 4. ವಿಷ್ಣು. (ನಂ) 5. ಪುಷ್ಟಿ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆಯುವಿಕೆ. ಪುಷ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) |

ಪುಷ್ಕಿ ಪುಷ್ಕಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೋಷಣೆ, ಸಾಕುವುದು. ಪುಷ (ಪುಷ್ಕಲ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೧೪) | 2. ಅಭಿವೃದ್ಧಿಹೊಂದು



ವುದು, ಬೆಳೆಯುವುದು. ಪುಷ ಕರಂ "ಕ್ರಿಚ್"। "ಪುಷ್ಪಿ  
ಜನಾಃ ಪುಷ್ಯ ಇವ ದ್ವಿತೀಯೇ" ರಘುಂ ೧೮-೩೨। 3. ಧರ್ಮ  
ಪುರುಷನ ಪತ್ನಿ. "ನಾಮತೋ ಧರ್ಮಪತ್ನಯಸ್ತಾಃ ಕೀರ್ತಯಂತಾ  
ನಿಬೋಧ ಮೇ। ಕೀರ್ತಿಸಂಮಿಥಿತೀರ್ಥಾ ಪುಷ್ಪಿಃ ಶ್ರದ್ಧಾ ಕ್ರಿಯಾ ತಥಾ"  
ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೭-೧೪। 4. ಗಣಪತಿಯ ಪತ್ನಿ. "ಪುಷ್ಪಿ-  
ಗಣಪತೇಃ ಪತ್ನಿ ಪೂಜಿತಾ ಜಗತೀತಲೇ"। 5. ಅಶ್ವಗಂಧಾ ಗಿಡ.  
ಪುಷ್ಪಿಕಾ ಪುಷ್ಪಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಪ್ಪೆಚಿಪ್ಪು. ಪುಷ್ಪಿಕಂ ಕಂ ಜಲ  
ಯಸ್ಯಾಃ।

ಪುಷ್ಪಿಕಾಂತ ಪುಷ್ಪಿಕಾಂತ (ಪುಂ) ಗಣಪತಿ. ಪುಷ್ಪಿಯ ಪತಿ.  
ಪುಷ್ಪಿಃ ಕಾಂತಃ।

ಪುಷ್ಪಿದಾ ಪುಷ್ಪಿದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಶ್ವಗಂಧಾ. ಪುಷ್ಪಿ  
ದದಾತಿ - ಡುಬಾ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)। (ವಿಂ)  
2. ದೇಹಕ್ಕೆ ಪುಷ್ಪಿಯುಂಟುಮಾಡುವ.

ಪುಷ್ಪತ್ ಪುಷ್ಪತ್ (ವಿಂ) ಸಾಕುತ್ತಿರುವ. ಸಲಹುತ್ತಿರುವ.  
ಪುಷ (ಪುಷ್ಪಿ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೬)। -ತೀ -ತೀ.

ಪುಷ್ಪ ಪುಷ್ಪ (ನಂ) 1. ಪುಷ್ಪ. ಹೂವು. ಪುಷ್ಯತಿ - ಪುಷ್ಪ  
(ವಿಕಸನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಪುಷ್ಪಂ ಪ್ರವಾಲೋಪ-  
ಹಿತಂ ಯದಿ ಸ್ಯಾತ್ ಮುಕ್ತಾಫಲಂ ವಾ ಯದಿ ವಿಹ್ರಮಸ್ಯಮ್"  
ಕುಮಾಂ ೧-೪೪। 2. ಹೆಂಗಸರ ರಜಸ್ಸು. ಪುಷ್ಯತೇ - ಪುಷ್ಪ  
ಕರ್ಮಂ "ಘಬ್" (೩-೩-೧೯)। 3. ವಿಕಾಸ, ಅರಳುವಿಕೆ.  
4. ಕುಬೇರನ (ಪುಷ್ಪಕ) ವಿಮಾನ. 5. ಒಂದು ವಿಧ ನೇತ್ರ  
ರೋಗ. "ಪುಷ್ಪಂ ವಿಕಾಸ ಆರ್ದ್ರೇ। ಧನದಸ್ಯ ವಿಮಾನಿ  
ಚ ಕುಸುಮೇ ನೇತ್ರಜ್ಯಪಿ" ಹೇಮಂ। (ಪುಂ) 6. ವಿಕಾಸ.  
7. ಪ್ರಕಾಶ. ಪುಷ್ಪ (ವಿಕಸನೆ) "ಘಬ್" (೩-೩-೧೮)।

ಪುಷ್ಪಕ ಪುಷ್ಪಕ (ನಂ) 1. ಕುಬೇರನ ವಿಮಾನ. ಪುಷ್ಯತಿ -  
ಪುಷ್ಪ (ವಿಕಸನೆ) "ಕಬುನ್" (೩ಂ ೨-೩೨)। ಶಬ್ದಾರ್ಥವ  
ದಲ್ಲಿ "ವಿಮಾನಂ ಪುಷ್ಪಕೋಸ್ತ್ರೀ" ಎಂದಿರುವುದರಿಂದ ಪುಷ್ಪಿಂ  
ದಲ್ಲೂ ಪ್ರಯೋಗವುಂಟು. "ವೈಮಾನಿಕಾಃ ಪುಷ್ಪಕತಸ್ತಜಂತು  
ಮಹತಾಂ ಪಥಿ। ಪುಷ್ಪಕಾಲೋಕಸಂಕ್ಷೋಭಂ ಮೇಧಾವರಣತತ್ಪರಾಃ"  
ರಘುಂ ೧೦-೪೬। 2. ಪುಷ್ಪ. ಹೂವು. ಪುಷ್ಪ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"।  
3. ವಿಷವಿಲ್ಲದ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹಾವು. 4. ಹಿತ್ತಾಳೆ.  
5. ಒಂದು ವಿಧ ನೇತ್ರರೋಗ. 6. ರಸಾಂಜನ.  
7. ಕುಸುಮಾಂಜನ, ನೇತ್ರಪುಷ್ಪ (ಕಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯುವ  
ಹೂ) ವನ್ನು ಕರಗಿಸುವ ಒಂದು ಅಂಜನ. 8. ರತ್ನಖಚಿತ  
ವಾದ ಬಳೆ. 9. ಮಣ್ಣಿನ ಅಗ್ನಿಷ್ಠಿಕೆ.

ಪುಷ್ಪಕರಣಕ ಪುಷ್ಪಕರಣಕ (ನಂ) 1. ಪುಷ್ಪದ ಪಾತ್ರೆ,  
ಹೂವಿನ ಬುಟ್ಟಿ. ಪುಷ್ಪಸ್ಯ ಕರಣಕಮ್। 2. ಅವಂತಿ

ದೇಶದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಪುಷ್ಪೋದ್ಯಾನ. "ಮಹಾಕಾಲಸ್ಯೋ-  
ಜ್ಜಯಿನಿ ವಿಶಾಲಾಜ್ವಂತಿಕಾ ತಥಾ। ತಸ್ಯೋದ್ಯಾನಂ ತು ವಿಜ್ಞೇಯಂ  
ನಾಮ್ನಾ ಪುಷ್ಪಕರಣಕಮ್"।

ಪುಷ್ಪಕರಣಿಕಾ ಪುಷ್ಪಕರಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಜ್ಜಯಿನೀ  
ನಗರ.

ಪುಷ್ಪಕಾಲ ಪುಷ್ಪಕಾಲ, -ಸಮಯ -ಸಮಯ (ಪುಂ) 1.  
ವಸಂತ ಋತು, ಪುಷ್ಪಪ್ರಚುರವಾದ ಕಾಲ. 2. ಹೆಂಗಸರು  
ಋತುಮತಿಯರಾಗುವ ಕಾಲ.

ಪುಷ್ಪಕಾಸೀಸ ಪುಷ್ಪಕಾಸೀಸ (ನಂ) ಗಂಧಕಾಮ್ನ ಲವಣ.

ಪುಷ್ಪಕೋಟ ಪುಷ್ಪಕೋಟಿ (ಪುಂ) 1. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಪುಷ್ಪ-  
ಪ್ರಿಯಃ ಕೋಟಃ। "ಇಂದಿನದಿರಃ ಪುಷ್ಪಕೋಟೋ ಮಧುರೋ ಮಧುಕೇಶವಃ"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 2. ಹೂವಿನೊಳಗಿರುವ ಹುಳ.

ಪುಷ್ಪಕೇತನ ಪುಷ್ಪಕೇತನ, -ಕೇತು -ಕೇತು (ಪುಂ) ಕಾಮ  
ದೇವ, ಮನ್ಮಥ.

ಪುಷ್ಪಚಾಪ ಪುಷ್ಪಚಾಪ (ಪುಂ) 1. ಕಾಮದೇವ, ಮನ್ಮಥ.  
ಪುಷ್ಪಂ ಚಾಪೋ ಯಸ್ಯ। "ಜಿತೇಂದ್ರಿಯೇ ಶೂಲಿನಿ ಪುಷ್ಪಚಾಪಃ  
ಸ್ವಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ ಪುನರಾಶಂಸೇ" ಕುಮಾಂ ೩-೪೭। 2. ಪುಷ್ಪ  
ರೂಪವಾದ ಧನುಸ್ಸು. "ಶೈಲಸಾರಮಪಿ ನಾತಿಯತ್ತನತ  
ಪುಷ್ಪಚಾಪಮಿವ ಪೇಶಲಂ ಸ್ಮರಃ" ರಘುಂ ೧೧-೪೫।

ಪುಷ್ಪಚಾಮರ ಪುಷ್ಪಚಾಮರ (ಪುಂ) 1. ತಾಳೆಗಿಡ, ಕೇತಕ  
ವೃಕ್ಷ. 2. ಮದನವೃಕ್ಷ, ಮಂಗಾರಿ ಗಿಡ, 3. ಬೆತ್ತ.

ಪುಷ್ಪದಂತ ಪುಷ್ಪದಂತ (ಪುಂ) 1. ವಾಯುದಿಕ್ಕಿನ ದಿಗ್ಗಜ.  
ಪುಷ್ಪಮಿವ ಶುಕ್ಲೋ ದಂತೋಽಸ್ಯ। 2. ಒಬ್ಬ ವಿದ್ಯಾಧರ.  
3. ಒಂದು ಅನೇ. 4. ಪಣ್ಣುಖಿನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ.  
5. ಒಬ್ಬ ಜನ.

ಪುಷ್ಪದ್ರವ ಪುಷ್ಪದ್ರವ (ಪುಂ) 1. ಮಕರಂದ, ಪುಷ್ಪರಸ.  
2. ಪುಷ್ಪವನ್ನು ಊರುಹಾಕಿ ತೆಗೆದ ಕಷಾಯ.

ಪುಷ್ಪದ್ರ ಪುಷ್ಪದ್ರ, -ದ್ರುಮ -ದ್ರುಮ (ಪುಂ) ಹೂವಿನ ಗಿಡ.

ಪುಷ್ಪಧನುಸ್ ಪುಷ್ಪಧನುಸ್ (ಪುಂ) 1. ಕಾಮದೇವ, ಮನ್ಮಥ.  
ಪುಷ್ಪಂ ಧನುರಸ್ಯ। ಸಂಜಾಯಾಮ್ ಅನಹಃ ವೈಕಲ್ಪಿಕತ್ವಾತ್ ನ ಅನಹಃ  
(೪-೪-೧೩೩)। "ದ್ರುತಮೇತಸ್ಯ ಪುಷ್ಪಧನುಷೋ ಧನುಃ ಕುಮುದೇ-  
ಜ್ಞನಾಮನಸಿ ಚಾವಸರಮ್" ಮಾಘಂ ೯-೪೧। 2. ಮನ್ಮಥನ  
ಬಿಲ್ಲು.

ಪುಷ್ಪಧನವನ್ ಪುಷ್ಪಧನವನ್ (ಪುಂ) ಪುಷ್ಪವೇ ಧನುಸ್ಸಾಗಿರುವ  
ಮನ್ಮಥ. ಪುಷ್ಪಂ ಧನುರಸ್ಯ "ಅನಹಃ" (೪-೪-೧೩೩)।  
"ಸಂಮೋಹನಂ ನಾಮ ಚ ಪುಷ್ಪಧನವಾ ಧನುಷ್ಯಮೋಘಂ ಸಮಧತ್ತ ವಾಣಮ್"  
ಕುಮಾಂ ೩-೬೬।



ಪುಷ್ಪನಿಷ ಪುಷ್ಪನಿಷ್ಠ (ಪುಂ) ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಪುಷ್ಪ  
ನಿಷ್ಠಾತಿ — ನಿಷ್ಠಾ "ಅನ್" (೩-೨-೧) ।

ಪುಷ್ಪನಿರ್ಯಾಸ ಪುಷ್ಪನಿರ್ಯಾಸ (ಪುಂ) ಮಕರಂದ, ಪುಷ್ಪರಸ.  
ಪುಷ್ಪಸ್ಯ ನಿರ್ಯಾಸಃ ।

ಪುಷ್ಪಧಯ ಪುಷ್ಪಧಯ (ಪುಂ) 1. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ.  
ಪುಷ್ಪಂ ಧಯತಿ — ಧೇ (ಪಾನೇ) "ಋಷ್" । ಮುಗಮಃ  
(೬-೩-೬೭) । (ವಿಂ) 2. ಪುಷ್ಪರಸವನ್ನು ಕುಡಿಯು  
ವವನು.

ಪುಷ್ಪಪುರ ಪುಷ್ಪಪುರ (ನಂ) ಪಾಟಲಿಪುತ್ರ ನಗರ, ಕುಸುಮ  
ಪುರ. ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಇದು ಪಾಟಲಿಪುತ್ರ ನಗರದ ಒಂದು  
ಭಾಗದ ಹೆಸರಾಗಿದ್ದಿತು. ಇದು ರಾಜಧಾನಿಯಾದ ಕಾಲ  
ದಿಂದ ಕಾಲಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಸಂಪೂರ್ಣನಗರವೂ ಪುಷ್ಪಪುರಮ್  
ಕುಸುಮಪುರಮ್ ಎಂಬ ಹೆಸರನ್ನು ಪಡೆದು ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಪಡೆಯಿತು.

ಪುಷ್ಪಪ್ರಚಯ ಪುಷ್ಪಪ್ರಚಯ (ಪುಂ) 1. ಕಳ್ಳತನದಿಂದ  
ಹೂವನ್ನು ಬಿಡಿಸುವುದು. ಪುಷ್ಪಾಣಾಂ ಪ್ರಚಯಃ । ಪುಷ್ಪಪ್ರಚಯಂ  
ಚೌರ್ಯೇಣ । 2. ಮರದ ಮೇಲೆ ಹತ್ತಿ ಹೂವನ್ನು ಬಿಡಿಸು  
ವುದು. 3. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ನಿಂತು ಕೋಲು ಮೊದಲಾದುವು  
ಗಳಿಂದ ಗಿಡದ ಹೂವನ್ನು ಬಿಡಿಸುವುದು. ಭೂಮಿ ಸ್ಥಿತವಾ  
ವೃಕ್ಷಾಗ್ರಸ್ಥಾನಾಂ ಪುಷ್ಪಾಣಾಂ ಪಟಚಾ ಪ್ರಚಯಂ ಕರೋತಿ ।

ಪುಷ್ಪಪ್ರಚಾಯ ಪುಷ್ಪಪ್ರಚಾಯ (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ನಿಂತು  
ಕೈಯಿಂದ ಗಿಡದ ಹೂವನ್ನು ಬಿಡಿಸುವುದು. ಪುಷ್ಪಾಣಾಂ  
ಪ್ರಚಾಯಃ — ಪ್ರ + ಚಿನ್ (ಚಯೇ) (ಹಸ್ತಾದಾನೇ) "ಛನ್"  
(೩-೩-೪೦) ।

ಪುಷ್ಪಪ್ರಚಾಯಿಕಾ ಪುಷ್ಪಪ್ರಚಾಯಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕ್ರಮ  
ವಾಗಿ ಪುಷ್ಪವನ್ನು ಬಿಡಿಸುವುದು, ಗಿಡದಿಂದ ಒಂದಾದ  
ಮೇಲೊಂದು ಹೂವನ್ನು ಬಿಡಿಸುವುದು. ಪುಷ್ಪ + ಪ್ರ + ಚಿನ್  
(ಚಯೇ) ಪಯಿ "ಞ್" (೩-೩-೧೧೧) ।

ಪುಷ್ಪಫಲ ಪುಷ್ಪಫಲ (ಪುಂ) 1. ಕಪಿತ್ಥ ವೃಕ್ಷ, ಬೇಲದ ಮರ.  
ಪುಷ್ಪಯುಕ್ತಂ ಫಲಮಸ್ಯ । 2. ಕೊಪ್ಪಾಂಡ, ಕುಂಬಳ ಗಿಡ.

ಪುಷ್ಪಬಾಣ ಪುಷ್ಪಬಾಣ (ಪುಂ) ಕಾಮದೇವ, ಪುಷ್ಪವೇ ಬಾಣ  
ವಾಗಿ ಉಳ್ಳ ಮನ್ಮಥ.

ಪುಷ್ಪಮಾಲಾ ಪುಷ್ಪಮಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೂವಿನ ಮಾಲೆ.

ಪುಷ್ಪಮಾಸ ಪುಷ್ಪಮಾಸ (ಪುಂ) 1. ಚೈತ್ರಮಾಸ. ಪುಷ್ಪಪ್ರಧಾನೋ  
ಮಾಸಃ । 2. ವಸಂತ ಸಮಯ, ವಸಂತ ಋತು.

ಪುಷ್ಪರಜಸ್ ಪುಷ್ಪರಜಸ್ (ನಂ) ಮಕರಂದ, ಹೂವಿನ  
ಧೂಳು.

ಪುಷ್ಪರಥ ಪುಷ್ಪರಥ (ಪುಂ) ಪುಷ್ಪದಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ರಥ,  
ಹೂವಿನಿಂದ ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ರಥ. ಪುಷ್ಪನಿರ್ಮಿತೋ ರಥಃ ।

ಪುಷ್ಪರಾಗ ಪುಷ್ಪರಾಗ (ಪುಂ) ಪುಷ್ಪರಾಗ ಮಣಿ. ಪುಷ್ಪಸ್ಯೇವ  
ರಾಗೋ ವರ್ಣೋ यस್ಯ । "ತಸ್ಯ ಬ್ರಹ್ಮಾ ನಿಜಿತಪುಷ್ಪರಾಗಂ ಪೌಷ್ಪಾಂ  
ತಿಥೌ ಪುಷ್ಪಮಸೂತ ಪತ್ನೀ" ರಘುಂ ೧೮-೩೨ । -ರಾಜಃ -ರಾಜಃ  
ಪುಷ್ಪಮಿವ ರಾಜತೇ-ರಾಜ (ದೀಪ್ತೋ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।

ಪುಷ್ಪರೇಣು ಪುಷ್ಪರೇಣು (ಪುಂ) ಪುಷ್ಪದ ಧೂಳು, ಮಕರಂದ.  
ಪುಷ್ಪಸ್ಯ ರೇಣುಃ । "ಸೇವ್ಯಮಾನಿ ಸುಖಸ್ಪರ್ಶಃ ಸಾಲನಿರ್ಯಾಸ-  
ಗಂಧಿಮಿಃ । ಪುಷ್ಪರೇಣುತ್ಕಿರೇವತಿರಾಧುತವನರಾಜಿಮಿಃ" ರಘುಂ  
೧-೩೮ ।

ಪುಷ್ಪಲಾವ ಪುಷ್ಪಲಾವ (ಪುಂ) ಹೂವಾಡಿಗ, ಮಾಲೆಯನ್ನು  
ರಚಿಸಲು ಹೂವನ್ನು ಬಿಡಿಸುವವನು. ಪುಷ್ಪಾಣಿ ಲುನಾತಿ-  
ಲೂ (ಛೇದನೇ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್"  
(೪-೧-೧೫) । -ಲಾವಿ -ಲಾವೀ. ಹೂವಾಡಿಗನ ಹೆಂಡತಿ.  
"ಗಂಧಸ್ವೇದಾಪನಯನರೂಪಾಂತರಕರ್ಣೋತ್ಪಲಾನಾಂ ಚಾಯಾದಾನಾ-  
ಕ್ಷಣಪರಿಚಿತಃ ಪುಷ್ಪಲಾವಿಮುಖಾನಾಮ್" ಮೇಘಂ ೧-೨೬ ।

ಪುಷ್ಪಲಾವಿನ್ ಪುಷ್ಪಲಾವಿನ್ (ಪುಂ) ಮಾಲಾಕಾರ,  
ಹೂವಾಡಿಗ, ಮಾಲೆಯನ್ನು ರಚಿಸಲು ಹೂವನ್ನು ಬಿಡಿಸು  
ವವನು. ಪುಷ್ಪಾಣಿ ಲುನಾತಿ - ಲೂ (ಛೇದನೇ) "ಗಿಮಿಃ"  
(೩-೨-೭೮) ।

ಪುಷ್ಪಲಿಹ ಪುಷ್ಪಲಿಹ (ಪುಂ) ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಪುಷ್ಪ  
ಲೇಹಿ — ಲಿಹ (ಅಸ್ವಾದನೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬) ।

ಪುಷ್ಪವತೀ ಪುಷ್ಪವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಷ್ಪವತಿಯಾದ ಹೆಂಸು,  
ಮತುಮತಿಯಾದ ಕನ್ಯೆ. ಪುಷ್ಪಂ ರಜೋಽಸ್ಯಸ್ಯಾಃ "ಮತುಪ್"  
(೫-೨-೯೪) । "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) ।

ಪುಷ್ಪವಂತಿ ಪುಷ್ಪವಂತಿ (ಪುಂ ದ್ವಿವಂ) ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರು.  
ಪುಷ್ಪೋ ವಿಕಾಸಃ ಪ್ರಕಾಶಶ್ಚ ಅನಯೋರಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪) ।  
ಪುಷ್ಪವಂತಿ ಪುಷ್ಪವದ್ಭೃತ್ಯಾಂ ಪುಷ್ಪವತೋಃ । ಈ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಅಕಾ  
ರಾಂತ ಪುಷ್ಪವಂತ ಶಬ್ದವೂ ಉಂಟು. ಅವ (ರಕ್ಷಣೇ)  
"ಜಾಚ್" (೩ಂ ೩-೧೨೬) । ಖೋಜ್ತಃ (೭-೧-೩) ಪುಷ್ಪ-  
ಸ್ಯಾವಂತಿ, ಶಕಂ । ಪುಷ್ಪವಂತಿ ಪುಷ್ಪವಂತಾಭ್ಯಾಂ ಪುಷ್ಪವಂತಯೋಃ  
ಇತ್ಯಾದಿ ರೂಪಗಳು. "ರವಿಶಶಿನಿ ಪುಷ್ಪವಂತಾಭ್ಯಾಂ"  
ನಾಮಮಾಲಾ ।

ಪುಷ್ಪವರ್ಷ ಪುಷ್ಪವರ್ಷ (ಪುಂ) ಹೂವಿನ ಮಳೆ. ಪುಷ್ಪಾಣಾಂ  
ವರ್ಷಮ್ । "ವೃಷ್ಟಿವರ್ಷಮ್" ಅಮಂ । "ಸುರಸಿ ಸುರವಿಸುಕ್ತಂ  
ಪುಷ್ಪವರ್ಷಂ ಪಪಾತ" ರಘುಂ ೧೨-೧೦೨ । "ವರ್ಷಾಽಸ್ಮಿ ಭಾರತಾದೀ  
ಚ ಜಮ್ಬೂದ್ವೀಪಾದ್ವೃಷ್ಟಿಷು" ಮೇದಿಂ । ಅದುದರಿಂದ "ವರ್ಷ"  
ಶಬ್ದವು ಪುನಃಪುನಃಕಲಿಂಗ.

ಪುಷ್ಪವೃಷ್ಟಿ ಪುಷ್ಪವೃಷ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೂವಿನ ಮಳೆ, ಹೂವನ್ನು  
ಮೇಲಿನಿಂದ ಸುರಿಯುವುದು. ಪುಷ್ಪಾಣಾಂ ವೃಷ್ಟಿಃ । "ಪರಸ್ಪರ-



ಶರವಾತಾ: ಪುಷ್ಪವೃಷ್ಟಿ ನ ಸೇಹಿರೆ" ರಘುಂ ೧೨-೧೪. ಲೋಕ ಹಿತಾರ್ಥ ಸಾಹಸ ತೋರಿ ಮಹೋಪಕಾರ ಮಾಡಿದ ರಾಜರ ಮೇಲೆ ಅಥವಾ ಉತ್ಸವಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಂಗಳಾರ್ಥ ಹೂವಿನ ಮಳೆಯನ್ನು ಕರೆಯುವುದುಂಟು.

ಪುಷ್ಪವಾಟಿ ಪುಷ್ಪವಾಟೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಷ್ಪೋದ್ಯಾನ, ಹೂವಿನ ತೋಟ. ಪುಷ್ಪಾಣಾಂ ವಾಟಿ.

ಪುಷ್ಪಶಕಟಿ ಪುಷ್ಪಶಕಟೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಕಾಶವಾಣಿ.

ಪುಷ್ಪಶರ ಪುಷ್ಪಶರ (ಪುಂ) ಪುಷ್ಪವೇ ಬಾಣವಾಗಿ ಉಳ್ಳ ಮನ್ಮಥ. ಪುಷ್ಪಂ ಶರೋಽಸ್ಯ.

ಪುಷ್ಪಶರಾಸನ ಪುಷ್ಪಶರಾಸನ (ಪುಂ) ಪುಷ್ಪವೇ ಧನುಸ್ಸಾಗಿ ಉಳ್ಳ ಮನ್ಮಥ. ಪುಷ್ಪಮಯಂ ಶರಾಸನಂ ಯಸ್ಯ.

ಪುಷ್ಪಸಮಯ ಪುಷ್ಪಸಮಯ (ಪುಂ) ವಸಂತಕಾಲ, ವಸಂತ ಋತು.

ಪುಷ್ಪಸಾರ ಪುಷ್ಪಸಾರ (ಪುಂ) ಪುಷ್ಪರಸ.

ಪುಷ್ಪಹಾಸ ಪುಷ್ಪಹಾಸ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಸಾಯಂ ಪುಷ್ಪಸ್ಯೇವ ಹಾಸ: ಭೋಗ್ಯತೋಲ್ಲಾಸೋಽಸ್ಯ. "ಸ್ವಾತ್ಮಾನುಭವಶಕ್ತಿನಾಂ ಸಾಯಂ ಪುಷ್ಪವದಸ್ಯ ವೇ. ಹಾಸೋಽಸ್ತಿ ಭೋಗ್ಯತೋಲ್ಲಾಸ: ಪುಷ್ಪಹಾಸ ಇತಿ ಸ್ಮೃತ: " ಇತಿ ನಿಸ್ಕೃತಿ: 1. "ಪುಷ್ಪಹಾಸ: ಪ್ರಜಾಗರ:" ವಿಂ ಸಂ. 2. ಪುಷ್ಪವು ವಿಕಾಸಹೊಂದುವುದು, ಹೂವು ಅರಳುವುದು. (ಸ್ತ್ರೀಂ)-ಹಾಸಾ-ಹಾಸಾ. 3. ಋತುಮತಿ ಯಾದ ಹೆಂಗಸು, ರಜಸ್ವಲೆ. ಪುಷ್ಪಂ ಹಾಸ ಇವ ಯಸ್ಯಾ: 1.

ಪುಷ್ಪಾಗಮ ಪುಷ್ಪಾಗಮ (ಪುಂ) ವಸಂತ ಋತು, ಪುಷ್ಪಗಳು ಹೇರಳವಾಗಿ ಬಿಡುವ ಕಾಲ. ಪುಷ್ಪಾಘ್ನಾಗಚ್ಛತ್ಯತ್ರ - ಆ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೮).

ಪುಷ್ಪಾ ಪುಷ್ಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಂಪಾನಗರ, ಕರ್ಣನ ರಾಜಧಾನಿ.

ಪುಷ್ಪಾಜೀವ ಪುಷ್ಪಾಜೀವ (ಪುಂ) ಹೂವಾಡಿಗೆ, ಹೂವನ್ನು ಮಾರಿ ಜೀವಿಸುವವನು. ಪುಷ್ಪಾಘ್ನಾಜೀವೋ ಜೀವಿಕಾಸ್ಯ. ಪುಷ್ಪೇರಾಜೀವತಿ - ಆ + ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಅಪ್" (೩-೧-೧೩೪) ಇತಿ ವಾ.

ಪುಷ್ಪಾಂಜಲಿ ಪುಷ್ಪಾಂಜಲಿ (ಪುಂ) ಹೂವಿನ ಬೊಗಸೆ.

ಪುಷ್ಪಾಂಬುಜ ಪುಷ್ಪಾಂಬುಜ (ನಂ) ಮಕರಂದ, ಪುಷ್ಪರಸ.

ಪುಷ್ಪಾಯುಧ ಪುಷ್ಪಾಯುಧ (ಪುಂ) ಪುಷ್ಪವೇ ಆಯುಧವಾಗಿ ಉಳ್ಳ ಮನ್ಮಥ. ಪುಷ್ಪಮಾಯುಧಮಸ್ಯ. "ಪುಷ್ಪಾಯುಧಸ್ಯಾಸ್ಥಿಮಿ-ರಧಂದಗ್ವ: ಸಿತಾಸಿತಶ್ರೀರಘಟಿ ದ್ವಿಜೇಂದ್ರ:" ನೈಋಂ ೨೨-೬೪.

ಪುಷ್ಪಾವಚಯ ಪುಷ್ಪಾವಚಯ (ಪುಂ) 1. ಹೂವನ್ನು ಕದಿಯುವುದು, ಕಳ್ಳತನದಿಂದ ಹೂವನ್ನು ಗಿಡದಿಂದ ಬಿಡಿಸುವುದು. ಪುಷ್ಪಾಣಾಮವಚಯ: - ಅವ + ಚಿಘ್ (ಚಯೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೬). 2. ಮರದ ಮೇಲೆ ಹತ್ತಿ ಹೂವನ್ನು

ಬಿಡಿಸುವುದು. 3. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ನಿಂತು ಕೋಲು ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಗಿಡದ ಹೂವನ್ನು ಬಿಡಿಸುವುದು.

ಪುಷ್ಪಾವಚಾಯ ಪುಷ್ಪಾವಚಾಯ (ಪುಂ) ನೆಲದಲ್ಲಿ ನಿಂತು ಕೈಯಿಂದ ಗಿಡದ ಹೂವನ್ನು ಬಿಡಿಸುವುದು (ಕೊಯ್ಯುವುದು). ಅವ + ಚಿಘ್ (ಚಯೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೦).

ಪುಷ್ಪಾವಚಾಯಿನ್ ಪುಷ್ಪಾವಚಾಯಿನ್ (ಪುಂ) ಹೂವಾಡಿಗೆ, ಹೂವನ್ನು ಕಟ್ಟಿ ಮಾರಲು ಗಿಡದಿಂದ (ಹೂವನ್ನು) ಬಿಡಿಸುವವನು. ಪುಷ್ಪಾಘ್ನವಚಿನೋತಿ - ಅವ + ಚಿಘ್ (ಚಯೇ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮).

ಪುಷ್ಪಾಸವ ಪುಷ್ಪಾಸವ (ನಂ) ಮಧು, ಜೇನುತುಪ್ಪ. ಪುಷ್ಪಸ್ಯಾಸವಮ್. "ಗೃಹೀತತಾಮ್ಬೂಲವಿಲೇಪನಸ್ರಜ: ಪುಷ್ಪಾಸವಾಭೋದಿತ-ವಕ್ತ್ರಪಕ್ಷ್ಮಜಾ:" ಋತುಸಂ.

ಪುಷ್ಪಾಸಾರ ಪುಷ್ಪಾಸಾರ (ಪುಂ) ಪುಷ್ಪವೃಷ್ಟಿ.

ಪುಷ್ಪಾಸ್ತ್ರ ಪುಷ್ಪಾಸ್ತ್ರ (ಪುಂ) ಪುಷ್ಪವೇ ಅಸ್ತ್ರವಾಗಿ ಉಳ್ಳ ಮನ್ಮಥ. ಪುಷ್ಪಾಘ್ನಾಸ್ತ್ರಾಘ್ನಸ್ಯ.

ಪುಷ್ಪಿಕಾ ಪುಷ್ಪಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಂತಮಲ, ಹಲ್ಲಿನಲ್ಲಿ ಸೇರುವ ಕೊಳೆ, ಹಲ್ಲುಪಾಚೆ. 2. ಲಿಂಗದ ಮಲ.

ಪುಷ್ಪಿಣಿ ಪುಷ್ಪಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಋತುಮತಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು, ರಜಸ್ವಲೆ.

ಪುಷ್ಪಿತ ಪುಷ್ಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಪುಷ್ಪಿಸಿರುವ, ಹೂವು ಬಿಟ್ಟಿರುವ. ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ ಸಂಜ್ಞಾತಮ್ "ಇತಃ" (೪-೨-೩೬). 2. ಅರಳಿರುವ, ವಿಕಾಸಹೊಂದಿದ. "ಏಕೇನಾಪಿ ಸುವಕ್ಷಣ ಪುಷ್ಪಿತೇನ ಸುಗಂಧಿನಾ. ವಾಸಿತಂ ತದ್ವನಂ ಸರ್ವಂ ಸುಪುತ್ರೇಣ ಕುಲಂ ಯಥಾ" ಚಾಣಕ್ಯ:.

ಪುಷ್ಪಿತಾಗ್ರಾ ಪುಷ್ಪಿತಾಗ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರದ ಅರ್ಧ ಸಮವೃತ್ತಪ್ರಕರಣದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ವಿಷಮ (1 ಮತ್ತು 3 ನೆಯ) ಪಾದಗಳಲ್ಲಿ ನಗಣದ್ವಯ ರಗಣ ಮತ್ತು ಯಗಣಗಳೂ, ಸಮ (2 ಮತ್ತು 4 ನೆಯ) ಪಾದಗಳಲ್ಲಿ ನಗಣ ಜಗಣ ಜಗಣ ರಗಣಗಳೂ ಮತ್ತು ಒಂದು ಗುರುವರ್ಣವೂ ಇದ್ದಲ್ಲಿ "ಪುಷ್ಪಿತಾಗ್ರಾ" ವೃತ್ತವಾಗುವುದು.

ಲಕ್ಷಣ: "ಅಯುಜಿ ನಯುಗರೇಫತೋ ಯಕಾರೋ ಯುಜಿ ಚ ನಜೌ ಜರಗಾಶ್ಚ ಪುಷ್ಪಿತಾಗ್ರಾ" ವೃಂ ೦.

ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ನ ನ ರ ಯ ನ ಜ ಜ ರ ಗು,  
||| ||| 010 100, ||| 101 101 010 0  
ಈ ವೃತ್ತದ ವಿಷಮ ಪಾದಗಳಲ್ಲಿ ಹನ್ನೆರಡು ಅಕ್ಷರಗಳೂ ಸಮಪಾದಗಳಲ್ಲಿ ಹದಿನಾರು ಅಕ್ಷರಗಳೂ ಇರುವವು.



**ಪುಷ್ಪಿನ್ ಪುಷ್ಪಿನ್** (ವಿಂ) ಪುಷ್ಪಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪುಷ್ಪಾಂಶಸ್ಯ ಸಂತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) ।

**ಪುಷ್ಪೇಷು ಪುಷ್ಪೇಷು** (ಪುಂ) ಪುಷ್ಪವೇ ಬಾಣವಾಗಿ ಉಳ್ಳ ಮನ್ಮಥ. ಪುಷ್ಪಮ್ ಇಷ್ಯಸ್ಯ । "ತುಲ್ಯಾಭಿಲಾಷಾಮಾಲೋಕಯ ಸ ಚೈಕಾಂ ಮುನಿಕನ್ಯಕಾಮ್ । ಯಯಾವಕಸ್ಮಾತ್ ಪುಷ್ಪೇಶುಶರಾಘಾತ-ರಸಜ್ಞತಾಮ್" ಕರ್ಯಾಸಂ । "ಪುಷ್ಪೇಷುಣಾ ಧ್ರುವಮಮನಿಷುವರ್ಜಪ್ತಿ-ಹಂಕಾರಮನ್ವಬಲಮಸ್ಮಿತಶಾಂತಶಕ್ತಿನ್" ನೆಪಂ ೧೧-೨೬ ।

**ಪುಷ್ಪೋತ್ಕಟಾ ಪುಷ್ಪೋತ್ಕಟಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾವಣ ಮತ್ತು ಕುಂಭಕರ್ಣ ಇವರ ತಾಯಿಯಾದ ಕೈಕಸಿಯ ಸಹೋದರಿ, ಬ್ರಹ್ಮಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಸುಮಾಲಿಯ ಮಗಳು. ರಾವಣಕುಂಭಕರ್ಣರು ಕೈಕಸಿಯ ಮಕ್ಕಳು. ರಾಮಾಂ । ಪುಷ್ಪೋತ್ಕಟಿಯ ಮಕ್ಕಳು. ಭಾಂ ।

**ಪುಷ್ಯ ಪುಷ್ಯ** (ಪುಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪುಷ್ಯ ನಕ್ಷತ್ರ. ಅಶ್ವಿನಿ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಎಂಟನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ. ಪುಣ್ಯಾತಿ ಕಾರ್ಯಾಣಿ ಪುಷ್ಯನ್ಯಾಸ್ಮಿನ್ನರ್ಥಾಃ ಇತಿ ವಾ—ಪುಷ (ಪುಷ್ಠಿ) "ಕೃಪ್" (೩-೩-೧೧೬) ನಿಪಾಂ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಠಾಪ್" (೪-೧-೪) । ಈ ನಕ್ಷತ್ರವು ಬೃಹಸ್ಪತಿ ದೇವತಾಕವಾದುದು. ಇದು ಕರ್ಕಾಟಕರಾಶಿಗೆ ಸೇರಿದುದು. ಈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು ಸುಂದರವಾದ ಶರೀರವುಳ್ಳವನೂ ತಾಯಿ ತಂದೆಗಳಲ್ಲಿ ಭಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನೂ ಸ್ವಧರ್ಮದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನೂ ಅಭಿನಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರವೀಣನೂ ಬಹುಮೂಲ್ಯವಾಹನವುಳ್ಳವನೂ ಆಗಿರುವನು. "ಪ್ರಸನ್ನಗಾತ್ರಃ ಪಿತುರ್ಮಾತು-ಭಕ್ತಃ ಸ್ವಧರ್ಮಯುಕ್ತೋಽಭಿನಯಾಭಿಯುಕ್ತಃ । ಭವೇನ್ಮನುಷ್ಯಃ ಕ್ಷಲ್ವ ಪುಷ್ಯಜನ್ಮಾ ಸಮ್ಮಾನಚಾಮೀಕರವಾಹನಾಡಯಃ" । ಪುಷ್ಯ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನಿಗೆ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಶನಿದಶೆ ನಡೆಯುವುದು. ಪುಷ್ಯ ನಕ್ಷತ್ರವು ಸೀಮಂತ, ನಾಮಕರಣ, ಕರ್ಣ ವೇಧನ, ಅನ್ನಪ್ರಾಶನ, ಚೌಳ, ಉಪನಯನ, ವಿದ್ಯಾರಂಭ, ಮಂತ್ರಾರಂಭ, ವಿವಾಹ, ಗೃಹಾರಂಭ, ಗೃಹಪ್ರವೇಶ, ಧಾನ್ಯಸಂಗ್ರಹ ಮುಂತಾದ ಶುಭ ಕಾರ್ಯಗಳಿಗೆ ಪ್ರಶಸ್ತವಾದುದು. 2. ಪುಷ್ಯಮಾಸ. 3. ಕಲಿಯುಗ. "ಪುಷ್ಯಃ ಕಲಿಯುಗಃ ಸ್ಮೃತಃ । ನಕ್ಷತ್ರಮಾಸಯೋರ್ಮೇಧೇ" ಮೇದಿಂ । 4. ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, "ತಸ್ಯ ಪ್ರಭಾನಿಜಿತ-ಪುಷ್ಯರಾಗಂ ಪೌಷ್ಯಾಂ ತಿಥೌ ಪುಷ್ಯಮಸೂತ ಪತ್ನೀ" ರಘುಂ ೧೮-೩೨ ।

**ಪುಷ್ಯತ್ ಪುಷ್ಯತ್** (ವಿಂ) 1. ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅಧಿಕಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪುಷ (ಪುಷ್ಠಿ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಪುಷ್ಯತಾಂ ಪಾಂಡರಂ ಕ್ಷತ್ರಂ ಪುಂಡರೀಕಮಿವ ಶ್ರಿಯಃ । ಧರ್ಮೋಽಧರ್ಮೇಚ ನಾನ್ಯೋಸ್ತಿ ರಕ್ಷಣೋಪೇಕ್ಷಣೇ ಭುವಃ" ಯಾದಂ ೨೨-೧೦ । 2. ಪ್ರದರ್ಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ತೋರಿಸುತ್ತಿರುವ.

**ಪುಷ್ಯರಥ ಪುಷ್ಯರಥ** (ಪುಂ) ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸಿದ ಉತ್ಸವಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವ ಚಕ್ರದ ವಾಹನ. "ಅಸೌ ಪುಷ್ಯರಥಃ ಕ್ರಯಾನ್ ನ ಸಮರಾಯ ಯತ್" ಅಮಂ । "ಮಹಾರಥಃ ಪುಷ್ಯರಥಂ ರಥಾಙ್ಗೀ ಕ್ಷಿಪ್ರಂ ಕ್ಷಪಾನ್ಯಾಥ ಇವಾಧಿರೂಢಃ" ಮಾಘಂ ೩-೨೨ ।

**ಪುಸ್ತ ಪುಸ್ತ** (ನಂ) 1. ಬಳಿಯುವುದು, ಮೆತ್ತುವುದು, ಪೂಸುವುದು. 2. ಮಣ್ಣು ಮರ ಲೋಹ ಚರ್ಮ ಮುಂತಾದುವುಗಳಿಂದ ಮಾಡಿದ ಶಿಲ್ಪಕಾರ್ಯ. ಪುಸ್ತಯತೇ—ಪುಸ್ತ (ಆದರಾನಾದರಯೋಃ) + ಣಿच् "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬) । "ಮೃದಾ ವಾ ದಾಹಣಾ ವಾಥ ವಸ್ತ್ರೇಣಾಪ್ಯಥ ಚರ್ಮಣಾ । ಲೋಹರತ್ನೈಃ ಕೃತಂ ವಾಪಿ ಪುಸ್ತಮಿತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ" । 3. ಪುಸ್ತಕ, ಗ್ರಂಥ. "ಪುಸ್ತಂ ಕಲಿಬೇ ಪುಸ್ತಕೇ ಚ ಲೇಪ್ಯಾದಿಶಿಲ್ಪಕರ್ಮಣಿ" ಮೇದಿಂ ।

**ಪುಸ್ತಕ ಪುಸ್ತಕ** (ನಂ) ಗ್ರಂಥ, ಅಕ್ಷರಗಳಿಂದ ಬರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ ಅರ್ಥವತ್ತಾದ ವಾಕ್ಯಗಳ ಸಮುದಾಯ. ಪುಸ್ತ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" ।

**ಪುಸ್ತಕರ್ಮನ್ ಪುಸ್ತಕರ್ಮನ್** (ನಂ) 1. ಗ್ರಂಥರಚನೆ, ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು ಬರೆಯುವುದು. 2. ಬಳಿಯುವುದು, ಪೂಸುವುದು ಮತ್ತು ಮೆತ್ತುವುದು.

**ಪೂ ಪೂಗ** (ಪುಂ) 1. ಅಡಕೆ ಮರ. ಪುನಾತಿ—ಪೂನ್ (ಪವನೇ) "ಗನ್" (೩ಂ ೧-೧೨೧) । "ತತೋ ವೇಲಾತದೇನೈವ ಫಲವತ್ಪೂಗ-ಮಾಲಿನಾ" ರಘುಂ ೪-೪೪ । 2. ರಾಶಿ, ಗುಂಪು, ಸಮೂಹ. "ಛನತಾಂ ಧ್ರುವಂ ನಯತಿ ತೇನ ಭವದ್ಗುಣಪೂಗಪೂರಿತಮತೃಪ್ತಯಾ" ಮಾಘಂ ೯-೬೪ । 3. ಭಾವ, ಸ್ವಭಾವ. (ನಂ) 4. ಅಡಕೆ, ಅಡಕೆಯಿ.

**ಪೂಗದ್ರುಮ ಪೂಗದ್ರುಮ** (ಪುಂ) ಅಡಕೆಮರ.

**ಪೂಗಪಾತ್ರ ಪೂಗಪಾತ್ರ** (ನಂ) ಉಗುಳುಪಾತ್ರೆ, ಉಗುಳು ದಾನಿ, ತಾಂಬೂಲರಸವನ್ನು ಉಗುಳುವ ಪಾತ್ರೆ, ಪೂಗಸ್ಯ ಚರ್ವಿತತದ್ರವಸ್ಯ ಪಾತ್ರಮ್ । "ಪೂಗಪಾತ್ರಂ ಫಾರುಷಕಮ್" ಹಾರಾಂ ।

**ಪೂಗಪಿಠ ಪೂಗಪಿಠ** (ಪುಂ) ತಾಂಬೂಲರಸವನ್ನು ಉಗಿಯುವ ಪಾತ್ರೆ. "ಕಟೋಲಕಃ ಪತದ್ಗ್ರಹಃ । ಪೂಗಪಿಠಂ ಚ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಪೂಗಪುಷ್ಪಿಕಾ ಪೂಗಪುಷ್ಪಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿವಾಹಸಮಯದಲ್ಲಿ ಕೊಡುವ ತಾಂಬೂಲ, ಎಲೆ ಅಡಕೆ. ಪೂಗಸಹಿತಂ ಪುಷ್ಪಮತ್ರ "ಕಪ್" (೫-೪-೧೫೪) । "ಕುಹಲಿಃ ಪೂಗಪುಷ್ಪಿಕಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಪೂಗಫಲ ಪೂಗಫಲ** (ನಂ) ಅಡಕೆಯಿ.

**ಪೂಜಕ ಪೂಜಕ** (ವಿಂ) ಆರಾಧಕ, ಪೂಜೆಮಾಡುವವನು. ಪೂಜಯತಿ—ಪೂಜ (ಪೂಜನೇ) + ಣಿच् "ಞ್" (೩-೧-೧೩೩) ।



**ಪೂಜನ ಪೂಜನ** (ನಂ) 1. ಪೂಜಿಸುವುದು, ಆರಾಧಿಸುವುದು.

2. ಗೌರವಿಸುವುದು. ಪೂಜ (ಪೂಜನೆ) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್"

(3-3-114)। "ದೇವದ್ವಿಜಗುರಪ್ರಾಜ್ಞಪೂಜನಂ ಶೌಚಮಾರ್ಜವಮ್।

ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಮಹಿಸಾ ಚ ಶಾರೀರಂ ತಪಃ ಉಚ್ಯತೇ" ಗೀತಾ 17-18।

(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಿ-ನೀ. ಹೆಣ್ಣುಗುಬ್ಬುಚ್ಚಿ.

**ಪೂಜನೀಯ ಪೂಜನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ.

2. ಪೂಜೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದ. 3. ಗೌರವಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ.

ಪೂಜ (ಪೂಜನೆ) + ಣಿच् "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। "ತವ್ಯಃ"

(3-1-96)। -ಯಿತವ್ಯಃ -ಯಿತವ್ಯಃ.

**ಪೂಜಯತ್ ಪೂಜಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸುತ್ತಿರುವ,

ಆರಾಧಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪೂಜ (ಪೂಜನೆ) + ಣಿच् "ಶತ್"

(3-2-124)। 2. ಗೌರವಿಸುತ್ತಿರುವ, ಮರ್ಯಾದೆ

ಯಿಂದ ಸತ್ಕರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-6)।

-ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

**ಪೂಜಾ ಪೂಜಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೂಜೆ, ದೇವರ ಪೂಜೆ, ದೇವತಾ

ರಾಧನೆ. ಪೂಜ (ಪೂಜನೆ) + ಣಿच् "ಅಡ್" (3-3-104)।

"ಅಪಿ ರಾಮೇ ಮಾಹಾಭಾಗಾ ಮಮ ಮಾತಾ ಯಶಸ್ವಿನಿ।

ವನ್ಯರೂಪಾಹರತ್ ಪೂಜಾಂ ಪೂಜಾಂ ಸರ್ವದೇಹಿನಾಮ್" ರಾಮಾಂ।

2. ಗೌರವಿಸುವುದು, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ಸತ್ಕರಿಸುವುದು.

"ಪ್ರತಿಬಕ್ಷಾತಿ ಹಿ ಶ್ರೇಯಃ ಪೂಜ್ಯಪೂಜಾವ್ಯತೀಕ್ರಮಃ" ರಘುಂ 1-99।

"ಸಂಪ್ರಾಪ್ತೌ ಯೋತಿಥಿಃ ಸಾಯಂ ಸೂರ್ಯೋ ಗೃಹಮೇಧಿನಾಮ್। ಪೂಜಯಾ

ತಸ್ಯ ದೇವತ್ವಂ ಪ್ರಯಾಂತಿ ಗೃಹಮೇಧಿನಃ" ಪಞ್ಚತಂ 1-121।

**ದೇವರ ಪೂಜೆಯ ಅಷ್ಟಾದಶೋಪಚಾರಗಳು:**

(1) ಆಸನ (2) ಸ್ವಾಗತ (3) ಪಾದ್ಯ (4) ಅರ್ಘ್ಯ

(5) ಆಜಮವೀಯ (6) ಸ್ನಾನ (7) ವಸ್ತ್ರ (8) ಉಪವೀತ

(9) ಗಂಧ (10) ಪುಷ್ಪ (11) ಅಭರಣ (12) ಧೂಪ

(13) ದೀಪ (14) ಭೋಜ್ಯ (ನೈವೇದ್ಯ) (15) ದರ್ಪಣ

(16) ಮಾಲಾನ್ಮಲೇಪನ (17) ನಮಸ್ಕಾರ ಮತ್ತು

(18) ವಿಸರ್ಜನೆ. ತನ್ವಸಾಂ।

**ಪೂಜಾ ಪೂಜಾರ್ಹ** (ವಿಂ) 1. ಪೂಜೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದ,

ಆರಾಧಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. ಪೂಜಾಮಹತಿ-ಅಹ (ಪೂಜಾಯಾಮ್)

"ಅಚ್" (3-2-12)। 2. ಮಾನ್ಯನಾದ, ಗೌರವಿಸಲು

ಯೋಗ್ಯನಾದ. "ಪ್ರಜನಾರ್ಯ ಮಾಹಾಭಾಗಾ ಪೂಜಾರ್ಹ ಗೃಹದೀಪ್ತಯಃ।

ಸ್ತ್ರೀಯಃ ಶ್ರೀಯಶ್ಚ ಗೃಹೇಷು ನ ವಿಶೇಷೋಸ್ತಿ ಕಶ್ಚನ" ಮನುಂ

9-26।

**ಪೂಜಿತ ಪೂಜಿತ** (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಆರಾಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪೂಜ (ಪೂಜನೆ) + ಣಿच् "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "ನಿವೃತ್ತೇ

ಭರತೇ ಧೀಮಾನತ್ರೇ ರಾಮಸ್ತಪೋವನಮ್। ಪ್ರಪೇದೇ ಪೂಜಿತಸ್ತಸ್ಮಿನ್

ದಂಡಕಾರಣ್ಯಮೀಶಿವಾನ್" ಭದ್ರಿಂ 4-1। 2. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರ್ಯಾದೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪೂಜಿತ ಪೂಜಿತ** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ, ದೇವರು. ಪೂಜ

(ಪೂಜನೆ) + ಣಿच् "ಇಲಕ್" (3-1-49)। (ವಿಂ) 2.

ಪೂಜ್ಯನಾದ, ಗೌರವಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ. 3. ಪೂಜಾರ್ಹ,

ಆರಾಧಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ.

**ಪೂಜ್ಯ ಪೂಜ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಪೂಜೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದ, ಆರಾಧಿಸಲು

ಯೋಗ್ಯನಾದ. ಪೂಜಯಿತುಮಹಃ - ಪೂಜ (ಪೂಜನೆ) + ಣಿच्

"ಯತ್" (3-1-99)। "ಪ್ರತಿಬಕ್ಷಾತಿ ಹಿ ಶ್ರೇಯಃ ಪೂಜ್ಯ-

ಪೂಜಾವ್ಯತೀಕ್ರಮಃ" ರಘುಂ 1-99। 2. ಗೌರವಿಸಲು ಅರ್ಹ

ನಾದ. 3. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಡುವ.

"ಯ ಏವ ವಿಧ್ವಾನ್ ತಪಸಾ ಚ ವೃದ್ಧಃ ಸ ಏವ ಪೂಜ್ಯೋ ಭವತಿ

ದ್ವಿಜಾನಾಮ್" ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ। (ಪುಂ) 5. ಶ್ವಶೂರ, ಮಾವ,

ಪತ್ನಿಯ ತಂದೆ, ಪತಿಯ ತಂದೆ. "ಪೂಜ್ಯಃ ಶ್ವಶೂರವಂದ್ಯಯೋಃ"

ಮೇದಿಂ।

**ಪೂತ ಪೂತ** (ಪುಂ) 1. ಶಂಖ. ಪವತೆ - ಪೂತ್ (ಪವನೆ) ಕರ್ತಂ

"ಕ್ತಃ" (3-4-92)। 2. ಬಿಳಿಯ ದರ್ಭೆ. 3. ಹುಳಿ

ಬೇಲ. (ನಂ) 4. ಸತ್ಯ, ದಿಟ, ನಿಜ, ಪ್ರಾಮಾಣಿಕತೆ.

5. ತೂರಿದ ಧಾನ್ಯ, ಹೊಟ್ಟಿನಿಂದ ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ

ಧಾನ್ಯ. (ವಿಂ) 6. ಪವಿತ್ರವಾದ, ಪರಿಶುದ್ಧವಾದ.

7. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಶೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಯಾವ ದೋಷವೂ ಇಲ್ಲದ.

"ದೃಷ್ಟಿಪೂತಂ ಪದಂ ನ್ಯಸ್ಯೇತ್ ವಸ್ತ್ರಪೂತಂ ಜಲಂ ಪಿಬೇತ್। ಸತ್ಯಪೂತಾಂ

ವದೇದಾಚ್ಚ ಮನಃಪೂತಂ ಸಮಾಚರೇತ್" ಮನುಂ 6-46। 8. ಪ್ರಾಯ

ಶ್ಚಿತ್ತ ವ್ರತ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಶುದ್ಧನಾದ. 9.

ಪವಿತ್ರವಾದ. "ಅಶ್ರಾಂತಶ್ರುತಿಪಾಠಪೂತರಸನಾವಿಮೃತಭೂರಿ-

ಸ್ತವಂ" ನೆಪಂ 2-102।

**ಪೂತಕತಾಯಿ ಪೂತಕತಾಯಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಂದ್ರನ ಪತ್ನಿ,

ಶಚಿದೇವಿ. ಪೂತಕತಾಯಿಃ ಶಕ್ರಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ "ಏ" "ಡೀಪ್"

ಚ (4-1-36)।

**ಪೂತಕತು ಪೂತಕತು** (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ಪೂತಃ ಕತುಃ ಯೇನ।

"ಘೋಷಸ್ಯಾನ್ವದಿಷ್ಟೇವ ಲಕ್ಷ್ಮಾ ಪೂತಕತುಃ ಪುರಃ" ಭದ್ರಿಂ 6-29।

**ಪೂತಗಾಂಧ ಪೂತಗಾಂಧ** (ಪುಂ) ಬರ್ಬರ ವೃಕ್ಷ. ಭಾರಂಗಿ ಗಿಡ.

**ಪೂತಗುಣ ಪೂತಗುಣ** (ನಂ) ಬಿಳಿಯ ದರ್ಭೆ.

**ಪೂತಗ್ನ ಪೂತಗ್ನ** (ಪುಂ) 1. ಪಲಾಶವೃಕ್ಷ, ಮುತ್ತುಗದ

ಮರ. 2. ಪನಸವೃಕ್ಷ, ಹಲಸಿನಮರ.

**ಪೂತಧಾನ್ಯ ಪೂತಧಾನ್ಯ** (ನಂ) ತಿಲ, ಎಳ್ಳು. ಪೂತಂ ಧಾನ್ಯಮ್।

**ಪೂತನಾ ಪೂತನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಳಲೆ ಗಿಡ. ಪೂತಂ ಕರೋತಿ-

ತತ್ಕರೋತಿ ಇತಿ "ಣಿच्" ತತೌ "ಯುಕ್" (3-2-94)।



- “ಅಭಯಾ ತ್ವಯಾ ಪಯಾ ವಯಸ್ಥಾ ಪೂತನಾಽಮೃತಾ” ಅಮಂ ।  
 2. ಒಬ್ಬ ರಕ್ತಸಿ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ  
 ಕಂಸನಿಂದ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸಿ. ಈ ರಾಕ್ಷಸಿಯು  
 ವಿಷ ಬಳಿದ ಸ್ತನವನುಣಿಸಲು ಒಂದು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಿಂದ  
 ಹತಳಾದಳು. “ಕಂಸೇನ ಪ್ರಹಿತಾ ಛೋರಾ ಪೂತನಾ ಬಾಲಧಾತಿನಿ ।  
 ಶಿಶುಶ್ಚಾರ ನಿಧನಂತಿ ಪುರಳಾಮಬ್ರಜಾದಿಭು” ಭಾಗಂ ೧೦-೬-೨ ।  
 3. ರಾಕ್ಷಸಿ. “ನಿರ್ಮಣಮೇವ ಹಿ ತದಾ ತವ ಲಾಲನೀಯಂ ಮಾ  
 ಪೂತನಾತ್ವಮುಪಗಾಃ ಶಿವತಾತಿರೇವ” ಮಾಲತೀಂ ೯-೫೧ ।  
 4. ಒಂದು ಬಾಲಗ್ರಹ ದೇವತೆ.

ಪೂತನಾರಿ ಪೂತನಾರಿ (ಪುಂ) ಪೂತನೆಯೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸಿಯು  
 ಶತ್ರುವಾದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಪೂತನಾಯಾ ಅರಿಃ ।

ಪೂತಫಲ ಪೂತಫಲ (ಪುಂ) 1. ಹಲಸಿನ ಮರ. (ನಂ) 2.  
 ಹಲಸಿನ ಹಣ್ಣು.

ಪೂತಾತ್ಮನ್ ಪೂತಾತ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ.  
 ಪೂತಃ ಆತ್ಮಾ ಸ್ವರೂಪಂ ಯಸ್ಯ । ಸಂಸಾರಿಗಳಂತೆ ಚಿದಚಿದ್ವಿಷ್ಣು  
 ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಪವಿತ್ರ  
 ಸ್ವರೂಪನು. “ಶರೀರತ್ವಾನ್ವ ಜಗತಃ ತದೋಷೇನ ಕದಾಚನ ।  
 ಲಿಪ್ಯತೇ ಯಃ ಸ ಪೂತಾತ್ಮಾ ನ ಭುಜ್ಜತೇ ಚ ಫಲಾನಿ ಯಃ”  
 ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ । “ಪೂತಾತ್ಮಾ ಪರಮಾತ್ಮಾ ಚ ಮುಕ್ತಾನಾಂ ಪರಮಾ  
 ಗತಿಃ” ವಿಂಸಂ । (ವಿಂ) 2. ಶುದ್ಧವಾದ ಶರೀರವುಳ್ಳ.  
 3. ಶುದ್ಧವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಕಲ್ಮಷವಿಲ್ಲದ ಹೃದಯವುಳ್ಳ.

ಪೂತಿ ಪೂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪವಿತ್ರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಶುದ್ಧವಾಗಿರು  
 ವಿಕೆ. ಪೂ (ಪವನೇ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) । 2. ದುರ್ಗಂಧ,  
 ಕೆಟ್ಟವಾಸನೆ. ಪೂತಿ (ವಿಶರಣೆ ದುರ್ಗಂಧೇ ಚ) “ಕ್ತಿಃ”  
 (೩-೩-೯೪) । 3. ಕೊಳೆತುಹೋಗುವುದು, ನಾರು  
 ವುದು. (ವಿಂ) 4. ದುರ್ಗಂಧದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಕೊಳೆತು  
 ನಾರುವ. “ಯಾತಯಾಮಂ ಗತರಸಂ ಪೂತಿ ಪರ್ಯುಷಿತಂ ಚ ಯತ್ ।  
 ಉಚ್ಚಿಷ್ಠಮಪಿ ತ್ರಾಮೇಧ್ಯಂ ಭೋಜನಂ ತಾಮಸಪ್ರಿಯಮ್” ಗೀತಾ ೧೭-೧೦ ।  
 (ಪುಂ) 5. ಪುನುಗು ಬೆಕ್ಕು. “ಶಿಲಾಜಾತಸ್ತು ಖಡ್ವಾಸಃ ಪೂತಿಃ  
 ಖಡ್ವಾಸಿಕಾಪಿ ಚ” ವೈಜಂ ।

ಪೂತಿಕ ಪೂತಿಕ (ಪುಂ) 1. ತಪ್ಪಿಸಿಗಡೆ. (ನಂ) 2. ವಿಷ್ಣು,  
 ಅಮೃತ್ಯು, ಮಲ. ಪೂತಿಯ ದುರ್ಗಂಧನೇ ಕಾರ್ಯತೆ—ಕೆ (ಶಬ್ದೇ)  
 “ಕಃ” (೩-೨-೩) । “ಕಿ ತ್ವಯಾ ಪಾಪಕಂ ಪೂತಂ ಕೃತಂ ಕರ್ಮ  
 ಸುಧಾರುಣಮ್ । ಯಸ್ತ್ವಂ ಇಮಶಾನೇ ಮೃತಕಾನ್ ಪೂತಿಕಾನ್ ತಿಸಿ ಕುತ್ಸಿ-  
 ತಾನ್” ಭಾಂ ।

ಪೂತಿಕರಜ ಪೂತಿಕರಜ (ಪುಂ) ತಪ್ಪಿಸಿಗಡೆ. ಪೂತಿಶ್ವಾಸಿ  
 ಕರಜಶ್ಚ ।

ಪೂತಿಕರಜ ಪೂತಿಕರಂಜ (ಪುಂ) ಕರಂಜವೃಕ್ಷದ ಒಂದು  
 ಭೇದ. ಪೂತಿಶ್ವಾಸಿ ಕರಂಜಶ್ಚ ।

ಪೂತಿಕರ್ಣ (ಕ) ಪೂತಿಕರ್ಣ (ಕ) (ಪುಂ) ಕೇವಲ ಸುರಿದು  
 ದುರ್ಗಂಧದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ಕಿವಿಯ ರೋಗ. ಪೂತಿಃ  
 ದುರ್ಗಂಧಃ ಕರ್ಣೋ ಯಸ್ಮಾತ್ । “ಪೂಯಂ ಸ್ರವತಿ ಯತ್ ಪೂತಿ ಸ ಶೇಯಃ  
 ಪೂತಿಕರ್ಣಕಃ” ।

ಪೂತಿಕಾ ಪೂತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜನ್ತು.  
 “ಪೂಲಾಕಾ ಇವ ಧಾನ್ಯೇಷು ಪೂತಿಕಾ ಇವ ಪಕ್ಷಿಷು । ಮಶಕಾ ಇವ  
 ಮತ್ಯೇಷು ಯೇಷಾಂ ಧರ್ಮೋ ನ ಕಾರಣಮ್” ಪञ्ಚತಂ ೩-೯೭ ।  
 2. ಪುನುಗು ಬೆಕ್ಕು. 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಲತೆ.

ಪೂತಿಕಾಣ್ ಪೂತಿಕಾಷ್ಠ (ನಂ) 1. ದೇವದಾರು ವೃಕ್ಷ.  
 ಪೂತಿ ಚ ಪೂತಿಕಾಣ್ ಚ । 2. ಸರಳ (ದೇವದಾರು) ವೃಕ್ಷ.  
 “ಪೂತಿಕಾಣ್ ಚ ಸರಲದೇವದಾರುಮಹೀರುಹೋಃ” ಮೇದಿಂ ।

ಪೂತಿಗಂಧ ಪೂತಿಗಂಧ (ಪುಂ) 1. ದುರ್ಗಂಧ, ಕೆಟ್ಟವಾಸನೆ,  
 ದುರ್ನಾತ್. 2. ಇಂಗುಡಿ ವೃಕ್ಷ, ಗಾರೆ ಗಿಡ. “ನಿತ್ಯಾ-  
 ನಧ್ಯಾಯ ಏವ ಸ್ಯಾತ್ ಗ್ರಾಮೇಷು ನಗರೇಷು ೪ । ಧರ್ಮನೈಪುಣ್ಯ  
 ಕಾಮಾನಾಂ ಪೂತಿಗಂಧೇ ಚ ಸರ್ವದಾ” ಮನುಂ ೪-೧೦೭ ।

ಪೂತಿಗಂಧಿ ಪೂತಿಗಂಧಿ (ವಿಂ) ದುರ್ಗಂಧದಿಂದ ಕೂಡಿದ,  
 ದುರ್ನಾತ್ವುಳ್ಳ. ಪೂತಿಗಂಧೋ ಯಸ್ಯ “ಇಃ” (೪-೪-೧೩೪) ।  
 “ಅವ್ಯಾಧಿಜಂ ಕಠುಜಂ ತೀಕ್ಷ್ಣಮುಷ್ಣಂ ಯಶೋಮುಖಂ ಪರುಷಂ ಪೂತಿಗಂಧಿ ।  
 ಸತಾಂ ಪೇಯಂ ಯನ್ನ ಪಿಬಂತ್ಯಸಂತಃ ಮನ್ಯುಂ ಮಹಾರಾಜ ಪಿಬ ಪ್ರಶಾಮ್ಯ”  
 ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೬೦ ।

ಪೂತಿತೇಲಾ ಪೂತಿತೈಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತೈಲತೆ,  
 ಕಂಗೊಂಗಿ ಗಿಡ. ಪೂತಿ ದುರ್ಗಂಧಂ ತೈಲಂ ಯಸ್ಯಾಃ ।

ಪೂತಿನಸ್ಯ ಪೂತಿನಸ್ಯ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಮೂಗಿನ ರೋಗ.  
 ಪೂತಿಃ ದುರ್ಗಂಧೋ ನಸ್ಯಃ ನಾಸಾಭವೋ ರೋಗಃ ।

ಪೂತಿನಾಸಿಕ ಪೂತಿನಾಸಿಕ (ವಿಂ) ದುರ್ಗಂಧದಿಂದ ಕೂಡಿದ  
 ಮೂಗುಳ್ಳ. ಪೂತಿಃ ದುರ್ಗಂಧಯುಕ್ತಾ ನಾಸಿಕಾ ಯಸ್ಯ ।

ಪೂತಿಪತ್ರ ಪೂತಿಪತ್ರ (ಪುಂ) ಹೆಮ್ಮರ, ಅಡುಮರ. ಪೂತಿನಿ  
 ಪತ್ರಾಣ್ಯಸ್ಯ ।

ಪೂತಿಪುಷ್ಪಿಕಾ ಪೂತಿಪುಷ್ಪಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾತುಲುಂಗ ವೃಕ್ಷ,  
 ಮಾದಳದ ಗಿಡ. ಪೂತಿನಿ ಪುಷ್ಪಾಣ್ಯಸ್ಯ ।

ಪೂತಿಫಲ ಪೂತಿಫಲ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಹುಜಿ ಗಿಡ. ಪೂತಿ  
 ಫಲಂ ಯಸ್ಯಾಃ “ಛಿಷ್” (೪-೧-೬೪) । “ಕಾಲಮೇಷಿ ಕೃಷ್ಣಾ-  
 ಫಲಾ ವಾಗುಜಿ ಪೂತಿಫಲಯಪಿ” ಅಮಂ ।

ಪೂತಿಮೇದ ಪೂತಿಮೇದ (ಪುಂ) ದುರ್ಗಂಧವುಳ್ಳ ಕಗ್ಗಲಿಮರ.  
 ಪೂತಿಮೇದೋಜ್ಯ ।

ಪೂತಿವಾತ ಪೂತಿವಾತ (ಪುಂ) 1. ಬಿಲ್ಲವೃಕ್ಷ, ಬಿಲ್ಲಪತ್ರೆ  
 ಮರ. ಪೂತಿಯ ಪಾರಿಶುದ್ಧತಾಯ ವಾತೋ ಯಸ್ಯ । 2. ದುರ್ಗಂಧ  
 ದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಗಾಳಿ.



ಪ್ರತಿವಕ್ಷ ಪೂತಿವ್ಯಕ್ತ್ಯ (ಪುಂ) ಹೆಮ್ಮರ, ತಿಗಡುಮರ.

ಪ್ರತೀಕ ಪೂತೀಕ (ಪುಂ) 1. ತಪಸಿಗಿಡ. 2. ಪುನುಗು ಬೆಕ್ಕು.

ಪ್ರತ್ಯುಂಡ ಪೂತ್ಯುಂಡ (ಪುಂ) ಕಸೂರಿ ಮೃಗ.

ಪೂನ ಪೂನ (ವಿಂ) ನಷ್ಟವಾದ, ನಾಶಹೊಂದಿದ. ಪೂ (ಪವನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | ನಿಷಾತಕಾರಸ್ಯ ನ: (ವಾಂ ೮-೨-೪೪) | ಪೂನಾ ಯವಾ: |

ಪೂಪ ಪೂಪ (ಪುಂ) ಹಿಟ್ಟಿನಿಂದ ಮಾಡಿದ ರೊಟ್ಟಿ ಮೊದಲಾದ ಭಕ್ಷ್ಯ. ಪೂ (ಪವನೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮) | ಪುಂ ಪಾತಿ — ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩) | "ಮಧು ಹೃತ್ವಾ ನರೋ ದಂಶ: ಪೂಂ ಹೃತ್ವಾ ಪಿಪಿಲಿಕ:" ಮಾರ್ಕಂ |

ಪೂಪಲಿ ಪೂಪಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೋಳಿಗೆ, ಒಬ್ಬಿಟ್ಟು.

ಪೂಪಾಲಿ ಪೂಪಾಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೋಳಿಗೆ, ಒಬ್ಬಿಟ್ಟು. ಪೂಪಾಯ ಅಲತಿ — ಅಲ (ಮೂಷಣಾದೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧) | "ಪೋಲಿ ಪೂಪಾಲಿ ಚರ್ಪದಿ ಚ ಸಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಪೂಪಿಕಾ ಪೂಪಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೋಳಿಗೆ, ಒಬ್ಬಿಟ್ಟು, ಪೂಪಸ್ತ-ದಾಕಾರೋಸ್ತಸ್ಯಾ: "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೪) | "ಪೂಪೋಪುಪ: ಫೋಲಿಕಾ ತು ಪೂಲಿಕಾಪೋಲಿಪೂಪಿಕಾ:" ಅಭಿಂ ಚಿಂ |

ಪೂಯಿ — ವಿಶರಣೆ ದುರ್ಗಂಧೇ ಚ (ಮ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) ಪೂಯತೆ | ಅಪೂಯಿಷ್ಠ | ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಒಡೆ, ಎರಡು ತುಂಡು ಮಾಡು, ಸೀಳು. 2. ಕೊಳೆತು ಹೋಗು, ಕೊಳೆತು ನಾರು, ಕೀವುಗಟ್ಟು. ಪೂಯತೆ ಮತ್ಸ್ಯ: |

ಪೂಯ ಪೂಯ (ನಂ) ಹಣ್ಣಾದ ಗಾಯದಿಂದ ಹೊರಡುವ ಕೀವು, ಕೆಟ್ಟುಹೋಗಿ ಬಿಳುಪಾದ ರಕ್ತ. ಪೂಯಿ (ವಿಶರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಪೂಯಂ ಚಿಕಿತ್ಸಕಸ್ಯಾಗ್ರಮ್" ಮನುಂ ೪-೨೨೦ | ಕೀವನ್ನು ಅಧಿಕಗೊಳಿಸುವ ವಸ್ತುಗಳು: "ತಕ್ರಾಂತೇನೈವಧಾನ್ಯಾದಿರ್ಯೋಷ್ಯಂ ವರ್ಗಂ ತದಾಹುತ: | ದೋಷ-ಸಂಜನನೋಹ್ಯೇಷ ವಿಜ್ಞೇಯ: ಪೂಯವರ್ಧನ:" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೧೯-೧೭ | [ಸುಶ್ರುತ ಸಂಹಿತೆಯಲ್ಲಿ ನವಧಾನ್ಯಾದಿವರ್ಗ ನೋಡಿ.] ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭) | ಪೂಯನಮ್ ಪೂಯನಮ್.

ಪೂಯಮಾನ ಪೂಯಮಾನ (ವಿಂ) ತೂರಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಹೊಟ್ಟನ್ನು ಬೇರ್ಪಡಿಸಿ ಶುದ್ಧವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ (ಧಾನ್ಯ). ಪೂ (ಪವನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) |

ಪೂಯಮಾನಯವ ಪೂಯಮಾನಯವ (ಅವ್ಯಂ) ಧಾನ್ಯವನ್ನು ತೂರಿ ಶುದ್ಧಮಾಡುವ ಸ್ಥಳ, -ಕಣ. ಪೂಯಮಾನಾ ಯವಾ ಯತ್ರ — ಅವ್ಯಯಿಂ (೨-೧-೧೭) |

ಪೂಯರಕ್ತ ಪೂಯರಕ್ತ (ಪುಂ) ಕೀವುಸಹಿತ ರಕ್ತ ಸುರಿಯುವ ಒಂದು ವಿಧ ಮೂಗಿನ ರೋಗ. ಪೂಯುಕ್ತಂ ರಕ್ತಮಸ್ಮಿನ್ | "ನಾಸಾ ಭವೇತ್ ಪೂಯಮಸೃಗ್ವಿಮಿಶ್ರಂ ತಂ ಪೂಯರಕ್ತಂ ಪ್ರವದಂತಿ ರೋಗಮ್" | "ನಿಚಯಾದಭಿಘಾತಾದ್ವಾ ಪೂಯಾಸೃಜ್ನಾಸಿಕಾ ಸ್ರವೇತ್ | ತತ್ಪೂಯರಕ್ತಮಾಖ್ಯಾತಂ ಶಿರೋದಾಹರಣಾಕರಮ್" |

ಪೂಯಾರಿ ಪೂಯಾರಿ (ಪುಂ) ಬೇವಿನ ಮರ. ಪೂಯಾನಾಮರಿ: |

ಪೂರ್ (:) ಪೂರ್ (:) (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಟ್ಟಣ, ನಗರ. ಪಿಪ್ಪತಿ — ಪ (ಪಾಲನಪೂರಣಯೋ: ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೧೭೭) | ತ್ವಮ್ (೭-೧-೧೦೨) | ದೀರ್ಘ: (೮-೨-೭೬) | "ರಥಸ್ಯ ತಸ್ಯಾಂ ಪುರಿ ದತ್ತವಕ್ಷುರ್ವಿದ್ವಾನ್ ವಿದಾಮಾಸ ಶನೇನ ಯಾತಮ್" ಮಾಘಂ ೩-೩೨ |

ಪೂರ್ ಪೂರ್ (ಪುಂ) 1. ಜಲಪ್ರವಾಹ, ನೀರು ಹರಿಯುವಿಕೆ, 2. ಜಲರಾಶಿ, ಜಲಸಮೂಹ. ಪೂಯತಿ-ಪೂರ್ (ಪೂರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಪೂರೋತ್ಪಿಡೇ ತಟಾಕಸ್ಯ ಪರಿವಾಹ: ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಾ" ತಂ ರಾಂ ೩-೨೯ | "ಮಹೋದಧಿ: ಪೂರ್ ಇವೇಂದು-ದರ್ಶನಾತ್" ರಘುಂ ೩-೧೭ | 3. ಪಾತ್ರೆಯೋಳಿಗೆ ನೀರು ತುಂಬುವುದು, ನೀರು ಮೊದಲಾದ ದ್ರವವಸ್ತುವನ್ನು ಸುರಿಯುವುದು. "ಭವಂತಿ ಯತ್ರೋಷಧಯೋ ರಜನ್ಯಾಮತೇಲಪೂರಾ: ಸುರತಪ್ರದೀಪಾ:" ಕುಮಾರಂ ೧-೧೦ | 4. ರೊಟ್ಟಿ ದೋಸೆ ಮೊದಲಾದ ಪಾದ್ಯ (ತಂಡಿ). 5. ಗಾಯವನ್ನು ತೊಳೆದು ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು. "ಪೂರೋ ಜಲಸಮೂಹೇ ಸ್ಯಾತ್ ವ್ರಣಸಂಶುದ್ಧಿ-ಕ್ಷಾಧಯೋ:" ಮೇದಿಂ |

ಪೂರಕ ಪೂರಕ (ಪುಂ) 1. ಮಾತುಲುಂಗ ವೃಕ್ಷ, ಮಾದಳದ ಗಿಡ. ಪೂಯತಿ — ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೇ) + ಣಿಚ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | 2. ಪ್ರಾಣಾಯಾಮದ ಒಂದು ಅಂಗ. ವಾಯುವನ್ನು ನಾಸಿಕೆಯಿಂದ ಎಳೆದುಕೊಂಡು ತುಂಬುವುದು ಪೂರಕ. "ಪೂರಕ: ಪೂರಣಂ ವಾಯೋ: ಕುಮ್ಮಭಕ: ಸ್ಥಾಪನಂ ಕ್ವಚಿತ್ | ಬಹಿರ್ನಿ:ಸಾರಣಂ ತಸ್ಯ ರೇಚಕ: ಪರಿಕೀರ್ತಿತ:" | "ನಾಸಿಕಾಕೃಷ್ಣಂ ತಚ್ಚಾಸೋ ಧ್ಯಾತು: ಪೂರಕಂ ತಚ್ಚತೇ" | (ವಿಂ) 3. ಪೂರ್ತಿಮಾಡುವ. 4. ತುಂಬುವ. "ಪ್ರಾಕಾರಸ್ಯ ಚ ಭೇತ್ತಾರಂ ಪರಿಕ್ಷಾಣಾಂ ಚ ಪೂರಕಮ್ | ದ್ವಾರಾಣಾಂ ಚೈವ ಭಕ್ಷುಕ್ತಾರಂ ಕ್ಷಿಪ್ರಮೇವ ಪ್ರವಾಸಯೇತ್" ಮನುಂ ೯-೨೮೯ |

ಪೂರಣ ಪೂರಣ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಪೂಯತಿ — ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೇ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ಸೇತು. ಪೂಯತೇನೇನ — ಪೂರಿ ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭) | 3. ಶಾಲ್ಮಲಿವೃಕ್ಷ, ಬೂರಗದ ಮರ. 4. ಎಷ್ಟು ತೈಲ. ಒಂದು ಔಷಧ. (ನಂ) 5. ತುಂಬುವುದು. "ಕುಮ್ಮ-ಪೂರಣಭವ: ಪಟುರ್ನಿವೇಶ್ಚಾರ ನಿರನದೋಽಭಿಸಿ ತಸ್ಯಾ:"



ರಘುಂ ೧-೭೩. 6. ಪೂರ್ತಿಮಾಡುವುದು. "ಯಾಚಮಾನ-  
ಜನಮಾನಸವೃತ್ತೇ: ಪೂರ್ಣಾಯ ಬತ ಜನ್ಮ ನ ಯಸ್ಯ" ನೈಷಂ ೫-೮೮. 7. ನೇಯ್ಗೆಯ ದಾರ, ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ನೇಯುವ ದಾರ. 8. ಸಂಖ್ಯಾಪೂರಣ, ಸಂಖ್ಯೆಯನ್ನು ತುಂಬುವುದು, "ತಸ್ಯ  
ಪೂರ್ಣಂ ಡಟ್" ಪಾಂ ಸುಂ ೫-೨-೪೮. ಪಞ್ಚಾನಾಂ ಪೂರ್ಣ:  
ಪಞ್ಚಮ: (ವಿಂ) 9. ತುಂಬುವ, ಪೂರ್ತಿಮಾಡುವ  
(ಸಂಖ್ಯೆ). ಪೂರಿ ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
"ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫). ಪೂರಣಿ ಪೂರಣೀ. "ಸಂಸತ್ಸು  
ಜಾತೇ ಪುರುಷಾಧಿಕಾರೇ ನ ಪೂರಣಿ ತಂ ಸಮುಪೇತಿ ಸಂಖ್ಯಾ" ಕಿರಾಂ  
೩-೫೧. 10. ತುಂಬುವವನು. ಪೂರಿ ಕರಂ "ಲ್ಯು:"  
(೩-೧-೧೩೪). 11. ಪೂರ್ತಿಮಾಡುವವನು, ಪೂರ್ಣ  
ವಾಗಿ ಮಾಡುವವನು. 12. ಗುಣಕಸಂಖ್ಯೆ, ಗುಣಿಸುವ  
ಸಂಖ್ಯೆ.

**ಪೂರಣೀಯ ಪೂರಣೀಯ (ವಿಂ)** 1. ತುಂಬಲ್ಪಡುವ.  
2. ಪೂರ್ಣಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ತುಂಬಬೇಕಾದ. 4.  
ಪೂರ್ಣಮಾಡಬೇಕಾದ, ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸಬೇಕಾದ. ಪೂರಿ  
(ಆಪ್ಯಾಯನೇ) + ಗಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). "ತವ್ಯ:"  
(೩-೧-೯೬). -ಯಿತವ್ಯ: -ಯಿತವ್ಯ:.

**ಪೂರಯಿತ್ ಪೂರಯಿತ್ಯ (ಪುಂ)** 1. ಎಷ್ಟು. ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೇ)  
+ ಗಿಚ್ "ತನ್" (೩-೨-೧೩೫). ಭಕ್ತರ ಮನೋರಥ  
ವನ್ನು ಪೂರ್ಣಗೊಳಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಸದಾ  
ಪೂರಯಿತುಂ ಶೀಲಂ ಯಸ್ಯ ಸ್ತೋತೃಮನೋರಥಾನ್ | ಸ ಸ್ಯಾತ್ ಪೂರಯಿತಾ"  
ಇತಿ ನಿರ್ಣಯ: | "ಪೂರ್ಣ: ಪೂರಯಿತಾ ಪುಣ್ಯ:" ವಿಂ ಸಂ |  
(ವಿಂ) 2. ತುಂಬುವವನು. 3. ಪೂರ್ತಿಮಾಡುವವನು,  
ಪೂರ್ಣಗೊಳಿಸುವವನು. ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೇ) + ಗಿಚ್  
"ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫).  
-ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

**ಪೂರಿಕಾ ಪೂರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪೂರಿ, ರವೆ ಅಥವಾ ಹಿಟ್ಟಿನಿಂದ  
ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಒಂದು ಭಕ್ಷ್ಯ.

**ಪೂರಿತ ಪೂರಿತ (ವಿಂ)** 1. ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರತಿಪಾದ-  
ಪೂರಿತದಿಗಂತರ: ಪತನ್ ಪುರಗೋಪುರಂ ಪ್ರತಿ ಸ ಸೈನ್ಯಸಾಗರ:"  
ಮಾಘಂ ೧೩-೨೭. 2. ಪೂರ್ತಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪೂರಿ  
(ಆಪ್ಯಾಯನೇ) + ಗಿಚ್ ಕರಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).  
3. ಅಧಿಕಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪೂರ ಪೂರು (ಪುಂ)** ಶರ್ಮಾಷ್ಠಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಯಯಾತಿಯ  
ಮಗ. [ಇವನು ತನ್ನ ತಂದೆ ಯಯಾತಿಯ ಮುದಿತನ  
ವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ತನ್ನ ಯೌವನವನ್ನು ಅವನಿಗೆ  
ಕೊಟ್ಟನು. ಅದರಿಂದ ಸಂತುಷ್ಟನಾದ ತಂದೆಯು ಪೂರು

ವಿಗೆ ರಾಜ್ಯಾಧಿಕಾರವನ್ನು ಕೊಟ್ಟನು. ಇವನು ಕೋಸಲ  
ರಾಜನ ಮಗಳನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ಅವಳಲ್ಲಿ ಜನಮೇಜಯ  
ಮತ್ತು ಪೌಷ್ಪಿಯಲ್ಲಿ ಪ್ರವೀರ ಈಶ್ವರ ರೌದ್ರಾಶ್ವರೇಂಬ  
ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪಡೆದನು. ಪೂರುವಿಗೆ ದ್ರುಹ್ಯು ಅನು ಯದು  
ಮತ್ತು ತುರ್ವಸು ಎಂಬ ನಾಲ್ವರು ಸಹೋದರರು ಇದ್ದರು.]

**ಪೂರ ಪೂರುಷ (ಪುಂ)** 1. ಮನುಷ್ಯ. 2. ಗಂಡಸು.  
ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೇ) "ಕುಷನ್" ಬಾಹುಂ | ಪುರ (ಅಗ್ರಗಮನೇ)  
"ಕುಷನ್" (೩ಂ ೪-೭೪) ವಾ | ಪೂಂ ದೀರ್ಘ: | [ಪೂರುಷ  
ಲಕ್ಷಣಕ್ಕೆ "ದ್ವಾತ್ರಿಶಲ್ಲಕ್ಷಣ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]  
ಸಾಂನುದ್ರಕಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವ ನಿಶೇಷ  
ಪೂರುಷಲಕ್ಷಣಗಳು: ಅಂಗುಷ್ಠ (ಹೆಬ್ಬೆರಳು) ಮಧ್ಯ  
ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಯವರೇಖೆಯುಳ್ಳವನಿಗೆ ಭೋಜನಸೌಖ್ಯ  
ಮತ್ತು ನೂರು ವರ್ಷಗಳು ಆಯುಸ್ಸು. "ಅಹ್ಗುಣೋದರ-  
ಮಧ್ಯೆ ತು ಯವೋ ಯಸ್ಯ ವಿರಾಜಿತ: | ತನ್ನತಂ ಭೋಜನಂ ತಸ್ಯ ಶತಂ  
ಜೀವತಿ ಮಾನವ:" | ಅಂಗೈಯಲ್ಲಿ ಅಂಕುಶ ಕುಲಿತ (ವಜ್ರಾ  
ಯುಧ) ಮತ್ತು ಭತ್ತರೇಖೆಗಳಿದ್ದರೆ ಅವನಿಗೆ ಐಶ್ವರ್ಯವೂ  
ಎಂಬತ್ತು ವರ್ಷಗಳ ಆಯುಷ್ಯವೂ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ.  
"ಅಹ್ಕುಶಂ ಕುಲಿತಂ ಶತಂ ಯಸ್ಯ ಪಾಣಿತಲೇ ಭವೇತ್ | ಏಶ್ವರೈ  
ಚ ವಿನಿರ್ನಿಷ್ಠಮಶೀತ್ಯಾಯುರ್ಭವೇದ್ಭುವಮ್" | ಕಿರುಬೆರಳಿನಿಂದ  
ತರ್ಜನಿಯವರೆಗೆ ಅಖಂಡವಾದ ರೇಖೆಯಿದ್ದರೆ ನೂರಿಪ್ಪತ್ತು  
ವರ್ಷಗಳ ಆಯುಷ್ಯವೂ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. "ಕನಿಷ್ಠಾ-  
ತರ್ಜನೀ ಯಾವತ್ ರೇಖಾ ಭವತಿ ಚಾಕ್ಷತಾ | ವಿಶತ್ಯಬ್ದಾಧಿಕಶತಂ  
ನರಾ ಜೀವತ್ಯನಾಮಯಾ:" | ಕಿರುಬೆರಳಿನಿಂದ ಮಧ್ಯದ ಬೆರಳ  
ವರೆಗೆ ಅಖಂಡವಾದ ರೇಖೆಯಿದ್ದರೆ ನೂರು ಅಥವಾ  
ಎಂಬತ್ತು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಜೀವಿಸಿರುವನು. "ಕನಿಷ್ಠಾ-  
ಮಧ್ಯಮಾ ಯಾವತ್ ರೇಖಾ ಭವತಿ ಚಾಕ್ಷತಾ | ಶತಾಬ್ದಂ ವಾಘವಾ-  
ಶೀತಿರ್ನರೋ ಜೀವೇತ್ ಸಂಶಯ:" | ಕನಿಷ್ಠಿಕೆ (ಕಿರುಬೆರಳು) ಯ  
ಕೆಳಗೆ ಇರುವ ರೇಖೆಯು ಪತ್ನಿಯರ ಸಂಖ್ಯೆಯನ್ನು  
ಸೂಚಿಸುವುದು. "ಕನಿಷ್ಠಾ ಯಾಂ ಸ್ಥಿತಾ ರೇಖಾ ಸಂಖ್ಯಾ  
ಯಾವತಿಕಾ ಸ್ಮೃತಾ | ತಾವತೀ ಪುರುಷಾಣಾಂ ತು ನಾರೀ ಭವತಿ  
ನಿಶ್ಚಿತಮ್" | ಮಧ್ಯಮಬೆರಳಲ್ಲಿ ಯವರೇಖೆಯಿದ್ದರೆ  
ಇತರರು ಕೂಡಿಸಿಟ್ಟಿರುವ ಧನವನ್ನು ಪಡೆಯುತ್ತಾನೆ.  
"ಮಧ್ಯಮಾಯಾಂ ಯದಿ ಯವಾ ದೃಶ್ಯಂತೇ ಸ್ವಂತಶೋಮನಾ: | ತದಾನ್ಯ-  
ಸಂಚಿತಂ ವित्तಂ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ" | ಅಂಗುಷ್ಠ (ಹೆಬ್ಬೆರಳು) ಯವ  
ರೇಖೆಯ ಮೇಲುಗಡೆ ಚಕ್ರರೇಖೆಯಿದ್ದರೆ ಪಾಮರರು  
ಸಂಪಾದಿಸಿ ಕೂಡಿಸಿಟ್ಟ ಧನವನ್ನು ಪಡೆಯುತ್ತಾನೆ.  
"ಯಸ್ಯಾಥ ಚಕ್ರಮಹ್ಗುಣೇ ಯವಾದ್ಧವಂ ಚ ದೃಶ್ಯತೇ | ತದಾ ವೇ  
ಪಾಮರಾದೀನಾಮಜಿತಂ ಧನಮಾಪ್ನುಯಾತ್" | ಗಲ್ಲ ಮತ್ತು ಎದೆ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಕೂಡಲಿಲ್ಲದವನು ಧೂರ್ತನಾಗುವನು. "ಚಿಬ್ಬುಕೇ



ಶಮಶ್ರುಣ್ಯಾ ಯೇ ನಿಲೋಮಹೃದಯಾಶ್ಚ ಯೇ | ತೇ ಭೂತಾ ನೇವ ಸಂದೇಹಃ |  
ಸಮುದ್ರವಚನಂ ಯಥಾ” |

**ಪೂರ್ಣ ಪೂರ್ಣ (ಪುಂ)** 1. ಎಷ್ಟು. ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯತೇ)+ಣಿಚ್  
“ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) | ಇಡಭಾವಃ ನಿಪಾಂ (೭-೨-೨೭) |  
ಪರಮಾತ್ಮನು ಅವಾಪ್ತಸಮಸ್ತಕಾಮನಾದುದರಿಂದ  
ಪೂರ್ಣನು. “ಪೂರ್ಣಃ ಸಮಸ್ತಕಾಮೇಶ್ವ ಸಂಪನ್ನಃ ಸರ್ವಶಕ್ತಿಭಿಃ”  
ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | “ಪೂರ್ಣಃ ಪೂರ್ಣಿತಾ ಪುಣ್ಯಃ” ವಿಂಸಂ |  
(ವಿಂ) 2. ಶಕ್ತಿ, ಸಮರ್ಥ, ಬಲಶಾಲಿ. 3. ಸಮಗ್ರ  
ವಾದ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ. “ಅಪೂರ್ಣಮೇಕೇನ ಶತಕ್ರತುಪಮಃ”  
ರಘುಂ ೩-೩೮ | 4. ಸಮಾಪ್ತವಾದ, ಕೊನೆಯನ್ನು  
ಮುಟ್ಟಿದ. 5. ತುಂಬಿರುವ, ಭರ್ತಿಯಾಗಿರುವ. “ಪರ್ಯಾಪ-  
ತತಕ್ರಿಯಿಕಲೋಕಮಗಮ್ಯಪುಣ್ಯಪೂರ್ಣಾಪಿಣಾ ವಿಪಣಿನೋ ವಿಪಣಿವಿ-  
ಭೇಜುಃ” ಮಾಘಂ ೪-೨೪ | 6. ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟ, ಭರ್ತಿಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಪೂರಿ + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) |  
ನಿಪಾಂ (೭-೨-೨೭) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರ್ಣಿ-ರ್ಣಾಃ ಪೂರ್ಣ  
ತಿಥಿ. ಪಂಚಮಿ ದಶಮಿ ಮತ್ತು ಪೂರ್ಣಿಮಾ ಇವು ಪೂರ್ಣ  
ತಿಥಿಗಳು. “ನಂದಾ ಭದ್ರಾ ಜಯಾ ರಿಕ್ತಾ ಪೂರ್ಣಾ ಪ್ರತಿಪದಃ  
ಕ್ರಮಾತ್” |

**ಪೂರ್ಣಕಾಮ ಪೂರ್ಣಕಾಮ (ಪುಂ)** 1. ಪರಮಾತ್ಮ. ಪೂರ್ಣಃ  
ಕಾಮೋಽಸ್ಯ | ಪರಮಾತ್ಮಾ ಅವಾಪ್ತಸಮಸ್ತಕಾಮಃ | (ವಿಂ)  
2. ಇಷ್ಟಸಿದ್ಧಿ ಹೊಂದಿದವನು, ಇಷ್ಟವಾದುದನ್ನು ಪಡೆದ  
ವನು. ಪೂರ್ಣಃ ಕಾಮೋ ಯಸ್ಯ |

**ಪೂರ್ಣಕ್ರಮ ಪೂರ್ಣಕ್ರಮ (ಪುಂ)** 1. ನೀರಿನಿಂದ ತುಂಬಿದ  
ಬಂದಿಗೆ. 2. ತುಂಬಿದ ಬಂದಿಗೆ. ಜಲಾದಿಭಿಃ ಪೂರ್ಣಃ ಕ್ರಮಃ |

**ಪೂರ್ಣಪಾತ್ರ ಪೂರ್ಣಪಾತ್ರ (ನಂ)** 1. ಮಂಗಳ ವಸ್ತುಗಳಿಂದ  
ತುಂಬಿದ ಪಾತ್ರೆ ಅಥವಾ ಪೆಟ್ಟಿಗೆ. ಪೂರ್ಣಂ ಚ ತತ್ ಪಾತ್ರಂ ಚ |  
2. ಪುತ್ರಜನನ ಜನ್ಮದಿನೋತ್ಸವ (ಹುಟ್ಟಿದ ಹಬ್ಬ)  
ಮುಂತಾದ ಸಂತೋಷಸಮಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಪರಿಜನರಿಗೆ  
ಪಾರಿತೋಷಿಕವಾಗಿ ಕೊಡುವ ವಸ್ತು ಆಭರಣ ಮೊದಲಾ  
ದುವು. ಉತ್ಸವ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಬಂಧುಮಿತ್ರರು ಯಜಮಾನ  
ನಿಂದ ವಸ್ತು ಆಭರಣ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಸಂತೋಷ  
ದಿಂದ ತಾವಾಗಿ ಎಳೆದು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. “ಹೃಷಿ-  
ಕುಸವಕಾಲೇ ಯದಲಕ್ಷ್ಮೀಶುಕಾದಿಕಮ್ | ಆಕೃತ್ಯ ಗೃಹ್ಯತೇ  
ಪೂರ್ಣಪಾತ್ರಂ ಪೂರ್ಣಲಿಪಂ ಚ ತತ್” ಹಾರಾಂ | “ಶಾಮ್ಭವಂ ಚಾಪಮಾರೋಪ್ಯ  
ಯೋಽಸ್ಮಾನಾನಂದಯಿಷ್ಯತಿ | ಪೂರ್ಣಪಾತ್ರಮಿದಂ ತಸ್ಮೈ ಮೇಥಿಲಿ  
ಕಲ್ಪಯಿಷ್ಯತಿ” ಅನರ್ಥಂ | 3. ಹೋಮಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ  
ಕೊಡುವ ಬ್ರಹ್ಮದಕ್ಷಿಣೆ, 256 ಮುಷ್ಟಿ (ಹಿಡಿ)ಗಳ  
ಪ್ರಮಾಣ.

8 ಮುಷ್ಟಿ (ಹಿಡಿ)ಗಳು 1 ಕುಂಜಿ.  
8 ಕುಂಜಿಗಳು 1 ಪುಷ್ಕಲ  
4 ಪುಷ್ಕಲಗಳು 1 ಪೂರ್ಣಪಾತ್ರ.

“ಅಷ್ಟಮುಷ್ಟಿಭವೇತುಜ್ವಿಃ ಕುಚ್ಚಯೋಽಷ್ಟೌ ಚ ಪುಷ್ಕಲಮ್ |  
ಪುಷ್ಕಲಾನಿ ಚ ಚತುರ್ವಿಂಶತಿ ಪೂರ್ಣಪಾತ್ರಂ ವಿಧೀಯತೇ” | “ಹೋಮಾಂತೇ  
ಪೂರ್ಣಪಾತ್ರಂ ಬ್ರಹ್ಮಣೇ ದद्याತ್” ಗೋಮಿಲಃ |

**ಪೂರ್ಣಪ್ರಜ್ಞ ಪೂರ್ಣಪ್ರಜ್ಞ (ಪುಂ)** ದ್ವೈತಮತ ಪ್ರವರ್ತಕರಾದ  
ಶ್ರೀಮನ್ಮಧ್ವಾಚಾರ್ಯರು, ಆನಂದ ತೀರ್ಥರು. ವಾಯು  
ದೇವರು ಶ್ರೀಮಧ್ವಾಚಾರ್ಯರೆಂಬ ಅಭಿಧಾನದಿಂದ  
ಅವತರಿಸಿ ದ್ವೈತಮತ ಪ್ರಚಾರ ಮಾಡಿದರು. “ಪ್ರಥಮಸ್ತು  
ಹನುಮಾನ್ ಸ್ಯಾತ್ ದ್ವಿತೀಯೋ ಭೀಮ ಏವ ಚ | ಪೂರ್ಣಪ್ರಜ್ಞಸ್ತತೀಯಶ್ಚ  
ಭಗವತ್ಕಾರ್ಯಸಾಧಕಃ” | [ದ್ವೈತಮತದ ವಿವರಕ್ಕೆ “ದ್ವೈತ-  
ದರ್ಶನ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. ಈ ಆಚಾರ್ಯರು ಇತರ  
ಮತ ಪ್ರವರ್ತಕರಾದ ಪೂರ್ವಾಚಾರ್ಯರುಗಳಂತೆ ಸಿದ್ಧಾಂತ  
ಸ್ಥಾಪಕರಾಗಿ ಅನೇಕ ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುವರು. ಅವು  
ಗಳಿಗೆ ಸರ್ವಮೂಲ ಗ್ರಂಥವೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಯಿದೆ. ಸರ್ವ  
ಮೂಲ ಗ್ರಂಥವು 27 ವಿಧ. ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಹತ್ತು ಪ್ರಕರಣ  
ಗ್ರಂಥಗಳು. ಆಚಾರ ಗ್ರಂಥಗಳು ಕೆಲವು. ಕೆಲವು ಸಿದ್ಧಾಂತ  
ಗ್ರಂಥಗಳು. ಪ್ರಸ್ಥಾನತ್ರಯ ಭಾಷ್ಯಗಳು. ಕೆಲವು ಪುರಾಣ  
ತಾತ್ಪರ್ಯ ನಿರ್ಣಯಗಳು. ಈ ಸರ್ವಮೂಲ ಗ್ರಂಥಗಳಿಗೆ  
ಶ್ರೀ ಜಯತೀರ್ಥಾಚಾರ್ಯರೆಂಬವರು ಟೀಕೆಗಳನ್ನು  
ಬರೆದಿರುವುದರಿಂದ ಅವರಿಗೆ “ಟೀಕಾಚಾರ್ಯ”ರೆಂದು  
ಹೆಸರಾಯಿತು. ಅವುಗಳ ಮೇಲೂ ಟೀಕೆಗಳು ಅಸಂಖ್ಯಾತ  
ವಾಗಿ ಬೆಳೆದುಬಂದಿವೆ.

ಶ್ರುತಿ ಸ್ಮೃತಿ ಇತಿಹಾಸ ಪುರಾಣ ಮೊದಲಾದ ಎಲ್ಲಾ  
ಶಾಸ್ತ್ರಗಳೂ ಶ್ರೀವಿಷ್ಣುವಿನ ಮಹಾತ್ಮ್ಯವನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸಿ  
ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿಗೆ ಸರ್ವೋತ್ಕರ್ಷವನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವುದ  
ರಿಂದ ಇಂತಹ ಉತ್ಕರ್ಷಜ್ಞಾನವೇ ಮೋಕ್ಷ ಸಾಧನವಾಗು  
ವುದೆಂದು ಸಿದ್ಧಾಂತಪಡಿಸಿರುವುದು, ಜಗತ್ಕಾರಣತ್ವ ಮೊದ  
ಲಾದ ಸಕಲ ವ್ಯಾಪಾರಗಳನ್ನು ವಿಷ್ಣುವಿಗೆ ಸಮರ್ಪಿಸಿ  
ವಿಷ್ಣುಭಕ್ತಿಯೇ ಮುಖ್ಯವೆಂದು ನಿರ್ಣಯಿಸಿರುವುದರಿಂದ  
ಇವರ ದರ್ಶನಕ್ಕೆ “ವೈಷ್ಣವಸಿದ್ಧಾಂತ”ವೆಂದು  
ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಯುಂಟಾಯಿತು. “ಉತ್ಪತ್ತಿಃ ಸ್ಥಿತಿಃ ಹರಾ ನಿಯತಿಃ-  
ಜ್ಞಾನಮಾವೃತಿಃ | ಬಂಧಮೋಕ್ಷೌ ಚ ಪುರುಷಾಽಸ್ಮಾತ್ ಸ ಹರಿರೇಕ-  
ರಾತ್” ಸರ್ವದರ್ಶನಸಂಘ್ರಹೇ ಸ್ಕಾಂದವಚನಮ್ | “ಯತೋ ಬಾ  
ಹ್ಮಾನಿ ಭೂತಾನಿ ಜಾಯಂತೇ | ಯೇನ ಜಾತಾನಿ ಜೀವಂತಿ”  
ಇತ್ಯಾದಿಶ್ರುತಿವಚನಮ್ |



**ಪೂರ್ಣಿಮೆ ಪೂರ್ಣಿಮೆ** (ಪುಂ) ಮಾತುಲುಂಗವೃಕ್ಷ. ಮಾದಳದ ಗಿಡ. ಪೂರ್ಣಿಮೆ ಯಸ್ಯ |

**ಪೂರ್ಣಿಮಾ ಪೂರ್ಣಿಮಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂರ್ಣಿಮೆ, ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ಪೂರ್ಣಿಮೆ: ಕಲಾಭಿ: ಪೂರ್ಣಿಮಾ: ಮೀಯತೇಷ್ಯಾಂ — ಮಾಟ್ (ಮಾನೇ) ಧರ್ಮ "ಕ:" (ವಾಂ 3-3-48) |

**ಪೂರ್ಣಿಮಾ ಪೂರ್ಣಿಮಾ** (ಪುಂ) 1. ಪೂರ್ಣಿಮೆ, ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ಪೂರ್ಣಿಮಾ ಯತ್ರ | "ದಶೋ ಪೂರ್ಣಿಮಾಸೇನ ಚಾತುರ್ಮಾಸ್ಯ: ಪುನ: ಪುನ: | ಅಜಯದ್ವಯಮೇಧೇನ ಸಹಸ್ರಂ ಪರಿವತ್ಸರಾನ್" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ 26-114 | 2. ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ದಿನ ಮಾಡುವ ಯಾಗ. ಪೂರ್ಣಿಮಾ ಪೂರ್ಣಿಮಾ ಸಾಧನವೇನಾಸ್ತೀತ್ಯಸ್ಯ "ಅಚ್" (4-2-129) |

**ಪೂರ್ಣಿಮಾ ಪೂರ್ಣಿಮಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂರ್ಣಿಮೆ, ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ಪೂರ್ಣಿಮಾ ಯತ್ರ | ಗೌರಾಂ "ಛೀಛ್" (4-1-61) |

**ಪೂರ್ಣಿಮಾ ಪೂರ್ಣಿಮಾ** (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಬಾಹು ಯುದ್ಧ.

**ಪೂರ್ಣಿ ಪೂರ್ಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂರ್ಣಿ ತಿಥಿ. ಪಂಚಮಿ ದಶಮಿ ಮತ್ತು ಪೂರ್ಣಿಮಾ ಇವು ಪೂರ್ಣಿ ತಿಥಿಗಳು. ಗುರುವಾರ ಮತ್ತು ಪೂರ್ಣಿ ತಿಥಿಗಳ ಸಂಯೋಗವು "ಸಿದ್ಧಿ ಯೋಗ" ವಾಗುವುದು.

**ಪೂರ್ಣಿ (ಲ)ಕ ಪೂರ್ಣಿ (ಲ)ಕ** (ನಂ) 1. ಪೂರ್ಣಿ ಪಾತ್ರ, ಸಂತೋಷಕಾಲದಲ್ಲಿ ಬಂಧುಗಳು ಮತ್ತು ಸ್ನೇಹಿತರು ಯಜಮಾನನಿಂದ ವಸ್ತ್ರ ಅಭರಣ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ತಾವಾಗಿಯೇ ಎಳೆದು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. 2. ನಗರಿ ತಮಟೆ ಮುಂತಾದವು. "ಭವೇತ್ಪೂರ್ಣಿಕಂ ವರ್ಷಪಿಣಿ ಪಠಹೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ |

**ಪೂರ್ಣಿಯೋಗ ಪೂರ್ಣಿಯೋಗ** (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯನ ಸಂಪೂರ್ಣ ಆಯುಃಪ್ರಮಾಣವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಗ್ರಹಗಳ ಸ್ಥಿತಿ, ಆಯುಃಪ್ರಮಾಣದ ಸಂಪೂರ್ಣಕಾಲ (ಶತಮಾನ) ಬದುಕಿರಲು ಅವಶ್ಯವಾದ ಗ್ರಹಗಳ ಸ್ಥಿತಿ. (ಗ್ರಹಗಳ ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧ). ಪೂರ್ಣಿಯೋಗ ಯೋಗ: ಭವತ್ಯಸ್ಮಾತ್ | ಅಷ್ಟಮಭಾವಾಧಿಪತಿಯು ಸ್ವಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಇದ್ದರೆ ಪೂರ್ಣಿಯು ಸ್ವ. ದಶಮ ಭಾವಾಧಿಪತಿಯು ತನ್ನ ಉಚ್ಚಕ್ಷೇತ್ರ, ಸ್ವಕ್ಷೇತ್ರ ಅಥವಾ ಮಿತ್ರಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿದ್ದರೂ ಲಗ್ನಾಧಿಪತಿ ಮತ್ತು ದಶಮಾಧಿಪತಿಗಳು ಕೇಂದ್ರದಲ್ಲಿದ್ದರೂ (ಸ್ವಕ್ಷೇತ್ರ ಮೂಲತ್ರಿಕೋಣ ಮತ್ತು ಸ್ವೋಚ್ಚಕ್ಷೇತ್ರಗಳಲ್ಲಿದ್ದರೆ ಮತ್ತು ವಿಶೇಷ) ಲಗ್ನಾಧಿಪತಿಯು ಕೇಂದ್ರದಲ್ಲಿದ್ದು ಗುರುಶುಕ್ರರೊಡನೆ ಕೂಡಿದ್ದರೂ ಅಥವಾ ಅವರಿಂದ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟರೂ ಪಾಪಗ್ರಹಗಳು ಮೂರು ಅರು ಮತ್ತು ಹನ್ನೊಂದನೆಯ ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿದ್ದರೂ ಶುಭಗ್ರಹಗಳು

ಕೇಂದ್ರ ತ್ರಿಕೋಣಗಳಲ್ಲಿದ್ದರೂ ಲಗ್ನಾಧಿಪತಿಯು ಬಲಿಷ್ಠನಾಗಿದ್ದರೂ ಮೂರು ಗ್ರಹಗಳು ಉಚ್ಚಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿದ್ದು ಲಗ್ನದಲ್ಲಿ ಅಷ್ಟಮಾಧಿಪತಿಯು ಇದ್ದರೂ ಅಷ್ಟಮದಲ್ಲಿ ಪಾಪಗ್ರಹಗಳಲ್ಲಿದ್ದರೂ ಪೂರ್ಣಿಯು ಸ್ವೇಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕು. ಮನುಷ್ಯನ ಆಯುಃಪ್ರಮಾಣ ನೂರು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ. ಇಷ್ಟು ಕಾಲ ಅವನು ಬದುಕಿರಬೇಕಾದರೆ ಹಿತವಾದ ಆಹಾರವಿಹಾರಗಳು ಕಾರಣ. "ವರ್ಷಶತಂ ಸತ್ವಾಯುಷ: ಪ್ರಮಾಣಮಸ್ಮಿನ್ ಕಾಲೇ ತಸ್ಯ ನಿಮಿತ್ತಂ ಪ್ರಕೃತಿಗುಣಾತ್ಮಸಂಪತ್ ಸಾತ್ಮೋಪಸೇವನಂ" ಚರಕಂ |

**ಪೂರ್ಣಿಯುಕ್ತ ಪೂರ್ಣಿಯುಕ್ತ** (ವಿಂ) ದೀರ್ಘಾಯುಷ್ಯ ವುಳ್ಳವನು.

**ಪೂರ್ಣಿಯುಕ್ತ ಪೂರ್ಣಿಯುಕ್ತ** (ನಂ) ದೀರ್ಘಾಯುಷ್ಯ, ಜೀವಿತದ ಸಂಪೂರ್ಣಕಾಲ, ನೂರು ವರ್ಷಗಳ ಜೀವನ ಕಾಲ.

**ಪೂರ್ಣಿವತಾರ ಪೂರ್ಣಿವತಾರ** (ಪುಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಸಂಪೂರ್ಣವತಾರ. ಪೂರ್ಣಿ: ಅವತಾರ: | ಶ್ರೀನೃಸಿಂಹಾವತಾರ, ಶ್ರೀರಾಮಾವತಾರ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಾವತಾರಗಳು ಪೂರ್ಣಿವತಾರಗಳು. "ಪೂರ್ಣಿ ನೃಸಿಂಹೋ ರಾಮಶ್ಚ ಶ್ವೇತದ್ವೀಪವಿರಾಡ್ ವಿಭು: | ಪರಿಪೂರ್ಣತಮ: ಕೃಷ್ಣೋ ವೈಕುಂಠೇ ಗೋಕುಲೇ ಸ್ವಯಮ್ | ವೈಕುಂಠೇ ಕಮಲಾಕಾಂತೋ ರೂಪಭೇದಶ್ಚತುರ್ಮುಖ: | ಗೋಕುಲೇ ಗೋಕುಲೇ ರಾಧಾ-ಕಾಂತೋಽಯಂ ದ್ವಿಭುಜ: ಸ್ವಯಮ್" ಬಹುವಂ |

**ಪೂರ್ಣಿ ಪೂರ್ಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂರ್ಣಿ, ಸಮಗ್ರತೆ.

**ಪೂರ್ಣಿಮಾ ಪೂರ್ಣಿಮಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೂರ್ಣಿಮೆ, ಹುಣ್ಣಿಮೆ ಪೂರಿ (ಆವ್ಯಾಯನೇ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114) | ಪೂರ್ಣಿಮಾ ಚಂದ್ರಸ್ಯ ಪೂರ್ಣಮ್, ತೇನ ನಿರ್ವೃತ್ತಾ — "ಇಮಪ್" (ವಾಂ 4-4-20) | "ಛೀಛ್" (4-1-4) | ಚಂದ್ರಮಂಡಲವು ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷದ ಹದಿನೈದನೆಯ ದಿನ ಕಲೆಗಲಿಂದ ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ತುಂಬಲ್ಪಡುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ನಿಖಿಲಾನ್ನಿಶಿ ಪೂರ್ಣಿಮಾ ತಿಥಿನುಪತಸ್ಯೇತಿತಿಥಿರೇಕಿಕಾ ತಿಥಿ:" ನೆಪಂ 2-36 | 2. ಮರೀಚಿಮಹರ್ಷಿಯ ಒಬ್ಬ ಮಗಳು.

**ಪೂರ್ಣಿ ಪೂರ್ಣಿ** (ಪುಂ) ಪೂರ್ಣಿಚಂದ್ರ, ಸಕಲ ಕಲೆಗಳಿಂದಲೂ ಪರಿಪೂರ್ಣನಾದ ಚಂದ್ರ. "ಪೂರ್ಣಿಮಾಸ್ಯ ವಿವಿಧ: ಪುನಸ್ತೇ ಪುನರ್ಮುಖೀಚಕ್ರನಿರ್ಮಲಮ್" ನೆಪಂ 10-20 |

**ಪೂರ್ಣಿಮಾ ಪೂರ್ಣಿಮಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಪಮಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ವರ್ಣ್ಯ ಉಪಮಾನ ಸಾಧಾರಣಧರ್ಮ ಮತ್ತು ಉಪಮಾವಾಚಕಪದ ಈ ನಾಲ್ಕೂ ಪದಗಳ ಉಪಾದಾನವಿದ್ದಲ್ಲಿ "ಪೂರ್ಣಿಮಾ" ಅಲಂಕಾರವಾಗುವುದು. "ಹಂಸೀವ ಕೃಷ್ಣ ತೇ ಕೀರ್ತಿ: ಸ್ವರ್ಗಜ್ಞಾಮವಗಾಹತೇ" ಇಲ್ಲಿ



ಕೀರ್ತಿಯು ವರ್ಣ್ಯ (ಉಪಮೇಯ). ಹಂಸಿಯು ಉಪಮಾನ. ಸ್ವರ್ಗಂಗಾವಗಾಹನವು ಸಾಧಾರಣ ಧರ್ಮ. ಇವ ಶಬ್ದವು ಉಪಮಾವಾಚಕ, ಈ ನಾಲ್ಕು ಪದಗಳಿಗೂ ಉಪಾದಾನ (ಪ್ರಯೋಗ) ವಿರುವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ ಪೂರ್ಣೋಪಮಾಲಂಕಾರ. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವುದಾದರೂ ಒಂದು ಎರಡು ಅಥವಾ ಮೂರು ಪದಗಳಿಗೆ ಪ್ರಯೋಗವಿಲ್ಲದಿದ್ದಲ್ಲಿ "ಲುಪ್ತೋಪಮಾ" ಅಲಂಕಾರ. "ಏಕದ್ವಿತ್ಯನುಪಾದಾನಾದ್ವಿತ್ತಾ ಲುಪ್ತೋಪಮಾಽಪಠಾ". [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಲುಪ್ತೋಪಮಾ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಪೂರ್ವ ಪೂರ್ತ (ನಂ)** 1. ಪಾಲನೆ, ಪೋಷಣೆ, ಸಾಕುವುದು. ಪ (ಪಾಲನಪೂರಣಯೋಃ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪). 2. ಬಾವಿ ಕೆರೆ ಮುಂತಾದುವನ್ನು ತೋಡಿಸುವುದು, ಯಾತ್ರಾರ್ಥಿಗಳ ಸೌಕರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ತೋಪುಗಳ ನಿರ್ಮಾಣ ಅನ್ನಸತ್ಯಗಳ ಏರ್ಪಾಡು ಹಣ್ಣುಹಂಪಲಿಗಾಗಿ ಉದ್ಯಾನ ನಿರ್ಮಾಣ ದೇವಾಲಯನಿರ್ಮಾಣ ಮುಂತಾದ ಧರ್ಮ ಕಾರ್ಯಗಳು. ಪ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ಪುಷ್ಕರಿಣಿಃ ಸಭಾವಾಪಿ ದೇವತಾಯತನಾನಿ ಚ | ಆರಾಮಶ್ಚ ವಿಶೇಷೇಣ ಪೂರ್ತ ಕರ್ಮ ವಿನಿರ್ದಿಶೇತ್" ಸ್ಮೃತಿಃ | "ಇಷ್ಟೇನ ಪೂರ್ತೇನ ನಲಸ್ಯ ವಶ್ಯಾಃ ಸ್ವಭೌಗಮತ್ರಾಪಿ ಸೃಜಂತ್ಯಮರ್ತ್ಯಾಃ" ನೆಟಂ ೩-೨೧. (ವಿಂ) 3. ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟು. 5. ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಸಾಕಲ್ಪಟ್ಟು.

**ಪೂರ್ತಿ ಪೂರ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ತುಂಬುವುದು, ಭರ್ತಿಮಾಡುವುದು. 2. ಪೂರ್ತಿಮಾಡುವುದು, ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸುವುದು. 3. ಸಾಕುವುದು, ಪೋಷಿಸುವುದು. ಪ (ಪಾಲನಪೂರಣಯೋಃ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೧೪). 4. ಗುಣಿಸುವುದು, ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು.

**ಪೂರ್ವ ಪೂರ್ವಾರ (ನಂ)** ಪಟ್ಟಣದ ಮಹಾದ್ವಾರ, ಗೋಪುರ, ಊರ ಹೊರಬಾಗಿಲು. ಪುರಃ ದ್ವಾರಮ್ |

**ಪೂರ್ಯ ಪೂರ್ಯ (ವಿಂ)** ತುಂಬಲ್ಪಡುವ, ಭರ್ತಿಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೇ) + ಣಿಚ್ "ಣ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) |

**ಪೂರ್ಯಮಾಣ ಪೂರ್ಯಮಾಣ (ವಿಂ)** ತುಂಬಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಭರ್ತಿಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೇ) + ಣಿಚ್ "ಶಾನ್ಯತ್" (೩-೨-೧೨೪) |

**ಪೂರ್ವ ಪೂರ್ವ (ನಂ)** 1. ಪೂರ್ವಕಾಲ, ಹಿಂದಿನಕಾಲ, ಪ್ರಾಚೀನಕಾಲ. ಪೂರ್ವತಿ - ಪೂರ್ವ (ನಿಕೇತನೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). 2. ಹಿಂದಿನಕಾಲ, ಇದಕ್ಕೆ ಮುಂಚಿನಕಾಲ. 3. ಪ್ರಾರಂಭಕಾಲ. ಮೊದಲನೆಯ ಘಟ್ಟ. (ಛಂ ೧೦೦೦) 4. ಪೂರ್ವಪುರುಷರು, ಮೂಲಪುರುಷರು, ವಂಶದ

ಹಿರಿಯರು. "ಪಯಃ ಪೂರ್ವಃ ಸ್ವನಿಃ ಸ್ವಾಸಿಃ ಕವೋಣಮುಪ-ಭುಜ್ಯತೇ" ರಘುಂ ೧-೬೭. "ತದರ್ಥಮುರ್ಮಿಮವದಾರಯದ್ವಿಃ ಪೂರ್ವಃ ಕಿಲಾಯಂ ಪರಿವಾಚಿತೋ ನಃ" ರಘುಂ ೧೩-೩. (ವಿಂ) 5. ಹಿಂದಿನ ಕಾಲದವನು, ಹಳೆಯ. 6. ಪ್ರಾರಂಭಕಾಲದ, ಪ್ರಾಚೀನ ಕಾಲದ. "ಇದಂ ಕವಿಮ್ಯಃ ಪೂರ್ವಮ್ಯಃ ನಮೋವಾಕಂ ಪ್ರಶಾಸ್ಮಹೇ" ರಂ ರಾಂ ೧-೧. 7. ಹಿಂದಿನ, ಇದಕ್ಕೆ ಹಿಂದಿನದಾದ. "ಪ್ರಾಣಿನಾಂ ಯದವಲೋಕನಕ್ಷಣೇ ಪೂರ್ವಜಾತಿಷು ಭವತ್ಯನುಸ್ಮೃತಿಃ" ಯಾದಂ ೧೭-೩೪. 8. ಹಿಂದಿನಕಾಲದ, ಇದಕ್ಕೆ ಮುಂಚಿನ ಕಾಲದ. "ಪೂರ್ವಾನುಬದ್ಧವೇಣ ಶತ್ರುಣಾ ಪ್ರಭವಿಷ್ಣುನಾ" ಮೃಚ್ಛಂ ೧೦-೪೪. 9. ಮೊದಲನೆಯ, ಪ್ರಾರಂಭದ, ಎಳೆಯ. "ಪೂರ್ವೇ ವಯಸಿ ಯಃ ಶಾಂತಃ ಸ ಶಾಂತಃ ಇತಿ ಮೇ ಮತಿಃ" ಪञ्ಚತಂ ೧-೧೭೬. 10. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ. 11. ಮೊದಲನೆಯ, ಹಿಂದಿನ. "ಪೂರ್ವಸ್ಮಾದನ್ಯವದ್ಭಾತಿ ಭಾವಾಧಾಶರಥಿ ಸ್ತುವನ್" ಭट्टಿಂ ೮-೧೦೫. 12. ಮೊದಲನೆಯ ಘಟ್ಟದ, ಪ್ರಾರಂಭದ. (ಅವ್ಯಂ) 13. ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ, ಹಿಂದಿನಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಪ್ರಾಚೀನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ. 14. ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ, ಮೊಟ್ಟ ಮೊದಲು. "ಪೂರ್ವಮೇವ ಮಯಾ ಜಾತಂ ಪೂರ್ಣಮೇತದ್ವಿ ಮೇದಸಾ" ಪञ्ಚತಂ ೧-೧೧೭. 15. ಇದಕ್ಕೆ ಹಿಂದೆ, ಇದಕ್ಕೆ ಮೊದಲು, ಇದಕ್ಕೆ ಮುಂಚೆ. "ಪೂರ್ವ ಮಾನಾದವಜ್ಞಾಯ ದ್ರವ್ಯಾರ್ಥಂ ಜನನಿ-ವಶಾತ್" ಮೃಚ್ಛಂ ೮-೧೭. 16. ಪ್ರಥಮವಾಗಿ, ಮೊದಲನೆಯವನಾಗಿ. "ಪೂರ್ವ ತಾವದಹಂ ಮೂಃ ದ್ವಿತೀಯಃ ಪಾಶಬನ್ಧಕಃ" ಪञ್ಚತಂ ೩-೨೧೧. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರ್ವಾ-ರ್ವಾ. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕು. ಪೂರ್ವ ಶಬ್ದವು ದಿಕ್ಕು ದೇಶ ಮತ್ತು ಕಾಲವಾಚಕವಾದಾಗ ಪ್ರಥಮಾ ಬಹುವಚನ, ಚತುರ್ಥೀ ಪಂಚಮಿ ಮತ್ತು ಸಪ್ತಮಿ ವಿಭಕ್ತಿಗಳ ಏಕವಚನಗಳಲ್ಲಿ ವಿಕಲ್ಪವಾಗಿ ಸರ್ವನಾಮ ಸಂಜ್ಞೆಯನ್ನು ಹೊಂದುವುದು.

| (ಛಂ) ಪೂರ್ವಃ | ಪೂರ್ವಾ      | ಪೂರ್ವಾಃ    |
|-------------|-------------|------------|
| ಪೂರ್ವ       | ಪೂರ್ವಾ      | ಪೂರ್ವಾನ್   |
| ಪೂರ್ವೇಣ     | ಪೂರ್ವಾಮ್ಯಾಂ | ಪೂರ್ವೇಃ    |
| ಪೂರ್ವಸ್ಮಿನ್ | ಪೂರ್ವಾಮ್ಯಾಂ | ಪೂರ್ವಮ್ಯಃ  |
| ಪೂರ್ವಾಯಿ    |             |            |
| ಪೂರ್ವಸ್ಮಾತ್ | ಪೂರ್ವಾಮ್ಯಾಂ | ಪೂರ್ವಮ್ಯಃ  |
| ಪೂರ್ವಾತ್    |             |            |
| ಪೂರ್ವಸ್ಯ    | ಪೂರ್ವಯೋಃ    | ಪೂರ್ವೇಷಾಮ್ |
| ಪೂರ್ವಸ್ಮಿನ್ | ಪೂರ್ವಯೋಃ    | ಪೂರ್ವೇಷು   |
| ಪೂರ್ವೇ      |             |            |

ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗದಲ್ಲಿ ಸರ್ವನಾಮಸಂಜ್ಞೆಯು ನಿತ್ಯವಾಗಿ ಬರುವುದು. ಪೂರ್ವಸ್ಯ ಪೂರ್ವಸ್ಯಾಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ.



ಸರ್ವನಾಮಸಂಜ್ಞೆಯಿರುವುದರಿಂದ ವೃತ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಪೂರ್ವ ದ್ವಾವ ಬರುವುದು.

ಪೂರ್ವಸ್ಯಾ: ರೂಪಂ = ಪೂರ್ವರೂಪಂ ।

ಪೂರ್ವಸ್ಯಾಂ ಸ್ಥಿತಂ = ಪೂರ್ವಸ್ಥಿತಂ ಇತ್ಯಾದಿ. "ಸರ್ವನಾಮನೋ ವೃತ್ತಿಮಾತ್ರೇ ಪುಂಙ್ಮಾವ:" (ವಾಂ ೨-೧-೪೧) ।

**ಪೂರ್ವ ಪೂರ್ವಕ ಪೂರ್ವಕ** (ವಿಂ) (ಸಮಾಸದ ಕೊನೆ ಯಲ್ಲಿ) ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿರುವ, ಮೊದಲಲ್ಲಿರುವ, ಮೊದಲಾಗಿ ರುವ. "ಸಂವತ್ಸರಾಭಿಷೇಕಪೂರ್ವಮಾಹುರ್ವೃತ್ತ: ಸ ನೌ ಸಂವತ್ಸರಾಭಿ- ವೃತ್ತಾಂತೇ" ರಘುಂ ೨-೪೮ । ಇಲ್ಲಿ ಸಂಬಂಧ (ಸಖ್ಯ)ಕ್ಕೆ ಅಭಾಷಣ (ಸಂಭಾಷಣೆ, ಅಲಾಪ)ವೇ ಪೂರ್ವ (ಮೊದಲು) ದಲ್ಲಿ ನಡೆದಿರಬೇಕೆಂಬ ಅರ್ಥ. ಮೊದಲು ಸಂಭಾಷಣೆ ಅನಂತರ ಸಖ್ಯ ಎಂಬ ಅರ್ಥವಿರುವುದರಿಂದ ಸಂಬಂಧವು ಅಭಾಷಣಪೂರ್ವವಾಗುವುದು. ಹೀಗೆಯೇ ರಾಜಪೂರ್ವ: ಎಂಬಲ್ಲಿ ರಾಜ ಶಬ್ದವೇ ಮೊದಲಾಗಿರುವ ದಶಪೂರ್ವರಥ: ಎಂಬಲ್ಲಿ ದಶಪದವೇ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿರುವ ರಥ ಎಂಬ ಅರ್ಥ. "ಪುಣ್ಯ: ಶಬ್ದೋ ಮುನಿರೀತಿ ಮುಹು: ಕೇವಲಂ ರಾಜಪೂರ್ವ:" ಶಾಕುಂ ೨-೧೪ । "ದಶಪೂರ್ವರಥಂ ಯಮಾಖ್ಯಯಾ ದಶಕಂಠಾರಿಗುಣವಿದುರ್ಬುಧಾ:" ರಘುಂ ೮-೨೯ । ಹೀಗೆಯೇ ಸ್ಮಿತಪೂರ್ವಂ ಬಹುಮಾನಪೂರ್ವಂ ಇತ್ಯಾದಿ. "ಅನಾಮಯಪ್ರಕರಣಪೂರ್ವಕಮಾಹ" ಶಾಕುಂ ।

**ಪೂರ್ವಕರ್ಮನ್ ಪೂರ್ವಕರ್ಮನ್** (ನಂ) 1. ಮೊದಲನೆಯ ಕೆಲಸ, ಮೊದಲು ಮಾಡಬೇಕಾದ ಕೆಲಸ. "ಕರ್ಮ ತ್ರಿವಿಧಂ । ಪೂರ್ವಕರ್ಮ ಪ್ರಧಾನಕರ್ಮ ಪಶ್ಚಾತ್ತರ್ಮಕರ್ಮೇತಿ" ಸುಶ್ರುತಂ । 2. ಪೂರ್ವ ಜನ್ಮದ ಕರ್ಮ, ಹಿಂದಿನ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ ಪುಣ್ಯಪಾಪ ಕರ್ಮ (ಕಾರ್ಯ)ಗಳು. "ಯದ್ವಿಜ್ಞಾನ್ ಭವತು ಭಗವನ್ ಪೂರ್ವಕರ್ಮನಿರೂಪಂ" ಮುಂ ಮಾಂ । 3. ಪೂರ್ವಭಾವಿಯಾಗಿ ಮಾಡುವ ಕೆಲಸ.

**ಪೂರ್ವಕಾಯ ಪೂರ್ವಕಾಯ** (ಫಂ) 1. ತೀರ್ಥಕ್ಕೆ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ದೇಹದ ಮುಂಭಾಗ. ಪೂರ್ವ ಕಾಯಸ್ಯ । "ಗ್ರೀವಾಭಿಷೇಕಮಿರಾಮಂ ಮುಹುರನುಪತತಿ ಸ್ಯಂದನೇ ಬದ್ಧದೃಷ್ಟಿ: ಪಶ್ಚಾರ್ಥೇನ ಪ್ರವಿಷ್ಟ: ಶರಪತನ- ಭಯಾದ್ಭಯಸಾ ಪೂರ್ವಕಾಯಂ" ಶಾಕುಂ ೧-೭ । 2. ಮನುಷ್ಯನ ದೇಹದ ಮೇಲುಭಾಗ, "ಸ್ಪೃಶನ್ ಕರಣಾನತಪೂರ್ವಕಾಯಂ ಸಂಪ್ರಸ್ಥಿತೋ ವಾಚಮವಾಚ ಕೌತ್ಸ:" ರಘುಂ ೪-೩೨ ।

**ಪೂರ್ವಕಾಲ ಪೂರ್ವಕಾಲ** (ಫಂ) 1. ಹಿಂದಿನಕಾಲ, ಪ್ರಾಚೀನ ಕಾಲ, ಹಳೆಯಕಾಲ. (ವಿಂ) 2. ಹಿಂದಿನಕಾಲದ. ಹಳೆಯ ಕಾಲದ, ಪ್ರಾಚೀನಕಾಲದ.

**ಪೂರ್ವಕೃತ ಪೂರ್ವಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ಮೊದಲು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪೂರ್ವ ಕೃತಂ । 2. ಪೂರ್ವಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಂದಿನ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಆಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ಮಾಡ ಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪೂರ್ವಕೋಟಿ ಪೂರ್ವಕೋಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂರ್ವಪಕ್ಷ, ವಾದದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಹಾಕುವ ಪ್ರಶ್ನೆ, ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಕಂಡುಬರುವ ಸಂಶಯ ನಿವಾರಣೆಗಾಗಿ ಹಾಕುವ ಪ್ರಶ್ನೆ.

**ಪೂರ್ವಗಜ್ಞಾ ಪೂರ್ವಗಂಗಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನರ್ಮದಾ ನದಿ. ಪೂರ್ವ ಚಾಸೀ ಗಜ್ಞಾ ಚ ।

**ಪೂರ್ವಜ ಪೂರ್ವಜ** (ಫಂ) 1. ಮೊದಲು ಹುಟ್ಟಿದ ಅಣ್ಣ, ಹಿರಿಯ ಸಹೋದರ. ಪೂರ್ವಜಿನ್ ಕಾಲೇ ಜಾಯತೇ — ಜನೀ (ಪ್ರಾದುರ್ಮವಿ) "ಓ:" (೩-೨-೯೭) । "ಪೂರ್ವದೇವಜನಿತಾನಭಿ- ನಿಷ್ಪನ್ ಪೂರ್ವಜೇನ ಸಹಿತೋ ಯದುನಾಥ:" ಯಾದಂ ೨೧-೬೪ । 2. ಪೂರ್ವಿಕ, ವಂಶದ ಹಿರಿಯ. "ಸ ಪೂರ್ವಜಾನಾಂ ಕಪಿಲೇನ ರೋಷಾತ್ ಮಸ್ಮಾವಶೇಷೀಕೃತವಿಗ್ರಹಾಣಾಮ್" ರಘುಂ ೧೬-೩೪ । (ಫಂ ಬಂ ವಂ) 3. ಚಂದ್ರಲೋಕದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವ ಪಿತೃ ಗಳು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಜಾ —ಜಾ. ಅಕ್ಕ, ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರಿ. (ವಿಂ) 4. ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಮೊದಲು ಹುಟ್ಟಿದ.

**ಪೂರ್ವಜನ್ಮನ್ ಪೂರ್ವಜನ್ಮನ್** (ಫಂ) 1. ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರ, ಅಣ್ಣ. ಪೂರ್ವ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ । "ಸ ಲಕ್ಷ್ಮಣಂ ಲಕ್ಷ್ಮಣಪೂರ್ವಜನ್ಮಾ ವಿಲೋಕಯ ಲೋಕತ್ರಯಗೀತಕೀರ್ತಿ:" ರಘುಂ ೧೪-೪೪ । (ನಂ) 2. ಹಿಂದಿನ ಜನ್ಮ. ಪೂರ್ವ ಜನ್ಮ । (ವಿಂ) 3. ಮೊದಲು ಹುಟ್ಟಿದ. ಪೂರ್ವ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ ।

**ಪೂರ್ವಜಾತಿ ಪೂರ್ವಜಾತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂರ್ವಜನ್ಮ, ಹಿಂದಿನ ಜನ್ಮ. "ಪ್ರಾಣಿನಾಂ ಯದವಲೋಕನಕ್ಷಣೇ ಪೂರ್ವಜಾತಿಷು ಭವತ್ಯ- ನುಸ್ಮೃತಿ:" ಯಾದಂ ೧೭-೩೪ ।

**ಪೂರ್ವದಕ್ಷಿಣಾ ಪೂರ್ವದಕ್ಷಿಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂರ್ವ ಮತ್ತು ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕುಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಅಗ್ನೇಯ ದಿಕ್ಕು. ಪೂರ್ವಸ್ಯಾ: ದಕ್ಷಿಣಸ್ಯಾಶ್ಚ ದಿಶ: ಅಂತರಾಲಂ (೨-೨-೨೬) ।

**ಪೂರ್ವದಿಕ್ಪತಿ ಪೂರ್ವದಿಕ್ಪತಿ** (ಫಂ) ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನ ಅಧಿಪತಿ, ಇಂದ್ರ. ಪೂರ್ವದಿಶ: ಅಧಿಪತಿ: ।

**ಪೂರ್ವದಿಗ್ವಲ ಪೂರ್ವದಿಗ್ವಲ** (ನಂ) ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ ಗ್ರಹಗಳ ಬಲ, ದ್ವಾದಶ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ ಗ್ರಹಗಳ ಬಲ. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಬುಧ ಮತ್ತು ಗುರು ಗ್ರಹಗಳು ಬಲಿಷ್ಠರು.

**ಪೂರ್ವದಿಗ್ವಲಿನ್ ಪೂರ್ವದಿಗ್ವಲಿನ್** (ಫಂ) ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಬಲಿಷ್ಠವಾದ ಗ್ರಹ, ದ್ವಾದಶರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನ ರಾಶಿ ಯಲ್ಲಿ ಬಲವುಳ್ಳ ಗ್ರಹ. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಬುಧ ಮತ್ತು ಗುರು ಗ್ರಹಗಳಿಗೆ ಬಲವಿರುವುದು. "ಪ್ರಾಚ್ಯಾಂ ಸೌಮ್ಯ- ಸುರಾಚಾರ್ಯಾ ಯಾಮ್ಯಾಂ ಭಾಸ್ಕರಭೂಮಿಜೌ । ಪ್ರತ್ಯಕ್ ಸೌರೀಕ್ಷದಿಚ್ಯಾಂ ತು ಸಿತೇನ್ದ್ರ ದಿಗ್ವಲಾನ್ವಿತೌ" ।



**ಪೂರ್ವದಿಗವದನ ಪೂರ್ವದಿಗ್ವದನ (ನಂ)** ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿಗೆ ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ (ನಿರ್ದಿಷ್ಟವಾಗಿ)ರುವ ರಾಶಿ. ಪೂರ್ವದಿಗ್ವದನ ವದನ ಸ್ಯಾ. ಮೇಷ, ಸಿಂಹ ಮತ್ತು ಧನು ರಾಶಿಗಳು ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿಗೆ ಅಭಿಮುಖವಾಗಿರುವವು.

**ಪೂರ್ವದಿಶ್ ಪೂರ್ವದಿಶ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕು. ಸೂರ್ಯನು ಉದಯಿಸುವ ದಿಕ್ಕು. ಪೂರ್ವ ದಿಕ್.

**ಪೂರ್ವದಿಶ್ಯ ಪೂರ್ವದಿಶ್ಯ (ವಿಂ)** ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ. ಪೂರ್ವದಿಶಿ ಭವಮ್ "ಯತ್" (೪-೩-೪೪)।

**ಪೂರ್ವದಿಷ್ಟ ಪೂರ್ವದಿಷ್ಟ (ವಿಂ)** ಪೂರ್ವ ಜನ್ಮದ ಭಾಗ್ಯಾನುಸಾರ ಉಂಟಾಗುವ ಸಂಖ್ಯೆ:ಖಾದಿಗಳು. ಪೂರ್ವ ದಿಷ್ಟ ಭಾಗ್ಯ ಕಾರಣತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭)। "ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಣಾಮಿ ತೇ ಶಾಪಮಾತ್ಮನೋಽಜ್ಞಲಿನಾಮ್ಬಿಕೇ। ದೇವೇರ್ಮರ್ತ್ಯಾಯ ಯತ್ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಪೂರ್ವದಿಷ್ಟಂ ಹಿ ತಸ್ಯ ತತ್" ಭಾಗಂ ೬-೧೭-೧೭।

**ಪೂರ್ವದೇವ ಪೂರ್ವದೇವ (ಪುಂ)** 1. ಅಸುರ, ದೇವತೆಗಳ ಶತ್ರು. ಪೂರ್ವ ತೇ ದೇವಾಶ್ಚ। ಯದ್ವಾ ಪೂರ್ವ ದೇವಾಃ। ಇವರು ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ದೇವತೆಗಳಾಗಿದ್ದು ಅನ್ಯಾಯ ಕೃತ್ಯಗಳಿಂದ ದ್ವೇಷದಿಂದ ದೇವತ್ವವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡು ಅಸುರರಾದರು. "ಪೂರ್ವದೇವ-ಜನಿತಾನಭಿನಿಷ್ಠನ್ ಪೂರ್ವಜೇನ ಸಹಿತೋ ಯದುನಾಥಃ" ಯಾದಂ ೨೧-೬೪। (ಪುಂ ಧ್ವಿವಂ) 2. ನರನಾರಾಯಣರು. "ತೇಷಾಂ ಮನಶ್ಚ ತೇಜಶ್ಚಾಪ್ಯಾದದಾನಾವಿವೌಜಸಾ। ಪೂರ್ವದೇವೌ ವ್ಯತಿಕ್ರಾಂತೌ ನರನಾರಾಯಣಾವೃಷಿ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೪೯-೪।

**ಪೂರ್ವದೇವತಾ ಪೂರ್ವದೇವತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅನಾದಿಯಿಂದ ದೇವತಾರೂಪರಾದ ಪಿತೃಗಳು. ಪೂರ್ವ ದೇವತಾಃ। ಪೂರ್ವ ದೇವತೆಗಳು ಕ್ರೋಧವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದವರೂ ಬಾಹ್ಯ ಮತ್ತು ಅಂತಃಶೌಚವುಳ್ಳವರಾಗಿಯೂ ಜಿತೇಂದ್ರಿಯರಾಗಿಯೂ ಯುದ್ಧವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದವರಾಗಿಯೂ ದಯೆ ಮೊದಲಾದ ಎಂಟು ಸುಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದವರಾಗಿಯೂ ಇರುವರು. "ಅಕ್ರೋಧನಾಃ ಶೌಚಪರಾಃ ಸತತಂ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಣಃ। ನ್ಯಸ್ತಶಸ್ತ್ರಾ ಮಹಾಭಾಗಾಃ ಪಿತರಃ ಪೂರ್ವದೇವತಾಃ" ಮನುಂ ೩-೧೯೨।

**ಪೂರ್ವದೇಶ ಪೂರ್ವದೇಶ (ಪುಂ)** ಜಂಬೂದ್ವೀಪದ ಪೂರ್ವ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ದೇಶ.

**ಪೂರ್ವಪಕ್ಷ ಪೂರ್ವಪಕ್ಷ (ಪುಂ)** 1. ತಿಂಗಳಿನ ಮೊದಲನೆಯ ಪಕ್ಷ, ಮೊದಲ ಹದಿನೈದು ದಿನಗಳ ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷ. ಪೂರ್ವ ಪಕ್ಷಃ। 2. ಶಾಸ್ತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಸಂಶಯ ಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಹಾಕುವ ಪ್ರಶ್ನೆ. 3. ಸಿದ್ಧಾಂತಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಾದ ಪ್ರಶ್ನೆ. 4. ವಾದಿಯು ಒಂದು ಪ್ರಮೇಯದ ವಿಚಾರದಲ್ಲಿ ಅದಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಮಾಡುವ ಯುಕ್ತಿಯುಕ್ತವಾದ ಚರ್ಚೆ. 5. ಅಧಿಕರಣದ ಐದು ಅವಯವಗಳಲ್ಲೊಂದು. ವಿಷಯಃ

ವಿಷಯಃ (ಸಂಶಯಃ) ಪೂರ್ವಪಕ್ಷಃ उत्तरम् ಮತ್ತು ನಿರ್ಣಯಃ (ಸಿದ್ಧಾಂತಃ) ಇವು ಐದು ಅಧಿಕರಣಾಂಗಗಳು.

**ಪೂರ್ವಪದ ಪೂರ್ವಪದ (ನಂ)** ಸಮಸ್ತ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲ ನೆಯ ಪದ. ಪೂರ್ವ ಪದಮ್।

**ಪೂರ್ವಪರ್ವತ ಪೂರ್ವಪರ್ವತ (ಪುಂ)** ಉದಯಪರ್ವತ. ಸೂರ್ಯನು ಉದಯಿಸುತ್ತಿರುವಂತೆ ಕಾಣುವ ಪೂರ್ವ ದಿಕ್ಕಿನ ಒಂದು ಪರ್ವತ.

**ಪೂರ್ವಪಾದ ಪೂರ್ವಪಾದ (ಪುಂ)** ಕಾಲಿನ ತುದಿ. ಪೂರ್ವ ಪಾದಸ್ಯ।

**ಪೂರ್ವಪಿತಾಮಹ ಪೂರ್ವಪಿತಾಮಹ (ಪುಂ)** ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಹಿರಿಯ, ಪಿತಾಮಹನಿಗಿಂತ ಹಿಂದಿನವನು, ಪ್ರಪಿತಾಮಹ ಮುಂತಾದವರು. ಪೂರ್ವಃ ಪಿತಾಮಹಾತ್।

**ಪೂರ್ವಪೀಠಿಕಾ ಪೂರ್ವಪೀಠಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗ್ರಂಥದ ಅವತರಣಿಕೆ, ಗ್ರಂಥದ ಪ್ರಾರಂಭಕ್ಕೆ ಮೊದಲು ಅದರಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಪಾದ್ಯವಾದ ವಿಷಯದ ಬಗ್ಗೆ ಕೊಡುವ ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಪರಿಚಯ, ಗ್ರಂಥರಚನೆಯ ಪ್ರಸ್ತಾವನೆ.

**ಪೂರ್ವಪುರುಷ ಪೂರ್ವಪುರುಷ (ಪುಂ)** ತಂದೆ ಮೊದಲಾದ ಮೂವರು ಹಿರಿಯರು, ತಂದೆ ತಾತ ಮತ್ತು ಮುತ್ತಾತ.

**ಪೂರ್ವಪೂರ್ವ ಪೂರ್ವಪೂರ್ವ (ವಿಂ)** ಹಿಂದು ಹಿಂದಿನ, ಹಿಂದಿ ನಮಗಿಂತ ಹಿಂದಿನ, ಹಿಂದಿನದಿಕ್ಕಿಂತ ಹಿಂದಿನ. ಪೂರ್ವ ವೀಕ್ಷಾಪಾಂ ದ್ವಿತ್ವಮ್। "ಪೂರ್ವಪೂರ್ವನೇಂದ್ರಾಣಾಮುಚ್ಚಿಷ್ಠಮಪಿ ಮೇದಿನಿ" ಯಾದಂ ೨೨-೧೧।

**ಪೂರ್ವಫಲ್ಗುನಿ ಪೂರ್ವಫಲ್ಗುನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಶ್ವಿನಿ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಹನ್ನೊಂದನೆಯದು. ಪೂರ್ವ ಫಲ್ಗುನಿ। ಈ ನಕ್ಷತ್ರವು ಭಗದೇವತಾಕವಾದುದು. "ನಾಸತ್ಯಾನ್ತಕವಹ್ನಿವಾತೃಶಶಭದ್ರಾದಿತಿಜ್ಯೋರಗಾ ಕ್ಷೇಶಾಃ ಪಿತರೋ ಭಗೋಽಯಮರವಿತ್ವಾ ಸಮೀರಃ ಕ್ರಮಾತ್" ಮುಂ ಚಿಂ। ಪೂರ್ವಫಲ್ಗುನೀ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು ಶೂರನೂ ದಾನಶೂರನೂ ಸಾಹಸಿಯೂ ಪ್ರಧೀಪತಿಯೂ ಕೋಪದ ಸ್ವಭಾವದವನೂ ಸಾಮರ್ಥ್ಯಶಾಲಿಯೂ ಧೂರ್ತಸ್ವಭಾವದವನೂ ಕ್ರೂರನೂ ವಾತರೋಗವುಳ್ಳವನೂ ಆಗಿರುವನು.

**ಪೂರ್ವಫಲ್ಗುನಿಭವ ಪೂರ್ವಫಲ್ಗುನೀಭವ (ಪುಂ)** ಬೃಹಸ್ಪತಿ, ದೇವತೆಗಳ ಆಚಾರ್ಯ.

**ಪೂರ್ವಭಾಗ ಪೂರ್ವಭಾಗ (ಪುಂ)** 1. ಮುಂಭಾಗ. 2. ಶರೀರದ ಮೇಲುಭಾಗ. 3. ಮೊದಲನೆಯ ಭಾಗ.

**ಪೂರ್ವಭಾಷಪದಾ ಪೂರ್ವಭಾಷಪದಾ (ಪುಂ)** ಅಶ್ವಿನಿ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಇಪ್ಪತ್ತೈದನೆಯದು. ಇದರ ಅಧಿದೇವತೆಯು ಅಜ್ಞಿಕಪಾದ. ಇದು ಖಟ್ಟಾಕೃತಿಯು ದ್ವಿತಾರಕಾತ್ಮಕವಾದುದು.



**ಪೂರ್ವಭಾವ ಪೂರ್ವಭಾವ** (ಪುಂ) 1. ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಇರುವಿಕೆ, ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಮೊದಲು ಕಾರಣವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪೂರ್ವ ಭಾವ: | 2. ಈಗ ಇರುವುದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಮೊದಲು ಇರುವಿಕೆ.

**ಪೂರ್ವಭಾವಿನ್ ಪೂರ್ವಭಾವಿನ** (ವಿಂ) 1. ಮೊದಲು ಇರುವ, ಇದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಮುಂಚೆ ಇರುವ. 2. ಕಾರಣ, ಹೇತು. ಪೂರ್ವ ಭವತಿ — ಭೂ "ಗಿಣಿ:" (3-1-134) | ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಢೀಪ್" (4-1-4) | -ಭಾವಿನಿ -ಭಾವಿನೀ.

**ಪೂರ್ವರಜ್ಜ ಪೂರ್ವರಂಗ** (ಪುಂ) 1. ನಾಟ್ಯಶಾಲೆ. ಪೂರ್ವ ರಜ್ಯತೇ-ಸ್ಥಿಮನ್ — ರಜ್ಜ (ರಾಗೇ) ಅಧಿಂ "ಛನ್" (3-3-121) | 2. ಅಭಿನಯಿಸಬೇಕಾದ ಕಥಾವಸ್ತುವಿಗೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ನೃತ್ಯ ಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಸಂಭವಿಸಬಹುದಾದ ವಿಘ್ನಗಳ ಶಾಂತಿಗಾಗಿ ಕುಶೀಲವರಿಂದ ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ನಾಂದೀಪಠನ ಗೀತವಾದ್ಯ ರೂಪವಾದ ಕಾರ್ಯ. "ಯತ್ರಾಡ್ಯವಸ್ತುನ: ಪೂರ್ವ ರಜ್ಜವಿಘ್ನೋಪಶಾಂತಯೇ | ಕುಶೀಲವಾ: ಪ್ರಕುರ್ವಂತಿ ಪೂರ್ವರಜ್ಜ: ಸ ಉಚ್ಯತೇ" ಸಾಂ ದಂ 6-22 | ಪೂರ್ವರಂಗದಲ್ಲಿ (ನಾಟ್ಯಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ) ಇದು ನಟನಿರ ಮತ್ತು ಗಾಯಕರ ಪರಸ್ಪರ ಸಂತೋಷ ಪೂರ್ವಕವಾದ ವ್ಯಾಪಾರವಾದುದರಿಂದಲೂ ಕಥಾವಸ್ತುವಿಗೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವುದರಿಂದಲೂ ಇದೂ ಪೂರ್ವರಂಗವಾಯಿತು. "ಸಭಾಪತಿ: ಸಭಾಸಮ್ಯಾ ಗಾಯಕಾ ವಾದಕಾ ಅಪಿ | ನಟಿ ನಟಶ್ಚ ಮೋದಂತೇ ಯತ್ರಾನ್ಯೋನ್ಯಾನುರಂಜನಾತ್ | ಅತೌ ರಜ್ಜ ಇತಿ ಜ್ಞೇಯ: ಪೂರ್ವ ಯತ್ಸ ಪ್ರಕಲ್ಪತೇ | ತಸ್ಮಾದಯಂ ಪೂರ್ವರಜ್ಜ: ಇತಿ ವಿವೃದ್ಧಿಃ ಉಚ್ಯತೇ" ಭಾವಪ್ರಕಾಶಿಕಾ | "ಪೂರ್ವರಜ್ಜ: ಪ್ರಸಜ್ಞಾಯ ನಾಟಕೀಯಸ್ಯ ವಸ್ತುನ:" ಮಾಘಂ 2-6 |

**ಪೂರ್ವರಾಗ ಪೂರ್ವರಾಗ** (ಪುಂ) ನಾಯಿಕಾನಾಯಕರ ಸಮಾ ಗಮಕ್ಕೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಅನುರಾಗ, ಪರಸ್ಪರ ಸ್ನೇಹಪುರುಷರ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಆಕರ್ಷಿಸುವ ಪ್ರೇಮ. ಸಮಾ ಗಮಕ್ಕೆ ಮೊದಲು ಇದೊಂದು ಅವಸ್ಥಾವಿಶೇಷ. ಈ ಪ್ರೇಮವು ಪರಸ್ಪರ ಶ್ರವಣ ಮತ್ತು ದರ್ಶನಗಳಿಂದ ಅಂಕುರಿಸಿ ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವುದು. "ಶ್ರವಣಾಕ್ಷರ್ಮನಾದಾಪಿ ಮಿಥ: ಸಂಕರರಾಗಯೋ: | ದಶಾವಿಶೇಷೋ ಯೋಪ್ರಾಪ್ತೌ ಪೂರ್ವರಾಗ: ಸ ಉಚ್ಯತೇ" ಸಾಂ ದಂ 3-166 |

**ಪೂರ್ವರಾತ್ರ ಪೂರ್ವರಾತ್ರ** (ಪುಂ) ರಾತ್ರಿಯ ಪೂರ್ವಭಾಗ, ರಾತ್ರಿಯ ಮೊದಲುಭಾಗ. ರಾತ್ರೇ: ಪೂರ್ವಭಾಗ: | ಪೂರ್ವ ರಾತ್ರೇ: "ಅಚ್" (4-4-69) |

**ಪೂರ್ವರೂಪ ಪೂರ್ವರೂಪ** (ನಂ) 1. ಪೂರ್ವರೂಪಾಲಂಕಾರ, ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. (1) ಒಂದು ವಸ್ತುವು ತನ್ನ ಗುಣವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬೇರೆ ಗುಣವನ್ನು ಹೊಂದಿದ್ದರೂ ಕಾರಣಾಂತರದಿಂದ ಪುನಃ ತನ್ನ ಗುಣವನ್ನೇ ಪಡೆಯುವುದು

"ಪೂರ್ವರೂಪ" ಅಲಂಕಾರ. "ಪುನಃ ಸ್ವಗುಣಸಂಪ್ರಾಪ್ತಿ: ಪೂರ್ವರೂಪಮುದಾಹೃತಮ್" | ತದಾ: "ಹರಕಣಾಂಶುಲಿಪ್ತೋಽಪಿ ಶೇಷಸ್ತ್ವಚ್ಛಸಾ ಸಿತ:" ಚಂದ್ರಾಂ | ಇಲ್ಲಿ ಆದಿಶೇಷನು ಪರಮೇಶ್ವರನ ಕಂಠದ (ನೀಲ) ಕಾಂತಿಯಿಂದ ತನ್ನ ಧಾವಳ್ಯ (ಗುಣ) ವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ನೈಲ್ಯ (ಗುಣ) ವನ್ನು ಹೊಂದಿದ್ದರೂ ನಿನ್ನ ಯಶಸ್ಸಿನಿಂದ ಅವ್ಯತನಾಗಿ ಮತ್ತೆ ತನ್ನ ಗುಣ (ಧಾವಳ್ಯ) ವನ್ನು ಹೊಂದಿದನೆಂದು ವರ್ಣಿತವಾಗಿರುವುದ ರಿಂದ ಪೂರ್ವರೂಪಾಲಂಕಾರ. (2) ಒಂದು ವಸ್ತುವು ವಿಹಾರಹೊಂದಿದ್ದರೂ ಅದರ ಮೊದಲಿನ ಅವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ಉಳಿಯುವುದೂ ಪೂರ್ವರೂಪ. "ಪೂರ್ವರೂಪಾನುವೃತ್ತಿಶ್ಚ ವಿಕೃತೇ ಸತಿ ವಸ್ತುನಿ | ದೀಪೇ ನಿರ್ವಾಪಿತೇಽಪ್ಯಾಸೀತ್ಕಾಂಚಿ-ರಲಮೆಹ್ಮಹ:" ಚಂದ್ರಾಂ | 2. ವ್ಯಾಧಿಯು ಬರುವುದಕ್ಕೆ ಮೊದಲು ಉಂಟಾಗುವ ಸೂಚನೆ, ವ್ಯಾಧಿಯ ಪೂರ್ವ ಲಕ್ಷಣ. 3. ಪೂರ್ವಸೂಚನೆ, ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದುವುದರ ಪೂರ್ವಲಕ್ಷಣ. 4. ಹಿಂದಿನ ರೂಪ.

**ಪೂರ್ವಲಕ್ಷಣ ಪೂರ್ವಲಕ್ಷಣ** (ನಂ) ಪೂರ್ವಸೂಚನೆ.

**ಪೂರ್ವವಯಸ್ ಪೂರ್ವವಯಸ್** (ನಂ) 1. ತಾರುಣ್ಯ, ಯೌವನ, ಪ್ರಾಯ. ಪೂರ್ವ ವಯ: | "ಪೂರ್ವ ವಯಸಿ ಯ: ಶಾಂತ: ಸ ಶಾಂತ ಇತಿ ಮೇ ಮತಿ: | ಧಾತುಷ್ಠ ಕ್ಷಯಮಾಣೇಶು ಶಮ: ಕಸ್ಯ ನ ಜಾಯತೇ" ಪञ्ಚತಂ 1-176 | (ವಿಂ) 2. ತರುಣ, ಪ್ರಾಯದವನು.

**ಪೂರ್ವವತಿನ್ ಪೂರ್ವವರ್ತಿನ** (ವಿಂ) ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿರುವ, ಮೊದಲು ಇರುವ. ಪೂರ್ವ ವರ್ತತೇ—ವೃತ್ತ (ವರ್ತನೆ) "ಗಿಣಿ:" (3-1-134) |

**ಪೂರ್ವವಾದ ಪೂರ್ವವಾದ** (ಪುಂ) ನ್ಯಾಯಾಧೀಶನ ಮುಂದೆ ಮಾಡುವ ವ್ಯವಹಾರವಿಷಯದ ಮಂಡನೆ, ವ್ಯವಹಾರದ ವಿಷಯವನ್ನು ಹಿಡಿದು ಮಾತಾಡುವುದು. ಪೂರ್ವ ವಾದ: | "ಪೂರ್ವವಾದಂ ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ ಯೋನ್ಯಮಾಲಂಬತೇ ಪುನಃ | ಪದಸಂಕ್ರಾಮಣಾ-ಜ್ಞಯೋ ಹೀನವಾದೀ ಸ ವೇ ನರ:" |

**ಪೂರ್ವವಾದಿನ್ ಪೂರ್ವವಾದಿನ** (ಪುಂ) ವ್ಯವಹಾರದ ವಿಷಯ ದನ್ನು ಹಿಡಿದು ಮೊದಲು ಮಾತಾಡುವ ವಾದಿ ಅಥವಾ ಪ್ರತಿವಾದಿ. ಪೂರ್ವ ವದತಿ—ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಗಿಣಿ:" (3-1-134) | "ಮಿಥ್ಯೋಕ್ತೌ ಪೂರ್ವವಾದೀ ತು ಪ್ರತಿಪತ್ತೌ ನ ಸಾ ಭವೇತ್" |

**ಪೂರ್ವವಾರ್ಷಿಕ ಪೂರ್ವವಾರ್ಷಿಕ** (ವಿಂ) ವರ್ಷಕಾಲದ ಪೂರ್ವಭಾಗದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ವರ್ಷಿಣಾಂ ಪೂರ್ವ ಪೂರ್ವವರ್ಷಿ:, ತತ್ರ ಜಾತ: "ಠಕ್" (4-3-11) |

**ಪೂರ್ವವೃತ್ತ ಪೂರ್ವವೃತ್ತ** (ನಂ) 1. ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ನಡೆದ ಕಥೆ, ಇತಿಹಾಸ. 2. ಹಿಂದಿನ ವಿಷಯ, ಭೂತಕಾಲದಲ್ಲಿ ನಡೆದ



ವಿಷಯ. "ಪೂರ್ವವೃತ್ತಕಥಿತಃ ಪುರಾವಿದಃ ಸಾನುಜಃ ಪಿತೃಸಖಸ್ಯ ರಾಘವಃ" ರಘುಂ ೧೧-೧೦ |

**ಪೂರ್ವಶಿಲ ಪೂರ್ವಶಿಲ** (ಪುಂ) ಪೂರ್ವಪರ್ವತ, ಉದಯ ಪರ್ವತ.

**ಪೂರ್ವ ಪೂರ್ವಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕು.

**ಪೂರ್ವಪರ ಪೂರ್ವಾಪರ** (ಪುಂ) 1. ಪೂರ್ವದೇಶ ಮತ್ತು ಪಶ್ಚಿಮದೇಶ. ಪೂರ್ವಾಪರಶ್ಚ. 2. ಪೂರ್ವ ದಿಕ್ಕಿನ ಮತ್ತು ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕಿನ. "ಪೂರ್ವಪರೌ ತೋನಿಧಿ ವಗಾಹ್ಯಾ ಸ್ಥಿತಃ ಪೃಥಿವ್ಯಾ ಇವ ಮಾನದಣಃ" ಕುಮಾರಂ ೧-೧೧ (ವಿಂ) 3. ಪೂರ್ವದ ಮತ್ತು ಅನನ್ತರದ.

**ಪೂರ್ವಾರ್ಧ ಪೂರ್ವಾರ್ಧ** (ನಂ) 1. ಮೊದಲನೆಯ ಅರ್ಧ ಭಾಗ. ಪೂರ್ವಾರ್ಧಮ್. "ದಿನಸ್ಯ ಪೂರ್ವಾರ್ಧಪರಾರ್ಧಭಿನ್ನಾ ಚಾಪೇವ ಮೇತ್ರಿ ಕಲಸಜ್ಜನಾನಾಮ್" ಭರ್ತುಂ ೧-೪೯ | 2. ಶರೀರದ ಮೇಲು ಭಾಗ. "ಶಕುಂತಲಾ ಪೂರ್ವಾರ್ಧೇನ ಶಯನಾದುತ್ಥಾಯ" ಶಾಕುಂ ೩ |

**ಪೂರ್ವಾಷಾಡಾ ಪೂರ್ವಾಷಾಡಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂರ್ವಾಷಾಡಾ ನಕ್ಷತ್ರ, ಅಶ್ವಿನಿ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಇಪ್ಪತ್ತನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ. ಈ ನಕ್ಷತ್ರವು ಜಲಾಧಿದೇವತಾಕ ವಾದುದು. ಇದು ಆನೆಯ ಕೊಂಬಿನ ಆಕಾರದಲ್ಲಿ ದ್ವಿತಾರ ಕಾಶ್ಮಿಕವಾದುದು.

**ಪೂರ್ವಾಹ್ನ ಪೂರ್ವಾಹ್ನ** (ಪುಂ) ಹಗಲಿನ ಮೂರು ಭಾಗಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ಭಾಗ, ಹಗಲಿನ ಪೂರ್ವಭಾಗ. ಪೂರ್ವಾಹ್ನಃ | ಸಮಾಸಾಂತಃ "ಠ್" (೪-೪-೯೧) | ಅಕ್ಷಾಂಶಃ (೪-೪-೮೮) | ಣತ್ವಮ್ (೮-೪-೭) | "ಆವರ್ತನಾತ್ ಪೂರ್ವಾಹ್ನೋ ಹ್ಯಪರಾಹ್ನಸ್ತತಃ ಪರಮ್" | "ಮೇತ್ರಂ ಪ್ರಸಾಧನಂ ಸ್ನಾನಂ ದಂತಧಾವನಮಜ್ಜನಮ್ | ಪೂರ್ವಾಹ್ನೇವ ಕುರ್ವೀತ ದೇವತಾನಾಂ ಚ ಪೂಜನಮ್" ಮನುಂ ೪-೧೪೨ |

**ಪೂರ್ವಾಹ್ನ ಪೂರ್ವಾಹ್ನ** (ವಿಂ) ಪೂರ್ವಾಹ್ನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಪೂರ್ವಾಹ್ನೇ ಜಾತಃ "ವುನ್" (೪-೩-೨೮) |

**ಪೂರ್ವಾಹ್ನ(ಹ್ನ)ತನ ಪೂರ್ವಾಹ್ನ** (ಹ್ನೇ) ತನ (ವಿಂ) ಪೂರ್ವಾಹ್ನದಲ್ಲಿರುವ. ಹಗಲಿನ ಮೊದಲನೆಯ ಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ. ಪೂರ್ವಾಹ್ನೇ ಭವಃ—ವಾ "ಠ್" ತುಡ್ ಚ (೪-೩-೨೪) | ಸಂಪ್ರಮಾ ವಾ ಲುಕ್ (೬-೩-೧೭) | ಪಕ್ಷೇ ಪೂರ್ವಾಹ್ನತನಃ ಪೂರ್ವಾಹ್ನತನಃ ಠ್ಚುಪ್ರತ್ಯಯಾಭಾವೇ "ಠ್" (೪-೩-೧೧) | **ಪೂರ್ವಾಹ್ನಕಃ ಪೂರ್ವಾಹ್ನಕಃ** ಪೂರ್ವಾಹ್ನಃ ಸೋದಾಸ್ಯ ಎಂದು ವಿಗ್ರಹವಾದರೆ "ಠ್" ಪ್ರತ್ಯಯವು ನಿತ್ಯವಾಗಿ ಬಂದು ಪೂರ್ವಾಹ್ನತನಮ್ ಪೂರ್ವಾಹ್ನತನಮ್ ಎಂದು ರೂಪವಾಗುವುದು.

**ಪೂರ್ವಾಹ್ನ ಪೂರ್ವಾಹ್ನಕಃ** (ವಿಂ) ಪೂರ್ವಾಹ್ನದಲ್ಲಿ ಸಾಧಿಸ ಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯ. ಪೂರ್ವಾಹ್ನಃ ಸಾಧನತಯಾಸ್ತಸ್ಯ "ಠ್" (೪-೨-೧೧೪) |

**ಪೂರ್ವಿನ್ ಪೂರ್ವಿನ್** (ವಿಂ) ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಕೆಲಸಮಾಡಿದವನು, ಮೊದಲು ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಿದವನು. ಪೂರ್ವ ಕೃತಮನೇನ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೮೬) |

**ಪೂರ್ವೇಶ್ವ ಪೂರ್ವೇಶ್ವ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಮೊದಲನೆಯ ದಿನ, ಹಿಂದಿನ ದಿನ. ಪೂರ್ವೇಶ್ವಹನಿ — ಪೂರ್ವ "ಏಶ್ವ" (೪-೩-೨೨) | "ಪೂರ್ವೇಶ್ವರಪರೇಶ್ವರಾ ಶ್ರಾದ್ಧಕರ್ಮಪುಸ್ಥಿತೇ | ನಿಮನ್ತ್ರಯೇತ ಚಿವರಾನ್ ಸಮ್ಯಗ್ವಿಪ್ರಾನ್ಯಥೋದಿತಾನ್" ಮನುಂ ೩-೧೮೭ | 2. ಪ್ರಾತಃಕಾಲ, ಹಗಲಿನ ಪ್ರಾರಂಭಕಾಲ, ಹಗಲಿನ ಪೂರ್ವಭಾಗ. "ಪೂರ್ವೇಶ್ವಃ ಪ್ರಾತಃಕಾಲೇ ಸ್ಯಾತ್" ಮೇದಿಂ | "ಪೂರ್ವೇಶ್ವಃ ಪೂರ್ವಾಹ್ನಪ್ರಭಾತಯೋಃ" ಹೇಮಂ |

**ಪೂರ್ವೋತ್ತರ ಪೂರ್ವೋತ್ತರ** (ವಿಂ) 1. ಪೂರ್ವ ಮತ್ತು ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಿನ. 2. ಪೂರ್ವದ ಮತ್ತು ಅನನ್ತರದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಪೂರ್ವ ಮತ್ತು ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕುಗಳ ಮಧ್ಯ ಭಾಗ, ಈಶಾನ್ಯದಿಕ್ಕು. ಪೂರ್ವೋತ್ತರಃ | "ಉತ್ತರಸ್ಯಾಶ್ಚ ದಿಶಃ ಅಂತರಾಲಮ್" (೩-೨-೧೬) |

**ಪೂಷನ್ ಪೂಷನ್** (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಪೂಷತಿ—ಪೂಷ (ವೃದ್ಧಿ) "ಕನಿಃ" (ತಂ ೧-೧೪೭) | "ಇಂದ್ರನೌಘಗಪ್ಯಗ್ನಿಸ್ತ್ವಿಷಾ ನಾಲ್ಯೇತಿ ಪೂಷಣಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೨೩ | ಪೂಷಾ ಪೂಷಣಿ ಪೂಷಣಃ | ಈ ಪೂಷಣಿಯ ಸೂರ್ಯನು ದ್ವಾದಶ ಸೂರ್ಯರಲ್ಲೊಬ್ಬನು. "ಘಾತಾ ಮಿತ್ರೋರ್ಯಮಾ ಶಕ್ರಃ ವರುಣಸ್ತ್ವಂಶ ಎವ ಚ | ಭಗೋ ವಿವಸ್ವಾನ್ ಪೂಷಾ ಚ ಸವಿತಾ ದಶಮಸ್ತಥಾ | ಏಕಾದಶಸ್ತಥಾ ತ್ವಷ್ಟಾ ದ್ವಾದಶೋ ವಿಷ್ಣುರುಚ್ಯತೇ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೬ |

**ಪೂಷಾತ್ಮಜ ಪೂಷಾತ್ಮಜ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೇಡ. ಪೂಷಣಃ ಆತ್ಮಜಃ | ವೃಷ್ಟಿಗೆ ಅಧಿಪತಿಯಾದ ಮೇಘವು ಸೂರ್ಯನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಆದಿತ್ಯಾಜ್ಜಾಯತೇ ವೃಷ್ಟಿಃ ವೃಷ್ಟೇರಣಂ ತತಃ ಪ್ರಜಾಃ" | "ವೃಷ್ಟಿ ಪೂಷಾತ್ಮಜೋ ಯಥಾ" ಭಾಂ ವನಂ | 2. ಇಂದ್ರ.

**ಪೂಷದಂತಹರ ಪೂಷದಂತಹರ** (ಪುಂ) ಪರಶಿವ. ಪರಮೇಶ್ವರನ ಅಂಶಭೂತನಾದ ವೀರಭದ್ರನಿಂದ ಪೂಷಣಿಯ ಸೂರ್ಯನ ದಂತಭಂಗವುಂಟಾಯಿತು.

**ಪುಕ್ತಾ ಪುಕ್ತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆಣ್ಣೆ ಬಿದಿರು ಸೊಪ್ಪು. **ಪುಕ್ತ ಪುಕ್ತ** (ವಿಂ) ಬೆರೆತಿರುವ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ. ಪುಕ್ತಿ (ಸಂಪರ್ಕ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | "ಪುಕ್ತಸ್ತುಪಾರೇಗಿರಿನಿರ್ಜರಾಣಾಮನೋಕಹಾಕಮ್ಪಿತಪುಷ್ಪಗಂಧಿ" ರಘುಂ ೨-೧೩ |



**ಪುಕ್ತಿ ಪುಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಕ್ತಿ, ಸಂಪರ್ಕ, ಸಂಬಂಧ, ಪುಕ್ತಿ (ಸಂಪರ್ಕ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) ।

**ಪುಚ್ಚಕ ಪುಚ್ಚಕ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಶ್ನೆಮಾಡುವವನು. ತಿಳಿದು ಕೊಳ್ಳಲು ಪ್ರಶ್ನಿಸುವವನು, ವಿಚಾರಮಾಡುವವನು. ಪ್ರಚ್ಛ (ಜಿಪ್ಸಾಯಾಮ್) "ಪುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । 2. ತನಿಖೆ ಮಾಡುವವನು. "ಪುಚ್ಚಕೇನ ಸದಾ ಭಾವ್ಯ ಪುರಣೇನ ವಿಜಾನತಾ" ಪಂಚತಂ ೪-೮೯ ।

**ಪುಚ್ಚತ್ ಪುಚ್ಚತ್** (ವಿಂ) ಪ್ರಶ್ನೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ತಿಳಿದು ಕೊಳ್ಳಲು ಕೇಳುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರಚ್ಛ (ಜಿಪ್ಸಾಯಾಮ್) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಕಿಮಿತಿ ಕಿಮಿತಿ ಪುಚ್ಚನ್ ಭಾಷಿತಂ ಸ ಪ್ರಿಯಾಯಾಃ" ನೆಪಂ ೩-೧೩೫ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡಿಪ್" (೪-೧-೬) । -ತೀ-೩೯, -ಸ್ತೀ-೨೯ ।

**ಪುಚ್ಚಾ ಪುಚ್ಚಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಶ್ನೆ, ಕೇಳಿಕೆ. 2. ತಿಳಿದು ಕೊಳ್ಳಲು ಪ್ರಶ್ನಿಸುವುದು. 3. ತನಿಖೆ, ವಿಚಾರಣೆ. ಪ್ರಚ್ಛ (ಜಿಪ್ಸಾಯಾಮ್) "ಅಃ" (೩-೩-೨೦೩) । "ಇತಿ ಕಿಮುಷಸಿ ಪುಚ್ಚಾಶಂಸಿಕಿಶಬ್ದರೂಪಪ್ರತಿನಿಯಮಿತವಾಚಾ ವಾಯಸೇನೇಷ ಪುಟಃ" ನೆಪಂ ೧೯-೬೦ ।

**ಪುತನಾ ಪುತನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೇನೆ, ದಂಡು, ಪಡೆ. ಪುಟ್ (ವ್ಯಾಯಾಮೇ) "ತತನ್" ಬಾಹುಂ । "ಪುರಃ ಸುರಾಣಾಂ ಪುತನಾಂ ಪ್ರಗ್ರೀಯಸೀಂ ವೀಲೋಕಯ ವೀರಃ ಪುಲಕಂ ಪ್ರಮೋದಜಮ್" ಕುಮಾಂ ೧೫-೪೬ । 2. 243 ಅನೇಗಳು 243 ರಥಗಳು 729 ಕುದುರೆಗಳು 1225 ಪದಾತಿ (ಕಾಲುಬಲ) ಗಳುಳ್ಳ ಸೈನ್ಯದ ಒಂದು ಗುಂಪು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಅನೀಕಿನಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. 3. ಸಂಗ್ರಾಮ, ಯುದ್ಧ.

**ಪುತನಾಧಿಪ ಪುತನಾಧಿಪ, -ಅಧಿಪತಿ -ಅಧಿಪತಿ** (ಪುಂ) ಸೇನಾಪತಿ. ಪುತನಾಯಾ ಅಧಿಪಃ ಅಧಿಪತಿರ್ವಾ । "ಮಹಾ-ಹವಾಮ್ಭೋಧಿವಿಧುನನೋದತ್ತಾನ್ ದದಶ ರಾಜಾ ಪುತನಾಧಿಪಾನ್ ಬಹುನ್" ಕುಮಾಂ ೧೫-೭ ।

**ಪುತನಾಪಾಡ್ (ಹ್) ಪುತನಾಪಾಡ್ (ಹ್)** (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ಪುತನಾಂ ಸಹತೇ - ಪಹ (ಮರ್ಷಣೆ) "ಪಿವಃ" (೩-೨-೬೩) । ಸಸ್ಯ ಪತ್ವಮ್ (೮-೩-೧೦೯) । ಇದು ಛಾಂದಸ್ ಪ್ರಯೋಗ. ಲಂಕೆ ಪ್ರಯೋಗದಲ್ಲಿ ಪುತನಾಂ ಸಾಹಯತಿ ಅಭಿಮವತಿ - ಪಹ (ಮರ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೭೬) । ಪತ್ವಮ್ (೮-೩-೫೬) ।

**ಪುಥಕ್ ಪುಥಕ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಬೇರೆಯಾಗಿ, ತನಿಯಾಗಿ, ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿ. ಪುಥ (ಪ್ರಕ್ಷೇಪೇ) "ಕಕ್" ಬಾಹುಂ । ಪ್ರಥ (ಪ್ರಖ್ಯಾನೇ) "ಅಜಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) ಸಂಪ್ರಸಾರಣಾ ಇತಿ ವಾ । "ಶಹ್ಣಾನ್ ದಧ್ಮುಃ ಪುಥಕ್ ಪುಥಕ್" ಗೀತಾ ೧-೧೮ ।

2. ಬೇರೆಯಾದ, ಭಿನ್ನವಾದ. "ರಚಿತಾ ಪುಥಗರ್ಥತಾ ಗಿರಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೨೭ । 3. ಒಂಟಿಯಾಗಿ, ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿ, ಬಿಡಿಯಾಗಿ. "ಇತಿ ಚ ಭವತೋ ಜಾಯಾಸ್ನೆಹಾತ್ ಪುಥಕ್-ಸ್ಥಿತಿರ್ಮೀರತಾ" ವಿಕ್ರಂ ೪-೩೯ । 4. ಏನಾ, ಹೊರತು, ಬಿಟ್ಟು. "ಪುಥಕ್ನಭಸ್ವತಶ್ಚಣಡಾತ್ ವೇನತೇನ ವಾ ವಿನಾ" ಭದ್ರಿಂ ೮-೧೦೯ ।

**ಪುಥಕರಣ ಪುಥಕರಣ** (ನಂ) ಬೇರ್ಪಡಿಸುವುದು, ಬೇರೆ ಮಾಡುವುದು.

**ಪುಥಕ್ಕೃತ್ಯ ಪುಥಕ್ಕೃತ್ಯ** (ಅವ್ಯಂ) ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿ ಮಾಡಿ, ಬೇರೆ ಮಾಡಿ, ತನಿಯಾಗಿ ಮಾಡಿ, ಬೇರ್ಪಡಿಸಿ.

**ಪುಥಕ್ತ್ವ ಪುಥಕ್ತ್ವ** (ನಂ) ಬೇರೆಯಾಗಿರುವಿಕೆ, ಒಂಟಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ, ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಎಂಬ ವ್ಯವಹಾರಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪುಥಗಿತೃಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತ್ವಃ" (೫-೧-೧೧೯) । "ಪುಥಾವ್ಯವಹಾರಕಾರಣಂ ಪುಥಕ್ತ್ವಮ್" ತಂ ಸಂ । ಇದಮಸ್ಮಾತ್ ಪುಥಕ್ ಇತ್ಯಾದಿ. "ಧನುರ್ಮತಾ ತೋವಮತಾ ಚ ಭೇಜೇ ಪುಥಕ್ತ್ವಮೇಕಂ ಚ ಯಥಾಪ್ರಮಾಣಮ್" ಯಾದಂ ೨೩-೨೧ ।

**ಪುಥಕ್ಪರ್ಣಿ ಪುಥಕ್ಪರ್ಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನರಿಹೊನ್ನೆಗಿಡ. ಪುಥಕ್ ಅಸಕ್ತಂ ಪರ್ಣಮಸ್ಯಾಃ "ಡಿಪ್" (೪-೧-೫೪) ।

**ಪುಥಗಾತ್ಮತಾ ಪುಥಗಾತ್ಮತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬೇರೆಯಾಗಿರುವಿಕೆ, ಭಿನ್ನವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪುಥಕ್ ಆತ್ಮಾ ಸ್ವರೂಪಂ ಯಸ್ಯ, ತಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೫-೧-೧೧೯) । 2. ವಿವೇಚನೆ, ಪ್ರಕೃತಿ ಪುರುಷಾದಿ ಭೇದಜ್ಞಾನ. "ವಿವೇಕಃ ಪುಥಗಾತ್ಮತಾ" ಅಮಂ ।

**ಪುಥಗಾತ್ಮಿಕಾ ಪುಥಗಾತ್ಮಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವ್ಯಕ್ತಿ, ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಬೇರೆಯಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪುಥಕ್ ಆತ್ಮಾ ಸ್ವರೂಪಂ ಯಸ್ಯಾಃ "ಕಪ್" । ಅತ ಇತ್ವಮ್ (೭-೩-೪೪) । "ವ್ಯಕ್ತಿಸ್ತು ಪುಥಗಾತ್ಮಿಕಾ" ಅಮಂ । ವಹ್ನಿತ್ವೇನ ಒಂದೇರೂಪವಿದ್ದರೂ ಮಹಾಶಸಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ರೂಪದಿಂದಿರುವುದರಿಂದ ವಹ್ನಿಗಳು ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾದುವು.

**ಪುಥಗಜನ ಪುಥಗಜನ** (ಪುಂ) 1. ನೀಚಮನುಷ್ಯ, ಕೆಳದರ್ಜೆಯ ಮನುಷ್ಯ. ಸಜ್ಜನೇಮ್ಯಃ ಪುಥಗಭೂತೋ ಜನಃ । "ವಿವರ್ಣಃ ಪಾಮರೋ ನೇಚಃ ಪ್ರಾಕೃತಃ ಪುಥಗಜನಃ" ಅಮಂ । "ಸ್ಥಿತಿ ಸಮೀಕ್ಷಯೋ-ಭಯಾ ಪರೀಕ್ಷಕಃ ಕರೋತ್ಯವಜ್ಞೋಪಹತಂ ಪುಥಗಜನಃ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೨೪ । 2. ಮೂರ್ಖ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು. "ವಿವಿನಕ್ತಿ ನ ಬುದ್ಧಿಃ ಸ್ವಯಮೇವ ಸ್ವಹಿತಂ ಪುಥಗಜನಃ" ಮಾಘಂ ೧೬-೩೯ ।

**ಪುಥಾ ಪುಥಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಂತಿ, ಕುಂತಿ ಭೋಜನ ಮಗಳು, ಪಾಂಡುರಾಜನ ಪತ್ನಿ. ಇವಳು ಯದುವಂಶದ ಶೂರ ರಾಜನ ಮಗಳು. ಕುಂತಿ ಭೋಜನಿಗೆ ಸಂತಾನವಿಲ್ಲ



ವಾದುದರಿಂದ ಶೂರರಾಜನಿಂದ ಇವಳನ್ನು ಸಾಕುಮಗಳನ್ನಾಗಿ ಪಡೆದನು. ಇದರಿಂದ ಇವಳಿಗೆ ಕುಂತಿಯೆಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು. ["ಕುಂತಿಭೋಜ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].

**ಪೃಥ್ವಿ ಪೃಥ್ವಿ, -ತನಯ -ತನಯ, -ಸುತ -ಸುತ, -ಸುನು -ಸುನು (ಪುಂ) ಪೃಥ್ವಿ (ಕುಂತಿ)ಯ ಮಕ್ಕಳಾದ**  
1. ಧರ್ಮರಾಜ 2. ಭೀಮಸೇನ ಮತ್ತು 3. ಅರ್ಜುನ.  
ಪೃಥ್ವಿ ಜಾಯತೇ, ಪೃಥ್ವಿ ಸ್ತನಯ: ಪೃಥ್ವಿ: ಸುತ: ಸುನುರ್ವಾ |  
"ಅಶ್ವತ್ಥಾಮಾ ಹತ ಇತಿ ಪೃಥ್ವಿ ಸುನುನಾ ಸ್ಪಷ್ಟಮುಕ್ತವಾ" ವೇಣೀಂ ೩-೧೧ | "ಅಭಿತಸ್ತಂ ಪೃಥ್ವಿ ಸುನು: ಸ್ನೇಹೇನ ಪರಿತಸ್ತರೇ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೮ | "ಮೃಗವಿಧಿಷಾಮಿವ ಯದಿತ್ಯಮಜನಿ ಮಿಷತಾಂ ಪೃಥ್ವಿ ಸುತೈ: " ಮಾಘಂ ೧೫-೩೪ |

**ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ (ಪುಂ) ಪಾಂಡುರಾಜ. ಪೃಥ್ವಿ: ಪತಿ: |**

**ಪೃಥ್ವಿ ಪೃಥ್ವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶತಪದಿ, ಸಾವಿರಕಾಲು, ಜರಿ.**

**ಪೃಥ್ವಿ ಪೃಥ್ವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಧರ್ಮ, ಭೂಮಿ, ಮನುಷ್ಯರ ವಾಸಸ್ಥಾನ. ಪ್ರಥ (ಪ್ರಖ್ಯಾನೇ) "ಪಿವನ್" (೩ಂ ೧-೧೪೮) ಸಂಪ್ರಸಾರಣಶ್ಚ | "ನಾಸಾವಿರೋಕಪವನೋಲ್ಲಸಿತಂ ತನೀಯೋ ರೋಮಾಂಶ್ಚತಾಮಿವ ಜಗಾಮ ರಜ:ಪೃಥ್ವಿ: " ಮಾಘಂ ೫-೫೪ |**  
2. (ನ್ಯಾಯಮತದಲ್ಲಿ) ನವದ್ರವ್ಯಗಳಲ್ಲೊಂದು.  
"ಪೃಥ್ವಿ ಪ್ತೇಜೋವಾಕ್ಯಾಕಾಶಕಾಲದಿಗಾರಮನಾಂಸಿ ನವೇವ (ದ್ರವ್ಯಾಣಿ) " ತಂ ಸಂ | **ಪೃಥ್ವಿ ಪೃಥ್ವಿ: " ರೂಪ-ರಸಗಂಧಸ್ಪರ್ಶವತೀ ಪೃಥ್ವಿ " ವೈಂ ಸುಂ | "ಗಂಧವತೀ ಪೃಥ್ವಿ" ತಂ ಸಂ |** ವಾಸನೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ದ್ರವ್ಯವು ಪೃಥ್ವಿ. ಪಿವನ್ ಪ್ರತ್ಯಯದ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಕೆಲವರು ಪವನ್ ಎಂದು ಹೇಳುವುದರಿಂದ **ಪೃಥ್ವಿ ಪೃಥ್ವಿ** ಎಂಬ ರೂಪವೂ ಉಂಟು.  
"ಪೃಥ್ವಿ ಪೃಥ್ವಿ ಪೃಥ್ವಿ ಧರಾ ಸರ್ವಸಹಾ ರಸಾ" ನಿಘಂ | ಪೃಥ್ವಿಯು ನಿಯತಾ ಮತ್ತು ಅನಿಯತಾ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಪರಮಾಣುರೂಪವಾದ ಪೃಥ್ವಿಯು ನಿತ್ಯ. ಕಾರ್ಯ ರೂಪವಾದ ದ್ವೈಣಕಾದಿ ಪೃಥ್ವಿಯು ಉತ್ಪತ್ತಿ ವಿನಾಶಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದುದರಿಂದ ಅದು ಅನಿತ್ಯ. "ಗಂಧವತೀ ಪೃಥ್ವಿ" | ಸಾ ದ್ವಿವಿಧಾ ನಿಯತಾನಿಯತಾ ಚೇತಿ | ನಿಯತಾ ಪರಮಾಣುರೂಪಾ | ಅನಿಯತಾ ಕಾರ್ಯರೂಪಾ ತಂ ಸಂ | 3. ಪಂಚ ಮಹಾಭೂತಗಳಲ್ಲೊಂದು. ["ಪಂಚಭೂತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].

**ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಪೃಥ್ವಿ: ಪತಿ: |** ಕ್ಷಿಯತಿ — ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯೇಶ್ವರಯೋ: ) "ವಿವ್" (೩-೨-೭೬) | "ರಾಜಾಂತರಣಾಂತೀ ದ್ವಿ ದೋಷಿ ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿತಾಮ್" ಮನುಂ ೯-೨೨೧ |

**ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ (ನಂ) ಭೂಮಿ, ಭೂಮಿಯ ಮೇಲುಭಾಗ. ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ ಪತಿ | "ಕಲಾಂತರತಲಭೃತಾ-ಚಲಕ: ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ ತುಲಿತಭೂಮಿ ದುಚ್ಯತೇ" ಮಾಘಂ ೧೫-೩೦ |**

**ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ, -ಪಾಲ -ಪಾಲ, -ಪಾಲಕ -ಪಾಲಕ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಪೃಥ್ವಿ: ಪತಿ: |** ಪೃಥ್ವಿ ಪಾಲಯತಿ ಪೃಥ್ವಿ: ಪಾಲಕೋ ವಾ | "ಸರ್ವೋಪಾಯೇಸ್ತಥಾ ಕುರ್ಯಾತ್ ನಿಯತ: ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ: " ಮನುಂ ೭-೧೭೭ | "ಬುಭುಜೇ ಪೃಥ್ವಿ ಪಾಲ: ಪೃಥ್ವಿ ಮೇವ ಕೇವಲಾಮ್" ರಘುಂ ೧೫-೧ |

**ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಪೃಥ್ವಿ: ಪತಿ: |** ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ — ಪತಿ (ಪರಿಪಾಲನಾಭ್ಯವಹಾರಯೋ: ) "ವಿವ್" (೩-೨-೭೬) |

**ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಪೃಥ್ವಿ: ಪತಿ: |** ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ — ಪತಿ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋ: ) "ವಿವ್" (೩-೨-೭೬) | "ಕ್ಷೋಮಮಗಮದತಿ ಮಾತ್ರಮಥೋ ಶಿಶುಪಾಲಪಕ್ಷಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ ಗಣ: " ಮಾಘಂ ೧೫-೪೭ | "ಮಾಮಾಹು: ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ ಮಾಧಿಪತಿ ನಾಗಾಧಿ-ರಾಜೋ ಭವಾನ್" ವಿಕ್ರಂ ೪-೪೭ |

**ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ, ವೇನರಾಜನ ಮಗ. [ವೇನರಾಜನು ಬಹಳ ನಾಸ್ತಿಕನಾಗಿದ್ದುದರಿಂದ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಸಸ್ಯಗಳೆಲ್ಲವೂ ನಾಶವಾಗುತ್ತಿದ್ದವು. ಆಗ ಪ್ರಜೆಗಳು ವೇನನ ಶರೀರವನ್ನು ಮಥನ ಮಾಡಲು ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ ಜನಿಸಿದನು. ಪೃಥ್ವಿ ರಾಜನು ಪ್ರಜೆಗಳ ಕಷ್ಟವನ್ನು ಕಂಡು ಭೂಮಿಯನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸಿ (ಕಡೆದು) ಅದುವರೆಗೆ ನುಂಗಿದ್ದ ವಸ್ತುಗಳೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಪ್ರಜೆಗಳಿಗೆ ಕೊಡಿಸಿ ಸೌಖ್ಯವುಂಟುಮಾಡಿದುದರಿಂದ ಭೂಮಿಗೆ "ಪೃಥ್ವಿ" ಯೆಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು. ಈ ರಾಜನು ಬಹಳ ಧರ್ಮಾತ್ಮ. ಸಾಕ್ಷಾತ್ ವಿಷ್ಣುವಿನ ಅಂಶದಿಂದ ಅವತರಿಸಿದವನು. ದುಷ್ಟನಿಗ್ರಹ ಶಿಷ್ಟಪರಿಪಾಲನರೂಪವಾದ ಕಾರ್ಯವೇ ಇವನ ಮುಖ್ಯ ಕರ್ತವ್ಯವಾಗಿದ್ದಿತು. ಸರ್ವ ಭೂತಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಸಮಭಾವನೆ. ಇತ್ಯಾದಿ ಸದ್ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ ಧರ್ಮದಿಂದ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಆಳುತ್ತಿದ್ದನು. ಭಾಗಂ ೪-೧೫-೧೮ | "ಭಾಸ್ವಂತಿ ರತ್ನಾನಿ ಮಹೋಷಧಿಂ ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ ದಿಷ್ಟಾ ದುರುಹಿರೀಶ್ವರೀಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೨ | 2. ವಿಷ್ಣು. ಪ್ರಥ (ಪ್ರಖ್ಯಾನೇ) "ಕ್ರು:" ಸಂಪ್ರಸಾರಣಶ್ಚ (೩ಂ ೧-೨೮) | ವಿಷ್ಣುವು ಪ್ರಪಂಚರೂಪದಿಂದ ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಪೃಥ್ವಿ: ಪ್ರಪಂಚರೂಪೇಣ ವಿಸ್ತೃತತ್ವಾದಿನಿಶ್ಚಿತ: " ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: | "ಪ್ರಾಣದ: ಪ್ರಾಣಮ: ಪೃಥ್ವಿ: " ವಿಂ ಸಂ | 3. ಅಷ್ಟವಸ್ತುಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ಕೃಷ್ಣಜೀರಕ, ಕರಿ ಜೀರಿಗೆ. "ಪೃಥ್ವಿ ಕಾರವಿ ಪೃಥ್ವಿ ಪತಿ: ಕಾಲೋಪಕುಶ್ವಿಕಾ"**



ಅಮಂ 1. ಹಿಂಗಿನ ಮರದ ಎಲೆ. (ವಿಂ) 6. ಅಗಲ  
ವಾದ, ವಿಸ್ತಾರವಾದ, ದೊಡ್ಡದಾದ. "ನೋಚೈಯದಾ ತಹ-  
ತಲೇಫು ಮಮುಸ್ತದಾನಿಮಾಧೋರಣಿರಭಿಹತಾ: ಪೃಥುಮೂಲಶಾಸ್ತ್ರಾ:"  
ಮಾಘಂ ೫-೪೪. "ಪೃಥು ನಿರಂತರಮಿಷ್ಟಭುಜಾಂತರಮ್" ಮಾಘಂ  
೬-೬೦. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ವಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೪). ಪೃಥ್ವಿ ಪೃಥ್ವೀ,  
ಪೃಥು: ಪೃಥುಃ. 7. ಉದ್ದವಾದ, ದೀರ್ಘವಾದ. "ನಗೇನ  
ನಾಗೇನ ಗರೀಯಸೋಚ್ಚಕೇರೋಧಿ ಪನ್ಥಾ: ಪೃಥುದಂತಶಾಲಿನಾ"  
ಮಾಘಂ ೧೨-೪೮. 8. ಪ್ರಚುರವಾದ, ಹೇರಳವಾದ, ಬಹಳ  
ವಾದ. 9. ದಪ್ಪವಾದ, ದೊಡ್ಡದಾದ. "ಪ್ರಥಿತಪೃಥುಪಯೋ-  
ಧರಾಂ ಗೃಹಾಣ ಸ್ವಯಮಿತಿ ಮುಖವಧುಮುದಾಸ ದೋರ್ಭ್ಯಾಮ್" ಮಾಘಂ  
೭-೪೯.

ಪೃಥುಕ ಪೃಥುಕ (ಪುಂ) 1. ಬಾಲಕ, ಎಳೆಯ ಮಗು, ಶಿಶು,  
ಮರಿ. ಪ್ರಥ (ಪ್ರಥ್ಯಾನೇ) "ಕುಕನ್" ಸಂಪ್ರಸಾರಣಶ್ಚ (ಉಂ  
೬-೫೩). "ಪ್ರಕ್ರೀಡಿತಾನ್ ರೇಣುಭಿರೇತೃ ತೂರ್ಣ ನಿನ್ಯುಜ್ಜನನ್ಯ:  
ಪೃಥುಕಾನ್ ಪಥಿಮ್ಯ:" ಮಾಘಂ ೩-೩೦. 2. ಅವಲಂಕಿತ.  
"ಪೃಥುಕೌ ಚಿಪಿಡಾರ್ಭಕೌ" ಅಮಂ 1. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ -ಕಾ.  
3. ಬಾಲಿಕೆ, ಹುಡುಗಿ.

ಪೃಥುಕೀತಿ ಪೃಥುಕೀರ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೃಥೆಯ ತಂಗಿ,  
ವಸುದೇವನ ಸಹೋದರಿ. (ವಿಂ) 2. ವಿಶಾಲವಾದ  
ಕೀರ್ತಿಯುಳ್ಳ, ಹೆಚ್ಚು ಯಶಸ್ಸನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿದ.

ಪೃಥುರೋಮನ್ ಪೃಥುರೋಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು.  
ಪೃಥುನಿ ರೋಮಾಣಿ ರೋಮಸ್ಥಾನಾನಿ ಶಲಾಕಾನಿ ಅಸ್ಯ 1. (ವಿಂ)  
2. ದೊಡ್ಡ ಕೂದಲುಳ್ಳ.

ಪೃಥುಲ ಪೃಥುಲ (ವಿಂ) ವಿಶಾಲವಾದ, ಅಗಲವಾದ,  
ವಿಸ್ತಾರವಾದ. ಪೃಥುತ್ವಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ-ಪೃಥು "ಲಬ್" (೫-೨-೯೭).  
"ಶ್ರೋಣಿಫು ಪ್ರಿಯಕರ: ಪೃಥುಲಾಸು ಸ್ಪರ್ಶಮಾಪ ಸಕಲೇನ ತಲೇನ"  
ಮಾಘಂ ೧೦-೬೫.

ಪೃಥುಲಾಕ್ಷ ಪೃಥುಲಾಕ್ಷ (ವಿಂ) ವಿಶಾಲವಾದ ನೇತ್ರವುಳ್ಳ,  
ಅಗಲವಾದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ. ಪೃಥುಲೇ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯ "ಷಕ್"  
(೫-೪-೧೧೩).

ಪೃಥುಸ್ಕಂಧ ಪೃಥುಸ್ಕಂಧ (ಪುಂ) ಸೂಕರ, ಹಂದಿ, ವರಾಹ.  
ಪೃಥು: ಸ್ಕಂಧೋಽಸ್ಯ 1.

ಪೃಥುದರ ಪೃಥುದರ (ಪುಂ) 1. ಮೇಷ, ಟಗರು. ಪೃಥು ತದರಂ  
ಯಸ್ಯ 1. ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩). (ವಿಂ) 2. ದೊಡ್ಡ  
ಹೊಟ್ಟೆಯುಳ್ಳ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಸ್ವಾಙ್ಗತ್ವಾತ್ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫೪).  
-ತದರಿ -ಉದರಿ.

ಪೃಥ್ವಿ ಪೃಥ್ವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭೂಮಿ, ಧರೆ, ಮನುಷ್ಯರ ವಾಸ  
ಸ್ಥಾನ. ಪೃಥು: ಸ್ಥೂಲತ್ವಗುಣಯುಕ್ತಾ - ಪ್ರಥ (ಪ್ರಥ್ಯಾನೇ) "ಕು:"

ಸಂಪ್ರಸಾರಣಶ್ಚ (ಉಂ ೧-೨೮). ಗುಣವಾಚಿತ್ವಾತ್ ವಾ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೪೪). "ಸಂವಿವ್ಯುರ್ಮಬರವಿಕಾರಿ ಚಮುಸಮುತ್ಯ ಪೃಥ್ವೀರಜ:  
ಕರಮಕಂಠಕಡಾರಮಾಶಾ:" ಮಾಘಂ ೫-೩. 2. ಕರಿಜೇರಿಗೆ.  
"ಸುಷವೀ ಕಾರವೀ ಪೃಥ್ವೀ ಪೃಥು: ಕಾಲೋಪಕುಚ್ಚಿಕಾ" ಅಮಂ 1.  
3. ದಪ್ಪಜಾತಿಯ ಯಾಲಕ್ಕಿ. 4. ಸ್ಥೂಲ ಮಗು.  
5. ವೃತ್ತಾಂತಾಕರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಹದಿನೇಳನೆಯ ಭಂದ  
ಸ್ಥಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: ಜಗಣ ಸಗಣ  
ಜಗಣ ಸಗಣ ಯಗಣ ಒಂದು ಲಘು ಮತ್ತು ಒಂದು  
ಗುರು. ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

|     |     |     |     |     |   |    |
|-----|-----|-----|-----|-----|---|----|
| ಜ   | ಸ   | ಜ   | ಸ   | ಯ   | ಲ | ಗು |
| 101 | 110 | 101 | 110 | 100 | 1 | 0  |

"ಜಸೌ ಜಸಯಲಾ ವಸುಗ್ರಹಯತಿಶ್ಚ ಪೃಥ್ವೀ ಗುರು:" ವೃಂ ೦.

ಪೃಥ್ವೀಕಾ ಪೃಥ್ವೀಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಪ್ಪಜಾತಿಯ ಯಾಲಕ್ಕಿ.  
2. ಕರಿಜೇರಿಗೆ.

ಪೃಥ್ವೀಧರ ಪೃಥ್ವೀಧರ (ಪುಂ) ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಪೃಥ್ವೀ  
ಧರತಿ - ಧೃತ್ (ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪).  
"ಅನ್ಯುನೋತ್ತತಯೋಽತಿಮಾತ್ರಪೃಥವ: ಪೃಥ್ವೀಧರಶ್ರೀಭೂತ:" ಮಾಘಂ  
೧೭-೬೯.

ಪೃಥ್ವೀಶ ಪೃಥ್ವೀಶ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. "ಪೃಥ್ವೀಶ ಏಶ  
ನುದತು ತ್ವದನಙ್ಗತಾಪಮ್" ನೆಪಂ ೧೧-೧೨೩.

ಪೃಥಾಕು ಪೃಥಾಕು (ಪುಂ) 1. ಗಜ, ಆನೆ. 2. ವ್ಯಾಘ್ರ,  
ಹುಲಿ. 3. ಚಿರತೆ. 4. ವೃಶ್ಚಿಕ, ಚೇಳು. 5. ಸರ್ಪ,  
ಹಾವು. 6. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಪರ್ಥ (ಕೃತಿಸಿತೆ ಶಬ್ದ) "ಕಾಕು:"  
ಸಂಪ್ರಸಾರಣಂ ಅಕಾರಸ್ಯ ಲೋಪಶ್ಚ (ಉಂ ೩-೮೦). "ಪೃಥಾಕು-  
ವೃಶ್ಚಿಕೇ ವ್ಯಾಘ್ರೇ ಚಿತ್ರಕೇ ಚ ಸರಿಸೃಪೇ" ಹೇಮಂ 1.

ಪೃಥಿನ ಪೃಥಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಶ್ಮಿ, ಕಿರಣ. ಸ್ಪರ್ಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೆ)  
"ನಿ:" ಸಕಾರಲೋಪ: ಗುಣಾಭಾವಶ್ಚ ನಿಪಾಂ (ಉಂ ೪-೫೨).  
2. ವಸುದೇವನ ಪೂರ್ವಜನಾದ ಪೃಥಿ. ವಸುದೇವನು  
ಹಿಂದಿನ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಸುತಪನೆಯ ಒಬ್ಬ ಪ್ರಜಾಪತಿ.  
ಇವರಿಬ್ಬರೂ ಪ್ರಜಾಸೃಷ್ಟಿಗಾಗಿ ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ನಿಯುಕ್ತ  
ರಾಗಿ ಉಗ್ರವಾದ ತಪಸ್ಸನ್ನಾಚರಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಇವರ  
ಅಪೇಕ್ಷೆಯನ್ನು ಈಡೇರಿಸಲು ಪರಮಾತ್ಮನು ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ  
ನಾಗಲು "ನಿನ್ನಂತಹ ಪುತ್ರನೊಬ್ಬನು ಬೇಕು" ಎಂದು  
ವರವನ್ನು ಬೇಡಿದರು. ಅದಕ್ಕನುಗುಣವಾಗಿ ಮುಂದಿನ  
ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ದೇವಕೀ-ವಸುದೇವರಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಇವರಿಗೆ  
ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣರೂಪದಿಂದ ಪುತ್ರನಾಗಿ ಅವತರಿಸಿ ಪೂರ್ವಜನ್ಮ  
ಸ್ಮರಣೆಗಾಗಿ ಶಂಖಚಕ್ರಧಾರಿಯಾಗಿ ದರ್ಶನವಿತ್ತನು.  
"ತ್ವಮೇವ ಪೂರ್ವಸಗೌಢಮ್: ಪೃಥಿನ: ಸ್ವಾಯಂಬುಲೇ ಸತಿ 1. ತದಾಯ



ಸುತಪಾ ನಾಮ ಪ್ರಜಾಪತಿರಕಲ್ಮಷಃ । ಯುವಾಂ ವೈ ಬ್ರಹ್ಮಣಾದಿಷ್ಟೌ  
 ಪ್ರಜಾಸರ್ಗೋ ಯದಾ ತತಃ । ಸನಿಯಮ್ಯೇಂದ್ರಿಯಗ್ರಾಮಂ ತೇಪಾಥೇ ಪರಮಂ  
 ತಪಃ । ತಪಸಾ ಶ್ರದ್ಧಯಾ ನಿತ್ಯಂ ಭಕ್ತ್ಯಾ ಚ ಹೃದಿ ಭಾವಿತಃ ।  
 ಪ್ರಾದುರಾಸಂ ವರದರಾಟ್ ಯುವಯೋಃ ಕಾಮದಿತಸಯಾ । ನ ವಬ್ರಾಞಃಪವರ್ಗಂ  
 ಮೇ ಸೋಹಿತೌ ಮಮ ಮಾಯಯಾ । ಗತೇ ಮಧಿ ಯುವಾಂ ಲಬ್ಧ್ವಾ ವರಂ  
 ಮತ್ಸದೃಶಂ ಸುತಮ್ । ತೃತೀಯೇಽಸ್ಮಿನ್ ಭವೇಽಹಂ ವೈ ತೇನೈವ ವಪುಷಾಽಥ  
 ವಾಮ್ । ಜಾತೌ ಭೂಯಸ್ತಯೋರೇವ ಸತ್ಯಂ ಮೇ ವ್ಯಾಹೃತಂ ಸತಿ । ಏತದ್ವಾಂ  
 ದರ್ಶಿತಂ ರೂಪಂ ಪ್ರಾಙ್ಜನ್ಮಸ್ಮರಣಾಯ ಮೇ । ನಾನ್ಯಥಾ ಮದ್ಭವಂ ಜ್ಞಾನಂ  
 ಮರ್ತ್ಯಲಿಙ್ಗೇ ನ ಜಾಯತೇ । ಯುವಾಂ ಮಾಂ ಪುತ್ರಭಾವೇನ ಬ್ರಹ್ಮಭಾವೇನ  
 ಚಾಸಕ್ರುತ್ । ಚಿಂತಯಂತೌ ಕೃತಸ್ತೇಹೌ ಯಾಸ್ಯೇಥೇ ಮದ್ಗತಿಂ ಪರಾಮ್ ”  
 भाग० १०-३ । 3. ಜಲ, ನೀರು. 4. ಅಮೃತ. 5. ಅನ್ನ.  
 6. ವೇದ. “ ಪೃಷ್ಠಿನಿರಿಯುಚ್ಯತೇ ಚಾನ್ಮಂ ವೇದಾ ಆಪೋಽಮೃತಂ ತಥಾ ”  
 भा० शान्ति० । (वि०) 7. ಸ್ವಲ್ಪ, ಕೆಲವು. 8. ವಾಮನ,  
 ಕುಳ್ಳ. 9. ದುರ್ಬಲವಾದ ಎಲ್ಲುಲುಗಳುಳ್ಳ.

पृश्निका ऋधुक्ता (स्त्री०) निरुपकारं. पृश्नो जले  
कायति — कै (सब्दे) “कः” (३-२-३)।

पृश्निगर्भं ऋद्धिर्गर्भं (पुं०) श्रुत्वा. पृश्निः जन्मान्तर-  
जाता देवकी गर्भः उत्पत्तिस्थानत्वेनास्त्यस्य “अच्”  
(५-२-१२७)। पृश्निः वेदादयो गर्भे यस्य वा। “पृश्नि-  
रित्युच्यते चान्नं वेदा आपोऽमृतं तथा। ममैतानि सदा  
गर्भः पृश्निगर्भस्ततोऽस्म्यहम्” भा० शान्ति०।

पृश्निपर्णी ऋद्धिर्दण्डः (स्त्री०) नरिह्येनैर्गिड. पृश्नि  
 स्वल्पं पर्णमस्याः “डीष्” (४-१-६४)। “पृश्निपर्णी  
 पृथक्पर्णी चित्रपर्ण्यङ्घ्रिपर्णिका” अम०।

पृथिनभद्र षुत्तीर्धदु (पुं०) श्रीरुच्युः पृथनी भद्रं  
यस्य ।

पृषत् ऋ, ऋ (पुं०) 1. जलबिन्दु, ನೀರಿನ ಹನಿ.  
 पर्षति — पृष् (सेचने) “अतिः” गुणभावः शतृवत्  
 अस्य कार्यम् निपा० (उ० २-८०)। जलबिन्दु ಎಂಬ  
 ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಬಹುವಚನವೆಂದು ಕೆಲವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.  
 “पृषन्ति बिन्दुपृषताः पुमांसो विप्रुषः स्त्रियः” अम०।  
 “नाथ त्वद्गुणदुग्धाब्धिपृषदास्वादनं क्षमम्” याद०  
 १६-११४। “पृतनां तस्य संप्रेक्ष्य पृषद्भावितसागराम्”  
 याद० २२-१९६। (पुं०) 2. ಹ೦ರಿಣ, ಜಿಂಕೆ. “पृषत्कि-  
 शोरी कुस्तामसङ्गतां कथं मनोवृत्तिमपि द्विपाधिपे”  
 नैष० ९-२९। स्त्रियां जाति० “जीष्” (३-१-६३)।  
 -ती -३९. “नलिनं मलिनं विवृण्वती पृषतीमस्पृशती  
 तदीक्षणे” नैष० २-२३।

ಪೃಷತ ಪೃಷತ (ಪುಂ) 1. ಮೈಮೇಲೆ ಬಿಳಿ ಚುಕ್ಕಿಗಳುಳ್ಳ  
 ಜಿಂಕೆ. ಪೃಷ್ಠ (ಸೆಚನೆ) “ಅತತ್” (ತಂ ೩-೧೧೧)।  
 2. ದ್ರವವಸ್ತುವಿನ ಬಿಂದು, ನೀರು ಮೊದಲಾದುವುಗಳ  
 ಹೆಸರು. “ಪತಿಸ್ತೇತಜಲದಾನ್ಮಮಸಃ ಪೃಷ್ಠೇರಪಾಂ ಶಮಯತಾ ಚ  
 ರಜಃ” ಕಿರಾಂ ೬-೨೭। 3. ಚುಕ್ಕಿ, ಬೊಟ್ಟು, ಗುರುತು.  
 4. ಗಾಳಿಯನ್ನು ಹೊತ್ತುತ್ತಿರುವ ಜಿಂಕೆ, ಗಾಳಿಗೆ  
 ವಾಹನದಂತಿರುವ ಜಿಂಕೆ. 5. ಮೊಸರು ಬೆರೆಸಿದ ತುಪ್ಪ.  
 “ಪೃಷತೋಽಪಿ ಚ ದಧ್ಯಾಜ್ಯೇ” ವೈಜಂ।

पृषताश्च षष्ठ्यङ् (पुं०) वायु, १०९. पृषतः  
अश्व इव गमनसाधनं यस्य ।

પૃષ્ઠતી યુક્તિ (સ્ત્રી.) ಹೆಣ್ಣು ಜಿಂಕೆ, ಹೆಣ್ಣು ಚಗರಿ.  
 “પૃષ્ઠતીમસ્પૃશતી તદીક્ષણે” નૈષ. ૨-૨૩।

ಪೃಷತಾಂ ಪತಿಃ ಪೃಷತಾಂ ಪತಿಃ (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾಢ.  
 "ತುಹಿನಯನ್ ಸರಿತಃ ಪೃಷತಾಂ ಪತಿಃ" ಮಾಘಂ ೬-೪೪।

पृषत्क ऋषड् (पुं०) छठ, २७७७. पृषन्ति बिन्दव इव  
को वायुरत्र। पृषत् संज्ञायां “कन्” वा। “युगपद्दृशे  
विशन् वराहं तदुपोढैश्च नमश्चरैः पृषत्कः” किरा०  
१३-२३।

ಪೃಷದಂಶ ಪೃಷದಂಶ (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾಳಿ.

पृषदश्च षष्ठदत्त (पुं०) जायते, गच्छ. पृषन् मृगोऽश्च  
इव बाहको यस्य ।

ಪೃಷದಾಜ್ಯ ಸೃಷದಾಜ್ಯ (ನಂ) ಮೊಸರು ಬೆರೆಸಿದ ತುಪ್ಪ.  
 ಪೃಷದ್ವಿಃ ದಧಿವಿಂದುಭಿಃ ಸಹಿತಮಾಜ್ಯಮ್ | “ಪೃಷದಾಜ್ಯಂ  
 ಸದಘ್ಯಾಜ್ಯೇ” ಅಮಂ |

पृषन्ति ष्यञ्स्ति (पुं०) बिन्दु, हन्, त्तेल्लु. "पयः-  
पृषन्तिभिः स्पृष्टा यान्ति वाता शनैः शनैः" ।

ಪೃಷೋದರ ಪೃಷ್ಠೋದರ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಪೃಷಂತಿ  
 उदरे यस्य । पृषो० (६-३-१०९) तलोपः । शिष्टै-  
 रुच्चरितत्वात् साधुः । (वि०) 2. ತೆಳ್ಳಗಿರುವ ಹೊಟ್ಟೆ  
 ಯುಳ್ಳ. ಪೃಷದಿವ उदरं यस्य ।

ಪೃಷೋದರಾದಿ ಪೃಷೋದರಾದಿ (ಪುಂ) ಪೃಷೋದರ ಮೊದ  
 ಲಾದ ಶಬ್ದಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಗಣ. ಈ ಗಣದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತ  
 ವಾದ ಶಬ್ದಗಳು ಶಾಸ್ತ್ರಾನುಸಾರವಾಗಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಅವನ್ನು  
 ಹಿರಿಯರು ಉಚ್ಚರಿಸಿದಂತೆಯೇ ನಾವೂ ಉಚ್ಚರಿಸಬೇಕು.  
 “ಪೃಷೋದರಾದಿನಿ ಯಥೋಪದಿಷ್ಠಮ್” ಪಾಂ ಸೂಂ ೬-೩-೧೦೯.  
 ಈ ಗಣದಲ್ಲಿ ಪಠಿತವಾದ ಪದಗಳು ವರ್ಣನಾಶ (ಲೋಪ)  
 ಆಗಮ ಆದೇಶ ಮತ್ತು ವರ್ಣ ವಿಪರ್ಯಯಗಳಿಂದ  
 ಸಿದ್ಧವಾಗಿವೆ. ಪೃಷೋದರ ಪೃಷೋತ್ಥಾನ ಬಲಾಹಕ ಜಿಮುತ ತಲಖಲ



ಪಿಶಾಚ ಬಸಿ ಮಯೂರ ಇವು ಪೃಷ್ಠೋದರಾದಿ ಗಣದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಶಬ್ದಗಳು. ಇದು ಆಕೃತಿ ಗಣವಾದುದರಿಂದ ಇನ್ನೂ ಅನೇಕ ಶಬ್ದಗಳು ಈ ಗುಂಪಿಗೆ ಸೇರುತ್ತವೆ. ಪೃಷ್ಠಃ ತದರಮ್ ಇಲ್ಲಿ "ತ" ಲೋಪ. ವಾರಿವಾಹಕೋ ಬಲಾಹಕಃ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪೂರ್ವ (ವಾರಿ) ಪದಕ್ಕೆ "ವ" ಕಾರಾದೇಶವೂ ಉತ್ತರ ಪದದ ಆದಿಗೆ ಲತ್ತವೂ ಬಂದಿರುವುದು. ಹಂಸಃ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಹನ ಧಾತುವಿಗೆ ಸಕ್ ಆಗಮವೂ ಸಿಹ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಹಿಸಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಧಾತುವಿಗೆ ವರ್ಣವಿಪರ್ಯಯವೂ ಬಂದು ರೂಪ ನಿಷ್ಪನ್ನವಾಗಿವೆ. ಇತ್ಯಾದಿ. "ಭವೇದ್ವರ್ಣಗಿಮಾಹಂಸಃ ಸಿಹೋ ವರ್ಣವಿಪರ್ಯಯಾತ್. ಗೂಹೋತ್ಮಾ ವರ್ಣವಿಹೃತಃ ವರ್ಣನಾಶಾತ್ಯುಛೋದರಮ್".

ಪೃಷ್ಠ ಪೃಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಕೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಶ್ನೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರಚ್ಛ (ಪ್ರೀತ್ಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ವೈವಾಹಿಕೀ ತಿರ್ಥಿ ಪೃಷ್ಠಾಸ್ತತ್ಕ್ಷಣಂ ಹರಬನ್ಧುನಾ" ಕುಮಾಂ ೬-೯೩. "ನಲಸ್ಯ ಪೃಷ್ಠಾ ನಿಷವಾಗತಾ ಗುಣಾನ್ ಮಿಥೇಣ ದ್ವತದ್ವಿಜವಂದಿಚಾರಣಾಃ" ನೆಪಂ ೧-೩೭. 2. ಸಿಂಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೇಚನೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪೃಷ್ಠ (ಸೇಚನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨).

ಪೃಷ್ಠವತ್ ಪೃಷ್ಠನತ್ (ವಿಂ) 1. ಕೇಳಿದವನು, ಪ್ರಶ್ನೆಮಾಡಿದವನು. ಪ್ರಚ್ಛ (ಪ್ರೀತ್ಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨). 2. ಸಿಂಪಿಸಿದವನು, ಸೇಚನೆ ಮಾಡಿದವನು.

ಪೃಷ್ಠಿ ಪೃಷ್ಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಶ್ನೆಮಾಡುವಿಕೆ, ಕೇಳುವಿಕೆ. ಪ್ರಚ್ಛ (ಪ್ರೀತ್ಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪). 2. ಸಿಂಪಿಸುವಿಕೆ, ಸೇಚನೆ ಮಾಡುವಿಕೆ. ಪೃಷ್ಠ (ಸೇಚನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪).

ಪೃಷ್ಠ ಪೃಷ್ಠ (ನಂ) 1. ಮೈಯ ಹಿಂಭಾಗ. ಪೃಷ್ಠತೇ - ಪೃಷ್ಠ (ಸೇಚನೆ) "ತಕ್" (೩-೨-೧೨). ನಿಪಾಂ. "ಪೃಷ್ಠಂ ತು ಚರಮಂ ತನೋಃ" ಅಮಂ. "ದ್ರವತಾಂ ನನು ಪೃಷ್ಠಮೀಕ್ಷತೇ ವದನ್ ಸೋಽಪಿ ನ ಜಾತು ವಿದ್ವಿಷಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೬-೬೦. 2. ಮೇಲುಭಾಗ, ಹೊರಮೈ, ಮೇಲುಮೈ. "ಪಿಷ್ಠಾದ್ರಿಪೃಷ್ಠಾಸ್ತರಸಾ ಚ ದಂತಿನಶ್ಚಲಜಿಜ್ಞಾಚಲದುರ್ಗಮಾ ಭುವಃ" ಮಾಘಂ ೧೧-೪೯. 3. ತೀರ್ಯಕ್ಪ್ರಾಣಿಯ ಬೆನ್ನು. "ಕೇಲಾಸಗೌರಂ ವೃಷಮಾರುಕ್ಶೋಃ ಪಾದಾರ್ಪಣಾನುಗ್ರಹಪೂತಪೃಷ್ಠಮ್" ರಘುಂ ೨-೩೫. 4. ಹಿಂಭಾಗ, ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಇನ್ನೊಂದು ಭಾಗ. 5. ಪುಸ್ತಕದ ಪುಟ.

ಪೃಷ್ಠಗೋಪ ಪೃಷ್ಠಗೋಪ (ಪುಂ) ಬೆಂಗಾವಲು, ಹಿಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ನಿಂತು ರಕ್ಷಿಸುವವನು.

ಪೃಷ್ಠಗ್ರಂಥಿ ಪೃಷ್ಠಗ್ರಂಥಿ (ಪುಂ) 1. ಬೆನ್ನಿನ ಗಂಟು, ಗೂನು. ಪೃಷ್ಠಸ್ಯ ಗ್ರಂಥಿಃ (ವಿಂ) 2. ಗೂನುಬೆನ್ನಿನವನು. ಪೃಷ್ಠೇ ಗ್ರಂಥಿಯಸ್ಯ.

ಪೃಷ್ಠಚಕ್ರುಸ್ ಪೃಷ್ಠಚಕ್ರುಸ್ (ಪುಂ) 1. ಏಡಿ, ನಳ್ಳಿ. 2. ಭಲ್ಲೂಕ, ಕರಡಿ.

ಪೃಷ್ಠತಸ್ ಪೃಷ್ಠತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಹಿಂಭಾಗದಿಂದ, ಹಿಂದುಗಡೆಯಿಂದ. ಪೃಷ್ಠ "ತಸಿಃ" (ವಾಂ ೫-೪-೪೪). 2. ಹಿಂಭಾಗದಲ್ಲಿ. "ನಮಃ ಪುರಸ್ತಾದಥ ಪೃಷ್ಠತಸ್ತೇ ನಮೋಽಸ್ತು ತೇ ಸರ್ವತಃ ಏವ ಸರ್ವ" ಗೀತಾ ೧೧-೪೦. 3. ಹಿಂಭಾಗಕ್ಕೆ, ಹಿಂದುಗಡೆಗೆ.

ಪೃಷ್ಠದೃಷ್ಟಿ ಪೃಷ್ಠದೃಷ್ಟಿ (ಪುಂ) 1. ಏಡಿ, ನಳ್ಳಿ. 2. ಭಲ್ಲೂಕ, ಕರಡಿ.

ಪೃಷ್ಠಭಾಗ ಪೃಷ್ಠಭಾಗ (ಪುಂ) ಬೆನ್ನು, ಹಿಂಭಾಗ.

ಪೃಷ್ಠಮಾಂಸಾದ ಪೃಷ್ಠಮಾಂಸಾದ (ವಿಂ) ಪರೋಕ್ಷದಲ್ಲಿ ದೂಷಿಸುವವನು, ಹಿಂದುಗಡೆ ದೋಷಾರೋಪಮಾಡುವವನು. ಪೃಷ್ಠೇ ಪರೋಕ್ಷೇ ಮಾಂಸಾದ ಇವ.

ಪೃಷ್ಠಮಾಂಸಾದನ ಪೃಷ್ಠಮಾಂಸಾದನ (ನಂ) ಪರೋಕ್ಷದಲ್ಲಿ ದೂಷಿಸುವುದು. ಪೃಷ್ಠೇ ಪರೋಕ್ಷೇ ಮಾಂಸಾದನಮಿವ.

ಪೃಷ್ಠವಂಶ ಪೃಷ್ಠವಂಶ (ಪುಂ) ಬೆನ್ನಿನ ಎಲುಬು, ಬೆನ್ನಿನ ಮೂಳೆ. ಪೃಷ್ಠಸ್ಯ ವಂಶಃ.

ಪೃಷ್ಠವಾಡ್ ಪೃಷ್ಠವಾಡ್ (ಪುಂ) ಭಾರವನ್ನು ಎಳೆಯುವ ವೃಷಭ, ಗಾಡಿಯ ಭಾರವನ್ನು ಎಳೆಯುವ ಎತ್ತು, ಪಳಗಿ ಸಲು ನೊಗದ ಪಾರ್ಶ್ವಕ್ಕೆ ಕಟ್ಟಲ್ಪಡುವ ಎತ್ತು. ಪೃಷ್ಠ ಯುಗಪಾರ್ಶ್ವಂ ವಹತಿ - ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಶ್ವಿಃ" (೩-೨-೬೪).

ಪೃಷ್ಠವಾಹ್ಯ ಪೃಷ್ಠವಾಹ್ಯ (ಪುಂ) ಬೆನ್ನಿನ ಮೇಲೆ ಮೂಟೆ ಹೊರುವ ಎತ್ತು, ಕುದುರೆ ಮೊದಲಾದುವು. ಪೃಷ್ಠೇನ ವಾಹ್ಯಂ ಯಸ್ಯ. "ಸ್ಥೌರೀ ಪೃಷ್ಠಯಃ ಪೃಷ್ಠವಾಹ್ಯಃ" ಅಭಿಂ. ವಿಂ.

ಪೃಷ್ಠಶಯ ಪೃಷ್ಠಶಯ (ವಿಂ) ಮೇಲುಮುಖವಾಗಿ ಮಲಗುವ, ಅಂಗಲಾಚಿ ಮಲಗುವ. ಪೃಷ್ಠೇ ಶಯೇ - ಶೀಘ್ರ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಅಚ್" (೩-೨-೧೫).

ಪೃಷ್ಠಶೃಂಗ ಪೃಷ್ಠಶೃಂಗ (ಪುಂ) ಬೆನ್ನಿನವರೆಗೂ ಕೊಯ್ದು ಬೆಳೆದಿರುವ ಕಾಡುಹೊತ. ಪೃಷ್ಠೇ ಶೃಂಗೋಽಸ್ಯ. "ಪೃಷ್ಠಶೃಂಗೋ ವನಾಜಃ ಸ್ಯಾತ್" ಅಭಿಂ. ವಿಂ.

ಪೃಷ್ಠಶೃಂಗಿನ್ ಪೃಷ್ಠಶೃಂಗಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಭೀಮಸೇನ. 2. ಮಹಿಷ, ಎಮ್ಮೆ. 3. ನಪುಂಸಕ. 4. ಕುರಿ, ಟಗರು. "ಪೃಷ್ಠಶೃಂಗಿ ಪುಮಾನ್ ದಂಶಮೀರೋ ಣ್ಣಕೇ ವೃಕೋದರೇ" ಮೇದಿಂ.

ಪೃಷ್ಠೋದಯ ಪೃಷ್ಠೋದಯ (ಪುಂ) ಪೃಷ್ಠೋದಯ ಲಗ್ನಗಳು, ಪೃಷ್ಠಭಾಗದಿಂದ ಉದಯಿಸುವ ಲಗ್ನಗಳು. ಪೃಷ್ಠೇನ ತದಯೋ ಯಸ್ಯ. ಮೇಷ, ವೃಷಭ, ಮಿಥುನ, ಕರ್ಕಾಟಕ, ಧನುಸ್ಸು ಮತ್ತು ಮಕರ ಇವು ನಿಶಾಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ ಲಗ್ನಗಳು. ಉಳಿದ ಲಗ್ನಗಳು ದಿನ ಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳವು. ನಿಶಾ



ಸಂಜ್ಞೆಯ ಲಗ್ನಗಳಲ್ಲಿ ಮಿಥುನ ಲಗ್ನ ಹೊರತು ಉಳಿದವು ಪುಷ್ಯಾದಯ ಲಗ್ನಗಳು. ಉಳಿದ ಸಿಂಹ ಕನ್ಯಾ ತುಲಾ ವೃಶ್ಚಿಕ ಮತ್ತು ಕುಂಭ ಲಗ್ನಗಳು ಶೀರ್ಷೋದಯ ಲಗ್ನಗಳು. ಮಿಥುನ ಲಗ್ನವು ಉಭಯ ಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ ಲಗ್ನ. "ಅತ್ರೋ ಗೋಪತಿಯುಗಂ ಚ ಕರ್ಕಿಭವಿಮಗಾಸ್ತಥಾ । ನಿಶಾಸಂಜಾಃ ಸ್ಮೃತಾಶ್ಚೇತೇ ಶೇಷಾಶ್ಚಾನ್ಯೇ ದಿನಾತ್ಮಕಾಃ । ನಿಶಾಸಂಜಾ ವಿಮಿಶುನಾಃ ಸ್ಮೃತಾ ಪುಣ್ಯೋದಯಾಸ್ತಥಾ । ಶೇಷಾಃ ಶೋಷೋದಯಾಹ್ಯೇತೇ ಮೀನಶ್ಚೋಭಯ-ಸಂಜಕಃ" ।

ಪುಟಕ ಪುಷ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಭಾರವಸ್ತು ಹೊರಲು ಅಗಲವಾದ ಬೆನ್ನುಳ್ಳ ಕುದುರೆ, ಮತ್ತು ಮೊದಲಾದುವು. ಪ್ರಶಸ್ತಮತಿ-ಶಯಿತ ಬಾ ಪುಟಮಸ್ಯ "ಯಪ್" (ವಾಂ ೫-೨-೧೨೦) । 'ಪುಟಾನಾ-ಮಪಿ ಚಾಶ್ವಾನಾಂ ಬಾಹ್ಲಿಕಾನಾಂ ಜನಾರ್ದನಃ । ದದೌ ಶತಸಹಸ್ರಾಣಿ ಕನ್ಯಾಧನಮನ್ತುತಮಮ್' ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೪೭-೪೪ । (ನಂ) 2. ರಥನುರ ಬೃಹತ್ ವೈರೂಪ ವೈರಾಜ ಶಾಕ್ವರ ಮತ್ತು ರೈವತಗಳೆಂಬ ಆರು ಸ್ತೋತ್ರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಆರು ದಿನಗಳ ಸಮೂಹ. ರಥನುರಬೃಹತ್ವವೆರಾಜಶಾಕ್ವರ-ರೈವತಾಖ್ಯಾನಿ ಷಡ್ ಪುಟಾಖ್ಯಸ್ತೋತ್ರಾಣಿ । ತದ್ವಿಕ್ತಾನ್ಯಹಾನಿ ಲಕ್ಷಣಯಾ ಪುಟಾನಿ, ತेषಾಂ ಸಮೂಹಃ "ಯನ್" (ವಾಂ ೪-೨-೪೨) । (ವಿಂ) 3. ಬೆನ್ನುನಲ್ಲಿರುವ, ಹಿಂಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ, ಹಿಂಭಾಗಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಪುಟಂ ಭವಃ "ಯತ್" (೪-೩-೫೫) ।

ಪೆಚಕ ಪೇಚಕ (ಪುಂ) 1. ಘೂಕ, ಗೂಬೆ. ಪಚ್ಯತೇ ದುಃಖೇನ—ಹುಪಚಪ್ (ಪಾಕೇ) "ಬುನ್" (೩ಂ ೫-೩೭) । 2. ಆನೆಯ ಬಾಲದ ಬುಡದ ಸಮೀಪ ಭಾಗ. "ಪೆಚಕೋ ಗಜಲಾಙ್ಗೂಲ-ಮೂಲೋಪಾಂತೇ ಚ ಕೌಶಿಕೇ" ಮೇದಿಂ । 3. ಪರ್ಯಂಕ, ಮಂಚ. 4. ಹೆಣ್ಣು. 5. ಮೇಘ, ಮೋಡ.

ಪೆಚಕಿನ್ ಪೇಚಕಿನ್ (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. ಪೆಚಕೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಹಿನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫) ।

ಪೆಚಿಲ ಪೇಚಿಲ (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. "ವರಾಙ್ಗಃ ಪುಷ್ಕರೀ-ಶ್ಚುಂಕಣಸಾಮಜಪೆಚಿಲಾಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಪೆಟ ಪೇಟಿ (ಪುಂ) ನೀಡಿದ ಬೆರಳುಗಳುಳ್ಳ ಅಂಗೈ.

ಪೆಟಕ ಪೇಟಕ (ಪುಂ) 1. ಬೆತ್ತ ಮರ ಮೊದಲಾದುವು ಗಳಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಪೆಟ್ಟಿಗೆ. ಪಿಟ (ಶಬ್ದಸಂಭಾತಯೋಃ) "ಕುನ್" (೩ಂ ೨-೩೨) । 2. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು, ರಾಶಿ. 3. ಬಿದಿರು ಬೆತ್ತ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಬುಟ್ಟಿ. "ಪೆಟಕಃ ಪುಸ್ತಕಾದೀನಾಂ ಮಂಜುಷಾಯಾಂ ಕದಂಬಕೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಪೆಟಾ ಪೇಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೆಟ್ಟಿಗೆ. ಪೆಟತಿ — ಪಿಟ (ಸಂಭಾತೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।

ಪೆಟಾಕ ಪೇಟಾಕ (ಪುಂ) ಪೆಟ್ಟಿಗೆ. ಪೆಟಕ ಪುಟಂ ।

ಪೆಟಿಕಾ ಪೇಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣ್ಣ ಪೆಟ್ಟಿಗೆ.

ಪೆಟಿ ಪೇಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣ್ಣ ಪೆಟ್ಟಿಗೆ, ಕೈಪೆಟ್ಟಿಗೆ.

ಪೆತ್ವ ಪೇತ್ವ (ನಂ) 1. ಅವ್ಯತ. 2. ಫುತ, ತುಪ್ಪ.

ಪೆಯ ಪೇಯ (ನಂ) 1. ಜಲ, ನೀರು. ಪಯತೇ—ಪಾ (ಪಾನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಯತ್" (೩-೧-೯೭) । ಇತ್ (೬-೪-೬೫) । 2. ಕ್ಷೀರ, ಹಾಲು. 3. ಎಂಟು ವಿಧ ಅನ್ನಗಳಲ್ಲೊಂದು. (1) ಭೋಜ್ಯಮ್ (2) ಪೆಯಮ್ (3) ಚೂಷ್ಯಮ್ (4) ಲೇಹ್ಯಮ್ (5) ಖಾಡ್ಯಮ್ (6) ಚರ್ವಣಮ್ (7) ನಿಷ್ಪೇಯಮ್ ಮತ್ತು (8) ಭಕ್ಷ್ಯಮ್ ಇವು ಎಂಟು ವಿಧ ಅನ್ನಗಳು. (ವಿಂ) 4. ಕುಡಿಯಲು ಯೋಗ್ಯ ವಾದ. 5. ಕುಡಿಯಲ್ಪಡುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಯಾ —ಯಾ. 6. ಗಂಜಿ, ಅಂಬಲಿ. 7. ಅನ್ನದ ಅಗಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕೆನೆ. "ಪೆಯಂ ಪಾತವ್ಯಪಯಸೋಃ ಪೇಯಾ ಶ್ರಾಣಾಚ್ಚಮಂಡಯೋಃ" ಮೇದಿಂ ।

ಪೆಯುಷ ಪೇಯುಷ (ನಂ) 1. ಅವ್ಯತ, ಸುಧೆ. ಪಿಯು (ಸೌತ್ರಧಾತುಃ) "ತುಪನ್" (೩ಂ ೪-೭೬) । ಬಾಹುಂ ಗುಣಃ । 2. ತುಪ್ಪ, ಫುತ. 3. ಕರು ಹಾಕಿದ ಏಳು ದಿನಗಳೊಳಗಿನ ಹಸುವಿನ ಹಾಲು, ಗಿಣ್ಣು ಹಾಲು. "ಸಪ್ತರಾತ್ರಪ್ರಸೂತಾಯಾಃ ಕೀರಂ ಪೆಯುಷಮುಚ್ಯತೇ" ಹಾರಾಂ । "ಶೇಲುಂ ಗವ್ಯಂ ಚ ಪೆಯುಷಂ ಪ್ರಯತ್ನೇನ ವಿವರ್ಜयेತ್" ಮನುಂ ೫-೬ ।

ಪೆರಾ ಪೇರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭೂಮಿ. "ಅಚಲಾಕೀಲಿನಿ ಪೆರಾ ಬೀಜಸೂರತ್ನಸುಃ ಸ್ವಸುಃ" ವೈಜಂ । 2. ಕತ್ತೆಯ ಮುಖದ ಅಕ್ಕಾದ ಒಂದು ವಾದ್ಯ. "ಅತಾಡಯನ್ ಮೃದಙ್ಗಾಂಶ್ಚ ಪೆರಾಶ್ಚಾಽ-ಪೂರಯನ್ ಕಲಾಃ" ಭಟ್ಟಿಂ ೧೭-೭ ।

ಪೆರು ಪೇರು (ಪುಂ) 1. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. ಪಿಯತೇ ರಸಾನ್ — ಪಿಡ್ (ಪಾನೇ) "ಃ" (೩ಂ ೪-೧೦೧) । "ತರ್ಪಮಾರ್ತಿಂಡ-ಮುಂಡೀರಪಾಥಿಪೇರಗಮಸ್ತಯಃ" ವೈಜಂ । 2. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. "ಮಿತದ್ರುಃ ಸಂವರಃ ಪೆರುಃ ಸ್ತಮ್ಭಿ ಸ್ತಮ್ಭಿಮಹೋದಧಿಃ" ವೈಜಂ ।

ಪೆಲ ಪೇಲ (ನಂ) 1. ಗತಿ, ಗಮನ, ಚಲನ. ಪೆಲ್ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । 2. ಅಂಡಕೋಶ, ವೃಷಾ.

ಪೆಲವ ಪೇಲವ (ಪುಂ) 1. ಅಸ್ಪೃಶ್ಯವಾದ, ಮುಟ್ಟಲು ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ. "ಪೆಲವಃ ಪುನರಸ್ಪೃಶ್ಯೋ ಜಮ್ಭಕೋ ನೃತ-ಗಾನವಿತ್" ವೈಜಂ । (ನಂ) 2. ಮೆಣಸು. "ಮರಿಕಂ ಪಲಿತಂ ಶ್ಯಾಮಂ ವೆಲ್ಲನಂ ಪೆಲವಂ ಕಟು" ವೈಜಂ । (ವಿಂ) 3. ಸುಷುಮಾರವಾದ, ಕೋಮಲವಾದ. "ಕಥಮಾತಪೇ ಗಮಿಷ್ಯಸಿ ಪರಿಬಾಧಾಪೆಲವೇರಙ್ಗೈಃ" ಶಾಕುಂ ೩-೧೯ । "ಪದಂ ಸಹೇತ ಭ್ರಮರಸ್ಯ ಪೆಲವಂ ಶಿರೀಷಪುಷ್ಪಂ ನ ಪುನಃ ಪತತಿಗಿಣಃ" ಕುಮಾಂ ೫-೬ । 4. ಕೃತವಾಗಿರುವ, ತಕ್ಕಿರುವ. 5. ವಿರಳವಾದ, ಎಡಬಿಟ್ಟಿರುವ.



ಪೆಶ ಪೇಶ (ಪುಂ) ರೂಪ, ಆಕಾರ.

ಪೆಶಲ ಪೇಶಲ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಪೆಶ ತದ್ಗುಣಕಂ ರಾಮಣೀಯಕಂ ಲಾತಿ ಗೃಹ್ಣಾತಿ ಇತಿ ಪೆಶಲಃ | ಗಣೇಂದ್ರನನ್ನು ಸಂರಕ್ಷಿಸಲು ಸಂಭ್ರಮದಿಂದ ವೇಗವಾಗಿ ಬರುತ್ತಿರುವಾಗ ಪುಷ್ಪಮಾಲೆ ಆಧರಣ ಮತ್ತು ಪೀತಾಂಬರಗಳು ಮೈಯಿಂದ ಜಾರಿಬೀಳುತ್ತಿದ್ದರೂ ಅದೂ ಸುಂದರವಾಗಿ ನಯನಮನೋಹರವಾಗಿ ಕಾಣುತ್ತಿದ್ದುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ದೇಶಲನು. "ತವರಾತಿಶಯತಃ ಸ್ವಸ್ತಸ್ಯ ಭೂಗಾಂವರಸುಂದರಃ | ಗಜೇಂದ್ರರಕ್ಷಾಸಮಯೇ ಯೋಸೌ ಸ್ಯಾತ್ ಪೆಶಲಃ ಸ್ಮೃತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | "ಅಕ್ರೂರಃ ಪೆಶಲೋ ದಕ್ಷಃ" ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ಮೃದುವಾದ, ಕೋಮಲವಾದ. ಪಿಶ (ಅವಯವ) ಮಾತೆ "ಘ್" (೩-೩-೧೮) | ಪೆಶ ರೂಪ ಲಾತಿ — ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | "ಸಾ ಸಂಯಸ್ತಾ ಮರಣಮತ್ರಾ ಪೆಶಲಂ ಧಾರಯಂತಿ ಶಯೋಸಜ್ಜೇ ನಿಹಿತಮಸಕ್ತಃ ಕ್ಷುದುಃಖೇನ ಗಾತ್ರಮ್" ಮೇಘಂ ೨-೩೦ | 3. ಕೃಶವಾದ, ತೆಳುವಾದ. "ಏತಾ ತ್ವಯಾ ಪೆಶಲಮಧ್ಯಯಾಪಿ ಧಟಾಂಬುಮಂವೃಥಿತಬಾಲಕೃತಾ" ರಘುಂ ೧೩-೩೪ | 4. ಸುಂದರವಾದ, ಚೆಲುವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ. 5. ದಕ್ಷ, ಸಮರ್ಥ, ಚತುರ. 6. ಮಧುರವಾದ, ಇಂಪಾದ. "ವಕ್ತುಲಪುಷ್ಪರಸಾಸವಪೆಶಲಃ ಧ್ವನಿರಗಾನ್ವಿರಗಾನ್ಮಧುಪಾವಲಿಃ" ಮಾಘಂ ೬-೭ | 7. ಧೂರ್ತ, ವಯಕ, ಮೋಸಾರ.

ಪೆಶಸ್ ಪೇಶಸ್ (ನಂ) 1. ರೂಪ, ಆಕಾರ. 2. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 3. ಕೋಶ.

ಪೆಶಸ್ಕೃತ್ ಪೇಶಸ್ಕೃತ್ (ವಿಂ) ಒಂದು ಕೃಮಿ, ಕೀಟ. ಪೆಶಃ ರೂಪಾಂತರಂ ಸ್ವಗೃಹೀತಕೀಡಸ್ಯ ಕರೋತಿ — ಡು ಕ್ಕತ್ (ಕರಣ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬) | "ಕೀಡಃ ಪೆಶಸ್ಕೃತಂ ಧ್ಯಾಯನ್ ಕುಡ್ಯಾ ತೇನ ಪ್ರವೇಶಿತಃ | ಯಾತಿ ತತ್ಸಾತ್ಮತಾಂ ರಾಜನ್ ಪೂರ್ವರೂಪಸಂತೃಪ್ತಜನ್" ಭಾಗಂ ೧೧-೯-೨೩ |

ಪೆಶಿ ಪೇಶಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಾಂಸದ ತುಂಡು. 2. ಮಾಂಸ ಖಂಡ, ಮಾಂಸದ ಮುದ್ದೆ. 3. ವಜ್ರಾಯುಧ. 4. ಮೊಟ್ಟೆ, ತತ್ತಿ. 5. ಕತ್ತಿಯ ಬರೆ. 6. ಗರ್ಭಖಂಡ. ಪಿಶ (ಅವಯವ) "ಙ್" (೩ಂ ೪-೧೧೯) | ವಾ "ಡೀಫ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫) | ಪೆಶಿ ಪೇಶಿ. "ಪೆಶಿ ಸುಪಕ್ವಕಾಲಿಲೇ ಮಾಂಸಾಂ ಸ್ತಂಭಪಿಪ್ಪಾಂಶುಃ | ಮಾಂಸಪಿಪ್ಪಾಂಶುಃ ಪೇಶಿ" ಮೇದಿಂ | 7. ಗರ್ಭ ಕೋಶ. 8. ಹಣ್ಣಾಗಿರುವ ಮೊಗ್ಗು, ಬಲಿತ ಮೊಗ್ಗು.

ಪೆಶಿಕೋಶ ಪೇಶಿಕೋಶ (ಪುಂ) ಅಂಡಕೋಶ, ಹಕ್ಕಿಯ ತತ್ತಿ. ಪೆಶಾಃ ಕೋಶಃ | "ಪೆಶಿಕೋಶೋ ದ್ವಿಹೀನೇಷ್ಠಮ್" ಅಮಂ |

ಪೆಶ ಪೇಶ (ಪುಂ) 1. ಅರೆಯುವುದು, ಪುಡಿಮಾಡುವುದು. 2. ಹಿಟ್ಟು ಮಾಡುವುದು. ಪಿಶ್ಲ (ಸಂಚೂರ್ಣ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) |

ಪೆಶಕ ಪೇಶಕ (ವಿಂ) 1. ಅರೆಯುವವನು, ಪುಡಿಮಾಡುವವನು. 2. ಹಿಟ್ಟು ಮಾಡುವವನು, ಬೀಸುವವನು. ಪಿಶ್ಲ (ಸಂಚೂರ್ಣ) "ಘ್" (೩-೧-೧೩೩) |

ಪೆಶಣ ಪೇಶಣ (ನಂ) 1. ಅರೆಯುವುದು, ಪುಡಿಮಾಡುವುದು. ಪಿಶ್ಲ (ಸಂಚೂರ್ಣ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಬೀಸುವಿಕೆ, ಹಿಟ್ಟು ಮಾಡುವಿಕೆ. 3. ಅರೆಯುವ ಕಲ್ಲು, ಕಲ್ಲುವತ್ತು, ಔಷಧ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಅರೆಯುವ ಗುಳಿ ಕಲ್ಲು. ಪಿಶ್ಲ ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | 4. ಬೀಸುವ ಕಲ್ಲು. (ವಿಂ) 5. ಅರೆಯುವ, ಪುಡಿಮಾಡುವ.

ಪೆಶಣಿ ಪೇಶಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬೀಸುವ ಕಲ್ಲು, ಹಿಟ್ಟು ಮಾಡುವ ಕಲ್ಲು. 2. ಅರೆಯುವ ಕಲ್ಲು, ಪುಡಿಮಾಡುವ ಕಲ್ಲು. ಪಿಶ್ಲ (ಸಂಚೂರ್ಣ) "ಅನಿಃ" ಬಾಹ್ಯಂ | ಸ್ತ್ರಿಯಾ ವಾ "ಡೀಫ್" (ವಾಂ ೪-೧-೪೫) | -ಪಿ -ಣೀ.

ಪೆಶಣೀಯ ಪೇಶಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಅರೆಯಲ್ಪಡುವ, ಪುಡಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಬೀಸಲ್ಪಡುವ. ಪಿಶ್ಲ (ಸಂಚೂರ್ಣ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) 3. ಅರೆಯಬೇಕಾದ 4. ಬೀಸಬೇಕಾದ. "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬) | ಪೆಶಣೀಯ ಪೇಶ್ವ ವ್ಯವಸ್ಥೆ.

ಪೆಶ್ಲ ಪೇಶ್ಲ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಪಿಂಗಳ ಮುಷಿಯ ಗೋತ್ರದವರ ಶಿಷ್ಯರು. ಪಿಶ್ಲಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯ "ಯ್" (೪-೧-೧೦೫) | ಪೆಶ್ಲಸ್ಯ ಛಾತ್ರಾಃ "ಅಙ್" (೪-೨-೧೧೧) | 2. ಪ್ರಭವ ಮೊದಲಾದ ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲೊಂದು.

ಪೆಶ್ಲಸ್ಯ ಪೇಶ್ಲಸ್ಯ (ಪುಂ) ಪಿಂಗಳ ಮುಷಿಯ ಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಪಿಶ್ಲಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯ "ಯ್" (೪-೧-೧೦೫) |

ಪೆಶ್ಲಿ ಪೇಶ್ಲಿ (ಪುಂ) ಪಿಂಗಳ ಮುಷಿಯ ಮಗ. ಪಿಶ್ಲಸ್ಯಾಪತ್ಯ "ಙ್" (೪-೧-೯೫) |

ಪೆಶರ ಪೇಶರ (ವಿಂ) ಮಡಕೆಯಲ್ಲಿ ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಅನ್ನ ಮುಂತಾದದ್ದು. ಪಿಶರೇ ಸಂಸ್ಕೃತಮ್ "ಅಙ್" (೪-೨-೧೧೧) |

ಪೆಶಿನ್ಯ ಪೇಶಿನ್ಯ (ನಂ) ಪರಾನ್ನದಿಂದ ಜೀವಿಸುವಿಕೆ, ಭಿಕ್ಷೆಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಜೀವನ. ಪಿಶಂ ಪರಿಪಿಶಂ ಭಯತಯಾಸ್ಯಸ್ಯ "ಙ್" (೪-೨-೧೧೫) | ಪಿಶಿನೋ ಭಾವಃ "ಘ್" (೪-೧-೧೨೪) |

ಪೆತಾಮಹ ಪೇತಾಮಹ (ವಿಂ) 1. ಪಿತಾಮಹನ ಸಂಬಂಧ ವಾದ. ಪಿತಾಮಹಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦) | 2. ತಾತ ನಿಂದ ಬಂದ. ತಾತನ ಕಾಲದಿಂದ ಬಂದ. "ನಾಸ್ತಿ ಪಿತ್ರಾಜಿತಂ ಕಿಂಚಿದ್ ನ ಮಯಾ ಕಿಂಚಿದಾಜಿತಮ್ | ಅಸ್ತಿ



ಮೇ ಹಾಸ್ತಶಿಲಾಂ ವಸ್ತು ಪೆತಾಮಹಂ ಧನಮ್" ವೇರಾಂ ಪಂ |

3. ಬ್ರಹ್ಮನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೧೫) |

-ಮಹಿ -ಮಹೀ. "ಅಯೋಷ್ಯಾ ಸೃಷ್ಟಲೋಕೇವ ಸದ್ವಿ: ಪೆತಾಮಹಿ ತನು:" ರಘುಂ ೧೫-೬೦ |

**ಪೆತ್ತಕ ಪೈತ್ಯಕ (ವಿಂ)** 1. ಪಿತ್ತಸಂಬಂಧವಾದ, ತಂದೆಯಿಂದ ಬಂದ. ಪಿತುರಾಗತಮ್ "ಠ್" (೪-೩-೭೮) | "ಪೆತ್ತಕಂ ತು ಪಿತಾ ದ್ರವ್ಯಮನವಾಪ್ತಂ ಯದಾನ್ಯುಯಾತ್ | ನ ತತ್ಪುತ್ರ: ಭಜೇತ್ಸಾರ್ಥ-ಮಕಾಮ: ಸ್ವಯಮಾಜಿತಮ್" ಮನುಂ ೯-೨೦೯ | 2. ತಂದೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಪಿತುರಿದಮ್ "ಠ್" | "ವಿತಾನಸಹಿತಂ ತತ್ರ ಭಜೇ ಪೆತ್ತಕಮಾಸನಮ್" ರಘುಂ ೧೭-೨೮ |

**ಪೆತ್ತಮತ್ಯ ಪೈತ್ಯಮತ್ಯ (ಪುಂ)** ಕನ್ಯಾವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು, ವಿವಾಹವಾಗುವುದಕ್ಕೆ ಮುಂಚೆ ತಂದೆಯ ಮನೆಯಲ್ಲಿರುವ ಕನ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಪಿತ್ತಮತ್ಯಾ ಅನುಡಾತಾ: ಕನ್ಯಾಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಞ:" (೪-೧-೧೫೧) |

**ಪೆತ್ತವಸೇಯ ಪೈತ್ಯವಸೇಯ (ಪುಂ)** ಸೋದರತ್ತೆಯ ಮಗ, ತಂದೆಯ ಸಹೋದರಿಯ ಮಗ. ಪಿತ್ತವಸುರಪತ್ಯಮ್ "ಠ್" (೪-೧-೧೩೩) | ಋಕಾರಸ್ಯ ಲೋಪಶ್ಚ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | -ಯಿ -ಯಾ. "ಪೆತ್ತವಸೇಯಿ ಭಗಿನಿ ಸ್ವಸ್ರಿಯಾ ಮಾತುರೇವ ಚ" ಮನುಂ ೧೧-೧೭೧ |

**ಪೆತ್ತವಸ್ತ್ರೀಯ ಪೈತ್ಯವಸ್ತ್ರೀಯ (ಪುಂ)** ಸೋದರತ್ತೆಯ ಮಗ, ತಂದೆಯ ಸಹೋದರಿಯ ಮಗ. ಪಿತ್ತವಸುರಪತ್ಯಮ್ "ಠ್" (೪-೧-೧೩೨) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೪) | -ಸ್ವಸ್ತ್ರೀಯಾ -ಸ್ವಸ್ತ್ರೀಯಾ.

**ಪೆತ್ತ ಪೈತ್ಯ (ವಿಂ)** ಪಿತ್ತಸಂಬಂಧವಾದ, ಪಿತ್ತದಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಪಿತ್ತಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) |

**ಪೆತ್ತಲ ಪೈತ್ಯಲ (ವಿಂ)** ಹಿತ್ತಾಳೆಯಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪೆತ್ತಿಕ ಪೈತ್ಯಿಕ (ವಿಂ)** ಪಿತ್ತದಿಂದ ಉಂಟಾದ (ವ್ಯಾಧಿ). ಪಿತ್ತೇನ ನಿವೃತ್ತ: "ಠ್" (೫-೧-೭೯) |

**ಪೆತ್ತ ಪೈತ್ಯ (ನಂ)** 1. ಪಿತ್ತತೀರ್ಥ, ಪಿತ್ತಸಂಬಂಧವಾದ ತೀರ್ಥ, ಪಿತ್ತಗಳನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಅಂಗುಷ್ಠ ಮತ್ತು ತರ್ಜನಿಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಬಿಡುವ ತೀರ್ಥ. ಪಿತ್ತಣಾಮಿದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) | "ಮಧ್ಯೇಽಙ್ಗುಲಾಙ್ಗುಲಯೋ: ಪೆತ್ತಮ್" ಅಮಂ | 2. ಪಿತ್ತಗಳ ದಿವಸ ಮಾಸ ಮತ್ತು ವರ್ಷ. ಮನುಷ್ಯರ ಒಂದು ತಿಂಗಳು ಪಿತ್ತಗಳಿಗೆ ಅಹೋರಾತ್ರರೂಪವಾದ ಒಂದು ದಿನ. [ಕೃಷ್ಣಾಷ್ಟಮಿಯ ಅರ್ಧದಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯೋದಯವೂ ಅಮಾವಾಸ್ಯೆಯ ದಿನ ಮಧ್ಯಾಹ್ನವೂ ಶುಕ್ಲಾಷ್ಟಮಿಯ ದಿನ ಸೂರ್ಯಾಸ್ತವೂ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಅರ್ಧರಾತ್ರಿಯೂ ಆಗುವುದು.] "ಮಾಸೇನ ಸ್ಯಾದಹೋ-

ರಾತ್ರ: ಪೆತ್ತೋ ವರ್ಷೇಣ ದೇವತ:" ಅಮಂ | ಮನುಷ್ಯರ ಮೂವತ್ತು (30) ತಿಂಗಳು ಪಿತ್ತಗಳಿಗೆ ಒಂದು ತಿಂಗಳು. ಮನುಷ್ಯರ ಮುನ್ನೂರ ಅರವತ್ತು (360) ತಿಂಗಳು ಅಥವಾ ಹತ್ತು ಸಾವಿರದ ಎಂಟುನೂರು (10,800) ದಿನಗಳು ಪಿತ್ತಗಳಿಗೆ ಒಂದು ವರ್ಷ.

**ಪೆಪ್ಪಲ ಪೈಪ್ಪಲ (ವಿಂ)** ಪಿಪ್ಪಲವೃಕ್ಷ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಅರಳಿ ಮರದಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪಿಪ್ಪಲಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) | "ಪಾಣಿ ಕಾರ್ಮುಕಮಕ್ಷಸೂತ್ರವಲಯಂ ದೃಢೋಽಪರ: ಪೆಪ್ಪಲ:" ಮಂ ವೀಂ ೧-೧೮ |

**ಪೆಶಾಚ ಪೈಶಾಚ (ಪುಂ)** 1. ಎಂಟು ವಿಧ ವಿವಾಹಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ವಿಧ. ಪಿಶಾಚಸ್ಯಾಯಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) | ಕನ್ಯೆಯ ಒಪ್ಪಿಗೆಯಿಲ್ಲದೆ, ಮಲಗಿರುವಾಗ ಮದ್ಯಪಾನಾದಿಗಳಿಂದ ಮತ್ತಳಾಗಿರುವಾಗ ಅಥವಾ ಆತ್ಮರಕ್ಷಣೆಗೂ ಅಸಮರ್ಥಳಾಗಿರುವಾಗ ಬಲಾತ್ಕಾರವಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ ವಿವಾಹವು ಪೈಶಾಚವು. ಎಂಟು ವಿಧ ವಿವಾಹಗಳಲ್ಲಿ ಇದು ಬಹಳ ನೀಚವಾದುದು. ಇದು ಬಹಳ ಪಾಪಹೇತು. "ಸುಪ್ತಾಂ ಮತ್ತಾಂ ಪ್ರಮತ್ತಾಂ ವಾ ರಹೋ ಯತ್ರೋಪಗಂಚತಿ | ಸ ಪಾಪಿಣಿ ವಿವಾಹಾನಾಂ ಪೆಶಾಚ: ಪ್ರಥಿತೋಽಧಮ:" ಮನುಂ ೩-೩೪ | 2. ಪಿಶಾಚಿ. ಪಿಶಾಚ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಞ್" (೫-೩-೧೧೭) | (ವಿಂ) 3. ಪಿಶಾಚ ಸಂಬಂಧವಾದ. (ನಂ) 4. ಕೋಪದಿಂದ ಮಾಡುವ ದಾನ.

**ಪೆಶುನ್ಯ ಪೈಶುನ್ಯ (ನಂ)** ಚಾಡಿಕೋರತನ, ಚಾಡಿಯನ್ನು ಹೇಳುವುದು, ಒಬ್ಬನ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ದೋಷವನ್ನು ಹೇಳುವುದು. ಪಿಶುನ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ಏಞ್" (೫-೧-೧೨೪) | "ಪೆಶುನ್ಯಂ ಸಾಹಸಂ ದ್ರೋಹ ಇರ್ಷ್ಯಾಸುಯಾರ್ಥದೂಷಣಮ್" ಮನುಂ ೭-೪೮ |

**ಪೆಷ್ಠ ಪೈಷ್ಠ (ವಿಂ)** ಪಿಷ್ಠಸಂಬಂಧವಾದ, ಹಿಟ್ಟಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪಿಷ್ಠಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) |

**ಪೆಷ್ಠಿ ಪೈಷ್ಠೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಒಂದು ವಿಧ ಮದ್ಯ.

**ಪೊ ಪೋ (ವಿಂ)** 1. ಶುದ್ಧವಾದ. 2. ಶುದ್ಧಮಾಡುವ.

**ಪೊಗಂಡ ಪೋಗಂಡ (ಪುಂ)** 1. ಐದರಿಂದ ಹತ್ತು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನೊಳಗಿನ ಹುಡುಗ. ಪೊ: ಶುದ್ಧೋ ಗಾಂಡೋ ಯಸ್ಯ | "ಪೊಗಂಡ: ಪಂಚಮಾದಬ್ದಾದವಾಕ್ ಚ ದಶಮಾದತ:" ಹಲಾಂ | (ವಿಂ) 2. ಅಂಗಹೀನನಾದವನು, ಯಾವುದಾದರೊಂದು ಅಂಗದಲ್ಲಿ ಕೊರತೆಯುಳ್ಳವನು.

**ಪೊಟ ಪೋಟಿ (ಪುಂ)** 1. ನಿವೇಶನ, ಮನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಜಾಗ, ಗೃಹನಿರ್ಮಾಣದ ಭೂಮಿ. ಪುಟ (ಸಂಕಲೇಷಣ) ಅಧಿಂ "ಏಞ್" (೩-೩-೧೨೧) | 2. ಬೆರಸುವುದು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸುವುದು. ಪುಟ ಭಾವೇ "ಏಞ್" (೩-೩-೧೮) |



**ಪೊಟಗಲ ಪೊಟಗಲ (ಪುಂ)** 1. ಜಂಬುಹುಲ್ಲು, ಕಾಶತ್ಯಣ. 2. ನಾಣಲಗಿಡ, ಲಾಳದ ಗಿಡ. 3. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. ಪುಟೇನ ಸಂಶ್ಲೇಷಣ ಗಲತಿ—ಗಲ (ಅದನೆ) ಗಾಲಯತಿ ವಾ—ಗಲ (ಪ್ರಸವಣ) ಣಿಚ್ “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ಅಥ ಪೊಟಗಲ: ಪುಸಿ ನಲೇ ಚ ಕಾಶಮತ್ಸ್ಯಯೋ:” ಮೇದಿಂ ।

**ಪೊಟಾ ಪೊಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪುರುಷಲಕ್ಷಣವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು, ಗಂಡು ಮೀನುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹೆಂಗಸು. ಪೊಟಯತಿ — ಪುಟ (ಭಾಷಾರ್ಥ) + ಣಿಚ್ “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಪೊಡು ಪೊಡು (ಪುಂ)** ತಲೆಚಿಪ್ಪಿನ ತಳಭಾಗ.

**ಪೊತ ಪೊತ (ಪುಂ)** 1. ಮಗು, ಶಿಶು. 2. ಮರಿ. ಪುನಾತಿ— ಪೂ (ಪವನ) “ತನ್” (೩-೨-೮೬) । “ಇಷ್ಠಾತ್ಮಜ: ಸಪದಿ ಸಾನ್ವಯ ಉ ದೇವ: ಶಾರ್ದೂಲಪೊತಮಿವ ಯಂ ಪರಿಪುಷ್ಯ ನೃಪ:” ಮುಡ್ರಾಂ ೨-೮ । 3. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. 4. ನಿವೇಶನ, ಮನೆ ಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಜಾಗ. 5. ನೌಕೆ, ಚಿಕ್ಕ ಜಹಜು, ಹರಿಗೋಲು. ಪವತೇ ವಾತೇನ । “ಪೊತೋ ದುಸ್ತರವಾರಿರಾಶಿ- ತರಣೆ” ಹಿತೋ ೨-೧೬೫ । “ಪೊತಭೂತಾಸ್ತ್ರಿಕೂಟಸ್ಯ ಪೊತಾ- ನೀತಾನಮನ್ಯತ” ಯಾದಂ ೨೨-೧೯೦ । 6. ಹತ್ತು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನ ಅನೇ. “ಪಂಚವರ್ಷೋ ಗಜೋ ಬಾಲ: ಪೊತಸ್ತು ದಶ- ವರ್ಷಕ:” ವೈಜಂ । 7. ಹುಲಿಯ ಜ್ವರ. “ಉಷ್ಣೇ ಲಸೋ- ಭಿತಾಪೋಷ್ವೇ ವ್ಯಾಧ್ರೇ ಪೊತೋ ಗವೀಶ್ವರ:” ವೈಜಂ । “ಪೊತ: ಶಿಶೋ ವಹಿತ್ರೇ ಚ ಗೃಹಸ್ಥಾನೇ ಚ ವಾಸಸಿ” ಮೇದಿಂ ।

**ಪೊತಕ ಪೊತಕ (ಪುಂ)** 1. “ಪೊತ” ಪದದ ಅರ್ಥ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಕೀ —ಕೀ. 2. ಹೆಣ್ಣುಗುಬ್ಬಿಚ್ಚಿ. “ಕಲವಿಕ್ಷುಸ್ತವಸೀ ಪೊತಮುಂಡ: ಶ್ಯಾಮಾ ತು ಪೊತಕೀ” ವೈಜಂ ।

**ಪೊತನ ಪೊತನ (ವಿಂ)** 1. ಪವಿತ್ರವಾದ. 2. ಪವಿತ್ರ ಗೋಳಿಸುವ.

**ಪೊತರಕ್ಷ ಪೊತರಕ್ಷ (ಪುಂ)** ಹಡಗಿನ ಲಂಗರು. ಪೊತ ರಕ್ಷತಿ — ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) “ಅಣ್” (೩-೨-೧) ।

**ಪೊತವಣಿಕ್ ಪೊತವಣಿಕ್ (ಪುಂ)** 1. ಹಡಗಿನಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿ ಸುವ ವರ್ತಕ, ಹಡಗಿನ ಮೂಲಕ ವಿದೇಶಗಳಿಗೆ ಹೋಗಿ ವ್ಯಾಪಾರ ಮಾಡುವ ವರ್ತಕ. ಪೊತೇನ ವಣಿಕ್ । 2. ಹಡಗಿನ ವರ್ತಕ, ಹಡಗಿನ ವ್ಯಾಪಾರ ಮಾಡುವವನು. ಪೊತಸ್ಯ ವಣಿಕ್ ।

**ಪೊತವಾಹ ಪೊತವಾಹ (ಪುಂ)** ನೌಕೆಯ ಜಾಲಕ, ಹಡಗನ್ನು ನಡೆಸುವವನು. ಪೊತ ವಹತಿ — ವಹ (ಪ್ರಾಪಣ) “ಅಣ್” (೩-೨-೧) ।

**ಪೊತಾಚ್ಛಾದನ ಪೊತಾಚ್ಛಾದನ (ನಂ)** ಪಟ್ಟಗೃಹ, ವಸ್ತ್ರ ಗೃಹ, ಡೇರೆ. ಪೊತವದಾಚ್ಛಾದನಮ್ । “ಪೊತಾಚ್ಛಾದನಮಾಹುಸ್ತು ವರಕಮಥ ವಸ್ತ್ರಕುಡ್ಡಿಮಂ ಕವಯ:” ಹಾರಾಂ ।

**ಪೊತಾಧಾನ ಪೊತಾಧಾನ (ನಂ)** ಸಣ್ಣ ಮೀನುಗಳ ಗುಂಪು, ಮೀನು ಮರಿಗಳ ಸಮೂಹ. ಪೊತಾ ಆಧೀಯಂತೇತ್ರ—ಆ + ಡುಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) ಅಧಿಂ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭) । “ಕ್ಷುಧ್ರಾಣ್ಡಮತ್ಸ್ಯಸಂಧಾತ: ಪೊತಾಧಾನಮಥೋ ಜಞಾ:” ಅಮಂ ।

**ಪೊತ್ರ ಪೊತ್ರ (ನಂ)** 1. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. 2. ವಜ್ರಾಯುಧ. 3. ಹಂದಿಯ ಮೂತಿ. 4. ನೇಗಿಲಿನ ಮುಖಭಾಗದ ತುದಿ. ಪುಯತೇಜೇನ — ಪೂ (ಪವನ) “ಫ್ಠನ್” (೩-೨-೧೮೩) । “ಪೊತ್ರಂ ವಸ್ತ್ರೇ ಮುಖಾಗ್ರೇ ಚ ಸೂಕರಸ್ಯ ಹಲಸ್ಯ ಚ” ವಿಶ್ವಂ । “ಪೊತ್ರಂ ವಜ್ರೇ ಮುಖಾಗ್ರೇ ಚ ಸೂಕರಸ್ಯ ಹಲಸ್ಯ ಚ” ಮೇದಿಂ । 5. ಹಡಗು, ಜಹಜು.

**ಪೊತ್ರಾಯುಧ ಪೊತ್ರಾಯುಧ (ಪುಂ)** ವರಾಹ, ಹಂದಿ.

**ಪೊತ್ರನ್ ಪೊತ್ರನ್ (ಪುಂ)** 1. ವರಾಹ, ಹಂದಿ. ಪೊತ್ರ- ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೫-೨-೧೧೫) । 2. ಮಹಿಷ, ಎಮ್ಮೆ. “ಲುಲಾಯ: ಕಾಸರ: ಶೃಂಗೀ ಹೇರಮ್ಬ: ಕೃಷ್ಣಶೃಂಗಕ: । ಜರಂತ: ಕಲ್ಪು: ಪೊತ್ರೀ” ವೈಜಂ ।

**ಪೊತಕೀ ಪೊತಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಣ್ಣುರಂಜೆಯ ಮೇಲೇಳುವ ಕೆಂಪು ಮೊಡವೆ, ನವೆ ಮತ್ತು ಸೋರುವಿಕೆ ಇವುಗಳೊಡನೆ ಕೂಡಿದ ರಂಜೆಯ ಮೇಲಿನ ಕೆಂಪು ಗುಳ್ಳೆ. “ಕಾಂಡು- ಸ್ತಾವಾನ್ವಿತಾ ಗುರ್ಯೋ ರಕ್ತಸರ್ಪಪಸನ್ನಿಭಾ: । ಪಿಡಕಾಶ್ಚ ರಜಾ- ವತ್ಯ: ಪೊತಕಯ ಇತಿ ಸಂಜ್ಞಿತಾ:” ಸುಶ್ರುತಂ ।

**ಪೊಲಿಕಾ ಪೊಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ರವೆ ಅಥವಾ ಗೋಧಿ ಹಿಟ್ಟಿನ ಪೂರಿ ರೊಟ್ಟಿ ಮೊದಲಾದುವು. “ಕುರ್ಯಾತ್ಸಮಿತಯಾತೀವ ತನ್ವೀ ಪರ್ಪಡಿಕಾ ತತ: । ಸ್ವೇದಯೇತ್ತಪ್ತಕೇ ತಾಂ ತು ಪೊಲಿಕಾಂ ತಾಂ ವಿಧುರ್ಬುಧಾ: । ತಾಂ ಖಾದೇಲ್ಲಪ್ತಿಕಾಯುಕ್ತಾಂ ತಸ್ಯಾಂ ಮಂಡಕ- ವದ್ಗುಣಾ:” ।

**ಪೊಲಿನ್ದ ಪೊಲಿನ್ದ (ಪುಂ)** ಹಡಗಿನ ಒಂದು ಭಾಗ, ಹಡಗಿನ ಪಟಗಳ ಆಶ್ರಯಕ್ಕಾಗಿ (ಹಡಗಿನ) ಅಡಿಯಿಂದ ಹೊರಟಿರುವ ಉದ್ದವಾದ ಕಂಬ. “ಪಾದಾರಕ: ಸ್ಯಾತ್ ಪೊಲಿನ್ದ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಪೊಲೀ ಪೊಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** “ಪೊಲಿಕಾ” ಪದದ ಅರ್ಥ. “ಪೊಲೀ ಪೂಪಾಲೀ ಚರ್ಪಡೀ ಚ ಸಾ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಪೊಷ ಪೊಷ (ಪುಂ)** 1. ಪೋಷಿಸುವುದು, ಸಾಕುವುದು. ಪುಷ (ಪುಷ್ಟಿ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮) । “ಅರ್ಥೇರಾಪಾದಿತೈರ್ಗುರ್ವ್ಯಾ ಹಿಸಯೇತಸ್ತತಶ್ಚ ತಾನ್ । ಪುಷ್ಣಾತಿ ಯೇಷಾಂ ಪೋಷಣ ಶಂಭುಗುಯಾತ್ಯಥ: ಸ್ವಯಮ್” ಭಾಗಂ ೩-೩೦-೧೦ । 2. ಬೆಳವಣಿಗೆ, ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುವಿಕೆ.

**ಪೊಷಕ ಪೊಷಕ (ವಿಂ)** 1. ಸಲಹುವವನು, ಪೋಷಿಸುವವನು, ಸಾಕುವವನು. ಪುಷ (ಪುಷ್ಟಿ) “ಘ್” (೩-೧-೧೩೩) । 2. ಬೆಳೆಸುವವನು, ಹೆಚ್ಚಿಸುವವನು, ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವವನು.



ಪೊಷಣ ಪೋಷಣ (ನಂ) 1. ಸಾಕುವುದು, ಸಲಹುವುದು.

ಪುಷ (ಪುಷ್ಠಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) 2. ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವುದು, ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು. "ತದ್ವದ್ವಿಜಾತಿಗುಶ್ರುಷಾ ಪೊಷಣಂ ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಿ" 3. ಪ್ರದರ್ಶಿಸುವುದು, ತೋರಿಸುವುದು.

ಪೊಷಣೀಯ ಪೋಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸಾಕಲ್ಪಡುವ, ಸಲಹಲ್ಪಡುವ. 2. ಸಾಕಬೇಕಾದ, ಸಲಹಬೇಕಾದ. 3. ಸಾಕಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಪುಷ (ಪುಷ್ಠಿ) ಕರ್ಮದಿ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) 4. ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 6. ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 7. ಪ್ರದರ್ಶಿಸಲ್ಪಡುವ, ತೋರಿಸಲ್ಪಡುವ. 8. ಪ್ರದರ್ಶಿಸಬೇಕಾದ, ತೋರಿಸಬೇಕಾದ. 9. ಪ್ರದರ್ಶಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ.

ಪೊಷತ್ ಪೋಷತ್ (ವಿಂ) ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತಿರುವ.

ಪೊಷಯಿನ್ ಪೋಷಯಿನ್ (ಫಂ) 1. ಕೋಗಿಲೆ. ಪುಷ (ಪುಷ್ಠಿ) + ಣಿನ್ "ಛನ್" (೩-೩-೨) 2. ಪೋಷಕ, ಕಾಪಾಡುವವನು, ಸಾಕುವವನು.

ಪೊಷಿತ ಪೋಷಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಲಹಲ್ಪಟ್ಟ. ಪುಷ (ಪುಷ್ಠಿ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) 2. ಬೆಳಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪೊಷಿತು ಪೋಷಿತು (ವಿಂ) 1. ಸಾಕುವವನು, ಸಲಹುವವನು. ಪುಷ (ಪುಷ್ಠಿ) "ತು" (೩-೧-೧೩೩) 2. ಬೆಳಸುವವನು.

ಪೊಷಿನ್ ಪೋಷಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಸಾಕುವವನು, ಸಲಹುವವನು. ಪುಷ (ಪುಷ್ಠಿ) "ಣಿನ್" (೩-೧-೧೩೪) 2. ಬೆಳಸುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಛಿನ್" (೪-೧-೫) 1. -ಣಿ -ಣೀ.

ಪೊಷ್ ಪೋಷ್ (ವಿಂ) ಸಾಕುವವನು, ಸಲಹುವವನು. ಪುಷ (ಪುಷ್ಠಿ) ದಿವಾಂ "ತು" (೩-೧-೧೩೩) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಛಿನ್" (೪-೧-೫) 1. -ಛಿ -ಛೀ.

ಪೊಷ್ಯ ಪೋಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕಾಪಾಡಲ್ಪಡುವ, ಸಲಹಲ್ಪಡುವ. ಪುಷ (ಪುಷ್ಠಿ) "ಯ್" (೩-೧-೧೨೪) 2. ಕಾಪಾಡಬೇಕಾದ, ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಸಲಹಬೇಕಾದ. 3. ಸಾಕಲು ಅರ್ಹನಾದ, ಸಲಹಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ.

ಪೊಷ್ಯಪುತ್ರ ಪೋಷ್ಯಪುತ್ರ (ಫಂ) ಸಲಹಿದ ಮೂತ್ರದಿಂದ ಪುತ್ರನಾಗುವವನು. ಪುಷ್ಯ: ಪುತ್ರ: 1. ಇವನು ದತ್ತಪುತ್ರ, ಪುತ್ರಸಂತಾನವಿಲ್ಲದವನು ತನ್ನ ಮಂತ್ರಾಭಿವೃದ್ಧಿಗಾಗಿಯೂ ಮತ್ತು ಉತ್ತರಕ್ರಿಯಾದಿಗಳಿಗಾಗಿಯೂ ಯೋಗ್ಯನಾದವನನ್ನು ಸ್ವೀಕಾರಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು. "ಅಪುತ್ರೇಣ ಸುತ: ಕಾರ್ಯೋ

ಯಾದಕ್ ತಾದಕ್ ಪ್ರಯತ್ನತ: 1. ಪಿಣ್ಡೋದಕಕ್ರಿಯಾಹೇತೋನಿ-ಸಂಕೀರ್ತನಾಯ ಚ" 1.

ಪೊಷ್ಯವರ್ಗ ಪೋಷ್ಯವರ್ಗ (ಫಂ) ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ರಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ ಬಂಧುಜನರು. ಪೊಷ್ಯಾಣಾಂ ಪಾಲನೀಯಾಣಾಂ ವರ್ಗ: 1. ತಾಯಿ, ತಂದೆ, ಗುರು, ಪತ್ನಿ, ಆಶ್ರಯ ಪಡೆದ ಬಂಧು ಸೇರಿದವನು, ಮಕ್ಕಳು, ಅಭ್ಯಾಗತ (ಆಹ್ವಾನವನ್ನು ಪಡೆದ ಭೋಜನಕ್ಕೆ ಬಂದವನು), ಅತಿಥಿ (ಆಹ್ವಾನವಿಲ್ಲದೆ ತಾನಾಗಿ ಭೋಜನಕ್ಕೆ ಬಂದವನು) ಮತ್ತು ಅಗ್ನಿ ಈ ಒಂಬತ್ತು ಮಂದಿ ಪೋಷ್ಯವರ್ಗಕ್ಕೆ ಸೇರಿದವರು. "ಮಾತಾ ಪಿತಾ ಗುರು: ಪತ್ನೀ ತ್ವಪತ್ಯಾಃ ಸಮಾಶ್ರಿತಾ: 1. ಅಭ್ಯಾಗತೋಽತಿಥಿಶ್ಚಾಘ್ನಿ: ಪೊಷ್ಯವರ್ಗಾ ಅಮೀ ನವ" ಕಾಶೀಖಂ 1. ಇವರನ್ನು ಸಲಹದಿದ್ದರೆ ಮಹಾಪ್ರತ್ಯವಾಯು.

ಪೊಷ್ಯಲೇಯ ಪೊಷ್ಯಲೇಯ (ಫಂ) ಪುಂಶ್ಚಲಿಯ ಮಗ, ಸ್ವೇರೀಯ ಮಗ, ವ್ಯಭಿಚಾರೀಯ ಮಗ. ಪುಂಶ್ಚಲ್ಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಛಕ್" (೪-೧-೧೨೦) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಛಿನ್" (೪-೧-೧೫) 1. -ಲೇಯಿ -ಲೇಯಿ.

ಪೊಷ್ಯಲೇಯ ಪೊಷ್ಯಲೇಯ (ನಂ) ವ್ಯಭಿಚಾರ, ಹಾದರಗಿತ್ತಿಡನೆ. ಪುಂಶಿ ಭತು: ಸಕಾಶಾತ್ ಚಲತಿ ಪುಂಶಾಂತರಂ ಗಚ್ಛತಿ ಇತಿ ಪುಂಶ್ಚಲೀ - ತಸ್ಯಾ: ಭಾವ: "ಛ್ಯಜ್" (೫-೧-೧೨೪) 1. "ಪೊಷ್ಯಲ್ಯಾಂಚಲಚಿತ್ತಾಂಚ ನೇಸ್ತೇಹ್ಯಾಂಚ ಸ್ವಭಾವತ: 1. ರಕ್ಷಿತಾ ಯತನೋಽಪಿಹ ಭರ್ತೃವೇತಾ ವಿಕೃಂವಂತಿ" ಮನುಂ ೯-೧೫ 1.

ಪೊಷ್ಯವನ ಪೊಷ್ಯವನ (ನಂ) ಪುಂಸವನವೆಂಬ ಬಂಧು ಸಂಸ್ಕಾರ. ಪುಂಸವನ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" 1.

ಪೊಷ್ಯ ಪೊಷ್ಯ (ಫಂ) 1. ಪುರುಷನ ಮಗ. ಪುಂಸೋಪತ್ಯಮ್ - ಪುಂ "ಸನ್" (೪-೧-೮೭) 1. 2. ಪುರುಷರ ಸಮೂಹ. ಪುಂಸಾ ಸಮೂಹ: 1. 3. ಪುರುಷನಲ್ಲಿ ಇರುವ, ಪುಂಸಿ ಭವ: 1. 4. ಪುರುಷನಿಂದ ಬಂದ. ಪುಂಸ ಆಗತ: 1. 5. ಪುರುಷನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಪುರುಷನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಪುಂಸಿ ಜಾತ: 1. (ನಂ) 6. ಪುಂಶ್ಚ. ಪುಂಸಿ ಭಾವ: 1. 7. ಧೈರ್ಯ. (ವಿಂ) 8. ಪುರುಷನನ್ನು ಹೊಂದಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಪುಂಸಾಸಮಹಂತಿ 1. ಇತ್ಯಾದಿ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಛಿನ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೫) 1. ಪೊಷ್ಯನಿ ಪೊಷ್ಯನಿ. "ಸಂಗಚ್ಛ ಪೊಷ್ಯ ಸ್ತ್ರೀಂ ಮಾ ಯುವಾನ್ ತರುಣಿ ಶುಭೇ 1. ರಾಘವ: ಪ್ರೋಷ್ಯ ಪಾಪಿಯಾನ್ ಜಹೀಹಿ ತಮಕಿಚನಮ್" ಭಟಿಂ ೫-೧೧ 1.

ಪೊಷ್ಯ ಪೊಷ್ಯ (ನಂ) 1. ಐದರಿಂದ ಹತ್ತು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನೊಳಗಿನ ಅವಸ್ಥೆ, ಬಾಲ್ಯ, ಶೈಶವ. ಪೊಷ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ಅನ್" (೫-೧-೧೩೦) 1. "ಕೌಮಾರಂ ಪಂಚಮಾ-ಬ್ದಾಂತಂ ಪೊಷ್ಯಂ ದಶಮಾವಧಿ 1. ಕೇಶೋರಮಾಪ್ತದಶಾತ್ ಯೌವನಂ



ಪೊರಂದರ ಪೊರಂದರ (ನಂ) 1. ಇಂದ್ರದೇವತಾಕವಾದ  
 ಜ್ಯೋಷ್ಠಾ ನಕ್ಷತ್ರ. ಪುರಂದರೋ ದೇವತಾಸ್ಯ "ಅಞ್" (೪-೨-೨೪)।  
 "ಪೊರಂದರೇತಿಶ್ವರಾಃ ಕುಲಾವತ್ತಯಶೋಽನ್ವಿತಾಃ ಪರಸ್ವಹತಃ"  
 ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೪-೧೬। (ವಿಂ) 2. ಇಂದ್ರನ ಸಂಖ್ಯಾಂಧಕಾರದ  
 ಪುರಂದರಸ್ಥಾಯಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಛಿಪ್"  
 (೪-೧-೧೪)। -೨-೦೬. "ಪೊರಂದರೀ ದಿಶಮನೂನಿಬದ್ಧ-  
 ರಾಗಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೯-೭೨।



ಪೌರ್ಣಮಾಸಿ ಹೃಣ್ಮಾಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುರ್ಣಮೇ,  
 ಹೃಣ್ಮೇ. ಪೂರ್ಣಿ ಮಾಸೋಽಸ್ಯಾಮ್, ತತಃ "ಅಙ್" (ವಾಂ



೭-೩-೨೩) । ಪೂರ್ಣಿ ಮಾಸವಂದ್ರಮಾ: ತಸ್ಯೇಯಮಿತಿ ವಾ । “ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೫) ।

ಪೊಣ್ಣೆಮಿ ಪೂರ್ಣಿಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂರ್ಣಿಮೆ, ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ಪೂರ್ಣವಂದ್ರೋ ಮೀಯತೇಷ್ವ — ಮಾಙ್ (ಮಾನೆ) “ಕ:” (ವಾಂ ೩-೩-೫೮) ।

ಪೌರ್ವ ಪೂರ್ವ (ವಿಂ) 1. ಪೂರ್ವಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. 2. ಹಿಂದಿನದಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಪೂರ್ವಸ್ಯೇದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) ।

ಪೌರ್ವಪರ್ಯ ಪೂರ್ವಪರ್ಯ (ನಂ) ಹಿಂದೆ ಮುಂದಿನ ಸಂಬಂಧ. ಪೂರ್ವಪರ್ಯೋರ್ಭಾವ: “ಏನ್” (೪-೧-೧೨೪) ।

ಪೌರ್ವಾಹ್ನಿಕ ಪೂರ್ವಾಹ್ನಿಕ (ವಿಂ) ಪೂರ್ವಾಹ್ನಿಕಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಪೂರ್ವಾಹ್ನಿಕದಲ್ಲಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ. ಪೂರ್ವಾಹ್ನಿಕ “ಠನ್” (೪-೩-೧೧) । “ಪರಾಶರಂ ಮನಿವರಂ ಕೃತಪೌರ್ವಾಹ್ನಿಕ-ಕ್ರಿಯಮ್ । ಮೇವೈಯ: ಪರಿಪ್ರಚ್ಛ ಪ್ರಣಿಪತ್ಯಾಭಿವಾಚ್ಯ ಚ” ವಿಂ ಪುಂ ೧ ।

ಪೌರ್ವಿಕ ಪೌರ್ವಿಕ (ವಿಂ) ಹಿಂದಿನ, ಪೂರ್ವಕಾಲದ. ಪೂರ್ವಸ್ಮಿನ್ ಕಾಲೇ ಭವ: “ಠನ್” (೪-೩-೧೧) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೫) । ಪೌರ್ವಿಕೋ ಪೌರ್ವಿಕೇ. “ಪೌರ್ವಿಕೀಂ ಸಂಸ್ಮರನ್ ಜಾತಿಂ ಬ್ರಹ್ಮವಾಮ್ಯಸ್ಯತೇ ಪುನ:” ಮನುಂ ೪-೧೪೯ ।

ಪೌಲಸ್ತ್ಯ ಪೌಲಸ್ತ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಕುಬೇರ. 2. ರಾವಣ. 3. ವಿಭೀಷಣ. ಪುಲಸ್ತೇಗೌತ್ರಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ “ಯನ್” (೪-೧-೧೦೫) । “ಪೌಲಸ್ತ್ಯ: ಕಥಮನ್ಯದಾರಹರಣೇ ದೋಷಂ ನ ವಿಜ್ಞಾತವಾನ್” ಪಶ್ಚತಂ ೨-೪ । 4. ಕುಂಭಕರ್ಣ. “ನಿರಯಾವಥ ಪೌಲಸ್ತ್ಯ: ಪುನರ್ಯುಧಾಯ ಮಂದಿರಾತ್” ರಘುಂ ೧೨-೮೩ । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೫) । ಪೌಲಸ್ತೀ ಪೌಲಸ್ತೀ. ತೂರ್ಪಣಾಪಿ. “ಪೌಲಸ್ತೀಯಾ ರಾವಣಶ್ರೀದೌ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಪೌಲಿ ಪೌಲಿ (ಪುಂ) ಅರ್ಧ ಬೆಂದ ಕಾಳು. (ಸ್ವಲ್ಪ ಪಕ್ವವಾದ) ಉಪಲಿ, ಗುಗ್ಗರಿ. ಪುಲ (ಮಹತ್ವೇ) ಭಾವೇ “ಏನ್” (೩-೩-೧೮) । “ಅಪಕವಂ ಪೌಲಿರಮ್ಯುಷ:” ಅಮಂ ।

ಪೌಲೋಮಿ ಪೌಲೋಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಲೋಮನ ಮಗಳು, ತಲೇದೇವಿ. ಪುಲೋಮನೋಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ “ಅನ್” (೪-೧-೧೨) । “ಆಶೀರತ್ಯಾ ನ ತೇ ಯುಕ್ತಾ ಪೌಲೋಮಿಸದೃಶೀ ಭವ” ಶಾಕುಂ ೭-೨೮ ।

ಪೌಷ ಪೌಷ (ಪುಂ) 1. ಪುಷ್ಯಮಾಸ, ಪುಷ್ಯನಕ್ಷತ್ರದೊಡನೆ ಸೇರಿದ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯುಳ್ಳ ಮಾಸ. ಪುಷ್ಯೇಣ ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ ಪೌಷಿ — ಸಾಸ್ಮಿನ್ವಸ್ತಿ “ಅನ್” (೪-೨-೨೧) । 2. ಈ ನಕ್ಷತ್ರದೊಡನೆ ಸೇರಿದ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯುಳ್ಳ ಪಕ್ಷ, ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷ. (ನಂ) 3. ಈ ನಕ್ಷತ್ರದೊಡನೆ ಸೇರಿದ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯು

ದಿನ. ಪುಷ್ಯೇಣ ಪುಷ್ಯನಕ್ಷತ್ರಯುಕ್ತಚಂದ್ರಮಸಾ ಯುಕ್ತಮಹ: “ಅನ್” (೪-೨-೨೧) । 4. ಉತ್ಸವ, ಹಬ್ಬ. 5. ಯುದ್ಧ. “ಪೌಷಿ ಮಾಸಪ್ರಭೇದೇ ಸ್ಯಾತ್ ಪೌಷಂ ತು ಮಹಯುದ್ಧಯೋ:” ಹೇಮಂ । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೫) । ಪೌಷಿ ಪೌಷೀ. 6. ಪುಷ್ಯ ನಕ್ಷತ್ರದೊಡನೆ ಸೇರಿದ ಚಂದ್ರನುಳ್ಳ ರಾತ್ರಿ. ಪುಷ್ಯೇಣ ಪುಷ್ಯನಕ್ಷತ್ರಯುಕ್ತಚಂದ್ರಮಸಾ ಯುಕ್ತಾ ರಾತ್ರಿ: । 7. ಪುಷ್ಯನಕ್ಷತ್ರದೊಡನೆ ಸೇರಿದ ಚಂದ್ರನುಳ್ಳ ಪೂರ್ಣಿಮೆ. “ತಸ್ಯ ಪ್ರಭಾನಿರ್ಜಿತಪುಷ್ಪರಾಗಂ ಪೌಷ್ಯಾಂ ತಿಥೌ ಪುಷ್ಯಮಸೂತ ಪತ್ನೀ” ರಘುಂ ೧೮-೩೨ ।

ಪೌಷ್ಕರ ಪೌಷ್ಕರ (ನಂ) 1. ಪುಷ್ಕರ ಮೂಲ, ತಾವರೆಯ ಗೆಡ್ಡೆ. ಪುಷ್ಕರಮಿವ ಮೂಲಮಸ್ಯ । 2. ತಾವರೆ ಹೂಗಳ ರಾಶಿ, ಕಮಲಗಳ ಸಮೂಹ. ಪುಷ್ಕರಾಣಾಂ ಸಮೂಹ: “ಅನ್” (೪-೨-೩೭) । (ವಿಂ) 3. ಕಮಲಸಂಬಂಧವಾದ, ತಾವರೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಪುಷ್ಕರಸ್ಯೇದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) ।

ಪೌಷ್ಕರಿಣಿ ಪೌಷ್ಕರಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಮಲಗಳ ಸಮೂಹದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಸರೋವರ, ಕಮಲಗಳಿಂದ ತುಂಬಿದ ಕೊಳ. ಪುಷ್ಕರಾಣಾಂ ಸಮೂಹ: ಪೌಷ್ಕರಮ್, ತದಸ್ಯಾಮಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೫-೨-೧೩೫) । “ಡೀಪ್” (೪-೧-೫) ।

ಪೌಷ್ಕಲ್ಯ ಪೌಷ್ಕಲ್ಯ (ನಂ) ಪೂರ್ಣವಾಗಿರುವಿಕೆ, ತುಂಬಿರುವಿಕೆ, ಹೇರಳವಾಗಿರುವಿಕೆ.

ಪೌಷ್ಠಿಕ ಪೌಷ್ಠಿಕ (ನಂ) 1. ನೀರಿನ ಧಾರೆಯೆರೆದು ಮಾಡುವ ದಾನ. “ಅತೀಯಂ ಸಾತ್ವಿಕಂ ದಾನಮುದಪೂರ್ವಂ ತು ಪೌಷ್ಠಿಕಮ್” ವೇಜಂ । 2. ಧನವೃದ್ಧಿ ಮತ್ತು ಜನರ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಕರ್ಮ. ಪುಷ್ಟಿಂ ಹಿತಮ್ “ಠಕ್” (೫-೧-೫) । “ಪುಷ್ಟಿಂನಜನಾದಿನಾಂ ವೃದ್ಧಿರೀತಿಯಭಿಧೀಯತೇ । ತದ್ವೇತುಭೂತಂ ಯತ್ ಕರ್ಮ ಪೌಷ್ಠಿಕಂ ತದಿಹೋಚ್ಯತೇ” । (ವಿಂ) 3. ಪುಷ್ಟಿಗೆ ಸಾಧನವಾದ, ಬೆಳವಣಿಗೆಗೆ ಹಿತವಾದ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ. “ಸತಾಂ ವೃತ್ತಮಭಿಷ್ಠಾಯ ನಿಹೀನಾ ಉದ್ವಿಧಿರ್ಭವ: । ಮನ್ತ್ರವರ್ಜಂ ನ ದುಷ್ಯಂತಿ ಕುರ್ವಾಣಾ: ಪೌಷ್ಠಿಕಾ: ಕ್ರಿಯಾ:” ಭಾಂ ಸಾಂತಿಂ ೩೦೨-೨೯ ।

ಪೌಷ್ಣ ಪೌಷ್ಣ (ನಂ) 1. ರೇವತೀ ನಕ್ಷತ್ರ. ಪೌಷಾ ದೇವತಾಸ್ಯ “ಅನ್” (೪-೨-೨೪) । “ರೇವತೀ ಪೌಷ್ಣ ಇತ್ಯಾಹುರನ್ತಯ: ಪೌಷಾ ತಥೇವ ಚ” ಮುಹೂಂ ದೀಂ । 2. ಪೂಷದೇವತಾಕವಾದ ಹವಿಸ್ಸು.

ಪೌಷ್ಪ ಪೌಷ್ಪ (ವಿಂ) 1. ಪುಷ್ಪಸಂಬಂಧವಾದ. ಪುಷ್ಪಸ್ಯೇದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) । 2. ಪುಷ್ಪದಿಂದ ಉಂಟಾದ, ಪುಷ್ಪದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಮದ್ಯ ಮುಂತಾದುದು). ಪುಷ್ಪೇಣ ನಿವೃತ್ತಮ್ ಪುಷ್ಪಸಮ್ಬಂಧಿ ವಾ । 3. ಪುಷ್ಪರೂಪ



ವಾದ. "ಅಮೇದಿ ತತ್ತಾದಗನಜ್ಜಮಾರ್ಗಣೆಯದಸ್ಯ ಪೌಷ್ಕರಪಿ  
ಧೇಯಕವುಕಮ್" ನೆಂ ೧-೪೬.

ಪೌಷಕ ಪೌಷ್ಕ (ನಂ) ಕುಸುಮಾಂಜನ, ಒಂದು ವಿಧ  
ಕಣ್ಣು ಕಪ್ಪು. ಪುಷ್ಪಸ್ಯ ಪ್ರತಿಕ್ರತಿ: "ಕನ್" (೪-೩-೯೭).  
ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮).

ಪ್ತಾ ಪ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜಟಿ, ತಪ್ಪುಗಳ ಕೇಶಪಾತ.  
2. ರಾಕ್ಷಸಿ. 3. ಪತನ. 4. ಅದೃಷ್ಟಹೀನನಾದ ಹೆಂಗಸು.  
"ಪ್ತಾ ಜಟಾಂ ಚ ರಾಕ್ಷಸಾಂ ಪತನೇ ದುರ್ಭಗಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಹೇಮಂ.

ಪ್ಯಾಡ್ ಪ್ಯಾಡ್ (ಅವ್ಯಂ) ಸಂಬೋಧನೆ. "ಸ್ಯು: ಪ್ಯಾಡ್ ಪಾಡ್ಜ್  
ಹೇ ಹೇ ಭೋ:" ಅಮಂ.

ಪ್ರ ಪ್ರು (ಅವ್ಯಂ) ಇದು ನಾಮ ಮತ್ತು ವಿಶೇಷಣ ಪದಗಳ  
ಮತ್ತು ಕ್ರಿಯಾಪದಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ನಿಪಾತಸಂಜ್ಞೆ,  
ಉಪಸರ್ಗಸಂಜ್ಞೆ ಮತ್ತು ಗತಿಸಂಜ್ಞೆಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿ ಈ  
ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ ದ್ಯೋತಕವಾಗುವುದು. (೧-೪-೬೦).

ಇದು 20 ಉಪಸರ್ಗಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯದು. 1. ಗತಿ,  
ಗಮನ. "ಅಥ ಜಾತವದನಯಬತ್ಸಲೇ ಪ್ರಸ್ರಿತಾ: ಸುಮನಸ:  
ಪ್ರತಸ್ಥಿರೇ" ಯಾದಂ ೧೭-೧೩೦. 2. ಆರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ.  
"ಅಥಾಪಿ ಗಜ್ಜಾಸಲಿಲಪ್ರವಾಹೇ ಪ್ರಕ್ರಾಂತಪಾತಾಮಿವ ಸಾಂಪ್ರದೇ"  
ಯಾದಂ ೨೩-೧೫. 3. ಉತ್ಕರ್ಷ, ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ. "ಯದಾ ಪ್ರಕೃಷ್ಠಾ  
ಮನ್ಯೇತ ಸರ್ವಾಸ್ತು ಪ್ರಕೃತೀಭಿಷಮ್" 4. ಅತಿಶಯ, ಹೆಚ್ಚಿಗೆ.  
"ಪ್ರಚ್ಛಾಯಸುಲಭನಿವಾ ದಿವಸಾ: ಪರಿಣಾಮರಮಣೀಯಾ:" ಶಾಕುಂ  
೧-೩. 5. ಪ್ರಾರಂಭ. 6. ಉತ್ಕೃಷ್ಟ. "ಕರ್ಮ ಯಜ:  
ಫಲಂ ಸ್ವರ್ಗ: ತಾಸಾಂ ತ್ವಂ ಪ್ರಭವೋ ಗಿರಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೨-೧೨.  
7. ಸ್ಪಷ್ಟತೆ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿರುವಿಕೆ. "ಅದೃಷ್ಟಾಣೂರಮುಖೇ-  
ಷ್ವಲಕ್ಷಿತಂ ಪ್ರದರ್ಶಯನ್ ಶ್ರುತಪತೇ: ಪರಾಕ್ರಮಮ್" ಯಾದಂ ೧೪-೧೧.  
8. ಶಕ್ತಿ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. 9. ಪ್ರಕಾಶ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕಾಣಿಸಿ  
ಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಪ್ರಭವತಿ ಹಿಮವತೋ ಗಜ್ಜಾ" ತತ್ರ ಪ್ರಕಾಶತೇ  
ಇತ್ಯರ್ಥ: 10. ಸ್ಪಷ್ಟತೆ, ನಿರ್ಮಲವಾಗಿರುವಿಕೆ.

ಪ್ರಕಟ ಪ್ರಕಟ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ, ವ್ಯಕ್ತ  
ವಾದ. ಪ್ರ + ಕಟ (ಗತೌ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪).  
"ಪ್ರಕಟಚ್ಛನ್ನಕೌಟಿಲ್ಯಾ: ಪಾಷಂಡಮಿವ ಹೈತುಕಾ:" ಯಾದಂ  
೧೬-೭೯. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ.  
ಕಣ್ಣಿಗೆ ತೋರುವಂತೆ, ಪ್ರಕಾಶವಾಗಿ, ಎಲ್ಲರಿಗೂ ತಿಳಿಯು  
ವಂತೆ. "ಪ್ರಕಟಂ ಮೃದು ನಾಮ ಜಲಪತ: ಪಠ್ಯಂ ಸೂಚಯತೋಷ್ಯಮಂತರಾ"  
ಮಾಘಂ ೧೬-೧೯.

ಪ್ರಕಟನ ಪ್ರಕಟನ (ನಂ) ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವಿಕೆ, ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸು  
ವಿಕೆ, ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ ತೋರಿಸುವಿಕೆ. ಪ್ರ + ಕಟ (ಗತೌ)  
"ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫).

ಪ್ರಕಟಯತ್ ಪ್ರಕಟಯತ್ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ.  
ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ ತೋರಿಸುತ್ತಿರುವ.

ಪ್ರಕಟಿತ ಪ್ರಕಟಿತ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ  
ವಾಗಿ ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಕಟ  
(ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).

ಪ್ರಕಟೀಕೃತ ಪ್ರಕಟೀಕೃತ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಸಿದ್ಧ  
ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪ್ರಕಟಂ ಪ್ರಕಟಂ ಕೃತಮ್ — ಪ್ರಕಟ + ಟ್ ಕೃತ್  
(ಕರಣಂ) + ಚಿವ: "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). "ಅಪ್ರಕಟೀ-  
ಕೃತಶಕ್ತಿ: ಶಕ್ತೋಽಪಿ ಜನಸ್ತಿರಸ್ತ್ರಿಕಾಂ ಲಭತೇ" ಪञ्ಚತಂ  
೧-೩೨. "ಪ್ರಕಟೀಕೃತಾ ಜಗತಿ ಯೇನ ಸ್ವಲ್ಪ ಸ್ಫುಟಮಿದ್ರತಾಽಽ  
ಮಯಿ ಗೋಚರಮಿದಾ" ಮಾಘಂ ೯-೮೦.

ಪ್ರಕಟೀಭೂತ ಪ್ರಕಟೀಭೂತ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಗೊಂಡಿರುವ,  
ಪ್ರಸಿದ್ಧಪಟ್ಟಿರುವ, ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿರುವ. ಅಪ್ರಕಟಂ ಪ್ರಕಟಂ  
ಭೂತಮ್ — ಪ್ರಕಟ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨).

ಪ್ರಕಟನ ಪ್ರಕಟನ (ನಂ) 1. ಪ್ರಸಿದ್ಧಗೊಳಿಸುವುದು,  
ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸುವುದು. 2. ಸಾರಿ ಹೇಳುವುದು, ಶ್ರುತ  
ಪಡಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ಕಟ (ವಾಕ್ಯಪ್ರಬಂಧಂ) "ಲ್ಯುಡ್"  
(೩-೩-೧೧೫).

ಪ್ರಕಮ್ಪ ಪ್ರಕಂಪ (ಪುಂ) ನಡುಕ, ಕಂಪನ, ಚೆನ್ನಾಗಿ  
ಅರಿವುದು. ಪ್ರ + ಕಪಿ (ಚಲನೆ) "ಚಕ್" (೩-೩-೧೮).  
"ಸಶಿರ:ಪ್ರಕಮ್ಪಮಪರಾ ರಿಪುಂ ಮಧೋರನುದೀರ್ಘವರ್ಣನಿಭೃತಾಂ ಮಾಹ್ನ-  
ಯತ್" ಮಾಘಂ ೧೩-೪೨.

ಪ್ರಕಮ್ಪನ ಪ್ರಕಂಪನ (ಪುಂ) 1. ಬಿರುಗಾಳಿ, ಮೇಗವಾದ  
ಗಾಳಿ. ಪ್ರಕಮ್ಪಯತಿ — ಪ್ರ + ಕಪಿ (ಚಲನೆ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯು:"  
(೩-೧-೧೩೪). "ಪ್ರಿಯೇಣ ತಸ್ಯಾನಪರಾಧಬಾಧಿತಾ: ಪ್ರಕಮ್ಪನೇ-  
ನಾನುಚಕಮ್ಪಿರೇ ಸುರಾ:" ಮಾಘಂ ೧-೬೧. (ನಂ) 2. ನಡುಗು  
ವುದು, ಅಲುಗಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ಕಪಿ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್"  
(೩-೩-೧೧೫). (ವಿಂ) 3. ನಡುಗಿಸುವ, ಭಯಗೊಳಿ  
ಸುವ. "ಆದ್ಯಕೋಲತುಲಿತಾಂ ಪ್ರಕಮ್ಪನೇ: ಕಮ್ಪಿತಾಂ ಮುಹುರನೀ-  
ದಗಾತ್ಮನಿ" ಮಾಘಂ ೧೪-೪೩.

ಪ್ರಕಮ್ಪಯತ್ ಪ್ರಕಂಪಯತ್ (ವಿಂ) ನಡುಗಿಸುತ್ತಿರುವ.  
ಪ್ರ + ಕಪಿ (ಚಲನೆ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪).  
"ಅಸಂಭವನ್ಮೂಢರಾಜಕುಕ್ಷಿಪು ಪ್ರಕಮ್ಪಯನ್ ಗಾಮವತಸ್ತರೇ ದಿಶ:"  
ಕಿರಾಂ ೧೪-೨೯.

ಪ್ರಕಮ್ಪಿತ ಪ್ರಕಂಪಿತ (ವಿಂ) 1. ನಡುಗಿದ, ಅಲುಗಾಡಿದ.  
ಪ್ರ + ಕಪಿ (ಚಲನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨).  
"ಸ್ಮರೇಽಧೀಕೃತ್ಯ ಧಿಯಾ ಭಯಾನ್ವಯಾ ಸ ಪಾಡಲಾಯಾ: ಸ್ತಬಕಂ"



ಪ್ರಕಾಶನ: "ನಿಷಂ ೧-೨೫. 2. ನಡುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಅಲ್ಲ  
ಗಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರ + ಕಪಿ (ಚಲನೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:"  
(೩-೨-೧೦೨). "ಕೋಲಮುಕುಟಮಗಿರಿಸಿ ಶನೇಶನೇ: ಪ್ರಕಾಶನ-  
ಜಗತ್ಪ್ರಸಾರ:" ಮಾಧಂ ೧೫-೩.

ಪ್ರಕಾಶನ ಪ್ರಕಾಶನ (ವಿಂ) ನಡುಗುವ, ಕಂಪಿಸುವ,  
ಅಲ್ಲಗಾಡುವ. ಪ್ರ + ಕಪಿ (ಚಲನೆ) "ಣಿಚಿ:"  
(೩-೧-೧೩೪).

ಪ್ರಕರ ಪ್ರಕರ (ಪುಂ) 1. ಸಮೂಹ, ರಾಶಿ. ಪ್ರ + ಕ್ಕ  
(ವಿಶ್ಲೇಷಣೆ) ಭಾವ "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭). "ಯಸ್ಯ ಚಾರುನ-  
ಶುಕ್ತಯ: ಸ್ಫುರಂತೀತಿಕಪ್ರಕರಗಮಂತಾ ದಧು:" ಮಾಧಂ ೧೪-೭೩.  
(ನಂ) 2. ಅಗುರು ಚಂದನ. (ವಿಂ) 3. ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟ  
ಹೂವು ಮೊದಲಾದವು. ಪ್ರ + ಕ್ಕ ಕರ್ಮಂ "ಅಪ್".  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕರಿ -ಕರಿ. ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಧಾನ ಕಾರ್ಯ  
ಸಿದ್ಧಿಗಾಗಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸುವ ಐದು ಅರ್ಥಪ್ರಕೃತಿಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು. "ದೀಪಂ ಬಿಂದು: ಪತಾಕಾ ಚ ಪ್ರಕರೀ ಕಾರ್ಯಮೇವ ಚ |  
ಅರ್ಥಪ್ರಕೃತಯ: ಪಂಚ ಜಾತಾ ಯಜ್ಞಾ ಯಾವಿಧಿ" ಸಾಂ ೬೦  
೬-೬೪. ಪ್ರಧಾನ ಕಥಾವಸ್ತುವಿನ ಮಧ್ಯೆ ಬರುವ ಅಲ್ಪ  
ವಾದ ಪ್ರಾಸಂಗಿಕ ಕಥೆಯು ಪ್ರಕರೀಯವೆನಿಸುವುದು. ಇದು  
ಪ್ರಧಾನಕಥೆಗೆ ಉಪಕಾರಕವಾದುದರಿಂದ ಅದರ ಅಂಗ  
ಭೂತವಾಗಿದ್ದು ಅನುಪಂಗಿಕವಾಗಿ ಸ್ವಪ್ರಯೋಜನವನ್ನು  
ಪಡೆಯುವುದರಿಂದ ಪ್ರಾಸಂಗಿಕವಾಗುವುದು. "ಪ್ರಾಸಂಗಿಕಂ  
ಪರಾಂಶಸ್ಯ ಸ್ವಾರ್ಥೋ ಯಸ್ಯ ಪ್ರಸಂಗತ:" ದಶರೂಂ ೧-೧೩.

ಪ್ರಕರಣ ಪ್ರಕರಣ (ನಂ) 1. ಪ್ರಬಂಧ, ವಿಷಯ. ಪ್ರಕೃತೀ-  
ಸ್ಮಿನ್ - ಪ್ರ + ಕ್ಕ ಕೃ (ಕರಣ) ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೭). "ಏತಪ್ರಕರಣಂ ರಾಜನಾಧಿಕೃತಯ ಯುಧಿಷ್ಠಿರಾ  
ಪತಿವ್ರತಾ ನಿಯತಂ ಧರ್ಮಂ ಚಾವಹಿತ: ಶೃಣು" ಭಾಂ ವನಂ  
೨೦೮-೨೪. 2. ನಾಟಕ ಮೊದಲಾದ ಹತ್ತು ವಿಧ ರೂಪಕ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ವಿಧ.

ಪ್ರಕರಣದಲ್ಲಿ ಲೋಕವ್ಯವಹಾರಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದಂತೆ  
ಕವಿಯಿಂದ ಕಲ್ಪಿತವಾದುದು ಇತಿವೃತ್ತ. ಶೃಂಗಾರಸವು  
ಪ್ರಧಾನವಾದುದು. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಅವಾತ್ಯ ಅಥವಾ ವರ್ತಕ  
ಇವರಲ್ಲಿ ಯಾವನಾದರೊಬ್ಬ ನಾಯಕನಾಗಿರಬೇಕು.  
ಇವನು ಧೀರಶಾಂತನೂ ಅಪಾಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಧರ್ಮ  
ಅರ್ಥಕಾಮಪರನೂ ಆಗಿರಬೇಕು. ಪ್ರಕರಣದಲ್ಲಿ ಹತ್ತು  
(10) ಅಂಕಗಳಿರಬೇಕು. ಉಳಿದ ಲಕ್ಷಣಗಳು ನಾಟಕದಂತೆ.  
"ಭವೇತಪ್ರಕರಣಂ ವೃತ್ತಂ ಲೋಕಿಕಂ ಕವಿಕಲ್ಪಿತಮ್ | ಶೃಂಗಾರೋಽಪ್ಯ  
ನಾಯಕಸ್ತು ವಿಪ್ರೋಽಮಾತ್ಯೋಽಥವಾ ವರ್ತಕಃ | ಸಾಪಾಯಧರ್ಮಕಾಮಾರ್ಥ-  
ಪರೋ ಧೀರಪ್ರಶಾಂತಕ:" ಸಾಂ ೬೦ ೬-೨೨೪, ೫. 3. ಗ್ರಂಥದ  
ಒಂದು ಭಾಗ, ಅಧ್ಯಾಯ. 4. ಸಂದರ್ಭ, ಸ್ಥಳ.

"ಅರ್ಥ: ಪ್ರಕರಣಂ ಲಿಪ್ತಂ ಶಬ್ದಸ್ಯಾನ್ಯಸ್ಯ ಸನ್ನಿಧಿ:" ಸಾಂ ೬೦  
೨. "ಸರ್ವಂ ಜಾನಾತಿ ದೇವ:" ಎಂಬಲ್ಲಿ ದೇವ ಪದಕ್ಕೆ ಅನೇಕ  
ಅರ್ಥಗಳಿದ್ದರೂ ರಾಜನೊಡನೆ ಮಾತಾಡುವ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ  
ನೀನು ಎಂಬ ಅರ್ಥವು ಆ ಪ್ರಕರಣದಿಂದ ಲಭ್ಯವಾಗು  
ವುದು. 5. ಸಮಯ, ಸಂದರ್ಭ. "ಯತ್ಪಾಠೋಜವಿಮುಷ್ಣ-  
ಪ್ರಕರಣಂ" ನೆಪಂ ೧೯-೫೮.

ಪ್ರಕರೀ ಪ್ರಕರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. "ಪ್ರಕರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.  
2. ನಾಲ್ಕು ರಸ್ತೆಗಳು ಕೂಡುವ ಚೌಕ. "ಪ್ರಕರೀತ್ವಪ್ರಕೃತೀ  
ಚತುರಾವನೀ" ಹೇಮಂ.

ಪ್ರಕರ್ಮ ಪ್ರಕರ್ಮ (ಪುಂ) 1. ಉತ್ಕರ್ಮ, ಅತಿಶಯ, ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ.  
ಪ್ರ + ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಕೃ" (೩-೩-೧೮). "ಅಭಿಮುಖ-  
ಪತಿಸಂಪುರ್ಣಪ್ರಕರ್ಮದಿವಜಿತಮುದ್ಧತಿಮುಜ್ಜವಲಾ ದಧಾನೇ:" ಮಾಧಂ  
೭-೨೯. 2. ಅತಿಶಯ, ಹೆಚ್ಚು, ಹೆಚ್ಚು. "ವೀರ್ಯವಿಧುತ:  
ಸ್ಮ ತದಾ ವಿವೇದ ಪ್ರಕರ್ಮಮಾಧಾರವಶಂ ಗುಣಾನಾಮ್" ಕಿರಾಂ  
೩-೧೮. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಎಳೆಯುವುದು. ಪ್ರಕರ್ಮಣ ಕರ್ಮ.

ಪ್ರಕರ್ಮಣ ಪ್ರಕರ್ಮಣ (ನಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಎಳೆಯುವುದು.  
ಪ್ರ + ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) ಭಾವ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).  
"ಸುಪ್ತಿಭಿರ್ಜಾನುಭಿಶ್ಚೇವ ನಿಷ್ಪನ್ನಾವಿತರೇತರಮ್ | ಪ್ರಕರ್ಮಣಾ-  
ಕರ್ಮಣಯೋರಮ್ಯಾಕರ್ಮವಿಕರ್ಮಣ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೦೫-೩೧.

ಪ್ರಕಲ್ಪನ ಪ್ರಕಲ್ಪನ (ನಂ) 1. ನಿರ್ಮಾಣ, ರಚನೆ,  
ತಯಾರಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ಕೃಷ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೫). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಲ್ಪನಾ -ಕಲ್ಪನಾ. ಕೃಷ +  
ಣಿಚ್ "ಯುಚ್". ಗೊತ್ತುಮಾಡುವುದು, ನಿಗದಿಮಾಡು  
ವುದು, ನಿರ್ಧರಿಸುವುದು. "ಸಮುದ ಸ್ವಾನಿ ಕರ್ಮಾಣಿ ಕುರ್ವ-  
ದ್ವಿರಿಹ ಮಾನವ: | ಅನೇನ ವಿವಿಧೋಗೇನ ಕರ್ಮವ್ಯಾಸಪ್ರಕಲ್ಪನಾ"  
ಮನುಂ ೮-೨೧೧. 2. ಏರ್ಪಡುವುದು, ಸಿದ್ಧ  
ಗೊಳಿಸುವುದು.

ಪ್ರಕಲ್ಪನೀಯ ಪ್ರಕಲ್ಪನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸಿದ್ಧವಾಗಬೇಕಾದ.  
2. ನಿರ್ಮಾಣವಾಗಬೇಕಾದ, ತಯಾರಾಗಬೇಕಾದ. ಪ್ರ + ಕೃಷ  
(ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). 3. ಸಿದ್ಧಪಡಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ, ಸಜ್ಜುಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಡುವ,  
ತಯಾರಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 6. ತಯಾರಿಸ  
ಬೇಕಾದ. ಪ್ರ + ಕೃಷ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್"  
(೩-೧-೯೬). "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬). ಪ್ರಕಲ್ಪನೀಯತವ್ಯ:  
ಪ್ರಕಲ್ಪನೀಯತವ್ಯ. ಣಿಜಭಾವೇ ಪ್ರಕಲ್ಪನೀಯತವ್ಯ: ಪ್ರಕಲ್ಪನೀಯತವ್ಯ.  
ಇತರಭಾವೇ ಪ್ರಕಲ್ಪನೀಯತವ್ಯ: ಪ್ರಕಲ್ಪನೀಯತವ್ಯ.

ಪ್ರಕಲ್ಪಯತ್ ಪ್ರಕಲ್ಪಯತ್ (ವಿಂ) ನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ರಚನೆ ಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಕೃಷ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ)



+ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
-ಯಮಾನ: -ಯಮಾನಃ.

ಪ್ರಕಲ್ಪಮಾನ ಪ್ರಕಲ್ಪಮಾನ (ವಿಂ) 1. ನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡು  
ತಿರುವ, ರಚಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಕೃಪ್ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) "ಶಾನಚ್"  
(೩-೨-೧೨೪)। 2. ನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ.

ಪ್ರಕಲ್ಪಿತ ಪ್ರಕಲ್ಪಿತ (ವಿಂ) 1. ರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಯಾರಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ+ಕೃಪ್ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ)+ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।  
"ಮುಖಮೀಕ್ಷಿತು ಕ್ಷಿತಿಪತೇರಪೇಯುಷಾಂ ಪರಿತ: ಪ್ರಕಲ್ಪಿತನಿಕೇತನಂ  
ಬಹಿ:" ಮಾಧಂ ೧೩-೨೬। 2. ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಜ್ಜು  
ಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಗೊತ್ತುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಗದಿಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ನಿಜಭಾವೇ ಪ್ರಕಲ್ಪಿತ: ಪ್ರಕಲ್ಪಿತಃ. 4. ನಿಗದಿ  
ಯಾಗಿರುವ. 5. ಸಿದ್ಧವಾಗಿರುವ. 6. ನಿರ್ಮಾಣವಾಗಿ  
ರುವ.

ಪ್ರಕಲ್ಪಿತವ್ಯ ಪ್ರಕಲ್ಪಿತವ್ಯ, -ಕಲ್ಪಯಿತವ್ಯ -ಕಲ್ಪಯಿ  
ತವ್ಯ, ಪ್ರಕಲ್ಪತವ್ಯ ಪ್ರಕಲ್ಪತವ್ಯ (ವಿಂ) "ಪ್ರಕಲ್ಪ-  
ನೀಯ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಪ್ರಕಲ್ಪ್ಯ ಪ್ರಕಲ್ಪ್ಯ (ವಿಂ) 1. ತಯಾರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಸಿದ್ಧ  
ಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಗೊತ್ತುಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ನಿಗದಿಮಾಡ  
ಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ+ಕೃಪ್ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ)+ಣಿಚ್ "ಪ್ಯತ್"  
(೩-೧-೧೨೪)।

ಪ್ರಕಾಂಡ ಪ್ರಕಾಂಡ (ಪುಂ) 1. ಮರದ ಬೇರಿನಿಂದ ಕೊಯ್ಬೆಗಳ  
ವರೆಗೂ ಇರುವ ದೂರ. ಪ್ರಕಾಂಡಯತೇ - ಪ್ರ+ಕಡಿ  
(ಭೇದನೆ)+ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೩-೪೬)। ಪುಷಂ।  
ಪ್ರಕೃಷ್ಠ: ಕಾಂಡೋ ವಾ। "ರಮಭಾಪಿ ಕಿಂ ಚಿಹ್ನಯತಿ ಪ್ರಕಾಂಡಂ  
ನ ಚಾತ್ಮನ: ಸ್ವೇನ ನ ಚೈತದ್ಗುರು" ನೈಷಂ ೭-೯೩। 2. ರೆಂಬೆ,  
ಕೊಂಬೆ. (ವಿಂ) 3. ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ.  
"ಕ್ಷತ್ರಪ್ರಕಾಂಡಗೃಹಿಣಿಬಹುಮಾನಪೂಜಾಮೂರ್ಜಸ್ವಲಾಮಪಿ ಶಚೀ ಮನಸಾ  
ಕರೋತು" ಮಂ ವೀಂ ೪-೩೫। "ಪ್ರಕಾಂಡೋ ವಿಠಪೇ ಶಸ್ತೇ  
ಮೂಲಸ್ಕಾಂತರೇ ತರೋ:" ಹೇಮಂ।

ಪ್ರಕಾಂಡಕ ಪ್ರಕಾಂಡಕ (ಪುಂ) 1. ಶಾಖೆ, ರೆಂಬೆ. ಪ್ರಕಾಂಡ  
ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕ:"। 2. ಮರದ ದೂರ, ರೆಂಬೆಯವರೆಗಿನ  
ಕಾಂಡ. (ವಿಂ) 3. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ.  
"ದಂಡಕಾನಘವಾತಾಂ ಯೋ ವೀರರಕ್ಷ:ಪ್ರಕಾಂಡಕೋ" ಮೃದ್ವಿಂ ೪-೬।

ಪ್ರಕಾಮ ಪ್ರಕಾಮ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಕಾಮಾಸಕ್ತನಾದ.  
ಪ್ರಕೃಷ್ಠ: ಕಾಮೋ यस್ಯ। 2. ಯಥೇಷ್ಟವಾದ, ಹೇರಳವಾದ.  
"ವಿಲೋಕಯಂತ್ಯೋ ವಪುರಾಪುರಕ್ಷಣಾಂ ಪ್ರಕಾಮವಿಸ್ತಾರಫಲಂ ಹರಿಷ್ಯ:"  
ರಘುಂ ೨-೧೧। (ಅವ್ಯಂ) -ಮಮ್ -ಮಮಃ. 3. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ,  
ಅತಿಶಯವಾಗಿ, ಅತ್ಯಂತವಾಗಿ. "ಪಾದೇ: ಪುರ: ಕ್ವರಿಣಾಂ

ವಿದಾರಿತಾ: ಪ್ರಕಾಮಮಾತ್ರಾಂತರಲಾಸ್ತತೋ ಗಜೇ:" ಮಾಧಂ  
೧೨-೨೧। 4. ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಂತೆ, ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ, ಇಷ್ಟಾನು  
ಸಾರವಾಗಿ. "ಪರಿಮಲಿತಮಪಿ ಪ್ರಿಯ: ಪ್ರಕಾಮಂ ಕುಚಯುಗ-  
ಮುಜ್ಜವಲಮೇವ ಕಾಮಿನೀನಾಮ್" ಮಾಧಂ ೭-೭೦।

ಪ್ರಕಾರ ಪ್ರಕಾರ (ಪುಂ) 1. ರೀತಿ, ಬಗೆ, ತೆರ. ಪ್ರ+ಡು  
ಕೃಪ್ (ಕರಣ) "ಭಕ್" (೩-೩-೧೮)। "ಗಾತ್ರಸ್ತಂಭ:  
ಸ್ಥಲಯತಿ ಗತಿ ಕ: ಪ್ರಕಾರ: ಕಿಮೇತತ್" ಮಾಲತೀಂ ೪-೨೦।  
2. ವಿಧ, ಪ್ರಭೇದ, ಜಾತಿ. 3. ಸಾಮ್ಯ, ಸಾದೃಶ್ಯ,  
ಹೋಲಿಕೆ. 4. ಭೇದ, ತಾರತಮ್ಯ, ವ್ಯತ್ಯಾಸ. "ಪ್ರಕಾರ-  
ಸ್ತುಲ್ಯಭೇದಯೋ:" ಮೇದಿಂ।

ಪ್ರಕಾಶ ಪ್ರಕಾಶ (ಪುಂ) 1. ಅಡಪ, ಸೂರ್ಯನ ಬೆಳಕು,  
ಬಿಸಿಲು. ಪ್ರ+ಕಾಶ್ (ದೀಪ್ತೌ) ಭಾವೇ "ಭಕ್" (೩-೩-೧೮)।  
2. ಕಾಂತಿ, ಬೆಳಕು. "ಕಿಂಚಿತ್ಪ್ರಕಾಶಸ್ತಿಮಿತೋಪತಾರೇಭ-  
ವಿಕ್ರಿಯಾಂ ವಿರತಪ್ರಸಂಗೈ:" ಕುಮಾಂ ೩-೪೭। 3. ತೋರ್ಕೆ,  
ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. (ವಿಂ) 4. ತೋರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ,  
ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ. "ಪ್ರಕಾಶಶ್ಚಾಪ್ರಕಾಶಶ್ಚ ಲೋಕಾಲೋಕ  
ಇವಾಚಲ:" ರಘುಂ ೧-೬೮। 5. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತೋರುವ,  
ಕಣ್ಣಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗುವ. "ಪ್ರಜ್ಞಾನತೀವ ಕ್ವಚಿದ್ಭೂತಶ್ರಿಯ:  
ಕ್ವಚಿತ್ಪ್ರಕಾಶಾನಥ ಗಹ್ವರಾನಪಿ" ಮಾಧಂ ೧೨-೪೬। 6.  
ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಪಡೆದಿರುವ, ಖ್ಯಾತಿಹೊಂದಿರುವ. "ಜಗತ್ಪ್ರಕಾಶಂ  
ತದಶೇಷಮಿಜ್ಯಯಾ ಭವದ್ಗುರ್ಲಕ್ಷ್ಯಯಿತು ಮಮೋದತ:" ರಘುಂ ೩-೪೮।  
7. ಅವರಣ ರಹಿತವಾದ, ಕತ್ತಲಿನಿಂದ ಆವೃತವಾಗಿಲ್ಲದ,  
ಬೆಳಕಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ವಿಪಿನಾನಿ ಪ್ರಕಾಶಾನಿ ಶಕ್ತಿಮತ್ವಾ-  
ಚ್ಚಕಾರ ಸ:" ರಘುಂ ೪-೩೧। 8. ಅರಳಿದ, ವಿರೂಪ  
ಹೊಂದಿದ. (ಅವ್ಯಂ) 9. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸು  
ವಂತೆ. "ಉನ್ನಿಧ್ರಪ್ರಿಯಕಮನೋರಮಂ ರಮण्या: ಸರೇಜೇ ಸರಸಿ  
ವಪು: ಪ್ರಕಾಶಮೇವ" ಮಾಧಂ ೮-೨೮। 10. ಬಹಿರಂಗವಾಗಿ,  
ಎಲ್ಲರಿಗೂ ತಿಳಿಯುವಂತೆ. "ಸಸಹಾಯ: ಸ ಹಂತವ್ಯ: ಪ್ರಕಾಶಂ  
ವಿವಿಧವಿಧೈ:" ಮನುಂ ೮-೧೯೩। 11. ಕಿವಿಗೆ ಕೇಳಿಸುವಂತೆ,  
ಎಲ್ಲರೂ ಕೇಳಲು ಅನುಕೂಲವಾಗುವಂತೆ. [ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ  
ಆತ್ಮಗತಮ್ ಎಂಬುದರ ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಪ್ರಕಾಶಮ್ ಎಂದು  
ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವುದು.] (ನಂ) 12. ಕಾಂಕ್ಷೆ, ಕಂಚು.

ಪ್ರಕಾಶಕ ಪ್ರಕಾಶಕ (ವಿಂ) 1. ಬೆಳಕನ್ನು ಉಂಟು  
ಮಾಡುವ, ಬೆಳಕನ್ನು ಕೊಡುವ. ಪ್ರಕಾಶಯತಿ - ಪ್ರ+ಕಾಶ್  
(ದೀಪ್ತೌ) "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ತತ್ತ್ವವನ್ನು  
ಹೊರಪಡಿಸುವ, ನಿಜವಾದ ಅಂಶವನ್ನು ವಿಶದಪಡಿಸುವ,  
ವಿಷಯವನ್ನು ವಿವರವಾಗಿ ನಿರೂಪಿಸಿ ಹೇಳುವ, "ತತ್ರ  
ಸತ್ತ್ವಂ ನಿರ್ಮಲತ್ವಾತ್ ಪ್ರಕಾಶಕಮನಾಮಯಮ್" ಗೀತಾ ೧೪-೬।



3. ಮೈದೋರುವ, ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗುವ, ತೋರ್ಪು  
ಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ. 4. ಸೂಚಿಸುವ, ತಿಳಿಸುವ.

**ಪ್ರಕಾಶನ ಪ್ರಕಾಶನ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. ದಿದೃಕ್ಷುಮ್ಯೋಜ್ಜುನಾ-  
ದಿಮ್ಯ: ದಿವ್ಯಂ ರೂಪಂ ಪ್ರಕಾಶಯತೃಸೌ-ಪ್ರ + ಕಾಶ (ದೀಪ್ತೌ) +  
ಣಿच् "ಲ್ಯು:" (3-1-134). "ದಿವ್ಯಂ ರೂಪಂ ದಿದೃಕ್ಷುಮ್ಯ:  
ಪಾರ್ಥಾದಿಮ್ಯೋ ವಿಶೇಷತ: | ರೂಪಂ ಪ್ರಕಾಶಯತಿ ಯ: ಸ ಪ್ರಕಾಶನ  
ईरित:" इति निरुक्ति: | "दिव्यं ददामि ते चक्षु:"  
गीता | "नैकरूपो बृहद्रूप: शिपिविष्ट: प्रकाशन:" वि०  
स० | (न०) 2. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವುದು, ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸು  
ವುದು, ಹೊರಗೆಡಹುವುದು. 3. ತೋರ್ಪುಡಿಸಿಕೊಳ್ಳು  
ವುದು, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಮೈದೋರುವುದು.  
4. ಬೆಳಕನ್ನಂಟುಮಾಡುವುದು. 5. ತೋರಿಸುವುದು,  
ಸೂಚಿಸುವುದು, ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸುವುದು, ನಿರೂಪಿಸಿ ಹೇಳು  
ವುದು. "इति स्वयं मोहमहोर्मिनिर्मितं प्रकाशनं शोचति  
नैषधे निजम्" नैष० ९-१२७ | "प्रणयप्रकाशनविदो  
मधुरा: सुतरामभीष्टजनचित्तहृत:" माघ० ९-५५ |  
(वि०) 6. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುವ, ಬೆಳಕನ್ನಂಟುಮಾಡುವ.

**ಪ್ರಕಾಶನೀಯ ಪ್ರಕಾಶನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ, ಪ್ರಸಿದ್ಧಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ + ಕಾಶ (ದೀಪ್ತೌ) +  
ಣಿच् "ಅನೀಯ್" (3-1-१६) | 2. ಪ್ರಕಟಿಸಲ್ಪಡುವ,  
ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಬೇಕಾದ.  
4. ಪ್ರಕಟಿಸಬೇಕಾದ. "तव्य:" (3-1-१६) | -यितव्य:  
-ಯಿತವ್ಯ:

**ಪ್ರಕಾಶಮಾನ ಪ್ರಕಾಶಮಾನ (ವಿಂ)** ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ,  
ಜ್ವಲಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಕಾಶ (ದೀಪ್ತೌ) "शानच्"  
(3-२-१२४) | "फणामणिवातमयूखमण्डलप्रकाश-  
मानोदरदिव्यधामनि" स्तो० २० |

**ಪ್ರಕಾಶಯತ್ ಪ್ರಕಾಶಯತ್ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ಬೆಳಕನ್ನಂಟುಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಕಾಶ  
(ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿच् "ಶತ್" (3-२-१२४) | 2. ಪ್ರಕಟಿ  
ಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ತೋರಿಸುತ್ತಿರುವ. "प्रकाशयन् किञ्चि-  
दिवाप्रमेय: प्रभावमात्मीयमनन्यवेद्यम्" याद० २३-१९ |  
3. ಪ್ರಸಿದ್ಧಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ.  
"प्रकाशयन्तं स्वमसावबुध्यत" नैष० ९-१२१ |

**ಪ್ರಕಾಶಯಿತ್ ಪ್ರಕಾಶಯಿತ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಬೆಳಕನ್ನಂಟು  
ಮಾಡುವ. 2. ಪ್ರಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವ, ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸುವ.

**ಪ್ರಕಾಶಾತ್ಮನ್ ಪ್ರಕಾಶಾತ್ಮನ್ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. ಪ್ರಕಾಶ:  
(मूर्खरपि सदा संप्रतिपन्नपरप्रभावतया) प्रदीप्त: आत्मा

स्वभावोऽस्य | "मूर्खरपि सदा सम्यक् प्रतिपन्नस्वभाव-  
वान् | य: स स्यात्तु प्रकाशात्मा" इति निरुक्ति: |

"ओजस्तेजोद्युतिधर: प्रकाशात्मा प्रतापन:" वि० स० |

2. ಸೂರ್ಯ. (ವಿಂ) 3. ವ್ಯಕ್ತವಾದ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ.

4. ವ್ಯಕ್ತವಾದ ಸ್ವರೂಪವುಳ್ಳ.

**ಪ್ರಕಾಶಿತ ಪ್ರಕಾಶಿತ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರಕಾಶಗೊಂಡ, ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ  
ಪಡೆದ. 2. ಪ್ರಕಟವಾದ, ಬಹಿರಂಗಪಟ್ಟಿರುವ. ಪ್ರ + ಕಾಶ  
(ದೀಪ್ತೌ) ಕರ್ತಂ "क्त:" (3-४-७२) | 3. ಪ್ರಕಾಶ  
ಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಸಿದ್ಧಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊರಗೆಡಹಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಪ್ರ + ಕಾಶ + ಣಿच् "क्त:" (3-२-१०२) | "प्रकाशित-  
त्वमतिशीलसारा: कृतोपकारा इव विद्विषस्ते" किरा०  
३-१६ | 4. ಪ್ರಕಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಬೆಳಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರದರ್ಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪ್ರಕಾಶ್ಯ ಪ್ರಕಾಶ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರಕಾಶಿಸಲ್ಪಡುವ, ಪ್ರಕಟಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ + ಕಾಶ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿच् "ण्यत्"  
(3-१-१२४) | 2. ಪ್ರಕಟಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ, ಪ್ರಕಾಶ  
ಗೊಳಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಪ್ರಕಟಿಸಬೇಕಾದ.  
4. ಪ್ರಸಿದ್ಧಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 5. ಪ್ರದರ್ಶಿಸಬೇಕಾದ.  
ತೋರಿಸಬೇಕಾದ. (अव्य०) 6. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಿ, ಪ್ರಕಟಿಸಿ.  
7. ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸಿ. ಪ್ರ + ಕಾಶ "क्त्वा" (3-४-२१) |  
"ल्यप्" (७-१-३७) | 8. ತೋರಿಸಿ, ಪ್ರದರ್ಶಿಸಿ.  
"लग्नद्विरेफाञ्जनभक्तिचित्रं मुखे मधुश्रीस्तिलकं प्रकाश्य"  
कुमा० ३-३० |

**ಪ್ರಕಿರಣ ಪ್ರಕಿರಣ (ನಂ)** 1. ಎರಚುವುದು, ಎಸೆಯುವುದು;  
2. ಚೆಲ್ಲುವುದು. ಪ್ರ + ಕ್ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ल्युट्" (3-३-११५) |

**ಪ್ರಕಿರತ್ ಪ್ರಕಿರತ್ (ವಿಂ)** 1. ಎರಚುತ್ತಿರುವ, ಎಸೆಯು  
ತ್ತಿರುವ, ಬೀರುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಕ್ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) "शत्"  
(3-२-१२४) | 2. ಚೆಲ್ಲುತ್ತಿರುವ. "तेज: प्रकिरता  
दिक्षु सप्रतापमदीप्यत" माघ० १९-८ |

**ಪ್ರಕೀರ್ಣ ಪ್ರಕೀರ್ಣ (ನಂ)** 1. ಚಾಮರ. ಪ್ರ + ಕ್ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ)  
"क्त:" (3-२-१०२) | "प्रकीर्णं गुत्सकादिषु" त्रिकाण्ड० |  
2. ಕಲಬೆರಕೆ, ವಿವಿಧ ವಿಷಯಗಳ ಸಂಗ್ರಹ. 3. ವಿವಿಧ  
ವಿಷಯಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಗ್ರಂಥಭಾಗ. (वि०) 4. ಬೆರಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ನಾನಾ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
(ಗ್ರಂಥ). 5. ಎರಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಚೆಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟ. "प्रकीर्ण: पुष्पाणां हरिचरणयोरञ्जलि-  
रयम्" वेणी० १-१ | 7. ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಲಿಸುವಂತೆ  
ಆಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "यान्तोऽप्युशन्तश्चरणैरिवावनि जवात्प्रकीर्ण-



ರಮಿತ: ಪ್ರಕೀರ್ಣಕ:” ಮಾಘಂ ೧೨-೧೭ ೧ 8. ಅಸಂಗತವಾದ, ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ, ಅಸಂಬಂಧವಾದ. “ಬಹುಪಿ ಸ್ವೇಚ್ಛಯಾ ಕಾಮಂ ಪ್ರಕೀರ್ಣಮಭಿಧೀಯತೇ। ಅನುಜ್ಞಿತಾರ್ಥಸಂಬಂಧ: ಪ್ರಬಂಧೋ ದುರುದಾಹರ:” ಮಾಘಂ ೨-೭೩।

ಪ್ರಕೀರ್ಣಕ ಪ್ರಕೀರ್ಣಕ (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. “ವಿಶ್ವಸ್ತಚಾಮರಕುಶಾನ್ ವಿಪ್ರವಿದ್ವಪ್ರಕೀರ್ಣಕಾನ್” ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೩೬-೪೨। (ನಂ) 2. ಚವರ. ಪ್ರಕೀರ್ಣ ಸಂಜಾಯಾ “ಕನ್” (೪-೩-೭೪)। “ಯಾಂತೋಸ್ಪೃಶಂತಶ್ಚರಣೈರಿವಾವನಿ ಜವಾತ್ಪ್ರಕೀರ್ಣರಮಿತ: ಪ್ರಕೀರ್ಣಕ:” ಮಾಘಂ ೧೨-೧೭ ೧ “ಚಾಮರಂ ತು ಪ್ರಕೀರ್ಣಕಮ್” ಅಮಂ 1. 3. ಬೆರಕೆ, ನಾನಾ ವಿಷಯಗಳ ಸಂಗ್ರಹ. 4. ನಾನಾ ವಿಷಯಗಳ ಸಂಗ್ರಹರೂಪವಾದ ಗ್ರಂಥದ ಒಂದು ಭಾಗ. “ಪ್ರಕೀರ್ಣಕಂ ಚಾಮರೇ ಸ್ಯಾದ್ವಿತ್ತಾರೆ ಚ ತುರಗ್ಗಮೇ” ಮೇದಿಂ 1. 5. ಗ್ರಂಥದ ವಿಸ್ತೃತ ಭಾಗ, ವಿವರಣೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಗ್ರಂಥದ ಭಾಗ.

ಪ್ರಕೀರ್ತನ ಪ್ರಕೀರ್ತನ (ನಂ) 1. ಹೇಳುವುದು. ಪ್ರ + ಕೃತ (ಸಂಶಬ್ದನೆ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಸಾರುವುದು, ಡಂಗುರ ಹೊಡೆಸುವುದು.

ಪ್ರಕೀರ್ತಿಸ ಪ್ರಕೀರ್ತಿಸ (ವಿಂ) 1. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರ + ಕೃತ (ಸಂಶಬ್ದನೆ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)। “ಪ್ರಭೂತಮಲ್ಯಂ ಕಾರ್ಯಂ ವಾ ಯೋ ನರ: ಕರ್ತುಮಿಚ್ಛತಿ। ಸರ್ವಾರಂಭೇಣ ತತ್ ಕುರ್ಯಾತ್ ಸಿಂಹಾದೇಕಂ ಪ್ರಕೀರ್ತಿಸಮ್” ಚಾಣಕ್ಯಂ ೬೭। 2. ಸಾರಿಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು, ಡಂಗುರ ಹೊಡೆದು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು.

ಪ್ರಕೀರ್ಯ ಪ್ರಕೀರ್ಯ (ಪುಂ) 1. ತಪ್ಪಿಸಿದ. 2. ಕಂಡವು. ಪ್ರ + ಕೃ (ವಿಶ್ಲೇಷ) “ಯಕ್” (೩-೪-೧೧೨)। (ಅವ್ಯಂ) 3. ಹರಡಿತು. 4. ಎಸೆದು.

ಪ್ರಕೀರ್ಯಮಾಣ ಪ್ರಕೀರ್ಯಮಾಣ (ವಿಂ) ಎರಚಲ್ಪಟ್ಟು, ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರ + ಕೃ (ವಿಶ್ಲೇಷ) ಕರ್ಮಂ “ಶಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪)। “ಪ್ರಕೀರ್ಯಮಾಣಾ ನಿಜಮುಷ್ಠಿಮದ್ಗರಕ್ಷತಾಕೃತೇ:” ಯಾದಂ ೧೪-೧೨।

ಪ್ರಕುಪಿತ ಪ್ರಕುಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಕೋಪಗೊಂಡ. ಪ್ರ + ಕುಪ (ಕ್ರೋಧ) “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨)। 2. ಕೆರಳಿದ. “ಪ್ರಕುಪಿತ ಇವ ರೋಗ: ಕ್ಷಿಪ್ರಕಾರೀ ವಿಕಾರಮ್” ಮಾಘಂ ೨೦-೭೬।

ಪ್ರಕುಪಿತವತ್ ಪ್ರಕುಪಿತವತ್ (ವಿಂ) ಕೋಪಗೊಂಡವನು. ಪ್ರ + ಕುಪ (ಕ್ರೋಧ) ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತವತು:” (೩-೨-೧೦೨)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಜೀಪ್” (೪-೧-೬)। -ಕೃತೀ -ಕೃತೀ.

ಪ್ರಕುಪ್ಯತ್ ಪ್ರಕುಪ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಕೋಪಗೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಕುಪ (ಕ್ರೋಧ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। “ಪ್ರತಿ-ವಿವ್ಯಾಧ ದೇತೆಯ ಬಾಣೀರಶನಿಮಿಷಣ:। ಪಕ್ಷಬಂತಮಿವಾದ್ವಿನ್ದಂ

ಪ್ರಕುಪ್ಯನ್ ಪಾಕಶಾಸನ:” ಯಾದಂ ೧೬-೮೪। ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಜೀಪ್” (೪-೧-೬)। -ಕುಪ್ಯಂತಿ -ಕುಪ್ಯಂತೀ.

ಪ್ರಕೃತ ಪ್ರಕೃತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಉಪಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರ + ಡು ಕೃ (ಕರಣ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)। “ಸಮವಾದಿ ವಕ್ತೃಭಿರಭೀಷ್ಠಸಂಕಥಾಪ್ರಕೃತಾರ್ಥಶಂಪಮಥ ಹಸ್ತ-ಸಂಜಯಾ” ಮಾಘಂ ೧೩-೩। 2. ಪ್ರಸಕ್ತವಾದ, ಪ್ರಸ್ತುತವಾದ, ಪ್ರಕರಣಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. [ಅಲಂಕಾರಿರು “ಉಪಮೇಯ” ಪದವ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈ ಪದವನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸುವರು.] “ವಿಷಯಾತ್ಮತಯಾರೋಪ್ಯೇ ಪ್ರಕೃತಾರ್ಥೋಪಯೋಗಿನಿ। ಪರಿಣಾಮೋ ಭವೇತ್ಯುತ್ಯುತ್ಯಾಧಿಕರಣೋ ದ್ವಿಧಾ” ಸಾಂ ದಂ ೧೦-೩೪। “ಪ್ರಕೃತಮನುಸರಾಮ:”। 3. ಮುಖ್ಯವಾದ, ಪ್ರಧಾನವಾದ. 4. ಸ್ವಭಾವದಿಂದಿರುವ, ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದದಿರುವ. “ಪ್ರಕೃತಂ ತು ಪ್ರಸ್ತುತೇಽಪಿ ಪ್ರಕೃತ: ಪ್ರಕೃತಿಸ್ಥಿತೇ” ಹೇಮಂ 1. 5. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಪ್ರಕೃಷ್ಣ ಕೃತ:। “ಅವ್ಯಾಕುಲಂ ಪ್ರಕೃತಮುತರಧೇಯಕರ್ಮ ಧಾರಾ: ಪ್ರಸಾಧಯಿತುಮವ್ಯತಿಕೀರ್ಣರೂಪಾ” ಮಾಘಂ ೪-೬೦।

ಪ್ರಕೃತಾರ್ಥ ಪ್ರಕೃತಾರ್ಥ (ಪುಂ) ಪ್ರಸ್ತುತವಾದ ವಿಷಯ, ಕೈಗೆ ತೆಗೆದುಕೊಂಡಿರುವ ವಿಷಯ. ಪ್ರಕೃತಾರ್ಥ:।

ಪ್ರಕೃತಿ ಪ್ರಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ವಭಾವ, ಸಹಜವಾದ ಗುಣ. ಪ್ರ + ಡು ಕೃ (ಕರಣ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪)। “ಉಷ್ಣ-ತ್ವಮಗ್ನಾತಪಸಪ್ರಯೋಗಾತ್ ಶೇತಯಂ ಹಿ ಯತಸಾ ಪ್ರಕೃತಿರ್ಜಲಸ್ಯ” ರಘುಂ ೪-೪೪। 2. ಸ್ವಭಾವ, ಹುಟ್ಟುಗುಣ. “ಪ್ರಕೃತಿ: ಕ್ಷಲು ಸಾ ಮಹೋಯಸ: ಸಹತೇ ನಾನ್ಯಸಮುತ್ಪತ್ತಿ ಯಯಾ” ಕಿರಾಂ ೨-೨೧। “ಪ್ರಕೃತ್ಯಾ ಯದ್ವಕ್ರಂ ತದಪಿ ಸಮರೇಖಂ ನಯನಯೋ:” ಶಾಕುಂ ೧-೯। “ರಾಕ್ಷಸೀಮಾಸುರೀಂ ಚೈವ ಪ್ರಕೃತಿಂ ಮೋಹಿನೀಂ ಶ್ರಿತಾ:” ಗೀತಾ ೯-೧೨। 3. (ಅದ್ವೈತ ಮತದಲ್ಲಿ) (1) ಅವಿದ್ಯೆ (2) ತ್ರಿಗುಣಾತ್ಮಿಕವಾದ ಮಾಯೆ. “ಮಯಾ-ಧ್ಯಕ್ಷೇಣ ಪ್ರಕೃತಿ: ಸ್ಥಯತೇ ಸಚರಾಚರಮ್” ಗೀತಾ ೯-೧೦। 4. (ದ್ವೈತಮತದಲ್ಲಿ) ಚಿತ್ ಮತ್ತು ಅಚಿತ್ (ಜಡ) ಎಂದು ಪ್ರಕೃತಿಯು ಎರಡು ವಿಧ. ಲಕ್ಷ್ಮಿಯು ಚಿತ್ಪ್ರಕೃತಿ, ಸ್ಥಾವರಜಗತ್ತು ಅಚಿತ್ಪ್ರಕೃತಿ. 5. (ವಿಶ್ವಾದ್ವೈತ ಮತದಲ್ಲಿ) ಈಶ್ವರಾಧಿಷ್ಠಿತವಾದ ಜಗತ್ತಿನ ಮೂಲಕಾರಣ. ಪ್ರಧಾನ, ಸತ್ತ್ವ ರಜಸ್ಸು ಮತ್ತು ತಮಸ್ಸು ಇವು ಹೆಚ್ಚು ಕಡಮೆಯಾಗದಂತೆ ಸಮಾನಗುಣಗಳುಳ್ಳ ದ್ರವ್ಯ. ಈ ತ್ರಿಗುಣದ್ರವ್ಯವು ಪೂರ್ವಪೂರ್ವಾವಸ್ಥಾ ವಿನಾಶರೂಪವಾದ ಉತ್ತರೋತ್ತರಾವಸ್ಥಾ ಭೇದಗಳಿಂದ ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು ತತ್ತ್ವಗಳಾಗಿ ಪರಿಣಾಮ ಹೊಂದುವುದು. “ಪ್ರಕೃತಿ: ಪञ्ಚಭೂತೇಷು ಸ್ವಭಾವೇ ಮೂಲಕಾರಣೇ”। ಇದೇ ಮೂಲಪ್ರಕೃತಿ.



ಈಶ್ವರಾಧಿಷ್ಠಿತವಾದ ಪ್ರಕೃತಿಯೇ ಸಕಲಜಗತ್ತಿಗೂ ಉಪಾದಾನಕಾರ. ಈ ಮೂಲಪ್ರಕೃತಿಯಲ್ಲಿರುವ ಪರಿಣಾಮರೂಪವಾದ ಸ್ವಭಾವಗುಣವೂ ಜೀವಾತ್ಮರ ಕರ್ಮಫಲಗಳೂ ಪರಮಾತ್ಮನ ಜಗತ್ಸೃಷ್ಟಿಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಹಕಾರಿಗಳಾಗಿರುವವು. “ಕಾಲಂ ಕರ್ಮ ಸ್ವಭಾವಂ ಚ ಮಾಯಾ ಮಾಯಾ ಸ್ವಯಾ | ಆತ್ಮನಃ ಪದ್ವ್ಯಯಾ ಪ್ರಾಪ್ತಂ ವಿಬುಧಪುರುಷಾದೇ” ಭಾಗಂ ೪-೨-೨೧ | 6. (ಸಾಂಖ್ಯಮತದಲ್ಲಿ) ಸತ್ತ್ವ ರಜಸ್ಸು ಮತ್ತು ತಮಸ್ಸು ಈ ಮೂರು ಗುಣಗಳ ವಿರುಪೇರಿಲ್ಲದ ಸಾಮ್ಯ. “ಸತ್ತ್ವ-ರಜಸ್ತಮಸಾಂ ಸಾಮ್ಯಾವಸ್ಥಾ ಪ್ರಕೃತಿಃ” ಸಾಂ ಸೂಂ | “ಸತ್ತ್ವಂ ರಜಸ್ತಮ ಇತಿ ಗುಣತ್ರಯಮುದಾಹೃತಮ್ | ಸಾಮ್ಯಾವಸ್ಥಿತೀತೇಷಾಂ ಪ್ರಕೃತಿಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾ” ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ | 7. (ಶಾಕ್ತರ ಮತದಲ್ಲಿ) ದೇವೀಪಂಚಕ ರೂಪವಾದ ಒಂದು ಶಕ್ತಿ. (1) ದುರ್ಗಾ (2) ರಾಧಾ (3) ಲಕ್ಷ್ಮೀ (4) ಸರಸ್ವತೀ ಮತ್ತು (5) ಸಾವಿತ್ರಿ ಈ ಐವರೂ ಸೃಷ್ಟಿಕಾರ್ಯದ ಪ್ರಕೃತಿಯೆಂದು ಇವರ ಮತ. “ಪ್ರಕೃಷ್ಠವಾಚಕಃ ಪ್ರಶ್ನ ಕೃತಿಶ್ಚ ಸೃಷ್ಟಿವಾಚಕಃ | ಸೃಷ್ಟಿ ಪ್ರಕೃಷ್ಠಾ ಯಾ ದೇವೀ ಪ್ರಕೃತಿಃ ಸಾ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ” | ಗುಣಂ ಪ್ರಕೃಷ್ಠೇ ಸತ್ತ್ವೇ ಚ ಪ್ರಶಬ್ದೋ ವರ್ತತೇ ಶ್ರುತೌ | ಮಧ್ಯಮೇ ರಜಸಿ ಕೃಶ್ವೇ ತಿಶಬ್ದಸ್ತಾಮಸೌ ಮತಃ | ತ್ರಿಗುಣಾತ್ಮಸ್ವರೂಪಾ ಯಾ ಸರ್ವಶಕ್ತಿಸಮನ್ವಿತಾ | ಪ್ರಧಾನಸೃಷ್ಟಿಕರಣಂ ಪ್ರಕೃತಿರ್ಸ್ತೇನ ಕಥ್ಯತೇ” | ಈ ತ್ರಿಗುಣಾತ್ಮಿಕ ಪ್ರಕೃತಿಯು ಅನನ್ತಕೋಟಿ ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡಮಯವಾದ ಸಕಲಜಗತ್ತಿಗೂ ಮೂಲಕಾರಣವಾದುದರಿಂದ ಮೂಲಪ್ರಕೃತಿ. ಶಾಶ್ವತವಾದುದರಿಂದ ಅಕ್ಷರ. ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದುದರಿಂದ ಅವ್ಯಕ್ತ. ಜಡವಾದುದರಿಂದ ತಮಸ್ಸು. ವಿಚಿತ್ರಕಾರ್ಯಗಳಿಗೆ ಕಾರಣವಾದುದರಿಂದ ಮಾಯೆ. ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ವಿರೋಧಿಯಾದುದರಿಂದ ಅವಿದ್ಯೆ. ಪರಮಾತ್ಮನ ಜಗತ್ಸೃಷ್ಟಿಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಸಹಾಯವಾದುದರಿಂದ ಅಪಂಶಕ್ತಿ. ಈ ರೀತಿ ವ್ಯವಹರಿಸಲ್ಪಡುವುದು. 8. (ವೈಯಾಕರಣಮತದಲ್ಲಿ) ಪ್ರಾತಿಪದಿಕ, ಸಂಭಾದಿಪ್ರತ್ಯಯರಹಿತವಾದ ಅರ್ಥವತ್ತಾದ ಶಬ್ದ ಸ್ವರೂಪ. ಇದು ನಾಮ ಮತ್ತು ಧಾತುಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. “ನಿಶ್ಚಿತಾ ಪ್ರಕೃತಿರ್ವೈಭಾ ನಾಮಧಾತುಪ್ರಭೇದತಃ | ಯತ್ಪ್ರಾತಿಪದಿಕಂ ಪ್ರಯತಂ ತನ್ನಾಮನೌ ನಾತಿರೀಚ್ಯತೇ” | 9. (ಸಂಗೀತ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಮೂಲಸ್ವರ. 10. (ಆಯುರ್ವೇದದಲ್ಲಿ) ದೇಹದ ಅವಸ್ಥೆ. 11. ಪರಮಾತ್ಮನ ಮಾಯೆಯೆಂಬ ಶಕ್ತಿ. ಈ ಶಕ್ತಿಯು (1) ಪರಾ ಮತ್ತು (2) ಅಪರಾ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. (1) ಭೂಮಿಃ ಆಪಃ ಅನಲಃ ವಾಯುಃ ಳಮ್ (ಆಕಾಶಃ) ಮನಃ ಬುದ್ಧಿಃ ಮತ್ತು ಅಹಂಕಾರಃ ಈ ರೀತಿ ಅಪರಾಪ್ರಕೃತಿಯು ಎಂಟು ವಿಧ. (2) ಇದಕ್ಕಿಂತಲೂ

ಭಿನ್ನವಾದ ಮತ್ತು ಜೀವರೂಪವಾದ ಪ್ರಕೃತಿಯು ಪರಾ ಪ್ರಕೃತಿ. ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ ಈ ಶಕ್ತಿಯಿಂದಲೇ ಈ ಜಗತ್ತೆಲ್ಲವೂ ಧರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದು. “ಯಸ್ಯ ಶಕ್ತಿರ್ಮಹಿಮಾ ಯಾ ಅಗದ್ವಿಭ್ರಮಕಾರಿಣಿ | ವಿಶ್ವೋತ್ಪತ್ತಿನಿಮಿತ್ತತ್ವಾತ್ ಪ್ರಕೃತಿಃ ಪ್ರೋಚ್ಯತೇ ಬೃಹಿಃ” ವೇದಾಂತಕೌಂ 12. (ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಸ್ವಾಮಿ ಅಮಾತ್ಯ ಸುಹೃತ್ತು ಕೋಶ ಲಕ್ಷ್ಯ ದರ್ಗಾ ಸೈನ್ಯ ಮತ್ತು ಪೌರರು. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಂ ಕುರ್ವಂತಿ ರಾಜ್ಯಮ್ | ಪ್ರ+ಕೃ ಕೃ “ಕ್ತಿವ್” (೩-೩-೧೭೪) | 13. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಮತ್ತು ಪುರುಷರ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ. 14. ಪುರಜನರು, ಪ್ರಜೆಗಳು. “ಚಾತುರಾಮಿವ ಕೋಽಪ್ಯ ಪ್ರಕೃತೀನಾಮಚೇತಸಾಮ್ ಪಾತುಮಹಂಥ ಪರ್ಯಪ್ತಂ ಪ್ರಸಾದನರಸಾಯನಮ್” ಯಾದಂ ೨೨-೨೧ | “ಪ್ರವರ್ತತಾಂ ಪ್ರಕೃತಿಹಿತಾಯ ಪಾಥಿವಃ” ಶಾಕುಂ ೭-೩೪ | 15. ಮಂತ್ರಿಮಂಡಲ, ಸಚಿವಸಂಪುಟ. “ಅಥಾನಾಥಾಃ ಪ್ರಕೃತಯಃ ಮಾತೃಬಂಧುನಿವಾಸಿನಮ್” ರಘುಂ ೧೨-೧೨ | 16. ಇಪ್ಪತ್ತೊಂದು ಅಕ್ಷರಗಳ ಪಾದಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಛಂದಸ್ಸು. “ಧೃತಿಶ್ಚಾತಿಧೃತಿಶ್ಚೇವ ಕೃತಿಃ ಪ್ರಕೃತಿರಾಕೃತಿಃ” ವೃಂ ೨೦ | 17. ಪಂಚಮಹಾಭೂತಗಳು. 18. ಪ್ರಧಾನ, ಮುಖ್ಯ. 19. ಪರಮಾತ್ಮ. 20. ಹೆಂಗಸು. 21. ಶಿಲ್ಪಿ, ಕೈಕೆಲಸಗಾರ.

**ಪ್ರಕೃತಿಜ ಪ್ರಕೃತಿಜ (ವಿಂ)** ಸ್ವಭಾವಸಿದ್ಧವಾದ, ಸ್ವಭಾವವಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಪ್ರಕೃತ್ಯಾ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) “ಜಃ” (೩-೨-೧೦೧) |

**ಪ್ರಕೃತೀತರಲ ಪ್ರಕೃತಿತರಲ (ವಿಂ)** ಸ್ವಭಾವವಾಗಿ ಚೆಂಬಲವಾದ, ಅಶಾಶ್ವತವಾದ, ಅನಿತ್ಯವಾದ. ಪ್ರಕೃತ್ಯಾ ತರಲಮ್ | “ಪ್ರಕೃತೀತರಲೇ ಕಾ ನಃ ಪಿಡಃ ಗತೇ ಹತಜೀವಿತೇ” ಅಮರಂ ೩೦ |

**ಪ್ರಕೃತಿಪುರುಷ ಪ್ರಕೃತಿಪುರುಷ (ವುಂ)** ಪ್ರಧಾನಪುರುಷ, ರಾಜ್ಯದ ಪ್ರಥಮಪ್ರಜೆ. “ಜಾನಾಮಿ ತ್ವಾಂ ಪ್ರಕೃತಿಪುರುಷಂ ಕಾಮರೂಪಂ ಮಥೂನಃ” ಮೇಘಂ ೧-೬ |

**ಪ್ರಕೃತಿಮಂಡಲ ಪ್ರಕೃತಿಮಂಡಲ (ನಂ)** 1. ಪ್ರಜಾ ಸೋಮ, ಜನಸಮುದಾಯ. ಪ್ರಕೃತೀಮಂಡಲಮ್ | “ಅಧಿಗತಂ ವಿಧಿವದ್ಯದಪಾಲಯತ್ಪ್ರಕೃತಿಮಂಡಲಮಾಸಮಕುಲೋಚಿತಮ್” ರಘುಂ ೧-೨ | 2. ಸ್ವಾಮಿ ಅಮಾತ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಸಪ್ತ ರಾಜ್ಯಾಂಗಗಳಲ್ಲೊಂದು.

**ಪ್ರಕೃತಿಭಾವ ಪ್ರಕೃತಿಭಾವ (ವುಂ)** ಸ್ವಭಾವವಾಗಿಯೇ ಇರುವುದು, ವ್ಯತ್ಯಾಸ (ವಿಕಾರ) ಹೊಂದದೆ ಇರುವುದು.

**ಪ್ರಕೃತಿಮಹತ್ ಪ್ರಕೃತಿಮಹತ್ (ವಿಂ)** ಸ್ವಭಾವವಾಗಿಯೇ ದೊಡ್ಡವರಾದ, ಉದಾರವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಸೌಜನ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪ್ರಕೃತ್ಯಾ ಮಹಾನ್ | “ಹೃದಿ ಸ್ವಚ್ಛಾ ಬೃತ್ತಿಃ ಶ್ರುತಮಧಿಗತಂ ಚ ಶ್ರವಣಯೋರ್ವಿನಾಯಕೇಶ್ವರೇಣ ಪ್ರಕೃತಿಮಹತಾಂ ಮಂಡನಮಿದಮ್” ಮೃಗಂ ೧-೪೩ |



**ಪ್ರಕೃತಿಸಿದ್ಧ ಪ್ರಕೃತಿಸಿದ್ಧ** (ವಿಂ) ಸ್ವಭಾವಸಿದ್ಧವಾದ, ಸಹಜವಾದ, ಹುಟ್ಟಿನಿಂದ ಬಂದ. ಪ್ರಕೃತ್ಯಾ ಸಿದ್ಧಮ್ |

“ಯಶಸಿ ಚಾಭಿರುಚಿವ್ಯಸನಂ ಶ್ರುತೌ ಪ್ರಕೃತಿಸಿದ್ಧಮಿದಂ ಹಿ ಮಾತುರನಾಮ್” ಭರ್ತೃಂ ೧-೪೨ |

**ಪ್ರಕೃಷ್ಠ ಪ್ರಕೃಷ್ಠ** (ವಿಂ) 1. ಉತ್ತಮವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. ಪ್ರ + ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) | 2. ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. “ಪ್ರಕೃಷ್ಠಗದ್ಗದೇನ ದೀರ್ಘಶೋಕಸಂತಾನೇನ ಸಂಪ್ರತಿ ಪರಿಕ್ಷೀಣೋ ರಾಮಭದ್ರಃ” ಉಂ ರಾಂ ೩ | 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಎಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಕೃಷ ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) | 4. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಉಳಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪ್ರಕೃಪ್ತಿ ಪ್ರಕೃಪ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಏರ್ಪಡಿಸುವುದು, 2. ಗೊತ್ತುಮಾಡುವುದು. 3. ಸಜ್ಜುಗೊಳಿಸುವುದು.

**ಪ್ರಕೃಪ್ಯ ಪ್ರಕೃಪ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ದರ್ಶನಂಧ, ಕೆಟ್ಟ ವಾಸನೆ, ದುರ್ನಾಶ. ಪ್ರ + ಕೃಪ (ಪೂತಿಭಾವ) “ಭಕ್” (೩-೩-೧೮) | 2. ತೋಷಣೆ, ಬಣಗುವಿಕೆ. “ಶೋಭಂ ಸ್ತನೋ ಹಿ ಮೃದುಮಾಸತಯೋಪನದಃ ಸರ್ವಂ ಪ್ರಕೃಪ್ಯಮುಪಯಾತೃವದೀಯತೇ ಚ” ಸುಶ್ರುತಂ |

**ಪ್ರಕೃಪ ಪ್ರಕೃಪ** (ಪುಂ) 1. ಸಿಟ್ಟಿಬಿಟ್ಟುಸುವಿಕೆ, ರೇಗಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ಕೃಪ (ಕ್ರೋಧ) + ಣಿಕ್ “ಭಕ್” (೩-೩-೧೮) | “ಉಪ-ದೇಶೋ ಹಿ ಮೂರ್ಖಾಂ ಪ್ರಕೃಪಾಯ ನ ಶಾಂತಯೇ” ಪೃಷ್ಠತಂ ೧-೪೨೦ | 2. ರೋಷ, ಆವೇಶ, ಅತಿಯಾದ ಕೋಪ, “ಪ್ರಮುಮಂತಃ ಪ್ರಕೃತಿಪ್ರಕೃಪಃ” ಕಿರಾಂ ೨-೪೨ | ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) | -ಕೃಪನಮ್ -ಕೋಪನಮ್.

**ಪ್ರಕೃಪಿತ ಪ್ರಕೃಪಿತ** (ವಿಂ) ರೇಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಿಟ್ಟಿಬಿಟ್ಟ ಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಕೃಪ (ಕ್ರೋಧ) + ಣಿಕ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) | “ಕುತುಹಲೇನೇವ ಮುಹುಃ ಕುಹುರವಂ ವಿಡಮ್ಬಚ ಡಿಮ್ಬೇನ ಪಿಕ್: ಪ್ರಕೃಪಿತಃ” ನೈಷಂ ೧-೩೮ |

**ಪ್ರಕೃಪಿನ್ ಪ್ರಕೃಪಿನ್** (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ಕೋಪಗೊಂಡ. “ನಿರಾಕೃತೇ ಯದುಭಿರೀತಿ ಪ್ರಕೃಪಿಭಿಃ” ಮಾಘಂ ೧೭-೨೦ |

**ಪ್ರಕೃಷ್ಠ ಪ್ರಕೃಷ್ಠ** (ಪುಂ) 1. ಮೊಳಕೆ ಕೆಳಗೆ ಮಣಕಟ್ಟಿನ ವರೆಗಿನ ಭಾಗ. ಪ್ರಕೃಷ್ಯತೇಜೇನ-ಪ್ರ + ಕೃಷ (ನಿಷ್ಕರ್ಷ) “ಯನ್” (ಉಂ ೨-೪) | “ಲತಾಗೃಹದ್ವಾರಗತೋಽಥ ನಂದಿ ವಾಮಪ್ರಕೃಷ್ಠಾ-ಪಿತಹೇಮವೇಶಃ” ಕುಮಾಂ ೩-೪೧ | 2. ಅರಮನೆಯೊಳಗಿನ ಕೊಠಡಿ. 3. ಹಸ್ತ, ಬಿಟ್ಟಿದ ಕೈ. “ಪ್ರಕೃಷ್ಠಃ ಕುರ್ಪರಾಘಸ್ತಾತ್ ಭೂಪಕ್ಷಾಂತರೇಽಪಿ ಚ | ಹಸ್ತೇ ಚ ವಿस्तೃತಕರೇ” ಹೇಮಂ | 4. ಅರಮನೆಯ ಹೊರಬಾಗಿಲಿನ ಸಮೀಪದ ಒಂದು ಕೊಠಡಿ. 5. ಮಣಕಟ್ಟು. “ಪ್ರಕೃಷ್ಠಭಾಜಃ ಪ್ರಿಯಶಾರಿಕಾಯಾಃ ಪಯಃ ಸ್ವಯಂ ಸಾದರಮರ್ಪಯಂತಿ” ಯಾದಂ ೧೩-೪೭ |

**ಪ್ರಕೃಷ್ಠಕ ಪ್ರಕೃಷ್ಠಕ** (ಪುಂ) ಅರಮನೆಯ ಹೊರಬಾಗಿಲಿನ ಸಮೀಪದ ಕೊಠಡಿ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” | “ತಸ್ಯ-ವಿನಮ್ರಕ್ಷಿತಿಪಾಲಸಂಕುಲೇ ತದಜ್ಞನದ್ವಾರವರಪ್ರಕೃಷ್ಠಕೇ” ಕುಮಾಂ ೧೫-೬ |

**ಪ್ರಕ್ರಮ ಪ್ರಕ್ರಮ** (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ಯದ ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. ಪ್ರ + ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ) “ಭಕ್” (೩-೩-೧೮) | “ಹಾ ಧಿವಕ್ರಮನಿಷ್ಠಮಸ್ತಕರಣಃ ಕೋಽಯಂ ವಿಧೇಃ ಪ್ರಕ್ರಮಃ” ಮಾಲತೀಂ ೫-೨೪ | 2. ಕ್ರಮ, ರೀತಿ. ಭಗವತ್ಪ್ರಕ್ರಮಃ ಎಂಬುದೊಂದು ಕಾವ್ಯದೋಷ. 3. ಕಾರ್ಯವಿಧಾನ, ಕಾರ್ಯನಡೆಸುವ ರೀತಿ. 4. ಅವಸರ, ಅವಕಾಶ. “ಪ್ರಕ್ರಮಃ ಕ್ರಮೇ-ವಸರೇ” ಮೇದಿಂ | 5. ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವುದು. ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) | -ಕ್ರಮಣಮ್ -ಕ್ರಮಣಮ್. “ಪ್ರದಕ್ಷಿಣ-ಪ್ರಕ್ರಮಣಾತ್ ಕೃಶಾನೋಃ” ಕುಮಾಂ ೭-೭೯ |

**ಪ್ರಕ್ರಮಭಿ ಪ್ರಕ್ರಮಭಿ** (ಪುಂ) ಕ್ರಮ ಭಂಗ, ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದ ರೀತಿಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬೇರೆ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಹೇಳುವುದು. ಪ್ರಕ್ರಮಸ್ಯ ಭಿಃ | “ಏವಮುಕ್ತೋ ಮನ್ವಿಮುಖ್ಯೇ ರಾವಣಃ ಪ್ರತ್ಯ-ಭಾಷತ” ಎಂಬಲ್ಲಿ ವಚ ಧಾತುವಿನಿಂದ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಉತ್ತರವನ್ನು ಅದೇ ಧಾತುವಿನಿಂದ ಕೊಡಬೇಕಾಗಿರುವಲ್ಲಿ ಭಿಃ ಧಾತುವಿನ ಪ್ರಯೋಗವು ಪ್ರಕ್ರಮಭಂಗದೋಷಾ ಕ್ರಾಂತವಾದುದು.

**ಪ್ರಕ್ರಾಂತ ಪ್ರಕ್ರಾಂತ** (ನಂ) 1. ಸಂಚಾರದ ಪ್ರದೇಶ, ಸಂಚಾರ ಮಾಡುವ ಸ್ಥಾನ. “ಪ್ರಕ್ರಾಂತಂ ಚ ಮುಹುಃ ಪೃಷ್ಠವಾ ಹನುಮಂತಂ ವ್ಯಸರ್ಜಯತ್” ಮಹಿಂ ೮-೧೨೫ | (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಪಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) | “ಅಥಾಪಿ ಗಜ್ಜಾಸಲಿಲಪ್ರವಾಹೇ ಪ್ರಕ್ರಾಂತಪಾತಾಮಿವ ಸಂಪ್ರಪೇದೇ” ಯಾದಂ ೨೩-೧೫ | 3. ಮುಂದೆ ಸಾಗಿದ, ಮುಂದೆ ನಡೆದ. 4. ಹಿಂದೆ ನಿರ್ದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೊದಲು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪ್ರಕ್ರಿಯಾ ಪ್ರಕ್ರಿಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಧಿಕಾರ, ರಾಜನು ಭತ್ತ ಚಾಮರಾದಿಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವುದು. ಪ್ರಕರ್ಷಯ ಕರಣಮ್ — ಪ್ರ + ಕೃ (ಕರಣ) “ಶಃ” (೩-೩-೧೦೦) | ರಿಡ್ ಚ | 2. ಪ್ರಕಾರ, ರೀತಿ, ಬಗೆ, ವಿಧಾನ. “ವಿಫಲಿತಜಲಸೇಕ-ಪ್ರಕ್ರಿಯಾಗೌರವೇಣ ಧ್ಯರಚಿ ಸ ಹೃತಚಿತ್ತಸ್ತತ್ರ ಭೇಮಿವೇನ” ನೈಷಂ ೨-೧೦೬ | 3. (ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಶಬ್ದವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಯ ಅವಸ್ಥೆ, ಶಬ್ದವು ನಿಷ್ಪನ್ನವಾಗಲು ನಡೆಯುವ ಶಾಸ್ತ್ರೀಯ ಕಾರ್ಯ. ರಾಮಃ ಎಂಬುವುದು ಪರಿನಿಷ್ಕ್ರಿಯೆ ರೂಪ. ರಾಮ + ಕೃ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರತ್ಯಯವಿಧಾನರೂಪ ಕಾರ್ಯವು ಪ್ರಕ್ರಿಯೆಯೆನಿಸುವುದು.



ಪ್ರಕಿರಣ ಪ್ರಕೃತ್ಯುಕ್ತ (ವಿಂ) ತೇವವಾಗುತ್ತಿರುವ, ನೆನೆಯುತ್ತಿರುವ, ಒದ್ದೆಯಾಗುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಕಿಲ್ದ (ಆರ್ದ್ರಿಭಾವೇ) "ಶತ್" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (4-1-6)। -ಕಿರಣಿ - ಕೃತ್ಯುಕ್ತಃ.

ಪ್ರಕಿರಣ ಪ್ರಕೃತ್ಯುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಒದ್ದೆಯಾದ, ತೇವವಾದ. ಪ್ರ + ಕಿಲ್ದ (ಆರ್ದ್ರಿಭಾವೇ) "ಕ್ತಃ" (3-4-92)। 2. ತೃಪ್ತಿ ಹೊಂದಿದ.

ಪ್ರಕೀದ ಪ್ರಕೃತ್ಯುಕ್ತ (ಪುಂ) ತೇವವಾಗುವುದು, ಒದ್ದೆಯಾಗುವುದು. ಪ್ರ + ಕಿಲ್ದ (ಆರ್ದ್ರಿಭಾವೇ) "ಘ್" (3-3-18)।

ಪ್ರಕೀದನ ಪ್ರಕೃತ್ಯುಕ್ತ (ನಂ) 1. ಒದ್ದೆಮಾಡುವುದು, ತೋಯಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ಕಿಲ್ದ (ಆರ್ದ್ರಿಭಾವೇ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। (ವಿಂ) 2. ಒದ್ದೆಮಾಡುವ, ತೋಯಿಸುವ. ಪ್ರ + ಕಿಲ್ದ + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134)।

ಪ್ರಕವಣ ಪ್ರಕೃತ್ಯುಕ್ತ (ಪುಂ) ವೀಣಾನಾದ, ವೀಣೆಯ ಶಬ್ದ. ಪ್ರ + ಕವಣ (ಶಬ್ದೇ) ವಾ "ಅಪ್" (3-3-64)। ಪಕ್ಷಿ "ಘ್" (3-3-18)। ಪ್ರಕವಣ: ಪ್ರಕವಣಃ. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। -ಕವಣನಮ್ - ಕೃತ್ಯುಕ್ತಃ.

ಪ್ರಕಾಲನ ಪ್ರಕೃತ್ಯುಕ್ತ (ನಂ) 1. ತೋಯಿಸುವುದು, ಶುಭ್ರ ಮಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ಕಾಲ (ಶೌಚಕರ್ಮಣಿ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। "ಯಸ್ಯಾವರೋಧಸ್ತನಚಂದನಾನಾಂ ಪ್ರಕಾಲನಾದ್ವಾರಿವಿಹಾರಕಾಲೇ" ರಘುಂ 6-48. 2. ತೋಯಿಸುವುದು, ಶುಭ್ರ ಮಾಡುವುದು, ಚೊಕ್ಕಟ ಮಾಡುವುದು. "ಧರ್ಮಿಣಿ ಯಸ್ಯ ವಿಕೀರ್ಣಾ ವರಂ ತಸ್ಯ ನಿರೀಹತಾ। ಪ್ರಕಾಲನಾದ್ವಿ ಪಕ್ಷಸ್ಯ ದೂರಾದಸ್ಪರ್ಶನಂ ವರಮ್" ಹಿತಂ। (ವಿಂ) 3. ತೋಯಿಸುವ, ಶುಭ್ರವಾಗಿ ಮಾಡುವ. 4. ತೋಯಿಸುವ. ಚೊಕ್ಕಟವಾಗಿ ಮಾಡುವ, ಪ್ರ + ಕಾಲ ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134)।

ಪ್ರಕಾಲನೀಯ ಪ್ರಕೃತ್ಯುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ತೋಯಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಶುಭ್ರವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಚೊಕ್ಕಟ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ + ಕಾಲ (ಶೌಚಕರ್ಮಣಿ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। 3. ತೋಯಿಸಬೇಕಾದ. 4. ಚೊಕ್ಕಟವಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ. "ತವ್ಯಃ" (3-1-96)। -ಯಿತವ್ಯಃ - ಯಿತವ್ಯಃ.

ಪ್ರಕಾಲಯತ್ ಪ್ರಕೃತ್ಯುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ತೋಯಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಶುಭ್ರಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಚೊಕ್ಕಟವಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಕಾಲ (ಶೌಚಕರ್ಮಣಿ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (4-1-6)। -ಕಾಲಯಂತಿ - ಕೃತ್ಯುಕ್ತಃ.

ಪ್ರಕಾಲಯಿತ್ ಪ್ರಕೃತ್ಯುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ತೋಯಿಸುತ್ತಿರುವ, ಶುಭ್ರವಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಕಾಲ

(ಶೌಚಕರ್ಮಣಿ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124)। 2. ಶುಭ್ರ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಚೊಕ್ಕಟಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (4-1-6)। -ಯಿತ್ರಿ - ಯಿತ್ರಿ.

ಪ್ರಕಾಲಿತ ಪ್ರಕೃತ್ಯುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ತೋಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಶುಭ್ರವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಶುಭ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೊಕ್ಕಟವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಕಾಲ (ಶೌಚಕರ್ಮಣಿ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

ಪ್ರಕಾಲ್ಯ ಪ್ರಕೃತ್ಯುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ತೋಯಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಶುಭ್ರಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ + ಕಾಲ (ಶೌಚಕರ್ಮಣಿ) + ಣಿಚ್ "ಘ್" (3-1-124)। (ಅವ್ಯಂ) 3. ತೋಯಿಸು, ಶುಭ್ರವಾಗಿಸು. 4. ಚೊಕ್ಕಟವಾಗಿಸು. ಪ್ರ + ಕಾಲ + ಣಿಚ್ "ಕ್ವಾ"। "ಲ್ಯಪ್" (3-1-36)।

ಪ್ರಕಾಲಯಮಾನ್ ಪ್ರಕೃತ್ಯುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಚೊಕ್ಕಟ ತೋಯಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಶುಭ್ರಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಕಾಲ (ಶೌಚಕರ್ಮಣಿ) + ಣಿಚ್ "ಶಾನಿಚ್" (3-2-124)।

ಪ್ರಕಿಪತ್ ಪ್ರಕೃತ್ಯುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಇಡುತ್ತಿರುವ, ಇರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಕಿಪು (ನಿರಸನೇ) "ಶತ್" (3-2-124)। "ಪ್ರಾವೃಟ್ ಪ್ರಾವೃಡ್ವಿತಿ ಬ್ರವೀತಿ ಶತಧಿಃ ಕಾರಂ ಕೃತೇ ಪ್ರಕಿಪನ್" ಮೃಚ್ಛಂ 4-18. 2. ಹಾಕುತ್ತಿರುವ, ಎಸೆಯುತ್ತಿರುವ. "ಮೂರಾನುದಹರದ್ಭುಜಶಾಲಿ ಪ್ರಕಿಪಂಶ್ಚ ನಗರಾಣಿ ಮಮದ್" ಯಾದಂ 21-49. 3. ಹೊಸದಾಗಿ ಸೇರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (4-1-6)। -ಕಿಪತಿ - ಕಿಪಂತಿ, -ಕೃತ್ಯುಕ್ತಃ, -ಕೃತ್ಯುಕ್ತಃ.

ಪ್ರಕಿಪಮಾನ್ ಪ್ರಕೃತ್ಯುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಇಡುತ್ತಿರುವ, ಇರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಕಿಪು (ನಿರಸನೇ) "ಶಾನಿಚ್" (3-2-124)। 2. ಎಸೆಯುತ್ತಿರುವ.

ಪ್ರಕಿಪ್ತ ಪ್ರಕೃತ್ಯುಕ್ತ (ನಂ) 1. ಇರಿಸುವುದು, ಇಡುವುದು. ಪ್ರ + ಕಿಪು (ನಿರಸನೇ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-4-92)। 2. ಎಸೆಯುವುದು, ಬಿಸಾಡುವುದು. (ವಿಂ) 3. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಒಳಗೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಳಕ್ಕೆ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪಾತಾಲಪ್ರತಿಮಲ್ಲಗಲ್ಲವಿವರ ಪ್ರಕಿಪ್ತಸಪ್ತಾಂಗವಮ್" ಮಾಲತೀಂ 4-22. 6. ಹೊಸದಾಗಿ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಇರುವುದರ ಜೊತೆಗೆ ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 7. ಮುಂದಕ್ಕೆ ಚಾಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಂದಕ್ಕೆ ನೀಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪ್ರಕಿಪ್ಯತ್ ಪ್ರಕೃತ್ಯುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಎಸೆಯುತ್ತಿರುವ. 2. ಇಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಕಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಶತ್" (3-2-124)।



**ಪ್ರಕ್ಷಿಪ್ಯಮಾಣ ಪ್ರಕ್ಷಿಪ್ಯಮಾಣ** (ವಿಂ) 1. ಎಸೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಇಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಇರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಿ" (೩-೨-೧೨೪)।

**ಪ್ರಕ್ಷಿಣ ಪ್ರಕ್ಷಿಣ** (ವಿಂ) 1. ಕಡಮೆಯಾದ. 2. ದುರ್ಬಲನಾದ, ಬಡಕಲಾದ. 3. ನಾಶಹೊಂದಿದ. 4. ಅವನತಿಹೊಂದಿದ, ಕ್ಷಯಹೊಂದಿದ. 5. ತಳುವಾದ. ಪ್ರ + ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। ದೀರ್ಘ: (೬-೪-೬೦)। ನಿಷ್ಠಾನತ್ವಮ್ (೮-೨-೪೬)।

**ಪ್ರಕ್ಷುಣ ಪ್ರಕ್ಷುಣ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನಡೆದು ಸವೆಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತುಳಿದು ಪಳಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಮಾರ್ಗ). ಪ್ರ + ಕ್ಷುಡಿರ್ (ಸಂಪೇಷಣೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಚೂರ್ಣಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪುಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಪುನಃಪುನಃ ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಥವಾ ಮನನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪ್ರಕ್ಷುಬ್ಧ ಪ್ರಕ್ಷುಬ್ಧ** (ವಿಂ) 1. ಕೆರಳಿರುವ, ರೇಗಿರುವ, ಕುಬಿಡನಾದ, ಕೋಪಗೊಂಡ. ಪ್ರ + ಕ್ಷುಮ (ಸಂಚಲನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। ಇಡಭಾವ: ನಿಪಾಂ (೭-೨-೧೮)। "ತತ್ಸ್ಯಂದನ: ಸಪದಿ ಸಾರಥಿಸಂಪ್ರಣುಜ: ಪ್ರಕ್ಷುಬ್ಧವಾರಿಧರಧೀರ-ಗಂಭೀರಘೋಷ:" ಕುಮಾಂ ೧೭-೧೦। 2. ಚಲಿಸಿದ, ಅಲುಗಾಡಿದ, ಕ್ಷೋಭೆಗೊಂಡ.

**ಪ್ರಕ್ಷುಮ್ಯತ್ ಪ್ರಕ್ಷುಮ್ಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಕ್ಷೋಭೆ ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ, ಅಳುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಕ್ಷುಮ (ಸಂಚಲನೆ) "ಶಾತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಪ್ರಕ್ಷುಮ್ಯದಮ್ಭೋಧಿವಿಭಿನ್ನಮೂಘರಾದ್ವಲಂ ದ್ವಿಷೋಽಮೃದವನಿಪ್ರಕಮ್ಪಮ್" ಕುಮಾಂ ೧೪-೨೩। 2. ಉದ್ರೇಕ ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ.

**ಪ್ರಕ್ಷುಮ್ಯಮಾಣ ಪ್ರಕ್ಷುಮ್ಯಮಾಣ** (ವಿಂ) 1. ಕ್ಷೋಭೆ ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ, ಹೆದರುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಕ್ಷುಮ (ಸಂಚಲನೆ) "ಶಾನಿ" (೩-೨-೧೨೪)। "ಪ್ರಕ್ಷುಮ್ಯಮಾಣಮವಲೋಕಯ ದಿಗಿಶಸೇನ್ಯಮ್" ಕುಮಾಂ ೧೭-೧೨। 2. ಉದ್ರೇಕ ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ.

**ಪ್ರಕ್ಷೇಪ ಪ್ರಕ್ಷೇಪ** (ಪುಂ) 1. ಇಡುವುದು, ಇರಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಖ" (೩-೩-೧೮)। 2. ಎಸೆಯುವುದು, ಬಿಡುವುದು. 3. ಮುಂದಕ್ಕೆ ಚಾಚುವುದು, ಮುಂದಕ್ಕೆ ನೀಡುವುದು. 4. ಹೊಸದಾಗಿ ಸೇರಿಸುವುದು, ಇರುವುದರ ಜೊತೆಗೆ ಸ್ವಂತವಾಗಿ ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ಸೇರಿಸುವುದು. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪)। -ಕ್ಷೇಪಣಮ್ -ಕ್ಷೇಪಣವತ್.

**ಪ್ರಕ್ಷೋಭ ಪ್ರಕ್ಷೋಭ** (ಪುಂ) 1. ಅಳುತ್ತಿರುವುದು, ಕ್ಷೋಭೆ ಹೊಂದುವುದು. 2. ಉದ್ರೇಕಗೊಳ್ಳುವುದು. ಪ್ರ + ಕ್ಷುಮ (ಸಂಚಲನೆ) "ಖ" (೩-೩-೧೮)।

**ಪ್ರಕ್ಷೇಪನ ಪ್ರಕ್ಷೇಪನ** (ಪುಂ) ನಾರಾಚ, ಲೋಹಮಯವಾದ ಬಾಣ. ಪ್ರಕ್ಷೇಪಣ ಕ್ಷೇಪದಂತೆ-ವಿಕ್ಷೇಪದಾ (ಅವ್ಯಯತೆ ಶಬ್ದ) "ಲ್ಯು:" (೩-೩-೧೩೪)। ಪೃಷಂ। "ಪ್ರಕ್ಷೇಪನಾಸ್ತು ನಾರಾಚಾ:" ಅಮಂ।

**ಪ್ರಕ್ಷರ ಪ್ರಕ್ಷರ** (ಪುಂ) 1. ಕುಕ್ಕುರ, ನಾಯಿ. 2. ಹೇಸರಗತ್ತೆ, (ನಂ) 3. ಕುದುರೆಯ ಕವಚ, ಕುದುರೆಯ ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಹಾಕುವ ನಿಲುವಂಗಿ. (ವಿಂ) 4. ಬಹಳ ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ, ಅತಿ ತೀವ್ರವಾದ, ಬಿಸಿಯಾದ. "ಪ್ರಕ್ಷರಂ ಹಯಸನ್ನಾಹೇ ಕುಕ್ಕುರೇಽಪಿ ಚ। ಪುಂಸಿ ತ್ರಿಷ್ವತ್ಯಂತಕ್ಷರೇ" ಮೇದಿಂ। (ಅವ್ಯಂ) 5. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ, ಅಧಿಕವಾಗಿ. "ವಸ್ತ: ಸಮಸ್ತಜನಹಾಸಕರ: ಕರಣೋಸ್ತಾವತ್ಕ್ಷರ: ಪ್ರಕ್ಷರಮುಲ್ಲಲಯಾಂಚಕಾರ" ಮಾಘಂ ೪-೭।

**ಪ್ರಕ್ಷಾ ಪ್ರಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಖ್ಯಾತಿ ಕೀರ್ತಿ, ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ. ಪ್ರ + ಕ್ಷಾ (ಪ್ರಕಟಣೆ) ಭಾವೇ "ಅಡ್" (೩-೩-೧೦೬)। 2. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಟಿಪ್ಪಣಿ. (ಉತ್ತರ ಪದವಾದಾಗ) (ವಿಂ) -ಪ್ರಕ್ಷಾ: - ಪ್ರಖ್ಯಾ: ಸದೃಶ, ಸಮಾನ. "ಗುಪ್ತಮಂತ್ರಚಯ-ಪ್ರಖ್ಯಂಗಳೋಪುರೇಂದ್ರೋಪಮೆ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ।

**ಪ್ರಕ್ಷಾತ ಪ್ರಕ್ಷಾತ** (ವಿಂ) ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾದ, ಕೀರ್ತಿವಂತನಾದ, ಖ್ಯಾತಿಯನ್ನು ಪಡೆದ. ಪ್ರ + ಕ್ಷಾ (ಪ್ರಕಟಣೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಪ್ರಕ್ಷಾತದೀಕ್ಷಂ ಪ್ರಣತಾರ್ತಿಭಜ್ಞೇ ಪಾಶಂಸ್ತದಾ ದಂತ್ಯರಿಪುಂ ಪ್ರಪನ್ನ:" ಯಾದಂ ೨೩-೩೪।

**ಪ್ರಕ್ಷಾತಿ ಪ್ರಕ್ಷಾತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಶಸ್ಸು, ಕೀರ್ತಿ. ಪ್ರ + ಕ್ಷಾ (ಪ್ರಕಟಣೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪)।

**ಪ್ರಕ್ಷಾನ್ ಪ್ರಕ್ಷಾನ್** (ನಂ) 1. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಹೊಂದುವುದು. 2. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ, ಕೀರ್ತಿ, ಯಶಸ್ಸು. ಪ್ರ + ಕ್ಷಾ (ಪ್ರಕಟಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪)।

**ಪ್ರಕ್ಷಾಪನ ಪ್ರಕ್ಷಾಪನ** (ನಂ) ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಪಡಿಸುವುದು. ಎಲ್ಲರಿಗೂ ತಿಳಿಯುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು.

**ಪ್ರಗಡ ಪ್ರಗಡ** (ಪುಂ) 1. ಮೊಳಕೆಯ ಮೇಲುಭಾಗ, ಮೊಳಕೆಯಿಂದ ಕಕ್ಷದವರೆಗಿನ ಭಾಗ. ಪ್ರತ್ಯಾಸನ್ನೋ ಗಡ: ಕಪೋಲೋಽಸ್ಯ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪ್ರಗಡ್ಡೆ - ಪ್ರಗಂಡೀ. 2. ಕೋಟೆಯ ಗೋಡೆ. 3. ವೀರರ ಶಿಖರ.

**ಪ್ರಗತ ಪ್ರಗತ** (ವಿಂ) ಮುಂದೆ ಬಂದಿರುವ, ಮುಂದೆ ಸಾಗಿದ, ಮುಂದುವರೆದ. ಪ್ರಗತಃ ಗತ:।

**ಪ್ರಗತಜಾನುಕ ಪ್ರಗತಜಾನುಕ** (ವಿಂ) ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಸೇರದೆ ವಿರಳವಾಗಿರುವ ಮೊಳಕಾಲುಗಳುಳ್ಳವನು, ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ದೂರದಲ್ಲಿರುವ ಮೊಳಕಾಲುಗಳುಳ್ಳವನು. ಪ್ರಗತೇ ವಿರಲೇ ಜಾನುನಿ ಯಸ್ಯ।



ಪ್ರಗಣ ಪ್ರಗಂಥ (ಪುಂ) ಪರ್ವಟ, ಹಪ್ಪಳ.

ಪ್ರಗಮ ಪ್ರಗಮ (ಪುಂ) 1. ಬೆಳವಣಿಗೆ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ. ಪ್ರ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೮) 2. ಸಂಚಾರ, ಓಡಾಟ.

ಪ್ರಗಮನ ಪ್ರಗಮನ (ನಂ) 1. ಪ್ರಗತಿ, ಬೆಳವಣಿಗೆ. 2. ಪ್ರತಿಮುಖಸಂಧಿಯ ಒಂದು ಅಂಗ, ಅನುರಾಗಬೀಜವು ಪರಸ್ಪರ ಸಂಭಾಷಣೆಗಳಿಂದ ಪ್ರಕಟವಾಗುವುದು ಪ್ರಗಮನ. "ಪ್ರಗಮನಂ ವಾಕ್ಯಂ ಸ್ಯಾದುತ್ತರೋತ್ತರಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೬-೯೨. "ಊರ್ವಶೀ — ಜಯತು ಜಯತು ಮಹಾರಾಜಃ | ರಾಜಾ — ಮಯಾ ನಾಮ ಜಿತಂ ಯಸ್ಯ ತ್ವಯಾಂ ಸಮುದೀಯತೇ" ವಿಕ್ರಂ ೨-೧೬. 3. ಸಂಚಾರ, ಓಡಾಟ. "ಹರೇಃ ಪ್ರಗಮನಂ ನಾಸ್ತಿ ನ ಪ್ರಮಾನಂ ಹಿಮದ್ರುಹಃ" ಭಟಿಂ ೯-೧೦೭.

ಪ್ರಗಲ್ಭ ಪ್ರಗಲ್ಭ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತಿಭೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಹೊಸ ಹೊಸದಾಗಿ ಹೊಳೆಯುವ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. ಪ್ರಗಲ್ಭತೆ — ಪ್ರ + ಗಲ್ಭ (ಘಾಙ್ರ್ಯ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಬ್ರುವತೇ ಸ್ಮ ದ್ವಯ ಉಪಸೃತ್ಯ ನರಾಶ್ಚರವತ್ ಪ್ರಗಲ್ಭಮತಿಗಮಗಿರಃ" ಮಾಘಂ ೯-೬೨. 2. ಕೆಚ್ಚಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಧೈರ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಐತಿ ಪ್ರಗಲ್ಭಂ ಪುರುಷಾಧಿರಾಜೋ ಮೃಗಾಧಿರಾಜಸ್ಯ ವಚೋ ನಿಶಮ್ಯ" ರಘುಂ ೨-೪೧. 3. ವಾಗಿ, ಧೈರ್ಯದಿಂದ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾತಾಡುವವನು. "ತತೋ ನೃಪಾಣಾಂ ಶ್ರುತ-ವಂಶವೃತ್ತಾ ಪುಂವತ್ ಪ್ರಗಲ್ಭಾ ಪ್ರತಿಹಾರರಕ್ಷಿ" ರಘುಂ ೬-೨೦. 4. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ವಿಕಾಸಹೊಂದಿದ. "ಗೃಹಃ ಪ್ರಗಲ್ಭೇಽಪಿ ವಯಸ್ಯತೋಽಸ್ಯಾಃ ತಸ್ಯೌ ನಿವೃತ್ತಾನ್ಯವರಾಭಿಲಾಷಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೪೧. 5. ಪ್ರೌಢವಾದ, ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಪಕ್ವವಾದ, ಉದಾರವಾದ ಅರ್ಥವುಳ್ಳ. "ಅಥಾಜಿನಾಷಾಢಧರಃ ಪ್ರಗಲ್ಭವಾಗ್ಜಲಶ್ಚಿವ ಬ್ರಹ್ಮಮಯೇನ ತೇಜಸಾ" ಕುಮಾಂ ೪-೩೦. 6. ಲಚ್ಚೆಯನ್ನು ತೊರೆದಿರುವ, ಸಂಕೋಚವಿಲ್ಲದ. 7. ಚತುರ, ದಕ್ಷ, ಸಮರ್ಥ. 8. ಗರ್ವದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 9. ಧೀರ, ಧೈರ್ಯಶಾಲಿ. "ಮುಕ್ತಾರ್ಪಣೇಶು ಪ್ರಕೃತಿಪ್ರಗಲ್ಭಾಃ ಸ್ವಯಂ ತರಂಗಾಧರದಾನದಕ್ಷಾಃ" ರಘುಂ ೧೩-೯. (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ಲಭಾ — ಲ್ಯಾ. (1) ಧೈರ್ಯಶಾಲಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು. (2) ಚಂಡಿ, ಗಯ್ಯಾಳ, ಬೈಗುಳದ ಹೆಂಗಸು. (3) ಮೂರು ವಿಧ ಸ್ವೀಯನಾಯಿಕೆಯರಲ್ಲೊಬ್ಬಳು. "ಸಾಪಿ ಕಥಿತಾ ತ್ರಿಭೇದಾ ಮುಕ್ತಾ ಮಧ್ಯಾ ಪ್ರಗಲ್ಭೇತಿ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೪೭. ಕಾಮದಿಂದ ಮೈಮರೆತವಳೂ ತುಂಬಿದ ಪ್ರಾಯವುಳ್ಳವಳೂ ಸಕಲವಿಧ ಸುರತಗಳಲ್ಲೂ ಪ್ರವೀಣಳೂ ಉನ್ನತ ವರ್ತನೆ ಯುಳ್ಳವಳೂ ಕಿಂಚಿಲ್ಲಜ್ಜೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದವಳೂ ನಾಯಕನ ಮೇಲೆ ಪ್ರಭಾವ ಬೀರುವವಳೂ ಆದ ಹೆಂಗಸು ಪ್ರಗಲ್ಭೆ

ಯೆನಿಸುವಳು. "ಸ್ಮರಾನ್ವಾ ಗಾಢತಾಽಽಽಯಾ ಸಮಸ್ತರತಕೋವಿದಾ | ಭಾವೋತ್ತರಾ ದರವೀಡಾ ಪ್ರಗಲ್ಭಾಕ್ರಾಂತವಲ್ಲಭಾ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೬೦.

ಪ್ರಗಲ್ಭತಾ ಪ್ರಗಲ್ಭತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಧೈರ್ಯ, ಕೆಚ್ಚು. 2. ಚಾತುರ್ಯ, ಬುದ್ಧಿವಂತಿಕೆ. ಪ್ರಗಲ್ಭಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) | "ಆರ್ಯಾಪ್ಯಽನ್ವತೀ ತತ್ರ ವ್ಯಾಪಾರಂ ಕರ್ತುಂ ಮಹಂತಿ | ಪ್ರಾಯೇನೈವ ವಿಧೇ ಕಾರ್ಯಂ ಪುರಂದ್ರೀಣಾಂ ಪ್ರಗಲ್ಭತಾ" ಕುಮಾಂ ೬-೩೨. 3. ಉತ್ಸಾಹ. 4. ಗರ್ವ, ಸೊಕ್ಕು. 5. ಹಿರಿಮೆ. 6. ಪ್ರತಿಭೆಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ.

ಪ್ರಗಾಢ ಪ್ರಗಾಢ (ವಿಂ) 1. ಅತಿಶಯವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅಧಿಕವಾದ. 2. ದೃಢವಾದ, ಬಲವಾದ. "ತತ್ರಾಂತರಿಕ್ಷೇ ಬಾಣಾಣಾಂ ಪ್ರಗಾಢಾಣಾಂ ವಿಶಾಂಪತೇ" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ | 3. ಕಷ್ಟವಾದ, ಕ್ಲಿಷ್ಟವಾದ. (ಅವ್ಯಂ) 4. ದೃಢವಾಗಿ, ಬಲವಾಗಿ. 5. ಕಷ್ಟದಿಂದ. 6. ಅಧಿಕವಾಗಿ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ.

ಪ್ರಗಾತ್ ಪ್ರಗಾತ್ (ವಿಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ಗಾಯಕ, ಉತ್ತಮವಾಗಿ ಹಾಡುವವನು. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಗಾಯತಿ — ಗಂ (ಕವ್ಯ) "ತತ್" (೩-೧-೧೩೩) | "ತತೋ ಗೋಪಾಃ ಪ್ರಗಾತಾರಃ ಕುಶಲಾ ನೃತ್ಯವಾದಿತೇ" ಭಾಂ ವನಂ | ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪) | — ಗಾತ್ರೀ — ಗಾತ್ರೀ.

ಪ್ರಗೀತ ಪ್ರಗೀತ (ನಂ) 1. ಉತ್ತಮವಾದ ಗಾನ, ಒಳ್ಳೆಯ ಸಂಗೀತ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹಾಡುವುದು. ಪ್ರಕೃಷ್ಠ ಗೀತಮ್ | (ವಿಂ) 2. ಉತ್ತಮವಾಗಿ ಹಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಗೀತಮ್ |

ಪ್ರಗುಣ ಪ್ರಗುಣ (ವಿಂ) 1. ಉತ್ತಮಗುಣಗಳುಳ್ಳ, ಯಜು ಮಾರ್ಗದ, ಪ್ರಾಮಾಣಿಕನಾದ, ಮಂಚನೆ ಮೋಸಗಳಿಲ್ಲದ. ಪ್ರಕೃಷ್ಟೋ ಗುಣೋ ಯಸ್ಯ | "ಕಲವಿತರಣದಕ್ಷಂ ಪಕ್ಷಪಾತಾನಮಿಶ್ರಂ ಪ್ರಗುಣಮನುವಿಧೇಯಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ಪದ್ಮಾಸಹಾಯಮ್" ದಯಾಣಂ | 2. ಅನುಗುಣವಾದ, ಅನುರೂಪವಾದ, ತಕ್ಕದಾದ. "ಗರಿಯಾನನ್ಯೋನ್ಯಪ್ರಗುಣಗುಣನಿರ್ಮಾಣನಿಪುಣೋ ವಿಚಾತುರ್ವ್ಯಾಪಾರಃ ಕಲತು ಚ ಮನೋಜ್ಞಶ್ಚ ಭವತು" ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೯. 3. ಉತ್ತಮ ಸ್ಥಿತಿಯುಳ್ಳ. "ಶ್ರಮಜಯಾತ್ ಪ್ರಗುಣಂ ಚ ಕರೋತ್ಯಸೌ ತನುಮತೋಽನು-ಮತಃ ಸಚಿವೈರ್ಯಯೋ" ರಘುಂ ೯-೪೯. 4. ದಕ್ಷ, ಚತುರ, ಸಮರ್ಥ. "ಪ್ರಾಣತ್ರಾಣಪ್ರಗುಣಮಭವಂ ಮತ್ಪರಿವೃಜ್ಞಕಲ್ಪಃ" ಮಾಲತೀಂ ೯-೪೭. 5. ಯಜುವಾದ, ವಕ್ರವಲ್ಲದ.

ಪ್ರಗುಣನ ಪ್ರಗುಣನ (ನಂ) 1. ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು. 2. ಕ್ರಮ ಪಡಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ಗುಣ (ಆಮನ್ತ್ರಣ) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |

ಪ್ರಗುಣಿತ ಪ್ರಗುಣಿತ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಧಿಕ ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಗುಣ (ಆಮನ್ತ್ರಣ) + ಣಿच् "ಕ್ತಃ"



(೩-೨-೧೦೨) 2. ಪುನಃ ಪುನಃ ಅವ್ಯತಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಅಭ್ಯಾಸಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. "ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞೋಪಿ ಪ್ರಗುಣಿತನಯೋಪ್ಯಾತ್ತಬೋಧೋಪಿ ಬಾಡಮ್ ಸಂಸಾರೇಽಸ್ಮಿನ್ ಭವತಿ ವಿರಲೋ ಭಾಜನಂ ಸದಗತೀನಾಮ್" ಭರ್ತುಂ ೨-೭೭.

**ಪ್ರಗೃಹ್ಯ ಪ್ರಗೃಹ್ಯ** (ನಂ) ಸ್ವರಸಂಧಿ ಕಾರ್ಯವು ಬೃಂದಿರುವ ಪದ, ಈಕಾರ ಉಕಾರ ಮತ್ತು ಏಕಾರಾಂತ ದ್ವಿವಚನದ ಪದ. "ಇದ್ವೇದ್ದಿವಚನಂ ಪ್ರಗೃಹ್ಯಮ್" ಪಾಂ ಸೂಂ ೧-೧-೧೧. ಹರಿ ಏತೌ, ವಿಷ್ಣು ಇಮೌ, ಗಂಧೇ ಅಮ್, ಪಚೇತೇ ಇಮೌ ಇತ್ಯಾದಿ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಗೃಹ್ಯಸಂಜ್ಞೆಯಿರುವುದರಿಂದ ಸಂಧಿಕಾರ್ಯವು ಬೃಂದಿರುವುದಿಲ್ಲ. "ಪ್ಲುತಪ್ರಗೃಹ್ಯಾ ಅಚಿ ನಿಯಮ್" ಪಾಂ ಸೂಂ ೬-೧-೧೨೫. ಪ್ರ+ಗ್ರಹ (उपादाने) "क्यप्" (೩-೧-೧೧೯).

**ಪ್ರಗೇ** (ಅವ್ಯಂ) ಪ್ರಾತಃಕಾಲ, ಪ್ರಭಾತ, ಹಗಲಿನ ಪ್ರಾರಂಭಕಾಲ. ಪ್ರಗೀಯತೇಽತ್ರ — ಪ್ರ + ಗೇ (ಶಬ್ದೇ) "ಕೇ". "इत्थं रथाश्वेभनिषादिनां प्रगे गणो नृपाणामथ तोरणाद्वहिः" ಮಾಘಂ ೧೨-೧.

**ಪ್ರಗೇತನ** (ವಿಂ) ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿರುವ. ಪ್ರಗೇ ಭವಃ "ट्युः" (೪-೩-೨೩). ತುಡ್ ಚ.

**ಪ್ರಗೇನಿಶ** (ವಿಂ) ಪ್ರಾತಃ ಕಾಲವೂ ರಾತ್ರಿಯಂತಿರುವ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿ ನಿದ್ರಿಸುವ. ಪ್ರಗೇ ನಿಶೇವ ನಿद्रಾಹೇತುಃ यस्य । प्रगे शेते इति वा । "उत्सूर्य-शायिनश्चासन् सर्वे चासन् प्रगेशयाः" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೨೩೫-೮೬.

**ಪ್ರಗ್ರಹ ಪ್ರಗ್ರಹ** (ಪುಂ) 1. ಕಿರಣ, ರಶ್ಮಿ. ಪ್ರ + ಗ್ರಹ (उपादाने) "अप्" (೩-೩-೫೮). "इन्द्रोः प्राच्यां भवति तरणः प्रग्रहः किं प्रतीच्याम्" 2. ಕುದುರೆಯ ಹಗ್ಗ, ಕುದುರೆಯ ಕಡಿವಾಣ. "उत्तेरुत्तालधुरारवं द्रुताः श्लथीकृतप्रग्रहमवतां व्रजाः" ಮಾಘಂ ೧೨-೩೧. 3. ತಕ್ಕಡಿಯ ದಾರ. ಪ್ರ + ಗ್ರಹ (उपादाने) "अप्" (೩-೩-೫೩). 4. ವಿಷ್ಣು. ಅರ್ಜುನಃ ರಶ್ಮಿಮಿರಿವ ಪ್ರಗ್ರಹತೇ ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಗೃಹ್ಯತೇ ಸಾರಥಿನಾನೇನ — ಪ್ರ + ಗ್ರಹ (उपादाने) करं "अप्" (೩-೩-೫೮). "पार्थः सारथिनानेन रश्मिभिर्यः प्रगृह्यते । स प्रग्रहः समाख्यातः सप्तवर्ण उदाहृतः" इति निरुक्तिः । "प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रः" ವಿಂಸಂ. 5. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 6. ಇಂದ್ರಿಯಗಳ ನಿಗ್ರಹ, ತಡೆ, ಹತೋಟಿ. 7. ಭುಜ, ಬಾಹು, ತೋಳು. 8. ಬಿಗಿಯಾಗಿ ಹಿಡಿಯುವಿಕೆ, ಭದ್ರವಾಗಿ ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. 9. ಪೂಜೆ. 10. ಕಕ್ಕಿಗಿಡ. 11. ಅವಲಂಬನ, ಆಶ್ರಯ, ಆಸರೆ. "नृपेष्वथ प्रणष्टेषु जगत्यप्रग्रहाः प्रजाः ।

क्षणेन निर्वृते चैवं हत्वाचान्योन्यमाहवे" हरिवं० । 12. ಕಣಿಗಿಲೆ ಗಿಡ. 13. ಧಾರಣ, ಧರಿಸುವುದು, ತೊಡುವುದು. 14. ಹಸು ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ. 15. ತಿರ್ಯಕ್ ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನು ಪಳಗಿಸುವುದು. 16. ಬೃಂದಿ, ಸೆರೆಯಾಳು, ಬೈದಿ. "तुलासूत्रेऽश्वरश्मौ प्रग्राहः प्रग्रहः पुनः । तयोश्च संयमोद्योतपूजावन्द्यार्चवंधेषु च" ವೈಜಂ. 17. ಭಾವೇ "ल्युट्" (೩-೩-೧೧೫) ।-ಗ್ರಹಣಮ್ - ಗ್ರಹಣಮ್.

**ಪ್ರಗ್ರಾಹ ಪ್ರಗ್ರಾಹ** (ಪುಂ) 1. ಕುದುರೆಯ ಕಡಿವಾಣ, ಕುದುರೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ. "अप्रग्राहैरिवादित्यो वाजिभिर्दूरपातिभिः" भट्टि० ೭-೫೨. 2. ಹಿಡಿಯುವುದು, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಲಾಭದ ಆಸೆಯಿಂದ ಹಿಡಿದು ಕೊಳ್ಳುವುದು. ಪ್ರ+ಗ್ರಹ (उपादाने) "घञ्" (೩-೩-೪೬). "पात्रप्रग्राहेण चरति भिक्षुः" सि० कौ० । "प्रग्राहैरिव पात्राणामन्वेष्ट्या मैथिली कृतैः" भट्टि० ೭-೪೪. 3. ತುಲಾಸೂತ್ರ, ತಕ್ಕಡಿಯ ದಾರ. ಪ್ರ + ಗ್ರಹ ವಾ "घञ्" (೩-೩-೫೨). "तुलाप्रग्राहेण चरति वणिक्" सि० कौ० । 4. ರಶ್ಮಿ, ಹಗ್ಗ. 5. ಕಿರಣ. "प्रग्राहस्तु तुलासूत्रे वृषादिप्रग्रहेऽपि च" मेदि० ।

**ಪ್ರಗ್ರೀವ ಪ್ರಗ್ರೀವ** (ಪುಂ) 1. ವಾತಾಯನ, ಗವಾಕ್ಷ, ಕಿಟಕಿ. 2. ಮನೆಯ ಸುತ್ತಲೂ ಹಾಕಿರುವ ಮರದ ಕಟ್ಟಕಟ್ಟಿ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಾ ಗ್ರೀವಾ ಯಸ್ಮಿನ್. 3. ಅಶ್ವಶಾಲೆ. 4. ಮರದ ತುದಿ, ವೃಕ್ಷದ ಅಗ್ರಭಾಗ. 5. ಪ್ರಾಸಾದ, ವಾಸಕ್ಕೆ ಸುಖವಾಗಿರುವ ಉಪ್ಪರಿಗೆ ಮನೆ. 6. ಕಲಶ, ಘಟ, ಬಿಂದಿಗೆ. 7. ಕಂಠ, ಕುತ್ತಿಗೆ. "प्रग्रीवमस्त्री कलशे ग्रीवाप्रासादयो-रपि" ವೈಜಂ. 8. ಪ್ರಸಾದ, ಸ್ವಚ್ಛತೆ. ನಾನಾರ್ಥ ರತ್ನ ಮಾಲೆಯಲ್ಲಿ "ಪ್ರಾಸಾದ" ಪದಕ್ಕೆ ಬದಲಾಗಿ "ಪ್ರಸಾದ" ಎಂದು ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. "प्रग्रीवमस्त्री ग्रीवायां प्रसादे कलशेऽपि च" नानार्थर० । (ವಿಂ) 9. ಸುಂದರವಾದ ಕಂಠವುಳ್ಳ, ಲಕ್ಷಣವಾದ ಕುತ್ತಿಗೆಯುಳ್ಳ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಾ ಗ್ರೀವಾ ಯಸ್ಯ ।

**ಪ್ರಗ್ರಹ ಪ್ರಗ್ರಹ** (ಪುಂ) ಉಪದೇಶ, ಬೋಧನೆ.

**ಪ್ರಥಮ ಪ್ರಥಮ ಪ್ರಥಮ** (ಪುಂ) 1. ಮನೆಯ ಹೊರಬಾಗಿಲಿನ ಸಮೀಪದ ಕೈಸಾಲೆ, ತಲೆ ಬಾಗಿಲಿನ ಬಳಿ ಇರುವ ಅಂಗಳ. ಪ್ರವಿಶದ್ವಿಜನೇಃ ಪಾದೇಃ ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಹನ್ಯತೇ — ಪ್ರ + ಹನ (हिंसागत्योः) कर्म० वा "अप्" (೩-೩-೭೯). ಪಕ್ಷೇ ವೃದ್ಧಿಃ. ನಿಪಾಂ. 2. ತಾಮ್ರ ಲೋಹದ ಬಿಂದಿಗೆ. 3. ಕಬ್ಬಿಣದ ದೊಡ್ಡ ಹಾರೆ. "प्रथम-स्ताम्रकुम्भे स्यादलित्ते लोहमुद्गरे" मेदि० ।



**ಪ್ರವಸ ಪ್ರಕೃಷ್ಠ (ಪುಂ)** 1. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ತಿನ್ನುವುದು, ಹೊಟ್ಟೆ ಬಾಕತನ. 2. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಅಸ್ತಿ — ಪ್ರ + ಅದ (ಮಕ್ಷಣ) "ಅಪ್" (3-3-49)। ಅದೇ: ಖಸ್ತು ಆದೇಶ: (2-4-36)।

**ಪ್ರವಾತ ಪ್ರಕೃಷ್ಠ (ಪುಂ)** 1. ಹೊಡೆತ, ಏಟು. ಪ್ರ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:) ಭಾವೇ "ಘ" (3-3-14)। 2. ಯುದ್ಧ, ಸಂಗ್ರಾಮ, ಕಾಳಗ. ಪ್ರ + ಹನ ಅಧಿಂ "ಘ" (3-3-121)।

**ಪ್ರವುಣ ಪ್ರಕೃಷ್ಠ (ಪುಂ)** ಅತಿಥಿ. ಪ್ರ + ವುಣ (ಭ್ರಮಣ) "ಕ:" (3-1-134)।

**ಪ್ರವೂರ್ಣ ಪ್ರಕೃಷ್ಠ (ಪುಂ)** 1. ಅತಿಥಿ. (ವಿಂ) 2. ತಿರುಗಾಡುತ್ತಿರುವ, ಅಲೆದಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ವುಣ (ಭ್ರಮಣ) "ಅಚ್" (3-1-134)।

**ಪ್ರವಕ್ರ ಪ್ರಕೃಷ್ಠ (ನಂ)** ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ ಸೈನ್ಯ, ಹೊರಟಿರುವ ಸೇನೆ. ಪ್ರಸ್ಥಿತಂ ಚಕ್ರಮ್ ಸೈನ್ಯಮ್।

**ಪ್ರವಕ್ಷಸ್ ಪ್ರಕೃಷ್ಠ (ಪುಂ)** 1. ಬೃಹಸ್ಪತಿ. ಪ್ರ + ವಕ್ಷಿಡ್ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಅಸಿ:" (ತಂ 4-2-32)। 2. ಬೃಹಸ್ಪತಿ ಗ್ರಹ.

**ಪ್ರವಂಡ ಪ್ರಕೃಷ್ಠ (ಪುಂ)** 1. ಬಿಳಿಯ ಕಣಗಿಲೆಗಿಡ. 2. ಬಹಳ ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ, ಬಹಳ ಕ್ರೂರವಾದ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಚಂಡ:। "ಪೌಲಸ್ತ್ಯಾಪಜಯಪ್ರವಂಡಚರಿತೇ ಯ: ಕಾರ್ತವೀರ್ಯೋ ಮುನಿ:" ಮಂವಿಂ 2-13। 3. ಭಯಂಕರವಾದ, ದಿಗಿಲುಹುಟ್ಟಿಸುವ. 4. ಸಹಿಸಲಾಗದ, ತಾಳಲು ಸಾಧ್ಯವಲ್ಲದ. 5. ಪ್ರತಾಪ ಶಾಲಿಯಾದ. 6. ಹೆಚ್ಚು ಕೋಪಗೊಂಡ, ಕೋಪದಿಂದ ಕೆರಳಿದ. 7. ಧೈರ್ಯಶಾಲಿ, ಕಿಚ್ಚಿದೆಯ. 8. ಬಹಳ ಜೋರಾದ, ರಭಸದ. 9. ಬಲಶಾಲಿ, ಬಲಿಷ್ಠ, ಅಧಿಕ ಬಲವುಳ್ಳವನು.

**ಪ್ರವಯ ಪ್ರಕೃಷ್ಠ (ಪುಂ)** 1. ಸಮೂಹ, ರಾಶಿ, ಗುಂಪು. ಪ್ರ + ವಿನ್ (ವಯನೇ) "ಅಚ್" (3-3-46)। "ಪ್ರಸನ್ನ: ಪುಷ್ಪಾನಾಂ ಪ್ರವಯ ಇವ ಸರ್ವಸ್ಯ ಸುಖದ:" ಮಂ ವಿಂ 2-14। 2. ಗಿಡದಲ್ಲಿರುವ ಪುಷ್ಪ ಫಲಗಳನ್ನು ಕೋಲು ಮುಂತಾದ ಸಾಧನಗಳಿಂದ ಕೀಳುವುದು. "ವೃಕ್ಷಾಗ್ರಸ್ಥಾನಾಂ ಫಲಾನಾಂ ಯಥಾ ಪ್ರವಯಂ ಕರೋತಿ" ಸಿಂ ಕೌಂ (3-3-40) 3. ಗಿಡದಲ್ಲಿರುವ ಪುಷ್ಪ ಫಲಗಳನ್ನು ಕಳ್ಳತನದಿಂದ ಕೈಯಿಂದ ಕೀಳುವುದು. "ಪುಷ್ಪಪ್ರವಯಂ ಚೋರೇಣ" "ಸಿಂ ಕೌಂ (3-3-40)। 4. ಶಿಥಿಲವಾದ ಸಂಯೋಗ, ಸಡಿಲವಾಗಿ ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ. "ಸಂಖ್ಯಾತ: ಪರಿಮಾಣಾಂ ಪ್ರವಯಾದಪಿ ಜಾಯತೇ। ಪ್ರವಯ: ಶಿಥಿಲಾಖ್ಯೋ ಯ: ಸಂಯೋಗಸ್ತೇನ ಜನ್ಯತೇ" ಭಾಷ್ಯಂ। ಪ್ರ + ವಿನ್ ಅಸ್ತೇಯೇ ಹಸ್ತಾದಾನೇ "ಘ" (3-3-40)।

(3-3-40)। -ಪ್ರವಾಯ: -ಪ್ರವಾಯ: ಕೈಯಿಂದ ಗಿಡದ ಪುಷ್ಪ ಫಲಗಳನ್ನು ಬಿಡಿಸುವುದು. "ಹಸ್ತಾದಾನೇ ಚರಸ್ತೇಯೇ"। ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)। -ವಯನಮ್ -ಚಯನಮ್.

**ಪ್ರವರ ಪ್ರಕೃಷ್ಠ (ಪುಂ)** 1. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. ಪ್ರವರತಯಸ್ಮಿನ್ — ಪ್ರ + ವರ (ಗತೌ) ಅಧಿಂ "ಘ:" (3-3-119)। ನಿಪಾಂ। 2. ಪ್ರಸಾರವಾಗುವುದು, ಹರಡುವುದು, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯೂ ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು. "ಮತ್ಯದ್ವಿಪ್ರವರಮಸ್ತ್ರವಿಚಾರಂ ಚಾರುಶಿಷ್ಯಜನತಾಮನುಶಿಷ್ಯ" ನೆಪಂ 21-6।

**ಪ್ರವರತ್ ಪ್ರಕೃಷ್ಠ (ವಿಂ)** ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವ, ತಿರುಗಾಡುತ್ತಿರುವ, ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ವರ (ಗತೌ) "ಶತ್" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-6)। -ವರಂತಿ -ಚರಂತಿ.

**ಪ್ರವರಿತ ಪ್ರಕೃಷ್ಠ (ವಿಂ)** 1. ಮುಂದೆ ಹೊರಟಿರುವ, ಮುಂದೆ ಸಾಗಿರುವ. ಪ್ರ + ವರ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (3-4-62)। 2. ಅನುಸರಿಸಿಬಂದ, ಮುಂದೆ ನಡೆದು ಬಂದ, ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ಮುಂದೆ ಸಾಗಿದ (ಕಾರ್ಯ)।

**ಪ್ರವಲ ಪ್ರಕೃಷ್ಠ (ವಿಂ)** 1. ಚಂಚಲವಾದ, ನಡುಗುವ. ಪ್ರ + ವಲ (ಕಂಪನೇ) "ಅಚ್" (3-1-134)। "ಯ ಉಪಲಾಕ್ಷಿ ಪ್ರವಲೇವಿಲೋಚನೇಸ್ತವಾಕ್ಷಿಸಾದೃಶ್ಯಮಿವ ಪ್ರಯುಜ್ಯತೇ" ಕುಮಾಂ 4-34। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನಡೆಯುವ. 3. ಬಳಕೆಯಲ್ಲಿರುವ, ರೂಢಿಯಲ್ಲಿರುವ, ವ್ಯವಹಾರದಲ್ಲಿರುವ.

**ಪ್ರವಲತ್ ಪ್ರಕೃಷ್ಠ (ವಿಂ)** 1. ತಿರುಗಾಡುತ್ತಿರುವ, ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವ, ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ವಲ (ಕಂಪನೇ) "ಶತ್" (3-2-124)। "ಏತಸ್ಮಿನ್ ಪ್ರವಲಾಕಿನಾಂ ಪ್ರವಲತಾಮುದ್ವೇಜಿತಾ: ಕೂಜಿತೇ:" ತಂ ರಾಂ 2-29। 2. ಅಲಗಾಡುತ್ತಿರುವ, ಅಲ್ಲಾಡುತ್ತಿರುವ. "ಪ್ರವಲತಾಲಾಪಿಕಲಶಹ್ವಕಸ್ವನಾ" ಮಾಘಂ 13-41। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-6)। -ವಲಂತಿ -ಚಲಂತಿ.

**ಪ್ರವಲಾಕ ಪ್ರಕೃಷ್ಠ (ಪುಂ)** 1. ನವಿಲಿನ ಗರಿ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಚಲತಿ-ವಲ (ಕಂಪನೇ) "ಆಕ:" (ತಂ 4-44)। 2. ಸರ್ಪ. 3. ಬಾಣದ ಏಟು. 4. ಧನುರ್ವಿದ್ಯೆ. "ಪ್ರವಲಾಕ: ಶರಾಘಾತೇ ಶಿಖಂಡೇ ಚ ಭುಜಙ್ಗಮೇ" ಮೇದಿಂ।

**ಪ್ರವಲಾಕಿನ್ ಪ್ರಕೃಷ್ಠ (ಪುಂ)** ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಪ್ರವಲಾಕೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114)। "ಏತಸ್ಮಿನ್ ಪ್ರವಲಾಕಿನಾಂ ಪ್ರವಲತಾಮುದ್ವೇಜಿತಾ: ಕೂಜಿತೇ:" ತಂ ರಾಂ 2-29।

**ಪ್ರವಲಾಯಿತ ಪ್ರಕೃಷ್ಠ (ವಿಂ)** ತೂಗಡಿಸಿದವನು, ತೂಗಡಿಕೆಯಿಂದ ಅಲ್ಲಾಡಿದವನು. ಪ್ರವಲ ಇವಾಚರತಿ —



ಪ್ರ+ಚಲ (ಕಂಪನೆ) "ಕ್ಯಡ್" (೩-೧-೧೧)। ಪ್ರಚಲಾಯ ಕರ್ತಂ  
 "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ವೃಣಿತ: ಪ್ರಚಲಾಯಿತ:" ಅಮಂ।  
 ಪ್ರಚಲಿತ ಪ್ರಚಲಿತ (ವಿಂ) 1. ಅಲಗಾದಿದ, ಕ್ಷೋಭೆ  
 ಗೊಂಡ. ಪ್ರ+ಚಲ (ಕಂಪನೆ) ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)।  
 "ವಿಕೌತುಕ: ಪ್ರಕೃತಮಹಾಪಲವೇಭವತ್ ವಿಶ್ವಜ್ವಲಪ್ರಚಲಿತ-  
 ಸಿಂಧುವಾರಿಣಿ" ಮಾಧಂ ೧೭-೩೦। 2. ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹೊರಟಿ  
 ರುವ, ಮುಂದೆ ಸಾಗಿದ. (ನಂ) 3. ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹೊರ  
 ಡುವುದು, ಮುಂದೆ ಸಾಗುವುದು. ಪ್ರ+ಚಲ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:"  
 (೩-೩-೧೧೪)। "ಪ್ರಚಲಿತೇ ಚಲಿತಂ ಸ್ಥಿತಮಾಸ್ಥಿತೇ"  
 ಕಿರಾಂ ೧೮-೧೦।

ಪ್ರಚಾಯ ಪ್ರಚಾಯ (ಪುಂ) "ಪ್ರಚಯ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.  
 ಪ್ರಚಾಯಿಕಾ ಪ್ರಚಾಯಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕ್ರಮವಾಗಿ ಗಿಡ  
 ದಿಂದ ಹೂವನ್ನು ಬಿಡಿಸಿ ಶೇಖರಿಸಿ ಇಡುವುದು, ಪ್ರ + ಚಿನ್  
 (ಚಯನೆ) ಭಾವೇ "ಫ್ವುಕ್" (೩-೩-೧೧೧)। 2. ಹೂವನ್ನು  
 ಬಿಡಿಸಿ ಶೇಖರಿಸಿಡುವ ಹೆಂಗಸು. ಪ್ರ + ಚಿನ್ "ಫ್ವುಲ್"  
 (೩-೧-೧೩೩)।

ಪ್ರಚಾರ ಪ್ರಚಾರ (ಪುಂ) 1. ಓಡಾಡುವುದು, ಸಂಚರಿಸು  
 ವುದು, ನಡೆಯುವುದು. ಪ್ರ + ಚರ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಫ್ವುಕ್"  
 (೩-೩-೧೮)। "ನಿಷ್ಕಂಪವೃಕ್ಷಂ ನಿಮೃತದ್ವಿರೇಫಂ ಮುಕಾಂಡಜಂ  
 ಶಾಂತಮಗ್ರಪ್ರಚಾರಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೪೨। 2. ಹಸು ಮೊದ  
 ಲಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳು ಮೇಯುವ ಪ್ರದೇಶ. "ಪರಿಶ್ರಾಂತ:  
 ಪಿಪಾಸಾರ್ತ: ಆಸಸಾದ ಮುನಿ ವನೇ। ಗವಾಂ ಪ್ರಚಾರೇವಾಸೀನಂ ಫೇನಮಾ-  
 ಪಿಬತಾಂ ಪಯ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೪೦-೧೭। 3. ವ್ಯವಹಾರದಲ್ಲಿರು  
 ವುದು, ಉಪಯೋಗದಲ್ಲಿರುವುದು, ಬಳಕೆಯಲ್ಲಿರುವುದು.  
 4. ಪ್ರಚಾರಪಡಿಸುವುದು, ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಶ್ರುತಪಡಿಸುವುದು,  
 ಎಲ್ಲಾಕಡೆಗೂ ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವುದು. 5. ಪ್ರಕಾಶ. 6.  
 ಕುದುರೆಯ ನೇತ್ರ ರೋಗ. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।  
 -ಚಾರಣಮ್ -ಚಾರಣಮ್. "ಅಧೀತಿಬೋಧಾಚರಣಪ್ರಚಾರಣ:  
 ದಶಾಶ್ವತಸ್ತ: ಪ್ರಣಯಸ್ತುಪಾಧಿಭಿ:" ನೆಪಂ ೧-೪।

ಪ್ರಚಾರಿತ ಪ್ರಚಾರಿತ (ವಿಂ) 1. ನಡೆಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿರುಗಾಡಿಸ  
 ಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಚರ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।  
 2. ಪ್ರಸಿದ್ಧಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಹಿರಂಗವಾಗಿ ಎಲ್ಲರಿಗೂ  
 ತಿಳಿಯುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪ್ರಚಾಲನ ಪ್ರಚಾಲನ (ನಂ) ಅಲಗಾಡಿಸುವಿಕೆ, ಕದಲಿಸು  
 ವಿಕೆ. ಪ್ರ + ಚಲ (ಕಂಪನೆ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।  
 "ಮಾಮ, ಕಿಮನೇನ ವೃಥಾನರ್ಥಪ್ರಚಾಲನೇನ" ಪೃಷ್ಠಂ ೫।

ಪ್ರಚಿಕೀರ್ಷಾ ಪ್ರಚಿಕೀರ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪನ ಮಾಡಲು  
 ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಪ್ರ + ಕೃ (ಕರಣೆ) + ಸನ್ "ಅ:"  
 (೩-೩-೧೦೨)।

ಪ್ರಚಿಕೀರ್ಷಾ ಪ್ರಚಿಕೀರ್ಷಾ (ವಿಂ) ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪನ ಮಾಡಲು  
 ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಪ್ರ + ಕೃ + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೨-೧೬೮)।  
 ಪ್ರಚಿತ ಪ್ರಚಿತ (ವಿಂ) 1. ಶೇಖರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ  
 (ಪುಷ್ಪ). ಪ್ರ + ಚಿನ್ (ಚಯನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।  
 2. ಪ್ರಚಯಸ್ವರದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 3. ಅಧಿಕಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
 ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರಚಿತಗುಣಾ ಮಣಿಭಿ: ಸ್ಯಮಂತಕಾಶೈ:"  
 ವಾದಂ ೨೪-೫।

ಪ್ರಚಿತಕ ಪ್ರಚಿತಕ (ಪುಂ) ದಂಡಕದ ಒಂದು ಭೇದ. ಪ್ರತಿ  
 ಪಾದದಲ್ಲೂ ಎರಡು ನಗಣಗಳ ಮುಂದೆ ಏಳು ಯಗಣ  
 ಗಳಿದ್ದಲ್ಲಿ "ಪ್ರಚಿತಕ:" ಎಂಬ ದಂಡಕವಾಗುವುದು.  
 "ಪ್ರಚಿತಕಸಮಭಿಧೌ ಧೀರಧೀಮಿ: ಸ್ಮೃತೌ ದಂಡಕೌ ನದ್ವಯಾದುತ್ತರೇ:  
 ಸಪ್ತಭಿರ್ಯ:" ವುಂ ೨೦।

ಪ್ರಚೀಯಮಾನ ಪ್ರಚೀಯಮಾನ (ವಿಂ) ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದು  
 ತಿರುವ, ಬೆಳೆಯುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಚಿನ್ (ಚಯನೆ) ಕರ್ತಂ  
 "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಕ್ರಮೇಣ ನಿರಸ್ತೀರ್ಯ ಚ ದೋಹದ-  
 ವ್ಯಥಾಂ ಪ್ರಚೀಯಮಾನಾವಯವಾ ರರಾಜ ಸಾ" ರಘುಂ ೩-೭।

ಪ್ರಚುರ ಪ್ರಚುರ (ಪುಂ) 1. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ. (ವಿಂ) 2.  
 ಅನೇಕ, ಬಹಳ, ಹೇರಳ. ಪ್ರಚುರತಿ — ಪ್ರ + ಚುರ (ಸ್ತೇಪೆ)  
 "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫)। "ನಿತ್ಯವ್ಯಯಾ ಪ್ರಚುರನಿತ್ಯಧನಾಗಮಾ  
 ಚ ವಾರಾಙ್ಗನೇವ ನೃಪನೀತಿರನೇಕರೂಪಾ" ಮೃತಂ ೧-೩೮।  
 ಚುರಾದಿನಾಂ ನಿಜವೈಕಲ್ಪಿಕ:। 3. ದೊಡ್ಡದಾದ, ಹಿರಿದಾದ.  
 (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 4. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ, ಹೇರಳವಾಗಿ. "ಪ್ರಚುರಾಧಿಗತಾಙ್ಗ-  
 ನಿವೃತ್ತಿಂ ಪರಿತಸ್ತವಾಂ ಖಲು ವಿಗ್ರಹೇಣ ಸ:" ಮಾಧಂ ೧೬-೩।

ಪ್ರಚುರಪುಷ್ಪ ಪ್ರಚುರಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) ಚೋರ, ಕಳ್ಳ.  
 ಪ್ರಚುರಾಸೌ ಪುಷ್ಪಶ್ಚ। "ಚೌರ: ಶಕ್ತೀವರ್ಣಕ: ಸ್ಯಾತ್  
 ಕುಮ್ಭಿಲಶ್ಚ ಪ್ರಚುರಪುಷ್ಪ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಪ್ರಚುರೀಕರಣ ಪ್ರಚುರೀಕರಣ (ನಂ) 1. ಶೇಖರಿಸಿಡುವುದು,  
 ರಾಶಿಹಾಕುವುದು. 2. ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು, ಬೆಳೆಸುವುದು.

ಪ್ರಚುರೀಕೃತ ಪ್ರಚುರೀಕೃತ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೆಳೆಸ  
 ಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಧಿಕಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪ್ರಚುರೀಭೂತ ಪ್ರಚುರೀಭೂತ (ವಿಂ) ಅಧಿಕವಾಗಿರುವ,  
 ಬೆಳೆದಿರುವ, ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿರುವ.

ಪ್ರವೇಶ ಪ್ರವೇಶ (ಪುಂ) 1. ವರಾಣ. ಪ್ರವೇಶತಿ — ಪ್ರ +  
 ಚಿತಿ (ಸಂಜ್ಞಾನೆ) "ಅಸುನ್" (೩ಂ ೪-೧೮೯)। "ಕಿಂಚಾಯ-  
 ಮರಿದುರ್ವಾರ: ಪಾಣಿ ಪಾಶ: ಪ್ರವೇಶತ:" ಕುಮಾಂ ೨-೨೧।  
 2. ಒಬ್ಬ ಮುನಿ, ಹತ್ತು ಪ್ರಜಾಪತಿಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. "ಮರೀಚಿ-  
 ಮತ್ಯಜ್ಞಿರಸೌ ಪುಲಸ್ತ್ಯಂ ಪುಲಹಂ ಕೃತುಮ್। ಪ್ರವೇಶತಂ ವಸಿಷ್ಠಂ ಚ  
 ಭಗ್ನಂ ನಾರದಮೇವ ಚ" ಮನ್ವಂ ೧-೩೫। 3. (ವಿಂ) ಸಂತೋಷ



ಗೊಂಡ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಂ ಚೇತೋಽಸ್ಯ। “ಪ್ರವೇತಾಃ  
ಪಾಶಿನಿ ಮನು ಸಂಪ್ರಹೃಷ್ಠಹೃದಿ ತ್ರಿಷು” ಮೇದಿಂ।

ಪ್ರವೇತ್ ಪ್ರಚೇತ್ಯ (ಪುಂ) ಸಾರಥಿ, ರಥವನ್ನು ನಡೆಸುವವನು.  
ಪ್ರವೇತತಿ ಯುದ್ಧಾದಿस्थಾನೇ ವೀರಾನ್ ಸಂಜಿನೋತಿ — ಪ್ರ + ಚಿತಿ  
(ಸಂಜಾನೇ) “ತೃಚ್” (೩-೧-೧೩೩)।

ಪ್ರವೇಲಕ ಪ್ರಚೇಲಕ (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ  
ವೇಲತಿ ಗಚ್ಛತಿ — ಪ್ರ + ವೇಲ್ (ವಲನೆ) “ಫ್ವಲ್”  
(೩-೧-೧೩೩)। (ವಿಂ) 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನಡೆಯುವ,  
ಒಳ್ಳೆಯ ನಡೆಗೆಯುಳ್ಳ.

ಪ್ರವೋದ ಪ್ರಚೋದ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರೇರಿಸುವುದು, ಒತ್ತಾಯ  
ಪಡಿಸುವುದು. 2. ಪುಸಲಾಯಿಸುವುದು, ಹುರಿದುಂಬಿಸು  
ವುದು, ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವುದು. 3. ಮುಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳು  
ವುದು, ನೂಕುವುದು. 4. ಕೆಟ್ಟ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಒತ್ತಾಯ  
ಪಡಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ಚುದ (ಸಂಚೋದನೆ) + ಣಿಚ್ “ಫ್ವಲ್”  
(೩-೩-೧೮)। ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫)। -ಚೋದನಮ್  
-ಚೋದನಮ್. ಪ್ರ + ಚುದ + ಣಿಚ್ “ಯುಚ್” (೩-೩-೧೦೭)।  
-ಚೋದನಾ -ಚೋದನಾ.

ಪ್ರವೋದಕ ಪ್ರಚೋದಕ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೇರಿಸುವ, ಒತ್ತಾಯ  
ಪಡಿಸುವ. ಪ್ರ + ಚುದ (ಸಂಚೋದನೆ) + ಣಿಚ್ “ಫ್ವಲ್”  
(೩-೧-೧೩೩)। 2. ಪುಸಲಾಯಿಸುವ, ಹುರಿದುಂಬಿಸುವ,  
ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವ. “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪)। -ಚೋದನಃ  
-ಚೋದನಃ. 3. ಕೆಟ್ಟ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಒತ್ತಾಯಪಡಿಸುವ.  
4. ಮುಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವ, ನೂಕುವ.

ಪ್ರವೋದನಿ ಪ್ರಚೋದನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣುಳ್ಳದ ಗಿಡ.  
ಪ್ರವೋದತೇಽಪಸಾಯತೇ ರೋಗೋನಯಾ — ಪ್ರ + ಚುದ (ಸಂಚೋದನೆ) +  
ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭)। “ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೫)।  
“ಪ್ರವೋದನಿ ಕುಲಿ ಕ್ಷುಧಾ ದುಸ್ಪರ್ಶಾ ರಾಷ್ಟ್ರಿಕೇತಯಿ” ಅಮಂ।

ಪ್ರವೋದನೀಯ ಪ್ರಚೋದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸ  
ಬೇಕಾದ. 2. ಪ್ರೇರಿಸಬೇಕಾದ.

ಪ್ರವೋದಯತ್ ಪ್ರಚೋದಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೇರಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಒತ್ತಾಯಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಪುಸಲಾಯಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಕೆಟ್ಟ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಒತ್ತಾಯ  
ಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ತಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ನೂಕುತ್ತಿರುವ.  
ಪ್ರ + ಚುದ (ಸಂಚೋದನೆ) + ಣಿಚ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)।  
“ಶಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪)। - ವೋದಯಃ -ಚೋದಯ  
ಮಾನಃ.

ಪ್ರವೋದಿತ ಪ್ರಚೋದಿತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒತ್ತಾಯ  
ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಚುದ (ಸಂಚೋದನೆ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತಃ”

(೩-೨-೧೦೨)। “ವೋದಿತೋ ಗುರುಣಾ ನಿಯಮಪ್ರವೋದಿತ ಏವ  
ವಾ। ಕುರ್ಯಾದಿಧ್ಯಯನೇ ಯತ್ನಮಾಚಾರ್ಯಸ್ಯ ಹಿತೇಷು ಚ” ಮನುಂ  
೨-೧೯೧। 2. ಪುಸಲಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಹುರಿದುಂಬಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ರಘುಣಾಮನ್ವಯಂ ವಕ್ಷ್ಯೇ ತನುವಾಗ್ವಿ-  
ಭವೋಽಪಿ ಸನ್। ತದ್ಗುಣೈಃ ಕರ್ಣಮಾಗತ್ಯ ಚಾಪಲಾಯ ಪ್ರವೋದಿತಃ”  
ರಘುಂ ೧-೯। 3. ಚಿತಾವಣೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೆಟ್ಟ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ  
ಒತ್ತಾಯಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಮುಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ,  
ನೂಕಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಮುಂದಕ್ಕೆ ನಡೆಸಲ್ಪಟ್ಟ. (ಎತ್ತು,  
ಆನೆ, ಕುದುರೆ ಮೊದಲಾದುವು). “ಪ್ರವೋದಿತಾಃ ಪರಿಚಿತಯನ್ತು-  
ಕರ್ಮಭಿನ್ನಿಷಾದಿಭಿಃ” ಮಾಘಂ ೧೭-೩೫।

ಪ್ರವೋದಿನ್ ಪ್ರಚೋದಿಸ್ (ವಿಂ) “ಪ್ರವೋದಕ” ಪದದ  
ಅರ್ಥ. ಪ್ರ + ಚುದ (ಸಂಚೋದನೆ) + ಣಿಚ್ “ಣಿನಿಃ”  
(೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೫)। -ವೋದಿನಿ  
-ವೋದಿನೀ.

ಪ್ರವೋದಮಾನ ಪ್ರಚೋದ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಒತ್ತಾಯ  
ಪಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಪುಸ  
ಲಾಯಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.  
3. ಚಿತಾವಣೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. \ ಕೆಟ್ಟ ಕೆಲಸಕ್ಕೆ  
ಒತ್ತಾಯಪಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 4. ಮುಂದಕ್ಕೆ ನೂಕಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಚುದ (ಸಂಚೋದನೆ) + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ “ಶಾನಚ್”  
(೩-೨-೧೨೪)।

ಪ್ರವೋದ ಪ್ರಚೋದ (ಪುಂ) ಮೇಲು ಹೊದಿಕೆ, ಹಾಸಿಗೆಯ  
ಮೇಲೆ ಹಾಸುವ ಬಟ್ಟೆ. ಪ್ರವೋದತೇಽನೇನ — ಪ್ರ + ಛದ  
(ಅಪವಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ “ಛಃ” (೩-೩-೧೧೮)। “ಪ್ರವೋದಾಂತ-  
ಗಲಿತಾಶ್ರುಬಿಂದುಮಿಃ ಕ್ರೋಧಮಿನ್ನವಲಯೈವಿವರತೇಃ” ರಘುಂ  
೧೯-೨೨।

ಪ್ರವೋದಪಟ ಪ್ರಚೋದಪಟ (ಪುಂ) ಮೇಲುಹೊದಿಕೆ, ಹಾಸಿಗೆಯ  
ಮೇಲೆ ಹಾಸುವ ದುಪ್ಪಟ. ಪ್ರವೋದಪಟಾಸೀ ಪಟಶ್ಚ।  
“ವಲಿಮಜ್ಜಾಭೋಗೇರಲಕಪತಿಸ್ತೇಃ ಶೀರ್ಣಕುಸುಮೇಃ ಸ್ತ್ರಿಯಾಃ ಸರ್ವಾವಸ್ಥಂ  
ಕಥಯತಿ ರತಂ ಪ್ರವೋದಪಟಃ” ಸಾಂ ೬೦ ೩।

ಪ್ರವೋದನಾ ಪ್ರಚೋದನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಶ್ನೆ, ಕೇಳಿಕೆ. ಪ್ರವೋದ  
(ಜಿಪ್ಸಾಯಾಮ್) “ಯುಚ್” ಬಾಹುಂ।

ಪ್ರವೋದನ ಪ್ರಚೋದನ (ನಂ) 1. ಒಳಬಾಗಿಲು, ರಹಸ್ಯದ  
ಬಾಗಿಲು. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಛನ್ನಮ್। (ವಿಂ) 2. ರಹಸ್ಯವಾಗಿರುವ,  
ಮರೆಯಾಗಿ ವರ್ತಿಸುವ. “ಪ್ರವೋದನಾ ಹಿ ಮಾಹಾತ್ಮಾನಃ ಚರಂತಿ  
ವಸುಧಾಮಿಮಾಮ್” ಸಾಂ ೧೦೦। (ಅವ್ಯಂ) 3. ರಹಸ್ಯ  
ವಾಗಿ, ಗುಟ್ಟಾಗಿ. “ವಿದ್ಯಾ ನಾಮ ನರಸ್ಯ ರೂಪಮಧಿಕಂ  
ಪ್ರವೋದನಗುಪ್ತಂ ಛನಮ್” ಭರ್ತುಂ ೧-೧೬।



**ಪ್ರಚ್ಛದನ ಪ್ರಚ್ಛದನ (ನಂ)** 1. ವಮನ, ವಾಂತಿ. ಪ್ರ + ಛದ (ವಮನೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ದೇಹ ದೊಳಗಿನ ವಾಯುವನ್ನು ಮೂವತ್ತೆರಡು ಮಾತ್ರಾಕಾಲ ದಲ್ಲಿ ಮೆಲ್ಲ ಮೆಲ್ಲಗೆ "ಪಿಂಗಲಾ" ನಾಡಿಯ ಮೂಲಕ ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡಿಸುವ ಪ್ರಯತ್ನ, ರೇಚನ. "ಪ್ರಚ್ಛದನ-ವಿಧಾರಣಾಮ್ಯಾಂ ವಾ ಪ್ರಾಣಸ್ಯ" ಪಾಂಯೊಂಸುಂ ೧-೩೪। "ಪ್ರಾಣಸ್ಯ ಶರೀರಾಂತರ್ಗತಸ್ಯ ವಾಯೋಃ ಪ್ರಚ್ಛದನಂ ದ್ವಾತ್ರಿಶನ್ಮಾತ್ರಾ-ಪ್ರಮಾಣೇನ ಶನೈಃ ಶನೈಃ ಪಿಙ್ಗಲಯಾ ಬಹಿರ್ವಿರೇಚನಮ್" ಯೋಗಸೂತ್ರ-ವೃತ್ತಿಃ ೧-೩೪। (ವಿಂ) 3. ವಾಂತಿಮಾಡಿಸುವ ಔಷಧ.

**ಪ್ರಚ್ಛದಿಕಾ ಪ್ರಚ್ಛದಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ವಮನ, ವಾಂತಿ. ಪ್ರ + ಛದ (ವಮನೆ) "ಫುಲ್" (೩-೩-೧೦೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಫಾಲ್"। ಅತ ಇತ್ವಮ್। (ವಿಂ) 2. ವಾಂತಿ ಮಾಡಿಸುವ ಔಷಧ ಮುಂತಾದುದು. ಕರ್ತಂ "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ಪ್ರಚ್ಛಾದನ ಪ್ರಚ್ಛಾದನ (ನಂ)** 1. ಉತ್ತರೀಯ, ಹೊದೆ ಯುವ ವಸ್ತ್ರ. ಪ್ರಚ್ಛಾದನೇನ — ಪ್ರ + ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭)। 2. ಮುಚ್ಚಿಡುವುದು, ಬಚ್ಚಿಡುವುದು, ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡುವುದು. "ಆತ್ಮಪ್ರಚ್ಛಾದನಾರ್ಥಂ ವೈ ಬಾಹುಬೀರ್ಯಮುಪಾಶ್ರಿತಃ। ವಿಪ್ರರೂಪಂ ವಿಧಾಯೇದಂ ಮನ್ಯೇ ಮಾಂ ಪ್ರತಿ ಯುಕ್ಯಸೇ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೦೪-೧೮। 3. ಹೊದಿಸುವುದು, ಮರೆಮಾಡುವುದು, ಮುಚ್ಚುವುದು.

**ಪ್ರಚ್ಛಾದನೀಯ ಪ್ರಚ್ಛಾದನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಹೊದಿಸ ಲ್ಪಡುವ. 2. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಡುವ, ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 3. ಹೊದಿಸಬೇಕಾದ. 4. ಮುಚ್ಚಬೇಕಾದ. ಪ್ರ + ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)।

**ಪ್ರಚ್ಛಾದಿತ ಪ್ರಚ್ಛಾದಿತ (ವಿಂ)** ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ವಿಧಾಯ ವೈಕಲ್ಪಿಕವೇಜಯಂತೀಂ ಪ್ರಚ್ಛಾದಿತಂ ಪ್ರಾಣಯತಿ ಸ್ಮ ಪಾರ್ಥಮ್" ಯಾದಂ ೨೩-೪೧।

**ಪ್ರಚ್ಛಾದ್ಯಮಾನ ಪ್ರಚ್ಛಾದ್ಯಮಾನ (ವಿಂ)** ಮುಚ್ಚಲ್ಪಡು ತ್ತಿರುವ, ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಛದ (ಅಪ-ವಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಶಾನ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ರಣಾಖ್ಯದರ್ಶೋ ರಜಸೋತ್ಥಿತೇನ ಪ್ರಚ್ಛಾದ್ಯಮಾನೇ ತಮಸೇವ ಭಾನೋ" ಯಾದಂ ೨೦-೨೬।

**ಪ್ರಚ್ಛಾಯ ಪ್ರಚ್ಛಾಯ (ವಿಂ)** ಒಳ್ಳೆಯ ನೆರಳುಳ್ಳ, ಪ್ರದೇಶ, ಹೆಚ್ಚು ನೆರಳುಳ್ಳ ಜಾಗ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಾ ಛಾಯಾ ಯತ್ರ ಪ್ರದೇಶಃ। "ಪ್ರಚ್ಛಾಯಸುಲಭನಿಧಾ ದಿವಸಾಃ ಪರಿಣಾಮರಮಣೀಯಾಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೩।

**ಪ್ರಚ್ಛಿಲ ಪ್ರಚ್ಛಿಲ (ವಿಂ)** ಜಲಶೂನ್ಯವಾದ, ನೀರಿಲ್ಲದ.

**ಪ್ರಚ್ಯವ ಪ್ರಚ್ಯವ (ಪುಂ)** 1. ವಿನಾಶ, ಅಳವು. 2. ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುವುದು, ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುವುದು, ಜಾರಿಬೀಳುವುದು. 3. ಸ್ತವಿಸುವುದು, ಸೋರುವುದು.

**ಪ್ರಚ್ಯವನ ಪ್ರಚ್ಯವನ (ನಂ)** 1. ಸೋರುವುದು, ಸ್ತವಿಸು ವುದು. 2. ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುವುದು. ಪ್ರ + ಚ್ಯುಡ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 3. ಅಧಿಕಾರ ಸ್ಥಾನದಿಂದ ಇಳಿಯುವುದು.

**ಪ್ರಚ್ಯಾವನ ಪ್ರಚ್ಯಾವನ (ನಂ)** 1. ಕೆಳಗೆ ತಳ್ಳುವುದು, ಕೆಡವುವುದು. ಪ್ರ + ಚ್ಯುಡ್ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಅಧಿಕಾರಸ್ಥಾನದಿಂದ ಇಳಿಸುವುದು.

**ಪ್ರಚ್ಯಾವಿತ ಪ್ರಚ್ಯಾವಿತ (ವಿಂ)** 1. ಕೆಳಗೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಅಧಿಕಾರದಿಂದ ಹೊರದೂಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪ್ರಚ್ಯುತ ಪ್ರಚ್ಯುತ (ವಿಂ)** 1. ಕೆಳಗೆ ಕೆಳಗೆಬಿದ್ದ. ಪ್ರ + ಚ್ಯುಡ್ (ಗತೌ) ಕರ್ತಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। 2. ಅಧಿಕಾರ ಸ್ಥಾನದಿಂದ ಹೊರಬಿದ್ದ. 3. ಸ್ತವಿಸಿದ, ಸೋರಿದ. 4. ನಾಶಹೊಂದಿದ.

**ಪ್ರಚ್ಯುತಿ ಪ್ರಚ್ಯುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುವುದು. 2. ನಾಶ, ಅಳವು. 3. ಸ್ತವಿಸುವುದು, ಸೋರುವುದು. 4. ಅಧಿಕಾರಸ್ಥಾನದಿಂದ ಹೊರಬೀಳುವುದು. ಪ್ರ + ಚ್ಯುಡ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।

**ಪ್ರಚ್ಯೋತತ್ ಪ್ರಚ್ಯೋತತ್ (ವಿಂ)** ಸೋರುತ್ತಿರುವ, ಸ್ತವಿಸು ತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಚ್ಯುತಿರ್ (ಕ್ಷರಣೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಽನ್ಮೀಲನ್ಮುಕ್ತುಲಕರಾಲಕುಂದಕೋಶಪ್ರಚ್ಯೋತದ್ವನಮಕರಂದಗಂಧ-ಬಂಧೋ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೪೧।

**ಪ್ರಜ ಪ್ರಜ (ಪುಂ)** ಪತಿ, ಗಂಡ. ಪ್ರವಿಶ್ಯ ಜಾಯಾಂ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾದುಮವಿ) "ಙಃ" (೩-೨-೯೯)।

**ಪ್ರಜನ ಪ್ರಜನ (ಪುಂ)** 1. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟುವುದು, ಜನಿಸು ವುದು. ಪ್ರ + ಜನಿ (ಪ್ರಾದುಮವಿ) "ಯದಿ ಹಿ ಸ್ತ್ರೀ ನ ರೋಚತ ಪುಮಾಂಸಂ ನ ಪ್ರಮೋದಯೇತ್। ಅಪ್ರಮೋದಾತ್ಪುನಃ ಪುಂಸಃ ಪ್ರಜನಂ ನ ಪ್ರವರ್ತತೇ" ಮನುಂ ೩-೬೧। 2. ಪ್ರಥಮಃ ಗರ್ಭಧಾರಣ ಕ್ಯಾಗಿ ಹಸುಗಳ ಮೇಲೆ ಹೋರಿಗಳನ್ನು ಹಾರಿಸುವುದು. 3. ಗರ್ಭಗ್ರಹಣ, ಗರ್ಭಧಾರಣ. ಪ್ರಜಾಯತೇನ — ಪ್ರ + ಜನಿ ಕರಂ "ಜಬ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ಪ್ರಜನಾರ್ಥ ಸ್ತ್ರೀಯಃ ಸೃಷ್ಟಾಃ ಸಂತಾನಾರ್ಥಂ ಚ ಮಾನವಾಃ। ತಸ್ಮಾತ್ಸಾಧಾರಣೋ ಧರ್ಮಃ ಶ್ರುತೌ ಪತ್ನ्या ಸಹೋದಿತಃ" ಮನುಂ ೯-೯೬। 4. ಜನನ ಹೇತು, ಉತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣ. "ಪ್ರಜನಶ್ರಾಸ್ತಮಿ ಕಂದರ್ಪಃ ಸರ್ಪಾಣಾಮಸ್ತಮಿ ವಾಸುಕಿಃ" ಗೀತಾ ೧೦-೨೮। 5. ಉಪಸ್ಥ ವೆಯ ಇಂದ್ರಿಯಂ,



ಸ್ತ್ರೀಯರ ಮತ್ತು ಪುರುಷರ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ. (ವಿಂ)

6. ಸೃಷ್ಟಿಸುವ, ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡುವ. "ಇಶೋ ನಗಾನಾಂ ಪ್ರಜನಃ ಪ್ರಜಾನಾಂ ಪ್ರಸಿದತಾಂ ನಃ ಸ ಮಹಾವಿಭೂತಿಃ" ಭಾಗಂ ೮-೫-೩೪।

ಪ್ರಜನನ ಪ್ರಜನನ (ನಂ) 1. ಜನ್ಮ, ಉತ್ಪತ್ತಿ. ಪ್ರ + ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಪುರುಷರ ಮತ್ತು ಸ್ತ್ರೀಯರ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ. ಪ್ರ + ಜನಿ ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೬)। 3. ಗೋವುಗಳ ಪ್ರಥಮ ಗರ್ಭಾಗ್ರಹಣ, ಹಸುಗಳಿಗೆ ಮೊದಲನೆಯಬಾರಿ ಹೋರಿ ಬಿಡುವುದು. ಪ್ರ + ಜನಿ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। 4. ಜನ್ಮವೀಯುವುದು, ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡುವುದು. "ತಸ್ಮಾತ್ ಪ್ರಹೇಷ್ಯಾಮ್ಯವ ತ್ವಾಂ ಹೀನಃ ಪ್ರಜನನಾತ್ ಸ್ವಯಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ।

ಪ್ರಜನಿಕಾ ಪ್ರಜನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜನ್ಮವೀಯುವ ತಾಯಿ. ಪ್ರ + ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) + ಣಿच् "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಪ್ರಜನಿತ ಪ್ರಜನಿತ (ವಿಂ) ಉಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಉತ್ಪತ್ತಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) + ಣಿच् "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಪ್ರಜನಿತಮದನೋ ಮನಸ್ವಿನಿಮಿಃ ಗುಣ-ಸುರಮಿಃ ಸುರಮಿಃ ಸ್ವಯಂ ನ ಮೇನೇ" ಯಾದಂ ೨೪-೧೪।

ಪ್ರಜನಿತು ಪ್ರಜನಿತು (ಪುಂ) ಜನಕ, ತಂದೆ. ಪ್ರ + ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) + ಣಿच् "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಪ್ರಜಲ್ಪ ಪ್ರಜಲ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಅತಿಯಾಗಿ ಮಾತಾಡುವುದು. ಪ್ರಕೃಷ್ಠೋ ಜಲ್ಪಃ-ಪ್ರ + ಜಲ್ಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಘಲ್" (೩-೩-೧೮)। ಇದು ಯೋಗಾಭ್ಯಾಸಕ್ಕೆ ಪ್ರತಿಬಂಧಕ ವಾದುದು. "ಅತ್ಯಾಹಾರಃ ಪ್ರಯಾಸಶ್ಚ ಪ್ರಜಲ್ಪೋ ನಿಯಮಗ್ರಹಃ। ಜನಸಂಕ್ಷುಪ್ತಶ್ಚ ಲೌಲ್ಯಂ ಚ ಷಡ್ಭಿರ್ಯೋಗೋ ವಿನಶ್ಯತಿ" ಹೃಂ ೧-೧೫। 2. ಅಲಾಪ, ಮಾತು. 3. ಹರಟೆ, ಪ್ರಯೋಜನ ವಿಲ್ಲದ ಮಾತು, ವೃಥಾಲಾಪ, ತಿರುಳಿಲ್ಲದ ಮಾತು. "ಅಸೂಯೇರ್ಷ್ಯಾಮಿದಯುಜಾ ಯೋವಧೀರಣಮದ್ರಯಾ। ಪ್ರಿಯಸ್ಯ ಕೌಶಲೋ-ದ್ಗಾರಃ ಪ್ರಜಲ್ಪಃ ಸ ತು ಕಥ್ಯತೇ"। ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। -ಜಲ್ಪನಮ್ -ಜಲ್ಪನಮ್.

ಪ್ರಜಲ್ಪತ್ ಪ್ರಜಲ್ಪತ್ (ವಿಂ) 1. ಮಾತಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಜಲ್ಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಪ್ರಜಲ್ಪನ್ ಮತ್ಯದೇ ಲಗನಃ ಕಾಂತಃ ಕಿಂ ನ ಹಿ ನೃಪುರಃ" ಚಂದ್ರಾಂ। 2. ಹರಟುತ್ತಿರುವ, ಉಪಯೋಗವಿಲ್ಲದೆ ಮಾತಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಅತಿಯಾಗಿ ಮಾತಾಡುತ್ತಿರುವ.

ಪ್ರಜಲ್ಪಿತ ಪ್ರಜಲ್ಪಿತ (ನಂ) 1. ಮಾತು, ನುಡಿ. ಪ್ರ + ಜಲ್ಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। "ಶೃಣು ತ್ವದಾಲೋಕನತರ್ಪಭಾಜಾಂ ಪ್ರಜಲ್ಪಿತಂ ಪಂಜರಶಾರಿಕಾಣಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೮-೧೨೬। 2. ಹರಟೆ, ಉಪಯೋಗವಿಲ್ಲದ

ಮಾತು, ತಿರುಳಿಲ್ಲದ ಮಾತು. (ವಿಂ) 3. ಮಾತನಾಡಿದ. ಪ್ರ + ಜಲ್ಪ ಕರಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ಸ್ವರೇಣ ತಸ್ಯಾಮಮೃತಸ್ತುತೇವ ಪ್ರಜಲ್ಪಿತಾಯಾಮಭಿಜಾತವಾಚಿ" ಕುಮಾಂ ೧-೪೫।

ಪ್ರಜವ ಪ್ರಜವ (ಪುಂ) ಹೆಚ್ಚು ವೇಗ. ಪ್ರ + ಜು [ಸೌತ್ರಧಾತು] "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭)।

ಪ್ರಜವಿತ ಪ್ರಜವಿತ (ವಿಂ) ಬಹಳ ವೇಗವುಳ್ಳ, ಹೆಚ್ಚು ವೇಗದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪ್ರ + ಜು (ಸೌತ್ರಧಾತು) + ಣಿच् "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। ಪ್ರಕೃಷ್ಠಜವೋಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ "ಇತಚ್" (೫-೨-೩೬) ವಾ। "ನನ್ವೇಷ ತ್ವರಿತಸುಮನ್ವ-ನುಶ್ಚಮಾನಪ್ರೋದ್ವಲ್ಯಾತ್ಪ್ರಜವಿತವಾಜಿನಾ ರಥೇನ" ಉಂ ೫-೧।

ಪ್ರಜವಿನ್ ಪ್ರಜವಿನ್ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ವೇಗವುಳ್ಳ. ಪ್ರ + ಜು [ಸೌತ್ರಧಾತು] "ಇನಿಃ" (೩-೨-೧೫೬)। "ಪ್ರಜವೀ ಜವನೋ ಜವಃ" ಅಮಂ। "ತಿಷ್ಠದ್ವಿಃ ಕಥಮಪಿ ದೇವತಾನು-ಭಾವಾದಾಕೃಷ್ಣಃ ಪ್ರಜವಿಭಿರಾಯತಂ ತುರಗೈಃ" ಕಿರಾಂ ೭-೪।

ಪ್ರಜಾ ಪ್ರಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜನ, ಪ್ರಜೆಗಳು. ಪ್ರಜಾಯತೇ- ಪ್ರ + ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಙಃ" (೩-೨-೧೧೯)। "ಅಥ ಪ್ರಜಾನಾಮಧಿಪಃ ಪ್ರಭಾತೇ ಜಾಯಾಪ್ರತಿಗ್ರಾಹಿತಗಂಧಮಾಲ್ಯಾಮ್" ರಘುಂ ೨-೨೧। "ಪ್ರಜಾಃ ಪ್ರಜಾನಾಥ ಪಿತೇವ ಪಾಸಿ" ರಘುಂ ೨-೪೮। 2. ಸಂತಾನ, ಮಕ್ಕಳು. "ಯಶಸೇ ವಿಜಿಗಿಷುಣಾಂ ಪ್ರಜಾಯೇ ಗೃಹಮೇಧಿನಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೭೭। ತಾಯಿ ತಂದೆಗಳ ಗುಣ ದೋಷಗಳಿಂದ ಮಕ್ಕಳು ಭಿನ್ನ ಭಿನ್ನ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳವ ರಾಗಿ ಹುಟ್ಟುತ್ತಾರೆ. "ಮಾತೃಣಾಂ ಶೀಲದೋಷೇಣ ಪಿತೃಶೀಲಗುಣೇನ ಚ। ವಿಮಿಶ್ರಾಸ್ತು ಪ್ರಜಾಃ ಸರ್ವಾಃ ಭವಂತಿ ಭವಶೀಲಿನಾಮ್" ಅನ್ನಿಪುಂ। 3. ಜನ್ಮ, ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟುವುದು.

ಪ್ರಜಾಕಾಮ ಪ್ರಜಾಕಾಮ (ವಿಂ) ಸಂತಾನವನ್ನು ಆವೇಕ್ಷೆ ಸುವ, ಮಕ್ಕಳಾಗಬೇಕೆಂದು ಬಯಸುವ. ಪ್ರಜಾಂ ಕಾಮಯತೇ- ಕಮು (ಕಾಂತೌ) + ಣಿಜ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।

ಪ್ರಜಾಗರ ಪ್ರಜಾಗರ (ಪುಂ) 1. ಜಾಗರಣೆ, ನಿದ್ರೆಮಾಡ ದಿರುವುದು. ಪ್ರ + ಜಾಗ್ (ನಿದ್ರಾಕ್ಷಯೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭)। "ಪ್ರಜಾಗರಾತ್ವಿಲಿಖಿತಸ್ತಸ್ಯಾಃ ಸ್ವಪ್ನೇ ಸಮಾಗಮಃ" ಶಾಕುಂ ೬-೨೨। 2. ವಿಷ್ಣು. ಪ್ರಜಾಗತಿ- ಪ್ರ + ಜಾಗ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಭಕ್ತರ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಅನವರತವೂ ಎಚ್ಚರದಿಂದಿರುವುದರಿಂದ "ಪ್ರಜಾಗರಃ" ಎಂಬ ಹೆಸರು. "ರಾತ್ರಿಂದಿವಂ ಪ್ರಜಾಗತಿ ಸಸ್ಯೇಷ್ವಿವ ಕೃಷಿವಲಃ। ಭಕ್ತೇಷು ನಿತರಾಂ ಯೋಸೋ ಪ್ರಜಾಗರ ಇಹೋಚ್ಯತೇ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ್ತಃ। "ಆಧಾರನಿಲಯೋ ಘಾತಾ ಪುಷ್ಪಹಾಸಃ ಪ್ರಜಾಗರಃ" ವಿಂ ಸಂ। 3. ಪಾಣ.



ಪ್ರಜಾತನ್ತು ಪ್ರಜಾತಂತು (ಪುಂ) ಸಂತಾನ, ಸಂತತಿ, ವಂಶ.  
ಪ್ರಜಾತಾ: ಪ್ರಜನನಸ್ಯ ತನ್ತುರಿವ । “ಆಚಾರ್ಯಾಃ ಪ್ರಿಯಂ ವನ-  
ಮಾಹುತ ಪ್ರಜಾತನ್ತು ಮಾ ವ್ಯವಚ್ಛೇತ್ಸಿ:” ತೆಂಱಪಂ ।

ಪ್ರಜಾತ ಪ್ರಜಾತ (ನಂ) ಪ್ರಜೆಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಪುರುಷೋತ್ಪತ್ತಿ.  
ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಜಾತಮ್ ।

ಪ್ರಜಾತಾ ಪ್ರಜಾತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಹಡೆದ ಹೆಂಗಸು.  
ಪ್ರಜಾತಂ ಸುತೋತ್ಪತಿ: ತದಸ್ಯಾ ಅಸ್ತಿ “ಅನ್” (೪-೨-೧೨೭) ।

ಪ್ರಜಾತಿ ಪ್ರಜಾತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಜೋತ್ಪತ್ತಿ, ಮಕ್ಕಳು ಜನಿ  
ಸುವುದು. ಪ್ರ + ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) ಭಾವೇ “ಕ್ತಿನ್”  
(೩-೩-೯೪) ।

ಪ್ರಜಾನತ್ ಪ್ರಜಾನತ್ (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯುತ್ತಿರುವ,  
ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಅರಿಯುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಜಾ (ಅವಬೋಧನೆ)  
“ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) ।

ಪ್ರಜಾನಾಥ ಪ್ರಜಾನಾಥ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ, ಪ್ರಜೆಗಳ  
ಒಡೆಯ. ಪ್ರಜಾನಾಂ ನಾಥ: । “ಜೀವನ್ ಪುನ: ಶಶ್ವದುಪಪ್ಲವೇಭ್ಯ:  
ಪ್ರಜಾ: ಪ್ರಜಾನಾಥ ಪಿತೇವ ಪಾಸಿ” ರಘುಂ ೨-೪೮ ।

ಪ್ರಜಾನಿಷೇಕ ಪ್ರಜಾನಿಷೇಕ (ಪುಂ) ಗರ್ಭಾಧಾನ ಮಾಡು-  
ವುದು, ಬಸಿರಾಂಟುಮಾಡುವುದು, ವೀರ್ಯವನ್ನು ಗರ್ಭ  
ಕೋಶಕ್ಕೆ ಸೇರಿಸುವುದು. ಪ್ರಜಾತಾ ನಿಷೇಕ: । “ಪ್ರಜಾನಿಷೇಕಂ  
ಮಯಿ ವರ್ತಮಾನಂ ಸುನೋರನುಚ್ಚಾಯತ ಚೇತಸೇತಿ” ರಘುಂ ೧೪-೬೦ ।

ಪ್ರಜಾಪ ಪ್ರಜಾಪ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಪ್ರಜಾ: ಪಾತಿ — ಪಾ  
(ರಕ್ಷಣೆ) “ಕ:” (೩-೨-೩) ।

ಪ್ರಜಾಪತಿ ಪ್ರಜಾಪತಿ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಬದ್ಧ  
ಮತ್ತು ಮುಕ್ತರಿಗಿಂತಲೂ ಉತ್ಕೃಷ್ಟರಾದ ನಿತ್ಯಸೂರಿಗಳು  
ಪ್ರಜೆಗಳು. ನಿತ್ಯಸೂರಿಗಳಾದ ಆ ಪ್ರಜೆಗಳಿಗೆ ಪತಿ (ಸ್ವಾಮಿ)  
ಯಾದುದರಿಂದ ವಿಷ್ಣುವು ಪ್ರಜಾಪತಿ. ಬಹುಮುಕ್ತಾಪೇಕ್ಷಯಾ  
ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಜಾಯಮಾನಾನಾಂ ಪ್ರಜಾನಾಂ ಪ್ರಾದುರ್ಭವತಾಂ ಸೂರಿಣಾಂ ಪತಿ:  
ಸ್ವಾಮಿ ನಿಯತಪರಿಚರಣೀಯ: । “ಬದ್ಧಾದುತ್ಕೃಷ್ಟತೋ ಯೇ ಚ ಜಾಯಂತೇ  
ಸೂರಯ: ಪ್ರಜಾ: । ತेषಾಂ ಯೋ ನಿಯತಸೂರಿಣಾಂ ಪತಿ: ಸ ಸ್ಯಾತ್  
ಪ್ರಜಾಪತಿ:” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । “ಜ್ಯೇಷ್ಠ: ಶ್ರೇಷ್ಠ: ಪ್ರಜಾಪತಿ:”  
ವಿಂಸಂ । 2. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಪ್ರಜಾನಾಂ ಪತಿ: ।

“ಅಸ್ಯಾ: ಸರ್ಗವಿಧೌ ಪ್ರಜಾಪತಿರಭುಚ್ಚಂದ್ರೋ ನು ಕಾಂತಿಪ್ರದ:  
ಶುಕ್ಲಾರಂಕರಸ: ಸ್ವಯಂ ನು ಮದನೋ ಮಾಸೋ ನು ಪುಷ್ಪಾಕರ:” ವಿಕ್ರಂ  
೧-೧೦ । 3. ಪ್ರಜಾಸೃಷ್ಟಿಗಾಗಿ ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ  
ಮಂತ್ರೀಚಿ ಮೊದಲಾದ ಹತ್ತು ಮಂದಿ ಪ್ರಜಾಪತಿಗಳು.

ದಶ ಪ್ರಜಾಪತಿಗಳು:—(1) ಮರೀಚಿ: (2) ಅಗ್ನಿ:  
(3) ಅಜ್ಞಿರಸ್ (ರಾ:) (4) ಪುಲಸ್ತ್ಯ: (5) ಪುಲಹ: (6) ಋತು:  
(7) ಪ್ರವೇತಸ್ (ತಾ:) (8) ವಸಿಷ್ಠ: (9) ಭಗು: ಮತ್ತು

(10) ನಾರದ: । 4. ರಾಜ, ದೊರೆ, ಪ್ರಜೆಗಳ ಒಡೆಯ,  
ಪ್ರಜೆಗಳನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನು. ಪ್ರಜಾನಾಂ ಪತಿ: । “ಅಥ  
ಧರ್ಮಮೂರ್ತೀನುರಾಗಭಾವಿತ: ಸ್ವಯಮಾದಿತ ಪ್ರವಯಣಂ ಪ್ರಜಾಪತಿ:”  
ಮಾಘಂ ೧೩-೧೯ । 5. ಚತುರ್ಮುಖನ ದಕ್ಷಿಣ ಅಂಗುಷ್ಠ  
ದಿಂದ ಜನಿಸಿದ ದಕ್ಷ (ಪ್ರಜಾಪತಿ). 6. ಸೂರ್ಯ.  
7. ಜಾಮಾತ, ಅಳಿಯ. 8. ವಹ್ನಿ, ಅಗ್ನಿ. 9. ವಿಶ್ವಶಕ್ರಮುಖ.  
“ಪ್ರಜಾಪತಿಬ್ರಹ್ಮರಾಜೋಜಾಮಾತರಿ ದಿವಾಕರೇ । ವಹ್ನೌ ತ್ವಷ್ಟರಿ  
ವಕ್ಷಾದೌ” ಹೇಮಂ । 10. ಮನು. “ನ ತೌ ಪ್ರತಿ ಹಿ ತಾನ್  
ಧರ್ಮಾನ್ಮನುರಾಹ ಪ್ರಜಾಪತಿ:” ಮನುಂ ೧೦-೭೮ । 11. ಜನಕ,  
ತಂದೆ. “ಜನಕೋ ಜನ್ಮದಾನಾಂ ರಕ್ಷಣಾಂ ಪಿತಾ ನೃಣಾಂ ।  
ತತೋ ವಿಶ್ವೀರ್ಣಕರಣಾತ್ ಕಲಯಾ ಸ ಪ್ರಜಾಪತಿ:” ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ ।

ಪ್ರಜಾವತ್ ಪ್ರಜಾವತ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂತಾನವುಳ್ಳ, ಮಕ್ಕ-  
ಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. 2. ಪ್ರಜೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೊರೆ,  
ಪ್ರಕೃತಿ ಸಂಪನ್ನನಾದ ರಾಜ. ಪ್ರಜಾ: ಸಂತ್ಯಸ್ಯ “ಮತುಪ್”  
(೪-೨-೯೪) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ತೀಪ್” (೪-೧-೬) —ವತೀ —ವತೀ.  
1. ಸಹೋದರನ ಪತ್ನಿ. ಪ್ರಜಾ ಅಸ್ತೀಸ್ಯಾ: “ಮತುಪ್” ।  
“ತಸ್ಯಾಮೇವಾಸ್ಯ ಯಾಮಿನ್ಯಾಮಂತರ್ವತೀ ಪ್ರಜಾವತೀ” ರಘುಂ  
೧೪-೧೩ । 2. ತಾಯಿ. 3. ಮಕ್ಕಳುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು.

ಪ್ರಜಾಸೃಜ್ ಪ್ರಜಾಸೃಜ್ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ.  
ಪ್ರಜಾ: ಸೃಜತಿ — ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) “ವಿವಪ್” (೩-೨-೭೬) ।  
“ಕೃತ: ಪ್ರಜಾಕ್ಷೇಮಕೃತಾ ಪ್ರಜಾಸೃಜಾ ಸುಪಾತ್ರನಿಕ್ಷೇಪನಿರಾಕುಲಾ-  
ತ್ಮನಾ” ಮಾಘಂ ೧-೨೮ ।

ಪ್ರಜೇಶ ಪ್ರಜೇಶ, —ಈಶ್ವರ —ಈಶ್ವರ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ,  
ಪ್ರಜೆಗಳ ಒಡೆಯ. ಪ್ರಜಾನಾಮೀಶ: ಈಶ್ವರೋ ವಾ । “ತಮಭ್ಯ-  
ನಂದತ್ಪ್ರಥಮಂ ಪ್ರಬೋಧಿತ: ಪ್ರಜೇಶ್ವರ: ಶಾಸನಹಾರಿಣಾ ಹರೇ:”  
ರಘುಂ (೩-೬೮) ।

ಪ್ರಜ ಪ್ರಜ (ಪುಂ) ವಿದ್ವಾಂಸ, ಪಂಡಿತ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದವನು,  
ಬುದ್ಧಿವಂತ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಜಾನಾತಿ — ಜಾ (ಅವಬೋಧನೆ) “ಕ:”  
(೩-೧-೧೩೬) ।

ಪ್ರಜಾ ಪ್ರಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬುದ್ಧಿ, ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವ ಮತ್ತು  
ವಿಚಾರಮಾಡುವ ಶಕ್ತಿ. ಪ್ರಜಾಯತೇಜಯಾ — ಪ್ರ + ಜಾ (ಅವ-  
ಬೋಧನೆ) “ಅಜ್” (೩-೩-೧೦೪) । “ಆಕಾರಸದೃಶಪ್ರಜಾ:  
ಪ್ರಜಯಾ ಸದೃಶಾಗಮ: । ಆಗಮೇ: ಸದೃಶಾರಂಭ: ಆರಂಭ-  
ಸದೃಶೋದಯ:” ರಘುಂ ೧-೧೪ । 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದ ಹೆಂಗಸು,

ಪ್ರಜಾತ ಪ್ರಜಾತ (ವಿಂ) ಪ್ರಖ್ಯಾತಿ ಪಡೆದ, ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ  
ಹೊಂದಿದ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಜಾತ: ।

ಪ್ರಜಾದೃಶ್ ಪ್ರಜಾದೃಶ್ (ವಿಂ) ಬುದ್ಧಿಯೇ ಕಣ್ಣಾಗಿರುವ,  
ಬಾಹ್ಯದೃಷ್ಟಿಯಿಲ್ಲದ. “ಖ್ಯಾತವದೃಶಿತಖ್ಯಾತೀಪ್ತೀನ್  
ಪ್ರಜಾದೃಶೋ ಭೂಮಿಭೂತ: ಸಭಾಯಾಮ್” ಯಾದಂ ೨೩-೧೬ ।



ಪ್ರಜ್ಞಾನ ಪ್ರಜ್ಞಾನ (ನಂ) 1. ಬುದ್ಧಿ, ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವ ಮತ್ತು ವಿಚಾರಮಾಡುವ ಶಕ್ತಿ. ಪ್ರ + ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114). 2. ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು. ಪ್ರ + ಜ್ಞಾ ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114). 3. ಚೈತನ್ಯ. (ವಿಂ) 4. ಬುದ್ಧಿವಂತ, ತಿಳಿದವನು. ಪ್ರಜ್ಞಾನಮಸ್ಯಸ್ಯ "ಅಚ್" (4-2-129)।

ಪ್ರಜ್ಞಾಲ ಪ್ರಜ್ಞಾಲ (ವಿಂ) ಬುದ್ಧಿವಂತ, ಪ್ರಜ್ಞಾ. ಪ್ರಜ್ಞಾಸ್ತಸ್ಯ "ಲಚ್" (4-2-99)। "ಮತುಪ್" (4-2-98)। ಪ್ರಜ್ಞಾವಾನ್ ಪ್ರಜ್ಞಾವಾನ್.

ಪ್ರಜ್ಞಿನ್ ಪ್ರಜ್ಞಿನ್ (ವಿಂ) ಬುದ್ಧಿವಂತ, ಜ್ಞಾನಿ. ಪ್ರಜ್ಞಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿ:" (4-2-114)।

ಪ್ರಜ್ಞಿಲ ಪ್ರಜ್ಞಿಲ (ವಿಂ) ಬುದ್ಧಿವಂತ, ಪ್ರಜ್ಞಾ. ಪ್ರಜ್ಞಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇಲಚ್" (4-2-100)।

ಪ್ರಜ್ಞು ಪ್ರಜ್ಞು (ವಿಂ) ಎರಳವಾದ ಮೊಳಕಾಲುಗಳುಳ್ಳವನು, ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಸೇರದೆ ದೂರವಾಗಿರುವ ಮೊಳಕಾಲುಗಳುಳ್ಳವನು. ಪ್ರಗತೇ ಜಾನುನಿ ಯಸ್ಯ "ಜ್ಞು:" (4-4-129)। "ಪ್ರಜ್ಞು: ಪ್ರಗತಜಾನುಕ:" ಅಮಂ।

ಪ್ರಜ್ವಲತ್ ಪ್ರಜ್ವಲತ್ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಉರಿಯುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಜ್ವಲ (ದೀಪ್ತೌ) "ಶತ್" (3-2-124)। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ, ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ. "ಪ್ರಜ್ವಲತಾಂತಿಚಕ್ರಾಣಿ ಚಕ್ರಾಣಿ ವರಚಕ್ರಾಣಾಮ್" ಕುಮಾಂ 16-17। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛಿಪ್" (4-1-6)। -ಜ್ವಲಂತಿ -ಜ್ವಲಂತಿ.

ಪ್ರಜ್ವಲನ ಪ್ರಜ್ವಲನ (ನಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಉರಿಯುವುದು. 2. ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪ್ರ + ಜ್ವಲ (ದೀಪ್ತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)।

ಪ್ರಜ್ವಲನೀಯ ಪ್ರಜ್ವಲನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಉರಿಯಬೇಕಾದ. 2. ಹೊಳೆಯಬೇಕಾದ. ಪ್ರ + ಜ್ವಲ (ದೀಪ್ತೌ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। "ತವ್ಯ:" (3-1-96)। -ಜ್ವಲಿತವ್ಯ: -ಜ್ವಲಿತವ್ಯ: 3. ಉರಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. 4. ಉರಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸಬೇಕಾದ. ಪ್ರ + ಜ್ವಲ + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। "ತವ್ಯ:" (3-1-96)। -ಜ್ವಲಯಿತವ್ಯ: -ಜ್ವಲಯಿತವ್ಯ:.

ಪ್ರಜ್ವಲಯತ್ ಪ್ರಜ್ವಲಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಉರಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಜ್ವಲ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛಿಪ್" (4-1-6)। -ಜ್ವಲಯಂತಿ -ಜ್ವಲಯಂತಿ.

ಪ್ರಜ್ವಲಿತ ಪ್ರಜ್ವಲಿತ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಉರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉರಿಯುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಜ್ವಲ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102)। "ಅಗ್ನಿ ಪ್ರಜ್ವಲಿತಂ ವಂದೇ ಜಾತವೇದ ಹುತಾಶನಮ್। ಸುವರ್ಣವರ್ಣಮಮಲಂ ಸಮಿಧಂ ಸರ್ವತೋಮುಖಮ್"। 2. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪ್ರಜೀನ ಪ್ರಜೀನ (ನಂ) ಹಕ್ಕಿಗಳ ಹಾರಾಟದ ಒಂದು ಭೇದ, ಹಕ್ಕಿಯು ವೇಗವಾಗಿ ಓಡುವಿಕೆ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಂ ಡಯನಮ್—ಪ್ರ + ಡಿಙ್ (ವಿಹಾಯಸಾ ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114)। ನಿಷ್ಠಾ ನತ್ವಮ್ (6-2-44)। "ಪ್ರಜೀನೋಽನಿಷ್ಠಾನಾನೀತಾ: ಸಾಗಗತಿಕ್ರಿಯಾ:" ಅಮಂ।

ಪ್ರಣ ಪ್ರಣ (ವಿಂ) ಪ್ರಾಚೀನವಾದ, ಪುರಾತನವಾದ, ಹಿಂದಿನ ಕಾಲದ. ಪ್ರ "ನ:" (ವಾಂ 4-4-24)।

ಪ್ರಣತ ಪ್ರಣತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಣಾಮ ಮಾಡಿದ, ನಮಸ್ಕರಿಸಿದ. ಪ್ರ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ಕ್ತ:" (3-4-92)। "ಪ್ರಣತ: ಶಿರಸಾ ಕರಿಷ್ಯತೇ ಸಕಲೇತಯ ಸಮಂ ಧರಾಧಿಪೆ:" ಮಾಧಂ 16-40। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬಗ್ಗಿರುವ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ನತ: 3. ಎನೀತ, ಎಧೇಯ.

ಪ್ರಣತಿ ಪ್ರಣತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಣಾಮ, ನಮಸ್ಕಾರ. ಪ್ರ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)। "ಕ್ಷಣಮಯಮುರ್ವಿಷ್ಟ: ಕ್ಷಮಾತಲನ್ಯಸ್ತಪಾದ: ಪ್ರಣತಿಪರಮವೇಕ್ಷ್ಯ ಪ್ರೀತಮಹ್ಲಾಯ ಲೋಕಮ್" ಮಾಧಂ 11-48। 2. ನಮ್ರತೆ, ಎನೆಯ, ಎಧೇಯತೆ. "ಸ ದದಶಂ ವೇತಸವನಾಚರಿತಾಂ ಪ್ರಣತಿ ಬಲಿಯಸಿ ಸಮುದ್ಧಿಕರೀಮ್" ಕಿರಾಂ 6-4।

ಪ್ರಣದತ್ ಪ್ರಣದತ್ (ವಿಂ) ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಣದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಶತ್" (3-2-124)।

ಪ್ರಣದನ ಪ್ರಣದನ (ನಂ) ಶಬ್ದಮಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ಣದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)।

ಪ್ರಣದಿತ ಪ್ರಣದಿತ (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದಮಾಡಿದ. ಪ್ರ + ಣದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಕ್ತ:" (3-4-92)। "ಸರಿತ ಇವ ಸವಿಭ್ರಮಪ್ರಯಾತಪ್ರಣದಿತಹಂಸಕಭೂಷಣಾ ವಿರೇಜು:" ಮಾಧಂ 9-23। 2. ರೋಂಕಾರಮಾಡಿದ. "ನಿಪಪಾತ ಸಂಭ್ರಮಭೃತ: ಶ್ರವಣಾದಸಿತಭ್ರುವ: ಪ್ರಣದಿತಾಲಿಕುಲಮ್" ಮಾಧಂ 9-91।

ಪ್ರಣಂತವ್ಯ ಪ್ರಣಂತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ನಮಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ನಮಸ್ಕರಿಸಬೇಕಾದ.

ಪ್ರಣಮತ್ ಪ್ರಣಮತ್ (ವಿಂ) ನಮಸ್ಕರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರಣಾಮ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ಶತ್" (3-2-124)। "ಪ್ರಣಮನ್ ಬ್ರಹ್ಮಣಾ ಪ್ರೋಕ್ತ: ರಾಜಕಾಧಿಪತಿ-ಸ್ತತ:" ಭट्टಿಂ 21-13। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛಿಪ್" (4-1-6)। -ಪ್ರಣಂತಿ -ಪ್ರಣಂತಿ.



ಪ್ರಣಮನ ಪ್ರಣಮನ (ನಂ) ಭಕ್ತಿಯಿಂದ ನಮಸ್ಕರಿಸುವುದು.

ಪ್ರಣಮ ಪ್ರಣಮ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಬಗ್ಗಿರುವ, ಕೆಳಮುಖವಾಗಿರುವ. ಪ್ರ+ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ರ:" (೩-೨-೧೬೭)। 2. (ಕಾಲಿಗೆ ಬಿದ್ದು) ನಮಸ್ಕಾರಮಾಡಿದ. "ದ್ರುತವಿಗಮಿತ-ವಿಪ್ರಯೋಗಚಿಹ್ನಾಮಪಿ ತನಯಾ ನೃಪತಿ: ಪದಪ್ರಣಮಾಮ್" ನೈಷಂ ೪-೧೧೮। 3. ವಿಧೇಯನಾದ, ವಿನೀತನಾದ.

ಪ್ರಣಯ ಪ್ರಣಯ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರೀತಿ, ಪ್ರೇಮ, ಅನುರಾಗ. ಪ್ರ+ಣಿನ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಅಚ್" (೩-೩-೪೬)। "ಪ್ರಣಯ-ಪ್ರಕಾಶನವಿದೋ ಮಧುರಾ: ಸುತರಾಮಭೀಷಜನಚಿತ್ತಹೃತ:" ಮಾಘಂ ೯-೪೪। 2. ವಿಸ್ತಂಭ, ವಿಶ್ವಾಸ. "ಸಖೇತಿ ಮತ್ವಾ ಪ್ರಸಮಂ ಯದುಕ್ತಂ ಹೇ ಕೃಷ್ಣ ಹೇ ಯಾದವ ಹೇ ಸಖೇತಿ। ಅಜಾನತಾ ಮಹಿಮಾಂ ತವೇದಂ ಮಯಾ ಪ್ರಮಾದಾತ್ ಪ್ರಣಯೇನ ವಾಪಿ" ಗೀತಾ ೧೧-೪೧। 3. ಯಾಚನೆ, ಬೇಡಿಕೆ. "ತದ್ಭೂತನಾಥಾನುಗ ನಾರ್ಹಸಿ ತ್ವಂ ಸಂಬಂಧಿನೋ ಮೇ ಪ್ರಣಯಂ ವಿಹಂತುಮ್" ರಘುಂ ೨-೪೭। 4. ಮುಕ್ತಿ, ಮೋಕ್ಷ. 5. ನಂಬಿಕೆ, ನೆಚ್ಚಿಕೆ. 6. ವಿನಯ, ವಿಧೇಯತೆ. "ಪ್ರಣಯ: ಪ್ರಶ್ರಯೇ ಪ್ರೇಮಿಣಿ ಯಾಚ್ಯಾವಿಸ್ತಮ್ಭಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ। 7. ದಯೆ, ಕರುಣೆ, ಕನಿಕರ. "ಏಷ ತೇ ಪ್ರಣಯೋ ವಿಪ್ರ ಶಿರಸಾ ಧಾರ್ಯತೇ ಮಯಾ" ಮೃಚ್ಛಂ ೧-೪೪।

ಪ್ರಣಯಕಲಹ ಪ್ರಣಯಕಲಹ (ಪುಂ) ಪ್ರೀತಿಯ ಜಗಳ, ಪತಿಪತ್ನಿಯರಿಗೆ ನಡೆಯುವ ಹುಸಿಯ ಜಗಳ. ಅನ್ತರಂಗದಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವಾಸವಿದ್ದರೂ ಯಾವುದಾದರೂ ತಾತ್ಕಾಲಿಕ ಅಸಮಾಧಾನದಿಂದ ಜಗಳವಾಡಿದಂತೆ ನಟಿಸುವುದು ಪ್ರಣಯಕಲಹ. ಈ ಕಲಹವು ಕೆಲವು ನಿಮಿಷಗಳಲ್ಲೇ ಶಾಂತವಾಗುವುದು. "ನಾಪ್ಯನ್ಯಸ್ಮಾತ್ ಪ್ರಣಯಕಲಹಾದ್ವಿಪ್ರಯೋಗೋಪಪತ್ತಿವಿತ್ತೇ-ಶಾನಾಂ ನ ಚ ಖಲು ವಯೋ ಯೌವನಾದನ್ಯದಸ್ತಿ" ಮೇಘಂ ೨-೨।

ಪ್ರಣಯಕುಪಿತ ಪ್ರಣಯಕುಪಿತ (ವಿಂ) ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಕೋಪಿಸಿಕೊಂಡ. ಪ್ರಣಯೇನ ಕುಪಿತ:। "ತ್ವಾಮಾಲಿಖ್ಯ ಪ್ರಣಯಕುಪಿತಾಂ ಧಾತುರಾಗೈ: ಶಿಲಾಯಾಮಾತ್ಮಾನಂ ತೇ ಚರಣಪತಿಸಂ-ಯಾವದಿಚ್ಛಾಮಿ ಕರ್ತುಮ್" ಮೇಘಂ ೨-೪೨।

ಪ್ರಣಯಕೋಪ ಪ್ರಣಯಕೋಪ (ಪುಂ) ಪ್ರೀತಿಯ ಕೋಪ, ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಮುನಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಪ್ರಣಯೇನ ಕೋಪ:। "ಪ್ರಣಯಕೋಪಭೃತೋಽಪಿ ಪರಾಙ್ಮುಖಾ: ಸಪದಿ ವಾರಿಧಾರಾರವ-ಭೀರವ:" ಮಾಘಂ ೬-೩೮।

ಪ್ರಣಯತ್ ಪ್ರಣಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಣಿನ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಅಧೀತಿಬೋಧಾಚರಣ-ಪ್ರಚಾರಣೈ: ದಶಾಶ್ರತಸ್ತ: ಪ್ರಣಯಶ್ರುಪಾಧಿಭಿ:" ನೈಷಂ ೧-೪। 2. ಒಯ್ಯುತ್ತಿರುವ, ಸಾಗಿಸುತ್ತಿರುವ,

ಪ್ರಣಯನ ಪ್ರಣಯನ (ನಂ) 1. ಒಯ್ಯುವುದು, ಸಾಗಿಸುವುದು. ಪ್ರ+ಣಿನ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಮಾಡುವುದು. "ಸರ್ಗಶೇಷಪ್ರಣಯನಾದ್ವಿಶ್ವಯೋನೇರನಂತರಮ್" ಕುಮಾರಂ ೬-೯। 3. ತರುವುದು. 4. ರಚಿಸುವುದು, ನಿರ್ಮಿಸುವುದು, ಕಾವ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು ಬರೆಯುವುದು. 5. ಅಗ್ನಿಯ ಒಂದು ಸಂಸ್ಕಾರ, ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಗಾರ್ಹಪತ್ಯದಿಂದ ತೆಗೆದು ಬೇರೆ ಕಡೆ ಇಡುವುದು. "ಶ್ರುಣುಮಣಿ ಪ್ರಣಯನಾದಿಸಂಸ್ಕೃತೇ ತೇಹಿವೀಷಿ ಜುಹ್ವಾಂ ಬಭೂವಿರೇ" ಮಾಘಂ ೧೪-೨೨।

ಪ್ರಣಯನೀಯ ಪ್ರಣಯನೀಯ (ವಿಂ) 1. ತರಲ್ಪಡುವ. 2. ಒಯ್ಯಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ+ಣಿನ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। 3. ಸಂಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ (ಅಗ್ನಿ).

ಪ್ರಣಯವತ್ ಪ್ರಣಯವತ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೇಮವುಳ್ಳ, ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪ್ರಣಯೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪)। 2. ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, ಆಸೆಯುಳ್ಳ. "ಸೋತೋವಹಾಂ ಪಥಿ ನಿಕಾಮಜಲಾಮತೀತ್ಯ ಜಾತ: ಸಖೇ ಪ್ರಣಯವಾನ್ ಮೃಗತೃಣಿಕಾ-ಯಾಮ್" ಶಾಕುಂ ೬-೧೬। 3. ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ, ಅನುರಾಗವುಳ್ಳ (ಪತಿ, ಗಂಡ). "ಸಿಕ್ತಾಯಾ: ಕ್ಷಣಮಭಿಷಿಚ್ಯ ಪೂರ್ವ-ಮನ್ಯಾಮನ್ಯಸ್ಯಾ ಪ್ರಣಯವತಾ ಬತಾಬಲಾಯಾ:" ಮಾಘಂ ೮-೪೩।

ಪ್ರಣಯಿತಾ ಪ್ರಣಯಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ, ಪ್ರೇಮದಿಂದಿರುವುದು. ಪ್ರಣಯಿನೋ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। "ತೀಕ್ಷ್ಣಾದುದ್ವಿಜತೇ ಮೃದೌ ಪರಿಭವಕ್ಲೇಶಾನ್ ಸಂತಿಷ್ಠತೇ ಮೂರ್ಖಾನ್ ದ್ವೇಷಿ ನ ಗಂಚ್ಯತಿ ಪ್ರಣಯಿತಾಮತ್ಯಂತವಿಹ-ತ್ಸವಪಿ" ಮುದ್ರಾಂ ೩-೪।

ಪ್ರಣಯಿನ್ ಪ್ರಣಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಪತಿ, ಗಂಡ. ಪ್ರಣಯೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)। "ಪ್ರಣಯಿನಂ ರಭಸಾ-ದುದರಶ್ರಿಯಾ ಬಲಿಭಯಾಲಿಭಯಾದಿವ ಸಸ್ವಜೇ" ಮಾಘಂ ೬-೧೩। (ವಿಂ) 2. ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, ಬಯಕೆಯುಳ್ಳ. "ಮೇಘಾಲೋಕೇ ಭವತಿ ಸುಖಿನೋಽಪ್ಯನ್ಯಥಾವೃತ್ತಿ ಚೇತ: ಕಂಠಾಶ್ಲೇಷಪ್ರಣಯಿನಿ ಜನೇ ಕಿಂ ಪುನರ್ದೂರಸಂಸ್ಥೇ" ಮೇಘಂ ೧-೩। 3. ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ, ಅನುರಾಗವುಳ್ಳ, ಪ್ರೇಮಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರನಾದ. "ಯದಿಂದಾವಾನಂದಂ ಪ್ರಣಯಿನಿ ಜನೇ ವಾ ನ ಭಜತೇ ವ್ಯನಕ್ತಚಿಂತಸ್ತಾಪಂ ತದಯಮತಿ-ಧೀರೋಽಪಿ ವಿಷಮಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೩-೯। 4. ಯಾಚಕ, ಬೇಡುವವನು. "ಪರಿಗ್ರಹಿತುಂ ಪ್ರಣಯಿಪ್ರಿಯತ್ವಾತ್ ತ್ರಿಲೋಚನ-ಸ್ತಾಮುಪಚಕ್ರಮೇ ಚ" ಕುಮಾರಂ ೩-೬೬। 5. ಸಹಚರ, ಒಡನಾಡಿ, ಮಿತ್ರ. "ಕುಶಾಡ್ಕುರಾದಾನಪರಿಕ್ಷತಾಙ್ಗುಲಿ: ಕೃತೋಽಕ್ಷಸೂತ್ರ-ಪ್ರಣಯಿ ತಯಾ ಕರ:" ಕುಮಾರಂ ೪-೧೧। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪)। ಪ್ರಣಯಿನಿ ಪ್ರಣಯಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೆಳತಿ, 2. ಪತ್ನಿ, ಹೆಂಡತಿ,



**ಪ್ರಣತನ ಪ್ರಣತನ (ನಂ)** 1. ನತನಮಾಡುವುದು, ಕುಣಿದಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ನೃತಿ (ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) । 2. ಕುಣಿಸುವುದು, ಅಲಗಾಡುವುದು, ಚಲಿಸುವುದು.

**ಪ್ರಣತಯಮಾನ ಪ್ರಣತಯಮಾನ (ವಿಂ)** 1. ಕುಣಿದಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ನೃತಿ (ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪೇ) + ಣಿಕ್ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಅಲಗಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಚಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ.

**ಪ್ರಣತಿಸ ಪ್ರಣತಿಸ (ವಿಂ)** 1. ಅಲಗಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಲಗಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ನೃತಿ (ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪೇ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । "ಪ್ರಣತಿಸಸ್ಮೇರಸರೋಜರಾಜಿ: ಪುರ: ಪರೀರಮ್-ಮಿಲನ್ಮಹೋಮಿ:" ಕುಮಾಂ ೧೩-೩೨ । 2. ಕುಣಿದಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪ್ರಣವ ಪ್ರಣವ (ಪುಂ)** 1. ಓಂಕಾರ, ಮಂತ್ರಗಳ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ವೇದಾಧ್ಯಯನದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಮತ್ತು ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಹೇಳಬೇಕಾದ ಶಬ್ದ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ನುಯತೆ-ಪ್ರ + ಗು (ಸ್ತುತೌ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭) । ಬ್ರಹ್ಮವಿಷ್ಣುಮಹೇಶ್ವರ-ರೂಪತ್ವಾತ್ ಪ್ರಣಮ್ಯತೇ — ಪ್ರ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) ಕರ್ಮಂ "ಘಕ್" (೩-೩-೧೯) ವಾ । ಪೃಷಂ । "ಆಂಕಾರ: ಪ್ರಣವ-ಸ್ತಾರೋ ವೇದಾದಿವರ್ತುಲೋ ಧ್ರುವ: । ತ್ರೈಗುಣ್ಯಂ ತ್ರಿಗುಣೋ ಬ್ರಹ್ಮ ಸತ್ಯೋ ಮನ್ತ್ರಾದಿರವ್ಯಯ:" । ಮಂತ್ರಗಳ ಆದಿ ಮತ್ತು ವೇದಾಧ್ಯಯನದ ಆದಿ ಮತ್ತು ಅಂತ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಣವೋಚ್ಚಾರಣದಿಂದ ಬ್ರಹ್ಮ ವಿಷ್ಣು ಮಹೇಶ್ವರರ ನಾಮಸಂಹಾರವಾಗುವುದು. "ಅಕಾರೋ ವಿಷ್ಣುಃ ಪೃಷ್ಠ: ಉಕಾರಸ್ತು ಮಹೇಶ್ವರ: । ಮಕಾರೇಣೋಚ್ಯತೇ ಬ್ರಹ್ಮಾ ಪ್ರಣವೇನ ತ್ರಯೋ ಮತಾ:" । "ಅಕಾರೇಣ ಜಗತ್ಪಾತಾ ಸಂಹರ್ತಾ ಸ್ಯಾದುಕಾರತ: । ಮಕಾರೇಣ ಜಗತ್ಸೃಷ್ಟಾ ಪ್ರಣವಾರ್ಥ ಉದಾಹೃತ:" । ಓಂಕಾರವು ಪರಮಾತ್ಮನ ಸ್ವರೂಪ. ಸಕಲವೂ ಪರಮಾತ್ಮನಿಂದಲೇ ಉತ್ಪನ್ನವಾದುವು. ಎಲ್ಲವೂ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಶೇಷಭೂತವಾದುವು. ಸರ್ವವೂ ಪರಮಾತ್ಮನ ಶರೀರವಾಗಿ ಅವನಲ್ಲೇ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವುವು. ಅದುದರಿಂದ ಸರ್ವಪ್ರಕಾರದಿಂದಲೂ ಸರ್ವವೂ ಪರಮಾತ್ಮನ ಸ್ವರೂಪವಾಗಿವೆ. ಹೀಗೆ ಪರಮಾತ್ಮನು ಸರ್ವಭೂತಾತ್ಮಕನಾಗಿರುವನು. "ರಸೋಹಮಸ್ಯ ಕೌಂತೇಯ ಪ್ರಭಾಸ್ಮಿ ಶಶಿಸೂರ್ಯಯೋ: । ಪ್ರಣವ: ಸರ್ವವೇದೇಷು ಶಬ್ದ: ಕ್ಷೇ ಪೌರೂಪಂ ನೃಪು: । ಪುಣ್ಯೋ ಗಂಧ: ಪೃಥಿವ್ಯಾಂ ಚ ತೇಜಸ್ವಾಸ್ಮಿ ವಿಭಾವಸೌ । ಜೀವನಂ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ತಪಸ್ವಾಸ್ಮಿ ತಪಸ್ವಿವು" ಇತ್ಯಾದಿ ಗೀತಾ ೭ । ಪ್ರಣವಾಕ್ಷರವು ಮೋಕ್ಷಪ್ರದವಾದುದು. "ಆಮಿತೀಕಾಕ್ಷರಂ ಬ್ರಹ್ಮ ವ್ಯಾಹರನ್ ಮಾನುಸ್ಮರನ್ । ಯ: ಪ್ರಯಾತಿ ತ್ಯಜನ್ ದೇಹಂ ಸ ಯಾತಿ ಪರಮಾಂ ಗತಿಮ್" ಗೀತಾ

೮-೧೩ । "ಇತ್ಯೇತದಕ್ಷರಂ ಬ್ರಹ್ಮ ಪರಮೋಕ್ಷಾರಸಂಜಿತಮ್ । ಯಸ್ತಂ ವೇದ ನರ: ಸಮ್ಯಕ್ ತಥಾ ವ್ಯಾಪ್ಯತಿ ವಾ ಪುನ: । ಸಂಸಾರ-ಚಕ್ರಮುತ್ಸೃಜ್ಯ ತ್ಯಕ್ತವಿಧಿಬಂಧನ: । ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ ಬ್ರಹ್ಮನಿಲಯಂ ಪರಮಂ ಪರಮಾತ್ಮನಿ" ಮಾರ್ಕಂ । 2. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಪ್ರಾಣಾನ್ ಸರ್ವಾನ್ (ಪರಮಾತ್ಮನಿ) ಪ್ರಣಾಮಯತಿ ಇತಿ ಪ್ರಣವ: । ಪ್ರ + ಗು (ಸ್ತುತೌ) ಅಂತರ್ಮಾವಿತರ್ಯಥ: । ತತ: "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) । ಪ್ರಣವಾಕ್ಷರಗಳಿಂದ ಆತ್ಮೋಚ್ಚೇವನಸಂಬಂಧವನ್ನು ಸ್ಮರಣೆಗೆ ತಂದು (ಜ್ಞಾಪಿಸಿ) ಎಲ್ಲರೂ ತನಗೆ ನಮಸ್ಕರಿಸಿ ಆಶ್ರಯಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಪ್ರಣವನು. "ಆತ್ಮೋಜ್ಜೀವನಸಮ್ಬಂಧಮುದೋಹ್ಯ ಪ್ರಣವೇನ ವೇ । ಪಾದಾರವಿಂದಯೋಸ್ತಾನು ಯ: ಪ್ರಣಾಮಯತಿ ನಿಯತಶ: । ಪ್ರಣವ: ಸ ಸಮಾಖ್ಯಾತ: ಸಪ್ತಾರ್ಣೋ ಮೋಕ್ಷದೋ ಮನು:" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ್ತಿ: । "ಪ್ರಣವ: ಪರಮಾತ್ಮನಿ: ಆಂ ತತ್ಸದಿತಿ ವಿಶ್ರುತ:" ಇತಿ ಚ । "ಪ್ರಾಣದ: ಪ್ರಣವ: ಪಣ:" ವಿಂ ಸಂ ।

**ಪ್ರಣಯತ್ ಪ್ರಣಯತ್ (ವಿಂ)** 1. ನಾಶಹೊಂದುತ್ತಿರುವ. 2. ಅದೃಶ್ಯವಾಗುತ್ತಿರುವ, ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗದೆ ಇರುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಣಶ (ಅದರ್ಶನೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಪ್ರಣಯತ್ನಪಿ ನಾಶಕನೋದಯೇತು ಬಾಣಗೋಚರಮ್ । ತ್ವಯೈವೋಕ್ತಂ ಮಹಾಮಾಯೋ ಮಾರೀಚೋ ರಾಮಹಸ್ತಿನ:" ಮಹಿಂ ೯-೧೩೪ ।

**ಪ್ರಣಪ್ರ ಪ್ರಣಪ್ರ (ವಿಂ)** 1. ನಷ್ಟವಾದ, ಕಳೆದುಹೋದ. ಪ್ರ + ಣಶ (ಅದರ್ಶನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) । "ಪ್ರಣಪ್ರಾಧಿಗತಂ ದ್ರವ್ಯಂ ತಿಷ್ಠೇದ್ವುಕ್ತೇರಧಿಷ್ಠಿತಮ್" ಮನುಂ ೮-೩೪ । 2. ನಾಶ ಹೊಂದಿದ, ಕಣ್ಮರೆಯಾದ. "ವಿದ್ಯುತ್ಪ್ರಣಾಶಂ ಸ ವರಂ ಪ್ರಣಪ್ರೋ ಯದೋರ್ಧ್ವಶಿಖಂ ತೃಣವದ್ವಿಶುಷ್ಕ:" ಮಹಿಂ ೩-೯೮ ।

**ಪ್ರಣಾದ ಪ್ರಣಾದ (ಪುಂ)** 1. ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಮಾತಾಡುವ ಶಬ್ದ, ಅನುರಾಗದಿಂದಾಡುವ ಸೀತಾರ. ಪ್ರಕೃಷ್ಟೋ ನಾದ: । ಪ್ರ + ಣದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) ಭಾವೇ "ಘಕ್" (೩-೩-೧೮) । "ಪ್ರಣಾದಸ್ತು ಶಬ್ದ: ಸ್ಯಾದನುರಾಗಜ:" ಅಮಂ । 2. ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಶಬ್ದ, ದೊಡ್ಡ ಶಬ್ದ, ಎತ್ತರದ ಶಬ್ದ. "ಅವಲೋಕನಾಯ ಸುರವಿಧಿಷಾಂ ದ್ವಿಷ: ಪಠಹಪ್ರಣಾದವಿಹಿತೋಪಹೃತಯ:" ಮಾಧಂ ೧೩-೩೦ ।

**ಪ್ರಣಾಮ ಪ್ರಣಾಮ (ಪುಂ)** 1. ನಮಸ್ಕಾರ, ವಿನಯದಿಂದ ಕೈ ಮುಗಿಯುವುದು, ಭಕ್ತಿಯಿಂದ ತಾನು ಚಿಕ್ಕವನೆಂದು ತಿಳಿಸುವ ಕೈಗಳ (ಅಂಜಲಿಯ) ಜೋಡಣೆ. ಪ್ರ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) ಭಾವೇ "ಘಕ್" (೩-೩-೧೮) । "ಕೃತ-ಪ್ರಣಾಮಸ್ಯ ಮಹಿಂ ಮಹಿಭುಜೇ ಜಿತಾಂ ಸಪತ್ನೇನ ನಿವೇದಯಿಷ್ಯತ:" ಕಿರಾಂ ೧-೨ । "ಮೂರ್ತಾಂ ಪ್ರಣಾಮಂ ವೃಷಭಧ್ವಜಸ್ಯ" ಕುಮಾಂ ೩-೬೨ । 2. ಅಪ್ಪಾಂಗಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ನಮಸ್ಕಾರ; ಭುಜಗಳು, ಪಾದಗಳು, ಮಂಡಿಗಳು, ವಕ್ಷಸ್ಸು (ಎದೆ),



ಲಲಾಟ (ಹಣೆ), ದೃಷ್ಟಿ (ಕಣ್ಣು), ಮನಸ್ಸು ಮತ್ತು ಮಾತು ಈ ಎಂಟು ಅಂಗಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ನಮಸ್ಕಾರವು ಸಾಷ್ಟಾಂಗ ಪ್ರಣಾಮ. "ದೋಷ್ಯಾ ಪದ್ಧಯಾ ಚ ಜಾನುಮ್ಯಾಮುರಸಾ ಶಿರಸಾ ದೃಶಾ | ಮನಸಾ ವಚಸಾ ಚೈವ ಪ್ರಣಾಮೋಽಷ್ಟಾಂಗ ಇರಿತಃ" ವಂದನಾಂ ಆಹ್ನಿಕಂ | ಪ್ರಣಾಮವು (1) ಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೈ ಜೋಡಿಸಿ ಮುಗಿಯುವುದು (2) ಅಷ್ಟಾಂಗ ಸಹಿತ ಪ್ರಣಾಮ (3) ಪಂಚಾಂಗ ಪ್ರಣಾಮ ಮತ್ತು (4) ಅಭಿವಾದನಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ಒಂದು ಕೈಯಿಂದ ನಮಸ್ಕರಿಸುವುದು ದೋಷವಾಗುವುದು. "ಏಕಹಸ್ತ-ಪ್ರಣಾಮಃ ಏಕಂ ವಾಪಿ ಪ್ರದಕ್ಷಿಣಮ್ | ಅಕಾಲೇ ದರ್ಶನಂ ವಿಷ್ಣೋರ್ಹಂತಿ ಪುಷ್ಯಂ ಪುರಾಕೃತಮ್" ತನ್ತ್ರಸಾಂ | ಪ್ರಣಾಮವು (1) ಕಾಯಿಕ (ಸಾಷ್ಟಾಂಗ ಪ್ರಣಾಮ) (2) ವಾಚಿಕ (ಮಂತ್ರೋಚ್ಚಾರಣಾರ್ಪಣಾ ಮೂಡುವ ನಮಸ್ಕಾರ) ಮತ್ತು (3) ಮಾನಸ (ಭೂಸ್ವರ್ಗ ಮೂಡದೆ ಕೇವಲ ಕೈ ಜೋಡಿಸಿ ಮಾಡುವ ನಮಸ್ಕಾರ) ಎಂದು ಮತ್ತೆ ಮೂರು ವಿಧ. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯದು ಉತ್ತಮ. ಎರಡನೆಯದು ಮಧ್ಯಮ. ಮೂರನೆಯದು ಅಧಮ. "ಪ್ರಸಾರ್ಯ ಪಾದೌ ಹಸ್ತೌ ಚ ಪತित್ವಾ ದೃಢವತ್ ಕ್ಷಿತೌ | ಜಾನುಮ್ಯಾಮವನೀಂ ಗತ್ವಾ ಶಿರಸಾಽಽಸ್ಪೃಶ್ಯ ಮೇದಿನೀಮ್ | ಕ್ರಿಯತೇ ಯೋ ನಮಸ್ಕಾರಃ | ಉತ್ತಮಃ ಕಾರ್ಯಿಕಃ ಸ್ಮೃತಃ" ಇತ್ಯಾದಿ. ಕಾಲಿಕಾಪುಂ | "ವಿಷ್ಣೋರ್ದಂಡಪ್ರಣಾಮಾರ್ಥಂ ಭಕ್ತೇನ ಪತತಾ ಭುವಿ | ಪಾತಿಸಂ ಪಾತಕಂ ಕೃತ್ವಂ ನೋತ್ತಿಷ್ಠತಿ ಪುನಃ ಸಹ" |

**ಪ್ರಣಾಯ ಪ್ರಣಾಯ** (ವಿಂ) 1. ಜೋರ, ಕಳ್ಳ, ವಿಶ್ವಾಸಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಲ್ಲದವನು. 2. ವಿರಕ್ತ, ಸುಖದಲ್ಲಿ ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದವನು. ವಿಶ್ವಾಸಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾಗಿರುವುದು ಮತ್ತು ಸುಖಾಪೇಕ್ಷೆ ಇವು ಸಂಮತವಾಗುವುದು. ಇಂತಹ ಸಂಮತಿಯಿಲ್ಲದ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಈ ಪ್ರಯೋಗ. ಪ್ರ + ಣಿವ್ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಪ್ಯತ್" (3-1-124) | "ಪ್ರಣಾಯೋಽಸಂಮತೌ" ಪಾಂ ಸುಂ | "ನ ಪ್ರಣಾಯೋ ಜನಃ ಕಚ್ಚಿತ್ ನಿಕಾಯಂ ತೇಽಧಿತಿಷ್ಠತಿ | ದೇವಕಾರ್ಯವಿಧಾತಾಯ ಧರ್ಮದ್ರೋಹಿ ಮಹೋದಯೇ" ಭಟಿಂ 6-66 | ಸಂಮತಿಯಿರುವಲ್ಲಿ ಪ್ರಣಯಃ ಎಂದಾಗುವುದು.

**ಪ್ರಣಾಲ ಪ್ರಣಾಲ** (ಪುಂ) 1. ನೀರು ಹರಿಯುವ ಮಾರ್ಗ, ಕಾಲುವೆ ಮೊದಲಾದುದು. ಪ್ರಣಲ್ಯತೇ ಜಲಾದಿನ್ರಿ:ಸಾರ್ಯತೇಜೇನ — ಪ್ರ + ಣಲ (ಗನ್ವೇ ಬನ್ವನೇ ಚ) "ಛ್" (3-3-121) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛಿಪ್" (4-1-41) | -ಣಾಲಿ -ಣಾಲೀ. "ಉಚ್ಚೇರಥಃ ಪಾತಿಪಯೋಮುಚೋಽಪಿ ಸಮೂಹಮುಹುಃ ಪಯಸಾಂ ಪ್ರಣಾಲಯಃ" ಮಾಘಂ 3-44 | 2. ಪರಂಪರೆ, ಎಡಬಿಡದಿರುವಿಕೆ, ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿರುವಿಕೆ.

**ಪ್ರಣಾಶ ಪ್ರಣಾಶ** (ಪುಂ) 1. ನಾಶವಾಗುವುದು, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸದೆ ಹೋಗುವುದು. ಪ್ರ + ಣಶ (ಅದರ್ಶನೇ) "ಛ್" (3-3-12) | "ಧ್ರುವಂ ಪ್ರಣಾಶಃ ಪ್ರಹಿತಸ್ಯ ಪತ್ರಿಣಃ ಶಿಲೋಂಚಯೇ ತಸ್ಯ ವಿಮಾರ್ಗಂ ನಯಃ" ಕಿರಾಂ 14-9 | 2. ನಾಶ, ಅಳಿವು, ಮರಣ. "ಮರ್ತುಃ ಪ್ರಣಾಶಾದಥ ಶೋಚನೀಯಂ ದಶಾಂತರಂ ತತ್ರ ಸಮಂ ಪ್ರಪನ್ನೇ" ರಘುಂ 14-1 |

**ಪ್ರಣಾಶನ ಪ್ರಣಾಶನ** (ನಂ) 1. ನಾಶಮಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ಣಶ (ಅದರ್ಶನೇ) + ಣಿವ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) | "ಸ ಚಾಪಮುತ್ಸೃಜ್ಯ ವಿಬೃಹ್ಮಮತ್ತರಃ ಪ್ರಣಾಶನಾಯ ಪ್ರಬಲಸ್ಯ ವಿವಿಧಿಃ" ರಘುಂ 3-60 | (ವಿಂ) 2. ನಾಶಪಡಿಸುವ, ಇಲ್ಲದಂತೆ ಮಾಡುವ, ಹಾಳುಮಾಡುವ. ಪ್ರ + ಣಶ + ಣಿವ್ ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134) |

**ಪ್ರಣಾಶಯತ್ ಪ್ರಣಾಶಯತ್** (ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಇಲ್ಲದಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಣಶ (ಅದರ್ಶನೇ) + ಣಿವ್ "ಶತ್" (3-2-124) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛಿಪ್" (4-1-6) | -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

**ಪ್ರಣಾಶಿತ ಪ್ರಣಾಶಿತ** (ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರ + ಣಶ (ಅದರ್ಶನೇ) + ಣಿವ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102) |

**ಪ್ರಣಾಶ್ಯ ಪ್ರಣಾಶ್ಯ** (ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ + ಣಶ (ಅದರ್ಶನೇ) + ಣಿವ್ "ಪ್ಯತ್" (3-1-124) |

**ಪ್ರಣಿಗದತ್ ಪ್ರಣಿಗದತ್** (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೇಳುತ್ತಿರುವ, ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ನಿ + ಗದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಶತ್" (3-2-124) | "ಸಮಯ ಏವ ಕರೋತಿ ಬಲಾಬಲಂ ಪ್ರಣಿಗದಂತ ಇತಿವ ಶರೀರಿಣಾಮ್" ಮಾಘಂ 6-44 | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛಿಪ್" (4-1-6) | -ಗದಂತಿ -ಗದಂತೀ.

**ಪ್ರಣಿಗದತ್ ಪ್ರಣಿಗದತ್** (ವಿಂ) ಹೊಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಹೊಲ್ಲಲು ಯತ್ನಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ನಿ + ಹನ (ಹಿಸಾಗಲ್ಯಾಃ) "ಶತ್" (3-2-124) | "ಪ್ರಣಿಗದಾತಿತ್ ಪ್ರಣಿಗದಂತಂ ಧನಃ ಪ್ರಣಿಗದಧಿವ" ಭಟಿಂ 9-99 | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛಿಪ್" (4-1-6) | -ಗದಂತಿ -ಗದಂತೀ.

**ಪ್ರಣಿದಧತ್ ಪ್ರಣಿದಧತ್** (ವಿಂ) 1. ಕಳಗೆ ಇಡುತ್ತಿರುವ, ಇರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ನಿ + ಡಧಾತ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಶತ್" (3-2-124) | 2. ಸಾವಧಾನವಾಗಿ ನೋಡುತ್ತಿರುವ, ಯೋಚಿಸಿ ನೋಡುತ್ತಿರುವ. "ಮೃದುಸುರಮಿಸುಜಾತಬನ್ಧುರಾಃ ಪ್ರಣಿದಧದಧನಿಬದ್ಧಪಕ್ಷಾಃ" ಯಾದಂ 24-42 | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛಿಪ್" (4-1-6) | -ದಧಂತಿ -ದಧಂತೀ.



ಪ್ರಣಿಧಾನ ಪ್ರಣಿಧಾನ (ನಂ) 1. ಪ್ರಯತ್ನ. ಪ್ರಣಿಧೀಯತೆ—

ಪ್ರ + ನಿ + ಡುಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫)। “ಪ್ರಣಿಧಾನೇನ ಧೈರ್ಯೇಣ ರೂಪೇಣ ವಚಸಾ ಚ ಮೇ। ಮನಃ ಪ್ರವಿಷ್ಟೋ ದೇವರ್ಷಿ ಗುಣಕೇಶಯಾಃ ಪತಿವರಃ” ಭಾಂ. ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೦೩-೨೧। 2. ಸಮಾಧಿ, ಧ್ಯಾನ, ಯೋಗಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಏಕವಸ್ತುವಿಷಯಕ ನಿರಂತರ ಚಿಂತನೆ. “ಸೋಽಪಶ್ಯತ್ ಪ್ರಣಿಧಾನೇನ ಸಂತತೇಃ ಸ್ತಂಭಕಾರಣಮ್” ರಘುಂ ೧-೭೪। 3. ಭಕ್ತಿ. “ಇಶ್ವರಪ್ರಣಿಧಾನಾದ್ವಾ” ಪಾಂ. ಯಂ. ಸುಂ ೧-೨೩। 4. ಚಿತ್ತೈಕ್ಯಾಗ್ರ್ಯ. 5. ಈಶ್ವರನಲ್ಲಿ ಸಕಲ ಕರ್ಮಗಳನ್ನೂ ಅರ್ಪಿಸುವುದು, ಸರ್ವಕರ್ಮಫಲತಾಗ್ನಿ. 6. ಅಂತಹ ಕರ್ಮಫಲಗಳನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸದಿರುವಿಕೆ, ಫಲಸಂನ್ಯಾಸ. “ತಪಃಸ್ವಾಧ್ಯಾಯೇಶ್ವರಪ್ರಣಿಧಾನಾನಿ ಕ್ರಿಯಾಯೋಗಃ” ಪಾಂ. ಯಂ. ಸುಂ ೨-೧। 7. ಪ್ರವೇಶ, ಒಳಗೆ ಹೋಗುವುದು. “ಬಹುಶಃ ಕ್ಷತಾ ಹೀನಶಸ್ತ್ರಪ್ರಣಿಧಾನೇನಾಪವಿಡ್ವಾ” ಸುಶ್ರುತಂ. ಶಾಕೀಯಂ ೮।

ಪ್ರಣಿಧಿ ಪ್ರಣಿಧಿ (ಪುಂ) 1. ಗೂಢಚಾರ, ರಹಸ್ಯಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿಯುಕ್ತನಾದವನು. ಪ್ರಣಿಧೀಯತೆ—ಪ್ರ + ನಿ + ಡುಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಕ್ರಿಃ” (೩-೩-೯೨)। “ಅಧ್ಯಾಪಿತಸ್ಯೋಶನಸಾಪಿ ನೇತಿ ಪ್ರಯುಕ್ತರಾಗಪ್ರಣಿಧಿವಿಶಿಷ್ಟೇ” ಕುಮಾಂ ೩-೬। “ಶ್ರುತಂ ಮಯಾ ಮತ್ಪ್ರಣಿಧಿಃ ಸ ವರ್ಗಃ” ೩-೧೭। 2. ಅನುಚರ, ಸೇವಕ, ಆಳು. 3. ಯಾಚನೆ, ಬೇಡುವುದು. 4. ಅವಧಾನ.

ಪ್ರಣಿನೆಸಾ ಪ್ರಣಿನೆಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಮಸ್ಕರಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಪ್ರ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) + ಸನ್ “ಅಃ” (೩-೩-೧೦೨)। ಪ್ರಣಿನೆಸು ಪ್ರಣಿನೆಸು (ವಿಂ) ನಮಸ್ಕರಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಪ್ರಣಂತುಮಿಚ್ಛುಃ—ಪ್ರ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) + ಸನ್ “ಃ” (೩-೨-೧೬೮)। “ಪ್ರಣಿನೆಸುರಿವಾಬೋಧಿ ಪರ್ಯಸ್ತಶಕದೋಪಮಃ” ಯಾದಂ ೨೨-೨೦೪।

ಪ್ರಣಿನವತ್ ಪ್ರಣಿನವತ್ (ವಿಂ) ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗುತ್ತಿರುವ, ಗರ್ಜಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ನಿ + ವದ (ಅವ್ಯಕ್ತ ಶಬ್ದೇ) “ವತ್” (೩-೨-೧೨೪)। “ಪ್ರಣಯಾದೀತ್ ಪ್ರಣಿಧನಂತೆ ಧನಃ ಪ್ರಣಿನದನ್ವಿವ” ಭಟ್ಟಂ ೯-೯೯। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬)। -ಣಿನದಂತಿ -ಣಿನದಂತೀ.

ಪ್ರಣಿಪತತ್ ಪ್ರಣಿಪತತ್ (ವಿಂ) 1. ನಮಸ್ಕರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ನಿ + ಪಲ್ (ಗತೌ) “ವತ್” (೩-೨-೧೨೪)। 2. ಶರಣಾಗತನಾಗುತ್ತಿರುವ.

ಪ್ರಣಿಪತನ ಪ್ರಣಿಪತನ (ನಂ) 1. ನಮಸ್ಕರಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ನಿ + ಪಲ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಕಾಲಿಗೆ ಬಿದ್ದು ಶರಣಾಗತನಾಗುವುದು.

ಪ್ರಣಿಪಾತ ಪ್ರಣಿಪಾತ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಣಾಮ, ನಮಸ್ಕಾರ. ಪ್ರ + ನಿ + ಪಲ್ (ಗತೌ) “ವತ್” (೩-೩-೧೨೮)। “ತಸ್ಯಾಃ ಸಖೀಮ್ಯಾಂ ಪ್ರಣಿಪಾತಪೂರ್ವ ಸ್ವಹಸ್ತಲೂನಃ ಶಿಶಿರಾತ್ಯಯಸ್ಯ” ಕುಮಾಂ ೩-೬೧। 2. ಕಾಲಿಗೆ ಬಿದ್ದು ಶರಣಾಗತನಾಗುವುದು. “ಪ್ರಣಿಪಾತಪ್ರತೀಕಾರಃ ಸಂರಂಭೋ ಹಿ ಮಹಾತ್ಮನಾಮ್” ರಘುಂ ೪-೬೪।

ಪ್ರಣಿಹಿತ ಪ್ರಣಿಹಿತ (ವಿಂ) 1. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ನಿ + ಡುಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। 2. ನೀಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಂದಕ್ಕೆ ಚಾಚಲ್ಪಟ್ಟ. “ಮಾಮಾಕಾಶ-ಪ್ರಣಿಹಿತಭುಜಂ ನಿರ್ದಯಾಶ್ಲೇಷಹೇತೋಲ್ಘಾಪಾಸ್ತೇ ಕಥಮಪಿ ಮಯಾ ಸ್ವಪ್ನಸಂದರ್ಶನೇಷು” ಮೇಘಂ ೨-೪೩। 3. ಏಕಾಗ್ರತೆಯಿಂದ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಪ್ರಣಿಹಿತಧಿಯಾಂ ತ್ವತ್ಸಂಪೃಕ್ತೇ ವೃಷಾದ್ರಿಶಿಖಾಮಣೌ ಪ್ರಸುಮರಸುಧಾಧಾರಾ-ಕಾರಾ ಪ್ರಸೀದತಿ ಭಾವನಾ” ದಯಾಶಂ ೮೦। 4. ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ, ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೀರಲ್ಪಟ್ಟ (ದೃಷ್ಟಿ). “ಸಾ ಸೀತಾಮಕ್ಕುಮಾರೋಪ್ಯ ಮರ್ತು-ಪ್ರಣಿಹಿತೇಕ್ಷಣಾಮ್” ರಘುಂ ೧೫-೮೪। “ಅಥ ಪ್ರಣಿಹಿತಂ ನ್ಯಸ್ತೇ ಪ್ರಾಪ್ತೇಽಪಿ ಚ ಸಮಾಹಿತೇ” ಮೇದಿಂ 1। 6. ಸಾವಧಾನವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಎಚ್ಚರದಿಂದ ಕೂಡಿದ. “ತತಃ ಪ್ರಣಿಹಿತಃ ಸ್ವಾರ್ಥೇ” ಭಟ್ಟಂ ೯-೯೯।

ಪ್ರಣಿ ಪ್ರಣಿ (ವಿಂ) ಉಂಟುಮಾಡುವ, ಏರ್ಪಡಿಸುವ. ಪ್ರಣಯತಿ—ಪ್ರ + ಣಿನ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) “ವಿವಪ್” (೩-೨-೬೧)। “ಸಾಯಂತಿನೀಂ ತಿಥಿಪ್ರಥ್ಯಃ ಪಕ್ಷಜಾತಾಂ ದಿವಾತನೀಮ್” ಭಟ್ಟಂ ೫-೬೫।

ಪ್ರಣಿತ ಪ್ರಣಿತ (ಪುಂ) 1. ಮಂತ್ರದಿಂದ ಸಂಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಅಗ್ನಿ. ಪ್ರಕೃಷ್ಣ ನೇತಃ—ಪ್ರ + ಣಿನ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। (ವಿಂ) 2. ಸರಿಯಾಗಿ ಒಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಕೃಷ್ಣ ನೇತಮ್। 3. ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ನೆರವೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಅಸೇವತಾಮ್ ಮಧುಗಂಧವಾರಿಣಿ ಪ್ರಣಿತಲೀಲಾಪ್ಲವನೋ ವನಾನಿಲಃ” ನೈಷಂ ೧-೧೦೬। 4. ಸರಿಯಾದ ಪಾಕದಿಂದ ರಸಯುಕ್ತವಾದ ಅಡಿಗೆ. ಪ್ರಣೀಯತೇ ಸಮ—ಪ್ರ + ಣಿನ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। “ಪ್ರಣಿತಮುಪಸಂಪನ್ನಮ್” ಅಮಂ 1। 5. ರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. “ಉತ್ತರಂ ರಾಮಚರಿತಂ ತತ್ಪ್ರಣಿತಂ ಪ್ರಯೋಜ್ಯತೇ” ರಂ. ರಾಂ ೧-೨। 6. ಏರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ನೃಪಸ್ಯ ವರ್ಣಾಶ್ರಮಪಾಲನಂ ಯತ್ಸ ಎವ ಧರ್ಮೋ ಮನುನಾ ಪ್ರಣಿತಃ” ರಘುಂ ೧೪-೬೭। 7. ಪ್ರವೇಶಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಳಕ್ಕೆ ತರಲ್ಪಟ್ಟ. “ಪ್ರಣಿತಃ ಸಂಸ್ಕೃತಾಗ್ನೌ ನಾ ಯಜ್ಞಪಾಪಾಂತರೇ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್। ತ್ರಿಭು ಕ್ಷಿಪ್ತೋಪ-



ಸಂಪನ್ನವಿಹಿತೇ ಪ್ರವೇಶಿತೇ" ಮೇದಿಂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತಾ-ತಾ.  
ಯಾಗಸಂಬಂಧವಾದ ಒಂದು ಪಾತ್ರೆ.

ಪ್ರಣೀತವತ್ ಪ್ರಣೀತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಮಾಡಿದವನು.  
2. ವಿಧಿಸಿದವನು. 3. ರಚಿಸಿದವನು. 4. ಒಯ್ದವನು.  
5. ತಯಾರಿಸಿದವನು. ಪ್ರ + ಣೀ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ್ತವತು:"  
(3-2-102). "ಜಗಜ್ಜಯಂ ತೇನ ಚ ಕೌಶಮಕ್ಷಯಂ ಪ್ರಣೀತವಾನ್  
ಶೇಷವಶೇಷವಾನಯಮ್" ನೆಫಂ 1-19.

ಪ್ರಣುತ ಪ್ರಣುತ (ವಿಂ) ಸ್ತುತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಕೊಂಡಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಣು (ಸ್ತುತೌ) "ಕ್ತ:" (3-2-102).

ಪ್ರಣುದತ್ ಪ್ರಣುದತ್ (ವಿಂ) ಮುಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುತ್ತಿರುವ,  
ಮುಂದಕ್ಕೆ ನೂಕುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಣುದ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಶತ್"  
(3-2-124). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-6). -ದಂತಿ  
-ದಂತೀ, -ದಂತೀ -ದಂತೀ. "ಶಾನತ್" (3-2-124).  
-ಣುದಮಾನ:-ಣುದಮಾನಃ.

ಪ್ರಣುದಮಾನ ಪ್ರಣುದಮಾನ (ವಿಂ) ಮುಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ, ಮುಂದಕ್ಕೆ ನಡೆಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

ಪ್ರಣುಜ ಪ್ರಣುಜ (ವಿಂ) ಮುಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಂದಕ್ಕೆ  
ನೂಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಣುದ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102).  
ನಿಷಾತಕಾರಸ್ಯ ವಾ ನಃ. ಪಕ್ಷೆ ಪ್ರಣುಜಮ್ ಪ್ರಣುಜಮ್.  
"ದಯಿತಾವಲೋಕನವಿಕಸನಯನಪ್ರಸರಪ್ರಣುಜಮಿವ ವಾರಿಹಮ್"  
ಮಾಘಂ 9-91.

ಪ್ರಣೇಜಕ ಪ್ರಣೇಜಕ (ವಿಂ) 1. ತೊಳೆಯುವ, ಶುದ್ಧ  
ಮಾಡುವ. 2. ಪೋಷಿಸುವ, ಸಾಕುವ. ಪ್ರ + ಣೀಜಿರ್  
(ಶೌಚಪೋಷಣಯೋಃ) "ಣ್ವಲ್" (3-1-133).

ಪ್ರಣೇಜನ ಪ್ರಣೇಜನ (ನಂ) 1. ತೊಳೆಯುವುದು, ಶುದ್ಧ  
ಮಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ಣೀಜಿರ್ (ಶೌಚಪೋಷಣಯೋಃ) "ಲ್ಯುಡ್"  
(3-3-114). 2. ಪೋಷಿಸುವುದು. 3. ತೊಳೆಯುವ  
ನೀರು, ಶುದ್ಧಮಾಡುವ ಜಲ. ಪ್ರ + ಣೀಜಿರ್ ಕರಂ  
"ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114). 4. ಪೋಷಿಸುವ, ಸಾಕುವ.  
ಕರಂ "ಲ್ಯು:" (3-1-134).

ಪ್ರಣೇತ್ ಪ್ರಣೇತ್ (ವಿಂ) 1. ಗ್ರಂಥವನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸುವವನು,  
-ರಚಿಸುವವನು. ಪ್ರ + ಣೀ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ತೃತ್"  
(3-1-133). 2. ನಾಯಕ, ಯಜಮಾನ, ಮುಂದಾಳು,  
3. ಸಾರಥಿ, ರಥವನ್ನು ನಡೆಸುವವನು. "ತೃಣಂ ಪ್ರಣೇತ್ರಾ  
ಕೃತನಾದಮುಚ್ಚಕೈಃ ಪ್ರಣೋದಿತಂ ವೇಸರಯುಗ್ಮಮಧ್ವನಿ" ಮಾಘಂ  
12-19. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-6). -ತ್ರಿ -ತ್ರಿ.

ಪ್ರಣೇಯ ಪ್ರಣೇಯ (ವಿಂ) ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಶಕ್ತನಾದ,  
ಅಧೀನನಾಗಿರುವ. ಪ್ರಣೇತುಂ ಶಕ್ಯಃ - ಪ್ರ + ಣೀ (ಪ್ರಾಪಣೆ)  
"ಯತ್" (3-1-93).

ಪ್ರಣೋದ ಪ್ರಣೋದ (ಪುಂ) ಮುಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವುದು,  
ಮುಂದಕ್ಕೆ ನೂಕುವುದು. ಪ್ರ + ಣುದ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಘನ್"  
(3-3-114). ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114). ಪ್ರಣೋದನಮ್  
ಪ್ರಣೋದನಮ್.

ಪ್ರಣೋದಿತ ಪ್ರಣೋದಿತ (ವಿಂ) ಮುಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಮುಂದಕ್ಕೆ ಅಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಂದಕ್ಕೆ ನಡೆಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಣುದ  
(ಪ್ರೇರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ತೃಣಂ ಪ್ರಣೇತ್ರಾ  
ಕೃತನಾದಮುಚ್ಚಕೈಃ ಪ್ರಣೋದಿತಂ ವೇಸರಯುಗ್ಮಮಧ್ವನಿ" ಮಾಘಂ  
12-19.

ಪ್ರತತ ಪ್ರತತ (ವಿಂ) 1. ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿ ಹರಡಿರುವ. ಪ್ರ + ತನು  
(ವಿಸ್ತಾರೇ) "ಕ್ತ:" (3-4-92). 2. ವಿಸ್ತಾರವಾದ,  
ಅಲವಾದ.

ಪ್ರತತಿ ಪ್ರತತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲತೆ, ಬಳ್ಳಿ. ಪ್ರ + ತನು (ವಿಸ್ತಾರೇ)  
ಕರಂ "ಕ್ತಿಚ್" (3-3-114). 2. ವಿಸ್ತಾರಗೊಳ್ಳು  
ವುದು, ಪ್ರಸರಣ, ವ್ಯಾಪನೆ. ಪ್ರ + ತನು (ವಿಸ್ತಾರೇ)  
ಭಾವೇ "ಕ್ತಿನ್" (3-3-114). "ಪ್ರತತಿಃ ವಿಸ್ತೃತೀಲತಾ"  
ಮೇದಿಂ.

ಪ್ರತನ ಪ್ರತನ (ವಿಂ) ಪುರಾತನವಾದ, ಪ್ರಾಚೀನವಾದ,  
ಹಳೆಯದಾದ. ಪ್ರ "ತನಪ್" (ವಾಂ 4-4-24).

ಪ್ರತನು ಪ್ರತನು (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಸಣ್ಣದಾಗಿರುವ, ಬಹಳ  
ತೆಳುವಾಗಿರುವ. ಪ್ರಕೃತಃ ತನುಃ. "ಆಕೃಷ್ಣಪ್ರತನುಪುಲಂತೆ-  
ಸ್ತರದ್ವಿಸ್ತಸ್ಯಾಮ್ಸ್ತದಥ ಸರೋಮಹಾರ್ಣವಸ್ಯ" ಮಾಘಂ 6-24.  
"ಶುಚಿಃ ಸೌಧೋತ್ಸಜ್ಞಃ ಪ್ರತನು ವಸನಂ ಪಕ್ಷಜದೃಶಃ" ಮತುಂ  
2-66. 2. ಬಹಳ ಚಿಕ್ಕದಾಗಿರುವ, ಅಲ್ಪಪ್ರಮಾಣದ.  
"ಉತ್ಪಶ್ಯಾಮಿ ಪ್ರತನುಷು ನದೀವೀಚಿಷು ಭೂವಿಲಾಸಾನ್" ಮೇಘಂ  
2-41. 3. ಅಲ್ಪವಾದ, ಕೊಂಚವಾದ. (ಅವ್ಯಂ) 4.  
ಅಲ್ಪವಾಗಿ, ಕೊಂಚವಾಗಿ. "ಪ್ರತನುಲ್ಲಸಿತಾಚಿರದ್ವಿತಃ ಶರದಂ  
ಪ್ರಾಪ್ಯ ವಿಖಣ್ಡಿತಾಯುಧಾಃ" ಮಾಘಂ 16-31.

ಪ್ರತಪನ ಪ್ರತಪನ (ನಂ) ಕಾಯಿಸುವುದು, ಬಿಸಿಯಾಗಿ  
ಮಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್"  
(3-3-114).

ಪ್ರತಪ್ತ ಪ್ರತಪ್ತ (ವಿಂ) 1. (ಬೆಂಕಿಯಲ್ಲಿ) ಕಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಪ್ರ + ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಪ್ರತಪ್ತ-  
ಚಾಮೀಕರಭಾಸುರೇಣ ದಿಶಃ ಪ್ರಕಾಶೇನ ಪಿಶಜ್ಜಯಂತ್ಯಃ" ಕಿರಾಂ  
16-40. 2. ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. (ಬಿಸಿಯಲ್ಲಿ) ಕಾಯಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. "ಉದ್ಭೂತಮುಚ್ಚೇರ್ವಜಿನಿಭಿರಂಶುಭಿಃ ಪ್ರತಪ್ತಮಸ್ಯರ್ಣತಯಾ  
ವಿವಸ್ವತಃ" ಮಾಘಂ 12-66. 4. ಕುಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರತಪ್ತ-  
ಸ್ಯೇವ ಸಹಸಾ ಸಪಿಷಸ್ತೋಯವಿನ್ದವಃ" ಮಾಘಂ 2-44.



ಪ್ರತಲ ಪ್ರತಲ (ಪುಂ) 1. ಬೆರಳುಗಳನ್ನು ನೀಡಿ ಬಿಚ್ಚಿದ ಹಸ್ತ. -ಅಂಗ್ಯ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಂ ತಲಮಸ್ಯ | 2. ಸಪ್ತಮಾತಾಳ ಲೋಕಗಳಲ್ಲೊಂದು.

ಪ್ರತಾನ ಪ್ರತಾನ (ನಂ) 1. ಲತೆಯ ಕುಡಿ, ಬಳ್ಳಿಯ ಹಬ್ಬು. ಪ್ರ + ತನು (ವಿಸ್ತಾರೆ) "ಘ್" (3-3-14) | "ಲತಾ-ಪ್ರತಾನೋದ್ಗ್ರಾಹಿತಃ ಸಕೇಶೇರಭಿಜ್ಯಧನ್ವಾ ವಿಚ್ಚಾರ ದಾಖಮ್" ರಘುಂ 2-6 | 2. ತಂತುಯುಕ್ತವಾದ ಬಳ್ಳಿ, ನೆಲದಲ್ಲೇ ಹರಡುವ ಕುಂಬಳ ಸೋರೆ ಮುಂತಾದ ಗಿಡ. "ಕುಂಭಗುಲಮ್ ತು ವಿವಿಧಂ ತಥೈವ ತೃಣಜಾತಯಃ | ಬೀಜಕಾಂಡರೂಪ್ಯೇವ ಪ್ರತಾನಾ ಬಲ್ಯ ಎವ ಚ" ಮನುಂ 1-48 | 3. ವಿಸ್ತಾರ, ಪ್ರಸರಣ, ಹರಡುವಿಕೆ, ವ್ಯಾಪನೆ. "ದ್ವಾಪ್ರತಾನಸಹಜಾಸ್ತರಣೇಷು ಭೇಜೆ ನಿರಾಸುಖಂ ವಸನಸಂಪದ್ವಾ ರಾಜದಾರೇಃ" ಮಾಧಂ 4-22 |

ಪ್ರತಾನಿನಿ ಪ್ರತಾನಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲತೆ, ಬಳ್ಳಿ.

ಪ್ರತಾಪ ಪ್ರತಾಪ (ಪುಂ) 1. ತಾಪ, ಬಿಸಿ, ಕಾವು. ಪ್ರ + ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) "ಘ್" (3-3-14) | "ಯಥಾ ಪ್ರಹ್ಲಾದನಾ-ಚ್ಚಂದ್ರಃ ಪ್ರತಾಪಾತ್ತಪನೋ ಯಥಾ" ರಘುಂ 4-12 | 2. ಪ್ರಭಾವ, ತೇಜಸ್ಸು. "ಪ್ರತಾಪೋಽತಃ ಶಬ್ದಃ ಪರಾಗಸ್ತದನಂತರಮ್" ರಘುಂ 4-30 | 3. ಆತಪ, ಬಿಸಿಲು. "ಪ್ರತಾಪಸ್ತಸ್ಯ ಮಾನೋಽಶ್ರ ಯುಗಪದ್ವ್ಯಾನಶ್ಚ ದಿಶಃ" ರಘುಂ 4-15 | 4. ಪೌರುಷ, ಶಕ್ತಿ, ಪರಾಕ್ರಮ. "ಸರ್ವಃ ಪ್ರಾಯೋ ಭಜತಿ ವಿಕೃತಿ ಮಿಥ್ಯಮಾನೇ ಪ್ರತಾಪೇ" ಮಂವೀಂ 2-4 | 5. ಯಶಸ್ಸು, ಕೀರ್ತಿ. 6. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. "ನಿಯತವಿಷಯವೃತ್ತೇರಪ್ಯನಲ್ಪಪ್ರತಾಪಕ್ಷತ-ಸಕಲವಿಪಕ್ಷಸ್ತೇಜಸಃ ಸ ಸ್ವಭಾವಃ" ಮಾಧಂ 11-49 |

ಪ್ರತಾಪನ ಪ್ರತಾಪನ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಸ್ವತೇಜೋಃ ಜಗತ್ ಪ್ರತಾಪಯತಿ - ಪ್ರ + ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134) | "ತೇಜೋಭಿರಾಪೂರ್ಯಂ ಜಗತ್ ಸಮಗ್ರಂ ಭಾಸ-ಸ್ತವೋಗ್ರಾಃ ಪತಪಂತಿ ವಿಷ್ಣೋ" ಗೀತಾ 11-30 | ಸೂರ್ಯಾದಿ ಗಳ ಮೂಲಕ ಜಗತ್ತನ್ನು ತಾಪಗೊಳಿಸುವುದರಿಂದ ವಿಷ್ಣುವು ಪ್ರತಾಪನನು. (ನಂ) 2. ಕಾಯಿಸುವಿಕೆ, ಬಿಸಿಮಾಡುವಿಕೆ, ಪ್ರ + ತಪ + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ" (3-3-114) | 3. ನೋಯಿಸುವುದು, ಓಡಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 4. ಬಿಸಿಮಾಡುವ, ಕಾಯಿಸುವ, ಸುಡುವ. ಪ್ರ + ತಪ + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134) | 5. ನೋಯಿಸುವ, ಓಡಿಸುವ.

ಪ್ರತಾಪವತ್ ಪ್ರತಾಪವತ್ (ವಿಂ) 1. ಪೌರುಷದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು, ಶೂರ, ವೀರ. ಪ್ರತಾಪೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (4-2-94) | 2. ಪ್ರಭಾವಶಾಲಿ, ತೇಜಸ್ವಿ. "ತೀಕ್ಷ್ಣಾ ನಾರುತುದಾ ಬುದ್ಧಿಃ ಕರ್ಮ ಶಾಂತಂ ಪ್ರತಾಪವತ್" ಮಾಧಂ 2-109 |

ಪ್ರತಾಪಸ ಪ್ರತಾಪಸ (ಪುಂ) 1. ಬಿಳಿ ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ, ಶ್ವೇತಾರ್ಕ ವೃಕ್ಷ. ಪ್ರತಾಪಂ ಚಕ್ಷುಸ್ತೇಜಃ ಸ್ಯತಿ - ಷೋ (ಅಂತಕರ್ಮಣಿ) "ಕಃ" (3-2-3) | 2. ಬಳ್ಳಿಯ ತಪಸ್ಸು. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಸ್ತಾಪಸಃ |

ಪ್ರತಾರ ಪ್ರತಾರ (ಪುಂ) ವಂಚನೆ, ಮೋಸ. ಪ್ರ + ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಘ್" (3-3-14) |

ಪ್ರತಾರಕ ಪ್ರತಾರಕ (ವಿಂ) ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. ಪ್ರತಾರಯತಿ - ಪ್ರ + ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಘ್" (3-1-133) | "ಸ ಪರಪ್ರತಾರಕೋಽಸೌ ನಿಂದತಿ ಯೋಜ್ಞಿಕ-ಪಣ್ಡಿತೋ ಯುವತೀಃ" ಭರ್ತುಂ 2-92 |

ಪ್ರತಾರಣ ಪ್ರತಾರಣ (ನಂ) ಮೋಸಗೊಳಿಸುವುದು, ವಂಚಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ" (3-3-114) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಯುಚ್" (3-3-103) | -ತಾರಣಾ -ತಾರಣಾ. "ಯದೀಚ್ಛಸಿ ವಶೀಕರ್ತುಂ ಜಗದೇಕೇನ ಕರ್ಮಣಾ | ಉಪಾಸ್ಯತಾಂ ಕಲೌ ಕಲ್ಪಲತಾ ದೇವೀ ಪ್ರತಾರಣಾ" ಉದ್ಭಂ |

ಪ್ರತಾರಯತ್ ಪ್ರತಾರಯತ್ (ವಿಂ) ಮೋಸಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-6) | -ಯಂತೀ -ಯಂತೀ.

ಪ್ರತಾರಯಿತ್ ಪ್ರತಾರಯಿತ್ (ವಿಂ) ವಂಚಿಸುವವನು, ಮೋಸಮಾಡುವವನು. ಪ್ರ + ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ತೃಚ್" (3-1-133) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-4) | -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

ಪ್ರತಾರಿತ ಪ್ರತಾರಿತ (ವಿಂ) ಮೋಸಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಂಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102) | "ಕಿಂ ಲೇವಂ ಕವಿಭಿಃ ಪ್ರತಾರಿತಮನಾಸ್ತತ್ತ್ವಂ ವಿಜಾನನ್ನಪಿ ತ್ವಡ್‌ಮಾಂಸಾಸ್ಥಿಮಯಂ ವಪುರ್ಮೃಗದೃಶಾಂ ಮಂದೋ ಜನಃ ಸೇವತೇ" ಭರ್ತುಂ 2-46 |

ಪ್ರತಾರಿನ್ ಪ್ರತಾರಿನ್ (ವಿಂ) 1. ವಂಚಿಸುವ, ಮೋಸಪಡಿಸುವ. ಪ್ರ + ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಣಿನಿಃ" (3-2-94) | 2. ದಾಟಿಸುವ, ಆಚೆಕಡೆಗೆ ಸಾಗಿಸುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-4) | -ತಾರಿಣಿ -ತಾರಿಣೀ.

ಪ್ರತಾರ್ಯಮಾಣ ಪ್ರತಾರ್ಯಮಾಣ (ವಿಂ) ವಂಚಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಮೋಸಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (3-2-124) |

ಪ್ರತಿ ಪ್ರತಿ (ಅವ್ಯಂ) ಇದೊಂದು ಉಪಸರ್ಗಾವ್ಯಯ. ಸುಬಂತ್ ಮತ್ತು ಕ್ರಿಯಾಪದಗಳೊಡನೆ ಸೇರಿದಾಗ ಇದು ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ ದ್ಯೋತಕವಾಗುವುದು. 1. ಹಿಂತಿರುಗಿ ಬಾ, ಮತ್ತೆ ಬಾ. "ಪ್ರತ್ಯಾಗತಂ ತ್ವಾಸ್ಮಿ ಕೃತಾರ್ಥಮೇವ



ಸ್ತನೋಪಪಿಡಂ ಪರಿರಂಧುಕಾಮಾ " ಕಿರಾಂ ೩-೪೪ | 2. ಹಿಂತಿ  
ರಾಗು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗು. "ಆಗತಾನಗಣಿತಪ್ರತಿಯಾತಾನು"  
ಮಾಘಂ ೧೦-೨೦ | 3. ಅಭಿವಯವಿವಾಗಿ, [ಎದುರಾಗಿ.  
"ಮದೋದತಾ: ಪ್ರತಿನಿಲಂ ವಿವೇಕವನಸ್ಥಲೀರ್ಮರಪತ್ರಮೋಷಾ:"  
ಕುಮಾಂ ೩-೩೧ | 4. ಪ್ರತಿಶೋಲ, ವಿರುದ್ಧ.  
"ಪ್ರತಿಕಾಮಿನೀತಿ ದದೃಶುಶ್ಚಕಿತಾ: ಸ್ಮರಜನ್ಮಮಂಪಯಸೋ-  
ಪಚಿತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೩೫ | 5. ಸ್ಪರ್ಧೆ, ಎದುರಿಸುವುದು,  
ಮೇಲಾಟ. "ಪ್ರತಿಚಂದ್ರ:" | 6. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ,  
ಸಮಾನತೆ. "ಸುತಾಂ ತದೀಯಾಂ ಸುರಮೇ: ಕೃತ್ವಾ ಪ್ರತಿನಿಧಿ ಶುಚಿ:"  
ರಘುಂ ೧-೮೧ | 7. ಎದುರು ಪಕ್ಷ, ವಿರೋಧ ಪಕ್ಷ.  
"ಅಸ್ತ್ರಜ್ವಾಲಾವಲಿಹಪ್ರತಿಬಲಜಲಧೀರಂತರೋವಿಯಮಾಣೇ" ವೇಣೀಂ  
೩-೭ | 8. ತಿರಸ್ಕಾರ, ನಿರಾಕರಣೆ, ತಳ್ಳಿಹಾಕುವುದು.  
"ಪ್ರತ್ಯಾದೇಶಾದಪಿ ಚ ಮಧುನೋ ವಿಷ್ಮತಭ್ರವಿಲಾಸಮ್" ಮೇಘಂ  
೨-೩೨ | 9. ವಿಘ್ನ. "ಪ್ರತಿಕ್ಷಣಂ ಸಾ ಕೃತರೋಮವಿಕ್ರಿಯಾಂ  
ವ್ರತಾಯ ಮೌಞೀಂ ತ್ರಿಗುಣಾಂ ಬಹಾರ ಯಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೫-೧೦ |  
ಈ ಉಪಸರ್ಗವು ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿರುವಾಗ ಕೊಡುವ ಅರ್ಥ  
ಗಳು. 1. ಲಕ್ಷಣ, ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು. "ವೃಕ್ಷಂ ಪ್ರತಿ ವಿಧೌತತೇ  
ವಿಧೌತು" | 2. ಇತ್ಯಂಭೂತಾಖ್ಯಾನ, ಒಂದು ರೀತಿ  
ಯಾಗಿರುವುದನ್ನು ಹೇಳುವುದು, ಒಂದು ಪ್ರಕಾರವಾಗಿರು  
ವುದನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು. "ಮಕ್ತೋ ವಿಣ್ಣುಂ ಪ್ರತಿ" | ವಿಷ್ಣು  
ವಿಷಯಕವಾದ ಭಕ್ತಿರೂಪ ಪ್ರಕಾಶವನ್ನು ಹೊಂದಿದವನು  
ಎಂದು ಅರ್ಥ. 3. ಭಾಗ. ಅಂಶ. "ಲಕ್ಷ್ಮೀಹರಿಂ ಪ್ರತಿ" |  
4. ವಿಷ್ಣು. "ವೃಕ್ಷಂ ವೃಕ್ಷಂ ಪ್ರತಿ ಸ್ಥಿತಿತಿ" | 5. ಪ್ರತಿ  
ದಾನ, ಬದಲಾಗಿ ಕೊಡುವುದು. "ತೀಲಮ್ಯ: ಪ್ರತಿ ಯಚ್ಚತಿ  
ಮಾಘಾನ್" | 6. ಎದುರಾಗಿ, ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ. "ಪರೇಣ  
ಭಗನೇಪಿ ಬಲೇ ಮಹೋಜಾ: ಯಾವಜ: ಪ್ರತೀರಿಸನ್ಯಮೇವ" ರಘುಂ  
೭-೫೫ | 7. ಅದರ ಕಡೆಗೆ, ಅವನ ಕಡೆಗೆ, ಅದನ್ನು  
ಕುರಿತು. "ಪ್ರತೀನ್ಯನಾಗಂ ಚಲಿತಸ್ತವರಾವತಾ ನಿರಸ್ಯ ಕೃಷ್ಣಂ  
ದಧಿತಾನ್ಯಮಡ್ಕುಶಮ್" ಮಾಘಂ ೧೨-೧೨ | 8. ಅದರ ವಿಷಯ  
ವಾಗಿ, ಅವನ ವಿಷಯವಾಗಿ. "ವಿವಕ್ಷತಾ ದೋಷಮಪಿ  
ಚ್ಯುತಾತ್ಮನಾ ತ್ವಯೇಕಮೀಶಂ ಪ್ರತಿ ಸಾಧು ಭಾಷಿತಮ್" ಕುಮಾಂ  
೫-೮೧ |

**ಪ್ರತಿಕೃಷ್ಣ ಪ್ರತಿಶಂಕ (ಅವ್ಯಂ)** 1. ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬನಲ್ಲಿಯೂ,  
ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಕಂಠದಲ್ಲಿಯೂ. ಕಂಠ ಕಂಠ. ವೀಪ್ಸಾಯಾಮ್  
ಅವ್ಯಯಿಂ | 2. ಕಂಠದ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ, ಕುತ್ತಿಗೆಯ ಹತ್ತಿರ.  
ಕಂಠಸ್ಯ ಸಮೀಪಮ್ ಸಾಮೀಪ್ಯೇ ಅವ್ಯಯಿಂ |

**ಪ್ರತಿಕೃಷ್ಣ ಪ್ರತಿಶಂಕ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಮಾಡು  
ವುದು, ತಾನು ಪಡೆದ ಉಪಕಾರಕ್ಕೆ ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರ ಮಾಡು  
ವುದು. 2. ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಂದ ತನಗೆ ಆದ ಅಪಕಾರಕ್ಕೆ

ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರ ಮಾಡುವವನು. ಪ್ರತಿ+ಙ್ಕೃತ್  
(ಕರಣ) "ತೃತ್" (೩-೧-೧೩೩) |

**ಪ್ರತಿಕರ್ಮನ್ ಪ್ರತಿಶಂಕ (ನಂ)** 1. ಅಲಂಕಾರ, ಶೃಂಗಾರ,  
ವಸ್ತ್ರ ಭೂಷಣಾದಿಗಳಿಂದ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ ವೇಷ ಬದಲಾ  
ವಣೆ. ಪ್ರತ್ಯಜ್ಞ ಕರ್ಮ | "ಪ್ರತಿಕರ್ಮ ಕರ್ಮಮುಪಚಕ್ರಮಿರೇ ಸರ್ವ-  
ಮುಪಕಾರಿ ಕೃತಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೪೩ | 2. ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆ,  
ಎದುರಿಸುವುದು, ಮಾಡಿದ ತಪ್ಪಿಗೆ ಬದಲಾಗಿ ಮಾಡು  
ವುದು.

**ಪ್ರತಿಕರ್ಷ ಪ್ರತಿಶಂಕ (ಪುಂ)** 1. ಆಕರ್ಷಣ, ಚೆನ್ನಾಗಿ  
ಎಳೆಯುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಕೃ" (೩-೩-೧೮) | 2. ಅರ್ಥ ಮತ್ತು ಅನ್ವಯ ಸೌಕರ್ಯ  
ಕ್ಕಾಗಿ ಹಿಂದಿನ ವಾಕ್ಯದ ಪದವನ್ನು ಮುಂದಿನ ವಾಕ್ಯಕ್ಕೆ  
ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು.

**ಪ್ರತಿಕಾಯ ಪ್ರತಿಶಂಕ (ಪುಂ)** 1. ಎದುರಾಳಿ, ಪ್ರತಿಪಕ್ಷ  
ದವನು, ವೈರಿ, ಹಗೆ. ಪ್ರತಿಗತ: ಕಾಯೋ ಯತ್ರ | "ಸ ವೃಷ-  
ವಜಸಾಯಕಾವಭಿವ್ರಂ ಜಯಹೇತು: ಪ್ರತಿಕಾಯಮೇಷಣೀಯಮ್" ಕಿರಾಂ  
೧೩-೨೮ | 2. ವಿಗ್ರಹ, ಪ್ರತಿಕೃತಿ, ಪ್ರತಿಮೆ. "ಛಾಯಾ  
ಛಂದ: ಕಾಯೋ ರೂಪಂ ವಿಮ್ಬಂ ಮಾನಕೃತೀ ಅಪಿ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ |

**ಪ್ರತಿಕಾರ ಪ್ರತಿಶಂಕ (ಪುಂ)** 1. ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆ, ಅಪಕಾರಕ್ಕೆ  
ಅಥವಾ ಉಪಕಾರಕ್ಕೆ ಬದಲಾಗಿ ಮಾಡುವ ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರ  
ಅಥವಾ ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರ. ಪ್ರತಿ+ಙ್ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಕೃ" (೩-೩-೧೮) | 2. ಪರಿಹಾರ, ನಿವಾರಣೆ. 3. ರೋಗ  
ಪರಿಹಾರಕ್ಕೆ ಮಾಡುವ ಚಿಕಿತ್ಸೆ. "ಪ್ರತಿಕಾರವಿಧಾನಮಾಯುಷ:  
ಸತಿ ಶೇಷೇ ಹಿ ಫಲಾಯ ಕಲ್ಪತೇ" ರಘುಂ ೮-೪೦ | ವಾ ದೀರ್ಘ:  
(೬-೩-೧೨೨) | ಪ್ರತಿಕಾರ: ಪ್ರತಿಶಂಕ:

**ಪ್ರತಿಕಾಶ ಪ್ರತಿಶಂಕ (ವಿಂ)** (ಸಮಾಸದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ  
ಉತ್ತರ ಪದವಾಗಿದ್ದಾಗ) ಸದೃಶವಾದ, ಸಮಾನವಾದ.  
ಪ್ರತಿ + ಕಾಶ (ದೀಪ್ತ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) |

**ಪ್ರತಿಕುಚ್ಚನ ಪ್ರತಿಶಂಕ (ನಂ)** 1. ಬಗ್ಗಿಸುವುದು, ವಕ್ರ  
ವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಕುಚ್ಚ (ಕೌಡಿಲ್ಯೇ) ಭಾವೇ  
"ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಅಲ್ಪವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು,  
ಚಿಕ್ಕದಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಕುಚ್ಚ (ಅಲ್ಪಿಭಾವೇ)  
"ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) |

**ಪ್ರತಿಕುಚ್ಚಿತ ಪ್ರತಿಶಂಕ (ವಿಂ)** 1. ಬಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಪ್ರತಿ+ಕುಚ್ಚ (ಕೌಡಿಲ್ಯೇ)+ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |  
"ಪ್ರತಿಕುಚ್ಚಿತಕುಪೇರೇಣ ತೇನ ಶ್ರವಣೋಪಾಂತಿಕನೀಯಮಾನಗವ್ಯಮ್"  
ಮಾಘಂ ೨೦-೧೯ | 2. ಚಿಕ್ಕದಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಕುಚ್ಚ (ಅಲ್ಪಿಭಾವೇ)+ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |



3. ಬಗ್ಗಿರುವ, ವಕ್ರವಾಗಿರುವ. 4. ಚಿಕ್ಕದಾಗಿರುವ. ಪ್ರತಿ+ ಕೃಚ್ (ಕೌಟಿಲ್ಯಾಲ್ಪಿಭಾವಯೋ:) "ಕ್ತ:" (3-4-62) ।

ಪ್ರತಿಕೂಪ ಪ್ರತಿಕೂಪ (ಪುಂ) ಕಂದಕ, ಕೋಟೆಯ ಸುತ್ತಲೂ ತೋಡಿರುವ ಹಳ್ಳ. ಪ್ರತಿರೂಪ: ಕೂಪ: । "ಸಾತಮ್: ಪ್ರತಿ ಕೂಪ: ಸ್ಯಾತ್" ಹಾರಾಂ ।

ಪ್ರತಿಕೂಲ ಪ್ರತಿಕೂಲ (ವಿಂ) 1. ವಿರುದ್ಧವಾದ, ಅನುಕೂಲವಲ್ಲದ. ಪ್ರತಿಪಂ ಕೂಲಾತ್ । "ದೃಢಮಪ್ಯಪರಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಂ ಪ್ರತಿಕೂಲಂ ನಿತರಾಂ ನಿರಸ್ಯತಿ" ಮಾಘಂ 16-64 । 2. ಕಠಿನವಾದ, ಹಿತವಲ್ಲದ, ಕರ್ಕಶವಾದ. "ಅಪ್ಯನ್ಯಪುಷ್ಪಾ ಪ್ರತಿಕೂಲಶಬ್ದಾ ಶ್ರುತವಿತನ್ಮೀರಿವ ತಾಡ್ಯಮಾನಾ" ಕುಮಾರಂ 1-45 । 3. ಎದುರಾಗಿರುವ, ಎದುರಾಗಿ ಬೀಸುವ (ಗಾಳಿ). (ಅವ್ಯಂ) 4. ಎದುರಾಗಿ, ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ. "ಉಪಾತವಾತಪ್ರತಿಕೂಲಪಾತಿನೀಷ್ಪತ್ಯಕಾಮ್ಯೋ ಬೃಹತೀ: ಶಿಲಾ ಇವ" ಮಾಘಂ 12-50 । 5. ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ, ಅನುಕೂಲವಾಗಿ. "ತಸ್ಮಿನ್ ವನೇ ಸಂಯಮಿನಾಂ ಮುನೀನಾಂ ತಪ:ಸಮಾಧೇ: ಪ್ರತಿಕೂಲವರ್ತೀ" ಕುಮಾರಂ 3-24 । 6. ಅಹಿತವಾಗಿ, ಕಠಿನವಾಗಿ.

ಪ್ರತಿಕೂಲತಾ ಪ್ರತಿಕೂಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರತಿಕೂಲವಾಗಿರುವಿಕೆ, ವಿರೋಧದಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ, ವಿರುದ್ಧವಾಗಿರುವುದು. "ಪ್ರತಿಕೂಲತಾಮುಪಗತೇ ಹಿ ವಿಧೌ ವಿಫಲತ್ವಮೇತಿ ಬಹುಸಾಧನತಾ" ಮಾಘಂ 9-6 ।

ಪ್ರತಿಕೂಲಭಾಷಣ ಪ್ರತಿಕೂಲಭಾಷಣ (ನಂ) ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವುದು.

ಪ್ರತಿಕೂಲಭಾಷಿನ್ ಪ್ರತಿಕೂಲಭಾಷಿನ್ (ವಿಂ) ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವ, ಎದುರಿಸಿ ಮಾತಾಡುವ. ಪ್ರತಿಕೂಲ ಭಾಷತೇ—ಭಾಷ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಗಿಣಿ:" (3-1-134) ।

ಪ್ರತಿಕೂಲವಚನ ಪ್ರತಿಕೂಲವಚನ (ನಂ) ವಿರುದ್ಧವಾದ ಮಾತು.

ಪ್ರತಿಕೂಲವರ್ತನ ಪ್ರತಿಕೂಲವರ್ತನ (ನಂ) ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಪ್ರತಿಕೂಲವರ್ತಿನ್ ಪ್ರತಿಕೂಲವರ್ತಿನ್ (ವಿಂ) ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ನಡೆಯುವ, ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಕಾರ್ಯ ನಡೆಸುವ. ಪ್ರತಿಕೂಲ ವರ್ತತೇ—ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಗಿಣಿ:" (3-2-66) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಕೀಪ್" (4-1-4) । —ವರ್ತಿನಿ —ವರ್ತಿನೀ.

ಪ್ರತಿಕೂಲವಾಕ್ ಪ್ರತಿಕೂಲವಾಕ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನುಕೂಲವಲ್ಲದ ಮಾತು, ವಿರುದ್ಧವಾದ ಮಾತು. ಪ್ರತಿಕೂಲಾ ವಾಕ್ ।

ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದ ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದ (ಪುಂ) ಪ್ರತಿಹೇಳುವುದು, ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವುದು, ಅಸಂಬಂಧವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವುದು.

ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದಿನ್ ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದಿನ್ (ವಿಂ) ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವ, ಅನುಕೂಲವಾಗಿ ಹೇಳುವ. ಪ್ರತಿಕೂಲ ವದತಿ—ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಗಿಣಿ:" (3-2-66) । "ಇತಿ ದ್ವಿಜಾತೌ ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದಿನಿ ಪ್ರವೇಷಮಾನಾಘರಲಕ್ಷ್ಯ-ಕೋಪಯಾ" ಕುಮಾರಂ 4-94 ।

ಪ್ರತಿಕೃತ ಪ್ರತಿಕ್ರೃತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಯ್ಯಿ ತೀರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿ+ಕೃ (ಕರಣಂ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) । "ಕೃತಪ್ರತಿಕೃತಪ್ರೀತಿಸ್ತಯೋರ್ಮುಕ್ತಾಂ ಸುರಾಸುರೇ:" ರಘುಂ 12-94 । 2. ಚಿಕ್ಕಿತ್ತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ರೋಗಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಔಷಧೋಪಚಾರ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ನಿವಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪರಿಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಸೇಡು ತೀರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. (ನಂ) 5. ಮುಯ್ಯಿ, ಪಡೆದ ಉಪಕಾರಕ್ಕೆ ಮಾಡುವ ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರ, 6. ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರ, ಸೇಡು ತೀರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. "ವಿಲಂಘನಮನ್ಯಮಪಿ ಪ್ರಿಯಂ ಪ್ರಮೋದ್ಯಮಪ್ರತಿಕೃತಂ ವಶು-ರತಮ್" ಕುಮಾರಂ 6-6 ।

ಪ್ರತಿಕೃತಿ ಪ್ರತಿಕ್ರೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿಗ್ರಹ, ಪ್ರತಿಮೆ: ಪ್ರಕೃಷ್ಠಾ ಕೃತಿ: । "ತಸ್ಯಾ ಉ ಪ್ರತಿಕೃತಿಸಖೋ ಯಕ್ತು-ನಾಜಹಾರ" ರಘುಂ 14-66 । 2. ಮುಯ್ಯಿ ತೀರಿಸುವುದು. 3. ಸೇಡು ತೀರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಶೃಣುವಂ ದೇವತಾ: ಸರ್ವಾ: ಶತ್ರುಪ್ರತಿಕೃತಿ ಪರಾಮ್" ಹರಿವಂ । 4. ಚಿತ್ರ, ಪ್ರತಿರೂಪ, ಭಾವಚಿತ್ರ, ಪಟ. "ಪ್ರತಿಕೃತಿರಚನಾಮ್ಯೋ ದೃತಿಸಂದರ್ಶಿತಾಮ್ಯ: ಸಮಚಿಕಿರರ್ಥಾ: ಶುದ್ಧಸಂತಾನಕಾಮೇ:" ರಘುಂ 16-43 । 5. ಪ್ರತಿನಿಧಿ, ಬದಲು ಮನುಷ್ಯ. (ವಿಂ) 6. ಸಮಾನವಾದ, ಸದೃಶವಾದ.

ಪ್ರತಿಕೃಷ್ಠ ಪ್ರತಿಕ್ರೃಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಎರಡು ಸಲ ಉಳಲ್ಪಟ್ಟ (ಭೂಮಿ). 2. ನೀಚ, ಅಧಮ. ಪ್ರತಿ+ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) । "ಪ್ರತಿಕೃಷ್ಠಂ ಮತಂ ಗರ್ಹ್ಯೆ ದ್ವಿರಾವೃತ್ಯಾ ಚ ಕರ್ಷಿತೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಾ ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರತಿಠಿಕಾರ, ಸೇಡು ತೀರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಮುಯ್ಯಿ ತೀರಿಸುವುದು. ಪ್ರತಿ — ಕೃಷ್ "ಶ:" (3-3-100) । 2. ರೋಗನಿವಾರಣೋಪಾಯ, ರೋಗಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಚಿಕಿತ್ಸೆ. 3. ನಿವಾರಣೋಪಾಯ, ಪರಿಹಾರಕಾರ್ಯ, "ಪ್ರತಿಶ್ರುಶ್ರಾವಕಾಕೃತ್ಯಸ್ತೇಮ್ಯೋ ವಿಘ್ನಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಾಮ್" ರಘುಂ 15-4 । 4. ಪ್ರತಿಫಲ.

ಪ್ರತಿಕ್ಷಣ ಪ್ರತಿಕ್ಷಣ (ಅವ್ಯಂ) ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ, ಪುನಃ ಪುನಃ, ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಸಮಯದಲ್ಲೂ. ಖಣಿ ಖಣಿ — ವಿಭಂ



ಅವ್ಯಯಿಂ । “ಪ್ರತಿಕೃತಿ ಸಂಭ್ರಮಲೋದೃಷ್ಟಿಲೀಲಾರವಿನ್ದೇನ ನಿವಾರಯಂತಿ” ಕುಮಾಂ ೩-೫೬ ।

**ಪ್ರತಿಕೃತಿ ಪ್ರತಿಕ್ಷಿಪ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿ + ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । 2. ನಿವಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪರಿಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಳ್ಳಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಅಕ್ಷೇಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ದೋಷಾರೋಪಣೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 7. ಕರೆದು ತಿರಸ್ಕರಿಸಿ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಆಹ್ವಯ ಪ್ರೇಷಿತೋ ಯಸ್ತು ಪ್ರತಿಕೃತಿಪ್ತಃ ಸ ಉಚ್ಯತೇ” ।

**ಪ್ರತಿಕ್ಷೇಪ ಪ್ರತಿಕ್ಷೇಪ** (ಪುಂ) 1. ಅಕ್ಷೇಪಣೆ. ಪ್ರತಿ + ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮) । 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸುವುದು, ತಳ್ಳಿಹಾಕುವುದು. 3. ವಿರೋಧಿಸಿ ಮಾತಾಡುವುದು. 4. ತಡೆಯುವುದು, ನಿಷೇಧಿಸುವುದು. 5. ದೋಷಾರೋಪಣೆ ಮಾಡುವುದು. 6. ನಿವಾರಿಸುವುದು, ಪರಿಹರಿಸುವುದು.

**ಪ್ರತಿಗತ ಪ್ರತಿಗತ** (ನಂ) 1. ಹಕ್ಕಿಗಳ ಒಂದು ವಿಧ ಹಾರಾಟ. ಪ್ರತಿ + ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪) । “ಗತಾಗತಪ್ರತಿಗತಸಂಪತ್ತಾಶ್ಚ ಪಕ್ಷಿಣಾಮ್ । ಗತಿಭೇದಾಃ ಪಕ್ಷಿಗೃಹಂ ಕುಲಾಯೋ ನೋಽಮಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” । 2. ಹಿಂತಿರುಗಿ ಬರುವುದು. (ವಿಂ) 3. ಹಿಂತಿರುಗಿ ಬಂದ. ಪ್ರತಿ + ಗಮ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) । 4. ಎದುರಾಗಿ ಬಂದ.

**ಪ್ರತಿಗಮನ ಪ್ರತಿಗಮನ** (ನಂ) ಹಿಂತಿರುಗುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು.

**ಪ್ರತಿಗರ್ಜತ ಪ್ರತಿಗರ್ಜತ** (ವಿಂ) 1. ಗರ್ಜನೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ಗರ್ಜ (ಶಬ್ದ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಎದುರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರತಿ ಸ್ಪರ್ಧಿಸುತ್ತಿರುವ. “ಸ ಹಿ ನಿರ್ದೇಶಮಲಕ್ಷಯತಾಮಮತ್ಸುಹೃದಯೋ-ಹೃದಯಃ ಪ್ರತಿಗರ್ಜತಾಮ್” ರಘುಂ ೧-೧ ।

**ಪ್ರತಿಗೃಹೀತ ಪ್ರತಿಗೃಹೀತ** (ವಿಂ) 1. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ವೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಮತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಪ್ಪಲ್ಪಟ್ಟ. “ಸಖೇ, ತ್ವಮಮ್ಬಯಾ ಪುತ್ರ ಇತಿ ಪ್ರತಿಗೃಹೀತಃ” ಶಾಕುಂ ೨ । 3. ಪ್ರತಿಭಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಎದುರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ವಾಧೀನಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. “ತೇನ ಹಿ ವರ್ಷವರಪ್ರತಿಗೃಹೀತಮೇನಂ ತತ್ರಭವತಃ ಸಕಾಶಂ ಪ್ರಾಪಯ” ಮಾಲಂ ೪ ।

**ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಯತ ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಯತ** (ವಿಂ) ಸ್ವೀಕರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅಂಗೀಕರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) “ಶತ್”

(೩-೨-೧೨೪) । “ಅಮೋಘಾಃ ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಯಂತಾವರ್ಧ್ಯಾನುಪದಮಾ-ಶಿಷಃ” ರಘುಂ ೧-೪೪ ।

**ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಯಮಾಣ ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಯಮಾಣ** (ವಿಂ) ಸ್ವೀಕರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) ಕರ್ಮಂ “ಶಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪) ।

**ಪ್ರತಿಗ್ರಹ ಪ್ರತಿಗ್ರಹ** (ಪುಂ) 1. ಸ್ವೀಕರಿಸುವುದು, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) “ಅಪ್” (೩-೩-೫೮) । “ನ ದ್ರವ್ಯಾಣಾಮವಿಜ್ಞಾಯ ವಿಧಿ ಧರ್ಮ್ಯ ಪ್ರತಿಗ್ರಹೇ । ಪ್ರಾಜ್ಞಃ ಪ್ರತಿಗ್ರಹಂ ಕುರ್ಯದಿವಸೀದನ್ನಪಿ ಕ್ಷುಧಾ” ಮನುಂ ೪-೧೮೭ । 2. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. “ಕರಕಲ್ಪಜನಾಂತರಾದ್ವಿಧೇಃ ಶುಚಿತಃ ಪ್ರಾಪಿ ಸ ಹಿ ಪ್ರತಿಗ್ರಹಃ” ನೆಪಂ ೨-೧೨ । 3. ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ ಮಾಡುವ ದಾನ. “ರಾಜತಃ ಪುಪ್ತವಿರೇ ನಿರೇನಸಃ ಪ್ರಾಪ್ಯ ತೇಷಾಂ ವಿಮಲಂ ಪ್ರತಿಗ್ರಹಮ್” ಮಾಘಂ ೧೪-೩೫ । 4. ದಾನಮಾಡಿದುದನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಕೊಡುಗೆಯನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವುದು. “ದಾನಂ ಪ್ರತಿಗ್ರಹಂ ಚೈವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾನಾಮಕಲ್ಪಯತ್” ಮನುಂ ೧-೮೮ । 5. ಪತದ್ಗ್ರಹ, ಉಗುಳುವ ಪಾತ್ರೆ, ಪೀಕದಾನಿ. ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಯಾತಿ ನಿಷ್ಠಿವನಂ — ಪ್ರತಿ + ಗ್ರಹ “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । 6. ಸೈನ್ಯದ ಹಿಂಭಾಗ. 7. ವಿವಾಹ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. “ಪ್ರತಿಗ್ರಹಃ ಸ್ವೀಕರಣೇ ಸೇನ್ಯಪೃಠೇ ಪತದ್ಗ್ರಹೇ । ದ್ವಿಜೇಭ್ಯೋ ವಿಧಿವದೇಯೇ ತದ್ಗ್ರಹೇ ಚ ಗ್ರಹಾಂತರೇ” ಮೇದಿಂ । ಪ್ರತಿ + ಗ್ರಹ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । -ಗ್ರಹಣಮ್ -ಗ್ರಹಣಮ್.

**ಪ್ರತಿಗ್ರಹೀತ ಪ್ರತಿಗ್ರಹೀತ** (ವಿಂ) 1. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು, ಸ್ವೀಕರಿಸುವವನು. ಪ್ರತಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) “ತೃಚ್” (೩-೧-೧೩೩) । 2. ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ ಮಾಡಿದ ದಾನವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. 3. ವಿವಾಹ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವವನು. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೫) । -ಗ್ರಹೀತೃ -ಗ್ರಹೀತೃ.

**ಪ್ರತಿಗ್ರಾಹ ಪ್ರತಿಗ್ರಾಹ** (ಪುಂ) 1. ಉಗುಳುವ ಪಾತ್ರೆ, ಪೀಕದಾನಿ. ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಯಾತಿ — ಪ್ರತಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) ವಾ “ಞಃ” (೩-೧-೧೪೩) । ಪಕ್ಷೇ “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । -ಗ್ರಹಃ -ಗ್ರಹಃ. “ಪ್ರತಿಗ್ರಾಹಃ ಪತದ್ಗ್ರಹಃ” ಅಮಂ । (ವಿಂ) 2. ದಾನವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವವನು, ಕೊಡುಗೆಯನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ಭಾವೇ “ಘ್” (೩-೩-೧೮) । 3. ದಾನವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು.

**ಪ್ರತಿಗ್ರಾಹಕ ಪ್ರತಿಗ್ರಾಹಕ** (ವಿಂ) ಸ್ವೀಕರಿಸುವವನು, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ಪ್ರತಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) “ಘ್” (೩-೧-೧೩೩) । “ಗಿಹಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) । -ಗ್ರಾಹಿನ್ -ಗ್ರಾಹಿನ್.



ಪ್ರತಿಗ್ರಾಹ್ಯತ್ ಪ್ರತಿಗ್ರಾಹ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಸ್ವೀಕರಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವವನು, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವಂತೆ ಮಾಡುವವನು. ಪ್ರತಿ + ಗ್ರಹ (उपादाने) + णिच् "शतृ" (३-२-१२४)। "मुष्टिं प्रतिग्राह्यता स्वमर्थं पात्रीकृतो दस्युरिवारिम येन" शाकु० ५-२०।

ಪ್ರತಿಗ್ರಾಹಿತ ಪ್ರತಿಗ್ರಾಹಿತ (ವಿಂ) ಸ್ವೀಕರಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿ + ಗ್ರಹ (उपादाने) + णिच् "क्तः" (३-२-१०२)। "अथ प्रजानामधिपः प्रभाते जाया-प्रतिग्राहितगन्धमाल्याम्" रघु० २-१।

ಪ್ರತಿಗ್ರಾಹ್ಯ ಪ್ರತಿಗ್ರಾಹ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸ್ವೀಕರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಸ್ವೀಕರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಪ್ರತಿ + ಗ್ರಹ (उपादाने) "ण्यत्" (३-१-१२४)।

ಪ್ರತಿಘ ಪ್ರತಿಘ (ಪುಂ) 1. ಕ್ರೋಧ, ಕೋಪ. ಪ್ರತಿಹಂತಿ ಅನೇನ — ಪ್ರತಿ + ಹನ (हिसागत्योः) "ङः" (वा० ३-२-४८)। "प्रतिघः कुतोऽपि समुपेत्य नरपतिगणं समाश्रयत्" माघ० १५-५३। 2. ಏಟು, ಹೊಡೆತ.

ಪ್ರತಿಘಾತ ಪ್ರತಿಘಾತ (ಪುಂ) 1. ಏಟು, ಹೊಡೆತ. ಪ್ರತಿ + ಹನ (हिसागत्योः) "घञ्" (३-३-१८)। 2. ಎದುರು ಹೊಡೆತ. "जयाशा यत्र चास्माकं प्रतिघातोत्थिताचिषा" कुमा० २-४९। 3. ಮಾರಣ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. ಭಾವೇ "ल्युट्" (३-३-११५)। -घातनम् -ಘಾತನಮ್.

ಪ್ರತಿಘಾತಕ ಪ್ರತಿಘಾತಕ (ವಿಂ) 1. ತಡೆಮಾಡುವವನು, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವವನು. ಪ್ರತಿ + ಹನ (हिसागत्योः) "ण्वल्" (३-१-१३३)। 2. ಹೊಡೆಯುವವನು, ಹಿಂಸಿಸುವವನು. 3. ಕೊಲ್ಲುವವನು. 4. ತೊಂದರೆಪಡಿಸುವವನು. "णिनिः" (३-१-१३४)। -घातिन् -ಘಾತಿನ್. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ङीप्" (४-१-५)। -घातिनी -ಘಾತಿನೀ. "विजित्य नेत्र-प्रतिघातिनीं प्रभामनन्यदृष्टिःसवितारमक्षत" कुमा० ५-२०।

ಪ್ರತಿಘ್ನ ಪ್ರತಿಘ್ನ (ನಂ) ದೇಹ, ಶರೀರ. ಪ್ರತಿ + ಹನ (हिसागत्योः) घञर्थे "कः" (वा० ३-३-५८)।

ಪ್ರತಿಘ್ನತೀ ಪ್ರತಿಘ್ನತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರತಿಬಂಧಿಸುತ್ತಿರುವ, ತಡೆಯುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ಹನ (हिसागत्योः) "शतृ" (३-२-१२४)। "ङीप्" (४-१-६)। "प्रतिघ्नतीभिः कृतमीलनानि द्युलोकभाजामपि लोचनानि" किरा० १६-४३।

ಪ್ರತಿಚಿಕೀರ್ಷಿ ಪ್ರತಿಚಿಕೀರ್ಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆ ಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಸೇಡು ತೀರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ.

2. ಮುಯ್ಯಿ ತೀರಿಸಲು ಇಚ್ಛೆ. ಪ್ರತಿಕರ್ತುಮಿಚ್ಛಾ—ಪ್ರತಿ + ಕೃ (करणे) + सन् "अः" (३-३-१०२)। "यथाप्रतिज्ञं द्विषतां युधि प्रतिचिकीर्षया" किरा० ११-७४।

ಪ್ರತಿಚಿಕೀರ್ಷಿ ಪ್ರತಿಚಿಕೀರ್ಷಿ (ವಿಂ) ಸೇಡು ತೀರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಪ್ರತ್ಯವಕಾರ ಮಾಡಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ. ಪ್ರತಿಕರ್ತುಮಿಚ್ಛು—ಪ್ರತಿ + ಕೃ (करणे) + सन् "उः" (३-२-१६८)।

ಪ್ರತಿಚ್ಛಂದ ಪ್ರತಿಚ್ಛಂದ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರತಿನಿಧಿ, ಬದಲಿಯವನು. (ವಿಂ) 2. ಸಮಾನವಾದ. ಪ್ರತಿಗತಂ ಛಂದಃ। "तैवेजयन्तीवनराजिराजिभिर्गिरिप्रतिच्छन्दमहामतङ्गजैः" माघ० १२-२९।

ಪ್ರತಿಚ್ಛನ್ನ ಪ್ರತಿಚ್ಛನ್ನ (ವಿಂ) ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿ + ಛದ (अपवारणे) "क्तः" (३-२-१०२)। "अनयोरेवोद्यानपालिकयोस्तिरकरिणीप्रतिच्छन्ना पार्श्व-वर्तिनी भूत्वोपलस्ये" आकु० ६।

ಪ್ರತಿಚ್ಛಾಯಾ ಪ್ರತಿಚ್ಛಾಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರತಿಮೆ, ವಿಗ್ರಹ. ಪ್ರತಿರೂಪಾ ಛಾಯಾ। ಪ್ರಕೃಷ್ಠಾ ಛಾಯಾ ವಾ। 2. ಪ್ರತಿಕ್ರತಿ, ಛಾಯಾಚಿತ್ರ.

ಪ್ರತಿಚ್ಛಾಯಿಕಾ ಪ್ರತಿಚ್ಛಾಯಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರತಿಬಿಂಬ, ಪ್ರತಿರೂಪ, ಛಾಯಾಚಿತ್ರ. "रूपं प्रतिच्छायिकयोपनीत-मालोकि ताभिर्यदि नाम कामम्" नैष० ६-४६।

ಪ್ರತಿಜಾಗರ ಪ್ರತಿಜಾಗರ (ಪುಂ) ಎಚ್ಚರದಿಂದ ಕಾಯುವಿಕೆ, ನಿದ್ರೆಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಎಚ್ಚರಿಕೆಯಿಂದ ಗಮನಿಸುವುದು, ಪ್ರತಿ + ಜಾಗೃ (निद्राक्षये) "घञ्" (३-३-१८)।

ಪ್ರತಿಜಿಗಮಿಷಾ ಪ್ರತಿಜಿಗಮಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಂತಿರುಗುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಮರಳಿ ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಪ್ರತಿ + ಗಮ್ಲ (गती) + सन् "अः" (३-३-१०२)।

ಪ್ರತಿಜಿಗಮಿಷಿತ ಪ್ರತಿಜಿಗಮಿಷಿತ (ವಿಂ) ಹಿಂತಿರುಗಿ ಹೋಗಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರಳಿ ಹೋಗಿ ಸೇರಲು ಇಚ್ಛಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿ + ಗಮ್ಲ (गती) + सन् "क्तः" (३-२-१०२)। "प्रतिजिगमिषितां त्रातुमन्वक् समन्व-ग्रहीत्" याद० १७-१३४।

ಪ್ರತಿಜಿಗಮಿಷು ಪ್ರತಿಜಿಗಮಿಷು (ವಿಂ) ಹಿಂತಿರುಗುವ ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, ಮರಳಿ ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ. ಪ್ರತಿ + ಗಮ್ಲ (गती) + सन् "उः" (३-२-१६८)।

ಪ್ರತಿಜಿಹೀಷತ್ ಪ್ರತಿಜಿಹೀಷತ್ (ವಿಂ) 1. ಒಯ್ಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ಹೃ (हरणे) + सन् "शतृ" (३-२-१२४)। 2. ಪರಿಹರಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ,



ಪ್ರತಿಭೂತ ಸೃತಿದ್ರುತ (ವಿಂ) ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ಓಡಿಬಂದ.  
ಎದುರಾಗಿ ಬಂದ. ಪ್ರತಿ+ದ್ರು (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೨೨)।



ಪ್ರತಿನಿವಿಷ್ಟ ಪ್ರತಿನಿವಿಷ್ಟ (ವಿಂ) ತನ್ನ ಮಾರ್ಗವನ್ನೇ  
ಹಿಡಿಯುವ ದುರಾಗ್ರಹವುಳ್ಳ ಹಟಮಾರಿತನದ, ತನ್ನ



ಪ್ರಯತ್ನವನ್ನೇ ಬಿಡದೆ ಮುಂದುವರಿಸುವ. ಪ್ರತಿ+ನಿ+  
ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) । "ನ ತು ಪ್ರತಿ-  
ನಿವಿಷ್ಟಮುಖಜನಚಿತ್ತಮಾರಾಧಯೇತ್" ಭರ್ತೃಂ ೧-೪ ।

ಪ್ರತಿನುಬತ್ ಪ್ರತಿನುಬತ್ (ವಿಂ) ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಅಟ್ಟುತ್ತಿರುವ,  
ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಓಡಿಸುತ್ತಿರುವ.

ಪ್ರತಿನೋದ ಪ್ರತಿನೋದ (ಪುಂ) ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಅಟ್ಟುವುದು,  
ಹಿಮ್ಮೆಟ್ಟಿಸುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಓಡಿಸುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಣುದ  
(ಪ್ರೇರಣೆ) ಭಾವೇ "ಬಜ್" (೩-೩-೧೮) । ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೫) । -ನೋದನಮ್ -ನೋದನಮ್.

ಪ್ರತಿಪಕ್ಷ ಪ್ರತಿಪಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ವೈರಿ, ಶತ್ರು, ಹಗೆ. ಪ್ರತಿಕೂಲಃ  
ಪಕ್ಷೋ यस್ಯ । "ದಂತೇಶ್ಚಿತ್ತದಿರೆ ಕೋಪಾತ್ ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಂ ಗಜಾ  
ಃ" ಮಾಘಂ ೧೯-೫೫ । 2. ಎದುರು ಪಕ್ಷ, ವಿರೋಧಿ  
ಪಕ್ಷ. ಪ್ರತಿಕೂಲಃ ಪಕ್ಷಃ । (ವಿಂ) 3. ವಿರುದ್ಧವಾದ,  
ವಿಘ್ನಕಾರಿಯಾದ. "ತದಲಂ ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಮುಪ್ಪತ್ತೇರವಲಮ್ಬ  
ವ್ಯವಸಾಯವನ್ಯತಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೧೫ । 4. ಸದ್ಭಾವದ,  
ಸಮಾನವಾದ. 5. ಪ್ರತಿವಾದಿ, ಎದುರಾಳಿ.

ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಿತ ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಿತ (ಪುಂ) ದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ  
ಹೇತು, ಐದು ವಿಧ ಹೇತುಭಾಸಗಳಲ್ಲಿಹೊಂದು ಭೇದ.  
ಪ್ರತಿಪಕ್ಷೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ "ಇತ್ಯು" (೫-೨-೩೬) । "ಅನೇಕಾಂತೋ  
ವಿರುದ್ಧಶ್ಚಾಪ್ಯಸಿದ್ಧಃ ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಿತಃ । ಕಾಲಾತ್ಯಯೋಪದಿಷ್ಟಶ್ಚ  
ಹೇತುಭಾಸಾಃ ಪञ್ಚವಾ" ಭಾಷಾಪಂ ।

ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಿನ್ ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಶತ್ರು, ವೈರಿ, ಹಗೆ.  
2. ಎದುರಾಳಿ, ಪ್ರತಿವಾದಿ. ಪ್ರತಿಪಕ್ಷೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ"  
(೫-೨-೧೧೫) ।

ಪ್ರತಿಪಕ್ಷವ್ಯ ಪ್ರತಿಪಕ್ಷವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸ್ವೀಕರಿಸಲ್ಪಡುವ,  
ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಒಪ್ಪಲ್ಪಡುವ. 2. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಡುವ.  
3. ಹೊಂದಲ್ಪಡುವ. 4. ಆಶ್ರಯಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರತಿ+ಪದ (ಗತೌ) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬) । 5. ಸ್ವೀಕರಿಸಬೇಕಾದ.  
6. ಸಂಮತಿಸಬೇಕಾದ, ಒಪ್ಪಬೇಕಾದ. 7. ಪಡೆಯಬೇಕಾದ. 8. ಆಶ್ರಯಿಸಬೇಕಾದ.

ಪ್ರತಿಪತ್ತಿ ಪ್ರತಿಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೌರವ, ಮರ್ಯಾದೆ.  
ಪ್ರತಿ + ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) । "ಸಾಮಾನ್ಯ-  
ಪ್ರತಿಪತ್ತಿಪೂರ್ವಕಮಿಧಂ ದಾರೆಣ ದೃಶ್ಯಾ ತ್ವಯಾ ಭಾಗ್ಯಾಯತ್ತಮತಃ ಪರಂ  
ನ ಸ್ವಲ್ಪ ತದ್ವಾಚ್ಯಂ ವಘ್ನಬಂಧುಮಿಃ" ಶಾಕುಂ ೪-೧೬ । 2. ಇತಿ  
ಕರ್ತೃವ್ಯತ್ಯಾಜ್ಯಾನ್, ಏನುಮಾಡಬೇಕೆಂಬ ಬುದ್ಧಿ. "ವಪುರಾದ-  
ರಾತಿಶಯಶಂಸಿ ಪುನಃ ಪ್ರತಿಪತ್ತಿಮೂಢಮಪಿ ಬಾಹಮಭೂತ್" ಮಾಘಂ  
೯-೭೭ । 3. ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಸಂಪಾದನೆ, ಹೊಂದುವಿಕೆ. 4. ಪ್ರವೃತ್ತಿ, ನಡವಳಿಕೆ, ಕಾರ್ಯ ನಡೆಸುವ ವಿಧಾನ.

"ಭವತ್ಯನಿಷ್ಠಾದಪಿ ನಾಮ ದುಃಸಹಾನ್ಮನಸ್ವಿನೀನಾಂ ಪ್ರತಿಪತ್ತಿ-  
ರೀದೃಶಿ" ಕುಮಾಂ ೫-೪೨ । "ಪ್ರತಿಪತ್ತಿರಘಃ ಕ್ಷುಣ್ಣನಸೋ ಜನತಾಃ-  
ಸ್ತವ ಸಾಧು ವರ್ಣಯೇ" ಮಾಘಂ ೧೬-೮ । 5. ವರ್ತಮಾನ,  
ಸುದ್ದಿ, ಸಮಾಚಾರ. "ಸ್ವನಗರಾಯ ಪ್ರಸ್ಥಿತಂ ಮಾಂ ಪ್ರಿಯಾ  
ಸಬಾಷ್ಪಮಾಹ ಕಿಯಚ್ಚಿರೇಣಾರ್ಯಪುತ್ರಃ ಪ್ರತಿಪತ್ತಿ ದಾಸ್ಯತೀತಿ'  
ಶಾಕುಂ ೬ । 6. ಉಪಾಯ, ಯುಕ್ತಿ. 7. ಅಂಗೀಕಾರ,  
ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಂಮತಿ. "ಚಿರೇಣಾನುಗುಣಂ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಪ್ರತಿಪತ್ತಿ-  
ಪರಾಙ್ಮುಖಿ" ಭರ್ತೃಂ ೮-೯೫ । 8. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ.  
"ವಾಗರ್ಥಾವಿವ ಸಂಪೃಕ್ತೌ ವಾಗರ್ಥಪ್ರತಿಪತ್ತಯೇ । ಜಗತಃ ಪಿತರೌ  
ವಂದೇ ಪಾರ್ವತೀಪರಮೇಶ್ವರೌ" ರಘುಂ ೧-೧ । 9. ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯ,  
ದಿಟ್ಟತನ. 10. ಕಾರ್ಯನಿರ್ವಹಣೆ, ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ.  
ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನೆರವೇರಿಸುವಿಕೆ. "ಕವಿಮಾಹ್ನಾಯಾಮಾಃ  
ಪ್ರಸ್ತುತಪ್ರತಿಪತ್ತಯೇ" ರಘುಂ ೧೫-೭೫ । 11. ಬುದ್ಧಿ. 12. ಪದ  
ಪ್ರಾಪ್ತಿ. "ಪ್ರತಿಪತ್ತಿಃ ಪ್ರವೃತ್ತೌ ಚ ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯೇ ಗೌರವೇಽಪಿ ಚ ।  
ಸಂಪ್ರಾಪ್ತೌ ಚ ಪ್ರಬೋಧೇ ಚ ಪದಪ್ರಾಪ್ತೌ ಚ ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ ।  
13. ಪುನಃ ಪಡೆಯುವುದು, ಮತ್ತೆ ಹೊಂದುವುದು.  
14. ಪ್ರತಿಭೆ, ಹೊಸ ಹೊಸದಾಗಿ ಹೊಳೆಯುವ ಬುದ್ಧಿ.  
15. ಕೀರ್ತಿ, ಯಶಸ್ಸು.

ಪ್ರತಿಪತ್ತಿಮತ್ ಪ್ರತಿಪತ್ತಿಮತ್ (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿವಳಿಕೆಯುಳ್ಳ,  
ಬುದ್ಧಿವಂತ. 2. ಕೀರ್ತಿಶಾಲಿ, ಪ್ರಖ್ಯಾತಿ ಪಡೆದವನು.  
ಪ್ರತಿಪತ್ತಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪) ।

ಪ್ರತಿಪಥ ಪ್ರತಿಪಥ (ವಿಂ) 1. ಮಾರ್ಗವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ  
ರುವ, ದಾರಿಯನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಹೋಗುವ. ಪನ್ಥಾನ-  
ಮನುಗತಃ । "ಪ್ರತಿಪಥಗತಿರಾಸೀದ್ವೇಗದೀರ್ಘೀಕೃತಾಙ್ಗಃ" ಕುಮಾಂ  
೩-೭೬ । (ಅವ್ಯಂ) 2. ಪ್ರತಿ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿಯೂ. "ಪ್ರಮ-  
ಥಿತಮುಖತಃ ಪ್ರತಿಪಥಂ ಮಥಿತಸ್ಯ ಭೃಶಂ ಮಹೀಯಸಾ" ಮಾಘಂ  
೩-೮೨ ।

ಪ್ರತಿಪದ್ ಪ್ರತಿಪದ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶುಕ್ಲ ಮತ್ತು ಕೃಷ್ಣ  
ಪಕ್ಷಗಳ ಮೊದಲನೆಯ ತಿಥಿ. ಪ್ರತಿಪದ್ವತೇ ಉಪಕ್ರಮ್ಯತೇಜಯಾ  
ಪಕ್ಷೋ ಮಾಸೋ ವಾ — ಪ್ರತಿ + ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ವಿಪ್" (ವಾಂ  
೩-೩-೧೦೮) । 2. ಬುದ್ಧಿ, ಪ್ರಜ್ಞೆ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ.

ಪ್ರತಿಪದ ಪ್ರತಿಪದ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ, ಪುನಃ  
ಪುನಃ, ಪದೆ ಪದೆ. ಪದೇ ಪದೇ — ವೀಕ್ಷಾಯಾಮ್ ಅವ್ಯಯಿಂ ।  
"ಪ್ರಹರಕಮಪನೀಯ ಸ್ವಂ ನಿದ್ರಾಸತೋಚ್ಚೇಃ ಪ್ರತಿಪದಮುಪಹೃತಃ  
ಕೇನಚಿಜ್ಜಾಗೃಹೀತಿ" ಮಾಘಂ ೧೧-೪ । 2. ಪ್ರತಿಯೊಂದು  
ಜಾಗದಲ್ಲಿಯೂ. "ಶಿಥಿಲಿತಕುಸುಮಾಕುಲಾಪ್ರಪಾಣಿಃ ಪ್ರತಿ-  
ಪದಸಂಯಮಿತಾಂಶುಕಾವೃತಾಙ್ಗಿ" ಮಾಘಂ ೭-೩೬ । 3. ಪ್ರತಿ  
ಯೊಂದು ಪದದಲ್ಲಿಯೂ. 4. ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಹೆಜ್ಜೆ  
ಯಲ್ಲಿಯೂ.



**ಪ್ರತಿಪದ್ಯಮಾನ ಪ್ರತಿಪದ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ. 2. ತಿಳಿಯುತ್ತಿರುವ. "ವೃತ್ತಂ ರಹಃ ಪ್ರಣಯಮಪ್ರತಿಪದ್ಯಮಾನೇ" ಶಾಕುಂ ೫-೨೩.

**ಪ್ರತಿಪನ್ನ ಪ್ರತಿಪನ್ನ** (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿ+ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ಪ್ರಮದಾಃ ಪತಿವತ್ಸರಗಾ ಇತಿ ಪ್ರತಿಪನ್ನಂ ಹಿ ವಿಚೇತನೇರಪಿ" ಕುಮಾಂ ೪-೩೩. 2. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಶಾಪಾವಸಾನೇ ಪ್ರತಿಪನ್ನ-ಮೂರ್ತಿಯಾಚಿರೇ ಪಂಚಶರಸ್ಯ ಸೇವಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೯೨. 3. ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಪ್ಪಲ್ಪಟ್ಟ. "ಆಶಂಸತಾ ಬಾಣಗತಿ ವೃಷಾಕ್ಷೇ ಕಾರ್ಯ ತ್ವಯಾ ನಃ ಪ್ರತಿಪನ್ನಕಲ್ಪಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೧೪. 4. ಕೈಗೊಂಡ ಕಾರ್ಯ, ವಹಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ ಕೆಲಸ. ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಕಾರ್ಯ. "ಕಿಂತ್ವಜ್ಞೀಕೃತಮುತ್ಸೃಜನ್ ಕೃಪಣವತ್ ಶಲಾಘ್ಯೋ ಜನೋ ಲಜ್ಜತೇ ನಿರ್ವಾಹಿಃ ಪ್ರತಿಪನ್ನವಸ್ತುಷು ಸತಾಮೇತದ್ವಿ ಗೋತ್ರವ್ರತಮ್" ಮುಡ್ರಾಂ ೨-೧೮. 5. ಸಂಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. "ರಥಂ ಸುಮನ್ಯ-ಪ್ರತಿಪನ್ನರಶಿಮಮ್" ರಘುಂ ೧೪-೪೭.

**ಪ್ರತಿಪಾದಕ ಪ್ರತಿಪಾದಕ** (ವಿಂ) 1. ಕೊಡುವ, ದಾನ ಮಾಡುವ. ಪ್ರತಿ + ಪದ (ಗತೌ) + ಣಿच् "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩). 2. ತಿಳಿಸುವ, ಬೋಧಿಸುವ. "ಸ್ವಗತ-ನಾನಾತ್ವಶೂನ್ಯಂ ಬ್ರಹ್ಮತತ್ವಮಿತಿ ಪ್ರತಿಪಾದಕೇಷು ವೇದಾಂತೇಷು ಜಾಗರೂಕೇಷು ಕಥಮಶೇಷಗುಣತ್ವಮ್" ಸಂ ದಂ ಸಂ. 3. ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳುವ, ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿ ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವ. 4. ಸಮರ್ಥಿಸುವ, ದೃಢಪಡಿಸುವ, ಸ್ಥಿರಪಡಿಸುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಠಾಪ್" (೪-೧-೪). -ಪಾದಿಕಾ -ಪಾದಿಕಾ.

**ಪ್ರತಿಪಾದನ ಪ್ರತಿಪಾದನ**(ನಂ) 1. ತಿಳಿಸುವುದು, ಬೋಧಿಸುವುದು. ಪ್ರತಿ+ಪದ (ಗತೌ) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). "ಪ್ರತಿಪಾದನಂ ತು ದಾನೇ ಪ್ರತಿಪತ್ತೌ ಚ ಬೋಧನೇ" ಮೇಡಿಂ. 2. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. "ಪ್ರತಿಶ್ರುತಾರ್ಥರಾಜ್ಯಪ್ರತಿಪಾದನೇಽಪಿ ಪರ್ವತಕವಿನಾಶಃ ಕೇವಲಂ ಕೃತಘನತಾಮಾತ್ರಫಲಃ ಸ್ಯಾತ್" ಮುಡ್ರಾಂ ೩. 3. ವಿವರವಾಗಿ ತಿಳಿಸುವಿಕೆ, ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿ ಹೇಳುವುದು. 4. ಸ್ಥಿರಪಡಿಸುವುದು, ದೃಢಪಡಿಸುವುದು, ಸಮರ್ಥಿಸುವುದು, ಸಾಧಿಸುವುದು.

**ಪ್ರತಿಪಾದನೀಯ ಪ್ರತಿಪಾದನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಸಲ್ಪಡುವ, ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಬೋಧಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರತಿ + ಪದ (ಗತೌ) + ಣಿच् "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). 2. ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಡುವ, ವಿಸ್ತರಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ದಾನಮಾಡಲ್ಪಡಬೇಕಾದ, ಕೊಡಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. "ಗುಣವತೇ ಕನ್ಯಕಾ ಪ್ರತಿಪಾದನೀಯೇತ್ಯಯಂ ತಾವತ್ಪ್ರಥಮಃ ಸಂಕಲ್ಪಃ" ಶಾಕುಂ ೪. 4. ತಿಳಿಸ

ಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. 5. ಸ್ಥಿರಪಡಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ, ಸಮರ್ಥಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. 6. ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಡಬೇಕಾದ.

**ಪ್ರತಿಪಾದಯಿತ್ ಪ್ರತಿಪಾದಯಿತ್** (ವಿಂ) "ಪ್ರತಿಪಾದಕ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಪ್ರತಿ + ಪದ (ಗತೌ) + ಣಿच् "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಠೀಪ್" (೪-೧-೫). -ಯಿತ್ಯೀ.

**ಪ್ರತಿಪಾದಯತ್ ಪ್ರತಿಪಾದಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಕೊಡುತ್ತಿರುವ, ದಾನಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ಪದ (ಗತೌ) + ಣಿच् "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). 2. ತಿಳಿಸುವ, ಬೋಧಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿ ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳುತ್ತಿರುವ. 4. ವಿಷಯವನ್ನು ದೃಢಪಡಿಸಿ ಸಮರ್ಥಿಸುತ್ತಿರುವ, ನಿರ್ದರ್ಶನದಿಂದ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಠೀಪ್" (೪-೧-೬). -ಪಾದಯಂತಿ -ಪಾದಯಂತಿ.

**ಪ್ರತಿಪಾದಿತ ಪ್ರತಿಪಾದಿತ** (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿ + ಪದ (ಗತೌ) + ಣಿच् "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). 2. ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ, ದಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಗುರುಃ ಪ್ರತಿಪಾದಿತಾಂ ವಧೂಮಹತ್ಯ ಸ್ವಜನಸ್ಯ ಭೂತೇಃ" ಮಾಘಂ ೧೬-೪೯. 4. ಸ್ಥಿರಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರ್ದರ್ಶನದಿಂದ ಸಮರ್ಥಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ದೃಢಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪ್ರತಿಪಾದುಕ್ ಪ್ರತಿಪಾದುಕ್** (ವಿಂ) ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ, ಪಡೆಯುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ಪದ (ಗತೌ) "ಉಕ್" (೩-೨-೧೫೪). "ಪ್ರಕೃತಿ ಪ್ರತಿಪಾದುಕೇಶ್ಚ ಪಾದೇಶ್ಚಕಲ್ಪೇ ಭಾನುಮತಃ ಪುನಃಪ್ರಸರ್ತುಮ್" ಮಾಘಂ ೨೦-೩೯.

**ಪ್ರತಿಪಾಢ ಪ್ರತಿಪಾಢ** (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರತಿ + ಪದ (ಗತೌ) + ಣಿच् "ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪). 2. ವಿವರಿಸಲ್ಪಡುವ, ವಿಸ್ತರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. 3. ದಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಕೊಡಲ್ಪಡುವ. "ಅರ್ಥಿನೇ ನ ತೃಣವದ್ವನಮಾತ್ರಂ ಕಿಂತು ಜೀವನಮಪಿ ಪ್ರತಿಪಾಢಮ್" ನೈಷಂ ೫-೮೬. 4. ಸಮರ್ಥಿಸಲ್ಪಡುವ, ನಿರ್ದರ್ಶನದಿಂದ ದೃಢಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ.

**ಪ್ರತಿಪಾಢಮಾನ ಪ್ರತಿಪಾಢಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ಪದ (ಗತೌ) + ಣಿच् ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪). 2. ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿ ನಿರೂಪಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಉದಾಹರಣೆಗಳಿಂದ ಸಾಧಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ದೃಢಪಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 4. ದಾನಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಕೊಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. "ಅರ್ಥಿಮ್ಯಃ ಪ್ರತಿಪಾಢಮಾನಮನಿಶಂ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ ವೃದ್ಧಿ ಪರಾಮ್" ಭರ್ತೃಂ ೧-೧೨.

**ಪ್ರತಿಪಾಲಕ ಪ್ರತಿಪಾಲಕ** (ವಿಂ) 1. ಕಾಪಾಡುವವನು, ರಕ್ಷಿಸುವವನು. ಪ್ರತಿ + ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿच् "ಫ್ವಲ್"



(೩-೧-೧೩೩) 1. ಪ್ರತಿಕ್ಷಿಸುವವನು, ಎದುರುನೋಡುತ್ತಿರುವವನು. 3. ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯುವವನು, ಪಾಲಿಸುವವನು.

ಪ್ರತಿಪಾಲನ ಪ್ರತಿಪಾಲನ (ನಂ) 1. ಪ್ರತಿಕ್ಷಿಸುವುದು, ಎದುರು ನೋಡುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) 1. 2. ಕಾಪಾಡುವುದು, ರಕ್ಷಿಸುವುದು. 3. ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯುವುದು, ಪಾಲಿಸುವುದು.

ಪ್ರತಿಪಾಲನೀಯ ಪ್ರತಿಪಾಲನೀಯ (ವಿಂ) 1. ನಿರೀಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಪಾಲಿಸಲ್ಪಡುವ, ಅನುಸರಿಸಿ ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಕಾಪಾಡಲ್ಪಡುವ, ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ನಿರೀಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ. 5. ಪಾಲಿಸಬೇಕಾದ, ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯಬೇಕಾದ. 6. ರಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ. ಪ್ರತಿ + ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) 1. "ತವ್ಯ:" 1. -ಪಾಲಯಿತವ್ಯ: -ಪಾಲಯಿತವ್ಯ:

ಪ್ರತಿಪಾಲಯತ್ ಪ್ರತಿಪಾಲಯತ್ (ವಿಂ) 1. ನಿರೀಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರತಿಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಎದುರುನೋಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) 1. "ಗತಮಚ್ಯುತೇನ ಸಹ ಶೂನ್ಯತಾಂ ಗತ: ಪ್ರತಿಪಾಲಯನ್ ಮನ ಇವಾಕ್ಷ-ನಾಜನ:" ಮಾಘಂ ೧೩-೪೭ 1. 2. ಕಾಪಾಡುತ್ತಿರುವ, ರಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಪಾಲಿಸಿ ಆಚರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ತೀಪ್" (೪-೧-೬) 1. -ಪಾಲಯಂತಿ -ಪಾಲಯಂತಿ.

ಪ್ರತಿಪಾಲಿತ ಪ್ರತಿಪಾಲಿತ (ವಿಂ) 1. ಕಾಪಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿ + ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) 1. 2. ನಿರೀಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಎದುರುನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಜಲಧರಾವಲಿರಪ್ರತಿಪಾಲಿತಸ್ವಸಮಯಾ ಸಮಯಾ-ಜಗತಿಧರಮ್" ಮಾಘಂ ೬-೨೫ 1. 3. ಪಾಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅನುಸರಿಸಿ ಆಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪ್ರತಿಪಾಲ್ಯ ಪ್ರತಿಪಾಲ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕಾಪಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ನಿರೀಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ, ಎದುರುನೋಡಲ್ಪಡುವ. 3. ಅನುಸರಿಸಿ ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಪಾಲಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರತಿ + ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಯತ್" (೩-೧-೧೭) 1.

ಪ್ರತಿಪಿಪಾದಯಿಷತ್ ಪ್ರತಿಪಿಪಾದಯಿಷತ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತಿಪಾದನೆ ಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ದಾನಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ಪದ (ಗತಿಯು) + ಣಿಚ್ + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) 1.

ಪ್ರತಿಪಿಪಾದಯಿಷಾ ಪ್ರತಿಪಿಪಾದಯಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರತಿಪಾದನೆ ಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಪ್ರತಿಪಾದಯಿಷಾಮಿಷಾ-ಪ್ರತಿ

+ ಪದ (ಗತಿಯು) + ಣಿಚ್ + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨) 1. 2. ದಾನಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ.

ಪ್ರತಿಪಿಪಾದಯಿಷಾ ಪ್ರತಿಪಿಪಾದಯಿಷಾ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತಿಪಾದನೆ ಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಪ್ರತಿ + ಪದ (ಗತಿಯು) + ಣಿಚ್ + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೨-೧೬೮) 1. 2. ದಾನಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಕೊಡಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ.

ಪ್ರತಿಪುರುಷ ಪ್ರತಿಪುರುಷ (ಫಂ) 1. ಬದಲಿ ಮನುಷ್ಯ, ಪ್ರತಿನಿಧಿ. 2. ಮನೆಯೊಳಗೆ ಯಾರಾದರೂ ಎಚ್ಚರ ದಿಂದಿರುವರೆ ಎಂಬುದನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಜೋರ (ಕಳ್ಳ)ರು ಮೊದಲು ಮನೆಯೊಳಗೆ ತಳ್ಳಿ ನೋಡುವ ಮನುಷ್ಯನ ಒಂದು ಅಕ್ಕಿತಿ. ಪ್ರತಿಪುರುಷ: ಪುರುಷ: 1. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬ ಮನುಷ್ಯನಿಗೂ, ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬನಿಗೂ.

ಪ್ರತಿಪುಸ್ತಕ ಪ್ರತಿಪುಸ್ತಕ (ನಂ) ಒಂದು ಪುಸ್ತಕಕ್ಕೆ ಪ್ರತಿರೂಪವಾದ ಪುಸ್ತಕ, ಮೂಲಪ್ರತಿಯ ನಕಲು, ಹಸ್ತಪ್ರತಿ.

ಪ್ರತಿಪೂಜನ ಪ್ರತಿಪೂಜನ (ನಂ) ಬದಲು ಮರ್ಯಾದೆ ಮಾಡುವುದು, ಮಾಡಿದ ಮರ್ಯಾದೆಗೆ ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಗೌರವಿಸುವುದು.

ಪ್ರತಿಪೂಜಿತ ಪ್ರತಿಪೂಜಿತ (ವಿಂ) ಕೋರಿಸಿದ ಗೌರವಕ್ಕೆ ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪ್ರತಿಪ್ರಣಾಮ ಪ್ರತಿಪ್ರಣಾಮ (ಫಂ) ಬದಲು ನಮಸ್ಕಾರ, ನಮಸ್ಕಾರಕ್ಕೆ ಬದಲಾಗಿ ಮಾಡುವ ನಮಸ್ಕಾರ.

ಪ್ರತಿಪ್ರದಾನ ಪ್ರತಿಪ್ರದಾನ (ನಂ) 1. ಬದಲಾಗಿ ಕೊಡುವುದು, ಒಂದು ವಸ್ತುವಿಗೆ ಬದಲಾಗಿ ಮತ್ತೊಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು ಕೊಡುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಪ್ರ + ದಾನ್ (ದಾನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) 1. 2. ತಂದ ವಸ್ತುವನ್ನು ಹಿಂತಿರುಗಿಸಿ ಕೊಡುವುದು, ವಸ್ತುವನ್ನು ಅದರ ಯಜಮಾನನಿಗೆ ಹಿಂತಿರುಗಿಸುವುದು. "ಮಮ ಪ್ರತಿಪ್ರದಾನಂ ಹಿ ರಾವಣಸ್ಯ ನ ರೋಚತೇ" ರಾಮಾಂ 1.

ಪ್ರತಿಪ್ರಿಯ ಪ್ರತಿಪ್ರಿಯ (ನಂ) ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರ, "ಪ್ರತಿಪ್ರಿಯಂ ಚೇದ್ಭವತೋ ನ ಕುರ್ಯಾ ವೃಥಾ ಹಿ ಮೇ ಸ್ಯಾತ್ಸವಪದೋಪಲಕ್ಷಿಃ:" ರಘುಂ ೫-೫೬ 1.

ಪ್ರತಿಪ್ರಯಾಣ ಪ್ರತಿಪ್ರಯಾಣ (ನಂ) ಹಿಂತಿರುಗುವುದು, ಹಿಂತಿರುಗಿ ಹೋಗುವುದು, -ಬರುವುದು.

ಪ್ರತಿಪ್ರಸವ ಪ್ರತಿಪ್ರಸವ (ಫಂ) ಒಂದು ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ನಿಷೇಧಿಸಿರುವ ವಿಷಯವನ್ನು ಮತ್ತೆ ವಿಧಿಸುವುದು, ಸಾಮಾನ್ಯಶಾಸ್ತ್ರದಿಂದ ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ವಿಷಯವನ್ನು ವಿಶೇಷ ಶಾಸ್ತ್ರದಿಂದ ವಿಧಿಸುವುದು. "ತೃಜಕಾಮ್ಯಾಂ ಕರ್ತರಿ" (೨-೨-೧೫) ಸೂತ್ರದಿಂದ ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಉಕ್ತವಾದ



ಪಕ್ಷೀ ಸಮಾಸ ನಿಷೇಧಕ್ಕೆ "ಯಾಜಕಾದಿಮಿಶ್ರ" (೨-೨-೯) ಸೂತ್ರದಿಂದ ಉಕ್ತವಾದ ವಿಶೇಷ ರೀತಿಯ ಪಕ್ಷೀ ಸಮಾಸ ವಿಧಾನವು ಪ್ರತಿಪ್ರಸವ. "ತೃಜಕಾಮ್ಯಾಂ ಕರ್ತರಿ" ಇತ್ಯಸ್ಯ ಪ್ರತಿಪ್ರಸವೋಪ್ಯಮ್ ಸಿಂ ಕೌಂ ।

**ಪ್ರತಿಪ್ರಸ್ಥಾನ ಪ್ರತಿಪ್ರಸ್ಥಾನ (ನಂ)** 1. ಎರಡು ಪಕ್ಷವನ್ನು ಸೇರುವುದು, ಶತ್ರುಗಳ ಕಡೆ ಸೇರುವುದು. ಪ್ರತಿಕೂಲ ಪ್ರಸ್ಥಾನಮ್ । 2. ಪ್ರತ್ಯುತ್ಥಾನ, ಎದುರುಗೊಳ್ಳುವುದು. "ಭರನ್ಯಾಸಂಘಪ್ರಬಲವೃಜಿನಪ್ರಾಮೃತಭೃತಾಂ ಪ್ರತಿಪ್ರಸ್ಥಾನಂ ತೇ ಶ್ರುತಿನಗರಶೃಂಗಾಡಕಜುಃ" ದಯಾಶಂ ।

**ಪ್ರತಿಪ್ರಹಾರ ಪ್ರತಿಪ್ರಹಾರ (ಪುಂ)** ಎದುರು ಎಟು, ಬದಲು ಹೊಡೆತ, ಹೊಡೆದ ಎಟಿಗೆ ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಹೊಡೆಯುವುದು. ಪ್ರತಿರೂಪ: ಪ್ರಹಾರ: ।

**ಪ್ರತಿಫಲ ಪ್ರತಿಫಲ (ನಂ)** 1. ಪ್ರತಿಬಿಂಬ, ಮಾರ್ಪಾಟು. ಸ್ವಚ್ಛವಾದ ವಸ್ತುವಿನೊಳಗೆ ಕಾಣುವ ಬೇರೆ ವಸ್ತುವಿನ ನೆರಳು. ಪ್ರತಿಫಲತಿ—ಪ್ರತಿ+ಫಲ (ನಿಷ್ಪತ್ತಿ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ಪ್ರತಿಫಲಮವಲೋಕ್ಯ ಸ್ವೀಯಮಿಂದೋ: ಕಲಾಃ ಹರಶಿರಸಿ ಪರಸ್ಯಾವಾಸಮಾಶ್ಚಮಾನಾ" । 2. ಶ್ರಮಕ್ಕೆ ತಕ್ಕ ಪ್ರಯೋಜನ, ಸಲ್ಲಿಸಿದ ಸೇವೆಗೆ ತಕ್ಕ ಫಲ. 3. ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರ, ಮುಯ್ಯಿ.

**ಪ್ರತಿಫಲತ್ ಪ್ರತಿಫಲತ್ (ವಿಂ)** ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿಸುವ, ಸ್ವಚ್ಛವಾದ ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದುವ. ಪ್ರತಿ+ಫಲ (ನಿಷ್ಪತ್ತಿ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಅಮಲಾತ್ಮಸು ಪ್ರತಿಫಲನಮಿತಸ್ತಠ್ಣಿಕಪೊಲಫಲಕೇಷು ಮುಹು:" ಮಾಧಂ ೯-೩೭ ।

**ಪ್ರತಿಫಲನ ಪ್ರತಿಫಲನ (ನಂ)** 1. ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿಸುವುದು, ಸ್ವಚ್ಛವಾದ ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿದ ಮತ್ತೊಂದು ವಸ್ತುವಿನ ನೆರಳು. ಪ್ರತಿ+ಫಲ (ನಿಷ್ಪತ್ತಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಶ್ರಮಕ್ಕೆ ತಕ್ಕ ಪ್ರಯೋಜನ ಪಡೆಯುವುದು. 3. ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರ.

**ಪ್ರತಿಫಲಿತ ಪ್ರತಿಫಲಿತ (ವಿಂ)** ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿಸಿದ, ಸ್ವಚ್ಛವಾದ ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡ, ಸ್ವಚ್ಛವಾದ ಬೇರೆ ವಸ್ತುವಿನೊಳಗೆ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿದ. ಪ್ರತಿ+ಫಲ (ನಿಷ್ಪತ್ತಿ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) ।

**ಪ್ರತಿಬದ್ಧ ಪ್ರತಿಬದ್ಧ (ವಿಂ)** 1. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿ+ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । "ನೃಪ: ಪುರಸ್ಥೈ: ಪ್ರತಿಬದ್ಧವತ್ಮಾ ಪಶ್ಚಾತ್ತನೇ: ಕಪ್ಪನ ನುಚ್ಚಮಾನ:" ನೆಪಂ ೧೦-೬ । 2. ಕಟ್ಟಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. "ವನಾಯ ಪಿತಪ್ರತಿಬದ್ಧವತ್ಸಾಂ ಯಶೋಧನೋ ಧೇನುಮೃಷಮೌಚ" ರಘುಂ ೨-೧ । 3. ಭಗ್ನ ಮನೋರಥ, ಆಶೆಯನ್ನು ತೊರೆದಿರುವ, ಉತ್ಸಾಹಹೀನ

ನಾದ. 4. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ತೌ ಸನ್ನಿಧಿಃ ವ್ಯಾಜಿತವೃತ್ತಿಭೇದಂ ರಸಾಂತರೇಷು ಪ್ರತಿಬದ್ಧರಾಗಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೯೧ ।

**ಪ್ರತಿಬಂಧನ್ ಪ್ರತಿಬಂಧನ್ (ವಿಂ)** ತಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ+ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಬಂಧನಿ -ಬಂಧಿನೀ. "ನಿಬಿಡಪೀನಕುಚದ್ವಯನ್ತ್ರಣಾ ತಮಪರಾಧಮದಾ-ತ್ಪ್ರತಿಬಂಧನಿ" ನೆಪಂ ೪-೧೦ ।

**ಪ್ರತಿಬಂಧ್ಯಮಾನ ಪ್ರತಿಬಂಧ್ಯಮಾನ (ವಿಂ)** 1. ತಡೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಕಟ್ಟಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ+ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

**ಪ್ರತಿಬಂಧ ಪ್ರತಿಬಂಧ (ಪುಂ)** 1. ಅಡ್ಡಿ, ತಡೆ, ಆತಂಕ. ಪ್ರತಿ+ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಘಃ" (೩-೩-೧೮) । "ಶಕ್ತಿಹಿ ಕಾಲಸ್ಯ ವಿಮೋಚನಾರ್ಥಾ ಶಕ್ತಿಯಂತರಾಣಾಂ ಪ್ರತಿಬಂಧಹೇತು:" ಮಂ ವೀಂ ೫-೪ । 2. ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ತಡೆಗಟ್ಟುವುದು, 3. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದುವುದು.

**ಪ್ರತಿಬಂಧಕ ಪ್ರತಿಬಂಧಕ (ವಿಂ)** 1. ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವ, ತಡೆಯೊಡ್ಡುವ. ಪ್ರತಿ+ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಘಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । "ತ್ಯಾಗಿನೋ ನಿಷ್ಕಲಕ್ಷ್ಯಸ್ಯ ಕೋ ದೋಷೋಽಸ್ಯ ಮಹಿಪತೇ: । ಮಮಾಪುಣ್ಯಂ ತು ತನ್ನಿಧ್ಯಂ ಯಚ್ಚೇಯ:ಪ್ರತಿಬಂಧಕಮ್" । 2. ಕಟ್ಟಿ ಹಾಕುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಠಾಪ್" ಪ್ರತಿಬಂಧಿಕಾ ಪ್ರತಿಬಂಧಿಕಾ.

**ಪ್ರತಿಬಂಧನ ಪ್ರತಿಬಂಧನ (ನಂ)** 1. ಕಟ್ಟಿಹಾಕುವುದು. ಪ್ರತಿ+ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ತಡೆಯುವುದು, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವುದು.

**ಪ್ರತಿಬಂಧನೀಯ ಪ್ರತಿಬಂಧನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ, ತಡೆಯಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರತಿ+ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । 2. ಕಟ್ಟಲ್ಪಡುವ. 3. ಕಟ್ಟಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ಕಟ್ಟಬೇಕಾದ. 5. ತಡೆಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. 6. ತಡೆಯಬೇಕಾದ. "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) । -ಬಂಧ್ಯಮ್ -ಬಂಧ್ಯಮ್.

**ಪ್ರತಿಬಂಧ್ಯ ಪ್ರತಿಬಂಧ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಕಟ್ಟಲ್ಪಡುವ. 2. ತಡೆಯಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರತಿ+ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) ।

**ಪ್ರತಿಬಲ ಪ್ರತಿಬಲ (ವಿಂ)** 1. ಶಕ್ತಿ, ಸಮರ್ಥ. ಪ್ರತಿಗತ ಬಲಮಸ್ಯ । 2. ಶತ್ರುವಿಗೆ ಸಮಾನ ಬಲವುಳ್ಳ. ಪ್ರತಿರೂಪ ಬಲಂ ಯಸ್ಯ । (ನಂ) 3. ಶತ್ರುಸೈನ್ಯ, ಪ್ರತಿಪಕ್ಷದ ಸೇನೆ. "ಅಸ್ತ್ರಜ್ವಾಲಾವಲಿಹಪ್ರತಿಬಲಜಲಧೇರಂತರೋರ್ವಿಯಮಾಣಂ" ವೇಣೀಂ



೩-೭. 4. ಶಕ್ತಿ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. 5. ಶತ್ರು, ಹಗೆ, ವೈರಿ.  
ಪ್ರತಿಕೂಲ ಬಲಮಸ್ಯ ।

**ಪ್ರತಿಬಿಂಬ ಪ್ರತಿಬಿಂಬ** (ಪುಂ) 1. ಮಾರ್ಪಾಳವು, ಪ್ರತಿ  
ಫಲನ, ಸ್ವಚ್ಛ ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ತೋರುವ ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ  
ನೆರಳು. ಪ್ರತಿರೂಪಿ ಬಿಂಬ: । “ಪರಿಕ್ಷಾಕಪಟಸ್ಕುಟಸ್ಕುರ-  
ತಪ್ರತಿಬಿಂಬಾನವಲಮ್ಬಿತಾಮ್ಬುನಿ” ನೆಪಂ ೨-೭೯. 2. ಎಗ್ರಹ,  
ಪ್ರತಿಮೆ. (ವಿಂ) 3. ಸದೃಶವಾದ, ಸಮಾನವಾದ.  
“ಅಸ್ಯಾ ಮುಖೇಂದಾವಧರ: ಸುಧಾಭುಬಿಂಬಸ್ಯ ಯುಕ್ತ: ಪ್ರತಿಬಿಂಬ  
ಉಪ:” ನೆಪಂ ೭-೩೮.

**ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿತ ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿತ** (ವಿಂ) ಪ್ರತಿಫಲಿಸಿರುವ, ಸ್ವಚ್ಛ  
ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ತದ್ವತ್ತಾಗಿ ಕಾಣುವ. ಪ್ರತಿಬಿಂಬೋಪ್ಯ  
ಸಂಜಾತ: “ಇತತ್” (೪-೨-೩೬). “ವಿರಹಪಾಂಡುಕಪಾಲತಲೇ  
ವಿಧುರ್ವ್ಯಧಿತ ಭೀಮಭುವ: ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿತ:” ನೆಪಂ ೪-೨೬.

**ಪ್ರತಿಬುದ್ಧ ಪ್ರತಿಬುದ್ಧ** (ವಿಂ) 1. ಜಾಗರೂಕನಾಗಿರುವ,  
ಅವಧಾನದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪ್ರತಿ+ಬುದ್ಧ (ಅವಗಮನೆ) “ಕ್ತ:”  
(೩-೪-೭೨). 2. ನಿದ್ರೆಯಿಂದ ಎಚ್ಚರಗೊಂಡಿರುವ.  
“ಪ್ರತಿಬುದ್ಧಾಪಿ ಕಿಂ ಕರಿಷ್ಯೆ । ನ ಮ ತಚಿತೇಷ್ವಪಿ ನಿಜಕಾರ್ಯೇಷು  
ಹಸ್ತಪಾದಂ ಪ್ರಸರತಿ” ಶಾಕುಂ ೪. 3. ಅರಳಿದ, ಎಕಾಸ  
ಹೊಂದಿದ, “ಅಯೇ ಅಪ್ರತಿಬುದ್ಧೋಽಪಿ ಚೂತಪ್ರಸವೋಽತ್ರ ಬಂಧನಮಜ್ಞ-  
ಸುರಮಿರ್ಭವತಿ” ಶಾಕುಂ ೬. 4. ಪ್ರಜ್ಞೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ,  
ಜ್ಞಾನೋದಯವಾಗಿರುವ.

**ಪ್ರತಿಬೋಧ ಪ್ರತಿಬೋಧ** (ಪುಂ) 1. ಎಚ್ಚರಿಕೆ, ಜಾಗರಣೆ,  
ನಿದ್ರೆಯಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಬೋಧ (ಅವಗಮನೆ)  
“ಬಲ್” (೩-೩-೧೮). “ಸ್ವಸ್ಥಮಭಿದದೃಶೆ ಸಹಸಾ ಪ್ರತಿಬೋಧ-  
ಜುಮ್ಭಿತಮುಖೈರ್ಮಂಗಾಧಿಪ:” ಕಿರಾಂ ೧೨-೪೮. 2. ಅರಳು  
ವುದು, ಎಕಾಸಹೊಂದುವುದು. 3. ಅರಿವು, ತಿಳಿವಳಿಕೆ.  
4. ಸ್ಮರಣೆ, ನೆನಪು, “ಸಮೋಹ: ಕಲ್ಮ ವಿಷ್ಮಯನೀಯೋ ನ  
ಪ್ರತಿಬೋಧ:” ಶಾಕುಂ ೬. 5. ಬೋಧನೆ, ಉಪದೇಶ.

**ಪ್ರತಿಬೋಧಕ ಪ್ರತಿಬೋಧಕ** (ವಿಂ) 1. ನಿದ್ರೆಯಿಂದ ಎಚ್ಚರ  
ಗೊಳಿಸುವವನು, ನಿದ್ರೆಯಿಂದ ಎಬ್ಬಿಸುವವನು. ಪ್ರತಿ+ಬೋಧ  
(ಅವಗಮನೆ) “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩). 2. ತಿಳಿಸುವ,  
ಬೋಧಿಸುವ, ಉಪದೇಶಿಸುವ.

**ಪ್ರತಿಬೋಧನ ಪ್ರತಿಬೋಧನ** (ನಂ) 1. ಬೋಧಿಸುವುದು,  
ಉಪದೇಶಿಸುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಬೋಧ (ಅವಗಮನೆ) “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೫). 2. ನಿದ್ರೆಯಿಂದ ಎಬ್ಬಿಸುವುದು, -ಎಚ್ಚರಿ  
ಸುವುದು.

**ಪ್ರತಿಬೋಧನೀಯ ಪ್ರತಿಬೋಧನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಎಚ್ಚರ  
ಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ, ನಿದ್ರೆಯಿಂದ ಎಬ್ಬಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರತಿ+ಬೋಧ

(ಅವಗಮನೆ)+ಞಿಚ್ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೧೬). 2. ಎಚ್ಚರ  
ಗೊಳಿಸಬೇಕಾದ, ಎಬ್ಬಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಡುವ,  
ಬೋಧಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಬೋಧಿಸಬೇಕಾದ, ಉಪದೇಶಿಸ  
ಬೇಕಾದ. “ತವ್ಯ:” । -ಬೋಧಯಿತವ್ಯ: -ಬೋಧಯಿತವ್ಯ:.

**ಪ್ರತಿಬೋಧಯತ್ ಪ್ರತಿಬೋಧಯತ್** (ವಿಂ) 1. ನಿದ್ರೆಯಿಂದ  
ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಉಪದೇಶಿಸುತ್ತಿರುವ.  
ಪ್ರತಿ+ಬೋಧ (ಅವಗಮನೆ)+ಞಿಚ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪).  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೫). -ಬೋಧಯಂತಿ -ಬೋಧಯಂತೀ.

**ಪ್ರತಿಬೋಧವತ್ ಪ್ರತಿಬೋಧವತ್** (ವಿಂ) 1. ಎಚ್ಚರಿಕೆ  
ಯುಳ್ಳ, ಜಾಗರೂಕತೆಯುಳ್ಳ. 2. ತಿಳಿವಳಿಕೆಯುಳ್ಳ,  
ಅರಿವುಳ್ಳ. ಪ್ರತಿಬೋಧೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೭).  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬). -ಬೋಧವಂತಿ -ಬೋಧವಂತೀ.  
“ಸ್ತ್ರೀಣಾಮಶಿಕ್ಷಿತಪದ್ವತ್ವಮಾನುಷೀಷು ಸಂದೃಶ್ಯತೇ ಕಿಮುತ ಯಾ:  
ಪ್ರತಿಬೋಧವತ್ಯ:” ಶಾಕುಂ ೪-೨೨.

**ಪ್ರತಿಬೋಧಿತ ಪ್ರತಿಬೋಧಿತ** (ವಿಂ) 1. ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿದ್ರೆಯಿಂದ ಎಬ್ಬಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿ+ಬೋಧ (ಅವಗಮನೆ)  
+ ಞಿಚ್ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨). 2. ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಬೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಪ್ರಿಯಸಖಿಸಿದೃಶಂ ಪ್ರತಿಬೋಧಿತಾ: ಕಿಮಪಿ  
ಕಾಮ್ಯಗಿರಾ ಪರಪುಷ್ಪಯಾ” ಮಾಘಂ ೬-೮.

**ಪ್ರತಿಭಟ ಪ್ರತಿಭಟ** (ಪುಂ) 1. ಶತ್ರುಪಕ್ಷದ ಯೋಧ, ಶತ್ರು  
ಸೈನ್ಯದೊಳಗಿನ ಸಿಪಾಯಿ. ಪ್ರತಿಕೂಲೋ ಭಟ: । 2. ಎದು  
ರಾಳಿ, ವಿರೋಧಿ, ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಿ, ಶತ್ರು. (ವಿಂ) 3. ಪ್ರತಿ  
ಸ್ಪರ್ಧಿಸುವ, ಪ್ರತಿದ್ವಂದ್ವಿಯಾದ. “ಗುಪ್ತಂ ಷಡಪ್ರತಿಭಟಸ್ತನಿ  
ಬಾಹುನೇತ್ರಂ ನಾಲೋಕಸೇತಿಸಯಮದ್ಭುತಮೇತದೀಯಮ್” ನೆಪಂ ೧೩-೬.

**ಪ್ರತಿಭಯ ಪ್ರತಿಭಯ** (ವಿಂ) 1. ಭಯಂಕರವಾದ, ಭಯ  
ವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಪ್ರತಿಗತಂ ಭಯಮಸ್ಮಿನ್. “ವಿದ್ವರಥ:  
ಪ್ರತಿಭಯಮಾಸ್ಯಕಂದರಂ ಚಲತ್ಕಣಾಧರಮಿವ ಕೋಟರಂ ತರ:”  
ಮಾಘಂ ೧೭-೧೭. (ನಂ) 2. ಭಯ, ಭೀತಿ, ಹೆದರಿಕೆ.  
“ಪ್ರತಿಭಯಂ ಭಯೇ । ಧೋರೇಽಪಿ” ಮೇದಿಂ.

**ಪ್ರತಿಭಾ ಪ್ರತಿಭಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬುದ್ಧಿಶಕ್ತಿ, ಜ್ಞಾನಬಲ.  
ಪ್ರತಿ + ಭಾ (ದೀಪ್ತಾ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೬). “ಗುರುಪದೇಶಂ  
ಪ್ರತಿಭೇವ ತೀಕ್ಷಣಾ ಪ್ರತೀಕ್ಷತೇ ಜಾತು ನ ಕಾಲಮತಿ:” ನೆಪಂ  
೩-೯೧. 2. ಬುದ್ಧಿ, ಅರಿವು, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. “ಸರ್ವತ:  
ಕುಶಲವಾನಸಿ ಕಚ್ಚಿತ್ತವಂ ಸ ನೆಪಥ ಇತಿ ಪ್ರತಿಭಾ ನ:” ನೆಪಂ  
೪-೭೪. 3. ಹೊಸಹೊಸದಾಗಿ ವಿಷಯಗಳು ಹೊಳೆ  
ಯುವ ಬುದ್ಧಿ. “ಪ್ರಜಾ ನವನವೋನ್ಮೇಷಶಾಲಿನಿ ಪ್ರತಿಭಾ  
ಮತಾ” । 4. ದೀಪ್ತಿ, ಪ್ರಕಾಶ, ಕಾಂತಿ. ಪ್ರತಿ + ಭಾ  
“ಅಡ್” (೩-೩-೧೦೬).



**ಪ್ರತಿಭಾತ ಪ್ರತಿಭಾತ (ವಿಂ)** 1. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರತಿ + ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಪ್ರಕಾಶದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಕಾಂತಿಯುಕ್ತವಾದ, ಹೊಳೆಯುವ. 3. ಹೊಳೆದ, ಸ್ಫುರಿಸಿದ.

**ಪ್ರತಿಭಾತ ಪ್ರತಿಭಾತ (ನಂ)** 1. ಪ್ರಕಾಶ, ಕಾಂತಿ, ಬೆಳಕು. ಪ್ರತಿ+ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ಅರಿವು. 3. ಸಮಯೋಚಿತವಾಗಿ ಉತ್ತರ ಹೇಳುವ ಬುದ್ಧಿ. 4. ಧೈರ್ಯ, ಕೆಚ್ಚಿದೆ.

**ಪ್ರತಿಭಾತವತ್ ಪ್ರತಿಭಾತವತ್ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರತಿಭೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಸಮಯೋಚಿತವಾದ ಉತ್ತರ ಹೇಳುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವುಳ್ಳ. ಪ್ರತಿಭಾತಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೭)। "ದಮವೋಪಸುತೇನ ಕಶ್ಚನ ಪತಿಶಿಷ್ಠ: ಪ್ರತಿಭಾತವಾನಥ" ಮಾಘಂ ೧೬-೧। 2. ಧೈರ್ಯಶಾಲಿ. 3. ಬುದ್ಧಿವಂತ. 4. ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ.

**ಪ್ರತಿಭಾನ್ವಿತ ಪ್ರತಿಭಾನ್ವಿತ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರತಿಭೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಹೊಸ ಹೊಸ ವಿಷಯಗಳು ಸ್ಫುರಿಸುವ ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ. ಪ್ರತಿಭಾ ಅನ್ವಿತ:। 2. ಧೈರ್ಯಶಾಲಿ. 3. ಪ್ರಕಾಶದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಕಾಂತಿಯುಕ್ತವಾದ. 4. ತಿಳಿವಳಿಕೆಯುಳ್ಳ.

**ಪ್ರತಿಭಾವತ್ ಪ್ರತಿಭಾವತ್ (ವಿಂ)** "ಪ್ರತಿಭಾನ್ವಿತ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಪ್ರತಿಭಾ ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೭)।

**ಪ್ರತಿಭಾಸ ಪ್ರತಿಭಾಸ (ಪುಂ)** 1. ಪ್ರಕಾಶ, ಕಾಂತಿ. ಪ್ರತಿ+ಭಾಸ (ದೀಪ್ತೌ) "ಭವ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಹೊಳೆಯುವುದು, ಪ್ರಕಾಶಿಸುವುದು. 3. ಸ್ಫುರಿಸುವುದು, ತೋರುವುದು. "ನ ಖಲು ವ್ಯಕ್ತಚಸಂಸ್ಪರ್ಶರಾಮಶಾದಿನ ಚಾರತಾಪ್ರತಿತಿ:। ಅಪಿ ತು ವಾಚ್ಯವೇಚಿತ್ಯಪ್ರತಿಭಾಸಾದೇವ" ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ. 4. ತೋರ್ಕೆ, ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

**ಪ್ರತಿಭಾಸನ ಪ್ರತಿಭಾಸನ (ನಂ)** 1. ಹೊಳೆಯುವುದು, ತೋರುವುದು. 2. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವಿಕೆ. 3. ತೋರ್ಕೆ, ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

**ಪ್ರತಿಭು ಪ್ರತಿಭು (ಪುಂ)** ಜಾಮೀನುದಾರ, ಹೊಣೆಗಾರ, ಸಾಲ ಮೊದಲಾದವುಗಳಿಗೆ ಹೊಣೆಯಾಗುವವನು. ಪ್ರತಿನಿಧಿಭವತಿ - ಪ್ರತಿ + ಭು (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬)। "ಯಾಚಿತಶ್ಚಿರಯತಿ ಕ್ವ ನು ಧೀರ: ಪ್ರಾಪಣೇ ಕ್ಷಣಮಪಿ ಪ್ರತಿಭು: ಕ:" ನೈಷಂ ೪-೧೨೬।

**ಪ್ರತಿಮ ಪ್ರತಿಮ (ವಿಂ)** (ಸಮಾಸದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ) ಸದೃಶವಾದ, ಸಮಾನವಾದ. ಪ್ರತಿಮಾತಿ - ಪ್ರತಿ+ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೬)।

**ಪ್ರತಿಮಲ್ಲ ಪ್ರತಿಮಲ್ಲ (ವಿಂ)** 1. ಸದೃಶವಾದ, ಸಮಾನವಾದ. ಪ್ರತಿರೂಪೋ ಮಲ್ಲ:। "ಪಾತಾಲಪ್ರತಿಮಲ್ಲಗಲ್ಲವಿವರ-ಪ್ರಕ್ಷಿಪ್ತಸಪ್ತಾಣಿವಂ ವಂದೇ ನಂದಿತನೀಲಕಂಠಪರಿಷದ್ವ್ಯಕ್ತಂ ತವ ಕ್ರೋಡಿತಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೪-೨೨। 2. ಬಲಿಷ್ಠನಾದ ಶತ್ರು, ಪ್ರಬಲನಾದ ವೈರಿ.

**ಪ್ರತಿಮಾ ಪ್ರತಿಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಪ್ರತಿಬಿಂಬ, ಛಾಯೆ, ಸ್ವಚ್ಛ ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಕಾಣುವ ಮತ್ತೊಂದು ವಸ್ತುವಿನ ರೂಪ. ಪ್ರತಿಮೀಯತೇಜನಯಾ - ಪ್ರತಿ + ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) ಕರಂ "ಅಡ್" (೩-೩-೧೦೬)। "ಮುಖಮಿಂದುರೂಜ್ಜವಲಕಪಾಲಮತ: ಪ್ರತಿಮಾಚ್ಚ-ಲೇನ ಸುದೃಶಾಮವಿಶತ್" ಮಾಘಂ ೯-೪೮। "ರತ್ನಸ್ತಮ್ರೇಷು ಸಂಕ್ರಾಂತಪ್ರತಿಮಾಸ್ತೇ ಚಕಾಶಿರೇ" ಮಾಘಂ ೨-೪। 2. ವಿಗ್ರಹ, ಬಿಂಬ, ಮೂರ್ತಿ. "ತತ: ಸಪರ್ಯಾ ಸಪಶುಪಹಾರಾಂ ಪುರ: ಪರಾರ್ಥಪ್ರತಿಮಾಗೃಹಾಃ" ರಘುಂ ೧೬-೩೯। 3. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ. ಪ್ರತಿ + ಮಾ ಭಾವೇ "ಅಡ್"। "ಅಶೈಕಧೇನೋ-ರಪರಾಧಚಂಡಾಧುರೋ: ಕೃಶಾನುಪ್ರತಿಮಾದ್ವಿಭೇಷಿ" ರಘುಂ ೨-೪೯। 4. ಆನೆಯ ಕೊಂಬುಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಕುಂಭಸ್ಥಳದ ಕೆಳಭಾಗ. [ವಿಷ್ಣು, ಪರಶಿವ, ಅರ್ಧನಾರೀಶ್ವರ, ನೃಸಿಂಹ, ಅಂಬಿಕೆ, ಲಕ್ಷ್ಮಿ, ಮನ್ಮಥ, ಮುಂತಾದ ಅರ್ಚಾ ಮೂರ್ತಿಗಳ ಲಕ್ಷಣ ಪ್ರಮಾಣ ವಿನ್ಯಾಸ ಮುಂತಾದ ವಿಷಯಗಳಿಗೆ ಮತ್ಸ್ಯಪುರಾಣ ಪಾದ್ಮೋತ್ತರಖಂಡ ಅಗ್ನಿ ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಬೇಕು. ಗ್ರಂಥವಿಸ್ತರ ಭಯದಿಂದ ಇಲ್ಲಿ ಕೊಡಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗಿಲ್ಲ]. 5. ಅಳತೆ, ಪ್ರಮಾಣ.

**ಪ್ರತಿಮಾನ ಪ್ರತಿಮಾನ (ನಂ)** 1. ಪ್ರತಿಬಿಂಬ, ವಿಗ್ರಹ, ಮೂರ್ತಿ. ಪ್ರತಿಮೀಯತೇಜೇನ - ಪ್ರತಿ + ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಸಾಮ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ. "ಪರ್ಯಂತಭೂಘರನಿಕ್ರುಜ್ಜವಿಜೃಂಭಿತೇನ ಹೇರಮ್ಬಕಂಠ-ರಸಿತಪ್ರತಿಮಾನಮೇತಿ" ಮಾಲತೀಂ ೯-೩। 3. ಆನೆಯ ಕುಂಭಸ್ಥಳದ ಕೆಳಭಾಗ, ಆನೆಯ ಕೊಂಬುಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಆನೆಯ ಹಣೆ. "ಅಮ್ಬೋಧಿರೋಪಸಿ ಪೃಶುಪ್ರತಿಮಾನಭಾಗಸ್ತೋರು-ದಂತಮುಸಲಪ್ರಸರಂ ನಿಪೇತೇ" ಮಾಘಂ ೪-೩೬।

**ಪ್ರತಿಮುಕ್ತ ಪ್ರತಿಮುಕ್ತ (ವಿಂ)** 1. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಂಧನದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿ + ಮುಕ್ತ (ಮೋಕ್ಷಣೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಗೃಹೀತಪ್ರತಿಮುಕ್ತಸ್ಯ ಸ ಧರ್ಮ-ವಿಜಯಿ ನೃಪ:। ಅಥ ಮಹೇಂದ್ರನಾಥಸ್ಯ ಜಹಾರ ನ ತು ಮೇದಿನಿಮ್" ರಘುಂ ೪-೪೩। 2. ಧರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿಮುಚ್ಯತೇ ಸ್ಮ। 3. ಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. "ನ ಮೃತ್ಯುಪಾಶಂ: ಪ್ರತಿಮುಕ್ತಸ್ಯ ವೀರಾ ವಿಕಲ್ಪನಂ ತವ ಗುಹ್ಯತಮಮ್" ಭಾಗಂ ೩-೧೮-೧೦। 4. ಹಿಂತಿರುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,



ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಚ್ಯಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. "ತದ್ವಚನತೀರ್ಥಮಿರದರಾಗಶೋಭಾಂ  
ವಿಲೋಕನೇಷು ಪ್ರತಿಮುಖತಮಾಸೀತ್" ರಘುಂ ೧೬-೫೯. 5. ಹಿಂತಿರು  
ಗಿದ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಹೋದ.

**ಪ್ರತಿಮುಖ ಪ್ರತಿಯುಖ (ನಂ)** 1. ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯ (ರೂಪಕ)  
ಗಳಲ್ಲಿ ಇರಬೇಕಾದ ಪಂಚಸಂಧಿಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. ಇದರ  
ಅಕ್ಷಣ:—ಮುಖಸಂಧಿಯಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಪ್ರಧಾನ ಫಲ  
ಸಂಪಾದಕವಾದ ಬೀಜದ ಪ್ರಕಾಶ ಮತ್ತು ಅಪ್ರಕಾಶ  
ವರ್ಣನೆಯು ಪ್ರತಿಯುಖ ಸಂಧಿ. "ಕಲಪ್ರಧಾನೋಪಾಯಸ್ಯ  
ಮುಖಸಂಧಿವಿವೇಶಿನ:। ಲಕ್ಷ್ಯಾಲಕ್ಷ್ಯಬೋಧೋದೋ ಯತ್ರ ಪ್ರತಿಮುಖ  
ಚ ತತ್" ಸಾಂ ೬೦ ೬-೭೭. ವಿಲಾಸ: ಪರಿಸರ್ಪ: ವಿಘಟತಮ್  
ತಪನಮ್ ನರ್ಮ ನರ್ಮಣ್ಯುತಿ: ಪ್ರಗಮನಮ್ ವಿರೋಧ: ಪರ್ಯುಪಾಸನಮ್ ವಜ್ರಂ  
ಪುಷ್ಪಮ್ ಉಪನ್ಯಾಸ: ವರ್ಣಸಂಹಾರ: ಇವು ಪ್ರತಿಯುಖ ಸಂಧಿಯ  
ಅಂಗಗಳು. "ವಿಲಾಸ: ಪರಿಸರ್ಪಃ ವಿಘಟತಮ್ ತಪನಂ ತಥಾ। ನರ್ಮ  
ನರ್ಮಣ್ಯುತಿಶ್ಚೈವ ತಥಾ ಪ್ರಗಮನಂ ಪುನ:। ವಿರೋಧಃ ಪ್ರತಿಮುಖೇ ತಥಾ  
ಸ್ಯಾತ್ಪರ್ಯುಪಾಸನಮ್। ವಜ್ರಂ ಪುಷ್ಪಮುಪನ್ಯಾಸೋ ವರ್ಣಸಂಹಾರ  
ಇತ್ಯಪಿ" ಸಾಂ ೬೦ ೬-೮೭, ೮೮ (ಅವ್ಯಂ) 2. ಅಭಿಮುಖ  
ವಾಗಿ, ಎದುರಾಗಿ. 3. (ಅದರ) ಕಡೆಗೆ.

**ಪ್ರತಿಯತ್ ಪ್ರತಿಯುತ್ (ವಿಂ)** 1. ಅಂತಿರುವ, ತಿಳಿದಿರುವ.  
ಪ್ರತಿ + ಇನ್ (ಗತೌ) "ಋತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
"ಙೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯತೀ -ಯತೀ. "ರತಿಪತಿ-  
ಪ್ರಹಿತಾನಿಲಹೇತಿತಾಂ ಪ್ರತಿಯತೀ ಸುದತೀ ಮಲಯಾನಿಲೇ" ನೆಪಂ  
೪-೪೦. 2. ಹಿಂತಿರುಗಿ ಬರುವ.

**ಪ್ರತಿಯಲ್ ಪ್ರತಿಯುತ್ (ಪುಂ)** 1. ಪ್ರಯತ್ನ. ಪ್ರತಿಯತ್ಯತೇ —  
ಪ್ರತಿ + ಯತೀ (ಪ್ರಯತ್ನೇ) "ನಡ್" (೩-೩-೯೦)।  
2. ಅಭಿಲಾಷೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಪಡೆಯುವ ಆಸೆ. 3. ಸಂಸ್ಕಾರ,  
ಗುಣ ಪುಷ್ಪ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಶೃಂಗರಿಸುವುದು,  
ಸೊಗಸು ಮಾಡುವುದು. "ಸುಗಂಧಿತಾಮಪ್ರತಿಯಲ್ಪೂರ್ವಾ  
ವಿಭ್ರಂತಿ ಯತ್ರ ಪ್ರಮದಾಯ ಪುಸಾಮ್" ಮಾಘಂ ೩-೫೪. 4.  
ಮುಯ್ಯ ತೀರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಸೇಡು ತೀರಿಸುವುದು,  
ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಕಾರ ಮಾಡುವುದು. 5. ರಚನೆ, ಮಾಡುವುದು,  
ನಿರ್ಮಿಸುವುದು. 6. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿಗೆ ಬೇರೆ ಗುಣ  
ವನ್ನು ಹೊಂದಿಸುವುದು, ಹೊಸ ಗುಣವನ್ನು ಕೂಡಿಸು  
ವುದು, ಪರಿಷ್ಕರಿಸುವುದು. "ಪ್ರತಿಯಲ್ಪೋ ಗುಣಾಧಾನಮ್"  
ಸಿಂ ಕೌಂ. 7. ಸೆರೆಹಿಡಿಯುವುದು. ಬಂಧಿಸುವುದು.  
(ವಿಂ) 8. ಪ್ರಯತ್ನವುಳ್ಳವನು. "ಪ್ರತಿಯಲ್ಪ: ಪ್ರಯಲ್ಪವಾನ್"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಪ್ರತಿಯಾತ ಪ್ರತಿಯಾತ (ವಿಂ)** 1. ಹಿಂತಿರುಗಿದ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ  
ಹೋದ. ಪ್ರತಿ + ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)।

"ಆಗತಾನಗಣಿತಪ್ರತಿಯಾತಾನ್ ವಲ್ಮಾನಭಿಸಿಸಾರಯಿಷು-  
ಣಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೦-೨೦. 2. ಮತ್ತೆ, ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ  
ಹೋದ.

**ಪ್ರತಿಯಾತನಾ ಪ್ರತಿಯಾತನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪ್ರತಿಕ್ರಮ, ಪ್ರತಿಮೆ.  
ಮೂರ್ತಿ. ಪ್ರತಿಯಾತನೇಜಯಾ — ಪ್ರತಿ + ಯತ (ನಿಕಾರೋಪ-  
ಸ್ಕಾರಯೋ:) + ಣಿನ್ "ಯುಕ್" (೩-೩-೧೦೭)। "ಅನಿವಿಧಾ  
ಯಾ ವಿಧವೇ ವಿಧಾತ್ರಾ ಪೃಥ್ವಿ ಪೃಥಿವ್ಯಾ: ಪ್ರತಿಯಾತನೇವ" ಮಾಘಂ  
೩-೩೪.

**ಪ್ರತಿಯಾನ್ ಪ್ರತಿಯಾನ್ (ನಂ)** ಹಿಂತಿರುಗುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ  
ತೆರಳುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೫)।

**ಪ್ರತಿಯಾಸಾ ಪ್ರತಿಯಾಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹಿಂತಿರುಗಲು  
ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆರಳಲು ಇಚ್ಛೆ. ಪ್ರತಿಯಾತುಮಿಚ್ಛಾ —  
ಪ್ರತಿ + ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೇ) + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨)।

**ಪ್ರತಿಯಾಸು ಪ್ರತಿಯಾಸು (ವಿಂ)** ಹಿಂತಿರುಗಲು  
ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ. ಪ್ರತಿಯಾತು-  
ಮಿಚ್ಛು: — ಪ್ರತಿ + ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೇ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮)।

**ಪ್ರತಿಯೋಗ ಪ್ರತಿಯೋಗ (ಪುಂ)** 1. ವಿರೋಧ. ಪ್ರತಿ +  
ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಪ್ರತಿ  
ಹೇಳುವುದು, ತಿರಸ್ಕರಿಸುವುದು, ನಿಷೇಧಿಸುವುದು. 3.  
ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆ, ಪ್ರತಿಕ್ರಾರ. 4. ವಿರುದ್ಧವಾದ ಸಂಬಂಧ.

**ಪ್ರತಿಯೋಗಿನ್ ಪ್ರತಿಯೋಗಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ವಿರುದ್ಧವಾದ  
ಸಂಬಂಧವುಳ್ಳ, ಪ್ರತಿಕೂಲಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ.  
ಪ್ರತಿರೂಪ ಯುಜ್ಯತೇ — ಪ್ರತಿ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ಧಿನ್ಯುನ್"  
(೩-೨-೧೪೨)। ಯಾವುದೊಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಅಭಾವ  
ವನ್ನು ಹೇಳುವವೋ ಆ ವಸ್ತುವು ಅಭಾವದ ಪ್ರತಿಕೂಲ  
ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವುದರಿಂದ ಅದು ಅಭಾವದ ಪ್ರತಿ  
ಯೋಗಿಯಾಗುವುದು. "ಘಟೋ ನಾಸ್ತಿ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಘಟದಲ್ಲಿ  
• ಅಭಾವ ರೂಪವಾದ ಪ್ರತಿಕೂಲ ಸಂಬಂಧವಿರುವುದರಿಂದ  
ಘಟವು ಘಟಾಭಾವ ಪ್ರತಿಯೋಗಿ. "ಘಟಾಭಾವಸ್ಯ ಪ್ರತಿಯೋಗಿ  
ಘಟ:" (ಪುಂ) 2. ವಿರೋಧಿ, ಶತ್ರು, ಹಗೆ. 3. ಸರಿ  
ಯಾದ ಈಡು, ಹೊಂದಿಕೆ.

**ಪ್ರತಿಯೋಧ ಪ್ರತಿಯೋಧ (ಪುಂ)** ಶತ್ರುಪಕ್ಷದ ಭಟ.  
"ತ್ರಿದಿವಂ ಪ್ರತ್ಯಪಚ್ಛಂತ ಪ್ರತಿಯೋಧಾ ನಿರಾಗಸ:" ಯಾದಂ  
೨೨-೧೪೫.

**ಪ್ರತಿರೂಪ ಪ್ರತಿರೂಪ (ವಿಂ)** 1. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡ್ಡಿ  
ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿ + ರುಧಿರ್ (ಆವರಣೇ) "ಕ್ತ:"



(೩-೨-೧೦೨) 1. ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಯಾವ ಕಡೆಗೂ ಹೋಗಲು ಬಿಡದೆ ನಿರ್ಬಂಧದಲ್ಲಿಡಲ್ಪಟ್ಟು (ಶತ್ರು).  
**ಪ್ರತಿರೂಪ ಪ್ರತಿರುಂಧತ್** (ವಿಂ) 1. ತಡೆಗಟ್ಟುತ್ತಿರುವ, ಅಡ್ಡಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ರಿಧಿರ್ (ಆವರಣ) "ಶತ್ರು" (೩-೨-೧೨೪) 2. ನಿಷೇಧಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ನಿರ್ಬಂಧ ದಲ್ಲಿಡುತ್ತಿರುವ. "ಶಾನ್" (೩-೨-೧೨೪) 1. -ರೂಪಾನ: -ರುಂಧಾಸಃ. ಪ್ರತಿಭಟಿಸುವ ವಿರೋಧಿ. "ಪ್ರಮಾನ್ಯಾನ್ವಿತ-ಪ್ರವರ್ಗದೀಪ್ತಿ: ಪ್ರತಿರೂಪಾನ್ವಿತರಾಸದೋ ರಾಸ" ಯಾದಂ ೧೫-೭೩.  
**ಪ್ರತಿರೂಪ ಪ್ರತಿರೂಪ** (ನಂ) 1. ವಿಗ್ರಹ, ಪ್ರತಿಮೆ, ಮೂರ್ತಿ. ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪನಾ ರೂಪ. 2. ಛಾಯಾಚಿತ್ರ, ಪ್ರತಿ ಬಿಂಬ. (ವಿಂ) 3. ಸಮಾನವಾದ, ಸದೃಶವಾದ, ಸಮಾನ ರೂಪವುಳ್ಳ, ಅನುರೂಪವಾದ.  
**ಪ್ರತಿರೋಧ ಪ್ರತಿರೋಧ** (ಪುಂ) 1. ತಡೆ, ಅಡ್ಡಿ. ಪ್ರತಿ + ರಿಧಿರ್ (ಆವರಣ) "ಘ" (೩-೩-೧೮) 2. ಮುತ್ತಿಗೆ ಹಾಕುವುದು. 3. ಚೌಯ್, ಕಳ್ಳತನ. 4. ತಿರಸ್ಕಾರ. ಪ್ರತಿರೋಧನೆನ - ಕರಂ "ಘ" (೩-೩-೧೨೧) 1. ಭಾವೆ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) 1. -ರೋಧನಮ್ -ರೋಧನಮ್.  
**ಪ್ರತಿರೋಧಕ ಪ್ರತಿರೋಧಕ** (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯುವವನು, ಅಡ್ಡಿಗಟ್ಟುವವನು. ಪ್ರತಿ+ರಿಧಿರ್ (ಆವರಣ) "ಘ" (೩-೩-೧೨೩) 1. "ತದೀರ್ಣರಾಗಪ್ರತಿರೋಧಕಂ ಜನೇರಭೀಷಣ-ಮಕ್ಷುಣತಯಾತಿರ್ಧುಗಮಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೩೪ 2. ಮುತ್ತಿಗೆ ಹಾಕುವವನು, ಸುತ್ತುಗಟ್ಟುವವನು. (ಪುಂ) 3. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ, ತಸ್ಮರ. "ಕೋದೃಪಾಣಿನಿನದಪ್ರತಿರೋಧಕಾನಾಮ್" ಮಾಲಂ ೫-೧೦.  
**ಪ್ರತಿರೋಧಿನ್ ಪ್ರತಿರೋಧಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ. ಪ್ರತಿರೂಪಿ - ಪ್ರತಿ + ರಿಧಿರ್ (ಆವರಣ) "ಘ" (೩-೩-೧೮) 1. (ವಿಂ) 2. ತಡೆಯುವವನು, ಅಡ್ಡಿಗಟ್ಟುವವನು. "ತು" (೩-೩-೧೨೩) 1. -ರೋಧಿ -ರೋಧಿ.  
**ಪ್ರತಿರೂಪ ಪ್ರತಿಲಬ್ಧ** (ವಿಂ) ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟು, ಹೊಂದ ಲ್ಪಟ್ಟು. "ಪ್ರತಿಲಬ್ಧೋಪಮಿಹ ಪ್ರಯೋಗಕಾಲ:" ಯಾದಂ ೧೫-೨೬.  
**ಪ್ರತಿಲಬ್ಧ ಪ್ರತಿಲಂಭ** (ಪುಂ) ಪಡೆಯುವುದು, ಹೊಂದು ವುದು. ಪ್ರತಿ+ಉಲಂಭ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಘ" (೩-೩-೧೮) 1. "ಏಕತೋ ಹಿ ಧಿಗಮೂಗುಣಜ್ಞಾನಮತ: ಕಥಮದ: ಪ್ರತಿಲಬ್ಧ:" ನೆಪಂ ೫-೬೯.  
**ಪ್ರತಿಲಾಭ ಪ್ರತಿಲಾಭ** (ಪುಂ) ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳು ವುದು, ಕೊಟ್ಟದ್ದನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಪಡೆಯುವುದು.  
**ಪ್ರತಿಲಿಪಿ ಪ್ರತಿಲಿಪಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರತಿರೂಪವಾದ ಬರವಣಿಗೆ, ಹಸ್ತಪ್ರತಿ.

**ಪ್ರತಿಲೋಪ ಪ್ರತಿಲೋಪ** (ವಿಂ) 1. ನೀತಿಗೆ ವಿರುದ್ಧ ವಾದ, ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದ. ಪ್ರತಿಗತಂ ಲೋಪ ಅನುಕೂಲಂ ಯಸ್ಮಾತ್. "ಸತೀವ್ರತಾತಿಪ್ರತಿಲೋಮತೀವ್ರಾ:" ನೆಪಂ ೬-೯೫ 2. ಶತ್ರುತ್ವದ, ಹಗೆತನದ. 3. ನಿಮ್ಮವರ್ಗದ.  
**ಪ್ರತಿಲೋಪ ಪ್ರತಿಲೋಪಜ** (ವಿಂ) ನಿಮ್ಮವರ್ಗದವ ನಿಂದ ಜನಿಸಿದ.  
**ಪ್ರತಿವಚನ ಪ್ರತಿವಚನ** (ನಂ) 1. ಪ್ರತ್ಯುತ್ಕರ, ಬದಲು ಮಾತು. 2. ಪ್ರತಿಧ್ವನಿ. 3. ವಿರುದ್ಧವಾದ ಮಾತು.  
**ಪ್ರತಿವಚಸ್ ಪ್ರತಿವಚಸ್** (ನಂ) 1. ಉತ್ತರ, ಪ್ರತ್ಯುತ್ಕರ, ಮರುನುಡಿ. ಪ್ರತಿರೂಪ ವಚಃ. "ವ್ಯಾಹತಾ ಪ್ರತಿವಚೋ ನ ಸಂದರ್ಭೇ ಗನ್ತುಮೇಷದವಲಮ್ಬಿತಾಂಶುಕಾ" ಕುಮಾರಂ ೮-೨ 2. ಪ್ರತಿ ಧ್ವನಿ. 3. ವಿರುದ್ಧವಾದ ಮಾತು.  
**ಪ್ರತಿವತ್ಸರ ಪ್ರತಿವತ್ಸರ** (ಅವ್ಯಂ) ಪ್ರತಿವರ್ಷದಲ್ಲೂ.  
**ಪ್ರತಿವಸ್ತು ಪ್ರತಿವಸ್ತು** (ನಂ) 1. ಸಮಾನವಾದ ಪದಾರ್ಥ, ಒಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು ಹೋಲುವ ಇನ್ನೊಂದು ವಸ್ತು. ಪ್ರತಿರೂಪ ವಸ್ತು. 2. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿಗೆ ಬದಲಾಗಿ ಪಡೆದ ಮತ್ತೊಂದು ವಸ್ತು, ವಿನಿಮಯ ಹೊಂದಿದ ವಸ್ತು. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಪದಾರ್ಥದಲ್ಲಿಯೂ. "ನ ಸ್ವೇದಿನಶ್ಚಾಮರಮಾಸ್ತೇನ ನಿಮೇಷನೆತ್ರಾ: ಪ್ರತಿವಸ್ತುಚಿತ್ರ:" ನೆಪಂ ೧೦-೩೩.  
**ಪ್ರತಿವಸ್ತುಪಮಾ ಪ್ರತಿವಸ್ತುಪಮಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರ್ಥಾ ಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಪ್ರತಿವಸ್ತು ಪ್ರತಿವಾಕ್ಯಾರ್ಥಮ್ ಉಪಮಾ ಸಾದೃಶ್ಯ (ಸಾಧಾರಣಧರ್ಮಃ) ಯಸ್ಯಾ: 1. ಉಪಮಾನೋಪ ಮೇಯವಾಕ್ಯಗಳಿಗೆ ಒಂದೇ ಸಮಾನ ಧರ್ಮದ ಅನ್ವಯ ವಿರುವಲ್ಲಿ "ಪ್ರತಿವಸ್ತುಪಮಾ" ಅಲಂಕಾರವಾಗುವುದು. ಲಕ್ಷಣ: "ವಾಕ್ಯಯೋರೇಕಸಾಮಾನ್ಯೇ ಪ್ರತಿವಸ್ತುಪಮಾ ಮತಾ" 1. ಉದಾ: "ತಾಪೇನ ಭ್ರಾಜತೇ ಸೂರ: ಶೂರಾಪೇನ ರಾಜತೇ" ಇಲ್ಲಿ ಪ್ರಕಾಶರೂಪವಾದ ಒಂದೇ ಸಾಧಾರಣ ಧರ್ಮವು ಭ್ರಾಜತೇ ರಾಜತೇ ಎಂದು ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಪದಗಳಿಂದ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವುದ ರಿಂದ ಪ್ರತಿವಸ್ತುಪಮಾಲಂಕಾರ.  
**ಪ್ರತಿವಾಕ್ (ಚ) ಪ್ರತಿವಾಕ್ (ಚ) (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪ್ರತ್ಯುತ್ಕರ, ಮರುನುಡಿ, ಬದಲುಮಾತು. ಪ್ರತಿರೂಪಾ ವಾಕ್. "ಭವತ್ಯ-ವಜ್ರಾ ಚ ಭವತ್ಯನುತರಾತ್ ಅತ: ಪ್ರದಿತು: ಪ್ರತಿವಾಚಮಸ್ಮಿ ತೇ" ನೆಪಂ ೯-೨೫.  
**ಪ್ರತಿವಾಕ್ಯ ಪ್ರತಿವಾಕ್ಯ** (ನಂ) ಪ್ರತ್ಯುತ್ಕರ, ಮರುನುಡಿ. ಪ್ರತಿರೂಪ ವಾಕ್ಯಮ್.  
**ಪ್ರತಿವಾಚಿಕ ಪ್ರತಿವಾಚಿಕ** (ನಂ) ಪ್ರತ್ಯುತ್ಕರ, ಬದಲು ಮಾತು, ಮರುನುಡಿ. "ಮಯಾಪಿ ದೇಯಂ ಪ್ರತಿವಾಚಿಕಂ ನ ತೇ ಸ್ವನಾಮ ಮತ್ಕಣಸುಧಾಮಕುಂವತೇ" ನೆಪಂ ೯-೧೬.



**ಪ್ರತಿವಾತ ಪ್ರತಿವಾತ (ಪುಂ)** 1. ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ಬೀಸುವ ಗಾಳಿ. ಪ್ರತಿಗತ: ಅಭಿಮುಖಭೂತೋ ವಾತ:। “ಪ್ರತಿವಾತೇ-  
ನುವಾತೇ ಚ ನಾಸೀತ ಗುಣಾ ಸಹ” ಮನುಂ ೨-೨೦೩। 2. ಪ್ರತಿ  
ಕೂಲವಾದ ಗಾಳಿ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಗಾಳಿಗೆ ಎದುರಾಗಿ,  
ಗಾಳಿಗೆ ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ. “ಗಚ್ಛತಿ ಪುರ: ಶರೀರಂ ಧಾವತಿ  
ಪಶ್ಚಾದಸಂಸ್ತುತಂ ಚೇತ:। ಚಿನ್ಮಾಂಶುಕಮಿವ ಕೇತೋ: ಪ್ರತಿವಾತಂ  
ನೀಯಮಾನಸ್ಯ” ಶಾಕುಂ ೧-೩೦।

**ಪ್ರತಿವಾದ ಪ್ರತಿವಾದ (ಪುಂ)** 1. ಪ್ರತ್ಯುತ್ಕರ, ಬದಲು  
ಮಾತು. ಪ್ರತಿ + ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಘ್”  
(೩-೩-೧೮)। 2. ಒಬ್ಬನು ಹೇಳಿದ ಮಾತಿಗೆ ವಿರುದ್ಧ  
ವಾಗಿ ಹೇಳುವುದು. 3. ತಿರಸ್ಕರಿಸಿ ಮಾತಾಡುವುದು.

**ಪ್ರತಿವಾದಿನ್ ಪ್ರತಿವಾದಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ  
ಮಾತಾಡುವ. ಪ್ರತಿ + ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಞಿನ್:”  
(೩-೨-೭೮)। 2. (ವ್ಯವಹಾರದಲ್ಲಿ) ಎದುರಾಗಿ, ವಾದಿಯು  
ಹೇಳಿದ ನ್ಯಾಯಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಾದ ನ್ಯಾಯವನ್ನು ತೋರಿಸಿ  
ಮಾತಾಡುವವನು. “ಅಥ ವಾದಿಕೃತಂ ಪ್ರಮಾಣಮನ್ಯ: ಪ್ರತಿವಾದೀವ  
ನಿರಾಕರೋತ್ಪ್ರಮಾಣ:” ಮಾಘಂ ೨೦-೧೮।

**ಪ್ರತಿವಾಸರ ಪ್ರತಿವಾಸರ (ಅವ್ಯಂ)** ಪ್ರತಿದಿನದಲ್ಲೂ. ವಾಸರೇ  
ವಾಸರೇ। ಅವ್ಯಯಿಂ।

**ಪ್ರತಿವಾಸಿನ್ ಪ್ರತಿವಾಸಿನ್ (ವಿಂ)** ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ವಾಸ  
ಮಾಡುವ, ಪಕ್ಕದ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ. ಪ್ರತ್ಯಾಸನ್ನಂ  
ವಸತಿ—ಪ್ರತಿ+ವಸ (ನಿವಾಸೇ) “ಞಿನ್:” (೩-೧-೧೩೪)।

**ಪ್ರತಿವಿಧಾತವ್ಯ ಪ್ರತಿವಿಧಾತವ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರತಿಯಾಗಿ  
ಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ನಿವಾರಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರತಿ + ವಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:)  
“ತವ್ಯ:” (೩-೧-೯೬)। 2. ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆ ಮಾಡಬೇಕಾದ,  
ಪರಿಹರಿಸಬೇಕಾದ.

**ಪ್ರತಿವಿಧಾನ ಪ್ರತಿವಿಧಾನ (ನಂ)** ಪ್ರತೀಕಾರ, ನಿವಾರ  
ಣೋಪಾಯ. ಪ್ರತಿ + ವಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:)  
ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)। “ಶತ್ರುಪ್ರಯುಕ್ತಾನಾಂ ತೋಷಣ-  
ರಸದಾಯಿನಾಂ ಪ್ರತಿವಿಧಾನಂ ಪ್ರತಿ ಅಪ್ರಮಾದಿನ: ಪರೀಕ್ಷಿತಮಕ್ತಯ:  
ನಿಯುಕ್ತಾ ಆಪ್ತಪುರುಷಾ:” ಮುद्रಾಂ ೧।

**ಪ್ರತಿವಿಧಿತ್ವಾ ಪ್ರತಿವಿಧಿತ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆಮಾಡಲು  
ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಪ್ರತೀಕಾರ ನಡೆಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಪ್ರತಿ + ವಿ + ಡು ಧಾನ್  
(ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) + ಸನ್ “ಅ:” (೩-೩-೧೦೨)।

**ಪ್ರತಿವಿಧಿತ್ವು ಪ್ರತಿವಿಧಿತ್ವು (ವಿಂ)** ಪ್ರತೀಕಾರ ಮಾಡಲು  
ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಪ್ರತಿ + ವಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) +  
ಸನ್ “ಉ:” (೩-೨-೧೬೮)।

**ಪ್ರತಿವಿನ್ಯ ಪ್ರತಿವಿನ್ಯ (ಪುಂ)** ಧರ್ಮರಾಜನ ಮಗ,  
ದೌಪದಿಯ ಪುತ್ರ. “ಪಾಂಡವೇಭ್ಯೋ ಹಿ ಪಾಶ್ವಾತ್ಯಾಂ ದ್ರೋಪದ್ಯಾಂ  
ಪಶ್ಚ ಜಜ್ಞಿರೇ। ಕುಮಾರಾ ರೂಪಸಂಪನ್ನಾ: ಸರ್ವಶಾಸ್ತ್ರವಿಶಾರದಾ:।  
ಪ್ರತಿವಿನ್ಯೋ ಯುಧಿಷ್ಠಿರಾತ್ ಸುತಸೋಮೋ ವೃಕೋದರಾತ್। ಅರ್ಜುನಾತ್  
ಶ್ರುತಕೀರ್ತಿಸ್ತು ಶತಾನೀಕಸ್ತು ನಾಕುಲಿ:। ತಥೈವ ಸಹದೇವಾಶ್ಚ  
ಶ್ರುತಸೇನ: ಪ್ರತಾಪವಾನ್” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೪-೧೬೪, ೫।

**ಪ್ರತಿವಿಷಾ ಪ್ರತಿವಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅತಿಬಿಷ. ಪ್ರತಿಪಂ  
ವಿಷಮಸ್ಯಾ:।

**ಪ್ರತಿವೇಶ ಪ್ರತಿವೇಶ (ಪುಂ)** ಪಕ್ಕದ ಮನೆ, ನೆರೆಮನೆ.  
ಪ್ರತ್ಯಾಸನ್ನೋ ವೇಶ:। ಪ್ರತಿವಿಶತ್ಯತ್ರ ಇತಿ ವಾ।

**ಪ್ರತಿವೇಶಿನ್ ಪ್ರತಿವೇಶಿನ್ (ವಿಂ)** ಪಕ್ಕದ ಮನೆಯವನು, ನೆರೆ  
ಮನೆಯವನು. ಪ್ರತಿವೇಶೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೫-೨-೧೧೫)।  
“ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಪ್ರಭಾತಸಮಯೇ ಪ್ರತಿವೇಶಿವರ್ಗೋ ದೋಷಾಂಶ್ಚ ಮೇ ವದತಿ  
ಕರ್ಮಣಿ ಕೌಶಲಂ ಚ” ಮೃಚ್ಛಂ ೩-೧೪। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಛಿಪ್”  
(೪-೧-೫)। -ವೇಶಿನಿ-ವೇಶಿನೀ. “ದೃಷ್ಟಿ ಹೇ ಪ್ರತಿವೇಶಿನಿ  
ಕ್ಷಣಮಿಹಾಪ್ಯಸ್ಮದಗೃಹೇ ದಾಸ್ಯಸಿ ಪ್ರಾಯೇಣಾಸ್ಯ ಶಿಶೋ: ಪಿತಾ ನ  
ವಿರಸಾ: ಕೌಪೀರಪ: ಪಾಸ್ಯತಿ” ಸಾಂ ೬೦ ೪।

**ಪ್ರತಿವೇಶಮ್ ಪ್ರತಿವೇಶಮ್ (ನಂ)** 1. ಪಕ್ಕದ ಮನೆ.  
ಪ್ರತ್ಯಾಸನ್ನಂ ವೇಶಮ್। (ಅವ್ಯಂ) 2. ಮನೆಯಲ್ಲಿ. ವೇಶಮನಿ  
ಪ್ರತಿವೇಶಮ್ ಅವ್ಯಯಿಂ। “ಕರಯುಷ್ಮದಮುಕುಲಾಪವರ್ಜಿತೈ:  
ಪ್ರತಿವೇಶಮ್ ಲಾಜಕುಸುಮೇರವಾಕಿರನ್” ಮಾಘಂ ೧೩-೩೭।

**ಪ್ರತಿವೇಶಮ್ ಪ್ರತಿವೇಶಮ್ (ಅವ್ಯಂ)** ಮನೆಯಲ್ಲಿ.

**ಪ್ರತಿಶಬ್ದ ಪ್ರತಿಶಬ್ದ (ಪುಂ)** ಪ್ರತಿಧ್ವನಿ, ಮರುದನಿ.  
ಪ್ರತಿರೂಪ: ಶಬ್ದ:। “ಧೀರನಿಜರವವಿಲೀನಗುರುಪ್ರತಿಶಬ್ದಮಸ್ಯ  
ರಣತುರ್ಯಮವಾದಿ” ಮಾಘಂ ೧೫-೭೩।

**ಪ್ರತಿಶಯನ ಪ್ರತಿಶಯನ (ನಂ)** ನಿರಶನವೃತ್ತ ಕೈಗೊಂಡು  
ಇಷ್ಟಪ್ರಾಪ್ತಿಗಾಗಿ ಸತ್ಯಾಗ್ರಹಮಾಡಿ ದೇವರ ಮುಂದೆ  
ಮಲಗುವುದು. “ಪ್ರತಿಶಯನಭೂಮಿಕಾಭೂಷಿತಪಯೋಧಿಪುಲಿನ.”  
ರघುಂ ಗಂ।

**ಪ್ರತಿಶಯಿತ ಪ್ರತಿಶಯಿತ (ವಿಂ)** ಇಷ್ಟಪ್ರಾಪ್ತಿಗಾಗಿ ನಿರಶನ  
ವೃತ್ತ ಕೈಗೊಂಡು ದೇವರ ಮುಂದೆ ಮಲಗಿರುವ. “ಅನಯಾ  
ಚ ಕಿಲಾಸ್ಮೈ ಪ್ರತಿಶಯಿತಾಯ ಸ್ವಪ್ನೇ ಸಮಾದಿಷ್ಟಮ್” ದಶಕುಂ।

**ಪ್ರತಿಶಾಸನ ಪ್ರತಿಶಾಸನ (ನಂ)** ಭೃತ್ಯರನ್ನು ಕರೆದು ಕಾರ್ಯ  
ದಲ್ಲಿ ನೇಮಿಸುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟಿ) ಭಾವೇ  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

**ಪ್ರತಿಶಿಷ್ಟ ಪ್ರತಿಶಿಷ್ಟ (ವಿಂ)** 1. ಅಷ್ಟಕ್ಕೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಹೇಳಿಕೆಯುಂಟಾದ್ದು. ಪ್ರತಿ + ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟಿ) “ಕ್ತ:”  
(೩-೨-೧೦೨)। “ದಮಧೋಷಸುತೇನ ಕಷ್ಠನ ಪ್ರತಿಶಿಷ್ಟ:”



ಪ್ರತಿಭಾವಾನಯ" ಮಾಘಂ ೧೬-೧೧. 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ತಳ್ಳಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು.

ಪ್ರತಿಶಯ ಪ್ರತಿಶಯ (ಪುಂ) ಜೀನಸರೋಗ. ಪ್ರತಿ + ಶಯ (ಗತೌ) "ಞ:" (೩-೧-೧೪೧). ["ಪೀನಸ" ಪದದ್ವಯದಿಂದ].

ಪ್ರತಿಶ್ರಯ ಪ್ರತಿಶ್ರಯ (ಪುಂ) 1. ಆಶ್ರಯ, ಸ್ಥಾನ, ಆಸರೆ. 2. ಗೃಹ, ಮನೆ. ಪ್ರತಿಶ್ರೀಯತೇ—ಪ್ರತಿ+ಶ್ರಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಅಚ್" (೩-೩-೪೬). "ಸ ಸಮ್ಯಕ್ ಪೂಜಯಿತ್ವಾ ತಂ ವಿಪ್ರಂ ವಿಪ್ರವಶಸ್ತದಾ. ದದೌ ಪ್ರತಿಶ್ರಯಂ ತಸ್ಮೈ ಸದಾ ಸರ್ವಾತಿಥಿವ್ರತ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ. 3. ಸಭೆ. 4. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಂಮತಿ. "ಪ್ರತಿಶ್ರಯ: ಸಭಾಪಾಂ ಚಾಪ್ರಯೋಽಮೃತಗಮೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ. 5. ಯಜ್ಞಶಾಲೆ.

ಪ್ರತಿಶ್ರವ ಪ್ರತಿಶ್ರವ (ಪುಂ) 1. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಂಮತಿ. ಪ್ರತಿ+ಶ್ರ (ಶ್ರವಣೇ) ಭಾವೇ "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭). "ಇತಿ ಸೋಽಭೀಷ್ಟಸಂಪ್ರಾಪ್ತೌ ಕಾರಯಿತ್ವಾ ಪ್ರತಿಶ್ರವಮ್. ದೂರಮುಕ್ತಾಂತಮರ್ಯಾದ: ಸಜ್ಜಮಂ ತಮಯಾಚತ" ರಾಜತಂ. 2. ವಾಗ್ದಾನ, ಭಾಷೆ ಕೊಡುವುದು, ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ.

ಪ್ರತಿಶ್ರವಣ ಪ್ರತಿಶ್ರವಣ (ನಂ) 1. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಂಮತಿ. ಪ್ರತಿ+ಶ್ರ (ಶ್ರವಣೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). "ಪ್ರತಿಶ್ರವಣಸಂಭಾಷಣಶಾನೋ ನ ಸಮಾಚರೇತ್" ಮನುಂ ೨-೧೯೫. 2. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ, ಭಾಷೆ ಕೊಡುವುದು, ವಾಗ್ದಾನ.

ಪ್ರತಿಶ್ರುತ್ ಪ್ರತಿಶ್ರುತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಂಮತಿ. ಪ್ರತಿ+ಶ್ರ (ಶ್ರವಣೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮). 2. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ, ವಾಗ್ದಾನ. 3. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. "ವಿಯದ್ಗತ: ಪುಷ್ಪಕಚಂದ್ರಶಾಲಾ: ಕ್ಷಣಂ ಪ್ರತಿಶ್ರುನ್ಮುಖರಾ: ಕರೋತಿ" ರಘುಂ ೧೩-೪೦.

ಪ್ರತಿಶ್ರುತ ಪ್ರತಿಶ್ರುತ (ನಂ) 1. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. ಪ್ರತಿ+ಶ್ರ (ಶ್ರವಣೇ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪). 2. ಮಾತುಕೊಡುವುದು, ವಾಗ್ದಾನ, ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. (ವಿಂ) 3. ವಾಗ್ದಾನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಭರವಸೆ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟು. "ಪ್ರತಿಶ್ರುತಾರ್ಥರಾಜ್ಯಪ್ರದಾನೇಽಪಿ ಪವಂತಕವಿನಾಶ: ಕೇವಲಂ ಕೃತಾಂತಾಮಾತ್ರಫಲ:ಸ್ಯಾತ್" ಮುದ್ರಾಂ ೩.

ಪ್ರತಿಶ್ರುತಿ ಪ್ರತಿಶ್ರುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. ಪ್ರತಿ+ಶ್ರ (ಶ್ರವಣೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪). "ಮನಸ್ವಿನಾಮುದಿತಗುರುಪ್ರತಿಶ್ರುತಿ: ಶ್ರುತಸ್ತಥಾ ನ ನಿಜಮದ್ಭಜನಿ:ಸ್ವನ:" ಮಾಘಂ ೧೭-೪೨. 2. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. 3. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. "ಇಷ್ಟಂ ನ: ಪ್ರತಿ ತೇ ಪ್ರತಿಶ್ರುತಿರಮೃತ್ ಯಾಽಽ ಸ್ವರಾಜ್ಞಾದಿನಿ" ನೈಷಂ ೫-೧೩೫.

ಪ್ರತಿಷಿದ್ಧ ಪ್ರತಿಷಿದ್ಧ (ವಿಂ) 1. ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟು, ನಿರೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರತಿ+ಪಿಠ (ಗತ್ಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). "ದೇವ, ಪ್ರತಿಪಿಠ: ಕೌಮುದಿ-ಮಹೋತ್ಸವ:" ಮುದ್ರಾಂ ೩. "ಸರ್ವತಃಪು ದಿವಾಸ್ವಾಪ: ಪ್ರತಿಪಿಠೋಽನ್ಯತ್ರ ಪ್ರೀಷ್ಮಾತ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ. 2. ನಿರೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು.

ಪ್ರತಿಷೇಧ ಪ್ರತಿಷೇಧ (ವಿಂ) 1. ನಿಷೇಧಿಸುವ, ತಡೆಗಟ್ಟುವ, ನಿರೋಧಿಸುವ. ಪ್ರತಿ+ಪಿಠ (ಗತ್ಯಾಮ್) "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩). 2. ಪ್ರತಿಹೇಳುವ, ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಹೇಳುವ. "ಯದಾ ತು ಪ್ರತಿಷೇಧಾರಂ ಪಾಪೋ ನ ಲಭತೇ ಕ್ವಚಿತ್. ತಿಷ್ಠಂತಿ ಬಹವೋ ಲೋಕಾಸ್ತದಾ ಪಾಪೇಷು ಕರ್ಮಸು" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೧೬-೧೦.

ಪ್ರತಿಷೇಧ ಪ್ರತಿಷೇಧ (ಪುಂ) 1. ತಡೆ, ಅಡ್ಡಿ, ನಿಷೇಧ. ಪ್ರತಿ+ಪಿಠ (ಗತ್ಯಾಮ್) "ವಚ್" (೩-೩-೧೮). "ಆಯಂ, ಕೌಮುದಿಮಹೋತ್ಸವಪ್ರತಿಷೇಧಸ್ಯ ಕಿಂ ಫಲಮಾಯ: ಪಶ್ಯತಿ" ಮುದ್ರಾಂ ೩. 2. ವಿರುದ್ಧವಾದ ಮಾತು, ಎದುರುಮಾತು. 3. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ ಒಂದು ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಪ್ರತಿಷೇಧವು ಸ್ವತಃ ಅನುಪಯುಕ್ತವಾಗಿ ಅರ್ಥಾಂತರ ಕೊಡುವುದರಲ್ಲಿ ಚಮತ್ಕಾರಕಾರಿಯಾಗುವುದು ಪ್ರತಿಷೇಧಾಲಂಕಾರ. ಲಕ್ಷಣ: "ಪ್ರತಿಷೇಧ: ಪ್ರಸಿದ್ಧಸ್ಯ ನಿಷೇಧಸ್ಯಾನುವರ್ಣನಮ್". ಉದಾ: "ನ ಭೂತಮೇತತ್ ಕಿತವ ಕ್ರಿಡನಂ ನಿಶಿತ: ಶರ:."

ಪ್ರತಿಷೇಧತ್ ಪ್ರತಿಷೇಧತ್ (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಅಡ್ಡಿಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ+ಪಿಠ (ಗತ್ಯಾಮ್) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). 2. ನಿರೋಧಿಸುತ್ತಿರುವ, ಬೇಡವೆಂದು ಹೇಳುತ್ತಿರುವ, ಮಾಡದಂತೆ ತಡೆಯುತ್ತಿರುವ. "ಪ್ರತಿಷೇಧತ್ಸು ಚಾಪರ್ಮಾತ್ ಹಿತಂ ಚೋಪದಿಶತ್ಸವಪಿ" ಮನುಂ ೨-೨೦೬.

ಪ್ರತಿಷೇಧಾಕ್ಷರ ಪ್ರತಿಷೇಧಾಕ್ಷರ (ನಂ) ನಿಷೇಧ ವಚನ, ಬೇಡ, ಕೊಡದು ಎನ್ನುವ ಮಾತು. "ಮುಹುರತ್ಕಾಲಸಿಂಹವಾಚರೋಽಽ ಪ್ರತಿಷೇಧಾಕ್ಷರವಿಕ್ಲವಾಭಿರಾಮಮ್" ಶಾಕುಂ ೩-೨೨.

ಪ್ರತಿಷೇಧೋಪಮಾ ಪ್ರತಿಷೇಧೋಪಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾವ್ಯಾದರ್ಶದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಪ್ರತಿಷೇಧೇನ ಉಪಮಾ. ಉಪಮಾನದ ಸಾದೃಶ್ಯವನ್ನು ಪ್ರತಿಷೇಧಿಸಿ ಉಪಮೇಯದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ವೈಚಿತ್ರ್ಯವನ್ನು ಹೇಳುವಲ್ಲಿ "ಪ್ರತಿಷೇಧೋಪಮಾ" ಅಲಂಕಾರ. "ನ ಜಾತು ಶಕ್ತಿರಿಂದೋಸ್ತೇ ಮುಖೇನ ಪ್ರತಿಗರ್ಜಿತುಮ್. ಕಲಿಜ್ಞಿನೋ ಜಡಸ್ಯೇತಿ ಪ್ರತಿಷೇಧೋಪಮೇನ ಸಾ" ಕಾವ್ಯಾಂ ೨-೩೪.

ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪನ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪನ (ಪುಂ) 1. ಗೌರವಾರ, ಗುಪ್ತವಾಗಿ ಸಮಾಚಾರವನ್ನು ಒಯ್ಯುವವನು. (ವಿಂ) 2. ಮುಂದೆ



ನಡೆಯುವವನು. 3. ಸಹಾಯಕ. "ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಶಃ ಪುಮನ್  
ಛೇತೇ ತ್ರಿವಿಧಗ್ರಹಸಹಾಯಯೋಃ" ವೇಜಂ.

ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಕ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಕ (ಪುಂ) ತೋಗಲಿನ ಹಗ್ಗ.

ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಕ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಕ (ವಿಂ) ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಘ್ನವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿ+ಸ್ತಂಭ (ರೋಧನೆ)  
ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-2-102).

ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಕ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಕ (ಪುಂ) ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವುದು, ತಡೆಯು  
ವುದು, ವಿಘ್ನವುಂಟುಮಾಡುವುದು. ಪ್ರತಿ+ಸ್ತಂಭ (ರೋಧನೆ)  
ಭಾವೇ "ಛ" (3-3-104). "ಬಾಹುಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಕವಿವೃದ್ಧ-  
ಮನ್ಯುರಭ್ಯರ್ಣಮಾಗಸ್ಕೃತಮಸ್ಪೃಶದ್ವಿಃ" ರಘುಂ 2-32.

ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೌರವ, ಮರ್ಯಾದೆ.  
ಪ್ರತಿ + ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಅಙ್" (3-3-106).  
"ಅಸ್ಯಾಧಿಕಸ್ಯೋಪಮಯೋಪಮಾತಾ ದಾತಾ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಂ ಖಲೃ ತೇಮ್ಯ  
ಎವ" ನೈಷಂ 9-16. 2. ಸ್ಥಿರತೆ, ಭದ್ರವಾಗಿರುವಿಕೆ.  
"ವಿಪಕ್ಷಮಖಿಲೀಕೃತ್ಯ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ಖಲೃ ದುರ್ಲಭಾ" ಮಾಧಂ 2-34.  
3. ಆಸ್ಥೆ, ಸ್ಥಾನ. "ವೇದಿಪ್ರತಿಷ್ಠಾನ್ ವಿತತಾಧ್ವರಾಣಾಂ  
ಯುಪಾನಿಷತ್ ಶತಶೋ ರಘುಣಾಮ್" ರಘುಂ 16-35. 4. ವಾಸ  
ಸ್ಥಾನ, ಗೃಹ. "ಅಸೌ ಶರಣ್ಯಃ ಶರಣೋನ್ಮುಖಾನಾಮಗಾಘ  
ಸತ್ವೋ ಮಗಧಪ್ರತಿಷ್ಠಃ" ರಘುಂ 6-21. 5. ಆಲಂಬನ,  
ಆಧಾರ, ಆಶ್ರಯ. "ಸಂರೋಪಿತೇಷ್ಯಾತ್ಮನಿ ಧರ್ಮಪತ್ನೀ ತ್ಯಕ್ತಾ  
ಮಯಾ ನಾಮ ಕುಲಪ್ರತಿಷ್ಠಾ" ಶಾಕುಂ 6-24. 6. ಯಶಸ್ಸು,  
ಕೀರ್ತಿ, ಪ್ರಖ್ಯಾತಿ. "ಪ್ರಾಣಪ್ರಚ್ಯುತಿಶೋಕಾ ನ ಚ ಮಯಾ  
ನಾತ್ಮಪ್ರತಿಷ್ಠಾಶಿನಾ" ಮುಡ್ರಾಂ 2-5. 7. ವಿಜಯ,  
ಸರ್ವೋತ್ಕೃಷ್ಟವಾದಿರುವುದು. "ಮಾನಿಷಾದ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಂ  
ತ್ವಮಗಮಃ ಶಾಶ್ವತೀಃ ಸಮಾಃ" ಚಂ ರಾಂ. 8. ಸ್ಥಾಪನೆ,  
ಇರಿಸುವುದು, ವಿಧಿವತ್ತಾಗಿ ಸ್ಥಾಪಿಸುವುದು. "ಏಕೈವ್ಯಾ-  
ದನಪೇತಮೀಶ್ವರಮಯಂ ಲೋಕೋರ್ಜಿತಃ ಸೇವತೇ ತಂ ಗಚ್ಛಂತ್ಯನ್ಯು ಯೇ  
ವಿಪತ್ತಿಷು ಪುನಸ್ತೇ ತತ್ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಶಯಾ" ಮುಡ್ರಾಂ 2-40. 9. ಯಾಗನಿಷ್ಪತ್ತಿ. 10. ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತ  
ವಾದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಭಂದಸ್ಸು. "ತುಕ್ತಾತ್ಯುಕ್ತಾ ತಥಾ ಮಹ್ಯಾ  
ಪ್ರತಿಷ್ಠಾನ್ಯಾ ಸುಪೂರ್ವಿಕಾ" ವೃಂ ರಂ. 11. ಸ್ಥಿತಿ, ಇರುವಿಕೆ.  
"ತಿಸ್ತೋತಸಂ ವಹತಿ ಯೋ ಗಗನಪ್ರತಿಷ್ಠಾಂ ಜ್ಯೋತೀಷಿ ವರ್ತಯತಿ ಚ  
ಪ್ರವಿಮಕ್ತರಶಿಮಃ" ಶಾಕುಂ 9-6. 12. ದೇವರ ಸಾನ್ನಿಧ್ಯ  
ಕ್ಕಾಗಿ ವಿಗ್ರಹವನ್ನು ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ ಮಂತ್ರಗಳಿಂದ  
ಆವಾಹನಪೂರ್ವಕ ಸ್ಥಾಪನೆಮಾಡುವುದು. "ವಿಶೇಷ-  
ಸನ್ನಿಧಿಯಾ ತು ಕ್ರಿಯತೇ ವ್ಯಾಪಕಸ್ಯ ತು. ಸನ್ಮೂರ್ತೇ ಭಾವನಾಮನ್ತ್ರಃ  
ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ಸಾಂಭಿಧೀಯತೇ". "ಪೂಜಾ ವಿನಾ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಂ ನಾಸ್ತಿ ನ  
ಮನ್ತ್ರಂ ವಿನಾ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ಚ. ತದುಭಯವಿಪ್ರತಿಪಕ್ಷಃ ಪಶ್ಯತು

ಗೌರ್ವಾಣಿಪಾಣಮ್" ಆರ್ಯಾಸಿಪ್ತಂ. 13. ಇಷ್ಟಸಿದ್ಧಿ, ಇಷ್ಟ  
ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಕಾರ್ಯವು ಕೈಗೊಡುವುದು. "ಔತುಕಯಮಾತ್ರ-  
ಮವಸಾಯಯತಿ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ" ಶಾಕುಂ 4-6.

ಪ್ರತಿಷ್ಠಾನ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾನ (ನಂ) 1. ಗಂಗಾ ನದಿಯ ಉತ್ತರ  
ತೀರದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ನಗರ, ಚಂದ್ರವಂಶದ ದೊರೆಗಳ  
ರಾಜಧಾನಿ. ಪ್ರತಿ+ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್"  
(3-3-116). 2. ವಾಸಸ್ಥಾನ. "ಪ್ರತಿಷ್ಠಾನೇ ನರಪಾತಿ  
ಯಯಾತಿ ಸಮುಪಸ್ಥಿತೌ" ಭಾಂ. ಉದ್ಯೋಗಂ 114-9. 3. ಒಂದು  
ನಗರದ ಸ್ಥಾಪನೆ.

ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಕ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಕ (ವಿಂ) ಸ್ಥಾಪನೆ ಮಾಡಿಸು  
ವವನು, ಪ್ರತಿಷ್ಠೆ ಮಾಡಿಸುವವನು. ಪ್ರತಿ + ಷ್ಠಾ  
(ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ)+ಞಿಚ್ "ಫ್ವಲ್" (3-1-133). "ತೃ" (3-1-133). ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಯಿತಾ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಯಿತಾ.

ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪನ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪನ (ನಂ) ದೇವರ ವಿಗ್ರಹವನ್ನು  
ಪ್ರತಿಷ್ಠೆಮಾಡಿಸುವುದು, ವಿಗ್ರಹದಲ್ಲಿ ಸಾನ್ನಿಧ್ಯಕ್ಕಾಗಿ  
ಮಂತ್ರಪೂರ್ವಕ ಆವಾಹನಮಾಡಿ ಪ್ರತಿಷ್ಠೆ ಮಾಡಿಸುವುದು.  
ಪ್ರತಿ+ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ)+ಞಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-116).

ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಸತ್ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಸತ್ (ವಿಂ) ಹೊರಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಸನ್ "ಶತ್"  
(3-2-124). ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ತಿಷ್ಠಾಸಂತಿ -ತಿಷ್ಠಾಸಂತಿ.  
ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಸಾ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊರಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ.  
ಪ್ರಸ್ಥಾತುಮಿಚ್ಛಾ-ಪ್ರ+ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ)+ಸನ್ "ಅಃ"  
(3-3-102).

ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಸಿತ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಸಿತ (ವಿಂ) ಹೊರಟುಬರಲು  
ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ+ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಸನ್ "ಕ್ತಃ"  
(3-2-102).

ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಸು ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಸು (ವಿಂ) ಹೊರಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ.  
ಪ್ರಸ್ಥಾತುಮಿಚ್ಛುಃ-ಪ್ರ + ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಸನ್ "ಃ"  
(3-2-164). "ಅಭಿವೇಶಂ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಸುರಾಸೀತ್ ಕಾರ್ಯದ್ವಯಾ-  
ಕುಲಃ" ಮಾಧಂ 2-1.

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಪ್ರ+ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102). 2. ಇರಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅರೇಃ ಸಂಧಾರ್ಯತೇ ನಾಭಿನಾಭೌ ಚಾರಾಃ  
ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಾಃ" ಪञ्ಚತಂ 1-49. 3. ಪ್ರತಿಷ್ಠೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಪೂಜಾಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಸ್ಥಾಪನಾದಿ ಸಂಸ್ಕಾರ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
4. ಗೌರವವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿದ, ಗೌರವ ಪಡೆದಿರುವ.  
ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ಅಸ್ಯ ಸಂಜ್ಞಾತಃ "ಇತಚ್" (4-2-36).  
"ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಾನಾಂ ಶಾಕೀತಿರ್ಮರಣಾದತಿರಿಚ್ಯತೇ" 5. ಕೀರ್ತಿ



ಶಾಲಿಯಾದ. (ಪುಂ) 6. ವಿಷ್ಣು. ಪ್ರತಿ + ಷಾ (ಗತಿ-  
ನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ್ತ:" (3-4-92). ಅನ್ಯಾನಪೇಷಯಾ ಸ್ವೇ  
ಮಹಿಮ್ನಿ ಸ್ಥಿತ:। "ಸ್ವೇ ಮಹಿಮ್ನಿ ಸ್ಥಿತೋ ಯಸ್ತು ಸ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ  
ಉಚ್ಯತೇ" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ:। "ಅಪಾನಿಧಿರಧಿಷ್ಠಾನಮಪ್ರಮತ್ತ:  
ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ:" ವಿಂ ಸಂ।

ಪ್ರತಿಸಂಜಿಹೀಪತ್ ಪ್ರತಿಸಂಜಿಹೀರ್ಷತ್ (ವಿಂ) ಹಿಂದಕ್ಕೆ  
ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ಸಮ್ + ಹ್ವ  
(ಹರಣೆ) + ಸನ್ "ಶತ್" (3-2-124)।

ಪ್ರತಿಸಂಜಿಹೀರ್ಷಿ ಪ್ರತಿಸಂಜಿಹೀರ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಂದಕ್ಕೆ  
ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಪ್ರತಿ + ಸಮ್ + ಹ್ವ (ಹರಣೆ) + ಸನ್  
"ಖ:" (3-2-102)।

ಪ್ರತಿಸಂಜಿಹೀರ್ಷಿ ಪ್ರತಿಸಂಜಿಹೀರ್ಷಾ (ವಿಂ) ಹಿಂದಕ್ಕೆ  
ಅರ್ಪಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಪ್ರತಿ + ಸಮ್ + ಹ್ವ (ಹರಣೆ) +  
ಸನ್ "ಃ" (3-2-164)।

ಪ್ರತಿಸಂಹರಣ ಪ್ರತಿಸಂಹರಣ (ನಂ) ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳು  
ವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಸಮ್ + ಹ್ವ  
(ಹರಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಪ್ರತಿಸಂಹರತ್ ಪ್ರತಿಸಂಹರತ್ (ವಿಂ) ಹಿಂದಕ್ಕೆ (ಬಾಣ  
ವನ್ನು) ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ಸಮ್ + ಹ್ವ  
(ಹರಣೆ) "ಶತ್" (3-2-124)। "ನರೇಂದ್ರಸುನು: ಪ್ರತಿ-  
ಸಂಹರಣಿಭುಂ ಪ್ರಿಯವದ: ಪ್ರತ್ಯವದ್ತುರೇಶ್ವರ:" ರಘುಂ 3-64।

ಪ್ರತಿಸಂಹತ್ ಪ್ರತಿಸಂಹತ್ (ವಿಂ) (ಬಾಣವನ್ನು) ಹಿಂದಕ್ಕೆ  
ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ಪ್ರತಿ + ಸಮ್ + ಹ್ವ (ಹರಣೆ)  
"ತುತ್" (3-1-133)।

ಪ್ರತಿಸಂಹಾರ ಪ್ರತಿಸಂಹಾರ (ಪುಂ) (ಪ್ರಯೋಗಿಸಿದ ಬಾಣ  
ವನ್ನು) ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಸಮ್ + ಹ್ವ  
(ಹರಣೆ) "ಖತ್" (3-3-114)।

ಪ್ರತಿಸಂಹತ ಪ್ರತಿಸಂಹತ (ವಿಂ) ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳು  
ಲ್ಪಟ್ಟ (ಬಾಣ). ಪ್ರತಿ + ಸಮ್ + ಹ್ವ (ಹರಣೆ) "ಕ್ತ:"  
(3-2-102)। "ರಾಜಾ, ಏಷ ಪ್ರತಿಸಂಹತ:" ಶಾಕುಂ 1।

ಪ್ರತಿಸಂಹ್ರಿಯಮಾಣ ಪ್ರತಿಸಂಹ್ರಿಯಮಾಣ (ವಿಂ) ಹಿಂದಕ್ಕೆ  
ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ (ಬಾಣ). ಪ್ರತಿ + ಸಮ್ + ಹ್ವ  
(ಹರಣೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನತ್" (3-2-124)।

ಪ್ರತಿಸಕ್ತ ಪ್ರತಿಸಕ್ತ (ವಿಂ) ಆಸಕ್ತವಾದ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿ  
ರುವ, ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿದ. ಪ್ರತಿ + ಷಜ್ಜ (ಸಕ್ತೆ)  
"ಕ್ತ:" (3-4-92)। "ನಿಶಮ್ಯ ಚೈನಾಂ ತಪಸೇ ಕೃತೋಪಮಾಂ  
ಸುತಾಂ ಗಿರೀಶಪ್ರತಿಸಕ್ತಮಾನಸಾಮ್" ಕುಮಾಂ 4-3।

ಪ್ರತಿಸಂಕ್ರಮ ಪ್ರತಿಸಂಕ್ರಮ (ಪುಂ) 1. ಮತ್ತೊಂದು  
ವಸ್ತುವಿನೊಳಗೆ ಸೇರಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿಸುವುದು.  
ಪ್ರತಿ + ಸಮ್ + ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಖತ್" (3-3-114)।  
ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। -ಕರ್ಮಣಮ್ -ಕ್ರಮಣಮ್.  
2. ಸಂಚಾರ.

ಪ್ರತಿಸಂಚರ ಪ್ರತಿಸಂಚರ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಳಯ, ವಿಲೀನ  
ಗೊಳ್ಳುವುದು. ಪ್ರತಿಸಂಚರಂತಿ ಕ್ರಿಯಾಶून್ಯತಯಾ ವಿಲೀಯಂತೇ-  
ಸ್ಮಿನ್ - ಪ್ರತಿ + ಸಮ್ + ಚರ (ಗತೌ) ಅಧಿಂ "ಖ:"  
(3-3-114) ನಿಪಾಂ। "ಪದಾಸಹಾಯಕರಣೇ ಪ್ರತಿಸಂಚರ-  
ಕೇಲಿಮಾಚರಸಿ" ದಯಾಸಂ 16। "ಯದಾ ತು ಪ್ರಕೃತೌ ಯಾತಿ  
ಲಯಂ ವಿಭ್ರಮಿದಂ ಜಗತ್। ತದೋಚ್ಯತೇ ಪ್ರಾಕೃತೋಽಯಂ ವಿಭ್ರಮಿ:  
ಪ್ರತಿಸಂಚರ:" ಮಾರ್ಕಂ 1 2. ಸಂಚಾರ.

ಪ್ರತಿಸಂದೇಶ ಪ್ರತಿಸಂದೇಶ (ಪುಂ) ಸಂದೇಶಕ್ಕೆ ಪ್ರತ್ಯುತ್ತರ  
ಹೇಳಿಕಳುಹಿಸುವುದು, ಹೇಳಿಕಳುಹಿಸಿದ ಮಾತಿಗೆ ಬದಲು  
ಮಾತು ಹೇಳಿಕಳುಹಿಸುವುದು. ಪ್ರತಿರೂಪ: ಸಂದೇಶ:।

ಪ್ರತಿಸಂಧಾನ ಪ್ರತಿಸಂಧಾನ (ನಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸು  
ವುದು, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಸಮ್ + ಡ್ವಾನ್  
(ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋ:) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ಅನು  
ಸಂಧಾನ, ಅನುಚಿಂತನೆ, ಧ್ಯಾನ. 3. ಅನ್ವೇಷಣೆ, ಹುಡುಕು  
ವುದು.

ಪ್ರತಿಸಂಧಿ ಪ್ರತಿಸಂಧಿ (ಪುಂ) 1. ಎರಾಮ, ನಿಲುಗಡೆ.  
ಪ್ರತೀಪ: ಸಂಧಿ:। "ಅದೃಷ್ಟತೋಽನುಪಾಯಾನ್ವ ಪ್ರತಿಸಂಧಿಶ್ಚ  
ಕರ್ಮಣ:" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ 1 2. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು,  
ಮತ್ತೆ ಒಟ್ಟುಗೂಡುವುದು.

ಪ್ರತಿಸಂಧೇಯ ಪ್ರತಿಸಂಧೇಯ (ವಿಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರತಿ + ಸಮ್ + ಡ್ವಾನ್  
"ಯತ್" (3-1-99)। 2. ಧ್ಯಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ.

ಪ್ರತಿಸರ ಪ್ರತಿಸರ (ಪುಂ) 1. ಹಸ್ತಸೂತ್ರ, ಕಂಕಣ, ರತ್ನ  
ಗಾಗಿ ಕೈಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಮಂತ್ರಿಸಿದ ದಾರ. ಪ್ರತಿಸರತಿ -  
ಪ್ರತಿ + ಸ್ (ಗತೌ) "ಖತ್" (3-1-134)। 2. ಒಂದು  
ಮಂತ್ರ. 3. ಮಾಲೆ, ಹೂವಿನ ಸರ. 4. ಸೈನ್ಯದ  
ಹಿಂಭಾಗ. 5. ವಿವಾಹಾದಿ ಶುಭಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಕೈಗೆಕಟ್ಟುವ  
ಮಂಗಳಸೂತ್ರ, ಕಂಕಣ. "ಏಸ್ತೋರಗಪ್ರತಿಸರೇಣ ಕರಣ  
ಪಾಣಿ:" ಕಿರಾಂ 4-33। 6. ಸೇವಕ, ಆಳು. 7. ವ್ರಣ  
ಶುದ್ಧಿ, ಗಾಯವನ್ನು ತೊಳೆದು ಶುದ್ಧ ಮಾಡುವುದು.  
(ಪುನಂ) 8. ಆಭರಣ, ಒಡವೆ. 9. ಕಾವಲುಗಾರ.

ಪ್ರತಿಸರ್ಗ ಪ್ರತಿಸರ್ಗ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮನ ಸೃಷ್ಟಿಗೆ ಸಮಾನ  
ವಾದ ದಕ್ಷ ಮರೀಚಿ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಜಾಪತಿಗಳ ಸೃಷ್ಟಿ



ಕಾರ್ಯ. ಇದು ಪುರಾಣದ ಐದು ಲಕ್ಷಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಸರ್ಗಶ್ಚ ಪ್ರತಿಸರ್ಗಶ್ಚ ವಂಶೋ ಮನ್ವಂತರಾಣಿ ಚ | ವಂಶಾನುಚರಿತಂ ಚೇತಿ ಲಕ್ಷಣಾನಾಂ ತು ಪञ्ಚಕಮ್" |

**ದಕ್ಷಪ್ರಜಾಪತಿಯ ಸೃಷ್ಟಿ:** ಅನೇಕ ಮಂದಿ ಪುತ್ರರು ದೇವರ್ಷಿಗಳು ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಸೋಮವರು ಮತ್ತು ಅನೇಕ ಪಿತೃಗಳಾಗಳು. "ಸುತಾನ್ ಬಹುನ್ ಸಮುತ್ಪಾದ್ಯ ದಕ್ಷೋ ದೇವರ್ಷಿಸತ್ತಮಾನ್ | ಮಹರ್ಷಿನ್ ಸೋಮಪಾದೀಶ್ಚ ಬಹುನ್ ಪಿತೃ-ಗಣಾಂತಥಾ | ಸೃಷ್ಟಿ ಪ್ರವರ್ತಯಾಮಾಸ ಪ್ರತಿಸರ್ಗೋಽಸ್ಯ ಸ ಸ್ಮೃತಃ" |

**ಮರೀಚಪ್ರಜಾಪತಿಯ ಸೃಷ್ಟಿ:** ಕಶ್ಯಪ, ಕಶ್ಯಪರಿಂದ ದೇವತೆಗಳು ದೈತ್ಯರು ದಾನವರು ಸಿದ್ಧರು ಗಂಧರ್ವರು ಯಕ್ಷರು ಅಪ್ಸರಸಿಯರು ಲಲಾವತ್ಯಗಳು ದುಷ್ಯಮೃಗಗಳು ಶ್ಯೇನ ಗರ್ದಭ ಪಶುಪಕ್ಷಿಗಳು ಗೋವುಗಳು ಅರುಣ ಗರುಡ ಮುಂತಾದವರು. "ಮರೀಚಃ ಕಶ್ಯಪೋ ಜಾತಃ ಕಶ್ಯಪಾತ್ ಸಕಲಂ ಜಗತ್ | ದೇವಾ ದೇವ್ಯಾ ದಾನವಾಶ್ಚ ತಸ್ಯ ಸರ್ಗಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ" |

**ಅತ್ರಿಪ್ರಜಾಪತಿಯ ಸೃಷ್ಟಿ:** ಅತ್ರಿಯ ನೇತ್ರದಿಂದ ಚಂದ್ರನು ಹುಟ್ಟಿದನು. ಚಂದ್ರನಿಂದ ಮುಂದೆ ಚಂದ್ರಮಂಶವು ಬೆಳೆಯಿತು. ಇದು ಸೋಮವರ್ಗ. "ಅತ್ರೇ-ನೇತ್ರಾದಭುಚ್ಚಂದ್ರಶ್ಚಂದ್ರವಂಶಸ್ತತೋಽಭವತ್ | ತೇನ ಸರ್ವಂ ಜಗದ್ವ್ಯಾಪ್ತಂ ಸೋಮವರ್ಗಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ" |

**ಅಥರ್ವಾಂಗಿರಸಿನ ಸೃಷ್ಟಿ:** ಅನೇಕ ಪುತ್ರರು. ಯಂತ್ರ ಮಂತ್ರ ಮೊದಲಾದವು ಈ ಪ್ರಜೆಗಳು.

**ಪುಲಸ್ತ್ಯನ ಸೃಷ್ಟಿ:** ಆಜ್ಯಪರು ಮತ್ತು ರಾಕ್ಷಸರು. "ಆಜ್ಯಪಾಲ್ಯಾಃ ಪುಲಸ್ತ್ಯಸ್ಯ ಪುತ್ರಾಶ್ಚಾನ್ಯೇ ಚ ರಾಕ್ಷಸಾಃ | ಪ್ರತಿಸರ್ಗಾಃ ಪುಲಸ್ತ್ಯಸ್ಯ ಬಲವೀರ್ಯಸಮನ್ವಿತಾಃ" |

**ಪುಲಹನ ಸೃಷ್ಟಿ:** ಕಾದ್ರವೇಯರು (ನಾಗಲೋಕದ ಸರ್ಪಗಳು) ಗಜ, ಅಶ್ವ ಮುಂತಾದ ಪ್ರಜೆಗಳು. "ಕಾದ್ರವೇಯಾ ಗಜಾ ಅಶ್ವಾಃ ಪ್ರಜಾ ಬಹುತರಾಂತಥಾ | ಸಸೃಜೇ ಪುಲಹನೇಃ ಸರ್ಗಸ್ತಸ್ಯ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ" | ಮತ್ತು ಕೃತುವಿಗೆ 88000 ಪ್ರಜೆಗಳು (ಪುತ್ರರು) ಪ್ರಜೇತಸ್ಸಿಗೆ 86000 ಪುತ್ರರು ವಸಿಷ್ಠರಿಗೆ 50 ಪುತ್ರರು ಭೃಗುವಿಗೆ ದೈತ್ಯಪುರೋಹಿತರಾದ ಭಾರ್ಗವರು ನಾರದರಿಂದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು ವಿಮಾನಗಳು ನೃತ್ಯ ಗೀತ ಮುಂತಾದವು. ಈ ರೀತಿ ಸೃಷ್ಟವಾದ ಪ್ರಜಾಸಂತತಿಗಳು ಜಗತ್ತೆಲ್ಲವನ್ನೂ ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವುದು.

"ಏತೇ ದಶ ಮರೀಚಾಃ ಕೃತದಾರಾನ್ ಬಹುನ್ ಸುತಾನ್ | ತ್ವಾಂ ದೌ-ತ್ವಾಂ ಪೃಥಿವೀಂ ದಿವಂ ಚ ಸಮಪೂರ್ಯನ್" | 2. ಪ್ರಳಯ, ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶ.

**ಪ್ರತಿಸರ್ಪಣ ಪ್ರತಿಸರ್ಪಣ (ನಂ) (ಅದರ) ಕಡೆಗೆ ಹೋಗುವುದು.**

**ಪ್ರತಿಸರ್ಪಣ ಪ್ರತಿಸರ್ಪಣ (ವಿಂ) (ಅದರ) ಕಡೆಗೆ ಹೋಗುವುದು.** ತಿರುವ, (ಅದನ್ನು) ಕುರಿತು ಹೋಗುವ. ಪ್ರತಿ + ಸೃ (ಗತೌ) "ಶತ್" (3-2-124) | "ತಸ್ಯ ಕುಣ್ಡಿನಪುರಂ ಪ್ರತಿಸರ್ಪಣಂ ಭೂಪತೇರ್ವ್ಯವಸಿತಾನಿ ಶಶಂಸುಃ" ನೆಪಂ 5-67 |

**ಪ್ರತಿಸಾರಣ ಪ್ರತಿಸಾರಣ (ನಂ) 1.** ಬೆರಳ ತುದಿಯಿಂದ ನಾಲಿಗೆ ಹಲ್ಲು ಮುಂತಾದವಕ್ಕೆ ಸುಗಂಧ ಚೂರ್ಣವನ್ನು ಹಚ್ಚುವುದು (ಉಜ್ಜುವುದು). ಪ್ರತಿ + ಸೃ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) | "ಅಭ್ಯಗುಲ್ಯಗ್ರೇಣ ಚೂರ್ಣಾಃ ಪರ್ಷಣಂ ಪ್ರತಿಸಾರಣಮ್" ವೇಜಂ | "ದಂತಜಿಹ್ವಾಮುಖಾನಾಂ ವಚ್ಚೂರ್ಣ-ಕಲ್ಕಾವಲೇಹಕಃ | ಶನೈರ್ವರ್ಷಣಮಭ್ಯಗುಲ್ಯಾ ತದ್ವಕ್ತಂ ಪ್ರತಿಸಾರಣಮ್" ಭಾವಪ್ರಂ | 2. ದೂರಮಾಡುವುದು, ದೂರಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವುದು. 3. ಗಾಯದ ಚಿಕಿತ್ಸೆ. 4. ಗಾಯಕ್ಕೆ ಮುಲಾಮು ಹಚ್ಚುವ ಒಂದು ಸಾಧನ. ಪ್ರತಿ + ಸೃ + ಣಿಚ್ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-116) | 5. ಜರುಗಿಸುವುದು, ತಳ್ಳುವುದು. (ವಿಂ) 6. ದೂರಮಾಡುವ, ದೂರಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವ. 7. ದೂರಕ್ಕೆ ಓಡಿಸುವ. ಪ್ರತಿ + ಸೃ + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134) |

**ಪ್ರತಿಸಾರಯತ್ ಪ್ರತಿಸಾರಯತ್ (ವಿಂ) 1.** ದೂರಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವ, ದೂರಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 2. ದೂರಕ್ಕೆ ಓಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ದೂರಕ್ಕೆ ಅಟ್ಟುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ಸೃ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124) | 3. ಗಾಯಕ್ಕೆ ಚಿಕಿತ್ಸೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 4. ಸುಗಂಧ ಚೂರ್ಣದಿಂದ ನಾಲಿಗೆ ತುಟ ಮೊದಲಾದವುಗಳನ್ನು ಜ್ವರಿಸುತ್ತಿರುವ. 5. ಗಾಯಕ್ಕೆ ಚಿಕಿತ್ಸೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 6. ಜರುಗಿಸುತ್ತಿರುವ.

**ಪ್ರತಿಸಾರಯಿತವ್ಯ ಪ್ರತಿಸಾರಯಿತವ್ಯ (ವಿಂ) 1.** ಚಿಕಿತ್ಸೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ (ಗಾಯ). ಪ್ರತಿ + ಸೃ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ತವ್ಯಃ" (3-1-96) | 2. ಜರುಗಿಸಲ್ಪಡುವ, ಸರಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ದೂರಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಡುವ. 4. ದೂರಕ್ಕೆ ಓಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ದೂರಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಬೇಕಾದ, 6. ದೂರಕ್ಕೆ ಓಡಿಸಬೇಕಾದ. 7. ಚಿಕಿತ್ಸೆಮಾಡಬೇಕಾದ. "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) | -ಸಾರಣೀಯಃ -ಸಾರಣೀಯಃ.

**ಪ್ರತಿಸಾರಯಿತ್ ಪ್ರತಿಸಾರಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) 1.** ಗಾಯಕ್ಕೆ ಮುಲಾಮು ಹಾಕುವವನು. 2. ದೂರಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವವನು. 3. ಅಟ್ಟುವವನು. ಪ್ರತಿ + ಸೃ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ತೃಚ್" (3-1-134) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ -ಸಾರಯಿತ್ರಿ -ಸಾರಯಿತ್ರಿ.

**ಪ್ರತಿಸಾರ್ಯಮಾಣ ಪ್ರತಿಸಾರ್ಯಮಾಣ (ವಿಂ) ಜರುಗಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಸರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.** ಪ್ರತಿ + ಸೃ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ ಕರಂ "ಶಾನ್" (3-2-124) | "ಧಾನ್ಯಭಗುಲಿಮಿಃ ಪ್ರತಿಸಾರ್ಯಮಾಣಮೂರ್ಣಮಯಂ ಕೌತುಕಹಸ್ತಸೂತ್ರಮ್" ಕುಮಾಂ 3-25 |



ಪ್ರತಿಸೀರಾ ಪ್ರತಿಪೀರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಟ್ಟೆಯ ತೆರೆ. ವಸ್ತುದ ಪರದೆ. ಪ್ರತಿಸಿನೋತಿ — ಪ್ರತಿ + ಪಿನ್ (ಬನ್ಧನೆ) “ಕ್ರನ್” (ತಂ ೨-೨೬) ದೀರ್ಘಶ್ಚ ।

ಪ್ರತಿಸೂರ್ಯ ಪ್ರತಿಸೂರ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಹಲ್ಲಿಯ ಜಾತಿಗೆ ಸೇರಿದ ಒಂದು ಬಗೆ ಓತಿ, ಗೋಸುಂಬೆ. “ಸ್ಯಾದ್ವೇದಾರ: ಕೃಕವಪಾತ್ ಕೃಕಲಾಸ: ತೃಣಾಂಜನ: । ಪ್ರತಿಸೂರ್ಯ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 2. ಅಂತರಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಎರಡನೆಯ ಸೂರ್ಯನಂತೆ ಕಾಣಿಸುವ ಒಂದು ಉತ್ಪತ್ತಿ. ಪ್ರತಿರೂಪ: ಸೂರ್ಯ: । ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕ:” । -ಸೂರ್ಯಕ: — ಸೂರ್ಯಕ: “ತೃಪ್ಯದ್ವಿ: ಪ್ರತಿಸೂರ್ಯಕೇರಜಗರಸ್ವೇದ-ದ್ರವ: ಪೀಯತೇ” ತಂ ರಾಂ ೨-೧೬ । ಅಂತರಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಕಾಣಿಸುವ ಪ್ರತಿ ಸೂರ್ಯನು ವೈದೂರ್ಯದಂತೆ ಬೆಳ್ಳಗೆ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿದ್ದರೆ ಜಗತ್ತಿಗೆ ಕ್ಷೇಮ ಮತ್ತು ಸುಖಿಕ್ಷ. “ಪ್ರತಿಸೂರ್ಯಕ: ಪ್ರಶಸ್ತೋ ದಿವಸಕೃದ್ತುರ್ವರ್ಣಸಪ್ರಮ: ಸ್ನಿಗ್ಧ: । ವೈದೂರ್ಯನಿಭ: ಸ್ವಚ್ಛ: ಶುಕ್ಲಶ್ಚ ಕ್ಷೇಮಸೌಮಿಷ:” ಬೃಹತ್ಸಂ ೩೭-೧ । ಪ್ರತಿ ಸೂರ್ಯನು ಹಳದಿ ಬಣ್ಣದಿಂದ ಕೂಡಿದ್ದರೆ ವ್ಯಾಧಿ ಕೆಂಪು ಅಶೋಕ ಬಣ್ಣವಾಗಿದ್ದರೆ ಶಸ್ತ್ರಯುದ್ಧನಡೆಯುವುದು. ಮೂಲಾಕಾರದ ಪ್ರತಿ ಸೂರ್ಯರಿಂದ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಕಳ್ಳಕಾಕರ ಭೀತಿ, ವ್ಯಾಧಿ ಮತ್ತು ರಾಜರಿಗೆ ವಿಪತ್ತುಗಳು ಸಂಭವಿಸುವವು. “ಪೀತೋ ವ್ಯಾಧಿ ಜನಯತೃಶೋಕರೂಪಶ್ಚ ಶಸ್ತ್ರಕೋಪಶ್ಚ । ಪ್ರತಿಸೂರ್ಯಾಣಾಂ ಮಾಲಾ ದಸ್ಯುಮಯಾತಕ್ವನೃಪಹನ್ತ್ರಿ” ಬೃಹತ್ಸಂ ೩೭-೨ ।

ಪ್ರತಿಸುಷ್ಪ ಪ್ರತಿಸುಷ್ಪ (ವಿಂ) 1. ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರತಿ + ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) । 2. ದಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ನಿರಾಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. “ಪ್ರತಿಸುಷ್ಪ: ಪ್ರೇಷಿತೇ ಸ್ಯಾತ್ಪ್ರತ್ಯಾಖ್ಯಾತೇ ಚ ವಾಚ್ಯವತ್” ಮೇದಿಂ ।

ಪ್ರತಿಪ್ರೀತಿ ಪ್ರತಿಪ್ರೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರತಿ ಹೆಂಗಸು. ಪರಸ್ಪ್ರೀತಿ. ಪ್ರತಿರೂಪಾ ಸ್ತ್ರೀ । (ಅವ್ಯಂ) 2. ಹೆಂಗಸಿಗೆ ಎದುರಾಗಿ, —ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ. ಆಭಿಮುಖ್ಯೇ ಅವ್ಯಯಿಂ ।

ಪ್ರತಿಪ್ರವೃತ್ತಿ ಪ್ರತಿಪ್ರವೃತ್ತಿ (ನಂ) ಸ್ಫುರಣ, ಹಾರುವುದು, ಅದಿರುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಪ್ರವೃತ್ತಿ (ಕಿಂಚಿಚ್ಚಲನೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।

ಪ್ರತಿಪ್ರವೃತ್ತಿ ಪ್ರತಿಪ್ರವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೇಲಾಟ, ಹುರುಡು. ಪ್ರತಿ + ಪ್ರವೃತ್ತಿ (ಸಂವರ್ಧ) “ಅಙ್” (೩-೩-೧೦೩) ।

ಪ್ರತಿಪ್ರವೃತ್ತಿ ಪ್ರತಿಪ್ರವೃತ್ತಿ (ವಿಂ) ಎದುರಾಳಿ, ಪ್ರತಿ ದ್ವಂದ್ವಿ, ಮೇಲಾಡುವವನು. ಪ್ರತಿಪ್ರವೃತ್ತಿ — ಪ್ರವೃತ್ತಿ (ಸಂವರ್ಧ) “ಗಿಣಿ:” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಪ್ರತಿಪ್ರವೃತ್ತಿ ಪ್ರತಿಪ್ರವೃತ್ತಿ, —ಸ್ವರ —ಸ್ವರ (ಪುಂ) ಪ್ರತಿಪ್ರವೃತ್ತಿ, ಪ್ರತಿಪ್ರವೃತ್ತಿ, ಮಾನುಡಿ. ಪ್ರತಿರೂಪ: ಸ್ವನ: ಸ್ವರೋ ವಾ ।

“ದಧಿರೇಽಧಿಮಿತ್ತಿ ಪಡಹಪ್ರತಿಪ್ರವೃತ್ತಿ: ಸ್ಫುಟಮದೃಹಾಸಮಿವ ಸೌಧ-ಪಙ್ಕ್ತಯ:” ಮಾಘಂ ೧೩-೩೧ ।

ಪ್ರತಿಹತ ಪ್ರತಿಹತ (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟು, ನಿವಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಎದುರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರತಿ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) । “ರಮ್ಯಾಸ್ತಪೋಧನಾನಾಂ ಪ್ರತಿಹತ-ವಿಜ್ಞಾ: ಕ್ರಿಯಾ: ಸಮವಲೋಕ್ಯ” ಶಾಕುಂ ೧-೧೨ । 2. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಅಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ವ್ಯರ್ಥಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. “ತಸ್ಮಿನ್ನಪಾಪಾ: ಸರ್ವೇ ನ: ಕ್ಷುರೇ ಪ್ರತಿಹತಕ್ರಿಯಾ:” ಕುಮಾರಂ ೨-೪೮ । 5. ನಿರಾಶನಾದ, ಆಸೆಯನ್ನು ತೊರೆದ. “ಮನೋಹತ: ಪ್ರತಿಹತ: ಪ್ರತಿಬದ್ಧೋ ಹತಶ್ಚ ಸ:” ಭಮಂ । 6. ದ್ವೇಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 7. ಬದಲಾಗಿ ಹೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟು.

ಪ್ರತಿಹತಿ ಪ್ರತಿಹತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎದುರು ಏಟು, ಎದುರು ವೆಟ್ಟು. ಪ್ರತಿ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೧೪) । “ಧ್ರುವಮಾಗತಾ: ಪ್ರತಿಹತಿ ಕಠಿಣೇ ಮದನೇಶವ: ಕುಚತಡೇ ಮಹತಿ” ಮಾಘಂ ೧-೪೯ ।

ಪ್ರತಿಹನನ ಪ್ರತಿಹನನ (ನಂ) 1. ಹಿಮ್ಮೆಟ್ಟುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಓಡುವುದು. 2. ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಹೊಡೆಯುವುದು, ಎದುರು ಏಟು ಹೊಡೆಯುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।

ಪ್ರತಿಹನ್ಯಮಾನ ಪ್ರತಿಹನ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ಹೊಡೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) ಕರ್ಮಂ “ಶಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪) । “ವಿಜ್ಞೇ: ಪುನ: ಪುನರಪಿ ಪ್ರತಿಹನ್ಯಮಾನಾ: ಪ್ರಾರಬ್ಧಮುತ್ತಮಗುಣಾ ನ ಪರಿತ್ಯಜಂತಿ” ಭರ್ತಂ ೧-೭೨ ।

ಪ್ರತಿಹತ್ ಪ್ರತಿಹತ್ (ವಿಂ) 1. ಪರಿಹರಿಸುವವನು, ಹೋಗಲಾಡಿಸುವವನು, ನಿವಾರಿಸುವವನು. ಪ್ರತಿ + ಹನ್ (ಹರಣೆ) “ತೃಚ್” (೩-೧-೧೩೩) । “ಉಪಪನ್ನಂ ನನು ಶಿವಂ ಸಪ್ತಸ್ವಜ್ಞೇಷು ಯಸ್ಯ ಮೇ । ದೇವೀನಾಂ ಮಾನುಷೀಣಾಂ ಚ ಪ್ರತಿಹರ್ತೃ ತ್ವಮಾಪದಾಮ್” ರಘುಂ ೧-೬೦ । 2. ಮತ್ತೆ ತರುವವನು, ಪುನಃ ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಬರುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಕೀಪ್” (೪-೧-೫) । —ಹತ್ವೋ —ಹತ್ವೇ.

ಪ್ರತಿಹಸ್ತಕ ಪ್ರತಿಹಸ್ತಕ (ಪುಂ) ಪ್ರತಿನಿಧಿ, ಪ್ರತಿ ಪುರುಷ, ಬದಲಿಯವನು. ಪ್ರತಿರೂಪೋ ಹಸ್ತೋ ಯಸ್ಯ । “ಆಶ್ರಿತಾನಾಂ ಭೃತೌ ಸ್ವಾಮಿಪ್ರವಾಸಾಂ ಭರ್ಮಪ್ರವೇಶನೇ । ಪುತ್ರಸ್ಯೋತ್ಪಾದನೇ ಚೈವ ನ ಸಂತಿ ಪ್ರತಿಹಸ್ತಕಾ:” ಹಿತೋಂ ೨-೩೩ ।

ಪ್ರತಿಹಾರ ಪ್ರತಿಹಾರ (ಪುಂ) 1. ದ್ವಾರ, ಬಾಗಿಲು. ಪ್ರತಿಹೀಯತೆ ಆವ್ರಿಯತೆ — ಪ್ರತಿ + ಹನ್ (ಹರಣೆ) “ಚಕ್” (೩-೩-೧೯) । “ಧವಲಾಶ್ವಮರದಿಮಪಟಲಾವಿಭಾವಿತಪ್ರತಿಹಾರಮಾವಿಶದಸೌ ಸದ:



ಶನೆ: " ಮಾಘಂ ೧೩-೬೨. 2. ದ್ವಾರಪಾಲಕ, ಬಾಗಿಲು  
ಕಾಯುವವನು. ಪ್ರತಿಹೀಯತೇಜ - ಪ್ರತಿ + ಹ್ (ಹರಣೆ)  
ಅಧಿಂ " ಧ್ವ " (೩-೩-೧೨೧). " ಜಾತೋ ಹಿ ಪ್ರತಿಹಾರೆಣ  
ಜಾನಿ ಕಶ್ಚಿನ್ ದ್ವಿಜೋತ್ತಮ: " 1. ವಾ ದೀರ್ಘ: (೬-೩-೧೨೨).  
ಪ್ರತಿಹಾರ: ಪ್ರತಿಹಾರಕ. 3. ಗಾರುಡಿಗ, ತಂತ್ರಗಾರ,  
ಯಕ್ಷಿಣ ಮಾಡುವವನು. ಪ್ರತಿರೂಪಂ ಹರತಿ - ಹ್ (ಹರಣೆ)  
" ಅಞ್ " (೩-೨-೧). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಗೌರಾಂ " ಡಿಘ್ " (೪-೧-೪೧). -ಹಾರಿ -ಹಾರಂ.

ಪ್ರತಿಹಾರಕ ಪ್ರತಿಹಾರಕ (ಪುಂ) ತಂತ್ರಗಾರ, ಗಾರುಡಿಗ,  
ಕಣ್ಣು ಕಟ್ಟು ಮಾಡುವವನು. ಪ್ರತಿ + ಹ್ (ಹರಣೆ)  
" ಧ್ವಲ್ " ೩-೧-೧೩೩.

ಪ್ರತಿಹಾರಭೂಮಿ ಪ್ರತಿಹಾರಭೂಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನೆಯು  
ಬಾಗಿಲು, ಮನೆಯ ಪ್ರವೇಶ ಸ್ಥಳ. ಪ್ರತಿಹಾರಸ್ಯ ಭೂಮಿ: 1.  
" ಭವಿಷ್ಯತ: ಪತ್ಯುರ್ಮಾ ಚ ಶಮ್ಮೋ: ಸಮಾಸಸಾದ ಪ್ರತಿಹಾರ-  
ಭೂಮಿಮ್ " ಕುಮಾಂ ೩-೫೮.

ಪ್ರತಿಹಾರರಕ್ಷಿ ಪ್ರತಿಹಾರರಕ್ಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದ್ವಾರಪಾಲಿಕೆ,  
ಮನೆಯ ಬಾಗಿಲನ್ನು ಕಾಯುವ ಹೆಂಗಸು. ಪ್ರತಿಹಾರಂ  
ರಕ್ಷತಿ. " ತತೋ ನೃಪಾಣಾಂ ಶ್ರುತವೃತ್ತವಂಶಾ ಪುಂವತ್ ಪ್ರಗಲ್ಭಾ  
ಪ್ರತಿಹಾರರಕ್ಷಿ " ರಘುಂ ೬-೨೦.

ಪ್ರತಿಹಾಸ ಪ್ರತಿಹಾಸ (ಪುಂ) 1. ಹಾಸ್ಯಮಾಡಿದವನನ್ನು  
ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಹಾಸ್ಯಮಾಡುವುದು. ಪ್ರತಿರೂಪೋ ಹಾಸ: 1.  
2. ಕಣ್ಣಿಗೆ ಗಿಡ. ಪ್ರತಿತೋ ಹಾಸೋ ವಿಕಾಸೋಽಸ್ಯ. 1. ವಾ ದೀರ್ಘ:  
(೬-೩-೧೨೨). ಪ್ರತಿಹಾಸ: ಪ್ರತಿಹಾಸ.

ಪ್ರತೀಕ ಪ್ರತೀಕ (ಪುಂ) 1. ಅಂಗ, ಅವಯವ. ಪ್ರತೀತಿ -  
ಪ್ರತಿ + ಇಞ್ (ಗತೌ) " ಕೀಕನ್ " (೩ಂ ೪-೨೫). ನಿಪಾಂ 1.  
" ತದಾ ಘಟೇತಾಪಿ ನ ವಾ ತದೇತಪ್ರತಿಪ್ರತೀಕಾದ್ಭೂತರೂಪಶಿಲ್ಪಮ್ "  
ನೈಷಂ ೭-೧೦. 2. ಮುಖ. (ನಂ) 3. ಒಂದು ಶ್ಲೋಕದ  
ಅರ್ಥವಾ ವಾಕ್ಯದ ಮೊದಲ ಪದ. " ವದನಸೌರಭಲೋಪರಿ-  
ಭ್ರಮತ್ " ಇತ್ಯಾದಿ ಶ್ಲೋಕದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ್ಕಾಗಿ " ವದನೇತಿ "   
ಎಂದು ವ್ಯಾಖ್ಯಾನದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ಪದವು  
ಪ್ರತೀಕವಾಗಿರುವುದು. 4. ವಿಗ್ರಹ, ಮೂರ್ತಿ. (ವಿಂ)  
5. ಅನುರೂಪವಾದ. 6. ಪ್ರತಿರೂಪವಾದ, ವಿರುದ್ಧ  
ವಾದ. " ಮುಖೇ ಪ್ರತೀಕಸ್ತ್ರಿಣಿವತ್ ಪ್ರತಿಕೂಲಾನುರೂಪಯೋ: " ವೈಜಂ 1.  
7. ನಿಯಮಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಲ್ಲದ, ನಿಯಮಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧ  
ವಾದ, ವಿಲೋಮ. " ಪ್ರತೀಕೋಽಪ್ಯವೇಽಪಿ ಸ್ಯಾತ್ ಪ್ರತಿಕೂಲ-  
ವಿಲೋಮಯೋ: " ಮೇದಿಂ 1.

ಪ್ರತೀಕಾರ ಪ್ರತಿಹಾರಕ (ಪುಂ) " ಪ್ರತೀಕಾರ " ಪದದ ಅರ್ಥ.  
" ವಿಪ್ರತೀಕಾರಪರೇಣ ಮಜ್ಜಲಂ ನಿಷೇವ್ಯತೇ ಭೂತಿಸಮುತ್ಸುಕೇನ "  
ಕುಮಾಂ ೫-೭೬.

ಪ್ರತೀಕಾಶ ಪ್ರತಿಹಾರಕ (ಪುಂ) 1. ಸಾಮ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ.  
ಪ್ರತೀಕಾಶತೇ - ಪ್ರತಿ + ಕಾಶ್ (ದೀಪ್ತೌ) " ಅಚ್ " (೩-೧-೧೩೪).  
ವಾ ದೀರ್ಘ: (೬-೩-೧೨೩). 1. ಪಕ್ಷೇ ಪ್ರತೀಕಾಶ: ಪ್ರತಿಹಾರಕ. 2.  
(ಸಮಾಸದಲ್ಲಿ ಉತ್ತರಪದವಾದಾಗ) ಸದೃಶವಾದ,  
ಸಮಾನವಾದ. " ಪುಟಪಾಕಪ್ರತೀಕಾಶೋ ರಾಮಸ್ಯ ಕರುಣೋ ರಸ: "  
೩ಂ ರಾಂ ೩-೧. " ಸ್ವರೂಪದೇವಮಿ. ನಿಮಸಂಕಾಶ-  
ನೀಕಾಶಪ್ರತೀಕಾಶೋಪಮಾದಯ: " ಅಮಂ 1.

ಪ್ರತೀಕ್ಷಕ ಪ್ರತಿಹಾರಕ (ವಿಂ) 1. ನಿರೀಕ್ಷಿಸುವವನು.  
2. ಕಾದು ನೋಡುವವನು. ಪ್ರತಿ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) " ಷ್ವಲ್ " (೩-೧-೧೩೩).

ಪ್ರತೀಕ್ಷಣ ಪ್ರತಿಹಾರಕ (ನಂ) 1. ನಿರೀಕ್ಷಿಸುವುದು, ಎದುರು  
ನೋಡುವುದು. 2. ಕಾದು ನೋಡುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಇಕ್ಷ  
(ದರ್ಶನೆ) ಭಾವೇ " ಲ್ಯುಟ್ " (೩-೩-೧೧೫).

ಪ್ರತೀಕ್ಷಮಾಣ ಪ್ರತಿಹಾರಕ (ವಿಂ) 1. ಎದುರು ನೋಡು  
ತ್ತಿರುವ. 2. ಕಾಯುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ)  
ಕರ್ತಂ " ಶಾನಚ್ " (೩-೨-೧೨೪). " ಪ್ರತೀಕ್ಷಮಾಣಾನವಿ-  
ಚಂದ್ರಶಾಲಂ ಪಶ್ಯ ತ್ವಯಾ ಶಿಕ್ಷಿತಚಾರುಲಾಸ್ಯಾನ್ " ಬಾದಂ  
೧೮-೧೨೫.

ಪ್ರತೀಕ್ಷಾ ಪ್ರತಿಹಾರಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಿರೀಕ್ಷಿಸುವುದು, ಎದುರು  
ನೋಡುವುದು. 2. ಕಾದು ನೋಡುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಇಕ್ಷ .  
(ದರ್ಶನೆ) " ಅ: " (೩-೩-೧೦೩). " ಮಿತ್ರಪ್ರತೀಕ್ಷಯಾ ಶಲ್ಯ  
ಧಾರ್ತರಾಷ್ಟ್ರಸ್ಯ ಚೋಮಯೋ: " ಮಾಂ 1.

ಪ್ರತೀಕ್ಷಿತ ಪ್ರತಿಹಾರಕ (ವಿಂ) 1. ಎದುರು ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ನಿರೀಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಕಾಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ)  
" ಕ್ತ: " (೩-೨-೧೦೨). " ತ್ವಂ ಸಮೀರಣ ಇವ ಪ್ರತೀಕ್ಷಿತ:  
ಕರ್ಷಕೇಣ ಬಲಜಾನ್ ಪುಷ್ಪತಾ " ಮಾಘಂ ೧೪-೭.

ಪ್ರತೀಕ್ಷಿತು ಪ್ರತಿಹಾರಕ (ವಿಂ) 1. ನಿರೀಕ್ಷಿಸುವ, ಎದುರು  
ನೋಡುವ. 2. ಕಾದು ನೋಡುವ. ಪ್ರತಿ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ)  
" ತ್ವಚ್ " (೩-೧-೧೩೩). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ " ಡಿಘ್ " (೪-೧-೫).  
-ಇಕ್ಷಿತ್ರೀ - ಈಕ್ಷಿತ್ರೀ.

ಪ್ರತೀಕ್ಷಿನ್ ಪ್ರತಿಹಾರಕ (ವಿಂ) 1. ನಿರೀಕ್ಷಿಸುವವನು.  
2. ಕಾದು ನೋಡುವವನು. ಪ್ರತಿ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) " ಣಿನಿ: " (೩-೧-೧೩೪).

ಪ್ರತೀಕ್ಷ್ಯ ಪ್ರತಿಹಾರಕ (ವಿಂ) 1. ಪೂಜ್ಯನಾದವನು, ಗೌರವಿಸ  
ಲ್ಪಡುವವನು. ಪ್ರತಿ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) ಕರ್ಮಂ " ಷ್ಯತ್ " (೩-೧-೧೨೪). 2. ಪಾಲಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. " ಪ್ರತೀಕ್ಷ್ಯಂ  
ತತ್ ಪ್ರತೀಕ್ಷಯೈ ಪಿತೃಷ್ವಸೇ ಪ್ರತಿಶ್ರುತಮ್ " ಮಾಘಂ ೨-೧೦೮.



(ಅವ್ಯಂ) 3. ಎದುರುನೋಡಿ. 4. ಕಾದುನೋಡಿ.

“ಕಾಮಸ್ತು ಬಾಣಾವಸರಂ ಪ್ರತೀಕ್ಷ್ಯ” ಕುಮಾಂ 3-64.

ಪ್ರತೀಕ್ಷ್ಯಮಾಣ (ವಿಂ) 1. ಎದುರು ನೋಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಆಸೆಯಿಂದ ಕಾದು ನೋಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) ಕರ್ಮಂ “ಶಾನಚ್” (3-2-124).

ಪ್ರತೀಚಿ ಪ್ರತೀಚೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕು, ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರಾದಿಗಳು ಅಸ್ತಹೊಂದುವ ದಿಕ್ಕು. ಪ್ರತಿ ಪಕ್ಷಾತ್ ದಿನಾಂತೇಷ್ವತಿ ಸೂರ್ಯಮ್—“ಕ್ವಿನ್” (3-2-49). “ಡಿಪ್” (4-1-6). “ಪ್ರತೀಚಿಸಿಂಧುವಿವಿ ದಿನೋಚ್ಚಾರೆ ಸುಖಕರಮ್” ನೆಪಂ 20-2. “ಅಗ್ರೇವಣಂ ವರ್ತಮಾನೇ ಪ್ರತೀಚ್ಯಾಂ ಚಂದ್ರಮಂಡಲೇ” ಭದ್ರಂ 9-93.

ಪ್ರತೀಚೀನ ಪ್ರತೀಚೀನ (ವಿಂ) ಪಶ್ಚಿಮ ದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. ಪ್ರತ್ಯಕ್ ಭವಮ್ “ಕ್ವಿನ್” (4-4-6).

ಪ್ರತೀಕ್ಷಾ ಪ್ರತೀಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಡಿಸಿದ ಆಹಾರವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. “ಪರಿವೇಷಣಂ ವರ್ಧನಂ ಚ ಪ್ರತೀಕ್ಷಾ ಪತತೋ ಗ್ರಹಃ” ವೇಜಂ. 2. ಹೆಚ್ಚು ಅಭಿಲಾಷೆ. “ಮಹಿ-ಮೃತಸ್ತಸ್ಯ ಚ ಮನ್ಮಥಶ್ರಿಯಾ ನಿಜಸ್ಯ ಚಿತ್ತಸ್ಯ ಚ ತಂ ಪ್ರತೀಕ್ಷಯಾ” ನೆಪಂ 1-26.

ಪ್ರತೀಚ್ಯ ಪ್ರತೀಚ್ಯ (ವಿಂ) ಪಶ್ಚಿಮದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಪ್ರತೀಚ್ಯಾಂ ಭವಃ.

ಪ್ರತೀತ ಪ್ರತೀತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾದ, ಪ್ರಖ್ಯಾತಿ ಪಡೆದ, ಹೆಸರುವಾಸಿಯಾದ. ಪ್ರತಿ + ಇನ್ (ಗತೌ) “ಕ್ತಿಃ” (3-4-92). “ಧರಸ್ಯೋದ್ಭವಾಸಿ ತ್ವಮಿತಿ ನನು ಸರ್ವತ್ರ ಜಗತಿ ಪ್ರತೀತಸ್ತರ್ಲಿ ಮಾಮತಿರಮಃ ಪ್ರಾಪಿಪಯಿಷುಃ” ಮಾಧಂ 4-69. 2. ಹರ್ಷಗೊಂಡ, ಸಂತೋಷಗೊಂಡ. “ಪತಿಃ ಪ್ರತೀತಃ ಪ್ರಸವೋನ್ಮುಖಿಂ ಪ್ರಿಯಾಂ ದದರ್ಶ ಕಾಲೇ ದಿವಮಭಿರಾಮಿವ” ರಘುಂ 3-12. 3. ಅರಿತಿರುವ, ತಿಳಿದಿರುವ. 4. ನಂಬಿರುವ, ವಿಶ್ವಾಸದಿಂದಿರುವ. “ಪ್ರತೀತಃ ಸಾದರೇ ಜಾತೇ ಹೃಷ-ಪ್ರಖ್ಯಾತಯೋಸ್ತ್ರಿಷು” ಮೇದಿಂ.

ಪ್ರತೀತಿ ಪ್ರತೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅರಿವು, ಪರಿಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ಪ್ರತಿ + ಇನ್ (ಗತೌ) “ಕ್ತಿನ್” (3-3-94). “ಆಗತ್ಯ ಮೃತಃ ಸಫಲೋ ಭವತ್ಯಾ ಭಾವಪ್ರತೀತ್ಯಾ ಗುಣಲೋಭವತ್ಯಾಃ” ನೆಪಂ 3-115. 2. ನಂಬಿಕೆ, ವಿಶ್ವಾಸ. “ತ್ವದರ್ಥಮರ್ಥಿತ್ವಕೃತಿ ಪ್ರತೀತಿಃ ಕೀದೃಕ್ ಮಯಿ ಸ್ಯಾನ್ನಿಷಧೇಶ್ವರಸ್ಯ” ನೆಪಂ 3-92. 3. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ, ಪ್ರಖ್ಯಾತಿ.

ಪ್ರತೀಪ ಪ್ರತೀಪ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಶೃಂಗನು ಘಹಾರಾಜನ ತಂದೆ, ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯನ ಪಾತಕ.

(ವಿಂ) 2. ವಿರುದ್ಧವಾದ, ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದ. “ಇತಿ ಪ್ರತೀಪೋಕ್ತಿಮತಿ ಸಖಿನಾಂ ವಿಲುಪ್ಯ ಪಾಂಡಿತ್ಯಬಲೇನ ಬಾಲಾ” ನೆಪಂ 6-106. 3. ಮೇಲುಮುಖವಾಗಿ ಹರಿಯುವ. ಪ್ರತಿಗತಾಃ ತತ್ತಾನಗಾ ಆಪೋ ಯಸ್ಯಾಃ. “ಅಮ್ಮೋಭಿಹಲ್ವಿಜ್ಜಿತ-ತುಕ್ಲರೋಧಸಃ ಪ್ರತೀಪನಾಮ್ನಿಃ ಕುರುತೇ ಸ್ಮ ನಿಮ್ನಗಾಃ” ಮಾಧಂ 12-47. 4. ಅನುಕೂಲವಲ್ಲದ, ಒಡಂಬಡಿಕೆಯಿಲ್ಲದ, ಸುಮತಿಯಿಲ್ಲದ. 5. ಪ್ರತಿಪಕ್ಷದ, ಶತ್ರುಪಕ್ಷದ. “ನ ತತ್ಯಜುರ್ನಮನನ್ಯವಿಶ್ರಮಾಃ ಪ್ರತೀಪಭೂಪಾಲಮೃಗೀದೃಶಾಂ ದೃಶಃ” ನೆಪಂ 1-11. (ನಂ) 6. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಪ್ರಸಿದ್ಧೋಪಮಾನಪ್ರಾತಿಕೂಲವರ್ಣನೆಯು “ಪ್ರತೀಪಾಲಂಕಾರ” ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ ಉಪಮಾನಕ್ಕೆ ಉಪಮೇಯತ್ವವನ್ನು ಹೇಳಿ ವರ್ಣಿಸುವುದು ಪ್ರತೀಪ. “ಪ್ರತೀಪಮುಪಮಾನಸ್ಯೋಪಮೇಯತ್ವಪ್ರಕಲ್ಪನಮ್” ಉದಾಂ : “ತ್ವಲ್ಲೋಚನಸಮಂ ಪಶ್ಯಂ ತ್ವದ್ವಕ್ತೃಸದೃಶೋ ವಿಧುಃ” ಚಂದ್ರಾಂ. ಈ ಪ್ರತೀಪಾಲಂಕಾರವು ಐದು ವಿಧ. [ಚಂದ್ರಾಲೋಕ, ಕುವಲಯಾನಂದ ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು ನೋಡಿ]. (ಅವ್ಯಂ) 7. ಪ್ರತಿಕೂಲವಾಗಿ, ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ, ಎದುರಿಸಿ. “ಮರ್ತು-ಪ್ರಕೃತಾಪಿ ರೋಷಪತಯಾ ಮಾ ಸ್ಮ ಪ್ರತೀಪಂ ಗಮಃ” ಶಾಕುಂ 4-17. 8. ಎದುರಾಗಿ, ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ.

ಪ್ರತೀಪಗ ಪ್ರತೀಪಗ (ವಿಂ) ಪ್ರತಿಕೂಲವಾಗಿ ಹೋಗುವ, ಎದುರಾಗಿ ಚಲಿಸುವ. ಪ್ರತೀಪಂ ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ (ಗತೌ) “ತಃ” (3-2-101). “ತಸ್ಯ ಜಾತು ಮರುತಃ ಪ್ರತೀಪಗಾಃ ವರ್ಮಸು ಧ್ವಜತರಪ್ರಮಾಥಿನಃ” ರಘುಂ 11-46.

ಪ್ರತೀಪಗತಿ ಪ್ರತೀಪಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ), —ಗಮನ —ಗಮನ (ನಂ) ವಕ್ರಗತಿ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದು ಹಿಂತಿರುಗುವಿಕೆ, ಹಿಂಚಲನೆ. ಪ್ರತೀಪಾ ಗತಿಃ. ಪ್ರತೀಪಂ ಗಮನಮ್. “ಅಮ್ಮಸಾ-ಮೋಷಸಂರೋಧಃ ಪ್ರತೀಪಗಮನಾದಿವ” ಕುಮಾಂ 2-25.

ಪ್ರತೀಪದರ್ಶಿನಿ ಪ್ರತೀಪದರ್ಶಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಂಗಸು. ಪ್ರತೀಪಂ ದ್ರಷ್ಟುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯಾಃ — ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣಂ) “ಪಿನ್ನಿಃ” (3-2-96). “ಪ್ರತೀಪದರ್ಶಿನಿ ವಾಮಾ ವನಿತಾ ಮಹಿಲಾ ತಥಾ” ಅಮಂ.

ಪ್ರತೀಯಮಾನ ಪ್ರತೀಯಮಾನ (ವಿಂ) ಬೋಧಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ತಿಳಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ಇನ್ (ಗತೌ) ಕರ್ಮಂ “ಶಾನಚ್” (3-2-124). “ರತ್ಯಾದಯೋ ಹಿ ಪ್ರಥಮಮೇಕೈಕಶಃ ಪ್ರತೀಯಮಾನಾಃ ಸರ್ವೇಷ್ಯೇಕೈಕಭೂತಾಃ ರಸತಾಮಾಪದಂತೇ” ಸಾಂ 60.

ಪ್ರತೀರ ಪ್ರತೀರ (ನಂ) ತಟ, ದಡ, ತೀರಪ್ರದೇಶ. ಪ್ರತೀರ-ಯತಿ — ಪ್ರ + ತೀರ (ಕರ್ಮಸಮಾಪ್ತೌ) + ಣಿಚ್ “ಅಚ್” (3-1-134).



ಪ್ರತಿವಾಪ ಪ್ರತಿವಾಪ (ಪುಂ) 1. ಹಾಲಿಗೆ ಹೆಪ್ಪು ಹಾಕು ವುದು. ಪ್ರತ್ಯುಪ್ಯತೇ—ಪ್ರತಿ + ಉಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನೇ) “ಘ” (3-3-14)। ದೀರ್ಘ: (6-3-122)। “ಆತಪ್ಪನಂ ಸಂಜ್ಞವನಂ ಪ್ರತಿವಾಪಶ್ಚ ಮೂತಕಮ್” ವೇಜಂ 2. ಒಂದು ವಿಧ ರೋಗ.

ಪ್ರತಿಷ್ಠ ಪ್ರತಿಷ್ಠ (ವಿಂ) ಸ್ವೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಂಗೀಕರಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟ, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿ + ಷ (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) “ಕ್ತ:” (3-2-102)। “ಅಮನ್ಯತಾವಂತಮಿವೇಷ ಪಲ್ಲವ: ಪ್ರತಿಷ್ಠಕಾಮಜ್ವಲದಸ್ತ್ರಜಾಲಕಮ್” ನೆಷಂ 1-102।

ಪ್ರತುಢ ಪ್ರತುಢ (ಪುಂ) ಕೊಕ್ಕಿನಿಂದ ಕಿತ್ತು ಹಿಸಿಸಿ ತಿನ್ನುವ ಹಕ್ಕಿ, ಕಾಗೆ, ರಣಹದ್ದು, ಹದ್ದು ಮುಂತಾದುವು. “ಪ್ರತುಢ ಭಕ್ಷಯಂತೇತೇ ತುಢೇನ ಪ್ರತುಢಾ: ಸ್ಮೃತಾ:”।

ಪ್ರತೋತ್ರ ಪ್ರತೋತ್ರ (ನಂ) ಅನೆಯನ್ನು ಚುಚ್ಚಿ ಶಿಕ್ಷಿಸುವ ಅಂಕುಶ. ಪ್ರತುಞತೇಜೇನ—ಪ್ರ + ತುಢ (ವ್ಯಥನೆ) “ಘ” (3-2-142)। “ಇತಿ ವಾಕ್ಸಾಯಕೇವಿಢ: ಪ್ರತೋತ್ರೇರಿವ ಕುಂಜರ:। ನಿಶಿ ನಿಸ್ತ್ರಿಶಮಾದಾಯ ವಿವಸ್ತ್ರೋಽಮ್ಯದ್ರವದ್ವಾ” ಭಾಗಂ 9-14-30।

ಪ್ರತೋದ ಪ್ರತೋದ (ಪುಂ) 1. ಅನೆಯನ್ನು ಶಿಕ್ಷಿಸುವ ಅಂಕುಶ. ಪ್ರತುಞತೇಜೇನ—ಪ್ರ + ತುಢ (ವ್ಯಥನೆ) ಕರಂ “ಘ” (3-3-121)। “ಪ್ರತೋದಾ ಜಗಲ್ವಾಮಮಾನಂಚುರ್ಯಜ್ಞಿಯಾ ಮೃಗಾ:” ಮಡಿಂ 14-99। 2. ಚಾವಟಿ, ಗಾಡಿಯ ಎತ್ತು ಕುದುರೆ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಅಟ್ಟಿ ನಡೆಸುವ ಕೋಲು. “ಪ್ರತೋದಸಂದಂಶಿಕಯೋದಹಾರ್ಷಿತ್ ಪಾಶ್ಚಾಲಕನ್ಯಾಪರಿಭೂತಿಶಲ್ಯಮ್” ಯಾದಂ 23-42।

ಪ್ರತೋಲಿ ಪ್ರತೋಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಗರದ ಮುಖ್ಯ ರಸ್ತೆ, ರಾಜಮಾರ್ಗ. ಪ್ರತೋಲಯಂತಿ ಜನಾ: ಅಸ್ಮಿನ್—ಪ್ರ + ತುಲ (ಛನ್ಮಾನೇ) + ಣಿಕ್ (3-1-134)। “ವಿಲೋಕಯಾಮಾಸ ಸಮಾಂ ಸ ಭಿಮ್ಯಾಸ್ತಸ್ಯ ಪ್ರತೋಲಿಮಣಿವೇದಿಕಾಯಾಮ್” ನೆಷಂ 6-44।

ಪ್ರತೋಷ ಪ್ರತೋಷ (ಪುಂ) 1. ಸಂತೋಷ. ಹರ್ಷ, ಆನಂದ. ಪ್ರ + ತುಷ (ತುಞ್ಟೌ) “ಘ” (3-3-14)। 2. ಸ್ವಾಯಂ ಭುವ ಮನುವಿನ ಹನ್ನೆರಡು ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. “ತೋಷ: ಪ್ರತೋಷ: ಸಂತೋಷ: ಭದ್ರ: ಶಾಂತಿರಿದ್ರಪತಿ:” ಭಾಗಂ 4-1-3।

ಪ್ರತ್ತ ಪ್ರತ್ತ (ವಿಂ) ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ, ದಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರದೀಯತೇ ಸ್ಮ—ಪ್ರ + ತು ದಾಕ್ (ದಾನೇ) “ಕ್ತ:” (3-2-102)। ತಕಾರಾದೇಶ: (3-4-43)।

ಪ್ರನ್ ಪ್ರನ್ (ವಿಂ) ಪ್ರರಾತನಮಾದ, ಹಳೆಯದಾದ, ಬಹಳ ಹಿಂದಿನ ಕಾಲದ. ಪ್ರ “ನ್” (ವಾಂ 4-4-24)। “ಪ್ರನ್ ವೇತಞ್ಢರಲ್ ಸತತಪರಿಚಲತ್ಕರ್ಣತಾಲಪ್ರರೋಹತ್” ಚಂ ಭಾಂ 1-1। “ಪ್ರನ್ಸ್ಯ ವಿಣ್ಣೋ ರೂಪಂ ಯತ್ ಸತ್ಯಸ್ಯತಸ್ಯ ಬ್ರಹ್ಮಣ:” ಭಾಗಂ 4-20-4।

ಪ್ರತ್ಯಕ್ ಪ್ರತ್ಯಕ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕು. 2. ಪಶ್ಚಿಮ ದೇಶ. 3. ಪಶ್ಚಿಮ ಕಾಲ. 4. ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕಿನಿಂದ. 5. ಪಶ್ಚಿಮ ದೇಶದಿಂದ. 6. ಪಶ್ಚಿಮ ಕಾಲದಿಂದ. 7. ಪಶ್ಚಿಮ ದೇಶದಲ್ಲಿ. 8. ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ. 9. ಪಶ್ಚಿಮ ಕಾಲದಲ್ಲಿ. ಪ್ರತ್ಯಚ್ಛತಿ—ಪ್ರತಿ + ಅಚ್ಚು (ಗತೌ) “ಕ್ವಿನ್” (3-2-49) “ಅಸ್ತಾತಿ:” (4-3-23)। ಅಸ್ತಾತೇ: ಲುಕ್ (4-3-30)। “ಪ್ರತ್ಯಗ್ವಿದೇಶಕಾಲೇಷು ವಾಚ್ಯವತ್ ತ್ರಿತಯೇಽವ್ಯಯಮ್” ಮೇದಿಂ 10. ಎರಡುವಾಗಿ, ಪ್ರತಿಹೂಲವಾಗಿ.

ಪ್ರತ್ಯಕ್ಪಣಿ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಪಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪಾಮಾರ್ಗ, ಉತ್ತರಣಿ ಗಿಡ. ಪ್ರತ್ಯಚ್ಛಿ ಪರ್ಣಾಪ್ಯಸ್ಯಾ:। “ಛಿಷ್” (4-1-64)। “ಪ್ರತ್ಯಕ್ಪಣಿ ಕೇಶವಲ್ಲಿ ಕಿಹಿಣಿ ಕ್ಷರ-ಮಂಜರೀ” ಅಮಂ 1.

ಪ್ರತ್ಯಕ್ಪುಷ್ಪಿ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಪುಷ್ಪಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪಾಮಾರ್ಗ, ಉತ್ತರಣಿ ಗಿಡ. ಪ್ರತ್ಯಚ್ಛಿ ಪುಷ್ಪಾಪ್ಯಸ್ಯಾ:। “ಛಿಷ್” (4-1-64)। “ಪ್ರತ್ಯಕ್ಪುಷ್ಪಿಸದಾಪುಷ್ಪಿನಿಮ್ಬಕಪಾಪಾಣಾಮ-ನ್ಯತಮೇನಾಲೋಢ್ಯ ಮಘುಸಂಧವಯುಕ್ತಾಂ ಮಾತ್ರಾಂ ಪಾಯಯಿತ್ವಾ ವಾಮಯೇತ್” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ 43-1।

ಪ್ರತ್ಯಕ್ಶ್ರೇಣಿ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಶ್ರೇಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಲಿಯಾಲದ ಮರ, ಇಲಿ ಕಿವಿಯ ಗಿಡ. ಪ್ರತಿಶ್ರೀ ಶ್ರೇಣಿ ಯಸ್ಯಾ:। “ಪ್ರತ್ಯಕ್ಶ್ರೇಣಿ ಸುತಶ್ರೇಣಿ ರಣಾ ಮೃಷಿಕಪರ್ಯಪಿ” ಅಮಂ 1.

ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ (ನಂ) 1. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ ಜ್ಞಾನ, ಇಂದ್ರಿಯಾರ್ಥ ಸನ್ನಿಹರ್ಷ (ಸಂಬಂಧ) ದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಜ್ಞಾನ, ಅನು ಭವ. ಪ್ರತಿಗತಮಕ್ಷಮಿನ್ದ್ರಿಯಮ್ ಯತ್ರ। ಇದು (1) ಛಾಣಜಮ್ (2) ರಾಸನಮ್ (3) ಶ್ರಾವಣಮ್ (4) ಚಾಕ್ಷುಷಮ್ (5) ಸ್ಪರ್ಶನಮ್ ಮತ್ತು (6) ಮಾನಸಮ್ ಎಂದು ಆರು ವಿಧ.

ಘ್ರಾಣೇಂದ್ರಿಯಕ್ಕೆ ಗಂಧವು ಗೋಚರವಾಗುವುದರಿಂದ ಇದು ಘ್ರಾಣಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ.

ಜಿಹ್ವೆಗೆ ರಸವು ಗೋಚರವಾಗುವುದು ರಾಸಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ.

ಶ್ರವಣೇಂದ್ರಿಯಕ್ಕೆ ಶಬ್ದವು ಗೋಚರವಾಗುವುದು ಶ್ರವಣಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ.

ಚಕ್ಷುರೇಂದ್ರಿಯದಿಂದ ಉದ್ಭೂತ ರೂಪದ ಗ್ರಹಣವು ಚಾಕ್ಷುಷಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ.



ತೃಗಿಂದ್ರಿಯಕ್ಕೆ ಉದ್ಭೂತಸ್ಪರ್ಶವದ್ವದ್ವದ ಅನುಭವವು ಸ್ಪರ್ಶನ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ.

ಮನೋಗ್ರಾಹ್ಯವಾದ ಸುಖದುಃಖಾದಿಜ್ಞಾನವು ಮಾನಸ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ. "ಛಾಣಜಾದಿಪ್ರಮೇದೇನ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಂ ಷಡ್ವಿಧಂ ಸ್ಮೃತಮ್ | ಛಾಣಸ್ಯ ಗೋಚರೋ ಗಂಧಃ ಗಂಧತ್ವಾದಿರಪಿ ಸ್ಮೃತಃ || ತಥಾ ರಸೋ ರಸಜ್ಞಾಯಾಸ್ತಥಾ ಶಬ್ದೋಽಪಿ ಚ ಶ್ರುತಃ || ತದ್ಭೂತರೂಪಂ ನಯನಸ್ಯ ಗೋಚರೋ ದ್ರವ್ಯಾಣಿ ತದ್ವಂತಿ ಪೃಥಕ್ತ್ವಸಂಖ್ಯೆ | ಕ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ ಯೋಗ್ಯವೃತ್ತಿಂ ಸಮವಾಯಂಶ್ಚ ತಾದೃಶಮ್ | ಗೃಹ್ಣಾತಿ ಚಕ್ಷುಃ ಸಮ್ಬಂಧಾತ್ ಆಲೋಕೋದ್ಭೂತರೂಪಯೋಃ | ತದ್ಭೂತಸ್ಪರ್ಶವದ್ವದ್ವಯಂ ಗೋಚರಃ ಸೋಽಪಿ ಚ ತ್ವಚಃ | ದ್ರವ್ಯಾಧ್ಯಕ್ಷೋ ತ್ವಚೋ ಯೋಗೋ ಮನಸಾ ಜ್ಞಾನಕಾರಣಮ್ | ಮನೋಗ್ರಾಹ್ಯಂ ಸುಖಂ ದುಃಖಮಿಚ್ಛಾ ದ್ವೇಷೋ ಮತಿಃ ಕೃತಿಃ" ಭಾಷಾಪಂ | (ವಿಂ) 2. ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗುವ, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸುವ. "ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾಭಿಃ ಪ್ರಪನ್ನಸ್ತನುಭಿರವತು ವಸ್ತಾಭಿರಂಶಾಭಿರೀಶಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೧ | 3. ಕಣ್ಣಿನ ಎದುರಿಗೆ ಇರುವ. (ಅವ್ಯಂ) 4. ಅಪರೋಕ್ಷವಾಗಿ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣುವಂತೆ. "ಕಲಂತ್ವನಭಿಸಂಧಾಯ ಕ್ಷೇತ್ರಿಣಾಂ ಬೀಜಿನಾಂ ತಥಾ | ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಂ ಕ್ಷೇತ್ರಿಣಾಮರ್ಥೋ ಬೀಜಾಣಿ ನಿರ್ಗಂಧೀಯಸಿ" ಮನ್ವಂ ೧-೫೨ | 5. ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಕಣ್ಣಿನಲ್ಲೂ. ಅಕ್ಷಿ ಅಕ್ಷಿ ಪ್ರತಿ - ಅವ್ಯಯಿಂ (೨-೧-೧೪) |

ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಜ್ಞಾನ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಜ್ಞಾನ (ನಂ) ಕಣ್ಣಿನ ಎದುರಿಗೆ ಕಾಣುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಜ್ಞಾನ, ವಸ್ತುವನ್ನು ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಿ ನೋಡುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರಿವು.

ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷದರ್ಶನ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷದರ್ಶನ (ನಂ) 1. ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಿ ನೋಡುವುದು, ಕಣ್ಣಿನ ಎದುರಿಗೆ ನೋಡುವುದು. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ ದರ್ಶನಮ್ | "ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷದರ್ಶನಂ ಯಶ್ಚೇ ಗತಿಂ ಚಾನುತ್ತಮಾಂ ಶುಭಾಮ್ | ನೇಷಯಾ ದದೋ ಶಕ್ರಃ ಪ್ರಿಯಮಾಣಃ ಶಚೀಪತಿಃ" ಭಾಂ ವನಂ ೫೪-೩೬ | (ವಿಂ) 2. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ ನೋಡುವ, ಎದುರಿಗೆ ನೋಡುವ. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಂ ಪಶ್ಯತಿ - ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣಂ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) | "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) | -ದರ್ಶಿನ್ -ದರ್ಶಿನ್. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಶೀಪ್" (೪-೧-೫) | -ದರ್ಶಿನಿ -ದರ್ಶಿನೀ.

ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾದ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾದ (ಫಂ) ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವೆಂದೇ ಪ್ರಮಾಣವೆಂದು ಹೇಳುವುದು, ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗುವುದೊಂದು ಹೊರತು ಬೇರೆ ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲವೆಂದು ವಾದಿಸುವುದು.

ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾದಿನ್ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾದಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ ಹೊರತು ಮತ್ತೆ ಯಾವುದೂ ಪ್ರಮಾಣವಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳುವವನು, ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಪ್ರಮಾಣದಿಂದ ಮಾತನಾಡುವವನು.

ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಮೇವ ಪ್ರಮಾಣತಯಾ ವದತಿ - ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೩೮) | 2. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವವನು.

ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಿನ್ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಿನ್ (ವಿಂ) ಕಣ್ಣಿನಿಂದ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಿ ನೋಡುವ. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಛಿನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫) |

ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷೋತಸ್ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷೋತಸ್ (ಫಂ) 1. ನದಿ, ಪಶ್ಚಿಮಾಭಿಮುಖವಾಗಿ ಹರಿಯುವ ಗಂಡುಹೊಳೆ. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷೋತೋ ಯಸ್ಯ | ಪೂರ್ವಾಭಿಮುಖವಾಗಿ ಹರಿಯುವ ಹೊಳೆಯು ನದಿ. ಪಶ್ಚಿಮಾಭಿಮುಖವಾಗಿ ಹರಿಯುವ ಹೊಳೆಯು ನದಿ. (ನರ್ಮದಾ ನದಿ ಹೊರತು). "ದಶದ್ವಿರ-ಮಿತಸ್ತತೋ ವಿಕಚವಾರಿಜಾಮ್ಬೂನದೇವಿನೋದಿತದಿನಕಲಮಾಃ ಕೃತ-ಹಚ್ಚ ಜಾಮ್ಬೂನದೇಃ" ಮಾಘಂ ೪-೬೬ | 2. ಪರಮಾತ್ಮ ಧ್ಯಾನಾಸಕ್ತನಾದ ಯತಿ. ಪ್ರತೀಚಿ ಪ್ರತ್ಯಗಾತ್ಮನಿ ಸ್ತೋತ್ರಶ್ಚಿತ-ಪ್ರವಾಹೋ ಯಸ್ಯ | 3. ನರ್ಮದಾ ನದಿ.

ಪ್ರತ್ಯಗಾತ್ಮನ್ ಪ್ರತ್ಯಗಾತ್ಮನ್ (ಫಂ) ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಮೇಶ್ವರ.

ಪ್ರತ್ಯಗಾನಂದ ಪ್ರತ್ಯಗಾನಂದ (ಫಂ) ಆತ್ಮಾನಂದವುಳ್ಳ, ಬ್ರಹ್ಮಾನಂದವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವ.

ಪ್ರತ್ಯಗಾಶಾಪತಿ ಪ್ರತ್ಯಗಾಶಾಪತಿ (ಫಂ) ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕಿನ ಅಧಿಪತಿ, ವರುಣ. ಪ್ರತ್ಯಗಾಶಾಪತಿಃ ಪತಿಃ |

ಪ್ರತ್ಯಗುದ್ವಿ ಪ್ರತ್ಯಗುದ್ವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಶ್ಚಿಮ ಮತ್ತು ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕುಗಳ ಮಧ್ಯದ ವಿದಿಕ್ಕು, ವಾಯುದಿಕ್ಕು. ಪ್ರತೀಚ್ಯಾ ರದೀಚ್ಯಾಶ್ಚ ದಿಶಃ ಅಂತರಾಲಮ್ |

ಪ್ರತ್ಯಗ್ರ ಪ್ರತ್ಯಗ್ರ (ವಿಂ) 1. ನವೀನವಾದ, ಹೊಸದಾದ. ಪ್ರತಿನವಮಗ್ರಮಸ್ಯ | "ದಂತಾನಾಮಧರಮಯಾವಕಂ ಪದಾನಿ ಪ್ರತ್ಯಗ್ರಾಸ್ತನುಮವಿಲೇಪನಾಂ ನಕ್ಷಾಕ್ಷಾಃ" ಮಾಘಂ ೮-೫೫ | 2. ಶುದ್ಧವಾದ.

ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಂ (ನಂ) 1. ವೇದಾಂಗಗಳಿಗೆ ಸಮಾನವಾದ -ಪುರಾಣಗಳು ನ್ಯಾಯಶಾಸ್ತ್ರ ಮೀಮಾಂಸಾ ಮತ್ತು ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ. 2. ದೇಹದಲ್ಲಿರುವ ಸಣ್ಣ ಸಣ್ಣ ಅವಯವಗಳು, ಪ್ರಧಾನವಾದ ಅಂಗಗಳನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಹುಟ್ಟುವ ಇತರ ಸೂಕ್ಷ್ಮಾವಯವಗಳು. ಪ್ರತಿಗತಮಜ್ಞಮ್ | ತಲೆ ಮೂಗು ಗಡ್ಡ ಹೊಟ್ಟೆ ಬೆನ್ನು ನಾಭಿ (ಹೊಕ್ಕಳು) ಹಣೆ ಹೊಕ್ಕಳಿನ ಕೆಳಭಾಗ (ಬಸ್ತಿ) ಕಂಠ (ಕುತ್ತಿಗೆ) ಕಿವಿಗಳು ಕಣ್ಣುಗಳು ಹುಬ್ಬುಗಳು ಶಂಖಗಳು (ಕಿವಿ ಮತ್ತು ಹುಬ್ಬುಗಳ ಮಧ್ಯೆ) ಹೆಗಲುಗಳು ಕೆನ್ನೆಗಳು ಕಕ್ಷಗಳು ಸ್ತನಗಳು ವೃಷಣಗಳು ಪಕ್ಕೆಗಳು ತೊಡೆಗಳು ಪಿರೇಗಳು ಮಂಡಿಗಳು ತೋಳುಗಳು ಮತ್ತು ಬೆರಳುಗಳು ಮುಂತಾದುವು. "ಮಸ್ತಕೋದರಪೃಷ್ಠ-



ನಾಭಿಲಲಾಟನಾಸಾಚಿಬುಕಬಸ್ತಿಗ್ರೀವಾ ಇತ್ಯೇತಾ ಏಕೇಕಾಃ । ಕರ್ಣ-  
ನೆತ್ರ ಭ್ರೂಶ್ಚಾಂಗಗಂಧಕಕ್ಷಸ್ತನವಕ್ಷಣವೃಷಣಪಾರ್ಶ್ವಸ್ಥಿಗ್ಜಾನ್ತು-  
ಕೂಪರಬಾಹುಪ್ರಮತಯೋ ದ್ವೇ ದ್ವೇ ವಿಶತಿರಡ್ಗುಲಯಃ ಸ್ತೋತಾಸಿ ಚ ।  
ಏಷ ಪ್ರತ್ಯಜ್ಞವಿಭಾಗಃ "ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೪-೪ । (ಅವ್ಯಂ)  
3. ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಅಂಗದಲ್ಲಿಯೂ. 4. ಪ್ರತಿಯೊಂದು  
ಅಂಗವನ್ನೂ.

**ಪ್ರತ್ಯಯಮುಖ ಪ್ರತ್ಯಯಜ್ಞಮುಖ (ವಿಂ)** 1. ಪಶ್ಚಿಮಾಭಿಮುಖ  
ವಾದ, ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕಿಗೆ ತಿರುಗಿಕೊಂಡಿರುವ. ಪ್ರತ್ಯಕ್ ಮುಖ  
ಯಸ್ಯ । "ಆಯುಷ್ಯಂ ಪ್ರಾಡ್‌ಮುಖೋ ಭುಕ್ತೇ ಯಶಸ್ಯಂ ದಕ್ಷಿಣಾಮುಖಃ ।  
ಶ್ರಿಯಂ ಪ್ರತ್ಯಡ್‌ಮುಖೋ ಭುಕ್ತೇ ಶ್ರುತಂ ಭುಕ್ತೇಹ್ಯದಡ್‌ಮುಖಃ"   
ಮನುಂ ೨-೪೨ । 2. ಹಿಮ್ಮುಖವಾದ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತಿರುಗಿದ.

**ಪ್ರತ್ಯನಂತರ ಪ್ರತ್ಯನಂತರ (ವಿಂ)** 1. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ,  
ಬಹಳ ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರುವ. ಪ್ರತಿಪ್ರಾಪ್ತಮನಂತರಮ್ । 2.  
ಸಮೀಪ ಸಂಬಂಧಹೊಂದಿರುವ, ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಸೇರಿದಂತಿ  
ರುವ. "ಆಜೀವಸ್ತು ಯೋಕ್ತೇನ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಃ ಸ್ವೇನ ಕರ್ಮಣಾ ।  
ಜೀವೇತ್ ಕ್ಷತ್ರಿಯಧರ್ಮೇಣ ಸ ಹ್ಯಸ್ಯ ಪ್ರತ್ಯನಂತರಃ" ಮನುಂ  
೧೦-೮೧ । (ಅವ್ಯಂ) 3. ಕೂಡಲೆ, ಮರುಕ್ಷಣದಲ್ಲಿ.

**ಪ್ರತ್ಯನಿಲ ಪ್ರತ್ಯನಿಲ (ಅವ್ಯಂ)** 1. ಗಾಳಿಗೆ ಎದುರಾಗಿ,  
ಗಾಳಿಗೆ ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ. 2. ಗಾಳಿಗೆ ಪ್ರತಿಯಾಗಿ,  
ಗಾಳಿಗೆ ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ.

**ಪ್ರತ್ಯನೀಕ ಪ್ರತ್ಯನೀಕ (ಪುಂ)** 1. ಶತ್ರು, ವೈರಿ, ಹಗೆ.  
ಪ್ರತಿಗತಃ ಅನೀಕಂ ಯುದ್ಧಮ್ । (ನಂ) 2. ಶತ್ರುಸೈನ್ಯ. "ಶ್ರುತೇಽಪಿ  
ತ್ವಾ ನ ಭವಿಷ್ಯಂತಿ ಸರ್ವೇ ಯೇವಸ್ಥಿತಾಃ ಪ್ರತ್ಯನೀಕೇಷು  
ಯೋಧಾಃ" ಗೀತಾ ೧೧-೩೨ । 3. ಶತ್ರುತ್ವ, ಹಗೆತನ, ವೈರಿ.  
4. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. ಬಲಿಷ್ಠನಾದ  
ಶತ್ರುವನ್ನು ಎದುರಿಸಲು ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದೆ ಶತ್ರುಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ  
ತನ್ನ ಪರಾಕ್ರಮ ಪ್ರದರ್ಶನ ಮಾಡುವುದು (ಶತ್ರುಪಕ್ಷಕ್ಕೆ  
ಮಾಡುವ ಪ್ರತೀಕಾರವು) "ಪ್ರತ್ಯನೀಕಾಲಂಕಾರ".  
ಇದರ ಲಕ್ಷಣಃ "ಪ್ರತ್ಯನೀಕಂ ಬಲವತಃ ಶತ್ರೋಃ ಪಕ್ಷ  
ಪರಾಕ್ರಮಃ" । ಉದಾಃ "ಜೈತ್ರನೇತ್ರಾನುಗೌ ಕರ್ಣಾವಿತ್ಪಲಾಮ್ಯಾಮಃ  
ಕೃತೌ" । ಕಾಂತಿಸಂಹಿತೆಯರ್ಥಗಳಿಂದ ತನ್ನನ್ನು ಜಯಿಸಿದ  
ನೇತ್ರಗಳೊಡನೆ ಸ್ಪರ್ಧಿಸಲು ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದೆ ಉತ್ಪಲಗಳಿಂದ  
ನೇತ್ರಸಮೀಪವರ್ತಿಯಾದ ಕರ್ಣಗಳು ತಿರಸ್ಕೃತವಾದುವು  
ಎಂದು ಶತ್ರುಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಪ್ರತೀಕಾರವರ್ಣನೆಯಿರುವುದ  
ರಿಂದ ಪ್ರತ್ಯನೀಕಾಲಂಕಾರ.

**ಪ್ರತ್ಯನುಮಾನ ಪ್ರತ್ಯನುಮಾನ (ನಂ)** ಎರಡೆರಡಾದ ಅನು  
ಮಾನ, ಪ್ರತೀಕೂಲವಾದ ಅನುಮಾನ. ಪ್ರತಿರೂಪಮನುಮಾನಮ್ ।  
"ಪರ್ವತೋ ವಹ್ನಿಮಾನ್ ಭೂಮಾತ್" ಎಂದು ಹೇಳಿದ್ದಕ್ಕೆ "ಪರ್ವತೋ

ನ ವಹ್ನಿಮಾನ್ ಪಾಷಾಣಮಯತ್ವಾತ್" ಎಂದು ಪ್ರತೀವಾದಿಯು  
ಹೇಳುವುದು ಪ್ರತ್ಯನುಮಾನ.

**ಪ್ರತ್ಯಂತ ಪ್ರತ್ಯಂತ (ಪುಂ)** 1. ಗಡಿ, ಸರಹದ್ದು, ಎಲ್ಲೆಯ  
ಪ್ರದೇಶ. ಪ್ರತಿಗತಃ ಅಂತಮ್ । "ಸ ಗುಪ್ತಮೂಲಪ್ರತ್ಯಂತಃ  
ಶುದ್ಧಪಾರ್ಷ್ಣೀಯಾನ್ವಿತಃ" ರघುಂ ೪-೨೬ । 2. ಮೇಚ್ಛದೇಶ.  
(ವಿಂ) 3. ಗಡಿಯಲ್ಲಿರುವ, ಅಂಚಿನಲ್ಲಿರುವ, ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ  
ಸೇರಿದಂತಿರುವ.

**ಪ್ರತ್ಯಂತಪರ್ವತ ಪ್ರತ್ಯಂತಪರ್ವತ (ಪುಂ)** ಪರ್ವತದ ಸುತ್ತಲೂ  
ಇರುವ ಗುಟ್ಟುಗಳು, ಬೆಟ್ಟದ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಸಣ್ಣ  
ಗುಟ್ಟುಗಳು. ಪ್ರತ್ಯಂತೇ ಮಹಾದ್ವೀಪಾಃ ಸಮೀಪೇ ಪರ್ವತಾಃ ।

**ಪ್ರತ್ಯಭಿಜ್ಞಾ ಪ್ರತ್ಯಭಿಜ್ಞಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗುರುತಿನ ವಸ್ತುವಿನಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಪೂರ್ವಸ್ಪರ್ಶ. ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಅನುಭವಿಸಿದ  
ವಸ್ತುವಿನ ದರ್ಶನದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಹಿಂದಿನ ನೆನಪು.  
ಪ್ರತಿಗತಾ ಅಭಿಜ್ಞಾಮ್ । ಒಂದು ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಕಡೆ  
ನೋಡಿದ್ದ ವಸ್ತುವನ್ನು ಮತ್ತೆ ನೋಡಿದಾಗ ಪೂರ್ವ  
ಸಂಸ್ಕಾರದಿಂದ ಅದೇ ಈ ವಸ್ತುವೆಂಬ ನೆನಪುಂಟಾಗುವುದು  
ಪ್ರತ್ಯಭಿಜ್ಞೆ. "ತದೇಶಕಾಲವೃತ್ತಿತ್ವರೂಪತತ್ತ್ವಾಸಂಸ್ಕಾರಾತ್ ಸ  
ಏವಾಯಂ ಛಟಃ ಇತಿ ಪ್ರತ್ಯಭಿಜ್ಞಾ ಜಾಯತೇ । "ಸಂಭ್ರವಿಲಾಸಮಥ  
ಸೌಜ್ಯಮಿತಿವ ನಾಮ ಸಪ್ರತ್ಯಭಿಜ್ಞಾಮಿವ ಮಾಮವಲೋಕ್ಯ ತಸ್ಯಾಃ"   
ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೮ ।

**ಪ್ರತ್ಯಭಿಜ್ಞಾತ ಪ್ರತ್ಯಭಿಜ್ಞಾತ (ವಿಂ)** ಗುರುತಿನಿಂದ ಕಂಡು  
ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪ್ರತ್ಯಭಿಜ್ಞಾದರ್ಶನ ಪ್ರತ್ಯಭಿಜ್ಞಾದರ್ಶನ (ನಂ)** ಪ್ರತ್ಯಭಿಜ್ಞಾ  
ಶಾಸ್ತ್ರ.

**ಪ್ರತ್ಯಭಿಯೋಗ ಪ್ರತ್ಯಭಿಯೋಗ (ಪುಂ)** ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಮಾಡುವ  
ಅಪಕಾರ, ಅಪರಾಧಿಯ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಪ್ರತೀ  
ಕಾರ. ಪ್ರತಿರೂಪೋಽಭಿಯೋಗಃ ।

**ಪ್ರತ್ಯಭಿವಾದ ಪ್ರತ್ಯಭಿವಾದ (ಪುಂ)** ಮಾಡಿದ ನಮಸ್ಕಾರಕ್ಕೆ  
ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಮಾಡುವ ಅಶೀರ್ವಾದ. ಪ್ರತಿ + ಅಭಿ + ವದ  
(ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಚ್ "ಭವ್" (೩-೩-೧೮) ।  
ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । -ವಾದನಮ್ -ವಾದನಮ್.

**ಪ್ರತ್ಯಯ ಪ್ರತ್ಯಯ (ಪುಂ)** 1. ವಿಶ್ವಾಸ, ನಂಬಿಕೆ. ಪ್ರತಿ+ಇನ್  
(ಗತೌ) "ಅನ್" (೩-೩-೫೬) । "ಸೂಯೋ ದೃಷ್ಟಪ್ರತ್ಯಯಾಃ  
ಪ್ರಾಪ್ತಸಂಜ್ಞಾಃ ಸಾಧೀಯಸ್ತೇ ಯದ್ರಣಾಯಾದ್ರಿಯಂತೇ" ಮಾಘಂ ೧೮-೬೩ ।  
2. ಕಾರಣ, ಹೇತು. "ಅಪೇಕ್ಷತೇ ಪ್ರತ್ಯಯಮುತ್ತಮಂ ತ್ವಾಂ ಬೀಜಾಡ್‌ಕುರಃ  
ಪ್ರಾಗ್‌ದಯಾದಿವಾಮ್ಭಃ" ಕುಮಾರಂ ೩-೧೮ । 3. ಶಪಥ,  
ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. ಪ್ರತಿಯತೇಜೇನ ಕರಂ "ಅಚ್" । 4. ಜ್ಞಾನ, ಅರಿವು,  
ಪರಿಜ್ಞಾನ. "ಸ್ಥಾನಪ್ರತ್ಯಯಾತ್ ವಯಮೇವಂತಕಿಣಃ" ಶಾಕುಂ ೭ ।



5. ಅಧೀನ, ಪರತಂತ್ರ. 6. ಪ್ರಾತಿಪದಿಕದ ಮುಂದೆ ಅದರ ಅರ್ಥಜ್ಞಾನಕ್ಕಾಗಿ ವಿಧಿಸಲ್ಪಡುವ ಸುಬಾದಿ ಪ್ರತ್ಯಯ. ಸುಪ್ ತಿಕ್ ಕೃತ್ ಮತ್ತು ತದ್ವಿತ್ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು. "ಪ್ರಕೃತಿಮವಧೀಕೃತೃ ವಿಧೀಯಮಾನಃ ಸ್ವಾರ್ಥಬೋಧಕಃ ಶಬ್ದವಿಶೇಷಃ ಪ್ರತ್ಯಯಃ | ಸ್ವೀಯಮರ್ಥ ಪ್ರತ್ಯಾಯಯತಿ" ಇತಿ भाष्यम् | "केवलं दधति कर्तृवाचिनः प्रत्ययानिह न जातु कर्मणि | धातवः सृजतिसंहृशास्तयः स्तोतिरत्र विपरीतकारकः" भाष० १४-६६ | 7. ಬುದ್ಧಿ, ಜ್ಞಾನ. 8. ರಂಧ್ರ, ಎವರ, ತೂತು. 9. ಆಚಾರ. 10. ಪ್ರಾತಿ, ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ. 11. ನಿಶ್ಚಯ, ನಿರ್ಣಯ. "यदि संशय एव स्यात् लिङ्गानामपि दर्शने | साक्षिप्रत्यय एव स्यात् सीमावादविनिर्णयः" मनु० ८-२५३ | 12. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. सहितान् प्रत्याययति विस्मययति | "योजसौ प्रत्याययति तान् प्रत्ययः समुदाहृतः" इति निरुक्तिः | "अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः" वि० सं० | "प्रत्ययो ज्ञानरन्ध्रयोः | विश्वासे शपथे हेतावाचारप्रथितत्वयोः | अधीने निश्चये स्वादौ" हेम० | (वि०) 13. ಸ್ವಾದುವಾದ, ಸಹಿಯಾದ. 14. ಸಹಾಯಕ, ಒತ್ತಾಸೆಮಾಡುವವನು. "प्रत्याः सहकारिणः" त्रिकाण्ड० |

ಪ್ರತ್ಯಯಕಾರಕ ಪ್ರತ್ಯಯಕಾರಕ (ವಿಂ) ನಂಬಿಕೆಯನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವವನು. ಪ್ರತ್ಯಯಂ ಕರೋತಿ-ಛಕ್ರಾನ್ (ಕರಣಂ) "ಫ್ವಲ್" (३-१-१३३) | "णिनिः" (३-१-१३४) | -ಕಾರಿ -ಕಾರಿಣಿ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (४-१-५) | -ಕಾರಿಣಿ -ಕಾರಿಣೀ. ಮುದ್ರೆ, ಮುದ್ರಿಕೆ, ಮೊಹರು.

ಪ್ರತ್ಯಯಿತ ಪ್ರತ್ಯಯಿತ (ವಿಂ) 1. ಆಪ್ತ. 2. ನಂಬಿಕೆ ವವನು, ನಂಬಿಕೆ ಹೊಂದಿರುವವನು. ಪ್ರತ್ಯಯೋಜ್ಯ ಸಂಜಾತಃ "इतच्" (५-२-३६) | "तच्छ्रुत्वा व्यसृजद्राजा सोऽथ प्रत्ययितान् द्विजान्" कथास० |

ಪ್ರತ್ಯಯಿನ್ ಪ್ರತ್ಯಯಿನ್ (ವಿಂ) ನಂಬಿಕೆಯುಳ್ಳವನು. ಪ್ರತ್ಯಯೋಜ್ಯಾಸ್ತಿ "इनिः" (५-२-११५) |

ಪ್ರತ್ಯಯಿನ್ ಪ್ರತ್ಯಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಶತ್ರು, ವೈರಿ, ಹಗೆ. ಪ್ರತಿಕೂಲಮ್ ಅರ್ಥಯಿತುಂ ಶೀಲಃ-ಪ್ರತಿ+ಅರ್ಥ (उपयाच्यायाम्) "णिनिः" (३-२-७८) | "प्रत्ययिपार्थिवपयोनिधिमाथ-मन्यपृथ्वीधरः पृथुरयं मधुराधिनाथः" नैष० ११-१०३ | 2. ವಿರೋಧಿ, ಪ್ರತಿಷ್ಠೆ, ಎದುರಾಳಿ. 3. (ನ್ಯಾಯಾಂಗ ಗಳಲ್ಲಿ) ಪ್ರತಿವಾದಿ, ವಾದಿಯ ಎದುರಾಳಿ. "स धर्मस्थ-सखः शश्वत् अर्थिप्रत्ययिनां स्वयम् | ददर्श संशयच्छेद्यान् व्यवहारानतन्द्रितः" रघु० १७-३९ |

ಪ್ರತ್ಯರ್ಪಣ ಪ್ರತ್ಯರ್ಪಣ (ನಂ) ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕೊಡುವುದು, ವಸ್ತುವಿನ ಯಜಮಾನನಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಕೃ (गतौ) + णिच् "ल्युट्" (३-३-११५) | "धरायां तस्य संरम्भं सीताप्रत्यर्पणैषिणः" रघु० १५-८८ |

ಪ್ರತ್ಯರ್ಪಣೀಯ ಪ್ರತ್ಯರ್ಪಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಒಪ್ಪಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಒಪ್ಪಿಸಬೇಕಾದ, -ಕೊಡಬೇಕಾದ. ಪ್ರತಿ+ಕೃ (गतौ) + णिच् "अनीयर्" (३-१-९६) | "तव्यः" (३-१-९६) | -यितव्यः -ಯಿತವ್ಯಃ.

ಪ್ರತ್ಯರ್ಪಯತ್ ಪ್ರತ್ಯರ್ಪಯತ್ (ವಿಂ) ಹಿಂತಿರುಗಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಒಪ್ಪಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ಕೃ (गतौ) + णिच् "शतृ" (३-२-१२४) | ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (४-१-६) | -यन्तो -ಯನ್ತೃಃ.

ಪ್ರತ್ಯರ್ಪಿತ ಪ್ರತ್ಯರ್ಪಿತ (ವಿಂ) ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಒಪ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿ + ಕೃ (गतौ) + णिच् "क्तः" (३-२-१०२) |

ಪ್ರತ್ಯವಮರ್ಶ ಪ್ರತ್ಯವಮರ್ಶ (ಪುಂ) ಅನುಸಂಧಾನ, ಧ್ಯಾನ, ಚಿಂತನೆ. ಪ್ರತಿ + ಅವ + ಮೃಶ (आमर्शने) "घञ्" (३-३-१८) | "ल्युट्" (३-३-११५) | -अवमर्शनम् -ಅವಮರ್ಶನಮ್.

ಪ್ರತ್ಯವರ ಪ್ರತ್ಯವರ (ವಿಂ) ಬಹಳ ನಿಕೃಷ್ಟವಾದ. ಪ್ರತಿರೂಪಿಃ ಖರಃ | "प्रतिग्रहाद्याजनाद्वा तथैवाध्यापनादपि | प्रतिग्रहः प्रत्यवरः प्रेत्य विप्रस्य गर्हितः" मनु० १०-१०९ | "मत्तः प्रत्यवरः कश्चित् नास्ति सुग्रीवसन्निधौ" रामा० |

ಪ್ರತ್ಯವರೋಧ ಪ್ರತ್ಯವರೋಧ (ಪುಂ) ತಡೆಯುವುದು, ವಿಘ್ನ ವಂಟುಮಾಡುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಅವ + ಠಿರ್ (आवरणे) "घञ्" (३-३-१८) | "ल्युट्" (३-३-११५) | -अवरोधनम् -ಅವರೋಧನಮ್.

ಪ್ರತ್ಯವಸನ ಪ್ರತ್ಯವಸನ (ನಂ) ಭೋಜನ. "अभ्यवहारः प्रत्यवसनं भोजनं जग्धिः" हला० |

ಪ್ರತ್ಯವಸಾನ ಪ್ರತ್ಯವಸಾನ (ನಂ) ಭೋಜನ, ಊಟ. ಪ್ರತಿ+ಅವ+ಘೋ (अन्तकर्मणि) "ल्युट्" (३-३-११५) | "जग्धिः प्रत्यवसानं च भक्षणं भोजनाशने" वैद्यकरत्न-माला |

ಪ್ರತ್ಯವಸಿತ ಪ್ರತ್ಯವಸಿತ (ವಿಂ) ಭಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿ+ಅವ+ಘೋ (अन्तकर्मणि) "क्तः" (३-२-१०२) |

ಪ್ರತ್ಯವಸ್ಯತ್ ಪ್ರತ್ಯವಸ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಊಟಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಭಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ+ಅವ+ಘೋ (अन्तकर्मणि) "शतृ" (३-२-१२४) | "अभीलानि प्राणिनः प्रत्यवस्यन् कालो



ನುನಂ ವ್ಯಾಧದಾವಾನನಾನಿ " ಮಾಘಂ ೧೮-೭೮ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಢಿಪ್" (೪-೧-೬) । -ಅವಸ್ಥಾಂತಿ -ಅವಸ್ಥಾಂತಿ.

ಪ್ರತ್ಯಯಸ್ಕಂದ ಪ್ರತ್ಯಯಸ್ಕಂದ (ಪುಂ) (ನ್ಯಾಯಾಂಗ ವ್ಯವಹಾರದಲ್ಲಿ) ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಉತ್ತರಗಳಲ್ಲೊಂದಂ ವಿಧ ಉತ್ತರ.

ಪ್ರತ್ಯಯಸ್ಥಾ ಪ್ರತ್ಯಯಸ್ಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರತಿಪಕ್ಷವಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವಿಕೆ. ವಿರುದ್ಧಪಕ್ಷವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪ್ರತಿ + ಅವ + ಣಾ (ಗತಿनिवृत्तौ) "ಅಖ್" (೩-೩-೧೦೬) । ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) । -ಅವಸ್ಥಾನಮ್ -ಅವಸ್ಥಾನಮ್ ಸಾಧಾರ್ಮ್ಯ ಮತ್ತು ವೈಧಾರ್ಮ್ಯಗಳಿಂದ ಪಕ್ಷ ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಗಳು ವಿರ್ಪಡುವುವು. "ಸಾಧಾರ್ಮ್ಯವೈಧಾರ್ಮ್ಯಾಂ ಪ್ರತ್ಯಯಸ್ಥಾನಮ್" ।

ಪ್ರತ್ಯಯಸ್ಥಾತ್ ಪ್ರತ್ಯಯಸ್ಥಾತ್ಯ (ವಿಂ) ಶತ್ರು, ಪ್ರತಿಪಕ್ಷ. ಪ್ರತಿ+ಅವ+ಣಾ (ಗತಿनिवृत्ತौ) "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩) । ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಿಯಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವುದರಿಂದ ಶತ್ರುವಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು.

ಪ್ರತ್ಯಯಹಾರ ಪ್ರತ್ಯಯಹಾರ (ಪುಂ) 1. ಸಂಹಾರ, ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶ, ಪ್ರಳಯ. ಪ್ರತಿ + ಅವ + ಹ್ (ಹರಣೇ) ಭಾವೇ "ಖ್" (೩-೩-೧೮) । "ಮಾನ್ಯಃ ಸ ಮೇ ಸ್ಥಾವರಜಙ್ಗಮಾನಾಂ ಸಂಸ್ಥಿತಪ್ರತ್ಯಯಹಾರೇತುಃ" ರಘುಂ ೨-೪೪ । 2. (ಸೈನ್ಯವನ್ನು) ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, (ಯುದ್ಧದಿಂದ) ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಬರಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. "ತತಃ ಪ್ರತ್ಯಯಹಾರೋಽಭೂತ್ಸೇನಾನಾಂ ರಾಜವಾಜಯಾ" ಭಾಂ ವನಂ ೨೮೫-೪೧ ।

ಪ್ರತ್ಯವಾಯ ಪ್ರತ್ಯವಾಯ (ಪುಂ) 1. ಪಾಪ, ದುರಿತ. ಪ್ರತ್ಯವಯತೇ — ಪ್ರತಿ + ಅವ + ಅಯ (ಗತೌ) "ಖ್" (೩-೩-೧೧೫) । "ಕ್ಷಯಂ ಕೇಚಿದುಪಾತ್ತಸ್ಯ ದುರಿತಸ್ಯ ಪ್ರವಕ್ಷತೇ । ಅನುತ್ಪತ್ತಿಃ ತಥಾಚಾನ್ಯೇ ಪ್ರತ್ಯವಾಯಸ್ಯ ಮನ್ವತೇ" ಜಾಬಾಲಿಃ । 2. ದುರಾಚಾರ, ವಿಪರೀತವಾದ ಆಚಾರ, ವಿರುದ್ಧವಾದ ಆಚಾರ, ಶಾಸ್ತ್ರ ವಿರುದ್ಧವಾದ ನಡವಳಿಕೆ. "ಉತ್ತಮಾನುತ್ತಮಾನ್ ಗಂಜನ್ ಹೀನಾನ್ ಹೀನಾಂಶ್ಚ ವರ್ಜಯನ್ । ಬ್ರಾಹ್ಮಣಃ ಶ್ರೇಷ್ಠತಾಮೇತಿ ಪ್ರತ್ಯವಾಯೇನ ಶೂದ್ರತಾಮ್" ಮನುಂ ೪-೨೪೫ । 3. ವಿಹಿತವಾದುದನ್ನು ಆಚರಿಸದಿರುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾದ ದೋಷ. "ಯಾವದಹಂಕರಣಂ ಕಿಲ ಸಾಧೋಃ ಪ್ರತ್ಯವಾಯಧೃತಯೇ ನ ಗುಣಾಯ" ನೆಫಂ ೫-೯ ।

ಪ್ರತ್ಯವೇಕ್ಷಣ ಪ್ರತ್ಯವೇಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಪೂರ್ವಾಪರ ವಿಷಯಗಳ ಪರ್ಯಾಯೋಚನೆ, ವಿಷಯವನ್ನು ಎಚ್ಚರದಿಂದ ಯೋಚಿಸುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಅವ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಮಾಡಿದ ಮತ್ತು ಮಾಡಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯಗಳ ಚಿಂತನೆ. ಭಾವೇ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩) । -ಅವೇಕ್ಷಾ -ಅವೇಕ್ಷಾ. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡುವಿಕೆ.

4. ಹಿಂತಿರುಗಿ ನೋಡುವುದು. "ಪ್ರತ್ಯವೇಕ್ಷಣಪದಂ ಪ್ರತಿಹಿ ಮಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೭-೧೧೭ ।

ಪ್ರತ್ಯವೇಕ್ಷಿತ ಪ್ರತ್ಯವೇಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪರಿಶೀಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಜಾಗರೂಕತೆಯಿಂದ ಯೋಚಿಸಿ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿ + ಅವ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಮಹಾರಾಜ, ಪ್ರತ್ಯವೇಕ್ಷಿತಾಃ ಪ್ರಮದವನಭೂಮಯಃ" ಶಾಕುಂ ೬ ।

ಪ್ರತ್ಯವೇಕ್ಷ್ಯ ಪ್ರತ್ಯವೇಕ್ಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಯೋಚಿಸಿ ವಿಚಾರ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಜಾಗರೂಕತೆಯಿಂದ ವಿಮರ್ಶಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರತಿ + ಅವ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) "ಪ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) । "ಭವ್ಯಮುಖ್ಯಾ ಸಮಾರಂಭಾಃ ಪ್ರತ್ಯವೇಕ್ಷ್ಯಾ ನಿರತ್ಯಯಾಃ" ರಘುಂ ೧೭-೫೩ । 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡಲ್ಪಡುವ.

ಪ್ರತ್ಯಯಮ್ ಪ್ರತ್ಯಯಮ್ (ಪುಂ) ಕೆಂಪು ಸಂಖ್ಯೆಕಲ್ಲು, ಒಂದು ಗೈರಿಕ ಧಾತು. ಪ್ರತಿರೂಪಃ ಅಸ್ಮಾ । "ಪ್ರತ್ಯಯಮಾ ಗಿರಿಮತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಪ್ರತ್ಯಹಮ್ ಪ್ರತ್ಯಹಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಪ್ರತಿದಿನವೂ, ನಿತ್ಯವೂ. ಅಹನ್ಯಹನಿ — ಅವ್ಯಯಿಂ । "ಗಿರಿಶಮುಪವಚಾರ ಪ್ರತ್ಯಹಂ ಸಾ ಸುಕೇಶಿ" ಕುಮಾಂ ೧-೬೦ ।

ಪ್ರತ್ಯಾಕಾರ ಪ್ರತ್ಯಾಕಾರ (ಪುಂ) ಖಡ್ಗಕೋಶ, ಕತ್ತಿಯಬರೆ. ಪ್ರತಿರೂಪಃ ಖಡ್ಗಸದೃಶಃ ಆಕಾರೋಽಸ್ಯ ।

ಪ್ರತ್ಯಾಖ್ಯಾತ ಪ್ರತ್ಯಾಖ್ಯಾತ (ವಿಂ) 1. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರಾಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । 2. ತಳ್ಳಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪ್ರತ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಪ್ರತ್ಯಾಖ್ಯಾನ (ನಂ) 1. ತಿರಸ್ಕಾರ, ನಿರಾಕರಣೆ. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) । "ಪ್ರತ್ಯಾಖ್ಯಾನಪರಾಙ್ಮುಖಃ ಪ್ರಿಯತಮೋ ಗಂತ್ವಂ ಪ್ರವೃತ್ತೋಽಧುನಾ" ಅಮರಂ ೮೭ । 2. ತಳ್ಳಿಹಾಕುವುದು.

ಪ್ರತ್ಯಾಗತ ಪ್ರತ್ಯಾಗತ (ವಿಂ) ಹಿಂತಿರುಗಿ ಬಂದ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಬಂದ. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) । "ಪ್ರತ್ಯಾಗತಂ ತ್ವಾಸ್ಮಿ ಕೃತಾರ್ಥಮೇವ ಸ್ತನೋಪಪಿಡಂ ಪರಿರಂಭುಕಾಮಾ" ಕಿರಾಂ ೩-೫೪ ।

ಪ್ರತ್ಯಾಗತಿ ಪ್ರತ್ಯಾಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಬರುವುದು, ಹಿಂತಿರುಗಿ ಬರುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) ।

ಪ್ರತ್ಯಾಗಮ ಪ್ರತ್ಯಾಗಮ (ಪುಂ) ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಬರುವುದು, ಹಿಂತಿರುಗಿ ಬರುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೮) । "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) । -ಆಗಮನಮ್ -ಆಗಮನಮ್.



**ಪ್ರತ್ಯಾದಾನ ಪ್ರತ್ಯಾದಾನ (ನಂ)** ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಡಾನ್ (ದಾನ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

**ಪ್ರತ್ಯಾದಿಷ್ಟ ಪ್ರತ್ಯಾದಿಷ್ಟ (ವಿಂ)** 1. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ನಿರಾಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರತಿ + ಆ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "ಪ್ರತ್ಯಾದಿಷ್ಟವಿಶೇಷಮಂಡನವಿಧಿ-ವಿಮಪ್ರಕೋಷಾಪಿತಮ್" ಶಾಕುಂ 6-6। 2. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ದೂಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ರಕ್ಷಾಗೃಹಗತಾ ದೀಪಾಃ ಪ್ರತ್ಯಾದಿಷ್ಟಾ ಇವಾಭವನ್" ರಘುಂ 10-66।

**ಪ್ರತ್ಯಾದೇಶ ಪ್ರತ್ಯಾದೇಶ (ಪುಂ)** 1. ತಿರಸ್ಕಾರ, ನಿರಾಕರಣೆ. ಪ್ರತಿ + ಆ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಛತ್" (3-3-114)। "ಪ್ರತ್ಯಾದೇಶಾದಪಿ ಚ ಮಧುನೋ ವಿಸ್ಮೃತಭ್ರವಿಲಾಸಮ್" ಮೇಘಂ 2-32। 2. ಅವಮಾನ, ಅವಜ್ಞೆ. "ಸುಕುಮಾರಂ ಪ್ರಹರಣಂ ಮಹೇಂದ್ರಸ್ಯ, ಪ್ರತ್ಯಾದೇಶೋ ರೂಪಗವಿತಾಯಾಃ ಶ್ರೀಗೌರಿಯಾಃ ಅಲಂಕಾರಃ ಸರ್ಗಸ್ಯ" ವಿಕ್ರಂ 1।

**ಪ್ರತ್ಯಾಧಾನ ಪ್ರತ್ಯಾಧಾನ (ನಂ)** ಪುನರಾಧಾನ, ದ್ವಿತೀಯ ವಿವಾಹವಾದ ನಂತರ ಮಾಡುವ ಅಗ್ನಿಸಂಧಾನ. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಡಾನ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

**ಪ್ರತ್ಯಾನಯನ ಪ್ರತ್ಯಾನಯನ (ನಂ)** ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತರುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಣಿನ್ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

**ಪ್ರತ್ಯಾಪತ್ತಿ ಪ್ರತ್ಯಾಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಪುನಃ ಬರುವುದು, ಹಿಂತಿರುಗಿ ಬರುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)। 2. ಪೈರಾಗ್ಯ, ಪ್ರಪಂಚವ್ಯವಹಾರದಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿಯನ್ನು ತೊರೆದುಬಿಡುವಿಕೆ.

**ಪ್ರತ್ಯಾಮ್ನಾತ ಪ್ರತ್ಯಾಮ್ನಾತ (ವಿಂ)** ಪ್ರತಿನಿಧಿಯಾಗಿ ಗೊತ್ತು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಬದಲಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಮ್ನಾ (ಅಮ್ಯಾಸೇ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

**ಪ್ರತ್ಯಾಮ್ನಾಯ ಪ್ರತ್ಯಾಮ್ನಾಯ (ಪುಂ)** ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ವಿಧಿಸಲ್ಪಡುವ ವಸ್ತು, ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ವಿಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ವಸ್ತುವು ದುರ್ಲಭವಾಗಿದ್ದು ಅದಕ್ಕೆ ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ವಿಹಿತವಾದ ವಸ್ತು. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಮ್ನಾ (ಅಮ್ಯಾಸೇ) ಕರ್ಮಂ "ಛತ್" (3-3-114)। "ಯುಕ್" (3-3-33)।

**ಪ್ರತ್ಯಾಯಕ ಪ್ರತ್ಯಾಯಕ (ವಿಂ)** 1. ವಿಶ್ವಾಸವುಂಟು ಮಾಡುವ, ನಂಬಿಕೆಯುಂಟುಮಾಡುವ. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಇನ್ (ಗತೌ) "ಫ್ಲುಲ್" (3-1-133)। 2. ಬೋಧಿಸುವ, ತಿಳಿಸುವ.

**ಪ್ರತ್ಯಾಯನ ಪ್ರತ್ಯಾಯನ (ನಂ)** 1. ವಿಶ್ವಾಸವುಂಟುಮಾಡುವುದು, ನಂಬಿಕೆ ಹುಟ್ಟಿಸುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಇನ್ (ಗತೌ) + ಣಿನ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ಬೋಧಿಸುವುದು, ತಿಳಿಸುವುದು.

**ಪ್ರತ್ಯಾಯಿತ ಪ್ರತ್ಯಾಯಿತ (ವಿಂ)** ನಂಬಿಕೆಯುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಇನ್ (ಗತೌ) + ಣಿನ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "ಪ್ರದರ್ಶಿತಾಪ್ತಭ್ರಮಣೇನ ನೂನಂ ಪ್ರತ್ಯಾಯಿತಾ ಮಂದರನರತೇನ" ಯಾದಂ 10-99।

**ಪ್ರತ್ಯಾಲಿಡ ಪ್ರತ್ಯಾಲಿಡ (ವಿಂ)** 1. ಬಿಲ್ಲುಗಾರನು ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ಬಾಣವನ್ನು ಹೂಡಿ ಹೊಂದು ಹಾಕಿ ಆಯವರಿತು ನಿಲ್ಲುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಲಿಹ (ಆಸ್ವಾದನ) "ಕ್ತಃ" (3-3-114)। (1) ಪ್ರತ್ಯಾಲಿಡ (2) ಆಲಿಡ (3) ಸಮಪದ (4) ವಿಶಾಖಿ ಮತ್ತು (5) ಮಂಡಲಗಳೆಂದು ಬಿಲ್ಲುಗಾರನ ಪಾದವಿನ್ಯಾಸವು ಐದು ಬಗೆ. "ಸ್ಯಾತ್ ಪ್ರತ್ಯಾಲಿಡಮಾಲಿಡಂ ಸಮಂ ಪಾದಂ ತಥಾಪರಮ್। ವೈಶಾಖಂ ಮಂಡಲಂ ಚೇತಿ ಧನ್ವಿನಾಂ ಸ್ಥಾನಪಂಚಕಮ್"। 2. ಅಸ್ವಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ರುಚಿನೋಡಲ್ಪಟ್ಟು.

**ಪ್ರತ್ಯಾವರ್ತನ ಪ್ರತ್ಯಾವರ್ತನ (ನಂ)** ಹಿಂತಿರುಗುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಬರುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಆ + ವೃತ್ (ವರ್ತನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

**ಪ್ರತ್ಯಾವೃತ್ತ ಪ್ರತ್ಯಾವೃತ್ತ (ವಿಂ)** 1. ಹಿಂತಿರುಗಿದ, ಹಿಮ್ಮೆಟ್ಟಿದ. ಪ್ರತಿ + ಆ + ವೃತ್ (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತಃ" (3-4-92)। "ಪ್ರತ್ಯಾವೃತ್ತಂ ಭಜ್ಜಭಾಜಿ ಸ್ವಸಂಯೇ ತುಲ್ಯಂ ಮುಕ್ತೇರಾಕಿರಂತಿ ಸ್ಮ ಕಚ್ಚಿತ್" ಮಾಘಂ 10-44। 2. ಮತ್ತೆ ಬಂದ, ಮತ್ತೆ ಸಂಭವಿಸಿದ. "ಪ್ರತ್ಯಾವೃತ್ತಮಹೋತ್ಸವೇನ ಮುಧಿತಾಂ ಪ್ರಾಪ್ತಃ ಪುರೀ ದ್ವಾರಕಾಮ್" ಯಾದಂ 23-62।

**ಪ್ರತ್ಯಾಶಾ ಪ್ರತ್ಯಾಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಇಷ್ಟವಾದ ವಸ್ತುವಿನ ನಿರೀಕ್ಷಣೆ, ಉತ್ಸಾಹದಿಂದ ಎದುರು ನೋಡುವುದು, ನಂಬಿಕೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹಾರೈಕೆ. ಪ್ರತಿ ಕಿಂಚಿದ್ವಸ್ತು ಪ್ರತಿ ಆಶಾ—ಪ್ರತಿ + ಆ + ಅಶ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಅಚ್" (3-1-134)। "ನ ಯತ್ರ ಪ್ರತ್ಯಾಶಾಮನುಪತತಿ ನೋ ವಾ ರಹಯತಿ ಪ್ರತಿಕ್ಷಿಪ್ತಂ ಚೇತಃ ಪ್ರವಿಶತಿ ಚ ಮೋಹಾನ್ವತಮಸಮ್" ಮಾಲತೀಂ 9-6। 2. ಆಸೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ, ತೃಷ್ಣೆ. "ಪ್ರತ್ಯಾಶಾಮಿರ್ಮದಸೋ ದಾರಿತಾನಿ" ಮಾಘಂ 10-96।

**ಪ್ರತ್ಯಾಶವಸ್ತ ಪ್ರತ್ಯಾಶವಸ್ತ (ವಿಂ)** 1. ಸಮಾಧಾನಗೊಂಡ. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಇವಸ (ಪ್ರಾಣನ) "ಕ್ತಃ" (3-4-92)। 2. ಮತ್ತೆ ಉಸಿರಾಡಿಕೊಂಡ. "ಪ್ರತ್ಯಾಶವಸ್ತಾಂ ಸಮಮನಿನವೇ-ಜಾಲಿಕೇಮಾಲಿತಿನಾಮ್" ಮೇಘಂ 2-34।



ಪ್ರತ್ಯಾಶ್ವಾಸ ಪ್ರತ್ಯಾಶ್ವಾಸ (ಪುಂ) ಸಮಾಧಾನಗೊಳ್ಳುವುದು, ಉಸಿರಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ಛ" (೩-೩-೧೮)।

ಪ್ರತ್ಯಾಶ್ವಾಸನ ಪ್ರತ್ಯಾಶ್ವಾಸನ (ನಂ) ಸಮಾಧಾನ ಪಡಿಸುವುದು, ಸಂತಯಿಸುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಪ್ರತ್ಯಾಶ್ವಾಸಿತ ಪ್ರತ್ಯಾಶ್ವಾಸಿತ (ವಿಂ) ಸಮಾಧಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಸಂತಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರತಿ+ಆ+ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ)+ ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಪ್ರತ್ಯಾಸತ್ತಿ ಪ್ರತ್ಯಾಸತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. (ಕಾಲ ಮತ್ತು ದೇಶಗಳ) ಸಾಮಾನ್ಯ, ಸಮಾಪಸಂಬಂಧ. 2. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಸಮಾನತೆ, ಸಾಮ್ಯ. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಪದ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪)।

ಪ್ರತ್ಯಾಸನ್ನ ಪ್ರತ್ಯಾಸನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಸಮಾಪದಲ್ಲಿರುವ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಪದ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। 2. ಸಂಪರ್ಕ ಹೊಂದಿರುವ, ಸಮಾಪ ಸಂಬಂಧವುಳ್ಳ. 3. ಸನ್ನಿಹಿತವಾಗಿರುವ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ. "ಪ್ರತ್ಯಾಸನ್ನ ದಂತಿನಿ ಪ್ರಾತಿಪಕ್ಷೇ ಯತ್ರಾ ನಾಗ: ಪ್ರಾಸ್ತವಕತ್ರಚ್ಚದೋಷಿ" ಮಾಘಂ ೧೮-೨೮।

ಪ್ರತ್ಯಾಸರ ಪ್ರತ್ಯಾಸರ (ಪುಂ) 1. ಸೇನೆಯ ಹಿಂಭಾಗ. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಸ್ (ಗತೌ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭)। "ಛ" (೩-೩-೧೨೧)। -ಆಸಾರ: -ಆಸಾರ: 2. ಸೇನೆಯ ಮೊಹ ರಚನೆ.

ಪ್ರತ್ಯಾಹತ ಪ್ರತ್ಯಾಹತ (ವಿಂ) ಕುರಿತಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ತಕ್ಕ ಕಡೆಮೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರತಿ+ಆ+ಹನ (ಹಿಸಾಗಲ್ಯಾ:) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಪ್ರತ್ಯಾಹತಾಸ್ತ್ರೋ ಗಿರಿಸಪ್ರಭಾವಾತ್ ಆತ್ಮನೈವಶಾಂ ಶಿಥಿಲೀಚಿಕಾರ" ರಘುಂ ೨-೪೧।

ಪ್ರತ್ಯಾಹರಣ ಪ್ರತ್ಯಾಹರಣ (ನಂ) 1. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತರುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಬರುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಆ + ಹ್ (ಹರಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ವಿಷಯಗಳಿಂದ ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ತಡೆದು ಸ್ವಾಧೀನದಲ್ಲಿ ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸಿ ನಿರ್ಬಂಧದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರ ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರ (ಪುಂ) 1. ಮನಸ್ಸು ಮತ್ತು ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ವಿಷಯಗಳಿಂದ ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು, ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸಿ ನಿರ್ಬಂಧದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಪ್ರತಿ+ಆ+ಹ್ (ಹರಣೆ) "ಛ" (೩-೩-೧೮)। ಇದು ಅಷ್ಟವಿಧ ಯೋಗಾಂಗಗಳಲ್ಲೊಂದು. (1) ಯಮ:

(2) ನಿಯಮ: (3) ಆಸನಮ್ (4) ಪ್ರಾಣಾಯಾಮ: (5) ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರ: (6) ಧಾರಣಾ (7) ಧ್ಯಾನಮ್ ಮತ್ತು (8) ಸಮಾಧಿ: ಇವು ಯೋಗದ ಎಂಟು ಅಂಗಗಳು. "ಯಮನಿಯಮಾಸನಪ್ರಾಣಾಯಾಮ-ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರಧಾರಣಾಧ್ಯಾನಸಮಾಧಯೋಷ್ಠಾವಜ್ಞಾನಿ" ಪಾಂ ಯಂ ಸುಂ ೨-೨೯। "ಶಬ್ದಾದಿಭವನುರಕ್ತಾನಿ ನಿಗೃಹ್ಯಾಕ್ಷಾಣಿ ಯೋಗವಿತ್। ಕುರ್ಯಾಚ್ಚಿತ್ತಾಂತಕಾರಿಣಿ ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರಪರಾಯಣ:" ವಿಷ್ಣುಪುಂ। 2. (ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಚತುರ್ಥಶ (ಹದಿನಾಲ್ಕು) ಮಾಹೇಶ್ವರಸೂತ್ರಗಳ ಇತ್ ಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ ಕೊನೆಯ ವರ್ಣದೊಡನೆ ಸೇರಿಸಿ ಹೇಳುವ ಮೊದಲನೆಯ ವರ್ಣಕ್ಕೂ ಅವೆರಡರ ಮಧ್ಯದ ವರ್ಣಗಳಿಗೂ ಹೇಳುವ ಒಂದು ಸಂಜ್ಞೆ. ಇದಕ್ಕೆ ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರವೆಂಬ ಸಂಜ್ಞೆ. "ಆದಿರನ್ತೇನ ಸಹಿತಾ" ಪಾಂ ಸುಂ ೧-೧-೭೧। "ಅನ್ತೇನ ಇತಾ ಸಹಿತ: ಆದಿ: ಮಧ್ಯಗಾಂ ಸ್ವಸ್ಯ ಚ ಸಂಜ್ಞಾ ಸ್ಯಾತ್" ಸಿಂ ಕೌಂ। ಅಇಙ್ ಎಂಬ ಸೂತ್ರದಲ್ಲಿ ಅಕಾರ ಮತ್ತು ಣ್ ವರ್ಣಗಳಿಗೆ ಮಾಡುವ ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರವು ಅಙ್। ಇಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ವರ್ಣವಾದ ಅಕಾರ ಮತ್ತು ಇತ್ ಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ ಣ್ ವರ್ಣಗಳ ಮಧ್ಯದ ವರ್ಣಗಳಾದ ಇ ಙ ವರ್ಣಗಳಿಗೂ ಅದಿವರ್ಣವಾದ ಅಕಾರಕ್ಕೂ ಗ್ರಹಣ. ಈ ರೀತಿ ಅಚ್ ಇಕ್ ಏಕ್ ಏಕ್ ಯಙ್ ಯರ್ ಲಙ್ ಅಲ್ ಇತ್ಯಾದಿ ಸಂಜ್ಞೆಗಳು ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರದಿಂದ ಸಿದ್ಧಿಸುವವು. ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರಗಳಲ್ಲಿ ಇತ್ ಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ ವರ್ಣಗಳಿಗೆ ಗ್ರಹಣವಿಲ್ಲ. "ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರೇಷ್ವಿತಾಂ ನ ಗ್ರಹಣಮ್" ಸಿಂ ಕೌಂ। ಅಚ್ ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರದಿಂದ ಎಲ್ಲಾ ಸ್ವರ ವರ್ಣಗಳಿಗೂ ಅಲ್ ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರದಿಂದ ಎಲ್ಲಾ ಸ್ವರ ಮತ್ತು ವ್ಯಂಜನ ವರ್ಣಗಳಿಗೂ ಗ್ರಹಣ. ಈ ಸೌಲಭ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರ ಮಾಡುವುದು.

ಪ್ರತ್ಯಾಹತ ಪ್ರತ್ಯಾಹತ (ವಿಂ) ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತರಲ್ಪಟ್ಟು, ಮತ್ತು ತರಲ್ಪಟ್ಟು. "ಪ್ರತ್ಯಾಹತ: ಪತ್ರಲತಾಚ್ಚುರಾಚಿ:" ಯಾದಂ ೧೮-೮೭।

ಪ್ರತಿಯುಕ್ತ ಪ್ರತಿಯುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಉತ್ತರ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರತಿ + ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಬದಲು ಹೇಳಿ ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರತಿಕೂಲವಾಗಿ ಉತ್ತರ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟು.

ಪ್ರತಿಯುಕ್ತಿ ಪ್ರತಿಯುಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬದಲು ಮಾಡು, ಉತ್ತರ. ಪ್ರತಿ + ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪)।

ಪ್ರತಿಯುಜ್ಜೀವನ ಪ್ರತಿಯುಜ್ಜೀವನ (ನಂ) ಪುನಃ ಜೀವಿಸುವುದು, ಕಷ್ಟ ನಿವಾರಣೆಯಾಗಿ ಮತ್ತು ಪೂರ್ವಸ್ಥಿತಿಗೆ ಬಂದು ಬಾಳುವುದು. ಪ್ರತಿ+ಉದ್+ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।



ಪ್ರತಿಯಜ್ಜೀವಿತ ಪ್ರತಿಯಜ್ಜೀವಿತ (ವಿಂ) ಬದುಕಿನ ಕಷ್ಟ ನಿವಾರಣೆಯಾಗಿ ಮತ್ತೆ ಹಿಂದಿನ ಸ್ಥಿತಿಗೆ ಬಂದಿರುವ.

ಪ್ರತಿಯುತ ಪ್ರತಿಯುತ (ಅವ್ಯಂ) 1. ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ, ಬದಲಾಗಿ, ಹೇಳಿದ ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಅಥವಾ ಮಾತಿಗೆ ವಿಪರೀತವಾಗಿ. ಪ್ರತಿ ಉತ. "ಅನುಕರ್ಮಾಪಾತಿಶಯೋ ಯದಿ ಕಷ್ಠಿತ್ ವಿವಕ್ಷಯತೇ | ನ ದೋಷಃ ಪುನಃಕರ್ಮೋಪಿ ಪ್ರತಿಯುತೇಯಮಲಂಕ್ರಿಯಾ" ಕಾವ್ಯಾಂ ೩-೧೩೭. 2. ವೈಪರೀತ್ಯದಿಂದ, ಸ್ವಭಾವಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ. "ಮಧುರೇರಪಿ ಭೂಯಸಾ ಸ ಮೇಷೈಃ ಪ್ರಥಮಂ ಪ್ರತಿಯುತ ವಾರಿಮಿಹಿದೀಪೇ" ಮಾಘಂ ೨೦-೭೧.

ಪ್ರತಿಯುತ್ಕ್ರಮ ಪ್ರತಿಯುತ್ಕ್ರಮ (ಪುಂ) 1. ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ನಡೆಸುವ ಪ್ರಯತ್ನ, ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ಕೈಗೊಳ್ಳುವ ಸನ್ನಾಹ. ಪ್ರತಿ + ಉತ್ + ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಷಯೇ) "ಘ" (೩-೩-೧೮). 2. ಮುಖ್ಯಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿಯ ಸಲುವಾಗಿ ನಡೆಸುವ ಪ್ರಾರಂಭದ ಕಾರ್ಯ, ಪ್ರಧಾನವಾದ ಫಲಕ್ಕೆ ಅನುಕೂಲವಾದ ಕಾರ್ಯಾರಂಭ. "ಕ್ರಿನ್" (೩-೩-೯೪). ಪ್ರತಿಯುತ್ಕ್ರಮಿ: ಪ್ರತಿಯುತ್ಕ್ರಮಿ. "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). -ಕಮಣಮ್ -ಕ್ರಮಣಮ್.

ಪ್ರತಿಯುತ್ತರ ಪ್ರತಿಯುತ್ತರ (ನಂ) ವಾದಿಯು ಹೇಳಿದ ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಪ್ರತಿವಾದಿಯ ಉತ್ತರ. ಪ್ರತಿರೋಧಮುತ್ತರಮ್.

ಪ್ರತಿಯುತ್ಥಾನ ಪ್ರತಿಯುತ್ಥಾನ (ನಂ) 1. ಬಂದವನಿಗೆ ಗೌರವ ಪ್ರದರ್ಶಿಸಲು ಆಸನದಿಂದ ಎದ್ದು ನಿಲ್ಲುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಉದ್ + ಣ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). "ಪೂಜಿತಃ ಪರಯಾ ಭಕ್ತ್ಯಾ ಪ್ರತಿಯುತ್ಥಾನಾಸನಾದಿಭಿಃ" ಭಾಗಂ ೧೦-೬೯. 2. ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ಸಿದ್ಧಗೊಳಿಸುವುದು. 3. ಎದುರುಗೊಂಡು ಎಳುವುದು.

ಪ್ರತಿಯುತ್ಥಿತ ಪ್ರತಿಯುತ್ಥಿತ (ವಿಂ) 1. ಎದುರುಗೊಂಡು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದುನಿಂತಿರುವ. 2. ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ಅಣಮಾಡಿರುವ. 3. ಹಿರಿಯರು ಬಂದಾಗ ಮರ್ಯಾದೆಗಾಗಿ ಆಸನದಿಂದ ಎದ್ದು ನಿಂತಿರುವ. ಪ್ರತಿ + ಉದ್ + ಣ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ್ರ:" (೩-೪-೭೨).

ಪ್ರತಿಯುತ್ಪನ್ನ ಪ್ರತಿಯುತ್ಪನ್ನ (ವಿಂ) 1. ತತ್ಕ್ಷಣ ಉದ್ಭವಿಸಿದ, ಕೂಡಲೆ ಉತ್ಪತ್ತಿಹೊಂದಿದ, ಒಡನೆಯೇ ಸಿದ್ಧವಾದ. ಪ್ರತಿ + ಉತ್ + ಪದ (ಗತೀ) "ಕ್ರ:" (೩-೪-೭೨). 2. ಪುನಃ ಹುಟ್ಟಿದ, ಮತ್ತೆ ಹುಟ್ಟಿಬಂದ.

ಪ್ರತಿಯುತ್ಪನ್ನಮತಿ ಪ್ರತಿಯುತ್ಪನ್ನಮತಿ (ವಿಂ) 1. ಚುರುಕಾದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು, ಸೂಕ್ಷ್ಮಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು, ಪ್ರತಿಭಾವಂತ. ಪ್ರತಿಯುತ್ಪನ್ನಾ ಮತಿಯಸ್ಯ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಸಮಯಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ ಹೊಳೆಯುವ ಬುದ್ಧಿ. "ಪ್ರತಿಯುತ್ಪನ್ನಮತಿರ್ಭಿಮಾನ್"

ವ್ಯವಸಾಯಿ ವಿಶಾರದಃ | ಸತ್ಯವರ್ಮಪರೋ ಯಶ್ಚ ಸ ಭಿಷಕ್ಪಾದ ಉಚ್ಯತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ.

ಪ್ರತಿಯುದಾಹರಣ ಪ್ರತಿಯುದಾಹರಣ (ನಂ) ಒಂದು ಉದಾಹರಣೆಗೆ ವಿರುದ್ಧವಾದ ಉದಾಹರಣೆ. "ಅಂತರ್ವತ್ಪತಿ-ವತೋನ್ಯುಕ್" (೪-೧-೩೨) ಸೂತ್ರದಲ್ಲಿ ಕೊಟ್ಟಿರುವ ಅಂತರ್ವತ್ಪತಿ ಮತ್ತು ಪತಿವತ್ಪತಿ ಎಂಬ ಉದಾಹರಣೆಗಳಲ್ಲಿ ವಿಧಿಸಿರುವ ನುಕ್ ಆಗಮ ಮತ್ತು ವತ್ವ ನಿಷಾತಗಳಿಗೆ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದ ಪದಗಳು ಪ್ರತಿಯುದಾಹರಣೆಗಳು. ಅಂತರಸ್ಯಾಂ ಶಾಲಾयां ಪಠಃ ಎಂದು ವಿಗ್ರಹ ಮಾತ್ರವೇ ಹೊರತು ಮತುಪ್ ಬರುವುದಿಲ್ಲ. ಪತಿಮತೀ ಪೃಥಿವೀ ಎಂಬಲ್ಲಿ ವತ್ವ ಬರುವುದಿಲ್ಲ. ಇವು ಪ್ರತಿಯುದಾಹರಣೆಗಳು.

ಪ್ರತಿಯುದ್ಗತ ಪ್ರತಿಯುದ್ಗತ (ವಿಂ) 1. ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ಎದ್ದು ಎದುರುಗೊಂಡ, ಗೌರವದೊಡನೆ ಎದುರಿಗೆ ಬಂದ. ಪ್ರತಿ + ಉದ್ + ಗಮ್ (ಗತೀ) ಕರಂ "ಕ್ರ:" (೩-೪-೭೨). "ಪ್ರತಿಯುದ್ಗತಪ್ರಿಯಸಖೀಜನದತ್ತಹಸ್ತಾಂ ಸತ್ಯಾಂ ತ್ರಯೀಮಯರಥಾದವ-ತಾರಯಿಷ್ಯನ್" ಯಾದಂ ೧೮-೧೩೧. 2. ಎದುರಿಗೆ ಎದ್ದು ಬಂದ.

ಪ್ರತಿಯುದ್ಗತಿ ಪ್ರತಿಯುದ್ಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ಎದ್ದು ಎದುರುಗೊಳ್ಳುವುದು, ಹಿರಿಯರನ್ನು ಗೌರವದಿಂದ ಕಾಣಲು ಆಸನದಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದು ಹೋಗುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಉದ್ + ಗಮ್ (ಗತೀ) "ಕ್ರಿನ್" (೩-೩-೯೪).

ಪ್ರತಿಯುದ್ಗಮ ಪ್ರತಿಯುದ್ಗಮ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರತಿಯುತ್ಥಾನ, ಹಿರಿಯರು ಬಂದಾಗ ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ಆಸನಬಿಟ್ಟು ಎದ್ದು ಎದುರಿಗೆ ಹೋಗುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಉದ್ + ಗಮ್ (ಗತೀ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೮). 2. ಎದುರಿಗೆ ಬಂದಾಗ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದು ಹೋಗುವುದು. "ಏಕತ್ರಾಸನಸಂಸ್ಥಿತಃ ಪರಿಹೃತಾ ಪ್ರತಿಯುದ್ಗಮಾ-ದ್ವರತಃ ತಾಮ್ಬೂಲಾನಯನಚ್ಛಲೇನ ರಮಸಾದಲೇಖೋಽಪಿ ಸಂವಿಚ್ಛಿಂತಃ" ಸಾಂದಂ ೩.

ಪ್ರತಿಯುದ್ಗಮನ ಪ್ರತಿಯುದ್ಗಮನ (ನಂ) ಗಣ್ಯರು ಬಂದಾಗ ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ಎದ್ದು ಎದುರಿಗೆ ಹೋಗುವುದು. ಪ್ರತಿ + ಉದ್ + ಗಮ್ (ಗತೀ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). "ಆಯಂ ಪ್ರತಿಯುತ್ಪನ್ನೋ ಮಹಾರಾಜಃ | ತತ್ರಪ್ರತಿಯುದ್ಗಮನೇನ ಸಂಭಾವ್ಯತಾಮಾರ್ಯೇಣ" ಪ್ರಬಂಧಂ ೨.

ಪ್ರತಿಯುಗಮನೀಯ ಪ್ರತಿಯುಗಮನೀಯ (ನಂ) 1. ಒಗೆದು ಶುದ್ಧವಾದ ಒಂದು ಜೊತೆ ವಸ್ತು. ಪ್ರತಿ + ಉದ್ + ಗಮ್ (ಗತೀ) "ಅನೀಯ್" (೩-೧-೯೬). (ವಿಂ) 2. ಪೂಜ್ಯನಾದ, ಗೌರವದಿಂದ ಎದ್ದು ಎದುರುಗೊಳ್ಳಲು ಅರ್ಹನಾದ.



ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರ ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರ (ಪುಂ) ಪಡೆದ ಉಪಕಾರಕ್ಕೆ ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಮಾಡುವ ಉಪಕಾರ, ಮುಖ್ಯ. ಪ್ರತಿರೂಪ: ಉಪಕಾರ: |

ಪ್ರತ್ಯುಪದೇಶ ಪ್ರತ್ಯುಪದೇಶ (ಪುಂ) ತಾನು ಕಲಿಸಿದ ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಂದ ಬೇರೆ ವಿಷಯವನ್ನು ಕಲಿಯುವುದು. "ವ್ಯನೀಯತ ಪ್ರತ್ಯುಪದೇಶಲಕ್ಷಣೇರಾದಿಸುಭಿನ್ನಪುರಶಿಷ್ಟಿಜ್ಞತಾನಿ" ಕುಮಾಂ ೧-೩೪ |

ಪ್ರತ್ಯುರಸ ಪ್ರತ್ಯುರಸ (ಅವ್ಯಂ) ವಕ್ಷಸ್ಥಲದಲ್ಲಿ. ತರಸಿ ಪ್ರತಿ ಪ್ರತ್ಯುರಸಮ್ ವಿಭಕ್ತಾರ್ಥೆ ಅವ್ಯಯಿಂ | ಸಮಾಸಾಂತ: "ಅಚ್" (೪-೪-೮೨) | "ಕೃತಮಂಡಲವನ್ಮುಲ್ಲಸದ್ವಿ: ಶಿರಸಿ ಪ್ರತ್ಯುರಸಮ್ ವಿಲಿಖಮಾನೇ:" ಮಾಧಂ ೨೦-೪೮ |

ಪ್ರತ್ಯುಪ್ತ ಪ್ರತ್ಯುಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನೊಳಗೆ ಹುದುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರತಿ + ಉಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಬಿತ್ತಲ್ಪಟ್ಟು, ಬೀಜಾವಾಪ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಜಿನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟು. "ಲೀನೇವ ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿತೇವ ಲಿಖಿತೇವೋತ್ಕೀರ್ಣರೂಪೇವ ಚ ಪ್ರತ್ಯುಪ್ತೇವ ಚ ಬಜ್ಜಲೇಪಟಿತೇವಾಂತನಿಖಾತೇವ ಚ" ಮಾಲತೀಂ ೪-೧೦ |

ಪ್ರತ್ಯುಷ ಪ್ರತ್ಯುಷ (ಪುಂ) ಪ್ರಭಾತ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲ. ಪ್ರತಿ+ಉಷ (ದಾಹೇ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೬) |

ಪ್ರತ್ಯುಷಸ್ ಪ್ರತ್ಯುಷಸ್ (ನಂ) ಪ್ರಭಾತ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲ. ಪ್ರತಿ + ಉಷ (ದಾಹೇ) "ಅಸಿ:" (೩ಂ ೪-೨೩೩) |

ಪ್ರತ್ಯುಷ ಪ್ರತ್ಯುಷ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಭಾತ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲ. ಪ್ರತಿ+ಉಷ (ಋಜಾಯಾಮ್) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೬) | "ದೀರ್ಘಿ-ಕುವನ್ ಪಡ್ ಮದಕಲಂ ಕೂಜಿತಂ ಸಾರಸಾನಾಂ ಪ್ರತ್ಯುಷೇಷು ಸ್ಫುಡಿತ-ಕಮಲಾಮೋದಮೇತ್ರಿಕಪಾಯ:" ಮೇಘಂ ೧-೩೧ | 2. ಅಷ್ಟವಸುಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ ವಸು.

ಪ್ರತ್ಯುಷಸ್ ಪ್ರತ್ಯುಷಸ್ (ನಂ) ಪ್ರಭಾತ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲ. ಪ್ರತಿ + ಉಷ (ಋಜಾಯಾಮ್) "ಅಸಿ:" (೩ಂ ೪-೨೩೩) | "ಪ್ರತ್ಯುಷಸ್ಯಪರಾಹ್ಣೇ ತು ಜಿರ್ಣಂತ್ರೇ ಚ ಪ್ರಕುಪ್ಯತಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ |

ಪ್ರತ್ಯುಹ ಪ್ರತ್ಯುಹ (ಪುಂ) ಅಂತರಾಯ, ವಿಷ್ಣು. ಪ್ರತಿ+ಉಹ (ವಿತರ್ಕೆ) "ಘಮ್" (೩-೩-೧೮) | "ಹ್ರೀಪ್ರತ್ಯುಹಪ್ರಶಮ-ಕುಶಲಾ: ಶೋಭವಶ್ಚಕುರಾಸಾಮ್" ಮಾಧಂ ೯-೮೭ |

ಪ್ರತ್ಯೇಕ ಪ್ರತ್ಯೇಕ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿ, ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬ ನನ್ನೂ, ಒಬ್ಬೊಬ್ಬನಲ್ಲಿಯೂ, ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬನಲ್ಲಿಯೂ, ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬನಿಗೂ. ಏಕಮೇಕಂ ಪ್ರತಿ-ಅವ್ಯಯಿಂ | "ಪ್ರತ್ಯೇಕಂ ವಿನಿಯುಕ್ತಾತ್ಮಾ ಕಥಂ ನ ಜಾಸ್ಯಸಿ ಪ್ರಭೋ" ಕುಮಾಂ ೨-೩೧ |

(ವಿಂ) 2. ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾದ, ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾದ. "ಪ್ರತ್ಯೇಕೋಕ್ತಿ-ಶ್ಲಾಘನಪ್ರೀಣಿತಾಭಿ:" ಯಾದಂ ೨೪-೮೮ |

ಪ್ರಥಮ ಪ್ರಥಮ (ವಿಂ) 1. ಮೊದಲನೆಯ. ಪ್ರಥ (ಪ್ರಖ್ಯಾನೇ) "ಅಮಚ್" (೩ಂ ೪-೬೮) | "ಪ್ರಥಮಾ ಚರಮಾ ಚ ದೇವತಾ ತ್ವಮ್" ಯಾದಂ ೧೪-೨೧ | "ಪ್ರಣಮಂತಿ ಸದಾ ಸುಯೋಧನಂ ಪ್ರಥಮೇ ಮಾನಭೃತಾಂ ನ ವೃಣಯ:" ಕಿರಾಂ ೨-೪೪ | 2. ಪ್ರಧಾನ, ಮುಖ್ಯ. "ಏಷ ವೈ ಪ್ರಥಮ: ಕಲ್ಪ: ಪ್ರದಾನೇ ಹ್ಯವ್ಯಕವ್ಯಯೋ:" ಮನುಂ ೩-೧೪೭ | 3. ಅಸದೃಶ, ಅತ್ಯುತ್ತಮ. "ರಾಮ ಇತ್ಯಭಿ-ರಾಮೇಣ ವಪುಷಾ ತಸ್ಯ ಚೋದಿತ: | ನಾಮಧೇಯಂ ಗುರುಶ್ಚಕ್ರೇ ಜಗತ್ಪ್ರಥಮ-ಮಜ್ಜಲಮ್" ರಘುಂ ೧೦-೬೭ | (ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ) (ಪುಂ) 4. ಪ್ರಥಮಪುರುಷ. ಭವತಿ ಭವತ: ಭವಂತಿ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಮಾ -ಮಾ. (ಅವ್ಯಂ) 5. ಮೊದಲು, ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ. "ಪ್ರಥಮಂ ಕಲಾಽಭವದಾರ್ಥಮಥೋ ಹಿಮದೀ-ಧಿತಿರ್ಮಹದಭೂದುದಿತ:" ಮಾಧಂ ೯-೨೯ | 6. ಮೊದಲು, ಹಿಂದೆ, ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ. "ಪ್ರಥಮಪ್ರಬುದ್ಧನದರಾಜಸುತಾವದೇನದ್ತುನೇವ ತುಹಿನವೃತ್ತಿನಾ" ಮಾಧಂ ೯-೩೦ | 7. ಮೊದಲು, ಎಲ್ಲಕ್ಕಿಂತಲೂ ಮುಂಚೆ. "ಯಾತ್ರಾಯೈ ಚೋದಯಾಮಾಸ ತಂ ಶಕ್ತೇ: ಪ್ರಥಮಂ ಶರತ್" ರಘುಂ ೪-೨೪ | 8. ಮೊದಲನೆಯದಾಗಿ, ಹೊಸದಾಗಿ. 9. ಪ್ರಥಮಾವಿಭಕ್ತಿ.

ಪ್ರಥಮಕಲ್ಪ ಪ್ರಥಮಕಲ್ಪ (ಪುಂ) ಮುಖ್ಯವಾದ ಕಲ್ಪ, ಮೊದಲನೆಯ ಪಕ್ಷ.

ಪ್ರಥಮಜ ಪ್ರಥಮಜ (ವಿಂ) 1. ಮೊದಲು ಹುಟ್ಟಿದ. ಪ್ರಥಮಂ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುರ್ಮವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೧೦೧) | 2. ಮೊದಲನೆಯ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು.

ಪ್ರಥಮಮಜ್ಜಲ ಪ್ರಥಮಮಂಗಳ (ನಂ) ಉತ್ತಮವಾದ ಮಂಗಳ, ಅಸಮಾನವಾದ ಮಂಗಳ. "ರಾಮ ಇತ್ಯಭಿರಾಮೇಣ ವಪುಷಾ ತಸ್ಯ ಚೋದಿತ: | ನಾಮಧೇಯಂ ಗುರುಶ್ಚಕ್ರೇ ಜಗತ್ಪ್ರಥಮ-ಮಜ್ಜಲಮ್" ರಘುಂ ೧೦-೬೭ |

ಪ್ರಥಮವಯಸ್ ಪ್ರಥಮವಯಸ್ (ನಂ) ಪೂರ್ವ ವಯಸ್ಸು, ತಾರುಣ್ಯ, ಪ್ರಾಯ.

ಪ್ರಥಮಾಶ್ರಮ ಪ್ರಥಮಾಶ್ರಮ (ಪುಂ) ನಾಲ್ಕು ಆಶ್ರಮಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯದಾದ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾಶ್ರಮ. ಪ್ರಥಮ: ಆಶ್ರಮ: | "ವಿವೇಶ ಕಶ್ಚಿಜ್ಜಡಲಿಲಸ್ತಪೋವನಂ ಶರೀರಬದ್ಧ: ಪ್ರಥಮಾಶ್ರಮೋ ಯಥಾ" ಕುಮಾಂ ೪-೩೦ |

ಪ್ರಥಯತ್ ಪ್ರಥಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಸಿದ್ಧಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರಥ (ಪ್ರಖ್ಯಾನೇ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | 2. ತೋರ್ಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರದರ್ಶಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಪ್ರಥಯ-ತ್ತನಿವಾರ್ಯವೀರ್ಯತಾಂ ಪ್ರಜಿಘಾಢೇಷುಮಘಾತುಕಂ ಶಿವ:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೪೮ |



ಪ್ರಥಾ ಪ್ರಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಥಾತಿ ಪ್ರಥ್ಯತಿ. ಪ್ರಥ (ಪ್ರಥ್ಯಾನೇ) ಭಾವೇ "ಅಙ್" (೩-೩-೧೦೪)। "ಶಾಂತಿಜನಜನಿತನಾಮಪದಾಂ ತ್ವಮತಃ ಶ್ರಿಯಃ ಪತಿರೀತಿ ಪ್ರಥಾಮಗಾಃ" ಮಾಘಂ ೧೫-೨೭।

ಪ್ರಥಿತ ಪ್ರಥಿತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಪಡೆದ, ಹೆಸರನ್ನು ಗಳಿಸಿದ, ಕೀರ್ತಿಯನ್ನು ಪಡೆದ. ಪ್ರಥ (ಪ್ರಥ್ಯಾನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ಅನುಮಾರ ನ ಮಾರ ಕಥಂ ನು ಸಾ ರತಿ-ರತಿಪ್ರಥಿತಾಪಿ ಪತಿವ್ರತಾ" ನೆಪಂ ೪-೭೯। (ಪುಂ) 2. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. "ಅಚ್ಯುತತ್ವೇನ ಲೋಕೇಽಸ್ಮಿನ್ ಪ್ರಥ್ಯಾತಃ ಪ್ರಥಿತಃ ಸ್ಮೃತಃ" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ। "ಅಚ್ಯುತಃ ಪ್ರಥಿತಃ ಪ್ರಾಣಃ ಪ್ರಾಣದೋ ವಾಸವಾನುಜಃ" ವಿಂ ಸಂ 1।

ಪ್ರಥಿತಿ ಪ್ರಥಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಾತಿ, ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ. ಪ್ರಥ (ಪ್ರಥ್ಯಾನೇ) "ಕ್ತಿಃ" (೩ಂ ೪-೧೮೨)।

ಪ್ರಥಿಮನ್ ಪ್ರಥಿಮನ್ (ಪುಂ) ವೈಶಾಲ್ಯ, ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿರುವುದು, ಅಗಲವಾಗಿರುವುದು. ಪೃಥಿವೀಭಾವಃ—ವಾ "ಇಮನಿಚ್" (೫-೧-೧೨೨)। ಪಕ್ಷೇ "ಅಣ್" (೫-೧-೧೩೧)। ಪಾರ್ಶ್ವಮ್ ಪಾರ್ಶ್ವಮ್. "ವಂಶ್ಯಾ ಗುಣಾಃ ಸತ್ವಪಿ ಲೋಕಕಾಂತಾಃ ಪ್ರಾರಂಭಸೂಕ್ಷಮಾಃ ಪ್ರಥಿಮಾನಮಾಪುಃ" ರಘುಂ ೧೮-೪೯।

ಪ್ರಥಿಮಿನಿ ಪ್ರಥಿಮಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಸ್ತಾರವಾದ (ಅಗಲವಾದ) ಶರೀರವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಪ್ರಥಿಮಾ ಅಸ್ತೃತ್ಯಾಃ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೩೭)।

ಪ್ರಥಿವೀ ಪ್ರಥಿವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಥಿವಿ, ಭೂಮಿ. ಪೃಥಿವೀ—ಪೃಥಿವೀಂ 1।

ಪ್ರಥಿಷ್ಠ ಪ್ರಥಿಷ್ಠ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿರುವ, ಹೆಚ್ಚು ಅಗಲವಾಗಿರುವ. ಏಷಾಮ್ ಅತಿಶಯೇನ ಪೃಥುಃ "ಇಷ್ಠನ್" (೫-೩-೫೫)। ಋಕಾರಸ್ಯ ರೇಫಃ (೬-೪-೧೬೧)।

ಪ್ರಥೀಯಸ್ ಪ್ರಥೀಯಸ್ (ವಿಂ) 1. ದೊಡ್ಡದಾದ, ವಿಸ್ತಾರವಾದ, ಅಗಲವಾದ. ಅನಯೋರತಿಶಯೇನ ಪೃಥುಃ "ಇಯಸುನ್" (೫-೩-೭೭)। ಋಕಾರಸ್ಯ ರೇಫಃ (೬-೪-೧೬೧)। 2. ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅತಿಶಯವಾದ. "ಪ್ರಥೀಯಸಾ ಸೂಕ್ಷಮನಿರಂತರೇಣ ಕ್ಷೌಮಾಭಿರಾಮೇಣ ಪರಾಗಮುನಾ" ಯಾದಂ ೨೦-೨೪। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬)। ಪ್ರಥೀಯಸೋ ಪ್ರಥೀಯಸೀ. "ಪುರಃ ಸುರಾಣಾಂ ಪೃತನಾಂ ಪ್ರಥೀಯಸೀಮ್" ಕುಮಾಂ ೧೫-೪೬।

ಪ್ರದ ಪ್ರದ (ವಿಂ) (ಸಮಾಸದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ) ದಾನಮಾಡುವವನು, ಕೊಡುವವನು. ಪ್ರದದಾತಿ—ಙ್ ದಾತ್ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೬)। "ಯಾನಶಯ್ಯಾಪ್ರದೋ ಭಾರ್ಯಮೇಶ್ವರ-ಮಭಯಪ್ರದಃ" ಮನುಂ ೪-೨೩೨।

ಪ್ರದಕ್ಷಿಣ ಪ್ರದಕ್ಷಿಣ (ನಂ) 1. ಎಡಗಡೆಯಿಂದ ಬಲಗಡೆಗೆ ಹೋಗಿ ದೇವರನ್ನು ಬಳಸಿ ಬರುವುದು, ಬಲಪಾರ್ಶ್ವವು

ದೇವರ ಕಡೆಗೆ ಬರುವಂತೆ ಮಾಡಿ ದೇವರನ್ನು ಸುತ್ತಿಬರುವುದು. "ಪ್ರದಕ್ಷಿಣಪ್ರಕ್ರಮಣಾತ್ ಕುಶಾನೋರ್ದಾಚಿಃ ತನ್ಮಿಥುನ್ ಚಕಾಶೇ" ಕುಮಾಂ ೭-೭೯। "ಏಕಂ ದೇವ್ಯಾಂ ರದೌ ಸಪ್ತ ತ್ರಿಣಿ ಕುರ್ಯಾದ್ವಿನಾಯಕೇ। ಚಕ್ಷಾರಿ ಕೇಶವೇ ಕುರ್ಯಾತ್ ಶಿವೇ ಚಾರ್ಷ-ಪ್ರದಕ್ಷಿಣಮ್"। (ವಿಂ ವಿಂ) 2. ಬಲಪಾರ್ಶ್ವದಿಂದ ಬಳಸಿ ಕೊಂಡು, ಸುತ್ತಿಕೊಂಡು. "ಪ್ರದಕ್ಷಿಣಂ ವ್ಯತಿರ್ಯಾಶ ಶೇಷಯಿತ್ವಾ ಮಹೀಧರಮ್" ಯಾದಂ ೨೨-೧೨೭।

ಪ್ರದತ್ತ ಪ್ರದತ್ತ (ವಿಂ) ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ, ದಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ದತ್ತಮ್—ಪ್ರ+ಙ್ ದಾತ್ (ದಾನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಪ್ರದಗ್ಧ ಪ್ರದಗ್ಧ (ವಿಂ) ದಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೆನ್ನಾಗಿ ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ+ದಹ (ಮಸ್ಮೀಕರಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಪ್ರದರ ಪ್ರದರ (ಪುಂ) 1. ಶರ, ಬಾಣ. ಪ್ರದೀಯತೇನೇನ—ಪ್ರ+ದ್ (ವಿದಾರಣ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೬)। 2. ಬೀಟೆ, ಬಿಲ್ಲ, ಹೆಚ್ಚು, ಗರ್ಜ. "ಸೀಮಾನಃ ಪ್ರದರೋದರೇಷು ವಿರಲಸ್ವಲ್ಪಾಂಸೋ ಯಾಸ್ವಯಮ್" ಛಂ ರಾಂ ೨-೧೬। 3. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಒಂದು ರೋಗ, ರಕ್ತ ಪ್ರದರ, ಜನನೇಂದ್ರಿಯದಿಂದ ಹೊರಡುವ ರಕ್ತ ಸ್ರಾವ. ಇದು (1) ಶ್ಲೇಷ್ಮಿಕಃ (2) ಪೆಂಟಿಕಃ (3) ವಾತಿಕಃ ಮತ್ತು (4) ತ್ರಿದೋಷಿಕಃ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. "ತಂ ಶ್ಲೇಷ್ಮಪಿತ್ತಾನಿಲಸನ್ನಿಪಾತೈಃ ಚತುಃಪ್ರಕಾರಂ ಪ್ರದರಂ ವದಂತಿ"। 4. ಭಂಗ, ಮುರಿಯುವುದು. "ಪ್ರದರೋ ರೋಗಮೇದೇ ಸ್ಯಾತ್ ವಿದಾರೆ ಶರಮಜ್ಜಯೋಃ" ಮೇದಿಂ 1।

ಪ್ರದರ್ಶಕ ಪ್ರದರ್ಶಕ (ಪುಂ) ತೋರಿಸುವವನು. ಪ್ರ+ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣ) + ಣಿಚ್ "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಪ್ರದರ್ಶನ ಪ್ರದರ್ಶನ (ನಂ) 1. ತೋರಿಸುವುದು, ಪ್ರದರ್ಶಿಸುವುದು, ತೋರ್ಪಡಿಸುವುದು. ಪ್ರ+ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ತೋರ್ಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಪ್ರದರ್ಶನೀಯ ಪ್ರದರ್ಶನೀಯ (ವಿಂ) 1. ತೋರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ತೋರಿಸಬೇಕಾದ. 3. ತೋರಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಪ್ರ+ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬)। -ದರ್ಶಯಿತವ್ಯಃ—ದರ್ಶಯಂತವ್ಯಃ।

ಪ್ರದರ್ಶಯತ್ ಪ್ರದರ್ಶಯತ್ (ವಿಂ) 1. ತೋರಿಸುತ್ತಿರುವ, ತೋರ್ಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ದರ್ಶಯಂತಿ—ದರ್ಶಯಂತೀ. 2. ಸ್ತುತ್ಯಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಪ್ರದರ್ಶಯನ್ ಕೃಷಪತೇಃ ಪರಾಕ್ರಮಮ್" ಯಾದಂ ೧೪-೧೧।

ಪ್ರದರ್ಶಯಮಾನ ಪ್ರದರ್ಶಯಮಾನ (ವಿಂ) ತೋರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣ) + ಣಿಚ್ "ಶಾನಶ್" (೩-೨-೧೨೪)।



ಪ್ರದರ್ಶಯಿತ್ ಪ್ರದರ್ಶಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) ತೋರಿಸುವವನು.

ಪ್ರ + ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) + ಣಿच् "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

ಪ್ರದರ್ಶಿತ ಪ್ರದರ್ಶಿತ (ವಿಂ) 1. ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೋರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) + ಣಿच् "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । "ಪ್ರದರ್ಶಿತಾತ್ಮಭ್ರಮಣೇನ ನೂನಮ್ ಪ್ರತ್ಯಾಯಿತಾ ಮಂದರನತೇನ" ಯಾದಂ ೧೮-೯೯ । 2. ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪ್ರದರ್ಶ್ಯ ಪ್ರದರ್ಶ್ಯ (ವಿಂ) 1. ತೋರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಪ್ರದರ್ಶಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ + ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) + ಣಿच् "ಯತ್" (೩-೧-೯೭) । (ಅವ್ಯಂ) 2. ತೋರಿಸಿ, ತೋರ್ಪಡಿಸಿ, ಪ್ರದರ್ಶಿಸಿ.

ಪ್ರದರ್ಶ್ಯಮಾನ ಪ್ರದರ್ಶ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) 1. ತೋರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ವಿವರಿಸಿ ತಿಳಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

ಪ್ರದಲ ಪ್ರದಲ (ಪುಂ) ಶರ. ಬಾಣ. ಪ್ರದಲತಿ — ದಲ (ವಿಶರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।

ಪ್ರವವ ಪ್ರವವ (ಪುಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ತಾಪ. ಪ್ರ + ಡ್ವ (ಉಪತಾಪೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೬) । (ವಿಂ) 2. ಹೆಚ್ಚು ತಾಪವುಂಟು ಮಾಡುವ. ಪ್ರಕರ್ಷಣೆ ದುನೋತಿ — ಪ್ರ + ಡ್ವ (ಉಪತಾಪೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।

ಪ್ರದಾ ಪ್ರದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆನ್ನಾಗಿ ದಾನಮಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ಡ್ವ ದಾನ್ (ದಾನೇ) ಭಾವೇ "ಅಡ್" (೩-೩-೧೦೪) ।

ಪ್ರದಾತವ್ಯ ಪ್ರದಾತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ದಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ದಾನಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ದಾನಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಪ್ರ + ಡ್ವ ದಾನ್ (ದಾನೇ) ಕರ್ಮಾದಿ "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬) ।

ಪ್ರದಾತು ಪ್ರದಾತು (ವಿಂ) 1. ದಾನಮಾಡುವವನು, ಉದಾರವಾಗಿ ಕೊಡುವವನು. ಪ್ರ + ಡ್ವ ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩) । 2. ಕೊಡುವವನು, ನೀಡುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಡೀಪ್ (೪-೧-೪) । -ದಾತ್ರಿ -ದಾತ್ರಿಃ.

ಪ್ರದಾನ ಪ್ರದಾನ (ನಂ) 1. ಬೆನ್ನಾಗಿ ದಾನಮಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ಡ್ವ ದಾನ್ (ದಾನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) । "ಪ್ರದಾನಂ ಪ್ರಚ್ಛನ್ನಂ ಗೃಹಮುಪಗತೇ ಸಂಭ್ರಮವಿಧಿಃ ಪ್ರಿಯಂ ಕೃತ್ವಾ ಮೀನಂ ಸದಸಿ ಕಥನಂ ಚಾಪ್ಯುಪಕೃತೇಃ" ಮತುಂ ೧-೪೭ । 2. ಕೊಡುವುದು, ನೀಡುವುದು. "ಯದ್ಗೋಬ್ರಾಹ್ಮಣಪ್ರದಾನವ್ರತಸುಕುನಮವಿಶ್ರಾಂತಮುಜ್ಜುಮತೇ ಸ್ಮ" ನೆಫಂ ೨-೧೦೪ ।

ಪ್ರದಾಯ ಪ್ರದಾಯ (ಪುಂ) ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. ಪ್ರ + ಡ್ವ ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಘಃ" (೩-೩-೧೮) । "ಯಕ್" (೭-೩-೩೩) ।

ಪ್ರದಾಯಕ ಪ್ರದಾಯಕ (ವಿಂ) ಕೊಡುವವನು. ಪ್ರ + ಡ್ವ ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಘಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । "ಯಕ್" (೭-೩-೩೩) ।

ಪ್ರದಾಯಿನ್ ಪ್ರದಾಯಿನ್ (ವಿಂ) ದಾನಮಾಡುವವನು.

ಪ್ರದದಾತಿ — ಪ್ರ + ಡ್ವ ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಣಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) । "ಯಕ್" (೭-೩-೩೩) ।

ಪ್ರದಿ ಪ್ರದಿ (ವಿಂ) 1. ದಾನ ಮಾಡುವವನು, ಉದಾರವಾಗಿ ಕೊಡುವವನು. ಪ್ರ + ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕಿಃ" (೩-೩-೯೨) । 2. ದಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ ವಸ್ತು.

ಪ್ರದಿಕ್ ಪ್ರದಿಕ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿದಿಕು, ಆಗ್ನೇಯ ನೈಋತ್ಯ ವಾಯವ್ಯ ಮತ್ತು ಈಶಾನ್ಯ ಮೂಲೆ ದಿಕ್ಕುಗಳು. ಪ್ರಗತಾ ದಿಗ್ಮಯಃ । "ತತೋ ವಿಭ್ರಾಂತಮನಸೋ ಜನಾಃ ಕ್ಷುಬ್ಧಯಪಿಡಿಂತಾಃ । ಗೃಹಾಣಿ ಸಂಪರೀತ್ಯಜ್ಯ ಬಭ್ರಮುಃ ಪ್ರದಿಶೋ ದಿಶಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ।

ಪ್ರದಿಗ್ಧ ಪ್ರದಿಗ್ಧ (ವಿಂ) ಲೇಪನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ದಿಹ (ಉಪಚಯೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । "ಅವ್ಯಕ್ತೇಷಾಮಿವ ಚಂದ್ರಲೇಖಾಂ ಪಾಂಸುಪ್ರದಿಗ್ಧಾಮಿವ ಹೇಮರೇಷಾಮ್" ರಾಮಾಂ ।

ಪ್ರದಿತ್ಸತ್ ಪ್ರದಿತ್ಸತ್ (ವಿಂ) ಕೊಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಡ್ವ ದಾನ್ (ದಾನೇ) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

ಪ್ರದಿಸಾ ಪ್ರದಿಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೊಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ದಾನ ಮಾಡಲು ಇಚ್ಛೆ. ಪ್ರದಾತುಮಿಚ್ಛಾ — ಪ್ರ + ಡ್ವ ದಾನ್ (ದಾನೇ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೩-೧೦೨) ।

ಪ್ರದಿಸು ಪ್ರದಿಸು (ವಿಂ) ಕೊಡಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ, ದಾನ ಮಾಡಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ. ಪ್ರದಾತುಮಿಚ್ಛುಃ — ಪ್ರ + ಡ್ವ ದಾನ್ (ದಾನೇ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮) । "ಭವತ್ಯವಜ್ಞಾ ಚ ಭವತ್ಯನುತ್ತರಾದತಃ ಪ್ರದಿಸುಃ ಪ್ರತಿವಾಚಮಸ್ಮಿ ತೇ" ನೆಫಂ ೯-೨೪ ।

ಪ್ರದಿಷ್ಟ ಪ್ರದಿಷ್ಟ (ವಿಂ) 1. ನಿರ್ದೇಶ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಗೊತ್ತು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । "ತಸ್ಯಾಲಮೇಷಾ ಕ್ಷುಧಿತಸ್ಯ ತೃಪ್ಯೆ ಪ್ರದಿಷ್ಟಕಾಲಾ ಪರಮೇಶ್ವರೇಣ" ರಘುಂ ೨-೪೦ । 2. ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಅಜ್ಞೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಮ್ಯರ್ಯಂ ಪೂರ್ವವಿಭವಾದಧಿಕಂಃ ಪ್ರದಿಷ್ಟಃ" ಯಾದಂ ೨೨-೨೪೨ ।

ಪ್ರದೀಪ ಪ್ರದೀಪ (ಪುಂ) 1. ದೀಪ, ದೀವಿಗೆ, ಸೊಡರು. ಪ್ರದೀಪಯತಿ — ಪ್ರ + ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿच् "ಅಚ್" "ಭವಂತಿ ಯತ್ನಿವಧಯೋ ರಜನ್ಯಾಮತೆಲಪೂರಾಃ ಸುರತಪ್ರದೀಪಾಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೧೦ । "ಪ್ರದೀಪಃ ಸ್ನೇಹಮಾದತ್ತೇ ದಕ್ಷಯಾಮ್ಯಂತರಸ್ಥಯಾ" ಮಾಘಂ ೨-೪೪ । 2. ಬೆಳಗುವ ವಸ್ತು, ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವ ವಸ್ತು.

ಪ್ರದೀಪಕ ಪ್ರದೀಪಕ (ವಿಂ) 1. ಬೆಳಗುವ, ಬೆಳಕು ಕೊಡುವ, ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವ. ಪ್ರ + ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿच् "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಸಣ್ಣ ದೀಪ, ಕೈದೀಪ.



ಪ್ರದೀಪನ ಪ್ರದೀಪನ (ನಂ) 1. ಬೆಳಗುವುದು, ಪ್ರಕಾಶ ಪಡಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವುದು, ಉರಿಯುವುದು. (ಪುಂ) 3. ಒಂದು ವಿಷ. "ಮಹಾದಾಹಕರಃ ಪೂರ್ವಃ ಕಥಿತಃ ಸ ಪ್ರದೀಪನಃ" (ವಿಂ) 4. ಬೆಳಗುವ, ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವ, ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (3-1-134).

ಪ್ರದೀಪಿತ ಪ್ರದೀಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102). 2. ಉರಿಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉರಿಯುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ತಂ ಪ್ರದೀಪಿತಲಾಙ್ಗೂಲಮ್" ರಾಮಾಂ.

ಪ್ರದೀಪ್ತ ಪ್ರದೀಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಉರಿಯುವ, ಜ್ವಲಿಸುವ. ಪ್ರ + ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕ್ತಃ" (3-4-92). "ದಯಾಧನಃ ಸಂಯತಿ ದೇವ್ಯಹಂತಾ ಪ್ರದೀಪ್ತಮಸ್ತ್ರಂ ಪ್ರತಿಸಂಜಹಾರ" ಯಾದಂ 20-94. 2. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ. "ಪ್ರದೀಪ್ತ-ರಲಶಿರಸಂ ಪ್ರಾಲೇಪಪರಿಪಾಂಡುರಮ್" ಯಾದಂ 22-129.

ಪ್ರದೀಪ್ತಿ ಪ್ರದೀಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. ಪ್ರ + ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94).

ಪ್ರಕೃಷ್ಠ ಪ್ರಕೃಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ದುರುಳ, ನೀಚ. ಪ್ರ + ಕೃಷ (ವೈಕೃತ್ಯೇ) "ಕ್ತಃ" (3-4-92). 2. ಕೆಟ್ಟಿರುವ, ಅಶುದ್ಧವಾಗಿರುವ, ಮಲಿನವಾದ. 3. ನಿಯಮಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಾದ.

ಪ್ರಕೃಷಿತ ಪ್ರಕೃಷಿತ (ವಿಂ) ಕೆಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಕೃಷ (ವೈಕೃತ್ಯೇ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102).

ಪ್ರದೇಶ ಪ್ರದೇಶ (ಪುಂ) 1. ಸ್ಥಾನ, ಜಾಗ. 2. ದೇಶ, ನಾಡು. ಪ್ರ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಬನ್" (3-3-121). "ದಿವಂ ಯದಿ ಪ್ರಾರ್ಥಯಸೇ ವೃಥಾ ಭಮಃ ಪಿತುಃ ಪ್ರದೇಶಸ್ತವ ದೇವಭೂಮಯಃ" ಕುಮಾಂ 4-44.

ಪ್ರದೇಶನ ಪ್ರದೇಶನ (ನಂ) 1. ದೇವರು ರಾಜರು ಮೊದಲಾದವರಿಗೆ ಅರ್ಪಿಸುವ ಉಪಹಾರ, ಕಾಣಿಕೆ. ಪ್ರದೀಪಯತೇ — ಪ್ರ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-113). 2. ಸಲಹೆ, ಸೂಚನೆ.

ಪ್ರದೇಶಿನಿ ಪ್ರದೇಶಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತರ್ಜನೀ ಬೆರಳು, ಅಂಗುಷ್ಠದ ಪಕ್ಕದ ಹೆದರಿಸುವ ಬೆರಳು. ಪ್ರದೀಪಯತೇ — ಪ್ರ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-113).

ಪ್ರದೇಶಿನಿ ಪ್ರದೇಶಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತರ್ಜನೀ ಬೆರಳು, ಹೆದರಿಸುವ ಬೆರಳು. ಪ್ರದೀಪಯತೇ — ಪ್ರ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಗಿಣಿ:" (3-1-134). "ತೀಪ್" (4-1-4). "ಅವಿಭ್ರಮದ್ಭ್ರಮದನಲೋಮುಕಾಕೃತಿ ಪ್ರದೇಶಿನೀಂ ಜಗದಿವ ದಗ್ಧಮಾಹುಕಿ:" ಮಾಘಂ 17-9.

ಪ್ರದೇಶ್ಯ ಪ್ರದೇಶ್ಯ (ಪುಂ) ಬೊಕ್ಕಸದ ಅಧಿಕಾರಿ.

ಪ್ರದೇಹ ಪ್ರದೇಹ (ಪುಂ) 1. ಲೇಪನಮಾಡುವುದು, ಬಳಿಯುವುದು. ಪ್ರ + ದಿಹ (ಅಪಚಯೇ) "ಬನ್" (3-3-114). 2. ಗಾಯಕ್ಕೆ ಮುಲಾಮು ಹಚ್ಚುವುದು.

ಪ್ರದೋಷ ಪ್ರದೋಷ (ಪುಂ) 1. ರಾತ್ರಿಯ ಮೊದಲನೆಯ ಭಾಗ, ಅಧಿಕವಾದ ದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕಾಲ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠೋ ದೋಷಃ ಯಸ್ಮಿನ್. "ವದ ಪ್ರದೋಷೇ ಸ್ಕುಟಚಂದ್ರತಾರಕಾ ವಿಭಾವರೀ ಯದ್ವರ್ಣಾಯ ಕಲ್ಪತೇ" ಕುಮಾಂ 4-44. "ಅಸ್ತಮಾನಂ ಸಮಾರಮ್ಯ ಸಾರ್ವಾಃ ಸಪ್ತ ಚ ನಾಡಿಕಾಃ. ಪ್ರದೋಷ ಇತಿ ವಿಖ್ಯಾತಸ್ತವರ್ಧಯಾಮತಃ ಪರಮ್" 2. ಹೆಚ್ಚು ದೋಷವುಳ್ಳವನು. "ತಮಃಸ್ವಭಾವಾಸ್ತೇಷ್ಯೇನಂ ಪ್ರದೋಷಮನುಯಾಯಿನಃ" ಮಾಘಂ 2-96.

ಪ್ರದೋಷಕಾಲ ಪ್ರದೋಷಕಾಲ (ಪುಂ) ರಾತ್ರಿಯ ಪ್ರಾರಂಭ ಕಾಲ, ರಾತ್ರಿಯ ಮೊದಲನೆಯ ಭಾಗ.

ಪ್ರದೋಷಕ ಪ್ರದೋಷಕ (ವಿಂ) ಸಾಯಂಕಾಲ ಪ್ರದೋಷ ವೇಳೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಪ್ರದೋಷೇ ಜಾತಃ "ಬುನ್" (4-3-28).

ಪ್ರದೋಹ ಪ್ರದೋಹ (ಪುಂ) ಹಸು ಎಮ್ಮೆ ಮೊದಲಾದವುಗಳ ಹಾಲು ಕರೆಯುವುದು. ಪ್ರ + ದುಹ (ಪ್ರಪೂರಣೇ) ಭಾವೇ "ಬನ್" (3-3-114).

ಪ್ರದ್ಯ ಪ್ರದ್ಯ (ನಂ) ಪುಣ್ಯ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಾ ದೌಃ ಸ್ವರ್ಗೋ ಯಸ್ಮಾತ್.

ಪ್ರದ್ಯುಮ್ನ ಪ್ರದ್ಯುಮ್ನ (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಂ ಬೃಹ್ಮಂ ಬಲಮಸ್ಯ. ಮನ್ಮಥನ ಅವತಾರ. ರುಕ್ಮಿಣೀ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣರ ಪುತ್ರ. [ಈತನನ್ನು ಶಂಬರಾಸುರನು ಮಾಯೆಯಿಂದ ಒಂದು ಅಪಹರಿಸಿ ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಹಾಕಿದನು. ಒಂದು ಮೀನು ಈ ಶಿಶುವನ್ನು ನುಂಗಿತು. ಬೆಸ್ಸನು ಈ ಮೀನನ್ನು ಹಿಡಿದು ತಂದು ಅದರೊಳಗಿದ್ದ ಶಿಶುವನ್ನು ಶಂಬರಾಸುರನ ರಾಣಿ ಮಾಯಾವತಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿದನು. ರಾಣಿಯು ಮಗುವಿಗೆ ಮಾಯಾವಿದ್ಯೆಗಳನ್ನು ಕಲಿಸಿ ಶಂಬರನನ್ನು ಕೊಲ್ಲಿಸಿ ಮಗುವನ್ನು ರುಕ್ಮಿಣಿಗೆ ತಂದು ಒಪ್ಪಿಸಿದಳು. ನಾರದನಿಂದ ತನ್ನ ಮಗನೆಂದು ತಿಳಿದ ರುಕ್ಮಿಣಿಯು ಸಂತೋಷದಿಂದ ಪುತ್ರನನ್ನು ಕರೆದುಕೊಂಡಳು.] "ಹಿತಾ-ಶಿಷ್ಯಾ ದನುಜೇಂದ್ರಭತ್ಯಾಃ ಪ್ರದ್ಯುಮ್ನವಿಕಾಂತಿಭಯಾನಿವೃತ್ತಾಃ" ಯಾದಂ 20-66.

ಪ್ರದ್ಯೋತ ಪ್ರದ್ಯೋತ (ಪುಂ) 1. ರಶ್ಮಿ, ಕಿರಣ. ಪ್ರದ್ಯೋತತೇ — ಪ್ರ + ದ್ಯುತ (ದೀಪ್ತೌ) "ಬನ್" (3-1-134). 2. ಬೆಳಗುವುದು, ಪ್ರಕಾಶಿಸುವುದು, ಹೊಳೆಯುವುದು. 3. ಮಗಧ ದೇಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. "ಪ್ರದ್ಯೋತಸ್ಯ ಸುತಾ ವಸಂತಸಮಯಸ್ತ್ವಂ ತೇತಿ ನಾನ್ಯಾ ಧೃತಿಮ್" ರತ್ನಾಂ 1-10.



**ಪ್ರಯೋಗ ಪ್ರಯೋಗ** (ಪುಂ) 1. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. ಪ್ರ+ಋತ (ದೀಪ್ತ) "ಯು" (3-2-149). "ಪ್ರಯೋಗಸಮಂ ಪೀರಾ: ಪ್ರಹೃಷಾ: ಪ್ರತುಪಾಸತ" ಯಾದಂ 22-236. (ನಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶ, ದೀಪ್ತಿ. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-2-149). (ವಿಂ) 3. ಹೊಳೆಯುವ, ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ. ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (3-2-149). "ದೇವ: ಪ್ರಭಾಪ್ರಭುರಿವ ಸ್ಮರಶಾಸ್ತ್ರಸುನು: ಪ್ರಯೋಗನ: ಸುಧನದುರ್ಧರಧಾಮಧಾಮಾ" ಕುಮಾಂ 17-23.

**ಪ್ರವೃತ್ತ ಪ್ರಯೋಗ** (ಪುಂ) ಪಲಾಯನ, ಓಡಿ, ಓಡಿಹೋಗುವುದು. ಪ್ರಕೃಷ್ಠೋ ದ್ರವ:.

**ಪ್ರವಾಹ ಪ್ರಯೋಗ** (ಪುಂ) 1. ಪಲಾಯನ, ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಂಡು ಓಡಿಹೋಗುವುದು. ಪ್ರ+ಋ (ಗತೌ) "ಘ" (3-2-27). 2. ವೇಗವಾಗಿ ಹೋಗುವುದು.

**ಪ್ರವಾಹಿನ್ ಪ್ರಯೋಗಿನ್** (ವಿಂ) ಓಡಿಹೋಗುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಪಲಾಯನದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. ಪ್ರ+ಋ (ಗತೌ) "ಗಿಣಿ:" (3-2-38).

**ಪ್ರವೃತ್ತ ಪ್ರಯೋಗ** (ವಿಂ) ಓಡಿಹೋದ, ಪಲಾಯನ ಮಾಡಿದ. ಪ್ರ+ಋ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (3-2-38). "ತುರಗ್ಗಮಂ ಪ್ರವೃತ್ತಮೇಕಯಾ ದಿಶಾ" ಮಾಘಂ 12-22.

**ಪ್ರವಹ ಪ್ರಯೋಗ** (ನಂ) 1. ಯುದ್ಧ, ಸಂಗ್ರಾಮ. ಪ್ರ+ಋ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಕ್ಯು:" (3-2-41). "ಪ್ರಹಿತ: ಪ್ರವಹಾನ್ ಪ್ರವಹಾನಹಮಾಕಾರಯಿತುಂ ಮಹೀಮತಾ" ಮಾಘಂ 16-42. 2. ಓಡುವುದು, ಸೇಳುವುದು. "ಪ್ರವಹಂ ಧಾರಣೇ ರಣಂ" ಮೇದಿಂ. (ವಿಂ) 3. ದೊಡ್ಡ ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ, ಅತೀಶಯವಾದ ಧನವುಳ್ಳವನು. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಂ ಧನಂ ಯಸ್ಯ.

**ಪ್ರವಹ ಪ್ರಯೋಗ** (ನಂ) 1. ಬಾಯಿಂದ ಉದಿ ತುಂಬುವುದು. ಪ್ರ+ಋ (ಧವಾನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-2-149). 2. ಸೇನನ್ನು ಬರಗೊಳಿಸುವ ವಸ್ತು.

**ಪ್ರವಹ ಪ್ರಯೋಗ** (ಪುಂ) 1. ಹಿಂಸೆ, ಬಾಧೆ, ತೊಂದರೆ. ಪ್ರ+ಋ (ಪ್ರಸಹನೆ) "ಘ" (3-2-149). 2. ಮೇಲೆ ಬೀಳುವುದು, ಅಕ್ರಮಣ. 3. ಅಸಹನೆ. 4. ಗರ್ವ, ಕೊಬ್ಬು, ಸೊಕ್ಕು.

**ಪ್ರವಹ ಪ್ರಯೋಗ** (ವಿಂ) 1. ಹಿಂಸಿಸುವವನು, ಪೀಡಿಸುವವನು, ತೊಂದರೆ ಕೊಡುವವನು. ಪ್ರ+ಋ (ಪ್ರಸಹನೆ) "ಘ" (3-2-149). 2. ಅಕ್ರಮಣ ಮಾಡುವವನು, ಮುತ್ತಿಗೆ ಹಾಕುವವನು. 3. ಬಲಾತ್ಕರಿಸುವವನು.

**ಪ್ರವಹ ಪ್ರಯೋಗ** (ನಂ) 1. ತೊಂದರೆ ಕೊಡುವುದು, ಹಿಂಸಿಸುವುದು. 2. ಅಕ್ರಮಣ ಮಾಡುವುದು. 3. ಬಲಾತ್ಕರಿಸಿ ವ್ಯಭಿಚಾರ ಮಾಡುವುದು. 4. ಮಾನಭಂಗಮಾಡು

ವುದು. ಪ್ರ+ಋ (ಪ್ರಸಹನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-2-149). 5. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 6. ತೊಂದರೆ ಕೊಡುವವನು. 7. ಅಕ್ರಮಣ ಮಾಡುವವನು. 8. ಬಲಾತ್ಕರಿಸಿ ವ್ಯಭಿಚಾರ ಮಾಡುವವನು. 9. ಮಾನಭಂಗ ಮಾಡುವವನು. ಪ್ರ+ಋ (ಪ್ರಸಹನೆ) "ಲ್ಯು:" (3-2-149).

**ಪ್ರವಹ ಪ್ರಯೋಗ** (ವಿಂ) 1. ತೊಂದರೆ ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಅಕ್ರಮಣ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ+ಋ (ಪ್ರಸಹನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102).

**ಪ್ರವಾಹ ಪ್ರಯೋಗ** (ಪುಂ) 1. ಮಹಾಮಾತ್ರ, ರಾಜನಿಗೆ ಮುಖ್ಯ ಸಹಾಯಕನಾಗಿರುವ ಮುಖ್ಯ ಅಧಿಕಾರಿ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಧೀಯತೇ—ಪ್ರ+ಋ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-2-149). (ಪುಂ) 2. ಸೇನಾಪತಿಗಳ ಅಧ್ಯಕ್ಷ. ಪ್ರ+ಋ "ಲ್ಯು:" (3-2-149). (ನಂ) 3. ಮೂಲಪ್ರಕೃತಿ, ಸಾಂಖ್ಯಮತದಲ್ಲಿ ಸತ್ತ್ವ ರಜಸ್ಸು ಮತ್ತು ತಮಸ್ಸು ಈ ಮೂರು ಗುಣಗಳುಳ್ಳ ಪ್ರಕೃತಿ. ಪ್ರವಹ ಸರ್ವಮತ್ರ—ಪ್ರ+ಋ "ಲ್ಯುಟ್" (3-2-149). 4. ಪರಮಾತ್ಮ. 5. ಬುದ್ಧಿ, ಪ್ರಜ್ಞೆ. (ವಿಂ) 6. ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ. 7. ಮುಖ್ಯ. "ಶಮಪ್ರಧಾನೇಷು ತಪೋಧನೇಷು ಗೃಹಂ ಹಿ ದಾಹಾತ್ಮಕಮಸ್ತಿ ತೇಜ:" ಶಾಕುಂ 2-7. "ರತ್ನೇಷು ಪೂಜಯೇದಂ ಪ್ರಧಾನಪುಷ್ಪಂ: ಸಹ" ಮನುಂ 9-203. "ಉಪಸರ್ಜನಂ ಪ್ರಧಾನಸ್ಯ ಧರ್ಮತೋ ನೋಪಪದ್ಯತೇ. ಪಿತಾ ಪ್ರಧಾನಂ ಪ್ರಜನೇ ತಸ್ಮಾದ್ಧರ್ಮೇಣ ತಂ ಲ್ಯಜೇತ್" ಮನುಂ 9-121. "ಪ್ರಧಾನಂ ಸ್ಯಾನ್ಮಹ ಮಾತ್ರೇ ಪ್ರಕೃತೌ ಪರಮಾತ್ಮನಿ. ಪ್ರಜ್ಞಾಯಾಮಪಿ ಚ ಕಲಿಬಮೇಕತ್ವೇ ತುತಮೇ ಸದಾ" ಮೇದಿಂ. "ಮಹಾಮಾತ್ರ: ಪ್ರಧಾನ: ಸ್ಯಾತ್" ಎಂದಾ. ಬೋಪಾ ಲಿತ ವಚನವಿರುವುದರಿಂದ ಮಹಾಮಾತ್ರ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಪುನಃಪುನಃ ಸಲಿಂಗ ಪ್ರಯೋಗಗಳೂ ಉಂಟು.

**ಪ್ರವಾಹಾತು ಪ್ರಯೋಗಾತು** (ಪುಂ) ಶುಕ್ರಧಾತು, ವೀರ್ಯ. **ಪ್ರವಾಹಮನ್ತ್ರಿನ್ ಪ್ರಯೋಗಮಂತ್ರಿನ್** (ಪುಂ) ಹಿರಿಯ ಮಂತ್ರಿ, ಮುಖ್ಯ ಸಚಿವ, ಮೊದಲ ಸಚಿವ, ರಾಷ್ಟ್ರದ ಪ್ರಧಾನ ಸಚಿವ. ಪ್ರಧಾನ: ಮುಖ್ಯ: ಮಂತ್ರಿ. ಪ್ರಧಾನಸಚಿವ: ಪ್ರಧಾನ ಸಚಿವ, -ಅಮಾತ್ಯ: -ಅನಾತ್ಯ:.

**ಪ್ರವಿ ಪ್ರಯೋಗ** (ಪುಂ) ಸೇವಿ, ಚಕ್ರಧಾರಿ, ರಥದ ಚಕ್ರದ ಅಂಚು. ಪ್ರವೀಯತೇಜೇನ—ಪ್ರ+ಋ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಕ್ತಿ:" (3-2-92). "ಚಕ್ರೇ ಪ್ರವಿರಿವಾಸಯತೋ ನಾಸ್ಯ ಶಯಂ ಪಲಾಯಿತುಮ್" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ 41-44. "ಪ್ರವಿ-ಮಂಡಲೋದತ್ತಪರಾಗಧನವಲಯಮಧ್ಯವರ್ತಿನ:" ಮಾಘಂ 14-99.

**ಪ್ರವಿ ಪ್ರಯೋಗ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉತ್ತಮವಾದ ಪ್ರಜ್ಞೆ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಬುದ್ಧಿ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಾ ಧೀ: (ವಿಂ) 2. ಉತ್ತಮ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು, ಬುದ್ಧಿವಂತ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಾ ಧೀಯಸ್ಯ.



**ಪ್ರಖ್ಯಾಪಿತ ಪ್ರಧೂಪಿತ** (ವಿಂ) 1. ಸಂತಾಪಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ದುಃಖಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರ + ಧೂಪ (ಸಂತಾಪೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। "ಅವಿಷಹ್ಯವ್ಯಸನಪ್ರಖ್ಯಾಪಿತಾಂ" ಕುಮಾಂ 4-30। 2. ಕಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಸುಟ್ಟು ಬಿಸಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ವಾಸನೆ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟು, ಸುವಾಸನೆ ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಖ್ಯಾಪಿತಾ -ಧೂಪಿತಾ. 4. ಸೂರ್ಯನು ಚಲಿಸುವ ದಿಕ್ಕು. 5. ಕಷ್ಟಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಹೆಂಗಸು, ಕ್ಲೇಶಕ್ಕೆ ಒಳಗಾದ ಹೆಂಗಸು. "ಪ್ರಖ್ಯಾಪಿತಾ ಕಲೇಶಿತಾಯಾಂ ಸೂರ್ಯಗಂತವ್ಯದಿಶ್ಯಪಿ" ಮೇದಿಂ।

**ಪ್ರಧ್ವಂಸ ಪ್ರಧ್ವಂಸ** (ಪುಂ) 1. ನಾಶ, ಪ್ರಳಯ. ಪ್ರ + ಧ್ವಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ) ಭಾವೇ "ಛಕ್" (3-3-104)। "ಪ್ರಧ್ವಂಸಮೇತಿ ವ್ಯಥಿತಾಚ್ಚ ತೇಜಃ" ಕಿರಾಂ 16-16। 2. ಸಾಂಖ್ಯ ಮತದಲ್ಲಿ ಕಳೆದುಹೋದ ಅವಸ್ಥೆ.

**ಪ್ರಧ್ವಂಸಿತ ಪ್ರಧ್ವಂಸಿತ** (ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಹುಟ್ಟುಡ ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರ + ಧ್ವಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। "ಪ್ರಧ್ವಂಸಿತಾನ್ವತಮಸಸ್ತತ್ರೋದಾಹರಣಂ ರವಿಃ" ಮಾಘಂ 2-33।

**ಪ್ರಪಂಚ ಪ್ರಪಂಚ** (ಪುಂ) 1. ವಿಪರ್ಯಾಸ, ವ್ಯತ್ಯಾಸ. ಪ್ರ + ಪಚಿ (ವ್ಯಕ್ತೀಕರಣ) "ಅಚ್" (3-1-134)। 2. ವಿಸ್ತಾರ, ಹರಡುವುದು, ಮುಂದೆ ಬೆಳೆಯುವುದು. ಪಚಿ (ವಿಸ್ತಾರವಚನ) ಅಧಿಂ "ಛಕ್" (3-3-121)। "ಭರತಜನಕವಿಪ್ರಣೀತಕಾವ್ಯಪ್ರಥಿತಾಙ್ಕಾ ಇವ ನಾಡಕಪ್ರಪಂಚಾಃ" ಮಾಘಂ 20-44। 3. ಸಂಚಯ, ಕೂಡಿಸುವುದು, ರಾಶಿ ಹಾಕುವುದು. 4. ಪ್ರತಾರಣ, ವಂಚನೆ, ಮೋಸ. 5. ಸಂಸಾರ, ಸಂಸಾರವು ಭ್ರಾಂತಿರೂಪ ವೈಪರೀತ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದರಿಂದ ಭ್ರಾಂತಿ ಮೂಲಕವಾಯಿತು. 6. ವಿಶದ ಪಡಿಸುವುದು, ವಿವರಿಸುವುದು. "ಪ್ರಪಂಚೋ ವಿಪ್ರಲಮ್ಬನೇ। ವಿस्तಾರೇ ಸಂಚಯೇಷಿ ಸ್ಯಾತ್" ಹೇಮಂ।

**ಪ್ರಪಂಚಿತ ಪ್ರಪಂಚಿತ** (ವಿಂ) 1. ವಿಸ್ತಾರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಬೆಳೆಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರ + ಪಚಿ (ವಿಸ್ತಾರವಚನ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। 2. ವಂಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಮೋಸಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ವಿವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ವಿಶದಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

**ಪ್ರಪತತ್ ಪ್ರಪತತ್** (ವಿಂ) ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಶತ್" (3-2-124)। "ನಾಮುಚ್ಛತ್ ಕೌಪಿತೌ ಹಂತುಮಿಷ ಪ್ರಪತನ್ನಪಿ" ಕುಮಾಂ 16-44।

**ಪ್ರಪತನ ಪ್ರಪತನ** (ನಂ) 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳುವುದು. ಪ್ರ + ಪಲ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ವಿಶ್ಲೇಷ ಹೊಂದುವ ವಸ್ತುವಿಗೆ ಆಶ್ರಯವಾಗಿದ್ದು ಚಲನವಿಲ್ಲದೆ ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವ ವಸ್ತು, ಎಲೆಗಳಿಗೆ ಆಶ್ರಯವಾಗಿದ್ದು ಎಲೆಗಳು ಉದುರಿಬಿದ್ದರೂ ಚಲಿಸದೆ ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವ ವೃಕ್ಷ.

"ಧ್ರುವಪಾಞೇಷಾದಾನಮ್" ಪಾಂ ಸೂಂ 1-4-24 ಸೂತ್ರದಿಂದ ವೃಕ್ಷವು ಅಪಾದಾನ ಸಂಜ್ಞೆಯನ್ನು ಹೊಂದುವುದು. ವೃಕ್ಷಾ-ತ್ಯಂ ಪತತಿ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಮರದಿಂದ ಬೀಳುವ ಎಲೆಗಳಿಗೆ ಆಶ್ರಯವಾಗಿದ್ದ ವೃಕ್ಷವು ಅಪಾದಾನ ಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳದ್ದು, ಇದೇ ಧ್ರುವ. ಇದೇ ಪ್ರಪತನ ಪದದ ಅರ್ಥ. ಪ್ರಪತತ್ಯಸ್ಮಾತ್ -ಅಪಾದಾನೇ "ಲ್ಯುಟ್"। ನಿಪಾಂ (3-4-64)।

**ಪ್ರಪತ್ತಿ ಪ್ರಪತ್ತಿ** (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬಿದ್ದು. 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಉದುರಿದ.

**ಪ್ರಪತ್ತಿ ಪ್ರಪತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶರಣಾಗತಿ, ಕಷ್ಟದ ಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಸಮರ್ಥನಾದ ರಕ್ಷಕನೊಬ್ಬನನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)। ಪರಮಾತ್ಮನ ಆಜ್ಞೆಗೆ ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ನಡೆದು ಅವನ ನಿಗ್ರಹಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರನಾಗುವುದರಿಂದ ಜೀವನು ಅನೇಕ ವಿಧ ಕ್ಲೇಶಪರಂಪರೆಗಳಿಗೆ ಪಾತ್ರನಾಗಬೇಕಾಗುವುದು. ಈ ಕಷ್ಟದಿಂದ ವಿಮುಕ್ತಿ ಪಡೆಯಲು ಸರ್ವಶರಣನಾದ ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನೇ ರಕ್ಷಕನನ್ನಾಗಿ ಆಶ್ರಯಿಸಬೇಕು. ಪರಮಾತ್ಮನ ಕೃಪೆಗೆ ಪಾತ್ರನಾಗಬೇಕಾದರೆ ಪ್ರಪತ್ತಿಯು ಸುಲಭವಾಯಿತು.

ಸಂಸಾರಬಂಧನಹೇತುವಾದ ಪ್ರಕೃತಿಯ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಮೋಕ್ಷವು ತನಗೆ ಸರ್ವಥಾ ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲವೆಂದು ತಿಳಿದ ಜೀವನು ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಶರಣಾಗತನಾಗಬೇಕು. ಇದೇ ಪ್ರಪತ್ತಿ, ಭರಣ್ಯಾಸ. "ಮಾಮೇಕಮೇವ ಶರಣಮಾತ್ಮಾನಂ ಸರ್ವ-ದೇಹಿನಾಮ್। ಯಾಹಿ ಸರ್ವಾತ್ಮಭಾವೇನ ಯಾಸ್ಯಸಿ ಹ್ಯಕುತೋಭಯಮ್"।

ಪರಮಾತ್ಮನೇ ಸಕಲ ಜಗನ್ನಿಯಾಮಕ. ಜಗದ್ವ್ಯಾಪಾರಗಳೆಲ್ಲವೂ ಅವನ ಅಧೀನ. ತನ್ನ ರಕ್ಷಣೆಯೂ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಸೇರಿದುದು ಎಂದು ರಕ್ಷಣೆಯ ಭಾರವನ್ನು ಅವನ ಚರಣಾರವಿಂದಗಳಲ್ಲಿ ಅರ್ಪಿಸಿ ಪುನರ್ಭವದ ಭೀತಿಯಿಲ್ಲದಿರಬಹುದು. "ಅಹಂ ಮದ್ರಕ್ಷಣಮರೋ ಮದ್ರಕ್ಷಣಫಲಂ ತಥಾ। ನ ಮಮ ಶ್ರೀಪತೇರೇವೇತ್ಯಾತ್ಮಾನಂ ನಿಕ್ಷಿಪೇದ್ಬುಧಃ॥ ನಿಃಶಂಕಃ ತತ್ವದೃಷ್ಟಯಾ ನಿರವಧಿಕದಯಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ಸಂರಕ್ಷಕಂ ತ್ವಾಂ ನ್ಯಸ್ಯ ತ್ವತ್ಪಾದಪದ್ಮೇ ವರದ ನಿಜಮರಂ ನಿರ್ಮರೋ ನಿರ್ಮಯೋಽಸ್ಮಿ"॥

ಇಂತಹ ಜೀವನ ರಕ್ಷಣೆಯು ತನಗೇ ಸೇರಿದುದರಿಂದ ಅವನ ಅಪರಾಧಗಳನ್ನು ಗಣಿಸದೆ ಪರಮಾತ್ಮನು ಸರ್ವ ಭೂತಗಳ ರಕ್ಷಣಾರೂಪವಾದ ವ್ರತವನ್ನು ಕೈಗೊಂಡಿರುತ್ತಾನೆ.

ಮಹಾತ್ಮನಾದ ವಿಭೀಷಣನು ತನ್ನ ಪತ್ನೀ ಪುತ್ರ ಮಿತ್ರ ಮೊದಲಾದ ಸರ್ವಸ್ವವನ್ನೂ ಪರಿತ್ಯಜಿಸಿ ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನನ್ನು ತನ್ನ ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ "ಪರित್ಯಕ್ತಾ ಮಯಾ ಲಕ್ಷ್ಮಾ ಮಿತ್ರಾಣಿ ಚ ಧನಾನಿ ಚ। ಭವದ್ಗತಂ ಚ ಮೇ ರಾಜ್ಯಂ ಜೀವಿತಂ ಚ



ಸುಖಾನಿ ಚ" ಎಂದು ಹೇಳಿ "ಸರ್ವಲೋಕಶರಣ್ಯಾಯ ರಾಘವಾಯ  
ಮಹಾತ್ಮನೇ । ನಿವೇದಯತ ಮಾಂ ಕ್ಷಿಪ್ರಂ ವಿभीಷಣಮುಪಸ್ಥಿತಮ್"  
ಎಂದು ಯಾಚಿಸಿದನು.

ಆಗ ಸರ್ವಲೋಕಶರಣ್ಯನಾದ ಶ್ರೀರಾಮಜಿಂದ್ರನು  
"ಸಕೃದೇವ ಪ್ರಪನ್ನಾಯ ತವಾಸ್ಮೀತಿ ಚ ಯಾಚತೇ । ಅಮಯಂ  
ಸರ್ವಭೂತೇಭ್ಯೋ ದದಾಮ್ಯೇತದ್ವ್ರತಂ ಮಮ" ಎಂದು ಅಭಯವನ್ನು  
ನೀಡಿ ಶರಣಾಗತನಾದವನನ್ನು ಎಂದಿಗೂ ಕೈಬಿಡುವುದಿಲ್ಲ  
ವೆಂದು ಸರ್ವಲೋಕರಕ್ಷಕತ್ವವನ್ನು ಘೋಷಿಸಿದನು.

ಜೀವನಿಗೂ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೂ ಇರುವ ಶೇಷ ಶೇಷಿಭಾವ  
ಅಕಿಂಚನ್ಯ (ಕರ್ಮ, ಜ್ಞಾನ ಮತ್ತು ಭಕ್ತಿಯೋಗ ರೂಪ  
ವಾದ ಸಾಧನವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ) ಅನನ್ಯ ಗತಿತ್ವ (ಸಮರ್ಥರಾದ  
ರಕ್ಷಕರಾರೂ ಇಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ) ಈ ಮೂರೂ ಪ್ರಪತ್ತಿಗೆ  
ಮುಖ್ಯ ಕಾರಣಗಳು. "ನ ಧರ್ಮನಿಷ್ಠೋಽಸ್ಮಿ ನ ಚಾತ್ಮವೇದಿ  
ನ ಭಕ್ತಿಮಾಸ್ತವಚ್ಚರಣಾರವಿಂದೇ । ಅಕ್ರಿಚ್ಛನೋಽನ್ಯಗತಿಃ  
ಶರಣ್ಯ ತ್ವತ್ಪಾದಮೂಲಂ ಶರಣಂ ಪ್ರಪದ್ಯೇ" ಸ್ತೋ ೨೦ । "ಮುಕ್ತುರ್ವ  
ಶರಣಮಹಂ ಪ್ರಪದ್ಯೇ" ಶ್ರುತಿಃ ।

ಪ್ರಪತ್ತಿಗೆ (1) ಆನುಕೂಲ್ಯಸ್ಯ ಸಂಕಲ್ಪಃ (ಭಗವತ್ತೀತಿರ  
ವಾದ ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಗಾಗಿ ಸಂಕಲ್ಪಿಸುವುದು). (2) ಪ್ರಾತಿ-  
ಕೂಲ್ಯಸ್ಯ ವರ್ಜನಮ್ (ಅವನಿಗೆ ಸಮತವಲ್ಲದ ಕಾರ್ಯಗಳ  
ಪರಿತ್ಯಾಗ). (3) ಮಹಾವಿಶ್ವಾಸಃ (ಪರಮಾತ್ಮನು ತನ್ನನ್ನು  
ರಕ್ಷಿಸುವನೆಂಬ ಮಹಾವಿಶ್ವಾಸ, ನಂಬಿಕೆ). (4) ಕಾರ್ಪಣ್ಯಮ್  
(ನಮ್ಮ ರಕ್ಷಣೆಯಲ್ಲಿ ನಾವು ಅಸಮರ್ಥರೆಂದು ಭಾವಿಸಿ  
ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು ಬೇಡುವುದು). ಮತ್ತು  
(5) ಗೋಪ್ತೃತ್ವವರಣಮ್ ("ತಮೇವ ಶರಣಂ ಗच्छ सर्वभावेन  
भारत" ಎಂಬ ಪರಮಾತ್ಮನ ಉಪದೇಶದಂತೆ ಅವನಲ್ಲೇ  
ರಕ್ಷಕತ್ವವನ್ನು ಯಾಚಿಸುವುದು). ಈ ಐದೂ ಮುಖ್ಯ  
ವಾದ ಅಂಗಗಳು.

ಈ ಪ್ರಪತ್ತಿಯಿಂದ ಮೋಕ್ಷಪ್ರಾಪ್ತಿಮಾತ್ರವಲ್ಲದೆ  
ಐಹಿಕವಾದ ಅಪೇಕ್ಷೆಗಳೂ ಸಿದ್ಧಿಸುವುವು. ಪ್ರಪತ್ತಿಗೆ ಜಾತಿ  
ಮತಗಳ ಭೇದವಿಲ್ಲದೆ ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷ ಭೇದವಿಲ್ಲದೆ ಎಲ್ಲರೂ  
ಅರ್ಹರು. "ಮಾಂ ಹಿ ಪಾಠಂ ವ್ಯಪಾಶ್ರಿತ್ಯ ಯೇಽಪಿ ಸ್ಯುಃ ಪಾಪ-  
ಯೋನಯಃ । ಸ್ತ್ರೀಯೋ ವೈಶ್ಯಾಸ್ತಥಾ ಶೂದ್ರಾಸ್ತೇಽಪಿ ಯಾಂತಿ ಪರಾಂ  
ಗತಿಮ್" ಗೀತಾ ೯-೩೨ ।

ಪ್ರಪತ್ತಿಯಿಂದ ಭಗವನ್ನಾಯಾರೂಪವಾದ ಪ್ರಕೃತಿಯ  
ಸಂಬಂಧವು ಹೋಗಿ ಮೋಕ್ಷವು ಲಭಿಸುವುದು. "ದೇವೀ  
ಹ್ಯೇಷಾ ಗುಣಮಯಿ ಮಮ ಮಾಯಾ ದುರತ್ಯಯಾ । ಮಾಮೇವ ಯೇ ಪ್ರಪದ್ಯಂತೇ  
ಮಾಯಾಮೇತಾಂ ತರಂತಿ ತೇ" ಗೀತಾ ೭-೧೪ । ಇದರಿಂದ  
ಎಂದೆಂದಿಗೂ ಪುನರ್ಜನ್ಮವಿಲ್ಲ. "आब्रह्मभुवनल्लोकाः  
पुनरावर्तिनोऽर्जुन । मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न

विद्यते" ಗೀತಾ ೮-೧೬ । ಇಂತಹ ಪ್ರಪತ್ತಿಯು  
ಅಜಾರ್ಯಾರ ಮೂಲಕ ನಡೆಯುವುದು ಸರ್ವೋತ್ತಮ.

ಪ್ರಪಥ ಪ್ರಪಥ (ಪುಂ) 1. ಉತ್ತಮವಾದ ಮಾರ್ಗ, ಒಳ್ಳೆಯ  
ದಾರಿ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಃ ಪನ್ಥಾಃ "ಅಃ" (೪-೪-೭೪) । (ವಿಂ)  
2. ಶಿಥಿಲವಾದ, ಸಡಿಲವಾದ.

ಪ್ರಪದ ಪ್ರಪದ (ನಂ) ಪಾದದ ಅಗ್ರಭಾಗ, ಕಾಲಿನ ತುದಿ.  
ಪ್ರಗತಂ ಪದಮ್ ।

ಪ್ರಪದನ ಪ್ರಪದನ (ನಂ) "ಪ್ರಪತ್ತಿ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಪ್ರ+ಪದ  
(ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

ಪ್ರಪನ್ನ ಪ್ರಪನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಶರಣಾಗತಿ ಹೊಂದಿದವನು.  
ಪ್ರಪದ್ಯತೇ ಸ್ಮ — ಪ್ರ + ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) ।  
"यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां  
त्वां प्रपन्नम्" ಗೀತಾ ೨-೭ । "ಸಕೃದೇವ ಪ್ರಪನ್ನಾಯ ತವಾಸ್ಮೀತಿ  
ಚ ಯಾಚತೇ । ಅಮಯಂ ಸರ್ವಭೂತೇಭ್ಯೋ ದದಾಮ್ಯೇತದ್ವ್ರತಂ ಮಮ"  
ರಾಮಾಂ । 2. ಹೊಂದಿರುವ, ಸೇರಿರುವ. "तदा सहा-  
स्माभिरनुज्ञया गुरोरियं प्रपन्ना तपसे तपोवनम्" ಕುಮಾಂ  
೪-೪೯ । 3. ಹೊಂದಿದ, ಪಡೆದ. "अपि प्रपन्नां प्रकृति  
विलोक्य" ನೈಷಂ ೯-೧೨೧ ।

ಪ್ರಪಲಾಯಿತ ಪ್ರಪಲಾಯಿತ (ವಿಂ) ಓಡಿಹೋದ, ಪಲಾ-  
ಯನ ಮಾಡಿದ.

ಪ್ರಪಾ ಪ್ರಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯಜ್ಞಶಾಲೆ, ಯಾಗಶಾಲೆ.  
ಪ್ರಪಿಬನ್ಯಸ್ಯಾಮ್—ಪ್ರ+ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಅಙ್" (೩-೩-೧೦೬) ।  
"विश्वामित्रं पुरस्कृत्य शतानन्दं च धामिकम् । प्रपामध्ये  
तु विधिवत् वेदिं कृत्वा महातपाः" ರಾಮಾಂ । 2. ಪಾನೀಯ  
ಶಾಲೆ, ಅರವಟ್ಟಿಗೆ, ಯಾತ್ರಾರ್ಥಿಗಳಿಗೆ ನೀರು ಪಾನಕ  
ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಕೊಡುವ ಗೃಹ.

ಪ್ರಪಾಠಕ ಪ್ರಪಾಠಕ (ಪುಂ) ಗ್ರಂಥದ ಒಂದು ಭಾಗ.  
ಅಧ್ಯಾಯ ಪರಿಚ್ಛೇದ ಉಲ್ಲಾಸ ಮೊದಲಾದುದು.

ಪ್ರಪಾಣಿ ಪ್ರಪಾಣಿ (ಪುಂ) ಹಸ್ತ, ಅಂಗೈ, ಪ್ರಾಣತಲ.  
ಪ್ರಕೃಷ್ಠಃ ಪಾಣಿಃ ।

ಪ್ರಪಾತ ಪ್ರಪಾತ (ಪುಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುವುದು, ಧುಮುಕು  
ವುದು. ಪ್ರ + ಪತ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಛಕ್" (೩-೩-೧೮) ।  
"मूर्च्छि गङ्गाप्रपातेन धीतपादाम्भसा च वः" ಕುಮಾಂ  
೬-೪೭ । 2. ಬೆಟ್ಟದಿಂದ ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುವ ಜಾಗ, ಕಮರಿ,  
ಬೆಟ್ಟದ ಕಡಿದಾದ ಮುಖ. ಪ್ರಪತನ್ಯಸ್ಮಾತ್ — ಪ್ರ + ಪತ್  
"ಛಕ್" (೩-೩-೧೯) । "मधु पश्यति मूढात्मा प्रपातं  
नैव पश्यति । करोति निन्दितं कर्म नरकं नैव पश्यति"  
ದೇವಿಭಾಂ । 3. ಪ್ರವಾಹವು ಮೇಲಿಂದ ಬೀಳುವ ಜಾಗ.



ಪ್ರಪತನ್ಯಸ್ಮಿನ್—ಅಧಿಂ “ಘ” (೩-೩-೧೨೧)। “ಗಜ್ಞಾ-  
ಪ್ರಪಾತಾಂತವಿರುದ್ಧಶಘ್ನಂ ಗೌರೀಗುರೋಗ್ಹರಮಾವಿವೇಶ” ರಘುಂ  
೨-೨೬। 4. ಗಿರಿನದಿ, ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ಹರಿಯುವ  
ನದಿ. 5. ತೀರ, ದಡ. 6. ಅಕ್ರಮಣ, ಮೇಲೆ ಬೀಳು  
ವುದು, ಮುತ್ತಿಗೆ. 7. ಹಕ್ಕಿಗಳ ಎಂಟು ವಿಧ ಹಾರಾಟ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಬಗೆ. “ಸಂಪಾತಂ ಚ ಪ್ರಪಾತಂ ಚ ಮಹಾಪಾತಂ  
ನಿಪಾತನಮ್। ಚಕ್ರತೀರ್ಯಕ್ ತಥಾ ಚೋರ್ಧ್ವಮಷ್ಟಮಂ ಲಘುಸಂಜ್ಞಕಮ್।  
8. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳಿಸುವುದು, ಒಂದು ಜಾಗದಿಂದ ಹೊರ  
ದೂಡುವುದು. “ತತ್ ನಸ್ಯಂ ದೇಯಂ ವಾತಾಭಿಭೂತೇ ಶಿರಸಿ  
ದಂತಕೇಶಶ್ಚಪ್ರಪಾತದಾರುಣಕರ್ಣಶೂಲಕರ್ಣಕ್ಷೇಪಂ” ಸುಶ್ರುತಂ  
ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೪೦-೨೨। 9. ಗಂಟೆ, ಹಳ್ಳ. “ಪ್ರಪಾತೋ  
ನಿರ್ಜೇರೇ ಭಗೌ। ಅವತೇ ಪತನೇ ಕಂಠೇ” ಹೇಮಂ। ಪ್ರ+ಪಲ್+  
ಣಿಚ್ “ಘ” (೩-೩-೧೨೧)।

ಪ್ರಪಾಯಿನ್ ಪ್ರಸಾಯಿನ (ವಿಂ) 1. ಪಾನಮಾಡುವವನು,  
ಕುಡಿಯುವವನು. ಪ್ರ+ಪಾ (ಪಾನೇ) “ಣಿನಿ:” (೩-೧-೧೩೪)।  
2. ರಕ್ಷಕ, ಕಾಪಾಡುವವನು. ಪ್ರ+ಪಾ (ರಕ್ಷಣೇ) “ಣಿನಿ:”।

ಪ್ರಪಿತಾಮಹ ಪ್ರಪಿತಾಮಹ (ವಿಂ) 1. ತಂದೆಯ ತಾತ,  
ತಾತನ ತಂದೆ, ಅಜ್ಜನ ತಂದೆ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಪ್ರಪಿತಾಮಹ:। “ಪಿತಾ  
ಯಸ್ಯ ನಿವೃತ್ತ: ಸ್ಯಾತ್ ಜೀವೇದಾಪಿ ಪಿತಾಮಹ:। ಪಿತು: ಸ  
ನಾಮ ಸಂಕೀರ್ತಯ ಕೀರ್ತಯೇತ್ ಪ್ರಪಿತಾಮಹಮ್” ಮನುಂ ೩-೨೨೧।  
2. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ, ಪರಮಾತ್ಮ. “ವಾಯುರ್ಯಗೋಷ್ಣಿ: ವರುಣ:  
ಶಶಾಂಕು: ಪ್ರಜಾಪತಿರ್ವೈ ಪ್ರಪಿತಾಮಹಃ” ಗೀತಾ ೧೧-೩೧। 3.  
ಪ್ರಜಾಪತಿಗಳ ತಂದೆಯಾದ ಪಿತಾಮಹ (ಚತುರ್ಮುಖ) ನ  
ತಂದೆ ಪರಬ್ರಹ್ಮ. “ಮೂರ್ಖ: ಸ್ವಸ್ತರುಸ್ತಾರ: ಸ ಪಿತಾ  
ಪ್ರಪಿತಾಮಹ:” ವಿಂ ಸಂ।

ಪ್ರಪಿತಾಮಹಿ ಪ್ರಪಿತಾಮಹೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಪಿತಾಮಹನ  
ಪತ್ನಿ, ತಂದೆಯ ಅಜ್ಜಿ, ತಾತನ ತಾಯಿ. ಪ್ರಪಿತಾಮಹಸ್ಯ  
ಸ್ತ್ರೀ—“ಢೀ” (೪-೧-೪೧)। “ಸ್ವೇನ ಭರ್ತೃ ಸಹಸ್ರಾಕ್ಷಂ  
ಮಾತಾ ಮುಕ್ತೇ ಸ್ವಧಾಮಯಮ್। ಪಿತಾಮಹಿ ಚ ಸ್ವೇನೈವ ಸ್ವೇನೈವ  
ಪ್ರಪಿತಾಮಹಿ”।

ಪ್ರಪಿತ್ಸಾ ಪ್ರಪಿತ್ಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊಂದಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಹೊಂದಲು  
ಅಭಿಲಾಷೆ. ಪ್ರ+ಪದ (ಗತೌ) +ಸನ್ “ಅ:” (೩-೩-೧೦೨)।

ಪ್ರಪಿತ್ಸು ಪ್ರಪಿತ್ಸು (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ,  
ಪಡೆಯಲು ಅಭಿಲಾಷೆಯುಳ್ಳ. ಪ್ರ+ಪದ (ಗತೌ) +ಸನ್  
“ಃ” (೩-೨-೧೬೮)। “ಪ್ರಪಿತ್ಸೋ: ಕಿಂ ಚ ತೇ ಮುಕ್ತಿ  
ನಿ:ಸ್ಪೃಹಸ್ಯ ಕಲೇಬರೇ” ಕಿರಾಂ ೧೧-೧೬। 2. ಬೀಳಲು  
ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. “ಪಯಸಿ ಪ್ರಪಿತ್ಸುರಪರಾಮ್ಬುನಿಧಿ:”  
ಮಾಧಂ ೯-೧।

ಪ್ರಪುತ್ರಾಡ ಪ್ರಪುತ್ರಾಡ (ವಿಂ) ಚಕ್ರಮಂದವೃಕ್ಷ, ತಗಚಿಗಿಡ.  
ಪುಮಾಸಂ ನಾಡಯತಿ—ನಡ (ಭ್ರಂಶೇ) +ಣಿಚ್ “ಅ” (೩-೨-೧)।  
ಪ್ರಕೃಷ್ಠ: ಪುತ್ರಾಡ:। ಡಸ್ಯ ಲತ್ವಮ್। ಪ್ರಪುತ್ರಾಡ: ಪ್ರಪುತ್ರಾಡ:  
ಪ್ರಪುತ್ರಾಡ: ಪ್ರಪುತ್ರಾಡ: ಪ್ರಪುತ್ರಾಡ: ಪ್ರಪುತ್ರಾಡ: ಎಂಬ  
ರೂಪಗಳೂ ಉಂಟು.

ಪ್ರಪೂರಿಕಾ ಪ್ರಪೂರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣುಳ್ಳದ ಗಿಡ. ಪ್ರಪೂಯತೇ  
ಕೃಷ್ಣಕೇ:—ಪ್ರ+ಪೂ ಕರ್ಮಂ “ಘ” (೩-೩-೧೨೧)।

ಪ್ರಪೂರಣ ಪ್ರಪೂರಣ (ನಂ) 1. ತುಂಬುವುದು. 2. ಸಮಾಪ್ತಿ  
ಗೊಳಿಸುವುದು, ಕೊನೆ ಮುಟ್ಟಿಸುವುದು. 3. ಸೇರಿಸುವುದು,  
ಅಳವಡಿಸುವುದು.

ಪ್ರಪೂರಿತ ಪ್ರಪೂರಿತ (ವಿಂ) 1. ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟ, ಭರ್ತಿಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊನೆ ಮುಟ್ಟಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಳವಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪ್ರಪೌಂಡರೀಕ ಪ್ರಪೌಂಡರೀಕ (ನಂ) ಬಿಳಿ ನೈದಿಲೆ ಗೆಡ್ಡೆ.

ಪ್ರಪೌತ್ರ ಪ್ರಪೌತ್ರ (ವಿಂ) ಮೊಮ್ಮಗನ ಮಗ, ಮಗನ  
ಮೊಮ್ಮಗ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಪೌತ್ರ:। (ಸ್ತ್ರೀಂ)—ಪೌತ್ರಿ—ಪೌತ್ರಿಣಿ.  
ಮೊಮ್ಮಗನ ಮಗಳು, ಮಗನ ಮೊಮ್ಮಗಳು.

ಪ್ರಪುಲ್ಲ ಪ್ರಪುಲ್ಲ (ವಿಂ) 1. ಎಕಾಸಹೊಂದಿದ, ಅರಳಿದ.  
ಪ್ರಪುಲ್ಲತಿ—ಪ್ರ+ಪುಲ್ಲ (ವಿಕಸನೇ) “ಅ” (೩-೧-೧೩೪)।  
“ಪ್ರಪುಲ್ಲತಾಪಿಚ್ಛಿನಿರ್ಭರಭೀಷುಮಿ: ಶುಭೇಶ್ಚ ಸಪ್ತಚ್ಛದಪಾಸು  
ಪಾಂಡುಮಿ:” ಮಾಧಂ ೧-೨೨। 2. ಎಸಾರವಾಗಿರುವ,  
ಅಗಲವಾಗಿರುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ತೆರೆದಿರುವ (ಕಣ್ಣು). “ಪ್ರಪುಲ್ಲ-  
ಚಕ್ಷು:ಕುಮುದ: ಕುಮಾರ್ಯಾ” ಕುಮಾಂ ೭-೭೪।

ಪ್ರಬದ್ಧ ಪ್ರಬದ್ಧ (ವಿಂ) ಬಿಗಿಯಾಗಿ ಕಟ್ಟಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಗಂಟು  
ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಭದ್ರಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ+ಬಂಧ (ಬಂಧನೇ)  
“ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)।

ಪ್ರಬಂಧ ಪ್ರಬಂಧ (ವಿಂ) 1. ಗ್ರಂಥ, ಕೃತಿ. 2. ಕಾವ್ಯ  
ಮೊದಲಾದ ರಚನೆ. ಪ್ರಬಂಧಯತೇ—ಪ್ರ+ಬಂಧ (ಬಂಧನೇ)  
“ಘ” (೩-೩-೧೮)। “ಮಾಸಸೌಮಿಲ್ಲಕಕವಿಪುತ್ರಾದಿನಾಂ  
ಪ್ರಬಂಧಾನತಿಕ್ರಮ್ಯ ವರ್ತಮಾನಕವೇ: ಕಾಲಿದಾಸಸ್ಯ ಕ್ರಿಯಾಯಾಂ ಕಥಂ  
ಬಹುಮಾನ:” ಮಾಲಂ ೧। 3. ಸಾತತ್ಯ, ವಿಚ್ಛಿತ್ತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವ  
ವಿಕೆ, ಎಡೆಬಿಡದಿರುವಿಕೆ. “ಅತಿಪ್ರಬಂಧಪ್ರಹಿತಾಸ್ತವೃಷ್ಟಿಭಿ:  
ತಮಾಶ್ರಯಂ ದುಃಪ್ರಸಹಸ್ಯ ತೇಜಸ:” ರಘುಂ ೩-೫೮। 4. ಕಟ್ಟು,  
ಗಂಟು. ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। —ಬಂಧನಮ್  
—ಬಂಧನಪಃ. “ಪ್ರಬಂಧನಾಯ ಪ್ರಜಿಘಾತಯ ಜಿಘಾತು:” ಕಿರಾಂ  
೧೬-೩೬।

ಪ್ರಬಂಧ ಪ್ರಬಂಧ (ವಿಂ) ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಬರೆಯುವವನು,  
ಕಾವ್ಯ ನಾಟಕಾದಿಗಳನ್ನು ರಚಿಸುವವನು. ಪ್ರ+ಬಂಧ  
(ಬಂಧನೇ) “ತು” (೩-೧-೧೩೩)।



ಪ್ರಬಂಧತಾ ಪ್ರಬಂಧತಾ (ಸ್ತಂ) ಗ್ರಂಥವನ್ನು ರಚಿಸುವಿಕೆ, ಗ್ರಂಥನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡುವಿಕೆ. ಪ್ರಬಂಧ: ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯). "ತದತ್ರ ಮದ್ವಾಪಿತಸುತ್ರಪದತೌ ಪ್ರಬಂಧತಾಸ್ತು ಪ್ರತಿಬಂಧತಾ ನ ತೇ" ನೆಪಂ ೯-೩೭.

ಪ್ರಬಂಧ ಪ್ರಬಂಧ (ವಿಂ) ಉತ್ತಮವಾದ, ಮೇಲ್ಮಟ್ಟದ.

ಪ್ರಬಲ ಪ್ರಬಲ (ಪುಂ) 1. ಪಲ್ಲವ, ಬಿಗುರು, ಕಿಸಲಯ.

ಪ್ರಕೃಷ್ಠ ಬಲತಿ-ಬಲ (ಪ್ರಾಣನೆ ಧಾನ್ಯಾವರೋಧನೆ ಚ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪).

2. ಹೆಚ್ಚು ಬಲಶಾಲಿಯಾದ, ಹೆಚ್ಚು ಶಕ್ತಿವಂತ. "ಪ್ರಣಾಶನಾಯ ಪ್ರಬಲಸ್ಯ ವಿಧಿಷ:" ರಘುಂ ೩-೬೦.

3. ಬಹಳ ಜೋರಾದ, ಅತಿ ಮೇಗವಾದ. "ಕೋಟ-ರಮಕಾಲವೃಷ್ಟಿ ಪ್ರಬಲಪುರೋವಾತಯಾ ಗಮಿತೇ" ಮಾಲಂ ೪-೨.

4. ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. "ತತ್ಸಾಂದ್ರಸಿನ್ಧುರಪರಾಗರಾಗೇ ಧ್ರುವಂ ಪ್ರಬಲಪ್ರಬಲಾಣಾಂ ತತ್" ನೆಪಂ ೭-೧೦೦. (ನಂ) 5.

ಹೆಚ್ಚು ಬಲ, ಅಧಿಕವಾದ ಶಕ್ತಿ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠ ಬಲಮ್.

ಪ್ರಬಾಧಕ ಪ್ರಬಾಧಕ (ವಿಂ) 1. ಪೀಡಿಸುವವನು,

ತೊಂದರೆಪಡಿಸುವವನು. 2. ಹಿಮ್ಮೆಟ್ಟಿಸುವವನು,

ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಓಡಿಸುವವನು.

ಪ್ರಬಾಧನ ಪ್ರಬಾಧನ (ನಂ) 1. ಪೀಡಿಸುವುದು, ತೊಂದರೆ

ಪಡಿಸುವುದು. 2. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಓಡಿಸುವುದು.

ಪ್ರಬಾಧಮಾನ ಪ್ರಬಾಧಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಪೀಡಿಸುತ್ತಿರುವ,

ತೊಂದರೆಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಬಾಧ (ವಿಲೋಡನೆ)

"ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಪ್ರಬಾಧಮಾನಸ್ಯ ಜಗಂತಿ

ಧೀಮನ್" ಮಹಿಂ ೧೨-೨. 2. ಹಿಮ್ಮೆಟ್ಟಿಸುತ್ತಿರುವ.

ಪ್ರಬಾಧ್ಯಮಾನ ಪ್ರಬಾಧ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) 1. ತೊಂದರೆ

ಪಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಪೀಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಬಾಧ

(ವಿಲೋಡನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪).

2. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಓಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

ಪ್ರಬುದ್ಧ ಪ್ರಬುದ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಎಚ್ಚರಗೊಂಡ, ನಿದ್ರೆಯಿಂದ

ಎದ್ದಿರುವ. ಪ್ರ + ಬುದ್ಧ (ಅವಗಮನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:"

(೩-೪-೭೨). "ಅಮ್ಯಕ್ತಮಿವ ಸ್ತಾತ: ಶುಚಿರಶುಚಿಮಿವ

ಪ್ರಬುದ್ಧ ಇವ ಸುಪ್ತಮ್" ಶಾಕುಂ ೪-೧೧. 2. ವಿಕಾಸಹೊಂದಿದ,

ಅರಳಿರುವ. "ಪ್ರಬುದ್ಧಪುಂಡರೀಕಾಕ್ಷಂ ಬಾಲಾತರ್ಪನಿಭಾಂಶುಕಮ್

ದಿವಸಂ ಶಾರದಮಿವ ಪ್ರಾರಮ್ಭಸುಖದರ್ಶನಮ್" ರಘುಂ ೧೦-೯೦.

3. ಬುದ್ಧಿವಂತ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿದವನು.

ಪ್ರಬುಧ್ಯಮಾನ ಪ್ರಬುಧ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಎಚ್ಚರಗೊಳ್ಳು

ತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಬುದ್ಧ (ಅವಗಮನೆ) "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೦೨).

2. ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಅರಿಯುತ್ತಿರುವ. "ಸಮೀ-

ಹಿತೋದಕಮಿದಂ ದ್ವಯೋರಿತಿ ಪ್ರಬುಧ್ಯಮಾನೋ ನ ನಿರೋಧಮಾದಧೇ"

ಶಾಕುಂ ೧೪-೯.

ಪ್ರಬೋಧ ಪ್ರಬೋಧ (ಪುಂ) 1. ಉತ್ತಮ ಜ್ಞಾನ, ಒಳ್ಳೆಯ

ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ಪ್ರ + ಬುದ್ಧ (ಅವಗಮನೆ) "ವಚ್" (೩-೩-೧೮).

"ಸುತಾತ್ಮಜಾ: ಸವಯಸ: ಪ್ರಥಿತಪ್ರಬೋಧಂ ಪ್ರಾಬೋಧಯನ್ಮುಷಸಿ

ವಾಗ್ಭಿರಹದಾರವಾಚ:" ರಘುಂ ೪-೬೪. 2. ಎಚ್ಚರಿಕೆ, ನಿದ್ರೆ

ಯಿಂದ ಎಚ್ಚರಗೊಳ್ಳುವುದು. "ಸಾ ಬಾಣವರ್ಷಿಣಂ ರಾಮಂ

ಯೋಧಯಿತ್ವಾ ಸುರದ್ವಿಷಾಮ್. ಅಪ್ರಬೋಧಾಯ ಸುಪ್ತವಾಪ ಗೃಧ್ರಚ್ಛಾಯೇ

ವಹುಚಿಂತಿ" ರಘುಂ ೧೨-೪೦. 3. ತಿಳಿಸುವುದು, ಬೋಧನೆ

ಮಾಡುವುದು. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪). -ಬೋಧನಮ್

-ಬೋಧನಮ್. 1. ವಾಸನೆಯಿಲ್ಲದ ವಸ್ತುವಿಗೆ ವಾಸನೆ

ಕಟ್ಟುವುದು. 2. ತಿಳಿಸುವುದು, ಬೋಧಿಸುವುದು.

ಪ್ರಬೋಧಕ ಪ್ರಬೋಧಕ (ಪುಂ) ನಿದ್ರೆಯಿಂದ ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸು

ವವನು.

ಪ್ರಬೋಧಯತ್ ಪ್ರಬೋಧಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಬೋಧಿಸು

ತ್ತಿರುವ, ತಿಳಿಯಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಬುದ್ಧ (ಅವಗಮನೆ) +

ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). 2. ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸು

ತ್ತಿರುವ, ನಿದ್ರೆಯಿಂದ ಎಬ್ಬಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಕೀಪ್"

(೪-೧-೬). -ಬೋಧಯಂತಿ -ಬೋಧಯಂತಿ. "ಶಾನಚ್"

(೩-೨-೧೨೪). -ಬೋಧಯಮಾನ: -ಬೋಧಯಮಾನ.

ಪ್ರಬೋಧವತ್ ಪ್ರಬೋಧವತ್ (ವಿಂ) 1. ಉತ್ತಮಜ್ಞಾನ

ವುಳ್ಳವನು, ಒಳ್ಳೆಯ ತಿಳಿವಳಿಕೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು.

ಪ್ರಬೋಧೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪). 2. ಭ್ರಾಂತಿ

ಯಿಂದ ಮುಕ್ತನಾದ, ಎಚ್ಚರಗೊಂಡ, ಯಥಾರ್ಥ ಜ್ಞಾನ

ವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿದ. "ಮುನಿರಯಾತ್ಮಮನಃ ಪ್ರಬೋಧವಾನ್

ಪ್ರಕಾಶಯಂತ ಸ್ವಮಸಾತ್ವಬುದ್ಧಯತ" ನೆಪಂ ೯-೧೨೧.

ಪ್ರಬೋಧಿತ ಪ್ರಬೋಧಿತ (ವಿಂ) 1. ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,

ನಿದ್ರೆಯಿಂದ ಎಬ್ಬಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಬುದ್ಧ (ಅವಗಮನೆ) + ಣಿಚ್

"ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). 2. ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೋಧಿಸ

ಲ್ಪಟ್ಟ. "ತಮಮ್ಯನಂದತ್ಪ್ರಥಮಂ ಪ್ರಬೋಧಿತ: ಪ್ರಜೇಶ್ವರ: ಶಾಸನ-

ಹಾರಿಣಾ ಹರೇ:" ರಘುಂ ೩-೬೮.

ಪ್ರಬೋಧ್ಯಮಾನ ಪ್ರಬೋಧ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸ

ಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ನಿದ್ರೆಯಿಂದ ಎಬ್ಬಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

ಪ್ರ + ಬುದ್ಧ (ಅವಗಮನೆ) + ಣಿಚ್ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪).

2. ತಿಳಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಬೋಧಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

ಪ್ರಬಂಜನ ಪ್ರಬಂಜನ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠ

ಮನಸ್ತಿ - ಭಂಜೋ (ಆಮರ್ದನೆ) "ಯುಚ್" (೩-೨-೭೮).

"ಕ್ಷಣಾದಧೇಷ ಕ್ಷಣದಾಪತಿಪ್ರಭ: ಪ್ರಬಂಜನಾಧ್ಯಯಜವೇನ

ವಾಜಿನಾ" ನೆಪಂ ೧-೬೭. (ನಂ) 2. ಮುರಿಯುವುದು,

ಒಡೆಯುವುದು, ತುಂಡುಮಾಡುವುದು. (ವಿಂ) 3.

ಮುರಿಯುವವನು, ಒಡೆಯುವವನು, ತುಂಡುಮಾಡು



ವವನು. "ಸಾ ಸಲಜ್ಜಾ ವಿಹಸ್ಯಾಹ ಪುತ್ರಂ ದೇಹಿ ಸುರೋತ್ತಮ |  
ಬಲವಂತಂ ಮಹಾಕಾಯಂ ಸರ್ವದರ್ಪಪ್ರಭಂಜನಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ.

**ಪ್ರಭವ ಪ್ರಭವ (ಪುಂ)** 1. ಉತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಹೇತು, ಜನ್ಮಕ್ಕೆ ಕಾರಣ. ಪ್ರಭವತ್ಯಸ್ಮಾತ್ — ಪ್ರ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) ಅಪಾದಾನೇ "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭) | "ಅನಂತರತ್ನಪ್ರಭವಸ್ಯ ಯಸ್ಯ ಹಿಮಂ ನ ಸೌಭಾಗ್ಯವಿಲೋಪಿ ಜಾತಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೩ | 2. ನದಿಯ ಮೂಲಸ್ಥಾನ, ಹೊಳೆಯ ಉತ್ಪತ್ತಿಯ ಸ್ಥಳ. "ತಸ್ಯಾ ಏವ ಪ್ರಭವಮವಲಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ಗೌರಂ ತುಷಾರೈಃ" ಮೇಧಂ ೧-೪೨ | 3. ಜನ್ಮ, ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟು. ಭಾವೇ "ಅಪ್" "ಯಮಾನನ್ಯಾತ್ಮ-ಭುವೋಽಪಿ ಕಾರಣಂ ಕಥಂ ಸಲಕ್ಷ್ಯಪ್ರಭವೋ ಭವಿಷ್ಯತಿ" ಕುಮಾಂ ೪-೮೧ | 4. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಪ್ರಕೃತೋ ಭವಃ ಜನ್ಮಯಸ್ಯ | "ದೇವಾದಿಜನವೈಜಾತ್ಯಾತ್ ಪ್ರಕೃತೋತ್ಪತ್ತಿಮತ್ವತಃ | ಅವಿಜ್ಞಾದೋಪವೇಧ್ಯಾತ್ ಪ್ರಭವಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | "ಸಂಭವೋ ಭಾವನೋ ಭರ್ತಾ ಪ್ರಭವಃ ಪ್ರಭುರೀಶ್ವರಃ" ವಿಂ ಸಂ | 5. ಹುಟ್ಟಿದ ಜಾಗ, ಉತ್ಪತ್ತಿಯ ಸ್ಥಾನ. ಪ್ರಭವತ್ಯಸ್ಮಿನ್ | 6. ಪರಾಕ್ರಮ, ಶಕ್ತಿ, ಬಲ. ಕರಂ "ಅಪ್" | 7. ಜ್ಞಾನದ ಮೂಲಸ್ಥಾನ. 8. ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲ ನೆಯ ಸಂವತ್ಸರ. "ಪ್ರಭವೋ ಜನ್ಮಮೂಲೇ ಸ್ಯಾತ್ ಜನ್ಮಹೇತೌ ಪರಾಕ್ರಮೇ | ಜ್ಞಾನಸ್ಯ ಚಾದಿಮಸ್ಥಾನೇ" ಮೇಧಿಂ | (ವಿಂ) 9. ಪರಾಕ್ರಮಶಾಲಿ. 10. ಹುಟ್ಟಿದ, ಉತ್ಪನ್ನವಾದ.

**ಪ್ರಭವಿಣ್ಣು ಪ್ರಭವಿಣ್ಣು (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರಭು, ಯಜಮಾನ, ಸ್ವಾಮಿ. ಪ್ರಭವಿತುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ — ಪ್ರ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಇಣ್ಣು" (೩-೨-೧೩೮) | "ನ ಭರ್ತಾ ನೈವ ಚ ಸುತೋ ನ ಪಿತಾ ಭ್ರಾತರೋ ನ ಚ | ಆದಾನೇ ವಾ ವಿಸರ್ಗೇ ವಾ ಸ್ತ್ರೀಧನೇ ಪ್ರಭವಿಣ್ಣವಃ" | 2. ಸಮರ್ಥ, ಶಕ್ತಿ.

**ಪ್ರಭಾ ಪ್ರಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು, ಕಾಂತಿ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಭಾತಿ—ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) "ಅಙ್" (೩-೩-೧೦೬) | "ಪ್ರಭಾ-ಮಹತ್ಯಾ ಶಿಕ್ಷಯೇವ ದೀಪಸ್ತ್ರಿಮಾರ್ಗೇವ ತ್ರಿದಿವಸ್ಯ ಮಾರ್ಗಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೨೮ | 2. ಕಿರಣ, ರಶ್ಮಿ. 3. ಸೂರ್ಯನ ಸುತ್ತಲೂ ಮಂಡಲಾಕಾರವಾಗಿ ಹರಡುವ ಛಾಯೆ, ಪರಿವೇಷ. 4. ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ. 5. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 6. ಕುಬೇರನ ಪತ್ನಿ. 7. ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಹನ್ನೆರಡ ನೆಯ ಭಂದಸ್ಥಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಲಕ್ಷ್ಮಣಃ ನಗಣದ್ವಯ ರಂಗಣದ್ವಯವಿದ್ವಲ್ಲಿ "ಪ್ರಭಾ" ವೃತ್ತವಾಗುವುದು. "ಸ್ವರಶರ-ವಿರತಿರ್ನನೌ ರೌ ಪ್ರಭಾ" ವೃಂ ರಂ | **ಗಣವಿನ್ಯಾಸಃ**

ನ ನ ರ ರ

||| ||| 010 010

**ಪ್ರಭಾಕರ ಪ್ರಭಾಕರ (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯ. ಪ್ರಭಾಂ ಕರೋತಿ—  
ಕೃ ಕೃ (ಕರಣೇ) "ಠಃ" (೩-೨-೨೧) | "ಕೃಶಾನುರಪ-

ಧೂಮತ್ವಾತ್ ಪ್ರಸನ್ನತ್ವಾತ್ ಪ್ರಭಾಕರಃ | ರಸೋವಿಪ್ರಕೃತಾಬಾಸ್ತಾಮಪ-  
ವಿದ್ವಿಶುಚಾವಿವ" ರಘುಂ ೧೦-೭೪ | 2. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. "ಪ್ರಭಾಕರೋಽಗ್ನಿಸೂರ್ಯಯೋಃ" ಮೇಧಿಂ | 3. ಚಂದ್ರ. "ತಾವತೀತ್ಯ ರಥಾನಿಕಂ ವಿಮುಕ್ತೌ ಪುರುಷರ್ಷಭೌ | ದದೃಶಾತೇ ಯಥಾ ರಾಹೋ-  
ರಾಸ್ಯಾನ್ಮುಕ್ತೌ ಪ್ರಭಾಕರೌ" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೧೦೧-೪ | 4. ಸಮುದ್ರ. 5. ಪರಮ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 6. ಒಬ್ಬ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಮೀಮಾಂಸಾಶಾಸ್ತ್ರ ಪ್ರವರ್ತಕ. ಇದರಿಂದ ಈ ದರ್ಶನಕ್ಕೆ "ಪ್ರಾಭಾಕರ" ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು, 7. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 8. ಕುಶದ್ವೀಪದ ಒಂದು ಖಂಡ.

**ಪ್ರಭಾಕೀಡ ಪ್ರಭಾಕೀಟಿ (ಪುಂ)** ಖದ್ಯೋತ, ಮಿಂಚು ಹುಳ. ಪ್ರಭಾಯುತಃ ಕೀಡಃ |

**ಪ್ರಭಾಂಜನ ಪ್ರಭಾಂಜನ (ಪುಂ)** ನುಗ್ಗಿಮರ.

**ಪ್ರಭಾತ ಪ್ರಭಾತ (ಪುಂ)** 1. ಪ್ರಾತಃಕಾಲ, ಬೆಳಕು ಹರಿಯುವ ಕಾಲ, ಹಗಲಿನ ಪ್ರಾರಂಭಕಾಲ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಭಾತುಂ ಪ್ರವೃತ್ತಮ್—  
ಪ್ರ + ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೧) | "ಪರಿಮಲ-  
ಛಿರಾಭಿರ್ನಯಕೃತಾಸ್ತು ಪ್ರಭಾತೇ ಯುವತಿಭಿರಪಭೋಗಾನ್ವೀರಚಃ  
ಪುಷ್ಪಮಾಲಾಃ" ಮಾಧಂ ೧೧-೨೭ | (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಭೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಕಾಂತಿಯುಕ್ತವಾದ. ಪ್ರ + ಭಾ ಕರಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | ವೈದ್ಯ ಪುರೋಹಿತ ಮಂತ್ರಿ ಮತ್ತು ಜೋಯಿಸ ಇವರನ್ನು ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿ ನೋಡಬೇಕು. "ವೇದಃ ಪುರೋಹಿತೋ ಮನ್ವಿರೋ ದೇವಜ್ಞೋಽಪಿ ಚತುರ್ಯಕಃ | ಪ್ರಭಾತಕಾಲೇ ದ್ರಷ್ಟವ್ಯೋ ನಿದ್ರಾಂ ಸ್ವಪ್ನಾಂ ವಿಮುಚ್ಯತೇ" | ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿ ಶ್ರೋತ್ರೀಯ ಸುಮಂಗಲಿ ಅಗ್ನಿ ಗೋವು ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರ ಇವರ ದರ್ಶನದಿಂದ ಸಕಲ ವಿಪತ್ತುಗಳೂ ಪರಿಹಾರವಾಗುವುವು. "ಶ್ರೋತ್ರಿಯಂ ಸುಭಾಗಾಮಿನಿಂ ಗಾಂಧರ್ವಾನಿಚಿತಂ ತಥಾ | ಪ್ರಾತಃಕಾಲಾಯ ಯಃ ಪಶ್ಯೇದಾಪಙ್ಗುಯಃ ಸ ವಿಮುಚ್ಯತೇ" |

**ಪ್ರಭಾವ ಪ್ರಭಾವ (ಪುಂ)** 1. ಪ್ರತಾಪ, ಉತ್ತಮ ಬೊಕ್ಕಸದ ಸ್ಥಿತಿ ಮತ್ತು ಸೈನ್ಯ ಮತ್ತು ದುಷ್ಟದಮನ ಇವುಗಳಿಂದಂಟಾದ ತೇಜಸ್ಸು, ಪ್ರಭು ಶಕ್ತಿ. ಪ್ರ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಭವ್" (೩-೩-೧೮) | "ಸ ಪ್ರತಾಪಃ ಪ್ರಭಾವಶ್ಚ ಯತ್ತೇಜಃ ಕೋಶದಂಡಜಮ್" ಅಮಂ | 2. ಮಹಿಮೆ, ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ. "ಪ್ರಕಾಶಯನ್ ಕಿಂಚಿದಿವಾಪ್ರಮೇಯಃ ಪ್ರಭಾವ-  
ಮಾತ್ಮೀಯಮನನ್ಯವೇದಮ್" ಯಾದಂ ೨೩-೧೯ | 3. ಶಾಂತಿ. 4. ಶಕ್ತಿ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. "ಪೂಜ್ಯತೇ ಯದಪೂಜ್ಯೋಽಪಿ ಯದಗಮ್ಯೋಽಪಿ  
ಗಮ್ಯತೇ | ವಂದ್ಯತೇ ಯದವಂದ್ಯೋಽಪಿ ಸ ಪ್ರಭಾವೋ ಧನಸ್ಯ ಚ" ಪञ्ಚತಂ ೧-೭ | 5. ಸೂರ್ಯನ ಒಬ್ಬ ಪುತ್ರ.

**ಪ್ರಭಾವಜ ಪ್ರಭಾವಜ (ನಂ)** 1. ಮಹಿಮೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ. 2. ಪ್ರಭುಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಪ್ರಭಾವಾತ್ ಜಾಯತೇ—  
ಜನಿ (ಪ್ರಾದುಮವಿ) "ಜಃ" (೩-೨-೯೮) |



ಪ್ರಭಾವತ್ ಪ್ರಭಾವತ್ (ವಿಂ) 1. ಕಾಂತಿಯುಕ್ತವಾದ, ಪ್ರಭೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪ್ರಭಾಸ್ವಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪)।  
ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ತೀಪ್" (೪-೨-೬)। -ವತೀ-ವತೀ.

ಪ್ರಭಾವವತ್ ಪ್ರಭಾವವತ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಭುಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಮಹಾಭವತೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪ್ರಭಾವಾಸ್ವಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪)। 2. ಶಕ್ತಿಮತ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಶಾಲಿ. "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। ಪ್ರಭಾವಿನ್ ಪ್ರಭಾವಿನ್ "ಪ್ರಭಾವಿನಂ ಭಾವಿನಮಂತಮಾತ್ಮನ:" ಮಾಘಂ ೧-೬೭।

ಪ್ರಭಾಪ ಪ್ರಭಾಪ (ಪುಂ) 1. ಅಷ್ಟವಸುಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. (ವಿಂ) 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾತಾಡುವವನು. ಪ್ರಕೃಷ್ಣಂ ಭಾಷತೇ - ಪ್ರ + ಭಾಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಅಪ್" (೩-೧-೧೩೪)। (ನಂ) 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾತಾಡುವುದು. ಭಾವೇ "ಭಪ್" (೩-೩-೧೮)।

ಪ್ರಭಾಪಣ ಪ್ರಭಾಪಣ (ನಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾತಾಡುವುದು, ಪ್ರ + ಭಾಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಪ್ರಭಾಸ ಪ್ರಭಾಸ (ಪುಂ) ಸೋಮತೀರ್ಥ. ಒಂದು ಪುಣ್ಯ ತೀರ್ಥ, ದ್ವಾರಕೆಯ ಹತ್ತಿರವಿರುವ ಒಂದು ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ. ಈ ಕ್ಷೇತ್ರವು ಗುಜರಾತ ಪ್ರಾಂತದಲ್ಲಿದೆ. ಇಲ್ಲಿ ಸುಪ್ರಸಿದ್ಧ ಸೋಮನಾಥ ದೇವಸ್ಥಾನವಿರುವುದು. ಅರ್ಜುನನು ತೀರ್ಥ ಯಾತ್ರಾಸಮಯದಲ್ಲಿ ಇಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸಿದನು. ಯಾದವರು ಸ್ವಯಂಧಕಲಹದಿಂದ ಪರಸ್ಪರ ಹೊಡೆದಾಡಿ ಹತರಾದುದು ಈ ಪ್ರಭಾಸ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ.

ಪ್ರಭಿನ್ನ ಪ್ರಭಿನ್ನ (ಪುಂ) ಮತ್ತೆಗಜ, ಮದಿಸಿದ ಅನೆ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಭಿಜತೇ ಸ್ಮ-ಪ್ರ+ಭಿವಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।  
"ಯಥಾ ನಲವನಂ ಕೃದ್: ಪ್ರಭಿನ್ನ: ಷಣ್ಡಿಹಾಯನ:। ಮೃದ್ನೀಯಾತ್ತದ್ವದಾ-  
ಯಸ್ತ: ಪಾರ್ಥೋಮೃದ್ನಾತ್ ಚಮ್ ತವ" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೨೮-೨೦।

ಪ್ರಭು ಪ್ರಭು (ಪುಂ) 1. ಸ್ವಾಮಿ, ಯಜಮಾನ. ಅಧಿಪತಿ. ಪ್ರ+ಭು (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಭು:" (೩-೨-೧೮೦)। "ಪ್ರಭುರ್ಭುಷ-  
ಭುವನತ್ರಯಸ್ಯ ಯ: ಶಿರೋಸ್ತಿರಾಗಾದೃಶಮಂ ಚಿಕಿತ್ಸಿಷು:" ಮಾಘಂ ೧-೪೯। 2. ಪತಿ, ಯಜಮಾನ. "ಯಮವಾಪ್ಯ ವಿವರ್ಮಭು:  
ಪ್ರಭು ಹಸತಿ ಛಾಮಪಿ ಶಕ್ರಮರ್ತುಕಾಮ್" ನೆಪಂ ೨-೧೬। 3. ವಿಷ್ಣು. ಬ್ರಹ್ಮಾದಿ ಸಕಲ ಜೀವರಿಗೂ ಭೋಗಾಪವರ್ಗಗಳನ್ನು ಕೊಡಲು ಸಮರ್ಥನಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.  
"ಬ್ರಹ್ಮಾದಿನಾಂ ಚ ಸರ್ವೇಷಾಂ ಭೋಗಮೋಕ್ಷಸಮರ್ಪಣೆ। ಸಮರ್ಥ: ಪ್ರಭು-  
ರಿದ್ಯುಕ್ತ: ಸರ್ವೇಷ್ಠಫಲದೊ ಮನು:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ:। "ಸಂಭವೋ  
ಭಾವನೋ ಭರ್ತಾ ಪ್ರಭವ: ಪ್ರಭುರೀಶ್ವರ:" ವಿಂ ಸಂ। 4. ಪರಿಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. "ಹರಶ್ಚ ಹರಿಣಾಕ್ಷಶ್ಚ ಸರ್ವಭೂತಹರ: ಪ್ರಭು:"।  
5. ಪಾರದ, ಪಾದರಸ. (ವಿಂ) 6. ಸಮರ್ಥ, ಶಕ್ತ. "ನ ಕಾಲಸಾರಂ ಹರಿಣಂ ತದಕ್ಷಿಪ್ಯಂ ಪ್ರಭುರ್ಬದ್ಧಮಭೂಮನೋಭು:"

ನೆಪಂ ೬-೧೯। 7. ಆಡಳಿತ ನಡೆಸುವವನು, ರಾಜ್ಯಭಾರ ಮಾಡುವವನು. 8. ಉತ್ತಮ, ಶ್ರೇಷ್ಠ. "ವೇಶೇಷ್ಯಾತ್ ಪ್ರಕೃತಿಶ್ರೇಷ್ಠತ್ವಾತ್ ನಿಯಮಸ್ಯ ಚ ಧಾರಣಾತ್। ಸಂಸ್ಕಾರಸ್ಯ ವಿಶೇಷಾच्च ವರ್ಣಿನಾಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ: ಪ್ರಭು:" ಮನುಂ ೧೦-೩।

ಪ್ರಭುತ್ವ ಪ್ರಭುತ್ವ (ನಂ) 1. ಸಮಸ್ತವಾದ ಚಿತ್ತು ಮತ್ತು ಅಚಿತ್ತುಗಳ ನಿಯಂತ್ರತ್ವ, ಸಕಲ ಚೇತನ ಮತ್ತು ಅಚೇತನಗಳಿಗೆ ನಿಯಾಮಕನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪ್ರಭೋರ್ಭಾವ: "ತ್ವ:" (೪-೧-೧೧೯)। ಸಕಲ ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿ ಸ್ಥಿತಿ ಪ್ರಳಯಗಳಿಗೂ ಪರಮಾತ್ಮನು ಪ್ರಭುವಾದುದರಿಂದ ಸಕಲ ಚೇತನಾ ಚೇತನಗಳ ಪ್ರಭುತ್ವ (ನಿಯಾಮಕತ್ವ)ವು ಅವನಲ್ಲಿರುವುದು. "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। ಪ್ರಭುತಾ ಪ್ರಭುತಾ. 2. ಒಡೆತನ. 3. ಪ್ರಭುಶಕ್ತಿ. "ಪ್ರಭುತ್ವಭೂಮಾನುಗೃಹಾಣ ವಾ ನ ವಾ" ನೆಪಂ ೯-೧೦೯। 4. ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ, ಪಾರಮ್ಯ. 5. ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. 6. ಅಧಿಕಾರ. "ತದೇವಾ ಭವತ: ಕಾಂತಾ ತ್ಯಜವೆನಾಂ ಗೃಹಾಣ ವಾ। ತಪಸ್ವಿನ್ಮಾ ಹಿ ದಾರೆಷು ಪ್ರಭುತಾ ಸರ್ವತೋಮುಖೀ" ಶಾಕುಂ ೪-೨೬।

ಪ್ರಭುಶಕ್ತಿ ಪ್ರಭುಶಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತಮಕೋಶಬಲ ಮತ್ತು ದುಷ್ಪದಮನಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದ ತೇಜಸ್ಸು. "ಅನು-  
ಪಾಲಯತಾಮುದೇಷ್ಯತೀಂ ಪ್ರಭುಶಕ್ತಿ ದ್ವಿಷತಾಮನೀಹಯಾ" ಕಿರಾಂ ೨-೧೦।

ಪ್ರಭೂತ ಪ್ರಭೂತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಚುರವಾದ, ಹೇರಳವಾದ. ಪ್ರ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ತಂ ಪೊತವಣಿಜಸ್ತತ್ರ ಪ್ರಭೂತ: ಪರ್ಯತೋಷಯನ್" ಯಾದಂ ೨೨-೯೭।  
2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದಿರುವ, ಮೇಲುಗಡೆ ಹೋಗಿರುವ. 3. ಉನ್ನತವಾದ, ಎತ್ತರವಾದ. 4. ಉತ್ಪನ್ನವಾದ, ಉಂಟಾಗಿರುವ.

ಪ್ರಭೃತಿ ಪ್ರಭೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟುವುದು. 2. ಪ್ರಾಯುರ್ಯ, ಹೇರಳವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪ್ರ+ಭು (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।

ಪ್ರಭೂಷ ಪ್ರಭೂಷ್ಣ (ವಿಂ) ಸಮರ್ಥ, ಶಕ್ತ. ಪ್ರ + ಭು (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಸ್ತು:" (೩-೨-೧೩೯)।

ಪ್ರಭೃತಿ ಪ್ರಭೃತಿ (ವಿಂ) 1. (ಸಮಾಸದಲ್ಲಿ ಉತ್ತರಪದ ವಾದಾಗ) ಅದೇ ಮೊದಲಾದ, ಅವನೇ -ಅವಳೇ -ಅವರೇ ಮೊದಲಾದ. "ತತೋ ಭವದಪಥ್ಯಕಾರಿಷು ಚಂದನದಾಸಪ್ರಭೃತಿಷು ನಿಗೃಹ್ಯಮಾಣೇಷು" ಮುದ್ರಾಂ ೩। (ಅವ್ಯಂ) 2. (ಅದು) ಮೊದಲುಗೊಂಡು, (ಅದರಿಂದ) ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ. "ತದಾ ಪ್ರಭೃತ್ಯುನ್ಮದನಾ ಪಿತುಗೃಹೇ ಲಲಾಟಿಕಾಚಂದನಧೂಸರಾಲಕಾ" ಕುಮಾಂ ೪-೪೪।



**ಪ್ರಭೇದ ಪ್ರಭೇದ (ಪಂ)** 1. ಭೇದ, ಪ್ರಕಾರ, ವಿಧ. ಪ್ರ+ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಭವ್" (3-3-121). 2. ಒಡೆಯುವುದು, ಸೇಳುವುದು, ಹೋಳುಮಾಡುವುದು. ಭಾವೇ "ಭವ್" (3-3-12). 3. ಹೊರಕ್ಕೆ ಚೆಮ್ಮುವುದು, ಮದವು ಸ್ರವಿಸುವುದು, ಮದೋದಕವು ಹರಿಯುವುದು. "ಬಭೂವ ತೇನಾತಿತರಾ ಸುತು:ಸಹ: ಕಟಪ್ರಭೇದೇನ ಕರೀವ ಪಾರ್ಥಿವ:" ರಘುಂ 3-36. 4. ಬೇರೆಯಾಗುವುದು.

**ಪ್ರಭೇದಕ ಪ್ರಭೇದಕ (ವಿಂ)** 1. ಒಡೆಯುವ, ಸೇಳುವ, ಬೇರೆಮಾಡುವ. ಪ್ರ+ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಭವ್" (3-1-133). 2. ಭೇದ ತೋರಿಸುವ, ವ್ಯತ್ಯಾಸವನ್ನು ತೋರಿಸುವ.

**ಪ್ರಭಂಶಯ ಪ್ರಭಂಶಕು (ಪಂ)** ಒಂದು ವಿಧ ಮೂಗಿನ ರೋಗ.

**ಪ್ರಭ್ರಷ್ಟ ಪ್ರಭ್ರಷ್ಟ (ನಂ)** 1. ತಲೆಯ ಜಡೆಯಿಂದ ಜೋಲಾಡುವ ಹೂವಿನ ಸರ. ಪ್ರ+ಭ್ರಶು (ಅಭ:ಪತನೇ) "ಕ್ತ:" (3-4-61). (ವಿಂ) 2. ಕೆಳಗೆ ಬಿದ್ದಿರುವ. "ಪ್ರಭ್ರಷ್ಟ: ಸರಭಸಮಮಸೋಜಗಾಹಕೃಡಾಭಿ:" ಮಾಘಂ ೮-೪೯. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೪-೪-೪). -ಭ್ರಷ್ಟಕಮ್.

**ಪ್ರಮತ್ತ ಪ್ರಮತ್ತ (ವಿಂ)** 1. ವಿವೇಕವಿಲ್ಲದವನು, ವಿವೇಚನೆಯ ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದವನು. 2. ಎಚ್ಚರ ತಪ್ಪಿದವನು. ಪ್ರ+ಮಥಿ (ಹರ್ಷೇ) "ಕ್ತ:" (3-4-62). "ಕಶ್ಚಿತ್ಕಾಂತಾ-ವಿರಹಗುಣಾ ಸ್ವಾಧಿಕಾರಾತ್ಪ್ರಮತ್ತ:" ಮೇಘಂ 1-1. "ಮತ್ತಂ ಪ್ರಮತ್ತಮುಮತ್ತಂ ಸುಪ್ತಂ ಬಾಲಂ ಸ್ತ್ರಿಯಂ ಜಡಮ್" ಭಾಗಂ 1-೭-36. 3. ಮದ್ಯಪಾನದಿಂದ ಮದಿಸಿದವನು. 4. ಹುಚ್ಚು ಹಿಡಿದವನು, ಬುದ್ಧಿಭ್ರಮೆಯುಳ್ಳವನು.

**ಪ್ರಮಥ ಪ್ರಮಥ (ಪಂ)** 1. ಪರಶಿವನ ಅನುಚರ. ಪ್ರಮಥತಿ ಕೃಷ್ಣಾನ್ - ಪ್ರ+ಮಥೆ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಅಚ್" (3-1-134). "ಅಪಿ ಶಯನಸಲೀಮ್ಯೋ ದತ್ತವಾಚಂ ಕಥಂಚಿತ್ಪ್ರಮಥಮುಖವಿಕಾರಿ-ಹಸಿಯಾಮಾಸ ಗೂಢಮ್" ಕುಮಾರಂ ೭-೯೫. 2. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. 3. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ಅಳಲೆಗಿಡ.

ಪರಮೇಶ್ವರನ ಪ್ರಮಥರು 36 ಕೋಟಿ ಮಂದಿಯಿರುವರು. ಇವರೆಲ್ಲರೂ ನಾನಾ ರೂಪಗಳನ್ನು ಧರಿಸಿರುವರು. ಪ್ರಮಥರು ಅನೇಕ ಗಣ (ಗುಂಪು) ಗಳಲ್ಲಿರುವರು. ಜಟಿ ಮತ್ತು ಅರ್ಧಚಂದ್ರಧಾರಿಗಳಾಗಿ ಕೆಲವರು ಪರಮೇಶ್ವರನ ಧ್ಯಾನಪರಾಯಣರಾಗಿ ಮದ ಮಾತ್ಸರ್ಯ ಅಹಂಕಾರಗಳನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿ ಸರ್ವದಾ ಪರಮಾತ್ಮನ ಸೇವೆ ಮಾಡುತ್ತಾ ಇರುವರು. ಇವರೆಲ್ಲರೂ ಸಂಸಾರವಿಮುಖರಾಗಿ ಸದಾ ಯೋಗಾಸಕ್ತರಾಗಿ ಬ್ರಹ್ಮಾನಂದವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿರು

ವರು. "ಷಡ್ವಿಂಶತ್ ಸಹಸ್ರಾಣಿ ಪ್ರಮಥಾ ದ್ವಿಜಸತ್ತಮಾ: | ನಾನಾರೂಪಧರಾ ಯೇ ವೈ ಜಟಾಚಂದ್ರಾರ್ಧಮಣಿಧರಾ: | ಯೋಗಿನೋ ಮದಮಾತ್ಸರ್ಯದಂಭಾಹಂಕಾರವಿಜಿತಾ: | ಸಂಸಾರವಿಮುಕ್ತಾ: ಸರ್ವೇ ಯತಯೋ ಯೋಗತತ್ಪರಾ: | ಕೃತ್ವಾ ಪರಿಷದಂ ಕುಚ್ಯಾ ತಿಷ್ಠಂತಿ ವಿಗತಕಲಮಾ: | ಇತ್ಯಾದಿ ಕಾಲಿಕಾಪುಂ. | ಇನ್ನು ಕೆಲವರು (ಎಂಟುಕೋಟಿ ಪ್ರಮಥರು) ಪರಮೇಶ್ವರನು ಪಾರ್ವತಿ ಯೊಡನೆ ಕ್ರೀಡಿಸುತ್ತಿರುವಾಗ ಇವರೂ ಅರ್ಧನಾರೀಶ್ವರರಾಗಿ ದ್ವಾರಪಾಲಕರಾಗಿರುತ್ತಾರೆ. ಪರಮೇಶ್ವರನು ಆಕಾಶಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವಾಗ ಇವರೂ ಹಿಂಬಾಲಿಸಿ ಹೋಗುತ್ತಾ ಪರಮೇಶ್ವರನ ಸೇವೆ ಮಾಡುತ್ತಾರೆ. ಇನ್ನು ಕೆಲವು ಗಣಗಳು ಶಸ್ತ್ರಾಸ್ತ್ರಧಾರಿಗಳಾಗಿ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಹೋರಾಡಿ ಶತ್ರುಸಂಹಾರ ಮಾಡುತ್ತಾರೆ. ಇವರ ಸಂಖ್ಯೆ ಒಂಬತ್ತು (9) ಕೋಟಿ. "ಉಮಾಸಹಾಯಂ ಕ್ರೋಧಂತಮನುಗಚ್ಛಂತಿ ಭೂಷಿತಾ: | ಶೃಂಗಾರವೇಷಾಭರಣಾ: ಅಷ್ಟೌ ತೇ ಕೋಟಯೋ ಗಣಾ: | ಅರ್ಧನಾರೀಶ್ವರಾಶ್ಚಾನ್ಯೇ ಹೃದ್ಯರ್ಧನಾರೀಶ್ವರಂ ಹರಮ್ | ಅನುಯಾಂತಿ ಮಹಾಭಾಗಾಸ್ತುತ್ಯರೂಪಾ ಹರಸ್ಯ ಯೇ | ಅರ್ಧನಾರೀಶರೀರಾಸ್ತು ದ್ವಾರಪಾಲಾ ಭವಂತಿ ತೇ | ಆಕಾಶಮಾರ್ಗಂ ಗಚ್ಛಂತಮನುಗಚ್ಛಂತಿ ನಿತ್ಯಶ: | ನಾನಾಶಸ್ತ್ರಧರಾ: ಶಂಭೋ-ಗಣಾಸ್ತು ಪ್ರಮಥಾ: ಸ್ಮೃತಾ: | ಪ್ರಮಥಂತಿ ಚ ಯುದ್ಧೇಷು ಬುದ್ಧಿಮಾನಾನ್ ಮಹಾಬಲಾನ್ | ತೇ ವೈ ಮಹಾಬಲಾ: ಶೂರಾ: ಸಂಖ್ಯಯಾ ನವಕೋಟಯ: | ಕಾಲಿಕಾಪುಂ |

**ಪ್ರಮಥನ ಪ್ರಮಥನ (ನಂ)** 1. ವಧೆ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. ಪ್ರ+ಮಥೆ (ವಿಲೋಡನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). "ವಾಲಿ ಪ್ರಮಥನಂ ಚೈವ ಸುಗ್ರೀವಪ್ರತಿಪಾದನಮ್" ರಾಮಾಂ. 2. ಕಲಕುವುದು. 3. ಕಡೆಯುವುದು. 4. ಪೀಡಿಸುವುದು, ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ಗಾಯಗೊಳಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 5. ವಧಿಸುವವನು, ಕೊಲ್ಲುವವನು. 6. ಹಿಂಸಿಸುವವನು. ಕೃತಂ "ಲ್ಯು:" (3-1-134). "ಸ ಚಾಶ್ವಿರೂಪಸದೃಶೋ ದೇವತುಲ್ಯಪರಾಕ್ರಮ: | ಸರ್ವಾಸಾಮೇವ ನಾರೀಣಾಂ ಚಿತ್ತಪ್ರಮಥನೋ ರಹ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ |

**ಪ್ರಮಥಾ ಪ್ರಮಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹರೀಶಕಿ, ಅಳಲೆಗಿಡ.

**ಪ್ರಮಥಾಧಿಪ ಪ್ರಮಥಾಧಿಪ (ಪಂ)** ಪ್ರಮಥಗಣಗಳ ಸ್ವಾಮಿಯಾದ ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಶಿವ. ಪ್ರಮಥಾನಾಮಧಿಪ: |

**ಪ್ರಮಥಿತ ಪ್ರಮಥಿತ (ವಿಂ)** 1. ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ+ಮಥ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). 2. ವಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಮಂತ್ರಿನಿಂದ ಕಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. (ನಂ) 4. ನೀರು ಬೆರಸದ ಕಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ ಮೊಸರು.

**ಪ್ರಮಥನತ್ ಪ್ರಮಥನತ್ (ವಿಂ)** 1. ಮಂತ್ರಿನಿಂದ ಕಡೆಯುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಮಥ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಶತ್" (3-2-124).



2. ಪೀಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಕೊಲ್ಲುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಮನ್ವತೀ -ಮುಕ್ತೀ.

ಪ್ರಮಥ್ಯಮಾನ ಪ್ರಮಥ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಕಡೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಮಥ್ಯ (ವಿಲೋಡನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನನ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಆಭಾತಿ ಭೃಷಿಷಮಯಂ ಸಮುದ್ರಃ ಪ್ರಮಥ್ಯಮಾನೋ ಗಿರಿಣಿವ ಮುಃ" ರಘುಂ ೧೩-೧೪ । 2. ಪೀಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಕಲಕಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಕ್ಷೋಭೆ ಹೊಂದಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 4. ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

ಪ್ರಮದ ಪ್ರಮದ (ಪುಂ) 1. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. ಪ್ರ + ಮದಿ (ಹರ್ಷ) "ಅಪ್" (೩-೩-೬೮) । "ತಚ್ಚತ್ವಾ ಮಮ ರಾಜಾಶ್ರವಿಷಾದಪ್ರಮದೌ ದ್ವಯೋಃ । ಅಭೂತಾಂ ಮೇಧಮಾಲೋಕ್ಯ ಹಂಸಚಾತಕಯೋರಿವ" ಕಥಾಸಂ । "ವಿಭ್ರಂತಿ ಯತ್ರ ಪ್ರಮದಾಯ ಪುಂಸಾಮ್" ಮಾಘಂ ೩-೫೪ । 2. ದತ್ತೂರಿಗಿಡ. ಪ್ರಮಾದಿತೇಜೇನ—ಪ್ರ + ಮದಿ ಕರಂ "ಅಪ್" । 3. ಮತ್ತೂ, ಮದಿಸಿದವನು. ಪ್ರಮಾದಿತಿ—ಪ್ರ+ಮದಿ "ಅಪ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ಪ್ರಾವೃಷಿ ಪ್ರಮದಬಹಿಣಿವಿಭೂತೃತಿಮಾದ್ರಿಷು ವಿಹಾರವಿಭ್ರಮಃ" ರಘುಂ ೧೯-೩೭ । 4. ಸಪ್ತರ್ಷಿಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ ಮುಷಿ.

ಪ್ರಮದಕಾನನ ಪ್ರಮದಕಾನನ, -ವನ-ವನ (ನಂ) ರಾಜನ ಅಂತಃಪುರದ ಸ್ತ್ರೀಯರ ವಿಹಾರಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ವನ, -ಕೈತೋಟ. ಪ್ರಮದಾನಾಂ ಕಾನನಮ್ ವನಮ್—ವಾ ಹ್ರಸ್ವಃ (೬-೩-೬೩) । "ಸ್ಯಾದೇತದೇವ ಪ್ರಮದವನಮಂತಃಪುರೋಚಿತಮ್" ಅಮಂ । ಪ್ರಮದಾವನಮ್ ಎಂಬ ಪಾಠವೂ ಉಂಟು. "ಅಧಿಗತ-ಕುಸುಮಾಪಚಾಯಲಿಲಃ ಪ್ರಮದವನಾನಿ ವಿಭೂಷಯನ್ ಸ್ವಧಾಮ್ನಾ" ಯಾದಂ ೨೪-೧೪ ।

ಪ್ರಮದಾ ಪ್ರಮದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತಮ ಹೆಂಗಸು. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಗುಣವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಪ್ರಕೃಷ್ಠೋ ಮದೋ ಹರ್ಷೋಸ್ತಿಸ್ಥಾಃ "ಅಪ್" (೫-೨-೧೨೭) । "ಧೃತಮುಗ್ಧಗಂಧಫಲಕೈವಿವಿಭು-ವಿಕಸದ್ವಿರಾಸ್ಯಕಮಲೈಃ ಪ್ರಮದಾಃ" ಮಾಘಂ ೯-೪೭ ।

ಪ್ರಮದಾಜನ ಪ್ರಮದಾಜನ (ಪುಂ) ಹೆಂಗಸು.

ಪ್ರಮನಸ್ ಪ್ರಮನಸ್ (ವಿಂ) ಸಂತೋಷದಿಂದಿರುವ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಯಾವಾಗಲೂ ಹರ್ಷದ ಚಿತ್ತವುಳ್ಳ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಂ ಮನೋ ಯಸ್ಯ । "ಇತಿ ಬಹುಪುಷ್ಪಂ ಪ್ರಮಾಪತಿ ಪ್ರಮನಸಿ ಮದ್ರಪತೌ ರಿಪುಸ್ತವಮ್" ಭಾಂ ಕರ್ಣಂ ೩೧-೪೨ । "ಪ್ರಮನಾಃ ಪ್ರಮೋದ-ಪರಿಫುಲ್ಲವಕ್ಷುಃ" ಮಾಘಂ ೧೩-೧೪ ।

ಪ್ರಮಾ ಪ್ರಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯಥಾರ್ಥಜ್ಞಾನ, ದ್ರವ್ಯಮೊದಲಾದುವುಗಳ ನಿಜವಾದ ಜ್ಞಾನ, ತತ್ತ್ವಾನುಭವ, ಯಥಾರ್ಥಾನುಭವ. ಪ್ರ + ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ಅಡ್"

(೩-೩-೧೦೬) । "ತದ್ವತಿ ತತ್ಪ್ರಕಾರಕಾನುಭವೋ ಯಥಾರ್ಥಃ । ಸೇವ ಪ್ರಮೇಯುಚ್ಯತೇ" ತಂ ಸಂ । ರಜತತ್ವ ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ರಜತದಲ್ಲಿ ಇದಂ ರಜತಮ್ ಎಂಬ ರಜತತ್ವ ಪ್ರಕಾರಕ ಜ್ಞಾನವು ಯಥಾರ್ಥವಾದುದರಿಂದ ಇದು ಪ್ರಮೇಯವಾದುದು. ಯತ್ರ ಇದಸ್ತಿ ತತ್ರ ತಸ್ಯಾನುಭವಃ । ಭವತಿ ಹಿ ರಜತೇ ಇದಂ ರಜತಮ್ ಇತಿ ಜ್ಞಾನಂ ರಜತತ್ವವತಿ ರಜತತ್ವಾವಗಾಹಿ ಎಂದು ಲಕ್ಷಣ ಸಮನ್ವಯ. ರಜತೇ ಇದಂ ರಜತಮ್ ಇತಿ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಂ ಪ್ರಮಾ । 2. ಪ್ರಮಾಣ, ವಸ್ತುಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಯಥಾರ್ಥವಾಗಿ ತಿಳಿಯುವ ಉಪಾಯ. ["ಪ್ರಮಾಣ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾದಿಪ್ರಮಾಸಿದ್ಧವಿರುದ್ಧಾರ್ಥವಿಬೋಧಿನಃ । ವೇದಾಂತಾ ಯದಿ ಶಾಸ್ತ್ರಾಣಿ ಬೋಧೈಃ ಕಿಮಪರಾಧ್ಯತೇ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೨-೪ ।

ಪ್ರಮಾಣ ಪ್ರಮಾಣ (ನಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಪ್ರಮೀಯತೇಜೇನ ನಿಸ್ಸಂಶಯವೇದರಹಸ್ಯಪರಮಾರ್ಥಪ್ರತ್ಯಾಯಕತಯಾ ಸೌಷ್ಠ್ಯಃ—ಪ್ರ + ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) । "ಪರಮಾರ್ಥ-ತ್ರಯೀಸಾರಪ್ರತ್ಯಾಯಕತಯಾ ಸ್ವಯಮ್ । ಪ್ರಮಾಣಮಿತಿ ವಿಖ್ಯಾತಃ ಸಪ್ತಾಣಾಂ ಮನುಸ್ತಮಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಿಃ । "ಪ್ರಮಾಣಂ ಪ್ರಾಣನಿಲಯ ಪ್ರಾಣಭೃತ್ ಪ್ರಾಣಜೀವನಃ" ವಿಂ ಸಂ । 2. ಅಧಾರ, ಯಥಾರ್ಥಾನುಭವಕ್ಕೆ ಕಾರಣ, ವಸ್ತುವನ್ನು ಯಥಾರ್ಥವಾಗಿ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವ ಉಪಾಯ. ಪ್ರಮೀಯತೇಜೇನ—ಪ್ರಮಾತಾ ಯೇನಾರ್ಥ ಪ್ರಮಿಣೋತಿ ತತ್ ಪ್ರಮಾಣಮ್ । ಈ ಯಥಾರ್ಥಾನುಭವವು (1) ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಮ್ (2) ಅನುಮಿತಿಃ (3) ಅಪಮಿತಿಃ ಮತ್ತು (4) ಶಾಬ್ದಮ್ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ಈ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಯಥಾರ್ಥಾನುಭವಗಳಿಗೂ ಅಸಾಧಾರಣಕಾರಣಗಳಾದ (1) ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಪ್ರಮಾಣಮ್ (2) ಅನುಮಾನಪ್ರಮಾಣಮ್ (3) ಅಪಮಾನಪ್ರಮಾಣಮ್ ಮತ್ತು (4) ಶಾಬ್ದಪ್ರಮಾಣಮ್ ಎಂಬ ನಾಲ್ಕು ಕರಣಗಳಿರುವುವು. "ಯಥಾರ್ಥಾನುಭವಶ್ಚತುರ್ವಿಧಃ । ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾನುಮಿತ್ಯಪಮಿತಿಶಾಬ್ದಭೇದಾತ್ । ತತ್ಕರಣಮಪಿ ಚತುರ್ವಿಧಮ್ । ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾನುಮಾನೋಪಮಾನಶಾಬ್ದಭೇದಾತ್ । ಅಸಾಧಾರಣ-ಕಾರಣಂ ಕರಣಮ್ । ಕಾರ್ಯನಿಯತಪೂರ್ವವೃತ್ತಿ ಕಾರಣಮ್" ತಂ ಸಂ । ಕಾರಣವು ಸಮವಾಯಿಕಾರಣಮ್ ಅಸಮವಾಯಿಕಾರಣಮ್ ಮತ್ತು ನಿಮಿತ್ತಕಾರಣಮ್ ಎಂದು 3 ವಿಧ. "ಕಾರಣಂ ಸಮವಾಯಿಸಮ-ವಾಯಿನಿಮಿತ್ತಭೇದಾತ್ ತ್ರಿವಿಧಮ್" ತಂ ಸಂ । (ಯಥಾರ್ಥಾನುಭವಕ್ಕೆ) ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾತ್ಮಕ ಪ್ರಮೇಗೆ ಚಕ್ಷುರಾದಿಗಳು ಪ್ರಮಾಣ. ಲಿಂಗ (ಹೇತು) ದರ್ಶನವು ಅನುಮಿತಿಗೆ ಪ್ರಮಾಣ. ಸಾದೃಶ್ಯ ಜ್ಞಾನವು ಅಪಮಿತಿಗೆ ಪ್ರಮಾಣ. ಶಾಬ್ದ ಪ್ರಮೇಗೆ ಶಬ್ದವು ಪ್ರಮಾಣ. ಈ ಎಲ್ಲಾ ಪ್ರಮೇಗಳಿಗೂ ಇಂದ್ರಿಯ ಸನ್ನಿರ್ವಹವೇ ಮುಖ್ಯವಾದ ಕರಣವು. "ಧರ್ಮ ಜಿಜ್ಞಾಸ-ಮಾನಾನಾಂ ಪ್ರಮಾಣಂ ಪರಮಂ ಶ್ರುತಿಃ" ಮನುಂ ೨-೧೩ । 3. ಅಳತೆ. (ಎತ್ತರ, ಉದ್ದ ಮತ್ತು ಅಗಲ). "ದೃಷ್ಟೋ ಹಿ ವೃಣವನ್"



ಕಲಮಪ್ರಮಾಣೋಽಪ್ಯಾಶಾ: ಪುರೋವಾತಮವಾಪ್ಯ ಮೇಘ:" ರಘುಂ ೧೮-೩೮। 4. ದರ್ಜೆ, ಮಟ್ಟ. 5. ದೃಷ್ಟಾಂತ. "ಪೃಥಿವ್ಯಾಂ ಸ್ವಾಮಿಭಕ್ತಾನಾಂ ಪ್ರಮಾಣೇ ಪರಮೇ ಸ್ಥಿತ:" ಮುಡ್ರಾಂ ೨-೨೨। 6. ನಿರ್ಣಾಯಕ, ನಿಶ್ಚಯಿಸುವವನು. "ನಾರೀಂ ಪೃಚ್ಛಾಮಿ ನೇಂದುಂ ಕಥಯತು ವಿಜಯಾ ನ ಪ್ರಮಾಣಂ ಯದೀಂದ್ರ:" ಮುಡ್ರಾಂ ೧-೧। "ಯತ: ಕಾಮಾದಿಭಿಷ್ಠ ಕುತಶ್ಚಿತ್ತಿಗ್ಗೂಡ: ಪ್ರವರತಿ। ತದೇತಜ್ಞಾತ್ವಾ ತತ್ರ ದೇವ: ಪ್ರಮಾಣಮಿತಿ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೨। 7. ಸೂಕ್ಷ್ಮ, ರುಜುವಾತು. 8. ಮರ್ಯಾದೆ. 9. ಇಯತ್ತೆ. 10. ಶಾಸ್ತ್ರ. 11. ಕಾರಣ, ಹೇತು. 12. ಅಜ್ಞೆ. 13. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. (ವಿಂ) 14. ಅಳಿಯುವವನು. ಪ್ರ+ಮಾ ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। 15. ಸತ್ಯವಾದಿ. "ಪ್ರಮಾಣ ನಿಯಮರ್ದಾಶಾಸ್ತ್ರೇಷು ಸತ್ಯವಾದಿನಿ। ಇಯತ್ತಾಂ ಚ ಹೇತೌ ಚ ಕಲಿವಂಕರವೇ ಪ್ರಮಾತರಿ" ಮೇದಿಂ।

**ಪ್ರಮಾಣಜ ಪ್ರಮಾಣಜ್ಞ (ಪುಂ)** 1. ತಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಮಾಣವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ, ಯಥಾರ್ಥ ಜ್ಞಾನದ ಉಪಾಯವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ. ಪ್ರಮಾಣಂ ಜಾನಾತಿ-ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩)।

**ಪ್ರಮಾಣಪತ್ರ ಪ್ರಮಾಣಪತ್ರ (ನಂ)** ವಿಷಯವನ್ನು ರುಜು ವಾತುಪಡಿಸುವ (ಸಮರ್ಥಿಸುವ) ಪತ್ರ, ಲಿಖಿತ ಮೂಲಕ ಸಮರ್ಥಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಪತ್ರ.

**ಪ್ರಮಾಣಪುರುಷ ಪ್ರಮಾಣಪುರುಷ (ಪುಂ)** ನಿರ್ಣಯಮಾಡುವವನು, ತೀರ್ಪುಗಾರ, ನ್ಯಾಯನಿರ್ಣಾಯಕ, ವ್ಯಾಜ್ಯವನ್ನು ಬಗೆಹರಿಸುವ ನ್ಯಾಯಮೂರ್ತಿ.

**ಪ್ರಮಾಣವಚನ ಪ್ರಮಾಣವಚನ (ನಂ)** ಯಥಾರ್ಥವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಮಾತು, ಆಧಾರಪೂರ್ವಕ ಹೇಳುವ ಮಾತು.

**ಪ್ರಮಾತಾಮಹ ಪ್ರಮಾತಾಮಹ (ಪುಂ)** ಮಾತಾಮಹನ ತಂದೆ, ತಾಯಿಯ ಅಜ್ಜ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠೋ ಮಾತಾಮಹ:। -ಮಹಿ-ಮಹಿಂ. ಮಾತಾಮಹನ ತಾಯಿ, ತಾಯಿಯ ಅಜ್ಜ.

**ಪ್ರಮಾತ್ ಪ್ರಮಾತ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಅಳಿಯುವವನು, ಅಳಿತ ಮಾಡುವವನು. ಪ್ರಮಿಣೋತಿ - ಪ್ರ + ಡುಮಿಕ್ (ಪ್ರಕ್ಷೇಪಣೆ) "ತುಕ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಯಥಾರ್ಥ ಜ್ಞಾನವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವವನು, ಪ್ರಮಾಣಪೂರ್ವಕ ವಸ್ತುಸ್ಥಿತಿ ಯನ್ನು ತಿಳಿಸುವವನು. 3. (ಅದ್ವೈತಮತದಲ್ಲಿ) ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿ ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿತವಾದ ಚೈತನ್ಯ. 4. (ಸಾಂಖ್ಯ ಮತದಲ್ಲಿ) ಶುದ್ಧ ಚೇತನ.

**ಪ್ರಮಾಥ ಪ್ರಮಾಥ (ಪುಂ)** 1. ಕ್ಷೋಭೆ ಹೊಂದಿಸುವುದು, ಕಲಕುವುದು, ಚಾಂಚಲ್ಯವುಂಟುಮಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ಮಥೆ

(ವಿಲೋಡನೆ) ಭಾವೇ "ಘಕ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಕಡೆಗೋಲಿ ನಿಂದ ಕಡೆಯುವುದು. 3. ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ಪೀಡಿಸುವುದು. 4. ವಧಿಸುವುದು, ಕೊಲ್ಲುವುದು. "ಸೈನಿಕಾನಾಂ ಪ್ರಮಾಥೇನ ಸತ್ಯಮೋಜಾಯಿತಂ ತ್ವಯಾ। ಜಾಮದಗ್ನಯಸ್ಯ ದಮನೇ ನ ಹಿ ನಿಬಂಧ-ಮರ್ಹತಿ" ಉಂ ರಾಂ ೫-೩೧। 5. ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಿ ಉಜ್ಜುವುದು, -ತಿಕ್ಕುವುದು. "ನಿಪಾತ್ಯ ಪೇಷಣಂ ಭೂಮಿ ಪ್ರಮಾಥ ಇತಿ ಕಥ್ಯತೇ"।

**ಪ್ರಮಾಥಿನ್ ಪ್ರಮಾಥಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಕ್ಷೋಭೆಯನ್ನು ಉಂಟು ಮಾಡುವ, ಕಲಕುವ, ಚಾಂಚಲ್ಯವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ. ಪ್ರ + ಮಥೆ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಘಿನ್ಯುನ್" (೩-೨-೧೪೫)। "ಚಂಚಲಂ ಹಿ ಮನ: ಕೃಷ್ಣ ಪ್ರಮಾಥಿ ಬಲವದ್ಧಮ್" ಗೀತಾ ೬-೩೪। "ಇಂದ್ರಿಯಾಣಿ ಪ್ರಮಾಥಿನಿ ಹರಂತಿ ಪ್ರಸಭಂ ಮನ:" ಗೀತಾ ೨-೬೦। 2. ತುಂಡುಮಾಡುವ, ಕತ್ತರಿಸುವ. "ಚಿತ್ತೀಯಮಾಣಾನತೀಲಾಘವೇನ ಪ್ರಮಾಥಿನಸ್ತಾನು ಭವಮಾರ್ಗಣಾ-ನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೭-೩೧। 3. ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ತಳ್ಳಿ ಹರಿದುಹಾಕುತ್ತಿರುವ. "ತಸ್ಯ ಜಾತು ಮಹತ: ಪ್ರತೀಪಗಾ: ವರ್ಮಸು ಧ್ವಜತರಪ್ರಮಾಥಿನ:" ರಘುಂ ೧೧-೫೮। 4. ಕೊಲ್ಲುವ, ವಧಿಸುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಢಿಪ್" (೪-೧-೬)। ಪ್ರಮಾಥಿನಿ ಪ್ರಮಾಥಿನೀ. "ಕವ ರುಜಾ ಹೃದಯಪ್ರಮಾಥಿನಿ ಕವ ಚ ತೇ ವಿಶ್ವಸನೀಯಮಾಯುಧಮ್" ಮಾಲಂ ೩-೨।

**ಪ್ರಮಾದ ಪ್ರಮಾದ (ಪುಂ)** 1. ಗಮನವಿಲ್ಲದಿರುವುದು, ಎಚ್ಚರಿಕೆ ಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಎಚ್ಚರ ತಪ್ಪುವುದು. ಪ್ರ + ಮದಿ (ಹರ್ಷ-ಲೇಪನಯೋ:) ಭಾವೇ "ಘಕ್" (೩-೩-೧೮)। "ಲೋಮಪ್ರಮಾದ-ವಿಶ್ವಾಸೇ: ಪುರುಷೋ ನಶ್ಯತೇ ತ್ರಿಮಿ:"। 2. ಕರ್ತವ್ಯದಲ್ಲಿ ಅಲಕ್ಷ್ಯ ಮತ್ತು ಅಕರ್ತವ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರವೃತ್ತಿ. "ಅಹನ್ಯಹನ್ಯಾತ್ಮನ ಏವ ತಾವಜ್ಞಾತುಂ ಪ್ರಮಾದಸ್ವಲಿತಂ ನ ಶಕ್ಯಮ್" ಶಾಕುಂ ೬-೨೬। 3. ಅಪರಾಧ, ತಪ್ಪು. "ಪ್ರಮಾದಾಲಸ್ಯಜಾಡಧಾನಿ ಸ್ಥಾಪಿ-ತಾನಿ ನಿಜಾನಿ ತೇ:" ಪಂಚತಂ ೧-೪೦। 4. ಅಪಾಯ, ಅನರ್ಥ, ಕೇಡು. "ಅಹೋ ಮಹಾನ್ ಪ್ರಮಾದ: ಪ್ರಮಾದ:" ಉಂ ರಾಂ ೩। 5. ಕುಡಿದು ಅಮಲೇರುವುದು. 6. ಹುಚ್ಚು ಹಿಡಿಯುವುದು.

**ಪ್ರಮಾದವತ್ ಪ್ರಮಾದವತ್ (ವಿಂ)** 1. ಎಚ್ಚರತಪ್ಪಿದವನು, ಗಮನವಿಲ್ಲದವನು. ಪ್ರಮಾದೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೧೨೭)। 2. ಕುಡಿದು ಅಮಲೇರಿದವನು. 3. ಹುಚ್ಚುಹಿಡಿದವನು, ಬುದ್ಧಿಭ್ರಮಣೆ ಹೊಂದಿದವನು. "ಇತಿ:" (೫-೨-೧೧೫)। ಪ್ರಮಾದಿನ್ ಪ್ರಮಾದಿನ್. "ಸರ್ವತ್ರ ಪ್ರಮಾದಿ ವೇಧೇಯ:" ವಿಕ್ರಂ। "ಪ್ರಮಾದಿನಾಂ ತಥಾ ಚಿರಾ: ಭಿಕ್ಷುಕಾ ಗೃಹಮೇಧಿನಾಮ್" ಪಂಚತಂ ೧-೧೬೭।



**ಪ್ರಮಾಣತ್ ಪ್ರಮಾಣ್ಯತ್** (ವಿಂ) ಎಚ್ಚರ ತಪ್ಪುತ್ತಿರುವ, ಮೈ ಮರೆಯುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಮದಿ (ಹರ್ಷಲೇಪನಯೋಃ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಉಪಾಯಮಾಸ್ಥಿತಸ್ಥಾಪಿ ನಶ್ಯಂತೀತಿ" ಪ್ರಮಾಣತಃ" ಮಾಘಂ ೨-೮೦।

**ಪ್ರಮಾಪಣ ಪ್ರಮಾಪಣ** (ನಂ) ವಧಿಸುವುದು, ಕೊಲ್ಲುವುದು. ಪ್ರ + ಮೀ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ಪ್ರಮಾಜತ ಪ್ರಮಾಜತ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಶುದ್ಧಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಮಜ್ (ಶುದ್ಧಿ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। 2. ಬಟ್ಟೆಯಿಂದ ಒರಸುತ್ತಿರುವ. ವೃದ್ಧರಭಾವೇ ಪ್ರಮಾಜನ್ ಪ್ರಮಾಜನ್. ಸಿತ್ರಯಾ "ಛಿಪ್" (೪-೧-೬)। ಪ್ರಮಾಜತೀ ಪ್ರಮಾಜತೀ, ಪ್ರಮಾಜತೀ ಪ್ರಮಾಜತೀ.

**ಪ್ರಮಾಜನ ಪ್ರಮಾಜನ** (ನಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತೊಳೆಯುವುದು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ಮಜ್ (ಶುದ್ಧಿ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಬಟ್ಟೆಯಿಂದ ಒರಸುವುದು. "ಅದೀಯಸಾ ಸ್ನಾನಜಲಸ್ಯ ವಾಸಸಾ ಪ್ರಮಾಜನೇನಾಧಿಕ-ಮುಜ್ಜವಲೀಕೃತಾಃ" ನೈಷಂ ೧೫-೧೪।

**ಪ್ರಮಾಜನೀಯ ಪ್ರಮಾಜನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಕ್ಕಲ್ಪಡುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ತೊಳೆಯಲ್ಪಡುವ, ಶುದ್ಧಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತೊಳೆಯಬೇಕಾದ. ಪ್ರ + ಮಜ್ (ಶುದ್ಧಿ) ಕರ್ಮದಿ "ಅನೀಯ್" (೩-೧-೧೬)। 3. ಒರಸಲ್ಪಡುವ. "ತವ್ಯಃ"। ಪ್ರಮಾಜಿತವ್ಯಮ್ ಪ್ರಮಾಜಿತವ್ಯಮ್, -ಮಾಜಿತವ್ಯಮ್-ಮಾಜಿತವ್ಯಮ್.

**ಪ್ರಮಾಜಿತ ಪ್ರಮಾಜಿತ** (ವಿಂ) 1. ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, "ಸರ್ವಥಾ ಪ್ರಮಾಜಿತಂ ತ್ವಯಾ ಪ್ರತ್ಯಾದೇಶದ್ವುಕ್ತಂ ಶಕ್ತುಂತಲಾಃ" ಶಾಕುಂ ೬। 2. ಒರಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪ್ರಮಿತ ಪ್ರಮಿತ** (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಅಲ್ಪವಾದ, ಕೊಂಚವಾದ. ಪ್ರ + ಮಾಜ್ (ಮಾನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ಪರಿತಃ ಪ್ರಮಿತಾಕ್ಷರಾಪಿ ಸರ್ವಂ ವಿಷಯಂ ವ್ಯಾಪ್ತವತೀ ಗತಾ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೬-೮೦। 2. ಎಲ್ಲರಿಗೂ ತಿಳಿದಿರುವ. ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾದ. 3. ಪರಿಮಿತವಾದ, ಒಂದು ಅಳತೆಗೆ ಒಳಪಟ್ಟ.

**ಪ್ರಮಿತಾಕ್ಷರಾ ಪ್ರಮಿತಾಕ್ಷರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ.

**ಪ್ರಮಿತಿ ಪ್ರಮಿತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಳತೆ. 2. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾದಿ ಪ್ರಮಾಣಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದ ಜ್ಞಾನ. 3. ಪ್ರಮಾಣ, ಯಥಾರ್ಥ ಜ್ಞಾನವನ್ನೊಳಗೊಂಡಿರುವ ಉಪಾಯ. ಪ್ರ + ಮಾಜ್ (ಮಾನೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪)।

**ಪ್ರಮೀಡ ಪ್ರಮೀಡ** (ವಿಂ) 1. ದಟ್ಟವಾದ, ಘನವಾದ, ಒತ್ತಾಗಿ ಕೂಡಿಸಿದ. 2. ಮೂತ್ರರೋಗವುಳ್ಳವನು. ಪ್ರ + ಮಿಹ (ಸ್ತೋಹನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ತ್ವಗದೋಷಿಣಾಂ ಪ್ರಮೀಡಾನಾಂ ಸ್ನಿಗ್ಧಾಭಿಷ್ಯಂದಿಬೃಹಿಣಾಮ್। ಶಿಶಿರೇ ಲಕ್ಷ್ಮಣಂ ಸಸ್ತಮಪಿ ವಾತವಿಕಾರಿಣಾಮ್" ಚರಕಂ ಸೂತ್ರಂ ೨೨-೨೪।

**ಪ್ರಮೀತ ಪ್ರಮೀತ** (ವಿಂ) 1. ಮರಣಹೊಂದಿದ. ಪ್ರ + ಮಿಡ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। 2. ಯಜ್ಞಕ್ಕಾಗಿ ವಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಪಶು. ಪ್ರ + ಮೀ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಪ್ರಮೀತಂ ವಾಚ್ಯಲಿಙ್ಗಂ ಸ್ಯಾತ್ ಪ್ರೋಕ್ಷಿತೇಽಪಿ ಮೃತೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ।

**ಪ್ರಮೀತಿ ಪ್ರಮೀತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರಣ, ಸಾವು. ಪ್ರ + ಮಿಡ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪)।

**ಪ್ರಮೀಲಾ ಪ್ರಮೀಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಾಢನಿದ್ರೆ, ಮೈಮರೆತ ನಿದ್ರೆ. ಪ್ರ + ಮೀಲ (ನಿಮೇಷಣೇ) "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩)। 2. ಅಲಸ್ಯ, ಯಾವ ಕೆಲಸದಲ್ಲೂ ಉತ್ಸಾಹವಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ನಿರಾಸಕ್ತಿ. 3. ಶ್ರಮದ ಕಾರಣ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವುದರಲ್ಲಿ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವುದು.

**ಪ್ರಮುಕ್ತ ಪ್ರಮುಕ್ತ** (ವಿಂ) ಬಂಧನದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಮುಕ್ಚ (ಮೋಕ್ಷಣೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಪ್ರಮುಕ್ತವತ್ ಪ್ರಮುಕ್ತವತ್** (ವಿಂ) ಬಿಡುಗಡೆಮಾಡಿದವನು. ಪ್ರ + ಮುಕ್ಚ (ಮೋಕ್ಷಣೇ) "ಕ್ತವತ್" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಪ್ರಮುಖ ಪ್ರಮುಖ** (ಪುಂ) 1. ಪುನ್ನಾಗವೃಕ್ಷ, ಸುರಗಿಮರ, ಸುರಹೊನ್ನೆಮರ. ಪ್ರಕೃಷ್ಣಂ ಮುಖಮಗ್ರಭಾಗೋ ಯಸ್ಯ। 2. ಸಮೂಹ, ರಾಶಿ, ಗುಂಪು. 3. ಮರ್ಯಾದೆಯ ಮನುಷ್ಯ. (ನಂ) 4. ತತ್ಕಾಲ, ವರ್ತಮಾನಕಾಲ, ಆಗಿನ ಕಾಲ. "ತದಾತ್ವಂ ಪ್ರಮುಖಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 5. ಮುಂಭಾಗ, ಎದುರು. "ಯಾನೇವ ಹತ್ವಾ ನ ಜಿಜಿವಿಷಾಮಸ್ತೇಽವಸ್ಥಿತಾಃ ಪ್ರಮುಖೇ ಘಾತ-ರಾಷ್ಟ್ರಾಃ" ಗೀತಾ ೨-೬। (ವಿಂ) 6. ಶ್ರೇಷ್ಠ, ಉತ್ತಮ. "ಬಲೇಷು ಪ್ರಮುಖೋ ಹಸ್ತೀ ನ ತಥಾನ್ಯೋ ಮಹೀಪತೇಃ" ಹಿತೋ ೩-೧೨೪। 7. ಪ್ರಧಾನ, ಮುಖ್ಯ. "ಜ್ವಲನ್ಮಣಿಶಿಖಾಶ್ಚನಂ ವಾಸುಕಿಪ್ರಮುಖಾ ನಿಶಿಃ। ಸ್ಥಿರಪ್ರದೀಪತಾಮೇತ್ಯ ಭುಜಙ್ಗಾಃ ಪರ್ಯುಪಾಸತೇ" ಕುಮಾರಂ ೨-೩೮। 8. ಪ್ರಥಮ, ಮೊದಲಾದ. "ನಾರದಪ್ರಮುಖಾಸ್ತಸ್ಯಾಮಂತವೇಶಾಂ ಮಹಾತ್ಮನಃ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೩೯-೨। 9. ಮರ್ಯಾದೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದ, ಗೌರವಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯನಾದ. 10. ಅಭಿಮುಖವಾದ, ಎದುರಾಗಿರುವ.

**ಪ್ರಮುಖ ಪ್ರಮುಖ** (ವಿಂ) 1. ಸೌಮ್ಯವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ, ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವ. ಪ್ರ + ಮುಹ (ವೇಚಿತೇ)



"ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) 2. ಅಜ್ಞ, ಪ್ರಜ್ಞಾ ಶೂನ್ಯನಾದ, ಮೈಮೇಲೆ ಎಚ್ಚರವಿಲ್ಲದ.

ಪ್ರಮುಖತ್ ಪ್ರಮುಂಚತ್ (ವಿಂ) ಬಿಡುಗಡೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಬಂಧನದಿಂದ ತಪ್ಪಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಮುಚ್ಚ (ಮೋಕ್ಷಣ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಹಿಪ್" (೪-೧-೬) 1. -ಮುಚ್ಚತಿ-ಮುಚ್ಚಂತಿ-ಮುಂಚತೀ-ಮುಂಚಂತೀ. "ಶಾನತ್" (೩-೨-೧೨೪) 1. -ಮುಚ್ಚಮಾನ:-ಮುಂಚಮಾನಃ.

ಪ್ರಮುದ್ ಪ್ರಮುದ್ (ವಿಂ) 1. ಹರ್ಷಗೊಂಡ, ಸಂತೋಷ ಪಟ್ಟಿರುವ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಾ ಮುದ್ರಸ್ಯ 1. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಹರ್ಷ, ಅನಂದ, ಸಂತೋಷ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಾ ಮುತ್. "ಶ್ರುತ್ವಾ ತು ಪಾರ್ಥಿವ-ಸ್ಯೇತತ್ ಸಂವತಃ ಪ್ರಮುದಂ ಗತಃ" ಭಾಂ 1.

ಪ್ರಮುದಿತ ಪ್ರಮುದಿತ (ವಿಂ) ಸಂತೋಷಪಟ್ಟಿರುವ. ಪ್ರ + ಮುದ (ಹರ್ಷ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) 1. "ಪ್ರಮುದಿತವರ-ಪಕ್ಷಮೇಕತಸ್ತತ್ಕ್ಷಿತಿಪತಿಮಂಡಲಮನ್ಯತೋ ವಿತಾನಮ್" ರಘುಂ ೬-೮೬ 1.

ಪ್ರಮುದಿತವರನಾ ಪ್ರಮುದಿತವರನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಮವೃತ್ತದ ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ನಗಣದ್ವಯ ರಗಣದ್ವಯಗಳುಳ್ಳ ವೃತ್ತ. ಲಕ್ಷಣ: "ಪ್ರಮುದಿತವರನಾ ಮವೇನೌ ರರೌ" ವೃಂ ರಂ 1. ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ನ ನ ರ ರ  
||| ||| 010 010

ಪ್ರಮುಷಿತ ಪ್ರಮುಷಿತ (ವಿಂ) 1. ಕದಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಪಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಮುಷ (ಸ್ತೇಯ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) 1. "ಪರಾಮುಷನ್ ಕಠಿಮಕಠೋರಕಾಮಿನೀಕುಚಸ್ಥಲಪ್ರಮುಷಿತಚಂದನಂ ಪೃಥು:" ಮಾಘಂ ೧೭-೧೧ 1. 2. ಬೇರೆ ಕಡೆಗೆ ತಿರುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಕ್ಷೇಪವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ (ಜ್ಞಾನ).

ಪ್ರಮುಷಿತವತ್ ಪ್ರಮುಷಿತವತ್ (ವಿಂ) ಅಪಹರಿಸಿದವನು.

ಪ್ರಮುಷಣತ್ ಪ್ರಮುಷಣತ್ (ವಿಂ) ಅಪಹರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಕದಿಯುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಮುಷ (ಸ್ತೇಯ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಹಿಪ್" (೪-೧-೬) 1. -ಮುಷಂತಿ -ಮುಷಂತೀ.

ಪ್ರಮುಷ್ಠ ಪ್ರಮುಷ್ಠ (ವಿಂ) ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಡೆದು ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಮುಜ್ (ಶುದ್ಧಿ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) 1. "ಯೇನ ಶ್ರಿಯಃ ಸಂಶ್ರಯದೋಷಕಂ ಸ್ವಭಾವ-ಲೋಲೇಶ್ಯಯಶಃಪ್ರಮುಷ್ಠಮ್" ರಘುಂ ೬-೪೧ 1.

ಪ್ರಮುಷ್ಠವತ್ ಪ್ರಮುಷ್ಠವತ್ (ವಿಂ) ಹೋಗಲಾಡಿಸಿದವನು, ತೊಳೆದುಹಾಕಿದವನು. ಪ್ರ + ಮುಜ್ (ಶುದ್ಧಿ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨) 1.

ಪ್ರಮೇಯ ಪ್ರಮೇಯ (ವಿಂ) 1. ತತ್ತ್ವತಃ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ ವಿಷಯ. ಪ್ರಮೀಯತೇ—ಪ್ರ + ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಯತ್" (೩-೧-೧೭) 1. "ಯೋಽರ್ಥಃ ತತ್ತ್ವತಃ ಪ್ರಮೀಯತೇ ತತ್ಪ್ರಮೇಯಮ್" 1. ಯಥಾರ್ಥಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ವಿಷಯವಾದುದು ಪ್ರಮೇಯ. "ಪ್ರಮಾವಿಷಯತ್ವಂ ಪ್ರಮೇಯತ್ವಮ್" 1. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾದಿ ಪ್ರಮಾಣದಿಂದ ತಿಳಿಸಲ್ಪಡುವ ವಿಷಯ. ಪ್ರಮಾಣಪ್ರತಿಪಾದೋಽರ್ಥಃ 1. 2. ಪರಬ್ರಹ್ಮ. ಮೋಕ್ಷಾಕಾಂಕ್ಷಿಗಳಿಂದ ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ ಪರಮಾತ್ಮ. ನಿಃಶ್ರೇಯಸಾರ್ಥಿಭಿಃ ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಮೇಯಮ್ 1. ಯಾವುದರ ಭ್ರಮೆಯಿಂದ ಈ ಸಂಸಾರದಲ್ಲಿ ತೊಳಲು ತಿರುಚೆವೋ ಯಾವುದರ ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನದಿಂದ ಈ ಸಂಸಾರವನ್ನು ತೊಳೆದುಕೊಳ್ಳುವೆವೋ ಅದೇ ಪ್ರಮೇಯ (ಪರಬ್ರಹ್ಮ). 3. (ನ್ಯಾಯಮತದಲ್ಲಿ) ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಪ್ರಮೇಯಗಳು. (1) ಆತ್ಮಾ (2) ಶರೀರಮ್ (3) ಇಂದ್ರಿಯಮ್ (4) ಅರ್ಥಃ (5) ಬುದ್ಧಿಃ (6) ಮನಃ (7) ಪ್ರವೃತ್ತಿಃ (8) ದೋಷಃ (9) ಪ್ರೇತಭಾವಃ (10) ಫಲಮ್ (11) ದುಃಖಮ್ ಮತ್ತು (12) ಅಪವಗ್ಗಃ 1. 4. ಅಳಿಯಲ್ಪಡುವ. 5. ಅಳಿಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 6. ಅಳಿಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 7. ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ. 8. ತಿಳಿಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 9. ತಿಳಿಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ.

ಪ್ರಮೇಹ ಪ್ರಮೇಹ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ವ್ಯಾಧಿ, ಶುಕ್ರ ಧಾತುವು ಯಾವಾಗಲೂ ಸ್ರವಿಸುವ ಒಂದು ರೋಗ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಮೇಹತಿ ಕ್ಷರತಿ ವೀರ್ಯಾದಿರೇನ — ಪ್ರ + ಮಿಹ (ಸೇವನೆ) ಕರಂ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೨೧) 1.

ಪ್ರಮೋಕ್ಷ ಪ್ರಮೋಕ್ಷ (ವಿಂ) 1. ಬಿಡುಗಡೆಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಲು ಅರ್ಹನಾದ. ಪ್ರ + ಮುಚ್ಚ (ಮೋಕ್ಷಣ) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೧೬) 1. "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) 1. -ಮೋಚನೀಯಃ -ಮೋಚನೀಯಃ.

ಪ್ರಮೋಕ್ಷ ಪ್ರಮೋಕ್ಷ (ಪುಂ) ಬಂಧನದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ.

ಪ್ರಮೋಚನ ಪ್ರಮೋಚನ (ನಂ) 1. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ಮುಚ್ಚ (ಮೋಕ್ಷಣ) ಮಾಡೆ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) 1. 2. ಹೊರಗೆ ಕಳುಹಿಸುವುದು, ಹೊರಗೆ ಹೊರಡಿಸುವುದು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಮೋಚನಿ -ಮೋಚನೀ. 3. ಬಿಡುಮೆಯ ಗಿಡ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಮುಚ್ಯತೇಜಯಾ — ಪ್ರ + ಮುಚ್ಚ (ಮೋಕ್ಷಣ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) 1. "ಹಿಪ್" (೪-೧-೧೫) 1.

ಪ್ರಮೋದ ಪ್ರಮೋದ (ಪುಂ) 1. ಅನಂದ, ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. ಪ್ರ + ಮುದ (ಹರ್ಷ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮) 1. "ಪುಷ್ಯೇನ ನಾಲೋಕತ



ಲೋಕಪಾಲ: ಪ್ರಮೋದಬಾಣಾಭೃತನೇತ್ರಮಾಲ:" ನೆಪಂ ೩-೨೮।

2. ಆಮೋದ, ಸುವಾಸನೆ. "ಅಶ್ವಿನೋರೋಷಧೀನಾಂವ ಚಾಣೋ  
ಮೋದಪ್ರಮೋದಯೋ:" ಮಾಗಂ ೨-೬-೨। 3. ಸಾಂಖ್ಯಮತದಲ್ಲಿ  
ಉಕ್ತವಾದ ಮುಖ್ಯವಾದ ಸಿದ್ಧಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ತಿಲಖ

ಮುಖ್ಯಾ: ಸಿದ್ಧಯ: ಪ್ರಮೋದಮುದಿತಮೋದಮಾನಾ:" ಸಾಂ ತತ್ವಕೋಂ।

**ಪ್ರಮೋದನ ಪ್ರಮೋದನ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. ತನ್ನ ಧ್ಯಾನಾಸಕ್ತ

ರಾದ ಭಕ್ತರನ್ನು ಸಂತೋಷಗೊಳಿಸುವುದರಿಂದ ಪರಮಾ

ತ್ಮನು ಪ್ರಮೋದನ. ಸ್ವಸಮ್ಮಂದಿನ: ತತ್ಪ್ರಥಮಾನುಸಂಧಾನೇನ

ಪ್ರಮೋದಯತಿ ಪ್ರಹರ್ಷಯತಿ—ಪ್ರ+ಮುದ (ಹರ್ಷ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:"

(೩-೧-೧೩೪)। "ವ್ಯಾನಾಸಕ್ತೇಷು ಭಕ್ತೇಷು ಮೋದಮಾನ: ಪ್ರಮೋದನ:"

ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ:। "ಜಿತಾಮಿತ್ರ: ಪ್ರಮೋದನ:" ವಿಂ ಸಂ।

(ನಂ) 2. ಅನಂದಪಡುವುದು, ಸಂತೋಷಪಡುವುದು.

ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 3. ಅನಂದಪಡಿಸುವುದು,

ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವುದು. ಪ್ರ+ಮುದ+ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್"।

(ವಿಂ) 4. ಅನಂದಪಡಿಸುವ, ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವುದಾದುವು.

ಪ್ರ+ಮುದ+ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)।

**ಪ್ರಮೋದಯತ್ ಪ್ರಮೋದಯತ್ (ವಿಂ)** ಸಂತೋಷವುಂಟು

ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಅನಂದಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಮುದ (ಹರ್ಷ)

+ ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಪ್ರಮೋದಯತ್ರ ಮುಖರಾನ್

ಕಲಾಪಿನ: ಪ್ರತಿಷ್ಠತೇ ನವಚನವದ್ರಥ: ಸ್ಮ ಸ:" ಮಾಗಂ

೧೯-೨೯। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। —ಮೋದಯಂತಿ

—ಮೋದಯಂತಿ.

**ಪ್ರಮೋದಯಿತ್ ಪ್ರಮೋದಯಿತ್ಯ (ವಿಂ)** ಸಂತೋಷವುಂಟು

ಮಾಡುವ. ಪ್ರ+ಮುದ (ಹರ್ಷ)+ಣಿಚ್ "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) —ಯಿತ್ರಿ —ಯಿತ್ರಿ.

**ಪ್ರಮೋದಿತ ಪ್ರಮೋದಿತ (ವಿಂ)** 1. ಸಂತೋಷವುಂಟಾಗಿ

ರುವ. ಪ್ರಮೋದಿಸ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತುಚ್" (೫-೨-೩೬)।

2. ಸಂತೋಷಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅನಂದಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3.

ಹೆಚ್ಚು ವಾಸನೆಯುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪರಿಮಳವುಂಟು

ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ+ಮುದ (ಹರ್ಷ)+ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

"ಬಂಧಾಡಯನಾನಾರತಮಲ್ಯಯುಧಪ್ರಮೋದಿತ: ಕೆಲವನೇ ಮಹದ್ಭಿ:"

ನೆಪಂ ೩-೧೨೪।

**ಪ್ರಮೋದಿನ್ ಪ್ರಮೋದಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಹರ್ಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಸಂತೋಷವುಳ್ಳ. ಪ್ರಮೋದಿಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫)।

2. ಹರ್ಷವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ಅನಂದಪಡಿಸುವ. ಪ್ರಮೋ-

ದಯತಿ—ಪ್ರ+ಮುದ (ಹರ್ಷ)+ಣಿಚ್ "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)।

**ಪ್ರಮೋಷ ಪ್ರಮೋಷಣ (ನಂ)** 1. ಕದಿಯುವುದು, ಅಪಹರಿ

ಸುವುದು. ಪ್ರ+ಮುಷ (ಸ್ತೇಯ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)।

2. ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು, ತೊಡೆದುಹಾಕುವುದು.

**ಪ್ರಮೋಷಣ ಪ್ರಮೋಷಣಯ (ವಿಂ)** 1. ಅಪಹರಿಸ

ಲ್ಪಡುವ. 2. ಅಪಹರಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಅಪಹರಿಸಲು

ಅರ್ಹವಾದ. ಪ್ರ+ಮುಷ (ಸ್ತೇಯ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬)।

"ತವ್ಯ:"। —ಮೋಷಿತವ್ಯಮ್ —ಮೋಷಿತವ್ಯಮ್.

**ಪ್ರಮೋಹ ಪ್ರಮೋಹ (ಪುಂ)** ಸರಿಯಾದ ಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದಿರು

ವುದು, ಮಂಕು ಹಿಡಿದಿರುವುದು. ಪ್ರ+ಮುಹ (ವೈಚಿತ್ಯ)

"ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ಪ್ರಸರತಿ ಪರಿಮಾಥಿ ಕೋಷ್ಯಯ

ದೇಹದಾಹಸ್ತಿರಯತಿ ಕರಣಾನಾಂ ಗ್ರಾಹಕತ್ವಂ ಪ್ರಮೋಹ:" ಮಾಲತೀಂ

೧-೪೪।

**ಪ್ರಮೋಹನ ಪ್ರಮೋಹನ (ನಂ)** ಮೋಹಗೊಳಿಸುವುದು,

ಮಂಕು ಹಿಡಿಸುವುದು. ಪ್ರ+ಮುಹ (ವೈಚಿತ್ಯ) + ಣಿಚ್

ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ಪ್ರಮೋಹನ ಪ್ರಮೋಹನ (ವಿಂ)** 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬಾಡಿದಹೋಗಿರುವ,

ಕಾಂತಿಹೀನವಾದ. ಪ್ರ+ಮುಹ (ವೈಚಿತ್ಯ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)।

ನತ್ವಂ (೮-೨-೪೩)। 2. ಕಳೆಗುಂದಿರುವ, ಸತ್ತ್ವವಿಲ್ಲದ,

ಹರ್ಷವಿಲ್ಲದ.

**ಪ್ರಯಚ್ಛತ್ ಪ್ರಯಚ್ಛತ್ (ವಿಂ)** 1. ಕೊಡುತ್ತಿರುವ, ನೀಡು

ತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ದಾಣ್ (ದಾನ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।

ದಾಣೋ ಯಚ್ಛಾದೇಶ: (೭-೩-೭೮)। "ಪ್ರಯಚ್ಛತೋಚ್ಛೇ: ಕುಸುಮಾನಿ

ಮಾನಿನಿ ವಿಪಕ್ಷಗೋತ್ರಂ ದಯಿತೇನ ಲಕ್ಷ್ಮಿಮತಾ" ಕಿರಾಂ ೮-೧೪।

2. ತಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಯಮ

(ಉಪರಮೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) "ತ:" (೭-೩-೭೭)।

**ಪ್ರಯತ್ ಪ್ರಯತ್ (ವಿಂ)** ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ

ಪಡೆಯುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಙ್ (ಗತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।

"ಪ್ರಯತ: ಪ್ರಶಮಂ ಹೃತಾಶನಸ್ಯ ಕ್ವಚಿದಾಲಕ್ಷಯತ ಮುಕ್ತಮೂಲಮರ್ಚಿ:"

ಮಾಗಂ ೨೦-೭೩।

**ಪ್ರಯತ ಪ್ರಯತ (ವಿಂ)** 1. ಪವಿತ್ರನಾದ, ಪರಿಶುದ್ಧನಾದ.

ಪ್ರ+ಯತೀ (ಪ್ರಯತೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ನಮ್ರ,

ವಿನೀತ. "ಇಕ್ಷ್ವಾಕುವಂಶಗುರವೇ ಪ್ರಯತ: ಪ್ರಣಮ್ಯ ಸಂಭ್ರಾತರಂ

ಭರತಮರ್ಯಪರಿಗ್ರಹಾಂತೇ" ರಘುಂ ೧೩-೭೦। 3. ಜಿತೇಂದ್ರಿಯ

ನಾದ, ಇಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹವುಳ್ಳ. ಪ್ರ+ಯಮ (ಉಪರಮೆ)

"ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಂ ಕುಲಪತಿನಾ ಸ ಪರ್ಣ-

ಶಾಲಾಮಧ್ಯಾಸ್ಯ ಪ್ರಯತಪರಿಗ್ರಹದ್ವಿतीय:" ರಘುಂ ೧-೯೫।

"ತಸ್ಮಿಂ ಹಿಮಾದ್ರೇ: ಪ್ರಯತಾಂ ತನುಜಾಂ ಯತಾತ್ಮನೇ ರೋಚಯಿತ್ ಯತಸ್ವ"

ಕುಮಾಂ ೩-೧೬। 4. ತಡೆದಿರುವ, ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಟ್ಟಿರುವ.

5. ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಪ್ರಯತ್ನಪಟ್ಟಿರುವ.

**ಪ್ರಯತನ ಪ್ರಯತನ (ನಂ)** ಪ್ರಯತ್ನಪಡುವುದು. ಪ್ರ+ಯತೀ

(ಪ್ರಯತೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)।



ಪ್ರಯತನೀಯ ಪ್ರಯತನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಯತ್ನ ಸಬೇಕಾದ. 2. ಪ್ರಯತ್ನ ಪಡಬಹುದಾದ. ಪ್ರ + ಯತಿ (ಪ್ರಯತ್ನೆ) "ಯತೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). "ತವ್ಯ:" -ಯತೀತವ್ಯಮ್ -ಯತೀತವ್ಯಮ್.

ಪ್ರಯತಮಾನ ಪ್ರಯತಮಾನ (ವಿಂ) ಪ್ರಯತ್ನ ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಯತಿ (ಪ್ರಯತ್ನೆ) "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಶಾನ ಯತಿ ಪ್ರಯಮನ್ಯಧುಮ್ಯ: ಸಾರತರಾಗಮನಾ ಯತಮಾನಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೪೫.

ಪ್ರಯತವತ್ ಪ್ರಯತವತ್ (ವಿಂ) ತಡೆದಿರುವ, ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಟ್ಟಿರುವ. ಪ್ರ + ಯಮ (ಉಪರಮೇ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨).

ಪ್ರಯತ್ ಪ್ರಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಯತ್ನ ಪಟ್ಟಿರುವ. ಪ್ರ + ಯತಿ (ಪ್ರಯತ್ನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). 2. ಸಿದ್ಧವಾಗಿರುವ, ಸಜ್ಜಾಗಿರುವ.

ಪ್ರಯತ್ನ ಪ್ರಯತ್ನ (ಪುಂ) 1. ಸರಿಯಾದ ಯತ್ನ, ಸರಿಯಾದ ಉದ್ಯಮ. ಪ್ರ + ಯತಿ (ಪ್ರಯತ್ನೆ) "ನಹ್" (೩-೩-೯೦). "ತಸ್ಯೇದಂ ವಿಪುಲಂ ವಿಧೇವಿಲಸಿತಂ ಪುಂಸಾಂ ಪ್ರಯತ್ನಚ್ಚಿದ:" ಮುಡಾಂ ೫-೨೦. 2. ಹೆಚ್ಚು ಶ್ರಮ. "ತದೇಶ ಕಥಮನುಷತತ ಏವ ಮೇ ಪ್ರಯತ್ನಪ್ರೇಕ್ಷಣೀಯ: ಸಂವೃತ:" ಶಾಕುಂ ೧. 3. ಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿಗಾಗಿ ಬಹಳ ತ್ವರೆಯಿಂದ ನಡೆಸುವ ಕಾರ್ಯ. ಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿಯಿಂದ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿಯ ವರೆಗೂ ಐದು ಅವಸ್ಥೆಗಳುಂಟು. (1) ಆರಮ್ಭ: (2) ಯತ್ನ: (3) ಪ್ರಾಪ್ತಾಶಾ (4) ನಿಯತಾಪ್ತಿ: ಮತ್ತು (5) ಫಲಾಗಮ: ಎರಡನೆಯ ಅವಸ್ಥೆಯೇ ಪ್ರಯತ್ನವಾಗುವುದು. "ಪ್ರಯತ್ನಸ್ತು ಫಲಾಪ್ತೌ ವ್ಯಾಪಾರೋಽಪಿ ತ್ವರಾನ್ವಿತ:" ಸಾಂ ೬-೭೨.

ಪ್ರಯತ್ನವತ್ ಪ್ರಯತ್ನವತ್ (ವಿಂ) ಪ್ರಯತ್ನವುಳ್ಳವನು, ಸರಿಯಾದ ಉದ್ಯಮವುಳ್ಳವನು. ಪ್ರಯತ್ನೋಽಸ್ಯ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪).

ಪ್ರಯತ್ನವ್ಯ ಪ್ರಯತ್ನವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡಲ್ಪಡುವ, ನಿಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ನಿಗ್ರಹಿಸಬೇಕಾದ, ಹತೋಟಿಯಲ್ಲಿಡಬೇಕಾದ. ಪ್ರ + ಯಮ (ಉಪರಮೇ) "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬). "ಯತೀಯರ್" -ಯಮನೀಯ: -ಯಮನೀಯ:

ಪ್ರಯಮನ ಪ್ರಯಮನ (ನಂ) ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡುವುದು, ಹತೋಟಿಯಲ್ಲಿಡುವುದು. ಪ್ರ + ಯಮ (ಉಪರಮೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

ಪ್ರಯಸನ ಪ್ರಯಸನ (ನಂ) 1. ಪ್ರಯತ್ನ. ಪ್ರ + ಯಸು (ಪ್ರಯತ್ನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). 2. ಆಯಾಸ, ಶ್ರಮ, ಬಳಲಿಕೆ.

ಪ್ರಯಸನೀಯ ಪ್ರಯಸನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಯತ್ನಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಯತ್ನಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಯತ್ನಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಪ್ರ + ಯಸು (ಪ್ರಯತ್ನೆ) ಕರ್ಮದೊ "ಯತೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬). -ಯಸೀತವ್ಯಮ್ -ಯಸೀತವ್ಯಮ್.

ಪ್ರಯಸ್ತ ಪ್ರಯಸ್ತ (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಕಷ್ಟದಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಯಸು (ಪ್ರಯತ್ನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). 2. ಸುಬಾರದ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಸಂಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ವ್ಯಂಜನ. 3. ಬಹಳ ಶ್ರಮದಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪ್ರಯಸ್ಯತ್ ಪ್ರಯಸ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಪ್ರಯತ್ನ ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಯಸು (ಪ್ರಯತ್ನೆ) "ಶತು" (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬). -ಯಸ್ಯಂತಿ -ಯಸ್ಯಂತಿ.

ಪ್ರಯಾಗ ಪ್ರಯಾಗ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ, ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ. ಈ ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರವು ಈಗಿನ ಅಲಹಾಬಾದಿನ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವುದು. 2. ಒಂದು ಯಾಗ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠ ಯಾಗ: 3. ಇಂದ್ರ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠ ಯಾಗಾ ಯಸ್ಮಾತ್. 4. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. "ಪ್ರಯಾಗಸ್ತೀರ್ಥಭೇದೇ ಸ್ಯಾಢ್ವಜೇ ಶತಮಸ್ತಾಶ್ವಯೋ:" ಮೇದಿಂ.

ಪ್ರಯಾಗಮಯ ಪ್ರಯಾಗಮಯ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ಪ್ರಯಾಗಾತ್ ಪ್ರಕೃಷ್ಠಯಾಗಕಾರಿಣಿ ವಿಭೇತಿ -ವಿ ಭಿ (ಮಯೇ) "ಅಚ್" ತನ್ (ವಾಂ ೩-೩-೫೬). ಇತರರು ಯಾಗಮಾಡುವುದರಿಂದ ಪದವಿಗೆ ಚ್ಯುತಿಯುಂಟಾಗುವುದೆಂದು ಇಂದ್ರನಿಗೆ ಭಯ.

ಪ್ರಯಾಚನ ಪ್ರಯಾಚನ (ನಂ) ಬೇಡುವುದು, ಕೇಳಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಪ್ರ + ಯಾಚ (ಯಾಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

ಪ್ರಯಾಚನೀಯ ಪ್ರಯಾಚನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಬೇಡಲ್ಪಡುವ, ಯಾಚಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ + ಯಾಚ (ಯಾಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಯತೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). 2. ಯಾಚಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಯಾಚಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. "ತವ್ಯ:" -ಯಾಚೀತವ್ಯ: -ಯಾಚೀತವ್ಯ:

ಪ್ರಯಾಚಿತ ಪ್ರಯಾಚಿತ (ವಿಂ) ಬೇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಯಾಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಯಾಚ (ಯಾಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).

ಪ್ರಯಾಣ ಪ್ರಯಾಣ (ನಂ) 1. ಗಮನ, ಹೊರಡುವುದು, ಹೊರಟುಬರುವುದು. ಪ್ರ + ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). "ಪ್ರಯಾಣಕಾಲೋಚಿತಚಾರುಣ್ಯಭದ್ರಜಂ ವಹನ್ ಪರ್ವತಪಕ್ಷದಾರಣಮ್" ಕುಮಾಂ ೧೪-೫. 2. ಯಾತ್ರೆ, ಪರಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ಹೊರಟುಬರುವುದು. "ದೃಷ್ಟಿಪ್ರಪಾತಂ ಪರಿಹೃತ್ಯ ತಸ್ಯ ಕಾಮ: ಪುರ:ಶುಕ್ರಮಿವ ಪ್ರಯಾಣಿ" ಕುಮಾಂ ೩-೪೩.

ಪ್ರಯಾತ್(ನ್) ಪ್ರಯಾತ್(ನ್) (ವಿಂ) ಹೋಗುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರಯಾಣಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣಿ) "ಶತು" (೩-೨-೧೨೪). "ಪತಿ ಪ್ರಯಾಂತಂ ಪುನಾಸ್ತಮನ್ವಯು:" ಕುಮಾಂ ೧೫-೯. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬). -ಯಾಂತಿ



-ಯಾಸ್ಮಿನ್. "ಪ್ರಯಾಂತೀ ಪೃತನಾ ಸದ್ವಿ: ಪ್ರಣಾದೇರ್ವಿಮಪೂರ್ಯತ್" ಯಾದಂ ೨೨-೬೧.

ಪ್ರಯಾತ ಪ್ರಯಾತ (ಪುಂ) 1. ಭೃಗು, ಪ್ರಪಾತ, ಬೆಟ್ಟದ ಕಮರಿ. (ನಂ) 2. ಪ್ರಯಾಣ, ಹೊರಟುಬರುವುದು. ಪ್ರ+ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪). 3. ನಡೆಗೆ, ಗಮನ. "ಸರಿತ ಇವ ಸವಿಭ್ರಮಪ್ರಯಾತಪ್ರಗದಿತಹಂಸಕಭೂಷಣಾ ವಿರೇಜು:" ಮಾಘಂ ೭-೨೩. (ವಿಂ) 4. ಹೊರಟಿರುವ. ಪ್ರ+ಯಾ ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). "ಪ್ರಾಚೀಂ ಪ್ರಯಾತೇ ವಿರಹಾದ್ಯಂ ತೇ ತಾಪಾಂಶ್ಚ ರೂಪಾಂಶ್ಚ ಶಶಾಂಶ್ಚಶಕ್ತಿ" ನೈಷಂ ೮-೬೨. 5. ಹೊಂದಿರುವ, ಪಡೆದಿರುವ. "ಪ್ರಯಾತಸ್ತವ ಯಮ್ಯತ್ವಂ ಶಸ್ತ್ರಪೂತೋ ಬ್ರವೀಮಿ ತೇ" ಭट्टಿಂ ೬-೪೯. 6. ಪ್ರಯಾಸದಿಂದ ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).

ಪ್ರಯಾತವತ್ ಪ್ರಯಾತವತ್ (ವಿಂ) ಹೊರಟಿರುವ, ಹೋಗುವ. ಪ್ರ+ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨).

ಪ್ರಯಾತವ್ಯ ಪ್ರಯಾತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಹೋಗ ಬೇಕಾದ, ಹೊರಟುಬರಬೇಕಾದ. ಪ್ರ+ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬). 2. ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ಅಭಿಮುಖ ವಾಗಿ ಹೋಗಿ ಹೋರಾಡಬೇಕಾದ (ಶತ್ರು). "ಅನೀಯರ್". -ಯಾನೀಯ: -ಯಾನೀಯಾ:

ಪ್ರಯಾತ್ ಪ್ರಯಾತ್ಯ (ವಿಂ) ಹೊರಡುವವನು, ಪ್ರಯಾಣ ಮಾಡುವವನು. ಪ್ರ+ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ತೃತ್" (೩-೧-೧೩೩).

ಪ್ರಯಾಮ ಪ್ರಯಾಮ (ಪುಂ) 1. ದೈರ್ಘ್ಯ, ಉದ್ದ, ನೀಳ. ಪ್ರ+ಯಮ (ಉಪರಮೆ) "ಯಮ್" (೩-೩-೧೮). 2. ಅಹಾರ ಧಾನ್ಯಗಳ ಕೊರತೆ. 3. ಅಹಾರಧಾನ್ಯಗಳ ಕೊರತೆಯಿಂದ ಕೊಳ್ಳುವವರ ಪೈಪೋಟಿ. "ನಿವಾಕಸ್ತು ಪ್ರಯಾಮ: ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ.

ಪ್ರಯಾಸ ಪ್ರಯಾಸ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಯತ್ನ. ಪ್ರ+ಯಸು (ಪ್ರಯತ್ನೇ) ಭಾವೇ "ಯಮ್" (೩-೩-೧೮). "ಪ್ರಯಾಸ: ಸುರಶತ್ರುಣಾಂ ಜಾತ್ಯುತ್ತರಮಿವಾಭವತ್" ಯಾದಂ ೧೬-೯೬. 2. ಆಯಾಸ, ಶ್ರಮ, ಹೆಚ್ಚು ಬಳಲಿಕೆ. "ಅತ್ಯಾಹಾರ: ಪ್ರಯಾಸಶ್ಚ ಪ್ರಜಲ್ಪೋ ನಿಯಮಗ್ರಹ: ಜನಸಂಘಶ್ಚ ಲೌಲ್ಯಂ ಚ ಷಡ್ಭಿರ್ಯೋಗೋ ವಿನಶ್ಯತಿ" ಹಠಂ.

ಪ್ರಯಾಸ್ಯತ್ ಪ್ರಯಾಸ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಹೊರಟುಬರಲಿರುವ, ಮುಂದೆ ಹೋಗಲಿರುವ. ಪ್ರ+ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) + ಸ್ಯ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಪ್ರಯಾಸ್ಯತ: ಪುಣ್ಯವನಾಯ ಜಿಣ್ಣೋ ರಾಮಸ್ಯ ರೋಚಿಣ್ಣುಮುಖಸ್ಯ ಧೃಣ್ಣು:" ಭट्टಿಂ ೧-೨೫.

ಪ್ರಯುಕ್ತ ಪ್ರಯುಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಪ ಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಶಬ್ದ). ಪ್ರ+ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗಿ) "ಕ್ತ:"

(೩-೨-೧೦೨). "ಅಯಮಪಿ ಚ ಗಿರಂ ನಸ್ತ್ವತ್ಪ್ರಬೋಧಪ್ರಯುಕ್ತಾ- ಮನುವದತಿ ಶುಕಸ್ತೇ ಮಂಜುವಾಕಪಂಜರಸ್ಯ:" ರಘುಂ ೫-೭೫.

2. ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಧ್ಯಾಪಿತಸ್ಯೋಶನಸಾಪಿ ನೀತಿ ಪ್ರಯುಕ್ತರಾಗಪ್ರಣಿಧಿವಿವಿಧಸ್ತೇ" ಕುಮಾಂ ೩-೬. 3. ಪ್ರಯೋ ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ (ಬಾಣ). "ಅಲಂ ಮಹೀಪಾಲ ತವ ಶ್ರಮೇಣ ಪ್ರಯುಕ್ತಮಪ್ಯಸ್ತ್ರಮಿತೋ ವೃಥಾ ಸ್ಯಾತ್" ರಘುಂ ೨-೩೪.

4. ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರಯುಕ್ತಸತ್ಕಾರವಿಶೇಷಮಾತ್ಮನಾ ನ ಮಾಂ ಪರಂ ಸಂಪ್ರತಿಪತ್ತುಮರ್ಹತಿ" ಕುಮಾಂ ೫-೩೯. 5. ನೆರವೇರಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರಯುಕ್ತಪಾಣಿಗ್ರಹಣಂ ಯದನ್ಯದ್ಧವರಂ ಪುಷ್ಯತಿ ಕಾಂತಿ- ಸಗ್ರಚಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೭೨. 6. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರಯುಕ್ತೇರಗ್ರತೋ ನಾಗೈ: ಪ್ರಾವೃಷೇರ್ಯೇರಿವಾಮ್ಬುದೇ:" ಯಾದಂ ೨೨-೨೦೦.

7. ಪ್ರೇರಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟ, ಒತ್ತಾಯಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಯಾವಮಾನೇನ ಪಿತು: ಪ್ರಯುಕ್ತಾ ದಕ್ಷಸ್ಯ ಕನ್ಯಾ ಭವಪೂರ್ವಪತ್ನೀ" ಕುಮಾಂ ೧-೨೧.

8. ಒತ್ತಾಗಿ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ದಟ್ಟವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಯುಕ್ತಮ್. 9. ಅಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಲುಗಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಮಹತ್ಪ್ರಯುಕ್ತಾಶ್ಚ ಮಹತ್ಸಖಾಭಂ ತಮರ್ಚ್ಯಮಾರಾದಭಿವರ್ತಮಾನಮ್" ರಘುಂ ೨-೧೦.

10. ಅಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಡೆಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರಸಹ್ಯ ಯೋಸ್ಮಾಸು ಪರೈ: ಪ್ರಯುಕ್ತ: ಸ್ಮರ್ತುಂ ನ ಶಕ್ಯ: ಕಿಮುತಾಧಿಕರ್ತುಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೪೪. 11. ಬಡ್ಡಿಯ ಸಂಪಾದನೆಗಾಗಿ ಸಾಲ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. 12. ಸಮಾಧಿಯಲ್ಲಿ ಕುಳಿತಿರುವ. ಪ್ರ+ಯುಜ (ಸಮಾಧಿ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨).

13. ಬೆನ್ನಾಗಿ ಕೂಡಿ ಕೊಂಡಿರುವ, ಸರಿಯಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. "ಗುಣಪ್ರಯುಕ್ತಾ: ಪರಮಮಂಭೇದಿನ: ಶರಾ ಇವಾವಂಶಭವಾ ಭವಂತಿ" ಉದ್ಭಂ.

14. ಉಂಟಾಗಿರುವ, ಏರ್ಪಟ್ಟಿರುವ, ಸಂಭವಿಸಿರುವ. "ಅಪಾಯಸಂದರ್ಶನಜಾಂ ವಿಪತ್ತಿಮುಪಾಯಸಂದರ್ಶನಜಾಂ ಚ ಸಿದ್ಧಿಮ್. ಮೇಧಾವಿನೋ ನೀತಿಗುಣಪ್ರಯುಕ್ತಾಂ ಪುರ: ಸ್ಫುರಂತೀಮಿವ ದರ್ಶಯಂತಿ" ಪञ्ಚತಂ ೧-೬೫. (ನಂ) 15. ಹೇತು, ಕಾರಣ, ನಿಮಿತ್ತ.

ಪ್ರಯುಕ್ತವತ್ ಪ್ರಯುಕ್ತವತ್ (ವಿಂ) 1. (ಪದವನ್ನು) ಪ್ರಯೋಗಿಸಿದವನು, (ಶಬ್ದವನ್ನು) ಉಪಯೋಗಿಸಿದವನು. 2. (ಬಾಣವನ್ನು) ಪ್ರಯೋಗಿಸಿದವನು. 3. ಕಳುಹಿಸಿ ದವನು. 4. ಪ್ರೇರಿಸಿದವನು, ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗುವಂತೆ ಮಾಡಿದವನು. 5. ಒತ್ತಾಯಪಡಿಸಿದವನು. 6. ಬಡ್ಡಿ ಗಾಗಿ ಸಾಲ ಕೊಟ್ಟವನು. ಪ್ರ+ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗಿ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨).

ಪ್ರಯುಕ್ತಿ ಪ್ರಯುಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಯೋಗಿಸುವುದು, ಉಪ ಯೋಗಿಸುವುದು. 2. ಬಡ್ಡಿಗಾಗಿ ಸಾಲ ಕೊಡುವುದು. 3. ಪ್ರೇರಿಸುವುದು, ಹುರಿದುಂಬಿಸುವುದು. 4. ಒತ್ತಾಯ ಪಡಿಸುವುದು. 5. ಕಳುಹಿಸುವುದು. 6. (ಬಾಣವನ್ನು)



ಪ್ರಯೋಗಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) ।

**ಪ್ರಯುಜ್ಯಮಾನ ಪ್ರಯುಜ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಒತ್ತಾಯಪಡಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಧ್ರುವೇಣ ಭರ್ತಾ ಧ್ರುವದರ್ಶನಾಯ ಪ್ರಯುಜ್ಯಮಾನಾ ಪ್ರಿಯದರ್ಶನೇನ" ಕುಮಾಂ ೭-೮೫ । 2. ಅನುಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಕೊಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. "ಪ್ರಯುಜ್ಯಮಾನಾನಿ ತಯೋರ್ಯಥಾಹ್ ಮಾಜ್ಞಲ್ಯ-ಮಾಲ್ಯಾಭರಣಾಕ್ಷತಾನಿ" ಯಾದಂ ೧೩-೮೩ । 3. ಬಡ್ಡಿಗಾಗಿ ಕೊಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ (ಸಾಲ). 4. ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ (ಪದ). 5. ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 6. ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 7. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 8. ಒತ್ತಾಯಪಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 9. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 10. ಅಲುಗಾಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

**ಪ್ರಯುಜ್ಜತ್ ಪ್ರಯುಜ್ಜತ್** (ವಿಂ) 1. (ಶಬ್ದವನ್ನು) ಪ್ರಯೋಗಿಸುತ್ತಿರುವ, ಉಪಯೋಗಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. (ಬಾಣವನ್ನು) ಪ್ರಯೋಗಿಸುತ್ತಿರುವ, ಬಿಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಪ್ರಯೋಗದಿಂದ ತೋರ್ಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಬಡ್ಡಿಗಾಗಿ ಹಣವನ್ನು ಸಾಲವಾಗಿ ಕೊಡುತ್ತಿರುವ. 5. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸೇರಿಸುತ್ತಿರುವ. 6. ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 7. ಪ್ರೇರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 8. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುತ್ತಿರುವ. 9. ಅಭಿನಯಿಸಿ ತೋರಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) । -ಯುಜ್ಜಾನ: -ಯುಂಜಾನಃ. "ಯತ್ಸತ್ಯಂ ಕಾವ್ಯವಿಶೇಷವೇದಿನ್ಯಾಂ ಪರಿಷದಿ ಪ್ರಯುಜ್ಜಾನಸ್ಯ ಮಮಾಪಿ ಚೇತಸಿ ಸುಮಹಾನ್ ಪರಿತೋಷಃ ಪ್ರಾಪ್ತುರ್ಭವತಿ" ಮುದ್ರಾಂ ೧ ।

**ಪ್ರಯುತ ಪ್ರಯುತ** (ನಂ) 1. ದಶಲಕ್ಷ ಸಂಖ್ಯೆ, ಹತ್ತು ಲಕ್ಷ. ಪ್ರ + ಯು (ಮಿಶ್ರಣೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । "ಶತಂ ಸಹಸ್ರಮಯುತಂ ನಿಯುತಂ ಪ್ರಯುತಂ ಮತಮ್ । ಸ್ತ್ರೀ ಕೋಟಿರಬುದಮಿತಿ ಕ್ರಮಾದ್ವಿಂಶತಿಶತಮುತಮ್" । (ವಿಂ) 2. ಹತ್ತು ಲಕ್ಷವುಳ್ಳ, ಹತ್ತು ಲಕ್ಷ ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ. (ವಿಂ) 3. ಸರಿಯಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕೂಡಿಕೊಂಡಿರುವ. ಪ್ರ + ಯು (ಮಿಶ್ರಣೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) ।

**ಪ್ರಯೋಕ್ತವ್ಯ ಪ್ರಯೋಕ್ತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವ, ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) । 2. ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವ. "ತೃಣಿಂ ದಂಡಃ ಪ್ರಯೋಕ್ತವ್ಯ-

ಸ್ತಸ್ಯ ಸಿದ್ಧಿ ಧ್ರುವೋ ಜಯಃ" ಮಂವಿಂ ೬-೧೫ । 3. ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವ, ಬಿಡಲ್ಪಡುವ (ಬಾಣ). 4. ಬಡ್ಡಿಗಾಗಿ (ಸಾಲ) ಕೊಡಲ್ಪಡುವ. 5. ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕೂಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಒತ್ತಾಯಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । -ಯೋಜನೀಯಃ.

**ಪ್ರಯೋಕ್ತ ಪ್ರಯೋಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಬಡ್ಡಿಗಾಗಿ ಸಾಲ ಕೊಡುವವನು. ಪ್ರ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ತತ್" (೩-೧-೧೩೩) । "ಉತ್ತಮರ್ಣಾಧಿಮರ್ಣಿ ದ್ವೌ ಪ್ರಯೋಕ್ತಗ್ರಾಹಕೌ ಕ್ರಮಾತ್" ಅಮಂ । 2. (ಬಾಣವನ್ನು) ಪ್ರಯೋಗಿಸುವವನು. "ಸಂಮೋಹನಂ ನಾಮ ಸಖೇ ಮಮಾಸ್ತ್ರಂ ಪ್ರಯೋಗಸಂಹಾರವಿಭಕ್ತಮನ್ತ್ರಮ್ । ಗಾಂಧರ್ವಮಾದತ್ಸವಯತಃ ಪ್ರಯೋಕ್ತುನಂ ಚಾರಿಹಿಸಾ ವಿಜಯಶ್ಚ ಹಸ್ತೇ" ರಘುಂ ೫-೫೭ । 3. ಆಚರಿಸುವವನು, ಮಾಡುವವನು. "ಪುತ್ರೋ ರಘುಸ್ತಸ್ಯ ಪದಂ ಪ್ರಶಾಂಸ್ತಿ ಮಹಾಕ್ರತೋವಿಶ್ವಸೃಜಃ ಪ್ರಯೋಕ್ತಾ" ರಘುಂ ೬-೭೬ । 4. ಪ್ರಯೋಗಮಾಡಿ ತೋರಿಸುವವನು, ಅಭಿನಯಿಸಿ ತೋರಿಸುವವನು, ನಾಟ್ಯಾಚಾರ್ಯ. "ಸ ಪ್ರಯೋಗನಿಪುಣಃ ಪ್ರಯೋಕ್ತುಃ ಸಂಜಘಂ ಸಹ ಮಿತ್ರಸನ್ನಿಧಿ" ರಘುಂ ೧೯-೩೬ । 5. ನಿಯೋಜಿಸುವವನು, ಆಜ್ಞೆಮಾಡಿ ಕಳುಹಿಸುವವನು. "ಪರದಾರಪ್ರಯೋಕ್ತಾರಃ ತೇ ವೈ ನಿರಯಗಾಮಿನಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ ೨೩-೬೧ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) । ಪ್ರಯೋಕ್ತೃಃ.

**ಪ್ರಯೋಗ ಪ್ರಯೋಗ** (ಪುಂ) 1. (ಶಬ್ದದ) ಪ್ರಯೋಗ, ಉಚ್ಚಾರಣೆ, (ಶಬ್ದವನ್ನು) ಉಪಯೋಗಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ಘಕ್" (೩-೩-೧೮) । "ಕ್ಷಣಶಯಿತ-ವಿಬುಧಾಃ ಕಲ್ಪಯಂತಃ ಪ್ರಯೋಗಾನ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೬ । 2. (ಬಾಣದ) ಪ್ರಯೋಗ, (ಬಾಣವನ್ನು) ಬಿಡುವುದು. "ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವೀಚ್ಛೇನಮಿಷ್ಠಪ್ರಯೋಗೇ ತತ್ಪೂರ್ವಭಜ್ಞೇ ವಿತಥಪ್ರಯತ್ನಃ" ರಘುಂ ೨-೪೨ । 3. ಅಭಿನಯಿಸಿ ಕಾರ್ಯದಿಂದ ತೋರಿಸುವುದು. "ತದತ್ರಭವಾನಿಮಂ ಮಾಂ ಚ ಶಾಸ್ತ್ರೇ ಪ್ರಯೋಗೇ ಚ ವಿಮೃಶತು" ಮಾಲಂ ೧ । 4. ಸಾಮದಾನಾದಿ ಉಪಾಯಗಳ ಆಚರಣೆ. "ಕ್ಷಣಶಯಿತವಿಬುಧಾಃ ಕಲ್ಪಯಂತಃ ಪ್ರಯೋಗಾನುದಧಿಮಹತಿ ರಾಜ್ಯೇ ಕಾವ್ಯವದ್ದವಿಗಾಹೇ" ಮಾಘಂ ೧೧-೬ । 5. ರೂಪಕ, ನಾಟಕ. "ಅಪಶ್ಯತಾಮಪ್ಸರಸಾಂ ಮುಹುರತಂ ಪ್ರಯೋಗಮಾತ್ರಂ ಲಲಿತಾಂಗಹಾರಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೯೧ । 6. ಓಷಧಿ ಮೂಲಿಕೆಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ಸ್ತಂಭನ ಉಚ್ಚಾಟನ ವಶೀಕರಣ ಮೊದಲಾದ ಕಾರ್ಯ. 7. ನಿದರ್ಶನ, ಉದಾಹರಣೆ. 8. ಬಡ್ಡಿಗಾಗಿ ಸಾಲವನ್ನು ಕೊಡುವುದು. "ಸಪ್ತ ವित्तागमा धर्म्या दायो लाभः क्रयो जयः । प्रयोगः कर्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च" ಮನುಂ ೧೦-೧೧೫ । 9. ಅಭಿನಯ. "ಸ ಪ್ರಯೋಗನಿಪುಣಃ



ಪ್ರಯೋಗಾತಿಶಯಃ ಸಂಜಞಃ ಸಹ ಮಿತ್ರಸನ್ನಿಧೌ" ರಘುಂ ೧೯-೩೬ |  
10. ಕಾರ್ಯತಃ ಮಾಡಿ ತೋರಿಸುವುದು.

**ಪ್ರಯೋಗಾತಿಶಯ ಪ್ರಯೋಗಾತಿಶಯ (ಫಂ)** ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಪ್ರಸ್ತಾವನೆಯ (ಆಮುಖದ) ಒಂದು ಭೇದ. ಸೂತ್ರಧಾರನು ತನ್ನ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ವಾಕ್ಯ ಪ್ರಯೋಗದಿಂದ ನಾಟಕದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಪಾತ್ರಪ್ರವೇಶ ವನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸಿ ಪದಗಳಿಂದ ಸೂಚಿಸಿ ನಿರ್ಗಮಿಸುವಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗಾತಿಶಯ ರೂಪವಾದ ಆಮುಖ (ಪ್ರಸ್ತಾವನೆ).

"ಉಪಯುಕ್ತಮಿತ್ಯುಪಕ್ಷೇಪಾತ್ ಸೂತ್ರಧಾರಪ್ರಯೋಗತಃ | ಪಾತ್ರಪ್ರವೇಶೋ ಯಥಾಯಂ ಪ್ರಯೋಗಾತಿಶಯೋ ಮತಃ" ದಶಕಂ |

**ಪ್ರಯೋಗಿನ್ ಪ್ರಯೋಗಿನ್ (ವಿಂ)** ಪ್ರಯೋಗ ನಡೆಸುವವನು, ಕಾರ್ಯಮಾಡಿ ತೋರಿಸುವವನು. ಪ್ರ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ಯುಜಿನ್" (೩-೨-೧೪೨) |

**ಪ್ರಯೋಜಕ ಪ್ರಯೋಜಕ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರೇರಿಸುವವನು, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗುವಂತೆ ಮಾಡುವವನು. ಪ್ರಯುಕ್ತಿ - ಪ್ರ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ಯುಕ್" (೩-೧-೧೩೩) | 2. (ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ) ಹೇತು ಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ ಕರ್ತೃ. ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವವನನ್ನು ಪ್ರೇರಿಸುವವನು ಕರ್ತೃ ಸಂಜ್ಞೆ ಮತ್ತು ಹೇತು ಸಂಜ್ಞೆಗಳನ್ನು ಹೊಂದುವವನು. ದೇವದತ್ತಃ ಯಜ್ಞಾ ಭವತಿ, ಯಜಕಸ್ತಂ ಪ್ರೇರಯತಿ ಎಂಬಲ್ಲಿ ದೇವದತ್ತನು ಮುಖ್ಯಕರ್ತೃನಾದನು, ಯಜಕನು ಪ್ರಯೋಜಕಕರ್ತೃನು. ಪ್ರಯೋಜಕನಾದ ಯಜಕನಿಗೆ ಹೇತುಸಂಜ್ಞೆ ಮತ್ತು ಕರ್ತೃ ಸಂಜ್ಞೆ ಬಂದಿರುವುದು. "ತತ್ರಪ್ರಯೋಜಕಕರ್ತೃತ್ವಮುಪೇತಿ ಮಮ ಜಲಪತಃ" ಮಾಘಂ ೨-೨೧ | 3. ಅಜ್ಞೆಮಾಡುವವನು. "ಶಾತಾತಪೋ ವಸಿಷ್ಠಶ್ಚ ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರಪ್ರಯೋಜಕಾಃ" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೪ | 4. ಬಡ್ಡಿಗಾಗಿ ಹಣವನ್ನು ಸಾಲವಾಗಿ ಕೊಡುವವನು. 5. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವವನು, ಹುರಿದುಂಬಿಸುವವನು.

**ಪ್ರಯೋಜನ ಪ್ರಯೋಜನ (ನಂ)** 1. ಕಾರ್ಯ. ಪ್ರ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ಯುಜಿ" (೩-೩-೧೧೩) | "ಪ್ರಯೋಜನಾಪೇಕ್ಷಿತಯಾ ಪ್ರಮಾಣಾಂ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಲಂ ಗೌರವಮಾಶ್ರಿತೇಷು" ಕುಮಾರಂ ೩-೧ | 2. ಗುರಿ, ಧ್ಯೇಯ, ಉದ್ದೇಶ. "ಪುತ್ರಪ್ರಯೋಜನಾ ದಾರಾಃ" | "ಧನಂ ಸರ್ವಪ್ರಯೋಜನಮ್" | 3. ಉಪಯೋಗ, ಅಗತ್ಯ, ಅವಶ್ಯಕತೆ. "ಯತಃ ಉತ್ತಮಮಧ್ಯಮಾಧಮಃ ಸರ್ವೇರಪಿ ರಾಜಾಂ ಪ್ರಯೋಜನಮ್" ಪञ्ಚತಂ ೧ | 4. ಫಲ. "ಅಲ್ಪಪ್ರಯೋಜನಕೃತೋತ್ತರ-ಪ್ರಯೋಜನಗುಣಲೋಪಲಗುಣೈಃ ಪರಿತೋಽನುವಿಧಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೨೪ | 5. ಹೇತು, ಕಾರಣ. ಪ್ರ + ಯುಜಿರ್ ಕರಂ "ಯುಜಿ" (೩-೩-೧೧೩) | 6. ಪಡೆಯುವ ಸಾಧನ, ಸಂಪಾದಿಸುವ ಉಪಾಯ. "ಏತಃಚತುರ್ವಿಧಂ ವಿಜ್ಞಾತುರಪಾರ್ಥಪ್ರಯೋಜನಮ್"

ಮನುಂ ೭-೧೦೦ | 7. ಉಪಯೋಗ, ಪ್ರಯೋಗ. 8. ಅಭಿ. ಬಡ್ಡಿ ಮತ್ತು ವ್ಯಾಪಾರಗಳಿಂದ ಬರುವ ಹೆಚ್ಚಿನ ಗಳಿಕೆ. "ಪ್ರಯೋಜನಂ ಕಾರ್ಯಹೇತುಃ" ಮೇದಿಂ |

**ಪ್ರಯೋಜ್ಯ ಪ್ರಯೋಜ್ಯ (ಫಂ)** 1. ಭೃತ್ಯ, ಸೇವಕ. (ನಂ) 2. ಬಡ್ಡಿಗಾಗಿ ಅಥವಾ ಹೆಚ್ಚಿನ ಸಂಪಾದನೆಗಾಗಿರುವ ಮೂಲಧನ. (ವಿಂ) 3. ಪ್ರಯೋಗಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ, ಉಪಯೋಗಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ಪ್ರ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ಯುಜಿ" (೩-೩-೬೮) ನಿಪಾಂ | "ವಾಕ್ ಚೈವ ಮಧುರಾ ಶ್ಲಕ್ಷಣಾ ಪ್ರಯೋಜ್ಯಾ ಧರ್ಮಮಿಚ್ಛತಾ" ಮನುಂ ೨-೧೪೯ | 4. ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವ, ಬಿಡಲ್ಪಡುವ (ಬಾಣ).

**ಪ್ರಯೋಜ್ಯ ಪ್ರಯೋಜ್ಯ (ವಿಂ)** ಅಳುತ್ತಿರುವ, ಕಣ್ಣೀರು ಬಿಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ರದಿರ್ (ಅಶ್ರುವಿಮೋಚನೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಶಿಪ್" (೪-೧-೬) | -ರದತೀ -ರುದತೀ.

**ಪ್ರಯೋಜಿತ ಪ್ರಯೋಜಿತ (ನಂ)** 1. ಅಳುವುದು. ಪ್ರ + ರದಿರ್ (ಅಶ್ರುವಿಮೋಚನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೨೪) | 2. ಕಣ್ಣೀರು ಬಿಟ್ಟಿರುವ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೨೨) |

**ಪ್ರಯೋಜಿತ ಪ್ರಯೋಜಿತ (ನಂ)** 1. ಜಠರ, ಹೊಟ್ಟೆ. ಪರೋಹಿತ - ಪ್ರ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡುಭವಿ ಚ) ಅಧಿಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೨೬) | (ವಿಂ) 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೇರುಬಿಟ್ಟಿರುವ, ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಂತಿರುವ. "ಪ್ರಯೋಜಿತಾ ಭಗವತ್ಯಧೋಕ್ಷಜೇ ಪ್ರಪ್ತಂ ಪುನಸ್ತಂ ವಿದುರಃ ಪ್ರವಕ್ರಮೇ" ಭಾಗಂ ೪-೧೩-೧ | 3. ಜನಿಸಿರುವ, ಹುಟ್ಟಿರುವ. ಪ್ರ + ರಹ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೨೨) | "ನಾಭಿಪ್ರಯೋಜಿತಾಂಶುರಾಸನೇನ ಸಂಸ್ತುಯಮಾನಃ ಪ್ರಥಮೇನ ಧಾತ್ರಾ" ರಘುಂ ೧೩-೬ | 4. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿರುವ. 5. ಉದ್ದವಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವ. "ಪ್ರಯೋಜಿತನೀರಿವ ಪಕ್ಷಿಜಾಲಃ" ಯಾದಂ ೧೮-೪ | 6. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವ.

**ಪ್ರಯೋಜಿತ ಪ್ರಯೋಜಿತ (ವಿಂ)** 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿರುವ. ಪ್ರ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡುಭವಿ ಚ) "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೇರುಬಿಟ್ಟಿರುವ. 3. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿರುವ, ಹೆಚ್ಚಿರುವ. 4. ಹುಟ್ಟಿರುವ.

**ಪ್ರಯೋಜಿತ ಪ್ರಯೋಜಿತ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಹುಟ್ಟುವುದು. 2. ಬೆಳೆಯುವುದು.

**ಪ್ರರೋಚನ ಪ್ರರೋಚನ (ನಂ)** ರುಚಿ ಹುಟ್ಟಿಸುವುದು, ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವುದು, ಇಷ್ಟಪಡಿಸುವುದು, ಹುರಿದುಂಬಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ರುಚ (ದೀಪ್ತಾವಭಿಪ್ರೀತೌ ಚ) + ಣಿಕ್ ಭಾವೇ



“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । “ಅಲೋಕಸಾಮಾನ್ಯಗುಣಸ್ತನುಜಃ  
ಪ್ರರೋಚನಾರ್ಥ ಪ್ರಕಟೀಕೃತಃ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೩ । “ಯುಕ್”  
(೩-೩-೧೦೭) । -ರೋಚನಾ -ರೋಚನಾ. ಕವಿಕಾವ್ಯಾದಿಗಳ  
ಪ್ರಶಂಸೆಯಿಂದ ಜನರ ಮನಸ್ಸನ್ನು ತನ್ನ ಕಡೆಗೆ ತಿರುಗಿಸಿ  
ಕೊಳ್ಳುವುದು. ಇದು ಭಾರತೀಯವೃತ್ತಿಯ ಒಂದು ಅಂಗ.

“ತಸ್ಯಾಃ ಪ್ರರೋಚನಾ ವೀಥಿ ತಥಾ ಪ್ರಹಸನಾಮುಖೇ । ಅಜ್ಞಾನ್ಯತ್ರೋ-  
ನ್ಮುಖೀಕಾರಃ ಪ್ರಶಂಸಾತಃ ಪ್ರರೋಚನಾ” ಸಾಂಧಂ ೬-೩೦ ।

**ಪ್ರರೋಪಣ ಪ್ರರೋಪಣ** (ನಂ) ಬೆಳೆಸುವುದು. ಪ್ರ + ಕ್ಕ  
(ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾದುರ್ಮವಿ ಚ) + ಣಿಕ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।  
ವಾ “ಪಃ” (೭-೩-೪೩) । ಪಕ್ಷೇ -ರೋಹಣಮ್ -ರೋಹಣಮ್.

**ಪ್ರರೋಪಣೀಯ ಪ್ರರೋಪಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಬೆಳೆಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ಬೆಳೆಸಬೇಕಾದ. ಪ್ರ + ಕ್ಕ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) + ಣಿಕ್  
“ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । ವಾ “ಪಃ” (೭-೩-೪೩) ।  
ಪಕ್ಷೇ -ರೋಹಣೀಯಃ -ರೋಹಣೀಯಃ. “ತವ್ಯಃ” -ರೋಪ-  
ಯಿತವ್ಯಃ, -ರೋಹಯಿತವ್ಯಃ, -ರೋಪಯಿತವ್ಯಃ, -ರೋಹ  
ಯಿತವ್ಯಃ.

**ಪ್ರರೋಪಿತ ಪ್ರರೋಪಿತ** (ವಿಂ) ಬೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಪ್ರ + ಕ್ಕ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) + ಣಿಕ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) ।  
ವಾ “ಪಃ” (೭-೩-೪೩) । ಪಕ್ಷೇ -ರೋಹಿತಃ -ರೋಹಿತಃ.

**ಪ್ರರೋಪಿತವತ್ ಪ್ರರೋಪಿತವತ್** (ವಿಂ) ಬೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆಸಿ  
ದವನು. ಪ್ರ + ಕ್ಕ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) + ಣಿಕ್ “ಕ್ತವತುಃ”  
(೩-೨-೧೦೨) । ವಾ “ಪಃ” (೭-೩-೪೩) । ಪಕ್ಷೇ -ರೋಹಿತವಾನ್  
-ರೋಹಿತವಾನ್.

**ಪ್ರರೋಹ ಪ್ರರೋಹ** (ಪುಂ) 1. ಅಂಕುರ, ಮೊಳಕೆ. ಪ್ರ + ಕ್ಕ  
(ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾದುರ್ಮವಿ ಚ) “ಅಕ್” (೩-೧-೧೩೪) ।  
“ಉಮಾತನೌ ಗುಹತನೌಃ ಸ್ಮರಸ್ಯ ತಚ್ಚಕ್ಷಿಣಿಃ ಪೂರ್ವಮಿವ ಪ್ರರೋಹಮ್”  
ಕುಮಾಂ ೭-೭೬ । 2. ತೇಜಸ್ವಿನ ಅಂಕುರ, ಅಂಕುರದಂತೆ  
ಹೊರಹೊಮ್ಮುತ್ತಿರುವ ಕಾಂತಿ. “ಕಪಾಲನೇತ್ರಾಂತರಲಬ್ಧ-  
ಮಾಗೈರ್ಯತಿಃ ಪ್ರರೋಹೈರಿದಿತಃ ಶಿರಸ್ತಃ” ಕುಮಾಂ ೩-೪೯ ।  
3. ಚಿಗುರುವುದು, ಮೊಳಕೆ ಹೊರಡುವುದು. 4. ಸಂತತಿಯ  
ಕೊನರು, ಮಂಶದ ಮೊಳಕೆ.

**ಪ್ರರೋಹಣ ಪ್ರರೋಹಣ** (ನಂ) 1. “ಪ್ರರೋಪಣ” ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ. 2. ಹುಟ್ಟುವುದು. 3. ಬೆಳೆಯುವುದು.  
ಪ್ರ + ಕ್ಕ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।

**ಪ್ರರೋಹಣೀಯ ಪ್ರರೋಹಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. “ಪ್ರರೋಪಣೀಯ”  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ. 2. ಬೆಳೆಯಲ್ಪಡುವ. 3. ಬೆಳೆಯ  
ಬೇಕಾದ. ಪ್ರ + ಕ್ಕ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) “ಅನೀಯರ್”  
(೩-೧-೯೬) । “ತವ್ಯಃ” । -ರೋಹಣೀಯಃ -ರೋಹಣೀಯಃ.

**ಪ್ರರೋಹತ್ ಪ್ರರೋಹತ್** (ವಿಂ) 1. ಹುಟ್ಟುತ್ತಿರುವ.  
2. ಬೆಳೆಯುತ್ತಿರುವ. “ಪ್ರರೋಹತಾ ವೀರಯಶಸ್ತರೂಪಾ”  
ಯಾದಂ ೨೦-೫೧ । 3. ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಕ್ಕ  
(ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ  
“ಙೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ರೋಹಂತಿ -ರೋಹಂತಿ.

**ಪ್ರರೋಹಯತ್ ಪ್ರರೋಹಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಬೆಳೆಸುತ್ತಿರುವ.  
2. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಕ್ಕ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ)  
+ ಣಿಕ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಙೀಪ್”  
(೪-೧-೬) । -ರೋಹಯಂತಿ -ರೋಹಯಂತಿ.

**ಪ್ರಲಪತ್ ಪ್ರಲಪತ್** (ವಿಂ) 1. ಮಾತಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಲಪ  
(ವ್ಯಕ್ತಾಯಾ ವಾಚಿ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಹರಟೆ  
ಹೊಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ವಿಪರೀತ ಮಾತಾಡುತ್ತಿರುವ, ವಿವೇಕ  
ವಿಲ್ಲದೆ ಮಾತಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ರೋದನಮಾಡುತ್ತಿರುವ,  
ಅಳುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ಲಪಂತಿ  
-ಲಪಂತಿ.

**ಪ್ರಲಪನ ಪ್ರಲಪನ** (ನಂ) 1. ಮಾತಾಡುವುದು, ಸಂಭಾಷಣೆ  
ಮಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । 2. ವೃಥಾ ಹರಟುವುದು,  
ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದೆ ಮಾತಾಡುವುದು. 3. ರೋದನ,  
ಅಳುವುದು.

**ಪ್ರಲಪನೀಯ ಪ್ರಲಪನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಮಾತಾಡಬೇಕಾದ,  
ಸಂಭಾಷಣೆ ಮಾಡಬೇಕಾದ. ಪ್ರ + ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾ ವಾಚಿ)  
“ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । 2. ಮಾತಾಡಲು ಅರ್ಹ  
ವಾದ. “ತವ್ಯಃ” । -ಲಪಿತವ್ಯಮ್ -ಲಪಿತವ್ಯಮ್.

**ಪ್ರಲಪಿತ ಪ್ರಲಪಿತ** (ನಂ) 1. ಮಾತಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ಲಪ  
(ವ್ಯಕ್ತಾಯಾ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) ।  
2. ರೋದನ. 3. ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದೆ ಮಾತಾಡುವುದು,  
ಹರಟೆ. (ವಿಂ) 4. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಾತಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । “ವಚೋ ವೇದೇಹೀತಿ  
ಪ್ರತಿಪದಮುದ್ಭೃ ಪ್ರಲಪಿತಮ್” ಸಾಂ ೬೦ ।

**ಪ್ರಲಪಿತವತ್ ಪ್ರಲಪಿತವತ್** (ವಿಂ) 1. ಮಾತಾಡಿದವನು.  
2. ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದೆ ಹರಟಿದವನು, 3. ರೋದನ  
ಮಾಡಿದವನು. ಪ್ರ + ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾ ವಾಚಿ) “ಕ್ತವತುಃ”  
(೩-೨-೧೦೨) ।

**ಪ್ರಲಮ್ಬ ಪ್ರಲಮ್ಬ** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಅಸುರ. 2. ತಗರ.  
3. ಪಯೋಧರ, ಸ್ತನ. 4. ಬಳ್ಳಿಯ ಚಿಗುರು. 5. ಶಾಪ,  
ರೆಂಬೆ. 6. ಹಾರ. (ವಿಂ) 7. ಜೋಲಾಡುವ, ನೇತಾ  
ಡುವ, ತೂಗಾಡುವ. ಪ್ರ + ಲಬಿ (ಅವಲಂಸನೆ) “ಅಕ್”



(೩-೧-೧೩೪)। (ಪುಂ) ೮. ಜೋಲಾಡುವುದು, ತೂಗಾಡುವುದು. ಪ್ರ+ಲಬಿ ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ಪ್ರಲಂಬೋ ದೈತ್ಯಭೇದೇ ಸ್ವಾತ್ ತ್ರಿಪುಷೇಷಿ ಪಯೋಧರೇ। ಲತಾಡ್ಕುರೇ ಚ ಶಾಖಾಃ ಹಾರಭೇದೇ ಪ್ರಲಂಬನೇ" ಮೇದಿಂ।

ಪ್ರಲಂಬನ ಪ್ರಲಂಬಘ್ನ (ಪುಂ) ಬಲರಾಮಂ.

ಪ್ರಲಂಬನ ಪ್ರಲಂಬನ (ನಂ) ಜೋಲಾಡುವುದು, ತೂಗಾಡುವುದು. ಪ್ರ+ಲಬಿ (ಅವಸಂಸನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।  
ಪ್ರಲಂಬಮಾನ ಪ್ರಲಂಬಮಾನ (ವಿಂ) ಜೋಲಾಡುತ್ತಿರುವ, ತೂಗಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಲಬಿ (ಅವಸಂಸನೆ) "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)।

ಪ್ರಲಂಬಿತ ಪ್ರಲಂಬಿತ (ವಿಂ) ಜೋಲಬಿದ್ದಿರುವ. ಪ್ರ+ಲಬಿ (ಅವಸಂಸನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)।

ಪ್ರಲಯ ಪ್ರಲಯ (ಪುಂ) 1. ನಾಶ, ಅಳಿವು. ಪ್ರ+ಲಿಙ್ (ಶ್ಲೇಷಣೆ) "ಅಕ್" (೩-೩-೫೬)। "ಪ್ರಲಯಮಖಿಲ-ತಾರಾಲೋಕಮಹಾಯ ನೀತ್ವಾ ಶ್ರಿಯಮನತಿಶಯಶ್ರೀಃ ಸಾನುರಾಗಂ ದಧಾತಃ" ಮಾಘಂ ೧೧-೬೬। 2. ಕಲ್ಪದ ಕೊನೆಯ ಕಾಲ, ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶದ ಕಾಲ. "ಪ್ರಲಯೋಲ್ಲಸಿತಸ್ಯ ವಾರಿಧಿಃ ಪರಿವಾಹೋ ಜಗತಃ ಕರೋತಿ ಕಿಮ್" ಮಾಘಂ ೧೬-೫೧। ಪ್ರಲಯವು ನಿಯತಪ್ರಲಯಃ ನೈಮಿತ್ತಿಕಪ್ರಲಯಃ ಪ್ರಾಕೃತಪ್ರಲಯಃ ಮತ್ತು ಆತ್ಮಾಂತಿಕಪ್ರಲಯಃ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. "ನಿತ್ಯಂ ನೈಮಿತ್ತಿಕಂ ಚೈವ ಪ್ರಾಕೃತಾತ್ಮಾಂತಿಕೌ ತಥಾ। ಚತುರ್ಥಾಂ ಪುರಾಣೇ-ಸ್ಮಿನ್ ಪ್ರೋಚ್ಯತೇ ಪ್ರತಿಸಂಚರಃ"। [ವಿವರಕ್ಕೆ ಆಯಾಪದ ಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. 3. ಮರಣ, ನಿಧನ, "ಮರ್ತ್ಯೇ ಪ್ರಲಯೇಷಿ ಪೂರ್ವಸುಕೃತಾಸಂಜ್ಞೇನ ನಿಃಸಂಜ್ಞಯಾ" ಮೃದಾಂ ೧-೧೪। 4. ಸೋರಿಗೆ ಬೀಳುವುದು, ಪ್ರಜ್ಞೆ ತಪ್ಪಿ ಬೀಳುವುದು. 5. ಒಂದು ವಿಧ ಸಾತ್ತ್ವಿಕ ಭಾವ. (1) ಸ್ತಮ್ಭಃ (2) ಸ್ವೇದಃ (3) ರೋಮಾಂಶಃ (4) ಸ್ವರಮಂಜಃ (5) ವೇಪಥುಃ (6) ವೈವರ್ಣ್ಯಮ್ (7) ಅಶ್ರು ಮತ್ತು (8) ಪ್ರಲಯಃ ಇವು ಎಂಟು ವಿಧ ಸಾತ್ತ್ವಿಕ ಭಾವ ಗಳು. ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೩೫। "ಪ್ರಲಯಃ ಸುಖದುಃಖಾಭ್ಯಾಂ ಚೇಷ್ಠಾಜ್ಞಾನನಿರಾಕೃತಿಃ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೩೯।

ಪ್ರಲಯಕಾಲ ಪ್ರಲಯಕಾಲ (ಪುಂ) ಕಲ್ಪದ ಕೊನೆಯಕಾಲ, ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶದ ಕಾಲ.

ಪ್ರಲಯಜಲಧರ ಪ್ರಲಯಜಲಧರ (ಪುಂ) ಪ್ರಲಯಕಾಲದ ಮೇಘ.

ಪ್ರಲಯಪಯೋಧಿ ಪ್ರಲಯಪಯೋಧಿ, -ಪಯೋನಿಧಿ -ಪಯೋನಿಧಿ, -ಅರ್ಣವ -ಅರ್ಣವ (ಪುಂ) ಪ್ರಳಯ ಕಾಲದ ಸಮುದ್ರ, ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಉಕ್ಕಿ ಭರವ ಸಮುದ್ರ. ಪ್ರಲಯ ಪಯೋಧಿಃ ಪಯೋನಿಧಿಃ ಅರ್ಣವೋ

ವಾ। "ಕ್ಷಿಪ್ತವಹುಜಲಬಿಂದು ವಪುಃ ಪ್ರಲಯಾರ್ಣವೋತ್ಥಿತ ಇವಾದಿ-ಶುಕರಃ" ಮಾಘಂ ೧೫-೫। "ಪ್ರಲಯಪಯೋಧಿಜಲೇ ಧೃತವಾನಸಿ ವೇದಮ್" ಗೀತಗೋಂ ೧।

ಪ್ರಲಯಪವನ ಪ್ರಲಯಪವನ (ಪುಂ) ಪ್ರಳಯಕಾಲದ ಗಾಳಿ. "ತುಲೋತ್ಕೋಪಪ್ರಲಯಪವನಃ ಕಿಂ ನ ಯಾತಃ ಸ್ಮೃತಿ ತೇ" ವೇಣೀಂ ೩-೨೩।

ಪ್ರಲಾಪ ಪ್ರಲಾಪ (ಪುಂ) 1. ಹರಟೆ, ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ ಮಾತು, ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ ಮಾತು, ವಿವೇಕವಿಲ್ಲದ ಮಾತು. ಪ್ರ+ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಃ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ಹೃತಭ್ರಾತೃಶತೋ ದುಃಖೀ ಪ್ರಲಾಪರಸ್ಯ ಕಾ ವ್ಯಥಾ" ವೇಣೀಂ ೫-೩೧। "ಅಸಂಬದ್ಧಪ್ರಲಾಪಶ್ಚ ವಾಡ್‌ಮಯಂ ಸ್ಯಾಚ್ಚತುರ್ವಿಧಮ್" ಮನುಂ ೧೨-೬। 2. ಸಂಭಾಷಣೆ, ಪರಸ್ಪರ ಮಾತಾಡುವುದು. 3. ರೋದನ.

ಪ್ರಲಾಪಿನ್ ಪ್ರಲಾಪಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಮಾತಾಡುವವನು. 2. ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದೆ ಮಾತಾಡುವವನು, ವಿವೇಕವಿಲ್ಲದೆ ಮಾತಾಡುವವನು. ಪ್ರಲಾಪಿನ್ — ಪ್ರ+ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಃ ವಾಚಿ) "ಘಿನ್ಯು" (೩-೨-೧೪೨)। "ದುರಾತ್ಮನ್ ಸುತಾಪಸದ ಅಸಂಬದ್ಧಪ್ರಲಾಪಿನ್" ವೇಣೀಂ ೩। 3. ರೋದನ ಮಾಡುವ, ಅಳುವ. "ಪ್ರಲಾಪಿನೋ ಭವಿಷ್ಯಂತಿ ಕದಾನ್ವೇತೇಷ-ಲಾಘಿಣಃ" ಭट्टಿಂ ೭-೧೨।

ಪ್ರಲೀನ ಪ್ರಲೀನ (ವಿಂ) 1. ನಾಶಹೊಂದಿದ, ಅಳಿದು ಹೋದ. ಪ್ರ+ಲಿಙ್ (ಶ್ಲೇಷಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ನಃ" (೮-೨-೪೪)। "ಪ್ರಲೀನಭೂಪಾಲಮಪಿ ಸ್ಥಿರಾಯತಿ ಪ್ರಶಾಸದಾವಾರಿಧಿ ಮಂಡಲಂ ಭುವಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೨೩। 2. ಪ್ರಜ್ಞಾ ತೂನ್ಮನಾದ, ಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದೆ ಬಿದ್ದಿರುವ. 3. ತಿರೋಭೂತವಾದ, ಮರೆಯಾದ. "ವಿದಧದಿವ ಜಗತ್ ಪುನಃ ಪ್ರಲೀನಂ ಭವತಿ ಮಹಾನ್ ಹಿ ಪರಾರ್ಥಂ ಏವ ಸರ್ವಃ" ಭट्टಿಂ ೧೦-೬೭।

ಪ್ರಲುಠಿತ ಪ್ರಲುಠಿತ (ವಿಂ) ಹೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟು ಹೊರಳಾಡುವ, ಗಾಯಗೊಂಡು ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಒದ್ದಾಡುವ. ಪ್ರ+ಲುಠ (ಪ್ರತಿಘಾತೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ಪ್ರಲುಠಿತ-ಮವನೋ ವಿಲೋಕ್ಯ ಕೃತಂ ದಶವದನಃ ಖಚರೋತ್ತಮಂ ಪ್ರಹೃತ್ಯನ್" ಭट्टಿಂ ೫-೧೦೮।

ಪ್ರಲೂನ ಪ್ರಲೂನ (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ+ಲೂ (ಛೇದನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಪ್ರಲೇಪ ಪ್ರಲೇಪ (ಪುಂ) 1. ಲೇಪನಮಾಡುವುದು, ಬಳಿಯುವುದು. ಪ್ರ+ಲಿಪ (ಉಪದೇಹೇ) ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಮುಲಾಮು, ಗಾಯ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಮೇಲೆ



ಹಚ್ಚುವ ಔಷಧ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠೋ ಲೇಪಃ ಯೇನ | "ಆಲಿಂಪ-  
ನಮೃತಮಯೇರಿವ ಪ್ರಲೇಪೇಂತರ್ವಾ ಬಹಿರಪಿ ವಾ ಶರೀರಘಾತುನ್"  
ತಂ ರಾಂ ೩-೩೯ |

**ಪ್ರಲೇಪಕ ಪ್ರಲೇಪಕ** (ಪುಂ) 1. ಲೇಪನ ಮಾಡುವವನು,  
ಗಾರೆಯ ಕೆಲಸದವನು, ಸುಣ್ಣ ಬಣ್ಣ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು  
ಬಳಿಯುವವನು. ಪ್ರ + ಲಿಪ (ಉಪದೇಹ) "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | 2. ಮುಲಾಮು ಹಚ್ಚುವವನು. 3.  
ಒಂದು ವಿಧ ಜ್ವರ.

**ಪ್ರಲೇಪನ ಪ್ರಲೇಪನ** (ನಂ) 1. ಲೇಪನಮಾಡುವುದು,  
ಮುಲಾಮು ಹಚ್ಚುವುದು. 2. ಸುಣ್ಣ ಬಣ್ಣಗಳನ್ನು  
ಬಳಿಯುವುದು. ಪ್ರ + ಲಿಪ (ಉಪದೇಹ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |

**ಪ್ರಲೇಹ ಪ್ರಲೇಹ** (ಪುಂ) 1. ಲೇಹ. 2. ಆಸ್ವಾದಿಸಲ್ಪಡುವ  
ಗೊಜ್ಜು, ಒಂದು ವ್ಯಂಜನ. "ಪ್ರಲೇಹಜಸ್ತೇಹೃತಾನುಬಿಮ್ಬನಾಂ  
ಚುಕುಮ್ಬ ಕೋಽಪಿ ಶ್ರಿತಭೋಜನಚ್ಛಲಃ" ನೆಪಂ ೧೬-೬೬ |

**ಪ್ರಲೋಮ ಪ್ರಲೋಮ** (ಪುಂ) 1. ಅತ್ಯಾಶೆ, ದುರಾಶೆ. ಪ್ರ + ಲುಮ  
(ವಿಮೋಹನೆ) "ಘ" (೩-೩-೧೮) | 2. ಮೋಹಗೊಳಿಸು  
ವುದು, ಆಸೆತೋರಿಸುವುದು, ಮರುಳುಮಾಡುವುದು.

**ಪ್ರಲೋಮನ ಪ್ರಲೋಮನ** (ನಂ) 1. ಆಸೆ ತೋರಿಸುವುದು,  
ಮರುಳುಮಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ಲುಮ (ವಿಮೋಹನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಆಕರ್ಷಿಸುವ ವಸ್ತು, ಮೋಹ  
ಗೊಳಿಸುವ ವಸ್ತು. ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) |

**ಪ್ರಲೋಮನೀಯ ಪ್ರಲೋಮನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಮರುಳು ಮಾಡ  
ಲ್ಪಡುವ, ಆಸೆತೋರಿಸಿ ಮೋಹಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ + ಲುಮ  
(ವಿಮೋಹನೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | 2. ಮೋಸಪಡಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. 3. ಮರುಳು ಮಾಡಬೇಕಾದ, ಆಸೆತೋರಿಸಿ  
ವಂಚಿಸಬೇಕಾದ.

**ಪ್ರಲೋಮಯತ್ ಪ್ರಲೋಮಯತ್** (ವಿಂ) ಆಸೆ ತೋರಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ಆಸೆತೋರಿಸಿ ಆಕರ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಲುಮ  
(ವಿಮೋಹನೆ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
"ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | "ಪ್ರಲೋಮಯಂತೀಂ ಲಲಿತೇಸ್ತತಃ ಪ್ರಥಮ  
ಲಕ್ಷಿತೆಃ" ಯಾದಂ ೨೨-೧೬೪ |

**ಪ್ರಲೋಮಿನ್ ಪ್ರಲೋಮಿನ್** (ವಿಂ) ಮೋಹಗೊಳಿಸುವ,  
ಆಸೆತೋರಿಸಿ ಮರುಳುಮಾಡುವ. ಪ್ರ + ಲುಮ (ವಿಮೋಹನೆ)  
"ಣಿತಿಃ" (೩-೨-೭೮) |

**ಪ್ರವಕ್ತೃ ಪ್ರವಕ್ತೃ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರವಚನ ಮಾಡುವವನು,  
ವೇದಶಾಸ್ತ್ರಾದಿಗಳನ್ನು ಅಧ್ಯಯನಮಾಡಿಸುವವನು. ಪ್ರ +  
ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) "ತೃಕ್" (೩-೨-೧೩೩) | 2. ಹೇಳು  
ವವನು, ಉಪದೇಶಿಸುವವನು, ಗುರು. "ಜಾತಿಮಾತ್ರೋಪಜೀವಿ

ವಾ ಕಾಮಂ ಸ್ಯಾದ್ಬ್ರಾಹ್ಮಣಬ್ರವಃ | ಧರ್ಮಪ್ರವಕ್ತಾ ನೃಪತೇಃ" ಮನುಂ  
೮-೨೦ |

**ಪ್ರವಚನ ಪ್ರವಚನ** (ನಂ) 1. ಉಪದೇಶ, ಬೋಧನೆ.  
2. ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ, ವಿವರದೊಡನೆ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವುದು.  
ಪ್ರ + ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |  
3. ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತು. 4. ವೇದ. "ಅಥ ಪ್ರವಚನಂ ವೇದೇ  
ಪ್ರಕೃಷ್ಠವಚನೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ | 5. ವೇದಾಂಗ.

**ಪ್ರವಚನೀಯ ಪ್ರವಚನೀಯ** (ಪುಂ) 1. ಗುರು, ಉಪಾಧ್ಯಾಯ.  
ಪ್ರ + ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) ವಾ ಕರ್ಮಂ "ಅನೀಯರ್" (೩-೪-೬೮) |  
ನಿಪಾಂ | ಪ್ರವಚನೀಯೋ ಗುರುವೇದಸ್ಯ | 2. ಪ್ರವಚನ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಡುವ. ಪಕ್ಷೇ ಕರ್ಮಂ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) |  
"ಪ್ರವಚನೀಯೋ ವೇದೋ ಗುರುಣಾ" ಸಿಂ ಕೌಂ | "ಅಥ ಪ್ರವಚ-  
ನೀಯಶ್ಚ ಸ್ಯಾತ್ ಪ್ರವಕ್ತೃಪ್ರವಾಚ್ಯಯೋಃ" ಮೇದಿಂ |

**ಪ್ರವಚಸ್ ಪ್ರವಚಸ್** (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾತಾಡುವವನು,  
ವಾಗ್ಮಿ, ಚತುರನಾಗಿ ಮಾತಾಡುವವನು. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಂ ವಚೋ  
ಯಸ್ಯ | "ವಾಚೋಯುಕ್ತಿಪटुर्ವಾಗ್ಮೀ ವಚೋಃ ಪ್ರವಚಃ ಪ್ರವಾಕ್" |

**ಪ್ರವಣ ಪ್ರವಣ** (ಪುಂ) 1. ಚತುಷ್ಟಯ, ನಾಲ್ಕು ರಸ್ತೆಗಳು  
ಕೂಡುವ ಜಾಗ (ಚೌಕ). ಪ್ರವಂತೆ ಜನಾ ಅನೇನ — ಪ್ರುಟ್  
(ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | (ನಂ) 2. ಉದರ,  
ಹೊಟ್ಟೆ. (ವಿಂ) 3. ಆಸಕ್ತನಾದ, ತತ್ಪರನಾದ. "ಜಾತೌ  
ನ ವित्ते ನ ಗುणे ನ ಕಾಮಃ ಸೌಂದರ್ಯ ಉ ಪ್ರವಣಃ ಸ ವಾಮಃ"  
ನೆಪಂ ೧೦-೧೩ | 4. ಬಗ್ಗಿರುವ, ಬಾಗಿರುವ. 5. ಪೂರ್ಣ  
ವಾದ, ತುಂಬಿರುವ. 6. ಅಧೀನ, ಪರತಂತ್ರ. 7. ಕ್ರಮ  
ವಾಗಿ ಇಳಿಜಾರಾಗಿರುವ (ಭೂಮಿ). 8. ಉನ್ಮುಖವಾದ,  
ಉತ್ಸಾಹದಿಂದಿರುವ, ಉತ್ಸುಕವಾದ. "ನ ಮಹಾನಪಿ  
ಭೂತಿಮಿಚ್ಛತಾ ಫಲಸಂಪದಪ್ರವಣಃ ಪರಿಕ್ಷಯಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೮ |  
9. ನಮ್ರ, ವಿಧೇಯ. 10. ಉದಾರನಾದ. 11. ಬಳಿದ,  
ಬಣ್ಣ ಕೆಟ್ಟಿರುವ, ಸೊರಗಿರುವ. 12. ಉದ್ದವಾದ,  
ನೀಳವಾದ. 13. ಕ್ಷೀಣವಾದ.

**ಪ್ರವಣತಾ ಪ್ರವಣತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಸಕ್ತನಾಗಿರುವಿಕೆ, ತತ್ಪರ  
ನಾಗಿರುವಿಕೆ ಒಲಿದಿರುವಿಕೆ. ಅನುಸರಿಸುವ ಸ್ವಭಾವ.  
ಪ್ರವಣಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) | "ನೀಚಪ್ರವಣತಾ  
ಲಕ್ಷಿಮ ಜಲಜಾಯಾಸ್ತವೋಚಿತಾ" |

**ಪ್ರವತ್ಸಯತ್ ಪ್ರವತ್ಸಯತ್** (ವಿಂ) ಪ್ರಯಾಣ ಹೊರಡಲಿರುವ.  
ಪರಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ಹೊರಟುಬರಲಿರುವ. ಪ್ರ + ವಸ (ನಿವಾಸೇ)  
+ ಸ್ಯಃ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |

**ಪ್ರವತ್ಸಯತ್ಪತಿಕಾ ಪ್ರವತ್ಸಯತ್ಪತಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪರಸ್ಥಳಕ್ಕೆ  
ಹೊರಟುಬರಲಿರುವ ಪುರುಷನ ಪತ್ನಿ. ಪ್ರವತ್ಸಯನ್ ಪತಿಃ  
ಯಸ್ಯಾಃ "ಕಪ್" |



**ಪ್ರವಯಣ ಪ್ರವಯಣ (ನಂ) 1.** ರಥದ ಎತ್ತು ಕುದುರೆ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ನಡೆಸಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಕೋಲಂ, ಚಾವಟಿ. ಪ್ರವೀಯತೇನೆನ — ಪ್ರ + ಅಜ (ಗತಿಕೋಪಣಯೋ:) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) । ಅಜೇ: ವಾ ವೀ ಆದೇಶ: (೨-೪-೫೭) । ಪಕ್ಷಿ ಪ್ರಾಜನಮ್ ಪ್ರಾಜನಮ್. "ಅಥ ಧರ್ಮಮೃತೀರನುರಾಗಭಾವಿತ: ಸ್ವಯಮಾದಿತ ಪ್ರವಯಣಂ ಪ್ರಜಾಪತಿ:" ಮಾಘಂ ೧೩-೧೯ । 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನಡೆಯುವುದು, ಗಂಭೀರವಾಗಿ ನಡೆಯುವುದು. ಪ್ರಕೃಷ್ಣ ವಯಣಮ್ ಗಮನಮ್ ।

**ಪ್ರವಯಸ್ ಪ್ರವಯಸ್ (ವಿಂ) 1.** ವೃದ್ಧ, ಮುದುಕ. ಪ್ರಗತ ವಯೋ ಯಸ್ಯ । "ನೃಪತಿ: ಪ್ರಕೃತೀರವೇಕ್ಷಿತುಂ ವ್ಯವಹಾರಾಸನಮಾದೇ ಯುವಾ । ಪರಿಚೇತುಮುಪಾಂಶು ಧಾರಣಾಂ ಕುಶಲತಂ ಪ್ರವಯಾಸ್ತು ವಿಷ್ಠರಮ್" ರಘುಂ ೮-೧೮ । 2. ಹಳೆಯದಾದ, ಪುರಾತನವಾದ.

**ಪ್ರವರ ಪ್ರವರ (ಪುಂ) 1.** ಸಂತತಿ, ವಂಶ. ಪ್ರ + ವೃ (ವರಣಂ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೮) । 2. ಸಂತತಿಯ ಮೂಲಪುರುಷರು, ಮೂಲಪುರುಷರ ಗಣ. ಈ ಮೂಲಪುರುಷರಾದ ಮುನಿಗಳು (ಯುಷಿಗಳು): ಭರದ್ವಾಜಗೋತ್ರಕ್ಕೆ ಭರದ್ವಾಜ ಅಂಗಿರಸ ಮತ್ತು ಬಾರ್ಹಸ್ಪತ್ಯ. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಗೋತ್ರಕ್ಕೆ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮರೀಚಿ ಮತ್ತು ಕೌಶಿಕ. ಅತ್ರಿ ಗೋತ್ರಕ್ಕೆ ಅತ್ರಿ ಆತ್ರೇಯ ಮತ್ತು ಶಾತಾತಪ. ಗೋತಮ ಗೋತ್ರಕ್ಕೆ ಗೋತಮ ವಸಿಷ್ಠ ಮತ್ತು ಬಾರ್ಹಸ್ಪತ್ಯ. ವಸಿಷ್ಠಗೋತ್ರಕ್ಕೆ ವಸಿಷ್ಠ. ಕಾಶ್ಯಪಗೋತ್ರಕ್ಕೆ ಕಾಶ್ಯಪ, ಅಪ್ಸಾರ ಮತ್ತು ನೈಧ್ರುವ. ಅಗಸ್ತ್ಯಗೋತ್ರಕ್ಕೆ ಅಗಸ್ತ್ಯ ದಧೀಚಿ ಮತ್ತು ಜೈಮಿನಿ. ಕೌಶಿಕಗೋತ್ರಕ್ಕೆ ಕೌಶಿಕ ಅತ್ರಿ ಮತ್ತು ಜಮದಗ್ನಿ. ವಾತ್ಸ್ಯ (ಶ್ರೀವತ್ಸ) ಗೋತ್ರಕ್ಕೆ ಭಾರ್ಗವ ಚ್ಯವನ ಆಪ್ತವಾನ ಔರ್ವ ಮತ್ತು ಜಮದಗ್ನಿ. ಕಾತ್ಯಾಯನಗೋತ್ರಕ್ಕೆ ಅತ್ರಿ ಭೃಗು ಮತ್ತು ವಸಿಷ್ಠ. ಗೌಗೋತ್ರಕ್ಕೆ ಗಾರ್ಗ ಕೌಸ್ತುಭ ಮತ್ತು ಮಾಂಡವ್ಯ. ಆತ್ರೇಯಗೋತ್ರಕ್ಕೆ ಆತ್ರೇಯ ಶಾತಾತಪ ಮತ್ತು ಸಾಂಖ್ಯ ಇತ್ಯಾದಿ. 3. ಉತ್ತರೀಯ, ಹೊದೆಯುವ ವಸ್ತ್ರ. (ನಂ) 4. ಅಗುರು ಚಂದನ. (ವಿಂ) 5. ಶ್ರೇಷ್ಠ ವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ. "ಉತ್ಕೃಷ್ಟಿತಸ್ಯ ಹೃದಯಾನುಗುಣಾ ವಯಸ್ಯಾ ಸಂಕೇತಕೇ ಚಿರಯತಿ ಪ್ರವರೋ ವಿನೋದ:" ಮೃಚ್ಛಂ ೩-೩ । 6. ಹಿರಿಯ, ಜೈಷ್ಠ.

**ಪ್ರವರ್ಗ ಪ್ರವರ್ಗ (ಪುಂ) 1.** ವಿಷ್ಣು. 2. ಹೋಮದ ಅಗ್ನಿ, ಯಾಗದ ಅಗ್ನಿ. ಪ್ರವೃಜ್ಯತೇ ನಿಕ್ಷಿಪ್ಯತೇ ಹವಿರಸ್ಮಿನ್—ಪ್ರ + ವೃಜಿ (ವರ್ಜನೆ) ಅಥಿಂ "ವಜ್" (೩-೩-೧೨೧) ।

**ಪ್ರವರ್ಗ ಪ್ರವರ್ಗ (ಪುಂ) ಅಂಗಭೂತವಾದ ಒಂದು ಯಾಗ.**

**ಪ್ರವರ್ತಕ ಪ್ರವರ್ತಕ (ವಿಂ) 1.** ಪ್ರವೃತ್ತಿಯನ್ನು ಉಂಟು ಮಾಡುವ, ಪ್ರೇರಿಸುವ, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗುವಂತೆ ಮಾಡುವ. ಪ್ರವರ್ತಯತಿ — ಪ್ರ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಣಿच् "ಫ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । 2. ಸ್ಥಾಪಕ, ಸ್ಥಾಪನೆಮಾಡಿದವನು, ಸಂಸ್ಥೆ ಮತ ಸಿದ್ಧಾಂತ ಮೊದಲಾದವುಗಳನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದವನು (ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದವನು). "ಛತ್ವಂತರಿ-ರ್ದೈತಮ ಆಯುರ್ವೇದಪ್ರವರ್ತಕ:" ಭಾಗಂ ೯-೧೭-೪ । 3. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮುಂದುವರಿಸುವ, ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸದೆ ಮುಂದಕ್ಕೆ ತರುವ. 4. ದುರ್ಬೋಧನೆಯಿಂದ ಒತ್ತಾಯ ಮಾಡುವ, ಚಿತಾವಣೆ ಮಾಡುವ.

**ಪ್ರವರ್ತನ ಪ್ರವರ್ತನ (ನಂ) 1.** ಮುನ್ನಡೆ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । "ಇತರಾಂಶ್ರೇಃ ಯೇಷಾಂ ಕವೀನಾಂ ಸ್ಯಾತ್ ಪ್ರವರ್ತನಮ್" । 2. ಪ್ರಾರಂಭ. "ರಾಜಾನಮಾಮನ್ಯ ತತ: ಕುರ್ಯಾತ್ ಸೇತುಪ್ರವರ್ತನಮ್" । 3. ಪ್ರವೃತ್ತಿಯುಂಟುಮಾಡುವುದು, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. "ಯುಕ್" (೩-೩-೧೦೭) । —ವರ್ತನಾ —ವರ್ತನಾ. "ಅಥವಾ ಭವತ: ಪ್ರವರ್ತನಾ ನ ಕಥಂ ಪಿಷ್ಠಮಿಂ ಪಿನಿಷ್ಠಿ ನ" ನೈಷಂ ೨-೬೧ ।

**ಪ್ರವರ್ತನೀಯ ಪ್ರವರ್ತನೀಯ (ವಿಂ) 1.** ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಡುವ, ಉಪಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಣಿच् "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । 2. ಪ್ರಾರಂಭಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 3. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಒತ್ತಾಯಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಡುವ, ಸ್ಥಾಪಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಪ್ರಾರಂಭಿಸಬೇಕಾದ. 6. ಸ್ಥಾಪಿಸಬೇಕಾದ. 7. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸಬೇಕಾದ. 8. ಪ್ರಾರಂಭಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಬೇಕಾದ. "ತವ್ಯ:" । —ವರ್ತಯಿತವ್ಯ: —ವರ್ತಯಿತವ್ಯ: ।

**ಪ್ರವರ್ತಯತ್ ಪ್ರವರ್ತಯತ್ (ವಿಂ) 1.** ಪ್ರವೃತ್ತಿಯುಂಟು ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಣಿच् "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಕಾರ್ಯವು ಮುನ್ನಡೆಯುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ.

**ಪ್ರವರ್ತಯಿತ್ ಪ್ರವರ್ತಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) "ಪ್ರವರ್ತಕ" ಪದದ ಅರ್ಥ.** ಪ್ರ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಣಿच् "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

**ಪ್ರವೃತ್ತಿ ಪ್ರವೃತ್ತಿ (ವಿಂ) 1.** ಸ್ಥಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಣಿच् "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಉಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಉತ್ಪತ್ತಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ನ ಕಾರಣಾತ್ ಸ್ವಾತ್ ವಿಭಿಧೇ ಕುಮಾರ:



ಪ್ರವರ್ತನ ದೀಪ ಇವ ಪ್ರದೀಪಾತ್ " ರಘುಂ ೪-೩೭। 3. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸುವಂತೆ ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಒತ್ತಾಯಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 5. ನಡೆಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಸಂಚಾರ ಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಓಡಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ಚಮರಾನ್ ಪರಿತಃ ಪ್ರವರ್ತಿಸ್ವಃ ಕ್ವಚಿದಾಕರ್ಣವಿಕೃಷ್ಣಮಲ್ಲವರ್ಷಿ" ರಘುಂ ೯-೬೬। 6. ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ಪದೇ ಪದೇ ಮೌನಮಯಾಂತರೀಪಿಣಿ ಪ್ರವರ್ತಿಸ್ವ ಸಾರಘಸಾರಸಾರಣಿ" ನೆಪಂ ೯-೧೫೫।

**ಪ್ರವರ್ತನ ಪ್ರವರ್ತನ (ವಿಂ)** 1. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮುಂದಕ್ಕೆ ನಡೆಸುವ. 2. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸುವ. 3. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವ, ಚಿಂತಾವೇಷಮಾಡುವ. 4. ಹುಟ್ಟಿ ಹೊರಟುಬರುವ. 5. ಸ್ಥಾಪಿಸುವ, ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ಪ್ರಾರಂಭಿಸುವ. ಪ್ರ+ವೃತ್ (ವರ್ತನೆ) + ಣಿಚ್ "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। ಪ್ರವರ್ತಿನಿ ಪ್ರವರ್ತನೀ. "ತ್ವಾಮಾಮನಂತಿ ಪ್ರವರ್ತಿನಿ ಪುರುಷಾಃ ಪ್ರವರ್ತಿನೀಮ್" ಕುಮಾಂ ೨-೧೩।

**ಪ್ರವರ್ಧನ ಪ್ರವರ್ಧನ (ನಂ)** 1. ಬೆಳೆಯುವುದು, ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುವುದು. ಪ್ರ+ವೃಙ್ (ವರ್ಧನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಅಧಿಕವಾಗುವುದು, ಹೆಚ್ಚುವುದು. (ವಿಂ) 3. ವೃದ್ಧಿ ಪಡಿಸುವ, ಹೆಚ್ಚಿಸುವ. ಪ್ರ+ವೃಙ್ ಕರಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। "ವಾತಪಿತ್ತೋಪಶಮನಂ ಗುರು ಶುಕ್ರಪ್ರವರ್ಧನಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬-೯೯।

**ಪ್ರವರ್ಧನೀಯ ಪ್ರವರ್ಧನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಬೆಳೆಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ+ವೃಙ್ (ವೃದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। 3. ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿಸಬೇಕಾದ, ಹೆಚ್ಚಿಸಬೇಕಾದ. 4. ಬೆಳೆಸಬೇಕಾದ.

**ಪ್ರವರ್ಧಮಾನ ಪ್ರವರ್ಧಮಾನ (ವಿಂ)** 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ. 2. ಬೆಳೆಯುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ವೃಙ್ (ವೃದ್ಧಿ) "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)।

**ಪ್ರವರ್ಧಯತ್ ಪ್ರವರ್ಧಯತ್ (ವಿಂ)** 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಬೆಳೆಸುತ್ತಿರುವ, ದೊಡ್ಡದಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ವೃಙ್ (ವೃದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್ "ಶತು" (೩-೨-೧೨೪)। "ಶಾನಚ್" -ವರ್ಧಯಮಾನಃ -ವರ್ಧಯಮಾನಃ.

**ಪ್ರವಸತ್ ಪ್ರವಸತ್ (ವಿಂ)** ಪ್ರಯಾಣಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಪರಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ಹೋಗುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ವಸ (ನಿವಾಸ) "ಶತು" (೩-೨-೧೨೪)। "ಪ್ರವಸತಃ ಸುತರಾಮುದಕಮ್ಪಯದ್ವಿದಲಕಂದಲಕಮ್ಪನಲಾಲಿತಃ" ಮಾಘಂ ೬-೩೦।

**ಪ್ರವಸನ ಪ್ರವಸನ (ನಂ)** ಪರಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ಪ್ರಯಾಣಮಾಡುವುದು, ಉರುಬಿಟ್ಟು ಹೊರಟುಬರುವುದು. ಪ್ರ+ವಸ (ನಿವಾಸ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ಪ್ರವಸನೀಯ ಪ್ರವಸನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಪರಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಪರಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಬಹಿಷ್ಕರಿಸಿ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡುವ, ಗಡೀಪಾರು ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ+ವಸ (ನಿವಾಸ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। 4. ಗಡೀಪಾರು ಮಾಡಬೇಕಾದ.

**ಪ್ರವಹ ಪ್ರವಹ (ಪುಂ)** 1. ಹೊರಗಡೆ ಸಂಚಾರಕ್ಕಾಗಿ ಹೊರಡುವುದು. ಪ್ರ+ವಹ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಘ:" ನಿಪಾಂ (೩-೩-೧೧೯)। 2. ಸಪ್ತವಿಧವಾಯುಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. "ಆವಹಃ ಪ್ರವಹಶ್ಚೈವ ವಿವಹಶ್ಚ ಸಮೀರಣಃ। ಪರಾವರಃ ಸಂವಹಶ್ಚ ಉದ್ವಹಶ್ಚ ಮಾಹಬಲಃ॥ ತಥಾ ಪರಿವಹಃ ಶ್ರೀಮಾನ್" ಹರಿವಂ। ಈ ವಾಯುವು ಅವಹ ವಾಯುವಿಗೆ ಮೇಲುಭಾಗದಲ್ಲಿರುವುದು. "ಯಸ್ಮಾಂ ಜ್ಯೋತೀಃ ಪಿ ವಹತಿ ಪ್ರವಹಸ್ತೇನ ಸ ಸ್ಮೃತಃ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ ೨-೧೨। 3. ಒಂದು ಮೇಘ.

**ಪ್ರವಹಣ ಪ್ರವಹಣ (ನಂ)** 1. ಮೇನಾ, ಶಿಖೆ, ಪುರುಷರಿಂದ ಹೊರಲ್ಪಡುವ ಒಂದು ವಾಹನ, ಸುತ್ತಲೂ ಪರದೆಗಳಿಂದ ಮುಚ್ಚಿದ ಸ್ತ್ರೀಯರ ವಾಹನ. ಪ್ರೋಹತೇಜೇನ — ಪ್ರ+ವಹ (ಪ್ರಾಪಣ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ರಥ, ಗಾಡಿ. "ಪರ್ಯಂತೋಪನೀತಯವಸಬುಸಕವಲಸುಪುಷ್ಪಾಸ್ತೇಲಾಮ್ಯಕ್ತವಿಷಾಣಾ ವದ್ಧಾಃ ಪ್ರವಹಣಬಲಿವರ್ಧಿಃ" ಮೃಚ್ಛಂ ೪।

**ಪ್ರವಹತ್ ಪ್ರವಹತ್ (ವಿಂ)** 1. ವಹಿಸಿರುವ, ಧರಿಸಿರುವ. ಪ್ರ+ವಹ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಶತು" (೩-೨-೧೨೪)। "ಪ್ರವಹಂತಂ ಸದಾಮೋದಂ ಸುಪ್ತಂ ಪರಿಜನಾನವಿತಮ್" ಭट्टಿಂ ೮-೫೨। 2. ಹರಿಯುತ್ತಿರುವ.

**ಪ್ರವಹಿಕಾ ಪ್ರವಹಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗಾಡಾರ್ಥವುಳ್ಳ ಮಾತು, ಅರ್ಧವಾಗದೆ ಪ್ರಶ್ನೆ, ಸಮಸ್ಯೆ, ಒಗಟು. ಪ್ರ+ವಹ (ಪರಿಮಾಪಣ) "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ಪ್ರವಾಕ್ (ಚ್) ಪ್ರವಾಕ್ (ಚ್) (ವಿಂ)** 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾತಾಡುವವನು, ಚತುರನಾಗಿ ಮಾತಾಡುವವನು, ವಾಗ್ಮಿ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಾ ವಾಕ್ ಯಸ್ಯ। "ವಾಚೋಯುಕ್ತಿಪಟುವಿಮಿ ವಚೋಜಃ ಪ್ರವಚಾಃ ಪ್ರವಾಕ್"। "ಜಡಾನಪ್ಯನುಲೋಮಾರ್ಥಾನ್ ಪ್ರವಾಚಃ ಕೃತಿರ್ನಾ ಗಿರಃ" ಮಾಘಂ ೨-೨೫। 2. ಅತಿಯಾಗಿ ಮಾತಾಡುವ, ಹರಟುವ, ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದೆ ಮಾತಾಡುವ. "ಪ್ರವಾಚಃ ಕಾರ್ಪಣ್ಯಾಽವಿತಯವಾಚೋಽಪಿ ಕೃತಿಃ" ಮುದ್ರಾಂ ೩-೧೬।

**ಪ್ರವಾಚನ ಪ್ರವಾಚನ (ನಂ)** ಪ್ರಕಟಿಸುವುದು, ಘೋಷಿಸುವುದು, ಪ್ರಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವುದು. ಪ್ರ+ವಚ (ಪರಿಮಾಪಣ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।



**ಪ್ರವಾಣಿ ಪ್ರವಾಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೇಯ್ಗೆಯವನ ಒಂದು ಸಲಕರಣೆ. ಹಾಸು ಎಳೆಗಳ ನಡುವೆ ಹೊಕ್ಕು ಎಳೆಗಳನ್ನು ಹಾಯಿಸುವ ಲಾಳಿ. ಪ್ರಕರಣ ಕಯತೇಜನ — ಪ್ರ + ವೇ (ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)। “ಛೀಪ್” (೪-೧-೧೫)। ನಿಪಾಂ ಹ್ರಸ್ವಃ।

**ಪ್ರವಾತ ಪ್ರವಾತ** (ಪುಂ) 1. ಸ್ವಚ್ಛವಾದ ಗಾಳಿ, ನಿರ್ಮಲವಾದ ಗಾಳಿ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠೋ ವಾತಃ। “ದೇವ, ಪ್ರವಾತಶಯನೇ ದೇವಿ ನಿಷಣ್ಣಾ ರಕ್ತಚಂದನಧಾರಿಣಾ ಚರಣೇನ ಭಗವತ್ಯಾ ಕಥಾಭಿ-ವಿನೋದಮಾನಾ ತಿಷ್ಠತಿ” ಮಾಲಂ ೪। 2. ಬಿರುಗಾಳಿ, ವೇಗವಾದ ಗಾಳಿ. “ನನು ಪ್ರವಾತೇಷಿ ನಿಷ್ಕಮ್ಪಾ ಗಿರಯಃ” ಶಾಕುಂ ೬। (ವಿಂ) 3. ಬಿರುಗಾಳಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಸ್ಥಳ, ವೇಗವಾಗಿ ಬೀಸುವ ಗಾಳಿಯುಳ್ಳ ಪ್ರದೇಶ. ಪ್ರಭೂತೋ ವಾತೋ ಯತ್ರ। “ಪ್ರವಾತನಿಲೋತ್ಪಲನಿವಿಶೇಷಮಧೀರವಿಪ್ರೇಕ್ಷಿತಮಾಯ-ತಾಕ್ಷಯಾ” ಕುಮಾಂ ೧-೪೬।

**ಪ್ರವಾದ ಪ್ರವಾದ** (ಪುಂ) 1. ಪರಸ್ಪರ ಮಾತು, ಪರಸ್ಪರ ಪ್ರತಿಭಟನೆಯ ಮಾತು, ಕೆಣಕಿ ಮಾತಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಘಬ್” (೩-೩-೧೮)। “ಇತ್ಯಂ ಪ್ರವಾದಂ ಯುಧಿ ಸಂಪ್ರಹಾರಂ ಪ್ರಚಕ್ರತು ರಾಮನಿಶಾವಿಹಾರೋ” ಭಟಿಂ ೨-೩೬। 2. ವದನು, ಜನರ ಆಡುಮಾತು. ಪ್ರಕೃಷ್ಠೋ ವಾದಃ। “ಅನುರಾಗಪ್ರವಾದಸ್ತು ವತ್ಸಯೋಃ ಸಾರ್ವಲೌಕಿಕಃ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೬। 3. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. “ಸನ್ಯಾಃ ಶ್ರಿಯಾಮನುಪ-ಭೋಗನಿರರ್ಥಕತ್ವದೋಷಪ್ರವಾದಮಮೃಜಗ್ನಗನಿಮ್ನಗಾನಾಮ್” ಮಾಘಂ ೫-೨೮।

**ಪ್ರವಾರ ಪ್ರವಾರ** (ಪುಂ) ಹೊದೆಯುವ ವಸ್ತ್ರ, ಉತ್ತರಿಯ. ಪ್ರವ್ರಿಯತೇಜನ — ಪ್ರ + ವೃ (ವರಣೇ) ವಾ “ಘಬ್” (೩-೩-೫೪)। ಪಕ್ಷೇ ಪ್ರವರಃ ಪ್ರವರಃ.

**ಪ್ರವಾರಣ ಪ್ರವಾರಣ** (ಪುಂ) 1. ತನ್ನ ಇಷ್ಟದಂತೆ ಮಾಡುವ ದಾನ, ನಿರ್ಬಂಧವಿಲ್ಲದೆ ಮಾಡುವ ದಾನ, ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ಮಾಡುವ ದಾನ. ಪ್ರವ್ರಿಯತೇ — ಪ್ರ + ವೃ (ವರಣೇ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। (ನಂ) 2. ನಿಷೇಧಿಸುವುದು, ತಡೆಯುವುದು. “ಪ್ರವಾರಣಂ ನಿಷೇಧೇ ಸ್ಯಾತ್ ಕಾಮ್ಯದಾನೇ ಚ ನ ದ್ವಯೋಃ” ಮೇದಿಂ।

**ಪ್ರವಾಲ ಪ್ರವಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಸಲಯ, ಅಂಕುರ, ಚಿಗುರು. ಪ್ರವಲತಿ — ಪ್ರ + ವಲ (ಪ್ರಾಣನೇ) “ಞಃ” (೩-೧-೧೪೦)। “ತಯೋಃ ಪ್ರವಾಲೈವನಯೋಸ್ತಥಾಮ್ಬುಜೈನಿಯೋದ್ಭುಕಾಮೇ ಕಿಮು ಬದ್ಧ-ವರ್ಮಣಿ” ನೈಷಂ ೧-೧೨೩। 2. ವಿದ್ಯಮ, ಹವಳ. “ಪ್ರವಾಲರಾಗಂಚ್ಛರಿತಂ ಸುಷುಪ್ಸಯಾ ಹರಿರ್ಧನಂಚ್ಛಾಯಮಿವಾಣಂಸಾಂ ನಿಧಿಮ್” ನೈಷಂ ೧-೭೪। 3. ವೀಣಾದಂಡ, ವೀಣೆಯ ದಂಡಿಗೆ. “ವೀಣಾದಂಡಃ ಪ್ರವಾಲಃ ಸ್ಯಾತ್” ಅಮಂ।

**ಪ್ರವಾಸ ಪ್ರವಾಸ** (ಪುಂ) 1. ಪರಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ಹೊರಟುಬರುವುದು, ಪರಸ್ಥಳದ ಪ್ರಯಾಣ. ಪ್ರ + ವಸ (ನಿವಾಸೇ)। “ರಾಮಪ್ರವಾಸೇ ವ್ಯಮೃಶನ್ ದೋಷಂ ಜನಾಪವಾದಂ ಸ ನರೇಂದ್ರಮೃತ್ಯುಮ್” ಭಟಿಂ ೩-೭। 2. ಪರಸ್ಥಳದ ವಾಸ. “ಇಷ್ಟಪ್ರವಾಸ-ಜನಿತಾನ್ಯಬಲಾಜನಸ್ಯ ದುಃಖಾನಿ ನೂನಮತಿಮಾತ್ರಸುದುಃಸಹಾನಿ” ಶಾಕುಂ ೪-೨।

**ಪ್ರವಾಸನ ಪ್ರವಾಸನ** (ನಂ) 1. ಪರಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸುವುದು, ಊರಿನಿಂದ ಹೊರಗೆ ಕಳುಹಿಸುವುದು. 2. ದೇಶಭ್ರಷ್ಟನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವುದು, ಗಡೀಪಾರುಮಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ವಸ (ನಿವಾಸೇ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। “ರಾಮಸ್ಯ ಬ್ರಾಹ್ಮರಸಿ ನಿರ್ಮರಗಭೃಕ್ಷಿತ್ರಸೀತಾವಿವಾಸನಪಟೋಃ ಕಠುಣಾ ಕುತಸ್ತೇ” ತಂರಾಂ ೨-೧೦। 3. ವಧೆ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. ಪ್ರ + ವಸ (ಹಿಡೇ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

**ಪ್ರವಾಸಿತ ಪ್ರವಾಸಿತ** (ವಿಂ) ದೇಶಭ್ರಷ್ಟನಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ವಸ (ನಿವಾಸೇ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)।

**ಪ್ರವಾಸಿನ್ ಪ್ರವಾಸಿನ್** (ವಿಂ) 1. ದೇಶಾಂತರದಲ್ಲಿ ವಾಸ ಮಾಡುವ. 2. ಪ್ರಯಾಣಮಾಡುವ, ಪರಸ್ಥಳದ ಪ್ರಯಾಣವನ್ನು ಕೈಗೊಂಡಿರುವ. ಪ್ರವಸ್ತುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ — ಪ್ರ + ವಸ (ನಿವಾಸೇ) “ಘಿನುಣ್” (೩-೨-೧೪೫)।

**ಪ್ರವಾಸ್ಯ ಪ್ರವಾಸ್ಯ** (ವಿಂ) ಹೊರಗೆ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡುವ, ಗಡೀಪಾರು ಮಾಡಲ್ಪಡುವ.

**ಪ್ರವಾಹ ಪ್ರವಾಹ** (ಪುಂ) 1. ಹೊನಲು, ಹರಿಯುವ ನೀರು. ಪ್ರ + वह (ಪ್ರಾಪಣೇ) “ಘಬ್” (೩-೩-೧೮)। “ಪೂರ್ವತದ್ವಿಪೀಡಿತವಾರಿರಾಶಿಃ ಸರಿತ್ಪ್ರವಾಹಸ್ತದಮುಃಸಸರ್ಜ” ರಘುಂ ೫-೪೬। 2. ಉತ್ತಮವಾದ ಅಶ್ವ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಕುದುರೆ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠೋ ವಾಹಃ। 3. ಹೊರಡುವುದು, ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹರಿದು ಬರುವುದು, ವಿಷಯವು ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹಿಡುವುದು, ವಿಷಯಗಳ ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾದ ಮುನ್ನಡೆ. “ಬ್ರಹ್ಮಾದಯಃ ಸುರಗುಣಾ ಮುನಯೋಽಪಿ ಸಿದ್ಧಾಃ ಸತ್ವೈಕತಾನಮತಯೋ ವಚಸಾಂ ಪ್ರವಾಹೈಃ” ಭಾಗಂ ೭-೯-೮। “ಪ್ರವಾಹಸ್ತು ಪ್ರವೃತ್ತೌ ಸ್ಯಾದಪಿ ಸ್ತೋತಸಿ ವಾರಿಣಃ” ಮೇದಿಂ। 4. ಮಲಮೂತ್ರಾದಿಗಳ ವಿಸರ್ಜನೆ. “ಪ್ರವಾಹೇಣ ಗುದಭ್ರಂಶೋ ಮೂತ್ರಾಘಾತೋ ಕಟಿಗ್ರಹೇ। ಮಧುರಾಮ್ಲಶೃತಂ ತೈಲಂ ಸರ್ಪಿರ್ವಾಪ್ಯನುವಾಸನಮ್” ಸುಶ್ರುತಂ ೭-೪೦।

**ಪ್ರವಾಹಕ ಪ್ರವಾಹಕ** (ಪುಂ) 1. ಠಾಣ್ಣಸ. (ವಿಂ) 2. ಮುಂದಕ್ಕೆ ಸಾಗಿಸುವ. ಪ್ರವಹತಿ — ಪ್ರ + वह (ಪ್ರಾಪಣೇ) “ಘಬ್” (೩-೧-೧೨೩)। “ಞಿಞಿಃ” (೩-೧-೧೨೪)। —ವಾಹಿನ್ —ವಾಹಿನ್.



ಪ್ರವಾಹಿಕಾ ಪ್ರವಾಹಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೃಹಣಾರೋಗ, ಅತಿ ಸಾರ, ಅತಿಯಾದ ಭೇದಿ. ಪ್ರವಹತಿ - ಪ್ರ + वह (प्रापणे) "ध्वल्" (३-३-१०८) ।

ಪ್ರವಾಹಿ ಪ್ರವಾಹೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರಳು. ಪ್ರೋಹತೇ - ಪ್ರ + वह (प्रापणे) "ध्वल्" (३-३-१०८) । "डीष्" (४-१-४१) ।

ಪ್ರವಿಕರ್ಷ ಪ್ರವಿಕರ್ಷ (ಪುಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಎಳೆಯುವುದು. "प्रविकर्षनिनादभिन्नरन्ध्रः" ಕಿರಾಂ १३-१६ ।

ಪ್ರವಿಕಸತ್ ಪ್ರವಿಕಸತ್ (ವಿಂ) 1. ಅರಳುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + वि + कस (गती) "शतृ" (३-२-१२४) । 2. ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ. "प्रविकसति चिराय द्योतिता-शेषलोके दशशतकरमूर्तविक्षिणीव द्वितीये" ಮಾಘಂ ११-६३ ।

ಪ್ರವಿಕಸಿತ ಪ್ರವಿಕಸಿತ (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅರಳಿರುವ. ಪ್ರ + वि + कस (गती) "क्तः" (३-४-७२) ।

ಪ್ರವಿಕಾಸ ಪ್ರವಿಕಾಸ (ಪುಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅರಳುವುದು. ಪ್ರ + वि + कस (गती) "ध्वल्" (३-३-१०८) । 2. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವುದು, ಹೊಳೆಯುವುದು.

ಪ್ರವಿಕಾಸಿನ್ ಪ್ರವಿಕಾಸಿನ್ (ವಿಂ) ಎಕಸಿಸುವ, ಅರಳುವ. ಪ್ರವಿಕಸತಿ - ಪ್ರ + वि + कस (गती) "णिनिः" (३-१-१३४) ।

ಪ್ರವಿಖ್ಯಾತ ಪ್ರವಿಖ್ಯಾತ (ವಿಂ) ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಪಡೆದ, ಖ್ಯಾತಿ ಯನ್ನು ಗಳಿಸಿದ. ಪ್ರ + वि + ख्या (प्रकथने) "क्तः" (३-४-७२) ।

ಪ್ರವಿಖ್ಯಾತಿ ಪ್ರವಿಖ್ಯಾತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಹಳ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ, ಕೀರ್ತಿ. ಪ್ರ + वि + ख्या (प्रकथने) "क्तिन्" (३-३-९४) ।

ಪ್ರವಿಚಲತ್ ಪ್ರವಿಚಲತ್ (ವಿಂ) 1. ಅಲುಗಾಡುತ್ತಿರುವ, ಅದಿರುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + वि + चल (कम्पने) "शतृ" (३-२-१२४) । 2. ದಾರಿತಪ್ಪಿ ಹೋಗುತ್ತಿರುವ, ಮಾರ್ಗ ಬಿಟ್ಟು ಹೋಗುತ್ತಿರುವ.

ಪ್ರವಿಚಲಿತ ಪ್ರವಿಚಲಿತ (ವಿಂ) 1. ಅಲುಗಾಡಿದ, ಅದಿರಿದ. ಪ್ರ + वि + चल (कम्पने) "क्तः" (३-४-७२) । 2. ದಾರಿತಪ್ಪಿ ಹೋಗಿರುವ, ಮಾರ್ಗ ಬಿಟ್ಟು ಹೋಗಿರುವ. 3. ಹೊರಟಿರುವ, ಮುಂದಕ್ಕೆ ನಡೆದ.

ಪ್ರವಿತತ ಪ್ರವಿತತ (ವಿಂ) 1. ಹರಡಿಕೊಂಡಿರುವ, ವಿಸ್ತಾರ ಗೊಂಡಿರುವ. ಪ್ರ + वि + तनु (विस्तारे) "तन्" (उ० ३-८८) । "प्रविततशरजालच्छन्नविश्वान्तराले" ಕಿರಾಂ १४-६५ । 2. ಕೆದರಿರುವ. ಬಿಚ್ಚಿ ಕೆದರಿಹೋಗಿ ರುವ. "हेमन्ः स्थलीषु परितः परिवृत्य बाजी धुन्वन्वपुः प्रविततायतकेशपङ्क्तिः" ಮಾಘಂ ५-५५ ।

ಪ್ರವಿದಾರಣ ಪ್ರವಿದಾರಣ (ನಂ) 1. ಯುದ್ಧ, ಕಾಳಗ. ಪ್ರ + वि + दृ (विदारणे) + णिच् अधि० "ल्युट्" (३-३-११७) । 2. ಸೀಳುವುದು, ಒಡೆಯುವುದು, ಭಾವೆ "ल्युट्" (३-३-११५) ।

ಪ್ರವಿದಾರಿತ ಪ್ರವಿದಾರಿತ (ವಿಂ) 1. ಸೀಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + वि + दृ (विदारणे) + णिच् "क्तः" (३-२-१०२) । 2. ಹೆಚ್ಚು ವಿಕಾಸಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ತೆರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "प्रवಿದारितारुणतरोग्रनयनकुसुमोज्ज्वलः स्फुरन्" ಮಾಘಂ १५-४९ ।

ಪ್ರವಿಡ್ಧ ಪ್ರವಿಡ್ಧ (ವಿಂ) ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಸಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + व्यध (ताडने) "क्तः" (३-२-१०२) ।

ಪ್ರವಿಮಕ್ತ ಪ್ರವಿಮಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರತ್ಯೇಕ ವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + वि + मज (सेवायाम्) "क्तः" (३-२-१०२) । 2. ಭಾಗ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಎರಡು ಹೋಳಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "त्रिस्रोतसं वहति यो गगन-प्रतिष्ठां ज्योतीषि वतंयति च प्रविमक्तरश्मिः" ಶಾಕುಂ ७-६ ।

ಪ್ರವಿಭಾಗ ಪ್ರವಿಭಾಗ (ಪುಂ) ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಭಾಗ, ಪಾಲು, ಹಂಚಿಕೆ. ಪ್ರ + वि + मज (सेवायाम्) "ध्वल्" (३-३-१०८) ।

ಪ್ರವಿರಲ ಪ್ರವಿರಲ (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಎರಳವಾದ, ಎಡೆ ಬಿಟ್ಟಿರುವ, ಮಧ್ಯೆ ಅಂತರದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ವ್ಯವಧಾನದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 2. ಬಹಳ ಅಲ್ಪವಾದ, ಬಹಳ ಕಡಮೆಯಾದ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠ ವಿರಲಂ ಯಸ್ಮಿನ್ । "प्रथममन्यमृताभिरुदीरिताः प्रविरला इव मुग्धवधूकयाः" ರಘುಂ ९-३४ ।

ಪ್ರವಿಲಯ ಪ್ರವಿಲಯ (ಪುಂ) ನಿವೃತ್ತಿ, ನಾಶ, ಅಳಿವು. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ವಿಲಯಃ । "ब्रह्मणीव विवर्तिनां क्वापि प्रविलयः कृतः" उ० रा० ६-६ ।

ಪ್ರವಿವತ್ಸತ್ ಪ್ರವಿವತ್ಸತ್ (ವಿಂ) ಪ್ರವಾಸ ಮಾಡಲು ಇಚ್ಛಿಸುತ್ತಿರುವ, ಪರಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ಹೊರಡಲು ಇಚ್ಛಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + वस (निवासे) + सन् "शतृ" (३-२-१२४) "प्रविवत्सतः प्रियतमस्य निगडमिव चक्षुरक्षिपत" ಮಾಘಂ १५-८६ ।

ಪ್ರವಿವತ್ಸಾ ಪ್ರವಿವತ್ಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರವಾಸಮಾಡುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ ಪರಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ಹೊರಡುವ ಇಚ್ಛೆ. ಪ್ರ + वस (निवासे) + सन् "क्" (३-३-१०२) ।

ಪ್ರವಿವತ್ಸು ಪ್ರವಿವತ್ಸು (ವಿಂ) ಪರಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ಹೊರಟುಬರಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಪ್ರವಾಸಮಾಡಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ. ಪ್ರ + वस (निवासे) + सन् "उः" (३-२-१६८) ।



ಪ್ರವಿಶತ್ ಪ್ರವಿಶತ್ (ವಿಂ) ಪ್ರವೇಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ಒಳಗೆ ಹೋಗುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಪುರಂ ಪರಸ್ಯ ಪ್ರವಿಶನ್ವಿಯೋಗಿ ಯೋಗೀವ ಚಿತ್ರಂ ಸ ರರಾಜ ರಾಜಾ" ನೆಪಂ ೬-೪೬। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ವಿಶಂತಿ -ವಿಶಂತೀ.

ಪ್ರವಿಶಲೇಷ ಪ್ರವಿಶಲೇಷ (ಪುಂ) ಅಗಲುವಿಕೆ, ಬೇರೆಯಾಗುವಿಕೆ.

ಪ್ರವಿಷ್ಟ ಪ್ರವಿಷ್ಟ (ವಿಂ) ಪ್ರವೇಶಿಸಿದ, ಒಳಗೆ ಹೋದ. ಪ್ರ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ತಚ್ಚಿಂತಯಾ-  
ನ್ತನಿರರ್ಚಾಯಿ ಚಾರು ಸ್ವಸ್ಯೇವ ತನ್ವಯಾ ಹೃದಯಂ ಪ್ರವಿಷ್ಟ:"  
ನೆಪಂ ೬-೩೦।

ಪ್ರವೀಣ ಪ್ರವೀಣ (ವಿಂ) ನಿಪುಣ, ಜಾಣ, ನುರಿತವನು, ಚತುರ. ವೀಣಯಾ ಪ್ರಗಾಯತಿ ಪ್ರವೀಣಯತಿ—ಪ್ರ + ವೀಣಾ + ಣಿच् (೩-೧-೨೫) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಅಪಿ ಭ್ರಮಿ-  
ಭಿಜ್ಞಿಭಿರಾವೃತಾಂಜ್ಞಂ ವಾಸೋ ಲತಾವೇಷಿತಕಪ್ರವೀಣಮ್" ನೆಪಂ ೭-೯೭। "ವಿಶ್ವಾವಸುಪ್ರಾಪ್ತಹರೈಃ ಪ್ರವೀಣೈಃ ಸಂಗೀಯಮಾನ-  
ತ್ರಿಪುರಾವದಾನ:" ಕುಮಾಂ ೭-೪೮।

ಪ್ರವೀರ ಪ್ರವೀರ (ಪುಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ವೀರಪುರುಷ, ಉತ್ತಮ ಯೋಧ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠೋ ವೀರಃ। 2. ಉತ್ತಮ ಪುರುಷ, ಶ್ರೇಷ್ಠ ಪುರುಷ.

ಪ್ರವೃತ್ತ ಪ್ರವೃತ್ತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭವಾದ. ಪ್ರ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ತದಿದಮೇವ ತಾವದ-  
ಚಿರಪ್ರವೃತ್ತಮುಪಭೋಗಕ್ಷಮಂ ಗ್ರೀಷ್ಮಸಮಯಮಧಿಕೃತ್ಯ ಗೀಯತಾಮ್" ಶಾಕುಂ ೧। 2. ಒಂದು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿರುವ, ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿರುವ, ಪ್ರಯತ್ನಿಸಿರುವ. "ಪ್ರವೃತ್ತ ಏವ ಸ್ವಯಮುಜ್ಜಿತಶ್ರಮಃ ಕ್ರಮೇಣ ಪೇಷ್ಠಂ ಭುವನದ್ವಿಷಾಮಸಿ" ಮಾಘಂ ೧-೪೦। 3. ಹುಟ್ಟಿದ, ಉತ್ಪನ್ನವಾದ, ಉಂಟಾದ, "ಅನುಗ್ರಹಂ ಸಂಸ್ಮರಣಪ್ರವೃತ್ತಮಿच्छಾಮಿ ಸಂವರ್ಧಿತಮಾಜ್ಞಯಾ ತೇ" ಕುಮಾಂ ೩-೩।

ಪ್ರವೃತ್ತಿ ಪ್ರವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಾರ್ತೆ, ಸಮಾಚಾರ, ಸುದ್ದಿ. ಪ್ರವರ್ತತೆ ವ್ಯಾಪ್ನೋತಿ — ಪ್ರ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತಿच्" (೩-೩-೧೭೪)। "ಪ್ರತ್ಯಾಸನ್ನೇ ನಭಸಿ ದಯಿತಾಜೀವಿತಾಲಮ್ಬ-  
ನಾರ್ಥಿ ಜಿಮೃತೇನ ಸ್ವಕುಶಲಮಯಿ ಹಾರಯಿಷ್ಯನ್ ಪ್ರವೃತ್ತಿಮ್" ಮೇಘಂ ೨-೪। 2. ವ್ಯಾಪಾರ, ಪ್ರಯತ್ನ. "ಪ್ರಾಣೇಣ ಸಾಮಗ್ರ್ಯವಿಧಿ ಗುಣಾನಾಂ ಪರಾಡ್ಭುಮುಖಿ ವಿಶ್ವಸುಜಃ ಪ್ರವೃತ್ತಿಃ" ಕುಮಾಂ ೩-೨೮। 3. ಪ್ರವಾಹ, ನೀರು ಮೊದಲಾದ ದ್ರವಪದಾರ್ಥದ ಹೊಸಲು. 4. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. "ತಪಸ್ವಿನಃ ಸ್ಥಾಣುವನೌಕಸಸ್ತಾಮಾಕಾಲಿಕೀ ವೀಕ್ಷ್ಯ ಮಧು-  
ಪ್ರವೃತ್ತಿಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೩೪। 5. ಒಲವು, ಒಲುವುದು.

"ಸತಾಂ ಹಿ ಸಂದೇಹಪದೇಷು ವಸ್ತುಷು ಪ್ರಮಾಣಮಂತಃಕರಣಪ್ರವೃತ್ತಯಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೧೯। 6. ಕಾರ್ಯ, ಕೆಲಸ, ವ್ಯಾಪಾರ. "ತ್ವಾಂ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಸ್ಮಾತ್ಕಲ್ಪಪ್ರವೃತ್ತಾವಸ್ತಯೇವ ಮನ್ಯುರ್ಭರತಾಗ್ರಜೇ ಮೇ" ರಘುಂ ೧೪-೭೩। 7. ನಡೆ, ಓಟ, ಹರಿವು, ಗತಿ. "ಪ್ರವೃತ್ತಿ-  
ರಾಸೀಂಚ್ಛದಾನಾಂ ಚರಿತಾರ್ಥಾ ಚತುಷ್ಟಯಿ" ಕುಮಾಂ ೨-೧೭। 8. ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ತೋರ್ಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಮೈದೋರುವುದು. "ಆದೇ ವಃ ಕುಸುಮಪ್ರಸೂತಿಸಮಯೇ ಯಸ್ಯಾ ಭವತ್ಯುತ್ಸವಃ" ಶಾಕುಂ ೪-೮। 9. ಪ್ರವೃತ್ತಿಮಾರ್ಗ, ಪ್ರಾಪಂಚಿಕವ್ಯಾಪಾರದಲ್ಲಿ ಸದಾ ಆಸಕ್ತನಾಗಿರುವುದು. 10. ಪ್ರವರ್ತನ, ಒಂದು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗುವುದು. 11. ಕೈಹಿಡಿದ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪಟ್ಟುಹಿಡಿದು ಪ್ರಯತ್ನವನ್ನು ಮುಂದುವರಿಸುವುದು. 12. ಬಳಕೆಯಲ್ಲಿರುವುದು, ವ್ಯವಹಾರದಲ್ಲಿರುವುದು. 13. ಉಜ್ಜಯಿನೀ ನಗರ.

ಪ್ರವೃದ್ಧ ಪ್ರವೃದ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿರುವ. ಪ್ರ + ವೃದ್ಧಿ (ವೃದ್ಧಿ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಸತ್ತ್ವಂ ಸಮುತ್ಕಟಂ ಜಾತಂ ಪ್ರವೃದ್ಧಂ ಶಾಸ್ತ್ರದರ್ಶನಾತ್"। 2. ಅಧಿಕ ವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. "ಪ್ರವೃದ್ಧಮಂದ್ರಾಂಬುದಧೀರನಾದಃ ಕೃಷ್ಣಾಣ-  
ವಾಮ್ಯಣಂಚರೈಹಂಸಃ" ಮಾಘಂ ೩-೨೧। 3. ದೊಡ್ಡದಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವ.

ಪ್ರವೃದ್ಧಿ ಪ್ರವೃದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆಯುವುದು, ಅಭಿವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವುದು. ಪ್ರ + ವೃದ್ಧಿ (ವೃದ್ಧಿ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪)। "ಪ್ರವೃದ್ಧಿ ಹೀಯತೇ ಚಂದ್ರಃ ಸಮುದ್ರೋಪಿ ತಥಾ-  
ವಿಧಃ" ರಘುಂ ೧೭-೭೧। 2. ಅಧಿಕವಾಗುವುದು, ಹೆಚ್ಚು ವುದು. 3. ದೊಡ್ಡದಾಗಿ ಬೆಳೆಯುವುದು. "ಇಮಶ್ಚುಪ್ರವೃದ್ಧಿ-  
ಜನಿತಾನನವಿಕ್ರಿಯಾಂಶ್ಚ ಪಲಕ್ಷಾನ್ ಪ್ರರೋಹಜಡಲಾನಿವ ಮನ್ವಿ-  
ವೃದ್ಧಾನ್" ರಘುಂ ೧೩-೭೧।

ಪ್ರವೇಕ ಪ್ರವೇಕ (ವಿಂ) ಉತ್ತಮವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. ಪ್ರವಿಚ್ಯತೇ—ಪ್ರ + ವಿಚಿರ್ (ಪೃಥುಭಾವೇ) "ಚಕ್" (೩-೩-೧೯)।

ಪ್ರವೇಗ ಪ್ರವೇಗ (ಪುಂ) ಅಧಿಕವಾದ ವೇಗ.

ಪ್ರವೇಣಿ ಪ್ರವೇಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆರಳು, ಹೆಣೆದಿರುವ ಜಡೆ. ಪ್ರ + ವೇಣಿ (ಗತಿಜ್ಞಾನಚಿಂತಾನಿಶಾಮನಾದಿ) "ಇನ್" (೩-೪-೧೧೮)। ವಾ ದೀರ್ಘಃ (ಗಂ ೪-೧-೪೫)। -ವೇಣಿ -ವೇಣೀ. "ಹೇಮಭಕ್ತಿಮತೀ ಭೂಮಿಃ ಪ್ರವೇಣಿಮಿವ ಪಿಪ್ರಿಘೇ" ರಘುಂ ೧೫-೩೦। 2. ಅನೆಯ ಮೇಲೆ ಹೊದಿಸುವ ಚಿತ್ರವರ್ಣದ ಕಂಬಳಿ, ರತ್ನಗಂಬಳಿ.

ಪ್ರವೇಪ ಪ್ರವೇಪ (ಪುಂ) ನಡುಗುವುದು, ಕಂಪಿಸುವುದು. ಟ್ವೇಪು (ಕಂಪನೆ) "ಚಕ್" (೩-೩-೧೮)। ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। -ವೇಪನಮ್ -ವೇಪನಮ್. "ಅಥುಚ್" (೩-೩-೮೯)। -ವೇಪಯಃ -ವೇಪಯಃ,



**ಪ್ರವೇಷಮಾನ ಪ್ರವೇಷಮಾನ** (ವಿಂ) ಕಂಪಿಸುತ್ತಿರುವ, ನಡುಗುತ್ತಿರುವ, ಅದಿರುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ವೇಷ (ಕಂಪನೆ) "ಶಾನ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಮುಖೇನ ಸಾ ಪದ್ಮಸುಗಂಧಿನಾ ನಿಶಿ ಪ್ರವೇಷಮಾನಾಧರಪತ್ರಶೋಭಿನಾ" ಕುಮಾಂ ೪-೨೭।

**ಪ್ರವೇಶ ಪ್ರವೇಶ** (ಪುಂ) ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು, ಒಳಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು, ಒಳಕ್ಕೆ ಬರುವುದು. ಪ್ರ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) ಭಾವೇ "ಘ" (೩-೩-೧೮)। "ಪ್ರವೇಶಯಾಮಾಸ ಚ ಭರ್ತುರೇನಾಂ ಭೂಷಣಮಾತ್ರಾನುಮತಪ್ರವೇಶಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೬೦। "ತವ ಪ್ರವೇಶೇ ಸುಕೃತಾನಿ ಹೇತುರ್ಮನ್ಯೇ ಮದಕುಪೋರಪಿ ತಾವದತ್ರ" ನೆಪಂ ೮-೨೭।

**ಪ್ರವೇಶಕ ಪ್ರವೇಶಕ** (ಪುಂ) ಐದು ವಿಧ ಅರ್ಥೋಪಕ್ಷೇಪಕಗಳಲ್ಲೊಂದು. [ನಾಟಕದ ಅಂಕಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ ಪ್ರದರ್ಶಿಸಲು ಅನುಚಿತವಾದ ಮತ್ತು ನೀರಸವಾದ ಕಥಾವಸ್ತುವನ್ನು ವಿಷ್ಕಂಭ ಮೊದಲಾದ ಐದು ಅರ್ಥೋಪಕ್ಷೇಪಕಗಳ ಮೂಲಕ ಸೂಚಿಸಬೇಕು.] (1) ವಿಷ್ಕಂಭ: (2) ಚೂಲಿಕಾ (3) ಅಕ್ಷಾಸ್ಯಮ್ (4) ಪ್ರವೇಶಕ: ಮತ್ತು (5) ಅಕ್ಷಾವತಾರ: ಇವು ಐದು ಅರ್ಥೋಪಕ್ಷೇಪಕಗಳು. ಹಿಂದೆ ನಡೆದ ಮತ್ತು ಮುಂದೆ ನಡೆಯಲಿರುವ ಕಥೆಯ ವಸ್ತುವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಅರ್ಥೋಪಕ್ಷೇಪಕವು ಪ್ರವೇಶಕ. ಪ್ರವೇಶಕಕ್ಕೆ ಮೊದಲನೆಯ ಅಂಕದಲ್ಲಿ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲ. ಇದು ನೀಚಪಾತ್ರಗಳಿಂದ ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವುದು. "ವೃತ್ತವರ್ತಿಷ್ಯಮಾಣಾನಾಂ ಕಥಾಂಶಾನಾಂ ನಿರ್ದೇಶಕ: ಪ್ರವೇಶಕಸ್ತು ನಾಘೋಕ್ತೇ ನಿಕಪಾತ್ರಪ್ರಯೋಜಿತ:"।

**ಪ್ರವೇಶನ ಪ್ರವೇಶನ** (ನಂ) 1. ಒಳಗೆ ಹೋಗುವುದು, ಒಳಕ್ಕೆ ಬರುವುದು. ಪ್ರ+ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ತವ ಯೋಗಪ್ರಭಾವೇನ ಶಕ್ಯಂ ತತ್ರ ಪ್ರವೇಶನಮ್" ಹರಿವಂ 1. 2. ಮಹಾದ್ವಾರ, ಮನೆಯ ಪ್ರಧಾನ ದ್ವಾರ. ಪ್ರವಿಶ್ಯತೇನೆನ-ಪ್ರ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)।

**ಪ್ರವೇಶನೀಯ ಪ್ರವೇಶನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರವೇಶಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 3. ಪ್ರವೇಶಿಸಬೇಕಾದ. ಪ್ರ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। ಪ್ರ+ವಿಶ+ಗಿನ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। 4. ಪ್ರವೇಶಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 5. ಪ್ರವೇಶಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. 6. ಪ್ರವೇಶಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಬೇಕಾದ. "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬)। ಕೇವಲಾತ್ -ವೇಷಯಮ್ -ವೇಷ್ಯ, ನ್ಯಮ್. ಷ್ಯಂತಾತ್ -ವೇಶಯಿತವ್ಯಮ್ -ವೇಶಯಿತವ್ಯಮ್.

**ಪ್ರವೇಶ್ಯ ಪ್ರವೇಶ್ಯ** (ವಿಂ) ಪ್ರವೇಶಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಫ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)।

**ಪ್ರವೇಷ ಪ್ರವೇಷ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ತೋಳು, ಭುಜ, ಬಾಹು. ಪ್ರ+ವೇಷ (ವೇಷನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಆನೆಯ ಬೆನ್ನು.

**ಪ್ರವ್ಯಕ್ತ ಪ್ರವ್ಯಕ್ತ** (ವಿಂ) ಸ್ಫುಟವಾದ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ. ಪ್ರವ್ಯಜ್ಯತೇ-ಪ್ರ + ವಿ + ಅಜ್ಞ (ವ್ಯಕ್ತವಾದ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಪ್ರವ್ರಜನ ಪ್ರವ್ರಜನ** (ನಂ) 1. ಸಂನ್ಯಾಸ ಸ್ವೀಕಾರ, ಸರ್ವ ಸಂಗಪರಿತ್ಯಾಗಪೂರ್ವಕ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಆಶ್ರಮವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ವ್ರಜ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಊರುಬಿಟ್ಟು ಹೊರಡಿಸುವುದು, ಗಡೀಪಾರು ಮಾಡಿಸುವುದು.

**ಪ್ರವ್ರಜಿತ ಪ್ರವ್ರಜಿತ** (ಪುಂ) 1. ಸಂನ್ಯಾಸಿ, ನಾಲ್ಕನೆಯ ಆಶ್ರಮವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದವನು. (ನಂ) 2. ಸಂನ್ಯಾಸ ಸ್ವೀಕಾರ.

**ಪ್ರವ್ರಜಿತಾ ಪ್ರವ್ರಜಿತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂನ್ಯಾಸಿನಿ.

**ಪ್ರವ್ರಜ್ಯಾ ಪ್ರವ್ರಜ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಾಲ್ಕನೆಯ ಆಶ್ರಮ, ಸಂನ್ಯಾಸ. ಪ್ರ + ವ್ರಜ (ಗತೌ) "ಕ್ಯಪ್" (೩-೩-೯೮)। "ಮುಕ್ತಾಯಜೋಪವೀತಾನಿ ಬಿಭ್ರತೋ ಹೈಮವಲ್ಕಲಾ: ರಕ್ತಾಕ್ಷಸುತ್ರಾ: ಪ್ರವ್ರಜ್ಯಾಂ ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷಾ ಇವಾಶ್ರಿತಾ:" ಕುಮಾಂ ೬-೬। 2. ಸರ್ವ ಸಂಗ ಪರಿತ್ಯಾಗಮಾಡಿ ವೈರಾಗ್ಯದಿಂದ ಭಿಕ್ಷುಕನಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವುದು. "ತತಶ್ಚ ಪ್ರವ್ರಜ್ಯಾಸಮಯಸುಲಭಾಚಾರವಿಮುಖ: ಪ್ರಸಕ್ತಸ್ತೇ ಯತನ: ಪ್ರಭವತಿ ಪುನರ್ದೇವಮಪರಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೪-೬।

**ಪ್ರವ್ರಶ್ನನ ಪ್ರವ್ರಶ್ನನ** (ಪುಂ) 1. ಕೈಕೊಡಲಿ. 2. ಸಣ್ಣ ಕತ್ತಿ, ಕುಡುಗೋಲು. ಪ್ರವ್ರಶ್ಯತೇನೆನ-ಪ್ರ + ಆ ವ್ರಶ್ (ಛೇದನೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। ಇಹ್ಮಪ್ರವ್ರಶ್ನನ: ಕುಠಾರ: ಸಿಂ ಕೌಂ।

**ಪ್ರಶಂಸಕ ಪ್ರಶಂಸಕ** (ವಿಂ) ಪ್ರಶಂಸೆ ಮಾಡುವವನು, ಹೊಗಳುವವನು, ಕೊಂಡಾಡುವವನು. ಪ್ರ+ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) "ಫ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ಪ್ರಶಂಸತ್ ಪ್ರಶಂಸತ್** (ವಿಂ) ಹೊಗಳುತ್ತಿರುವ, ಸ್ತೋತ್ರ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಕೊಂಡಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬)। -ಶಂಸಂತಿ -ಶಂಸಂತೀ.

**ಪ್ರಶಂಸನ ಪ್ರಶಂಸನ** (ನಂ) 1. ಹೊಗಳಿಕೆ, ಕೊಂಡಾಡುವುದು. ಪ್ರ+ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಹೊಗಳಿಸುವುದು. ಗಿನ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।

**ಪ್ರಶಂಸನೀಯ ಪ್ರಶಂಸನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಹೊಗಳಲ್ಪಡುವ, ಶ್ಲಾಘಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ+ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) ಕರಂ "ಅನೀಯರ್"



(೩-೧-೧೬) 1. ಶ್ಲಾಘಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಶ್ಲಾಘಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. "ಪ್ರಶಂಸನೀಯಾನಿ ಬಭೂವುರಾಜೌ ಪಶ್ಚಾತ್ತಪ್ರಯಾ-  
ತಾನಿ ಧನುರ್ಧರಾಣಾಮ್" ಯಾದಂ ೨೦-೫೮. "ತವ್ಯಃ" 1.  
-ಶಂಸಿತವ್ಯಮ್ -ಶಂಸಿತವ್ಯಮ್.

ಪ್ರಶಂಸಯತ್ ಪ್ರಶಂಸಯತ್ (ವಿಂ) ಹೊಗಳಿಸುತ್ತಿರುವ, ಕೊಂಡಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) 1. -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ. "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) 1. -ಶಂಸಯಮಾನಃ -ಶಂಸಯಮಾನಃ.

ಪ್ರಶಂಸಾ ಪ್ರಶಂಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊಗಳಿಕೆ, ಕೊಂಡಾಡುವುದು. ಪ್ರ+ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) ಭಾವೇ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨) 1. 2. ಖ್ಯಾತಿ, ಕೀರ್ತಿ. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ. "ಧರ್ಮೋಚ್ಚವಸ್ತು ಧರ್ಮಶಾಃ  
ಸತಾಂ ಧರ್ಮಮನುಷ್ಠಿತಾಃ 1. ಮನ್ವವರ್ಜಂ ನ ದುಷ್ಯಂತಿ ಪ್ರಶಂಸಾಂ  
ಪ್ರಾಪ್ನುವಂತಿ ಚ" ಮನುಂ ೧೦-೧೨೭.

ಪ್ರಶಂಸಿತ ಪ್ರಶಂಸಿತ (ವಿಂ) ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಶ್ಲಾಘಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊಂಡಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ+ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) 1.

ಪ್ರಶಂಸಿತವತ್ ಪ್ರಶಂಸಿತವತ್ (ವಿಂ) ಹೊಗಳಿದವನು, ಕೊಂಡಾಡಿದವನು, ಶ್ಲಾಘಿಸಿದವನು. ಪ್ರ+ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨) 1.

ಪ್ರಶಂಸ್ಯ ಪ್ರಶಂಸ್ಯ (ವಿಂ) ಹೊಗಳಲ್ಪಡುವ, ಕೊಂಡಾಡಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ+ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) 1. ವಾ "ಕೃಪ್" (ವಾಂ ೩-೧-೧೦೯) 1. -ಶಂಸಯಮ್ -ಶಂಸಯಮ್.

ಪ್ರಶಮ ಪ್ರಶಮ (ಪುಂ) 1. ಶಾಂತತೆ, ಸಹನೆ, ತಾಳ್ಮೆ. ಪ್ರ+ಶಮು (ಉಪಶಮೇ) ಭಾವೇ "ಛ" (೩-೩-೧೮) 1. "ಪ್ರಶಮಾಭರಣಂ ಪರಾಕ್ರಮಃ ಸ ನಯಾಪಾದಿತಸಿದ್ಧಿಭೂಷಣಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೩೨. 2. ಕಡಮೆಯಾಗುವುದು, ತಗ್ಗುವುದು. ನಂದಿಹೋಗುವುದು. "ಪ್ರಶಮಾದಿಚಿಛಾಮೇತದನುದ್ಗುಣಿಸುರಾ-  
ಯುಧಮ್" ಕುಮಾಂ ೨-೨೦. 3. ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸುವುದು, ತಣಿಸುವುದು. ಶಾಂತಗೊಳಿಸುವುದು, ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸುವುದು. "ಕ್ಷುಭಿತಸ್ಯ ಮಹಿಮತಸ್ತವಯಿ ಪ್ರಶಮೋಪನಯನಂ ವೃಥಾ ಮಮ" ಮಾಘಂ ೧೬-೫೧.

ಪ್ರಶಮನ ಪ್ರಶಮನ (ನಂ) 1. ಕಡಮೆಯಾಗುವುದು, ಶಾಂತಗೊಳಿಸುವುದು, ಅಡಗಿಸುವುದು. ಪ್ರ+ಶಮು (ಉಪಶಮೇ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) 1. "ಆಪನ್ನಾತಿಪ್ರಶಮನ-  
ಫಲಾಃ ಸಂಪದೋ ಹ್ಯುತ್ತಮಾನಾಮ್" ಮೇಘಂ ೧-೫೩. 2. ವಧೆ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. 3. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. "ತೈಃ ಸಾರ್ಥಂ ಚಿಂತಯೇ-  
ನ್ವಿತಯಂ ಸಾಮಾನ್ಯಂ ಸಂವಿವಿಗ್ರಹಮ್ 1. ಸ್ಥಾನಂ ಸಮುದಯಂ ಗುಪ್ತಿ

ಲಂಘಪ್ರಶಮನಾನಿ ಚ" ಮನುಂ ೭-೫೬. 4. ರಕ್ಷಣೆ, ಕಾಪಾಡುವುದು, ಸ್ಥಿರಪಡಿಸುವುದು, ಭದ್ರಪಡಿಸುವುದು. "ಲಂಘ-  
ಪ್ರಶಮನಸ್ವಸ್ಥಮಶೇನಂ ಸಮುಪಸ್ಥಿತಾ 1. ಪಾಶಿವಶ್ರೀದ್ವಿತೀಯೇವ  
ಶರತ್ಪಕ್ಷಜಲಕ್ಷಣಾ" ರಘುಂ ೪-೧೪. 5. ಕಡಮೆಯಾಗುವುದು, ಶಾಂತವಾಗುವುದು. ಪ್ರ+ಶಮು ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) 1. 6. ನಿವಾರಣೆಯಾಗುವುದು. 7. ನಿವಾರಣೆ ಮಾಡುವುದು, ರೋಗಾದಿಗಳನ್ನು ಗುಣಪಡಿಸುವುದು,

ಪ್ರಶಮನೀಯ ಪ್ರಶಮನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಕಡಮೆಯಾಗಲ್ಪಡುವ, ಶಾಂತಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ, ಅಡಗಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ+ಶಮು (ಉಪಶಮೇ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) 1. 2. ಶಾಂತಗೊಳಿಸಬೇಕಾದ, ನಿವಾರಣೆಯಾಗಬೇಕಾದ. 3. ನಿವಾರಣೆಗೆ ಅರ್ಹವಾದ. "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೧೬) 1. -ಶಮಯಿತವ್ಯಃ -ಶಮಯಿತವ್ಯಃ.

ಪ್ರಶಮಯತ್ ಪ್ರಶಮಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಶಾಂತಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ, ಕಡಮೆಯಾಗುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಶಮು (ಉಪಶಮೇ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) 1. 2. ತಣಿಸುತ್ತಿರುವ, ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಅರಿಸುತ್ತಿರುವ, ನಂದಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ನಿವಾರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) 1. -ಶಮಯಂತಿ -ಶಮಯಂತಿ. "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) 1. -ಶಮಯಮಾನಃ -ಶಮಯಮಾನಃ.

ಪ್ರಶಮಿತ ಪ್ರಶಮಿತ (ವಿಂ) 1. ಕಡಮೆಯಾಗಲ್ಪಟ್ಟ, ಶಾಂತಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ+ಶಮು (ಉಪಶಮೇ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) 1. "ಅಸಿಚ್ಯತ ಪ್ರಶಮಿತಪಾಂಸುಭಿರ್ಮಹಿ-  
ಮದಾಮ್ಬುಭಿರ್ಮತನವಪೂರ್ಣಕುಮಭಯಾ" ಮಾಘಂ ೧೭-೩೮. 2. ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಅರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ನಿವಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪರಿಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಹಾ ಹಾ ವಿಕಪರಗೃಹ-  
ವಾಸದೂಷಣಂ ಯದ್ದೇಹ್ಯಾಃ ಪ್ರಶಮಿತಮದ್ಭೂತೈರಪಾಯಃ" ತಂರಾಂ ೧-೪೦. ವಾ ಇಡಾಗಮಃ ನಿಪಾಂ (೭-೨-೨೭) 1. ಇಡಭಾವಪಕ್ಷೇ -ಶಾಂತಃ -ಶಾಂತಃ.

ಪ್ರಶಮಿತವತ್ ಪ್ರಶಮಿತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಶಾಂತಗೊಳಿಸಿದವನು. 2. ಅರಿಸಿದವನು, ನಂದಿಸಿದವನು. 3. ತಣಿಸಿದವನು, ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸಿದವನು. ಪ್ರ+ಶಮು (ಉಪಶಮೇ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨) 1. ವಾ ಇಡಾಗಮಃ ನಿಪಾಂ (೭-೨-೨೭) 1. ಇಡಭಾವಪಕ್ಷೇ -ಶಾಂತವಾನ್ -ಶಾಂತವಾನ್.

ಪ್ರಶಸ್ತ ಪ್ರಶಸ್ತ (ನಂ) 1. ಹೊಗಳಿಕೆ, ಶ್ಲಾಘನೆ, ಕೊಂಡಾಟ. ಪ್ರ+ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೫) 1. 2. ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊಂಡಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಶ್ಲೇಷವಾದ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) 1. "ಸ ತ್ವಂ ಮದೀಯೇ ಮಹಿತೇ ಪ್ರಶಸ್ತೇ ವಸಂ-  
ಶ್ವತುರ್ಯೋಗ್ನಿರಿವಾಗ್ನಿಗಾರೇ" ರಘುಂ ೫-೨೫.



**ಪ್ರಶಸ್ತಿ ಪ್ರಶಸ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಶ್ಲಾಘನೆ, ಹೊಗಳಿಕೆ. ಪ್ರ + ಶಸ್ತು (ಸ್ತುತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। 2. ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ, ಉತ್ಕೃಷ್ಟವಾಗಿರುವಿಕೆ.

**ಪ್ರಶಸ್ಯಮಾನ ಪ್ರಶಸ್ತನಾನ (ವಿಂ)** ಶ್ಲಾಘಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಹೊಗಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಶಸ್ತು (ಸ್ತುತೌ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಇಯಮಧುನಾ ವಸುಧರಾ-ಜಾಹ್ನವೀಶ್ವರಾ ಪ್ರಶಸ್ಯಮಾನಾ ಮಯಾ ಚಾರುಧರಾ ಚ ಸಮರ್ಪಿತಾ ಪೂರ್ವ ಭಗವತಾ ವೈಶ್ವಾನರೇಣ ನಿರ್ಣಿತಪುಷ್ಯಚರಿತ್ರಾ ಜಾನಕೀ ಪರಿಗೃಹ್ಯ-ತಾಮ್" ತಂ.ರಾಂ ೭।

**ಪ್ರಶಾಮ್(ನ್) ಪ್ರಶಾಮ್(ನ್) (ವಿಂ)** 1. ಶಾಂತನಾಗಿರುವ, ತಾಳ್ಮೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪ್ರ + ಶಾಮು (उपशमे) "क्विप्" (೩-೨-೬೧)। ದೀರ್ಘ: (೬-೪-೧೫)। (ಅವ್ಯಂ) 2. ಸಾಮರ್ಥ್ಯ.

**ಪ್ರಶಾಂತ ಪ್ರಶಾಂತ (ವಿಂ)** 1. ತಾಳ್ಮೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಶಾಂತನಾಗಿರುವ. ಪ್ರ + ಶಾಮು (उपशमे) "ಕ್ತಿ:" (೩-೪-೭೨)। "ಪ್ರಶಾಂತಶ್ವಾಪದಾಕೀರ್ಣ ಮುನಿಶಿಷ್ಯೋಪಶೋಭಿತಮ್"। 2. ನಿಶಬ್ಧವಾಗಿರುವ, ಸ್ತಬ್ಧವಾಗಿರುವ. "ಅಹೋ ಪ್ರಶಾಂತ-ರಮಣೀಯಮುಪಾಸನಮ್"। 3. ಸಮಾಧಾನಗೊಂಡಿರುವ, ತೃಪ್ತಿಹೊಂದಿರುವ. 4. ಬಗೆಹರಿದಿರುವ, ಕೊನೆಗೊಂಡಿರುವ, ಒಂದು ಸ್ತಿಮಿತಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ. 5. ಅರಿಹೋಗಿರುವ, ನಂದಿಹೋಗಿರುವ. "ಕಥಮವಿರಲಪ್ರವೃತ್ತವಾರಿಧಾರಾ ಸಂಪಾತ: ಪ್ರಶಾಂತಮೇವ ಪಾವಕಾಸ್ತ್ರಮ್" ತಂ.ರಾಂ ೬।

**ಪ್ರಶಾಂತಿ ಪ್ರಶಾಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಕೋಪತಾಪಗಳಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಶಾಂತತೆ, ತಾಳ್ಮೆ. ಪ್ರ + ಶಾಮು (उपशमे) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। 2. ಕಡಮೆಯಾಗುವುದು, ತಗ್ಗುವುದು. 3. ಅರಿಹೋಗುವುದು, ನಂದಿಹೋಗುವುದು. 4. ನಿವೃತ್ತಿ, ನಿವಾರಣೆ, ಪರಿಹಾರ.

**ಪ್ರಶಾಸಕ ಪ್ರಶಾಸಕ (ವಿಂ)** 1. ಅಳುವವನು. 2. ಅಜ್ಞೆ ಮಾಡುವವನು. ಪ್ರ + ಶಾಸು (अनुशिष्टी) "श्वल्" (೩-೧-೧೩೩)। 3. ಉಪದೇಶಿಸುವವನು, ಕಲಿಸುವವನು. 4. ಪಾಲಿಸುವವನು. 5. ಶಿಕ್ಷಿಸುವವನು, ದಂಡಿಸುವವನು.

**ಪ್ರಶಾಸತ್ ಪ್ರಶಾಸತ್ (ವಿಂ)** 1. ಅಜ್ಞಾಪಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಅಳುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಶಾಸು (अनुशिष्टी) "शत्" (೩-೨-೧೨೪)। "ಪ್ರಲೀನಭೂಪಾಲಮಪಿ ಸ್ಥಿರಾಯತಿ ಪ್ರಶಾಸ-ದಾವಾರಿಧಿ ಮಂಡಲಂ ಭುವ:" ಕಿರಾಂ ೧-೨೩। 3. ಕಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ಬೋಧಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಪಾಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ರಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. 5. ಶಿಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ದಂಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಶಿಪ್" (೪-೧-೬)। -ಶಾಸತೀ -ಶಾಸತೀ.

**ಪ್ರಶಾಸನ ಪ್ರಶಾಸನ (ನಂ)** 1. ಅಜ್ಞೆ ಮಾಡುವುದು. 2. ಅಳುವುದು. ಪ್ರ + ಶಾಸು (अनुशिष्टी) "ल्युट्" (೩-೩-೧೧೫)। 3. ಉಪದೇಶ, ಬೋಧನೆ. 4. ದಂಡನೆ, ಶಿಕ್ಷೆ. 5. ಪಾಲನೆ, ರಕ್ಷಣೆ.

**ಪ್ರಶಾಸ್ತ ಪ್ರಶಾಸ್ತ (ಪುಂ)** 1. ಪ್ರಭು, ದೊರೆ, ಅಳುವವನು. ಪ್ರ + ಶಾಸು (अनुशिष्टी) "तृच्" (೩-೧-೧೩೩)। "ಪ್ರಶಾಸ್ತ್ರಾಧ್ಯಕ್ಷಸೇನಾನಾಂ ಮನ್ಯಮಾತ್ಯಪುರೋಹಿತಾಂ ಸಮ್ಯಕ್-ಪ್ರವಾರವಿಜ್ಞಾನಂ ದುಷ್ಠಾನಾಶ್ಚಾವಬೋಧನಮ್" ಕಾಮಂ ನಿಯಂ. (ವಿಂ) 2. ಅಜ್ಞೆ ಮಾಡುವವನು. 3. ಉಪದೇಶಿಸುವವನು, ಗುರು, ಆಚಾರ್ಯ. 4. ಶಿಕ್ಷಿಸುವವನು, ದಂಡಿಸುವವನು. 5. ರಕ್ಷಿಸುವವನು. "ಶಾಸು" ಧಾತುವಿಗೆ ೭-೨-೩೪ ಸೂತ್ರದಲ್ಲಿ ಇಡಾಗಮ ಸಹಿತವಾಗಿ ಮತ್ತು ೬-೪-೧೨ ಸೂತ್ರದಲ್ಲಿ ಪ್ರ ಪೂರ್ವಕ ಶಾಸು ಧಾತುವಿಗೆ ಇಡಾಗಮ ಸಹಿತವಾಗಿ ನಿರ್ದೇಶ ವಿರುವುದು. ಇದರಂತೆ ಪ್ರಶಾಸ್ತ ಪದಪ್ರಯೋಗ ಸಿದ್ಧವಾಗುವುದು. ಅದರ ರಘುವಂಶ (೧-೯೨) ದಲ್ಲಿ ಶಾಸು ಧಾತುವಿಗೆ "ಆದೇಶಂ ದೇಶಕಾಲಜಃ ಶಿಷ್ಯಃ ಶಾಸಿತುರಾನತಃ" ಎಂದು ಇಡಾಗಮ ಸಹಿತವಾದ ಪ್ರಯೋಗವಿರುವುದು. ಮತ್ತು ಪ್ರ ಪೂರ್ವಕ "ಶಾಸು" ಧಾತುವಿಗೆ ಪಂಚತಂತ್ರ (೫-೬೨) ದಲ್ಲಿ ಇಡಾಗಮ ಸಹಿತವಾದ ಪ್ರಯೋಗವೂ ಕಂಡುಬರುವುದು. "ಯತ್ರ ಸ್ತ್ರೀ ಯತ್ರ ಕಿತವೋ ಬಾಲೋ ಯತ್ರ ಪ್ರಶಾಸಿತಾಃ । ತದ್ಗೃಹಂ ಕ್ಷಯಮಾಯಾತಿ ಭಾರ್ಗವೋ ಹೀದಮಬ್ರವೀತ್" ॥

**ಪ್ರಶಿಷ್ಯ ಪ್ರಶಿಷ್ಯ (ಪುಂ)** ಶಿಷ್ಯನ ಶಿಷ್ಯ, ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಯ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಶಿಷ್ಯಃ ।

**ಪ್ರಶ್ನೋತ್ತರ ಪ್ರಶ್ನೋತ್ತರ (ವಿಂ)** 1. ಚಿಮುಕಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸಿಂಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಶ್ವತಿರ್ (क्षरणे) "शत्" (೩-೨-೧೨೪)। 2. ಸ್ವೀಕರಿಸುವ, ಸೋರುತ್ತಿರುವ.

**ಪ್ರಶ್ನೋತ್ತರ ಪ್ರಶ್ನೋತ್ತರ (ನಂ)** 1. ಚಿಮುಕಿಸುವುದು, ಸಿಂಪಡಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ಶ್ವತಿರ್ (क्षरणे) "ल्युट्" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಸೋರುವುದು, ಸ್ವೀಕರಿಸುವುದು.

**ಪ್ರಶ್ನ ಪ್ರಶ್ನ (ಪುಂ)** 1. ಕೇಳಿಕೆ, ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಕೇಳುವುದು. ಪ್ರಶ್ನ (जीप्सायाम्) "नङ्" (೩-೩-೯೦)। "ಶ:" (೬-೪-೧೯)। "ಸ್ವಾಧೀನಕುಶಲಾಃ ಸಿದ್ಧಿಮಂತಃ । ಸ ಭವಂತಮನಾಮಯಪ್ರಶ್ನಪೂರ್ವಕಮಿದಮಾಹ" ಶಾಕುಂ ೫। 2. ಪರೀಕ್ಷಾರ್ಥವಾಗಿ ಕೇಳುವುದು, ವಿಚಾರಣೆಮಾಡುವುದು, ತನಿಖೆ ಮಾಡುವುದು. "ಸಾಕ್ಷಿಪ್ರಶ್ನವಿಧಾನಂ ಚ ಧರ್ಮ ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸಯोरपि" ಮನುಂ ೧-೧೧೫। 3. ಸಮಸ್ಯೆ, ತೊಡಕು. "ದ್ವಿತೀಯಂ ತೇ ಪ್ರಶ್ನಂ ದಾಸ್ಯಾಮಿ । ಸುಸಮೃದ್ಧಾನಾಂ ಗ್ರಾಮಾಣಾಂ ಕಾರಣಾಂ ಕರೋತಿ" ಮೃಚ್ಛಂ ೫। 4. ಗ್ರಂಥದ ಒಂದು ಭಾಗ.



ಪ್ರಶ್ನಕೃತಿ ಪ್ರಶ್ನದೂತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಮಸ್ಯೆ, ಒಗಟು, ಗೂಢಾರ್ಥವುಳ್ಳ ಪ್ರಶ್ನೆ. ಪ್ರಶ್ನಸ್ಯ ಕೃತಿವಿ. "ಪ್ರಶ್ನಕೃತಿ ಪ್ರಹೇಲಿಕಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಪ್ರಶ್ನವಿವಾಕ ಪ್ರಶ್ನವಿವಾಕ (ಪುಂ) ನ್ಯಾಯವನ್ನು ನಿರ್ಣಯಿಸುವವನು, ವ್ಯಾಜ್ಯವನ್ನು ವಿಮರ್ಶಿಸಿ ತೀರ್ಪುಕೊಡುವವನು, ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಅಭಿಪ್ರಾಯಭೇದ ಬಂದಾಗ ವ್ಯವಹಾರದ ನಿರ್ಣಯಕ್ಕಾಗಿ ಬಂದ ಮೂರನೆಯವನು. ಪ್ರಶ್ನಸ್ಯ ವಿವಾಕೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭).

ಪ್ರಶ್ನಯನ ಪ್ರಶ್ನಯನ (ನಂ) ಸಡಿಲವಾಗುವುದು, ಬಿಗಿ ಕಡಮೆಯಾಗುವುದು. ಪ್ರ + ಅಶ್ಚ (ದೌರ್ಬಲ್ಯ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

ಪ್ರಶ್ನಯನ ಪ್ರಶ್ನಯನ (ನಂ) 1. "ಪ್ರಶ್ನಯನ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಪ್ರ + ಅಶ್ಚ (ದೌರ್ಬಲ್ಯ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). 2. ಬಿಡುವುದು, ವಿಮೋಚನೆ, ಬಿಡುಗಡೆ. ಪ್ರ + ಅನ್ಯ (ವಿಮೋಚನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

ಪ್ರಶ್ನಯಿತ ಪ್ರಶ್ನಯಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಡಿಲವಾಗಿರುವ, ಬಿಗಿ ತಪ್ಪಿರುವ. ಪ್ರ + ಅಶ್ಚ (ದೌರ್ಬಲ್ಯ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨). 2. ವಿಮೋಚನೆಯಾಗುವುದು, ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರ + ಅನ್ಯ (ವಿಮೋಚನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨).

ಪ್ರಶ್ನಯ ಪ್ರಶ್ನಯ (ಪುಂ) 1. ವಿಧೇಯತೆ, ವಿನಯ, ನಮ್ರತೆ. ಪ್ರ + ಅಶ್ಚ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬). "ಕೇಕೇಯಾ-ಸ್ತನಯೋ ಜನೇ ಭರತೋ ನಾಮ ಶೀಲವಾನ್. ಜನಯಿತ್ರೀಮಲಂಚಕ್ರೇ ಯಃ ಪ್ರಶ್ನಯ ಇವ ಪ್ರಶ್ನಯಮ್" ರಘುಂ ೧೦-೭೦. 2. ಗೌರವ, ಮರ್ಯಾದೆ. "ಶೌರೇಃ ಪ್ರತಾಪೋಪನತೇರಿತಸ್ತತಃ ಸಮಾಗತೇಃ ಪ್ರಶ್ನಯನಮ್ನುತಿಭಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೩೩. 3. ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸುವುದು. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). -ಅಶ್ಚಯಮ್ -ಶ್ರಯಣಮ್.

ಪ್ರಶ್ನಿತ ಪ್ರಶ್ನಿತ (ವಿಂ) ವಿಧೇಯ, ನಮ್ರ, ವಿನಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪ್ರ + ಅಶ್ಚ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ಅಬ್ರವೀತ್ ಪ್ರಶ್ನಿತಂ ವಾಕ್ಯಂ ಪ್ರಸವಾರ್ಥಂ ದ್ವಿಜೋತ್ತಮಮ್" ರಾಮಾಂ.

ಪ್ರಶ್ನಲಯ ಪ್ರಶ್ನಲಯ (ವಿಂ) ಸಡಿಲವಾಗಿರುವ, ಶಿಥಿಲವಾಗಿರುವ.

ಪ್ರಶ್ನಲಯ ಪ್ರಶ್ನಲಯ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವ. ಪ್ರ + ಲಿಷ (ಆಲಿಂಜನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨). 2. ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಪ್ರಶ್ನಲಯ ಪ್ರಶ್ನಲಯ (ಪುಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವಿಕೆ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ. ಪ್ರ + ಲಿಷ (ಆಲಿಂಜನೆ) "ಚ್ಚ" (೩-೩-೧೮).

ಪ್ರಶ್ನಲಯ ಪ್ರಶ್ನಲಯ (ವಿಂ) 1. ಕೇಳಲ್ಪಡುವ, ಪ್ರಶ್ನಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರಶ್ನ (ಜಿಪ್ಸಾಯಾಮ್) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬). 2. ಪ್ರಶ್ನಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. "ಪ್ರಶ್ನವ್ಯಂ ಪೃಚ್ಛತಸ್ತಸ್ಯ ಕಥನೀಯಮವಿವಚತ್" ಮೃದ್ವಿಂ ೬-೪೬. 3. ಪ್ರಶ್ನಿಸಬೇಕಾದ. "ಯಃ ಪೃಶ್ವಾ ಕುಸ್ತೇ ಕಾರ್ಯಂ ಪ್ರಶ್ನವ್ಯಾನ್ ಸ್ವಹಿತಾನ್ ಗುಹ್ನ್" ಪञ्ಚತಂ ೪-೬೪.

ಪ್ರಶ್ನ ಪ್ರಶ್ನ (ವಿಂ) ಪ್ರಶ್ನಮಾಡುವವನು, ಕೇಳುವವನು. ಪ್ರಶ್ನ (ಜಿಪ್ಸಾಯಾಮ್) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬). ೪: (೮-೨-೩೬). ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೫). ಪ್ರಶ್ನ ಪ್ರಶ್ನ.

ಪ್ರಶ್ನ ಪ್ರಶ್ನ (ವಿಂ) 1. ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವ, ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ಹೋಗುವ. ಪ್ರ + ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೪). ಪತ್ವಮ್ (೮-೩-೯೨). "ಆದಿಷ್ಟವರ್ಮಾ ಮುನಿಭಿಃ ಸ ಗಚ್ಛಂತಪತಾಂ ವರಃ. ವಿರರಾಜ ರಥಪ್ರಶ್ನವಾಲಿ-ಖಿಲ್ಯೆರಿವಾಂಶುಮಾನ್" ರಘುಂ ೧೫-೧೦. 2. ಮುಖ್ಯ, ಪ್ರಧಾನ. "ಭೂತಭೂತಾಸ್ಯಃ ಪ್ರಶ್ನಾಃ ಪ್ರಾತಿಷ್ಠಂತ ಕಮಾಭುತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೨-೩೦.

ಪ್ರಶ್ನವಾಟ್ (ಹ್) ಪ್ರಶ್ನವಾಟ್ (ಹ್) (ಪುಂ) ಪಳಗಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ ಮತ್ತು, ತಿದ್ದಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ ಮತ್ತು. ಪ್ರಶ್ನ-ಮಗ್ಗಾಗಮಿನಂ ವಹತಿ-ವಹ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಪಿವಃ" (೩-೨-೬೪). ಮತ್ತುಗಳನ್ನು ಗಾಡಿಗೆ ಪಳಗಿಸಲು ಮೊದಲು ನೋಗದ ತುದಿಗೆ ಕಟ್ಟಿ ನಡೆಸುವರು. "ಪ್ರಶ್ನವಾಡ್ಯುಗಪಾಶ್ವಂಗಃ" ಅಮಂ.

ಪ್ರಶ್ನವಾಟ್ ಪ್ರಶ್ನವಾಟ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೊದಲನೆಯ ಸಲ ಗರ್ಭಧರಿಸಿದ ಹೆಸು. ಪ್ರಶ್ನ ವಹತಿ-ವಹ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಪಿವಃ" (೩-೨-೬೪). "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬೧).

ಪ್ರಸಕ್ತ ಪ್ರಸಕ್ತ (ವಿಂ) ಪರಿಪೂರ್ಣವಾದ, ಸಮಸ್ತವಾದ. "ಪ್ರಸಕ್ತಕುಚವನ್ಧುರೋರೋರಃ ಪ್ರಸಕ್ತವಿಭಿನ್ನತನುತರೀಯ-ಬನ್ಧಾ" ಮಾಘಂ ೭-೩೪.

ಪ್ರಸಕ್ತ ಪ್ರಸಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಸಕ್ತಃ. "ಮಮ ರೂಪಕೀರ್ತಿಮಹರದ್ಭುವಿ ಯಸ್ತಮನುಪ್ರಸಕ್ತಹೃದಯೇಯಮಿತಿ. ತ್ವಯಿ ಮತ್ಸರಾದಿವ ನಿರಸ್ತದಯಃ ಸುತರಾಂ ಕ್ಷಿಣೋತಿ ಖಲು ತಾಂ ಮದನಃ" ಮಾಘಂ ೯-೬೩. 2. ಸಂತತವಾದ, ಎಡೆಬಿಡದ, ನಿರಂತರವಾದ, ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾದ. "ರಥಾಕ್ಷಸೀಮಂತಿತಸಾನ್ದಕರ್ದಮಾನ್ ಪ್ರಸಕ್ತಸಂಪಾತಪೃಥಕ್ಕೃತಾನ್ ಪಥಃ" ಕಿರಾಂ ೪-೧೮. 3. ಅಸಕ್ತನಾಗಿರುವ, ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವ. "ಕುರ್ವಂತಿ ತಾವತ್ಪ್ರಥಮಂ ಪ್ರಿಯಾಣಿ ಯಾವನ್ ಜಾನಂತಿ ನರಂ ಪ್ರಸಕ್ತಮ್" ಪञ्ಚತಂ ೧-೨೦೫. 4. ನಿರಂತರಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿ



ಯವ. "ಪ್ರಸಕ್ತಾ: ಕಾಮಭೋಗೇಷು ಪತಂತಿ ನರಕೇಶುಚೌ" ಗೀತಾ ೧೬-೧೬. 5. ಸಂಬಂಧಪಟ್ಟ, ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದ ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. (ಅವ್ಯಂ) 6. ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ ನಿರಂತರವಾಗಿ. "ಅಧೋಮುಖಾಕಾಶಸರಿಸ್ತರಿಪಾತಿನೀರಪ: ಪ್ರಸವತಂ ಮುಚು: ಪಯೋಮುಚ:" ಕಿರಾಂ ೧೬-೫೫.

**ಪ್ರಸಕ್ತಿ ಪ್ರಸಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಆಸಕ್ತಿ, ಶ್ರದ್ಧೆ, ಭಕ್ತಿ, ನಿಷ್ಠೆ. ಪ್ರ + ಷಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪). "ಮಾ ಭುವನಪಥಹತಸ್ತವೇಂದ್ರಿಯಾಃ ಸಂಸಾರೇ ಶಿವಾ ಶಿವಾ ಪ್ರಸಕ್ತಿಮ್" ಕಿರಾಂ ೫-೫೦. 2. ಸಂಬಂಧ, ಜೊತೆಗೂಡುವುದು, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವುದು. 3. ಅನುಮಿತಿ. 4. ವ್ಯಾಪ್ತಿ. ಅತಿಪ್ರಸಕ್ತಿ: ಅತಿವ್ಯಾಪ್ತಿ: 5. ಸಂಭವಿಸುವಿಕೆ, ಆಗುವಿಕೆ, ಒದಗುವಿಕೆ. 6. ಪ್ರಸ್ತಾವ, ಅವಕಾಶ, ಸಂದರ್ಭ. ತಕ್ಕ ಸಮಯ.

**ಪ್ರಸಕ್ತಿಯಾನ ಪ್ರಸಂಖ್ಯಾನ (ನಂ)** 1. ಆತ್ಮಾನುಸಂಧಾನ, ಧ್ಯಾನ, ತಪಸ್ಸು. ಪ್ರ + ಸಮ್ + ಹ್ಯಾ (ಪ್ರಕೃತೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). "ಶ್ರುತಾಪ್ಸರೋಗೀತಿರಪಿ ಕ್ಷಣೇಽಸ್ಮಿನ್ ಹರ: ಪ್ರಸಕ್ತಿಯಾನಪರೋ ಬಭೂವ" ಕುಮಾಂ ೩-೪೦. 2. ಕೀರ್ತಿ, ಯಶಸ್ಸು, ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ.

**ಪ್ರಸಜ್ಞ ಪ್ರಸಂಗ (ಪುಂ)** 1. ಸಂಬಂಧ, ಸಹವಾಸ. ಪ್ರ + ಷಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೆ) "ಘಬ್" (೩-೩-೧೮). "ಅಸತಾಂ ಸಜ್ಜದೋಷಣ ಸಾಧವೋ ಯಾಂತಿ ವಿಕ್ರಿಯಾಮ್. ದುರ್ಯೋಧನಪ್ರಸಜ್ಞೇನ ಭೀಷ್ಮೋ ಗೋಹರಣೇ ಗತ:" ಪಂಚತಂ ೧-೨೭೪. 2. ಸಂಬಂಧ, ಅನುಷಂಗ, ಪ್ರಕರಣ, ಪ್ರಸ್ತಾವ. "ಕಥಾಪ್ರಸಜ್ಞೇನ ಜನೇ-ರದಾಹುತಾದನುಸ್ಮೃತಾಽಖಂಡಲಸುನುವಿಕ್ರಮ:" ಕಿರಾಂ ೧-೨೪. 3. ಮೈಥುನ, ಸಂಭೋಗ. "ಭವತಿ ಭಣಾಮಿ ನಿವರ್ತತಾ-ಮಸ್ಮಾದ್ಗಣಿಕಾಪ್ರಸಜ್ಞಾತ್ ಇತಿ" ಮೃಚ್ಛಂ ೪. 4. ಸಂಭವಿಸುವುದು, ಘಟನೆ, ಆಗುವುದು, ಒದಗುವುದು. 5. ವ್ಯಾಪ್ತಿ. ಅತಿಪ್ರಸಜ್ಞ: ಅತಿವ್ಯಾಪ್ತಿ: 6. ಉದ್ದೇಶ, ಇಚ್ಛೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ. "ಕಿಂಚಿತ್ಪ್ರಕಾಶಸ್ತಿಮಿತೋಗ್ರತಾರೇಶ್ವರಿವಿಕ್ರಿಯಾಂ ವಿರತಪ್ರಸಜ್ಞ:" ಕುಮಾಂ ೩-೪೭. 7. ಕಾರ್ಯ, ಹವ್ಯಾಸ, ವ್ಯಾಪಾರ, ಪ್ರವೃತ್ತಿ, ಹಯಲ. "ಕಾಲಕ್ರಮೇಣಾಥ ತಯೋ: ಪ್ರವೃತ್ತೇ ಸ್ವರೂಪಯೋಗೇ ಸುರತಪ್ರಸಜ್ಞೇ" ಕುಮಾಂ ೧-೧೯. 8. ಅಕ್ರಮವಾದ ಸಂಭೋಗ. 9. ಅನುರಕ್ತನಾಗಿರುವಿಕೆ, ಪ್ರೀತಿಯಿಂದಿರುವಿಕೆ.

**ಪ್ರಸಜ್ಯಪ್ರತಿಷೇಧ ಪ್ರಸಜ್ಯಪ್ರತಿಷೇಧ (ಪುಂ)** ವಿಧಿವಾಕ್ಯಕ್ಕೆ ಅಪ್ರಾಧಾನ್ಯವೂ ಪ್ರತಿಷೇಧಕ್ಕೆ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯವೂ ಇರುವಿಕೆ. ಯಾವ ವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ಉದ್ದೇಶಕ್ಕೆ ಅಪ್ರಾಧಾನ್ಯ ಮತ್ತು ಪ್ರತಿಷೇಧ (ನಿಷೇಧ)ಕ್ಕೆ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯವಿರುವುದೋ ಅಲ್ಲಿ ಪ್ರಸಜ್ಯಪ್ರತಿಷೇಧ. "ಅಪ್ರಾಧಾನ್ಯಂ ವಿಧೇಯತ್ರ ಪ್ರತಿಷೇಧೇ

ಪ್ರಧಾನತಾ | ಪ್ರಸಜ್ಯಪ್ರತಿಷೇಧೋಽಸೌ ಕ್ರಿಯಾ ಸಹ ಯತ್ರ ನಬ್" |

**ಪ್ರಸಜ್ಜನ ಪ್ರಸಂಜನ (ನಂ)** 1. ಪ್ರವರ್ತನ, ಕಾರ್ಯ ನಡೆಸುವುದು, ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ಷಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). 2. ಸೇರಿ ಸುವುದು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕೂಡಿಸುವುದು.

**ಪ್ರಸಜ್ಜಿತ ಪ್ರಸಂಜಿತ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಡೆಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಷಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). "ಮಮೇವ ವಾಹದಿನಮಶ್ರುದ್ದಿನೇ: ಪ್ರಸಜ್ಜ ವರ್ಷಾಸು ಸ್ಮೃತೌ ಪ್ರಸಜ್ಜಿತೇ" ನೇಷಂ ೯-೯೬. 2. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪ್ರಸಕ್ತಿ ಪ್ರಸಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ನೈರ್ಮಲ್ಯ. ಪ್ರ + ಷದ್ಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪). 2. ಔದಾರ್ಯ. 3. ಪ್ರಸನ್ನತೆ, ಪ್ರಸಾದ, ಅನುಗ್ರಹ. "ಪ್ರಸಕ್ತೇ ಗೋತ್ರಭಿದ-ಸ್ತಪಾಸಿ" ಕಿರಾಂ ೩-೨೯.

**ಪ್ರಸದನ ಪ್ರಸದನ (ನಂ)** ಪ್ರಸನ್ನತೆ, ಪ್ರಸಾದ. ಅನುಗ್ರಹ ಬುದ್ಧಿ. ಪ್ರ + ಷದ್ಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). "ಪ್ರಸದನಮನುಕ್ರಮೇ ಪ್ರಾಪ್ತವಂತಾ ಭವಂತಾ ವೃಷಗಿರಿಹರಿನಿಲಂ ವ್ಯಜ್ಜಿತಂ ನಿವಿಶಂತಿ" ದಯಾಶಂ |

**ಪ್ರಸನ್ನ ಪ್ರಸನ್ನ (ವಿಂ)** 1. ನಿರ್ಮಲವಾದ, ತಿಳಿಯಾದ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ. ಪ್ರ + ಷದ್ಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). "ಪರ್ಯಾಸಿ ದಧಿಸರ್ಪಿಣಿ ರಸವಂತಿ ಹಿತಾನಿ ಚ | ಸಲಿಲಾನಿ ಪ್ರಸನ್ನಾನಿ ಸರ್ವೇ ಭಾವಾಶ್ಚ ಶೋಭನಾ: || ರಸಾ: ಸ್ಪರ್ಶಾಶ್ಚ ಗಂಧಾಶ್ಚ ಶಬ್ದಾಶ್ಚಾಪಿ ಗುಣಾನ್ವಿತಾ: | ದೃಶ್ಯಾನಿ ಚ ಪ್ರಸನ್ನಾನಿ ಯತ್ರ ರಾಜಾ ಯುಧಿಷ್ಠಿರ:" ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೩೧-೪೨, ೪೪. 2. ಸಂತೋಷಗೊಂಡ, ಸುಪ್ರೀತನಾದ. "ಅಪಿ ಪ್ರಸನ್ನೇನ ಮಹರ್ಷಿಣಾ ತ್ವಂ ಸಮ್ಯಗ್ವಿನಿಯಾನುಮತೋ ಗೃಹಾಬ" ರಘುಂ ೫-೧೦. 3. ನಿರ್ಮಲವಾದ, ಕೋಪತಾಪಾದಿ ದೋಷರಹಿತವಾದ. "ಅಪಿ ಪ್ರಸನ್ನಂ ಹರಿಣೇಷು ತೇ ಮನ: ಕರಸ್ಯದಭಂಪ್ರಣಯಾಪಹಾರಿಣಿ" ಕುಮಾಂ ೫-೩೫. 4. ದಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಅನುಗ್ರಹದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. "ನ ಕೇವಲಾನ್ಯಾಂ ಪಯಸಾಂ ಪ್ರಸುತಿಮವೇಹಿ ಮಾಂ ಕಾಮದುಷಾಂ ಪ್ರಸನ್ನಾಮ್" ರಘುಂ ೨-೬೩. 5. ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ, ಪ್ರಸಾದ ಗುಣದಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಅಥವೇಮಲ್ಯಂ ಪ್ರಸಾದ:" | 6. ಸತ್ಯ, ನಿಜ, ಯಥಾರ್ಥ. "ವಯಸ್ಯ ಮಕರಂದ, ಪ್ರಸನ್ನಪ್ರಾಯಸ್ತೇ ತರ್ಕ:" ಮಾಲತೀಂ ೧. 7. ನೆಮ್ಮದಿಯ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಪ್ರಶಾಂತವಾದ ಚಿತ್ತವುಳ್ಳ. 8. ಶುದ್ಧವಾದ, ನಿರ್ಮಲವಾದ, ಮೇಘ ಮುಂತಾದುದರಿಂದ ಮುಚ್ಚಲ್ಪಡದಿರುವ.



“ಪ್ರಸನ್ನದಿಕ್ಪಾಸುರ್ವಿವಿಕ್ತವಾತಂ ಶಕ್ತಿಸ್ವನಾನಸ್ತರಪುಷ್ಪವೃಷ್ಟಿ”  
ಕುಮಾಂ ೧-೨೩।

ಪ್ರಸನ್ನತಾ ಪ್ರಸನ್ನತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೈಮಲ್ಯ, ಸ್ವಚ್ಛವಾಗಿರು  
ವಿಕೆ.

ಪ್ರಸನ್ನಮುಖ ಪ್ರಸನ್ನಮುಖ (ವಿಂ) 1. ನಗುಮುಖವುಳ್ಳ.  
ಸಂತೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮುಖವುಳ್ಳ. ಪ್ರಸನ್ನಂ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ।  
2. ಅನುಗ್ರಹವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಮುಖಮುದ್ರೆಯುಳ್ಳ.  
-ವದನ -ವದನ. “ಪ್ರಸನ್ನವದನಂ ಧ್ಯಾಯೇತ್ಸರ್ವವಿಘ್ನೋಪಶಾಂತಯೇ”।

ಪ್ರಸನ್ನಾ ಪ್ರಸನ್ನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ, ಸಾರಾಯಿ.  
ಪ್ರ + ಷಡ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨)। ನಿಷ್ಠಾ-  
ತಕಾರಸ್ಯ ನಕಾರಃ (೮-೨-೪೨)। “ಪ್ರಸನ್ನಾ ಸ್ತ್ರೀ ಸುರಾಯಾಂ  
ಸ್ಯಾತ್” ಮೇದಿಂ।

ಪ್ರಸಭ ಪ್ರಸಭ (ನಂ) 1. ಬಲಾತ್ಕಾರ, ಬಲವಂತ, ನಿರ್ಬಂಧ.  
ಪ್ರಗತಾ ಸಭಾ ಸಭಾಧಿಕಾರೋ ಯಸ್ಮಾತ್। “ಯೋಗ್ಯೈರ್ವಜ್ಞಿನ್ಯುಪಜಾಂ  
ವರೀತುಂ ವೀರೇನಹಃ ಪ್ರಸಭೇನ ಹತುಮ್” ನೈಷಂ ೧೦-೩।  
(ಅವ್ಯಂ) 2. ಬಲವಂತವಾಗಿ, ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ.  
“ಇಂದ್ರಿಯಾಣಿ ಪ್ರಮಾಥಿನಿ ಹರಂತಿ ಪ್ರಸಭಂ ಮನಃ” ಗೀತಾ ೨-೬೦।  
3. ಅಧಿಕವಾಗಿ, ಅತ್ಯಂತವಾಗಿ. “ತವಾಸ್ಮಿ ಗೀತರಾಗೇಣ  
ಹಾರಿಣಾ ಪ್ರಸಭಂ ಹತಃ” ಶಾಕುಂ ೧-೫। 4. ಧಾಷ್ಟ್ಯದಿಂದ,  
ದಿಟ್ಟುತನದಿಂದ. “ಸಖೇತಿ ಮತ್ವಾ ಪ್ರಸಭಂ ಯದುಕ್ತಂ ಹೇ ಕೃಷ್ಣ ಹೇ  
ಯಾದವ ಹೇ ಸಖೇತಿ” ಗೀತಾ ೧೧-೪೧।

ಪ್ರಸರ ಪ್ರಸರ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾಬಲ್ಯ, ವೇಗ. ಪ್ರ + ಸ್ (ಗತೌ)  
“ಅಪ್” ಬಾಹುಂ। “ದಿಗಿಶಬ್ದದಾಂಶವಿಭುತಿರೀಶಿತಾ ದಿಶಾಂ  
ಸ ಕಾಮಪ್ರಸರಾವರೋಧಿನಿಮ್” ನೈಷಂ ೧-೬। 2. ಹರಡು  
ವುದು, ಮುಂದಕ್ಕೆ ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು. “ದಯಿತಾವಲೋಕವಿಕ-  
ಸನ್ನಯನಪ್ರಸರಪ್ರಣುಮಿವ ವಾರಿಹುಮ್” ಮಾಘಂ ೯-೭೧।  
3. ಮಾರ್ಗ, ಪ್ರವೇಶಾವಕಾಶ. “ಶುರೇಭ್ಯೋಽಪ್ಯಧಿಕಂ  
ವಿಭೇತ್ಯುಪಹಸತೀಕಾಂತಭೀರುನಹೋ ಶ್ರೀಲಂಘಪ್ರಸರೇವ ವೇಶವನಿತಾ  
ದುಃಖೋಪಚರ್ಯಾ ಭೃಶಮ್” ಮುದ್ರಾಂ ೩-೫। 4. ಅತಿಶಯವಾದ  
ಪ್ರಮಾಣ, ಅಧಿಕ, ಹಿರಿಮೆ, ಗಾತ್ರ, ವಿಸ್ತಾರ. “ತ್ವಷ್ಟುಃ  
ಸದಾಮ್ಯಾಸಗೃಹೀತಶಿಲ್ಪವಿಜ್ಞಾನಸಂಪತ್ಪ್ರಸರಸ್ಯ ಸೀಮಾ” ಮಾಘಂ  
೩-೩೫। 5. ಪ್ರವಾಹ, ಹೊನಲು, ಹರಿವು. 6.  
ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. 7. ಯುದ್ಧ. 8. ಬಾಣ. 9.  
ಪ್ರಣಯ, ಪ್ರೀತಿ, ವಿಶ್ವಾಸ. 10. ವೇಗ. “ಪ್ರಸರಃ ಪ್ರಣಯೇ  
ವೇಗ” ಮೇದಿಂ। “ಪ್ರಸರಸ್ತು ಸಂಗರೇ ಪ್ರಣಯೇ ಜವೇ” ಹೇಮಂ।  
“ಲೋಹನಾಲಸ್ತು ನಾರಾಚಃ ಪ್ರಸರಃ ಕಾಂಡಗೋಚರಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಪ್ರಸರಣ ಪ್ರಸರಣ (ನಂ) 1. ಹರಡುವುದು, ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು.  
ಪ್ರ + ಸ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

2. ಗಮನ, ಹೋಗುವುದು, ಸಂಚರಿಸುವುದು. 3. ಸೇನೆಯು  
ಅಲ್ಲಿಂದಿಲ್ಲಿಗೆ ಸುತ್ತುವುದು, ಸೇನೆಯ ಓಡಾಟ. 4.  
ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಂಡು ಓಡುವುದು.

ಪ್ರಸರಣಿ ಪ್ರಸರಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೇನೆಯ ಓಡಾಟ, ಸೈನ್ಯದ  
ಸುತ್ತುಟ. ಪ್ರ + ಸ್ (ಗತೌ) “ಅನಿಃ” (೩-೨-೧೦೨)।  
ವಾ ದೀರ್ಘಃ (ಗಂ ೪-೧-೪೫)।

ಪ್ರಸರ್ಪಣ ಪ್ರಸರ್ಪಣ (ನಂ) 1. ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು.  
ಮುಂದಕ್ಕೆ ನಡೆಯುವುದು. ಪ್ರ + ಸ್ಪಲ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ  
ಹರಡುವುದು, ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು. 3. ಸಭೆಯೊಳಗೆ ಪ್ರವೇಶ  
ಿಸುವುದು.

ಪ್ರಸರ್ಪತ್ ಪ್ರಸರ್ಪತ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಓಡಾಡುತ್ತಿರುವ. “ಅಪಿ ತದ್ವಪುಷಿ ಪ್ರಸರ್ಪತೋಗಮಿತೇ ಕಾಂತಿ-  
ಶರೇರಗಾಘತಾಮ್” ನೈಷಂ ೨-೩೨। 2. ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗು  
ತ್ತಿರುವ, ಮುಂದಕ್ಕೆ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಸ್ಪಲ್  
(ಗತೌ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। 3. ಎಲ್ಲಾಕಡೆಗೂ  
ಹರಡುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬)। -ಸರ್ಪಂತಿ  
-ಸರ್ಪಂತಿ.

ಪ್ರಸರ್ಪಿನ್ ಪ್ರಸರ್ಪಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಮುಂದೆ ಸಾಗುವ,  
ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ. ಪ್ರ + ಸ್ಪಲ್ (ಗತೌ) “ಗಿನಿಃ”  
(೩-೧-೧೩೪)। 2. ಹರಡುವ ಸ್ವಭಾವದ, ವ್ಯಾಪಿಸುವ  
ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ. “ಗಿನಿಃ” (೩-೨-೭೮)।

ಪ್ರಸವ ಪ್ರಸವ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಸವಿಸುವುದು, ಹೆರುವುದು.  
ಪ್ರ + ಷಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಪ್ರಸವೇ) “ಅಪ್” (೩-೩-೫೮)। “ಪತಿಃ  
ಪ್ರತೀತಃ ಪ್ರಸವೋನ್ಮುಖೀಂ ಪ್ರಿಯಾಂ ದದರ್ಶ ಕಾಲೇ ದಿವಮಭಿತಾಮಿವ”  
ರಘುಂ ೩-೧೨। 2. ಗರ್ಭ ಧರಿಸುವುದು, ಬಸಿರಾಗುವುದು.  
“ಯಥಾವಿಧ್ಯಧಿಗಮ್ಯೇನಾಂ ಶುಕ್ಲವಸ್ತ್ರಾಂ ಶುಚಿವ್ರತಾಮ್। ಮಿಥೋ  
ಭಜೇತಾಪ್ರಸವಾತ್ ಸಕೃತ್ಸಕೃದ್ವತಾತ್ಯತೌ” ಮನುಂ ೯-೭೦। 3.  
ಜನ್ಮ, ಉತ್ಪತ್ತಿ. “ಜ್ಞಾನೇ ಮೀನಂ ಕ್ಷಮಾ ಶಕ್ತೌ ತ್ಯಾಗೇ ಕ್ಷಮಾ  
ವಿಪರ್ಯಯಃ। ಗುಣಾ ಗುಣಾನುಬಂಧಿತ್ವಾತ್ ತಸ್ಯ ಸಪ್ರಸವಾ ಇವ”  
ರಘುಂ ೧-೨೨। 4. ಪುತ್ರ, ಮಗ, ಸಂತಾನ. “ವಧೂ-  
ವಿಧಾತ್ರಾ ಪ್ರತಿನಂದತೇ ಸ್ಮ ಕಲ್ಯಾಣಿ ವೀರಪ್ರಸವಾ ಭವೇತಿ”  
ಕುಮಾಂ ೭-೮೭। 5. ಕಾರಣ, ಹೇತು. ಕರಂ “ಅಪ್”।  
“ಉಪಕಾರಕಮಾಯತೇಭೃಶಂ ಪ್ರಸವಃ ಕರ್ಮಫಲಸ್ಯ ಭೂರಿಣಃ” ಕಿರಾಂ  
೨-೪೩। 6. ಪುಷ್ಪ, ಕುಸುಮ, ಹೂವು. “ಗಣಾ ನಮೇಕ-  
ಪ್ರಸವಾವತಂಸಾ ಭೂರ್ಜತ್ವಚಃ ಸ್ಪರ್ಶವತೀರ್ದಧಾನಾಃ” ಕುಮಾಂ ೧-೫೫।  
7. ಫಲ, ಹಣ್ಣು. “ಅಥ ರಿರಿಸುಮಮ್ ಯುಗಪದ್ಗಿರೋ ಕೃತಯಥಾ-  
ಸ್ವತಃಪ್ರಸವಶ್ರಿಯಾ” ಮಾಘಂ ೬-೧।



**ಪ್ರಸವನ ಪ್ರಸವನ (ನಂ)** 1. ಪ್ರಸವಿಸುವುದು, ಹೆರುವುದು. ಪ್ರ + ಷಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭವಿಮೋಚನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ಸಂತಾನಾಭಿವೃದ್ಧಿಶಕ್ತಿ, ಪ್ರಸವಿಸುವ ಚೈತನ್ಯ. ಪ್ರ + ಷು (ಪ್ರಸವೇಶ್ವಯೋಃ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 3. ಅಭ್ಯನುಜ್ಞೆ, ಅನುಮತಿ, ಅಪ್ಪಣೆ. ಪ್ರಸವೋಽಪ್ಯನುಜ್ಞಾನಮ್ ಸಿಂ ಕೌಂ।

**ಪ್ರಸವನೀಯ ಪ್ರಸವನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರಸವಿಸಲ್ಪಡುವ, ಗರ್ಭದಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ತರಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ + ಷಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭವಿಮೋಚನೆ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। 2. ಅನುಮತಿ ಕೊಡಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ + ಷು (ಪ್ರಸವೇಶ್ವಯೋಃ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। 3. ಪ್ರಸವಿಸಬೇಕಾದ. 4. ಅನುಮತಿ ಕೊಡಬೇಕಾದ. "ತವ್ಯಃ"। -ಸವಿತವ್ಯಮ್ -ಸವಿತವ್ಯಮ್, ವಾ ಇತ್। ಪಕ್ಷೇ -ಸೌತವ್ಯಮ್ -ಸೌತವ್ಯಮ್.

**ಪ್ರಸವಬಂಧನ ಪ್ರಸವಬಂಧನ (ನಂ)** ಹೂವು ಹಣ್ಣು ಕಾಯಿ ಗಳ ತೊಟ್ಟು. ಪ್ರಸವಾನಾಂ ಬಂಧನಂ ಯತ್ರ।

**ಪ್ರಸವಿತು ಪ್ರಸವಿತು (ಪುಂ)** ತಂದೆ, ಜನಕ, ರಕ್ಷಕ. ಪ್ರಸುತೇ ಜನಯತಿ - ಪ್ರ + ಷಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭವಿಮೋಚನೆ) "ತೃಚ್" (3-1-133)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸವಿತ್ರಿ -ಸವಿತ್ರಿ, "ಜೀಪ್" (4-1-4)।

**ಪ್ರಸವ್ಯ ಪ್ರಸವ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದ, ವಿರುದ್ಧವಾದ. ಪ್ರಗತಂ ಸವ್ಯಾತ್। 2. ಪ್ರಸವಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ + ಷಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭವಿಮೋಚನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಯತ್" (3-1-96)। 3. ಅನುಜ್ಞೆ ಕೊಡಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ + ಷು (ಪ್ರಸವೇಶ್ವಯೋಃ) ಆವಶ್ಯಕೇ "ಯತ್" (3-1-124)। -ಸಾವ್ಯಮ್ -ಸಾವ್ಯಮ್, 4. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಅನುಮತಿ ಕೊಡಬೇಕಾದ. (ನಂ) 5. ಪ್ರದಕ್ಷಿಣೆ, ದೇವರು ಹಿರಿಯರು ಮುಂತಾದವರು ಬಲ ಪಾಶ್ವರ್ಥದಲ್ಲಿರುವಂತೆ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಸುತ್ತಿಬರುವುದು. "ಪ್ರಸವ್ಯಾಪಿ ತಚ್ಚಕ್ರುತ್ವಿಜೋಽಗ್ನಿಚಿತಂ ನೃಪಮ್" ರಾಮಾಂ।

**ಪ್ರಸಹ ಪ್ರಸಹ (ಪುಂ)** 1. ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ ಇತರ ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನು ಹಿಂಸಿಸಿ ಕೊಂದು ತಿನ್ನುವ ಕ್ರೂರಪ್ರಾಣಿ, -ಪಕ್ಷಿ, ಹದ್ದು, ಗಿಡಗ, ಕುರವಕ ಹಕ್ಕಿ ಮೊದಲಾದುವು. "ಕಾಕೋ ಗೃಧ್ರ ಉಲೂಕಶ್ಚ ಚಿಲ್ಲಶ್ಚ ಶಶಘಾತಕಃ। ಚಾಪೋ ಭಾಸಶ್ಚ ಕುರರ ಇತ್ಯಾद्याಃ ಪ್ರಸಹಾಃ ಸ್ಮೃತಾಃ" ಭಾವಪ್ರಂ। 2. ತಾಳ್ಮೆ, ಸಹನೆ. (ವಿಂ) 3. ಬಹಳ ಸಹಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ, ಬಹಳ ಸಹನೆಯುಳ್ಳ. ಪ್ರ + ಷಹ (ಮರ್ಷಣೆ) "ಅಚ್" (3-1-134)।

**ಪ್ರಸಹನ ಪ್ರಸಹನ (ಪುಂ)** 1. ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ ಇತರ ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನು ಹಿಂಸಿಸಿ ಕೊಂದು ತಿನ್ನುವ ಹದ್ದು, ಗಿಡಗ, ಕುರವಕ, ಕಾಗೆ ಮೊದಲಾದ ಪಕ್ಷಿ, ಹಿಂಸಿಸುವ ಪ್ರಾಣಿ,

ಸಿಂಹ, ಹುಲಿ ಮೊದಲಾದುವು. ಪ್ರಗತಂ ಸಹನಂ ಸಹ್ಯಗುಣೋ ಯಸ್ಮಾತ್। "ಶಾದ್ವಲಸಿಂಹಶರಭಶ್ಚತರಕ್ಷುಮುಖ್ಯಾಃ ಯೇಽನ್ಯಾನ್ ಪ್ರಸಹ್ಯವಿನಿಹತ್ಯ ನಿವರ್ತಯಂತೇ। ತೇ ಕೀರ್ತಿತಾಃ ಪ್ರಸಹನಾಃ ಪಲಲಂ ತದೀಯಮರ್ಶಃ ಪ್ರಮೇಹಜಠರಾಮಯಜಾಡ್ಯಹಾರಿ" ರಾಜನಿಂ। (ನಂ) 2. ಸಹನೆ, ತಾಳ್ಮೆ. 3. ಅಲಿಂಗನ, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಪ್ರ + ಷಹ (ಮರ್ಷಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। (ವಿಂ) 4. ಸಹನೆಯುಳ್ಳ, ತಾಳ್ಮೆಯುಳ್ಳ. ಪ್ರಸಹನ-ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (4-2-126)। 5. ಸಹನೆಯಿಲ್ಲದ, ಸ್ವಲ್ಪವೂ ತಾಳ್ಮೆಯಿಲ್ಲದ. ಪ್ರಗತಂ ಸಹನಂ ಯಸ್ಮಾತ್।

**ಪ್ರಸಹ್ಯ ಪ್ರಸಹ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಹೆಚ್ಚು ಸಹಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಶಕ್ತವಾದ. ಪ್ರಕರ್ಷಣೆ ಸೌಕುಂ ಶಕ್ಯಃ - ಪ್ರ + ಷಹ (ಮರ್ಷಣೆ) "ಯತ್" (3-1-99)। (ಅವ್ಯಂ) 2. ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ, ಬಲವಂತದಿಂದ. "ಪ್ರಸಹ್ಯ ತೇಜೋಭಿರಸಂಖ್ಯತಾಂ ಗತೇರದಸ್ತವಯಾ ನುತ್ತಮನುತ್ತಮಂ ತಮಃ" ಮಾಘಂ 1-26।

**ಪ್ರಸಹ್ಯಚೋರ ಪ್ರಸಹ್ಯಚೋರ (ಪುಂ)** ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ ಕಳ್ಳತನ ಮಾಡುವವನು, ದರೋಡೆ ಮಾಡುವವನು, ಡೆಕಾಯಿತ. ಪ್ರಸಹ್ಯ ಬಲಾತ್ಕಾರೇಣ ಚೋರಃ।

**ಪ್ರಸಹ್ಯಹರಣ ಪ್ರಸಹ್ಯಹರಣ (ನಂ)** ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ ಅಪಹರಿಸುವುದು, ದರೋಡೆ ಮಾಡುವುದು.

**ಪ್ರಸಾದ ಪ್ರಸಾದ (ಪುಂ)** 1. ಸ್ವಚ್ಛವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಕೊಳೆಯಿಲ್ಲದೆ ನಿರ್ಮಲವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪ್ರ + ಷದ್ (ವಿಶರಣಾದಿ) "ಘಜ್" (3-3-118)। "ಅಯಾ ನ ಮುಚ್ಛತಿ ಮಲೋಪಹತಪ್ರಸಾದೇ ಶುದ್ಧೇ ತು ದರ್ಪಣತಲೇ ಸುಲಭಾವಕಾಶಾ" ಶಾಕುಂ 9-32। 2. ಅನುಗ್ರಹ, ಕೃಪೆ. "ತವ ಪ್ರಸಾದಾತ್ ಕುಸುಮಾಯುಧೋಽಪಿ ಸಹಾಯಮೇಕಂ ಮಧುಮೇವ ಲಘ್ವಾ" ಕುಮಾಂ 3-10। 3. (1) ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಶಬ್ದದ ಒಂದು ಗುಣ, ಕಾವ್ಯಬಂಧದ (ಪದರಚನೆಯ) ಶೈಥಿಲ್ಯ. "ಶೈಥಿಲ್ಯಂ ಪ್ರಸಾದಃ" ಕಾವ್ಯಾಂ ಸುಂ। "ಗಾಢತ್ವ-ಶೈಥಿಲ್ಯಾಮ್ಬಾಂ ವ್ಯುತ್ಕ್ರಮೇಣ ಮಿಶ್ರಣಂ ಬಂಧಸ್ಯ ಪ್ರಸಾದಃ" ರಸಗಂ। ಇದು ಶಬ್ದದ ಗುಣ. (2) ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಅರ್ಥಗತವಾದ ಒಂದು ಗುಣ, ಅರ್ಥದ ವೈಮಲ್ಯ, ವಿವಕ್ಷಿತವಾದ ಅರ್ಥಕ್ಕೆ ಸಮರ್ಪಕವಾದ ಪದಗಳ ಪ್ರಯೋಗ. "ಅಥವೈಮಲ್ಯಂ ಪ್ರಸಾದಃ" ಕಾವ್ಯಾಂ ಸುಂ। "ಯಾವರ್ಯಕಪದತ್ವರೂಪಮರ್ಥವೈಮಲ್ಯಂ ಪ್ರಸಾದಃ" ರಸಗಂ। ಇದು ಅರ್ಥಗುಣ. (3) ಕಾವ್ಯಕ್ಕೆ ಅತ್ಯಭೂತವಾದ ರಸದ ಒಂದು ಧರ್ಮ, ಪಠನ ಅಥವಾ ಶ್ರವಣಮಾತ್ರದಿಂದಲೇ ಸಹೃದಯರ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಆಕರ್ಷಿಸುವಂತಹ ಒಂದು ಧರ್ಮ. "ಚಿತ್ತಂ ವ್ಯಾಪ್ನೋತಿ ಯಃ ಕ್ಷಿಪ್ರಂ ಶುಕ್ಲೇನ್ಧನಮಿವಾನಲಃ। ಸ ಪ್ರಸಾದಃ ಸಮಸ್ತೇಷು ರಸೇಷು ರಚನಾಸು ಚ" ಸಾಂ 40-69। "ಶ್ರುತಮಾತ್ರಾ ವಾಕ್ಯಾರ್ಥ



ಕರತಲವದರಮಿವ ನಿವೇದಯಂತಿ ಘಟನಾ ಪ್ರಸಾದಸ್ಯ" ರಸಗಂ |  
ಇದು ರಸದ ಧರ್ಮ. "ನೈಕಮೋಜಃ ಪ್ರಸಾದೋ ವಾ ರಸಭಾವವಿದಃ  
ಕವೇ:" ಮಾಘಂ ೨-೮೩. 4. ವರ, ಬೇಡಿಕೆ. "ಅತರ್ಕ-  
ಯದ್ವಿಘ್ನಮಿವೇಷ್ಠಸಾಹಸಃ ಪ್ರಸಾದಮಿಚ್ಛಾಸದೃಶಂ ಪಿನಾಕಿನಃ"  
ಮಾಘಂ ೧-೪೯. 5. ತಿಳಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ, ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಯಾವ  
ಯೋಚನೆಯೂ ಇಲ್ಲದೆ ಸ್ವಚ್ಛವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯ.  
"ಗಹನಮಪರರಾತ್ರಪ್ರಾಪ್ತಬುದ್ಧಿಪ್ರಸಾದಾಃ ಕವಯ ಇವ ಮಹಿಪಾಶ್ಚಿಂತ-  
ಯಂತ್ಯರ್ಥಜಾತಮ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೬. 6. ದೇವರಿಗೆ ನಿವೇದನ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ವಸ್ತು. "ಆಸೀದ್ವಿಂಶಧ್ವಜೋ ರ'ಜಾ ಪ್ರಜಾಪಾಲನ-  
ತತ್ಪರಃ | ಪ್ರಸಾದಂ ಸತ್ಯದೇವಸ್ಯ ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ ದುಃಖಮವಾಪ ಸಃ"  
ಸ್ಕಾಂದಂ. 7. ನಿರ್ಮಲವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಶುದ್ಧವಾಗಿರುವಿಕೆ,  
ಕಶ್ಮಲವಿಲ್ಲದೆ ಸ್ವಚ್ಛವಾಗಿರುವಿಕೆ. 8. ಪ್ರಸನ್ನತೆ, ಸೌಮ್ಯತೆ,  
ಕಾಂತಿವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. "ಪ್ರಸಾದಲಕ್ಷ್ಮಿಂ ದಧತಂ ಸಮಗ್ರಾಂ ವಪುಃ  
ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಜನಾತಿಗೇನ" ಕಿರಾಂ ೩-೨. 9. ಗುರುಹಿರಿಯರು  
ಉಪಮಾಡಿ ಉಳಿದ ಅನ್ಯ. 10. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು.  
"ನ ಪ್ರಸಾದಮುಚಿತಂ ಗಮಿತಾ ಛಿನ್ನೋದಿತಂ ತಿಮಿರಮದ್ರಿವನೇಮ್ಯಃ"  
ಕಿರಾಂ ೯-೨೫.

**ಪ್ರಸಾದನ ಪ್ರಸಾದನ (ನಂ)** 1. ತಿಳಿಯಾಗಿ ಮಾಡುವುದು,  
ಸ್ವಚ್ಛವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ಷದ್ (ವಿಶರಣಾದಿ)  
ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). 2. ಸಂತೋಷಪಡಿಸು  
ವುದು, ಪ್ರಸನ್ನನಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. 3. ಶಾಂತನನ್ನಾಗಿ  
ಮಾಡುವುದು. ಸಮಾಧಾನ ಪಡಿಸುವುದು. ಮುನಿಸನ್ನ  
ತಿಳಿಗೊಳಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 4. ಸಮಾಧಾನ ಪಡಿಸುವ,  
ಒಲಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ. 5. ತಿಳಿಯಾಗಿ ಮಾಡುವ, ಸ್ವಚ್ಛವಾಗಿ  
ಮಾಡುವ. 6. ಸಂತೋಷ ಪಡಿಸುವ, ಪ್ರಸನ್ನನಾಗಿ  
ಮಾಡುವ. "ಪ್ರಸಾದನಂ ದೃಷ್ಟಿಮನಃಶ್ರುತೋನಾಮದಿವ್ಯಮಾಸ್ಕಂದಿತ-  
ದಿವ್ಯಮಾಸೀತ್" ಛಾಂದಂ ೧೩-೮೧. ಣಿಞ್ "ಯುಕ್"  
(೩-೩-೧೦೭). -ಸಾದನಾ -ಸಾದನಾ. 7. ಸೇವೆ,  
ಶುಶ್ರೂಷೆ. 8. ಪೂಜೆ. 9. ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು.

**ಪ್ರಸಾದಯತ್ ಪ್ರಸಾದಯತ್ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರಸನ್ನನಾಗಿ  
ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಸಂತೋಷಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಷದ್  
(ವಿಶರಣಾದಿ) + ಣಿಞ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪).  
"ಮೃದ್ವಜ್ಞನಾದೇನ ಮೃಗಾಕ್ಷುಮಿಲಿ ಪ್ರಸಾದಯನ್ ಪಾಲಯತೀಹ ದೈತ್ಯಾನ್"  
ಛಾಂದಂ ೧೮-೨೭. 2. ಸ್ವಚ್ಛವಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ.  
3. ಶಾಂತಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ.  
4. ಒಲಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬).  
-ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

**ಪ್ರಸಾದಿತ ಪ್ರಸಾದಿತ (ವಿಂ)** 1. ಅನುಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೃಪೆ  
ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಷದ್ (ವಿಶರಣಾದಿ) + ಣಿಞ್ "ಕ್ತಃ"

(೩-೨-೧೦೨). 2. ನಿರ್ಮಲವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಭವತ್  
ಪ್ರಸಾದಿತಸುರೋ ಮಹೋತ್ಸವಃ ಪ್ರಮದಾಜನಸ್ಯ ಸ ಚಿರಾಯ ಮಾಧವಃ"  
ಮಾಘಂ ೧೩-೩೮. 3. ಪ್ರಸನ್ನನಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಸಂತೋಷಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಸಮಾಧಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಸಂತೈಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಶುದ್ಧವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ವಚ್ಛ  
ವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪ್ರಸಾದಿನ್ ಪ್ರಸಾದಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಅನುಗ್ರಹಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ,  
ದಯೆಯ ಸ್ವಭಾವದ. 2. ಪ್ರಸಾದಗುಣದಿಂದ  
ಕೂಡಿದ. ಪ್ರಸಾದೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫).  
"ಪ್ರಸಿದ್ಧಾರ್ಥಪದತ್ವಂ ಯತ್ಸ ಪ್ರಸಾದೋ ನಿಗದ್ಯತೇ" | "ಆಜಸ್ವಿ-  
ವರ್ಣಾಂಜ್ವಲವೃತ್ತಶಾಲಿನಃ ಪ್ರಸಾದನೋಽನುಜ್ಞಿತಗೌತ್ರಸಂವಿದಃ"  
ಮಾಘಂ ೧೨-೩೫.

**ಪ್ರಸಾದಿಸ್ಥಲ ಪ್ರಸಾದಿಸ್ಥಲ (ನಂ)** (ವೀರಶೈವ ಮತದಲ್ಲಿ)  
ಸಾಧನೆಯ ಆರು ಸೋಪಾನಮಾರ್ಗಗಳಲ್ಲಿ ಮೂರನೆಯ  
ಸೋಪಾನ. ಅಂತರಂಗವು ಪ್ರಶಾಂತವಾಗಿದ್ದು ಜ್ಞಾನೋ  
ದಯವಾಗುವುದರಿಂದ ಎಲ್ಲದರಲ್ಲೂ ಶಿವನನ್ನು ಕಾಣುವ  
ಬುದ್ಧಿಯೂ ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಶಿವನ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿ  
ಯುವ ಬುದ್ಧಿಯೂ ತಾನು ಶಿವನ ಪೋಷಣೆಗೆ ಒಳಪಟ್ಟು  
ಶಿವನ ಮೂಲಕ ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಪ್ರಸಾದರೂಪವಾಗಿ ಪಡೆಯು  
ತ್ತಿರುವನೆಂಬ ಜ್ಞಾನವೂ ಈ ಮೂರನೆಯದಾದ ಪ್ರಸಾದಿ  
ಸ್ಥಲದಿಂದ ಲಭಿಸುವವು. ಸಾಧನದಿಂದ ಎಲ್ಲವನ್ನೂ  
ಶಿವನಿಗೆ ಅರ್ಪಿಸಿ ಆಮೇಲೆ ತಾನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವುದು  
ಪ್ರಸಾದಿಯ ಲಕ್ಷಣ.

**ಪ್ರಸಾಧನ ಪ್ರಸಾಧನ (ನಂ)** 1. ಅಲಂಕರಿಸುವುದು, ಶೃಂಗ  
ರಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ಸಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) + ಣಿಞ್ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೫). "ಅಕುರ್ವತ ಪ್ರಥಮಸಮಾಗಮೋಚಿತಂ ಚಿರೋ-  
ಜ್ಞಿತಂ ಸುರಗಣಿಕಾಃ ಪ್ರಸಾಧನಮ್" ಮಾಘಂ ೧೭-೩೪. 2.  
ಅಭರಣ, ಒಡವೆ. ಪ್ರಸಾಧಯತೇನಯಾ — ಪ್ರ + ಸಾಧ  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭). "ಮೃತಾರ್ಥಶೋಭಾಹ್ನಿಯಮಾಣನೇತ್ರಾಃ  
ಪ್ರಸಾಧನೇ ಸನ್ನಿಹಿತೇಽಪಿ ನಾರ್ಯಃ" ಕುಮಾರಂ ೭-೧೩. (ವಿಂ)  
3. ಅಲಂಕರಿಸುವವನು, ಶೃಂಗರಿಸುವವನು. ಪ್ರ + ಸಾಧ +  
ಣಿಞ್ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪). (ನಂ) 4. ಬಾಚಣಿಗೆ.

**ಪ್ರಸಾಧನಿ ಪ್ರಸಾಧನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಬಾಚಣಿಗೆ. ಪ್ರಸಾಧಯತೇ-  
ನೇನ — ಪ್ರ + ಸಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) + ಣಿಞ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭).  
"ಕೇಶಪ್ರಸಾಧನೀ ಕೇಶ್ಯಾ ರಜೋಜಂತುಮಲಾಪಹಾ" ಸುಶ್ರುತಂ  
ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ. 2. ಸಿದ್ಧಿ.

**ಪ್ರಸಾಧಯತ್ ಪ್ರಸಾಧಯತ್ (ವಿಂ)** ಅಲಂಕರಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಶೃಂಗರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಸಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) + ಣಿಞ್



“ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) ।  
-ಯಂತಿ -ಯೌಃ. “ಪ್ರಸಾಧಯಂತಿಮವಧೀಯಂ ಧಾತ್ರಿಮಜ್ಜ-  
ರಸಂಭಾವಿತಭೂಷಣಾನ್ಯಾ” ಯಾದಂ ೧೩-೫೩ ।

ಪ್ರಸಾಧಿಕಾ ಪ್ರಸಾಧಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೀವಾರ, ಒಂದು  
ಕಾಡು ಧಾನ್ಯ. ಪ್ರ + ಸಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) “ಫುಲ್”  
(೩-೧-೧೩೩) । 2. ಅಲಂಕರಿಸುವ ಹೆಂಗಸು. ಪ್ರ + ಸಾಧ  
+ ಣಿಚ್ “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) । “ಪ್ರಸಾಧಿಕಾಲಮ್ಬಿತ-  
ಮಗ್ರಪಾದಮಾಕ್ಷಿಪ್ಯ ಕಾಚಿತ್ ದ್ರವರಾಗಮೇವ” ಕುಮಾಂ ೭-೫೮ ।

ಪ್ರಸಾಧಿತ ಪ್ರಸಾಧಿತ (ವಿಂ) ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಶೃಂಗರಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಸಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) ।  
“ಶ್ರೀವಾದ್ಭುತೇವಾವಶೋಭಿತಾಪಿ ಪ್ರಸಾಧಿತಾ ಮಾಣವಕೇನ ಸೇಯಮ್”  
ನೇಷಂ ೭-೬೬ ।

ಪ್ರಸಾರ ಪ್ರಸಾರ (ಪುಂ) 1. ಹರಡುವುದು, ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು.  
ಪ್ರ + ಸ್ (ಗತೌ) “ವನ್” (೩-೩-೧೮) । 2. ಮುಂದಕ್ಕೆ  
ನೀಡುವುದು, ಮುಂದೆ ಚಾಚುವುದು. “ಪ್ರಸಾರಾಕುಚನಾಶ್ಚನ  
ನಿಃಶಲ್ಯಮಿತಿ ನಿರ್ದಿಶೇತ್” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ।

ಪ್ರಸಾರಣ ಪ್ರಸಾರಣ (ನಂ) 1. ಮುಂದಕ್ಕೆ ನೀಡುವುದು,  
ಐದು ವಿಧ ಕರ್ಮಗಳಲ್ಲೊಂದು ವಿಧ. ಪ್ರ + ಸ್ (ಗತೌ) +  
ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । (1) ಉತ್ಕೇಪಣಮ್  
(2) ಅವಕ್ಷೇಪಣಮ್ (3) ಆಕುಚನಮ್ (4) ಪ್ರಸಾರಣಮ್ ಮತ್ತು  
(5) ಗಮನಮ್ ಇವು ಐದು ಕರ್ಮಗಳು. 2. ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು,  
ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವುದು.

ಪ್ರಸಾರಯತ್ ಪ್ರಸಾರಯತ್ (ವಿಂ) ಹರಡುತ್ತಿರುವ,  
ಮುಂದಕ್ಕೆ ಚದರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಸ್ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್  
“ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । “ತದಪ್ರದೇಶೇಷು ತರಙ್ಗಹಸ್ತೇಃ  
ಪ್ರಸಾರಯನ್ ಸಂಪ್ರತಿ ಫೇನಪಙ್ಕ್ತಿಮ್” ಯಾದಂ ೧೮-೧೧೨ ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ಯಂತಿ -ಯೌಃ.

ಪ್ರಸಾರಿಣಿ ಪ್ರಸಾರಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಳ್ಳುಗನೆಗಿಡ. ಪ್ರಸಾರತಿ  
—ಪ್ರ + ಸ್ (ಗತೌ) “ಣಿನಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) । “ಡೀಪ್” ।

ಪ್ರಸಾರಿತ ಪ್ರಸಾರಿತ (ವಿಂ) 1. ಮುಂದಕ್ಕೆ ನೀಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಮುಂದಕ್ಕೆ ಚಾಚಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಸ್ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತಃ”  
(೩-೨-೧೦೨) । “ಪ್ರತ್ಯುಜ್ಜಗಾಮೇವ ಗುರುಪ್ರಮೋದಪ್ರಸಾರಿತೋ-  
ತುಙ್ಗತರಙ್ಗವಾಹುಃ” ಮಾಘಂ ೩-೭೮ । 2. ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ವಿಸ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಽವಜಾಂಶುಕಂಧ್ರವಮನುಕೂಲಮಾರುತಪ್ರಸಾರಿತಃ  
ಪ್ರಸಂಭೂತೋಪಹೃತಯಃ” ಮಾಘಂ ೧೭-೪೯ ।

ಪ್ರಸಾರಿನ್ ಪ್ರಸಾರಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಮುಂದಕ್ಕೆ ನೀಡುವ,  
ಮುಂದಕ್ಕೆ ಚಾಚುವ, ಪ್ರಸಾರಯತಿ —ಪ್ರ + ಸ್ (ಗತೌ) +  
ಣಿಚ್ “ಧಿನುಙ್” (೩-೨-೧೪೫) । 2. ಹರಡುವ

ಸ್ವಭಾವದ, ವ್ಯಾಪಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ. 3. ಹೆಚ್ಚುವ, ವೃದ್ಧಿ  
ಹೊಂದುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೫) । -ಸಾರಿಣಿ  
-ಸಾರಿಣೀ. “ಅನಾಸ್ಥಯಾ ಸುನಕರಪ್ರಸಾರಿಣಿ ದದಶ್ ದೂನಃ  
ಸ್ಥಲಪದ್ಮಿನಿ ನಲಃ” ನೇಷಂ ೧-೮೮ । “ಪ್ರಸಾರಿಣಿ ಸಪದಿ  
ನಭಸ್ಥಲೇ ತತಃ ಸಮೀರಣಭ್ರಮಿತಪರಾಗರೂಪಿತಾ” ಮಾಘಂ  
೧೭-೪೪ ।

ಪ್ರಸಿತ ಪ್ರಸಿತ (ನಂ) 1. ಕೀವು. ಪ್ರ + ಪಿ (ಅಂತಕರ್ಮಣಿ)  
“ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । (ವಿಂ) 2. ಅಸಕ್ತನಾದ,  
ತತ್ಪರನಾದ. ಪ್ರ + ಪಿಚ್ (ಬಂಧನೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) ।  
3. ಯಾವಾಗಲೂ ಇರುತ್ತಿದ್ದ, ನಿತ್ಯವೂ ಇರುತ್ತಿದ್ದ.  
“ಅವಸಿತಂ ಹಸಿತಂ ಪ್ರಸಿತಂ ಮುಢಾ ವಿಸಿತಂ ಹಸಿತಂ ಸ್ಮರ-  
ಭಾಸಿತಮ್” ಭट्टಿಂ ೧೦-೬ । “ತತ್ಪರೇ ಪ್ರಸಿತಾಸಕ್ತಾ-  
ವಿಷ್ಣುರ್ದೃಕ್ತ ಉತ್ಸುಕಃ” ಅಮಂ । 4. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಂಧಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಪ್ರಸಿದ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಶೃಂಗರಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಪಿಚ್ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) ।  
“ಯಥಾ ಪ್ರಸಿದ್ಧಮಧುರಂ ಶಿರೋರಹೈರ್ಜಟಾಭಿರಪ್ಯವಮಮುತದಾನನಮ್”  
ಕುಮಾಂ ೫-೯ । 2. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಪಡೆದ, ಪ್ರಾತಿಯನ್ನು ಗಳಿಸಿದ,  
ಕೀರ್ತಿಯನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿದ, ಹೆಸರುವಾಸಿಯಾದ. “ಏಕಾಂತ  
ಮೌಘ್ಯಾನವಬುದ್ಧವಿಭ್ರಮಃ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಿಸ್ತಾರಗುಣೈವಿಲೋಚನಃ”  
ಮಾಘಂ ೧೨-೩೯ ।

ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಾತಿ, ಹೆಸರುವಾಸಿ, ಕೀರ್ತಿ.  
ಪ್ರ + ಪಿಚ್ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) । “ವಿದ್ಯಾ-  
ಶ್ರುತಸ್ಯ ಏವೇತಾ ಇತಿ ನೋ ಗುರುದರ್ಶನಮ್ । ಪೃಥಕ್ ಪೃಥಕ್ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿರ್ವಿ  
ಯಾಸು ಲೋಕೋ ವ್ಯವಸ್ಥಿತಃ” ಕಾಮಂದಂ । 2. ಭೂಷಣ, ಅಭರಣ,  
ಬಡವೆ. 3. ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ, ಕಾರ್ಯ ಕೈಗೊಡುವುದು.  
“ಆವಿಧಿಷಾಮಾ ತಪಸಾಂ ಪ್ರಸಿದ್ಧೇರಸ್ಮದ್ವಿನಾ ಮಾ ಭುಷಮುನ್ಮನಿಭುಃ”  
ಕಿರಾಂ ೩-೩೯ ।

ಪ್ರಸುಪ್ತ ಪ್ರಸುಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಮಲಗಿರುವ, ನಿದ್ರಿಸುತ್ತಿರುವ.  
ಪ್ರ + ಪಿ ಷಪ್ (ಶಯೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) । 2. ಬೆನ್ನಾಗಿ  
ನಿದ್ರಿಸುವ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಸುಪ್ತಃ । “ಕಥಂ ಪ್ರಿಯವಚನೇನೇವ ಮೇ  
ವಕ್ಷಸಿ ಪ್ರಸುಪ್ತಾ” ಉಂ ರಾಂ ೧ ।

ಪ್ರಸುಪ್ತಿ ಪ್ರಸುಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಿದ್ರೆ. ಪ್ರ + ಪಿ ಷಪ್ (ಶಯೇ)  
“ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) ।

ಪ್ರಸು ಪ್ರಸು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಾಯಿ, ಜನನಿ. ಪ್ರಸುಯತೇ—ಪೂಜ್  
(ಪ್ರಾಣಿಪ್ರಸವೇ) “ವಿವ್” (೩-೨-೬೧) । “ಪ್ರಸುಪ್ರಸಾದಾಧಿ-  
ಗತಾ ಪ್ರಸೂನಮಾಲಾ ನಲಸ್ಯೋದ್ಭ್ರಮವೀಕ್ಷಿತಸ್ಯ” ನೇಷಂ ೬-೪೯ ।  
2. ಹೆಣ್ಣು ಕುದುರೆ. 3. ಲತೆ, ಬಳ್ಳಿ. 4. ಬೆಂಕಿ.



(ವಿಂ) 5. ಪ್ರಸವಿಸುವ. ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಹೆರುವ. "ಸ್ತ್ರೀ-  
ಪ್ರಸೂತ್ರಾಧಿವೇತ್ತವ್ಯಾ ಪುರುಷದ್ವೇಷಿಣಿ ತಥಾ" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೭೩ |  
"ಪ್ರಸೂರವಾಜನನ್ಯೋಶ್ಚ ಕದಲಿವೀರೂಢೋರಪಿ" ವಿಶ್ವಂ |

**ಪ್ರಸೂಕಾ ಪ್ರಸೂಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ಕುದುರೆ. ಪ್ರಸೂರವ  
ಪ್ರಸೂಕಾ |

**ಪ್ರಸೂತ ಪ್ರಸೂತ** (ನಂ) 1. ಪುಷ್ಪ, ಕುಸುಮ, ಹೂವು.  
ಪ್ರಸೂಯತೇ—ಪ್ರ+ಪೂಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಪ್ರಸವೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |  
(ವಿಂ) 2. ಜನಿಸಿದ, ಹುಟ್ಟಿದ. ಪ್ರ+ಪೂಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭ-  
ವಿಮೋಚನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | "ತದನ್ವಯೇ ಶುದ್ಧಿಮತಿ  
ಪ್ರಸೂತ: ಶುದ್ಧಿಮತ್ತರ:" ರಘುಂ ೧-೧೨ | 3. ಉತ್ಪನ್ನವಾದ,  
ಉಂಟಾದ. "ಯತ್ರ ಸ್ತುತಕೋರತಯಾ ಪ್ರಸೂತ: ಸಾನೂನಿ ಗಂಧ:  
ಸುರಭೀಕರೋತಿ" ಕುಮಾಂ ೧-೧ |

**ಪ್ರಸೂತಾ ಪ್ರಸೂತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಸವಿಸಿದ ಹೆಂಗಸು, ಮಗು  
ವನ್ನು ಹೆತ್ತ ಹೆಂಗಸು. ಪ್ರಸೂತೇ ಸ್ಮ—ಪ್ರ+ಪೂಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭ-  
ವಿಮೋಚನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | "ಅಕಾಲೇ ಚ  
ಪ್ರಸೂತಾ ಸ್ತ್ರೀ ಸ್ನೇಹಪಾನಂ ವಿವರ್ಜಯೇತ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ  
೩೨-೪೮ |

**ಪ್ರಸೂತಿ ಪ್ರಸೂತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜನನ, ಹುಟ್ಟುವುದು.  
ಪ್ರ+ಪೂಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭವಿಮೋಚನೇ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) |  
"ಪ್ರಸೂತಿಭಾಜ: ಸರ್ಗಸ್ಯ ತಾವೇವ ಪಿತರೌ ಸ್ಮೃತೌ" ಕುಮಾಂ  
೨-೭ | 2. ಪ್ರಸವ, ಹೆರುವುದು. ಪ್ರ+ಪೂಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಪ್ರಸವೇ)  
"ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | "ಕೃಷ್ಣಾ ವಚಾ ಚಾಪಿ ಜಲೇನ ಪಿಪ್ಪಾ  
ಸೇರಣ್ಡತೇಲಾ ಖಲು ನಾಭಿಲೇಪಾತ್ | ಸುಖಂ ಪ್ರಸೂತಿ ಕುಲೇಽಜ್ಞಾನಾಂ  
ನಿಪೀಡಿತಾನಾಂ ಬಹುಭಿ: ಪ್ರಮಾದೇ:" ಭಾವಪ್ರಂ | 3. ಹಕ್ಕಿಗಳು  
ಮೊಟ್ಟೆಯಿಡುವುದು. "ಮದೇಕಪುತ್ರಾ ಜನನಿ ಜರಾತುರಾ ನವ-  
ಪ್ರಸೂತಿವರತಾ ತಪಸ್ವಿನಿ" ನೈಷಂ ೧-೧೩೫ | 4. ಉತ್ಪತ್ತಿ,  
(ಪುಷ್ಪವು ಗಿಡಗಳಲ್ಲಿ) ಬೆಳೆಯುವುದು. "ಆದ್ಯೇ ವ:  
ಕುಸುಮಪ್ರಸೂತಿಸಮಯೇ ಯಸ್ಯಾ ಭವತ್ಯುತ್ಸವ:" ಶಾಕುಂ ೪-೮ |  
5. ಸಂತಾನ, ಸಂತತಿ. ಪ್ರಜೆ, ಮಕ್ಕಳು. "ಸ್ಥಿತೈ ದೃಢಯತೌ  
ದೃಢಯಾನ್ ಪರಿಣೇತು: ಪ್ರಸೂತಯೇ" ರಘುಂ ೧-೨೫ | 6. ಉತ್ಪತ್ತಿಯು  
ಸೃಷ್ಟಿ. "ತ್ವಂ ಸರ್ವಸ್ಯ ಭುವನಸ್ಯ ಪ್ರಸೂತಿ: ತ್ವಮೇವಾಗ್ರೇ ಭವಸಿ  
ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ" ಭಾಂ ಆದಿಂ | 7. ಉತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣ. "ನ  
ಕೇವಲಾನಾಂ ಪಂಚಸಾಂ ಪ್ರಸೂತಿಮವೇಹಿ ಮಾಂ ಕಾಮದುಘಾಂ ಪ್ರಸನ್ನಾಮ್"  
ರಘುಂ ೨-೬೩ | 8. ದಕ್ಷನ ಪತ್ನಿ, ಸತೀದೇವಿಯ ತಾಯಿ.  
9. ಪ್ರೇರಣೆ. ಪೂ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭) |

**ಪ್ರಸೂತಿಕಾ ಪ್ರಸೂತಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಸವಿಸಿದ ಹೆಂಗಸು,  
ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಹೆಡೆದ ಹೆಂಗಸು. ಪ್ರಸೂತಾ "ಕನ್" (೫-೩-೭೫) |

**ಪ್ರಸೂತಿಜ ಪ್ರಸೂತಿಜ** (ನಂ) ಕಪ್ಪು, ನೇವು.

**ಪ್ರಸೂನ ಪ್ರಸೂನ** (ನಂ) 1. ಕುಸುಮ, ಪುಷ್ಪ, ಹೂವು.  
ಪ್ರಸೂಯತೇ ಸ್ಮ—ಪ್ರ+ಪೂಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭವಿಮೋಚನೇ) "ಕ್ತ:"  
(೩-೨-೧೦೨) | ನಿಷ್ಠಾತಸ್ಯ ನಕಾರ: (೮-೨-೪೫) |  
"ತತ: ಪ್ರಸೂನೇ ಚ ಫಲೇ ಚ ಮಂಜುಲೇ ಸ ಸಮುಖಸ್ಥಾಙ್ಗುಲಿನಾ  
ಜನಾಧಿಪ:" ನೈಷಂ ೧-೭೬ | 2. ಫಲ, ಹೆಣ್ಣು. (ವಿಂ)  
3. ಹುಟ್ಟಿದ, ಉತ್ಪನ್ನವಾದ. "ಪ್ರಸೂನೌ ವಾಚ್ಯವಜ್ಜಾತೇ  
ಕಲಿವಂ ತು ಫಲಪುಷ್ಪಯೋ:" ಮೇದಿಂ |

**ಪ್ರಸೂನಧನ್ವನ್ ಪ್ರಸೂನಧನ್ವನ್** (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ.  
ಪ್ರಸೂನಂ ಪುಷ್ಪಂ ಧನ್ಯಸ್ಯ "ಅನಡ್" (೫-೪-೧೩೩) | "ಪ್ರಸೂನ-  
ಧನ್ವಾ ಶರಸಾತ್ಕರೋತಿ ಮಾಮಿತಿ ಕುಧಾಕ್ರುದ್ಯತ ತೇನ ಕೇತಕಮ್"  
ನೈಷಂ ೧-೮೧ |

**ಪ್ರಸೂನವೃಷ್ಟಿ ಪ್ರಸೂನವೃಷ್ಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಷ್ಪವೃಷ್ಟಿ,  
ಧಾರಾಕಾರವಾಗಿ ಪುಷ್ಪವು ಬೀಳುವುದು.

**ಪ್ರಸೂತ ಪ್ರಸೂತ** (ಪುಂ) 1. ಅರ್ಧಾಂಜಲಿ, ಅರ್ಧ ಬೊಗಸೆ,  
ನೀರು ನಿಲ್ಲುವಂತೆ ಗುಳಿಯಾಗಿ ಮಾಡಿದ ಹಸ್ತ. ಪ್ರ+ಸ್ಮ  
(ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | ಪ್ರಕೃತಂ ಸ್ಮೃತಮಸ್ಯ ಇತಿ ವಾ |  
(ನಂ)? 2 ಪಲಗಳ ಪ್ರಮಾಣ. (ವಿಂ) 3. ಮುಂದಕ್ಕೆ  
ನೀಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಮುಂದಕ್ಕೆ ಚಾಚಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರ+ಸ್ಮ "ಕ್ತ:"  
(೩-೨-೧೦೨) | 4. ದೀರ್ಘವಾದ, ಉದ್ದವಾದ. "ಅಕ್ಷೋಭಿ  
ಪ್ರಸೂತವಿಲೋಕಬಾಹುಪಕ್ಷಯೋಷಾಣಾಮುಹುರೋಜಗಣ್ಡಶೇಲೆ:" ಮಾಘಂ  
೮-೨೫ | 5. ವಿನಯಶಾಲಿ, ವಿಧೇಯ, ವಿನೀತ. 6. ಹೆಚ್ಚಿ  
ರುವ, ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿರುವ, ಬೆಳೆದಿರುವ. "ನ ತೇಜಸ್ತೇಜಸ್ವಿ  
ಪ್ರಸೂತಮಪರೇಷಾಂ ವಿಪಹತೇ ಸ ತಸ್ಯ ಸ್ವೋ ಭಾವ: ಪ್ರಕೃತಿ-  
ನಿಯತತ್ವಾದಕೃತಕ:" ಉಂ ರಾಂ ೬-೧೪ | 7. ಹೊರಗೆ  
ಹರಡಿರುವ, ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವ, ಹೊಮ್ಮಿ ಹೊರಗೆ ಬರುವ.  
"ಸ್ಫುರನ್ಮಣಿಪ್ರಸೂತಮರೀಚಿಸ್ಮೃಚಿಭಿ:" ಮಾಘಂ ೧೭-೫೧ |  
8. ವೇಗವಾದ. 9. ಮುಂದೆ ನಡೆದ. ಮುಂದೆ ಹೋಗು  
ತ್ತಿರುವ. "ಪ್ರಸೂತಂ ರಭಸಾದಯೋಽಭಿನಿಲಾ ಪ್ರತಿಪಾದಂ ಪರಿತೋಽಭಿ-  
ವೇಶ್ಯಂತೀ" ಮಾಘಂ ೨೦-೫೧ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತಾ -ತಾ.  
10. ಜಂಘೆ, ಮೊಳಕೆಗಳು. ಪ್ರಸೂಯತೇ ಸ್ಮ—ಪ್ರ+ಸ್ಮ  
(ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ಪ್ರಸೂತ: ಸುಪ್ರಸಾರೇ  
ಸ್ಯಾಡ್ವಿನೀತೇ ವೇಗಿತೇ ತ್ರಿಷು | ಅರ್ಧಾಂಜಲೌ ತು ಪುಲಿಂಜೋ  
ಜಹ್ವಾಘಾಂ ಪ್ರಸೂತಾ ಮಾತಾ" ಮೇದಿಂ |

**ಪ್ರಸೂತಿ ಪ್ರಸೂತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುನ್ನಡೆ, ಪ್ರಗತಿ, ಬೆಳೆವಣಿಗೆ.  
ಪ್ರ+ಸ್ಮ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | 2. ಅರ್ಧಾಂಜಲಿ,  
ಅರ್ಧ ಬೊಗಸೆ, ಗುಳಿಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಹಸ್ತ. 3.  
2 ಪಲಗಳ ಪ್ರಮಾಣ. 4. ಸಂತತಿ. ಸಂತಾನ, ಪ್ರಜೆ,  
ಮಕ್ಕಳು. "ವರ್ಧಿತಾನಿ ಪ್ರಸೂತಾ ವೈ ವಿನತಾಕುಲಕರ್ತೃಭಿ:"  
ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೦೧-೩ |



**ಪ್ರಸೇಕ ಪ್ರಸೇಕ** (ಪುಂ) 1. ಸೇಚನೆಮಾಡುವುದು. ಸಿಂಪಿಸುವುದು, ಚೆಮುಕಿಸುವುದು. ಪ್ರ+ಪಿಚ (ಕ್ಷರಣ) "ಛ" (3-3-18). 2. ಒಂದು ರೀತಿ. "ಶ್ವಾಸಕಾಸಪ್ರತಿಶ್ವಾಸ-ಪ್ರಸೇಕಾರೋಚಕಜ್ವರಾನ್ | ಹಂತಿ ಮೂಲಕಯುಷಸ್ತು ಕಫಮೇದೋಗಲಾಮ-ಯಾನ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬ |

**ಪ್ರಸೇದಿವಸ್ ಪ್ರಸೇದಿವಸ್** (ವಿಂ) ಪ್ರಸನ್ನನಾದ, ಸಂತುಷ್ಟನಾದ, ಸುಪ್ರೀತನಾದ. ಪ್ರ+ಪದಲ್ (ವಿಶರಣಗತ್ಯವಸಾದನೇಷು) "ವಸು:" (3-1-108) | "ಪ್ರಸೇದಿವಾಸಂ ತಮುಪಾಸಸಾದ ವಮನ್ನಿವಾಂತೇ ವಿನಯೇನ ಜಿಣ್ಣು:" ಕಿರಾಂ 3-24 | ನೇಷಂ 2-19 |

**ಪ್ರಸೇವ ಪ್ರಸೇವ** (ಪುಂ) 1. ಬಿಡಿರಿನ ತಟ್ಟೆ. ಪ್ರ+ಪಿವ (ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) "ಛ" (3-3-19) | 2. ವೀಣೆಯ ಹೆರಳು, ವೀಣಾದಂಡದ ಕೆಳಗೆ ಗಂಭೀರವಾದ ಶ್ರಾವ್ಯವಾದ ಶಬ್ದ ಹೊರಡಲು ಇಟ್ಟಿರುವ ಸೋರೆ ಬುರುಡೆ. "ಪ್ರಸೇವ: ಪುಸಿ ವೀಣಾಙ್ಗೆ ಸ್ಯುತೇ ಚ" ಮೇದಿಂ |

**ಪ್ರಸೇವಕ ಪ್ರಸೇವಕ** (ಪುಂ) 1. ವೀಣಾದಂಡದ ಕೆಳಗೆ ಮಧುರವಾದ ಶಬ್ದ ಹೊರಡಲು ಇಟ್ಟಿರುವ ಬುರುಡೆ. ಸೋರೆ ಬುರುಡೆ. ಪ್ರಸೇವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" | 2. ಬಿಡಿರಿನ ತಟ್ಟೆ.

**ಪ್ರಸಕ್ಂದನ ಪ್ರಸಕ್ಂದನ** (ನಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಜಾರಿ ಬೀಳುವುದು. ಪ್ರ+ಸ್ಕಂದಿರ್ (ಗತಿಶೋಷಣಯೋ:) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) | 2. ವಿರೇಕ, ಭೇದಿ. 3. ದಾರಿತಪ್ಪಿ ನಡೆಯುವುದು, ಅಪರಾಧವೆಸಗುವುದು.

**ಪ್ರಸಕ್ತ ಪ್ರಸಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಜಾರಿಬಿದ್ದ. ಪ್ರ+ಸ್ಕಂದಿರ್ (ಗತಿಶೋಷಣಯೋ:) "ಕ್ತ:" (3-4-92) | 2. ದಾರಿತಪ್ಪಿ ನಡೆದ, ಅಪರಾಧವೆಸಗಿದ.

**ಪ್ರಸ್ಥಲತ್ ಪ್ರಸ್ಥಲತ್** (ವಿಂ) ಎಡವಿ ಬೀಳುತ್ತಿರುವ, ಮುಗ್ಗುರಿಸುತ್ತಿರುವ.

**ಪ್ರಸ್ಥಲನ ಪ್ರಸ್ಥಲನ** (ನಂ) ಎಡವಿ ಬೀಳುವುದು, ಮುಗ್ಗುರಿಸಿ ಬೀಳುವುದು. ಪ್ರ+ಸ್ಥಲ (ಸಂಚಲನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) |

**ಪ್ರಸ್ಥಲಿತ ಪ್ರಸ್ಥಲಿತ** (ವಿಂ) ಎಡವಿದ, ಮುಗ್ಗುರಿಸಿ ಬಿದ್ದ. ಪ್ರ+ಸ್ಥಲ (ಸಂಚಲನೇ) "ಕ್ತ:" (3-4-92) |

**ಪ್ರಸ್ತರ ಪ್ರಸ್ತರ** (ಪುಂ) 1. ಶಿಲೆ, ಕಲ್ಲು. ಪ್ರಸ್ತುಣಾತಿ-ಪ್ರ+ಸ್ತು (ಆಚ್ಛಾದನೇ) "ಅಚ್" (3-1-134) | "ಪಾಷಾಣ-ಪ್ರಸ್ತರಗ್ರಾವೋಪಲಾಶ್ವಮಾನ:ಶಿಲಾ ದೃಢತ್" ಅಮಂ | 2. ಮಣಿ, ರತ್ನ. 3. ಹಾಸಿಗೆ, ಸುಪ್ಪತ್ತಿಗೆ, ಮೆತ್ತೆ. 4. ಎಲೆ ಚಿಗುರು ಕುಸುಮ ಇವುಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಹಾಸಿಗೆ. "ಪಲ್ಲವಾರ್ಥವಿರಚಿತೇ ಶಯನೀಯೇ ತು ಸಂಸ್ತರ: | ಪ್ರಸ್ತರ:

ಪ್ರಸ್ತಿರೇವೇತಿ ಪ್ರಸ್ತಾರೋಽಪಿ ಚ ಕುತ್ರಚಿತ್" | 5. ದರ್ಭೆಯ ಒಂದು ಮುಷ್ಟಿ. 6. ಸಮವಾಗಿರುವ ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಮೇಲ್ಮೈ.

**ಪ್ರಸ್ತರಣ ಪ್ರಸ್ತರಣ** (ನಂ) 1. ಹಾಸಿಗೆ, ಸುಪ್ಪತ್ತಿಗೆ, ಮೆತ್ತೆ. 2. ಹರಡುವುದು, ಹಾಸುವುದು.

**ಪ್ರಸ್ತವನ ಪ್ರಸ್ತವನ** (ನಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸ್ತೋತ್ರ ಮಾಡುವುದು. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಶ್ಲಾಘಿಸುವುದು, ಕೊಂಡಾಡುವುದು. ಪ್ರ+ಪ್ತು (ಸ್ತುತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) |

**ಪ್ರಸ್ತವನೀಯ ಪ್ರಸ್ತವನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸ್ತೋತ್ರ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಶ್ಲಾಘಿಸಲ್ಪಡುವ, ಕೊಂಡಾಡಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ+ಪ್ತು (ಸ್ತುತೌ) ಕರ್ಮಂ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) | 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೊಗಳಬೇಕಾದ. 4. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕೊಂಡಾಡಬೇಕಾದ. 5. ಹೊಗಳಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಸ್ತೋತ್ರವೊಡಲು ಅರ್ಹನಾದ. 6. ಕೊಂಡಾಡಲು ಅರ್ಹನಾದ. ಶ್ಲಾಘಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. "ತವ್ಯ:" (3-1-96) | -ಸ್ತೋತವ್ಯ: -ಸ್ತೋತವ್ಯ:

**ಪ್ರಸ್ತವ್ಯ ಪ್ರಸ್ತವ್ಯ** (ವಿಂ) ಸ್ತುತಿಗೆ ಅರ್ಹನಾದ. ಹೊಗಳಿಕೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದ. ಪ್ರ+ಸ್ತವಮರ್ಹತಿ "ಯ:" (4-1-66) |

**ಪ್ರಸ್ತಾರ ಪ್ರಸ್ತಾರ** (ಪುಂ) 1. ಹರಡುವುದು, ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು. ಪ್ರ+ಸ್ತು (ಆಚ್ಛಾದನೇ) "ಛ" (3-3-18) | 2. ಭಂದಾಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ವೃತ್ತಗಳ ಪ್ರಭೇದಗಳನ್ನು ತಿಳಿಯುವ ಒಂದು ಉಪಾಯ. "ಪಾದೇ ಸರ್ವಗುರಾವಾದೇಲೈಃ ನ್ಯಸ್ಯ ಗುರೋಃ | ಯಥೋಪರಿ ತಥಾ ಶೇಷ ಭೂಯ: ಕುರ್ಯಾದಮ್ ವಿಧಿಮ್ || ಅನೇ ದ್ವಾದ್ಗುರುಣೇಷ ಯಾವತ್ಸರ್ವಲಕ್ಷುರ್ಭವೇತ್ | ಪ್ರಸ್ತಾರೋಽಂ ಸಮಾಖ್ಯಾತಶ್ಚಂದೋವಿಚಿತಿವೇದಿಭಿ:" ವೃಂ ೨೦ | 3. ವನ, ಕಾಡು. 4. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಸಮತಲವಾಗಿರುವ ಮೇಲ್ಮೈ. 5. ಪುಷ್ಪಲತಾದಿಗಳಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಹಾಸಿಗೆ.

**ಪ್ರಸ್ತಾವ ಪ್ರಸ್ತಾವ** (ಪುಂ) 1. ಪೀಠಿಕೆ, ಒಂದು ಗ್ರಂಥದಲ್ಲಿನ ಪ್ರತಿಪಾದ್ಯ ವಿಷಯಗಳ ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಪರಿಚಯ. 2. ಅವಕಾಶ, ಅವಸರ, ಸರಿಯಾದ ಕಾಲ, ಸಂದರ್ಭ. ಪ್ರ+ಪ್ತು (ಸ್ತುತೌ) "ಛ" (3-3-18) | "ಶಿಷ್ಯಾಯ ಭೃಹತಾಂ ಪತ್ಯು: ಪ್ರಸ್ತಾವಮದಿಶದ್ಧಶಾ" ಮಾಘಂ 2-68 | 3. ಉಲ್ಲೇಖ, ಸೂಚನೆ, ನಿರ್ದೇಶ. "ಅಪಿ ನಾಮ ಮೃಗತೃಣಿಕೇವ ನಾಮಮಾತ್ರ-ಪ್ರಸ್ತಾವೋ ಮೇ ವಿಷಾದಾಯ ಕಲ್ಪತೇ" ಶಾಕುಂ 9 | 4. ಪ್ರಕರಣ, ಸಂದರ್ಭ, ಸನ್ನಿವೇಶ. "ಪ್ರಸ್ತಾವದೇಶಕಾಲಾದೇವೈಶಿಷ್ಟ್ಯಾತ್ ಪ್ರತಿಭಾಜುಷಾಮ್" ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ | 5. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ.

**ಪ್ರಸ್ತಾವನಾ ಪ್ರಸ್ತಾವನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. ಪ್ರಸ್ತಾವಯತಿ ಕಾರ್ಯಾದಿಕಮ್-ಪ್ರ+ಪ್ತು (ಸ್ತುತೌ) +



ಣಿನ್ "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭)। "ಡಕ್ಷಾರವನಿರಾರ್ಯಬಾಲ-  
ಚರಿತಪ್ರಸ್ತಾವನಾಡಿಂಡಿಮಃ" ಮಂ ವೀಂ ೧-೫೪। 2. ಪೀಠಿಕೆ,  
ಉಪ್ಪೇದ್ವಾತ. "ಪ್ರಸ್ತಾವನಾ ಕಲ್ಪವೇಷಾ ಕಪಟನಾಟಕಸ್ಯ"  
ಮಾಲತೀಂ ೨। 3. ಅಮುಖ, ನಾಟಕ (ರೂಪಕ)ಗಳ  
ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ನಟ ವಿದೂಷಕ ಅಥವಾ ಪಾರಿಪಾಶ್ವರ್ಯಕನು  
ಸೂತ್ರಧಾರನೊಡನೆ ಕಲಿತು ಮಾತನಾಡುವುದು. ನಟ  
ಸೂತ್ರಧಾರರು ತಮ್ಮ ಸ್ವಂತ ವ್ಯವಹಾರದಿಂದ ನಾಟಕದ  
ಕಥಾವಸ್ತುವನ್ನು ಸೂಚಿಸಿ ಮುಂದಿನ ಪಾತ್ರಪ್ರವೇಶ  
ವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವುದು. "ನಟಿ ವಿದೂಷಕೋ ವಾಪಿ ಪಾರಿ-  
ಪಾಶ್ವಕ ಏವ ವಾ। ಸೂತ್ರಧಾರೆಣ ಸಹಿತಾಃ ಸಂಲಾಪಂ ಯತ್ರ ಕುರ್ವತೇ।  
ಚಿತ್ರವಾಕ್ಯೈಃ ಸ್ವಕಾರ್ಯೋತ್ಥೈಃ ಪ್ರಸ್ತುತಾಕ್ಷೇಪಿಭಿರ್ಮಿಥಃ। ಅಮುಖಂ  
ತನ್ತು ವಿಜ್ಞೇಯಂ ನಾಮ್ನಾ ಪ್ರಸ್ತಾವನಾಪಿ ಸಾ" ಸಾಂ ೬೦ ೬-೩೧,  
೩೨।

**ಪ್ರಸ್ತಾವಿತ ಪ್ರಸ್ತಾವಿತ** (ವಿಂ) ನಿರ್ದೇಶಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು,  
ಉಲ್ಲೇಖ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರ + ಷ್ಟು (ಸ್ತುತೌ) + ಣಿನ್  
"ಕ್ತಃ" (೩-೨-೨೦೨)। "ಶಾಕುಂತಲಾದಿನಿತಿಹಾಸವಾದಾನ  
ಪ್ರಸ್ತಾವಿತಾನನ್ಯಪರೇವಂಚೋಭಿಃ" ಮಾಲತೀಂ ೩-೩।

**ಪ್ರಸ್ತರ ಪ್ರಸ್ತರ** (ಪುಂ) ಹೂವು ಚಿಗುರುಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತ  
ವಾದ ಹಾಸಿಗೆ, ಮೆತ್ತೆ, ಸುಪ್ಪತ್ತಿಗೆ. ಪ್ರಸ್ತರ ಪೃಷ್ಠಂ।

**ಪ್ರಸ್ತುತ ಪ್ರಸ್ತುತ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸ್ತೋತ್ರ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟು, ಕೊಂಡಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರಕರ್ಷಣೆ ಸ್ತುತಃ। 2. ಪ್ರಕರಣ  
ದಿಂದ ಲಭ್ಯವಾದ, ಸಂದರ್ಭದಿಂದ ಒದಗಿದ. 3. ಪ್ರಾರಂಭ  
ಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಉಪಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಕೈಗೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು.  
4. (ಅಲಂಕಾರಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಪ್ರಕೃತವಾದ, ಪ್ರಸಕ್ತವಾದ,  
ವರ್ಣ್ಯ. "ಅಪ್ರಸ್ತುತಪ್ರಶಂಸಾ ಸ್ಯಾತ್ ಸಾ ಯತ್ರ ಪ್ರಸ್ತುತಾಶ್ರಯಾ"  
ಚಂದ್ರಾಂ। 5. ಪ್ರತಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಎದುರು ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟು.  
(ನಂ) 6. ಸ್ತುತಿ, ಹೊಗಳಿಕೆ. 7. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ.

**ಪ್ರಸ್ತುತವತ್ ಪ್ರಸ್ತುತವತ್** 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸ್ತೋತ್ರ ಮಾಡಿ  
ದವನು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೊಗಳಿದವನು. 2. ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದವನು,  
ಉಪಕ್ರಮಿಸಿದವನು. ಪ್ರ + ಷ್ಟು (ಸ್ತುತೌ) "ಕ್ತವತುಃ"  
(೩-೨-೧೦೨)।

**ಪ್ರಸ್ತುತವತ್ ಪ್ರಸ್ತುತವತ್** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸ್ತೋತ್ರ ಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ. 2. ಶ್ಲಾಘಿಸುತ್ತಿರುವ, ಕೊಂಡಾಡುತ್ತಿರುವ.  
ಪ್ರ + ಷ್ಟು (ಸ್ತುತೌ) "ಶತು" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
"ಜೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಸ್ತುತೀ -ಸ್ತುತೀ. "ಶಾನಚ್"  
(೩-೨-೧೨೪)। -ಸ್ತುತಾನ್ -ಸ್ತುತಾನ್.

**ಪ್ರಸ್ತುತಮಾನ ಪ್ರಸ್ತುತಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ತೋತ್ರ  
ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಹೊಗಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಷ್ಟು

(ಸ್ತುತೌ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)। 2. ಶ್ಲಾಘಿಸ  
ಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಕೊಂಡಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಪ್ರಸ್ತಾವ  
ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

**ಪ್ರಸ್ತುತ ಪ್ರಸ್ತುತ** (ವಿಂ) ಆಚ್ಛಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಮರೆಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟು. ಪ್ರ + ಸ್ತು (ಆಚ್ಛಾದನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।  
**ಪ್ರಸ್ತುತವತ್ ಪ್ರಸ್ತುತವತ್** (ವಿಂ) "ಪ್ರಸ್ತವನೀಯ" ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.

**ಪ್ರಸ್ತುತ ಪ್ರಸ್ತುತ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ತುತಿಸುವವನು,  
ಹೊಗಳುವವನು. 2. ಶ್ಲಾಘಿಸುವವನು, ಕೊಂಡಾಡು  
ವವನು. ಪ್ರ + ಷ್ಟು (ಸ್ತುತೌ) "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಸ್ತುತೀ -ಸ್ತುತೀ.

**ಪ್ರಸ್ಥ ಪ್ರಸ್ಥ** (ಪುಂ) 1. ಸಾನುಪ್ರದೇಶ, ಬೆಟ್ಟದ ಸಮ  
ಪ್ರದೇಶ, - ಸಮವಾದ ಭೂಭಾಗ. ಪ್ರತಿಷ್ಠಂತಃ-ಪ್ರ +  
ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೫೮)। "ಪ್ರಸ್ಥಂ  
ಹಿಮಾದ್ರೇರ್ಮೃಗನಾಭಿಗಮ್ಯ ಕಿಂಚಿತ್ಕವಣತಿಕನ್ನರಮಧ್ಯಯಾಸ"  
ಕುಮಾಂ ೧-೫೪। 2. ಉನ್ನತವಾದ ವಸ್ತು. 3. ಪರ್ವತದ  
ಶಿಖರ, ಬೆಟ್ಟದ ತುದಿ. "ಯತಃ ಪರಾರ್ಥಾನಿ ಮೃತಾನ್ಯನುನಃ  
ಪ್ರಸ್ಥಮ್ಹುರ್ಮುರಿಸುಚ್ಛಿಖಾನಿ" ಮಾಘಂ ೪-೧೧। 4. ಪೂರ್ವ  
ಕಾಲದ ಧಾನ್ಯದ ಒಂದು ಅಳತೆ, ಬಳ್ಳ, ಸೇರು. ಪ್ರಸ್ಥೀಯತಃ-  
ನೆನ - ಪ್ರ + ಷ್ಠಾ "ಕಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೫೮)। (ವಿಂ)  
5. ಸ್ಥಿರವಾದ, ದೃಢವಾದ. "ಪ್ರಸ್ಥೋಽಸ್ತೀ ಮಾನಭೇದೇ ಸ್ಯಾತ್  
ಸಾನಾವುನ್ಮಿತವಸ್ತುನಿ" ಮೇದಿಂ।

**ಪ್ರಸ್ಥಪುಷ್ಪ ಪ್ರಸ್ಥಪುಷ್ಪ** (ಪುಂ) ಮರುವಕ, ಮರುಗ. ಪ್ರಸ್ಥ  
ಸಾನೌ ಪುಷ್ಪತಿ-ಪುಷ್ಪ (ವಿಕಸನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।

**ಪ್ರಸ್ಥಾತ್ ಪ್ರಸ್ಥಾತ್** (ವಿಂ) ಹೊರಟುಬರುವವನು,  
ಪ್ರಯಾಣ ಮಾಡುವವನು. ಪ್ರ + ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ)  
"ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೫)।  
-ಸ್ಥಾತ್ರಿ -ಸ್ಥಾತ್ರಿ.

**ಪ್ರಸ್ಥಾನ ಪ್ರಸ್ಥಾನ** (ನಂ) 1. ಪ್ರಯಾಣ, ಹೊರಟು  
ಬರುವುದು. ಪ್ರ + ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)।  
"ಪ್ರಸ್ಥಾನಪ್ರಣತಿಮಿರಙ್ಗುಲಿಫು ಚಕ್ರಮೌ ಲಿಖ್ಯತಮಕರಂದ-  
ರೆಣುಗೌರಮ್" ರಘುಂ ೪-೮೮। 2. ಸಂಚಾರ, ಗಮನ, ನಡೆ.  
"ಕಾಲೇ ಗತೇ ಬಹುತಿಥೇ ಮಮ ಸೇವ ಜಾತಾ ಪ್ರಸ್ಥಾನವಿವಲಗತೇ-  
ರವಲಂಬನಾರ್ಥಾ" ಶಾಕುಂ ೫-೩। 3. ಆಗಮನ, ಬರುವುದು.  
"ಮನ್ಯೇ ಮತ್ಪಾವನಾಯೈವ ಪ್ರಸ್ಥಾನಂ ಭವತಾಮಿಹ" ಕುಮಾಂ ೬-೬೧।  
4. ಜೈತ್ರಯಾತ್ರಿಗಾಗಿ ರಾಜನ ಪ್ರಯಾಣ. "ಪ್ರಸ್ಥಾನಕಾಲ-  
ಕ್ಷಮವೇಷಕಲ್ಪನಾಕೃತಕ್ಷಣಕ್ಷೇಪಮುದೈಷತಾಚ್ಯುತಮ್" ಮಾಘಂ  
೧೨-೧। 5. ದರ್ಶನಗಳ ಪದ್ಧತಿ.



**ಪ್ರಸ್ಥಾನಕ ಪ್ರಸ್ಥಾನಕ** (ನಂ) ಹದಿನೆಯ ಉಪರೂಪಕ ಗಳಲ್ಲೊಂದು ವಿಧ.

**ಪ್ರಸ್ಥಾನೀಯ ಪ್ರಸ್ಥಾನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಹೊರಡಬೇಕಾದ. 2. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಹೊರಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಪ್ರ + ಣ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96). "ತವ್ಯ:" (3-1-96). -ಸ್ಥಾತವ್ಯಮ್ -ಸ್ಥಾತವ್ಯಮ್.

**ಪ್ರಸ್ಥಾಪನ ಪ್ರಸ್ಥಾಪನ** (ನಂ) 1. ಹೊರಡಿಸುವುದು. ಕಳುಹಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ಣ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಇಡುವುದು, -ಇರಿಸುವುದು.

**ಪ್ರಸ್ಥಾಪನೀಯ ಪ್ರಸ್ಥಾಪನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಡುವ, ಕಳುಹಿಸಿಕೊಡಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ + ಣ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96). 2. ಹೊರಡಿಸಬೇಕಾದ, ಕಳುಹಿಸಿಕೊಡಬೇಕಾದ. 3. ಇರಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಇರಿಸಬೇಕಾದ. "ತವ್ಯ:" -ಸ್ಥಾಪಯಿತವ್ಯ:

**ಪ್ರಸ್ಥಾಪಿತ ಪ್ರಸ್ಥಾಪಿತ** (ವಿಂ) 1. ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಣ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ತವ್ಯಿ ಸ್ಮರಾಧಿ: ಸತತಾಸ್ಮಿತೇನ ಪ್ರಸ್ಥಾಪಿತೋ ಭೂಮಿಭೂತಾಸ್ಮಿ ತೇನ" ನೆಪಂ 3-114. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪ್ರಸ್ಥಿತ ಪ್ರಸ್ಥಿತ** (ವಿಂ) 1. ಹೊರಟಿರುವ, ಹೊರಟು ಬಂದಿರುವ. ಪ್ರ + ಣ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ್ತ:" (3-4-92). "ಪ್ರಸ್ಥಿತಾಭಿರಧಿನಾಥನಿವಾಸಂ ಧ್ವಂಸಿತಪ್ರಿಯಸಖೀವಚನಾಭಿ:" ಕಿರಾಂ 1-36. 2. ಹೊರಟಿರುವ, ಪ್ರವೃತ್ತವಾದ. "ಪ್ರಾಪ್ಯ ನಾಭಿನದಮಜ್ಜನಮಾಶು ಪ್ರಸ್ಥಿತಂ ನಿವಸನಗ್ರಹಣಾಯ" ಮಾಧಂ 10-60. 3. ಹೊರಟುಹೋಗಿದ್ದ. "ಪ್ರಸ್ಥಿತಾ-ಮಭಿನಿವೇಶವಾನ್ ಪುನ: ಪ್ರತ್ಯಪದ್ಯತ ಧೃತಿ ಪುರಂದರ:" ಯಾದಂ 13-93. 4. ಪಲಾಯನಮಾಡಿದ, ಓಡಿಹೋದ. "ಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯ ದುರ್ಮದವಿವೇಕಯೋರಿವ ಪ್ರಸ್ಥಿತೇವ ಚಕಿತಾಸ್ಮರಾವತಿ" ಯಾದಂ 13-94.

**ಪ್ರಸ್ಥಿತಿ ಪ್ರಸ್ಥಿತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವುದು. 2. ಪ್ರಯಾಣ ಮಾಡುವುದು, ಹೊರಟುಬರುವುದು. ಪ್ರ + ಣ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94). "ಪ್ರಸ್ಥಿತೀ ಪರಿಮೇಯಾನಿ ಪಶ್ಚಾದುಪಚಿತಾನಿ ಸಾ" ಯಾದಂ 22-240.

**ಪ್ರಸ್ತವ ಪ್ರಸ್ತವ** (ಪುಂ) ಸೋರುವುದು, ಹರಿಯುವುದು, ಸುರಿಯುವುದು. ಪ್ರ + ಣ (ಪ್ರಸವಣ) "ಅಪ್" (3-3-59). "ಪ್ರಸ್ತವೇನಾಭಿವರ್ಣಂತೀ ವತ್ಸಾಲೋಕಪ್ರವರ್ತಿನಾ" ರಘುಂ 1-64.

**ಪ್ರಸ್ನಿಗ್ಧ ಪ್ರಸ್ನಿಗ್ಧ** (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ, ಹೆಚ್ಚು ವಿಶ್ವಾಸವುಳ್ಳ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಸ್ನಿಗ್ಧ: 2. ನುಣುಪಾಗಿರುವ. "ಪ್ರಸ್ನಿಗ್ಧಾ: ಕವಚಿದಿಕ್ತಗುದೀಫಲಭಿದ: ಸುಚ್ಯಂತ ಏವೋಪಲಾ:" ಶಾಕುಂ 1-13.

**ಪ್ರಸ್ತುತ ಪ್ರಸ್ತುತ** (ವಿಂ) ಸೋರುತ್ತಿರುವ, ಸ್ತವಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಣ (ಪ್ರಸವಣ) "ಕ್ತ:" (3-4-92). "ತಮುತ್ಸುಕಾಶ್ಚ ಕು-ರವೇಕ್ಷಣೋತ್ಸುಕಂ ಗವಾಂ ಗಣಾ: ಪ್ರಸ್ತುತಪೀವರೋಧಸ:" ಕಿರಾಂ 4-10.

**ಪ್ರಸ್ತುಷಾ ಪ್ರಸ್ತುಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೊಮ್ಮಗನ ಹೆಂಡತಿ, ಸೋಸು ಸೋಸೆ, ಸ್ತುಷಾ: ಸ್ತುಷಾ - ಪೃಷಂ.

**ಪ್ರಸ್ಪಂದನ ಪ್ರಸ್ಪಂದನ** (ನಂ) ಅದಿರುವುದು, ಕಂಪಿಸುವುದು, ಚಲಿಸುವುದು, ನಡೆಗುವುದು. ಪ್ರ + ಸ್ಪದಿ (ಕಿಚ್ಚಿ-ಚ್ಚಲನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

**ಪ್ರಸ್ಪಂದಮಾನ ಪ್ರಸ್ಪಂದಮಾನ** (ವಿಂ) ಅದಿರುತ್ತಿರುವ, ನಡೆಗುತ್ತಿರುವ, ಕಂಪಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಸ್ಪದಿ (ಕಿಚ್ಚಿ-ಚ್ಚಲನೆ) "ಶಾನಚ್" (3-2-124). "ಪ್ರಸ್ಪಂದಮಾನ: ಪುನಃಪುನಃ ರಾಮಂ ಪುರಸ್ತಾತ್ ಸ್ಥಿತಮಾಚಚಕ್ಷೆ" ರಾಮಾಂ.

**ಪ್ರಸ್ಪಂದಿತ ಪ್ರಸ್ಪಂದಿತ** (ವಿಂ) 1. ಅದಿದ, ಚಲಿದ. ಪ್ರ + ಸ್ಪದಿ (ಕಿಚ್ಚಿ-ಚ್ಚಲನೆ) "ಕ್ತ:" (3-4-92). (ನಂ) 2. ಅದಿರುವುದು, ಚಲಿಸುವುದು.

**ಪ್ರಸ್ಕುಟ ಪ್ರಸ್ಕುಟ** (ವಿಂ) 1. ವಿಕಾಸಹೊಂದಿದ, ಅರಳಿದ. ಪ್ರ + ಸ್ಕುಟ (ವಿಕಸನೆ) "ಕ:" (3-1-134). 2. ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ, ವ್ಯಕ್ತವಾದ.

**ಪ್ರಸ್ಕುಟಿತ ಪ್ರಸ್ಕುಟಿತ** (ವಿಂ) 1. ವಿಕಾಸಹೊಂದಿದ, ಅರಳಿದ. ಪ್ರ + ಸ್ಕುಟ (ವಿಕಸನೆ) "ಕ್ತ:" (3-4-92). (ನಂ) 2. ಅರಳುವುದು, ವಿಕಾಸಹೊಂದುವುದು. ಭಾವೆ "ಕ್ತ:" (3-3-114). 3. ತಾಡನ, ಹೊಡೆಯುವುದು.

**ಪ್ರಸ್ಕುರಣ ಪ್ರಸ್ಕುರಣ** (ನಂ) 1. ಅದಿರುವುದು, ಚಲಿಸುವುದು, ಕಂಪಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ಸ್ಕುರ (ಸ್ಕುರಣ ಸಂಚಲನೆ ಚ) ಭಾವೆ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಹೊಳೆಯುವುದು, ಹೊಸದಾಗಿ ಮನಸ್ಸಿಗೆ ತೋರುವುದು. 3. ಹಾರುವುದು, ನೆಗೆಯುವುದು, ಜಿಗಿಯುವುದು, ಚೆಮ್ಮುವುದು. 4. ಹೊರಳಾಡುವುದು. 5. ಪ್ರಕಾಶಕ್ಕೆ ಬರುವುದು, ಪ್ರಭಾವಶಾಲಿಯಾಗುವುದು. 6. ಹೊಳೆಯುವುದು, ಪ್ರಕಾಶಿಸುವುದು.

**ಪ್ರಸ್ಕುರತ್ ಪ್ರಸ್ಕುರತ್** (ವಿಂ) 1. ಅದಿರುತ್ತಿರುವ, ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಸ್ಕುರ (ಸ್ಕುರಣ ಸಂಚಲನೆ ಚ) "ಶತ್" .



(೩-೨-೧೨೪) 1. "ರಿಸತಯಿವತಿ ಭುಯಃ ಶಘಮಗ್ರೇ ವಿಕೀರ್ಣ ಪಟುರಚಲೋಽಃ ಪ್ರಸ್ಕುರತ್ಪ್ರೋಥಮಃ" ಮಾಘಂ ೧೧-೧೧ 1. 2. ಹೊರಳಾಡುತ್ತಿರುವ. "ಉತ್ಕಿಷ್ಕಯೋಚ್ಚೈಃ ಪ್ರಸ್ಕುರಂತ ರದಾಮ್ಯಾಮಿಷಾದಂತಃ ಕುಂಜರಂ ಶಾತ್ರವೀಯಮ್" ಮಾಘಂ ೧೮-೩೮ 1. 3. ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಹಾರುತ್ತಿರುವ, ಜಿಗಿಯುತ್ತಿರುವ, ಚಿಮ್ಮುತ್ತಿರುವ. 5. ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ತೋರುತ್ತಿರುವ. 6. ಪ್ರಕಾಶಕ್ಕೆ ಬರುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಪಡೆಯುತ್ತಿರುವ.

**ಪ್ರಸ್ಕುರಿತ ಪ್ರಸ್ಕುರಿತ** (ನಂ) 1. ಅದಿರುವುದು, ಚಲಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ಸ್ಕುರ (ಸ್ಕುರಣ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) 1. 2. ಹೊರಳಾಡುವುದು. (ವಿಂ) 3. ಅದಿರಿದ, ಚಲಿಸಿದ, ನಡುಗಿದ. "ಗುರುಪುತ್ರಮುಪಾಚೇದಂ ಕೃಷಾ ಪ್ರಸ್ಕುರಿತಾಧರಃ" 1. 4. ಹೊರಳಾಡಿದ. 5. ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಹೊಳೆದ. 6. ಚಿಮ್ಮಿದ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿದ.

**ಪ್ರಸ್ಕೂಟನ ಪ್ರಸ್ಕೂಟನ** (ನಂ) 1. ಅರಳುವುದು. ಎಕಾಸ ಹೊಂದುವುದು. ಪ್ರ + ಸ್ಕೂಟ (ವಿಕಸನ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) 1. 2. ಬಿರಿಯುವುದು, ಬಾಯಿಬಿಡುವುದು, ಬಾಯಿ ತೆರೆಯುವುದು. 3. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ತೂರುವುದು. 4. ಶೂರ್ಪ, ಮೊರ, ಧಾನ್ಯವನ್ನು ತೂರುವ ಕೊಂಗ.

**ಪ್ರಸ್ಮೃತ ಪ್ರಸ್ಮೃತ** (ವಿಂ) 1. ವಿಸ್ಮೃತವಾದ, ಮರೆತು ಹೋದ, ಮರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಸ್ಮೃ (ಆಧ್ಯಾನ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) 1. "ಪ್ರಸ್ಮೃತಂ ನ ತ್ವಯಾ ತಾವದ್ಯನ್ಮೋಹನವಿಮೋಹಿತಃ 1. ಅತೃಪ್ತೋಽಧರಪಾನೇಷು ರಸನಾಮಪಿಬಂ ತವ" ನೈಷಂ ೨೦-೭೮ 1. 2. ಮರೆಯದೆ ಇರುವ, ಅವಿಸ್ಮೃತ. "ಪ್ರಸ್ಮೃತತ್ವದ್ವಿಪಕಾರ-ಪದ್ಧತೇಃ" ಯಾದಂ ೧೭-೧೧೮ 1.

**ಪ್ರಸ್ಯಂದ ಪ್ರಸ್ಯಂದ** (ಪುಂ) ಸ್ರವಿಸುವುದು, ಸೋರುವುದು. ಪ್ರ + ಸ್ಯಂದ್ (ಪ್ರಸ್ರವಣ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) 1.

**ಪ್ರಸ್ಯಂದಿನ್ ಪ್ರಸ್ಯಂದಿನ್** (ವಿಂ) ಸೋರುವ, ಸ್ರವಿಸುವ, ಜಿನುಗುವ. ಪ್ರ + ಸ್ಯಂದ್ (ಪ್ರಸ್ರವಣ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) 1.

**ಪ್ರಸ್ರವಣ ಪ್ರಸ್ರವಣ** (ಪುಂ) 1. ಮಾಲುವತ್ವವರ್ತ. "ಸಂತತ-ಮಭಿಷ್ಯಂದಮಾನಮೇಧಮೇದುರಿತನೀಲಿಮಾ ಜನಸ್ಥಾನಮವ್ಯಗೋ ಗಿರಿಃ ಪ್ರಸ್ರವಣೋ ನಾಮ" ಉಂ ರಾಂ ೧ 1. (ನಂ) 2. ಸೋರುವುದು, ಸ್ರವಿಸುವುದು, ಜಿನುಗುವುದು. ಪ್ರ + ಸ್ರ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) 1. 3. ಚಿಲುಮೆ, ನೀರು ಜಿನುಗುವ ಸ್ಥಳ, ಊಟ. ಪ್ರಸ್ರವತಿ ಜಲಮಸ್ಮಿನ್—ಪ್ರ + ಸ್ರ ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) 1. "ತಡಾಕಾನ್ಯುದಪಾನಾನಿ ವಾಪ್ಯಃ ಪ್ರಸ್ರವಣಾನಿ ಚ" ಮನುಂ ೮-೨೪೮ 1. 4. ಸ್ನಾನದಿಂದ ಹೊರ

ಡುವ. ಕ್ಷೀರ. "ಅತಂದ್ರಿತಾ ಸಾ ಸ್ವಯಮೇವ ವೃಕ್ಷಕಾನ್ ಘಟಂತತಪ್ರಸ್ರವಣೈರ್ವ್ಯವರ್ಧಯತ್" ಕುಮಾಂ ೪-೧೪ 1. 5. ಬೆವರು, ಸ್ನೇದ.

**ಪ್ರಸ್ರವತ್ ಪ್ರಸ್ರವತ್** (ವಿಂ) ಸ್ರವಿಸುತ್ತಿರುವ, ಜಿನುಗುತ್ತಿರುವ, ಸೋರುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಸ್ರ (ಗತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) 1. -ಸ್ರವಂತಿ -ಸ್ರವಂತೀ.

**ಪ್ರಸ್ರವಿನ್ ಪ್ರಸ್ರವಿನ್** (ವಿಂ) (ಹಾಲು) ಜಿನುಗುತ್ತಿರುವ. (ಹಾಲು) ಸೋರುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರಸ್ರವೋಽಸ್ರವಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪) 1. -ಸ್ರವಿಣಿ -ಸ್ರವಿಣೀ. "ದದರ್ಶ ರಾಜಾ ಜನನೀಮಿವ ಸ್ವಾಂ ಗಾಮಪ್ರತಃ ಪ್ರಸ್ರವಿಣಿಂ ನ ಸಿಹಮ್" ರಘುಂ ೨-೬೧ 1.

**ಪ್ರಸ್ರಾವ ಪ್ರಸ್ರಾವ** (ಪುಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸೋರುವುದು, ಹೆಚ್ಚು ಸೋರುವುದು. ಪ್ರ + ಸ್ರ (ಗತೌ) "ಘ್" (೩-೩-೨೭) 1. 2. ಮೂತ್ರ.

**ಪ್ರಸ್ರುತ ಪ್ರಸ್ರುತ** (ವಿಂ) ಜಿನುಗಿದ, ಸೋರಿದ, ಸ್ರವಿಸಿದ.

**ಪ್ರಸ್ವಾನ ಪ್ರಸ್ವಾನ** (ಪುಂ) ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಶಬ್ದ, ಎತ್ತರದ ಧ್ವನಿ. ಪ್ರ + ಸ್ವನ (ಶಬ್ದ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) 1.

**ಪ್ರಸ್ವಾಪ ಪ್ರಸ್ವಾಪ** (ಪುಂ) 1. ಮಲಗಿನಿದ್ರಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ಙಿ ಷ್ವಪ್ (ಶಯ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) 1. "ಮತ್ತಸ್ಯ ಸೇಯಂ ಮದನದ್ವಿಪಸ್ಯ ಪ್ರಸ್ವಾಪವಪ್ರೋಚ್ಚಕುಚಾಸ್ತು ವಾಸ್ತು" ನೈಷಂ ೭-೮೪ 1. 2. ಶತ್ರುಗಳಿಗೆ ನಿದ್ರೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಅಸ್ತ್ರ, ಸಂಪೋಹನಾಸ್ತ್ರ. ಪ್ರಸ್ವಾಪ್ಯತೇ ಶತ್ರುರನೇನ—ಪ್ರ + ಙಿ ಷ್ವಪ್ (ಶಯ) + ಙಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೩-೪೬) 1. ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) 1. -ಸ್ವಾಪನಮ್-ಸ್ವಾಪನಮ್. "ಗಾಂಧರ್ವಮಸ್ತ್ರಂ ಕುಸುಮಾಸ್ತ್ರಕಾಂತಃ ಪ್ರಸ್ವಾಪನಂ ಸ್ವಪ್ನನಿವೃತ್ತ-ಲೌಲ್ಯಃ" ರಘುಂ ೭-೬೧ 1. (ನಂ) 3. ನಿದ್ರೆಯನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವುದು, ನಿದ್ರಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) 1.

**ಪ್ರಸ್ವಿನ್ನ ಪ್ರಸ್ವಿನ್ನ** (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆವರಿರುವ. ಪ್ರ + ಙಿ ಷ್ವಿದಾ (ಸ್ನೇಹನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) 1. ಪ್ರಸ್ವಿನ್ನಶ್ಚೈತ್ರಃ 1.

**ಪ್ರಸ್ವೇದ ಪ್ರಸ್ವೇದ** (ಪುಂ) ಬೆವರು, ಸ್ನೇದ. ಪ್ರ + ಙಿ ಷ್ವಿದಾ (ಸ್ನೇಹನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧) 1. "ಪ್ರಸ್ವೇದವಾರಿಸವಿಶೇಷ-ವಿಷಕ್ತಮಜ್ಜೆ ಕ್ಷುಪ್ತಿಕಂ ಕ್ಷತನಖಕ್ಷತಮುತ್ಕಿಷ್ಪಂತಿ" ಮಾಘಂ ೪-೨೩ 1.

**ಪ್ರಸ್ವೇದಿತ ಪ್ರಸ್ವೇದಿತ** (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆವರಿರುವ. ಪ್ರ + ಙಿ ಷ್ವಿದಾ (ಸ್ನೇಹನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) 1. ವಾ ಇಡಾಗಮಃ (೭-೨-೧೭) 1. ಇಡಭಾವಪಕ್ಷ -ಪ್ರಸ್ವಿನ್ನಃ -ಪ್ರಸ್ವಿನ್ನಃ 1. ಙಿ



ಪ್ರವಿದಾ (ಗಾತ್ರಪ್ರಕರಣ) ದಿವಾಂ. -ಪ್ರವಿದಿತ:-ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ: ನಿತ್ಯವಾಗಿ ಇಡಾಗಮ ಬರುವುದು.

ಪ್ರಹತ ಪ್ರಹತ (ವಿಂ) 1. ಎಸಾರಗೊಂಡ, ಹರಡಿರುವ. ಪ್ರ + ಹನ (ಹಿಸಾಗಲ್ಯಾ:) "ಕ್ತ:" (3-4-92) 2. ತುಳಿದು ಸವೆದಿರುವ (ದಾರಿ). "ಪ್ರಹತಂ ವಿತತೇ ಕ್ಷುಣ್ಣೇ" ಮೇದಿಂ. 3. ಹೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ನಗಾರಿ). "ಸಜ್ಜಿತಾಯ ಪ್ರಹತಮುರಜಾ: ಸ್ನಿಗ್ಧಗಮ್ಮಿರಘೋಷಮ್" ಮೇಘಂ 2-1. 4. ಹಿಮ್ಮೆಟ್ಟಿದ, ಪರಾಭವಗೊಂಡು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಬಂದಿದೆ.

ಪ್ರಹರ ಪ್ರಹರ (ಪುಂ) ಒಂದು ದಿವಸದ ಎಂಟನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. ಒಂದು ಯಾಮ, ಒಂದು ಜಾವ. ಪ್ರಹ್ರಿಯತೇ ಡಕ್ಕಾದಿರಸ್ಮಿನ್ - ಪ್ರ + ಹ್ರ (ಹರಣ) ಸಂಜಾಯಾಂ "ಘ:" (3-3-114) 1. "ಚತವಾರ: ಪ್ರಹರಾ: ಸ್ಮರಾತಿಭಿರಭೂತ್ ಸಾಪಿ ಕ್ಷಪಾ ದು:ಕ್ಷಯಾ ತತಸ್ತಯಾ ಕೃಪಯಾಖಿಲೇವ ವಿಧಿನಾ ರಾತ್ರಿ-ಸ್ತ್ರಿಯಾಮಾ ಕೃತಾ" ನೇಘಂ 1-146.

ಪ್ರಹರಣ ಪ್ರಹರಣ (ನಂ) 1. ಅಸ್ತು, ಆಯುಧ. ಪ್ರಹ್ರಿಯತೇ-ನೆನ - ಪ್ರ + ಹ್ರ (ಹರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-119) 1. "ಪ್ರಾಗ್ವೀರಾನನುಪಾತ್ಯ ತತ್ಪ್ರಹರಣಾನ್ಯಾಚ್ಚಿತ್ತಿ ವಿಕ್ರಾಮತ:" ಮಾಲತೀಂ 6-9. 2. ಯುದ್ಧ, ಸಂಗ್ರಾಮ. ಪ್ರಹ್ರಿಯತೇ-ಸ್ಮಿನ್ - ಪ್ರ + ಹ್ರ ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-119) 1. 3. ಏಟು, ಹೊಡೆತ. 4. ಸುತ್ತಲೂ ವಸ್ತುವ ತೆರೆಯಿಂದ ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ ಶಿಬಿರ, ಮೇನಾ. 5. ಒಯ್ಯುವುದು, ಭಾವ "ಲ್ಯುಟ್" 1.

ಪ್ರಹರತ್ ಪ್ರಹರತ್ (ವಿಂ) 1. ಹೊಡೆಯುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಹ್ರ (ಹರಣ) "ಶತ್" (3-2-124) 1. "ಹೃದಿ ವಿದಮಭುವ: ಪ್ರಹರನ್ ಶರೇರತಿಪತಿರ್ನಿಪಥಾಧಿಪತೇ: ಕೃತೇ" ನೇಘಂ 4-19. 2. ಒಯ್ಯುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-6) 1. -ಹರಂತಿ-ಹರಂತಿ.

ಪ್ರಹರಿನ್ ಪ್ರಹರಿನ್ (ವಿಂ) ಕಾವಲುಗಾರ, ಯಾಮದ ಸರದಿ ಯಂತೆ ಕಾಯುವವನು. ಪ್ರಹರೋಸ್ತಯಸ್ಯ "ಇನಿ:" (4-2-114) 1.

ಪ್ರಹತ್ ಪ್ರಹತ್ (ವಿಂ) 1. ಹೊಡೆಯುವವನು. ಪ್ರ + ಹ್ರ (ಹರಣ) "ತೃಕ್" (3-1-133) 1. 2. ಯುದ್ಧಮಾಡುವವನು. 3. ಬಿಲ್ಲುಗಾರ, ಬಾಣವನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸುವವನು. "ಪ್ರಹರ್ತುರೇವೋರಗರಾಜರಜ್ಜವೋ ಜವೇನ ಕಂಠಂ ಸಮಯಾ: ಪ್ರಪೇದಿರೇ" ಮಾಘಂ 1-46.

ಪ್ರಹೃ ಪ್ರಹೃ (ಪುಂ) ಅತಿಶಯವಾದ ಅನಂದ. ಹೆಚ್ಚು ಸಂತೋಷ. ಪ್ರ + ಹ್ರ (ತುಷ್ಟಿ) "ಘಕ್" (3-3-114)

"ಮಹೋದಧಿ: ಪೂರ ಇವೇಂದುರ್ದಶನಾತ್ ಗುರು: ಪ್ರಹೃ: ಪ್ರಬಭೂವ ನಾತ್ಮನಿ" ರಘುಂ 3-19.

ಪ್ರಹರ್ಷಣ ಪ್ರಹರ್ಷಣ (ಪುಂ) 1. ಬಾಧಗ್ರಹ. ಪ್ರಹರ್ಷಯತಿ ಪ್ರ + ಹ್ರ (ತುಷ್ಟಿ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯು:" (3-1-134) 1. 2. ಅನಂದ, ಸಂತೋಷ. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" 1. "ಸ್ನಿಗ್ಧ-ಗಮ್ಮಿರಯಾ ವಾಚಾ ಪ್ರಹರ್ಷಣಕರೀ ವಿಭೋ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ 344-30. (ನಂ) 3. ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವುದು. 4. ಪ್ರಹರ್ಷಣಾಲಂಕಾರ, ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಇದು (1) ಯತ್ನವಿಲ್ಲದೆ ಅಪೇಕ್ಷಿತಫಲಸಿದ್ಧಿ, (2) ಅಪೇಕ್ಷಿತಕ್ಕಿಂತಲೂ ಅಧಿಕಫಲಸಿದ್ಧಿ ಮತ್ತು (3) ಫಲಸಿದ್ಧಿಗಾಗಿ ಉಪಾಯವನ್ನು ಹುಡುಕುವ ಪ್ರಯತ್ನ ದಿಂದಲೇ ಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ಲಕ್ಷಣ: ಕ್ರಮವಾಗಿ (1) "ಉತ್ಕಂಠಿತಾರ್ಥಸಂಸಿದ್ಧಿ: ವಿನಾ ಯತ್ನಂ ಪ್ರಹರ್ಷಣಮ್" 1. (2) "ವಾಚ್ಛಿತಾದಧಿಕಾರ್ಥಸ್ಯ ಸಂಸಿದ್ಧಿಶ್ಚ ಪ್ರಹರ್ಷಣಮ್" 1. (3) "ಯತ್ನಾದುಪಾಯಸಿದ್ಧಿರ್ಯತ್ನಾಕ್ಷಾಲ್ಪಾಭ: ಫಲಸ್ಯ ಚ" 1. ಉದಾ: ಕ್ರಮವಾಗಿ (1) "ತಾಮೇವ ಧ್ಯಾಯತೇ ತಸ್ಯೆ ನಿಸ್ಸೃಷ್ಟಾ ಸೇವ ದೃತಿಕಾ" 1. (2) "ದೀಪಮುದ್ರಾಜಯೇದಾವತ್ತಾವ-ದಮ್ಯದಿತೋ ರವಿ:" 1. (3) "ನಿಧ್ಯಾಜ್ಞನೌಷಧಿಮೂಲಂ ಖನತಾ ಸಾಧಿತೋ ನಿಧಿ:" 1. (ವಿಂ) 5. ಸಂತೋಷವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ. "ನಾನಾಪಕ್ಷಿಣಂ ರಮ್ಯಂ ಕದ್ಲಪುತ್ರಪ್ರಹರ್ಷಣಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ 299.

ಪ್ರಹರ್ಷಿಣಿ ಪ್ರಹರ್ಷಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹರಿದ್ವಿ, ಅರಿಶಿನ. ಪ್ರಹರ್ಷಯತಿ - ಪ್ರ + ಹ್ರ (ತುಷ್ಟಿ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯು:" (3-1-134) 1. 2. ವೃತ್ತ ರತ್ನ ಕರೋಕ್ತವಾದ ಹದಿಮೂರನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಪ್ರತಿ ಪಾದದಲ್ಲೂ ಮಗಣ ನಗಣ ಜಗಣ ರಗಣ ಮತ್ತು ಒಂದು ಗುರುವರ್ಣವಿದ್ದಲ್ಲಿ "ಪ್ರಹರ್ಷಿಣಿ" ವೃತ್ತವಾಗುವುದು. "ಮನೋ ಜೌ ಗಸ್ತ್ರಿದಶಯತಿ: ಪ್ರಹರ್ಷಿಣಿಯಮ್" ವೃಂ 20. ಈ ವೃತ್ತದ ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ಮ ನ ಜ ರ ಗು  
000 111 101 010 0

ಪ್ರಹಸತ್ ಪ್ರಹಸತ್ (ವಿಂ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ನಗುತ್ತಿರುವ. 2. ಅವಹಾಸ್ಯ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಅವಹೇಳನ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಹಸ (ಹಸನೆ) "ಶತ್" (3-2-124) 1. 3. ಅಣಕಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಪ್ರಹಸನ್ ಬಹುಶ: ಪ್ರಹೇಲಿಕಾಭಿ: ಮತಿಮೋದಯಂ ವಿದಧೇ ಮನಸ್ವಿನೀನಾಮ್" ಯಾದಂ 24-62. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-6) 1. -ಹಸಂತಿ-ಹಸಂತಿ.

ಪ್ರಹಸನ್ ಪ್ರಹಸನ್ (ನಂ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ನಗುವುದು. ಪ್ರ + ಹಸ (ಹಸನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) 1.



2. ಅಣಕಿಸುವುದು. 3. ಹಾಸ್ಯಮಾಡುವುದು. 4. ದಶ ರೂಪಕಗಳಲ್ಲೊಂದು ವಿಧ ರೂಪಕ. ಪ್ರಹಸನ್ಯನೇನ | ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" |

**ಪ್ರಹಸನೀಯ ಪ್ರಹಸನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ನಗ ಬೇಕಾದ. 2. ಹಾಸ್ಯಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 3. ಹಾಸ್ಯಮಾಡ ಬೇಕಾದ. 4. ಅಣಕಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಅಣಕಿಸಬೇಕಾದ. ಪ್ರ + ಹಸೇ (ಹಸನೆ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) | "ತವ್ಯ:" -ಹಸಿತವ್ಯ: -ಹಸಿತವ್ಯ:

**ಪ್ರಹಸಂತಿ ಪ್ರಹಸಂತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಡುಮಲ್ಲಿಗೆ. 2. ಕಾಡಿರುವಂತಿ. 3. ದೊಡ್ಡ ಅಗ್ನಿಷ್ಠಿಗೆ.

**ಪ್ರಹಸಿತ ಪ್ರಹಸಿತ** (ವಿಂ) 1. ಹಾಸ್ಯಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಅಣಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. (ನಂ) 3. ಹಾಸ್ಯಮಾಡುವುದು. 4. ಅಣಕಿಸುವುದು. 5. ಹಾಸ, ನಗು. "ತच्छ್ವಾ ಸಾಪಿ ಪ್ರಹಸಿತವದನಾ ಪುಲಕಾಕ್ಷಿತಸರ್ವಾಕ್ಷಿ" ಪञ्ಚತಂ 1 |

**ಪ್ರಹಸ್ತ ಪ್ರಹಸ್ತ** (ಪುಂ) 1. ಬೆರಳುಗಳನ್ನು ನೀಡಿರುವ ಅಂಗೈ. ಪ್ರಸೃತೋ ಹಸ್ತ: | 2. ರಾವಣನ ಒಬ್ಬ ಮಂತ್ರಿ. "ಪ್ರಹಸ್ತಮರ್ಥಯಾಚ್ಛಕ್ರೇ ಯೋಧುಮದ್ಭುತವಿಕ್ರಮಮ್" ಭट्टಿಂ 14-66 |

**ಪ್ರಹಾಣ ಪ್ರಹಾಣ** (ನಂ) ತೃಜಿಸುವುದು, ದೂರಮಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114) | "ಮೇತ್ರಾದಿಚಿತ್ತಪರಿಕರ್ಮವಿದೋ ವಿಧಾಯ ಕಲೇಶಪ್ರಹಾಣಮಿಹ ಲಬ್ಧಸಬೀಜಯೋಗಾ:" ಮಾಘಂ 4-55 |

**ಪ್ರಹಾಪಣ ಪ್ರಹಾಪಣ** (ನಂ) ದೂರಮಾಡಿಸುವುದು, ದೂರಕ್ಕೆ ಹೋಗುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು, ತೃಜಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114) | "ನ್ಯಾಯ್ಯಾಃ ಅಪಿ ತೇ ಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾ: ಕುರ್ವನ್ತ್ಯಾಶು ಪ್ರಹಾಪಣಮ್" ಭट्टಿಂ 9-104 |

**ಪ್ರಹಾಪಯತ್ ಪ್ರಹಾಪಯತ್** (ವಿಂ) ತೃಜಿಸುವಂತೆ ಮಾಡು ತ್ತಿರುವ.

**ಪ್ರಹಾರ ಪ್ರಹಾರ** (ಪುಂ) ಏಟು, ಹೊಡೆತ. ಪ್ರ + ಹ್ (ಹರಣೇ) "ಘಜ್" (3-3-116) | "ಪ್ರಹಾರಮುಚ್ಛಿಪಗಮೇ ರಥಸ್ಥಾ ಯನ್ತುನುಪಾಲಮ್ಯ ನಿವರ್ತಿತಾಶ್ವಾನ್" ರಘುಂ 9-44 |

**ಪ್ರಹಾಸ ಪ್ರಹಾಸ** (ಪುಂ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾದ ನಗು. ಪ್ರಕೃಷ್ಟೋ ಹಾಸ: | "ತೇಽಪಿ ಮಮಾಣ್ಯಭಿಜ್ಞಂತಿ ಪ್ರಹಾಸೇನಾಪಿ ಸಂಸದಿ" ಕಾಮಂದಂ | 2. ನಟ, ನರ್ತಕ. ಪ್ರಕೃಷ್ಟೋ ಹಾಸೋ ಯಸ್ಮಾತ್ | 3. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 4. ಪ್ರಕಾಶ, ತೋರಿಕೆ. "ಽದ್ವಾತಕವಣಿತವಿಲೋಹೇಮಘಟ: ಪ್ರಾಲಂಬದ್ವಿಗುಣಿತಚಾಮರ-ಪ್ರಹಾಸ:" ವೇಣೀಂ 2-29 |

**ಪ್ರಹಾಸಿನ್ ಪ್ರಹಾಸಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಹಾಸ್ಯಗಾರ, ನಗಿಸು ವವನು. ಪ್ರಕೃಷ್ಟ ಹಾಸಯತಿ — ಪ್ರ + ಹಸೇ (ಹಸನೆ) + ಣಿಕ್

"ಣಿನಿ:" (3-2-96) | 2. ನಗುವವನು. ಪ್ರ + ಹಸೇ "ಣಿನಿ:" (3-1-134) | "ವಿಕೀರ್ಣಸಂತಪಿಬಲಿ-ಪ್ರಹಾಸಿಮಿಸ್ತಥಾ ನ ಗಾಙ್ಗೈ: ಸಲಿಲೈದಿವ ಶ್ವಚುತೆ:" ಕುಮಾಂ 4-36 |

**ಪ್ರಹಿ ಪ್ರಹಿ** (ಪುಂ) ಕೂಪ, ಬಾವಿ. ಪ್ರಹಿಯತೇ — ಪ್ರ + ಹ್ (ಹರಣೇ) "ಃ" (3-1-134) | ಟಿಲೋಪಶ್ಚ | "ಪುಸ್ಯೇವಾನ್ಯು: ಪ್ರಹಿ: ಕೂಪ:" ಅಮಂ |

**ಪ್ರಹಿವತ್ ಪ್ರಹಿವತ್** (ವಿಂ) ಕಳುಹಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ + ಹಿ (ಗತೌ ವೃದ್ಧೌ ಚ) "ಶತ್" (3-2-124) | "ಪ್ರಹಿವಂತೋ ಹನುಮಂತಂ ಪ್ರಮೀಣಂತಂ ದ್ವಿಷನ್ಮತೀ:" ಭट्टಿಂ 9-97 |

**ಪ್ರಹಿತ ಪ್ರಹಿತ** (ವಿಂ) 1. ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಹಿ (ಗತೌ ವೃದ್ಧೌ ಚ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) | "ಪ್ರಹಿತ: ಪ್ರಧನಾಯ ಮಾಧವಾನಹಮಾಕಾರಯಿತು ಮಹಿಭೃತಾ" ಮಾಘಂ 16-42 | 2. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಬಾಣ). ಪ್ರ + ಹಿ "ಕ್ತ:" (3-2-102) | "ರತಿಪತಿಪ್ರಹಿತಾನಿಲಹೇತಿತಾಂ ಪ್ರತಿಯತೀ ಸುದತೀ ಮಲಯಾನಿಲೇ" ನೆಪಂ 4-40 | 3. ಮುಂದಕ್ಕೆ ನೀಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಮುಂದೆ ಬಾಚಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅನುವಪು-ರಪರೇಣ ಬಾಹುಮೂಲಪ್ರಹಿತಭುಜಾಕಲಿತಸ್ತನೇನ ನಿನ್ಯೇ" ಮಾಘಂ 9-21 | 4. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಡು ಧಾಜ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಕ್ತ:" (3-2-102) |

**ಪ್ರಹೀಣ ಪ್ರಹೀಣ** (ವಿಂ) ಪರಿತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ದೂರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) | ನಿಷ್ಠಾತಸ್ಯ ನ: (6-2-44) | "ಪ್ರಹೀಣ-ಜೀವಿತಂ ಕುರ್ಯೇ ನ ಶತ್ರುಮುಪಸ್ಥಿತಮ್" ಭट्टಿಂ 9-104 |

**ಪ್ರಹುತ ಪ್ರಹುತ** (ನಂ) ಭೂತಯಜ್ಞ, ಗೃಹಸ್ಥನು ಪ್ರತಿದಿನ ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ ಪಂಚಯಜ್ಞಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಪ್ರಹೃಯತೇ ಸಮ—ಪ್ರ + ಹು (ದಾನಾದನಯೋ:) "ಕ್ತ:" (3-2-102) | "ಜಪೋಹುತೋ ಹುತೋ ಹೋಮ: ಪ್ರಹುತೋ ಭೌತಿಕೋ ಬಲಿ:" ಬ್ರಾಹ್ಮ ಹುತಂ ದ್ವಿಜಾಗ್ರಚಾರ್ಚಾ ಪ್ರಾಶಿತಂ ಪಿತೃತರ್ಪಣಮ್" ಮನುಂ 3-94 |

**ಪ್ರಹುತ ಪ್ರಹುತ** (ವಿಂ) 1. ಹೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ವಶಪಡಿಸಿ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಬಲಾತ್ಕಾರವಾಗಿ ಸ್ವಾಧೀನಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಹ್ (ಹರಣೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) | (ನಂ) 3. ಏಟು, ಹೊಡೆತ. ಪ್ರಹಾರ. ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114) |

**ಪ್ರಹೃಷ್ಠ ಪ್ರಹೃಷ್ಠ** (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಗೊಂಡ. ಪ್ರ + ಹೃಷ (ತುಷ್ಟೌ) "ಕ್ತ:" (3-4-62) | "ಪ್ರಹೃತನಸಮಂ ಪೌರಾ: ಪ್ರಹೃಷ್ಠಾ: ಪ್ರತ್ಯುಪಾಸತ" ಯಾದಂ 22-236 | 2. ರೋಮಾಂಚವುಂಟಾಗಿರುವ, ಪುಲಕಿತವಾದ.



**ಪ್ರಹೃಷ್ಯತ್ ಪ್ರಹೃಷ್ಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡುತ್ತಿರುವ, ಅನಂದವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಹೃಷ (ತುಷ್ಟಿ) "ಶತ್" (3-2-124). "ಪ್ರಹೃಷ್ಯತಾ ಜಾಮ್ಬವತಾ ನಿವೇದಿತಾ ಪ್ರವಾಲಜಾಮ್ಬೂನದರಸಸಹಿತಮ್" ಯಾದಂ 14-62. 2. ರೋಮಾಂಚಗೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಸಂತೋಷದಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳುತ್ತಿರುವ. "ಸ್ವಾಮಿದರ್ಶನಸಂತೋಷಾತ್ಪ್ರಹೃಷ್ಯದ್ವಿಸ್ತನುರಹೈ:" ಯಾದಂ 16-44.

**ಪ್ರಹೇಲಾ ಪ್ರಹೇಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಲಿಗೆಯ ಮಾತು, ವಿನೋದದ ಸಂಭಾಷಣೆ. ಪ್ರಹೇಲಯತಿ ಅಭಿಪ್ರಾಯ ಸೂಚಯತಿ — ಪ್ರ + ಹಿಲ್ (ಭಾವಕರಣಂ) + ಣಿच् "ಅಚ್" (3-1-134). "ಭೀತ-ಭೀತೈ: ಪುರಾ ಶತ್ರುಮಂದಂ ಮಂದಂ ವಿಸರ್ಪತಿ | ಭೂಮಿ ಪ್ರಹೇಲಯಾ ಪಶ್ಚಾತ್ ಜಾರಹಸ್ತೋಽಜ್ಞನಾಸ್ವಿವ" ಪञ्ಚತಂ 2-40.

**ಪ್ರಹೇಲಿಕಾ ಪ್ರಹೇಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಮಸ್ಯೆ, ಒಗಟು, ಗೂಢಾರ್ಥವುಳ್ಳ ಮಾತು. ಪ್ರಹೇಲಯತಿ-ಅಭಿಪ್ರಾಯ ಸೂಚಯತಿ — ಪ್ರ+ಹಿಲ್ (ಭಾವಕರಣಂ) + ಣಿच् "ಫುಲ್" (3-1-133). "ವ್ಯಕ್ತೀಕೃತ್ಯ ಕಮಪ್ಯರ್ಥಂ ಸ್ವರೂಪಾರ್ಥಸ್ಯ ಗೋಪನಾತ್ | ಯತ್ರ ಬಾಹ್ಯಾಂತರಾವರ್ಥಿ ಕರ್ಯತೇ ಸಾ ಪ್ರಹೇಲಿಕಾ" |

**ಪ್ರಹ್ಲಾಪ ಪ್ರಹ್ಲಾಪ್** (ವಿಂ) ಸಂತೋಷಪಟ್ಟು, ತೃಪ್ತಿ ಹೊಂದಿರುವ. ಪ್ರಹ್ಲಾಪತೇ ಸ್ಮ — ಪ್ರ + ಹ್ಲಾದಿ (ಸುಖೇ ಚ) "ಕ್ತ:" (3-4-62) |

**ಪ್ರಹ್ಲಾಪ ಪ್ರಹ್ಲಾಪ** (ಪುಂ) 1. ಅಧಿಕವಾದ ಸಂತೋಷ, ಅತಿಶಯವಾದ ಅನಂದ. ಪ್ರ + ಹ್ಲಾದಿ (ಸುಖೇ ಚ) ಭಾವೇ "ವಕ್" (3-3-116). 2. ಅವ್ಯಕ್ತ ಶಬ್ದ. 3. ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವಿನ ಕುಮಾರ, ಕಯಾಧುವಿನಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವಿನ ಪುತ್ರ. ಮಾತೃಗರ್ಭದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ನಾರದ ಮಹರ್ಷಿಯ ತತ್ತ್ವೋಪದೇಶದಿಂದಲೂ ಜನ್ಮಾಂತರ ಸಂಸ್ಕಾರದಿಂದಲೂ ಪ್ರಹ್ಲಾದನು ಪರಮವಿಷ್ಣುಭಕ್ತನಾದನು. ಗುರುಕುಲದಲ್ಲಿ ತನ್ನೊಡನೆ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಬಾಲಕರಿಗೂ ತತ್ತ್ವೋಪದೇಶ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದನು. ಸಹೋದರನಾದ ಹಿರಣ್ಯಕ್ಷನ ಸಂಹಾರದಿಂದ ವಿಷ್ಣುವಿನಲ್ಲಿ ಪರಮದ್ವೇಷವನ್ನಿಟ್ಟಿದ್ದ ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವಿಗೆ ಪ್ರಹ್ಲಾದನ ಈ ವಿಷ್ಣುಭಕ್ತಿಯು ಸಹಿಸದೆ ನಾನಾ ವಿಧವಾದ ಚಿತ್ರಹಿಂಸೆಗಳಿಂದ ಪ್ರಹ್ಲಾದನನ್ನು ಒಡಿಸುತ್ತಿದ್ದನು. ಪರಮಾತ್ಮನ ಕೃಪೆಯಿಂದ ಎಲ್ಲಾ ವಿಪತ್ತುಗಳಿಂದಲೂ ಪಾರಾಗುತ್ತಿದ್ದನು. "ಆಹಾಮರ್ಷಣಾವಿಷ್ಟ: ಕಥಾಯಿಭೂತಲೋಚನ: | ವಧ್ಯತಾಮಾಶ್ವಯಂ ವಧ್ಯೋ ನಿ:ಸಾರಯತ ನೈಶ್ವಂತಾ: || ಸರ್ವರೂಪಾಃ ಸಂಭೋಜಯತಾಸನೈ: | ಸುಹೃಲ್ಲಿಂಗಧರ: ಶತ್ರುಮುನೇರ್ದೃಷ್ಟಿಮಿವೇಂದ್ರಿಯಮ್ || ನೈಶ್ವಂತಾಸ್ತೇ

ಸಮಾದಿಷ್ಟಾ: ಭರ್ತೃ ವೈ ಶೂಲಪಾಣಯ: | ತಿಗ್ಮದಂಟುಕರಾಲಾಸ್ಯಾ-ಸ್ತಾಽಶ್ವಮಶ್ರುಶಿರೋರುಹಾ: || ನದಂತೋ ಭೇರವಾಹಾಢಾಶಿಞ್ಞಿ-ಭಿಂದಿತಿ ವಾದಿನ: | ಆಸೀನಂ ಚಾಹನನ್ ಶೂಲೈ: ಪ್ರಹ್ಲಾದಂ ಸರ್ವಮರ್ಮಸು || ಪರೇ ಬ್ರಹ್ಮಾಣ್ಯನಿರ್ದೇಶ್ಯೇ ಭಗವತ್ಯಖಿಲಾತ್ಮನಿ | ಯುತಾತ್ಮನ್ಯಕಲಾ ಆಸನ್ನಪುಣ್ಯಸ್ಯೇವ ಸತ್ಕಿರಾ: " ಭಾಗಂ 9-6 | ಈ ರೀತಿ ಒಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟರೂ ವಿಷ್ಣುವು ಸರ್ವಶಕ್ತ ಸರ್ವಜ್ಞ ಮತ್ತು ಸರ್ವವ್ಯಾಪಿ ಎಂದು ತಂದೆಗೂ ಹೇಳುತ್ತಿದ್ದನು. ಇದರಿಂದ ಕುಪಿತನಾದ ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವು ವಿಷ್ಣುವು ಸರ್ವವ್ಯಾಪಿಯಾಗಿದ್ದಲ್ಲಿ ಈ ಕಂಬದಲ್ಲಿ ನನಗೆ ಮೈದೋರಲಿ ಎಂದು ಕಂಬವನ್ನು ಕಾಲಿನಿಂದ ಒದ್ದನು. ಭಕ್ತವತ್ಸಲನಾದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಕಂಬವನ್ನು ಸೀಳಿಕೊಂಡು ನೃಸಿಂಹರೂಪದಿಂದ ಬಂದು ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ಪ್ರಹ್ಲಾದನಿಗೆ ಪಟ್ಟ ಕಟ್ಟಿ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ವಹಿಸಿದನು. ಪ್ರಹ್ಲಾದನೂ ತನ್ನ ತಂದೆಯ ಅವಿವೇಕದ ಕೃತ್ಯಗಳನ್ನು ಕ್ಷಮಿಸಿ ಸದ್ಗತಿಯು ನೀಯಬೇಕೆಂದು ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲಿ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದನು. "ವರಂ ವರಯ ಏತತ್ತೇ ವರದೇಶಾನ್ಮಹೇಶ್ವರ | ಯದನಿಂದತ್ ಪಿತಾ ಮೇ ತ್ವಾಮವಿದ್ವಾಸ್ತೇಜ ಏಶ್ವರಮ್ | ವಿದ್ವಾಮರ್ಷಾಶಯ: ಸಾಕ್ಷಾತ್ ಸರ್ವಲೋಕಗುಹಂ ಪ್ರಭುಮ್ | ಭ್ರಾತೃಹೇತಿ ಮೃಷಾದೃಷ್ಟಿಃ ಸ್ವದ್ಭಕ್ತೇ ಮಯಿ ಚಾಭವಾನ್ | ತಸ್ಮಾತ್ಪಿತಾ ಮೇ ಪೂಯತ ದುರಂತಾದ್ಧುಸ್ತರಾದಧಾತ್ | ಪೂತಸ್ತೇಷಾಂ ಸದೃಷ್ಟಸ್ತದಾ ಕೃಪಣವತ್ಸಲ ||" ಪರಮಾತ್ಮನು "ತ್ರಿ:ಸಪ್ತಭಿ: ಪಿತಾ ಪೂತ: ಪಿತೃಭಿ: ಸಹ ತೇಜಃ | ಯತ್ಸಾಧೋಽಸ್ಯ ಗೃಹೇ ಜಾತೋ ಭವಾನ್ ವೈ ಕುಲಪಾವನ: || ಪಿತ್ರೈಃ ಚ ಸ್ಥಾನಮಾತಿಷ್ಠ ಯಥೋಕ್ತಂ ಬ್ರಹ್ಮವಾದಿಭಿ: | ಮರ್ಯಾದೇಶ್ಯ ಮನಸ್ತಾತ್ ಕುರು ಕರ್ಮಾಣಿ ಮತ್ಪರ: " ಭಾಗಂ 9-10 | ಎಂದು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದನು.

**ಪ್ರಹ್ಲಾದನ ಪ್ರಹ್ಲಾದನ** (ನಂ) 1. ಸಂತೋಷವುಂಟು ಮಾಡುವುದು. ಪ್ರ + ಹ್ಲಾದಿ (ಸುಖೇ ಚ) + ಣಿच् ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). "ಯಥಾ ಪ್ರಹ್ಲಾದನಾಚ್ಚಂದ್ರ: ಪ್ರತಾಪಾತ್ಪನೋ ಯಥಾ | ತಥೈವ ಸೋಽಭೂದನ್ವರ್ಥೋ ರಾಜಾ ಪ್ರಕೃತಿ-ರಂಜನಾತ್" ರಘುಂ 4-12. (ವಿಂ) 2. ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವ. ಪ್ರಹ್ಲಾದಯತೇ — ಪ್ರ + ಹ್ಲಾದಿ + ಣಿच् "ಲ್ಯು:" (3-1-134). "ಅಬಿನ್ಧನಂ ವಹ್ನಿಮಸೌ ವಿಭತಿ ಪ್ರಹ್ಲಾದನಂ ಜ್ಯೋತಿರಂಜನೇನ" ರಘುಂ 13-4.

**ಪ್ರಹ್ಲ ಪ್ರಹ್ಲ** (ವಿಂ) 1. ನಮ್ರ, ಬಗ್ಗಿರುವ, ವಿಧೇಯತೆಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವ. ಪ್ರ+ಹ್ಲೇಬ್ (ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ವನ್" (3-2-141). ನಿಪಾಂ | "ಭಕ್ತಿಪ್ರಹ್ಲಂ ಕಥಮಪಿ ಯವೀಯಾಸಮುತ್ಸೃಜ್ಯ ಚಾಪಾರೋಪವ್ಯಗ್ರಾಡ್ಗುಲಿಕಿಸಲಯಂ ಮೇಧ-ನಾದಭಯಾಯ" ಮಂ ವೀಂ 6-37. 2. ಇಳಿಜಾರಾಗಿರುವ, ಕೆಳಗಡೆಗೆ ಒಟುವಾಗಿರುವ. "ಪ್ರಹ್ಲಾನತೀವ ಕ್ವಚಿದ್ಧುಡತಿಶ್ರಿತ:



ಕವಚಿತ್ರಕಾಶಾನಯ ಗಹ್ವರಾನಪಿ" ಮಾಘಂ ೧೨-೪೬ | 3. ಬಗ್ಗಿದ, ಮಣಿದ. "ಪ್ರಹ್ಲೇಷವನಿವಂಧರೂಢಿ ಹಿ ಸಂತ:" ರಘುಂ ೧೬-೮೦ |

**ಪ್ರಹ್ಲಿಕೃತ ಪ್ರಹ್ಲೇಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ಬಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಅವರ್ಜಿತ, ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. "ತಥಾಪಿ ನಿಷ್ಠಂ ನೃಪ ತಾವಕೀನೇ: ಪ್ರಹ್ಲಿಕೃತಂ ಮೇ ಹೃದಯಂ ಗುಣಿಧಿ:" ಕಿರಾಂ ೩-೧೨ |

**ಪ್ರಹ್ಲಿಭವತ್ ಪ್ರಹ್ಲೇಭವತ್** (ವಿಂ) ನಮ್ರನಾಗುತ್ತಿರುವ. ಬಗ್ಗುತ್ತಿರುವ. "ಪ್ರಹ್ಲಿಭವನ್ಮತ್ತರೇಣ ಮೂರ್ಛಾ ನಮಶ್ಚಕಾರಾ-ಙ್ಗಿಘ್ರಿಯುಗಂ ಸ್ವಮಾತು:" ಕುಮಾಂ ೧೩-೩ |

**ಪ್ರಹ್ಲಿಭೂತ ಪ್ರಹ್ಲೇಭೂತ** (ವಿಂ) ನಮ್ರನಾಗಿರುವ, ಬಗ್ಗಿರುವ.

**ಪ್ರಾಂಶು ಪ್ರಾಂಶು** (ಪುಂ) 1. ಎತ್ತರವಾದ ಮನುಷ್ಯ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಾ ಅಂಶವೋ ಯಸ್ಯ | "ಪ್ರಾಂಶುಲಮ್ಯೇ ಫಲೇ ಲೋಭಾದುದಾಹುರಿವ ವಾಮನ:" ರಘುಂ ೧-೩ | (ವಿಂ) 2. ಎತ್ತರವಾದ, ಉನ್ನತವಾದ. "ವ್ಯೂಹೋರಸ್ಕೋ ವೃಷಸ್ಕಂಧ: ಶಾಲಪ್ರಾಂಶುರ್ಮಹಾಭುಜ:" ರಘುಂ ೧-೧೩ | 3. ಉದ್ದವಾದ, ನೀಳವಾದ. "ನೇತಚ್ಚಿತ್ರಂ ಯದಯಮುದಧಿಷ್ಯಾಮಸೀಮಾಂ ಧರಿತ್ರಿಮೇಕ: ಕೃತ್ಸನಾಂ ನಗರಪರಿಘ ಪ್ರಾಂಶುಬಾಹುಭುನಕ್ತಿ" ಶಾಕುಂ ೨-೧೪ |

**ಪ್ರಾಕ್ ಪ್ರಾಕ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಮುಂಚೆ, ಮೊದಲು, ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ. "ಪ್ರಾಕ್ ನಾಭಿವರ್ಧನಾತ್ ಪುಸೋ ಜಾತಕರ್ಮ ವಿಧೀಯತೇ" ಮನುಂ ೨-೨೯ | "ಪ್ರಾಗಂತರಿಕ್ಷಗಮನಾತ್ ಸ್ವಮಪತ್ಯಜಾತಮ್" ಶಾಕುಂ ೪-೨೨ | (ವಿಂ) 2. ಪೂರ್ವದೇಶ. 3. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕು. 4. ಪೂರ್ವಕಾಲ. 5. ಪೂರ್ವದೇಶದಲ್ಲಿ. 6. ಪೂರ್ವಕಾಲದಲ್ಲಿ. 7. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ. 8. ಪೂರ್ವದೇಶದಿಂದ. 9. ಪೂರ್ವಕಾಲದಿಂದ. "ಪ್ರಾಗತೀತಾರ್ಥಕಮ್" ಅಮಂ | "ದಿಗ್ದೇಶಕಾಲೇ ಪೂರ್ವಾದೌ ಪ್ರಾಗುದಕ್ಪ್ರತ್ಯಗಾದಯ:" ಅಮಂ | "ಪ್ರಾಚ್ಛಂದೋದಿಶಿ ದೇಶೇ ಚ ಕಾಲೇ ಚ ವಾಚ್ಯಲಿಙ್ಗಕ:" ಮೇದಿಂ | "ದಿಕ್ಪ್ರಾಚ್ಛಂದೇಮ್ಯ: ಸಪ್ತಮೀಪಂಚಮೀಪ್ರಥಮಾಭ್ಯೋ ದಿಗ್ದೇಶಕಾಲೇಷ್ವಸ್ತಾತಿ:" (೪-೩-೨೭) | ಅಶ್ವೇಲುಕ್ (೪-೩-೩೦) | ಇತಿ ಅಸ್ತಾತೇಲುಕ್ | ಪ್ರಾಚ್ಯಾಂ ದಿಶಿ ಪ್ರಾಚ್ಯಾ ದಿಶ: ಪ್ರಾಚೀ ದಿಕ್ | ಪ್ರಾಚಿ ದೇಶೇ ಕಾಲೇ ಚ, ಪ್ರಾಚೋ ದೇಶಾತ್ ಕಾಲಾಚ್ಚ | ಪ್ರಾಚ್ ದೇಶ: ಕಾಲಶ್ಚ | 10. ಪ್ರಭಾತ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲ. 11. ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ. 12. ಕಳೆದುಹೋದ, ಅತೀತವಾದ. 13. ಹಿಂದೆ, ಹಿಂದಿನ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ. "ಇತಿ ಪ್ರಾಗೇವ ನಿರ್ದಿಷ್ಟಮ್" |

**ಪ್ರಾಕರಣಿಕ ಪ್ರಾಕರಣಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕರಣದಿಂದ ಬಂದ, ಪ್ರಸಕ್ತವಾದ ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಪ್ರಕರಣಾ-ದಾಗತ: "ಶಕ್" | 2. ಉಪಮೇಯ, ವರ್ಣ್ಯ, ಪ್ರಕೃತ.

**ಪ್ರಾಕೃತಿಕ ಪ್ರಾಕೃತಿಕ** (ವಿಂ) ಪರಸ್ಪರೀಯ ಅಸರಿಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಪ್ರಾಕೃತಿಕ ಹಿನಸ್ತಿ — ಪ್ರ + ಆ + ಕೃ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕಿಕನ್" (ವಂ ೨-೪೨) |

**ಪ್ರಾಕಾಮ್ಯ ಪ್ರಾಕಾಮ್ಯ** (ನಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರನ ಎಂಟು ಐಶ್ವರ್ಯ (ವಿಭೂತಿ)ಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಪ್ರಕಾಮಸ್ಯ ಭಾವ: "ವ್ಯಖ್" (೪-೧-೧೨೪) | "ಅಣಿಮಾ ಮಹಿಮಾ ಚೈವ ಗರಿಮಾ ಲಘಿಮಾ ತಥಾ | ಪ್ರಾಪ್ತಿ: ಪ್ರಾಕಾಮ್ಯಮಿಶಿತವ್ ವಶಿತವ್ ಚಾಷ್ಟ-ಭೂತಯ:" | 2. ಇಚ್ಛಾಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ. ನಿರ್ಬಂಧವಿಲ್ಲದ ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ. "ವ್ಯಕ್ತೋ ವ್ಯಕ್ತೇತರಶ್ಚಾಸಿ ಪ್ರಾಕಾಮ್ಯಂ ತೇ ವಿಭೂತಿಃ" ಕುಮಾಂ ೨-೧೧ |

**ಪ್ರಾಕಾರ ಪ್ರಾಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ಸುತ್ತುಗೋಡೆ, ಮನೆಯ ಸುತ್ತಲೂ ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಹಾಕುವ ಗೋಡೆ. ಪ್ರಕ್ರಿಯತೇ—ಪ್ರ+ಕೃ ಕೃ (ಕರಣೇ) ಕರ್ಮಂ "ಕೃ" (೩-೩-೧೯) | ದೀರ್ಘ: (೬-೩-೧೨೨) | "ಕುತುಹಲೇನೇವ ಜವಾದುಪೇತ್ಯ ಪ್ರಾಕಾರಭಿತ್ತಯಾ ಸಹಸಾ ನಿಷಿದ್ಧ:" ಮಾಘಂ ೩-೪೧ | 2. ಬೇಲಿ.

**ಪ್ರಾಕಾರೀಯ ಪ್ರಾಕಾರೀಯ** (ವಿಂ) ಪ್ರಾಕಾರಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ ಇಟ್ಟಿಗೆ ಗಾರೆ ಮೊದಲಾದವು. ಪ್ರಾಕಾರಾಯೇದಮ್ "ಛ:" (೪-೨-೧೧೪) |

**ಪ್ರಾಕಾಶ್ಯ ಪ್ರಾಕಾಶ್ಯ** (ನಂ) ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ, ಪ್ರಕಾಶಗೊಳ್ಳುವುದು, ಕೀರ್ತಿ ಪಡೆಯುವುದು, ಎಲ್ಲರ ದೃಷ್ಟಿಗೂ ಬೀಳುವುದು. ಪ್ರಕಾಶಸ್ಯ ಭಾವ: "ವ್ಯಖ್" (೪-೧-೧೨೪) | "ಪ್ರಾಕಾಶ್ಯಂ ಸ್ವಗುಣೋದಯೇನ ಗುಣಿನೋ ಗಂಚಂತಿ ಕಿಂ ಜನ್ಮನಾ" ಪಂಚತಂ ೧-೧೦೩ |

**ಪ್ರಾಕೃತ ಪ್ರಾಕೃತ** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಸಾಮಾನ್ಯ ಮನುಷ್ಯ, ಸಂಸ್ಕೃತಿಯಿಲ್ಲದ ಮನುಷ್ಯ, ಅಸಭ್ಯ, ಪಾಮರ. (ನಂ) 2. ಪ್ರಾಕೃತ ಭಾಷೆ, ಸಂಸ್ಕೃತ ಭಾಷೆಯೇ ಪ್ರಕೃತಿಯಾಗಿರುವ ಭಾಷೆ. ಪ್ರಕೃತೇರಾಗತ: "ಅನ್" (೪-೩-೭೪) | ಪ್ರಕೃತೋ ಭವ: "ಅನ್" (೪-೩-೪೩) ವಾ | "ಪ್ರಕೃತಿ: ಸಂಸ್ಕೃತಂ ತತ್ರ ಭವತ್ವಾತ್ ಪ್ರಾಕೃತಂ ಸ್ಮೃತಮ್ | ತದ್ಭವಂ ತತ್ಸಮಂ ದೇಶೀತ್ಯೇವ-ಮೇತತ್ ತ್ರಿಧಾ ಮತಮ್" | ಈ ಭಾಷೆಯು (1) ಅರ್ಧಮಾಗಧಿ (2) ಶೌರಸೇನಿ (3) ಪೈಶಾಚಿ (4) ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರಿ (5) ಮಾಗಧಿ ಮತ್ತು (6) ಅಪಭ್ರಂಶ: ಎಂದು ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಆರು ವಿಧ. (ವಿಂ) 3. ಪ್ರಕೃತಿಸಂಬಂಧವಾದ. ಪ್ರಕೃತೇರಿದಮ್ | 4. ಸ್ವಭಾವವಾಗಿ ಉಂಟಾದ. ಪ್ರಕೃತ್ಯಾ ಸ್ವಭಾವೇನ ನಿವೃತ್ತ: | ನಾಟಕಾದಿರೂಪಕಗಳಲ್ಲಿ ಉತ್ತಮಪುರುಷಪಾತ್ರಗಳು ಸಂಸ್ಕೃತಭಾಷೆಯನ್ನೂ ಅವರ ಪತ್ನಿಯರು ಶೌರಸೇನಿಯನ್ನೂ ಉಪಯೋಗಿಸಬೇಕು. ರಾಜನ ಅಂತಃಪುರದ ವಾಮನ ಕಂಚುಕಿ ಮೊದಲಾದವರು ಮಾಗಧೀಭಾಷೆ



ಯನ್ನೂ ಚೀಟಿ ಪ್ರತೀಹಾರ ಮೊದಲಾದವರು ಅರ್ಥ  
ಮಾಗಧಿಯನ್ನೂ ಧೂರ್ತಪಾತ್ರಗಳು ಅವನ್ನೀಭಾಷೆ  
ಯನ್ನೂ ಉಪಯೋಗಿಸಬೇಕು. 5. ಪ್ರಾಕೃತಶತ್ರು,  
ಪ್ರಕೃತ್ಯಾ ಸಿದ್ಧ: ಪ್ರಾಕೃತ: ಶತ್ರು:। ತನ್ನ ಸಮೀಪದೇಶ  
(ಅವ್ಯವಹಿತ ದೇಶ) ದ ರಾಜನು ಪ್ರಾಕೃತ ಶತ್ರು. "ವಿಷಯಾ-  
ನಂತರೋ ರಾಜಾ ಶತ್ರು:" ಅಮಂ। 6. ಪ್ರಾಕೃತಮಿತ್ರ,  
ಸ್ವಭಾವವಾಗಿಯೇ ಮಿತ್ರನಾಗಿರುವವನು. ಪ್ರಕೃತ್ಯಾ ಸ್ವಭಾವೇನ  
ಮಿತ್ರಮ್। ಪ್ರಾಕೃತ ಶತ್ರುವಿನ ಮುಂದಿನ ದೇಶದ ರಾಜನು  
ಪ್ರಾಕೃತ ಮಿತ್ರ. ಈ ಪ್ರಾಕೃತಮಿತ್ರ ಮತ್ತು ಅಮಿತ್ರರು  
ಸಹಜಕೃತ್ರಿಮಮಿತ್ರಾಮಿತ್ರರಂತಲ್ಲದೆ ಎಂದೆಂದಿಗೂ  
ಮಿತ್ರ ಮತ್ತು ಅಮಿತ್ರರಾಗಿಯೇ ಇರುತ್ತಾರೆ. "ಸತ್ತಾ  
ಗರಿಯಾನ್ ಶತ್ರುಃ ಕೃತ್ರಿಮಸ್ತೌ ಹಿ ಕಾರ್ಯತ:। ಸ್ಯಾತಾಮಿತ್ರೋ  
ಮಿತ್ರೇ ಚ ಸಹಜಪ್ರಾಕೃತಾವಪಿ" ಮಾಘಂ ೨-೩೬।

**ಪ್ರಾಕೃತಜ್ವರ ಪ್ರಾಕೃತಜ್ವರ (ಪುಂ) ವರ್ಷಮತು ಶರದೃತು**  
ಮತ್ತು ವಸಂತ ಋತುಗಳಲ್ಲಿ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಬರುವ ವಾತ  
ಪಿತ್ತ ಮತ್ತು ಕಫ ಜ್ವರ. ಪ್ರಾಕೃತ: ಪ್ರಕೃತಿಸಮ್ಬಂಧಿ ಜ್ವರ:।  
ವರ್ಷಮತುವಿನಲ್ಲಿ ಬರುವ ಜ್ವರವು ವಾತಜ್ವರ. ಶರದೃತು  
ವಿನಲ್ಲಿ ಬರುವುದು ಪಿತ್ತಜ್ವರ. ವಸಂತಋತುವಿನಲ್ಲಿ  
ಬರುವ ಜ್ವರವು ಕಫಜ್ವರ. "ವರ್ಷಾಶಿರಃಸಂತೇಷು ವಾತಾಃ  
ಪ್ರಾಕೃತ: ಕ್ರಮಾತ್"।

**ಪ್ರಾಕೃತಪ್ರಲಯ ಪ್ರಾಕೃತಪ್ರಲಯ (ಪುಂ) ಪ್ರಕೃತಿಯ ನಾಶ**  
ರೂಪವಾದ ಒಂದು ವಿಧ ಪ್ರಳಯ. ಪ್ರಕೃತಿಸಂಬಂಧ  
ವಾದ ಪ್ರಳಯ. ಪ್ರಾಕೃತ: ಪ್ರಕೃತಿಸಮ್ಬಂಧಿ ಪ್ರಲಯ:।  
ಪ್ರಳಯವು ನಿತ್ಯ ನೈಮಿತ್ತಿಕ ಪ್ರಾಕೃತ ಮತ್ತು ಆತ್ಮಂತಿಕ  
ಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ಬ್ರಹ್ಮನಿಗೆ ಎರಡು ಪರಾರ್ಥಗಳು  
ಕಳೆದ ನಂತರ ಮಹತ್ತು ಅಹಂಕಾರ ಪಂಚಭೂತಗಳೆಂಬ  
ಏಳು ಪ್ರಕೃತಿಗಳೂ ಲಯಹೊಂದುವುವು. ಇದೇ ಪ್ರಾಕೃತ  
ಪ್ರಳಯ. ಈ ಏಳು ಪ್ರಕೃತಿಗಳ ನಾಶಕ್ರಮ:  
ಪರ್ವಣ್ಯನು ನೂರು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಮಳೆಯನ್ನು ಸುರಿಸು  
ವುದಿಲ್ಲ. ಪ್ರಜೆಗಳು ಅನ್ನಾಹಾರವಿಲ್ಲದೆ ಪರಸ್ಪರ ಕೊಂದು  
ತಿನ್ನುವರು. ಪ್ರಳಯಕಾಲದ ಸೂರ್ಯನು ಸಮುದ್ರ  
ಭೂಮಿ ಮತ್ತು ಪ್ರಾಣಿಗಳ ದೇಹಗಳಲ್ಲಿರುವ ದ್ರವವನ್ನು  
ಶೋಷಿಸುತ್ತ ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ತನ್ನ ಕಿರಣಗಳಿಂದ ದಹಿಸಿಬಿಡು  
ವನು. ಸಂಕರ್ಷಣರೂಪಿಯಾದ ಪರಮಾತ್ಮನ ಮುಖ  
ದಿಂದ ಹೊರಟ ಪ್ರಳಯಾಗ್ನಿಯು ಪ್ರಚಂಡ ವಾಯುವಿನ  
ಸಾಹಾಯ್ಯದಿಂದ ಪಾತಾಳಾದಿ ವಿವರಗಳನ್ನು ದಹಿಸುತ್ತ  
ಬರುವುದು. ಈ ಸೂರ್ಯಾಗ್ನಿಗಳ ಜ್ವಾಲೆಗಳಿಂದ ನಾನಾ  
ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡವು ದಗ್ಧವಾಗುವುದು. ಆಗ  
ಪ್ರಚಂಡವಾದ ಬಿರುಗಾಳಿಯೊಂದು ಹೊರಟು ನೂರು

ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಬೀಸುತ್ತಾ ಆಕಾಶವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಧೂಳಿನಿಂದ  
ಮುಚ್ಚಿಬಿಡುವುದು. ಮೇಘಗಳು ಭಯಂಕರವಾಗಿ ಗರ್ಜಿ  
ಸುತ್ತ ನೂರು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಸತತವಾಗಿ ಮಳೆಯನ್ನು  
ಸುರಿಸುವುವು. ಇದರಿಂದ ಪ್ರಪಂಚವೆಲ್ಲಾ ಜಲಮಯವಾಗು  
ವುದು. ಭೂಮಿಯ ಗಂಧಗುಣವು ಹೋಗಿ ಜಲದಲ್ಲಿ ಲಯ  
ಹೊಂದುವುದು. ಜಲದ ರಸಗುಣವು ತೇಜಸ್ಸಿನಿಂದ  
ಆಕರ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಜಲವು ತೇಜಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಲಯಿಸುವುದು.  
ತೇಜಸ್ಸು ವಾಯುವಿನಲ್ಲಿ ಲಯಹೊಂದುವುದು. ಸ್ಪರ್ಶ  
ಗುಣವು ಆಕಾಶದಿಂದ ಆಕರ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ವಾಯುವು ಆಕಾಶ  
ದಲ್ಲಿ ಲಯಹೊಂದುವುದು. ಆಕಾಶವು ತಾಮಸಾಹಂಕಾರ  
ದಲ್ಲಿ ಆಮೇಲೆ ರಾಜಸ ತಾಮಸ ಸಾತ್ವಿಕಾಹಂಕಾರಗಳು  
ಮಹತ್ತರತ್ವದಲ್ಲಿ ಲಯಹೊಂದುವುವು. ಮಹತ್ತರತ್ವ  
ವನ್ನು ಸತ್ತಾದಿ ಗುಣಗಳು (ತ್ರಿಗುಣಾತ್ಮಿಕವಾದ  
ಪ್ರಕೃತಿಯು) ಗ್ರಹಿಸುವುವು. ಆಮೇಲೆ ಆ ಪ್ರಕೃತಿಯು  
ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲಿ ಐಕ್ಯಹೊಂದುವುದು. ಈ ರೀತಿ ಪ್ರಾಕೃತ  
ಪ್ರಳಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರಥಮ ಮೊದಲಾದ ಮಹತ್ತರತ್ವದವರೆಗಿನ  
ತತ್ತ್ವಗಳೆಲ್ಲವೂ ಲಯಹೊಂದಿ ಪರಬ್ರಹ್ಮನ ಸ್ವರೂಪ  
ಮಾತ್ರ ಉಳಿಯುವುದು. "ಶತೇಜಂತಾಸನೋ ವಿಶ್ವಮಾತ್ಮ-  
ಸಾತ್ಕೃತ್ಯ ಚಾತ್ಮನು:। ದ್ವಿಪರಾರ್ಥ ತ್ವತಿಕಾಂತಿ ಬ್ರಹ್ಮಣ:  
ಪರಮೇಷ್ಠಿನ:। ತದಾ ಪ್ರಕೃತಯ: ಸಂತ ಕಲ್ಪಂತೆ ಪ್ರಲಯಾಯ ವೆ।  
ಏಷ ಪ್ರಾಕೃತಿಕೋ ರಾಜನ್ ಪ್ರಲಯೋ ಯತ್ರ ಲೀಯತೆ। ಅಂಠಕೋಶಸ್ತು  
ಸಂಘಾತೋ ವಿಘಾತ ಉಪಸಾದಿತೆ। ಪರ್ಜನ್ಯ: ಶತವರ್ಷಾಣಿ ಭೂಮೌ  
ರಾಜನ್ ನ ವರ್ಷತಿ। ತದಾ ನಿರತ್ತೇ ಹ್ಯನ್ಯನ್ಯಂ ಭಕ್ಷಮಾಣಾ:  
ಕ್ಷುಧಾನ್ವಿತಾ:। ಕ್ಷಯಂ ಯಾಸ್ಯಂತಿ ಶನಕೈ: ಕಾಲೇನೋಪದೃತಾ:  
ಪ್ರಜಾ:। ಸಾಮುದ್ರಂ ದೈಹಿಕಂ ಭೂಮಿಂ ರಸಂ ಸಾವರ್ತಕೋ ರವಿ:।  
ರಶ್ಮಿಭಿ: ಪಿಬತೆ ಧೋರೈ: ಸರ್ವಂ ನೈವ ವಿಮುಚ್ಚತಿ। ತತ:  
ಸಂವರ್ತಕೋ ವಹ್ನಿ: ಸಂಕ್ಷುರ್ಷಣಮುಖೋತ್ಥಿತ:। ದಹತೃನಿಲವೇಗೋತ್ಥ:  
ಶೂನ್ಯಾನ್ ಭೂವಿವರಾನಥ। ಉಪಯಧ: ಸಮಂತಾನ್ವ ಶಿಖಾಭಿವಹ್ನಿ-  
ಸೂರ್ಯೋ:। ದಹ್ಯಮಾನ್ ವಿಭಾತ್ಯಂಢಂ ದಧಗೋಮಯಪಿಂಢವತ್।  
ತತ: ಪ್ರಚಂಡಪವನೋ ವರ್ಷಾಣಾಮಧಿಕಂ ಶತಮ್। ಪರ: ಸಾವರ್ತಕೋ  
ವಾಪಿ ಧೂಮ್ರಂ ಕ್ಷಂ ರಜಸಾವೃತಮ್। ತತೋ ಮೇಘಕುಲಾನ್ಯಜ್ಞ ಚಿತ್ರ-  
ವರ್ಣಾನ್ಯನೇಕಶ:। ಶತಂ ವರ್ಷಾಣಿ ವರ್ಷಂತಿ ನದಂತಿ ರಭಸಸ್ವನೈ:।  
ತತ ಏಕೋದಕಂ ವಿಶ್ವಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಂಢವಿವರಾಂತರಮ್। ಅಸ್ತಗಂಧಾ  
ತು ಪೃಥಿವೀ ಪ್ರಲಯತ್ವಾಯ ಕಲ್ಪತೆ। ಅಪಾಂ ರಸಮಥೋ ತೇಜ: ತಾ  
ಲೀಯಂತೇಶ್ಚ ನೀರಸಾ:। ಅಸತೆ ತೇಜಸೋ ರೂಪಂ ವಾಯುಸ್ತದ್ರಹಿತಂ  
ತದಾ। ಲೀಯತೆ ಚಾನಿಲೆ ತೇಜೋ ವಾಯೋ: ಕ್ಷಂ ಅಸತೆ ಗುಣಮ್।  
ಸ ವೆ ವಿಶತಿ ಕ್ಷಂ ರಾಜನ್ ತತಶ್ಚ ನಭಸೋ ಗುಣಮ್। ಶಬ್ದಂ  
ಅಸತಿ ಭೂತಾದಿನಭಸ್ತಮನುಲೀಯತೆ। ಮಹಾನ್ ಅಸತ್ಯಹಂಕಾರಂ  
ಗುಣಾ: ಸತ್ತ್ವಾದಯಶ್ಚ ತಮ್। ಅಸತೇಶ್ಚಾಕೃತಂ ರಾಜನ್ ಗುಣಾನ್-



ಕಾಲೇನ ಚೋದಿತಮ್ । ಲಯಃ ಪ್ರಾಕೃತಿಕೋ ಹೃಷಃ ಪುರುಷಾವ್ಯಕ್ತಯೋ-  
ಯದಾ । ಶಕ್ತಯಃ ಸಂಪ್ರಲೀಯಂತೇ ವಿವಶಾಃ ಕಾಲವಿದ್ವತಾಃ ”  
ಭಾಗಂ ೧೨-೪ ।

**ಪ್ರಾಕೃತಮಾನುಷ ಪ್ರಾಕೃತಮಾನುಷ** (ಪುಂ) ಸಾಮಾನ್ಯ  
ಮನುಷ್ಯ, ಕೆಳದರ್ಜೆಯ ಮನುಷ್ಯ, ಸಂಸ್ಕೃತಿಯಿಲ್ಲದ  
ಮನುಷ್ಯ.

**ಪ್ರಾಕೃತಮಿತ್ರ ಪ್ರಾಕೃತಮಿತ್ರ** (ನಂ) ಸ್ವಭಾವವಾಗಿಯೇ  
ಮಿತ್ರನಾಗಿರುವವನು. [“ಪ್ರಾಕೃತ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಪ್ರಾಕ್ತನ ಪ್ರಾಕ್ತನ** (ವಿಂ) 1. ಹಿಂದಿನ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ,  
ಪೂರ್ವಜನ್ಮಸಂಬಂಧವಾದ. ಪ್ರಾಕ್ ಪೂರ್ವಸ್ಥಿನ್ ಜನ್ಮನಿ  
ಭವಃ “ಠ್ಯಲ್” (೪-೩-೨೩) । ತುಡ್ ಚ । “ಫಲಾನುಮೇಯಾಃ  
ಪ್ರಾರಮ್ಭಾಃ ಸಂಸ್ಕಾರಾಃ ಪ್ರಾಕ್ತನಾ ಇವ” ರಘುಂ ೧-೨೦ ।  
2. ಹಿಂದಿನ, ಪೂರ್ವದ. “ಸ್ಥಿರೋಪದೇಶಾಮುಪದೇಶಕಾಲೇ ಪ್ರಪೇದಿರೇ  
ಪ್ರಾಕ್ತನಜನ್ಮವಿಧಾಃ” ಕುಮಾರಂ ೧-೩೦ । 3. ಹಿಂದಿನದಾದ,  
ಹಳೆಯದಾದ, ಪುರಾತನವಾದ.

**ಪ್ರಾಕ್ಫಲಗುನಿ ಪ್ರಾಕ್ಫಲಗುನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂರ್ವಫಲಗುನೀ  
ನಕ್ಷತ್ರ. ಪ್ರಾಚೀ ಫಲಗುನಿ ।

**ಪ್ರಾಕ್ಫಲಗುನಿಭವ ಪ್ರಾಕ್ಫಲಗುನೀಭವ** (ಪುಂ) ಬೃಹಸ್ಪತಿ.  
ಪ್ರಾಕ್ಫಲಗುನಿಯಾ ಭವಃ ।

**ಪ್ರಾಕ್ಫಲಗುನೇಯ ಪ್ರಾಕ್ಫಲಗುನೇಯ** (ಪುಂ) ಬೃಹಸ್ಪತಿ.  
ಪ್ರಾಕ್ಫಲಗುನಿಯಾ ಭವಃ “ಠ್ಯಲ್” । “ಪ್ರಾಕ್ಫಲಗುನೇಯಸ್ತು ತಥ್ಯಾನುಜಃ”  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಪ್ರಾಖ್ಯ ಪ್ರಾಖ್ಯಾರ್ಯ** (ನಂ) 1. ತೀಕ್ಷ್ಣವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಬಹಳ  
ಚೂಪಾಗಿರುವಿಕೆ. 2. ಬಹಳ ಬಿಸಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ಕಟು  
ವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಖಾರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಮನಸ್ಸನ್ನು ನೋಯಿಸು  
ವಂತಿರುವಿಕೆ. ಪ್ರಖರಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಘ್ನ” ।

**ಪ್ರಾಗ್ರ ಪ್ರಾಗ್ರಗ್ರ** (ವಿಂ) ಪೂರ್ವಾಭಿಮುಖವಾದ.

**ಪ್ರಾಗಭಾವ ಪ್ರಾಗಭಾವ** (ಪುಂ) ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಇಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ,  
ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಉತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಆ ವಸ್ತುವು  
ಇಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಉತ್ಪತ್ತಿಃ ಪ್ರಾಕ್ ಸಮವಾಯಿಕಾರಣೇ ಕಾರ್ಯಸ್ಯ  
ಸಂಸರ್ಗಾಭಾವಃ । ಉತ್ಪನ್ನ ವಸ್ತುವೇ ಪುನಃ ಉತ್ಪತ್ತಿಯನ್ನು  
ಹೇಳುವ ದೋಷಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಪ್ರಾಗಭಾವಃ ಎಂಬ ಒಂದು  
ಅಭಾವವನ್ನು ಅಂಗೀಕರಿಸಬೇಕು. ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಅಭಾವ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಇದು ಒಂದು ವಿಧ.

**ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯ ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯ** (ನಂ) 1. ದಿಟ್ಟತನ, ಧೈರ್ಯ.  
ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಘ್ನ” (೪-೧-೧೨೪) । “ನಿಃಸಾಧ್ಯಸತ್ವಂ  
ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯಮ್” ಸಾಂ ದಂ । “ಸಮಾಶ್ಲಿಷ್ಠಾಃ ಸಮಾಶ್ಲೇಷಃ  
ಚುಮ್ಬಿತಾಃ ಚುಮ್ಬನೇರಪಿ । ದೃಷ್ಟಾಃ ದರ್ಶನೇಃ ಕಾಂತಾಃ ದಾಸೀಕುರ್ವಂತಿ

ಯೋಷಿತಃ” ಸಾಂ ದಂ । 2. ಪ್ರಾವೀಣ್ಯ, ಕೌಶಲ, ನಿಪುಣತೆ,  
ಜಾಣತನ. 3. ವಾಕ್ಸಂಪತ್ತು, ವಾಗ್ಮಿತ್ವ, ಮಾತಿನಲ್ಲಿ  
ಪಟುವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಮಾತಿನ ವೈಖರಿ. “ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯಹೀನಸ್ಯ  
ನರಸ್ಯ ವಿಧಾ ಶಸ್ತ್ರಂ ಯಥಾ ಕಾಪುರುಷಸ್ಯ ಹಸ್ತೇ । ನ ತೃಪ್ತಿ-  
ಮುತ್ಪಾದಯತೇ ಶರೀರೇ ವೃದ್ಧಸ್ಯ ದಾರಾ ಇವ ದರ್ಶನೀಯಾಃ” । “ಶಾಸ್ತ್ರಂ  
ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ಸಹಜಶ್ಚ ಬೋಧಃ ಪ್ರಾಗಲ್ಭ್ಯಮಮ್ಯಸ್ತಗುಣಾ ಚ ವಾಣಿ”  
ಮಾಲತೀಂ ೩-೧೧ । 4. ಮರ್ಯಾದೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ,  
ಉದ್ವಿಗತನ.

**ಪ್ರಾಗಾರ ಪ್ರಾಗಾರ** (ಪುಂ) ಗೃಹ, ಮನೆ.

**ಪ್ರಾಗುದೀಚಿ ಪ್ರಾಗುದೀಚೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂರ್ವ ಮತ್ತು  
ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕುಗಳ ಮಧ್ಯದ ವಿದಿಕಕ್ಕು, ಈಶಾನ್ಯದಿಕ್ಕು.  
ಪ್ರಾಚ್ಯಾಶ್ಚ ಉದೀಚ್ಯಾಶ್ಚ ದಿಶೋಽಂತರಾಲಮ್ ಪ್ರಾಗುದೀಚಿ ।

**ಪ್ರಾಗ್ಜ್ಯೋತಿಷ ಪ್ರಾಗ್ಜ್ಯೋತಿಷ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಮರೂಪ  
ದೇಶ. (ನಂ) 2. ಒಂದು ಪಟ್ಟಣ. ಇದು ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ  
ಸರಕಾಸಾರನ ಪಟ್ಟಣವಾಗಿತ್ತು. “ಪ್ರಯಯಿ ದೀಪ್ತಸನ್ನಾಹಃ  
ಪ್ರಾಗ್ಜ್ಯೋತಿಷಪುರಂ ಪ್ರಭುಃ” ಯಾದಂ ೧೭-೭೧ ।

**ಪ್ರಾಮ್ನಿಷ ಪ್ರಾಮ್ನಿಷ್ಣ** (ಪುಂ) ಪೂರ್ವ ಮತ್ತು ದಕ್ಷಿಣದ  
ಮಧ್ಯದೇಶ, ಪ್ರಾಚ್ಯದೇಶ.

**ಪ್ರಾಗ್ಭಕ್ತ ಪ್ರಾಗ್ಭಕ್ತ** (ನಂ) ಆಹಾರಕ್ಕೆ ಮೊದಲು ಔಷಧ  
ವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಊಟಕ್ಕೆ ಮುಂಚೆ ಔಷಧ  
ಸೇವನೆ ಮಾಡುವುದು. “ಪ್ರಾಗ್ಭಕ್ತಂ ನಾಮ ಯತ್ ಪ್ರಾಕ್  
ಭಕ್ತಸ್ಯೋಪಯುಜ್ಯತೇ” ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರತಂ ೬೪-೬೮ ।

**ಪ್ರಾಗ್ಭಾರ ಪ್ರಾಗ್ಭಾರ** (ಪುಂ) ಪೂರ್ವದ ಅಗ್ರಭಾಗ, ಬೆಟ್ಟದ  
ತುದಿಯ ಪ್ರದೇಶ, ತಿಖರ. “ಶಿಲಾಘ್ರೇ ಶಿಖರಂ ಶೃಂಗಂ ದಂತಃ  
ಪ್ರಾಗ್ಭಾರ ಇತ್ಯಪಿ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । “ಕ್ರಂದತೋರವಚ್ಛ-  
ಧಾತ್ವಾತಿಭೂತಪ್ರಾಗ್ಭಾರಭೂಮಿಃ ಸ್ತುತಃ” ಮಾಲತೀಂ ೪-೧೯ ।

**ಪ್ರಾಗ್ರ ಪ್ರಾಗ್ರ** (ವಿಂ) ಉನ್ನತವಾದ, ಎತ್ತರವಾದ.

**ಪ್ರಾಗ್ರಸರ ಪ್ರಾಗ್ರಸರ** (ವಿಂ) 1. ಮುಖ್ಯ, ಪ್ರಧಾನ,  
ಮುಂದಾಳು. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಅಗ್ರೇ ಸರತಿ—ಸೃ (ಗತೌ) “ಅಚ್”  
(೩-೧-೧೩೪) । “ತ್ವಮಹಂತಾಂ ಪ್ರಾಗ್ರಸರಃ ಸ್ಮೃತೋಽಸಿ ಯತ್  
ಶಕುಂತಲಾ ಮೃತಿಮತೀ ಚ ಸತ್ಕಿಯಾ” ಶಾಕುಂ ೪-೧೪ ।  
2. ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವ, ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ಹೋಗುವ.

**ಪ್ರಾಗ್ರಹರ ಪ್ರಾಗ್ರಹರ** (ವಿಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ.  
ಪ್ರಾಗ್ರೇ ಹರತಿ — ಪ್ರ + ಹ್ರ (ಹರಣೇ) “ಅಚ್” (೩-೨-೯) ।  
“ತಥೇತಿ ತಸ್ಯಾಃ ಪ್ರಣಯಂ ಪ್ರತೀತಃ ಪ್ರತ್ಯಗ್ರಹೀತಪ್ರಾಗ್ರಹರೋ ರಘುಣಾಮ್”  
ರಘುಂ ೧೬-೨೩ ।

**ಪ್ರಾಗ್ರಾಟ ಪ್ರಾಗ್ರಾಟ** (ಪುಂ) ಹೆಪ್ಪುಹಾಕಿದ ನಂತರ ಘನ  
ರೂಪಕ್ಕೆ ಬರುತ್ತಿರುವ ತೆಳ್ಳಗಿರುವ ಮೊಸರು. ಪ್ರಾಗ್ರೇ ಅಟತಿ  
— ಅಟ (ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) ।



ಪ್ರಾಚ್ಯ ಸ್ಯಾಗ್ರ (ವಿಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ.  
ಪ್ರಾಚ್ಯ ಭವ: "ಯತ್" (೪-೪-೧೧೬) ।

ಪ್ರಾಗ್ವಂಶ ಸ್ಯಾಗ್ರಂಶ (ಪುಂ) 1. ಹೋಮದ್ರವ್ಯವಿರುವ  
ಗೃಹಕ್ಕೆ ಪೂರ್ವಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ ಗೃಹ, ಯಜಮಾನ ಮತ್ತು  
ಯಾತ್ರಿಕೃಗಳು ಇರುವ ಮನೆ. ಪ್ರಾಕ್ ವಂಶೋತ್ತರ । 2. ವಿಷ್ಣು.  
ಪ್ರಾಚಾಂ ಪೂರ್ವಾಂ ಅನಾದಿವಿದ್ಯಾನಿತ್ಯಮುಕ್ತಾನಾಂ ಸೂರಿಣಾಂ ವಂಶ:  
ಸ್ವರೂಪಾವಿರ್ಮಾನಿಬಂಧನಭೂತತಯಾ ಸಮುದ್ಭವಭೂಮಿ: । "ಅನಾದಿ-  
ಮುಕ್ತಾ: ಪ್ರಾಚ್ಛೋ ಯೇ ತೇಷಾಮುದ್ಭವಭೂಮಿದ: । ಪ್ರಾಗ್ವಂಶ ಇತಿ  
ವಿಖ್ಯಾತ: ಸಪ್ತಾಣಾಂ ಮನುರತ್ತಮ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । "ಪ್ರಾಗ್ವಂಶೋ  
ವಂಶವರ್ಧನ:" ವಿಂ ಸಂ ।

ಪ್ರಾಗ್ವತ್ ಸ್ಯಾಗ್ರಂತ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪೂರ್ವದೇಶದಂತೆ. 2.  
ಪೂರ್ವಕಾಲದಂತೆ. ಪ್ರಾಗಿವ—"ವತಿ:" (೪-೧-೧೧೬) ।

ಪ್ರಾಚಾತ ಸ್ಯಾಗ್ರಂತ್ (ಪುಂ) ಯುದ್ಧ, ಕಾಳಗ. ಪ್ರಾಹ್ಮಣೀಶ್ವರ  
—ಪ್ರ + ಆ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:) "ವತ್" (೩-೩-೧೨೧) ।

ಪ್ರಾಚಾರ ಸ್ಯಾಗ್ರಂತ್ (ಪುಂ) ಹೋಮದಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಗೆ ಮಾಡುವ  
ಅಜ್ಞಾಹುತಿ. ಪ್ರ + ಆ (ಕ್ಷರಣ) ಭಾವೇ "ವತ್" (೩-೩-೧೨೧) ।  
ದೀರ್ಘ: (೬-೩-೧೨೨) ।

ಪ್ರಾಘುಣ ಸ್ಯಾಗ್ರಂತ್ (ಪುಂ) ಅತಿಥಿ. ಪ್ರಾಘುಣತೇ ಭ್ರಾಮ್ಯತಿ—  
ಪ್ರ+ಆ+ಘುಣ (ಭ್ರಮಣೇ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫) । ಸ್ವಾರ್ಥೇ  
"ಕ:" । ಪ್ರಾಘುಣಕ: ಸ್ಯಾಗ್ರಂತ್ಕ: । "ತದಾಗಚ್ಛ ಪ್ರಾಘುಣಕ-  
ನ್ಯಾಯೇನ ಅಸ್ಮದಾವಾಸಮ್" ಪ್ರಚ್ಛತಂ ೪ ।

ಪ್ರಾಘುಣಿಕ ಸ್ಯಾಗ್ರಂತ್ಕ (ಪುಂ) ಅತಿಥಿ. ಪ್ರಾಘುಣ "ಠಕ್" ।  
"ಶ್ರವಣಪ್ರಾಘುಣಿಕೀಕೃತಾ ಜನೈ:" ನೈಷಂ ೨-೫೬ ।

ಪ್ರಾಡ್ ಸ್ಯಾಗ್ರಂತ್ (ವಿಂ) 1. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕು. 2. ಪೂರ್ವ  
ಕಾಲ. 3. ಪೂರ್ವದೇಶ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಅಶ್ವತಿ—ಪ್ರ+ಅಶ್ವ  
(ಗತೌ) "ವಿವನ್" (೩-೨-೫೯) । ಪ್ರಾಚೀ ದಿಕ್ । ಪ್ರಾಡ್  
ದೇಶ: ಕಾಲೋ ವಾ ।

ಪ್ರಾಜ್ಞ ಸ್ಯಾಗ್ರಂತ್ (ನಂ) ಪಣವವಾದ್ಯ. ಗೋಮುಖ,  
ಮೃದಂಗದ ಒಂದು ಭೇದ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಮಜ್ಜಂ ಯಸ್ಯ ।

ಪ್ರಾಜ್ಞಮ್ ಸ್ಯಾಗ್ರಂತ್ಕ (ನಂ) 1. ಪಣವವಾದ್ಯ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠ-  
ಮಜ್ಜನಮಜ್ಜಂ ಯಸ್ಯ । 2. ಮನೆಯ ನೆಲ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಮಜ್ಜನಂ  
ಗಮನಂ ಯತ್ರ । 3. ಅಂಗಳ, ಸುತ್ತಲೂ ಗೋಡೆಗಳಿಂದ  
ಅವೃತವಾದ ಪ್ರದೇಶ. "ಉದಯಶಿಖರಿಸ್ತುಪ್ರಾಜ್ಞಮೇವ  
ರಿಜ್ಞನ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೪೭ ।

ಪ್ರಾಡ್‌ಮುಖ ಸ್ಯಾಗ್ರಂತ್ಕ (ವಿಂ) ಪೂರ್ವಾಭಿಮುಖವಾದ,  
ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿಗೆ ಮುಖವಾದಿಕ್ಕೊಂದಿರುವ. "ಪಶ್ಚಿಮಾಂ  
ದಿಶಮಾಕ್ರಮ್ಯ ಪ್ರಾಡ್‌ಮುಖಂ ರಥಮಾಸ್ಥಿತಮ್" ಯಾದಂ ೨೨-೧೦೩ ।

ಪ್ರಾಚ್ಯಂತ್ಯ ಸ್ಯಾಗ್ರಂತ್ಕ (ನಂ) 1. ಭಯಂಕರವಾಗಿರುವಿಕೆ.  
ಪ್ರಾಚ್ಯಂತ್ಯ ಭಾವ: "ವ್ಯವ್" (೪-೧-೧೨೪) । "ಕೀಲಾಲ-  
ವ್ಯತಿಕರಗುಲ್ಫದಧನಪಙ್ಕ್ತ: ಪ್ರಾಚ್ಯಂತ್ಯಂ ವಹತಿ ನಕ್ಷಾಪುಷ್ಪಸ್ಯ  
ಮಾರ್ಗ:" ಮಾಲತೀಂ ೩-೧೭ । 2. ಬಹಳ ಜೋರಾಗಿರುವಿಕೆ,  
ರಭಸವಾಗಿರುವಿಕೆ.

ಪ್ರಾಚಿಕಾ ಸ್ಯಾಗ್ರಂತ್ಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಡುನೋಣ. 2. ಒಂದು  
ಹೆಣ್ಣು ಗಿಡಗ ಹಕ್ಕಿ.

ಪ್ರಾಚೀ ಸ್ಯಾಗ್ರಂತ್ಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕು. ಪ್ರಥಮಮಶ್ವತಿ  
ಸೂರ್ಯಮ್—ಪ್ರ + ಅಶ್ವ (ಗತೌ) "ವಿವನ್" (೩-೨-೫೯) ।  
"ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) । "ಪ್ರಾಚೀ ದಿಶಾ ದಿನಪತಿಂ ಪರಿಭೋಕ್ತು-  
ಕಾಮಾ" ಯಾದಂ ೧೯-೧೬ ।

ಪ್ರಾಚೀನ ಸ್ಯಾಗ್ರಂತ್ಕ (ನಂ) 1. ಊರಿನ ಸುತ್ತಲೂ ಇರುವ  
ಬೇಲಿ, ಊರಿನ ಸುತ್ತಲೂ ಹಾಕಿರುವ ಮುಳ್ಳಿನ ಬೇಲಿ.  
ಪ್ರಾಚೀನ—ಪ್ರಾಕ್ ವಾ "ವ್" (೪-೪-೮) । ವಸ್ತುನಾದೇಶ:  
(೭-೧-೨) । (ವಿಂ) 2. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ. 3. ಪೂರ್ವ  
ದೇಶದಲ್ಲಿರುವ, ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ. 4. ಪೂರ್ವಕಾಲದ.  
(ಅವ್ಯಂ) 5. ಪ್ರದಕ್ಷಿಣವಾಗಿ.

ಪ್ರಾಚೀನಪನಸ ಸ್ಯಾಗ್ರಂತ್ಕ (ಪುಂ) ಬಿಲ್ಲವೃಕ್ಷ.

ಪ್ರಾಚೀನವಹಿಸ್ ಸ್ಯಾಗ್ರಂತ್ಕ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ,  
ದೇವತೆಗಳ ಪ್ರಭು. "ಸ ಯಯಿ ಪ್ರಥಮಂ ಪ್ರಾಚೀಂ ತುಲ್ಯ:  
ಪ್ರಾಚೀನವಹಿಸ್" ರಘುಂ ೪-೨೮ । 2. ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. ಈ  
ರಾಜನ ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿ ದರ್ಭೆಗಳು ಪೂರ್ವಾಗ್ರವಾಗಿ ಬೆಳೆದಿದ್ದು  
ದರಿಂದ ಈ ರಾಜನಿಗೆ ಈ ಹೆಸರುಂಟಾಯಿತು. "ಪ್ರಾಚೀನಾಗ್ರಾ:  
ಕುಶಾಸ್ತಸ್ಯ ಪೃಥಿವ್ಯಾಂ ವಿಶ್ರುತಾ ಮುನೇ । ಪ್ರಾಚೀನವಹಿಸ್ಸಗವಾನ್  
ಖ್ಯಾತೌ ಭುವಿ ಮಾಬಲ:" ।

ಪ್ರಾಚೀನಾ ಸ್ಯಾಗ್ರಂತ್ಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗುರು ಶಂಖ. ಪ್ರಾಚಿ  
ಭವಾ "ವ್" (೪-೪-೮) ।

ಪ್ರಾಚೀನಾವಿತಿ ಸ್ಯಾಗ್ರಂತ್ಕ (ನಂ) ಎಡತೋಳಿನ  
ಕೆಳಗಡೆ ಬರುವಂತೆ ಧರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಯಜ್ಞೋಪವೀತ.  
ಪ್ರಾಚೀನಮ್ ಆನೀಯತೇ—ಆ+ಅಜ (ಗತೀಪಣಯೋ:) "ವಿ"  
ಆದೇಶ: (೨-೪-೫೬) । "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । ಪಿತೃ  
ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಹೀಗೆ ಧರಿಸಬೇಕು. "ಸವ್ಯಂ ಬಾಹುಂ  
ಸಮುದೃತ್ಯ ದಕ್ಷಿಣೇ ತು ಧೃತಂ ದ್ವಿಜಾ: । ಪ್ರಾಚೀನಾವಿತಮಿತ್ಯುಕ್ತಂ  
ಪಿತ್ರೇ ಕರ್ಮಣಿ ಯೋಜಯೇತ್" ಕೂರ್ಮಪುಂ ।

ಪ್ರಾಚೀನಾವಿತಿನ್ ಸ್ಯಾಗ್ರಂತ್ಕ (ವಿಂ) ಪ್ರಾಚೀನಾ  
ವೀತ ಯಜ್ಞೋಪವೀತವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ. ಪ್ರಾಚೀನಾವಿತಿ-  
ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ — "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) ।



ಪ್ರಾಚೀಪತಿ ಸ್ತೌಚೀಪತಿ (ಪುಂ) ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿಗೆ ಅಧಿಪತಿ  
ಯಾದ ಇಂದ್ರ. ಪ್ರಾಚ್ಯಾ: ಪತಿ: |

ಪ್ರಾಚೀರ ಸ್ತೌಚೀರ (ನಂ) ಉದಿನ ಸುತ್ತಲೂ ಹಾಕುವ  
ಮುಳ್ಳಿನ ಬೇಲಿ. ಪ್ರಾಚೀಯತೆ—ಪ್ರ + ಆ + ಚಿನ್ (ಚಯನೆ)  
“ಕ್ನ” (ತಂ ೨-೨೫) |

ಪ್ರಾಚ್ಯ ಸ್ತೌಚ್ಯುರ್ಯ (ನಂ) ಸಮೃದ್ಧಿ, ಪುಷ್ಕಳವಾಗಿರು  
ವಿಕೆ, ಹೇರಳವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪ್ರಚುರಸ್ಯ ಭಾವ: “ವ್ಯಕ್”  
(೪-೧-೧೨೪) |

ಪ್ರಾಚಿತಸ ಸ್ತೌಚೀತಸ (ಪುಂ) 1. ವಾಲ್ಮೀಕಿಮಹರ್ಷಿ.  
2. ವರಾಣಸ ಪುತ್ರ. ಪ್ರಾಚಿತಸೋಪತ್ಯ “ಅನ್” (೪-೧-೧೨೨) |  
“ವಾಚಂ ನಿಶಮ್ಯ ಭಗವಾನ್ ಸ ತು ನಾರದಸ್ಯ ಪ್ರಾಚಿತಸ: ಪ್ರವಚಸಾಂ  
ಪ್ರಥಮ: ಕವೀನಾಮ್” ಚಂ ರಾಂ | (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 3.  
ಪ್ರಾಚೀನ ಬರ್ಹಸ್ಪತೀ ರಾಜನ ಮಕ್ಕಳು. ಈ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ  
ಸಕಾರಾಂತ ಬಹುವಚನದ ರೂಪ.

ಪ್ರಾಚ್ಯ ಸ್ತೌಚ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ. ಪ್ರಾಚಿ  
ಭವ: “ಯತ್” (೪-೨-೧೦೧) | 2. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟಿದ. ಪ್ರಾಚಿ ಜಾತ: “ಯತ್” (೪-೨-೧೦೧) | (ಪುಂ)  
3. ಪ್ರಾಚ್ಯದೇಶ, ಶರಾವತೀನದಿಯವರೆಗಿನ ದೇಶ,  
ಶರಾವತೀ ನದಿಯ ಪೂರ್ವ ದಕ್ಷಿಣ ದೇಶ. “ಶರಾವತೀಸ್ತು  
ಯೋಜವೇ: | ದೇಶ: ಪ್ರಾದಕ್ಷಿಣ: ಪ್ರಾಚ್ಯ:” ಅಮಂ |

ಪ್ರಾಜಕ ಸ್ತೌಜಕ (ಪುಂ) ಸಾರಥಿ, ರಥವನ್ನು ನಡೆಸುವವನು.  
ಪ್ರಾಜಯತಿ ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಗಮಯತಿ ಅಶ್ವಾದೀನ್ — ಪ್ರ + ಅಜ (ಗತಿ  
ಕ್ಷೇಪಣಯೋ:) “ಞ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) | “ಯತ್ರಾಪವರ್ತತೇ  
ಯುಗ್ಯಂ ವೈಗುण्याತ್ ಪ್ರಾಜಕಸ್ಯ ಚ | ತತ್ರ ಸ್ವಾಮಿ ಭವೇದ್ಗುಣಯೋ  
ಹಿಸಾಯಾಂ ದ್ವಿಶತಂ ದಮಮ್” ಮನುಂ ೮-೨೯೩ |

ಪ್ರಾಜನ ಸ್ತೌಜನ (ನಂ) ಜಾವಟಿ, ಬಾರುಗೋಲು.  
ಪ್ರವೀಯತೇಜೇನ—ಪ್ರ + ಅಜ (ಗತಿಕ್ಷೇಪಣಯೋ:) ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೭) | “ಲ್ಯುಕ್ತಪ್ರಾಜನರಹಿರಕ್ಷಿತಧನು: ಪಾರ್ಥಿಕ್ಷಿತ-  
ಮರ್ಗಿಣಿ:” ವೇಣೀಂ ೩-೧೦ |

ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯ ಸ್ತೌಜಾಪತ್ಯ (ನಂ) 1. ಹನ್ನೆರಡು ದಿನಗಳಲ್ಲಿ  
ಮಾಡಬಹುದಾದ ಒಂದು ವ್ರತ, ಇದೊಂದು ಪ್ರಾಯ  
ಶ್ಚಿತ್ತ. 2. ರೋಹಿಣಿ ನಕ್ಷತ್ರ. ಪ್ರಾಜಾಪತಿ ದೇವತಾಸ್ಯ “ಞ್ವ:”  
(೪-೧-೮೫) | (ಪುಂ) 3. ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಾನಸಪುತ್ರರು.  
ಪ್ರಾಜಾಪತೇರಿಮೇ | “ಜಹು: ಪರಿಗ್ರಹಪ್ರೀಡಾಂ ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯಾಸ್ತಪಸ್ವಿನ:”  
ಕುಮಾಂ ೬-೩೪ | 4. ಎಂಟು ವಿಧ ವಿವಾಹಗಳಲ್ಲೊಂದು.  
ಇಬ್ಬರೂ ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಅಚರಿಸುತ್ತಿರಬೇಕೆಂದು  
ಹೇಳಿ ಕನ್ಯಾಪ್ರದಾನಮಾಡುವುದು “ಸ್ತೌಜಾಪತ್ಯ”  
ವಿವಾಹ. “ಸಹೋಭಿ ಚರತಾಂ ಧರ್ಮಮಿತಿ ವಾಚಾನುಭಾಷ್ಯ ಚ |

ಕನ್ಯಾಪ್ರದಾನಮಭ್ಯರ್ಚ್ಯ ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯೋ ವಿಧಿ: ಸ್ಮೃತ:” ಮನುಂ  
೩-೩೦ | (ವಿಂ) 5. ಪ್ರಜಾಪತಿಸಂಬಂಧವಾದ. ಪ್ರಾಜಾಪತೇ-  
ರಿದಮ್ | “ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾನಾಂ ಸ್ಮೃತಂ ಸ್ಥಾನಂ ಕ್ರಿಯಾವತಾಮ್”  
ಮಾರ್ಕಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಪತ್ಯಾ —ಪತ್ಯಾ. 6. ಸಂನ್ಯಾಸಾಶ್ರಮ  
ವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವ ಮೊದಲು ಮಾಡಬೇಕಾದ ಪ್ರಜಾಪತಿ  
ದೇವತಾಕವಾದ ಒಂದು ಇಷ್ಟ. ಪ್ರಾಜಾಪತಿ ದೇವತಾಸ್ಯಾ:  
“ಞ್ವ:” (೪-೧-೮೫) | “ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯಾಂ ನಿರೂಪ್ಯೇಷ್ಠಿಂ ಸರ್ವವೇದ-  
ಸದಕ್ಷಿಣಾಮ್ | ಆತ್ಮನ್ಯಗ್ನಿನ್ ಸಮಾರೋಪ್ಯ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ: ಪ್ರವ್ರಜೇದ್-  
ಗೃಹಾತ್ ಮನುಂ ೬-೩೮ |

ಪ್ರಾಜಿತ ಸ್ತೌಜಿತ (ಪುಂ) ಸೂತ, ಸಾರಥಿ. ಪ್ರಾಜತಿ—  
ಪ್ರ + ಅಜ (ಗತಿಕ್ಷೇಪಣಯೋ:) “ತೃಚ್” (೩-೧-೧೩೩) |  
“ರಹೋಭಾಜಾಮಕ್ಷಧು: ಸ್ಯಂದನಾನಾಂ ಹಾಹಾಕಾರಂ ಪ್ರಾಜಿತು: ಪ್ರತ್ಯ-  
ನಂದತ್” ಮಾಘಂ ೧೮-೭ |

ಪ್ರಾಜೇಶ ಸ್ತೌಜೇಶ (ನಂ) ರೋಹಿಣಿನಕ್ಷತ್ರ. ಪ್ರಾಜೇಶ:  
ಪ್ರಾಜಾಪತಿ: ದೇವತಾಸ್ಯ “ಅನ್” (೪-೨-೨೪) |

ಪ್ರಾಜ ಸ್ತೌಜ (ಪುಂ) 1. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ, ಜ್ಞಾನಿ.  
ಪ್ರಜಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಞ:” (೪-೨-೧೦೧) | “ದೇವದ್ವಿಜಗುರಪ್ರಾಜ-  
ಪೂಜನಂ ಶೌವಮಾಂಜವಮ್” ಗೀತಾ ೧೭-೧೪ | 2. ಒಂದು  
ಜಾತಿಯ ಗಿಳಿ. (ವಿಂ) 3. ಬುದ್ಧಿವಂತ, ಜಾಣ. “ನಾಮ-  
ಧೇಯಸ್ಯ ಯೇ ಕೇಚಿದಭಿವಾದಂ ನ ಜಾನತೇ | ತಾನ್ ಪ್ರಾಜೋಽಹಮಿತಿ  
ಬ್ರೂಯಾತ್ಪ್ರಿಯ: ಸರ್ವಾಸ್ತಥೈವ ಚ” ಮನುಂ ೨-೧೨೩ | (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
—ಜಾ —ಜ್ಞಾ. 1. ಬುದ್ಧಿ. ಪ್ರಜಾ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಞ:” (೪-೨-೧೦೧) |  
2. ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿನಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು. ಪ್ರಜಾಸ್ಯಾಸ್ಯಾ: “ಞ:” |  
“ಪ್ರಾಜಾ ತು ಭೀಮತೀ” ಅಮಂ | —ಜ್ಞಿ —ಜ್ಞಿ. ಪಂಡಿತ,  
ತಿಳಿದವಳು, ಜ್ಞಾನಸಂಪನ್ನೆಯಾದ ಹೆಂಗಸು. ಪ್ರಜಾ ಎವ  
ಪ್ರಾಜ: ಸ್ವಾರ್ಥ “ಅನ್” (೪-೪-೩೮) | “ಜಿಪ್”  
(೪-೧-೧೫) |

ಪ್ರಾಜಮ್ಮನ್ಯ ಸ್ತೌಜ್ಮನ್ಯ (ವಿಂ) ತಾನೇ ಪ್ರಾಜ್ಞನೆಂದು  
ತಿಳಿದಿರುವ. ಪ್ರಾಜಮಾತ್ಮಾನಂ ಮನ್ಯತೇ—“ಞ್ವ” (೩-೨-೮೩) |  
ಮುಮಾಗಮ: (೬-೩-೬೭) | ವಾಣಿನಿ: | ಪ್ರಾಜಮಾನಿ  
ಸ್ತೌಜ್ಮನಾಃ.

ಪ್ರಾಜ್ಯ ಸ್ತೌಜ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಚುರವಾದ, ಹೇರಳವಾದ,  
ಸಮೃದ್ಧವಾದ. ಪ್ರವೀಯತೇ—ಅಜ (ಗತೌ) “ಞ್ವತ್”  
(೩-೧-೧೨೪) | ವೀಮಾಬಿ ನ | “ವಿಜಿತಯ ಯ: ಪ್ರಾಜ್ಯಮಯ-  
ಚ್ಚದುತ್ತರಾನ್ ಕುರುನಕುಪ್ಯಂ ವಸು ವಾಸವೋಪಮ:” ಕಿರಾಂ ೧-೩೫ |  
2. ಹೇರಳವಾದ ತುಪ್ಪವುಳ್ಳ. ಪ್ರಭೂತಮಾಜ್ಯಂ ಭೂತಂ ಯಸ್ಯ |  
(ನಂ) 3. ಹೇರಳವಾದ ತುಪ್ಪ. ಪ್ರಭೂತಮಾಜ್ಯಮ್ |

ಪ್ರಾಂಜಲಿ ಸ್ತೌಂಜಲಿ (ವಿಂ) 1. ಅಂಜಲಿಬದ್ಧನಾಗಿರುವ,  
ಕೈಗಳನ್ನು ಜೋಡಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ, ಗೌರವ ತೋರಿಸಲು



ಎರಡು ಹಸ್ತಗಳನ್ನೂ ಜೋಡಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ. ಪ್ರಬದ್ಧೋ-  
ಜ್ಜಲಿಯೆನ. "ವಾಚಸ್ಪತಿರವಾಚೇದಂ ಪ್ರಾಜ್ಞಲಿರ್ಜಲಜಾಸನಮ್"  
ಕುಮಾಂ ೨-೩೦. 2. ಹಸ್ತಗಳ ಜೋಡಣೆ, ಅಂಜಲಿ,  
ಬೋಗಸೆ.

ಪ್ರಾಡ್ ಪ್ರಾಟ್ (ವಿಂ) ಪ್ರಶ್ನೆಯಾದುವವನು. ಪ್ರಚ್ಛ (ಪ್ರಿಪಾ-  
ಯಾಮ್) "ಕ್ವಿಪ್" ಸಂಪ್ರಸಾರಣಾಭಾವ: ದೀರ್ಘಶ್ಚ (ತಂ ೨-೫೮)।

ಪ್ರಾಡ್‌ವಿವಾಕ ಪ್ರಾಡ್ವಿವಾಕ (ಪುಂ) ನ್ಯಾಯಾಧಿಪತಿ, ವ್ಯವ-  
ಹಾರಗಳನ್ನು ವಿಚಾರಣೆಮಾಡಿ ತೀರ್ಮಾನಿಸುವ ಅಧಿಕಾರಿ.  
ಪ್ರಾಡ್ ಚ ವಿವಾಕಶ್ಚ ಪ್ರಾಡ್‌ವಿವಾಕೌ ಪ್ರಶ್ನವಿವಾಕಾವಸ್ಯ ಸ್ತ:  
"ಅಚ್" (೫-೨-೧೨೭)। ವಾದಿ ಪ್ರತಿವಾದಿಗಳ ವಿವಾದಾ-  
ಸ್ಪದವಾದ ಮಾತುಗಳನ್ನು ಕೇಳಿ ವಿಚಾರಣೆಯ ಪೂರ್ವಕ  
ನಿರ್ಣಯವನ್ನು ಮಾಡುವುದರಿಂದ ನ್ಯಾಯಾಧೀಶನು  
ಪ್ರಾಡ್ವಿವಾಕನು. "ವಿವಾದಾನುಗತಂ ಪೃಷ್ಟಾ ಪೂರ್ವಾಕಯಂ ಪ್ರಯತ್ನತ:।  
ವಿಚಾರಯತಿ ಯೇನಾಸೌ ಪ್ರಾಡ್‌ವಿವಾಕಸ್ತತ: ಸ್ಮೃತ:"। ವಾದಿ  
ಪ್ರತಿವಾದಿಗಳ ವಿರುದ್ಧ ಮತ್ತು ಅವಿರುದ್ಧ ಮಾತುಗಳನ್ನು  
ಕೇಳಿ ಸಭಿಕ (ಪಂಚಾಯತದಾರ) ರೊಡನೆ ವಿವೇಚನೆ ಮಾಡಿ  
ತೀರ್ಮಾನಿಸುವವನಾದುದರಿಂದ ನ್ಯಾಯಾಧೀಶನು ಪ್ರಾಡ್ವಿ-  
ವಾಕನು. "ವಿವಾದಾನುಗತಂ ಪೃಷ್ಟಾ ಸಸಮ್ಯಸ್ತಪ್ರಯತ್ನತ:।  
ವಿಚಾರಯತಿ ಯೇನಾಸೌ ಪ್ರಾಡ್‌ವಿವಾಕಸ್ತತ: ಸ್ಮೃತ:"।

ಪ್ರಾಣ ಪ್ರಾಣ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಪ್ರಾಣಿತಿ  
ಚಿರಕಾಲಂ ಜೀವತಿ — ಪ್ರ + ಅನ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ಅಚ್"  
(೩-೧-೧೩೪)। "ಕಂಜ: ಪ್ರಾಣಶ್ಚ ವೇದೀಶವೇದಗರ್ಭಪುರಾಣಗಾ:"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 2. ಶರೀರದೊಳಗಿರುವ ಪಂಚವಾಯುಗಳ  
ಒಂದೊಂದು. ಪ್ರಾಣಿತ್ಯನೇನ — ಪ್ರ + ಅನ ಕರಂ "ಏವ್"  
(೩-೩-೧೨೧)। ಈ ಪ್ರಾಣವಾಯುವು ಹೃದಯದಲ್ಲಿರು-  
ವುದು. "ಹೃದಿ ಪ್ರಾಣೋ ಗುಡೇಶ್ವಾನ: ಸಮಾನೋ ನಾಭಿಸಂಸ್ಥಿತ:"  
ಅಮಂ. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 3. ಶರೀರದೊಳಗಿರುವ ಪಂಚ  
ಪ್ರಾಣವಾಯುಗಳು. (1) ಪ್ರಾಣ: (2) ಅಪಾನ: (3) ಸಮಾನ:  
(4) ಉದಾನ: ಮತ್ತು (5) ವ್ಯಾನ: ಇವು ಪಂಚವಾಯು  
ಗಳು.

ದೇಹದಲ್ಲಿ ಪಂಚಪ್ರಾಣವಾಯುಗಳ ಸ್ಥಾನ:  
ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಣವಾಯು. ಗುಡಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ  
ಅಪಾನವಾಯು. ನಾಭಿಯಲ್ಲಿ ಸಮಾನವಾಯು. ಕಂಠ  
ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಉದಾನವಾಯು ಮತ್ತು ಶರೀರದ ಎಲ್ಲಾ  
ಭಾಗಗಳಲ್ಲೂ ವ್ಯಾನವಾಯು. "ಹೃದಿ ಪ್ರಾಣೋ ಗುಡೇಶ್ವಾನ:  
ಸಮಾನೋ ನಾಭಿಸಂಸ್ಥಿತ:। ಉದಾನ: ಕಂಠದೇಶಸ್ಥೋ ವ್ಯಾನ:  
ಸರ್ವಶರೀರಗ:"।

ಈ ಐದು ವಾಯುಗಳ ಹೆಸರು: (1) ನಾಗ:  
(2) ಕೂರ್ಮ: (3) ಕೃಕರ: (4) ದೇವದತ್ತ: ಮತ್ತು (5)

ಧನಂಜಯ:। ಉದ್ಗಾರ (ತೇಗುವುದು, ವಾಕರಿಸುವುದು),  
ಉನ್ಮೀಲನ (ತೆರೆಯುವುದು), ಉತ್ಸರ್ಜನ ವಿಸರ್ಜನೆಗಳಿಗೆ  
ತಡೆಯಿಲ್ಲದೆ ಮಾಡುವುದು. ಸೀನನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದು,  
ಆಕಳಿಕೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಬಾಯನ್ನು ಅಗಲಿಸುವುದು.  
ಜೀವ ಹೋದರೂ ಶರೀರವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ವ್ಯಾಪಿಸಿಕೊಂಡಿರು-  
ವುದು ಈ ಐದು ವಾಯುಗಳ ವ್ಯಾಪಾರ. "ಉದ್ಗಾರೇ ನಾಗ  
ಆಖ್ಯಾತ: ಕೂರ್ಮ ಉನ್ಮೀಲನೇ ಸ್ಥಿತ:। ಕೃಕರಾಂಶ್ಚ ಧೃತಂ ಜೇಯಂ  
ದೇವದತ್ತಾದ್ವಿಜೃಂಭಣಮ್। ನ ಜಹಾತಿ ಮೃತಂ ವಾಪಿ ಸರ್ವವ್ಯಾಪಿ  
ಧನಂಜಯ:"। ಮತ್ತು ಈ ಪಂಚಪ್ರಾಣಗಳೂ ಕ್ರಮ  
ವಾಗಿ ಅನ್ನಪ್ರವೇಶನ ಮಲಮೂತ್ರಾದಿಗಳ ಉತ್ಸರ್ಜನ  
ಅನ್ನವಿಪಾಚನ ಭಾಷಣ ಮತ್ತು ನಿರ್ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ  
ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುವು. 4. ಬಾಣಂತಿ ಬೋಳ.  
5. ಕಾವ್ಯದ ಜೀವ, ಕಾವ್ಯದ ಮುಖ್ಯವಾದ ಸಾರ. 6. ಬಲ,  
ಸಾರ, ಶಕ್ತಿ. 7. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 8. ಬಹಳ ಪ್ರಿಯ  
ವಾದ ವಸ್ತು ಅಥವಾ ಪ್ರೀತಿಪಾತ್ರನಾದ ಮನುಷ್ಯ.  
"ಅರ್ಥಾ ವಹಿಷ್ವರಾ: ಪ್ರಾಣಾ:"। 9. ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯ  
ಮತ್ತು ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಗಳು. "ಸ್ಪಷ್ಟವೇತಾನ್ ಅಶುಚಿ-  
ನಿತ್ಯಮದ್ವಿ: ಪ್ರಾಣಾನುಪಸ್ಪೃಶತ್। ಗಾತ್ರಾಣಿ ಚೈವ ಸರ್ವಾಣಿ  
ನಾಭಿ ಪಾಣಿತಲೇನ ತು" ಮನುಂ ೪-೧೪೩. (ವಿಂ) 10. ತುಂಬ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರಾಣೋ ಹೃನ್ಮಾಸ್ತೇ ಬೋಲೇ ಕಾವ್ಯಜೀವೇನಿಲೇ ಬಲೇ।  
ಪುಲಿಂಗ್ಗ: ಪೂರೀತೇ ವಾಚ್ಯಲಿಂಗ್ಗ: ಪುಂಭೂಮಿ ಚಾಸುಪು" ಮೇದಿಂ।

ಪ್ರಾಣಕ ಪ್ರಾಣಕ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರಿಯ ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ ಪ್ರಾಣ,  
ಜೈತನ್ಯವಿರುವ ಪ್ರಾಣ. ಪ್ರಾಣೇನ ಕಾಯತಿ — ಕಂ (ಶಬ್ದೇ)  
"ಕ:" (೩-೨-೩)। 2. ಹೊನ್ನೆಮರ. 3. ಗಂಡಸರ  
ನಿಲುವಂಗಿ, ಉದ್ದದ ಅಂಗಿ. "ಪ್ರಾಣಕ: ಸತ್ವಜಾತೀಯೇ  
ಜೀವಕದ್ರುಮಚೋಲಯೋ:" ಮೇದಿಂ।

ಪ್ರಾಣಾಂತಕ ಪ್ರಾಣಾಂತಕ (ವಿಂ) ಜೀವವನ್ನು ಹೋಗ  
ಲಾಡಿಸುವ, ಜೀವಕ್ಕೆ ಹಾನಿಯುಂಟುಮಾಡುವ. ಪ್ರಾಣಾನ್  
ಹಂತಿ—ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಪ್ರಾಣಚ್ಛಿದ್ ಪ್ರಾಣಚ್ಛಿದ್ (ವಿಂ) ಪ್ರಾಣವನ್ನು ಅಪಹರಿ-  
ಸುವ, ಕೊಲ್ಲುವ. "ಪ್ರಾಣಚ್ಛಿದಾ ದೈತ್ಯಪತೇನೇನಾನಾಮ್"  
ಮಾಘಂ ೩-೧೪।

ಪ್ರಾಣಚ್ಛೇದ ಪ್ರಾಣಚ್ಛೇದ (ಪುಂ) ಹತ್ಯೆ, ಕೊಲೆ, ಮಿಡನೆ.  
ಪ್ರಾಣಸ್ಯ ಚ್ಛೇದ:।

ಪ್ರಾಣಜೀವನ ಪ್ರಾಣಜೀವನ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು.

ಪ್ರಾಣತ್ ಪ್ರಾಣತ್ (ವಿಂ) ಜೀವಿಸಿರುವ, ಜೀವಿಸುತ್ತಿರುವ ಬದುಕಿ-  
ರುವ. ಪ್ರ + ಅನ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬)। ಪ್ರಾಣತೀ ಪ್ರಾಣತೀ.



**ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗ ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗ (ಪುಂ)** 1. ಪ್ರಾಣವನ್ನು ಬಿಡುವುದು, ಅತ್ಯಂತ. ಪ್ರಾಣಸ್ಯ ತ್ಯಾಗಃ | "ವರಂ ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೋ ನ ಚ ಪಿಶುನವಾಕ್ಯೇಷ್ವಭಿರಹಿಚಿಃ" | 2. ಮರಣ.

**ಪ್ರಾಣತ್ಯ ಪ್ರಾಣತ್ಯ (ಪುಂ)** 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಪ್ರಾಣಿತ್ಯನೇನ— ಪ್ರ + ಅನ (ಪ್ರಾಣನೇ) "ಅಃ" (ಉಂ 3-113) | 2. ಪ್ರಜಾಪತಿ, ಬ್ರಹ್ಮ. 3. ಪುಣ್ಯತೀರ್ಥ. (ವಿಂ) 4. ಬಲಶಾಲಿ, ಶಕ್ತಿವಂತ. ಪ್ರಾಣಿತಿ — ಕರ್ತಂ "ಅಃ" |

**ಪ್ರಾಣದ ಪ್ರಾಣದ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. (1) ಪ್ರಾಣ ಬಲಂ ದದಾತಿ — ಸೂರಿಯು: ಸದಾ ದರ್ಶನರೂಪಸ್ವಾನುಭವಪರಿಚರಣಾನುಕೂಲಬಲದ: —ಓ ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕ:" (3-2-3) | ನಿತ್ಯಸೂರಿಗಳಿಗೆ ಪರಿಚಯ ಮೊದಲಾದ ಕಾರ್ಯಗಳಿಗೆ ಬಲವನ್ನು ಕೊಡುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಸೂರಿಯು: ಪರಿಚಯಾದೌ ಬಲದ: ಪ್ರಾಣದ: ಸ್ಮೃತ:" ಇತಿ ನಿರಹಿತಿ: | "ईशान: प्राणद: प्राण:" ವಿಂ ಸಂ | (2) ಪ್ರಾಣ ಮಹತಾಂ ಮನೋಚಿತಂ ಬಲಂ ದದಾತಿ | ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಸಮುದ್ರಮಂಥನಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ ಬಲವನ್ನು ಕೊಟ್ಟಿದ್ದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "महतां बल-दानाद्धि समुद्रमथने भृशम् | प्राणदश्च समुद्रिष्ट: कूर्म-रूपतया हि स:" ಇತಿ ನಿರಹಿತಿ: | "अच्युत: प्रथित: प्राण: प्राणदो वासवानुज:" ವಿಂ ಸಂ | (3) ವಿಷಯ-ವಿಷಮುಚ್ಚಿತೇಭ್ಯ: ಆತ್ಮಮ್ಯ: ಪ್ರಾಣಮ್ ಆತ್ಮೋಜ್ಜೀವನಂ ದದಾತಿ ಇತಿ ಚ | ವಿಷಯಗಳೆಂಬ ವಿಷದಿಂದ ಕಲುಷಿತರಾದ ಜೀವಾತ್ಮರಿಗೆ ದಯೆಯಿಂದ ಆತ್ಮೋಜ್ಜೀವನವನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸುವುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು. "कान्तादि विषयव्याप्त्या नष्टात्मभ्य: कृपावशात् | सदात्मोज्जीवनं योऽसौ ददाति प्राणद: स्मृत:" ಇತಿ ನಿರಹಿತಿ: | "ऊर्ध्वग: सत्यथाचार: प्राणद: प्रणव: पण:" ವಿಂ ಸಂ | 2. ಜೀವಕವ್ಯಕ್ಷ, ಹೊನ್ನೆಮರ. (ನಂ) 3. ಜಲ, ನೀರು. 4. ರಕ್ತ. ಪ್ರಾಣ ದದಾತಿ—ಓ ದಾನ್ "ಕ:" (3-2-3) | (ವಿಂ) 5. ಪ್ರಾಣದಾನ ಮಾಡುವವನು. "अर्थप्रदान-मेवाहु: संसारे सुमहत् तप: | अर्थद: प्राणद: प्रोक्त: प्राणा ह्यर्थेषु कीलिता:" ಕಥಾಸಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ)—ವಾ-ದಾ. 6. ಅಳಲಿಗಿಡ. ಪ್ರಾಣ ಜೀವನ ಬಲಂ ವಾ ದದಾತಿ | 7. ಪ್ರಾಣ ದಾನಮಾಡುವ ಹೆಂಗಸು.

**ಪ್ರಾಣದಂಡ ಪ್ರಾಣದಂಡ (ಪುಂ)** ಮರಣದಂಡನೆ, ಪ್ರಾಣ ತೆಗೆಯುವ ಶಿಕ್ಷೆ.

**ಪ್ರಾಣದಾತ್ ಪ್ರಾಣದಾತ್ಯ (ವಿಂ)** ಪ್ರಾಣದಾನ ಮಾಡುವವನು, ವಿಪತ್ತಿನಿಂದ ಪಾರುಮಾಡುವವನು, ಅಪತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ ರಕ್ಷಿಸುವವನು. ಪ್ರಾಣ ದದಾತಿ — ಓ ದಾನ್ (ದಾನೇ)

"तृच्" (3-1-133) | ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ತೃಪ್" (4-1-4) | —ದಾತ್ರಿ —ದಾತ್ರಿ.

**ಪ್ರಾಣದಾನ ಪ್ರಾಣದಾನ (ನಂ)** ಪ್ರಾಣವನ್ನು ಉಳಿಸುವುದು, ವಿಪತ್ತಿನಿಂದ ಪಾರುಮಾಡುವುದು, ಪ್ರಾಣಾಪತ್ತಿನಿಂದ ರಕ್ಷಿಸುವುದು.

**ಪ್ರಾಣಧಾರಣ ಪ್ರಾಣಧಾರಣ (ನಂ)** 1. ಪ್ರಾಣವನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವುದು, ಬದುಕಿರುವುದು, ಜೀವಿಸಿರುವುದು. (ವಿಂ) 2. ಜೀವನೋಪಾಯ, ಬದುಕಿಗೆ ಆಧಾರಭೂತವಾದ ಸಾಧನ.

**ಪ್ರಾಣವೃತ್ ಪ್ರಾಣವೃತ್ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. ಪ್ರಾಣಾನ್ ಮಾತು-ವಹರತಿ -- ಷ್ (ಧಾರಣೆ) "ಕ್ವಿಪ್" (3-2-66) | "प्राणवृत् प्राणजीवन:" ವಿಂ ಸಂ | 2. ಜೀವ, ಪ್ರಾಣ.

**ಪ್ರಾಣನ ಪ್ರಾಣನ (ಪುಂ)** 1. ಕಂಠ, ಕುತ್ತಿಗೆ. ಪ್ರಾಣಿತ್ಯನೇನ ಪ್ರ + ಅನ (ಪ್ರಾಣನೇ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-117) | 2. ಜಲ, ನೀರು. (ನಂ) 3. ಬದುಕುವುದು, ಜೀವಿಸುವುದು. ಪ್ರ+ಅನ (ಪ್ರಾಣನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-117) | 4. ಬದುಕಿಸುವುದು, ರಕ್ಷಿಸುವುದು. ಪ್ರ+ಅನ (ಪ್ರಾಣನೇ)+ ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-117) | "प्रह्लादाह्लादनानि प्रणतसुरगणप्राणनप्रीणनानि" |

**ಪ್ರಾಣನಾಥ ಪ್ರಾಣನಾಥ (ಪುಂ)** 1. ಪತಿ, ಗಂಡ. ಪ್ರಾಣಾನಾಥಃ | "चाटुकारमपि प्राणनाथं रोषादपास्य या | पश्चात्तापमवाप्नोति कलहान्तरिता तु सा" ಸಾಂ ದಂ 3 | 2. ಎಲ್ಲಾ ಪ್ರಾಣಿಗಳಿಗೂ ಒಡೆಯನಾದ ಯಮ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ನಾಥಾ —ನಾಥಾ. ಪತ್ನಿ. "विष्णोर्विश्वात्मनस्तां विपुल-गुणमयीं प्राणनाथां प्रणामि" |

**ಪ್ರಾಣನೀಯ ಪ್ರಾಣನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಬದುಕಿರಬೇಕಾದ. 2. ಬದುಕಿರಲು ಅರ್ಹನಾದ. ಪ್ರ + ಅನ (ಪ್ರಾಣನೇ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) | 3. ಬದುಕಿಸಲ್ಪಡುವ, ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ + ಅನ + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) | 4. ಬದುಕಿಸಬೇಕಾದ. ರಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ. 5. ರಕ್ಷಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. "तव्य:" | ಪ್ರಾಣಿತವ್ಯ: ಪ್ರಾಣಿತವ್ಯ: ಣಿಚಿ — ಪ್ರಾಣಿತವ್ಯ: ಪ್ರಾಣಿತವ್ಯ:.

**ಪ್ರಾಣಂತ ಪ್ರಾಣಂತ (ಪುಂ)** 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಪ್ರಾಣಿತ್ಯನೇನ — ಪ್ರ + ಅನ (ಪ್ರಾಣನೇ) "ಞ್" (ಉಂ 3-127) | ಛೋಂತ: (3-2-3) | 2. ರಸಾಂಜನ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಾಣಂತಿ ಪ್ರಾಣಂತಿ. "ತೃಪ್" (4-1-41) | 1. ಕ್ಷುತ್ತು, ಹಸಿವು. 2. ಬಿಕ್ಕಿ ಬಿಕ್ಕಿ ಅಳುವುದು. 3. ಹಿಕ್ಕು, ಬಿಕ್ಕುಳಿಕೆ.



**ಪ್ರಾಣಪ್ರದ ಪ್ರಾಣಪ್ರದ** (ವಿಂ) ಪ್ರಾಣವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವವನು, ಜೀವದಾನ ಮಾಡುವವನು. ಪ್ರಾಣಂ ಪ್ರದದಾತಿ—ಪ್ರ+ಙ್ ಡಾಕ್ (ದಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೬) । “ಪ್ರಾಣಪ್ರದಃ ಸುಹೃತ್ ಸಾರ್ಥವಾಹಸುತಃ ವಸುದತ್ತೋ ಮಯಾ ಸ್ಮೃತಃ” ಕಥಾಸಂ । -ಪ್ರವಾ-ಪ್ರದಾ. ಮುದ್ದಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಗಂದಿಗರ ಸರಕು, ಒಂದು ಒಷಧಿ.

**ಪ್ರಾಣಭಾಸ್ವತ್ ಪ್ರಾಣಭಾಸ್ವತ್** (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. **ಪ್ರಾಣಭೃತ್ ಪ್ರಾಣಭೃತ್** (ಪುಂ) ಜೀವ, ಪ್ರಾಣ. ಪ್ರಾಣಾನ್ ವಿಭೃತಿ—ಙ್ ಭೃ (ಧಾರಣೆ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೨೬) । “ಅಂತರ್ಗತಂ ಪ್ರಾಣಭೃತಾಂ ಹಿ ವೇದ ಸರ್ವಂ ಭವಾನ್ ಭಾವಮತೋಽಭಿ-ಧಾಸ್ಯೇ” ರಘುಂ ೨-೪೩ ।

**ಪ್ರಾಣಮಯಕೋಶ ಪ್ರಾಣಮಯಕೋಶ** (ಪುಂ) ಐದು ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪ್ರಾಣ. “ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಃ ಪञ್ಚಭಿರಚ್ಚಿತ್ತೋಽಯಂ ಪ್ರಾಣೋ ಭವೇತ್ ಪ್ರಾಣಮಯಸ್ತು ಕೋಶಃ” ವಿವೇಕಚೂ. । ಇದು ಜೀವನಿಗೆ ಅಚ್ಚಾದಕವಾದ ದೇಹ ಮೊದಲಾದ ಐದು ಕೋಶಗಳಲ್ಲೊಂದು. [“ಪञ್ಚಕೋಶ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಪ್ರಾಣಯತ್ ಪ್ರಾಣಯತ್** (ವಿಂ) ಬದುಕಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರಾಣಯತಿ—ಪ್ರ+ಅನ (ಪ್ರಾಣನೆ)+ಞಿಕ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । “ಪ್ರಾಣಯಂತಮರಿಂ ಪ್ರೋಚೇ ರಾಕ್ಷಸೇಂದ್ರೋ ವಿಭೀಷಣಮ್” ಮೃತ್ಯುಂ ೧-೧೦೧ ।

**ಪ್ರಾಣಯಮ ಪ್ರಾಣಯಮ** (ಪುಂ) ಪ್ರಾಣಾಯಾಮ. ಪ್ರಾಣಾ ಯಮ್ಯಂತೇಽನೇನ—ಯಮ (ಉಪರಮೆ) ಕರಂ “ಅಪ್” (೩-೩-೬೩) ।

**ಪ್ರಾಣಯಾತ್ರಾ ಪ್ರಾಣಯಾತ್ರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶ್ವಾಸ ಮತ್ತು ಉಚ್ವಾಸ ರೂಪವಾದ ಪ್ರಾಣದ ವ್ಯಾಪಾರ. 2. ಭೋಜನ, ಪ್ರಾಣ ಧರಿಸಿರಲು ಬೇಕಾಗುವ ವ್ಯಾಪಾರ. 3. ಬದುಕಿರುವುದು, ಜೀವಿಸಿರುವುದು. “ಪಿಂಡಪಾತಮಾತ್ರಪ್ರಾಣಯಾತ್ರಾಂ ಭಗವ-ತೀಮ್” ಮಾಲತೀಂ ೧ ।

**ಪ್ರಾಣಯೋನಿ ಪ್ರಾಣಯೋನಿ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. 2. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಜೀವನಾಧಾರ, ಜೀವನೋಪಾಯ.

**ಪ್ರಾಣರಂಧ್ರ ಪ್ರಾಣರಂಧ್ರ** (ನಂ) 1. ಬಾಯಿ. 2. ಮೂಗಿನ ಹೊಳ್ಳೆ.

**ಪ್ರಾಣರೋಧ ಪ್ರಾಣರೋಧ** (ಪುಂ) ಶ್ವಾಸೋಚ್ವಾಸಗಳನ್ನು ತಡೆಯುವುದು, ಉಸಿರಾಡುವುದನ್ನು ನಿರೋಧಿಸುವುದು.

**ಪ್ರಾಣಲಿಙ್ಗಿಸ್ಥಲ ಪ್ರಾಣಲಿಂಗಿಸ್ಥಲ** (ನಂ) ವೀರಶೈವ ಮತದಲ್ಲಿ ಸಾಧನೆಯ ಪಟ್ಟಲ ಮಾರ್ಗದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಸ್ಥೋಪಾನ. ಭಕ್ತಸ್ಥಲ ಮಹೇಶಸ್ಥಲ ಮತ್ತು ಪ್ರಸಾದಿ

ಸ್ಥಲಗಳಲ್ಲಿ ಕರ್ಮಕ್ಕೇ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯವಿರುವುದು. ಜ್ಞಾನವು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ವಿಕಾಸಹೊಂದದೆ ಗೌಣವಾಗಿರುವುದು. ಪ್ರಾಣಲಿಂಗಿಸ್ಥಲದಿಂದ ಜ್ಞಾನವೇ ಪ್ರಧಾನವಾಗಿ ಕರ್ಮವು ಗೌಣವಾಗುವುದು. ಚಂಚಲವಾದ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ಒಂದು ಕಡೆ ನಿಲ್ಲಿಸುವುದರಿಂದ ಹೋಗಿ ಕಂಡ ದೇವರು ಒಳಗೆ ಇರುವನೇಂಬ ಜ್ಞಾನವು ಉಂಟಾಗುವುದು. ಇದರಿಂದ ಮುಂದೆ ಆತ್ಮಸ್ವರೂಪ ಜ್ಞಾನವುಂಟಾಗುವುದು. ಲಿಂಗದಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಣವನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸಿ ಪ್ರಾಣದಲ್ಲಿ ಲಿಂಗವನಿರಿಸುವ ಕಾರಣ ಪ್ರಾಣಲಿಂಗವಾಯಿತು.

**ಪ್ರಾಣವತ್ ಪ್ರಾಣವತ್** (ಪುಂ) ಪ್ರಾಣವಾಯುವಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ಜೀವ, ಪ್ರಾಣ. ಪ್ರಾಣ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪) । “ಯಾಮಾಹುಃ ಸರ್ವಬೀಜಪ್ರಕೃತಿರೀತಿ ಯಥಾ ಪ್ರಾಣಿನಃ ಪ್ರಾಣವಂತಃ” ಶಾಕುಂ ೧ ।

**ಪ್ರಾಣವಿಯೋಗ ಪ್ರಾಣವಿಯೋಗ** (ಪುಂ) ಪ್ರಾಣವು ಶರೀರ ದಿಂದ ಬೇರೆಯಾಗುವುದು, ಮರಣ.

**ಪ್ರಾಣವೃತ್ತಿ ಪ್ರಾಣವೃತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಈ ದೇಹದೊಳಗಿರುವಾಗ ಜೀವದ ವ್ಯಾಪಾರ.

**ಪ್ರಾಣಶರೀರ ಪ್ರಾಣಶರೀರ** (ಪುಂ) ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಪ್ರಾಣಃ ಶರೀರಂ ಸ್ವರೂಪಂ ಯಸ್ಯ ।

**ಪ್ರಾಣಸಂಯಮ ಪ್ರಾಣಸಂಯಮ** (ಪುಂ) ಪ್ರಾಣವನ್ನು ತಡೆ ಹಿಡಿಯುವುದು, ಪ್ರಾಣವು ಹೋಗದಂತೆ ನಿರೋಧಿಸುವುದು.

**ಪ್ರಾಣಸಂಯಮ ಪ್ರಾಣಸಂಯಮ** (ನಂ) ಪ್ರಾಣಗಳಿಗೆ ಮನೆಯಾಗಿರುವ ಶರೀರ.

**ಪ್ರಾಣಸಮ ಪ್ರಾಣಸಮ** (ಪುಂ) 1. ಪತಿ, ಗಂಡ. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಾಣಕ್ಕೆ ಸಮನಾದ, ಬಹಳ ಪ್ರೀತಿಪಾತ್ರನಾದ. “ರಾಮಸ್ಯ ದಯಿತಾ ಭಾರ್ಯಾ ನಿದ್ರಾಂ ಪ್ರಾಣಸಮಾ ಹಿತಾ” ರಾಮಾಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸಮಾ-ಸಮಾನ. ಪತ್ನಿ.

**ಪ್ರಾಣಸಾರ ಪ್ರಾಣಸಾರ** (ವಿಂ) ಬಲವೇ ಸಾರವಾಗಿರುವ, ಬಲವೇ ತಿರುಳಾಗಿರುವ, ಬಲಶಾಲಿಯಾಗಿರುವ. ಪ್ರಾಣೋ ಬಲಮೇವ ಸಾರಃ ಸ್ಥಿರಾಂಶೋ ಯತ್ರ । “ಅಪಚಿತಮಪಿ ಗಾತ್ರಂ ವ್ಯಾಯತತ್ವಾದಲಕ್ಷ್ಯಂ ಗಿರಿವಿರ ಇವ ನಾಗಃ ಪ್ರಾಣಸಾರಂ ವಿಭೃತಿ” ಶಾಕುಂ ೨-೪ ।

**ಪ್ರಾಣಹರ ಪ್ರಾಣಹರ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಾಣವನ್ನು ಒಂದು ದೇಹ ದಿಂದ ಮತ್ತೊಂದು ದೇಹಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುವ. 2. ಬಲವನ್ನು ಕಳೆಯುವ. ಪ್ರಾಣಂ ಹರತಿ ದೇಹಾದೇಹಾಂತರಂ ಪ್ರಾಪಯತಿ ಪ್ರಾಣಂ ಬಲಂ ವಾ ಹರತಿ—ಹೃ (ಹರಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೨-೯) । “ಶುಕ್ಲಾ ಮಾಸಂ ಸ್ತ್ರಿಯೋ ವೃದ್ಧಾಃ ಬಾಲಾರ್ಕಸ್ತರಣಂ ದಧಿ । ಪ್ರಭಾತೇ ಮಥುನಂ ನಿद्रಾ ಸಃ ಪ್ರಾಣಹರಾಣಿ ಪಠ” । “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) ।



-ಹಾರಕ: -ಹಾರಕ: "ಪಿನ್ನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। -ಹಾರಿನ್  
-ಹಾರಿನ್.

ಪ್ರಾಣಾ: ಪ್ರಾಣಾ: (ಪುಂ. ಬಂ. ವಂ) ದೇಹದೊಳಗಿರುವ ಪಂಚ  
ಪ್ರಾಣಗಳು. ಪ್ರಾಣೀಯೇಭಿ: - ಪ್ರ + ಅನ (ಪ್ರಾಣನೆ) ಕರಂ  
"ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। ["ಪ್ರಾಣ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]  
"ಪ್ರಾಣೈ: ಪಣೈ: ಸ್ವಂ ನಿಪುಣಂ ಭಣಂತ:" ನೆಫಂ ೩-೮೮।

ಪ್ರಾಣಾ ಪ್ರಾಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಪಕ್ಷಿ, ಒಂದು ಹೆಣ್ಣು ಹಕ್ಕಿ.  
ಪ್ರಾಣಿತಿ ಬಹುಕಾಲಮ್ - ಪ್ರ + ಅನ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ಅಚ್"  
(೩-೧-೧೩೪)।

ಪ್ರಾಣಾತ್ಯಯ ಪ್ರಾಣಾತ್ಯಯ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾಣನಾಶ. 2.  
ಪ್ರಾಣಹೋಗುವ ಸಮಯ.

ಪ್ರಾಣಾಧಿಕ ಪ್ರಾಣಾಧಿಕ (ವಿಂ) ಪ್ರಾಣಕ್ಕಿಂತಲೂ ಅಧಿಕ  
ವಾದ, ಜೀವಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಿಯವಾದ. ಪ್ರಾಣೇಷ್ಯಾ-  
ಪ್ಯಧಿಕ:।

ಪ್ರಾಣಾಯತನ ಪ್ರಾಣಾಯತನ (ನಂ) ಪ್ರಾಣಗಳಿಗೆ ಮುಖ್ಯ  
ಸ್ಥಾನವಾದ ದೇಹದ ನವರಂಧ್ರಗಳು. ಕಣ್ಣುಗಳು 2  
ಕರ್ಣಕುಹರಗಳು 2 ಪಾಯು 1 ಉಪಸ್ಥ 1 ಅಸ್ಥ 1  
ನಾಸಿಕೆಯ ಹೊಳ್ಳೆಗಳು 2 ಇವು ನವರಂಧ್ರಗಳು.  
"ಅಕ್ಷಿಣಿ ಕರ್ಣರಂಧ್ರೇ ಚ ಪಾಯುಪಸ್ಥಾಸ್ಯನಾಸಿಕಾ:। ತವ-  
ಚ್ಚಿದ್ರಾಣಿ ತಾನ್ಯೇವ ಪ್ರಾಣಸ್ಯಾಯತನಾನಿ ತು"।

ಪ್ರಾಣಾಯಾಮ ಪ್ರಾಣಾಯಾಮ (ಪುಂ) ಪ್ರಾಣವಾಯುವಿನ  
ನಿರೋಧ, ಪ್ರಾಣವಾಯುವನ್ನು ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು.  
ಪ್ರಾಣಾ ಆಯಮ್ಯಂತೇನ-ಆ+ಯಮ (ಉಪರಮೆ) ಕರಂ "ಘ್"  
(೩-೩-೧೨೧)। ಇದು ಅಷ್ಟಾಂಗ ಯೋಗದ ಒಂದು  
ಅಂಗ. ಲೋಕದಲ್ಲಿ ದೇಹ ಮತ್ತು ಪ್ರಾಣವಾಯುಗಳ  
ಸಂಬಂಧವೇ ಜೀವನ. ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಣವಾಯುವು  
ಇರುವವರೆಗೆ ಮಾತ್ರ ಮನುಷ್ಯನ (ಪ್ರಾಣಿ ಸಾಮಾನ್ಯದ)  
ಜೀವನ. ಈ ಪ್ರಾಣವಾಯುವು ಶರೀರದಿಂದ ನಿರ್ಗಮಿಸಿದ  
ನಂತರ ಮರಣವು ಸಿದ್ಧ. ಅದುದರಿಂದ ದೇಹದಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಣ  
ವಾಯುವನ್ನು ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸಿದಷ್ಟು ಕಾಲವೂ ಮನುಷ್ಯನು  
ಬದುಕಿರಬಹುದು. ಇದಕ್ಕೆ ಉಪಾಯ ಪ್ರಾಣಾಯಾಮ.  
"ಯಾವದ್ವಾಯು: ಸ್ಥಿತೋ ದೇಹೇ ತಾವಜ್ಜೀವನಮುಚ್ಯತೇ। ಮರಣಂ ತಸ್ಯ  
ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತಿಸ್ತತೋ ವಾಯು ನಿರೋಧಯೇತ್" ಹಠಂ ೨-೩। ದೇಹ  
ದೊಳಗೆ ನಾಡಿಗಳು ಮಲದಿಂದ ವ್ಯಾಪ್ತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ  
ಪ್ರಾಣವಾಯುವು ಸುಷುಮ್ನಾ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಪ್ರವಹಿಸು  
ವುದಿಲ್ಲ. ನಾಡೀಚಕ್ರವು ಶುದ್ಧವಾದರೆ ಮಾತ್ರ ಯೋಗಿಗೆ  
ಪ್ರಾಣಾಯಾಮವು ಸುಗಮವಾಗುವುದು. "ಮಲಾಕುಲಾಸು  
ನಾಡಿಃ ಮಾಸ್ತೋ ನೇವ ಮಧ್ಯಗ:। ಕಥಂ ಸ್ಯಾದ್ಉತ್ಮನಿಭಾವ:

ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ: ಕಥಂ ಭವೇತ್। ಶುದ್ಧಿಮೇತಿ ಯದಾ ಸರ್ವ ನಾಡಿಚಕ್ರ  
ಮಲಾಕುಲಮ್। ತದೇವ ಜಾಯತೇ ಯೋಗಿ ಪ್ರಾಣಸಂಗ್ರಹಣೆ ಕ್ಷಮ:"।  
ಸುಷುಮ್ನಾ ನಾಡಿಯಲ್ಲಿ ಮಲಶುದ್ಧಿಯಾದ ನಂತರ ಪ್ರಾಣಾ  
ಯಾಮವನ್ನು ಮಾಡಬೇಕು. "ಪ್ರಾಣಾಯಾಮಂ ತತ: ಕುರ್ಯಾನ್ನಿತ್ಯಂ  
ಸಾತ್ವಿಕಯಾ ಧಿಯಾ। ಯಥಾ ಸುಷುಮ್ನಾನಾಡಿತ್ಯಾ ಮಲಾ: ಶುದ್ಧಿ  
ಪ್ರಯಾಂತಿ ಚ" ಹಠಂ ೨-೬।

ಪ್ರಾಣಾಯಾಮ ವಿಧಾನ: ಮೂಲಮಂತ್ರ  
ಅಥವಾ ಪ್ರಣವವನ್ನು ಹದಿನಾರು ಸಲ ಜಪಿಸಿ ಎಡಮೂಗಿ  
ನಿಂದ ವಾಯುವನ್ನು ಮೊದಲು ತುಂಬಬೇಕು. ಇದು  
ಪೂರಕ. ಬಳಿಕ ಅರವತ್ತನಾಲ್ಕು ಸಲ ಜಪಿಸಿ ಅದನ್ನು  
ದೇಹದೊಳಗೆ (ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ) ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸಬೇಕು. ಇದು  
ಕುಂಭಕ. ಅಮೇಲೆ ಮೂವತ್ತೆರಡು ಸಲ ಜಪಿಸಿ ಅದನ್ನು  
ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಿಡಬೇಕು. ಇದು ರೇಚಕ. ಪುನಃ ದಕ್ಷಿಣ  
(ಬಲ) ನಾಸಿಕೆಯಿಂದ ತುಂಬಿ ವಾಮ ದಕ್ಷಿಣ ಎರಡ  
ರಿಂದಲೂ ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸಿ ವಾಮ (ಎಡ) ನಾಸಿಕೆಯಿಂದ  
ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಿಡಬೇಕು. ಮತ್ತೆ ವಾಮ ನಾಸಿಕೆಯಿಂದ  
ತುಂಬಿ ವಾಮ ಮತ್ತು ದಕ್ಷಿಣ ನಾಸಿಕೆಗಳೆರಡರಿಂದಲೂ  
ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸಿ ದಕ್ಷಿಣ ನಾಸಿಕೆಯಿಂದ ಬಿಡಬೇಕು. ಈ  
ರೀತಿ ಮೂರು ಸಲ ಪ್ರಾಣಾಯಾಮ ಮಾಡಬೇಕು.  
"ಪೂರಯೇತ್ ಷೋಡಶಭಿರ್ವಾಯು ಧಾರಯೇತ್ತತ್ತ್ವತುರ್ಗುಣೈ:। ರೇಚಯೇತ್  
ಕ್ರಮಕಾರ್ಥೇನ ಅಶಕ್ತ್ಯಾ ತತ್ತುರೀಯಕೈ:॥ ಪ್ರಾಣಾಯಾಮತ್ರಯ  
ಕುರ್ಯಾನ್ಮೂಲೇನ ಪ್ರಣವೇನ ವಾ। ಅಥವಾ ಮನ್ತ್ರಬಿಜೇನ ಯಥೋಕ್ತ-  
ವಿಧಿನಾ ಸುಖಿ:"। ಯೋಗಿಯು ಪದ್ಮಾಸನದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು  
ಇಡಾ (ಚಂದ್ರ) ನಾಡಿಯಿಂದ ವಾಯುವನ್ನು ತುಂಬಬೇಕು.  
ಅದನ್ನು ಯಥಾಶಕ್ತಿ ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸಿ ಪುನಃ  
ಹಿಂಗಲಾ (ಸೂರ್ಯ) ನಾಡಿಯಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಿಡಬೇಕು.  
ಇದಕ್ಕೆ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಪೂರಕ ಕುಂಭಕ ರೇಚಕಗಳೆಂದು  
ಹೆಸರು. "ಪೂರಕಂ ಪೂರಣಂ ವಾಯು: ಕುಂಭಕ: ಸ್ಥಾಪನಂ ಕ್ವಚಿತ್।  
ಬಹಿರ್ನಿ:ಸಾರಣಂ ತಸ್ಯ ರೇಚಕ: ಪರಿಕೀರ್ತಿತ:"॥ "ಬದ್ಧ-  
ಪದಾಸನೋ ಯೋಗಿ ಪ್ರಾಣಂ ಚಂದ್ರೇಣ ಪೂರಯೇತ್। ಧಾರಯಿತ್ವಾ  
ಯಥಾಶಕ್ತಿ ಭೂಯ: ಸೂರ್ಯೇಣ ರೇಚಯೇತ್॥ ಪ್ರಾಣಂ ಸೂರ್ಯೇಣ ಚಾಕೃತ್ಯ  
ಪೂರಯೇದ್ಧರಂ ಶನೈ:। ವಿಧಿವತ್ಕ್ರಮಕಂ ಕೃತ್ವಾ ಪುನಶ್ಚಂದ್ರೇಣ  
ರೇಚಯೇತ್॥ ಯೇನ ತ್ಯಜೇತ್ತೇನ ಪಿತ್ವಾ ಧಾರಯೇದತಿರೋಧತ:।  
ರೇಚಯೇಚ್ಚ ತತೋಜ್ಯೇನ ಶನೈರೇವ ನ ವೇಗತ:" ಹಠಂ ೨-೭, ೮, ೯।

ಪ್ರಾಣಾಯಾಮ ಲಕ್ಷಣ: "ಪ್ರಾಣಾಸ್ಯಮನಿಲಂ  
ವಶ್ಯಮಸ್ಯಾಸಾತ್ ಕುರುತೇ ತು ಯತ್। ಪ್ರಾಣಾಯಾಮ: ಸ ವಿಜ್ಞೇಯ:  
ಸಬಿಜೋಬಿಜ ಏವ ಚ"। ಪ್ರಾಣಾಯಾಮವಿಲ್ಲದೆ ಮಂತ್ರ  
ಜಪ ಮತ್ತು ಪೂಜಾಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಅರ್ಹತೆಯಿಲ್ಲ. "ಪ್ರಾಣಾಯಾಮಂ  
ವಿನಾ ಮನ್ತ್ರಪೂಜನೇ ನ ಹಿ ಯೋಗತಾ"। ಅಭ್ಯಾಸಮುಖ್ಯ



ದಿಂದ ಉಪದಿಷ್ಟವಾದ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಣಾಯಾಮ ಮಾಡಿದರೆ ಸಕಲ ವ್ಯಾಧಿಗಳ ನಿವಾರಣೆಯೂ ಆಗುವುದು. ಕ್ರಮತಃಪ್ರಿದ ಪ್ರಾಣಾಯಾಮದಿಂದ ಸಕಲ ರೋಗಗಳೂ ಉದ್ಭವಿಸುವುವು. "ಪ್ರಾಣಾಯಾಮೇನ ಯುಕ್ತೇನ ಸರ್ವರೋಗಕ್ಷಯೋ ಭವೇತ್ | ಅಯುಕ್ತಾಭ್ಯಾಸಯುಕ್ತೇನ ಸರ್ವರೋಗಸಮುದ್ಭವಃ" ಹಂ ೨-೧೬ |

ಗಾಯತ್ರೀಪ್ರಾಣಾಯಾಮಃ : "ಸವ್ಯಾಹುತಿ ಸಪ್ರಣವಾ ಗಾಯತ್ರೀ ಶಿರಸಾ ಸಹ | ತ್ರಿಃ ಪಠೇದಾಯತಪ್ರಾಣಃ ಪ್ರಾಣಾಯಾಮಃ ಸ ಉಚ್ಯತೇ | ಪ್ರಾಣಾಯಾಮತ್ರಯಂ ಕೃತ್ವಾ ಪ್ರಾಣಾಯಾಮ-ಸ್ತ್ರಿಭಿಸ್ತ್ರಿಭಿಃ | ಅಹೋರಾತ್ರಕೃತಾತ್ ಪಾಪಾನ್ಮುಚ್ಯತೇ ನಾತ್ರ ಸಂಶಯಃ" |

ಪ್ರಾಣಾಹುತಿ ಪ್ರಾಣಾಹುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೋಜನಕ್ಕೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಣರೂಪವಾದ ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಮಾಡುವ ಹವಿಸ್ಸಿನ ಆಹುತಿ. ಪ್ರಾಣರೂಪೇಭ್ಯಃ ಅಗ್ನಿಮ್ಯಃ ಆಹುತಿಃ |

ಪ್ರಾಣಿತ ಪ್ರಾಣಿತ (ವಿಂ) 1. ಬದುಕಿರುವವನು, ಜೀವಿಸಿರುವವನು. ಪ್ರ+ಅನ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | 2. ಬದುಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಜ್ಜೀವನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ+ಅನ+ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಪ್ರಾಸ್ಥಿತ ಪ್ರತಿಬಲಾವಸಥಾಯ ಪ್ರಾಣಿತವಿಧಶಭೂತಿರನಂತಃ" ಯಾದಂ ೨೧-೨೮ |

ಪ್ರಾಣಿತವತ್ ಪ್ರಾಣಿತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಬದುಕಿದವನು. ಪ್ರ+ಅನ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಬದುಕಿಸಿದವನು, ರಕ್ಷಿಸಿದವನು. ಪ್ರ+ಅನ+ಣಿಕ್ "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

ಪ್ರಾಣಿಹಿತ ಪ್ರಾಣಿಹಿತ (ನಂ) ಕುದುರೆ ಬಿಗರು ಕೋಳಿ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಜೂಜು. ಪ್ರಾಣಿಭಿಃ ಕೃತಂ ಹಿತಮ್ |

ಪ್ರಾಣಿನ್ ಪ್ರಾಣಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಜೀವ, ಜೀತನ, ಪ್ರಾಣಸಹಿತವಾದ ಮತ್ತು ಉತ್ಪತ್ತಿಯುಳ್ಳ ಮನುಷ್ಯ ಪಶು ಪಕ್ಷಿ ಮೊದಲಾದುವು. ಪ್ರಾಣೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) | "ಯಾಮಾಹುಃ ಸರ್ವವಿಜಪ್ರಕೃತಿರೀತಿ ಯಾ ಪ್ರಾಣಿನಃ ಪ್ರಾಣವಂತಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೧ | (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಾಣಸಹಿತವಾದ, ಪ್ರಾಣವಾಯುವಿನಿಂದ ಕೂಡಿದೆ.

ಪ್ರಾಣಿಹಿತಾ ಪ್ರಾಣಿಹಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾದುಕೆ, ಪಾದರಕ್ಷೆ.

ಪ್ರಾಣೀತ್ಯ ಪ್ರಾಣೀತ್ಯ (ನಂ) ಮಾಣ, ಸಾಲ.

ಪ್ರಾಣೇಶ ಪ್ರಾಣೇಶ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 2. ಮತಿ, ಗಂಡ. "ಪ್ರಾಣೇಶಾನಭಿ ವಿಧವು ವಿಧುತಹಸ್ತಾಃ" ಮಾಘಂ ೮-೧೩ | -ईश्वरः -ಈಶ್ವರಃ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ -ईशा -ಈಶಾ. -ईश्वरी -ಈಶ್ವರೀ. ಪತ್ನಿ, ಭಾರ್ಯೆ. "ಪ್ರಾಣೇಶ್ವರೀ ಪ್ರಾಪ್ತುಮೀಷ ಶೋರಿಃ" ಯಾದಂ ೧೩-೧ |

ಪ್ರಾತಃಕೃತ್ಯ ಪ್ರಾತಃಕೃತ್ಯ (ನಂ) ಪ್ರತಿದಿನ ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯ.

ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಪ್ರಾತಃಕಾಲ (ಪುಂ) ಪ್ರಭಾತ, ಹಗಲಿನ ಪ್ರಾರಂಭಕಾಲ.

ಪ್ರಾತಃಸಂಧ್ಯಾ ಪ್ರಾತಃಸಂಧ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೂರ್ಯೋದಯಕ್ಕೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಹರಡುವ ಪ್ರಕಾಶ, ರಾತ್ರಿಯ ಕಳೆದು ಮರುದಿನ ಸೂರ್ಯೋದಯಕ್ಕೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಮುಹೂರ್ತಕಾಲವು ಪ್ರಾತಃಸಂಧ್ಯಾಕಾಲ. ಸಮ್ಯಕ್ ಧ್ಯಾಯಂತ್ಯಸ್ಯಾಂ—ಧ್ಯೈ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ಅಹ್" (೩-೩-೧೦೬) | ಜಪಮಾಡುವಕಾಲ. ಪ್ರಾತಃ ಸಂಧ್ಯಾ | ಸಂಧೌ ಭವಾ ಇತಿ ವಾ | ರಾತ್ರಿಗೆ "ತ್ರಿಯಾಮಾ" ಎಂದು ಹೆಸರಿರುವುದರಿಂದ ರಾತ್ರಿಯ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಮುಹೂರ್ತವೂ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಒಂದು ಮುಹೂರ್ತವೂ ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲವಾಗುವುದು. "ಸೂರ್ಯೋದಯಾನ್ವ ಪ್ರಥಮಂ ಯದಾ ಸ್ಥಾದರುಣೋದಯಃ | ಪ್ರಾತಃಸಂಧ್ಯಾ ತದೋದೇತಿ ದೇವಾನಾಂ ಪ್ರೀತಿಕಾರಿಣಿ | ಅಸ್ತಂಗತೇ ತತಃ ಸೂರ್ಯೋ ಲೋಪವನ್ನಿಭಾ ಸದಾ | ಉದೇತಿ ಸಾಯಂಸಂಧ್ಯಾಪಿ ಪಿತೃಣಾಂ ಮೋದಕಾರಿಣಿ" ಕಾಲಿಕಾಪುಂ |

ಪ್ರಾತಃಸ್ನಾನ ಪ್ರಾತಃಸ್ನಾನ (ನಂ) ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಸ್ನಾನ. ಅವಗಾಹನ ಸ್ನಾನವು ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿ ವಿಹಿತವಾಗಿದೆ. "ಉಪಃಕಾಲೇ ತು ಸಂಪ್ರಾಪ್ತೇ ಕೃತ್ವಾಚಾವಶ್ಯಕಂ ಬುಧಃ | ಸ್ನಾನಾನಾದಿಷು ಶುದ್ಧಾಸು ಶೌಚಂ ಕೃತ್ವಾ ಯಥಾವಿಧಿ || ಪ್ರಾತಃಸ್ನಾನೇನ ಪೂಯಂತೇ ಯೇಷಿ ಪಾಪಕೃತೌ ಜನಾಃ | ತಸ್ಮಾತ್ಸರ್ವಪ್ರಯತ್ನೇನ ಪ್ರಾತಃಸ್ನಾನಂ ಸಮಾಚರೇತ್" ||

ಪ್ರಾತರ್ ಪ್ರಾತರ್ (ಅವ್ಯಂ) ಪ್ರಭಾತ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲ, ಮುಂಜಾನೆ. ಪ್ರಾತತಿ—ಪ್ರ+ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೆ) "ಅರನ್" (೩ಂ ೪-೪೯) | "ಪ್ರಾತರ್ಹಿಮಕರತಾಂತ್ರನು ವಿಷಜದ್ರೂಂಽಪರ ಇವಾಭವದ್ಭೂಮಃ" ಮಾಘಂ ೧೪-೪೧ |

ಪ್ರಾತರಾಶ ಪ್ರಾತರಾಶ (ಪುಂ) ಪ್ರಾತಃಕಾಲದ ಭೋಜನ, ಬೆಳಗಿನ ಊಟ. ಪ್ರಾತರಶ್ಯತೇ ಭುಜ್ಯತೇ—ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಭವ್" (೩-೩-೧೯) | ಪ್ರಾತಃ ಪ್ರಾತಃಕಾಲೇ ಆಶೋ ಭೋಜನಮ್ ಇತಿ ವಾ | "ಪ್ರಾತರಾಶವದಿಹಾಸ್ಯ ಭುಜ್ಯತೇ ಸಪ್ತಲೋಕತೀಲಕಸ್ಯ ಚಾರ್ತಾ" ಯಾದಂ ೧೭-೩೯ |

ಪ್ರಾತರ್ಗೌ ಪ್ರಾತರ್ಗೌ (ಪುಂ) ಸುತ್ತಿಪಾಠಕ, ಹೊಗಳುವ ಭಜಿ.

ಪ್ರಾತರ್ಭೋಜನ ಪ್ರಾತರ್ಭೋಜನ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಕಾಗೆ. ಪ್ರಾತಃ ಭುಜ್ಯತೇ—ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) "ತತ್" (೩-೧-೧೩೩) | (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿ ಊಟ ಮಾಡುವ.



ಪ್ರಾತರ್ಭೋಜನ ಸ್ತೋತ್ರಭೋಜನ (ನಂ) ಬೆಳಗಿನ ಉಪಾಸನಾ.

ಪ್ರಾತಃ ಪ್ರಭಾತೇ ಭೋಜನಮ್ ।

ಪ್ರಾತಸ್ತರಾಮ್ ಸ್ತೋತ್ರಸ್ಮರಾಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಅರುಣೋದಯಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಮುಂಜಾನೆ ಹೊತ್ತಿಗೆಮುಂಚೆ.

ಪ್ರಾತಃ ಅತಿಶಯನೇ "ತರಪ್" (೪-೩-೪೭) । "ಆಮುಃ" (೪-೪-೧೧) । "ಪ್ರಾತಸ್ತರಾಂ ಪತತ್ರಿಮ್ಯಃ ಪ್ರಬುಢಃ ಪ್ರಗಮನ್ ರವಿಮ್" ಭೃಗುಂ ೪-೧೪ ।

ಪ್ರಾತಿ ಸ್ತೋತ್ರ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೂರ್ತಿಮಾಡುವುದು, ತುಂಬುವುದು. ಪ್ರಾ (ಪೂರಣ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪) । 2. ಒಂದು ಚೋಟಿನ ಅಳತೆ, ಒಂದು ಪ್ರಾದೇಶದ ಅಳತೆ. ತರ್ಜನಿ ಬೆರಳಿನೊಡನೆ ನೀಡಿದ ಹೆಬ್ಬರಳಿನ ಅಳತೆ ಪ್ರಾದೇಶವಾಗುವುದು. ಈ ಅಳತೆಗೆ ಚೋಟು ಎಂದು ಹೆಸರು. "ಪ್ರಾತಿಃ ಪೂರ್ತಿಪ್ರಾದೇಶಯೋಃಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ ।

ಪ್ರಾತಿಕಾ ಸ್ತೋತ್ರಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಾಸಿವಾಳದಗಿಡ, ಜಪಾವೃಕ್ಷ. ಪ್ರ + ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನ) "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

ಪ್ರಾತಿಕೂಲಿಕ ಸ್ತೋತ್ರಕೂಲಿಕ (ವಿಂ) ಪ್ರತಿಕೂಲವಾಗಿರುವ, ವಿರುದ್ಧವಾಗಿರುವ. ಪ್ರಾತಿಕೂಲಂ ವರ್ತತೆ—"ಠಕ್" (೪-೪-೨೮) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಠೀಪ್" (೪-೪-೧೫) । -ಕೂಲಿಕೀ. "ತಾಂ ಪ್ರಾತಿಕೂಲಿಕಾಂ ಮತ್ವಾ ಜಿಹ್ವೀರ್ಭೂಮಿವಿಗ್ರಹಃ" ಭೃಗುಂ ೪-೧೪ ।

ಪ್ರಾತಿಕೂಲ ಸ್ತೋತ್ರಕೂಲ (ನಂ) ಪ್ರತಿಕೂಲವಾಗಿರುವಿಕೆ, ವಿರುದ್ಧವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪ್ರಾತಿಕೂಲಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಫಲ್" (೪-೧-೧೨೪) ।

ಪ್ರಾತಿಜನೀನ ಸ್ತೋತ್ರಜನೀನ (ವಿಂ) ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬನಲ್ಲೂ ಒಳ್ಳೆಯವನಾಗಿರುವ, ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬನಿಗೂ ಅನುಕೂಲವಾಗಿರುವ. ಪ್ರಾತಿಜನಂ ಸಾಧುಃ "ಫಲ್" (೪-೪-೧೯) ।

ಪ್ರಾತಿಪಕ್ಷ ಸ್ತೋತ್ರಪಕ್ಷ (ವಿಂ) ಪ್ರತಿಪಕ್ಷ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಶತ್ರುಸಂಬಂಧವಾದ. ಪ್ರಾತಿಪಕ್ಷಸ್ಯಾಯಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦) । "ಪ್ರತ್ಯಾಸನ್ನೇ ದಂತಿನಿ ಪ್ರಾತಿಪಕ್ಷೇ ಯನ್ತ್ರಾ ನಾಗಃ ಪ್ರಾಸ್ತವಕ್ವಚ್ಛದೋಽಪಿ" ಮಾಘಂ ೧೮-೨೮ ।

ಪ್ರಾತಿಪಥಿಕ ಸ್ತೋತ್ರಪಥಿಕ (ವಿಂ) ಮಾರ್ಗಕ್ಕೆ ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ ಹೋಗುವವನು, ದಾರಿಯಕಡೆಗೆ ಹೋಗುವವನು. ಪ್ರಾತಿಪಥಂ ಗच्छತಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೪೨) । ಸೂತ್ರೇ ಚಕಾರಾತ್ ಠನಿ -ಪ್ರಾತಿಪಥಿಕಃ- ಸ್ತೋತ್ರಪಥಿಕಃ ।

ಪ್ರಾತಿಪದ ಸ್ತೋತ್ರಪದ (ವಿಂ) ಪ್ರತಿಪತ್ತಿನ (ಪಾಡ್ಯದ) ದಿನ ಉಂಟಾಗುವ. ಪ್ರಾತಿಪದಿ ಭವಃ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೬) ।

ಪ್ರಾತಿಪದಿಕ ಸ್ತೋತ್ರಪದಿಕ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರತಿಪತ್ ತಿಥಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಅಗ್ನಿ. ಪ್ರಾತಿಪತ್ತಿಥೌ ಭವಃ "ಠಕ್" (೪-೩-೧೧) ।

"ಇತ್ಯಮ್ಭೂತೋ ಮಹಾನಗ್ನಿಃ ಸಹಸ್ರಾಕ್ಷೋಽಸ್ಮಿನ್ ಮಹಾನ್ । ಉವಾಚ ದೇವಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಣಂ ತಿಥಿಮ್ ದೀಯತಾಂ ಪ್ರಭೋ । ಯಸ್ಯಾಮಹಂ ಸಮಸ್ತಸ್ಯ ಜಗತಃ ಸ್ವಾತಿಮಾಪ್ನುಯಾಮ್ ॥ ದೇವಾನಾಮಥ ಯಕ್ಷಾಣಾಂ ಗಂಧರ್ವಾಣಾಂ ಚ ಸತಮ್ । ಆದೌ ಪ್ರಾತಿಪದಾ ಯೇನ ತ್ವಮುತ್ಪನ್ನೋಽಸಿ ಪಾವಕಃ । ತ್ವತ್ಪದಾತ್ ಪ್ರಾತಿಪದಿಕಂ ಸಮ್ಭವಿಷ್ಯಂತಿ ದೇವತಾಃ । ಅತಸ್ತೇ ಪ್ರಾತಿಪಕ್ಷಾಮ ತಿಥಿರೇಷಾ ಭವಿಷ್ಯತಿ" ವರಾಹಪುಂ । (ನಂ) 2. ಒಂದು ಸಂಜ್ಞೆ. ಧಾತು ಪ್ರತ್ಯಯ ಮತ್ತು ಪ್ರತ್ಯಯಾಂತ ಭಿನ್ನವಾದ ಅರ್ಥವತ್ತಾದ ಶಬ್ದಸ್ವರೂಪವು ಪ್ರಾತಿಪದಿಕ ಸಂಜ್ಞೆಯನ್ನು ಹೊಂದುವುದು. "ಅರ್ಥವದಧಾತು-ರಪ್ರತ್ಯಯಃ ಪ್ರಾತಿಪದಿಕಮ್" ಪಾಂ ಸೂಂ ೧-೨-೪೫ । ಪ್ರಾತಿಪದೇ ಧಾತುಭಿನ್ನಪದೇ ಭವಃ ।

ಪ್ರಾತಿಭ ಸ್ತೋತ್ರಭ (ನಂ) ಪ್ರತಿಭೆ. ಹೊಸಹೊಸದಾಗಿ ವಿಷಯಗಳು ಹೊಳೆಯುವ ಬುದ್ಧಿ. ಪ್ರಾತಿಭಾ ಸ್ವಾರ್ಥಃ "ಅಙ್" (೪-೪-೩೮) । "ಪ್ರಾತಿಭಂ ತ್ರಿಸರಕೇಣ ಗತಾನಾಂ ವಕ್ರವಾಕ್ಯ-ರಚನಾರಮಣೀಯಃ" ಮಾಘಂ ೧೦-೧೨ ।

ಪ್ರಾತಿಭಾವ್ಯ ಸ್ತೋತ್ರಭಾವ್ಯ (ನಂ) 1. ಜಾಮೀನು, ಹೊಣೆಗಾರಿಕೆ. ಪ್ರಾತಿಭಾವಿ ಭಾವಃ "ಫಲ್" (೪-೧-೧೨೪) । 2. ಜಾಮೀನಾದವನು ಕೊಡಬೇಕಾದ ಧನ. "ಪ್ರಾತಿಭಾವ್ಯಂ ವೃಥಾದಾನಮಾಕ್ಷಿಕಂ ಸೌರಿಕಂ ಚ ಯತ್ । ದಣ್ಡಶುಲ್ಕಾವಶೇಷಂ ಚ ನ ಪುತ್ರೋ ದಾತುಮರ್ಹತಿ" ಮನುಂ ೮-೧೫೯ ।

ಪ್ರಾತಿಭಾಸಿಕ ಸ್ತೋತ್ರಭಾಸಿಕ (ವಿಂ) ತೋರ್ಕೆಯಿಂದ ಮಾತ್ರ ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣುವ, ವಾಸ್ತವವಾಗಿಲ್ಲದ. ಪ್ರಾತಿಭಾಸಿ-ದಾಗತಃ । ಸತ್ತ್ವವು (ವಸ್ತುವಿನ ಇರುವಿಕೆ) ಪಾರಮಾರ್ಥಿಕಮ್ ವ್ಯಾವಹಾರಿಕಮ್ ಮತ್ತು ಪ್ರಾತಿಭಾಸಿಕಮ್ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ತ್ರಿಕಾಲಗಳಲ್ಲೂ ಅಬಾಧಿತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಬ್ರಹ್ಮನ ಸತ್ತ್ವವು ಪಾರಮಾರ್ಥಿಕ. ವ್ಯವಹಾರಕಾಲದಲ್ಲಿ ಬಾಧೆಯಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಫಟಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಸತ್ತ್ವವು ವ್ಯಾಹಾರಿಕ. ಪ್ರತಿಭಾಸದ (ತೋರ್ಕೆ) ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಕಾಣುವುದರಿಂದ (ಅನಂತರ ಬಾಧಿತವಾಗುವುದರಿಂದ) ಶುಕ್ತಿಯಲ್ಲಿ ರಜತದ ಜ್ಞಾನವು ಪ್ರಾತಿಭಾಸಿಕ.

ಪ್ರಾತಿಲೋಮಿಕ ಸ್ತೋತ್ರಲೋಮಿಕ (ವಿಂ) ಪ್ರತಿಕೂಲವಾಗಿರುವ, ನೀತಿಗೆ ವಿರುದ್ಧವಾಗಿರುವ. ಪ್ರಾತಿಲೋಮಂ ವರ್ತತೆ "ಠಕ್" (೪-೪-೨೮) ।

ಪ್ರಾತಿಲೋಮ್ಯ ಸ್ತೋತ್ರಲೋಮ್ಯ (ನಂ) ವಿಪರ್ಯಯ, ತಲೆಕೆಳಗಾಗುವುದು, ಹಿಂದುಮುಂದಾಗುವುದು, ನೀತಿಗೆ ವಿರುದ್ಧವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪ್ರಾತಿಲೋಮಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಫಲ್" (೪-೧-೧೨೪) ।

ಪ್ರಾತಿವೇಶಿಕ ಸ್ತೋತ್ರವೇಶಿಕ (ವಿಂ) ನೆರೆಮನೆಯವನು, ಪಕ್ಕದ ಮನೆಯವನು. ಪ್ರಾತಿವೇಶಿ ಭವಃ ।



**ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ** (ವಿಂ) ಪಕ್ಕದಮನೆಯವನು, ನೆರೆಮನೆಯವನು. ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ ಭವಃ | "ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯಾನುಭವಯೌ ಚ ಕಲ್ಯಾಣೇ ವಿಶತಿರ್ವಿಜೇ" ಮನುಂ ೮-೩೯೨ |

**ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ** (ನಂ) ವೇದದ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಶಾಖೆಗೂ ಇರುವ ವ್ಯಾಕರಣ. ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ ಭವಃ "ಆಯಃ" (ವಾಂ ೪-೩-೪೯) | ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯವು ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಶಾಖೆಗೂ ಬೇರೆಬೇರೆಯಾಗಿದೆ. ಸಂಹಿತಾಪಾಠಗಳಲ್ಲಿನ ಉಚ್ಚಾರಣೆ ಸ್ವರ ಸಂಧಿ ಆಯಾಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಹ್ರಸ್ವದೀರ್ಘಗಳು ಮೊದಲಾದ ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳೂ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯದಲ್ಲಿ ಪರಿಶೀಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. ಸಂಹಿತೆಗಳ ಮಂತ್ರಗಳ ಉದಾಹರಣೆಗಳೊಡನೆ ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ವಿವೇಚನೆ ಮಾಡಲಾಗಿದೆ. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಯುಗ್ಮೇದದ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯವು ಬಹಳ ಪ್ರಾಚೀನವಾದುದು. ಆಶ್ವಲಾಯನರ ಗುರುಗಳಾದ ಶೌನಕರು ಈ ಯುಗ್ಮೇದದ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯವನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇದಕ್ಕೆ ಶಿಕ್ಷಾಶಾಸ್ತ್ರವೆಂದು ಹೆಸರೂ ಉಂಟು.

ಸಾಮವೇದ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಪುಷ್ಪಮುಷಿವಿರಚಿತವಾದ "ಪುಷ್ಪಸೂತ್ರ" ಮತ್ತು ಶಾಕಟಾಯನ ರಚಿತವಾದ "ಮುಕ್ತಾಂತ್ರ" ಇವೆರಡೂ ಮುಖ್ಯವಾದುವು.

ತೈತ್ತಿರೀಯ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯದಲ್ಲಿ ಎರಡು ಪ್ರಶ್ನೆಗಳಿವೆ. ಇದು ಸೂತ್ರಾತ್ಮಕವಾದುದು. ಪ್ರಥಮಪ್ರಶ್ನೆಯಲ್ಲಿ ವರ್ಣಸಮಾಮಾಯ ಶಬ್ದಸ್ಥಾನ ಶಬ್ದೋತ್ಪತ್ತಿಯ ರೀತಿನಾನಾವಿಧವಾದ ಸ್ವರಗಳು ವಿಸರ್ಗಸಂಧಿ ಮುಂತಾದ ವಿಚಾರಗಳೂ ಎರಡನೆಯ ಪ್ರಶ್ನೆಯಲ್ಲಿ ಣತ್ವವಿಧಾನ ಅನುಸ್ವಾರ ಅನುನಾಸಿಕ ಸ್ವರಿತ ಸಂಹಿತಾಸ್ವರೂಪ ಮುಂತಾದ ವಿಚಾರಗಳೂ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ.

ಶುಕ್ಲಯಜುರ್ವೇದದ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯವನ್ನು ಶಾಕಟಾಯನ ಮುನಿಗಳು ರಚಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಎಂಟು ಅಧ್ಯಾಯಗಳಿವೆ.

**ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಅಸಾಧಾರಣ ಧರ್ಮ. 2. ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬನಲ್ಲೂ ಇರುವ, ಪ್ರತಿಯೊಂದರಲ್ಲೂ ಇರುವ (ವಿಶೇಷಧರ್ಮ). ಘಟದಲ್ಲಿ ಘಟನಿಷ್ಠವಾದ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವವು ವಿಶೇಷಧರ್ಮ. ಇದು ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ.

**ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ** (ವಿಂ) ಮಾಯಾಕಾರ. ಯಕ್ಷಿಣಿಯವನು, ಗಾರುಡಿಗ. ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ: ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯) | "ಮಾಯಾಕಾರಸ್ತು ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯಃ" ಅಮಂ |

**ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ** (ವಿಂ) ಕೇವಲ ಜ್ಞಾನದಿಂದ ಉಂಟಾದ, ವಸ್ತುತಃ ಇಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಭ್ರಾಂತಿಯಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಪ್ರತೀತ್ಯಾ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೭೯) |

**ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ** (ವಿಂ) ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯವೆಂಬ ಮಗ, ಶಂಕನು ರಾಜ. ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) |

**ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ** (ವಿಂ) ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯವಾಗಿ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ವಿರುದ್ಧವಾಗಿರುವ. ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ ವರ್ತತೆ "ಠಕ್" (೪-೪-೨೮) |

**ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ** (ವಿಂ) ಜಾಮಿನುದಾರ, ಸಾಲಗಾರನಿಗೋಸ್ಕರ ಜಾಮಿನಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವವನು.

**ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ** (ವಿಂ) ಮೊದಲನೆಯ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ. ಪ್ರಥಮಕಲ್ಪ ಪ್ರಥಮಶಾಸ್ತ್ರಮಧೀತೆ — "ಠಕ್" (ವಾಂ ೪-೨-೬೦) |

**ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಮೊದಲು ಉಂಟಾದ. ಪ್ರಥಮೇ ಭವಃ "ಠಕ್" (೪-೩-೭೨) | 2. ಮೊದಲನೆಯ.

**ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ** (ನಂ) ಮೊದಲನೆಯದಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪ್ರಥಮಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಉನ್" (೪-೧-೧೨೪) |

**ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ** (ವಿಂ) ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಗಣ. ಪ್ರ ಮೊದಲಾದ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಗುಂಪು. ಪ್ರ ಪರಾ ಅಪ ಸಮ್ ಅನ್ ಅವ ನಿಸ ನಿರ್ ದುಸ್ ದುರ್ ವಿ ಆಙ್ ನಿ ಅಧಿ ಅಪಿ ಅತಿ ಸು ತ್ ಅಮಿ ಪ್ರತಿ ಪರಿ ತ್ಪ ಇವು ಪ್ರಾದಿಗಳು.

**ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ದರ್ಶನಕೊಡುವುದು, ತೋರ್ಪ. ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) ಭಾವಃ "ಘನ್" (೩-೩-೧೮) | 2. ಹುಟ್ಟುವುದು, ಜನ್ಮವೆತ್ತುವುದು. "ವಪುಃಪ್ರಾತೀಕವ್ಯವಾದನುಮಿತಮಿದಂ ಜನ್ಮನಿ ಪುರಾ ಪುರಾರೇ ನ ಕ್ವಾಪಿ ಕ್ವಚಿದಪಿ ಭವಂತಂ ಪ್ರಣತವಾನ್" ಕುವಂ |

**ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಹುಟ್ಟಿದ, ಉತ್ಪತ್ತಿ ಹೊಂದಿದ. 2. ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡ, ಪ್ರಕಟವಾಗಿರುವ.

**ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ** (ವಿಂ) ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ, ಪ್ರಕಟಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಪ್ರ + ಅದ (ಭಕ್ಷಣ) "ಉನ್" ಬಾಹುಂ | "ಮಹಾಭೂತಾದಿ ವೃತ್ತಿಜಾಃ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯಸೀತ್ತಮೋನುಧಃ" ಮನುಂ ೧-೬ |

**ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯ** (ವಿಂ) ಪ್ರಕಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರಾತೀಕವ್ಯತಂ ಲಾಭವಮಲ್ಬಣೇನ" ಯಾದಂ ೨೦-೮ |

**ಪ್ರಾದೇಶ ಪ್ರಾದೇಶ** (ವಿಂ) 1. ಒಂದು ಜೋಡಿನ ಅಂಕ, ತರ್ಜನಿ ಬೆರಳನ್ನೊಡನೆ ನೀಡಿದ ಹೆಬ್ಬೆರಳಿನ ಅಂಕ. ಪ್ರದೀಶಯತೆ — ಪ್ರ + ದಿಶಾ (ಅತಿಸಂಜ್ಞೆ) "ಘನ್" (೩-೩-೧೨೧) | ದೀರ್ಘಃ (೬-೩-೧೨೨) | "ಪ್ರಮಾಣತೋ ಭೀಮಸೇನಃ ಪ್ರಾದೇಶೋನಾಭಿಕೋಽನ್ಯಾತ್" | 2. ಪ್ರದೇಶ, ಸ್ಥಾನ, ಸ್ಥಳ. ಪ್ರದೇಶ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮) | "ಪ್ರಾದೇಶೋ ದೇಶಮಾತ್ರೇ ಚ ತರ್ಜನ್ಯಾಙ್ಗುಲಸಮ್ಮಿತೇ" ಮೇದಿಂ |



ಪ್ರಾದೇಶನ ಪ್ರಾದೇಶಿಕ (ನಂ) ದಾನ, ಕೊಡುವುದು. ಪ್ರ + ಆ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

ಪ್ರಾದೇಶಿಕ ಪ್ರಾದೇಶಿಕ (ವಿಂ) ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಇರುವ, ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಪ್ರದೇಶ ಮಹ: "ಠಕ್" ।

ಪ್ರಾದೋಷ ಪ್ರಾದೋಷ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರದೋಷಕಾಲದ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಪ್ರದೋಷಸ್ಯಾಯಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) । 2. ಪ್ರದೋಷಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕೂಗುವ ಮೃಗ. ಪ್ರದೋಷೇ ವ್ಯಾಹರತಿ "ಅಞ್" (೪-೩-೫೧) । ಪ್ರದೋಷೇ ವ್ಯಾಹರತಿ ಪ್ರಾದೋಷೋ ಮೃಗ: । 3. ಪ್ರದೋಷಕಾಲದಲ್ಲಿ ಅಧ್ಯಯನಮಾಡಿದ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ. ಪ್ರದೋಷಸಹಚರಿತಂ ಅಧ್ಯಯನಂ ಸೋಢಮಸ್ಯ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೪) । ವಾ "ಠಕ್" । -ಪ್ರಾದೋಷಿಕ: -ಪ್ರಾದೋಷಿಕ: ।

ಪ್ರಾಧಾನಿಕ ಪ್ರಾಧಾನಿಕ (ನಂ) ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಬೇಕಾಗುವ ಆಯುಧ. ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವ ಆಯುಧ. ಪ್ರಧನಂ ಸಂಗ್ರಾಮ: ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೫-೧-೧೦೯) । "ಸೂರ್ಯೋದಯಾಭ್ಯಾಸಗಮಂ ತ್ರಿಧಾಮಭಿ: ಪರಿಕ್ರಮತ್ಪ್ರಾಧಾನಿಕೇ-ದ್ವರಾಸದಮ್" ಭಾಗಂ ೩-೮-೩೧ ।

ಪ್ರಾಧಾನ್ಯ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯ (ನಂ) ಮುಖ್ಯವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಎಲ್ಲಕ್ಕಿಂತಲೂ ಮಿಗಿಲಾಗಿರುವಿಕೆ, ಸರ್ವೋತ್ಕೃಷ್ಟವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪ್ರಧಾನಸ್ಯ ಭಾವ: "ಘ್" (೫-೧-೧೨೪) ।

ಪ್ರಾಧೀತ ಪ್ರಾಧೀತ (ನಂ) 1. ಸರಿಯಾಗಿ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವುದು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ವೇದಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಕಲಿಯುವುದು. ಪ್ರಕೃಷ್ಟಮಧೀತಮ್ । (ವಿಂ) 2. ವೇದಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು. ಪ್ರಕೃಷ್ಟಮಧೀತಂ ಯೇಷಾಮ್ । "ಅನನ್ಯ-ಯೋಗಾತ್ಸ ರಥೋ ಬಹಾರ ಪ್ರಾಧೀತವೇಷಾಂ ಪ್ರಣವಪ್ರವೃತ್ತಿಮ್" ಯಾದಂ ೨೩-೨೩ ।

ಪ್ರಾಘ್ವ ಪ್ರಾಘ್ವ (ನಂ) 1. ನರ್ವಂ. ಪರಿಹಾಸ. "ಪ್ರಾಘ್ವ-ಮಘ್ವನಿ ಮುಷಾ ವಿದಧಾಸಿ" । 2. ಬಹಳ ದೂರದಮಾರ್ಗ. 3. ಬಂಧನ, ಕಟ್ಟು. (ವಿಂ) 4. ನಮ್ರನಾದ, ಬಗ್ಗಿರುವ, "ಪ್ರಾಘ್ವಂ ಸುಪ್ರಣತೇ ಚಾತಿರ್ದೂರವರ್ಮನಿ ಬನ್ಧನೇ" ವಿಶ್ವಂ । (ಅವ್ಯಂ) 5. ಅನುಕೂಲವಾಗಿ. "ಸಮಾಜನೇ ಮೇ ಭುಜ-ಮೂರ್ವಬಾಹು: ಸವ್ಯೇತರಂ ಪ್ರಾಘ್ವಮಿತ: ಪ್ರಯುಕ್ತೇ" ರಘುಂ ೧೩-೪೩ । 6. ವಕ್ರವಾಗಿ, ಡೊಂಕಾಗಿ.

ಪ್ರಾಂತ ಪ್ರಾಂತ (ಪುಂ) 1. ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ. 2. ಕೊನೆಯಭಾಗ, ತುದಿಯಲ್ಲಿರುವ ಪ್ರದೇಶ. ಪ್ರಕೃಷ್ಟೋತ್ತ: । "ಪ್ರಾಂತೇಷು ಸಂಸಕ್ತನಮೇಕಾಶಾಂ ವ್ಯಾನಾಸ್ಪದಂ ಭೂತಪತೇವಿವೇಶ" ಕುಮಾರಂ ೩-೪೩ । 3. ಪಾರ್ಶ್ವ, ಪಕ್ಕ. "ಅಮೀ ವೇದಿ ಪರಿತ: ಕಲ್ಪತಪಿಷ್ಣಯಾ: ಸಮಿಧಂತ: ಪ್ರಾಂತಸಂಸ್ಥಿರ್ಗದರ್ಭಿ:" ಶಾಕುಂ ೪-೭ । 4. ಕೋಣ, ಮೂಲೆ. "ಇಷ್ಟತೀರ್ಯಗ್ವಲನವಿಷಮಂ ಕೃಣಿತಪ್ರಾಂತಮೇತತ್" ಮಾಲತೀಂ ೪-೨ ।

ಪ್ರಾಂತತಸ್ ಪ್ರಾಂತತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಪ್ರಾಂತಭಾಗದಲ್ಲಿ, ಕೊನೆಯಭಾಗದಲ್ಲಿ, ಸುತ್ತಲೂ. ಪ್ರಾಂತ "ತಸಿ:" (ವಾಂ ೫-೪-೪೪) ।

ಪ್ರಾಂತರ ಪ್ರಾಂತರ (ನಂ) 1. ಬಹಳದೂರ ನಡೆಯಬೇಕಾದ ದಾರಿ. ಪ್ರಕೃಷ್ಟಮಂತರಂ ವ್ಯವಧಾನಮತ್ರ । 2. ಬಹಳದೂರ ಮರ ನೆರಳು ನೀರು ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲದ ದಾರಿ. ದೂರಶೂನ್ಯೋ ದೂರಶೂನ್ಯ: ಜಲಾದಿವಿಜಿತ: ಅಥವಾ ಪ್ರಾಂತರಂ ಭವತಿ । 3. ಅರಣ್ಯ, ಕಾಡು. 4. ಕೋಟರ, ಮರದ ಪೊಟರೆ. "ಪ್ರಾಂತರಂ ವಿಪಿನೇ ದೂರಶೂನ್ಯವರ್ಮನಿ ಕೋಟರೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಪ್ರಾಂತಶೂನ್ಯ ಪ್ರಾಂತಶೂನ್ಯ (ನಂ) ಮರ ನೆರಳು ನೀರು ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲದ ಶೂನ್ಯವಾದ ಮಾರ್ಗ.

ಪ್ರಾಪಕ ಪ್ರಾಪಕ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದುವವನು, ಪಡೆಯುವವನು. ಪ್ರ + ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । 2. ಹೊಂದಿಸುವ, ಸೇರಿಸುವ. ಪ್ರ + ಆಪ್ + ಣಿच् "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೪) । 3. ಸಾಗಿಸುವ, ಒಯ್ಯುವ. 4. ಗಳಿಸಿಕೊಡುವ, ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಡುವ. "ತ್ವತ್ಪ್ರಾಪಕ-ಸ್ತಸ್ಯತಿ ನನಸೋಽಪಿ ತ್ವಯೇವ ದಾಸ್ಯೇಽಪಿ ನ ಲಜ್ಜತೇ ಯತ್" ನೆಪಂ ೩-೧೧೦ ।

ಪ್ರಾಪಣ ಪ್ರಾಪಣ (ನಂ) 1. ಒಯ್ಯುವುದು, ಸಾಗಿಸುವುದು. 2. ಸೇರಿಸುವುದು, ಹೊಂದಿಸುವುದು. ಪ್ರ + ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 3. ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಡುವುದು, ದೊರಕಿಸಿಕೊಡುವುದು. 4. ಹೊಂದುವುದು, ಪಡೆಯುವುದು. ಪ್ರ + ಆಪ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 5. ಹೊಂದುವುದು, ಸೇರುವುದು, ತಲುಪುವುದು.

ಪ್ರಾಪಣಿಕ ಪ್ರಾಪಣಿಕ (ಪುಂ) ವ್ಯಾಪಾರಮಾಡುವವನು, ವರ್ತಕ. ಪ್ರ + ಆ + ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರೇ ಸ್ತುತೌ ಚ) "ಕಿಕನ್" (ತಂ ೨-೪೨) । "ಆಡ್ಯಾದಿವ ಪ್ರಾಪಣಿಕಾದಜಸಂ ಜಗ್ರಾಹ ರತ್ನಾನ್ಯಮಿತಾನಿ ಲೋಕ:" ಮಾಘಂ ೪-೧೧ ।

ಪ್ರಾಪಣೀಯ ಪ್ರಾಪಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಪಡೆಯಬೇಕಾದ, ಹೊಂದಬೇಕಾದ. 2. ಪಡೆಯಲ್ಪಡುವ, ಹೊಂದಲ್ಪಡುವ. 3. ಪಡೆಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ, ಹೊಂದಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. 4. ಸೇರಲು ಶಕ್ಯವಾದ, ತಲುಪಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ಪ್ರ + ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । 5. ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ಸೇರಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 7. ಸಾಗಿಸಲ್ಪಡುವ. 8. ಹೊಂದಿಸಲ್ಪಡುವ. 9. ತಲುಪಿಸಲ್ಪಡುವ. "ಭೂ-ಜ್ಯೋತಿ: ಸಲಿಲಮರುತಾಂ ಸಂನಿಪಾತ: ಕ್ವ ಮೇಧ: ಸಂದೇಶಾರ್ಥಿ: ಕ್ವ ಪटಕರಣಿ: ಪ್ರಾಣಿಭಿ: ಪ್ರಾಪಣೀಯಾ:" ಮೇಧಂ ೧-೫ ।



10. ಹೊಂದಿಸಬೇಕಾದ. 11. ತಲುಪಿಸಬೇಕಾದ. 12. ಸಾಗಿಸಬೇಕಾದ. "ತವ್ಯ:" (3-1-96). ಪ್ರಾಪ್ತವ್ಯಮ್ ಪ್ರಾಪ್ತವ್ಯಮ್. "ಪ್ರಾಪ್ತವ್ಯಮರ್ಥ ಲಭತೇ ಮನುಷ್ಯೋ ದೇವೋಽಪಿ ತ ಲಕ್ಷ್ಯಯಿತುಂ ನ ಶಕ್ತ:" ಪಠ್ಯತಂ 2-1-12. ಪ್ರ+ಆಪ್ಲ್+ ಣಿಚ್ "ತವ್ಯ:" (3-1-96). ಪ್ರಾಪಯಿತವ್ಯ: ಪ್ರಾಪಯಿತವ್ಯಃ.

ಪ್ರಾಪಯತ್ ಪ್ರಾಪಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124). "ಪ್ರಾಪಯನ್ ಪವನವ್ಯಾಧೇಗಿರಮುತ್ತರಪಕ್ಷತಾಮ್" ಮಾಘಂ 2-1-5. 2. ಸೇರಿಸುತ್ತಿರುವ, ತಲುಪಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಸಾಗಿಸುತ್ತಿರುವ, ಒಯ್ಯುತ್ತಿರುವ. 4. ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಡುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (4-1-6). -ಯಂತಿ-ಯಂತಿ. "ಶಾನಚ್" (3-2-124). ಪ್ರಾಪಯಮಾಣ: ಪ್ರಾಪಯಮಾಣಃ.

ಪ್ರಾಪಯಿತ್ ಪ್ರಾಪಯಿತ್ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಿಸುವ. ಪ್ರ+ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) + ಣಿಚ್ "ತತ್" (3-1-133). 2. ಸೇರಿಸುವ, ತಲುಪಿಸುವ. 3. ಸಾಗಿಸುವ, ಒಯ್ಯುವ. 4. ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಡುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (4-1-5). -ಯಿತ್ರೋ-ಯಿತ್ರೋ.

ಪ್ರಾಪಿತ ಪ್ರಾಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ+ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಪ್ರಾಪಿತೇವ ಚಡುಕಾಕುವಿಡಂಬ ಲಮ್ಬಿತೇನ ಬಹುಯಾಚನಲಜ್ಜಾಮ್" ನೆಫಂ 4-64. 2. ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರಾಪಿತಸ್ತವ ಪರಂ ಪದಂ ತ್ವಯಾ ನಿವಿಶೇಮ ನಿವಿಶೇಮಹಿ ತ್ವಯಿ" ಯಾದಂ 1-9-94. 3. ಒಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಾಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ತಲುಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪ್ರಾಪಿತವತ್ ಪ್ರಾಪಿತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಸೇರಿಸಿದವನು. 2. ತಲುಪಿಸಿದವನು. 3. ಸಾಗಿಸಿದವನು, ಒಯ್ದವನು. ಪ್ರ+ಆಪ್ಲ್+ಣಿಚ್ "ಕ್ತವತು:" (3-2-102).

ಪ್ರಾಪಿಪಯಿಷತ್ ಪ್ರಾಪಿಪಯಿಷತ್ (ವಿಂ) 1. ಒಯ್ಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) + ಸನ್ "ಶತ್" (3-2-124). 2. ಸೇರಿಸಲು ಇಚ್ಛಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ತಲುಪಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ.

ಪ್ರಾಪಿಪಯಿಷಾ ಪ್ರಾಪಿಪಯಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಯ್ಯಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಸಾಗಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. 2. ತಲುಪಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. 3. ಹೊಂದಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಪ್ರ+ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) + ಸನ್ "ಅ:" (3-3-102).

ಪ್ರಾಪಿಪಯಿಷು ಪ್ರಾಪಿಪಯಿಷು (ವಿಂ) 1. ಒಯ್ಯಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. ಪ್ರ+ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) + ಸನ್ "ಃ:" (3-2-166). "ಪ್ರತೀತಸ್ತತ್ಕಿ ಮಾಮತಿಭರಮಃ: ಪ್ರಾಪಿ-

ಪಯಿಷು:" ಮಾಘಂ 4-69. 2. ಸೇರಿಸಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ. 3. ತಲುಪಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ.

ಪ್ರಾಪ್ತ ಪ್ರಾಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ+ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ಪ್ರಾಪ್ತಾ: ಕೃಷ್ಣಾದೃಷ್ಟಶೃಂಗೋಪಚಾರೈ: ಪುಣ್ಯಶ್ರೀಕಾ: ಕೋಸಲೇಂದ್ರೇಣ ಪುತ್ರಾ:" ಮಂ ವೀಂ 1-24. 2. ಅನುಭವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಈಡುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಆಮೃಶ್ಯ ರಾತ್ರಿಮಠೋದಯಜಾತಪುಷ್ಪಾಂ ಪ್ರಾಪ್ತಾನುತಾಪ ಇವ ಸತ್ಪಥಲಕ್ಷಣೇನ" ಯಾದಂ 1-9-40. "ತೇನ ಪ್ರಾಪ್ತಂ ಗರ್ಭವಾಸಾದಿ ದುಃಖಮ್" ಮುಂ ಮಾಂ. 3. ಸೇರಲ್ಪಟ್ಟ, ತಲುಪಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ನ ತಸ್ಯೈ ಭರ್ತೃತ: ಪ್ರಾಪ್ತಮಾನಸಂಪ್ರತಿಪತ್ತಿಷು" ಮಾಘಂ 1-9-36. 5. ಉಂಟಾದ, ಸಂಭವಿಸಿದ. "ಏತಸ್ಮಿನ್ನೇನಸಿ ಪ್ರಾಪ್ತೇ ವಸಿತ್ವಾ ಗದಂಭಾಜಿನಮ್" ಮನುಂ 1-1-122. 6. ಹೊಂದಿದ, ಸೇರಿದ, ತಲುಪಿದ. "ಪರಿಷ್ಕೃತಿ ಭಾರತವರ್ಷಸಿಮ್ನ: ಪ್ರಾಪ್ತಾ ವಯಂ ಪವಂತಸಾವಂಭೂಮಮ್" ಯಾದಂ 1-6-33. 7. ಹೊಂದಿದ, ಪಡೆದ, ಸಂಪಾದಿಸಿದ. "ಪ್ರಾಪ್ತೋ ಮೌಕ್ತಿಕಹಾರಮುನ್ನತ-ಕುಚಾಭೋಗಸ್ತದೀಯದ್ವಿಷಾಮ್" ಮಾಘಂ 1-6-64. 8. ಅನುಭವಿಸಿದ, ತಾಳ್ಮೆಯಿಂದ ಸಹಿಸಿದ. "ಪ್ರಾಪ್ತೋಽಭಿಮಾನವ್ಯಸನಾದಸಹ್ಯಂ ದಂತೀವ ದಂತವ್ಯಸನಾದ್ವಿಕಾರಮ್" ಕಿರಾಂ 3-45. 9. ಬಂದಿರುವ, ಆಗಮಿಸಿರುವ. "ಪ್ರಾಪ್ತಾವೇಕರಥಾರೂಢೌ ಪೃಚ್ಛಂತೌ ತ್ವಾಮಿತಸ್ತತ:" ವೇಣೀಂ 4-25. 10. ಬಂದು ಸೇರಿದ, ಉಪಸ್ಥಿತವಾದ. "ಪ್ರಾಪ್ತಾರ್ಥಗ್ರಹಣಂ ದ್ರವ್ಯಪರೀವರ್ತೋಽನುರೋಧನಮ್" ಹಿತೋಂ 2-1-3. 11. ಬಂದ, ಬಂದಿರುವ, ಬಂದು ಸೇರಿದ. "ಅಸಾಧ್ಯ: ಕುರುತೇ ಕೋಪಂ ಪ್ರಾಪ್ತೇ ಕಾಲೇ ಗದೋ ಯಥಾ" ಮಾಘಂ 2-94.

ಪ್ರಾಪ್ತಕಾಲ ಪ್ರಾಪ್ತಕಾಲ (ಪುಂ) 1. ಸರಿಯಾದ ಕಾಲ, ಯೋಗ್ಯವಾದ ಸಮಯ. (ವಿಂ) 2. ಅನುಕೂಲವಾದ ಕಾಲವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ, ಯೋಗ್ಯವಾದ ಕಾಲವುಳ್ಳ.

ಪ್ರಾಪ್ತಪ್ರಸವ ಪ್ರಾಪ್ತಪ್ರಸವ (ವಿಂ) ಪ್ರಸವಕಾಲವು ಸಮಾಪಿಸಿರುವ, ಹೆರಿಗೆಯ ಸಮಯವು ಬಂದಿರುವ. "ಪ್ರಾಪ್ತಪ್ರಸವಮಾತ್ಮಾನಂ ಗಜ್ಞಾದೇವ್ಯಾ ವಿಮುಚ್ಛತಿ" ತಂ ರಾಂ 9-2.

ಪ್ರಾಪ್ತಮನೋರಥ ಪ್ರಾಪ್ತಮನೋರಥ (ವಿಂ) ಇಷ್ಟಸಿದ್ಧಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿದ, ಅಪೇಕ್ಷೆಯು ಕೈಗೊಂಡಿದ.

ಪ್ರಾಪ್ತರೂಪ ಪ್ರಾಪ್ತರೂಪ (ವಿಂ) 1. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. 2. ಮನೋಹರವಾದ, ರಮಣೀಯವಾದ. "ಪ್ರಾಪ್ತರೂಪೋ ಜರಮ್ಯಯೋ:" ಮೇದಿಂ.

ಪ್ರಾಪ್ತವತ್ ಪ್ರಾಪ್ತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಪಡೆದ, ಸಂಪಾದಿಸಿದ, ಹೊಂದಿದ. ಪ್ರ+ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತವತು:" (3-2-102).



“ಪದ್ಮನಾಭಚರಣಾಕ್ಷಿತಾಶ್ವಸು ಪ್ರಾಪ್ತವತ್ಸವಮತವಿಪ್ರುಷೋ ನವಾ:”  
ಕುಮಾಂ ೭-೨೩. 2. ಹೊಂದಿದ, ಸೇರಿದ, ತಲುಪಿದ.  
3. ಆಗಮಿಸಿದ, ಬಂದು ಸೇರಿದ. 4. ಹೊಂದಿದ, ಪಡೆದ.  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” । -ವತ್ತಿ-ವತ್ತಿ. “ರಮ್ಯಾ-ಇತಿ ಪ್ರಾಪ್ತವತ್ತಿ:  
ಪತಾಕಾ ರಾಗಂ ವಿವಿಕ್ತಾ ಇತಿ ವರ್ಧಯಂತಿ:” ಮಾಘಂ ೩-೫೩ ।

**ಪ್ರಾಪ್ತಿ ಪಾಠ್ಯ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊಂದುವುದು, ಪಡೆಯು  
ವುದು. ಪ್ರ+ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) ।  
“ಪರಸ್ಪರಪ್ರಾಪ್ತಿನಿರಾಶಯೋವರಂ ಶರೀರನಾಶೋಽಪಿ ಸಮಾನ್-  
ರಾಗಯೋ:” ಮಾಲಂ ೩-೧೬ । 2. ಸೇರುವುದು, ತಲುಪು  
ವುದು. 3. ಆಗಮನ, ಬರುವುದು. 4. ಉತ್ಪತ್ತಿ,  
ಉದಯ, ಅವಿರ್ಭಾವ. “ಗಚ್ಛಂತ್ಯಾತ್ಮಪ್ರಸಾದೇನ ವಿರುಷಾಂ  
ಪ್ರಾಪ್ತಿಮವ್ಯಯಾಮ್” ಭಾಂ ಆಶ್ವಂ ೪೮-೩ । 5. ಜನ್ಮಾಂತರ  
ದಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ ಪಾಪಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯಗಳ ಫಲ. 6.  
ಅಣಿಮಾದಿ ಅಪ್ಪಸ್ಥಿತಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. “ಅಣಿಮಾ ಮಹಿಮಾ  
ಚೈವ ಗರಿಮಾ ಲಘಿಮಾ ತಥಾ । ಪ್ರಾಪ್ತಿ: ಪ್ರಾಕಾಮ್ಯ-  
ಮಿಶಿತ್ವಂ ವಶಿತ್ವಂ ಚಾಷ್ಟಭೂತಯ:” ಅಮಂ । 7. ಲಾಭ,  
ಸಂಪಾದನೆ. 8. ಸಂಗ್ರಹ, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸುವುದು.  
ಕೂಡಿಸುವುದು. 9. ಭಾಗ, ಅಂಶ. 10. ಅದೃಷ್ಟ.  
11. ಸಂಯೋಗ, ಸಂಬಂಧ. 12. ಮುಖಸಂಧಿಯ  
ಬಂದು ಅಂಗ.

**ಪ್ರಾಪ್ತಾಶಾ ಪಾಠ್ಯಾಶಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊಂದುವ  
ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಪಡೆಯುವ ಆಸೆ. 2. ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ಪ್ರಾರಂಭ  
ಸಲ್ಪಟ್ಟ ಕಾರ್ಯದ ಐದು ಅವಸ್ಥೆಗಳಲ್ಲೊಂದು. (1) ಆರಂಭ:  
(2) ಯತ್ನ: (3) ಪ್ರಾಪ್ತಾಶಾ (4) ನಿಯತಾಪ್ತಿ: ಮತ್ತು  
(5) ಫಲಾಗಮ: ಮೂರನೆಯ ಅವಸ್ಥೆಯು ಪ್ರಾಪ್ತಾಶೆ.  
ಉಪಾಯ ಮತ್ತು ಅಪಾಯ (ಪ್ರತಿಬಂಧಕ) ಶಂಕೆಗಳಿಂದ  
ಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿಯ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಸಂಶಯ.  
“ಉಪಾಯಾಪಾಯಶಙ್ಕಾಭ್ಯಾಂ ಪ್ರಾಪ್ತಾಶಾ ಪ್ರಾಪ್ತಿಸಂಭವ:”  
(ಸಂಭಾವನಾ) ಸಾಂ ದಂ ೬-೭೨ ।

**ಪ್ರಾಪ್ತವತ್ ಪಾಠ್ಯವತ್** (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ,  
ಪಡೆಯುತ್ತಿರುವ. 2. ತಲುಪುತ್ತಿರುವ, ಸೇರುತ್ತಿರುವ.  
ಪ್ರ+ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । “ಶುಭಾ:  
ಸಂಕ್ಷಂ ನ ಕ್ವಚಿತ್ಪ್ರಾಪ್ತವಂತ: ದೂರಾನ್ಮುಕ್ತಾ: ಶೀಘ್ರತಾಂ ದರ್ಶಯಂತ:”  
ಮಾಘಂ ೧೮-೧೩ । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ವತ್ತಿ  
-ವತ್ತಿ.

**ಪ್ರಾಪ್ಯ ಪಾಠ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲ್ಪಡುವ. 2. ಆಶ್ರಯಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. 3. ಸೇರಲ್ಪಡುವ, ತಲುಪಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ+ಆಪ್ಲ್  
(ವ್ಯಾಪ್ತೌ) “ಪ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪) । 4. ವ್ಯಾಕರಣ

ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಕರ್ಮಗಳಲ್ಲೊಂದು.

(1) ನಿವೃತ್ಯಮ್ (2) ವಿಕಾರ್ಯಮ್ (3) ಪ್ರಾಪ್ಯಮ್ ಮತ್ತು  
(4) ಅನಿವೃತ್ತಮ್ ಇವು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಕರ್ಮಗಳು. “ದೇವದತ್ತ:  
ಶಾಲಾಂ ಗಚ್ಛತಿ” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಶಾಲೆಯು ಪ್ರಾಪ್ಯಕರ್ಮವಾಗು  
ವುದು. (ಅವ್ಯಂ) 5. ಹೊಂದಿ, ಪಡೆದು. 6. ಸೇರಿ,  
ತಲುಪಿ. “ಪ್ರಾಪ್ಯ ಯಾದವಪತಿಸ್ತ್ರಿವಿವಿಕ್ತಂ ದೇವಮಾತುರನೀತ-  
ಕುಂಡಲ:” ಯಾದಂ ೧೭-೫ ।

**ಪ್ರಾಪ್ಯ ಪಾಠ್ಯ** (ನಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಬಲದಿಂದ ಕೂಡಿರು  
ವಿಕೆ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಪ್ರಭಾವ. ಪ್ರಬಲಸ್ಯ ಭಾವ: “ಪ್ಯನ್”  
(೫-೧-೧೨೪) । 2. ಅಭ್ಯುದಯ, ಏಳಿಗೆ, ಏರಿಕೆ.

**ಪ್ರಾಬೋಧಿಕ ಪಾಠ್ಯೋಧಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾತಃಕಾಲ,  
ಉಷಾಕಾಲ. ಪ್ರಬೋಧಾಯ ಹಿತ: “ಠಕ್” । 2. ಮೊಗಧ,  
ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿ ರಾಜನನ್ನು ಎಬ್ಬಿಸಲು ಹಿತಕರವಾದ  
ರಾಗದಿಂದ ಗಾನಮಾಡುವ ಸ್ತುತಿಪಾಠಕ. ಪ್ರಬೋಧ: ಪ್ರಬೋಧನ  
ತತ್ರ ನಿಯುಕ್ತ: “ಠಕ್” (೪-೪-೬೯) । (ವಿಂ) 3.  
ಪ್ರಬೋಧವೇ (ಎಬ್ಬಿಸುವುದೇ) ಪ್ರಯೋಜನವಾಗಿರುವ.  
ಪ್ರಬೋಧ: ಪ್ರಬೋಧನಂ ಪ್ರಯೋಜನಂ ಯಸ್ಯ “ಠಕ್” (೫-೧-೧೦೯) ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ ಪ್ರಾಬೋಧಿಕೀ ಪಾಠ್ಯೋಧಿಕೀ. “ಪ್ರಾಬೋಧಿಕೀಭಿರಪಸೇದು-  
ರಿತೀವ ವಾಗ್ಭಿ: ಸ್ವಾಧೀನಮರ್ತ್ಯತನಯಂ ಶ್ರುತಿವಂದಿನಸ್ತಮ್”  
ಯಾದಂ ೧೯-೧ ।

**ಪ್ರಾಭಜನ ಪಾಠ್ಯಜನ** (ನಂ) ಸ್ವಾತೀನಕ್ಷತ್ರ. ಪ್ರಾಭಜನೋ  
ದೇವತಾಸ್ಯ “ಅನ್” (೪-೨-೨೪) ।

**ಪ್ರಾಭಜನಿ ಪಾಠ್ಯಜನಿ** (ಪುಂ) ವಾಯುವಿನ ಮಗನಾದ  
ಹನುಮಂತ. ಪ್ರಾಭಜನಸ್ಯ ಅಪत्यಮ್ “ಇನ್” (೪-೧-೯೫) ।  
“ಆಯುಷಿ ತ್ವಕ್ಷು ನಿಮಿಷ ಪ್ರಾಭಜನಿರಮೋಚಯತ್” ಮೃತ್ರಿಂ  
೯-೬೭ ।

**ಪ್ರಾಭವ ಪಾಠ್ಯವ** (ನಂ) 1. ಪ್ರಭುತ್ವ, ಆಡಳಿತ, ಆಳ್ವಿಕೆ.  
ಪ್ರಮೋರ್ಭಿ: “ಅನ್” (೫-೧-೧೩೧) । 2. ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ,  
ಉತ್ಕೃಷ್ಟವಾಗಿರುವಿಕೆ.

**ಪ್ರಾಭವ್ಯ ಪಾಠ್ಯವತ್** (ನಂ) 1. ವಿಭುತ್ವ. 2. ಅಧಿಕಾರ.  
ಪ್ರಭವತೋ ಭಾವ: “ಪ್ಯನ್” (೫-೧-೧೨೪) । “ಅನಿಚ್ಛತ:  
ಪ್ರಾಭವ್ಯಾದ್ರಾಜಾ ದಂಡಯ: ಶತಾನಿ ಷಟ್” ಮನುಂ ೮-೪೧೨ ।

**ಪ್ರಾಭಾಕರ ಪಾಠ್ಯಾಕರ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಭಾಕರಮತಾನು  
ಯಾಯಿ. (ನಂ) 2. ಪ್ರಭಾಕರನ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
ಪ್ರಾಭಾಕರಮತಂ ವೇದಿ ಪ್ರಾಭಾಕರಸಂಬಂಧಿ ವಾ “ಅನ್” (೪-೨-೫೯,  
೪-೩-೧೨೦) ।

**ಪ್ರಾಭಾತಿಕ ಪಾಠ್ಯಾತಿಕ** (ವಿಂ) ಉಷಾಕಾಲದ ಸಂಬಂಧ  
ವಾದ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿರುವ. ಪ್ರಾತೇ ಭವ: “ಠಕ್” ।



“ಪ್ರಾಲೇಯಲೇಶಮಿಶ್ರ ಮಹತಿ ಪ್ರಾಭಾತಿಕೇ ಚ ವಾತಿ ಜಡೆ”  
ಪಠ್ಯತಂ ೧-೩೪೧ |

**ಪ್ರಾಭುತ ಸ್ತಂಭ್ಯತ** (ನಂ) ಕಾಣಿಕೆ, ರಾಜನ ಸಂದರ್ಶನಕ್ಕೆ ಹೋದಾಗ ಕೊಡುವ ಉಪಹಾರ. ಪ್ರಾಭ್ರಿಯತೆ—ಪ್ರ+ಆ+ಭ್ರ (ಭರಣೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) | “ತಂ ದತ್ತಪ್ರಾಭುತಂ ದತ್ತಂ ಸ ಸಮಾನ್ಯ ವ್ಯಸರ್ಜಯತ್” ಕಥಾಸಂ |

**ಪ್ರಾಭುತಕ ಸ್ತಂಭ್ಯತಕ** (ನಂ) ಕಾಣಿಕೆ, ರಾಜನಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸುವ ಉಪಹಾರ. ಪ್ರಾಭುತ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕಃ” |

**ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ ಸ್ತಂಭ್ಯತಕ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಮಾಣದಿಂದ ಸಿದ್ಧವಾದ, ಯಥಾರ್ಥಾನುಭವಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾದಿ ಉಪಾಯಗಳಿಂದ ಸಿದ್ಧವಾದ. ಪ್ರಮಾಣೇನ ನಿವೃತ್ತಃ “ಠಕ್” (೪-೧-೭೯) | 2. ಶಾಸ್ತ್ರಸಿದ್ಧವಾದ. 3. ವಿಶ್ವಾಸಾರ್ಹವಾದ, ನಂಬಿಕೆಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ. 4. ಹೇತುವಾದಿ, ನೈಯಾಯಿಕ.

**ಪ್ರಾಮಾಣ್ಯ ಸ್ತಂಭ್ಯತಕ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ವಿಷಯವನ್ನು ಸಮರ್ಥಿಸುವುದಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ ಸಾಕ್ಷ್ಯ, -ರೂಪವಾತು. ಪ್ರಮಾಣಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಘ್ನ” (೪-೧-೧೨೪) | 2. ವಿಶ್ವಾಸಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾಗಿರುವಿಕೆ, ನಂಬಲು ಅರ್ಹವಾಗಿರುವಿಕೆ.

**ಪ್ರಾಮಾದಿಕ ಸ್ತಂಭ್ಯತಕ** (ವಿಂ) ಅಜಾಗರೂಕತೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ, ಎಚ್ಚರಿಕೆಯಿಲ್ಲದ ಕಾರಣದಿಂದ ಸಂಭವಿಸಿದ. ಪ್ರಮಾದೇನ ನಿವೃತ್ತಃ “ಠಕ್” (೪-೪-೧೯) |

**ಪ್ರಾಮೋದ್ಯ ಸ್ತಂಭ್ಯತಕ** (ನಂ) 1. ಮುಣ, ಸಾಲ, 2. ಮರಣ.

**ಪ್ರಾಯ ಸ್ತಂಭ್ಯತ** (ಫಂ) 1. ಮರಣ ಹೊಂದಲು ಮಾಡುವ ಉಪವಾಸ. ಪ್ರಕೃಷ್ಟಮಯನಮ್—ಇನ್ (ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೩-೪೬) | “ಅಹಂ ವಃ ಪ್ರತಿಜಾನಾಮಿ ನ ಗಮಿಷ್ಯಾಮ್ಯಹಂ ಪುರೀಮ್ | ಇಹೈವ ಪ್ರಾಯಮಾಸಿಷ್ಯೇ ಶ್ರೇಯೋ ಮರಣಮೇವ ಚ” ರಾಮಾಂ | 2. ಮರಣ. 3. ಹೆಚ್ಚು ಸಂಖ್ಯೆ, ಅಧಿಕಾಂಶ. 4. ಸಮೃದ್ಧಿ, ಹೇರಳ. 5. ಪಾಪ. 6. ತಪಸ್ಸು. (ಸಮಾಸದ ಕೊನೆ ಯಲ್ಲಿ) (ಅವ್ಯಂ) 7. ಬಹುಮಟ್ಟಿಗೆ, ಅನೇಕವಾಗಿ. (ವಿಂ) 8. ಸಮೃದ್ಧವಾದ, ತುಂಬಿದ. “ಸ್ಕೂಟಿತಕಮಲಾ-ಮೋದಪ್ರಾಯಾಃ ಪ್ರವಾಂತು ವನಾನಿಲಾಃ” ಉಂ ರಾಂ ೩-೨೪ | 9. ಬಹಳವಾದ, ಪ್ರಚುರವಾದ, ಅಧಿಕವಾದ. “ಮಿಲಿತ-ವೇತ್ರಪಾಣಿವರ್ಷವರಪ್ರಾಯಪುರುಷಪರಿವಾರಾ” ಮಾಲತೀಂ ೧ | 10. ತುಲ್ಲವಾದ, ಸದೃಶವಾದ. “ವರ್ಷಶತಪ್ರಾಯಂ ದಿನಮ್” | “ಪೀಯೂಷಪ್ರಾಯಂ ಪ್ರಭಾಷಣಮ್” ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಪ್ರಾಯಸ್ಯ ಸ್ತಂಭ್ಯತಕ** (ನಂ) ಪರಿಶುದ್ಧನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪ್ರಯತಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಘ್ನ” (೪-೧-೧೨೪) |

**ಪ್ರಾಯಶಸ್ ಸ್ತಂಭ್ಯತಕ** (ಅವ್ಯಂ) ಬಹುಮಟ್ಟಿಗೆ, ಬಹುಮಟ್ಟಿಗೆ, ಅನೇಕವಾಗಿ. “ಆಶಾಬಂಧಃ ಕುಸುಮಸದೃಶಂ ಪ್ರಾಯಶೋ ಹೃದ್ಗನಾನಾಂ ಸದಃ ಪಾತಿ ಪ್ರಣಯಿ ಹೃದಯಂ ವಿಪ್ರಯೋಗೇ ಕುಣದಿ” ಮೇಘಂ ೧-೧೦ |

**ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ ಸ್ತಂಭ್ಯತಕ** (ನಂ) ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ, ಪಾಪ ಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಶಾಸ್ತ್ರವಿಹಿತವಾದ ಕರ್ಮ. ಪ್ರಾಯಸ್ಯ ಪಾಪಸ್ಯ ಚಿತ್ತಂ ವಿಶೋಧನಮ್ | “ಪ್ರಾಯಃ ಪಾಪಂ ಸಮುದಿಷ್ಟಂ ಚಿತ್ತಂ ತಸ್ಯ ವಿಶೋಧನಮ್” ಸ್ಮೃತಿಃ | ಪ್ರಾಯಃ ತಪಃ ತಸ್ಯ ಚಿತ್ತಂ ನಿಶ್ಚಯಃ | “ಪ್ರಾಯೋ ನಾಮ ತಪಃ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಚಿತ್ತಂ ನಿಶ್ಚಯಃ ಉಚ್ಯತೇ | ತಪೋನಿಶ್ಚಯಸಂಯುಕ್ತಂ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತಮಿತಿ ಸ್ಮೃತಮ್” | ನಿಶ್ಚಯಸಂಯುಕ್ತಂ ಪಾಪಕ್ಷಯಸಾಧನತ್ವೇನ ನಿಶ್ಚಿತಮ್ ಇತಿ ವಾ | ತಪಸ್ಸು ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿ ಖೇಡಿಸುತ್ತಿರುವ ಪಾಪವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವುದರಿಂದ ಅದು ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ, ಶಾರೀರವಾದ ಕರ್ಮದೋಷದಿಂದ ಮನುಷ್ಯನು ಸ್ಥಾವರತ್ವವನ್ನೂ ವಾಚಿಕದೋಷದಿಂದ ಪಕ್ಷಿ ಮತ್ತು ಮೃಗ ಜನ್ಮಗಳನ್ನೂ ಮಾನಸದೋಷದಿಂದ ಅಂತ್ಯಜತ್ವವನ್ನೂ ಹೊಂದುತ್ತಾನೆ. “ಶರೀರಜೈಃ ಕರ್ಮದೋಷೈಃ ಪಾತಿ ಸ್ಥಾವರತಾಂ ನರಃ | ವಾಚಿಕೈಃ ಪಕ್ಷಿಮೃಗತಾಂ ಮಾನಸೇರನ್ತರ್ಯಜಾತಿತಾಮ್” ಮನುಂ ೧೨-೯ | ಈ ಮೂರು ವಿಧವಾದ ದೋಷದ ಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತವನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು. “ಅಕುರ್ವನ್ ವಿಹಿತಂ ಕರ್ಮ ನಿಷಿದ್ಧಂ ತು ಸಮಾಚರನ್ | ಪ್ರಸಜ್ಜೇಂದ್ರಿಯಾರ್ಥೇಷು ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತೀಯತೇ ನರಃ || ಕಾಮ್ಯಾನ್ತಾಂ ಸಕಲಾರ್ಥಂ ಚ ದೋಷಾತಾರ್ಥಮೇವ ಚ | ಅತಃ ಕಾಮ್ಯಂ ನೈಮಿತ್ತಿಕಂ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತಮಿತಿ ಸ್ಥಿತಿಃ” ||

**ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತಿ ಸ್ತಂಭ್ಯತಕ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ.

**ಪ್ರಾಯಸ್ ಸ್ತಂಭ್ಯತಕ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಬಹುಮಟ್ಟಿಗೆ, ಅನೇಕವಾಗಿ. ಪ್ರ+ಶಾ (ಗತೌ) “ಅಸುನ್” (ಉಂ ೪-೧೮೯) | “ಸ ಪೌರಕನ್ಯಾಕರವಿಪ್ರಕೀರ್ಣಾನ್ ಪ್ರಾಯಃ ಪ್ರತಿಚ್ಛನ್ತುಪಚಾರ-ಲಾಜಾನ್” ಯಾದಂ ೧೩-೬೩ | 2. ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾವ್ಯಂಜಕ ಶಬ್ದ. “ಮನ್ಯೇ ಶಕ್ತೌ ಧ್ರುವಂ ಪ್ರಾಯೋ ನೂನಮಿತ್ಯೇವಮಾದಿಭಿಃ | ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾ ವ್ಯಜ್ಯತೇ ಶಬ್ದೇರಿವಶಬ್ದೋಽಪಿ ತಾದೃಶಃ” | “ಮಾಲಿನ್ಯಯೋಗ-ಮಪನೀಯ ಕರಾವಮಶಃ ಪ್ರಾಯೋ ಯಥಾಹಮನುಲಿಂಪತಿ ಕುಡ್ಕುಮೇನ” ಯಾದಂ ೧೯-೨೭ | 3. ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ. “ಪ್ರಾಯಃ ಪ್ರತ್ಯಯ-ಮಾದತ್ತೇ ಸ್ವಗುಣೇಷುತಮಾದರಃ” ಕುಮಾಂ ೬-೨೦ |

**ಪ್ರಾಯಿಕ ಸ್ತಂಭ್ಯತಕ** (ವಿಂ) ಬಹುಮಟ್ಟಿಗೆ ಉಂಟಾಗುವ, ಅನೇಕವಾಗಿ ಸಂಭವಿಸುವ, ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲೂ ಪ್ರವರ್ತಿಸದಿರುವ, ವಿಕಲ್ಪವಾದ. ಪ್ರಾಯೇಣ ಭವಮ್ “ಠಕ್” (೪-೩-೩೯) |

**ಪ್ರಾಯೇಣ ಸ್ತಂಭ್ಯತಕ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ, ಬಹುಮಟ್ಟಿಗೆ, ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ. “ಪ್ರಾಯೇಣ ಸಾಮಗ್ರ್ಯವಿಧೌ ಗುಣಾನ್ತಾಂ ಪರಾಙ್ಮುಖೀ



ವಿಶ್ವಸೃಜ: ಪ್ರವೃತ್ತಿ:” ಕುಮಾಂ ೩-೨೮ । 2. ಬಹುಶಃ, ಬಹುಮಟ್ಟಿಗೆ, ಅನೇಕವಾಗಿ. “ಪ್ರಾಘೇನ ನೀಚಾನಪಿ ಮೇದಿನಿ-  
ಭೃತೋ ಜನಃ ಸಮೇನೇವ ಪಥಾಧಿರೋಹತಿ” ಮಾಘಂ ೧೨-೪೬ ।  
3. ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾವೃಂದಕ ಶಬ್ದ. “ಪ್ರದಕ್ಷಿಣಾವೃತ್ತಶಿಖಾಕಲಾಪಃ  
ಪ್ರಾಘೇನ ನೀರಾಜನಮಾತತಾನ” ಯಾದಂ ೧೩-೮೫ ।

**ಪ್ರಾಯೋಜ್ಯ ಪ್ರಾಯೋಜ್ಯ** (ವಿಂ) ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವ,  
ಉಪಯೋಗಾರ್ಹವಾದ. ಪ್ರ+ಆ+ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ)+ಣಿಕ್  
ಕರ್ಮಂ “ಯತ್” (೩-೧-೧೭) । “ಪ್ರಾಯೋಜ್ಯಂ ನ ವಿಭಜ್ಯತ” ।  
ಉಪಯೋಗಾರ್ಹವಾದ ಪುಸ್ತಕಾದಿಗಳನ್ನು ಭಾಗಮಾಡಿ  
ಕೊಳ್ಳಿಕೊಡದು.

**ಪ್ರಾಯೋಪವಿಷ್ಠ ಪ್ರಾಯೋಪವಿಷ್ಠ** (ವಿಂ) 1. ನಿರಶನವ್ರತ  
ವನ್ನು ಕೈಗೊಂಡು ಕುಳಿತಿರುವ, ಉದ್ದೇಶಪಟ್ಟ ಕಾರ್ಯದ  
ಸಫಲತೆಗಾಗಿ ಉಪವಾಸಮಾಡಿ ದೇವರ ಮುಂದೆ ಕುಳಿತಿ  
ರುವ. ಪ್ರಾಘೇನ ಮರಣಾರ್ಥಮನಶನೇನ ಉಪವಿಷ್ಠಃ । 2.  
ಅಮರಣ ಉಪವಾಸವನ್ನು ಕೈಗೊಂಡು ಕುಳಿತಿರುವ.  
“ಪ್ರಾಯೋಪವಿಷ್ಠೇ ನೃಪತೌ ಮಣಲೂರೇಶ್ವರೇ ತದಾ” ಭಾಂ ಆಶ್ವಂ  
೭೧-೧ ।

**ಪ್ರಾಯೋಪವೇಶ ಪ್ರಾಯೋಪವೇಶ** (ವುಂ) 1. ಒಂದು ಕಾರ್ಯದ  
ಸಾಧನೆಗಾಗಿ ದೇವರ ಮುಂದೆ ಉಪವಾಸಮಾಡಿ ಕೂಡು  
ವುದು. ಪ್ರಾಘೇನ ಮರಣಾರ್ಥಮನಶನೇನ ಉಪವೇಶಃ । “ಪ್ರಾಯೋ-  
ವೇಶಮಸ್ಮಾಕಂ ಮರಣಂ ಚ ಜಟಾಯುಷಃ” ರಾಮಾಂ । 2. ಮರಣ  
ಪರ್ಯಂತ ನಿರಶನ ವ್ರತವನ್ನು ಕೈಗೊಂಡು ಕುಳಿತಿರು  
ವುದು. “ಪ್ರಾಯೋಪವೇಶೋ ರಾಜರ್ಷಿಃ ವಿಪ್ರಶಾಪಾತ್ ಪರೀಕ್ಷಿತಃ”  
ಭಾಗಂ । ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । -ಉಪವೇಶನಮ್.

**ಪ್ರಾಯೋಗಿಕ ಪ್ರಾಯೋಗಿಕ** (ವಿಂ) ಪ್ರಯೋಗಕ್ಕೆ ಅರ್ಹ  
ವಾದ. ಪ್ರಯೋಗಮಹಂತಿ - ಪ್ರಯೋಗ “ಠಕ್” (೫-೧-೬೪) ।  
ಉಪಯೋಗವೃದ್ಧಿಃ (೭-೩-೨೦) ।

**ಪ್ರಾರಂಭ ಪ್ರಾರಂಭ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಪ  
ಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ+ಆ+ರಮ (ರಾಮಸ್ಯೇ) “ಕ್ತಃ”  
(೩-೨-೧೦೨) । “ಅಥಾಭಿಷೇಕಂ ರಘುವಂಶಕೇತೋಃ ಪ್ರಾರಂಭ-  
ಮಾನಂದಜಲೇಜನನ್ಯೋಃ । ನಿವೃತ್ತಯಾಮಾಸುರಮಾತೃವೃದ್ಧಾಸ್ತೀರ್ಥಾ-  
ಹೃತೈಃ ಕಾಂಚನಕುಂಭತೋಯೈಃ” ರಘುಂ ೧೪-೭ । “ಪ್ರಾರಂಭಮುತ್ತಮ-  
ಗುಣಾ ನ ಪರಿತ್ಯಜಂತಿ” ಭರ್ತೃಂ ೧-೭೨ । 2. ಪ್ರಾರಂಭ  
ಕರ್ಮ, ಪುನರ್ಜನ್ಮಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ಜನ್ಮಾಂತರದ ಕರ್ಮ.  
ಅನುಭವಿಸಲು ಪ್ರಾರಂಭವಾದ ಕರ್ಮವು ಪ್ರಾರಂಭಕರ್ಮ.  
ಕರ್ಮವು ಪ್ರಾರಂಭ ಮತ್ತು ಸಂಚಿತಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ.  
ಪ್ರಾರಂಭಕರ್ಮವನ್ನು ಅದು ಕೊನೆಗೊಳ್ಳುವವರೆಗೂ

ಅನುಭವಿಸಿಯೇ ತೀರಬೇಕು, ಸಂಚಿತ (ಕೂಡಲ್ಪಟ್ಟ) ಕರ್ಮವು  
ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ ಜ್ಞಾನ ಮತ್ತು ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯಗಳಿಂದ  
ಕ್ಷಮೆಯ ಹೊಂದುವುದು. “ಅವಶ್ಯಮೇವ ಭೋಕ್ತವ್ಯಂ ಕೃತಂ ಕರ್ಮ  
ಶುಭಾಶುಭಮ್ । ನಾಭುಕ್ತಂ ಕ್ಷೀಯತೇ ಕರ್ಮ ಕಲ್ಪಕೋಟಿಶತೈರಪಿ” ।  
“ಜ್ಞಾನಾಗ್ನಿಃ ಸರ್ವಕರ್ಮಾಣಿ ಭಸ್ಮಸಾತ್ ಕುಸ್ತೇಽರ್ಜುನ” ಗೀತಾ  
೪-೩೭ । (ನಂ) 3. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. ಭಾವೇ  
“ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪) ।

**ಪ್ರಾರಂಭವತ್ ಪ್ರಾರಂಭವತ್** (ವಿಂ) ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದ, ಉಪ  
ಕ್ರಮಿಸಿದ. ಪ್ರ+ಆ+ರಮ (ರಾಮಸ್ಯೇ) “ಕ್ತವತುಃ” ।

**ಪ್ರಾರಂಭಿ ಪ್ರಾರಂಭಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ.  
ಪ್ರ+ಆ+ರಮ (ರಾಮಸ್ಯೇ) ಭಾವೇ “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೧೧೪) ।  
2. ಅನೇಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ. ಪ್ರ+ಆ+ರಮ ಕರಂ  
“ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೧೧೪) ।

**ಪ್ರಾರಂಭವ್ಯ ಪ್ರಾರಂಭವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಡುವ,  
ಉಪಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ+ಆ+ರಮ (ರಾಮಸ್ಯೇ) “ತವ್ಯಃ”  
(೩-೧-೧೬) । 2. ಪ್ರಾರಂಭಿಸಬೇಕಾದ, ಉಪಕ್ರಮಿಸ  
ಬೇಕಾದ, 3. ಉಪಕ್ರಮಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಪ್ರ+ಆ+ರಮ  
“ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೧೬) । -ಪ್ರಾರಂಭಣೀಯಃ.

**ಪ್ರಾರಂಭಮಾಣ ಪ್ರಾರಂಭಮಾಣ** (ವಿಂ) ಪ್ರಾರಂಭಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಉಪಕ್ರಮ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಆ+ರಮ (ರಾಮಸ್ಯೇ)  
“ಶಾಂತು” (೩-೨-೧೨೪) ।

**ಪ್ರಾರಂಭ್ಯ ಪ್ರಾರಂಭ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಉಪಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಡುವ,  
ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ+ಆ+ರಮ (ರಾಮಸ್ಯೇ) “ಯತ್”  
(೩-೧-೧೨೪) । (ಅವ್ಯಂ) 2. ಪ್ರಾರಂಭಮಾಡಿ, ಉಪ  
ಕ್ರಮಿಸಿ.

**ಪ್ರಾರಂಭ ಪ್ರಾರಂಭ** (ವುಂ) 1. ಉಪಕ್ರಮ, ಮೊದಲು  
ಮಾಡುವುದು, ಪ್ರಾರಂಭಿಸುವುದು. ಪ್ರ+ಆ+ರಮ  
(ರಾಮಸ್ಯೇ) ಭಾವೇ “ಛಕ್” (೩-೩-೧೮) । “ಪ್ರಾರಂಭೇಽಪಿ  
ತ್ರಿಯಾಮಾ ತರುಣಯತಿ ನಿಜಂ ನೇಲಿಮಾನಂ ವನೇಷು” ಮಾಲತೀಂ  
೫-೬ । 2. ಯೋಗಿ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠಃ ಪ್ರಾರಂಭೋ ಯೋಗೋ ಯಸ್ಯ ।  
“ದಿವಸಂ ಶಾರದಮಿವ ಪ್ರಾರಂಭಸುಖದರ್ಶನಮ್” ರಘುಂ ೧೦-೯ ।  
(ವಿಂ) 3. ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಡುವ, ಉಪಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಡುವ.  
(ಸಾಮಾನ್ಯಪ್ರಾಯೋಗ). ಪ್ರ+ಆ+ರಮ ಕರ್ಮಂ  
“ಛಕ್” (೩-೩-೧೯) । “ಫಲಾನುಮೇಯಾಃ ಪ್ರಾರಂಭಾಃ ಸಂಸ್ಕಾರಾಃ  
ಪ್ರಾಕ್ತನಾ ಇವ” ರಘುಂ ೧-೨೦ । ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।  
-ಪ್ರಾರಂಭಣಮ್ -ಪ್ರಾರಂಭಣಮ್.

**ಪ್ರಾರಂಭಣೀಯ ಪ್ರಾರಂಭಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ, ಉಪಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ+ಆ+ರಮ (ರಾಮಸ್ಯೇ)



ಕರ್ಮಂ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। 2. ಪ್ರಾರಂಭಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ಪ್ರಾರಂಭವೇ ಪ್ರಯೋಜನವಾಗಿರುವ. ಪ್ರಾರಂಭಣಂ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಛ:" (೪-೧-೧೧೧)।

ಪ್ರಾರೋಹ ಪ್ರಾರೋಹ (ವಿಂ) ಬೆಳೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದ (ಚಿಗುರು). ಪ್ರಾರೋಹ: ಶಿಲಮಸ್ಯ "ಞ:" (೪-೪-೬೨)।

ಪ್ರಾರ್ಣ ಪ್ರಾರ್ಣ (ನಂ) ಮೂಲಭೂತವಾದ ಮೂ. ಸಾಲ.

ಪ್ರಾರ್ಥನಾ ಪ್ರಾರ್ಥನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯಾಚನೆ, ಬೇಡಿಕೆ, ಕೋರಿಕೆ. ಪ್ರ+ಅರ್ಥ (उपयाच्यायाम्)+ ಣಿच् "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೩)। "ಯೇ ವರ್ತಂತೇ ಧನಪತಿಪುರ: ಪ್ರಾರ್ಥನಾಡು:ಖಮಾಜೋ ಯೇ ಚಾಲ್ಪತ್ವಂ ದಧತಿ ವಿಷಯಾಕ್ಷೇಪಯಾಪ್ತಿಬುದ್ಧಿ:" ಮೃಂ ೩-೨೮। 2. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ. "ಅಥವಾ ಲಬ್ಧಾವಕಾಶಾ ಮೇ ಪ್ರಾರ್ಥನಾ" ಶಾಕುಂ ೧। "ಉತ್ಸರ್ಪಿಣಿ ಸ್ವಲ್ಪ ಮಹತಾಂ ಪ್ರಾರ್ಥನಾ" ಶಾಕುಂ। ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। ಪ್ರಾರ್ಥನಮ್ ಪ್ರಾರ್ಥನಮ್. "ಯುಗಕ್ಷಯಕೃತಾ ವರ್ಮಾ: ಪ್ರಾರ್ಥನಾನಿ ವಿಕುರ್ವಂತೆ" ಭಾಂ ವನಂ ೫೧-೩೮।

ಪ್ರಾರ್ಥನಾಸಿದ್ಧಿ ಪ್ರಾರ್ಥನಾಸಿದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಷ್ಟಸಿದ್ಧಿ, ಮನೋರಥವು ಕೈಗೊಂಡುವುದು. ಪ್ರಾರ್ಥನಾಃ ಸಿದ್ಧಿ:। "ಪವನಸ್ಯಾನುಕೂಲತ್ವಾತ್ಪ್ರಾರ್ಥನಾಸಿದ್ಧಿಶಾಸಿನ:" ರಘುಂ ೧-೪೨।

ಪ್ರಾರ್ಥನೀಯ ಪ್ರಾರ್ಥನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲ್ಪಡುವ, ಬೇಡಲ್ಪಡುವ, ಯಾಚಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ+ಅರ್ಥ (उपयाच्यायाम्)+ ಣಿच् "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। 2. ಪ್ರಾರ್ಥಿಸ ಬೇಕಾದ. 3. ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬)। -ವಿತವ್ಯ: -ಯಿತವ್ಯ: "ನ ದೃಶ್ಯತೇ ಪ್ರಾರ್ಥಯಿತವ್ಯ ಏವ ತೇ" ಕುಮಾಂ ೫-೪೬।

ಪ್ರಾರ್ಥಯಮಾನ ಪ್ರಾರ್ಥಯಮಾನ (ವಿಂ) ಬೇಡುತ್ತಿರುವ, ಯಾಚಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಅರ್ಥ (उपयाच्यायाम्)+ ಣಿच् "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)।

ಪ್ರಾರ್ಥಯಿತ್ ಪ್ರಾರ್ಥಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) ಬೇಡುವವನು, ಯಾಚಿಸುವವನು. ಪ್ರ+ಅರ್ಥ (उपयाच्यायाम्)+ ಣಿच् "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡಿಪ್" (೪-೧-೫)। -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿಃ.

ಪ್ರಾರ್ಥಿತ ಪ್ರಾರ್ಥಿತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಯಾಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ+ಅರ್ಥ (उपयाच्यायाम्)+ ಣಿच् "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಭವಿಷ್ಯತಿ ಪ್ರಾರ್ಥಿತದುರ್ಲಭ: ಕಥಮ್" ಕುಮಾಂ ೫-೪೬। 3. ಕೋರಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಜ್ಞವ್ಯಯಪ್ರಾರ್ಥಿತಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ: ಸ್ಥಾಪ್ವಾಶ್ರಮಂ ಹೈಮವತಂ ಜಗಾಮ" ಕುಮಾಂ ೩-೨೩। 4. ಶತ್ರುವಿನಿಂದ ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪ್ರಾರ್ಥಿತವತ್ ಪ್ರಾರ್ಥಿತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಬೇಡಿದವನು, ಯಾಚಿಸಿದವನು. 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದವನು. 3. ಕೋರಿದವನು. 4. ಶತ್ರುವನ್ನು ತಡೆದವನು. 5. ಕೊಂದವನು. ಪ್ರ+ಅರ್ಥ (उपयाच्यायाम्)+ ಣಿच् "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಪ್ರಾರ್ಥಿನ್ ಪ್ರಾರ್ಥಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಬೇಡುವವನು, ಯಾಚಿಸುವವನು. 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. ಪ್ರ+ಅರ್ಥ (उपयाच्यायाम्)+ ಣಿच् "ಞಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। "ಮಂದ: ಕವಿ-ಯಶ:ಪ್ರಾರ್ಥಿ ಗಮಿಷ್ಯಾಮ್ಯಪಹಾಸ್ಯತಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೩। 3. ಮೇಲೆ ಬೀಳುವವನು, ದಾಳಿಮಾಡುವವನು.

ಪ್ರಾರ್ಥ್ಯ ಪ್ರಾರ್ಥ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಬೇಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಕೋರಲ್ಪಡುವ. 3. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ದಾಳಿಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ+ಅರ್ಥ (उपयाच्यायाम्)+ ಣಿच् "ಯತ್" (೩-೧-೯೭)।

ಪ್ರಾಲಂಬ ಪ್ರಾಲಂಬ (ಪುಂ) 1. ಮುತ್ತಿನ ಸರ. "ಪ್ರಾಲಂಬದ್ವಿಗುಣಿತಚಾಮರಪ್ರಹಾಸ:" ವೇಣೀಂ ೨-೨೮। (ನಂ) 2. ಕಂಠದಿಂದ ಎದೆಯ ಮೇಲೆ ಜೋಲಾಡುವ ಪುಷ್ಪಮಾಲೆ. ಪ್ರಾಲಂಬತೇ—ಪ್ರ+ಆ+ಲಬಿ (अवलसने) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ವಿಕ್ರಸ್ತಮಸಾದಪರೋ ವಿಲಾಸೀ ರತ್ನಾನು-ವಿಧಾಙ್ಗದಕೊಟಿಲಗ್ನಮ್। ಪ್ರಾಲಂಬಮುಕ್ತುಷ್ಯ ಯಥಾವಕಾಶಂ ನಿನಾಯ ಸಾಚೀಕೃತಚಾರುಕವತ್ರ:" ರಘುಂ ೬-೧೪। (ವಿಂ) 3. ಜೋಲಾಡುತ್ತಿರುವ.

ಪ್ರಾಲಂಬಿಕಾ ಪ್ರಾಲಂಬಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಿನ್ನದ ಸರ, ಚಿನ್ನದ ಕಂಠಾಂಧರಣಿ. ಪ್ರಾಲಂಬತೇ—ಪ್ರ+ಆ+ಲಬಿ (अवलसने) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಪ್ರಾಲೇಯ ಪ್ರಾಲೇಯ (ನಂ) ಹಿಮ, ಮಂಜು. ಪ್ರಲೀಯಂತೇ ಪದಾರ್ಥ ಅತ್ರ ಪ್ರಲಯೋ ಹಿಮಾದ್ರಿ: ತತ ಆಗತಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೭೪)। ಇಯಾದೇಶ: (೭-೩-೨)। "ಪ್ರಾಲೇಯಶೀತ-ಮಚಲೇಶ್ವರಮೀಶ್ವರೋಽಪಿ ಸಾಂದ್ರೇಭವಮವಸನಾವರಣೋಽಧಿಶತೇ" ಮಾಘಂ ೪-೬೪।

ಪ್ರಾಲೇಯರಶ್ಮಿ ಪ್ರಾಲೇಯರಶ್ಮಿ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. 2. ಕರ್ಪೂರ.

ಪ್ರಾಲೇಯಶಿಲ ಪ್ರಾಲೇಯಶಿಲ (ಪುಂ) ಹಿಮಾಚಲ, ಹಿಮವ ತೃರ್ವತ. "ಪ್ರಾಲೇಯಶಿಲಾತ್ ಪ್ರಥಿತಾನುಭಾವಾ ಪ್ರವರ್ತಂತೇ ವಾಗ್ವಿವ ವಸ್ಯವಾಚ:" ಯಾದಂ ೧೮-೪೭।

ಪ್ರಾಲೇಯಾಂಶು ಪ್ರಾಲೇಯಾಂಶು (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಪ್ರಾಲೇಯವತ್ ಶೀತಾ ಅಂಶವೋಽಸ್ಯ। "ಪ್ರಾಲೇಯಾಂಶೋ: ಸರ್ಪದಿ ರುಚಯ: ಶಾಂತ-ಮಾನಾಂತರಾಃ" ಮಾಘಂ ೧-೮೭। 2. ಕರ್ಪೂರ.



**ಪ್ರಾಲೇಯಾಶ್ರಿ ಸ್ರಾವಣೀಯಾದ್ರಿ** (ಪುಂ) ಹಿಮಾಚಲ, ಹಿಮವತ್ಪರ್ವತ. "ಪ್ರಾಲೇಯಾಶ್ರೇಷ್ಠತಮಾಶ್ರಿಕ್ರಮ್ಯ ತಾಂಸ್ತಾನ್ ವಿಸ್ತೇಷಾನ್" ಮೇಘಂ ೧-೫೭.

**ಪ್ರಾವೃಷ ಸ್ರಾವಣೀ** (ಪುಂ) ಯವ, ಬಾರ್ಲಿ.

**ಪ್ರಾವಣ ಸ್ರಾವಣ** (ನಂ) ಖನಿತ್ರ, ಗುದ್ದಲಿ, ನೆಲವನ್ನು ಆಗೆಯುವ ಒಂದು ಸಾಧನ.

**ಪ್ರಾವರ ಸ್ರಾವರ** (ಪುಂ) ಉರಿನ ಸುತ್ತಲೂ ಹಾಕಿರುವ ಬೇಲಿ. ಪ್ರ + ಆ + ವೃ (ವರಣ) ಕರಂ "ಅಪ್" (೩-೩-೫೮).

**ಪ್ರಾವರಣ ಸ್ರಾವರಣ** (ನಂ) ಉತ್ತರೀಯ, ಹೊದೆಯುವ ವಸ್ತ್ರ. ಪ್ರಾವೃಣೋತ್ಪನ್ನೇನ ಶರೀರಮ್—ಪ್ರ + ಆ + ವೃ (ವರಣ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭).

**ಪ್ರಾವಾರ ಸ್ರಾವಾರ** (ಪುಂ) ಉತ್ತರೀಯ, ಹೊದೆಯುವ ವಸ್ತ್ರ. ಪ್ರಾವೃಯತೇ ಶರೀರಮನೇನ—ಪ್ರ + ಆ + ವೃ (ವರಣ) "ಘ್" (೩-೩-೫೪). "ಆಚ್ಛಾದಯಸಿ ಪ್ರಾವಾರಾನಶನಾಸಿ ಪಿಶಿತಾದನಮ್" ಭಾಂ ಸಭಾಂ.

**ಪ್ರಾವಾರಕ ಸ್ರಾವಾರಕ** (ಪುಂ) ಹೊದೆಯುವ ವಸ್ತ್ರ, ಉತ್ತರೀಯ.

**ಪ್ರಾವಾಸ ಸ್ರಾವಾಸ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರವಾಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕೊಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಪ್ರವಾಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರವಾಸೇ ದೀಯತೇ ಕಾರ್ಯಂ ವಾ "ಅಞ್" (೫-೧-೧೭).

**ಪ್ರಾವಾಸಿಕ ಸ್ರಾವಾಸಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಯಾಣಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸಾಧುವಾಗಿರುವ, ಪ್ರವಾಸಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾಗಿರುವ. ಪ್ರವಾಸಾಯ ಸಾಧು: "ಠ್" (೪-೪-೧೦೩). 2. ಪ್ರವಾಸಕ್ಕೆ ಉಪಯುಕ್ತವಾದ, ಪ್ರವಾಸಕ್ಕೆ ಅನುಕೂಲವಾಗಿರುವ. ಪ್ರವಾಸಾಯ ಪ್ರಭವತಿ "ಠ್" (೫-೧-೧೦೧).

**ಪ್ರಾವೀಣ್ಯ ಸ್ರಾವೀಣ್ಯ** (ನಂ) ಜಾಣತನ, ನಿಪುಣತೆ, ನುರಿತಿರುವಿಕೆ, ಕುಶಲತೆ. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದಿರುವಿಕೆ. ಪ್ರವೀಣಸ್ಯ ಭಾವ: "ಞ್" (೫-೧-೧೨೪). "ಆವಿಷ್ಕೃತಂ ಕಥಾ-ಪ್ರಾವೀಣ್ಯಂ ವತ್ಸೇನ" ತಂ ರಾಂ ೪.

**ಪ್ರಾವೃಟ್(ಷ) ಸ್ರಾವೃಟ್(ಷ)** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವರ್ಷಾಕಾಲ, ವರ್ಷಮುತು, ಮಳೆಗಾಲ. ಪ್ರಾವೃಷ್ಯತ್ರ—ವೃಷು(ಸೆಚನೆ) ಅಧಿಂ "ಕ್ವಿಪ್" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮). "ಪಥಾನ್ ಹಿಮೇ ಪ್ರಾವೃಷಿ ಖಜ್ಜರೀಡಾನ್ ಕ್ಷಿಪ್ನುರ್ಮಾದಾಯ ವಿಧಿ: ಕ್ವಚಿತ್ತಾನ್" ನೆಪಂ ೧೦-೧೨೦.

**ಪ್ರಾವೃಡ್ಕಾಲ ಸ್ರಾವೃಟ್ ಕಾಲ** (ಪುಂ) ವರ್ಷಾಕಾಲ, ಮಳೆಗಾಲ.

**ಪ್ರಾವೃಡ್ಕಾಲ ಸ್ರಾವೃಡ್ಕಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಶರದೃತು. ಪ್ರಾವೃಷ: ಅತ್ಯಯೋ ನಾಶೋ ಯತ್ರ. 2. ವರ್ಷಮುತುವು ಕೊನೆಗೊಳ್ಳುವುದು. ಪ್ರಾವೃಷ: ಅತ್ಯಯ:.

**ಪ್ರಾವೃತ ಸ್ರಾವೃತ** (ನಂ) 1. ಅವಗುಂಠನ, ಮುಸುಕು, ತೋಳಿಲ್ಲದ ಮೇಲಂಗಿ. ಪ್ರ+ಆ+ವೃ (ವರಣ) ಕರಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). (ವಿಂ) 2. ಹೊದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುತ್ತಲೂ ಆವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪ್ರಾವೃತಿ ಸ್ರಾವೃತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊದಿಕೆ, ಆವರಣ, ಮುಸುಕು, ಅವಗುಂಠನ. 2. ಉರಿನ ಸುತ್ತಲೂ ಹಾಕಿರುವ ಬೇಲಿ. ಪ್ರಾವೃಣೋತಿ ಪ್ರಕರ್ಷಣಾಚ್ಛಾದಯತಿ ದೃಷ್ಟಿಮಾರ್ಗಮ್—ಪ್ರ+ಆ+ವೃ (ವರಣ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪). 3. ಮಲ, ಅಶುಚಿ, ಆತ್ಮನ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಮರೆಮಾಡುವ ಮಾಯೆಯ ಕಾರ್ಯ. ಪ್ರಾವೃಣೋತಿ ಆಚ್ಛಾದಯತಿ ಆತ್ಮನೋ ದರ್ಶನಕ್ರಿಯೆ.

**ಪ್ರಾವೃತ್ತಿಕ ಸ್ರಾವೃತ್ತಿಕ** (ಪುಂ) ಸಮಾಚಾರವನ್ನು ಒಯ್ಯುವ ದೊಡ್ಡ.

**ಪ್ರಾವೃಷಾ ಸ್ರಾವೃಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವರ್ಷಾಕಾಲ, ವರ್ಷಮುತು. ಪ್ರಾವೃಷ್ ಹಲ್ಂತತ್ವಾತ್ "ಠಾಪ್"। "ಆಪಂ ಚೈವ ಹಲ್ಂತಾನಾಮ್"।

**ಪ್ರಾವೃಷಾಯಣಿ ಸ್ರಾವೃಷಾಯಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಸುಗುನ್ನಿಗಿಡ. ಪ್ರಾವೃಷಾಮಯತೇ—ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩).

**ಪ್ರಾವೃಷಿಕ ಸ್ರಾವೃಷಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಪ್ರಾವೃಷಿ ವರ್ಷಕಾಲೇ ಕಾಯತಿ—ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩). (ವಿಂ) 2. ವರ್ಷಾಕಾಲದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ವರ್ಷಮುತುವಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಪ್ರಾವೃಷಿ ಭವ: "ಠ್" (೪-೩-೨೬). ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಅಲುಕ್ (೬-೩-೧೫).

**ಪ್ರಾವೃಷಿಜ ಸ್ರಾವೃಷಿಜ** (ಪುಂ) 1. ಬಿರುಗಾಳಿ, ಚಂಡಮಾರುತ. (ವಿಂ) 2. ವರ್ಷಮುತುವಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ವರ್ಷಾಕಾಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಪ್ರಾವೃಷಿ ಜಾತ:—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಠ:" (೩-೨-೧೭). ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಅಲುಕ್ (೬-೩-೧೫). "ಇತಿ ಪೂರ ಇವೋದಕಸ್ಯ ಯ: ಸರಿತಾಂ ಪ್ರಾವೃಷಿಜಸ್ತದ್ರೂಮೈ:" ಮಾಘಂ ೧೬-೭೫.

**ಪ್ರಾವೃಷೇಶ್ಯ ಸ್ರಾವೃಷೇಶ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಕುಟುಂಬವೃಕ್ಷ, ಬೆಟ್ಟ ಮಲ್ಲಿಗೆ ಗಿಡ. 2. ಈಚಲುಮರ, ಕದಂಬವೃಕ್ಷ. ಪ್ರಾವೃಷಿ ಭವ: "ಞ್" (೪-೩-೧೭). (ನಂ) 3. ಪ್ರಾಚುರ್ಯ, ಪುಷ್ಕಲವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಹೇರಳವಾಗಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 4. ವರ್ಷಾಕಾಲದಲ್ಲಿರುವ, ವರ್ಷಮುತುವಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. "ಪ್ರಾವೃಷೇಶ್ಯಂ ಪಯೋವಾಹಂ ವಿಶ್ವದೇವತಾವಿವ" ರಘುಂ ೧-೩೬. 5. ವರ್ಷಾಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕೊಡಲ್ಪಡುವ. 6. ವರ್ಷಾಕಾಲದಲ್ಲಿ



ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರಾಕೃಷಿ ದೀಯತೆ ಕಾರ್ಯ ವಾ "ಉಪ್ಪು:"  
(೪-೧-೧೬)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಉಪ್ಪು -ಉಪ್ಪು. 7. ನಮಗುನ್ನಿ  
ಗಿಡ. 8. ಕೊಮ್ಮೆಗಿಡ.

ಪ್ರಾಕೃಷ್ಯ ಪ್ರಾಕೃಷ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಕುಟುಂಬವೃಕ್ಷ, ಬೆಟ್ಟಮಲ್ಲಿಗೆ  
ಗಿಡ. 2. ಕದಂಬವೃಕ್ಷ, ಈಚಲುಮರ. ಪ್ರಾಕೃಷಿ ಭವ:।  
3. ಹುಳಿಬೇಲ. (ನಂ) 4. ವೈಡೂರ್ಯ. (ವಿಂ)  
5. ವರ್ಷಾಕಾಲದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ.

ಪ್ರಾವೇಶನ ಪ್ರಾವೇಶನ (ನಂ) 1. ಶಿಲ್ಪಶಾಲೆ, ಕೈಗಾರಿಕೆಯ  
ಮನೆ. ಪ್ರಾವೇಶನತ್ರ-ಪ್ರ+ಆ+ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನ) ಅಧಿಂ  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩)। (ವಿಂ) 2. ಪ್ರವೇಶನಮಯ  
ದಲ್ಲಿ ಕೊಡಲ್ಪಡುವ. 3. ಪ್ರವೇಶನಮಯದಲ್ಲಿ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರವೇಶನದೀಯತೆ ಕಾರ್ಯ ವಾ "ಅನ್" (೪-೧-೧೭)।

ಪ್ರಾವೇಶಿಕ ಪ್ರಾವೇಶಿಕ (ವಿಂ) ಪ್ರವೇಶಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ,  
ಪ್ರವೇಶಕ್ಕೆ ಅನುಕೂಲವಾದ.

ಪ್ರಾಕೃಷ್ಯ ಪ್ರಾಕೃಷ್ಯ (ನಂ) 1. ಸಂನ್ಯಾಸ ಧರ್ಮ, ಸಂನ್ಯಾಸ  
ಜೀವನ. ಪ್ರಾಕೃಷ್ಯಾ: ಭಾವ: "ಉಪ್ಪು" (೪-೧-೧೨೪)।  
2. ಪರ್ಯಟನ, ಗ್ರಾಮ್ಯಕರಾತ್ರಸಂಚಾರ.

ಪ್ರಾಶ ಪ್ರಾಶ (ಪುಂ) 1. ತಿನ್ನುವುದು, ಭಕ್ಷಿಸುವುದು, ಭೋಜನ  
ಮಾಡುವುದು. ಪ್ರ+ಅಶ (ಭೋಜನ) "ಉಪ್ಪು" (೩-೩-೧೧೪)।  
ಭಾವ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। -ಅಶನಮ್ -ಅಶನಮ್.  
2. ಆಹಾರ.

ಪ್ರಾಶನ ಪ್ರಾಶನ (ನಂ) 1. ತಿನ್ನುವುದು, ಊಟಮಾಡು  
ವುದು. ಪ್ರ+ಅಶ (ಭೋಜನ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।  
2. ಆಹಾರ.

ಪ್ರಾಶನೀಯ ಪ್ರಾಶನೀಯ (ವಿಂ) 1. ತಿನ್ನಲ್ಪಡುವ, ಭಕ್ಷಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. 2. ತಿನ್ನಬೇಕಾದ, ಭುಜಿಸಬೇಕಾದ. 3. ತಿನ್ನಲು  
ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಊಟಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಪ್ರ+ಅಶ  
(ಭೋಜನ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬)। "ತವ್ಯ:"।  
-ಅಶಿತವ್ಯಮ್ -ಅಶಿತವ್ಯಮ್.

ಪ್ರಾಶಸ್ತ ಪ್ರಾಶಸ್ತ (ನಂ) ಸರ್ವೋತ್ಕೃಷ್ಟವಾಗಿರುವಿಕೆ,  
ಶ್ರೇಷ್ಠವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಎಲ್ಲಕ್ಕೂ ಮೇಲಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪ್ರಾಶಸ್ತಸ್ಯ  
ಭಾವ: "ಉಪ್ಪು" (೪-೧-೧೨೪)।

ಪ್ರಾಶಿತ ಪ್ರಾಶಿತ (ವಿಂ) 1. ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟ, ಭಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಪ್ರ+ಅಶ (ಭೋಜನ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। (ನಂ)  
2. ಊಟಮಾಡುವುದು, ಭಕ್ಷಿಸುವುದು. ಭಾವ "ಕ್ತ:"  
(೩-೩-೧೧೪)।

ಪ್ರಾಶಿತವತ್ ಪ್ರಾಶಿತವತ್ (ವಿಂ) ಊಟಮಾಡಿದ.  
ಭೋಜನಮಾಡಿದ. ಪ್ರ+ಅಶ (ಭೋಜನ) "ಕ್ತವತು:"  
(೩-೨-೧೦೨)।

ಪ್ರಾಶನತ್ ಪ್ರಾಶನತ್ (ವಿಂ) ತಿನ್ನಲ್ಪಡುವ, ಊಟಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಅಶ (ಭೋಜನ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಅಶನತೀ -ಅಶನತೀ.

ಪ್ರಾಶಿನಕ ಪ್ರಾಶಿನಕ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಶ್ನಮಾಡುವವನು,  
ಪರೀಕ್ಷಾರ್ಥವಾಗಿ ಕೇಳುವವನು. 2. ನ್ಯಾಯದ ತೀರ್ಪು  
ಗಾರ, ಪ್ರಶ್ನಿಸಿ ವ್ಯವಹಾರವನ್ನು ತೀರ್ಮಾನ ಮಾಡು  
ವವನು. "ತದತ್ರ ಭಗವತ್ಯಾ ಪ್ರಾಶಿನಕಪದಮಧ್ಯಾಸಿತವ್ಯಮ್"  
ಮಾಲಂ ೧।

ಪ್ರಾಶ್ಯ ಪ್ರಾಶ್ಯ (ವಿಂ) ಊಟಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ತಿನ್ನಲ್ಪಡುವ,  
ಭಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ+ಅಶ (ಭೋಜನ) "ಉಪ್ಪು" (೩-೧-೧೨೪)।

ಪ್ರಾಸ ಪ್ರಾಸ (ಪುಂ) 1. ಎಸೆಯುವುದು. ಪ್ರ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ)  
"ಉಪ್ಪು" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಕುಂತಾಯುಧ. ಪ್ರಾಸ್ಯತೆ-  
ಪ್ರ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) ಕರ್ಮಂ "ಉಪ್ಪು" (೩-೩-೧೧೫)। "ಗದಾಭಿ-  
ರಸಿಗಿ: ಪ್ರಾಸೇರ್ಬಿಣೀಶ್ಚಾನತಪರ್ವಿಭಿ:" ಭಾಂ ಭೀಷಂ ೭೦-೨೩।  
3. ಅನುಗುಣವಾದ ಮತ್ತು ಪ್ರಕೃಷ್ಟವಾದ ವರ್ಣಗಳ  
ಅಥವಾ ಪದಗಳ ನ್ಯಾಸ, ಸಮಾನವರ್ಣಗಳ ಅಥವಾ  
ಸಮಾನವಾದ ಶಬ್ದಗಳ ನ್ಯಾಸ. ಪ್ರಕೃಷ್ಠ: ಆಸ: ನ್ಯಾಸ:।  
ರಸಾದಿಗಳಿಗೆ ಅನುಕೂಲವಾದ ಸಜಾತೀಯವರ್ಣಗಳ  
ಆವೃತ್ತಿಯು ಪ್ರಾಸವೆನಿಸುವುದು. ಈ ಪ್ರಾಸವು  
(ಸಜಾತೀಯವರ್ಣಗಳ ಆವೃತ್ತಿಯು) ರಸಾದಿಗಳಿಗೆ  
ಅನುಕೂಲವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ "ಅನುಪ್ರಾಸ:" ಎಂದು  
ಹೆಸರು. "ಅನುಪ್ರಾಸ: ಶಬ್ದಸಾಮ್ಯಂ ವೈಷಮ್ಯೇಽಪಿ ಸ್ವರಸ್ಯ ಯತ್"  
ಸಾಂ ದಂ ೧೦-೩। ಈ ಅನುಪ್ರಾಸವು (1) ಛೇದಾನುಪ್ರಾಸ:  
(2) ವೃತ್ತಾನುಪ್ರಾಸ: (3) ಶ್ರುತಾನುಪ್ರಾಸ: (4) ಅನ್ಯಾಮುಪ್ರಾಸ:  
ಮತ್ತು (5) ಲಾಟಾನುಪ್ರಾಸ: ಎಂದು ಐದು ವಿಧ. [ವಿವರಕ್ಕೆ  
ಆಯಾ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಪ್ರಾಸಕ ಪ್ರಾಸಕ (ಪುಂ) 1. ಕುಂತಾಯುಧ. 2. ಪಗಡೆ  
ಯಾಟದ ದಾಳ. ಪ್ರಾಸ ಸಂಜ್ಞಾ "ಕನ್" (೪-೩-೧೪೭)।

ಪ್ರಾಸಜ್ಞ ಪ್ರಾಸಜ್ಞ (ಪುಂ) ಎತ್ತನ್ನು ಪಳಗಿಸುವಾಗ ಅದರ  
ಕತ್ತಿಗೆ ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟುವ ನೊಗ. ಪ್ರಾಸಜ್ಞತೆ - ಪ್ರ+ಪಜ್ಞ  
(ಸಂಜ್ಞೆ) "ಉಪ್ಪು" (೩-೩-೧೧೫)। ಈ ನೊಗವು ಗಾಡಿಯ  
ನೊಗಕ್ಕಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನವಾದುದು. "ಪ್ರಾಸಜ್ಞೋ ನಾ ಯುಗಾಂತರಮ್"  
ಅಮಂ।

ಪ್ರಾಸಜ್ಞಿಕ ಪ್ರಾಸಜ್ಞಿಕ (ವಿಂ) ಪ್ರಸಂಗದಿಂದ ಪ್ರಾಪ್ತ  
ವಾದ, ಒಂದು ವಿಷಯದ ಪ್ರಸ್ತಾವದಿಂದ ಬಂದ. ಪ್ರಾಸಜ್ಞಾ-  
ದಾಗತ: "ಠಕ್"। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಛೀಪ್"। ಪ್ರಾಸಜ್ಞಿಕೀ  
ಪ್ರಾಸಜ್ಞಿಕೀ. "ಪ್ರಾಸಜ್ಞಿಕೀನಾಂ ವಿಷಯ: ಕಥಾನಾಮ್"  
ಉಂ ರಾಂ।



**ಪ್ರಾಸಜ್ಞ ಪ್ರಸಂಗ್ಯ** (ಪುಂ) ಪಳಗಿಸುವ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕತ್ತಿನ ಮೇಲೆ ಕಟ್ಟುವ ನೊಗವನ್ನು ಹೊರುವ ಎತ್ತು. ಪ್ರಾಸಜ್ಞ ವಹತಿ "ಯತ್" (೪-೪-೭೬)। "ಯುಗಾದಿನಾಂ ತು ಬೋಧಾರೋ ಯುಗಪ್ರಾಸಜ್ಞಶಾಕಟಾಃ" ಅಮಂ।

**ಪ್ರಾಸಾದ ಪ್ರಸಾದ** (ಪು) 1. ಉಪ್ಪರಿಗೆಯ ಮನೆ, ಶ್ರೀಮಂತರ ಮಹಡಿಯ ಮನೆ. ಪ್ರಸಾದತಿ ಮನೋಽ- "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। ದೀರ್ಘ: (೬-೩-೧೨೨)। "ಪ್ರಾಸಾದಮಾಲಾಸು ಬಭೂವುರಿದ್ಯಂ ತ್ಯಕ್ತಾನ್ಯಕಾರ್ಯಾಣಿ ವಿಚೇಷಿತಾನಿ" ಕುಮಾಂ ೭-೫೬। 2. ದೇವಸ್ಥಾನ. 3. ರಾಜಗೃಹ, ಅರಮನೆ. "ಪೂರ್ವ ಗಾಧಿಸುತೇನ ಸಾಮಿಧಿತಾ ಮುಕ್ತಾ ನು ಮಂದಾಕಿನಿ ಯಪ್ರಾಸಾದದುಕೂಲವಲ್ಲಿ- ರನಿಲಾಂದೋಲೇರಲೇಲಿಹಿವಿ" ನೆಪಂ ೨-೧೦೨। "ಪ್ರಾಸಾದೋ ದೇವನುಪಯೋಗೇ" ಸೇದಿಂ।

**ಪ್ರಾಸಾದಕುಕ್ಕುಟ ಪ್ರಸಾದಕುಕ್ಕುಟ** (ಪು) ಪಾರಾವತ, ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ. ಪ್ರಾಸಾದಸ್ಯ ಕುಕ್ಕುಟ ಇವ।

**ಪ್ರಾಸಾದತಲ ಪ್ರಸಾದತಲ** (ನಂ) ಅರಮನೆ ಮಹಡಿಯ ಮೇಲ್ಮಾವಣೆಯ ಸಮಪ್ರದೇಶ.

**ಪ್ರಾಸಿಕ ಪ್ರಾಸಿಕ** (ಪುಂ) ಕುಂತಾಯುಧವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ ಭಟ, -ಯೋಧ. ಪ್ರಾಸ: ಪ್ರಹರಣಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೫೭)।

**ಪ್ರಾಸಾದಿಕ ಪ್ರಾಸಾದಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಸನ್ನತೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಪ್ರಸಾದ ಗುಣದಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಪ್ರಸಾದೇ ಭವಮ್ "ಠಕ್"। "ಅಹೋ ಪ್ರಾಸಾದಿಕಂ ರೂಪಮನುಭಾವಶ್ಚ ಪಾವನ:" ತಂ ರಾಂ ೬-೨೦। 2. ಸುಂದರವಾದ, ರಮ್ಯವಾದ.

**ಪ್ರಾಸ್ತಾವಿಕ ಪ್ರಾಸ್ತಾವಿಕ** (ವಿಂ) ಪ್ರಸ್ತಾವದಿಂದ ಬಂದ, ಒಂದು ವಿಷಯದ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಬಂದ. ಪ್ರಸ್ತಾವಾದಾಗತ: "ಠಕ್"।

**ಪ್ರಾಸ್ಥಾನಿಕ ಪ್ರಾಸ್ಥಾನಿಕ** (ವಿಂ) ಪ್ರಯಾಣಕಾಲಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಪ್ರಯಾಣದ ಸಮಯಕ್ಕೆ ಉಚಿತವಾದ, ಹೊರಟುಬರುವ ವೇಳೆಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಪ್ರಸ್ಥಾನಂ ಪ್ರಯೋಜನ- ಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೫-೧-೧೦೧)। "ಪ್ರಾತರ್ಯಥೋಕ್ತವ್ರತಪಾರಣಾಂತೇ ಪ್ರಾಸ್ಥಾನಿಕಂ ಸ್ವಸ್ತಿಯನಂ ಪ್ರಯುಜ್ಯ" ರಘುಂ ೨-೭೦।

**ಪ್ರಾಸ್ಥಿಕ ಪ್ರಾಸ್ಥಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಒಂದು ಪ್ರಸ್ಥದ ಅಳತೆ ಯುಳ್ಳ. ಪ್ರಸ್ಥಂ ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೫-೧-೫೭)। "ಪ್ರಾಸ್ಥಿಕೋ ಧಾನ್ಯರಾಶಿ:"। 2. ಒಂದು ಪ್ರಸ್ಥಧಾನ್ಯ ದಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರಸ್ಥೇನ ಕ್ರೀತಮ್—"ಠಕ್" (೫-೧-೩೭)। 3. ಒಂದು ಪ್ರಸ್ಥದ ತೂಕವುಳ್ಳ.

**ಪ್ರಾಸವಣ ಪ್ರಾಸವಣ** (ವಿಂ) ಚಿಲುಮೆಯಿಂದ ಹೊರಟಿರುವ, ಬಾಗ್ಗೆಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿರುವ. ಪ್ರಾಸವಣಾದಾಗತ: "ಅಞ್" (೪-೩-೭೪)।

**ಪ್ರಾಹ ಪ್ರಾಹ** (ಪುಂ) ನೃತ್ಯದ ಉಪದೇಶ, ನೃತ್ಯದ ಶಿಕ್ಷಣ.

**ಪ್ರಾಹ ಪ್ರಾಹ** (ಪುಂ) ಪೂರ್ವಾಹ್ನ, ಹಗಲಿನ ಪೂರ್ವಭಾಗ. ಪ್ರಥಮಂ ಚ ತದಹ್ನ- "ಠಕ್" (೫-೪-೧೧)। ಅಹ್ನಾದೇಶ: (೫-೪-೮೮)। ಣತ್ವಮ್ (೮-೪-೭)।

**ಪ್ರಾಹ್ಲೇತನ ಪ್ರಾಹ್ಲೇತನ** (ವಿಂ) ಹಗಲಿನ ಪೂರ್ವಾರ್ಧದ, ಪೂರ್ವಾಹ್ನದ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಪ್ರಾಹ್ಲೇತನ ಭವ: "ಠಕ್" (೪-೩-೨೩)। ತುಡ್ ಚ। ಂದಂತವಂ ನಿಪಾಂ। "ಕ್ರಿಯಾಂ ಪ್ರಾಹ್ಲೇತನೀ ಕೃತ್ವಾ ನಿವೇಧನ್ ಪಾಣಿನಾ ಸಖೀಮ್" ನೆಪಂ ೨೦-೧೧।

**ಪ್ರಾಹ್ಲೇತರಾಮ್ ಪ್ರಾಹ್ಲೇತರಾಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಹೊತ್ತಿಗೆಯುಂಟೆ. ಅತಿಶಯೇನ ಪ್ರಾಹ್ಲೇತರಾಮ್ "ತರಪ್" (೫-೩-೫೭)। ಆಮು: (೫-೪-೧೧)। "ತಮಪ್" (೫-೩-೫೫)। ಆಮು: (೫-೪-೧೧)। ಪ್ರಾಹ್ಲೇತರಾಮ್ ಪ್ರಾಹ್ಲೇತರಾಮ್.

**ಪ್ರಿಯ ಪ್ರಿಯ** (ಪುಂ) 1. ಪತಿ, ಗಂಡ. ಪ್ರೀಣಾತಿ—ಪ್ರೀತ್ (ತರ್ದೇ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫)। "ಉಪವನಂ ನಿರಭರಸ್ಯತ ಪ್ರಿಯಾನ್ವಿಯುತೀರ್ಯುತೀ: ಶಿಶಿರಾನಿಲ:" ಮಾಧಂ ೬-೬೨। "ಪ್ರಿಯೇಷು ಸೌಭಾಗ್ಯಫಲಾ ಹಿ ಚಾಸ್ತಾ" ಕುಮಾಂ ೫-೧। 2. ಜಾಮಾತ, ಅಳಿಯ. "ರಾಜತ್ವಿಕಸ್ನಾತಕಗುಣ್ ಪ್ರಿಯ- ಶ್ವಶುರಮಾತುಲಾನ್" ಮನುಂ ೩-೧೧೯। 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. 4. ಪಣ್ಯಗ. (ವಿಂ) 5. ಹಿತವಾದ, ಮನೋಹರ ವಾದ, ಅಹ್ಲಾದಕರವಾದ. "ಪ್ರಿಯವಚನಶತೇಂದಾರವಾದೀ ರಹಸಿ ಮನ: ಶ್ರುತಿರಂಜಕೇವಿಚಿತ್ರೇ:" ಯಾದಂ ೨೪-೬೦। 6. ಇಷ್ಟ ವಾದ. 7. ಪ್ರೀತಿಪಾತ್ರವಾದ.

**ಪ್ರಿಯವದ ಪ್ರಿಯವದ** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಗಂಧರ್ವ, "ಅವೇಹಿ ಗಂಧರ್ವಪತೇಸ್ತನುಜಂ ಪ್ರಿಯವದಂ ಮಾಂ ಪ್ರಿಯದರ್ಶನಸ್ಯ" ರಘುಂ ೫-೫೩। (ವಿಂ) 2. ಹಿತವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವವನು. ಪ್ರಿಯಂ ವದತಿ— ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ವಕ್" (೩-೨-೩೮)। ಮುಮಾಗಮ:। "ಪ್ರಿಯವದೋಪಿ ನೇವಾಹಂ ಭುವೇ ಮಿಥ್ಯಾ ಪರಂತಪ" ಭದ್ರಿಂ ೬-೧೦೧। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ -ವದಾ -ವದಾ. "ತದಪ್ಯಪಾಕೀರ್ಣ- ಮತ: ಪ್ರಿಯವದಾಂ ವದಂತ್ಯಪಣೇತಿ ಚ ತಾಂ ಪುರಾವಿದ:" ಕುಮಾಂ ೫-೨೮।

**ಪ್ರಿಯವದಾ ಪ್ರಿಯವದಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಪ್ರತಿ ಪಾದದಲ್ಲೂ ನಗಣ ಮಗಣ ಜಗಣ ಮತ್ತು ರಗಣಗಳಿದ್ದಲ್ಲಿ "ಪ್ರಿಯವದಾ" ವೃತ್ತವಾಗುವುದು. "ಭುವಿ ಭವೇನಭಜರೇ: ಪ್ರಿಯವದಾ" ವೃಂ ೨೦। ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ನ    ಮ    ಜ    ರ  
|||    0||    10||    010

**ಪ್ರಿಯಕ ಪ್ರಿಯಕ** (ಪುಂ) 1. ಕೆದಂಬ ವೃಕ್ಷ. ಈಚಲು ಮರ. ಪ್ರೀಣಾತಿ—ಪ್ರೀತ್ (ತರ್ದೇ) "ವುನ್" (ತಂ ೨-೩೨)।



2. ಹೊನ್ನೆಮರ. 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ, ಚಿತ್ರಮೃಗ, ಮೈಮೇಲೆ ಚುಕ್ಕೆಗಳಿರುವ ಜಿಂಕೆ. "ಹಿರೀಚಿತ್ರತನೂಹ-  
ಶಾಲಿಭಿಃ ವಿಚಲಿತಃ ಪರಿತಃ ಪ್ರಿಯಕವ್ರಜಃ" ಮಾಘಂ ೪-೩೨ |

4. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. 5. ಪ್ರಿಯಂಗು ವೃಕ್ಷ, ಪ್ರೇಂಕಣ  
ಗಿಡ. 6. ಕುಂಕುಮ ಕೇಸರಿ. "ಪ್ರಿಯಕಃ ಪಿತಸಾಲಕೇ |  
ನಿಪೇ ಚಿತ್ರಮೃಗೇ ಚಾಲಿ ಪ್ರಿಯಜ್ಞೋ ಕುಡ್ಕುಮೇಷಿ ಚ" ಮೇದಿಂ |

(ನಂ) 7. ಹೊನ್ನೆ ಹೂವು. "ಉದ್ವಿಧಪ್ರಿಯಕಮನೋರಮಂ  
ರಮण्याಃ ಸರೇಜೇ ಸರಸಿ ವಪುಃ ಪ್ರಕಾಶಮೇವ" ಮಾಘಂ ೮-೨೮ |

ಪ್ರಿಯಕೃತ್ ಪ್ರಿಯಕೃತ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. (ವಿಂ) 2.  
ಹಿತವಾದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವ.

ಪ್ರಿಯಜ್ಞ ಪ್ರಿಯಂಕರ (ವಿಂ) ಹಿತವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ,  
ಹಿತವಾದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವ. ಪ್ರಿಯಂ ಕರೋತಿ—ಪ್ರಿಯ  
+ ಕೃ (ಕರಣ) ವಾ "ಕೃ" (೩-೨-೪೪) | ಪಕ್ಷ  
"ಅನ್" | ಪ್ರಿಯಕಾರಃ ಪ್ರಿಯಕಾರಃ. "ಪಿತುಃ ಪ್ರಿಯಜ್ಞೋ  
ಭರ್ತಾ ಕ್ಷೇಮಕಾರಸ್ತಪಸ್ವಿನಾಮ್" ಭೃಗುಂ ೪-೭೭ |

ಪ್ರಿಯಜ್ಞೋ ಪ್ರಿಯಂಕರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಶ್ವಗಂಧಾ ಗಿಡ.  
2. ಹೆಣ್ಣುಳ್ಳದ ಗಿಡ.

ಪ್ರಿಯಜ್ಞು ಪ್ರಿಯಂಗು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರೇಂಕಣಗಿಡ. ಪ್ರಿಯಂ  
ಗಂಚತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಕ್ರುಃ" (೩ಂ ೧-೩೭) |  
ನಿಪಾಂ | "ಪ್ರಿಯಜ್ಞುಶ್ಯಾಮಾಕ್ಷಪ್ರಕೃತಿರಪಿ ಚಾಪಾಣ್ಡು ಮಧುರಮ್"  
ಮಾಲತೀಂ ೩-೯ | 2. ಕರಿಸಾಸವೆ. 3. ಹಿಪ್ಪಲಿ. 4. ನವಣೆ.  
"ಪ್ರಿಯಜ್ಞುಃ ಸ್ತ್ರೀ ರಾಜಿಕಾಕಣಯೋರಪಿ | ಫಲಿನ್ಯಾಂ ಕಡ್ಗುಸಸ್ಯೇ  
ಚ" ಮೇದಿಂ |

ಪ್ರಿಯಜನ ಪ್ರಿಯಜನ (ಪುಂ) ಪ್ರೀತಿಪಾತ್ರನಾದ ಮನುಷ್ಯ.  
ಪ್ರಿಯೋ ಜನಃ |

ಪ್ರಿಯಜೀವ ಪ್ರಿಯಜೀವ (ಪುಂ) 1. ಹೆಮ್ಮರ. (ವಿಂ)  
2. ಜೀವವು ಬಹಳ ಪ್ರಿಯವಾಗಿರುವ, ಬಹುಕಾಲ ಜೀವಿ  
ಸುವ. ಪ್ರಿಯೋ ಜೀವೋ ಯಸ್ಯ |

ಪ್ರಿಯತಮ ಪ್ರಿಯತಮ (ಪುಂ) 1. ಅತಿಶಯವಾದ ಪ್ರೇಮ  
ವುಳ್ಳ ಪತಿ. ಅತಿಶಯೇನ ಪ್ರಿಯಃ | "ಶಿಪ್ರಾಪಾತಃ ಪ್ರಿಯತಮ  
ಛವಿ ಪ್ರಾರ್ಥನಾಚಾಡುಕಾರಃ" ಮೇಘಂ ೧-೩೧ | (ವಿಂ) 2. ಹೆಚ್ಚು  
ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ. ಅಯಮೇವಾಮತಿಶಯೇನ ಪ್ರಿಯಃ—ಪ್ರಿಯ "ತಮಪ್"  
(೪-೩-೪೪) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ತಮಾ —ತಮಾ. ಪತ್ನಿ,  
ಹೆಂಡತಿ.

ಪ್ರಿಯತರ ಪ್ರಿಯತರ (ವಿಂ) ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ  
ಒಬ್ಬ. ಅಯಮನಯೋರತಿಶಯೇನ ಪ್ರಿಯಃ | "ಪುತ್ರಾದಪಿ ಪ್ರಿಯತರಂ  
ಖಲು ತೇನ ದಾನಂ ಮನ್ಯೇ ಪಶೋರಪಿ ವಿವೇಕವಿವರ್ಜಿತಸ್ಯ" ಪञ्ಚತಂ  
೨-೪೪ |

ಪ್ರಿಯತಾ ಪ್ರಿಯತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರೇಮಂ, ಪ್ರೀತಿ, ವಿಶ್ವಾಸ.  
ಪ್ರಿಯಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) | "ನ ಭಕ್ಷಯತಿ  
ಯೋ ಮಾಸಂ ವಿಧಿಹಿತ್ವಾ ಪಿಶಾಚವತ್ | ಸ ಲೋಕೇ ಪ್ರಿಯತಾಂ ಯಾತಿ  
ವ್ಯಾಧಿಭಿಃ ನ ಪಿಡಚತೇ" ಮನುಂ ೪-೪೦ | "ತ್ವಃ"  
(೪-೧-೧೧೯) | ಪ್ರಿಯತ್ವಮ್ ಪ್ರಿಯತ್ವಮ್.

ಪ್ರಿಯದರ್ಶನ ಪ್ರಿಯದರ್ಶನ (ಪುಂ) 1. ಶುಭವುಳ್ಳ ಗಿಡ. ಪ್ರಿಯಂ  
ದರ್ಶನಂ ಯಸ್ಯ | 2. ಹಾಲೆಗಿಡ. 3. ಒಬ್ಬ ಗಂಧರ್ವ.  
"ಅವೇಹಿ ಗಂಧರ್ವಪತೇಸ್ತನುಜಂ ಪ್ರಿಯವದಂ ಮಾಂ ಪ್ರಿಯದರ್ಶನಸ್ಯ" ರಘುಂ  
೪-೪೩ | (ವಿಂ) 4. ಸುಂದರವುರುವ. ನೋಡಲು  
ವಿಶ್ವಾಸ ಹುಟ್ಟಿಸುವ ಚೆಲುವಾದ ಮನುಷ್ಯ. "ತತ್ತ್ವಭೂಮಿ-  
ಪತಿಃ ಪತ್ನಯೈ ದರ್ಶಯನ್ ಪ್ರಿಯದರ್ಶನಃ" ರಘುಂ ೧-೪೭ |

ಪ್ರಿಯದರ್ಶಿನ್ ಪ್ರಿಯದರ್ಶಿನ್ (ವಿಂ) ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ  
ನೋಡುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ವಿಶ್ವಾಸದಿಂದ  
ನೋಡುವ. ಪ್ರಿಯಂ ಪಶ್ಯತಿ—ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣ) "ಣಿನಿಃ"  
(೩-೨-೭೮) |

ಪ್ರಿಯಪ್ರಾಪ್ತ ಪ್ರಿಯಪ್ರಾಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ,  
ಅತಿಶಯವಾದ ವಿಶ್ವಾಸದಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಪ್ರಿಯಪ್ರಾಪ್ತಾ ವೃತ್ತಿಃ  
ವಿನಯಮಧುರೋ ವಾಚಿ ನಿಯಮಃ ಪ್ರಕೃತ್ಯಾ ಕಲ್ಯಾಣೋ ಮತಿರನವಗೀತಃ  
ಪರಿಚಯಃ" ತಂ ರಾಂ ೨-೨ | (ನಂ) 2. ಮಧುರವಾದ  
ಮಾತು, ವಿಶ್ವಾಸದ ಮಾತು. ಪ್ರಿಯಸ್ಯ ಪ್ರಾಪ್ತೋ ಯಸ್ಮಿನ್ |

ಪ್ರಿಯಪ್ರೇಪ್ತ ಪ್ರಿಯಪ್ರೇಪ್ತ (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿತವಾದುದನ್ನು  
ಹೊಂದಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಇಷ್ಟವಾದುದನ್ನು ಪಡೆಯಲು  
ಉತ್ಸುಕನಾದ. ಪ್ರಿಯಂ ಪ್ರಾಪ್ತುಮಿಚ್ಛುಃ—ಪ್ರ+ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ)  
+ ಸನ್ "ತಃ" (೩-೨-೧೬೮) |

ಪ್ರಿಯಭಾಷಣ ಪ್ರಿಯಭಾಷಣ (ನಂ) ಮಧುರವಾದ ಮಾತು,  
ಪ್ರೀತಿಯುಕ್ತವಾದ ಮಾತು. ಪ್ರಿಯಂ ಭಾಷಣಮ್ |

ಪ್ರಿಯಭಾಷಿನ್ ಪ್ರಿಯಭಾಷಿನ್ (ವಿಂ) ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ  
ಮಾತಾಡುವವನು. ಮಧುರವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವವನು.  
ಪ್ರಿಯಂ ಭಾಷತೇ—ಭಾಷ (ವ್ಯಕ್ತಾಃ ವಾಚಿ) "ಣಿನಿಃ"  
(೩-೨-೭೮) |

ಪ್ರಿಯಮಂಡನ ಪ್ರಿಯಮಂಡನ (ವಿಂ) ಅಭರಣಗಳಲ್ಲಿ ಬಹಳ  
ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ, ಒಡವೆಗಳನ್ನು ತೊಡುವುದರಲ್ಲಿ ಆಸೆ  
ಯುಳ್ಳ. ಪ್ರಿಯಂ ಮಂಡನಂ ಯಸ್ಯ | "ನಾದತ್ತೇ ಪ್ರಿಯಮಂಡನಾಪಿ  
ಭವತಾಂ ಸ್ನೇಹೇನ ಯಾ ಪಲ್ಲವಮ್" ಶಾಕುಂ ೪-೮ |

ಪ್ರಿಯಮಧು ಪ್ರಿಯಮಧು (ಪುಂ) 1. ಬಲರಾಮ. ಪ್ರಿಯಂ ಮಧು  
ಮಘಂ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಮಧುವು ಬಹಳ ಪ್ರಿಯವಾಗಿರುವ.

ಪ್ರಿಯವಯಸ್ಯ ಪ್ರಿಯವಯಸ್ಯ (ಪುಂ) ಪ್ರೀತಿಪಾತ್ರನಾದ  
ಮಿತ್ರ. ಪ್ರಿಯೋ ವಯಸ್ಯಃ |



**ಪ್ರಿಯವಾದಿನ್ ಪ್ರಿಯವಾದಿನಿ** (ವಿಂ) ಹಿತವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವ, ಸಂತೋಷದ ಮಾತನ್ನಾಡುವ, ಪ್ರೀತಿಪೂರ್ವಕವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವ. ಪ್ರಿಯಂ ವದತಿ — ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ) ವಾಚಿ "ಗಿರಿ:" (೩-೨-೭೮)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡಿಪ್" (೪-೧-೫)। -ವಾದಿನಿ -ವಾದಿನೀ. "ಕೋ ವಿದೇಶ: ಸವಿದ್ಯಾನಾಂ ಕ: ಪರ: ಪ್ರಿಯವಾದಿನಾಮ್"।

**ಪ್ರಿಯವ್ರತ ಪ್ರಿಯವ್ರತ** (ಪುಂ) 1. ಸ್ವಾಯಂಭುವ ಮನುವಿನ ಪುತ್ರ. "ಪ್ರಿಯವ್ರತೋತಾನಯಾದೌ ಮನೋ: ಸ್ವಾಯಂಭುವಸ್ಯ ತು | ದ್ವೌ ಪುತ್ರೌ ಸುಮಹಾವೀರ್ಯೌ ಧರ್ಮಜೌ ಕಥಿತೌ ತವ"। (ವಿಂ) 2. ವ್ರತಾಚರಣೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳವನು. ಪ್ರಿಯಂ ವ್ರತಂ ಯಸ್ಯ |

**ಪ್ರಿಯಸಖ ಪ್ರಿಯಸಖ** (ಪುಂ) ಪ್ರಿಯಂ ಮಿತ್ರಂ. ಅಪ್ಪ ಸ್ನೇಹಂತ. ಪ್ರಿಯ: ಸಖಾ "ಡಕ್" (೫-೪-೧೧)। "ಆಪೃಚ್ಛಸ್ವ ಪ್ರಿಯಸಖಮಮ್ ತುಂಗಮಾಲಿಂಗ್ಯ ಶೈಲಮ್" ಮೇಘಂ ೧-೧೨ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸಖಿ -ಸಖೀ. ಗೆಳತಿ.

**ಪ್ರಿಯಸಂದೇಶ ಪ್ರಿಯಸಂದೇಶ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಿಯನ ಸಂದೇಶ. ಪತಿಯು ಬಯಸಿಮಾತಿನ ಮೂಲಕ ಕಳುಹಿಸುವ ಸಮಾಚಾರ, ಪತಿಯು ಹೇಳಿಕಳುಹಿಸುವ ಮಾತು. 2. ಚಂಪಕ ವೃಕ್ಷ, ಸಂಪಿಗೆ ಮರ.

**ಪ್ರಿಯಾ ಪ್ರಿಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಂಗಸು. 2. ಪತ್ನಿ. ಪ್ರೀತಿಗಾತಿ — ಪ್ರೀತ್ (ತರ್ಪಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೧-೧೩೫)। "ಪ್ರಿಯಾ ಮನೋಮುಷರದಾವದಾಹೇ ದೇವೀಸ್ವದರ್ಶನೇ ನಿಮಜ್ಜಯದ್ವಿ:" ನೈಷಂ ೮-೮೮ | 3. ಸಣ್ಣ ಯಾಲಕ್ಕಿ. 4. ವೃತ್ತಾಂತ, ಸಮಾಚಾರ. 5. ಮದ್ಯ. 6. ಮಲ್ಲಿಗೆ.

**ಪ್ರಿಯಾಹ್ ಪ್ರಿಯಾರ್ಹ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಪರಮಾತ್ಮ. ಪ್ರಿಯಮೇಕಮಕ್ತಿಂ ಜ್ಞಾನಿನಮಹಂತಿ — "ಅಚ್" (೩-೨-೧೨)। "ಛೇದಮರ್ಥಜ್ಞಾನಿತಂ ಯ: ಪ್ರಿಯಾಹ್: ಪ್ರಿಯಮಹಂತಿ" ಇತಿ ನಿರ್ಣತಿಕ: | "ಅಭಿಪ್ರಾಯ: ಪ್ರಿಯಾರ್ಹೋಹ್:" ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಿಯವಾದ ಮಾತಿಗೆ ಅರ್ಹನಾದ, ಪ್ರೀತಿಯ ಮಾತಿಗೆ ಯೋಗ್ಯನಾದ.

**ಪ್ರಿಯಾಲ ಪ್ರಿಯಾಲ** (ಪುಂ) ಮೊರಟಗಿಡ. ಪ್ರೀತ್ (ತರ್ಪಣ) "ಕಾಲನ್" (೩ಂ ೩-೭೬)। ಹ್ಲಸ್ವ: ನಿಪಾಂ | "ಮೃಗಾ: ಪ್ರಿಯಾಲದ್ವಮಮಂಜರೀಣಾಂ ರಜ:ಕರ್ಣವಿಧಿಧನತದೃಷ್ಟಿಪಾತಾ:" ಕುಮಾಂ ೩-೩೧ |

**ಪ್ರೀ ಪ್ರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರೀತಿ, ಪ್ರೇಮ, ವಿಶ್ವಾಸ. ಪ್ರೀತ್ (ತರ್ಪಣ) "ವಿವಪ್" |

**ಪ್ರೀಣ ಪ್ರೀಣ** (ವಿಂ) 1. ಪುರಾತನವಾದ, ಹಳೆಯದಾದ. ಪ್ರ"ಕ್ತ:" (ವಾಂ ೫-೪-೨೫) | 2. ಪ್ರೀತನಾದ, ತೃಪ್ತಿ

ಹೊಂದಿದ, ಸಂತುಷ್ಟನಾದ. ಪ್ರೀತ್ (ತರ್ಪಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | ತಸ್ಯ ನ: (೮-೨-೪೪) |

**ಪ್ರೀಣನ ಪ್ರೀಣನ** (ನಂ) ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವುದು, ತೃಪ್ತಿಯುಂಟುಮಾಡುವುದು. ಪ್ರೀತ್ (ತರ್ಪಣ) + ಸ್ವಾರ್ಥೇ ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | ತುಗಾಗಮ: (ವಾಂ ೭-೪-೨) | "ಪ್ರಹ್ಲಾದಾಹ್ಲಾದನಾನಿ ಪ್ರಣತಸುರಗಣಪ್ರಾಣನಪ್ರೀಣನಾನಿ" | "ತಸ್ಮಿನ್ಸುಪ್ತೇ ಜಗತ್ಪುಷ್ಪಂ ಪ್ರೀಣಿತೇ ಪ್ರೀಣಿತಂ ಜಗತ್ | ತದಾರಾಧನತೋ ದೇವಿ ಸರ್ವೇಷಾಂ ಪ್ರೀಣನಂ ಭವೇತ್" |

**ಪ್ರೀಣಯತ್ ಪ್ರೀಣಯತ್** (ವಿಂ) ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸಂತೋಷಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರೀತ್ (ತರ್ಪಣ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡಿಪ್" (೪-೧-೬) | -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ. "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಪ್ರೀಣಯಮಾನ: ಪ್ರೀಣಯಮಾನಃ.

**ಪ್ರೀಣಾನ ಪ್ರೀಣಾನ** (ವಿಂ) ತೃಪ್ತಿಹೊಂದುತ್ತಿರುವ, ಸಂತೋಷಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರೀತ್ (ತರ್ಪಣ) "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) |

**ಪ್ರೀಣಿತ ಪ್ರೀಣಿತ** (ವಿಂ) ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂತೋಷಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರೀತ್ (ತರ್ಪಣ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ಸಿಞ್ಞಮೇ ಹಸತಿ ನ ಸ್ಮ ತೇನ ಸಾ ಪ್ರೀಣಿತಾಪಿ ಪರಿಹಾಸಭಾಷಣೈ:" ನೈಷಂ ೧೮-೪೯ |

**ಪ್ರೀಣಿತವತ್ ಪ್ರೀಣಿತವತ್** (ವಿಂ) ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸಿದ, ಸಂತೋಷಪಡಿಸಿದ. ಪ್ರೀತ್ (ತರ್ಪಣ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨) |

**ಪ್ರೀತ ಪ್ರೀತ** (ವಿಂ) 1. ತೃಪ್ತಿಹೊಂದಿದ, ಸಂತುಷ್ಟನಾದ. ಪ್ರೀತ್ (ಪ್ರೀತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | "ಕ್ಷಣಮಯಮುಪವಿಷ್ಠ: ಕ್ಷಮಾತಲನೃಪಸ್ತಪಾದ: ಪ್ರಣತಿಪರಮವೇಕ್ಷ್ಯ ಪ್ರೀತಮಹ್ನಾಯ ಲೋಕ:" ಮಾಘಂ ೧೧-೪೮ | 2. ಸಂತೋಷಪಟ್ಟ, ಹರ್ಷಗೊಂಡಿರುವ. "ಪ್ರೀತ: ಪ್ರೀತಿಪ್ರಮುಖವಚನಂ ಸ್ವಾಗತಂ ವ್ಯಾಜಹಾರ" ಮೇಘಂ ೧-೪ | 3. ಪ್ರೇಮವುಳ್ಳ, ವಿಶ್ವಾಸವುಳ್ಳ, ಅನುರಾಗವುಳ್ಳ.

**ಪ್ರೀತವತ್ ಪ್ರೀತವತ್** (ವಿಂ) ತೃಪ್ತಿಹೊಂದಿದ, ಸಂತುಷ್ಟನಾದ. ಪ್ರೀತ್ (ತರ್ಪಣ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨) |

**ಪ್ರೀತಿ ಪ್ರೀತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರೇಮ, ವಿಶ್ವಾಸ, ವಾತ್ಸಲ್ಯ. ಪ್ರೀತ್ (ತರ್ಪಣ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | "ಪ್ರೀತ್ಯಾ ನಿಯುಕ್ತಾಂಲಿಹತೀ ಸ್ತನನ್ಧಗ್ರಾಸ್ತ್ರಗೃಹ ಪಾರಿಮುಖೇನ ಜಾನುನೋ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೪೦ | 2. ತೃಪ್ತಿ, ಸಂತುಷ್ಟಿ, ಸಂತೋಷ. "ಪ್ರೀತಿಮೇವೈತಿ ಕೃತೇನ ಮಮೇದ್ವಕ್ರಮಣಾ ಪುರರಿಪುರ್ಮದನಾರಿ:" ನೈಷಂ ೨೧-೩೭ | 3. ಚಟ, ಲಂಪಟತನ, ವ್ಯಸನ,



ಅಸಕ್ತಿ. 4. ಸ್ನೇಹ, ಸಖ್ಯ, ಗೆಳೆತನ. "ಪ್ರೀತ್ಯಾಪಿ ದತ್ತೇಕ್ಷಣ-  
ಸನ್ನಿಪಾತಂ ಭಯಂ ಭುಜ್ಜಾಧಿಪವದ್ವಾನ್ಮ" ಮಡಿಂ ೧೨-೨೦ |

5. ಮನ್ಮಥನ ಪತ್ನಿ. [ಅನಂಗವತಿಯೆಂಬ ವೇಶ್ಯ  
ಯೊಬ್ಬಳು ಮಾಘಮಾಸದಲ್ಲಿ ವಿಭೂತಿವ್ಯಾಧಿವಶದಿಂದ  
ಮನ್ಮಥನನ್ನು ಆಚರಿಸಿ ಮನ್ಮಥನ ಪತ್ನಿಯಾದಳು.] "ಸಾ  
ಚಾನಜ್ಜವತಿ ವೇಶ್ಯಾ ಕಾಮದೇವಸ್ಯ ಸಾಮ್ಪ್ರತಮ್ | ಪತ್ನೀ ಸಪತ್ನೀ  
ಸಂಜಾತಾ ರತ್ನಾಃ ಪ್ರೀತೀರೀತಿ ಶ್ರುತಾ" ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ. 6.  
ವಿಷ್ಣುಭ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು  
ಯೋಗ. "ಪ್ರೀತಿಯೋಗಾಂತರೇ ಪ್ರೇಷಿಣ ಸ್ವರಪತ್ನೀಮುದೋಃ  
ಸ್ವಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ. 7. ಅನುರಾಗ, ಪ್ರಣಯ, ಒಲುಮೆ.

**ಪ್ರೀತಿವಾನ್ ಪ್ರೀತಿದಾನ (ನಂ)** 1. ವಿಶ್ವಾಸದಿಂದ ದಾನ  
ಮಾಡುವುದು, ಪ್ರೇಮದಿಂದ ಕೊಡುವುದು. ಪ್ರೀತ್ಯಾ  
ದಾನಮ್. 2. ಸ್ನೇಹದಿಂದ ಕೊಡುವುದು, ಅಭಿಮಾನದಿಂದ  
ಕೊಡುವುದು. "ವತ್ಸ ಮಾಘವ, ದಿಷ್ಟಿಚಾ ವರ್ಧಿತೋಽಸಿ |  
ಸೌಜಯಮವಸರಃ ಪ್ರೀತಿವಾನ್ಮಸ್ಯ" ಮಾಲತೀಂ ೪ |

**ಪ್ರೀತಿಪಾತ್ರ ಪ್ರೀತಿಪಾತ್ರ (ನಂ)** 1. ಪ್ರೀತಿಗೆ ವಿಷಯನಾದ.  
2. ಅಭಿಮಾನಪಾತ್ರ, ಸ್ನೇಹಪಾತ್ರ.

**ಪ್ರೀತಿಪೂರ್ವಕ ಪ್ರೀತಿಪೂರ್ವಕ (ಅವ್ಯಂ)** 1. ವಿಶ್ವಾಸ  
ಪೂರ್ವಕವಾಗಿ. 2. ಅಭಿಮಾನಪೂರ್ವಕವಾಗಿ, ಸ್ನೇಹ  
ಪೂರ್ವಕವಾಗಿ.

**ಪ್ರೀತಿಮತ್ ಪ್ರೀತಿಮತ್ (ವಿಂ)** 1. ಪ್ರೇಮದಿಂದ ಕೂಡಿದ,  
ವಾತ್ಸಲ್ಯವುಳ್ಳ. ಪ್ರೀತಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪) |  
2. ಅನುರಾಗವುಳ್ಳ, ಪ್ರಣಯವುಳ್ಳ. "ಕುಮುದವನಮಪಶ್ರಿ  
ಶ್ರೀಮದಮ್ಭೋಜನಂ ತ್ಯಜತಿ ಮುದಮುಲಕಃ ಪ್ರೀತಿಮಾಶ್ರಯಾಕಃ"  
ಮಾಘಂ ೧೧-೬೪ | 3. ತೃಪ್ತಿಹೊಂದಿದ, ಸಂತುಷ್ಟನಾದ.  
4. ಸ್ನೇಹವುಳ್ಳ, ಗೆಳೆತನವುಳ್ಳ. 5. ಸಂತೋಷವುಳ್ಳ.

**ಪ್ರೀತಿಯುಜ್ ಪ್ರೀತಿಯುಜ್ (ವಿಂ)** 1. ಸ್ನೇಹವುಳ್ಳ, ವಿಶ್ವಾಸ  
ವುಳ್ಳ. 2. ಪ್ರೀತಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ, ಅನುರಾಗವುಳ್ಳ.  
3. ವಾತ್ಸಲ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಪ್ರೀತಿ ಯುಜ್ಕ್ತೇ—ಯುಜಿರ್  
(ಯೋಗ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೬೧) | "ಸಖಿನಿವ ಪ್ರೀತಿಯುಜೋಽ-  
ನುಜೀವಿನಃ ಸಮಾನಮಾನಾನ್ ಸುಹೃದಶ್ಚ ಬಂಧುಭಿಃ" ಕಿರಾಂ  
೧-೧೦ | 4. ಸಂತೋಷವುಳ್ಳ. 5. ತೃಪ್ತಿಹೊಂದಿದ.

**ಪ್ರೀತಿವರ್ಧನ ಪ್ರೀತಿವರ್ಧನ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ.  
ಉತ್ತರೋತ್ತರಗುಣಾವಿಷ್ಕಾರೇಣ ಪ್ರೀತಿ ವರ್ಧಯತಿ—ವರ್ಧ (ಛೇದನ-  
ಪೂರಣಯೋಃ) + ಣಿನ್ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) | "ಗುಣ-  
ವಿಷ್ಕರಣಾಸ್ತೀತಿಯುತುತರೋತ್ತರತೋಽಧಿಕಮ್ | ಯಸ್ತು ಪ್ರೀತಿ ವರ್ಧಯತಿ  
ಪ್ರೀತಿವರ್ಧನ ಇರಿತಃ" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ | "ಪ್ರಿಯಕೃತ್ ಪ್ರೀತಿ-  
ವರ್ಧನಃ" ವಿಂ ಸಂ. | (ವಿಂ) 2. ಸಂತೋಷವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿ

ಸುವ. 3. ಪ್ರೇಮವನ್ನು ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವ. 4. ಅನುರಾಗ  
ವನ್ನು ಅಧಿಕಗೊಳಿಸುವ.

**ಪ್ರುಷತ್ ಪ್ರುಷತ್ (ವಿಂ)** 1. ಸಿಂಪಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸೇಚನೆಮಾಡು-  
ತ್ತಿರುವ. 2. ಒದ್ದೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ತುಂಬುತ್ತಿರುವ.  
ಪ್ರುಷ (ಸ್ನೇಹನಾದಿ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |

**ಪ್ರುಷಿತ ಪ್ರುಷಿತ (ವಿಂ)** 1. ಸೇಚನೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಿಂಪಿಸ-  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರುಷ (ಸ್ನೇಹನೇವನಪೂರಣೇಷು) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |  
2. ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಒದ್ದೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಪ್ರುಷಿತವತ್ ಪ್ರುಷಿತವತ್ (ವಿಂ)** 1. ಸಿಂಪಿಸಿದವನು.  
2. ಒದ್ದೆಮಾಡಿದವನು. 3. ತುಂಬಿದವನು.

**ಪ್ರುಷ್ಠ ಪ್ರುಷ್ಠ (ವಿಂ)** ದಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರು-  
(ದಾಹೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

**ಪ್ರುಷ್ಠವತ್ ಪ್ರುಷ್ಠವತ್ (ವಿಂ)** ದಹಿಸಿದವನು, ಸುಟ್ಟವನು.  
ಪ್ರು (ದಾಹೇ) "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

**ಪ್ರುಷ್ ಪ್ರುಷ್ (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯ, ರವಿ. ಪ್ರೋಷತಿ—ಪ್ರು-  
(ದಾಹೇ) "ವನ್" (೩-೧-೧೪೯) | 2. ಯುತು. ಪ್ರು-  
(ಸ್ನೇಹನಾದಿ) "ವನ್" | "ಪ್ರುಷಃ ಸ್ಯಾದ್ವತುಸೂರ್ಯಯೋಃ" |

**ಪ್ರುಷ್ವಾ ಪ್ರುಷ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಜಲಕಣ, ನೀರಿನ ಹನಿ. ಪ್ರುಷ್ಣಾತಿ  
ಸಿಂಚತಿ—ಪ್ರು (ಸ್ನೇಹನಾದಿ) "ವನ್" (೩-೧-೧೪೯) |  
"ಢಾಪ್" |

**ಪ್ರೇಕ್ಷಕ ಪ್ರೇಕ್ಷಕ (ಪುಂ)** 1. ನೋಡುವವನು. ಪ್ರ + ಕ್ಷ  
(ದರ್ಶನೇ) "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | 2. ಪರೀಕ್ಷಾಧಿಕಾರಿ.  
3. ತನಿಖಾಧಿಕಾರಿ.

**ಪ್ರೇಕ್ಷಣ ಪ್ರೇಕ್ಷಣ (ನಂ)** 1. ನೋಡುವುದು. ಪ್ರ + ಕ್ಷ  
(ದರ್ಶನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | "ದೃಷ್ಟಾ ತತಃ  
ಪೂರ್ವತೀಯಮೇಕಾನೇಕಾಪ್ಸರಃ ಪ್ರೇಕ್ಷಣಕೌತುಕಾನಿ" ನೈಷಂ ೭-೯೨ |  
2. ನೇತ್ರ, ಕಣ್ಣು. ಪ್ರೇಕ್ಷತೇನೇನ—ಪ್ರ + ಕ್ಷ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೭) | "ಮಧ್ಯೇ ಖಾಮಾ ಚಕಿತಹರಿಣಿಪ್ರೇಕ್ಷಣಾ  
ನಿಮ್ನನಾಭಿಃ" ಮೇಘಂ ೨-೧೯ | 3. ಸಾರ್ವಜನಿಕ ಪ್ರದರ್ಶನ-  
ನಾಲಯ.

**ಪ್ರೇಕ್ಷಣಕೂಟ ಪ್ರೇಕ್ಷಣಕೂಟ (ಪುಂ)** ಕಣ್ಣಿನ ಗುಡ್ಡೆ,  
ಅಕ್ಷಿಗೋಲಕ. ಪ್ರೇಕ್ಷಣಸ್ಯ ಕೂಟಃ |

**ಪ್ರೇಕ್ಷಣಕ ಪ್ರೇಕ್ಷಣಕ (ನಂ)** ಪ್ರದರ್ಶನ, ದೃಶ್ಯ, ನೋಟ.

**ಪ್ರೇಕ್ಷಣೀಯ ಪ್ರೇಕ್ಷಣೀಯ (ವಿಂ)** 1. ನೋಡಲ್ಪಡುವ.  
ಪ್ರ + ಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | 2. ನೋಡ-  
ಬೇಕಾದ. 3. ನೋಡಲು ಅರ್ಹವಾದ, ರಮ್ಯವಾದ,  
ಮನೋಹರವಾದ. "ವಪ್ರಕ್ರೀಡಾಪರಿಣತಗಜಪ್ರೇಕ್ಷಣೀಯಂ ದದಶ್"



ಮೇಘಂ ೧-೨ | "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೬) | -ಇಕ್ಷಿತವ್ಯ:  
-ಈಕ್ಷಿತವ್ಯ:

ಪ್ರೇಕ್ಷಣೀಯಕ ಪ್ರೇಕ್ಷಣೀಯಕ (ನಂ) ದೃಶ್ಯ, ನೋಟ,  
ಪ್ರದರ್ಶನ. "ಪ್ರೇಕ್ಷಣೀಯಕಮಿವ ಕ್ಷಣಮಾಸನ್ ಹೀವಿಮಙ್ಗುರ-  
ವಿಲೋಚನಪಾತಾ:" ಮಾಘಂ ೧೦-೮೨ |

ಪ್ರೇಕ್ಷಮಾಣ ಪ್ರೇಕ್ಷಮಾಣ (ವಿಂ) ನೋಡುತ್ತಿರುವ, ವೀಕ್ಷಿಸು-  
ತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) |  
"ಬಹುಶಸ್ತೇ ತತಸ್ತತ್ರ ಕ್ಷತ್ರಿಯಾ ರಣಮೂರ್ಧನಿ | ಪ್ರೇಕ್ಷಮಾಣಾಸ್ತಥಾಽ-  
ತಿಷ್ಠನ್ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಽಶ್ವ ಸಮಂತತ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೦೫-೫೦ |

ಪ್ರೇಕ್ಷಾ ಪ್ರೇಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೋಡುವುದು. ಪ್ರ + ಇಕ್ಷ  
(ದರ್ಶನೆ) "ಅ:" (೩-೩-೧೦೩) | "ನ ಶ್ರೀವಿರಕ್ತಮಪಿ ಮಾಂ  
ವಿಜಹಾತಿ ಯಸ್ಯಾ: ಪ್ರೇಕ್ಷಾಲವಾರ್ಥ ಇತರೇ ನಿಯಮಾನ್ ವಹಂತಿ"  
ಭಾಗಂ ೩-೧೬-೭ | 2. ಶೋಭೆ, ಕಾಂತಿ, ಪ್ರಕಾಶ. "ಪ್ರೇಕ್ಷಾಂ  
ಕ್ಷಿಪಂತ ಹರಿತೋಪಲಾತ್ರೇ: ಸಂಖ್ಯಾಭರಣೀವೇಶ್ವರಕಮಮೂರ್ಧನ:"  
ಭಾಗಂ ೩-೮-೨೪ | 3. ಪ್ರಜ್ಞೆ, ಬುದ್ಧಿ. "ಪ್ರತ್ಯುಕ್ತಂ ಚ  
ಯವಕ್ರೀತಂ ಪ್ರೇಕ್ಷಾಪೂರ್ವ ತಥಾತ್ಮನಾ" ಭಾಂ ವನಂ ೧೩೮-೭ |  
4. ಮರದ ರೆಂಬೆ. 5. ನೃತ್ಯವನ್ನು ನೋಡುವುದು. "ಪ್ರೇಕ್ಷಾ  
ನೃತ್ಯಕ್ಷಣೇ ಬುದ್ಧೌ" ಮೇದಿಂ | 6. ನೃತ್ಯ. "ಪ್ರೇಕ್ಷಾ ಧೀರೀಕ್ಷಣಂ  
ನೃತ್ಯಮ್" ಹೇಮಂ | "ಪ್ರೇಕ್ಷಾಸಮಾಜಂ ಗಚ್ಛೇದ್ವಾ ಸಾ ದಂಡಚಾ  
ಕೃಷ್ಣಲಾನಿ ಷಟ್" ಮನುಂ ೯-೮೪ |

ಪ್ರೇಕ್ಷಾಗೃಹ ಪ್ರೇಕ್ಷಾಗೃಹ (ನಂ) ರಾಜನ ಮಂತ್ರಾಲೋಚನೆಯು  
ಮಂದಿರ.

ಪ್ರೇಕ್ಷಾವತ್ ಪ್ರೇಕ್ಷಾವತ್ (ವಿಂ) ವಿದ್ಯಾವಂತ, ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿ.  
ವಿವೇಚನೆಯ ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು. ಪ್ರೇಕ್ಷಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್"  
(೫-೨-೯೪) |

ಪ್ರೇಕ್ಷಿತ ಪ್ರೇಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) 1. ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ + ಇಕ್ಷ  
(ದರ್ಶನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | (ನಂ) 2. ನೋಟ,  
ದರ್ಶನ. ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೯೪) |

ಪ್ರೇಕ್ಷಿನ್ ಪ್ರೇಕ್ಷಿನ್ (ವಿಂ) ನೋಡುವ, ವೀಕ್ಷಿಸುವ.  
ಪ್ರ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) |

ಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯ ಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡಲ್ಪಡುವ.  
ಪ್ರ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ಪ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) | (ಅವ್ಯಂ)  
2. ನೋಡಿ, ದರ್ಶನ ಮಾಡಿ. ಪ್ರ + ಇಕ್ಷ "ಲ್ಯಪ್"  
(೭-೧-೩೭) |

ಪ್ರೇಕ್ಷಣ ಪ್ರೇಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಸುತ್ತುವುದು, ತಿರುಗಾಡು-  
ವುದು, ಗಮನ. ಪ್ರ+ಇಕ್ಷಿ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್"  
(೩-೩-೧೧೫) | 2. ಉಯ್ಯಾಲೆ. 3. ಜೋಲಾಡುವುದು,  
ತೂಗಾಡುವುದು. 4. ಅಪ್ಪಾದಶ (ಹದಿನೆಂಟು) ಉಪ

ರೂಪಕಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಪ್ರೇಕ್ಷಣವು ಏಕಾಂಕವುಳ್ಳ ಒಂದು  
ಉಪರೂಪಕ. ಇದರಲ್ಲಿ ಗರ್ಭ ಮತ್ತು ವಿಮರ್ಶ ಸೇರಿ  
ಗಳಿಲ್ಲ. ಸೂತ್ರಧಾರನಿಲ್ಲ. ಸೂತ್ರಧಾರನ ಕರ್ತವ್ಯವನ್ನು  
ನೇಪಥ್ಯದೊಳಗೆ ನಟನೊಬ್ಬನು ನಿರ್ವಹಿಸುವನು. ಪ್ರವೇಶಕ  
ಮತ್ತು ವಿಷ್ಕಂಭಕಗಳೂ ಇಲ್ಲ. ಇದರ ನಾಯಕನು ನೀಚ,  
ಇತ್ಯಾದಿ. "ಗರ್ಭಾವಿಮರ್ಶರಹಿತಂ ಪ್ರೇಕ್ಷಣಂ ಹೀನನಾಯಕಮ್ |  
ಅಸೂತ್ರಧಾರಮೇಕಾಂಕಮವಿಷ್ಕಂಭಪ್ರವೇಶಕಮ್ | ನೇಪಥ್ಯೇ ಗೀಯತೇ  
ನಾಂದೀ ತಥಾ ತತ್ರ ಪ್ರರೋಚನಾ" ಸಾಂ ದಂ ೬ |

ಪ್ರೇಕ್ಷತ್ ಪ್ರೇಕ್ಷತ್ (ವಿಂ) ಆಡುತ್ತಿರುವ, ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ತೂಗಾಡುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಇಕ್ಷಿ (ಗತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |  
"ಜ್ಯಾಕೃಷ್ಣಿಬದ್ಧಕಟಕಾಮುಖಪಾಣಿಪೃಠಪ್ರೇಕ್ಷತ್ಪ್ರಖಾಶುಚಯಸಂವಲಿತೋ-  
ಽಂಬಿಕಾಯಾ:" ಅಮರಂ ೧ |

ಪ್ರೇಕ್ಷಾ ಪ್ರೇಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೋಲೆ, ಉಯ್ಯಾಲೆ. ಪ್ರೇಕ್ಷಯತೇ  
—ಪ್ರ+ಇಕ್ಷಿ (ಗತೌ) "ಘ್" (೩-೩-೧೯) | "ನಾಗಿನ-  
ಗೋಗುಃಪ್ರಾಹ್ಮಣಪ್ರೇಕ್ಷಾದಮ್ಪತ್ಯಂತರೇಣಾಭಿವಾಚಾತ್" ಸುಶ್ರುತಂ  
ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೨೪ | 2. ಸುತ್ತಾಡುವುದು, ಓಡಾಡುವುದು,  
ತಿರುಗಾಡುವುದು, ಅಲೆದಾಡುವುದು. 3. ಕುದುರೆಯು  
ನಡೆಗೆಯ ಒಂದು ಭೇದ. 4. ಒಂದು ನಮೂನೆಯ ಮನೆ.  
"ಪ್ರೇಕ್ಷಾ ಪರ್ಯಟನೇಷ್ವಗತೌ ಸಂವೇಶನಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ | 5. ನೃತ್ಯ,  
ನರ್ತನ, ಕುಣಿದಾಟ. "ಪ್ರೇಕ್ಷಾ ಪರ್ಯಟನೇ ನೃತ್ಯೇ ದೋಲಾಃ  
ವಾಜಿನಾಂ ಗತೌ" ಹೇಮಂ |

ಪ್ರೇಕ್ಷಿತ ಪ್ರೇಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) ಆಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಪ್ರ+ಇಕ್ಷಿ (ಗತೌ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |

ಪ್ರೇಕ್ಷೋಲ ಪ್ರೇಕ್ಷೋಲ (ಪುಂ) 1. ತೂಗುಮಂಚ.  
ಉಯ್ಯಾಲೆಯಂತೆ ಆಡುತ್ತಿರುವ ಮಂಚ. ಪ್ರೇಕ್ಷೋಲ್ಯತೇ  
ಚಾಲ್ಯತೇ—ಪ್ರೇಕ್ಷೋಲ (ದೋಲನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೯) |  
"ಯದ್ವಿಕ್ಷೇಪಣಸಂಸ್ಕೃತೋದಧಿಪಯ:ಪ್ರೇಕ್ಷೋಲಪರ್ಯಕ್ಷಿ ಕಾನಿತ್ಯಾರೋಹಣ-  
ನಿವೃತ್ತೌ ವಿಹರತೇ ದೇವ: ಸಹೇವ ಶ್ರಿಯಾ" ದಶಾವತಾರಂ |  
2. ತೂಗಾಡುವುದು, ಜೋಲಾಡುವುದು. ಪ್ರೇಕ್ಷೋಲ ಭಾವೇ  
"ಘ್" (೩-೩-೧೮) | "ಉತ್ಕುಲ್ಲಾಜನಸರ್ಜವಾಸಿತವಹತಪೌರ-  
ಸ್ತಯಜ್ಞಾಶಾಮರತಪ್ರೇಕ್ಷೋಲಸ್ಥಲಿತೇಂದ್ರನೀಲಶಕಲಸ್ನಿಗಧಾಮ್ಬು-  
ಧ್ರೇಣಯ:" ಮಾಲತೀಂ ೯-೧೭ |

ಪ್ರೇಕ್ಷೋಲನ ಪ್ರೇಕ್ಷೋಲನ (ನಂ) 1. ದೋಲೆ, ತೂಗು  
ಮಂಚ, ಉಯ್ಯಾಲೆ. ಪ್ರೇಕ್ಷೋಲ್ಯತೇಜೇನ—ಪ್ರೇಕ್ಷೋಲ (ದೋಲನೆ)  
ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಕಂಪನ, ಚಲನೆ,  
ಅಲಾಟ. ಪ್ರೇಕ್ಷೋಲ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) |  
"ವಿರೇಚನಪ್ರೇಕ್ಷೋಲನಾಜೀರ್ಣಗರ್ಭಶಾತನಪ್ರಭೃತಿಭಿವಿಶೇಷೈರ್ಬಂಧನಾ-  
ನ್ಯುಚ್ಯತೇ ಗರ್ಭ: ಫಲಮಿವ ವೃತ್ತಬಂಧನಾದಭಿಧಾತವಿಶೇಷ:"



ಸುಶ್ರುತಂ ನಿಧಾನಂ ೮-೩ | ಗರ್ಭಿಣಿಯರು ಉಯ್ಯಾಲೆ ಯಾಡುವುದರಿಂದ ಗರ್ಭಪಾತವು ಸಂಭವಿಸುವುದು. ವಿರೇಚನ, ಅರ್ಜೀರ್ಣ, ಔಷಧದಿಂದ ಗರ್ಭಪಾತ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಗರ್ಭವು ವಿಚಲಿತವಾಗಿ ಗರ್ಭಪಾತವಾಗುವುದು. ಹೀಗೆಯೇ ಸಂಭೋಗ, ರಥ (ಗಾಡಿ) ಮೊದಲಾದ ಯಾನಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಯಾಣಮಾಡುವುದು, ದಾರಿ ನಡೆಯುವುದು, ಎಡವುವುದು, ಮೇಲಿನಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಧುಮುಕುವುದು, ಓಡುವುದು, ಕಲ್ಲು ಕೋಲು ಇವುಗಳಿಂದ ಹೊಡೆಯುವುದು, ವಿಷಮಶಯನಾಸನ (ವಕ್ರವಾಗಿ ಮಲಗುವುದು ಮತ್ತು ಕೂಡುವುದು), ಉಪವಾಸ ಮುಂತಾದುವೂ ಗರ್ಭಪಾತಕ್ಕೆ ಕಾರಣಗಳು.

**ಪ್ರೇಕ್ಷೋಲಿತ ಪ್ರೇಂಖೋಲಿತ** (ವಿಂ) ಅಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೂಗಾಡಿ ಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರೇಕ್ಷೋಲ (ದೋಲನೆ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

**ಪ್ರೇತ ಪ್ರೇತ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಭೂತ, ದೆವ್ವ, ಪಿಶಾಚ. ಪ್ರ + ಇಣ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | "ಯಜಂತೇ ಸಾತ್ವಿಕಾ ದೇವಾನ್ ಯಕ್ಷರಕ್ಷಾಸಿ ರಾಜಸಾಃ | ಪ್ರೇತಾನ್ ಭೂತಗಣಾಂ ಶ್ರಾನ್ಯೇ ಯಜಂತೇ ತಾಮಸಾ ಜನಾಃ" ಗೀತಾ ೧೭-೪ | (ವಿಂ) 2. ಮೃತ, ಪ್ರಾಣ ಹೋದವನು, ಸತ್ತವನು. "ಪ್ರೇತಾ ವರೇಣ ಶಕ್ತಸ್ಯ ಪ್ರಾಣಂತಃ ಕಪಯಸ್ತತಃ" ಭೃಗು ೨೧-೨೦ | "ಆಚಾರ್ಯ ತು ಖಲು ಪ್ರೇತೇ ಗುರುಪುತ್ರೇ ಗುಣಾನ್ವಿತೇ | ಗುರುದಾರೆ ಸಪಿಂಡೇ ವಾ ಗುರುವತ್ ವೃತ್ತಿಮಾಚರೇತ್" ಮನು ೨-೨೪೭ | 3. ಮೃತ ನಾದನಂತರ ಔರ್ಧ್ವದೇಹಿಕ ಕ್ರಿಯೆಯು ನಡೆಯುವ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿರುವ ಜೀವ. ವೇದೋಕ್ತ ಔರ್ಧ್ವದೇಹಿಕ ಕ್ರಿಯೆಯು ನಡೆಯದಿರುವುದು ಮತ್ತು ವಿಷ್ಣುದ್ವೇಷ ಇತ್ಯಾದಿಗಳು ನರಕಯಾತನೆಯನ್ನು ಅನುಭವಿಸಿದ ನಂತರ ಜೀವನಿಗೆ ಪ್ರೇತಶರೀರಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗುವುವು.

**ಪ್ರೇತಕಾರ್ಯ ಪ್ರೇತಕಾರ್ಯ** (ನಂ) ಮೃತನಾದವನಿಗೆ ನಡೆಸಬೇಕಾದ ಔರ್ಧ್ವದೇಹಿಕ ಕ್ರಿಯೆ. ಪ್ರೇತಾಯ ಕಾರ್ಯಮ್ |

**ಪ್ರೇತದೇಹ ಪ್ರೇತದೇಹ** (ಪುಂ) ಮೃತನಾದ ನಂತರ ಜೀವನಿಗೆ ಉಂಟಾಗುವ ಶರೀರ.

**ಪ್ರೇತನದಿ ಪ್ರೇತನದಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೈತರಣೀನದಿ. ಪ್ರೇತನರಣಿಯಾ ನದಿ |

**ಪ್ರೇತಪಕ್ಷ ಪ್ರೇತಪಕ್ಷ** (ಪುಂ) ಪಿತ್ಯಪಕ್ಷ.

**ಪ್ರೇತಪತಿ ಪ್ರೇತಪತಿ** (ಪುಂ) ಯಮಧರ್ಮರಾಯ.

**ಪ್ರೇತರಾಕ್ಷಸಿ ಪ್ರೇತರಾಕ್ಷಸೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತುಲಸಿ. ಪ್ರೇತಸ್ಯ ಪಿಶಾಚಸ್ಯ ರಾಕ್ಷಸೀವ |

**ಪ್ರೇತ್ಯ ಪ್ರೇತ್ಯ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಲೋಕಾಂತರ, ಭೂಲೋಕ ಕ್ಷಾಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದ ಲೋಕ, 2. ಲೋಕಾಂತರವನ್ನು ಹೊಂದಿ,

**ಪ್ರೇತ್ಯಭಾವ ಪ್ರೇತ್ಯಭಾವ** (ಪುಂ) ಮೃತನಾದನಂತರ ಮತ್ತೊಂದು ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವುದು, ಮತ್ತೊಂದು ಜನ್ಮ ಪಡೆಯುವುದು.

**ಪ್ರೇಪ್ಸಾ ಪ್ರೇಪ್ಸಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊಂದುವ ಅಭಿಲಾಷೆ, ಪಡೆಯುವ ಆಸೆ. ಪ್ರ + ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨) |

**ಪ್ರೇಪ್ಸು ಪ್ರೇಪ್ಸು** (ವಿಂ) ಪಡೆಯಲು ಅಭಿಲಾಷೆಯುಳ್ಳ, ಹೊಂದಲು ಆಸೆಯುಳ್ಳ. ಪ್ರ + ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮) |

**ಪ್ರೇಮನ್ ಪ್ರೇಮನ್** (ಪುಂ) 1. ಅನುರಾಗ, ಪ್ರೀತಿ, ವಿಶ್ವಾಸ. ಪ್ರಿಯಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಇಮನಿಕ್" (೪-೧-೧೨೨) | 2. ಸ್ನೇಹ, ಗೆಳೆತನ. ಪ್ರೀತ್ಯರ್ಥ ಮತ್ತು ಸ್ನೇಹಾರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರೇಮ ಶಬ್ದವು ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ನಪುಂಸಕಲಿಂಗದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದು. "ಯೋಷಿತೋ ನ ಮದಿರಾಂ ಭೃಗಮೀಶುಃ ಪ್ರೇಮ ಪಶ್ಯತಿ ಭಯಾನ್ಯಪದೇಷಿ" ಕಿರಾಂ ೧-೭೦ | "ರೂಪಮಪ್ರತಿ-ವಿಧಾನಮನೋಃ ಪ್ರೇಮಕಾರ್ಯಮನಪೇಕ್ಷಯ ವಿಕಾಸಿ" ಮಾಘಂ ೧೦-೩೭ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಅಮರಕೋಶದಲ್ಲಿ "ಪ್ರೇಮಾ ನಾ ಪ್ರಿಯತಾ ಹೃದೈ ಪ್ರೇಮ ಸ್ನೇಹಃ" ಎಂದೂ ಮೇದಿನಿಕೋಶದಲ್ಲಿ "ಪ್ರೇಮಾಸ್ತ್ರೀ ಸ್ನೇಹ-ನರ್ಮಣೋಃ" ಎಂದೂ ಪುಂಲಿಂಗ ಮತ್ತು ನಪುಂಸಕಲಿಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. ಹೇಮಕೋಶ (ಅನೇಕಾರ್ಥಸಂಗ್ರಹ) ದಲ್ಲಿ "ಪ್ರೇಮ ತು ಸ್ನೇಹನರ್ಮಣೋಃ" ಎಂದು ನಪುಂಸಕಲಿಂಗದಲ್ಲಿ ನಿರ್ದೇಶಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. 3. ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ. (ಪುಂ) 4. ಇಂದ್ರ. 5. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. "ಪ್ರೇಮಾ ನಾ ವಾಸವೇ ವಾತೇ ಪ್ರೇಮಾಸ್ತ್ರೀ ಸ್ನೇಹನರ್ಮಣೋಃ" ಮೇದಿಂ |

**ಪ್ರೇಮಪಾತನ ಪ್ರೇಮಪಾತನ** (ನಂ) ನೇತ್ರಜಲ, ಕಣ್ಣೀರು. ಪ್ರೇಮ್ಣಾ ಪಾತನಂ ಯಸ್ಯ |

**ಪ್ರೇಮಪಾತ್ರ ಪ್ರೇಮಪಾತ್ರ** (ನಂ) ಪ್ರೀತಿಗೆ ವಿಷಯನಾದ, ವಿಶ್ವಾಸಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ (ಮನುಷ್ಯ). ಪ್ರೇಮ್ಣಾಃ ಪಾತ್ರಮ್ | "ಯೋಗ್ಯಮಾಜನಯೋಃ ಪಾತ್ರಮ್" |

**ಪ್ರೇಮಭಾವ ಪ್ರೇಮಭಾವ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರೀತಿ, ವಿಶ್ವಾಸ. 2. ಸ್ನೇಹ. ಪ್ರೇಮ್ಣಾ ಭಾವಃ |

**ಪ್ರೇಮಿನ್ ಪ್ರೇಮಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ, ಅನುರಾಗವುಳ್ಳ. 2. ಸ್ನೇಹವುಳ್ಳ. ಪ್ರೇಮಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) |

**ಪ್ರೇಯಸ್ ಪ್ರೇಯಸ್** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಿಯ, ಪತಿ. ಅನಯೋ-ರತಿಶಯೇನ ಪ್ರಿಯಃ-ಪ್ರಿಯ "ಇಯಸುನ್" (೪-೩-೪೭) | ಪ್ರಾದೇಶಃ (೬-೪-೧೪೭) | "ಸಿಂಚಂತ್ಯಾಃ ಕಥಮಪಿ ಬಾಹುಮುಗ್ರಮಯ್ಯ ಪ್ರೇಯಾಸಂ ಮನಸಿಜಡುಃಖದುರ್ಬಲಾಃ" ಮಾಘಂ ೮-೩೪ | 2. ಗೆಳೆಯ, ಸ್ನೇಹಿತ, ಮಿತ್ರ. "ನಿಷ್ಣಾತಶ್ಚ ಸಮಾಗಮೋಽಪಿ



ವಿಹಿತಸ್ವಪ್ರೇಯಸಃ ಕಾಂತಯಾ" ಮಾಲತೀಂ ೧೦-೨೪। (ವಿಂ)  
3. ಅತಿಪ್ರಿಯವಾದ. "ಸಂಪ್ರೀತೌ ನೃಪನಂದನೌ ಯದಪರಂ ಪ್ರೇಯ-  
ಸ್ತದಪ್ಯುಚ್ಯತಾಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೧೦-೨೪। 4. ಬಹಳ ಪ್ರೀತಿ  
ಪಾತ್ರನಾದ, ಹೆಚ್ಚು ವಿಶ್ವಾಸಕ್ಕೆ ವಿಷಯನಾದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
"ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। ಪ್ರೇಯಸೀ ಪ್ರೇಯಸೀ. ಪತ್ನಿ, ಹೆಂಡತಿ.  
"ಕಸ್ಯಚಿತ್ತಸಮದನಂ ಮದನೀಯಪ್ರೇಯಸೀವದನಪಾನರತಸ್ಯ" ಮಾಘಂ  
೧೦-೧೦।

**ಪ್ರೇರಕ ಪ್ರೇರಕ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಚೋದನೆ ಮಾಡುವವನು,  
ಒಂದು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗುವಂತೆ ಮಾಡುವವನು.  
ಪ್ರ+ಓರ (ಗತೌ ಕಂಪನೆ ಚ) + ಣಿಚ್ "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।  
2. ಒತ್ತಾಯಪಡಿಸುವವನು. 3. ಉತ್ತೇಜನಗೊಳಿಸು  
ವವನು, ಹುರಿದುಂಬಿಸುವವನು. 4. ಕಳುಹಿಸುವವನು.  
5. ಮುಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವವನು.

**ಪ್ರೇರಣ ಪ್ರೇರಣ** (ನಂ) 1. ಒಂದು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರವರ್ತಿಸು  
ವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ಪ್ರ+ಓರ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಒತ್ತಾಯಪಡಿಸುವುದು. 3. ಉತ್ತೇಜನ  
ಗೊಳಿಸುವುದು. "ಧಿಕ್ ಚಾಪಲೇ ವತ್ಸಿಮವತ್ಸಲತ್ವಂ  
ಯಪ್ರೇರಣಾದುತ್ತರಲಿಖಂತ್ಯಾ" ನೈಷಂ ೩-೫೫। 4. ಕಳುಹಿಸು  
ವುದು. 5. ಎಸೆಯುವುದು. "ಹಿಮೇಶ್ವರಾ ಭವತಿ ವಿಫಲ-  
ಪ್ರೇರಣಾ ಚೂರ್ಣಮುಷ್ಠಿಃ" ಮೇಘಂ ೨-೫। 6. ನೂಕುವುದು.  
"ಯುಕ್" (೩-೩-೧೦೭)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಣಾ -ಣಾ. "ಚಪಲ-  
ಚರಣಕಾಂಕ್ಷಪ್ರೇರಣೋತ್ತುಂಗಿತಾಗ್ರಮ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೩।

**ಪ್ರೇರಣೀಯ ಪ್ರೇರಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರವರ್ತಿಸುವಂತೆ  
ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಒತ್ತಾಯಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 3.  
ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡುವ. ಪ್ರ+ಓರ  
(ಗತೌ ಕಂಪನೆ ಚ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)।  
5. ಪ್ರವರ್ತಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಬೇಕಾದ. 6. ಒತ್ತಾಯಿಸ  
ಬೇಕಾದ. 7. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸಬೇಕಾದ, ಹುರಿದುಂಬಿಸ  
ಬೇಕಾದ. 8. ಕಳುಹಿಸಬೇಕಾದ. 9. ಎಸೆಯಲ್ಪಡುವ.  
10. ಎಸೆಯಬೇಕಾದ. "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬)।

**ಪ್ರೇರಣಿತವ್ಯಃ ಪ್ರೇರಣಿತವ್ಯಃ.**

**ಪ್ರೇರಯತ್ ಪ್ರೇರಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರವರ್ತಿಸುವಂತೆ ಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ. 2. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹುರಿದುಂಬಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. 3. ಒತ್ತಾಯಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಕಳುಹಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. 5. ಎಸೆಯುತ್ತಿರುವ. 6. ಮುಂದಕ್ಕೆ ನೂಕು  
ತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಓರ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಫಲ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

**ಪ್ರೇರಿತ ಪ್ರೇರಿತ** (ವಿಂ) 1. ಒತ್ತಾಯಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2.  
ಹುರಿದುಂಬಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಪ್ರವರ್ತಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

4. ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರಯೋಗಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಮುಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ನೂಕಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಪ್ರ+ಓರ (ಗತೌ ಕಂಪನೆ ಚ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ"  
(೩-೨-೧೦೨)।

**ಪ್ರೇರಿತವತ್ ಪ್ರೇರಿತವತ್** (ವಿಂ) 1. ಒತ್ತಾಯಪಡಿಸಿ  
ದವನು. 2. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸಿದವನು. 3. ತೊಡಗುವಂತೆ  
ಮಾಡಿದವನು. 4. ಮುಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಿದವನು. 5. ಕಳುಹಿಸಿ  
ದವನು. 6. ಎಸೆದವನು, ಪ್ರಯೋಗಿಸಿದವನು. ಪ್ರ+ಓರ  
(ಗತೌ ಕಂಪನೆ ಚ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಪ್ರೇರ್ಮಾಣ ಪ್ರೇರ್ಮಾಣ** (ವಿಂ) 1. ಒತ್ತಾಯಪಡಿಸ  
ಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಪ್ರವರ್ತಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಓರ (ಗತೌ ಕಂಪನೆ ಚ) + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ  
"ಶಾನಿಕ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಯಃ ಪ್ರೇರ್ಮಾಣೋಽಪಿ ಹೃದಾ  
ಮಧೋನಸ್ತದರ್ಶನಾಯಾಂ ಹ್ರಿಯಮಾಪದಾಗಃ" ನೈಷಂ ೬-೭೯।  
3. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 4. ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ. 5. ಎಸೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 6. ಮುಂದಕ್ಕೆ  
ನೂಕಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

**ಪ್ರೇರ್ಮನ್ ಪ್ರೇರ್ಮನ್** (ಪುಂ) ಸಾಗರ, ಸಮುದ್ರ. ಪ್ರ+ಓರ  
(ಗತೌ) "ವನಿಪ್" (೩ಂ ೪-೧೧೬)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್"  
ರಶ್ರಾಂತಾದೇಶಃ (೪-೧-೭)। ಪ್ರೇರ್ಮನಿ ಪ್ರೇರ್ಮನಿ. ನದಿ,  
ಹೊಳೆ.

**ಪ್ರೇಷ ಪ್ರೇಷ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರೇರಿಸುವುದು, ಪ್ರಚೋದಿಸುವುದು,  
ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ ಓಡಿಸುವುದು. ಪ್ರ+ಓಷ (ಉಕ್ತೆ)  
"ಫಜ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಕ್ಲೇಶ, ನೋವು, ಪೀಡೆ.

**ಪ್ರೇಷಣ ಪ್ರೇಷಣ** (ನಂ) 1. ಕಳುಹಿಸುವುದು. ಪ್ರ+ಓಷ  
(ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಪ್ರಚೋ  
ದಿಸುವುದು. ಪ್ರ+ಓಷ+ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಯುಕ್" (೩-೩-೧೦೭)।  
ಪ್ರೇಷಣಾ ಪ್ರೇಷಣಾ.

**ಪ್ರೇಷಣೀಯ ಪ್ರೇಷಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡುವ.  
ಪ್ರ+ಓಷ (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)।  
2. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಪ್ರಚೋದಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಕಳುಹಿಸ  
ಬೇಕಾದ. 4. ಪ್ರಚೋದಿಸಬೇಕಾದ.

**ಪ್ರೇಷಿತ ಪ್ರೇಷಿತ** (ವಿಂ) 1. ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ+ಓಷ  
(ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಪ್ರೇಷಿತಾಃ ಪೃಥಗಥೌ  
ದಮಯಂತಿ ಚಿತ್ತಚೋರೈಶ್ಚತುರಾ ನಿಜದೃಶ್ಯಃ" ನೈಷಂ ೫-೫೬।  
2. ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ ನಡೆಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ  
ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.



**ಪ್ರೇಷ ಪ್ರೇಷ್ಯ** (ವಿಂ) ಬಹಳ ಪ್ರಿಯನಾದ, ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರೀತಿ ಪಾತ್ರನಾದ. ಅಯಮೇಷಾಮತಿಶಯೇನ ಪ್ರಿಯ: "ಇಷ್ಠನ್" (೪-೩-೪೪) | ಪ್ರಿಯಸ್ಯ ಪ್ರಾದೇಶ: | (೬-೪-೧೪೭) |

**ಪ್ರೇಷಾ ಪ್ರೇಷ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರೇಯಸಿ, ಪ್ರಿಯತಮೆ, ಪತ್ನಿ. ಪ್ರೇಷ "ಛಾಪ್" | 2. ಮೊಳಕಾಲು.

**ಪ್ರೇಷ್ಯ ಪ್ರೇಷ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ದೂತ, ಸೇವಕ, ಅಳು. ಪ್ರ+ಇಷ (ಉಚ್ಛೇ) ಕರ್ಮಂ "ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) | "ಸ್ಥಿತ: ಪರಪ್ರೇಷ್ಯಗುಣೋಽಪಿ ಯತ್ರ" ನೆಪಂ ೧-೨೧ | (ವಿಂ) 2. ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಷ್ಯಾ -ಷ್ಯಾ. ಸೇವಕ, ದೂತಿ.

**ಪ್ರೇಷ್ಯಭಾವ ಪ್ರೇಷ್ಯಭಾವ** (ಪುಂ) ಸೇವಕತನ, ದಾಸ್ಯ. ಪ್ರೇಷ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: | "ಪ್ರೇಷ್ಯಭಾವೇನ ನಾಮಯಂ ದೇವೀಶಬ್ದಕ್ಷಮಾ ಸತೀ | ಸ್ನಾನೀಯವಸ್ತ್ರಾಕ್ರಿಯಯಾ ಪತ್ರೋರ್ಣಿ ವೋಪಯುಜ್ಯತೇ" ಮಾಲಂ ೪-೧೨ |

**ಪ್ರೇಷ್ಯರೂಪಕ ಪ್ರೇಷ್ಯರೂಪಕ** (ನಂ) ಪ್ರಿಯವಾದ ರೂಪದ ಭಾವ, ಸುಂದರವಾದ ರೂಪವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಪ್ರಿಯರೂಪಸ್ಯ ಭಾವ: "ವುನ್" (೪-೧-೧೩೩) | "ಪ್ರೇಷ್ಯರೂಪಕವಿಶೇಷನಿವೇಶ: ಸಂದದ್ವಿರಮರಾ: ಶ್ರುತಪೂರ್ವ:" ನೆಪಂ ೪-೬೬ |

**ಪ್ರೇಷ ಪ್ರೇಷ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಕಳುಹಿಸುವುದು. ಪ್ರ+ಇಷ (ಗತೌ) "ಛಾಪ್" (೩-೩-೧೮) | 2. ಕ್ಲೇಶ, ಪೀಡೆ, ತೊಂದರೆ. 3. ಮರ್ದನ, ಅಮುಕುವುದು, ಉಜ್ಜುವುದು, ಒತ್ತುವುದು. 4. ಉನ್ನಾದ, ಹುಚ್ಚು. "ಪ್ರೇಷ: ಕಲೇಶೇ ಚ ಮರ್ದನೇ | ಉನ್ನಾದೇ ಪ್ರೇಷಣೇ" ಮೇದಿಂ | ವೃದ್ಧಿ: (ವಾಂ ೬-೧-೮೯) |

**ಪ್ರೇಷ್ಯ ಪ್ರೇಷ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ದೂತ, ಸೇವಕ, ಅಳು. ಪ್ರ+ಇಷ (ಗತೌ) ಕರ್ಮಂ "ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) | ವೃದ್ಧಿ: (ವಾಂ ೬-೧-೮೯) | (ನಂ) 2. ದಾಸ್ಯ, ಸೇವಕತನ. ಪ್ರೇಷ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ಞ್ಯತ್" (೪-೧-೧೨೪) | "ತಸ್ಯ ಕೃತ್ವಾ ಗೃಹಾಭ್ಯರ್ಣಂ ಪ್ರೇಷ್ಯಂ ಕುರ್ವನ್ಮುನಿವಾಸ ಸ:" ಕಥಾಸಂ |

**ಪ್ರೇಷ್ಯಭಾವ ಪ್ರೇಷ್ಯಭಾವ** (ಪುಂ) ಕೈಂಕರ್ಯ, ಸೇವಕತನ ಕಾರ್ಯ. ಪ್ರೇಷ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: | "ಜಙ್ಗಮಂ ಪ್ರೇಷ್ಯಭಾವೇ ವ: ಸ್ಥಾವರಂ ಚರಣಾಙ್ಗಿತಮ್ | ವಿಭಕ್ತಾನುಗ್ರಹಂ ಮನ್ಯೇ ದ್ವಿರೂಪಮಪಿ ಮೇ ವಪು:" ಕುಮಾಂ ೬-೪೮ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛಾಪ್" (೪-೧-೧) | -ಷ್ಯಾ -ಷ್ಯಾ. ಸೇವಕ, ದೂತಿ.

**ಪ್ರೋಕ್ತ ಪ್ರೋಕ್ತ** (ವಿಂ) ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರ+ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ಪ್ರೋಕ್ತ: ಪ್ರತ್ಯುತ್ತರಂ ನಾಹಿ ವಿರುದ್ಧಂ ಪ್ರಭುಣಾ ಚ ಯ: | ನ ಸಮೀಪೇ ಹಸ್ತಯುಚ್ಚೈ: ಸ ಭವೇದ್ರಾಜವಲ್ಲಮ:" ಪಂಚತಂ ೧-೬೧ |

**ಪ್ರೋಕ್ಷಣ ಪ್ರೋಕ್ಷಣ** (ನಂ) 1. ಪೋಷಿಸುವುದು, ಸಿಂಹಿಸುವುದು. ಪ್ರ+ಉಕ್ಷ (ಸೇವನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |

"ಅದ್ವಿಷ್ಟು ಪ್ರೋಕ್ಷಣಂ ಶೀಘ್ರಂ ಬಹುನಾಂ ಧಾನ್ಯವಾಸಸಾಮ್" ಮನುಂ ೪-೧೧೮ | 2. ಯಜ್ಞದ ಪಶುವಿನ ವಧೆ. "ಪ್ರೋಕ್ಷಣಂ ಸೇವನೆ ವಧೇ" ಮೇದಿಂ | "ಯ ಇಮೇ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾ: ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಮನ್ತ್ರಾ ವೈ ಪ್ರೋಕ್ಷಣಂ ಗವಾಮ್" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೭-೯ |

**ಪ್ರೋಕ್ಷಿತ ಪ್ರೋಕ್ಷಿತ** (ವಿಂ) 1. ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೇವನೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ+ಉಕ್ಷ (ಸೇವನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಯಜ್ಞಕ್ಕಾಗಿ ಮಂತ್ರದಿಂದ ಅಭಿಮಂತ್ರಿಸಿ ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ (ಪಶು). 3. ಯಜ್ಞಕ್ಕಾಗಿ ಸಂಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮಾಂಸ ಮೊದಲಾದುದು. "ಪ್ರೋಕ್ಷಿತಂ ನಿಹತೇ ಸಿಕ್ತೇ" ಮೇದಿಂ |

**ಪ್ರೋಚಾರಣ ಪ್ರೋಚಾರಣ** (ನಂ) ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಉಚ್ಚರಿಸುವುದು, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಶಬ್ದಮಾಡುವುದು.

**ಪ್ರೋಚಾರಿತ ಪ್ರೋಚಾರಿತ** (ವಿಂ) ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ+ಉಚ್+ಚರ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |

**ಪ್ರೋಚಲತ್ ಪ್ರೋಚಲತ್** (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುತ್ತಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಉಚ್+ಶಲ (ಚಲನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಶಸ್ತ್ರೈರ್ದಿವಿಷ್ಠಿಚ್ಛಿರ-ಇಂದ್ರಪ್ರೋಚಲಚ್ಛೋಣಿತೋಕ್ಷಿತ:" ಮಾಘಂ ೨-೬೬ |

**ಪ್ರೋಚಲನ ಪ್ರೋಚಲನ** (ನಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ನೆಗೆಯುವುದು. ಪ್ರ+ಉಚ್+ಶಲ (ಚಲನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |

**ಪ್ರೋಚವೆಸ್ ಪ್ರೋಚವೆಸ್** (ಅವ್ಯಂ) ಬಹಳ ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ.

**ಪ್ರೋಚ್ಛನ ಪ್ರೋಚ್ಛನ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಉಬ್ಬಿರುವ, ಉದಿಕ್ಕೊಂಡಿರುವ. 2. ಸ್ಥೂಲವಾದ, ದಪ್ಪನಾದ.

**ಪ್ರೋಚ್ಛಿತ ಪ್ರೋಚ್ಛಿತ** (ವಿಂ) ಬಹಳ ಎತ್ತರವಾಗಿರುವ, ಉನ್ನತವಾಗಿರುವ.

**ಪ್ರೋಜಾಸನ ಪ್ರೋಜಾಸನ** (ನಂ) ಕೊಲ್ಲುವುದು. ಪ್ರ+ಉಚ್+ಜಸು (ಹಿಸಾಯಾಮ್)+ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |

**ಪ್ರೋಜನ ಪ್ರೋಜನ** (ನಂ) ತಡೆಸುವುದು, ಬಿಡುವುದು. ಪ್ರ+ಉಜ್ಞ (ಉತ್ತರಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |

**ಪ್ರೋಜಿತ ಪ್ರೋಜಿತ** (ವಿಂ) ತಡೆಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ+ಉಜ್ಞ (ಉತ್ತರಣೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ವರ್ಮ: ಪ್ರೋಜಿತಕೇತವೋಽತ್ರ ಪರಮೋ ನಿರ್ಮತ್ತರಾಣಾಂ ಸತಾಮ್" ಭಾಗಂ ೧-೧-೨ |

**ಪ್ರೋಚ್ಛನ ಪ್ರೋಚ್ಛನ** (ನಂ) ಅಳಿಸುವುದು, ತೊಡೆಯುವುದು, ತೊಡೆದು ಹಾಕುವುದು, ಒರಸಿಹಾಕುವುದು. ಪ್ರ+ಉಚ್ಛಿ (ಉಚ್ಛೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |







“ಸ್ಫುರನ್ಮಗ್ಧ: ಪ್ರೋಜ್ಜಲದನಿನದಸ್ಫುಜಿತಮಿತ:” ಭರ್ತುಂ ೨-೨೩.

**ಪ್ರೋಜತ ಪ್ರೋಜ್ಯತ** (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದುಬಂದಿರುವ, ಉದಯಿಸಿದ. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗಿರುವ. 3. ಹೆಚ್ಚಿರುವ, ಅಧಿಕವಾಗಿರುವ. ಪ್ರ+ಉದ್+ಙ್ (ಗತೌ) “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨).

**ಪ್ರೋಜತ ಪ್ರೋಜ್ಯತ** (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಎತ್ತರವಾದ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಉತ್ತತ: 2. ಬಲಶಾಲಿ, ಬಲಿಷ್ಠ. “ಯೋ ಬಲಾತ್ಪ್ರೋಜತಂ ಯಾತಿ ನಿಹಂತುಂ ಸಬಲೋಽಪ್ಯರಿಮ್” ಪञ्ಚತಂ ೧-೨೬೧.

**ಪ್ರೋಜತಿ ಪ್ರೋಜ್ಯತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಹಳ ಎತ್ತರ. 2. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಏಳಿಗೆ. ಪ್ರ+ಉದ್+ಞಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪).

**ಪ್ರೋಲ್ಲಸತ್ ಪ್ರೋಲ್ಲಸತ್** (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಉದ್+ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣ-ಕ್ರೀಡನಯೋ:) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪). “ಪ್ರೋಲ್ಲಸತ್ಕ್ರುಣ್ಡಲಪ್ರೋತ-ಪಚ್ಚರಾಗದಲತಿವಿಷಾ” ಮಾಘಂ ೨-೧೯.

**ಪ್ರೋಲ್ಲಸಿತ ಪ್ರೋಲ್ಲಸಿತ** (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೊಳೆಯುವ. ಪ್ರ+ಉದ್+ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣ-ಕ್ರೀಡನಯೋ:) “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨). 2. ಹೆಚ್ಚು ಸಂತೋಷಗೊಂಡಿರುವ.

**ಪ್ರೋಲ್ಲಾಘ ಪ್ರೋಲ್ಲಾಘ** (ವಿಂ) ರೋಗದಿಂದ ಮುಕ್ತನಾದ, ರೋಗ ವಾಸಿಯಾದವನು. ಪ್ರ+ಉದ್+ಲಾಘ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨).

**ಪ್ರೋಲ್ಲಾಘಿತ ಪ್ರೋಲ್ಲಾಘಿತ** (ವಿಂ) ವ್ಯಾಧಿಯಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ರೋಗ ವಾಸಿಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರ+ಲಾಘ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ)+ಞಿಕ್ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨).

**ಪ್ರೋಲ್ಲೇಖನ ಪ್ರೋಲ್ಲೇಖನ** (ನಂ) 1. ಗುರುತು ಹಾಕುವುದು, ಸುತ್ತಲೂ ಗುರುತು ಹಾಕಿ ಒಂದು ಚೌಕಟ್ಟನ್ನು ತಯಾರಿಸುವುದು. 2. ನಿರ್ದೇಶಮಾಡಿ ಹೇಳುವುದು, ನಿರ್ದೇಶಮಾಡಿ ತೋರಿಸುವುದು.

**ಪ್ರೋಷ ಪ್ರೋಷ** (ಪುಂ) ಉರಿತ, ದಹಿಸುವುದು, ಸುಡುವುದು. ಪುಷ (ದಾಹೇ) ಭಾವೇ “ಘ್” (೩-೩-೧೮). ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫). ಪ್ರೋಷಣಮ್ ಪ್ರೋಷಣಮ್.

**ಪ್ರೋಷಿತ ಪ್ರೋಷಿತ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರವಾಸದಲ್ಲಿರುವ, ಪರಸ್ಥಳದ ಪ್ರಯಾಣವನ್ನು ಕೈಗೊಂಡಿರುವ. ಪ್ರ+ವಸ (ನಿವಾಸೇ) “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨). “ತತ್ರ ನಿಯತವಿಹಿತೋಪಹೃತಿಷು ಪ್ರೋಷಿತೇಷು ಪತಿಷು ದ್ಯುಯೋಷಿತಾಮ್” ಮಾಘಂ ೧೪-೩೦. 2. ಹೊರಟುಹೋಗಿರುವ, ದೂರದಲ್ಲಿರುವ. “ಪ್ರೋಷಿತಾರ್ಯಮಂ

ಮೇರೋನ್ಮಹಾರಸ್ತೀಮಿವ” ಮಾಘಂ ೨-೩೯. 3. ನಷ್ಟವಾದ, ಕಳೆದುಹೋದ. “ಅಧಿಗತರತಿಶೋಭ: ಪ್ರತ್ಯುಷ: ಪ್ರೋಷಿತಶ್ರೀ:” ಮಾಘಂ ೧೧-೩೦.

**ಪ್ರೋಷಿತಭರ್ತೃಕಾ ಪ್ರೋಷಿತಭರ್ತೃಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿದೇಶದಲ್ಲಿರುವವನ ಪತ್ನಿ, ವಿದೇಶಕ್ಕೆ ಹೋಗಿರುವವನ ಪತ್ನಿ. ಪ್ರೋಷಿತೋ ವಿದೇಶಗತೋ ಭರ್ತೃಯಸ್ಯಾ: 1. ಸಮಾಸಾಂತ: “ಕಪ್” “ನಾನಾಕಾರ್ಯವಶಾತ್ಸಾ ದೂರದೇಶಂ ಗತ: ಪತಿ: 1. ಸಾ ಮನೋಭವ-ದು:ಖಾರ್ತಾ ಭವೇತ್ಪ್ರೋಷಿತಭರ್ತೃಕಾ” ಸಾಂ ೬೦ ೩-೮೪.

**ಪ್ರೋಷ ಪ್ರೋಷ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. ಪ್ರಕೃಷ್ಠ: ಔಷ್ಣೋಽಸ್ಯ. 2. ಒಂದು ದೇಶ. 3. ಎತ್ತು, ವೃಷಭ.

**ಪ್ರೋಷಪದ ಪ್ರೋಷಪದ** (ಪುಂ) 1. ಭಾದ್ರಪದ ಮಾಸ. ಪ್ರೋಷಪದಾಭಿ: ನಕ್ಷತ್ರವಿಶೇಷ: ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ ಯಸ್ಮಿನ್ ಮಾಸೇ “ಅಞ್” (೪-೨-೨೧). 2. -ಪದಾ -ಪದಾ ಪೂರ್ವಾ ಭಾದ್ರಾ ಮತ್ತು ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರಾ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು. ಪ್ರೋಷೋ ಗೌ: ತಸ್ಯೇವ ಪಾದಾವಸ್ಯಾ: “ಅಚ್” (೫-೪-೧೨೦). 1. ಪದ್ಮಾವಶ್ಚ ನಿಪಾಂ. ನಕ್ಷತ್ರವಾಚಕವಾದ “ಪ್ರೋಷಪದಾ” ಶಬ್ದವು ಪುಲಿಂಗದಲ್ಲಿಯೂ ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. “ಶುಕ್ರ: ಪ್ರೋಷಪದೇ ಪೂರ್ವ ಸಮಾಹೃತ್ಯ ವಿರೋಚತೇ. 2. ಉತ್ತರೇ ತು ಪರಿಕ್ರಮ್ಯ ಸಹಿತ: ಸಮುದೀಕ್ಷತೇ” ಭಾಂ ಭೀಷಂ ೩-೧೫. (ವಿಂ) 3. ಎತ್ತಿನ ಕಾಲಿನಂತೆ ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳವನು. ಪ್ರೋಷೋ ಗೌ: ತಸ್ಯೇವ ಪಾದಾವಸ್ಯಾ. ನಿಪಾಂ (೫-೪-೧೨೦).

**ಪ್ರೋಷಪದಿ ಪ್ರೋಷಪದಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭಾದ್ರಪದ ಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ಪ್ರೋಷಪದಾಭಿರ್ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಅಞ್” (೫-೪-೩೮). “ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೫).

**ಪ್ರೋಷಪಾದ ಪ್ರೋಷಪಾದ** (ವಿಂ) ಪ್ರೋಷಪದಾ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಪ್ರೋಷಪದಾ “ಅಞ್” (೪-೩-೧೬). 2. ಉತ್ತರಪದಸ್ಯಾದೇರಚೋ ವೃದ್ಧಿ: (೭-೩-೧೮).

**ಪ್ರೋಷಿ ಪ್ರೋಷಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. ಪ್ರಕೃಷ್ಠ: ಔಷ್ಣೋಽಸ್ಯಾ: 2. ವಾ ಪರೂಪಮ್ (ವಾಂ ೬-೧-೯೪) ವಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೫೫). “ಪ್ರೋಷಿ ತು ಶಫರೀ ದ್ವಯೋ:” ಎಂದು ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ “ಪ್ರೋಷ:” ಎಂದು ಪುಲಿಂಗದ ಪ್ರಯೋಗವೂ ಉಂಟು. ಪಕ್ಷೇ ವೃದ್ಧಿ: 1. ಪ್ರೋಷಿ ಪೌಷ್ಕೀ.

**ಪ್ರೋಹ ಪ್ರೋಹ** (ಪುಂ) 1. ಆನೆಯ ಕಾಲು. “ಆಕ್ರುಶ್ವಿತಪ್ರೋಹ-ನಿರೂಪಿತಕ್ರಮಂ ಕರಣುರಾರೋಹಯತೇ ನಿಷಾದಿನಮ್” ಮಾಘಂ ೧೨-೫. 2. ಕಾಲಿನ ಸಂದು, ಗ್ರಂಥಿ. 3. ಗಿಡದ ಗೆಣ್ಣು. 4. ತರ್ಕ. (ವಿಂ) 5. ನಿಪುಣ, ಜಾಣ, ನುರಿತವನು. “ಪ್ರೋಹೋ ಗಜಾಡ್ಧಿಪರ್ವಣೋ: 1. ವಾಚ್ಯವನ್ನಿಪುಣೇ ತರ್ಕ” ಮೇದಿಂ.



**ಪ್ರೌಢ ಸೌಧ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವ, ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿರುವ. ಪ್ರ + वह (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ್ತ:" । "ಸುಹೃದಿ ಗುಣನಿವಾಸೇ ಪ್ರೇಯಸಿ ಪ್ರಾಣನಾಥೇ ಕಥಮಿವ ಸಹಪಾಸುಕೀಡನ-ಪ್ರೌಢಸಖ್ಯೆ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೮ । 2. ಬಲಿತಿರುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾಗಿರುವ, ಹಣ್ಣಾಗಿರುವ. "ತ್ವತ್ಸಂಪರ್ಕಾತ್ಯುಲಕಿತಮಿವ ಪ್ರೌಢಪುಷ್ಪ: ಕದಂಬ:" ಮೇಘಂ ೧-೨೫ । 3 ತುಂಬಿದ, ಪೂರ್ಣವಾದ. "ಭಗನೆರ್ದಂಡೇರಾತಪತ್ರಾಣಿ ಭೂಮೌ ಪರ್ಯಸ್ತಾನಿ ಪ್ರೌಢವನ್ದ್ರಚುತಿನಿ" ಮಾಘಂ ೧೮-೬೭ । 4. ದಟ್ಟವಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವ, ನಿಬಿಡವಾಗಿರುವ, ಗಾಢವಾದ. "ಪ್ರೀತ್ಯೈ ಯುನಾಂ ವ್ಯವಹಿತತಪನಾ: ಪ್ರೌಢವ್ಯಾನ್ತಂ ದಿನಮಿಹ ಜಲದಾ:" ಮಾಘಂ ೪-೬೨ । 5. ರಭಸವಾದ, ವೇಗವಾಗಿ ಚಲಿಸುವ, ಬಿರುಸಾದ. "ಕಾಂತಯಾ ಸರ್ವದಿ ಕೌಂಪ್ಯುಪಗೃಹ: ಪ್ರೌಢಪಾಣಿರಪನೇತು-ಮಿಯೇಷ" ಮಾಘಂ ೧೦-೭೩ । 6. ಅಭಿಮಾನದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಹೆಮ್ಮೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಪ್ರಗಲ್ಭನಾದ. "ಪ್ರಸಹ್ಯ ರಾವಣದ್ವಿಷ್ಟಮಸ್ಮದ್ಗೃಹಸ್ಯ ಪಶ್ಯತ: । ಅಸ್ತ್ರದಾನಾಙ್ಗುತಂ ಕಾಲೇ ಪ್ರೌಢೇನ ಮುನಿನಾ ಕೃತಮ್" ಮಂ ವೀಂ ೨-೩ । 7. ಧೈರ್ಯ ದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಕೆಚ್ಚಿದೆಯುಳ್ಳ. "ಚಕರ ಕಿಲ ಚಾಡು ಪ್ರೌಢಯೋಷಿದ್ವದಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೧೧-೩೯ । 8. ನಿಪುಣನಾದ, ಜಾಣನಾದ. "ಇಜ್ಞಿತಜ್ಞಾ: ಪುರುಪ್ರೌಢಾ ಏಕಾರಾಮಾಶ್ಚ ಸಾತ್ವತಾ:" ಭಾಗಂ ೩-೨-೯ । 9. ಸರಿಯಾದ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಮದುವೆ ಮಾಡಿಕೊಂಡವನು. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಕೂಡ: । 10. ಗಂಭೀರವಾದ. 11. ಮೇಲ್ಮಟ್ಟದ, ಮೇಲ್ಪರಗತಿಯ.

**ಪ್ರೌಢಪಾದ ಸೌಧಪಾದ** (ಪುಂ) ಕಾಲುಗಳನ್ನು ಮಡಿಸಿ ಅಸನದ ಮೇಲಿಟ್ಟು ಬೆನ್ನು ಬಳಸಿಬಂದ ವಸ್ತ್ರದಿಂದ ಮಂಡಿ ಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟಿ ಕುಳಿತಿರುವವನು. ಪ್ರೌಢ: ಪಾದೋ ಯಸ್ಯ । "ಆಸನಾರೂಢಪಾದಸ್ತು ಜಾನುನೋರ್ಜಂಜಯೋಸ್ತಥಾ । ಕೃತಾವಸಕ್ವಿಕೋ ಯಸ್ತು ಪ್ರೌಢಪಾದ: ಸ ಉಚ್ಯತೇ" ।

**ಪ್ರೌಢಾ ಸೌಧಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂವತ್ತು ವರ್ಷಗಳಿಂದ ಐವತ್ತೈದು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನೊಳಗಿರುವ ಹೆಂಗಸು, ತಾರುಣ್ಯಾವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಮೀರಿದ ಹೆಂಗಸು. "ಬಾಲಾ ತು ತರುಣಿ ಪ್ರೌಢಾ ವೃದ್ಧಾ ಭವತಿ ನಾಯಿಕಾ । ಗುಣಯೋಗೇನ ರತ್ನವ್ಯಾ ನಾರೀ ವಸ್ಯಾ ಭವೇತ್ತದಾ" । ನಾಯಿಕೆಯರ ಪ್ರಭೇದಗಳಲ್ಲಿ ಇದೊಂದು ಭೇದ. "ಆಷೋಡಶಿ ಭವೇದ್ಬಾಲಾ ತರುಣಿ ತ್ರಿಶತಾ ಮತಾ । ಪಂಚಪಂಚಾಶತಿ ಪ್ರೌಢಾ ಭವೇದ್ವೃದ್ಧಾ ತತ: ಪರಮ್" ।

**ಪ್ರೌಢಿ ಸೌಧಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಿರಿಮೆ, ಗೌರವ, ಮರ್ಯಾದೆ. ಪ್ರ + वह (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) । ವೃದ್ಧಿ: (ವಾಂ ೬-೧-೮೯) । 2. ಧೈರ್ಯ, ಕೆಚ್ಚು. 3. ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. 4. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವಿಕೆ. 5. ವೃದ್ಧಿ

ಹೊಂದಿರುವಿಕೆ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವಿಕೆ. 6. (ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ) ವಿವಕ್ಷಿತವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವಿಕೆ. "ವಿವಕ್ಷಿತಾರ್ಥ-ನಿರ್ವಾಹ: ಕಾವ್ಯೇ ಪ್ರೌಢಿರೀತಿ ಸ್ಮೃತಾ" । 7. ಕಾವ್ಯ ರಚನೆಯ ಒಂದು ವೈಚಿತ್ರ್ಯ. ಒಂದೇ ಪದದಲ್ಲಿ ಒಂದು ವಾಕ್ಯದ ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ ಅರ್ಥ ಬರುವಂತೆ ಪದಪ್ರಯೋಗ, ಒಂದು ವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಪದದ ಅರ್ಥವನ್ನು ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳುವುದು. ಇದು ಕಾವ್ಯರಚನೆಯಲ್ಲಿ ಕಂಡು ಬರುವ ಒಂದು ವೈಚಿತ್ರ್ಯ. ಇದಕ್ಕೆ ವ್ಯಾಸ ಮತ್ತು ಸಮಾಸಗಳೆಂದು ಹೆಸರು. "ಪದೇ ವಾಕ್ಯಾರ್ಥರಚನಾ ವಾಕ್ಯಾರ್ಥೇ ಚ ಪದಾಭಿಧಾ । ಪ್ರೌಢಿವ್ಯಾಸಿಸಮಾಸೌ ಚ ಸಾಂಭಿಪ್ರಾಯತ್ವಮಸ್ಯ ಚ" । 8. ಅಭಿಮಾನ, ಹೆಮ್ಮೆ.

**ಪ್ರೌಢಿತ್ವ ಸೌಧಿತ್ವ** (ನಂ) 1. (ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ) ವಿವಕ್ಷಿತವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವಂತೆ ಪದಪ್ರಯೋಗದ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. ಪ್ರೌಢಿ "ತ್ವ:" (೪-೧-೧೧೯) । "ಯತ್ಪ್ರೌಢಿತ್ವಮುದಾರತಾ ಚ ವಚಸಾಂ ಯಚ್ಚಾರ್ಥತೋ ಗೌರವಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೦ । 2. ಹೆಚ್ಚು ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಒಂದು ಪದದಲ್ಲೇ ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಹೇಳುವುದು ಮತ್ತು ಸಣ್ಣ ವಿಷಯವನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಿ ದೊಡ್ಡ ವಾಕ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಹೇಳುವುದು ಈ ರೀತಿಯ ಒಂದು ವೈಚಿತ್ರ್ಯ.

**ಪ್ರೌಣ ಸೌಣ** (ವಿಂ) ಜಾಣ, ನಿಪುಣ.

**ಪ್ರೌಠಪದ ಸೌಷ್ಠಪದ** (ಪುಂ) 1. ಭಾದ್ರಪದಮಾಸ. ಪ್ರೌಠಪದಾಭಿ: ತಕ್ಷತ್ರವಿಶೇಷ: ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ ಯಸ್ಮಿನ್ ಮಾಸೇ "ಅಞ್" (೪-೨-೨೧) । 2. -ಪದಾ -ಪದಾ. ಪೂರ್ವಾ ಭಾದ್ರಾ ಮತ್ತು ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರಾ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು. 3. -ಪದೀ -ಪದೀ. ಭಾದ್ರಪದಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ.

**ಪ್ರೌಹ ಸೌಹ** (ಪುಂ) ತರ್ಕ, ಊಹೆ. ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಕೂಡ: । ವೃದ್ಧಿ: (ವಾಂ ೬-೧-೮೯) ।

**ಪ್ಲಕ್ಷ ಪ್ಲಕ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಜುಲ್ಲಿ ಗಿಡ. 2. ಬಸುರಿ ಮರ. 3. ಅರಳಿ ಮರ. 4. ಒಂದು ದ್ವೀಪ. "ಪ್ಲಕ್ಷೋ ಜದೀಗದ-ಭಾಂಡದ್ವೀಪಭಿತ್ಕುಂಜರಾಶನೇ" ಮೇದಿಂ ।

**ಪ್ಲಕ್ಷದ್ವೀಪ ಪ್ಲಕ್ಷದ್ವೀಪ** (ಪುಂ) ಸಪ್ತದ್ವೀಪಗಳಲ್ಲೊಂದು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ದ್ವೀಪ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].

**ಪ್ಲವ ಪ್ಲವ** (ಪುಂ) 1. ತೆಪ್ಪ, ಜನರನ್ನು ನೀರಿಸ ಮೇಲೆ ದಾಟಿಸಲು ನೀರಿನಲ್ಲಿ ತೇಲಿಕೊಂಡು ಹೋಗುವಂತೆ ಬೊಂಬು ಅಥವಾ ಮರದ ದಿಮ್ಮಿಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟಿದ ಹರಿಗೋಲು. ಪ್ಲವತೇಜನೇ-ಪ್ಲವ್ (ಗತೌ) ಕರಂ "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭) । "ಸುಸುಕ್ಷಮೇಣಾಪಿ ರಂಧ್ರೇಣ ಪ್ರವಿಷ್ಯಾಮ್ಯಂತರಂ ರಿಪು: । ನಾಶಯೇಚ್ಚ ಶನೇ: ಪಶ್ಚಾತ್ಪ್ಲವಂ ಸಲಿಲಪೂರವತ್" ಪಂಚತಂ ೨-೪೪ । "ಸರ್ವಂ ಜ್ಞಾನಪ್ಲವೇನೈವ ವೃಜಿನಂ ಸಂತರಿಸ್ಯಸಿ"



ಗೀತಾ ೪-೩೬। 2. ತೇಲುವುದು, ಈಜುವುದು. 3. ಸ್ನಾನ. 4. ದಾಟುವುದು. "ಸ್ಮರಯೌವನಯೋಃ ಖಲು ದ್ವಯೋಃ ಲಲವಕುಮ್ಮಭಿ ಭವತಃ ಕುಚಾವುಭಿ" ನೆಪಂ ೨-೩೧। 5. ಹಾರುವುದು, ನೆಗೆಯುವುದು. 6. ಪ್ರವಾಹ. 7. ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. 8. ವಾನರ, ಕಪಿ. 9. ಶತ್ರು, ವೈರಿ. 10. ಮೀನಿನ ಬಲೆ. 11. ಶ್ವಪಚ. 12. ನೀರುಕೋಳಿ. 13. ಅಂಜೂರದ ಗಿಡ. 14. ಕುಲಕ, ಐದು ಮತ್ತು ಹೆಚ್ಚು ಶ್ಲೋಕಗಳು ಏಕಾನ್ವಯ ಹೊಂದುವಿಕೆ. "ದ್ವಾಮ್ಯಾ ಯುಗ್ಮಮಿತಿ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ತ್ರಿಮಿಃ ಶ್ಲೋಕೈವಿಶೇಷಕಮ್। ಕಾಲಾಪಕಂ ಚತುರ್ಮಿಃ ಸ್ಯಾತ್ ತದ್ಧರ್ವಂ ಕುಲಕಂ ಮತಮ್"। 15. ಮೇಷ, ಟಗರು. 16. ಹಿಂತಿರುಗುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು. 17. ಪ್ರೇರಿಸುವುದು, ಒತ್ತಾಯ ಪಡಿಸುವುದು. 18. ಜುಲಿಗಿಡ. 19. ಶಬ್ದ. 20. ಇಳಿಜಾರು ಪ್ರದೇಶ. 21. ಜಲಾಂತರ, ನೀರಿನ ಮಧ್ಯಭಾಗ. 22. ಮೈಚ್ಚುಚಾತಿ. (ನಂ) 23. ತುಂಗಮುಸ್ಸೆ, ಕೊನ್ನಾರಿಯ ಒಂದು ಭೇದ. (ವಿಂ) 24. ನೆಗೆಯುವ, ಹಾರುವ. 25. ತೇಲುವ. "ಲಲವಃ ಸ್ಯಾತ್ ಲಲವೇನ ಖೇಲೇ ಭೇಕೇವೈ ಶ್ವಪಚೇಽಪಿ ಚ। ಶಾಖಾಮೃಗೇ ಚ ಕುಲಕೇ ಪ್ರವಣೇ ಪರ್ಕಡೀದ್ರುಮೇ। ಕಾರಣದವಾಸ್ಯವಿಹಗೇ ಶಬ್ದೇ ಲ್ಲುತಗತೌ ಪುಮಾನ್। ಕೇವರ್ತೀಮುಸ್ತಕೇ ಗಂಧತೃಣೇಽಪಿ ಸ್ಥಾಪ್ತಪು- ಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ।

**ಲಲವಕ ಪ್ಲವಕ (ಪುಂ)** 1. ಕತ್ತಿಯ ಅಲುಗಿನ ಮೇಲೆ ನರ್ತನ ಮಾಡುವವನು. 2. ಶ್ವಪಚ. 3. ಭೇಕ, ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. 4. ಪ್ಲಕ್ಷವೃಕ್ಷ, ಅಂಜೂರದ ಗಿಡ.

**ಲಲವಗ ಪ್ಲವಗ (ಪುಂ)** 1. ವಾನರ, ಕಪಿ. ಲಲವೇನ ಗಚ್ಛತಿ— ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಙಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)। "ಸಹಸಿ ಲಲವಗೈರಪಾಸಿತಂ ನ ಹಿ ಗುಜ್ಜಾಫಲಮೇತಿ ಸೋಷಮತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೬-೪೭। 2. ಭೇಕ, ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. 3. ಶಿರೀಷ ವೃಕ್ಷ, ಬಾಗೆಮರ. 4. ನೀರಿನಮೇಲೆ ತೇಲಾಡುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹಕ್ಕಿ, ಮುಳುಗು ಹಕ್ಕಿ. 5. ಅರಣ್ಯ, ಸೂರ್ಯನ ಸಾರಥಿ. "ಲಲವಗೋ ವಾನರೇ ಭೇಕೇ ಸಾರಥೌ ಚೋಣದೀಧಿತೇಃ" ಮೇದಿಂ।

**ಲಲವಗತಿ ಪ್ಲವಗತಿ (ಪುಂ)** ಭೇಕ, ಕಪ್ಪೆ. ಲಲವೇನ ಗತಿಯಸ್ಯ।

**ಲಲವಜ್ಜ ಪ್ಲವಂಗ (ಪುಂ)** 1. ವಾನರ, ಕಪಿ. ಲಲವೇನ ಗಚ್ಛತಿ— ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಖಚ್" (೩-೨-೪೭)। ಖಚೋ ವಾ ಡಿತ್ತವಮ್ (ವಾಂ ೩-೨-೩೮)। ಡಿತ್ತವಾಭಾವೇ ಲಲವಂಗಮಃ ಪ್ಲವಂಗಮಃ. "ಸಂಚೇರಾತ್ಮಾನ ಇವಾಪರಂ ಕ್ಷಣಾತ್ಕಾಮಾರುಹಂ ದೇಹಮಿವ ಲಲವಜ್ಜಮಾಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೫೫। 2. ಜಿಂಕೆ. 3. ಅಂಜೂರದ ಗಿಡ. 4. ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. "ಲಲವಜ್ಜಮಸ್ತು ಮಂಡುಕೇ ತಥಾ ಶಾಖಾಮೃಗೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ।

**ಲಲಾಕ್ಷ ಪ್ಲಕ್ಷ (ನಂ)** 1. ಜುಲಿ ಹಣ್ಣು. ಲಲಾಕ್ಷಸ್ಯ ಕಲಮ್ "ಖಣ್" (೪-೩-೧೬೪)। 2. ಜುಲಿ ಮರದ ತೊಗಟೆ ಬೇರು ಎಲೆ ಮುಂತಾದುದು. ಲಲಾಕ್ಷಸ್ಯ ವಿಕಾರಃ ಅವಯವೋ ವಾ "ಖಣ್" (೪-೩-೧೩೫)। 3. ಜುಲಿ ಮರಗಳ ಸಮೂಹ. ಲಲಾಕ್ಷಸ್ಯ ಸಮೂಹಃ "ಖಣ್" (೪-೨-೩೭)। (ವಿಂ) 4. ಜುಲಿ ಮರದ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಲಲಾಕ್ಷಸ್ಯೇದಮ್ "ಖಣ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ಲಲವನ ಪ್ಲವನ (ನಂ)** 1. ತೇಲುವುದು, ಈಜುವುದು. ಲ್ಲುಡ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಹಾರುವುದು. 3. ನೆಗೆಯುವುದು. 4. ದಾಟುವುದು. 5. ಸ್ನಾನ. "ಶಯನಂ ಚಾಸನಂ ವಾಪಿ ನೇಚ್ಛೇದ್ವಾಪಿ ದ್ವಯೋತ್ತರಮ್। ನಾಮ್ನಾತಪೌ ನ ಲಲವನಂ ನ ಯಾನಂ ನಾಪಿ ವಾಹನಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬-೪೯೦। 6. ಇಳಿಜಾರು. 7. ಮಿತಿಮೀರಿದ ಪ್ರವಾಹ, ಜಲಪ್ರಳಯ. 8. ಕುದುರೆಯ ಒಂದು ವಿಧ ನಡೆಗೆ, ಕುದುರೆಯ ನೆಗೆತ.

**ಲಲಾವಿಕ ಪ್ಲಾವಿಕ (ವಿಂ)** ತೆಪ್ಪದಿಂದ ಹೊಳೆಯನ್ನು ದಾಟುವವನು. ಲಲವೇನ ತರತಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೫)।

**ಲಲಾವನ ಪ್ಲಾವನ (ನಂ)** 1. ಸ್ನಾನ ಮಾಡಿಸುವುದು. ಲ್ಲುಡ್ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಲಲಾವನಾರ್ಥಂ ನರಶ್ರೇಷ್ಠ ಪುಣ್ಯೇನ ಸಲಿಲೇನ ಹ" ಭಾಂ। 2. ಮಿತಿಮೀರಿದ ಪ್ರವಾಹದಿಂದ ಹರಿಯುವುದು, ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಕೊಚ್ಚಿ ಕೊಂಡು ಹೋಗುವಂತೆ ಹರಿಯುವುದು. 3. ಜಲಪ್ರಳಯ.

**ಲಲಾವಯತ್ ಪ್ಲಾವಯತ್ (ವಿಂ)** 1. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ತೇಲಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಸೇಚನೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಸಿಂಪಿಸುತ್ತಿರುವ. ಲ್ಲುಡ್ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಕ್ಷೋಭಯನ್ ಜಲನಿಧಿ- ನನುವೇಲಂ ಲಲಾವಯಂಶ್ಚ ವಸುಧಾಂ ಪ್ರಜಹರ್ಷ" ಯಾದಂ ೨೧-೪೭।

**ಲಲಾವಿತ ಪ್ಲಾವಿತ (ವಿಂ)** 1. ನೀರು ಮೊದಲಾದ ದ್ರವ ದ್ರವ್ಯದಲ್ಲಿ ಅದ್ದಲ್ಪಟ್ಟು, — ತೋಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಲ್ಲುಡ್ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಸಿಂಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಸೇಚನೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. "ಭೂಮಂಜ- ಸಂಕ್ಷೋಭವಿದಾರಿತೋಷ್ಠಿಕಾ ಗಲನ್ಮಘುಲಾವಿತದ್ವರವತ್ಸಮಿ" ಮಾಘಂ ೧೨-೨೬। 3. ಪ್ರವಾಹದಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ಪುರೀ ಸಾ ವಾಸುದೇವಸ್ಯ ಲಲಾವಿತಾ ದಧಿನಾ ತತಃ" ದೇವಿಭಾಂ।

**ಲಲಾವಿನ್ ಪ್ಲಾವಿನ್ (ವಿಂ)** ಪ್ರವಹಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹರಿಯುತ್ತಿರುವ. ಲಲವತೇ—ಲ್ಲುಡ್ (ಗತೌ) "ಣಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)।



“ತಿಯ್ಯಕ್ಕಟಪ್ಲಾವಿಮದಾಂಬುನಿನ್ಗಾವಿಪುರ್ಯಮಾಣಶ್ರವಣೋದರ  
ದ್ವಿಪಾ:” ಮಾಘಂ ೧೨-೪೭.

ಪ್ಲಿ(ಪ್ಲಿ)ಹನ್ ಪ್ಲಿ(ಪ್ಲಿ)ಹನ್ (ಪುಂ) ಹೊಟ್ಟೆಯ  
ಎಡಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ ಮಾಂಸಗ್ರಂಥಿ. ಪ್ಲಿಹ (ಗತೌ)  
“ಕನಿನ್” (ಉಂ ೧-೧೫೭) ನಿಪಾಂ. ಇದು ಗುಲ್ಮ  
ರೋಗ. [“ಗುಲ್ಮ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಪ್ಲಿಹಘನ ಪ್ಲಿಹಘನ (ಪುಂ) ಮುಳ್ಳು ಮುತ್ತುಗದ ಗಿಡ.  
ಪ್ಲಿಹಾನಂ ಹನ್ತಿ—ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) “ಠಕ್” (೩-೨-೫೩).

ಪ್ಲಿಹಶತ್ರು ಪ್ಲಿಹಶತ್ರು (ಪುಂ) ಮುಳ್ಳು ಮುತ್ತುಗದ ಗಿಡ.  
ಪ್ಲಿಹ: ಶತ್ರು:.

ಪ್ಲಿಹಾ ಪ್ಲಿಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊಟ್ಟೆಯ ಎಡಪಾರ್ಶ್ವದಲ್ಲಿರುವ  
ಮಾಂಸಗ್ರಂಥಿ. ಪ್ಲಿಹ (ಗತೌ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೫)  
ಪೂಂ ದೀರ್ಘ: ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಠಾಪ್”.

ಪ್ಲುಕ್ಷಿ ಪ್ಲುಕ್ಷಿ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಪ್ಲುಕ್ಯತಿ—ಪ್ಲುಕ್  
(ದಾಹೇ) “ಕ್ಸಿ:” (ಉಂ ೩-೧೫೫). 2. ಸ್ನೇಹ, ತೈಲ.  
3. ಮನೆಯನ್ನು ಸುಡುವುದು.

ಪ್ಲುತ ಪ್ಲುತ (ಪುಂ) 1. ಪ್ಲುತವರ್ಣ, ಮೂರು ಮಾತ್ರಾ  
ಕಾಲದ ವರ್ಣ. ಪ್ಲುತಂ ಪ್ಲುತವದ್ಗತಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಅಚ್”  
(೫-೨-೧೨೭). ಏಕಮಾತ್ರಾಕಾಲದ ವರ್ಣವು ಹ್ರಸ್ವ.  
ದ್ವಿಮಾತ್ರಾಕಾಲದ ವರ್ಣವು ದೀರ್ಘ. ತ್ರಿಮಾತ್ರಾಕಾಲದ  
ವರ್ಣವು ಪ್ಲುತ. “ಏಕಮಾತ್ರಾ ಭವೇದ್ಧ್ರಸ್ವ: ದ್ವಿಮಾತ್ರಾ ದೀರ್ಘ  
ಉಚ್ಯತೇ. ತ್ರಿಮಾತ್ರಾಸ್ತು ಪ್ಲುತೋ ಜ್ಞೇಯೋ ವ್ಯಂಜನಂ ತ್ವರ್ಣಮಾತ್ರಕಮ್”  
2. ಕುದುರೆಯ ಐದು ವಿಧ ನಡೆಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ವಿಧ.  
ಕುದುರೆಯ ನೆಗೆತ. 3. ತೀರ್ಯಕ್ ಗಮನ, ಅಡ್ಡಲಾಗಿ  
ಸಂಚರಿಸುವುದು. “ತಿಯ್ಯಚ್ಚಸ್ತಿಯ್ಯಗೇವಾಸ್ಯ ಪೇತುರ್ವಕ್ಪ್ಲುತಾ  
ಮೃಗಾ:” ಕಥಾಸಂ. (ವಿಂ) 4. ನೆನೆಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೇಚನೆ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. “ಕ್ಷಿತಿಸ್ತಲಶಯನಾಂತಾದ್ರುತಿಸ್ತಂ ದಾನಪಚ್ಚಪ್ಲುತ-  
ಬಹುಲಶರೀರಂ ಶಾಯಯತ್ಯೇಷ ಭುಯ:” ಮಾಘಂ ೧೧-೭. 5.  
ತೊಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. “ಪ್ಲುತಮಿವ ಶಿಶಿರಾಂಶೋರಂಶುಭಿರ್ಯನ್ನಿಶಾಸು  
ಸ್ಫಟಿಕಮಯಮರಾಜದ್ರಾಜತಾದ್ರಿಪ್ರಲಾಭಮ್” ಮಾಘಂ ೧೧-೫೩.  
6. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ. “ಪ್ರಾಪೇ ಕೀರ್ತಿಪ್ಲುತಮಹಿಮಾಪ್ಲಾಪಾಃ-

ನವದತ್ತಾ” ಮಾಘಂ ೧೧-೪೮. 7. ಚಲಿಸುವ, ಆಡುವ.

“ಸೌಧಸಜ: ಪ್ಲುತಪತಾಕತಯಾಭಿನಿನ್ಯು:” ನೆಪಂ ೧೧-೬.

ಪ್ಲುತಿ ಪ್ಲುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಾರುವುದು. 2. ನೆಗೆಯುವುದು.  
3. ದಾಟುವುದು. ಪ್ಲುತ್ (ಗತೌ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪).  
4. ಪ್ರವಾಹ. 5. ಕುದುರೆಯ ಒಂದು ವಿಧ ನಡೆಗೆ.  
6. ಮೂರು ಮಾತ್ರಗಳ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ವರ್ಣಗಳ  
ಉಚ್ಚಾರಣೆ.

ಪ್ಲುಷ ಪ್ಲುಷ (ವಿಂ) ದಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ಲುಷ  
(ದಾಹೇ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨). “ಪ್ಲುಷ: ಸ್ವೇಶ್ವಾಪರೋಪಿ:  
ಸಹ ಸ ಹಿ ಮಕರೇಣಾತ್ಮಭು: ಕೇತುನಾಽಭುತ್” ನೆಪಂ ೮-೧೦೫.

ಪ್ಲುತ ಪ್ಲುತ (ನಂ) ಶಸ್ತ್ರಕ್ರಿಯೆಗೆ ಬೇಕಾದ ವಸ್ತು, ಹತ್ತಿ  
ಬಟ್ಟೆ, ಮೊದಲಾದವು.

ಪ್ಲುಷ ಪ್ಲುಷ (ಪುಂ) ದಹಿಸುವುದು, ಸುಡುವುದು. ಪ್ಲುಷ  
(ದಾಹೇ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮). ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೫). ಪ್ಲುಷಣಮ್ ಪ್ಲುಷಣಮ್.

ಪ್ಲುಷಣ ಪ್ಲುಷಣ (ನಂ) 1. ದಹಿಸುವುದು, ಸುಡುವುದು.  
ಪ್ಲುಷ (ದಾಹೇ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫). (ವಿಂ)  
2. ದಹಿಸುವ, ಸುಡುವ. ಪ್ಲುಷ (ದಾಹೇ) ಕರ್ತಂ “ಲ್ಯು:”  
(೩-೧-೧೩೪). “ತಾರ್ತೀಯೀಕಂ ಪುರಾಸ್ತದವತು ಮದನಪ್ಲುಷಣಂ  
ಲೋಚನಂ ವ:” ಮಾಲತೀಂ ೧-೪.

ಪ್ಲು ಪ್ಲು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಹಾರ, 2. ಭಕ್ಷಣ. ಪ್ಲು (ಭಕ್ಷಣಂ)  
“ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬). “ಪ್ಲು ವೀತಿರ್ಭಕ್ಷಣಂ ಚ ಸಾ”  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಪ್ಲುತ ಪ್ಲುತ (ವಿಂ) ಭಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟ, ಊಟ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ಲು (ಭಕ್ಷಣಂ) “ಕ್ತ:” (೩-೧-೧೦೨).

ಪ್ಲುತ ಪ್ಲುತ (ನಂ) ಭೋಜನ, ಊಟ. ಪ್ಲು (ಭಕ್ಷಣಂ)  
ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫).

ಪ್ಲು ಪ್ಲು (ಪುಂ) ಒಂದು ಅಹಾರ, ಒಂದು ರೂಪ.

ಪ್ಲುರ ಪ್ಲುರ (ವಿಂ) 1. ಒಂದು ರೂಪವುಳ್ಳ, ಒಂದು ಅಹಾರ  
ವುಳ್ಳ. 2. ಸುಂದರವಾದ, ರಮ್ಯವಾದ, ಸೊಗಸಾದ.



# ಫ

ಫ ಫ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ “ಫ” ವರ್ಗದ ಎರಡನೆಯ ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಂತರಸ್ವಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಒಪ್ಪಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಮಹಾಪ್ರಾಣವರ್ಣ. “ಕಾದಯೋ ಮಾವಸಾನಾಃ ಸ್ಪರ್ಶಾಃ” | “ಸ್ಪೃಷ್ಟಂ ಪ್ರಯತನಂ ಸ್ಪರ್ಶನಾಮ್” | “ತುಪ್ಪಧ್ವಾನಿ-ಯಾನಾಮೋಷಿ” ಸಿಂ ಕೌಂ |

ಫ ಫ (ಪುಂ) 1. ಫಲಭಾಗ. 2. ಝಂಝಮಾರುತ, ಬಿರುಗಾಳಿ. 3. ಆಕಳಿ. 4. ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವುದು, ಅಧಿಕವಾಗುವುದು. (ನಂ) 5. ಕಠಿನವಾದ ಮಾತು, ಕೋಪದ ಮಾತು. 6. ಪೂತಾರ, ಊದುವುದು. 7. ನಿಷ್ಪಲವಾದ ಮಾತು. 8. ಕಫ, ಶ್ಲೇಷ್ಮ. 9. ವಾರ. 10. ಆಹ್ವಾನ, ಕರೆ. “ಕಫೇ ವಾರೆ ಫಕಾರಃ ಸ್ಯಾತ್ ತಥಾಹ್ವಾನೇ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ | ಫಕಾರೇಽಪಿ ಚ ಫಃ ಪ್ರೋಕ್ತಃ ತಥಾ ನಿಃಫಲಭಾವಣೇ” ಏಕಾಂ | 11. ಯುದ್ಧ. 12. ವಾರಣ, ತಡೆಯುವುದು.

ಫಕ ಫಕ್ (ಪುಂ) ಹೆಳವ, ಕುಂಟ.

ಫಕಿಕಾ ಫಕಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿಷಯ ನಿರ್ಣಯಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಪೂರ್ವಪಕ್ಷ. 2. ಅಸದ್ಭಾವಹಾರ, ಕುತರ್ಕ, ವಿತಂಡಾವಾದ. 3. ಗ್ರಂಥ. “ಫಣಿಭಾಷಿತಭಾಷ್ಯಫಕಿಕಾ-ವಿಷಮಾ ಕೃಷ್ಣಲನಾಮವಾಪಿತಾ” ನೆಫಂ ೨-೯೫ | 4. ಠಕ್ಕು, ಮೋಸ.

ಫಜ್ಜಿಕಾ ಫಂಜಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭಾರಂಗಿ ಮರ. 2. ತೀಟಕಸಂಧಿ. 3. ದೇವತಾಳೆ ಮರ.

ಫಜ್ಜಿ ಫಂಜೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭಾರಂಗಿ ಗಿಡ.

ಫಡ್ ಫಟ್ (ಅವ್ಯಂ) ಮಂತ್ರಗಳನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸುವಾಗ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ಅಸ್ತ್ರ ಮಂತ್ರ. [ಅಂಗನ್ಯಾಸ, ಕರನ್ಯಾಸ, ಪೂಜಾಸಾಮಗ್ರಿಗಳ ಪ್ರೋಕ್ಷಣೆ, ನೈವೇದ್ಯದ ಪ್ರೋಕ್ಷಣೆ, ಹೋಮಾಗ್ನಿಯ ಆವಾಹನ ಮುಂತಾದ ಸಮಯಗಳಲ್ಲಿ ಈ ಮಂತ್ರದ ಉಪಯೋಗ.]

ಫಟ ಫಟಿ (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಾವಿನ ಹೆಡೆ. ಸ್ಕುಟ (ವಿಕಸನೆ) “ಅವ್” (೩-೧-೧೩೪) | ಪೃಷಂ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಟಾಪ್” | ಫಟಾ ಫಟಾ.

ಫಟಾ ಫಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಾವಿನ ಹೆಡೆ. ಫಟ “ಟಾಪ್” (೪-೧-೪) | “ನಿವಿಣೇಣಾಪಿ ಸರ್ಪೇಣ ಕರ್ತವ್ಯಾ ಮಹತೀ ಫಟಾ | ವಿಷಂ ಭವತು ಮಾ ವಾಸ್ತು ಫಟಾಟೋಪೋ ಭಯಕ್ಷರಃ” ಪञ्ಚತಂ ೧-೨೨೫ | 2. ಕೈತವ, ಕಪಟ. 3. ದಂತ, ಹಲ್ಲು. “ಫಟಾ ತು ಫಣದಂಭಯೋಃ” ವಿಶ್ವಂ | “ಫಟಾ ತು ಫಣದಂತಯೋಃ” ಮೇದಿಂ | “ಫಟಾ ತು ಕೇತವೇ ಫಣೇ” ಹೇಮಂ |

ಫಣ ಫಣಿ (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಾವಿನ ಹೆಡೆ. ಫಣ (ಗತೌ) “ಅವ್” (೩-೧-೧೩೪) | “ಗಾಮಧಾಸ್ಯತ್ ಕಥಂ ನಾಗೋ ಮೃಗಾಲಮೃದುಭಿಃ ಫಣಿಃ” ಕುಮಾಂ ೬-೬೮ | “ಸ್ಕಟಾಢಾಂ ತು ಫಣಾ ದ್ವಯೋಃ” ಅಮಂ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಫಣಾ ಫಣಾ. “ಜ್ವಲತಿ ಚಲಿತೇನ್ವನೋಽಗ್ನಿಃ ವಿಪ್ರಕೃತಃ ಪನ್ನಗಃ ಫಣಾಂ ಕುರುತೇ” ಶಾಕುಂ ೬-೩೦ |

ಫಣಾಧರ ಫಣಾಧರ (ಪುಂ) ಸರ್ಪ, ಹಾವು.

ಫಣಾಮಣಿ ಫಣಾಮಣಿ (ಪುಂ) ಹಾವಿನ ಹೆಡೆಯ ಮೇಲಿರುವ ರತ್ನ.

ಫಣಾಮಂಡಲ ಫಣಾಮಂಡಲ (ನಂ) ಗುಂಡಾಗಿ ಸುತ್ತಿ ಕೊಂಡಿರುವ ಹಾವಿನ ಮೈ. “ತತ್ಫಣಾಮಂಡಲೋದ್ಧಿಮಗ್ನಿ-ದ್ಯೋತಿತವಿಗ್ರಹಮ್” ರಘುಂ ೧೦-೭ |

ಫಣಿಜ್ಜಕ ಫಣಿಜ್ಜಕ (ಪುಂ) ಮರಗ. ಫಣಿನಮುಜ್ಜತಿ—ಉಜ್ಜ (ಉತ್ಸರ್ಗ) “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) | ಪೃಷಂ |

ಫಣಿತಿ ಫಣಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾಕ್ಕು, ಮಾತು. “ಮಧುಮಯ-ಫಣಿತಿಣಾಂ ಮಾರ್ಗದರ್ಶಿ ಮಹರ್ಷಿಃ” ಚಂ ರಾಂ | “ಗೀರ್ಣಿತಿ-ಗಿರಾ ವಾಚಾ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಫಣಿನ್ ಫಣಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಫಣಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಛಿತಿಃ” (೪-೨-೧೧೬) | “ಅಥ ಪ್ರಯತ್ನೋತ್ತಮಿತಾನ-ಮತ್ಫಣೈರ್ಭೃತೇ ಕಥಂಚಿತ್ ಫಣಿಣಾಂ ಗಣೇರವಃ” ಮಾಧಂ ೧-೧೩ | 2. ಪತಂಜಲಿಮಹರ್ಷಿ, ವ್ಯಾಕರಣಮಹಾಭಾಷ್ಯವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಆದಿಶೇಷನ ಅವತಾರವಾದ ಒಬ್ಬ ಮುನಿ. “ಫಣಿಭಾಷಿತಭಾಷ್ಯಫಕಿಕಾ” ನೆಫಂ ೨-೯೫ |

ಫಣಿಪತಿ ಫಣಿಪತಿ (ಪುಂ) ವಾಸುಕಿ, ಆದಿಶೇಷ. ಫಣಿಣಾಂ ಪತಿಃ |

ಫಣಿಪ್ರಿಯ ಫಣಿಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಫಣಿಣಾಮ್ ಪ್ರಿಯಃ | ಸರ್ಪಗಳಿಗೆ ವಾಯುವು (ಆಹಾರವಾದುದರಿಂದ) ಪ್ರಿಯವಾದುದು.

ಫಣಿಫೇನ ಫಣಿಫೇನ (ಪುಂ) ಅಫೀಮು.

ಫಣಿಭಾಷ್ಯ ಫಣಿಭಾಷ್ಯ (ನಂ) ವ್ಯಾಕರಣ ಮಹಾಭಾಷ್ಯ, ಪಾಣಿನಿ ಮಹರ್ಷಿಯ ವ್ಯಾಕರಣ ಸೂತ್ರಗಳಿಗೆ ಪತಂಜಲಿ ಮುನಿಯು ರಚಿಸಿದ ಭಾಷ್ಯ.

ಫಣಿಭುಜ್ ಫಣಿಭುಜ್ (ಪುಂ) 1. ವೈನತೇಯ, ಗರುಡ. ಫಣಿನಂ ಭುಜ್ಕತೇ—ಭುಜ. “ಕಿವಪ್” (೩-೨-೭೬) | 2. ಮಯೂರ, ನವಿಲು.



**ಫಣಿಮುಖ ಫಣಿಮುಖ** (ನಂ) ಕನ್ನಗತ್ತರಿ, ಗೋಡೆಯಲ್ಲಿ ಕನ್ನ ಕೊರೆಯಲು ಕಳ್ಳರು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ಅಯುಧ. ಫಣಿನ ಇವ ಮುಖಮಸ್ಯ |

**ಫಣಿವಲ್ಲಿ ಫಣಿವಲ್ಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾಗವಲ್ಲಿ, ವೀಳ್ಯದಲೆಯ ಬಳ್ಳಿ.

**ಫಣಿಶಾಯಿನ್ ಫಣಿಶಾಯಿನ್** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು.

**ಫಣಿಹನ್ತ್ರಿ ಫಣಿಹನ್ತ್ರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸರ್ಪಾಕ್ಷಿ; ಈಶ್ವರಿ ಹಂಚು.

**ಫಣಿನ್ದ್ರ ಫಣಿನ್ದ್ರ**, -**ಈಶ್ವರ - ಈಶ್ವರ** (ಪುಂ) ಆದಿತೇಷ. ಅನನ್ತ್, ಫಣಿನಾಮಿನ್ದ್ರ: ಈಶ್ವರೋ ವಾ |

**ಫಂಡ ಫಂಡ** (ಪುಂ) ಜಠರ, ಹೊಟ್ಟೆ. ಫಣ (ಗತೌ) "ಫ:" (ಽಽಂ ೧-೧೧೩) |

**ಫರ ಫರ** (ನಂ) ಚರ್ಮದ ಫಲಕ, ಗುರಾಣಿ.

**ಫರ್ಕರಿಕ ಫರ್ಕರಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಅಂಗೈ, ಕರತಲ. (ನಂ) 2. ಕಿಸಲಯ, ಚಿಗುರು. 3. ಮಾರ್ದವ, ಮೃದು ವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಮೃದು. ಸ್ಫುರ (ಸ್ಫುರಣೆ) "ಈಕನ್" ಫರ್ಕರ-ದೇಶಶ್ಚ (ಽಽಂ ೪-೨೦) | "ಫರ್ಕರಿಕಶ್ಚಪೇಡೇ ಸ್ಯಾತ್ ಫರ್ಕರಿಕ ತು ಮಾರ್ದವೇ" ಮೇದಿಂ |

**ಫಲ ಫಲ** (ನಂ) 1. ಹಣ್ಣು. ಫಲ (ನಿಷ್ಪತ್ತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ವನಾನ್ತರಾದ್ಭಾವೃತ್ತಿ: ಸಮಿತುಕುಶಲಾಹರೇ:" ರಘುಂ ೧-೪೯ | 2. ಎಳೆಗಾಯಿ. "ಽದೇತಿ ಪೂರ್ವ ಕುಸುಮಂ ತತ: ಫಲಮ್" ಶಾಕುಂ ೭-೩೦ | 3. ಬೆಳೆ, ಫಸಲು. "ತ್ವಯಾಯತಂ ಕೃಷಿಫಲಮಿತಿ ಭೂವಿಲಾಸಾನಭಿಜ್ಞೇ:" ಮೇಘಂ ೧-೧೬ | 4. ಲಾಭ, ಸಂಪಾದನೆ. "ತ್ಯಾಜಿತೇ: ಫಲಮುತ್ಸಾತೇ-ಭಗನೇಶ್ಚ ಬಹುಶಾ ನೃಪೇ:" ರಘುಂ ೪-೩೩ | "ಶಾಂತಮಿದಮಾಶ್ರಮಪದಂ ಸ್ಫುರತಿ ಚ ಬಾಹು: ಕುತ: ಫಲಮಿಹಾಸ್ಯ" ಶಾಕುಂ ೧-೧೪ | 5. ಕಾರ್ಯದ ಫಲ, ಪರಿಣಾಮ, ಫಲಿತಾಂಶ. "ಅತ್ಯುತ್ಕಟೇ: ಪುಣ್ಯಪಾಪೇರಿಹೈವ ಫಲಮಶ್ನುತೇ" ಹಿತೌಂ ೧-೭೩ | 6. ಪ್ರಯೋಜನ, ಗುರಿ. "ಕಿಮಪೇಕ್ಷ್ಯ ಫಲಂ ಪಯೋಧರಾನ್ ಧ್ವನತ: ಪ್ರಾರ್ಥಯತೇ ಮೃಗಾಧಿಪ:" ಕಿರಾಂ ೨-೨೧ | 7. ಪ್ರತಿಫಲ, ಮುಯ್ಯಿ. "ಫಲಮಸ್ಯೋಪಹಾಸಸ್ಯ ಸದಾ: ಪ್ರಾಪ್ಸ್ಯಸಿ ಪಶ್ಯ ಮಾಮ್" ರಘುಂ ೧೨-೩೭ | 8. ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ, ಕೆಲಸವು ಕೈಗೊಂಡುವುದು, ಫಲನಿಷ್ಪತ್ತಿ. "ಬ್ರುವತೇ ಹಿ ಫಲೇನ ಸಾಧವೋ ನ ತು ಕಠೇನ ನಿಜೋಪಯೋಗಿತಾಮ್" ನೆಷಂ ೨-೪೮ | 9. ಮೂಲಧನದ ಮೇಲೆ ಬರುವ ಬಡ್ಡಿ. 10. ಸಂತತಿ, ಬೀಳಿಗೆ. "ತಸ್ಯಾಪನೋದಾಯ ಫಲಪ್ರವೃತ್ತಾವುಪಸ್ಥಿತಾಯಾಮಪಿ ನಿರ್ವ್ಯಪೇಕ್ಷ:" ರಘುಂ ೧೪-೩೯ | 11. ಪ್ರಯೋಜನ, ಸೌಕರ್ಯ. 12. ಹಣ್ಣು ಕಾಯಿಗಳ ಒಳತಿರುಳು, ಒಳಗಿನ

ಮೆದುವಾದ ಭಾಗ. 13. ಗುರಾಣಿ, ಚರ್ಮದ ಫಲಕ. 14. ಬಾಣದ ತುದಿ, ಶಸ್ತ್ರದ ಅಗ್ರಭಾಗ. "ಫಲಯೋಗ-ಮವಾಪ್ಯ ಸಾಯಕಾನಾಮನಿಯೋಗೇನ ವಿಲಕ್ಷಿತಾಂ ಗತಾನಾಮ್" ಮುद्रಾಂ ೭-೧೦ | 15. ಕತ್ತಿಯ ಅಲುಗು. 16. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಮುಟ್ಟು, ರಜಸ್ಸು, ಅರ್ತವ. 17. ಮುಷ್ಯ, ಅಂಡ ಕೋಶ, ಬೀಜ. 18. ಭೋಗ, ಸುಖ. 19. ತ್ರಿಫಲಾ, ಅಳಲೆಕಾಯಿ ತಾರೆಕಾಯಿ ಮತ್ತು ನೆಲ್ಲಿಕಾಯಿಗಳು. "ಹರೀತಕೀ ಚಾಮಲಕೀ ವಿಭೀತಕಮಿದಂ ತ್ರಯಮ್ | ತ್ರಿಫಲಾ ಫಲಮಿತ್ಯುಕ್ತಂ ತತ್ತ್ವ ಜ್ಞೇಯಂ ಫಲತೃಕಮ್" | 20. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. 21. ತಕ್ಕೋಲವೃಕ್ಷದ ಒಂದು ಪರಿಮಳ ದ್ರವ್ಯ. 22. ಧನ. ಐಶ್ವರ್ಯ. 23. ಪ್ರೇಂಕಣ ಗಿಡ. 24. ಕಾರಣದಿಂದ ಉಂಟಾದ ಕಾರ್ಯ. 25. ಜಾತೀಫಲ, ಜಾಯಿಕಾಯಿ. "ಫಲಂ ಹೇತುಸಮುತ್ಥೇ ಫಲಕೇ ವ್ಯುಢಿಲಾಭಯೋ: | ಜಾತೀಫಲೇಷು ಕಿಂಕೋಲೇ ಸಸ್ಯವಾಣಾಘಯೋರಪಿ | ಫಲಿನ್ಯಾಂ ತು ಫಲಂ ಪ್ರಾಹು: ತ್ರಿಫಲಾಘಾಂ ಫಲಂ ಕ್ವಚಿತ್" ವಿಶ್ವಂ | 26. ಕರಮಾರ್ಧಕ ವೃಕ್ಷ, ಕಮರಿಕೆ ಗಿಡ. 27. ನೇಗಿಲಿಗುಳ. 28. ನಿಷ್ಪತ್ತಿ, ತಯಾರಿಕೆ. 29. ಒಂದು ಮೊತ್ತವನ್ನು ಭಾಗಿಸಿದರೆ ಬರುವ ಭಾಗಲಬ್ಧ. "ಲಾಭನಿಷ್ಪತ್ತಿಭೋಗೇಷು ವೀಜೇ ಫಲೇ ಧನೇ ಫಲಮ್" ವೇಜಂ | 30. ಶಾರಿಫಲ, ನೆತ್ತವಾಡುವ ಹಲಗೆ. (ಪುಂ) 31. ಕುಟುಬ ವೃಕ್ಷ, ಬೆಟ್ಟ ಮಲ್ಲಿಗೆ.

**ಫಲಕ ಫಲಕ** (ಪುನಂ) 1. ಗುರಾಣಿ, ಚರ್ಮದ ಅಡ್ಡಣ, ಶಸ್ತ್ರಾಸ್ತ್ರಗಳ ಎಡುಗಳನ್ನು ತಡೆಯುವ ತೊಗಲಿನ ಹಲಗೆ. ತ್ರಿಫಲಾ (ವಿಶರಣೆ) "ವುನ್" (ಽಽಂ ೫-೩೫) | "ಶಾಙ್ಗಿ ಬಾಣಂ ಕೃಪಾಣಂ ಫಲಕಮರಿಗದೇ ಪ್ರಶಾಙ್ಗೋ ಸಹ" | (ಪುಂ) 2. ಅಸ್ಥಿಖಂಡ. 3. ನಾಗಕೇಸರ. 4. ಮರದ ಅಥವಾ ಶಿಲೆ ಲೋಹ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಹಲಗೆ. "ಇತ್ಯಂ ನೆಯೋ ರಜನಿದಿವಸೌ ಲೋಲಯನ್ ದ್ವಾವಿವಾಕ್ಷೌ ಕಾಲ:ಕಲ್ಯೌ ಮುಖನಫಲಕೇ ಕ್ರೋಡತಿ ಪ್ರಾಣಿಶಾರೇ:" ಭತೃಂ ೩-೪೨ | 5. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಅಗಲವಾದ ಮೇಲ್ಮೈ. "ಧೃತಮುಧಗಣ್ಡಫಲಕೇ-ವಿಬಭು: ವಿಕಸದ್ವಿರಾಸ್ಯಕಮಲೈ: ಪ್ರಮದಾ:" ಮಾಘಂ ೯-೪೭ | 6. ಬಾಣದ ಅಗ್ರಭಾಗ.

**ಫಲಕಪಾಣಿ ಫಲಕಪಾಣಿ** (ಪುಂ) ಗುರಾಣಿಯನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ ಯೋಧ. ಫಲಕಂ ಪಾಣೌ ಯಸ್ಯ |

**ಫಲಕಾಮ ಫಲಕಾಮ** (ವಿಂ) ಮಾಡಿದ ಕರ್ಮಗಳ ಫಲವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. ಫಲಂ ಕಾಮಯತೇ-ಕಮು (ಕಾಂತೌ) "ಅಞ್" (೩-೨-೧) | "ಧರ್ಮವಾಣಿಜಿಕಾ ಮೂಢಾ: ಫಲಕಾಮಾ ನರಾಧಮಾ:" |



**ಫಲಕಾಮನಾ ಫಲಕಾನುನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಫಲದ ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಮಾಡಿದ ಕರ್ಮದ ಫಲವನ್ನು ಪಡೆಯುವ ಆಸೆ.

**ಫಲಕಾಲ ಫಲಕಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಮಾಡಿದ ಕಾರ್ಯದ ಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವ ಕಾಲ. 2. ಸುಗ್ಗಿಯ ಕಾಲ, ಪೈರುಗಳು ಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವ ಕಾಲ.

**ಫಲಕಿನ್ ಫಲಕಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಗುರಾಣಿಯನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ ಯೋಧ. 2. ಮರದಿಂದ ಅಥವಾ ಲೋಹ ಶಿಲೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಮಾಡಿದ ಉದ್ದದ ಕಾಲ್ಮಣ. (Bench). 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. "ಫಲಕಿ ಮತ್ಸ್ಯಭೇದೇ ನಾ ವಾಚ್ಯವತ್ಫಲಕಾನ್ವಿತೇ" ಮೇದಿಂ. (ವಿಂ) 4. ಫಲಕ (ಹಲಗೆ)ವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು.

**ಫಲಕೀ ಫಲಕೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಂದನವೃಕ್ಷ, ಗಂಧದ ಮರ.

**ಫಲಕೇಸರ ಫಲಕೇಸರ** (ಪುಂ) ನಾರಿಕೇಳ ವೃಕ್ಷ, ತೆಂಗಿನ ಮರ.

**ಫಲಕೋಶ ಫಲಕೋಶ** (ಪುಂ) ಮುಷ್ಕ, ಅಂಡಕೋಶ. ವೃಷಣ.

**ಫಲಗ್ರಾಹಿನ್ ಫಲಗ್ರಾಹಿನ್** (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಫಲ ಗೃಹ್ಣಾತಿ—ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಗಿಹಿನ್" (3-1-134). (ವಿಂ) 2. ಫಲವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವವನು, ಫಲವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು.

**ಫಲತ್ರಯ ಫಲತ್ರಯ** (ನಂ) ತ್ರಿಫಲಾ, ಅಳಲೆಕಾಯಿ ತಾರೆ ಕಾಯಿ ಮತ್ತು ವೆಲ್ಲಿ ಕಾಯಿಗಳು.

**ಫಲತ್ರಿಕ ಫಲತ್ರಿಕ** (ನಂ) ತ್ರಿಫಲಾ, ಅಳಲೆಕಾಯಿ, ತಾರೆ ಕಾಯಿ ಮತ್ತು ನೆಲ್ಲಿಕಾಯಿಗಳು. "ಪಥ್ಯಾವಿಭಿತ್ತಾತ್ರಿಣಾಂ ಫಲೈಃ ಸ್ಯಾತ್ತ್ರಿಫಲಾ ಸಮಃ. ಫಲತ್ರಿಕಂ ಚ ತ್ರಿಫಲಾ ಸಾ ವರಾ ಚ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ" ಭಾವಪ್ರಂ. 1

**ಫಲದ ಫಲದ** (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಫಲ ದದಾತಿ—ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (3-2-3). (ವಿಂ) 2. ಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವ. "ತೃಚ್" (3-1-133). -ದಾತಾ. -ದಾತಾ.

**ಫಲನಿಷ್ಪತ್ತಿ ಫಲನಿಷ್ಪತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಫಲದ ಉತ್ಪತ್ತಿ ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ, ಕಾರ್ಯವು ಕೈಗೊಡುವುದು. ಫಲಸ್ಯ ನಿಷ್ಪತ್ತಿಃ.

**ಫಲಪಾಕ ಫಲಪಾಕ** (ಪುಂ) 1. ಪರಿಣಾಮ, ಕಾರ್ಯದ ಸಿದ್ಧಿ, ಕಾರ್ಯವು ಕೈಗೊಡುವಿಕೆ. 2. ಕಾಯಿ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹಣ್ಣಾಗುವುದು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾಗುವುದು. 3. ಕರಮದರ್ಶಕ ವೃಕ್ಷ, ಕಮರಿಕೆ ಗಿಡ.

**ಫಲಪಾಕಾಂತಾ ಫಲಪಾಕಾಂತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಫಲ ಬಿಟ್ಟು ಮೇಲೆ ಒಣಗಿಹೋಗುವ ಗಿಡ. ಫಲಪಾಕಃ ಪಾಂತೋ ಯಸ್ಯಾಃ. ತೋಗರಿ ಅವರೆ ಹೆಸರು ಉದ್ದು ಕಡಲೆ ಮೊದಲಾದ ದ್ವಿದಳ ಧಾನ್ಯದ ಗಿಡಗಳು, ಬಾಳೆ ಕುಂಬಳ ಪಡಪಲ ಹಾಗಲ ಮುಂತಾದ ಗಿಡ ಮತ್ತು ಲತೆಗಳು.

**ಫಲಪಾದಪ ಫಲಪಾದಪ** (ಪುಂ) ಫಲವೃಕ್ಷ, ಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವ ವೃಕ್ಷ.

**ಫಲಪೂರ ಫಲಪೂರ** (ಪುಂ) ಮಾದಳದ ಗಿಡ. -ಫಲೇನ ಪೂರ್ಣಃ. 1. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" 1. -ಪೂರಕಃ -ಪೂರಕಃ.

**ಫಲಪ್ರದ ಫಲಪ್ರದ** (ವಿಂ) ಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವ. ಫಲಂ ಪ್ರದದಾತಿ—ಪ್ರ + ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (3-1-136).

**ಫಲಪ್ರದಾನ ಫಲಪ್ರದಾನ** (ನಂ) ಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವುದು.

**ಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿ ಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದ ಫಲವು ಲಭಿಸುವುದು. ಫಲಸ್ಯ ಅಭಿಪ್ರೀತಫಲಸ್ಯ ಪ್ರಾಪ್ತಿಃ.

**ಫಲಭಾಕ್ ಫಲಭಾಕ್** (ವಿಂ) 1. ಫಲವನ್ನು ಹೊಂದುವವನು. ಪ್ರಯತ್ನದ ಫಲವನ್ನು ಪಡೆಯುವವನು. ಫಲಂ ಭಜತೇ—ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಫಿವಃ" (3-2-62). 2. ಮಾಡಿದ ಕರ್ಮಗಳ ಫಲವನ್ನು ಹೊಂದುವವನು.

**ಫಲಭೂಮಿ ಫಲಭೂಮಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಣ್ಯ ಪಾಪರೂಪಗಳಾದ ಕರ್ಮಗಳ ಫಲವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವ ಸ್ಥಾನ, ಸ್ವರ್ಗ ನರಕಗಳು. ಫಲಭೋಗಾರ್ಥಂ ಭೂಮಿಃ. 1. "ಭೂಮಿವೈಸುಖರಾಢ್ಯಾ ಸ್ಯಾತ್ ಸ್ಥಾನಮಾತ್ರೇಽಪಿ ಚ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ. 1

**ಫಲಭೋಕ್ತೃ ಫಲಭೋಕ್ತೃ** (ವಿಂ) ಪುಣ್ಯ ಪಾಪಗಳ ಫಲವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವವನು. ಫಲಂ ಭುಂಕ್ತೇ—ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) "ತೃಚ್" (3-1-133).

**ಫಲಭೋಗ ಫಲಭೋಗ** (ಪುಂ) ಪುಣ್ಯ ಪಾಪಗಳ ಫಲವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವುದು. ಫಲಾನಾಂ ಕರ್ಮಫಲಾನಾಂ ಭೋಗಃ.

**ಫಲಯೋಗ ಫಲಯೋಗ** (ಪುಂ) 1. ಫಲದ ಸಂಯುಕ್ತ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದ ಫಲದ ಲಾಭ, ಪ್ರಯತ್ನದ ಫಲವನ್ನು ಪಡೆಯುವುದು. ಫಲಸ್ಯ ಯೋಗಃ ಸಿದ್ಧಿಃ. 1. "ಫಲಯೋಗಮವಾಪ್ಯ ಸಾಯಕಾನಾಮನಿಯೋಗೇನ ವಿಲಕ್ಷಿತಾಂ ಗತಾನಾಮ್" ಮುಡ್ರಾಂ ೭-೧೦. 2. ನಾಟಕದ ಸಂಪೂರ್ಣಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿರೂಪವಾದ ಒಂದು ಅವಸ್ಥೆ. "ಸಾವಸ್ಯಾ ಫಲಯೋಗಃ ಸ್ಯಾತ್ ಚಃ ಸಮಗ್ರಫಲೋದಯಃ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೭೩.

**ಫಲವತ್ ಫಲವತ್** (ವಿಂ) ಫಲದಿಂದ ಕೂಡಿದ ವೃಕ್ಷ, ಹಣ್ಣು ಕಾಯಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮರ. ಫಲಾನ್ಯಸ್ಯ ಸಂತಿ 1. "ಮತುಪ್" (4-2-94). 1. "ಅಪುಣಾಃ ಫಲವಂತೋ ಯೇ ತೇ



ವನಸ್ಪತಯಃ ಸ್ಮೃತಾಃ | ಪುಷ್ಪಿಣಃ ಕಲಿನಶ್ಚೈವ ವೃಕ್ಷಾಸ್ತುಭಯತಃ  
ಸ್ಮೃತಾಃ" ಮನುಂ ೧-೪೭ |

**ಕಲವರ್ತುಲ ಫಲವರ್ತುಲ** (ಪುಂ) 1. ಕಲ್ಲಂಗಡಿ ಗಿಡ. (ನಂ)  
2. ಕಲ್ಲಂಗಡಿ ಹಣ್ಣು.

**ಕಲವಿಕ್ರಯಿಕ ಫಲವಿಕ್ರಯಿಕ** (ಪುಂ) ಹಣ್ಣು ಕಾಯಿ  
ಗಳನ್ನು ಮಾರುವವನು. ಕಲವಿಕ್ರಯೇಣ ಜೀವತಿ "ಠನ್"  
(೪-೪-೧೩) |

**ಕಲವೃಕ್ಷಕ ಫಲವೃಕ್ಷಕ** (ಪುಂ) ಪಸುವೃಕ್ಷ, ಹಲಸಿನಮರ.  
ಕಲಪ್ರಧಾನೋ ವೃಕ್ಷಃ | ಸಂಜಾಯಾಂ "ಕನ್" |

**ಕಲಶಾಕ ಫಲಶಾಕ** (ನಂ) ಆರು ವಿಧ ತರಕಾರಿಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು  
ವಿಧ. "ಪತ್ರಂ ಪುಷ್ಪಂ ಕಲಂ ನಾಲಂ ಕಂದಂ ಸಂಸ್ವೇದಜಂ  
ತಥಾ | ಶಾಕಂ ಷಡ್ವಿಧಮುದ್ವಿಷ್ಟಂ ಗುರು ವಿವಾಡಯೋತ್ತರಮ್"  
ಭಾವಪ್ರಂ |

**ಕಲಶಾಡವ ಫಲಶಾಡವ** (ಪುಂ) ದಾಡಿಮ ವೃಕ್ಷ, ದಾಳಂಬೆ  
ಗಿಡ. "ಪಿಂಡಪುಷ್ಪಸ್ತು ದಾಡಿಮಃ ಕಲಶಾಡವಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಕಲಶಾಲಿನ್ ಫಲಶಾಲಿನ್** (ವಿಂ) ಫಲದಿಂದ ಕೂಡಿದ,  
ಫಲದಿಂದ ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ. ಕಲೇನ ಶಾಲಂತೆ-ಶಾಲೃ (ಕತ್ಯನೇ)  
"ಫಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಫಿನ್" (೪-೧-೪) |  
-ಶಾಲಿನಿ -ಶಾಲಿನೀ

**ಕಲಶ್ರುತಿ ಫಲಶ್ರುತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರ್ಮಗಳ ಫಲಗಳನ್ನು  
ಹೇಳುವ ವಾಕ್ಯಗಳನ್ನು ಕೇಳುವುದು. ಕಲಸ್ಯ ವೇದೋಕ್ತಕರ್ಮ-  
ಕಲಸ್ಯ ಶ್ರುತಿಃ ಶ್ರವಣಮ್ | ಎಲ್ಲಾ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆ  
ಯಿಲ್ಲದೆ ಆಚರಿಸಬೇಕಾದುದರಿಂದ ವೇದೋಕ್ತಕರ್ಮ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಅಭಿರುಚಿಯುಂಟಾಗಲು ಮಾತ್ರ ಫಲಶ್ರುತಿಯಿರು  
ವುದು. "ವೇದೋಕ್ತಮೇವ ಕುರ್ವಾಣೋ ನಿಃಸಂಕೋಽಪಿತಮಿಶ್ವರೇ |  
ನೈಷ್ಕರ್ಮ್ಯಾ ಲಭತೇ ಸಿದ್ಧಿ ರೋಚನಾರ್ಥಾ ಕಲಶ್ರುತಿಃ" ಭಾಗಂ  
೧೧-೩-೪೬ |

**ಕಲಶ್ರೇಷ್ಠ ಫಲಶ್ರೇಷ್ಠ** (ಪುಂ) ಅಮ್ರವೃಕ್ಷ, ಮಾವಿನ ಮರ.  
ಕಲೇನ ಶ್ರೇಷ್ಠಃ |

**ಕಲಾಗಮ ಫಲಾಗಮ** (ಪುಂ) (ವೃಕ್ಷಗಳು) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಫಲಿಸು  
ವುದು, ತುಂಬ ಫಲಬಿಡುವುದು. ಕಲಾನಾಮಾಸಮಂತಾತ್ ಗಮೋ  
ಗಮನಂ ಪ್ರಾಪ್ತಿಃ | "ಭವಂತಿ ನಮ್ರಾಸ್ತರವಃ ಕಲಾಗಮಃ"  
ಶಾಕುಂ ೪-೧೨ |

**ಕಲಾದನ ಫಲಾದನ, -ಅಶನ -ಅಶನ** (ಪುಂ) 1. ಶುಕ  
ಪಕ್ಷಿ, ಗಿಣಿ. ಕಲಾನಾಮದನೋ ಭಕ್ಷಕಃ ಕಲಾನಿ ಅಸ್ನಾತಿ ವಾ |  
(ವಿಂ) 2. ಹಣ್ಣುಗಳನ್ನು ತಿನ್ನುವ.

**ಕಲಾಧ್ಯಕ್ಷ ಫಲಾಧ್ಯಕ್ಷ** (ಪುಂ) ಹಾಲೆ ಗಿಡ.

**ಕಲಾನುಬಂಧ ಫಲಾನುಬಂಧ** (ಪುಂ) ಫಲಗಳ ಪರಂಪರೆ,  
ಒಂದಾದ ಮೇಲೊಂದು ಫಲವು ಅನುಸರಿಸಿ ಬರುವುದು.  
ಕಲಾನಾಮನುಬಂಧಃ |

**ಕಲಾನುಮೇಯ ಫಲಾನುಮೇಯ** (ವಿಂ) ಫಲದಿಂದ ಊಹಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ, ಫಲಿತಾಂಶದಿಂದ ಊಹಿಸಲ್ಪಡಬಹುದಾದ.  
ಕಲೇನ ಅನುಮಾತುಂ ಯೋಗ್ಯಃ | ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯವು ಯಾರಿಗೂ  
ತಿಳಿಯದಂತೆ ರಹಸ್ಯವಾಗಿರಬೇಕು. ಫಲದಿಂದಲೇ  
ಆ ಕಾರ್ಯದ ಮಹತ್ವವು ತಿಳಿಯಬೇಕು. "ಮನ್ತ್ರಮೂಲಂ  
ಯತೋ ರಾಜ್ಯಮತೋ ಮನ್ತ್ರಂ ಸುರಕ್ಷಿತಮ್ | ಕುರ್ಯಾದಿಥಾ ತತ್ರ ವಿಧುಃ  
ಕರ್ಮಣಾಮಾಫಲೋದಯಾತ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೩೪೪ | "ಕಲಾನುಮೇಯಾಃ  
ಪ್ರಾರಮ್ಭಾಃ ಸಂಸ್ಕಾರಾಃ ಪ್ರಾಕ್ತನಾ ಇವ" ರಘುಂ ೧-೨೦ |

**ಕಲಾನ್ವೇಷಣ ಫಲಾನ್ವೇಷಣ** (ನಂ) ಮಾಡಿದ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ  
ತಕ್ಕ ಫಲವನ್ನು ಪಡೆಯಲು ಯತ್ನಿಸುವುದು, ಕಾರ್ಯದ  
ಫಲವನ್ನು ಅರಸುವುದು. ಕಲಸ್ಯ ಅನ್ವೇಷಣಮ್ |

**ಕಲಾನ್ವೇಷಿನ್ ಫಲಾನ್ವೇಷಿನ್** (ವಿಂ) ಮಾಡಿದ ಕಾರ್ಯದ  
ಫಲವನ್ನು ಎದುರು ನೋಡುವ, ಕಾರ್ಯದ ಫಲವನ್ನು  
ಪಡೆಯಲು ಯತ್ನಿಸುವ. ಕಲಮನ್ವೇಷತೇ - ಣ್ (ಗತೌ)  
"ಫಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) |

**ಕಲಾಪೇಕ್ಷಾ ಫಲಾಪೇಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾಡಿದ ಕಾರ್ಯದ  
ಫಲವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು, ಫಲವನ್ನು ನಿರೀಕ್ಷಿಸುವುದು.

**ಕಲಾಮ್ಲ ಫಲಾಮ್ಲ** (ಪುಂ) 1. ಅಮ್ಲವೇತಸ, ಪುಲ್ಲುಪುರಿಚಿ.  
(ನಂ) 2. ಹುಣಿಸೆಹಣ್ಣು.

**ಕಲಾರಾಮ ಫಲಾರಾಮ** (ಪುಂ) ಉಪವನ, ಹಣ್ಣಿನ ತೋಟ.

**ಕಲಾಹಾರ ಫಲಾಹಾರ** (ಪುಂ) 1. ಹಣ್ಣುಗಳ ಆಹಾರ.  
2. ಹಣ್ಣುಗಳ ಊಟ, ಹಣ್ಣುಗಳನ್ನು ತಿನ್ನುವುದು.

**ಕಲಿ ಫಲಿ** (ನಂ) ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. "ಕಲಿ ಕಲಿನ್ಯಾಂ  
ಕಲಿ ತು ವಸನೇ ಕಾಲ ತಲ್ಪತೌ" ಹೇಮಂ |

**ಕಲಿತ ಫಲಿತ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಯಿ ಹಣ್ಣು ಬಿಟ್ಟಿರುವ ಮರ,  
ಫಲಿಸಿದ ವೃಕ್ಷ. ಕಲಂ ಸಂಜ್ಞಾತಮಸ್ಯ "ಫಲಿತ" (೪-೨-೩೬) |  
2. ಒಂದು ಪರಿಮಳ ದ್ರವ್ಯ, ಕೆಲ್ಲುಹೂವು. (ವಿಂ)  
3. ಫಲಿಸಿದ, ಸಿದ್ಧಿಸಿದ, ಕೈಗೂಡಿದ, ನೆರವೇರಿದ. ಕಲ  
(ನಿಷ್ಪತ್ತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | 4. ಫಲದಿಂದ ಕೂಡಿದ,  
ಬೆಳೆಗಳಿಂದ ಸಮೃದ್ಧವಾದ.

**ಕಲಿನ್ ಫಲಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಫಲಿಸಿದ ವೃಕ್ಷ, ಫಲಗಳಿಂದ,  
ಕೂಡಿದ ಮರ. ಕಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಫಿನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) |  
(ವಿಂ) 2. ಫಲಿಸಿದ, ಫಲಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ.

**ಕಲಿನ ಫಲಿನ** (ಪುಂ) ಫಲದಿಂದ ಕೂಡಿದ ವೃಕ್ಷ, ಫಲ ಸಹಿತ  
ವಾದ ವೃಕ್ಷ. ಕಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಫಲಿನ್" (ವಾಂ ೪-೨-೧೨೧) |



**ಕಲಿನಿ ಫಲಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಪ್ರಿಯಂಗು ವೃಕ್ಷ, ಪ್ರೇಂಕಣ ಗಿಡ. 2. ನೀರುಹಿಪ್ಪಲಿ, ಕೋಳಿಕುಟುಕನ ಗಿಡ.

“ಕಲಿನ್ಯಗ್ನಿಶಿಖಾयां च फलयां स्त्री कलिनಿ त्रिषु”  
ಮೆದಿಂ. 3. ಬೆಣ್ಣೆಬಿದಿರು ಸೊಪ್ಪು. “विशल्याग्नि-  
शिखानन्ता कलिनो शक्रपुण्यपि” ಅಮಂ.

**ಕಲಿ ಫಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪ್ರಿಯಂಗು ವೃಕ್ಷ, ಪ್ರೇಂಕಣ ಗಿಡ.  
ಫಲ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪೧).

**ಕಲೀಕರಣ ಫಲೀಕರಣ (ನಂ)** ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಒಕ್ಕುವುದು,  
ತೆನೆಬಡಿದು ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಹೊಟ್ಟಿನಿಂದ ಬೇರ್ಪಡಿಸುವುದು.

**ಕಲೀಕೃತ ಫಲೀಕೃತ (ವಿಂ)** ಒಕ್ಕಲ್ಪಟ್ಟ, ತೆನೆಬಡಿದು  
ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಧಾನ್ಯ).

**ಕಲೇಗ್ರಹಿ ಫಲೀಗ್ರಹಿ (ಪುಂ)** 1. ಸರಿಯಾದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಫಲ  
ಬಿಡುವ ಮರ, ಬುಜೆಯಾಗದ ಮರ. ಕಲಾನಿ ಗುಣ್ವಾತಿ—  
ಗ್ರಹ (उपादाने) एदन्तत्वं “इन्” प्रत्ययश्च निपा०  
(೩-೨-೨೬). (ವಿಂ) 2. ಫಲವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳು-  
ವವನು.

**ಕಲೇರುಹಾ ಫಲೇರುಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹಸುರು ಪಾದರಿ ಗಿಡ.  
ಹೆಗ್ಗಜ್ಜು ಗದ ಗಿಡವೆಂದು ಕೆಲವರು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ.

**ಕಲೋದಯ ಫಲೋದಯ (ಪುಂ)** 1. ಫಲದ ಉತ್ಪತ್ತಿ,  
ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ, ಕಾರ್ಯವು ಕೈಗೊಡುವುದು. ಕಲಸ್ಯೋದಯಃ।  
“सोऽहमाजन्मशुद्धानामाफलोदयकर्मणाम्। आसमुद्रक्षिति-  
शानामानाकरयवर्त्मनाम्” रघु० ೧-೫। 2. ಲಾಭ,  
ಸಂಪಾದನೆ. 3. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ. “कलोदयः  
स्यात्त्रिविवे लाभेऽपि च फलोदयः” विश्व०। 4.  
ಸಂತೋಷ, ಹರ್ಷ. 5. ಶಿಕ್ಷೆ, ಪಾಪದ ಫಲ

**ಕಲೋದ್ಗಮ ಫಲೋದ್ಗಮ (ಪುಂ)** ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ, ಕಾರ್ಯವು  
ಕೈಗೊಡುವುದು. ಕಲಸ್ಯ ಉದ್ಗಮಃ।

**ಕಲ್ಪ ಫಲ್ಗು (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಕಲ್ಪತ್ತಿ ಗಿಡ, ಬ್ರಹ್ಮಮೇಡಿ.  
ಫಲ (निष्पत्तौ) “उः” गुक् च (उ० ೧-೧೮)। “काको-  
दुम्बरिका फल्गुः” अम०। 2. ಗಯಾಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿರುವ  
ಒಂದು ನದಿ. 3. ವಸಂತಯುತು. 4. ವಸಂತೋತ್ಸವದಲ್ಲಿ  
(ಹೋಳಿ ಹಬ್ಬದಲ್ಲಿ) ಪರಸ್ಪರ ಎರಚಾಡುವ ಓಕಳಿ  
(ಗುಲಾಲು). (ವಿಂ) 5. ಸಾರವಿಲ್ಲದ, ಸತ್ಯವಿಲ್ಲದ,  
ತಿರುಳಿಲ್ಲದ. “सारं ततो ब्राह्मणपास्य फल्गु हंसैर्यथा  
क्षीरमिवाम्बुमध्यात्” पञ्चत० ೧-೯। 6. ಪ್ರಯೋಜನ  
ವಿಲ್ಲದ, ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಬಾರದ, ಉಪಯೋಗಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯ  
ವಲ್ಲದ. “फल्गुः काकोदुम्बरिकावृक्षे निरर्थकेऽपि च”  
हेम०। “फलवसारेऽभिधेयवत्। नदीभेदे मलप्त्वां स्त्री”

ಮೆದಿಂ. 7. ಸಣ್ಣದಾದ, ಚಿಕ್ಕದಾದ, ಅಲ್ಪವಾದ.  
8. ರಮ್ಯವಾದ, ಸುಂದರವಾದ. 9. ದುರ್ಬಲವಾದ,  
ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ.

**ಕಲ್ಪದಾ ಫಲ್ಗು (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗಯಾಕ್ಷೇತ್ರದ ಒಂದು ನದಿ.

**ಕಲ್ಪಾನ ಫಲ್ಗುನ (ಪುಂ)** 1. ಅರ್ಜುನ, ಪಾರ್ಥ. ಕಲ್ಪಾತಿ—  
ಫಲ (निष्पत्तौ) “उनन्” गुणामश्च (उ० ೩-೫೬)।  
“अर्जुनः फल्गुनः पार्थः किरीटी इवेतवाहनः। बीमत्सु-  
विजयः कृष्णः सव्यसाची धनञ्जयः” ಎಂದು ಅರ್ಜುನನಿಗೆ  
ಹತ್ತು ಹೆಸರುಗಳು. [“अर्जुन” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]  
2. ಫಾಲ್ಗುನ ಮಾಸ. (ವಿಂ) 3. ಫಲ್ಗುನಿ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟಿದ.

**ಕಲ್ಪಾನಾಲ ಫಲ್ಗುನಾಲ (ಪುಂ)** ಫಾಲ್ಗುನಮಾಸ. ಕಲ್ಪಾನೇನ  
ಅಲತಿ—ಅಲ “अच्”।

**ಕಲ್ಪಾನೀ ಫಲ್ಗುನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ ಬಂ ವಂ)** 1. ಫಲ್ಗುನಿ ನಕ್ಷತ್ರ  
ಗಳು, ಪೂರ್ವ ಫಲ್ಗುನಿ ಮತ್ತು ಉತ್ತರ ಫಲ್ಗುನಿ ನಕ್ಷತ್ರ  
ಗಳು. ಕಲ್ಪಾನ ಗೌರಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪೧)। “मैत्रे  
मुहूर्ते शशलाञ्छनेन योग गतासूतरफल्गुनीषु” कुमा०  
೭-೬। 2. ಕಲ್ಪತ್ತಿ ಗಿಡ.

**ಕಲ್ಪಾಟಿಕಾ ಫಲ್ಗುನಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಲ್ಪತ್ತಿ ಗಿಡ.  
ಕಲ್ಪಾನಾ ವಾಟಿಂ “कन्” (५-३-१७)।

**ಕಲ್ಪಾತ್ಸವ ಫಲ್ಗುತ್ಸವ (ಪುಂ)** ವಸಂತೋತ್ಸವ, ಓಕಳಿ  
ಹಬ್ಬ, ಮದನೋತ್ಸವ.

**ಕಲ್ಪ ಫಲ್ಗು (ನಂ)** ಪುಷ್ಪ, ಹೂವು.

**ಕಾ ಫಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಕಠಿನವಾದ ಮಾತು, ಕೋಪದ ಮಾತು.  
2. ಕಲೆ, ಹದಿನಾರನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. 3. ಕ್ರೇಡೆ, ಆಟ.  
4. ಕುಟೀರ, ಗುಡಿಸಲು. “का स्त्रियां निष्ठुरोक्तौ च  
कलाकेलिकुटीषु च” नानार्थर०।

**ಕಾಃ ಫಾಃ (ಪುಂ)** 1. ಸಂತಾಪ, ದುಃಖ. 2. ಫಲವಿಲ್ಲದ  
ಮಾತು, ವೃಥಾವಾದ ಮಾತು. “फिः कोपे फाश्च  
सन्तापे तथा निष्फलभाषणे”।

**ಕಾಡಕಿ ಫಾಟಿಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸ್ಪಟಿಕ.

**ಕಾಣಿ ಫಾಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಗುಡ, ಬೆಲ್ಲ. ಕಣ (गतौ) +  
णिच् “इन्” (उ० ४-११७)। 2. ಮೊಸರಿನಲ್ಲಿ  
ಕಲಸಿದ ಹುರಿಹಿಟ್ಟು. “फाणिगुडकरम्भयोः” विश्व०।

**ಕಾಣಿತ ಫಾಣಿತ (ನಂ)** ಕಾಕಂಬಿ. ಕಣ (गतौ) + णिच्  
“क्तः” (३-२-१०२)। “मत्स्यण्डी फाणितं खण्ड-  
विकारे” अम०।



**ಕಾಣ್ಡ ಕಾಂಟಿ (ಪುಂ)** 1. ಆಯಾಸವಿಲ್ಲದೆ ಕುದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಕಷಾಯ. ಕಷಯೇ—ಕಷ (ಗತೌ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। “ಕಾಣ್ಡತಿಕವಾಞ್ಜೋ ರಸಃ” ವೈಜಂ। “ಅಮ್ಲಿಷ್ಠನಾದಾ ನಿರಗುಃ ಕಾಣ್ಡಚಿತ್ರಾಸ್ತ್ರಪಾಣಯಃ” ಭಟ್ಟಿಂ ೧-೧೭। (ವಿಂ) 2. ಆಯಾಸವಿಲ್ಲದೆ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಕಾಲ ಕಾಲ (ಪುಂ)** 1. ಮಹಾದೇವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 2. ಬಲರಾಮ. 3. ಬಿಳಿ ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 4. ದಾಳಿಂಬೆ ಗಿಡ. “ಕಾಲಃ ಪುಂಸಿ ಮಹಾದೇವೇ ಕಾಲಿಂದೀಶ್ವರೇನಪಿ ಚ” ಮೇಡಿಂ। “ಸ್ವೇತಾರ್ಕೇ ದಾಡಿಮೇ ಕಾಲಃ” ವೈಜಂ। (ಪುಂ) 5. ನೇಗಿಲ ಗುಳ. ಜಿ ಕಲಾ (ವಿಶರಣೆ) ಕರಂ “ಕಜ್” (೩-೩-೧೨೧)। “ನ ಕಾಲಕೃಷ್ಣಮಶನೀಯಾದುತ್ಸೃಷ್ಟಮಪಿ ಕೇನಚಿತ್” ಮನುಂ ೬-೧೬। (ನಂ) 6. ಲಠಾಟ, ಹಣೆ. “ಕಾಲಂ ಸೀರೋಪಕರಣಂ ಕಾರ್ಪಸಿ ಲಪನೇನಪಿ ಚ” ನಾನಾರ್ಕಂ। 7. ಹತ್ತಿ, ಕಾರ್ಪಾಸ. (ವಿಂ) 8. ಹತ್ತಿಯ ನೂಲಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ವಸ್ತ್ರ. “ಕಲೀಬಂ ಸೀರೋಪಕರಣಂ ತ್ರಿಭು ಕಾರ್ಪಸಿವಾಸಸಿ” ಮೇಡಿಂ। ನೇಗಿಲ ಗುಳ ವಾಚ್ಛಿಪಾದ ಕಾಲ ಶಬ್ದವು ಅಮರಕೋಶದಲ್ಲಿ ಪುಲಿಂಗ ದಲ್ಲೂ ಮೇದಿನೀ ಕೋಶದಲ್ಲಿ ನಪುಂಸಕದಲ್ಲೂ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ (ಪುಂ) ಎಂದು ಲಿಂಗ ನಿರ್ದೇಶಮಾಡಲಾಗಿದೆ.

**ಕಾಲಕೃಷ್ಣ ಕಾಲಕೃಷ್ಣ (ನಂ)** 1. ನೇಗಿಲಿಂದ ಉಳಲ್ಪಟ್ಟ ಕ್ಷೇತ್ರ. (ವಿಂ) 2. ನೇಗಿಲಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದ ಧಾನ್ಯ ಮೊದಲಾದುವು. “ನ ಮುತ್ರ್ ಪಥಿ ಕುರ್ವೀತ ನ ಭಸ್ಮಾನಿ ನ ಗೋವಜೇ। ನ ಕಾಲಕೃಷ್ಣೇ ನ ಜಲೇ ನ ಚಿತ್ರಾಂ ನ ಚ ಪರ್ವತೇ” ಮನುಂ ೪-೪೬।

**ಕಾಲ್ಗುನ ಕಾಲ್ಗುನ (ಪುಂ)** 1. ಫಾಲ್ಗುನ ಮಾಸ. ಕಲತಿ ನಿಷ್ಪಾದಯತಿ ಕಲ (ನಿಷ್ಪತ್ತೌ) “ತನನ್” ಗುಕ್ ಚ (ತಂ ೩-೫೬)। ಸ್ವಾರ್ಥ “ಅನ್”। 2. ಅರ್ಜುನ, ಕುಂತಿಯ ಮಗ. ಕಾಲ್ಗುನ ಏವ “ಅನ್” (೫-೪-೩೮)। ವೃದ್ಧಿಃ (೭-೨-೧೧೭)। “ಉತ್ತರಾಭ್ಯಾಂ ಚ ಪೂರ್ವಾಭ್ಯಾಂ ಕಾಲ್ಗುನೀ-ಮ್ಯಾಮಹಂ ದಿವಾ। ಜಾತೋ ಹಿಮವತಃ ಪೃಥೇ ತೇನ ಮಾಂ ಕಾಲ್ಗುನಂ ವಿದುಃ” ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೪೩-೩೪। 3. ಅರ್ಜುನ ವೃಕ್ಷ, ಮತ್ತಿ ಮರ.

**ಕಾಲ್ಗುನಾನುಜ ಕಾಲ್ಗುನಾನುಜ (ಪುಂ)** 1. ಜೈತ್ರಮಾಸ. 2. ವಸಂತಋತು. ಕಾಲ್ಗುನಾದನು ಪಶ್ಚಾಜ್ಞಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭಾವಿ) “ಜಃ” (೩-೨-೧೮)। (ದ್ವಿಂ) 3. ನೆಕುಲ ಮತ್ಸ್ಯ ಸಹದೇವ.

**ಕಾಲ್ಗುನಿಕ ಕಾಲ್ಗುನಿಕ (ಪುಂ)** ಫಾಲ್ಗುನಮಾಸ. ಕಾಲ್ಗುನಿ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಮಿನ್ ಮಾಸೇ ವಾ “ಠಕ್” (೪-೨-೨೩)। ಪಕ್ಷ ಕಾಲ್ಗುನಃ ಕಾಲ್ಗುನಃ.

**ಕಾಲ್ಗುನಿ ಕಾಲ್ಗುನೀ (ಸ್ತ್ರೀ)** ಫಾಲ್ಗುನಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿ ಮೆ. ಕಾಲ್ಗುನಿನಕ್ಷತ್ರಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ—ಕಾಲ್ಗುನಿ “ಅನ್” (೪-೨-೩)।

**ಕಿರಣ್ಣ ಕಿರಣ್ಣ (ಪುಂ)** 1. ಪರಂಗಿಯವರ ದೇಶ, ಯೂರೋಪ ದೇಶ. 2. ಒಂದು ವಿಧ ರೋಗ. ಈ ರೋಗವು ಪರಂಗಿಯವರ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಬರುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಈ ಹೆಸರು.

**ಕಿರಣ್ಣಿನ್ ಕಿರಣ್ಣಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ಪರಂಗಿ ದೇಶದವನು, ಯೂರೋಪ ಮಂಡದವನು. (ವಿಂ) 2. ಕಿರಣ ರೋಗ ವುಳ್ಳವನು.

**ಕುಕ ಪುಕ (ಪುಂ)** ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ.

**ಕು(ಕು)ತ್ ಪು(ಪು)ತ್ (ಅವ್ಯಂ)** ಬೆಂಕಿಯನ್ನು ಉದುವ ಒಂದು ಅನುಕರಣ ಶಬ್ದ.

**ಕು(ಕು)ತಾರ ಪು(ಪು)ತಾರ (ಪುಂ)** ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ.

**ಕು(ಕು)ತಾರ ಪು(ಪು)ತಾರ (ಪುಂ)** 1. ಬೆಂಕಿಯನ್ನು ಉದುವ ಶಬ್ದದ ಅನುಕರಣ. ಕು (ಕು) ದಿತಿ ಅವ್ಯಕ್ತ-ಶಬ್ದಸ್ಯ ಕಾರಃ—ತುಕ್ತಾ (ಕರಣ) “ಕಜ್” (೩-೩-೧೮)। 2. ಸರ್ಪದ “ಬುಸ್” ಶಬ್ದ. ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। —ಕರಣಮ್—ಕರಣಮ್. ಭಾವೇ “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪)। —ಕೃತಿಃ—ಕೃತಿಃ.

**ಕು(ಕು)ತುತ ಪು(ಪು)ತುತ (ನಂ)** 1. ಉದುವ ಕೊಳ ವೆಯು ಶಬ್ದ. 2. ಕಿರಿಚುವುದು, ಚೀರಾಟ. (ವಿಂ) 3. ಉದಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಉದಿ ಗಾಳಿ ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಕುಪ್ಪುಸ ಪುಪ್ಪುಸ (ಪುಂ)** ಹೃದಯದ ಎಡಪಾರ್ಶ್ವದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಕೋಶ. ದೇಹದಲ್ಲಿ ಆಮಾಶಯವು ನಾಭಿಗೆ ಮೇಲು ಭಾಗದಲ್ಲಿರುವುದು. ಅಗ್ನಿ(ಜಠರಾಗ್ನಿ)ಯು ನಾಭಿಯ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವುದು. ನಾಭಿಯ ಕೆಳಗಡೆ ಪಶ್ಚಾತ್ತಯ. ಬಸ್ತಿಯು ಮೂತ್ರಾಶಯ. ಪುಪ್ಪುಸವು ಹೃದಯದ ಎಡ ಭಾಗದಲ್ಲಿರುವುದು.

**ಕುಲ ಪುಲ (ವಿಂ)** 1. ವಿಕಾಸ ಹೊಂದಿದ, ಅರಳಿದ (ಪುಷ್ಪ). ಜಿ ಕಲಾ (ವಿಶರಣೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೧-೧೮೭)। ತಸ್ಯ ಲಕ್ಷಂ ನಿಪಾಂ (೮-೨-೫೫)। “ಜಲಂ ಚ ಶುಶುಮೇಚ್ಛಂ ಕುಲೈರ್ಜಲ-ರಹೇಸ್ತಥಾ” ಭಾಂ। 2. ತೆರೆದಿರುವ, ಅಗಲವಾದ (ಕಣ್ಣು). (ನಂ) 3. ಅದ್ಭುತ, ಅಶ್ಚರ್ಯ. “ಆಶ್ಚರ್ಯ ಕುಲಮಾಶ್ಚ ತಮ್” ವೈಜಂ।

**ಕುಲಕಾಲ ಪುಲಕಾಲ (ಪುಂ)** ಮೊರದ ಗಾಳಿ, ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಕೇರುವಾಗ ಬರುವ ಗಾಳಿ.



**ಫುಲ್ಲನೆತ್ರ ಫುಲ್ಲನೆತ್ರ, -ಲೋಚನ-ಲೋಚನ.** (ವಿಂ)

1. ಅಗಲವಾದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳವನು. ಫುಲ್ಲೆ ವಿಕಸಿತಂ  
ನೆತ್ರೇ ಲೋಚನೇ ವಾ ಯಸ್ಯ | (ಪುಂ) 2. ಜಿಂಕೆ.

**ಫುಲ್ಲಿ ಫುಲ್ಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಹಾಸ, ಅರಳುವುದು.

**ಫೆನ ಫೇನ** (ಪುಂ) 1. ನೋರೆ, ಬುರುಗು. ಸ್ಫಾಯತೆ - ಸ್ಫಾಯಿ  
(ವೃದ್ಧಿ) "ನಕ್" ನಿಪಾಂ (ಉಂ 3-3) | "ವಿಭಾತಿ  
ಪರ್ಯಂತಮಹಿ ಪಯೋಃ ಫೇನೇರಸೌ ವೀಚಿಕರಪ್ರಕೋಣಃ" ಯಾದಂ  
14-42 | ಫೇನ: ಎಂದು ಊಂಶ ಪ್ರಯೋಗವೂ ಉಂಟು.  
2. ಬಾಯಿಯ ನೋರೆ, ಜೋಲ್ಲು, ಲಾಲಾಜಲ.

**ಫೆನಕ ಫೇನಕ** (ಪುಂ) 1. ನೋರೆ, ಬುರುಗು. ಫೆನ ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಕನ್" | 2. ತುಪ್ಪದಲ್ಲಿ ಕರಿದ ಸಕ್ಕರೆ ಮಿಶ್ರವಾದ  
ಅಕ್ಕಿ ಹಿಟ್ಟಿನ ರೊಟ್ಟಿ.

**ಫೆನಲ ಫೇನಲ** (ವಿಂ) ನೋರೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಫೆನೋಸ್ಯಾಸ್ತಿ  
"ಲಕ್" (4-2-99) |

**ಫೆನವತ್ ಫೇನವತ್** (ವಿಂ) ನೋರೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಫೆನೋ-  
ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (4-2-99) | ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್"  
(4-1-6) | -ವತೀ -ವತೀ. "ತತ್ರ ಸಾಗರಗಾ ಹ್ಯಾಪಃ  
ಕೀರ್ಯಮಾಣಾಃ ಸಮಂತತಃ | ಪ್ರಾದುರಾಸನ್ ಸುಕಲುಷಾಃ ಫೆನವತ್ಯೌ  
ವಿಶಾಂಪತೇ" ಭಾಂ ವನಂ |

**ಫೆನವಾಹಿನ್ ಫೇನವಾಹಿನ್** (ಪುಂ) ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ.

**ಫೆನಾಗ್ರ ಫೇನಾಗ್ರ** (ನಂ) ನೋರೆಯಮೇಲಿನ ಗುಳ್ಳೆ.  
ಫೆನಸ್ಯಾಗ್ರಮ್ |

**ಫೆನಾಯಮಾನ ಫೇನಾಯಮಾನ** (ವಿಂ) ನೋರೆಯು ಮೇಲಕ್ಕಿ  
ಏಳುತ್ತಿರುವ (ಹಾಲು ಮೊದಲಾದುದು). ಫೆನಮುದ್ರಮತಿ-  
ಫೆನ "ಕ್ಯಡ್" (ವಾಂ 3-1-16) | "ಅಮೋಘವಾಣಸ್ಯ  
ಮುನೇರಶೋಘ್ಯ ಫೆನಾಯಮಾನಾನಿ ಯಶಃಪಯೋಧೌ" ಯಾದಂ  
14-32 |

**ಫೆನಿಕಾ ಫೇನಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೇಣೆ. ಫೆನ ಇವಾಕ್ರತೀರಸ್ಯಾ:-  
ಫೆನ "ಠನ್" (4-2-114) |

**ಫೆನಿಲ ಫೇನಿಲ** (ಪುಂ) 1. ಎಲಚಿ ಗಿಡ, ಬೋರೆ ಗಿಡ.  
ಫೆನ "ಇಲಕ್" (4-2-99) | 2. ರಂಗುವಾಲದ

ಗಿಡ. (ನಂ) 3. ಎಲಚಿ ಹಣ್ಣು, ಬೋರೆ ಹಣ್ಣು.

4. ದತ್ತೂರಿ ಕಾಯಿ. (ವಿಂ) 5. ನೋರೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ.

"ಫೆನಿಲೋಽರಿಷ್ಟಪಾದಪೇ | ಫೆನಿಲಂ ಮದನಫಲೇ ವದರೇ ಫೆನ-  
ವತ್ಯಪಿ" ಹೇಮಂ | "ಮತ್ಸೇತುನಾ ಫೆನಿಲಮಮ್ಬುರಾಶಿಮ್"  
ರಘುಂ 13-2 |

**ಫೇರ ಫೇರ** (ಪುಂ) ಜಂಬುಕ, ನರಿ. ಫೇ ಇತಿ ಶಬ್ದಂ ರಾತಿ-ರಾ  
(ದಾನೇ ಗ್ರಹಣೇ ಚ) "ಕಃ" (3-1-136) |

**ಫೇರವ ಫೇರವ** (ಪುಂ) 1. ಜಂಬುಕ, ನರಿ. ಫೇ ಇತಿ ಅವ್ಯಕ್ತೌ  
ರವೋಽಸ್ಯ | "ಕ್ರಂದತಫೇರವಚಂಡಚಾತ್ಕೃತಿಭೃತಪ್ರಾಗ್ಭಾರಭೀಮೈ-  
ಸ್ತದೇಃ" | ಮಾಲತೀಂ 4-19 | 2. ರಾಕ್ಷಸ, ಅಸುರ.  
"ಫೇರವೌ ಜಮ್ಬುಕೇಽಪೇ" ವಿಶ್ವಂ |

**ಫೇರು ಫೇರು** (ಪುಂ) ಜಂಬುಕ, ನರಿ. ಫೇ ಇತಿ ಅವ್ಯಕ್ತಂ ರೌತಿ-  
ಫ (ಶಬ್ದೇ) "ಙುಃ" (ವಾಂ 3-2-140) | "ಫೇರಫೇರವ-  
ಜಮ್ಬುಕಾಃ" ಅಮಂ | "ಗೃಹೇಷು ಯೇವತಿಯಯಃ ನಾರ್ಚಿತಾಃ  
ಸಲಿಲೇರಪಿ | ಯದಿ ನಿರ್ಯಾಂತಿ ತೇ ನೂನಂ ಫೇರಾಜಗೃಹೋಪಮಾಃ"  
ಭಾಗಂ 6-16-7 |

**ಫೇರುಂಡ ಫೇರುಂಡ** (ಪುಂ) ನರಿ, ಜಂಬುಕ. "ಫೇರಫೇರುಂಡ-  
ಫೇರವಾಃ" ವೈಜಂ |

**ಫೇಲ ಫೇಲ** (ನಂ) ಉಚ್ಚಿಷ್ಟ, ಊಟಮಾಡಿ ಉಳಿದ ಅನ್ನ.  
ಫೇಲ್ (ಗತೌ) "ಫಲ್" (3-3-19) |

**ಫೇಲಕ ಫೇಲಕ** (ಪುಂ) ಉಚ್ಚಿಷ್ಟ, ಊಟಮಾಡಿ ಉಳಿದ  
ಅನ್ನ. ಫೇಲ ಸಂಜ್ಞಾಯಾಂ "ಕನ್" |

**ಫೇಲಾ ಫೇಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಚ್ಚಿಷ್ಟ, ಊಟಮಾಡಿ ಉಳಿದ  
ಅನ್ನ, ಎಂಜಲು. ಫೇಲ್ (ಗತೌ) "ಅಃ" (3-3-103) |  
"ಫೇಲಾ ಪಿಂಡೇಽಧಿಕೋಽಜ್ಜಿತೇ" ವೈಜಂ |

**ಫೇಲಿ ಫೇಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಚ್ಚಿಷ್ಟ, ಎಂಜಲು.

**ಫೇಲಿಕಾ ಫೇಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಚ್ಚಿಷ್ಟ, ಎಂಜಲು. ಫೇಲಿ  
ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" |

**ಫೇಲಿ ಫೇಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಚ್ಚಿಷ್ಟ, ಊಟಮಾಡಿ ಉಳಿದ  
ಅನ್ನ, ಎಂಜಲು. ಫೇಲಿ ವಾ "ಡೀಪ್" (ಗಂ  
4-1-84) |

ಇತಿ "ಫ" ಕಾರಾರಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್ |



ಬ

ಬ ಬ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ "ಪ" ವರ್ಗದ ಮೂರನೆಯ ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಂತರ ಸ್ಪೃಷ್ಟ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಒಪ್ಪಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಅಲ್ಪಪ್ರಾಣವರ್ಣ. "ಕಾದಯೋ ಮಾವಸಾನಾಃ ಸ್ಪರ್ಶಾಃ" । "ಸ್ಪೃಷ್ಟಂ ಪ್ರಯತನಂ ಸ್ಪರ್ಶಿನಾಂ" ।

ಬ ಬ (ಪುಂ) 1. ವರುಣ. 2. ಕುಂಭ. ಕಲಶ, ಬಿಂದಿಗೆ. 3. ಫಲ. 4. ವಕ್ಷಸ್ಥಲ. ಎದೆ. 5. ಗದ. "ಬಕಾರೋ ವರುಣಃ ಪ್ರೋಕ್ತೋ ಕಲಶಃ ಬಃ ಫಲಃಪಿ ಚ । ವಕ್ಷಃಸ್ಥಲಃ ಚ ಬಃ ಪ್ರೋಕ್ತೋ ಗದಾಯಾಂ ಸಮುದಾಹತಃ" ಏಕಾಂ । 6. ಬಿಂದು. 7. ವಿಕಲ್ಪ. 8. ಗುರು. 9. ಮದ. 10. ಸಂಪತ್ತನ್ನಂಟು ಮಾಡುವ. 11. ಕಲಹ, ಜಗಳ. 12. ಪಕ್ಷ. 13. ಗರ್ಭ. 14. ಪರ್ವ. "ಬಃ ಕುಂಭಃ ವರುಣೋ ಬಿಂದುವಿಕ್ಲ್ಯಃ ಚ ಗುರೋ ಮದಃ । ವಿಭೂತಿಕಾರಿ ಕಲಹಃ ಪಕ್ಷಃ ಗರ್ಭಃ ಪರ್ವಣಿ" ನಾನಾರ್ಥರಂ ।

ಬಂಹಿಠ ಬಂಹಿಷ್ಠ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಹೆಚ್ಚಾದ. ಅಯಮೇಷಾ-  
ಮತಿಶಯೇನ ಬಹುಲಃ "ಐಠನ್" (೪-೩-೪೪) । "ಬಂಹಿ"  
ಆದೇಶಶ್ಚ (೬-೪-೧೪೭) ।

ಬಂಹಿಯಸ್ ಬಂಹೀಯಸ್ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಹೆಚ್ಚಾದ. ಅಯಮನ-  
ಯೋರತಿಶಯೇನ ಬಹುಲಃ "ಐಯಸ್" (೪-೩-೪೭) । "ಬಂಹಿ"  
ಆದೇಶಶ್ಚ (೬-೪-೧೪೭) । "ಬಂಹಿಯಸಾ ದೀಪ್ತಿವಿತಾನಕೇನ  
ಚಕಾಸಯಾಮಾಸತುಲ್ಲಸಂತಿ" ಮಾಘಂ ೩-೬ । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ  
"ಓಪ್" (೪-೧-೬) । -ಯಸಿ -ಯಸೀ.

ಬಕ ಬಕ (ಪುಂ) 1. ಬಕಪಕ್ಷಿ. ಕೊಕ್ಕರೆ. ಬಕ್ಕತೆ-ವಕಿ  
(ಕೌಟಿಲ್ಯ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) । ಬಬಯೋರಭೇದಃ ।  
2. ಬಕಾಸುರ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಿಂದ ಹತನಾದ ಒಬ್ಬ ಅಸುರ.  
"ತಮಾಪತಂತಂ ಸ ನಿಗೃಹ್ಯ ತುಂಭಯೋರ್ದೋಮ್ಯಾ ಬಕಂ ಕಂಸಸಹಸ್ರಂ ಸತಾಂ  
ಪತಿಃ । ಪಶ್ಯತ್ಸು ಬಾಲೇಷು ದದಾರ ಲೀಲಯಾ ಮುದಾವಹೋ ವೀರಣವದ್-  
ದಿವೌಕಸಾಮ್" ಭಾಗಂ ೧೦-೧೨-೪೧ । 3. ಬಕಾಸುರ,  
ಪಾಂಡವರು ಏಕಚಕ್ರನಗರದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಭೀಮಸೇನನಿಂದ ಹತ  
ನಾದ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. "ತತೋ ಭೀಮೋ ಬಕಂ ಹತ್ವಾ ಗತ್ವಾ  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣವೇಶಮ ತತ್ । ಬಲಿವದೌ ಚ ಶಕಟಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಯ ನ್ಯವೇದಯತ್"  
ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೭೮-೧೦ । 4. ಕಂಬೇರ. (ನಂ) 5.  
ಬಕ ಪುಷ್ಪ. "ಪುಷ್ಪಭೇದಃ ಬಕಂ ರಕ್ಷಃಪಕ್ಷಿಷ್ಕಾಧಿಪಾ ಬಕಾಃ"  
ನಾನಾರ್ಥರಂ ।

ಬಕನಿಷ್ಪದನ ಬಕನಿಷ್ಠಾದನ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. 2.  
ಭೀಮಸೇನ.

ಬಕವತ ಬಕವೃತ (ನಂ) ಬಕಪಕ್ಷಿಯಂತೆ ವರ್ತಿಸುವುದು,  
ಕಪಟ, ಮೋಸ.

ಬಕವತಚರ ಬಕವೃತಚರ (ವಿಂ) ಬಕಪಕ್ಷಿಯಂತೆ ನಡೆಸು  
ವವನು. ಕಪಟ, ಮೋಸಗಾರ, ಪಟಂಗ.

ಬಕವೇರಿನ್ ಬಕವೈರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ 2. ಭೀಮ  
ಸೇನ. ಬಕಸ್ಯ ವೈರೀ ।

ಬಕಾರಿ ಬಕಾರಿ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. 2. ಭೀಮಸೇನ.

ಬಕೇರುಕಾ ಬಕೇರುಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೊಕ್ಕರೆ. 2. ಗಾಳಿ  
ಯಿಂದ ಬಗ್ಗಿರುವ ಮರದ ರೆಂಬೆ. "ಬಕೇರುಕಾ ಬಲಾಕಾ-  
ಭಿಧಾತಾವರ್ಜಿತಶಾಸ್ತ್ರಯೋಃ" ಮೇದಿಂ ।

ಬಡವಾ ಬಡವಾ (ಸ್ತ್ರೀ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಕುದುರೆ. ಬಲಂ ವಾತಿ—  
ವಾ (ಗತಿಗಂಧನಯೋಃ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) । "ಟಾಪ್" ।  
ಫಲಯೋರಭೇದಃ । "ಬಡವಾನಾಂ ತು ಶುದ್ಧಾನಾಂ ಚಂದ್ರಾಂಶುಸಮವರ್ತಸಾಮ್ ।  
ದದೌ ಜನಾರ್ದನಃ ಪ್ರೀತ್ಯಾ ಸಹಸ್ರಂ ಹೇಮಮುಷಿತಮ್" ಭಾಂ  
೧-೨೪೭-೪೦ । "ವಾಮ್ಯಶ್ಚಾ ಬಹವಾವಂತಿ" ವೇಜಂ । 2. ದಾಸಿ,  
ಸೇವಕಿ, ಹೆಣ್ಣು ಅಳಂ. "ದಾಸೀ ತು ಚೇಟಿಕಾ ಚೇಟಿ ಬಡವಾ  
ಕುಂಭಧಾರಿಕಾ" ವೇಜಂ । 3. ಅಶ್ವಿನೀದೇವತೆ. 4. ಸೂರ್ಯನ  
ಪತ್ನಿ. ಸಂಜಾ ಛಾಯಾ ಮತ್ತು ಬಡವಾ ಈ ಮೂವರೂ  
ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿಯರು. "ಸಂಜಾ ಛಾಯಾ ಚ ರಾಜೇಂದ್ರ ಯೇ  
ಪ್ರಾಗಭಿಹಿತೇ ತವ । ತೃತೀಯಾಂ ಬಡವಾಮೇಕೇ ತಾಸಾಂ ಸಂಜಾ-  
ಸುತಾಸ್ತ್ರಯಃ" ಭಾಗಂ । 5. ಬಡಬಾಗಿ. "ಅಥಾಕಾಶಗತಾ  
ದೇವಾಃ ಕ್ರುದ್ಧಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಮಹೇಶ್ವರಮ್ । ಪ್ರಸೀದ ಜಗತಾಂ ನಾಥ ಕಾಮೇ  
ಕ್ರೋಧಂ ಪರಿತ್ಯಜ । ಇತಿ ಸ್ಮ ವದತಾಂ ತೇಷಾಮಮರಾಣಾಂ ತದಾನಲಃ ।  
ಲಲಾಟೇ ಚಕ್ಷುಃ ಸಂಭೂತೋ ಭಸ್ಮಾಕಾರ್ಷಿಣ್ಮನೋಭವಮ್ । ಬ್ರಹ್ಮಾ  
ಕ್ರೋಧಾನಲಂ ಶಮ್ಭೋರ್ಧಕ್ಷಂತಂ ಸಕಲಾನ್ ಜನಾನ್ । ಬಡವಾರುಪಿಣಂ  
ಚಕ್ರೇ ದೇವಾನಾಂ ಪುರತಸ್ತದಾ । ಬಡವಾಂ ತಾಂ ಸಮಾಧಾಯ ತದಾ  
ಜ್ವಾಲಾಮುಖೀಂ ವಿಧಿಃ । ಸಾಗರಂ ಪ್ರಯಯೌ ಲೋಕಹಿತಾಯ ಜಗತಾಂ  
ಪ್ರಭುಃ" ಕಾಲಿಕಾಪುಂ । 6. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಹೆಂಗಸು. 7. ಒಂದು  
ನದಿ. 8. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು. "ಬಡವಾ ದ್ವಿಜ-  
ಯೋಷಿತಿ । ಅಶ್ವಾಸಾಂ ಕುಂಭದಾಸ್ಯಾಂ ಚ ನಾರೀಜಾತ್ಯಂತರೇಽಪಿ ಚ"  
ಮೇದಿಂ ।

ಬಡವಾಗಿ ಬಡವಾಗಿ, -ಅನಲ -ಅನಲ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ  
ದಲ್ಲಿ ಕುದುರೆಯ ಮುಖದಿಂದ ಹೊರಟ ಅಗ್ನಿ, ಬಡಬಾಗಿ.  
ಬಡವಾಯಾ ಸಮುದ್ರಸ್ಥಿತಾಯಾ ಅಶ್ವಾಸಾ ಮುಖಸ್ಥೋಽಗ್ನಿಃ ಅನಲೋ  
ವಾ । ಉರ್ವಮುಷಿಯು ಅಯೋನಿಜ ಪುತ್ರನನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ



ತನ್ನ ತೊಡೆಯನ್ನು ಒಂದು ದರ್ಭೆಯಿಂದ ಮಥನ ಮಾಡಲು ಜ್ವಾಲಾಮಾಲೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಬ್ಬ ಪುತ್ರನು ಜನಿಸಿ ತನ್ನ ಜ್ವಾಲೆಯಿಂದ ಲೋಕವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ದಹಿಸ ಲಾರಂಭಿಸಿದನು. ಆಗ ಬ್ರಹ್ಮನು ಆ ಜ್ವಾಲಾಮಯನಾದ ಪುತ್ರನಿಗೆ ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಬಡವಾ ಮುಖವನ್ನು ಸ್ಥಾನವಾಗಿ ಕಲ್ಪಿಸಿ ಜಗತ್ತನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಿದನು. ಅದರಿಂದ ಆ ಅಗ್ನಿಗೆ ಬಡವಾಗ್ಗೆ ಎಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು. ಮನ್ಮಥನ ದಹನಕ್ಕಾಗಿ ಪರಮೇಶ್ವರನ ಫಾಲನೇತ್ರದಿಂದ ಹೊರಟ ಅಗ್ನಿಯೂ ಬಡವಾಗ್ಗೆ. ["ಬಡವಾ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ಬಡವಾನಲ- ಭೂಮರಾಜಿರೂಪಾ" ಯಾದಂ ೧೪-೧೦೧.

**ಬಡವಾಸುತ ಬಡವಾಸುತ** (ಪುಂ ದ್ವಿಂ) ಬಡವಾ ಪುತ್ರರಾದ ಅಶ್ವಿನೀ ಕುಮಾರರು, ಅಶ್ವಿನೀ ದೇವತೆಗಳು.

**ಬಡಿಸ ಬಡಿಸ** (ನಂ) ಮೀನನ್ನು ಹಿಡಿಯುವ ಗಾಳಿ. ಬಲಿನೊ ಮತ್ಸ್ಯಾನ್ ಶ್ಯತಿ - ಶೋ(ತನುಕರಣ) "ಕ:" (೩-೨-೩) । ಡಲಯೋರಭೇದ: । "ಬಡಿಸಂ ಮತ್ಸ್ಯಬಂಧನಮ್" ಅಮಂ ।

**ಬರ ಬರ** (ಪುಂ) 1. ಹತ್ತಿ ಗಿಡ. 2. ಎಲಚಿ ಗಿಡ, ಬೋರೆ ಗಿಡ. ಬರ (ಸ್ಯಯೆ) "ಅರ:" ಬಾಹಂ । 3. ಹತ್ತಿಕಾಯಿ ಯೊಳಗಿನ ತಿರುಳು. (ನಂ) 4. ಎಲಚಿ ಹಣ್ಣು. ಬರಯಾ: ಫಲಮ್ - "ಅಣ್" (೪-೩-೧೩೪) । ಅಣ್ಣ "ಲುಕ್" (೪-೩-೧೬೩) । "ಅಥ ಸರಸಿಜಯೋನರಾಜಯಾ ರಾಮವೃತ್ತಂ ಕರಬರಸಮಾನಂ ಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯ ದೃಷ್ಟಯಾ ಪ್ರತೀಚ್ಯಾ" ಚಂ ರಾಂ । 5. ಹತ್ತಿಕಾಯಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಾ -ರಾ. 6. ರಾಶಿ. 7. ವಿಷ್ಣು ಕ್ರಾಂತಿ. 8. ಹತ್ತಿಗಿಡ.

**ಬರರಿಕಾಶಮ ಬರರಿಕಾಶಮ** (ಪುಂ) ಇದೊಂದು ಪುಣ್ಯ ಕ್ಷೇತ್ರ. ಈ ಕ್ಷೇತ್ರವು ಹಿಮಾಲಯದ ಒಂದು ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀನಗರಕ್ಕೆ ಸುಮಾರು 55 ಮೈಲಿಗಳಷ್ಟು ದೂರದಲ್ಲಿ ಅಲಕನಂದಾನದಿಯ ಪಶ್ಚಿಮ ತೀರದಲ್ಲಿರುವುದು. ಇಲ್ಲಿ ನರನಾರಾಯಣರ ದೇವಾಲಯವಿರುವುದು. ಇದು ನಮ್ಮ ಭಾರತದಲ್ಲಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ ಒಂದು ಯಾತ್ರಾಸ್ಥಳ. ಲೋಕ ಕ್ಷೇಮಕ್ಕಾಗಿ ನರನಾರಾಯಣರು ತಪಸ್ಸುಮಾಡಿದ ಕ್ಷೇತ್ರ.

**ಬರರಿ ಬರರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹತ್ತಿ ಗಿಡ. 2. ಎಲಚಿ ಗಿಡ. ಬರರ ಗೌರಾಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೪೧) । 3. ನಸುಗುನ್ನಿ ಗಿಡ.

**ಬರರಿಕುಣ ಬರರಿಕುಣ** (ಪುಂ) ಎಲಚಿಯ ಹಣ್ಣಿನ ಕಾಲ, ಎಲಚಿ ಗಿಡವು ಹಣ್ಣು ಬಿಡುವ ಕಾಲ. ಬರರಿಣಾಂ ಪಾಕ: "ಕುಣ್" (೪-೨-೨೪) ।

**ಬರರಿತಪೋವನ ಬರರಿತಪೋವನ** (ನಂ) ಬರರಿಕಾಶಮ, ನರನಾರಾಯಣರು ತಪಸ್ಸುಮಾಡಿದ ಕ್ಷೇತ್ರ. "ಬರರಿತಪೋ-

ವನನಿವಾಸನಿರತಮವಗಾತ ಮಾನ್ಯಥಾ । ವಾತುರದಯನಿಧನೇ ಜಗತಾಂ ನರಮಂಶಮಾದಿಪುರುಷಸ್ಯ ಗಾಂ ಗತಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೨-೩೩ ।

**ಬರರಿನಾಥ ಬರರಿನಾಥ** (ಪುಂ) ಬರರಿಕಾಶಮದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ದೇವಾಲಯ.

**ಬಡ ಬಡ** (ವಿಂ) 1. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಬಂಧ (ಬಂಧನ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । "ಛಾಯಾಬದ್ಧ- ಕದಂಬಕಂ ಮೃಗಕುಲಂ ರೋಮ್ಯಮನ್ಯಸ್ಯತು" ಶಾಕುಂ ೨-೬ । 2. ಉಂಟಾದ, ಎಷ್ಟು. "ಅಸ್ಮತ್ ಸಾ ನಾಗವಧುಪಭೋಗ್ಯಂ ಮೈನಾಕಮಮೋನಿಧಿಬದ್ಧಸಹ್ಯಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೨೦ । 3. ಸಂಕೋಲೆ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೀಡುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಜಿತಾಶೇಷವಿಪಕ್ಷಸ್ಯ ಬದ್ಧಮುಕ್ತಾವಭಾಸಿನಿ" ಯಾದಂ ೨೨-೨೩ । 4. ರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಜೋಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸ ತದಾ ಸನ್ನತಸ್ಕಂಧೋ ಬದ್ಧಾಂಜಲಿರನಿಶ್ವಸನ್" ಯಾದಂ ೧೬-೬೯ । 5. ರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಶ್ಲೋಕ ಏಷ ತ್ವಯಾ ಬದ್ಧ: ನಾತ್ರ ಕಾರ್ಯಾ ವಿಚಾರಣಾ" ರಾಮಾಂ । 6. ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ. "ಬದ್ಧೋ ವಾಸರಸಕ್ರೂರೋ ಭೀಮೋ ರಾಮೇಣ ಲವಣ- ಸಲಿಲಾಶ್ವಾಸೇ" ಭದ್ರಿಂ ೨೩-೨ । 7. ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ದೇಹಬದ್ಧಮಿವೇಂದ್ರಸ್ಯ ಚಿರಕಾಲಾಜಿತಂ ಯಶ:" ೨-೪೭ । 8. ಬಳಗಿ ಕೊಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕುಂದಣದಲ್ಲಿರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 9. ಬೀರಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೀಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಗ್ರೀವಾ- ಮಂಜಾಭಿರಾಮಂ ಮುಹುರನುಪತತಿ ಸ್ಯಂದನೇ ಬದ್ಧದೃಷ್ಟಿ:" ಶಾಕುಂ ೧-೭ । 10. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಲ್ಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 11. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಟ್ಟುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ವರಣೇನ ಯಥಾ ಪಾಶೇಬ್ದಂ ಏವಾಭಿದೃಶ್ಯತೇ" ಮನುಂ ೧-೩೦೮ । 12. ಬಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 13. ವ್ಯಕ್ತವಾದ, ಹೊರಗೆ ಹೊಮ್ಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಘನರಾಜಿನೂತನಪಯ:ಸಮುಕ್ಷಣಕ್ಷಣಬದ್ಧಕುಡ್ಮಲಕದಂಬ- ಡಂಬರ:" ಮಾಲತೀಂ ೩-೭ । 14. ದೃಢವಾದ, ದೃಢವಾಗಿ ಬೇರುಬಿಟ್ಟಿರುವ. 15. ಸಿಕ್ಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಲೆಯೊಳಗೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 16. ಸಂಸಾರವಾಶದಿಂದ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟವನು, ಸಂಸಾರದಲ್ಲಿ ಅನುವರ್ತಿಸಿಕೊಂಡು ಬರುವವನು.

**ಬಡಜಿಹ್ವ ಬಡಜಿಹ್ವ** (ವಿಂ) ನಾಲಗೆ ಬಿಗಿಹಿಡಿದಿರುವ, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ತೋರಿದಂತೆ ಮಾತನಾಡಿದಿರುವ.

**ಬಡವೃಷ್ಟಿ ಬಡವೃಷ್ಟಿ** (ವಿಂ) ನೆಟ್ಟದೃಷ್ಟಿಯುಳ್ಳ, ಯಾವ ಕಡೆಯೂ ಚಲಿಸದೆ ದಿಟ್ಟಿಸಿ ನೋಡುತ್ತಿರುವ.

**ಬಡನಿಶ್ವಯ ಬಡನಿಶ್ವಯ** (ವಿಂ) ದೃಢವಾದ ನಿಶ್ಚಯ, ವೃಳ್ಳ, ಸ್ಥಿರಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ.

**ಬಡಪರಿಕರ ಬಡಪರಿಕರ** (ವಿಂ) 1. ಸೊಂಟಕ್ಕೆ ಬಟ್ಟೆ ಯನ್ನು ಕಟ್ಟಿರುವ, ಬಟ್ಟೆಯಿಂದ ಸೊಂಟವನ್ನು ಸುತ್ತಿ



ಕಟ್ಟಿರುವ. ಬದ್ಧ: ಪರಿಕರೋ यस್ಯ | 2. ನಡು ಕಟ್ಟಿಕೊಂಡು ಸಿದ್ಧವಾಗಿರುವ, ಸಜ್ಜಾಗಿರುವ.

**ಬದ್ಧಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಬದ್ಧಪ್ರತಿಜ್ಞೆ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡಿರುವ. 2. ದೃಢವಾದ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ, ಮಾತಿಗೆ ತಪ್ಪದಿರುವ.

**ಬದ್ಧಭಾವ ಬದ್ಧಭಾವ** (ವಿಂ) ಮನಸ್ಸು ಒಲಿದಿರುವ, ಪ್ರೇಮವಿಟ್ಟಿರುವ.

**ಬದ್ಧಮುಠಿ ಬದ್ಧಮುಠಿ** (ವಿಂ) 1. ಬಿಗಿಹಿಡಿದ ಕೈಯುಳ್ಳ. 2. ಕೃಪಣ, ಜಿಪುಣ. ಬದ್ಧಾ ಮುಠಿರಸ್ಯ |

**ಬದ್ಧಮೂಲ ಬದ್ಧಮೂಲ** (ವಿಂ) ದೃಢವಾದ ಬೇರುಳ್ಳ, ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ಬೇರೂರಿರುವ. ಬದ್ಧಂ ದೃಢಂ ಮೂಲಂ यस್ಯ | "ಬದ್ಧ-ಮೂಲಸ್ಯ ಮೂಲಂ ಹಿ ಮಹದ್ವೇರತರೋ: ಸ್ತ್ರೀಯಃ" ಮಾಘಂ ೨-೩೮ |

**ಬದ್ಧಶಿಕ್ಷ ಬದ್ಧಶಿಕ್ಷ** (ವಿಂ) 1. ಗಂಟುಹಾಕಿರುವ ಶಿಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, ತಲೆಯ ಜುಟ್ಟನ್ನು ಗಂಟುಹಾಕಿಕೊಂಡಿರುವ. ಬದ್ಧಾ ಶಿಕ್ಷಾ ಯಸ್ಯ | (ಪುಂ) 2. ಶಿಕ್ಷು. ಜುಟ್ಟನ್ನು ಗಂಟು ಹಾಕುವ ವಯಸ್ಸಿನ ಮಗು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಶಿಕ್ಷಾ -ಶಿಕ್ಷಾ. 3. ಕೊನ್ನಾರಿಗಡ್ಡೆಯ ಒಂದು ಭೇದ.

**ಬಧಿರ ಬಧಿರ** (ವಿಂ) 1. ಕಿವುಡ, ಶ್ರೋತ್ರೇಂದ್ರಿಯವಿಲ್ಲದವನು. ಬಧ್ನಾತಿ ಕರ್ಣಮ್ - ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಕಿರಚ್" (ತಂ ೧-೪೧) | "ಜಡಮೂಕಾಂಭವಧಿರಾನ್ ತೈರ್ಯಗ್ಯೋನಾನ್ ವಯೋತಿಗಾನ್" ಮನುಂ ೭-೧೪೯ | 2. ಅರಿವಿಲ್ಲದವನು, ಪರಿಚಯವಿಲ್ಲದವನು. "ವಿಶ್ವಕರ್ತುರವತಾರ ಇತಿ ಸ್ವಂ ಬದ್ಧಮಂತ ಬಧಿರೋ ನಿಗಮೇಷು" ಯಾದಂ ೨೧-೪ |

**ಬಧಿರಮನ್ ಬಧಿರಮನ್** (ಪುಂ) ಕಿವುಡು. ಬಧಿರಸ್ಯ ಭಾವಃ ವಾ "ಇಮನಿಚ್" (೪-೧-೧೨೩) | ಪಕ್ಷೆ "ಫ್ಯಾ" (೪-೧-೧೨೪) | ಬಾಧಿಯಮ್ ಬಾಧಿಯಮ್.

**ಬಧ್ನತ್ ಬಧ್ನತ್** (ವಿಂ) 1. ಬುಧಿಸುತ್ತಿರುವ, ಕಟ್ಟಿಹಾಕುತ್ತಿರುವ. ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | 2. ಬೇಡಿ ಹಾಕುತ್ತಿರುವ, ಸಂಕೋಲೆ ಹಾಕುತ್ತಿರುವ. 3. ನಿರ್ಮಿಸುತ್ತಿರುವ, ಕಟ್ಟಿದ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಕಟ್ಟುತ್ತಿರುವ. 4. ಗ್ರಂಥವನ್ನು ರಚಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಜಿರ್" (೪-೧-೬) | ಬಂಧತೀ ಬಧ್ನತೀ.

**ಬದ್ಧಿ(ನ್ದಿ) ಬಂಧಿ(ನ್ದಿ)** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೈದಿ, ಸೆರೆಯಾಳು. "ಮೋಕ್ಷಯತೇ ಸುರಬಂಧಿನಾಂ ವೇಣೀವೀರ್ಯವಿಭೂತಿಮಿ:" ಕುಮಾಂ ೨-೬೧ | 2. ಸೆರೆ, ಬಂಧನ. 3. ದಾಸ್ಯ, ಗುಲಾಮಗಿರಿ.

**ಬಂಧ - ಬಂಧನೆ** (ಕ್ರಿಯಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) |

ಬಧ್ನಾತಿ ಬಧ್ನತೀ ಬಧ್ನಂತಿ |  
ಬಬಂಧ | ಬಂಧಾ ಬಂಧಾರೌ  
ಬಂಧಾರಃ | ಬಂಧಂತಿ ಬಂಧಂತಿ |

ಬಧ್ನಾತು } ಬಧ್ನತೀತಾಮ್ ಬಧ್ನಂತು |  
ಬಧ್ನತೀತಾಮ್ }

ಬಧಾನ | ಬಧ್ನಾನಿ ಬಧ್ನಾವ ಬಧ್ನಾಮ |

ಅಬಧ್ನಾತ್ ಅಬಧ್ನತೀತಾಮ್ |

ಬಧ್ನತೀತಾಮ್ | ಬಧ್ಯಾತ್ | ಅಬಾಂತ್ಸೀತ್ |

1. ಕಟ್ಟು, ಗಂಟುಹಾಕು. "ಬಬಂಧ ಚಾಸ್ತ್ರಾಕುಲದೃಷ್ಟಿರಸ್ಯಾಃ ಸ್ಥಾನಾಂತರೇ ಕಲ್ಪಿತಸಂನಿವೇಶಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೨೪ | 2. ಮನಸ್ಸನ್ನಿಡು, ಅದರ ಕಡೆ ಲಕ್ಷ್ಯವಿಡು. "ಅತೋಽಮಿಲಾಷೇ ಪ್ರಥಮಂ ತಥಾವಿಧೇ ಮನೋ ಬಬಂಧಾನ್ಯರಸಾನ್ ಬಿಲಿಙ್ಗ್ಯ" ರಘುಂ ೩-೪ | 3. ಕೊಡು, ಉಂಟುಮಾಡು. "ಕಾಲೇ ಖಲು ಸಮಾರಂಭಾಃ ಫಲಂ ಬಧ್ನಂತಿ ನೇತಯಃ" ರಘುಂ ೧೨-೬೯ | 4. ಮನಸ್ಸನ್ನು ಅಕರ್ಷಿಸು, ಮೋಹಗೊಳಿಸು. "ಬಧ್ನಾತಿ ಮೇ ಬಂಧುರಗಾತ್ರಿ ಚಕ್ಷುರ್ದೃಷ್ಟಃ ಕಕುಚಾನಿವ ಚಿತ್ರಕೂಟಃ" ರಘುಂ ೧೩-೪೭ | 5. ತಡೆ, ನಿರೋಧಿಸು. 6. ಧರಿಸು, ತೊಡು. "ನ ಹಿ ಚೂಡಾಮಣಿಃ ಪಾದೇ ಪ್ರಭವಾಮೀತಿ ಬಧ್ಯತೇ" ಪञ्ಚತಂ ೧-೭೮ | 7. ಕಟ್ಟಿಹಾಕು, ಬಂಧಿಸು. "ಬಲಿಬಂಧೇ ಜಲಧಿರ್ಮಮನ್ಯೇ ಜಹೇಽಮೃತಂ ದೈತ್ಯಕುಲಂ ವಿಜಿಗ್ಮ್ಯ" ಭट्टಿಂ ೨-೩೯ | 8. ಸೃಷ್ಟಿಸು, ನಿರ್ಮಿಸು, ಒಂದು ಆಕಾರ ಕೊಡು, ಒಂದು ರೂಪ ಕೊಡು. "ದೇಹಬದ್ಧ-ಮಿವೇಂದ್ರಸ್ಯ ಚಿರಕಾಲಾಜಿತಂ ಯಶಃ" ಕುಮಾಂ ೨-೪೭ | 9. ಫಲಿಸು, ಫಲ ಕೊಡು, ಫಲ ಬಿಡು, ಉಂಟುಮಾಡು, ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡು. "ಚೂತಾನಾಂ ಚಿರನಿರ್ಗತಾಪಿ ಕಲಿಕಾ ಬಧ್ನಾತಿ ನ ಸ್ವಂ ರಜಃ" ಶಾಕುಂ ೬-೪ | 10. ಮಾಡು, ರಚಿಸು, ನಿರ್ಮಿಸು. 11. ಬೇಡಿ ಹಾಕು, ಸಂಕೋಲೆ ಹಾಕು. "ಜಿತಾಶೇಷವಿಪಕ್ಷಸ್ಯ ಬದ್ಧಮುಕ್ತಾವಭಾಸಿನಿ" ಯಾದಂ ೨೨-೨೩ |

**ಕರ್ಮಣಿ:**-ಬಧ್ಯತೇ | ಬಬಂಧ | ಬಂಧಾ | ಬಂಧಂತಿ | ಬಧ್ಯತಾಮ್ | ಬಬಂಧಂತಿ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ನಿಜಿ:**-ಬಂಧಯತಿ, -ತೇ | ಬಂಧಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, ಬಬಂಧ, -ಆಸ | ಬಂಧಯಿತಾ | ಬಂಧಯತು, -ತಾಮ್ | ಬಬಂಧಯತ್, -ತ | ಬಂಧಯೇತ್-ತ ಇತ್ಯಾದಿ. "ಸ ಸೇತು ಬಂಧಯಾಮಾಸ ಪ್ಲವಗೈಲವಗಾಮ್ಭಸಿ" ರಘುಂ ೧೨-೭೦ |

**ಕೃತ್ಸು:**-ಬಂಧಯಾಮ್ | ಬಂಧನೀಯಮ್ | ಬಂಧಯಮ್ | ಬದ್ಧಃ | ಬದ್ಧವಾನ್ | ಬಧ್ನನ್, ಬಧ್ನತೀ | ಬಂಧಂತಿ, -ತೀ | ಬದ್ಧಮ್ | ಬಂಧನಮ್ | ಬದ್ಧಾ | ಬದ್ಧಾ | ಬದ್ಧಾ |

**ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:**

(1) ಅನು + ಬಂಧ = ಅನುಬಧ್ನಾತಿ | ಅನುಬಂಧಃ | ಅನು-ಬದ್ಧಃ | ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಸಂಬಂಧಹೊಂದು, ಅಸಕ್ತಿ ಹೊಂದು. "ಯಸ್ಯಾಂ ಮನಶ್ಚಕ್ಷುರ್ನುಬಂಧಸ್ತಸ್ಯಾಮೃದ್ಧಿಃ"



ಮಾಲತೀಂ ೨। 2. ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ ಸಂಬಂಧಿಸು. ಎಡೆ ಬಿಡದೆ ಇರು. "ವಿರಮ ವಿರಮ ವಹ್ನೇ ಮುಚ್ಚ ಧುಮಾನುಬನ್ಧಮ್" ರತ್ನಾಂ ೪-೧೬। 3. ಅನುವರ್ತಿಸು, ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ ಮುಂದು ಸಾಗು. "ಅಪನೇಷ್ಯತಿ ತೇ ಮನ್ಯು ನಿಯಾನುಬದ್ಧಕುರ್ವೇರ: ಕುಮಾರೋ ಭೀಮಸೇನ:" ವೇಣೀಂ ೧। 4. ಅನುಸರಿಸು, ಹಿಂಬಾಲಿಸು. "ತಾಸಾಕುಲ: ಪರಿಪತನ್ ಪರಿತೋನಿಕೇತಾನ್ ಪುಭಿರ್ನ ಕೇಶ್ವಿದಪಿ ಧನ್ವಿಭಿರನ್ವಬನ್ಧಿ" ಮಾಧಂ ೫-೨೬। 5. ಅನುವರ್ತಿಸುವುದು, ಒಂದರ ಹಿಂದೆ ಒಂದು ಸೇರಿದಂತೆ ಬರುವುದು. "ಸತ್ಯೋಷ್ಯ ಲೋಕವಾದ: ಯತ್ಸಂಪತ್ಸಂಪದಮನುಬದ್ಧಾತಿ" ಕಾದಂ। 6. ಬೆರೆತಿರು, ಮಿಶ್ರವಾಗು. "ನೀಲಕಂಠ-ಕಲಕೇಕಾನುಬನ್ಧಿನಾ ಮನ್ದ್ರಹಂಕೃತೇನ ಮಾಮನುಮನ್ಯತೇ" ಮಾಲತೀಂ ೧। 7. ಜೊತೆಯಲ್ಲಿರು, ಸಂಗಡ ಇರು. "ಮಹೋದಯಸ್ತಸ್ಯ ಹಿತಾನುಬನ್ಧಿಭಿ:" ಕಿರಾಂ ೧-೨೦।

(2) ಉ + ಬನ್ಧ = ಉಬ್ಧನಮ್। ಉಬ್ಧಯ। 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿಕಟ್ಟು. 2. ನೇಣುಹಾಕು, ತೂಗುಹಾಕು. "ಏತಯಾ ಮಾಧವೀಲತಯಾ ಪಾಶಂ ವಿರಚ್ಯ ಅಶೋಕಪಾದಪೇ ಆತ್ಮಾನ-ಮುಬ್ಧಯ ವ್ಯಾಪಾದಯಾಮಿ" ರತ್ನಾಂ ೩। 3. ಸೆಡಲಿಸು, ಕಟ್ಟು ಬಿಚ್ಚು. "ಉಬ್ಧಕೇಶಶ್ಚತುಪತ್ರಲೇಖ:" ರಘುಂ ೧೬-೬೭।

(3) ನಿ + ಬನ್ಧ = ನಿಬದ್ಧಾತಿ। ನಿಬದ್ಧ:। 1. ಕಟ್ಟು, ಗಂಟುಹಾಕು. "ಅಕಾರಿ ತತ್ಪೂರ್ವನಿಬದ್ಧಯಾ ತಯಾ ಸರಾಗಮಸ್ಯಾ ರಶನಾಗುಣಾಸ್ಪದಮ್" ಕುಮಾಂ ೫-೧೦। 2. ಸಿಲುಕಿಸು, ಕಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸು. "ಆತ್ಮವನ್ತಂ ನ ಕರ್ಮಣಿ ನಿಬದ್ಧಂತಿ ಧನಂಜಯ" ಗೀತಾ ೪-೪೧। 3. ಗ್ರಂಥ ರಚಿಸು, ಗ್ರಂಥ ನಿರ್ಮಿಸು. "ಸಂಸ್ಕಾರಪೂತೇನ ವರಂ ವರೇಣ್ಯಂ ವಧು ಸುಖಗ್ರಾಹ್ಯ-ನಿಬದ್ಧನೇನ" ಕುಮಾಂ ೭-೧೦। 4. ಅನುಗ್ರಹಪತ್ರ ಬರೆ, ದಾನಶಾಸನ ಬರೆ. "ಅನುಸೂತ್ರಪದನ್ಯಾಸಾ ಸದ್ವೃತ್ತಿ: ಸನ್ನಿಬದ್ಧತಾ। ಶಬ್ದವಿಧೇವ ನೋ ಭಾತಿ ರಾಜನೀತಿರಪಸ್ಪಶಾ" ಮಾಧಂ ೨-೧೧೨।

(4) ನಿರ್ + ಬನ್ಧ = ನಿರ್ಬನ್ಧ:। ನಿರ್ಬಂಧ್ಯ। 1. ಒತ್ತಾಯಪಡಿಸು, ಬಲಾತ್ಕರಿಸು. "ನಿರ್ಬಂಧಪೃಷ್ಠ: ಸ ಜಗಾದ ಸರ್ವಂ ಸ್ತುವಂತಿ ಪೌರಾಶ್ವರೀತಂ ತ್ವದೀಯಮ್" ರಘುಂ ೧೪-೩೨। 2. ಹಿಟ ಮಾಡು, ಸ್ಥಿರಪ್ರಯತ್ನ ಮಾಡು, ಪಟ್ಟು ಹಿಡಿ. "ನಿರ್ಬಂಧಸಂಜಾತಲ್ಪಾರ್ಯಕಾರ್ಯಮಚಿಂತಯಿತ್ವಾ ಗುರುಣಾಹಮುಕ್ತ:" ರಘುಂ ೫-೨೧।

(5) ಪ್ರ + ಬನ್ಧ = ಪ್ರಬನ್ಧ:। ಪ್ರಬಂಧನಮ್। 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸು, ಪದಗಳನ್ನು ಜೋಡಿಸು. ಪಾಠ್ಯಗಳನ್ನು ರಚಿಸು, ಗ್ರಂಥವನ್ನು ರಚಿಸು. "ಪ್ರಥಿತಯಶಸಾಂ ಭಾಸಸೌಮಿಲ್ಲಲಕಾ-ದೀನಾಂ ಪ್ರಬಂಧಾನತಿಕಮ್ಯ" ಮಾಲಂ ೧। 2. ಸಾತಡ್ಡ,

ನಿರಂತರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಎಡೆಬಿಡದೆ ಇರುವಿಕೆ. "ಅತಿಪ್ರಬಂಧ-ಪ್ರಹಿತಾಸ್ತವೃಷ್ಟಿಭಿ:" ರಘುಂ ೩-೫೮।

(6) ಪ್ರತಿ + ಬನ್ಧ = ಪ್ರತಿಬದ್ಧಾತಿ। ಪ್ರತಿಬಂಧ:। ಪ್ರತಿ-ಬದ್ಧ:। 1. ತಡೆ. ನಿರೋಧಿಸು. "ಪ್ರತಿಬದ್ಧಾತಿ ಹಿ ಶ್ರೇಯ: ಪೂಜ್ಯಪೂಜಾವ್ಯತಿಕರ್ಮ:" ರಘುಂ ೧-೭೯। 2. ಒಳಕ್ಕೆ ಸೇರಿಸು, ಕುಂದಣದಲ್ಲಿಡು. "ಬಹಲಾನುರಾಗಕುರ್ವಿನ್ದದಲಪ್ರತಿಬದ್ಧ-ಮಧ್ಯಮಿವ ದಿಗ್ವಲಯಮ್" ಮಾಧಂ ೧-೮। 3. ಸ್ಥಿರವಾಗಿರಿಸು, ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲಿಸು. "ತೌ ಸನ್ಧಿಭು ವ್ಯಜ್ಜಿತವೃತ್ತಿಭೇದಂ ರಸಾಂತರೇಭು ಪ್ರತಿಬದ್ಧರಾಗಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೯೧। 4. ಕಟ್ಟು ಹಾಕು, ಬಂಧಿಸು. "ವನಾಯ ಪೀತಪ್ರತಿಬದ್ಧವತ್ಸಾಂ ಯಶೋವನೋ ಧೇನುಮೃಗೇಮೋಚ" ರಘುಂ ೨-೧।

(7) ಸಮ್ + ಬನ್ಧ = ಸಮ್ಬದ್ಧಾತಿ। ಸಮ್ಬಂಧ:। ಸಮ್ಬದ್ಧ:। 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕಟ್ಟು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಗಂಟುಹಾಕು. 2. ಸ್ನೇಹ ಹೊಂದು, ಗೆಳೆತನ ಪಡೆ. "ಸಮ್ಬಂಧಮಾಭಾಷಣ-ಪೂರ್ವಮಾಹು: ವೃತ್ತ: ಸ ನೌ ಸಂಗತಯೋರ್ವನಾಂತೇ" ರಘುಂ ೨-೫೮। 3. ವಿವಾಹದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ನೆಂಟತನ, ಬಾಂಧವ್ಯ. "ತೇನ ಯೋಜಿತಸಮ್ಬಂಧಂ ವಿದ್ವತ್ ಮಾಮಪ್ಯವಶ್ಚಿತಮ್" ಕುಮಾಂ ೬-೩೦। "ಏಷ ವ: ಶ್ಲಾಘ್ಯಸಮ್ಬಂಧಿ ಜನಕಾನಾಂ ಕುಲೋದ್ಭವ:" ಉಂ ರಾಂ ೪-೯।

ಬನ್ಧ ಬಂಧ (ಬಂ) 1. ದೇಹ, ಶರೀರ. ಬಂಧನೇನ-ಬನ್ಧ (ಬನ್ಧನೆ) ಕರಂ "ಬಂ" (೩-೩-೧೨೧)। 2. ಸಂಸಾರ ಬಂಧನ, ಕರ್ಮಗಳ ಫಲವನ್ನು ಅನುಭವಿಸಲು ಉಂಟಾದ ದೇಹಸಂಬಂಧ. "ಬಂಧಂ ಮೋಕ್ಷಂ ಚ ಯಾ ವೇತ್ತಿ ಬುದ್ಧಿ: ಸಾ ಪಾರ್ಥ ಸಾನ್ವಿಕೀ" ಗೀತಾ ೧೮-೩೦। 3. ಬೇಡಿ ಹಾಕುವುದು, ಸಂಕೋಲೆ ಹಾಕುವುದು, ಬನ್ಧ ಭಾವೆ "ಬಂ" (೩-೩-೧೮)। "ನಿರೋಧನೇನ ಬಂಧೇನ ವಿವಿಧೇನ ವಧೇನ ವಾ" ಮನುಂ ೮-೩೧೦। 4. ಕಟ್ಟುವುದು, ಗಂಟುಹಾಕುವುದು. "ಪ್ರಸಮವಿಮಿಶ್ರ-ತನುತರೀಯಬನ್ಧಾ" ಮಾಧಂ ೭-೩೪। 5. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಜೋಡಿಸು ವುದು, ಸೇರಿಸುವುದು. "ಪ್ರಾಸಾದವಾತಾಯನದೃಶ್ಯಬನ್ಧ: ಸಾಕೇತ-ನಾರ್ಯೋಜ್ಜಲಿಭಿ: ಪ್ರಣೇಮು:" ರಘುಂ ೧೪-೧೩। 6. ಯೋಗ, ಸಂಬಂಧ. "ತತ್ತ್ವಾವಬೋಧೇನ ವಿನಾಪಿ ಭೂಯಸ್ತನುತ್ಯಜಾಂ ನಾಸ್ತಿ ಶರೀರಬನ್ಧ:" ರಘುಂ ೧೩-೫೮। 7. ಯೋಗಾಸನಕ್ಕಾಗಿ ಅಳವಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಶರೀರದ ಸ್ಥಿತಿ, ಶರೀರದ ವಿನ್ಯಾಸ, ಭಂಗಿ. "ಪರ್ಯಂಕಬನ್ಧಸ್ಥಿರಪೂರ್ವಕಾಯಮೃತ್ವಾಯತಂ ಸನಮಿತೋ-ಭಯಾಸಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೪೫। 8. ನಿರ್ದಿಷ್ಟವಾದ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಪದ್ಯಗಳನ್ನು ರಚಿಸುವುದು. ಖಡ್ಗಬನ್ಧ: (ಕತ್ತಿಯ ಅಕಾರ ದಲ್ಲಿ ಪದ್ಯರಚನೆ) ಗೋಮೃತ್ರಿಕಾಬನ್ಧ: (ವೃಷಭಗಳ ಮೂತ್ರವು ಬೀಳುವ ಅಕಾರದಲ್ಲಿ ಪದ್ಯರಚನೆ) ಪದ್ಯಬನ್ಧ: (ಪದ್ಯಗಳ



ಬಂಧು ಬಂಧು (ಪುಂ) 1. ಸಂಬಂಧ, ಸಂಬಂಧಿ, ಒಂದೇ ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಬಂಧಾತಿ ಸ್ತೇಹೇನ ಮನಃ— ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) “ಃ” (ಉಂ ೧-೧೦) । “ಯತ್ರ ದ್ರುಮಾ ಅಪಿ ಮೃಗಾ ಅಪಿ ಬಂಧವೋ ಮೇ ಯಾನಿ ಪ್ರಿಯಾಸಹಚರಶ್ಚಿರಮಧ್ಯವಾತ್ಸಮ್” ಉಂ ರಾಂ ೩-೮ । 2. ಮಿತ್ರ, ಸುಹೃತ್ತು, ಗೆಳೆಯ. “ಜಾಲೋದ್ಗೀರ್ಣ-ರೂಪಚಿತವಪುಃಕೇಶಸಂಸ್ಕಾರಧುಪೈಃ ಬಂಧುಪ್ರೀತ್ಯಾ ಭವನಶಿಖಿಭಿದಂತ-ನೃತ್ಯೋಪಹಾರಃ” ಮೇಘಂ ೧-೩೨ । 3. ಸಹೋದರ, ಒಡ ಹುಟ್ಟಿದವನು. “ಅಥಾನಾಥಾಃ ಪ್ರಕೃತಯೋ ಮಾತೃಬಂಧು-ನಿವಾಸಿನಮ್” ರಘುಂ ೧೨-೧೨ । 4. ತಾಯಿ. 5. ತಂದೆ. 6. ಪತಿ, ಗಂಡ. “ಅಯೋಧೀನಾಯ ಇವಾಭಿತಪ್ತಂ ವೇದೇಹಿಬಂಧೋ-ಹೃದಯಂ ವಿವದ್ರೆ” ರಘುಂ ೧೪-೩೩ । ಬಂಧುಗಳನ್ನು ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಆತ್ಮಬಂಧುಃ ಮಾತೃಬಂಧುಃ ಮತ್ತು ಪಿತೃಬಂಧುಃ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧವಾಗಿ ವಿಂಗಡಿಸಬಹುದು. (1) ತಾಯಿಯ ಮತ್ತು ತಂದೆಯ ಸಹೋದರಿಯ ಮಕ್ಕಳು ಮತ್ತು ಸೋದರಮಾವನ ಮಕ್ಕಳು ಆತ್ಮಬಂಧುಗಳು. “ಆತ್ಮ-ಮಾತುಃ ಸ್ವಸುಃ ಪುತ್ರಾಃ ಆತ್ಮಪಿತುಃ ಸ್ವಸುಃ ಸುತಾಃ । ಆತ್ಮಮಾತುಲ-ಪುತ್ರಾಶ್ಚ ವಿಜ್ಞೇಯಾ ಆತ್ಮಬಂಧವಃ । (2) ಪಿತಾಮಹನ (ತಂದೆಯ ತಂದೆಯ) ಸಹೋದರಿಯ ಮಕ್ಕಳು ತಂದೆಯ ಸಹೋದರನ ಮಕ್ಕಳು ಮತ್ತು ತಂದೆಯ ಸೋದರ ಮಾವನ ಮಕ್ಕಳು ಪಿತೃಬಂಧುಗಳು. “ಪಿತುಃ ಪಿತುಃ ಸ್ವಸುಃ ಪುತ್ರಾಃ ಪಿತುಃ ಪಿತುಃ ಸ್ವಸುಃ ಸುತಾಃ । ಪಿತುಃ ಪಿತುಲಪುತ್ರಾಶ್ಚ ವಿಜ್ಞೇಯಾಃ ಪಿತೃಬಂಧವಃ” । (3) ಮಾತಾಮಹನ (ತಾಯಿಯ ತಂದೆಯ) ಸಹೋದರಿಯ ಮಕ್ಕಳು ಮಾತಾಮಹಿಯ (ತಾಯಿಯ ತಾಯಿಯ) ಸೋದರಿಯ ಮಕ್ಕಳು ಮತ್ತು ತಾಯಿಯ ಸಹೋದರಮಾವನ ಮಕ್ಕಳು ಮಾತೃಬಂಧು



ಗಳು. "ಮಾತು: ಪಿತು: ಸ್ವಸು: ಪುತ್ರಾ: ಮಾತುರ್ಮಾತು: ಸ್ವಸು: ಸುತಾ: | ಮಾತುರ್ಮಾತುಲಪುತ್ರಾಶ್ಚ ವಿಜ್ಞೇಯಾ ಮಾತೃಬಂಧವ:" | 7. ಬಂಧೂಕ, ಕೆಂಪು ದಾಸವಾಳದ ಗಿಡ ಮತ್ತು ಪುಷ್ಪ. "ಬಂಧುಬಂಧುಕಪುಷ್ಪೇ ಸ್ಯಾದ್ಬಂಧುಭ್ರಾತರೀ ಬಾಂಧವೇ" ವಿಶ್ವಂ | 8. ಮಂಜುಳ, ಕಾಮದೇವ. "ಶೂರ್ಪಕಾರಿರ್ಮಧುಸಖ: ಪಂಚೇಷು ವಿಷಮಾಯುಧ: | ಬಂಧುರ್ಮಾಂ ಜರಾಭೀರುಹ್ಂಚಯೋ ಮಧು- ಸಾರಥಿ:" ವೇಜಂ | 9. ತನ್ನ ಮತದ ಧರ್ಮವನ್ನು (ಕರ್ತವ್ಯವನ್ನು) ಪಾಲಿಸದ ಧರ್ಮ (ಕರ್ಮ) ಭ್ರಷ್ಟ. ನಿಂದಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮಬಂಧು: ಋಷಿಬಂಧು: ಇತ್ಯಾದಿ ಪ್ರಯೋಗ.

**ಬಂಧುಕೃತ್ಯ ಬಂಧುಕೃತ್ಯ** (ನಂ) 1. ಬಂಧುವಿನ ಕರ್ತವ್ಯ. ಬಂಧುವಾದವನು ಮಾಡಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯ. ಬಂಧು: ಕೃತ್ಯಮ್ | "ಅತನುಷು ವಿಭವೇಷು ಜಾತಯ: ಸಂತು ನಾಮ ತ್ವಯಿ ತು ಪರಿಸಮಾಪ್ತಂ ಬಂಧುಕೃತ್ಯಂ ಪ್ರಜಾನಾಮ್" ಶಾಕುಂ ೪-೮ | 2. ಮಿತ್ರನ ಕರ್ತವ್ಯ. "ಕಂಚಿತ್ಸೌಮ್ಯ ವ್ಯವಸಿತಮಿದಂ ಬಂಧುಕೃತ್ಯಂ ತ್ವಯಾ ಮೇ" ಮೇಘಂ ೨-೪೧ |

**ಬಂಧುಜನ ಬಂಧುಜನ** (ಪುಂ) ನೆಂಟಿ. ಸಂಬಂಧವುಳ್ಳವನು.

**ಬಂಧುಜೀವಕ ಬಂಧುಜೀವಕ** (ಪುಂ) ಕೆಂಪು ದಾಸವಾಳದ ಗಿಡ.

**ಬಂಧುತಾ ಬಂಧುತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಂಧುಗಳ ಸಮೂಹ. ನೆಂಟರ ಗುಂಪು. ಬಂಧುನಾಂ ಸಮೂಹ: "ತಲ್" (೪-೨-೪೩) | "ಸ ಸಂತತಂ ದರ್ಶಯತೇ ಗತಸ್ಮಯ: ಕೃತಾಧಿಪತ್ಯಾಮಿವ ಸಾಧು ಬಂಧುತಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೧೦ | 2. ಬಂಧುತ್ವ, ನೆಂಟತನ. ಬಂಧುರ್ಮಾತಿ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) |

**ಬಂಧುತ್ವ ಬಂಧುತ್ವ** (ನಂ) ನೆಂಟತನ. ಬಂಧುರ್ಮಾತಿ: "ತ್ವ:" (೪-೧-೧೧೯) |

**ಬಂಧುಮತ್ ಬಂಧುಮತ್** (ವಿಂ) ಬಂಧುಜನರುಳ್ಳವನು, ನೆಂಟರಿಂದ ಕೂಡಿದವನು. ಬಂಧುರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪) |

**ಬಂಧುರ ಬಂಧುರ** (ಪುಂ) 1. ದಾಸವಾಳದ ಗಿಡ. ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಊ:" (೩ಂ ೧-೪೧) | 2. ಹಂಸ. 3. ಕಿವುಡ. 4. ಎಳ್ಳಿನ ಹಿಂಡಿ. 5. ವಾಯುವಿಳಂಗ. 6. ಬಕಪಕ್ಷಿ. 7. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ, ಯೋನಿ. (ನಂ) 8. ಮುಕುಟ, ಕಿರೀಟ. "ಬಂಧುರಂ ಮುಕುಟೇ ಪುಸಿ ಸ್ತ್ರೀಚಿಹ್ನ ತೈಲಕಲ್ಕಯೋ: | ಬಂಧುಕೇ ಬಧಿರೇ ಹಂಸೇ ತ್ರಿಷು ಸ್ಯಾದ್ರಮ್ಯತಮ್ರಯೋ:" ಮೇದಿಂ | (ವಿಂ) 9. ರಮ್ಯವಾದ, ಸುಂದರವಾದ. "ಕಥಂ ನು ತಂ ಬಂಧುರಕೋಮಲಾಙ್ಗುಲಿ ಕರಂ ವಿಹಾಯಾಸಿ ನಿಮಗ್ನಮಗ್ನಸಿ" ಶಾಕುಂ ೬-೧೩ | 10. ಸಮವಾಗಿಲ್ಲದ, ಹಳ್ಳತಿಟ್ಟುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಪ್ರಸಕಲಕುಚಬಂಧುರೋದ್ದುರೋ: ಪ್ರಸಮವಿಭಿನ್ನತನುತ-

ರಿಯಬಂಧಾ" ಮಾಘಂ ೭-೩೪ | 11. ಬಗ್ಗಿರುವ, ನಮ್ರವಾದ. 12. ಡೊಂಕಾದ, ವಕ್ರವಾದ. (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 13. ಹುರಿಹಿಟ್ಟು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಂಧುರಾ ಬಂಧುರಾ. 14. ಸ್ವೈರೀ, ವೇಶ್ಯ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ. "ಬಂಧುರಾ ಪಂಪಯೋಷಾಂ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಪುಮ್ನಿ ಸಕ್ತುಷು" ಮೇದಿಂ | 15. ನೋಗದ ಕೆಳಗಿನ (ಗಾಡಿಯ) ಮೂಕಿಕಂಬ. "ಬಂಧುರಾ ತನುಕೂಬರಮ್" ವೇಜಂ |

**ಬಂಧುಲ ಬಂಧುಲ** (ಪುಂ) 1. ಸ್ವೈರೀಯ ಪುತ್ರ, ಕುಲಟಿಯ ಮಗ, ಹಾದರಗಿತ್ತಿಯ ಮಗ. ಬಂಧುನ್ ಲಾತಿ—ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩) | "ಬಂಧುಲಶ್ಚಾಸತೀಸುತ:" ಅಮಂ | "ಪರಗೃಹಲಲಿತಾ: ಪರಾನ್ನಪುಟಾ: ಪರಪುರುಷೇಜನಿತಾ: ಪರಾಜ್ಞನಾಸು | ಪರಧನನಿರತಾ: ಗುಣೇಷ್ವವಾಚ್ಯಾ: ಗಜಕಲಭಾ ಇವ ಬಂಧುಲಾ ಲಲಾಮ:" ಮೃಚ್ಛಂ ೪-೨೮ | 2. ಬಂಧೂಕ, ದಾಸವಾಳದ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 3. ಸುಂದರವಾದ, ರಮ್ಯವಾದ, ಸೊಗಸಾದ. 4. ಬಾಗಿರುವ, ಡೊಂಕಾಗಿರುವ, ವಕ್ರವಾಗಿರುವ.

**ಬಂಧುಕ ಬಂಧುಕ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಂಪು ದಾಸವಾಳದ ಗಿಡ. ಬಂಧಾತಿ ಮನ:—ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಊ:" (೩ಂ ೪-೪೧) | "ಬಂಧುಕೋ ಬಂಧುಜೀವಕ:" ಅಮಂ | "ನವಕರನಿಕರೇಣ ಸ್ಪಷ್ಟಬಂಧುಕಸೂನಸ್ತಬಕರಚಿತಮೇತೇ ಶೇಖರಂ ವಿಭ್ರತೀವ" ಮಾಘಂ ೧೧-೪೬ | 2. ಹೊನ್ನೆಮರ. "ಬಂಧುಕೋ ಬಂಧುಜೀವೇ ಸ್ಯಾದ್ಬಂಧುಕ: ಪೀತಸಾಲಕೇ" ಮೇದಿಂ | (ನಂ) 3. ದಾಸವಾಳದ ಹೂವು. "ಬಂಧುಕಶ್ಚುತಿಬಾಂಧವೋಽಮಘರ:" ಗೀತಗೋಂ |

**ಬಂಧುಕಪುಷ್ಪ ಬಂಧುಕಪುಷ್ಪ** (ಪುಂ) ಹೊನ್ನೆಮರ.

**ಬಂಧುರ ಬಂಧುರ** (ಪುಂ) 1. ರಂಧ್ರ, ವಿವರ. ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಊ:" (೩ಂ ೪-೯೦) | (ವಿಂ) 2. ನಮ್ರವಾದ, ಬಗ್ಗಿರುವ. 3. ರಮ್ಯವಾದ, ಸುಂದರವಾದ. "ಬಂಧುರ-ಬಂಧುರೋ ಸ್ಯಾತಾಂ ನಮ್ರಸುಂದರಯೋಸ್ತ್ರಿಷು" | "ಬಂಧುರಬಂಧುರೋ ರಮ್ಯೇ ನಮ್ರೇ" ವಿಶ್ವಂ | 4. ಹಳ್ಳ ತಿಟ್ಟಾಗಿರುವ, ಬಂದೇ ಮಾಡುವಾಗಿಲ್ಲದ.

**ಬಂಧ್ಯ ಬಂಧ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಕಟ್ಟಿಲ್ಲದವ, ಬಂಧಿಸಲ್ಪಡುವ. ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) | 2. ಬಂಧಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. "ಅಬಂಧ್ಯಾ ಯಶ್ಚ ಬಂಧಾತಿ ಬಧ್ವಂ ಯಶ್ಚ ಪ್ರಮುಚ್ಛತಿ" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೨೪೩ | 3. ಸೆರೆಹಿಡಿಯಲ್ಪಡುವ. 4. ಬಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಜೋಡಿಸಿ ಕಟ್ಟಲ್ಪಡುವ. 5. ರಚಿಸಲ್ಪಡುವ, ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ಅಣಕಟ್ಟು. ನೀರನ್ನು ತಡೆದಿರುವ ಅಡ್ಡಗಟ್ಟು, ಸೇತು. "ಸೇತುಶ್ಚ ದ್ವಿವಿಧೋ ಜಯ: ಸ್ವಯೋ ಬಂಧ್ಯಸ್ತಥೈವ ಚ | ತೋಪಪ್ರವರ್ತನಾತ್ ಸ್ವಯ: ಬಂಧ್ಯ: ಸ್ಯಾತ್ತಪ್ರವರ್ತನಾತ್" |



**ಬಂಜಿ ಬಂಜಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾರ್ವತಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

ಬಂಜಿ: ಶಿವಸ್ಯೇಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) ।

**ಬಂಜಿ ಬಂಜಿ** (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಬಿಭ್ರತಿ—ಓಂ ಭೂಂ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕುಃ" (೩ಂ ೧-೨೨) । 2. ವಿಷ್ಣು. ಭರತಿ—ಭೂಂ (ಭರಣೇ) "ಕುಃ" (೩ಂ ೧-೨೨) । "ಅನಂತ-ರೂಪೋ ಯೋ ಭಕ್ತೇ ಪೃಥ್ವೀ ಬಂಜಿಃ ಸ ಔರಿತಃ" ಇತಿ ನಿರಹಿತಃ । "ಋದ್ರೋ ಬಹುಶಿರಾ ಬಂಜಿಃ" ವಿಂ ಸಂ । 3. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. "ಶೃಂಗೀ ಶೃಂಗಪ್ರಿಯೋ ಬಂಜಿ ರಾಜರಾಜೋ ನಿರಾಮಯಃ" ಶಿವಸಂ । 4. ಒಬ್ಬ ಮುನಿ. 5. ಒಂಗಳ ವರ್ಣ, ಕೆಂಪು ಬೆರೆತ ಕಂದುಬಣ್ಣ. 6. ಒಬ್ಬ ಯಾದವ. "ಆಲಪ್ಯಾಲಮಿದಂ ಬಂಜಿರ್ಯತ್ಸ ದಾರಾನಪಾಹರತ್" ಮಾಘಂ ೨-೪೦ । 7. ದೊಡ್ಡ ಅಕಾರದ ಮುಂಗುಸಿ. ಕೇರ. (ವಿಂ) 8. ಪಟ್ಟಿತಲೆಯುಳ್ಳವನು, ಬಟ್ಟಿತಲೆಯುಳ್ಳವನು. 9. ಒಂಗಳವರ್ಣದ, ಕಂದುಬಣ್ಣದ. "ಬಬಂಜಿ ಬಾಲಾಣ-ಬಂಜಿವಲ್ಕಲಮ್" ಕುಮಾರಂ ೪-೮ । "ಬಂಜಿವೇಶ್ವಾನರೇ ಶೂಲಪಾಣೌ ಚ ಗಢಧವಜೇ । ವಿಶಾಲೇ ನಕುಲೇ ಪುಸಿ ಪಿಙ್ಗಲೇ ತ್ವಭಿಧೇಯವತ್" ।

**ಬಂಜಿವಾಹನ ಬಂಜಿವಾಹನ** (ಪುಂ) ಅರ್ಜುನನಿಗೆ ಚಿತ್ರಾಂಗದೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಗ, ಮಣಿಪುರದ ರಾಜ.

**ಬಂಜಿ ಬಂಜಿ** (ಪುಂ) ಭ್ರಮರ, ತುಂಬಿ. "ಇಂದಿಂದಿರ-ಶ್ಚಂಚರೀಕೋ ಲೋಲಮ್ಬೋ ಬಂಜಿಶ್ಚ ಸಃ" ಅಮಂ ।

**ಬಂಜಿ ಬಂಜಿ** (ಪುಂ) ಬೆಕ್ಕ, ಚಿತ್ರಾಂಗದವನು. "ಪಶುಸ್ತು ಮಲಕೋ ಮೋಕಃ ಕಫಃ ಶುದ್ಧಜಡಶ್ಚರೀಃ । ಬಾಲೇ ತು ಬಂಜಿಃ" ವೇಜಂ ।

**ಬಂಜಿ ಬಂಜಿ** (ಪುಂ) 1. ರಾಜಮಾಷ, ಅಲಸಂದ. ಬಂಜಿ (ಗತೀ) "ಅದನ್" (೩ಂ ೪-೮೨) । "ರಾಜಮಾಷಸ್ತು ಬಂಜಿಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ದೀ —ಬೀ. 2. ಅಲಸಂದ. 3. ಮೇಶ್ವರ, ಸೂರ್ಯ. "ಬಂಜಿ ಪಂಚಯೋಷಾಃ ವೀಹಿಭೇದೇ ಚ ಯೋಷಿತಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಬಂಜಿ ಬಂಜಿ** (ಪುಂ) 1. ಯವನನಿಗೆ ತೀವರಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಗ. (ಬಾಹ್ಯಾಣನಿಗೆ ಬೆಸ್ತರ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವಳು ತೀವರಿ). "ತೀವರೀ ಧೀವರಾತ್ ಪೌಂಡ್ರ ಬಂಜಿ ಯವನಾದಸೌ" ವೇಜಂ । 2. ಉಂಗುರ ಕೂದಲು, ಗುಂಗುರು ಕೂದಲು, ಕುರುಳು. "ಕುಂತಲಾಶ್ಚ ಶಿರೋರುಹಾಃ । ಕುಂಚಿತಾಸ್ತೇ ಕರ್ಕರಾಲಾ ಬಂಜಿರಾ ಅಲಕಾ ಅಪಿ" ವೇಜಂ । (ವಿಂ) 3. ನೀಚ, ಪಾಮರ. "ನೀಚೇ ತು ಹೀನಾಪಸದಪಾಮರೇತರಬಂಜಿರಾಃ" ವೇಜಂ ।

**ಬಂಜಿ ಬಂಜಿ** (ಪುಂ) 1. ಸೇವಕ, ಪರಿವಾರ, ಅಳು. ಬಂಜಿತಿ—ಬಂಜಿ (ಬಂಜಿ) "ಅನ್" (೩-೧-೧೩೪) । (ಪುಂ) 2. ಎಲೆ, ಪಶು, ದಳ. "ಆಪಾಂಡುರ ಕೇತಕಬಂಜಿಮನ್ಯಃ" ರಘುಂ

೬-೧೭ । (ನಂ) 3. ನವಿಲಿನ ಗರಿ. "ಯದ್ವಾಯುನಾನ್ವಿಷ್ಟಮಗ್ನಿಃ ಕಿರಾತೇರಾಸೇವ್ಯತೇ ಭಿನ್ನಶಿಖಿಣ್ಡಿಬಂಜಿಃ" ಕುಮಾರಂ ೧-೧೪ ।

4. ನವಿಲಿನ ಪುಕ್ಕ. "ಪ್ರಾಪ್ತಾ ದವೋಲ್ಕಾಹತಶೇಖರಬಂಜಿಃ ಕ್ರಿಡಾ-ಮಯೂರಾ ವನಬಂಜಿಣತ್ವಮ್" ರಘುಂ ೧೬-೧೪ । "ಬಂಜಿ ಪಿಚ್ಚೇ ದಲೇಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಎಂದು ಮೇದಿನೀಕೋಶದಲ್ಲಿ ನವಿಲಿನ ಪುಕ್ಕ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ನಪುಂಸಕಲಿಂಗವೆಂದೂ ಎಲೆ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಪುಂನಪುಂಸಕಲಿಂಗವೆಂದೂ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. "ಶಿಖಿಪಿಚ್ಚದಲೋ ಬಂಜಿ" ಎಂದು ಶಾಶ್ವತ ಕೋಶಕಾರನು ಎರಡನ್ನೂ ಪುಂಲಿಂಗವೆಂದು ಹೇಳಿರುತ್ತಾನೆ. ಹೇಮಚಂದ್ರ ಕವಿಯು "ಬಂಜಿ ಪುಂ ಪರಿವಾರೇ ಕಲಾಪೇ" ಎಂದು ಮೂರು ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲೂ ಪುಂಲಿಂಗದಲ್ಲಿ ನಿರ್ದೇಶಿಸಿರುತ್ತಾನೆ.

**ಬಂಜಿ ಬಂಜಿ** (ಪುಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಬಂಜಿಮಸ್ತಸ್ಯ "ಇನ್" (ವಾಂ ೪-೨-೧೨೧) । "ಸ ಪಲ್ವಲೋತ್ತೀರ್ಣ-ವರಾಹಯುಥಾನ್ಯಾ ವಾಸವಶೋನ್ಮುಖಬಂಜಿಣಾನಿ" ರಘುಂ ೨-೧೭ ।

**ಬಂಜಿ ಬಂಜಿ** (ಪುಂ) ನವಿಲು, ಮಯೂರ. ಬಂಜಿಮಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) । "ತೀರಸ್ಥಲೀವಹಿಭಿರ್ಮುಕ್ತಲಾಪಿಃ ಪ್ರಸ್ಥಿಂಧಕೇರಭಿನಂದಮಾನಮ್" ರಘುಂ ೧೬-೬೪ ।

**ಬಂಜಿಮುಖ ಬಂಜಿಮುಖ** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. ಬಂಜಿಃ ಅಗ್ನಿಃ ಮುಖಮಸ್ಯ । 2. ಅಗ್ನಿ.

**ಬಂಜಿವಾಹನ ಬಂಜಿವಾಹನ** (ಪುಂ) ಸ್ಕಂದ, ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪುಣ್ಯ. ಬಂಜಿ ವಾಹನಮಸ್ಯ ।

**ಬಂಜಿ ಬಂಜಿ** (ವಿಂ) 1. ದರ್ಭೆಯ ಮೇಲಿರುವ. ಬಂಜಿವಿ ತಿಷ್ಠತಿ—ಱಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕಃ" (೩-೨-೪) । (ನಂ) 2. ಮುಡಿವಾಳವೆಂಬ ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯಕ್ಕೆ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ಹುಲ್ಲು.

**ಬಂಜಿಮತ್ ಬಂಜಿಮತ್** (ವಿಂ) ದರ್ಭೆಸಹಿತವಾದ, ದರ್ಭೆ ಯೊಡನೆ ಕೂಡಿದ. ಬಂಜಿಮಸ್ತಸ್ಯ "ಮತುಪ್" (೪-೪-೯೪) ।

**ಬಂಜಿ ಬಂಜಿ** (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಬಂಜಿತಿ—ಬಂಜಿ (ಬಂಜಿ) "ಇನಿಃ" (೩ಂ ೨-೧೦೯) । ನಲೋಪಶ್ಚ । 2. ಕುಶ, ದರ್ಭೆ. "ಬಂಜಿ ಕುಶಶುಷ್ಮಣಿಃ" । ಮೇದಿನೀಕೋಶದಲ್ಲಿ ಕುಶವಾಚಕ "ಬಂಜಿ" ಶಬ್ದವು "ಬಂಜಿ ಪುಸಿ ಹುತಾಶತೇ । ನ ಸ್ತ್ರೀ ಕುಶ" ಎಂದು ಪುಂನಪುಂಸಕಲಿಂಗವಾಗಿ ನಿರ್ದಿಷ್ಟವಾಗಿದೆ.

**ಬಲ ಬಲ** (ಪುಂ) 1. ಬಲರಾಮ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಅಣ್ಣ. ಬಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅನ್" (೪-೨-೧೨೭) [ಎವಂಶ್ಚ "ಬಲರಾಮ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ಬಲಮಸ್ಯುಯೋಧನೇರಮುಷ್ಮಿನ್ ಪರಿಹೀಣಾ ಯುಷಿ ನ ಪ್ರವರ್ತಿತವ್ಯಮ್" ಯಾದಂ ೧೪-೮೦ । 2. ವಾಯು, ಕಾಗೆ. 3. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. ಇವನು ಇಂದ್ರನಿಂದ ಹತ



ನಾದನು. "ಸೇನಾರ್ಪಿತ ನಂದನಮನ್ವಕದ್ವಿಷೋ ಯುಧೇ ಪುರಸ್ಕೃತ್ಯ ಬಲಸ್ಯ ಶಾತ್ರವಃ" ಕುಮಾಂ ೧೪-೧೧ (ನಂ) 4. ಶಕ್ತಿ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. ತ್ರಾಣ. ಬಲತಿ—ಬಲ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) 1. "ಬಲಾವಲೇಪಾದಧುನಾಪಿ ಪೂರ್ವವತ್ ಪ್ರಬಾಧ್ಯತೇ ತೇನ ಜಗಜ್ಜಿಗಿಷುಣಾ" ಮಾಘಂ ೧-೨೨ 1. 5. ಸೈನ್ಯ, ಸೇನೆ. ದಂಡು. "ವ್ಯಭಜ್ಯತ ವ್ಯಾಪ್ತಹಯೋಮಿಜಾಲಂ ಬಲಂ ಯದ್ನಾಂ ಬಲಿನಂದನೇನ" ಯಾದಂ ೨೦-೨೦ 1. 6. ಪಲ್ಲವ, ಚಿಗುರು. 7. ದೇಹ, ಶರೀರ. 8. ಸೌಲ್ಯ, ದಪ್ಪವಾಗಿರುವಿಕೆ. 9. ರೂಪ. 10. ಧಾತು, ವೀರ್ಯ. 11. ಅಸ್ತಿ, ಎಲುಬು. 12. ರಕ್ತ. (ವಿಂ) 13. ಬಲಶಾಲಿ. "ಸೈನ್ಯಾಸ್ಥಿರಪರೇತಃ ಸೈನ್ಯಶಕ್ತಿಃ ಚೇದಲಂ ಕಲಿಬೇ | ವಾನ್ತಚಾಲಕೇ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ತ್ರಿಘ್ನ-ಬಲವತಿ ನಾ ಸೀರಿದೈತ್ಯಕಾಕೇಃ" ನಾನಾರ್ಥರಂ 1.

ಬಲವು ಮನುಷ್ಯ ಮತ್ತು ಪ್ರಾಣಿಭೇದದಿಂದ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ವಿಧವಾಗಿರುವುದು. ಮನುಷ್ಯರಲ್ಲೂ ಒಬ್ಬೊಬ್ಬರಿಗೊಂದೊಂದು ರೀತಿಯಿಂದಿರುವುದು.

|                  |                             |    |
|------------------|-----------------------------|----|
| ಕ್ಷತ್ರಿಯರಿಗೆ     | ಯುದ್ಧವೇ                     | ಬಲ |
| ವೈಶ್ಯರಿಗೆ        | ವ್ಯಾಪಾರ                     | "  |
| ವೈಶ್ಯವರಿಗೆ       | ವಿಷ್ಣುಭಕ್ತಿ ಮತ್ತು ದಾಸತ್ವ    | "  |
| ಯತಿಗಳಿಗೆ         | ಸದಾಚಾರ ಮತ್ತು ತಪಸ್ಸು         | "  |
| ಸ್ತ್ರೀಯರಿಗೆ      | ಯೌವನ                        | "  |
| ಸತ್ತುರುಪರಿಗೆ     | ಸತ್ಯ                        | "  |
| ರಾಜರಿಗೆ          | ಪ್ರತಾಪ                      | "  |
| ಬಾಲಕರಿಗೆ         | ರೋದನ                        | "  |
| ವೇಶ್ಯೆಯರಿಗೆ      | ವೇಷ                         | "  |
| ದುರ್ಜನರಿಗೆ       | ಹಿಂಸೆ ಮತ್ತು ಮಿಥ್ಯೆ (ಸುಳ್ಳು) | "  |
| ಭಿಕ್ಷುಕರಿಗೆ      | ಭಿಕ್ಷೆ                      | "  |
| ಆಶ್ರಿತರಿಗೆ       | ಅನುಸರಣೆ                     | "  |
| ಅಲ್ಪದಾಯದವರಿಗೆ    | ಶೇಖರಣೆ (ಕೂಡಿಡುವುದು)         | "  |
| ಪಂಡಿತರಿಗೆ        | ವಿದ್ಯೆ                      | "  |
| ಧನಿಕರಿಗೆ         | ಧನ                          | "  |
| ಶುದ್ಧಾತ್ಮರಿಗೆ    | ಶೌಚ (ಶುದ್ಧಿ)                | "  |
| ಶಾಂತಾತ್ಮರಿಗೆ     | ಶಾಂತತೆ (ಸಹನೆ, ವಿವೇಕ)        | "  |
| ಗುಣಶಾಲಿಗಳಿಗೆ     | ಐಕಮತ್ಯ ಮತ್ತು ಗುಣ            | "  |
| ಕಳ್ಳರಿಗೆ         | ಸುಳ್ಳು                      | "  |
| ದುಷ್ಟಪ್ರಾಣಿಗಳಿಗೆ | ಹಿಂಸೆ                       | "  |

|                                     |              |    |
|-------------------------------------|--------------|----|
| ಸತಿಯರಿಗೆ                            | ಪತಿಸೇವೆ      | ಬಲ |
| ದೇವತೆಗಳಿಗೆ                          | ವರ ಮತ್ತು ಶಾಪ | "  |
| ಶಿಷ್ಯರಿಗೆ                           | ಗುರುಸೇವೆ     | "  |
| ಗೃಹಸ್ಥರಿಗೆ                          | ಧರ್ಮಾಚರಣೆ    | "  |
| ಭೃತ್ಯರಿಗೆ                           | ರಾಜಸೇವೆ      | "  |
| ಹೊಗಳುಭಟರಿಗೆ                         | ಹೊಗಳಿಕೆ      | "  |
| ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಗಳಿಗೆ                     | ವೇದ          | "  |
| ಪಾಪಾತ್ಮರಿಗೆ                         | ಪಾಪಕಾರ್ಯ     | "  |
| ಭಕ್ತರಿಗೆ                            | ಪರಮಾತ್ಮ      | "  |
| ಪುಣ್ಯಾತ್ಮರಿಗೆ                       | ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯ   | "  |
| ಪ್ರಜೆಗಳಿಗೆ                          | ರಾಜ          | "  |
| ಮರಗಳಿಗೆ                             | ಫಲ           | "  |
| ಸಮುದ್ರ, ಸಸ್ಯ, ನದಿ ಮತ್ತು ಮತ್ಸ್ಯಗಳಿಗೆ | ಜಲ           | "  |
| ಬ್ರಾಹ್ಮಣರಿಗೆ                        | ಶಾಂತತೆ       | "  |
| ಇತ್ಯಾದಿ.                            |              |    |

**ಜನಸಾಮಾನ್ಯಕ್ಕೂ ಸಮಾನವಾದ ಬಲ :**

(1) ವಿದ್ಯೆ (2) ಸತ್ಕುಲ (3) ಸ್ನೇಹ (4) ಸದ್ಬುದ್ಧಿ (5) ಸತ್ತ್ವಗುಣ (6) ದೈವ (7) ಶಪಸ್ಸು (8) ಧನ (ಐಶ್ವರ್ಯ) (9) ಸಾಹಾಯ್ಯ ಮತ್ತು (10) ವೀರ್ಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಲಾ ಬಲಾ. 14. ಕಳ್ಳಂಗಡಲೆ.

**ಬಲಕ ಬಲಕ (ಫಂ) ರಾತ್ರಿಯ ಮೊದಲನೆಯ ಜಾವ (ಯಾವು) ದಲ್ಲಿ ಆಗುವ ಸ್ವಪ್ನ, ಸಾಯಂಕಾಲ ಆರು ಗಂಟೆಯಿಂದ ಒಂಬತ್ತು ಗಂಟೆಯವರೆಗೆ ಆಗುವ ಸ್ವಪ್ನ. ಮೊದಲನೆಯ ಜಾವದ ಸ್ವಪ್ನ ಬಲಕ. ಎರಡನೆಯ ಜಾವದ ಸ್ವಪ್ನ ಲೋಚಮಾನಕ. ಮೂರನೆಯ ಜಾವದ ಸ್ವಪ್ನ ನಚಿಕ. ನಾಲ್ಕನೆಯ ಜಾವದ ಸ್ವಪ್ನ ಸದ್ಯಃಪಾಕ. ಉದಯಾತ್ಮಾರ್ವದಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಜಾವದಲ್ಲಿ ಆಗುವ ಸ್ವಪ್ನವು ಸದ್ಯಃಪಾಕ. ಸದ್ಯಃಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವುದು. "ಪ್ರದೋ ಬಲಕಃ ಸ್ವಪ್ನೋ ನಿಶೀಯೇ ಲೋಚಮಾನಕಃ | ನಚಿಕೋಽಪರರಾತ್ರೇ ಸ್ಯಾತ್ ಸದ್ಯಃಪಾಕೋ ನಿಶಾತ್ಯಯೇ" ವೈಜಂ 1.**

**ಬಲಜ ಬಲಜ (ನಂ) 1. ಗೋಪುರ, ನಗರದ ಮಹಾದ್ವಾರ, ಪಟ್ಟಣದ ಹೆಬ್ಬಾಗಿಲು. ಬಲಾತ್ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತಭಿವಿ) "ತಃ" (೩-೨-೧೮) 1. ಭೂಮಿ, ನೆಲ, ಜಮೀನು, ಕ್ಷೇತ್ರ 3. ಯುದ್ಧ. (ಫಂ) 4. ಮರ ಗಿಡ ಮೊದಲಾದವುಗಳ ಹಣ್ಣು ಕಾಯಿ ಮತ್ತು ಧಾನ್ಯರಾಶಿ. "ಬಲಜೋ ಧಾನ್ಯರಾಶಿಃ ಸ್ಯಾತ್" ವೈಜಂ 1. "ತ್ವಂ ಸಮೀರಣ ಇವ ಪ್ರತೀಕ್ಷಿತಃ ಕರ್ಷಕೇಣ ಬಲಜಾನ್ ಪುಷ್ಪತಾ" ಮಾಘಂ ೧೪-೨೧ (ವಿಂ)**



5. ಬಲದಿಂದ ಉಂಟಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜಾ -ಜಾ. 6. ರೂಪವತಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು. 7. ಭೂಮಿ. 8. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕಾಡುಮಲ್ಲಿಗೆ. 9. ವೈಶ್ಯ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು. "ಬಲಜಂ ಗೋಪುರೇ ಕ್ಷೇತ್ರೇ ಸಸ್ಯಸಂಘರಯೋರಪಿ | ಬಲಜಾ ವರಯೋಷಾಂ ವಸುಮತ್ಯಾಮಪಿ ಸ್ಮೃತಾ " ವಿಷ್ವಂ | "ಬಲಜಾ ವರಯೋಷಾಂ ಯುಷ್ಯಾಮಪಿ ವಣಿಕ್ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ " ಮೇದಿಂ |

**ಬಲವ ಬಲದ** (ಪುಂ) 1. ಹೊನ್ನೆಮರ. 2. ಹೋಮದ ಅಗ್ನಿ. ದೇಹಕ್ಕೆ ಪುಷ್ಟಿಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ ಒಂದು ಕರ್ಮದ ಹೋಮಾಗ್ನಿ. 3. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. (ವಿಂ) 4. ಬಲವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ, ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಕೊಡುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ದಾ -ದಾ. 5. ಅಶ್ವಗಂಧಾ ಗಿಡ.

**ಬಲದೇವ ಬಲದೇವ** (ಪುಂ) 1. ಬಲರಾಮ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಅಣ್ಣ. ಬಲೇನ ದೀವ್ಯತಿ - ದಿವು (ಕೌಡಾದೌ) "ಅಚ್" (3-1-134) | "ತದ್ಗಂಧ ದೇವದೇವಾಂಶೋ ಬಲದೇವೋ ಮಹಾಬಲಃ | ಕನ್ಯಾರತ್ನಮಿದಂ ರಾಜನ್ ನರರಾಜಾಯ ದೇಹಿ ಭೋಃ" ಭಾಗಂ 9-3-33 | 2. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ದೇವಾ -ದೇವಾ. 3. ಕಹಿ ದಸರಿ, ನೀರಾಮೆ ಬಳ್ಳಿ. "ಬಲದೇವೋ ಬಲೇ ವಾತೇ ತ್ರಾಯಮಾಣೌಷಧೌ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ " ಮೇದಿಂ |

**ಬಲದ್ವಿಷ್ ಬಲದ್ವಿಷ್, -ನಿಷ್ಠದನ -ನಿಷ್ಠಾದನ** (ಪುಂ) ಬಲಾಸುರನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದ ಇಂದ್ರ. ಬಲಸ್ಯ ದ್ವಿಟ್ ಬಲಂ ನಿಷ್ಠದಯತಿ ವಾ - ನಿ + ಷ್ಠ (ಕ್ಷರಣಂ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134) |

**ಬಲನ ಬಲನ** (ನಂ) ಬಲಗೊಳಿಸುವುದು, ಶಕ್ತಿ ತುಂಬುವುದು.

**ಬಲನಿಷ್ಠದನ ಬಲನಿಷ್ಠಾದನ** (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ.

**ಬಲಪ್ರಸು ಬಲಪ್ರಸೂ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಲರಾಮನ ತಾಯಿ ರೋಹಿಣಿ. ಬಲಸ್ಯ ಪ್ರಸುಃ |

**ಬಲಭದ್ರ ಬಲಭದ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಬಲರಾಮ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಅಣ್ಣ. ಬಲಂ ಭದ್ರಂ ಶ್ರೇಷ್ಠಮಸ್ಯ | 2. ಅನನ್ತ, ಅದಿಶೇಷ. (ವಿಂ) 3. ಬಲಶಾಲಿ, ಶಕ್ತಿವಂತ. 4. ಲೋಧ್ರ ಗಿಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಭದ್ರಾ -ಭದ್ರಾ. 5. ಕುಮಾರಿ, ಕನ್ಯೆ. 6. ಕಹಿ ದಸರಿ, ನೀರಾಮೆ ಬಳ್ಳಿ. "ಬಲಭದ್ರಾ ತ್ರಾಯಮಾಣಾಕುಮಾರ್ಯೋಃ ಪುಸಿ ಸೀರಿಣಿ" ಮೇದಿಂ | "ಬಲಭದ್ರಸ್ತ್ವನಂತೇ ಬಲಶಾಲಿನಿ | ಬಲಭದ್ರಾ ಕುಮಾರ್ಯಾ ಸ್ಯಾತ್ ತ್ರಾಣಮಾಣೌಷಧಾವಪಿ" ಹೇಮಂ | ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ" | ಬಲಭದ್ರಿಕಾ ಬಲಭದ್ರಿಕಾ.

**ಬಲರಾಮ ಬಲರಾಮ** (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಅಣ್ಣ, ರೋಹಿಣೀ ದೇವಿಯ ಮಗ. ಬಲೇನ ರಮತೇ - ರಮ್ (ಕೌಡಾಯಾಮ್) "ಞಃ" (3-1-140) | [ಬಲರಾಮನು ವಸುದೇವನಿಗೆ ದೇವ ಕಿಯ ಏಳನೆಯ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಮಗ. ಬಲರಾಮನು

ಅದಿಶೇಷನ ಅವತಾರ. ಪರಮಾತ್ಮನ ಆಜ್ಞೆಯಂತೆ ಯೋಗ ಮಾಯೆಯು ದೇವಕಿಯ ಗರ್ಭದಿಂದ ಅಕರ್ಷಿಸಿ ವಸು ದೇವನ ಇನ್ನೊಬ್ಬ ಪತ್ನಿಯಾದ ರೋಹಿಣಿಯ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಇವನಿಗೆ ಸಂಕರ್ಮಣನೆಂದೂ ರೋಹಿಣೀಯ ನೆಂದೂ ಹೆಸರಾಯಿತು. ಅಧಿಕ ಬಲಶಾಲಿಯಾಗಿದ್ದುದರಿಂದ ಮತ್ತು ಸೌಮ್ಯನೂ ಸುಂದರನೂ ಆಗಿದ್ದುದರಿಂದ ಬಲ ರಾಮನೆಂದೂ ಹೆಸರು. ಬಲರಾಮನ ಆಯುಧವು ಮುಸಲ (ಒನಕೆ) ಮತ್ತು ಹಲ (ನೇಗಿಲು) ಗಳಾಗಿದ್ದುದ ರಿಂದ ಮುಸಲೀ ಮತ್ತು ಹಲೀ ಸೀರೀ ಎಂಬ ಹೆಸರುಗಳೂ ಉಂಟು. ಬಲರಾಮನು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನೊಡನೆ ಸುಂದ ಗೋಕುಲದಲ್ಲೇ ಇದ್ದು, ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಓಡಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಧೇನುಕ ಪ್ರಲಂಬ ಮೊದಲಾದ ವೀರರಾಕ್ಷಸರನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ಲೋಕಕ್ಷೇಮವುಂಟುಮಾಡಿದನು. ಯದುಕುಲ ಪುರೋಹಿತ ನಾದ ಗರ್ಗಮುನಿಯಿಂದ ಉಪನಯನವ್ರತವು ನಡೆದ ನಂತರ ಬಲರಾಮ ಕೃಷ್ಣರಿಬ್ಬರಿಗೂ ಸಾಂದೀಪನಿಯಲ್ಲಿ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ನಡೆಯಿತು. ಇವರೊಡನೆ ಕುಜೇಲನೂ ಸತೀರ್ಥನಾಗಿದ್ದನು. ಕುಂದಿ (ರೈವತ) ಕನ್ಯೆಯಾದ ರೇವತೀ ದೇವಿಯು ಬಲರಾಮನ ಪತ್ನಿ. "ರೇವತೀ ನಾಮ ತನಯಾ ರೇವತಸ್ಯ ಮಹೀಪತೇಃ | ತಪಯೇ ಬಲಃ ತಸ್ಯಾಂ ಜಞಾತೇ ನಿಶತೋ- ಲ್ಮುಕೌ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ | ಯಮುನಾ ತೀರದಲ್ಲಿ ಬಲರಾಮನು ಗೋಪಸ್ತ್ರೀಯರೊಡನೆ ವಿಹರಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಜಲಕ್ರೇಡ್‌ಗಾಗಿ ಯಮುನೆಯನ್ನು ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಕರೆದನು. ಅದು ಬರಲಿಲ್ಲ. ಆಗ ತನ್ನ ನೇಗಿಲಿನಿಂದ ಅದನ್ನು ಭೇದಿಸಲು ಹೊರಟಾಗ ಯಮುನೆಯು ಮರೆಹೊಕ್ಕು ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬಂದಿತು. ಅದ ರಿಂದ ಇವನಿಗೆ ಕಾಳಂದೀಭೇದನನೆಂದೂ ಹೆಸರಾಯಿತು. ಇವನಿಗೆ ಕೌರವರ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ವಿಶೇಷ ಅಭಿಮಾನವಿದ್ದರೂ ಪಾಂಡವರೇ ಗೆಲ್ಲುವರೆಂದು ತಿಳಿದು ತಟಸ್ಥನಾಗಿದ್ದು ತೀರ್ಥಯಾತ್ರೆಗೆ ಹೊರಟನು. ಭೂಪ್ರದಕ್ಷಿಣೆ ಮಾಡಿ ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರಕ್ಕೆ ಬಂದು ಭೀಮಾರ್ಜುನರನ್ನು ಯುದ್ಧದಿಂದ ತಡೆಯಲು ಯತ್ನಿಸಿದರೂ ತನ್ನ ಮಾತನ್ನು ಕೇಳದ ಭೀಮನನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲು ಹೊರಟನು. ಆಗ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸಿ ದ್ವಾರಕೆಗೆ ಕಳುಹಿಸಿಬಿಟ್ಟನು. ಕೊನೆಗೆ ಪ್ರಭಾಸಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಯಾದವರ ಕಲಹವನ್ನು ಕಂಡು ಸರ್ಪ ಶರೀರವನ್ನು ಧರಿಸಿ ಬಲರಾಮನು ಸಮುದ್ರವನ್ನು ಸೇರಿ ದನು.]

**ಬಲಲ ಬಲಲ** (ಪುಂ) ಬಲರಾಮ.

**ಬಲವತ್ ಬಲವತ್** (ವಿಂ) 1. ಶಕ್ತಿವಂತ. ಬಲಶಾಲಿ. ಬಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ - ಬಲ "ಮತುಪ್" (4-2-94) | "ಸ ಚಿಂತಯತ್ಯೇವ ಭಿಷ್ವತ್ವದೇವ್ಯತೀರಹೋ ದುರಂತಾ ಬಲವದಿರೋಧಿತಾ"



ಕಿರಾಂ ೧-೨೩. "ಬಲವಾನಪಿ ಕೋಪಜನ್ಮನಸ್ತಮಸೋ ನಾಭಿಭವಂ ಕುಣ್ಡಿ ಯಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೩೬. 2. ಅತಿಶಯವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. "ನ ಚ ಬಿಶ್ವಸಿಮೋ ನ ವೃದ್ಧವಾಕ್ಯಂ ಬಲವನ್ಮಾನವಿಲಕ್ಷಣಂ ನ ಚೇತ್ಸ್ಯಾತ್" ಯಾದಂ ೧೪-೪೪. 3. ಪ್ರಬಲವಾದ, ಮೇಲುಗೈಯಾದ. "ಬಲವಾನಿन्द्रಿಯಗ್ರಾಮೋ ವಿಧ್ವಾಂಸಮಪಿ ಕರ್ಷತಿ" ಮನುಂ ೨-೨೧೪. 4. ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಭಾವವುಳ್ಳ, ಮಹತ್ವವುಳ್ಳ. "ಅವೇಮಿ ಚೆನಾಮನಧೇತಿ ಕಿಂತು ಲೋಕಾಪವಾದೋ ಬಲವಾನ್ ಮತೋ ಮೇ" ರಘುಂ ೧೪-೪೦. (ಅವ್ಯಂ) 5. ಬಲವಾಗಿ, ದೃಢವಾಗಿ. "ಅಧೇಂದ್ರಿಯಕ್ಷೋಭಮಯುಗ್ಮನೆತ್ರಃ ಪುನರ್ವಶಿತ್ವಾದಲವನ್ನಿಗೃಹ್ಯ" ಕುಮಾರಂ ೩-೬೯. 6. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ, ಅತಿಶಯವಾಗಿ. "ಬಲವದಪಿ ಶಿಕ್ಷಿತಾನಾಮಾತ್ಮನ್ಯಪ್ರತ್ಯಯಂ ಚೇತಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೨.

**ಬಲವರ್ಧನ ಬಲವರ್ಧನ** (ವಿಂ) ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವ, ಬಲವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವ. ಬಲಂ ವರ್ಧಯತಿ—ವೃಧು (ವೃದ್ಧಿ)+ ಣಿच् "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪).

**ಬಲವರ್ಧನಿ ಬಲವರ್ಧನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಚ್ಚಿಸ್ಕಳಿಸಿ. ಒಂದು ಮೂಲಿಕೆ.

**ಬಲವಿನ್ಯಾಸ ಬಲವಿನ್ಯಾಸ** (ಪುಂ) ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಶತ್ರುಗಳು ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗದಂತೆ ವಿಂಗಡಿಸಿ ಸೇನೆಯನ್ನು ಸರಿಯಾದ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು. ಬಲಸ್ಯ ಸೇನಸ್ಯ ದೇಶವಿಶೇಷೇ ವಿಭಜ್ಯ ನ್ಯಾಸಃ. ಧಂಡವ್ಯುಹಃ ಚಕ್ರವ್ಯುಹಃ ಪದ್ಮವ್ಯುಹಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಬಲಶಾಲಿನ್ ಬಲಶಾಲಿನ್** (ವಿಂ) ಶಕ್ತಿವಂತ, ಪರಾಕ್ರಮಿ. ಬಲೇನ ಶಾಲತೆ—ಶಾಲ (ಕತ್ಯನೇ) "ಣಿಞಿಃ" (೩-೧-೧೩೪).

**ಬಲಸೂದನ ಬಲಸೂದನ** (ಪುಂ) ಬಲಾಸೂರನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದ ಇಂದ್ರ. ಬಲಂ ಸೂದಯತಿ—ಪೂದ (ಕ್ಷರಣೇ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪).

**ಬಲಹನ್ ಬಲಹನ್** (ಪುಂ) 1. ಶ್ಲೇಷ್ಮ, ಕಫ. ಬಲಂ ಹಂತಿ—ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೮೭). 2. ಇಂದ್ರ. ಉಪಪದ-ನಿಯಮಸ್ಯ ಪ್ರಾಯಿಕತ್ವಾತ್ "ಕ್ವಿಪ್".

**ಬಲಾ ಬಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ವಿದ್ಯೆ. ಈ ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮಹರ್ಷಿಯು ಶ್ರೀರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರಿಗೆ ಉಪದೇಶಿಸಿ ಇದರ ಪಠನದಿಂದ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಹಸಿವೂ ಬಾಯಾರಿಕೆಯೂ ಆಗುವುದಿಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳಿದರು. "ಕೃತ್ವಿಪಾಸೇ ನ ತೇ ರಾಮ ಭವಿಷ್ಯೇತೇ ನರೋತ್ತಮ. ಬಲಾಮತಿಬಲಾಂವೇವ ಪಠತಃ ಪಥಿ ರಾಘವ" ರಾಮಾಂ. 2. ಕಳ್ಳಂಗಳಲೆ.

**ಬಲಾಕಾ ಬಲಾಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆಳ್ಳಕೆ, ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಬಕಪಕ್ಷಿ. ಬಲತೇ—ಬಲ (ಸಂವರಣೇ) "ಆಕಃ" (೩ಂ

೪-೧೪). "ಸೇವಿಷ್ಯಂತೇ ನಯನಸುಭಗಂ ಕ್ವೇ ಭವಂತಂ ಬಲಾಕಾಃ" ಮೇಘಂ ೧-೯.

**ಬಲಾತ್ ಬಲಾತ್** (ಅವ್ಯಂ) ಬಲವಂತದಿಂದ, ನಿರ್ಬಂಧದಿಂದ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ನಿಷಾಢ. ಬಲಮತತಿ—ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೇ) "ಕ್ವಿಪ್". "ಬಲಾತ್ ಸಂದೃಷಯೇತ್ಯಸ್ತು ಪರಭಾರ್ಯಾ ನರಃ ಕ್ವಚಿತ್. ವಧದೃಢೋ ಭವೇತ್ತಸ್ಯ ನಾಪರಾಧೋ ಭವೇತ್ ಸ್ತ್ರಿಯಾಃ" 1.

**ಬಲಾತ್ಕಾರ ಬಲಾತ್ಕಾರ** (ಪುಂ) ನಿರ್ಬಂಧಪಡಿಸುವುದು. ಬಲಾತ್+ಕೃ (ಕರಣೇ) "ಘಞ್" (೩-೩-೧೮). "ಮತ್ತಾಭಿ-ಯುಕ್ತಸ್ತೀಬಾಲಬಲಾತ್ಕಾರಕೃತಂ ಚ ಯತ್. ತದಪ್ರಮಾಣಂ ಲಿಖಿತಂ ಭಯೋಪಚಿತಂ ತಥಾ" 1.

**ಬಲಾಧ್ಯಕ್ಷ ಬಲಾಧ್ಯಕ್ಷ** (ಪುಂ) ಸೇನಾಪತಿ. ದಳಪತಿ.

**ಬಲಾನುಜ ಬಲಾನುಜ, -ಅವರಜ -ಅವರಜ** (ಪುಂ) ಬಲರಾಮನ ತಮ್ಮನಾದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಬಲಸ್ಯಾನುಜೋ-ವರಜೋ ವಾ.

**ಬಲಾರಾತಿ ಬಲಾರಾತಿ, -ರಿಪು-ರಿಪು** (ಪುಂ) ಬಲಾಸೂರನ ಪೈರಿಯಾದ ಇಂದ್ರ. ಬಲಸ್ಯಾರಾತಿಃ.

**ಬಲಾಶ ಬಲಾಶ** (ಪುಂ) 1. ಶ್ಲೇಷ್ಮ, ಕಫ. ಬಲಮಶನಾತಿ—ಅಶ (ಭೋಜನೇ) "ಅಞ್" (೩-೨-೧). "ಬಲಾಶ ಉವಾಯತ-ಮುನ್ನತಂ ಚ ಶೋಕಂ ಕರೋತ್ಯನ್ಯಗತಿಂ ನಿವಾರ್ಯ" 1. 2. ಒಂದು ವಿಧ ಗಂಟಲಿನ ರೋಗ. ಗಂಟಲ ಉದಲು. ಗಂಟಲು ಉದುವುದರಿಂದ ಆಹಾರವು ಗಂಟಲಿನ ಒಳಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದನ್ನು ತಡೆಯುವುದು. "ಗಲೇ ಚ ಶೋಕಂ ಕುರುತಃ ಪ್ರವೃದ್ಧೌ ಶ್ಲೇಷ್ಮಾನಿಲೌ ಶ್ವಾಸಃ ಕ್ವೋಪಪನ್ನಮ್. ಮರ್ಮಚ್ಛಿದಂ ದುಸ್ತರಮೇತ-ಮಾಹುಃ ಬಲಾಶಸಂಜ್ಞಂ ನಿಪುಣಾ ವಿಕಾರಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ನಿಧಾನಂ ೧೬-೪೪.

**ಬಲಾಹಕ ಬಲಾಹಕ** (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಬಲಾಕಾಭಿಃ ಹಾಯತೇ ಗಮ್ಯತೇ—ಆಹಾಹ (ಗತೌ) "ಕ್ವುನ್" (೩ಂ ೨-೩೭).

**ಬಲಿ ಬಲಿ** (ಪುಂ) 1. ಬಲಿಚಕ್ರವರ್ತಿ, ವಿರೋಚನನ ಮಗ. ಪ್ರಹ್ಲಾದನ ಮೊಮ್ಮಗ, ಬಾಣಾಸೂರನ ತಂದೆ. ಬಲಿ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯು ಇಂದ್ರನಿಂದ ಸಂಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರ ಮೃತಸಂಜೀವಿನೀವಿದ್ಯೆಯ ಪ್ರಭಾವದಿಂದ ಪುನಃ ಬದುಕಿದನು. ಬಳಿಕ ವಿಶ್ವಜಿತ್ತೆಂಬ ಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡಿ ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ರಥ ಕುದುರೆ ಧ್ವಜಗಳನ್ನೂ ಪ್ರಹ್ಲಾದನಿಂದ ದಿವ್ಯಧನುಸ್ಸು ಅಕ್ಷಯಬತ್ತಲೆಗಳನ್ನು ಪಡೆದು ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಇಂದ್ರನನ್ನು ಜಯಿಸಿ ಸ್ವರ್ಗವನ್ನು ವಶಪಡಿಸಿಕೊಂಡನು. ಇವನು ನರ್ಮದಾತೀರದಲ್ಲಿ ಅಶ್ವಮೇಧ ಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡಲು ಉಪಕ್ರಮಿಸಿದಾಗ ಮಹಾವಿಷ್ಣುವು ಬಲಿಯ ನಿಗ್ರಹಕ್ಕಾಗಿ ಅದಿತಿಯ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ವಾಮನ



ರೂಪದಿಂದ ಅವತರಿಸಿ ಬಲಿಯ ಯಾಗಶಾಲೆಗೆ ಬ್ರಹ್ಮ ಜಾರಿಯ ಮೇಷದಲ್ಲಿ ಬಂದು ಮೂರಡಿ ಭೂಮಿಯನ್ನು ಯಾಚಿಸಿದನು. "ಮಮಾಗ್ನಿಶರಣಾರ್ಥಾಯ ದೇಹಿ ಭೂಮಿ ಪದತ್ರಯಮ್ | ಸುವರ್ಣಗ್ರಾಮರತ್ನಾದಿ ತದರ್ಥಮ್ಯಃ ಪ್ರದೀಯತಾಮ್" | ಬಲಿ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯು ಪರಮ ಸಂತೋಷದಿಂದ ಮೂರಡಿ ಭೂಮಿಯನ್ನು ದಾನಮಾಡಿ ನೀರಿನ ಧಾರೆಯೆರೆಯಲು ವಾಮನ ಮೂರ್ತಿಯ ರೂಪವು ಬೃಹದಾಕಾರವಾಗಿ ಬೆಳೆದು ಜಗತ್ತೆಲ್ಲ ವನ್ನೂ ವ್ಯಾಪಿಸಿತು. ಭೂಮಿ ಮತ್ತು ಆಕಾಶಗಳನ್ನು ಎರಡು ಅಡಿಗಳಿಂದ ಅಳೆದು ಮೂರನೆಯ ಅಡಿಯನ್ನು ಬಲಿಯ ತಲೆಯ ಮೇಲಿಟ್ಟು ಪಾತಾಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಿ ಬಲಿಯನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸಿ ದೇವರಾಜ್ಯವನ್ನು ಇಂದ್ರನಿಗೆ ವಹಿಸಿಕೊಟ್ಟನು. ಬಲಿಯನ್ನು ಪಾತಾಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವಾಗ ಪರಮಾತ್ಮನು ವಿಧಿಹೀನ ವಾದ ದಾನ, ಶ್ರೋತ್ರಿಯನಿಲ್ಲದ ಶ್ರಾದ್ಧ, ಶ್ರದ್ಧೆಯಿಲ್ಲದ ಕರ್ಮ, ದಕ್ಷಿಣೆಯಿಲ್ಲದ ಯಾಗ, ಉದಕವಿಲ್ಲದ ಪೂಜೆ, ದರ್ಭೆಯಿಲ್ಲದ ಕ್ರಿಯೆ, ಅಜ್ಞವಿಲ್ಲದ ಹೋಮ ಇವು ಗಳಿಂದ ಬರುವ ಪುಣ್ಯವು ಆಯಾ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಮಾಡಿ ದವರಿಗೆ ಸೇರದೆ ಅವೆಲ್ಲವೂ ನಿನಗೆ ಸಲ್ಲುವುವು ಎಂದು ವರವಿತ್ತನು. ಮತ್ತು ಬಲಿಚಕ್ರವರ್ತಿಗೆ ಒಂದು ಕಲ್ಪ ಪ್ರಮಾಣದ ಆಯುಷ್ಯವನ್ನೂ ಮುಂದಿನ ಸಾವರ್ಣಿಕ ಮನ್ವಂತರದಲ್ಲಿ ಇಂದ್ರಪದವಿಯನ್ನೂ ಅಲ್ಲಿಯವರೆಗೂ ಸುತಲಲೋಕದಲ್ಲಿ ಸಕಲಭೋಗಗಳನ್ನೂ ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದನು. "ದಾನಾನ್ಯವಿಧಿದತ್ತಾನಿ ಶ್ರಾದ್ಧಾನ್ಯಶ್ರೋತ್ರಿಯಾಣಿ ಚ | ಕೃತಾನ್ಯ-ಶ್ರದ್ಧಯಾ ಯಾನಿ ತಾನಿ ದಾಸ್ಯಂತಿ ತೇ ಫಲಮ್ | ಅದಕ್ಷಿಣಾಸ್ತಥಾ ಯಜ್ಞಾಃ ಕ್ರಿಯಾಶ್ಚಾವಿಧಿನಾ ಕೃತಾಃ | ಫಲಾನಿ ತವ ದಾಸ್ಯಂತಿ ಹ್ಯಧೀತಾನ್ಯವ್ರತಾನಿ ಚ | ತದೇನ ವಿನಾ ಪೂಜಾ ವಿನಾ ದರ್ಶನ ಯಾ ಕ್ರಿಯಾ | ಆಜ್ಯೇನ ಚ ವಿನಾ ಹೋಮ ಫಲದಾಸ್ತೇ ಚ ತೇ ಬಲೇ" ಇತ್ಯಾದಿ. ಬಲಿಚಕ್ರವರ್ತಿಯು ಏಳು ಮಂದಿ ಚರಂಜೀವಿ ಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. "ಅಶ್ವತ್ಥಾಮಾ ಬಲಿವ್ಯಾಸೋ ಹನುಮಾಶ್ಚ ವಿಭೀಷಣಃ | ಕೃಪಃ ಪರಶುರಾಮಶ್ಚ ಸಪ್ತತೇ ಸ್ಥಿರಜೀವಿನಃ" | 2. ಪೂಜೆ, ಆರಾಧನೆ. "ಅವಚಿತಬಲಿಪುಷ್ಪಾ ವೇದಿ-ಸಮಾಗದಕ್ಷಾ" ಕುಮಾಂ ೧-೬೦ | 3. ಉಪಹಾರ, ಅಹುತಿ, ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನು ಅರ್ಪಿಸುವುದು. 4. ತೆರಿಗೆ, ರಾಜನಿಗೆ ಕೊಡುವ ಕಂದಾಯ, ಉತ್ಪನ್ನವಾದ ವಸ್ತುವಿನ ಆರನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗವಾದ ರಾಜಾದಾಯ, ಕರ. ಬಲ (ಪರಿಭಾಷಣಹಿಸಾದಾನೇಷು) "ಇನ್" (೩೦ ೪-೧೧೮) | "ಪ್ರಜಾನಾಮೇವ ಭೂತೈಃ ಸ ತಾಮ್ಯೋ ಬಲಿಮಗ್ರಹೀತ್" ರಘುಂ ೧-೧೮ | 5. ಬಲಿಕರ್ಮ, ಭೂತಯಜ್ಞ, ಗೃಹಸ್ಥನು ಪ್ರತಿದಿನ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞಗಳಲ್ಲೊಂದು. (1) ವೇದಾಭ್ಯಾಸ (ಬ್ರಹ್ಮಯಜ್ಞ). (2) ಹೋಮ, ಅಗ್ನಿ

ಕಾರ್ಯ (ದೇವಯಜ್ಞ). (3) ಅತಿಥಿಸತ್ಕಾರ (ಮನುಷ್ಯ ಯಜ್ಞ). (4) ಪಿತೃತರ್ಪಣ (ಪಿತೃಯಜ್ಞ) ಮತ್ತು (5) ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನು ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸುವುದು (ಭೂತಯಜ್ಞ) ಇವು ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞಗಳು. "ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯೇನಾರ್ಚಯೇತರ್ಷಿನ್ ಹೋಮೇವಾನ್ಯಥಾವಿಧಿ | ಪಿತೃನ್ ಶ್ರಾದ್ಧೇಶ್ಚ ನೃನನ್ನಃ ಭೂತಾನಿ ಬಲಿಕರ್ಮಣಾ" ಮನುಂ ೩-೮೧ | 6. ಚಾಮರದ ಹಿಡಿ. "ಬಲಿದೇವಪ್ರಭೇದೇ ಚ ಕರಚಾಮರದಣಯೋಃ | ತಪಹಾರೆ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 7. ಮುಟ್ಟಿನಿಂದ ಜೀರ್ಣವಾಗಿ ಸುಕ್ಕು ಹಿಡಿದ ಚರ್ಮ. 8. ಮನೆಯ ಕಟ್ಟಡಕ್ಕೆ ಉಪಯೋಗಿ ಸಿರುವ ಒಂದು ಮರ. 9. ಹೆಂಗಸರ ಮತ್ತು ಸ್ಥೂಲ ಕಾಯರ ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಕಂಡುಬರುವ ಚರ್ಮದ ಮಡಿಪು, ತ್ರಿವಳಿ. "ಸ್ತ್ರೀ ತು ಜರಯಾ ಶ್ಲಥಚರ್ಮಣಿ | ಗೃಹದಾರುಪ್ರಭೇದೇ ಚ ಜಠರಾವಯವೇಷಿ ಚ" ಮೇದಿಂ | 10. ಗಂಧಕ.

**ಬಲಿಕ ಬಲಿಕ (ಪುಂ)** ಆರು ದಿನಗಳಿಗೊಮ್ಮೆ ಊಟಮಾಡುವವನು. "ಚಾಂದ್ರಾಯಣರತಶ್ಚಂದ್ರವ್ರತಿಕಃ ಸೌಮಿಕಶ್ಚ ಸಃ | ಷಷ್ಠಕಾಲಿ ತು ಬಲಿಕಃ" ವೈಜಂ |

**ಬಲಿಕರ್ಮನ್ ಬಲಿಕರ್ಮನ್ (ನಂ)** 1. ಭೂತತೃಪ್ತಿಯುಂಟು ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ, ಭೂತಯಜ್ಞ. 2. ಪೂಜೆ, ಆರಾಧನೆ. 3. ತೆರಿಗೆಯನ್ನು ಸಲ್ಲಿಸುವುದು.

**ಬಲಿದಾನ ಬಲಿದಾನ (ನಂ)** ಇಷ್ಟಸಿದ್ಧಿಗಾಗಿ ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನು ಕೊಂದು ಅರ್ಪಿಸುವುದು. ಬಲಿದಾನದಿಂದ ಮುಕ್ತಿಯನ್ನು ಪಡೆಯಬಹುದು. ಸೌಖ್ಯ ಹೊಂದ ಬಹುದು ಮತ್ತು ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಜಯಿಸಬಹುದು. "ಬಲಿದಾನೇನ ಸತತಂ ಜಯೇಷ್ಠತನ್ ನೃಪಾನ್ ನೃಪ" | ಬಲಿದಾನ ದಿಂದ ಇಷ್ಟಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿಯಲ್ಲದೆ ಹಿಂಸಾಜನ್ಯವಾದ ಪಾಪವೂ ಉಂಟು. ಬಲಿದಾನೇನ ವಿಪ್ರೇಂದ್ರ ದುರ್ಗಾಪ್ರೀತಿರ್ಭವ-ನೃಣಾಮ್ | ಹಿಸಾಜನ್ಯಂ ಚ ಪಾಪಂ ಚ ಲಭತೇ ನಾತ್ರ ಸಂಶಯಃ" | ಬಲಿಗಾಗಿ ಪ್ರಾಣಿಯನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನು, ಬಲಿಗಾಗಿ ಪ್ರಾಣಿಯನ್ನು ಕೊಡುವವನು, ಬಲಿ ಕೊಡುವವನು, ಬಲಿ ಗಾಗಿ ಪ್ರಾಣಿಯನ್ನು ಕತ್ತರಿಸುವವನು, ಬಲಿ ಕೊಡುವಾಗ ಇವರನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವವನು, ಬಲಿಗಾಗಿ ಪ್ರಾಣಿಯನ್ನು ಹಿಂದೆ ಮತ್ತು ಮುಂದುಗಡೆ ಹಿಡಿದುಕೊಂಡು ನಿಂತಿರುವವನು. ಇವರೆಲ್ಲರಿಗೂ ಈ ಪಾಪವುಂಟು.

**ಬಲಿದಾನದ ನಿಂದೆ:** "ಯೇ ಮಮಾರ್ಚನಮಿತ್ಯುಕ್ತವಾ ಪ್ರಾಣಿಹಿಸನತತ್ಪರಾಃ | ತತ್ಪೂಜನಂ ಮಮಾಮೇವೈ ಯದೋಷಾತ್ತದಧೋ-ಗತಿಃ | ಮದರ್ಥೈಃ ಶಿವ ಕುರ್ವಂತಿ ತಾಮಸಾ ಜೀವಘಾತನಮ್ | ಆಕಲ್ಪಕೋಟಿ ನಿರಯೇ ತेषಾಂ ವಾಸೋ ನ ಸಂಶಯಃ" ಪಾಪಪುಂ |



**ಬಲಿಧ್ವಸಿನ್ ಬಲಿಧ್ವಂಸಿನ್** (ಪುಂ) ಎಷ್ಟು. ಬಲಿ ಧ್ವಂಸಯತಿ — ಧ್ವಂಸು (ಅವಸ್ಥಾಸನೆ) + ಣಿಚ್ "ಣಿನಿ:" (೩-೨-೭೮) । ಬಲಿನಾ ಪೂಜಾ ಅವಿಧ್ಯಾ ಧ್ವಂಸಯಿತು ಶೀಲ-ಮಸ್ಯ ಇತಿ ವಾ ।

**ಬಲಿನ್ ಬಲಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರ. ಬಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) । "ಬಲಾದಿಮ್ಯೋ ಮತುಬನ್ಯತರಸ್ಯಾಮ್" (೪-೨-೧೩೬) । ಇತಿ ಪಕ್ಷೇ "ಇನಿ:" । "ಮತುಪ್" ಪ್ರತ್ಯಯೇ ಬಲವಾನ್ ಬಲವಾನ್. "ಪಾರ್ಥಿವೇಂದ್ರೋ ಧನುಷ್ಯಾಣಿಬಲಿ ದಶರಥಾತ್ಮಜ:" ವೈಜಂ । 2. ಬಲರಾಮ. "ತಾಲಾಕ್ಷೋ ರೇವತೀಕಾಂತ: ಸಾತ್ವತೋ ಮುಸಲಿ ಬಲಿ" ವೈಜಂ । 3. ಕೆಂಪು ಹೂವಿನ ಗೋರಂಟಿ. "ಶೋಣಿ ಬಲಿ ಕುರವಕ:" ವೈಜಂ । 4. ತೆಂಗಿನ ಮರ. "ನಾರಿಕೇಲೆ ತು ಲಾಙ್ಗಲಿ । ದಾಕ್ಷಿಣಾತ್ಯೋಃ ಫಲೋಜ್ವಾಲಸ್ಮುತಙ್ಗ: ಕುರ್ವಕೇಸರ: । ಸದಾಫಲೋ ಬಲಿ ಚಾಸ್ಮಿನ್" ವೈಜಂ । 5. ಮಾಷ, ಉದ್ದು. "ಮಾಷಸ್ತು ಮಲದೋ ನಂದಿ ಧರೀ ಬೀಜವರೋ ಬಲಿ" ವೈಜಂ । 6. ದೇಹದ ಸೂರ. ಸತ್ತ್ವ, ಮಜ್ಜೆ. "ಅಸ್ಥಿಸ್ತೇಹೋ ವೀರ್ಯಕರೋ ಮಜ್ಜತೇಜಸ್ವಿನೋ ಬಲಿ" ವೈಜಂ । 7. ವರಾಹ, ಹಂದಿ. 8. ಉಷ್ಣ, ಬಂಟಿ. 9. ಮಹಿಷ, ಎಮ್ಮೆ. (ವಿಂ) 10. ಬಲಶಾಲಿ, ಶಕ್ತಿವಂತ, ಶೂರ. "ಕುಶಧ್ವಜಸ್ತಾನಿ ಚಲಧ್ವಜಾನಿ ನಿವೇಶಯಾಮಾಸ ಬಲಿ ಬಲಾನಿ" ರಘುಂ ೧೬-೩೭ ।

**ಬಲಿನನ್ವನ ಬಲಿನಂದನ, -ಪುತ್ರ -ಪುತ್ರ, -ಸುತ -ಸುತ, -ಸುನು -ಸುನು** (ಪುಂ) ಬಲಿಯ ಮಗನಾದ ಬಾಣಾಸೂರ.

**ಬಲಿಪುಟ ಬಲಿಪುಷ್ಪ** (ಪುಂ) ವಾಯುಸ, ಕಾಗೆ. ಬಲಿನಾ ಪುಟ: ।

**ಬಲಿಪ್ರಿಯ ಬಲಿಪ್ರಿಯ** (ಪುಂ) ಲೋಧ್ರ ವೃಕ್ಷ.

**ಬಲಿಭುಜ ಬಲಿಭುಜ್** (ಪುಂ) ವಾಯುಸ, ಕಾಗೆ. ಬಲಿ ವೈಶ್ವ-ದೇವಾನ್ ಭುಜ್ಕತೇ — ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ:) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬) । "ಅಹೋ ಅಧರ್ಮ: ಪಾಲಾನಾಂ ಪೀಠಾಂ ಬಲಿಭುಜಾಮಿವ" ಭಾಗಂ ೧-೧೮-೩೩ ।

**ಬಲಿಶ ಬಲಿಶ** (ನಂ) 1. ಮೂರು ರಜ್ಜುಗಳ ಅಳತೆ, 576 ಅಂಗುಲಗಳ ಅಳತೆ. "ನಿವರ್ತನಂ ತು ತಿಸೃಭಿ ರಜ್ಜುಭಿ: ಬಲಿಶಂ ಚ ತತ್" ವೈಜಂ । 2. ಮೀನು ಹಿಡಿಯುವ ಗಾಳಿ. "ಬಲಿಶಂ ಮತ್ಸ್ಯವೇಧನಮ್" ವೈಜಂ । ಲಡಯೋರಭೇದ: ।

**ಬಲಿವೇಶಮನ್ ಬಲಿವೇಶಮನ್, -ಸದ್ವನ್ -ಸದ್ವನ್** (ನಂ) ರಸಾತಲ, ಪಾತಾಳಲೋಕ.

**ಬಲಿಠ ಬಲಿಠ** (ವಿಂ) 1. ಉಷ್ಣ, ಬಂಟಿ. 2. ಅಧಿಕ ಬಲಶಾಲಿ, ಹೆಚ್ಚು ಬಲವುಳ್ಳವನು. ಅತಿಶಯೇನ ಬಲಿ "ಇಠನ್" (೪-೩-೪೪) ।

**ಬಲಿಯಸ್ ಬಲಿಯಸ್** (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ಬಲಶಾಲಿಯಾದ. ಅನಯೋರತಿಶಯೇನ ಬಲಿ—ಬಲ "ಇಯಸ್" (೪-೩-೪೭) । "ಬಲಿಯಸ್ತಸ್ಯ ಬಹುಪಕಾರವಿತ್ ಬಹುಜ್ಜ ದರ್ಪ ಭುಜಯನ್ತ್ರ-ಲೀಲಯಾ" ಯಾದಂ ೧೪-೨೨ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) । —ಯಸೀ —ಯಸೀ. "ಸಾ ಕಿಂ ನ ರಮ್ಯಾ ಸ ಚ ಕಿಂ ನ ರಂತಾ ಬಲಿಯಸೀ ಕೇವಲಮೀಶ್ವರೇಕ್ಷಾ" ।

**ಬಲಿವರ್ಧ ಬಲಿವರ್ಧ** (ಪುಂ) ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. ಲೀಲಮೀ: ವರ್ ವರಣಮ್ — ಇಶ್ವ ವರ್ ಚ ಇವರೋ, ತೋ ದದಾತಿ — ಇವರ್ಧ: —ಬಲಿ ಚ ಇವರ್ಧಶ್ಚ ಬಲಿವರ್ಧ: । "ಸಂಯೋಜ್ಯಾಥ ಬಲಿವರ್ಧಯುಗಾ ರಚಿತಮಙ್ಗಲ: । ಕೃತ್ವಾ ಬಲಿಂ ತಸ್ಯ ತರೋರಾರೇಭೇ ಕೃಷಿಮತ್ರ ಸ:" ಕಥಾಸಂ ।

**ಬಲಬಜ ಬಲಬಜ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ಕರಡಿಹುಲ್ಲು.

**ಬಲ್ಯ ಬಲ್ಯ** (ನಂ) 1. ವೀರ್ಯ, ಶುಕ್ರಧಾತು. ಬಲಾಯ ಹಿತಮ್ — "ಯ:" (೪-೨-೮೦) । (ವಿಂ) 2. ಬಲವನ್ನು ಕೊಡುವ, ಶಕ್ತಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. "ಬಲ್ಯಂ ರೇತೋ ಬಲಕೃತೋ:" ಹೇಮಂ ।

**ಬಲ್ಯಾ ಬಲ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಶ್ವಗಂಧಾಲತೆ. 2. ಮುಳ್ಳುಗಸೆ ಗಿಡ.

**ಬಲಕಯ ಬಲಕಯ** (ಪುಂ) ಪ್ರಾಯದಕರು. ಬಲಕತೇ — ಬಲಕ (ಗತೋ) "ಅಯನ್" ಬಾಹುಂ ।

**ಬಲಕ(ಯ) ಬಲಕ(ಯ) ಬಲಕ(ಯ) ಬಲಕ(ಯ)** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಹಳ ಕಾಲ ಕಳೆದು ಕರುಹಾಕಿದ ಹಸು. ಬಲಕಯ: ತರುಣವತ್ಸ: ಅಸ್ಯಾ: ಅಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) । "ಙೀಪ್" । "ಚಿರಸೂತಾ ಬಲಕಯಿಣಿ" ಅಮಂ ।

**ಬಸ್ತ ಬಸ್ತ** (ಪುಂ) ಹೊಡೆತ, ಅಜ. ಬಸ್ತಯತಿ — ಬಸ್ತ (ಅರ್ಧನೆ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಬಸ್ತಿ ಬಸ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊಕ್ಕುಳಿನ ಕೆಳಭಾಗ.

**ಬಹಲ ಬಹಲ** (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ, ಪುಷ್ಕಳವಾದ, ಹೇರಳವಾದ. ಬಹಿ (ವೃದ್ಧಿ) "ಕಲ:" (೩-೧-೧೦೬) । "ಬಹಲಾನುರಾಗಕುರವಿಂದಲಪ್ರತಿಬದ್ಧಮಧ್ಯಮಿವ ದಿಗ್ವಲಯಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೮ । 2. ದಪ್ಪವಾದ, ಮಂದವಾದ. 3. ದೃಢವಾದ. 4. ಕರ್ಕಶವಾದ, ಕಠಿಣವಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಲಾ —ಲಾ. 5. ದೊಡ್ಡ ಯಾಲಕ್ಕಿ ಗಿಡ.

**ಬಹಿರಂಗ ಬಹಿರಂಗ** (ನಂ) 1. ಹೊರ ಅವಯವ. 2. ಹೊರ ಭಾಗ, ಹೊರಗಡೆಯ ಭಾಗ. 3. ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಪ್ರತ್ಯಯಾದಿನಿಮಿತ್ತದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಪ್ರಕೃತ್ಯವಯವಾದಿ ಕಾರ್ಯ. ಅಲ್ಪಾಪೇಕ್ಷಮನ್ತರಙ್ಗಮ್ । ಬಹುಪೇಕ್ಷಂ ಬಹಿರಙ್ಗಮ್ । ಅಲ್ಪಾಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ ಅಂತರಂಗಶಾಸ್ತ್ರದ



ಕಾರ್ಯವು ಪ್ರಸಕ್ತವಾದಾಗ ಬಹಿರಂಗತಾಸ್ಯದ ಕಾರ್ಯವು ಅಸಿದ್ಧವು. ಅಂತಹ ಬಹಿರಂಗಕಾರ್ಯವು ಇಲ್ಲವೆಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕು.

**ಬಹಿರಿನ್ದ್ರಿಯ ಬಹಿರಿಂದ್ರಿಯ (ನಂ)** ಬಾಹ್ಯೇಂದ್ರಿಯಗಳು, ಹೊರಗಿನ ಇಂದ್ರಿಯಗಳು. ಶ್ರೋತ್ರ ಚಕ್ಷುಸ್ಸು ತ್ವಕ್ ಜಿಹ್ವೆ ಮತ್ತು ನಾಸಿಕೆ ಇವು ಐದೂ ಬಹಿರಿಂದ್ರಿಯಗಳು.

**ಬಹಿರಪಾಥಿ ಬಹಿರುಪಾಥಿ (ಪುಂ)** ಹೊರಗಿನ ಕಾರಣ, ಬಾಹ್ಯ ಹೇತು. ಬಹಿ: ಉಪಾಧಿ: ಹೇತು: । “ವ್ಯತಿಷಜತಿ ಪದಾರ್ಥಾನಾಂತರ: ಕೋಪಿ ಹೇತು: ನ ಖಲು ಬಹಿರಪಾಥಿನ್ ಪ್ರೀತಯ: ಸಂಶ್ರಯಂತೆ” ಉಂ ರಾಂ ೬-೧೨ ।

**ಬಹಿರ್ವಾರ ಬಹಿರ್ವಾರ (ನಂ)** ಹೊರಬಾಗಿಲು, ತೋರಣದ ಬಾಗಿಲು.

**ಬಹಿರ್ಭೂತ ಬಹಿರ್ಭೂತ (ವಿಂ)** 1. ಹೊರಕ್ಕೆ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು, ಅಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಒಳಗಡೆ ಸೇರದಿರುವ, ಹೊರಗಡೆ ಇರುವ.

**ಬಹಿರ್ಮುಖ ಬಹಿರ್ಮುಖ (ವಿಂ)** 1. ಹೊರಗಿನ ವಿಷಯ ಗಳಲ್ಲಿ ಅನುರಕ್ತನಾದ, ಹೊರ ಪ್ರಪಂಚದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತನಾದ. ಬಹಿ: ಬಾಹ್ಯವಿಷಯ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ । 2. ವಿಮುಖನಾದ, ಮುಖ ವನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತಿರುಗಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ.

**ಬಹಿರ್ವಿಕಾರ ಬಹಿರ್ವಿಕಾರ (ವಿಂ)** ವಿಕಾರಗಳಿಗಿಂತ ಹೊರಗಿರುವ, ಮಹದಾದಿ ತತ್ತ್ವಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾಗಿರುವ. ವಿಕಾರೇಮ್ಯೋ ಬಹಿ: । “ಬಹಿರ್ವಿಕಾರಂ ಪ್ರಕೃತೇ: ಪೃಥಗಿದ್ವಿ: ಪುರಾತನಂ ತ್ವಾಂ ಪುರುಷಂ ಪುರಾವಿದ:” ಮಾಘಂ ೧-೩೩ ।

**ಬಹಿಶ್ಚರ ಬಹಿಶ್ಚರ (ವಿಂ)** ಹೊರಗೆ ಸಂಚರಿಸುವ. ಬಹಿ: ಚರತಿ — ಚರ (ಗತೌ) “ಠ:” (೩-೨-೧೬) । “ಅರ್ಥಾ ಬಹಿಶ್ಚರಾ: ಪ್ರಾಣಾ:” ।

**ಬಹಿಷ್ಕರಣ ಬಹಿಷ್ಕರಣ (ನಂ)** 1. ಹೊರಗೆ ಹಾಕುವುದು. ಒಳಗೆ ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳದಿರುವುದು. ಬಹಿ: + ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಬಹಿರಿಂದ್ರಿಯ.

**ಬಹಿಷ್ಕಾರ ಬಹಿಷ್ಕಾರ (ಪುಂ)** ಹೊರಗೆ ಹಾಕುವುದು, ಒಳಗೆ ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳದಿರುವುದು. ಬಹಿ: + ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) ಭಾವೇ “ಘ” (೩-೩-೧೮) ।

**ಬಹಿಷ್ಕೃತ ಬಹಿಷ್ಕೃತ (ವಿಂ)** ಹೊರಗೆ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು, ಹೊರಗೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು. ಬಹಿ: + ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) ।

**ಬಹಿಷ್ಠ ಬಹಿಷ್ಠ (ವಿಂ)** ಹೊರಗಡೆ ನಿಂತಿರುವ. ಬಹಿ: ತಿಷ್ಠತಿ — ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) “ಕ:” (೩-೨-೪) ।

**ಬಹಿಸ್ ಬಹಿಸ್ (ಅವ್ಯಂ)** 1. ನಗರದ ಮನೆಯ ಅಥವಾ ಊರಿನ ಹೊರಗೆ. “ಬಹಿಃಪನಗರಂ ಬಲಾನಿ ದೃಷ್ಟಾ ಸಹ

ಯದ್ವಿಭಿ: ಸಮಯೇ ನಿವರ್ತಮಾನಮ್” ಯಾದಂ ೨೪-೧೮ । 2. ಹೊರಭಾಗದಲ್ಲಿ, ಹೊರಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ. “ಬಹಿರಪಿ ವಿಸಂತಯ: ಕಾಮಮಾನಿನ್ಯಿರೇ ಯದ್ವಿಸಕರಕುಚೋಜ್ಜಂ ಧ್ವಾಂತ-ಮನ್ತಗೃಹೇಷು” ಮಾಘಂ ೧೧-೫೯ । 3. ಹೊರಗಡೆ, ಎಲ್ಲರಿಗೂ ತಿಳಿಯುವಂತೆ ಮೇಲುನೋಟದಲ್ಲಿ. “ಬಹಿ: ಸರ್ವಾಕಾರ-ಪ್ರವಣರಮಣಿಯಂ ವ್ಯವಹರನ್ ಪರಾಮ್ಯುಹಸ್ಥಾನಾನ್ಯಪಿ ತನುತರಾಣಿ ಸ್ಥಗಯತಿ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೭ । 4. ಹೊರಗಡೆ, ದೇಹದ ಒಳಭಾಗಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದ ಹೊರಭಾಗ. “ಅಂತರ್ಬಹಿ: ಪುರ: ಪಶ್ಚಾತ್ ಸರ್ವದಿಕ್ಷವಪಿ ಸೇವ ಮೇ” ಚಂದ್ರಾಂ । 5. ಹೊರ ಗಡೆಯು. “ನ ಖಲು ಬಹಿಃಪಾಥಿನ್ ಪ್ರೀತಯ: ಸಂಶ್ರಯಂತೆ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೭ ।

**ಬಹು ಬಹು (ವಿಂ)** 1. ಹೆಚ್ಚಾದ, ಬಹಳವಾದ. ಬಹಿ (ಬೃಹೌ) “ಕು:” ನಲೋಪಪ್ಪ (ಉಂ ೧-೨೯) । “ಅಲ್ಪಸ್ಯ ಹೇತುರ್ಬಹು ಹಾತುಮಿಚ್ಛನ್ ವಿಚಾರಮೃಡ: ಪ್ರತಿಭಾಸಿ ಮೇ ತ್ವಮ್” ರಘುಂ ೨-೪೭ । 2. ಅಧಿಕವಾದ. ಎರಡಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚಾದ. “ಕಾಲೇ ಗತೇ ಬಹುತಿಥೇ ಮಮ ಸೇವ ಜಾತಾ” ಶಾಕುಂ ೫-೩ । 3. ಪುಷ್ಕಳವಾದ, ಹೇರಳವಾದ. “ಬಹುನಿ ಭೀಮಸ್ಯ ವಸುನಿ ದಕ್ಷಿಣಾಂ ಪ್ರಯಚ್ಛತ: ಸತ್ವಮವೇಕ್ಷ್ಯ ತತ್ಕ್ಷಣಮ್” ನೈಷಂ ೧೪-೪೩ । 4. ದೊಡ್ಡದಾದ, ಹಿಂದಾದ. (ಅವ್ಯಂ) 5. ಬಹಳವಾಗಿ. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ. “ಬಹುಪಿ ಸ್ವೇಚ್ಛಯಾ ಕಾಮಂ ಪ್ರಕೀರ್ಣಮಭಿವಿಧೀಯತೇ” ಮಾಘಂ ೨-೭೩ । 6. ಅಧಿಕವಾಗಿ, ದೊಡ್ಡದಾಗಿ. “ತ್ವತ್ಸಮ್ಮಾವಿತಮಾತ್ಮಾನಂ ಬಹು ಮನ್ಯಾಮಹೇ ವಯಮ್” ಕುಮಾಂ ೬-೨೦ । 7. ಹೇರಳವಾಗಿ, ಪುಷ್ಕಳವಾಗಿ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ವಾ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೪೫) । ಬಹ್ನಿ, ಬಹು: ಬಹ್ನೀ, ಬಹು:.

**ಬಹುಕ ಬಹುಕ (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಏಡಿ, ನಳ್ಳಿ. 3. ಅರ್ಧವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 4. ನೀರುಕಾಗೆ. 5. ಬಾವಿ ತೋಡುವವನು. “ಬಹುಕ: ಕರ್ಕಟೇ ಚಾರ್ಕೇ ದಾತ್ಯು ಹೇ ಜಲಖಾತಕೇ” ಮೇದಿಂ ।

**ಬಹುಕಂಠಕ ಬಹುಕಂಠಕ (ಪುಂ)** 1. ನೆಗ್ಗಿಲುಗಿಡ. ಬಹುನಿ ಕಂಠಕಾನ್ಯಸ್ಯ । 2. ತೇಟಕ ಸಂಧಿ. 3. ಕಿರುತಾಳೆ ಗಿಡ.

**ಬಹುಕಂದ ಬಹುಕಂದ (ಪುಂ)** ಸೂರಣದ ಗಿಡ.

**ಬಹುಕರ ಬಹುಕರ (ಪುಂ)** 1. ಕಣವನ್ನು ಗುಡಿಸಿ ಬೊಕ್ಕಟ್ಟು ಮಾಡುವವನು. ಬಹು ಕರೋತಿ ಭುವಂ ಸಮಾಷ್ಟಿ “ಠ:” (೩-೨-೨೨) । 2. ಹೆಚ್ಚು ಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು. ಬಹು ಕಾರ್ಯ ಕರೋತಿ-ಕೃತ್ “ಠ:” (೩-೨-೧೦೨) । “ನಿಹಂತಾ ವೇರಕಾರಾಣಾಂ ಸತಾಂ ಬಹುಕರ: ಸದಾ” ಭट्टಿಂ ೫-೭೮ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೪೧) । -ಕರೀ -ಕರೀ. ಪೂರಕ. ಕೆಸಬರಿಕೆ, ಬರಲು.



ಬಹುಕಾಲ ಬಹುಕಾಲ (ಅವ್ಯಂ) ಬಹಳ ಕಾಲದಿಂದ.

ಬಹುಕೃತ್ ಬಹುಕೂರ್ಚ (ಪುಂ) ತೆಂಗಿನ ಮರ.

ಬಹುಕುಸುಮ ಬಹುಕುಸುಮ (ವಿಂ) ತಾಳೆಯುಳ್ಳ, ಹೆಚ್ಚು ಸಹನೆ ಯುಳ್ಳ. "ಅತೋಽಪಿ ಕಿಂಚಿದ್ಭವತೀ ಬಹುಕುಸುಮಾ ದ್ವಿಜಾತಿ-  
ಭಾವಾದುಪಪನ್ನಾಪಲ: " ಕುಮಾರಂ ೪-೪೦ |

ಬಹುಗಂಧ ಬಹುಗಂಧ (ನಂ) 1. ಲವಂಗಪಟ್ಟಿ, ದಾಲ್ಚಿನ್ನಿ. (ವಿಂ) 2. ಹೆಚ್ಚು ಪಾಸನೆಯುಳ್ಳ. ಬಹು: ಗಂಧೋ ಯಸ್ಮಿನ್ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಗಂಧಾ -ಗಂಧಾ. 3. ಕಾಡುಮಲ್ಲಿಗೆಯ ಒಂದು ಬೇಡ. 4. ಸಂಹಿಯ ಮೊಗ್ಗು.

ಬಹುಗರ್ಹವಾಕ್ (ಚ್) ಬಹುಗರ್ಹವಾಕ್ (ಚ್) ಬಹಳ ತುಚ್ಛವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವವನು. ವೃಥಾವಾಗಿ ಹರಟುವವನು. ಬಹು ಗರ್ಹಾ ನಿಂದಿತಾ ವಾಕ್ ಯಸ್ಯ | "ವಾಚಾಟೋ ಬಹುಗರ್ಹವಾಕ್" ಅಮಂ |

ಬಹುತಸ್ ಬಹುತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಅನೇಕ ಕಡೆಗಳಿಂದ. ಬಹು ವಾ "ತಸಿಲ್" (೪-೩-೭) | ಪಕ್ಷ ಬಹುಮ್ಯ: |

ಬಹುತಿಥ ಬಹುತಿಥ (ವಿಂ) ಅನೇಕವಾದ, ಬಹಳವಾದ. ಬಹು "ತಿಥುಕ್" (೪-೨-೪೨) | "ಕಾಲೇ ಗತೇ ಬಹುತಿಥೇ ಮಮ ಸೇವ ಜಾತಾ" ಶಾಕುಂ ೪-೩ |

ಬಹುತೃಣ ಬಹುತೃಣ (ನಂ) ತೃಣಕ್ಕೆ ಸಮಾನನಾದವನು. ಔಷಧಸಮಾಪ್ತಂ ತೃಣಮ್ - ವಾ "ಬಹುತ್" (೪-೩-೬೮) | ಈ ಪ್ರತ್ಯಯವು ಪ್ರಕೃತಿಗೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಬಂದಿರುವುದರಿಂದ ಬಹುತೃಣಮ್ ಎಂದಾಗುವುದು. "ನಿರ್ದರ್ಶನಮಸಾರಾಣಾಂ ಲಘುಬಹು-  
ತೃಣಂ ನರ:" ಮಾಘಂ ೧-೪೦ | [ನಿಂದ್ಯ ಮತ್ತು ಉಪಯೋಗ ವಿಲ್ಲದ್ದು ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಇದರ ಪ್ರಯೋಗ].

ಬಹುತ್ರ ಬಹುತ್ರ (ಅವ್ಯಂ) ಅನೇಕ ಕಡೆಗಳಲ್ಲಿ, ಅನೇಕ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿ. ಬಹು "ತ್ರಲ್" (೪-೩-೧೦) |

ಬಹುತ್ವ ಬಹುತ್ವ (ನಂ) ಅನೇಕವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಬಹಳವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಬಹೋರ್ಭಾವ: "ತ್ವ:" (೪-೧-೧೧೯) | "ತಲ್" | ಬಹುತಾ ಬಹುತಾ.

ಬಹುತ್ವಕ್ (ಚ್) ಬಹುತ್ವಕ್ (ಚ್) (ಪುಂ) ಭೂರ್ಜವೃಕ್ಷ, ಭುಜಪತ್ರೆ ಗಿಡ. ಬಹುತ್ವಕ್ವೋ ಯಸ್ಯ |

ಬಹುದ ಬಹುದ (ವಿಂ) ಉದಾರವಾಗಿ ಕೊಡುವ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ದಾನಮಾಡುವ. ಬಹು ದದಾತಿ-ಓದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩) |

ಬಹುದಾಯಿನ್ ಬಹುದಾಯಿನ್ (ವಿಂ) ಅನೇಕವಾಗಿ ಕೊಡುವ, ಉದಾರವಾಗಿ ದಾನಮಾಡುವ. ಬಹು ದದಾತಿ-ಓದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮) |

ಬಹುದ್ರಾಘ ಬಹುದ್ರಾಘ (ಪುಂ) 1. ಗೋಧಿ. ಬಹುನಿ ದ್ರಾಘಾನಿ ಅಪಕ್ವಾವಸ್ಥಾयां यस्य | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ದ್ರಾಘಾ -ದುಗ್ಧಾ. 2. ಸ್ನುಹೀವೃಕ್ಷ, ಕಳ್ಳಿಮರ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" | -ದ್ರಾಘಿಕಾ -ದುಗ್ಧಿಕಾ.

ಬಹುಧಾ ಬಹುಧಾ (ಅವ್ಯಂ) ಅನೇಕ ವಿಧವಾಗಿ.

ಬಹುಧಾರ ಬಹುಧಾರ (ನಂ) ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧ. [ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧಕ್ಕೆ ಆರು ಧಾರೆ (ಅಲುಗು) ಗಳಿರುವುವು.]

ಬಹುಪತ್ರ ಬಹುಪತ್ರ (ಪುಂ) ಈರುಳ್ಳಿ.

ಬಹುಪಾದ್ ಬಹುಪಾದ್ (ಪುಂ) ವಟುವೃಕ್ಷ, ಅಲದ ಮರ. ಬಹು: ಪಾದಾ ಅಸ್ಯ ಪಾದಸ್ಯ ಲೋಪ: ಸಮಾಸಾಂತ: (೪-೪-೧೪೦) | "ನ್ಯಗ್ರೋಧೋ ಬಹುಪಾದ್ವಟ:" ಅಮಂ |

ಬಹುಪಾದ ಬಹುಪಾದ (ಪುಂ) 1. ವಟುವೃಕ್ಷ, ಅಲದ ಮರ. ಬಹು: ಪಾದಾ ಅಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಅನೇಕ ಪಾದಗಳುಳ್ಳ. "ದ್ವಿಪಾದಬಹುಪಾದಾನಿ ತಿರ್ಯಗ್ಗತಿಮತೀನಿ ಚ" ಭಾಂ |

ಬಹುಪುಷ್ಪ ಬಹುಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಪಾರಿಜಾತದ ಗಿಡ. 2. ಹವಳದ ಗಿಡ.

ಬಹುಪ್ರಕಾರ ಬಹುಪ್ರಕಾರ (ವಿಂ) 1. ಅನೇಕ ವಿಧವಾದ, ಅನೇಕ ರೀತಿಯಾದ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಅನೇಕ ವಿಧವಾಗಿ.

ಬಹುಪ್ರಜಾ ಬಹುಪ್ರಜಾ (ಪುಂ) 1. ವರಾಹ, ಹಂದಿ. ಬಹುಪ್ರಜಾ: ಪ್ರಜಾ ಅಸ್ಯ | 2. ಮುಂಜತ್ಯಣ, ಮಂಜಿಯ ಹುಲ್ಲ. (ವಿಂ) 3. ಹೆಚ್ಚು ಮಕ್ಕಳುಳ್ಳವನು.

ಬಹುಪ್ರತಿಜ್ಞ ಬಹುಪ್ರತಿಜ್ಞ (ವಿಂ) ಅನೇಕ ಹೇಳಿಕೆಗಳನ್ನೊಳಗೊಂಡ ವ್ಯವಹಾರ, ಇಟ್ಟಿದ್ದ ಮತ್ತು ಕೊಟ್ಟಿದ್ದ ಹಣವನ್ನು ಹಿಂತಿರುಗಿಸಲಿಲ್ಲವೆಂದೂ ಭೂಮಿ ವಗೈರೆಗಳನ್ನು ಆಕ್ರಮಿಸಿರುವನೆಂದೂ ಮುಂತಾಗಿ ದೂರುಗಳನ್ನೊಳಗೊಂಡ ವ್ಯಾಜ್ಯ.

ಬಹುಪ್ರದ ಬಹುಪ್ರದ (ವಿಂ) ಹೇರಳವಾಗಿ ಕೊಡುವವನು, ಉದಾರವಾಗಿ ದಾನಮಾಡುವವನು. ಬಹು ಪ್ರದದಾತಿ-ಪ್ರ+ಓದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೬) | "ದಾನಶೌಣ್ಡೋ ಬಹುಪ್ರದ:" ಅಮಂ |

ಬಹುಪ್ರಸು ಬಹುಪ್ರಸು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಚ್ಚು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಹೆತ್ತ ತಾಯಿ. ಬಹುನ್ ಪ್ರಸುತೇ-ಪ್ರ+ಪೂಙ್ (ಪ್ರಾಣಿಪ್ರಸವೇ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೬೧) |

ಬಹುಫಲ ಬಹುಫಲ (ಪುಂ) 1. ಕೆದಂಬ ವೃಕ್ಷ. ಈಜೆಲು ಮರ. 2. ಹುಳಿ ಬೇಲ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಫಲಾ -ಫಲಾ



3. ಕಾಡುದ್ದಿನ ಗಿಡ. 4. ಕಾಚಿಸೊಪ್ಪು, ಗಣಕಿಸೊಪ್ಪು.  
5. ಹಾಗಲ ಗಿಡ. -ಫಲಿ-ಫಲೀ. 6. ನೆಲ್ಲಿ ಗಿಡ.

**ಬಹುಬೀಜ ಬಹುಬೀಜ** (ಪುಂ) 1. ಸೀತಾಫಲದ ಗಿಡ (ನಂ) 2. ಸೀತಾಫಲದ ಹಣ್ಣು.

**ಬಹುಮಂಜರೀ ಬಹುಮಂಜರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತುಲಸಿ ಗಿಡ.

**ಬಹುಮತ ಬಹುಮತ** (ವಿಂ) 1. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಬಹು + ಮತ (ಜ್ಞಾನ) "ಕು:" (3-2-102)। "ಯಾತೇರಿವ ಶಮಿಷ್ಠಾ ಮತಬಹುಮತಾ ಭವ" ಶಾಕುಂ 4-6। 2. ಅನೇಕರ ಅಭಿಪ್ರಾಯಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. ಬಹುನಾ ಮತಾನಿ ಯಸ್ಯ।

**ಬಹುಮತಿ ಬಹುಮತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಮಾನ, ಗೌರವ. 2. ಅರ್ಹತೆಯ ಪರಿಗಣನೆ. "ಕಾಂತಾನಾಂ ಬಹುಮತಿಮಾಯುಃ ಪಯೋದಾ ನಾಲ್ಪಿಯಾನ್ ಬಹು ಸುಕೃತಂ ಹಿನಸ್ತಿ ದೋಃ" ಕಿರಾಂ 9-14।

**ಬಹುಮಲ ಬಹುಮಲ** (ನಂ) ಸೀಸ ಲೋಹ.

**ಬಹುಮಾನ ಬಹುಮಾನ** (ಪುಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಗೌರವ, ಹೆಚ್ಚು ಮರ್ಯಾದೆ. "ತಮಾತಿಥೇಯಿ ಬಹುಮಾನಪೂರ್ವಯಾ ಸಪರ್ಯಯಾ ಪ್ರತ್ಯಾದಿಯಾ ಪಾರ್ವತೀ" ಕುಮಾಂ 4-31। (ನಂ) 2. ಚಾರಿ ತೋಷಿಕ, ಪ್ರೀತಿಯ ಕೊಡುಗೆ, ವಿಶ್ವಾಸದಿಂದ ಮಾಡುವ ದಾನ, ಸಂಮಾನ.

**ಬಹುಮಾನ್ಯ ಬಹುಮಾನ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಗಣ್ಯ, ಗೌರವಿಸಲ್ಪಡುವವನು, ಮರ್ಯಾದೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದವನು. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಗೌರವಿಸಿ, ಮರ್ಯಾದೆಮಾಡಿ.

**ಬಹುಮಾರ್ಗಗಾ ಬಹುಮಾರ್ಗಗಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನೇಕ ಮಾರ್ಗಗಳಲ್ಲಿ ಹರಿಯುವ ಗಂಗಾನದಿ. 2. ಸ್ವರೀಣ, ವ್ಯಭಿಚಾರೀಣ, ವೇಶ್ಯೆ.

**ಬಹುಮುಖ ಬಹುಮುಖ** (ವಿಂ) ನಾನಾ ರೀತಿಯ, ಅನೇಕ ವಿಧವಾದ.

**ಬಹುಮೂಲ್ಯ ಬಹುಮೂಲ್ಯ** (ನಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಮೊತ್ತ. (ವಿಂ) 2. ಹೆಚ್ಚು ಬೆಲೆಬಾಳುವ, ಅಧಿಕ ಬೆಲೆಯುಳ್ಳ. ಬಹು ಮೂಲ್ಯಮಸ್ಯ। "ಬಹುಮೂಲ್ಯಂ ಮಹಾಧನಮ್" ಅಮಂ।

**ಬಹುರೂಪ ಬಹುರೂಪ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ಶಿವ. ಪರಮೇಶ್ವರ. 3. ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ. 4. ಓತಿಕೇತ, ಕೃಕಲಾಸ, ಹೆಂಟೆಗೊದ್ದ. 5. ಸಜ್ಜರಸ, ಮತ್ತಿಮರದ ಹಾಲು. "ಬಹುರೂಪಃ ಶಿವೇ ವಿಷ್ಣೋ ಸರತೇ ಭೂಕೇ ಸ್ಮರೇ" ಮೇದಿಂ। 6. ಕೇಶ, ಕೂದಲು. (ವಿಂ) 7. ಅನೇಕ ರೂಪಗಳುಳ್ಳ.

**ಬಹುಲ ಬಹುಲ** (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಬಹುನ್ ಲಾತಿ-ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕು:" (3-2-3)। 2. ಕೃಷ್ಣವಕ್ಷ, ಚಾಂದ್ರ ಮಾಸದ ಎರಡನೆಯ ಅರ್ಧ. "ಜ್ಞಾನಿನಾದಮಥ ಗೃಹ್ಣತೀ ತಯೋಃ ಪ್ರಾದುರಾಸ ಬಹುಲಕ್ಷಪಾಚ್ಚವಿಃ" ರಘುಂ 11-14। (ನಂ) 3. ಆಕಾಶ, ಅಂತರಿಕ್ಷ. 4. ಬಿಳಿ ಮೆಣಸು. (ವಿಂ) 5. ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅಧಿಕವಾದ. "ಜನ್ಮನಿ ಕಲೇಶಬಹುಲೇ" ಹಿತಂ। 6. ಅನೇಕವಾದ, ಎರಡಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚಾದ. "ತರಣತಮಾಲನೀಲಬಹುಲೋತ್ತಮದಮ್ಬುಧರಾಃ" ಮಾಲತೀಂ 9-16। 7. ಕಪ್ಪುಬಣ್ಣದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ -ಲಾ. 8. ನೀಲಿಗಿಡ. 9. ಯಾಲಕ್ಕಿ ಗಿಡ. 10. ಗೋವು. ಹಸು, ಆಕಳು. 11. ಭೂಮಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ-ಬಂವಂ) 12. ಕೃತ್ತಿಕಾ ನಕ್ಷತ್ರ. "ಬಹುಲಾ ನೋಲಿಕಾಯಾಂ ಸ್ಯಾದೇಲಾಯಾಂ ಗವಿ ಯೋಷಿತಿ। ಕೃತ್ತಿಕಾಸು ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಭೂಮಿ ವಿಹಾಯಸಿ ನಪುಂಸಕಮ್। ಪುಂಸ್ಯಗ್ನೌ ಕೃಣ್ಣಪಕ್ಷೇ ಚ ವಾಚ್ಯವತ್ ಪ್ರಾಜ್ಯಕೃಣ್ಣಯೋಃ" ಮೇದಿಂ। "ಸ್ತ್ರೀ ಸ್ಯಾತ್ ಪೃಥಿವ್ಯಾಮುಕ್ತಾಯಾಮೇಲಾಯಾಂ ಕೃತ್ತಿಕಾಸು ಚ" ವೇಜಂ।

**ಬಹುಲಗಂಧಾ ಬಹುಲಗಂಧಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಾಲಕ್ಕಿ ಗಿಡ.

**ಬಹುಲೀಕರಣ ಬಹುಲೀಕರಣ** (ನಂ) 1. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ತೂರುವುದು. 2. ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು.

**ಬಹುಲೀಕೃತ ಬಹುಲೀಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ಕಣದಲ್ಲಿ ತೂರಿ ರಾಶಿ ಹಾಕಿದ ಧಾನ್ಯ, ಹೊಟ್ಟಿನಿಂದ ಬೇರ್ಪಡಿಸಿ ಶುದ್ಧವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಧಾನ್ಯ. ಅಬಹುಲಂ ಬಹುಲಮಕಾರಿ। "ಶ್ವೇತ-ಮಾವಸಿತಂ ಧಾನ್ಯಂ ಪೂತಂ ತು ಬಹುಲೀಕೃತಮ್" ಅಮಂ। 2. ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಬಹುವಚನ ಬಹುವಚನ** (ನಂ) 1. ಎರಡಕ್ಕಿಂತಲೂ ಅಧಿಕ ಸಂಖ್ಯೆಯನ್ನು (ಬಹುತ್ವವನ್ನು) ತೋರಿಸುವ (ಬಹು) ವಚನ. ಬಹುವಂ ವಕ್ತಿ-ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134)। "ಜಸ್" ಮೊದಲಾದ "ಸುಪ್" ವಿಭಕ್ತಿಗಳು. ಮಾನವಾಃ ಅಜ್ಞನಾಃ ಅಪತ್ಯಾನಿ ಇತ್ಯಾದಿ. 2. ಕ್ರಿಯಾಪದದ "ಜಿ" ಮೊದಲಾದ "ತಿಙ್" ವಿಭಕ್ತಿಗಳು. ತಿಷ್ಠಂತಿ ಧಾವಂತಿ ಕುर्वಂತಿ ರಾಜಂತೆ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಬಹುವಲ್ಕ ಬಹುವಲ್ಕ** (ಪುಂ) ಶ್ರಿಯಾಲವೃಕ್ಷ, ಮೊರಟೆಗಿಡ.

**ಬಹುವಾರಕ ಬಹುವಾರಕ** (ಪುಂ) ಚಳ್ಳೆಗಿಡ. ಬಹುನ್ ವಾರಯತಿ -ವೃತ್ (ವರಣೆ)+ ಣಿಕ್ "ವುನ್" (3-2-32)।

**ಬಹುವಿಧ ಬಹುವಿಧ** (ವಿಂ) ನಾನಾ ವಿಧವಾದ, ಅನೇಕ ಪ್ರಕಾರವಾದ. ಬಹುವೋ ವಿಧಾ ಯಸ್ಯ। "एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे" ಗೀತಾ 4-32।

**ಬಹುವೀರ್ಯ ಬಹುವೀರ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ವಿಭೀತಕ ವೃಕ್ಷ, ತಾರ ಗಿಡ. 2. ಶಾಲ್ಮಲಿ ವೃಕ್ಷ, ಬೂರುಗದ ಮರ. 3. ಮರುಗ. (ವಿಂ) 4. ಹೆಚ್ಚು ವೀರ್ಯವುಳ್ಳ.



श्रीः

# शब्दार्थकौस्तुभः

(प्रायौगिक संस्कृत—कर्णाटक शब्दकोशः)

ಸಂಸ್ಕೃತ — ಕನ್ನಡ ಶಬ್ದಕೋಶ

ಸಂಪುಟ ೫

ಪದಗಳು : बहुव्रीहि—वेदान्त

ಸಾಹಿತ್ಯ ವಿದ್ವಾನ್

ಚಕ್ರವರ್ತಿ ಶ್ರೀನಿವಾಸ ಗೋಪಾಲಾಚಾರ್ಯ

ಬಾಪ್ಪೊ ಪ್ರಕಾಶನ

ಬೆಂಗಳೂರು ಪ್ರೆಸ್, ಬೆಂಗಳೂರು



॥ श्रीः ॥

श्रीमते हयग्रीवाय नमः ।

## शब्दार्थकौस्तुभः ।

(संस्कृत-कर्णाटक शब्दकोशः)

संस्कृत-कन्नಡ ಶಬ್ದ ಕೌಶ

ಪಂಚಮ ಭಾಗ

लक्ष्मीं तनोतु व्यवधूय चित्ते वितर्कडोलां विविधार्थराशेः ।

लक्ष्मीहयास्यः स्फुरिताक्षमालो लक्ष्मीलसद्वत्सतलः सदा नः ॥

त्रयीचयसुधानिधिप्रचयभूतहेषारवा सुधोदधिसुतायुता प्रचितसर्वदोषापहा ।

नतेष्टफलदायिका बुधहृदब्जमित्रायिता परिस्फुरतु मे सदा हयमुखी परा देवता ॥

राकासुधाकरसुधामलदिव्यमूर्ते श्रीनाथ भव्यमतिदायक सैन्धवास्य ।

अस्पृष्टसंशयकलङ्कपदार्थजातं वागीश तेऽद्य कृपया हृदि मे चकास्तु ॥

नत्वा लक्ष्मीहयग्रीवौ गुरुवन्दनपूर्वकम् ।

शब्दार्थकौस्तुभस्यास्य पञ्चमं भागमारभे ॥

बहुग्रीहि बಹುಗ್ರೀಹಿ (पुं०) 1. ಅನ್ಯಪದಾರ್ಥಪ್ರಧಾನವಾದ ಒಂದು ಸಮಾಸ. "ಶೇಷೋ ಬಹುಗ್ರೀಹಿಃ" ಎಂಬ ಅಧಿಕಾರ ಸೂತ್ರದಿಂದ ವಿಧಿಸಲ್ಪಡುವ ಒಂದು ಸಮಾಸ. उक्तादन्यः शेषः । "द्वितीया श्रित ..." (२-१-२४), "तृतीया तत्कृत" (२-१-३०), "चतुर्थी तदर्थ ..." (२-१-३६), "पञ्चमी भयेन" (२-१-३७), "षष्ठी" (२-२-८), "सप्तमी शौण्डेः" (२-१-४०) ಈ ಸೂತ್ರಗಳಿಂದ ದ್ವಿತೀಯಾದಿ ವಿಭಕ್ತಿಗಳನ್ನು ನಿರ್ದೇಶಿಸಿ ಅನೇಕ ಸಮಾಸಗಳನ್ನು ಹೇಳಿ ಪ್ರಥಮಾವಿಭಕ್ತಿಗೆ ಯಾವ ಸಮಾಸವನ್ನೂ ಹೇಳದಿರುವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ "ಶೇಷ" ಪದಕ್ಕೆ ಪ್ರಥಮಾವಿಭಕ್ತಿಯೆಂದು ಅರ್ಥವು. ಅನೇಕ ಪ್ರಥಮಾವಿಭಕ್ತಿಯಂತಪದಗಳು ಅನ್ಯಪದಾರ್ಥಪ್ರಧಾನವಾಗಿದ್ದರೆ ಅಲ್ಲಿ ಬಹುಗ್ರೀಹಿ ಸಮಾಸ. दत्ता दक्षिणा यस्मै सः

दत्तदक्षिणो द्विजः ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪ್ರಥಮಾಂತವಾದ ಎರಡು ಪದಗಳೂ (ಸ್ವತಂತ್ರವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಹೊಂದದೆ) ದ್ವಿಜ (ಅನ್ಯ) ಪದಾರ್ಥಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿರುವುದರಿಂದ (ಇಲ್ಲಿ) ಬಹುಗ್ರೀಹಿ ಸಮಾಸ. पीताम्बरः त्रिलोचनः ಇತ್ಯಾದಿ (वि०) 2. ಹೆಚ್ಚು ಧಾನ್ಯವುಳ್ಳ. "तत्पुरुष, कर्मधारय येनाहं स्यां सदा बहुग्रीहिः" उद्ध० ।

बहुशस् बಹುಶಸ್ (अव्य०) 1. ಅನೇಕವಾಗಿ, ಬಹಳವಾಗಿ. बहु "शस्" (५-४-४२) । "पश्यन्तीनां न खल् बहुशो न स्थलीदेवतानां मुक्तास्थूलास्तरुकिंसलयेष्वश्रु लेशाः पतन्ति" मेघ० २-४३ । 2. ಅನೇಕ ಸಲ ಅನೇಕವಿಧವಾಗಿ. "चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि बहुशं वेपथुमतीं रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचरः" शाकु० १-२० । 2. ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ.



ಬಹುಶಾಲ ಬಹುಶಾಲ (ಪುಂ) ಸ್ವಹೀಪಕ್ಷ, ಕಳ್ಳಿ ಗಿಡ.

ಬಹುಶಿಖಾ ಬಹುಶಿಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರುಹಿಪ್ಪಲಿ.

ಬಹುಶಿರಸ್ ಬಹುಶಿರಸ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಬಹುನಿ ಶಿರಾಸಿ  
ಅಸ್ಯ । "ರದ್ರೋ ಬಹುಶಿರಾ ಬಭ್ರುಃ" ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ)  
2. ಅನೇಕ ತಲೆಗಳುಳ್ಳ.

ಬಹುಶ್ರುತ ಬಹುಶ್ರುತ (ವಿಂ) 1. ಅನೇಕ ಶಾಸ್ತ್ರಾಭ್ಯಾಸ  
ಪುಳ್ಳವನು, ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. ಬಹುನಿ ಶ್ರುತಾನಿ ಶಾಸ್ತ್ರಾಣಿ  
ಯಸ್ಯ । "ಶತ್ರುಘಾತಿನಿ ಶತ್ರುಧನೇ ಸುಬಾಹೌ ಚ ಬಹುಶ್ರುತೇ" ರಘುಂ  
೧೫-೩೬ । 2. ವೇದಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿದವನು. "ಗುಹಂ ವಾ  
ಬಾಲವೃದ್ಧೌ ವಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ವಾ ಬಹುಶ್ರುತಮ್ । ಆತತಾಯಿನಮಾಯಾನ್ತಂ  
ಹನ್ಯಾದೇವಾವಿಚಾರಯನ್" ಮನುಂ ೮-೩೫೦ ।

ಬಹುಸಂತತಿ ಬಹುಸಂತತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ  
ಬಿದಿರು. ಬಹ್ನಿ ಸಂತತಿಸ್ತಾಃ । (ವಿಂ) 2. ಅನೇಕ  
ಸಂತಾನವುಳ್ಳವನು, ಬಹುಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳುಳ್ಳವನು.

ಬಹುಸಾರ ಬಹುಸಾರ (ಪುಂ) ಖದಿರ ವೃಕ್ಷ, ಬಿಳಿಯ ಕಗ್ಗಲಿ  
ಮರ.

ಬಹುಸುತಾ ಬಹುಸುತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಿಲ್ಲಪಿಚ್ಚರ, ಶತಮೂಲಿ  
ಗಿಡ, ಶತಾವರಿ. ಬಹವಃ ಸುತಾ ಯಸ್ಯಾಃ । (ವಿಂ) -ಸುತ  
-ಸುತ. 2. ಅನೇಕ ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳುಳ್ಳ.

ಬಹುಸು ಬಹುಸು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಹಂದಿ. 2. ಹೆಚ್ಚು  
ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಹಡೆದ ಹೆಂಗಸು. ಬಹುನ್ ಸುತೇ-ಷುಕ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭ-  
ವಿಮೋಚನೆ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧) ।

ಬಹುಸುತಿ ಬಹುಸುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಕರುಹಾಕಿದ  
ಹೆಸು. ಬಹುಃ ಸುತಿಃ ಯಸ್ಯಾಃ । 2. ಅನೇಕ ಮಂದಿ  
ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಹಡೆದ ಹೆಂಗಸು.

ಬಹುದಕ ಬಹುದಕ (ಪುಂ) ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಸಂನ್ಯಾಸಿಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ.  
(1) ಕುಟಿಚಕಃ (2) ಬಹುದಕಃ (3) ಹಂಸಃ ಮತ್ತು (4)  
ಪರಮಹಂಸಃ ಎಂದು ಸಂನ್ಯಾಸಿಗಳು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ಬಹೂ  
ದಕನು ಕಾಷಾಯ ಮತ್ತು ತ್ರಿದಂಡವನ್ನು ಧರಿಸಿ ಏಳು  
ಮನೆಗಳಲ್ಲಿ ಭಿಕ್ಷೆ ಬೇಡಿ ಜೀವಿಸಬೇಕು. ಈ ಸಂನ್ಯಾಸಿಗೆ  
ನೀರಿನ ಖರ್ಚು ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ಬಹುವಿತ ಬಹುವಿತ (ನಂ) ಹರಟೆ, ಅರ್ಧವಿಲ್ಲದ ಅಪ್ಪ  
ಯುಕ್ತವಾದ ಮಾತು.

ಬಹ್ವಾಶಿನ್ ಬಹ್ವಾಶಿನ್ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಊಟಮಾಡು  
ವವನು, ಹೆಚ್ಚು ಆಹಾರವನ್ನು ತಿನ್ನುವವನು. ಬಹು ಅಸ್ಮಾತಿ  
—ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಗಿತಿಃ" (೩-೨-೭೮) । "ಬಹ್ವಾಶಿಃ  
ಸ್ವಲ್ಪಸಂತುಷ್ಟಃ ಸುನಿद्रಃ ಶೀಘ್ರಚೇತನಃ । ಪ್ರಮುಖತಃ ಶೂರಃ  
ಜಾತವ್ಯಾಃ ಷಡ್ ಶುನೋ ಗುಣಾಃ" ಚಾಣಕ್ಯಂ ।

ಬಹ್ವಚ್ ಬಹ್ವಚ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಋಗ್ವೇದ. (ನಂ) 2.  
ಸೂಕ್ತ. ಬಹ್ವಯೋ ಋತೋ ಯಸ್ಮಿನ್ ।

ಬಹ್ವಚ ಬಹ್ವಚ್ (ವಿಂ) 1. ಋಗ್ವೇದವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ  
ಮಾಡಿದವನು, ಋಕ್‌ಶಾಖೆಯವನು. ಬಹ್ವಯೋ ಋತಃ  
ಅಧ್ಯೇತವ್ಯಾ ಯೇನ "ಅಃ" (೫-೪-೭೪) । "ಯತ್ನೇನ ಭೋಜಯೇತ್  
ಶ್ರಾದ್ಧೇ ಬಹ್ವಚ್ ವೇದಪಾರಗಮ್" ಮನುಂ ೩-೧೪೫ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2.  
-ಚಿ-ಚೀ. ಋಕ್‌ಶಾಖೆಯವನ ಪತ್ನಿ. ಬಹ್ವಚಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ ।

ಬಾಡವ ಬಾಡವ (ಪುಂ) 1. ಬಾಡಬಾಗಿ, ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ  
ರುವ ಕುದುರೆಯ ಮುಖದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಅಗ್ನಿ. ಬಡವಾಯಾ  
ಭವಃ "ಅಗ್" (೪-೩-೫೩) । 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. (ಪುಂ) 3.  
ಪಾತಾಳಲೋಕ. (ನಂ) 4. ಕುದುರೆಗಳ ಗುಂಪು.  
ಅಶ್ವಗಳ ಸಮೂಹ. ಬಡವಾನಾಂ ಸಮೂಹಃ "ಅಗ್" (೪-೨-೪೫) ।  
(ವಿಂ) 5. ಬಡವಾಸಂಬಂಧವಾದ. ಬಡವಾಯಾ ಅಯಮ್  
"ಅಗ್" (೪-೩-೧೨೦) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವಾ -ವಾ.

ಬಾಡವಾನಿ ಬಾಡವಾನಿ (ಪುಂ) ಬಡವಾನಲ, ಸಮುದ್ರ  
ದಲ್ಲಿ ಕುದುರೆಯ ಮುಖದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಅಗ್ನಿ.

ಬಾಡವೇಯ ಬಾಡವೇಯ (ಪುಂ) ಅಶ್ವಿನೀಕುಮಾರರು.  
ಬಡವಾಯಾ ಘೌಡಕರೂಪಧಾರಿಣಿಃ ಸೂರ್ಯಪತ್ನಿಃ ಅಪತ್ಯೇ । ಬಡವಾ  
"ಢಕ್" (೪-೧-೧೨೦) ।

ಬಾಡವ್ಯ ಬಾಡವ್ಯ (ನಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣರ ಸಮೂಹ. ಬಾಡವಾನಾಂ  
ಸಮೂಹಃ "ಯನ್" (೪-೨-೪೨) ।

ಬಾಡ ಬಾಡ (ವಿಂ) 1. ಅತಿಶಯವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. 2. ದೃಢ  
ವಾದ, ಬಲವಾದ, ಸ್ಥಿರವಾದ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಸತ್ಯವಾಗಿ,  
ನಿಜವಾಗಿ. ಬಾಹು (ಪ್ರಯತ್ನೇ) "ಕ್ತಃ" ನಿಪಾಂ (೭-೨-೧೮) ।  
"ಬಾಡಮೇಘ ದಿವಸೇಷು ಪಾಥಿವಃ ಕರ್ಮ ಸಾಧಯತಿ ಪುತ್ರಜನ್ಮನೇ"  
ರಘುಂ ೧೯-೫೨ । 4. ಅತಿಶಯವಾಗಿ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ. "ವಪುರಾ-  
ದರಾತಿಶಯಶಾಸಿ ಪುನಃ ಪ್ರತಿಪತ್ತಿಮೂಢಮಪಿ ಬಾಡಮಭೂತ್"  
ಮಾಘಂ ೯-೭೭ । (ನಂ) 5. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. 6. ಅಂಗೀಕಾರ,  
ಒಪ್ಪಿಗೆ.

ಬಾಣ ಬಾಣ (ಪುಂ) 1. ಬಾಣ, ಅ-ಬಾ. ಬಣ (ಶಬ್ದ) ಭಾವೇ  
"ಘನ್" (೩-೩-೧೮) । ಬಾಣಃ ಶಬ್ದಃ ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್"  
(೫-೨-೧೨೭) । "ಜಮ್ಭದ್ವಿಷತ್ಪ್ರಭೃತಿ ದಿವ್ಯಪತಿಚಾಪಮುಕ್ತಾ  
ಬಾಣಾಃ ಶಿತಾ ದನುಜನಾಯಕಬಾಣಸಂಘಾನ್" ಕುಮಾರಂ ೧೭-೩ ।  
2. ಹಸುವಿನ ಕೆಚ್ಚಲು. 3. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು. ಬಣ (ಶಬ್ದ)  
ಭಾವೇ "ಘನ್" (೩-೩-೧೮) । 4. ಗರಿಯಿಲ್ಲದ ಕೇವಲ  
ಬಾಣ. 5. ಅಗ್ನಿ. 6. ಕರಿಯ ಹೂವಿನ ಗೋರಂಟಿ  
ಮರ. "ಬಾಣೋ ವೃಕ್ಷವಿಶೇಷೇ ಸ್ಯಾತ್ ಶರಸ್ಯಾವಯವೇ ಶರೇ"  
ಹೇಮಂ । 7. ಬಾಣಾಸುರ, ಬಲೇಶ್ವರವರ್ತಿಯ ಮಗ



[ಇವನು ಶಿವಭಕ್ತ. ಮಹಾಕಾಲನೆಂದು ಇವನಿಗೆ ಬೇರೊಂದು ಹೆಸರೂ ಉಂಟು. ಈಶ್ವರನ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ಇವನು ಸಾವಿರ ತೋಳುಗಳನ್ನು ಪಡೆದನು. ಇವನ ಮಗಳಾದ ಉಷೆಯನ್ನು ಅನಿರುದ್ಧನು ಅಪಹರಿಸಿ ಮದುವೆಯಾದನು.] “ಬಾಣ: ಸಹಸ್ರೇಣ ಭುಜೈ: ಪ್ರಮಾಣ್ಯನ್ ಆತ್ಮಾನ್-ರೂಪೇರಸುರೈ: ಸಮೇತ:” ಯಾದಂ ೨೦-೩೫। 8. ಬಾಣಭಟ್ಟ, ಹರ್ಷವರ್ಧನನ ಅಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿದ್ದ ಒಬ್ಬ ಮಹಾಕವಿ. ಹರ್ಷವರ್ಧನನ ವರ್ಣನಾತ್ಮಕವಾದ ಹರ್ಷಚರಿತ, ಕಾದಂಬರಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಕಲ್ಪಿತಕಥೆ ಮುಂತಾದುವು ಈ ಕವಿಯಿಂದ ರಚಿತವಾದುವು. 9. ಐದು ಸಂಖ್ಯೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಞಾ -ಣಾ. 10. ಬಾಣದ ಮೂಲಭಾಗ, ಬಾಣದ ಬುಡ. (ಪುಸ್ತ್ರೀಂ) -ಞ: -ಣಾ: -ಞಾ -ಣಾ. 11. ಕರಿಯ ಹೊವಿನ ಗೋರಂಟಿ ಮರ. “ಬಾಣ: ಸ್ಯಾದ್ಗೋಸ್ತನೇ ದೈತ್ಯಭೇದೇ ಕೇವಲಕಾಂಡಯೋ:। ಬಾಣಾ ತು ಬಾಣ-ಮೂಲೇ ಸ್ತ್ರೀ ನೀಲಕ್ಷಿಣ್ಯಾ ಪುನರ್ದಯೋ:” ಮೇದಿಂ। “ಬಾಣ: ಸ್ಯಾತ್ ಕೇವಲೇ ಕಾಂಡೇ ಕಾಂಡಾವಯವದೈತ್ಯಯೋ:। ಬಾಣಾ ಕ್ಷಿಣ್ಯಾಮ್” ವಿಶ್ವಂ।

**ಬಾಣಧಿ ಬಾಣಧಿ** (ಪುಂ) ಬತ್ತಳಿಕೆ, ಬಾಣಗಳ ಚೀಲ. ಬಾಣಾ: ಭೀಯಂತೇಽಸ್ಮಿನ್-ತುಭಾನ್ (ವಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) “ಕಿ:” (೩-೩-೯೩)।

**ಬಾಣವೃಷಿ ಬಾಣವೃಷಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಣಗಳ ಸುರಿಮಳೆ. ಬಾಣಾನಾಂ ವೃಷಿ:।

**ಬಾಣಸಂಧಾನ ಬಾಣಸಂಧಾನ** (ನಂ) ಬಿಲ್ಲಿಗೆ ಬಾಣವನ್ನು ಏರಿಸುವುದು, ಬಾಣವನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸಲು ಹೆದೆಯೊಡನೆ ಸೇರಿಸುವುದು. ಬಾಣಸ್ಯ ಸಂಧಾನಮ್। “ಕಾ ಕಥಾ ಬಾಣ-ಸಂಧಾನೇ ಜ್ಯಾಶಬ್ದೇನೈವ ದ್ವರತ:” ಶಾಕುಂ ೩-೧।

**ಬಾಣಮುತಾ ಬಾಣಮುತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಣಾಸುರನ ಮಗಳು, ಉಷಾದೇವಿ. [“ತಪಾ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಬಾದರ ಬಾದರ** (ಪುಂ) 1. ಹತ್ತಿಯ ಗಿಡ. ಬದರ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಅನ್” (೪-೪-೩೮)। 2. ಎಲಚಿ ಗಿಡ. ಬೋರೆ ಗಿಡ. (ನಂ) 3. ಹತ್ತಿಯ ನೂಲು. 4. ಎಲಚಿಹಣ್ಣು, ಬೋರೆ ಹಣ್ಣು. 5. ಹತ್ತಿಯ ಕಾಯಿ. “ಬದರಿ ಕೋಲಿ-ಕಾರ್ಪಸ್ಯೋಬಾದರಂ ತು ತಯೋ: ಕಲೇ” ಹೇಮಂ। (ವಿಂ) 6. ಎಲಚಿಗಿಡದ ಸಂಬಂಧವಾದ ಎಲೆ ಹಣ್ಣು ಕೊಗಟೆ ಮುಂತಾದುವು. 7. ಹತ್ತಿಯ ಗಿಡದ ಸಂಬಂಧವಾದ ಎಲೆ, ಕಾಯಿ, ನೂಲು, ವಸ್ತ್ರ ಮುಂತಾದುವು. ಬದರಾಯಾ ವಿಕಾರ: “ಅನ್” (೪-೩-೧೩೫)। ತಸ್ಯ ಲುಕ್ (೪-೩-೧೬೩)। ಬದರಸ್ಯ ವಿಕಾರ: “ಅನ್” (೪-೩-೧೩೪)।

**ಬಾದರಾಯಣ ಬಾದರಾಯಣ** (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮಸೂತ್ರಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ ವೇದವ್ಯಾಸ ಮಹರ್ಷಿ, ಶುಕ ಮಹರ್ಷಿಯ ತಂದೆ. ಬದಯಾ ಭವ: “ಫಕ್” (೪-೧-೯೯)।

**ಬಾದರಿಕ ಬಾದರಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಬದರಿ ಫಲ ಬಿಡುವ ಕ್ಷೇತ್ರ. 2. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದಿರುವುದನ್ನು ಒಂದೊಂದಾಗಿ ಅರಿಸಿ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು.

**ಬಾಧ ಬಾಧ** (ಪುಂ) 1. ಅಡ್ಡಿ, ಅತುಕ, ಪ್ರತಿಬಂಧ. ಬಾಧ (ವಿಲೋಕನೆ) “ಬತ್” (೩-೩-೧೮)। 2. (ನ್ಯಾಯಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ ಪಕ್ಷ. “ಸಾಧ್ಯಾಭಾವವಾನ್ ಧಕ್ಷ:” “ಹದೊ ಬಹ್ನಿಮಾನ್ ಭೂಮಾತ್” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪಕ್ಷವಾದ ಹೃದದಲ್ಲಿ ಸಾಧ್ಯವಾದ ವಹ್ನಿಯಿಲ್ಲದಿರುವುದು (ವಹ್ನಿಯಿಲ್ಲದ ಹೃದವು) ಬಾಧವು.

**ಬಾಧಕ ಬಾಧಕ** (ವಿಂ) 1. ಅಡ್ಡಿಯಾಗಿರುವ, ತಡೆಯಾಗಿರುವ, ಪ್ರತಿಬಂಧಕವಾಗಿರುವ. (ಪುಂ) 2. ಸ್ತ್ರೀಯರಿಗೆ ಮತುಕಾಲದಲ್ಲಿ ಗರ್ಭ ಧರಿಸಲು ಅಡ್ಡಿಯಾಗುವ ಒಂದು ರೋಗ. ಈ ರೋಗವು (1) ರಕ್ತಮಾದ್ರೀಬಾಧಕ. (2) ಷಷ್ಠೀಬಾಧಕ. (3) ಅಂಕುರಬಾಧಕ ಮತ್ತು (4) ಜಲಕುಮಾರಬಾಧಕಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ.

(1) ಸೊಂಟ ಹೊಕ್ಕಳಿನ ಕೆಳಭಾಗ ಪಕ್ಕಗಳು ಮತ್ತು ಎದೆ ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ನೋವುಂಟಾಗಿ ಕಾಲಕ್ಷೃಷ್ಟಿಯಿಲ್ಲದೆ ಅಕ್ರಮವಾಗಿ ಬಹಿಷ್ಕೆಯಾಗುವುದರಿಂದ ರಕ್ತಮಾದ್ರೀಬಾಧಕ (ದೋಷ)ವುಂಟಾಗಿ ಗರ್ಭಧಾರಣೆಯ ಶಕ್ತಿ ಕಡೆಮೆಯಾಗುವುದು.

(2) ಕಣ್ಣುಗಳು ಕೈಗಳು ಮತ್ತು ಜನನೇಂದ್ರಿಯಗಳಲ್ಲಿ ಉರಿತವೂ, ಜೊಲ್ಲು ಬೆರೆತ ರಕ್ತವೂ ಒಂದು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡು ಸಲ ಬಹಿಷ್ಕೆಯಾಗುವುದೂ ಷಷ್ಠೀಬಾಧಕ ದೋಷದ ಕಾರ್ಯಗಳು.

(3) ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಒಂದು ವಿಧ ಕಳವಳವೂ ದೇಹದಲ್ಲಿ ಭಾರವೂ ರಕ್ತಸ್ರಾವವೂ ಹೊಕ್ಕಳ ಕೆಳಭಾಗದಲ್ಲಿ ಶೂಲೆಯೂ ಮೂರು ನಾಲ್ಕು ತಿಂಗಳಿಗೊಂದಾವೃತ್ತಿ ಬಹಿಷ್ಕೆಯಾಗುವುದೂ ದೇಹವು ಕೃಶವಾಗುವುದೂ ಕೈಕಾಲುಗಳಲ್ಲಿ ಉರಿತವೂ ಅಂಕುರಬಾಧಕದ ಲಕ್ಷಣ. ಅಂಕುರಬಾಧಕದ ದೋಷದಿಂದ ದೇಹವು ಶುಷ್ಕವಾಗುವುದು. ಗರ್ಭ ಧರಿಸಿದರೂ ಯಾವಾಗಲೂ ಉದರಶೂಲೆ ಮೊದಲಾದ ಬಾಧೆಗಳಿರುವುವು.

(4) ದೇಹವು ಕೃಶವಾಗಿದ್ದು ಕ್ರಮೇಣ ಸ್ಥೂಲವಾಗುವುದು ಅಕಾಲದಲ್ಲಿ ಅಕ್ರಮವಾಗಿ ಬಹಿಷ್ಕೆಯಾಗುವುದು ಸ್ತನಗಳು ದಪ್ಪವಾಗುವುದು ಮೈಯಲ್ಲಿ ರಕ್ತವು ಕಡೆಮೆಯಾಗುವುದು. ಇವು ಜಲಕುಮಾರಬಾಧಕ ಲಕ್ಷಣಗಳು.



**ಬಾಧನ ಬಾಧನ** (ನಂ) 1. ಪೀಡಿಸುವುದು, ತೊಂದರೆ ಪಡಿಸುವುದು. ಬಾಧ (ವಿಲೋಡನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ಅಡ್ಡಿಮಾಡುವುದು, ತಡೆಯುವುದು. (ವಿಂ) 3. ಪೀಡಿಸುವ, ತೊಂದರೆಪಡಿಸುವ. ಬಾಧ "ಲ್ಯು:" (3-1-134)। 4. ತಡೆಯುವ, ಪ್ರತಿಬಂಧಿಸುವ.

**ಬಾಧಾ ಬಾಧಾ**(ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೀಡೆ, ತೊಂದರೆ, ಹಿಂಸೆ, ನೋವು. ಬಾಧ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಅ:" (3-3-103)। "ದುವೃತ್ತಾ: ಸಂತಿ ಶತಶ: ದಾನವಾ: ಪಾಪಯೋನಯ:। ತೇಮ್ಯೋ ನ ಸ್ಯಾಽಘಾಂ ಬಾಧಾ ಮುನೀನಾಂ ತ್ವಂ ತಥಾ ಕುರು" ಮಾರ್ಕಂ। 2. ನಿಷೇಧ. 3. ಅಡ್ಡಿ, ತಡೆ. 4. ವಿರೋಧ.

**ಬಾಧಿತ ಬಾಧಿತ** (ವಿಂ) 1. ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಬಾಧ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। 2. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. (ನ್ಯಾಯ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ವಿರೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಪ್ಪೆಂದು ಸಮರ್ಥಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಇದು ಐದು ವಿಧ ಹೇತುಭಾಸಗಳಲ್ಲೊಂದು ವಿಧ. "ಸಾಧ್ಯಾಭಾವವತ್ಪಕ್ಷಕೋ ಹೇತು:"। "ವಹ್ನಿರನುಣ: ದ್ರವ್ಯತ್ವಾತ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ವಹ್ನಿಯಲ್ಲಿರುವ ಉಷ್ಣತ್ವವು ತ್ವಗಿಂದ್ರಿಯದಿಂದ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವುದಾದುದರಿಂದ ಪಕ್ಷವಾದ ವಹ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಸಾಧ್ಯವಾದ ಅನುಷ್ಣತ್ವವು ಇಲ್ಲವಾಯಿತು. ಅದುವರಿಂದ ಹೇತುವು ದುಷ್ಪವಾಗಿ ಬಾಧಿತವಾಯಿತು.

**ಬಾಧಿರ್ಯ ಬಾಧಿರ್ಯ** (ನಂ) ಕಿವುಡು. ಬಾಧಿರಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಽಽ" (4-1-124)। "ಯದಾ ಶಬ್ದವಹಂ ವಾಯು: ಸ್ರೋತ ಆವೃತ್ಯ ತಿಷ್ಠತಿ। ಶುಭ: ಶ್ಲೇಷಮಾನವಿತೋ ವಾಪಿ ಬಾಧಿರ್ಯ ತೇನ ಜಾಯತೇ"।

**ಬಾಧ್ಯ ಬಾಧ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಬಾಧಿಸಲ್ಪಡುವ, ಪೀಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ಬಾಧ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಽಽಽ" (3-1-124)। 2. ವಿರೋಧಿಸಲ್ಪಡುವ, ತಪ್ಪೆಂದು ಸಮರ್ಥಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ತಡೆಯಲ್ಪಡುವ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ.

**ಬಾಧಕಿನೇಯ ಬಾಧಕಿನೇಯ** (ವಿಂ) ಕುಲಟೆಯ ಮಗ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿಯ ಮಗ. ಬಾಧಕಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ — ಬಾಧಕಿ "ಢಕ್" "ಱನ್" ಚ (4-1-126)। "ಅಥ ಬಾಧಕಿನೇಯ: ಸ್ಯಾದ್ಬಾಧಕೀಶ್ವರಾಸತೀಸುತ:" ಅಮಂ।

**ಬಾಧಕ ಬಾಧಕ** (ಪುಂ) 1. ಬಂಧು, ನೆಂಟ, ಒಂದೇ ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಬಾಧಕೇವ "ಅಞ್" (4-4-32)। "ತವಯಸ್ಯಾ: ಕಥಮಪ್ಯಬಾಧಕಕೃತಾಂ ಸ್ನೇಹಪ್ರವೃತ್ತಿ ಚ ತಾಮ್" ಶಾಕ್ರಂ 4-16। 2. ಮಿತ್ರ, ಸುಹೃತ್ತು, ಗೆಳೆಯ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಬಾಧ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 3. ಸಹೋದರ. 4. ಮಾತು, ಸೋದರಮಾವ ಮುಂತಾದವರು.

**ಬಾಧಕ ಬಾಧಕ** (ನಂ) ಬಂಧುತ್ವ, ಒಂದೇ ಮಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿರುವಿಕೆ, ನೆಂಟತನ. ಬಾಧಕೋಭಾವ: "ಽಽಽ" (4-1-124)।

**ಬಾರಕೀರ ಬಾರಕೀರ** (ಪುಂ) 1. ಭಾವಮೈದುನ, ಪತ್ನಿಯ ಸಹೋದರ. "ಶ್ಯಾಲೋ ಬಾರಕೀರ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 2. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಕುದುರೆ.

**ಬಾರ್ಬೇರ ಬಾರ್ಬೇರ** (ಪುಂ) 1. ತವರ. 2. ಮಾವಿನ ಹೆಣ್ಣಿನ ತಿರುಳು. 3. ಅಕುರ, ಮೊಳಕೆ. 4. ಅಸತೀಪುತ್ರ, ಕುಲಟೆಯ ಮಗ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿಯ ಮಗ. "ಬಾರ್ಬೇರೋ ರಜ್ಞ ಆಮ್ರಾಸ್ಯಾಙ್ಕುರೇ ಗಣಿಕಾಸುತೇ" ಮೇದಿಂ।

**ಬಾರ್ಹತ ಬಾರ್ಹತ** (ನಂ) ಬೃಹತೀಫಲ, ಹೆಗ್ಗುಳ್ಳದಕಾಯಿ. ಮುಳ್ಳುಬದನೆಯಕಾಯಿ. ಬೃಹತ್ಯಾ: ಫಲಮ್ "ಅಞ್" (4-3-164)।

**ಬಾರ್ಹಸ್ಪತ ಬಾರ್ಹಸ್ಪತ** (ವಿಂ) ಬೃಹಸ್ಪತಿಸಂಬಂಧವಾದ. ಬೃಹಸ್ಪತೇರಿದಮ್ "ಅಞ್" (4-3-120)।

**ಬಾರ್ಹಸ್ಪತ್ಯ ಬಾರ್ಹಸ್ಪತ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ನಾಸ್ತಿಕ, ಬೃಹಸ್ಪತಿಯಿಂದ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನಮಾಡುವವನು. ಬಾರ್ಹಸ್ಪತ್ಯ ಬೃಹಸ್ಪತಿನಾ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಶಾಸ್ತ್ರಮಖೀಯ-ಮಾನತ್ವೇನಾಸ್ಯಸ್ಯ "ಅಞ್" (4-2-129)। ಬೃಹಸ್ಪತಿಯು ಚಾರ್ವಾಕಮತಪ್ರವರ್ತಕನಾದುದರಿಂದ ಅವನ ಅನುಯಾಯಿಗಳೆಲ್ಲರೂ ನಾಸ್ತಿಕರು. (ನಂ) 2. ಬೃಹಸ್ಪತಿಯಿಂದ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ ಶಾಸ್ತ್ರ. ಬೃಹಸ್ಪತಿನಾ ಪ್ರೋಕ್ತಮ್ "ಽಽಽ" (4-3-101)। 3. ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಕಾರ್ಯ, ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಧರ್ಮ. ಬೃಹಸ್ಪತೇ: ಕರ್ಮ "ಯಕ್" (4-1-124)।

**ಬಾಲ ಬಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಶಿಶು, ಸಣ್ಣ ಮಗು. ಬಲ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ಞ:" (3-1-140)। 2. ಹುಡುಗ, ಹದಿನಾರು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನೊಳಗಿರುವ ಬಾಲಕ. "ಆಘೋಡಶಾಙ್ಗವೇ-ದ್ವಾಲ: ತಣಸ್ತತ ಉಚ್ಯತೇ। ವೃದ್ಧ: ಸ್ಯಾತ್ಸಪ್ತತೇರ್ದ್ವೈ ವರ್ಷೀಯಾನ್ ನವತೇ: ಪರಮ್"। 3. ಅಜ್ಜ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು, ಮೂರ್ಖ. "ಅಜ್ಞೋ ಭವತಿ ವೈ ಬಾಲ: ಪಿತಾ ಭವತಿ ಮನ್ವದ:" ಮನುಂ 2-143। 4. ಕೇಶವಾಶ, ತಲೆಯ ಕೂದಲು. 5. ಕುದುರೆಯ ಬಾಲ. 6. ಆನೆಯ ಬಾಲ. 7. ತೆಂಗಿನ ಮರ. 8. ಐದು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನ ಆನೆಯ ಮರಿ. 9. ಕುದುರೆಯ ಮರಿ. "ಪಂಚವರ್ಷೋ ಗಜೋ ಬಾಲ: ಸ್ಯಾತ್ ಪತೋ ದಶವರ್ಷಕ:" ವೈಜಂ। (ಪುಂನಂ) 10. ಮುಡಿವಾಳ ವೆಂಬ ಗಂಧಿಗರ ಒಂದು ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯ. (ವಿಂ) 11. ಎಳೆಯದಾದ, ಚಿಕ್ಕದಾದ, ದೊಡ್ಡದಾಗಿ ಬೆಳೆಯದಿರುವ. "ದಿನಾವಸಾನೋತ್ಸುಕಬಾಲವತ್ಸಾ ವಿಸೃಜ್ಯತಾಂ ಧನುರಿಯ ಮಹರ್ಷಿ:"



ರಘುಂ ೨-೪೫। (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಲಾ ಬಾಲಾ. 12. ಅರಿಶಿನ. 13. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮಲ್ಲಿಗೆ. "ಬಾಲೋ ನಾ ಕುಂತಲೇಶ್ವರಸ್ಯ ಕರಿಣಶ್ಚಾಪಿ ಬಾಲಧೌ। ನಾರಿಕೇಲೇ ಹರಿದ್ರಾಯಾ ಮಲ್ಲಿಕಾ-ಭಿಷ್ಯಪಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್। ವಾಚ್ಯಲಿಙ್ಗೋಽರ್ಭಕೇ ಮೂರ್ತೇ ಹಿಬೇರೇ ಪುನಃಪುನಃಕಮ್" ಮೇದಿಂ। 14. ಬಾಲಿಕೆ, ಹುಡುಗಿ. "ಸಾ ಬಾಲಾ ಪರವತೀತಿ ಮೇ ವಿವಿದಿತಮ್" ಶಾಕುಂ ೩-೨।

**ಬಾಲಕ ಬಾಲಕ** (ಪುಂ) 1. ಶಿಶು, ಸಣ್ಣ ಮಗು. ಬಾಲ ಎವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"। 2. ಹುಡುಗ. 3. ಅನೆಯ ಬಾಲ. 4. ಕುದುರೆಯ ಬಾಲ. 5. ಅಜ್ಜ, ಮೂರ್ಖ, ತಿಳಿಗೇಡಿ. 6. ಕಪ್ಪು ಬತ್ತ. 7. ಮುಡಿವಾಳ. 8. ಉಗುರ. 9. ಬಳೆ, ವಲಯ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಲಿಕಾ ಬಾಲಿಕಾ. 10. ಹುಡುಗಿ. "ಬಾಲಕಸ್ತು ಶಿಶಾವಜ್ಞೇ ಬಾಲಧೌ ಹ್ಯಹಸ್ತಿನೋಃ। ಅಙ್ಗುರೀಯಕ ಹಿಬೇರವಲಯೇ ಪುಸಿ ಬಾಲಿಕಾ। ಬಾಲಾಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ। 11. ಕರ್ಣಾಭರಣ. 12. ಸೈಕತ, ಮರಳು. [ವಿಶ್ವ ಪ್ರಕಾಶದಲ್ಲಿ ಮುಡಿವಾಳ, ಉಗುರ ಮತ್ತು ಬಳೆ ಈ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ನಪುಂಸಕಲಿಂಗವೆಂದು ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ.]

**ಬಾಲಕೀಯ ಬಾಲಕೀಯ** (ವಿಂ) ಹುಡುಗನ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಸಹಜವಾದ.

**ಬಾಲಕುಮಿ ಬಾಲಕುಮಿ** (ಪುಂ) ಹೇನು, ಕೂರೆ.

**ಬಾಲಕುಣ ಬಾಲಕುಷ್ಣ** (ಪುಂ) ಎಳೆವಯಸ್ಸಿನ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಬಾಲ: ಕುಣ:।

**ಬಾಲಕ್ರೀಡನ ಬಾಲಕ್ರೀಡನ** (ನಂ) 1. ಮಕ್ಕಳ ಆಟ. 2. ಮಕ್ಕಳ ಆಟದ ಬೊಂಬೆ ಮೊದಲಾದುವು. ಬಾಲಾ: ಕ್ರೀಡಂತ್ಯನೇನ — ಕ್ರೀಡ್ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭)।

**ಬಾಲಕ್ರೀಡನಕ ಬಾಲಕ್ರೀಡನಕ** (ಪುಂ) ಮಕ್ಕಳ ಆಟದ ಸಾಮಾನು, ಚೆಂಡು ಕವಡೆ ಮೊದಲಾದುದು.

**ಬಾಲಕ್ರೀಡಾ ಬಾಲಕ್ರೀಡಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಕ್ಕಳ ಆಟ. ಬಾಲಾನಾಂ ಕ್ರೀಡಾ।

**ಬಾಲಗರ್ಭಿಣಿ ಬಾಲಗರ್ಭಿಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೊದಲನೆಯ ಸಲ ಗರ್ಭಧರಿಸಿದ ಹಸು. ಬಾಲಾ ಚಾಸೌ ಗರ್ಭಿಣಿ ಚ।

**ಬಾಲಗೋಪಾಲ ಬಾಲಗೋಪಾಲ** (ಪುಂ) ಶ್ರೀ ಬಾಲಕೃಷ್ಣ ಮೂರ್ತಿ.

**ಬಾಲಗ್ರಹ ಬಾಲಗ್ರಹ** (ಪುಂ) ಶಿಶುಗಳನ್ನು ಖೇಡಿಸುವ ಒಂದು ಗ್ರಹ. ಬಾಲಾನಾಂ ಬಾಲಕಾನಾಂ ಗ್ರಹ:। ತಾಯಿ ತಂದೆಗಳ ಅನುಚಾರದಿಂದ ಗ್ರಹಗಳು ಶಿಶುಗಳನ್ನು ಖೇಡಿಸುವವು. "ಬಾಲಗ್ರಹಾ ಅನಾಚಾರಾತ್ ಪಿಡಯಂತಿ ಶಿಶುಂ ಯತ:। ತಸ್ಮಾತ್ತದ್ವು-ಸರ್ಗಮ್ಯೋ ರಕ್ಷೆದಾಲಂ ಪ್ರಯತ್ನತ:"। ಆದುದರಿಂದ ಇಂತಹ ಉಪದ್ರವಗಳಿಂದ ಹುಡುಗನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಬೇಕು.

**ಬಾಲಚಂದ್ರ ಬಾಲಚಂದ್ರ** (ಪುಂ) ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುತ್ತಿರುವ ಚಂದ್ರ.

**ಬಾಲತನಯ ಬಾಲತನಯ** (ಪುಂ) ಖದಿರವೃಕ್ಷ, ಕಗ್ಗಲಿಮರ. ಬಾಲಾಸ್ತನಯಾ: ಪತ್ರಾಣ್ಯಸ್ಯ।

**ಬಾಲತನ್ತ್ರ ಬಾಲತಂತ್ರ** (ನಂ) ಸೂಲಗಿತ್ತಿತನ, ಶಿಶುವಿನ ರಕ್ಷಣೆಯ ಉಪಾಯ, ಕುಮಾರ ಭೃತ್ಯ. ಬಾಲಾರ್ಥ ತದ್ರಕ್ಷಣಾರ್ಥ ತನ್ತ್ರಮುಪಾಯ:। ಇದು ಆಯುರ್ವೇದದ ಅಷ್ಟಾಂಗಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. ಗರ್ಭಿಣಿಯ ಉಪಚಾರದಿಂದ ಶಿಶುವಿನ ರಕ್ಷಣೆ ಯಾಗಬೇಕಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಕುಮಾರಭೃತ್ಯವೆಂದು ಹೆಸರು.

**ಆಯುರ್ವೇದದ ಎಂಟು ಅಂಗಗಳು:** (1) ಶಲ್ಯಮ್ (2) ಶಾಲಾಕ್ಯಮ್ (3) ಕಾಯಚಿಕಿತ್ಸಾ (4) ಭೂತವಿಜ್ಞಾ (5) ಕೌಮಾರಭೃತ್ಯಮ್ (6) ಅಗದತನ್ತ್ರಮ್ (7) ರಸಾಯನತನ್ತ್ರಮ್ ಮತ್ತು (8) ವಾಜೀಕರಣತನ್ತ್ರಮ್। "ಕುಮಾರಭೃತ್ಯಾ ಸ್ಯಾಢಾಲ-ತನ್ತ್ರಮ್ ಗರ್ಭಿಣ್ಯವೇಕ್ಷಣಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಬಾಲಪತ್ರ ಬಾಲಪತ್ರ** (ಪುಂ) ಖದಿರವೃಕ್ಷ, ಕಗ್ಗಲಿಮರ ಬಾಲ ಇವ ಅಲ್ಪ ಪತ್ರಮಸ್ಯ।

**ಬಾಲಪಾಶಾ ಬಾಲಪಾಶಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಡಬಿಲ್ಲೆ, ತಲೆಯಲ್ಲಿ ಜಡೆಯ ಮೇಲೆ ಹಾಕಿಕೊಳ್ಳಬಹುದಾದ ಒಂದು ಆಭರಣ. ಬಾಲಪಾಶೇ ಕೇಶಸಮೂಹೇ ಸಾಧು: "ಯತ್" (೪೪-೯೮)।

**ಬಾಲಬೋಧ ಬಾಲಬೋಧ** (ಪುಂ) 1. ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಬೋಧನೆ ಮಾಡುವುದು, ಹುಡುಗರಿಗೆ ಪಾಠಹೇಳುವುದು. 2. ಮಕ್ಕಳ ಶಕ್ತಿಗೆ ಶಕ್ಯಂತೆ ರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಪಠ್ಯಪುಸ್ತಕ, ಮಕ್ಕಳ ವಯಸ್ಸಿಗೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ ಬೋಧನೆ ಮಾಡಲು ರಚಿತ ವಾದ ಪಾಠದ ಪುಸ್ತಕ.

**ಬಾಲಭದ್ರಕ ಬಾಲಭದ್ರಕ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ವಿಷ, ವಿಷದ ಒಂದು ಭೇದ.

**ಬಾಲಭಾರ ಬಾಲಭಾರ** (ಪುಂ) ಕೇಶಪಾಶ, ಕೇಶಸಮೂಹ. ಬಾಲಸ್ಯ ಭಾರ:। "ಬಾಧೇತೋಲ್ಕಾಕ್ಷಪಿತಚಮರೀಬಾಲಭಾರೋ ದವಾಗ್ನಿ:" ಮೇಘಂ ೧-೪೩।

**ಬಾಲಭಾವ ಬಾಲಭಾವ** (ಪುಂ) ಬಾಲ್ಯ, ಶೈಶವ, ಹುಡುಗ ನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಬಾಲಸ್ಯ ಭಾವ:।

**ಬಾಲಮೇಷಜಯ ಬಾಲಮೇಷಜಯ** (ನಂ) ರಸಾಂಜನ. ಬಾಲಸ್ಯ ಶಿಶೋರ್ಮೇಷಜಯಮ್।

**ಬಾಲಮೃಷಯ ಬಾಲಮೃಷಯ** (ನಂ) 1. ಚಣಕ, ಕಡಲೆ. (ವಿಂ) 2. ಮಕ್ಕಳಿಂದ ತಿನ್ನಲ್ಪಡುವ. 3. ಮಕ್ಕಳು ತಿನ್ನಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಬಾಲಮೃಷಯತೇ।

**ಬಾಲಮೃಷಿಕಾ ಬಾಲಮೃಷಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಿಟ್ಟಿಲಿ, ಸಣ್ಣ ಚಾತಿಯ ಇಲಿ. ಬಾಲಾ ಚಾಸೌ ಮೃಷಿಕಾ ಚ।



**ಬಾಲರಾಜ ಬಾಲರಾಜ** (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ಹುಡುಗ. ಒಳ್ಳೆಯ ಹುಡುಗ. (ನಂ) 2. ವೈದೂರ್ಯಮಣಿ. ಬಾಲ: ಅಲ್ಪೋಪಿ ರಾಜತೇ ।

**ಬಾಲರೋಗ ಬಾಲರೋಗ** (ಪುಂ) ಸಣ್ಣ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಬರುವ ವ್ಯಾಧಿ. ಬಾಲಾನಾಂ ರೋಗ: । ಚಿಕ್ಕ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಸಾಕುವ ತಾಯಿ ಅಥವಾ ದಾದಿಯು ಗುರುವಾದ ಆಹಾರವನ್ನು ಸೇವಿಸುವುದರಿಂದ ವಾತ ಪಿತ್ತ ಕಫಗಳು ಕೆಟ್ಟು ಅವರ ಸ್ತನ್ಯವು (ಎದೆಯ ಹಾಲು) ಕೆಡುವುದರಿಂದ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಅನೇಕ ವ್ಯಾಧಿಗಳು ಸಂಭವಿಸುವವು. “ಧಾತ್ಯಾಸ್ತು ಗುಣಿ-ಭೌಜ್ಯವಿಷಮೇದೋಪಜೇಸ್ತಥಾ । ದೋಷಾ ದೇಹೇ ಪ್ರಕೃಪ್ಯಂತಿ ತತ: ಸ್ತನ್ಯಂ ಪ್ರದುಷ್ಯತಿ । ಮಿಥ್ಯಾಹಾರವಿಹಾರಿಣ್ಯಾ ದುಷ್ಠಾ ವಾತಾದಯ: ಸ್ತ್ರೀಯಾ: । ದೂಷಯಂತಿ ಪಯಸ್ತೇನ ಜಾಯಂತೇ ವ್ಯಾಧಯ: ಶಿಶೋ: ।” ವಾತದೋಷದಿಂದ ಕೆಟ್ಟ ಹಾಲನ್ನು ಕುಡಿದ ಶಿಶುವು ವಾತ ರೋಗ ಪೀಡಿತವಾಗುವುದು. ಅದರ ಸ್ವರವು ಕುಗ್ಗುವುದು. ದೇಹವು ಕೃಶವಾಗುವುದು. ಮಲಮೂತ್ರಗಳೂ ಬಂಧಿಸು ವುವು. ಪಿತ್ತದೋಷದಿಂದ ಕೆಟ್ಟ ಹಾಲನ್ನು ಕುಡಿದ ಮಗುವಿನ ದೇಹವು ಬೆವರುವುದು. ಯಾವಾಗಲೂ ಬಾಯಾರುವುದು. ದೇಹವು ಯಾವಾಗಲೂ ಉಷ್ಣವಾಗಿರು ವುದು. ಇದರಿಂದ ಕಾಮಾಲೆ ರೋಗವೂ ಬರುವುದು. “ವಾತದುಷ್ಠಂ ಶಿಶು: ಸ್ತನ್ಯಂ ಪಿಬನ್ ವಾತಗದಾತುರ: । ಕ್ಷಾಮ-ಸ್ವರ: ಕೃಶಾಂಜ್ಞ: ಸ್ಯಾದ್ವಿಷಮೂತ್ರಮಾಕುತ:” । “ಸ್ವಿನ್ನೋ ಭಿತ್ತಮಲೋ ಬಾಲ: ಕಾಮಲಾಪಿತ್ತರೋಗವಾನ್ । ತೃಣಾಲೂಢ್ಯ-ಸರ್ವಾಂಜ್ಞ: ಪಿತ್ತದುಷ್ಠಂ ಪಯ: ಪಿಬನ್” । ಕಫ ದೋಷದಿಂದ ಕೆಟ್ಟಿರುವ ಸ್ತನ್ಯವನ್ನು ಕುಡಿದ ಮಗುವಿನ ಬಾಯಲ್ಲಿ ಯಾವಾಗಲೂ ಜೊಲ್ಲು ಸುರಿಯುವುದು. ಎದೆಯಲ್ಲಿ ಕಫ ಸೇರುವುದು. ಮಗುವು ಮಂಕಾಗುವುದು. ಮುಖ ಕಣ್ಣು ಗಳು ಊದಿಕೊಳ್ಳುವುವು. ಕುಡಿದ ಹಾಲನ್ನು ವಾಂತಿ ಮಾಡುವುದು. “ಶ್ಲೇಷ್ಮದುಷ್ಠಂ ಪಿಬನ್ ಕ್ಷೀರಂ ಲಾಲಾತು: ಶ್ಲೇಷ್ಮರೋಗವಾನ್ । ನಿद्रಾದಿತೋ ಜಡ: ಶೂನವಕ್ತ್ರಾಕ್ಷ: ಕರ್ದನ: ಶಿಶು:” । ದೊಡ್ಡವರಿಗೆ ಬರುವ ಜ್ವರ ಮೊದಲಾದ ವ್ಯಾಧಿಗಳು ಶಿಶುಗಳಿಗೆ ಬರುವುದಲ್ಲದೆ ಶಿಶುಗಳಿಗೇ ಬರುವ ರೋಗಗಳೂ ಅನೇಕವಾಗಿವೆ. ತಾಲುಕಂಡಕಮ್ ಮಹಾಪಕ್ವಮ್ ಕುಕ್ಕುಣಕ: ತುಂಡಿಗುದಪಾಕ: ಅಹಿಪ್ತನಮ್ ಪಾರಗಮಿಕಮ್ ಮುಂತಾದ ವ್ಯಾಧಿಗಳು ಶಿಶುಗಳಿಗೆ ಮಾತ್ರ ಬರುವುವು. [ಇವುಗಳ ಸ್ವರೂಪ ಮತ್ತು ಚಿಕಿತ್ಸೆಗಳಿಗೆ “ಭಾವಪ್ರಕಾಶ” ಗ್ರಂಥದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಬಾಲಲತಾ ಬಾಲಲತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎಳೆಯ ಲತೆ, ಹೊಸದಾಗಿ ಚಿಗುರಿರುವ ಬಳ್ಳಿ. ಬಾಲಾ ಚಾಸೌ ಲತಾ ಚ । “ಅವಾಕಿರನ್

ಬಾಲಲತಾ: ಪ್ರಸುನೇರಾಚಾರಲಾಜೇರಿವ ಪೌರಕನ್ಯಾ:” ರಘುಂ ೨-೧೦ ।

**ಬಾಲವ ಬಾಲವ** (ಪುಂ) ಬವ ಮೊದಲಾದ ಹನ್ನೊಂದು ಕರಣಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡನೆಯದು.

**ಬಾಲವತ್ಸ ಬಾಲವತ್ಸ** (ಪುಂ) ಕಂದುಬಣ್ಣದ ಕಪೋತ, ಬೂದಿಬಣ್ಣದ ಪಾರಿವಾಳ. “ಕಪೋತೋ ಬಾಲವತ್ಸ: ಸ್ಯಾತ್” ವೈಜಂ ।

**ಬಾಲವಾಯಜ ಬಾಲವಾಯಜ** (ನಂ) ವೈದೂರ್ಯಮಣಿ. ಬಾಲವಾಯೇ ದೇಶವಿಶೇಷೇ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುರ್ಭವಿ) “ಛ:” (೩-೨-೯೭) ।

**ಬಾಲವಾಹ್ಯ ಬಾಲವಾಹ್ಯ** (ಪುಂ) ಕಾಡುಮೇಕೆ. ಬಾಲಾ: ಪೌತಾ: ವಾಹ್ಯಾ ಯಸ್ಯ । ಕಾಡುಮೇಕೆಗಳು ಏನಾದರೂ ಭಯವುಂಟಾದರೆ ಮರಿಗಳನ್ನು ಬೆನ್ನಿನ ಮೇಲೆ ಹೊತ್ತು ಕೊಂಡು ಓಡುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. (ವಿಂ) 2. ಬಾಲಕ ರಿಂದ ಹೊರಲ್ಪಡುವ. ಮಕ್ಕಳಿಂದ ಒಯ್ಯಲ್ಪಡುವ.

**ಬಾಲವ್ಯಜನ ಬಾಲವ್ಯಜನ** (ನಂ) ಚಾಮರ. ಬಾಲೇನ ಚಮರೀಮೃಗಬಾಲೇನ ನಿರ್ಮಿತಂ ವ್ಯಜನಮ್. “ಯಸ್ಯಾರ್ಥಯುಕ್ತಂ ಗಿರೀರಾಜಶಬ್ದಂ ಕುರ್ವಂತಿ ಬಾಲವ್ಯಜನೇಶ್ಚಮರಯ:” ಕುಮಾಂ ೧-೧೩ ।

**ಬಾಲಹಸ್ತ ಬಾಲಹಸ್ತ** (ಪುಂ) ಕೂದಲುಗಳಿಂದ ತುಂಬಿದ ಬಾಲ.

**ಬಾಲಾ ಬಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹುಡುಗಿ, ಹೆಣ್ಣು ಮಗು, ಕುಮಾರಿ. 2. ಯುವತಿ, ತರುಣಿ, ಪ್ರಾಯದ ಹೆಂಗಸು. “ಸಾ ಬಾಲಾ ಪರವತೀತಿ ಮೇ ವಿವಿದಿತಮ್” ಶಾಕುಂ ೩-೨ । 3. ಅರಿಶಿನ. 4. ತೆಂಗಿನಕಾಯಿ. 5. ಸಣ್ಣ ಯಾಲಕ್ಕಿ. 6. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮಲ್ಲಿಗೆ ಗಿಡ.

**ಬಾಲಾಕ ಬಾಲಾಕ** (ಪುಂ) ಎಳೆಯ ಸೂರ್ಯ, ಆಗತಾನೆ ಉದಯಿಸಿದ ಸೂರ್ಯ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲದ ಸೂರ್ಯ. ಬಾಲ ಶ್ರಾಸೌ ಅರ್ಕಶ್ಚ ।

**ಬಾಲಿಕಾ ಬಾಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹುಡುಗಿ, ಕುಮಾರಿ. 2. ಪ್ರಾಯದ ಹೆಂಗಸು, ಯುವತಿ, ತರುಣಿ. 3. ಮರಳು. “ಬಾಲಾयां ವಾಲುकायां च बालिकाशब्द इष्यते” शाश्व० । 4. ಎಲೆಗಳ ಮರ್ಯಾದೆ. 5. ಕಿವಿಯ ಒಂದು ಅಭರಣ. “ಬಾಲಿಕಾ ಕರ್ಣಭೂಷಣೇ । ಪಿಶ್ತೋಲಾयां बालुकायां बालायाम्” ಹೇಮಂ । “ಬಾಲಿಕಾ । ಬಾಲಾयां बालुका पत्रकाहले कर्णभूषणे” ಮೇದಿಂ ।

**ಬಾಲಿಶ ಬಾಲಿಶ** (ಪುಂ) 1. ಸಣ್ಣ ಮಗು, ಎಳೆಯ ಮಗು, ಶಿಶು. ಬಾಡ್ (ಆಪ್ಲಾವ್ಯೆ) “ಇನ್” (೩ಂ ೪-೧೧೭) । ಬಾಡಿ ವೃದ್ಧಿ ಇಯತಿ — ಶೋ (ತನುಕರಣೆ) “ಕ:”



(೩-೨-೩)। “ಬಾಲಿಶಾ ವತ ಯುಂ ವಾ ಅಧರ್ಮಂ ಧರ್ಮಮಾನಿನಃ”  
ಭಾಗಂ ೪-೧೪-೨೩। (ವಿಂ) 2. ಮೂರ್ಖ, ಅಜ್ಞ,  
ತಿಳಿಗೇಡಿ. “ಅಪಾಙ್ಕ್ತಥೋ ಯಾವತಃ ಪಾಙ್ಕ್ತಥಾನ್ ಭುಜ್ಜಾ-  
ನಾನನುಪಶ್ಯತಿ। ತಾವತಾಂ ನ ಫಲಂ ತತ್ರ ದಾತಾ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ  
ಬಾಲಿಶಃ” ಮನುಂ ೩-೧೭೬। (ನಂ) 3. ಉಪಧಾನ,  
ತಲೆದಿಂಬು.

**ಬಾಲಿಶತಾ ಬಾಲಿಶತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಜ್ಞತೆ, ತಿಳಿಗೇಡಿತನ,  
ಮೂರ್ಖತನ. ಬಾಲಿಶಸ್ಯ ಭಾವಃ “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯)।  
“ತ್ವಃ”। ಬಾಲಿಶತ್ವಮ್ ಬಾಲಿಶತ್ವಮ್.

**ಬಾಲೇಯ ಬಾಲೇಯ** (ಪುಂ) 1. ಬಲಿಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಮಗ.  
ಬಲೇರಪತ್ಯಮ್ “ಠ್” (೪-೧-೧೩೬)। “ಬಲೇಃ ಪುತ್ರಾಶ್ಚ  
ಪೌತ್ರಾಶ್ಚ ಶತಶೋಽಪಿ ಸಹಸ್ರಶಃ। ಬಾಲೇಯೋ ನಾಮ ವಿಖ್ಯಾತೋ  
ಗಣೋ ವಿಕ್ರಾಂತಪೌರುಷಃ”। 2. ರಾಸಭ, ಗರ್ದಭ, ಕತ್ತೆ.  
3. ಗರ್ದಭ ರೂಪದಿಂದಿದ್ದ ಬಲಿಚಕ್ರವರ್ತಿ. “ಎವಮುಕ್ತೋ  
ಭಗವತಾ ಮಹೇಂದ್ರಃ ಪೃಥಿವೀಂ ತದಾ। ಚಚಾರೇರಾವತಸ್ಕಂಧಮಧಿ-  
ರಹ್ಯಾ ಶ್ರಿಯಾ ವೃತಃ। ತತಃ ದದರ್ಶ ಸ ಬಲಿಃ ಕಿರವೇಷಣ ಸಂವೃತಮ್।  
ಯಥಾಖ್ಯಾತಂ ಭಗವತಾ ಶೂನ್ಯಾಗಾರಕೃತಾಲಯಮ್” ಭಾಂ ಭಿಷಂ  
೨೩೦-೧೨, ೧೩। (ವಿಂ) 4. ಮೃದುಪಾದ, ಮೃದು  
ಪಾದ. 5. ಪೂಜೆಗೆ ಹಿತವಾದ, ಉಪಹಾರಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ. ಬಲಯೇ ಇಮೇ “ಠ್” (೪-೧-೧೩)। “ಪುಷ್ಪಂ  
ಫಲಂ ಚಾರ್ತವಮಾಹರಂತ್ಯೋ ಬೀಜಂ ಚ ಬಾಲೇಯಮಕೃಷ್ಣರೋಹಿ”  
ರಘುಂ ೧೪-೭೭।

**ಬಾಲೇಯಶಾಕ ಬಾಲೇಯಶಾಕ** (ಪುಂ) ಭಾರಂಗಿ ಗಿಡ.  
ಬಾಲೇಯಸ್ಯ ಗರ್ಭಸ್ಯ ಶಾಕಃ। ಇದನ್ನು ಕತ್ತೆಯು ತಿನ್ನುವುದ  
ರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ಬಾಲೇಷ್ಠ ಬಾಲೇಷ್ಠ** (ಪುಂ) ಬದರವೃಕ್ಷ, ಎಲಚಿಮರ,  
ಬೋರೆಗಿಡ. ಬಾಲಾನಾಮಿಷ್ಠಃ।

**ಬಾಲೋಪವೀತ ಬಾಲೋಪವೀತ** (ನಂ) 1. ಯಜ್ಞೋಪ-  
ವೀತ. 2. ಮಕ್ಕಳು ಹೊದೆಯುವ ವಸ್ತ್ರ. ಬಾಲಾನಾ-  
ಮುಪವೀತಮಿವ।

**ಬಾಲ್ಯ ಬಾಲ್ಯ** (ನಂ) 1. ಶೈಶವ, ಹುಡುಗತನ. ಬಾಲಸ್ಯ  
ಭಾವಃ “ಷ್ಯಲ್” (೪-೧-೧೨೪)। “ರಮ್ಯಾಂ ರಘುಪ್ರತಿನಿಧಿಃ”  
ಸ ನವೋಪಕಾರ್ಯಾ ಬಾಲ್ಯಾತ್ಪರಾಮಿವ ದಶಾಂ ಮದನೋಽಭ್ಯುವಾಸ”  
ರಘುಂ ೪-೬೩। 2. ಚಿಕ್ಕದಾಗಿರುವಿಕೆ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿಹೊಂದು  
ವುದಕ್ಕೆ ಪೂರ್ವದ ಅವಸ್ಥೆ, ಬೆಳೆಯುವ ಮೊದಲಿನ ಅವಸ್ಥೆ.  
“ದಿವಾಪಿ ನಿಷ್ಠಗೃತಮರೀಚಿಭಾಸಾ ಬಾಲ್ಯಾದನಾಽಪಿ ಕೃತ-  
ಲಾಙ್ಛನೇನ” ಕುಮಾಂ ೭-೩೫। 3. ಹುಡುಗಾಟ, ಮಕ್ಕ  
ಳಾಟ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ,

**ಬಾಹು ಬಾಹು** (ಪುಂ) 1. ಹಬೆ, ನೀರಿನ ಆವಿ. ಬಾಹು (ವಿಲೋಡನೆ)  
“ಪಃ” ಧಸ್ಯ ಷಶ್ಚ (ಉಂ ೩-೨೮)। 2. ನೇತ್ರಜಲ,  
ಕಣ್ಣೀರು. “ಬಾಹುಪೋ ನೇತ್ರಜಲೋಮಣಿಃ” ವಿಸ್ವಂ। ನೇತ್ರ-  
ಜಲವು ಸಂತೋಷದಿಂದಲೂ ಮತ್ತೂ ದುಃಖದಿಂದಲೂ  
ಹೊರಡುವುದು. “ಆನಂದಬಾಹುಪವಿಸರೋ ನಯನೇ ಪ್ರಜಾನಾ-  
ಮಾವಿರ್ಬಭೂವ ಮಕರಂದ ಇವಾರವಿಂದೇ” ಚಂ ರಾಂ। “ಯಾಸ್ಯ-  
ತ್ಯಥಾ ಶಕುಂತಲೇತಿ ಹೃದಯಂ ಸಂಸ್ಪೃಷ್ಟಮುಕ್ತಕಂಠಯಾ ಕಂಠಃ ಸ್ತಂಭಿತ-  
ಬಾಹುಪವೃತ್ತಿಕಲ್ಪುಷಶ್ಚಿಂತಾಜಡಂ ದರ್ಶನಮ್” ಶಾಕುಂ ೪-೫।

**ಬಾಹುಕಾ ಬಾಹುಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಂಗಿನ ಗಿಡ.

**ಬಾಸ್ತ ಬಾಸ್ತ** (ವಿಂ) ಹೊತದ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಬಸ್ತಸ್ಯ  
ಜಾಗಸ್ಯೇದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦)। “ಕಾಷ್ಣಾರೀರವ-  
ಬಾಸ್ತಾನಿ ಚರ್ಮಾಣಿ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಣಃ” ಮನುಂ ೨-೪೧।

**ಬಾಹು ಬಾಹು** (ಪುಂ) 1. ಭುಜ, ತೋಳು. ಬಾಹುರೇವ। ಪೃಷಂ।  
2. ಕುದುರೆ. “ಬಾಹೋಽಶ್ವಭುಜಯೋಃ ಪುಮಾನ್” ಇತಿ ದಾಮೋದರಃ।

**ಬಾಹಾ ಬಾಹಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭುಜ, ತೋಳು. ಬಾಹುರೇವ। ಪೃಷಂ।  
“ಬಾಹುರ್ಬಾಹು ಭುಜಾಭುಜಃ”। “ಸ್ಕನ್ಧೋ ದೋಃ ಶಿಖರೋಽಸೋಽಸ್ತ್ರೀ  
ಬಾಹಾ ಬಾಹುಭುಜೌ ನ ಪನ್” ವೇಜಂ। “ಚೂತಸಂಗತಾಪಿ ಮಾಂ  
ಪ್ರತ್ಯಾಲಿಙ್ಗೇತೋಗತಾಃ ಶಾಖಾಬಾಹಾಃ” ಶಾಕುಂ ೪।

**ಬಾಹೀಕ ಬಾಹೀಕ** (ವಿಂ) 1 ಹೊರಗಡೆ ಇರುವ, ಹೊರ  
ಗಿನ. ಬಹಿಃ ಭವಃ “ಃ” ಟಿಲೋಪಶ್ಚ (ವಾಂ ೪-೧-೮೫)।  
(ಪುಂವಂವಂ) 2. ಬಾಹೀಕ ದೇಶದ ಜನರು. (ಪುಂ) 3.  
ಬಾಹೀಕ ದೇಶದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವವನು.

**ಬಾಹು ಬಾಹು** (ಪುಂ) 1. ಭುಜ, ತೋಳು. ಬಾಹುತೇ—ಬಾಹು  
(ವಿಲೋಡನೆ) “ಕ್ರುಃ” ಹಸ್ತಾದೇಶಃ (ಉಂ ೧-೨೭)। “ಬಾಹು-  
ಪ್ರತಿಷ್ಠಂಭವಿವೃದ್ಧಮನ್ಯುರಭ್ಯರ್ಣಮಾಗಸ್ಕೃತಮಸ್ಪೃಶಾದ್ವಿಃ” ರಘುಂ  
೨-೩೨। ಸಾಮುದ್ರಿಕ ಲಕ್ಷಣದಂತೆ ದೀರ್ಘವಾದ ತೋಳು  
ಗಳುಳ್ಳವನು ರಾಜನಾಗುವನು. ತೂಗಾಡುವ ತೋಳು  
ಗಳುಳ್ಳವನು ಉತ್ತಮವಾದ ಐಶ್ವರ್ಯವನ್ನು ಹೊಂದು  
ವನು. ಹ್ರಸ್ವವಾದ (ಮೋಟು) ತೋಳುಗಳುಳ್ಳವನು  
ದಾಸನಾಗುತ್ತಾನೆ (ಇತರರಿಗೆ ಸೇವಕನಾಗುತ್ತಾನೆ). ಎಡ  
ಭುಜದಲ್ಲಿ ಸುಳಿಯಿರುವವನು ಉದ್ದವಾದ ತೋಳುಗಳುಳ್ಳ  
ವನು ರಾಜನಾಗುವನು. “ದೀರ್ಘಬಾಹುರ್ಭವೇದ್ರಾಜಾ ಸಮುದ್ರ-  
ವಚನಂ ಯಥಾ। ಪ್ರಲಂಬಬಾಹುರೇಶ್ವರೈಃ ಪ್ರಾಪ್ನುಯಾದ್ಗುಣಸಂಯುತಮ್।  
ಹ್ರಸ್ವಬಾಹುರ್ಭವೇದ್ರಾಸಃ ಪರಪ್ರೇಷ್ಯಕರಸ್ತಥಾ। ವಾಮಾವರ್ತಭುಜಾ ಯೇ  
ತು ಯೇ ಚ ದೀರ್ಘಭುಜಾ ನರಾಃ। ಸಂಪೂರ್ಣಬಾಹುಯೋಃ ತು ರಾಜಾನಸ್ತೇ  
ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾಃ”। 2. ಮೊಳಕೆಯ ಮೇಲುಭಾಗ. “ಮುಖಂ  
ಬಾಹು ಪ್ರಬಾಹು ಚ ಮನಃ ಸರ್ವೇಂದ್ರಿಯಾಣಿ ಚ। ರಕ್ಷತವ್ಯಾ-  
ಹತೈಶ್ಚರೈಸ್ತವ ನಾರಾಯಣೋಽವ್ಯಯಃ” ವಿಷ್ಣುಪುಂ ೪-೪-೧೯।  
3. ರಥದ ಮೂಕೆಯ ಮರ.



**ಬಾಹುಕ ಬಾಹುಕ** (ಪುಂ) ಋತುಪರ್ಣರಾಜನ ಅಶ್ವಪಾಲ (ಕುದುರೆಯ ರಕ್ಷಕ) ರೂಪದಿಂದ ನಳಮಹಾರಾಜ. [ಪುಷ್ಕರನಿಂದ ಜೂಜಿನಲ್ಲಿ ಪರಾಜಯ ಹೊಂದಿದ ನಳ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯು ಗ್ರಹಸಾರ ದೋಷದಿಂದ ಧರ್ಮಪತ್ನಿಯಾದ ದಮಯಂತಿಯೊಡನೆ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಅಲ್ಲಿ ಅವಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಅವಳಿಗೆ ತಿಳಿಯದಂತೆ ಓಡಿಹೋದನು. ಮುಂದೆ ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಕಾಡುಪಿಚ್ಚಿನಲ್ಲಿ ಸಿಕ್ಕಿಕೊಂಡು ಚೀರಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಕಾರ್ಕೋಟಕನೆಂಬ ಸರ್ಪವನ್ನು ಬದುಕಿಸಿ ಅದರ ಸಲಹೆಯಂತೆ ಋತುಪರ್ಣರಾಜನ ನಗರದಲ್ಲಿ ರಾಜನ ಅಶ್ವಪಾಲಕನಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡನು. ನಳನು ಋತುಪರ್ಣನಿಗೆ ಅಶ್ವವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಹೇಳಿಕೊಟ್ಟು ಅವನಿಂದ ಅಕ್ಷವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿತನು. ಇದರಿಂದ ಪುಷ್ಕರನನ್ನು ಜೂಜಿನಲ್ಲಿ ಸೋಲಿಸಿ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಪಡೆದು ದಮಯಂತಿಯೊಡನೆ ಸುಖವಾಗಿ ರಾಜ್ಯವಾಳುತ್ತಿದ್ದನು.]

**ಬಾಹುಕುಠ ಬಾಹುಕುಠ** (ವಿಂ) ಮೊಂಡಾದ ತೋಳುಗಳುಳ್ಳ, ತುಂಡು ತೋಳುಗಳುಳ್ಳ. ಬಾಹೀ ಕುಠಃ.

**ಬಾಹುಕುಠ ಬಾಹುಕುಠ** (ಪುಂ) ಹಕ್ಕಿಯ ಗರಿ. ಬಾಹುರಿವ ಕುಠಾತಿ — ಕುಠ (ಸಂಶ್ಲೇಷಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೨-೨೩೪).

**ಬಾಹುಜ ಬಾಹುಜ** (ಪುಂ) 1. ಕ್ಷತ್ರಿಯ. ಬಾಹುಮ್ಯಾಂ ಪರಮಾತ್ಮನಃ ಭುಜಾಭ್ಯಾಂ ಬಾಹೋರ್ವಾ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಙಃ" (೩-೨-೨೭, ೨೮ ವಾ) । "ಬಾಹು ರಾಜನ್ಯಃ ಕೃತಃ" ಶ್ರುತಿಃ । 2. ಶುಕ, ಗಿಣಿ. 3. ತಾನಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿ ಬೆಳೆದ ಎಳ್ಳು. (ವಿಂ) 4. ತೋಳಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

**ಬಾಹುತ್ರಾಣ ಬಾಹುತ್ರಾಣ** (ನಂ) ಬಾಣಗಳ ಏಟು ಬೀಳದಿರುವಂತೆ ತೋಳಿಗೆ ಹಾಕುವ ಲೋಹಕವಚ. ಬಾಹುಃ ತ್ರಾಯತೇಜೇನ — ತ್ರೆಡ (ಪಾಲನೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೨೨೭) ।

**ಬಾಹುದಾ ಬಾಹುದಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಹುದಾ ನದಿ. [ಪ್ರಸೇನ ಜಿತ್ತಿನ ಪತ್ನಿಯಾದ ಗೌರಿಯು ಪತಿಯ ಶಾಪದಿಂದ ಈ ನದಿಯ ರೂಪವನ್ನು ಪಡೆದಳು. ಈ ನದಿಯು ಹಿಮಾಲಯದಿಂದ ಹರಿದು ಬರುವುದು. ಲಿಖಿತ ಮುನಿಯು ತಾನು ಮಾಡಿದ ಪಾಪಕೃತ್ಯಗಳ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತಕ್ಕಾಗಿ ತನ್ನ ಕೈಗಳನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿಕೊಂಡನು. ಅಣ್ಣನಾದ ಶಂಖನ ಮೂರ್ತಿಯಂತೆ ಈ ನದಿಯಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನಮಾಡಿದುದರಿಂದ ಮತ್ತೆ ತೋಳುಗಳು ಬರುವುವು. ಇದರಿಂದ ಈ ನದಿಗೆ "ಬಾಹುದಾ" ಎಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು.] "ತಸ್ಯ ತದ್ವಚನಂ ಶ್ರುತ್ವಾ ಶಾಹ್ವಸ್ಯ ಲಿಖಿತಸ್ತದಾ । ಅವಗಾಹ್ಯಾಪಗಾಂ ಪುಣ್ಯಾಮೃದಕಾರ್ಥಂ ಪ್ರಚಕ್ರಮೇ । ಪ್ರಾದುರಾಸ್ತಾಂ ತತಸ್ತಸ್ಯ ಕರೌ ಜಲಜಸನ್ನಿಧೌ । ತತಃ ಸ ವಿस्ಮಿತೌ ಭ್ರಾತುರ್ದರ್ಶಯಾಮಾಸ ತೌ ಕರೌ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೨೩ ।

**ಬಾಹುಭಾ ಬಾಹುಭಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೋಳಿನ ಅಭರಣ, ಕೇಯೂರ, ಬಾಹೋರ್ಮಾ ಆಭರಣಮ್ ।

**ಬಾಹುಮಾತ್ರ ಬಾಹುಮಾತ್ರ** (ವಿಂ) ಒಂದು ತೋಳಿನ ಅಳತೆಯುಳ್ಳ. ಬಾಹುಃ ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ "ಮಾತ್ರಾಚ್" (೪-೨-೩೭) ।

**ಬಾಹುಮೂಲ ಬಾಹುಮೂಲ** (ನಂ) ಕಕ್ಷ, ಕಂಕಳು. ಬಾಹೋರ್ಮೂಲಮ್ ।

**ಬಾಹುಯುಕ್ತ ಬಾಹುಯುಕ್ತ** (ನಂ) ಪರಸ್ಪರ ತೋಳುಗಳನ್ನು ಹಿಡಿದು ಮಾಡುವ ಯುದ್ಧ, ಕೈ ಕಾಳಗ. ಬಾಹುಭಿರ್ಯುಕ್ತಮ್ ।

**ಬಾಹುಲ ಬಾಹುಲ** (ಪುಂ) 1. ವಹ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಬಹುಲಾನಾಂ ಕೃತ್ತಿಕಾನಾಮಯಮ್ "ಅಣ್" । [ಕ್ಷತ್ರೀಕಾನಕ್ಷತ್ರವು ಅಗ್ನಿ ದೇವತಾಕವಾದುದು.] 2. ಕಾರ್ತಿಕಮಾಸ. ಬಹುಲಾಭಿಃ ಕೃತ್ತಿಕಾಭಿರ್ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ — "ಅಣ್" (೪-೨-೩) । ಸಾಂಸ್ಥಿಮಿತ್ರಾಸ್ತಿ "ಅಣ್" (೪-೨-೨೨) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ಲಾ — ಲಾ. 3. ಕಾರ್ತಿಕಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ಬಹುಲಾಭಿಃ ಕೃತ್ತಿಕಾಭಿಃ ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ "ಅಣ್" (೪-೨-೩) ।

**ಬಾಹುಲಕ ಬಾಹುಲಕ** (ನಂ) ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಯಾವುದೊಂದು ನಿಯಮಕ್ಕೂ ಒಳಪಡದ ವಿಧಿನಿಷೇಧಗಳ ವಿಧಾನ ಮೊದಲಾದುದು. ಒಂದು ಕಡೆ ವಿಹಿತವಾದ ಶಾಸ್ತ್ರವು ಕೆಲವು ಕಡೆ ಬರದೆ ಇರುವುದು, ಕೆಲವು ಕಡೆ ವಿಹಿತವಾಗಿ ಬರುವುದು ಇತ್ಯಾದಿ. (ಬಹುಲ ಗ್ರಹಣದಿಂದ) ಬಹುಲೇನ ಬಹುಲಗ್ರಹಣೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಅಜ್" (೪-೨-೭೪) । ಸಂಜಾಯಾಂ "ಕನ್" ।

**ಬಾಹುಲೇಯ ಬಾಹುಲೇಯ** (ಪುಂ) ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪಣ್ಮಿಖಿ, ಕುಮಾರಸ್ವಾಮಿ. ಬಹುಲಾನಾಂ ಕೃತ್ತಿಕಾನಕ್ಷತ್ರಾಣಾಮಪತ್ಯಮ್ "ಙಕ್" (೪-೨-೨೨೦) ।

**ಬಾಹುಲ್ಯ ಬಾಹುಲ್ಯ** (ನಂ) ಸಮೃದ್ಧಿ, ಹೇರಳವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಪುಷ್ಕಲವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಬಹುಲಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಘಜ್" (೪-೨-೨೨೪) ।

**ಬಾಹುಶಾಲಿನ್ ಬಾಹುಶಾಲಿನ್** (ವಿಂ) ಭುಜಪರಾಕ್ರಮದಿಂದ ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ. ಬಾಹುಮ್ಯಾಂ ತದ್ವಿಕ್ರಮಾಧಿವೇನ ಶಾಲತೇ — ಶಾಲ (ಕತ್ಯನೆ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೭೮) । "ಅಂಸ-ಕಸ್ತೂರಿಕಾ ಭೂಮಿರ್ಭವತಾಂ ಬಾಹುಶಾಲಿನಾಮ್" ಯಾದಂ ೨೨-೭ ।

**ಬಾಹುಬಾಹವಿ ಬಾಹುಬಾಹವಿ** (ಅನ್ಯಂ) ಕೈಕಾಳಗ. ತೋಳುಗಳಿಂದ ಪರಸ್ಪರ ಹೊಡೆದಾಡಿ ಮಾಡುವ ಯುದ್ಧ. ಬಾಹುಮ್ಯಾಂ ಬಾಹುಮ್ಯಾಂ ಪ್ರಹತ್ಯೇದಂ ಪ್ರವೃತ್ತಂ ಯುದ್ಧಮ್ "ಙಚ್" (೪-೪-೨೨೭) ।

**ಬಾಹ್ಯ ಬಾಹ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಹೊರಗಿನ. ಹೊರಗಡೆ ಇರುವ. ಬಹಿಃ ಭವಃ "ಯಜ್" ಟಿಲೋಪಶ್ಚ (ವಾಂ ೪-೨-೮೪) । "ಯಸ್ಯ ಚೋಪವನಂ ಬಾಹ್ಯಂ ಗಂಧವದ್ಗಂಧಮಾದನಮ್" ಕುಸುಂ ೬-೪೬ । 2. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನೊಡನೆ ಅಥವಾ ಒಂದು ವಿಷಯ



ದೊಡನೆ ಸೇರದಿರುವ, ಒಂದು ವಿಷಯದಿಂದ ದೂರವಾಗಿರುವ, ಯಾವುದೊಂದು ವಿಷಯದೊಡನೆ ಸೇರಲು ಅರ್ಹತೆಯಿಲ್ಲದೆ ಹೊರಗಿರುವ. "ಲಕ್ಷವಾಪಿ ಲೋಕೇ ಪರಿಣಾಹಿ ರೂಪಂ ಜಾತಾಸ್ತದ್ಬೋಧಮಾನಬಾಹ್ಯಾಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೩೬।

3. ಹೊರಗಿನವನು, ಹೊಸಬ, ಅಪರಿಚಿತ. "ತ್ಯಕ್ತಾಶ್ರಾಮ್ಯಂತರಾ ಯೇನ ಬಾಹ್ಯಾಶ್ರಾಮ್ಯಂತರೀಕೃತಾಃ" ಪಂಚತಂ ೧-೨೮೨।

**ಬಾಹ್ಯಕ ಬಾಹ್ಯಕ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಬಾಹ್ಯಕ ದೇಶ. 2. ಬಾಹ್ಯಕ ದೇಶದ ಜನರು. (ಪುಂ) 3. ಬಾಹ್ಯಕ ದೇಶದ ಕುದುರೆ. (ನಂ) 4. ಹಿಗ್ಗು. 5. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. "ಅಥ ಬಾಹ್ಯಕಃ। ದೇಶಭೇದಃಶ್ವಭೇದೇ ಚ ಬಾಹ್ಯಕಂ ಹಿಡ್ಗು ಕುಂಕುಮಮ್" ಹೇಮಂ।

**ಬಾಹ್ಯಕ ಬಾಹ್ಯಕ** (ಪುಂ) 1. ಬಾಹ್ಯಕ ದೇಶದ ಕುದುರೆ. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ಬಾಹ್ಯಕ ದೇಶ. (ನಂ) 3. ಹಿಗ್ಗು. 4. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. "ಬಾಹ್ಯಕಂ ಕುಂಕುಮಂ ಹಿಡ್ಗು" ವೇಜಂ।

**ಬಿಡ ಬಿಡ** (ನಂ) 1. ತೊಳೆದು ಕಾಯಿಸಿದ ಉಪ್ಪು. (ವಿಂ) 2. ಭೇದಕವಾದ, ಒಡೆಯುವ.

**ಬಿಡಾಲ ಬಿಡಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಬೆಕ್ಕು, ಮಾರ್ಚಾರ. ಬಿಡ (ಆಕ್ರೋಶ) "ಕಾಲನ್" (ತಂ ೧-೧೧೪)। 2. ಕಣ್ಣಿನ ಗುಡ್ಡೆ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಜಿಬ್" (೪-೧-೬೩)। ಬಿಡಾಲಿ ಬಿಡಾಲಿ. 3. ಒಂದು ಪಕ್ಷಿ.

**ಬಿಡಾಲಕ ಬಿಡಾಲಕ** (ಪುಂ) 1. ಬೆಕ್ಕು, ಮಾರ್ಚಾರ. 2. ಕಣ್ಣಿನ ಹೊರಗಡೆಗೆ ಮುಲಾಮನ್ನು ಹಚ್ಚುವುದು. (ನಂ) 3. ಹರಿದಳ.

**ಬಿಡಾಲಪದಕ ಬಿಡಾಲಪದಕ** (ನಂ) ಹದಿನಾರು ಮೂಷಗಳ ತೂಕ.

**ಬಿಡೌಜಸ್ ಬಿಡೌಜಸ್** (ಪುಂ) ಮಹೇಂದ್ರ, ದೇವೇಂದ್ರ. ಬಿಡಮೋಜೋಸ್ಯ।

**ಬಿಂದು ಬಿಂದು** (ಪುಂ) 1. ಕಣ, ಹನಿ, ತೊಟ್ಟು. ಬಿಡಿ (ಅವಯವ) "ತಃ" ಬಾಹುಂ। "ಜಲಬಿಂದುನಿಪಾತೇನ ಕ್ರಮಶಃ ಪೂರ್ಯಂತಿ ಪಟಃ"। 2. ಚುಕ್ಕೆ, ಬೊಟ್ಟು. 3. ಅನೆಯ ಮೈಮೇಲೆ ಇರುವ ಬಣ್ಣ ಬಣ್ಣದ ಬೊಟ್ಟು. "ನ್ಯಸ್ತಾಕ್ಷರಾ ಧಾತುರಸೇನ ಯತ್ರ ಭೂರ್ಜತ್ವಚಃ ಕುಂಜರಬಿಂದುಶೋಭಾಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೭। 4. ಸೊನ್ನೆ, ಪೂಜ್ಯ, ಶೂನ್ಯ. "ನ ರೋಮಕಪೌಷಮಿಷಾ-ಜ್ಜಗತ್ಕೃತಾ ಕೃತಾಶ್ಚ ಕಿಂ ದೃಷಣಶೂನ್ಯಬಿಂದುವಃ" ನೈಪಂ ೧-೨೧। 5. ಆಕ್ಷರಗಳ ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿ ಅಥವಾ ಮೇಲುಗಡೆ ಇರುವ ಅನುಸ್ವಾರ. 6. ನಾಟಕೀಯ ಸಂಧಿಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಒಂದು ಅರ್ಥಪ್ರಕೃತಿ, ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯ ಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ ಐದು ಅರ್ಥಪ್ರಕೃತಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ವಿಜಂ

ಬಿಂದುಃ ಪತಾಕಾ ಚ ಪ್ರಕರೀ ಕಾರ್ಯಮೇವ ಚ। ಅರ್ಥಪ್ರಕೃತಯಃ ಪಂಚ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೬೪। ಬಿಂದುರೂಪವಾದ ಈ ಅರ್ಥ ಪ್ರಕೃತಿಯು ರೂಪಕಗಳಲ್ಲಿ ಅಪಾಂತರಪ್ರಯೋಜನಗಳಿಂದ ಪ್ರಕೃತಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ವಿಚ್ಛೇದವಂಟಾದರೆ ಅದರ ಅವಿಚ್ಛೇದಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗಿರುವುದು. "ಅವಾಂತರಾರ್ಥ-ವಿಚ್ಛೇದೇ ಬಿಂದುರಂಶೇದಕಾರಣಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೬-೬೬। 7. ದಂತಕ್ಷತ, ಪ್ರಿಯತಮನು ಪ್ರೇಯಸಿಯ ಅಧರಾಮೃತ ಪಾನಮಾಡುವಾಗ ಅವಳ ತುಟಿಯಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಗಾಯ. 8. ಹುಬ್ಬುಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ. (ವಿಂ) 9. ತಿಳಿವಳಿಕೆಯುಳ್ಳವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 10. ಮೃತಾಪತ್ಯವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು, ಬಾಲ್ಯದಲ್ಲೇ ಸಾಯುವ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಹದೆಯುವ ಹೆಂಗಸು. "ಬಿಂದುದಂತಕ್ಷತಾಂತರೇ। ಭ್ರೂವೋರ್ಮಧ್ಯೇ ರೂಪಕಾರ್ಥ-ಪ್ರಕೃತೌ ಪೃಷ್ಠೇ ಪುಮಾನ್। ವೇದಿತರ್ಯನ್ಯಲಿಙ್ಗಃ ಸ್ಯಾತ್" ಮೇದಿಂ। "ಬಿಂದುವಿಪ್ರುಜ್ಞಾತ್ರೋರವಶತೇ" ಹೇಮಂ। "ನಶ್ಯತ್ಪ್ರಸೂತಿಬಿಂದುಃ ಸ್ಯಾತ್" ವೇಜಂ।

**ಬಿಂದುಜಾಲಕ ಬಿಂದುಜಾಲಕ** (ನಂ) 1. ಅನೆಯ ಮುಖದ ಮೇಲಿರುವ ಬಣ್ಣ ಬಣ್ಣದ ಚುಕ್ಕೆಗಳು, ಅನೆಯ ಮುಖದಲ್ಲಿರುವ ಮತ್ತಿಗಳು. 2. ಬಿಂದುಗಳ ರಾಶಿ, ದ್ರವ ವಸ್ತುವಿನ ಕಣಗಳ ರಾಶಿ, ಹನಿಗಳ ಸಮೂಹ.

**ಬಿಂದುತನ್ತ್ರ ಬಿಂದುತನ್ತ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಚತುರಂಗದ ಆಟ. 2. ಪಗಡೆಯಾಟದ ಹಾಸು. "ಬಿಂದುತನ್ತ್ರಃ ಪುಮಾನ್ ಶಾರಿ-ಫಲಕೇ ಚತುರಂಗಕೇ" ಮೇದಿಂ। ಹೇಮ ಮತ್ತು ವಿಶ್ವಪ್ರಕಾಶ ಕೋಶಗಳಲ್ಲಿ "ಬಿಂದುತನ್ತ್ರಂ ವಿದುಃ ಶಾರಿಫಲಕೇ ಚತುರಂಗಕೇ" ಎಂದು ನಪುಂಸಕಲಿಂಗದಲ್ಲಿರುವುದು.

**ಬಿಂದುದೇವ ಬಿಂದುದೇವ** (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.

**ಬಿಂದುಪತ್ರ ಬಿಂದುಪತ್ರ** (ಪುಂ) ಬೂರುಗದ ಮರ.

**ಬಿಂದುಮಾಧವ ಬಿಂದುಮಾಧವ** (ಪುಂ) ಕಾಶೀಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ನೆಲೆಸಿರುವ ವಿಷ್ಣು.

**ಬಿಂದುಸರಸ್ ಬಿಂದುಸರಸ್** (ನಂ) ಗಂಗೆಯನ್ನು ಭೂಲೋಕಕ್ಕೆ ಕರೆತರಲು ಭಗೀರಥನು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡಿದ ಸ್ಥಳ. [ಭಗೀರಥನ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಿಂದ ಗಂಗೆಯು ವೇಗವಾಗಿ ಭೂಮಿಗೆ ಇಳಿಯುತ್ತಿರಲಾಗಿ ಪರಮೇಶ್ವರನು ತನ್ನ ಜಟಾಕುಹರದಲ್ಲಿ ಅಡಗಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಕೋಪಗೊಂಡ ಗಂಗೆಯು ಜಲಬಿಂದುಗಳು ನೆಲದಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದು ಈ ಸರಸ್ಸು ಉಂಟಾದುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಬಿಂದುಸರಸ್ಸೆಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು.] "ಭವೋತ್ತಮಾಂಜ್ಞೇ ಪತಿತಾ ಸಂಘಾ ಯೋಗಮಾಯಯಾ। ತಸ್ಯಾ ಯೇ ಬಿಂದುವಃ ಕೇಚಿತ್ ಕ್ಷುಬ್ಧಾಃ ಪತಿತಾ ಭುವಿ। ಕೃತಂ ತು ತೇಬಿಂದು-ಸರಸ್ತತೋ ಬಿಂದುಸರಃ ಸ್ಮೃತಮ್" ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ ಅಧ್ಯಾಂ ೧೦೧।



**ವಿವಿಧ ಬಿಂಬಕ (ಪುಂ)** ಹೆಂಗಸರ ಶೃಂಗಾರಭಾವದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ಕಾರ್ಯ, ಗರ್ವದಿಂದ ಇಷ್ಟವಸ್ತುವಿನ ನಲ್ಲೂ ಅನಾದರ ತೋರಿಸುವುದು. "ವಿವಿಧಕಸ್ವತಿ-ಗರ್ವೇಣ ವಸ್ತುನೋಪೇಷ್ಯನಾದರಃ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೦೦। "ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ವಿಲಾಸವಿವಿಧಕವಿಭ್ರಮಾ ಲಲಿತಂ ತಥಾ। ಹೇಲಾ ಲೀಲೇತಮಿ ಹಾವಾಃ ಕ್ರಿಯಾಃ ಸೃಜ್ಜಾರಭಾವಜಾಃ" ಅಮಂ।

**ವಿವಿಧಕಾ ಬಿಂಬಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಭಯಪಡಿಸುವುದು, ಹೆದರಿಸುವುದು.

**ವಿವಿಧ ಬಿಂಬಕ (ವಿಂ)** ಭಯಪಡುತ್ತಿರುವ, ಹೆದರು ತ್ತಿರುವ. ವಿ ಬಿ (ಭಯ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ವಿವಿಧದ್ವಿರನುಪಾದೇಶಾದ್ವಿವಿಧ ಸಮುದತಾತ್" ಯಾದಂ ೨೨-೫। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡಿಪ್" (೪-೧-೬)। ವಿವಿಧತೀ.

**ವಿವಿಧ ಬಿಂಬಕ (ವಿಂ)** ಧರಿಸಿರುವ, ಹೊಂದಿರುವ. ಹೊತ್ತಿರುವ. ಡು ಭೃ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ವಿವಿಧತೌ ಮಧುರತಾಮತಿಮಾತ್ರಂ ರಾಗಿಭಿ-ರ್ಯುಗಪದೇವ ಪಪಾತೇ" ಮಾಧಂ ೧೦-೮। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡಿಪ್" (೪-೧-೬)। ವಿವಿಧತೀ.

**ವಿವಿಧ ಬಿಂಬಕ (ವಿಂ)** ಧರಿಸಿರುವ, ಹೊಂದಿರುವ, ಹೊತ್ತಿರುವ. ಡು ಭೃ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಶಾನ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ವಿವಿಧಮಾಯತಿಮತೀಮವೃಥಾ ಶಿರೋಧಿ ಪ್ರತ್ಯಗ್ರತಾಮತಿರಸಾಮಧಿಕಂ ದಧಂತಿ" ಮಾಧಂ ೫-೬೫। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ವಿವಿಧಾ ಬಿಂಬಕಾ. "ವಿವಿಧಯಾ ಬಹುಲಯಾವಕಪಕ್ಷಪಿಙ್ಗ-ಪಿಚ್ಛಾವಚೂಡಮನುಮಾಧವಧಾಮ ಜಗ್ಮುಃ" ಮಾಧಂ ೫-೧೩।

**ವಿವಿಧ ಬಿಂಬ (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರ ಮಂಡಲ. ಬಿ (ಗತೌ) ಬನ್ ನುಮ್ ಹಸ್ವಶ್ಚ ನಿಪಾಂ (೩ಂ ೪-೧೫)। "ವಿವಿಧಸ್ತ್ರೀ ಮಂಡಲಂ ತ್ರಿಪು" ಅಮಂ। "ಪತಂತಿ ವಿವಿಧಾದುತ ತಿಗ್ಮತೇಜಸಃ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೫೩। 2. ಮಂಡಲದಂತೆ ವರ್ತುಲವಾಗಿರುವ ಒಂದು ಆಕಾರ. "ಆರೋಹೇನಿವಿ-ಬೃಹತ್ತಿತಮ್ಬಿವಿವಿಧಃ" ಮಾಧಂ ೮-೮। 3. ಪ್ರತಿಮೆ, ವಿಗ್ರಹ. 4. ಪ್ರತಿಬಿಂಬ, ಛಾಯೆ. "ಪ್ರಭೇವತಿ ಮಣಿವಿವಿಧಗ್ರಾಹೇ ಮಣಿರ್ನ ಮೃದಾದಯಃ" ೩ಂ ರಾಂ ೨-೪। 5. ಪ್ರತಿಬಿಂಬ ವನ್ನು ಕೊಡುವ ಮೂಲವಸ್ತು. 6. ಮುಖ. 7. ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು. (ಪುಂ) 8. ಕೃಕಲಾಸ, ಓತಿಕೇತ. (ನಂ) 9. ತೊಂಡೆಹಣ್ಣು. [ಸ್ತ್ರೀಯರ ತುಟಿಗೆ ಈ ಹಣ್ಣಿನ ಸಾಮ್ಯ ಕೊಡುವರು.] "ವಿವಿಧಂ ಬಹು ಮನುತೇ ತುರಜ್ಜವಕ್ತೃಶ್ಚುಮ್ಬಂತಂ ಮುಖಮಿಹ ಕಿನ್ನರಂ ಪ್ರಿಯಾಯಾಃ" ಮಾಧಂ ೪-೩೮। "ವಿವಿಧಸ್ತ್ರೀ ಮಂಡಲಸಮಪ್ರತಿಮಾಮುಖಲಕ್ಷಮಸು। ಪ್ರತಿವಿವಿಧೇ ತತ್ಪ್ರಕೃತೌ ಕಲಿ ತು ಸ್ಯಾದ್ವಿವಿಧಕಾಫಲೇ" ವೈಜಂ।

**ವಿವಿಧ ಬಿಂಬಕ (ನಂ)** 1. ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರ ಮಂಡಲ. 2. ತೊಂಡೆಹಣ್ಣು.

**ವಿವಿಧಕಾ ಬಿಂಬಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ತೊಂಡೆಗಿಡ. ವಿವಿಧ ಕಾಯತಿ—ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)। 2. ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರರ ಮಂಡಲ.

**ವಿವಿಧ ಬಿಂಬಕ (ವಿಂ)** ಪ್ರತಿಫಲಿಸಿರುವ, ಪ್ರತಿಬಿಂಬ ಹೊಂದಿರುವ, ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿಸಿರುವ. ವಿವಿಧಸ್ಯ ಸಂಜ್ಞಾತಃ "ಇತತ್" (೫-೨-೩೬)। "ಅಂತರಿಕ್ಷಮಣಿರ್ದರ್ಶನಾಂತರೇ ವಿವಿಧತೇವ ಭವತೀ ವಿಭಾಷ್ಯತೇ" ಯಾದಂ ೧೭-೨೫।

**ವಿಲ ಬಿಲ (ನಂ)** 1. ರಂಧ್ರ, ತೂತು, ಮುತ್ತು ಮೊದಲಾದ ಕುಳಿ. ವಿಲತಿ—ವಿಲ (ಛೇದನ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫)। "ಉದ್ರವಾಮೇಂದ್ರಸಿಕ್ತಾ ಭೂವಿಲಮಗ್ನಾವಿವೋರಗೌ" ರಘುಂ ೧೨-೫। 2. ಗುಹೆ, ಗವಿ. [ದೈವನಿರ್ಮಿತವಾದ ಸ್ವಭಾವವಾದ ಗುಹೆ.] "ವಿಲೇ ತದೀಯೇ ವಿಬುಧಾಲಯೋಪಮೇ ವಿಕಲ್ಪಮಾನಾಕೃತಿ-ಮಪ್ಸರೋಗಣಃ" ಯಾದಂ ೧೪-೫೯। 3. ಗುಳಿ, ಗುಂಡಿ, ಹಳ್ಳಿ. 4. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಇಂದ್ರಿಯನಾಳ, ಯೋನಿನಾಳ. (ಪುಂ) 5. ಉಚ್ಚೈಶ್ವರವಸ್ತು, ಇಂದ್ರನ ಆಶ್ವ. "ವಿಲಂ ಛಿದ್ರೇ ಗುಹಾಃ ಚ ಪುಮಾನುಚ್ಚಃಶ್ರವೋಹಯೇ" ಮೇದಿಂ।

**ವಿಲಕಾರಿನ್ ಬಿಲಕಾರಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ಮೂಷಕ, ಇಲಿ. (ವಿಂ) 2. ಬಿಲವನ್ನು ಮಾಡುವ, ಗುಂಡಿಯನ್ನು ತೋಡುವ.

**ವಿಲಯೋನಿ ಬಿಲಯೋನಿ (ವಿಂ)** ಬಿಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ವಿಲಂ ಯೋನಿರೂಪತಿಸ್ಥಾನಂ ಯಸ್ಯ। "ಜಿತಸಿಂಹಮಯಾ ನಾಗಾ ಯತ್ರಾಶ್ವಾ ವಿಲಯೋನಯಃ" ಕುಮಾಂ ೬-೩೯।

**ವಿಲೇಶಯ ಬಿಲೇಶಯ (ಪುಂ)** 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ವಿಲೇ ಶೇತೇ—ಶಿಡ್ (ಸ್ವಪ್ನ) "ಅಚ್" (೩-೨-೧೫)। ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ವಾ "ಅಲುಕ್" (೬-೩-೧೮)। ೨. ವಿಲೇಶಯಃ ಬಿಲೇಶಯಃಃ. 2. ಮೂಷಕ, ಇಲಿ. "ವಿಲೇಶಯಸ್ತು ಪುಲಿಙ್ಗೋ ಮೂಷಕೇ ಚ ಭುಜಙ್ಗಮೇ" ಮೇದಿಂ। (ವಿಂ) 3. ಬಿಲದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ.

**ವಿಲೋಕಸ್ ಬಿಲೋಕಸ್ (ಪುಂ)** 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. 2. ಮೂಷಕ, ಇಲಿ. ವಿಲೋಕೋಽಸ್ಯ। (ವಿಂ) 3. ಬಿಲದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ.

**ವಿಲ ಬಿಲ್ಲ (ನಂ)** 1. ಅಲವಾಲ, ಗಿಡಮರಗಳ ಕೆಳಗೆ ನೀರು ನಿಲ್ಲಲು ಮಾಡುವ ಪಾತಿ. 2. ಗುಣ, ಗುಂಡಿ ಹಳ್ಳಿ. 3. ಹಿಂಗು.

**ವಿಲ ಬಿಲ್ಲ (ಪುಂ)** 1. ಬಿಲ್ಲಪತ್ರೆಯ ಮರ. ವಿಲ (ಛೇದನ) "ಬನ್" (೩ಂ ೪-೧೫)। ನಿಪಾಂ। ವಬಯೋರಭೇದಃ। (ನಂ) 2. ಬಿಲ್ಲದ ಕಾಯಿ.



**ವಿಶ್ವಕೋಶ ಬಿಲ್ವಕೇಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಬಿಲ್ವವೃಕ್ಷಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಭೂಮಿ.

**ವಿಶ್ವಪತ್ರ ಬಿಲ್ವಪತ್ರ (ನಂ)** ಬಿಲ್ವವೃಕ್ಷದ ಎಲೆ, ಬಿಲ್ವ ದಳ.

**ವಿಶ್ವಪೇಶಿಕಾ ಬಿಲ್ವಪೇಶಿಕಾ -ಪೇಶಿ-ಪೇಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಒಣಗಿದ ಬಿಲ್ವದ ಕಾಯಿ, ಬಿಲ್ವದ ಬೀಜ.

**ವಿಶ್ವವನ ಬಿಲ್ವವನ (ನಂ)** ಬಿಲ್ವವೃಕ್ಷಗಳ ಕಾಡು, ಬಿಲ್ವ ಮರಗಳ ತೋಪು.

**ವಿಸ ಬಿಸ (ನಂ)** 1. ತಾವರೆಯ ದಂಟು, ತಾವರೆಬಳ್ಳಿಯ ಕಾಂಡ. ವಿಸ್ಯತಿ—ವಿಸ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫)। "ಅರ್ಥೋಭುಕ್ತೇನ ವಿಸೇನ ಜಾಯಾಂ ಸಂಭಾವಯಾಮಾಸ ರಥಾಙ್ಗನಾಮಾ" ಕುಮಾಂ ೩-೩೭। 2. ತಾವರೆದಂಟಿನ ನಾರು, -ತಂತು, -ಎಳೆ.

**ವಿಸಕಣ್ಠಿಕಾ ಬಿಸಕಂಠಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸಣ್ಣ ಜಾತಿಯ ಕೊಕ್ಕರೆ, ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಬಕಪಕ್ಷಿ, ಬೆಳ್ಳಕ್ಕಿ. ವಿಸಮಿವ ಕಣ್ಠಾಸ್ತಯಾ: "ಕಪ್"।

**ವಿಸಕಣ್ಠಿನ್ ಬಿಸಕಂಠಿನ್ (ಪುಂ)** ಬೆಳ್ಳಕ್ಕಿ, ಬಕಪಕ್ಷಿಯ ಒಂದು ಭೇದ. ವಿಸಮಿವ ಕಣ್ಠಾಸ್ತಯಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)।

**ವಿಸಕುಸುಮ ಬಿಸಕುಸುಮ (ನಂ)** ತಾವರೆಯ ಹೂವು, ಕಮಲ, ಪದ್ಮ. ವಿಸಸ್ಥ ಕುಸುಮಮ್। -ಪುಷ್ಪಮ್ -ಪುಷ್ಪಮ್, -ಪ್ರಸೂನಮ್ -ಪ್ರಸೂನಮ್. "ಜಕ್ಷುಬಿಸಂ ಭೃತವಿಕಾಸಿವಿಸ-ಪ್ರಸೂನಾ:" ಮಾಘಂ ೪-೨೮।

**ವಿಸಜ ಬಿಸಜ (ನಂ)** ಕಮಲ, ತಾವರೆಹೂವು.

**ವಿಸತನ್ತು ಬಿಸತಂತು (ಪುಂ)** ತಾವರೆದಂಟಿನ ಎಳೆ, -ನಾರು.

**ವಿಸಿನಿ ಬಿಸಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಪದ್ಮಲತೆ, ತಾವರೆಯ ಬಳ್ಳಿ. 2. ತಾವರೆಬಳ್ಳಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇಶ. 3. ತಾವರೆ ಬಳ್ಳಿಗಳ ಸಮೂಹ. ವಿಸ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೩೫)।

**ವಿಸ್ತ ಬಿಸ್ತ (ಪುಂ)** ಚಿನ್ನದ ಒಂದು ತೂಕ, ಒಂದು ಕರ್ಷದ ತೂಕ, 20 ಗುಲಗಂಜಿಗಳ ತೂಕ. [ಐದು ಗುಲಗಂಜಿಗಳ ತೂಕ ಒಂದು ಅದ್ಯಮಾಷಕ. ಹದಿನಾರು ಅದ್ಯಮಾಷಕಗಳ ತೂಕ ಒಂದು ಕರ್ಷ. ಚಿನ್ನದ ಕರ್ಷ ತೂಕವು ಒಂದು ಬಿಸ್ತ] "ಗುಜ್ಜಾ: ಪञ्चाಶಮಾಷಕಾ:। ತೇ ಷೋಡಶಾಕ್ಷ: ಕರ್ಷಾಸ್ತ್ರೀ"। "ಸುರ್ವಣವಿಸ್ತೌ ಹೇಮನೋಕ್ಷೇ" ಅಮಂ।

**ಬೀಜ ಬೀಜ (ನಂ)** 1. ಹೇತು, ಕಾರಣ. ವಜತಿ ಕಾರ್ಯ ಗಚ್ಛತಿ—ವಜ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ವಬಯೋರಭೇದ:। ಪೃಷೋದರಾದಿತ್ವಾತ್ ಇತ್ವಮ್। 2. ಮೂಲ ಕಾರಣ. "ಯಾಮಾಹು: ಸರ್ವಬೀಜಪ್ರಕೃತೀರೀತಿ ಯಾ ಪ್ರಾಣಿನ:

ಪ್ರಾಣವಂತ:" ಶಾಕುಂ ೧-೧। 3. ಬೀಜ, ಕಾಳು, ಧಾನ್ಯ.

"ಅರ್ಥಬೀಜಾಙ್ಗಲಿದಾನಲಾಲಿತಾಸ್ತಯಾ ಚ ತಸ್ಯಾಂ ಹರಿಣಾ ವಿಶಿಷ್ಟಮ್:" ಕುಮಾಂ ೪-೧೪। 4. ಪುರುಷನ ವೀರ್ಯ, ಧಾತು. "ತಮ್ ಎವ ಕ್ಷಮೆ ವೋಡುಮುಭಯೋರ್ಬೀಜಮಾಹಿತುಮ್" ಕುಮಾಂ ೨-೬೦। 5. ನಾಟಕ (ರೂಪಕ) ಗಳಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯ ಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿಗೆ ಸಾಧಕವಾದ (ಮೂಲ) ಕಾರಣ. ಇದು ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿದ್ದು ಕ್ರಮೇಣ ಬೆಳೆದು ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿ ಮುಖ್ಯಫಲಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗುವುದು.

"ಸ್ತೋಕೋದ್ವಿಷ್ಟ: ಕಾರ್ಯಹೇತು: ಬೀಜಂ ವಿಸ್ತಾರ್ಯನೇಕಥಾ" ದಶಕಂ। ಶ್ರೀಹರ್ಷನ ರತ್ನಾವಳಿಯಲ್ಲಿ ರತ್ನಾವಳಿಯ ಪ್ರಾಪ್ತಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ ಯೋಗೋಪಾಯೋನ ವ್ಯಾಪಾರವು ಬೀಜ. ವೇಣೀಸಂಹಾರದಲ್ಲಿ. ದ್ರೌಪದಿಯು ಬಿಚ್ಚಿದ್ದ ಕೇಶಪಾಶ ವನ್ನು ಪುನಃ ಗುಟ್ಟುಹಾಕಲು ಮೂಲಕಾರಣವಾದ ಯುಧಿಷ್ಠಿರನ ಉತ್ಸಾಹವು ಬೀಜ. 6. ಹೆಣ್ಣಿನ ತಿರುಳು.

7. ಅನ್ನ, ಆಹಾರ. "ಬೀಜಂ ಶುಕ್ಲೇ ಫಲಾಸ್ತಮ್ಯಶ್ಚ" ವೇಜಂ। 8. ತತ್ತ್ವ. 9. ಮಹಾಮಂತ್ರಗಳ ಮುಖ್ಯಭಾಗವಾದ ಬೀಜಾಕ್ಷರ. 10. ದೇಹದೊಳಗಿನ ಸಾರ, ಮಜ್ಜೆ. "ಬೀಜಂ ರೇತಸಿ ತತ್ತ್ವೇ ಚ ಹೇತಾವತ್ಕುರಕಾರಣಂ" ವಿಶ್ವಂ।

**ಬೀಜಕೋಶ ಬೀಜಕೋಶ (ಪುಂ)** ತಾವರೆಹೂವಿನಲ್ಲಿರುವ ಬೀಜಗಳ ಕೋಶ, ತಾವರೆಯ ಕಾಯಿ. ಬೀಜಸ್ಯ ಕೋಶ:।

**ಬೀಜಗಣಿತ ಬೀಜಗಣಿತ (ನಂ)** ಸುಖ್ಯಾ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಅಕ್ಷರಗಳ ಸಂಜ್ಞೆಯ ಮೂಲಕ ಪ್ರತಿಪಾದನೆ ಮಾಡುವ ಶಾಸ್ತ್ರ.

**ಬೀಜನ್ಯಾಸ ಬೀಜನ್ಯಾಸ (ಪುಂ)** ರೂಪಕದಲ್ಲಿ ಕಾವ್ಯಾರ್ಥದ (ಕಥಾವಸ್ತುವಿನ) ಮೂಲವು ತಿಳಿಯುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು, ಕಾವ್ಯಾರ್ಥದ ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಕಾವ್ಯಾರ್ಥದ ಸೂಚನೆ.

**ಬೀಜಪುರುಷ ಬೀಜಪುರುಷ (ಪುಂ)** ಒಂದು ವಂಶದ ಮೂಲ ಪುರುಷ.

**ಬೀಜಪುಷ್ಪ ಬೀಜಪುಷ್ಪ (ಪುಂ)** 1. ದತ್ತೂರಿಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಮರುಗ.

**ಬೀಜಪೂರ ಬೀಜಪೂರ (ಪುಂ)** 1. ಮಾದಳ ಗಿಡ. ಬೀಜ: ಪೂಯಂತೆ—ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯಂತೆ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫)। (ನಂ) 2. ಮಾದಳ ಹಣ್ಣು.

**ಬೀಜಮನ್ತ್ರ ಬೀಜಮಂತ್ರ (ಪುಂ)** ರಹಸ್ಯಾರ್ಥವನ್ನೊಳಗೊಂಡ ಪದದಿಂದ ಪ್ರಾರಂಭವಾಗುವ ಮಹಾಮಂತ್ರ, ಪರಮಾರ್ಥವನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ರಹಸ್ಯಾರ್ಥಗರ್ಭಿತ ವಾದ ಮಂತ್ರ.

**ಬೀಜಮಾತೃಕಾ ಬೀಜಮಾತೃಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಬೀಜಕೋಶ, ಸಸ್ಯದ ಪಕ್ಕವಾದ ಬೀಜದ ಆವರಣ.



**ಬೀಜವಪನ ಬೀಜವಪನ (ನಂ)** 1. ಕ್ಷೇತ್ರ, ಭೂಮಿ, ನೆಲ.  
ಬೀಜಾನಿ ಉಪಂತೇಷ — ಟು ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನೇ) ಅಧಿಂ  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭) 2. ನೆಲದಲ್ಲಿ ಬೀಜವನ್ನು  
ಬಿತ್ತುವುದು. ಬೀಜಾನಾಂ ವಪನಮ್ | ಟು ವಪ್ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೫) |

**ಬೀಜವರ ಬೀಜವರ (ಪುಂ)** ಮಾಪ, ಉದ್ದ.

**ಬೀಜವಾಪ ಬೀಜವಾಪ (ಪುಂ)** 1. ಬೀಜಗಳ ಬಿತ್ತನೆ.  
ಬೀಜಾನಾಂ ವಾಪ: — ಟು ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನೇ) ಭಾವೇ “ಘಜ್”  
(೩-೩-೧೮) | (ವಿಂ) 2. ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತುವವನು.

**ಬೀಜಸಂಖ್ಯೆ ಬೀಜಸಂಖ್ಯೆ (ಪುಂ)** ಬಿತ್ತನೆಗೆ ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ ಬೀಜಗಳ ಸಂಗ್ರಹ.

**ಬೀಜಸು ಬೀಜಸು (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕ್ಷೇತ್ರ, ಭೂಮಿ, ನೆಲ.

**ಬೀಜಾಕೃತ ಬೀಜಾಕೃತ (ನಂ)** ಬೀಜ ಬಿತ್ತಿದ ಮೇಲೆ  
ಉಳಿಲ್ಪಟ್ಟ ಕ್ಷೇತ್ರ. ಬೀಜೇನ ಸಹಕೃತ ಕೃಷ್ಣಮ್ — “ಡಾಕ್”  
(೫-೪-೫೮) |

**ಬೀಜಾಡ್ಕುರ ಬೀಜಾಂಕುರ (ಪುಂ)** ಬೀಜದಿಂದ ಹೊರಡುವ  
ಮೊಳಕೆ, ಬೀಜದ ಮೊಳಕೆ. ಬೀಜಸ್ಯಾಡ್ಕುರ: | “ಬೀಜಾಡ್ಕುರ:  
ಪ್ರಾಗ್ಘನಾದಿವಾಮ್ಭ:” ಕುಮಾಂ ೩-೧೮ |

**ಬೀಜಾಮ್ಲ ಬೀಜಾಮ್ಲ (ನಂ)** ಹುಣಿಸೆಹಣ್ಣು.

**ಬೀಜಿನ್ ಬೀಜಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಬೀಜವಾಪ  
ಮಾಡಿದ ತಂದೆ, ಜನಕ. ಬೀಜಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:”  
(೫-೨-೧೧೫) | “ಫಲಂ ತ್ವನಭಿಸನ್ಧಾಯ ಕ್ಷೇತ್ರಿಣಾಂ ಬೀಜಿನಾಂ  
ತಥಾ” ಮನುಂ ೯-೫೨ | (ವಿಂ) 2. ಬೀಜವನ್ನು ಹೊಂದಿರು  
ವವನು, ಧಾನ್ಯ (ಕಾಳು) ಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು.  
3. ಬೀಜವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಕಾಯಿ.

**ಬೀಜ್ಯ ಬೀಜ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಬೀಜದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ. 2. ಯಾವು  
ದಾದರೂ ಒಂದು ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಬೀಜಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ—  
“ಯಪ್” (ವಾಂ ೫-೨-೧೨೦) |

**ಬೀಮತ್ಸ ಬೀಮತ್ಸ (ಪುಂ)** 1. ಬೀಮತ್ಸರಸ, ಶೃಂಗಾರ ವೀರ  
ಮೊದಲಾದ ಒಂಬತ್ತು ರಸಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಬಥ (ಬನ್ಧನೆ) +  
ಚಿತ್ತವಿಕಾರೇ “ಸನ್” (ವಾಂ ೩-೧-೬) “ಅ:” (೩-೩-೧೦೨) |  
ಬೀಮತ್ಸಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಅಚ್” (೫-೨-೧೨೭) | ಬೀಮತ್ಸ  
ರಸಕ್ಕೆ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ ಜುಗುಪ್ಸೆ. ಇದು ಮಹಾಕಾಲ  
ದೇವತಾಕವಾದುದು. ಕೊಳೆತು ನಾರುವ ಮಾಂಸ ರಕ್ತ  
ಮೊದಲಾದುವು ಅಲಂಬನವಿಭಾವ. ಅವುಗಳಿಂದ  
ಹೊರಟು ಹರಿಯುತ್ತಿರುವ ಕೃಮಿಕೀಟಗಳು ಉದ್ದೀಪನ  
ವಿಭಾವ. ಉಗುಳುವುದು ಕಣ್ಣು ಮುಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳುವುದು  
ಮೊದಲಾದುವು ಅನುಭಾವಗಳು. ಮೋಹ ಆವೇಗ

ವ್ಯಾಧಿ ಮೊದಲಾದುವು ವ್ಯಭಿಚಾರಿ ಭಾವಗಳು. “ಜುಗುಪ್ಸಾ-  
ಸ್ಯಾಪಿಭಾವಸ್ತು ಬೀಮತ್ಸ: ಕಥ್ಯತೇ ರಸ: | ನೀಲವರ್ಣೋ ಮಹಾ-  
ಕಾಲದೇವತೋಽಯಮುದಾಹೃತ: | ದುರ್ಗಂಧಮಾಂಸಸಂಧಿರಮೇವಾಸ್ಯಾಲಂಬನಂ  
ಮತಮ್ | ತತ್ರೈವ ಕೃಮಿಪಾತಾಘಮುದ್ದೀಪನಮುದಾಹೃತಮ್” ಇತ್ಯಾದಿ.  
ಸಾಂ ೬೦ ೩ | 2. ಅರ್ಜುನ. (ವಿಂ) 3. ಕೂರ.  
4. ಅಸಹ್ಯವಾದ, ಜುಗುಪ್ಸೆ ಹುಟ್ಟಿಸುವ. 5. ಅಸೂಯೆ  
ಪಡುವ. 6. ಚಿತ್ತವಿಕಾರ ಹೊಂದಿದ. “ಬೀಮತ್ಸೋ ನಾಽರ್ಜುನೇ  
ಕ್ರೂರವೃಣಾತ್ಮವಿಕೃತೇ ತ್ರಿಪು” ಮೇದಿಂ |

**ಬೀಮತ್ಸು ಬೀಮತ್ಸು (ಪುಂ)** 1. ಅರ್ಜುನ. ಬೀಮತ್ಸತಿ—ಬಥ  
(ಬನ್ಧನೆ) ಚಿತ್ತವಿಕಾರಾರ್ಥ “ಸನ್” “ಅ:” (೩-೨-೧೬೮) |  
ಇದು ಅರ್ಜುನನ ಹತ್ತು ಹೆಸರುಗಳಲ್ಲೊಂದು. “ಅರ್ಜುನ:  
ಫಲ್ಗುನೋ ಜಿಷ್ಣು: ಕಿರೀಟೋ ಶ್ವೇತವಾಹನ: | ಬೀಮತ್ಸುರ್ವಿಜಯ:  
ಕೃಷ್ಣ: ಸಂವ್ಯಸಾಚೀ ಧನಂಜಯ:” ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೪೦-೯ |  
ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಅರ್ಜುನನು ಅಸಹ್ಯವಾದ ಕೆಲಸವನ್ನು  
ಮಾಡುವುದಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ಅವನಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು. “ನ  
ಕುರ್ಯಾ ಕರ್ಮ ಬೀಮತ್ಸಂ ಯುಧ್ಯಮಾನ: ಕಥಂಚನ | ತೇನ ದೇವಮನುಷ್ಯೇಷು  
ಬೀಮತ್ಸುರೀತಿ ವಿಶ್ರುತ:” ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೪೦-೧೮ |

**ಬುಕಕ ಬುಕಕ (ಪುಂ)** 1. ಹೃದಯ, ಎದೆ. 2. ಹೃದಯ  
ದೊಳಗಿನ ಮಾಂಸಖಂಡ. ಬುಕಕಯತಿ — ಬುಕ್ ಬುಕ್ ಇತಿ  
ಅವ್ಯಕ್ತಶಬ್ದಂ ಕರೋತಿ | (ಪುಂ) 3. ಭಾಗ, ಅಡು.  
(ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ಸಮಯ, ವೇಳೆ, ಕಾಲ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಕಾ  
—ಕಾ. 5. ಶೋಣಿತ, ರಕ್ತ.

**ಬುಕಕನ ಬುಕಕನ (ನಂ)** 1. ನಾಯಿ ಬಗಳುಳುವುದು,  
ನಾಯಿಯ ಕೂಗು. 2. ತೀರ್ಯಕಪ್ರಾಣಿಗಳ ಶಬ್ದ.  
ಬುಕಕ (ಭವಣ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) |

**ಬುಕಕಾರ ಬುಕಕಾರ (ಪುಂ)** ಸಿಂಹದ ನಾದ, ಸಿಂಹದ ಗರ್ಜನೆ.  
“ಬುಕಕಾರ: ಸಿಂಹನಾದಕ:” ಹಾರಾಂ |

**ಬುದ್ಧ ಬುದ್ಧ (ಪುಂ)** 1. ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನ ಹೊಂದಿದ ಒಬ್ಬ  
ಮಹಾಪುರುಷ, ಬುದ್ಧದೇವ, ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಒಂದು  
ಅವತಾರ. ಬುಧ್ಯತೇ — ಬುಧ (ಅವಗಮನೆ) “ಕ್ತ:”  
(೩-೨-೧೮೮) | ಕಲಿಯುಗವು ಪ್ರಾರಂಭವಾದ ಮೇಲೆ  
ರಾಕ್ಷಸರನ್ನು ಮೋಹಗೊಳಿಸಲು ಮಾಡಿದ ಒಂದು  
ಅವತಾರವಿದು. “ತತ: ಕಲೌ ಸಂಪ್ರವೃತ್ತೇ ಸಂಮೋಹಾಯ ಸುರ-  
ದ್ವಿಷಾಮ್ | ಬುದ್ಧೋ ನಾಮ್ನಾ ಜಿನಸುತ: ಕೀಕಟೇ ಭವಿಷ್ಯತಿ”  
ಭಾಗಂ ೧-೩-೨೪ | ಬುದ್ಧನಿಂದ ಪ್ರಚಾರಕ್ಕೆ ಬಂದ  
ದರ್ಶನವು ಬೌದ್ಧಮತ. ಈ ಬೌದ್ಧಮತವು ವೇದವನ್ನೂ  
ವೇದವಿಹಿತ ಕರ್ಮಗಳನ್ನೂ ಬಹಿಷ್ಕರಿಸುವುದರಿಂದ ಇದು  
ಅವೈದಿಕಮತ. ಗೀತಗೋವಿಂದದಲ್ಲಿ ಜಯದೇವ  
ಕವಿಯು ಬೌದ್ಧವತಾರವು ಒಂಬತ್ತನೆಯದೆಂದು ಹೇಳಿರು



ತಾನೆ. " ನಿಂದಸಿ ಯಜ್ಞವಿಘ್ನೇಹಹ ಶ್ರುತಿಜಾತಂ ಸಹದಯಹದಯ-  
ವಶಿತಪಶುಪಾತಮ್ | ಕೇಶವ ! ಧೃತಬುದ್ಧಶರೀರ, ಜಯಜಗದೀಶ  
ಹೇ " ಗೀತಗೋಂ ೧-೯ | [ಬುದ್ಧನು ಶಾಕ್ಯಸಿಂಹ ಸರ್ವಾರ್ಥ-  
ಸಿದ್ಧಿ ಗೌತಮ ಮತ್ತು ಅರ್ಕಬಂಧು ಎಂಬ ನಾಮಧೇಯ  
ಗಳಿಂದ ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾಗಿದ್ದನು. ಈತನು ಕಪಿಲವಸ್ತುರಾಜ  
ನಾದ ಶುದ್ಧೋದನನಿಗೆ ಮಾಯಾದೇವಿಯಲ್ಲಿ ಪುತ್ರನಾಗಿ  
ಅವತರಿಸಿದನು. ಈತನು ಪ್ರಾಪ್ತವಯಸ್ಕನಾದಾಗ ಜಗತ್ತಿ-  
ನಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಧಿ ಜರಾಮರಣಗಳಿಂದ ಸಂಕಟಪಡುತ್ತಿರುವ  
ಜನರನ್ನು ನೋಡಿ ವೈರಾಗ್ಯಹೊಂದುವನೆಂದು ದೈವಜ್ಞ-  
ರಿಂದ ತಿಳಿದ ಶುದ್ಧೋದನನು ರತಿಕೇಳಿಕುಶಲರಾದ ಅನೇಕ  
ಯುವತಿಯರನ್ನು ಅಂತಃಪುರದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸಿ ಇವನಿಗೆ ಬಾಹ್ಯ  
ಪ್ರಪಂಚದ ಸಂಪರ್ಕವೇ ಇಲ್ಲದಂತೆ ಮಾಡಿದನು. ಆದರೆ  
ಇಂತಹ ಭೋಗಗಳಿಗೆ ಸ್ವಲ್ಪವೂ ಸೋಲದೆ ಗೌತಮನು  
ಪ್ರಪಂಚದ ಪರ್ಯಟನೆಗಾಗಿ ತಂದೆಯ ಅನುಮತಿಯನ್ನು  
ಪಡೆದು ಹೊರಟು ಅಲ್ಲಲ್ಲಿ ನಾನಾ ವಿಧವಾದ ವ್ಯಾಧಿ  
ಗಳಿಂದಲೂ ಜರೆಯಿಂದ ಬಂಧುಜನರ ತಿರಸ್ಕಾರಕ್ಕೆ  
ಪಾತ್ರರಾದ ಜನರ ನರಳಿಕೆಗಳಿಂದಲೂ ಸಂಕಟಪಡುತ್ತಿದ್ದವ-  
ರನ್ನು ನೋಡಿ ಅದರಿಂದ ಸಂಪೂರ್ಣ ವೈರಾಗ್ಯವನ್ನು  
ಹೊಂದಿ ವೈಶಾಲಿನಗರಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಪರಮವಿರಕ್ತ  
ಶಿಖಾಮಣಿಯಾದ ಒಬ್ಬ ಗುರುವನ್ನು ಸೇರಿ ಅವರಿಂದ  
ಉಪದೇಶ ಪಡೆದು ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನಿಯಾಗಿ ಸಂಕಟಗಳಿಗೆ  
ಸಿಲುಕಿದ ಜನರ ಕಷ್ಟಗಳನ್ನು ನಿವಾರಿಸಲು ಸಂಕಲ್ಪಿಸಿ  
ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಜ್ಞಾನೋಪದೇಶಮಾಡಿದನು.] "ವಿಕೀರ್ಯ  
ವಿಜ್ಞಾನಮಯಿಂ ಪ್ರಭಾಂ ಪ್ರಭುಜಂಗಪ್ರದೀಪಃ ಪ್ರಥಿತಃ ಪ್ರಭಾಕರಃ |  
ಬುದ್ಧಃ ಸ ರಾಶಿಮಹಸಾಂ ಮಹೋಜ್ವಲೋ ಜ್ವಲಂಶ್ಚ ನಿರ್ವಾಣಪದಂ ಪರಂ  
ಗತಃ || ಪ್ರಕಾಶ್ಯ ಶ್ರೀಲೋಕಯಮಲಂ ಮಲಿಮಸಂ ಪ್ರಬೃಹದ್ವಿಹಿಸಾರ-  
ಸಕ್ಷುಷಿತಂ ವಿಭುಃ | ಪ್ರಬೋಧಧಾರಾಧರಭೂರಿವಾರಿಮಿ ರರಾಜ  
ದೇವೋ ಭುವಿ ಬೋಧಮಾಸ್ಕರಃ " || [ಎವರೆಕ್ಕೆ "ಬೌದ್ಧ"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ವಿದ್ವಾಂಸ, ಪಂಡಿತ, ಜ್ಞಾನ  
ಸಂಪಾದಿಸಿದವನು, ಬುದ್ಧಿವಂತ. (ವಿಂ) 3. ತಿಳಿವಳಿಕೆ  
ಯುಳ್ಳವನು. 4. ಎಚ್ಚರವುಳ್ಳವನು 5. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಅರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಬೃಹ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | (ನಂ)  
6. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ಅರಿವು. ಬೃಹ ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ"  
(೩-೩-೧೧೪) |

**ಬೃಹಗಯಾ ಬುದ್ಧಗಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೀಟದೇಶದಲ್ಲಿರುವ  
ಬೌದ್ಧರ ಗಯೆ. ಇದೊಂದು ಯಾತ್ರಾಸ್ಥಳ. ಇದು ಮಗಧ  
ದೇಶದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವುದು.

**ಬೃಹಗುರು ಬುದ್ಧಗುರು** (ಫಂ) ಬುದ್ಧನ ತತ್ತ್ವೋಪದೇಶ  
ಮಾಡುವ ಆಚಾರ್ಯ, ಬೌದ್ಧಮತಾನುಯಾಯಿ.

**ಬೃಹಧರ್ಮ ಬುದ್ಧಧರ್ಮ** (ಫಂ) ಅಹಿಂಸಾರೂಪವಾದ  
ಬುದ್ಧನ ಧರ್ಮ.

**ಬೃಹಪುರಾಣ ಬುದ್ಧಪುರಾಣ** (ನಂ) ಬುದ್ಧದೇವನ ಅವತಾರ  
ಮತ್ತು ಚರಿತ್ರೆಯನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಒಂದು ಪುರಾಣ.

**ಬೃಹವತ್ ಬುದ್ಧವತ್** (ವಿಂ) ತಿಳಿದವನು, ಅರಿತವನು.  
ಬೃಹ (ಅವಗಮನೆ) "ಕ್ತವತ್" (೩-೨-೧೦೨) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
"ತೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ವತ್ -ವತೀ.

**ಬೃಹಿ ಬುದ್ಧಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜ್ಞಾನ, ಅರಿವು, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ಬೃಹ  
(ಅವಗಮನೆ) "ಕ್ತವತ್" (೩-೨-೧೦೪) | ಯಾವುದಾದ  
ರೊಂದು ಇಂದ್ರಿಯದಿಂದ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಗ್ರಹಿಸುವ  
ಶಕ್ತಿಯು ಬುದ್ಧಿಯೆನಿಸುವುದು. ಇದು ಆತ್ಮನಿಷ್ಠವಾದ  
ಆತ್ಮಗುಣ. ಬುದ್ಧಿಯು (1) ಸಾತ್ತ್ವಿಕ (2) ರಾಜಸ ಮತ್ತು  
(3) ತಾಮಸಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. (1) ಅಭ್ಯುದಯ  
ಸಾಧನಭೂತವಾದ ಪ್ರವೃತ್ತಿಧರ್ಮ ಮತ್ತು ಮೋಕ್ಷ  
ಸಾಧನಭೂತವಾದ ನಿವೃತ್ತಿಧರ್ಮಗಳನ್ನೂ ದೇಶಕಾಲಾದಿ  
ಗಳಿಗೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ ಕಾರ್ಯ ಮತ್ತು ಅಕಾರ್ಯ  
ಗಳನ್ನೂ ಶಾಸ್ತ್ರಾತಿಕ್ರಮ ಮತ್ತು ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ  
ಮಾಡುವ ಅನುಷ್ಠಾನಗಳನ್ನೂ (ಭಯಾಭಯ ಸ್ಥಾನ  
ಗಳನ್ನೂ) ಸಂಸಾರಯಾಥಾತ್ಮ್ಯ ಮತ್ತು ಮೋಕ್ಷ  
ಯಾಥಾತ್ಮ್ಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ ಬುದ್ಧಿಯು ಸಾತ್ತ್ವಿಕ.  
"ಪ್ರವೃತ್ತಿ ಚ ನಿವೃತ್ತಿ ಚ ಕಾರ್ಯಾಕಾರ್ಯೇ ಭಯಾಭಯೇ | ಬಂಧಂ  
ಮೋಕ್ಷಂ ಚ ಯಾ ವೇತ್ತಿ ಬುದ್ಧಿಃ ಸಾ ಪಾರ್ಥ ಸಾತ್ವಿಕೀ" ಗೀತಾ  
೧೮-೩೦ | (2) ಮೇಲೆ ಹೇಳಿದ ಪ್ರವೃತ್ತಿ ಮತ್ತು  
ನಿವೃತ್ತಿಧರ್ಮಗಳನ್ನೂ ಕಾರ್ಯಾಕಾರ್ಯಗಳನ್ನೂ  
ಭಯಾಭಯಗಳನ್ನೂ ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ (ಅಯಥಾರ್ಥವಾಗಿ)  
ಯಾವುದರಿಂದ ತಿಳಿಯುವನೋ ಅದು ರಾಜಸಬುದ್ಧಿ.  
"ಯಯಾ ಧರ್ಮಧರ್ಮಂ ಚ ಕಾರ್ಯಂ ಚಾಕಾರ್ಯಮೇವ ಚ | ಅಯಥಾಬತ್  
ಪ್ರಜಾನಾತಿ ಬುದ್ಧಿಃ ಸಾ ಪಾರ್ಥ ರಾಜಸೀ" ಗೀತಾ ೧೮-೩೧ |  
(3) ಧರ್ಮವನ್ನು ಅಧರ್ಮವನ್ನಾಗಿಯೂ ಅಧರ್ಮವನ್ನು  
ಧರ್ಮವನ್ನಾಗಿಯೂ ಹೀಗೆಯೇ ಸಕಲವಿಷಯಗಳನ್ನೂ  
ಯಥಾರ್ಥವಾಗಿ ತಿಳಿಯದೆ ವಿಪರೀತವಾಗಿ ಯಾವುದ-  
ರಿಂದ ತಿಳಿಯುವನೋ ಅದು ತಾಮಸಬುದ್ಧಿ. "ಅಧರ್ಮಂ  
ಧರ್ಮಮಿತಿ ಯಾ मन्यते तमसावृता | सर्वार्थान् विपरीतांश्च  
बुद्धिः सा पार्थ तामसी" ಗೀತಾ ೧೮-೩೨ |  
2. (ನೈಯಾಯಿಕ ಮತದಲ್ಲಿ) ಸಕಲವ್ಯವಹಾರಗಳಿಗೂ  
ಕಾರಣವಾದ ಜ್ಞಾನ. "ಅರ್ಥ ಬೃಹಾ ಶಬ್ದರಚನಾ"  
ಎಂಬ ನ್ಯಾಯದಿಂದ ಸಕಲಶಬ್ದಪ್ರಯೋಗಕ್ಕೂ  
ಕಾರಣವಾದ ಜ್ಞಾನವೇ ಬುದ್ಧಿ. "ಸರ್ವವ್ಯವಹಾರಹೇತುಜ್ಞಾನಿ"



ಬುದ್ಧಿ: " ತಂ ಸಂ । ಈ ಬುದ್ಧಿಯು (1) ಸ್ಮೃತಿ: (2) ಅನುಭವ: ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಅನುಭವವು (1) ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಮ್ ಮತ್ತು (2) ಅನುಮಿತಿ: ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಇಂದ್ರಿಯಾರ್ಥಸನ್ನಿಹಿತದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಜ್ಞಾನವು ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ, ಇದು (1) ಛಾಣಜಮ್, (2) ರಾಸನಮ್, (3) ಶ್ರಾವಣಮ್, (4) ಚಾಕ್ಷುಷಮ್, (5) ಸ್ಪರ್ಶನಮ್ ಮತ್ತು (6) ಮಾನಸಮ್ ಎಂದು ಆರು ವಿಧ. [" ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ " ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಅನುಮಿತಿಯು (1) ಕೇವಲಾನ್ವಯಿ, (2) ಕೇವಲವ್ಯತಿರೇಕಿ ಮತ್ತು (3) ಅನ್ವಯವ್ಯತಿರೇಕಿ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. 3. ಶೀಘ್ರವಾಗಿ ಗ್ರಹಿಸುವ ಶಕ್ತಿ, ಚುರುಕು ಬುದ್ಧಿ. " ಶಾಸ್ತ್ರೇಷ್ವವ್ಯಾಹತಾ ಬುದ್ಧಿ: ಮೌರ್ಖಿ ಧನುಷಿ ಚಾತತಾ " ರಘುಂ ೧-೧೯ । 4. ವಿಷಯಗಳ ಪರಿಜ್ಞಾನ, ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲೂ ಒಳ್ಳೆಯ ಪರಿಚಯ. " ಬೃಹಬೃಹಿ-ಮತಾಂ ಲೋಕೇ ನಾಸ್ತೀಗಮ್ಯ ಹಿ ಕಿಂಚನ " ಪಞ್ಚತಂ ೪-೪೬ । 5. ಮನಸ್ಸು, ಚಿತ್ತ. " ಪುರಾಣಮಿತ್ಯೇವ ನ ಸಾಧು ಸರ್ವಂ ನ ಚಾಪಿ ಕಾವ್ಯಂ ನ ವಮಿತ್ಯವದ್ಯಮ್ । ಸಂತ: ಪರೀಕ್ಷಾನ್ಯತರದ್ಭಜಂತೇ ಮೂಢ: ಪರಪ್ರತ್ಯಯನೇಬುದ್ಧಿ: " ಮಾಲಂ ೧-೨ । 6. ಅಭಿಪ್ರಾಯ, ಭಾವನೆ, ತೋಚುವುದು. 7. ನಂಬಿಕೆ, ವಿಶ್ವಾಸ. " ಅನಯೇವ ಬುದ್ಧಯಾ ತಪೋವನಗತೋಽಪಿ ಘಾತಿಸ್ತಪಸ್ವೀ ನಂದಬಂಶೀಯ: ಸರ್ವಾರ್ಥ-ಸಿದ್ಧಿ: " ಮುಡ್ರಾಂ ೧ । 8. ಪ್ರಜ್ಞೆ, ಕುಗ್ಗಿಹೋಗಿದ್ದು ಮತ್ತೆ ಬಂದ ಜ್ಞಾನ. 9. ಧರ್ಮಪುರುಷನ ಹದಿಮೂರು ಮಂದಿ ಪತ್ನಿಯರಲ್ಲೊಬ್ಬಳು. 10. ಸಾಂಖ್ಯತತ್ತ್ವಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡನೆಯದಾದ ಮಹತ್ತತ್ತ್ವ. " ಮಹತ್ತತ್ತ್ವಮಿತಿ ಪ್ರೋಕ್ತ ಬುದ್ಧಿತತ್ತ್ವಂ ತದ್ವಚ್ಯತೇ " ।

**ಬುದ್ಧಿಯ ಐದು ಗುಣಗಳು:** (1) ಇಷ್ಟಾನಿಷ್ಠ-ವಿಪತ್ತಿ: (2) ವ್ಯವಸಾಯ:, (3) ಸಮಾಧಿತಾ, (4) ಸಂಶಯ: ಮತ್ತು (5) ಪ್ರತಿಪತ್ತಿ: । (1) ಇಷ್ಟವಾದ ಮತ್ತು ಅನಿಷ್ಟವಾದ ವೃತ್ತಿಗಳ ನಾಶ. ಇದು ನಿದ್ರಾರೂಪ ವಾದುದು. (2) ಉತ್ಸಾಹ. (3) ಚಿತ್ತಸ್ಥೈರ್ಯ (ಚಿತ್ತ ವೃತ್ತಿ ನಿರೋಧ). (4) ಸಂಶಯ ಮತ್ತು (5) ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಮಾಣವೃತ್ತಿ.

**ಬುದ್ಧಿಯ ಸಪ್ತ (7) ಗುಣಗಳು:** (1) ಶುಶ್ರೂಷಾ, (2) ಶ್ರವಣಮ್, (3) ಗ್ರಹಣಮ್, (4) ಛಾರಣಮ್, (5) ಉಪಾಹಾರ:, (6) ಅರ್ಥವಿಜ್ಞಾನಮ್ ಮತ್ತು (7) ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನಮ್ ।

**ಬುದ್ಧಿಯ ನಾಶಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಮೂಲಗಳು:** (1) ಶोक: (ದುಃಖ), (2) ಕ್ರೋಧ: (ಕೋಪ), (3) ಲೋಭ: (ಅತಿಯಾದ ಆಸೆ), (4) ಕಾಮ: (ಆಸೆ, ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆ), (5) ಮೋಹ: (ಕೃತ್ಯಾಕೃತ್ಯ ವಿವೇಕವಿಲ್ಲ ದಿರುವಿಕೆ), (6) ಪರಾಸುತಾ, (7) ಇರ್ಷ್ಯಾ (ಅಸಹನೆ),

(8) ಮಾನ: (ಗರ್ವ), (9) ವಿಚಿಕಿತ್ಸಾ (ಸಂಶಯ), (10) ಹಿಸಾ, (11) ಅಸೂಯಾ (ಇತರರ ಗುಣದಲ್ಲಿ ದೋಷ ಹೇಳುವುದು) ಮತ್ತು (12) ಜುಗುಪ್ಸಾ (ಪರನಿಂದ).

**ಬುದ್ಧಿಗಮ್ಯ ಬುದ್ಧಿಗಮ್ಯ (ವಿಂ)** ಬುದ್ಧಿಯಿಂದ ಹೊಂದ ಲ್ಪಡುವ, ಜ್ಞಾನದಿಂದ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ.

**ಬುದ್ಧಿಜೀವಿನ್ ಬುದ್ಧಿಜೀವಿನ್ (ವಿಂ)** ಜ್ಞಾನಬಲದಿಂದ ಬದುಕುವವನು, ವಿಚಾರಶೀಲ, ಯುಕ್ತಾಯುಕ್ತ ವಿವೇಚನೆ ಮಾಡುವವನು, ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಸಿದ್ಧವಾಗದಿರುವುದನ್ನು ತಿರಸ್ಕರಿಸುವವನು. ಬುದ್ಧಿಜೀವಿತ್ವಂ ।

**ಬುದ್ಧಿತತ್ತ್ವ ಬುದ್ಧಿತತ್ತ್ವ (ನಂ)** ಸಾಂಖ್ಯತತ್ತ್ವಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡನೆಯದಾದ ಮಹತ್ತತ್ತ್ವ. " ಮಹತ್ತತ್ತ್ವಮಿತಿ ಪ್ರೋಕ್ತ ಬುದ್ಧಿತತ್ತ್ವಂ ತದ್ವಚ್ಯತೇ " ।

**ಬುದ್ಧಿಪೂರ್ವ ಬುದ್ಧಿಪೂರ್ವ (ವಿಂ)** ಉದ್ದೇಶಪೂರ್ವಕವಾದ, ಬೇಕೆಂದು ಮಾಡಿದ. ಬುದ್ಧಿ: ಪೂರ್ವಂ ಯಸ್ಮಿನ್ ಕರ್ಮಣಿ । (ಅವ್ಯಂ) -ಪುರ:ಸರಮ್ -ಪುರ:ಸರಮ್, -ಪೂರ್ವಕಮ್ -ಪೂರ್ವ ಕಮ್. ಉದ್ದೇಶಪೂರ್ವಕವಾಗಿ. " ದುರಾಕ್ಷಸವಿಷ್ವಂಸ-ಮಕಾರ್ಷ ಬುದ್ಧಿಪೂರ್ವಕಮ್ " ಭದ್ರಂ ೧-೧೨೮ ।

**ಬುದ್ಧಿಭ್ರಮ ಬುದ್ಧಿಭ್ರಮ (ಫಂ)** ಬುದ್ಧಿಯು ಕೆರಳುವುದು, ಚಿತ್ತವು ವಿಚಾರ ಹೊಂದುವುದು, ಹುಚ್ಚು ಹಿಡಿಯುವುದು. ಬುದ್ಧಿ: ಭ್ರಮ: । -ಭ್ರಮಣಮ್ -ಭ್ರಮಣಮ್. ಭ್ರಮ (ಚಲನೆ) ಭಾವೇ " ಲ್ಯುಟ್ " (೩-೩-೧೧೫) ।

**ಬುದ್ಧಿಮತ್ ಬುದ್ಧಿಮತ್ (ವಿಂ)** 1. ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿ, ಚುರುಕು ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. 2. ಉನ್ನತಮಟ್ಟದ ಜ್ಞಾನವುಳ್ಳ ವನು. ಬುದ್ಧಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ-ಪ್ರಶಂಸಾಃ " ಮತುಪ್ " (೪-೨-೯೪) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ " ಡಿಪ್ " (೪-೧-೬) । -ಮತೀ -ಮತೀ. " ಬೃಹ-ಬೃಹಿಮತಾಂ ಲೋಕೇ ನಾಸ್ತೀಗಮ್ಯ ಹಿ ಕಿಂಚನ " ಪಞ್ಚತಂ ೪-೪೬ ।

**ಬುದ್ಧಿಮತ್ತಾ ಬುದ್ಧಿಮತ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಬುದ್ಧಿವಂತನಾಗಿರುವಿಕೆ, ಚುರುಕುಬುದ್ಧಿಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. ಬುದ್ಧಿಮತೋ ಭಾವ: " ತಲ್ " (೪-೧-೧೧೯) । " ತ್ವ: " (೪-೧-೧೧೯) । -ಮತ್ವಮ್ -ಮತ್ವಮ್.

**ಬುದ್ಧಿಯೋಗ ಬುದ್ಧಿಯೋಗ (ಫಂ)** ಮುಖ್ಯವಾದ ಫಲದಲ್ಲಿ ತ್ಯಾಗಬುದ್ಧಿ ಮತ್ತು ಸಿದ್ಧಿ ಅಸಿದ್ಧಿಗಳಲ್ಲಿ ಸಮತ್ವಬುದ್ಧಿ ಹೊಂದುವುದು. ಫಲಸಂಗವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸದೆ ಮಾಡುವ ಕರ್ಮಾಚರಣೆಯಿಂದ ದುಃಖರೂಪವಾದ ಸಂಸಾರಬಂಧ ನಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗುವನು. ಬುದ್ಧಿಯೋಗದಿಂದ ಸಾಂಸಾರಿಕ ದುಃಖನಿವೃತ್ತಿ ಹೊಂದಿ ಮೋಕ್ಷ ಸಂಪಾದನೆಯಾಗುವುದು. " ಯೋಗಸ್ಯ: ಕುರು ಕರ್ಮಣಿ ಸಂಗಂ ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ ಧನಞ್ಜಯ । ಸಿದ್ಧಿಃ ಸಿದ್ಧಯೋ: ಸಮೋ ಭೂತ್ವಾ ಸಮತ್ವಂ ಯೋಗ ಉಚ್ಯತೇ ॥ ದೂರೇಣ ಹೃದಯಂ



ಕರ್ಮ ಬುದ್ಧಿಯೋಗಾದನಂಜಯ । ಬುದ್ಧಿ ಶರಣಮನ್ವಿಚ್ಛ ಕೃಪಣಾಃ  
ಫಲಹೇತವಃ ॥ ಬುದ್ಧಿಯುಕ್ತೋ ಜಹಾತೀಹ ತಮಃ ಸುಕೃತದುಷ್ಕೃತೇ ।  
ತಸ್ಮಾತ್ಯೋಗಾಯ ಯುಜ್ಯಸ್ವ ಯೋಗಃ ಕರ್ಮಸು ಕೌಶಲಮ್ ” ಗೀತಾ  
೨-೪೮-೫೦ ।

**ಬುದ್ಧಿಲಕ್ಷಣ ಬುದ್ಧಿ ಲಕ್ಷಣ (ನಂ)** ಉತ್ತಮ ಬುದ್ಧಿಯ  
ಲಕ್ಷಣ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯ ಗುರುತು.

**ಬುದ್ಧಿಶಾಸ್ತ್ರ ಬುದ್ಧಿ ಶಸ್ತ್ರ (ವಿಂ)** ಜ್ಞಾನಮೆಂಬ ಆಯುಧ  
ವುಳ್ಳ, ಬುದ್ಧಿಯಿಂದಲೇ ಎಲ್ಲಾ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನೂ ಸಾಧಿ  
ಸುವ. ಬುದ್ಧಿಶಾಸ್ತ್ರಂ ಯಸ್ಯ । “ಬುದ್ಧಿಶಾಸ್ತ್ರಃ ಪ್ರಕೃತ್ಯಜ್ಞೋ  
ಘನಸಂವೃತಿಕಂಚುಕಃ । ಚಾರೇಕ್ಷಣೋ ದ್ವಿತಮುಖೋ ಪುರುಷಃ ಕೋಽಪಿ  
ಪಾರ್ಥಿವಃ ” ಮಾಘಂ ೨-೮೨ ।

**ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿನ್ ಬುದ್ಧಿ ಶಾಲಿನ್ (ವಿಂ)** ಜ್ಞಾನದಿಂದ ಪ್ರಕಾಶಿ  
ಸುವ, ಚುರುಕುಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ, ಉನ್ನತಮಟ್ಟದ ಅರಿವುಳ್ಳ.

ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿನ್-ಶಾಲ (ಕಲ್ಪನೆ) “ಗಿಣಿಃ” (೩-೨-೭೮) ।

**ಬುದ್ಧಿಸಹಾಯ ಬುದ್ಧಿ ಸಹಾಯ (ಪುಂ)** ಆಮಾತ್ಯ, ಮಂತ್ರಿ,  
ಬುದ್ಧಿಯಿಂದ ಹಿತವನ್ನು ಮಾಡುವ ಸಲಹೆಗಾರ. ಬುದ್ಧಿ  
ಸಹಾಯಃ ಬುದ್ಧಿ ಸಹಾಯಿ ವಾ ।

**ಬುದ್ಧಿಹೀನ ಬುದ್ಧಿ ಹೀನ (ವಿಂ)** ಬುದ್ಧಿಯಿಲ್ಲದವನು.

**ಬುದ್ಧಿ-ತ್ರಯ ಬುದ್ಧಿ ತ್ರಯ (ನಂ)** ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯ.  
ಬುದ್ಧಿಶಾಸ್ತ್ರಃ ಇಂದ್ರಿಯಮ್ (1) ಶ್ರೋತ್ರ, (2) ತ್ವಕ್, (3) ನೇತ್ರ,  
(4) ಜಿಹ್ವೆ ಮತ್ತು (5) ಸ್ಪರ್ಶ ಇವು ಐದೂ ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯ  
ಗಳು. “ಶ್ರೋತ್ರಂ ತ್ವಕ್ ಚಕ್ಷುಷಿ ಜಿಹ್ವಾ ನಾಸಿಕಾ ಚೈವ ಪಂಚಮಿ ।  
ಬುದ್ಧಿ-ಇಂದ್ರಿಯಾಣಿ ” ಮನುಂ ।

**ಬುದ್ಧಿ ಬುದ್ಧಿ (ಪುಂ)** 1. ನೋರೆ, ನೀರಿನ ಮೇಲಿನ ಗುಳ್ಳೆ.  
ಬುದ್ಧಿ ಇತ್ಯವ್ಯಕ್ತಧ್ವನಿ ಬುದ್ಧಿತಿ ಕರೋತಿ-ಬುದ್ಧಿರ್ (ನಿಶಾಮನೆ)  
“ಕಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೫) । “ಸತತಂ ಜಾತವಿನ್ಯಾಃ  
ಪಯಸಾಮಿವ ಬುದ್ಧಿಃ ಪಯಸಿ” ಪಿಞ್ಚತಂ ೫-೭ । 2.  
ಗರ್ಭದ ಒಂದು ಅವಸ್ಥೆ, ಐದು ದಿನಗಳ ಕಾಲ ಬೆಳೆದ  
ಗರ್ಭ, ಐದು ದಿನಗಳು ತುಂಬಿದ ಗರ್ಭ.

**ಬುಧ ಬುಧ (ಪುಂ)** 1. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. ಬುಧ (ಅವಗಮನೆ)  
“ಕಃ” (೩-೧-೧೩೫) । “ಯದಿ ಶಮಗಿರೋ ವೈಯಾಸಿಕಯೋ  
ಬುಧಶ್ಚ ಸಮಾಗಮಃ” ಪ್ರಬೋಧಂ ೪-೧೨ ॥ 2. ದೇವತೆ.  
“ನಿರೀಯ ಯಸ್ಯ ಕ್ಷಿತಿರಕ್ಷಿಣಃ ಕಥಾಸ್ತಥಾದ್ರಿಯಂತೇ ನ ಬುಧಾಃ  
ಸುಧಾಮಪಿ ” ನೆಫಂ ೧-೧ । 3. ಬುಧಗ್ರಹ, ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ  
ಪತ್ನಿ ತಾರೆಯಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರನಿಂದ ಜನಿಸಿದ ಮಗ. “ಕ್ರೂರಗ್ರಹಃ  
ಸಕೇತುಃ ಚಂದ್ರಮಸಂಪೂರ್ಣಮಂಡಲಮಿದಾನಿಮ್ । ಅಭಿಭವಿತುಮಿಚ್ಛತಿ  
ಬಲಾತ್ ರಕ್ಷತೇನ ತು ಬುಧಯೋಗಃ ” ಮುದ್ರಾಂ ೧-೬ । “ಅಪಿ  
ಲಕ್ಷಿತಮಧ್ವಾನಂ ಬುಧಃ ನ ಬುಧೋಪಮಃ ” ರಘುಂ ೧-೪೭ ।

**ಬುಧನ ಉತ್ಪತ್ತಿ :** [ಚತುರ್ಮುಖ ಬ್ರಹ್ಮನ ಪುತ್ರ  
ನಾದ ಅತ್ರಿವಂಹರ್ಷಿಯ ಮಗ ಚಂದ್ರನನ್ನು ಬ್ರಹ್ಮನು  
ಸಮಸ್ತ ಓಷಧಿ ದ್ವಿಜ ಮತ್ತು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಿಗೆ ಅಧಿಪತಿ  
ಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದನು. ಇದರಿಂದ ಗರ್ವಿತನಾದ ಚಂದ್ರನು  
ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಪತ್ನಿಯಾದ ತಾರೆಯನ್ನು ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ  
ಅಪಹರಿಸಿದನು. ಬ್ರಹ್ಮ ಮೊದಲಾದ ಸಕಲ ದೇವತೆಗಳು  
ಎಷ್ಟು ಹೇಳಿದರೂ ಅವಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟುಕೊಡಲಿಲ್ಲ. ಕೊನೆಗೆ  
ಚಂದ್ರನ ಸಾಹಾಯ್ಯಕ್ಕೆ ಬಂದ ಶುಕ್ರಶಿಷ್ಯರಾದ ಅಸುರ  
ರಿಗೂ ದೇವತೆಗಳಿಗೂ ಘೋರವಾದ ಯುದ್ಧ ನಡೆದು  
ಜಗತ್ತೆಲ್ಲವೂ ತಲ್ಲಣಿಸಿಹೋಗಲು ಬ್ರಹ್ಮನು ಎಲ್ಲರನ್ನೂ  
ಸಮಾಧಾನಗೊಳಿಸಿ ತಾರೆಯನ್ನು ಬೃಹಸ್ಪತಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸುವಂತೆ  
ಚಂದ್ರನಿಗೆ ಹೇಳಿ ಅವಳನ್ನು ಬೃಹಸ್ಪತಿಯೊಡನೆ ಸೇರಿಸಿ  
ದನು. ಆಗ ಚಂದ್ರನಿಂದ ಗರ್ಭ ಧರಿಸಿದ್ದ ತಾರೆಯು  
ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಮಾತಿನಂತೆ ಗರ್ಭವನ್ನು ಒಂದು ಜೊಂಡು  
ಹುಲ್ಲಿನ ಪೊದೆಯಲ್ಲಿ ಬಿಟ್ಟಳು. ಬಿಟ್ಟಕೂಡಲೆ ಅದು ದಿವ್ಯ  
ತೇಜಸ್ಸಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ಶಿಶುವಾಗಿ ಎಲ್ಲರ ಮನಸ್ಸನ್ನೂ  
ಆಕರ್ಷಿಸಿತು. ಈ ಮಗುವು ಯಾರಿಗೆ ಸೇರಿದ್ದೆಂದು ಎಲ್ಲರೂ  
ಬಲಾತ್ಕಾರವಾಗಿ ಕೇಳಲು ತಾರೆಯು ಚಂದ್ರನ ಮಗನೆಂದು  
ಲಜ್ಜೆಯಿಂದ ಹೇಳಿ ಒಪ್ಪಿಕೊಂಡಳು. ಆಗ ಎಲ್ಲರೂ ಬುಧನು  
ಚಂದ್ರನ ಮಗನೆಂದು ನಿಶ್ಚಯಿಸಿದರು. ] ವಿಷ್ಣುಪುಂ ೪-೬ ।  
ಬುಧನಿಗೆ ಮಿಥುನ ಮತ್ತು ಕನ್ಯಾರಾಶಿಗಳು ಕ್ಷೇತ್ರ. ಕನ್ಯಾ  
ರಾಶಿಯು ಉಚ್ಚ. ಮೀನರಾಶಿಯು ನೀಚ. ಇವನಿಗೆ ರವಿ  
ಶುಕ್ರರು ಮಿತ್ರರು. ಚಂದ್ರನು ಶತ್ರು. ಬುಧನು ಶುಭ  
ಗ್ರಹ. ವೈಶ್ಯ. ಪಿತೃವರ್ಣವುಳ್ಳವನು. ಬುಧಗ್ರಹದ  
ದಶೆಯ ಕಾಲ ಹದಿನೇಳು (17) ವರ್ಷಗಳು.

**ಬುಧಗ್ರಹದ ದಶೆಯಲ್ಲಿ ತನ್ನ (ಸ್ವ) ಮತ್ತು  
ಇತರ ಗ್ರಹಗಳ ಅಂತರ್ದಶಾ (ಭುಕ್ತಿ) ಮಾನ :**

| ಭುಕ್ತಿ       | ನರ್ಷ | ಮಾಸಗಳು | ದಿನಗಳು |
|--------------|------|--------|--------|
| ಸ್ವಭುಕ್ತಿ    | 2    | 4      | 27     |
| ಕೇತು ಭುಕ್ತಿ  | 0    | 11     | 27     |
| ಶುಕ್ರ ಭುಕ್ತಿ | 2    | 10     | 0      |
| ರವಿ ಭುಕ್ತಿ   | 0    | 10     | 6      |
| ಚಂದ್ರ ಭುಕ್ತಿ | 1    | 5      | 0      |
| ಕುಜ ಭುಕ್ತಿ   | 0    | 11     | 27     |
| ರಾಹು ಭುಕ್ತಿ  | 2    | 6      | 18     |
| ಗುರು ಭುಕ್ತಿ  | 2    | 3      | 6      |
| ಶನಿ ಭುಕ್ತಿ   | 2    | 8      | 9      |



ತನ್ನ (ಸ್ವ) ಮತ್ತು ಇತರ ಗ್ರಹಗಳ ದಶಗಳಲ್ಲಿ  
ಬುಧನ ಅಂತರ್ದಶಾ (ಭುಕ್ತಿ) ಮಾನ :

| ದಶೆ      | ವರ್ಷ | ಮಾಸಗಳು | ದಿನಗಳು |
|----------|------|--------|--------|
| ರವಿದಶೆ   | 0    | 10     | 6      |
| ಚಂದ್ರದಶೆ | 1    | 5      | 0      |
| ಕುಜದಶೆ   | 0    | 11     | 27     |
| ರಾಹು:ದಶೆ | 2    | 6      | 18     |
| ಗುರುದಶೆ  | 2    | 3      | 6      |
| ಶನಿದಶೆ   | 2    | 8      | 9      |
| ಸ್ವದಶೆ   | 2    | 4      | 27     |
| ಕೇತುದಶೆ  | 0    | 11     | 27     |
| ಶುಕ್ರದಶೆ | 2    | 10     | 0      |

ಬೃಹ - ಅವಗಮನೆ (ಭಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸಂ) । ಬೋಧತಿ ।

ಬೃಬೋಧ ಬೃಬುಧತು: ಬೃಬುಧು: । ಬೋಧಿತಾ । ಬೋಧಿಷ್ಯತಿ । ಬೋಧತು ।  
ಅಬೋಧತ್ । ಬೋವೇತ್ । ಇತ್ಯಾದಿ. ತಿಳಿದುಕೊ, ಅರಿ.

ಕರ್ಮಣಿ:—ಬೃಹ್ಯತೇ । ಬೃಬುಧೇ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗಿಣಿ:—ಬೋಧಯತಿ । ಬೋಧಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬ್ರಹ್ಮ, -ಆಸ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಬೃಹ - ಅವಗಮನೆ (ದಿವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) । ಬೃಹ್ಯತೇ ।

ಬೃಬುಧೇ । ಬೋಧಾ । ಬೃಹ್ಯತಾಮ್ । ಅಬೃಹ್ಯತ । ಬೃಹ್ಯತೇ ।  
ಅಬೋಧಿ, ಅಬೃಹ್ । ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ತಿಳಿದುಕೊ, ಅರಿ. “ವಿಮ್ಬ-  
ವಿಮ್ಬತಾವಯವಂ ಪುಮಾನಿತಿ ಕ್ರಮಾದಮ್ ನಾರದ ಇತ್ಯಬೋಧಿ  
ಸ:” ಮಾಘಂ ೧-೩ । “ನಾಬುಧ ಕಲ್ಪದ್ರುಮತಾಂ ವಿಹಾಯ ಜಾತಂ  
ತಮಾತ್ಮನೃಪಿಪತ್ರವೃಕ್ಷಮ್” ರಘುಂ ೧೪-೪೮ । 2. ನಿರ್ದಿ-  
ಯಿಂದೇಳು, ಎಚ್ಚರಗೊಳ್ಳು. “ತೇ ಚ ಪ್ರಾಪುರುಷವಂತಾ ಬೃಬುಧೇ  
ಚಾದಿಪುರುಷ:” ರಘುಂ ೧೦-೬ । 3. ಪ್ರಜ್ಞೆಹೊಂದು,  
ಜೇತಿಸಿಕೊ. “ಶನೇರಬೋಧಿ ಸುಗ್ರೀವ: ಸೌಲುಷ್ವಾತ್ಕಣ-  
ನಾಸಿಕಮ್” ಭದ್ರಂ ೧೫-೫೭ ।

ಕರ್ಮಣಿ:—ವೇದಿಸಂತೆ ರೂಪಗಳಾಗುವುವು.

ಗಿಣಿ:—ಬೋಧಯತೀत्याದಿರೂಪಾಣಿ ।

ಕೃತು:—ಬೋಧವ್ಯಮ್ । ಬೋಧನೀಯಮ್ । ಬೋಧ್ಯಮ್ । ಬೃಹ: ।  
ಬೃಹವಾನ್ । ಬೃಹ್ಯಮಾನ: । ಬೋಧುಮ್ । ಬೃಹಮ್ । ಬೋಧನಮ್ ।  
ಬೃಹ್ವಾ । ವಿಬೃಹ್ಯ । “ಬೋಧವ್ಯಂ ಕಿಮಿವ ಹಿ ಯತ್ವಯಾ ನ  
ಬೃಹಮ್” ಭದ್ರಂ ೧೦-೭೪ ।

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು :

(1) ಉ+ಬೃಹ=ಉಬೃಹ್ಯತೇ । ಉಬೋಧನಮ್ । ಉಬೃಹ್ ।  
ಉಬೋಧಯತ್ । 1. ಎಚ್ಚರಗೊಳ್ಳು, ನಿರ್ದಿಯಿಂದೇಳು.

2. ಜೇತನಗೊಳಿಸು, ಬದುಕಿಸು, ಉಸಿರಾಡುವಂತೆ ಮಾಡು.  
3. ಉತ್ತೇಜನ ಕೊಡು, ಕೆರಳಿಸು, ಹುರಿದುಂಬಿಸು.

(2) ನಿ+ಬೃಹ=ನಿಬೋಧತಿ । ನಿಬೋಧತು । 1. ತಿಳಿ,  
ಅರಿತುಕೊ. “ಸಖಿ ತದೀಯಾ ತಮುವಾಚ ವರ್ಣಿನಂ ನಿಬೋಧ  
ಸಾಧೌ ತವ ಚೇತ್ ಕುತೂಹಲಮ್” ಕುಮಾಂ ೫-೫೨ । 2. ಕೇಳು,  
ಗಮನಿಸು, ಅರಿಸು.

(3) ಕು+ಬೃಹ=ಕುಬೋಧ: । ಕುಬೋಧನಮ್ । ಕುಬೃಹ್  
ದಿಂದ ತಿಳಿದುಕೊ. “ನಿಸರ್ಗದುಬೋಧಮಬೋಧವಿಕ್ಲವಾ: ಕ್ವ  
ಭೂಪತೀನಾಂ ಚರಿತಂ ಕ್ವ ಜಂತವ:” ಕಿರಾಂ ೧-೬ ।

(4) ಪ್ರ+ಬೃಹ=ಪ್ರಬೃಹ: । ಪ್ರಬೋಧನಮ್ । ಪ್ರಬೋಧಿತ: ।  
ಪ್ರಬೋಧಯತ್ । 1. ಎಚ್ಚರಗೊಳ್ಳು, ನಿರ್ದಿಯಿಂದೇಳು, “ಪ್ರಥಮ-  
ಪ್ರಬೃಹನದರಾಜಸುತಾವದೇನೇವ ತುಹಿನಿವೃತ್ತಿನಾ” ಮಾಘಂ  
೧-೩೦ । 2. ಅರಳು, ವಿರಾಸಹೊಂದು. “ಸಾಂಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯಾ  
ಸ್ಥಲಕಮಲಿನೀಂ ನ ಪ್ರಬೃಹಾಂ ನ ಸುಪ್ತಾಂ” ಮೇಘಂ ೨-೨೭ ।  
3. ತಿಳಿಸು, ಜ್ಞಾಪಿಸು. “ತಮಮನಂದತ್ ಪ್ರಥಮಂ ಪ್ರಬೋಧಿತ:  
ಪ್ರಜೇಶ್ವರ: ಶಾಸನಹಾರಿಣಾ ಹರೇ:” ರಘುಂ ೩-೬೮ ।

(5) ಪ್ರತಿ+ಬೃಹ=ಪ್ರತಿಬೃಹ: । ಪ್ರತಿಬೋಧಿತ: । ಪ್ರತಿ-  
ಬೋಧ್ಯಮಾನ: । 1. ನಿರ್ದಿಯಿಂದ ಎಚ್ಚರಗೊಳ್ಳು, ನಿರ್ದಿ-  
ಯಿಂದೇಳು. 2. ಅರಳು, ವಿರಾಸಹೊಂದು. “ಅಪ್ರತಿ-  
ಬೃಹೋಪಿ ಚೂತಪ್ರಸವೋತ್ತರ ಬಂಧನಭಂಗಸುರಭಿರ್ಭವತಿ” ಶಾಕುಂ ೬ ।  
3. ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸು, ನಿರ್ದಿಯಿಂದೆಬ್ಬಿಸು. 4. ತಿಳಿಸು,  
ಜ್ಞಾಪಿಸು. “ಪ್ರಥಮಂ ಸಾರಜ್ಞಾಕ್ಷಯಾ ಪ್ರಿಯಯಾ ಪ್ರತಿಬೋಧ್ಯ-  
ಮಾನಮಪಿ ಸುಪ್ತಮ್” ಶಾಕುಂ ೬-೭ ।

(6) ಸಮ್+ಬೃಹ=ಸಂಬೃಹ: । ಸಂಬೋಧನಮ್ ।  
1. ಸಂಚರಿಸುವು, ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಕರೆ. “ಸಂಬೃಹೋ ಶಾಕಲ್ಯ-  
ಸ್ಯೇತಾವನಾರ್ಥೇ” ಪಾಂ ಸುಂ ೧-೧-೧೬ । 2. ತಿಳಿ, ಅರಿ.  
“ಸಮ್ಭುತ್ಸಿಂಹಾ: ಸುನಯನಯನೇವಿವಿಧಿಪಾಸಿಹಿತಾನಿ” ಭದ್ರಂ  
೧೧-೩೦ । 3. ತಿಳಿಸು, ಜ್ಞಾಪಿಸು. “ಮೃಗ್ಯಶ್ಚ ದರ್ಮಾಡ್ಕುರ-  
ನಿವ್ಯಪೇಕ್ಷಾಸ್ತವಾಗತಿಜ್ಞಂ ಸಮಬೋಧಯನ್ಮಾಮ್” ರಘುಂ ೧೩-೨೫ ।

ಬೃಹಚಕ್ರ ಬುಧಚಕ್ರ (ನಂ) ಬುಧಗ್ರಹವು ಬೇರೆ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ  
ಸಂಚರಿಸುವಾಗ ಸುಖಾದಿ ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಶುಭಾಶುಭ ಫಲ  
ಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಚಕ್ರ. ಬೃಹಸ್ಯ ಚಕ್ರಮ್ ।

ಬೃಹಚಾರ ಬುಧಚಾರ (ಪುಂ) ಬುಧಗ್ರಹವು ದ್ವಾದಶ ರಾಶಿ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವಿಕೆ.

ಬೃಹಜನ ಬುಧಜನ (ಪುಂ) ಪಂಡಿತ. ವಿದ್ವಾಂಸ.

ಬೃಹತನಯ ಬುಧತನಯ, -ಸುತ-ಸುತ (ಪುಂ) ಪುರೂರ  
ವಸ್ತು, ವೈವಸ್ವತಮನುವಿನ ಮಗಳಾದ ಇಳಿಯಲ್ಲಿ  
ಜನಿಸಿದ ಬುಧನ ಮಗ.



**ಬುಧವಾರ ಬುಧವಾರ, -ವಾಸರ -ವಾಸರ** (ಪುಂ) ಬುಧನು ಅಧಿಪತಿಯಾಗಿರುವ ವಾರ (ದಿವಸ). ಬುಧಸ್ಯ ವಾರ: ವಾಸರೋ ವಾ । ಬುಧವಾರ ಹುಟ್ಟಿದವನು ಗುಣಶಾಲಿ. ಇತರರ ಗುಣಗಳನ್ನೂ ತಿಳಿಯುವ ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು. ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ದಕ್ಷನು. ವಿಲಾಸಸ್ವಭಾವದವನು. ಬುದ್ಧಿ ವಂತ. ವಿಧೇಯ. ಮೃದುಸ್ವಭಾವದವನು. ಸುಂದರಾಕಾರ ವುಳ್ಳವನು. "ಗುಣಿ ಗುಣಜ: ಕುಶಲಿ ಕ್ರಿಯಾದೌ ವಿಲಾಸಶಾಲಿ ಮತಿಮಾನ್ ವಿನೀತ: । ಮೃದುಸ್ವಭಾವ: ಕಮನೀಯಮೃತಿ: ಬುಧಸ್ಯ ವಾರೆ ಪ್ರಮಖೋ ಮನುಷ್ಯ:" ।

**ಬುಧಾ ಬುಧಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಟಾಮಾಂಸಿ. ಬುಧ (ಅವಗಮನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೧೩೫) ।

**ಬುಧಾನ ಬುಧಾನ** (ಪುಂ) 1. ವೇದವನ್ನು ಕಲಿಸುವ ಗುರು. ಬೋಧಯತಿ—ಬುಧಿರ್ (ಬೋಧನೆ) "ಆನಕ್" (೩ಂ ೨-೯೦) । (ವಿಂ) 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದವನು, ವಿವೇಚನೆ ಮಾಡುವವನು. ಯಾಕ್ತಾಯುಕ್ತ ಪರಿಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು. 3. ಬುದ್ಧಿವಂತ. ಚೆರುಕುಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. 4. ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಮಾತಾಡುವವನು. 5. ತತ್ತ್ವೋಪದೇಶ ಮಾಡುವವನು. "ಬುಧಾನಸ್ತು ಗುರೌ ವಿಜ್ಞೇ" ಮೇದಿಂ ।

**ಬುಧಿತ ಬುಧಿತ** (ವಿಂ) ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಬುಧ (ಅವಗಮನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । ಸ್ವಾದಿಂ ಬುಧ ಧಾತುವು ಸೇರಿಟ್ಟ. ದಿವಾಂ ಧಾತುವು ಅನಿಟ್ಟ.

**ಬುಧಿಲ ಬುಧಿಲ** (ವಿಂ) ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. ಬುಧ (ಅವಗಮನೆ) "ಕಿಲಕ್" (೩ಂ ೧-೫೬) ।

**ಬುಧ್ನ ಬುಧ್ನ** (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷದ ಮೂಲ ಭಾಗ, ಮರದ ಬೇರು. ಬಂಧನಾತಿ — ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ನಕ್" ಬುಧಿ ಆದೇಶಶ್ಚ (೩ಂ ೩-೫) । 2. ಪಾತ್ರೆಯ ತಳಭಾಗ. 3. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. "ಬುಧ್ನೋ ಗಿರಿಶಮೂಲಯೋ: " ಹೇಮಂ ।

**ಬುಭುಕ್ಷಾ ಬುಭುಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಊಟಮಾಡಲು ಇಚ್ಛೆ. ಹಕ್ಕಿವು. ಭೋಕ್ತುಮಿಚ್ಛಾ—ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ:) + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨) ।

**ಬುಭುಕ್ಷಿತ ಬುಭುಕ್ಷಿತ** (ವಿಂ) ಹಸಿದಿರುವವನು, ಊಟ ಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. ಬುಭುಕ್ಷಾಸ್ಯ ಸಂಜ್ಞಾತಾ "ಇತಕ್" (೫-೨-೩೬) । "ಅಜಿಗತ: ಸುತಂ ಹಂತುಮುಪಾಸರ್ಪ- ದ್ವುಭುಕ್ಷಿತ:" ಮನುಂ ೧೦-೧೦೫ ।

**ಬುಭುಕ್ತ ಬುಭುಕ್ತ** (ವಿಂ) ಹಸಿದಿರುವವನು, ಊಟ ಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. ಭೋಕ್ತುಮಿಚ್ಛು:—ಭುಜ (ಪರಿ- ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ:) + ಸನ್ "ಃ:" (೩-೨-೧೬೮) ।

**ಬುಭುಕ್ಷಾ ಬುಭುಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ತಿಳಿಯಲು ಆಸೆ. ಬೋಧುಮಿಚ್ಛಾ—ಬುಧ (ಅವಗಮನೆ) + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೨-೧೦೨) ।

**ಬುಭುಕ್ತು ಬುಭುಕ್ತು** (ವಿಂ) ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ತಿಳಿಯಲು ಆಸೆಯುಳ್ಳ. ಬೋಧುಮಿಚ್ಛು:—ಬುಧ (ಅವಗಮನೆ) + ಸನ್ "ಃ:" (೩-೨-೧೬೮) । "ಬುಭುಕ್ತವೋ ದ್ರುತಂ ಸೀತಾಂ ಭುತ್ಸಿಧ್ವಂ ಪ್ರಬ್ರವೀಮಿ ವ:" ಮೃದಿಂ ೭-೧೦೦ ।

**ಬುಭೂಷಾ ಬುಭೂಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಗಲು ಆಸೆ, 2. ಇರಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಭವಿತುಮಿಚ್ಛಾ—ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨) ।

**ಬುಭೂಷು ಬುಭೂಷು** (ವಿಂ) 1. ಆಗಲು ಆಸೆಪಡುವ. 2. ಇರಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಭವಿತುಮಿಚ್ಛು:—ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) + ಸನ್ "ಃ:" (೩-೨-೧೬೮) । "ಪ್ರಮುಖಮುಖಮುಖನತ್ರಯಸ್ಯ ಯ: ಶಿರೋಽತಿರಾಗಾದೃಶಮಂ ಚಿಕಿತ್ಸಿ:" ಮಾಘಂ ೧-೪೯ ।

**ಬುಸ ಬುಸ** (ನಂ) 1. ಜಳ್ಳು ತನೆಯ ಹುಲ್ಲು, ತಿರುಳಿಲ್ಲದ, ಧಾನ್ಯದ ಕಡ್ಡಿ. ಬುಸ್ಯತೇ ತತ್ಸೃಜ್ಯತೇ—ಬುಸ (ತತ್ಸರ್ಗ) (೩-೨-೧೩೫) । 2. ಮೊಸರಿನ ಮೇಲಿನ ತೆಳುವಾದ ಭಾಗ.

**ಬುಸ್ತ ಬುಸ್ತ** (ನಂ) 1. ಹಲಸು ಮೊದಲಾದ ಹಣ್ಣಿನ ಸಿಪ್ಪೆ ಹುಲ್ಲು ದಿಂಡು ಮೊದಲಾದುದು (ಬಿಸಾಡುವ ವಸ್ತು). ಬುಸ (ಅನಾದರೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಪಾತ್ರೆಯಲ್ಲಿ ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮಾಂಸ.

**ಬೃಹಜಾತಕ ಬೃಹಜಾತಕ** (ನಂ) ವರಾಹಮಿಹಿರಾ ಚಾರ್ಯರಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಒಂದು ಜ್ಯೋತಿಷ ಗ್ರಂಥ.

**ಬೃಹತ್ಕಕಾ ಬೃಹತ್ಕಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೇರೀವಾದ್ಯ, ನಗಾರಿ.

**ಬೃಹತ್ ಬೃಹತ್** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಬೃಹ (ವೃದ್ಧಿ) "ಅತಿ:" (೩ಂ ೨-೮೪) । "ಸ ಭೂಮಿ ವಿಶ್ವತೋ ವೃತ್ವಾ ಅತ್ಯತಿಷ್ಠ- ದೃಶಾಙ್ಗುಲಮ್" "ಅಗೋರಣೀಯಾನ್ ಮಹತೋ ಮಹೀಯಾನ್" ಇತ್ಯಾದಿ ಶ್ರುತಿವಾಕ್ಯಗಳಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನ ಸರ್ವಾತಿಶಯ ಮಹಿಮೆಯು ವರ್ಣಿತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಎಲ್ಲಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬೃಹತ್ತಾದವನು. "ವಿಪುಲಂ ಪರಮವ್ಯೋಮ ಮಹಿಮ್ನಾ ಚುಲಕೀಕೃತಮ್ । ಯೇನ ನಾಮ್ನಾ ಬೃಹತ್ ಸ ಸ್ಯಾತ್ ಷಡ್ಗಂಶ್ರ ಬೃಹತ್ವದ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । "ಅಣುಬೃಹತ್ ಕೃಶ: ಸ್ಥೂಲ:" ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ) 2. ದೊಡ್ಡದಾದ, ದಪ್ಪವಾದ. "ವಿತರತಿ ಬೃಹದರಮಾ ಪರ್ವತ: ಪ್ರೀತಿಮಕ್ಷಣೋ:" ಮಾಲತೀಂ ೯-೫ । 3. ಅಗಲವಾದ, ವಿಸ್ತಾರವಾದ, ವಿಶಾಲವಾದ. "ದಿಲಿಪಸೂನೋ: ಸ ಬೃಹದ್ಭುಜಾಂತರಂ ಪ್ರವಿಶ್ಯ ಭೀಮಾಸುರ- ಶೋಣಿತೋಚಿತ:" ರಘುಂ ೩-೫೪ । 4. ಉದ್ದವಾದ, ನೀಳ



ವಾದ. "ಧಾತುತಾಮಾಧರ: ಪ್ರಾಣದೇವದಾಃ ಬೃಹದ್ಬುಜ:" ಕುಮಾಂ ೬-೫೧. 5. ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. "ಬೃಹತ್ಸಹಾಯ: ಕಾರ್ಯಾಂತಿ ಕೋದೀಯಾನಪಿ ಗಚ್ಛತಿ" ಮಾಘಂ ೨-೧೦೦. 6. ಧಾರಾಳವಾದ, ಹೇರಳವಾದ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ತೀಪ್" (೪-೧-೬). ಬೃಹತೀ ಬೃಹತೀ.

ಬೃಹತಿಕಾ ಬೃಹತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತರೀಯ, ಹೊದೆಯುವ ವಸ್ತ್ರ. ಬೃಹತ್ಯೇವ "ಕನ್" (೫-೪-೬) 1.

ಬೃಹತೀ ಬೃಹತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಾತು. ಬೃಹ (ಬೃಹಿ) "ಅತಿ:" (೩ಂ ೨-೮೪) 1. "ತೀಪ್" (೪-೧-೬) 1. 2. ಹೆಗ್ಗುಳ್ಳದ ಗಿಡ, ಬೀಜ ಬದನೆ ಗಿಡ. 3. ದೊಡ್ಡ ವೀಣೆ. 4. ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರೋಕ್ತವಾದ ಒಂಬತ್ತನೆಯ ಛಂದಸ್ಸು. "ಗಾಯತ್ರಿಯುಗನುಷ್ಠುಚ ಬೃಹತೀ ಪಙ್ಕ್ತಿರೇವ ಚ" ವೃಂ ೨೦. 5. ನಾರದರ ವೀಣೆ. 6. ಉತ್ತರೀಯ, ಹೊದೆಯುವ ವಸ್ತ್ರ. 7. ನೀರು ತುಂಬಿಡುವ ಪಾತ್ರೆ. "ಬೃಹತೀ ಕ್ಷುಧವಾತೀಯಾಂ ಅಂದೋವಸನಭೇದಯೋ: 1. ಮಹತ್ಯಾ ವಾಚಿ ವರ್ಧನ್ಯಾಮ್" ಹೇಮಂ 1.

ಬೃಹಿತ ಬೃಹಿತ (ನಂ) ಅನೆಯ ಗರ್ಜನೆ, ಅನೆಯ ಕೂಗು. ಬೃಹಿ (ಬೃಹಿ) "ಕತ:" (೩-೩-೧೧೪) 1.

ಬೃಹತಕಾ ಬೃಹತಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗುಣಾತ್ಮಕವಿ ರಚಿತವಾದ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ.

ಬೃಹತಾಯ ಬೃಹತಾಯ (ವಿಂ) ದೊಡ್ಡ ದೇಹವುಳ್ಳವನು. ಬೃಹನ್ ಕಾಯೋ ಯಸ್ಯ 1.

ಬೃಹತುಕ್ಷಿ ಬೃಹತುಕ್ಷಿ (ವಿಂ) ದೊಡ್ಡ ಹೊಟ್ಟೆಯುಳ್ಳ ವನು. ಬೃಹನ್ ಕುಕ್ಷಿಯಸ್ಯ 1.

ಬೃಹತಿಕಾ ಬೃಹತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗುರು ಶುಂಠಿ. ಬೃಹನ್ ತಿಕತೋ ರಸೋ ಯಸ್ಯ 1.

ಬೃಹತ್ಪಾದ ಬೃಹತ್ಪಾದ (ಪುಂ) 1. ಅಲದ ಮರ. (ವಿಂ) 2. ದೊಡ್ಡ ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳವನು.

ಬೃಹತ್ಸಂಹಿತಾ ಬೃಹತ್ಸಂಹಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವರಾಹಮಿಹಿರಾ ಚಾರ್ಯ ವಿರಚಿತ ಒಂದು ಜ್ಯೋತಿಷ ಗ್ರಂಥ.

ಬೃಹತ್ಸಂಹಿತಾ ಬೃಹತ್ಸಂಹಿತಾ (ಪುಂ) 1. ಗಜ, ಆನೆ. ಬೃಹತ್ಸಂಹಿತಾ ಅಸ್ಯ 1. (ವಿಂ) 2. ದೊಡ್ಡ ದೇಹವುಳ್ಳವನು.

ಬೃಹದಾರಣ್ಯಕ ಬೃಹದಾರಣ್ಯಕ (ನಂ) ವೇದದ ಒಂದು ಭಾಗ, ಒಂದು ಉಪನಿಷತ್ತು.

ಬೃಹದ್ಗೋಲ ಬೃಹದ್ಗೋಲ (ನಂ) ಕಲ್ಲಂಗಡಿ ಹಣ್ಣು.

ಬೃಹದ್ಬಾಹು ಬೃಹದ್ಬಾಹು (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 2. ಹರಳು ಗಿಡ.

ಬೃಹನ್ನಲಾ ಬೃಹನ್ನಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರ್ಜುನ. ಪಾಂಡವರ ಅಜ್ಞಾತವಾಸ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ವಿರಾಟನ ಅರಮನೆಯಲ್ಲಿ ನಾಟ್ಯ ಚಾರ್ಯನಾಗಿದ್ದ ಅರ್ಜುನನ ಹೆಸರು.

ಬೃಹದ್ರಥ ಬೃಹದ್ರಥ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. 2. ಜರಾಸಂಧನ ತಂದೆ.

ಬೃಹಸ್ಪತಿ ಬೃಹಸ್ಪತಿ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆಗಳ ಗುರು, ದೇವತೆಗಳ ಪುರೋಹಿತ. ಬೃಹತಾ ಪತಿ: - ಸುಡಾಗಮ: ತಲೋಪಶ್ಚ (ವಾಂ ೬-೧-೧೫೭) 1. 2. ಒಂದು ಗ್ರಹ. ಬೃಹಸ್ಪತಿಗೆ ಧನುಸ್ಸು ಮತ್ತು ಮೀನರಾಶಿಗಳು ಕ್ಷೇತ್ರ. ಕರ್ಕಾಟಕ ರಾಶಿಯು ಉಚ್ಚ, ಮಕರರಾಶಿ ನೀಚಸ್ಥಾನ. ರವಿ ಚಂದ್ರ ಮತ್ತು ಕುಜರು ಮಿತ್ರರು. ಶನಿ ಸಮ. ಬುಧ ಶುಕ್ರರು ಶತ್ರುಗಳು. ಗುರುವು ಶುಭಗ್ರಹ, ಶ್ವೇತವರ್ಣದ ದೇಹವುಳ್ಳವನು. ಪುರುಷಗ್ರಹ. ಬೃಹಸ್ಪತಿ ಗ್ರಹದ ದಶಾಕಾಲ ಹದಿನಾರು (16) ವರ್ಷಗಳು.

ಬೃಹಸ್ಪತಿ (ಗುರು) ಗ್ರಹದ ದಶೆಯಲ್ಲಿ ತನ್ನ (ಸ್ವ) ಮತ್ತು ಇತರ ಗ್ರಹಗಳ ಅಂತರ್ದರ್ಶಾ (ಭುಕ್ತಿ) ಮಾನ:

| ಭುಕ್ತಿ       | ವರ್ಷ | ಮಾಸ | ದಿನಗಳು |
|--------------|------|-----|--------|
| ಸ್ವಭುಕ್ತಿ    | 2    | 1   | 18     |
| ಶನಿ ಭುಕ್ತಿ   | 2    | 6   | 12     |
| ಬುಧ ಭುಕ್ತಿ   | 2    | 3   | 6      |
| ಕೇತು ಭುಕ್ತಿ  | 0    | 11  | 6      |
| ಶುಕ್ರ ಭುಕ್ತಿ | 2    | 8   | 0      |
| ರವಿ ಭುಕ್ತಿ   | 0    | 9   | 18     |
| ಚಂದ್ರ ಭುಕ್ತಿ | 1    | 4   | 0      |
| ಕುಜ ಭುಕ್ತಿ   | 0    | 11  | 6      |
| ರಾಹು ಭುಕ್ತಿ  | 2    | 4   | 24     |

ತನ್ನ (ಸ್ವ) ಮತ್ತು ಇತರ ಗ್ರಹಗಳ ದಶೆಗಳಲ್ಲಿ ಗುರುವಿನ ಅಂತರ್ದರ್ಶಾ (ಭುಕ್ತಿ) ಮಾನ:

| ದಶೆ       | ವರ್ಷ | ಮಾಸ | ದಿನಗಳು |
|-----------|------|-----|--------|
| ರವಿ ದಶೆ   | 0    | 9   | 18     |
| ಚಂದ್ರ ದಶೆ | 1    | 4   | 0      |
| ಕುಜ ದಶೆ   | 0    | 11  | 6      |
| ರಾಹು ದಶೆ  | 2    | 4   | 24     |
| ಸ್ವ ದಶೆ   | 2    | 1   | 18     |
| ಶನಿ ದಶೆ   | 2    | 6   | 12     |
| ಬುಧ ದಶೆ   | 2    | 3   | 6      |
| ಕೇತು ದಶೆ  | 0    | 11  | 6      |
| ಶುಕ್ರ ದಶೆ | 2    | 8   | 0      |



**ಬೃಹಸ್ಪತಿವಾರ ಬೃಹಸ್ಪತಿವಾರ, -ವಾಸರ -ನಾಸರ(ಪುಂ)**  
ಗುರುವಾರ, ಬೃಹಸ್ಪತಿಯು ಅಧಿಪತಿಯಾಗಿರುವ ವಾರ.

**ಬೇರ ಚೀರ (ನಂ)** ಎಗ್ರಹ, ಪ್ರತಿಮೆ, ಮೂರ್ತಿ. "ಪ್ರತಿ-  
ಚಂದ್ರ: ಪ್ರತಿನಿಧಿ: ಬೇರಂ ಚ ಪ್ರತಿರೂಪಕಮ್" ವೇಜಂ 1.

**ಬೆಜಿಕ ಚೈಚಿಕ (ವಿಂ)** 1. ಬೀಜದಿಂದ ಉಂಟಾದ, ರೇತಸ್ಸಿನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ. ಬೀಜೇನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (4-1-99).  
2. ಧಾನ್ಯರೂಪ ಬೀಜದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ.

**ಬೆಡಾಲ ಚೈಡಾಲ (ವಿಂ)** ಬೆಕ್ಕಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಮಾರ್ಜಾಫ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಬೆಡಾಲಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಘ್" (4-3-120).

**ಬೆಂಬ ಚೈಂಬ (ವಿಂ)** ಬಿಂಬ ಸಂಬಂಧವಾದ,

**ಬೆಂಬಿಕ ಚೈಂಬಿಕ (ವಿಂ)** ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ, ಕಾಮಾಸಕ್ತ, ಪ್ರಣಯಿ. "ದಾಕ್ಷಿಣ್ಯಂ ನಾಮ ಬಿಂಬೋಠಿ ಬೆಂಬಿಕಾನಾಂ ಕುಲವ್ರತಮ್" ಮಾಲಂ 4-14.

**ಬೆಲ್ವ ಚೈಲ್ವ (ವಿಂ)** 1. ಬಿಲ್ವವೃಕ್ಷಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಬಿಲ್ವ ಪತ್ರ ಮರದ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಬೆಲ್ವಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಘ್" (4-3-120). (ನಂ) 2. ಬಿಲ್ವಫಲ, ಬಿಲ್ವಪತ್ರಕಾಯಿ.

**ಬೊಕ್ಕಾಣ ಚೋಕ್ಕಾಣ (ಪುಂ)** ಕುದುರೆಯು ಹುರುಳಿ ಮೊದಲಾದ ಆಹಾರವನ್ನು ತಿನ್ನುವ ಚೀಲ. "ಯುಗಾಸನ-  
ಪ್ರಸೇವೇ ತು ದ್ವಿ ಬೊಕ್ಕಾಣಪ್ರಸೇಹಕೌ" ವೇಜಂ 1.

**ಬೋ ಚೋಧ (ಪುಂ)** 1. ವಿವೇಕ, ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ಅರಿವು. ಬುಧ (ಅವಗಮನೆ) "ಘ್" (3-3-14). "ಘೃತ್ವಾ ಬೋಜಲೇರಬೋಧಹೂಲಂ ತಲ್ಲೋಮಜನ್ಯಂ ರಜ:" ಪ್ರಬೋಧಂ 4-23.  
2. ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಅರ್ಥಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಗ್ರಹಿಸುವುದು. "ಬಾಲಾನಾಂ ಸುಖಬೋಧಾಯ ಕ್ರಿಯತೇ ತರ್ಕಸಂಗ್ರಹ:" ತಂ ಸಂ. "ಅಭಿತಿಬೋಧಾಚರಣಪ್ರಚಾರಣೇದಶಾಸ್ತ್ರತತ್ರ: ಪ್ರಣಯನುಪಾಧಿಭಿ:" ನೇಷಂ. 3. ಎಚ್ಚರದಿಂದಿರುವುದು, ಜಾಗೃತಿ, ಎಚ್ಚತ್ತಿರುವುದು. 4. ಜೈತನ್ಯ. 5. ಉಪದೇಶಿಸುವುದು, ಬುದ್ಧಿವಾದ, ಸಲಹೆ. 6. ಶಿಕ್ಷಣ, ಬೋಧನೆ.

**ಬೋಧಕ ಚೋಧಕ (ವಿಂ)** 1. ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯುಂಟುಮಾಡುವ, ಜ್ಞಾನವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಬೋಧಯತಿ — ಬುಧ (ಅವಗಮನೆ) + ಣಿच् "ಫಲ್" (3-1-133). "ವರ್ಣಿ: ಪದಂ ಪ್ರಯೋಗಾಹಿನಿವಿತೈಕಾರ್ಯಬೋಧಕಾ:" ಸಾಂ ದಂ 2-4. 2. ಉಪದೇಶಿಸುವ, ಶಿಕ್ಷಣ ಕೊಡುವ. 3. ನಿವೇದಿಸುವ, ಅರುಹುವ, ಶ್ರುತಪಡಿಸುವ. 4. ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸುವ, ಎಬ್ಬಿಸುವ. 5. ಸಲಹೆ ಕೊಡುವ. 6. ಜ್ಞಾಪಿಸುವ, ನೆನಪುಕೊಡುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಠಾಪ್" (4-1-4). ಬೋಧಿಕಾ ಬೋಧಿಕಾ.

**ಬೋಧಕ ಚೋಧಕರ (ಪುಂ)** 1. ರಾಜನನ್ನು ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ನಿಧಿಯಿಂದ ಎಬ್ಬಿಸುವವನು. ಬೋಧಂ ಕರೋತಿ — ಡುಕ್ರಾ (ಕರಣಂ) "ಠ:" (3-2-20). (ವಿಂ) 2. ಉಪದೇಶಿಸುವವನು, ಶಿಕ್ಷಣಕೊಡುವವನು. 3. ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವವನು. 4. ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸುವ, ಎಬ್ಬಿಸುವ.

**ಬೋಧನ ಚೋಧನ (ನಂ)** 1. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ಬುಧ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114). "ಪರಿಚಯಂ ಚಲಲಕ್ಷ್ಯನಿಪಾತನೇ ಭಯರೂಪೋಶ್ಚ ತದಿಜ್ಞಿತಬೋಧನಮ್" ರಘುಂ 9-49. 2. ಉಪದೇಶ, ಶಿಕ್ಷಣ. ಬುಧ (ಅವಗಮನೆ) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114). 3. ಎಬ್ಬಿಸುವುದು, ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸುವುದು. "ಸಮಯೇನ ತೇನ ಚಿರಸುಪ್ತಮನೋಭವಬೋಧನಂ ಸಮ-  
ಬೋಧಯತ" ಮಾಘಂ 9-24. 4. ನಿವೇದಿಸುವುದು, ಅರುಹುವುದು, ವಿಜ್ಞಾಪಿಸುವುದು, ಶ್ರುತಪಡಿಸುವುದು. 5. ತಿಳಿಸುವುದು, ಸೂಚಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 6. ಉಪದೇಶಿಸುವ, ಶಿಕ್ಷಣಕೊಡುವ. 7. ನಿವೇದಿಸುವ, ಶ್ರುತಪಡಿಸುವ. 8. ಎಬ್ಬಿಸುವ, ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸುವ. 9. ಸೂಚಿಸುವ. ಬುಧ ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (3-1-134).

**ಬೋಧನಿ ಚೋಧನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ತಿಪ್ಪಲಿ, ಹಿಪ್ಪಲಿ. ಬೋಧನೀನಯಾ — ಬುಧ (ಅವಗಮನೆ) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114). "ಬೋಧನೀ ಗಂಧಪಿಪ್ಪಲಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ. 2. ಕಾರ್ತಿಕ ಶುದ್ಧ ಏಕಾದಶಿ.

**ಬೋಧನೀಯ ಚೋಧನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಬೋಧಿಸಲ್ಪಡುವ, ತಿಳಿಯಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ತಿಳಿಯಪಡಿಸಬೇಕಾದ, 3. ತಿಳಿಯಪಡಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಬುಧ (ಅವಗಮನೆ) "ಅನೀಯರ್" (3-2-96). "ತವ್ಯ:" ಬೋಧಿತವ್ಯ: ಬೋಧಿತವ್ಯ: ಬುಧ + ಣಿच् "ತವ್ಯ:" (3-1-96). ಬೋಧಯಿತವ್ಯ: ಬೋಧಯಿತವ್ಯ: "ಅಸ್ಮದಭಿಪ್ರಾಯಮುಪನಿಷ-  
ದ್ವಿವೇಕೇನ ಬೋಧಯಿತವ್ಯಾ" ಪ್ರಬೋಧಂ 6.

**ಬೋಧಯತ್ ಚೋಧಯತ್ (ವಿಂ)** 1. ಉಪದೇಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ಶಿಕ್ಷಣಕೊಡುತ್ತಿರುವ, ಕಲಿಸುತ್ತಿರುವ. ಬುಧ (ಅವಗಮನೆ) + ಣಿच् "ಶತ್" (3-2-124). 2. ಹಿತವನ್ನು ತಿಳಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸಲಹೆ ಕೊಡುತ್ತಿರುವ. "ರಾವಣಂ ಗಮಯ ಪ್ರೀತಿ ಬೋಧಯಂತಂ ಹಿತಾಹಿತಮ್" ಮೃದ್ವಿಂ 6-62. 3. ನಿವೇದಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅರುಹುತ್ತಿರುವ, ವಿಜ್ಞಾಪಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಎಬ್ಬಿಸುತ್ತಿರುವ, ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. 5. ಸೂಚಿಸುತ್ತಿರುವ. 6. ತಿಳಿಯಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೇಳುತ್ತಿರುವ. "ಮಂಜಿತ್ತಾ ಮದಗತಪ್ರಾಣಾ ಬೋಧಯಂತ: ಪರಸ್ಪರಮ್" ಗೀತಾ 10-9.



**ಬೋಧನ ಬೋಧಾನ (ಪುಂ)** 1. ಬೃಹಸ್ಪತಿ, ಗುರು.

2. ವಿದ್ವಾಂಸ, ಪಂಡಿತ. (ವಿಂ) 3. ಬುದ್ಧಿಮಂತ, ಜಾಣ.

ತಿಳಿದವನು. ಬೃಹ (ಅವಗಮನೆ) "ಶಾನಿ" (3-2-124)।

**ಬೋಧಿ ಬೋಧಿ (ಪುಂ)** 1. ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿಮರ. ಬೃಹ್ಮತೇ

—ಬೃಹ (ಅವಗಮನೆ) "ಇನ್" (3-1-119)। 2. ಜ್ಞಾನ.

ತಿಳಿವಳಿಕೆ. 3. ಬೌದ್ಧರ ಸಮಾಧಿ. 4. ಬುದ್ಧದೇವ.

5. ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ. 6. ಉತ್ತಮಜ್ಞಾನ, ಸಂಪೂರ್ಣ

ಜ್ಞಾನ. (ವಿಂ) 7. ಜ್ಞಾನಿ, ತಿಳಿದವನು. "ಬೋಧಿ:

ಸಮಾಧಿ ಚ ಕುಕ್ಕುಟಾಶ್ವತ್ಥಬುದ್ಧಿಃ" ನಾನಾರ್ಥರಂ ।

**ಬೋಧಿತ ಬೋಧಿತ (ವಿಂ)** 1. ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೂಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಬೃಹ (ಅವಗಮನೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102) ।

2. ಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನೆನಪುಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸ್ಮರಿಸ್ಯತಿ

ತ್ವಾಂ ನ ಸ ಬೋಧಿತೋಽಪಿ ಸನ್" ಶಾಕ್ತಂ 4-1 । 3. ಎಚ್ಚರಿಸ

ಲ್ಪಟ್ಟ, ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಮದಪಠನಿನದ್ವಿಬೋಧಿತೋ

ರಾಜಹಂಸಃ ಸುರಗಜ ಇವ ಗಾಂಧೀ ಸೇಕತಂ ಸುಪ್ರತೀಕಃ" ರಘುಂ

4-94 । 4. ನಿವೇದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಜ್ಞಾಪಿಸ

ಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಬೋಧಿತ್ವ ಬೋಧಿತ್ವ (ಪುಂ)** ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿಮರ.

ಬೋಧಿಸ್ತಾಸಿ ದ್ವಮಶ್ವ ।

**ಬೋಧಿಸತ್ವ ಬೋಧಿಸತ್ವ (ಪುಂ)** 1. ಬುದ್ಧದೇವ. ಬೋಧಿ-

ಜ್ಞಾನಿ ಸತ್ವಂ ಯಸ್ಯ । "ಬುದ್ಧಸ್ತು ಶ್ರೀಧನಃ ಶಾಸ್ತಾ ಬೋಧಿ-

ಸತ್ವೋ ವಿನಾಯಕಃ" ವೈಜಂ । 2. ಸರಿಯಾದ ಜ್ಞಾನ

ಸಂಪಾದನೆಯ ಪ್ರಯತ್ನದಲ್ಲಿರುವ ಬೌದ್ಧಸಂನ್ಯಾಸಿ.

"ಏವಂವಿಧೇವಿಲಸಿತೇರತಿಬೋಧಿಸತ್ವಃ" ಮಾಲತೀಂ 10-21 ।

**ಬೋಧಿ ಬೋಧಿ (ವಿಂ)** ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ, ಅರಿಯಲ್ಪಡುವ.

ಬೃಹ (ಅವಗಮನೆ) "ಞಿತ್" (3-1-124) । ಕರ್ತಂ "ತವ್ಯಃ"

(3-1-96) । ಬೋಧಯಾಮ್ ಬೋಧಯಾಮ್. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ

ತಿಳಿಯಬೇಕಾದ.

**ಬೌದ್ಧ ಬೌದ್ಧ (ಪುಂ)** 1. ಬುದ್ಧದೇವನಿಂದ ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ

ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನಮಾಡುವವನು, -ತಿಳಿದವನು.

ಬುದ್ಧೇನ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಶಾಸ್ತ್ರಮಧೀತೇ ವೇದ ವಾ "ಅನ್" (4-2-49) ।

2. ಬುದ್ಧನ ಮತಾನುಯಾಯಿ, ಬುದ್ಧನ ಮತವನ್ನು

ಆಶ್ರಯಿಸಿರುವವನು. ಬೌದ್ಧರು (1) ಮಾಘ್ಯಮಿಕಾ;

(2) ಯೋಗಾಚಾರಾಃ; (3) ಸೌತ್ರಾಂತಿಕಾಃ ಮತ್ತು (4) ವೈಶಾ-

ಫಿಕಾಃ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಬೌದ್ಧವರ್ಣನ"

ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] (ನಂ) 3. ಬೌದ್ಧಶಾಸ್ತ್ರ. ಬುದ್ಧೇನ

ಪ್ರೋಕ್ತಮ್ "ಅನ್" (4-3-101) । (ವಿಂ) 4. ಬುದ್ಧನ

ಸಂಬಂಧವಾದ. 5. ಬುದ್ಧಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಬುದ್ಧಸ್ಯ

ಬುದ್ಧೇವಾ ಇದಮ್ "ಅನ್" (4-3-120) ।

**ಬೌದ್ಧವರ್ಣನ ಬೌದ್ಧ ದರ್ಶನ (ನಂ)** ಬೃಹಸ್ಪತಿಯಿಂದ ರಚಿತ

ವಾಗಿ ಬುದ್ಧದೇವನಿಂದ ಪ್ರಚಾರಕ್ಕೆ ಬಂದ ಒಂದು ದರ್ಶನ.

ಬೌದ್ಧರಿಗೆ ವೇದವು ಪ್ರಮಾಣವಲ್ಲ. ವೇದವಿಹಿತ ಕರ್ಮ

ಗಳಲ್ಲಿ ನಂಬಿಕೆಯಿಲ್ಲ. ಆದುದರಿಂದ ಇದೊಂದು ನಾಸ್ತಿಕ

ದರ್ಶನ. ಬೌದ್ಧಸಿದ್ಧಾಂತದ ತತ್ತ್ವಗಳಾದ ಶೂನ್ಯ

ವಾದವೇ ಮೊದಲಾದವು ಉಪನಿಷತ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ಖಂಡಿಸ

ಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಸಿದ್ಧಾಂತವು ಅನಾದಿಕಾಲದಿಂದಲೂ

ಪ್ರಚಾರದಲ್ಲಿತ್ತೆಂದು ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ. ಬುದ್ಧನು

"ತಾಪಾತ್ ವೇಧಾಂವ ನಿಕಟಾತ್ ಸುವರ್ಣಮಿವ ಪರಿಶೀಲತಃ । ಪರೀಕ್ಷ

ಮಿಸ್ತವಃ ಗ್ರಾಹ್ಯಂ ನ ತು ಮದಾಕೃತ್ಯಗೌರವಾತ್" ಎಂದು ಹೇಳಿರು

ವನು. ಬುದ್ಧನ ನಿರ್ವಾಣದ ಅನಂತರ ಮಹಾಸ್ಥವಿರರೇಂಬ

ವಿದ್ವಾಂಸರು ಬುದ್ಧನ ಉಪದೇಶಗಳನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿಟ್ಟರು.

ಅವರಲ್ಲಿ ಮತಭೇದದಿಂದ ತ್ರಿಪಿಟಕಸಂಪ್ರದಾಯವು

ಪ್ರಾರಂಭವಾಯಿತು. ಈ ಪಿಟಕತ್ರಯಕ್ಕೂ ಸಂಸ್ಕೃತದಲ್ಲಿ

ಸೂತ್ರೋಪದೇಶ ವಿನಯಭಾಷಾ ಮತ್ತು ಅಭಿಧರ್ಮ

ವಿಭಾಷಾ ಎಂಬ ಮೂರು ಗ್ರಂಥಗಳು ರಚಿತವಾದುವು.

ಮಾಧ್ಯಮಿಕರು ಮತ್ತು ಯೋಗಾಚಾರರು

"ಅಭಿಧರ್ಮವಿಭಾಷಾ" ಸಂಪ್ರದಾಯದವರು.

ಸೌತ್ರಾಂತಿಕರು "ಸೂತ್ರೋಪದೇಶ" ಸಂಪ್ರದಾಯಕ್ಕೆ

ಸೇರಿದವರು. ವೈಭಾಷಿಕರು "ವಿನಯಭಾಷಾ"

ಸಂಪ್ರದಾಯಸ್ಥರು.

(1) ಮಾಧ್ಯಮಿಕರ ಮತ—ಬಾಹ್ಯವೂ ಇಲ್ಲ

ಅಂತರವೂ ಇಲ್ಲವೆಂಬ ಶೂನ್ಯವಾದ ಇವರದು.

(2) ಯೋಗಾಚಾರರು—ಬಾಹ್ಯ ವಸ್ತುಗಳೆಲ್ಲ

ವನ್ನೂ ವಿಜ್ಞಾನವೆಂಬ ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸಿ ವೈರಾಗ್ಯೋಪ

ದೇಶದಲ್ಲಿರುವವರು.

(3) ಸೌತ್ರಾಂತಿಕರು ಮತ್ತು ವೈಭಾಷಿಕರು—

ಬಾಹ್ಯಾಂತರ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಒಪ್ಪಿಕೊಂಡು ಅವುಗಳಿಗೆ

ಕ್ಷಣಿಕತ್ವವನ್ನು ಹೇಳುವರು. ಇವರದು ಕ್ಷಣಿಕವಾದ.

ಈ ಕ್ಷಣಿಕವಾದಿಗಳು ವಸ್ತುಗಳು ಸ್ಥಿರವೆಂಬ ಭಾವನೆಯಿಂದ

ದುಃಖಮಯಸಂಸಾರಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗುವುದೆಂದೂ

ಕ್ಷಣಿಕತ್ವವನ್ನು ಹೇಳಿದರೆ ಪರಮವೈರಾಗ್ಯಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗು

ವುದೆಂದೂ ಹೇಳುವರು. ಆದರೆ ಪ್ರತಿ ವಸ್ತುವೂ ಅನಿತ್ಯ

ಅಶಾಶ್ವತ ಮತ್ತು ನಶ್ವರ ಎಂಬ ಭಾವನೆಯಿಂದ ವೈರಾಗ್ಯ

ಹುಟ್ಟಬಹುದೆಂದು ವಸ್ತುಸ್ಥಿರವಾದಿಗಳ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

ಸೌತ್ರಾಂತಿಕರೂ ವೈಭಾಷಿಕರೂ ಬಾಹ್ಯಾಂತರವಸ್ತು

ಗಳನ್ನು ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುವುದರಿಂದ ಇವರನ್ನು ಸರ್ವಾಸ್ತಿ

ವಾದಿಗಳು ಎನ್ನುವರು. ಯೋಗಾಚಾರ ಮತದಲ್ಲಿ ಬಾಹ್ಯ

ವಸ್ತುಗಳು ಇಲ್ಲವೆಂದರೂ ಮಾಧ್ಯಮಿಕ ಮತದಲ್ಲಿ ಸರ್ವ



ವಸ್ತುಗಳು ಇಲ್ಲವೆಂದರೂ ಈ ಶೂನ್ಯವಾದವು ಪರಮಾರ್ಥ ದೃಷ್ಟಿಯಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ. ವ್ಯವಹಾರದೃಷ್ಟಿಯಲ್ಲಿ ಯಾವುದನ್ನೂ ನಿರಾಕರಿಸುವುದಿಲ್ಲ.

ಬೌದ್ಧರಿಗೆ ಬುದ್ಧನೇ ದೇವರು. ಪ್ರಪಂಚವೆಲ್ಲವೂ ನಶ್ವರವಾದುದು, ದುಃಖ ಸಮುದಯ ಮಾರ್ಗ ಮತ್ತು ನಿರೋಧಗಳೆಂಬ ನಾಲ್ಕು ಆರ್ಯಸತ್ಯಸಂಪ್ರದಾಯಕ್ಕೆ ಸೇರಿದ ತತ್ತ್ವಗಳು. ಇವರಿಗೆ ಸರ್ವಾಸ್ತಿವಾದವು ಇಷ್ಟವಾದುದು. ಪ್ರಪಂಚವೆಲ್ಲವೂ ದುಃಖಮಯವಾದುದರಿಂದ ಅದೇ ದುಃಖ. ಈ ದುಃಖವು ರೂಪ ವಿಜ್ಞಾನ ವೇದನಾ ಸಂಜ್ಞಾ ಮತ್ತು ಸಂಸ್ಕಾರಗಳೆಂದು ಐದು ಸ್ಕಂಧಗಳಾಗಿರುವವು. ಈ ಸ್ಕಂಧಪಂಚಕವು ದುಃಖಮೂಲ ಮತ್ತು ದುಃಖಮಿಶ್ರವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಇದೊಂದು ದುಃಖರಾಶಿ. ಬೌದ್ಧರಿಗೆ ಈ ಸ್ಕಂಧಪಂಚಕಗಳಿಗಿಂತ ಅತಿರಿಕ್ತ ಅತ್ಯನಿಲ್ಲ. “ಸರ್ವಕಾರ್ಯಶರೀರೇಷು ಮುಕ್ತವಾಙ್ಗಸ್ಕನ್ಧಪಂಚಕಮ್ | ಸೌಗತಾನಾಮಿವಾತ್ಮಾನ್ಯೋ ನಾಸ್ತಿ ಮನ್ತ್ರೋ ಮಹಿ-ಭೃತಾಮ್” ಮಾಘಂ ೨-೨೮. “ಬೌದ್ಧಾನಾಂ ಸುಗತೋ ದೇವೋ ವಿಶ್ವಂ ಚ ಕ್ಷಣಭಙ್ಗುರಮ್ | ಆರ್ಯಸತ್ಯಾಽಪ್ಯಯಾ ತತ್ತ್ವಚತುಷ್ಟಯಮಿದಂ ಕ್ರಮಾತ್ | ದುಃಖಮಾಯತನಂ ಚೈವ ತತಃ ಸಮುದಯೋ ಮತಃ | ಮಾರ್ಗ-ಶ್ಚೇತಸ್ಯ ಚ ವ್ಯಾಖ್ಯಾ ಕ್ರಮೇಣ ಶ್ರೂಯತಾಮತಃ | ದುಃಖಂ ಸಂಸಾರಿಣಃ ಸ್ಕನ್ಧಾಸ್ತೇ ಚ ಪञ्ಚ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾಃ | ವಿಜ್ಞಾನಂ ವೇದನಾ ಸಂಜ್ಞಾ ಸಂಸ್ಕಾರೋ ರೂಪಮೇವ ಚ” ಸಂ ೬೦ ಸಂ |

ನೈರಾತ್ಮ್ಯನಾದ—ಬೌದ್ಧರು ಆತ್ಮನನ್ನು ಒಪ್ಪುವುದಿಲ್ಲ. ಆತ್ಮನನ್ನು ಅಂಗೀಕರಿಸಿದರೆ ನಾನು ನನ್ನದು ಎಂಬ ಅಹಂಕಾರ ಮಮಕಾರಗಳು ಹುಟ್ಟುವವು. ನೈರಾತ್ಮ್ಯ ಭಾವನೆಯಿಂದ ಮಮಕಾರವು ನಾಶವಾಗುವುದು. ಈ ನೈರಾತ್ಮ್ಯದರ್ಶನವೇ ನಿರ್ವಾಣಮೆಂಬ ಮೋಕ್ಷಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗುವುದು. ಬೋಧಿಸತ್ತ್ವಪದವಿಯು ನಿರ್ವಾಣಕ್ಕೆ ಮುಖ್ಯ ಕಾರಣ.

ಬೋಧಿಸತ್ತ್ವನಾಗಬೇಕಾದರೆ ತನ್ನ ಅಪರಾಧಗಳನ್ನು ಮಹಾತ್ಮರಲ್ಲಿ ತಿಳಿಸಿ ಕ್ಷಮೆಯನ್ನು ಯಾಚಿಸಬೇಕು. ಮನೋನಿಗ್ರಹವಾಗಬೇಕು. ಜೀವನ್ಮುಕ್ತನಾಗಿರಬೇಕು. ಬುದ್ಧ ಶಿಷ್ಯನು ತನ್ನ ಭೋಜನಕಾಲದಲ್ಲಿ “ಈ ಭೋಜನದಿಂದ ದೇಹದಲ್ಲಿರುವ ಸಕಲಕೃಮಿಕೇಟಾದಿಗಳನ್ನೂ ಪೋಷಿಸುತ್ತೇನೆ. ಬೋಧಿಸತ್ತ್ವನಾದನಂತರ ಸಕಲ ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನೂ ಉದ್ಧರಿಸಲು ಯತ್ನಿಸುತ್ತೇನೆ” ಎಂದು ಸಂಕಲ್ಪಮಾಡಬೇಕು.

ಬುದ್ಧದೇವನು ಭೂಮ್ಯಾಕಾಶಗಳು ಇರುವವರೆಗೂ ಲೋಕದ ಪಾಪಗಳನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವುದಕ್ಕಾಗಿ ತಾನಿರಬೇಕೆಂದೂ ಎಲ್ಲರ ಪಾಪಗಳೂ ತನ್ನ ತಲೆಯ ಮೇಲೆ ಬಿದ್ದು

ಎಲ್ಲರೂ ಮೋಕ್ಷ ಹೊಂದಲಿ ಎಂದೂ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿರುವನು. “ಆಕಾಶಸ್ಯ ಸ್ಥಿತಿಯಿವತ್ ಯಾವದಪ್ಯವನೇಃ ಸ್ಥಿತಿಃ | ತಾವನ್ಮಮ ಸ್ಥಿತಿರ್ಮುಯಾತ್ ಲೋಕಪಾಪಾನಿ ನಿಘನತಃ” |

ನಿರ್ವಾಣ—ಬೋಧಿಸತ್ತ್ವರಿಗೆ ತಮ್ಮ ಪೂರ್ವಪುಣ್ಯ ಮತ್ತು ಜ್ಞಾನಸಂಪತ್ತುಗಳಿಂದ ಮಹಾತ್ಮರ ಕುಲದಲ್ಲಿ ಜನ್ಮವೂ ಲೋಕಾನುಗ್ರಹಕ್ಕಾಗಿ ಉಪದೇಶವೂ ಲಭಿಸುವವು. ಸಮಸ್ತ ರಾಗದ್ವೇಷಾದಿ ಕ್ಲೇಶಾವರಣವೂ ಜ್ಞೇಯಾ ವರಣವೂ ಮಾಯವಾಗಿ ಸರ್ವಜ್ಞತ್ವವು ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗಿ ಸಕಲ ದುಃಖಗಳನ್ನೂ ಪರಿಹರಿಸುವ ಕರುಣಾಮಯವಾದ ಬುದ್ಧಪದವಿಯು ಲಭ್ಯವಾಗುವುದು. ಇದೇ ಪರಮಾನಂದ. ಇದೇ ನಿರ್ವಾಣ (ಮೋಕ್ಷ). “ರಾಗಾದಿಜ್ಞಾನ-ಸಂತಾನವಾಸನೋಚ್ಛೇದಸಂಭವಾ | ಚತುರ್ಣಾಮಿಪಿ ಬೌದ್ಧಾನಾಂ ಮುಕ್ತೀರೇಷಾ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ” |

ಬ್ರಹ್ಮ ಬ್ರಹ್ಮ (ಫಂ) 1. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. ಬಧ್ನಾತಿ ತಿಮಿರಮ್—ಬನ್ಧ (ಬನ್ಧನೆ) “ನಕ್” ಬ್ರಹ್ಮಿ ಆದೇಶಾಽ (ಽಂ ೩-೪) | 2. ವೃಕ್ಷದ ಮೂಲಭಾಗ, ಮರದ ಬುಡ. 3. ಅರ್ಕ ವೃಕ್ಷ, ಏಕದ ಗಿಡ. 4. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 5. ದಿವಸ, ಹಗಲು. 6. ಆಶ್ವ, ಕುದುರೆ.

ಬ್ರಹ್ಮಕರ್ಮ ಬ್ರಹ್ಮಕರ್ಮ (ನಂ) 1. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಕರ್ತವ್ಯವಾದ ಮತಸಂಬಂಧವಾದ ಕಾರ್ಯ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣನು ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಸಂಧ್ಯಾವಂದನಾದಿ ಕಾರ್ಯ. “ಅಹರಹಃ ಸನ್ಯಾಮುಪಾಸೀತ” | 2. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಮುಷ್ಟಿಕ್ಕುಗಳೆಲ್ಲೊಬ್ಬನಾದ ಬ್ರಹ್ಮ.

ಬ್ರಹ್ಮಕರ್ಮಸಮಾಧಿ ಬ್ರಹ್ಮಕರ್ಮಸಮಾಧಿ (ಫಂ) ಬ್ರಹ್ಮ ರೂಪವಾದ ಕರ್ಮದಲ್ಲಿ ಚಿತ್ತದ ಏಕಾಗ್ರತೆಯುಳ್ಳವನು, ಹವಿಸ್ಸು ಅಗ್ನಿ ಹವಿಸ್ಸನ್ನು ಅರ್ಪಿಸುವ ಕರ್ತೃ ಎಲ್ಲವೂ ಬ್ರಹ್ಮಭೂತವಾದುದು (ಬ್ರಹ್ಮಮಯ) ಎಂದು ತಿಳಿಯುವವನು. ಬ್ರಹ್ಮಾತ್ಮಕ ಕರ್ಮಣಿ ಸಮಾಧಿಃ ಅನುಸಂಧಾನಂ (ಚಿತ್ತ-ಕಾಮಚ) ಯಸ್ಯ | ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಸೌಟು ಮೊದಲಾದ ಉಪಕರಣಗಳು ಹವಿಸ್ಸನ್ನು ಅರ್ಪಿಸುವ ಕರ್ತೃ ಅರ್ಪಿಸಲ್ಪಡುವ ಹವಿಸ್ಸು ಅಗ್ನಿ ಎಲ್ಲವೂ ಬ್ರಹ್ಮ ಕಾರ್ಯವಾದುದರಿಂದ ಬ್ರಹ್ಮಮಯವಾದ ಅಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮನಾದ ಕರ್ತೃವು ಬ್ರಹ್ಮರೂಪವಾದ ಹವಿಸ್ಸನ್ನು ಸಮರ್ಪಿಸುವನು. ಹೀಗೆ ಎಲ್ಲವೂ ಬ್ರಹ್ಮಮಯವೆಂದು ತಿಳಿಯುವವನು ಬ್ರಹ್ಮಕರ್ಮಸಮಾಧಿಯಾಗುವನು. ಇವನು ಬ್ರಹ್ಮಭೂತವಾದ ಆತ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಹೊಂದುತ್ತಾನೆ. “ಬ್ರಹ್ಮಾರ್ಪಣಂ ಬ್ರಹ್ಮ ಹವಿಃ ಬ್ರಹ್ಮಾಗ್ನಿ ಬ್ರಹ್ಮಾಣಾ ಹುತಮ್ | ಬ್ರಹ್ಮೈವ ತೇನ ಗಂತವ್ಯಂ ಬ್ರಹ್ಮಕರ್ಮಸಮಾಧಿನಾ” ಗೀತಾ ೪-೨೪ |



**ಬ್ರಹ್ಮಕಲ್ಪ ಬ್ರಹ್ಮಕಲ್ಪ** (ಪುಂ) ಚತುರ್ಮುಖಬ್ರಹ್ಮನ ವಯಸ್ಸು, ಬ್ರಹ್ಮನ ಆಯುಸ್ಸಿನ ಕಾಲ.

**ಬ್ರಹ್ಮಕಾಂಡ ಬ್ರಹ್ಮಕಾಂಡ** (ಪುಂ) ಆತ್ಮಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ವೇದದ ಒಂದು ಭಾಗ.

**ಬ್ರಹ್ಮಕಾಂಡ ಬ್ರಹ್ಮಕಾಂಡ** (ಪುಂ) ಹಿಪ್ಪನೇರಳೆ ಗಿಡ.

**ಬ್ರಹ್ಮಕುಂಡ ಬ್ರಹ್ಮಕುಂಡ** (ನಂ) ದೇವತೆಗಳ ಸ್ನಾನಕ್ಕಾಗಿ ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಒಂದು ಸರಸ್ಸು (ಕೊಳ). ಬ್ರಹ್ಮಣಾ ನಿರ್ಮಿತಂ ಕುಂಡಮ್ । “ಪಾಂಡುನಾಥಸ್ಯೋತ್ತರಸ್ಯಾಂ ಬ್ರಹ್ಮ-ಕುಂಡಾಹ್ವಯಂ ಸರಃ । ಬ್ರಹ್ಮಣಾ ನಿರ್ಮಿತಂ ಪೂರ್ವಂ ಸ್ನಾನಾಯ ಸ್ವರ್ಗ-ವಾಸಿನಾಮ್ । ಆಯಾಮೇನ ಶತವ್ಯಾಮಂ ವಿಸ್ತೀರ್ಣೇನ ತದರ್ಧಕಮ್ । ಸರ್ವಪಾಪಹರಂ ಪುಣ್ಯಂ ದೇವಲೋಕಾತ್ ಸಮಾಗತಮ್ ” ।

**ಬ್ರಹ್ಮಕೂಟ ಬ್ರಹ್ಮಕೂಟ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಪರ್ವತ. ಬ್ರಹ್ಮಕುಂಡದಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನಮಾಡಿ ಪರಮೇಶ್ವರನನ್ನು ಪೂಜಿಸಿ ಈ ಪರ್ವತವನ್ನು ಏರಿದವರು ಮೋಕ್ಷ ಪಡೆಯುತ್ತಾರೆ. “ಬ್ರಹ್ಮಕುಂಡಜಲೇ ಸ್ನಾತ್ವಾ ಪೂಜಯಿತ್ವಾ ತುಮಾಪತಿಮ್ । ಬ್ರಹ್ಮಕೂಟಂ ಸಮಾರುಹ್ಯ ಮುಕ್ತಿಮೇವಾಪ್ನುಯಾನ್ಮರಃ ” ಕಾಲಿಕಾಪುಂ ।

**ಬ್ರಹ್ಮಕೂರ್ವ ಬ್ರಹ್ಮಕೂರ್ವ** (ನಂ) ಪಂಚಗವ್ಯಪ್ರಾಶನ, ಒಂದು ವ್ರತ. ಅಹೋರಾತ್ರ ಉಪವಾಸ ಮಾಡಿ ಮರು ದಿನ ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಮಾಡುವ ಪಂಚಗವ್ಯಪ್ರಾಶನವು ಬ್ರಹ್ಮಕೂರ್ವವೆನಿಸುವುದು. ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ದಿನ ಈ ವ್ರತಾಚರಣೆಯು ಇನ್ನೂ ವಿಶೇಷವಾದುದು. “ಅಹೋರಾತ್ರೋ-ಪಿತೋ ಭೂತ್ವಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಾಂ ವಿಶೇಷತಃ । ಪञ्चಗವ್ಯಂ ಪಿಬೇತ್ಪ್ರಾತಃ ಬ್ರಹ್ಮಕೂರ್ವವಿಧಿಃ ಸ್ಮೃತಃ ” ।

**ಬ್ರಹ್ಮಕೋಶ ಬ್ರಹ್ಮಕೋಶ** (ಪುಂ) 1. ವೇದಗಳ ರಾಶಿ, ಸಮಗ್ರವಾದ ವೇದ. 2. ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡ, ಜಗತ್ತು. “ಕಾತ್ರೋ-ಛರ್ಮಃ ಶ್ವಿತ ಇವ ತನುಂ ಬ್ರಹ್ಮಕೋಶಸ್ಯ ಗುಪ್ತಮ್ ” ತಂ ರಾಂ ೬-೯ ।

**ಬ್ರಹ್ಮಕೋಶಿ ಬ್ರಹ್ಮಕೋಶಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಜವಾನ. ವಾದಕ್ಕಿ-ಒಂದು.

**ಬ್ರಹ್ಮಕೃಷ್ಣಿ ಬ್ರಹ್ಮಕೃಷ್ಣಿ** (ಪುಂ) 1. ದೇಹದೊಳಗಿನ ಮೂಳೆಗಳ ಕೀಲು, ಮೂಳೆಗಳ ಸಂಧಿ. 2. ಯಜ್ಞೋಪವೀತದ ಗುಟ್ಟು.

**ಬ್ರಹ್ಮಧಾತಕ ಬ್ರಹ್ಮಧಾತಕ** (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯೆ ಮಾಡುವವನು, ಬ್ರಾಹ್ಮಣನನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವವನು. ಬ್ರಹ್ಮಾಣಂ ವಿಪ್ರಂ ಹಂತಿ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) “ಞ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) । “ಪಙ್ಕ್ತಿಭೇದಿ ವೃಥಾಪಾಕೋ ನಿಯಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಂದಕಃ । ಆದೇಶೋ-ವೇದವಿಕ್ರೇತಾ ಪಙ್ಕ್ತೇತೇ ಬ್ರಹ್ಮಧಾತಕಾಃ” । “ಗಿಣಿಃ” (೩-೨-೭೮) । -ಧಾತಿನ್ -ಘಾತೀನ್. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೪) । -ಧಾತಿನಿ -ಘಾತಿನೀ.

**ಬ್ರಹ್ಮಧೋಷ ಬ್ರಹ್ಮಧೋಷ** (ಪುಂ) ವೇದಧೋಷ, ವೇದಪಾರಾಯಣದ ಶಬ್ದ. ಬ್ರಹ್ಮಾಣಃ ಧೋಷಃ ।

**ಬ್ರಹ್ಮಣ ಬ್ರಹ್ಮಣ** (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯೆ ಮಾಡುವವನು, ಬ್ರಾಹ್ಮಣನನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವವನು. ಬ್ರಹ್ಮಾಣಂ ಹಂತಿ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) “ಕಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೪) ।

**ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ** (ನಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ, ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕೈಗೊಳ್ಳುವ ಒಂದು ವ್ರತ, -ನಿಯಮ. ಬ್ರಹ್ಮಣೇ ವೇದಾರ್ಥೇ ವೇದಾಧ್ಯಯನಾರ್ಥೇ ಚರ್ಯಮ್ ಆಚರ-ಣೀಯಮ್ । ನೂಲ್ಯು ಆಶ್ರಮಗಳಲ್ಲಿಯೂ. ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಈ ವ್ರತಕ್ಕಾಗಿ ಸ್ವೀಕರಿಸುವ ಆಶ್ರಮವು ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾಶ್ರಮ. ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾಶ್ರಮದಲ್ಲಿರುವವನು ಅಷ್ಟಾಂಗಮೈಥುನವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಬೇಕು.

**ಅಷ್ಟಾಂಗ ಮೈಥುನಗಳು:** (1) ಸ್ಮರಣಮ್ (ಪುರುಷನಿಗೆ ಸ್ತ್ರೀಸ್ಮರಣ ಹೆಂಗಸಿಗೆ ಪುರುಷನ ಸ್ಮರಣ), (2) ಕೀರ್ತನಮ್, (3) ಕೇಲಿಃ (ಕ್ರೀಡೆ), (4) ಪ್ರೇಕ್ಷಣಮ್ (ನಿಯಮಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಾದ ದೃಶ್ಯಗಳ ದರ್ಶನ), (5) ಗುಹ್ಯ-ಭಾಷಣಮ್ (ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವುದು), (6) ಸಂಕಲ್ಪಃ, (7) ಅಧ್ಯವಸಾಯಃ (ಲೌಕಿಕ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಯತ್ನ) ಮತ್ತು (8) ಕ್ರಿಯಾನಿರ್ವೃತ್ತಿಃ ಇವೆಲ್ಲವೂ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಕ್ಕೆ ಘಾತಕಗಳು. ಇದು ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರಿಗೆ ಸಮಾನವಾದುದು.

“ಅವಿಪ್ಲುತಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯೋ ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮಮಾವಿಶೇತ್” ಮನುಂ ೩-೨ ।

“ಯೇ ದೀಪಸ್ಯ ಶ್ರೇಯಸಃ ಪಾರಕಾಮಾಶ್ರಿತಾರೋಽಪಿ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಂ ಚರಂತಿ” ಮಂ ವೀಂ ೧-೨೪ । 2. ಯೋಗದ ಅಷ್ಟಾಂಗಗಳಲ್ಲಿಯಾದ ಯಮದ ಒಂದು ಭೇದ. (1) ಅಹಿಂಸಾ, (2) ಅಸತ್ಯಮ್, (3) ಅಸ್ತೇಯಮ್, (4) ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಮ್ ಮತ್ತು (5) ಅಪರಿಗ್ರಹಃ ಇವು ಐದೂ ಯಮದ ಭೇದಗಳು.

**ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿನ್ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾಶ್ರಮದಲ್ಲಿರುವವನು, ವೇದಾಧ್ಯಯನಕ್ಕಾಗಿ ವ್ರತವನ್ನು ಕೈಗೊಂಡಿರುವವನು, ಉಪನೀತನಾಗಿ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು. ಬ್ರಹ್ಮಾ ವೇದಃ, ತದಧ್ಯಯನಾರ್ಥೇ ವ್ರತಮಪಿ ಬ್ರಹ್ಮಾ, ಬ್ರಹ್ಮಾ ಚರತುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ “ಗಿಣಿಃ” (೩-೨-೭೮) । ಬ್ರಹ್ಮತಪೋ ಜ್ಞಾನಂ ವಾ ಚರತಿ ಅರ್ಜಯತ್ಯವಶ್ಯಮ್ “ಗಿಣಿಃ” (೩-೩-೧೭೦) । ಇತಿ ವಾ । ಉಪನಯನವಾದನಂತರ ಗುರುವಿನ ಸನ್ನಿಧಿಯಲ್ಲಿ ಷಡಂಗಸಹಿತವಾಗಿ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ. 2. ವಿವಾಹವಿಲ್ಲದೆ ಜೀವನ ಯಾತ್ರೆಯನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸುವವನು.

**ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಯ ನಿಯಮಗಳು:** ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಸ್ನಾನಮಾಡಿದನಂತರ ದೇವರ್ಷಿಪಿತೃತರ್ಪಣಗಳನ್ನೂ ದೇವತಾರ್ಚನೆ ಮತ್ತು ಸಮಿದಾಧಾನಗಳನ್ನೂ ಮಾಡ



ಬೇಕು: "ನಿತ್ಯಂ ಸ್ನಾತ್ವಾ ಶುಚಿ: ಕುರ್ಯದ್ವಿವಿಧಪಿತೃತರ್ಪಣಮ್ |  
 ದೇವತಾಸ್ಯರ್ಚನಂ ಚೈವ ಸಮಿದಾಧಾನಮೇವ ಚ" ಮನುಂ ೨-೧೭೬ |  
 ಮಧು (ಜೇನುತುಪ್ಪ) ಮಾಂಸ ಕರ್ಪೂರ ಚಂದನ ಮೊದ  
 ಲಾದ ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯಗಳು ಪುಷ್ಪ ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು  
 ಉದ್ರೇಕಗೊಳಿಸುವ ವಸ್ತುಗಳ ಭಕ್ಷಣ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಹಿಂಸೆ  
 ಅಭ್ಯಂಗಸ್ನಾನ ನೇತ್ರಾಂಜನ ಪಾದರಕ್ಷೆ ಭತ್ತಧಾರಣೆ  
 ಕಾಮ ಕ್ರೋಧ ಲೋಭ ನೃತ್ಯ ಗಾನ ಜೂಜು ವೃಥಾಲಾಪ  
 ಪರದೂಷಣ ಮಿಥ್ಯೆ ಸ್ತ್ರೀಯರ ವೀಕ್ಷಣೆ ಮತ್ತು ಅಲಿಂಗನ  
 ಪರಾಪಕಾರ ಇವೆಲ್ಲಾ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಗೆ ವರ್ಜ್ಯಗಳು. ವೇದಾ  
 ಧ್ಯಯನಸಂಪನ್ನರಾದವರ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಭಿಕ್ಷೆ  
 ಯನ್ನು ತರಬೇಕು. "ವರ್ಜಯೇನ್ಮಧು ಮಾंसं च गन्धं माल्यं  
 रसान् स्त्रियः । शुक्तानि यानि सर्वाणि प्राणिनां चैव  
 हिंसनम् । अभ्यङ्गमञ्जनं चाक्षणोरुपಾನच्छत्रधारणम् ।  
 कामं क्रोधं च लोभं च नर्तनं गीतवादनम् । द्यूतं च  
 जनवादं च परिवादं तथಾನृतम् । स्त्रीणां च प्रेक्षणालम्भ-  
 मुपघಾतं परस्य च" ಮನುಂ ೨-೧೭೬-೧೭೯ | ಈ ನಿಯಮ  
 ಗಳನ್ನು ಪಾಲಿಸುತ್ತ ಜಿತೇಂದ್ರಿಯನಾಗಿ ಗುರುಗಳಲ್ಲಿ  
 ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಬೇಕು. 3. ಸ್ಕಂದ, ಷಣ್ಮುಖ.  
 "ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ ಬ್ರತೀ ಸ್ಕಂದೋ ದುರ್ಗಾ ತು ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಣಿ" ವೇಜಂ |  
 -ಚಾರಿಣಿ -ಚಾಂಣೀ. 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. "ವೇದೇಷು ಚರತೇ  
 ಯಸ್ಮಾತ್ ತೇನ ಸಾ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಣಿ" ದೇವೀಪುಂ | 2. ಬ್ರಹ್ಮ  
 ಚರ್ಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹೆಂಗಸು. "ಆಸೀತಾಮರಣಾತ್  
 ಕ್ಷಾಂತಾ ನಿಯತಾ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಣಿ" ಮನುಂ ೪-೧೪೮ |

ಬ್ರಹ್ಮಜ ಬ್ರಹ್ಮಜ (ಪುಂ) ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಷಣ್ಮುಖ.

ಬ್ರಹ್ಮಜನ್ಮನ್ ಬ್ರಹ್ಮಜನ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ಉಪನಯನವಾದ  
 ನಂತರ ಉಂಟಾಗುವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಜನ್ಮ. 2. ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ  
 ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಜನ್ಮ.

ಬ್ರಹ್ಮಜಿಜ್ಞಾಸಾ ಬ್ರಹ್ಮಜಿಜ್ಞಾಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪರಬ್ರಹ್ಮವನ್ನು  
 ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವ ಇಚ್ಛೆ, ಪರಬ್ರಹ್ಮದ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು  
 ಅರಿಯುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಜ್ಞಾತುಮಿಚ್ಛಾ ಜಿಜ್ಞಾಸಾ, ಬ್ರಹ್ಮಣಿ  
 ಜಿಜ್ಞಾಸಾ | "ಅಥಾತೋ ಬ್ರಹ್ಮಜಿಜ್ಞಾಸಾ" ಬ್ರಂ ಸುಂ ೧-೧-೧ |

ಬ್ರಹ್ಮಜೀವಿನ್ ಬ್ರಹ್ಮಜೀವಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಜೀವನಕ್ಕಾಗಿ  
 ವೇದವನ್ನು ಹೇಳಿಕೊಡುವವನು, ಸಂಬಳ ಪಡೆದು ವೇದ  
 ಪಾಠ ಹೇಳುವವನು. 2. ವೇದವಿಹಿತ ಕರ್ಮಾಚರಣೆ  
 ಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಬ್ರಹ್ಮಣಾ ವೇದೇನ ಜೀವತಿ—ಜೀವ  
 (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಜಿವಿತಿ:" (೩-೧-೧೩೪) |

ಬ್ರಹ್ಮಜ ಬ್ರಹ್ಮಜ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಬ್ರಹ್ಮ ವೇದಂ ಜಾನಾತಿ  
 ಅರ್ಥಪರ್ಯಂತಂ ಸಾಕ್ಷಾತ್ ಕರೋತಿ — ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ:"  
 (೩-೨-೩) | "ಯೋ ವೇದಾನರ್ಥತೋ ವೇದಿತಿ ಸೌರ್ಯಿ ಬ್ರಹ್ಮಜವಿಶ್ರುತ:"

ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: | "ಬ್ರಹ್ಮವಿದ್ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ಬ್ರಹ್ಮಿ ಬ್ರಹ್ಮಜೋ  
 ಬ್ರಾಹ್ಮಣಪ್ರಿಯ:" ವಿಂ ಸಂ | 2. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಷಣ್ಮುಖ.  
 "ಬ್ರಹ್ಮಪ್ರಿಯೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸತ್ರತೀ ತ್ವಂ ಬ್ರಹ್ಮಜೋ ವೈ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾನಾಂ ಚ  
 ನೇತಾ" ಭಾಂ ವನಂ ೨೩೩-೧೧ | (ವಿಂ) 3. ಬ್ರಹ್ಮ  
 ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಅರಿತವನು, ಪರಮಪುರುಷನ ಸ್ವರೂಪ  
 ವನ್ನು ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಿಸಿಕೊಂಡವನು, ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನವನ್ನು  
 ಸಂಪಾದಿಸಿದವನು. 4. ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು.

ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನ ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನ (ನಂ) 1. ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನ, ಬ್ರಹ್ಮ  
 ವಿಷಯಕವಾದ ಜ್ಞಾನ, ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವರೂಪಲಕ್ಷಣಗಳ ತಿಳಿ  
 ವಳಿಕೆ. 2. (ಪಾತಂಜಲ ಮತದಲ್ಲಿ) ಕ್ಲೇಶಕರ್ಮವಿಪಾಕಾಶಯ  
 ನಿವರ್ತಕವಾದ ಪರಮಾತ್ಮಜ್ಞಾನ. 3. ಬ್ರಹ್ಮವಿದ್ಯೆಯ  
 ಅರಿವು. 4. ಬ್ರಹ್ಮೋಪಾಸನೆ. 5. ಪ್ರಕೃತಿಪುರುಷರ  
 ವಿವೇಕ ವಿಷಯ ಜ್ಞಾನ.

ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನಿನ್ ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನಿನ್ (ವಿಂ) ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನವುಳ್ಳ  
 ವನು, ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ಪರಮಾತ್ಮ  
 ಜ್ಞಾನವನ್ನು ಪಡೆದವನು. ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇತಿ:"  
 (೪-೨-೧೧೪) |

ಬ್ರಹ್ಮಣಸ್ಪತಿ ಬ್ರಹ್ಮಣಸ್ಪತಿ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ.  
 ಬ್ರಹ್ಮಣ: ಚತುರ್ಮುಖಸ್ಯ ವೇದಸ್ಯ ವಾ ಪತಿ:

ಬ್ರಹ್ಮಣ್ಯ ಬ್ರಹ್ಮಣ್ಯ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಬ್ರಹ್ಮಣ್ಯ  
 ಹಿತ: "ಯತ್" (೪-೧-೭) | ಪ್ರಕೃತಿ ಮತ್ತು ಜೀವಾತ್ಮರ  
 ಸರ್ವಾವಸ್ಥೆಗಳಲ್ಲೂ ಸ್ಥಿತಿ ಮತ್ತು ಭೋಗಾದಿಗಳಿಗೆ ಕಾರಣ  
 ನಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಬ್ರಹ್ಮಣ್ಯ. "ಜೀವಾತ್ಮಾ  
 ಪ್ರಕೃತಿಶ್ರಾಪಿ ಬ್ರಹ್ಮೇತಿ ವ್ಯಪದಿಶ್ಯತೇ | ತಾಸ್ಯಾಂ ಯ: ಸ್ಥಿತಿ-  
 ಭೋಗಾದೇ: ಸರ್ವಾವಸ್ಥಾಸು ಕಾರಣಮ್ | ಬ್ರಹ್ಮಣ್ಯ: ಸ ಚ ವಿಜ್ಞೇಯ:  
 ಸಪ್ತಾಂಗೋ ಭೋಗದಾಯಕ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: | "ಬ್ರಹ್ಮಣ್ಯೋ  
 ಬ್ರಹ್ಮಕೃದ್ಬ್ರಹ್ಮಾ ಬ್ರಹ್ಮ ಬ್ರಹ್ಮವಿವರ್ಧನ:" ವಿಂ ಸಂ | 2.  
 ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು. ಬ್ರಹ್ಮಣಿ ಸಾಧು: "ಯತ್"  
 (೪-೪-೯೮) | 3. ಮುಂಜತ್ಯಣ. 4. ಹತ್ತಿಯ ಗಿಡ.  
 5. ಹೂವಿಡಿದ ಮರ. "ತದಸ್ತು ಪೂಗ: ಕ್ರಮುಕೋ ಬ್ರಹ್ಮಣ್ಯೋ  
 ಬ್ರಹ್ಮದಾಹ ಚ" ಅಮಂ | 6. ಶನೈಶ್ಚರ, ಶನಿಗ್ರಹ.  
 "ಬ್ರಹ್ಮಣ್ಯ: ಸ್ಯಾತ್ ಬ್ರಹ್ಮಸಾಧುಬ್ರಹ್ಮದಾಹಶನೈಶ್ಚರೇ" ಮೇದಿಂ |  
 7. ಹಿಪ್ಪನೇರಳೆ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 8. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ  
 ಅನುಕೂಲವಾದ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ಹಿತವಾದ.

ಬ್ರಹ್ಮಣ್ಯದೇವ ಬ್ರಹ್ಮಣ್ಯದೇವ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ.  
 ಬ್ರಹ್ಮಣ್ಯೋ ದೇವ:

ಬ್ರಹ್ಮತಾ ಬ್ರಹ್ಮತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮನಾಗುವಿಕೆ. ಬ್ರಹ್ಮ  
 ನಲ್ಲಿ ಐಕ್ಯವಾಗುವಿಕೆ. 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣತ್ವ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣ



ನಾಗುವಿಕೆ. ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) |

"ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) | ಬ್ರಹ್ಮತ್ವಮ್ ಬ್ರಹ್ಮತ್ವಮ್.

3. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಋತ್ವಿಕ್ವಿನ ಕಾರ್ಯ. ಹೊತ್ರಾವಾಚಿನೊ  
ಬ್ರಹ್ಮನ್ ಶಬ್ದಸ್ಯ "ತಲ್" (೪-೧-೧೩೬) | ಬ್ರಹ್ಮತ್ವಮ್  
ಬ್ರಹ್ಮತ್ವಮ್.

ಬ್ರಹ್ಮ ಬ್ರಹ್ಮದ (ಪುಂ) 1. ಆಚಾರ್ಯ, ಗುರು. ವೇದಾ  
ಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿಸುವ ಉಪಾಧ್ಯಾಯ. 2. ಬ್ರಹ್ಮವಿದ್ಯೆ  
ಯನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸುವ ಗುರು. ಬ್ರಹ್ಮ ದದಾತಿ — ತು ದಾನ್  
(ದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩) |

ಬ್ರಹ್ಮದಂಡ ಬ್ರಹ್ಮದಂಡ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಶಾಪ.  
ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ಶಾಪರೂಪೋ ದಂಡ: | "ಬ್ರಹ್ಮದಂಡಹತಾ ಯೇ  
ಚ ವಿಶ್ವದಗ್ನಿಹತಾಶ್ಚ ಯೇ | ತೇಷಾಮುಢ್ವರಣಾರ್ಥಾಯ ಇಮಂ ಪಿಂಡಂ  
ದದಾಮ್ಯಹಮ್" || 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಸಿದ್ಧಿಯಷ್ಟಿ. ಬ್ರಾಹ್ಮ  
ಣನ ತಪಃಸಿದ್ಧಿರೂಪವಾದ ದಂಡ. ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ  
ದಂಡ: ಸಿದ್ಧಯಶ್ಚಿ: | ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿಯ ಬ್ರಹ್ಮದಂಡ.

"ಏಕೇನ ಬ್ರಹ್ಮದಂಡೇನ ಸರ್ವಾಸ್ತ್ರಾಣಿ ಹತಾನಿ ಮೇ" ರಾಮಾಂ |

3. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ನೀಡಿದ ದಾನ. 4. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.

ಬ್ರಹ್ಮದರ್ಶಿ ಬ್ರಹ್ಮದರ್ಶಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಜವಾನ, ಓಮ,  
ವಾದಕ್ಕಿ.

ಬ್ರಹ್ಮದಾಯ ಬ್ರಹ್ಮದಾಯ (ಪುಂ) ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಪೂರ್ಣ  
ವಾದ ನಂತರ (ಸಮಾವರ್ತನವಾದನಂತರ) ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ  
ರಾಜನು ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ಕೊಡುತ್ತಿದ್ದ ಧನ ಮತ್ತು ಭೂ  
ರೂಪವಾದ ದಾನ. ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ವಿಪ್ರಾಯ ರಾಜಾ ದೀಯತೇ—ತು ದಾನ್  
(ದಾನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಛಂ" (೩-೩-೧೯) |

ಬ್ರಹ್ಮದಾಯಾದ ಬ್ರಹ್ಮದಾಯಾದ (ಪುಂ) 1. ವಂಶಪಾರಂಪರ  
ವಾಗಿ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. 2.  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಕುಲದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು.

ಬ್ರಹ್ಮದಾರ ಬ್ರಹ್ಮದಾರು (ನಂ) 1. ಹೊವರಿಚಿ ಮರ.  
2. ಹಿಪ್ಪನೇರಿಳೆ ಗಿಡ.

ಬ್ರಹ್ಮದಿನ ಬ್ರಹ್ಮದಿನ (ನಂ) ಚತುರ್ಮುಖ ಬ್ರಹ್ಮನ ಒಂದು  
ಹಗಲು (ಅಹಸ್ಸ). ಬ್ರಹ್ಮನ ಒಂದು ದಿನದ ಅರ್ಧಭಾಗ.  
ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ದಿನಮ್ ಅಹ: | ಮನುಷ್ಯನ ಒಂದು ಸೌರ ವರ್ಷ  
ಅಥವಾ 365½ ದಿನಗಳು ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಒಂದು ದಿನ.  
ಮನುಷ್ಯನ 360 ವರ್ಷಗಳು ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಒಂದು ವರ್ಷ.  
[ನಿಮೇಷಾದಿ ಕಾಲವಿಭಾಗಕ್ಕೆ "ಕಾಲ" ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.] ಮನುಷ್ಯನ ಒಂದು ವರ್ಷದಲ್ಲಿ ಆರು ತಿಂಗಳು  
ಉತ್ತರಾಯಣ ಮತ್ತು ಆರು ತಿಂಗಳು ದಕ್ಷಿಣಾಯನ  
ಗಳೆಂದು ಎರಡು ಅಯನಗಳು ಇರುವುವು. ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನಿ

ಗಳು ಉತ್ತರಾಯಣದಲ್ಲಿ ಅರ್ಚಿಸಿದಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ  
ಹೋಗಿ ಪುನರಾವೃತ್ತಿಯಿಲ್ಲದೆ ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು ಸೇರು  
ತ್ತಾರೆ. ಪುಣ್ಯಕರ್ಮಮಾಡಿದವರು ದಕ್ಷಿಣಾಯನದಲ್ಲಿ  
ಧೂಮಾದಿಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಹೋಗಿ ಚಂದ್ರನನ್ನು ಸೇರು  
ತ್ತಾರೆ. ಮತ್ತೆ ಹಿಂತಿರುಗುತ್ತಾರೆ. "ಅಗ್ನಿರ್ಯೋತಿರಹ:

ಶುಕ್ಲ: ಷಣ್ಮಾಸಾ उत्तरायणम् | ತತ್ರ ಪ್ರಯಾತಾ ಗच्छन्ತಿ  
ಬ್ರಹ್ಮ ಬ್ರಹ್ಮವಿದೋ ಜನಾ: || ಭೂಮಿ ರಾತ್ರಿಸ್ತಥಾ ಕೃಷ್ಣಾ:  
ಷಣ್ಮಾಸಾ ದಕ್ಷಿಣಾಯನम् | ತತ್ರ ಚಾಂದ್ರಮಸಂ ಜ್ಯೋತಿ: ಯೋಗಿ  
ಪ್ರಾಪ್ಯ ನಿವರ್ತತೇ" ಗೀತಾ ೮-೨೪, ೨೫ | "ತಥಾ ಇತ್ಯಂ ವಿದ್ಯುಃ  
ಚೇಮೇ ಅರಣ್ಯೇ ಶ್ರದ್ಧಾ ತಪ ಇತ್ಯುಪಾಸತೇ ತೇರ್ಚಿಷಮಭಿಸಂಭವನ್ತಿ"

"ಅಥ ಯ ಇಮೇ ಗ್ರಾಮ ಇಷ್ಟಾಪೂರ್ತೇ ದತ್ತಮಿತ್ಯುಪಾಸತೇ ತೇ ಭೂಮ-  
ಮಭಿಸಂಭವನ್ತಿ" ಛಾಂದೋಗ್ಯಂ | 12,000 ದೇವವರ್ಷಗಳು  
ಅಥವಾ 43,20,000 ಮಾನುಷ ವರ್ಷಗಳು ಒಂದು  
ಚತುರ್ಯುಗದ (ಕೃತ, ತ್ರೇತಾ, ದ್ವಾಪರ ಮತ್ತು ಕಲಿ)  
ಕಾಲ. ದೇವತೆಗಳ 1000 ಚತುರ್ಯುಗಗಳು (ದೇವ  
ವರ್ಷಗಳು 1,20,00,000 ಅಥವಾ ಮಾನುಷ ವರ್ಷ  
ಗಳು 4,32,00,00,000) ಬ್ರಹ್ಮನಿಗೆ ಒಂದು ಹಗಲು.  
ಮತ್ತು 1000 ಚತುರ್ಯುಗಗಳ ಕಾಲ ಬ್ರಹ್ಮನಿಗೆ  
ಒಂದು ರಾತ್ರಿ. "ಸಹಸ್ರಯುಗಪರಂತರಮಹ್ಯದ್ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ವಿಶ್ವ: |

ರಾತ್ರಿ ಯುಗಸಹಸ್ರಾಂತಾಂ ತೇಹೋರಾತ್ರಿವಿದೋ ಜನಾ:" ಗೀತಾ ೮-೧೭ |  
ಹಗಲಿನ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಚತುರ್ಮುಖನ ದೇಹಾವಸ್ಥಾ  
ರೂಪವಾದ ಅವ್ಯಕ್ತದಿಂದ ಮೂರು ಲೋಕಗಳೊಳಗೆ  
ರುವ ದೇಹೇಂದ್ರಿಯಾದಿ ವಸ್ತುಗಳೆಲ್ಲವೂ ಹುಟ್ಟುತ್ತವೆ.  
ರಾತ್ರಿಯ ಪ್ರಾರಂಭಕಾಲದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲವೂ ಚತುರ್ಮುಖನ  
ದೇಹದೊಳಗೇ ಲೀನವಾಗುತ್ತವೆ. "ಅವ್ಯಕ್ತಾದ್ವ್ಯಕ್ತಯ:  
ಸರ್ವಾ: ಪ್ರಭವಂತ್ಯಹರಾಗಮೇ | ರಾತ್ರಾಗಮೇ ಪ್ರಲೀಯಂತೇ ತತ್ರೈವಾವ್ಯಕ್ತ-  
ಸಂಜ್ಞಕೇ" ಗೀತಾ ೮-೧೮ | ಬ್ರಹ್ಮನ ಹಗಲಿನಲ್ಲಿ ಜಗತ್ತಿನ  
ಸೃಷ್ಟಿಕಾರ್ಯವು ನಡೆಯುವುದು. ರಾತ್ರಿಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸಮಸ್ತ  
ಪ್ರಾಣಿವರ್ಗವೂ ಅವನ ಶರೀರದಲ್ಲೇ ಲಯಹೊಂದುವುವು.  
ಈ ರಾತ್ರಿಕಾಲದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ ಈ ಪ್ರಲಯವು ನೈಮಿತ್ತಿಕ  
ಪ್ರಲಯ.

ಬ್ರಹ್ಮದೂಷಕ ಬ್ರಹ್ಮದೂಷಕ (ವಿಂ) ವೇದವನ್ನು ನಿಂದಿಸು  
ವವನು, ವೇದವನ್ನು ಖಂಡಿಸುವವನು. ಬ್ರಹ್ಮ ದೂಷಯತಿ—  
ದೂಷ (ವೈಕಲ್ಯ) + ಣಿಕ್ "ಉಕ್" (೩-೧-೧೩೩) | ಉಪಧಾಯಾ  
ಋತ್ವಮ್ (೬-೪-೯೦) |

ಬ್ರಹ್ಮದೇವ ಬ್ರಹ್ಮದೇವ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಾಹ್ಮಧರ್ಮದಿಂದ  
ವಿವಾಹವಾದವನು. (ನಂ) 2. ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿಸು  
ವುದು. (ವಿಂ) 3. ವಂಶಪರಂಪರೆಯಿಂದ ವೇದಾ  
ಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿಸುವ ಕುಲದವನು.



**ಬ್ರಹ್ಮವೇದ ಬ್ರಹ್ಮದೈತ್ಯ (ಪುಂ)** ಬ್ರಹ್ಮರಾಕ್ಷಸ, ಬ್ರಹ್ಮ ಪಿಶಾಚ. ಬ್ರಹ್ಮಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣರೂಪೋ ದೈತ್ಯಃ |

**ಬ್ರಹ್ಮದ್ವಿಷ್ ಬ್ರಹ್ಮದ್ವಿಷ್ (ವಿಂ)** 1. ವೇದವನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸುವವನು. 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸುವವನು. ಬ್ರಹ್ಮ ದ್ವೇಷಿ — ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) “ಕ್ವಿಪ್” (3-2-61) | “ಬ್ರಹ್ಮದ್ವಿಷ್ ಪರಿವಿತ್ತಿಶ್ಚ ಗಣಾಮ್ಯಂತರ ಏವ ಚ” ಮನುಂ 3-144 | “ಬ್ರಹ್ಮದ್ವಿಷೋ ಹ್ಯೇವ ನಿಹಂತಿ ಸರ್ವಾನ್” ಮಂ ವೀಂ 1-62 |

**ಬ್ರಹ್ಮದ್ವೇಷ ಬ್ರಹ್ಮದ್ವೇಷ (ಪುಂ)** 1. ವೇದವನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸುವುದು, ವೇದವನ್ನು ನಿಂದಿಸುವುದು. 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸುವುದು.

**ಬ್ರಹ್ಮದ್ವೇಷಿನ್ ಬ್ರಹ್ಮದ್ವೇಷಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ವೇದದಲ್ಲಿ ದ್ವೇಷ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು, ವೇದವನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸುವವನು. 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸುವವನು.

**ಬ್ರಹ್ಮನ್ ಬ್ರಹ್ಮನ್ (ಪುಂ)** 1. ವಿಪ್ರ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ಬೃಹತಿ — ಬೃಹಿ (ವೃದ್ಧೌ) “ಮನಿನ್” ನಕಾರಸ್ಯಾಕಾರಶ್ಚ (3ಂ 8-146) | “ಬ್ರಹ್ಮಾದಯೋ ಬ್ರಹ್ಮಹಿತಾಯ ತಪ್ತ್ವಾ ಪರಃಸಹಸ್ರಂ ಶರದಸ್ತಪಾಸಿ” ಮಂ ವೀಂ 1-42 | 2. ಚತುರ್ಮುಖಿ, ಹಿರಣ್ಯಗರ್ಭ, ಪಿತಾಮಹ, ಬೃಹತಿ ವರ್ಧಯತಿ ಪ್ರಜಾ: “ಮನಿನ್” (3ಂ 8-146) | 3. ವಿಷ್ಣುಂಭ ಮೊದಲಾದ 27 ಯೋಗಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. 4. ಸೂರ್ಯ. 5. ಋತ್ವಿಕ್ಕು. 6. ಚಂದ್ರ. 7. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 8. ಯಜ್ಞ. 9. ಸದ್ಯೋಜಾತ ಮೊದಲಾದ ಮಂತ್ರ. “ಬ್ರಹ್ಮಾಕ್ಷಭೂರ್ಬ್ರಹ್ಮಣಿ ಯಜಿತಾತ್ಮಾ” ಕುಮಾಂ 3-14 | 10. ರುದ್ರ. 11. ಇಂದ್ರ. 12. ಜೀವಾತ್ಮ. (ನಂ) 13. ಶ್ರುತಿ, ವೇದ. ಬೃಹಿ “ಮನಿನ್” | “ತೇನೇ ಬ್ರಹ್ಮ ಹೃದಾ ಯ ಆದಿಕವಯೇ ಮುಹ್ಯಂತಿ ಯತ್ಸೂರಯಃ” ಭಾಗಂ 1-1-1 | “ಯದ್ಬ್ರಹ್ಮ ಸಮ್ಯಗಾಮ್ನಾತಂ ಯದಗ್ನೌ ವಿಧಿನಾ ಹೃತಮ್ | ಯಚ್ಚ ತಪ್ತಂ ತಪಸ್ತಸ್ಯ ವಿಪಕವಂ ಫಲಮಥ ನಃ” ಕುಮಾಂ 6-16 | 14. ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಬ್ರಹ್ಮ. “ನಿರತಿ-ಶಯಕಲ್ಯಾಣಗುಣಗಣೈಃ ಸ್ವರೂಪಗುಣವಿಭವೈಶ್ಚ ಬೃಹತಿ ವಿಶ್ವಮನಾ-ಪೇಕ್ಷಿಕಂ ಬೃಹಯತಿ ಚ | ಬೃಹತ್ವಾದ್ ಬೃಹಣತ್ವಾಚ್ಚ ಬ್ರಹ್ಮೇತಿ ಪರಿಕೀರ್ತಯತೇ” | “ಬ್ರಹ್ಮ ಬ್ರಹ್ಮವಿವರ್ಧನಃ” ವಿಂ ಸಂ | “ಯದ್ವಾಚಾನಮ್ಯುದಿತಂ ಯೇನ ವಾಗಮ್ಯುದಿತೇ | ತದೇವ ಬ್ರಹ್ಮ ತ್ವಂ ವಿಧಿ ನೇದಂ ಯದಿದಮುಪಾಸತೇ” ಕೇನಂ | “ವದಂತಿ ತತ್ತತ್ವವಿದಸ್ತತ್ವಂ ಯಜ್ಞಾನಮದ್ವಯಮ್ | ಬ್ರಹ್ಮೇತಿ ಪರಮಾತ್ಮೇತಿ ಭಗವಾನಿತಿ ಶಬ್ದತೇ” ಭಾಗಂ 1-2-11 | “ಬ್ರಹ್ಮಣೋಸ್ತು ತವ ಶಕ್ತಿಲತಾಯಾಂ ಮೃಷ್ಟಿ ವಿಶ್ವಮಥ ಪತ್ಯುರಹೀನಾಮ್” ನೈಷಂ 21-109 |

**ದಾರ್ಶನಿಕರು ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುವ ಪರಬ್ರಹ್ಮ ಸ್ವರೂಪ:**

**ದೈತ್ಯದರ್ಶನ:** ವಿಷ್ಣುವೇ ಪರಬ್ರಹ್ಮ. ಸಚ್ಚಿದಾನಂದ ಸ್ವರೂಪನು. ಸಕಲಕಲ್ಯಾಣಗುಣಗಣಪರಿಪೂರ್ಣನು. ಜಗತ್ತಿಗೆ ಆದಿಕಾರಣನು. ಸರ್ವಾಂತರ್ಯಾಮಿ ಮತ್ತು ಸ್ವತಂತ್ರನು. “ಸ್ವತನ್ತ್ರೋ ಭಗವಾನ್ ವಿಷ್ಣುಃ ನಿರ್ದೋಷೋ-ಸದ್ಗುಣಃ” ತತ್ವವಿಂ | ಇದು ಇವರ ಸಿದ್ಧಾಂತ.

**ಅದೈತ್ಯದರ್ಶನ:** ಜೈತನ್ಯಸ್ವರೂಪನಾದ ಪರ ಮಾತ್ಮನೇ ಪರಬ್ರಹ್ಮ. ಪರಬ್ರಹ್ಮವು ಸಗುಣ ಮತ್ತು ನಿರ್ಗುಣ ಭೇದಗಳಿಂದ ಎರಡು ವಿಧ. ಮಾಯೆಯೆಂಬ ಅವಿದ್ಯಾವಿಶಿಷ್ಟನಾದ ಮತ್ತು ಜಗತ್ಕಾರಣನಾದ ಈಶ್ವರನು ಸಗುಣಬ್ರಹ್ಮ. ಮಾಯಾತೀತ ಮತ್ತು ಜಾಗ್ರದಾದ್ಯವಸ್ಥಾತ್ಮಯಾತೀತವಾದುದು ನಿರ್ಗುಣ ಬ್ರಹ್ಮ. ಮಾಯಾವಿಶಿಷ್ಟನಾದ ಈಶ್ವರನು ಜಗತ್ತಿಗೆ ಉಪಾದಾನಕಾರಣ. ಮತ್ತು ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಸ್ಥಿತಿಲಯ ಗಳಿಗೆ ಕಾರಣನಾಗಿರುವನು. “ಯತೋ ವಾ ಇಮಾನಿ ಭೂತಾನಿ ಜಾಯಂತೇ | ಯೇನ ಜಾತಾನಿ ಜೀವಂತಿ | ಯತ್ಪ್ರಯನ್ತಯಭಿಸಂ-ವಿಶಂತಿ | ತದ್ವಿಜಿಜ್ಞಾಸಸ್ವ | ತದ್ಬ್ರಹ್ಮ” ತೇಂ 3ಂ | “ನಿರ್ಗುಣಂ ನಿಷ್ಕಲಂ ಶಾಂತಂ ನಿರವಯಂ ನಿರಂಜನಮ್” ಇವೇತಾಂ 3ಂ | “ಅಯಮಾತ್ಮಾ ಬ್ರಹ್ಮ” | “ಸರ್ವಂ ಕಲ್ವಿದಂ ಬ್ರಹ್ಮ” ಎಂಬ ವಾಕ್ಯಗಳಿಂದ ಬ್ರಹ್ಮವೇ ಸಕಲ ಪ್ರಪಂಚವೆಂದು ಇವರ ಸಿದ್ಧಾಂತ.

**ವಿಶಿಷ್ಟಾದೈತ್ಯತ:** ಲಕ್ಷ್ಮೀನಾರಾಯಣನೇ ಪರಬ್ರಹ್ಮ. ಇವನು ಸಕಲಜಗನ್ನಿಯಾಮಕ. ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಸ್ಥಿತಿ ಪ್ರಲಯಗಳಿಗೆ ಕಾರಣನು. “ಜನ್ಮಾಥಸ್ಯ ಯತಃ” ಕಂ ಸೂಂ 1-1-2 | “ಯತೋ ವಾ ಇಮಾನಿ ಭೂತಾನಿ ಜಾಯಂತೇ | ಯೇನ ಜಾತಾನಿ ಜೀವಂತಿ | ಯತ್ಪ್ರಯನ್ತಯಭಿಸಂವಿಶಂತಿ | ತದ್ವಿಜಿಜ್ಞಾ-ಸಸ್ವ | ತದ್ಬ್ರಹ್ಮ” ತೇಂ 3ಂ | ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಚಿದಚಿದ್ವಿಶಿಷ್ಟ ರೂಪದಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಜಗತ್ತಿಗೆ ಉಪಾದಾನ ಕಾರಣನೂ ನಿಮಿತ್ತಕಾರಣನೂ ಆಗಿರುವನು. ಹೇಯ ಗುಣರಹಿತನಾಗಿರುವುದರಿಂದ ನಿರ್ಗುಣನೂ ಸಕಲ ಕಲ್ಯಾಣ ಗುಣಪರಿಪೂರ್ಣನಾದುದರಿಂದ ಸಗುಣನೂ ಆಗಿರುವನು. ಸಕಲ ಜೀವರೂ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಶರೀರವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಜೀವರು ಶೇಷರು. ಪರಮಾತ್ಮನು ಶೇಷ. ಈ ಶೇಷ ಶೇಷಭಾವವು ವಿಶಿಷ್ಟಾದೈತ್ಯತ ಸಿದ್ಧಾಂತದಲ್ಲಿ ಒಂದು ವಿಶೇಷವಾದ ಅಂಶವಾಗಿದೆ. ಪರಮಾತ್ಮನು ಸರ್ವ ಸ್ವತಂತ್ರನು. ಲಕ್ಷ್ಮಿಗೆ ಪರಮಾತ್ಮನ ಅಧೀನವಾದ ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ. ಉಳಿದೆಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲೂ ಸರ್ವಸಾಮ್ಯ ವಿರುವುದು. “ವಾಸುದೇವಃ ಪರಂ ಬ್ರಹ್ಮ ಕಲ್ಯಾಣಗುಣಸಂಯುತಃ |



ಭುವನಾನಾಮುಪಾದಾನಂ ಕರ್ತಾ ಜೀವನಿಯಾಮಕಃ" । ಪರಮಾತ್ಮನು ಸರ್ವಪ್ರಾಣಿಗಳ ಹೃದಯದಲ್ಲೂ ಅಂತರ್ಯಾಮಿಯಾಗಿರುವನು. ಸಕಲ ಜೀವಾತ್ಮರ ಕರ್ಮಾನುಗುಣವಾಗಿ ಅವರವರ ವ್ಯಾಪಾರಗಳಿಗೆ ಪ್ರೇರಕನಾಗಿರುತ್ತಾನೆ. "ಯ ಆತ್ಮನಿ ತಿಷ್ಠನ್ನಾತ್ಮಾನಮಂತರೋ ಯಮಯತಿ" ಇತಿ ಶ್ರುತಿಃ । "ತದೇವ ವಾಸುದೇವಾಖ್ಯಂ ಪರಂ ಬ್ರಹ್ಮ ನಿಗದ್ಯತೇ । ಅಂತರ್ಯಾಮಿ ಜೀವಸಂಸ್ಥೋ ಜೀವಪ್ರೇರಕ ಇರಿತಿಃ" । ಇದು ಇವರ ಸಿದ್ಧಾಂತ.

**ಶಕ್ತಿವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತ—ವೀರಶೈವದರ್ಶನ:** ಪತಿ ಪರಶಿವ ಪರಮಾತ್ಮ ಎಂದು ಹೇಳಲ್ಪಡುವ ನಿತ್ಯವಾದ ಸತ್ಯವಸ್ತುವು ಪರಬ್ರಹ್ಮ. ನಮ್ಮ ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗುವ ಮತ್ತು ಪ್ರತಿಕ್ಷಣದಲ್ಲೂ ಪರಿವರ್ತನ ಹೊಂದುವ ಸ್ವಭಾವದ ಪ್ರಪಂಚಕ್ಕಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನವಾದುದು ಈ ಸತ್ಯವಸ್ತು. ಇದು ಸಚ್ಚಿದಾನಂದ ಸ್ವರೂಪವುಳ್ಳದ್ದು ಮತ್ತು ಪರಿಪೂರ್ಣವಾದುದು. ಪರಮಾತ್ಮನು ಸರ್ವಶಕ್ತಿ ಸಂಪನ್ನನು. ಸಕಲ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಕರ್ಮಾನುಸಾರವಾಗಿ ಪರಮಾತ್ಮನು ಜಗತ್ತನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸುವನು. "ಅಜ್ಞೋ ಜನ್ತುರನಿಶೋಽಯಮಾತ್ಮನಃ ಸುಖದುಃಖಯೋಃ । ಇಶ್ವರಪ್ರೇರಿತೋ ಗಂಚತ್ ಸ್ವರ್ಗಂ ವಾ ಶ್ವಭ್ರಮೇವ ವಾ" ಸಂ ೧೦ ಸಂ ೧. ಸಕಲ ಜಗತ್ತಿಗೂ ಸೃಷ್ಟಿಕರ್ತನಾದುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಸರ್ವಜ್ಞ. "ಸರ್ವಜ್ಞಃ ಸರ್ವಕರ್ತೃತ್ವಾತ್ ಸಾಧನಾಙ್ಗಫಲಃ ಸಹ । ಯೋ ಯಜ್ಞಾ ನಾತಿ ಕುಸ್ತೇ ಸ ತದೇವೇತಿ ಸುಸ್ಥಿತಮ್" । ಪರಶಿವನು ನಿರಾಕಾರ, ನಿರವಯವ. ಆದರೂ ನಿರಾಕಾರಬ್ರಹ್ಮನ ಧ್ಯಾನಪೂಜಾದಿಗಳು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ಭಕ್ತಾನುಗ್ರಹಕ್ಕಾಗಿ ಈಶಾನಮಸ್ತಕ, ತತ್ಪರುಷವಕ್ತ್ರ, ಅಘೋರ ಹೃದಯ, ವಾಮದೇವಗುಹ್ಯ ಮತ್ತು ಸದ್ಯೋಜಾತಪಾದ ಗಳೆಂಬ ಐದು ಶರೀರಗಳನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವನು. ಮಲ ಕರ್ಮ ಮಾಯೆ ಮೊದಲಾದ ಪಾಶಜಾಲಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಇವು ಪ್ರಾಕೃತ ಶರೀರವಲ್ಲ. "ಮಲಾಽಽಸಂಭವಾಚ್ಚಾಕ್ತಂ ವಪುರ್ನೇತಾದೃಶಂ ಪ್ರಭೋಃ । ತದ್ವಪುಃ ಪಂಚಭಿರ್ಮಂತ್ರೈಃ ಪಂಚಕೃತ್ಯೋಪಯೋಗಿಭಿಃ । ಇಶತತ್ಪುರುಷಾಧೋರವಾಮಾಕ್ಷೈರ್ಮಂತ್ರೈಃ ಸ್ತಕಾದಿಮತ್ । ಸಾಧಕಸ್ಯ ತು ರಕ್ಷಾರ್ಥಂ ತಸ್ಯ ರೂಪಮಿದಂ ಸ್ಮೃತಮ್" ಸಂ ೧೦ ಸಂ ೧. ಇದು ಇವರ ಸಿದ್ಧಾಂತ. 15. ತತ್ತ್ವ. 16. ತಪಸ್ಸು. 17. ಆಕಾಶ. 18. ಅನ್ನ. 19. ಅಧ್ಯಾತ್ಮ ವಿದ್ಯೆ. 20. ವೇದಜ್ಞಾನ. "ಬ್ರಹ್ಮಾ ವಿರಿಞ್ಚಿದ್ವಿಜಯೋಃ ಕೃತ್ವಿಕ್ವಚ್ಚಂದ್ರಾರ್ಕಯೋಗಯೋಃ । ಬ್ರಹ್ಮ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ತಪೋಽಪ್ಯಾತ್ಮವೇದಜ್ಞಾನೇಷು ಸುರಿಭಿಃ" ವಿಷ್ಣುಂ. 21. ಬ್ರಹ್ಮತೇಜಸ್ಸು. "ಬ್ರಹ್ಮಾ ರುದ್ರೇಂದ್ರಭೃವಾದಿವಿಪ್ರತ್ವಿಕ್ಯಜ್ಞಾತೃಷು । ಅಕ್ಷಯನೌ ಕಲಿ ತು ವೇದೇಽನ್ತೇ ಖಾಘ್ಯಾತ್ಮಾತ್ಮತಪಸ್ಸು ಚ" ವೈಜಂ. 22. ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ, ವೈರಾಗ್ಯ, ವಿಷಯ ಪರಿತ್ಯಾಗ, "ಭಗವಾನ್

ಕಾಶ್ಯಪಃ ಶಾಶ್ವತೇ ಬ್ರಹ್ಮಣಿ ಸ್ಥಿತಃ ಇತಿ ಪ್ರಕಾಶಃ । ಇಯಂ ಚ ವಃ ಪ್ರಿಯಸಖೀ ತದಾತ್ಮಜೇತಿ ಕಥಮೇತತ್" ಶಾಕುಂ ೧ । 23. ವೇದೋಕ್ತ ಕರ್ಮ. 24. ಸತ್ಯ. 25. ಪ್ರಕೃತಿ. "ತಸ್ಮಾದೇತದ್ಬ್ರಹ್ಮ ನಾಮ ರೂಪಮಜ್ಞಂ ಚ ಜಾಯತೇ" ಮುಂಡಕಂ. 1. "ಮಮ ಯೋನಿರ್ಮಹದ್ಬ್ರಹ್ಮ ತಸ್ಮಿನ್ ಗರ್ಭಂ ದಧಾಮ್ಯಹಮ್" ಗೀತಾ ೧೪-೩. 26. ಪ್ರಣವ. "ಆಮಿತ್ಯೇಕಾಕ್ಷರಂ ಬ್ರಹ್ಮ ವ್ಯಾಹರನ್ ಮಾಮನುಸ್ಮರನ್" ಗೀತಾ ೮-೧೩. 27. ಜೀವಾತ್ಮ.

**ಬ್ರಹ್ಮನಿರ್ವಾಣ ಬ್ರಹ್ಮನಿರ್ವಾಣ (ನಂ)** ಬ್ರಹ್ಮತ್ವವನ್ನು ಹೊಂದುವುದು, ಬ್ರಹ್ಮನಲ್ಲಿ ಐಕ್ಯಹೊಂದುವುದು, ಬ್ರಹ್ಮನಲ್ಲಿ ಲಯಹೊಂದುವುದು, ಮೋಕ್ಷ. "ಏಷಾ ಬ್ರಾಹ್ಮೀ ಸ್ಥಿತಿಃ ಪಾರ್ಥ ನನಾಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ವಿಮುಹ್ಯತಿ । ಸ್ಥಿತ್ವಾಸ್ಯಾಮಂತಕಾಲೇಽಪಿ ಬ್ರಹ್ಮನಿರ್ವಾಣಮುಚ್ಛತಿ" ಗೀತಾ ೨-೭೨. ಸಕಲ ವಿಧವಾದ ಪ್ರಾಪಂಚಿಕ ಅನಿಷ್ಟಗಳೂ ನಿವೃತ್ತಿಹೊಂದಿ ಪರಮಾನಂದ ಪ್ರಾಪ್ತಿಯಾಗುವುದೇ ಮೋಕ್ಷ. ಅಜ್ಞಾನವು ನಿವೃತ್ತಿ ಹೊಂದಿ "ಅಹಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಸ್ಮಿ" ಎಂಬ ಜ್ಞಾನವುಂಟಾಗುವುದೇ ಸಚ್ಚಿದಾನಂದಸ್ವರೂಪವಾದ ಪರಬ್ರಹ್ಮದಲ್ಲಿ ಐಕ್ಯ ಹೊಂದುವುದು. ಬ್ರಹ್ಮನಿರ್ವಾಣ ಬ್ರಹ್ಮನಿರ್ವಾಣಿ ಮೋಕ್ಷಂ ಇತಿ ಗಂಚತಿ ಎಂದು ಶ್ರೀ ಶಂಕರಭಗವತ್ಪಾದಾಚಾರ್ಯರ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ. (ಶ್ರೀ ಶಂಕರಭಾಷ್ಯ.) ಬ್ರಹ್ಮನಿರ್ವಾಣ ಪದಕ್ಕೆ ಪಷ್ಠಿಸಮಾಸ ಹೇಳದೆ ನಿರ್ವಾಣಮಯಂ ಬ್ರಹ್ಮ ಗಂಚತಿ ಸುಖೇತಾನಮಾತ್ಮಾನಂ ಅವಾಪ್ನೋತಿ ಸುಖೈಕಸ್ವರೂಪನಾದ ಆತ್ಮನನ್ನು ಹೊಂದುತ್ತಾನೆ ಎಂದು ಶ್ರೀ ರಾಮಾನುಜಾಚಾರ್ಯರ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ (ಭಾಷ್ಯ).

ಅಪರಿಗಣಿತಾನಂತಗುಣಗಣಂ ನಾರಾಯಣಾಖ್ಯಂ ಪರಂ ಬ್ರಹ್ಮ ಅಪರೋಕ್ಷಜ್ಞಾನಿ ಇತಿ ಅಪರೋಕ್ಷ ಜ್ಞಾನಿಯು ಸಕಲಗುಣ ಗಣಪರಿಪೂರ್ಣನಾದ ಶ್ರೀ ನಾರಾಯಣನೆಂಬ ಪರಬ್ರಹ್ಮವನ್ನು ಹೊಂದುತ್ತಾನೆ ಎಂದು ಶ್ರೀಮದಾನಂದತೀರ್ಥ ಶ್ರೀಪಾದರ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ (ಭಾಷ್ಯ).

**ಬ್ರಹ್ಮಪತ್ರ ಬ್ರಹ್ಮಪತ್ರ (ನಂ)** ಪಲಾಶಪತ್ರ, ಮುತ್ತಗದ ಎಲೆ. "ಭೋಜನಂ ಬ್ರಹ್ಮಪತ್ರೇಷು ಕಥಯಾಲೋಚನಂ ಹರೇಃ । ದರ್ಶನಂ ವೇಣವಾನಾಂ ಚ ಮಹಾಪಾತಕನಾಶನಮ್" ।

**ಬ್ರಹ್ಮಪದ ಬ್ರಹ್ಮಪದ (ನಂ)** 1. ಪರಬ್ರಹ್ಮದ ಸ್ಥಾನ. 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಸ್ಥಾನ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಪದವಿ.

**ಬ್ರಹ್ಮಪವಿತ್ರ ಬ್ರಹ್ಮಪವಿತ್ರ (ಫಂ)** ಕುಶ, ದರ್ಭೆ.

**ಬ್ರಹ್ಮಪರಿಷದ್ ಬ್ರಹ್ಮಪರಿಷದ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಬ್ರಾಹ್ಮಣರ ಸಭೆ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣರ ಗೋಷ್ಠಿ.

**ಬ್ರಹ್ಮಪಾದಪ ಬ್ರಹ್ಮಪಾದಪ (ಫಂ)** 1. ಪಲಾಶವೃಕ್ಷ, ಮುತ್ತಗದ ಮರ. ಬ್ರಹ್ಮಾ ತದಾಖ್ಯಯಾ ಪ್ರಸಿದ್ಧಃ ಪಾದಪಃ । 2. ಉದುಂಬರ ವೃಕ್ಷ, ಅತ್ತಿಮರ.



**ಬ್ರಹ್ಮಪಾರಾಯಣ ಬ್ರಹ್ಮಸಾರಾಯಣ (ನಂ) ಸಂಪೂರ್ಣ**  
ವೇದಾಧ್ಯಯನ. ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ವೇದಸ್ಯ ಪಾರಾಯಣಂ ಸಮಗ್ರಾಧ್ಯಯನಮ್ |  
“ತೇಷಾಮಿದಾನಿ ದಾಯಾದೋ ವೃದ್ಧಃ ಸೀರಧ್ವಜೋ ನೃಪಃ |  
ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕಯೋ ಮುನಿರಯಮ್ ಬ್ರಹ್ಮಪಾರಾಯಣಂ ಜಗೌ” ಮಂ ವೀಂ  
೧-೧೪ |

**ಬ್ರಹ್ಮಪಾಶ ಬ್ರಹ್ಮಪಾಶ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮಾಸ್ತ್ರ.** ಬ್ರಹ್ಮಣಾ ದತ್ತಃ  
ಪಾಶಃ | “ಅಬಜ್ಜಾತಪರಿಹರಂ ಬ್ರಹ್ಮಪಾಶೇನ ವಿಹರನ್”  
ಮಡಿಂ ೧-೭೬ |

**ಬ್ರಹ್ಮಪುತ್ರ ಬ್ರಹ್ಮಪುತ್ರ (ಪುಂ) 1.** ಒಂದು ನದಿ, ಒಂದು  
ಗಂಡು ಹೊಳೆ. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿಗೆ ಹರಿಯುವ ಹೊಳೆಯು  
ನದಿ. ಪಶ್ಚಿಮದಿಕ್ಕಿಗೆ ಹರಿಯುವ ಹೊಳೆಯು ನದಿ.  
ಬ್ರಹ್ಮಪುತ್ರವು ಹಿಮಾಲಯದ ಪೂರ್ವಭಾಗದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ  
ಬಂಗಾಳಕೊಲ್ಲಿಯನ್ನು ಸೇರುವುದು. 2. ಕಾಕೋಲಾದಿ  
ವಿಷಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. ಬ್ರಹ್ಮಣಃ ಪುತ್ರಃ | “ತ್ವಂ ವಿಷ  
ಬ್ರಹ್ಮಣಃ ಪುತ್ರಃ ಸತ್ಯೇ ಧರ್ಮೇ ವ್ಯವಸ್ಥಿತಃ” ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೧೦ |  
“ಬ್ರಹ್ಮಪುತ್ರಃ ಕ್ವೇತುಭೇದೇ ನದಿಭೇದೇ ಚ ಪುಂಸ್ಯಯಮ್” ಮೇಡಿಂ |  
3. ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಗ. ನಾರದ ಮೊದಲಾದ ಹತ್ತು ಮಂದಿ  
ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಾನಸಪುತ್ರರು. 4. ರುದ್ರ. “ಬ್ರಹ್ಮಪುತ್ರಸ್ತು  
ಹ್ರೇಷಿಣಿ” ವೇಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪುತ್ರಿ-ಪುತ್ರಿ. ಸರಸ್ವತೀ  
ನದಿ.

**ಬ್ರಹ್ಮಪುರಿ ಬ್ರಹ್ಮಪುರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1.** ಬ್ರಹ್ಮನ ಸ್ಥಾನ, ಜಪ  
ಕ್ಕಾಗಿ ಧ್ಯಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ ಪರಬ್ರಹ್ಮದ ಸ್ಥಾನವಾದ  
ಹೃದಯಕಮಲ, ಮೋಡಶದಳಾತ್ಮಕವಾದ ನಾಡೀಚಕ್ರ.  
ಬ್ರಹ್ಮಣಃ ಪುರಿ | 2. ಕಾಶೀನಗರ. “ವಿद्याಪ್ರಬೋಧೋದಯ-  
ಜನ್ಮಭೂಮಿವಿರಾಣಸೀ ಬ್ರಹ್ಮಪುರಿ ನಿರತಯಾ” ಪ್ರಬೋಧಂ ೨-೧೨ |

**ಬ್ರಹ್ಮಬಂಧು ಬ್ರಹ್ಮಬಂಧು (ಪುಂ) 1.** ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಂದ ಜನ್ಮ  
ಪಡೆದು ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋಚಿತವಾದ ಯಾವ ಆಚಾರವೂ ಇಲ್ಲ  
ದವನು, ನಿಂದ್ಯನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಬ್ರಹ್ಮಾ ವಿಪ್ರಃ ಬಂಧುರಸ್ಯಾದಕೋ  
ಯಸ್ಯ ಬ್ರಹ್ಮಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಜಾತಿಃ ಬಂಧುರಸ್ಯ ವಾ | “ವಪನಂ ದ್ರವಿಣಾ-  
ದಾನಂ ಸ್ಥಾನಾನಿವಾಸಿನಂ ತಥಾ | ಏಷ ಹಿ ಬ್ರಹ್ಮಬಂಧುನಾಂ ವಧೋ  
ನಾನ್ಯೋಽಸ್ತಿ ದೇಹಿಕಃ” ಭಾಗಂ ೧-೭-೪೭ | 2. ನಿರ್ದೇಶ,  
ತೋರಿಸುವುದು. ದ್ವೇಷಾದಿಗಳಿಂದ ಹೆಸರನ್ನು ಹೇಳಲು  
ಇಷ್ಟವಿಲ್ಲದೆ ನಿರ್ದೇಶಮಾಡಿ ಹೇಳುವುದು. 3. ಅಧಿಕ್ಷೇಪ,  
ತಿರಸ್ಕಾರ. “ಬ್ರಹ್ಮಬಂಧುರಧಿಕ್ಷೇಪೇ ನಿರ್ದೇಶೋ” ಅಮಂ | “ಬ್ರಹ್ಮ-  
ಬಂಧುರಧಿಕ್ಷೇಪೇ ನಿರ್ದೇಶೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ನಾ” ಮೇಡಿಂ |

**ಬ್ರಹ್ಮಬಿಂದು ಬ್ರಹ್ಮಬಿಂದು (ಪುಂ) ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ**  
ಬಾಯಿಂದ ಬೀಳುವ ನೀರಿನ ಹನಿ. ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಬಿಂದುವಃ |  
“ಪಾಠೇ ವಿಶ್ರುಣೋ ಬ್ರಹ್ಮಬಿಂದುವಃ” ಅಮಂ |

**ಬ್ರಹ್ಮಬ್ರವಣ ಬ್ರಹ್ಮಬ್ರವಣ (ಪುಂ) 1.** (ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಲ್ಲ  
ದವನು) ತಾನು ಬ್ರಾಹ್ಮಣನೆಂದು ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳುವವನು.  
ಆತ್ಮಾನಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ಬ್ರೂತೇ-ಬ್ರೂ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಶಾನಂ”  
(೩-೨-೧೨೪) | ಕರ್ಣನು ತಾನು ಬ್ರಾಹ್ಮಣನೆಂದು  
ಹೇಳಿ ಪರಶುರಾಮನಲ್ಲಿ ಅಸ್ತವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿತನು.  
2. ಆಯೋಗ್ಯನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ಹೆಸರಿಗೆ ಮಾತ್ರ  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ಜಾತಿ ಮಾತ್ರದಿಂದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನೆಂದು ಹೇಳಿ  
ಕೊಳ್ಳುವವನು.

**ಬ್ರಹ್ಮಭದ್ರಾ ಬ್ರಹ್ಮಭದ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಹಿದಸರಿ, ನೀರಾಮೆ**  
ಬಳ್ಳಿ.

**ಬ್ರಹ್ಮಭಾಗ ಬ್ರಹ್ಮಭಾಗ (ಪುಂ) ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಮುಕ್ತಿಕ್ಕಾಗಿ**  
ಕೊಡಬೇಕಾದ ಭಾಗ. ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಭಾಗಃ |

**ಬ್ರಹ್ಮಭುವನ ಬ್ರಹ್ಮಭುವನ (ನಂ) ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕ, ಸತ್ಯ**  
ಲೋಕ. ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಭುವನಮ್ | ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕವು ವಿರಾಟ್  
ಪುರಾಷನ ಅವಯವಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ಶಿವೋಭಾಗದಲ್ಲಿ  
ಇರುವುದು. ಇದು ಏಳು ಊರ್ಧ್ವಲೋಕಗಳಲ್ಲೊಂದು.  
“ಮूर्ಧನಿಃ ಸತ್ಯಲೋಕಸ್ತು ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕಃ ಸನಾತನಃ” ಭಾಗಂ ೨ |  
“ಆಬ್ರಹ್ಮಭುವನಾಲ್ಲೋಕಾಃ ಪುನರಾವರ್ತಿನೋಽಜ್ಞಿನಃ” ಗೀತಾ ೮-೧೬ |

**ಬ್ರಹ್ಮಭೂತ ಬ್ರಹ್ಮಭೂತ (ವಿಂ) 1.** ಬ್ರಹ್ಮಭಾವವನ್ನು  
ಹೊಂದಿದವನು. ಶಾಂ ಭಾಂ | 2. ಅಪರಿಚ್ಛಿನ್ನವಾದ  
ಜ್ಞಾನವನ್ನು ಹೊಂದಿ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಶೇಷನಾಗಿರುವ  
ನೆಂಬ ಸ್ವಭಾವದ ಆತ್ಮಸ್ವರೂಪವುಳ್ಳವನು. ರಾಂ ಭಾಂ |  
“ಬ್ರಹ್ಮಭೂತಃ ಪ್ರಸನ್ನಾತ್ಮಾ ನ ಶೋಚತಿ ನ ಕಾಡ್ಭತಿ |  
ಸಮಃ ಸರ್ವೇಷು ಭೂತೇಷು ಮರ್ತ್ಯಕಿಂ ಲಬ್ಧವೇ ಪರಾಮ್” ಗೀತಾ  
೧೮-೪೪ |

**ಬ್ರಹ್ಮಭೂಯ ಬ್ರಹ್ಮಭೂಯ (ನಂ) 1.** ಬ್ರಹ್ಮತ್ವ, ಬ್ರಹ್ಮ  
ಭಾವ, ಬ್ರಹ್ಮನಾಗುವಿಕೆ, ಬ್ರಹ್ಮನಲ್ಲೇ ಲಯಹೊಂದುವಿಕೆ,  
ಮೋಕ್ಷ. ಬ್ರಹ್ಮಣಿ ಭಾವಃ-ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “ಕೃಪ್”  
(೩-೧-೧೦೭) | ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಭಾವೋ ವಾ | 2. ಆತ್ಮಾನುಭವ,  
ಬ್ರಹ್ಮಸಾಮ್ಯ. 3. ಸರ್ವದಾ ಬ್ರಹ್ಮಮನಸ್ಕನಾಗಿರುವಿಕೆ.  
“ಅಹಂಕಾರಂ ಬಲಂ ದರ್ಪಂ ಕಾಮಂ ಕ್ರೋಧಂ ಪರಿಗ್ರಹಮ್ | ವಿಮುಚ್ಯ  
ನಿರ್ಮಮಃ ಶಾಂತೋ ಬ್ರಹ್ಮಭೂಯಾ ಕಲ್ಪತೇ” ಗೀತಾ ೧೮-೪೩ |  
“ಯಶೋಭಿರಾಬ್ರಹ್ಮಸಮಂ ಪ್ರಕಾಶಃ ಸ ಬ್ರಹ್ಮಭೂಯಂ ಗತಿಮಾಜಗಾಮ್”  
ರಘುಂ ೧೮-೨೮ | 4. ಬ್ರಾಹ್ಮಣತ್ವ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಾಗುವಿಕೆ.

**ಬ್ರಹ್ಮಮಯ ಬ್ರಹ್ಮಮಯ (ವಿಂ) ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವರೂಪದ, ವೇದ**  
ಸ್ವರೂಪದ. ಬ್ರಹ್ಮನ್ “ಮಯಿ” (೪-೪-೨೨) | “ಅಥಾ-  
ಜಿನಾಷಾಧರಃ ಪ್ರಗಲ್ಬವಾಗ್ಜ್ವಲನ್ನಿವ ಬ್ರಹ್ಮಮಯೇನ ತೇಜಸಾ”  
ಕುಮಾಂ ೪-೩೦ |



**ಬ್ರಹ್ಮಸೂತ್ರವೇದಾಂತ** ಬ್ರಹ್ಮಮಂಗಲವೇದಾಂತ (ಸ್ತಂ) ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿ.

**ಬ್ರಹ್ಮಸೂತ್ರ** ಬ್ರಹ್ಮಮಹ (ಪಂ) ಬ್ರಹ್ಮಣ ಸಂತೋಷಾರ್ಥ (ಗೌರವಾರ್ಥ) ನಡೆಸುವ ಉತ್ಸವ, ಸಂತೋಷಕೂಟ.

**ಬ್ರಹ್ಮಮೀಮಾಂಸಾ** ಬ್ರಹ್ಮಮೀಮಾಂಸಾ (ಸ್ತಂ) ಬ್ರಹ್ಮ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ, ವೇದಾಂತ, ವ್ಯಾಸ ಮಹರ್ಷಿಪ್ರಣೀತವಾದ ಬ್ರಹ್ಮಸೂತ್ರ, ಉತ್ತರ ಮೀಮಾಂಸೆ.

**ಬ್ರಹ್ಮಯಜ್ಞ** ಬ್ರಹ್ಮಯಜ್ಞ (ಪಂ) ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮತ್ತು ವೇದಾಧ್ಯಾಪನ, ವೇದವನ್ನು ಹೇಳುವುದು (ಪಾರಾಯಣ ಮಾಡುವುದು) ಮತ್ತು ಹೇಳಿಕೊಡುವುದು. ಇದು ಪ್ರತಿ ದಿನವೂ ಗೃಹಸ್ಥನು ಮಾಡಬೇಕಾದ ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞ ಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಅಧ್ಯಾಪನಂ ಬ್ರಹ್ಮಯಜ್ಞಃ ಪಿತೃಯಜ್ಞಸ್ತು ತರ್ಪಣಮ್ | ಹೋಮೋ ದೇವೋ ಬಲಿಭೌತೋ ನೃಯಜ್ಞೋಽತಿಥಿಪೂಜನಮ್" ಮನುಂ ೩-೨೦ | ಇಲ್ಲಿ "ಅಧ್ಯಾಪನ" ಪದವು ಅಧ್ಯಯನಕ್ಕೂ ಉಪಲಕ್ಷಣ.

**ಬ್ರಹ್ಮಯೋಗ** ಬ್ರಹ್ಮಯೋಗ (ಪಂ) ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನ ಸಂಪಾದನೆ.

**ಬ್ರಹ್ಮಯೋನಿ** ಬ್ರಹ್ಮಯೋನಿ (ಪಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮನ ಪುತ್ರ. ಬ್ರಹ್ಮಾ ಯೋನಿಃ ಕಾರಣಂ ಯಸ್ಯ | "ತ್ವಯೇವ ಚಿಂತ್ಯಮಾನಸ್ಯ ಗುಣಾ ಬ್ರಹ್ಮಯೋನಿನಾ" ರಘುಂ ೧-೬೪ | (ವಿಂ) 2. ಬ್ರಹ್ಮ ನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ. 3. ವೇದಗಳಿಗೆ ಕಾರಣನಾದ. 4. ಬ್ರಹ್ಮನ ಉತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣನಾದ. "ಯಸ್ಯ ಚೇತಸಿ ವರ್ತೇತಾಃ ಸ ತಾವತ್ ಕೃತಿನಾಂ ವರಃ | ಕಿಂ ಪುನಃ ಬ್ರಹ್ಮಯೋನೇಃ ತವ ಚೇತಸಿ ವರ್ತೇತೆ" ಕುಮಾರಂ ೬-೧೮ | 5. ಬ್ರಹ್ಮಪ್ರಾಪ್ತಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ ಬ್ರಹ್ಮಧ್ಯಾನ. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾ ಬ್ರಹ್ಮ ಯೋನಿಃ ಸ್ಥಾಃ ಯೇ ಸ್ವಕಮಂಥ-ವಸ್ಥಿತಾಃ" ಮನುಂ ೧೦-೨೪ |

**ಬ್ರಹ್ಮಯೋನಿ** ಬ್ರಹ್ಮಯೋನೀ (ಸ್ತಂ) ಒಂದು ತೀರ್ಥ. ಇದು ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಸರಸ್ವತೀ ನದೀತೀರದಲ್ಲಿರುವುದು. ಬ್ರಹ್ಮಾ ಯೋನಿಃ ಸ್ಥಾಪಿತಕಾರಣಂ ಯಸ್ಯಾಃ |

**ಬ್ರಹ್ಮರಂಧ್ರ** ಬ್ರಹ್ಮರಂಧ್ರ (ನಂ) ತಲೆಯಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ರಂಧ್ರ, ತಲೆಯಿಂದ ಪ್ರಾಣವಾಯುವು ಹೊರಡುವ ಒಂದು ತೂತು. ಬ್ರಹ್ಮಣ ಬ್ರಹ್ಮಪ್ರಾಪ್ತये ರಂಧ್ರಮ್ | ಈ ರಂಧ್ರ ದಿಂದ ಪ್ರಾಣವಾಯುವು ನಿರ್ಗಮಿಸಿದರೆ ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕ ಪ್ರಾಪ್ತಿಯಾಗುವುದು. ಇದರಿಂದ ಬ್ರಹ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ ವಾಗುವುದು. ಗುರುಮುಖದಿಂದ ಸುಷುಮ್ನಾ (ಮಧ್ಯ ನಾಡೀ) ಭೇದನ ಪ್ರಕಾರವನ್ನೂ ತಿಳಿದು ಪ್ರಾಣವಾಯುವು ಮಧ್ಯನಾಡಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಿ ಬ್ರಹ್ಮರಂಧ್ರ ದಲ್ಲಿ ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸಬೇಕು. ಹೀಗೆ ನಿರೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ

ಪ್ರಾಣವಾಯುವು ಅಲ್ಲಿ ಲಯಹೊಂದಿದ ನಂತರ ಮನಸ್ಸೂ ಲಯಹೊಂದುವುದು. ಪ್ರಾಣವಾಯು ಮತ್ತು ಮನಸ್ಸು ಲಯಹೊಂದಿದ ಮೇಲೆ ಅಬಾಧಿತವಾದ ಬ್ರಹ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವಾಗುವುದು. ಆಗ ಪ್ರರುಷನು ಜೀವನ್ಮುಕ್ತನಾಗುವನು. "ಜ್ಞಾತ್ವಾ ಸುಷುಮ್ನಾಸದ್ಭೇದಂ ಕೃತ್ವಾ ವಾಯುಂ ಚ ಮಧ್ಯಗಮ್ | ಸ್ಥಿತ್ವಾ ಸದೇವ ಸುಸ್ಥಾನೇ ಬ್ರಹ್ಮರಂಧ್ರೇ ನಿರೋಧಯೇತ್" ಹಠಂ ೪-೧೬ | "ಸುಷುಮ್ನಾ ಮಧ್ಯನಾಡೀ ತಸ್ಯಾಃ ಸದ್ಭೇದಂ ಶೋಭನಂ ಭೇದನಪ್ರಕಾರಂ ಜ್ಞಾತ್ವಾ ಗುರುಮುಖಾದಿವಿದಿತ್ವಾ ವಾಯುಂ ಪ್ರಾಣಂ ಮಧ್ಯಗಮಧ್ಯನಾಡೀಸಂಚಾರಿಣಂ ಕೃತ್ವಾ ಬ್ರಹ್ಮರಂಧ್ರೇ ಮೂರ್ಧನವಿಕಾಶೇ ನಿರೋಧಯೇತ್ ನಿತರಾಂ ರುದ್ಧಂ ಕುರ್ಯಾತ್ | ಪ್ರಾಣಸ್ಯ ಬ್ರಹ್ಮರಂಧ್ರೇ ನಿರೋಧೋ ಲಯಃ | ಪ್ರಾಣಲಯೇ ಜಾತೇ ಮನೋಽಪಿ ಲೀಯತೇ | ಪ್ರಾಣಮನಸೋರ್ಲಯೇ ಸತಿ ಭಾವನಾವಿಶೇಷರೂಪಸಮಾಧಿಸಹಕೃತೇನಾಂತಃಕರಣೇನ ಅಬಾಧಿತಾತ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರೋ ಭವತಿ | ತದಾ ಜೀವನ್ಮುಕ್ತಃ ಪುರುಷೋ ಮುಕ್ತೋ ಭವತಿ" ಇತಿ ಟೀಕಾ |

**ಬ್ರಹ್ಮರಾಕ್ಷಸ** ಬ್ರಹ್ಮರಾಕ್ಷಸ (ಪಂ) ಹಿಂಸಾಕೃತ್ಯಗಳಿಂದ ರಾಕ್ಷಸತ್ವವನ್ನು ಹೊಂದಿದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿ ಪರಸ್ತ್ರೀಹರಣ ಪರಧನಾಪಹರಣ ಇತ್ಯಾದಿಗಳಿಂದ ರಾಕ್ಷಸ ಜನ್ಮ ಪಡೆದ ಆತ್ಮ. (ಭೂತ, ಪಿಶಾಚ). "ಪರಸ್ಯ ಯೋಷಿತಂ ಹೃತ್ವಾ ಪರಸ್ವಮಪಹೃತ್ಯ ಚ | ಅರಣ್ಯೇ ನಿರ್ಜಲೇ ದೇಶೇ ಭವತಿ ಬ್ರಹ್ಮರಾಕ್ಷಸಃ" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೨೧೨ | "ಸಂಯೋಗಂ ಪತಿಸ್ತೇರ್ಗತ್ವಾ ಪರಸ್ಯೇವ ಚ ಯೋಷಿತಮ್ | ಅಪಹೃತ್ಯ ಚ ವಿಪ್ರಸ್ವಂ ಭವತಿ ಬ್ರಹ್ಮರಾಕ್ಷಸಃ" ಮನುಂ ೧೨-೬೦ |

**ಬ್ರಹ್ಮರಾತ** ಬ್ರಹ್ಮರಾತ (ಪಂ) ಶುಕಮಹರ್ಷಿ.

**ಬ್ರಹ್ಮರಾತ್ರಿ** ಬ್ರಹ್ಮರಾತ್ರಿ (ಸ್ತಂ) ಚತುರ್ಮುಖ ಬ್ರಹ್ಮನ ರಾತ್ರಿ. ದೇವತೆಗಳ 1000 ಚತುರ್ಮುಖಗಳ (1,20,00,000 ದೇವತೆಗಳೂ ಅಥವಾ 4,32,00,00,000 ಮಾನುಷ ವರ್ಷಗಳು) ಕಾಲ. ಬ್ರಹ್ಮನ ಈ ರಾತ್ರಿಕಾಲದಲ್ಲಿ ತೈಲೋಕ್ಯದೊಳಗಿನ ಚರಾ ಚರಾತ್ಮಕ (ಸ್ಥಾವರ ಜಂಗಮ) ಸಕಲ ವಸ್ತುಗಳೂ ಬ್ರಹ್ಮನ ದೇಹಾವಸ್ಥಾರೂಪವಾದ ಅವ್ಯಕ್ತದಲ್ಲಿ ಲಯಹೊಂದುವುವು. ಇದು ನೈಮಿತ್ತಿಕ ಪ್ರಲಯ. "ಅವ್ಯಕ್ತಾದ್ವ್ಯಕ್ತತಯಃ ಸರ್ವಾಃ ಪ್ರಭವಂತ್ಯಹರಾಗಮೇ | ರಾತ್ರಾಗಮೇ ಪ್ರಲೀಯಂತೇ ತತ್ರೈವಾ-ವ್ಯಕ್ತಸಂಜ್ಞಕೇ" ಗೀತಾ ೮-೧೮ | [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಬ್ರಹ್ಮದಿನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ದೈವಿಕಾನಾಂ ಯುಗಾನಾಂತು ಸಹಸ್ರಂ ಪರಿ-ಸಂಖ್ಯಯಾ | ಬ್ರಾಹ್ಮಮೇಕಮಹಶ್ಚೈವ ತಾವತೀ ರಾತ್ರಿರೇವ ಚ" ಮನುಂ ೧-೨೨ | "ಬ್ರಾಹ್ಮೋ ನೈಮಿತ್ತಿಕೋ ನಾಮ ತಸ್ಯಾಂತೇ ಪ್ರತಿಸಂಚರಃ | ತದಾ ಹಿ ದಹತೇ ಸರ್ವಂ ತ್ರಿಲೋಕಂ ಭೂಭುವಾದಿಕಮ್" ವಿಷ್ಣುಪುಂ ೧-೩-೨೨ | ನೈಮಿತ್ತಿಕ ಪ್ರಳಯದಲ್ಲಿ ರುದ್ರರೂಪಿಯಾದ ವಿಷ್ಣುವು ಮೂರು ಲೋಕಗಳನ್ನು ದಹಿಸಿ ತನ್ನ ನಿಶ್ವಾಸ



ದಿಂದ ಮೇಘಗಳನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸುವನು. ಈ ಮೇಘಗಳು ನೂರು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಸತತವಾಗಿ ಭಯಂಕರವಾದ ಸಿಡಿಲುಗುಡುಗುಗಳೊಡನೆ ಮಳೆಯನ್ನು ಸುರಿಸಿ ಪ್ರಳಯಾಗ್ನಿಯನ್ನು ಶಾಂತಗೊಳಿಸುವವು. ಮತ್ತೆ ಪರಮಾತ್ಮನ ನಿಶ್ವಾಸದಿಂದ ಹೊರಟ ವಾಯುವು ಆ ಮೇಘಗಳನ್ನು ಚದುರಿಸಿದನಂತರ ಆ ವಾಯುವನ್ನು ಪಾನಮಾಡಿ ವಿಷ್ಣುವು ಏಕಾಕಾರವಾದ ಆ ಮಹಾಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಶೇಷಶಾಯಿಯಾಗಿ ಜನಲೋಕ ನಿವಾಸಿಗಳಾದ ಸನಕಾದಿ ಮಹರ್ಷಿಗಳಿಂದ ಸ್ತುತಿಸಲ್ಪಡುತ್ತ ಯೋಗನಿದ್ರೆಯಲ್ಲಿ ಮಗ್ನನಾಗಿರುವನು. "एकाणवे तु त्रैलोक्ये ब्रह्मा नारायणात्मकः। भोगिशय्यां गतः शते त्रैलोक्यप्रास-  
बृंहितः" विष्णुपु० १-३-२४।

**ಬ್ರಹ್ಮರೀತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿತಾಳೆ.

**ಬ್ರಹ್ಮರೇಖಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಣೆಯ ಬರಹ. ಬ್ರಹ್ಮನು ಮನುಷ್ಯನ ಕರ್ಮಾನುಗುಣವಾದ ಫಲಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸಲು ಹಣೆಯಲ್ಲಿ ಬರೆಯುವ ರೇಖೆ, ಅದೃಷ್ಟವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ರೇಖೆ, ಲಠಾಟ ರೇಖೆ.

**ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿ** (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮನ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಅರಿತಿರುವ ಋಷಿ, ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನಿಯಾದ ಋಷಿ. 2. ಸಂಪೂರ್ಣ ವೇದಜ್ಞಾನವನ್ನು ಪಡೆದ ಋಷಿ. ಬ್ರಹ್ಮ ಪರಬ್ರಹ್ಮ ವೇದ ವಾ ಋಷತಿ ವೇದಿ — ಋಷಿ (ಗತೌ) "ಇನ್" (ತಂ ४-१२०)। ವಸಿಷ್ಠ ಮೊದಲಾದ ಋಷಿಗಳು. "ब्रह्मर्षयो वसिष्ठाद्याः सुश्रुताद्याः श्रुतर्षयः"। "ब्रह्मर्षि-  
शब्दमतुलं स्वाजितैः कर्मभिः शुभैः। यदि मे भगवन्नाह  
ततोऽहं विजितेन्द्रियः" भा०।

**ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿದೇಶ** (ಪುಂ) ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರ ಮೊದಲಾದ ನಾಲ್ಕು ದೇಶಗಳು, ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿಗಳ ವಾಸಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ದೇಶಗಳು. ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿಗಳ ದೇಶ: ವಾಸಯೋಗ್ಯ ದೇಶ:। ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರ, ಮತ್ಸ್ಯದೇಶ, ಪಂಚಾಲದೇಶ ಮತ್ತು ಶೂರಸೇನ ದೇಶ ಇವು ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿದೇಶಗಳು. "कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पञ्चालाः शूरसेनकाः। एष ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मावतदिनन्तरः" मनु० २-१९।

**ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕ** (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮನ ಜಗತ್ತು, ಸತ್ಯ ಲೋಕ. ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಲೋಕ:।

**ಬ್ರಹ್ಮವಚ** (ನಂ) ಬ್ರಹ್ಮನ ವಾಕ್ಯ, ವೇದ. ಬ್ರಹ್ಮಣ: ವದನಮ್ ವಾಕ್ಯನ್ -- ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ "यत्" (३-१-१०६)।

**ಬ್ರಹ್ಮವರ್ಚಸ** (ನಂ) 1. ತಪಸ್ಸು ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಇವುಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದ ತೇಜಸ್ಸು. ಬ್ರಹ್ಮಣಾ ತಪಸಾ

वेदेन वा वर्चः "अच्" (५-४-७८)। ವೇದೋಕ್ತವಾದ ಆಚಾರಪರಿಪಾಲನವು ವೃತ್ತ, ಗುರುಮುಖದಿಂದ ವೇದಾಧ್ಯಯನವು ಅಧ್ಯಯನ. ಈ ವೃತ್ತ ಮತ್ತು ಅಧ್ಯಯನಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ತೇಜಸ್ಸಿನ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಯು ಬ್ರಹ್ಮವರ್ಚಸ. "पुरुषायुषजीविन्यो निरातङ्का निरी-  
तयः। यन्मदीयाः प्रजास्तस्य हेतुस्त्वद्ब्रह्मवर्चसम्" रघु० १-६३। 2. ಅಂತಃಸತ್ತ್ವ. "भवतु दृष्टं ब्रह्मवर्चसम्" शाकु० ६।

**ಬ್ರಹ್ಮವರ್ಚಸ್ವಿನ್** ಬ್ರಹ್ಮವರ್ಚಸ್ವಿನ್ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮವರ್ಚಸ್ಸುಳ್ಳವನು, ತಪಸ್ಸು ಮತ್ತು ವೇದಾಧ್ಯಯನಗಳಿಂದ ತೇಜಸ್ವಿಯಾಗಿರುವವನು. ಬ್ರಹ್ಮವರ್ಚಸ್ "विनिः" (५-२-१२१)। "ब्रह्मवर्चस्विनः पुत्रा जायन्ते शिष्ट-  
संमताः" मनु० ३-३९।

**ಬ್ರಹ್ಮವರ್ಧನ** ಬ್ರಹ್ಮವರ್ಧನ (ನಂ) ತಾಮ್ರಲೋಹ.

**ಬ್ರಹ್ಮವಾದ** (ಪುಂ) 1. ವೇದಪಠನ, ವೇದ ಪಾರಾಯಣ. ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ವೇದಸ್ಯ ವಾದ: ವದನಮ್ ಪಠನಮಿತ್ಯರ್ಥ:। "बृहस्पतिर्ब्रह्मवादे आत्मतत्त्वे स्वयं हरिः" भाग०  
४-२२-६२। 2. ಬ್ರಹ್ಮನಿರ್ಣಾಯಕ ವಾಕ್ಯ, ಬ್ರಹ್ಮತತ್ತ್ವವನ್ನು ನಿರ್ಣಯಿಸುವ ವಾಕ್ಯ. (ವಿಂ) 3. ಬ್ರಹ್ಮ (ವೇದ) ಪಠನ ಮಾಡುವವನು, ವೇದಪಾರಾಯಣ ಮಾಡುವವನು. ಬ್ರಹ್ಮವಾದೋ ವೇದಪಾಠೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "अच्"।

**ಬ್ರಹ್ಮವಾದಿನ್** ಬ್ರಹ್ಮವಾದಿನ್ (ಪುಂ) 1. ವೇದಪಠನ ಮಾಡುವವನು. ಬ್ರಹ್ಮವಾದ: ವೇದವಾದೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "इनिः" (५-२-११५)। "तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपः  
क्रियाः। प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम्" गीता १७-२४। 2. ವೇದಾನ್ತಪ್ರತಿಪಾದ್ಯವಾದ ಪರ ಬ್ರಹ್ಮದ ವಿಚಾರದಲ್ಲಿ ವಾದಮಾಡುವವನು. "यद्ब्रह्म-  
वादिभिरुपासितवन्धपादे" म० वी० ४-२१।

**ಬ್ರಹ್ಮವಾದಿನಿ** ಬ್ರಹ್ಮವಾದಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಾಯತ್ರಿ.

**ಬ್ರಹ್ಮವಿದ್** ಬ್ರಹ್ಮವಿದ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಬ್ರಹ್ಮ ಅನಂತಶಾಖೆ ವೇದ ವೇದಿ ಜಾನಾತಿ--ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "क्विप्" (३-२-६१)। "यो वेदान्ततो वेत्ति स ब्रह्मविद् उदीरितः" इति निरुक्तिः। "ब्रह्मविद् ब्राह्मणो ब्रह्मी" वि० स०। 2. ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನವನ್ನು ಪಡೆದವನು, ಬ್ರಹ್ಮ ಪರಮಾತ್ಮನ ವೇದಿ. ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನಿಯಾದವನು ಪರಮಪದವನ್ನು ಹೊಂದುತ್ತಾನೆ. "ब्रह्म-  
विदानोति परम्" तै० उप०। 3. ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು, ಸಂಪೂರ್ಣ ವೇದಾರ್ಥವನ್ನು ತಿಳಿದವನು.



ब्रह्मसुत ब्रह्मसूत, -सूनु -सूनु (१०) मरीचि  
अत्रि, वसिष्ठा नारद मोदलाद दश प्रजापतिगण.



**ಬ್ರಹ್ಮಸು ಬ್ರಹ್ಮಸೂ (ಪುಂ)** 1. ಕಾಮದೇವ, ಮನ್ಮಥ. ಬ್ರಹ್ಮ  
ತಪಃ ಸುವತಿ ಪ್ರೇರಯತಿ ಚಾಲಯತಿ ಯಾವತ್ — ಷ (ಪ್ರೇರಣೆ)  
“ವಿವಿ” (3-2-36)। “ಬ್ರಹ್ಮಸುವಿಶ್ವಕೇತುಃ ಸ್ಯಾತ್”  
ಅಮಂ 1. 2. ಅನಿರುದ್ಧ. ಅನಿರುದ್ಧಮೂರ್ತಿಯಾದ  
ಪರಮಾತ್ಮನಿಂದ ಬ್ರಹ್ಮನು ಜನಿಸಿದನು. “ಅನಿರುದ್ಧಾತ್ಮತೋ  
ಬ್ರಹ್ಮಾ ತನ್ನಾಭಿಕಮಲೋದ್ಭವಃ” ಬ್ರಹ್ಮಪುಂ 1.

**ಬ್ರಹ್ಮಸೂತ್ರ ಬ್ರಹ್ಮಸೂತ್ರ (ನಂ)** 1. ಯಜ್ಞಸೂತ್ರ,  
ಯಜ್ಞೋಪವೀತ. ಬ್ರಹ್ಮಣಿ ವೇದಾಧ್ಯಯನಸಮಯೆ ಉಪನಯನಕಾಲೆ  
ಧೃತಂ ಸೂತ್ರಮ್। “ತಸ್ಯೋಪನೀಯಮಾನಸ್ಯ ಸಾವಿತ್ರಿ ಸವಿತಾ-  
ಬ್ರವೀತ್। ಬೃಹಸ್ಪತಿರ್ಬ್ರಹ್ಮಸೂತ್ರಂ ಮೇಖಲಾಂ ಕಸ್ಯಪೋಽದದಾತ್” ಭಾಗಂ  
೮-೧೮-೧೪। 2. ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ರಚಿತವಾದ  
ವೇದಾನ್ತಸೂತ್ರ, ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ  
ಮತ್ತು ನಿರ್ಣಯಿಸುವ ಸೂತ್ರ, ಶಾರೀರಕಸೂತ್ರ. ಬ್ರಹ್ಮ-  
ಪ್ರತಿಪಾದಕಂ ಸೂತ್ರಮ್। “ಋಷಿಭಿರ್ಬಹುಭಾ ಗೀತಂ ಛಂದೋಭಿ-  
ವಿವಿಧೈಃ ಪೃಥಕ್। ಬ್ರಹ್ಮಸೂತ್ರಪದೇಶ್ವಾಪಿ ಹೇತುಮದ್ವಿವಿಧಿವಿಶ್ವತಃ”  
ಗೀತಾ ೧೩-೪। ಬ್ರಹ್ಮಸೂತ್ರಗಳಿಗೆ ಎಲ್ಲಾ ಆಚಾರ್ಯರು  
ಗಳೂ ತಮ್ಮ ತಮ್ಮ ಮತಾನುಸಾರ ಭಾಷ್ಯಗಳನ್ನು  
ಬರೆದಿರುತ್ತಾರೆ.

**ಬ್ರಹ್ಮಸುನು ಬ್ರಹ್ಮಸೂನು (ಪುಂ)** “ಬ್ರಹ್ಮಸುತ” ಪದವನ್ನು  
ನೋಡಿ.

**ಬ್ರಹ್ಮಸ್ತಂಬ ಬ್ರಹ್ಮಸ್ತಂಭ (ಪುಂ)** ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡ, ಪ್ರಪಂಚ,  
ಜಗತ್ತು. “ಬ್ರಹ್ಮಸ್ತಂಬಂ ನಿವಾಸದ್ಭೂಮಿವ ರಮಸಾವಿಪ್ರಕರ್ತುಂ  
ಕ್ಷಮಾ ಯೇ” ಮಂ ವೀಂ ೫-೩೨।

**ಬ್ರಹ್ಮಸ್ತೇಯ ಬ್ರಹ್ಮಸ್ತೇಯಂ (ನಂ)** ನ್ಯಾಯವಲ್ಲದ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ  
ಜ್ಞಾನಸಂಪಾದನೆ ಮಾಡುವುದು, ಒಬ್ಬನು ವೇದಾಧ್ಯಯನ  
ಮಾಡುತ್ತಿರುವಾಗ ಅವನ ಅನುಮತಿಯಿಲ್ಲದೆ ಕೇಳಿ ತಿಳಿದು  
ಕೊಳ್ಳುವುದು.

**ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವ ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವ (ನಂ)** ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಸ್ವತ್ತು, ಬ್ರಾಹ್ಮಣ  
ಸಂಪತ್ತು, ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಧನ. ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ಸ್ವಂ  
ಧನಮ್। “ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವಂ ವಾ ಗುರಸ್ವಂ ವಾ ದೇವಸ್ವಂ ವಾಪಿ ಯೋ ಹರೇತ್।  
ಸ ಕೃತಘ್ನ ಇತಿ ಜ್ಞೇಯೋ ಮಹಾಪಾಪೀ ಚ ಭಾರತೇ”।

**ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯಾ ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ವಧೆ,  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಕೊಲೆ. ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಹತ್ಯಾ ಹನನಮ್। ಇದು  
ಪಂಚಮಹಾಪಾಪಗಳಲ್ಲೊಂದು. “ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯಾ ಸುರಾಪಾನಂ  
ಸ್ತೇಯಂ ಗುರ್ವಜ್ಞನಾಗಮಃ। ಮಹಾನ್ತಿ ಪಾತಕಾನ್ಯಾಹುಃ ಸಂಸರ್ಗಶ್ಚಾಪಿ  
ತೈಃ ಸಹ” ಮನುಂ ೧೧-೫೪।

**ಬ್ರಹ್ಮಹನ್ ಬ್ರಹ್ಮಹನ್ (ಪುಂ)** ಬ್ರಾಹ್ಮಣನನ್ನು ಕೊಂದವನು.  
ಬ್ರಹ್ಮಾಣಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ಹತವಾನ್।

**ಬ್ರಹ್ಮಾಜ್ಞಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಂಗಳೂ (ಪುಂ)** 1. ಅಶ್ಚ, ಕುದುರೆ.  
ಬ್ರಹ್ಮಣಃ ಅಜ್ಞಾತ್ ಭವತಿ — ಭೂ “ವಿವಿ” (3-2-109)।  
2. ಸದೋಜಾತಾದಿ ಮಂತ್ರಗಳ ಅಂಗಭೂತವಾದ ಹೃದ  
ಯಾದಿ ಮಂತ್ರಗಳ ಸ್ಥಾನ. ಬ್ರಹ್ಮಣಾಂ ಸದೋಜಾತಾದಿಮನ್ತ್ರಾ-  
ಣಾಮಜ್ಞಾನಿ ಹೃದಯಾದಿಮನ್ತ್ರಾಃ ತेषಾಂ ಸ್ಥಾನಮ್। “ಸ ಚ  
ತ್ವದೇಕೇಭುನಿಪಾತಸಾಧ್ಯೋ ಬ್ರಹ್ಮಾಜ್ಞಭೂರ್ಬ್ರಹ್ಮಣಿ ಯೋಜಿತಾತ್ಮಾ”  
ಕುಮಾಂ 3-೧೫। (ವಿಂ) 3. ಬ್ರಹ್ಮನ ಅಂಗದಿಂದ  
ಹುಟ್ಟಿದ.

**ಬ್ರಹ್ಮಾಂಜಲಿ ಬ್ರಹ್ಮಾಂಜಲಿ (ಪುಂ)** 1. ವೇದಾಧ್ಯಯನದ  
ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಮತ್ತು ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಆಚಾರ್ಯನಿಗೆ  
ಕೈಜೋಡಿಸಿ ಮಾಡುವ ನಮಸ್ಕಾರ. ಬ್ರಹ್ಮಾಂಜಲಿಃ।  
“ಬ್ರಹ್ಮಾರಂಭೇಷ್ವಸಾನೇ ಚ ಪಾದೌ ಗ್ರಾಹ್ಯೌ ಗುರೋಃ ಸದಾ। ಸಂಹತ್ಯ  
ಹಸ್ತಾವಧ್ಯೇಯಂ ಸ ಹಿ ಬ್ರಹ್ಮಾಂಜಲಿಃ ಸ್ಮೃತಃ” ಮನುಂ ೨-೭೧।  
2. ವೇದಾಧ್ಯಯನದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಗೌರವದಿಂದ ಮಾಡುವ  
ನಮಸ್ಕಾರ. “ಅಧ್ಯೇಷ್ಯಮಾಣಸ್ತ್ವಾಚಾಂತೋ ಯಶಾಶಾಸ್ತ್ರ-  
ಮುದ್ಭುಮುಃ। ಬ್ರಹ್ಮಾಂಜಲಿಕೃತೋಽಪ್ಯಾಪ್ಯೋ ಲಘುವಾಸಾ ಜಿತೇ-  
ಂದ್ರಿಯಃ” ಮನುಂ ೨-೭೦। “ಪಾಠೇ ಬ್ರಹ್ಮಾಂಜಲಿಃ” ಅಮಂ 1.

**ಬ್ರಹ್ಮಾಣಿ ಬ್ರಹ್ಮಾಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಬ್ರಹ್ಮನ ಪತ್ನಿ, ಸರಸ್ವತಿ,  
ಸಾವಿತ್ರಿ, ಗಾಯತ್ರಿ. ಬ್ರಹ್ಮಾಣಮಾನಯತಿ ಜೀವಯತಿ—ಅನ  
(ಪ್ರಾಣನೇ) + ಣಿಚ್ “ಅಣ್” (3-2-1)। “ಙೀಪ್”  
(೪-೧-೧೫)। ಬ್ರಹ್ಮನು ಧ್ಯಾನಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಅವನ  
ದೇಹವನ್ನು ಭೇದಿಸಿಕೊಂಡು ಅರ್ಧ ಸ್ತ್ರೀರೂಪ ಮತ್ತು  
ಅರ್ಧ ಪುರುಷರೂಪವುಳ್ಳ ಒಂದು ಅಕೃತಿಯು ಅವಿಭವಿ  
ಸಿತು. ಆ ಸ್ತ್ರೀರೂಪವೇ ಸರಸ್ವತಿ ಸಾವಿತ್ರಿ ಮತ್ತು  
ಗಾಯತ್ರಿ. “ತತಃ ಸಂಜಪತಸ್ತಸ್ಯ ಮಿತ್ವಾ ದೇಹಮಕಲ್ಮಷಮ್।  
ಸ್ತ್ರೀರೂಪಮರ್ಧಮಕರೋದಧಿಂ ಪುರುಷರೂಪವತ್। ಶತರೂಪಾ ಚ ಸಾ  
ಖ್ಯಾತಾ ಸಾವಿತ್ರಿ ಚ ನಿಗದ್ಯತೇ। ಸರಸ್ವತೀಶ್ಚ ಗಾಯತ್ರಿ ಬ್ರಹ್ಮಾಣಿ  
ಚ ಪರಂತಪ” ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ 1. 2. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. “ಬ್ರಹ್ಮಾಣಿ  
ಬ್ರಹ್ಮಜನನಾತ್ ಬ್ರಹ್ಮಾಕ್ಷರಪರಾ ಮತಾ” ದೇವೀಪುಂ 1.

**ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡ ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡ (ನಂ)** ಪ್ರಪಂಚ, ಜಗತ್ತು, ಸೃಷ್ಟಿಕರ್ತ  
ನಾದ ಬ್ರಹ್ಮನು ಹುಟ್ಟಿದ ಸ್ವರ್ಣದ ಅಂಡ. (ಸ್ವರ್ಣ  
ದಂತೆ ಶುದ್ಧ ಮತ್ತು ಸ್ವಚ್ಛವಾದ ತತ್ತ್ವ) ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡದಲ್ಲಿ  
ಚತುರ್ದಶಲೋಕಗಳೂ ಅಡಗಿರುತ್ತವೆ. ಪರಮಾತ್ಮನು  
ನಾನಾವಿಧವಾದ ಪ್ರಜೆಗಳನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಲು ಪ್ರಥಮವಾಗಿ  
“ಆಪೋ ಜಾಯಂತಾಮ್ ಎಂದು ಧ್ಯಾನಮಾಡಿದ ಮಾತ್ರ  
ದಿಂದಲೇ ಜಲಸೃಷ್ಟಿಯಾಯಿತು. ಅದರಲ್ಲಿ ಶಕ್ತಿರೂಪ  
ವಾದ ಬೀಜವನ್ನು ಇಟ್ಟನು. ಆ ಬೀಜವು ಸೂರ್ಯನಂತೆ  
ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ ಒಂದು ಸುವರ್ಣದ ಅಂಡವಾಯಿತು.  
ಆ ಅಂಡದಲ್ಲಿ ಸಕಲಜಗತ್ತಿಗೂ ಪಿತಾಮಹನಾದ



ಚತುರ್ಮುಖಬ್ರಹ್ಮನ ಆವಿರ್ಭಾವವಾಯಿತು. ಚತುರ್ಮುಖನು ಅದರಲ್ಲಿ (ಬ್ರಹ್ಮಮಾನಂದ) ಸಂವತ್ಸರ ಕಾಲ ಇದ್ದು ಧ್ಯಾನದಿಂದ ಆ ಅಂಡವನ್ನು ಎರಡು ಭಾಗವಾಗಿ ಮಾಡಿ ಆ ಎರಡು ಶಕಲಗಳಿಂದ ಸ್ವರ್ಗಲೋಕ ಮತ್ತು ಭೂಲೋಕಗಳನ್ನೂ ಮಧ್ಯೆ ಅಂತರಿಕ್ಷವನ್ನೂ ಅಷ್ಟದಿಕ್ಕುಗಳನ್ನೂ ಸಮುದ್ರವನ್ನೂ ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ಅನಂತರ ಮಹದಾದಿ ಕ್ರಮದಿಂದ ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುತ್ತಾನೆ.

**ಬ್ರಹ್ಮಾತ್ಮಮ್ ಬ್ರಹ್ಮಾತ್ಮಭೂ (೪ಂ) ಅಶ್ವ. ಕುದುರೆ. ಬ್ರಹ್ಮಣ:**  
 ಆತ್ಮನ: ಶರೀರಾತ್ಮವತಿ--ಬ್ರಹ್ಮಾತ್ಮಮ್ + ಭೂ "ಕಿವಿ" (೩-೨-೧೭೯) ।

**ಬ್ರಹ್ಮಾಧಿಗಮ ಬ್ರಹ್ಮಾಧಿಗಮ (೪ಂ) ವೇದಾಧ್ಯಯನ**  
 ಮಾಡುವುದು, ಗುರುಗಳಿಂದ ವೇದವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವುದು (ಹೇಳಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು). ಬ್ರಹ್ಮಣ: ವೇದಸ್ಯ ಅಧಿಗಮ: ಪ್ರಾಪ್ತಿ: ।

**ಬ್ರಹ್ಮಾನಂದ ಬ್ರಹ್ಮಾನಂದ (೪ಂ) 1.** ಅನಂದಸ್ವರೂಪವಾದ ಬ್ರಹ್ಮದ ಅನಂದ. ಬ್ರಹ್ಮಣ: ಆನಂದ: । ಸಂಪ್ರದಾಯ ಬದ್ಧನಾಗಿ ಸ್ವರಾಕ್ಷರಭ್ರಂಶವಿಲ್ಲದೆ ಸಾಂಗ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಸಂಪನ್ನನಾಗಿಯೂ ಆಶುತರಕ್ರಿಯೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ ಹಿರಿಯರ ಆಶೀರ್ವಾದಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರನಾಗಿಯೂ ಶಾರೀರ ಮತ್ತು ಮನೋಬಲಗಳಿಂದ ದೃಢಕಾಯನಾಗಿಯೂ ಇರುವ ಈ ಎಲ್ಲಾ ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ ಸಾಧನಸಂಪನ್ನನಾದ ಯುವಕನಿಗೆ ಸಕಲ ಪೃಥ್ವೀಮಂಡಲದಲ್ಲೂ ಸಕಲ ಭೋಗಸಾಧನವಾದ ದೃಷ್ಟಾರ್ಥ ಮತ್ತು ಕರ್ಮಸಾಧನವಾದ ಅದೃಷ್ಟಾರ್ಥಗಳು ತುಂಬಿ ತುಳುಕಾಡುತ್ತಿರುವುದರಿಂದ ಅದರಿಂದ ಲಭಿಸುವ ಅನಂದವು ಮಾನುಷವಾದ ಅನಂದ. "ಯುವಾ ಸ್ಯಾತ್ ಸಾಧು ಯುವಾಚ್ಯಾಯಿಕ: । ಆಶಿಷ್ಠೋ ದ್ರಿಷ್ಟಿಃ ಕಲಿಷ್ಠ: । ತಸ್ಯೇಯಂ ಪೃಥಿವೀ ಸರ್ವಾ ವಿಸ್ತಸ್ಯ ಪೂರ್ಣಾ ಸ್ಯಾತ್ । ಸ ಏಕೋ ಮಾನುಷ ಆನಂದ: " ತೆಂ ೩ಂ । ಈ ರೀತಿ ವಿಷಯೋಪಭೋಗಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದ ಶ್ರೋತ್ರಿಯನ ಅನಂದಕ್ಕೆ ನೂರ ರಷ್ಟು ಅಧಿಕವಾದ ಅನಂದವು ಮನುಷ್ಯಗಂಧರ್ವರಿಗೆ ಒಂದು ಅನಂದವಾಗುವುದು. ಮನುಷ್ಯಗಂಧರ್ವರ ಅನಂದಕ್ಕೆ ನೂರರಷ್ಟು ಅನಂದವು ದೇವಗಂಧರ್ವರಿಗೆ ಒಂದು ಅನಂದ. (ಮನುಷ್ಯನ ಕರ್ಮ ಮತ್ತು ವಿಶೇಷ ವಿದ್ಯೆಗಳ ಪ್ರಭಾವದಿಂದ ಅಂತರ್ಧಾನಾದಿ ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿ ಗಂಧರ್ವತ್ವವನ್ನು ಪಡೆದವರು ಮನುಷ್ಯ ಗಂಧರ್ವರು, ಅಂತರಿಕ್ಷ ಲೋಕವಾಸಿಗಳಾದ ಗಂಧರ್ವರು ದೇವಗಂಧರ್ವರು.) "ತೇ ಯೇ ಶತಂ ಮಾನುಷಾ ಆನಂದಾ: । ಸ ಏಕೋ ಮನುಷ್ಯಗಂಧರ್ವಾಣಾಮಾನಂದ: । ಶ್ರೋತ್ರಿಯಸ್ಯ ಚಾಕಾಮಹ-ತಸ್ಯ । ತೇ ಯೇ ಶತಂ ಮನುಷ್ಯಗಂಧರ್ವಾಣಾಮಾನಂದಾ: । ಸ ಏಕೋ ದೇವಗಂಧರ್ವಾಣಾಮಾನಂದ: " ತೆಂ ೩ಂ । ದೇವಗಂಧರ್ವರ

ಅನಂದಕ್ಕೆ ನೂರರಷ್ಟು ಅನಂದವು ಪಿತೃಗಳಿಗೆ ಒಂದು ಅನಂದವಾಗುವುದು. ಪಿತೃಗಳ ಅನಂದಕ್ಕೆ ನೂರರಷ್ಟು ಅನಂದವು ಆಜಾನಜದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಒಂದು ಅನಂದ. ಆಜಾನಜದೇವತೆಗಳ ಅನಂದಕ್ಕೆ ನೂರರಷ್ಟು ಅನಂದವು ಕರ್ಮದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಒಂದು ಅನಂದ. ಕರ್ಮದೇವತೆಗಳ ಅನಂದಕ್ಕೆ ನೂರರಷ್ಟು ಅನಂದವು ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಒಂದು ಅನಂದ. ದೇವತೆಗಳ ಅನಂದಕ್ಕೆ ನೂರುಭಾಗ ಅಧಿಕವಾದ ಅನಂದವು ಇಂದ್ರನಿಗೆ ಒಂದು ಅನಂದ. ಇಂದ್ರನ ಅನಂದಕ್ಕೆ ನೂರುಪಾಲು ಅಧಿಕವಾದ ಅನಂದವು ಬೃಹಸ್ಪತಿಗೆ ಒಂದು ಅನಂದ. ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಅನಂದಕ್ಕೆ ನೂರರಷ್ಟು ಅಧಿಕವಾದ ಅನಂದವು ಪ್ರಜಾಪತಿ (ಚತುರ್ಮುಖ)ಗೆ ಒಂದು ಅನಂದ. ಪ್ರಜಾಪತಿಯ ಅನಂದಕ್ಕೆ ನೂರರಷ್ಟು ಅನಂದವು ಬ್ರಹ್ಮದ ಒಂದು ಅನಂದ. ಇದೇ ಬ್ರಹ್ಮಾನಂದ.

**ಬ್ರಹ್ಮಾರಣ್ಯ ಬ್ರಹ್ಮಾರಣ್ಯ (೪ಂ) ವೇದಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡುವ**  
 ಸ್ಥಳ. ಬ್ರಹ್ಮಣಿ ವೇದಸ್ಯ ಅರಣ್ಯಮಿವ । "ಸ್ಯಾದ್ಗಾಯತ್ರೀ ತು ಸಾವಿತ್ರೀ ಬ್ರಹ್ಮಾರಣ್ಯಂ ತು ಪಾಠಮ್: " ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಬ್ರಹ್ಮಾರಮ್ ಬ್ರಹ್ಮಾರಂಭ (೪ಂ) ವೇದಾಧ್ಯಯನದ**  
 ಪ್ರಾರಂಭ. ಬ್ರಹ್ಮಣಿ ವೇದಸ್ಯ ಆರಮ್ಭ: । "ಬ್ರಹ್ಮಾರಮ್ಭಃ-ವಸಾನೇ ಚ ಪಾದೌ ಗ್ರಾಹ್ಯೌ ಗುರೌ: ಸದಾ " ಮನುಂ ೨-೭೧ ।

**ಬ್ರಹ್ಮಾರ್ಪಣ ಬ್ರಹ್ಮಾರ್ಪಣ (೪ಂ) 1.** ಮಾಡಿದ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲಿ ಅರ್ಪಿಸುವುದು. ಬ್ರಹ್ಮಣಿ ಅರ್ಪಣಮ್ ಸರ್ವ-ಕರ್ಮಣಾಂ ನ್ಯಾಸ: । ಮಾಡಿದ ಕರ್ಮಗಳನ್ನೆಲ್ಲಾ ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲಿ ಅರ್ಪಿಸುವ ಬಗೆ: ನಾನು ಕರ್ತನಲ್ಲ. ಮಾಡಿದವನು ಮಾಡಿಸಿದವನು ಎಲ್ಲವೂ ಪರಮಾತ್ಮನೇ ಎಂಬ ಭಾವನೆಯಿಂದ ಅವನಲ್ಲಿ ಅರ್ಪಣೆ ಮಾಡಬೇಕು. ಅದು ಬ್ರಹ್ಮಾರ್ಪಣವಾಗುವುದು. "ನಾಹಂ ಕರ್ತಾ ಸರ್ವಮೇತದ್ಬ್ರಹ್ಮೈವ ಕುರುತೇ ತಥಾ । ಏತದ್ ಬ್ರಹ್ಮಾರ್ಪಣಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಕೃಷಿಮಿಸ್ತೀಶ್ವರಶಿಖಿ: " । ಈ ಕರ್ಮಾಚರಣೆಯಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಸಂತುಷ್ಟನಾಗಲಿ ಎಂಬ ಭಾವನೆಯಿಂದ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಭಗವತ್ತೀತ್ಯರ್ಥ ಮಾಡುವುದೂ ಬ್ರಹ್ಮಾರ್ಪಣವಾಗುವುದು. "ಪ್ರೀಣಾತು ಭಗವಾನಿಶ: ಕರ್ಮಣಾನೇನ ಶಾಶ್ವತ: । ಕರೋತಿ ಸತತಂ ಬುದ್ಧ್ಯಾ ಬ್ರಹ್ಮಾರ್ಪಣಮಿದಂ ಪರಮ್ " । ಮಾಡಿದ ಕರ್ಮಗಳ ಫಲವನ್ನು ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲಿ ಅರ್ಪಿಸುವುದೂ ಬ್ರಹ್ಮಾರ್ಪಣವಾಗುವುದು. "ಯದ್ವಾ ಫಲಾನಾಂ ಸನ್ಯಾಸಂ ಪ್ರಕುರ್ಯಾತ್ಪರಮೇಶ್ವರೇ । ಕರ್ಮಣಾಮೇತದಪ್ಯಾಹು: ಬ್ರಹ್ಮಾರ್ಪಣಮನುತ್ತಮಮ್ " ಕರ್ಮಪುಂ 1. 2. ಬ್ರಹ್ಮಕ್ಕೆ ಅರ್ಪಿಸಲ್ಪಡುವ ಹವಿಸ್ಸು. ಬ್ರಹ್ಮ ಯಸ್ಯ ಹವಿಷೋ-ರ್ಪಣಂ ತದ್ಬ್ರಹ್ಮಾರ್ಪಣಮ್ । 3. ಪರಮಾತ್ಮನ ಕೈಂಕರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಅವನ ಸನ್ನಿಧಿಯಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಆತ್ಮಸಮರ್ಪಣ.



**ಬ್ರಹ್ಮಾವರ್ತ ಬ್ರಹ್ಮಾವರ್ತ (ಫಂ)** ಸರಸ್ವತೀ ಮತ್ತು ದೃಷದ್ವತೀ ನದಿಗಳ ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶ. ಬ್ರಹ್ಮಣಾಂ ಬ್ರಹ್ಮನಿಷ್ಠ-  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾನಾಮಾವರ್ತ ಇವ. "ಸರಸ್ವತೀದೃಷದ್ವತೀದೇವನದೀಯಂ-  
ದಂತರಮ್ | ತಂ ದೇವನಿರ್ಮಿತಂ ದೇಶಂ ಬ್ರಹ್ಮಾವರ್ತಂ ಪ್ರಚಕ್ಷತೇ" ಮನುಂ  
೨-೧೭ |

**ಬ್ರಹ್ಮಾಸನ ಬ್ರಹ್ಮಾಸನ (ನಂ)** 1. ಧ್ಯಾನಸಮಯದಲ್ಲಿ ಹಾಕುವ ಸ್ವಸ್ತಿಕಾಸನ ಪದ್ಮಾಸನ ಮೊದಲಾದ ಆಸನ, ಬ್ರಹ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಕ್ಕಾಗಿ ಧ್ಯಾನಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಆಸನ. ಬ್ರಹ್ಮಪ್ರಾಪ್ತೇ ಆಸನಮ್ | ಧ್ಯಾನಾಸನ ಮತ್ತು ಯೋಗಾಸನಗಳೆಂದು ಬ್ರಹ್ಮಾಸನವು ಎರಡು ವಿಧ. ಪರಮಾರ್ಥಚಿಂತನೆಗಾಗಿ ಧ್ಯಾನಾಸನ. ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿನಿರೋಧಕ್ಕಾಗಿ ಯೋಗಾಸನ. 2. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಯುಕ್ತಿಸ್ಥಿತಿಗೆ ಹಾಕುವ ಆಸನ.

**ಬ್ರಹ್ಮಾಸ್ತ್ರ ಬ್ರಹ್ಮಾಸ್ತ್ರ (ನಂ)** ಬ್ರಹ್ಮದೇವತಾಕವಾದ ಅಸ್ತ್ರ. ಬ್ರಹ್ಮದೇವತಾಕಮಸ್ತ್ರಮ್ |

**ಬ್ರಹ್ಮಿನ್ ಬ್ರಹ್ಮಿನ್ (ಫಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಬ್ರಹ್ಮ ಸರ್ವಮೇತತ್ ಪ್ರಮಾಣಪ್ರಮೇಯರೂಪವಸ್ತವಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) | "ಮಾನಮೇಯಸ್ವರೂಪತ್ವಾತ್ ಸ್ವಯಂ ಬ್ರಹ್ಮೀತಿ ಕಥ್ಯತೇ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: | "ಬ್ರಹ್ಮವಿದ್ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ಬ್ರಹ್ಮೀ ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಪ್ರಿಯ:" ವಿಂ ಸಂ | 2. ವೇದ ಮತ್ತು ವೇದಾರ್ಥಗಳನ್ನು ತಿಳಿದವನು. ಬ್ರಹ್ಮ ವೇದೋ ವೇದತಯಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) |

**ಬ್ರಹ್ಮಿಷ್ಠ ಬ್ರಹ್ಮಿಷ್ಠ (ಫಂ)** 1. ರಘುವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಹಿರಣ್ಯನಾಭನ ಮಗನಾದ ಕೌಸಲ್ಯ ರಾಜನ ಮಗ. (ವಿಂ) 2. ವೇದ ಮತ್ತು ವೇದಾರ್ಥಗಳನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದವನು. ಬ್ರಹ್ಮಿನ್ "ಇಷ್ಠನ್" (೪-೩-೪೪) | "ಬ್ರಹ್ಮಿಷ್ಠಮಾಧಾಯ ನಿಜೇಽಧಿಕಾರೇ ಬ್ರಹ್ಮಿಷ್ಠ-  
ಮೇವ ಸ್ವತನ್ತುಪ್ರಸೂತಮ್" ರಘುಂ ೧೮-೨೮ |

**ಬ್ರಹ್ಮಿಷ್ಠಾ ಬ್ರಹ್ಮಿಷ್ಠಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

**ಬ್ರಹ್ಮೀ ಬ್ರಹ್ಮೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹೊನ್ನಗೊನ್ನೆ ಸೊಪ್ಪು.

**ಬ್ರಾಹ್ಮ ಬ್ರಾಹ್ಮ (ಫಂ)** 1. ಬ್ರಾಹ್ಮಮುಹೂರ್ತ, ರಾತ್ರಿಯ ಕೊನೆಯ ಯಾಮದ ಮುಹೂರ್ತ, ಅರುಣೋದಯಕ್ಕೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಮುಹೂರ್ತಕಾಲ. (ಒಂದು ಮುಹೂರ್ತಕ್ಕೆ 48 ನಿಮಿಷಗಳು.) "ರಾತ್ರೇಶ್ಚ ಪಶ್ಚಿಮೇ ಯಾಮೇ ಮುಹೂರ್ತೋ ಬ್ರಾಹ್ಮ ಉಚ್ಯತೇ" | ಬ್ರಾಹ್ಮಮುಹೂರ್ತದಲ್ಲಿ ಮನಸ್ಸು ನಿರ್ಮಲವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಹಾಸಿಗೆಯಿಂದ ಎದ್ದು ಧರ್ಮಾರ್ಥಗಳ ವಿಷಯವಾಗಿಯೂ ವೇದಾರ್ಥಗಳ ವಿಷಯವಾಗಿಯೂ ಚಿಂತಿಸಬೇಕು. "ಬ್ರಾಹ್ಮೇ ಮುಹೂರ್ತೇ ಬೃಹ್ಯತೇ"

ಧರ್ಮಾರ್ಥೋ ಚಾನುಚಿಂತಯೇತ್ | ಕಾಯಕಲೇಶಾಂಶ್ಚ ತನ್ಮೂಲಾನ್ ವೇದ-  
ತತ್ವಾರ್ಥಮೇವ ಚ" ಮನುಂ ೪-೯೨ | 2. ಎಂಟು ವಿಧ ವಿವಾಹಗಳಿಲ್ಲೊಂದು. (1) ಬ್ರಾಹ್ಮ:, (2) ದೈವ:, (3) ಆರ್ಷ:, (4) ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯ:, (5) ಆಸುರ:, (6) ಗಾನ್ಧರ್ವ:, (7) ರಾಕ್ಷಸ:, ಮತ್ತು (8) ಪೈಶಾಚ: ಎಂದು ವಿವಾಹವು ಎಂಟು ಬಗೆ. ವಸ್ತ್ರ ಮಾಶ್ಯಾದಿಗಳಿಂದ ಅಲಂಕೃತನಾದ ಗುಣಶಾಲಿಯಾದ ವರನನ್ನು ಪೂಜಿಸಿ ಉತ್ತಮ ವಸ್ತ್ರಾಲಂಕಾರಾದಿಗಳಿಂದ ಭೂಷಿತನಾದ ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ಅವನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ ನಡೆಸುವ ವಿವಾಹವು ಬ್ರಾಹ್ಮವೆನಿಸುವುದು.

"ಆಚ್ಛಾಢ್ಯ ಚಾರ್ಚಯಿತ್ವಾ ಚ ಶ್ರುತಿಶೀಲವತೇ ಸ್ವಯಮ್ | ಆಹ್ವಯ ದಾನಂ ಕನ್ಯಾಯಾ: ಬ್ರಾಹ್ಮೋ ಧರ್ಮ: ಪ್ರಕೀರ್ತಿತ:" ಮನುಂ ೩-೨೧ |

3. ನಾರದಮಹರ್ಷಿ. 4. ಪಾದರಸ. 5. ರಾಜನ ಒಂದು ಧರ್ಮ. ರಾಜನು ತನ್ನ ಶ್ರೇಯಸ್ಸಿಗಾಗಿ ಕೈಗೊಳ್ಳುವ ಕರ್ತವ್ಯಗಳಿಲ್ಲೊಂದು. ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಪೂರ್ತಿಮಾಡಿ ಗುರು ಕುಲದಿಂದ ಹಿಂತಿರುಗಿದ ಸ್ನಾತಕನನ್ನು ಪೂಜಿಸಿ ಗೌರವಿಸುವುದು ರಾಜನ ಕರ್ತವ್ಯಗಳಿಲ್ಲೊಂದು. "ಆವೃತ್ತಾನಾಂ ಗುರುಕುಲಾತ್ ವಿಪ್ರಾಣಾಂ ಪೂಜಕೋ ಭವೇತ್ | ನೃಪಾಣಾಮಧ್ಯಯೋ ಛೇಷ ಬ್ರಾಹ್ಮೋ ಧರ್ಮೋ ವಿಧೀಯತೇ" ಮನುಂ ೭-೮೨ | (ನಂ) 6.

(ಅಂಗೈ) ಅಂಗುಷ್ಠದ ಮೂಲದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಅಚಮನ ಮಾಡುವ ತೀರ್ಥ. ಬ್ರಹ್ಮಾ ದೇವತಾ ಅಸ್ಯ "ಅಙ್" (೪-೨-೨೪) | ಈ ತೀರ್ಥದಿಂದ ಅಚಮನವು ಎಹಿತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. 7. ಬ್ರಾಹ್ಮಪುರಾಣ, ಅಷ್ಟಾದಶ ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲಿ 10,000 ಗ್ರಂಥಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಮಹಾಪುರಾಣ.

8. ಬ್ರಹ್ಮದೇವತಾಕವಾದ ರೋಹಿಣೀ ನಕ್ಷತ್ರ. 9. ಬ್ರಹ್ಮದೇವತಾಕವಾದ ಅಸ್ತ್ರ (ಬ್ರಹ್ಮಾಸ್ತ್ರ). "ಅಮೌಘಂ ಸಂದಧೇ ಚಾಸ್ಮಿಂ ಧನುಷ್ಯೇಕಧನುರ್ಧರ: | ಬ್ರಾಹ್ಮಮಸ್ತ್ರಂ ಪ್ರಿಯಾಶೋಕಶಲ್ಯ-  
ನಿಷ್ಕರ್ಷಣೌಷಧಮ್" ರಘುಂ ೧೨-೯೭ | (ವಿಂ) 10. ಪರಬ್ರಹ್ಮ ಸಂಬಂಧವಾದ. 11. ಚತುರ್ಮುಖ ಬ್ರಹ್ಮನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ: ಇದಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦) |

"ಬ್ರಾಹ್ಮಂ ಸರ: ಕಾರಣಮಾಪ್ತವಾಚೋ ಬುದ್ಧೇರಿವಾವ್ಯಕ್ತಮುದಾಹರಂತಿ" ರಘುಂ ೧೩-೬೦ |

12. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಸಂಬಂಧವಾದ.

13. ವೇದ ಸಂಬಂಧವಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮೀ ಬ್ರಾಹ್ಮೀ.

14. ಭಾಷೆ, ವಾಕ್ಯ, ಮಾತು. 15. ವಾಗ್ದೇವಿ, ಸರಸ್ವತೀ ದೇವಿ. 16. ಬ್ರಹ್ಮಶಕ್ತಿ. 17. ಹೊನ್ನಗೊನ್ನೆ ಸೊಪ್ಪು.

18. ಕೀರೆಸೊಪ್ಪು.

**ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ (ಫಂ)** 1. ನಾಲ್ಕು ವರ್ಣಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲ ನೆಯ ವರ್ಣದವನು. ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋಪತ್ಯಮ್ "ಅಙ್" (೪-೧-೯೨) |

"ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾತಿಕ್ರಮತ್ಯಾಗೋ ಭವತಾಮೇವ ಭೂತಯೇ | ಜಾಮದಗ್ನಯಶ್ಚ

ವೋ ಮಿತ್ರಮನ್ಯಥಾ ದುರ್ಮನಾಯತೇ" ಮಂ ವೀಂ ೨-೧೦ |



2. ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು. ಬ್ರಾಹ್ಮಣಿತಿ "ಅನ್" (೪-೨-೪೯) | 3. ಪರಬ್ರಹ್ಮದ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಅರಿತವನು, ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದವನು. ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾತಿ "ಅನ್" (೪-೨-೯೨) | (ನಂ) 4. ವೇದದಲ್ಲಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣವೆಂಬ ಒಂದು ಭಾಗ. ಸಂಹಿತೆಗಳು ಪ್ರಾಯಶಃ ಛಂದೋಬದ್ಧವಾಗಿದ್ದರೆ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಗಳು ಗದ್ಯರೂಪದಲ್ಲಿ ಇವೆ. ಸಂಹಿತೆಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ತುತಿ ಇಹಪರಗಳ ಫಲಗಳಿಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಗಳು ನಿಂದೆ ಮತ್ತು ಪ್ರಶಂಸೆಗಳು ರೋಗನಿವಾರಣ ಸಂಗ್ರಾಮವಿಧಾನ ವಿಜಯಸಾಧನೆ ಮುಂತಾದುವುಗಳನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸುವ ಸೂಕ್ತಗಳೂ ದರ್ಶಪೂರ್ಣಮಾಸಾದಿ ಇಷ್ಟಿಗಳೂ ಮತ್ತು ಸೋಮಯಾಗ ಇವುಗಳ ಮಂತ್ರಗಳೂ ಇವೆ. ಬ್ರಾಹ್ಮಣಗಳಲ್ಲಿ ಯಜ್ಞವನ್ನು ಮಾಡಬೇಕಾದ ವಿಧಾನ ಅದಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ಕಾಲ ಅದಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ ಸಾಧನ ಸಂಪತ್ತುಗಳು ಯಜ್ಞವನ್ನು ಮಾಡಲು ಅಧಿಕಾರಿ ಮಂತ್ರಗಳನ್ನು ವಿನಿಯೋಗಿಸುವ ಪ್ರಕರಣ ಮತ್ತು ರೀತಿ ಇವನ್ನು ವಿವೇಚಿಸಿ ಹೇಳುವುದರಿಂದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಗಳು "ವಿಧಿ" ರೂಪದಲ್ಲಿವೆಯೆಂದು ಹೇಳಬಹುದು.

#### ಯಗ್ವೇದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಗಳು : 2

(1) ಐತರೇಯ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಈ ಬ್ರಾಹ್ಮಣದಲ್ಲಿ 40 ಅಧ್ಯಾಯಗಳಿವೆ. ಇವು ಐದೈದು ಅಧ್ಯಾಯಗಳಿ ಗೊಂದರಂತೆ ಎಂಟು ಪಂಚಿಕೆಗಳಾಗಿ ವಿಭಾಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. ಈ ಬ್ರಾಹ್ಮಣದಲ್ಲಿ ಯಜ್ಞದ ವಿಷಯ ಪ್ರಧಾನವಾಗಿದೆ.

(2) ಕೌಷೀಢಕೀ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಇದರಲ್ಲಿ 30 ಅಧ್ಯಾಯಗಳಿವೆ. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಧಾನ ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರ ದರ್ಶಪೂರ್ಣಮಾಸ ಸೋಮಯಾಗ ಈ ವಿಷಯಗಳು ವಿವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ.

#### ಯಜುರ್ವೇದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಗಳು : 2

(1) ತೈತ್ತಿರೀಯ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಕೃಷ್ಣಯಜುರ್ವೇದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಗಳಲ್ಲಿ ಉಪಲಬ್ಧವಾಗಿರುವುದು ಇದೊಂದು ಮಾತ್ರ. ಈ ಬ್ರಾಹ್ಮಣದಲ್ಲಿ 3 ಕಾಂಡಗಳಿವೆ. ಇವುಗಳಿಗೆ ಅಷ್ಟಕಗಳೆಂದು ಹೆಸರು. 1 ಮತ್ತು 2ನೆಯ ಕಾಂಡಗಳಲ್ಲಿ ಎಂಟು ಪ್ರಪಾಠಕಗಳೂ 3ನೆಯ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ 12 ಪ್ರಪಾಠಕಗಳೂ ಇವೆ. 1 ನೆಯ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಧಾನ ಗವಾಮಯನ ವಾಜಪೇಯ ನಕ್ಷತ್ರೇಷ್ಟಿ ಮತ್ತು ರಾಜಸೂಯ ಇವುಗಳ ವಿಷಯ ವಿವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. 2ನೆಯ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರ ಉಪಹೋಮ ಬೃಹಸ್ಪತಿಸವ ಮುಂತಾದ ಯಾಗಗಳ ವರ್ಣನೆಗಳಿವೆ. 3ನೆಯ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ನಕ್ಷತ್ರೇಷ್ಟಿಯ ವಿಸ್ತಾರವಾದ ವರ್ಣನೆಯಿದೆ.

(2) ಶತಪಥ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಇದು ಶುಕ್ಲಯಜುರ್ವೇದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಗ್ರಂಥಗಳೆಲ್ಲವೂ ಇದು ಬಹಳ ದೊಡ್ಡದು. ಇದರಲ್ಲಿ ಕಾಣ್ವ ಮತ್ತು ಮಾಧ್ಯಂದಿನ ಗಳೆಂದು ಎರಡು ಪಾಠಗಳುಂಟು. ಕಾಣ್ವಶಾಖೆಯಲ್ಲಿ 17 ಕಾಂಡಗಳೂ ಮಾಧ್ಯಂದಿನ ಶಾಖೆಯಲ್ಲಿ 14 ಕಾಂಡಗಳೂ ಇವೆ.

#### ಸಾಮವೇದೀಯ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಗಳು : 9

(1) ತಾಂಡ್ಯಮಹಾಬ್ರಾಹ್ಮಣ, (2) ಪಡ್ವಿಂಶಬ್ರಾಹ್ಮಣ, (3) ಸಾಮವಿಧಾನಬ್ರಾಹ್ಮಣ, (4) ಆರ್ಷೇಯ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, (5) ದೈವತಬ್ರಾಹ್ಮಣ, (6) ಉಪನಿಷದ್ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, (7) ಸಂಹಿತೋಪನಿಷದ್ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, (8) ವಂಶಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಮತ್ತು (9) ಜೈಮಿನೀಯ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ.

#### ಅಥರ್ವವೇದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ : 1

ಗೋಪಥಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಈ ವೇದಕ್ಕೆ ಸೇರಿದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಗಳಲ್ಲಿ ಉಪಲಬ್ಧವಾಗಿರುವುದು ಇದೊಂದು ಮಾತ್ರ. ಈ ಬ್ರಾಹ್ಮಣದಲ್ಲಿ ಪೂರ್ವ ಗೋಪಥ ಮತ್ತು ಉತ್ತರ ಗೋಪಥಗಳೆಂದು ಎರಡು ಭಾಗಗಳಿವೆ. ಮೊದಲ ನೆಯದರಲ್ಲಿ ಐದು ಪ್ರಪಾಠಕಗಳೂ ಎರಡನೆಯದರಲ್ಲಿ ಆರು ಪ್ರಪಾಠಕಗಳೂ ಇರುವುವು. 5. ಬ್ರಾಹ್ಮಣರ ಸಮೂಹ. ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಅನ್" (೪-೨-೩೪) | "ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ಬ್ರಹ್ಮಸಂಘಾತೇ ವೇದಭಾಗೇ ನಪುಂಸಕಮ್ | ಭೂಮಿ ದೇವೇ ತು ಪುಂಲಿಂಗಃ" | ಮೇದಿಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಞಿ -ಞೀ. 6. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಪತ್ನಿ. 7. ಬ್ರಾಹ್ಮಣಹೆಂಗಸು. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣಿ ಯದ್ವಗುಪ್ತಾ ತು ಗಚ್ಛತಾಂ ವೇಶ್ಯಪಾರ್ಥಿವೀ | ವೇಶ್ಯಂ ಪಚ್ಛತಂ ಕುರ್ಯಾತ್ಕನಿವ್ಯಂ ತು ಸಹಸ್ರಿಕಮ್" | ಮನುಂ ೮-೩೪೬ | 8. ಭಾರಂಗಿ. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣಿ ಹೃಜ್ಜಿಕಾ-ಸ್ಪೃಹಾಹಿಜಪತ್ನೀಃ ವಿಶ್ರುತಾ" | ವಿಶ್ವಂ | 9. ಕಂಚು. 10. ಕೆಂಪುಬಾಲದ ಹಲ್ಲಿ (ಗೌಳಿ). "ಹಾಲಾಹಲಸ್ತ್ವಜ-ನಿಕಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಿ ರಕ್ತಪುಚ್ಛಿಕಾ" | ವೇಜಂ | 11. ಕಪಿಲ ವರ್ಣದ ದೊಡ್ಡ ಇರುವೆ, ಕಣಜದ ಹುಳ. "ಕೃತಾತಃ ಸ್ಯಾತ್ ಪಿಪಿಲಿಕಾ | ಬ್ರಾಹ್ಮಣಿ ಚ ಮಹಾನ್ ಪಿಚ್ಛಃ" | ವೇಜಂ |

ಬ್ರಾಹ್ಮಣಚಕ್ಷುಸ್ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಚಕ್ಷುಸ್ (ನಂ) ವೇದ ಮತ್ತು ಸ್ತೂತಿಗಳು. ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ಚಕ್ಷುರಿವ ಸರ್ವಾರ್ಥಪ್ರಕಾಶಕತ್ವಾತ್ | "ಶ್ರುತಿ ಸ್ಮೃತಿ ಚ ವಿಪ್ರಾಣಾಂ ಚಕ್ಷುಷಿ ದೇವನಿರ್ಮಿತೇ | ಕಾಣಸ್ತ-ತ್ರೈಕಯಾ ಹೀನಃ ದ್ವಾಮ್ಯಾಮನ್ಯಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ" | ಹಾರೀತಂ |

ಬ್ರಾಹ್ಮಣವಿವರಣೆ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಚಂಡಾಲ (ಫಂ) 1. ಕರ್ತವ್ಯಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಅಕೃತ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡುವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ನಿಷಿದ್ಧಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡುವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ-ಶ್ವಾತಾಲ ಇವ | 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಶೂದ್ರನಿಂದ



ಜನಿಸಿದವನು. "ಯಸ್ತು ತತ್ಕಾರಯನ್ಮೋಹಾತ್ ಸಜಾತ್ಯಾ ಸ್ಥಿತ-  
ಯಾನ್ಯಯಾ । ಯಥಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಚಂಡಾಲಃ ಪೂರ್ವದೃಷ್ಟಸ್ತಥೈವ ಸಃ"  
ಮನುಂ ೧-೮೭ ।

**ಬ್ರಾಹ್ಮಣಜೀವಿಕಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಜೀವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಜೀವನೋಪಾಯ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣನು ಜೀವನಕ್ಕಾಗಿ ಅಶ್ರಯಿಸುವ ವೃತ್ತಿ. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನು ಪಟಕರ್ಮನಿರತನಾಗಿರಬೇಕು. (1) ಅಧ್ಯಯನ (ವೇದ ಮತ್ತು ಶಾಸ್ತ್ರಭಾಷೆ), (2) ಅಧ್ಯಾಪನ (ವೇದ ಮತ್ತು ಶಾಸ್ತ್ರಗಳ ಪ್ರವಚನ), (3) ಯಜನ (ಯಾಗಮಾಡುವುದು), (4) ಯಾಜನ (ಯಾಗ ಮಾಡಿಸುವುದು), (5) ದಾನ (ಕೊಡುವುದು) ಮತ್ತು (6) ಪ್ರತಿಗ್ರಹ (ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು) ಇವು ಪಟಕರ್ಮಗಳು. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಯಾಜನ ಅಧ್ಯಾಪನ ಮತ್ತು ಪ್ರತಿಗ್ರಹಗಳನ್ನು ಜೀವನಕ್ಕಾಗಿ ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳಬೇಕು. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾ ಬ್ರಹ್ಮಯೋನಿಸ್ಥಾ ಯೇ ಸ್ವಕರ್ಮಣ್ಯವಸ್ಥಿತಾಃ । ತೇ ಸಮ್ಯಗುಪಜೀವೇಯುಃ ಪಟಕರ್ಮಿಣಿ ಯಥಾಕ್ರಮಮ್ । ಅಧ್ಯಾಪನಮಧ್ಯಯನಂ ಯಜನಂ ಯಾಜನಂ ತಥಾ । ದಾನಂ ಪ್ರತಿಗ್ರಹಸ್ಯೈವ ಪಟಕರ್ಮಿಣ್ಯಪ್ರಜನ್ಮನಃ । ಷಣ್ಣಾಂ ತು ಕರ್ಮಣಾಮಸ್ಯ ತ್ರಿಣಿ ಕರ್ಮಿಣಿ ಜೀವಿಕಾ । ಯಾಜನಾಧ್ಯಾಪನೇ ಚೈವ ವಿಶುದ್ಧಾಚ್ಚ ಪ್ರತಿಗ್ರಹಃ" ಮನುಂ ೧ ।

**ಬ್ರಾಹ್ಮಣಪ್ರಿಯ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಪ್ರಿಯ (ಪುಂ)** ವಿಷ್ಣು. ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಃ ವೇದಾಧಿಕಾರಿಣಃ ಪ್ರಿಯಾ ಅಸ್ಯ । "ವೇದಾಧಿಕಾರಿಣೋ ವಿಪ್ರಾಃ ಪ್ರಿಯಾ ಯಸ್ಯೇತಿ ವೈ ಸದಾ । ಬ್ರಾಹ್ಮಣಪ್ರಿಯ ಇತ್ಯುಕ್ತೋ ನವಾಣಾಂ ಧರ್ಮದೋ ಮನುಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । "ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಪ್ರಿಯಃ" ವಿಂ ಸಂ ।

**ಬ್ರಾಹ್ಮಣಬ್ರೂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಬ್ರೂ (ಪುಂ)** ಜಾತಿಮಾತ್ರದಿಂದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನೆಂದು ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳುವವನು, ವಿಹಿತವಾದ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಅಚರಿಸದಿರುವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ಜಾತಿಮಾತ್ರತಯಾ ಆತ್ಮಾನಂ ಬ್ರೂವತಿ — ಬ್ರೂ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫) । "ವಿಪ್ರಃ ಸಂಸ್ಕಾರಯುಕ್ತೋ ನ ನಿರಯಂ ಸಂಖ್ಯಾದಿ ಕರ್ಮ ಯಃ । ನೈಮಿತ್ತಿಕಂ ತು ನೋ ಕುರ್ಯಾತ್ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಬ್ರೂ ಉಚ್ಯತೇ" ರಾಘಪುಂ ೧ ।

**ಬ್ರಾಹ್ಮಣಯಾಜಿಕಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಯಾಜಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಭಾರಂಗಿ ಮಠ.

**ಬ್ರಾಹ್ಮಣಲಕ್ಷಣ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಲಕ್ಷಣ (ನಂ)** ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ಅಸಾಧಾರಣವಾದ ಧರ್ಮ (ಲಕ್ಷಣ). ಯೋಗ ತಪಸ್ಸು ದಮ ದಾನ ಸತ್ಯ ಶೌಚ ದಯೆ ಶಾಸ್ತ್ರಭಾಷೆ ವಿಧ್ಯೆ ಅಸ್ತಿತ್ವ ವಿಜ್ಞಾನ ಇವು ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಲಕ್ಷಣ. "ಯೋಗಸ್ತಪೋ ದಮೋ ದಾನಂ ಸತ್ಯಂ ಶೌಚಂ ದಯಾ ಶ್ರುತಮ್ । ವಿಜ್ಞಾನ-ಮಾಸ್ತಿಕಯಮೇತದ್ಬ್ರಾಹ್ಮಣಲಕ್ಷಣಮ್" ।

**ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಯನ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಯನ (ಪುಂ)** ಸತ್ಕುಲಪ್ರಸೂತನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಮಗ, ಸದಾಚಾರಸಂಪನ್ನನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಮಗ. ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಫಕ್" (೪-೧-೧೯) ।

**ಬ್ರಾಹ್ಮಣಶಸ್ತ್ರ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಶಸ್ತ್ರ (ನಂ)** ಅಭಿಚಾರಮಂತ್ರ ರೂಪವಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಮಾತು, ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಶಾಪ. ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ಶಸ್ತ್ರಮಿವ । "ವಾಕ್ಶಸ್ತ್ರಂ ವೈ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ತೇನ ಹನ್ಯಾದರೀನ್ ದ್ವಿಜಃ" ಮನುಂ ೧ ।

**ಬ್ರಾಹ್ಮಣ್ಯ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ್ಯ (ಪುಂ)** 1. ಶನಿಗ್ರಹ. (ನಂ) 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಧರ್ಮ. ["ಬ್ರಾಹ್ಮಣಲಕ್ಷಣಃ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 3. ಬ್ರಾಹ್ಮಣರ ಸಮೂಹ. ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾನಾಂ ಸಮೂಹಃ "ಯನ್" (೪-೨-೪೨) । 4. ಬ್ರಾಹ್ಮಣತ್ವ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಭಾವ. ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ಭಾವಃ "ವ್ಯಕ್" (೫-೧-೧೨೪) । "ಶೂದ್ರಾಃ ಶಯನಮಾರೋಪ್ಯ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ಯಾತ್ಯಧೋಗತಿಮ್ । ಜನಯಿತ್ವಾ ಸುತಂ ತಸ್ಯಾಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ್ಯಾದೇವ ಹೀಯತೇ" ಮನುಂ ೩-೧೭ । "ಬ್ರಾಹ್ಮಣ್ಯಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣತ್ವೇ ಚ ಸಮೂಹೇ ಚ ದ್ವಿಜನ್ಮನಾಮ್" ಮೇದಿಂ ೧ ।

**ಬ್ರಾಹ್ಮಣಮೂರ್ತ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಮೂರ್ತ (ಪುಂ)** "ಬ್ರಾಹ್ಮ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ಬ್ರಾಹ್ಮಾಹೋರಾತ್ರ ಬ್ರಾಹ್ಮಾಹೋರಾತ್ರ (ಪುಂ)** ಚತುರ್ಮುಖ ಬ್ರಹ್ಮನ ಹಗಲು ಮತ್ತು ರಾತ್ರಿ. ದೇವತೆಗಳ 1000 ಚತುರ್ಮುಖಗಳು (1,20,00,000 ದೇವವರ್ಷಗಳು, 432,00,00,000 ಮಾನುಷ ವರ್ಷಗಳು) ಕಳೆದರೆ ಬ್ರಹ್ಮನಿಗೆ ಒಂದು ಹಗಲು. ಇದು ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಕಾಲ. ಇಷ್ಟೇ ಕಾಲವು ಬ್ರಹ್ಮನಿಗೆ ಒಂದು ರಾತ್ರಿ. ಇದು ಪ್ರಲಯ ಕಾಲ. ಬ್ರಹ್ಮಣೋಷ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) । ಬ್ರಾಹ್ಮಾಹೋರಾತ್ರಃ ।

**ಬ್ರಾಹ್ಮಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** "ಬ್ರಾಹ್ಮ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ಬ್ರೂವತ್ ಬ್ರೂವತ್ (ವಿಂ)** ಹೇಳುತ್ತಿರುವ, ಮಾತಾಡುತ್ತಿರುವ. ಬ್ರೂ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಇತಿ ಬ್ರೂವಂತಂ ತಮುವಾಚ ಸ ವ್ರತೀ ನ ವಾಚ್ಯಮಿತ್ಯಂ ಪುರುಷೋತ್ತಮ ತ್ವಯಾ" ಮಾಘಂ ೧-೩೧ । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಓಪ್" (೪-೧-೬) । ಬ್ರೂವತೀ ಬ್ರೂವತೀ.

**ಬ್ರೂವಾಣ ಬ್ರೂವಾಣ (ವಿಂ)** ಹೇಳುತ್ತಿರುವ, ಮಾತಾಡುತ್ತಿರುವ. ಬ್ರೂ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಶಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಇತಿ ಬ್ರೂವಾಣೇನ ಮಹೇಂದ್ರಸುತುಂ ಮಹರ್ಷಿಣಾ ತೇನ ತಿರೋಬಭೂವೇ" ಕಿರಾಂ ೩-೩೦ ।

**ಬ್ರೂ - ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ** (ಅದಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಲಟ್-ಪರಂ ಈ ಲಕಾರದಲ್ಲಿ ಮೊದಲ ಐದು ವಚನಗಳಿಗೆ



(ತಿಪ್ ತಸ್ ಕ್ವಿ ಸಿಪ್ ಶಸ್ ಗಳಿ) ಗಲ್ ಅತುಸ್ ತುಸ್ ಶಲ್  
ಅಶುಸ್ ಮತು ಆಹ ಎಂಬ ಆದೇಶಗಳು ಎಕಲ್ಪವಾಗಿ  
ಬರುವವು.

|        |                   |                 |                    |
|--------|-------------------|-----------------|--------------------|
| ಪಕ್ಷೇ— | { ಆಹ<br>ಬ್ರವೀತಿ   | ಆಹತು:<br>ಬ್ರೂತ: | ಆಹು:  <br>ಬ್ರುವಂತಿ |
|        | { ಆತ್ಮ<br>ಬ್ರವೀಷಿ | ಆಹತು:<br>ಬ್ರೂಯ: | —<br>ಬ್ರೂಯ         |
|        | ಬ್ರವೀಮಿ           | ಬ್ರೂವ:          | ಬ್ರೂಮ:             |
| ಆತ್ಮಂ  | ಬ್ರೂತೇ            | ಬ್ರೂವಾತೇ        | ಬ್ರೂವತೇ            |
|        | ಬ್ರೂಷೇ            | ಬ್ರೂವಾಶೇ        | ಬ್ರೂಷವೇ            |
|        | ಬ್ರೂವೇ            | ಬ್ರೂವಹೇ         | ಬ್ರೂಮಹೇ            |

|       |                   |                |        |
|-------|-------------------|----------------|--------|
| ಲಿಟ್— | ಬ್ರೂವೋ ವಚ್ಯಾದೇಶ:  |                |        |
| ಪರಂ   | ಉವಾಚ              | ಉಚತು:          | ಉಚು:   |
|       | { ಉವಚಿಶ್ಚ<br>ಉವಕಥ | { ಉಚಯು:<br>ಉಚ  | { ಉಚ   |
|       | { ಉವಾಚ<br>ಉವಚ     | { ಉಚಿವ<br>ಉಚಿಮ | { ಉಚಿಮ |
| ಆತ್ಮಂ | ಉಚೇ               | ಉಚಾತೇ          | ಉಚಿರೇ  |
|       | ಉಚಿಷೇ             | ಉಚಾಶೇ          | ಉಚಿಷವೇ |
|       | ಉಚೇ               | ಉಚಿವಹೇ         | ಉಚಿಮಹೇ |

|       |         |           |          |
|-------|---------|-----------|----------|
| ಲೂಟ್— | ವಕ್ತಾ   | ವಕ್ತಾರೌ   | ವಕ್ತಾರ:  |
| ಪರಂ   | ವಕ್ತಾಸಿ | ವಕ್ತಾಸ್ಥ: | ವಕ್ತಾಸ್ಥ |
| ಆತ್ಮಂ | ವಕ್ತಾಸೇ | ವಕ್ತಾಸಾಶೇ | ವಕ್ತಾಷವೇ |

|       |       |                       |            |           |
|-------|-------|-----------------------|------------|-----------|
| ಲೂಟ್— | ಪರಂ   | ವಕ್ಷ್ಯತಿ              | ಆತ್ಮಂ      | ವಕ್ಷ್ಯತೇ  |
| ಲೂಟ್— | ಪರಂ   | { ಬ್ರವೀತು<br>ಬ್ರೂತಾತ್ | ಬ್ರೂತಾಂ    | ಬ್ರೂವಂತು  |
|       |       | { ಬ್ರೂಹಿ<br>ಬ್ರೂತಾತ್  | ಬ್ರೂತಂ     | ಬ್ರೂತ     |
|       |       | ಬ್ರವಾಣಿ               | ಬ್ರವಾವ     | ಬ್ರವಾಮ    |
|       | ಆತ್ಮಂ | ಬ್ರೂತಾಂ               | ಬ್ರೂವಾತಾಂ  | ಬ್ರೂವತಾಂ  |
|       |       | ಬ್ರೂಷ್ವ               | ಬ್ರೂವಾಶಾಂ  | ಬ್ರೂಷ್ವಮ್ |
|       |       | ಬ್ರವೇ                 | ಬ್ರವಾವಹೇ   | ಬ್ರವಾಮಹೇ  |
| ಲಙ್—  | ಪರಂ   | ಅಬ್ರವೀತ್              | ಅಬ್ರೂತಾಂ   | ಅಬ್ರೂವನ್  |
|       |       | ಅಬ್ರವೀ:               | ಅಬ್ರೂತಮ್   | ಅಬ್ರೂತ    |
|       |       | ಅಬ್ರವಮ್               | ಅಬ್ರೂವ     | ಅಬ್ರೂಮ    |
|       | ಆತ್ಮಂ | ಅಬ್ರೂತ                | ಅಬ್ರೂವಾತಾಂ | ಅಬ್ರೂವತ   |

ವಿಧಿಲಿಟ್—  
ಪರಂ ಬ್ರೂಯಾತ್ ಬ್ರೂಯಾತಾಂ  
ಆತ್ಮಂ ಬ್ರೂವೀತ್ ಬ್ರೂವೀಯಾತಾಂ ಇತ್ಯಾದಿ.  
ಕರ್ಮಣಿ:—ಉಚ್ಯತೇ | ಉಚೇ | ವಕ್ತಾ | ವಕ್ಷ್ಯತೇ |  
ಉಚ್ಯತಾಂ | ಉಚ್ಯತ | ಉಚ್ಯತ | ವಕ್ಷೀಷತ್ | ಅವಾಚಿ |  
ಅವಕ್ಷ್ಯತ |

ಕೃತ್ಸು:—ವಕ್ತವ್ಯಮ್ | ವಚನೀಯಮ್ | ವಾಚ್ಯಮ್, ವಾಕ್ಯಮ್ |  
ಉಕ್ತ: | ಉಕ್ತವಾನ್ | ಬ್ರೂವನ್, ಬ್ರೂವತೀ, ಬ್ರೂವಾಣ: | ವಕ್ತುಮ್ |  
ಉಕ್ತಮ್ | ವಚನಮ್ | ಉಕ್ತವಾ | ಪ್ರೋಚ್ಯ | ಉಕ್ತವೋಕ್ತವಾ |  
ವಾಚವಾಚಮ್ |

ಇತಿ “ವ” ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್ |

ಭ

ಭ ಭ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ “ವ” ವರ್ಗದ ನಾಲ್ಕನೆಯ  
ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಂತರ ಸ್ಪೃಷ್ಟ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಒಪ್ಪಸ್ಥಾನ  
ದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಮಹಾಪ್ರಾಣವರ್ಣ. “ಕಾದಯೋ  
ಮಾವಸಾನಾಃ ಸ್ಪರ್ಶಾಃ” | “ಸ್ಪೃಷ್ಟಂ ಪ್ರಯತನಂ ಸ್ಪರ್ಶಾನಾಮ್” |

ಭ ಭ (ಪುಂ) 1. ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರು, ದೈತ್ಯರ ಗುರು.  
2. ಶುಕ್ರಗ್ರಹ. 3. ಶಂಭು, ಪರಮೇಶ್ವರ. 4. ಭ್ರಮರ,  
ಮುಂಬಿ. 5. ಭಾವ, ಸ್ವಭಾವ. 6. ಕಿರಣ. 7. ಮೇಘ,  
ಮೋಡ. “ಭ: ಶಂಭೌ ಭರಣಿ ಭಾವೇ ಶುಕ್ರೇಶೌ ಜಲದೇ

ಪುಮಾನ್” ನಾನಾರ್ಥರಂ | (ನಂ) 8. ಗಗನ, ಆಕಾಶ.  
9. ರಾಶಿ. 10. ನಕ್ಷತ್ರ. 11. ಪುಂಡ್ರ (ತ್ರಿಪುಂಡ್ರ  
ಮತ್ತು ಉದ್ಭವಪುಂಡ್ರ). 12. ಚಕ್ರ. “ಕಲೀವೇ ತು  
ಗಗನೇ ರಾಶೌ ತಾರಾಣಾಂ ಪುಂಡ್ರಚಕ್ರಯೋಃ” ನಾನಾರ್ಥರಂ |

ಭಕಾರ ಭಕಾರ (ಪುಂ) “ಭ” ವರ್ಣ, ಭ ಎಂಬ ಅಕ್ಷರ.

ಭಕ್ಟ ಭಕ್ಟ (ನಂ) ವಿವಾಹಕ್ಕಾಗಿ ವಧೂವರರ (ಜಾತಕ  
ಗಳ) ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಹೊಂದಿಕೆಗೆ ನೋಡುವ ದ್ವಾದಶಕೂಟ  
ಗಳು.



**ಭಕ್ತ ಭಕ್ತ** (ನಂ) 1. ಅನ್ಯ, ಭಜ್ಯತೇ — ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । "ಗಂಧೇನ ಸ್ಫುರತಾ ಮನಾಗನುಸೃತೋ ಭಕ್ತಸ್ಯ ಸರ್ಪಿಷ್ಮತಃ ಕರ್ಕಂಧುಫಲಮಿಶ್ರಶಾಕಪಚನಾಮೋದಃ ಪರಿಸ್ತೀರ್ಯತೇ" ತಂ ರಾಂ ೪-೧ । 2. ಅಹಾರ, ಧಾನ್ಯ. "ಯಸ್ಯ ತ್ರೈವಾರ್ಷಿಕಂ ಭಕ್ತಂ ಪರ್ಯಾಪ್ತಂ ಭುತ್ಯವೃತ್ತಯೇ । ಅಧಿಕಂ ವಾಪಿ ವಿವೇತ ಸ ಸೋಮಂ ಪಾತುಮರ್ಹತಿ" ಮನುಂ ೧೧-೭ । (ವಿಂ) 3. ಪೂಜೆ ಮಾಡುವವನು, ಆರಾಧಿಸುವವನು, ಉಪಾಸನೆ ಮಾಡುವವನು. 4. ನಿಷ್ಕೆಯುಳ್ಳವನು, (ದೇವರು ಗುರುಹಿರಿಯ ರಲ್ಲಿ) ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳವನು. "ಭಕ್ತೋಽಸಿ ಮೇ ಸಖಾ ಚೇತಿ ರಹಸ್ಯಂ ಹೃತದ್ವತ್ತಮಮ್" ಗೀತಾ ೪-೩ । ಭಗವದ್ಭಕ್ತರು ಸರ್ವ ಶ್ರೇಷ್ಠರು. ಸಕಲ ಪುಣ್ಯತೀರ್ಥಗಳೂ ಅವರ ಶರೀರದಲ್ಲಿವೆ. ಅವರ ಪಾದ ಧೂಳಿಯಿಂದ ಸಕಲ ಪೃಥ್ವೀಮಂಡಲವೂ ಪರಿಶುದ್ಧವಾಗುವುದು. ಮಂತ್ರೋಪಾಸಕರಾಗಿ ಭಗವನ್ನೀವೇದಿತವಾದ ಅನ್ಯವನ್ನು ಭಜಿಸುವ ಭಗವದ್ಭಕ್ತರು ಪರಮಾತ್ಮನ ಪ್ರಾಣಿಂಕಂತಲೂ ಅಧಿಕರು. ಇಂತಹ ಭಕ್ತರು ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ 10,000 ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಮಾತ್ರ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿರುವರು. ಅನಂತರ ವರ್ಣಭೇದವೆಲ್ಲಾ ನಾಶವಾಗಿ ಎಲ್ಲರೂ ಒಂದೇ ವರ್ಣದವರಾಗುವರು. "ಪೃಥಿವ್ಯಾ ಯಾನಿ ತೀರ್ಥಾನಿ ಪುಷ್ಪಾನ್ಯಪಿ ಚ ಜಾಹ್ನವಿ । ಮದ್ಭಕ್ತಾನಾಂ ಶರೀರೇಷು ಸಂತಿ ಪೂತೇಷು ಸಂತತಮ್ । ಮದ್ಭಕ್ತಪಾದರಜಸಾ ಸಂಧಃ ಪೂತಾ ವಸುಂಧರಾ । ಮನ್ಮನ್ತೋಪಾಸಕಾ ವಿಪ್ರಾ ಯೇ ಮದುಚ್ಛಿಷ್ಟ-ಭೋಜಿನಃ । ಮಾಮೇವ ನಿದ್ಯಂ ಧ್ಯಾಯಂತೇ ತೇ ಮತ್ಪ್ರಾಣಾಧಿಕಾಃ ಪ್ರಿಯಾಃ । ಕಲೇರ್ದಶಸಹಸ್ರಾಣಿ ಮದ್ಭಕ್ತಾಃ ಸಂತಿ ಭೂತಲೇ । ಏಕವರ್ಣಾ ಭವಿಷ್ಯಂತಿ ಮದ್ಭಕ್ತೇಷು ಗತೇಷು ಚ" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ । 5. ಭಾಗಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವ. ಭಜ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) । 6. ಭಾಗಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಭಜ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) ।

**ಭಕ್ತಕಂಸ ಭಕ್ತಕಂಸ** (ಪುಂ) ಅನ್ಯದ ಪಾತ್ರೆ.

**ಭಕ್ತಕಾರ ಭಕ್ತಕಾರ** (ಪುಂ) ಅಡಿಗೆಯವನು. ಭಕ್ತಂ ಕರೋತಿ — ಡುಕ್ರಾ (ಕರಣಂ) "ಅಙ್" (೩-೨-೧) ।

**ಭಕ್ತದಾಸ ಭಕ್ತದಾಸ** (ಪುಂ) ಅನ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಜೀತಮಾಡುವವನು, ಹೊಟ್ಟೆಪಾಡಿಗಾಗಿ ಮತ್ತೊಬ್ಬನ ಸೇವೆ ಮಾಡುವವನು. ಭಕ್ತೇನ ದಾಸಃ ।

**ಭಕ್ತಪುಲಾಕ ಭಕ್ತಪುಲಾಕ** (ಪುಂ) ಅನ್ಯದ ಅಗಳು. ಭಕ್ತಸ್ಯ ಪುಲಾಕಃ ।

**ಭಕ್ತಮಂಡ ಭಕ್ತಮಂಡ** (ನಂ) ಅನ್ಯದ ಮೇಲಿನ ಕೆನೆ.

**ಭಕ್ತರೋಚನ ಭಕ್ತರೋಚನ** (ವಿಂ) ಅನ್ಯವು ರುಚಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವ ವಸ್ತು, ಹಸಿವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಪದಾರ್ಥ.

ಭಕ್ತಂ ರೋಚಯತೇ — ರುಚ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿच् "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಭಕ್ತವತ್ಸಲ ಭಕ್ತವತ್ಸಲ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಭಕ್ತೇಷು ವತ್ಸಲಃ । "ವಿಶೇಷಂ ವಕ್ತಿ ಭಕ್ತೇಷು ಯೋಽಸೌ ಸ್ಯಾತ್ ಭಕ್ತ-ವತ್ಸಲಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । "ಲೋಕಬಂಧುಲೋಕನಾಥೋ ಮಾಧವೋ ಭಕ್ತವತ್ಸಲಃ" ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ) 2. ಭಕ್ತರಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ, ಭಕ್ತರಲ್ಲಿ ದಯೆಯುಳ್ಳ. "ಭಕ್ತಿಮನ್ತ ಇಹ ಭಕ್ತವತ್ಸಲೇ ಸಂತತಸ್ಮರಣರೀಣಕಲ್ಮಷಾಃ" ಮಾಘಂ ೧೪-೬೩ ।

**ಭಕ್ತಿ ಭಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೇವರು ಮತ್ತು ಗುರುಹಿರಿಯ ರಲ್ಲಿ ಇಡುವ ನಿರತಿಶಯವಾದ ಪ್ರೀತಿ, —ಗೌರವಬುದ್ಧಿ, —ಅನುರಾಗ, ಜೀವಾತ್ಮ ಪರಮಾತ್ಮ ಯಾಥಾರ್ಥ್ಯ ಜ್ಞಾನ ದಿಂದ ಮಾಡುವ ಪರಮಪುರುಷನ ಪಾದಾರವಿಂದಗಳ ಧ್ಯಾನ ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) । ನಿರ್ಮಲ ಚಿತ್ತದಿಂದ ಮಾಡುವ ಪರಮಾತ್ಮನ ಕಥಾಶ್ರವಣ ಕೀರ್ತನ ಪಾದಸೇವನೆ ಅರ್ಚನೆ ಪ್ರಣಾಮ ಇತ್ಯಾದಿ 9 ಅಂಗಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಧ್ಯಾನವು ಭಕ್ತಿಯೆನಿಸುವುದು. "ಶ್ರವಣಂ ಕೀರ್ತನಂ ವಿಷ್ಣೋಃ ಸ್ಮರಣಂ ಪಾದಸೇವನಮ್ । ಅರ್ಚನಂ ವಂದನಂ ದಾಸ್ಯಂ ಸಖ್ಯಮಾತ್ಮನಿವೇದನಮ್ । ಇತಿ ಪುಂಸಾಪಿತಾ ವಿಷ್ಣೋ ಭಕ್ತಿಶ್ಚೇನ್ನವಲಕ್ಷಣಾ" ಭಾಗಂ ೭-೫-೨೩ । "ಸರ್ವೋಪಾಧಿ-ವಿನಿರ್ಮುಕ್ತಂ ತತ್ಪರತ್ವೇನ ನಿರ್ಮಲಮ್ । ಹೃಷೀಕೇಣ ಹೃಷೀಕೇಶಸೇವನಂ ಭಕ್ತಿರೂಚ್ಯತೇ" । "ಸ್ನೇಹಪೂರ್ವಮನುಷ್ಯಾನಂ ಭಕ್ತಿರೀತಿಯಭಿಧೀಯತೇ" । ಸಾ ಚ ಪರಾನುರಕ್ತಿರೀಶ್ವರೇ । "ಸ್ವದತ್ತಯೇವ ಸ್ವಪದಾಂಜಭಾಜಾ ಭಕ್ತ್ಯಾ ಸ್ವಯಂ ತಾರಯಸೇ ಭವಾಂಜಿಮ್" ಯಾದಂ ೨೦-೮೩ । "ಭಕ್ತ್ಯಾ ಗುರೌ ಮಯ್ಯನುಕಂಪಯಾ ಚ" ರಘುಂ ೨-೬೩ । 2. ಬೇರೆ ಯಾಗುವುದು, ಭಾಗವಾಗುವುದು. 3. ರಚನೆ, ಗ್ರಂಥನೆ, ಜೋಡಣೆ. "ಭವತಿ ವಿರಲಭಕ್ತಿರ್ಮಲನಿಪುಣೋಪಹಾರಃ" ರಘುಂ ೫-೭೪ । 4. ಸೇವೆ, ಪೂಜೆ, ಉಪಾಸನೆ, ಆರಾಧನೆ. "ಸೇವಾ ಭಕ್ತಿರೂಪಾಸ್ತಿಃ" ಇತಿ ಕೋಶಃ । 5. ಶ್ರದ್ಧೆ. 6. ಗೌರವಪ್ರೀತಿ, ಮುಖ್ಯವಾದ ಗುಣವನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿದ ವೃತ್ತಿ. 7. ಭಂಗಿ, ಭಕ್ತಿ. "ಭಕ್ತಿಃ ಸೇವಾಗೌಣವೃತ್ತಯೋಃ ಭಜ್ಜಯಾಂ ಶ್ರದ್ಧಾವಿಭಾಗಯೋಃ" ಹೇಮಂ । 8. ಅನಂದವಾಗುವಂತೆ ಗಂಧ ಪುಷ್ಪ ಅಭರಣ ಇವುಗಳಿಂದ ಅಲಂಕರಿಸುವುದು. "ಕನಕಕಲಶಯುಕ್ತಂ ಭಕ್ತಿಶೋಭಾಸನಾಥಂ ಕ್ಷಿತಿ-ವಿರಚಿತಶಯ್ಯಂ ಕೌತುಕಾಗಾರಮಾಗಾತ್" ಕುಮಾರಂ ೭-೯೪ ।

**ಭಕ್ತಿನಮ್ರ ಭಕ್ತಿನಮ್ರ** (ವಿಂ) ಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಬಗ್ಗಿರುವ, ಭಕ್ತಿಯಿಂದ ತಗ್ಗಿರುವ. ಭಕ್ತ್ಯಾ ನಮ್ರಃ ।

**ಭಕ್ತಿಪೂರ್ವಕ ಭಕ್ತಿಪೂರ್ವಕ** (ಅವ್ಯಂ) ಪ್ರೀತಿಪುರಃಸರವಾಗಿ, ಭಕ್ತಿಯೊಡನೆ. ಭಕ್ತಿಃ ಪೂರ್ವಂ ಯಸ್ಮಿನ್ ಕರ್ಮಣಿ ।



**ಜ್ಞಾನಯೋಗ:** ಪರಬ್ರಹ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದ ಭಕ್ತಿಗೆ ಉಪಾಯವಾದ ಆತ್ಮಚಿಂತನೆ, ಕರ್ಮಯೋಗದಿಂದ ಚಿತ್ತನೈರ್ಮಲ ಹೊಂದಿ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ತಾನು ಶೇಷಭೂತನೆಂದು ತಿಳಿದು ಮಾಡುವ ಪ್ರಕೃತಿವಿಯುಕ್ತನಾದ ಆತ್ಮನ ಚಿಂತನೆ, ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನವನ್ನು ಹೊಂದುವ ಒಂದು ಉಪಾಯ. ಮೋಕ್ಷಾಭಿಲಾಷೆಯಿಂದ ಮಾತ್ರ ಜ್ಞಾನಯೋಗಕ್ಕೆ ಅಧಿಕಾರಿಯಾಗುವುದಿಲ್ಲ. ಕರ್ಮಯೋಗದಿಂದ ಪಾಪಗಳನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡು ಅನಂತರ ಜ್ಞಾನಯೋಗವನ್ನು ಕೈಗೊಳ್ಳಬೇಕು. ಕರ್ಮಯೋಗವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಜ್ಞಾನಯೋಗವನ್ನೇ ಆಚರಿಸುವವನಿಗೆ ಪ್ರಾಚೀನ ವಾಸನೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ ರಾಗದ್ವೇಷಾದಿಗಳು ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ಆಯಾ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರೇರಿಸುತ್ತವೆಯಾದುದರಿಂದ ಮೊದಲೇ ಜ್ಞಾನಯೋಗಕ್ಕೆ ಯತ್ನಿಸಬಾರದು. ಕರ್ಮಯೋಗದಿಂದ ಪ್ರತಿಬಂಧಕರೂಪವಾದ ಎಲ್ಲಾ ದೋಷಗಳನ್ನು ಪರಿಹರಿಸಿಕೊಂಡು, ಜ್ಞಾನಯೋಗವನ್ನು ಆಚರಿಸಬೇಕು. ಕರ್ಮವು ದ್ರವ್ಯಮಯ ಮತ್ತು ಜ್ಞಾನಮಯಗಳೆಂಬ ಎರಡು ಅಂಶಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ್ದು ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಜ್ಞಾನಮಯವೇ ಶ್ರೇಯಸ್ಕರ. ಫಲ ಸಂಗವಿಲ್ಲದ ಎಲ್ಲಾ ಕರ್ಮಗಳೂ ಜ್ಞಾನದಲ್ಲಿ ಪರಿಸಮಾಪ್ತಿ ಹೊಂದುವುದರಿಂದ ಜ್ಞಾನಯಜ್ಞವು ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದುದು. “ಸर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः । यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्” ಗೀತಾ ೪-೩೦ । “इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ । तयोर्न वशमागच्छेत् तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ” ಗೀತಾ ೩-೩೪ । “तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ । पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम्” ಗೀತಾ ೩-೪೧ । “श्रेयान् द्रव्यमयाद्यज्ञात् ज्ञानयज्ञः परन्तप । सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते” ಗೀತಾ ೪-೩೩ । ಜ್ಞಾನಯೋಗದಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಿದ ಆತ್ಮಜ್ಞಾನವು ಅನಾದಿಕಾಲಪ್ರವೃತ್ತವಾದ ಸಕಲ ಕರ್ಮರಾಶಿಯನ್ನೂ ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. “ज्ञानान्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन” ಗೀತಾ ೪-೩೭ । ಆತ್ಮಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದುದೂ ಅದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಪವಿತ್ರವಾದುದೂ ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲ. ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ಜ್ಞಾನಾಕಾರವಾದ ಕರ್ಮಯೋಗದಿಂದ ಕಾಲಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಆತ್ಮಜ್ಞಾನವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿ ಅದರಿಂದ ನಿರತಿಶಯವಾದ ಮೋಕ್ಷವನ್ನು ಪಡೆಯಬಹುದು. “न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते । तत् स्वयं योग-



संसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति । श्रद्धावान् लभते ज्ञानं  
तत्परः संयतेन्द्रियः । ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधि-  
गच्छति ” गीता ४-३८, ३९ । ज्ञानयोगವು ಕಲಿಸಿ  
ವಾದುದರಿಂದಲೂ ಕರ್ಮಯೋಗದಿಂದ ಶೀಘ್ರವಾಗಿ  
ಸಿದ್ಧಿಯುಂಟಾಗುವುದರಿಂದಲೂ ಕರ್ಮಯೋಗವೇ ಒಳ್ಳೆ  
ಯದು.

**ಭಕ್ತಿಯೋಗ:** ಆತ್ಮದರ್ಶನಕ್ಕಾಗಿ ಕೈಗೊಳ್ಳುವ  
ಒಂದು ಉಪಾಯ. ಆತ್ಮಜ್ಞಾನಪೂರ್ವಕ ಕರ್ಮ  
ಯೋಗದ ಅನುಷ್ಠಾನದಿಂದ ಆತ್ಮವರೋಹನವಾಗುವುದ  
ರಿಂದ ಆತ್ಮಜ್ಞಾನಿಯಾದವನು ಭಗವದುಪಾಸಕನಾಗು  
ತ್ತಾನೆ. ಧೈರ್ಯವಸ್ತುವು ಬಹಳ ಪ್ರಿಯವಾದುದರಿಂದ  
ಬಹಳ ಪ್ರಿಯರೂಪವಾದ ಸ್ಮೃತಿಸಂತಾನವೇ ಉಪಾಸನೆ.  
ಇದೇ ಬ್ರಹ್ಮಪ್ರಾಪ್ತಿಗೆ ಸಾಧನವಾದ ಭಕ್ತಿಯೋಗ.  
ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಪುಣ್ಯಕರ್ಮಮಾಡಿದವರು ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲಿ  
ಶರಣಾಗತಿ ಮಾಡುತ್ತಾರೆ. ಅವರು ಆರ್ತರು ಅರ್ಥಾರ್ಥಿ  
ಗಳು ಜಿಜ್ಞಾಸುಗಳು ಮತ್ತು ಜ್ಞಾನಿಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು  
ವಿಧ. ಐಶ್ವರ್ಯವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡು ಮತ್ತೆ ಅದನ್ನು  
ಪಡೆಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು ಆರ್ತ. ದಾರಿದ್ರ್ಯದಿಂದ  
ಕಷ್ಟಕ್ಕೊಳಗಾಗಿ ಐಶ್ವರ್ಯವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು  
ಅರ್ಥಾರ್ಥಿ. ಪ್ರಕೃತಿವಿಯುಕ್ತನಾದ ಆತ್ಮನ ಸ್ವರೂಪ  
ವನ್ನು ಪಡೆಯಲಿಚ್ಛಿಸುವವನು ಜಿಜ್ಞಾಸು. ಪರಮಾತ್ಮನೇ  
ಪರಮಪ್ರಾಪ್ಯನೆಂದು ತಿಳಿದು ಅವನನ್ನು ಪಡೆಯಲು  
ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು ಜ್ಞಾನಿ. ಈ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಭಕ್ತರಲ್ಲಿ  
ಜ್ಞಾನಿಯು ಸರ್ವಶ್ರೇಷ್ಠನು. ಅವನೇ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ  
ಪ್ರಿಯನಾದವನು. ಜ್ಞಾನಿಗೂ ಪರಮಾತ್ಮನು ಬಹಳ  
ಪ್ರಿಯನಾಗುತ್ತಾನೆ. “चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः  
सुकृतिनोऽर्जुन । आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च  
भरतर्षभ ॥ तेषां ज्ञानी नित्ययुक्तः एकभक्ति-  
विशिष्यते । प्रियो हि ज्ञानिनोऽप्यर्थमहं स च मम  
प्रियः ” गीता ९-१६, १७ । ಈ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಭಕ್ತರಲ್ಲಿ  
ಮೊದಲನೆಯ ಮೂವರು ಪರಮಾತ್ಮನಿಂದ ಫಲವನ್ನು  
ಹೊಂದಿ ಅವನ ಮಹಿಮೆಯನ್ನು ಕೊಂಡಾಡುತ್ತಾರೆ.  
ಜ್ಞಾನಿಯಾದರೋ ಬೇರೆ ಫಲವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸದೆ ಪರ  
ಮಾತ್ಮನಲ್ಲೇ ಭಕ್ತಿಯಿಟ್ಟಿರುವುದರಿಂದ ಶರೀರಕ್ಕೆ ಆತ್ಮನು  
ಆಧಾರವಾಗಿರುವಂತೆ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಆತ್ಮನುತಿರುತ್ತಾನೆ.  
“उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् । आस्थितः  
स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम् ” गीता ९-१८ ।  
ಅನೇಕ ಜನ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ ಪುಣ್ಯಕರ್ಮಗಳಿಂದ  
ಪರಮಾತ್ಮನ ಪ್ರಾಪ್ತಿಗೆ ವಿರೋಧಿಯಾದ ಪಾಪವನ್ನು

ಕಳೆದುಕೊಂಡು ದ್ವಂದ್ವಮೋಹದಿಂದ ಮುಕ್ತರಾಗಿ ಜರಾ  
ಮರಣಮೋಕ್ಷಕ್ಕಾಗಿಯೂ ಪರಮಾತ್ಮಪ್ರಾಪ್ತಿರೂಪ  
ವಾದ ಐಶ್ವರ್ಯಕ್ಕಾಗಿಯೂ ಸಂಕಲ್ಪಮಾಡಿದ ಭಕ್ತರು  
ಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನೇ ಭಜಿಸುತ್ತಾರೆ. “येषां  
त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् । ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ताः  
भजन्ते मां दृढव्रताः ” गीता ७-२८ । ಪ್ರಕೃತಿ ವಿಯುಕ್ತ  
ನಾದ ಆತ್ಮನ ಸ್ವರೂಪದರ್ಶನಕ್ಕಾಗಿ ಪರಮಾತ್ಮನ  
ಆರಾಧನ (ಉಪಾಸನಾ) ರೂಪವಾದ ಪ್ರಯತ್ನವನ್ನು  
ಕೈಗೊಳ್ಳುವವರು ಬ್ರಹ್ಮವನ್ನೂ ಅಧ್ಯಾತ್ಮವನ್ನೂ ಅಖಿಲ  
ವಾದ ಕರ್ಮವನ್ನೂ ತಿಳಿಯುತ್ತಾರೆ. “जरामरणमोक्षाय  
मामाश्रित्य यतन्ति ये । ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं  
कर्म चाखिलम् ” गीता ७-२९ । ಇದು ಪರಮಾತ್ಮ  
ಪ್ರಾಪ್ತಿಗೆ ಸಾಧನವಾದ ಭಕ್ತಿಯೋಗ.

**भक्तृ भक्त्य (वि०)** 1. ಪೂಜಿಸುವವನು, ಉಪಾಸನೆ  
ಮಾಡುವವನು. भज (सेवायाम्) “तृच्” (३-१-१३३) ।  
2. ಭಾಗಮಾಡುವವನು, ಬೇರೆಮಾಡುವವನು.

**भक्ष - अदने (चुरा० उभ० सक० से०) ।** भक्षयति, -ते ।  
भक्षयामास, -चकार । भक्षयिता । भक्षयिष्यति, -ते ।  
भक्षयतु, -ताम् । अभक्षयत्, -त् । भक्षयेत्, -त् ।  
ಇತ್ತಾದಿ. ತಿನ್ನು, ಊಟಮಾಡು.

**कर्मणि :—भक्ष्यते ।** “यथामिषं जले मत्स्यैर्भक्ष्यते  
इवापदेर्भुवि ” पञ्चत० २-१२२ ।

**सनि :—बिभक्षति, -ते ।**

**कृत्सु :—भक्षयितव्यः ।** भक्षणीयः । भक्ष्यः । भक्षयन्,  
-न्ती । भक्षितः । भक्षणम् । भक्षयित्वा । “भक्षयित्वा  
बहून् मत्स्यानुत्तमाघममध्यमान् ” पञ्चत० १-२३२ ।

**भक्ष भक्ष् (पुं०)** 1. ಆಹಾರ, ಊಟ. 2. ಊಟಮಾಡು  
ವುದು, ತಿನ್ನುವುದು. 3. ತಿಂಡಿ.

**भक्षक भक्ष्क (वि०)** 1. ತಿನ್ನುವವನು, ಊಟಮಾಡು  
ವವನು. भक्ष (अदने) + णिच् “ण्वल्” (३-१-१३३) ।  
“भक्ष्यभक्षकयोः प्रीतिविपत्तेः कारणं महत् ” हितो०  
१-५५ । 2. ಹೊಟ್ಟೆಬಾಕ, ಹಿತಿಮೀರಿ ಊಟಮಾಡು  
ವವನು.

**भक्षकार भक्ष्कार (पुं०)** ತಿಂಡಿಯನ್ನು ಮಾಡುವವನು.  
भक्षं करोति — डुकृञ् (करणे) “अण्” (३-२-१) ।

**भक्षण भक्ष्ण (न०)** ತಿನ್ನುವುದು, ಊಟಮಾಡುವುದು.  
भक्ष (अदने) + णिच् “ल्युट्” (३-३-११५) । “न  
मांसभक्षणे दोषो न मद्ये न च मैथुने ” मनु० ५-५६ ।



**ಭಕ್ಷಣೀಯ ಭಕ್ತಿಯೋಗ** (ವಿಂ) 1. ತಿನ್ನಲ್ಪಡುವ. 2. ತಿನ್ನಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ತಿನ್ನಬೇಕಾದ. ಭಕ್ಷ (ಅದನೆ) + ಣಿच् "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬)। "ತ್ವದ್ವಚನೇನ ಭಕ್ಷಣೀಯಾಸ್ತೇ ದಾಯಾದಾಃ" ಪಂಚತಂ ೪। "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೧೬)। -ಯಿತವ್ಯಃ -ಯಿತವ್ಯಃ.

**ಭಕ್ಷಿತ ಭಕ್ತಿ** (ನಂ) 1. ತಿನ್ನಲ್ಪಡುವ. ಭಕ್ಷ (ಅದನೆ) + ಣಿच् "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಅಹಾರ. (ವಿಂ) 3. ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟ. ಭಕ್ಷಯತೇ ಸ್ಮ-ಭಕ್ಷ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ತೇ ಚ ತೇನ ಶನೈಃಶನೈರಭಕ್ಷಿತಾಃ" ಪಂಚತಂ ೪।

**ಭಕ್ಷ್ಯ ಭಕ್ತ್ಯಾ** (ನಂ) 1. ತಿಂಡಿ. ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಅಹಾರ ವಸ್ತು, ತಿನ್ನಲ್ಪಡುವ ವಸ್ತು. ಭಕ್ಷ (ಅದನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)। "ಭಕ್ಷ್ಯಭಕ್ಷಕಯೋಃ ಪ್ರೀತಿ-ವಿಪತ್ತಿಃ ಕಾರಣಂ ಮಹತ್" ಹಿತಂ ೧-೫೫। (ವಿಂ) 2. ತಿನ್ನಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಭಕ್ಷಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ.

**ಭಕ್ಷ್ಯಕಾರ ಭಕ್ತ್ಯುಕ್ತಾರ** (ಪುಂ) ತಿಂಡಿಯನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು, ಭಕ್ಷ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡುವವನು. ಭಕ್ಷ್ಯಂ ಕರೋತಿ-ಛುಕ್ತಾನ್ (ಕರಣಂ) "ಅನ್" (೩-೨-೧)।

**ಭಗ ಭಗ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ, ದ್ವಾದಶ (12) ಆದಿತ್ಯ ರಲ್ಲೊಬ್ಬ. ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಘಃ" (೩-೩-೧೧೮)। (1) ಘಾತಾ, (2) ಮಿತ್ರಃ, (3) ಅರ್ಯಮಾ, (4) ಶಕ್ರಃ, (5) ವರುಣಃ, (6) ಅಂಶಃ, (7) ಭಗಃ, (8) ವಿವಸ್ವಾನ್, (9) ಪೂಷಾ, (10) ಸವಿತಾ, (11) ತ್ವಷ್ಟಾ ಮತ್ತು (12) ವಿಷ್ಣುಃ। ಈ ಹನ್ನೆರಡು ಮಂದಿ ಆದಿತ್ಯರೂ ಪ್ರಳಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ ಪ್ರಕಾಶಿಸುವರು. 2. ಐಶ್ವರ್ಯ, ಸಂಪತ್ತು. 3. ಕಾಮ, ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಬಯಕೆ, ಇಚ್ಛೆ. 4. ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ. 5. ಪ್ರಯತ್ನ. 6. ಅಣವಾದಿ ಐಶ್ವರ್ಯ. 7. ಮುಕ್ತಿ, ಮೋಕ್ಷ. 8. ಧರ್ಮ. 9. ಜ್ಞಾನ. 10. ವೈರಾಗ್ಯ. 11. ಕೀರ್ತಿ, ಯಶಸ್ಸು. 12. ವೀರ್ಯ, ಪರಾಕ್ರಮ. 13. ತಪಸ್ಸು. 14. ಕಾಂತಿ, ಸೌಂದರ್ಯ, ಸೊಬಗು. 15. ಯೋನಿ, ಸ್ತ್ರೀಯರ ಗುಹ್ಯೇಂದ್ರಿಯ. ಮೇದಿನೀ ಕೋಶಕಾರರು ಆದಿತ್ಯ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಪುಂಲಿಂಗವೆಂದು ಹೇಳಿ ಉಳಿದೆಲ್ಲ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲೂ ನಪುಂಸಕಲಿಂಗವೆಂದು ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ. "ಭಗಂ ಶ್ರೀಯೋನಿವೀರ್ಯೇಚ್ಛಾಜ್ಞಾನವೈರಾಗ್ಯಕೀರ್ತಿಭಿಃ। ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯೈಶ್ವರ್ಯ-ಯತ್ನೈಃ ಧರ್ಮೈಃ ಮೋಕ್ಷೈಃ ಚ ನಾ ರವೌ" ಮೇದಿಂ। ನಾನಾರ್ಥ ರತ್ನಮಾಲೆ ಮತ್ತು ವೈಜಯಂತೀ ಕೋಶಗಳಲ್ಲಿ ಯೋನಿ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ನಪುಂಸಕಲಿಂಗವೆಂದು ಹೇಳಿ ಉಳಿದೆಲ್ಲ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲೂ ಭಗ ಶಬ್ದವು ಪುಂಲಿಂಗವೆಂದು ಹೇಳಿದೆ. "ಭಗಃ ಶ್ರೀಕಾಮಮಾಹಾತ್ಮ್ಯಯತ್ನೈಶ್ವರ್ಯಾರ್ಕಮುಕ್ತಿಭಿಃ।

ಇಚ್ಛಾವೀರ್ಯತಪಃಕೀರ್ತಿವೈರಾಗ್ಯಜ್ಞಾನಕಾಂತಿಭಿಃ। ಯೋನೌ ತು ಸ್ತ್ರೀಯಾಃ ಕಲಿಬೇ" ನಾನಾರ್ಥಂ। "ಭಗಂ ಯೋನೌ ಭಗೋ ಯತ್ನೇ ಯಶೋ-ವೀರ್ಯಾರ್ಕಭೂತಿಭಿಃ। ಕಾಂತೀಚ್ಛಾಜ್ಞಾನವೈರಾಗ್ಯಧರ್ಮೈಶ್ವರ್ಯತಪಸ್ಸು ಚ" ವೈಜಂ। (ಪುಂ) 16. ಚಂದ್ರ. (ನಂ) 17. ಪೂರ್ವ ಫಲ್ಗುನೀ ನಕ್ಷತ್ರ. 18. ಸೌಭಾಗ್ಯ, ಅದೃಷ್ಟ. "ಯಸ್ಯ ರಾಷ್ಟ್ರೇ ಪ್ರಜಾಃ ಸರ್ವಾಃ ತಸ್ಯಂತೇ ಸಾಧ್ಯಸಾಧುಭಿಃ। ತಸ್ಯ ಮತಸ್ಯ ನಶ್ಯಂತಿ ಕೀರ್ತಿರಾಯುರ್ಮಗ್ನೋ ಗತಿಃ" ಭಾಗಂ ೧-೧೭-೧೦।

**ಭಗಣ ಭಗಣ** (ಪುಂ) 1. ರಾಶಿಗಳ ಸಮೂಹ. 2. ನಕ್ಷತ್ರ ಗಳ ಸಮೂಹ. ಭಾಗಾ ನಕ್ಷತ್ರಾಣಾಂ ಗಣಃ ಸಮೂಹಃ।

**ಭಗವತ್ ಭಗದತ್ತ** (ಪುಂ) ನರಕಾಸುರನ ಹಿರಿಯ ಮಗ. ಇವನು ಪ್ರಾಣಜ್ಯೋತಿಷಪುರದ ದೊರೆ. "ಋತುಮತ್ಯಾಂ ತು ಜಾಯಾಂ ಕಾಲೇನ ನರಕಃ ಕ್ರಮಾತ್। ಭಗದತ್ತಂ ಮಹಾಶೀರ್ಷ ಮದವತ್ತಂ ಸುಮಾಲಿನಮ್। ಚತುರೋ ಜನಯಾಮಾಸ ಪುತ್ರಾಸ್ತಾಂಶ್ಚ ಕ್ಷಿತೇಃ ಸುತಃ" ಕಾಲಿಕಾಪುಂ।

**ಭಗದೇವತ ಭಗದೈವತ** (ನಂ) ಪೂರ್ವಫಲ್ಗುನೀ ನಕ್ಷತ್ರ. ಭಗೋ ದೇವತಂ ದೇವತಾಜ್ಯಮ್।

**ಭಗವದ್ ಭಗವದರ** (ಪುಂ) ಆಸನ ಕುರು, ಗುಹ್ಯಸ್ಥಾನದ ವೃಣ, "ಪಿಸ್ತುಲಾ" ಎಂಬ ಒಂದು ವ್ಯಾಧಿ. ಭಗಂ ದಾರಯತಿ-ಢ್ (ವಿದಾರಣಂ) + ಣಿच् "ಖಚ್" (೩-೨-೪೬)। ಮುಗಾಗಮಃ (೬-೩-೬೭)। ಭಗವದರವು ಗುದಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ವ್ಯಾಧಿ. ಇದು ವಾತ ಪಿತ್ತ ಶ್ಲೇಷ್ಮ ಸನ್ನಿಪಾತ ಮತ್ತು ಆಗಂತು ನಿಮಿತ್ತವಾದ (ಕ್ರಮವಾಗಿ) ಶತಪೋನಕ ಉಷ್ಣಗ್ರೀವ ಪರಿಸ್ರಾವಿ ಶಂಖೂಕಾವರ್ತ ಮತ್ತು ಉನ್ಮಾದಿಗಳಿಂದ ಬರುವ ವಿಧ. "ವಾತಪಿತ್ತ-ಶ್ಲೇಷ್ಮಸನ್ನಿಪಾತಾಗಂತುನಿಮಿತ್ತಾಃ ಶತಪೋನಕೋಷ್ಠಗ್ರೀವಪರಿಸ್ರಾವಿ-ಶಂಖೂಕಾವರ್ತೋನ್ಮಾದಿಗಣೋ ಯಥಾಸಂಖ್ಯಂ ಪಂಚ ಭಗವದರಾ ಭವಂತಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ನಿವಾಂ ೪-೩।

**ಭಗವದರದ ಪೂರ್ವರೂಪಃ** ಗುದಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಮೊದಲು ಪಿರೈಗಳ ನೋವು ನವೆ ಉರಿತ ಮತ್ತು ಊತ ಗಳು ಉಂಟಾಗುವುವು. "ಕಟಿಕಪಾಲವೇದನಾ ಕಣ್ಡದಾಹಃ ಶೋಫಶ್ಚ ಗುದಸ್ಯ ಭವತಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ನಿವಾಂ ೪-೪।

(1) **ನಾತಿಕ (ಶತಪೋನಕ) ಭಗವದರ**ಃ ಈ ಮೇಲಿನ ವಿಕಾರಗಳುಂಟಾದಾಗ ಅಪಘಾಹಾರ ಸೇವನೆ ಯಿಂದ ವಾಯುವು ಪ್ರಕೋಪಗೊಂಡು ಅಲ್ಲೇ ನೆಲೆಸಿ ಗುದಪ್ರದೇಶದ ಸುತ್ತಲೂ ಒಂದೆರಡು ಅಂಗುಲಗಳಷ್ಟು ಮಾಂಸರಕ್ತಗಳನ್ನು ಕೆಡಿಸಿ ಅಲ್ಲಿ ರಕ್ತಕುರುಗಳನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವುದು. ಅದರಿಂದ ಅತೀವ ವೇದನೆಯುಂಟಾಗುವುದಲ್ಲದೆ ಅದು ಬಲಿತು ಪಕ್ಷವಾಗಿ ಮೂತ್ರಾಶಯದ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ಆ ಕುರುವು ತೊಯ್ದುಹೋಗಿ



ಜಲ್ಲದಿಯಂತಿರುವ ಸಣ್ಣ ಸಣ್ಣ ರಂಧ್ರಗಳ ಮೂಲಕ ನೀರಿ  
ನಿಂದ ತುಂಬಿ ಕೊಸರಿಹೋಗಿ ಅನವರತವೂ ನೋರೆಯಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ರಕ್ತವು ಸೋರುತ್ತಿರುವುದು. ಆ ವ್ರಣದಿಂದ  
ಯಾವಾಗಲೂ ದುಡಿತವೂ ಕತ್ತರಿಯಿಂದ ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪ  
ಟ್ಟಂತೆಯೂ ಸೂಜಿಯಿಂದ ಚುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟಂತೆಯೂ ಬಹಳ  
ವೇದನೆಯುಂಟಾಗುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ಪ್ರತೀಕಾರ ನಡೆಯ  
ದಿದ್ದರೆ ವಾತ ಮೂತ್ರ ಮಲ ಮತ್ತು ರೇತಸ್ಸುಗಳೆಲ್ಲವೂ  
ಈ ರಂಧ್ರಗಳ ಮೂಲಕವೇ ಹೊರಗೆ ಬರುವುವು. ಇದು  
ವಾತನಿಮಿತ್ತವಾದ “ಶತಪೋನಕ” ಭಗಂದರ.

“ತತ್ರಾಪ್ಯಸೇವಿನಾಂ ವಾಯುಃ ಪ್ರಕುಪಿತಃ ಸನ್ನಿವೃತ್ತಃ ಸ್ಥಿರೀಭೂತೋ  
ಗುದಮಭಿತೋಽಙ್ಗುಲೇ ದ್ವ್ಯಙ್ಗುಲೇ ವಾ ಮಾंसಶೋಣಿತೇ ಪ್ರದ್ವ್ಯಾರುಣವರ್ಣಾ  
ಪಿಡಕಾಂ ಜನಯತಿ । ಸಾಙ್ಸ್ಯ ತೋದಾದೀನ್ ವೇದನಾವಿಶೇಷಾಙ್ಗಜನ-  
ಯತಿ । ಅಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಮಾಣಾ ಚ ಪಾಕಮುಪೇತಿ । ಮೂತ್ರಾಶಯಾ-  
ಮ್ಯಾಶಗತತ್ವಾಂಚ ವ್ರಣಃ ಪ್ರಕಿಲಿನ್ನಃ ಶತಪೋನಕವದನುಮುಖೇಶ್ಚಿತ್ತ-  
ರಾಪೂರ್ಯತೇ । ತಾನಿ ಚ ಛಿದ್ರಾಪ್ಯಜಸ್ರಮಂಚಂ ಫೇನಾನುವಿಧಮಧಿಕ-  
ಮಾಸ್ರಾವಂ ಸ್ರವಂತಿ । ವ್ರಣಶ್ಚ ತಾಡಯತೇ ಮಿಥ್ಯತೇ ಛಿದ್ರತೇ  
ಸೂಚಿಭಿರೀವ ನಿಸ್ತುಯತೇ ಗುದಂ ಚಾವದೀಯತೇ । ಉಪೇಕ್ಷಿತೇ ಚ  
ವಾತಮೂತ್ರಪುರೀಷರೇತಸಾಮಪ್ಯಾಗಮಶ್ಚ ತೇವ ಛಿದ್ರೇಭವತಿ । ತಂ  
ಭಗಂದರಂ ಶತಪೋನಕಮಿತ್ಯಾಚಕ್ಷತೇ” ಸುಶ್ರುತಂ ನಿದಾನಂ ೪-೫ ।

(2) ಪೈತ್ತಿಕ (ಉಷ್ಮಗ್ರೀವ) ಭಗಂದರಃ  
ಪಿತ್ತವು ಪ್ರಕೋಪಗೊಂಡು ವಾಯುವಿನಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳ  
ಲ್ಪಟ್ಟು ಒಂದೆರಡು ಅಂಗುಲಗಳಷ್ಟು ಮಾಂಸರಕ್ತಗಳನ್ನು  
ಕೆಡಿಸಿ ಅಲ್ಲೇ ನೆಲೆಯಾಗಿ ನಿಂತು ಉಷ್ಮಗ್ರೀವದ (ಒಂಟಿಯ  
ಕತ್ತಿನ) ಆಕಾರದ ಕೆಂಪು ಕುರುಗಳನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡು  
ವುದು. ಈ ರಕ್ತಕುರುಗಳು ಉರಿತವೇ ಮೊದಲಾದ  
ಅನೇಕ ವಿಧವಾದ ಅಸಹ್ಯ ವೇದನೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡು  
ವುವು. ಇದಕ್ಕೆ ಪ್ರತೀಕಾರ ನಡೆಯದಿದ್ದರೆ ಬಲಿತು  
ಪಕ್ವವಾದ ವ್ರಣವು ಬೆಂಕಿಯಿಂದ ಸುಟ್ಟಂತೆ ಅತೀವ ವೇದನೆ  
ಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದು. ಮತ್ತು ದುರ್ಗಂಧದ  
ರಕ್ತವು ಸೋರುತ್ತಿರುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ಚಿಕಿತ್ಸೆ ನಡೆಯ  
ದಿದ್ದರೆ ಇದರ ಮೂಲಕವೇ ವಾತ ಮೂತ್ರ ಮಲ ಮತ್ತು  
ರೇತಸ್ಸುಗಳು ಹೊರಡುವುವು. ಇದು “ಉಷ್ಮಗ್ರೀವ”  
ಭಗಂದರ. “ಪಿತ್ತಂ ತು ಪ್ರಕುಪಿತಮನಿಲೇನಾಃ ಪ್ರೇರಿತಂ ಪೂರ್ವ-  
ವದವಸ್ಥಿತಂ ರಕ್ತಾಂ ತನ್ವೀಮುಚ್ಚಿತಾಮುಷ್ಠಗ್ರೀವಾಕಾರಾಂ ಪಿಡಕಾಂ  
ಜನಯತಿ । ಸಾಙ್ಸ್ಯ ಶೋಷಾದೀನ್ ವೇದನಾವಿಶೇಷಾನ್ ಜನಯತಿ ।  
ಅಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಮಾಣಾ ಚ ಪಾಕಮುಪೇತಿ । ವ್ರಣಶ್ಚ ಅಗ್ನಿಕಾರಾಮ್ಯಾ-  
ಮಿವ ದಹ್ಯತೇ । ದುರ್ಗಂಧಮುಷ್ಣಮಾಸ್ರಾವಂ ಸ್ರವತಿ । ಉಪೇಕ್ಷಿತಶ್ಚ  
ವಾತಮೂತ್ರಪುರೀಷರೇತಾಂಸಿ ವಿಸೃಜತಿ । ತಂ ಭಗಂದರಮುಷ್ಠಗ್ರೀವ-  
ಮಿತ್ಯಾಚಕ್ಷತೇ” ಸುಶ್ರುತಂ ನಿದಾನಂ ೪-೬ ।

(3) ಶ್ಲೇಷ್ಮಿಕ (ಪರಿಸ್ರಾವಿ) ಭಗಂದರಃ  
ಶ್ಲೇಷ್ಮ (ಕಫ)ವು ಪ್ರಕೋಪಗೊಂಡು ವಾಯುವಿನಿಂದ  
ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು ರಕ್ತ ಮಾಂಸಗಳನ್ನು ಕೆಡಿಸಿ ಅಲ್ಲೇ  
ನೆಲೆ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ನವೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಶಾಶ್ವತವಾದ  
ಬಿಳಿಯ ಕುರುಗಳನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದು. ಇದರಿಂದ  
ತಾಳಲಾರದಷ್ಟು ನವೆಯುಂಟಾಗುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ಸರಿ  
ಯಾದ ಚಿಕಿತ್ಸೆ ನಡೆಯದಿದ್ದರೆ ಕುರುವು ಬಲಿತು ವ್ರಣವಾಗಿ  
ಬಹಳ ಕಠಿಣವಾಗಿ ಉದಿಕ್ಕೊಂಡು ಅಸಹ್ಯವಾದ ನವೆಯ  
ನ್ನುಂಟುಮಾಡಿ ಯಾವಾಗಲೂ ಸೋರುತ್ತಿರುವುದು.  
ಇದು ಶ್ಲೇಷ್ಮನಿಮಿತ್ತವಾದ “ಪರಿಸ್ರಾವಿ” ಭಗಂದರ.  
“ಶ್ಲೇಷ್ಮಾ ತು ಪ್ರಕುಪಿತಃ ಸಮೀರಣೇನಾಃ ಪ್ರೇರಿತಃ ಪೂರ್ವವದವಸ್ಥಿತಃ  
ಶುಕ್ಲಾವಭಾಸಾಂ ಸ್ಥಿರಾಂ ಕಂಠಮತೀಂ ಪಿಡಕಾಂ ಜನಯತಿ । ಸಾಙ್ಸ್ಯ  
ಕಂಠವಾದೀನ್ ವೇದನಾವಿಶೇಷಾನ್ ಜನಯತಿ । ಅಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಮಾಣಾ ಚ  
ಪಾಕಮುಪೇತಿ । ವ್ರಣಶ್ಚ ಕಠಿಣಃ ಸಂರಂಭಿ ಕಂಠಪ್ರಾಯಃ ಪಿಪ್ಪಿಲ-  
ಮಜಸ್ರಮಾಸ್ರಾವಂ ಸ್ರವತಿ । ಉಪೇಕ್ಷಿತಶ್ಚ ವಾತಮೂತ್ರಪುರೀಷರೇತಾಂಸಿ  
ವಿಸೃಜತಿ । ತಂ ಭಗಂದರಂ ಪರಿಸ್ರಾವಿಮಿತ್ಯಾಚಕ್ಷತೇ” ಸುಶ್ರುತಂ  
ನಿದಾನಂ ೪-೭ ।

(4) ಶಂಬೂಕಾವರ್ತ (ಶಂಬೂಕಾವರ್ತ) ಭಗಂದರಃ  
ವಾಯುವು ಪ್ರಕೋಪಗೊಂಡು ಪಿತ್ತ ಮತ್ತು ಶ್ಲೇಷ್ಮ  
ಗಳೊಡನೆ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಅಲ್ಲೇ ನಿಂತು ಪಾದಾಂಗುಷ್ಠ  
ಗಾತ್ರದ ಕುರುವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದು. ಈ ಕುರುವು  
ಬಹಳ ನೋವು ಉರಿತ ಮತ್ತು ನವೆಗಳನ್ನುಂಟುಮಾಡು  
ವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ತಕ್ಕ ಚಿಕಿತ್ಸೆ ನಡೆಯದಿದ್ದರೆ ವ್ರಣವು  
ಬಲಿತು ನಾನಾ ವರ್ಣದ ಕೀವು ರಕ್ತಗಳು ಸೋರು  
ವುವು. ಇದು ಶಂಬೂಕದ (ಕಪ್ಪೆಚಿಟ್ಟಿನ) ಆಕಾರದಲ್ಲಿದ್ದು  
ವಿಶೇಷವಾದ ವೇದನೆಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದರಿಂದ  
“ಶಂಬೂಕಾವರ್ತ” ಭಗಂದರ. “ವಾಯುಃ ಪ್ರಕುಪಿತಃ  
ಪ್ರಕುಪಿತೋ ಪಿತ್ತಶ್ಲೇಷ್ಮಾಣೋ ಪರಿಗೃಹ್ಯಾಧೋ ಗತ್ವಾ ಪೂರ್ವವದವಸ್ಥಿತಃ  
ಪಾದಾಙ್ಗುಲಪ್ರಮಾಣಾಂ ಪಿಡಕಾಂ ಜನಯತಿ । ಸಾಙ್ಸ್ಯ ತೋದಾಹ-  
ಕಂಠವಾದೀನ್ ವೇದನಾವಿಶೇಷಾನ್ ಜನಯತಿ । ಅಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಮಾಣಾ  
ಚ ಪಾಕಮುಪೇತಿ । ವ್ರಣಶ್ಚ ನಾನಾವಿಧವರ್ಣಮಾಸ್ರಾವಂ ಸ್ರವತಿ ।  
ಪೂರ್ಣನದೀಶಮ್ಬೂಕಾವರ್ತವಚ್ಚಾತ್ರ ಸಮುತ್ಪಿಂಠಂತಿ ವೇದನಾವಿಶೇಷಾಃ ।  
ತಂ ಭಗಂದರಂ ಶಮ್ಬೂಕಾವರ್ತಮಿತ್ಯಾಚಕ್ಷತೇ” ಸುಶ್ರುತಂ ನಿದಾನಂ  
೪-೮ ।

(5) ಅಗಂತುಕ (ತಲ್ಮಜ, ಉನ್ಮಾರ್ಗ) ಭಗಂದರಃ  
ಅನ್ನದೊಡನೆ ಮಾಂಸ ತಿನ್ನುವವನು ಅದರಲ್ಲಿದ್ದ ಎಲುವಿನ  
ಚೂರನ್ನು ತಿಳಿಯದೆ ನುಂಗಿದಾಗ ಆ ಎಲುವಿನ ಚೂರು  
ಪುರೀಷ (ಮಲ)ದೊಡನೆ ಬೆರೆತುಹೋಗಿ ಅಪಾನ  
ವಾಯುವಿನಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು ಮಾರ್ಗ ತಪ್ಪಿ ಬರು



ಭಗೀರಥಪ್ರಯತ್ನ (೪ಂ) ಮಹಾ  
 ಪ್ರಯತ್ನ, ಬಹಳ ಪ್ರಯಾಸದ ಯತ್ನ, ಬಹಳ ಕಷ್ಟ  
 ಸಾಧ್ಯವಾದ ಕಾರ್ಯಸಾಧನೆಗೆ ನಡೆಸುವ ಪ್ರಯತ್ನ.  
 ದೇವಲೋಕದಿಂದ ಗಂಗಾನದಿಯನ್ನು ಭೂಲೋಕಕ್ಕೆ  
 ತರಲು ಭಗೀರಥನು ಮಹಾಪ್ರಯತ್ನ (ಪ್ರಯಾಸ)



ಪಟ್ಟಿದ್ದರಿಂದ ಇಂತಹ ಪ್ರಯತ್ನಕ್ಕೆ ಭಗೀರಥಪ್ರಯತ್ನ ಎಂದು ಜನರು ಹೇಳುವರು.

**ಸಗೋಲ ಭಗೋಲ (ಛಂ)** ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಮಂಡಲ, ರಾಶಿಚಕ್ರ.

**ಭಗ್ನ ಭಗ್ನ (ನಂ)** 1. ಕಾಲು ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಮೂಳೆ

ಮುರಿಯುವುದು, ಎಲುಬು ಮುರಿದುಹೋಗುವುದು.

ಭಜ್ಯತೇ ಆಮರ್ಶತೇ ವಿಶಿಲಯತೇ—ಭಜ್ಜೋ (ಆಮರ್ಶನೆ) ಭಾವೇ

“ಕ್ತ:” (೩-೩-೧೧೪)। ಮೂಳೆಯ ಮುರಿತವು

(1) ಸಂಧಿಮುಕ್ತ ಮತ್ತು (2) ಕಾಂಡಭಗ್ನ ಎಂದು ಎರಡು

ವಿಧ. ಸಂಧಿಮುಕ್ತವು (1) ಉತ್ತಿಷ್ಠ, (2) ವಿಶ್ಲಿಷ್ಠ,

(3) ವಿವರ್ತಿತ, (4) ಅವಕ್ಷಿಪ್ತ, (5) ಅತಿಕ್ಷಿಪ್ತ ಮತ್ತು

(6) ತೀರ್ಯಾಕ್ಷಿಪ್ತ ಎಂದು ಆರು ವಿಧ. ಕಾಂಡಭಗ್ನವು

(1) ಕರ್ಕಟಕ, (2) ಅಶ್ವಕರ್ಣ, (3) ಚೂರ್ಣಿತ,

(4) ಪಿಚ್ಚಿತ, (5) ಅಸ್ಥಿಚ್ಛಲ್ಲಿತ, (6) ಕಾಂಡಭಗ್ನ,

(7) ಮಜ್ಜಾನುಗತ, (8) ಅತಿಪಾತಿತ, (9) ವಕ್ರ,

(10) ಭಿನ್ನ, (11) ಪಾಟಿತ ಮತ್ತು (12) ಸ್ಫುಟಿತ ಎಂದು

ಹನ್ನೆರಡುವಿಧ. ಸುಶ್ರುತಂ ನಿಧಾನಂ ೧೪-೪, ೮। ಮಣಿಕಟ್ಟು

ಮೊಳಕೈ ಜಾನು (ಮಂಡಿ) ಒರೆ ಬೆನ್ನಲುಬು ಇವುಗಳು

ಮುರಿದರೆ ಚಿಕಿತ್ಸೆಯಿಂದ ಎಲುಬುಗಳನ್ನು ಮತ್ತೆ ಸೇರಿ

ಸಲು ಸಾಧ್ಯ. “ಮಣಿಬಂಧೇ ಕರ್ಪೇ ಚ ಜಾನೌ ಭಗ್ನೇ ಕಡೌ

ತಥಾ। ಪೃಷ್ಠವಂಶೇ ವಿಭಗ್ನೇ ಚ ಸಾಧ್ಯಾನ್ಯತಾನಿ ಸತ್ತಮ”।

ಹೆಗಲು ಮತ್ತು ಮೊಳಕೈಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ ಬೆನ್ನಲುಬಿನ

ಕೆಳಭಾಗ ಎದೆ ಮತ್ತು ತೊಡೆಗಳ ಎಲುಬುಗಳು ಮುರಿದರೆ

ಚಿಕಿತ್ಸೆಗೆ ಸಾಧ್ಯವಾಗುವುದಿಲ್ಲ. “ಸ್ಕಾಂಧಕರ್ಪರಮಧ್ಯೇ ಚ ತಥಾ

ಚ ತ್ರಿಕಮಧ್ಯತ:। ತರಸಿ ಕ್ರೌಡಕೇ ಚೈವ ವಿಭಗ್ನಂ ತದಸಾಧ್ಯ-

ಕಮ್”। (ವಿಂ) 2. ಒಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ,

ಚೂರುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಭಜ್ಜೋ (ಆಮರ್ಶನೆ) “ಕ್ತ:”

(೩-೨-೧೦೨)। “ಭಗ್ನದ್ರುಮಾಶ್ರಕುರಿತಸ್ತತೋ ದಿಶ: ಸಮುಲ್ಲ-

ಸತ್ಕೇತನಕಾನನಾಕುಲಾ:” ಮಾಘಂ ೧೨-೪೯। 3. ಕೆಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,

ವ್ಯರ್ಥಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಪರಾಜಯಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,

ಸೋಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಆ: ಕಥಮಿದಾನಿ ಭಗ್ನಾ ಅಪಿ ಪುನ:

ಪ್ರತಿನಿವೃತ್ತಾ: ಪೃಷ್ಠಾನ್ತುಸಾರಿಣ: ಪರ್ಯವೃಷ್ಟಿಭಯಂತಿ ಮಾಂ ಚಮುಪ-

ತಯ:” ತಂ ರಾಂ ೪। 5. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಭಗ್ನಪಾದಕ್ಷ ಭಗ್ನಪಾದಕ್ಷ (ನಂ)** ಒಂದು ಪಾದವನ್ನು

ಮುರಿದ ನಕ್ಷತ್ರ, ಮೂರು ಪಾದಗಳು ಒಂದು ರಾಶಿಗೆ

ಸೇರಿದ ನಕ್ಷತ್ರ, ತ್ರಿಪಾದಿ ನಕ್ಷತ್ರ. ಕೃತ್ತಿಕೆ, ಪುನರ್ವಸು,

ಉತ್ತರಾಷ್ಣಾ, ವಿಶಾಖೆ, ಉತ್ತರಾಷಾಢ ಮತ್ತು

ಪೂರ್ವಾಷಾಢ ಈ ಆರು ನಕ್ಷತ್ರಗಳು ಭಗ್ನಪಾದ ನಕ್ಷತ್ರ

ಗಳು. ಇವಕ್ಕೆ ಪುಷ್ಕರವೆಂಬ ಸಂಜ್ಞೆ. ಭಗ್ನಪಾದಂ ಕ್ಷಮ್।

“ಪುನರ್ವಸುತರಾಷಾಢಾ ಕೃತ್ತಿಕೋತ್ತರಾಷ್ಣಾನಿ। ಪೂರ್ವಾಷಾಢಾ

ಚ ಷಡೇತೇ ಪುಷ್ಕರಾ: ಸ್ಮೃತಾ:”। ಇವುಗಳ ಒಂದೊಂದು ಪಾದಗಳು ಬೇರೆ ಬೇರೆ ರಾಶಿಗಳಿಗೆ ಸೇರುವುದರಿಂದ ಇವು ಭಗ್ನಪಾದಕ್ಷಗಳು.

**ಭಗ್ನಪೃಷ್ಠ ಭಗ್ನಪೃಷ್ಠ (ವಿಂ)** 1. ಎದುರಾಗಿ ಬರುತ್ತಿ

ರುವ, ಸಮ್ಮುಖವಾಗಿರುವ. ಭಗ್ನಂ ಪೃಷ್ಠಂ ಯಸ್ಮಿನ್।

“ಭಗ್ನಪೃಷ್ಠಸ್ತು ಸಮುಖ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 2. ಬೆನ್ನು ಮುರಿ

ದಿರುವ, ಭಗ್ನವಾದ ಬೆನ್ನಲುಬುಳ್ಳ. “ಭಗ್ನಪೃಷ್ಠಕಡಿಗ್ರೀವಂ

ಸ್ತಬ್ಧದೃಷ್ಟಿಂ ಹ್ಯಧೋಮುಖಮ್। ಕಷ್ಟೇನ ಲಿಖಿತಂ ಪುಸ್ತಕಂ ಯತ್ನೇನ

ಪರಿಪಾಲಯೇತ್”।

**ಭಗ್ನಪ್ರಕಮ ಭಗ್ನಪ್ರಕಮ (ಛಂ)** ಕ್ರಮಭಂಗ, ಪ್ರಾರಂಭ

ಸಿದ ರೀತಿಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬೇರೆ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಹೇಳುವುದು.

ಭಗ್ನ: ಪ್ರಕಮ:। ಇದು ಪ್ರಕಮಭಂಗವಾಗುವುದು. “ಏವ-

ಮುಕ್ತೋ ಮನ್ವಿಮುಖ್ಯ: ರಾವಣ: ಪ್ರತ್ಯಭಾಷತ” ಇಲ್ಲಿ ವಚ

ಧಾತುವಿಗೆ ಕ್ರಮಭಂಗ ಬಂದಿರುವುದು. ಇದೊಂದು ಕಾವ್ಯ

ದೋಷ.

**ಭಗ್ನಪ್ರತಿಜ್ಞ ಭಗ್ನಪ್ರತಿಜ್ಞ (ವಿಂ)** ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯನ್ನು ಮುರಿದ

ವನು, ಕೊಟ್ಟ ಮಾತಿನಂತೆ ನಡೆಯದಿರುವವನು. ಭಗ್ನಾ

ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ ಯೇನ।

**ಭಗ್ನಮನಸ್ ಭಗ್ನಮನಸ್ (ವಿಂ)** ಉತ್ಸಾಹಭಂಗ ಮಾಡ

ಲ್ಪಟ್ಟ, ಧೈರ್ಯ ಕೆಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಭಗ್ನಂ ಮನೋ ಯಸ್ಯ।

**ಭಗ್ನಮನೋರಥ ಭಗ್ನಮನೋರಥ (ವಿಂ)** ಆಶಾಭಂಗ

ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಫಲವಾದ ಅಭಿಲಾಷೆಯುಳ್ಳ. ಭಗ್ನೋ

ಮನೋರಥೋ ಯಸ್ಯ। “ತಥಾ ಸಮಕ್ಷಂ ದಹತಾ ಮನೋಭವಂ ಪಿನಾಕಿನಾ

ಭಗ್ನಮನೋರಥಾ ಸತೀ” ಕುಮಾರಂ ೪-೧।

**ಭಗ್ನವ್ರತ ಭಗ್ನವ್ರತ (ವಿಂ)** ನಿಯಮವನ್ನು ಮುರಿದವನು,

ನಿಯಮದಂತೆ ನಡೆಯದಿರುವವನು.

**ಭಗ್ನಸಂಧಿ ಭಗ್ನಸಂಧಿ (ವಿಂ)** ದೇಹದಲ್ಲಿ ಮುರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ

ಎಲುಬುಗಳ ಕೀಲುಗಳುಳ್ಳವನು. ಭಗ್ನ: ಸಂಧಿ: ಯಸ್ಯ।

**ಭಗ್ನಸಂಧಿಕ ಭಗ್ನಸಂಧಿಕ (ನಂ)** ತಕ್ಕ, ಮಜ್ಜಿಗೆ. ಭಗ್ನೋ

ವಿಶಿಷ್ಟ: ದಧ್ನ: ಸಂಧಿರತ್ರ।

**ಭಗ್ನಾತ್ಮನ್ ಭಗ್ನಾತ್ಮನ್ (ಛಂ)** ಚಂದ್ರ. ಭಗ್ನ: ಆತ್ಮಾ

ಶರೀರಂ (ಕೃಣಪಕ್ಷೇ) ಯಸ್ಯ।

**ಭಗ್ನಾಶ ಭಗ್ನಾಶ (ವಿಂ)** ಆಶಾಭಂಗ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಫಲ

ವಾದ ಅಭಿಲಾಷೆಯುಳ್ಳ. ಭಗ್ನಾ ಆಶಾ ಯಸ್ಯ। “ಭಗ್ನಾಶಸ್ಯ

ಕರಣಪಿಪಿಂಡಿತತನೋಮ್ಲಾನೇಂದ್ರಿಯಸ್ಯ ಕ್ಷುಧಾ” ಭರ್ತಂ ೧-೮೨।

**ಭಗ್ನೋತ್ಸಾಹ ಭಗ್ನೋತ್ಸಾಹ (ವಿಂ)** ಉತ್ಸಾಹವಿಲ್ಲದವ

ನಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಧೈರ್ಯ ಕೆಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಎದೆಗುಂದಿಸ

ಲ್ಪಟ್ಟ. ಭಗ್ನ: ಉತ್ಸಾಹ: ಯಸ್ಯ।



**ಭಗ್ನೋದಮ ಭಗ್ನೋದಮ** (ವಿಂ) ವಿಫಲವಾದ ಪ್ರಯತ್ನವುಳ್ಳ, ವ್ಯರ್ಥವಾದ ಪ್ರಯತ್ನವುಳ್ಳ. ಭಗ್ನ: ಉದಮ: ಯಸ್ಯ |  
“ಮನ್ಯೇ ದುರ್ಜನಚಿತ್ತವೃತ್ತಿಹರಣೇ ಧಾತಾಪಿ ಭಗ್ನೋದಮ:” ಹಿತೋಂ ೧-೧೬೫ |

**ಭಕ್ತು ಭಂಕ್ತು** (ವಿಂ) ಒಡೆಯುವವನು, ಸೀಳುವವನು. ಭಂಜೋ (ಆಮರ್ದೇನ) “ತನ್” (೩-೨-೧೩೫) | “ಪ್ರಾಕಾರಸ್ಯ ಚ ಭೇತ್ತಾರಂ ಪರಿಕ್ಷಾಣಾಂ ಚ ಪೂರಕಮ್ | ದ್ವಾರಾಣಾಂ ಚೈವ ಭಕ್ತಾರಂ ಕ್ಷಿಪ್ರಮೇವ ಪ್ರವಾಸಯೇತ್” ಮನುಂ ೧-೨೮೯ |

**ಭಜ ಭಂಗ** (ಪುಂ) 1. ಒಡೆಯುವುದು, ಮುರಿಯುವುದು. ಭಂಜೋ (ಆಮರ್ದೇನ) ಭಾವೇ “ಘಜ್” (೩-೩-೧೮) | “ಬಭೌ ಸ ಭಿಂದನ್ ಬೃಹತಸ್ತರಜ್ಞಾನ್ ವಾರ್ಯಗಲಾಭಜ್ಞ ಇವ ಪ್ರವೃತ್ತ:” ರಘುಂ ೫-೪೫ | 2. ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಸಂಕೋಚ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಬಗ್ಗಿಸಿ ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಹೆಣೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. “ಗ್ರೀವಾಭಜ್ಞಾಭಿರಾಮಂ ಮುಹುರನುಪತತಿ ಸ್ಯಂದನೇ ಬದ್ಧ-ದೃಷ್ಟಿ:” ಶಾಕುಂ ೧-೭ | 3. ಪ್ರತಿಬಂಧ, ತಡೆ. “ಪ್ರತ್ಯಬ್ರವೀಚ್ಚೇನಮಿಷುಪ್ರಯೋಗೇ ತತ್ಪೂರ್ವಭಜ್ಞೇ ವಿತಥಪ್ರಯತ್ನ:” ರಘುಂ ೨-೪೨ | 4. ಪರಾಜಯ, ಸೋಲು. “ಘನುಷಾ ಸಮಮಾಶು ವಿಧಿಷಾಂ ಕುಲಮಾಶಿಷ್ಟಿತಮಜ್ಞಮಾನತಿಮ್” ಮಾಘಂ ೧೬-೬೩ | 5. ತುಂಡು, ಚೂರು. “ಚಿತ್ರದ್ವಿಪಾ: ಪದ್ಮ-ವನಾವತೀರ್ಣಾ: ಕರೇಣುಭಿದತ್ತಮೃಗಾಲಭಜ್ಞಾ:” ರಘುಂ ೧೬-೧೬ | 6. ತಿರಸ್ಕಾರ, ನಿರಾಕರಣೆ. “ಅಮ್ಯಯನಾಭಜ್ಞಭಯೇನ ಸಾಧು-ಮಾಧ್ಯಸ್ಥ್ಯಮಿಷ್ಟೇಷ್ಯವಲಂಬತೇಷ್ಯೇ” ಕುಮಾರಂ ೧-೫೨ | 7. ಚಿದರಿಹೋಗುವುದು. “ಅನಂತರಂ ಚ ಯಾತ್ರಾಭಜ್ಞಪ್ರಚಲಿತಸ್ಯ ಮಹತ: ಪೌರನೇಗಮಜನಸ್ಯ ಸಂಕುಲೇನ ವಿಘಟಿತಾಯಾಂ ತಸ್ಯಾಮ್” ಮಾಲತೀಂ ೧ | 8. ಸೀಳು, ಬಿರುಕು, ಒಡಕು. 9. ಬೀರ್ಪಡಿಸುವುದು, ಪ್ರತ್ಯೇಕಗೊಳಿಸುವುದು. 10. ಒಂದು ರೋಗ. 11. ಅಲೆ, ತರಂಗ. ಭಂಜೋ ಕರ್ಮಂ “ಘಜ್” (೩-೩-೧೯) | 12. ಗಮನ, ಚಲನ. 13. ನಾಲೆ, ಕಾಲುವೆ. 14. ನಾಶ, ಅಳಿವು. “ಪ್ರಸಭಂ ಭಜ್ಞಮಭಗ್ನುರೋ-ದಯ:” ಮಾಘಂ ೧೬-೭೨ | 15. ವಂಚನೆ, ಮೋಸ. 16. ಕೊಟಿಲ್ಲ, ವಕ್ರತೆ. “ಭೂಭಜ್ಞೇ ರಚಿತೇಷಿ ದೃಷ್ಟಿರಧಿಕಂ ಸೋಕ್ತಂಮುದೀಕ್ಷತೇ” ಅಮರಂ ೨೮ |

**ಭಜ್ಞವಾಸಾ ಭಂಗವಾಸಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹರಿದ್ರೆ, ಅರಿಶಿನ. ಭಜ್ಞೇನ ವಾಸ: ಸೌರಭಂ ಯಸ್ಯಾ: |

**ಭಜ್ಞ ಭಂಗಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣಬಿನ ಗಿಡ. ಭಜ್ಯತೇ — ಭಂಜೋ (ಆಮರ್ದೇನ) “ಘಜ್” (೩-೩-೧೨೧) |

**ಭಜ್ಞ ಭಂಗಿ, ಭಜ್ಞಿ ಭಂಗೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರೂಪಾಂತರ, ಬೇರೆ ಪ್ರಕಾರ, ಬೇರೆ ರೀತಿ. ಭಂಜೋ (ಆಮರ್ದೇನ) “ಇನ್”

(ಉಂ ೪-೧೧೭) | ಕುತ್ವಮ್ (೭-೩-೫೩) | ವಾ “ಙೀಷ್” (ಗಂ ೫೦) | “ಪರ್ಯಾಯೋಕ್ತಂ ತು ಗಮ್ಯಸ್ಯ ವಚೋ ಭಜ್ಞಚಿಂತ-ರಾಶ್ರಯಮ್” | 2. ಮುರಕು, ಒಡಕು, ಬಿರುಕು. 3. ವಿಚ್ಛಿತ್ತಿ, ಸೌಂದರ್ಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ವರ್ಣಕೀರ್ಯೆ. “ಯಾನಾದವಾತರದ್ದೂರಮಹಿತಲೇನ ಮಾರ್ಗೇಣ ಭಜ್ಞಿರಚಿತಸ್ಪಟಿಕೇನ ರಾಮ:” ರಘುಂ ೧೩-೬೯ | 4. ವಂಚನೆ, ಮೋಸ, ಠಕ್ಕು. 5. ವ್ಯಾಜ, ನೆಪ, ಸುಬಾಜು. “ಯ: ಪಾಶ್ಚಜನ್ಯಪ್ರತಿ-ವಿಶ್ವಭಜ್ಞಾ ಧಾರಾಮಸ: ಫೇನಮಿವ ವ್ಯನಕ್ತಿ” ವಿಕ್ರಂ ದೇವಚಂ | 6. ವೀಚಿ, ತರಂಗ, ಅಲೆ. 7. ಸಮಯೋಚಿತ ವಾದ ಉತ್ತರ. 8. ಡೊಂಕುಮಾರ್ಗ, ಸೊಟ್ಟು ದಾರಿ. 9. ವಿನಯ, ಗರ್ವವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 10. ವ್ಯಂಗ್ಯೋಕ್ತಿ, ಹಾಸ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ ವ್ಯಂಗ್ಯದ ಮಾತು. 11. ಅವಕಾಶ, ನಡುವಣ ಕಾಲ. 12. ಘಕ್ಕು, ಚಾತುರ್ಯ.

**ಭಜ್ಞಿ ಭಂಗಿನ** (ವಿಂ) ನಾಶಸ್ವಭಾವದ, ನಶ್ವರವಾದ, ಶಾಶ್ವತವಲ್ಲದ, ಕ್ಷಣಿಕವಾದ. ಭಜ್ಞ: ನಾಶೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೫-೨-೧೧೫) | “ತದಪಿ ತತ್ಕ್ಷಣಭಜ್ಞಿ ಕರೋತಿ ಚೇದಹಹ ಕಷ್ಟಮಪಿಂಡಿತತಾ ವಿಧೇ:” ಭರ್ತುಂ ೧-೮೬ |

**ಭಜ್ಞು ಭಂಗುರ** (ವಿಂ) 1. ನಶ್ವರವಾದ, ನಾಶದ ಸ್ವಭಾವದ. ಭಂಜೋ (ಆಮರ್ದೇನ) “ಘುರಜ್” (೩-೨-೧೬೧) | “ಸಂದೃಶ್ಯ ಕ್ಷಣಭಜ್ಞುರಂ ತದಖಿಲಂ ಧನ್ಯಸ್ತು ಸನ್ಯಸ್ಯತಿ” ಭರ್ತುಂ ೩-೨೦ | 2. ಒಡೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದ, ತುಂಡಾಗುವ, ಒಡೆದು ಚೂರಾಗುವ ಸ್ವಭಾವದ. 3. ವಕ್ರವಾದ, ಡೊಂಕಾದ, ಕುಟಿಲವಾದ. “ಶಶಿಮುಖಿ ತವ ಭಾತಿ ಭಜ್ಞುರಭೂ: ಪುವಜನಮೋಹಕರಾಲಕಾಲಸರ್ಪಿ” ಗೀತಗೋಂ ೧೦-೩ | 4. ವಂಚನೆಯ, ಮೋಸದ. 5. ಬದಲಾವಣೆಯ ಸ್ವಭಾವದ. (ಪುಂ) 6. ನದಿಯ ಡೊಂಕು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಾ -ರಾ. 7. ಅತಿಬಜೆ.

**ಭಜ್ಞ ಭಂಗ್ಯ** (ನಂ) 1. ಸಣಬು ಬೆಳೆಯುವ ಭೂಮಿ. ಭಜ್ಞಾನಾಂ ಭವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ ವಾ “ಯತ್” (೫-೨-೪) | ಪಕ್ಷೇ “ಽಜ್ಞ” (೫-೨-೧) | ಭಾಜ್ಞೀನಮ್ ಭಾಂಗೀನಮ್. (ವಿಂ) 2. ಮುರಿಯಲ್ಪಡುವ. 3. ತೊಂದರೆಪಡಿಸ ಲ್ಪಡುವ. 4. ನೋಯಿಸಲ್ಪಡುವ.

**ಭಜಕ್ ಭಜಕ್ತು** (ನಂ) 1. ರಾಶಿಚಕ್ರ. 2. ನಕ್ಷತ್ರಮಂಡಲ.

**ಭಜ - ಸೇವಾಯಾಮ್** (ಮ್ವಾಂ ಉಮಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) | ಭಜತಿ, -ತೇ | ಬಭಾಜ, ಭಜೇ | ಭಕ್ತಾ | ಭಜ್ಯತಿ, -ತೇ | ಭಜತು, ತಾಮ್ | ಅಭಜತ್, -ತ | ಭಜೇತ್, -ತ | ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಭಾಗಮಾಡು, ವಿಭಾಗಿಸು. “ಭಜೇನ್ ಪೈತೃಕಂ ರಿಕ್ವ-ಮನೀಶಾಸ್ತೇ ಹಿ ಜೀವತೋ:” ಮನುಂ ೯-೧೦೪ | 2. ಪಾಲು



ತೆಗೆದುಕೊ, ಹಂಚಿಕೊ. "ಪಿತ್ರಂ ವಾ ಭಜತೇ ಶೀಲಂ ಮಾತು-  
ವೈಭವಮೇವ ವಾ" ಮನುಂ ೧೦-೪೯. 3. ಸ್ವೀಕರಿಸು, ಆಂಗೀ-  
ಕರಿಸು. "ಭಜತು ಪ್ರಥಮಾರ್ಹಣಾಂ ಯಥಾಹಂ ಭಗವಾನೇಷ ಸರ್ವಾ-  
ರ್ಣವೈಕಸೇತುಃ" ಯಾದಂ ೧೪-೮೨. 4. ಆಶ್ರಯಹೊಂದು, ಅವಲಂಬಿಸು. "ನ ಕಶ್ಚಿದ್ವರ್ಣನಾಮಪಥಮಪಕೃಷ್ಣಾಪಿ ಭಜತೇ"  
ಶಾಕುಂ ೪-೧೦. 5. ಆಚರಿಸು, ಪಾಲಿಸು. "ಜುಗೋಪಾ-  
ತ್ಮಾನಮತ್ರಸ್ತೋ ಭಜೇ ಧರ್ಮಮನಾತುರಃ" ರಘುಂ ೧-೨೧. 6.  
ಸೇವಿಸು, ಪೂಜಿಸು. "ಭಜಂತಿ ಯಸ್ಮಿನ್ ಪದಯೋರಮುಖ್ಯ ನ್ಯಾಸಂ  
ಶುಭಂ ನಿಶ್ಚಿತಯೋಗಲಕ್ಷ್ಯಾಃ" ಯಾದಂ ೧೮-೪೬. 7. ಪಡೆ,  
ಹೊಂದು, ತಾಳು. "ಅನುಭೂಯ ಹಿರಣ್ಯರಾವಣತ್ವೇ ಭಜತೇ ಸಂಪ್ರತಿ  
ವೇದಿರಾಜಭಾವಮ್" ಯಾದಂ ೧೪-೧೪. 8. ಹೊಂದು,  
ಅನುಭವಿಸು, ಗುರಿಯಾಗು. "ಭಜಂತಿ ವಿಪದಸ್ತೂರ್ಣಮತಿ-  
ಕ್ರಾಮಂತಿ ಸಂಪದಃ" ಮೃತ್ಯುಂ ೧೮-೪. 9. ಸೇವಿಸು, ಉಪ-  
ಚರಿಸು. "ದೋಹಾವಸಾನೇ ಪುನರೇವ ದೋಷಿ ಭಜೇ ಭುಜೋಚ್ಚಿಷ್ಣ-  
ರಿಪುನಿಷಣ್ಣಾಮ್" ರಘುಂ ೨-೨೩. 10. ಆರಿಸು, ಆಯಾಕೊ.  
"ಸಂತಃ ಪರೀಕ್ಷಾನ್ಯತರಃ ಭಜಂತೇ ಮೂಢಃ ಪರಪ್ರತೀಯನೇಯಬುದ್ಧಿಃ"  
ಮಾಲಂ ೧-೨. 11. ಅನುಗ್ರಹಿಸು, ಕೃಪೆಮಾಡು, ದಯೆ  
ತೋರಿಸು.

ಕರ್ಮಣಿ:—ಭಜ್ಯತೇ | ಭಜ್ಯತಾಮ್ | ಅಭಜ್ಯತ | ಭಜ್ಯತ |  
ಅಭಜಿ |

ಕೇವಲಾತ್ ಕೃತ್ಸು:—ಭಕ್ತವ್ಯಮ್ | ಭಜನೀಯಮ್ | ಭಾಗ್ಯಮ್ |  
ಭಕ್ತಃ | ಭಕ್ತವಾನ್ | ಭಜನ್, ಭಜಂತಿ | ಭಜಮಾನಃ |  
ಭಕ್ಯನ್, -ತಿ, ಭಕ್ಯಂತಿ | ಭಕ್ಯಮಾಣಃ | ಭಕ್ತಮ್ |  
ಭಕ್ತುಮ್ | ಭಜನಮ್ | ಭಕ್ತ್ವಾ | ವಿಭಜ್ಯ | ಭಾಜಂಭಾಜಮ್ |  
ಭಕ್ತ್ವಾಭಕ್ತ್ವಾ |

ಭಜತ್ ಭಂಜತ್ (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸೇವಿಸು-  
ತ್ತಿರುವ. ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |  
2. ಸೇವಿಸುತ್ತಿರುವ, ಉಪಚರಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಆಶ್ರಯ  
ಪಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಅವಲಂಬಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಸ್ವೀಕರಿಸು-  
ತ್ತಿರುವ, ಆಂಗೀಕರಿಸುತ್ತಿರುವ. 5. ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ,  
ಪಡೆಯುತ್ತಿರುವ. "ದೋಷ ತಸ್ಯ ತಥಾವಿಧಸ್ಯ ಭಜತಶ್ಚಾಪಸ್ಯ  
ಗೃಹ್ಣಿನ್ ಗುಣಮ್" ನೈಷಂ ೧೨-೯೭. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್"  
(೪-೧-೬) | -ಂತಿ -೨೯. "ಸರಿತ ಇವ ಮೃಗಾದೃಶಸ್ತಮೇಕಂ  
ಸಹಿತಗುಣೈರಮಹೋದ್ಧಿ ಭಜಂತ್ಯಃ" ಯಾದಂ ೨೪-೬೯ |

ಭಜನ ಭಂಜನ (ನಂ) 1. ಸೇವಿಸುವುದು, ಪೂಜಿಸುವುದು.  
ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | 2. ಸೇವಿಸು-  
ವುದು, ಉಪಚರಿಸುವುದು. 3. ಆಶ್ರಯಿಸುವುದು.  
4. ಭಾಗಿಸುವುದು, ಭಾಗಮಾಡುವುದು.

ಭಜಮಾನ ಭಂಜಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಭಾಗಮಾಡುವವನು.  
ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) | 2. ಸೇವಿಸು-  
ವವನು, ಪೂಜಿಸುವವನು. 3. ಉಪಚರಿಸುವವನು.  
4. ನ್ಯಾಯವಾಗಿ ಬಂದ, ತಿಳಿದವರು ಸಮ್ಮತಿಸಿದ, ಯುಕ್ತ-  
ವಾದ. ಭಜ ತಾಚ್ಛೀಲ್ಯೇ "ಚಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೯) |  
"ಯುಕ್ತಮೌಪಯಿಕಂ ಲಮ್ಯಂ ಭಜಮಾನಾಭಿನೀತವತ್" ಅಮಂ |

ಭಜ್ಯಕ ಭಂಜಕ (ವಿಂ) 1. ಮುರಿಯುವವನು, ಒಡೆಯು-  
ವವನು. ಭಜ್ಯ (ಆಮರ್ದನೆ) "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |  
2. ತಡೆಯುವವನು, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವವನು. 3. ಕೆಡಿಸು-  
ವವನು, ವ್ಯರ್ಥಪಡಿಸುವವನು. 4. ನಿವಾರಿಸುವವನು,  
ಹೋಗಲಾಡಿಸುವವನು.

ಭಜ್ಯತ್ ಭಂಜತ್ (ವಿಂ) 1. ಮುರಿಯುತ್ತಿರುವ, ಒಡೆಯು-  
ತ್ತಿರುವ. 2. ನೋವುಂಟುಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಅಡ್ಡಿ-  
ಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ವ್ಯರ್ಥಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಭಜ್ಯ (ಆಮರ್ದನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್"  
(೪-೧-೬) | ಭಜ್ಯತೀ ಭಂಜತೀ.

ಭಜನ ಭಂಜನ (ನಂ) 1. ಮುರಿಯುವುದು, ಒಡೆಯು-  
ವುದು. ಭಜ್ಯ (ಆಮರ್ದನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |  
"ಅವಮರ್ದಃ ಪ್ರತೀವಾತಃ ಕೇತನಾನಾಂ ಭಜನಮ್" ಭಾಂ  
ಶಾಂತಿಂ ೪೮-೬೪. 2. ಕೆಡಿಸುವುದು, ವ್ಯರ್ಥಪಡಿಸು-  
ವುದು. 3. ಕ್ಲೇಶಪಡಿಸುವುದು, ನೋಯಿಸುವುದು.  
4. ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವುದು, ತಡೆಯುವುದು. 5. ನಿವಾರಿಸು-  
ವುದು, ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು, ಪರಿಹರಿಸುವುದು.  
"ತದುದಿತಭಯಭಜನಾಯ ಯುನಾಂ ತ್ವದಧರಸೀಧುಸುಧೇವ ಸಿದ್ಧಮನ್ತ್ರಃ"  
ಗೀತಗೋಂ ೧೦-೩. (ವಿಂ) 6. ಮುರಿಯುವ, ಒಡೆ-  
ಯುವ. ಭಜ್ಯ ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) |  
7. ಕೆಡಿಸುವ, ವ್ಯರ್ಥಪಡಿಸುವ. 8. ನೋಯಿಸುವ.  
9. ನಿವಾರಿಸುವ, ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. 10. ಅಡ್ಡಿಪಡಿ-  
ಸುವ, ತಡೆಯುಂಟುಮಾಡುವ.

ಭಜನೀಯ ಭಂಜನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಒಡೆದುಹಾಕಲ್ಪಡುವ.  
2. ಒಡೆಯಬೇಕಾದ. 3. ಒಡೆಯಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ.  
4. ಒಡೆಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಭಜ್ಯ (ಆಮರ್ದನೆ)  
"ಅನೀಯತ್" (೩-೧-೯೬) | 5. ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ.  
6. ಹೋಗಲಾಡಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 7. ನಿವಾರಿಸಬೇಕಾದ.  
8. ನಿವಾರಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 9. ತಡೆಯಲ್ಪಡುವ. 10.  
ತಡೆಯಬೇಕಾದ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 11. ತಡೆಯಲು  
ಅರ್ಹವಾದ. 12. ತಡೆಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 13. ವ್ಯರ್ಥ-  
ಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 14. ವ್ಯರ್ಥಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 15. ವ್ಯರ್ಥ



ಪಡಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 16. ವ್ಯರ್ಥಪಡಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. 17. ನೋಯಿಸಲ್ಪಡುವ. 18. ನೋಯಿಸಬೇಕಾದ. 19. ನೋಯಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. 20. ನೋಯಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) ।  
**ಭಜ್ತವ್ಯಮ್ ಭಂಕ್ತವ್ಯಮ್.**

**ಭಜನಕ ಭಂಜನಕ (ಪುಂ)** ಕಫ ಮತ್ತು ವಾತದೋಷದಿಂದ ಮುಖವನ್ನು ವಕ್ರವಾಗಿಸುವ ಮತ್ತು ಹಲ್ಲನ್ನು ಉದುರಿಸುವ ಒಂದು ವಿಧ ಮುಖರೋಗ. ಭನಕ್ತಿ — ಭಜ್ಜೋ (ಆಮರ್ದನೆ) "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) । ಸಂಜ್ಞಾ "ಕನ್" । "ವಕ್ತ್ರಂ ವಕ್ರಂ ಭವೇದಸ್ಯ ದಂತಭಜ್ಜಶ್ಚ ಜಾಯತೇ । ಕಫವಾತಕೃತೌ ವ್ಯಾಧಿಃ ಸ ಭಜ್ಜನಕಸಂಜಿತಃ" ।

**ಭಟ ಭಟಿ (ಪುಂ)** 1. ಸೈನಿಕ, ಯುದ್ಧ ಮಾಡುವವನು, ಸಿಪಾಯಿ. ಭಟಿ—ಭಟ (ಭೃತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ತೈರ್ಭುವಾಪಿ ಸಮಂ ವಿಧ್ವಾನ್ ಸಂತೋಷಂ ನ ಭಟಾ ಯುಃ" ಕುಮಾಂ ೧೬-೩೫ । 2. ಮೈತ್ರ್ಯಜಾತಿಯವನು. 3. ಕೂಲಿಗಾಗಿ ಕೆಲಸಮಾಡುವ ಸೈನಿಕ. 4. ವೀರಪುರುಷ. "ಪದೇ ಪದೇ ಸಂತಿ ಭಟಾರಣೋದ್ಭಟಾ ನ ತೇಷು ಹಿಸಾರಸ ಏಷ ಪೂರ್ಯತೇ" ನೆಪಂ ೧-೧೩೨ । 5. ಪಾಮರ. "ಭಟಃ ಪಾಮರಭೇದೇ ಚ ವೀರೇ ಚ" ವಿಶ್ವಂ । 6. ರಾಕ್ಷಸ.

**ಭಟಾ ಭಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಇಂದ್ರವಾರುಣಿ, ಹಾವುಮೆಕ್ಕಿ ಗಿಡ.

**ಭಟಿತ್ರ ಭಟಿತ್ರ (ನಂ)** ಶೂಲದಲ್ಲಿಟ್ಟು ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮಾಂಸ, ಸಲಾಕೆಯ ತುದಿಯಲ್ಲಿ ಪಕ್ಕವಾದ ಮಾಂಸ. ಭಟಿ (ಭೃತೌ) "ಇತ್ರಃ" (೩ಂ ೪-೧೭೩) । "ಶೂಲಾಕೃತಂ ಭಟಿತ್ರಂ ಚ" ಅಮಂ ।

**ಭಟ ಭಟಿ (ಪುಂ)** 1. ಸುತ್ತಿಪಾಣಕ, ಹೊಗಳುಭಟಿ. ಭಟಿ (ಭೃತೌ) "ತನ್" ಬಾಹುಂ । 2. ಹೊಗಳುವ ಪ್ರವೃತ್ತಿ, ಯುಕ್ತ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು. "ಕ್ಷತ್ರಿಯಾದಿಪ್ರಕನ್ಯಾಃ ಭಟೋ ಜಾತೋಽನುವಾಚಕಃ" । 3. ವಿದ್ವಾಂಸರ ಹೆಸರಿನೊಡನೆ ಸೇರಿಸುವ ಒಂದು ಬಿರುದು. "ತದಾಮುಷ್ಯಾಯಣಸ್ಯ ತತ್ರಭವತೋ ಭಟಗೋಪಾಲಸ್ಯ ಪೌತ್ರಃ ಪದವಾಕ್ಯಪ್ರಮಾಣಜ್ಞೋ ಭವಭೂತಿರನಿಮಿ" ಮಾಲತೀಂ ೧ । ಭಟನಾರಾಯಣಃ ಇತ್ಯಾದಿ. 4. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. (ನಂ) 5. ಸ್ವಾಮಿತ್ವ, ಯಜಮಾನತನ.

**ಭಟನಾರಾಯಣ ಭಟಿನಾರಾಯಣ (ಪುಂ)** ವೇಣೀಸಂಹಾರ ನಾಟಕವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಕವಿ.

**ಭಟಾಚಾರ್ಯ ಭಟಾಚಾರ್ಯ (ಪುಂ)** ಉತ್ತಮ ಉಪದೇಶಕನಿಗೆ ಅಥವಾ ದೊಡ್ಡ ಪಂಡಿತನಿಗೆ ಕೊಡುವ ಒಂದು ಬಿರುದು.

**ಭಟಾರ ಭಟಾರ (ಪುಂ)** 1. ಸ್ವಾಮಿ, ಯಜಮಾನ. ಭಟಿ ಸ್ವಾಮಿತ್ವಂ ಇಚ್ಛತಿ — ಇ (ಗತೌ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) । 2. ಹೆಸರಿನೊಡನೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವ ಒಂದು ಗೌರವದ ಪದ. —ಬಿರುದು. (ವಿಂ) 3. ಪೂಜ್ಯ, ಗೌರವಾರ್ಹ. "ಭಟಾರೋ ಭಗವಾನ್ ಪೂಜ್ಯಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಭಟಾರಕ ಭಟಾರಕ (ಪುಂ)** 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. (ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಈ ಪ್ರಯೋಗ). ಭಟಾರ ಸಂಜ್ಞಾ "ಕನ್" । 2. ದೇವತೆ. 3. ತಪೋಧನ, ಋಷಿ. "ಭಟಾರಕೋ ನೃಪೇ ನಾಟಕವಾಚಾ ದೇವೇ ತಪೋಧನೇ" ಮೇದಿಂ ।

**ಭಟಾರಿಕಾ ಭಟಾರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ರಾಜಮಾತೆ, ರಾಜನ ತಾಯಿ (ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಈ ಪ್ರಯೋಗ). "ಭಟಾರಿಕಾ ರಾಜಮಾತಾ ತತ್ಪುತ್ರೀ ಭರ್ತೃದಾರಿಕಾ" ವೈಜಂ । 2. ದೇವಾಂಗನೆ.

**ಭಟಿ ಭಟಿ (ಪುಂ)** ರಾಮಚರಿತವೆಂಬ ಒಂದು ಮಹಾಕಾವ್ಯವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಮಹಾಕವಿ. ಈ ಕವಿಯು ಮಹಾವೈಯಾಕರಣ. ಈತನ ಕಾವ್ಯವು ಕವಿಯ ಹೆಸರಿನಲ್ಲೇ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿ "ಭಟಿಕಾವ್ಯಮ್" ಎಂದು ವ್ಯವಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. ಈ ಭಟಿಕಾವ್ಯವು ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರದ ಅಧ್ಯಯನದ ಫಲವಾಗಿ ರಚಿತವಾಗಿದೆ.

**ಭಟಿನಿ ಭಟಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ರಾಣಿ, ಮಹಿಷಿ, ರಾಜನ ಪತ್ನಿ (ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಈ ಪ್ರಯೋಗ). 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಪತ್ನಿ. "ಭಟಿನೀ ದ್ವಿಜಭಾರ್ಯಾಃ ನಾಟಕೋಕ್ತೌ ರಾಜಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ ।

**ಭಟ ಭಟ (ಪುಂ)** ಒಬ್ಬ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು.

**ಭಟಿಲ ಭಟಿಲ (ಪುಂ)** 1. ವೀರ, ಶೂರ. 2. ಸೇವಕ. ಭಟಿ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) "ಇಲಚ್" (೩ಂ ೧-೫೪) । "ಭಟಿಲೋ ಶೂರಸೇವಕೋ" ।

**ಭಣಕ ಭಣಕ (ವಿಂ)** ಮಾತಾಡುವವನು. ಭಣ (ಶಬ್ದ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

**ಭಣತ್ ಭಣತ್ (ವಿಂ)** ಮಾತಾಡುತ್ತಿರುವ, ಹೇಳುತ್ತಿರುವ. ಭಣ (ಶಬ್ದ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಸ ಏಷ ಪಕ್ಷೀತಿ ಭಣಂತಮಮ್ಯಥಾತ್" ನೆಪಂ ೯-೧೨೮ ।

**ಭಣನ ಭಣನ (ನಂ)** ಮಾತಾಡುವುದು. ಭಣ (ಶಬ್ದ) ಮಾತೆ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

**ಭಣಿತ ಭಣಿತ (ವಿಂ)** ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಭಣ (ಶಬ್ದ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । "ಶ್ರೀಜಯದೇವಭಣಿತಮತಿಸುಂದರಮೋಹನ-ಮಧುರಪುರುಷಮ್" ಗೀತಗೋಂ ೨-೮ ।

**ಭಣಿತಿ ಭಣಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮಾತು, ವಾಕ್ಯ, ವಾಕ್ಯ. ಭಣ (ಶಬ್ದ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) । "ನ ಯೇಷಾಮಾನಂದಂ ನಯತಿ ಜಗನ್ನಾಥಭಣಿತಿಃ" ಮಾಂ ವಿಂ ।



ಖಂಡಾಕಿ ಭಂಡಾಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬದನೆಗಿಡ. ಮಡ (ಮೃತೌ)

"ಆಕ:" (ಉಂ ೪-೧೫) | ನಿಪಾಂ |

ಖಂಡುಕ ಭಂಡುಕ (ಪುಂ) ಶೋಣಾಕ ವೃಕ್ಷ, ಹೆಮ್ಮರ.

ಖಂಡ ಭಂಡ (ಪುಂ) ಎದೂಪಕ, ಹಾಸ್ಯಗಾರ. ಮಡಿ (ಪರಿ-  
ಭಾಷಣ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) |

ಖಂಡಕ ಭಂಡಕ (ಪುಂ) ದಾಸರಿ ಹಕ್ಕಿ.

ಖಂಡನ ಭಂಡನ (ನಂ) 1. ಕವಚ, ಅಂಗಿ. 2. ಯುದ್ಧ,  
ಕಾಳಗ. 3. ಮಂಚನೆ, ಮೋಸ. ಮಡಿ (ಪರಿಭಾಷಣ)  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫, ೧೧೭) | "ಖಂಡನ ಕವಚೇ ಯುಧಿ |  
ಖಲಿಕಾರೇ" ಹೇಮಂ |

ಖಂಡಹಾಸಿನಿ ಭಂಡಹಾಸಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇಶ್ಯೆ, ಸೂಳೆ.  
ಖಂಡೇನ ಸಹ ಹಸತಿ—ಹಸೆ (ಹಸನೆ) "ಘನಿ:" (೩-೨-೭೮) |  
"ಜಿಪ್" (೪-೧-೫) |

ಖಂಡಲ ಭಂಡಲ (ಪುಂ) 1. ಶಿರೀಷವೃಕ್ಷ, ಬಾಗೆಮರ.  
ಮಡಿ (ಪರಿಭಾಷಣ) "ಇಲಕ್" (ಉಂ ೧-೫೪) | "ಅಥ  
ಖಂಡಲೇ | ಕಪಿತನ: ಶಿರೀಷಶ್ಚ" ವೈಜಂ | 2. ದೂತ.  
3. ಕಲ್ಯಾಣ, ಶುಭ, ಮಂಗಳ. "ಖಂಡಲೋ ದೂತ: ಕಲ್ಯಾಣಂ  
ಚ" ಉಗಾಂ |

ಖಂಡಿ ಭಂಡೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಾಗೆಮರ. 2. ಮಂಜಿಷ್ಠೆ.

ಖಂಡೀರ ಭಂಡೀರ (ಪುಂ) 1. ಬಾಗೆಮರ, ಶಿರೀಷವೃಕ್ಷ.  
2. ಬೆಲುಕೇರೆ. ಮಡಿ (ಪರಿಭಾಷಣ) "ಇನ್" ಬಾಹುಂ |  
3. ಅಲದಮರ.

ಖಂಡೀರಿ ಭಂಡೀರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂಜಿಷ್ಠೆ.

ಖಂಡೀಲ ಭಂಡೀಲ (ಪುಂ) ಮಂಜಿಷ್ಠೆ.

ಖಂಡುಕ ಭಂಡುಕ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು.  
2. ಶೋಣಾಕ ವೃಕ್ಷ, ಹೆಮ್ಮರ.

ಖಂಡಂತ ಭಂಡಂತ (ಪುಂ) 1. ಬೌದ್ಧಭಿಕ್ಷು, ಬೌದ್ಧ ಸಂನ್ಯಾಸಿ.  
2. ಜೈನ ಸಂನ್ಯಾಸಿ (ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಈ ಪ್ರಯೋಗ).  
"ಅಥ ನಾಟಕೋಕ್ತಯೋ ರಾಜಾ ದೇವೋ ಮಹಾರಾಜೋಽಪಿ ಚ ....  
ಖಂಡಂತಾ: ಸ್ಯು: ಶಾಕ್ಯಕ್ಷಪಣಕಾದಯ:" ವೈಜಂ | "ಖಂಡಂತ !  
ನಿರೂಪ್ಯತಾಂ ತಾವದಸ್ಮಾಕಂ ಪ್ರಸ್ಥಾನಯೋಗ್ಯದಿವಸ:" ಮುಡ್ರಾಂ ೪ |

ಖಂಡಾಕ ಭಂಡಾಕ (ಪುಂ) ಶುಭ, ಮಂಗಳ. ಮಡಿ (ಕಲ್ಯಾಣ  
ಸುಖೇ ಚ) "ಆಕ:" (ಉಂ ೪-೧೫) | ನಲೋಪಶ್ಚ |

ಖಂಡ ಭಂಡ (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಮಡಿ (ಕಲ್ಯಾಣ  
ಸುಖೇ ಚ) "ರಕ್" ನಲೋಪಶ್ಚ (ಉಂ ೨-೨೯) | 2. ಶ್ರೀ  
ರಾಮಚಂದ್ರ. 3. ಶ್ರೀರಾಮನ ಒಬ್ಬ ದೂತ. "ಪ್ರಪಂಚ  
ಖಂಡಂ ವಿಜಿತಾರಿಖಂಡ:" ರಘುಂ ೧೪-೩೧ | 4. ದಾಸರಿ

ಹಕ್ಕಿ, ಗೀಜಗನ ಹಕ್ಕಿ. 5. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. 6. ಒಂದು  
ಜಾತಿಯ ಆನೆ. 7. ಮೇರುಪರ್ವತ. 8. ಕದಂಬವೃಕ್ಷ.  
(ನಂ) 9. ಶುಭ, ಮಂಗಳ, ಕಲ್ಯಾಣ. "ಖಂಡಂ ವಿಜಿತಾರಿ  
ಖಂಡಂ ಭೂಯೇ ಮಹಾಲಯ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೫ | "ವಿಜಿತಾರಿ  
ಖಂಡಂ ನೋ ವಿಜಿತಾರಿ ಮನೋಜಾಯ ವಿಜಯೇ" ಮಾಲತೀಂ ೬-೭ |  
10. ವಿಮಾಹ ಮೊದಲಾದ ಉತ್ಸವ. 11. ಮುಸ್ತಕ,  
ಕೊನ್ನಾರಿ. 12. ಸೌಖ್ಯ. 13. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. (ವಿಂ)  
14. ಶ್ರೇಷ್ಠ. "ಪ್ರಪಂಚ ಖಂಡಂ ವಿಜಿತಾರಿಖಂಡ:" ರಘುಂ  
೧೪-೩೧ | 15. ಸಾಧುವಾದ, ಒಳ್ಳೆಯದಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ದ್ರಾ-ದ್ರಾ. 16. ಗಂಗಾನದಿ. 17. ಸಣ್ಣರಾಶಿ. 18.  
ಮುಳ್ಳಗಸೆ ಗಿಡ. 19. ತೀಟಕ ಸಂಧಿ. 20. ತೇಗದ  
ಮರ. 21. ಹಿಪ್ಪಲಿಗಿಡ. 22. ಎರಡೂ ಪಕ್ಷಗಳ ಬಿದಿಗೆ.  
ಸಪ್ತಮಿ ಮತ್ತು ದ್ವಾದಶೀ ತಿಥಿಗಳು. (ಸ್ತ್ರೀನಂ) 23.  
ಜ್ಯೋತಿಷದಲ್ಲಿ ಬವ ಮೊದಲಾದ ಕರಣಗಳಲ್ಲಿ ಏಳ  
ನೆಯದು. ಬವ ಬಾಲವ ಕಾಲವ ತೈತಲ ಗರಜ ವಣಿಕ್  
ಭದ್ರ ಶಕುನಿ ಚತುಷ್ಪಾತ್ ನಾಗವ ಮತ್ತು ಶಿಂಸುಘ್ನ  
ಇವು ಹನ್ನೊಂದು ಕರಣಗಳು. "ಖಂಡೋ ರೂಪೇ ರಾಮಚಂದ್ರ  
ಮೇರುಕದಂಬಯೋ:" ವಿಶ್ವಂ | "ಖಂಡಂ ಕಲ್ಯಾಣಸೌಖ್ಯಯೋ:"  
ವೈಜಂ | "ಖಂಡ: ಶಿವೇ ಖಂಡೀರೀ ರೂಪೇ ಚ ಕದಂಬಕೇ |  
ಕರಿಜಾತಿವಿಶೇಷೇ ನಾ ಕಲೀಬಂ ಮಹಾಲಯಸ್ತಯೋ: | ಕಾಂಚನ  
ಚ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ರಾಸ್ತಾಕೃಷ್ಣಾವ್ಯಯೋನದೀಪು ಚ | ತಿಥಿಖಂಡೇ  
ಪ್ರಸಾರಿಣ್ಯಾಂ ಕರ್ತವ್ಯಾನಂದಯೋರಪಿ | ತ್ರಿಪು ಶ್ರೇಷ್ಠೇ ಚ ಸಾಧು  
ಚ ನ ಪುಂಸಿ ಕರಣಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ |

ಖಂಡಕಂ ಭಂಡಕಂ (ಪುಂ) ಗೋಕರ್ಣಕ್ಷೇತ್ರ.

ಖಂಡಕಂಶ್ವರ ಭಂಡಕಂಶ್ವರ (ಪುಂ) ಗೋಕರ್ಣ (ಕ್ಷೇತ್ರ)  
ದಲ್ಲಿರುವ ಶಿವಲಿಂಗ.

ಖಂಡಕಾಲಿ ಭಂಡಕಾಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.  
2. ಕಣಜದ ಹುಳ. "ಖಂಡಕಾಲಿ ತು ಗಂಧೋಲ್ಯಾಂ ಕಾಲ್ಯಾಯ-  
ನ್ಯಾಮಪಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ |

ಖಂಡಕಾಂಠ ಭಂಡಕಾಂಠ (ನಂ) ದೇವದಾರು ಮರ.

ಖಂಡಕುಮ್ಮ ಭಂಡಕುಂಭ (ಪುಂ) ಪೂರ್ಣಕುಂಭ, ನೀರಿನಿಂದ  
ತುಂಬಿದ ಪೂರ್ಣಕಲಶ. ಖಂಡ: ಕುಮ್ಮ: |

ಖಂಡದಾರ ಭಂಡದಾರು (ಪುಂ) ದೇವದಾರು ವೃಕ್ಷ. ಖಂಡ  
ದಾರು |

ಖಂಡಪರ್ಣಿ ಭಂಡಪರ್ಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಿವನೆಯ ಮರ.

ಖಂಡಪೀಠ ಭಂಡಪೀಠ (ನಂ) 1. ಮಂಗಳಾಸನ, ವೈಭವ  
ಯುತವಾದ ರಾಜನ ಆಸನ. 2. ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಪ್ರತಿಷ್ಠೆ  
ಮಾಡಿ ಪೂಜಿಸುವ ಆಸನ. 3. ಗುರುಹಿರಿಯರನ್ನು



ಕುಳ್ಳಿರಿಸಿ ಸತ್ಕರಿಸುವ ಆಸನ. “उपतस्थुः प्रकृतयो  
भद्रपीठोपवेशितम्” ರಘುಂ ೧೭-೧೦ |

ಭದ್ರಬಲಾ ಭದ್ರಬಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಳ್ಳುಗಸೆ ಗಿಡ, ಸಾರಣೆ  
ಗಿಡ. ಭದ್ರಂ ಬಲಮಸ್ಯಾ: |

ಭದ್ರಮುಖ ಭದ್ರಮುಖ (ವಿಂ) ಮಂಗಳಕರವಾದ ಮುಖ  
ವುಳ್ಳವನು, ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತನಾಡುವವನು, ಸೌಮ್ಯವಾದ  
ಮುಖವುಳ್ಳವನು. [ಸುಶಿಕ್ಷಿತನ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಅದರ  
ಮತ್ತು ವಿನಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಸಂಬೋಧನೆ.] “भद्रमुख,  
न खल्वयं मुनिकुमारः” ಶಾಕುಂ ೭ | ಸ್ತ್ರಿಯಾ “डीप्”  
(೪-೧-೪೪) | -ಮುಖಿ -ಮುಖೀ.

ಭದ್ರಮುಸ್ತಕ ಭದ್ರಮುಸ್ತಕ (ಪುಂ) ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣದ ಕೊನ್ನಾರಿ.

ಭದ್ರಮೃಗ ಭದ್ರಮೃಗ (ಪುಂ) ಉತ್ತಮ ಜಾತಿಯ ಒಂದು  
ಆನೆ.

ಭದ್ರಯವ ಭದ್ರಯವ (ಪುಂ) ಗಿರಿಮಲ್ಲಿಗೆಯ ಬೀಜ.

ಭದ್ರೇಣ ಭದ್ರೇಣ (ಪುಂ) ಐರಾವತ,

ಭದ್ರೋಹಿಣಿ ಭದ್ರೋಹಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಟುಕ ರೋಹಿಣಿ.

ಭದ್ರಶ್ರೀ ಭದ್ರಶ್ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಧದ ಮರ.

ಭದ್ರಾ ಭದ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) “भद्र” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಭದ್ರಾಕರಣ ಭದ್ರಾಕರಣ (ನಂ) ಕ್ಷೌರ, ಆಯುಷ್ಯಮರ್ಫ,  
ಜಾಲ. ಭದ್ರ + ಡಾಕ್ (ವಾಂ ೪-೪-೬೭) | ಕೃತ್ “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೫) |

ಭದ್ರಾಙ್ಗ ಭದ್ರಾಙ್ಗ (ಪುಂ) ಬಲರಾಮ.

ಭದ್ರಾಶ್ವ ಭದ್ರಾಶ್ವ (ನಂ) ಜಂಬೂದ್ವೀಪದ ಒಂಬತ್ತು ವರ್ಷ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು.

ಭದ್ರಾಶ್ರಯ ಭದ್ರಾಶ್ರಯ (ಪುಂ) ಗಂಧದ ಮರ. ಭದ್ರಸ್ಯ  
ಮಙ್ಗಲಸ್ಯಾಶ್ರಯ: |

ಭದ್ರಾಸನ ಭದ್ರಾಸನ (ನಂ) 1. ವೈಭವಯುತವಾದ ರಾಜನ  
ಆಸನ, ರಾಜನ ರತ್ನಸಿಂಹಾಸನ. ಭದ್ರಂ ಚ ತದಾಸನಂ ಚ |  
2. ಧ್ಯಾನಕ್ಕಾಗಿ ಕೂಡುವ ಒಂದು ಆಸನ, ತಪಸ್ಸಿಗಾಗಿ  
ಕೂಡುವಾಗ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಒಂದು ವಿಧ ಅಂಗವಿನ್ಯಾಸ.  
3. ಮಂಗಳಾಸನ, ಹಸೆಮಣಿ. “भद्रासनं काञ्चनपाद-  
पीठम्” ಕುಮಾಂ ೧೨-೨೦ |

ಭದ್ರೇಲಾ ಭದ್ರೇಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಪ್ಪ ಜಾತಿಯ ಯಾಲಕ್ಕಿ.

ಭದ್ರಿಕಾ ಭದ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. (ಎರಡು ಪಕ್ಷಗಳ) ಬಿದಿಗೆ  
ಸಪ್ತಮಿ ಮತ್ತು ದ್ವಾದಶಿ ತಿಥಿಗಳು. 2. ಎರಡು ನಗಣ  
ಗಳು ರಗಣ ಒಂದು ಲಘು ಮತ್ತು ಒಂದು ಗುರುಪರ್ಣ  
ಇವುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹನ್ನೊಂದನೆಯ ಭಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು

ವೃತ್ತ. “ननरलगुरुभिश्च भद्रिका” ವೃಂ ೨೦ |  
3. ತಾಯಿತ, ರಕ್ಷಾಕರಂಡಕ.

ಭಪಂಜರ ಭಪಂಜರ (ನಂ) ನಕ್ಷತ್ರಮಂಡಲ.

ಭಪತಿ ಭಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ, ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಅಧಿಪತಿ.  
2. ರಾಶಿಯ ಅಧಿಪತಿ. ದ್ವಾದಶ ರಾಶಿಗಳ ಅಧಿಪತಿ  
ಗಳು:

|                             |       |
|-----------------------------|-------|
| ಮೇಷ ಮತ್ತು ವೃಶ್ಚಿಕ ರಾಶಿಗಳಿಗೆ | ಕುಜ   |
| ವೃಷಭ ಮತ್ತು ತುಲಾ             | ಶುಕ್ರ |
| ಮಿಥುನ ಮತ್ತು ಕನ್ಯಾ           | ಬುಧ   |
| ಕರ್ಕಾಟಕ ರಾಶಿಗೆ              | ಚಂದ್ರ |
| ಸಿಂಹ ರಾಶಿಗೆ                 | ರವಿ   |
| ಧನುಸ್ಸು ಮತ್ತು ಮೀನ ರಾಶಿಗಳಿಗೆ | ಗುರು  |
| ಮಕರ ಮತ್ತು ಕುಂಭ              | ಶನಿ   |

ಭಯ ಭಯ (ನಂ) 1. ಭೀತಿ, ಹೆದರಿಕೆ. ತ್ರಿ ಭಿ (ಭಯೇ)  
“अच्” (ವಾಂ ೩-೩-೪೬) | “भयस्य पूर्वावितर-  
स्तरस्विना मनस्यु येन द्युसदां न्यधीयत” ಮಾಘಂ ೧-೪೩ |  
2. ದಿಗಿಲು, ಕಳವಳ, ಗಾಬರಿ. “अमोघत्वयशोभङ्ग-  
भयादिव निवर्तते | अखण्डितबले तस्मिन् दण्डो दण्ड-  
धरापितः” ಯಾದಂ ೧೬-೩೫ | 3. ಕುಬ್ಜಕ ವೃಕ್ಷದ ಹೂವು.  
4. ಅಪಾಯ. (ವಿಂ) 5. ಭಯಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ,  
ಭಯವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ, ಘೋರವಾದ. ವಿಮೇಲ್ಯ-  
ಸ್ಮಾದಿತಿ—ತ್ರಿ ಭಿ (ಭಯೇ) “अच्” (ವಾಂ ೩-೩-೪೬) |  
“भयं प्रतिभये घोरे प्रसूने कुब्जकस्य च” ಮೇದಿಂ |

ಭಯಕೃತ್ ಭಯಕೃತ್ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀ ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಭಯಂ  
ಕರೋತಿ ಸ್ವಶಾಸನಾತಿವರ್ತಿनाम् — ಭಯ + ಕೃತ್ (ಕರಣಂ)  
“क्विप्” (೩-೨-೭೬) | “आज्ञातिलङ्घिनां पुंसां  
नरकादिभयंकरः | भयकृत् स समाख्यातः सप्ताणो  
भववर्धनः” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: | “अमूर्तिरनघोश्चित्त्यो  
भयकृत् भयनाशनः” ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ಭಯ  
ವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. 3. ಅಪಾಯಕರವಾದ.

ಭಯಕ್ಷುರ ಭಯಂಕರ (ವಿಂ) ಭಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.  
ಭಯಂ ಕರೋತಿ — ತ್ರಿ ಭಿ (ಭಯೇ) ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) “खच्”  
(೩-೨-೪೩) | “भयङ्करः प्राणभृतां मृत्योर्भुज इवापरः”  
ಕಿರಾಂ ೧೧-೧೭ |

ಭಯಡಿಂಡಿಮ ಭಯಡಿಂಡಿಮ (ಪುಂ) ಭೇರಿ, ನಗಾರಿ,  
ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಹೊಡೆಯುವ ತಮಟೆ. ಭಯಾಶ್ಚ ಶತ್ರುಭಯೋ-  
ತ್ಪಾದನಾಯ ಡಿಂಡಿಮ: | “रणतूर्यं तु संग्रामपटहो भय-  
ಡಿण्डिमः” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |



ಭಯದ್ರುತ ಭಯದ್ರುತ (ವಿಂ) ಭಯದಿಂದ ಓಡಿದವನು.

ಭಯಾತ್ ದ್ರುತಃ । “ಕಾನ್ದಿಶಿಕೋ ಭಯದ್ರುತಃ” ಅಮಂ ।

ಭಯನ ಭಯನ (ನಂ) ಭಯ, ಭೀತಿ, ಹೆದರಿಕೆ. ತ್ರಿ ಭಿ (ಭಯೇ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । “ತಂಕೋಸ್ತೃತಿ ಭಿಭಿಷಾ ಭೀತಿಃ ಸಾಧ್ಯಸಂ ಭಯನಂ ಭಯಮ್” ವೈಜಂ ।

ಭಯನಾಶನ ಭಯನಾಶನ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀ ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಭಯಂ ಆಜ್ಞಾನುರ್ವತಿನಾಂ ಭಯಂ ನಾಶಯತಿ—ಗುಣ (ಅದರ್ಶನೇ) + ಗುಣಿ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ಆಜ್ಞಾನುರ್ವತಿನಾಂ ಸ್ವಸ್ಯ ಭಯಂ ನಾಶಯತೀತಿ ಯಃ । ಭಯನಾಶನ ಇತ್ಯುಕ್ತೋ ನವಾರ್ಣಃ ಕರ್ಮ-ಕಾರಕಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । “ಭಯಕೃತ್ ಭಯನಾಶನಃ” ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ) 2. ಭಯವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ.

ಭಯನಾಶಿನ್ ಭಯನಾಶಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಭಯವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವವನು. ಭಯಂ ನಾಶಯತಿ—ಗುಣ (ಅದರ್ಶನೇ) “ಗುಣಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಛೀಪ್” (೪-೧-೫) । —ನಾಶಿನಿ —ನಾಶಿನೀ. 2. ನೀರಾಮೆ ಬಳ್ಳಿ.

ಭಯಭೀತ ಭಯಭೀತ (ವಿಂ) ಭಯದಿಂದ ಹೆದರಿದ. ಭಯಾತ್ ಭೀತಃ ।

ಭಯಭ್ರಷ್ಟ ಭಯಭ್ರಷ್ಟ (ವಿಂ) ಭಯದಿಂದ ಓಡಿದವನು. ಭಯಾತ್ ಭ್ರಷ್ಟಃ ।

ಭಯಹೇತು ಭಯಹೇತು (ಪುಂ) 1. ಭಯದ ಕಾರಣ. ಭಯಸ್ಯ ಹೇತುಃ ಕಾರಣಮ್ । (ವಿಂ) 2. ಭಯಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ.

ಭಯಾನಕ ಭಯಾನಕ (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಾಘ್ರ, ಹುಲಿ. 2. ರಾಹು. 3. ಭಯಾನಕ ರಸ, ಶೃಂಗಾರಾದಿ ರಸಗಳಲ್ಲಿ ಭಯಸ್ಥಾಯಿಭಾವವುಳ್ಳ ಒಂದು ರಸ.

ಈ ರಸಕ್ಕೆ ಆಲಂಬನ ವಿಭಾವಾದಿಗಳು :

ಭಯಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದುದು ಆಲಂಬನ ವಿಭಾವ. ಅದರ ಭಯಂಕರ ವ್ಯಾಪಾರವು ಉದ್ದೀಪನ ವಿಭಾವ. ಪ್ರಲಯ ಸ್ವೇದ ರೋಮಾಂಚ ನಡುಕ ಮುಂತಾದುವು ವ್ಯಭಿಚಾರಿ ಭಾವಗಳು. ಗದ್ದದ ಸ್ವರದಿಂದ ಮಾತಾಡುವುದು ಅನು ಭಾವ. “ಭಯಾನಕೋ ಭಯಸ್ಥಾಯಿಭಾವಃ ಕಾಲಾಧಿದೈವತಃ । ಯಸ್ಮಾದುತ್ಪದ್ಯತೇ ಭೀತಿಃ ಸ್ತದತ್ರಾಲಂಬನಂ ಮತಮ್ । ಚೇಷ್ಠಾ ಘೋರತರಾ-ಸ್ತಸ್ಯ ಭವೇದುದ್ದೀಪನಂ ಪುನಃ । ಅನುಭಾವೋಽತ್ರ ವೈವರ್ಣ್ಯಗದ್ಗದಸ್ವರ-ಭಾಷಣಮ್ । ಪ್ರಲಯಸ್ವೇದರೋಮಾಂಚಕಂಪದಿಕ್ಪ್ರೇಕ್ಷಣಾದಯಃ । ಜುಗುಪ್ಸಾವೇಗಸಂಮೋಹಸಂತ್ರಾಸಗಲಾನಿಧಿನತಾಃ । .....ವ್ಯಭಿ-ಚಾರಿಣಃ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೨೩೫-೨೩೬ । (ವಿಂ) 4. ಭಯವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ, ಭಯಂಕರವಾದ. ವಿಮೇಲ್ಯ-ಸ್ಥಾತ್ —ತ್ರಿ ಭಿ (ಭಯೇ) “ಆನಕಃ” (೩ಂ ೩-೮೨) । “ವಕ್ತ್ರಾಣಿ ತೇ ತ್ವರಮಾಣಾ ವಿಶಂತಿ ದಂಷ್ಟ್ರಾಕರಾಲಾನಿ ಭಯಾ-

ನಕಾನಿ” ಗೀತಾ ೧೧-೨೭ । “ಭಯಾನಕಃ ಸ್ಮೃತೋ ವ್ಯಾಘ್ರೇ ರಸೇ ರಾಹೌ ಭಯಚ್ಛೇ” ಮೇದಿಂ । “ಮುರದ್ವಿಷಃ ಸ್ವನಿತಭಯಾನಕಾನಕಮ್” ಮಾಧಂ ೧೭-೨೦ ।

ಭಯಾಪಹ ಭಯಾಪಹ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಭಯಮಪಹತ್ಯಾತ್ ಅಪ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) “ಛ” (೩-೨-೪೯) । “ಅನಂತ-ರೂಪೋಽನಂತಶ್ರೀಜಿತಮನ್ಯುರ್ಮಯಾಪಹಃ” ವಿಂ ಸಂ । “ಅನಾಥತ್ವ-ಭಯಂ ಹಂತಿ ವಾತ್ಸಲ್ಯೇನೈವ ಮಾದೃಶಾಮ್ । ಭಯಾಪಹಃ ಸಮಾ-ಖ್ಯಾತೋ ವಸ್ತವೋ ಮನುಷ್ಯತಮಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । 2. ರಾಹು, ದೊರೆ, ಮಂಡಲಾಧಿಪತಿ. “ರಾಜಾಧಿಪೋ ಮಂಡಲೇಶಃ ಏಕ-ಜನ್ಮಾ ಭಯಾಪಹಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । (ವಿಂ) 3. ಭಯವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ.

ಭಯಾರ್ತ ಭಯಾರ್ತ (ವಿಂ) ಭಯದಿಂದ ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಭಯೇನ ಆರ್ತಃ ।

ಭಯಾವಹ ಭಯಾವಹ (ವಿಂ) ಭಯವನ್ನು ಉಂಟು ಮಾಡುವ. ಭಯಮಾವಹತಿ—ಆ+ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೇ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ಸ್ವಧರ್ಮೇ ನಿಧನಂ ಶ್ರೇಯಃ ಪರಧರ್ಮೋ ಭಯಾವಹಃ” ಗೀತಾ ೩-೩೫ ।

ಭರ ಭರ (ಪುಂ) 1. ಅತಿಶಯ, ಅಧಿಕ, ಹೆಚ್ಚಿಗೆ. ಭೃ (ಭರಣೇ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ಪೀನಪಯೋಧರಭಾರ-ಭರೇಣ ಹರಿಂ ಪರಿರಮ್ಯ ಸರಾಗಮ್” ಗೀತಗೋಂ ೧-೪೦ । 2. ಪುಂಜ, ಸಮೂಹ, ರಾಶಿ. “ಸ್ಫುರದ್ಭುಜ್ವಲಾಧರದಲೈ-ವಿಲಸದ್ಭನಾಂಶುಕೇಶರಭರೈಃ ಪರಿತಃ” ಮಾಧಂ ೯-೪೭ । 3. ಭಾರ, ಹೊರೆ. “ಫಲಭರಪರಿಣಾಮಶ್ಯಾಮಜಮ್ಬುನಿಕುಂಜ-ಸ್ವಲನಮುಖರಭೂರಿಸ್ತೋತಸೋ ನಿರ್ಜರಿಷ್ಯಃ” ಉಂ ರಾಂ ೨-೨೦ । “ಭರೋಽತಿಶಯಭಾರಯೋಃ” ಮೇದಿಂ । “ರಾಮಕೃಷ್ಣಾವಿತಿ ಭುವೋ ಭಗವಾನಹರದ್ಭರಮ್” ಭಾಗಂ ೧-೩-೨೩ ।

ಭರತ ಭರತ (ಪುಂ) ಕುಂಭಕಾರ, ಕುಂಬಾರ.

ಭರಣ ಭರಣ (ಪುಂ) 1. ಭರಣೇ ನಕ್ಷತ್ರ. (ನಂ) 2. ಕೂಲಿ. 3. ಸಂಬಳ. ಭ್ರಿಯತೇಜೇನ—ಭೃ (ಭರಣೇ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । 4. ಪೋಷಿಸುವುದು, ಸಾಕುವುದು. ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” । “ಪ್ರಜಾನಾಂ ವಿನಯಾಧಾನಾದ್ರಕ್ಷಣಾಭರಣಾದಪಿ” ರಘುಂ ೧-೨೪ । 5. ಧರಿಸುವುದು, ಉಡುವುದು. 6. ಹೊರು ವುದು. (ವಿಂ) 7. ಪೋಷಿಸುವವನು, ಸಾಕುವವನು. 8. ಧರಿಸುವವನು, ಉಡುವವನು. ಕರ್ತಂ “ಲ್ಯುಟ್” ।

ಭರಣಿಕ ಭರಣಿಕ (ವಿಂ) ಕೂಲಿ ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಮೂಟೆ ಹೊರುವವನು. ಭರಣೇನ ಹರತಿ—ಭರಣ “ಛನ್” (೪-೪-೧೬) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಛೀಪ್” (೪-೧-೫) । ಭರಣಿಕೀ ಭರಣಿಕೀ.



**ಭರಣಿ ಭರಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಭರಣೀ ನಕ್ಷತ್ರ, ಅಶ್ವಿನೀ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡನೆಯದು. ಭರಣ "ಜಿಫ" (೪-೧-೪೧) | ಈ ನಕ್ಷತ್ರವು ಯಮ ದೇವತಾಕವಾದುದು. ಇದು ಮೇಷರಾಶಿಗೆ ಸೇರಿದ ನಕ್ಷತ್ರ. 2. ಕಹಿ ಹೀರಿಗಿಡ. "ಭರಣಿ ಧೋಷಕೇ ಕ್ಷೇ" ಮೇದಿಂ |

**ಭರಣಿಭೂ ಭರಣೀಭೂ (ಪುಂ)** ರಾಹುಗ್ರಹ. ಭರಣಿ ಮೂಲಪ್ರಾಂತಿಪ್ರಾಂತ ಯಸ್ಯ |

**ಭರಣೀಯ ಭರಣೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಪೋಷಿಸಲ್ಪಡುವವನು, ಸಾಕಲ್ಪಡುವವನು. 2. ಪೋಷಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದವನು. 3. ಪೋಷಿಸಬೇಕಾದವನು. ಭೂ (ಭರಣಿ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | "ಸರ್ವಂ ಭವತು ತೇ ರಾಜ್ಯಂ ಪಂಚ ಗ್ರಾಮಾನ್ ವಿಸರ್ಜಯ | ಅವಶ್ಯಂ ಭರಣೀಯಾ ಹಿ ಪಿತುಸ್ತೇ ರಾಜಸತ್ತಮ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೫೦-೧೭ | "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬) | **ಭರಣೀಯಃ ಭರಣೀಯಃ** |

**ಭರಣಿ ಭರಣಿ (ಪುಂ)** 1. ಸ್ವಾಮಿ, ಯಜಮಾನ. ಭೂ (ಭರಣಿ) "ಅಢಿಚ್" (೩ಂ ೧-೧೨೬) | 2. ರಾಜ, ದೊರೆ. 3. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. 4. ಕೃಮಿ, ಹುಳಿ.

**ಭರಣಿ ಭರಣಿ (ನಂ)** 1. ಸಂಬಳ. 2. ಕೂಲಿ. ಭರಣಿ ಸಾಧು "ಯತ್" (೪-೪-೯೮) | "ಭರಣಿ ಭರಣಿ ಭರಣಿ ವೇತನಂ ನಿಷ್ಕರಯೋ ಭೃತಿಃ" ವೈಜಂ |

**ಭರತ ಭರತ (ಪುಂ)** 1. ದುಷ್ಕೃತನಿಗೆ ಶಕುಂತಲೆಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಮಗ ಭರತ ಕುಮಾರ, ಭರತಚಕ್ರವರ್ತಿ. ಇವನಿಗೆ ಸರ್ವದಾಮನನೆಂದೂ ಹೆಸರು. ಇವನು ವಿದರ್ಭ ರಾಜನ ಮೂವರು ಕನ್ಯೆಯರನ್ನು ವಿವಾಹ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಅವರಲ್ಲಿ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪಡೆದನು. ಭರತನು ಪಟ್ಟಾಭಿಷಿಕ್ತನಾಗಿ ಧರ್ಮದಿಂದ ರಾಜ್ಯ ಪರಿಪಾಲನ ಮಾಡುತ್ತ ಗಂಗಾತೀರದಲ್ಲಿ ಐವತ್ತೈದು ಅಶ್ವಮೇಧ ಯಾಗಗಳನ್ನೂ ಯಮುನಾ ತೀರದಲ್ಲಿ ಇಪ್ಪತ್ತೊಂಟು ಅಶ್ವಮೇಧ ಯಾಗಗಳನ್ನೂ ಮಾಡಿದನು. 2. ದಶರಥನಿಗೆ ಕೈಕಯಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಪುತ್ರ, ಶ್ರೀರಾಮನ ತಮ್ಮ. [ಇವನು ಕುಶಧ್ವಜನ ಮಗಳಾದ ಮಾಂಡವಿಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿದ್ದನು. ಭರತನು ಮಾತುಲನಾದ ಯುಧಾಜಿತ್ತಿನ ಮನೆಯಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಶ್ರೀರಾಮನು ವನವಾಸಕ್ಕೆ ತೆರಳಿದನು. ಮಾವನ ಮನೆಯಿಂದ ಬಂದ ಭರತನು ಈ ವಿಷಯವನ್ನು ಕೇಳಿ ಬಹಳ ಖಿನ್ನನಾಗಿ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು ರಾಜ್ಯ ಸ್ವೀಕರಿಸುವಂತೆ ಅನೇಕ ವಿಧವಾಗಿ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದರೂ ಶ್ರೀರಾಮನು ಅದಕ್ಕೆ ಸಮ್ಮತಿಸದಿರಲು ಶ್ರೀರಾಮನ ಪಾದುಕೆಗಳನ್ನು ಪಡೆದು ನಂದಿಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿ ಪಾದುಕಾ

ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ ಮಾಡಿ ಪೂಜಿಸುತ್ತ ಪಾದುಕೆಗಳ ಆಜ್ಞೆ ಪಡೆದು ಶ್ರೀರಾಮನು ಅರಣ್ಯದಿಂದ ಬರುವವರೆಗೂ ಅವುಗಳ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ರಾಜ್ಯವನ್ನಾಳುತ್ತಿದ್ದು ಅರಣ್ಯದಿಂದ ಬಂದನಂತರ ಸಂತೋಷದಿಂದ ಸ್ವಾಗತಿಸಿ ಶ್ರೀರಾಮನಿಗೆ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ ಮಾಡಿ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಒಪ್ಪಿಸಿ ಭಕ್ತಾಗ್ರೇಸರನೆಂದು ಖ್ಯಾತಿಪಡೆದನು.] "ಭರತಾಯ ಪರಂ ನಮೋಸ್ತು ತಸ್ಮೈ ಪ್ರಥಮೋದಾಹರಣಾಯ ಭಕ್ತಿಭಾಜಾಯ | ಯದ್ವಿಜಯಶೇಷತಃ ಪೃಥಿವ್ಯಾ ಪ್ರಥಿತೋ ರಾಘವಪಾದುಕಾಪ್ರಭಾವಃ" ಪಾದುಂ ಸಂ | 3. ಜಡಭರತ, ಋಷಭದೇವನ ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಪುತ್ರ. ["ಜಡಭರತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 4. ಋತ್ವಿಕ್ಕು, ಯಾಗದ ಪುರೋಹಿತ. "ಯಾಜಕಾ ಭರತಾ ಯಜ್ಞಲಿಹಃ" ವೈಜಂ | 5. ನಾಟ್ಯಾಚಾರ್ಯ ರಾದ ಭರತಮುನಿ, ನಾಟ್ಯಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಮುನಿ. 6. ಶೈಲೂಷ, ನಟ. ಭೂ (ಭರಣಿ) "ಅತಚ್" (೩ಂ ೩-೧೧೦) | ಭರತನು ಪ್ರೋಕ್ತಂ ನಾಟಕಶಾಸ್ತ್ರಮಧೀತೆ "ಅಣ್" (೪-೨-೫೯) | ಅಣಿ ಲುಕ್ (೪-೨-೬೪) | 7. ಒಂದು ವಾದ್ಯ. 8. ನೇಯಿಗೆಯವನು. 9. ಭಾರತ ವರ್ಷ. ಋಷಭದೇವನ ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಪುತ್ರನಾದ ಜಡಭರತನು ಈ ದೇಶವನ್ನು ಅಳಿದುರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಭಾರತವರ್ಷವೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. "ಭರತೋ ಜ್ಯೇಷ್ಠಃ ಶ್ರೇಷ್ಠಗುಣ ಆಸೀದೇನೆದಂ ವರ್ಷಂ ಭಾರತಮಿತಿ ವ್ಯಪದಿಶಂತಿ" ಭಾಗಂ ೫-೪-೯ | 10. ಶಬರ, ಕಿರಾತ. 11. ಕ್ಷೇತ್ರ. 12. ಸಂಚರ, ಮಾರ್ಗ. "ಭರತಃ ಶಬರೇ ರಾಮಾನುಜೇ ಭಾರತವರ್ಷಕೇ | ದುಷ್ಯಂತಜೇ ನಟೇ ನಾಟಕಶಾಸ್ತ್ರಕೃತಾಂತುರ್ವಾಯಯೋಃ" ನಾನಾಶಂಕರಂ | "ಭರತೋ ವಾಘಭೇದೇನ ದೌಷ್ಯಂತೋ ಸಂಚರೇ ನಟೇ | ರಾಮಾನುಜೇ ಚ ಭರತಸ್ತಾಂತುರ್ವಾಯೇನ ಚ ಕ್ವಚಿತ್" ವಿಶ್ವಂ | "ಭರತಃ ಶಬರೇ ನಟೇ | ಕ್ಷೇತ್ರೇ ರಾಮಾನುಜೇ ಶಾಸ್ತ್ರೇ ದೌಷ್ಯಂತಾವೃಷಭಾತ್ಮಜೇ" ಹೇಮಂ |

**ಭರತಖಂಡ ಭರತಖಂಡ (ನಂ)** ಭಾರತ ವರ್ಷದ ಒಂದು ಭಾಗ.

**ಭರತಪುತ್ರಕ ಭರತಪುತ್ರಕ (ಪುಂ)** ಶೈಲೂಷ, ನಟ. ಭರತಸ್ಯ ನಾಟಕಶಾಸ್ತ್ರಪ್ರಣೇತುಃ ಪುತ್ರ ಇವ ಕಾಯತಿ—ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) |

**ಭರತಪ್ರಸೂ ಭರತಪ್ರಸೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಶಕುಂತಲೆ, ಭರತ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ತಾಯಿ. 2. ಕೈಕಯೀ, ದಶರಥ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಕಿರಿಯ ಹೆಂಡತಿ. 3. ಋಷಭದೇವನ ಪತ್ನಿ, ಜಡಭರತನ ತಾಯಿ.

**ಭರತರಸ ಭರತರಸ (ಪುಂ)** ಭರತವಂಶದಲ್ಲಿ ಶ್ರೇಷ್ಠ ನಾದವನು.



ಭರತವರ್ಷ ಭರತವರ್ಷ (ಪುಂ) ಭಾರತ ದೇಶ.

ಭರತವಾಕ್ಯ ಭರತವಾಕ್ಯ (ನಂ) ನಾಟಕದ ಕೊನೆಯ ಶ್ಲೋಕ, ನಾಟಕಾಭಿನಯ ಪೂರ್ತಿಯಾದನಂತರ ಸಾಮಾಜಿಕ ರಿಗೆ ನಟನಿಂದ ಹೇಳಲ್ಪಡುವ ಆಶೀರ್ವಚನ. "ತಥಾ-  
ಪೀದಮಸ್ತು ಭರತವಾಕ್ಯಮ್"। "ಪ್ರವರ್ತತಾಂ ಪ್ರಕೃತಿಹಿತಾಯ  
ಪಾಥಿವ್ಯಃ ಸರಸ್ವತೀ ಶ್ರುತಮಹತಾಂ ಮಹೀಯಸಾಮ್। ಮಮಾಪಿ ಚ  
ಕ್ಷಯತು ನೀಲಲೋಹಿತಃ ಪುನರ್ಮವಂ ಪರಿಗತಶಕ್ತಿರಾತ್ಮಭೂಃ"  
ಶಾಕುಂ ೭-೩೪। ಇದು (ಭರತವಾಕ್ಯ) ಪ್ರತಿಯೊಂದು  
ನಾಟಕದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ನಟನ ವಾಕ್ಯವಾಗಿರುವುದು.

ಭರತಾಗ್ರಜ ಭರತಾಗ್ರಜ (ಪುಂ) ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರ, ಭರತನ  
ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರ. ಭರತಸ್ಯಾಗ್ರಜಃ।

ಭರಥ ಭರಥ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 2. ಲೋಕಪಾಲ,  
ಅವ್ಯದಿಕ್ಷಾಲಕರಲ್ಲೊಬ್ಬ. ಭಃ (ಭರಣ) "ಅಥಃ"  
(ಽಂ ೩-೧೧೪)।

ಭರದ್ವಾಜ ಭರದ್ವಾಜ (ಪುಂ) 1. ಭರದ್ವಾಜ ಮುನಿ, ಅಣ್ಣ  
ನಾದ ಉತಥ್ಯನ ಪತ್ನಿ ಮಮತೆಯಲ್ಲಿ ಬೃಹಸ್ಪತಿಯಿಂದ  
ಜನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಋಷಿ. ದ್ವಾಮ್ಯಾ ಜಾತಃ ದ್ವಾಜಃ। ಪೃಷೋಂ।  
ಒಬ್ಬನ (ಉತಥ್ಯನ) ಕ್ಷೇತ್ರ (ಪತ್ನಿ)ದಲ್ಲಿ ಇನ್ನೊಬ್ಬ  
(ಬೃಹಸ್ಪತ್ಯಾಚಾರ್ಯ) ರಿಂದ ಜನಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಈತನು ದ್ವಾಜ  
ನಾದನು. [ಪತಿಗೆ (ಉತಥ್ಯನಿಗೆ) ಹೆದರಿ ಶಿಶುವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು  
ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದ ಮಮತೆಯನ್ನು ಕರೆದು ಭರ (ಪುಷಾಣ)  
ದ್ವಾಜಮ್ (ಇಬ್ಬರ ಮಗುವಾದ ಈತನನ್ನು ಪೋಷಿಸು) ಎಂದು  
ಬೃಹಸ್ಪತ್ಯಾಚಾರ್ಯರು ಹೇಳಲು ಅವಳು ಆಶ್ಚರ್ಯವಾಗಿ  
ಜನಿಸಿದ ಈ ಶಿಶುವನ್ನು ಪೋಷಿಸುವುದಿಲ್ಲ ತವಮಿಮ ಭರ  
ಎಂದು ಹೇಳುತ್ತ ಹೊರಟುಹೋದಳು. ಈ ಕಾರಣದಿಂದ  
ಈ ಮುನಿಗೆ "ಭರದ್ವಾಜಃ" ಎಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು. "ಮೂಢ  
ಭರ ದ್ವಾಜಮಿಮ ಭರ ದ್ವಾಜ ಬೃಹಸ್ಪತೇ। ಯಾತೌ ಯದುಕ್ತವಾ ಪಿತರೌ  
ಭರದ್ವಾಜಸ್ತತಸ್ತವಯಮ್" ಭಾಗಂ ೧-೨೦-೪। [ಈ ಮುನಿಯು  
ಗಂಗಾತೀರದಲ್ಲಿ ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಫುತಾಚಿಯೆಂಬ  
ಅಪ್ಸರಸಿಯಲ್ಲಿ ಮೋಹಗೊಂಡು ವೀರ್ಯವನ್ನು ಒಂದು  
ದ್ರೋಣ (ದೊನ್ನೆ) ದಲ್ಲಿ ಬಿಟ್ಟನು. ಆದರಿಂದ ದ್ರೋಣಾ  
ಚಾರ್ಯರು ಜನಿಸಿದರು.] 2. ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹರ್ಷಿಯ  
ಶಿಷ್ಯನಾದ ಒಬ್ಬ ಋಷಿ. [ವನವಾಸಕ್ಕಾಗಿ ಹೊರಟ  
ಶ್ರೀರಾಮನು ಪ್ರಯಾಗಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಈ  
ಮಹರ್ಷಿಯ ಮಾತಿನಂತೆ ಚಿತ್ರಕೂಟ ಪರ್ವತಕ್ಕೆ ಬಂದು  
ವಾಸಿಸುತ್ತಿದ್ದನು. ಭರತನು ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ  
ಕರೆತರಬೇಕೆಂದು ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಅವನಿಗೂ ಅವನ  
ಪರಿವಾರಕ್ಕೂ ದಿವ್ಯವಾದ ಆತಿಥ್ಯವನ್ನು ನೀಡಿದನು.

ಶ್ರೀರಾಮನು ವನವಾಸ ಮುಗಿಸಿಕೊಂಡು ಬರುವಾಗ ಈ  
ಮುನಿಯ ಆಶ್ಚರ್ಯದಿಂದಲೇ ಹನುಮಂತನ ಮೂಲಕ  
ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ತಾನು ಬರುತ್ತಿರುವ ವಿಷಯವನ್ನು ಹೇಳಿ  
ಕಳುಹಿಸಿದನು.] 3. ಭರದ್ವಾಜಪಕ್ಷಿ. "ಭರದ್ವಾಜಃ ಪಕ್ಷಿಭೇದ  
ಬೃಹಸ್ಪತಿಸುತೇಷು ಚ" ಹೇಮಂ।

ಭರಿತ ಭರಿತ (ವಿಂ) 1. ಪೂರ್ಣವಾದ, ತುಂಬಿರುವ.  
ಭರೋಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ "ಇತಚ್" (೪-೨-೩೬)। 2. ಪೋಷಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಾಕಲ್ಪಟ್ಟ.

ಭರಿಮನ್ ಭರಿಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಕುಟುಂಬ, ಸಂಸಾರ.  
ಛುಮ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) ಕರ್ಮಂ "ಇಮನಿಚ್" (ಽಂ  
೪-೧೪೭)। "ಭರಿಮಾ ಕುಟುಂಬಮ್" ಉಣಾಂ। 2. ಪೋಷಿಸು  
ವುದು, ಸಾಕುವುದು. ಛುಮ್ ಭಾವೇ "ಇಮನಿಚ್"।  
3. ವಿಷ್ಣು. ಕರ್ಮಂ ಇಮನಿಚ್।

ಭರು ಭರು (ಪುಂ) 1. ಸ್ವಾಮಿ, ಯಜಮಾನ. 2. ಪತಿ,  
ಗಂಡ. ಭರತಿ-ಭಃ (ಭರಣ) "ಃ" (ಽಂ ೧-೭)।  
3. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 4. ಹರ, ಪರಶಿವ. "ಭರುಃ ಸ್ವರ್ಣ  
ಹರೇ ಪುಂಸಿ" ಮೇದಿಂ। "ಭರುರ್ಮತುಕನಕಯೋಃ" ಹೇಮಂ।  
5. ವಿಷ್ಣು. 6. ಸಮುದ್ರ.

ಭರುಜ ಭರುಜ (ಪುಂ) ಸೃಗಾಲ, ಜಂಬುಕ, ನರಿ. ಭೇತಿ  
ಶಬ್ದೇನ ರೋಜಯತಿ-ರುಜ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೪)।  
"ಸೃಗಾಲೋ ಭರುಜಃ ಕ್ರೋಷಾ ಶ್ರೀಮಿರ್ಮಗಮತ್ತಕಃ" ವೇಜಂ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ವಾ "ಜಿಃ" (೪-೧-೪೪)। ಭರುಜಾ ಭರುಜಾ,  
ಭರುಜಿ ಭರುಜೀ.

ಭರುಕ ಭರುಕ (ನಂ) 1. ಹುರಿಯುಲ್ಪಟ್ಟ ಮಾಂಸ.  
2. ಕುರಿಯುಲ್ಪಟ್ಟ ಮಾಂಸ. "ಅಜ್ಞಾತೇಷು ವಿಪಕ್ವಂ ಮಾಂಸಂ  
ಭೂತಿಭರುಕಂ ಭರುಕಮ್" ಅಭಿಧಾನರಂ।

ಭಗ ಭಗ (ಪುಂ) 1. ಈಶ್ವರ, ಪರಶಿವ, ಮಹಾದೇವ.  
ಭಗ್ಯಂತೇಜೇನ ಕಾಮಾದಯಃ-ಭಗ್ನಿ (ಭಜನೆ) "ಭಗ್" (೩-೩-೧೨೧)। ಕೃತ್ವಮ್ (೭-೩-೭೨)। ".....ಭೂತವರ್ಗಂ  
ಭಗಗೃಹಿಣಿಂ ರುಧಿರೇಧಿನೋಮಿ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೩-೧೪। 2. ಸೂರ್ಯ  
ನಲ್ಲಿರುವ ಈಶ್ವರಸಂಬಂಧವಾದ ಒಂದು ತೇಜಸ್ಸು.  
"ಆದಿತ್ಯಾಂತಗತಂ ತೇಜೋ ಭಗಾಣ್ಯಂ ತನ್ಮುಮುಕ್ಷುಃಭಿಃ। ಜನ್ಮಮೃತ್ಯು-  
ವಿನಾಶಾಯ ದುಃಖಸ್ಯ ತ್ರಿತಯಸ್ಯ ಚ। ಧ್ಯಾನೇನ ಪುರುಷೇಯಂ  
ದ್ರಷ್ಟವ್ಯಂ ಸೂರ್ಯಮಂಡಲೇ" ಯೋಗಿಯಾಜ್ಞಂ।

ಭಜನ ಭಜನ (ನಂ) 1. ಹುರಿಯುವುದು. 2. ಕುರಿಯು  
ವುದು. ಭಗ್ನಿ (ಭಜನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।  
3. ಬಾಣಲೆ, ಹುರಿಯುವ ಓಡು. ಭಜ್ಯತೇತ್ರ-ಭಗ್ನಿ  
ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। (ವಿಂ) 4. ಹುರಿಯು



ವವನು. 5. ಕರಿಯುವವನು. ಭಜಿ ಕರಂ "ಲ್ಯು:" (3-1-134)।

ಭಜಿತ ಭರ್ಜಿತ (ವಿಂ) 1. ಹುರಿಯಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಕರಿಯಲ್ಪಟ್ಟು. ಭಜಿ (ಭರ್ಜನೆ) ಕರಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

ಭರ್ತು ಭರ್ತು (ಪುಂ) 1. ಯಜಮಾನ, ಪತಿ, ಗಂಡ. ವಿಭರ್ತಿ — ಭೂಮ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ತುಚ್" (3-1-133)। "ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಭರ್ತಾ ಧರ್ಮದಾರಾಶ್ಚ ಪುಂಸಾಮಿತ್ಯನ್ಯೋನ್ಯ ವತ್ಸಯೋಜ್ಞಾತಿ-ಮಸ್ತು" ಮಾಲತೀಂ 6-18। "ಭರ್ತುಃ ಪ್ರಣಯಸಂಭ್ರಮದತ್ತಾಂ ವಾಣೀಮತಿರಸಾಂ ರಸಯಿತ್ವಾ" ಕಿರಾಂ 9-44। 2. ಸ್ವಾಮಿ, ಯಜಮಾನ, ಒಡೆಯ. "ಶಾಪೇನಾಸ್ತಂಗಮಿತಮಹಿಮಾ ವರ್ಷ-ಭೋಗ್ಯೇಣ ಭರ್ತುಃ" ಮೇಘಂ 1-11। 3. ವಿಷ್ಣು. ಸಾಧುನ್ ಆತ್ಮದಾನಕೇಶಿಲ: ವಿಭರ್ತಿ ಪುಣ್ಯಾತಿ—ಭೂಮ್ "ತುನ್" (3-2-134)। "ಯಸ್ತಾನ್ ಪುಣ್ಯಾತ್ಮದಾನಾತ್ ಸ ಭರ್ತಾ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ। "ಸಂಭವೋ ಭಾವನೋ ಭರ್ತಾ ಪ್ರಭವಃ ಪ್ರಭುರೀಶ್ವರಃ" ವಿಂ ಸಂ। 4. ಸೃಷ್ಟಿಕರ್ತನಾದ ಚತುರ್ಮುಖ. (ವಿಂ) 5. ಪೋಷಕ, ಸಾಕುವವನು. "ಭರ್ತಾ ಸ್ವಾಮಿನಿ ಪುಂಸಿ ಸ್ವಾತ್ ತ್ರಿಪು ಧಾತರೀ ಪೋಷರೀ" ಮೇದಿಂ। 6. ಯಜಮಾನ, ಮುಖಂಡ, ಮುಂದಾಳು. ನಾಯಕ. "ಸ್ವಭರ್ತುನಾಮಗ್ರಹಣಾಢ್ಭೂವ ಸಾಂದ್ರೇ ರಜಸ್ವಾತ್ಮ-ಪರಾವಬೋಧಃ" ರಘುಂ 7-41। "ಭರ್ತಾರೋ ಸ್ವಾಮಿಧಾರಕೌ" ಶಾಶ್ವಂ।

ಭರ್ತುಣಿ ಭರ್ತುಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪತಿಯನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವ ಲಕ್ಷ್ಮಣದ ಹಸ್ತದ ಒಂದು ರೇಖೆ. ಭರ್ತುರೀ ಹಂತಿ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) "ಢ್ಕ" (3-2-43)। "ಪತಿಣಿ ಪಾಣಿರೇಖಾ" ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಭರ್ತುಧಾರಕ ಭರ್ತುಧಾರಕ (ಪುಂ) ರಾಜಕುಮಾರ. ಭರ್ತುಃ ಅಧಿಪಸ್ಯ ರಾಜಃ ದಾರಕಃ ಪುತ್ರಃ। [ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಇದರ ಪ್ರಯೋಗ.]

ಭರ್ತುಧಾರಿಕಾ ಭರ್ತುಧಾರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾಜಕುಮಾರಿ. ಭರ್ತುಃ ರಾಜಃ ದಾರಿಕಾ ಪುತ್ರಿ। [ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಇದರ ಪ್ರಯೋಗ.]

ಭರ್ತುಮತೀ ಭರ್ತುಮತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುಮಂಗಲಿ, ಪತಿಯುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. "ಸತೀಮಪಿ ಜಾತಿಕುಲಕಸಂಶ್ರಯಾಂ ಜನೋಜ್ಯಥಾ ಭರ್ತುಮತೀಂ ವಿಶಿಷ್ಟತೇ" ಶಾಕುಂ 5-17।

ಭರ್ತುಹರಿ ಭರ್ತುಹರಿ (ಪುಂ) ವಾಕ್ಯಪದೀಯ ಶೃಂಗಾರ ನೀತಿ ಮತ್ತು ವೈರಾಗ್ಯಶತಕಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಕವಿ.

ಭರ್ತುನ ಭರ್ತುನ (ನಂ) ಅಪಕಾರದ ಮಾತು, ಹೆದರಿಕೆಯ ಮಾತು. ಭರ್ತು (ತರ್ಜನೆ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್"

(3-3-114)। "ಯುಚ್" (3-3-107)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭರ್ತುನಾ ಭರ್ತುನಾ. "ಭರ್ತುನಾಶ್ಚ ಮಧುರಸ್ಮಿತಗರ್ಭಃ" ಮಾಧಂ 10-69।

ಭರ್ತುಯತ್ ಭರ್ತುಯತ್ (ವಿಂ) ಹೆದರಿಸಿ ಮಾತನಾಡು ತಿರುವ. ಭರ್ತು (ತರ್ಜನೆ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಜೀಪ್" (4-1-6)। —ಯಂತಿ —ಯಾಸ್ತು. "ಶಾನುಚ್" (3-2-124)। —ಯಮಾಣಃ. "ಭರ್ತುಯಶ್ಚಿವ ವಾಗ್ಜಾಲಃ ಪ್ರಜಯೋಪಹಸಶ್ಚಿವ" ಪ್ರಬೋಧಂ 2-2।

ಭರ್ತಿಸತ ಭರ್ತಿಸತ (ವಿಂ) 1. ಹೆದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಬೆದರಿಸಿ ಮಾತನಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಭರ್ತು (ತರ್ಜನೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102)। (ನಂ) 2. ಹೆದರಿಸಿ ಮಾತನಾಡುವುದು. ಭರ್ತು ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114)।

ಭರ್ಮಣ್ಯಾ ಭರ್ಮಣ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇತನ, ಕೂಲಿ, ಸಂಬಳ. ಭರ್ಮಣಿ ಭರಣಿ ಸಾಧುಃ — ಭರ್ಮನ್ "ಯತ್" (4-4-96)।

ಭರ್ಮನ್ ಭರ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 2. ಕೂಲಿ, ಸಂಬಳ. ಭೂಮ್ (ಭರಣಿ) "ಮನಿನ್" (3-4-144)। "ಭೃತಿಕಾಚ್ಚನಯೋರ್ಮಮ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। "ಭರ್ಮ ಸ್ವಾತ್ ಕಾಚ್ಚನೇ ಭೃತೀ" ಮೇದಿಂ। 3. ಪೋಷಕ, ಸಾಕುವುದು, ಕಾಪಾಡುವುದು, ಸಲಹುವುದು. "ಭಿಷಗಿಭರಾಪ್ತೇರಥ ಗರ್ಭ-ಭರ್ಮಣಿ" ರಘುಂ 3-19। 4. ಭಾರ, ಹೊರ. 5. ನಾಭಿ, ಹೊಕ್ಕುಳು. "ಭರ್ಮ ಸ್ವರ್ಣಂ ಭೃತೀ ಭಾರೆ" ವಿಶ್ವಂ। 6. ರೇತಸ್ಸು, ವೀರ್ಯ. "ಹೇಮಿನಿ ರೇತಸಿ ಭರ್ಮ ಸ್ವಾತ್" ನಾನಾರ್ಥಂ।

ಭರ್ಮಿನ್ ಭರ್ಮಿನ್ (ಪುಂ) ಬಾಹ್ಯದಿಂದ ಪುಲ್ಕಿಸಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು. "ಪುಲ್ಕಸೀ ಭರ್ಮಿಣಿ ಸುತೇ" ವೇಜಂ।

ಭಲಹ ಭಲಹ (ಪುಂ) ನಾಯಿ. "ಕೋಲಯಕೋಽಸ್ಥಿವಾದಾಶ್ಚ ಭವನೋ ಭಲಹೋಽಪಿ ಚ" ವೇಜಂ।

ಭಲ್ಲ ಭಲ್ಲ (ಪುಂ) 1. ಭಲ್ಲಾಕ, ಕರಡಿ. 2. ಅರ್ಧಚಂದ್ರಾಕಾರದ ಒಂದು ಶಸ್ತ್ರ. ಭಲ್ಲ (ಪರಿಮಾಣಹಿಸಾದಾನೇಷು) "ಅಚ್" (3-1-134)। "ಭಲ್ಲಃ ಸ್ವಾತ್ಪುಂಸಿ ಭಲ್ಲುಕೇ ಶಸ್ತ್ರಭೇದೇ ಪುನರ್ದಯೋಃ" ಮೇದಿಂ। "ಭಲ್ಲೇನ ಶಿತಧಾರೆಣ ಮಿಶ್ರೋಽಪಿ ರಿಪುಣಾಶ್ವಗಃ" ಕುಮಾಂ 16-44। "ಕವಚಿದಾಕರ್ಣ ವಿಕೃಷ್ಟಭಲ್ಲವರ್ಷಿ" ರಘುಂ 9-66।

ಭಲ್ಲಾತ ಭಲ್ಲಾತ (ಪುಂ) ಗೇರುಮರ.

ಭಲ್ಲಾತಕ ಭಲ್ಲಾತಕ (ಪುಂ) 1. ಗೇರುಮರ. ಭಲ್ಲಾತಕ ಇವಾತತಿ—ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೇ) "ಕುನ್" (3-2-32)। "ವೀರವೃಕ್ಷೋಽಘೋಽಗ್ನಿಮುಖೀ ಭಲ್ಲಾತಕೀ ತ್ರಿಪು" ಅಮಂ। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಭಲ್ಲಾತಕೀ ಭಲ್ಲಾತಕೀ. (ನಂ) 2. ಗೇರುಹಣ್ಣು.



ಬಲ್ಲೆ ಛೇ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ವಿಧ ಶಸ್ತ್ರ. "ಬಲ್ಲೆ  
ಬಲ್ಲೆ ಚ ಬಾಣೇ ಸ್ಯಾತ್ ಬಲ್ಲೆ ಬಲ್ಲಕ ಉಚ್ಯತೇ" ವಿಶ್ವಂ ।  
2. ಗೇರುಮರ. "ಬಲ್ಲಾತಕಾಂ ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಬಲ್ಲೆ" ಮೇದಿಂ ।

ಬಲ್ಲು(ಲ್ಲ್)ಕ ಛೇ(ಲ್ಲ್)ಕ (ಪುಂ) 1. ಕರಡಿ. ಬಲ್ಲತಿ  
ಹಿನಸ್ತಿ—ಬಲ್ಲ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಃ" ಬಾಹುಂ । "ಕನ್"  
(೪-೩-೮೪) । "ಊಕ:" (ಉಂ ೪-೪೧) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ  
"ಛೇ" (೪-೧-೬೩) । ಬಲ್ಲು(ಲ್ಲ್)ಕ ಛೇ(ಲ್ಲ್)ಕ ೧.  
"ಬಲ್ಲುಕೋ ಬಲ್ಲುಕೋಽಪಿ ಚ" ಶಬ್ದಭೇದಂ । "ಅಥ ಬಲ್ಲುಕೇ ।  
ಶ್ರುಕ್ಷಾಚ್ಚಬಲ್ಲಬಲ್ಲುಕಾ:" ಅಮಂ । "ದಧತಿ ಕುಹರಬಾಜಾಮತ್ರ  
ಬಲ್ಲುಕಯುನಾಮ್" ಉಂ ರಾಂ ೨-೨೧ । 2. ವಾನರ, ಕಪಿ.  
"ಕಪಿ: ಶಾಖಾಮೃಗೋ ಹರಿ: । ಮಹಾವೇಗೋ ದಧಿಮುಖ: ಕುರಜ್ಞೋ  
ಬಲ್ಲುಕ: ಪೃಥು:" ವೇಜಂ ।

ಭವ ಛೇ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾದೇವ, ಶಂಕರ, ಪರಶಿವ,  
ಪರಮೇಶ್ವರ. ಭವತಿ ಭವತೇ ವಾ—ಭೂ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಅಚ್"  
(೩-೧-೧೩೪) । "ಆಲಂಬತಾಪ್ರಕರಮತ್ರ ಭವೋ ಭವಾನ್ಯಾ:"  
ಕಿರಾಂ ೪-೨೯ । "ತಾವತ್ಸ ವಹ್ನಿರ್ಮವನೇತ್ರಜನ್ಮಾ" ಕುಮಾಂ  
೩-೭೨ । 2. ಸಂಸಾರ. "ತದಿಚ್ಛಾಮೋ ವಿಮೋ ಸೃಷ್ಟುಂ  
ಸೇನಾನ್ಯಂ ತಸ್ಯ ಶಾಂತಯೇ । ಕರ್ಮಬಂಧುಚ್ಛಿದಂ ಭಮಂ ಭವಸ್ಯೇವ  
ಮುಮುಕ್ಷವ:" ಕುಮಾಂ ೨-೪೧ । 3. ಜನ್ಮ, ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟು.  
ಭೂ "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭) । "ಬಭೂವ ಸರ್ವಂ ಶುಭಶಾಂತಿ  
ತತ್ಕ್ಷಣಂ ಭವೋ ಹಿ ಲೋಕಾಮೃದಯಾ ತಾದೃಶಾಮ್" ರಘುಂ ೩-೧೪ ।  
4. ಸತ್ತೆ, ಇರುವಿಕೆ. 5. ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಹೊಂದುವಿಕೆ.  
6. ಕ್ಷೇಮ, ಕುಶಲ, ಸೌಖ್ಯ. "ಭವ: ಕ್ಷೇಮಶಾಂತಿಸಾರೇ  
ಸತ್ತಾಯಾಂ ಪ್ರಾಪ್ತಿಜನ್ಮನೋ:" ಮೇದಿಂ । (ನಂ) 7. ಫಲ.

ಭವಚ್ಛಿದ್ ಭವಚ್ಛೇದ (ವಿಂ) ಸಂಸಾರವನ್ನು ನಿವೃತ್ತಿಗೊಳಿಸುವ,  
ಇಹಲೋಕದ ಜೀವನವನ್ನು ಕೊನೆಗಾಣಿಸುವ.  
ಭವಂ ಸಂಸಾರಂ ಚಿನತ್ತಿ—ಚ್ಛಿದಿರ್ (ದ್ವಿಧೀಕರಣೇ) "ಕ್ವಿಪ್"  
(೩-೨-೬೧) । "ಆಗಮಾದಿವ ತಮೋಽಪಹಾದಿತ: ಸಂಭವಂತಿ  
ಮತಯೋ ಭವಚ್ಛಿದ:" ಕಿರಾಂ ೪-೨೨ ।

ಭವಚ್ಛೇದ ಭವಚ್ಛೇದ (ಪುಂ) ಸಂಸಾರದ ನಿವೃತ್ತಿ, ಇಹ  
ಲೋಕದ ಜೀವನವನ್ನು ಕೊನೆಗಾಣಿಸುವುದು. ಭವಸ್ಯ  
ಸಂಸಾರಸ್ಯ ಛೇದ: ।

ಭವಚ್ಛೇದಕರ ಭವಚ್ಛೇದಕರ (ವಿಂ) ಸಂಸಾರಬಂಧನ  
ವನ್ನು ಬಿಡಿಸುವ. ಭವಸ್ಯ ಛೇದಂ ಕರೋತಿ—ಕೃ (ಕರಣೇ)  
"ಃ" (೩-೨-೨೦) । "ಭವಾನ್ ಭವಚ್ಛೇದಕರ: ಕರೋತ್ಯಥ:"  
ಮಾಘಂ ೧-೩೪ ।

ಭವತ್ ಭವತ್ (ವಿಂ) 1. ನೀನು ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ  
ಗೌರವದ ಪದ. ಭಾತಿತಿ ಭವಾನ್—ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) "ಛವತು:"

(ಉಂ ೧-೬೩) । (ಪುಂ) ಭವಾನ್ ಭವಂತೌ ಭವಂತ: ।  
"ಭವದ್ಗಿರಾಮವಸರಪ್ರದಾನಾಯ ವಚಾಂತಿ ನ:" ಮಾಘಂ ೨-೮ ।  
"ಭವಲ್ಲಬ್ಬವರೋದೀರ್ಣಸ್ತಾರಕಾಸ್ಯೋ ಮಹಾಸುರ:" ಕುಮಾಂ ೨-೩೨ ।  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭವತೀ ಭವತೃ ಭವತೃ: । "ದೇವಿ, ಪ್ರಬಲ-  
ಚಿಂತಾಕುಲಹೃದಯಾಮಿವ ಭವತೀಮವಲೋಕಯಾಮಿ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೪ ।  
ಈ ಭವತ್ ಪದವು ಅತ್ರ ಮತ್ತೂ ತತ್ರ ಪದಗಳೊಡನೆ ಸೇರಿ  
ದಾಗಿ ಪೂಜ್ಯಾರ್ಥಕವಾಗುವುದು. "ಸಜ್ಜಿತರಚನಾಂ ಕೃತ್ವಾ  
ಅತ್ರಭವತೋ ದ್ವಿತಂ ಪ್ರೇಷಯತಮ್" ಮಾಲಂ ೧ । "ಆದಿಷ್ಟೋಽಸ್ಮಿ  
ತತ್ರಭವತಾ ಕಾಷ್ಯಪೇನ" ಶಾಕುಂ ೪ । 2. ವರ್ತಮಾನ  
ಕಾಲದ, ಈಗ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ ಕಾಲದ. ಭೂ "ಶತ್"  
(೩-೨-೧೨೪) । "ಭೂತಂ ಭವದ್ಭಾವಿ ಚ ಯನ್ವ ಕಿಂಚಿತ್  
ಸರ್ವಜ್ಞ ಸರ್ವಂ ತವ ಗೋಚರಂ ತತ್" ಕುಮಾಂ ೧೨-೪೪ ।  
3. ಹುಟ್ಟುವ, ಉಂಟಾಗುವ, ಸಂಭವಿಸುವ. "ಭವನ್  
ಭಯಾಯ ಲೋಕಾನಾಮಾಕಂಪಿತಮಹೀತಲ:" ಮಾಘಂ ೧೯-೪ ।  
4. ಆಗಿರುವ, ಉಂಟಾಗಿರುವ, "ಭವ್ಯೋ ಭವನ್ಮಪಿ ಮುನೇರಿಹ  
ಶಾಸನೇನ ಕ್ಷಾತ್ರೇ ಸ್ಥಿತ: ಪಥಿ ತಪಸ್ಯ ಹತಪ್ರಮಾದ:" ಕಿರಾಂ  
೪-೪೯ । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಛೇ" (೪-೧-೬) । ಭವಂತೀ ಭವಂತೀಃ ।

ಭವತೀ ಭವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಷಲೇಪನ ಮಾಡಿದ ಬಾಣ.

ಭವದೀಯ ಭವದೀಯ (ವಿಂ) ನಿನ್ನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಭವತ:  
ಅಯಮ್ "ಛಸ್" (೪-೨-೧೧೪) । "ಛವತು" ಪ್ರತ್ಯಯಾನ್ತ  
ವಾದ ಸರ್ವನಾಮ ಭವತ್ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಮಾತ್ರ "ಛಸ್"  
ಪ್ರತ್ಯಯ ಬರುವುದು. "ಶತ್" ಪ್ರತ್ಯಯಾನ್ತ ಭವತ್  
ಶಬ್ದಕ್ಕೆ "ಅನ್" ಪ್ರತ್ಯಯ ಬಂದು ಭಾವತ: ಭಾವತಃ  
ಎಂದು ರೂಪವಾಗುವುದು. "ಅಪಿ ದೃಷ್ಟಮಪಿ ಶ್ರುತಂ ಪ್ರಭಾವಂ  
ಭವದೀಯಂ ಭವಿನಸ್ತಮೋಽಭಿಮುತಾ:" ಯಾದಂ ೧೪-೨೪ ।

ಭವನ ಭವನ (ನಂ) 1. ಗೃಹ, ಮನೆ. ಭವನ್ಯತ್ರ—ಭೂ  
(ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) । "ಭವನೋದರೇಷು  
ಪರಿಮಂದತಯಾ ಶಯಿತೋಲ್ಲಸ: ಸ್ಫಟಿಕಯಷ್ಟಿರುಚ:" ಮಾಘಂ  
೧-೩೯ । "ಭವನವಲಮಿತುಜ್ಜವಾತಾಯನಸ್ಥಾ" ಮಾಲತೀಂ  
೧-೧೮ । 2. ಭಾವ, ಅಭಿಪ್ರಾಯ. 3. ಸತ್ತೆ, ಅಸ್ತಿತ್ವ,  
ಇರುವಿಕೆ. ಭೂ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) । "ಭವನಂ  
ಸ್ಯಾತ್ ಗೃಹೇ ಭಾವೇ" ಮೇದಿಂ । 4. ಸ್ಥಾನ, ಆಶ್ರಯ.  
5. ಜನ್ಮ, ಉತ್ಪತ್ತಿ. "ಜನ್ಮಾಶ್ರಯಶ್ಚ ಭವನಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।  
6. ಉಂಟಾಗುವುದು, ಸಂಭವಿಸುವುದು. (ಪುಂ) 7. ನಾಯಿ.  
"ಕೌಲೇಯಕೋಽಸ್ಥಿತ್ವಾದಶ್ಚ ಭವನೋ ಭಲುಹೋಽಪಿ ಚ" ವೇಜಂ ।

ಭವನೀಯ ಭವನೀಯ (ವಿಂ) ಆಗಬೇಕಾದ, ಸಂಭವಿಸ  
ಬೇಕಾದ. ಭವಿತುಮಹಂ ಭೂ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) ।  
"ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) । ಭವಿತವ್ಯಮ್ ಭವಿತವ್ಯಮ್ ।



“ವಿಪತ್ತಿ ಕಿ ವಿಪಾದೇನ ಸಂಪತ್ತಿ ಹರ್ಷಣೇನ ಕಿಮ್ | ಭವಿತವ್ಯಂ  
ಭವತ್ಯೇವ ಕರ್ಮಣಾಮಿದೃಶಿ ಗತಿಃ” |

**ಭವಭೂತಿ ಭವಭೂತಿ** (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಮಹಾಕವಿ. ಈ ಕವಿಯು  
ಕ್ರಿ.ಶ. 7 ನೆಯ ಶತಮಾನದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿದ್ದನೆಂದು ಚರಿತ್ರೆ  
ಯಿಂದ ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ. ಈತನು ವಿದರ್ಭದೇಶದ  
ಪದ್ಮಪುರದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು. ನೀಲಕಂಠನೆಂಬುವನು  
ಈತನ ತಂದೆ. ಜಾತುಕರ್ಣಿಯು ತಾಯಿ, ಶ್ರೀಕಂಠ  
ನೆಂದು ಈ ಕವಿಯ ನಾಮಕರಣದ ಹೆಸರು. ಈತನಿಗೆ  
ಆಶ್ರಯದಾತನಾಗಿದ್ದ ಯಶೋವರ್ಮರಾಜನು “ಸಾಮ್ಬಾ  
ಪುನಾತು ಭವಭೂತಿಪವಿತ್ರಮೂರ್ತಿಃ” ಎಂಬ ಈ ಕವಿಯ ಶ್ಲೋಕ  
ದಿಂದ ಸಂತೋಷಗೊಂಡು ಇವನಿಗೆ “ಭವಭೂತಿಃ” ಎಂಬ  
ಹೆಸರನ್ನಿಟ್ಟು ಅದೇ ಹೆಸರಿನಿಂದ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಗೊಳಿಸಿದನು.  
ಪರಮೇಶ್ವರನೇ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಿ ಬಂದು ಈತನಿಗೆ ಭೂತಿ  
ಯನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದುದರಿಂದ ಭವಾಭೂತಿರಸ್ಯ  
ಎಂದು ಈತನಿಗೆ ಅನ್ವರ್ಥನಾಮವಾಯಿತೆಂದು ಒಂದು ಕಥೆ.  
ಈ ಕವಿಯಿಂದ (1) ಮಹಾವೀರಚರಿತಮ್, (2) ಮಾಲತೀಮಾಧವಮ್  
ಮತ್ತು (3) उत्तररामचरितम् ಎಂಬ ಮೂರು ರೂಪಕ  
ಗಳು ರಚಿತವಾಗಿವೆ. ಮೊದಲ ಎರಡು ರೂಪಕಗಳ  
ಶೈಲಿಯು ಕ್ಲಿಷ್ಟವಾದುದು. “उत्तरे रामचरिते भवभूति-  
विशिष्यते” ಎಂದು ಕೊಂಡಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಈ ಕವಿಯ ಶೈಲಿಯು  
ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತದಲ್ಲಿ ದ್ರಾಕ್ಷಾಪಾಕಕ್ಕಿಳಿದು ಭಾವುಕ  
ರಿಗೆ ಪರಮ ಭೋಗ್ಯವಾಗಿರುವುದು.

**ಭವವೀತಿ ಭವವೀತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಸಾರಬಂಧವಿಮೋಚನೆ,  
ಸಂಸಾರದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ. ಭವಾವೀತಿಃ | “ಭವವೀತಯೇ  
ಹತಬೃಹತ್ತಮಸಾಮವಬೋಧವಾರಿ ರಜಸಃ ಶಮನಮ್” ಕಿರಾಂ  
೬-೪೧ |

**ಭವಾತಿಗ ಭವಾತಿಗ** (ವಿಂ) ಸಂಸಾರವನ್ನು ದಾಟಿದವನು,  
ಸಂಸಾರಬಂಧವಿಮೋಚನೆ ಹೊಂದಿದವನು. ಭವಂ ಸಂಸಾರ-  
ಮತಿಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ಙಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) |

**ಭವಾತ್ಮಜ ಭವಾತ್ಮಜ** (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಷಣ್ಮುಖ.  
2. ವಿನಾಯಕ, ಗಣಪತಿ. ಭವಸ್ಯ ಆತ್ಮಜಃ |

**ಭವಾದೃಶ ಭವಾದೃಶ** (ವಿಂ) ನಿನ್ನಂತಹ, ನಿನ್ನಂತಿರುವ.  
ಭವಾನಿವ ದೃಶ್ಯತೇ—ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) “ಕಿವನ್” (೩-೨-೬೦) |  
ಆತ್ಮಮ್ (೬-೩-೯೧) | “ಕಜ್” (೩-೨-೬೦) | ಭವಾದೃಶಃ  
ಭವಾದೃಶಃ. “ಕಸಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೪೭) | ಭವಾದೃಶಃ  
ಭವಾದೃಶಃ. ಕಿವಿನಿ ಕವಿ ಚ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೪,  
೪-೧-೧೪) | ಭವಾದೃಶಿ ಭವಾದೃಶೀ. ಕಸೇ “ಟಾಪ್”  
(೪-೧-೪) | ಭವಾದೃಶಿ ಭವಾದೃಶಿ. “ಧ್ವಂಸತೇ ಯದಿ

ಭವಾದೃಶಸ್ತತಃ ಕಃ ಪ್ರಯಾತು ವದ ತೇನ ವರ್ತಮಾ” ಕಿರಾಂ  
೧೩-೪೧ | “ಭವಾದೃಶೇಷು ಪ್ರಮದಾಜನೋದಿತಂ ಭವತ್ಯಧಿಕೋಪ  
ಇವಾನುಶಾಸನಮ್” ಕಿರಾಂ ೧-೨೮ |

**ಭವಾನಿ ಭವಾನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭವನ ಪತ್ನಿ, ಪರಮೇಶ್ವರನ  
ಸತಿ, ಪಾರ್ವತೀದೇವಿ. ಭವಸ್ಯ ಪತ್ನಿ—ಭವ “ಙೀಪ್”  
ಆನುಕ್ ಆಗಮಶ್ಚ (೪-೧-೪೯) | “ಆಲಮ್ಬತಾಪ್ರಕರಮತ್ರ  
ಭವೋ ಭವಾನ್ಯಾಚ್ಯೋತನ್ನಿರ್ದಾಪಸಲಿಲಾಙ್ಗುಲಿನಾ ಕರೇಣ”  
ಕಿರಾಂ ೪-೨೯ |

**ಭವಾಂತಕೃತ್ ಭವಾಂತಕೃತ್** (ಪುಂ) 1. ಚತುರ್ಮುಖ  
ಬ್ರಹ್ಮ. “ಯದಾ ಸ್ವಪಿತಿ ಶಾಂತಾತ್ಮಾ ತದಾ ಸರ್ವಂ ನಿಮಿಲತಿ”  
ಮನುಂ ೧-೪೨ | 2. ಸಂಸಾರಬಂಧವನ್ನು ಬಿಡಿಸುವ  
ಪರಮಾತ್ಮಜ್ಞಾನ.

**ಭವಾಯನಿ ಭವಾಯನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗಾನದಿ. ಭವಃ ಅಯನಂ  
ಸ್ಥಾನಂ ಯಸ್ಯಾಃ | ಗೌರಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೪೧) |

**ಭವಿಕ ಭವಿಕ** (ನಂ) 1. ಕುಶಲ, ಕ್ಷೇಮ. ಪ್ರಶಸ್ತೋ ಭವೋ  
ಭದ್ರಪ್ರಾಪ್ತಿರಸ್ತಾಸ್ತಿ “ಠನ್” (೪-೨-೧೧೪) | (ವಿಂ)  
2. ಶುಭಕರವಾದ, ಕ್ಷೇಮವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.

**ಭವಿತವ್ಯ ಭವಿತವ್ಯ** (ವಿಂ) ಆಗಬೇಕಾದ, ಸಂಭವಿಸ  
ಬೇಕಾದ. ಭವಿತುಮಹಂ “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬) | “ವಿಪತ್ತಿ  
ಕಿ ವಿಪಾದೇನ ಸಂಪತ್ತಿ ಹರ್ಷಣೇನ ಕಿಮ್ | ಭವಿತವ್ಯಂ ಭವತ್ಯೇವ  
ಕರ್ಮಣಾಮಿದೃಶಿ ಗತಿಃ” | “ಭವಿತವ್ಯಂ ಭವತ್ಯೇವ ಯದ್ವಿಧೇರ್ಮನಸಿ  
ಸ್ಥಿತಮ್” |

**ಭವಿತವ್ಯತಾ ಭವಿತವ್ಯತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಆಗ  
ಬೇಕಾಗುವಿಕೆ, ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಸಂಭವಿಸುವಿಕೆ. ಭವಿತವ್ಯಸ್ಯ  
ಭಾವಃ “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯) | “ಸರ್ವಕಥಾ ಭಗವತೀ  
ಭವಿತವ್ಯತೇವ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೩ |

**ಭವಿತ್ ಭವಿತ್** (ವಿಂ) 1. ಮುಂದೆ ಆಗುವ, ಭವಿಷ್ಯತ್  
ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸಂಭವಿಸುವ. ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “ತನ್”  
(೩-೨-೧೩೪) | 2. ಮುಂದೆ ಬೆನ್ನಾಗಿ ಆಗುವ ಸ್ವಭಾವದ,  
ಒಳ್ಳೆಯದಾಗಿ ಆಗುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೪) |  
ಭವಿತ್ರಿ ಭವಿತ್ರಿ. “ನೃಪಂ ತಮಾವರತಮನೋಜನಾಭಿಃ ಸಾ ವ್ಯತ್ಯ-  
ಗಾದನ್ಯವಧುರ್ಮವಿತ್ರಿ” ರಘುಂ ೬-೪೨ |

**ಭವಿನ್ ಭವಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಸಂಸಾರಿ, ಸಂಸಾರಬಂಧನಕ್ಕೆ  
ಒಳಗಾದವನು. ಭವೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಙಿನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪) |  
2. ಜೀವಿಸಿರುವವನು, ಬದುಕಿರುವವನು.

**ಭವಿಲ ಭವಿಲ** (ಪುಂ) 1. ಜಾರ, ವೈಭವಾರಿ, ಉಪಪತಿ.  
ಭೂ “ಙಲ್” (೩ಂ ೧-೪೪) | “ಪಿಠಕೇಲಿಃ ಪಿಠಮದೋ  
ಭವಿಲಶಿಕ್ಷುರೋ ವಿಠಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | (ನಂ) 2. ಗೃಹ,



ಮನೆ. 3. ಭವ್ಯವಾದ ಭವಿಷ್ಯತ್ತು, ಶುಭವಾದ ಮುಂದಿನ ಕಾಲ. "ಭವಿಲಂ ಭವನಿ ಭವ್ಯ" ವೈಜಂ.

**ಭವಿಷ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಮುಂದೆ ಬೆನ್ನಾಗಿ ಆಗುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಮುಂದೆ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಇಣ್ಣುಕ್" (3-2-138). ಸಿದ್ಧಾಂತ ಕೌಮುದಿಯಂತೆ ಈ ಪ್ರಯೋಗ. ಮಹಾಭಾಷ್ಯದಲ್ಲಿ "ಭವಃ ಇತ್ಯಪ್ರತಿಷೇಧಶ್ಚ" ಎಂದಿರುವುದರಿಂದ "ಭವಿಷ್ಯ" ಪದವು ನಿರಂಕುಶ ಕವಿಗಳ ಪ್ರಯೋಗ. 2. ಆಗುವ, ಸಂಭವಿಸುವ, ಒದಗುವ. "ಸಹೇಲಹಾಸಚ್ಚುರಿತಾನೇಂದ್ರ-ಸ್ತತಃ ಕುಮಾರಃ ಪುರತೋ ಭವಿಷ್ಯುಃ" ಕುಮಾಂ 13-13.

**ಭವಿಷ್ಯ (ತ್) ಭವಿಷ್ಯ (ತ್)** (ಪುಂ) 1. ಮುಂದಿನ ಕಾಲ, ಮುಂದೆ ಬರುವ ಕಾಲ. ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಸ್ಯಃ" (3-1-33). 2. ಮುಂದಿನ ಕಾಲದ, ಮುಂದಿನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ, ಮುಂದಿನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸಂಭವಿಸುವ. "ಭವಿಷ್ಯತಃ ಪತ್ಯುರ್ಮಾ ಚ ಶಮ್ಮೋಃ ಸಮಾಸಸಾದ ಪ್ರತಿಹಾರಭೂಮಿಮ್" ಕುಮಾಂ 3-58. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಜಿಪ್" (4-1-6). -ಽಯಂತಿ -ಽಪ್ರೀತಿ. "ಅವ್ಯಾಕ್ಷೇಪೋ ಭವಿಷ್ಯಂತ್ಯಾಃ ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿರ್ಹಿ ಲಕ್ಷಣಮ್" ರಘುಂ 10-6. (ನಂ) 3. ಭವಿಷ್ಯ ಪುರಾಣ, ಮುಂದಿನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಕುರಿತು ಬರೆದ ಪುರಾಣ.

**ಭವಿಷ್ಯತ್ಕಾಲ ಭವಿಷ್ಯತ್ಕಾಲ** (ಪುಂ) ಮುಂದಿನ ಕಾಲ, ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವ ಕಾಲ.

**ಭವಿಷ್ಯವಾವಿನ್ ಭವಿಷ್ಯನಾದಿನ್** (ವಿಂ) ಮುಂದಿನ ಕಾಲ ದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವುದನ್ನು ಹೇಳುವವನು, ಭವಿಷ್ಯ ನುಡಿಯುವವನು. ಭವಿಷ್ಯ ವದತಿ—ವದ "ಞಿನಿಃ" (3-2-98).

**ಭವ್ಯ ಭವ್ಯ** (ನಂ) 1. ಕುಶಲ, ಕ್ಷೇಮ, ಶುಭ. ಭವತಿ—ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) ವಾ ಕರ್ತಂ "ಯತ್" (3-4-68). ಪಕ್ಷೆ ಭೂತೇಜೇನ—ಭಾವೇ "ಯತ್". "ಭವ್ಯಮುಖ್ಯಾಃ ಸಮಾರಮ್ಭಾಃ ಪ್ರತ್ಯವೇಕ್ಷ್ಯಾ ನಿರತ್ಯಯಾಃ" ರಘುಂ 19-43. 2. ಅಸ್ಥಿ, ಎಲುಬು. 3. ಭವಿಷ್ಯತ್ಕಾಲ, ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವ ಕಾಲ. 4. ಸತ್ಯ, ನಿಜ. 5. ಅದೃಷ್ಟ, ಭಾಗ್ಯ. (ವಿಂ) 6. ಸತ್ಯವಾದ, ನಿಜವಾದ. 7. ಶುಭಕರ, ಮಂಗಳವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ. 8. ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಅರ್ಹನಾದ. "ಇತಿ ತ್ಯಾಜ್ಯೇ ಭವೇ ಭವ್ಯೋ ಮುಕ್ತಾವುತಿಷ್ಠತೇ ಜನಃ" ಕಿರಾಂ 11-13. 9. ಅದೃಷ್ಟವಂತ, ಭಾಗ್ಯಶಾಲಿ, ಪುಣ್ಯಶಾಲಿ. "ಸಾ ಭೂಧರಾಣಾಮಧಿಪೇನ ತಸ್ಯಾಂ ಸಮಾಧಿಮತ್ಯಾಮುದಪಾದಿ ಭವ್ಯಾ" ಕುಮಾಂ 1-22. 10. ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ, ಉತ್ತಮ

ನಾದ. "ಯತ್ಪಾದಪದ್ಮಮಭವಾಯ ಭಜಂತಿ ಭವ್ಯಾಃ" ಭಾಗಂ.

11. ಭವಿಷ್ಯತ್ಕಾಲದ, ಮುಂದಿನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ. 12. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ನಡೆಯಬೇಕಾದ, ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಆಗ ಬೇಕಾದ. "ಅವಶ್ಯಭವ್ಯೇಷ್ವನವಗ್ರಹಗ್ರಹಾ ಯಾ ದಿಶಾ ಧಾವತಿ ವೇಧಸಃ ಸ್ಪೃಹಾ" ನೈಷಂ 1-120. 13. ಶಾಂತನಾದ, ಸೌಮ್ಯನಾದ, ತಾಳ್ಮೆಯುಳ್ಳ. "ಭವ್ಯೋ ಭವನ್ತಪಿ ಮುನೇರಿಹ ಶಾಸನೇನ" ಕಿರಾಂ 4-49. 14. ಸಾಧು, ಒಳ್ಳೆಯವನು. "ವೀತಸ್ಪೃಹಾಣಾಮಪಿ ಮುಕ್ತಿಭಾಜಾ ಭವಂತಿ ಭವ್ಯೇಷು ಹಿ ಪಕ್ಷಪಾತಃ" ಕಿರಾಂ 3-12. (ಪುಂ) 15. ಕಡಾರದ ಗಿಡ, ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಹೆರಿಗೆ ಗಿಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವ್ಯಾ -ವ್ಯಾ. 16. ಗಜಹಿಪ್ಪಲಿ. 17. ಆಗಸೆ ಗಿಡ. "ಭವ್ಯಂ ಶುಭೇ ಚ ಸತ್ಯೇ ಚ ಯೋಗ್ಯೇ ಭಾವಿನಿ ಚ ತ್ರಿಷು. ಕರ್ಮರಂಜಿತರೌ ಪುನಿ ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಕರಿಕಣೋಮಯೋಃ. ಕಲಿಬರಮಸ್ಥಿನಿ" ಮೇದಿಂ.

**ಭವ ಭವ** (ಪುಂ) 1. ಶ್ವಾನ, ನಾಯಿ. ಭವತಿ—ಭವ (ಭತ್ಸನೆ) "ಅಚ್" (3-1-134). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವಾ -ವಾ. 2. ಘಂಟಾಮಣಿ ಸೊಪ್ಪು, ಕಂಕೋಷ್ಠ.

**ಭವಕ ಭವಕ** (ಪುಂ) ಶ್ವಾನ, ನಾಯಿ. ಭವ (ಭತ್ಸನೆ) "ಕುವುನ್" (3-2-32). "ಶುನಕೋ ಭವಕಃ ಸ್ವಾ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಜಿಪ್" (4-1-61). -ಕೀ -ಕೀ.

**ಭವಣ ಭವಣ** (ಪುಂ) 1. ನಾಯಿ, ಶ್ವಾನ. ಭವತಿ—ಭವ (ಭತ್ಸನೆ) "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134). "ಸ್ವಾ ಸಾರಮೇಯಃ ಶುನಕೋ ಭವಣೋ ಮೃಗದಂಶಕಃ" ವೈಜಂ. (ನಂ) 2. ನಾಯಿಯ ಕೂಗು, ನಾಯಿ ಬಗುಳುವುದು. ಭವ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಃ" (3-3-114). "ಬುಕ್ಕನಂ ಶ್ವಕೃತಧ್ವಾನೇ ಭವಣಂ ಭವಿತಂ ಶುನಃ" ವೈಜಂ.

**ಭವಿತ ಭವಿತ** (ನಂ) ನಾಯಿಯ ಶಬ್ದ, ನಾಯಿಯ ಕೂಗು. ಭವ (ಭತ್ಸನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-3-114). "ಭವಣಂ ಭವಿತಂ ಶುನಃ" ವೈಜಂ.

**ಭಸತ್ ಭಸತ್** (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. "ನಿಡೋದ್ಭವಃ ಶುಕೋ ನಿಡೋ ಮಲೂಕೋ ವಿಪ್ರುಷೋ ಭಸನ್" ವೈಜಂ. 2. ಕಾಲ, ವೇಳೆ. "ಕಾಲಸ್ತವಪಠ್ಯಜ್ಞಹಕೋ ಭಸಂತೋ ಭಸದಿತ್ಯಪಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಭಸದ್ ಭಸದ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಣದೇವತೆ. 2. ಮಾಂಸ. 3. ಯೋನಿ, ಸ್ತ್ರೀಯರ ಗುಹ್ಯಪ್ರದೇಶ, ಗುಹ್ಯಾಂಗ. ಭಸ (ಭತ್ಸನೆದೀಪ್ಯೋಃ) "ಅದಿಃ" (3-1-129). "ಭಸದ್ಭಾಸ್ವರಮಾಂಸಯೋಃ" ಹೇಮಂ. "ಭಸದ್ಸ್ತ್ರೀ ಭಾಸ್ವರೇ ಯೋನಿ" ಮೇದಿಂ.

**ಭಸಂತ ಭಸಂತ** (ಪುಂ) ಕಾಲ, ವೇಳೆ. ಭಸಂತಿ—ಭಸ (ಭತ್ಸನೆದೀಪ್ಯೋಃ) "ಜ್ಞಚ್" ಬಾಹುಂ.



**ಭಸಿತ ಭಸಿತ** (ನಂ) ವಿಭೂತಿ, ಭಸ್ಮ, ಬೂದಿ. ಭಸ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೩-೯೪) । "ಭೂತಿಭಸಿತಂ ಭಸ್ಮ ಕ್ಷಾರಂ ರಕ್ಷಾ ಚ ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾ" ಅಭಿಂ. ೨೦ ।

**ಭಸ್ಮಕಾ ಭಸ್ಮಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತೋಗಲಿನ ಚೀಲ. 2. ತೋಗಲಿನತಿದಿ. 3. ತೋಗಲಿನ ಪಾತ್ರೆ. ಭಸ (ದೀಪ್ತೌ) "ಫ್ರನ್" (೩ಂ ೪-೧೬೭) । "ಫ್ರನ್" (೪-೧-೪) । ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" । ವಾ ಇತ್ (೭-೩-೪೭) । ಇತ್ವಪಕ್ಷೇ **ಭಸ್ಮಿಕಾ ಭಸ್ಮಿಕಾ**.

**ಭಸ್ಮಾ ಭಸ್ಮಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತೋಗಲಿನ ಚೀಲ. 2. ತೋಗಲಿನ ತಿದಿ. 3. ತೋಗಲಿನ ಪಾತ್ರೆ. ಭಸ (ದೀಪ್ತೌ) "ಫ್ರನ್" (೩ಂ ೪-೧೬೭) ।

**ಭಸ್ಮಕ ಭಸ್ಮಕ** (ನಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಹಸಿವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಒಂದು ರೋಗ. ತಿಂದ ಆಹಾರವನ್ನು ಬೇಗ ಜೀರ್ಣ ಮಾಡುವ ಒಂದು ರೋಗ. ಭಸ್ಮನ್ ಸಂಜ್ಞಾಂ "ಕನ್" । ಬಹಳ ರೂಕ್ಷವಾದ (ವೇಗವಾದ) ಆಹಾರ ಸೇವನೆಯಿಂದ ಕಫವು ಕಡಮೆಯಾಗಿ ವಾತ ಮತ್ತು ಪಿತ್ತಗಳು ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿ ಅಗ್ನಿಯು ವೇಗವಾಗುವುದರಿಂದ ತಿಂದ ಆಹಾರವು ಬೇಗ ಜೀರ್ಣವಾಗುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ಭಸ್ಮಕ ರೋಗವೆಂದು ಹೆಸರು. ಇದನ್ನು ಉಪೇಕ್ಷಿಸಿದರೆ ಕ್ಷಯರೋಗಕ್ಕೆ ತುತ್ತಾಗ ಬೇಕಾಗುವುದು. "ಕಡ್ವಾದಿರೂಕ್ಷಾನ್ನಮುಜಾಂ ನರಾಣಾಂ ಕ್ಷೀಣೇ ಕಫೇ ಮಾರುತಪಿತ್ತವೃದ್ಧೌ । ಅತಿಪ್ರವೃದ್ಧಃ ಪವನಾನ್ವಿತೋಽಗ್ನಿಃ ಭುಕ್ತಂ ಕ್ಷಣಾಢ್ನಸ್ಮ ಕರೋತಿ ಯಸ್ಮಾತ್ । ತಸ್ಮಾದಸೌ ಭಸ್ಮಕ-ಸಂಜ್ಞಕೋಽಭುದುಪೇಕ್ಷಿತೋಽಪ್ಯ ಪಚತೇ ಚ ಧಾತುನ್" ॥ ಜಾಠರಾಗ್ನಿಯ ವೇಗದಿಂದ ಬಾಯಾರಿಕೆ ಬೆವರು ಸಂತಾಪ (ಜ್ವರ) ಮೂರ್ಛೆ ಮುಂತಾದ ತೊಂದರೆಗಳಾಗಿ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಧಾತುಗಳು ನಾಶವಾಗುವುವು. "ತೃಡ್ಸ್ವೇದದಾಹಮುರ್ಚಾದಿನ್ ಕೃತ್ವೇವಾಲ್ಯಗ್ನಿಸಂಭವಾನ್ । ಪಕ್ವಾನ್ನಮಾಶು ಧಾತ್ವಾದಿನ್ ಸಂ ಕ್ಷಿಪ್ರಂ ನಾಶಯೇದ್ಧುವಮ್" ಮಾವ್ರಂ । 2. ವಾಯುವಿಳಂಗ. 3. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 4. ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ. "ಭಸ್ಮಕಂ ರೋಗಭೇದೇ ಸ್ಯಾದ್ವಿಡ್ವಜ್ಜಕಲಧಿತಯೋಃ" ವಿಶ್ವಂ ।

**ಭಸ್ಮಗಂಧಾ ಭಸ್ಮಗಂಧಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರೇಣುಕ ಎಂಬ ಒಂದು ಗಂಧದ್ರವ್ಯ. ಭಸ್ಮನ ಇವ ಗಂಧೋತ್ಪತ್ತಿಃ ।

**ಭಸ್ಮಗಂಧಿನಿ ಭಸ್ಮಗಂಧಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರೇಣುಕ ಎಂಬ ಒಂದು ಗಂಧದ್ರವ್ಯ. ಭಸ್ಮನಃ ಗಂಧೋತ್ಪತ್ತಿಃ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) । "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫) । "ಹರೇಣು ರೇಣುಕಾ ಕೌಂತಿ ಕಪಿಲಾ ಭಸ್ಮಗಂಧಿನಿ" ಅಮಂ ।

**ಭಸ್ಮಗರ್ಭಾ ಭಸ್ಮಗರ್ಭಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಬಲವರ್ಣದ ಅಗುರು. "ಅಥ ಪಿಂಚಿಲಾಽಗುರ್ದಿಶಿಷಾಃ । ಕಪಿಲಾ ಭಸ್ಮಗರ್ಭಾ ಸಾ" ಅಮಂ ।

**ಭಸ್ಮತೂಲ ಭಸ್ಮತೂಲ** (ನಂ) 1. ಗ್ರಾಮಗಳ ಸಮೂಹ, ಹಳ್ಳಿಗಳ ಗುಂಪು. ಭಸ್ಮ ತೂಲಯತಿ—ತೂಲ (ನಿಷ್ಕರ್ಷೆ) + ಣಿಚ್ "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫) । 2. ಧೂಳಿನ ಸುರಿಮಳೆ. 3. ಹಿಮ, ಮಂಜು. "ಭಸ್ಮತೂಲಂ ಗ್ರಾಮಕೂಟಂ ಪಾಸುರ್ವಪ್ತಂ ಹಿಮೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ ।

**ಭಸ್ಮಧಾರಣ ಭಸ್ಮಧಾರಣ** (ನಂ) ವಿಭೂತಿಯ ಧಾರಣೆ, ವಿಭೂತಿಯನ್ನು ಹಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಭಸ್ಮನೋ ಧಾರಣಮ್ । —ಲೇಪನಮ್ —ಲೇಪನಮ್.

**ಭಸ್ಮಧಾರಣ ವಿಧಿ:** ಕಾಂತಿ ಮತ್ತು ಸೌಖ್ಯವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವರು ಅಮಂತ್ರಕವಾದ ಗಂಧ ಅಗುರು ಮತ್ತು ಕೇಸರಿ ಇವುಗಳನ್ನು ತಿರ್ಯಕ್ಪುಂಡ್ರವಾಗಿ ಧರಿಸಬೇಕು. ಈ ಪುಂಡ್ರವನ್ನು ಧರಿಸಿದರೂ ಭಸ್ಮಧಾರಣೆಯಾಗಬೇಕು. "ವೈದಿಕಂ ಮನ್ತ್ರಂ ರಹಿತಂ ಚಂದನಾಗುರುಕ್ತುಕುಮಮ್ । ತಿರ್ಯಕ್-ಪುಂಡ್ರಾತ್ಮನಾ ಧಾರ್ಯ ಕಾಂತಿಸೌಖ್ಯಾಭಿಲಾಷಿಭಿಃ । ಪುಂಡ್ರೋ ಧೃತ-ಶ್ಚಂದನಾದೇರಪಿ ಭಸ್ಮ ನ ಸಂತ್ಯಜೇತ್ । ದಹ್ಯತ ಭಸ್ಮಸಂತ್ಯಾಗೀ ಸತೀಶಕ್ರೋಧವಹ್ನಿತಃ । ಚಂದನಾದುಪರಿ ಪ್ರಾಜ್ಞೋ ಧಾರಯೇದ್ಭಸ್ಮ ವೈದಿಕಮ್ । ಲೌಕಿಕಂ ಚಂದನಾಘಂ ತು ಭಸ್ಮೋಪರಿ ನ ಧಾರಯೇತ್" । ಭಸ್ಮಧಾರಣೆಮಾಡಿ ಅದರ ಮೇಲೆ ಚಂದನಾದಿ ತ್ರಿಪುಂಡ್ರ ವನ್ನು ಧರಿಸಕೂಡದು. ಭಸ್ಮಧಾರಣೆಯಿಲ್ಲದೆ ಮಾಡುವ ಶಿವಪೂಜೆಯಿಂದ ಫಲವಿಲ್ಲ. "ವಿನಾ ಭಸ್ಮತ್ರಿಪುಂಡ್ರೇಣ ವಿನಾ ಕ್ಷತ್ರಾಕ್ಷಮಾಲಯಾ । ಮಹಾದೇವೋಽರ್ಚಿತೋ ಯೇನ ನ ಚ ತಸ್ಯ ಫಲಪ್ರದಃ" ಲಿಂಗಪುಂ ।

**ಭಸ್ಮನ್ ಭಸ್ಮನ್** (ನಂ) 1. ಭಸ್ಮ, ಬೂದಿ. ಭಸ (ದೀಪ್ತೌ) "ಮನಿನ್" (೩-೨-೭೫) । 2. ವಿಭೂತಿ, ಧಾರಣೆಗಾಗಿ ಮಂತ್ರಪೂರ್ವಕ ಬೆರಣಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ತಯಾರಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟ ಬೂದಿ. "ಭಸ್ಮಾನುಲಿಪ್ತೇ ವಪುಷಿ ಸ್ವಕೀಯೇ ಸಹೇಲ-ಮಾದರ್ಶತಲಂ ವಿಮೃಜ್ಯ" ಕುಮಾಂ ೯-೨೮ ।

**ಭಸ್ಮಸಾತ್ ಭಸ್ಮಸಾತ್** (ಅವ್ಯಂ) ಭಸ್ಮವಾಗಿ, ಸಂಪೂರ್ಣ ಬೂದಿಯಾಗಿ. ಭಸ್ಮ ಕಾತ್ಸರ್ಯೇನ ಸಂಪನ್ನಮ್ — ಭಸ್ಮನ್ ವಾ "ಸಾತಿಃ" (೪-೪-೫೨) । ಈ ಸಾತಿ ಪ್ರತ್ಯಯವು ಕೃಷ್ಣ ಭೂ ಮತ್ತು ಅಸ ಧಾತುಗಳ ಯೋಗವಿದ್ದಲ್ಲಿ ಅಭೂತ ತದ್ಭಾವಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ವಿಕಲ್ಪವಾಗಿ ಬರುವುದು. ಭಸ್ಮ-ಸಾಙ್ಗವತಿ, ಭಸ್ಮೀಭವತಿ । ಅಗ್ನಿಸಾಙ್ಗವತಿ, ಅಗ್ನೀಭವತಿ, ಭಸ್ಮಸಾತ್ಕರೋತಿ, ಭಸ್ಮೀಕರೋತಿ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಭಸ್ಮಾವಶೇಷ ಭಸ್ಮಾವಶೇಷ** (ವಿಂ) ಭಸ್ಮರೂಪದಲ್ಲಿ ಉಳಿದಿರುವ. ಭಸ್ಮವಾವಶೇಷೋ ಯಸ್ಯ । "ತಾವತ್ಸ ವಹ್ನಿ-ಭವನೇತ್ರಜನ್ಮಾ ಭಸ್ಮಾವಶೇಷಂ ಮದನಂ ಚಕಾರ" ಕುಮಾಂ ೩-೭೨ ।



**ಭಸ್ಮಾಸುರ ಭಸ್ಮಾಸುರ** (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಅಸುರ. [ಈ ಅಸುರನು ಪರಮೇಶ್ವರನನ್ನು ಕುರಿತು ತಪಸ್ಸುಮಾಡಿ ತನಗೆ ಯಾರಿಂದಲೂ ಮರಣ ಕೂಡದೆಂದೂ ತಾನು ಯಾರ ತಲೆಯ ಮೇಲೆ ಕೈಯಿಟ್ಟರೂ ಅವರು ಭಸ್ಮವಾಗ ಬೇಕೆಂದೂ ವರ ಪಡೆದನು. ಈ ವರವನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸಲು ಒಂದು ಸಲ ಈಶ್ವರನ ತಲೆಯ ಮೇಲೆ ಕೈಯಿಡಲು ಹೋಗಲಾಗಿ ಈಶ್ವರನು ಈ ವಿಷಯವನ್ನು ವಿಷ್ಣುವಿಗೆ ತಿಳಿಸಿದನು. ವಿಷ್ಣುವು ಮೋಹಿನೀ ರೂಪ ಧರಿಸಿ ತಾನು ಮಾಡುವಂತೆಯೇ ನರ್ತನ ಮಾಡಿದರೆ ಅವನ ವಶವಾಗುವುದಾಗಿ ಹೇಳಿ ನರ್ತನದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ವಿಷ್ಣುವು ತನ್ನ ತಲೆಯ ಮೇಲೆ ಕೈಯಿಟ್ಟಾಗ ಭಸ್ಮಾಸುರನೂ ತನ್ನ ತಲೆಯ ಮೇಲೆ ಕೈಯಿಟ್ಟು ನರ್ತನಮಾಡಲು ಕೂಡಲೇ ಭಸ್ಮವಾದನು.]

**ಭಸ್ಮಾಹವ್ಯ ಭಸ್ಮಾಹವ್ಯ** (ಪುಂ) ಕರ್ಪೂರ.

**ಭಸ್ಮೀಕರಣ ಭಸ್ಮೀಕರಣ** (ನಂ) ಭಸ್ಮವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಬೂದಿಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ಭಸ್ಮನ್ + ಕೃನ್ ಅಭೂತತದ್ಭಾವೇ "ಚ್ವಿ:" (೪-೪-೪೦) | ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | ಇತ್ (೭-೪-೩೨) |

**ಭಸ್ಮೀಕೃತ ಭಸ್ಮೀಕೃತ** (ವಿಂ) ಭಸ್ಮವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಭಸ್ಮನ್ + ಕೃನ್ ಅಭೂತತದ್ಭಾವೇ "ಚ್ವಿ:" (೪-೪-೪೦) | ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ಭಸ್ಮೀಕೃತಾನಾಂ ಸಗರಾತ್ಮಜಾನಾಂ ಪ್ರಾಹುಃಸುಖಾಂ ಪ್ರಾಪಿತದೇವಭಾವಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೮-೪೬ |

**ಭಸ್ಮೀಭೂತ ಭಸ್ಮೀಭೂತ** (ವಿಂ) ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಬೂದಿಯಾದ. ಭಸ್ಮನ್ + ಭೂ ಅಭೂತತದ್ಭಾವೇ "ಚ್ವಿ:" (೪-೪-೪೦) | ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | ಇತ್ (೭-೪-೩೨) | "ಭಸ್ಮೀಭೂತಸ್ಯ ದೇಹಸ್ಯ ಪುನರಾಗಮನಂ ಕುತ:" |

**ಭಾ - ದೀಪ್ತೌ** (ಅದಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ) | ಭಾತಿ ಭಾತಃ | ಭಾನ್ತಿ | ಬಭೌ ಬಭತುಃ | ಭಾತುಃ | ಭಾತಾ | ಭಾಸ್ಯತಿ | ಭಾತು | ಅಭಾತ್ ಅಭಾತಾಮ್ | ಭಾತುಃ | ಭಾತಾ | ಭಾಸೀತ್ | ಅಭಾಸ್ಯತ್ | ಪ್ರಕಾಶಿಸು, ಹೊಳೆ. "ಅಮುನಾ ಧನೈಃ ಕ್ಷಿತಿಭೃತಾತಿಭೃತಾ ಸಮತೀತ್ಯ ಭಾತಿ ಜಗತೀ ಜಗತೀ" ಕಿರಾಂ ೪-೨೦ | "ಬಭೌ ಚ ಪ್ರೇಯಸೀವಕ್ವಂ ಪತ್ಯುರೂತಮಯನ್ ಕರಃ" ನೈಷಂ ೨೦-೪೧ | "ಭಾತು ನಾಮ ಸುದೃಶಾಂ ದಶನಾಙ್ಕಃ ಪಾಟಲೋ ಧವಲಗುಂಡತಲೇಷು" ಮಾಘಂ ೧೦-೮೬ |

**ಭಾತುಃ**:-ಭಾತವ್ಯಃ | ಭಾನೀಯಃ | ಭೇಯಃ | ಭಾತಃ | ಭಾನ್ |

ಭಾತಮ್ | ಭಾತ್ವಾ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಭಾ ಭಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಂತಿ, ಪ್ರಭೆ, ದೀಪ್ತಿ. ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) "ಅಙ್" (೩-೩-೧೦೪) | "ಅಸ್ಮತ್ಕಿಲ ಶ್ರೋತ್ರಸುಖಾಂ ವಿಧಾಯ

ರಮಾ ಚಿರಂ ಭಾಮತುಲಾಂ ನಲಸ್ಯ" ನೈಷಂ ೩-೨೬ | 2. ಸೌಂದರ್ಯ, ಸೊಬಗು. "ತಾವದ್ಭಾ ಭಾರವೇರ್ಭಾತಿ ಯಾವ-  
ನ್ಮಾಘಸ್ಯ ನೋದಯಃ" ತದ್ಭೂಂ | 3. ಭೂಮಿ. 4. ಅಲಂಕಾರ. "ಭಾ ಭುವ್ಯಲಂಕೃತೌ ದೀಪ್ತೌ" ನಾನಾರ್ಥರಂ |

**ಭಾಕುಟ ಭಾಕುಟ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. ಭಾ ದೀಪ್ಯಾ ಕುಟತಿ-ಕುಟ (ಕೌಟಿಲ್ಯೇ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೪) |

**ಭಾಕೂಟ ಭಾಕೂಟ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. 2. ಒಂದು ಪರ್ವತ, ಒಂದು ಬೆಟ್ಟ. ಭಾಯುಕ್ತಾಃ ಕೂಟಾಃ | ಶಿಖರಾಣಿ ಯಸ್ಯ | "ಭಾಕೂಟಃ ಶಿಲಕ್ಷಣಯೋರ್ಮೇಧೇ" ಮೇದಿಂ |

**ಭಾಕೋಶ ಭಾಕೋಶ** (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಭಾನಾಂ ದೀಪ್ತಿನಾಂ ಕೋಶ ಇವ | "ದಿನಮಣಿಹರಿಹೇಲಿಬ್ರಹ್ಮಭಾಕೋಶಭಾಸುಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಭಾಕ್ತ ಭಾಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಗೌಣವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಬಂದ, ಗೌಣ ವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಬೋಧಿತವಾದ. ಭಕ್ತೇಃ ಗೌಣವೃತ್ತೇರಾಗತಃ "ಅಙ್" (೪-೩-೭೬) | 2. ಅನ್ಯದ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಭಕ್ತಸ್ಯ ಅಯಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦) | 3. ನಿಯತವಾಗಿ ಅನ್ಯ ಕೊಡಲ್ಪಡುವವನು, ಆಶ್ರಿತ. ಭಕ್ತಮಸ್ಮೈ ನಿಯತಂ ದೀಯತೇ-ವಾ "ಅಙ್" (೪-೪-೬೮) | ಪಕ್ಷೇ "ಠಕ್" | **ಭಾಕ್ತಿಕಃ ಭಾಕ್ತಿಕಃ**.

**ಭಾಕ್ತಿಕ ಭಾಕ್ತಿಕ** (ವಿಂ) "ಭಾಕ್ತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ಭಾಗ ಭಾಗ** (ಪುಂ) 1. ಭಾಗ, ಪಾಲು, ಹಿಸ್ಸೆ. ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮) | "ಭಾಗೋ ಯವೀಯಸಾಂ ತತ್ರ ಯದಿ ವಿಧಾನುಪಾಲಿನಃ" ಮನುಂ ೯-೨೦೪ | 2. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಅಂಶ, ಒಂದು ಪದಾರ್ಥದ ಏಕದೇಶ. ಭಜ ಕರ್ಮಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೯) | 3. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. 4. ಅದೃಷ್ಟ, ಭಾಗ್ಯ. 5. ರೂಪಾಯಿಯ ಅರ್ಧಭಾಗ, ಅರ್ಧ ರೂಪಾಯಿ. "ಭಾಗೋ ರೂಪ್ಯಾರ್ಥಕೇ ಭಾಗ್ಯೈಕದೇಶಯೋಃ" ಮೇದಿಂ | 6. ಸ್ಥಾನ, ಜಾಗ, ಅವಕಾಶ. "ಉರಸ್ಯಪರ್ಯಾಪ್ತಿನಿವೇಶಭಾಗಾ ಪ್ರೌಢಿ-  
ಭವಿಷ್ಯಂತಮುದೀಕ್ಷಮಾಣಾ" ರಘುಂ ೧೮-೪೭ | 7. ರಾಶಿಯ 30 ನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. "ತ್ರಿಶಾಂಶಕಸ್ತಥಾ ರಾಶೇರಗಿ  
ಇತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ" | "ಭಾಗಾ ಭಾಗ್ಯಾಂಶತುರ್ಯಾಶಾಃ" ವೈಜಂ |

**ಭಾಗಧೇಯ ಭಾಗಧೇಯ** (ನಂ) 1. ಭಾಗ್ಯ, ಅದೃಷ್ಟ. ಭಾಗ ಏವ ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಧೇಯಃ" (ವಾಂ ೪-೪-೨೪) | "ಭಾಗಧೇಯಪರಿ-  
ಪಾಕತಸ್ತದಾ ವಾಸವೋ ವಸತಿಮನ್ಯುಪಾಗತಮ್" ಯಾದಂ ೧೭-೬ | 2. ಅಂಶ, ಪಾಲು. "ಅಪರ್ಯಾಪ್ತೀವ ನಿವಾರಭಾಗಧೇಯೋಚಿತೈ-  
ರ್ಮುಗೈಃ" ರಘುಂ ೧-೪೦ | 3. ತೆರಿಗೆ, ಕಂದಾಯ, ಸರ್ಕಾರಕ್ಕೆ



**ಭಾಗವತ ಭಾಗವತ (ನಂ) 1.** ಶ್ರೀಮದ್ಭಾಗವತ, ವ್ಯಾಸ  
 ಮಹರ್ಷಿಪ್ರಣೀತವಾದ ಅಷ್ಟಾದಶ ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲೊಂದು,  
 ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಮಹಿಮೆಯನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವ ಒಂದು ಪುರಾಣ  
 ಗ್ರಂಥ. **ಭಾಗವತ: ಇದಂ "ಅಂ" (೪-೩-೧೨೦) ।**  
 ಈ ಪುರಾಣದಲ್ಲಿ 12 ಸ್ಕಂಧಗಳೂ ಹದಿನೆಂಟು ಸಹಸ್ರ  
 ಗ್ರಂಥಗಳೂ ಇವೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಶ್ರೀವಿಷ್ಣುವಿನ 24 ಅವತಾರ  
 ಗಳು ನಾರದಮಹರ್ಷಿಯ ಉಪದೇಶಪಡೆದ ವ್ಯಾಸ  
 ಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಭಾಗವತ ರಚನಾರಂಭ ಪರೀಕ್ಷಿಸಿದ  
 ಜನನ ಅವನಿಗೆ ರಾಜ್ಯಲಾಭ ಅವನಿಂದ ಕಲಿಪುರುಷನ  
 ನಿಗ್ರಹ ಪರಮಾತ್ಮನ ವಿರಾಡ್‌ರೂಪ ತತ್ತ್ವಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿ  
 ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡನಿರ್ಮಾಣ ವಿಷ್ಣುವಿನ ನಾಭಿಕಮಲದಿಂದ  
 ಬ್ರಹ್ಮೋತ್ಪತ್ತಿ ದಶವಿಧಸೃಷ್ಟಿ ಭಕ್ತಿಯೋಗದಿಂದ  
 ಪ್ರಕೃತಿಯ ತಿರೋಧಾನ ಜಡಭರತನ ವೃತ್ತಾಂತ  
 ಹಿರಣ್ಯಾಕ್ಷ ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುಸಂಹಾರ ಅಸುರರಿಂದ ದೇವತೆ  
 ಗಳ ಪರಾಜಯ ಸಮುದ್ರಮಥನ ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿಯ  
 ಆವಿರ್ಭಾವ ದೇವತೆಗಳ ಆವೃತವಾದಿಂದ ವಂಚಿತರಾದ  
 ದೈತ್ಯರ ಪರಾಜಯ ವಾಮನಾವತಾರ ಬಲಿನಿಗ್ರಹ  
 ಶ್ರೀರಾಮಚರಿತ ಪರಶುರಾಮನಿಂದ ಕ್ಷತ್ರಿಯರ ಸಂಹಾರ  
 ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಾವತಾರ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಬಾಲಲೀಲೆ ಶಕಟ ತೃಣಾ  
 ವರ್ತಾದಿ ಅಸುರರ ವಧೆ ಇಂದ್ರಮಖಿಭಂಗ ಗೋವಿಂದ  
 ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ ಕಂಸವಧೆ ರುಕ್ಮಿಣೀಕಲ್ಯಾಣ ಶಿಶುಪಾಲ  
 ದಂತವಕ್ತ್ರರ ವಧೆ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಿಂದ ಉದ್ಧವನಿಗೆ ಜ್ಞಾನೋಪ  
 ದೇಶ ಸತ್ಸಂಗಮಹಿಮೆ ಭಕ್ತಿಯ ಮಹತ್ತ್ವ ಧ್ಯಾನಯೋಗ  
 ಪರಮಾತ್ಮನ ವಿಭೂತಿವರ್ಣನೆ ಧರ್ಮನಿರೂಪಣೆ ತತ್ತ್ವ  
 ಗಳ ಸಂಖ್ಯೆ ಪ್ರಕೃತಿಪುರುಷವಿವೇಕ ಕಲಿಧರ್ಮನಿರೂಪಣೆ  
 ಪರೀಕ್ಷಿಸಿದ ದೇಹತ್ಯಾಗ ವೇದಗಳ ಶಾಖಾವಿಭಾಗ  
 ಮಾರ್ಕಂಡೇಯನಿಂದ ಭಗವನ್ಮಾಯಾನಿರ್ಮಿತವಾದ  
 ಮಹಾಪ್ರಳಯಲೀಲಾದರ್ಶನ ಪುರಾಣಗಳ ಶ್ಲೋಕ  
 ಸಂಖ್ಯೆ ಶ್ರೀಮದ್ಭಾಗವತಮಹತ್ತ್ವ ಇತ್ಯಾದಿ ವಿಷಯ  
 ಗಳು ವರ್ಣಿತವಾಗಿವೆ. **2. ದೇವೀಭಾಗವತ.** ದೇವಿಯ  
 ಮಹಿಮೆಯನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವ ಒಂದು ಉಪಪುರಾಣ.  
**ಭಾಗವತ್ಯಾ: ದುರ್ಗಾ: ಇದಂ "ಅಂ" (೪-೩-೧೨೦) ।**  
 "ಭಾಗವತ್ಯಾಶ್ಚ ದುರ್ಗಾಶ್ಚರಿತಂ ಯತ್ರ ವಿವ್ರತೇ । ತತು ಭಾಗವತಂ  
 ಪ್ರೋಕ್ತಂ ನ ತು ದೇವೀಪುರಾಣಕಮ್" ಶಿವಪುಂ । (ವಿಂ) **3.**  
**ಭಗವದ್ಭಕ್ತ.** ಭಗವಾನ್ ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣ: ಭಗವತೀ ದುರ್ಗಾ ವಾ

भागीरथी धारिणी (स्त्री०) गंगानदी, धारिणी  
 दैवलीकदिन्द धारलीककै कर्तन्द दैवलीकद  
 नदी. भगीरथस्य अयम् “अण्” (४-३-१२०) ।  
 [कपिलमहर्षियः कौश्याग्न्यादि दग्धरागि धारिणी  
 धारतारागिद्व तन् पुरवर्जराद ६० सप्त, मन्दि  
 सगर चक्रवर्तियः मर्कटिगे सद्गतिर्युगुमादलु  
 धारिणीधनु लुग, तपस्सन्नु कृगैण्डु दैवलीक  
 दिन्द ए नदियन्नु धारलीककै कर्तन्दिद्वरिन्द  
 ए नदिगे “भागीरथी” एण्ड हसरायितु.]  
 “भगीरथेन सा नीता तेन भागीरथी स्मृता” ब्रह्मवै० ।  
 “भागीरथीपावककृतिकानामानन्दबाष्पाकुललोचनानाम्”  
 कुमा० ११-३ ।



**भागुरि धागुरि** (पुं०) ಒಬ್ಬ ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರಪ್ರವರ್ತಕ  
ನಾದ ಋಷಿ. "वष्टि भागुरिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गयोः ।  
आपंचैव हलन्तानां यथा वाचा निशा दिशा" सि० कौ० ।

**भाग्य धಾಗ್ಯ** (ನಂ) 1. ಅದೃಷ್ಟ, ಶುಭ ಮತ್ತು ಅಶುಭ  
ಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಹೆಣೆಯಬರಹ, ಶುಭಾಶುಭ ಕರ್ಮ  
ಗಳ ಪರಿಣಾಮ. भज्यते—भज (सेवायाम्) "प्यत्"  
(३-१-१२४) । "स्त्रियश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं देवो न  
जानाति कुतो मनुष्यः" । "सा निन्दन्ती स्वानि  
भाग्यानि बाला बाहूक्षेपं क्रन्दितुं च प्रवृत्ता" शाकु०  
५-३० । 2. ಅದೃಷ್ಟ, ಸುದೈವ, ದೈವಯೋಗ.  
"ग्रहेस्ततः पञ्चभिरुच्चसंश्रयैरसूर्यगैः सूचितभाग्य-  
सम्पदम्" रघु० ३-१३ । 3. ಐಶ್ವರ್ಯ, ಧನಸಂಪತ್ತು.  
"भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी  
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः" शाकु०  
४-१७ । 4. ಜನ್ಮಾಂತರದ ಪಾಪ ಮತ್ತು ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯ.  
5. ಕಾರ್ಯ, ಕೆಲಸ. "भाग्यं कर्मण्यन्यजन्मकर्मण्यपि  
शुभाशुभे" वैज० । (वि०) 6. ಭಾಗಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ,  
ಪಾಲ ಹೊಂದಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. भागमर्हति "यत्"  
(५-१-६६) । 7. ಒಂದು ಅಂಶವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ,  
ಒಂದು ಭಾಗವುಳ್ಳ (ಒಂದು ಮೊತ್ತ), ಶೇಕಡಾವಾರು  
ಬಡ್ಡಿಯುಳ್ಳ (ಒಂದು ಮೊತ್ತ). भागो वृद्ध्यादिरस्मिन्  
दीयते — वा "यत्" (५-१-४९) । ಪಕ್ಷ "ठन्"  
(५-१-४९) । भागिकम् धागिकम्.

**भाग्यक्रम धಾಗ್ಯಕ್ರಮ** (ಪುಂ) ಅದೃಷ್ಟದ ಸರದಿ, ಶುಭಾ  
ಶುಭ ಕರ್ಮಗಳ ಫಲವಾದ ಶುಭ ಮತ್ತು ಅಶುಭಗಳ  
ಪರ್ಯಾಯ. भाग्यस्य क्रमः । "सत्यं न मे विभव-  
नाशकृतास्ति चिन्ता भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति  
यान्ति" मृच्छ० १-१३ ।

**भाग्ययोग धಾಗ್ಯಯೋಗ** (ಪುಂ) ಅದೃಷ್ಟವು ಕೂಡಿಬರು  
ವುದು, ಅದೃಷ್ಟಕಾಲವು ಸೇರಿಬರುವುದು. भाग्यस्य योगः ।

**भाग्यवत् धಾಗ್ಯವತ್** (ವಿಂ) ಅದೃಷ್ಟಶಾಲಿ, ಭಾಗ್ಯವಂತ.  
भाग्यमस्यास्ति "मतुप्" (५-२-९४) । मस्य वः  
(८-२-९) । स्त्रियां "डीप्" (४-१-६) । -वती -वती.

**भाग्यवशात् धಾಗ್ಯವಶಾತ್** (ಅವ್ಯಂ) ದೈವಯೋಗದಿಂದ,  
ಸುದೈವದಿಂದ, ಭಾಗ್ಯಬಲದಿಂದ, ಅದೃಷ್ಟ ವಿಶೇಷದಿಂದ.

**भाग्यविल्व धಾಗ್ಯವಿಪ್ಲವ** (ಪುಂ) ಅದೃಷ್ಟವು ವಿಪರೀತ  
ವಾಗುವುದು, ದುರದೃಷ್ಟದ ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ದೌರ್ಭಾಗ್ಯದ  
ಘಟನೆ. भाग्यस्य विल्वः ।

**भाङ्गीन धಾಂಗೀನ** (ನಂ) ಸಣಬು ಬೆಳೆಯುವ ಭೂಮಿ.  
भङ्गाया भवनं क्षेत्रम्—वा "खल्" (५-२-१) । पक्षे  
"यत्" (५-२-४) । भङ्गयम् धाङ्गयम्.

**भाजक धಾಜಕ** (ವಿಂ) ಭಾಗಿಸುವ, ಭಾಗಮಾಡುವ. भज  
(सेवायाम्) "प्वल्" (३-१-१३३) ।

**भाजन धಾಜನ** (ನಂ) 1. ಪಾತ್ರೆ (ತಪ್ಪಲಿ, ಬಟ್ಟಲು,  
ಕೊಳದಪ್ಪಲಿ ಮುಂತಾದುವು). भाज (पृथक्कर्मणि) +  
णिच् "ल्युट्" (३-३-११३) । "राजतैर्भाजनैरेषामथो  
वा रजतान्वितैः" मनु० ३-२०२ । 2. ಅಶ್ರಯ,  
ಆಧಾರ, ಪಾತ್ರೆ. "कल्याणानां त्वमसि महसां भाजनं  
विश्वमूर्ते" मालती० १-३ । 3. ಯೋಗ್ಯ, ಅರ್ಹ.  
"भवादृशा एव भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम्" काद० ।  
4. ಭಾಗಮಾಡುವುದು. भाज भावे "ल्युट्" (३-३-११५) ।  
5. (ಗಣಿತದಲ್ಲಿ) ಭಾಗಿಸುವುದು.

**भाजित धाಜಿತ** (ವಿಂ) 1. ಭಾಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೇರೆ ಮಾಡೆ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. भाज (पृथक्कर्मणि)+णिच् "क्तः" (३-२-१०२) ।  
(न०) 2. ಭಾಗ, ಪಾಲು, ಅಂಶ. भाज भावे "क्तः"  
(३-३-११४) ।

**भाज्य धाज्य** (ವಿಂ) 1. ವಿಭಾಗಿಸಲ್ಪಡುವ, ಭಾಗಮಾಡ  
ಲ್ಪಡುವ. भज्यते विभज्यते—भज (सेवायाम्) कर्म०  
"प्यत्" (३-१-१२४) । 2. ಭಾಗಮಾಡಬೇಕಾದ.  
3. ಭಾಗಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ, ಭಾಗಮಾಡಬಹುದಾದ.  
4. ಪಿತ್ರಾರ್ಥಿತ ಆಸ್ತಿ.

**भाटक धाಟक** (ಪುಂ) ಬಾಡಿಗೆ, ಕೂಲಿ, ಇತರರ ಮನೆ  
ಗಾಡಿ ಮುಂತಾದವನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು  
ಕೊಡುವ ಹಣ. भट (भृतौ) "प्वल्" (३-१-१३३) ।  
"गृहवाप्यापणादीनि गृहीत्वा भाटकेन यः । स्वामिनो  
नार्षयेद्यावत्तावदाप्यः स भाटकम्" ।

**भाटि धाಟि** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಾಡಿಗೆ, ಕೂಲಿ. 2. ವೇಶ್ಯೆಯ  
ಸಂಪಾದನೆ.

**भाट्ट धाट्ट** (ಪುಂ) ಮೀಮಾಂಸಾದರ್ಶನಕಾರರಾದ  
ಕುಮಾರಿಲಭಟ್ಟರ ಅನುಯಾಯಿ (ಶಿಷ್ಯ).

**भाग धाण** (ಪುಂ) ದಶವಿಧ ರೂಪಕಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ರೂಪಕ.  
ದಶರೂಪಕಗಳು: (1) नाटकम्, (2) प्रकरणम्,  
(3) भाणः, (4) प्रहसनम्, (5) डिमः, (6) व्यायोगः,  
(7) समवकारः, (8) वीथी, (9) अङ्कः ಮತ್ತು (10)  
ईहामृगः ಭಾಣದಲ್ಲಿ ಧೂರ್ತನಾಯಕನ ಚರಿತ್ರೆಯು ಪ್ರತಿ  
ಪಾದ್ಯ ವಿಷಯ. ಒಂದೇ ಅಂಕ. ಒಂದೇ ಪಾತ್ರ. ಆಕಾಶ



ಭಾಷಿತದಿಂದ ಉಕ್ತಿ ಪ್ರತ್ಯುಕ್ತಿಗಳು ನಡೆಯುತ್ತವೆ. ಶೃಂಗಾರ ಮತ್ತು ವೀರರಸಗಳು ಸೂಚಿತವಾಗಿರಬೇಕು. ಕಥೆಯು ಕಲ್ಪಿತವಾಗಿರಬೇಕು. ಮುಖ ಮತ್ತು ನಿರ್ವಹಣ ಸಂಧಿಗಳು ಮಾತ್ರ. “ಭಾಗಸ್ತು ಧೂತಚರಿತೋ ನಾನಾವಸ್ಥಾಂತ-ರಾತ್ಮಕಃ | ಏಕಾಙ್ಕ ಏಕ ಏವಾತ್ರ ನಿಪುಣಃ ಪಂಡಿತೋ ವಿಠಃ | ಸಮ್ಬೋಧನೋಕ್ತಿಪ್ರತ್ಯುಕ್ತೀ ಕುರ್ಯಾದಿಕಾಶಭಾಷಿತಃ | ಸೂಚಯೇದೀರ-ಶೃಂಗಾರೋ ಶೌರ್ಯಸೌಭಾಗ್ಯವರ್ಣನಃ | ತತ್ರೇತಿವೃತ್ತಮುತ್ಪಾದ್ಯ ವೃತ್ತಿಃ ಪ್ರಾಯೇಣ ಭಾರತೀ | ಮುಖನಿರ್ವಹಣೇ ಸಂಧಿ ಲಾಸ್ಯಾಜ್ಞಾನಿ ದಶಾಪಿ ಚ” ಸಾಂ ೧೦ |

**ಭಾಂಡ ಭಾಂಡ (ನಂ)** 1. ಪಾತ್ರೆ (ಬಿದಿಗೆ, ಬಟ್ಟಲ, ತಪ್ಪಲೆ ಮುಂತಾದವು). ಭಣತಿ—ಭಣ (ಶಬ್ದ) “ಙ:” (ಉಂ ೧-೧೧೪) | “ಅನ್” (೪-೪-೩೮) | “ಹತ್ವಾ ತು ಕಾಂಚನಂ ಭಾಂಡಂ ಕುಮಿಯೋನೌ ಪ್ರಜಾಯತೇ” ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೭೩-೧೦೨ | 2. ವರ್ತಕನ ಮೂಲಧನ. 3. ಅಶ್ವದ ಆಭರಣ, ಕುದುರೆಗೆ ತೊಡಿಸುವ ಒಡವೆ. 4. ನದಿಯ ಪಾತ್ರ, ಎರಡು ತೀರಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಹೊಳೆಯು ಹರಿಯುವ ಭಾಗ. 5. ಭೂಷಣ, ಒಡವೆ. “ಭಾಂಡಂ ಮೂಲವಣಿಗಿವಿತ್ತೇ ತುರಜ್ಞಾಣಾಂ ಚ ಮಂಡನೇ | ನದೀಕೂಲದ್ವಯಮಿಮ್ಯೇ ಭೂಷಣೇ ಭಾಜನೇಽಪಿ ಚ” ಹೇಮಂ | 6. ಘಟ, ಒಂದು ವಾದ್ಯ. 7. ಉಗ್ರಾಣ, ಸರಕುಗಳನ್ನು ತುಂಬಿಡುವ ಗೃಹ. “ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡಭಾಂಡೋದರ-ಭ್ರಾಮ್ಯತಿಪಿಂಡಿತವಿಂಡಿಮಾ” ಮಂ ವೀಂ ೧-೪೪ | 8. ಪೆಟ್ಟಿಗೆ, ಕರಂಡ, ಡಬ್ಬಿ, ಸಂಪುಟ, ಚೀಲ.

**ಭಾಂಡಪುಟ ಭಾಂಡಪುಟ (ಪುಂ)** ನಾಟಕ, ನಾಯಿಂದ, ಕ್ಷೌರಿಕ. ಭಾಂಡೇ ಪುಟಾ ಯಸ್ಯ |

**ಭಾಂಡಾಗಾರ ಭಾಂಡಾಗಾರ (ಪುಂ)** 1. ಉಗ್ರಾಣ, ಸರಕು ಗಳನ್ನು ತುಂಬಿಡುವ ಮನೆ. ಭಾಂಡಾನಾಮಗಾರ: “ಭಾಂಡಾ-ಗಾರಾಯುಧಾಗಾರಾನ್ ಧಾನ್ಯಾಗಾರಾಂಶ್ಚ ಸರ್ವಶಃ” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೬೮-೪೯ | 2. ಆಶ್ರಯ, ಆಧಾರ, ಸ್ಥಾನ.

**ಭಾಂಡಾಗಾರಿಕ ಭಾಂಡಾಗಾರಿಕ (ಪುಂ)** ಉಗ್ರಾಣದ ಅಧಿಕಾರಿ, ಉಗ್ರಾಣದ ಯಜಮಾನ. ಭಾಂಡಾಗಾರೇ ನಿಯುಕ್ತ: “ಠನ್” (೪-೪-೭೦) |

**ಭಾಂಡಾರ ಭಾಂಡಾರ (ನಂ)** ಉಗ್ರಾಣ, ಸರಕು ಮೊದಲಾದುವುಗಳನ್ನು ತುಂಬಿಡುವ ಮನೆ. ಭಾಂಡಂ ತದಾಕಾರ-ಮುಚ್ಛತಿ—ಋ (ಗತೌ) “ಅನ್” (೩-೨-೧) | ಪುಸ್ತಕ-ಭಾಂಡಾರಮ್ ಜ್ಞಾನಭಾಂಡಾರಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಭಾಂಡಾರಿನ್ ಭಾಂಡಾರಿನ್ (ಪುಂ)** ಭಂಡಾರದ ಅಧಿಕಾರಿ, ಉಗ್ರಾಣದ ಯಜಮಾನ. ಭಾಂಡಾರಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪) | “ತೃಪಿತಃ ಕ್ಷುಧಿತಃ ಕಾಮೀ ವಿಧ್ಯಾರ್ಥಿ

ಕೃಷಿಕಾರಕಃ | ಭಾಂಡಾರೀ ಚ ಪ್ರವಾಸೀ ಚ ಸಪ್ತ ಸುಪ್ತಾನ್ ಪ್ರಬೋಧಯೇತ್” |

**ಭಾಂಡ ಭಾಂಡಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ನಾಟಕನ ಪೆಟ್ಟಿಗೆ, ಕ್ಷೌರಿಕನ ಚೀಲ.

**ಭಾಂಡಿಲ ಭಾಂಡಿಲ (ಪುಂ)** ನಾಟಕ, ನಾಯಿಂದ.

**ಭಾಂಡಿವಾಹ ಭಾಂಡಿವಾಹ (ಪುಂ)** ನಾಟಕ, ಕ್ಷೌರಿಕ, ನಾಯಿಂದ. ಭಾಂಡಿ ವಹತಿ—ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೇ) “ಅನ್” (೩-೨-೧) |

**ಭಾಂಡಿಶಾಲಾ ಭಾಂಡಿಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕ್ಷೌರದ ಮನೆ, ನಾಯಿಂದನ ಅಂಗಡಿ, ಆಯುಷ್ಯಮೃದ ಶಾಲೆ.

**ಭಾಂಡೀರ ಭಾಂಡೀರ (ಪುಂ)** ವಟವೃಕ್ಷ, ಅಲದ ಮರ.

**ಭಾತ ಭಾತ (ನಂ)** 1. ಪ್ರಭಾತ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲ. ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೧) | 2. ದೀಪ್ತಿ, ಪ್ರಕಾಶ. ಭಾ ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪) | (ವಿಂ) 3. ಪ್ರಕಾಶಿ ಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ.

**ಭಾತಿ ಭಾತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಶೋಭೆ, ಕಾಂತಿ, ಪ್ರಕಾಶ. ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) |

**ಭಾತು ಭಾತು (ಪುಂ)** 1. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) “ತುನ್” (ಉಂ ೧-೭೨) | “ಭಾತುರಾದಿತ್ಯಃ” ಉಗಾಡಿಃ | (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ, ಶೋಭಿಸುವ.

**ಭಾದ್ರ ಭಾದ್ರ (ಪುಂ)** 1. ಭಾದ್ರಪದಮಾಸ, ಚೈತ್ರ ಮೊದಲು ಗೊಂಡು ಆರನೆಯ ತಿಂಗಳು. ಭಾದ್ರೀ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಸ್ಮಿನ್ “ಅನ್” (೪-೨-೨೧) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭಾದ್ರಾ ಭಾದ್ರಾ. 2. ಪೂರ್ವಾಭಾದ್ರಾ ಮತ್ತು ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರಾ ನಕ್ಷತ್ರ ಗಳು. ಭಾದ್ರೀ ಭಾದ್ರೀ. 3. ಭಾದ್ರಪದ ಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ಭದ್ರಯಾ ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ |

**ಭಾದ್ರಪದ ಭಾದ್ರಪದ (ಪುಂ)** 1. ಭಾದ್ರಪದ ಮಾಸ, ಚೈತ್ರ ಮೊದಲುಗೊಂಡು ಆರನೆಯ ತಿಂಗಳು. ಭಾದ್ರಪದೀ ಪೌರ್ಣ-ಮಾಸ್ಯಸ್ಮಿನ್ “ಅನ್” (೪-೨-೨೧) | (ಸ್ತ್ರೀಂ ಬಂ ವಂ) -ವದಾ -ಪದಾ. 2. ಪೂರ್ವಾಭಾದ್ರಪದಾ ಮತ್ತು ಉತ್ತರಾಭಾದ್ರಪದಾ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು. -ವದೀ -ಪದೀ. ಭಾದ್ರಪದಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ.

**ಭಾದ್ರಮಾತುರ ಭಾದ್ರಮಾತುರ (ಪುಂ)** ಪತಿವ್ರತೆಯ ಮಗ, ಸದಾಚಾರಸಂಪನ್ನಳಾದ ಹೆಂಗಸಿನ ಮಗ. ಭದ್ರಮಾತುರಪತ್ಯಮ್ “ಅನ್” (೪-೧-೧೧೪) |

**ಭಾನ ಭಾನ (ನಂ)** 1. ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ತೋರಿಸಿ ಕೊಳ್ಳುವುದು. 2. ಪ್ರಕಾಶ, ಕಾಂತಿ, ದೀಪ್ತಿ. 3. ಜ್ಞಾನ,



ತಿಳುವಳಿಕೆ, ಗ್ರಹಣಶಕ್ತಿ. ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

**ಭಾನು ಭಾಸು** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಭಾತಿ—ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) "ನು:" (3-3-32)। "ತನೋತಿ ಭಾನೋ: ಪರಿವೇಷ-ಕೇತವಾತ್ ತದಾ ವಿಧಿ: ಕುಂಡಲನಾಂ ವಿಧೋರಪಿ" ನೈಷಂ 1-14। 2. ಕಿರಣ, ರಶ್ಮಿ, ಕಿರಣ. "ಭಾನುರ್ನಾ ಕಿರಣೇ ಸೂರ್ಯ" ಮೇದಿಂ। 3. ವಿಷ್ಣು. ಅತಿಭಾಸ್ವರೇಣ ಭಾಸ್ಕರೇಣಾಪಿ ಉಪಜೀವ್ಯತೇಜಾ ಭಾತಿ ಇತಿ ಭಾನು:। "ರವೇಸ್ತೇಜಸ್ಕರತ್ವಾಂಶ್ಚ ಭಾನುರೀತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ:। "ಅಮೃತಾಂಶುಃಪ್ತವೋ ಭಾನು: ಶಶಬಿಂದು: ಸುರೇಶ್ವರ:" ವಿಂ ಸಂ। 4. ದಿವಸ, ಒಂದು ದಿನ. "ಭಾನುರಂಶೌ ರವೌ ದಿನೇ" ಹೇಮಂ। 5. ಹರ, ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. "ಭಾನವೋರ್ಜ್ಞಹರಾಂಶವ:" ವೇಜಂ। 6. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 7. ರಾಜ, ದೊರೆ.

**ಭಾನುಜ ಭಾನುಜ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯನ ಮಗ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಜಾ—ಜಾ. 2. ಸೂರ್ಯನ ಪುತ್ರಿ, ಕಾಳಿಂದೀ ನದಿ.

**ಭಾನುಮತ್ ಭಾನುಮತ್** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಭಾನವ: ಕಿರಣಾ ಅಸ್ಯ ಸಂತಿ "ಮತುಪ್" (4-2-94)। "ವಿಶೋಷಿತಾಂ ಭಾನುಮತೌ ಮಯುಕ್ತ: ಮಂದಾಕಿನೀಪುಷ್ಕರಬೀಜಮಾಲಾಮ್" ಕುಮಾಂ 3-64। 2. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಮತೀ —ಮತೀ. ದುರ್ಯೋಧನನ ಪತ್ನಿ.

**ಭಾನೇಮಿ ಭಾನೇಮಿ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಭಾನಾಂ ನೇಮಿರಿವ। 2. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. "ದಿನಪ್ರಣಿತ್ವವ್ಯವಿಧಿಃ ಭಾನೇಮಿರಪರವ್ರತ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಭಾಮ ಭಾಮ** (ಪುಂ) 1. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) "ಮನ್" (3-3-133)। 2. ದೀಪ್ತಿ, ಪ್ರಕಾಶ, ಕಾಂತಿ. 3. ಕ್ರೋಧ, ಕೋಪ. ಭಾಮ (ಕ್ರೋಧೇ) "ಭವ್" (3-3-114)। "ಭಾಮ: ಕ್ರೋಧೇ ಸ್ವೌ ರವೌ" ಹೇಮಂ। 4. ಸೋದರಿಯ ಗಂಡ, ಅಕ್ಕತಂಗಿಯರ ಗಂಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಮಾ —ಮಾ. 5. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಪತ್ನಿ ಸತ್ಯಭಾಮಾ. "ಭಾಮಯಾ ಭಗವತಾ ಚ ಭಾಷಿತೇ" ಯಾದಂ 17-131।

**ಭಾಮಿನ್ ಭಾಮಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಕೋಪವುಳ್ಳವನು. ಭಾಮ (ಕ್ರೋಧೇ) "ಜಿಹಿ:" (3-3-130)। ಭಾಮಿನ್ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಹಿ" (4-1-4)। ಭಾಮಿನಿ ಭಾಮಿನೀ. 2. ಕೋಪ ವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. "ಉಪಚೀಯತ ಏವ ಕಾಪಿ ಶೋಭಾ ಪರಿತೌ ಭಾಮಿನಿ ತೇ ಮುಖಸ್ಯ ನಿಯಮ್" ಭಾಮಿಂ ವಿಂ।

**ಭಾಮಿನಿವಿಲಾಸ ಭಾಮಿನೀವಿಲಾಸ** (ಪುಂ) ಜಗನ್ನಾಥ ಪಂಡಿತ ವಿರಚಿತವಾದ ಒಂದು ಕಾವ್ಯ.

**ಭಾರ ಭಾರ** (ಪುಂ) 1. ಹೊರೆ, ತೂಕವುಳ್ಳ ಗಂಟು. ಭ್ರಿಯತೇ —ಭೂ (ಭರಣೇ) "ಭವ್" (3-3-119)। "ಭಾರ: ಕಾಯೋ ಜೀವಿತಂ ವಜ್ರಕೀಲಂ ಕಾಷ್ಠಾ: ಶೂನ್ಯಾ: ನಿರ್ಫಲಾನೀಂದ್ರಿಯಾಣಿ" ಮಾಲತೀಂ 1-37। 2. ತೂಕ, ಭಾರ, 3. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. "ಸ್ವಬಾಲಭಾರಸ್ಯ ತದುತ್ತಮಾಜ್ಞಜೇ: ಸ್ವಯಂ ಚಮಯೇವ ತುಲಾಭಿಲಾಷಿಣ:" ನೈಷಂ 1-24। 4. ಅತಿರೇಕ, ಅತಿಶಯ, ಅಧಿಕ. "ಸಾ ಮುಕ್ತಕಂಠಂ ವ್ಯಸನಾತಿಭಾರಾಂಶ್ಚಕ್ರಂದ ವಿಗ್ನಾ ಕುರರೀವ ಭೂ:" ರಘುಂ 14-64। 5. ವಿಷ್ಣು. 6. ಕಾವಡಿ, ಅಡ್ಡ. 7. 2000 ಪಲಗಳ ತೂಕ.

|                 |            |
|-----------------|------------|
| 5 ಗುಲಗಂಜಿಗಳ ತೂಕ | 1 ಅದ್ಯಮಾಷಕ |
| 16 ಅದ್ಯಮಾಷಕಗಳು  | 1 ಕರ್ಷ     |
| 4 ಕರ್ಷಗಳು       | 1 ಪಲ       |
| 100 ಪಲಗಳು       | 1 ತುಲೆ     |
| 20 ತುಲೆಗಳು      | 1 ಭಾರ      |
| ಅಥವಾ 2000 ಪಲಗಳು |            |

"ಭಾರ: ಸ್ಯಾದ್ವಿವಧೇ ವಿಷ್ಣೌ ಪಲಾನಾಂ ಟಿಸಹಸ್ರಕೇ" ಮೇದಿಂ।

**ಭಾರತ ಭಾರತ** (ನಂ) 1. ವೇದವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಪ್ರಣೀತ ವಾದ ಶ್ರೀಮನ್ಮಹಾಭಾರತ ಗ್ರಂಥ, ಭಾರತ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ವಂಶದ ದೊರೆಗಳ ಚರಿತ್ರೆಯನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವ ಒಂದು ಇತಿಹಾಸ. ಭರತಾನ್ ಭರತವಂಶೀಯಾನ್ ಅಧಿಕೃತ ಕೃತೌ ಗ್ರಂಥ: "ಅಣ್" (4-3-107)। ವೇದಾದಿ ಸಕಲ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳ ಸಾರಾಂಶವನ್ನು ಇದರಲ್ಲಿ ವಿಸ್ತರಿಸಿ ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ "ಭಾರತ" ವೆಂದು ಹೆಸರು. ಭಾರಂ ವೇದಾದಿಶಾಸ್ತ್ರ-ಮ್ಯೋಽಪಿ ಸಾರಾಂಶಂ ತನೋತಿ—ತನ್ತು (ವಿಸ್ತಾರೇ) "ಃ:" (3-2-101)। "ತಪಸಾ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯೇಣ ವ್ಯಸ್ಯ ವೇದಂ ಸಂನಾತನಮ್। ಇತಿಹಾಸಮಿಮಂ ಚಕ್ರೇ ಪುಣ್ಯಂ ಸತ್ಯವತೀಸುತ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ 1-34। "ಮಹತ್ವಾದ್ಭಾರವತ್ವಾಂಶ್ಚ ಸಹಾ-ಭಾರತಮುಚ್ಯತೇ" ಈ ಕಾರಣದಿಂದಲೂ ಇದು ಮಹಾಭಾರತ ವಾಗಿದೆ. ಶಕುಂತಲಾ-ದುಷ್ಯಂತರ ಪುತ್ರನಾದ ಭರತ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ವಂಶಸಂಭೂತರಾದ ರಾಜರ ಚರಿತ್ರೆಯನ್ನು ಒಳಗೊಂಡಿರುವುದರಿಂದಲೂ ಇದಕ್ಕೆ ಭಾರತವೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು.

ಕೌರವ-ಪಾಂಡವರ ಯುದ್ಧವ್ಯಾಜದಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಭೂಭಾರವನ್ನು ಇಳಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಇದೊಂದು ಬೃಹತ್ತಾದ ಇತಿಹಾಸವಾಯಿತು. ಮಹಾಭಾರತವು ಒಂದು ಲಕ್ಷ ಗ್ರಂಥಾತ್ಮಕವಾದುದು. ದೈವಯೋಗದಿಂದ ಕೌರವ ಪಾಂಡವರಿಗೆ ವೈರವುಂಟಾಗಿ ಪಾಂಡವರನ್ನು ರಾಜ್ಯಭ್ರಷ್ಟರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಲು ಯತ್ನಿಸಿದ ದುರ್ಯೋಧನನು ದ್ಯೂತ



ದಲ್ಲಿ ಧರ್ಮರಾಜನನ್ನು ಸೋಲಿಸಿ ಪತ್ತೀ ಮತ್ತು ಸಹೋದರರೊಡನೆ ವನವಾಸಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿದನು. ವನವಾಸ ಮತ್ತು ಅಜ್ಞಾತವಾಸಗಳನ್ನು ಮುಗಿಸಿ ಬಂದ ಧರ್ಮರಾಜ ನಿಗೆ ಧರ್ಮಪ್ರಾಪ್ತವಾದ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಕೊಡದೆ ದ್ರೋಹ ಮಾಡಲು ಸಂಕಲ್ಪಿಸಿದ ದುರ್ಯೋಧನನಿಗೂ ಪಾಂಡವರಿಗೂ ಘೋರಯುದ್ಧ ನಡೆದು ಎರಡು ಪಕ್ಷಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಮಹಾಪರಾಕ್ರಮಿಗಳಾದ ಅನೇಕ ರಾಜಾಧಿರಾಜರು ಹತರಾದರು. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಸಾಹಾಯ್ಯದಿಂದ ಪಾಂಡವರು ಭೀಷ್ಮ ದ್ರೋಣ ಅಶ್ವತ್ಥಾಮ ಕರ್ಣ ಮೊದಲಾದವರನ್ನು ಸೋಲಿಸಿ ಬಾಲ್ಯದಿಂದಲೂ ತಮಗೆ ಪರಮದ್ರೋಹ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ದುರ್ಯೋಧನನಾದಿ ಸಕಲ ಕೌರವರನ್ನೂ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ನಾಮಾವಶೇಷ ಮಾಡಿ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಸುಪಾದಿಸಿದರು. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಕೃಪೆಯಿಂದಲೂ ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯರ ಅನುಮತಿಯಿಂದಲೂ ಧರ್ಮರಾಜನು ಪಟ್ಟಾಭಿಷಿಕ್ತನಾಗಿ ಸಹೋದರರೊಡನೆ ಧರ್ಮದಿಂದ ರಾಜ್ಯವಾಳಿದನು. ಶ್ರೀಮನ್ಮಹಾಭಾರತವು ಕೌರವ-ಪಾಂಡವರ ಯುದ್ಧವನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವ ಇತಿಹಾಸ ಮಾತ್ರವಲ್ಲ. ಇದೊಂದು ನವರಸ ಪರಿಪೂರ್ಣವಾದ ಮಹಾಕಾವ್ಯ. ಸಕಲ ವೇದಾರ್ಥಗಳನ್ನೂ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಿರುವುದರಿಂದ ಇದೊಂದು ಸ್ಮೃತಿಗ್ರಂಥವೂ ಆಗಿದೆ. ರಾಜಧರ್ಮ ವರ್ಣಾಶ್ರಮಧರ್ಮ ಯುದ್ಧ ಧರ್ಮ ಮುಂತಾದುವುಗಳನ್ನೂ ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ ಇದೊಂದು ಧರ್ಮಗ್ರಂಥ. ರಾಜನೀತಿಯನ್ನು ಬೋಧಿಸುವುದರಿಂದ ನೀತಿಗ್ರಂಥ. ಮೋಕ್ಷಧರ್ಮನಿರೂಪಣೆಯಿರುವುದರಿಂದ ಮೋಕ್ಷಶಾಸ್ತ್ರ. ಇದರಲ್ಲಿ ಚಾತುರ್ವರ್ಣ್ಯ ಪುರಾಣಗಳು ತಪಸ್ಸು ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ ಪೃಥಿವಿ ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರ ಗ್ರಹಗಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳು ಯುಗಪ್ರಮಾಣ ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಕ್ರಮ ಪ್ರಲಯಪ್ರಕಾರ ಧರ್ಮ ಅರ್ಥ ಕಾಮ ಮತ್ತು ಮೋಕ್ಷರೂಪವಾದ ಪುರುಷಾರ್ಥ ಚತುಷ್ಟಯ ಮೊದಲಾದ ಅನೇಕ ಜನಜೀವನ ಜೀವಾತುವಾದ ವಿಷಯಗಳು ಪ್ರತಿಪಾದಿತವಾಗಿವೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಪಾದಿತವಾಗಿರುವ ಧರ್ಮ, ಅರ್ಥ, ಕಾಮ ಮತ್ತು ಮೋಕ್ಷ ಮೊದಲಾದ ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳೂ ಬೇರೆ ಗ್ರಂಥಗಳಲ್ಲಿರಬಹುದು. ಇದರಲ್ಲಿ ಹೇಳದಿರುವ ವಿಷಯವನ್ನು ಮತ್ತಾವ ಗ್ರಂಥದಲ್ಲೂ ನೋಡಲಾರೆವು. "ಯದಿಹಾಸ್ತಿ ತದನ್ಯತ್ರ ಯನ್ನೇಹಾಸ್ತಿ ನ ತತ್ ಕ್ವಚಿತ್" ಭಾಂ ಸ್ವರ್ಗಂ ೪-೫೦.

ಶ್ರೀಮದ್ರಾಮಾಯಣದಂತೆ ಮಹಾಭಾರತವು ಎಲ್ಲಾ ಕವಿಗಳ ಕಾವ್ಯರಚನೆಗೂ ಆಕರವಾಗಿದೆ. ಮಹಾಭಾರತವು ಅಜ್ಞಾನಾಂಧಕಾರದಿಂದ ಅಂಧನಾಗಿರುವ ಮಾನವನಿಗೆ ನೇತ್ರಾಂಜನದಂತಿರುವುದು. ಪುರುಷಾರ್ಥಚತುಷ್ಟಯ

ನಿರೂಪಣೆಯಿಂದ ಮಾನವನ ಅಜ್ಞಾನವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸಿ ಅವನ ಹೃದಯವನ್ನು ಪರಿಶುದ್ಧಗೊಳಿಸುವುದು. ಮತ್ತು ಬುದ್ಧಿಯನ್ನು ವಿಕಾಸಗೊಳಿಸುವುದು. ಭಾರತೀಯರ ಸನಾತನಧರ್ಮ ಮತ್ತು ಸಂಸ್ಕೃತಿಗಳ ಸಂಪೂರ್ಣ ಪರಿಚಯಮಾಡಿಕೊಡುವ ಜ್ಞಾನದೀವಿಗೆಯಾಗಿದೆ. ಇಂತಹ ಸರ್ವಾಂಗಪರಿಪೂರ್ಣವಾದ ಮಹಾಭಾರತದ ಪಠನ ಮತ್ತು ಪಾಠನೆಗಳಿಂದ ಜನರೆಲ್ಲರೂ ಸುಸಂಸ್ಕೃತರಾಗಿ ಬಾಳುವರು. ಲೌಕಿಕ ಮತ್ತು ಪಾರಮಾರ್ಥಿಕ ವ್ಯವಹಾರಗಳಲ್ಲೂ ನಿಷ್ಣಾತರಾಗುವರು. "ಸर्वेषां कविमुत्थानामुपजीव्यो भविष्यति । पञ्चन्य इव भूतानामक्षयो भारत-द्रुमः" । "धर्मार्थकाममोक्षार्थैः समासव्यासकीर्तनैः । त्वया भारतसूर्येण नृणां विनिहतं तमः" । "येन त्वया भारततैलपूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः" ।

ಭಾರತವನ್ನು ನಿತ್ಯವೂ ಕೇಳುವವನಿಗೂ ಪಠನಮಾಡುವವನಿಗೂ ನಿತ್ಯವೂ ಪೂಜಿಸುವವನಿಗೂ ಯಾವಾಗಲೂ ಜಯವು ಹಸ್ತಗತವಾಗುವುದು. "भारतं शृणुयान्नित्यं भारतं परिकीर्तयेत् । भारतं भवने यस्य तस्य हस्तगतो जयः" । 2. ಭಾರತದೇಶ, ಜಂಬೂದ್ವೀಪದೊಳಗಿರುವ (ನಮ್ಮ) ದೇಶ. ಭರತ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯು ಆಳಿದ ದೇಶ. ಭರತಸ್ಯ ರಾಜಃ ಇದಮ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೨೦) । "एतद्ब्रह्मगुरुभार भारतं वर्षमद्य मम वर्तते वशे" ಮಾಘಂ ೧೪-೫ । 3. ಭರತ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಭರತಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪत्यಮ್ "ಅಣ್" (೪-೧-೯೨) । 4. ಭರತಮುನಿ ಪ್ರಣೀತವಾದ ನಾಟ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 5. ಭರತಮುನಿಪ್ರಣೀತನಾಟ್ಯಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಅಭ್ಯಾಸಮಾಡುವ ನಟರು, ಶೈಲೂಷರು. ಭರತೇನ ಪ್ರೋಕ್ತಮಥೀಯತೆ "ಅಣ್" (೪-೨-೫೯) । "उवाच स महातेजा ब्रह्माणं परमेष्ठिनम् । कृतं मयेदं भगवन् काव्यं परमपूजितम् ॥ ब्रह्मन् वेदरहस्यं च यच्चान्यत् स्थापितं मया । साङ्गोपनिषदां चैव वेदानां विस्तर-क्रिया । इतिहासपुराणानामुन्मेषं निमिषं च यत् । भूतं भव्यं भविष्यच्च त्रिविधं कालसंज्ञितम्" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧ ।

ಭಾರತವರ್ಷ ಭಾರತವರ್ಷ (ಪುನಂ) ಭಾರತವರ್ಷ, ಜಂಬೂದ್ವೀಪದೊಳಗಿರುವ ಒಂದು ದೇಶ. ಹಿಮಾಲಯಕ್ಕೆ ದಕ್ಷಿಣದಲ್ಲಿರುವ ಭಾರತದೇಶ. ಭಾರತ ಭರತಸಮ್ಬಂಧಿ ವರ್ಷಮ್ । ಭಾರತವರ್ಷವು ಜಂಬೂದ್ವೀಪದೊಳಗಿನ ಒಂಬತ್ತು ವರ್ಷ (ಭಾಗ) ಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. ಜಂಬೂದ್ವೀಪದ ಒಂಬತ್ತು ವರ್ಷಗಳು: (1) ಕುರು, (2) ಹಿರಣ್ಯಯ, (3) ರಮ್ಯಕ, (4) ಇಲಾವೃತ, (5) ಹರಿ, (6) ಕೇತುಮಾಲ,







**ಭಾರಿಕ ಭಾರಿಕ** (ಪುಂ) ಮೂಟೆ ಹೊರುವವನು, ಕೂಲಿ ಯಾಳು. ಭಾರೋಽಸ್ತಿ ವಾಹ್ಯತ್ವೇನ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೪)।  
ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪)। **ಭಾರಿಕೋ ಭಾರಿಕೇ.**  
"ಭಾರವಾಹಸ್ತು ಭಾರಿಕಃ" ಅಮಂ ।

**ಭಾರಿನ್ ಭಾರಿನ್** (ಪುಂ) ಮೂಟೆ ಹೊರುವವನು, ಕೂಲಿ ಯಾಳು. ಭಾರೋಽಸ್ತಸ್ಯ "ಙಿನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪)। "ಚಕ್ರಿಣೋ ದಶಮೀಸ್ಥಸ್ಯ ರೋಗಿಣೋ ಭಾರಿಣಃ ಸ್ತ್ರೀಯಾಃ । ಸ್ನಾತಕಸ್ಯ ಚ ರಾಜಾಽಪ್ಯ ಪನ್ಯಾ ದೇಯೋ ವರಸ್ಯ ಚ" ಮನುಂ ೨-೧೩೮।

**ಭಾರ್ಗವ ಭಾರ್ಗವ** (ಪುಂ) 1. ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರು, ದೈತ್ಯರ ಗುರು. ಭೂಗೋಪತ್ಯಮ್ "ಅಙ್" (೪-೧-೧೧೪)। 2. ಗಜ, ಆನೆ. 3. ಕುಲಾಲ, ಪಾಂಡವರು ಬಿಡಾರ ಮಾಡಿದ್ದ ಮನೆಯ ಯಜಮಾನ ಕುಂಬಾರ. "ಗತ್ವಾ ತು ತಾಂ ಭಾರ್ಗವ-ಕರ್ಮಶಾಲಾಂ ಪಾಥೌ ಪೃಥಾಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ಮಹಾನುಭಾವೌ" ಭಾಂ ೧-೧೯೦-೧। 4. ಧನುರ್ಧರ, ಬಿಲ್ಲುಗಾರ. 5. ಪರಶು ರಾಮ. "ಭಾರ್ಗವೋ ಗಜಧನ್ವಿನೋಃ । ಶುಕ್ರೇ ಪರಶುರಾಮೇ ಚ" ಮೇದಿಂ । "ಕೃತ್ವಾ ರಬ್ಧಹಗತೌ ಕ್ಷಣಮನ್ತರಾಯಂ ಯದ್ಭಾರ್ಗವಃ ಪರಗತೇವಿಹತಿ ಪ್ರಪೇದೇ" ಚಂ ರಾಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಬಿ -ವೀ. 6. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. 7. ಪಾರ್ವತಿ. 8. ಗರಿಕೆಹುಲ್ಲು. "ಭಾರ್ಗವಿ ಪಾರ್ವತೀಶ್ವರೀಃ । ದ್ವಾರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ । 9. ಭೃಗುವಂಶದ ಹೆಂಗಸು. "ಕಸ್ಮಾನ್ವಿರಾಯಿತೋಽಸೀತಿ ಪೃಷ್ಠಸ್ತಾಮಾಹ ಭಾರ್ಗವೀಮ್" ಭಾಂ ೧-೭೬-೩೪ ।

**ಭಾರ್ಗವಪ್ರಿಯ ಭಾರ್ಗವಪ್ರಿಯ** (ಪುಂ) ವಜ್ರ, ಹೀರಣ್ಯ. ಶುಕ್ರ, ಗ್ರಹಕ್ಕೆ ವಜ್ರವು ಪ್ರಿಯವಾದುದು.

**ಭಾರ್ಗಿ ಭಾರ್ಗೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭಾರಂಗಿ ಮರ.

**ಭಾರ್ಯಾ ಭಾರ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧರ್ಮಪತ್ನಿ, ಮದುವೆಯಾದ ಹೆಂಡತಿ. ಖ್ಯಾತೇ — ತುಭ್ಯಾ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಘ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) । "ಸಾ ಭಾರ್ಯಾ ಯಾ ಗೃಹೇ ದಕ್ಷಾ ಸಾ ಭಾರ್ಯಾ ಯಾ ಪ್ರಿಯವದಾ (ಪ್ರಜಾವತೀ) । ಸಾ ಭಾರ್ಯಾ ಯಾ ಪತಿಪ್ರಾಣಾ ಸಾ ಭಾರ್ಯಾ ಯಾ ಪತಿವ್ರತಾ" ಭಾಂ ೧-೭೪-೪೦ । ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ಭಾರ್ಯೆಯಿದ್ದರೆ ಹರ್ಷ. ಮಂಗಳಕ್ಕೆ ಭಾರ್ಯೆಯೇ ಕಾರಣ. ಸಂಸಾರಕ್ಕೂ ಭಾರ್ಯೆಯೇ ಕಾರಣ. ಸಕಲ ವಿಧ ಸಂಸಾರ ಸೌಖ್ಯಕ್ಕೂ ಭಾರ್ಯೆಯೇ ಮೂಲಕಾರಣ. ಪತ್ನಿಯು ರಥದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ಸಂಚರಿಸುವವನಿಗೆ ರಥವಿರುವಂತೆ ಗೃಹಸ್ಥನಿಗೆ ಮನೆಯಿರುವಂತೆ. ಆದುದರಿಂದ ಸಕಲವಿಧಭೋಗ ಮತ್ತು ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳಿಗೂ ಭಾರ್ಯೆಯೇ ಮೂಲಕಾರಣ. "ಭಾರ್ಯಾಮೂಲಃ ಸದಾ ಹೃಃಃ ಭಾರ್ಯಾಮೂಲಃ ಸರ್ವಮ್ । ಭಾರ್ಯಾಮೂಲಃ ಸಂಸಾರಃ ಭಾರ್ಯಾಮೂಲಃ ಸೌರತಮ್ । ಯಥಾ ರಥಃ ರಥಿನಾಂ ಗೃಹಿಣಾಂ ಚ

ತಥಾ ಗೃಹಮ್ । ಸಾರಥಿಸ್ತು ಯಥಾ ತೇಷಾಂ ಗೃಹಸ್ಥಾನಾಂ ತಥಾ ಪ್ರಿಯಾ" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ ।

**ಭಾರ್ಯಾ ಭಾರ್ಯಾ** (ಪುಂ) 1. ಜೀವನಕ್ಕಾಗಿ ತನ್ನ ಪತ್ನಿಯನ್ನು ವಿಕ್ರಯಿಸಲು ಹೊರಟಿರುವವನು, ತನ್ನ ಪತ್ನಿಯ ವೇಶ್ಯಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಭಾರ್ಯಾ ತದಾನಮದತಿ — ಅಟ (ಗತೌ) "ಅಙ್" (೩-೨-೧) । 2. ತಮಟೆ ಹೊಡೆದು ಜೀವಿಸುವವನು. "ಭಾರ್ಯಾಃ ಪಡಹಾಜಿವೋ ಲೋಭಾತ್ಸವಸ್ತ್ರೀಸಮರ್ಪಕೇ" ಹೇಮಂ ।

**ಭಾರ್ಯಾಟಿಕ ಭಾರ್ಯಾಟಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಪತ್ನಿಯಿಂದ ಜಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನು, ಪತ್ನಿಗೆ ವಶನಾದವನು, ಪತ್ನಿಗೆ ಹೆದರುವವನು. ಭಾರ್ಯಾ ಆಟಃ ಗತಿಃ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯) । 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ, "ಭಾರ್ಯಾಟಿಕೋ ಭವೇದ್ಭಾರ್ಯಾನಿಜಿತೇ ಹರಿಣಾಂತರೇ" ವಿಶ್ವಂ ।

**ಭಾರ್ಯಾಪತಿ ಭಾರ್ಯಾಪತಿ** (ಪುಂ ದ್ವಿವಂ) ಪತ್ನಿ ಮತ್ತು ಪತಿ, ಗಂಡ ಹೆಂಡಿರು, ದಂಪತಿಗಳು. ಭಾರ್ಯಾ ಚ ಪತಿಶ್ಚ ।

**ಭಾರ್ಯಾ ಭಾರ್ಯಾ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಪರ್ವತ. 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. 3. ನಿಯೋಗವಿಲ್ಲದೆ ಪರಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪಡೆದವನು. ಭಾರ್ಯಾ ಪರಭಾರ್ಯಾಮೃಚ್ಛತಿ — ಋ (ಗತೌ) "ಉಙ್" (೩ಂ ೧-೧) । "ಭಾರ್ಯಾಃ ಶಿಲಾಭೇದೇ ಸ್ಯಾತ್ ಮೃಗಭೇದೇ ಚ ತತ್ರ ಚ । ಕ್ರೋಡಯಾ ಪರಭಾರ್ಯಾಂ ಪುತ್ರೋ ಯೇನೋಪಪಾದಿತಃ" ಮೇದಿಂ ।

**ಭಾರ್ಯಾ ಭಾರ್ಯಾ** (ಪುಂ) ಮದುವೆಯಾದವನು, ಪತ್ನಿಯನ್ನು ಪಡೆದವನು. ಠಾ ಭಾರ್ಯಾ ಯೇನ — ವಾ ಪರಿನಿಪಾತಃ (೨-೨-೩೭) । ಪಕ್ಷಿ ಠಾಭಾರ್ಯಾಃ ಉಠಾಭಾರ್ಯಾಃ ।

**ಭಾಲ ಭಾಲ** (ನಂ) 1. ಹಣೆ, ನೊಸಲು, ಲಠಿ. ಭಾ ದೀಪ್ತಿ ಲಾತಿ — ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) । 2. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. "ಭಾಲಂ ತೇಜೋಲಲಾಟಯೋಃ" ಮೇದಿಂ । "ಸ್ವಾಮಿನ್ ಭಟ್ಟಗುರಯಾಲಕಂ ಸತೀಲಕಂ ಭಾಲಂ ವಿಲಾಸಿನ್ ಕುರು" ಸಾಂ ದಂ ೩ ।

**ಭಾಲನೆತ್ರ ಭಾಲನೆತ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. ಭಾಲೇ ನೇತ್ರಮಸ್ಯ । -ಲೋಚನಃ -ಲೋಚನಃ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲೋಚನಾ -ಲೋಚನಾ. 2. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

**ಭಾಲಾಙ್ಕ ಭಾಲಾಙ್ಕ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ, ಪರಶಿವ. ಭಾಲೇ ಅಙ್ಕೋಽಸ್ಯ । 2. ಗಂಗೆ. 3. ಒಂದು ವಿಧ ಶಾಕ. 4. ಕಚ್ಚುಪ, ಆಮೆ. 5. ಕೆಂಪುಮೀನು. 6. ಹಣೆಯಲ್ಲಿ ಮಹಾಪುರುಷನ ಲಕ್ಷಣವುಳ್ಳ ಪುರುಷ. "ಭಾಲಾಙ್ಕಃ ಕರಪತ್ರೇ ಸ್ಯಾತ್ ಶಾಕಭೇದೇ ಚ ರೋಹಿತೇ । ಮಹಾಲಕ್ಷಣಸಂಪನ್ನಪುರುಷೇ ಕಚ್ಚುಪೇ ಹರೇ" ಮೇದಿಂ ।



ಭಾಲ್ ಭಾಲ್ (ಪುಂ) ಅದಿತ್ಯ, ಸೂರ್ಯ.

ಭಾಲ್ ಭಾಲ್ (ಪುಂ) ಕರಡಿಯಾಕಾರದ ಒಂದು ಪ್ರಾಣ.

ಭಲ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಝಕ:" (ಓಂ ೪-೪೧)। "ಕೋಲಙ್ಕಸ್ತು ಜಲಕೋ ಭಾಲ್ಕೋ ಭಲ್ಕುಕಾಕೃತಿ:" ವೇಜಂ।

ಭಾವ ಭಾವ (ಪುಂ) 1. ಅಶಯ, ಅಭಿಪ್ರಾಯ. ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಪ್ರಸಹಾ ಚೇತಃಸು ಸಮಾಸಜಂತಮಸಂತುತಾನಾಮಪಿ ಭಾವಮಾರ್ಗಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೨। 2. ಮನಸ್ಸಿನ ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಒಂದು ಸಾತ್ವಿಕ ಭಾವ. ಭಾವಯತಿ ಜಾಪಯತಿ ಮನೋಗತಮ್ — ಭೂ + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಭಾವಸುಚಿತ-ಮದೃಷ್ಟವಿಪ್ರಿಯಮ್" ಕುಮಾಂ ೮-೧೫। ಸಾತ್ವಿಕ ಭಾವವು (1) ಸ್ತಂಭಃ, (2) ಪ್ರಲಯಃ, (3) ರೋಮಾಂಚಃ, (4) ಸ್ವರಭಿಜ್ಞಃ, (5) ವೇಪಥುಃ, (6) ವೈವರ್ಣ್ಯಮ್, (7) ಅಶ್ರು ಮತ್ಸು (8) ಸ್ವೇದಃ ಎಂದು ಎಂಟು ವಿಧ. "ಸ್ತಂಭಃ ಸ್ವೇದೋಽಥ ರೋಮಾಂಚಃ ಸ್ವರಭಿಜ್ಞೋಽಥ ವೇಪಥುಃ। ವೈವರ್ಣ್ಯಮಶ್ರುಪ್ರಲಯ ಇತ್ಯಷ್ಟೌ ಸಾತ್ವಿಕಾಃ ಸ್ಮೃತಾಃ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೩೫। 3. ನಿರ್ವೇದ ಮೊದಲಾದ ಮೂವತ್ತಮೂರು ವೈಭಿಜಾರಿಭಾವಗಳು. [ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೪೧ ನೋಡಿ] 4. ರತಿ ಮೊದಲಾದ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವಗಳು. ಇವು 8 ಅಥವಾ 9. (1) ರತಿಃ, (2) ಹಾಸಃ, (3) ಶೋಕಃ, (4) ಕ್ರೋಧಃ, (5) उत्साहः, (6) भयम्, (7) जुगुप्सा ಮತ್ತು (8) विस्मयಃ ಎಂದು ಎಂಟು ವಿಧ. ಕೆಲವರು ಶಂಕಿತರಸವನ್ನೂ ಅಂಗೀಕರಿಸಿ ಶಮವನ್ನೂ ಸೇರಿಸಿ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವಗಳು 9 ಎಂದು ಹೇಳುವರು. "ರತಿಹಾಸಿಶ್ಚ ಶೋಕಶ್ಚ ಕ್ರೋಧೋತ್ಸಾಹೌ ಭಯಂ ತಯಾ। ಜುಗುಪ್ಸಾ ವಿस्ಮಯಃ ಚೇತ್ಯ-ಮಠೌ ಪ್ರೋಕ್ತಾಃ ಶಮೋಽಪಿ ಚ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೭೫। "ನಾನಾಭಿನಯಸಂಬಂಧಾಭಾವಯಂತಿ ರಸಾನ್ಯತಃ। ತಸ್ಮಾನ್ಭಾವಾ ಅಮಿ ಪ್ರೋಕ್ತಾಃ ಸ್ಥಾಯಿ ಸಂಚಾರಿ (ವ್ಯಭಿಚಾರಿ) ಸಾತ್ವಿಕಾಃ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೮೧। "ಕಮಪರಮವಶಂ ನ ವಿಪ್ರಕುರ್ಯುಃ ವಿಭುಮಪಿ ತಂ ಯದಮಿ ಸ್ಪೃಶಂತಿ ಭಾವಾಃ" ಕುಮಾಂ ೬-೯೫। 5. ಅಲಂಕಾರ ಮತ್ತು ಉದ್ದೇಶನ ವಿಭಾವಗಳು. "ಭ್ರಮತಿ ಭುವನೇ ಕಂದರ್ಪಜ್ಞಾ ವಿಕಾರಿ ಚ ಯೌವನಂ ಲಲಿತಮಧುರಾಸ್ತೇ ತೇ ಭಾವಾಃ ಕ್ಷಿಪಂತಿ ಚ ಧೀರತಾಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೦। 6. ಸತ್ಯ, ಇರುಷಿಕೆ, ಅಸ್ತಿತ್ವ. "ನಾಸತೋ ವಿಘ್ನತೇ ಭಾವೋ ನಾಭಾವೋ ವಿಘ್ನತೇ ಸತಃ। ತುಭಯೋರಪಿ ದೃಷ್ಟಾಂತಸ್ತವನಯೋ-ಸ್ತತ್ವದರ್ಶಿನಿಃ" ಗೀತಾ ೨-೧೬। 7. ಸ್ಥಿತಿ, ದೇಶ, ಅವಸ್ಥೆ. "ವಸುಧೇವಕುಪ್ತನಂದಯಂ ತತ್ ಕಿಮಪಿ ಇಹಾ ಕಿಶೋರಭಾವ-ದೃಶ್ಯಮ್" ಗೋಪಾಲವಿಂ। 8. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಸರ್ವ-ವಿಭೂತಿಭಿರ್ವಿಶಿಷ್ಟತಯಾ ಭವತಿ — ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಞಃ" ಕಾಶಿಕಾವೃತ್ತಿಃ (೩-೧-೧೪೩)। ಭಾವಯತಿ — ಭೂ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ)

+ ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ವಾ। "ಭಾವಃ ಪ್ರಪಂಚಾತ್ಮತಯಾ ಭಾತಿ ಸತ್ತಾಸ್ವರೂಪತಃ" ಇತಿ ನಿರ್ವಹಿತಃ। "ಭೂತಕೃತ್ ಭೂತಮೃದ್ಭಾವಃ" ವಿಂ ಸಂ। 9. ವಸ್ತು, ವಿಷಯ, ಪದಾರ್ಥ. "ಜಗತಿ ಜಯಿನಸ್ತೇ ತೇ ಭಾವಾ ನಬೇಂದುಕಲಾದಯಃ ಪ್ರಕೃತಿಮಧುರಾಃ ಸಂತ್ಯೇವಾನ್ಯೇ ಮನೋ ಮಂದಯಸ್ತಿ ಚ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೩೯। 10. ಪೀಡೆ, ವಿಶ್ವಾಸ. "ಬಬಂಧ ಸಾ ನೋತಮ-ಸೌಕುಮಾರ್ಯಾ ಕುಮುದತೀ ಭಾನುಮತೀವ ಭಾವಮ್" ರಘುಂ ೬-೩೬। 11. ದರ್ಜೆ, ಪದವಿ, ಅಂತಸ್ತು. "ಪ್ರೇಮಭಾವೇನ ನಾಮೇಯಂ ದೇವೀಶಬ್ದಕ್ಷಮಾ ಸತೀ। ಸ್ನಾನೀಯವಸ್ತ್ರಕ್ರಿಯಯಾ ಪತ್ರೋಣೈವೋಪ-ಯುಜ್ಯತೇ" ಮಾಲಂ ೫-೧೨। 12. ವಸ್ತುವಿನ ಅಸಾಧಾರಣ ಧರ್ಮ. "ತಸ್ಯ ಭಾವಸ್ತವತಲೌ" (೫-೧-೧೧೯)। ಗೋಭಾವಃ ಗೋತ್ವಮ್। ಘಟಸ್ಯ ಭಾವಃ ಘಟತ್ವಮ್। 13. ಚಿತ್ತ, ವೃತ್ತಿ, ಪಾರಮಾರ್ಥಿಕವಾದ ಸತ್ಯವಾದ ಬುದ್ಧಿ, ಭಕ್ತಿ. "ಅಹಂ ಸರ್ವಸ್ಯ ಪ್ರಭವೋ ಮತ್ತಃ ಸರ್ವಂ ಪ್ರವರ್ತತೇ। ಇತಿ ಮತ್ವಾ ಭಜಂತೇ ಮಾಂ ಬುಧಾ ಭಾವಸಮನ್ವಿತಾಃ" ಗೀತಾ ೧೦-೮। 14. ಭಾವನೆ, ಕ್ರಿಯೆ, ಸಕಲ ಧಾತುವಾಚ್ಯವಾದ ಕ್ರಿಯಾ ಸಾಮಾನ್ಯ, ಸಿದ್ಧಾಂತವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಧಾತ್ವರ್ಥ. ಸಿದ್ಧಾಂತವಸ್ಥಾಪನೆ ಧಾತುರ್ಥೆ ವಾಕ್ಯ ಧಾತುಃ "ಭವ್" ಸಿಂ ಕೌಂ। ಪಾಕ ಶಬ್ದವು ಪಚ ಧಾತುವಿಗೆ ಭಾವಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ವಿಹಿತವಾದ "ಭವ್" ಪ್ರತ್ಯಯದಿಂದ ಪಾಕರೂಪವಾದ ಕ್ರಿಯೆಯನ್ನು ಬೋಧಿಸುವುದರಿಂದ ಸಿದ್ಧಾಂತವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿದ ಧಾತ್ವರ್ಥದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯುಕ್ತವಾಗಿದೆ. 15. ಸ್ವಭಾವ, ಸಹಜವಾದ ಗುಣ, ಸ್ವರೂಪಲಕ್ಷಣ, ಧರ್ಮ, ಪ್ರಕೃತಿ, ಹುಟ್ಟುಗುಣ. "ನ ತೇಜಸ್ತೇಜಸ್ವೀ ಪ್ರಸುತಮಪರೇಣಾ ವಿಪಹೃತೇ ಸ ತಸ್ಯ ಸ್ವೋ ಭಾವಃ ಪ್ರಕೃತಿನಿಯತತ್ವಾತ್ಪ್ರಕೃತಕಃ" ಓಂ ರಾಂ ೬-೧೪। 16. ಅರ್ಥ, ಅಭಿಪ್ರಾಯ, ತಾತ್ಪರ್ಯ, ಸಾರಾಂಶ. 17. ಮನಸ್ಸು, ಚಿತ್ತ, ಹೃದಯ. "ಮನಃ-ಪ್ರಸಾದಃ ಸೌಮ್ಯತ್ವಂ ಮೌನಮಾತ್ಮವಿನಿಗ್ರಹಃ। ಭಾವಸಂಶುದ್ಧಿ-ರित್ಯೇತತ್ತಪೋ ಮಾನಸಮುಚ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೧೭-೧೬। 18. ರಂಗಸ್ಥಲದ ವಿದ್ವಾಂಸ, ನಾಟ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಂಭಾವಿತನಾದ ಮನುಷ್ಯ (ನಟ). "ಭಾವೋ ವಿಜ್ಞಾನ" ಅಮಂ। 19. ಜನ್ಮ, ಹುಟ್ಟು. 20. ವಿಭೂತಿ. 21. ಶುದ್ಧವಾದ ಧಾತ್ವರ್ಥ, ಕೇವಲ ಧಾತುವಿನ ಅರ್ಥ. "ಧಾತುರ್ಥಃ ಕೇವಲಃ ಶುದ್ಧೋ ಭಾವ ಇತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ"। 22. ಪದಾರ್ಥಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿ ಮೊದಲಾದ ಆರು ವಿಚಾರಗಳು. (1) ಉತ್ಪತ್ತಿ, (2) ಸ್ಥಿತಿ, (3) ವಿಪರೀಣಾಮ, (4) ಬೆಳವಣಿಗೆ (ವರ್ಧನ), (5) ಕ್ಷಯ ಮತ್ತು (6) ನಾಶ ಇವು ವಸ್ತುವಿನ ಆರು ವಿಚಾರಗಳು. "ಉತ್ಪತ್ತಾದಿರೂಪಣಭಾವವಿಕಾರಯುಕ್ತಃ ಪದಾರ್ಥಃ" ಇತಿ ಯಾಸ್ಕಃ। 23. ನವಗ್ರಹಗಳ ಜೀವ್ಯ, ಗ್ರಹಗಳ 12 ವಿಧ



ವ್ಯಾಪಾರ, ಕೆಲಸ. “ಶಯನಂ ಚೋಪವೇಶಶ್ಚ ನೇತ್ರಪಾಣಿಃ  
ಪ್ರಕಾಶನಮ್ | ಗಮನಂ ಗಮನೇಚ್ಛಾ ಚ ಸಮಾಧಿಂ ವಸತಿಸ್ಥಿತಿಃ |  
ಆಗಮನಂ ಭೋಜನಂ ನೃತ್ಯಲಿಪ್ತಾ ಚ ಕೌತುಕಮ್ | ನಿद्रಾ  
ಗ್ರಹಣಾ ಭಾವಾಶ್ಚ ದ್ವಾದಶೈಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾಃ” | 24. ಆತ್ಮ.  
25. ಪರ್ಯಾಯೋಚನ, ಚಿಂತನೆ, ವಿವೇಚನೆ. “ಯದಾ  
ಭಾವೇನ ಭವತಿ ಸರ್ವಭಾವೇಷು ನಿಃಸ್ಪೃಹಃ | ತದಾ ಸುಖ  
ಮವಾಪ್ನೋತಿ ಪ್ರೇತಃ ಚೇಹ ಚ ಶಾಶ್ವತಮ್” ಮನುಂ ೬-೮೦ |  
26. ಒಂದು ವಿಧ ಅಭಿನಯ. 27. ಜಂತು, ಪ್ರಾಣಿ.  
28. ಗೌರವಹೊಂದಿದ, ಮಾನ್ಯ, ಪೂಜ್ಯ. “ಭಾವೋ ಗೌರವಿತೇ  
ಜಂತೌ ಪದಾರ್ಥಸಂಭಿನಯಾಂತರೇ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 29. ಲಗ್ನ  
ಮೊದಲುಗೊಂಡು ತನು ಮೊದಲಾದ ಹನ್ನೆರಡು ಭಾವ  
ಗಳು. (1) ತನು. (2) ಧನ, ಕುಟುಂಬ, ವಾಕ್ಯ, ಪ್ರಯಾಣ, ನೇತ್ರ, ಮುಖ ಮುಂತಾದುವು. (3) ಭಗಿನಿ,  
ಸಹೋದರ, ಸತ್ತ್ವ, ಪರಾಕ್ರಮ ಮುಂತಾದುವು. (4) ಮಾತೃ, ಬಂಧು, ಸುಖ, ಪುಸ್ತಕ, ಗೃಹ, ಶಯ್ಯ,  
ಪಶು, ಧಾನ್ಯ ಮುಂತಾದುವು. (5) ಸಂತತಿ (ಸಂತಾನ),  
ಪ್ರತಿಭೆ ಮುಂತಾದುವು. (6) ಶತ್ರು, ರೋಗ, ಭಯ, ಪಾಪ, ಶಸ್ತ್ರ, ಆಪಣ (ಅಗಡಿ), ಜ್ಞಾತಿ ಮುಂತಾದುವು.  
(7) ಕಾಮ, ಪತ್ನಿ, ದ್ಯೂತ, ವಾಣಿಜ್ಯ, ಕ್ರಯ ವಿಕ್ರಯ, ವಿವಾಹ, ಭೋಗ, ಅಲಂಕಾರ ಮುಂತಾದುವು. (8) ನಿಧನ,  
ನಾಶ, ಆಯುಷ್ಯ, ಜೀವನೋಪಾಯ, ಮೋಕ್ಷ ಮುಂತಾ  
ದುವು. (9) ಸುಕೃತ, ಗುರು, ಭಾಗ್ಯ, ಪಿತೃಜ್ಞಾನ, ದಯೆ, ಭಕ್ತಿ,  
ದೇವತೋಪಾಸನೆ, ಆನಂದ ಮುಂತಾದುವು. (10) ಪುಣ್ಯ, ಸತ್ಕರ್ಮ, ವೀರ್ಯ ಮುಂತಾದುವು. (11)  
ಆಯುಸ್ಸು, ಅರ್ಥಲಾಭ, ಜಯ ಮುಂತಾದುವು. (12)  
ವೈಯ, ನರಕ, ನಾಶ ಮುಂತಾದುವು. ಇವು ತನ್ನಾದಿ  
ದ್ವಾದಶ (12) ಭಾವಗಳು. 30. ಸ್ತ್ರೀಯರಿಗೆ ಯೌವನ  
ದಲ್ಲಿ ಸ್ವಭಾವವಾಗಿ ಉಂಟಾಗುವ 28 ವಿಧ ಅಲಂಕಾರ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ಅಲಂಕಾರ,  
ಹುಟ್ಟಿದ ಮೊದಲುಗೊಂಡು ಯಾವ ರೀತಿಯ ವಿಕಾರ  
ವನ್ನೂ ಹೊಂದದಿರುವ ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಪ್ರಥಮತಃ ಉಂಟಾ  
ಗುವ ವಿಕಾರ. “ನಿವಿಕಾರಾತ್ಮಕೇ ಚित್ತೇ ಭಾವಃ ಪ್ರಥಮ-  
ವಿಕ್ರಿಯಾ” ಸಾಂ ೬೦ ೩-೯೩ | 31. ಯೋನಿ. 32. ಬುಧ,  
ಪಂಡಿತ. 33. ಲೀಲೆ. 34. ಉಪದೇಶ, ಸಲಹೆ.  
35. ಶಬ್ದದ ಪ್ರವೃತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣ. “ಭಾವೋಽಭಿಪ್ರಾಯ-  
ವಸ್ತುನೋಃ | . ಸ್ವಭಾವಜನ್ಮಸತ್ತಾತ್ಮಕ್ರಿಯಾಲಿಲಾವಿಭೂತಿಷು |  
ಚೇಷ್ಟಾಯೋನ್ಯೋಬೃಧೇ ಜಂತೌ ಸೃಷ್ಟಾರಾದೇಶ್ಚ ಕಾರಣಂ | ಶಬ್ದಪ್ರವೃತ್ತಿ-  
ಹೇತೌ ಚ” ಹೇಮಂ | 36. (ಸಾಂಖ್ಯ ಮತದಲ್ಲಿ) ಧರ್ಮ  
ಮೊದಲಾದ ಎಂಟು ವಿಧವಾದ ಭಾವಗಳು. (1) ಧರ್ಮ;

(2) ಅಧರ್ಮ, (3) ಜ್ಞಾನಮ್, (4) ಅಜ್ಞಾನಮ್, (5) ವೈರಾಗ್ಯಮ್,  
(6) ಅವೈರಾಗ್ಯಮ್, (7) ಔಶ್ವರ್ಯಮ್ ಮತ್ತು (8) ಅನೌಶ್ವರ್ಯಮ್  
ಇವು 8 ವಿಧ ಭಾವಗಳು. 37. (ದ್ವೈತಮತದಲ್ಲಿ) ಚೇತನ  
ಮತ್ತು ಅಚೇತನ ಎಂಬ ಎರಡು ಭೇದಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ  
ಅಸ್ವತಂತ್ರ ತತ್ತ್ವ. 38. (ವೈಶೇಷಿಕ ಮತದಲ್ಲಿ) ದ್ರವ್ಯ  
ಗುಣ ಕರ್ಮ ಸಾಮಾನ್ಯ ವಿಶೇಷ ಮತ್ತು ಸಮವಾಯು  
ಗಳೆಂಬ ಆರು ಪದಾರ್ಥಗಳು. “ದ್ರವ್ಯಾದಿಷಟ್ಕಾನ್ಯತಮತ್ವ  
ಭಾವತ್ವಮ್” ಸಿಂ ಮುಕ್ತಾಂ |

**ಭಾವಕ ಭಾವಕ (ಪುಂ)** 1. ಚಿತ್ತವಿಕಾರ, ಭಾವನೆ. ಭಾವ  
ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕಃ” | (ವಿಂ) 2. ಭಾವಿಸುವ, ಕಲ್ಪಿಸುವ,  
ಊಹಿಸುವ. 3. ಉತ್ಪಾದಿಸುವ, ಸೃಷ್ಟಿಸುವ, ಕಾರ್ಯ  
ರೂಪಕ್ಕೆ ತರುವ. ಭೂ + ಣಿच् “ಫ್ಲು” (೩-೧-೧೩೩) |  
**ಭಾವಜ ಭಾವಜ (ಪುಂ)** ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ಭಾವೇ ಮನಸಿ  
ಜಾಯತೇ — ಜನಿ “ಛಃ” (೩-೨-೯೭) |

**ಭಾವಜ ಭಾವಜ (ವಿಂ)** 1. ಮನಸ್ಸನ್ನು ಅರಿತವನು,  
2. ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. ಭಾವಂ ಚಿತ್ತಂ ಆಶಯಂ  
ವಾ ಜಾನಾತಿ — ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) “ಕಃ” (೩-೨-೩) |  
**ಭಾವತ ಭಾವತ (ವಿಂ)** ಉತ್ಪತ್ತಿಹೊಂದುವ ವಸ್ತುವಿನ  
ಸಂಬಂಧವಾದ, ಮುಂದೆ ಹುಟ್ಟುವ ಪದಾರ್ಥಸಂಬಂಧ  
ವಾದ. ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) |  
ಭವತಃ ಇದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) |

**ಭಾವತ್ ಭಾವತ್ (ವಿಂ)** ನಿನ್ನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಭವತಃ  
ಇದಮ್ — “ಠಕ್” (೪-೨-೧೧೪) | ವೃದ್ಧ ಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ  
ಭವತ್ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಠಕ್ ಪ್ರತ್ಯಯವೂ ಶತ್ ಪ್ರತ್ಯಯಾಂತ  
ಭವತ್ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಅನ್ ಪ್ರತ್ಯಯವೂ ಬರುವುದು.

**ಭಾವನ ಭಾವನ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. ಅನಿಷ್ಟನಿವಾರಣಾದಿನಾ  
ಭಾವಯತಿ ತಜ್ಜೀವಯತಿ — ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) + ಣಿच्  
“ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪) | “ಜನಿತ್ವೋಜ್ಜೀವಯತಿ ಯೋ ಜನಾನ್  
ಸ್ಯಾತ್ ಭಾವನಸ್ತು ಸಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | “ಸಂಭವೋ ಭಾವನೋ  
ಭರ್ತಾ ಪ್ರಮವಃ ಪ್ರಭುರೀಶ್ವರಃ” ವಿಂ ಸಂ | 2. ಪರಶಿವ,  
ಪರಮೇಶ್ವರ. (ಸ್ತ್ರೀನಂ) —ನಾ-ನಾ, -ನಮ್-ನಮಃ.  
3. ಧ್ಯಾನ, ಚಿಂತನೆ. ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) + ಣಿच् “ಯು”  
(೩-೩-೧೦೭) | ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) ವಾ |  
“ನಾಸ್ತಿ ಬುದ್ಧಿರಯುಕ್ತಸ್ಯ ನ ಚಾಯುಕ್ತಸ್ಯ ಭಾವನಾ” ಗೀತಾ  
೨-೬೬ | 4. ಶ್ರದ್ಧೆ, ನಂಬಿಕೆ, ವಿಶ್ವಾಸ. “ಮನ್ತ್ರೇ ತೀರ್ಥೇ  
ದ್ವಿಜೇ ದೇವೇ ದೇವಜ್ಞೇ ಭೇಷಜೇ ಗುರೌ | ಪಾದೃಶೀ ಭಾವನಾ ಯಸ್ಯ  
ಸಿದ್ಧಿರ್ಭವತಿ ತಾದೃಶೀ” ಪञ्ಚತಂ ೪-೯೯ | 5. ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ  
ಉಂಟಾಗುವ ಕಲ್ಪನೆ, ಕಲ್ಪನೆಯ ಬಿಂಬ. “ಮುಹುರವಲೋಕಿತ-  
ಮಂಜನಲಿಲಾ ಮಧುರಪುರಹಮಿತಿ ಭಾವನಶಿಲಾ” ಗೀತಗೋಂ



೬-೪। 6. ಲೇಪನ, ಬಳಿಯುವುದು, ಪುಸುವುದು.  
7. ವಾಸನೆ ಕಟ್ಟುವುದು. "ಭಾವನಾ ಲೇಪನೇ ವ್ಯಾಪ್ತೇ" ವಿಷಯಂ ।  
8. ಜನ್ಮಾಂತರದ ವಾಸನೆ, ಅನುಭೂತವಸ್ತುವಿನ ಸ್ಮೃತಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ ಸಂಸ್ಕಾರ. 9. ಪ್ರಯತ್ನ. ಚೇತಃ ತಾತ್ಕಲಿಕ ಪಚತಿ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಅಪ್ಯಾತಾರ್ಥವಾದ ಪ್ರಯತ್ನವು ಭಾವನೆ. 10. ಧಾತುವಾಚ್ಯವಾದ ವ್ಯಾಪಾರ. ಪಚತಿ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪಾಕಾನುಕೂಲ ವ್ಯಾಪಾರವು ಭಾವನೆ. "ವ್ಯಾಪಾರೋ ಭಾವನಾ ಸೇವೋತ್ಪಾದನಾ ಸೇವ ಚ ಕ್ರಿಯಾ" । 11. (ವೈದ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಔಷಧವನ್ನು ತಯಾರಿಸಲು ಮಾಡುವ ಒಂದು ಸಂಸ್ಕಾರ, ದ್ರವ ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಜೋರ್ಣವನ್ನು ಬೆರೆಸಿ ಔಷಧಕ್ಕೆ ಮಾಡುವ ಸಂಸ್ಕಾರ. 12. ಪರ್ಯಾಯ ಲೋಚನೆ.

**ಭಾವಬೋಧಕ ಭಾವಬೋಧಕ** (ವಿಂ) ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ, ಮನೋಗತವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ. (ರೋಮಾಂಚ ಭೂಭಂಗ ಮೊದಲಾದುವು.) ಭಾವಂ ಬೋಧಯತಿ—ಬುಧ (ಅವಗಮನೆ) + ಣಿಚ್ "ಞ್ಚುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

**ಭಾವಮಿಶ್ರ ಭಾವಮಿಶ್ರ** (ವುಂ) (ನಾಟಕದಲ್ಲಿ) ಪೂಜ್ಯ, ಗೌರವಾರ್ಹ. "ಪ್ರಸಿದಂತು ಭಾವಮಿಶ್ರಾಃ" ಶಾಕುಂ ೬ ।

**ಭಾವವಚನ ಭಾವವಚನ** (ನಂ) ಧಾತ್ವರ್ಥವನ್ನು ಹೇಳುವ ಪದ, ಕ್ರಿಯೆಯನ್ನು ಹೇಳುವ ಪದ. ಭಾವಃ ಕ್ರಿಯಾ ಉಚ್ಯತೇಜನೇನ ।

**ಭಾವವಾಚಕ ಭಾವವಾಚಕ** (ನಂ) ಧಾತ್ವರ್ಥವನ್ನು ಹೇಳುವ ಪದ. ಭಾವಸ್ಯ ಧಾತ್ವರ್ಥಕ್ರಿಯಾಯಾ ವಾಚಕಮ್ ।

**ಭಾವಶಬಲತಾ ಭಾವಶಬಲತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭಾವಗಳ ಮಿಶ್ರಣ, ಪರಸ್ಪರ ವಿರುದ್ಧವಾದ ಅಥವಾ ಉದಾಸೀನವಾದ ಭಾವಗಳ ಮಿಶ್ರಣ. "ಬಾಹ್ಯಬಾಧಕಭಾವಮಾಪತ್ರಾನಾಮ್ ಉದಾಸೀನಾನಾಂ ವಾ ಭಾವಾನಾಂ ಶಬಲತಾ ವ್ಯಾಮಿಶ್ರಣಮ್" ರಸಗಂ । "ಕ್ವಾಕಾರ್ಯ ಶಶಲಕ್ಷ್ಮಣಃ ಕ್ವ ಚ ಕುಲಂ ಭೂಯೋಽಪಿ ದೃಶ್ಯತ ಸಾ ದೋಷಾಣಾಂ ಪ್ರಶಮಾಯ ಮೇ ಶ್ರುತಮಹೋ ಕೋಪೇಽಪಿ ಕಾಂತಂ ಮುಖಮ್ । ಕಿಂ ವಕ್ಷ್ಯಂತ್ಯಪಕಲ್ಮಷಾಃ ಕೃತಧಿಯಃ ಸ್ವಪ್ನೇಽಪಿ ಸಾ ದುರ್ಲಭಾ ಚೇತಃ ಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯಮುಪೇಹಿ ಕಃ ಕ್ವಲಯುವಾ ಧನ್ಯೋಽಪರಂ ಪಾಸ್ಯತಿ" ವಿಕ್ರಂ । ಇಲ್ಲಿ ವಿತರ್ಕ ಔತ್ಸುಕ್ಯ ಮತಿವಿಸ್ಮರಣ ಶಂಕಾ ಮುಂತಾದ ಭಾವಗಳ ಮಿಶ್ರಣ.

**ಭಾವಶಾಂತಿ ಭಾವಶಾಂತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭಾವಗಳ ನಾಶ, ವಿರುದ್ಧ ಸಾಮಗ್ರಿಯ ಬಲದಿಂದ ಭಾವಗಳು ಶಾಂತವಾಗುವಿಕೆ. ಭಾವಸ್ಯ ಶಾಂತಿಃ ಶಮಃ । "ಸುತನು ಜಹಿಹಿ ಕೋಪಂ ಪಥ್ಯ ಪಾದಾನತಂ ಮಾಂ ನ ಕ್ವಲಂ ತವ ಕದಾಚಿತ್ ಕೋಪ ಉಪವಿಧೋಽಭೂತ್ । ಇತಿ ನಿಗದತಿ ನಾಥೇ ತಿರ್ಯಗಾಮಿಲಿತಾಕ್ಷಾ

ನಯನಜಲಮನಲ್ಪಂ ಮುಕ್ತಮುಕ್ತಂ ನ ಕಿಂಚಿತ್" ಇಲ್ಲಿ ಕಣ್ಣೀರು ಬಿಟ್ಟಿದ್ದರಿಂದ ಈರ್ಷ್ಯಾರೂಪ ಸಂಚಾರಿ ಭಾವಕ್ಕೆ ನಾಶ.

**ಭಾವಶೂನ್ಯ ಭಾವಶೂನ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಅನುರಾಗಶೂನ್ಯ, ವಿಶ್ವಾಸವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರೀತಿಯಿಲ್ಲದ. ಭಾವೇನ ಶೂನ್ಯಃ ರಹಿತಃ । "ಉಪಚಾರವಿಧಿಮನಸ್ವಿನೀನಾಂ ನ ತು ಪೂರ್ವಾಮ್ಯಧಿಕೋಽಪಿ ಭಾವಶೂನ್ಯಃ" ಮಾಲಂ ೩-೩ । 2. ಅಭಿಪ್ರಾಯವಿಲ್ಲದ, ಮನಸ್ಸಿಲ್ಲದ, ಉದ್ದೇಶವಿಲ್ಲದ. "ಇತ್ಯೇವಂ ತ್ಯಕ್ತಹಸ್ತೇ ಸಪದಿ ಸುರಗಣೇ ಭಾವಶೂನ್ಯೇ ಸಮಸ್ತೇ" ।

**ಭಾವಸಂಧಿ ಭಾವಸಂಧಿ** (ವುಂ) ಭಾವಗಳ ಸಂಧಿ, ವಿರುದ್ಧವಾದ (ಸಂಚಾರಿ) ಭಾವಗಳಿಗೆ ಒಂದು ಕಡೆ ಸಮಾವೇಶ. ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಭಿಭೂತಯೋಃ ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಭಿಭವನಯೋರ್ಯೋರ್ಭಾವಯೋಃ ಸಾಮಾನ್ಯಾಧಿಕರಣ್ಯಂ ಭಾವಸಂಧಿಃ ರಸಗಂ । "ನಯನಯುಗಾ-ಸೇವನಕಂ ಮಾನಸವೃತ್ತಯಾಪಿ ದುಃಪ್ರಾಪಮ್ । ರೂಪಮಿದಂ ಮದಿರಾಕ್ಷಯಾ ಮದಯತಿ ಹೃದಯಂ ದುನೋತಿ ಚ ಮೇ" ಇಲ್ಲಿ ಹರ್ಷ ಮತ್ತು ವಿಷಾದಗಳಿಗೆ ಸಮಾವೇಶವಿರುವುದು.

**ಭಾವಸಮಾಹಿತ ಭಾವಸಮಾಹಿತ** (ವಿಂ) 1. ಭಕ್ತಿಸಂಪನ್ನ, ಭಕ್ತ. 2. ಶ್ರದ್ಧಾಳು, ಧರ್ಮಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು.

**ಭಾವಸ್ಥ ಭಾವಸ್ಥ** (ವಿಂ) ಅನುರಾಗವುಳ್ಳವನು, ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳವನು, ವಿಶ್ವಾಸವುಳ್ಳವನು. ಭಾವೇ ತಿಷ್ಠತಿ—ಘಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕಃ" (೩-೨-೪) । "ಯದಾ ಬುಧಃ ಸರ್ವಗತ-ಸ್ವಮುಚ್ಯತೇ ನ ವೇತ್ಸಿ ಭಾವಸ್ಥಮಿಮಂ ಕಥಂ ಜನಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೪೮ ।

**ಭಾವಸ್ಥಿರ ಭಾವಸ್ಥಿರ** (ವಿಂ) ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಬೇರೂರಿರುವ, ಜನ್ಮಾಂತರವಾಸನೆಯಿಂದ ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವ. ಭಾವಃ ಸ್ಥಿರಮ್ । "ತನ್ವೇತಸಾ ಸ್ಮರತಿ ನೂನಮಬೋಧಪೂರ್ವ ಭಾವಸ್ಥಿರಾಣಿ ಜನನಾಂತರಸೌಹೃದಾನಿ" ಶಾಕುಂ ೪-೨ ।

**ಭಾವಾಟ ಭಾವಾಟಿ** (ವುಂ) 1. ಭಾವಕ. 2. ಸಾಧು. 3. ನಿವೇಶ. 4. ಕಾಮುಕ. 5. ನಟ. ಭಾವೇನ ಅದತಿ—ಅಟ (ಗತೌ) "ಅಣ್" (೩-೨-೧) । "ಭಾವಾಟೋ ಭಾವಕೇ ಸಾಧೌ ನಿವೇಶೇ ಕಾಮುಕೇ ನಟೇ" ಮೇದಿಂ ।

**ಭಾವಾನುಗ ಭಾವಾನುಗ** (ವಿಂ) 1. ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯುವವನು, ಆಶಯದಂತೆ ನಡೆಯುವವನು. ಭಾವಮನುಸೃತ್ಯ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಙಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಅನುಗಾ —ಅನುಗಾ. 2. ಛಾಯೆ, ನೆರಳು.

**ಭಾವಿಕ ಭಾವಿಕ** (ನಂ) 1. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಹಿಂದೆ ನಡೆದ ಅಥವಾ ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವ ವಿಷಯದ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವರ್ಣನೆ, ಭೂತ ಮತ್ತು ಭವಿಷ್ಯತ್



ವಿಷಯಗಳು ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ ನಡೆಯುವಂತೆ ವರ್ಣಿಸುವುದು.

“ಭಾವಿಕಂ ಭೂತಭಾವ್ಯರ್ದಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಸ್ಯ ವರ್ಣನಮ್” ಚಂದ್ರಾಂ ।

“ಅಹಂ ವಿಲೋಕಯೇಷ್ಯಾಪಿ ಯುಷ್ಯಂತೇಽತ್ರ ಸುರಾಸುರಾಃ” । (ವಿಂ)

2. ಭಾವಪ್ರಧಾನವಾದ, ರಸಪ್ರಧಾನವಾದ. ಭಾವೇನ ನಿರ್ವೃತ್ತಮ್ ।

ಭಾವಿತ ಭಾವಿತ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ.

ಭೂ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) + ಣಿच् “ಕ್ತಃ” (3-2-102) । “ಮಾ

ಸ್ಮ ಮೇಷ್ಠ ಮಯಿ ಗೋಪ್ತರಿ ಸ್ಥಿತೇ ಭಾವಿತಾನಿ ಭವುಕಾನಿ ಸಂತು

ವಃ” ಯಾದಂ 17-124 । 2. ಪವಿತ್ರಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಶುದ್ಧಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

“ಯೇ ಚೈನಂ ಪ್ರತಿಪದ್ಯಂತೇ ಭಕ್ತಿಯೋಗೇನ ಭಾವಿತಾಃ ।

ತೇಭಾಮೇವಾತ್ಮನಾತ್ಮಾನಂ ದರ್ಶಯತೀಶ ಹೃದಯಃ”

ಭಾಂ ಅನುಂ 47-39 । 3. ಮಿಶ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೆರಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಭೂ (ಅವಕಲ್ಕನೆ) + ಣಿच् “ಕ್ತಃ” (3-2-102) ।

4. ಚಿಂತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಧ್ಯಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವಕಲ್ಕನಂ

ಮಿಶ್ರೀಕರಣಮಿತ್ಯೇಕೇ । ಚಿಂತನಮಿತ್ಯನ್ಯೇ ಸಿಂ ಕೌಂ ।

5. ಉಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಲ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಭಾವಿತೇಯಂ ತ್ವಯಾ ಸಾಧು

ನವರಾಗಾ ಸ್ವಲ್ಪತ್ವಯಿ” ನೆಪಂ 20-36 । 6. ಸಮರ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಪ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

“ಏತತ್ ಸಂಸೂಚಿತಂ ಬ್ರಹ್ಮಾನ್ ತಾಪತ್ರಯಚಿಹ್ನಿಸ್ತಿಸಿತಮ್ ।

ಯದೀಶ್ವರೇ ಭಗವತಿ ಕರ್ಮ ಬ್ರಹ್ಮಾಣಿ ಭಾವಿತಮ್” ಭಾಗಂ 1-4-32 । 7. ಪ್ರದರ್ಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

8. ವಾಸನೆ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. 9. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಭಾವಿತಾತ್ಮನ್ ಭಾವಿತಾತ್ಮನ್ (ವಿಂ) ಶುದ್ಧಾತ್ಮ, ಪರಮಾತ್ಮನ ಧ್ಯಾನಾದಿಗಳಿಂದ ಪರಿಶುದ್ಧವಾದ ಹೃದಯವುಳ್ಳ.

ಭಾವಿತಃ ಆತ್ಮಾ ಯಸ್ಯ ।

ಭಾವಿತ್ರ ಭಾವಿತ್ರ (ನಂ) ತ್ರೈಲೋಕ್ಯ, ಸ್ವರ್ಗ ಮರ್ತ್ಯ ಮತ್ತೂ ಪಾತಾಲಲೋಕಗಳು. ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “ಣಿತ್ರನ್”

(ತಂ 4-170) ।

ಭಾವಿನ್ ಭಾವಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಮುಂದಿನ ಕಾಲ, ಭವಿಷ್ಯತ್ತು.

ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “ಛಿನಿಃ” (ತಂ 4-4) । “ಪದೇ ಪದೇ

ಭಾವಿನಿ ಭಾವಿನಿ ತಂ ಯಥಾ ಕರಪ್ರಾಪ್ಯಮವೇತಿ ನೂನಮ್” ನೆಪಂ 3-11 । (ವಿಂ) 2. ಮುಂದಿನ ಕಾಲದ, ಭವಿಷ್ಯತ್ ಕಾಲದ.

ಭೂ “ಛಿನಿಃ” (3-3-6) । “ಭೂತಂ ಭವದ್ಭಾವಿ ಚ

ಯನ್ವ ಕಿಂಚಿತ್” ಕುಮಾಂ 12-44 । “ಸಾಹ ಸ್ಮ ನೈವಾ-

ಶಕುನಿಭವೇನ್ಮೇ ಭಾವಿಪ್ರಿಯಾವೇದಕ ಏಷ ಹಂಸಃ” ನೆಪಂ 3-9 ।

3. ಉಂಟಾಗುವ, ಸಂಭವಿಸುವ. “ಪ್ರಸ್ಥಾನಂ ತೇ ಕಥಮಪಿ

ಸಖೇ ಲಮ್ಬಮಾನಸ್ಯ ಭಾವಿ” ಮೇಘಂ 1-41 । 4. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಆಗಬೇಕಾದ, ಹಣೆಯಲ್ಲಿ ಮೊದಲೇ ಬರೆದಿಟ್ಟಿರುವ.

“ಯದಭಾವಿ ನ ತದ್ಭಾವಿ ಭಾವಿ ಚೇನ್ನ ತದನ್ಯಥಾ” ಹಿತಂ

4-4 । 5. ಚಿಂತಿಸುವ, ಧ್ಯಾನಿಸುವ. ಸ್ವಿಯಾ “ಛಿಪ್”

(4-1-4) । -ನಿ-31. “ಪದೇ ಪದೇ ಭಾವಿನಿ ಭಾವಿನಿ

ತಮ್” ನೆಪಂ 3-11 ।

ಭಾವಿನಿ ಭಾವಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ ಆಶಯ

ವುಳ್ಳ, ಹೆಂಗಸು, ಒಳ್ಳೆಯ ಅಭಿಪ್ರಾಯವುಳ್ಳ, ಹೆಂಗಸು.

ಪ್ರಶಸ್ತೌ ಭಾವೋಽಸ್ಯಾ ಅಸ್ತಿ “ಛಿನಿಃ” (4-2-114) ।

“ಅನೇನ ಧರ್ಮಃ ಸವಿಶೇಷಮಥ ಮೇ ತ್ರಿವರ್ಗಸಾರಃ ಪ್ರತಿಭಾತಿ

ಭಾವಿನಿ” ಕುಮಾಂ 4-36 । 2. ಪತಿವ್ರತೆ, ಗುಣಶಾಲಿ

ಯಾದ ಹೆಂಗಸು. 3. ಸುಂದರಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು.

ಭಾವುಕ ಭಾವುಕ (ಪುಂ) 1. ಸಹೋದರೆಯ ಪತಿ, ಒಡಹುಟ್ಟಿದವಳ ಗಂಡ (ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ). ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್)

“ತಕಾ” (3-2-144) । “ಭಾವುಕೌ ಭಗಿನಿಪತಿಃ”

ಅಭಿಂ 20 । (ನಂ) 2. ಮಂಗಳ, ಕುಶಲ, ಕ್ಷೇಮ.

“ಭಾವುಕಂ ಭವುಕಂ ಭವ್ಯಂ ಕುಶಲಂ ಕ್ಷೇಮಮಪ್ಪ್ರಿಯಾಮ್” ಅಮಂ ।

(ವಿಂ) 3. ಮಂಗಳಕರ, ಶುಭವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.

4. ಹುಟ್ಟುವ ಸ್ವಭಾವದ. “ಪ್ರಜನಿಷ್ಣುಸ್ತು ಭಾವುಕಃ”

ವೇಜಂ । 5. ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಅಭಿರುಚಿಯುಳ್ಳವನು, ರಸಿಕ.

ಭಾವ್ಯ ಭಾವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಆಗಬೇಕಾದ, ತಪ್ಪದೆ ನಡೆಯಬೇಕಾದ. ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “ಘ್ಯತ್” (3-1-124) ।

2. “ಭವ್ಯ” ಪದದ ಅರ್ಥ.

ಭಾಷಣ ಭಾಷಣ (ನಂ) 1. ಮಾತಾಡುವುದು. ಭಾಷ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114) । 2. ಮಾತು, ನುಡಿ, ವಾಣಿ. 3. ನಿರ್ವಹಣಸಂಧಿಯ ಒಂದು ಅಂಗ. “ಸಾಮದಾನಾದಿ ಭಾಷಣಮ್” ಸಾಂ ದಂ 6-113 ।

ಭಾಷಣಿ ಭಾಷಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಂದೆ, ದೂಷಣೆ, ಬೈಗಳು.

“ಪರಿವಾಗ್ ಭಾಷಣೀತಿ ಚ” ವೇಜಂ ।

ಭಾಷಾ ಭಾಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮನುಷ್ಯನ ಪರಸ್ಪರ ವ್ಯವಹಾರಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದ ವಾಕ್ಯ, ಮಾತು, ನುಡಿ. ಭಾಷ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಅಃ” (3-3-103) । [ಸಂಸ್ಕೃತ ಕನ್ನಡ ತಮಿಳು ತೆಲುಗು ಹಿಂದಿ ಮರಾಠಿ ಪ್ರಾಕೃತ ಬಂಗಾಳಿ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಾಂತ್ ಭಾಷೆಗಳು.] 2. ವಾಕ್ಯ, ವಾಚ್ಯಯ. “ಕಥಾ ಹಿ ಸರ್ವಭಾಷಾಭಿಃ ಸಂಸ್ಕೃತೇನ ಚ

ಬದ್ಧತೇ । ಭೂತಭಾಷಾಮಯಿಂ ಪ್ರಾಹುರ್ದಮುತಾರ್ಥಾ ಬೃಹತ್ಕಥಾಮ್”

ಕಾವ್ಯಾಂ 1-36 । 3. ಸರಸ್ವತಿ, ವಾಗ್ವೇದಿ, ಮಾತಿನ ಅಧಿದೇವತೆ. 4. (ವ್ಯವಹಾರದಲ್ಲಿ) ದೋಷಾರೋಪ, ಫಿರ್ಯಾದು, ರಾಜನಲ್ಲಿ ಅಥವಾ ನ್ಯಾಯಾಲಯದಲ್ಲಿ ದೂರು ಹೇಳುವುದು. “ಯದಾವೇದಯತೇ ರಾಜೇ ತದ್ಭಾಷೇತ್ಯಭಿ-



धीयते" । 5. लक्ष्मण, स्वरूपवत्तु तिरुसुव म्मातु.  
"स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव" गीता  
२-५४।

**भाषापरिच्छेद भाषाಪರಿಚ್ಛೇದ** (ಪುಂ) ನ್ಯಾಯ  
ವೈಶೇಷಿಕ ಸಾಂಕೇತಿಕ ಶಬ್ದಗಳು ಮತ್ತು ಅರ್ಥನಿರ್ಣಯ  
ವನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ. ನ್ಯಾಯವೈಶೇಷಿಕ  
ಸಮ್ಮತವಾದ ಪದಾರ್ಥಗಳನ್ನು ವಿವರಿಸುವ ಗ್ರಂಥ.

**भाषासम भाषासम** (ಪುಂ) ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು  
ಭೇದ. ಒಂದೇ ವಿಧವಾದ (ಒಂದೇ ಅನುಪೂರ್ವಿಯುಳ್ಳ)  
ನಾನಾಭಾಷೆಗಳ ಶಬ್ದಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ವಾಕ್ಯ. "शब्दे-  
रेकविधरेव भाषासु विविधास्वपि । वाक्यं यत्र भवेत्  
सोऽयं भाषासम इतीष्यते" सा० द० १०-१० । "मञ्जुल  
मणिमञ्जीरे कलगम्भीरे विहारसरसीतीरे । विरसासि  
केलिकीरे किमालि धीरे च गन्धसारसमीरे" ಇದು  
ಸಂಸ್ಕೃತ ಪ್ರಾಕೃತ ಶೌರಸೇನೀ ಪ್ರಾಚೀ ಆಮಂತೀ ಮೊದ  
ಲಾದ ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದೇ ರೀತಿಯ ಅನುಪೂರ್ವಿಯುಳ್ಳ  
ಶ್ಲೋಕ.

**भाषित भाषित** (ನಂ) 1. ವಚನ, ವಾಕ್ಯ, ಮಾತು, ನುಡಿ.  
भाष (व्यक्तायां वाचि) भावे "क्तः" (३-३-११४) ।  
"आकारैरिङ्गितैर्गत्या चेष्टया भाषितेन च । नेत्रवक्त्र-  
विकारैश्च गृह्यतेऽतर्गतं मनः" मनु० ८-२६ । (वि०)  
2. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ನುಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. भाष कर्म० "क्तः"  
(३-२-१०२) । "फणिभाषितभाष्यफक्किकाविषमा  
कुण्डलनामवीपिता" नैष० २-९५ ।

**भाषिन् भाषिन्** (ವಿಂ) ಮಾತಾಡುವ, ಹೇಳುವ.  
भाष (व्यक्तायां वाचि) "णिनिः" (३-१-१३४) ।  
स्त्रियां "ङीप्" (४-१-५) । भाषिणी भाषिणी.  
"ततः प्रतीच्छ प्रहरेति भाषिणी परस्परोल्लासितशल्य-  
पल्लवे" नैष० १-६८ ।

**भाष्य भाष्य** (ನಂ) 1. ಸೂತ್ರಗಳ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಗ್ರಂಥ.  
ಸೂತ್ರಗಳ ಪದಗಳಿಗೆ ಸೂತ್ರಾನುಸಾರವಾದ ಅರ್ಥ  
ವಿವರಣೆ. "सूत्रस्य पदमादाय वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः ।  
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः" ।  
(वि०) 2. ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. 3. ಹೇಳಬೇಕಾದ. भाष  
"ष्यत्" (३-१-१२४) ।

**भाष्यकार भाष्यकार** (ಪುಂ) ಸೂತ್ರಗ್ರಂಥಗಳಿಗೆ  
ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ (ಭಾಷ್ಯ) ಬರೆದವರು. भाष्यं करोति—डुकृब्  
(करणे) "अण्" (३-२-१) ।

**ಸೂತ್ರಗ್ರಂಥಗಳು ಮತ್ತು ಅವುಗಳ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ  
(ಭಾಷ್ಯ) ಕಾರರು :**

| ಸೂತ್ರಗ್ರಂಥ          | ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕಾರರು   | ಭಾಷ್ಯ  |
|---------------------|--|--|
| 1. ಪಾಣಿನಿ ಸೂತ್ರಗಳು  | ಪತಂಜಲಿಮುನಿ   | ಮಹಾಭಾಷ್ಯ   |
| 2. ಬ್ರಹ್ಮ ಸೂತ್ರಗಳು  | (1) ಶ್ರೀಶಂಕರಾಚಾರ್ಯರು<br>(2) ಶ್ರೀರಾಮಾನುಜಾಚಾರ್ಯರು<br>(3) ಶ್ರೀಮದ್ವಾಚಾರ್ಯರು<br>(4) ಶ್ರೀ ಶ್ರೀಪತಿ ಪಂಡಿತರಾಧ್ಯರು | ಶ್ರೀಶಂಕರ ಭಾಷ್ಯ<br>ಶ್ರೀಭಾಷ್ಯ<br>ಶ್ರೀಸುಧಾ<br>ಶ್ರೀಕರಭಾಷ್ಯ |
| 3. ಯೋಗ ಸೂತ್ರಗಳು     | ವೇದವ್ಯಾಸರು   | —  |
| 4. ಸಾಂಖ್ಯ ಸೂತ್ರಗಳು  | ವಿಷ್ಣುನಭಿಕ್ಷು  | ಸಾಂಖ್ಯ ಪ್ರವಚನಭಾಷ್ಯ                                     |
| 5. ಗೌತಮ ಸೂತ್ರಗಳು    | (1) ವಾತ್ಸಾಯನ<br>(2) ಮಸ್ಮರಿ   | ನ್ಯಾಯಭಾಷ್ಯ<br>ಮಸ್ಮರಿಭಾಷ್ಯ                              |
| 6. ಕಣಾದ ಸೂತ್ರಗಳು    | ಪ್ರಶಸ್ತಪಾದ   | ಪ್ರಶಸ್ತಪಾದ ಭಾಷ್ಯ                                       |
| 7. ಮೀಮಾಂಸಾ ಸೂತ್ರಗಳು | ಶಬರಸ್ವಾಮಿ ಇತ್ಯಾದಿ  | ಶಾಬರಭಾಷ್ಯ  |

**भाष्यकृत् भाष्यकृत्** (ಪುಂ) "भाष्यकार" ಪದದ  
ಅರ್ಥ.

**भास् भास्** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೀಪ್ತಿ, ಕಾಂತಿ, ಪ್ರಕಾಶ.  
भास् (दीप्ती) "क्विप्" (३-२-१७७) । "रोधोभुवां  
मुहुरमुत्र हिरण्मयीनां भासस्तटिद्विलसितानि विडम्ब-  
यन्ति" किरा० ५-४६ । 2. ಮಯೂಖ, ಕಿರಣ.  
"अस्तापास्तसमस्तभासि नभसः पारं प्रयाते रवी"  
रत्ना० १-२३ । 3. ಇಚ್ಛೆ, ಆವೇಕ್ಷೆ. 4. ಪ್ರಭಾವ,  
ಮಹಿಮೆ. 5. ಕರಣ, ಸಾಧನ. (ನಂ) 6. ಗಗನ,  
ಅಕಾಶ. 7. ರಾಶಿ. 8. ನಕ್ಷತ್ರ. 9. ಪುಂಡ್ರ. (ತೀರ್ಯಕ್  
ಪುಂಡ್ರ ಮತ್ತು ಉರ್ಧ್ವಪುಂಡ್ರ) 10. ಚಕ್ರ. "स्त्रियां  
भाः करणे द्युतो । क्लीबे तु गगने राशी तारायां  
पुण्ड्रचक्रयोः" नानार्थर० ।

**भास भास** (ಪುಂ) 1. ದೀಪ್ತಿ, ಕಾಂತಿ, ಪ್ರಕಾಶ. भास्  
(दीप्ती) भावे "घञ्" (३-३-१८) । 2. ಗೋಷ್ಠಿ,  
ಹಸುವಿನ ಕೊಟ್ಟಿಗೆ. भासन्ते गावोऽत्र — भास् अघि०



“ಛಬ್” (೩-೩-೧೯) । 3. ಗೃಧ್ರ, ಹದ್ದು. 4. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. “ಭಾಸಂತು ಭಾಸಿ ಗೃಧ್ರಶಕ್ತುಯೋಃ” ಹೇಮಂ । 5. ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ. “ಭಾಸೋ ಭಾಸಿ ಸಮಾಖ್ಯಾತೋ ಗೋಷ ಕುಕ್ಕುಟಗೃಧ್ರಯೋಃ” ವಿಷ್ಣುಂ । 6. ಭಾಸಮಹಾಕವಿ. ಈ ಕವಿಯ ಗ್ರಂಥಗಳು ಸಂಸ್ಕೃತವಾಚ್ಯಯದಲ್ಲಿ ಬಹಳ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿವೆ. ಈತನು ಕವಿಕುಲತೀಲಕನಾದ ಕಾಳಿದಾಸನಿ ಗಿಂತಲೂ ಪ್ರಾಚೀನನು. ಕಾಳಿದಾಸನು ತನ್ನ ಮಾಲವಿ ಕಾಗ್ನಿಮಿತ್ರನಾಟಕದಲ್ಲಿ “ಪ್ರಥಿತಯಶಸಾಂ ಭಾಸಸೌಮಿಲ್ಲ-ಕವಿಪುತ್ರಾದೀನಾಂ ಪ್ರಬಂಧಾನತಿಕ್ರಮ್ಯ ವರ್ತಮಾನಕವೇಃ ಕಾಲಿದಾಸಸ್ಯ ಕ್ರಿಯಾಯಾಂ ಕಥಂ ಬಹುಮಾನಃ” ಎಂದು ಭಾಸನನ್ನು ಹೊಗಳಿ ದ್ದಾನೆ.

ಭಾಸಕವಿಯಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಹದಿಮೂರು (13) ನಾಟಕ (ರೂಪಕ) ಗಳು :

- (1) ಪ್ರತಿಜ್ಞಾಂಯಗಂಧರಾಯಣ
- (2) ಪಂಚರಾತ್ರ
- (3) ಸ್ವಪ್ನವಾಸವದತ್ತ
- (4) ಚಾರುದತ್ತ
- (5) ಪ್ರತಿಮಾ
- (6) ಅಭಿಷೇಕ
- (7) ಮಧ್ಯಮ ವ್ಯಾಯೋಗ
- (8) ದೂತಘಟೋತ್ಕಚ
- (9) ದೂತವಾಕ್ಯ
- (10) ಬಾಲಚರಿತ
- (11) ಅವಿಮಾರಕ
- (12) ಕರ್ಣಭಾರ
- (13) ಉರುಭಂಗ

(ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭಾಸೀ ಭಾಸೀ. ಗರುಡನ ಪತ್ನಿಯರಲ್ಲೊಬ್ಬಳು.

ಭಾಸಕ ಭಾಸಕ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವ, ಹೊಳೆಯು ವಂತೆ ಮಾಡುವ. 2. ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವ, ತೋರುವಂತೆ ಮಾಡುವ. ಭಾಸ್ (ದೀಪ್ತೌ) “ಞ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) ।

ಭಾಸನ ಭಾಸನ (ನಂ) 1. ಹೊಳೆಯುವುದು, ಪ್ರಕಾಶಿಸು ವುದು. ಭಾಸ್ (ದೀಪ್ತೌ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಹೊಳೆಯುವುದು, ತೋರುವುದು.

ಭಾಸನೀಯ ಭಾಸನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 2. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ತೋರ್ಪಡಿಸಬೇಕಾದ, ತೋರುವಂತೆ ಮಾಡಬೇಕಾದ. 5. ತೋರುವಂತೆ ಮಾಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 6. ತೋರುವಂತೆ ಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಭಾಸ್ (ದೀಪ್ತೌ)

“ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬) । -ಸಿತವ್ಯಮ್ -ಸಿತವ್ಯಮ್.

ಭಾಸಮಾನ ಭಾಸಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ. 2. ಮನಸ್ಸಿಗೆ ತೋರುತ್ತಿರುವ, ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ. ಭಾಸ್ (ದೀಪ್ತೌ) “ಶಾನ್ತ್” (೩-೨-೧೨೪) ।

ಭಾಸಿತ ಭಾಸಿತ (ನಂ) 1. ಹೊಳೆಯುವುದು, ಪ್ರಕಾಶಿಸು ವುದು. 2. ಹೊಳೆಯುವುದು, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ತೋರುವುದು. ಭಾಸ್ (ದೀಪ್ತೌ) ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪) । (ವಿಂ) 3. ಪ್ರಕಾಶಗೊಂಡ, ಹೊಳೆದ. 4. ತೋರಿದ, ಮನಸ್ಸಿ ನಲ್ಲಿ ಹೊಳೆದ. ಭಾಸ್ ಕರ್ಮ “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) ।

ಭಾಸಿತವತ್ ಭಾಸಿತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಿಸಿದ, ಹೊಳೆದ. 2. ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಹೊಳೆದ, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ತೋರಿದ. ಭಾಸ್ (ದೀಪ್ತೌ) “ಕ್ತವತುಃ” (೩-೨-೧೦೨) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ವತೀ -ವತೀ.

ಭಾಸಂತ ಭಾಸಂತ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಭಾಸ್ (ದೀಪ್ತೌ) “ಜ್ವಲ್” (೩-೩-೧೨೮) । ಭಾಸಂತಃ ಸೂರ್ಯಃ ಉಗಾಂ । 2. ಚಂದ್ರ. 3. ನಕ್ಷತ್ರ. 4. ಭಾಸಪಕ್ಷಿ. (ವಿಂ) 5. ಸುಂದರವಾದ ಆಕಾರವುಳ್ಳ. “ಭಾಸಂತೋ ಭೇ ಸೂರ್ಯ ರಮ್ಯಭಾಸಯೋಃ” ಹೇಮಂ । “ಭಾಸಂತಃ ಸುಂದರಾಕಾರೇ ತ್ರಿಷು ನಾ ಭಾಸಪಕ್ಷಿಣಿ” ಮೇದಿಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಂತೀ -೨೭೬. ನಕ್ಷತ್ರ.

ಭಾಸು ಭಾಸು (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಭಾಸ್ (ದೀಪ್ತೌ) “ಉಜ್” ಬಾಹುಂ । “ಭಾಸುಃ ಪಿತುಸ್ತಮೋಹಂತಾ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಭಾಸುರ ಭಾಸುರ (ಪುಂ) 1. ಸ್ಪಟಿಕಶಿಲೆ. 2. ಎರ, ಶೂರ. (ನಂ) 3. ಕಲ್ಯಾಣ, ಮಂಗಳ, ಶುಭ. “ಭಾಸುರಂ ಭವಿಕಂ ಮವ್ಯಂ ಕಲ್ಯಾಣಂ ಶ್ವೋವಸೀಯಸಮ್” ವೆಂಜಂ । (ವಿಂ) 4. ಪ್ರಕಾಶ ಮಾನವಾದ, ಹೊಳೆಯುವ. ಭಾಸ್ (ದೀಪ್ತೌ) “ಛುರಕ್” (೩-೨-೧೬೧) । “ಮಣಿಮಯೋಷಾಂಶುಕಭಾಸುರಾಃ ಸುರವಧು-ಪರಿಭುಕ್ತಲತಾಗೃಹಾಃ” ಕಿರಾಂ ೫-೫ ।

ಭಾಸ್ - ದೀಪ್ತೌ (ಭಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) । ಭಾಸತೇ । ಬಭಾಸೇ । ಭಾಸಿತಾ । ಭಾಸಿಷ್ಯತೇ । ಭಾಸತಾಮ್ । ಅಭಾಸತ । ಭಾಸೇತ । ಅಭಾಸಿಷ್ಠ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಭಾವೇ :-ಭಾಸ್ಯತೇ । ಭಾಸ್ಯತಾಮ್ । ಅಭಾಸ್ಯತ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು :-ಭಾಸಿತವ್ಯಃ । ಭಾಸನೀಯಃ । ಭಾಸ್ಯಃ । ಭಾಸಿತಃ । ಭಾಸಿತವಾನ್, -ವತೀ । ಭಾಸಮಾನಃ । ಭಾಸಿತಮ್ । ಭಾಸನಮ್ ।

ಭಾಸ್ಕರ ಭಾಸ್ಕರ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಭಾಸಂ ಕರೋತಿ- ಕೃತ್ “ಠಃ” (೩-೩-೨೧) । “ತೋಯಾಂತಭಾಸ್ಕರಾಲಿವ ರೇಜೇ



मुनिपरम्परा" कुमा० ६-४९। 2. अग्नि, बौ०।  
"भास्करोऽग्नौ प्रभाकरे" मेदि०। 3. भास्करा  
चार्यरु, सिद्धान्तरीरामाचार्य गुरुकाररु।  
4. वि०। 5. परमेश्वर, महादेव. (न०) 6.  
सूर्य, चन्द्र.

भास्करद्युति भास्करद्वय (पुं०) 1. विष्णु. परस्पर-  
भावुकप्रभावत्वात् भास्करस्येव द्युतिरस्य। "पर-  
प्रभावाभिभवलक्षणद्युतिमांश्च यः। स भास्करद्युतिः  
प्रोक्तो नेत्रवैमल्यदो मनुः" इति निरुक्तिः। "चन्द्रांशु-  
भास्करद्युतिः" वि० स०। (स्त्री०) 2. सूर्यान्  
प्रकाश, बिसिल. भास्करस्य द्युतिः।

भास्करावर्त भास्करावर्त (पुं०) तल्लेखनं बन्दु  
भेद, सूर्योदयवन्दु मेलं बन्दु बन्दु  
विधं तल्लेखनं. ಈ ರೋಗವು ಸೂರ್ಯೋದಯವಾದ  
ನಂತರ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ಸೂರ್ಯನು ಬೆಳೆದಂತೆಲ್ಲಾ ಇದೂ  
ಅಧಿಕವಾಗಿ ಸೂರ್ಯಾಸ್ತವಾದ ಕೂಡಲೆ ಶಮನವಾಗು  
ವುದು. "सूर्योदयं या प्रति मन्दमन्दमक्षिभ्रुवं रुक्  
समुपैति गाढम्। विवर्धते चांशुमता सहैव सूर्यापिवृत्तौ  
विनिवर्तते च। शीतेन शान्तिं लभते कदाचित् उष्णेन जन्तुः  
सुखमाप्नुयाच्च। तं भास्करावर्तमुदाहरन्ति सर्वात्मकं  
कष्टतमं विकारम्" सुश्रुत० उत्तरत० २५-११, १२।

भास्करि भास्करि (पुं०) सूर्यपुत्र (1) वृषस्वत  
ಮನು. (2) ಶನಿಗ್ರಹ ಮತ್ತು (3) ಕರ್ಣ. भास्कर-  
स्यापत्यम् "इन्" (४-१-९५)।

भास्वत् भास्वत् (पुं०) 1. सूर्य. भासः सन्त्यस्य  
"मतुप्" (५-२-९४)। "नृपनीलमणीगृहत्विवामुपधे-  
यंत्र भयेन भास्वतः" नैष० २-७५। 2. अर्धवृक्ष,  
ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 3. ಚಂದ್ರ. (ವಿ०) 4. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ,  
ಹೊಳೆಯುವ. "भास्वन्ति रत्नानि महौषधीश्च पृथूप-  
दिष्टां दुदुर्ध्वरित्रीम्" कुमा० १-२। 5. ತೇಜಶಾಲಿ  
ಯಾದ. "न केवलं दरीसंस्थं भास्वतां दर्शनेन वः।  
अन्तर्गतमपास्तं मे रजसोऽपि परं तमः" कुमा० ६-६०।  
"भास्वानिन्दौ भास्वरेज्ಜ" वैज०। स्त्रियां "डीप्"  
(४-१-६)। -ती-३१.

भास्वद्वंश भास्वद्वಂಶ (ಪುಂ०) ಸೂರ್ಯವಂಶ.

भास्वर भास्वर (ಪುಂ०) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಅಗ್ನಿ.  
3. ಹಗಲು. 4. ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. भासु (दीप्ता) "वरच्"  
(३-२-१७५)। (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 5. ಗಣದೇವತೆಗಳು.

"आदित्यविश्वसवस्तुषिताभास्वरानिलाः" अम०।  
(वि०) 6. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ.

भिक्षण भिक्षण (न०) ಬೇಡುವುದು, ಯಾಚಿಸುವುದು.  
भिक्ष (भिक्षायामलाभे लाभे च) "ल्युट्" (३-३-११५)।  
भिक्षमाण भिक्षमाण (वि०) ಯಾಚಿಸುತ್ತಿರುವ, ಬೇಡು-  
ತ್ತಿರುವ. भिक्ष (भिक्षायामलाभे लाभे च) "शानच्"  
(३-२-१२४)। "संदृश्य शरणं शून्यं भिक्षमाणो वनं  
प्रियाम्। प्राणान् दुहन्निवात्मानं शोकं चित्तमवारुधत्"  
भट्टि० ६-९।

भिक्षा भिक्षा (स्त्री०) 1. ಭಿಕ್ಷೆ, ತಿರುಪೆ, ಯಾಚನೆ.  
भिक्ष (भिक्षायामलाभे लाभे च) "अः" (३-३-१०३)।  
"वाणिज्ये वसते लक्ष्मीः तदर्थं कृषिकर्मणि। तदर्थं  
राजसेवायां भिक्षायां नैव नैव च"। 2. ಭಿಕ್ಷೆ, ಉಪಾ-  
ದಾನ, ಬೇಡಿ ತಂದ ವಸ್ತು. ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಗಳು ಮತ್ತು  
ಯತಿಗಳು ಗೃಹಸ್ಥರ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಭಿಕ್ಷೆ ತೆಗೆದು ಭೋಜನ  
ಮಾಡಬೇಕು. ಗೃಹಸ್ಥನೂ ಅವರಿಗೆ ಭಿಕ್ಷೆ ನೀಡಬೇಕು.  
"भिक्षां च भिक्षवे दद्याद्विधिवत् ब्रह्मचारिणे" मनु०  
३-९४। 3. ವೇತನ, ಕೂಲಿ, ಸಂಬಳ. 4. ಸೇವೆ.  
"भिक्षा सेवाप्रार्थनयोर्भृतौ भिक्षितवस्तुषु" हेम०।

भिक्षाक भिक्षाक (पुं०) 1. ಭಿಕ್ಷುಕ, ಯಾಚಕ, ಭಿಕ್ಷೆ  
ಬೇಡುವವನು. भिक्ष (भिक्षायामलाभे लाभे च)  
"षाकन्" (३-२-१५५)। 2. ಯತಿ, ಸಂನ್ಯಾಸಿ.  
3. ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ. (ಸ್त्री०) -ಕೀ-३१. ಭಿಕ್ಷುಕಿ, ಭಿಕ್ಷೆ  
ಬೇಡುವ ಹೆಂಗಸು.

भिक्षाचर भिक्षाचर (पुं०) ಭಿಕ್ಷುಕ, ಭಿಕ್ಷೆ ಬೇಡು-  
ವವನು. भिक्षां चरति—चर (गतिभक्षणयोः) "टः"  
(३-२-१७)।

भिक्षाटन भिक्षाटन (न०) 1. ಭಿಕ್ಷೆಗಾಗಿ ತಿರುಗುವುದು,  
ಯಾಚನೆಗಾಗಿ ಅಲೆದಾಡುವುದು. 2. ಭಿಕ್ಷೆಗಾಗಿ ಸಂಚರಿಸು-  
ವುದು, ಯತಿ ಮತ್ತು ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಗಳು ಭಿಕ್ಷುನ್ನಕ್ಕಾಗಿ  
ಮನೆ ಮನೆಗೆ ಹೋಗುವುದು. भिक्षायै अटनम्। "अर्धं  
दानववैरिणा गिरिजयाप्यर्धं शिवस्याहृतं देवेत्यं जगतीतले  
स्मरहराभावे समुन्मीलति। गङ्गा सागरमम्बरं शशिकला  
नागाधिपः क्षमातलं सर्वज्ञत्वमधीश्वरत्वमगमत्त्वां मां च  
भिक्षाटनम्"।

भिक्षान्न भिक्षान्न (न०) ಭಿಕ್ಷೆ ಬೇಡಿ ತಂದ ಅನ್ನ.

भिक्षार्थिन् भिक्षार्थिन् (पुं०) ಭಿಕ್ಷೆ ಬೇಡುವವನು,  
ಯಾಚಕ. भिक्षामर्थयते—अर्थ (याचयाम्) "णिनिः"  
(३-१-१३४)।



**ಭಿಕ್ಷಾವೃತ್ತಿ** ಭಿಕ್ಷಾವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭಿಕ್ಷೆಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಜೀವನ, ಸಂನ್ಯಾಸ ಮತ್ತು ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಯ ಜೀವನ. 2. ಯಾಚನೆಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಜೀವನ.

**ಭಿಕ್ಷಾಶಿನ್ ಭಿಕ್ಷಾಶಿನ್** (ವಿಂ) ಭಿಕ್ಷು ಬೇಡಿ ತಿನ್ನುವವನು, ಭಿಕ್ಷುಕ. ಭಿಕ್ಷಾಮನಾತಿ — ಅಶ (ಭೋಜನೆ) “ಗಿಣಿ:” (3-2-96) ।

**ಭಿಕ್ಷಿತ ಭಿಕ್ಷಿತ** (ವಿಂ) ಯಾಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೇಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಭಿಕ್ಷ (ಭಿಕ್ಷಾಯಾಮಲಾಭೇ ಲಾಭೇ ಚ) “ಕ್ತ:” (3-2-102) । “ಭಿಕ್ಷಿತಾ ಶತಮಖಿ ಸುಕೃತಂ ಯತ್ತಪರಿಸ್ರಮವಿದ: ಸ್ವವಿಭೂತೌ” ನೆಪಂ 4-21 ।

**ಭಿಕ್ಷು ಭಿಕ್ಷು** (ಪುಂ) 1. ಯತಿ, ಸಂನ್ಯಾಸ. 2. ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ. ಭಿಕ್ಷ (ಭಿಕ್ಷಾಯಾಮ್) “ತ:” (3-2-166) । “ಭಿಕ್ಷಾಂ ಚ ಭಿಕ್ಷವೇ ದತ್ತಾದಿಧಿವತ್ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಣಿ” ಮನುಂ 3-94 । 3. ಸಂನ್ಯಾಸ, ನಾಲ್ಕನೆಯ ಆಶ್ರಮ. 4. ಬೌದ್ಧ ಸಂನ್ಯಾಸ. “ಕೀವರೀ ಶ್ರಮಣೋ ಭಿಕ್ಷುರ್ವಲ್ಯಶ್ಚೇತ್ರ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಭಿಕ್ಷುಕ ಭಿಕ್ಷುಕ** (ಪುಂ) ಭಿಕ್ಷು ಬೇಡುವವನು, ಯಾಚನೆ ಮಾಡುವವನು, ಭಿಕ್ಷೆಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಭಿಕ್ಷ (ಭಿಕ್ಷಾಯಾಮ್) “ತಕನ್” ಬಾಹುಂ । “ಆಕೀರ್ಣ ಭಿಕ್ಷುಕೇ-ವಾನ್ಯೀರಗಾರಮುಪಸಂವ್ರಜೇತ್” ಮನುಂ 6-41 । “ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ಭಿಕ್ಷುಕಂ ವಾಪಿ ಭೋಜನಾರ್ಥಮುಪಸ್ಥಿತಮ್ । ಬ್ರಾಹ್ಮಣೇರಮ್ಯನುಜಾತ: ಶಕ್ತಿತ: ಪ್ರತಿಪೂಜಯೇತ್” ಮನುಂ 3-243 । ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ, ಸಂನ್ಯಾಸ, ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ, ಗುರುಪೋಷಕ (ಭಿಕ್ಷುನಿಂದ ಗುರುವನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನು), ಅಧ್ಯಗ (ಪ್ರಯಾಣದಲ್ಲಿ ಮನೆಗೆ ಬಂದವನು), ಕ್ಷೀಣವೃತ್ತಿ (ಜೀವನೋಪಾಯವಿಲ್ಲದವನು) ಈ ಆರು ಮಂದಿ ಭಿಕ್ಷುಕರು. “ಬ್ರಹ್ಮಚಾರೀ ಯತಿಶ್ಚೈವ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ ಗುರುಪೋಷಕ: । ಅವ್ಯಗ: ಕ್ಷೀಣವೃತ್ತಿಶ್ಚ ಪಡತೇ ಭಿಕ್ಷುಕಾ: ಸ್ಮೃತಾ:” ।

**ಭಿಕ್ಷುಸಂಘಾಟಿ ಭಿಕ್ಷುಸಂಘಾಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೇವರ, ಭಿಕ್ಷು ಗಳ ವಸ್ತ್ರ. ಭಿಕ್ಷು + ಸಮ್ + ಘಟ “ಅಘ್” (3-2-1) । ಗೌರಾಂ “ಘಿ” (4-1-41) । “ಪುರೀಷಂ ಕೌಕುಟಂ ಕೇಶಾನ್ ಚರ್ಮಂ ಸರ್ಪತ್ವಂ ತಥಾ । ಜೀರ್ಣಂ ಚ ಭಿಕ್ಷುಸಂಘಾಟಿಂ ಭೂಮನಾಯೋಪ-ಕಲ್ಪಯೇತ್” ಸುಶ್ರುತಂ ಉತ್ತರತಂ 33-6 ।

**ಭಿಕ್ಷ ಭಿಕ್ಷ** (ನಂ) ಶಕಲ, ತುಂಡು, ಚೂರು. ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) “ಕ್ತ:” (3-2-102) । ನತ್ವಾಭಾವ: ನಿಪಾಂ (6-2-49) ।

**ಭಿಕ್ಷಿ ಭಿಕ್ಷಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕುಡ್ಯ, ಗೋಡೆ. ಭಿದಿರ್ — ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) “ಕ್ತಿನ್” (3-3-94) । “ಜ್ಯೋತಿಸಾಂಕಾ-ಮಿಹ ವಿತರತಿ ಹಂಸಶ್ಯೇನೀಮಧ್ಯೇಽಪ್ಯಹ್ನ: ಸ್ಫಟಿಕರಜತಭಿಕ್ಷಿ-

ಚ್ಚಾಯಾ” ಕಿರಾಂ 4-31 । 2. ತುಂಡು, ಶಕಲ, ಚೂರು. 3. ಆಶ್ರಯ, ಪ್ರದೇಶ, ಸ್ಥಾನ. “ಸೈವೇಯಂ ಮಮ ಚಿತ್ರಕರ್ಮ-ರಚನಾ ಭಿಕ್ಷಿ ವಿನಾ ವರ್ತತೇ” ಮುಡ್ರಾಂ 2-4 । 4. ಅವಕಾಶ, ಬಿರುಕು, ಸಂದು. 5. ಪ್ರಕಾಶ. 6. ಭೇದನ, ಒಡೆಯುವಿಕೆ, ಮುರಿಯುವಿಕೆ. “ಭಿಕ್ಷಿ: ಕುಡ್ಯೇ ಭೇದನೇ ಸ್ಯಾತ್ ಅವಕಾಶಪ್ರಕಾಶಯೋ:” ನಾನಾರ್ಥರಂ । “ಭಿಕ್ಷಿ: ಕುಡ್ಯೇ ಪ್ರದೇಶೋ ಚ” ಹೇಮಂ ।

**ಭಿಕ್ಷಿಕಾ ಭಿಕ್ಷಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕುಡ್ಯ, ಗೋಡೆ. ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) “ತಿಕ್ತನ್” (3-3-94) । 2. ಗೋಳ, ಹಲ್ಲಿ.

**ಭಿಕ್ಷಿಚೋರ ಭಿಕ್ಷಿಚೋರ** (ಪುಂ) ಗೋಡೆಯಲ್ಲಿ ಕನ್ನ ಕೊರೆದು ಕದಿಯುವವನು. ಮಿತ್ರಾ ಭಿಕ್ಷಿಭೇದನೇನ ಚೋರಯತಿ — ಚುರ (ಸ್ತೇಯೇ) + ಣಿಚ್ “ಅಚ್” (3-1-134) ।

**ಭಿಕ್ಷಿಪಾತನ ಭಿಕ್ಷಿಪಾತನ** (ಪುಂ) ಹೆಗ್ಗಣ. ಭಿಕ್ಷಿ ಪಾತಯತಿ — ಪಲ್ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯು:” (3-1-134) ।

**ಭಿದ್ ಭಿದ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭೇದ, ತಾರತಮ್ಯ, ವ್ಯತ್ಯಾಸ. ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) “ವಿವಪ್” (ವಾಂ 3-3-94) । 2. ಭೇದನ, ತುಂಡುಮಾಡುವುದು, ಒಡೆಯುವುದು. 3. ಭೇದ, ಬಗೆ, ವಿಧ. (ವಿಂ) 4. ಒಡೆಯುವ, ಭೇದಿಸುವ, ತುಂಡುಮಾಡುವ (ಸಮಾಸದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ). ಗೋತ್ರಭಿದ್, ಬಲಭಿದ್ ಇತ್ಯಾದಿ. “ಖಣ್ಡಿತವಿಗ್ರಹಂ ಬಲಭಿದೋ ಧನುರಿದ್ ವಿವಿಧಾ:” ಕಿರಾಂ 4-43 । 5. ಅಗೆಯುವ, (ನೆಲವನ್ನು) ತೋಡುವ. “ತುರಗವಿಚಯವ್ಯಾನ್ವಿಭಿದ: ಸಗರಾಘವೇ” ತಂ ರಾಂ 1-23 ।

**ಭಿದಕ ಭಿದಕ** (ಪುಂ) 1. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. ಭಿನತ್ತಿ — ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) “ವುನ್” (ತಂ 2-37) । (ನಂ) 2. ವಜ್ರ. 3. ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧ.

**ಭಿದಾ ಭಿದಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭೇದ, ವ್ಯತ್ಯಾಸ, ತಾರತಮ್ಯ. ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) “ಅಙ್” (3-3-104) । 2. ಭೇದನ. ಒಡೆಯುವಿಕೆ, ಭಾಗಮಾಡುವಿಕೆ. “ವಿದೂರಪಾತೇನ ಭಿದಾ-ಮುಪೇಯುಷಶ್ಚ್ಯುತಾ: ಪ್ರವಾಹಾದಮಿತ: ಪ್ರಸಾರಿಣ:” ಕಿರಾಂ 6-10 । 3. ಭೇದ, ವಿಧ, ಬಗೆ. 4. ಬೇರೆಯಾಗುವಿಕೆ, ಪ್ರತ್ಯೇಕ ವಾಗುವಿಕೆ. 5. ಧನಿಯ.

**ಭಿದಿ ಭಿದಿ** (ಪುಂ) ವಜ್ರಾಯುಧ. ಭಿನತ್ತಿ — ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) “ಙ್” (ತಂ 4-142) । ಭಿದಿವಂಜಮ್ ಸಿಂ ಕೌಂ ।

**ಭಿದಿರ್-ವಿದಾರಣೆ** (ಠಾಂ ತಂ ಸಂ ಅನಿಂ) । ಭಿನತ್ತಿ । ಭಿಂತೆ । ವಿಭೇದ, ವಿಭಿಧೆ । ಭೇದಾ । ಭಿನತ್ತು, ಭಿಂತಾಮ್ । ಅಭಿನತ್, ಅಭಿಂತ । ಇತ್ಯಾದಿ.



ಕರ್ಮಣಿ:—ಮಿತ್ರತೇ | ಮಿತ್ರತಾಮ್ | ಅಮಿತ್ರತ | ಮಿತ್ರೇತ |  
ಅತೃದಿ.

ಕುಸ್ತು:—ಮೇತವ್ಯಮ್ | ಮೇದನೀಯಮ್ | ಮೇಷಮ್ | ಮಿತ್ರ: |

ಮಿನ್ದನ್, —ತೀ | ಮಿನ್ದಾನ: | ಮಿತ್ರಮ್ | ಮೇದನಮ್ |

1. ಭೇದಿಸು, ಒಡೆ, ಬೊರುಮಾಡು, ತುಂಡುಮಾಡು.

“ಯೇ ಸತ್ಯಮೇವ ನ ಗುಣ್ ಪ್ರತಿಮಾನಯಂತಿ ತेषಾಂ ಕಥಂ ನು ಹೃದಯಂ  
ನ ಮಿನತ್ತಿ ಲಜ್ಜಾ” ಮುಡ್ರಾಂ ೩-೩೩ | 2. ಎಕಾಸಹೊಂದು,

ಅರಳು. “ಸೂರ್ಯಾಶುಭಿಮಿತ್ರಮಿವಾರವಿನ್ದಮ್” ಕುಮಾಂ ೧-೩೨ |

3. ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗು, ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗು. “ಯದ್ವಾಯುರ್ನಿಷ್ಠ-

ಮುಗ್ಧ: ಕಿರಾತೇರಾಸೇವ್ಯತೇ ಮಿತ್ರಶಿಷ್ಯಾಽಽವಿಹಂ” ಕುಮಾಂ ೧-೧೫ |

4. ಭಂಗಮಾಡು, ಮುರಿ, ಉಲ್ಲಂಘಿಸು, ಅತಿಕ್ರಮಿಸು.

“ವಿದ್ವಾನ್ಯಪಿ ತಯೋರ್ವಾಸ್ಥಿ: ಸಮಯಂ ಲಕ್ಷಮಣೋಽಮಿನತ್” ರಘುಂ

೧೫-೧೪ | 5. ಚೆದರಿಹೋಗು, ದಿಕ್ಕಾಪಾಲಾಗಿ ಓಡಿ

ಹೋಗು. “ಮೂರ್ತೌ ವಿಘ್ನಸ್ತಪಸ ಇವ ನೋ ಮಿತ್ರಸಾರಙ್ಗಯುಷ:”

ಶಾಕುಂ ೧-೨೯ | 6. ಸಡಿಲಿಸು, ಶಿಥಿಲವಾಗಿ ಮಾಡು.

“ಶನೈ: ಕೃತಪ್ರಾಣವಿಮುಕ್ತಿರೀಶ: ಪರ್ಯಂಕವನ್ಮ ನಿವಿಡಂ ವಿಮೇದ”

ಕುಮಾಂ ೩-೫೯ | 7. ವ್ಯತ್ಯಾಸ ಹೊಂದು, ಬದಲಾಗು.

“ನ ಕಾರಣಾತ್ ಸ್ವಾದಿಮಿಧೇ ಕುಮಾರ: ಪ್ರವರ್ತತೋ ದೀಪ ಇವ

ಪ್ರದೀಪಾತ್” ರಘುಂ ೫-೩೭ | 8. ಹೊರಗೆಡಹು, ಬಯಲು

ಮಾಡು, ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸು. “ಷಡ್ಕರ್ಣೌ ಮಿತ್ರತೇ ಮನ್ತ್ರ:

ಚತುಷ್ಕರ್ಣ: ಸ್ಥಿರೋ ಭವೇತ್ | ತಸ್ಮಾತ್ಸರ್ವಪ್ರಯತ್ನೇನ ಷಡ್ಕರ್ಣಂ

ವರ್ಜಯೇತ್ ಸುಖಿ:” ಪञ್ಚತಂ ೧-೧೦೮ | 9. ಬದಲಾಯಿಸು,

ಮಾರ್ಪಡಿಸು. “ನ ದುರ್ವಹೋಪಿಪಯೋವರಾತೌ ಮಿನ್ದಂತಿ

ಮನ್ದಾಂ ಗತಿಮಶ್ವಮುಖ್ಯ:” ಕುಮಾಂ ೧-೧೧ | 10. ಕೆದರಿಸು,

ಸಾ ನವಲ್ಲಟಮಾಡು, ಉಚ್ಚಾಟನೆಮಾಡು. “ಆನಂದಜ:

ಶೋಕಜಮಶ್ಚ ವಾಙ್ಮಸ್ತಯೋರಶೀತಂ ಶಿಶಿರೋ ವಿಮೇದ” ರಘುಂ

೧೪-೩ |

ಮಿದಿರ ಭಿದಿರ (ನಂ) ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧ. ಮಿದಿರ್

(ವಿದಾರಣೆ) “ಕಿರಕ್” (ಉಂ ೧-೫೧) | ಮಿದಿರಂ ವಜ್ರಮ್

ಸಿಂ ಕೌಂ | “ಶತಧಾರಂ ಶತಾರಂ ಚಾಭೋತ್ಯಂ ಮಿದಿರಮಮ್ಬುಜಮ್”

ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | ಮಿದಿರ್ “ಕು:” (ಉಂ ೧-೨೪) | ಮಿತ್ರ:

ಭಿದು: “ವಜ್ರಾಶನಿಮಿತ್ರಮಿತ್ರ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | ಮಿದಿರ್

“ರಕ್” (ಉಂ ೨-೧೩) | ಮಿತ್ರ: ಭಿದು:.

ಮಿದುರ ಭಿದುರ (ಪುಂ) 1. ಪ್ಲಕ್ಷ್ಮವೃಕ್ಷ, ಬಸುರಿಮರ.

(ನಂ) 2. ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧ. ಮಿನತ್ತಿ—ಮಿದಿರ್

(ವಿದಾರಣೆ) “ಕುರಕ್” (೩-೨-೧೬೨) | “ಕುಲಿಶಂ ಮಿದುರಂ

ಪವಿ:” ಇಮಂ | (ವಿಂ) 3. ಮಿಶ್ರವಾದ, ಬೆರೆತಿರುವ.

“ನಿಲಾಶ್ಮದೃತಿಮಿದುರಾಶ್ವಮಸೋಽಪರಶ್ಚ” ಮಾಘಂ ೪-೨೬ |

4. ಭೇದಿಸುವ, ಒಡೆಯುವ.

ಮಿತ್ರ ಭಿದು (ಪುಂ) ನೆದ, ಗುಡುಹೊಳೆ. ಮಿನತ್ತಿ ತೀರಮ್

—ಮಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) “ಕುಪ್” (೩-೧-೧೧೫) | ನಿಪಾಂ |

ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿಗೆ ಹರಿಯುವ ಹೊಳೆ ನದಿ. ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕಿಗೆ

ಹರಿಯುವ ಹೊಳೆ ನದಿ. “ತೋದಾಗಮ ಇವೋದ್ಯಮಿತ್ರಯೋ-

ನಾಮಧೇಯಸದೃಶಂ ವಿವೇಚಿತಮ್” ರಘುಂ ೧೧-೮ |

ಮಿನ್ದತ್ ಭಿಂಢತ್ (ವಿಂ) 1. ಒಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಸೇಳು

ತ್ತಿರುವ. ಮಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) |

2. ಅತಿಕ್ರಮಿಸುತ್ತಿರುವ, ಉಲ್ಲಂಘಿಸುತ್ತಿರುವ, ಮೀರು

ತ್ತಿರುವ. “ನಿಹತಶ್ಚ ಸ್ಥಿತಿಂ ಮಿನ್ದನ್ ದಾನವೋಽಸೌ ಬಲದ್ವಿಪಾ”

ಭದ್ರಿಂ ೭-೬೮ | 3. ಹೊರಗೆಡಹುತ್ತಿರುವ, ಬಯಲು

ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 4. ಸಡಿಲಿಸುತ್ತಿರುವ. 5. ಕೆದರಿಸು

ತ್ತಿರುವ. 6. ಮಾರ್ಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 7. ಚೆದರಿಸು

ತ್ತಿರುವ. 8. ಬೇರ್ಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. “ಶಾನಕ್” ಮಿನ್ದಾನ:

ಭಿಂಢಾನ.

ಮಿನ್ದಿ ಭಿ:ದಿ (ಪುಂ) ಒಡೆಯುವುದು, ಸೇಳುವುದು.

ಮಿನ್ದಿಪಾಲ ಭಿಂಢಿಪಾಲ (ಪುಂ) 1. ಕೈಯಿಂದ ಎಸೆಯು

ಬಹುದಾದ ಸ್ಥೂಲ ಕಟ್ಟಿ. 2. ಕವಣೆ, ದೂರಕ್ಕೆ ಕಲ್ಲನ್ನು

ಎಸೆಯುವ ಹಾಗೆ ಅಥವಾ ಚರ್ಮದಿಂದ ಮಾಡಿದ ಒಂದು

ಸಾಧನ.

ಮಿತ್ರ ಭಿನ್ಮ (ವಿಂ) 1. ಮಿಶ್ರವಾದ, ಬೆರೆತಿರುವ. ಮಿದಿರ್

(ವಿದಾರಣೆ) “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨) | “ಮಿತ್ರೇಷು ರತ್ನ-

ಕಿರಣಿ: ಕಿರಣೇಷ್ವಿವೇಂದೋರುಚ್ಚಾವಚೇರಪಗತೇಷು ಸಹಸ್ರಸಂಖ್ಯಾಮ್”

ಮಾಘಂ ೪-೪೬ | 2. ಬೇರೆಯಾದ, ವಿರುದ್ಧವಾದ.

“ವಿಚ್ಛಿತ್ತಿನವಚಂದನೇನ ವಪುಷೋ ಮಿತ್ರೋಽಧರೋಽಲತಕೇ:”

ಮಾಘಂ ೧೬-೮೪ | 3. ಅನೇಕ ವಿಧವಾದ, ನಾನಾ ಬಗೆಯ.

“ಸಮ್ಕುಂಠಲಲಘುವಿಮಾನರಂಧ್ರಮಿತ್ರ: ಪ್ರಸ್ಥಾನಂ ಸಮಮಿಧಧೇ

ಮೃದ್ಜನಾದ:” ಕಿರಾಂ ೭-೧ | 4. ಬೇರೆಯಾದ, ಬೇರೆ ರೀತಿ

ಯಾದ. “ಮಿತ್ರಸ್ವರಮುಸವಣ: ಶಕ್ತಿದೃಷ್ಟಿ: ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ-

ತೇಜಾ:” ಪञ್ಚತಂ ೧-೨೧೦ | 5. ಎಕಾಸಹೊಂದಿದ,

ಅರಳಿದ. “ನವೋಪಸಾ ಮಿತ್ರಮಿವೇಕಪಕ್ಷಜಮ್” ಶಾಕುಂ

೭-೧೬ | 6. ಚೆದರಿಹೋದ, ದಿಕ್ಕಾಪಾಲಾಗಿ ಓಡಿಹೋದ.

“ಮೂರ್ತೌ ವಿಘ್ನಸ್ತಪಸ ಇವ ನೋ ಮಿತ್ರಸಾರಙ್ಗಯುಷ:” ಶಾಕುಂ

೧-೨೯ | 7. ಒಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. “ಮಿತ್ರೋ-

ರಸ್ಕೌ ಶತ್ರುಣಾಕೃಷ್ಯ ದ್ವಾರಾತ್ ಆಸನ್ನತ್ವಾತ್ಕೌಚಿದೇಕೇಷುಣಿವ”

ಮಾಘಂ ೧೮-೬೫ | 8. ಶಿಥಿಲವಾದ, ಸಡಿಲವಾದ. 9.

ಬದಲಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಾರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 10. ವ್ಯತ್ಯಾಸ

ಹೊಂದಿದ, ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದಿದ. 11. ಒಡೆದಿರುವ,

ಮುರಿದಿರುವ. “ಮಿತ್ರನೌಕ ಇವ ಛಾಯನ್” ಭದ್ರಿಂ ೫-೮೮ |



**ಭಿನ್ನಕ ಭಿನ್ನಕ** (ಪುಂ) 1. ಬಾಧ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಸ್ವಲ್ಪ ವ್ಯತ್ಯಾಸ ಹೊಂದಿದ.

**ಭಿನ್ನಕಟ ಭಿನ್ನಕಟ** (ವಿಂ) ಗಂಡಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ಮದೋದಕ ಸುರಿಯುತ್ತಿರುವ, ಮದಿಸಿರುವ. ಭಿನ್ನ: ಸ್ರವನ್ಮದ: ಕಟೋ यस್ಯ | "ಭೇಜೆ ಭಿನ್ನಕಟೇನಗಿರನ್ಯಾನುಪರೋಽಽ ಯ: " ರಘುಂ ೪-೮೩ |

**ಭಿನ್ನಕುಮ ಭಿನ್ನಕುಂಭ** (ವಿಂ) 1. ಜಾಮೀನಿನಿಂದ ಬಿಡು ಗಡೆ ಹೊಂದಿ ಸ್ವತಂತ್ರನಾಗಿರುವ. 2. ಸಾಲ ತೀರಿಸಿ ಜೀತದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಹೊಂದಿದ. "ಸ್ವಸ್ಕಂದೋ ಭಿನ್ನ-ಕುಮಭ್ರ ಭುಜಿಷ್ಯೋ ದಾಸ್ಯಮೋಚಿತ: " ವೈಜಂ |

**ಭಿನ್ನಕೂಟ ಭಿನ್ನಕೂಟ** (ವಿಂ) ಉಪನಾಯಕನಿಂದ ಬೇರ್ಪಟ್ಟ ಸೈನ್ಯ, ಉಪನಾಯಕನನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡ ಸೈನ್ಯ. "ಸೈನ್ಯಂ ತು ಭಿನ್ನಕೂಟಂ ತನ್ನಟಾವಾಂತರನಾಯಕಮ್ " ವೈಜಂ |

**ಭಿನ್ನಕ್ರಮ ಭಿನ್ನಕ್ರಮ** (ವಿಂ) ಕ್ರಮವಿಲ್ಲದ, ಕ್ರಮದ ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದಿದ, ವ್ಯತ್ಯಾಸ ಹೊಂದಿದ ಕ್ರಮವುಳ್ಳ. ಭಿನ್ನ: ಕ್ರಮೋ ಯತ್ರ | ವಾಕ್ಯ ಅಥವಾ ಶೈಲಿಯು ಕ್ರಮಭಂಗ ಹೊಂದಿದರೆ "ಭಿನ್ನಕ್ರಮ" ವಾಗುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ "ಭಗ್ನಪ್ರಕ್ರಮ" ಎಂದು ಹೆಸರು. ಇದೊಂದು ಕಾವ್ಯದೋಷ. "ಏವಮುಕ್ತೋ ಮನ್ತ್ರಿಮುಖ್ಯೇ ರಾವಣ: ಪ್ರತ್ಯಭಾಷತ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ವಚ ಧಾತುವಿನಿಂದ ಪ್ರಾರಂಭವಾದ ವಾಕ್ಯವು ಆ ಧಾತುವಿನಿಂದಲೇ ಕೊನೆಗೊಳ್ಳದೆ ಮೃದಾತುವಿನಿಂದ ಪ್ರತಿವಚನವು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ ಭಗ್ನ ಪ್ರಕ್ರಮ ರೂಪವಾದ ಕಾವ್ಯದೋಷವಿರುವುದು.

**ಭಿನ್ನದೇಶ ಭಿನ್ನದೇಶ** (ಪುಂ) 1. ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಪ್ರದೇಶ, ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಸ್ಥಳ. ಭಿನ್ನೋ ದೇಶ: | (ವಿಂ) 2. ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಸ್ಥಳವುಳ್ಳ, ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಸ್ಥಳದ ಸಂಬಂಧವಿರುವ. ಭಿನ್ನೋ ದೇಶ: ಯಯೋ: | "ಕೃತ್ಯಯೋಃ ಭಿನ್ನದೇಶತ್ವಾದ್ವೈಧಿಭವತಿ ಮೇ ಮನ: " ಶಾಕುಂ ೨-೧೭ |

**ಭಿನ್ನಪ್ರಕಾರ ಭಿನ್ನಪ್ರಕಾರ** (ವಿಂ) ಬೇರೆ ವಿಧವಾದ, ಬೇರೆ ರೀತಿಯದಾದ. ಭಿನ್ನ: ಪ್ರಕಾರೋ ಯಸ್ಯ |

**ಭಿನ್ನದೇಹ ಭಿನ್ನದೇಹ** (ವಿಂ) ಗಾಯಗೊಂಡ ಮೈಯುಳ್ಳ, ಮುರಿದ ದೇಹವುಳ್ಳ.

**ಭಿನ್ನಮರ್ಮನ್ ಭಿನ್ನಮರ್ಮನ್** (ವಿಂ) ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ಏಟು ಬಿದ್ದಿರುವ, ಮರ್ಮಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಗಾಯಗೊಂಡಿರುವ.

**ಭಿನ್ನಮರ್ಯಾದಿ ಭಿನ್ನಮರ್ಯಾದಿ** (ವಿಂ) 1. ಎಲ್ಲವೀರಿದ, ಹದ್ದಾಮೀರಿದ, ಉಲ್ಲಂಘಿಸಿದ, ಅತಿಕ್ರಮಿಸಿದ. ಭಿನ್ನಾ ಮರ್ಯಾದಾ ಯೇನ | 2. ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದಿರುವ, ತಹಬಂದಿ ಯಲ್ಲಿಲ್ಲದ, ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಲ್ಲದ.

**ಭಿನ್ನರಚಿ ಭಿನ್ನರಚಿ** (ವಿಂ) 1. ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಅಭಿರುಚಿ ಯುಳ್ಳ. ಭಿನ್ನಾ ರಚಿ: ಯಸ್ಯ | "ನಾಟ್ಯಂ ಭಿನ್ನರಚೇರ್ಜನಸ್ಯ ಬಹುವಾಪ್ಯಕಂ ಸಮಾರಾಧಕಮ್ " ಮಾಲಂ ೧-೪ | 2. ಬೇರೆ ಬೇರೆ ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ, "ನಾಸೌ ನ ಕಾಮ್ಯೋ ನ ಚ ವೇದ ಸಮ್ಯಕ್ ದ್ರಷ್ಟುಂ ನ ಸಾ ಭಿನ್ನರಚಿರ್ಹಿ ಲೋಕ: " ರಘುಂ ೬-೩೦ |

**ಭಿನ್ನಲಿಂಗ ಭಿನ್ನಲಿಂಗ** (ಪುಂ) ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಲಿಂಗದ ಶಬ್ದ ಗಳು. ಭಿನ್ನಂ ಲಿಂಗಂ ಯೇಷಾಮ್ | "ಕೃತೋಽತ್ರ ಭಿನ್ನಲಿಂಗಾನಾ-ಮನುಕ್ತಾನಾಂ ಕರ್ಮಾದೃತೇ " ಅಮಂ |

**ಭಿನ್ನವೃತ್ತ ಭಿನ್ನವೃತ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಜೀವನೋಪಾಯವುಳ್ಳ. ಭಿನ್ನಂ ವೃತ್ತಂ ಯಸ್ಯ | 2. ಹೀನವಾದ ಜೀವನವುಳ್ಳ, ಕಷ್ಟದ ಜೀವನವುಳ್ಳ. 3. ಭಂದೋನಿಯಮಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಾದ ವೃತ್ತವುಳ್ಳ. 4. ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಆಚಾರವುಳ್ಳ.

**ಭಿನ್ನವೃತ್ತಿ ಭಿನ್ನವೃತ್ತಿ** (ವಿಂ) 1. ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಜೀವನೋಪಾಯವುಳ್ಳ. 2. ನಿಶ್ಯಷ್ಟವಾದ ಜೀವನವುಳ್ಳ. ಭಿನ್ನಾ ವೃತ್ತಿರಯಸ್ಯ |

**ಭಿಯಾ ಭಿಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ. ಭೀಯತೇ — ಜಿ ಭಿ (ಭಯೇ) "ಅಜ್" (೩-೩-೧೦೪) | "ತದ್ವೋಽಸ್ತ್ರೀ ಭಿಭಿಯಾ ಭೀತಿ: ಸಾಧ್ಯವಸಂ ಭಯನಂ ಭಯಮ್ " ವೈಜಂ |

**ಭಿಲ್ಲ ಭಿಲ್ಲ** (ಪುಂ) ಕಿರಾತ, ಬೇಡರವನು, ಒಬ್ಬ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು. "ಪುಲಿಂದಾ: ಶಬರಾ ಭಿಲ್ಲಾ: ಕಿರಾತಾಶ್ಚಾ-ನ್ತ್ಯಜಾ: ಪೃಥಕ್ " ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | "ದೇಶೇ ದೇಶೇ ಜಡಿಮಕುರಜ್ಞಾ-ಸ್ತೇಜೋಮಲ್ಲೇದಿನಕರಭಿಲ್ಲೇ " ಚಂ ಭಾಂ |

**ಭಿಲ್ಲತರು ಭಿಲ್ಲತರು** (ಪುಂ) ಲೋಧಗಿಡ.

**ಭಿಲ್ಲಭೂಷಣ ಭಿಲ್ಲಭೂಷಣ** (ಪುಂ) ಗುಲಗಂಜಿ ಗಿಡ.

**ಭಿಷಜ್ ಭಿಷಜ್** (ಪುಂ) 1. ವೈದ್ಯ, ರೋಗದ ಚಿಕಿತ್ಸೆ ನಡೆಸುವವನು. ವಿಭೇತ್ಯಸ್ಮಾತ್ ರೋಗ: — ಜಿ ಭಿ (ಭಯೇ) "ಅಜಿ:" ಪ್ರಕೃತೇ: ಷುಗಾಗಮಶ್ಚ (೩ಂ ೧-೧೩೫) | "ಆಪ್ತೇನ ತಕ್ಷಣಾ ಭಿಷಜೇವ ತಕ್ಷಣಂ ಪ್ರವಕ್ರಮೇ ಲಕ್ಷಣಪೂರ್ವಕ: ಕ್ರಮ: " ಮಾಧಂ ೧೨-೨೫ | 2. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಭಿಷಜ್ಯತಿ ಸಮ್ಯಗ್ವಿ-ದಿತನಿಧಾನತಯಾ ಚಿಕಿತ್ಸತಿ | "ಭವರೋಗನಿಧಾನಜ್ಞೋ ಯೋಽಸೌ-ಭಿಷಗುದೀರಿತ: " ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ: | "ತಿಸಾಮಾ ಸಾಮಗ: ಸಾಮ ನಿರ್ವಾಣಿಂ ಭೇಷಜಂ ಭಿಷಕ್ " ವಿಂ ಸಂ | 3. ಔಷಧ.

**ಭಿಷ್ಣು ಭಿಷ್ಣು** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೀದುಹೋದ ಅನ್ನ. ಭಿಷ್ಣುಮನ್ನಂ ಟೀಕತೇ — ಟೀಕ (ಗತೌ) "ಙ:" (೩-೨-೧೦೧) | "ಭಿಷ್ಣು ದಗ್ಧಿಕಾ " ಅಮಂ |

**ಭಿಷ್ಟಾ ಭಿಷ್ಟಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನ್ನ. ಬಹಸ್ತಿ — ಬಸ (ದೀಪ್ತೌ) "ಸ:" ಬಾಹುಂ | ಇತ್ವಮ್ (೭-೪-೭೮) |



**ಭಿಸ್ತಿಟಾ ಭಿಸ್ತಿಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸೀದುಹೋದ ಅನ್ಯ. ಭಿಸ್ತಿಟಾ  
ಟೀಕತೆ — ಪೃಷ್ಠಂ । “ದಧಾನ್ ಭಿಸ್ತಿಟಾ ಖಿಲಿ” ವೈಜಂ ।

**ಋ ಭಿ — ಭಯೆ** (ಜುಹಿಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ) । ವಿಭೇತಿ  
ವಿಭಿತಃ ವಿಭಿತಃ ವಿಭಿಮತಿ । ವಿಭಾಯ । ಭೇತಾ । ಭೇಷ್ಯತಿ ।  
ವಿಭೇತು । ಅವಿಭೇತ್ । ವಿಭಿಯಾತ್ । ಇತ್ಯಾದಿ. ಹೆದರು,  
ಭಯಪಡು, ಅಂಜು. “ನಿರ್ಜರಾಃ ಪ್ರತಿನಿಶಾಮಯಮಾನಾಃ  
ವಿಭಿಮತಿ ಸ್ಮ ಜಗದುಶ್ಚ ಜಯೋಕ್ತಿಮ್” ಯಾದಂ ೨೧-೪೪ ।

**ಭಾವೆ:**—ಭೀಯತೆ । ವಿಭಯಾಂ ಚಕ್ರ, -ಬಮುವೆ, -ಆಸೆ ।  
ವಿಭಿಮೆ । ಭಾಯಿತಾ, ಭೇತಾ । ಭಾಯಿಷ್ಯತೆ, ಭೇಷ್ಯತೆ । ಭೀಯತಾಮ್ ।  
ಭೀಯತ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಣಿವಿ:**—ಭಾಪಯತಿ, ಭೀಷಯತೆ, ಭಾಯಯತಿ, -ತೆ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತು:**—ಭೇತವ್ಯಮ್ । ಭಯನೀಯಮ್ । ಭಯಮ್ । ಭೀತಃ ।  
ಭೀತವಾನ್, -ವತಿ । ವಿಭಿಮತ್, -ತಿ । ಭೀತಮ್ । ಭಯನಮ್ ।  
ಭೀತ್ವಾ । ವಿಭೀಯ । ಭಾಯಭಾಯಮ್ । ಭೀತ್ವಾ ಭೀತ್ವಾ ।

**ಭಿ ಭೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ, ಅಂಜಿಕೆ. ಋ ಭಿ (ಭಯೆ)  
“ವಿವ್” (ವಾಂ ೩-೩-೯೪) । “ಸ ಚಿಂತಯತ್ಯೇವ ಭಿಷ್ವ-  
ದೇಷ್ಯತೀರಹೋ ದುರಂತಾ ಬಲವದಿರೋಧಿತಾ” ಕಿರಾಂ ೧-೨೩ ।

**ಭೀಕರ ಭೀಕರ (ವಿಂ)** ಭಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ಭಯ  
ವನ್ನು ಹುಟ್ಟಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಭಿಂ ಕರೋತಿ — ಕೃನ್  
(ಕರಣಂ) “ಟಃ” (೩-೨-೨೦) ।

**ಭೀತ ಭೀತ (ನಂ)** 1. ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ. ಋ ಭಿ (ಭಯೆ)  
ಭಾವೆ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪) । “ಭೀತಂ ಭಯೆ ಭಯಯುತೆ”  
ಹೇಮಂ । (ವಿಂ) 2. ಹೆದರಿದ, ಭಯಗೊಂಡ. ಭಿ ಕರತಂ  
“ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) । “ಪ್ರಲಂಬಹಂತುಃ ಪ್ರಸಮೀಕ್ಷ್ಯ ವೇಗಂ  
ಭೀತಾಃ ಪಲಾಯಂತ ಭೀತಾರ್ತನಾಡಾಃ” ಯಾದಂ ೨೦-೧೨ ।

**ಭೀತಿ ಭೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ, ಅಂಜಿಕೆ. ಋ ಭಿ  
(ಭಯೆ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) । “ಭೀತಿಕೋಪಸಮವಾಯ-  
ರೂಪಯಾ ದೋಲಯೇವ ಸಮಕೃಷ್ಯತ ದ್ವಿಧಾ” ಯಾದಂ ೧೭-೪೬ ।  
2. ಕಂಪನ, ನಡುಕ. “ಭೀತಿಃ ಸಾಂವಸಕಮ್ಪಯೋಃ” ಹೇಮಂ ।

**ಭೀತಿನಾಡಿತಕ ಭೀತಿನಾಟಿತಕ (ನಂ)** ಭಯದ ಅಭಿನಯ,  
ಭಯಗೊಂಡವನಂತೆ ನಟಿಸುವುದು.

**ಭೀಮ ಭೀಮ (ಪುಂ)** 1. ಭೀಮಸೇನ, ಪಾಂಡುರಾಜನ ಮಗ,  
ಮಧ್ಯಮ ಪಾಂಡವ. [ಭೀಮಸೇನನು ಕುಂತೀ ದೇವಿಯಲ್ಲಿ  
ವಾಯುದೇವನಿಂದ ಜನಿಸಿದವನು. ಕುಂತಿಯು ದುರ್ವಾಸ  
ಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಉಪದೇಶಹೊಂದಿದ ವಾಯುದೇವತಾಕ  
ಮಂತ್ರದ ಮಹಿಮೆಯಿಂದ ಈತನನ್ನು ಪಡೆದಳು.  
ಯುಧಿಷ್ಠಿರನು ಇವನ ಅಣ್ಣ. ಅರ್ಜುನನು ಇವನ ತಮ್ಮ.

ನಕುಲ ಸಹದೇವರು ಇವನ ಬಲತಾಯಿಯ ಮಕ್ಕಳು.  
ಇವನು ಚಿಕ್ಕಮಗುವಾಗಿದ್ದಾಗ ಒಂದು ದಿನ ತಾಯಿಯ  
ಮಡಿಲಿನಿಂದ ಉರುಳಿ ಶತಶೃಂಗಪರ್ವತದ ಮೇಲೆ ಬಿದ್ದ.  
ಆ ಪರ್ವತವು ಪುಡಿ ಪುಡಿಯಾಯಿತು. ಭೀಮನು ಬಾಲ್ಯ  
ದಿಂದಲೂ ಅಸಾಧಾರಣ ಶಕ್ತಿ ಹೊಂದಿದ್ದರಿಂದ ಇವನಿಗೆ  
ಭೀಮನೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಬಾಲ್ಯದಲ್ಲಿ ದುರ್ಯೋಧ  
ನಾದಿಗಳೊಡನೆ ಆಟವಾಡುತ್ತಿದ್ದು ಅವರನ್ನು ಸೋಲಿಸು  
ತ್ತಿದ್ದನು. ಭೀಮನು ಬಲರಾಮನಲ್ಲಿ ಗದಾಯುದ್ಧ  
ವನ್ನು ಕಲಿತನು. ದುರ್ಯೋಧನನ ಮೋಸವನ್ನು ಅರಿತ  
ಭೀಮಸೇನನು ಅರಗಿನ ಮನೆಯಿಂದ ತಾಯಿ ಮತ್ತು  
ಸಹೋದರರೊಡನೆ ಅರಣ್ಯವನ್ನು ಸೇರಿ ಅಲ್ಲಿ ಹಿಡಿಂಬ  
ರಾಕ್ಷಸನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ಅವನ ತಂಗಿಯಾದ ಹಿಡಿಂಬಿ  
(ಕಮಲಪಾಲಿಕೆ) ಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾದನು. ಅವಳಲ್ಲಿ  
ಘಟೋತ್ಕಚನು ಜನಿಸಿದನು. ದ್ರೌಪದಿ, ಹಿಡಿಂಬೆ ಮತ್ತು  
ಜಲಂಧರೆಯೆಂಬ ಮೂವರು ಇವನ ಪತ್ನಿಯರು. ಯುಧಿ  
ಷ್ಠಿರನ ರಾಜಸೂಯಯಾಗದ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಜರಾಸಂಧ  
ನಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ ಅವನನ್ನು ಬಾಹುಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಸಂಹರಿಸಿ  
ದನು. ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ದ್ರೌಪದಿಯ ಮಾನಭಂಗಕ್ಕೆ ಯತ್ನಿಸಿದ  
ದುರ್ಯೋಧನನ ಊರುಭಂಗಮಾಡುವುದಾಗಿ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ  
ಮಾಡಿದನು. ವನವಾಸದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಕಿಮ್ಮೀರ ರಾಕ್ಷಸನನ್ನು  
ಕೊಂದನು. ವಿರಾಟನಗರದಲ್ಲಿ ಅಜ್ಞಾತವಾಸದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ  
ಇವನಿಗೆ ವಲಲನೆಂಬ ಹೆಸರು. ಪಾಂಡವರು ರಹಸ್ಯವಾಗಿ  
ಇವನನ್ನು ಜಯೇಶನೆಂದು ಕರೆಯುತ್ತಿದ್ದರು. ವಿರಾಟ  
ನಗರದಲ್ಲಿ ದ್ರೌಪದಿಯ ಮಾನಭಂಗಕ್ಕೆ ಯತ್ನಿಸಿದ ಕೀಚಕ  
ನನ್ನೂ ಉಪಕೀಚಕರನ್ನೂ ಸಂಹರಿಸಿದನು. ಮಹಾಭಾರತದ  
ಏಳನೆಯ ದಿನದ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ದುರ್ಯೋಧನನ ಎಂಟು  
ಮಂದಿ ಸಹೋದರರನ್ನೂ ಕೊಂದು ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯ  
ರನ್ನೂ ಸೋಲಿಸಿದನು. ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಕರ್ಣನಿಗೆ ಸಾಹಾಯ್ಯ  
ಮಾಡಲು ಬಂದ ದುರ್ಜಯನನ್ನು ಕೊಂದು ಕರ್ಣನನ್ನು  
ಓಡಿಸಿದನು. ಶಕುನಿಯನ್ನು ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಪರಾಜಯ  
ಗೊಳಿಸಿ ಎಲ್ಲರೂ ನೋಡುತ್ತಿದ್ದಂತೆಯೇ ದುಃಶಾಸನನ  
ತೋಳುಗಳನ್ನು ಮುರಿದು ಅವನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ಅವನ  
ರಕ್ತಪಾನ ಮಾಡಿದನು. ಕೊನೆಗೆ ದುರ್ಯೋಧನನು ತಪ್ಪಿಸಿ  
ಕೊಂಡು ಹೋಗಿ ಒಂದು ಮಡುವಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿರುವ  
ನೆಂದು ತಿಳಿದು ಕೃಷ್ಣನೊಡನೆ ಭೀಮನು ಅಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ  
ವೀರವಾದಪೂರ್ವಕ ಗದಾಯುದ್ಧ ಮಾಡಿ ದುರ್ಯೋಧನನ  
ಊರು (ತೊಡೆ) ಗಳನ್ನು ಮುರಿದು ಅವನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ  
ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯನ್ನು ಪೂರೈಸಿ ದ್ರೌಪದಿಗೆ ಸಂತೋಷವುಂಟು  
ಮಾಡಿದನು.] 2. ವಿದರ್ಭದೇಶದ ದೊರೆ, ದಮಯಂತಿಯ



**ಶಿಕ್ಷಣ ಭೀಷ್ಮ (ಕುಂ) 1.** ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯ, ಗೊಗ್ಗಿಯಲ್ಲಿ  
 ಶಂಕನುರಾಜನಿಗೆ ಜನಿಸಿದ ಪುತ್ರ. [ವಸಿಷ್ಠರಿಂದ ಶಾಪ



ಹೊಂದಿ ಗಂಗೆಯ ಪುತ್ರರಾಗಿ ಜನಿಸಿದ ಅಷ್ಟವಸುಗಳಲ್ಲಿ ಭೀಷ್ಮನು ಕೊನೆಯ ಪುತ್ರ. ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯರಿಗೆ ಪರಶು ರಾಮನಿಂದ ಧನುರ್ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ನಡೆಯಿತು. ಒಂದು ದಿನ ಶಂತನುವು ನದೀತೀರದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ದಾಶರಾಜನ ಪುತ್ರಿಯಾದ ಸತ್ಯವತಿಯನ್ನು ಕಂಡು ಮೋಹಿತನಾಗಿ ಅವಳನ್ನು ತನಗೆ ಮದುವೆಮಾಡಿಕೊಡಬೇಕೆಂದು ದಾಶರಾಜ ನನ್ನು ಬೇಡಿದನು. ಅವಳ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಮಗನಿಗೇ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಕೊಡಬೇಕೆಂಬ ದಾಶರಾಜನ ಅಭಿಪ್ರಾಯ ವನ್ನು ತಿಳಿದ ಭೀಷ್ಮನು ಅದಕ್ಕೆ ಸಮ್ಮತಿಸಿ ಈ ಕಾರಣ ದಿಂದ ತಾನು ಮದುವೆಯನ್ನೇ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದಿಲ್ಲ ವೆಂದು ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಮಾಡಿ ಸತ್ಯವತಿಯನ್ನು ತಂದು ತನ್ನ ತಂದೆಗೆ ಮದುವೆಮಾಡಿಸಿದನು. ಇದರಿಂದ ಸಂತೋಷ ಗೊಂಡ ಶಂತನುವು ಭೀಷ್ಮನಿಗೆ ಸ್ವೇಚ್ಛಾಮರಣರೂಪವಾದ ವರವನ್ನಿತ್ತನು. ಭೀಷ್ಮನು ಸತ್ಯವತಿಯ ಮಗನಾದ ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯನಿಗೆ ಕಾಶಿರಾಜನ ಪುತ್ರಿಯರಾದ ಅಂಬಿಕೆ ಮತ್ತು ಅಂಬಾಲಿಕೆಯರನ್ನು ತಂದು ವಿವಾಹ ಮಾಡಿಸಿ ದನು. ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯನಿಗೆ ಸಂತಾನವಿಲ್ಲದೆ ಹೋದುದ ರಿಂದ ಸತ್ಯವತಿಯ ಸೂಚನೆಯಂತೆ ವ್ಯಾಸರಿಂದ ಅಂಬಿಕೆ ಯಲ್ಲಿ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನೂ ಅಂಬಾಲಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಪಾಂಡುವೂ ಜನಿಸಿದರು. ದ್ರೌಪದೀ ಸ್ವಯಂವರಾನಂತರ ಭೀಷ್ಮನು ಪಾಂಡುಪುತ್ರರಾದ ಧರ್ಮರಾಜಾದಿಗಳನ್ನು ಕರೆತರಿಸಿ ಅವರಿಗೆ ಅರ್ಧ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಕೊಡಿಸಿದನು. ಪಾಂಡವರು ದ್ಯೂತದಲ್ಲಿ ಪರಾಜಿತರಾಗಿ ವನವಾಸದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಅವರನ್ನು ದುರ್ಯೋಧನನು ಪತ್ತೆಮಾಡಲು ಯತ್ನಿಸಿದಾಗ ಅವರೊಡನೆ ಸಂಧಿಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವಂತೆ ದುರ್ಯೋಧನನಿಗೆ ಉಪದೇಶಮಾಡಿದನು. ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲಾ ಮಹಾರಥರೂ ಮಡಿಯಲು ದುರ್ಯೋಧನನು ಭೀಷ್ಮನನ್ನು ಸೇನಾಪತಿ ಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದನು. ಭೀಷ್ಮನು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಮಹಿಮೆ ಯನ್ನು ದುರ್ಯೋಧನನಿಗೆ ತಿಳಿಸಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಬಲದಿಂದ ಪಾಂಡವರಿಗೆ ಜಯವು ಸಿದ್ಧವೆಂದೂ ಅವರೊಡನೆ ಸಂಧಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಬೇಕೆಂದೂ ಪುನಃ ಹೇಳಿದನು. ಭೀಷ್ಮನು ಶಸ್ತ್ರತ್ಯಾಗ ಮಾಡಿದಲ್ಲಿ ತಾನು ಪಾಂಡವರನ್ನು ಗೆಲ್ಲುವು ದಾಗಿ ಕರ್ಣನು ಹೇಳಿದ ಮಾತಿನಂತೆ ದುರ್ಯೋಧನನು ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯರಿಗೆ ಸೇನಾಧಿಕಾರವನ್ನು ಬಿಟ್ಟುಕೊಡು ವಂತೆ ಹೇಳಿದನು. ಶಿಖಿಂಡಿಯು ಯುದ್ಧಸನ್ನದ್ಧನಾಗಿ ಬಂದಾಗ ತಾನು ಯುದ್ಧಮಾಡುವುದಿಲ್ಲವೆಂದು ಭೀಷ್ಮನು ಶಸ್ತ್ರತ್ಯಾಗಮಾಡಿ ತನ್ನನ್ನು ಈಗ ಸಂಹರಿಸಬಹುದೆಂದು ಧರ್ಮರಾಜನಿಗೆ ಸೂಚಿಸಿ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬಿದ್ದನು. ಆಗ ಕೌರವ ಪಾಂಡವರೆಲ್ಲರೂ ಭೀಷ್ಮನ ಪಾದಾರವಿಂದಗಳಿಗೆ

ನಮಸ್ಕರಿಸಿದರು. ಅರ್ಜುನನು ಭೀಷ್ಮನಿಗೆ ಶರತಲ್ಪವನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿ ಭೀಷ್ಮನ ಅಭೀಷ್ಟದಂತೆ ಪರ್ಜನ್ಯಾಸ್ತ್ರದಿಂದ ಭೂಮಿಯನ್ನು ತೋಡಿ ಪಾತಾಳ ಗಂಗೆಯಿಂದ ಅವನ ಬಾಯಾರಿಕೆಯನ್ನು ನಿವಾರಿಸಿದನು. ಶರತಲ್ಪದಲ್ಲಿ ಮಲಗಿ ದ್ದಾಗ ಧರ್ಮರಾಜನು ಧರ್ಮೋಪದೇಶ ಮಾಡಬೇಕೆಂದು ಭೀಷ್ಮನನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದನು. ಶಸ್ತ್ರಾಸ್ತ್ರಗಳಿಂದ ಗಾಯ ಗೊಂಡಿರುವುದರಿಂದ ಉಪದೇಶಿಸಲು ತನ್ನ ಅಸಾಮರ್ಥ್ಯ ವನ್ನು ಹೇಳಿಕೊಂಡಾಗ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಭೀಷ್ಮನಿಗೆ ಅಂತಹ ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದನು. ಆಗ ಭೀಷ್ಮನು ಧರ್ಮರಾಜ ನಿಗೆ ವರ್ಣಾಶ್ರಮಧರ್ಮ ಅಪದ್ಧರ್ಮ ರಾಜನೀತಿ ಮೋಕ್ಷಧರ್ಮ ಮುಂತಾದ ಅನೇಕ ಧರ್ಮಗಳನ್ನು ಉಪ ದೇಶಿಸಿದನು. ಅನುಶಾಸನ ಪರ್ವದ ದಾನಧರ್ಮಪರ್ವ ದಲ್ಲಿ ಭೀಷ್ಮನು ಧರ್ಮರಾಜನಿಗೆ ಶ್ರೀವಿಷ್ಣು ಸಹಸ್ರನಾಮ ಸ್ತೋತ್ರವನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸಿರುತ್ತಾನೆ. ಬಳಿಕ ಭೀಷ್ಮನು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ ಮತ್ತು ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರಾದಿಗಳ ಅನುಮತಿ ಪಡೆದು ಯೋಗಬಲದಿಂದ ಬ್ರಹ್ಮರಂಧ್ರವನ್ನು ಭೇದಿಸಿ ಕಣ್ಮರೆಯಾದನು.] 2. ಭಯಾಂಕ ರಸ. 3. ರುದ್ರ, ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 4. ರಾಕ್ಷಸ. (ವಿಂ) 5. ಭಯಂಕರವಾದ.

“ಶಿಷ್ಯೋ ಋತೇ ಚ ಗಾಙ್ಗೇ ರಾಕ್ಷಸೇ ಚ ಭಯಂಕರೇ” ಹೇಮಂ ।

ಶಿಷ್ಯಕ ಭೀಷ್ಮಕ (೪ಂ) 1. ಭೀಷ್ಮ. 2. ರುಕ್ಮಿಣೀ ದೇವಿಯು ತಂದೆಯಾದ ಭೀಷ್ಮಕರಾಜ, ವಿದರ್ಭದೇಶದ ದೊರೆ. ವಿದರ್ಭದೇಶದಲ್ಲಿ ಭೋಜಕಟವೆಂಬುದು ಇವನ ರಾಜಧಾನಿಯಾಗಿತ್ತು. “ರಾಜೇ ಮೌಜಕಟಸ್ಯಾ ಮಹಾಮಾತ್ರಾಯ ಖೇಮತೇ । ಶಿಷ್ಯಕಾಯ ಸ ಭರ್ಮತಾ ಸಾಕ್ಷಾ ದಿವ್ಯಸತ್ಯಾಯ ವೇ” ಸಾಂ ಸಭಾಂ ೩೨-೬೫ ।

ಶಿಷ್ಯಪಂಚಕ ಭೀಷ್ಮಪಂಚಕ (೧ಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕ ಶುಕ್ಲ ಏಕಾದಶಿ ಮೊದಲುಗೊಂಡು ಐದು ತಿಥಿಗಳು (ಏಕಾದಶಿ, ದ್ವಾದಶಿ, ತ್ರಯೋದಶಿ, ಚತುರ್ದಶಿ ಮತ್ತು ಹುಣ್ಣಿಮೆ). 2. ಈ ಐದು ತಿಥಿಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ ವ್ರತ.

ಶಿಷ್ಯಜನನಿ ಭೀಷ್ಮಜನನೀ, -ಸ್ತ-ಸೂ (ಸ್ತಂ) ಭೀಷ್ಮನ ತಾಯಿ, ಗಂಗಾನದಿ.

ಶಿಷ್ಯಾಪ್ತಮಿ ಭೀಷ್ಮಾಪ್ತಮೀ (ಸ್ತಂ) ಮಾಘ ಶುಕ್ಲ ಅಷ್ಟಮಿ, ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯನು ದೇಹವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದ ತಿಥಿ.

ಶ್ರು ಭು (೪ಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 2. ಚತುರ್ಮುಖ ಬ್ರಹ್ಮ. 3. ಚಂದ್ರ. “ಶ್ರು: ಶಮೋ ಖಾತರೀಂದ್ರಿ ನಾ” ನಾನಾರ್ಯಂ ।

ಶ್ರುತ ಭುಕ್ತ (೧ಂ) 1. ಭೋಜನ, ಊಟಮಾಡುವುದು. ಶ್ರುತ (परिपालनाम्यवहारयो:) ಸಾವೇ “ಕು:” (೩-೩-೧೯೪) ।



“ಆಸಿತಂ ಶಯಿತಂ ಭುಕ್ತಂ ಸ್ಮೃತ ರಾಮಸ್ಯ ಕೀರ್ತಯ” ರಾಮಾಂ ।  
2. ಅನುಭವಿಸುವುದು. 3. ಆಹಾರ. (ವಿಂ) 4. ತಿನ್ನು  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಭುಜ ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । “ಅಪೂಜಿತಂ  
ತು ತದ್ಭುಕ್ತಮುಭಯಂ ನಾಶಯೇದಿದಮ್” ಮನುಂ ೨-೫೫ । 5. ಅನು  
ಭವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಮನುಪ್ರಭೃತಿಭಿರ್ಮಾನೈ-  
ಭುಕ್ತಾ ಯದಪಿ ರಾಜಭಿಃ” ರಘುಂ ೪-೭ । 6. ಕಳೆದುಹೋದ,  
ನಡೆದುಹೋದ (ಕಾಲ).

**ಭುಕ್ತಭೋಗ ಭುಕ್ತಭೋಗ** (ವಿಂ) ಸುಖವನ್ನು ಅನುಭವಿಸಿ  
ದವನು. ಭುಕ್ತೋ ಭೋಗೋ ಯೇನ ।

**ಭುಕ್ತವತ್ ಭುಕ್ತವತ್** (ವಿಂ) ಊಟಮಾಡಿದವನು. ಭುಜ  
(ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) “ಕ್ತವತ್” (೩-೨-೧೦೨) ।  
“ಭುಕ್ತವಾನ್ ವಿಹರೇತ್ತ್ವೇವ ಸ್ತ್ರೀಭಿರಂತಃಪುರೇ ಸಹ” ಮನುಂ  
೭-೨೨೧ । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ವತೀ-ವತೀಃ.

**ಭುಕ್ತಶಃ ಭುಕ್ತಶಃ** (ಪುಂ) ತಿಂದು ಉಳಿದುದು, ಊಟ  
ಮಾಡಿದ ಉಳಿಕೆ.

**ಭುಕ್ತಸಮುಜ್ಜಿತ ಭುಕ್ತಸಮುಜ್ಜಿತ** (ವಿಂ) ತಿಂದು ಉಳಿ  
ದುದು, ಊಟವಾದ ನಂತರ ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ ಅನ್ನ ಮೊದ  
ಲಾದುದು. ಭುಕ್ತಂ ಪಶ್ಚಾತ್ ಸಮುಜ್ಜಿತಮ್ ।

**ಭುಕ್ತಿ ಭುಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭೋಜನ, ಊಟ. ಭುಜ  
(ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) ।  
2. ಭೋಗ, ಅನುಭವ, ಗೃಹ ಕ್ಷೇತ್ರ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ  
ಸ್ವಾಧೀನಾನುಭವ. “ಆಹುತಾ ಶೋಭೇತ್ ಭುಕ್ತಿಮಾಗಮಂ  
ಚಾಪಿ ಸಂಸದಿ । ತತ್ಸುತೋ ಭುಕ್ತಿಮೇವೈಕಾಂ ಪೌತ್ರಾದಿಷು ನ  
ಕಿಂಚನ” । “ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಂ ಯಸ್ಯ ಯದ್ಭುಕ್ತಂ ಕ್ಷೇತ್ರಾಣಾಂ ದಶ  
ವತ್ಸರಾನ್ । ತತ್ರ ಭುಕ್ತಿಃ ಪ್ರಮಾಣಂ ಸ್ಯಾತ್ ನ ಸಾಕ್ಷೀ ನಾಕ್ಷರಾಣಿ  
ಚ” ಪञ्ಚತಂ ೩-೯೨ । 3. ರಾಶಿಯಿಂದ ರಾಶಿಗೆ ರವಿ  
ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹಗಳ ಸಂಚಾರ. 4. ನ್ಯಾಯಾಲಯದ  
ವ್ಯವಹಾರಗಳಿಗೆ ಬೇಕಾಗುವ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಪ್ರಮಾಣಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು. (1) ಪ್ರಮಾಣ. (2) ಲಿಖಿತ. (3) ಭುಕ್ತಿ  
ಮತ್ತು (4) ಸಾಕ್ಷಿ. “ಪ್ರಮಾಣಂ ಲಿಖಿತಂ ಭುಕ್ತಿಃ ಸಾಕ್ಷಿಣ-  
ಶ್ಚೇತಿ ಕೀರ್ತಿತಮ್ । ಷಷ್ಠಸಮನ್ಯತಮಾಭಾವೇ ದಿವ್ಯಾನ್ಯತಮ-  
ಮುಚ್ಯತೇ” । 5. ಭೋಗ, ಸುಖಾನುಭವ.

**ಭುಗ ಭುಗ್** (ವಿಂ) 1. ಬಗ್ಗಿರುವ, ವಕ್ರವಾಗಿರುವ,  
ಡೊಂಕಾಗಿರುವ. ಭುಗೋ (ಕೌಡಿಲ್ಯೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) ।  
“ಭುಗ್ನಭಾಗಸ್ತತಸ್ಸ ಹಸ್ತದಾಕ್ರಮಣಯನ್ವಿತಃ” ಯಾದಂ  
೨೨-೨೦೪ । 2. ಬಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಕ್ರವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಭುಜ ಭುಜ** (ವಿಂ) (ಸಮಾಸದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ) 1. ತಿನ್ನುವ,  
ಊಟಮಾಡುವ. ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) “ವಿವಪ್”

(೩-೨-೭೬) । 2. ಅನುಭವಿಸುವ. 3. ಉಪಯೋಗಿಸಿ  
ಸುವ. 4. ಆಳುವ, ಪಾಲಿಸುವ. “ಅಭಿಯೋಗ ಇಮಾನ್  
ಮಹಿಭುಜೋ ಭವತಾ ತಸ್ಯ ಕೃತಃ ಕೃತಾವಧೇಃ” ಕಿರಾಂ ೨-೪೬ ।

**ಭುಜ - ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ** (ಠಾಂ ಪಾಲನಾರ್ಥೇ ಪರಂ  
ಸಕಂ ಅನಿಂ) । 1. ಭುನಕ್ತಿ ಭುಂಕ್ತಃ ಭುಂಜಂತಿ ।  
ಬುಭುಜ । ಭುಂಕ್ತಾ । ಭುಂಕ್ಯತಿ । ಭುನಕ್ತು ಭುಂಕ್ತಾತ್  
ಭುಂಕ್ತಾಂ ಭುಂಜಂತು । ಅಭುನಕ್ । ಭುಂಜ್ಯಾತ್ । ಭುಂಜ್ಯಾತ್  
ಭುಂಜ್ಯಾಸ್ತಾಂ । ಅಭುಂಕ್ಶೀತ್ । ಅಭುಂಕ್ಯತ್ । 2. ಪಾಲನಭಿನ್ನೇರ್ಥೇ  
“ಭುಜೋಜನವನೇ” ಇತ್ಯಾತ್ಮನೇಪದಮ್ । ಭುಂಕ್ತೇ ಭುಂಜಾತೇ  
ಭುಂಜತೇ । ಬುಭುಜೇ । ಭುಂಕ್ತಾ । ಭುಂಕ್ಯತೇ । ಭುಂಕ್ತಾಂ ।  
ಅಭುಂಕ್ತ । ಭುಂಜೀತ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

1. ಪಾಲಿಸು, ರಕ್ಷಿಸು. 2. ಅನುಭವಿಸು. 3. ಭುಂಜಿಸು,  
ಊಟಮಾಡು.

**ಕರ್ಮಣಿಃ**—ಭುಂಜ್ಯತೇ । ಭುಂಜ್ಯತಾಂ । ಅಭುಂಜ್ಯತ । ಭುಂಜ್ಯೇತ್ ।  
ಅಭುಂಜಿ । ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತುಃ**—ಭುಂಕ್ತವ್ಯಮ್ । ಭುಂಜನೀಯಮ್ । ಭುಂಜ್ಯಮ್ ಭುಂಜ್ಯಾಥೇ ।  
ಭುಂಜ್ಯಮ್ ಅನ್ಯತ್ । ಭುಂಕ್ತಃ । ಭುಂಕ್ತವಾನ್, -ವತೀ । ಭುಂಜನ್,  
ಪಾಲನಭಿನ್ನೇರ್ಥೇ ಭುಂಜಾನಃ । ಭುಂಕ್ತುಮ್ । ಭುಂಕ್ತಮ್ । ಭುಂಕ್ತವಾ ।

**ಭುಜ ಭುಜ** (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಾಹು, ತೋಳು. ಭುಜಯೇನ—  
ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) “ಭಜ್” (೩-೩-೧೨೧) ।  
“ಜಾಸ್ಯಸಿ ಕಿಯದ್ಭುಜೋ ಮೇ ರಕ್ಷತಿ ಮೌವೀಕಿಣಾಕ್ಷ ಇತಿ”  
ಶಾಕುಂ ೧-೧೩ । 2. ಕೈ, ಹಸ್ತ, ಪಾಶ. “ಚಕ್ಷುರ್ದಭುಜ  
ಭ್ರಮಿತಚಂಡಗದಾಭಿಧಾತಸಂಚುರ್ಣಿತೋರುಗಲಸ್ಯ ಸುಯೋಧನಸ್ಯ”  
ವೇಣೀಂ ೧-೨೧ । 3. ಅನೆಯ ಸೊಂಡಿಲು. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
ಭುಜಾ ಭುಜಾ. “ಅಥ ಬಾಹೌ ಪಾಣೌ ಭುಜಾ ದ್ವಯೋಃ” ನಾನಾರ್ಥರಂ ।  
4. ವಕ್ರತೆ, ಕೊಟ್ಟೆ, ಡೊಂಕು. 5. (ಗಣಿತಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ)  
ಸರಳ ರೇಖಾಕೃತಿಯಲ್ಲಿನ ಒಂದು ಬಾಹು. ತ್ರಿಭುಜಃ  
Triangle (ತ್ರಿಭುಜಾಕೃತಿಃ), ಚತುರ್ಭುಜಃ Quadrangle  
(ಚತುರ್ಭುಜಾಕೃತಿಃ) ।

**ಭುಜಕೋಟರ ಭುಜಕೋಟರ** (ಪುಂ) ಕಡ್ಡು, ಕಂಕಳು. ಭುಜಸ್ಯ  
ಕೋಟರ ಇವ ।

**ಭುಜಗ ಭುಜಗ** (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಭುಜೋ (ಕೌಡಿಲ್ಯೇ)  
“ಕಃ” (೩-೧-೧೩೫) । ಭುಜಃ ಸನ್ ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ಲ  
(ಗತೌ) “ಙಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) । ಡಿತ್ವಸಾಮರ್ಥ್ಯಾತ್  
ಅಭಸ್ಯಾಪಿ ಡೆಲೊಪಃ । “ಹಿತ್ವಾ ತಸ್ಮಿನ್ ಭುಜಗವಲಯಂ  
ಶಂಭುನಾ ದತ್ತಹಸ್ತಾ” ಮೇಘಂ ೧-೬೦ । 2. ಅಶ್ಲೇಷಾನ್ವಕ್ಷತ್ರ.

**ಭುಜಗಪತಿ ಭುಜಗಪತಿ** (ಪುಂ) 1. ಅದಿತೇಷ, ಸರ್ಪಗಳ  
ರಾಜ. ಭುಜಗಾನಾಂ ಪತಿಃ । “ಜಟಾಜೂಪಿಡಂ ಭುಜಗಪತಿ-



ಭೋಗೋಪಮಭುಜಂ ದದರ್ಶ ಶ್ರೀಮಂತಂ ವಿಪಿನಭುವಿ ಸೀತಾಸಹಚರಮ್”  
 ಚಂ ರಾಂ 1. ವಾಸುಕಿ. 3. ಪತಂಜಲಿಮುನಿ. 4. ಪಿಂಗಲ  
 ಮುನಿ. ಭುಜಗರಾಜಃ ಭುಜಗರಾಜಃ. “ಭುಜಗರಾಜಸೀತನ  
 ನಮಃಶ್ರಿತಾ ಕನಕರಾಜಿವಿರಾಜಿತಸಾನುನಾ” ಕಿರಾಂ ೪-೪.

ಭುಜಗರಿಪು ಭುಜಗರಿಪು, -ಶತ್ರು-ಶತ್ರು (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. 2. ನವಿಲು.  
 ಭುಜಗನಾಂ ರಿಪುಃ ಶತ್ರುರ್ವಾ 1. ನವಿಲು.

ಭುಜಗಾಧಿಪ ಭುಜಗಾಧಿಪ (ಪುಂ) 1. ಆದಿಶೇಷ. 2. ವಾಸುಕಿ.

ಭುಜಗಾಂತಕ ಭುಜಗಾಂತಕ (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. 2. ನವಿಲು.  
 ಭುಜಗಾನಾಮಂತಕಃ 1.

ಭುಜಗಾಶನ ಭುಜಗಾಶನ (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. 2. ನವಿಲು.  
 ಭುಜಗಾಶನಾತಿ—ಅಶ (ಭೋಜನೆ) “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪) 1.

ಭುಜಗೇಂದ್ರ ಭುಜಗೇಂದ್ರ, -ईश -ईश (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ  
 ರಾಜ, ವಾಸುಕಿ. 2. ಆದಿಶೇಷ. 3. ಪತಂಜಲಿಮುನಿ.  
 4. (ಭಂದಃಶಾಸ್ತ್ರ ಪ್ರವರ್ತಕ) ಪಿಂಗಲಮುನಿ. 5. ಬಲ  
 ರಾಮ. “ಭುಜಗೇಂದ್ರಫಣಾರತ್ನಶಕ್ವಾರ್ಹಮಣಿಚಿತ್ರಿತಃ” ಯಾದಂ  
 ೧೬-೪೪ 1.

ಭುಜಙ್ಗ ಭುಜಙ್ಗ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಭುಜೇನ  
 ಕೌಟಿಲ್ಯೇನ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ಖಚ್” (ವಾಂ  
 ೩-೨-೩೮) 1. ಖಚ್ಚ ವಾ ಡಿತ್ (೩-೨-೩೮) 1. ಟಿಲೋಪಃ 1.  
 “ಆಶ್ರಾಂತಪೂರ್ವಮಿವ ಮುಕ್ತವಿಷಂ ಭುಜಙ್ಗಂ ಪ್ರೋವಾಚ ಕೌಸಲಪತಿಃ  
 ಪ್ರಥಮಾಪರಾಧಃ” ರಘುಂ ೯-೭೯ 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್”  
 (೪-೧-೬೩) 1. ಭುಜಙ್ಗೋ ಭುಜಙ್ಗೀ. “ಜಾಗತಿ ದಂಶಾಯ  
 ನಿಶಾತದಂಟ್ರಾಕೌಟಿವಿಷೋದ್ಗಾರಗುರುಭುಜಙ್ಗೀ” ಮಾಲತೀಂ ೬-೧ 1.  
 2. ಮಿಂಡ, ಉಪಪತಿ, ಎಚ್. “ಭುಜಙ್ಗೋ ಭುಜಗೇ ಪಿದ್ಗೇ”  
 ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1. “ಅಭೂಮಿರೇಷಾ ಭುಜಙ್ಗಭಜ್ಜಿಭಾಷಿತಾನಾಮ್”  
 ಕಾದಂ 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್” 1.

ಭುಜಙ್ಗಪ್ರಯಾತ ಭುಜಙ್ಗಪ್ರಯಾತ (ನಂ) ವೃತ್ತರತ್ನಾ  
 ಕರೋಕ್ತವಾದ ವರ್ಣವೃತ್ತದ ಒಂದು ಭೇದ, ನಾಲ್ಕು  
 ಯಗಣಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣಃ  
 “ಭುಜಙ್ಗಪ್ರಯಾತಂ ಭವೇತ್ಸತ್ತುಭಿಃ” ವೃಂ ರಂ 1. ಗಣವಿನಾಶಃ  
 ಯ ಯ ಯ ಯ  
 100 100 100 100

ಭುಜಙ್ಗಭುಜ ಭುಜಙ್ಗಭುಜ (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. 2.  
 ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಭುಜಙ್ಗ ಭುಜ್ಜತೇ—ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾ-  
 ಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) “ಖಿವಪ್” (೩-೨-೭೬) 1.

ಭುಜಙ್ಗಮ ಭುಜಙ್ಗಮ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಭುಜೇನ  
 ಕೌಟಿಲ್ಯೇನ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) “ಖಚ್” (ವಾಂ

೩-೨-೩೮) 1. ಖಚ್ಚ ಡಿವಾ ಇತಿ ಡಿವ್ವಸ್ಯ ವೈಕಲ್ಪಿಕತ್ವಾತ್  
 ಟಿಲೋಪೋ ನ 1. “ಪಟೀರಸ್ಕಂಧವಿಷಯಾಸ್ತತ್ರ ತೇಷಾಂ ಭುಜಙ್ಗಮಾಃ”  
 ಯಾದಂ ೨೨-೧೯೮ 1. 2. ಅಶ್ವೇಷಾಂನಕೃತ್. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್”  
 (೪-೧-೬೩) 1. -ಗಮಿ -ಗಮೀ.

ಭುಜಙ್ಗಲತಾ ಭುಜಙ್ಗಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಾಂಬೂಲವಲ್ಲಿ,  
 ವಿಶ್ವದೇವಿಯ ಬಳ್ಳಿ.

ಭುಜಙ್ಗಹನ್ ಭುಜಙ್ಗಹನ್ (ಪುಂ) ಗರುಡ. ಭುಜಙ್ಗಂ ಹನ್ತಿ  
 —ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) “ಖಿವಪ್” (೩-೨-೮೭) 1. ಅತ್ರ  
 ಬ್ರಹ್ಮಭೂತೇತಾದಿನಿಯಮಸ್ಯ ಪ್ರಾಯಿಕತ್ವಾತ್ ಅನ್ಯೇಷ್ವಪ್ಯುಪಪದೇಷು  
 “ಖಿವಪ್” ಭವತ್ಯೇವ 1. “ತುಚ್” (೩-೧-೧೩೩) 1. -ಹನ್ತು  
 (ತಾ) —ಹಂತ್ಯ (ತಾ).

ಭುಜಙ್ಗಾಕ್ಷಿ ಭುಜಙ್ಗಾಕ್ಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸರ್ಪಾಕ್ಷಿ ಬಳ್ಳಿ,  
 ಕುಂಡಲಿಕಂಠು. “ನಕುಲೇಷಾ ಭುಜಙ್ಗಾಕ್ಷಿ ಛತ್ರಾಕ್ಷಿ ಸುವಹಾ  
 ಚ ಸಾ” ಅಮಂ 1.

ಭುಜಶಿರಸ್ ಭುಜಶಿರಸ್ (ನಂ) ಸ್ಕಂಧ, ಹೆಗಲು. ಭುಜಸ್ಯ  
 ಶಿರ ಇವ 1.

ಭುಜಾ ಭುಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಾಹು, ತೋಳು. ಭುಜ “ಢಾಪ್”  
 (೪-೧-೪) 1. “ಗಚ್ಛತಾ ದಶರಥೇನ ನಿವೃತಿ ಭುಜಾಮಸುಲಭಾಂ  
 ಭುಜಾಬಲಾತ್” ಚಂ ರಾಂ 1. 2. ಕರ, ಕೈ, ಹಸ್ತ.

ಭುಜಾದಲ ಭುಜಾದಲ (ಪುಂ) ಹಸ್ತ, ಕೈ, ಪಾಣಿ.

ಭುಜಾಂತರ ಭುಜಾಂತರ, -अन्तराल -अन्तराल (ನಂ)  
 ಬಾಹುಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ, ವಕ್ಷಸ್ಥಲ, ಎದೆ. ಭುಜಯೋರಂತರಮ್ 1.  
 “ದಿಲಿಪಸುನೋಃ ಸ ಬೃಹದ್ಭುಜಾಂತರಂ ಪ್ರವಿಷ್ಯ ಭೀಮಾಸುರಶೋಣಿತೋ-  
 ಚಿತಃ” ರಘುಂ ೩-೪೪ 1. “ಭುಜಾಂತರಾಲೇನ ವಿಭುಃ ಪ್ರತಿಚ್ಛನ್”  
 ಯಾದಂ ೨೩-೪೧ 1.

ಭುಜಿ ಭುಜಿ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಭುನಕ್ತಿ ಭುಜ್ಜತೇ ವಾ  
 ಸರ್ವಾನ್ —ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) “ಃ” (ಓಂ  
 ೪-೧೪೧) 1. 2. ಭುಜ ಧಾತು.

ಭುಜಿಷ್ಯ ಭುಜಿಷ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಪರಿಚಾರಕ, ಸೇವಕ, ಆಳು.  
 ಭುಜ್ಜತೇ ಸ್ವಾಮ್ಯುಚ್ಛಿಷ್ಟಮ್—ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ)  
 “ಕಿಷ್ಯನ್” (ಓಂ ೪-೧೭೮) 1. “ವಧ್ಯಮಭಿಹತಭುಜಿಷ್ಯ-  
 ಮಮ್ ಸಹ ಚಾನಯಾ ಸ್ಥವಿರರಾಜಕನ್ಯಯಾ” ಮಾಧಂ ೧೪-೬೩ 1.  
 2. ಸ್ವತಂತ್ರ, ಇತರರಿಗೆ ಅಧೀನನಲ್ಲದವನು. 3. ಹಸ್ತ  
 ಸೂತ್ರ, ಕಂಕಣ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಭುಜಿಷ್ಯಾ ಭುಜಿಷ್ಯಾ. 4. ದಾಸಿ.  
 “ಅಥಾಙ್ಗದಾಶಿಷ್ಟಭುಜಂ ಭುಜಿಷ್ಯಾ ಹೇಮಾಙ್ಗದಂ ನಾಮ ಕಲಿಙ್ಗ-  
 ನಾಥಮ್” ರಘುಂ ೬-೪೩ 1. 5. ವೇಶ್ಯ, ಸೂಳೆ. “ಭುಜಿಷ್ಯಸ್ತು  
 ಸ್ವತನ್ತ್ರೇ ಚ ಹಸ್ತಸೂತ್ರಕದಾಸಯೋಃ 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ದಾಸೀಗಣಿಕಯೋಃ”  
 ಮೇದಿಂ 1.



ಭುಜ್ಯ ಭುಜ್ಯು (ಪುಂ) 1. ಭಾಜನ, ಪಾತ್ರೆ. ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯ-  
ವಹಾರಯೋ:) "ಯುಕ್" (ಉಂ ೩-೨೧) | ಕಿತ್ವಾಽಽ ಗುಣಃ |  
2. ಅಗ್ನಿ. 3. ಆಹಾರ.

ಭುಜ್ಯತ್ ಭುಂಜತ್ (ಪುಂ) 1. ಊಟಮಾಡುತ್ತಿರುವ.  
ಭೋಜನಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಕಾಪಾಡುತ್ತಿರುವ. ಭುಜ  
(ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ:) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಪಾಲನ-  
ಭಿನ್ನಾರ್ಥ "ಶಾನಿ" (೩-೨-೧೨೪) | ಭುಜ್ಯಾನ್: ಭುಂಜಾನ್: |

ಭುವನ ಭುವನ (ನಂ) 1. ಲೋಕ, ಜಗತ್ತು. ಭವಂತ್ಯತ್ರ—  
ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕೃನ್" (ಉಂ ೨-೮೦) | ಭುವನವು  
(1) ಸ್ವರ್ಗ (2) ಮರ್ತ್ಯ ಮತ್ತೂ (3) ಪಾತಾಳಗಳೆಂಬ  
ಮೂರು ಭಾಗಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದೆ. "ಗುಣೇವರಂ ಭುವನಹಿತ-  
ಚ್ಚಲೇನ ಯಂ ಸನಾತನ: ಪಿತರಮುಪಾಗಮತ್ ಸ್ವಯಮ್" ಮೃತ್ರಿಂ ೧-೧ |  
ಮತ್ತು (1) ಭೂ: (2) ಭುವ: (3) ಸುವ: (4) ಮಹ: (5) ಜನ:  
(6) ತಪ: ಮತ್ತು (7) ಸತ್ಯಮ್ ಇವು ಏಳು ಉದ್ಭವ  
ಲೋಕಗಳು. (1) ಅತಲಮ್ (2) ವಿತಲಮ್ (3) ಸುತಲಮ್  
(4) ರಸಾತಲಮ್ (5) ತಲಾತಲಮ್ (6) ಮಹಾತಲಮ್ ಮತ್ತು  
(7) ಪಾತಾಲಮ್ ಇವು ಏಳು ಅಧೋಲೋಕಗಳು. ಈ ರೀತಿ  
ಭುವನವು ಹದಿನಾಲ್ಕು ಭಾಗಗಳಾಗಿದೆ. "ಭೂಮಿ: ಸ್ವ-  
ಮಹೇವ ಜನಶ್ಚ ತಪ ಏವ ಚ | ಸತ್ಯಲೋಕಶ್ಚ ಸಪ್ತೇ ಲೋಕಾಸ್ತು  
ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾ: || " ಅತಲಂ ವಿತಲಂ ಚೈವ ಸುತಲಂ ಚ ಗಭಸ್ತಿ-  
ಮತ್ | ರಸಾತಲಂ ಮಹಾತಲಂ ಪಾತಾಲಂ ಸಪ್ತಮಂ ಸ್ಮೃತಮ್" |  
"ಭ್ರಮತಿ ಭುವನೇ ಕಂದರ್ಪಾಜ್ಞಾ ವಿಕಾರಿ ಚ ಯೌವನಮ್" ಮಾಲತೀಂ  
೧-೨೦ | 2. ಭೂಮಿ. 3. ಜಲ, ನೀರು. 4. ಗಗನ,  
ಆಕಾಶ. "ಭುವನಂ ವಿಷ್ಣುಪಿ ಮಹ್ಯಾಂ ಸಲಿಲೇಷು ವಿಯತ್ಯಪಿ"  
ವಿಷ್ಣುಂ | 5. ಜನ, ಮನುಷ್ಯ.

ಭುವನತ್ರಯ ಭುವನತ್ರಯ (ನಂ) ಸ್ವರ್ಗ ಮರ್ತ್ಯ ಮತ್ತು  
ಪಾತಾಳ ಲೋಕಗಳು. ಭುವನಾನಾಂ ತ್ರಯಮ್ | "ಪ್ರಭುರ್ಭೂಭುವನ-  
ತ್ರಯಸ್ಯ ಯ: ಶಿರೋಽತಿರಾಗಾಢಶಮಂ ಚಿಕಾರ್ತಿಷು:" ಮಾಧಂ ೧-೪೯ |

ಭುವನೇಶ ಭುವನೇಶ, -ಶಿವರ -ಈಶ್ವರ (ಪುಂ) ರಾಜ,  
ದೊರೆ, ಭೂಮಿಯ ಒಡೆಯ.

ಭುವನೇಶ್ವರೀ ಭುವನೇಶ್ವರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಂಚಿಕೆಯ ಒಂದು  
ಮೂರ್ತಿ.

ಭುವನ್ಯ ಭುವನ್ಯು (ಪುಂ) 1. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್)  
"ಕನ್ಯು" (ಉಂ ೩-೫೧) | 2. ಪ್ರಭು, ಸ್ವಾಮಿ,  
ಯಜಮಾನ. "ಭುವನ್ಯು: ಸ್ವಾಮಿಸೂರ್ಯಯೋ:" ಸಿಂ ಕೌಂ |  
3. ವಹ್ಮ, ಅಗ್ನಿ. "ಭುವನ್ಯೌ ವಹ್ಮಿಭಾಸ್ಕರೌ" ವೇಜಂ |  
4. ಚಂದ್ರ, "ಭುವನ್ಯು: ಸ್ವಾತ್ ಪುಮಾನ್ ಭಾನೌ ಜ್ವಲನೇ  
ಶಾಲಾಂಜಲೇ" ಮೇದಿಂ |

ಭುವಲೋಕ ಭುವಲೋಕ (ಪುಂ) ಭೂಲೋಕ ಮೊದಲಾದ  
ಸಪ್ತ ಉದ್ಭವಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡನೆಯದು. ಭುವಶ್ಚಾಸೀ  
ಲೋಕಶ್ಚ | "ಭೂಮಿಸೂರ್ಯಾಂತರಂ ಯಜ್ಞ ಸಿದ್ಧಾದಿಮುನಿಸೇವಿತಮ್ |  
ಭುವಲೋಕಸ್ತು ಸೌಂಧ್ಯುಕ್ತೋ ದ್ವಿತೀಯೋ ಮುನಿಸತ್ತಮ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ  
೨-೭-೧೭ |

ಭುವಸ್ ಭುವಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಗಗನ, ಆಕಾಶ. ಭವತಿ—ಭೂ  
(ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಅಸುನ್" (ಉಂ ೪-೨೧೬) | ಇದು ಸಪ್ತ  
ಉದ್ಭವಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡನೆಯದು. "ಭೂಲೋಕ:  
ಕಲ್ಪಿತ: ಪದ್ಮಾಂ ಭುವಲೋಕೋಽಸ್ಯ ನಾಭಿತ:" ಭಾಗಂ ೨-೫-೩೮ |  
"ಭೂ: ಪಾದೌ ಯಸ್ಯ ನಾಭಿವಿಯತ್" | 2. ಮಹಾವ್ಯಾಹೃತಿಯ  
ಒಂದು ಭಾಗ. "ಅಕಾರಂ ಚಾಪ್ಯುಕಾರಂ ಚ ಮಕಾರಂ ಚ  
ಪ್ರಜಾಪತಿ: | ವೇದತ್ರಯಾನಿರದುಹದ್ಭೂಭುವ: ಸ್ವರಿತೀತಿ ಚ"  
ಮನುಂ ೨-೭೬ |

ಭೂ - ಸತ್ತಾಯಾಮ್ (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) |

|      |       |       |       |
|------|-------|-------|-------|
| ಲಟ್— | ಭವತಿ  | ಭವತ:  | ಭವಂತಿ |
|      | ಭವಸಿ  | ಭವಥ:  | ಭವಥ   |
|      | ಭವಾಮಿ | ಭವಾವ: | ಭವಾಮ: |

|       |      |         |        |
|-------|------|---------|--------|
| ಲಿಟ್— | ಬಭೂವ | ಬಭೂವತು: | ಬಭೂವು: |
|-------|------|---------|--------|

|       |       |         |         |
|-------|-------|---------|---------|
| ಲುಟ್— | ಭವಿತಾ | ಭವಿತಾರೌ | ಭವಿತಾರ: |
|-------|-------|---------|---------|

|       |          |          |           |
|-------|----------|----------|-----------|
| ಲೃಟ್— | ಭವಿಷ್ಯತಿ | ಭವಿಷ್ಯತ: | ಭವಿಷ್ಯಂತಿ |
|-------|----------|----------|-----------|

|       |                |        |       |
|-------|----------------|--------|-------|
| ಲೋಟ್— | ಭವತು<br>ಭವತಾತ್ | ಭವತಾಮ್ | ಭವಂತು |
|-------|----------------|--------|-------|

|      |       |         |       |
|------|-------|---------|-------|
| ಲಙ್— | ಅಭವತ್ | ಅಭವತಾಮ್ | ಅಭವನ್ |
|------|-------|---------|-------|

|           |       |         |        |
|-----------|-------|---------|--------|
| ವಿಧಿಲಿಙ್— | ಭವೇತ್ | ಭವೇತಾಮ್ | ಭವೇಯು: |
|-----------|-------|---------|--------|

|          |        |            |         |
|----------|--------|------------|---------|
| ಆಶೀಲಿಙ್— | ಭೂಯಾತ್ | ಭೂಯಾಸ್ತಾಮ್ | ಭೂಯಾಸು: |
|----------|--------|------------|---------|

|       |       |         |        |
|-------|-------|---------|--------|
| ಲುಙ್— | ಅಭೂತ್ | ಅಭೂತಾಮ್ | ಅಭೂವನ್ |
|-------|-------|---------|--------|

|       |           |             |           |
|-------|-----------|-------------|-----------|
| ಲೃಙ್— | ಅಭವಿಷ್ಯತ್ | ಅಭವಿಷ್ಯತಾಮ್ | ಅಭವಿಷ್ಯನ್ |
|-------|-----------|-------------|-----------|

1. ಇರು. "ಅಭೂತುಪೋ ವಿಬುಧಸಖ: ಪರಂತಪ: ಶ್ರುತಾನ್ವಿತೋ  
ದಶರಥ ಇತ್ಯುದಾಹುತ:" ಮೃತ್ರಿಂ ೧-೧ | 2. ಆಗು, ಆಗಿರು.

"ಭವಂತಿ ತೇ ಸಮ್ಯತಮಾ ವಿಪಶ್ಚಿಂತಾಂ ಮನೋಗತಂ ವಾಚಿ ನಿವೇಶ-  
ಯಂತಿ ಯೇ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೪ | "ಭವ ಹೃದಯ ಸಾಂಭಿಲಾಷಂ  
ಸಂಪ್ರತಿ ಸಂದೇಹನಿರ್ಣಯೋ ಜಾತ:" ಶಾಕುಂ ೧-೨೪ | 3. ಸಂಭ  
ಎಸು, ಆಗು, ಉಂಟಾಗು.

"ನಾತತಾಯಿವಧೇ ದೋಷೋ  
ಹಂತುರ್ಭವತಿ ಕಶ್ಚನ" ಮನುಂ ೮-೩೫೧ | 4. ಜೀವಿಸಿರು,  
ಬದುಕಿರು. "ಶ್ರುತೇಽಪಿ ತ್ವಾ ನ ಭವಿಷ್ಯಂತಿ ಸರ್ವೇ ಯೇಽವಸ್ಥಿತಾ:  
ಪ್ರತ್ಯನೀಕೇಷು ಯೋಧಾ:" ಗೀತಾ ೧೧-೩೨ | 5. ಇರು, ನಿಲ್ಲು,  
ವಾಸಮಾಡು. "ಅಸ್ಮಿನ್ನೇವ ಲತಾಗೃಹೇ ತ್ವಮಭವಸ್ತನ್ಮಾರ್ಗದತ್ತೇ-  
ಕ್ಷಣ: ಸಾ ಹಂಸೈ: ಕೃತಕೌತುಕಾ ಚಿರಮಭೂದಗೋದಾವರಿಸೇಕತೇ"  
ಉಂ ರಾಂ ೩-೩೭ | 6. ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳು, ಅನುಕೂಲವಾಗಿರು.



“ತಸ್ಯಾ: ಪ್ರಕಾಮಂ ಪ್ರಿಯದರ್ಶನೋಽಪಿ ನ ಸ ಕ್ಷಿತಿಶೋ ರುಚ್ಯೇ  
ಬಭೂವ” ರಘುಂ ೬-೪೪. 7. ಸಂಧ್ಯಾವಾಗು. “ಭವತಿ  
ಭವಾನ್ ಯಾಜಯಿಷ್ಯತಿ”.

ಭಾವೇ:—ಭೂಯತೇ. ಬಭೂವೇ. ಭಾವಿತಾ, ಭವಿತಾ. |  
ಭಾವಿಷ್ಯತೇ, ಭವಿಷ್ಯತೇ. ಭೂಯತಾಂ. ಅಭೂಯತ. ಭೂಯತ. |  
ಭಾವಿಷ್ಯತಿ. ಅಭಾವಿ. ಅಭವಿಷ್ಯತ.

ಗಿಚ್ಛಿ:—ಆತ್ಮಂ ಭಾವಯತೇ ಭಾವಯತೇ ಭಾವಯಂತೇ.

ಪರಂ ಭಾವಯತಿ ಭಾವಯತ: ಭಾವಯಂತಿ. |  
ಭಾವಯಾಂ ಚಕ್ರೇ, —ಬಭೂವ —ಆಸ. ಭಾವಯಾಂ ಚಕಾರ, —ಬಭೂವ,  
—ಆಸ. ಭಾವಯಿತಾ. ಭಾವಯತಾಂ, —ತು. ಅಭಾವಯತ,  
ಅಭಾವಯತ್. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ:—ಬುಭೂಷತಿ. ಬುಭೂಷಾಂ ಚಕಾರ, —ಬಭೂವ, —ಆಸ. |  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:—“ತವ್ಯತವ್ಯಾನೀಯರ:” | ತವ್ಯ:—ಭವಿತವ್ಯಮ್. |  
ಅನೀಯರ್—ಭವನೀಯಮ್. “ಅಚೋ ಯತ್” ಭವತೀತಿ ತವ್ಯ: |  
ತವ್ಯಮನೇನ ವಾ. ಭಾವೇ “ಕ್ತ:”—ಭೂತಂ ಪಡೇನ. |  
“ಕ್ತವತು:”—ಭೂತವಾನ್. “ಶತು:”—ಭವನ್. ಸ್ವಿರ್ಯಾಂ  
“ಙೀಪ್”—ಭವಂತಿ. “ತುಮುನ್”—ಭವಿತುಮ್. ಭಾವೇ  
“ಲ್ಯುಟ್”—ಭವನಮ್. ಕರಣೇ ಅಧಿಕರಣೇ ಚ “ಲ್ಯುಟ್”—  
ಭವತ್ಯನೇನ ಅತ್ರ ವಾ ಭವನಮ್. ಕರ್ತೃಂ “ಲ್ಯುಟ್”—ಭವನ: |  
ಭವತ್ಯಸ್ಯಾಮಿತಿ ಭವನೀ. ಶುಭಸ್ಯ ಭವನೀ ಶುಭಭವನೀ  
ಸುಮುಹೂರ್ತಯಾತ್ರಾ. “ಕ್ತ್ವಾ” ಭೂತ್ವಾ. ಗ್ರಾಮಣಿಭೂತ್ವಾ ವ್ಯವಹರತಿ. |  
ಸಮಾಸೇ ಕ್ತ್ವೋ “ಲ್ಯಪ್”—ಸಂಭೂಯ, ಪರಿಭೂಯ. ಅನುಭೂಯ. |  
“ಘಮುಲ್” ಭಾವಂ ಭಾವಮ್.

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಅನ್ಯಯಗಳ ಮತ್ತು ಉಪಸರ್ಗ  
ಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಅಧಿ+ಭೂ=ಅಧಿಭೂ: | ಅಧಿಭವತಿ. ಅತಿಶಯ  
ವಾಗಿ ಆಗು, ದೊಡ್ಡವನಾಗಿ ಆಗು, ಯಜಮಾನನಾಗಿ  
ಆಗು. “ಅಧಿಭೂರ್ನಾಯಕೋ ನೇತಾ” ಅಮಂ. “ರಕ್ಷೋನಾಥೋ  
ರಘುಣಾಂ ತ್ವರಿತಮಧಿಭುವಾ” ಮಂವಿಂ ೬-೫೬.

(2) ಅನು+ಭೂ=ಅನುಭವತಿ. ಅನುಭವ: | ಅನುಭೂಯ. |  
ಅನುಭವಿಸು, ಸವನೋಡು. “ಅನುಭೂಯ ನ ತೃಪ್ಯತಿ ಸ್ವ  
ನಾಥ: ತಮಪಿ ಪ್ರೇಮವಿಲೀನಚೇತಸಸ್ತಾ:” ಯಾದಂ ೨೪-೭೫.

(3) ಅಭಿ+ಭೂ=ಅಭಿಭವತಿ. ಅಭಿಭವನಮ್. |  
ತಿರಸ್ಕರಿಸು, ಆಕ್ರಮಿಸು, ಅವಮಾನಗೊಳಿಸು. “ಅಮ್ಯ-  
ಭೂಯತ ವಾಹನಾಂ ಚರತಾಂ ಗಾತ್ರಸಿಂಜಿತತ: | ವರ್ಮಭಿ: ಪವನೋ-  
ದ್ಭೂತರಾಜತಾಲಿವನಭವನಿ:” ರಘುಂ ೪-೫೬. “ವರ್ಮೇ ನಷ್ಟೇ  
ಕುಲಂ ಕೃತ್ಸ್ನಮವರ್ಮೋಽಭಿಭವತ್ಯುತ” ಗೀತಾ ೧-೪೦.

(4) ಆವಿ+ಭೂ=ಆವಿಭವತಿ. ಆವಿಭವಮ್. |  
ಆವಿಭೂಯ. ಆವಿಭೂತಮ್. ಅವಿರ್ಭವಿಸು, ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷನಾಗು,  
ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳು, ಮೈದೋರು. “ಆವಿಭೂತಮಭೂತಪೂರ್ವಮಪರಂ  
ಯತ್ಕಿಂಚಿದೇಕಂ ಮಹ:” ಚಂ ರಾಂ.

(5) ಉ+ಭೂ=ಉಭವತಿ. ಉಭೂತಮ್. ಉಭವ: |  
ಹುಟ್ಟು, ಉತ್ಪತ್ತಿಹೊಂದು. “ದಿಲಿಪಸುನುರ್ಮಣಿರಾಕರೋ-  
ದ್ಭವ: ಪ್ರಯುಕ್ತಸಂಸ್ಕಾರ ಇವಾಧಿಕಂ ಬಭೌ” ರಘುಂ ೩-೧೮.

(6) ಪರಾ+ಭೂ=ಪರಾಭವ: | 1. ಪರಾಭವ,  
ತಿರಸ್ಕಾರ, ಅವಮಾನ. 2. ವಿಪತ್ತು, ವಿನಾಶ. “ಪರೇ-  
ರರ್ಪಾಸಿತವೀರೈರಸಂಪದಾಂ ಪರಾಭವೋಽಪ್ಯುತ್ಸವ ಏವ ಮಾನಿನಾಮ್”  
ಕಿರಾಂ ೧-೪೧.

(7) ಪರಿ+ಭೂ=ಪರಿಭವ: | ತಿರಸ್ಕಾರ, ಅವಮಾನ.  
“ಪರಿಭವೋಽರಿಭವೋ ಹಿ ಸುತು:ಸಹ:” ಮಾಘಂ ೬-೪೫.

(8) ಪ್ರತಿ+ಭೂ=ಪ್ರತಿಭೂ: | ಪ್ರತಿನಿಧಿಯಾಗು,  
ಹಾಜರಾಗು. “ಅಮೃದಭೀಷ್ಠಪ್ರತಿಭೂ: ಸ ತಸ್ಯಾ: ವರಂ ಹಿ  
ದೃಷ್ಟಾ ದದತೇ ಪರಂ ತೇ” ನೈಷಂ ೧೪-೪.

(9) 1. ಸಂ+ಭೂ=ಸಂಭವತಿ. ಸಂಭವ: | ಹುಟ್ಟು,  
ಉತ್ಪತ್ತಿ. “ಪ್ರಿಯಸ್ಯ ಸುಹೃದೋ ಯತ್ರ ಮಮ ತತ್ರೇವ ಸಂಭವ: |  
ಭೂಯಾತ್” ಮಾಲತೀಂ ೯-೪೧.

2. ಸಂ+ಸ+ಗಿಚ್ಛಿ=ಸಂಭಾವನಾ. ಮರ್ಯಾದೆ,  
ಗೌರವ. “ಸಂಭಾವನಾಂ ಭೂತಿಮಿವೋದ್ದರಿಸ್ಯನ್” ಕಿರಾಂ  
೩-೩೯.

ಭೂ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಧ್ರುವಾನುಬಂಧನ ಸರ್ವಾಧಾರೋ  
ಭವತಿ—ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೧೭೯). |  
“ಆತ್ಮಾನಪಾದಿಸಂಬಂಧಾತ್ ಸರ್ವಾಧಾರತಯಾ ತಥಾ | ಭವತೀತಿ  
ಚ ಭೂ: ಪ್ರೋಕ್ತೋ ಭಕ್ತಾನಾಂ ಭೂತಿದೋ ಮನು:” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: |  
“ಅನಿರ್ವಿಣ್ಣ: ಸ್ಥವಿಷ್ಠೋ ಭೂ:” ವಿಂ ಸಂ. 2. ಯಾಗದ  
ಅಗ್ನಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಭೂಮಿ, ಪೃಥಿವಿ. ಭವತಿ—ಭೂ  
(ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೧೭೮). “ಸ್ವೇರಂ ಸಮಾ-  
ಚಕ್ರವಿರೇ ಭುವಿ ವೆಲ್ಲನಾಯ” ಮಾಘಂ ೫-೫೩. 4. ಸ್ಥಾನ,  
ಜಾಗ. 5. ನೆಲ, ಪ್ರದೇಶ. “ಅಂತಸ್ತೋಯಂ ಮಣಿಮಯಭುವ-  
ಸ್ತುಜ್ಜಮಂಜಲಿಹಾಸಾ:” ಮೇಘಂ ೨-೧. 6. ಮಹಾವ್ಯಾಹೃ  
ತಿಯ ಒಂದು ಭಾಗ. (ವಿಂ) 7. ಹುಟ್ಟುವ, ಉತ್ಪತ್ತಿ  
ಹೊಂದುವ. (ಸಮಾಸದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ). ಆತ್ಮಮ್: ಸ್ವಯಂಭೂ:  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಭೂಕ (ಪುಂ) 1. ಛಿದ್ರ, ರಂಧ್ರ, ಬಿಲ್. 2. ಸಮಯ,  
ಕಾಲ. ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “ಕಕ್” (೩ಂ ೩-೪೧). |  
“ಭೂಕಶಿಕ್ಷಣಂ ಕಾಲೇ” ಹೇಮಂ. 3. ಅಂಧಕಾರ.



ಭೂಕಮ್ಯ ಭೂಕಂಪ (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯು ಅಲುಗಾಡುವುದು, ಭೂಮಿಯ ನಡುಕ, ನೆಲ ಗುಡುಗು.

ಭೂಕರ್ಣ ಭೂಕರ್ಣ (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯ ಋಜುರೇಖೆ, ಅಡ್ಡಳತೆ, ಭೂಮಿಯ ಒಂದು ಪಾರ್ಶ್ವದಿಂದ ಎದುರು ಪಾರ್ಶ್ವಕ್ಕೆ ಹಾದುಹೋಗುವ ವ್ಯಾಸ.

ಭೂಕವ್ಯ ಭೂಕತ್ಯಪ (ಪುಂ) ವಸುದೇವ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ತಂದೆ.

ಭೂಕಾಕ ಭೂಕಾಕ (ಪುಂ) 1. ಕೊಕ್ಕರೆ. 2. ಕ್ರೌಂಚಪಕ್ಷಿ. 3. ಕಪೋತ, ಪಾರಿವಾಳ.

ಭೂಕೇಶ ಭೂಕೇಶ (ಪುಂ) 1. ಪಾಚಿ, ಶೈವಾಲ. 2. ವಟವೃಕ್ಷ, ಅಲದಮರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕೇಶಿ -ಕೇಶೀ. 3. ಬಾಹುಜಿಗೆ ಗಿಡ. "ಭೂಕೇಶ: ಶೈವಲೇ ವತೇ | ಭೂಕೇಶವಲ್ಗುಜೇಽಪಿ ಸ್ಯಾತ್" ಮೇದಿಂ. -ಕೇಶಾ -ಕೇಶಾ. 4. ರಾಕ್ಷಸಿ.

ಭೂಕಿತ್ ಭೂಕಿತ್ (ಪುಂ) ವರಾಹ, ಹಂದಿ. ಭುವಂ ಕ್ಷಿಣೋತಿ -ಕ್ಷಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ಷಿವ್" (3-2-96). "ಸುಚೀರೋಮಾ ಬಹುಸುರಾಖನಿಕ: ಸ್ಥೂಲನಾಸಿಕೋ ಭೂಕಿತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಭೂಗರ್ಭ ಭೂಗರ್ಭ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಭೂ: ಭೂಮಿ: ಗರ್ಭ: ಸದಾನುಭವೇನ ಭರಣೀಯತಯಾ ಗರ್ಭಭೂತಾ ಅಸ್ಯ | "ಯಸ್ಯ ಭೂರ್ಭರಣೀಯಾಭೂತ್ ಭೂಗರ್ಭೋಽನುಭವೇನ ಸ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: | "ಹಿರಣ್ಯಗರ್ಭೋ ಭೂಗರ್ಭ:" ವಿಂ ಸಂ.

ಭೂಗೃಹ ಭೂಗೃಹ (ನಂ) ಭೂಮಿಯೊಳಗಿನ ಮನೆ, ನೆಲ ಮಂಚ. ಭೂಮ್ಯಸ್ಥಂ ಗೃಹಮ್.

ಭೂಗೋಲ ಭೂಗೋಲ (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯ ಮಂಡಲ, ಗೋಳಾಕಾರದ ಭೂಮಿ. ಭೂ: ಗೋಲ ಇವ | "ವೇದಾನುಧರತೇ ಜಗನ್ನಿವಹತೇ ಭೂಗೋಲಮುಧಿಭರತೇ" ಗೀತಗೋಂ. ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ಅಧಿಷ್ಠಿತವಾಗಿರುವ ಸುವರ್ಣಾಂಡ (ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡ) ದ ಮಧ್ಯೆ ಇರುವ ಅವಕಾಶದಲ್ಲಿ ಭೂರ್ಭುವಃಸ್ವರ್ಗಾತ್ಮಕವಾದ ಜಗತ್ತು ಅಡಗಿರುವುದು. ಇದು ಗೋಲಾಕಾರವಾಗಿರುವುದು. "ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡಮೇತತ್ ಸುಪಿರಂ ತತ್ರೇದಂ ಭೂರ್ಭುವಾದಿಕಮ್ | ಕಡಾಹದ್ವಿತಯಸ್ಯೈವ ಸಂಪುಟಂ ಗೋಲಕಾಕೃತಿ:" ಸುಂ ಸಿಂ 12-29. ಈ ಗೋಲಾಕಾರವಾದ ಭೂಮಿಯನ್ನು ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡದ ಮಧ್ಯದ ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮನು ತನ್ನ ಧಾರಣಾತೀತವಾದ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಧರಿಸಿರುವನು. ಭೂಗೋಲದ ಧಾರಣಾತ್ಮಕವಾದ ಪರಮಾತ್ಮನ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಅಂಡಾಂತರ್ಗತವಾದ ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ನಿಂತಿರುವುದು. "ಮಧ್ಯೆ ಸಮಂತಾದೃಷ್ಟಸ್ಯ ಭೂಗೋಲೋ ವ್ಯೋಮ್ನಿ ತಿಷ್ಠತಿ | ವಿಭ್ರಾಣ: ಪರಮಾಂ ಶಕ್ತಿಂ ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಧಾರಣಾತ್ಮಿಕಾಮ್" ಸುಂ ಸಿಂ 12-32.

ಭೂಚ್ಛಾಯ ಭೂಚ್ಛಾಯ (ನಂ) 1. ಭೂಮಿಯ ನೆರಳು. (ರಾಹು). ಭುವ:ಚ್ಛಾಯಾ ಭೂಚ್ಛಾಯಮ್ ವಿಕಲ್ಪೇನ ನಪುಂಸಕತ್ವಮ್ | ಪಕ್ಷೇ ಭೂಚ್ಛಾಯಾ ಭೂಚ್ಛಾಯಾ. 2. ಅಂಧಕಾರ, ಕತ್ತಲೆ. "ಸಾರಜ್ಞಂ ಕತಿಚಿತ್ತಂ ಸಂಜಗರೀರೇ ಭೂಚ್ಛಾಯಮೇಚ್ಛನ್ ಪರೇ" ಕುವಂ.

ಭೂತ ಭೂತ (ಪುಂ) 1. ಕೃಷ್ಣ ಪಕ್ಷಿ. 2. ಕೃಷ್ಣ ಪಕ್ಷದ ಚತುರ್ದಶಿ. "ಭೂತಂ ಕೃಷ್ಣಚತುರ್ದಶ್ಯಾಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 3. ದೇವಾಂಶದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಂದು ಬಾಲಗ್ರಹ. 4. ಕುಮಾರ. (ನಂ) 5. ಪೃಥಿವಿ ಅಪ್ಪು (ಜಲ) ತೇಜಸ್ಸು ವಾಯು ಮತ್ತು ಆಕಾಶಗಳೆಂಬ ಪಂಚ ಮಹಾಭೂತಗಳು. 6. ಪ್ರಾಣಿ, ಜನ್ತು. "ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯೇ ನಿಯತ ಯುಕ್ತ: ಸ್ಯಾಧ್ಯಾಂತೋ ಮಂತ್ರ: ಸಮಾಹಿತ: | ದಾತಾ ನಿಯಮನಾದಾತಾ ಸರ್ವಭೂತಾನುಕರ್ಮಕ:" ಮನುಂ 6-2. "ಭೂತಾನ್ ಯೋ ನಾನು-ಗೃಹ್ಣಾತಿ ಹ್ಯಾತ್ಮನ: ಶರಣಾಗತಾನ್ | ಭೂತಾರ್ಥಾಸ್ತಸ್ಯ ನಶ್ಯಂತಿ ಹಂಸಾ: ಪದ್ಮವನೇ ಯಥಾ" ಪञ्ಚತಂ 3-131. "ಕ್ಷರ: ಸರ್ವಾಣಿ ಭೂತಾನಿ ಕೂಟಸ್ಥೋಕ್ಷರ ಉಚ್ಯತೇ" ಗೀತಾ 15-16. 7. ಸತ್ಯ, ಯಥಾರ್ಥ, ನಿಜ. 8. ಐದು ಸಂಖ್ಯೆ. 9. ಸ್ಥಾವರ ಮತ್ತು ಜಂಗಮ ರೂಪವಾದ ವಸ್ತು. "ರಕ್ಷಾನ್ ಧರ್ಮೇಣ ಭೂತಾನಿ ರಾಜಾ ವಚ್ಯಾಂಶ್ಚ ಪಾತಯನ್ | ಯಜತೇಽಹರಹ್ಯಂಜೈ: ಸಹಸ್ರ-ಶತದಕ್ಷಿಣೈ:" ಮನುಂ 6-306. 10. ಪಿಶಾಚ, ದೆವ್ವ. 11. ತತ್ತ್ವಾನುಸಂಧಾನ. 12. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಉಪಮಾನ, ಹೋಲಿಕೆ. 13. ಭೂತಕಾಲ, ಕಳೆದುಹೋದ ಕಾಲ. "ಭೂತಮವ್ಯಭವದಾತ್ಮನ: ಪ್ರಭೋ ಯನ್ನಿದಾನಮಖಿಲಸ್ಯ ಶಾಶ್ವತಮ್" ಯಾದಂ 13-103. (ವಿಂ) 14. ಭೂತಕಾಲದ, ಕಳೆದು ಹೋದ ಕಾಲದ, ಅತೀತವಾದ. "ಭೂತಂ ಭವದ್ಭವಿಷ್ಯಂ ವಾ ಕಿಂ ತತ್ ಸ್ಯಾತ್ ಜಗತಿ ಪ್ರಿಯೇ | ಭವತೀ ಯನ್ನ ಜಾನೀಯಾತ್ ಇತಿ ಸರ್ವೋಽಪ್ಯುವಾಚ ತಾಮ್" | 15. ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ, ಹೊಂದ ಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 16. ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಉಚಿತವಾದ, ನ್ಯಾಯವಾದ, 17. ಸದೃಶವಾದ, ಸಮಾನವಾದ. 18. ಸತ್ಯವಾದ, ಯಥಾರ್ಥವಾದ, ನಿಜವಾದ. 19. ನಡೆದುಹೋದ. "ಭೂತಂ ಕ್ಷಮಾದೌ ಪಿಶಾಚಾದೌ ಜಂತೌ ಕ್ಲಿಬಂ ತ್ರಿಪುಚಿತೇ | ಪ್ರಾಪ್ತೇ ವೃತ್ತೇ ಸಮೇ ಸತ್ಯೇ ದೇವಯೋನ್ಯಂತರೇ ತು ನಾ | ಕುಮಾರೇಽಪಿ" ಮೇದಿಂ. "ಭೂತಂ ಸತ್ಯೋಪಮಾನಯೋ: | ಪ್ರಾಪ್ತೇ-ತೀತೇ ಪಿಶಾಚಾದೌ ಪೃಥ್ವಾದೌ ಜನ್ತುಯುಕ್ತಯೋ:" ಹೇಮಂ. 20. ದೇವಲಕ, ಜೀವನಕ್ಕಾಗಿ ದೇವರ ಪೂಜೆಮಾಡುವವನು. "ಭೂತೋ ದೇವಲಕೇ ಪ್ರಾಪ್ತವೃತ್ತಯೋರಭಿವೇಶಯತ್" ವಿಶ್ವಂ.

ಭೂತಕಾಲ ಭೂತಕಾಲ (ಪುಂ) ನಡೆದುಹೋದ ಕಾಲ, ಕಳೆದುಹೋದ ಕಾಲ, ಹಿಂದಿನಕಾಲ.



**ಭೂತಕೃತ್ ಭೂತಕೃತ್** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಸಕಲ ಭೂತಗಳನ್ನೂ ಸೃಷ್ಟಿಸುವ ಪರಮಾತ್ಮ. ಸರ್ವಾಣಿ ಭೂತಾನಿ ಕರೋತಿ ಸೃಜತಿ —ಛಾಂ (ಕರಣ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬) । “ಭೂತಾನಿ ಯೋಸೌ ಸೃಜತಿ ಸ್ವಾತನ್ತ್ರ್ಯೇಣ ಸ ಭೂತಕೃತ್” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । “ಭೂತಕೃತ್ ಭೂತಭೂತ ಭಾವಃ” ವಿಂ ಸಂ । “ಯತೋ ವಾ ಇಮಾನಿ ಭೂತಾನಿ ಜಾಯಂತೇ” ಶ್ರುತಿಃ ।

**ಭೂತಕೇಶ ಭೂತಕೇಶ** (ಪುಂ) ಜಟಾಮಾಂಸಿ. ಭೂತಾನಾಂ ಕೇಶ ಇವ ।

**ಭೂತಕ್ರಾಂತಿ ಭೂತಕ್ರಾಂತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೂತದ ಅವೇಶ, ಪಿಶಾಚ ಹಿಡಿಯುವುದು. ಭೂತಸ್ಯ ಕ್ರಾಂತಿಃ ।

**ಭೂತಗುಣ ಭೂತಗುಣ** (ಪುಂ) ಪೃಥಿವಿ ಮೊದಲಾದ ಪಂಚ ಭೂತಗಳ ಗುಣಗಳು. ಪೃಥಿವಿಗೈ-ಗಂಧ. ಜಲಕ್ಕೆ-ರಸ. ತೇಜಸ್ಸಿಗೆ-ರೂಪ. ವಾಯುವಿಗೆ-ಸ್ಪರ್ಶ. ಆಕಾಶಕ್ಕೆ-ಶಬ್ದ. ಇದು ನೈಯಾಯಿಕರ ಮತ. ಸಾಂಖ್ಯರು-ಆಕಾಶವು ಶಬ್ದಗುಣಕ. ವಾಯುವು ಶಬ್ದಸ್ಪರ್ಶಗುಣಕ. ಶಬ್ದಸ್ಪರ್ಶ ರೂಪಗುಣತ್ರಯಾತ್ಮಕವಾದುದು ತೇಜಸ್ಸು. ಜಲವು ಶಬ್ದಸ್ಪರ್ಶರೂಪ ರಸಾತ್ಮಕವಾದುದು. ಶಬ್ದಸ್ಪರ್ಶರೂಪ ರಸಗಂಧಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದುದು ಪೃಥ್ವಿ ಎಂದು ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುವರು.

**ಭೂತಗಣ ಭೂತಗಣ** (ಪುಂ) 1. ಪೃಥಿವಿ ಮೊದಲಾದ ಪಂಚಭೂತಗಳ ಸಮೂಹ. “ಗುಣಸಂಪದಾನುಗುಣತಾಂ ಗಮಿತಃ ಕುಸ್ತೇಸ್ಯ ಭಕ್ತಿಮಿವ ಭೂತಗಣಃ” ಕಿರಾಂ ೬-೩೩ । 2. ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಸಮೂಹ. ಭೂತಾನಾಂ ಗಣಃ ।

**ಭೂತಹನ ಭೂತಹನ** (ಪುಂ) 1. ಭುಜಪತ್ರ. ಭೂತಂ ಹಂತಿ—ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) “ಏಕ್” (೩-೨-೪೩) । ಭುಜಪತ್ರಯ ಧಾರಣೆಯಿಂದ ಬಾಲಗ್ರಹ ಪಿಶಾಚ ಇವುಗಳ ಉಪದ್ರವವು ನಿವಾರಣೆಯಾಗುವುದು. 2. ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳಿ. 3. ಉಷ್ಟ್ರ. 4. (ವಿಂ) 4. ಭೂತಗಳನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ.

**ಭೂತಹನಿ ಭೂತಹನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತುಲಸಿ.

**ಭೂತಚತುರ್ದಶಿ ಭೂತಚತುರ್ದಶಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ತಿಕ ಕೃಷ್ಣ ಚತುರ್ದಶಿ. ಇದಕ್ಕೆ ಯಮಚತುರ್ದಶಿಯೆಂದು ಹೆಸರು. ಈ ದಿವಸ ಚಂದ್ರೋದಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನಮಾಡಿ ಧರ್ಮ ರಾಜನ ಪೂಜೆ ಮಾಡಬೇಕು. ಇದರಿಂದ ನರಕಭೀತಿ ನಿವಾರಣೆಯಾಗುವುದು. “ಕಾರ್ತಿಕೇ ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷೇ ತು ಚತುರ್ದಶ್ಯಾಂ ವಿಧುದಯೇ । ಅವಶ್ಯಮೇವ ಕರ್ತವ್ಯಂ ಸ್ನಾನಂ ನರಕಭೀಶಿಃ” ಸ್ಕಾಂದಂ । “ಚತುರ್ದಶ್ಯಾಂ ಧರ್ಮರಾಜಪೂಜಾ ಕಾರ್ಯಾ ಪ್ರಯತ್ನತಃ । ಸ್ನಾನಮಾವಶ್ಯಕಂ ಕಾರ್ಯಂ ನರನರಕಭೀಶಿಃ” ಪಾಶ್ವಪುಂ ।

**ಭೂತದ್ರಾವಿನ್ ಭೂತದ್ರಾವಿನ್** (ಪುಂ) ಕೆಂಪು ಗಣಿಗಲಿಗಡ.

**ಭೂತದ್ರೂಮ ಭೂತದ್ರೂಮ** (ಪುಂ) ಚೆಳ್ಳೆಮರ. ಭೂತಪ್ರಿಯೋ ದ್ರೂಮಃ । **ಭೂತಧಾತ್ರಿ ಭೂತಧಾತ್ರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೃಥಿವಿ, ಭೂಮಿ. ಭೂತಾನಿ ದಧಾತಿ—ಛಾಂ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ತೃತ್” (೩-೨-೧೩೩) । “ಜಿಪ್” (೪-೨-೪) । “ಸಖಿ ಭೂತಧಾತ್ರಿ, ವತ್ಸೇ ವೇದೇಹಿ ಸಮಾಶ್ರಸಿಹಿ” ಉಂ ರಾಂ ೭ । “ನಿಷ್ಪನ್ನ-ಶಾಲೀಕ್ಷುಯವಾದಿಶಸ್ಯಾಂ ಭಯವಿಮುಕ್ತಾಮುಪಶಾಂತವೇರಾಮ್ । ಸಂಹೃಷ್ಟ-ಲೋಕಾಂ ಕಲಿದೋಷಮುಕ್ತಾಂ ಕ್ಷತ್ರಂ ತದಾ ಶಾಸ್ತಿ ಚ ಭೂತಧಾತ್ರಿಮ್” ಬೃಹತ್ಸಂ ।

**ಭೂತನಾಥ ಭೂತನಾಥ** (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಭೂತಾನಾಂ ನಾಥಃ । “ತದ್ಭೂತನಾಥಾನುಗ ನಾಹಿಸಿ ತ್ವಂ ಸಂಬಂಧಿನೋ ಮೇ ಪ್ರಣಯಂ ವಿಹಂತುಮ್” ರಘುಂ ೨-೪೮ । -ಪತಿಃ-ಪತಿಃ, -ಭರ್ತಾ-ಭರ್ತಾ.

**ಭೂತನಾಯಿಕಾ ಭೂತನಾಯಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ. ಭೂತಾನಾಂ ನಾಯಿಕಾ ।

**ಭೂತಪತ್ನಿ ಭೂತಪತ್ನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತುಲಸಿ.

**ಭೂತಪುಷ್ಪ ಭೂತಪುಷ್ಪ** (ಪುಂ) ಹೆಮ್ಮರ, ತಿಗಡುಮರ.

**ಭೂತಪೂರ್ಣಿಮಾ ಭೂತಪೂರ್ಣಿಮಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಶ್ವಯುಜ ಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ.

**ಭೂತಪೂರ್ವ ಭೂತಪೂರ್ವ** (ವಿಂ) 1. ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ನಡೆದ, ಹಿಂದಿನಕಾಲದಲ್ಲಿ ನಡೆದ. ಪೂರ್ವ ಭೂತಃ ಭೂತಪೂರ್ವಃ—ಪೂರ್ವನಿಪಾತಃ । 2. ಹಿಂದಿನಕಾಲದ, ಪೂರ್ವಕಾಲದ. “ಪಶ್ಯಾಮಿ ಚ ಜನಸ್ಥಾನಂ ಭೂತಪೂರ್ವಕರಾಲಯಮ್” ಉಂ ರಾಂ ೨-೧೭ ।

**ಭೂತಭಾವನ ಭೂತಭಾವನ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಭೂತಾನಿ ಪೃಥಿವ್ಯಾದೀನಿ ಭಾವಯತಿ ಧಾರಕಪೋಷಕಭೋಗ್ಯಪ್ರದಾನೇನ ವರ್ಧಯತಿ—ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಃ” (೩-೨-೧೩೪) । “ಧಾರಕಾದಿಪ್ರದಾನೇನ ಯಶ್ಚ ವರ್ಧಯತಿ ಸ್ವಯಮ್ । ಭೂತಾನಿ ನಿಯಂತ್ರಯತಿ ಇತಿ ಸ ತು ಸ್ಯಾತ್ ಭೂತಭಾವನಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । “ಭೂತಾತ್ಮಾ ಭೂತಭಾವನಃ” ವಿಂ ಸಂ । 2. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. “ಅಭಿವಾಚ್ಯೋ ಮಹಾಕರ್ಮಾ ತಪಸ್ವೀ ಭೂತಭಾವನಃ” ಭಾಂ । (ವಿಂ) 3. ಭೂತಗಳ ಧಾರಕ ಮತ್ತು ನಿಯಾಮಕ. “ಭೂತಭೂತ ಚ ಭೂತಸ್ಯೋ ಮಮಾತ್ಮಾ ಭೂತಭಾವನಃ” ಗೀತಾ ೯-೪ ।

**ಭೂತಭಾಷಾ ಭೂತಭಾಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಿಶಾಚಿಗಳ ಮಾತು.

**ಭೂತಭೂತ್ ಭೂತಭೂತ್** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಭೂತಾನಿ ವಿಭಾತಿ—ಛಾಂ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬) । “ಭೂತಭೂತ್ ಭೂತಭರಣಾತ್” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । “ಭೂತಕೃತ್ ಭೂತ-ಭೂತಭಾವಃ” ವಿಂ ಸಂ । “ವಿಭರ್ತಯ್ಯಯ ಇಶ್ವರಃ” ಗೀತಾ ೧೪-೧೭ । (ವಿಂ) 2. ಭೂತಗಳನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ. “ಭೂತ-ಭೂತ ಚ ಭೂತಸ್ಯಃ ಮಮಾತ್ಮಾ ಭೂತಭಾವನಃ” ಗೀತಾ ೯-೪ ।



**ಭೂತಮಹೇಶ್ವರ ಭೂತಮಹೇಶ್ವರ** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಭೂತಾನಾಂ  
ಬ್ರಹ್ಮಯಮಾದಯ ಇಶ್ವರಾಃ, ತೇಷಾಮಪಿ ಇಶ್ವರತಯಾ ಮಹಾಶ್ರಾಸೌ  
ಇಶ್ವರಶ್ಚ | “ಭೂತೇಶ್ವರಾಣಾಂ ಸ ಬ್ರಹ್ಮಯಮಾದೀನಾಂ ನಿಯಂತ್ರಣಾತ್ |  
ಕಾರಣಂ ಜಗತಾಂ ಯಶ್ಚ ಸ ಸ್ಯಾತ್ ಭೂತಮಹೇಶ್ವರಃ” ಇತಿ  
ನಿರೂಪಿತಃ | “ಸಿಂಹೋ ಭೂತಮಹೇಶ್ವರಃ” ವಿಂ ಸಂ |

**ಭೂತಯಜ್ಞ ಭೂತಯಜ್ಞ** (ಪುಂ) ಗೃಹಸ್ಥನು ಪ್ರತಿದಿನವೂ  
ಅಚರಿಸಬೇಕಾದ ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞಗಳಲ್ಲೊಂದು, ವೈಶ್ವ  
ದೇವ. ಇದು ಪ್ರಾಣಿಗಳ ತೃಪ್ತಿಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಒಂದು  
ಯಜ್ಞ. ಭೂತಾನಿ ವಾಯುಸಾದೀನ್ ಪ್ರಾಣಿನಃ ತದ್ವಿಷ್ಯ ಯಜ್ಞಃ |  
“ಋಷಿಯಜ್ಞಂ ದೇವಯಜ್ಞಂ ಭೂತಯಜ್ಞಂ ಚ ಸರ್ವದಾ | ನೃಯಜ್ಞಂ ಪಿತೃಯಜ್ಞಂ  
ಚ ಯಥಾಶಕ್ತಿ ನ ಹಾಪಯೇತ್” ಮನುಂ ೪-೨೧ |

**ಭೂತಯೋನಿ ಭೂತಯೋನಿ** (ಪುಂ) ಪರಮಾತ್ಮ, ಪರಮೇಶ್ವರ.  
ಪೃಥಿವ್ಯಾದಿ ಪಂಚಭೂತಗಳಿಗೂ ಸಕಲ ಪ್ರಾಣಿಗಳಿಗೂ  
ಪರಮಾತ್ಮನೇ ಕಾರಣನು, ಭೂತಾನಾಂ ಯೋನಿಃ ಕಾರಣಮ್ |

**ಭೂತಲ ಭೂತಲ** (ನಂ) 1 ಭೂಮಿಯ ಮೇಲ್ಮೈ,  
ಭೂಮಿಯ ಮೇಲ್ಭಾಗ. ಭುವಃ ತಲಮ್ | “ಭುವಸ್ತಲಮಿವ  
ವ್ಯೋಮ ಕುರ್ವನ್ ವ್ಯೋಮೇವ ಭೂತಲಮ್” ರಘುಂ ೪-೨೯ | 2.  
ಪಾತಾಳ, ಭೂಮಿಯ ಕೆಳಭಾಗ, ಭೂಮಿಯ ತಳಭಾಗ.  
“ಜಗತ್ಪ್ರಯೇಕಸ್ಥಪತಿತ್ವಮುಚ್ಚಕೇರಹೀಶ್ವರಸ್ತಮಭಿಶಿರಸ್ಸು  
ಭೂತಲಮ್” ಮಾಧಂ ೧-೩೪ |

**ಭೂತಲಿಪಿ ಭೂತಲಿಪಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೃಥಿವಿ ಮೊದಲಾದ ಪಂಚ  
ಭೂತಗಳು ದೇವತೆಯಾಗಿರುವ ಅಕ್ಷರಗಳು. ಭೂತಸ್ಯ  
ಲಿಪಿಃ | “ವಾಯ್ವಗ್ನಿಭೂಜಲಾಕಾಶಾಃ ಪಂಚಾಶ್ಚಲಿಪಯಃ  
ಕ್ರಮಾತ್ | ಪಂಚ ಹ್ರಸ್ವಾಃ ಪಂಚ ದೀರ್ಘಾಃ ಬಿನ್ದುಂತಾಃ ಸಂಧಿ-  
ಸಂವಾಃ | ಪಂಚಶಃ ಕಾದಯಃ ಷಷ್ಠಲಸಹಾಂತಾಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾಃ” |

**ಭೂತವರ್ಣ ಭೂತವರ್ಣ** (ಪುಂ) 1. ಧ್ಯಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ  
ಪಂಚ ಭೂತಗಳ ವರ್ಣಗಳು. ಭೂತಾನಾಂ ವರ್ಣಃ |

|           |                    |
|-----------|--------------------|
| ಪೃಥಿವಿಗೆ  | —ಹಿಂತ (ಹಳದಿ)       |
| ಜಲಕ್ಕೆ    | —ಶುಕ್ಲ (ಬಿಳುಪು)    |
| ತೇಜಸ್ಸಿಗೆ | —ರಕ್ತ (ಕೆಂಪು)      |
| ವಾಯುವಿಗೆ  | —ಕೃಷ್ಣ (ಕಪ್ಪು)     |
| ಆಕಾಶಕ್ಕೆ  | —ಸ್ವಚ್ಛ (ನಿರ್ವರ್ಣ) |

“ಸ್ವಚ್ಛಂ ವಿಯನ್ಮರುತ್ಕೃಣ್ಣೋರಕ್ತೋಗ್ನಿವಿಶದಂ ಪಯಃ | ಪೀತಾ  
ಭೂಮಿಃ ಪಂಚ ಭೂತಾನೈಕೈಕಾಧಾರತೋ ವಿಧುಃ” | 2. ಪೃಥಿವಿ  
ಮೊದಲಾದ ಪಂಚಭೂತಗಳು ದೇವತೆಯಾಗಿರುವ ಅಕ್ಷರ  
ಗಳು.

**ಭೂತವಿಜ್ಞಾನ ಭೂತವಿಜ್ಞಾನ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೂತ (ಪಿಶಾಚ)ಗಳನ್ನು  
ಬಿಡಿಸುವ ವಿಧ್ಯೆ, ಗ್ರಹಗಳ ಶಮನಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ

ಶಾಂತಿಕರ್ಮವನ್ನು ಹೇಳುವ ವಿಧ್ಯೆ. ಭೂತಾದಿನಿವಾರಣಾರ್ಥ  
ವಿಜ್ಞಾನ |

**ಭೂತವೃಕ್ಷ ಭೂತವೃಕ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ತಾರೆಗಿಡ. 2. ಹೆಮ್ಮರ.

**ಭೂತಶುದ್ಧಿ ಭೂತಶುದ್ಧಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ಶರೀರೋತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣ  
ವಾದ) ಪೃಥಿವಿ ಮೊದಲಾದ ಪಂಚಭೂತಗಳ ಶುದ್ಧಿ.  
ಭೂತಾನಾಂ ದೇಹಾರಂಭಕಾಣಾಂ ಪೃಥಿವ್ಯಾದೀನಾಂ ಭಾವನಾವಿಶೇಷಾತ್  
ಶುದ್ಧಿಃ |

**ಭೂತಸಂಚಾರ ಭೂತಸಂಚಾರ** (ಪುಂ) ಪಿಶಾಚಗಳ ಆವೇಶ,  
ಪಿಶಾಚ ಹಿಡಿಯುವುದು. ಭೂತಾನಾಂ ಸಂಚಾರಃ |

**ಭೂತಸಂಪ್ಲವ ಭೂತಸಂಪ್ಲವ** (ಪುಂ) ಜಗತ್ತಿನ ಮಹಾ  
ಪ್ರಳಯ. ಭೂತಾನಾಂ ಸಂಪ್ಲವಃ |

**ಭೂತಸರ್ಗ ಭೂತಸರ್ಗ** (ಪುಂ) ಭೂತಗಳ ಸೃಷ್ಟಿ, ಪಂಚ  
ಭೂತಗಳ ಮತ್ತು ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಸೃಷ್ಟಿ. ಈ ಭೂತ  
ಸೃಷ್ಟಿಯು (1) ಬ್ರಾಹ್ಮಮ್, (2) ಪ್ರಜಾಪತೀಯಮ್, (3) ಸೌಮ್ಯಮ್,  
(4) ಏಂದ್ರಮ್, (5) ಗಾಂಧರ್ವಮ್, (6) ಕೌಬೇರಮ್, (7) ರಾಕ್ಷಸಮ್,  
(8) ಪೇಶಾಚಮ್, (9) ಮಾನುಷಮ್, (10) ಸ್ಥಾವರಮ್, (11)  
ಪಾಶವಮ್, (12) ಮಾರ್ಗಮ್, (13) ಸಾಪಮ್ ಮತ್ತು (14)  
ಶಾಕುನಿಕಮ್ ಎಂದು 14 ವಿಧ. ಭೂತಾನಾಂ ಪೃಥಿವ್ಯಾದೀನಾಂ  
ಪ್ರಾಣಿನಾಂ ಚ ಸರ್ಗಃ ಸೃಷ್ಟಿಃ |

**ಭೂತಸೃಜ ಭೂತಸೃಜ** (ಪುಂ) ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸುವ  
ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಭೂತಾನಿ ಸೃಜತಿ—ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗಂ)  
“ಕಿವಪ್” (೩-೨-೭೬) | “ಬಹುಭಾ ಗತಾಂ ಜಗತಿ ಭೂತಸೃಜಾ  
ಕಮನೀಯತಾಂ ಸಮಮಿಹುತೃ ಪುರಾ” ಕಿರಾಂ ೬-೪೨ |

**ಭೂತಹನ್ತ್ರಿ ಭೂತಹನ್ತ್ರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಳಿ ಗರಿಕೆ. ಭೂತಾನಿ  
ಹಂತಿ—ಹನ (ಹಿಸಾಗತೃಃ) “ತೃತ್” (೩-೧-೧೩೩) |  
“ಹಿಪ್” (೪-೧-೫) | ಬಿಳಿ ಗರಿಕೆಯನ್ನು ಧರಿಸುವುದ  
ರಿಂದ ಹೆಂಗಸರೆ ಗರ್ಭಧಾರಣೆಗೆ ತೊಂದರೆಪಡಿಸುವ  
ಭೂತಚೇಷ್ಟೆಯು ನಿವಾರಣೆಯಾಗುವುದು.

**ಭೂತಾತ್ಮನು ಭೂತಾತ್ಮನು** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ.  
ಸರ್ವೇಷಾಂ ಭೂತಾನಾಮಾತ್ಮಾ | ಶರೀರಭೂತವಾದ ಸಕಲ ಭೂತ  
ಗಳಿಗೂ ಆತ್ಮನಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. “ಶರೀರ  
ಭೂತಭೂತಾನಾಂ ಭೂತಾತ್ಮಾಽಽತ್ಮತಯಾ ಸ್ಥಿತಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ |  
“ಭೂತಾತ್ಮಾ ಭೂತಭಾವನಃ” ವಿಂ ಸಂ | 2. ದೇಹ, ಶರೀರ.  
ಭೂತಾನಿ ಪೃಥಿವ್ಯಾದಿಪಂಚಭೂತಾನಿ ಆತ್ಮಾ ಸ್ವರೂಪಂ ಯಸ್ಯ |  
“ಯಃ ಕರೋತಿ ತು ಕರ್ಮಾಣಿ ಸ ಭೂತಾತ್ಮೋಚ್ಯತೇ ಬುಧಃ” |  
3. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 4. ಜೀವಾತ್ಮ, ಶರೀರವನ್ನು  
ಹೊಂದಿರುವ ಜೀವ. “ಭೂತಾತ್ಮಾ ಪವನೇ ದೇಹೇ ಯಶ್ಚ ಕರ್ತಾ  
ತನೌ ಪುಮಾನ್” ವೇಜಂ | 5. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ.



भूपाल ध्रुवराज (पुं०) उच्च, दीर्घ. भुवं पालयति  
—पाल (रक्षणे) + णिच् “अण्” (३-२-१) । “प्रलीन  
भूपालमपि स्थिरायति प्रशासदावारिधि मण्डलं भुवः”



ಕಿರಾಂ ೧-೨೩. "ಪ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) 1. -ಪಾಲಕ:  
-ಪಾಲಕ.

ಭೂಪುತ್ರ ಭೂಪುತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಕುಜಗ್ರಹ. 2. ನರಕಾಸುರ.  
ಭುವ: ಪುತ್ರ: 1. -ಪುತ್ರಿ-ಪುತ್ರಿ. 3. ಸೀತಾದೇವಿ.

ಭೂಮತು ಭೂಭೃತ್ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ಭುವೋ ಭರತಾ.  
"ಭೂಮತುರಸ್ಯ ರತಿರೇವ ಮೃಗಾಕ್ಷಿ ಮೂರ್ತಾ ಸೌಖ್ಯಂ ತವಾಸ್ತು  
ಕುಸುಮಾಯುಧ ಏವ ಮೂರ್ತ: " ನೈಷಂ ೧೧-೧೨೧. 2. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ.  
"ಭೂಮತು: ಸಮಧಿಕಮಾದಧೇ ತದೋರ್ವಾ: ಶ್ರೀಮತ್ತಾ  
ಹರಿಸಖವಾಹಿನಿ ನಿವೇಶ: " ಕಿರಾಂ ೭-೨೭.

ಭೂಭುಜ ಭೂಭುಜ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಭುವಂ ಭುಜ್ಜತೇ  
ಭುನಕ್ತಿ ಪಾಲಯತಿ ವಾ-ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ:  
"ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬) 1. "ಗಚ್ಛತಾ ದಶರಥೇನ ನಿವೃತ್ತಿ  
ಭೂಭುಜಾಮಸುಲಭಾ ಭುಜಾಬಲಾತ್" ಚಂ ರಾಂ.

ಭೂಮತು ಭೂಭೃತ್ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ಭುವಂ  
ವಿಭರತಿ ಪಾಲಯತಿ-ಭೂಮ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋ:) "ವಿವಪ್"  
(೩-೨-೭೬) 1. "ಉಪಕುಪ್ಯಮಾನಮಿವ ಭೂಮತಾಂ ಬಲೈ: ಪುಟಭೇದನಂ  
ದನುಸುತಾರಿರೇಕತ" ಮಾಧಂ ೧೩-೨೬. 2. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ.  
ಭುವಂ ವಿಭರತಿ ಧಾರಯತಿ-ಭೂಮ್ "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬) 1.  
"ಭೂಮದ್ವಿರಪ್ಯಸ್ಥಲಿತಾ: ಖಲೂತ್ತರಪಹ್ಲುವಾನಾ ಸರಿತ:  
ಪೃಥೂರಪಿ" ಮಾಧಂ ೧೨-೨೩.

ಭೂಮಂಡಲ ಭೂಮಂಡಲ (ನಂ) ಗೋಳಾಕಾರದ ಭೂಮಿ,  
ಗುಂಡಾಗಿರುವ ಭೂಮಿ. ಭುವೋ ಮಂಡಲಮ್.

ಭೂಮನ್ ಭೂಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಅತಿಶಯ, ಸಮೃದ್ಧಿ, ಹೆಚ್ಚಿಗೆ.  
ಬಹುಭಾವಿ: "ಇಮನಿವ್" (೪-೧-೧೨೨) 1. ಬಹುಭೂಮಿ:  
ಇಲೋಪಶ್ಚ (೬-೪-೧೫೮) 1. "ಭೂಮ್ನಾ ರಸಾನಾಂ ಗಹನಾ:  
ಪ್ರಯೋಗಾ: ಸೌಹಾರ್ದಹೃದ್ಯಾನಿ ವಿವೇಚಿತಾನಿ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೬.  
2. ಬಹುತ್ವ, ಅನೇಕತ್ವ. "ಭಾರ್ಯಾ ಜಾಯಾಽಽಯ ಪುಭೂಮಿನ್"  
ಅಮಂ. 1. "ಭೂಮಿನಿಂದಾಪ್ರಶಂಸಾಸು ನಿಯೋಗೇತಿಶಯೇನ" ಸಿಂ  
ಕೌಂ ಶ್ಲೋಕವಾರ್ತಿಕಮ್. 3. ಬಹು.

ಭೂಮಿ ಭೂಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭೂಮಿ, ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಲೋಕ.  
ಭವಂತ್ಯಸ್ಯಾಂ ಭೂತಾನಿ-ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಮಿ:" (೩ಂ  
೪-೪೫) 1. "ಅಸ್ತ್ರಂ ಭೂಮಿ ಯನ್ವಕಾಸಾಂಚಕಾರ" ಮಾಧಂ  
೧೮-೬೯. 1. "ಭೂಮೇದಿವಮಿವಾರೂಢಂ ಮನ್ಯೇ ಭವದನುಗ್ರಹಾತ್"  
ಕುಮಾಂ ೬-೫೫. 2. ಸ್ಥಾನ, ಜಾಗ, ಪ್ರದೇಶ. "ಭೂಮಿ:  
ಕ್ಷಿತೀ ಸ್ಥಾನಮಾತ್ರೇ" ವೈಜಂ. 1. "ಮೃಗೈವೃತ್ತಿತರೋಮನ್ಯಮುಡಜಾಙ್ಗನ-  
ಭೂಮಿಷು" ರಘುಂ ೧-೫೨. 3. ಎಲ್ಲೆ, ಅವಧಿ, ಪರಿಮಾಣ,  
ಅಳತೆ. "ಪ್ರಕುಪಿತಮಭಿಸಾರಣೇಽನುನೆತುಂ ಪ್ರಿಯಮಿಷಯಿ ಹಬಲಾ-  
ಜನಸ್ಯ ಭೂಮಿ:" ಕಿರಾಂ ೧೦-೫೮. 4. ವಿಷಯ, ಪಾತ್ರ,

ಗುರಿ. ಪ್ರೇಮಭೂಮಿ: ವಿಶ್ವಾಸಭೂಮಿ: ಕೋಪಭೂಮಿ: 1. 5. ನೆಲ,  
ಮಣ್ಣಿನ ಭೂಭಾಗ, ಭೂಮಿಯ ಮೇಲ್ಮೈ. "ಆಯುಷ್ಮನ್  
ಉದ್ಘಾತಿತೀ ಭೂಮಿರತಿ ಮಯಾ ರಶ್ಮಿಸಂಯಮನಾತ್ ರಥಸ್ಯ  
ಮಂದೀಕೃತೋ ವೇಗ:" ಶಾಕುಂ ೧.

ಭೂಮಿಕಂದರ ಭೂಮಿಕಂದರ (ನಂ) ನಾಯಿಕೋಡೆ.

ಭೂಮಿಕಮ್ ಭೂಮಿಕಮ್ (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯ ನಡುಕ,  
ನೆಲಗುಡುಗು, ಭೂಮಿಯು ಅಲುಗಾಡುವುದು. ಭೂಮಿ:  
ಕಮ್.

ಭೂಮಿಕಾ ಭೂಮಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೇಶ, ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ  
ಪಾತ್ರಗಳ ರೂಪಾಂತರ. "ಅನ್ಯರೂಪೈರ್ದನ್ಯಸ್ಯ ಪ್ರವೇಶ: ಸ ತು  
ಭೂಮಿಕಾ" 1. "ಅವಾಪ್ಯ ಶೈಲೂಷ ಇವೇಶ ಭೂಮಿಕಾಮ್" ಮಾಧಂ  
೧-೬೯. 2. ಅಲಂಕಾರ, ವೇಷರಚನೆ. "ಭೂಮಿಕಾ  
ರಚನಾಯಾಂ ಸ್ಯಾದ್ವೇಶಾಂತರಪರಿಗ್ರಹೇ" ಮೇದಿಂ. 3. ನಾಟಕದಲ್ಲಿ  
ವಹಿಸುವ ಪಾತ್ರ, ನಟನ ಪಾತ್ರ, ನಾಟಕಕಾರನು ಕಲ್ಪಿ-  
ಸುವ ವ್ಯಕ್ತಿ. "ಸೌಗತಜರತ್ಪ್ರವಾಜಿಕಾಯಾ: ಕಾಮಂದಕಯಾಸ್ತು  
ಪ್ರಥಮಾಂ ಭೂಮಿಕಾಂ ಭಾವ ಏಕ ಏವಾಧೀತೀ" ಮಾಲತೀಂ ೧.  
4. ಮನೆಯ ಮಹಡಿ, ಮಾಳಿಗೆ, ಅಂತಸ್ತು, ಉಪ್ಪರಿಗೆ.  
ಪಂಚಭೂಮಿಕ:, ಸಪ್ತಭೂಮಿಕ: ಪ್ರಾಸಾದ: 1. 5. ಹಂತ, ಘಟ್ಟ.  
6. ಸಣ್ಣ ಹಲಗೆ, ಬರೆಯುವ ಮಣೆ. 7. ಸ್ಥಳ, ಜಾಗ,  
ಪ್ರದೇಶ. 8. ಗ್ರಂಥಗಳಿಗೆ ಬರೆಯುವ ಉಪೋದ್ಘಾತ,  
ಪ್ರಸ್ತಾವನೆ.

ಭೂಮಿಜ ಭೂಮಿಜ (ಪುಂ) 1. ಕುಜಗ್ರಹ, ಅಂಗಾರಕ.  
2. ನರಕಾಸುರ. 3. ಮನುಷ್ಯ. (ವಿಂ) 4. ಭೂಮಿ  
ಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜಾ-ಜಾ. 5. ಸೀತಾದೇವಿ.  
"ಭೂಮಿಜೋ ನರಕೇಽಙ್ಗರೇ ಸೀತಾದೇವ್ಯಾಂ ತು ಭೂಮಿಜಾ" ಮೇದಿಂ.

ಭೂಮಿಜಮ್ಬುಕಾ ಭೂಮಿಜಮ್ಬುಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಾಯಿ  
ನೇರಿಕೆ. 2. ಕಾಗೆ ಹೇರಿಕೆ.

ಭೂಮಿಜೀವಿ ಭೂಮಿಜೀವಿ (ಪುಂ) 1. ವೈಶ್ಯ. 2. ರೈತ,  
ಬೇಸಾಯಗಾರ. (ವಿಂ) 3. ಭೂಮಿಯ ಉತ್ಪತ್ತಿ  
(ಬೆಳೆ)ಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಭೂಮ್ಯಾ ತತ್ಕರ್ಷಣಾದಿನಾ  
ಜೀವತಿ-ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೇ) "ಜಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) 1.

ಭೂಮಿವೇ ಭೂಮಿವೇ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಭೂಮಿ  
ದೇವ ಇವ. "ಭೂಮಿವೇನರದೇವಸಂಗಮೇ ಪೂರ್ವದೇವರಿಪುರಹಣಾಂ ಹರಿ:"  
ಮಾಧಂ ೧೪-೫೮.

ಭೂಮಿಧರ ಭೂಮಿಧರ (ಪುಂ) ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಧರತಿ-  
ಧರ್ಮ (ಧಾರಣೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) 1. ಭೂಮಿ: ಧರ:

ಭೂಮಿಪ ಭೂಮಿಪ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಭೂಮಿ ಪಾತಿ-ಪಾ  
(ರಕ್ಷಣೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩) 1.



ಭೂಮಿಪತಿ ಭೂಮಿಪತಿ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಭೂಮಿ: ಪತಿ: ।

“ತತ್ತದ್ಭೂಮಿಪತಿ: ಪತ್ಯೈ ದರ್ಶಯನ್ ಪ್ರಿಯದರ್ಶನ:” ರಘುಂ ೧-೪೭ ।

ಭೂಮಿಪಾಲ ಭೂಮಿಪಾಲ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಭೂಮಿ

ಪಾಲಯತಿ—ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಚ್ “ಅಣ್” (೩-೨-೧) ।

“ನರೇಂದ್ರಮಾರ್ಗಾಡ್ವಿ ಇವ ಪ್ರಪೇದೇ ವಿವರ್ಣಭಾವಂ ಸ ಚ ಭೂಮಿಪಾಲ:”

ರಘುಂ ೬-೬೭ । “ಞ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) । —ಪಾಲಕ:

—ಪಾಲಕ:

ಭೂಮಿಭಾಗ ಭೂಮಿಭಾಗ (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯ ಒಂದು ಭಾಗ,

—ಒಂದು ಪ್ರದೇಶ.

ಭೂಮಿಭೃತ್ ಭೂಮಿಭೃತ್ (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಭೂಮಿ

ವಿಭೃತಿ—ಭೂಮಿ (ಧಾರಣೆ) “ವಿಭೃ” (೩-೨-೭೬) ।

2. ರಾಜ, ದೊರೆ. ಭೂಮಿ ವಿಭೃತಿ ಪೋಷಯತಿ—ಭೂಮಿ

(ಪೋಷಣೆ) “ವಿಭೃ” (೩-೨-೭೬) । (ವಿಂ) 3. ಭೂಮಿ

ಯನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವ. “ಭೂಮಿಭೃದಿತಿ ಪರಹಾರಿತಭೂಮಿ-

ಮುದಾಹ್ನಿಯಸ್ವ ಕಥಮನ್ಯಥಾ ಜನೇ:” ಮಾಘಂ ೧೫-೨೯ ।

ಭೂಮಿರಹ ಭೂಮಿರಹ (ಪುಂ) ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಭೂಮಿ ರೋಹತಿ

—ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಕುಮವಿ ಚ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೫) ।

ಭೂಮಿಸಂಭವ ಭೂಮಿಸಂಭವ (ಪುಂ) 1. ಕುಜಗ್ರಹ,

ಅಂಗಾರಕ. 2. ನರಕಾಸುರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಸಂಭವಾ

—ಸಂಭವಾ. 3. ಸೀತಾದೇವಿ.

ಭೂಮಿಸ್ಪೃಶ ಭೂಮಿಸ್ಪೃಶ (ಪುಂ) 1. ಮನುಷ್ಯ. 2. ವೃಕ್ಷ.

3. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ. 4. ಅಂಧ, ಕುರುಡ. ಭೂಮಿ ಸ್ಪೃಶತಿ

—ಸ್ಪೃಶ (ಸ್ಪರ್ಶನೆ) “ವಿವನ್” (೩-೨-೫೮) । 5. ಹೆಳವ,

ಕುಂಟ. “ಭೂಮಿಸ್ಪೃಶೇಶ್ವನರಯೋ:” ವಿಶ್ವಂ ।

ಭೂಮಿ ಭೂಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೂಮಿ ಪದದ ಅರ್ಥ. ಭೂಮಿ

ವಾ “ಙೀಃ” (ಗಂ ೪-೧-೪೫) ।

ಭೂಯಸ್ ಭೂಯಸ್ (ವಿಂ) 1. ಅಧಿಕ, ಹೆಚ್ಚಾದ, ಬಹಳ

(ಸಂಖ್ಯೆಯಲ್ಲಿ). ಅತಿಶಯೇನ ಬಹು —ಬಹು “ಝಿಸುನ್”

(೫-೩-೫೭) । ಬಹೋ: ಭೂ: ಝೀಲಪಶ್ವ (೬-೪-೧೫೮) ।

(ಪುಂ) ಭೂಯಾನ್ ಭೂಯಾಸಿ ಭೂಯಾಸಿ: । “ಭೂಯಾಸಿ: ಕ್ವಚಿದಪಿ

ಕಾಮಮಸ್ತುಲಂತ:” ಮಾಘಂ ೧೬-೮೨ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೂಯಸಿ

ಭೂಯಸೌ ಭೂಯಸ್ಯ: । “ಇದಂ ಜಿಘತ್ಸಾಮಪಹಾಯ ಭೂಯಸಿಂ ನ

ಸಸ್ಯಮಮ್ಯೇತಿ ಮೃಗೀಕದಂಬಕಮ್” ಕಿರಾಂ ೪-೩೩ । (ನಂ)

ಭೂಯ: ಭೂಯಸಿ ಭೂಯಾಸಿ: । “ಭರಂ ಭರಂ ವಿತರ ಭಗವನ್ ಭೂಯಸೇ

ಮಜ್ಜಲಾಯ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೩ । 2. ದೊಡ್ಡದಾದ, ವಿಪುಲ

ವಾದ, ವಿಸ್ತಾರವಾದ. “ಪಶ್ಚಾರ್ಥೇನ ಪ್ರವಿಷ್ಟ: ಶರಪತನ-

ಭಯಾದ್ಭೂಯಸಾ ಪೂರ್ವಕಾಯಮ್” ಶಾಕುಂ ೧-೭ । (ಅವ್ಯಂ)

3. ಪುನಃ, ಮತ್ತೆ, ತಿರುಗಿ. “ರಿಪುತಿಮಿರಮುದಸ್ಯೋದೀಯ-

ಮಾನಂ ದಿನಾದೌ ದಿನಕೃತಮಿವ ಲಕ್ಷ್ಮೀಸ್ತ್ವಾಂ ಸಮಮ್ಯೇತು ಭೂಯ:”

ಕಿರಾಂ ೧-೪೬ । 4. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ, ಅಧಿಕವಾಗಿ. “ಭೂಯೋ

ಬಭೌ ದರ್ಪಣಮಾದಧಾನಾ” ಕುಮಾರಂ ೭-೨೬ ।

ಭೂಯಸ್ತ್ವ ಭೂಯಸ್ತ್ವ (ನಂ) ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವಿಕೆ, ಅಧಿಕ

ವಾಗಿರುವಿಕೆ.

ಭೂಯಿಷ್ಠ ಭೂಯಿಷ್ಠ (ವಿಂ) (ಸಮಾಸದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ)

1. ಪ್ರಧಾನವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವ, ಮುಖ್ಯವಾಗಿರುವ.

ಅತಿಶಯೇನ ಬಹು “ಝಿಷ್ಠನ್” (೫-೩-೫೫) । ಝಿಷ್ಠಸ್ಯ ಯಿಡ್

ಚ (೬-೪-೧೫೯) । “ತೇಷಾಂ ಸದಶ್ವಭೂಯಿಷ್ಠಾ: ತುಙ್ಗಾ ದ್ರವಿಣ-

ರಾಶಯ:” ರಘುಂ ೪-೭೦ । 2. ಬಹುಭಾಗವಾದ, ಹೆಚ್ಚು

ಭಾಗವಾದ, ಹೆಚ್ಚು ಕಡಿಮೆ ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ. “ನಿರ್ವಾಣ-

ಭೂಯಿಷ್ಠಮಥಾಸ್ಯ ವೀಯಮ್” ಕುಮಾರಂ ೩-೫೨ । 3. ಅತಿಶಯ

ವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ, ಬಹಳವಾದ. (ಅವ್ಯಂ) 4. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ,

ಅಧಿಕವಾಗಿ, ಅತಿಶಯವಾಗಿ. “ಭೂಯಿಷ್ಠಂ ಭವ ದಕ್ಷಿಣಾ

ಪರಿಜನೇ ಭಾಗ್ಯೇಷ್ವನುತ್ಸೇಕಿನಿ” ಶಾಕುಂ ೪-೧೭ ।

ಭೂಯೋ ಭೂಯೋ ಭೂಯೋ (ಅವ್ಯಂ) ಮತ್ತೆ

ಮತ್ತೆ, ಪುನಃ ಪುನಃ. “ಭೂಯೋ ಭೂಯೋ: ಸವಿಧನಗರೀರಥಯಾ

ಪರ್ಯಂತಮ್” ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೮ ।

ಭೂರಿ ಭೂರಿ (ಪುಂ) 1. ವಾಸುದೇವ, ವಿಷ್ಣು. ಭೂ (ಸತ್ತಾ-

ಯಾಮ್) “ಕ್ರಿ:” (೩ಂ ೪-೬೫) । 2. ಶಿವ, ಮಹೇಶ್ವರ.

3. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. (ನಂ) 4. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ.

(ವಿಂ) 5. ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅಧಿಕವಾದ. “ಭೂರಿಭಿರ್ಭಾರಿಭಿ-

ರ್ಭೀರೈರ್ಮಾರೈರಭಿರೇಭಿರೇ” ಮಾಘಂ ೧೯-೬೬ । 6. ದೊಡ್ಡ

ದಾದ (ಪ್ರಮಾಣದಲ್ಲಿ). 7. ಬಹಳ, ಹೇರಳ. “ತಾನ್

ಭೂರಿದಾನ್ಶತುರೋಽಪಿ ದ್ವರಂ ವಿಹಾಯ ಯಾಮಾನಿವ ವಾಸರಸ್ಯ”

ಕಿರಾಂ ೩-೩೫ । (ಅವ್ಯಂ) 8. ಅಧಿಕವಾಗಿ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ,

ಅತಿಶಯವಾಗಿ. “ಭೂರಿನಾ ವಾಸುದೇವೇ ಚ ಹರೇ ಚ ಪರಮೇಷ್ಠಿನಿ ।

ನಪುಂಸಕಂ ಸುವರ್ಣಂ ಚ ಪ್ರಾಜ್ಯೇ ಸ್ಯಾತ್ ವಾಚ್ಯಲಿಂಗಕ:” ಮೇದಿಂ ।

ಭೂರಿಜ್ ಭೂರಿಜ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೂಮಿ, ಪೃಥ್ವಿ. ಭೂ (ಭರಣೆ)

“ಙ್ಜಿ:” ಙ್ಕಾರಾದೇಶಾಶ್ಚ (೩ಂ ೨-೭೩) ।

ಭೂರಿಗಮ ಭೂರಿಗಮ (ಪುಂ) ಗರ್ವಭ, ಕತ್ತೆ.

ಭೂರಿದ ಭೂರಿದ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ದಾನಮಾಡುವ. ಭೂರಿ

ದದಾತಿ —ದಾನ್ (ದಾನೆ) “ಕ:” (೩-೨-೩) ।

ಭೂರಿದಕ್ಷಿಣ ಭೂರಿದಕ್ಷಿಣ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ವಾಸುದೇವ.

ಹಯಮೇಧಾದಿಮಿ: ಯಜಮಾನತಯಾ ಭೂರಯೋ ದಕ್ಷಿಣಾ ಅಸ್ಯ ।

“ಹಯಮೇಧಾದಿಭಿರ್ಯಜ್ಞ: ಜಗದಾಚಾರ್ಯಕಾಯ ವೇ । ಯಜಮಾನ: ಸ

ವಿಜ್ಞೇಯ: ಸರ್ವದಾ ಭೂರಿದಕ್ಷಿಣ:” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । “ಕಪಿನ್ದ್ರೋ

ಭೂರಿದಕ್ಷಿಣ:” ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ) 2. ಹೆಚ್ಚು, ದಕ್ಷಿಣ

ಯುಳ್ಳ, ಅಧಿಕವಾದ ದಾನವುಳ್ಳ. ಭೂರಿದಕ್ಷಿಣಾ ಯಸ್ಯ ।



ಭೂರ್ಮಾಯ ಭೂರ್ಮಾಯ (ಪುಂ) 1. ಜಂಭುಕ, ನರಿ. ಭೂರ್ಮಾಯ ಮಾಯಾ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಅಧಿಕ ಮಾಯೆಯುಳ್ಳ.

ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಅನೇಕವಾಗಿ, ಬಹಳವಾಗಿ. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ. ಭೂರ್ಮಾಸ್ "ಶಸ್" (೪-೪-೪೨) |

ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗುರುಗುಲು ಗಿಡ, ಅಣ್ಣ ಗಿಡ.

ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಭುವಿ ರೋಹತಿ — ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡುಭವಿ ಚ) "ವಿವ್" (೩-೨-೭೬) | "ಸರಜಸಮಕರಂದನಿಭರಾಸು ಪ್ರಸವವಿಭೂತಿಷು ಭೂರ್ಮಾಸ್ ವಿರಕ್ತಃ" ಮಾಘಂ ೭-೪೨ | (ವಿಂ) 2. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಪುಂ) ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಭುವಿ ರೋಹತಿ—ಭೂ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡುಭವಿ ಚ) "ಕಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೪) | "ವಿಹಾಯ ನಿಃಸಾರತಯೇವ ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಪದಂ ವನಶ್ರೀವನಿತಾಸು ಸಂದಧೇ" ಕಿರಾಂ ೮-೨೦ |

ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಪುಂ) ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಗಿಡ. ಭೂರ್ಮಾಸ್: ಕುಂಜರೇಷು | "ನೃಪಾಕ್ಷರಾ ಧಾತುರಸೇನ ಯತ್ರ ಭೂರ್ಮಾಸ್: ಕುಂಜರೇಷು ಶೋಣಾಃ" ಕುಮಾರಂ ೧-೭ |

ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಪುಂ) ಸಂಸ್ಕಾರವಿಲ್ಲದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಂದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು. "ವ್ರಾತಾತ್ ಜಾಯತೇ ವಿಪ್ರಾತ್ ಪಾಪಾತ್ಮಾ ಭೂರ್ಮಾಸ್: ಕುಂಜರೇಷು" ಮನುಂ ೧೦-೨೧ |

ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧರಣಿ, ಭೂಮಿ. ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) "ನಿಃ" (ತಂ ೪-೪೨) |

ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಪುಂ) ಭೂರ್ಮಾಸ್, ಅಂತರಿಕ್ಷದ ಕೆಳಗಿನ ಲೋಕ, ಮನುಷ್ಯ ಲೋಕ. ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಲೋಕಃ | ಪಾದಗಂಧದ ಸಂಚರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಲೋಕ. "ಪಾದಗಂಧಂ ಚ ಯತ್ಕಿಂಚಿತ್ ವಸ್ತುವಸ್ತಿ ಪೃಥಿವೀಮಯಮ್ | ಸ ಭೂರ್ಮಾಸ್: ಸಮಾಖ್ಯಾತಃ ವಿವರೋಽಸ್ಯ ಮಯೋದಿತಃ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ ೨-೪ |

ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ನಂ) ಭೂರ್ಮಾಸ್.

ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ಸ್ವಯಂವ್ಯಕ್ತಾದಿರೂಪೇಣ ಭುವಿ ಶೇತೇ — ಶೀಙ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಅಚ್" (೩-೨-೧೪) | "ಸ್ವಯಂವ್ಯಕ್ತಾದಿರೂಪೇಣ ಕೌ ಶೇತೇ ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಸಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | "ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್" ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಮಲಗುವವನು.

ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ವಿಶ್ವಜನೀನೇನ ಶೀಲೇನ ಶ್ರಿಯಃಪತಿಮಾತ್ಮಾನಂ ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಮಂಜಯತಿ — ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಅಲಂಕಾರೇ) + ಣಿಚ್ "ಯುಚ್" (೩-೨-೧೪೧) | "ಎವಂ ವಿಶ್ವಜನೀನೇನ ಶಿವೇನ ಚ ಶ್ರಿಯಃಪತಿಃ | ಯ ಆತ್ಮಾನಂ ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್"

ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | "ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್" ವಿಂ ಸಂ | (ನಂ) 2. ಅಲಂಕಾರ, ಒಡವೆ, ಅಭರಣ. ಭೂರ್ಮಾಸ್ — ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಅಲಂಕಾರೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | "ನಕ್ಷತ್ರಭೂರ್ಮಾಸ್ ಚಂದ್ರೋ ನಾರೀಣಾಂ ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಪತಿಃ" | "ಅನ್ಯೋನ್ಯ-ಶೋಭಾಜನನಾದ್ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಸಾಧಾರಣೋ ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್" ಕುಮಾರಂ ೧-೪೨ | 3. ಅಲಂಕರಿಸುವಿಕೆ, ಶೃಂಗರಿಸುವಿಕೆ. ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |

ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ವಿಂ) 1. ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಶೃಂಗರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಅಲಂಕರಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಅಲಂಕರಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಅಲಂಕಾರೇ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) | "ತವ್ಯಃ" | ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್: ಭೂರ್ಮಾಸ್.

ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ವಿಂ) ಅಲಂಕರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಶೃಂಗರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಅಲಂಕಾರೇ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) | —ಯಂತಿ —ಯಂತಿ.

ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ವಿಂ) ಅಲಂಕರಿಸುವ, ಶೃಂಗರಿಸುವ. ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಅಲಂಕಾರೇ) + ಣಿಚ್ "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩) | ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೪) | —ಯಂತಿ —ಯಂತಿ.

ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಲಂಕಾರ, ಶೃಂಗಾರ. ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಅಲಂಕಾರೇ) "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩) | 2. ಅಭರಣ, ಒಡವೆ. "ದಂಪತ್ಯೋಃ ಪರ್ಯದಾತ್ ಪ್ರೀತ್ಯಾ ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಪರಿಚ್ಛೇದಾನ್" ಭಾಗಂ ೩-೨೨-೨೨ | "ತಾಂ ಮದೋ ದಯಿತಸಂಜ್ಞಮಭೂರ್ಮಾಸ್" ಮಾಘಂ ೧೦-೩೩ | "ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಸಂಸ್ಕೃತೇ ಯಮ್" ನೆಪಂ ೧೦-೩೮ |

ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ವಿಂ) ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಅಲಂಕಾರೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್: ವಾಶನೇ: ಪಶ್ಯ ಲಕ್ಷ್ಮಣ | ರೋಚನೇ ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಪಂಪಾಮಸ್ಮಾಕಂ ಹೃದಯಾವಿಧಮ್" ಭಟ್ಟಂ ೬-೭೩ |

ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ವಿಂ) ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುವ ಸ್ವಭಾವದವನು, ಚೆನ್ನಾಗಿರುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ತುಃ" (೩-೨-೧೩೮) | "ಕ್ಷತ್ರಿಯಂ ಚೈವ ಸರ್ವಂ ಚ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ಚ ಬಹುಶ್ರುತಮ್ | ನಾವಮನ್ಯೇತ ವೈ ಭೂರ್ಮಾಸ್: ಕೃಶಾನಪಿ ಕದಾಚನ" ಮನುಂ ೪-೧೩೪ |

ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಪುಂ) 1. ಕುಂಜರ. 2. ನರಕಾಸುರ. ಭೂರ್ಮಾಸ್: ಸುತಃ (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಸುತಾ —ಸುತಾ. 3. ಸುತಾದೇವ.

ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯ. ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಸ್ಪೃಶತಿ — ಸ್ಪೃಶ (ಸ್ಪರ್ಶನೇ) "ವಿವ್" (೩-೨-೪೮) |

ಭೂರ್ಮಾಸ್ ಭೂರ್ಮಾಸ್ (ಪುಂ) ಸುಮೇರುಪರ್ವತ.



**ಭಗು ಭೃಗು (ಪುಂ)** 1. ಬ್ರಹ್ಮನ ಹೃದಯವನ್ನು ಭೇದಿಸಿ ಹೊರಟ (ಜನಿಸಿದ) ಒಬ್ಬ ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿ. ಈ ಋಷಿಯು ಸ್ವಾಯಂಭುವ ಮನ್ವಂತರದವನು. ಖ್ಯಾತಿಯೆಂಬುವಳು ಈ ಋಷಿಯ ಪತ್ನಿ. ಈ ಋಷಿಗೆ ಕವಿ ಮತ್ತು ಚೈವನ ರೆಂಬ ಇಬ್ಬರು ಪುತ್ರರು. ಭೃಗುಪತ್ನಿ ಖ್ಯಾತಿಯಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಮಿಯು ಅವತರಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಲಕ್ಷ್ಮಿಗೆ ಭಾರ್ಗವಿಯೆಂದು ಹೆಸರು. “ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಹೃದಯಂ ಭಿತ್ತ್ವಾ ನಿಃಸೃತೋ ಭಗವಾನ್ ಭಗುಃ | ಭಗೋಃ ಪುತ್ರಃ ಕವಿವಿದ್ವಾನ್ ಶುಕ್ರಃ ಕವಿಸುತೋ ಗ್ರಹಃ | ಸ್ವಯಂಭುವಾ ನಿಯುಕ್ತಃ ಸನ್ಭವನ್ ಪರಿಧಾವತಿ | ತಸ್ಮಿನ್ನಿವಿಧಾತು ವಿಧಿನಾ ಯೋಗಕ್ಷೇಮಾಯ ಭಾಗವೇ | ಅನ್ಯಮುತ್ಪಾದಯಾಮಾಸ ಪುತ್ರಂ ಭಗುರ-ನಿಂದಿತಮ್ | ಚ್ಯವನ್ ದೋಷತಪಸಂ ಧರ್ಮಾತ್ಮಾನಂ ಯಶಸ್ವಿನಮ್” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೭ | 2. ಜಮದಗ್ನಿ ಋಷಿ, ಪರಶುರಾಮನ ತಂದೆ. 3. ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರು, ಅಸುರರ ಗುರು. 4. ಶುಕ್ರ ಗ್ರಹ. 5. ಬೆಟ್ಟದ ತಪ್ಪಲು ಪ್ರದೇಶ, ಪ್ರಸ್ಥಭೂಮಿ. 6. ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಶಿವ. 7. ಸಮವಾದ ಬೆಟ್ಟದ ತುದಿ. ಹಳ್ಳತಿಟ್ಟಿಲ್ಲದ ಪರ್ವತದ ಶಿಖರ. 8. ಶುಕ್ರವಾರ. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 9. ಭೃಗುವಿನ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವರು.

**ಭಗುಜ ಭೃಗುಜ (ಪುಂ)** 1. ಭೃಗುವಿನ ಪುತ್ರ, ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯ, ಅಸುರರ ಗುರು. 2. ಶುಕ್ರ ಗ್ರಹ. ಭಗುಜಾಯಿತೆ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃಭವಿ) “ಃ” (೩-೨-೧೮) |

**ಭಗುತನಯ ಭೃಗುತನಯ (ಪುಂ)** 1. ಭೃಗು ಪುತ್ರನಾದ ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯ, ಅಸುರರ ಗುರು. 2. ಶುಕ್ರ ಗ್ರಹ. ಭಗುಃ ತನಯಃ | —ಪುತ್ರಃ —ಪುತ್ರಃ, —ಸುತಃ —ಸುತಃ.

**ಭಗುಪತಿ ಭೃಗುಪತಿ (ಪುಂ)** ಪರಶುರಾಮ, ಭೃಗು ವಂಶೋತ್ಪನ್ನರ ಪತಿ. ಭಗುಣಾಂ ತದ್ವಂಶೀಯಾ ನಾಂ ಪತಿಃ | “ಕೇಶವ ಧೃತಭಗುಪತಿರೂಪ ಜಯಜಗದೀಶ ಹರೇ” ಗೀತಗೋಂ |

**ಭಗುವಾರ ಭೃಗುವಾರ, —ವಾಸರ —ನಾಸರ (ಪುಂ)** ಶುಕ್ರ ವಾರ.

**ಭೃಗ್ ಭೃಂಗ (ಪುಂ)** 1. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ವಿಭತ್ತಿ — ಓ ಭಗ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಗನ್” ನುಡ್ ಚ (ಉಂ ೧-೧೨೨) | “ಆರಣ್ಯಾಃ ಸುಮನಸಃ ಔಷಿರೇ ನ ಭೃಗೈರೌಚಿತ್ಯಂ ಗಣಯತಿ ಕೋ ವಿಶೇಷಕಾಮಃ” ಮಾಘಂ ೮-೧೦ | 2. ಕಳಿಂಗ ಪಕ್ಷಿ, ಕವಲೊಡೆದ ಪುಕ್ಕವುಳ್ಳ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹಕ್ಕಿ. 3. ಭೃಂಗರಾಜ, ಗರಗದಸೊಪ್ಪು. 4. ಜಾರ, ಉಪಪತಿ, ಮುಂಡ. (ನಂ) 5. ಲವಂಗಪಟ್ಟಿ, ದಾಲ್ಚಿನ್ನಿ. “ಭೃಗೋ ಧೂಮ್ರಾಟಪಿಙ್ಗಯೋಃ | ಮಧುಕೃತೇ ಭೃಗುರಾಜೇ ಪುನಿ ಭೃಗ್ ಗುಡ್ಡವಚಿ” ಮೇದಿಂ | 6. ಅಭ್ರಕ, ಕಾಗೆಬಂಗಾರ. 7. ಚಿನ್ನದ ಗಿಂಡಿ.

**ಭೃಗುಪರ್ಣಿ ಭೃಂಗಪರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸಣ್ಣ ಯಾಲಕ್ಕಿ ಗಿಡ. ಭೃಗ್ ಇವ ಪರ್ಣಮಸ್ಯಾಃ |

**ಭೃಗುಪ್ರಿಯಾ ಭೃಂಗಪ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮಾಧವೀಲತೆ, ಕಾಡಿರುವಂತಿಗೆ ಗಿಡ.

**ಭೃಗುರಾಜ ಭೃಂಗರಾಜ (ಪುಂ)** 1. ಗರಗದ ಸೊಪ್ಪು. 2. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. 3. ಕಳಿಂಗ ಪಕ್ಷಿ. “ಮಾರ್ಕವೋ ಭೃಗು-ರಾಜಃ ಸ್ಯಾತ್” ಅಮಂ | “ಧೂಮ್ರಾಟಲೋ ಭೃಗುರಾಜಃ” ವೈಜಂ |

**ಭೃಗುರ ಭೃಂಗಾರ (ಪುಂ)** 1. ಚಿನ್ನದ ಗಿಂಡಿ. ವಿಭತ್ತಿ ಜಲಮ್ — ಓ ಭಗ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಆರನ್” (ಉಂ ೩-೧೩೬) | “ಮದನಹುತಭುಗುಜ್ಜಾರ ಸದೃಶಕಮಲಭೃಗುರಮಧುರಸ-ಸಜ್ಜಾರಚಿತಮದಭೃಗುರವಂ.....” ಚಂ ಭಾಂ | 2. ಜಾಡಿ, ಹೂಜಿ ಮೊದಲಾದ ನೀರಿನ ಪಾತ್ರೆ. 3. ಲವಂಗ. 4. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ರೀ —ರೀ. 5. ಜೀರಂಡೆ ಹುಳ, ಚಿಮ್ಮಂಡಿ. ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕಃ” | ಭೃಗುರಾರಿಕಾ ಭೃಂಗಾರಿಕಾ.

**ಭೃಗುನ್ ಭೃಂಗಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ಪರಮೇಶ್ವರನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ. 2. ಅಲದಮರ.

**ಭೃಗುರಿದಿ ಭೃಂಗಿರಿಡಿ (ಪುಂ)** ಪರಮೇಶ್ವರನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ.

**ಭೃಜಕಠ ಭೃಜಕಠ (ಪುಂ)** ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಪ್ರಾತ್ಯಬ್ರಾಹ್ಮಣ (ಸಂಸ್ಕಾರವಿಲ್ಲದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ) ನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವನು. “ವಿಪ್ರಾ ವ್ರಾತಾಭೃಜಕಠಮ್” ವೈಜಂ |

**ಭೃಜತ್ ಭೃಜತ್ (ವಿಂ)** ಹುರಿಯುತ್ತಿರುವ. ಅಸಜ (ಪಾಕೆ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಜಿಪ್” (೪-೧-೬) | —ತೀ —ತೀ, —ಂತೀ —ಂತೀ. “ಶಾನಕ್” (೩-೨-೧೨೪) | ಭೃಜಮಾನಃ ಭೃಜಮಾನಃ.

**ಭೃಜನ ಭೃಜನ (ಪುಂ)** ಹುರಿಯುವ ಓಡು, ಬಾಣಲಿ.

**ಓ ಭಗ್ —ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ (ಜುಹೋಂ ಉಋಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) |**

ಲಟ್ — ಪರಂ ವಿಭತ್ತಿ ವಿಭುತಃ ವಿಭ್ರತಿ |

ಆತ್ಮಂ ವಿಭುತೇ ವಿಭ್ರಾತೇ ವಿಭ್ರತೇ |

ಲಿಟ್ — ಪರಂ ಬಭಾರ ಬಭ್ರತುಃ ಬಭ್ರುಃ |

ವಿಭರಾಂ ಬಭೂವ —ಆಸ |

ಆತ್ಮಂ ಬಭ್ರೇ ಬಭ್ರಾತೇ ಬಭ್ರಿರೇ |

ಛುಟ್ — ಭರ್ತಾ ಭರ್ತಾರೋ ಭರ್ತಾರಿಃ |

ಭರ್ತಾಸಿ, —ಸೇ ಭರ್ತಾಸ್ಮಿ, —ಹೇ |

ಠಟ್ — ಭರಿಷ್ಯತಿ | ಭರಿಷ್ಯತೇ |

ಲೂಟ್ — ಪರಂ ವಿಭರ್ತುಃ } ವಿಭರ್ತಾಮ್ ವಿಭ್ರತುಃ |

ವಿಭರ್ತಾತ್ }

ಆತ್ಮಂ ವಿಭರ್ತಾಮ್ ವಿಭ್ರತಾಮ್ ವಿಭ್ರತಾಮ್ |



ಲಙ್— ಪರಂ ಅಭಿಮಃ ಅಭಿಮೃತಾಂ ಅಭಿಮಃ |  
 ಆತ್ಮಂ ಅಭಿಮೃತ ಅಭಿಮೃತಾಂ ಅಭಿಮೃತ |  
 ಲಿಙ್— ಪರಂ ವಿಭ್ರಾತ್ ವಿಭ್ರಾತಾಂ ವಿಭ್ರಾತುಃ |  
 ಆತ್ಮಂ ವಿಭ್ರಾತ ವಿಭ್ರಾತಾಂ ವಿಭ್ರಾತುಃ |  
 ಆಶೀಲಿಙ್—

ಪರಂ ವಿಭ್ರಾತ್ | ಆತ್ಮಂ ವಿಭ್ರಾತುಃ |  
 ಲುಙ್— ಪರಂ ಅಭಿಮೃತುಃ | ಆತ್ಮಂ ಅಭಿಮೃತುಃ |  
 ಲೃಙ್— ಪರಂ ಅಭಿಮೃತುಃ | ಆತ್ಮಂ ಅಭಿಮೃತುಃ |

1. ಮೃತಂ, ಮೃತುಃ. “ವಿಭ್ರಾತುಃ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ರಣ-  
 ಕಾಮ್ಯಂತಿ ಚಾಮರಾಃ” ಮೃತ್ರಿಂ ೧೮-೨೪ | 2. ಮೃತಂ,  
 ಮೃತುಃ. “ವಿಭ್ರಾತುಃ ವಂಶಃ ಕತಮಸ್ತಮೋಪಹಂ ಭವಾದೃಶಂ ನಾಯಕ-  
 ರತ್ನಮೀದೃಶಮ್” ನೃಪಂ ೯-೬ | 3. ಮೃತಂ, ಮೃತುಃ,  
 ಮೃತುಃ. “ಪ್ರಜಾಢಾಂ ವಿನ್ಯಾಧಾನಾಕ್ಷಣಾಕ್ಷರಣಾದಪಿ”  
 ರಘುಂ ೧-೨೪ | 4. ಮೃತಂ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗೂ ಮೃತಂ,  
 “ಅಭಿಮೃತುಃ ಲೋಕಾನಭ್ರಾಜಿಷ್ಠ ಕ್ಷಯಾಗ್ನಿವತ್” ಮೃತ್ರಿಂ  
 ೧೫-೨೪ | 5. ಮೃತಂ, ಭೃತಮೃತುಃ. “ಸುಹೃದಾಮುಪಕಾರ-  
 ಕಾರಣಾತ್ ದ್ವಿಷತಾಂ ಚಾಪ್ಯುಪಕಾರಕಾರಣಾತ್ | ನೃಪಸಂಶ್ರಯ ಇಷ್ಯತೇ  
 ಬೃಹಜಂಠರಂ ಕೌ ನ ವಿಭ್ರಾತುಃ ಕೇವಲಮ್” ಪಞ್ಚತಂ ೧-೨೨ |  
 6. ಮೃತಂ, ತಾಳು. “ಜಟಾಶ್ಚ ವಿಭ್ರಾತುಃ ಕಮಶ್ರುಲೋಮ-  
 ನಖಾನಿ ಚ” ಮನುಂ ೬-೬ | 7. ಅನುಭವಮೃತಂ, ಸಂತೋಷ  
 ಪಡು ಅಥವಾ ಕಷ್ಟಪಡು. “ಭಾವಶುದ್ಧಿಸಹಿತಮೃದಂ ಜನೌ  
 ನಾಟಕೇರಿವ ಬಹಾರ ಭೋಜನಃ” ಮಾಘಂ ೧೪-೫೦ | 8. ಉಂಟು  
 ಮೃತುಃ. 9. ನೀಡು, ಕೊಡು. “ಯೌವನೇ ಸದಲಂಕಾರಾಃ  
 ಶೋಭಾಂ ವಿಭ್ರಾತುಃ ಸುಭ್ರವಃ” |

ಕರ್ಮಣಿಃ—ಭ್ರಿಯತೇ ಭ್ರಿಯತೇ ಭ್ರಿಯಂತೇ | ಭರ್ತಾ | ಭರಿಸ್ಯತೇ |  
 ಭ್ರಿಯತಾಂ | ಅಭ್ರಿಯತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸುಃ—ಭರತವ್ಯಃ | ಭರಣೀಯಃ | ಭಾರ್ಯಃ | ಭೂತಃ |  
 ಭೂತವಾನ್ | ವಿಭ್ರಾತುಃ | ವಿಭ್ರಾತುಃ | ವಿಭ್ರಾತುಃ | ಭರತುಃ |  
 ಭೂತಮ್ | ಭರಣಮ್ | ಭೂತವಾನ್ | ಸಂಭೂತ | “ಅಪ್ರಭೂತಮವಜ್ಜಗ-  
 ತ್ತ್ರಯಂ ವಿಭ್ರಾತುಃ ಸ್ವಿಜಗದೇಕದಂಪತಿ” ಯಾದಂ ೧೭-೫೭ |  
 “ವಿಭ್ರಾತುಃ ತ್ವದಭಿಲಾಪಚೇತಸೋಃ ಸ್ವಾದುತಾಂ ಪ್ರಸದನಂ ಚ ಶಾಶ್ವತಮ್”  
 ಯಾದಂ ೧೭-೨೭ | “ವಿಭ್ರಾಣಮಾಯತಿಮತೀಮವೃಥಾ ಶಿರೋಧಿ  
 ಪ್ರತ್ಯಗ್ರತಾಮತಿರಸಾಮಧಿಕಂ ದಧಂತಿ” ಮಾಘಂ ೫-೬೫ |

ಭೂತ ಭೃತ (ಪುಂ) 1. ಸಂಬಳ ಕೊಟ್ಟು ಕಾಪಾಡಲ್ಪಟ್ಟ  
 ಸೇವಕ. ಭ್ರಿಯತೇ ಸ್ವ—ಭೂತ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಕ್ತಃ”  
 (೩-೨-೧೦೨) | “ಉತ್ತಮಸ್ತ್ವಾಯುಧೀಯೋ ಯೋ ಮಧ್ಯಮಸ್ತು ಕೃಷಿ-  
 ವಲಃ | ಅಥಮೋ ಭಾರವಾಹೀ ಸ್ವಾದಿತೀವಂ ತ್ರಿವಿಧೋ ಭೂತಃ” |  
 “ಭೂತೋ ನಾರ್ತೋ ನ ಕುರ್ಯಾದ್ವಿ ದರ್ಪಾತ್ ಕರ್ಮ ಯಥೋದಿತಮ್” ಮನುಂ

೮-೨೧೫ | (ನಂ) 2. ಭರಣ, ಪೋಷಿಸುವುದು. 3.  
 ಮೂಲೆ ಹೊರುವುದು. ಭೂತ ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೧೪) |  
 (ವಿಂ) 4. ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಧರಿಸ  
 ಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟ. “ಭೂತನಿಖಿಲರಸಾತಲಃ ಸರಲಃ  
 ಶಿಖರಿಸಮೋಮಿತಿರೋಹಿತಾಂತರಿಕ್ಷಃ” ಮೃತ್ರಿಂ ೧೦-೫೮ |

ಭೂತಕ ಭೃತಕ (ಪುಂ) 1. ಸಂಬಳದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು.  
 ಭೂತ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” (೫-೪-೫) | 2. ಕೂಲಿಯಿಂದ  
 ಜೀವಿಸುವವನು, ಕೂಲಿಯಾಳು.

ಭೂತಕಾಧ್ಯಯನ ಭೃತಕಾಧ್ಯಯನ (ನಂ) ಸಂಬಳ ಪಡೆದ  
 ಉಪಾಧ್ಯಾಯನಿಂದ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವುದು, —ಪಾಠ  
 ಕಲಿಯುವುದು. ಭೂತಕಾಧ್ಯಯನಮ್ |

ಭೂತಕಾಧ್ಯಾಪಕ ಭೃತಕಾಧ್ಯಾಪಕ (ಪುಂ) ಸಂಬಳ ಪಡೆದು  
 ಪಾಠ ಕಲಿಸುವವನು. ಭೂತಕಃ ಸನ್ ಅಧ್ಯಾಪಯತಿ—ಅಧಿ+  
 ಇಙ್ (ಅಧ್ಯಯನೇ)+ಣಿಕ್ “ಫ್ಲು” (೩-೧-೧೩೩) | “ಭೂತಕಾ-  
 ಧ್ಯಾಪಕೋ ಯಶ್ಚ ಭೂತಕಾಧ್ಯಾಪಿತಸ್ತಥಾ” ಮನುಂ ೩-೧೫೬ |

ಭೂತಕಾಧ್ಯಾಪಿತ ಭೃತಕಾಧ್ಯಾಪಿತ (ವಿಂ) ಸಂಬಳ ಪಡೆದ  
 ಉಪಾಧ್ಯಾಯನಿಂದ ಕಲಿತವನು. ಭೂತಕಾಧ್ಯಾಪಿತಃ |  
 “ಭೂತಕಾಧ್ಯಾಪಿತಸ್ತಥಾ” ಮನುಂ ೩-೧೫೬ |

ಭೂತಿ ಭೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೇತನ, ಸಂಬಳ. 2. ಕೂಲಿ.  
 ಇ ಭೂ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೧೪) |  
 “ಭೂತಾನಾಂ ಚ ಭೂತಿ ವಿಧಾತ್ ಮಾಘಾಶ್ಚ ವಿವಿಧಾ ನೃಣಾಮ್”  
 ಮನುಂ ೯-೨೩೨ | 3. ಪೋಷಣೆ, ಸಾಕುವುದು. 4. ಮೂಲ್ಯ.  
 “ಭೂತಿರ್ಭರಣಮೂಲ್ಯಯೋಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 5. ಬಾಡಿಗೆ. ಭೂ  
 ಕರಂ “ಕ್ತಿನ್” |

ಭೂತಿಭುಜ್ ಭೃತಿಭುಜ್ (ಪುಂ) ಕೂಲಿಯಾಳು, ಜೀತದಾಳು,  
 ಕೂಲಿಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಭೂತಿ ವೇತನಂ ಭುಜ್ವತೇ  
 “ಕ್ತಿವ್” (೩-೨-೭೬) |

ಭೂತ್ಯ ಭೃತ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಸೇವಕ, ಅಳು. ಭೂ (ಭರಣೇ)  
 “ಕ್ತಿವ್” (೩-೧-೧೧೨) | ಭೂತ್ಯಾಃ ಕರ್ಮಕರಾಃ ಸಿಂ ಕೌಂ |  
 “ತ್ವದ್ಭೂತ್ಯಭೂತ್ಯಪರಿಚಾರಕಭೂತ್ಯಭೂತ್ಯಭೂತ್ಯಸ್ಯ ಭೂತ್ಯ ಇತಿ ಮಾ  
 ಸ್ಮರ ಲೋಕನಾಥ” ಮುಂ ಮಾಂ | 2. ರಾಜನ ಮಂತ್ರಿ,  
 ಅಮಾತ್ಯ. 3. ಸರಕಾರದ ಅಧಿಕಾರಿಗಳು. ಸುವರ್ಣವನ್ನು  
 ತೂಕಮಾಡಿ ಉಜ್ಜಿ ಕತ್ತರಿಸಿ ಮತ್ತು ಕಾಯಿಸಿ ಪರೀಕ್ಷಿಸು  
 ವಂತೆ ಭೃತ್ಯನನ್ನು ಅವನ ವಿದ್ಯೆ ಶೀಲ ಕುಲ ಮತ್ತು  
 ಅವನು ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ ಇವುಗಳಿಂದ ಪರೀಕ್ಷಿಸಿ ನೇಮಿಸಿ  
 ಕೊಳ್ಳಬೇಕು. “ಯಥಾ ಚತುರ್ಭಿಃ ಕನಕಂ ಪರೀಕ್ಷಯತೇ ತುಲಾಧರ್ಮ-  
 ಚ್ಚೇದನತಾಪನೇನ | ತಥಾ ಚತುರ್ಭಿಃ ಭೂತಕಃ ಪರೀಕ್ಷಯತೇ ಶ್ರುತೇನ  
 ಶೀಲೇನ ಕುಲೇನ ಕರ್ಮಣಾ” | “ಭೂತ್ಯವಿನಾ ಸ್ವಯಂ ರಾಜಾ



ಲೋಕಾನುಗ್ರಹಕಾರಿಭಿಃ । ಮಯುಕ್ತೇರಿವ ದೀಪ್ತಾಂಶುಸ್ತೇಜಸ್ವಯಪಿ  
ನ ಶೋಭತೇ" ಪಂಚತಂ ೧-೮೮ । (ವಿಂ) 4. ಪೋಷ್ಯ  
ಲ್ಪಡುವವನು, ಸಾಕಲ್ಪಡುವವನು.

ಭೃತ್ಯತ್ವ ಭೃತ್ಯತ್ವ (ನಂ) ಸೇವಕತನ, ದಾಸ್ಯ. ಭೃತ್ಯಸ್ಯ  
ಭಾವ: "ತಲ್" ।

ಭೃತ್ಯಾ ಭೃತ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೇತನ, ಕೂಲಿ. 2. ಸಂಬಳ.  
ಭೃತ್ (ಭರಣ) "ಕೃಪ್" (೩-೩-೯೯) । 3. ಪೋಷಣೆ,  
ಸಲಹುವುದು, ಕಾಪಾಡುವುದು. "ಕುಮಾರಭೃತ್ಯಾಕುಶಲೇ-  
ಽನುಷ್ಠಿತೇ ಮಿಥ್ಯಾಭಿರಾಪ್ತೇರಥ ಗರ್ಭಮರ್ಮಣಿ" ರಘುಂ ೩-೧೯ ।

ಭೃಶ ಭೃಶ (ನಂ) 1. ಅತಿಶಯ, ಹೆಚ್ಚಿಗೆ. ಭೃಶು (ಅಪತನೇ)  
ಅಂತರ್ಮಾವಿತ ಣಿಚ್ "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫) । (ವಿಂ) 2.  
ಅತಿಶಯವಾದ, ಹೇರಳವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. "ಭೃಶಕುಸುಮ-  
ಶರೇಪುಪಾತಮೋಹಾದನವಸಿತಾರ್ಥಪದಾಕುಲೋಽಭಿಲಾಪ:" ಕಿರಾಂ  
೧೦-೬೧ । (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3. ಅತಿಶಯವಾಗಿ, ಹೇರಳ  
ವಾಗಿ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ. "ಭೃಶಸ್ವಿದ: ಪುಲಕವಿಕಾಸಿಮೂರ್ತಯೋ  
ರಸಾಧಿಕೇ ಮನಸಿ ನಿವಿಷ್ಟಸಾಹಸಾ:" ಮಾಘಂ ೧೭-೪೮ ।  
4. ಅತಿಶಯವಾಗಿ, ಬಹಳವಾಗಿ. "ಭೃಶಂ ವಿಯೋಗಾನಲ-  
ತಪ್ಯಮಾನ ಕಿಂ ವೀಲಿಯಸೇ ನ ತ್ವಮಯೋಮಯಂ ಯದಿ" ನೆಪಂ ೯-೮೯ ।  
5. ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ, ಪುನಃ ಪುನಃ.

ಭೃಷ್ಠ ಭೃಷ್ಠ (ವಿಂ) ಹುರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಭ್ರಷ್ಟ (ಪಾಕೆ)  
"ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । ಸಂಪ್ರಸಾರಣಮ್ (೬-೧-೧೬) ।

ಭೃಷ್ಠಿ ಭೃಷ್ಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹುರಿಯುವುದು. ಭ್ರಷ್ಟ (ಪಾಕೆ)  
"ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) । ಸಂಪ್ರಸಾರಣಮ್ (೬-೧-೧೬) ।  
2. ಗಿಡಮರಗಳಲ್ಲದ ಪ್ರದೇಶ, ಸಸ್ಯಗಳಲ್ಲದ ತೋಟ.  
"ಭೃಷ್ಠಿ: ಸ್ಯಾಢ್ಞಜೇನ ಶೂನ್ಯವಾಟಿಕಾयां च योषिति" ಮೇದಿಂ ।

ಭೇಕ ಭೇಕ (ಪುಂ) 1. ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. ಭಿ ಭಿ (ಭಯ)  
"ಕನ್" (೩-೩-೪೩) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ "ಕೀಪ್"  
(೪-೧-೬೩) । ಭೇಕಿ ಭೇಕೀ. 2. ಮೇಘ, ಮೋಡ.  
"ಭೇಕೋ ಮಣ್ಡುಕಮೇವಯೋ:" ಮೇದಿಂ । (ತ್ರಿಂ) 3. ನಕ್ಷತ್ರ.  
"ಭೇಕಸ್ತು ತಾರಕೇ । ತ್ರಿಷು ವರ್ಷಾಂಶ್ವಿ ಪುಂಸಿ ಸ್ಥಾತ್" ನಾನಾರ್ಥಂ ।  
(ವಿಂ) 4. ಭೇರು, ಭಯದ ಸ್ವಭಾವದವನು. "ಭೇಕೋ  
ಮೇಘಮಣ್ಡುಕಭೀಷು" ಹೇಮಂ ।

ಭೇಕಟ ಭೇಕಟ (ಪುಂ) ಕೊಂಡುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಕ್ರಯಕ್ಕೆ  
ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಭೇಕ ಇವ ಟಲತಿ—ಟಲ (ವೆಕ್ಲವ್ಯ)  
"ಟ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) ।

ಭೇಕಪರ್ಣಿ ಭೇಕಪರ್ಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂಡಿಪ್ಪೆ.

ಭೇಡ ಭೇಡ (ಪುಂ) ಮೇಷ, ಟಗರು, ಗಂಡುಕುರಿ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
"ಕೀಪ್" । -ಕೀ -ಕೀ.

ಭೇತವ್ಯ ಭೇತವ್ಯ (ವಿಂ) ಭಯಪಡಬೇಕಾದ, ಹೆದರಬೇಕಾದ.  
ಭಿ ಭಿ (ಭವ) "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) । "ಭೇತವ್ಯಂ  
ನೃಪತೇಸ್ತತ: ಸಚಿವತೋ ರಾಜಸ್ತತೋ ವಲ್ಲಭಾದನ್ಯೇಮ್ಯಶ್ಚ ವಸಂತಿ  
ಯೇಷ್ಯ ಭವನೇ ಲಬ್ಧಪ್ರಸಾದಾ ವಿಠಾ:" ಮುಡ್ರಾಂ ೩-೧೪ ।  
"ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । ಭಯನೀಯಮ್ ಭಯನೀಯಮ್.

ಭೇತವ್ಯ ಭೇತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಒಡೆಯಬೇಕಾದ, ಸೇಳ  
ಬೇಕಾದ. 2. ಬೇರ್ಪಡಿಸಬೇಕಾದ, ಬೇರಮಾಡಬೇಕಾದ.  
3. ರಂಧ್ರಮಾಡಬೇಕಾದ, ವೆಜ್ಜ ಕೊರೆಯಬೇಕಾದ.  
4. (ರಹಸ್ಯವನ್ನು) ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 5. ಮಲ  
ವಿಸರ್ಜನೆ ಮಾಡಿಸಬೇಕಾದ. ಮಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ)  
"ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) । "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) ।  
ಭೇದನೀಯಮ್ ಭೇದನೀಯಮ್.

ಭೇತ್ ಭೇತ್ (ವಿಂ) 1. ಭೇದಿಸುವವನು, ಒಡೆಯುವವನು,  
ಸೇಳುವವನು. ಮಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ತೃ" (೩-೧-೧೩೩) ।  
2. ತೊಂದರೆಪಡಿಸುವವನು, ನೆಮ್ಮದಿಗೆ ಭಂಗವನ್ನುಂಟು  
ಮಾಡುವವನು. 3. ರಹಸ್ಯವನ್ನು ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸುವವನು,  
ಗುಟ್ಟನ್ನು ಹೊರಗೆಡಹುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಕೀಪ್"  
(೪-೧-೫) । ಭೇತ್ರಿ ಭೇತ್ರಿ.

ಭೇದ ಭೇದ (ಪುಂ) 1. ಭೇದಿಸುವುದು, ಒಡೆಯುವುದು,  
ಸೇಳುವುದು. 2. ಬೇರಮಾಡುವುದು, ತುಂಡುಮಾಡು  
ವುದು. 3. ರಂಧ್ರ ಮಾಡುವುದು, ತೂತು ಮಾಡುವುದು,  
ವೆಜ್ಜ ಕೊರೆಯುವುದು. 4. ಬಿರುಕು ಮಾಡುವುದು, ಕಂಡಿ  
ಹೊಡೆಯುವುದು. ಮಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಕನ್"  
(೩-೩-೧೮) । 5. ನಾಲ್ಕು ಉಪಾಯಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ  
ಭೇದೋಪಾಯ. ಮಿದಿರ್ ಕರಂ "ಕನ್" (೩-೨-೧೨೧) ।  
ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಅವನ ಮಿತ್ರಾದಿ  
ಗಳನ್ನು ಬೇರ್ಪಡಿಸುವ ಒಂದು ಉಪಾಯವಿದು. "ಪರಸ್ಪರಂ  
ತು ಯೇ ದುಷ್ಠಾ: ಕೃದ್ಧಾ ಭೀತಾವಮಾನಿತಾ: । ತेषಾಂ ಭೇದಂ ಪ್ರಯುಜ್ಜೀತ  
ಭೇದಸಾಧ್ಯಾ ಹಿ ತೇ ಮತಾ:" । 6. ವೈತ್ಯಾಸ, ತಾರತಮ್ಯ.  
"ನ ವಸ್ತುಭೇದಪ್ರತಿಪತ್ತಿರಸ್ತಿ ಮೇ ತಥಾಪಿ ಭಕ್ತಿಪ್ರಣೇಂದ್ರ-  
ಶೇಖರೇ" ಭರ್ತುಂ ೩-೮೪ । 7. ವೈತ್ಯಾಸ, ಬದಲಾವಣೆ.  
"ನ ಬುದ್ಧಿಭೇದಂ ಜನಯೇದಜ್ಞಾನಾಂ ಕರ್ಮಸಂಜ್ಞಿನಾಮ್" ಗೀತಾ ೩-೨೬ ।  
8. ರಹಸ್ಯವನ್ನು ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸುವುದು, ಗುಟ್ಟನ್ನು  
ಹೊರಗೆಡಹುವುದು. 9. ವೈವಿಧ್ಯ, ಬಗೆ ಬಗೆಯಾಗಿರು  
ವುದು. "ಅಥ ನಾಯಿಕಾ ತ್ರಿಭೇದಾ ಸ್ವಾನ್ಯಾ ಸಾಧಾರಣಿ ಸ್ತ್ರೀತಿ"  
ಸಾಂ ದಂ ೩-೫೬ । 10. ವಿರೇಚನ, ಮಲವಿಸರ್ಜನೆ.

ಭೇದಕ ಭೇದಕ (ವಿಂ) 1. ಭೇದಿಸುವ, ಸೇಳುವ. 2.  
ಬೇರ್ಪಡಿಸುವ, ತುಂಡುಮಾಡುವ. 3. ರಂಧ್ರಮಾಡುವ.



4. ವ್ಯತ್ಯಾಸ ತೋರಿಸುವ. 5. ರಹಸ್ಯವನ್ನು ಬಹಿರಂಗ ಪಡಿಸುವ. 6. ಮಲವಿಸರ್ಜನೆ ಮಾಡಿಸುವ. ಮಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಫಲ್" (3-1-133) | ಸ್ತ್ರಿಯಾ ಭೇದಿಕಾ ಭೇದಿಕಾ.

**ಭೇದನ ಭೇದನ (ನಂ)** 1. ಸೀಳುವುದು, ಒಡೆಯುವುದು. 2. ಬೇರ್ಪಡಿಸುವುದು, ಬೇರೆ ಮಾಡುವುದು. 3. ರಂಧ್ರ ಮಾಡುವುದು, ತೂತು ಕೊರೆಯುವುದು. 4. ವ್ಯತ್ಯಾಸ ತೋರಿಸುವುದು. 5. ರಹಸ್ಯವನ್ನು ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸುವುದು. 6. ಮಲವಿಸರ್ಜನೆ ಮಾಡಿಸುವುದು. ಮಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) | (ವಿಂ) 7. ಸೀಳುವ. 8. ಬೇರ್ಪಡಿಸುವ. 9. ರಂಧ್ರ ಮಾಡುವ. 10. ಗುಟ್ಟನ್ನು ಹೊರಗೆಡಹುವ. 11. ವ್ಯತ್ಯಾಸ ತೋರಿಸುವ. 12. ಮಲವಿಸರ್ಜನೆ ಮಾಡಿಸುವ. ಮಿದಿರ್ + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (3-1-134) | (ಪುಂ) 13. ಸೂಕರ, ವರಾಹ, ಹಂದಿ. 14. ಅಮ್ಲವೇತಸ, ಹುಳಿಹಬ್ಬೆ.

**ಭೇದನೀಯ ಭೇದನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಭೇದಿಸಬೇಕಾದ, ಸೀಳಬೇಕಾದ, ಒಡೆಯಬೇಕಾದ. 2. ಬೇರ್ಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 3. ರಂಧ್ರ ಮಾಡಬೇಕಾದ. 4. ವ್ಯತ್ಯಾಸ ತೋರಿಸಬೇಕಾದ. 5. ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 6. ಮಲ ವಿಸರ್ಜನೆ ಮಾಡಿಸಬೇಕಾದ. ಮಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) | "ತವ್ಯ:" (3-1-96) | **ಭೇದನೀಯ: ಭೇತ್ತವ್ಯ:**

**ಭೇದಿತ ಭೇದಿತ (ವಿಂ)** 1. ಸೀಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಭೇದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತುಂಡುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ರಂಧ್ರ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತೂತು ಕೊರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ವ್ಯತ್ಯಾಸ ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. (ರಹಸ್ಯ) ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ವಿರೇಚನ ಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಮಿದಿರ್—(ವಿದಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102) |

**ಭೇದಿನ್ ಭೇದಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಸೀಳುವ, ಭೇದಿಸುವ. 2. ಬೇರ್ಪಡಿಸುವ, ಬೇರೆ ಮಾಡುವ. 3. ರಂಧ್ರ ಕೊರೆಯುವ. 4. ವ್ಯತ್ಯಾಸತೋರಿಸುವ. 5. ಗುಟ್ಟನ್ನು ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸುವ. 6. ವಿರೇಚನಮಾಡಿಸುವ. ಮಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಣಿತಿ:" (3-2-96) | (ಪುಂ) 7. ಹುಳಿಹಬ್ಬೆ.

**ಭೇದುರ ಭೇದುರ (ನಂ)** ವಜ್ರಾಯುಧ. ಮಿದುರ ಪೃಷಂ |

**ಭೇದ್ಯ ಭೇದ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಸೀಳಲ್ಪಡುವ. 2. ಬೇರೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ರಂಧ್ರ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 4. ವ್ಯತ್ಯಾಸ ತೋರಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. (ರಹಸ್ಯ) ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ಮಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಯತ್"

(3-1-124) | 6. ವಿಶೇಷ್ಯ. ಭೇದನಿತ್ಯಮಹತಿ "ಯತ್" (4-1-64) |

**ಭೇದಗಾಮಿ ಭೇದ್ಯಗಾಮಿ (ವಿಂ)** ವಿಶೇಷ್ಯಾಧೀನವಾದ. ಭೇದಂ ವಿಶೇಷ್ಯಂ ಗच्छತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಣಿತಿ:" (3-2-96) | "ತ್ರಿವೇಷಾಂ ಭೇದಗಾಮಿ ಯತ್" ಅಮಂ |

**ಭೇದಲಿಂಗ ಭೇದ್ಯಲಿಂಗ (ವಿಂ)** ವಿಶೇಷ್ಯಾಧೀನ ಲಿಂಗವುಳ್ಳ (ಶಬ್ದ).

**ಭೇನ ಭೇನ (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯ, ರವಿ. 2. ಚಂದ್ರ. ಭಾನಾಂ ಗಮಸ್ತೀನಾಂ ನಕ್ಷತ್ರಾಣಾಂ ವಾ ಇನಃ | "ಭೇನಃ ಸೂರ್ಯೋ ನಿಶಾಕರೇ" ವೈಜಂ |

**ಭೇರ ಭೇರ (ಪುಂ)** ಪಟಹ, ಭೇರಿ, ನಗಾರಿ ವಿಭೇದ್ಯಸ್ಮಾತ್—ವಿ ಭಿ (ಭಯೇ) "ರನ್" (3-2-29) | ನಿಪಾಂ |

**ಭೇರಿ ಭೇರಿ, ಭೇರಿ ಭೇರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ನಗಾರಿ. ವಿ ಭಿ (ಭಯೇ) "ಕ್ರಿನ್" (3-4-66) | "ರನ್" (3-2-29) ವಾ | "ಛಿಪ್" (4-1-41) | "ಶಙ್ಖಾನ್ ದಮ್ನುಸ್ತಾಡ್ಯಂತಿ ಸ್ಮ ಭೇರಿ:" ಚಂ ಭಾಂ |

**ಭೇರುಂಡ ಭೇರುಂಡ (ಪುಂ)** 1. ಭೇರುಂಡ ಪಕ್ಷಿ, ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹಕ್ಕಿ. (ನಂ) 2. ಗರ್ಭಧಾರಣೆ, ಗರ್ಭ ಧರಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 3. ಭಯಂಕರವಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ಯಕ್ಷಿಣಿ, ಯಕ್ಷ ಹೆಂಗಸು. 5. ಒಂದು ದೇವತೆ. "ಭೇರುಂಡೋ ದೇವತಾಭೇದೇ ಪಕ್ಷಿಭೇದೇ ಭಯಂಕರೇ" ನಾನಾರ್ಥರಂ | "ಭೇರುಂಡಾ ದೇವತಾಭೇದಯಕ್ಷಿಣ್ಯಂತರಯೋಃ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ | ಭಯಾನಕೇ ವಾಚ್ಯವತ್" ಮೇದಿಂ |

**ಭೇಲ ಭೇಲ (ಪುಂ)** 1. ಸಣ್ಣ ಜಾತಿಯ ಹುಲಿ. ವಿ ಭಿ (ಭಯೇ) "ರನ್" (3-2-29) | ರಸ್ಯ ಲತ್ವಮ್ | "ಹುಂಡಶ್ರಾಲ್ಪಸ್ತ್ವಯಂ ದ್ವಿಪಿ ಚುಲಕೋ ಭೇಲಮೇಹಿತೌ" ವೈಜಂ | 2. ತೆಪ್ಪ, ಹರಿಗೋಲು. 3. ಒಬ್ಬ ಮುನಿ. (ವಿಂ) 4. ಭಯ ಸ್ವಭಾವದವನು. 5. ಮೂರ್ಖ, ಬುದ್ಧಿಯಿಲ್ಲದವನು, ದಡ್ಡ. "ಭೇಲಃ ಪ್ಲವೇ ಮುನಿಭೇದೇ ಮೀರೌ ಬುದ್ಧಿ-ವಿವರ್ಜಿತೇ" ಹೇಮಂ | 6. ಚಂಚಲವಾದ.

**ಭೇಲಕ ಭೇಲಕ (ಪುಂ)** ತೆಪ್ಪ, ಹರಿಗೋಲು. ಭೇಲ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:" |

**ಭೇಷ ಭೇಷ (ಪುಂ)** ರೋಗಭಯ.

**ಭೇಷಜ ಭೇಷಜ (ನಂ)** ಔಷಧ, ಮದ್ದು. ಭೇಷಂ ರೋಗಭಯಂ ಜಯತಿ—ಜಿ (ಜಯೇ) "ಙ:" (3-2-101) | "ಅತಿ-ವೀರ್ಯವತೀವ ಭೇಷಜೇ ಬಹುರಲ್ಪೀಯಸಿ ದೃಶ್ಯತೇ ಗುಣಃ" ಕಿರಾಂ 2-4 | [ಔಷಧ ಸೇವನೆಯ ಕಾಲ ಮತ್ತು ಕ್ರಮಗಳಿಗೆ "ಭೇಷಜ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]



ಭೇಷಜಾಙ್ಗ ಭೇಷಜಾಙ್ಗ (ನಂ) ಅನುವಾನ, ಔಷಧಸೇವ  
ನೆಯ ನಂತರ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ ನೀರು ಮೊದಲಾದುದು.  
ಭೇಷಜಸ್ಯಾಙ್ಗಮ್ |

ಭೇಷ ಭೈಕ್ಷ್ಯ (ನಂ) 1. ಭಿಕ್ಷೆ, ಬೇಡುವಿಕೆ, ಯಾಚಿಸುವುದು.  
ಭಿಕ್ಷಾ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" | 2. ಭಿಕ್ಷೆಯಿಂದ ತಂದ ವಸ್ತು.  
"ಮೃತಂ ಕ್ಲಿ ಯಾಚಿತಂ ಭೇಷಜಮೃತಂ ಸ್ಯಾದಯಾಚಿತಮ್" ವೈಜಂ |  
3. ಭಿಕ್ಷೆಯ ಸಮೂಹ, ಯಾಚಿಸಿ ತಂದ ವಸ್ತುಗಳ ರಾಶಿ.  
ಭಿಕ್ಷಾಣಾಂ ಸಮೂಹ: "ಅನ್" (೪-೨-೩೮) | 4. ಭಿಕ್ಷೆಯ  
ಕ್ರಮವನ್ನು ಹೇಳುವ ಗ್ರಂಥದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ. ಭಿಕ್ಷಾ  
"ಅನ್" (೪-೩-೭೩) |

ಭೇಷಚರ್ಯಾ ಭೈಕ್ಷ್ಯ ಚರ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭಿಕ್ಷಾಟನೆ, ಭಿಕ್ಷೆಗಾಗಿ  
ತಿರುಗಾಟ.

ಭೇಷಜೀವಿಕಾ ಭೈಕ್ಷ್ಯ ಜೀವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭಿಕ್ಷೆಯಿಂದ  
ಜೀವಿಸುವಿಕೆ, ಯಾಚನೆಯ ಆಹಾರದಿಂದ ಬದುಕುವುದು.  
ಭೇಷಜೇಣ ಜೀವಿಕಾ |

ಭೇಷುಕ ಭೈಕ್ಷ್ಯುಕ (ನಂ) ಭಿಕ್ಷುಕರ ಸಮೂಹ, ಯಾಚಕರ  
ಗುಂಪು. ಭಿಕ್ಷುಕಾಣಾಂ ಸಮೂಹ: "ಅನ್" (೪-೨-೪೫) |

ಭೇಷ್ಯ ಭೈಕ್ಷ್ಯ (ನಂ) ಭಿಕ್ಷೆ, ತಿರುಪೆಯಿಂದ ಪಡೆದ ಆಹಾರ.  
ಭಿಕ್ಷಾ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಏನ್" (ವಾಂ ೫-೧-೧೨೪) |

ಭೇದಿಕ ಭೈದಿಕ (ವಿಂ) ನಿತ್ಯವೂ ಒಡೆಯಲು ಅರ್ಹವಾದ.  
ಭೇದ ನಿಯಮಹಂತಿ "ಠಕ್" (೫-೧-೬೪) |

ಭೇಮಿ ಭೈಮೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭೀಮಕಾದಶಿ, ಮಾಘ ಶುಕ್ಲ  
ಏಕಾದಶಿ. ಭೀಮೇನ ಉಪಾಸಿತಾ ಭೀಮಸ್ಯೇಯಂ ವಾ "ಅನ್"  
(೪-೩-೧೨೦) | "ಮಾಘಮಾಸೇ ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷೇ ಸೂರ್ಯಕ್ಷೇಣ ಯುತಾ  
ಪುರಾ | ಏಕಾದಶಿ ತಥಾ ತ್ರೇಷಾ ಭೀಮೇನ ಸಮುಪಾಸಿತಾ" |  
2. ಭೀಮರಾಜನ ಪುತ್ರಿ, ದಮಯಂತಿ. ಭೀಮಸ್ಯ ರಾಜ್ಞಃ  
ಅಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ "ಅನ್" (೪-೧-೯೨) | "ಭೇಮಿ ನಿರೀಕ್ಷಾ-  
ಭಿಮುಖಿ ಮಧೋನಃ ಸ್ವಾರಾಜ್ಯಲಕ್ಷ್ಮೀರಮೃತಾಮೃತಸೂಯಾಂ | ದೃಷ್ಟ್ವಾ  
ತತಸ್ತತ್ಪರಿಹಾರಿಣಿಂ ತಾಂ ವ್ರಿಡಂ ಬಿಡೌಜಃ ಪ್ರವಣಾಮೃತಾಂ"  
ನೈಷಂ ೧೪-೩೫ |

ಭೇಮರಥಿ ಭೈಮರಥೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನುಷ್ಯನ ಜೀವಮಾನ  
ದಲ್ಲಿ 77ನೆಯ ವರ್ಷದ 7ನೆಯ ಮಾಸದ 7ನೆಯ  
ರಾತ್ರಿ. ಇದು ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ಒಂದು ಗಂಡಕಾಲವಾದುದು  
ರಿಂದ ಈ ದಿವಸ ಶಾಂತಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು. "ಯಾ  
ಸಪ್ತಸಪ್ತತತಮೇ ವರ್ಷೇ ಮಾಸಿ ಚ ಸಪ್ತಮೇ | ಸಪ್ತಮಿ ಪ್ರಾಣಿನಾಂ  
ಧೋರಾ ರಾತ್ರಿಭೇಮರಥಿ ಹಿ ಸಾ" ವೈಜಂ |

ಭೇಮಸೇನಿ ಭೈಮಸೇನಿ (ಪುಂ) ಭೀಮಸೇನನ ಮಗ. ಭೀಮ-  
ಸೇನಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಐನ್" (೪-೧-೯೫) |

ಭೇರವ ಭೈರವ (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಶಂಕರ, ಪರಮೇಶ್ವರ  
ಭೀರ್ಮಯಾ ರವಿ ಯಸ್ಯ ಭೀರವಃ ತತಃ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" |  
2. ಸಂಗೀತದ ರಾಗದ ಒಂದು ಭೇದ. ಈ ರಾಗವು  
ಮಹಾದೇವನ ಮುಖದಿಂದ ಹೊರಟದ್ದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.  
3. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. "ಅಪ್ಯದ್ರೌ ಶೃಂಗಿಭೇರವಿ" ವೈಜಂ |  
4. ಭಯಾನಕ ರಸ. ಭೀರೋರಿದಂ ಭೇರವಮ್ "ಅನ್"  
(೪-೩-೧೨೦) | 5. ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ. (ವಿಂ) 6.  
ಭಯಂಕರವಾದ, ಭಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. "ಭೇರವಿ  
ಭೇಷಣಿ ರತ್ನೇ ರಾಗಭೇದಸ್ಯ ಮಾಧವಃ" ಹೇಮಂ |

ಭೇರವಿ ಭೈರವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಚಾಮುಂಡಿಕಾ.  
ಭೇರವ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೫) | "ಚಾಮುಂಡಾ ಚರ್ವಿಕಾ  
ಚರ್ಮಮುಂಡಾ ಮಾರ್ಜರಿಕಾಣಿಕಾ | ಕರ್ಣಮೋಡಿ ಮಹಾಗಂಧಾ ಭೇರವಿ  
ಚ ಕಪಾಲಿನಿ" |

ಭೇಷಜ್ಯ ಭೈಷಜ್ಯ (ನಂ) ಔಷಧ, ಮದ್ದು. ಭೇಷಜ ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಜ್ಯಃ" (೫-೪-೨೩) | ಆರೋಗ್ಯವನ್ನು ಕಾಪಾಡತಕ್ಕ  
ವಸ್ತುವು (ಔಷಧ) ಭೈಷಜ್ಯ. "ತದೇವ ಯುಕ್ತಂ ಭೇಷಜ್ಯಂ  
ಯದಾರೋಗ್ಯಾಯ ಕಲ್ಪತೇ" ಚರಕಂ ಸೂತ್ರಂ ೨ |

ಆಯಾ ರೋಗಗಳಿಗನುಸಾರವಾಗಿ ಔಷಧ  
ಸೇವನೆಯ ಕಾಲ ಮತ್ತು ಕ್ರಮ:

ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಔಷಧವನ್ನು ಅದರಲ್ಲೂ ಕಷಾಯ  
ವನ್ನು ಪ್ರಾತಃಕಾಲ (ಬೆಳಿಗ್ಗೆ) ಸೇವಿಸಬೇಕು. ಔಷಧವನ್ನು  
ಐದು ಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಸೇವಿಸಬೇಕು. (1) ಸೂರ್ಯೋದಯ  
ಕಾಲ (2) ಹಗಲು ಊಟದ ಕಾಲ (3) ಸಾಯಂಕಾಲ  
(4) ರಾತ್ರಿ ಭೋಜನಕಾಲ ಮತ್ತು (5) ಅರ್ಧರಾತ್ರಿ.  
"ಭೇಷಜ್ಯಮಮ್ಯವಹರೇತ್ ಪ್ರಭಾತೇ ಪ್ರಾಯಶಃ ಬುಧಃ | ಕಫಾಯಾಸ್ತು  
ವಿಶೇಷಣ ತತ್ರ ಭೇದಸ್ತು ದರ್ಶಿತಃ | ಜ್ವೇದಃ ಪಚ್ಚವಿಧಃ ಕಾಲೋ  
ಭೇಷಜ್ಯಗ್ರಹಣೇ ನೃಣಾಮ್ | ಕಿಂಚಿತ್ಸೂರ್ಯೋದಯೇ ಜಾತೇ ತಥಾ  
ದಿವಸಭೋಜನೇ | ಸಾಯಂತನೇ ಭೋಜನೇ ಚ ಮುಹುರ್ವಾಪಿ ತಥಾ  
ನಿಶಿ" ||

ಪಿತ್ತ ಮತ್ತು ಕಫ (ಶ್ಲೇಷ್ಮ) ಉಲ್ಬಣವಾದಾಗಲೂ  
ಭೇದಿ ಮತ್ತು ವಾಂತಿಗಾಗಿ ಔಷಧ ಸೇವಿಸುವಾಗಲೂ  
ಶಸ್ತ್ರಚಿಕಿತ್ಸೆಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿಯೂ ಪ್ರಾತಃಕಾಲ (ಸೂರ್ಯೋ-  
ದಯ ಕಾಲ) ದಲ್ಲಿ ಖಾಲಿ ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಔಷಧ ಸೇವಿಸ  
ಬೇಕು. "ಪ್ರಾತಃ ಪಿತ್ತಕಫೋದ್ರೇಕೇ ವಿರೇಕವಮನಾರ್ಥಯಃ |  
ಲೇಖನಾರ್ಥೇ ಚ ಭೇಷಜ್ಯಂ ಪ್ರಭಾತೇನವಮಾಹರೇತ್" |

ಅಪಾನವಾಯುವು ವೃತ್ತಾಂತವಾದಾಗ ಹಗಲು  
ಭೋಜನದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಔಷಧ ಸೇವಿಸಬೇಕು. "ಭೇಷಜ್ಯಂ  
ವಿಗುಣೇಷ್ಯಾನೇ ಭೋಜನಾಗ್ರೇ ಪ್ರಾಶಸ್ಯತೇ | ಅರುಚಿ ಚಿತ್ರಭೋಜ್ಯಶ್ಚ  
ಮಿಶ್ರಂ ರುಚಿರಮಾಹರೇತ್" |



ಸಮಾನವಾಯುವು ವ್ಯತ್ಯಾಸಗೊಂಡಾಗ ಅಗ್ನಿಯು ಮಂದವಾಗುವುದರಿಂದ ವೈದ್ಯನು ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ಔಷಧವನ್ನು ಉಟದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಕೊಡಬೇಕು. “ಸಮಾನವಾತೇ ವಿಗುಣೇ ಮಂದೇನಾವತಿರ್ದೀಪನಮ್ | ದದ್ಯಾದ್ಭೋಜನಮಧ್ಯೇ ಚ ಶೇಷಜ್ಯಂ ಕುಶಲೋ ಮಿಷಕ್” ||

ವ್ಯಾನವಾಯುವು ಉದ್ರೇಕಗೊಂಡಾಗ ಭೋಜನಾನಂತರ ಔಷಧ ಸೇವಿಸಬೇಕು. ಬಿಕ್ಕಳಿಕೆಗೂ ವಾತರೋಗಗಳಿಗೂ ಉಟಕ್ಕೆ ಮುಂಚೆಯೂ ಅನಂತರವೂ ಸೇವಿಸಬೇಕು. “ವ್ಯಾನಕೋಪೇ ತು ಶೇಷಜ್ಯಂ ಭೋಜನಾಂತೇ ಸಮಾಹರೇತ್ | ಹಿವ್ವಕಾಕ್ಷೇಪಕಕಮ್ಮೇಷು ಪೂರ್ವಮಂತೇ ಚ ಭೋಜನಾತ್” |

ಉದಾನವಾಯುವು ಪ್ರಶುಖಿತವಾದಾಗ ಸ್ವರದಲ್ಲಿ ದೋಷಕಂಡರೆ ಸಾಯಂಕಾಲ ಭೋಜನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿ ಕಬಳದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲೂ ಔಷಧ ಸೇವಿಸಬೇಕು. “ಉದಾನೇ ಕೃಪಿತೇ ವಾತೇ ಸ್ವರಮಜ್ಜಾದಿಕಾರಿಣಿ | ಪ್ರಾಸಪ್ರಾಸಾಂತರೇ ದೇಯಂ ಶೇಷಜ್ಯಂ ಸಾಂಧ್ಯಭೋಜನೇ” |

ಪ್ರಾಣವಾಯುವು ವ್ಯತ್ಯಾಸಗೊಂಡಾಗ ಸಾಯಂಕಾಲದ ಉಟದ ನಂತರ ಔಷಧ ಸೇವಿಸಬೇಕು. “ಪ್ರಾಣೇ ಪ್ರದೃಷ್ಟೇ ಸಾಂಧ್ಯಸ್ಯ ಭುಕ್ತಸ್ಯಾಂತೇ ಪ್ರದೀಯತೇ | ಔಷಧಂ ಪ್ರಾಯಶೋ ಧೀರೈಃ ಕಾಲೋಷ್ಯಂ ಸ್ಯಾತ್ ತೃತೀಯಕಃ” ||

ಪದೇ ಪದೇ ದಾಹ ವಾಂತಿ ಬಿಕ್ಕಳಿಕೆ ಮತ್ತು ಉಬ್ಬಿಸ ಬಾಧೆಗಳುಂಟಾದಾಗ ರಾತ್ರಿ ಉಟದ ಸಮಯದಲ್ಲೇ ಔಷಧವನ್ನು ಕೊಡಬೇಕು. ಇದು ನಾಲ್ಕನೆಯ ಕಾಲ. “ಮುಹುರ್ಮುಹುಶ್ಚ ತುಡ್ಛದಿಹಿವ್ವಕಾಶ್ವಾಸಗರೇಷು ಚ | ಸಾಂಧ್ಯಂ ಚ ಶೇಷಜ್ಯಂ ದದ್ಯಾದಿತಿ ಕಾಲಶ್ಚತುರ್ಥಕಃ” || “ಋತ್ವಿಜಶ್ಚವಿಕಾರೇಷು ಲೇಖನೇ ಬೃಹಣಿ ತಥಾ | ಪಾಚನೇ ಶಮನೇ ದೇಯಮನನ್ಯಂ ಶೇಷಜ್ಯಂ ನಿಶಿ” ಇದು ಐದನೆಯ ಕಾಲ.

**ಶೋಕವ್ಯ ಭೋಕ್ತೃವ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಭುಜಿಸಲ್ಪಡುವ, ತಿನ್ನಲ್ಪಡುವ. 2. ತಿನ್ನಬೇಕಾದ. 3. ತಿನ್ನಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ಅನುಭವಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಅನುಭವಿಸಬೇಕಾದ. 6. ಅನುಭವಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. “ಪ್ರಾರಂಭಂ ಕಿಲ ಶೋಕವ್ಯಂ ಶುಭಂ ವಾಪ್ಯಶಯಶುಭಮ್” | ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೧೬) | “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೧೬) | ಭೋಜನೀಯಮ್ ಭೋಜನೀಯಮ್.

**ಶೋಕವ್ಯ ಭೋಕ್ತೃ (ಪುಂ)** 1. ಎಷ್ಟು. ಭಕ್ತರರ್ಪಿತಂ ಭೂತಕೀರ್ಮಣ್ಯಪರಕಸಹಿತತಂಜಲಪಕ್ವಪಾಯಸಾದಿಕಂ ಅಮೃತಮಿವ ಭುಕ್ತೇ-ಭುನಕ್ತಿ ಪಾಲಯತಿ ವಾ — ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) “ತುಚ್ಛ” (೩-೧-೧೩೩) | “ಶೋಕವ್ಯಾರ್ಪಿತಸ್ಯ ಶೋಕವ್ಯತ್ವಾತ್ ಶೋಕವ್ಯಾ ಸ್ಯಾದಮೃತಸ್ಯ ವಾ” ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ | “ಪ್ರಾಜಿಷ್ಣು-ಭೋಜನಂ ಶೋಕವ್ಯ” ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ಭೋಜನ

ಮಾಡುವವನು, ಉಟಮಾಡುವವನು. ಭುಜ “ತುಚ್ಛ” | 3. ಸುಖವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವವನು. 4. ಕಾಪಾಡುವವನು, ಸಲಹುವವನು. 5. ಅನುಭವಿಸುವವನು, ಉಪಯೋಗಿಸುವವನು. x

**ಶೋಕವ್ಯ ಭೋಗ (ಪುಂ)** 1. ಸುಖ, ಸೌಖ್ಯ. ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) “ವ್ಯ” (೩-೩-೧೮) | “ತಂ ರಾಗಬಂಧಿಷ್ವವಿ-ತೃಪ್ತಮೇವ ಭೋಗೇಷು ಸೌಖ್ಯವಿಶೇಷಭೋಗ್ಯಮ್” ರಘುಂ ೧೮-೧೯ | 2. ದುಃಖ. 3. ಸುಖ ದುಃಖಗಳ ಅನುಭವ. 4. ಭೋಜನ, ಉಟ. 5. ಪೋಷಣೆ, ಪಾಲನೆ. 6. ದೇಹ, ಶರೀರ. 7. ಬಾಡಿಗೆ. 8. ವೇಶ್ಯೆಯ ಬಾಡಿಗೆ, ಸೂಳೆಗೆ ಕೊಡುವ ಹಣ. 9. ಧನ, ಸಂಪತ್ತು. 10. ಸರ್ಪದ ದೇಹ. 11. ಸರ್ಪದ ಹೆಡೆ. 12. ರಾಜ್ಯ. 13. ಭೂಮಿಯ ಫಲಾನುಭವ. 14. ಸ್ವರ್ಗ ಚಂದನಾದಿ ಸುಖದ ವಸ್ತುಗಳು. 15. ಭೋಜನಕೂಟ, ಔತಣದ ಸಮಾರಂಭ. “ಶೋಗೋ ರಾಜ್ಯೇ ಧನೇ ಸೌಖ್ಯೇ ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ | ಫಣೇ ದೇಹೇ ಚ ಸರ್ಪಸ್ಯ ವೇಶ್ಯಾದೀನಾಂ ಭೂತಾವಪಿ” ವೇಜಂ | 16. ಮೇಷಾದಿ ದ್ವಾದಶ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯಾದಿ ಗ್ರಹಗಳ ಸಂಚಾರ.

**ಶೋಕವ್ಯ ಭೋಗಗೃಹ (ನಂ)** 1. ವಾಸಮಾಡುವ ಮನೆ. ಶೋಗಾರ್ಥಿ ಗೃಹಮ್ | 2. ದೇಹ, ಶರೀರ. 3. ಅಂತಃಪುರ.

**ಶೋಕವ್ಯ ಭೋಗದೇಹ (ಪುಂ)** ಪಾಪಪುಣ್ಯಗಳ ಫಲಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವ ಶರೀರ. ಭುಜ್ಯತೇ ಸುಖದುಃಖಾದಿಕಮತ್ರ — ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) ಅಧಿಂ “ವ್ಯ” (೩-೩-೧೨೧) | ಸ ಚಾಸೌ ದೇಹಶ್ಚ |

**ಶೋಕವ್ಯ ಭೋಗಭೂಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸುಖವನ್ನು ಅನುಭವಿಸಲು ಏರ್ಪಟ್ಟ ಭೂಮಿ, ಭಾರತ ವರ್ಷಕ್ಕಿಂತಲೂ ಅತಿರಿಕ್ತವಾದ ಭೂಮಿ, ಸ್ವರ್ಗ. ಶೋಗಾರ್ಥಿ ಭೂಮಿಃ | ಭಾರತವು ಕರ್ಮಭೂಮಿ. ಉಳಿದವು ಪುಣ್ಯಫಲವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವ ಭೋಗಭೂಮಿಗಳು. “ಅತ್ರಾಪಿ ಭಾರತಂ ಶ್ರೇಷ್ಠಂ ಜಮ್ಬವೀಪೇ ಮಹಾಮುನೇ | ಯತೋ ಹಿ ಕರ್ಮಭೂರೇಷಾ ಹ್ಯತೋಜ್ಯಾ ಶೋಗಭೂಮಯಃ” ವಿಷ್ಣುಪುಂ ೨-೩-೨೨ |

**ಶೋಕವ್ಯ ಭೋಗವತ್ (ಪುಂ)** 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಶೋಗಃ ಫಣಾಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೧೪) | 2. ನಾಟ್ಯ. “ಶೋಗವಾನ್ ನಾಟಕನಾಗಯೋಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | (ವಿಂ) 3. ಸುಖವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವವನು, ಸುಖಪಡುವವನು. ಶೋಗೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ | ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಜಿನ್” (೪-೧-೭೩) | -ವತ್ | 4. ಪಾತಾಳ ಲೋಕ, ಸರ್ಪಗಳ ಲೋಕ. 5. ಪಾತಾಳ ಗಂಗೆ. 6. ಹೆಣ್ಣು ಹಾವು. “ನಾಗಾ ಬಹುಫಣಾಃ



ಸರ್ಪಸ್ತೆಷಾಂ ಭೋಗವತಿ ಪುರಿ" ವೈಜಂ. "ಭೋಗವತಿ ಭುಜ್ಜಾನಾಂ ನಗರೀಸರಿತೋರಪಿ" ವಿಶ್ವಂ.

ಭೋಗಸಂಘನ್ ಭೋಗಸಂಘನ್ (ನಂ) 1. ವಾಸದ ಮನೆ. ಭೋಗಾರ್ಥ ಸಂಘ. 2. ರಾಣಿವಾಸ, ಅಂತಃಪುರ.

ಭೋಗಾವಲಿ ಭೋಗಾವಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುತ್ತಿಪಾಠಕನ ಪ್ರಶಂಸಾವಚನ.

ಭೋಗವಾಸ ಭೋಗವಾಸ (ಪುಂ) 1. ರಾಣಿವಾಸ, ಅಂತಃಪುರ. ಭೋಗಾರ್ಥ ಆವಾಸ: 2. ವಾಸದ ಮನೆ.

ಭೋಗಿಕ ಭೋಗಿಕ (ಪುಂ) ಅಶ್ವಪಾಲಕ, ಕುದುರೆಯನ್ನು ಉಪಚರಿಸುವವನು.

ಭೋಗಿಕಾಂತ ಭೋಗಿಕಾಂತ (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾಳಿ. "ಭೋಗಿಕಾಂತ: ಕಂಪಲಕ್ಷ್ಮಿ ಪಶ್ಚಧಾರಾವನಿಶ್ಚ ಸ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಭೋಗಿನ್ ಭೋಗಿನ್ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. 2. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. "ಭೋಗಿವೇದನಮಾರ್ಗೇ ಚಂದನಾನಾಂ ಸಮರ್ಪಿತಮ್" ರಘುಂ ೪-೪೮. 3. ಗ್ರಾಮಾಧಿಪತಿ, ಗ್ರಾಮದ ಯಜಮಾನ. 4. ನಾಟಕ, ಕ್ಷೌರಿಕ. 5. ಆಶ್ಲೇಷಾಂಶಕ್ಷತ್ರ. (ವಿಂ) 6. ವಿಷಯಾಸಕ್ತ, ವಿಷಯ ಲಂಪಟ, ಸೌಖ್ಯವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವವನು. ಭೋಗೋಸ್ತಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫). ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ತೀಪ್" (೪-೧-೫). ಭೋಗಿನಿ ಭೋಗಿನೀ. 1. ಸೌಖ್ಯವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವ ಹೆಂಗಸು. 2. ರಾಜನ ಪಟ್ಟಮಹಿಷಿಗಿಂತ ಬೇರೆಯಾದ ಇತರ ಪತ್ನಿಯರು. "ಭೋಗಿ ಭುಜ್ಜಮೇ ರಾಜಿ ಗ್ರಾಮಯಾ ನಾಪಿತೇಜಿ ಚ | ವಿಹಾಯ ಮಹಿಷಿಂ ಚಾನ್ಯಯೋಷಿತಿ ಭೋಗಿನಿ" ಮೇದಿಂ.

ಭೋಗಿಭುಜ್ ಭೋಗಿಭುಜ್ (ಪುಂ) 1. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಭೋಗಿನ್ ಭುಜ್ಜತೇ—ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ:) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬). 2. ಮುಂಗುಸಿ, ಕೇರ.

ಭೋಗಿನ್ದ್ರ ಭೋಗಿನ್ದ್ರ, -ದೇಶ ಈಶ (ಪುಂ) 1. ಆದಿಶೇಷ, ಸರ್ಪಗಳ ರಾಜ. 2. ವಾಸುಕಿ. ಭೋಗಿನಾಮಿನ್ದ್ರ: ದೇಶೋ ವಾ.

ಭೋಗ್ಯ ಭೋಗ್ಯ (ನಂ) 1. ಧನ, ಸಂಪತ್ತು. ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ:) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪). 2. ಧಾನ್ಯ, ಕಾಳು. (ವಿಂ) 3. ಅನುಭವಿಸಲ್ಪಡುವ. "ಶಾಪೇನಾಸ್ತಂಗಮಿತಮಹಿಮಾ ವರ್ಷಭೋಗ್ಯೇನ ಭರ್ತು:" ಮೇಘಂ ೧-೧. 4. ಅನುಭವಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 5. ಸುಖವನ್ನು ಅನುಭವಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. "ತಂ ರಾಗವನ್ವಿಷ್ವವಿತೃಪ್ತಮೇವ ಭೋಗೇ ಸೌಮ್ಯವಿಶೇಷಭೋಗ್ಯಮ್" ರಘುಂ ೧೮-೧೯. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೋಗ್ಯಾ ಭೋಗ್ಯಾ. 6. ವೇಶ್ಯ, ಸೂಳೆ.

ಭೋಜ ಭೋಜ (ಪುಂ) 1. ಭೋಜರಾಜ, ಮೂಲವದೇಶದ ಸಿಂಧುಲರಾಜನ ಪುತ್ರ. ಇವನ ರಾಜಧಾನಿ ಧಾರಾನಗರ. [ಸಿಂಧುಲ ರಾಜನು ತನ್ನ ವೃದ್ಧತ್ವದಲ್ಲಿ ರಾಜ ವನ್ನು ತಮ್ಮ ನಾದ ಮುಂಜನಿಗೆ ವಹಿಸಿ 5 ವರ್ಷದ ಭೋಜಕುಮಾರ ನನ್ನು ಅವನಿಗೇ ಒಪ್ಪಿಸಿದನು. ಒಂದು ದಿನ ರಾಜನು ಸಭೆಯಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಒಬ್ಬ ಜ್ಯೋತಿಸಿಯು ಒಂದು ಭೋಜ ರಾಜನು ಐವತ್ತೈದು ವರ್ಷಗಳು ಏಳು ತಿಂಗಳು ಮತ್ತು ಮೂರು ದಿನಗಳಕಾಲ ದಕ್ಷಿಣಾಪಥವನ್ನು ಆಳುವನೆಂದು ಹೇಳಿದಾಗ ಮುಂಜನು ಚಿಂತಾಕ್ರಾಂತನಾಗಿ ಸಾಮಂತ ರಾಜನಾದ ವತ್ಸರಾಜನ ಮೂಲಕ ಭೋಜಕುಮಾರನ ವಧೆಗೆ ಆಜ್ಞಾಪಿಸಿದನು. ವತ್ಸರಾಜನು ರಾಜಾಜ್ಞೆಯಿಂದ ಕುಮಾರನ ವಧೆಗೆ ಯತ್ನಿಸಿದಾಗ ಅವನ ಸಹೋದರನ "एक एव सुहृदमो निधनेऽप्यनुयाति यः। शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यच्च गच्छति" ಎಂಬ ವಾಕ್ಯವನ್ನು ಕೇಳಿ ವೈರಾಗ್ಯ ಹೊಂದಿದವನಾಗಿ ಭೋಜನನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಿ ಕೃತ್ರಿಮವಾದ ಅವನ ಶರಸ್ವನ್ನು ತಂದು ರಾಜನಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿದನು. ಶರಶ್ವೇದನ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಭೋಜನು ಹೇಳಿದ ನೆಂಬ "मान्धाता च महीपतिः कृतयुगालङ्कारभूतो गतः सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासी दशास्यान्तकः। अन्ये चापि युधिष्ठिरप्रभृतयो याता दिवं भूतले नैकेनापि समं गता वसुमती मुञ्ज त्वया यास्यति" ಈ ಶ್ಲೋಕ ವನ್ನು ಕೇಳಿ ರಾಜನು ಬಹಳ ದುಃಖಿತನಾಗಿ ಕೆಳಗೆ ಬಿದ್ದು ಒದ್ದಾಡಿದನು. ಬಳಿಕ ಇದಕ್ಕೆ ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞರಿಂದ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತಕ್ಕಾಗಿ ರಾಜನು ಅಗ್ನಿಪ್ರವೇಶಕ್ಕೆ ಸಿದ್ಧ ನಾಗಲು ಒಬ್ಬ ಕಾಪಾಲಿಕನು ಒಂದು ಭೋಜಕುಮಾರ ನನ್ನು ಬದುಕಿಸಿಕೊಡುವುದಾಗಿ ಹೇಳಿ ವತ್ಸರಾಜನು ತನ್ನ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ರಕ್ಷಿಸಿಟ್ಟಿದ್ದ ಭೋಜನನ್ನು ಕರೆತಂದು ರಾಜನಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿದನು. ಮುಂಜನು ಬಹಳ ಸಂತೋಷಗೊಂಡು ಭೋಜಕುಮಾರನಿಗೆ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕಮಾಡಿ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಅವನಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿ ತಾನು ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ತೆರಳಿದನು. ಭೋಜ ರಾಜನು ಸುಖವಾಗಿ ಧರ್ಮದಿಂದ ರಾಜ್ಯವನ್ನಾಳಿದನು. ಭೋಜನು ರಾಜನು ಮಾತ್ರವಲ್ಲದೆ ಸುಸ್ಥಿತದಲ್ಲಿ ದೊಡ್ಡ ಕವಿಯೂ ಆಗಿದ್ದನು. ಚಂಪೂರಾಮಾಯಣ ಸರಸ್ವತೀ ಕಂಠಾಭರಣ ಇತ್ಯಾದಿ ಗ್ರಂಥಗಳು ಭೋಜರಾಜವಿರಚಿತ ವಾದವು.] 2. ವಿದರ್ಭದೇಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. "अथश्वरेण ऋकंशिकानां स्वयंवराय स्वसुरिन्दुमत्याः। आप्तः कुमारानयनोत्सुकेन भोजेन दूतो रघवे विसृष्टः" ರಘುಂ ೪-೩೯. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 3. ಭೋಜದೇಶ. 4. ಭೋಜ ದೇಶದ ಜನರು.



**ಭೋಜಕ ಭೋಜಕ (ವಿಂ)** 1. ಊಟ ಮಾಡುವವನು.

ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

2. ರಸಾಸ್ವಾದ ಮಾಡುವವನು. 3. ಊಟ ಮಾಡಿಸುವವನು. ಭುಜ + ಣಿಕ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

**ಭೋಜಕ ಭೋಜಕಟಿ (ಪುಂ)** 1. ಭೋಜ ದೇಶ. (ನಂ)

2. ಭೋಜಕಟಪುರ. ರುಕ್ಮಿಣಿಯ ಸಹೋದರನಾದ ರುಕ್ಮಿಯಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಒಂದು ನಗರ. ಇದು ವಿದರ್ಭ ದೇಶದ ರಾಜಧಾನಿ.

**ಭೋಜದೇವ ಭೋಜದೇವ (ಪುಂ)** ಭೋಜ ಮಹಾರಾಜ. ಧಾರಾ ನಗರದ ದೊರೆ.

**ಭೋಜ ಭೋಜನ (ನಂ)** 1. ಊಟ. ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

**ಭೋಜನ ಕ್ರಮ :** ಮೊದಲು ದ್ರವರೂಪದ ಆಹಾರವನ್ನೂ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಕಠಿನವಾದ ಆಹಾರವನ್ನೂ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ದ್ರವಾಹಾರವನ್ನೂ ಸೇವಿಸುವವನಿಗೆ ಬಲ ಮತ್ತು ಆರೋಗ್ಯ ಕೆಡುವುದಿಲ್ಲ. "ಪ್ರಾಘ್ರವಂ ಪುಠೋಽನನ್ ವೈ ಮಧ್ಯೇ ಚ ಕಠಿನಾಶನಃ । ಪುನರಂತೇ ದ್ರವಾಶೀ ತು ಬಲಾರೋಘೇ ನ ಮುಚ್ಛತಿ" ।

**ಭೋಜನಕ್ಕೆ ಕೂಡಲು ದಿಕ್ಕಿನ ನಿಯಮ :** ಆಯುಸ್ಸನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು ಪೂರ್ವಾಭಿಮುಖನಾಗಿಯೂ ಯಶಸ್ಸನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು ದಕ್ಷಿಣಾಭಿಮುಖನಾಗಿಯೂ ಐಶ್ವರ್ಯವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು ಪಶ್ಚಿಮಾಭಿಮುಖನಾಗಿಯೂ ಸತ್ಯದ ಫಲವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು ಉತ್ತರಾಭಿಮುಖನಾಗಿಯೂ ಕುಳಿತು ಭೋಜನ ಮಾಡಬೇಕು. "ಆಯುಷ್ಯಂ ಪ್ರಾಡ್ಘಮುಕ್ತೋ ಭುಕ್ತೇ ಯಶಸ್ಯಂ ದಕ್ಷಿಣಾಮುಖಃ । ಶ್ರಿಯಂ ಪ್ರತ್ಯಙ್ಘಮುಕ್ತೋ ಭುಕ್ತೇ ಋತಂ ಭುಕ್ತೇ ಹೃದ್ಯದ್ಘಮುಖಃ" ಮನುಂ ೨-೫೨ ।

**ಭೋಜನದ ಪ್ರಮಾಣ :** ಜಠರದ (ಹೊಟ್ಟೆಯ) ಅರ್ಧ ಭಾಗವನ್ನು ಆಹಾರ (ಅನ್ನ)ದಿಂದಲೂ ಕಾಲು ಭಾಗ ನೀರಿನಿಂದಲೂ ತುಂಬಿ ಕಾಲು ಭಾಗದಷ್ಟು ಅವಕಾಶವನ್ನು ವಾಯು ಸಂಚಾರಕ್ಕಾಗಿ ಬಿಡಬೇಕು "ಜಠರಂ ಭೂಯದಧಮಗ್ನಿಭಗ್ನಿಂ ಜಲೇನ ಚ । ವಾಯೋಃ ಸಂಚರಣಾರ್ಥಂ ತು ಚತುರ್ದಶಮಂಶೇಷಯತ್" ವಿಷ್ಣುಪುಂ ।

ಜಾಯಾರಿಕೆಯಿಂದ ಪೀಡಿತನಾದಾಗ ಮೊದಲು ಆಹಾರವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡರೆ ಗುಲ್ಮರೋಗವೂ ಹಸಿದಿರುವಾಗ ನೀರನ್ನು ಕುಡಿದರೆ ಜಲೋದರರೋಗವೂ ಬರುವುದು. "ತೃಪಿತಸ್ತು ನ ಚಾಶನೀಯಾತ್ಕುಠಿತೋ ನ ಜಲಂ ಪಿಬೇತ್ । ತೃಪಿತಸ್ತು ಭವೇದ್ಗುಲ್ಮೋ ಕುಠಿತಸ್ತು ಜಲೋದರೀ" । ಭೋಜನ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ನೀರನ್ನು ಕುಡಿದರೂ ನೀರು ಕುಡಿ

ಯದೆ ಊಟಮಾಡಿದರೂ ಅನ್ನವು ಸರಿಯಾಗಿ ಜೀರ್ಣವಾಗುವುದಿಲ್ಲ. ಅದುದರಿಂದ ಜಾಣರಾಗಿದ್ದಾಗಲೂ ಊಟಮಾಡುವಾಗ ಪದೇ ಪದೇ ಮಿತವಾಗಿ ನೀರನ್ನು ಕುಡಿಯಬೇಕು. "ಅತ್ಯಮ್ಬುಪಾನಾನ್ ವಿಪಚ್ಯತೇಽಗ್ನಮನ್ಬುಪಾನಾನ್ವ ಸ ಏವ ದೋಷಃ । ತಸ್ಮಾನ್ನರೋ ವಹ್ನಿವಿವರ್ಧನಾಯ ಮುಹುರ್ಮುಹುರಾರಿ ಪಿಬೇದಭೂರಿ" । ಪರಮಾತ್ಮನು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿ ಕೊಟ್ಟಿದ್ದನ್ನು ಅವನಿಗೆ ಅರ್ಪಿಸಿ ಬಳಿಕ ನಾವು ಅದನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸಬೇಕು. ಯಜ್ಞದಿಂದ ಸಂತುಷ್ಟರಾದ ದೇವತೆಗಳು ನಮಗೆ ಸಕಲ ಸುಖಸಾಧನಗಳನ್ನೂ ಅನುಗ್ರಹಿಸುತ್ತಾರೆ. ಅವರು ಕೊಟ್ಟಿದ್ದನ್ನು ಅವರಿಗೆ ನಿವೇದಿಸದೆ ಉಪಯೋಗಿಸುವುದು ದೊಡ್ಡ ಅಪರಾಧ. ಹಾಗೆ ಮಾಡುವವನು ಕಳ್ಳನೆನಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ. "ಇಘಾನ್ ಭೋಗಾನ್ ಹಿ ವೋ ದೇವಾ ದಾಸ್ಯಂತೇ ಯಜ್ಞಭಾವಿತಾಃ । ತೇದಂತಾನಪ್ರದಾಯಮ್ಯೋ ಯೋ ಭುಕ್ತೇ ಸ್ತೇನ ಏವ ಸಃ" ಗೀತಾ ೩-೧೨ । 2. ವಿಷ್ಣು. ಉಪಾಸಿತೃಭಿಃ ಸುಖೇನ ಭುಜ್ಯತೇ ಅನುಭೂಯತೇ — ಭುಜ ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೩) । ಲಿಙ್ಗಮಶಿಷ್ಯ ಲೋಕಾಶ್ರಯಾತ್ । "ಸುಖೇನ ಭೋಜನಂ ಪ್ರಾಹುಯೋ ಭಕ್ತೇರನುಭೂಯತೇ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ । "ಆಜಿಷ್ಣುಭೋಜನಂ ಭೋಕ್ತಾ" ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ) 3. ಊಟ ಮಾಡಿಸುವವನು, ಪೋಷಿಸುವವನು, ಸಲಹುವವನು.

**ಭೋಜನೀಯ ಭೋಜನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಊಟಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. 2. ಊಟ ಮಾಡಬಹುದಾದ. 3. ಊಟ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಭುಜ (ಅಮ್ಯವಹಾರೇ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) । 4. ಊಟಮಾಡಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 5. ಊಟಮಾಡಿಸಬಹುದಾದ. 6. ಊಟಮಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ಭುಜ + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) । "ತತ್ರ ಯೇ ಭೋಜನೀಯಾಃ ಸ್ಯುಃ ಯೇ ಚ ವರ್ಜ್ಯಾ ದ್ವಿಜೋತ್ತಮಾಃ" ಮನುಂ ೩-೧೨೪ । "ತವ್ಯಃ" । ಭೋಜಯಿತವ್ಯಃ ಭೋಜಯಿತವ್ಯಃ ।

**ಭೋಜಪತಿ ಭೋಜಪತಿ (ಪುಂ)** ಭೋಜ ವಂಶದ ದೊರೆ, ಕಂಸ. ಭೋಜನಾಂ ತದ್ವಂಶೀಯಾಂ ಪತಿಃ ।

**ಭೋಜಪುರ ಭೋಜಪುರ (ನಂ)** ಭೋಜರಾಜನ ನಗರ, ಧಾರಾನಗರ. ಭೋಜಪುರಮ್ ।

**ಭೋಜಯತ್ ಭೋಜಯತ್ (ವಿಂ)** 1. ಊಟ ಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ತಿನ್ನಿಸುತ್ತಿರುವ. ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಪಾಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ಪೋಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಜಿಫ್" (೪-೧-೬) । -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

**ಭೋಜಯಿತ್ ಭೋಜಯಿತ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಊಟಮಾಡಿಸುವ, ಭೋಜನಮಾಡಿಸುವ. 2. ಪೋಷಿಸುವ, ಸಾಕುವ, ಸಲಹುವ. ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) + ಣಿಕ್



“ತೃ” (೩-೧-೧೩೩) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಙೀ” (೪-೧-೫) ।  
-ಯಿತ್ರಿ-ಯಿತ್ರಿ.

**ಭೋಜಿನ್ ಭೋಜಿನ್** (ವಿಂ) ಉಟಮಾಡುವವನು, ತಿನ್ನು  
ವವನು. (ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಸಮಾಸದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ  
ಪ್ರಯೋಗ.) ಭುಜ (ಅಮ್ಯವಹಾರೇ) “ಗಿಣಿ” (೩-೨-೭೮) ।  
ಉಣಭೋಜಿ ಶೀಘ್ರಭೋಜಿ ಇತ್ಯಾದಿ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಙೀ”  
(೪-೧-೫) । ಭೋಜಿನಿ ಭೋಜಿನೀ.

**ಭೋಜ್ಯ ಭೋಜ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಭುಜಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ,  
ತಿನ್ನುಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಭುಜ (ಅಮ್ಯವಹಾರೇ) “ಯತ್”  
(೩-೧-೧೨೪) । (ನಂ) 2. ಆಹಾರ, ಅನ್ನ ಮೊದಲಾದ  
ಭೋಜನದ್ರವ್ಯ. ಆರು ವಿಧ ಆಹಾರಗಳಿಲ್ಲೊಂದು.  
ಆರು ವಿಧ ಆಹಾರಗಳು “ಆಹಾರಂ ಷಡ್ವಿಧಂ ಚೂಷ್ಯಂ ಪೇಯಂ ಲೇಹ್ಯಂ  
ತಥೈವ ಚ । ಭೋಜ್ಯಂ ಭಕ್ಷ್ಯಂ ತಥಾ ಚರ್ವ್ಯ ಗುರು ವಿಶ್ವಾತ್ಯುತರಮ್” ।  
ಹೀರಿ ಕುಡಿಯುವ ರಸವುಳ್ಳ ವಸ್ತು ಚೂಷ್ಯ. ಕುಟ್ಟು  
ಮೊದಲಾದುದು. ನೀರು ಪಾನಕ ಮೊದಲಾದುದು  
ಪೇಯ. ನಾಲಗೆಯಿಂದ ನೆಕ್ಕಿ ರಸಾಸ್ವಾದನೆ ಮಾಡಿ  
ತಿನ್ನುವ ಆಹಾರ ಲೇಹ್ಯ. ಉಟಮಾಡುವ ಅನ್ನ  
ಮೊದಲಾದುದು ಭೋಜ್ಯ. ತಿಂಡಿ ತಿನ್ನುವ ಮೊದಲಾದ  
ತಿನ್ನುವ ಆಹಾರ ಭಕ್ಷ್ಯ. ದಂತದಿಂದ ಅಗಿದು ತಿನ್ನುವ  
ಹುರಿಗಡಲೆ ಮೊದಲಾದುದು ಚರ್ವ್ಯ. “ತವೇವ ಹ್ಯಂ  
ಹೊತಾ ಚ ಭೋಜ್ಯಂ ಭೋಕ್ತಾ ಚ ಶಾಶ್ವತಃ” ಕುಮಾಂ ೨-೧೫ ।  
3. ಹಬ್ಬದ ಉಟ. “ಕ್ಷಣಃ ಪವಂ ಚ ಕಲ್ಯಾಣಂ ಭೋಜ್ಯಂ ತು  
ಜಠರೋತ್ಸವಃ” ವೇಜಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜ್ಯಾ -ಜ್ಯಾ. 4.  
ಇಂದುಮತಿ, ಅಜ ಮಹಾರಾಜನ ಪತ್ನಿ. ಭೋಜಸ್ಯ ಗೌತಾ-  
ಪತ್ಯಮ್ ಸ್ತ್ರೀ “ಯಜ್” (ಗಂ ೪-೧-೮೦) । “ಪೂರ್ವಾನುಷಿಷ್ಟಂ  
ನಿಜಗಾದ ಭೋಜ್ಯಾಮ್” ರಘುಂ ೬-೫೯ ।

**ಭೋಜ್ಯಸಂಭವ ಭೋಜ್ಯಸಂಭವ** (ಪುಂ) ಶರೀರದೊಳಗಿನ  
ರಸಧಾತು. ಸಂಭವತ್ಯಸ್ಮಾತ್ ಇತಿ ಸಂಭವಃ — ಸಮ್ + ಭು  
“ಅಭ” (೩-೩-೫೭) । ಭೋಜ್ಯಂ ಸಂಭವೋಜ್ಯ ।

**ಭೋಲ ಭೋಲ** (ಪುಂ) ನಟಿಯಲ್ಲಿ ವೈಶ್ಯನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವನು.  
(ವ್ರಾತೃನಾದ ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಂದ ಸರ್ವಣ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ-  
ದವಳು ನಟಿ.) “ಮೇತ್ರಿ ವಾಟಂ ನಟಿ ಭೋಲಂ ಪ್ರಸೂತೇ ಕಾಲುಷಿ  
ಕಿಟಮ್” ವೇಜಂ ।

**ಭೋಲಿ ಭೋಲಿ** (ಪುಂ) ಉಪ್ಪು. ಒಂಟೆ. “ಮೋಲಿರ್ಬಹುಕರೋ  
ವಕ್ರಗ್ರೀವಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಭೋಸ್ (ಭೋಃ) ಭೋಸ (ಭೋಃ)** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಕರೆ,  
ಸಂಬೋಧನೆ. ಮಾತಿ—ಭಾ(ದೀಪ್ತಾ) “ಡೋಸ್” ಬಾಹುಂ ।  
ಹಿರಿಯರನ್ನೂ ಪೂಜ್ಯರಾದವರನ್ನೂ ಕರೆಯುವಾಗಲೂ

ನಮಸ್ಕರಿಸುವಾಗಲೂ ಇದರ ಪ್ರಯೋಗ. “ಭೋಃ ಶಬ್ದಂ  
ಕೀರ್ತಯೇದಂತೇ ಸ್ವಸ್ಯ ನಾಮನೋಭಿವಾದನೇ । ನಾಮನಾಂ ಸ್ವರೂಪಭಾವೋ  
ಹಿ ಭೋಭಾವೋ ಹೃಷಿಭಿಃ ಸ್ಮೃತಃ” ಮನುಂ ೧-೧೨೪ ।  
2. ಸಾಮಾನ್ಯ ಜನರ ಸಂಬೋಧನೆ. “ಭೋಭೋಃ ಶಾಕ್ಷರ-  
ಗೃಹಾಧಿವಾಸಿನೋ ಜಾನಪದಾಃ” ಮಾಲತೀಂ ೩ ।

**ಭೋಜ್ಯ ಭೋಜ್ಯಂ** (ಪುಂ) 1. ಸರ್ವದೇವತಾಕವಾದ ಅಶ್ಲೇಷಾ  
ನಕ್ಷತ್ರ. 2. ಸರ್ವ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಭುಜ್ಜಸ್ಯೇದಮ್ “ಅಭ”  
(೪-೩-೧೨೦) ।

**ಭೌತ ಭೌತ** (ಪುಂ) 1. ದೇವಲಕ. ಜೀವನಕ್ಕಾಗಿ ದೇವರ  
ಪೂಜೆ ಮಾಡುವವನು. 2. ಭೂತಯಜ್ಞ, ಗೃಹಸ್ಥನು  
ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು. “ಹೋಮೋ ದೇವೋ ಬಲಿರ್ಮೌತೋ ನೃಪಶ್ಚೋತತಿಥಿಪೂಜನಮ್”  
ಮನುಂ ೩-೭೦ । 3. ಪಿಶಾಚಗಳ ಆರಾಧಕ, ಭೂತಗಳ  
ಉಪಾಸಕ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ತೀ -ತೀ. 4. ರಾತ್ರಿ. “ಕಾಮಾ  
ಯಾಮ್ಯಾ ದೋಷಾ ತುಙ್ಗೀ ಭೌತೀ ಶತಾಕ್ಷೀ ಚ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।  
(ವಿಂ) 5. ಪ್ರಾಣಿಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.

**ಭೌತಿಕ ಭೌತಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ.  
“ಏಕಪಾದ್ಭೌತಿಕೋ ಭದ್ರಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । (ನಂ) 2. ಮುತ್ತು,  
ಮೌಕ್ತಿಕ, ಮುಕ್ತಾಫಲ. ಭೂತಾನಾಂ ವಿಕಾರಃ “ಠಕ್” ।  
(ವಿಂ) 3. ಭೂತಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ (ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನು  
ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಮಾಡುವ ಭೂತಯಜ್ಞ.) “ಜಪೋಽಹುತೋ ಹುತೋ  
ಹೋಮಃ ಪ್ರಹುತೋ ಭೌತಿಕೋ ಬಲಿಃ” ಮನುಂ ೩-೭೪ । 4. ಪಂಚ  
ಭೂತಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದ (ಉಪದ್ರವ). [“ಆಧಿ-  
ಭೌತಿಕ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 5. ಪಂಚಭೂತಗಳಿಂದ  
ಉಂಟಾದ (ಶರೀರ ಮುಂತಾದುದು.) “ಏಕಾಂತವಿಷ್ವಂಸಿಘ್ರ  
ಮದ್ವಿಧಾನಾಂ ಪಿಂಡೇಷ್ವನಾಸ್ಥಾ ಖಲು ಭೌತಿಕೇಭುಃ” ರಘುಂ ೨-೫೭ ।  
6. ಪಿಶಾಚಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.

**ಭೌಮ ಭೌಮ** (ಪುಂ) 1. ಅಂಗಾರಕ, ಕುಜಗ್ರಹ. 2. ನರಕಾ  
ಸುರ. ಭೂರಪತ್ಯಮ್ “ಅಭ” (೪-೧-೧೨೨) । “ತವಿ  
ಭೌಮಂ ಗತೇ ಜೇತುಮರೋತ್ಸೀತಿಸ್ತು ಪುರೀಮಿಮಾಮ್” ಮಾಘಂ ೨-೩೯ ।  
3. ಆಕಾಶ, ಗಗನ. (ವಿಂ) 4. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ,  
ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಇರುವ. “ಭೌಮೋ ಮುನಿಃ ಸ್ಥಾನಪರಿಗ್ರಹೋಜ್ಯಮ್”  
ರಘುಂ ೧೩-೩೬ । 5. ಭೂಮಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
6. ಕುಜಗ್ರಹಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.

**ಭೌಮನ ಭೌಮನ** (ಪುಂ) ದೇವಶಿಲ್ಪಿಯಾದ ವಿಶ್ವಕರ್ಮ.  
ಭೂಮಾ ಬ್ರಹ್ಮಾ, ತಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ “ಅಭ” (೪-೧-೯೨) ।

**ಭೌಮರತ್ನ ಭೌಮರತ್ನ** (ನಂ) ಪ್ರವಾಳ, ಹವಳ.

**ಭೌಮವಾಸರ ಭೌಮವಾಸರ** (ಪುಂ) ಮಂಗಳವಾರ.



**ಭೌಮಿಕ ಭೌಮಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿರುವ, ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವ. 2. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ನಿಂತಿರುವ.

"ಸ್ಪೃಶಂತಿ ಬಿಂದುವಃ ಪಾದೌ ಯ ಆಚಾಮಯತಃ ಪರಾನ್ |  
ಭೌಮಿಕೇಸ್ತೇ ಸಮಾ ಜ್ಞೇಯಾ ನ ತೇರಪ್ರಯತೌ ಭವೇತ್" ಮನುಂ ೪-೧೪೨ |

**ಭೌಮಿ ಭೌಮೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೀತಾದೇವಿ, ಜಾನಕಿ.

**ಭೌರೀಕ ಭೌರೀಕ** (ಪುಂ) ಸುವರ್ಣಾಧ್ಯಕ್ಷ, ಬೊಕ್ಕಸದಲ್ಲಿರುವ ಸುವರ್ಣದ ಅಧಿಕಾರಿ. ಭೌರೀಣಿ ಸುವರ್ಣ ನಿಯುಕ್ತಃ "ಠಕ್" (೪-೪-೬೯) |

**ಭ್ರಂಶ ಭ್ರಂಶ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಕೆಳಚೆಕ್ಕೊಳ್ಳುವುದು, ಕೆಳಚೆ ಬೀಳುವುದು. ಭ್ರಂಶು (ಅವಸರಸನೆ) ಭಾವೇ "ಛ" (೩-೩-೧೮) | "ಸೇಹೇಸ್ಯ ನ ಭ್ರಂಶಮತೌ ನ ಲೋಭಾತ್ಸ ತುಲ್ಯಪುಷ್ಪಾಭರಣೌ ಹಿ ಭೀರಃ" ರಘುಂ ೧೬-೭೪ | 2. ಸ್ಥಾಯವಾದ ಸ್ಥಾನದಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬರುವುದು, ಪದಚ್ಯುತನಾಗುವುದು. 3. ನಾಶ, ಕಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಸ್ಮೃತಿಭ್ರಂಶಾದ್ಬುದ್ಧಿನಾಶಃ ಬುದ್ಧಿನಾಶಾತ್ಪ್ರಣಶ್ಯತಿ" ಗೀತಾ ೨-೬೩ | 4. ಕಡಮೆಯಾಗುವುದು, ಇಳಿಮುಖವಾಗುವುದು, ಕ್ಷೀಣವಾಗುವುದು. 5. ತಪ್ಪಿಸಿ ಕೊಳ್ಳುವುದು, ಗುಂಪನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಹೋಗುವುದು, ಗುಂಪಿನಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಂಡು ಹೋಗುವುದು. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | ಭ್ರಂಶನಮ್ ಭ್ರಂಶನಮ್.

**ಭ್ರಂಶನೀಯ ಭ್ರಂಶನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಜಾರಿ ಬೀಳಬೇಕಾದ. 2. ಜಾರಿ ಬೀಳಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಭ್ರಂಶು (ಅವಸರಸನೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | 3. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳಿಸಬೇಕಾದ. 4. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳಿಸಲು ಶಕ್ತವಾದ. ಭ್ರಂಶು + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | "ತವ್ಯಃ" | ಭ್ರಂಶಿತವ್ಯಮ್ ಭ್ರಂಶಿತವ್ಯಮ್.

**ಭ್ರಂಶಿತ ಭ್ರಂಶಿತ** (ವಿಂ) ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಭ್ರಂಶು (ಅವಸರಸನೆ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

**ಭ್ರಂಶಿನ್ ಭ್ರಂಶಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಚೆಕ್ಕೊಳ್ಳುವ, ಜಾರಿ ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುವ. ಭ್ರಂಶು (ಅವಸರಸನೆ) "ಞಿಞಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ಕ್ಷಯಹೊಂದುವ, ಕಡಮೆಯಾಗುವ, ಇಳಿಮುಖವಾಗುವ. 3. ಗುಂಪಿನಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ. 4. ಒಂದು ಸ್ಥಾನದಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬರುವ, ಪದಚ್ಯುತನಾಗುವ. 5. ನಾಶವಾಗುವ, ಕಳೆದುಹೋಗುವ.

**ಭ್ರ (ಭ್ರ) (ಭ್ರ) ಕುಸ ಭ್ರ (ಭ್ರ) (ಭ್ರ) ಕುಂಸ** (ಪುಂ) ಸ್ತ್ರೀವೇಷಧಾರಿಯಾಗಿ ಕುಣಿಯುವ ಗಂಡಸು. ಭ್ರವಾ ಕುಂಸೌ ಭಾಷಣಂ ಶೋಭಾ ವಾ ಅಸ್ಯ | ಭ್ರವಾ ಕುಂಸಯತಿ - ಕುಂಸಿ (ಭಾಷಾರ್ಥ) + ಣಿಕ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ವಾ | ಭ್ರೂಶಬ್ದಸ್ಯ ಹ್ರಸ್ವಃ ಅಕಾರಾದೇಶಶ್ಚ (ವಾಂ ೬-೩-೬೧) |

"ಭ್ರಕುಂಸಶ್ಚ ಭ್ರಕುಂಸಶ್ಚ ಭ್ರಕುಂಸಶ್ಚೇತಿ ನರ್ತಕಃ | ಸ್ತ್ರೀವೇಷಧಾರಿ ಪುರುಷಃ" ಅಮಂ |

**ಭ್ರ (ಭ್ರ) (ಭ್ರ) ಕುಡಿ ಭ್ರ (ಭ್ರ) (ಭ್ರ) ಕುಂಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುಬ್ಬು ಗಂಟುಹಾಕುವುದು. ಭ್ರವಾಃ ಕುಡಿಃ - ಕುಡಿ (ಕುಡಿಯಲಿ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೨೦) | "ಭ್ರಕುಂಸ" ದಂತೆ ಇದಕ್ಕೂ ಮೂರು ರೂಪಗಳು. "ಬಡಬಾನಲಧೂಮರಾಜಿಹ್ವಾ ಭ್ರಕುಡಿ-ಸ್ತಸ್ಯ ಮುಖೇ ಪರಿಸ್ಫುರಂತಿ" ಯಾದಂ ೧೫-೧೦೨ |

**ಭ್ರಮು - ಚಲನೆ** (ಮಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ) | ಭ್ರಮತಿ, ಭ್ರಮಯತಿ | ಬಭ್ರಾಮ | ಭ್ರಮತು, ಭ್ರಮಯತು | ಅಭ್ರಮೀತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಆಲೆ, ಸುತ್ತಾಡು, ತಿರುಗಾಡು. "ಮನೌ ನಿಷ್ಠಾಶೂನ್ಯಂ ಭ್ರಮತಿ ಚ ಕಿಮಪ್ಯಾಲಿಖತಿ ಚ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೩೪ | 2. ಸಂಚರಿಸು, ತಡೆಯಿಲ್ಲದೆ ಓಡಾಡು. "ಭ್ರಮತಿ ಚ ಭುವನೇ ಕಂದರ್ಪಾಜ್ಞಾ ವಿಕಾರಿ ಚ ಯೌವನಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೦ |

ಣಿಞಿಃ - ಭ್ರಮಯತಿ, -ತೇ | ಭ್ರಮಯಿತಾ | ಭ್ರಮಯತು, -ತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಭ್ರಮ ಭ್ರಮ** (ಪುಂ) 1. ಜಲನೆ, ಸುತ್ತಾಡುವುದು, ಆಲೆ ದಾಡುವುದು. ಭ್ರಮು (ಚಲನೆ) ಭಾವೇ "ಛ" (೩-೩-೧೮) | 2. ತಿರುಗುವುದು, ಗಿರಗಿರನೆ ತಿರುಗುವುದು, ವೃತ್ತಾಕಾರದ ಕಕ್ಷೆಯಲ್ಲಿ ಹೋಗುವುದು. 3. ಭ್ರಾಂತಿ, ತಪ್ಪು ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ಅದಲ್ಲದ ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ (ಅದರ ಸಾದೃಶ್ಯದಿಂದ) ಅದು ಎಂಬ ಜ್ಞಾನ. ಶುಕ್ತೌ ರಜತತ್ವಜ್ಞಾನಂ ಭ್ರಮಃ | 4. ಮಿಥ್ಯಾ ಜ್ಞಾನ. "ದೇವೌ ಜಗಾದ ತಂ ಭದ್ರ ಕೌಷ್ಯಂ ತೇ ಮನಸಿ ಭ್ರಮಃ" ರಾಜತಂ | 5. ಸಾಣೆಹಿಡಿಯುವ ಚಕ್ರ, ಕತ್ತಿ ಮಸೆಯುವ ಯಂತ್ರ. "ಆರೋಪ್ಯ ಚಕ್ರಭ್ರಮಮುಣತೇಜಾಸ್ವಪ್ನೇವ ಯಂತೋ-ಲ್ಲಿಖಿತೌ ವಿಭಾತಿ" ರಘುಂ ೬-೩೨ | 6. ಬೀಸುವ ಕಲ್ಲು. 7. ಸುಳಿ, ಅವರ್ತ. 8. ಸಂಶಯ, ಸಂದೇಹ. "ವಿಚಿಕಿತ್ಸಾ ತು ಸಂದೇಹಃ ಸಂಶಯೌ ವಿಶಯೌ ಭ್ರಮಃ" ವೈಜಂ | 9. ಬೈರಿಗೆ, ವೆಜ್ಜೆ ಕೊರೆಯುವ ತಿರುಪುಳಿ. "ಆಸ್ಫೋಟನಿ ವೇಧನಿಕಾ ಭ್ರಮಃ" ವೈಜಂ | 10. ಜಲನಿರ್ಗಮಿಸ್ಥಾನ, ನೀರು ದಾರಿ, ತೊಬ್ಬು. "ಭ್ರಮಾಗತೇರಮ್ಭುಭಿರಮ್ಭುರಾಶಿಃ" ಮಾಘಂ ೩-೩೮ |

**ಭ್ರಮಣ ಭ್ರಮಣ** (ನಂ) 1. ತಿರುಗಾಡುವುದು, ಸುತ್ತಾಡುವುದು. ಭ್ರಮು (ಚಲನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಗಿರಗಿರನೆ ತಿರುಗುವುದು. "ಭ್ರಮಣರಯವಿಕೀರ್ಣಸ್ವರ್ಣ-ಭಾಸಾ ಸ್ವಗೇನ" ನೈಪಂ ೨-೧೦೮ | 3. ಸಂಚಾರ, ನಡೆದಾಡುವುದು. 4. ಪುನಃ ಪುನಃ ಬರುವುದು. "ನವಾಗ್ನಿಧೂಮ-ಸಂರೋಧೌ ದಿಡ್ಭೂಹೌ ಭ್ರಮಣಾನಿ ಚ" ಕಾಮಂ ನಿಯಂ | 5. ತತ್ತರಿಸುವುದು, ದಿಗ್ಭ್ರಮೆಯಾಗುವುದು.



**ಅಮಣಿ ಭ್ರಮಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕ್ರೀಡಾಸಂಚಾರ, ವಿನೋದ ಸಂಚಾರ. 2. ಜಲಾಶಯ, ಜಗಣಿ. ಅಮು (ಚಲನೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ಅಮಣಿ ಕಾಣಿಡಿಕಾಯಾ ಕ್ರೀಡಾಠಾಯಾಮಧೀಶಿತು: ಮೇದಿಂ। 3. ಅಟದ ಸಾಮಾನು.

**ಅಮಣಿಯ ಭ್ರಮಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ತಿರುಗಿಸಲ್ಪಡುವ, ಸುತ್ತಿಸಲ್ಪಡುವ. ಅಮು (ಚಲನೆ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯ್" (೩-೧-೧೬)। 2. ಓಡಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ, ನಡೆಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಸುತ್ತಿಸಬೇಕಾದ, ತಿರುಗಿಸಬೇಕಾದ. 4. ತಿರುಗಾಡಿಸ ಬೇಕಾದ. ಅಮು "ಅನೀಯ್"। 5. ಭ್ರಾಂತಿಪಡಬೇಕಾದ. 6. ಸಂದೇಹಪಡಬೇಕಾದ.

**ಅಮತ್ ಭ್ರಮತ್** (ವಿಂ) 1. ತಿರುಗುತ್ತಿರುವ, ಚಕ್ರದಂತೆ ಸುತ್ತುತ್ತಿರುವ. ಅಮು (ಚಲನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಪ್ರಲಯೋದನ್ವದಾವರ್ತೆ ಅಮನ್ತ ಇವ ಪರ್ವತಾ:" ಯಾದಂ ೨೨-೧೦೮। 2. ತಿರುಗಾಡುತ್ತಿರುವ, ಓಡಾಡುತ್ತಿರುವ. "ಅಮಮುಖ್ಯಾ-ಮುಪಕಾರಿಕಾಯಾಮಾಯಸ್ಯ ಮೆಮಿವಿರಹಾತ್ಕಷಿಯಾನ್" ನೆಪಂ ೬-೩೬। 3. ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಅಲೆಯುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। **ಅಮಂತಿ ಭ್ರಮಂತೀ**.

**ಅಮತ್ಕುಟಿ ಭ್ರಮತ್ಕುಟೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಓಲೆಗರಿ ಹುಲ್ಲು: ಮೊದಲಾದವುಗಳಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಕೂಡೆ. ಅಮಂತಿ ಕುಟಿವೆ। "ಕಾವಾರಿ ಜಙ್ಗಮಕುಟಿ ಅಮತ್ಕುಟಯ ಸರ್ಪರ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಅಮಂತ ಭ್ರಮನ್ತ** (ಪುಂ) ಸಣ್ಣ ಮನೆ. "ಗಮಗಾರೋಽ-ಪವರಕೋ ಅಮಂತೋ ಗೃಹಕೋಲ್ಪಕ:" ವೈಜಂ।

**ಅಮರ ಭ್ರಮರ** (ಪುಂ) 1. ಮಧುಕರ, ಭೃಂಗ, ದುಂಬಿ. ಅಮು (ಅನವಸ್ಥಾನೆ) "ಅರ:" (೩ಂ ೩-೧೩೨)। "ಅಮರ-ಕುಲಾಕುಲೋತ್ಪನ್ನಸುಗಂಧಿಪುಷ್ಪತರಃ" ಮೃದ್ವಿಂ ೨೧-೨೧। 2. ಕಾಮುಕ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ, ಶೃಂಗಾರಪ್ರಿಯ.

**ಅಮರಕ ಭ್ರಮರಕ** (ಪುಂ) 1. ಹಣೆಯ ಮೇಲೆ ಜೋಲಾಡು ತ್ತಿರುವ ಗುಂಗುರು ಕೂದಲು. ಅಮರ ಇವ ಕಾಯತಿ-ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। "ತೇ ಲಲಾಟೇ ಅಮರಕಾ:" ಅಮಂ। 2. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಅಮರ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"। 3. ನೀರಿನ ಸುಳಿ, ಅವರ್ತ. 4. ಬೈರಿಗೆ, ವೆಜ್ಜ ಕೊರೆ ಯುವ ತಿರುಪುಳಿ. 5. ಚೆಟ್ಟಿಲಿ, ಸಣ್ಣ ಜಾತಿಯ ಇಲಿ. 6. ಗೈರಿಕ, ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಧಾತು ಮೊದಲಾದುವು. 7. ಜಲ, ನೀರು. "ಅಮರಕೋ ಜಲೇ ಮೃಗೇ ಗಿರಿಜೇ ಚೂರ್ಣ-ಕುಂತಲೇ" ವಿಶ್ವಂ। 8. ಜೇನುತುಪ್ಪ, "ಅಮರಂ ತು ಅಮರಕಂ ಕ್ಷೌದ್ರಂ ಸಾರಧಮಾಕ್ಷಿಕೇ" ವೈಜಂ।

**ಅಮರಕರಣಕ ಭ್ರಮರಕರಂಡಕ** (ಪುಂ) ದುಂಬಿಗಳಿಂದ ತುಂಬಿದ ಪೆಟ್ಟಿಗೆ. [ಕಳ್ಳರು ಪೆಟ್ಟಿಗೆಯಲ್ಲಿ ದುಂಬಿಗಳನ್ನು ತುಂಬಿಕೊಂಡು ಹೋಗಿ ಅವನ್ನು (ತಾವು ಕಳ್ಳತನಕ್ಕೆ ನುಗ್ಗುವ ಮೊದಲು) ಮನೆಯೊಳಕ್ಕೆ ಬಿಡುತ್ತಾರೆ. ಅವು ದೀಪದ ಮೇಲೆ ಸಂಚರಿಸಿ ದೀಪವನ್ನು ಆರಿಸಿದಾಗ ತಾವು ಮನೆಯೊಳಕ್ಕೆ ಪ್ರವೇಶಿಸುತ್ತಾರೆ.]

**ಅಮರಕೀಟ ಭ್ರಮರಕೀಟಿ** (ಪುಂ) ಕಣಜಿಗ, ಕಣಜದ ಹುಳ.

**ಅಮರಾಲಕ ಭ್ರಮರಾಲಕ** (ಪುಂ) ಹಣೆಯ ಮೇಲೆ ಜೋಲಾಡುತ್ತಿರುವ ಗುಂಗುರು ಕೂದಲು.

**ಅಮರೀ ಭ್ರಮರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ದುಂಬಿ. ಅಮರ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। "ಅಮರೀಕವರಿಭಾರಅಮರೀಮುಖರೀಕೃತಮ್। ದೂರಿಕರೋತು ದುರಿತಂ ಗೌರೀಚರಣಪಚ್ಚಜಮ್" ಕುವಂ।

**ಅಮರೇಷ ಭ್ರಮರೇಷ್ಠ** (ಪುಂ) ಹೆಮ್ಮರ, ತಿಗಡುಮರ. ಅಮರೇಷ್ಠ:

**ಅಮರೋತ್ಸವ ಭ್ರಮರೋತ್ಸವಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾಧವೀಲತೆ, ಕಾಡಿರುವಂತಿಕೆ ಗಿಡ. ಅಮರಾಣಾಮುತ್ಸವೋ ಮದೋ ಯಸ್ಮಾತ್।

**ಅಮಾಸಕ್ತ ಭ್ರಮಾಸಕ್ತ** (ವಿಂ) (ಸಾಣೆಕಲ್ಲಿನ ಮೇಲೆ) ಕತ್ತಿ ವಸೆಯುವವನು. ಅಮೇ ನಿಶಾನಾರ್ಥೆ ಚಕ್ರಅಮಣಿ ಆಸಕ್ತ:

**ಅಮಿ ಭ್ರಮಿ -ಮಿ -ಮೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭ್ರಮಣ, ತಿರುಗು ವಿಕೆ. ಅಮು (ಅನವಸ್ಥಾನೆ) "ಇಕ್" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮)। "ನೆತ್ರಾಕ್ಷರಾಭಾರಮಿಮೋತಮಾ ಜ್ಞಾಮಿಪ್ರಸ್ತುತಾಲಾತಚಕ್ರಂ....." ಮಾಲತಿಂ ೫-೨೩। 2. ಜಲಾವರ್ತ, ನೀರಿನ ಸುಳಿ. 3. ಸುಂಟರಗಾಳಿ. 4. ಮಂಡಲಾಕಾರವಾಗಿ ಸುತ್ತುವುದು, ಮಂಡಲಾಕಾರದ ಗಮನ, -ನಡೆಗೆ. "ಅಚೀಕರನ್ವಾಹ ಹ್ರೇನ ಯಾ ಅಮೀನಿಜಾತಪತ್ರಸ್ಯ ತಲಸ್ಥಲೇ ತಲಃ" ನೆಪಂ ೧-೭೩। 5. ಮಂಡಲಾಕಾರದ ಸೈನ್ಯರಚನೆ. "ವೀರಾನ್ ಸಹಸ್ರಶೋ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಅಮಿಮಿಃ ಪರ್ಯವಸ್ಥಿತಾನ್"। 6. ತಪ್ಪು, ದೋಷ, ಅಶುದ್ಧ.

**ಅಮಿತವ್ಯ ಭ್ರಮಿತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ತಿರುಗಿಸಬೇಕಾದ, ಸುತ್ತಿಸಬೇಕಾದ. 2. ಸಂದೇಹಪಡಬೇಕಾದ. 3. ಭ್ರಾಂತಿ ಪಡಬೇಕಾದ. 4. ತಿರುಗಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 5. ಸಂದೇಹಪಡಲು ಅರ್ಹವಾದ, ಸಂಶಯಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ. 6. ಭ್ರಾಂತಿಪಡಲು ತಕ್ಕುದಾದ. ಅಮು (ಅನವಸ್ಥಾನೆ) "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೬)।

**ಅಮಿನ್ ಭ್ರಮಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಸುತ್ತುತ್ತಿರುವ, ಚಕ್ರದಂತೆ ತಿರುಗುತ್ತಿರುವ. ಅಮತಿ - ಅಮು (ಚಲನೆ) "ಣಿತಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವ, ತಿರುಗಾಡು ತ್ತಿರುವ. "ಅಮಿ ಕದಂಬಸಂಪನ್ನಃ ಪವನಃ ಶಮಿನಾಮಪಿ"



ಅದ್ವಿಂ ೭-೪ | 3. ಭ್ರಾತೃಯುಳ್ಳ, ಮಿಥ್ಯಾಜ್ಞಾನವುಳ್ಳ.  
4. ಸಂಶಯವುಳ್ಳ, ಸಂದೇಹವುಳ್ಳ. ಭ್ರಮಾಂಸ್ಯ ವಿಚಿತೆ  
“ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪) |

ಭ್ರಮ್ಯ ಭ್ರಮ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸುತ್ರಿಸಲ್ಲಡುವ, ತಿರುಗಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. 2. ಸಂದೇಹಿಸಲ್ಲಡುವ. ಭ್ರಮು (ಅನವಸ್ಥಾನೇ)  
“ಯತ್” (೩-೧-೯೮) |

ಭ್ರಮಿಮನ್ ಭ್ರಮಿಮನ್ (ಪುಂ) ಬಹಳ ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವಿಕೆ,  
ಅತಿಶಯವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಭ್ರಮಸ್ಯ ಭಾವ: “ಇಮನಿ”  
(೪-೧-೧೨೩) | ರತ್ವಂ (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೩) |

ಭ್ರಮತ್ ಭ್ರಮತ್ (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುತ್ತಿರುವ,  
ಜಾರಿ ಬೀಳುತ್ತಿರುವ. 2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳುತ್ತಿರುವ. ಭ್ರಮು  
(ಅವಸ್ಥಾನೇ ಅಥವಾ ಪತನೇ ವಾ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡಿಪ್” (೪-೧-೬) | -ಂತಿ -೨೯.

ಭ್ರಷ್ಟ ಭ್ರಷ್ಟ (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಕೆಳಗಿಳಿದು. 2. ಕೆಳಗೆ  
ಬಿದ್ದಿರುವ. ಭ್ರಷ್ಟು (ಅವಸ್ಥಾನೇ ಅಥವಾ ಪತನೇ ವಾ) “ಕ್ತ:”  
(೩-೪-೭೨) | “ಪತಗೇಂದ್ರವಜ್ರಾಸಾದ್ಭ್ರಷ್ಟಕುಂಡಲಿತಾತ್ಮ-  
ನಾಮ್” ಯಾದಂ ೨೨-೧೯೪ | 3. ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಂಡ, ಒಂದು  
ಸಮೂಹದಿಂದ ಬೇರೆಯಾದ, ಸಮೂಹವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು  
ಹೋಗಿರುವ. 4. ನ್ಯಾಯದಿಂದ ಹೊರಗಿರುವ, ನ್ಯಾಯ  
ವನ್ನು ಮೀರಿ ನಡೆದಿರುವ. 5. ಪದಾಪ್ಯುತ್ಸಾದವನ್ನು,  
ಒಂದು ಪದವಿಯನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡವನು. ರಾಜ್ಯಾದ್ಭ್ರಷ್ಟ: |  
ಅಧಿಕಾರಾದ್ಭ್ರಷ್ಟ: |

ಭ್ರಾಜು - ದೀಪ್ತೌ (ಘಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸಂ) | ಭ್ರಾಜತೇ |  
ಬಭ್ರಾಜೆ ಬಭ್ರಾಜಾತೇ ಬಭ್ರಾಜಿರೇ | ಭ್ರಾಜಿತಾ | ಭ್ರಾಜಿಷ್ಯತೇ |  
ಭ್ರಾಜತಾಮ್ | ಅಭ್ರಾಜತ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಪ್ರಕಾಶಿಸು, ಹೊಳೆ.  
ಕೃತು: - ಭ್ರಾಜಿತವ್ಯ: | ಭ್ರಾಜನೀಯ: | ಭ್ರಾಜ್ಯ: |  
ಭ್ರಾಜಿತ: | ಭ್ರಾಜಿತವಾನ್ | ಭ್ರಾಜಮಾನ: | ಭ್ರಾಜನಮ್ |  
ಭ್ರಾಜಿತಮ್ | ಭ್ರಾಜಿತ್ವಾ |

ಭ್ರಾಜಕ ಭ್ರಾಜಕ (ನಂ) 1. ಒತ್ತ. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶಿ  
ಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ. ಭ್ರಾಜು (ದೀಪ್ತೌ) “ಫ್ವಲ್”  
(೩-೧-೧೩೩) |

ಭ್ರಾಜನ ಭ್ರಾಜನ (ನಂ) ಪ್ರಕಾಶಿಸುವುದು, ಹೊಳೆಯು  
ವುದು. ಭ್ರಾಜು (ದೀಪ್ತೌ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪) |

ಭ್ರಾಜತು ಭ್ರಾಜತು (ಪುಂ) ಪ್ರಕಾಶ, ಕಾಂತಿ. ತು ಭ್ರಾಜು  
(ದೀಪ್ತೌ) “ಅಯು” (೩-೩-೮೯) |

ಭ್ರಾಜಮಾನ ಭ್ರಾಜಮಾನ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ. ಭ್ರಾಜು (ದೀಪ್ತೌ) “ಶಾನ”  
(೩-೨-೧೨೪) |

ಭ್ರಾಜಿತ ಭ್ರಾಜಿತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಗೊಂಡ. ಭ್ರಾಜು  
(ದೀಪ್ತೌ) “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨) | 2. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಳೆಪ್ಪ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಭ್ರಾಜು + ಣಿಕ್ “ಕ್ತ:”  
(೩-೨-೧೦೨) | (ನಂ) 3. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವುದು, ಹೊಳೆಯು  
ವುದು. ಭ್ರಾಜು ಭಾವೇ “ಕ್ತ:” |

ಭ್ರಾಜಿಷ್ಯ ಭ್ರಾಜಿಷ್ಯ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಭ್ರಾಜು (ದೀಪ್ತೌ)  
“ಇಣ್ಯು” (೩-೨-೧೩೮) | ಉಪಾಸಕರಿಗೆ ಪ್ರಕಾಶನ  
ಸ್ವಭಾವದವನು ಪರಮಾತ್ಮ. “ಉಪಾಸಿತೃಮ್ಯೋ ಭ್ರಾಜಿಷ್ಯಃ  
ಸ್ವಪ್ರಕಾಶನಶೀಲತ:” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: | “ಭ್ರಾಜಿಷ್ಯಭೋಜನಂ  
ಭೋಕ್ತಾ” ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ಹೊಳೆಯುವ,  
ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ.

ಭ್ರಾತೃ ಭ್ರಾತೃ (ಪುಂ) 1. ಸಹೋದರ, ಒಡಹುಟ್ಟಿದವನು.  
ಭ್ರಾಜತೇ - ಭ್ರಾಜು (ದೀಪ್ತೌ) “ತನ್” ಜಲೋಪಶ್ರ ನಿಪಾಂ  
(೩ಂ ೨-೯೬) | “ಭ್ರಾತುಸ್ತೇ ತನಯೇನ ಶೌರಿಗುಣಾ ದ್ಯಾಲೇನ  
ಗಾಣ್ಡೀವಿನ:” ವೇಣಿಂ ೬-೨೭ | “ಭ್ರಾತರೀ ನ್ಯಸ್ಯ ಯಾತೌ ಮಾ  
ಮೃಗಾವಿನ್ ಮೃಗಯಾಮಸೌ” ಮದ್ವಿಂ ೪-೮೨ | 2. ವಿಶ್ವಾಸ  
ಪಾತ್ರನಾದ ಗೆಳೆಯ. 3. ಸಾಮಾನ್ಯ ಗೆಳೆಯ. “ಭ್ರಾತ:  
ಪರ್ವಣಿ ಪಶ್ಯ ದಾನವಪತಿ: ಶೌರ್ಯವಿಶೇಷಾಕೃತಿ:” ಮತಂ ೧-೨೬ |  
(ಪುಂ ದ್ವಿವಂ) 4. ಸಹೋದರ ಮತ್ತು ಸಹೋದರ.  
ಭ್ರಾತಾ ಚ ಸ್ವಸಾ ಚ ಭ್ರಾತರೌ - ಏಕಶೇಷ: (೧-೨-೬೮) |  
“ಭ್ರಾತೃಭಗಿನ್ಯೌ ಭ್ರಾತರಾವುಭೌ” ಅಮಂ |

ಭ್ರಾತೃಕ ಭ್ರಾತೃಕ (ವಿಂ) ಸಹೋದರನಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ,  
ಸಹೋದರನಿಂದ ಬಂದ. ಭ್ರಾತೃ “ಕನ್” (೪-೨-೭೭) |

ಭ್ರಾತೃಜ ಭ್ರಾತೃಜ (ಪುಂ) ಸಹೋದರನ ಪುತ್ರ, ಒಡಹುಟ್ಟಿದ  
ವನ ಮಗ. ಭ್ರಾತೃಜಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರಭಿ) “ಜ:”  
(೩-೨-೯೮) | -ಜಾ -ಜಾ. -ಮಗಳು.

ಭ್ರಾತೃಜಾಯಾ ಭ್ರಾತೃಜಾಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಹೋದರನ ಪತ್ನಿ,  
ಒಡಹುಟ್ಟಿದವನ ಹೆಂಡತಿ. ಭ್ರಾತೃಜಾಯಾ |

ಭ್ರಾತೃತ್ವ ಭ್ರಾತೃತ್ವ (ನಂ) ಸಹೋದರ ಭಾವ.

ಪ್ರಾತೃದ್ವಿತೀಯಾ ಭ್ರಾತೃದ್ವಿತೀಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ತಿಕ ಶುಕ್ಲ  
ದ್ವಿತೀಯಾ. [ಕಾರ್ತಿಕ ಶುದ್ಧ ಬಿದಿಗೆಯ ದಿನ ಹೆಣ್ಣು  
ಮಕ್ಕಳು ತಮ್ಮ ಸಹೋದರನನ್ನು ಮನೆಗೆ ಕರೆತಂದು  
ಊಟೋಪಚಾರಗಳಿಂದ ಸತ್ಕರಿಸುತ್ತಾರೆ. ಯಮುನೆಯೂ  
ಸಹ ಆ ದಿವಸ ತನ್ನ ಸಹೋದರನಾದ ಯಮಧರ್ಮರಾಯ  
ನನ್ನು ಕರೆದು ಸತ್ಕರಿಸಿದುದರಿಂದ ಈ ಬಿದಿಗೆಗೆ ಯಮ  
ದ್ವಿತೀಯಾ ಎಂದೂ ಹೆಸರು.] “ಯಸ್ಯಾಂ ತಿಥೌ ಯಮುನಯಾ  
ಯಮರಾಜದೇವ: ಸಂಭೋಜಿತ: ಪ್ರತಿಜಗತ್ ಸ್ವಸೃಸೌಹೃದೇನ | ತಸ್ಯಾಂ  
ಸ್ವಸು: ಕರತಲಾದಿಹ ಯೋ ಮುನುಕ್ತಿ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ ರತ್ನಸುಖಧಾನ್ಯ-  
ಮನುತ್ತಮಂ ಸ:” |



**ಭ್ರಾತೃವ್ಯ ಭ್ರಾತೃವ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಸಹೋದರನ ಪುತ್ರ. ಭ್ರಾತುರಪತ್ಯಮ್ "ವ್ಯತ್" (೪-೧-೧೪೪) । "ಜಯರಾಜಾನುಜಂ ರಾಜಾ ಯಶೋರಾಜಂ ನಿವೇಶಿತಮ್ । ತನ್ಮತೇನಾನುಚಸ್ಕಂದ ಭ್ರಾತೃವ್ಯಂ ರಾಜಕಾಭಿವಃ" । 2. ಶತ್ರು, ವೈರಿ. ಭ್ರಾತೃ "ವ್ಯನ್" (೪-೧-೧೪೫) । "ಭ್ರಾತೃವ್ಯಮೇತಂ ತ್ವಮದಭ್ರವೀರ್ಮುಪೇಕ್ಷಯಾಘ್ಯೇ-ಧಿತಮಪ್ರಮತ್ತಃ" ಭಾಗಂ ೪-೧೧-೧೭ ।

**ಭ್ರಾತೃಶ್ವಶುರ ಭ್ರಾತೃಶ್ವಶುರ** (ಪುಂ) 1. ಪತಿಯ ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರ, ಪತಿಯ ಹಿರಿಯ ಅಣ್ಣ. ಭ್ರಾತಾ ಶ್ವಶುರ ಇವ ಪೂಜ್ಯತ್ವಾತ್ । 2. ಸಹೋದರನ ಪತ್ನಿಯ ತಂದೆ, ಸಹೋದರನ ಮಾವ. ಭ್ರಾತುಃ ಶ್ವಶುರಃ ।

**ಭ್ರಾತ್ರ ಭ್ರಾತ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಬಿಳಿ ಸಾಸವೆ. "ತ್ರಿವಿಧಮಭ್ರಾತ್ರ-ರಕ್ಷೋಘ್ನಾಃ" ವೈಜಂ । (ವಿಂ) 2. ಸಹೋದರನ ಸಂಬಂಧ ವಾದ. ಭ್ರಾತುರಿದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) ।

**ಭ್ರಾತ್ರೀಯ ಭ್ರಾತ್ರೀಯ** (ಪುಂ) ಸಹೋದರನ ಪುತ್ರ, ಒಡ ಹುಟ್ಟಿದವನ ಮಗ. ಭ್ರಾತುರಪತ್ಯಮ್ "ಃ" (೪-೧-೧೪೪) । "ಭ್ರಾತ್ರೀಯೋ ಭ್ರಾತೃಜೇ" ಅಮಂ ।

**ಭ್ರಾಂತ ಭ್ರಾಂತ** (ವಿಂ) 1. ಭ್ರಮೆಗೊಂಡ, ಸಂಶಯ ಹೊಂದಿದ. 2. ಮಿಥ್ಯಾಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು, ಅದಲ್ಲದ ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಅದು ಎಂಬ ಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು. ಭ್ರಮ್ (ಚಲನೆ) ಕರ್ತಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) । 3. ಸುತ್ತಾಡಿದ, ತಿರುಗಾಡಿದ. 4. ಸುತ್ತಿದ, ಚಕ್ರದಂತೆ ತಿರುಗಿದ. (ನಂ) 5. ಭ್ರಮಣ, ಚಕ್ರದಂತೆ ತಿರುಗುವಿಕೆ, ಸುತ್ತಾಟ. 6. ಸಂಚಾರ, ತಿರುಗಾಡುವುದು, ಸುತ್ತಾಡುವುದು. ಭ್ರಮ್ ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" । (ಪುಂ) 7. ದತ್ತಾರಿಗಿಡ. 8. ಮದಿಸಿದ ಅನೆ.

**ಭ್ರಾಂತಿ ಭ್ರಾಂತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಿಥ್ಯಾಜ್ಞಾನ, ತಪ್ಪು ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ಭ್ರಮ್ (ಚಲನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) । "ಶ್ರಿತಾಸಿ ಚಂದನಭ್ರಾಂತ್ಯಾ ದ್ವಿವಿಪಾಕಂ ವಿಷದ್ರುಮಮ್" ತಂ ರಾಂ ೧-೪೭ । 2. ಸಂಶಯ, ಸಂದೇಹ. 3. ಭ್ರಮಣ, ಚಕ್ರದಂತೆ ತಿರುಗುವುದು. 4. ಸುತ್ತಾಡುವುದು, ತಿರುಗಾಡುವುದು, ಅಲೆದಾಡುವುದು.

**ಭ್ರಾಂತಿಮತ್ ಭ್ರಾಂತಿಮತ್** (ಪುಂ) 1. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಸಾದೃಶ್ಯದಿಂದ ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಮತ್ತೊಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಭ್ರಮೆಯುಂಟಾಗುವಲ್ಲಿ ಭ್ರಾಂತಿ ಮದಲಂಕಾರವಾಗುವುದು. ತದಾಃ "ಅಯಂ ಪ್ರಮತ್ತಮಧುಪಃ ತ್ವನ್ಮುಖಂ ವೇತ್ತಿ ಪಚ್ಛಜಮ್" । ಇಲ್ಲಿ ಮುಖದಲ್ಲಿ ಪಂಕಜತ್ವ ಭ್ರಮೆಯು ವರ್ಣಿತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಭ್ರಾಂತಿಮದ ಲಂಕಾರ. (ವಿಂ) 2. ಭ್ರಾಂತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ತಪ್ಪು

ತಿಳಿವಳಿಕೆಯುಳ್ಳ. ಭ್ರಾಂತಿರಸ್ತಸ್ಯ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪) । 3. ಸುತ್ತುತ್ತಿರುವ, ತಿರುಗುತ್ತಿರುವ. "ವಿಂದುಕ್ಷೇಪಾನ್ ಪಿಪಾಸುಃ ಪರಿಸರತಿ ಶಿಖೀ ಭ್ರಾಂತಿಮದ್ವಾರಿಯನ್ಮಮ್" ಮಾಲಂ ೨-೧೨ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಮತೀ-ಮತೀ.

**ಭ್ರಾಂತಿಹರ ಭ್ರಾಂತಿಹರ** (ಪುಂ) 1. ಸಚಿವ, ಮಂತ್ರಿ, ಅಮಾತ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಮಿಥ್ಯಾಜ್ಞಾನವನ್ನು ನಿವಾರಿಸುವ, ತಪ್ಪು ತಿಳಿವಳಿಕೆಯನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. ಭ್ರಾಂತಿ ಹರತಿ-ಹರ್ (ಹರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೨-೯) ।

**ಭ್ರಾಮ ಭ್ರಾಮ** (ಪುಂ) 1. ಚಕ್ರದಂತೆ ತಿರುಗುವುದು, ಸುತ್ತುವುದು. 2. ಸಂಚರಿಸುವುದು, ತಿರುಗಾಡುವುದು. 3. ಮಿಥ್ಯಾಜ್ಞಾನ, ತಪ್ಪು ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ಭ್ರಮ್ (ಚಲನೆ) "ಞಃ" (೩-೧-೧೪೦) ।

**ಭ್ರಾಮಕ ಭ್ರಾಮಕ** (ಪುಂ) 1. ಜಂಬುಕ, ನರಿ. 2. ಆಯಸ್ಕಾಂತ ಮಣಿ, ಸೂಜಿಗಲ್ಲು. 3. ಧೂರ್ತ, ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. 4. ಸೂರ್ಯಕಾಂತಿ ಹೊರುವ. ಭ್ರಮ್ (ಚಲನೆ) + ಣಿಚ್ "ಞ್ಕುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । "ಭ್ರಾಮಕೋ ಜಂಬುಕೇ ಭೂತೇ ಸೂರ್ಯವರ್ತಿಸಮಭೇದಯೋಃ" ವಿಶ್ವಂ ಮತ್ತು ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ) 5. ತಿರುಗಿಸುವ, ಸುತ್ತಿಸುವ, ಸುತ್ತಲೂ ಚಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವ. 6. ಮಿಥ್ಯಾಜ್ಞಾನವುಂಟುಮಾಡುವ, ತಪ್ಪು ತಿಳಿವಳಿಕೆ ಕೊಡುವ.

**ಭ್ರಾಮಣ ಭ್ರಾಮಣ** (ನಂ) ತಿರುಗುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು, ಚಕ್ರದಂತೆ ತಿರುಗಿಸುವುದು, ಸುತ್ತುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ಭ್ರಮ್ (ಚಲನೆ) + ಣಿಚ್ "ಞ್ಕುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

**ಭ್ರಾಮಯತ್ ಭ್ರಾಮಯತ್** (ವಿಂ) ತಿರುಗಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸುತ್ತಿಸುತ್ತಿರುವ. ಭ್ರಮ್ (ಚಲನೆ) + ಣಿಚ್ "ಞ್ಕುತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति । भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया" ಗೀತಾ ೧೮-೬೧ ।

**ಭ್ರಾಮರ ಭ್ರಾಮರ** (ಪುಂ) 1. ಆಯಸ್ಕಾಂತ ಶಿಲೆ, ಸೂಜಿ ಗಲ್ಲು. (ನಂ) 2. ಮಧು, ಜೇನುತುಪ್ಪ. ಭ್ರಾಮರೇಣ ಕೃತಮ್ "ಅಚ್" (೪-೩-೧೧೯) । "ಭ್ರಾಮರಂ ಮಧುನಿ ಸ್ಮೃತಮ್ । ಪುನಿ ಪ್ರಸ್ತರಭೇದೇ" ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ) 3. ಭ್ರಮರ ಸಂಬಂಧ ವಾದ. ಭ್ರಾಮರಸ್ಯದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) ।

**ಭ್ರಾಮರೀ ಭ್ರಾಮರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾರ್ವತಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ. ಭ್ರಾಮರೋ ಭ್ರಾಮರವರ್ಣಃ ಅಸ್ಯಾ ಅಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) । "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧) ।

**ಭ್ರಾಷ್ಟ ಭ್ರಾಷ್ಟ** (ಪುಂ) 1. ಬಾಣಲಿ, ಹುರಿಯವ ಓಡು. ಭ್ರಾಷ್ಟೇತ್-ಭ್ರಾಷ್ಟ (ಪಾಕೆ) "ಷ್ಟನ್" (ತಂ ೪-೧೬೦) ।



“ರೋದ್ರೇ ಚಕ್ಷುಷಿ ತಜ್ಜಿತಸ್ತನುಮನುಶ್ರಾಪ್ತಂ ಚ ಯಚ್ಚಿಕ್ಷಿಪೇ”  
ನೃಪಂ ೩-೧೨೮. 2. ಆಕಾಶ, ಅಂತರಿಕ್ಷ.

ಶ್ರಾಪ್ತಕ ಭ್ರೂಷ್ಠಕ (ಪುಂ) ಬಾಣಲಿ, ಹುರಿಯುವ ಓಡು.  
ಶ್ರಾಪ್ತ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕ:” | “उत्पतितोऽपि हि चणकः  
शक्तः किं श्राप्टकं भङ्क्तुम्” पञ्चतं (೧-೧-೪೩) |

ಶ್ರುಕ್ಸ ಭ್ರೂಕುಂಸ (ಪುಂ) “ಶ್ರುಕ್ಸ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಶ್ರುಕ್ಟಿ(ಡಿ) ಭ್ರೂಕುಟಿ (ಟೀ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) “ಶ್ರುಕ್ಟಿ”  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ. “श्रुक्टीकठोरितललाटमाननम्”  
माघं ೧೪-೯. “श्रुक्टी तस्य मुखे परिस्फुरन्ती”  
यादಂ ೧೪-೧೦೧ |

ಶ್ರು ಭ್ರೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುಬ್ಬು, ಕಣ್ಣಿನ ಮೇಲೆ ಇರುವ  
ರೋಮ ಪಟ್ಟಿ. ಶ್ರುಮ್ (ಅನವಸ್ಥಾನೇ) “ಙ್” (ಉಂ  
೨-೬೯) | “श्रुवा स्फुरत्या मदनस्य मौर्वी ज्याघातरेखा-  
मभिदर्शयन्ती” यादಂ ೧೩-೪೪ |

ಶ್ರುಕ್ಟಿ ಭ್ರೂಕುಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) “ಶ್ರುಕ್ಟಿ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಶ್ರುಕ್ಸ ಭ್ರೂಕುಂಸ (ಪುಂ) “ಶ್ರುಕ್ಸ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಶ್ರುಕ್ಷೇ ಭ್ರೂಕ್ಷೇಪ (ಪುಂ) ಹುಬ್ಬನ್ನು ಕುಣಿದಾಡಿಸು  
ವುದು, ಹುಬ್ಬುಗಳ ಮೂಲಕ ಮಾಡುವ ಸುಜ್ಞೆ, ಶ್ರುವಿ:  
ಕ್ಷೇಪ: | ಯಾವುದಾದರೂ ವಿಷಯವನ್ನು ರಹಸ್ಯವಾಗಿ  
ಅಥವಾ ಮೌನದಿಂದ ಸೂಚಿಸಲು ಹುಬ್ಬುಗಳನ್ನು ಅಡಿಸು  
ವುದು ಒಂದು ಸಂಕೇತ. “प्रवेशयामास च भर्तुरेनां  
श्रुक्षेपमात्रानुमतप्रवेशाम्” कुमां ೩-೬೦ |

ಶ್ರುಜಾಹ ಭ್ರೂಜಾಹ (ನಂ) ಹುಬ್ಬಿನ ಮೂಲಭಾಗ,  
ಹುಬ್ಬಿನ ಪ್ರಾರಂಭದ ಭಾಗ. ಶ್ರುವ: ಮೂಲಮ್ “ಜಾಹ್”  
(೪-೨-೨೪) |

ಶ್ರುಣ ಭ್ರೂಣ (ಪುಂ) 1. ಹೆಂಗಸರ ಗರ್ಭ. 2. ಶಿಶು,  
ಬಾಲಕ. ಶ್ರುಣ್ಯತೇ — ಶ್ರುಣ (ಆಶಾವಿಶದ್ವಯೋ: “ಘ”  
(೩-೩-೧೯) | “श्रूणोऽर्भके स्त्रैणगर्भे” अमं |

ಶ್ರುಣ ಭ್ರೂಣಘ್ (ವಿಂ) 1. ಭ್ರೂಣಹತ್ಯೆ ಮಾಡು  
ವವನು, ಶಿಶುವನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವವನು. 2. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಗರ್ಭ  
ವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವವನು. ಶ್ರುಣಂ ಹಂತಿ — ಹನ (ಹಿಸಾ-  
ಗತಯೋ: “ಕ:” (ವಾಂ ೩-೨-೪) |

ಶ್ರುಣಹತ್ಯಾ ಭ್ರೂಣಹತ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಗರ್ಭ  
ವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. 2. ಶಿಶುವನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವುದು.  
ಶ್ರುಣಸ್ಯ ಹತ್ಯಾ |

ಶ್ರುಮಜ್ಜ ಭ್ರೂಭಂಗ (ಪುಂ) ಹುಬ್ಬನ್ನು ಗಂಟುಹಾಕುವುದು,  
ಅಸಮಾಧಾನ ತೋರಿಸಲು ಹುಬ್ಬು ಗಂಟುಹಾಕುವುದು.  
“सभ्रूमज्जं मुखमिव पयो वेत्रवत्याश्रलोमि” मेघಂ  
೧-೨೪ |

ಶ್ರುಮೇದ ಭ್ರೂಭೇದ (ಪುಂ) “ಶ್ರುಮಜ್ಜ” ಪದದ ಅರ್ಥ.

ಶ್ರುಮೇದಿನ್ ಭ್ರೂಭೇದಿನ್ (ವಿಂ) ಅಸಮಾಧಾನ ಅಥವಾ  
ಕೋಪವನ್ನು ಸೂಚಿಸಲು ಗಂಟುಹಾಕಿದ ಹುಬ್ಬುಳ್ಳ.  
ಶ್ರುಮೇದೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪) |

ಶ್ರುಷ ಭ್ರೂಷ (ಪುಂ) 1. ಜಲನ, ಅಲುಗಾಡುವುದು, ಅಳಾಡು  
ವುದು. ಶ್ರುಷ (ಗತೌ) “ಘ” (೩-೩-೧೮) | 2. ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ ಒಂದು ಸ್ಥಾನದಿಂದ (ಪದವಿ ಅಥವಾ ವೃತ್ತಿ)  
ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬರುವುದು, ಉಚಿತವಾದ ಸ್ಥಾನವು ತಪ್ಪುವುದು.  
“अेषो अंशो यथोचितात्” अमं | 3. ತತ್ಪರಿಸಿ  
ನಡೆಯುವುದು, ತಪ್ಪು ಹೆಜ್ಜೆ ಹಾಕುವುದು. 4. ದಾರಿ  
ಬಿಟ್ಟು ಹೋಗುವುದು, ತಪ್ಪು ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವುದು.  
ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) | ಶ್ರುಷಣಮ್ ಭ್ರೂಷಣಮ್.

ಶ್ರುವೇಯ ಭ್ರೂವೇಯ (ಪುಂ) ಭ್ರೂ ಎಂಬ ಹೆಂಗಸಿನ ಮಗ.  
ಶ್ರುನಾಮ ಕಾಚಿತ್ ಸ್ತ್ರೀ, ತಸ್ಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ “ಠಕ್”  
(೪-೧-೧೨೪) | ವುಗಾಗಮಶ್ಚ |

ಶ್ರುಕ್ಷ ಭ್ರೂಕ್ಷ (ಪುಂ) ತಿನ್ನುವುದು, ಊಟಮಾಡುವುದು.  
ಶ್ರುಕ್ಷ (ಅದನೇ) “ಘ” (೩-೩-೧೮) |

इति “भ” कारादिपदार्थनिरूपणम् |



## ಮ

ಮ ಮ ಇದು ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ "ಮ" ವರ್ಗದ ಐದನೆಯ ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಂತರ ಸ್ಪಷ್ಟಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಓಷ್ಠ ಮತ್ತು ನಾಸಿಕೆಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಅನುನಾಸಿಕ ವರ್ಣ. "ಕಾದಯೋ ಮಾವಸಾನಾಃ ಸ್ಪರ್ಶಾಃ" | "ಸ್ಪೃಷ್ಟಂ ಪ್ರಯತನಂ ಸ್ಪರ್ಶಿನಾಮ್" | "ಉಪಧಮಾನೀಯಾನಾಮೋಠೌ" | "ಋಮಙ್ಗನಾನಾಂ ನಾಸಿಕಾ ಚ" ಸಿಂ ಕೌಂ |

ಮ ಮ (ಪುಂ) 1. ಸಮಯ, ಕಾಲ. 2. ಶ್ರೇಷ್ಠ. 3. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. 4. ಮಹಾದೇವ, ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 5. ಯಮ. 6. ಚಂದ್ರ. 7. ವಿಷ. "ಮಃ ಶಿವಶ್ಚಂದ್ರಮಾ ವೇಧಾಃ" ಏಕಾಂ. 8. ಇಂದ್ರ. 9. ಬಂಧನ. 10. ಮೂರು ಗುರುವರ್ಣಗಳುಳ್ಳ "ಮ" ಗಣ. 11. ಶಿರಸ್ಸು, ತಲೆ. "ಮೋ ಯಮೇ ಸಮಯೇಽಪಿ ಸ್ಯಾತ್ ವಿಷೇ ಚ ಮಧುಸೂದನೇ" ಮೇದಿಂ. (ನಂ) 12. ಜಲ, ನೀರು. "ಮಃ ಶಾಮಭೌ ಧಾತರೀಂದ್ರೇ ಚ ಜಲೇ ತು ಸ್ಯಾನ್ನಪುಂಸಕಮ್ | ಮಃ ಶಿರೋ ಮಾ ಚ ಮಧ್ಯೇ ಚ ಬಂಧನೇ ಮಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ" ರತ್ನಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾ ಮೂ. 13. ಮಧ್ಯಮ ಸ್ವರ. 14. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. "ಮಾ ಸ್ತ್ರೀ ಪಶಾಲಯಾಃ ಸ್ಯಾತ್ ಪುಲಿಂಗ್ಗಶ್ಚಂದ್ರಶೇಖರೇ" ಮೇದಿಂ |

ಮಕರ ಮಕರ (ಪುಂ) 1. ಮತ್ಸ್ಯವ ಒಂದು ಭೇದ. ಮಚ್ಚುತೆ — ಮಕಿ (ಭೂಷಾಯಾಮ್) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | ಮಕ ರಾತಿ — ರಾ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | "ಜಞಾಣಾಂ ಮಕರಶ್ಚಾಸ್ಮಿ" ಗೀತಾ ೧೦-೩೧ | 2. ಮೇಷಮೊದಲಾದ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಹತ್ತನೆಯ ರಾಶಿ. 3. ಕುಬೇರನ ಒಂಬತ್ತು ನಿಧಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಮಂ ವಿಷಂ ಕಿರತಿ — ಕ್ (ವಿಷೇಪೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭) |

ಮಕರಕುಂಡಲ ಮಕರಕುಂಡಲ (ನಂ) ಮಕರಾಕಾರದ ಒಂದು ಕರ್ಣಾಭರಣ, ಹತ್ತಕಡುಕ. ಕುಂಡಲಂ ಮಕರ ಇವ | "ಮಹಾಕಿರೀಟಕಟಕಃ ಸ್ಫುರನ್ಮಕರಕುಂಡಲಃ" ಭಾಗಂ ೩-೪-೩೭ |

ಮಕರಕೇತನ ಮಕರಕೇತನ (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ. ಮಕರಃ ಕೇತನಮ್ ಅಸ್ಯ | एवं ಮಕರಕೇತುಃ — ಧ್ವಜಃ ಇತ್ಯಾದಿ. "ಶರೀರಿಣಾ ಜೈತ್ರಶರೇಣ ಯತ್ರ ನಿಃಶಕ್ಲಮುಷೇ ಮಕರಧ್ವಜೇನ" ಮಾಘಂ ೩-೬೧ |

ಮಕರಂದ ಮಕರಂದ (ಪುಂ) 1. ಐಷ್ವರಸ, ಹೂವಿನ ರಸ. ಮಕರಂ ದತಿ — ದೌ (ಅವಸ್ಥಾಪನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | ಪೃಷಂ | "ಪ್ರಸ್ಥಾನಪ್ರಗತಿಭಿರಙ್ಗುಲೀಪು ಚಕ್ರಮೌಲಿಸ್ತವ್ಯುತ-ಮಕರಂದರೇಣುಗೌರಮ್" ರಘುಂ ೪-೮೮ | (ನಂ) 2. ಕೇಸರ, ಕಿಂಜಲ್ಕ, ಹೂವಿನ ಕುಸುಮ.

ಮಕರವ್ಯೂಹ ಮಕರವ್ಯೂಹ (ಪುಂ) ಮಕರದ ಆಕಾರದಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲಿಸುವ ಸೈನ್ಯಗಳ ಗುಂಪು. ಮಕರಾಕಾರಃ ವ್ಯೂಹಃ |

ಮಕರಸಂಕ್ರಾಂತಿ ಮಕರಸಂಕ್ರಾಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೂರ್ಯನು ಮಕರ ರಾಶಿಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು. 2. ಸೂರ್ಯನು ಮಕರ ರಾಶಿಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸುವ ದಿವಸ. ಮಕರೇ ಮಕರರಾಶೌ (ರವಿಃ) ಸಂಕ್ರಾಂತಿಃ |

ಮಕರಾಚ್ಚ ಮಕರಾಂಕ (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ.

ಮಕರಾಲಯ ಮಕರಾಲಯ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ. ಮಕರಾಣಾ-ಮಾಲಯಃ |

ಮಕರಿನ್ ಮಕರಿನ್ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ. ಮಕರೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) |

ಮಕುಟ ಮಕುಟ (ನಂ) ಕಿರೀಟ. ಮಚ್ಚುತೇನೇನ — ಮಕಿ (ಮಂಡನೆ) "ಉಃ" ಬಾಹುಂ | "ಅಧರಾಹಿತಚಾರುಶನಾಲಾಃ ಮಕುಟಾ-ಲಮ್ಬಿಮಯೂರಪಿಚ್ಛಮಾಲಾಃ" ಯಾದಂ ೧೪-೯೦ |

ಮಕುತಿ ಮಕುತಿ (ಪುಂ) ಸರ್ಕಾರವು ಶೂದ್ರನಿಗೆ ಕೊಡುವ ಅಜ್ಜು ಪತ್ರ. "ಮಕುತಿಃ ಶೂದ್ರಶಾಸನಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಮಕುರ ಮಕುರ (ಪುಂ) 1. ದರ್ಪಣ, ಕನ್ನಡಿ. ಮಕಿ (ಮಂಡನೆ) "ಉಃ" (೩-೧-೪೦) | 2. ಕುಲಾಲನ ದಂಡ, ಕುಂಬಾರನು ಚಕ್ರವನ್ನು ತಿರುಗಿಸುವ ಕೋಲು. 3. ವಕುಳವೃಕ್ಷ. 4. ಕೋರಕ, ಮೊಗ್ಗು. "ಮಕುರೋ ಮಕುರೋ ಯಥಾ | ಕುಲಾಲದಂಡೇ ವಕುಲೇ ಕೋರಕಾದರ್ಶಯೋರಪಿ" ಹೇಮಂ |

ಮಕುಲ ಮಕುಲ (ಪುಂ) 1. ವಕುಳವೃಕ್ಷ, ಪವಳದ ಗಿಡ. ಮಕಿ (ಮಂಡನೆ) "ಉಃ" ಬಾಹುಂ | ಪೃಷಂ | 2. ಮೊಗ್ಗು.

ಮಕುಟಕ ಮಕುಟಕ (ಪುಂ) ಕಾಡುಹೆಸರು. ಮಕಿ (ಮಂಡನೆ) "ಉಃ" ಬಾಹುಂ | ಮಕುಂ ಸ್ತಕತಿ — ಷ್ಟಕ (ಪ್ರತಿಪಾತೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |

ಮಕುಠ ಮಕುಠ (ಪುಂ) 1. ಕಾಡುಹೆಸರು. (ವಿಂ) 2. ಮೆಲ್ಲನೆಯ, ನಿಧಾನವಾದ, ತಾಮಸದ. "ಮಕುಠೋ ಬ್ರಿಹಿಭೇದೇ ನಾ ಮನ್ಯರೇ ಪುನರನ್ಯವತ್" ಮೇದಿಂ | "ಮಕುಠೋ ವನಮುದ್ಗಃ ಸ್ಯಾನ್ಮಕುಠಕಮುಕುಠಕೌ" |

ಮಕೂಲ ಮಕೂಲಕ (ಪುಂ) ಜಾಪಾಳ. ಮಕಿ (ಮಂಡನೆ) "ಉಃ" (೩-೧-೪೦) |

ಮಕೋಲ ಮಕೋಲ (ಪುಂ) ಒಂದು ಗೃಹಿಕ ಧಾತು. "ಶಿಲಾಧಾತುಃ ಸಿತೋಪಲಃ ಮಕೋಲಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |



**ಮಕ್ಕಳು** (ಪುಂ) 1. ಚಿಕ್ಕ ಆನೆ, ಸಣ್ಣ ಆಕಾರದ ಆನೆ. 2. ಸಹಾಲದಲ್ಲಿ ದಂತ ಹುಟ್ಟಿದಿರುವ ಆನೆ.

“ಕಾಲೇಷ್ಯಜಾತದಂತಶ್ಚ ಸ್ವಲ್ಪಾಙ್ಗೂಪಿ ಚ ಮಕ್ಕಳು.” ವೈಜಂ. 1

**ಮಕ್ಕಳು** (ಪುಂ) 1. ಸಿಟ್ಟು, ಕೋಪ. 2. ರಾಶಿ, ಗುಂಪು, ಸಮೂಹ. 3. ಕಪಟ, ದಂಭಾಚಾರ. ಮಕ್ಕಳು (ಸಂಘಾತೇ ರೋಚಿ ಚ) “ಮಕ್ಕಳು” (3-3-14). 4. ತನ್ನ ತಪ್ಪನ್ನು ಮುಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ, ಮಾಡಿದ ಅಪರಾಧವನ್ನು ಇಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳುವುದು. “ಸ್ವದೋಷಾಙ್ಗಾಧನಂ ಮಕ್ಕಳು.” ಹಾರಾಂ. 1

**ಮಕ್ಕಳು** (ಪುಂ) ಪಿರಿಯಾಲವ್ಯಕ್ತ, ಮೊರಟಿ ಗಿಡ. ಮಕ್ಕಳು ವೀರ್ಯಮಸ್ಯ.

**ಮಕ್ಕಳು** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೋಣ. ಮಕ್ಕಳು (ಸಂಘಾತೇ ರೋಚಿ ಚ) “ಮಕ್ಕಳು” (3-1-133). “ಕುಲಕಗತಸಮುದ್ರಾಸ್ವಾದನೇ ಕುಂಭಯೋನೇರಿತರಕರನಿರಸ್ತಾ ಮಕ್ಕಳುಕೋತ್ಸಾರೀತ್ಯಾ” ಚಂ. ರಾಂ. 1. ಮಕ್ಕಳುಕೋ. ಪೃಷಂ. 1

**ಮಕ್ಕಳು** (ನಂ) ಜೇನುಮೇಣ. ಮಕ್ಕಳುಕಾಯಾ ಮಲಮ್.

**ಮಕ್ಕಳು** (ಪುಂ) ಯಜ್ಞ, ಯಾಗ, ದೇವತೆಗಳ ಪೂಜೆ. ಮಕ್ಕಳುನಿ ದೇವಾ ಅತ್ರ—ಮಕ್ಕಳು(ಗತೌ) “ಮಕ್ಕಳು” (3-3-121). “ಮಕ್ಕಳುಖಿತ್ರೋಜುಮತಃ ಪುರೋಹಿತಾ ಧಿನೋತಿ ಹವ್ಯೇನ ಹಿರಣ್ಯ-ರೇತಸಮ್” ಕಿರಾಂ. 1-22.

**ಮಕ್ಕಳು** (ಪುಂ) ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರ. ಮಕ್ಕಳುಸ್ಯ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಯಾಗಸ್ಯ ತಾತಾ ರಕ್ಷಕಃ. “ರಾವಣಾರಿಮಕ್ಕಳುತಾತಾ ಸೀತಾಯಾಃ ಪತಿರೀತ್ಯಪಿ” 1.

**ಮಕ್ಕಳು** (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ, ಅಸುರ. (ವಿಂ) 2. ಯಜ್ಞವನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸುವವನು, ಯಜ್ಞಕ್ಕೆ ವಿಘ್ನವುಂಟುಮಾಡುವವನು. ಮಕ್ಕಳು ದ್ವೇಷಿ—ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) “ಮಕ್ಕಳು” (3-2-61). “ತ್ರಿಲೋಕನಾಥೇನ ಸದಾ ಮಕ್ಕಳು-ದ್ವಿಷಸ್ತ್ವಯಾ ನಿಯಮ್ಯಾ ತನು ದಿವ್ಯಚಕ್ಷುಷಾ” ರಘುಂ. 3-45.

**ಮಕ್ಕಳು** (ಪುಂ) ಸಂಸ್ಕಾರ ಹೊಂದಿದ ಯಾಗಗ್ನಿ. ಎವಂ ಮಕ್ಕಳುನಲಃ ಮಕ್ಕಳುನಲಃ ಇತ್ಯಾದಿ. “ಮಹಾವೀರೋ ಮಕ್ಕಳುನಲಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 1

**ಮಕ್ಕಳು** (ಪುಂ. ಬಂ. ವಂ) 1. ಮಗಧದೇಶ, ಈಗಿನ ಬಿಹಾರ ಪ್ರಾಂತದ ದಕ್ಷಿಣಭಾಗ. “ಮಗಧಾಃ ಕೀಕಟಾ ಮತಾಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 1. “ಅಸ್ತಿ ಮಗಧೇಷು ಪುಷ್ಪಪುರೀ ನಾಮ ನಗರೀ” ದಶಕುಂ. 1. 2. ಮಗಧದೇಶದ ಜನರು. “ಇಕ್ಷಿತಜಾಶ್ಚ ಮಗಧಾಃ ಪ್ರೇಕ್ಷಿತಜಾಶ್ಚ ಕೋಸಲಾಃ” ಭಾಂ. ಕರ್ಣಂ. 3-34.

**ಮಗಧಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಪ್ಪಲಿ.

**ಮಗಧೇಶ** (ಪುಂ) 1. ಮಗಧದೇಶ, —ಮಗಧೇಶ —ಈಶ್ವರ (ಪುಂ) 1. ಜರಾಸಂಧ. 2. ಮಗಧದೇಶದ ದೊರೆ. ಮಗಧಾನಾಮಿಶಃ: ಈಶ್ವರೋ ವಾ. “ಪ್ರಾಕ್ಸನ್ನಿಕರ್ಷ ಮಗಧೇಶ್ವರಸ್ಯ ನೇತ್ವಾ ಕುಮಾರೀ-ಮವದತ್ಸುನಂದಾ” ರಘುಂ. 6-20.

**ಮಗಧ** (ವಿಂ) 1. ಮುಳುಗಿದ, ನೀರಿನೊಳಗೆ ಹೋಗಿ ರುವ. ತು ಮಸ್ತು (ಶುದ್ಧಿ) “ಮಗಧಃ” (3-4-92). 1. ತಕಾರಸ್ಯ ನತ್ವಮ್ (6-2-45). “ಕೃತಃ ಪ್ರಯತನೋ ನ ಚ ದೇವ ಲಾಭಂ ಮಗಧಂ ಪಯಸ್ಯಾಭರಣೋತ್ತಮಂ ತೇ” ರಘುಂ. 16-96. 2. ಒಳಗೆ ಅಡಗಿರುವ, ಒಳಕ್ಕೆ ಹುದುಗಿಕೊಂಡ, ಒಳಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. “ಗಗನಾ ದ್ವಿಷಚ್ಛದಾನಿ ಪಕ್ಷುಭೂತೇ ಸಂಭಾವನಾ ಭೂತಿಮಿವೋದರೀಷ್ಯನ್” ಕಿರಾಂ. 3-39.

**ಮಗಧ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ದ್ವೀಪ. 2. ಒಂದು ದೇಶ. ಮಗಧಿ (ಗತೌ) “ಮಗಧಿ” (3-1-134). ಪೃಷಂ. 1. (ನಂ) 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಪುಷ್ಪ. 4. ಧನ, ಐಶ್ವರ್ಯ.

**ಮಗಧವತ್** (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ, ದೇವತೆಗಳ ರಾಜ. ಮಗಧವತ್ ಪೂಜ್ಯತೇ—ಮಗಧ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) “ಮಗಧಿಃ” (3-1-149). ನಿಪಾಂ. 1. ಮಗಧಾ ಮಗಧಾನೌ ಮಗಧಾನಃ. “ತವ ಪ್ರಯಾತಸ್ಯ ಜಯಾಯ ತೇಷಾಂ ಕ್ರಿಯಾದಧಾನಾಂ ಮಗಧಾ ವಿಧಾತಮ್” ಕಿರಾಂ. 3-42. “ಮಗಧಾ ಬಹುಲಮ್” (6-4-128) ಇತಿ “ತು” ಆದೇಶೋ ಮಗಧಾನ್ ಮಗಧವಂತಿ ಮಗಧವಂತಃ ಇತಿ ರೂಪಮ್. “ಹವಿರ್ಜಕ್ಷತಿ ನಿಃಶಕ್ತೋ ಮಗಧೇಷು ಮಗಧಾನಸೌ” ಭಟ್ಟಂ. 16-19. (ವಿಂ) 2. ಧನವುಳ್ಳವನು, ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ. ಮಗಧಂ ಧನಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮಗಧಿ” (4-2-94).

**ಮಗಧಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಶ್ವಿನಿ ಮೊದಲಾಗಿ ಹತ್ತನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ. ಇದು ಪಂಚತಾರಾತ್ಮಕವಾದುದು. ಒಂದು ಮನೆಯ ಆಕಾರವುಳ್ಳದ್ದು. ಪಿತೃಗಣವು ಇದರ ಅಧಿಪತ್ಯದೇವತೆ. ಮಗಧಾನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು ಕಠಿನ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು. ಮಾತಾಪಿತೃಗಳಲ್ಲಿ ಭಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು. ತೀಕ್ಷ್ಣಸ್ವಭಾವದವನು. ಶುದ್ಧ ವಿದ್ಯಾವಂತ. ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಜಯಿಸುವ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. ಮಗಧಾ ಮಗಧಾ. ಒಂದು ಧಾನ್ಯ.

**ಮಗಧಾತ್ರಯೋದಶಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಗಧಾ ನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ ಕೂಡಿದ ತ್ರಯೋದಶಿ ತಿಥಿ, ಭಾದ್ರಪದ ಕೃಷ್ಣ ತ್ರಯೋದಶಿ.

**ಮಗಧು** (ಪುಂ) ಮೈಮೇಲಿನ ಚಿಟ್ಟು, ಚರ್ಮದ ಮೇಲಿನ ಮಚ್ಚೆ. “ಮಗಧುಸ್ತು ಸಿಂಹ ಸಿಂಹಂ ಚ” ವೈಜಂ. 1

**ಮಗಧು** (ಪುಂ) ದರ್ಪಣ, ಕನ್ನಡಿ. ಮಗಧಿ (ಮಗಧನೇ) “ಮಗಧಿ” ಬಾಹುಂ. 1



**ಮಕ್ಕುಶ ಮಂಕುಶ** (ಪುಂ) ಸಂಗೀತ ಮತ್ತು ಕುಣಿತ ಬಲ್ಲವನು.

**ಮಕ್ಕುಶ ಮಂಕ್ತು** (ವಿಂ) ಸ್ನಾನಮಾಡುವವನು. ಟು ಮಸ್ತೊ (ಶುದ್ಧಿ) "ತು" (೩-೧-೧೩೩) । ನುಮ್ (೭-೧-೬೦) ।

**ಮಕ್ಕುಶ ಮಂಕ್ತು** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಜಾಗೃತಿಯಾಗಿ, ಶೀಘ್ರವಾಗಿ, ಕೂಡಲೆ. ಮಜ್ಜತಿ—ಟುಮಸ್ತೊ (ಶುದ್ಧಿ) "ಸು:" ಬಾಹುಂ । ನುಮಾಗಮ: (೭-೧-೬೦) । "ಯದ್ಗತಿನ: ಕಡ-ಕಡಾಹತಡಾನ್ಮಿಮಕ್ಕುಶೋಮಕ್ಕುಶದಪಾತಿ ಪರಿತ: ಪಡಲೇರಲಿನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೫-೩೭ । 2. ಅಧಿಕವಾಗಿ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ. 3. ನಿಜವಾಗಿ, ವಾಸ್ತವವಾಗಿ, ಯಥಾರ್ಥವಾಗಿ. "ಮಕ್ಕುಶ ಶೀಘ್ರೇ ಭುಶೇ ತತ್ವೇ" ಹೇಮಂ ।

**ಮಕ್ಕ ಮಂಗೆ** (ಪುಂ) ಹಡಗಿನ ತುದಿ, ನೌಕೆಯ ಶಿಖರ. ಮಗಿ (ಗತೌ) "ಅ" (೩-೧-೧೩೪) । "ನಿಶಿರೋ ಮಕ್ಕಮರಿತ್ರಯಾಮ್" ವೈಜಂ ।

**ಮಕ್ಕಲ ಮಂಗೆಲ** (ನಂ) 1. ಮಂಗಳ ಗ್ರಹ, ಅಂಗಾರಕ, ಕುಜ. ಮಗಿ (ಗತೌ) "ಅ" (೩-೧-೧೩೪) । "ಕುಜಾರಮಕ್ಕಲಾಕ್ಷಾರಾ: ಲೋಹಿತಾಕ್ಷೋ ಮಹಿಸುತ:" ವೈಜಂ । 2. ಅನಂದ, ಹರ್ಷ, ಸುಖ. "ಭದ್ರಂ ಭದ್ರಂ ವಿತರ ಭಗವನ್ ಭುಯಸೇ ಮಕ್ಕಲಾಯ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೩ । 3. ಮಲ್ಲಿಗೆ ಹೂವಿನ ವಾಸನೆ, ಮಲ್ಲಿಗೆ ಹೂವಿನಲ್ಲಿರುವ ಪರಿಮಳ. "ಮಲಿಕಾಪಾಂ ಸ್ಥಿತೋ ಗಂಧೋ ಮಕ್ಕಲಯೋ ಮಕ್ಕಲಶ್ಚ ಸ:" ವೈಜಂ । 4. ಕಲ್ಯಾಣ, ಮಂಗಳ, ಶುಭ. "ಪ್ರಮಾತಶ್ಚೇ ಪರಿತೋ ದಿಗಂತಾಸ್ತುರ್ಯಸ್ವನೇ ಮುಚ್ಛತಿ ಮಕ್ಕಲಾರ್ಥೇ" ರಘುಂ ೬-೯ । 5. ಶ್ರೇಯಸ್ಸು, ಕ್ಷೇಮ. "ಸಂಗ: ಸತಾಂ ಕಿಮು ನ ಮಕ್ಕಲ-ಮಾತನೋತಿ" । 6. ಶುಭನಿಮಿತ್ತ, ಒಳ್ಳೆಯ ಶಕುನ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಲಾ-ಲಾ. 7. ಬಿಳಿ ಗರಿಕೆ. 8. ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ. "ಮಕ್ಕಲಾ ಸಿತದ್ವಾರಿಯಾಮುಮಾಪಾಂ ಪುಸಿ ಭೂಮಿಜೇ । ನಪುಸಕಂತು ಕಲ್ಯಾಣೇ ಸರ್ವಾರ್ಥಲಕ್ಷಣೇ" ಮೇದಿಂ । 9. ಪತಿಪ್ರತೆ, ಪತಿಗೆ ಅನುಕೂಲವಾಗಿರುವ ಹೆಂಗಸು, ಪತಿಸೇವೆಯಲ್ಲಿ ನಿರತಳಾದ ಹೆಂಗಸು. 10. ಅರಿಶಿನ.

**ಮಕ್ಕಲಕರ ಮಂಗೆಲಕರ** (ವಿಂ) ಮಂಗಳವನ್ನು ಉಂಟು ಮಾಡುವ, ಕ್ಷೇಮವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ಶ್ರೇಯಸ್ಸನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ. ಮಕ್ಕಲಂ ಕರೋತಿ—ಡುಕ್ರ (ಕರಣಂ) "ಠ:" (೩-೨-೨೦) ।

**ಮಕ್ಕಲಕಾರಕ ಮಂಗೆಲಕಾರಕ** (ವಿಂ) ಶುಭವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ, ಕ್ಷೇಮವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಮಕ್ಕಲಂ ಕರೋತಿ—ಕುಕ್ರ (ಕರಣಂ) "ಠುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

**ಮಕ್ಕಲಕಾರ್ಯ ಮಂಗೆಲಕಾರ್ಯ** (ನಂ) ಶುಭಕಾರ್ಯ, ವಿವಾಹ ಮೊದಲಾದ ಕಲ್ಯಾಣಕಾರ್ಯ, ಹೆಚ್ಚಿದ ಆಚರಣೆ.

**ಮಕ್ಕಲಗ್ರಹ ಮಂಗೆಲಗ್ರಹ** (ಪುಂ) 1. ಕುಜಗ್ರಹ, ಅಂಗಾರಕ. 2. ಶುಭಗ್ರಹ, ಶುಭ ಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವ ಗ್ರಹ.

**ಮಕ್ಕಲಚ್ಛಾಯ ಮಂಗೆಲಚ್ಛಾಯ** (ಪುಂ) ಪ್ಲಕ್ಷಪ್ಲಕ್ಷ. ಮಕ್ಕಲಂ ಮಕ್ಕಲಜನಿಕಾ ಚಾಯಾಸ್ಯ ।

**ಮಕ್ಕಲತುಯ ಮಂಗೆಲತುಯ**, —ವಾಠ —ವಾಠ್ಯ (ನಂ) ಮಂಗಳಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ ವಾದ್ಯ. "ಸುಖಶ್ರವಾ ಮಕ್ಕಲತುಯನಿವನಾ: ಪ್ರಮೋದನುಯೈ: ಸಹ ವಾರಯೋಪಿತಾಮ್" ರಘುಂ ೩-೧೯ ।

**ಮಕ್ಕಲಪಾಠಕ ಮಂಗೆಲಪಾಠಕ** (ಪುಂ) ಮಂಗಳವನ್ನು ಪಠಿಸುವವನು, ಸ್ತುತಿಸುವವನು, ಹೊಗಳುವವನು. ಪಠತಿ—ಪಠ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಠುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । ಮಕ್ಕಲಸ್ಯ ಪಾಠಕ: ।

**ಮಕ್ಕಲಪ್ರದ ಮಂಗೆಲಪ್ರದ** (ವಿಂ) ಮಂಗಳವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ, ಕ್ಷೇಮವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ಶ್ರೇಯಸ್ಸು, ನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಮಕ್ಕಲಂ ಪ್ರದದಾತಿ—ಪ್ರ + ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೬) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಪ್ರದಾ-ಪ್ರದಾ. ಅರಿಶಿನ.

**ಮಕ್ಕಲವಾರ ಮಂಗೆಲವಾರ** (ಪುಂ) ಕುಜವಾರ.

**ಮಕ್ಕಲಸೂತ್ರ ಮಂಗೆಲಸೂತ್ರ** (ನಂ) 1. ಸೌಭಾಗ್ಯವನ್ನು ಕೊಡುವ ಸೂತ್ರ, ಶುಭಸೂಚಕ ಸೂತ್ರ, ಕೈಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಪ್ರತಿಸರ, ಶುಭಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಕಟ್ಟುವ ಕಂಕಣ. 2. ವಿವಾಹದಲ್ಲಿ ಹೆಂಗಸಿಗೆ ಕಂಠದಲ್ಲಿ ಕಟ್ಟುವ ಮಂಗಳ ಸೂತ್ರ, ಮಾಂಗಲ್ಯದ ಸೂತ್ರ.

**ಮಕ್ಕಲಯ ಮಂಗೆಲಯ** (ಪುಂ) 1. ನೀರಾಮೆ ಬಳ್ಳಿ. 2. ಅಶ್ವತ್ಥ ವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿಮರ. 3. ಬಿಲ್ವವೃಕ್ಷ, ಬಿಲ್ವಪತ್ರ ಮರ. 4. ಕಾಡುಕಡಲೆ. (ನಂ) 5. ಮಲ್ಲಿಗೆ ಹೂವಿನ ವಾಸನೆ ಯುಳ್ಳ ಅಗುರು. "ಮಕ್ಕಲಯಂ ಮಲಿಗಾನ್ವಿ ಯತ್" ಅಮಂ । 6. ದಧಿ, ಮೊಸರು. 7. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ ಪಚ್ಚಕರ್ಪೂರ ಹರಿದ್ರೆ ಮುರೆ ಮುಸ್ತಿ ಮುಂತಾದ ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯಗಳಿಂದ ಮಿಶ್ರವಾದ ನೀರಿನ ಸ್ನಾನ. "ಯತ್ ಸರ್ವೋಪಧಿಸ್ನಾನಂ ತನ್ಮಕ್ಕಲಯಮ್" ವೈಜಂ । (ವಿಂ) 8. ಮಂಗಳಕರವಾದ, ಶುಭಕರವಾದ, ಕಲ್ಯಾಣವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಮಕ್ಕಲಾಯ-ಹಿತಮ್ "ಯತ್" (೫-೧-೫) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಲಯಾ-ಲಯಾ. 9. ಶಮೀವೃಕ್ಷ, ಬನ್ನಿಮರ. 10. ಕಾಡುಸಬ್ಬಸಿಗೆ. 11. ಬೆಂಡೆಗಿಡ. 12. ಬಿಳಿ ಬಚೆ. 13. ಮಲ್ಲಿಗೆ ಹೂವಿನ ವಾಸನೆ. "ಮಲಿಕಾಪಾಂ ಸ್ಥಿತೋ ಗಂಧ: ಮಕ್ಕಲಯಾ ಮಕ್ಕಲಶ್ಚ ಸ:" ವೈಜಂ । 14. ಶಂಖಪುಷ್ಪದ ಗಿಡ. 15. ಪೇಂಕಣ ಗಿಡ, ಪ್ರಿಯಂಗುಲತೆ. 16. ಕಪಿತ್ತ.



ಪೃ. 17. ಗೋರೋಚನ. "ಮಜ್ಜಲಿಮ: ಸ್ಯಾತ್ ತ್ರಾಯಮಾಣಾ-  
ಶ್ವತ್ಯಬಿಲ್ವಮಸೂರಕೇ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಶಮ್ಯಾಮಃ ಪುಷ್ಪಿಮಿಸಿ-  
ಶುಕಲವಾಸು ಚ। ರೋಚನಾಯಾಮಥೋ ದಧಿ ಕಲಿಬಂ ಶಿವಕರೇ  
ತ್ರಿಪು" ಮೇದಿಂ।

ಮಜ್ಜಲಿಮ ಮಂಜಲಕ (ಪುಂ) ಕಾಡುಕಡಲೆ. ಮಜ್ಜಲೆ  
ಸಾಧು: "ಯತ್" (೪-೪-೯೮)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"।

ಮಜ್ಜಿನಿ ಮಂಗಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೆಂಕೆ, ಹಡಗು.

ಮಜ್ಜಿಕಾ ಮಂಜಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠ  
ವಾದ. ನಾಮಪದದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಇದರ ಪ್ರಯೋಗ  
ಗೋಮಜ್ಜಿಕಾ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಹಸು.

ಮಜ್ಜಕುತ್ ಮಜ್ಜಕುತ್ (ನಂ) ದೇಹದೊಳಗಿನ ಎಲ್ಲು.  
ಮಜ್ಜಾನಂ ಕರೋತಿ—ತುಕುತ್ (ಕರಣಂ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬)।  
ಉಂಟಮಾಡಿದ ಅನ್ನವು ರಸವಾಗಿ ಪರಿಣಮಿಸಿ ಕ್ರಮೇಣ  
ರಕ್ತ ಮಾಂಸ ಮೇದಸ್ಸು ಅಸ್ಥಿ ಮಜ್ಜೆ ಮತ್ತು ಶುಕ್ರ  
ಧಾತುಗಳನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದು. "ರಸಾದ್ರಕ್ತಂ ತತೋ  
ಮಾಂಸಂ ಮಾಂಸಾನ್ಮೇದಃ ಪ್ರಜಾಯತೇ। ಮೇದಸೋಽಸ್ಯ ತತೋ ಮಜ್ಜಾ  
ಮಜ್ಜಃ ಶುಕ್ರಂ ತು ಜಾಯತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೧೪-೧೦।

ಮಜ್ಜತ್ ಮಜ್ಜತ್ (ವಿಂ) ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗುತ್ತಿರುವ,  
ಸ್ನಾನಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ತುಮಸ್ಸೋ (ಶುದ್ಧಿ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
"ಯದ್ಗೋಪ್ರತರಕಲ್ಪೋಽಭೂತ್ ಸಮದಸ್ತತ್ರ  
ಮಜ್ಜತಾಮ್" ಋಣಂ ೧೫-೧೦೧।

ಮಜ್ಜನ್ ಮಜ್ಜನ್ (ಪುಂ) 1. ಎಲ್ಲುಬಿನೊಳಗಿನ ನೆಣ,  
ದೇಹಸಾರ. ತುಮಸ್ಸೋ (ಶುದ್ಧಿ) "ಕನಿ:" (೩ಂ ೧-೧೫೭)।  
ನಿಶಾಂ। "ಎತೇ ನಿಷ್ಕುಪ್ಯ ಜಹ್ವಾನಲಕಮುದಯಿನಿರ್ಮಜ್ಜಧಾರಾಃ  
ಪಿಬಂತಿ" ಮಾಲತೀಂ ೫-೧೭। 2. ಮರದ ಬೇಗು,  
ಮರದ ಸಾರ.

ಮಜ್ಜನ ಮಜ್ಜನ (ನಂ) 1. ನೀರಿನೊಳಗೆ ಮುಳುಗುವುದು,  
ನೀರಿನಲ್ಲಿಳಿದು ಸ್ನಾನಮಾಡುವುದು. ತುಮಸ್ಸೋ (ಶುದ್ಧಿ)  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಇತಿ ಧೌತಪುರಂದ್ರಿಮತ್ಸರಾನ್  
ಸರಸಿ ಮಜ್ಜನೇನ" ಮಾಘಂ ೮-೭೧। 2. ಮಜ್ಜೆ, ದೇಹಸಾರ.

ಮಜ್ಜಾ ಮಜ್ಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎಲ್ಲುಬಿನೊಳಗಿನ ನೆಣ, ದೇಹ  
ಸಾರ, ಸತ್ವ. ಮಜ್ಜತಿ—ತುಮಸ್ಸೋ (ಶುದ್ಧಿ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।  
"ಲಜ್ಜಾವದ್ರಾಜವನ್ಮಜ್ಜಾ ಮಾಂಸಸಾರಾಸ್ಥಿ-  
ಸಾರಯೋಃ" ಇತಿ ಭಾಗುರಿಃ। "ಮಜ್ಜೋಕ್ತಾ ಮಜ್ಜಯಾ ಸಹ"  
ದ್ವಿರೂಪಂ। 2. ಮರದ ಸಾರ, ಮರದ ರಸ.

ಮಜ್ಜಾಜ ಮಜ್ಜಾಜ (ನಂ) 1. ವೀರ್ಯ, ಶುಕ್ರಧಾತು.  
ಮಜ್ಜಾಯಾ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೯೮)।  
2. ಗುಗ್ಗುಳ.

ಮಜ್ಜಾರಸ ಮಜ್ಜಾರಸ (ಪುಂ) ಶುಕ್ರಧಾತು, ವೀರ್ಯ.  
ಮಜ್ಜಾಯಾ ರಸಃ।

ಮಜ್ಜಾಸಾರ ಮಜ್ಜಾಸಾರ (ಪುಂ) ಜಾಯಿಕಾಯಿ. ಮಜ್ಜಾಯಾ  
ಸಾರೋಽಸ್ಯ।

ಮಜ್ಜ ಮಂಜ (ಪುಂ) 1. ಮಂಜ, ಪಲ್ಲಂಗ. ಮಜ್ಜತೇ—ಮಜಿ  
(ಧಾರಣೋಚ್ಚಾಯಪೂಜನೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। 2.  
ಉನ್ನತವಾದ ಆಸನ, ಎತ್ತರವಾದ ಪೀಠ. "ಸ ತತ್ರ  
ಮಜ್ಜೇಷು ಮನೋಜವೇಷಾನ್ ಸಿಂಹಾಸನಸ್ಥಾನುಪಚಾರವತ್ಸು" ಋಣಂ  
೬-೧। 3. ಅಟ್ಟಣೆ, ಕಾವಲುಗಾರನಿಗಾಗಿ ಎತ್ತರವಾಗಿ  
ಕಟ್ಟುವ ಗುಡಿಸಲು, ಎತ್ತರದ ಜೋಪಡಿ.

ಮಜ್ಜಕ ಮಂಜಕ (ಪುಂ) 1. ಪಲ್ಲಂಕ, ಮಂಜ. ಮಜ್ಜ  
ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"। "ವೃದ್ಧೋಽಪಿ ಪತಿರೇಷ ಮಜ್ಜಕಗತಃ ಸ್ಥೂಣಾವ-  
ಶೇಷಂ ಗೃಹಮ್" ಸಾಂ ದಂ। 2. ಅಟ್ಟಣೆ, ಎತ್ತರವಾಗಿ  
ಕಟ್ಟಿದ ಗುಡಿಸಲು, ಎತ್ತರದ ಜೋಪಡಿ.

ಮಜ್ಜಕಾಶ್ರಯ ಮಂಜಕಾಶ್ರಯ (ಪುಂ) ಮತ್ಕುಣ, ತಿಗಣೆ.  
ಮಜ್ಜಕಃ ಆಶ್ರಯೋ ಯಸ್ಯ।

ಮಜ್ಜಮಂಜ ಮಂಜಮಂಜ (ಪುಂ) ಹೊಲಗಳಲ್ಲಿ ಪೈರು  
ಗಳನ್ನು ಕಾಯಲು ನಾಲ್ಕು ಕಂಬಗಳ ಮೇಲೆ ಕಟ್ಟುವ  
ಗುಡಿಸಲು, ಎತ್ತರದ ಜೋಪಡಿ.

ಮಜ್ಜಿಕಾ ಮಂಜಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕುರ್ಚಿ, ನಾಲ್ಕು  
ಪಾದಗಳ ಆಸನ. 2. ದನಕರುಗಳಿಗೆ ನೀರು ಹಾಕುವ  
ಹರಿದೋಣೆ, ತೊಟ್ಟಿ. 3. ಉದ್ದದ ತಟ್ಟೆ.

ಮಜ್ಜರ ಮಂಜರ (ನಂ) 1. ತಿಲಕವೃಕ್ಷ. 2. ಮುತ್ತು.  
3. ಲತೆ.

ಮಜ್ಜರಿ(ರಿ) ಮಂಜರಿ(ರಿ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೂವು  
ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಗೊಂಚಲು. ಮಜ್ಜು ಮನೋಹರತಾಂ  
ಶ್ರುತಿ — ಶ್ರು (ಗತೌ) "ಇ:" (೩ಂ ೪-೧೩೯)।  
"ಸ್ಫುರನ್ನಖಾಂಶುಕ್ರಮಜ್ಜರಿಭೃತಃ" ಕಿರಾಂ ೮-೫। 2.  
ಅಂಕುರ, ಹೊಸದಾಗಿ ಹೊರಟಿರುವ ಚಿಗುರು. "ಮಜ್ಜಯ್-  
ದಾರಾ ಶುಶುಮೇರ್ಜುನಸ್ಯ" ಋಣಂ ೧೬-೫೧। 3. ದಪ್ಪ  
ಮುತ್ತು. 4. ತುಲಸಿ. 5. ತಿಲಕವೃಕ್ಷ. 6. ಲತೆ.

ಮಜ್ಜಾ ಮಂಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಡು. 2. ಹೂವು  
ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಗೊಂಚಲು. 3. ಲತೆ.

ಮಜ್ಜಿ ಮಂಜಿ(ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಂಜರಿ, ಗೊಂಚಲು. 2. ಲತೆ,  
ಬಳ್ಳಿ. "ವಮರೀ ಮಜ್ಜರಂ ನನಾ। ಮಜ್ಜಿಶ್ಚ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಮಜ್ಜಿಕಾ ಮಂಜಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇಶ್ಯೆ, ಸೂಳೆ.

ಮಜ್ಜಿಮ ಮಂಜಿಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂಜಿಮೆ.



**ಮಂಜೀರ ಮಂಜೀರ** (ಪುಂ) 1. ನೂಪುರ, ಕಾಲಿನ ಒಂದು ಅಭರಣ, ಗೆಜ್ಜೆ ಸರಪಳಿ. ಮಂಜು (ಧ್ವನಿ) [ಸೌತ್ರಧಾತು:] "ಇರನ್" ಬಾಹುಂ. 2. ಮೊಸರು ಕಡೆಯುವ ಮಂಕಿನ ಹಗ್ಗವನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಕಂಬ.

**ಮಂಜೀರಕ ಮಂಜೀರಕ** (ವಿಂ) ನೂಪುರದಂತೆ ಶಬ್ದ ಮಾಡುವವನು. ಮಂಜೀರ ಇವ ಕಾಯತಿ — ಕಂ (ಶಬ್ದ) "ಕ:" (೩-೨-೩) ।

**ಮಂಜು ಮಂಜು** (ವಿಂ) 1. ರಮಣೀಯವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ. ಮಂಜ (ಮಾಜನೆ ಶಬ್ದ ಚ) "ಕು:" (೩-೧-೩೭) । "ವರಣಸಚ್ಚರಣರಣಾಯಮಾನಮಂಜುಮಂಜೀರರಣಿತಾನುವಿಧ-....." ಮಾಲತೀಂ ೧ । 2. ಇಂಪಾದ, ಮಧುರವಾದ (ಧ್ವನಿ). "ಸ್ವಲದಸಮಂಜಸಮಂಜುಜಲಿತಂ ತೇ" ತಂ ರಾಂ ೪-೪ ।

**ಮಂಜುಕೇಶಿನ್ ಮಂಜುಕೇಶಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠ. (ವಿಂ) 2. ಸುಂದರವಾದ ಕೂದಲುಳ್ಳ.

**ಮಂಜುಘೋಷ ಮಂಜುಘೋಷ** (ಪುಂ) 1. ಇಂಪಾದ ಧ್ವನಿ, ಮನೋಹರವಾದ ಶಬ್ದ. ಮಂಜುಮಂಜುಲೋ ಘೋಷ: ಶಬ್ದ: । (ವಿಂ) 2. ಇಂಪಾದ ಧ್ವನಿಯುಳ್ಳ.

**ಮಂಜುಭಾಷಿನ್ ಮಂಜುಭಾಷಿನ್** (ವಿಂ) ಇಂಪಾಗಿ ಮಾತಾಡುವ. ಮಂಜು ಭಾಷತೇ—ಭಾಷ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಞಿತಿ:" (೩-೧-೧೩೪) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪) । —ಭಾಷಿಣಿ —ಭಾಷಿಣೀ, —ವಾದಿನ್ —ವಾದಿನಿ, —ವಾದಿನಿ —ವಾದಿನೀ.

**ಮಂಜುಭಾಷಿಣಿ ಮಂಜುಭಾಷಿಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೃತ್ತ ರತ್ನಾಕರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ 13 ನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. "ಸಜಸಾ ಜಗೌ ಭವತಿ ಮಂಜುಭಾಷಿಣಿ" ವೃಂ ರಂ । ಇದರ ಗಣನಿತ್ಯಾಸ:

|     |     |     |     |    |
|-----|-----|-----|-----|----|
| ಸ   | ಜ   | ಸ   | ಜ   | ಗು |
| 110 | 101 | 110 | 101 | 0  |

**ಮಂಜುವಾಕ್ ಮಂಜುನಾಚ್** (ವಿಂ) ಇಂಪಾದ ಮಾತುಳ್ಳ, ಮನೋಹರವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವ. ಮಂಜು: ವಾಕ್ ಯಸ್ಯ । "ಅನುವದತಿ ಶುಕಸ್ತೇ ಮಂಜುವಾಕ್ಯಂಜರಸ್ಯ:" ರಘುಂ ೪-೭೪ ।

**ಮಂಜುಲ ಮಂಜುಲ** (ಪುಂ) 1. ನೀರುಕೋಳಿ. ಮಂಜು "ಲಕ್" (೪-೨-೧೭) । (ನಂ) 2. ಲತಾಗೃಹ, ನಿಕುಂಜ, ಪೊದೆ. 3. ನೀರಿನ ಬುಗ್ಗೆ, ಊಟಿ. 4. ಚಿತ್ರವರ್ಣ, ಶಬಲವರ್ಣ. (ವಿಂ) 5. ಮಧುರವಾದ, ಇಂಪಾದ (ಧ್ವನಿ). 6. ಮನೋಹರವಾದ, ಸುಂದರವಾದ. "ಮಂಜು-ಲಂತು ಜಲಾಶಲೇ । ರಮ್ಯೇ ಕುಂಜೇ ಮಂಜುಲಸ್ತು ದಾತೃಹೇ" ಹೇಮಂ ।

**ಮಂಜುಷಾ ಮಂಜುಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೆಟ್ಟಿಗೆ. ದ್ರುಮಸ್ತೋ (ಶುದ್ಧಿ) "ಋಷನ್" (ತಂ ೪-೭೭) ನುಮ್ ಚ । 2. ಪುರ, ನಗರ, ಪಟ್ಟಣ. "ಪೆಠಾ ಪುರೀ ಚ ಮಂಜುಷಾ" ವೈಜಂ । 3. ಬಿದಿರಿನ ಬುಟ್ಟಿ, ಮಂಕರಿ. "ಭಕ್ಷಯಾಶಯಾಹಿಮಂಜುಷಾಂ ದೃಷ್ಟವಾಕ್ಸುಸ್ತೇನ ಭಕ್ಷಿತ:" ಚಂದ್ರಾಂ । 4. ಮಂಜಿಷ್ಠ. 5. ಪಾಷಾಣ, ಶಿಲೆ.

**ಮಂಚಿ ಮಂಚಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಲಿಕ್ಕಲ್ಲು ಮಳೆ, ಶಿಲಾವೃಷ್ಟಿ. "ಧನೋಪಲಸ್ತು ಕರಕ: ಪುಂಜಿಕಾ ಮಂಚಿತಿ ಚ" ವೈಜಂ ।

**ಮಂ ಮಂ** (ಪುಂ) 1. ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿನಿಲಯ. ಮಂತ್ಯತ್ರ —ಮಂ (ಮದನಿವಾಸಯೋ:) "ಮಂ" (೩-೩-೧೨೧) । "ಮಂಶಿಶಾಪಾದಿನಿಲಯ:" ಅಮಂ । 2. ಸಣ್ಣ ಕೊಠಡಿ, ಚಿಕ್ಕ ಕೋಣೆ. 3. ಸಂನ್ಯಾಸಿಯ ವಾಸಸ್ಥಾನ, ಮುನಿಯ ಆಶ್ರಮ. 4. ಗುಡಿ, ದೇವಾಲಯ. 5. ಎತ್ತುಗಳು ಎಳೆಯುವ ಗಾಡಿ.

**ಮಂರ ಮಂರ** (ಪುಂ) 1. ಕಠಿನತೆ, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ, ಬಿರುಸಾಗಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ಗಟ್ಟಿಯಾದ, ಕಠಿನವಾದ, ಬಿರುಸಾಗಿರುವ. "ಕಂಕಶೇ ಪರೂಘೋ ಮಂರ: ಸ್ವೋರಣ: ಸ್ವರ:" ವೈಜಂ । 3. ಮದ್ಯಪಾನದಿಂದ ಅಮಲೇರಿದವನು, ಕುಡಿದು ಮದವೇರಿದವನು.

**ಮಂಠು ಮಂಠು** (ಪುಂ) ಒಂದು ಚರ್ಮದ ವಾದ್ಯ, ಡಿಕ್ಕಿಯೆಂಬ ವಾದ್ಯ. "ವಾಲ್ಯಪ್ರಭೇದಾ ಡಮರಮಂಠುಡಿಗಿಡಿಮ-ಕ್ಷರಾ:" ಅಮಂ ।

**ಮಂಠುಕ ಮಂಠುಕ** (ಪುಂ) ಡಿಕ್ಕಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಚರ್ಮ ವಾದ್ಯ.

**ಮಣಿ ಮಣಿ** (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರತ್ನ, ವಜ್ರ, ಮುತ್ತು ಮುಂತಾದುವು. ಮಣ್ಯತೇ—ಮಣ (ಶಬ್ದ) "ಞ್" (ತಂ ೪-೧೧೭) । ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗದಲ್ಲಿ ವಿಕಲ್ಪವಾಗಿ "ಙೀಪ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೪) । ಮಣಿ ಮಣಿ. "ಮಣೌ ವಜ್ರಸಮುತ್ಕೀರ್ಣೇ ಸೂತ್ರಸ್ಯೇವಾಸ್ತಿ ಮೇ ಗತಿ:" ರಘುಂ ೧-೪ । 2. ಮಂಡಬಂಧ, ಮಣಿಕಟ್ಟು, ಹಸ್ತದ ಮೂಲಭಾಗ. "ಮಣಿಬಂಧೋ ಮಣಿ: ಪಾಣಿಮೂಲೇ" ವೈಜಂ । 3. ಅಡಿನ ಕತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಜೋಲಾಡುವ ಮಂಸದ ಬುಗುಟಿ (ಗಂಟು), ಅಜಾಗಲ ಸ್ತನ. 4. ಗುಡಾಣ, ದೊಡ್ಡ ಮಣ್ಣಿನ ಪಾತ್ರೆ, ನೀರು ತುಂಬಿಡುವ ಮಡಕೆ. "ಅವಲಿ ಮಣಿರಜಾಕಂಠಸ್ತನೇ ರತ್ನೇಷ್ಯಾಲಿಂಜರೇ" ವೈಜಂ । 5. ಲಿಂಗದ ಅಗ್ರಭಾಗ. "ಮಣಿ: ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸಯೋರಶ್ಮಜಾತೌ ಮುಕ್ತಾದಿಕೋಪಿ ಚ । ಕಂಠದೇಶಸ್ತನೇಜಾಯಾ ಲಿಂಜಾಂಽಲಿಂಜರೇಷಿ ಚ" ಮೇದಿಂ ।

**ಮಣಿಕ ಮಣಿಕ** (ಪುಂ) ಗುಡಾಣ, ನೀರು ಮತ್ತು ಸಾಮಾನುಗಳನ್ನು ತುಂಬಿಡುವ ದೊಡ್ಡ ಮಣ್ಣಿನ ಪಾತ್ರೆ. ಮಣಿ



ಸಂಜಾಯಾ "ಕನ್" (೪-೩-೭೫)। "ಅಲಿಂಜರ: ಸ್ಯಾನ್ಮಣಿಕ:"  
ಅಮಂ।

**ಮಣಿಕರ್ಪಿಕಾ ಮಣಿಕರ್ಪಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಶೀಕ್ಷೇತ್ರ  
ದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಪುಣ್ಯತೀರ್ಥ.

**ಮಣಿಕಾರ ಮಣಿಕಾರ** (ಪುಂ) ವಜ್ರವ್ಯಾಪಾರ ಮಾಡು  
ವವನು, ಮತ್ತು ರತ್ನ ವಜ್ರಗಳ ಅಭರಣಗಳನ್ನು  
ಮಾಡುವವನು, ಅಕ್ಕಸಾಲೆ. ಮಣಿ ಕರೋತಿ—ಡುಕ್ಕಳ್  
(ಕರಣ) "ಅಞ್" (೩-೨-೧)। "ಮಣಿಕಾರೋ ವೈದಿಕ:  
ಶೈಲಿಕಸ್ತಾಮ್ರಕುಟಕ:" ವೈಜಂ।

**ಮಣಿಗ್ರೀವ ಮಣಿಗ್ರೀವ** (ಪುಂ) ಕುಬೇರನ ಮಗ.

**ಮಣಿಚ್ಛಿದ್ರಾ ಮಣಿಚ್ಛಿದ್ರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆರಿಗೆ ಹಾಲೆ  
ಯೆಂಬ ಒಂದು ಮೂಲಿಕೆ. 2. ಮೇದಾ ಎಂಬ ಮೂಲಿಕೆ.

"ಮಣಿಚ್ಛಿದ್ರಾ ತು ಮೇದಾಯಾಮೃಷಮಾಪ್ಯೌಷಧೇಷಿ ಚ" ಮೇದಿಂ।

**ಮಣಿತ ಮಣಿತ** (ನಂ) ರತಿಕಾಲದ ಶಬ್ದ, ಸಂಭೋಗ ಕಾಲ  
ದಲ್ಲಿ ಸ್ತ್ರೀಯರ ಅವ್ಯಕ್ತ ಶಬ್ದ. ಮಣ (ಶಬ್ದ) "ಕ್ತ:"  
(೩-೩-೧೧೪)। "ಸೀಕ್ರತಾನಿ ಮಣಿತಂ ಕಣ್ಣಾಂಕ್ತಿ: ಸ್ನಿಗ್ಧ-  
ಮುಕ್ತಮಲಮಥವಚಾಸಿ" ಮಾಘಂ ೧೦-೭೫।

**ಮಣಿತಾರಕ ಮಣಿತಾರಕ** (ಪುಂ) ಸಾರಸ ಪಕ್ಷಿ, ನೀರು  
ಹಕ್ಕಿ, ತಾವರೆ ಹಕ್ಕಿ. ಮಣಿರಿವ ತಾರಕಾಸ್ಯ। ಸ್ತ್ರಿಯಾ  
ಜಾತಿಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೬೩)।

**ಮಣಿವರ್ಪಣ ಮಣಿವರ್ಪಣ** (ನಂ) ರತ್ನಕನ್ನಡಿ, ರತ್ನಖಚಿತ  
ವಾದ ಕನ್ನಡಿ.

**ಮಣಿವೀಪ ಮಣಿವೀಪ** (ಪುಂ) 1. ರತ್ನ ಕೆತ್ತಿದ ದೀಪ.  
ಮಣಿಖಚಿತೋ ದೀಪ:। 2. ದೀಪದಂತೆ ಬೆಳಗುವ ರತ್ನ.  
ಮಣಿವೀಪ ಇವ।

**ಮಣಿಪೀಠ ಮಣಿಪೀಠ** (ನಂ) ರತ್ನ ಕೆತ್ತಿದ ಆಸನ, ಮಣಿ  
ಮಯವಾದ ಮಣಿ. ಮಣಿಮಯ ಪೀಠಮ್। "ಅನಾರತಂ ಯೌ  
ಮಣಿಪೀಠಶಾಯಿನಾವರಂಜಯದ್ರಾಜಶಿರ:ಸ್ರಜಾಂ ರಜ:" ಕಿರಾಂ  
೧-೪೦।

**ಮಣಿಪುಷ್ಪಕ ಮಣಿಪುಷ್ಪಕ** (ಪುಂ) ಸಹದೇವನ ಶಂಖ.  
"ನಕುಲ: ಸಹದೇವಶ್ಚ ಸುಧೋಷಮಣಿಪುಷ್ಪಕೌ" ಗೀತಾ ೧-೧೬।

**ಮಣಿಪುರ ಮಣಿಪುರ** (ನಂ) ಕಳಿಂಗದೇಶದ ಮುಖ್ಯ ಪಟ್ಟಣ,  
ಬಭ್ರವಾಹನ (ಅರ್ಜುನನ ಮಗ)ನ ರಾಜಧಾನಿ.

**ಮಣಿಪುರ ಮಣಿಪುರ** (ನಂ) ನಾಭಿಯಲ್ಲಿ ಪಟಾಚಕ್ರಾಂತ  
ಗತವಾದ ಒಂದು ಪದ್ಮ. ಇದು ಸುಷುಮ್ನಾನಾಡಿ  
ಯೊಳಗೆ ಪಟಾಚಕ್ರಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ನಾಭಿಯಲ್ಲಿರುವುದು.  
"ತದ್ಭವಂ ನಾಭಿದೇಶ ತು ಮಣಿಪುರಂ ಮಹಾಪ್ರಭಮ್। ಮೇಧಾಭಂ  
ವಿಶ್ವದಾಭಂ ಚ ಬಹುತೇಜೋಮಯಂ ತತ:"।

**ಮಣಿಬಂಧ ಮಣಿಬಂಧ** (ಪುಂ) 1. ಮಣಿಕಟ್ಟು, ಹಸ್ತದ  
ಮೂಲಭಾಗ. ಮಣಿಬಂಧಿತೇತ್ರ—ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। 2. ರತ್ನ ಮತ್ತು ಮುಂತಾದವನ್ನು  
ಕಟ್ಟುವುದು. "ಉಪನತಮಣಿಬಂಧೇ ಮೃದ್ಧಿ ಪಾಲಸ್ಯಶತ್ರು:  
ಸುರಭಿ ಸುರವಿಮುಕ್ತಂ ಪುಷ್ಪವರ್ಷಂ ಪಪಾತ" ರಘುಂ ೧೨-೧೦೨।

**ಮಣಿಬಂಧನ ಮಣಿಬಂಧನ** (ನಂ) 1. ಅಲಂಕಾರಕ್ಕಾಗಿ  
ಮತ್ತು ರತ್ನಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವುದು. 2. ಮಣಿಕಟ್ಟು,  
ಹಸ್ತದ ಮೂಲಭಾಗ. ಮಣಿಬಂಧಿತೇತ್ರ—ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ)  
ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭)।

**ಮಣಿಬೀಜ ಮಣಿಬೀಜ** (ಪುಂ) 1. ದಾಳಿಂಬೆ ಗಿಡ. (ನಂ)  
2. ದಾಳಿಂಬೆ ಹಣ್ಣು.

**ಮಣಿಮಂಟಪ ಮಣಿಮಂಟಪ** (ಪುಂ) 1. ರತ್ನಖಚಿತವಾದ  
ಮಂಟಪ. ಮಣಿಮಯೋ ಮಂಟಪ:। 2. ಆದಿಶೇಷನ ವಾಸ  
ಸ್ಥಾನ.

**ಮಣಿಮಾಲಾ ಮಣಿಮಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುತ್ತಿನ ಹಾರ.  
2. ರತ್ನದ ಹಾರ. 3. ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ಭಂದಸ್ಥಿನ ಒಂದು  
ವೃತ್ತ. "ತ್ಯೌ ತ್ಯೌ ಮಣಿಮಾಲಾ ಚಿತ್ತಾ ಗುಹ್ಯವಕ್ತೃ:" ವೃಂ ೨೦।  
ಪ್ರತಿ ಪಾದದಲ್ಲಿಯೂ ತಗಣ ಯಗಣ ತಗಣ ಯಗಣ  
ಗಳಿದ್ದು ಆರು ವರ್ಣಗಳಿಗೆ ಯತಿಯಿರುವುದು "ಮಣಿ  
ಮಾಲಾ" ವೃತ್ತವಾಗುವುದು.

ತ ಯ ತ ಯ ।

೦೦। 100 ೦೦। 100

ಇದು ಈ ವೃತ್ತದ ಗಣವಿನ್ಯಾಸ. 4. ದಂತಕ್ಷತ, ಸಂಭೋಗ  
ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಹಲ್ಲಿನ ಗಾಯ. "ಮಣಿಮಾಲಾ ತು  
ಹಾರೆ ದಂತಕ್ಷತಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ। 5. ದೀಪ್ತಿ, ಪ್ರಕಾಶ.  
6. ಲಕ್ಷ್ಮಿ.

**ಮಣಿಮೇಖಲಾ ಮಣಿಮೇಖಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರತ್ನಖಚಿತವಾದ  
ವಡ್ಡಾಣ, -ಡಾಬು, -ನಡಕಟ್ಟು.

**ಮಣಿಸಾನು ಮಣಿಸಾನು** (ಪುಂ) ಮೇರುಪರ್ವತ.

**ಮಣಿಚ ಮಣಿಚ** (ಪುಂ) 1. ಹಸ್ತದ ಅಗ್ರಭಾಗ, ಕೈಯ  
ತುದಿ. 2. ಮತ್ತು. 3. ಪುಷ್ಪ, ಹೂವು. "ಮಣಿಚ-  
ಮಗ್ರಹಸ್ತೇಷಿ ಪುಷ್ಪಮೌಕ್ತಿಕಯೋರಪಿ" ವೈಜಂ।

**ಮಣಿಚಕ ಮಣಿಚಕ** (ನಂ) ಪುಷ್ಪ, ಹೂವು. "ಮಣಿಚಕಂ  
ಪ್ರಸೂನಂ ಚ ಸೂನಂ ಸುಮನಸ: ಸ್ತ್ರಿಯ:" ವೈಜಂ।

**ಮಂಡ ಮಂಡ** (ಪುಂ) 1. ಅನ್ನದ ಮೇಲಿನ ಕೆನೆ, ಗಂಜಿ.  
ಮಂಡಯತೇ—ಮಡಿ (ಭೂಷಾಯಾಮ್) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)।  
"ಸರ್ವರಸಾಗ್ರೇ ಮಂಡಮಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಅಮಂ। "ನಿವಾರೌದನ-  
ಮಂಡಮಿಶ್ರಮಧುರಂ ಸದ್ಯ:ಪ್ರಸೂತಪ್ರಿಯಾಪೀತಾದಮ್ಯಧಿಕಂ ತಪೋವನಮೃಗ:



ಪರ್ಯಂತಿಮಾಚಾಮತಿ" ತಂ ರಾಂ ೪-೧. 2. ಮೊಸರಿನ ಮೇಲಿನ ಕೆನೆ. 3. ಅಭರಣ, ಒಡವೆ. 4. ಹರಳುಗಿಡ. 5. ಸಾರ, ತಿರುಳು, ಸತ್ತ್ವಾಂಶ. 6. ಹಕ್ಕಿಯ ಪುಕ್ಕ. 7. ಒಂದು ಶಾಕ. 8. ಕೆನೆ, ನೋರೆ, ಮೇಲಿನ ರಸ. 9. ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. ಮಂಡತಿ ವರ್ಷಿಕಾಲೇ ಹೃಷ್ಯತಿ—ಮಡಿ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂಡಾ ಮಂಡಾ. 10. ನೆಲ್ಲಿ ಗಿಡ. "ಮಂಡೋ ಮಸ್ತುನಿ ಭೂಯಾಮೇರಣ್ಡೆ ಸಾರ-ಪಿಂಚಯೋಃ. | ಶಾಕೇ ಮಂಡಾತ್ವಾಮಲಕಯಾಮ್" ಹೇಮಂ |

ಮಂಡಕ ಮಂಡಕ (ಪುಂ) ಗೋಧಿಹಿಟ್ಟಿನಿಂದ ಮಾಡಿದ ಒಂದು ವಿಧ ಭಕ್ಷ್ಯ, ಮಂಡಿಗೆ. ಮಂಡ ಸಂಜ್ಞಾಂ "ಕನ್" |

ಮಂಡನ ಮಂಡನ (ನಂ) 1. ಭೂಷಣ, ಒಡವೆ, ಅಭರಣ. ಮಡಿ (ಭೂಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭). "ವಿಪಕ್ಷ-ಚಿತ್ತೋನ್ಮಥನಾ ನಖವ್ರಣಾಸ್ತಿರೋಹಿತಾ ವಿಭ್ರಮಮಂಡನೇನ" ಕಿರಾಂ ೮-೩೪. "ಸಾ ಮಂಡನಾನ್ಮಂಡನಮನ್ವಭುಕ್ತ" ಕುಮಾಂ ೭-೫. 2. ಅಲಂಕರಿಸುವಿಕೆ, ಶೃಂಗರಿಸುವಿಕೆ. ಮಡಿ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). "ಮಾಮಕ್ಷಮ್ ಮಂಡನ-ಕಾಲಹಾನೇವೇತ್ತೀವ ಬಿಂಬಾಧರಬದ್ಧತೃಣಮ್" ರಘುಂ ೧೩-೧೬. (ವಿಂ) 3. ಅಲಂಕರಿಸುವ, ಶೃಂಗರಿಸುವ. ಮಂಡಯತಿ — ಮಡಿ (ಭೂಯಾಮ್) "ಯುಚ್" (೩-೨-೧೫೧). "ಮಂಡನಂ ಸ್ಯಾದಲಕ್ಷ್ಮೀಲಕ್ಷ್ಮೀರಿಣುನಿ ವಾಚ್ಯವತ್" ವಿಶ್ವಂ |

ಮಂಡಪ ಮಂಡಪ (ಪುಂ) 1. ತೆರೆದ ಚಪ್ಪರ, ಸುತ್ತಲೂ ಮರೆಯಿಲ್ಲದ ಚಪ್ಪರ, ಜನರ ವಿಶ್ರಾಂತಿ ಸ್ಥಳ, ಜಾವಡಿ. 2. ದೇವಾಲಯ, ಗುಡಿ. 3. ಮದುವೆ ಮುಂಜಿ ಮಂತಾದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಹಾಕುವ ಚಪ್ಪರ. "ದೀರ್ಘವಮಿ ನಿಯಮಿತಾಃ ಪಟಮಂಡಪೇಶು ನಿಶ್ರಾಂ ವಿಹಾಯ ವನಜಾಕ್ಷ ವನಾಯುಡೇಶ್ಯಾಃ" ರಘುಂ ೫-೭೩. 4. ಲತಾಗೃಹ, ಪೊದೆ, ಪೊದರು. ಮಡಿ (ಭೂಯಾಮ್) "ವಚ್" (೩-೩-೧೮). ಮಂಡ ಪಾತಿ—ಪಾ "ಕಃ" (೩-೨-೩). "ಪ್ರತ್ಯಾಸನ್ನೋ ಕುರವಕವೃತೇರ್ಮಾಧಿವಿ-ಮಂಡಪಸ್ಯ" ಮೇಘಂ ೨-೧೫. (ವಿಂ) 5. ಹಾಲು ಮೊಸರು ಮುಂತಾದುವುಗಳ ಮೇಲಿನ ಕೆನೆಯನ್ನು ಕೂಡಿಸುವ. ಮಂಡ ಮಸ್ತು ಪಿಬತಿ — ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕಃ" |

ಮಂಡನೀಯ ಮಂಡನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಅಲಂಕರಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಅಲಂಕರಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಮಡಿ (ಭೂಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). "ತವ್ಯಃ" | ಮಂಡಯಿತವ್ಯಃ ಮಂಡಯಿತವ್ಯಃ.

ಮಂಡಯತ್ ಮಂಡಯತ್ (ವಿಂ) ಅಲಂಕರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಶೃಂಗರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಮಡಿ (ಭೂಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಸತ್" (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬) |

—ಯನ್ತೀ —ಯನ್ತೀ. "ಪ್ರಚಲಿತವದಲಭೃತಾಃ ಷಡ್ವೈರ್ಮಂಡಯನ್ತೀ" ತಂ ರಾಂ ೩-೧೭ |

ಮಂಡಯಂತ ಮಂಡಯಂತ (ಪುಂ) 1. ಅಲಂಕಾರ, ಅಭರಣ, ಒಡವೆ, ಭೂಷಣ. ಮಡಿ (ಭೂಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಸಚ್" (ತಂ ೩-೧೨೮). ಏಷ್ಯಾಂತಾದೇಶಃ (೭-೧-೩). 2. ಅನ್ನ. 3. ನಟ, ನರ್ತಕ. 4. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಸಮೂಹ.

ಮಂಡಯಂತಿ ಮಂಡಯಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಂಗಸು. ಮಂಡಯತಿ — ಮಡಿ (ಭೂಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಸಚ್" (ತಂ ೩-೧೨೮). "ಸ್ತ್ರೀವರ್ಯೋಷಿತಾ ರಾಮಾ ಮಂಡಯಂತಿ ವಜ್ರಜನಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಮಂಡಲ ಮಂಡಲ (ಪುಂ) 1. ಶರೀರದೊಳಗಿನ ಎಂಟು ವಿಧ ಸಂಧಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಎಂಟು ವಿಧ ಸಂಧಿಗಳು: (1) ಕೊರಾಃ, (2) ತಲೂಲಾಃ, (3) ಸಾಮುದ್ಗಾಃ, (4) ಪ್ರತರಾಃ, (5) ತುಗ್ಗಸೇವಿನ್ಯಃ, (6) ವಾಯಸತುಂಡಾಃ, (7) ಮಂಡಲಾಃ ಮತ್ತು (8) ಶಾಸ್ತ್ರಾವರ್ತಾಃ. ಬೆರಳು ಮಣಿಕಟ್ಟು ಗುಲ್ಮ (ಕಾಲಿನ ಗಂಟು) ಜಾನು (ಮಂಡಿ) ಮತ್ತು ಕೊರವರ (ಮೊಳಕೆ)ಗಳಲ್ಲಿ ಕೋರಸಂಧಿಗಳೂ ಕಂಕಳ ತೊಡೆಗಳ ಸಂಧಿ ಮತ್ತು ದಂತಗಳಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲಾಖಲಸಂಧಿಗಳೂ ಹೆಗಲು ಗುದಪ್ರದೇಶ ಯೋನಿ ಮತ್ತು ನಿತಂಬಗಳಲ್ಲಿ ಸಾನುದ್ಗ ಸಂಧಿಗಳೂ ಕತ್ತು ಮತ್ತು ಬೆನ್ನೆಲುಬುಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರತರಸಂಧಿಗಳೂ ಶಿರಸ್ಸು, ಪಿರೆ, ಮತ್ತು ಕಪಾಲ (ತಲೆಯ ಚಿಪ್ಪು)ಗಳಲ್ಲಿ ತುನ್ನಸೇವನೀಸಂಧಿಗಳೂ ಕೆನ್ನೆಯ ಮೇಲುಭಾಗಗಳಲ್ಲಿ ವಾಯಸತುಂಡಸಂಧಿಗಳೂ ಕಂಠ ಹೃದಯ ನೇತ್ರಗಳು ಮೂತ್ರಕೋಶ ಮತ್ತು ನಾಡಿಗಳಲ್ಲಿ ಮಂಡಲಸಂಧಿಗಳೂ ಶ್ವೇತ (ಕಿವಿ) ಶೃಂಗಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ತಂಬಾವರ್ತಸಂಧಿಗಳೂ ಇರುವುವು. ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೫-೨೭. 2. ಕುಕ್ಕುರ, ನಾಯಿ. "ಯಕ್ಷ ಇಂದ್ರಮಹಶ್ವಾಲಃ ಕಪಿಲೋ ಮಂಡಲಃ ಶುನಃ" ವೇಜಂ. (ವಿಂ) 3. ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರ ಮಂಡಲ, —ಬಿಂಬ. "ಅಪರ್ವಣಿ ಗ್ರಹಕಲ್ಪೇಂದ್ರಮಂಡಲಾ" ಮಾಲಂ ೪-೧೬. 4. ದೇಶ, ರಾಷ್ಟ್ರ. "ತೇನ ಸಿಂಹಾಸನಂ ಪಿಶ್ಯಮಖಿಲಂ ಚಾರಿ-ಮಂಡಲಮ್" ರಘುಂ ೪-೪. 5. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಸರ್ಪ, ಮಂಡಲದ ಹಾವು. 6. ಪರಿಧಿ, ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರ ಸುತ್ತಲೂ ಕಟ್ಟುವ (ಚಕ್ರಾಕಾರದ) ಪರಿವೇಷ. 7. ಹನ್ನೆರಡು ರಾಜರುಗಳ ಸಮೂಹ. 8. ಕುಷ್ಠ ರೋಗ. "ಮಂಡಲೋ ಬಿಂಬದೇಶಯೋಃ | ಭುಜ್ಜಮೇದೇ ಪರಿಧೌ ಶುನಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ-ರಾಜಕೇ | ಸಂಜ್ಞಾತೇ ಕುಷ್ಠಮೇದೇ ಚ" ಹೇಮಂ. (ನಂ) 9. ಸಮೂಹ, ಸಮುದಾಯ, ರಾಶಿ, ಗುಂಪು. "ಛಾಯಾಮಂಡಲ-ಲಕ್ಷಣೇಣ ತಮದೃಶ್ಯಾ ಕಿಲ ಸ್ವಯಮ್" ರಘುಂ ೪-೫. "ಸ್ಫುರತಿ ಸುರಮುನೀನಾಂ ಮಂಡಲಂ ವ್ಯಸ್ತಮೇತತ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೩



10. ಹಳ್ಳಿಗಳ ಸಮುದಾಯ, ಗ್ರಾಮಗಳ ಸಮೂಹ.  
11. ಹನ್ನೆರಡು ರಾಜರುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇಶ. 12. ಪ್ರತಿಬಿಂಬ, ಛಾಯೆ. ತ್ರಿಲಿಂಗ ಮಂಡಲ ವೃಂದೆ ಗ್ರಾಮೀಣ ಪ್ರತಿಬಿಂಬಯೋಃ। ತಪಸ್ವಿ ಕುಠರೋ ದೇಶ ದ್ವಾದಶರಾಜಕೇ" ವೇಜಂ। ವೈಜಯಂತಿಯಲ್ಲಿ ನಾಯನ್ನು ಪುಲಿಂಗ ಮತ್ತು ಉಳಿದಲ್ಲವನ್ನೂ ತ್ರಿಲಿಂಗಗಳಲ್ಲೂ ಹೇಮಕೋಶ (ಅನೇಕಾರ್ಥಸಂಗ್ರಹ)ದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಪುಲಿಂಗ ದಲ್ಲೂ ಮೇದಿನೀಕೋಶದಲ್ಲಿ ನಾಯನ್ನು ಪುಲಿಂಗದಲ್ಲೂ ಸಮೂಹ ಮತ್ತು ಬಿಂಬಗಳನ್ನು ತ್ರಿಲಿಂಗಗಳಲ್ಲೂ ಪರಿಧಿ ಕುಷ್ಠ ದೇಶ ಮತ್ತು ಹನ್ನೆರಡು ರಾಜರ ಸಮೂಹ ಈ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ನಪುಂಸಕಲಿಂಗದಲ್ಲೂ ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ. "ಮಂಡಲಂ ಪರಿಧೌ ಕೋಶೇ ದೇಶ ದ್ವಾದಶರಾಜಸು। ಕಲೀಬಂಧು ನಿವಹೇ ಬಿಂಬೇ ತ್ರಿಪು ಪುಸಿ ತು ಕುಕ್ಕುರೇ" ಮೇದಿಂ। 13. ಸೈನ್ಯಗಳ ಸಮೂಹ. 14. ಗೋಳ, ವಲಯ, ವರ್ತುಲ, ವೃತ್ತ. "ಪ್ರಶಾಸದಾವಾರಿಧಿ ಮಂಡಲಂ ಭುವಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೨೩। 15. ಬಿಲ್ಲುಗಾರನು ನಿಲ್ಲುವ ಒಂದು ರೀತಿ, ಮೂರಡಿಯ ಆಗಲದಲ್ಲಿ ಕಾಲಗಳನ್ನು ಇಟ್ಟು ಕೊಂಡು (ಬಾಣ ಪ್ರಯೋಗಕ್ಕಾಗಿ) ನಿಲ್ಲುವಿಕೆ. "ತ್ರಿವಿತ-ಸ್ಯಂತರೌ ಪಾದೌ ಮಂಡಲಂ ತೋರಣಾಕೃತೌ" ವೇಜಂ। 16. ಋಗ್ವೇದದ ಒಂದು ಭಾಗ. [ಋಗ್ವೇದವು ಹತ್ತು ಮಂಡಲಗಳಾಗಿ ಭಾಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದು.] 17. ಹುಲಿ ಯುಗುರು ಗಿಡ. 18. ಜಿಲ್ಲೆ, ದೇಶದ ಒಂದು ಭಾಗ.

**ಮಂಡಲಕ ಮಂಡಲಕ** (ನಂ) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. ಮಂಡಲ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ"। 2. ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರರ ಬಿಂಬ. 3. ವಲಯ, ಗೋಳ, ವೃತ್ತ. 4. ಸೈನ್ಯದ ವ್ಯೂಹ, ಸೇನೆಗಳ ಸಮೂಹ. 5. ದರ್ಪಣ, ಕನ್ನಡಿ. 6. ಕುಷ್ಠ ರೋಗ. 7. ದೇಶ, ರಾಷ್ಟ್ರ. (ಪುಂ) 8. ಕುಕ್ಕುರ, ನಾಯಿ. "ಭವೇನ್ಮಂಡಲಕಂ ಬಿಂಬೇ ಕುಠಭೇದೇ ಚ ದರ್ಪಣೇ" ಮೇದಿಂ।

**ಮಂಡಲನೃತ್ಯ ಮಂಡಲನೃತ್ಯ** (ನಂ) ಚಕ್ರದ ಆಕಾರದಲ್ಲಿ ಸುತ್ತುತ್ತಾ ಮಾಡುವ ನೃತ್ಯ.

**ಮಂಡಲಪತ್ರಿಕಾ ಮಂಡಲಪತ್ರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೆಂಪು ಕೊಮ್ಮೆ ಗಿಡ. 2. ಕಬಿಲವರ್ಣದ ಅಗುರು. "ಕಪಿಲಾ ಪಿಚ್ಛಿಲಾ ಭಸ್ಮಗರ್ಭಾ ಮಂಡಲಪತ್ರಿಕಾ" ವೇಜಂ।

**ಮಂಡಲಾಗ್ರ ಮಂಡಲಾಗ್ರ** (ಪುಂ) ಖಡ್ಗ, ತುದಿಯಲ್ಲಿ ಬಗ್ಗಿರುವ ಕತ್ತಿ. ಮಂಡಲಮಿವಾಗ್ರಮಸ್ಯ। "ಕೌಕ್ಷೇಯಕೋ ಮಂಡಲಾಗ್ರಃ" ಅಮಂ।

**ಮಂಡಲಾಧಿಪ ಮಂಡಲಾಧಿಪ, -ಅಧಿಪತಿ -ಅಧಿಪತಿ** (ಪುಂ) 1. ರಾಷ್ಟ್ರಪತಿ, ರಾಷ್ಟ್ರದ ಒಡೆಯ. 2. ಜಿಲ್ಲೆಯ

ಅಧಿಕಾರಿ. 3. ರಾಜ, ದೊರೆ. ಮಂಡಲಸ್ಯ ಅಧಿಪಃ ಅಧಿಪತಿರ್ವಾ।

**ಮಂಡಲಾವೃತ್ತಿ ಮಂಡಲಾವೃತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂಡಲಾಕಾರವಾಗಿ ಚಲಿಸುವುದು, ಚಕ್ರದಂತೆ ಸುತ್ತುವುದು. ಮಂಡಲಮಿವ ಅವೃತ್ತಿಃ। "ಅಮಿಷು ಕೃತಪುಟಾಂತರ್ಮಂಡಲಾವೃತ್ತಿಚಕ್ಷುಃಪ್ರಚಲಿತ-ಚಕ್ರಲಭ್ರತಾಂಡವರ್ಮಂಡಯಂತ್ಯಾ" ತಂ ರಾಂ ೩-೧೯।

**ಮಂಡಲಿನ್ ಮಂಡಲಿನ್** (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ಮಂಡಲ-ಮಸ್ಯಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪)। 2. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. 3. ನಾಯಿ. 4. ಅಜಗರ, ಹೆಬ್ಬಾವು. 5. ಬಿಡಾಲ, ಬೆಕ್ಕು. 6. ಸೂರ್ಯ. 7. ಇಂದ್ರ. "ಮಂಡಲಿ ನಾ ರಾಜಿ ಸೂರ್ಯ ಶಕ್ರೇಹಿ ಶ್ವಾಬಿಡಾಲಯೋಃ" ನಾನಾರ್ಥರಂ।

**ಮಂಡಲಿ ಮಂಡಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗರಿಕೆ ಹುಲ್ಲು. 2. ವೃತ್ತ, ವಲಯ, ಗೋಳ. 3. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. 4. ಚಕ್ರ, ಕಾರವಾಗಿ ಚಲಿಸುವುದು. ಮಂಡಲ ಗೌರಾಂ "ಙೀಘ್" (೪-೧-೪೧)।

**ಮಂಡಲೇಶ ಮಂಡಲೇಶ, -ಶಿಖರ -ಈಶ್ವರ** (ಪುಂ) "ಮಂಡಲಾಧಿಪ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

**ಮಂಡಹಾರಕ ಮಂಡಹಾರಕ** (ಪುಂ) ಮದ್ಯ ತೆಗೆಯುವವನು, ಬಟ್ಟೆ ಇಳಿಸುವವನು. ಮಂಡಂ ಹರತಿ - ಹಮ್ (ಹರಣ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ಮಂಡಾ ಮಂಡಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೆಲ್ಲಿ ಗಿಡ. ಮಡಿ (ಭೂಷಾಯಾಮ್) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಆಮಲಕಯಾಂ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಮಂಡಾ" ಮೇದಿಂ।

**ಮಂಡಿತ ಮಂಡಿತ** (ವಿಂ) ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಶೃಂಗರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಮಡಿ (ಭೂಷಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಭಾತಿ ಕೇಸರವತೇವ ಮಂಡಿತಾ ಬಂಧುಜೀವತಲಿಕೇನ ಕನ್ಯಕಾ" ಕುಮಾಂ ೮-೪೦।

**ಮಂಡೂಕ ಮಂಡೂಕ** (ಪುಂ) 1. ಕಪ್ಪೆ. ಮಂಡಯತಿ ವರ್ಷಿಕಾಲಮ್ -ಮಡಿ (ಭೂಷಾಯಾಮ್) "ಝಕಣ್" (ತಂ ೪-೪೨)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ "ಙೀಘ್" (೪-೧-೬೩)। ಮಂಡೂಕಿ ಮಂಡೂಕೀ. "ಪಶುಮಂಡೂಕಮಾರ್ಜಾರಿಶ್ವಸರ್ಪನಕುಲಾಖುಭಿಃ" ಮನುಂ ೪-೧೨೬। 2. ಹೆಮ್ಮರ, ತಿಗಡೆ ಮರ. 3. ಒಬ್ಬ ಮುನಿ. "ಮಂಡೂಕಿ ಭೇಕಶೋಣಕೌ" ಹೇಮಂ। (ನಂ) 4. ಒಂದು ವಿಧ ಸುರತ ಬಂಧ.

**ಮಂಡೂಕಪರ್ಣ ಮಂಡೂಕಪರ್ಣ** (ಪುಂ) ಹೆಮ್ಮರ, ತಿಗಡೆ ಮರ. ಮಂಡೂಕ ಇವ ಪರ್ಣಮಸ್ಯ।

**ಮಂಡೂಕಪರ್ಣಿ ಮಂಡೂಕಪರ್ಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಂಜಿಷ್ಠೆ. ಮಂಡೂಕ ಇವ ಪರ್ಣಮಸ್ಯಾಃ "ಙೀಘ್" (೪-೧-೬೪)। "ಮಂಡೂಕಪರ್ಣಿ



ಮಂಡೀರಿ ಮಂಡಿ ಯೋಜನವಲ್ಯಪಿ" ಅಮಂ । 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣೇ  
ಗಿಡ, ಭಾರಂಗಿ ಗಿಡ. "ಮಂಡೂಕಪರ್ಣಿ ಮಜ್ಜಿಷ್ಠಾಬ್ರಾಹ್ಮಣ್ಯೋ-  
ನಾ ತು ಶೋಣಕೇ" ಮೇದಿಂ । 3. ಒಂದೆಲೆಗನ ಗಿಡ.  
4. ಹೊನಗೊನ್ನೆ ಸೊಪ್ಪು.

**ಮಂಡೂಕಪ್ರತಿ ಮಂಡೂಕಪುತ್ರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಪ್ಪೆಯ ನಡೆಗೆ  
ಕಪ್ಪೆಯ ನೆಗೆತ. ಕಪ್ಪೆಯು ನಡೆಯುವಾಗ ಭೂಮಿಯ  
ಸ್ಪರ್ಶವಿಲ್ಲದೆ ನೆಗೆದು ಹೋಗುವಿಕೆ. ಮಂಡೂಕಸ್ಯ ಪ್ರತಿಃ ।  
ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಸೂತ್ರದಿಂದ ಪದಗಳ  
ಅನುವೃತ್ತಿಯು ಮಂಡೂಕಪುತ್ರಿಯಂತಿರುವುದು. ಒಂದು  
ಸೂತ್ರದ ಪದಗಳನ್ನೂ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಸೂತ್ರಗಳನ್ನೂ  
ಬಿಟ್ಟು ದೂರದ ಸೂತ್ರಾರ್ಥಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದಂತೆ ಅನು-  
ವೃತ್ತಿ ಮಾಡುವುದು. ಈ ಪದಗಳು ಮಂಡೂಕದಂತೆ  
ಹಾರಿಹೋಗಿ ದೂರದ ಸೂತ್ರದಲ್ಲಿ ಅನ್ವಯ ಹೊಂದು-  
ವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಮಂಡೂಕಪುತ್ರಿ ಎಂದು ವ್ಯವಹಾರ.  
"ಮಂಡೂಕಪ್ರತಿಯಾನುವರ್ತತೇ" ಸಿಂ ಕೌಂ ।

**ಮಂಡೂಕಮಾತೃ ಮಂಡೂಕಮಾತೃ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮೀಲತೆ,  
ಹೊನಗೊನ್ನೆ ಗಿಡ.

**ಮಂಡೂಕಾ ಮಂಡೂಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂಜಿಷ್ಠೆ.

**ಮಂಡೂಕೀ ಮಂಡೂಕೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಕಪ್ಪೆ. 2.  
ಹೊನಗೊನ್ನೆ ಗಿಡ. 3. ಗಡುಸಾದ ಹೆಂಗಸು, ಧೈರ್ಯ  
ಶಾಲಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು.

**ಮಂಡೂರ ಮಂಡೂರ** (ನಂ) ಲೋಹದ ಮಲ, ಕಬ್ಬಿಣದ  
ಕಿಲುಬು, ತುಕ್ಕು. ಮಂಡತಿ — ಮಡಿ (ಮುಖಾಯಾಮ್) "ಹರಃ"  
(ಠಂ ೪-೯೦) ।

**ಮತ ಮತ** (ನಂ) 1. ಅಭಿಪ್ರಾಯ, ಮನೋಗತ, ಆಶಯ.  
ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) । "ಮಮ ತಾವನ್ಮತ-  
ಮಿದಂ ಶ್ರೂಯತಾಮಜ್ಞ ವಾಮಪಿ" ಮಾಘಂ ೨-೧೨ । 2. ಒಂದು  
ಪಕ್ಷ, ಯಾವುದಾದರೊಂದು ಕಕ್ಷೆ. "ಸುಹೃದಃ ಸಹಜಾಸ್ತಥೇ-  
ತರೇ ಮತಮೇಷಾಂ ನ ವಿನಿಶ್ಚಯಂತಿ ಯೇ" ಕಿರಾಂ ೨-೪೫ ।  
3. ಸಂಮತಿ, ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಅಂಗೀಕಾರ. 4. ಉಪದೇಶ, ತತ್ತ್ವ  
ಬೋಧನೆ. "ಯೇ ಮೇ ಮತಮಿದಂ ನಿಯಮನುತಿಷ್ಠಂತಿ ಮಾನವಾಃ"  
ಗೀತಾ ೩-೩೧ । 5. ಉದ್ದೇಶ. 6. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. 7.  
ಪೂಜೆ, ಗೌರವ. (ವಿಂ) 8. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. 9. ಸಂಮತಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಒಪ್ಪಿಗೆ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. 10. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಬಭೌ ಚ ಸಾ ತೇನ ಸತಾಂ ಮತೇನ ಶ್ರದ್ಧೇವ  
ಸಾಕ್ಷಾಧಿಧಿನೋಪಪನ್ನಾ" ರಘುಂ ೨-೧೬ । 11. ಉದ್ದೇಶಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 12. ಅಭಿಪ್ರಾಯಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಮತಂ ತು ಸಮ್ಮತೇ  
ಜ್ಞಾತೇ" ಮೇದಿಂ । "ಮತಂ ಸ್ಥಾತ್ಸಮ್ಮತೇರ್ಚಿತೇ" ಹೇಮಂ ।

**ಮತಜ್ಞ ಮತಂಜ** (ಪುಂ) 1. ಮತಂಜ ಯಜ್ಞ. "ಮತಜ್ಞ-  
ಶಾಪಾದವಲೇಪಮೂಲಾದವಾಪ್ತವಾನಸ್ಮಿ ಮತಜ್ಞಜತ್ವಮ್" ರಘುಂ  
೫-೫೩ । 2. ಗಜ, ಆನೆ. 3. ಮೇಘ, ಮೋಡ.

**ಮತಜ್ಞಜ ಮತಂಜಜ** (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. ಮತಜ್ಞಾದೃಷೇರ್ಜಯತೇ  
— ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಜಃ" (೩-೨-೧೮) । "ತ್ವಯಾತ್ಮ-  
ಹಸ್ತೇನ ಮಹಿ ಮದಚ್ಯುತಾ ಮತಜ್ಞಜೇನ ಸಗಿವಾಪವರ್ಜಿತಾ"  
ಕಿರಾಂ ೧-೨೯ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ "ಜಿಷ್" (೪-೧-೬೩) ।

**ಮತಲಿಲಿಕಾ ಮತಲಿಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಶಸ್ತ, ಶ್ರೇಷ್ಠ,  
ಉತ್ತಮ. ಮತಂ ಮತಿಮಲತಿ — ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ)  
"ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । ಪೃಷಂ । ಇದು ನಿಯತಲಿಂಗ.  
ಸಮಾಸದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಇದರ ಪ್ರಯೋಗ. **ಗೋಮತಲಿಲಿಕಾ**  
ಗೋಮತಲಿಲಿಕಾ. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಹಸು.

**ಮತಾನುಗ ಮತಾನುಗ** (ವಿಂ) 1. ಅಭಿಪ್ರಾಯದಂತೆ ನಡೆ-  
ಯುವ, ಆಶಯವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯುವ. 2. ಉಪ-  
ದೇಶದಂತೆ ನಡೆಯುವ, ಮತಮನುಸೃತ್ಯ ಗಚ್ಛತಿ — ಅನು + ಗಮ್ಲೃ  
(ಗತೌ) "ಜಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) । "ವಸಿಷ್ಠಸ್ಯ  
ಮತಾನುಗಃ" ರಾಮಾಂ ।

**ಮತಾಂತರ ಮತಾಂತರ** (ನಂ) 1. ಬೇರೆ ಮತ, ಬೇರೆ ಪಂಥ.  
2. ಅಭಿಪ್ರಾಯಭೇದ, ಭಿನ್ನವಾದ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.  
3. ಭಿನ್ನವಾದ ಉದ್ದೇಶ. ಅನ್ಯತ್ ಮತಮ್ ।

**ಮತಾವಲಂಬನ ಮತಾವಲಂಬನ** (ನಂ) ಒಂದು ಮತವನ್ನು  
ಹೊಂದುವುದು, ಒಂದು ಮತವನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸುವುದು.  
ಮತಸ್ಯಾವಲಂಬನಮ್ ।

**ಮತಿ ಮತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ಮನ್ಯತೇ ಅನಯಾ  
— ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪) । "ಕವ ಸೂರ್ಯ-  
ಪ್ರಭವೋ ವಂಶಃ ಕವ ಚಾಲ್ಪವಿಷಯಾ ಮತಿಃ" ರಘುಂ ೧-೨ ।  
2. ಬುದ್ಧಿ, ಪ್ರಜ್ಞೆ, ವಿಚಾರಮಾಡುವ ಶಕ್ತಿ. "ಕುರು  
ತನ್ಮತಿಮೇವ ವಿಕ್ರಮೇ ನೃಪ ನಿರ್ಭಯ ತಮಃಪ್ರಮಾದಜಮ್" ಕಿರಾಂ  
೨-೨೨ । 3. ಇಚ್ಛೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ. 4. ಸ್ಮೃತಿ, ಸ್ಮರಣೆ,  
ನೆನಪು. 5. ಉದ್ದೇಶ. 6. ಪ್ರಣವ. "ಮತಿಃ ಸ್ತ್ರೀಚ್ಛಾ-  
ಧಿಯೋಃ ಸ್ಮೃತೌ" ಮೇದಿಂ । "ಆಂಕಾರಃ ಪ್ರಣವಸ್ತಾರಸ್ತಾರಕಂ  
ಸರ್ವವಿನ್ಮತಿಃ" ವೆಂಜಂ । 7. ಅಭಿಪ್ರಾಯ, ನಂಬಿಕೆ,  
ವಿಶ್ವಾಸ. "ವಿಧಿರಹೋ ಬಲವಾನಿತಿ ಮೇ ಮತಿಃ" ಭರ್ತುಂ  
೧-೮೫ । 8. ಗೌರವ, ಮರ್ಯಾದೆ. 9. ಸಲಹೆ, ಉಪ-  
ದೇಶ. 10. ಅಭಿಪ್ರಾಯ, ಮನೋಗತ, ಆಶಯ.  
"ಮತಿಭೇದತಮಸ್ತಿರೋಹಿತೇ ಗಹನೇ ಕೃತ್ಯವಿಧೌ ವಿವೇಕಿನಾಮ್"  
ಕಿರಾಂ ೨-೩೩ । 11. ಚಿತ್ತ, ಮನಸ್ಸು. "ಮಮ ತು  
ಮತಿರ್ನ ಮನಾಗಮೇತು ಧರ್ಮಾತ್" ಭಾಮಿಂ ವಿಂ ।



**ಮತಿಪೂರ್ವ ಮತಿಪೂರ್ವ** (ವಿಂ) 1. ಬುದ್ಧಿಪೂರ್ವಕವಾದಂ (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 2. ಬುದ್ಧಿಪೂರ್ವಕವಾಗಿ, ಉದ್ದೇಶಪೂರ್ವಕವಾಗಿ, -ಪೂರ್ವಕಮ್ -ಪೂರ್ವಕಮ್.

**ಮತಿಭೇದ ಮತಿಭೇದ** (ಪುಂ) 1. ಉದ್ದೇಶಭೇದ, ಬೇರೆಯಾದ ಉದ್ದೇಶ. 2. ಅಭಿಪ್ರಾಯಭೇದ, ಭಿನ್ನವಾದ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. ಮತಿಭೇದ: "ಮತಿಭೇದತಮಸ್ತಿರೋಹಿತೇ ಗಹನೇ ಕೃತ್ಯವಿಧೌ ವಿವೇಕಿನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೩೩.

**ಮತಿಭ್ರಮ ಮತಿಭ್ರಮ** (ಪುಂ) 1. ಚಿತ್ತಭ್ರಮೆ, ಬುದ್ಧಿಯು ಕದಲುವಿಕೆ, ಬುದ್ಧಿಯು ತಾರುಮಾರಾಗುವಿಕೆ. ಮತಿಭ್ರಮ: "ಸ್ವಪ್ನೋ ನು ಮಾಯಾ ನು ಮತಿಭ್ರಮೋ ನು ಕಿಲಂ ನು ತಾವತ್ಕಲಮೇವ ಪುಣ್ಯಮ್" ಶಾಕುಂ ೬-೧೦. 2. ತಪ್ಪು ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ವ್ಯತ್ಯಾಸವಾಗಿ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ.

**ಮತಿಭ್ರಂಶ ಮತಿಭ್ರಂಶ** (ಪುಂ) ಬುದ್ಧಿನಾಶ, ಬುದ್ಧಿಯ ಪಲ್ಲಟ, ಉನ್ಮಾದ, ಹುಚ್ಚು. ಮತಿಭ್ರಂಶ:.

**ಮತಿಭ್ರಾಂತಿ ಮತಿಭ್ರಾಂತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಿತ್ತಭ್ರಮೆ, ಬುದ್ಧಿಯು ಕದಲುವಿಕೆ, ಬುದ್ಧಿಯು ತಾರುಮಾರಾಗುವಿಕೆ. 2. ತಪ್ಪು ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ಮತಿಭ್ರಾಂತಿ:.

**ಮತಿವಿಭ್ರಮ ಮತಿವಿಭ್ರಮ** (ಪುಂ) ಬುದ್ಧಿಯ ನಾಶ, ಉನ್ಮಾದ, ಹುಚ್ಚು.

**ಮತಿಮತ್ ಮತಿಮತ್** (ವಿಂ) ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿ, ಉತ್ತಮ ಪ್ರಜ್ಞೆಯುಳ್ಳವನು. ಪ್ರಶಸ್ತಾ ಮತಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪). "ಮತಿಮಾನ್ ವಿನಯಪ್ರಮಾಥಿನ: ಸಮುಪೇಕ್ಷತ ಸಮುಪ್ರತಿ ದಿವಿ:" ಕಿರಾಂ ೨-೪೨. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡಿಪ್" (೪-೧-೬). -ಮತಿ -ಮತಿ.

**ಮತಿಶಾಲಿನ್ ಮತಿಶಾಲಿನ್** (ವಿಂ) ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿ, ಜಾಣ. ಮತ್ಯಾ ಶಾಲತೇ-ಶಾಲ (ಕಲ್ಪನೆ) "ಗಿರಿ:" (೩-೧-೧೩೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡಿಪ್" (೪-೧-೪). -ಶಾಲಿನಿ -ಶಾಲಿನೀ.

**ಮತಿಹೀನ ಮತಿಹೀನ** (ವಿಂ) ಬುದ್ಧಿಯಿಲ್ಲದವನು, ಮೂರ್ಖ, ದಡ್ಡು. ಮತ್ಯಾ ಹೀನ: "ಮತಿಹೀನ: ಪಶುರೇಷ ಮರ್ಪಣೀಯ:" ಯಾದಂ ೧೪-೬೨.

**ಮತಕ ಮತಕ** (ಪುಂ) 1. ತಿಗಣೆ, ಮಂಚದ ಹುಳ. ಮದಿ (ಹಪೆ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬). ಮದ್ ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕನ್" (ವಿಂ) 2. ನನ್ನ ಸಂಬಂಧವಾದ, ನನ್ನದಾದ. ಮಮೇದಮ್ "ಕನ್" (೪-೨-೭೮). "ನೇತನ್ಮತ ಮತಕಮಿತಿ ಬ್ರುವಾಣ: ಸಹಸ್ರಶೋಷೈ ಶಪಥಾನಶಪ್ಯತ್" ಭಟಿಂ ೩-೩೨.

**ಮತಕುಣ ಮತಕುಣ** (ಪುಂ) 1. ತಿಗಣೆ, ಮಂಚದ ಹುಳ. ಮದ (ತೃಪ್ತಿಯೋಗ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬). ಮದ್ ಕುಣತಿ -ಕುಣ (ಶಬ್ದ) "ಅನ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಮತಕುಣಾವಿವ

ಪುರಾ ಪರಿಪ್ಲವೌ ಸಿಂಧುನಾಥಶಯನೇ ನಿವೇದ್ಯುಃ" ಮಾವಂ ೧೪-೬೮. 2. ದಂತವಿಲ್ಲದ ಗಜ, ಕೊಂಬು ಬೆಳೆಯದ ಆನೆ. 3. ಗಡ್ಡವಿಲ್ಲದ ಪುರುಷ, ಗಡ್ಡ ಬೆಳೆಯದ ಮನುಷ್ಯ. "ಅಥ ಮತಕುಣ: ಖಡ್ಗಾಕೀಟೇ ನಿವಿಷಾಣಗಜೇ ನಿಷ್ಮಶ್ರುಪೂರ್ಣೇ" ನಾನಾರ್ಥರಂ. 4. ತೆಂಗಿನ ಮರ. "ಮತಕುಣೋಽಮಶ್ರುಪೂರ್ಣೇ. ತದ್ವಶೇ ನಾರಿಕೇಲೇ ಚ ನಿವಿಷಾಣಗಜೇಽಪಿ ಚ" ಹೇಮಂ. (ನಂ) 5. ಮೊಣಕಾಲಿನ ಹೊದಿಕೆ, ಜಂಘಾತ್ರಾಣ. "ಜಙ್ಘಾತ್ರಾಣಂ ತು ಮತಕುಣಮ್" ವೈಜಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಣಿ -ಣೀ. ತರುಣಯ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ, ಯುವತಿಯ ಗುಹ್ಯೇಂದ್ರಿಯ.

**ಮತಕುಣಾರಿ ಮತಕುಣಾರಿ** (ಪುಂ) ಸೆಣಬಿನ ಗಿಡ, ಗಾಂಜಾ ಗಿಡ, ಬಂಗಿ.

**ಮತ ಮತ** (ಪುಂ) 1. ಮದಿಸಿದ ಆನೆ, ಅಮಲೇರಿದ ಆನೆ. ಮಾವತಿ - ಮದಿ (ಹಪೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). 2. ಅಮಲೇರಿದ ಮನುಷ್ಯ. 3. ಒಕ, ಕೋಗಿಲೆ. 4. ಮಹಿಷ, ಎಮ್ಮೆ. 5. ದತ್ತೂರಿಗಿಡ. (ವಿಂ) 6. ಕುಡಿದು ಅಮಲೇರಿದವನು. 7. ಸಂತೋಷಗೊಂಡವನು. 8. ವಿವೇಕಶೂನ್ಯ, ಅವಿವೇಕ. "ಹೃಷ್ಣೇ ಮತಸ್ತುತ: ಪ್ರಹ್ಲಬ: ಪ್ರಮದಿತ: ಪ್ರೀತ:" ಅಮಂ.

**ಮತಕಾಶಿನಿ ಮತಕಾಶಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತಮ ಹೆಂಗಸು, ಮೋಹಗೊಳಿಸುವ ಹೆಂಗಸು. ಮತೇವ ಕಾಶತೇ - ಕಾಶ (ದೀಪ್ತ) "ಗಿರಿ:" (೩-೨-೭೯). "ವರಾರೋಹಾ ಮತಕಾಶಿನ್ಯುತ್ತಮಾ ವರವರ್ಣಿನಿ" ಅಮಂ.

**ಮತಮಯೂರ ಮತಮಯೂರ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಮತೋ ಮಯೂರೋ ಯಸ್ಮಾತ್. 2. ಸಂತೋಷಗೊಂಡ ನವಿಲು. (ನಂ) 3. ಹದಿಮೂರನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಪ್ರತಿ ಪಾದದಲ್ಲಿಯೂ ಮಗಣ ತಗಣ ಯಗಣ ಸಗಣ ಮತ್ತು ಒಂದು ಗುರುವರ್ಣವಿರುವ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: "ವೇದೇರ್ಘ್ರೇಸ್ತೌ ಯಸಗಾ ಮತಮಯೂರಮ್" ವೃಂ ೨೦. ಇದರ ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ಮ ತ ಯ ಸ ಗು  
೦೦೦ ೦೦೧ ೧೦೦ ೧೧೦ ೦

**ಮತ್ತರ ಮತ್ತರ** (ವಿಂ) ನನಗಿಂತಲೂ ಅಧಿಕನಾದ, ನನಗಿಂತಲೂ ಅತಿಶಯನಾದ. ಅಸ್ಮತ್ "ತರಪ್".

**ಮತ್ತವಾರಣ ಮತ್ತವಾರಣ** (ಪುಂ) 1. ಮದಿಸಿದ ಆನೆ, ಅಮಲೇರಿದ ಆನೆ. ಮತೋ ವಾರಣ: 2. ವಲಭಿ, ಮನೆಯ ಸೂರಿಗೆ ಆಧಾರವಾಗಿಟ್ಟಿರುವ ಮುಂದಕ್ಕೆ ಚಾಚಿದ ಮರದ ಪಟ್ಟಿ, ಕಪೋತ ಪಾಲಿಕೆ. "ಕೂಡಾಗಾರಂ ತು ವಲಮಿ ನಿರ್ಯುಹೋ ಮತ್ತವಾರಣಮ್" ವೈಜಂ. 3. ಪಲ್ಲಂಕ, ಮಂಚ. "ಆಸಂದಿ ಮತ್ತವಾರಣಮ್" ವೈಜಂ. 4. ಮನೆಯ



ಮಹಡಿಯ ಮುಂದಿನ ಪಡಸಾಲೆ, ವರಂಡ. "ಅಥ ಮತ್ತ-  
ವಾರಣ: | ಪ್ರಾಸಾದವೀಶಿವರಣ್ಣ ಮತ್ತಹಸ್ತಿನ್ಯಪಾಶ್ರವೇ" ಹೇಮಂ |

ಮತ್ತಾ ಮತ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. ಮದೋಸ್ತಯಸ್ಮಾತ್  
"ಅವ್" (೪-೨-೧೨೭) | 2. ಪ್ರತಿ ಪಾದದಲ್ಲಿಯೂ  
ಮಗಣ ಭಗಣ ಸಗಣ ಮತ್ತು ಒಂದು ಗುರು ವರ್ಣ  
ಗಣದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ:  
"ಮತ್ತಾ ಜೇಯಾ ಮಮಸಗಯುಕ್ತಾ" ವೃಂ ರಂ | ಇದರ ಗಣ  
ವಿನ್ಯಾಸ:

ಮ ಮ ಸ ಗ  
೦೦೦ ೦೧ ೧೦ ೦

ಮತ್ತಾಕ್ರೋಡಾ ಮತ್ತಾಕ್ರೋಡಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೃತ್ತಾಕ್ರೋಡಾ  
ವಾದ ಇಪ್ಪತ್ತಮೂರನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ.  
ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: "ಮತ್ತಾಕ್ರೋಡಾ ಮೋತೌ ನೌ ನಾವಿತಿ  
ಲಗಿತಿ ಚ ವಸುಶರದಶಯತಿಕಾ" ವೃಂ ರಂ | ಇದರ  
ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ಮ ಮ ತ ನ ನ ನ ನ ಲ ಗ  
೦೦೦ ೦೦೦ ೦೦೧ ೧೧ ೧೧ ೧೧ ೧೧ ೧ ೦

ಮತ್ತಾಲಂಬ ಮತ್ತಾಲಂಬ (ಪುಂ) ಮಸಾರೆ, ಪಡಸಾಲೆ,  
ಜಗುಲಿ, ವರಂಡ. ಮತ್ತಾಲಂಬ್ಯತೇ—ಆ+ಲಬಿ (ಅವ-  
ಸಂಸೇ) "ಅವ್" (೩-೩-೧೯) |

ಮತ್ತೇಭ ಮತ್ತೇಭ (ಪುಂ) 1. ಮದಿಸಿದ ಗಜ, ಅಮಲೇರಿದ  
ಆನೆ. ಮತ್ತ: ಇಮ: | "ಮತ್ತೇಭರದನೋತ್ಕೀರ್ಣವ್ಯಕ್ತಿವಿಕ್ರಮ-  
ಲಕ್ಷಣಮ್" ರಘುಂ ೪-೫೯ | (ನಂ) 2. ವೃತ್ತಾಕ್ರೋಡಾ  
ವಾದ ಇಪ್ಪತ್ತರಡನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು  
ವೃತ್ತ. ಪ್ರತಿ ಪಾದದಲ್ಲಿಯೂ ತಗಣ ಭಗಣ ಯಗಣ  
ಜಗಣ ಸಗಣ ರಗಣ ನಗಣ ಮತ್ತು ಒಂದು ಗುರುವರ್ಣ  
ದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ:  
"ತೌ ಭೌ ಯಜೌ ಸರಣಾ: ಪಙ್ಕ್ತಿಸ್ತಯತಿ ಮತ್ತೇಭಮತ್ರ  
ಕಥಿತಮ್" ವೃಂ ರಂ | ಇದರ ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ತ ಮ ಯ ಜ ಸ ರ ನ ಗ  
೦೦೧ ೦೧ ೧೦೦ ೧೦೧ ೧೧೦ ೦೧೦ ೧೧ ೦

ಮತ್ಯ ಮತ್ಯ (ನಂ) 1. ಉತ್ತ ಭೂಮಿಯನ್ನು ಸಮಮಾಡುವ  
ಒಂದು ಹಲಗೆ, ಹಲುಬೆ, ಕುಂಟೆ. ಮತ್ತೆ ಸಮೀಕರಣೆ ಸಾಧು  
"ಯತ್" (೪-೪-೯೮) | 2. ಕುಡೆಗೋಲು ಮಚ್ಚುಕತ್ತಿ,  
ಮುಂತಾದುವುಗಳ ಹಿಡಿ.

ಮತ್ಸ ಮತ್ಸ (ಪುಂ) 1. ಮತ್ಸ್ಯ, 2. ಮತ್ಸ್ಯರಾಜ. ಮಾದ್ರತಿ  
—ಮದೀ (ಹರ್ಷ) "ಸನ್" ಬಾಹುಂ |

ಮತ್ಸರ ಮತ್ಸರ (ಪುಂ) 1. ಮಾತ್ಸರ್ಯ, ಹೊಟ್ಟೆಕಿಚ್ಚು,  
ಇತರರ ಉತ್ತಮ ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಕಂಡು ದ್ವೇಷಿಸುವುದು.

ಮದೀ (ಹರ್ಷ) "ಸರ:" (ಊಣಾಂ ೩-೭೩) | "ತವಿ  
ಮತ್ಸರಾದಿವ ನಿರಸ್ತದಯ: ಸುತರಾಂ ಕ್ಷಿಣೋತಿ ಖಲು ತಾಂ ಮದನ:"  
ಮಾಘಂ ೯-೬೩ | 2. ಕ್ರೋಧ, ಕೋಪ. 3. ವೈರ, ದ್ವೇಷ,  
ಹಗೆತನ, ಶತ್ರುತ್ವ. "ವಿರೋಧಿಸತ್ತ್ವೋಜ್ಜಿತಪೂರ್ವಮತ್ಸರಮ್"  
ಕುಮಾಂ ೫-೧೭ | 4. ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ, ಅಭಿಮಾನ.  
"ಇತಿ ಧೌತಪುರಸ್ಥಿಮತ್ಸರಾನ್" ಮಾಘಂ ೮-೭೧ | 5.  
ಲೋಭ, ಅತಿಯಾದ ಆಸೆ, ಕಾರ್ಪಣ್ಯ. (ವಿಂ) 6. ಕೃಪಣ,  
ಲೋಭಿ, ಅತಿಯಾದ ಆಸೆಯುಳ್ಳವನು. 7. ಅಸೂಯೆ  
ಯುಳ್ಳವನು, ಇತರರ ಭಾಗ್ಯವನ್ನು ನೋಡಿ ಸಹಿಸದವನು.  
"ಧನವಂತಮದಾತಾರಂ ಪುರುಷಂ ಮತ್ಸರಂ ವಿದು:" ಶಾಶ್ವಂ |  
"ಮತ್ಸರ: ಪರಸಂಪತ್ತಿಕ್ಷಮಾಯಾಂ ತದ್ವತಿ ಕೃಷಿ | ಕೃಪಣೇ" ಹೇಮಂ |  
(ಪುಸ್ತ್ರೀಂ) 8. ನೋಣ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಮತ್ಸರಾ | "ಮಕ್ಷಿಕಾಯಾಂ  
ಚ ಮತ್ಸರ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | "ಮತ್ಸರಾ ಮಕ್ಷಿಕಾಯಾಂ ಸ್ಯಾತ್"  
ಮೇದಿಂ |

ಮತ್ಸರಿನ್ ಮತ್ಸರಿನ್ (ವಿಂ) 1. ದ್ವೇಷವುಳ್ಳವನು, ವೈರಿ,  
ಹಗೆ, ಶತ್ರು. ಮತ್ಸರೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೨೫) |  
"ವೈರಾಯಿತಾರಸ್ತರಲಾ: ಸ್ವಯಂ ಮತ್ಸರಿಣ: ಪರೇ" ಮಾಘಂ  
೨-೧೨೫ | 2. ಅಸೂಯೆಯುಳ್ಳವನು, ಇತರರ ಸಂಪ-  
ತ್ತನ್ನು ನೋಡಿ ಸಹಿಸದವನು, ಇತರರ ಏಳಿಗೆಯನ್ನು  
ದ್ವೇಷಿಸುವವನು. "ಪರವೃದ್ಧಿಮತ್ಸರಿ ಮನೋ ಹಿ ಮಾನಿನಾಮ್"  
ಮಾಘಂ ೧೫-೧ |

ಮತ್ಸ್ಯ ಮತ್ಸ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಮೀನು. ಮಾದ್ರತಿ—ಮದೀ (ಹರ್ಷ)  
"ಸನ್" (ತಂ ೪-೨) | "ನಾದೇಯಾ ಮಚ್ಚುರಾ ಮತ್ಸ್ಯಾ: ಗುರವೌ  
ಮಾಹುತಾಪಹಾ:" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬-೧೨೪ | 2. ಮಹಾ  
ವಿಷ್ಣುವಿನ ಒಂದು ಅವತಾರ, ವಿಷ್ಣುವಿನ ಹತ್ತು ಅವತಾರ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ಅವತಾರ.

ಸೋಮಕನಂಬ ರಾಕ್ಷಸನು ವೇದಗಳನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿ  
ಕೊಂಡು ಹೋಗಲಾಗಿ ವಿಷ್ಣುವು ಮತ್ಸ್ಯರೂಪದಿಂದ  
ಅವತರಿಸಿ ಆ ರಾಕ್ಷಸನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ವೇದಗಳ ಉದ್ಧಾರ  
ಮಾಡಿದನು. [ಸೂರ್ಯಪುತ್ರನಾದ ವೈವಸ್ವತಮನುವು  
ವಿಷ್ಣುವನ್ನು ಕುರಿತು ತಪಸ್ಸುಮಾಡಿ ಪ್ರಳಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ಸ್ಥಾ ವರಜಂಗಮಾತ್ಮಕವಾದ ಸಕಲಜಗತ್ತನ್ನೂ ಕಾಪಾಡುವ  
ಸಾಮರ್ಥ್ಯವನ್ನು ಪಡೆದನು. ಒಂದುದಿನ ಮನುವು ತಪಸ್ಸು  
ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ತನ್ನ ಮೇಲೆ ಬಿದ್ದ ಒಂದು ಮೀನನ್ನು  
ದಯೆಯಿಂದ ಕಾಪಾಡಲು ತನ್ನ ಒಂದು ಪಾತ್ರೆಯಲ್ಲಿ  
ಇಟ್ಟನು. ಅದು ಕ್ರಮವಾಗಿ ಹದಿನಾರು ಅಂಗುಲದಷ್ಟು  
ಬೆಳೆದು ತನ್ನನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಬೇಕೆಂದು ಹೇಳಿತು. ಅನಂತರ  
ಬೃಹದಾಕಾರವನ್ನು ಹೊಂದಿ ಸಮುದ್ರವನ್ನು ಸೇರಿತು.  
ಆಗ ಮತ್ಸ್ಯಾವತಾರಿಯಾದ ವಿಷ್ಣುವು ಇನ್ನು ಕೆಲವು



ಕಾಲದಲ್ಲೇ ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿಹೋಗಿರುವ ಚರಾಚರ ಜಗತ್ತನ್ನು ದೇವನಿರ್ಮಿತವಾದ ಈ ಹಡಗಿನಲ್ಲಿಟ್ಟು ರಕ್ಷಿಸಬೇಕೆಂದೂ ಪ್ರಳಯವಾತದಿಂದ ಹಡಗು ವಿಚಲಿತವಾದರೆ ನನ್ನ ಕೊಂಬಿನ ಮೇಲೆ ಇಟ್ಟು ರಕ್ಷಿಸಬೇಕೆಂದೂ ಪ್ರಳಯಾನಂತರ ಪ್ರಾರಂಭವಾಗಲಿರುವ ಕೃತಯುಗದಲ್ಲಿ ನೀನೇ ಜಗತ್ತಿಗೆಲ್ಲಾ ಅಧಿಪತಿಯಾಗುವೆಯೆಂದೂ ಲೋಕೋತ್ತರವಾದ ಧೈರ್ಯ ಶಕ್ತಿ ಸಾಮರ್ಥ್ಯಗಳು ನಿನಗೆ ಲಭಿಸುವುವೆಂದೂ ಹೇಳಿದನು.] “ಯುಗಾಂತವಾತಾಭಿ-  
ಹತಾ ಯದಾ ಭವತಿ ನೌರ್ನೃಪ | ಶೃಂಗೇಃಸ್ಮಿನ್ ಮಮ ರಾಜೇಂದ್ರ  
ತದೇಮಾಂ ಸಂಯಮಿಷ್ಯಸಿ || ತತೋ ಲಯಾಂತೇ ಸರ್ವಸ್ಯ ಸ್ಥಾವರಸ್ಯ  
ಚರಸ್ಯ ಚ | ಪ್ರಜಾಪತಿಃ ಸ್ವಂ ಭವಿತಾ ಜಗತಃ ಪೃಥಿವೀಪತೇ”  
ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ. 3. ಮೀನರಾಶಿ, ಹನ್ನೆರಡು ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ  
ಕೊನೆಯ ರಾಶಿ. (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 4. ವಿರಾಟರಾಜನು  
ಆಳುತ್ತಿದ್ದ ಮತ್ಸ್ಯದೇಶ, ಈ ದೇಶವು ಈಗಿನ ಜಯಪುರ  
ಸಂಸ್ಥಾನ ಆಳ್ವಾರ್ ಸಂಸ್ಥಾನ ಮತ್ತು ಭರತಪುರದ ಕೆಲವು  
ಭಾಗಗಳಿಂದ ಕೂಡಿತ್ತು. ಪಾಂಡವರು ಹನ್ನೆರಡು ವರ್ಷ  
ವನವಾಸ ಮಾಡಿ ಅಜ್ಞಾತವಾಸವನ್ನು ಇಲ್ಲಿ ಕಳೆದರು.  
5. ಮತ್ಸ್ಯದೇಶದ ಜನರು.

**ಮತ್ಸ್ಯಕರಂಡಿಕಾ ಮತ್ಸ್ಯಕರಂಡಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೀನಿನ ಬುಟ್ಟಿ.**

**ಮತ್ಸ್ಯಗನ್ಧಾ ಮತ್ಸ್ಯಗಂಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸತ್ಯವತಿ, ದಾಶರಾಜನ ಸಾಕುಮಗಳು, ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯ ತಾಯಿ.** ಮತ್ಸ್ಯಸ್ಯೇವ  
ಗನ್ಧೋಽಸ್ಯಾಃ | [ಈಕೆಯು ಉಪರಿಚರವಸುವಿನ ವೀರ್ಯ  
ವನ್ನು ನುಂಗಿದ ಒಂದು ಮತ್ಸ್ಯದ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿ  
ದಾಶರಾಜನಿಂದ ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟವಳು. ಇವಳಿಗೆ ಸತ್ಯವತೀ  
ಯೋಜನಗಂಧಾ ಎಂಬ ಹೆಸರೂ ಉಂಟು. ಒಂದು ದಿನ  
ದಾಶರಾಜನ ಭೋಜನಕಾಲದಲ್ಲಿ ನದಿಯನ್ನು ದಾಟಲು  
ಬಂದ ಪರಾಶರರನ್ನು ತಂದೆಯ ಆದೇಶದಂತೆ ನದಿಯ  
ಆಚೆ ಧಡಕ್ಕೆ ಸೇರಿಸಿದಳು. ಅವಳ ಸೌಂದರ್ಯ ನೋಡಿ  
ಮೋಹಗೊಂಡ ಪರಾಶರರಿಂದ ತಮ್ಮಿಬ್ಬರ ಸಂಗಮವು  
ತಾಯಿ ತಂದೆಗಳಾಗಿಗೂ ತಿಳಿಯಕೂಡದೆಂದೂ ಕನ್ಯಾ  
ವಸ್ಥೆಯು ಉಪ್ಪವಾಗಕೂಡದೆಂದೂ ತನ್ನ ದೇಹದಲ್ಲಿ  
ಸರ್ವದಾ ಸೌಗಂಧ್ಯವಿರಬೇಕೆಂದೂ ವರವನ್ನು ಪಡೆದಳು.  
ಇವಳ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಕೃಷ್ಣದ್ವೈಪಾಯನರು (ವ್ಯಾಸರು)  
ಜನಿಸಿದರು.]

**ಮತ್ಸ್ಯಜೀವಿನ್ ಮತ್ಸ್ಯಜೀವಿನ್ (ಪುಂ) ಮತ್ಸ್ಯದಿಂದ ಜೀವನಮಾಡುವ ಬೆಸ್ಮ.** ಮತ್ಸ್ಯೇನ ಜೀವತಿ — ಜೀವ  
(ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) “ಞಿನಿ:” (3-1-134) |

**ಮತ್ಸ್ಯಾಂಡಿ ಮತ್ಸ್ಯಾಂಡೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಕಂಬಿ, ಜೋನುಬೆಲ್ಲ.**  
ಕಚ್ಚಾ ಸಕ್ಕರೆಯ ಪಾಕ. ಮದಂ ಮಧುರರಸಂ ಸ್ಯಂದತೇ — ಸ್ಯಂದ್  
(ಪ್ರಸ್ರವಣೆ) “ಅನ್” (3-2-1) | ಪೃಥಂ | “ಮತ್ಸ್ಯಾಂಡಿ  
ಫಾಣಿತಂ ಖಂಡವಿಕಾರೇ” ಅಮಂ | “ಇಕ್ಷೋ ರಸೋ ಯಃ  
ಸಂಪಕ್ವೋ ಧನಃ ಕಿಷ್ಕಿದ್ರವಾನ್ವಿತಃ | ಮದವತ್ ಸ್ಯಂದತೇ  
ಯಸ್ಮಾತ್ ಮತ್ಸ್ಯಾಂಡೀತಿ ನಿಗದತೇ” ಭಾವಪ್ರಂ |

**ಮತ್ಸ್ಯದೇಶ ಮತ್ಸ್ಯದೇಶ (ಪುಂ) ವಿರಾಟ ರಾಜನು ಆಳುತ್ತಿದ್ದ ಒಂದು ದೇಶ.**

**ಮತ್ಸ್ಯಧಾನಿ ಮತ್ಸ್ಯಧಾನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೀನಿನ ಬುಟ್ಟಿ.**  
ಮೀನನ್ನು ಹಿಡಿದು ತುಂಬುವ ಬುಟ್ಟಿ. ಮತ್ಸ್ಯಾಃ ಧೀಯಂತೇಽವ  
--- ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-119) |

**ಮತ್ಸ್ಯನಾಶನ ಮತ್ಸ್ಯನಾಶನ (ಪುಂ) 1. ಕುರುವಹಕ್ಕಿ, ಮೀನು ತಿನ್ನುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹಕ್ಕಿ, ಕಡಲ ಹದ್ದು.** ಮತ್ಸ್ಯಾನ್  
ನಾಶಯತಿ—ಗಣ (ಅದರ್ಶನೆ) “ಲ್ಯು:” (3-1-134) |  
(ವಿಂ) 2. ಮತ್ಸ್ಯಗಳನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವವನು.

**ಮತ್ಸ್ಯಪಿತ್ತಾ ಮತ್ಸ್ಯಪಿತ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಟುಕರೋಹಿಣಿ.**  
ಮತ್ಸ್ಯಸ್ಯ ಪಿತ್ತಮಿವ ರಸೋಽಸ್ಯಸ್ಯಾಃ “ಅಚ್” (4-2-129) |

**ಮತ್ಸ್ಯಪುರಾಣ ಮತ್ಸ್ಯಪುರಾಣ (ನಂ) ಅಷ್ಟಾದಶ ಪುರಾಣ**  
ಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಮತ್ಸ್ಯರೂಪದಿಂದ ಅವತರಿಸಿದ ಪರಮಾತ್ಮ  
ನಿಂದ ಉಕ್ತವಾದುದರಿಂದ ಈ ಪುರಾಣಕ್ಕೆ ಈ ಹೆಸರು.  
“ಪುಣ್ಯಂ ಪವಿತ್ರಮಾಯುಷ್ಯಮಿದಾನಿಂ ಶೃಣುತ ದ್ವಿಜಾಃ | ಮಾತ್ಸ್ಯಂ  
ಪುರಾಣಮಖಿಲಂ ಯಜ್ಜಗಾದ ಗದಾಧರಃ” ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ | ಈ ಪುರಾಣ  
ದಲ್ಲಿ 14,000 ಶ್ಲೋಕಗಳಿವೆ.

**ಮತ್ಸ್ಯಬಂಧಕ ಮತ್ಸ್ಯಬಂಧಕ (ಪುಂ) ಬೆಸ್ಮರವನು, ಮೀನು ಹಿಡಿಯುವವನು.** ಮತ್ಸ್ಯಾನ್ ಬಂಧನಾತಿ—ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ)  
“ಞ್ವಲ್” (3-1-133) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್” (4-1-63) |  
—ಬಂಧಕಿ —ಬಂಧಕೀ.

**ಮತ್ಸ್ಯಬಂಧನ ಮತ್ಸ್ಯಬಂಧನ (ನಂ) ಮೀನನ್ನು ಹಿಡಿಯುವ**  
ಗಾಳ. ಮತ್ಸ್ಯಾಃ ಬಂಧಂತೇಽನೇನ—ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) “ಲ್ಯುಟ್”  
(3-3-119) |

**ಮತ್ಸ್ಯಬಂಧಿನ್ ಮತ್ಸ್ಯಬಂಧಿನ್ (ವಿಂ) ಮೀನು ಹಿಡಿಯುವವನು, ಬೆಸ್ಮರವನು.** ಮತ್ಸ್ಯಾನ್ ಬಂಧನಾತಿ—ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ)  
“ಞಿನಿ:” (3-2-96) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್” (4-1-63) |  
—ಬಂಧಿನಿ —ಬಂಧಿನೀ.

**ಮತ್ಸ್ಯಮುಕ್ತಾ ಮತ್ಸ್ಯಮುಕ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಲಗೈಯ ಕೆಳಗೆ ಎಡಗೈಯನ್ನು ಇಟ್ಟು ಎರಡು ಹೆಬ್ಬೆರಳುಗಳನ್ನೂ ಅಡಿಸುತ್ತಿರುವ ಒಂದು ಮುದ್ರೆ.** “ದಕ್ಷಿಣಾಣಿಪುಂಡ್ರೇಶೇ ವಾಮಾಣಿ-  
ತಲಂ ನ್ಯಸೇತ್ | ಅಡ್ಡಗುಠೌ ಚಾಲಯೇತ್ಸಮ್ಯಕ್ ಮುದ್ರೇಯಂ ಮತ್ಸ್ಯ-  
ರೂಪಿಣಿ” ತನ್ತ್ರಸಾಂ |



**ಮತ್ಸರಾಜ ಮತ್ಸರಾಜ** (ಪುಂ) 1. ವಿರಾಟರಾಜ, ಮತ್ಸರಾಜ ದೇಶದ ದೊರೆ. ಮತ್ಸರಾಜಾ ರಾಜಾ. 2. ರೋಹಿತವೆಂಬ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು.

**ಮತ್ಸರವೇಷನ ಮತ್ಸರವೇಷನ** (ನಂ) 1. ಮೀನು ಹಿಡಿಯುವ ಗಾಳಿ. ಮತ್ಸರಾ ವಿಷಯ ಅನೇಕ — ವ್ಯಥೆ (ತಾಡನೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-110) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವೇಷನಿ ವೇಷನೀ. "ಛೀಪ್" (4-1-14) । 2. ಮೀನು ಹಿಡಿದು ತಿನ್ನುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕಡಲಹಕ್ಕಿ.

**ಮತ್ಸರಾಕ್ಷಿ ಮತ್ಸರಾಕ್ಷಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊನ್ನಗೊನ್ನೆ ಸೊಪ್ಪು. ಮತ್ಸರಾಕ್ಷಿವಾಸ್ತವ್ಯಾ: ಪುಷ್ಪಮ್ "ಷಕ್" (4-4-113) । ಗೌರಾಂ "ಛೀಪ್" (4-1-41) । 2. ಕೀರೆಸೊಪ್ಪು. 3. ಸೋಮಲತೆ.

**ಮತ್ಸರಾದನ ಮತ್ಸರಾದನ, -ಅಶನ -ಅಶನ** (ಪುಂ) 1. ಮೀನು ತಿನ್ನುವವನು. ಮತ್ಸರಾನ್ತಿ ಅಶನಾತಿ ವಾ ಅದ (ಭಕ್ಷಣ) ಅಶ (ಭೋಜನೆ) ವಾ "ಲ್ಯು:" (3-1-134) । 2. ಸಮುದ್ರದ ಪಕ್ಷಿ, ಕಡಲ ಹಕ್ಕಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಅವನಿ -ಅವನೀ 3. ನೀರುಹಿಪ್ಪಲಿ.

**ಮತ್ಸರಾವತಾರ ಮತ್ಸರಾವತಾರ** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣುವಿನ ಹತ್ತು ಅವತಾರಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ಅವತಾರ. ಮತ್ಸರರೂಪಣ ಅವತಾರ: ।

**ಮಥನ ಮಥನ** (ಪುಂ) 1. ಉಜ್ಜಿ ಬೆಂಕಿಯನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸುವ ಒಂದು ಮರ. 2. ಕಡೆಯುವುದು. 3. ಕಲಕುವುದು. 4. ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ಗಾಯಮಾಡುವುದು. 5. ಆರೆಯುವುದು. 6. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು, ಕೊಲ್ಲುವುದು. ಮಥೆ (ವಿಲೋಡನೆ) ಭಾವ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114) । (ವಿಂ) 7. ಕಡೆಯುವ. 8. ಹಿಂಸಿಸುವ. 9. ಕಲಕುವ, ಕೀಳು ಮೇಲು ಮಾಡುವ. 10. ಆರೆಯುವ. 11. ನಾಶಪಡಿಸುವ, ಕೊಲ್ಲುವ. ಮಥೆ ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (3-1-134) । "ಮಧುಮಥನದಯೇ ತ್ವಾಂ ವಾರಿವಾರಾವಿಶೇಷ:" ದಯಾಶಂ ।

**ಮಥಿತ ಮಥಿತ** (ನಂ) 1. ನೀರು ಬೆರಸದೆ ಕಡೆದ ಮೊಸರು. ಮಥೆ (ವಿಲೋಡನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102) । (ವಿಂ) 2. ಕಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರಮಥಿತಭೂತ: ಪ್ರತಿಪಥಂ ಮಥಿತಸ್ಯ ಮೃಶಂ ಮಹಿಭೃತಾ" ಮಾಘಂ 3-22 । 3. ಕಲಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಬುಡಮೇಲು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಮಥಿತಾಮ್ಸಸೋ ರವಿಕೀರ್ಣ-ಮೃದಿತಕದಲಿಗವೇಷುಕಾ:" ಕಿರಾಂ 12-41 । 4. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗಾಯಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಆರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಮಥಿತಂ ಪುನ: । ಕಲಿಬಂ ನಿರ್ಜಲ-ಖೋಲೇ ಸ್ಯಾತ್ ತ್ರಿಪಾಲೋದಿತಘಟಯೋ:" ಮೇದಿಂ ।

**ಮಥಿನ್ ಮಥಿನ್** (ಪುಂ) (ಮೊಸರು ಕಡೆಯುವ) ಕಡೆಗೋಲು, ಮಂಥನ ದಂಡ. ಮಥ್ಯತೇಜೇನ—ಮನ್ಯ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಛಿನಿ:" (3-4-11) । "ಮುಹು: ಪ್ರಣುಜ್ಞೇಷು ಮಥಾಂ ವಿವರ್ತನೇನದತ್ಸು ಕುಮ್ಮೇಷು ಮೃದ್ವಜ್ಞಮನ್ಯರಮ್" ಕಿರಾಂ 4-16 ।

**ಮಥುರಾ ಮಥುರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಥುರಾ ನಗರ, ತೊರಸೇನ ದೇಶದ ದೊರೆ ಸುಷೇಣನ ನಗರ. ["ಮಥುರಾ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ಕಲಿಂದಕನ್ಯಾ ಮಥುರಾಂ ಗತಾಪಿ ಗಜ್ಜೋಮಿಸಂಸಕ್ತ-ಜಲೇನ ಭಾತಿ" ರಘುಂ 6-48 ।

**ಮಥುತ್ ಮಥುತ್** (ವಿಂ) 1. ಕಡೆಯುತ್ತಿರುವ. 2. ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಕಲಕುತ್ತಿರುವ. 4. ನಾಶಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 5. ಆರೆಯುತ್ತಿರುವ. ಮನ್ಯ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಶತ್" (3-2-124) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್" (4-1-6) । -ಶಿ-ಶೀಂ.

**ಮಥ್ಯಮಾನ ಮಥ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಕಡೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಕಲಕಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 4. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 5. ಆರೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಮಥೆ (ವಿಲೋಡನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (3-2-124) ।

**ಮದ ಮದ** (ಪುಂ) 1. ಮತ್ಸು, ಅಮಲು. ಮದಿ (ಹರ್ಷ) "ಅಪ್" (3-3-60) । "ಧೂರ್ಣಯನ್ ಮದಿರಾಸ್ವಾದಮದಪಾಟಲಿತ-ದ್ವಿತಿ" ಮಾಘಂ 2-16 । 2. ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ. "ಪ್ರಮ-ವನ್ಯಭಿಮಾನಶಾಲಿನಾಂ ಮದಮುತ್ಸುಮಯಿತು ವಿಭೂತಯ:" ಕಿರಾಂ 2-48 । 3. ದರ್ಪ, ಕೊಬ್ಬು. "ಮದಮಾನಸಮುಢತಂ ನೃಪಂ ನ ವಿಯುಕ್ತೇ ನಿಯಮೇನ ಮೃತಾ" ಕಿರಾಂ 2-49 । 4. ಮದೋದಕ, ಅನೆಯ ಕುಂಭಸ್ಥಲದಿಂದ ಹೊರಡುವ ರಸಿಕೆ, ಮದಜಲ. "ಮದಾನಿಲೇರಧಿಮಧುಚ್ಛತಗಾಂಧಿಭಿರ್ದಿಪಾ ದ್ವಿಪಾ-ನಭಿಯುರೇವ ರಹಸಾ" ಮಾಘಂ 10-60 । 5. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. 6. ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. 7. ವೀರ್ಯ, ರೇತಸ್ಸು. 8. ಕಸ್ತೂರಿ. "ಮದೋ ರೇತಸಿ ಕಸ್ತೂರೀ ಗರ್ವೇ ಹರ್ಷಮದಾನಯೋ:" ಮೇದಿಂ । "ಮದೋ ರೇತಸ್ಯಹಂಕಾರೇ ಮಥೇ ಹರ್ಷಮದಾನಯೋ: । ಕಸ್ತೂರಿಕಾಯಾಂ ಕ್ಷೇಬ್ಯೇ ಚ" ಹೇಮಂ । 9. ಉನ್ಮಾದದ ಪೂರ್ವಾವಸ್ಥೆ, ಹುಚ್ಚು ಹಿಡಿಯುವ ಪೂರ್ವದ ಸ್ಥಿತಿ.

**ಮದಕಲ ಮದಕಲ** (ಪುಂ) 1. ಮದಿಸಿದ ಅನೆ, ಅಮಲೇರಿದ ಅನೆ. ಮದೇನ ಕಲ: ಅವ್ಯಕ್ತಧ್ವನಿರಸ್ಯ । ಮದೇನ ಕಲೋ ಮನೋಜ್ಞೋ ವಾ । (ವಿಂ) 2. ಮದದಿಂದ ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವ. 3. ಮದದಿಂದ ಅವ್ಯಕ್ತ ಧ್ವನಿಮಾಡುವ. "ವಿಕಚತಾಮರಸಾ ಗೃಹದೀಧಿಕಾ ಮದಕಲೋದಕಲೋಲವಿಹೃಜ್ಞಮಾ:" ರಘುಂ 9-30 । 4. ಹುಚ್ಚು ಹಿಡಿದವನು, ಉನ್ಮತ್ತ.

**ಮದಗನ್ವ ಮದಗಂಧ** (ಪುಂ) 1. ಸಪ್ತಚ್ಛದ, ಏಳೆಲೆ ಬಾಳೆ ಗಿಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಗನ್ವಾ -ಗಂಧಾ. 2. ಮದ್ಯ. 3. ಅತಸ್ತೀ ಗಿಡ, ಅಗಸ್ತಿ ಗಿಡ.



**ಮದ್ಯುತ ಮದಜ್ಯುತ** (ವಿಂ) 1. ಮದಜಲವನ್ನು ಸುರಿ ಸುವ. ಮದ ಮದಜಲಂ ಚ್ಯೋತತಿ—ಚ್ಯುತಿರ್ (ಆಸೆವನೆ) “ಕಿವಿಪ್” (3-2-96)। “ತ್ವಯಾತ್ಮಹಸ್ತೇನ ಮಹಿ ಮದ್ಯುತಾ ಮತಙ್ಗಜೇನ ಸಗಿವಾಪವಜಿತಾ” ಕಿರಾಂ 1-291. 2. ಕಾಮುಕ, ಕಾಮಾಸಕ್ತ.

**ಮದಜಲ ಮದಜಲ** (ನಂ) ಅನೆಯ ಕುಂಭಸ್ಥಲದಿಂದ ಹೊರಡುವ ನೀರು (ರಸಿಕ).

**ಮದನ ಮದನ** (ಪುಂ) 1. ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ. ಮದಯತಿ —ಮದಿ (ಹರ್ಷಗ್ಲೇಪನಯೋಃ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಃ” (3-1-134)। ಮಾಖ್ಯಾನೇನ —ಮದಿ ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-119) ವಾ। “ಇದಮಿಹ ಮದನಸ್ಯ ಜೈತ್ರಮಸ್ತ್ರಂ ಸಹಜವಿಲಾಸನಿಬಂಧನಂ ಶರೀರಮ್” ಮಾಲತೀಂ 2-6। 2. ಕಾಮ, ವಿಷಯವಾಸನೆ. “ಮದನಮುಪದಧೇ ಸ ಏವ ತಾಸಾಂ ದುರವಿಗಮಾ ಹಿ ಗತಿಃ ಪ್ರಯೋಜನಾ- ನಾಮ್” ಕಿರಾಂ 10-40। 3. ವಸಂತಯುತು. 4. ಜೇನು ಮೇಣ. 5. ದತ್ತೂರಿಗಿಡ. “ಮದನಃ ಸ್ಮರಣ್ವತುರವಸಂತದ್ವಮ- ಸಿಕ್ವಯಾಃ” ವಿಶ್ವಂ। 6. ವಕುಳವೃಕ್ಷ. 7. ಖದಿರ ವೃಕ್ಷ, ಕಗ್ಗಲಿ ಮರ. 8. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. 9. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. “ವಶಕುಮದನಃ ಪಿತುರ್ಮಶಾಕೋ ಮದುರೋ ದ್ವಿಜಃ” ವೈಜಂ। 10. ಕಾಮಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಒಂದು ಬಗೆ ಆಲಿಂಗನ. 11. ಮುಂಗಾರಿ ಗಿಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮದನಾ ಮದನಾ. 12. ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. “ಮದಿರಾ ಸುರಾ। ಮದನಾ ಮೋಹಕಲಿಕಾ” ವೈಜಂ।

**ಮದನಕಂಡಕ ಮದನಕಂಟಕ** (ಪುಂ) ರೋಮಾಂಚ, ಪ್ರೀತಿ ಯಿಂದ ಮೈಗೂದಲು ಎದ್ದು ನಿಲ್ಲುವಿಕೆ. ಮದನನಿಮಿತ್ತಃ ಕಂಡಕ ಇವ।

**ಮದನಕಲಹ ಮದನಕಲಹ** (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ ಯುದ್ಧ, ಸಂಭೋಗ, ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ಸಂಗಮ. “ಕ್ಷಿಪನ್ನಿದ್ರಾಮುಕ್ತಾಂ ಮದನಕಲಹೋದಸುಭಗಾಮುಪಾತ್ತೋಕ್ತಮ್ಪಾನಾಂ ವಿಹಗಮಿಥುನಾಂ ಪ್ರಥಮತಃ” ಮಾಲತೀಂ 2-12।

**ಮದನಗೃಹ ಮದನಗೃಹ** (ನಂ) 1. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಜನ ನೇಂದ್ರಿಯ. ಮದನಸ್ಯ ಗೃಹಮ್। 2. ಜಾತಕದಲ್ಲಿ ಲಗ್ನ ದಿಂದ ಏಳನೆಯ ಸ್ಥಾನ.

**ಮದನಗೋಪಾಲ ಮದನಗೋಪಾಲ** (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಮದನ ಇವ ಗೋಪಾಲಃ।

**ಮದನಚತುರ್ದಶಿ ಮದನಚತುರ್ದಶಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚೈತ್ರ ಶುದ್ಧ ಚತುರ್ದಶಿ. [ಮದನೋತ್ಸವವನ್ನು ಆಚರಿಸುವ ದಿನ.]

**ಮದನತ್ರಯೋದಶಿ ಮದನತ್ರಯೋದಶಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚೈತ್ರ ಶುದ್ಧ ತ್ರಯೋದಶಿ. [ಮದನೋತ್ಸವವನ್ನು ಆಚರಿಸುವ ದಿನ.]

**ಮದನದ್ವಾದಶಿ ಮದನದ್ವಾದಶಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚೈತ್ರ ಶುದ್ಧ ದ್ವಾದಶಿ. [ಮದನೋತ್ಸವವನ್ನು ಆಚರಿಸುವ ದ್ವಾದಶಿ.]

**ಮದನಪಾಠಕ ಮದನಪಾಠಕ** (ಪುಂ) ಕೋಗಿಲೆ.

**ಮದನಮೋಹನ ಮದನಮೋಹನ** (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಮದನಮಪಿ ಮೋಹಯತಿ ಸೌಂದರ್ಯೇಣ।

**ಮದನಲೇಖ ಮದನಲೇಖ** (ಪುಂ) ತಮ್ಮ ಪ್ರೀತಿ ವಿಶ್ವಾಸ (ಅನುರಾಗ)ಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸಲು ನಾಯಿಕೆ ಮತ್ತು ನಾಯಕರು ಪರಸ್ಪರ ಕಳುಹಿಸುವ ಪ್ರೇಮಪತ್ರ. ಮದನಜ್ಞಾಪನಾರ್ಥಿ ಲೇಖಃ ಪತ್ರಮ್। “ತವ ನ ಜಾನೇ ಹೃದಯಂ ಮಮ ಪುನಃ ಕಾಮೋ ದಿವಾಪಿ ರಾತ್ರಾವಪಿ। ನಿರ್ವಣ ತಪತಿ ಬಲೀಯಸ್ತ್ವಯಿ ವೃತ್ತಮನೋ- ರಥಾನ್ಯಜ್ಞಾನಿ” ಶಾಕುಂ 3-13।

**ಮದನಸದನ ಮದನಸದನ** (ನಂ) 1. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಜನ ನೇಂದ್ರಿಯ. ಮದನಸ್ಯ ಸದನಮ್। 2. ಜಾತಕದಲ್ಲಿ ಲಗ್ನದಿಂದ ಏಳನೆಯ ಸ್ಥಾನ.

**ಮದನಾಪ್ರಕ ಮದನಾಗ್ರಕ** (ಪುಂ) ಹಾರಕ ಧಾನ್ಯ. ಮದನ ಮದನವಿಕಾರಜನಕಮಗ್ರಮಸ್ಯ।

**ಮದನಾಡ್ಕುಶ ಮದನಾಂಕುಶ** (ಪುಂ) 1. ಪುರುಷನ ಜನ ನೇಂದ್ರಿಯ, ಪುರುಷನ ಲಿಂಗ. 2. ಸಂಭೋಗ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಆಗುವ ನಖಕ್ಷತ.

**ಮದನಾಂತಕ ಮದನಾಂತಕ** —ಅರಿ-ಅರಿ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. ಮದನಸ್ಯ ಅಂತಕಃ ಅರಿವಾ।

**ಮದನಾಲಯ ಮದನಾಲಯ** (ಪುಂ) 1. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಜನ ನೇಂದ್ರಿಯ. ಮದನಸ್ಯಾಲಯಃ। 2. ಜಾತಕದಲ್ಲಿ ಲಗ್ನದಿಂದ ಏಳನೆಯ ಸ್ಥಾನ.

**ಮದನಾವಸ್ಥಾ ಮದನಾವಸ್ಥಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಮುಕರಿಗೆ ಮನ್ಮಥ ಬಾಧೆಯಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅವಸ್ಥೆ. ವ್ಯಕ್ ಮನಃ- ಸಂಕಲ್ಪಃ ಸಂಕಲ್ಪಃ ಜಾಗರಃ ಕೃಶತಾ ಅರತಿಃ। ಹೀತ್ಯಾಗಃ- ಉನ್ಮಾದಃ ಮೂರ್ಛಾ ಅಂತಃ ಇವು ಹತ್ತು ಮದನಾವಸ್ಥೆಗಳು.

**ಮದನಾ ಮದನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುರೆ, ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ.

**ಮದನೋತ್ಸವ ಮದನೋತ್ಸವ** (ಪುಂ) 1. ಮನ್ಮಥನ ಪೂಜೆ, ಹೋಳಿಹಬ್ಬ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ವಾ-ವಾ. 2. ಸ್ವರ್ಗಲೋಕದ ಮೆತ್ರೆ.

**ಮದಯತ್ ಮದಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಮದವನ್ನುಂಟುಮಾಡು ತ್ತಿರುವ, ಕಾಮವಿಕಾರವನ್ನು ಹುಟ್ಟಿಸುತ್ತಿರುವ. ಮದಿ



(ಹರ್ಷಲೇಪನಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಅಮಲೇರಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ.

ಮದಯಂತಿ ಮದಯಂತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡುಮಲ್ಲಿಗೆ.

ಮದಯಿತ್ ಮದಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕಾಮವಿಕಾರವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ. 2. ಅಮಲೇರಿಸುವ, ಮದವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ. ಮದೀ (ಹರ್ಷಲೇಪನಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩) । 3. ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಯಿತ್ರಿ-ಯಿತ್ರಿ.

ಮದಯಿತ್ ಮದಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ. ಮದೀ (ಹರ್ಷಲೇಪನಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಇತ್ಯುಚ್" (೩-೨-೨೯) । 2. ಮೇಘ, ಮೋಡ. "ಮದಯಿತ್ಯುರ್ವಿಧುರಾಣ್ಯೋಮಧೂಮೋ ನಮೋಗಜಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । (ನಂ) 3. ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. (ವಿಂ) 4. ಮದ್ಯ ತೆಗೆಯುವವನು, ಹೆಂಡ ಇಳಿಸುವವನು. 5. ಮದವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ಅಮಲೇರಿಸುವ. 6. ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವ.

ಮದಲೇಖಾ ಮದಲೇಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೃತ್ತರತ್ನಕರೋಕ್ತ ವಾದ ಏಳನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ, ಪ್ರತಿ ಪಾದದಲ್ಲಿಯೂ ಮಗಣ ಸಗಣ ಮತ್ತು ಒಂದು ಗುರುವರ್ಣ ದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: "ಮಸೌ ಗಃ ಸ್ಯಾನ್ಮದಲೇಖಾ" ೪೦ ರಂ । ಇದರ ಗಣವಿನ್ಯಾಸಃ :

ಮ ಸ ಗು  
೦೦೦ 11೦ ೦

2. ಮದೋದಕದ ಗೆರೆ, ಮದಜಲ ಬೀಳುವುದರಿಂದಂಟಾ ಗುವ ಗೆರೆ.

ಮದಸಾರ ಮದಸಾರ (ವಿಂ) ಹತ್ತಿಗಿಡ. ಮದ ಸಾರಯತಿ ದ್ವೀಕರೋತಿ—ಸೃ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಅಞ್" (೩-೨-೧) ।

ಮದಸ್ಥಾನ ಮದಸ್ಥಾನ (ನಂ) ಮದ್ಯದ ವನೆ, ಹೆಂಡದ ಅಂಗಡಿ. ಮದಸ್ಯ ಸ್ಥಾನಮ್ । "ಶುಷ್ಕಾಪಾನಂ ಮದಸ್ಥಾನಮ್" ವೆಂಜಂ ।

ಮದಸ್ತುತಿ ಮದಸ್ತುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮದಜಲವು ಸುರಿಯುವಿಕೆ, ಮದೋದಕವು ಸೋರುವುದು. ಮದಸ್ಯ ಸ್ತುತಿಃ । "ದಧತಿ ಕ್ಷತೀಃ ಪರಿಣತದ್ವಿರದೆ ಮುದಿತಾಲಿಯೋಷಿತಿ ಮದಸ್ತುತಿಃ" ಕಿರಾಂ ೬-೭ ।

ಮದಾಕುಲ ಮದಾಕುಲ (ವಿಂ) ಮದದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಮದ ದಿಂದ ಆವೇಶಗೊಂಡ. ಮದನಾಕುಲಃ ।

ಮದಾಡಯ ಮದಾಡಯ (ವಿಂ) 1. ತಾಳವೃಕ್ಷ, ತಾಳ ಮರ. ಮದೇನ ಮದಜನಕರಸೇನ ಆಡಯಃ । (ವಿಂ) 2. ಮದದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು, ಅಮಲೇರಿದವನು.

ಮದಾಡಯ ಮದಾಡಯ (ವಿಂ) ಮದ್ಯಪಾನದಿಂದಂಟಾ ಗುವ ಒಂದು ರೋಗ. ಮದೇನ ಅಡಯೋ ನಾಶೋಽಪಿ । "ವಿಷಸ್ಯ ಯೇ ಗುಣಾ ದೃಷ್ಟಾಃ ಸನ್ನಿಪಾತಪ್ರಕೋಪನಾಃ । ತ ಏವ ಮಘೇ ದೃಶ್ಯಂತೇ ವಿಷೇ ತು ಬಲವತ್ತರಾಃ । ತಸ್ಮಾದವಿಧಿಪೀತೇನ ತಥಾ ಮಾತ್ರಾಧಿಕೇನ ಚ । ಯುಕ್ತೇನ ಚಾಹಿತೈರಗ್ನೇರಕಾಲೇ ಸೇವಿತೇನ ಚ । ಮಘೇನ ಕ್ಷಲ ಜಾಯಂತೇ ಮದಾಡಯಮುಕ್ತಾ ಗದಾಃ" ಭಾವಪ್ರಂ ।

ಮದಾಮ್ನಾತ ಮದಾಮ್ನಾತ (ವಿಂ) ಅನೆಯ ಹೆಗಲ ಮೇಲೆ ಹೊರಿಸಲಾದ ನಗಾರಿ. ಮದಾಯ ಮದೋದ್ರೇಕಾಯ ಆಮ್ನಾತಃ ।

ಮದಾಂಬರ ಮದಾಂಬರ (ವಿಂ) 1. ಮದಿಸಿದ ಆನೆ. ಮದೋ-ಂಬರಮಿವಾಸ್ಯ । 2. ಐರಾವತ, ಇಂದ್ರನ ಆನೆ.

ಮದಾರ ಮದಾರ (ವಿಂ) 1. ಮದಿಸಿದ ಆನೆ. 2. ವರಾಹ, ಸೂಕರ, ಹಂದಿ. 3. ದತ್ತೂರಿ ಗಿಡ. 4. ಕಾಮುಕ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ. ಮದೀ (ಹರ್ಷಲೇಪನಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಆರನ್" (೩-೨-೧೩೪) । 5. ಧೂರ್ತ, ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. "ಮದಾರೋ ಹಸ್ತಿ ಭೂತಯೋಃ" ಮೇದಿಂ ।

ಮದಾಮನ್ ಮದಾಮನ್ (ನಂ) ಮದದಿಂದಂಟಾಗುವ ನೇತ್ರರೋಗ.

ಮದಾಮದ ಮದಾಮದ (ವಿಂ) ಫಲಕಮತ್ಸ್ಯ. ಮದಾಮಣಿ ಮದಜನ್ಯಂ ನೇತ್ರರೋಗಂ ದದಾತಿ । "ರಾಜಗ್ರೀವೋ ಮದಾಮದಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಮದಾಲಸ ಮದಾಲಸ (ವಿಂ) ಮದದಿಂದ ಬಳಲಿದವನು.

ಮದಾಲಾಪಿನ್ ಮದಾಲಾಪಿನ್ (ವಿಂ) ಕೋಗಿಲೆ. ಮದೇನಾಲ-ಪತಿ—ಆ + ಲಪ "ಣಿಞಃ" (೩-೧-೧೩೪) ।

ಮದಾಹ್ಲ ಮದಾಹ್ಲ (ವಿಂ) ಕಸೂರಿ, ಮೃಗದ ಮದ. ಮದಃ ಮೃಗಮದಃ ಆಹ್ವಾಸ್ಯ । "ಕಸ್ತೂರಿ ಗಂಧಚೇಲಿಕಾ । ಮದಾಹ್ಲಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಮದಿರ ಮದಿರ (ವಿಂ) 1. ರಕ್ತಖದಿರವೃಕ್ಷ, ಕೆಂಪು ಹೂವಿನ ಕಗ್ಗಲಿ ಮರ. ಮದೀ (ಹರ್ಷಲೇಪನಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಕಿರಚ್" (೩-೧-೫೧) । (ವಿಂ) 2. ಮದವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. 3. ಹರ್ಷ ವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. 4. ಮದಿಸಿರುವ.

ಮದಿರಾ ಮದಿರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. ಮಾದ್ರತ್ಯನೇನ—ಮದೀ (ಹರ್ಷಲೇಪನಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಕಿರಚ್" (೩-೧-೫೧) । ಮದ್ಯವು (1) ಮಾಧ್ವಿಕಮ್ (2) ಪಾನಸಮ್ (3) ದ್ರಾಕ್ಷಮ್ (4) ಕ್ಷಾರ್ಜೂರಮ್ (5) ತಾಲಮ್ (6) ಲೇಖವಮ್ (7) ಮೇರೆಯಮ್ (8) ಮಾಕ್ಷಿಕಮ್ (9) ಟಾಕ್ಷಮ್ (10) ಮಧುಕಮ್ (11) ನಾರಿಕೇಲಜಮ್ ಮತ್ತು (12) ಮುಖ್ಯಮ್ ಎಂದು ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ. "ನ ಸಜೋ ರುಚಿರೇ ರಮಣೀಯಶ್ಚಂದನಾನಿ ವಿರಹೇ ಮದಿರಾ ವಾ" ಕಿರಾಂ ೧-೩೫ ।



**ಮದಿರಾಳಿ ಮದಿರಾಳಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೋಹಗೊಳಿಸುವ ನೇತ್ರಗಳುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು, ಮದನವಿಕಾರವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಮದಿರೆ ಇವ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯಾ: "ಏಕ್" (೪-೪-೧೧೩) । "ಹೀಕ್" (೪-೧-೪೧) । ಮದಿರೆ ಮತ್ತೆ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯಾ: ವಾ । "ಮಧುಕರ ಮದಿರಾಳಿ: ಶಂಸ ತಸ್ಯಾ: ಪ್ರವೃತ್ತಿ ವರತನುರಥವಾಸಿ ನೆವ ದೃಢಾ ತ್ವಯಾ ಮೇ" ವಿಕ್ರಂ ೪-೪೨ ।

**ಮದಿರಾಗುಹ ಮದಿರಾಗುಹ** (ನಂ) ಮದ್ಯದ ಮನೆ, ಹೆಂಡದ ಅಂಗಡಿ, ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ಇಳಿಸುವ ಮನೆ.

**ಮದಿರಾಸಲ ಮದಿರಾಸಲ** (ಪುಂ) ಮಾವಿನಮರ. ಮದಿರಾಸಲ ಸಲಾ "ಡಕ್" (೪-೪-೧೧) ।

**ಮದಿಠಾ ಮದಿಠಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. ಅತಿಶಯೇನ ಮದಿಠಿ "ಐಠನ್" (೪-೩-೪೪) । "ಮದಿರಾ ಸುರಾ । ಮದನಾ ಮೋಹಲಿಕಾ ಮದಿಠಾ ಕಾಚಮಾಲಿಕಾ" ವೈಜಂ ।

**ಮದೀ ಮದೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತಮವಿಷಯ ಮಣ್ಣಿನ ಹೆಂಟೆ ಗಳನ್ನು ಪುಡಿಮಾಡುವ ಕುಂಟೆ.

**ಮದೀಯ ಮದೀಯ** (ವಿಂ) ನನ್ನ, ನನ್ನ ಸಂಬಂಧವಾದ, ನನಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಮಮ ಅಯಮ್ ಇದಂ ವಾ—ಅಸ್ಮದ್ "ಛ:" (೪-೨-೧೧೪) । "ಮ:" (೪-೨-೧೮) । "ಛೀಯ:" (೪-೧-೨) । "ಸ ತ್ವಂ ಮದೀಯೇನ ಶರೀರವೃತ್ತಿ ದೇಹೇನ ನಿವೃತ್ತಯಿತು ಪ್ರಸಾದ" ರಘುಂ ೨-೪೪ । ಸ್ತ್ರಿಯಾ ಮದೀಯಾ.

**ಮದೋಕ್ತ ಮದೋಕ್ತ** (ಪುಂ) 1. ಮದವೇರಿದ ಅನೆ, ಅಮಲೇರಿದ ಅನೆ. ಮದೇನ ಮದೋಕ್ತೇನ ಉಕ್ತ: । 2. ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ, ಕಪೋತ ಪಕ್ಷಿ. "ಪಾರಾವತ: ಕಲರವೋ ರಕ್ತದೃಷ್ಟಿಮದೋಕ್ತ:" ವೈಜಂ । (ನಂ) 3. ಜೇನುತುಪ್ಪ ದಿಂದ ತಯಾರಿಸಿದ ಮದ್ಯ. "ಮಧುಮಧೇ ತು ಮಾಧ್ವಿಕಂ ಕಾಮಿಕಾಂತಂ ಮದೋಕ್ತಮ್" ವೈಜಂ । (ವಿಂ) 4. ಮದದಿಂದ ಉನ್ಮತ್ತನಾದ, ಹುಚ್ಚು ಹಿಡಿದ. 5. ಮದದಿಂದ ಕೊಬ್ಬಿದ. "ತೇ ತಾನ್ ಗ್ರಾಮ್ಯಗಜಾನ್ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಸರ್ವೇ ವನಗಜಾಸ್ತದಾ । ಸಮಾಬ್ರವಂತ ವೇಗೇನ ಜಿಘಾಂಸಂತೋ ಮದೋಕ್ತಾ:" ಭಾಂ ।

**ಮದೋದಗ್ರ ಮದೋದಗ್ರ**, -ಉದ್ಗ್ರ-ಉದ್ಗ್ರ (ವಿಂ) ಮದದಿಂದ ಅವೇಶ ಹೊಂದಿದ, ಅಮಲಿನಿಂದ ಕುಪಿತವಾದ, ಮದವೇರಿದ. ಮದೇನ ಉದಗ್ರ: ಉದಗ್ರತೋ ವಾ । "ಮದೋದಗ್ರಾ: ಕಕುಬಂತ: ಸರಿತಾ ಕೂಲಮುಧ್ರಜಾ:" ರಘುಂ ೪-೨೨ । "ಮದೋದಗ್ರಾ: ಪ್ರತ್ಯನಿಲಂ ವಿಚೇರ:" ಕುಮಾಂ ೩-೩೧ ।

**ಮದೋದಗ್ರ ಮದೋದಗ್ರ** (ಪುಂ) ಮದನಾಪ, ಮದ ಸುರಿಯುವುದು, ಮದೋದಕ ಸೋರುವುದು. ಮದಸ್ಯೋ-ದಗ್ರಾ: । "ಖರ್ಜೂರಿಕ್ವಚನಧಾನಾ ಮದೋದಗ್ರಸುಗಂಧಿಷು" ರಘುಂ ೪-೪೭ ।

**ಮದೋನ್ಮತ್ತ ಮದೋನ್ಮತ್ತ** (ವಿಂ) ಗರ್ವದಿಂದ ಕೊಬ್ಬಿರುವ, ಅಹಂಕಾರದಿಂದ ಉನ್ಮತ್ತನಾದ. ಮದೇನ ಉನ್ಮತ್ತ: ।

**ಮದ್ಗು ಮದ್ಗು** (ಪುಂ) 1. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿ ಮೀನು ಹಿಡಿದು ತಿನ್ನುವ ಒಂದು ಹಕ್ಕಿ, ಒಂದು ಜಲಚರ ಪಕ್ಷಿ. ಮಜ್ಜತಿ—ತು ಮಸ್ತೋ (ಶುದ್ಧಿ) "ತ:" (ತಂ ೧-೭) । ಕೃತ್ವಮ್ (೭-೩-೪೩) । ಸಸ್ಯ ದ: (೮-೪-೪೩) । "ಮದ್ಗು:-ಪಾನೀಯಕಾಕಿಕಾ" । 2. ಕಾಡಿನ ಪಶು ಪಕ್ಷಿಗಳನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವ ಮನುಷ್ಯ. "ಮೇದಾನ್ಮಚ್ಚುಮದ್ಗುನಾಮಾರಣ್ಯಪಶು-ಹಿಸನಮ್" ವೈಜಂ । 3. ಉಡ ನಕ್ರ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಹಿಡಿದು ಕೊಲ್ಲುವ ಬೇಡರವನು. 4. ಮೀನು ಹಿಡಿಯಲು ಅಪ್ಪಣೆ ಸಾರುವವನು. "ಸ್ಯಾತ್ ಪಾರಧೇನುಕೋ ವೇನೋ ಗೋಧಾದಿ-ವಧಬಂಧಕೃತ್ । ಸ ನಿಷಾದೋ ಮತ್ಸ್ಯವಾತಾನ್ ಮದ್ಗುರಾಘೋಷಣೇನ ಸ:" ವೈಜಂ । 5. ಮಾಗಧ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು.

**ಮದ್ಗುರ ಮದ್ಗುರ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. ಮಜ್ಜತಿ—ತು ಮಸ್ತೋ (ಶುದ್ಧಿ) ಮದೀ (ಹರ್ಷ) ವಾ "ಉರಕ್" (ತಂ ೧-೪೧) । ನಿಪಾಂ । 2. ಒಬ್ಬ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು. 3. ಮುತ್ತಿನ ಚಿಟ್ಟಿಗಾಗಿ ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗುವವನು. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" । ಮದ್ಗುರಕ: ಮದ್ಗುರಕ:

**ಮದ್ಗುರಪ್ರಿಯಾ ಮದ್ಗುರಪ್ರಿಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮದ್ಗುರ ಜಾತಿಯ ಹೆಣ್ಣು ಮೀನು. ಇದಕ್ಕೆ ಶೃಂಗಿಯೆಂದು ಹೆಸರು. "ಮದ್ಗುರಸ್ಯ ಪ್ರಿಯಾ ಶೃಂಗೀ" ಅಮಂ ।

**ಮದ್ಯ ಮದ್ಯ** (ನಂ) 1. ಹೆಂಡ, ಸಾರಾಯಿ. ಮಾದ್ಯತನೇನ—ಮದೀ (ಹರ್ಷ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೦೦) । "ಮದ್ಯಮಂದ-ವಿಗಲತ್ಪಮಿಷ್ವಚ್ಚಕ್ಷುರ್ಮಿಷಿತಪಕ್ಷಮ ದಧತ್ಯಾ" ಮಾಘಂ ೧೦-೧೭ । (ವಿಂ) 2. ಮದವುಂಟುಮಾಡುವ, ಅಮಲೇರಿಸುವ. 3. ಹರ್ಷಗೊಳಿಸುವ, ಉಲ್ಲಾಸವುಂಟು ಮಾಡುವ. ಮದ್ಯವು 12 ವಿಧ. ["ಮದಿರಾ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಮದ್ಯಪ ಮದ್ಯಪ** (ವಿಂ) ಮದ್ಯಪಾನ ಮಾಡುವವನು, ಹೆಂಡ ವನ್ನು ಕುಡಿಯುವವನು. ಮದ್ಯ ಪಿಬತಿ—ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩) ।

**ಮದ್ಯಪಾನ ಮದ್ಯಪಾನ** (ನಂ) ಮದ್ಯವನ್ನು ಕುಡಿಯುವುದು. ಮದ್ಯಸ್ಯ ಪಾನಮ್ ।

**ಮದ್ಯಪುಷ್ಪಾ ಮದ್ಯಪುಷ್ಪಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರಾಟೆಮೊಗ್ಗು. ಮದ್ಯಸಾಧನಂ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯಾ: ।

**ಮದ್ಯವಾಸಿನಿ ಮದ್ಯವಾಸಿನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರಾಟೆಮೊಗ್ಗಿನ ಗಿಡ.



ಮದ್ರಸಂಧಾನ ಮಧ್ಯಸಂಧಾನ (ನಂ) ಹೆಂಡವನ್ನು ತೆಗೆಯುವುದು, ಬಟ್ಟೆ ಇಳಿಸುವುದು.

ಮದ್ರ ಮಧ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಮದ್ರದೇಶದ ದೊರೆ. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ಮದ್ರದೇಶ. 3. ಮದ್ರದೇಶದ ಜನರು. [ಮದ್ರದೇಶವು ಈಗಿನ ಪಂಜಾಬ ದೇಶ. ಮದ್ರದೇಶದ ಮುಖ್ಯ ಪಟ್ಟಣ (ರಾಜಧಾನಿ) ಶಾಕಲ ನಗರ. ಚಂದ್ರಭಾಗಾ-ಇರಾವತೀನದಿಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗದ ಪ್ರದೇಶವು ಮದ್ರದೇಶ.]

ಮದ್ರಕ ಮಧ್ಯಕ (ವಿಂ) ಮದ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಮದ್ರೆ ಜಾತ: "ಕನ್" (೪-೨-೧೩೧)।

ಮದ್ರಕಾರ ಮಧ್ಯಕಾರ (ವಿಂ) ಹರ್ಷವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ, ಸಂತೋಷವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ. ಮದ್ರಂ ಕರೋತಿ—ಛ ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಅನ್" (೩-೨-೪೪)। ಪಕ್ಷೆ "ಅನ್" (೩-೨-೪೪)। ಮದ್ರಕ್ಷುರ: ಮದ್ರಂಕರಃ.

ಮದ್ರರಾಜ ಮಧ್ಯರಾಜ (ಪುಂ) ಮದ್ರದೇಶದ ದೊರೆ, ಶಲ್ಯ, ಯತಾಯನರಾಜನ ಮಗ, ಮಾದ್ರಿಯ ಸಹೋದರ. ["ಶಲ್ಯ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಮದ್ರಸುತಾ ಮಧ್ಯಸುತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮದ್ರರಾಜನ ಮಗಳು, ಮಾದ್ರಿ, ಪಾಂಡುರಾಜನ ಪತ್ನಿ. ಮದ್ರಸ್ಯ ಸುತಾ।

ಮದ್ರನ್ ಮಧ್ಯನ್ (ಪುಂ) ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಮದ್ರಿ (ಹರ್ಷ) "ವನಿಪ್" (೩ಂ ೪-೧೧೨)।

ಮದ್ರಗೌಣ ಮಧ್ಯಗೌಣ (ವಿಂ) ನನ್ನ ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿರುವ, ನನ್ನ ಕಡೆ ಇರುವ. ಮಮ ವರ್ಗಂ ಪಕ್ಷೆ ಭವ:—ವಾ "ಅ:" (೪-೩-೬೪)। ಪಕ್ಷೆ "ಅ:" (೪-೩-೬೪)। ಮದ್ರಗೌಣ: ಮದ್ರಗೌಣಯಃ. ಪಕ್ಷೆ "ಯತ್" (೪-೩-೬೪)। ಮದ್ರಗೌಣ: ಮದ್ರಗೌಣಃ.

ಮದ್ರಿಧ ಮದ್ರಿಧ (ವಿಂ) ನನ್ನಂತಿರುವ. ಮಮ ವಿಧೇವ ವಿಧಾ ಯಸ್ಯ। "ಮದ್ರಿಧಾ ವಿಷಮವೃತ್ತಿಶಾಲಿನ:" ಯಾದಂ ೧೭-೧೭।

ಮಧು ಮಧು (ಪುಂ) 1. ಚೈತ್ರ ಮಾಸ. ಮನ್ಯತೇ—ಮನ (ಜ್ಞಾನ) "ಃ" (೩ಂ ೧-೧೮)। ನಸ್ಯ ಧನ್ಯಃ। "ರೇಜತುರ್ಗತಿ-ವಶಾತ್ಪ್ರವರ್ತಿನೌ ಭಾಸ್ಕರಸ್ಯ ಮಧುಮಾಧವಾವಿವ" ರಘುಂ ೧೧-೭। 2. ವಸಂತ ಋತು. "ನಿವೇಶಯಾಮಾಸ ಮಧುಧೀರೇಪಾನ್ಮಾಮಾಕ್ಷ-ರಾಣಿವ ಮನೋಭವಸ್ಯ" ಕುಮಾಂ ೩-೨೭। 3. ಅಶೋಕ ವೃಕ್ಷ. 4. ಸೀಹಾಲೆ ಗಿಡ. 5. ಹಿಪ್ಪೆ ಮರ. 6. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. "ಶತ್ರುಘ್ನಶ್ಚ ಮಧೋ: ಪುತ್ರಂ ಲವಣಂ ನಾಮ ರಾಕ್ಷಸಮ್। ಹತ್ವಾ ಮಧುವನೇ ಚಕ್ರೇ ಮಧುರಾಂ ನಾಮ ವೈ ಪುರೀಮ್," ಭಾಗಂ ೧-೧೧-೧೪। 7. ವಿಷ್ಣುವಿನ ಕರ್ಣಮಾಲದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. ಇವನು ವಿಷ್ಣುವಿನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಮಾಡಿ

ಹತನಾದನು. ಭಾಂ ವನಂ ೨೦೬। (ನಂ) 8. ಅತಿಮಧುರ. 9. ಮಹರಂದ, ಪುಷ್ಪರಸ. "ಮಧು ದ್ವಿರೇಫ: ಕುಸುಮಕಪಾತ್ರೇ ಪಪೌ ಪ್ರಿಯಾಂ ಸ್ವಾಮನುವರ್ತಮಾನ:" ಕುಮಾಂ ೩-೩೬। 10. ಮಧ್ಯ, ಹೆಂಡ. "ತತ್ತಥಾ ಹಿ ದಯಿತಾನನದತ್ತಂ ವ್ಯಾನಶೇ ಮಧು ರಸಾತಿಶಯೇನ" ಕಿರಾಂ ೧-೪೮। 11. ಜೇನುತುಪ್ಪ. "ಏತಾಸ್ತಾ ಮಧುನೌ ಧಾರಾ: ಇಚ್ಛಂತಿ ಸವಿಷಾಸ್ತವಯಿ" ೩ಂ ರಾಂ ೩-೩೪। 12. ಮಧುರ ರಸ. 13. ಜಲ, ನೀರು. 14. ಕ್ಷೀರ, ಹಾಲು. "ನಾ ವಸಂತೇ ರಸೇಷುರೇ। ಚೈತ್ರೇ ಮಧುಕೇ ಕಲೀತ್ವಪ್ಸು ಮಧೇ ಪುಷ್ಪರಸೇ ಮಧು" ವೈಜಂ। "ಗವ್ಯಂ ಜ್ಯೇಷ್ಠಂ ಮಧು ಕ್ಷೀರಮ್" ವೈಜಂ। "ಮಧು ಕ್ಷೌದ್ರೇ ಜಲೇ ಕ್ಷೀರೇ ಮಧೇ ಪುಷ್ಪರಸೇ ಮಧು:। ದೈತ್ಯೇ ಚೈತ್ರೇ ವಸಂತೇ ಚ ಜೀವಾ-ಶೋಕೇ ಮಧುದ್ರುಮೇ" ವಿಶ್ವಂ। (ವಿಂ) 15. ಮಧುರವಾದ, ಸಿಹಿಯಾದ.

ಮಧುಕ ಮಧುಕ (ಪುಂ) 1. ಸ್ತುತಿಪಾಠಕ, ಹೊಗಳುಭಟ. 2. ಅತಿಮಧುರ. 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಪಕ್ಷಿ. (ನಂ) 4. ಅಮೃತ ಬಳ್ಳಿ. ಮಧು ಮಧುರಂ ಕಾಯತಿ—ಕಂ (ಶಬ್ದ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। "ಮಧುಕೋ ವಂದಿಮೇದೇ ಸ್ವಾಜ್ಜ್ಯೇಷ್ಠಧಾಹ್ವೇ ವಿಹಗಾಂತರೇ। ಮಧುಕಂ ಮಧುಪರ್ಯಾ ಸ್ವಾತ್" ವಿಶ್ವಂ। 5. ಹಳೆಯ ಜೇನುತುಪ್ಪ. "ಮಧುಲಂ ತು ಮಧುರಸ್ತೀ ಮಧುಕಂ ತತ್ ಪುರಾತನಮ್" ವೈಜಂ।

ಮಧುಕಂಠ ಮಧುಕಂಠ (ಪುಂ) ಕೋಗಿಲೆ. ಮಧು: ಮಧುರ: ಕಂಠಾಂಸ್ಯ। "ಮಧುಕಂಠೋ ಧೋಷಯಿತ್ಸು: ಕಾಮತಾಲ: ಸುತರ್ದನ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। -ಕಂಠೀ -ಕಂಠೀ.

ಮಧುಕರ ಮಧುಕರ (ಪುಂ) 1. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಮಧು ಕರೋತಿ—ಛ ಕೃತ್ (ಕರಣ) ತಾಂಚೀತ್ಯೇ "ಠ:" (೩-೨-೨೦)। "ಆಮೋಕ್ಷಯಂತೇ ತ್ವಯಿ ಮಧುಕರಶ್ರೇಣಿಧೀರ್ಭಿನ್ ಕಟಾಕ್ಷಾನ್" ಮೇಘಂ ೧-೩೫। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। ಮಧುಕರೀ ಮಧುಕರಃ. 2. ಕಾಮುಕ, ಸ್ತ್ರೀಲಂಪಟ, ಕಾಮಾಸಕ್ತ.

ಮಧುಕೃತ್ ಮಧುಕೃತ್ (ಪುಂ) ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಮಧು ಕರೋತಿ—ಛ ಕೃತ್ "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೭೬)।

ಮಧುಕೇತಭ ಮಧುಕೈಟಭ (ಪುಂ ದ್ವಿಂ) ಮಧು ಮತ್ತು ಕೈಟಭರೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸರು. ಮಧುಶ್ಚ ಕೇತಭಶ್ಚ। ["ಕೇತಭ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ಮಧುಕೇತಭಮೇರಮದಿನಸ್ತೇ" ಯಾದಂ ೧೫-೧೮।

ಮಧುಕೋಶ ಮಧುಕೋಶ (ಪುಂ) ಜೇನುಗೂಡು. ಮಧುವಂ ಕೃತ: ಕೋಶ:।

ಮಧುಕಮ ಮಧುಕೃಮ (ಪುಂ) ಮದ್ಯಪಾನದ ಕ್ರಮ.



ಮಧುಖರ್ಜುರಿ ಮಧುಖರ್ಜುರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಂಡಖರ್ಜುರ, ಮೆದುಮಾದ (ಸಿಹಿ) ಖರ್ಜುರ. ಮಧು: ಮಧುರಾ ಖರ್ಜುರಿ ।

ಮಧುಗಾಯನ ಮಧುಗಾಯನ (ಪುಂ) ಕೋಗಿಲೆ. ಮಧು ಗಾಯತಿ —ಗೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಘೃಟ್" (೩-೧-೧೪೭) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫) । -ಗಾಯನೋ -ಗಾಯನೀ.

ಮಧುಘೋಷ ಮಧುಘೋಷ (ಪುಂ) ಕೋಗಿಲೆ. ಮಧುಮಧುರ: ಘೋಷ: ಅಸ್ಯ ।

ಮಧುಜ ಮಧುಜ (ನಂ) ಜೇನುಮೇಣ. ಮಧುನೋ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಮವಿ) "ಙ:" (೩-೨-೯೮) ।

ಮಧುಜಾ ಮಧುಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಲ್ಲುಸಕ್ಕರೆ. 2. ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ. ಮಧುನೋ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ "ಙ:" (೩-೨-೯೮) ।

ಮಧುಜಿತ್ ಮಧುಜಿತ್ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಮಧು ಜಿತವಾನ್—ಜಿ (ಜಯೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬) ।

ಮಧುತೃಣ ಮಧುತೃಣ (ಪುಂ) ಕಬ್ಬು. ಮಧು: ಮಧುರ: ತೃಣ: ಮಧುರಂ ತೃಣಂ ವಾ ।

ಮಧುತ್ರಯ ಮಧುತ್ರಯ (ನಂ) ಮಧುರವಾದ ಮೂರು ವಸ್ತುಗಳು. ತುಪ್ಪ ಜೇನುತುಪ್ಪ ಕಲ್ಲುಸಕ್ಕರೆ ಇವು ಮೂರು ಮಧುರ ವಸ್ತುಗಳು. ಮಧುನಾಂ ಮಧುರವಸ್ತುನಾಂ ತ್ರಯಮ್ ।

ಮಧುದೂತ ಮಧುದೂತ (ಪುಂ) ಮಾವಿನ ಮರ. ಮಧೋ-ವಸಂತಸ್ಯ ದೂತ ಇವ ।

ಮಧುದ್ರೂಮ ಮಧುದ್ರೂಮ (ಪುಂ) ಹಿಪ್ಪೆ ಮರ. ಮಧುನಾಮಾ ದ್ರೂಮ: । ಮಧ್ವರ್ಥ ಮಧುತ್ಪಾದಕೋ ವಾ ದ್ರೂಮ: ಇತಿ ವಾ ।

ಮಧುದ್ವಿಷ ಮಧುದ್ವಿಷ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. "ಮಧುದ್ವಿಷೋ ವರ್ಣಮುಷಾಂ ಮಣಿಣಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೮-೧೦೭ ।

ಮಧುನಿಷ್ಠದನ ಮಧುನಿಷ್ಠದನ, -ರಿಪು -ರಿಪು, -ಸೂದನ -ಸೂದನ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಮಧು ಮಧುನಾಮರಾಕ್ಷಸಂ ನಿಷ್ಠದತೇ ಮಧೋ:ರಿಪು: ಮಧು ಸೂದಯತಿ ವಾ । ಮಧು ಸೂರಿಣಾಂ ಕರಣಂ ಸೂದಯತಿ ಆತ್ಮನೈವುಪಸಂಹರತಿ ಇತಿ ವಾ—ಛೂದ (ಕ್ಷರಣೇ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) । "ಮಧ್ವಾಲ್ಯಮಸುರಂ ಹಂತಿ ಸೂರಿಣಾಂ ಕರಣಂ ಚ ವಾ । ಉಪಸಂಹರತಿ ಸ್ವಸ್ಮಿನ್ ಮಧುಸೂದನ ಇಷ್ಯತೇ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ್ತಿ: । "ಮಾಧವೋ ಮಧುಸೂದನ:" ವಿಂ ಸಂ ।

ಮಧುನೆತು ಮಧುನೆತು (ಪುಂ) ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಮಧು ನಯತಿ ಪುಷ್ಪೇಭ್ಯ:—ಗೋ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ತುಕ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

ಮಧುಪ ಮಧುಪ (ಪುಂ) 1. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಮಧು ಪಿಬತಿ —ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩) । "ವಕುಲಪುಷ್ಪರಸಾಸವ-ಪೇಶಲಘ್ವನಿರಗಾನ್ವಿರಗಾನ್ಮಧುಪಾವಲಿ:" ಮಾಘಂ ೬-೭ । (ವಿಂ) 2. ಮದ್ಯಪಾನ ಮಾಡುವವನು, ಹೆಂಡ ಕುಡಿಯುವವನು.

ಮಧುಪಕ ಮಧುಪಕ (ಪುಂ) 1. ಮೊಸರು ತುಪ್ಪ ಜಲ ಜೇನುತುಪ್ಪ ಸಕ್ಕರೆ ಇವುಗಳ ಬೆರಕೆ. ಇವು ಐದನ್ನೂ ಬೆರಸಿ ಮನೆಗೆ ಬಂದ ಅತಿಥಿಗಳಿಗೂ ವಿವಾಹಕಾಲದಲ್ಲಿ ವರನಿಗೂ ಕೊಟ್ಟು ಪೂಜಿಸಬೇಕು. "ದಧಿ ಸರ್ಪಿಜಲಂ ಕೌಡಂ ಸಿತಾ ಚೇತಶ್ಚ ಪಚ್ಚಭಿ: । ಪ್ರೋಚ್ಯತೇ ಮಧುಪಕಸ್ತು ಸರ್ವದೇವೈ-ತುಷ್ಠಯೇ" । ಇದು ಪೂಜಾಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಮೋಡ ಶೋಪಚಾರಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಒಂದು ವರ್ಷದ ನಂತರ ಮನೆಗೆ ಬಂದ ರಾಜ ಯತ್ರಿಕು ಸ್ನಾತಕ (ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಪೂರ್ತಿಮಾಡಿದವನು) ಗುರು ಅಳಿಯ ಮಾವ (ಶ್ವಶೂರ) ಮತ್ತು ಸೋದರಮಾವ ಇವರನ್ನು ಮಧುಪಕದಿಂದ ಸತ್ಕರಿಸಬೇಕು. "ರಾಜತ್ವಿಕ್ಸನಾತಕಗುರುನ್ ಪ್ರಿಯಶ್ವಶೂರ-ಮಾತುಲಾನ್ । ಅಹೈನ್ಮಧುಪಕೇಣ ಪರಿಸಂವತ್ಸರಾತ್ ಪುನ:" ಮನುಂ ೩-೧೧೯ । (ನಂ) 2. ದಧಿ ಮಿಶ್ರವಾದ ಮಧು, ಮೊಸರು ಬೆರಸಿದ ಜೇನುತುಪ್ಪ. "ಮಧುಪಕಂ ದಧಿಮಧುಘೃತಮಪಿಹಿತಂ ಕಾಂತ್ಯೇನ" । "ಅಸಿವದಧ್ಯನ್ಮಧುಪಕಮಪಿತಂ ಸ ತದ್ವ್ಯವಾತ್ಕ-ಮುದಕದರ್ಶಿನೇ" ನೆಪಂ ೧೬-೧೩ ।

ಮಧುಪರ್ಣಿಕಾ ಮಧುಪರ್ಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೀಲಿಗಿಡ. 2. ಶೀವನೆ ಮರ. 3. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. ಮಧಿವ ಪರ್ಣಿ-ನ್ಯಸ್ಯಾ: "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬೪) । ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೫-೩-೭೫) ।

ಮಧುಪರ್ಣಿ ಮಧುಪರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. ಮಧಿವ ಪರ್ಣಿನ್ಯಸ್ಯಾ: "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬೪) । 2. ಶೀವನೆ ಮರ. "ಮಧುಪರ್ಣಿ ಚ ಗಾಮ್ಭೀರ್ಯಾ ನೇಲಿಸಂಜ್ಞಾಭಾವಪಿ" ಮೇದಿಂ । 3. ನೀಲಿಗಿಡ. "ಅಥ ನೇಲಿವಿಶಲ್ಯಯೋ: । ಮಧುಪರ್ಣಿ" ವೇಜಂ ।

ಮಧುಪಾನ ಮಧುಪಾನ (ನಂ) ಮದ್ಯವನ್ನು ಕುಡಿಯುವುದು.

ಮಧುಪಾಯಿನ್ ಮಧುಪಾಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. (ವಿಂ) 2. ಮದ್ಯಪಾನ ಮಾಡುವವನು, ಹೆಂಡ ಕುಡಿಯುವವನು. ಮಧು ಪಿಬತಿ—ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ -ಪಾಯಿನಿ -ಪಾಯಿನೀ.

ಮಧುಪುರಿ ಮಧುಪುರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಧುರಾನಗರ. ಮಧೋ: ದೇವಸ್ಯ ಪುರಿ । "ನೇಮಿಷಂ ಫಾಲ್ಗುಣಂ ಸೇತು: ಪ್ರಭಾಸೋಽಥ ಕುಶಸ್ಥಲಿ । ವಾರಾಣಸಿ ಮಧುಪುರಿ ಪಮ್ಪಾ ಬಿಂದುಸರಸ್ತಥಾ" ಭಾಗಂ ೭-೧೪-೩೧ ।

ಮಧುಪುಷ್ಪ ಮಧುಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಹಿಪ್ಪೆಮರ. 2. ಬಾಗೆ ಮರ. 3. ಅಶೋಕವೃಕ್ಷ. 4. ಪವಳದ ಗಿಡ, ವಕುಳವೃಕ್ಷ.

ಮಧುಪ್ರಮೇಹ ಮಧುಪ್ರಮೇಹ (ಪುಂ) ಮೂತ್ರರೋಗ, ಮೂತ್ರಾತಿಸಾರ.



ಮಧುಪ್ರಿಯ ಮಧುಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) ಬಲರಾಮ. ಮಧು ಮಧು  
ಪ್ರಿಯ ಯಸ್ಯ |

ಮಧುಬಹುಲಾ ಮಧುಬಹುಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡಿರುವಂತಿಗೆ ಗಿಡ.

ಮಧುಬೀಜ ಮಧುಬೀಜ (ಪುಂ) 1. ದಾಳಿಂಬೆ ಗಿಡ. (ನಂ)  
2. ದಾಳಿಂಬೆ ಹಣ್ಣು.

ಮಧುಮಕ್ಷಿಕಾ ಮಧುಮಕ್ಷಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೇನು ಹುಳ.  
ಮಧುಕರ್ತೃ ಮಕ್ಷಿಕಾ |

ಮಧುಮತ್ ಮಧುಮತ್ (ವಿಂ) 1. ಜೇನುತುಪ್ಪದೊಡನೆ  
ಬೆರೆತಿರುವ. 2. ಸಿಹಿಯಾದ, ಮಧುರವಾದ. ಮಧು  
ಮಧುರಸೋಪ್ಪದ ಸ್ವರೂಪ "ಮಧು" (೪-೨-೧೪) | ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಜಿಪ್"  
(೪-೧-೬) | -ಮತಿ-ಮತಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಒಂದು ನದಿ.  
ಈ ನದಿಯು ಮಾಳವ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ಹರಿದು ಸಿಂಧು  
ನದಿಯೊಡನೆ ಸೇರುವುದು. "ಅಯಂ ಚ ಮಧುಮತಿಸಿಂಧು-  
ಸಂಭೇದಭಾವನೋ ಭಗವಾನ್ ಭವಾನಿಪತಿ:" ಮಾಲತೀಂ ೧ |

ಮಧುಮತ್ತ ಮಧುಮತ್ತ (ವಿಂ) ಮದ್ಯಪಾನದಿಂದ ಮದಿಸಿ  
ದವನು, ಹೆಂಡ ಕುಡಿದು ಅಮಲೇರಿದವನು. ಮಧುನಾ  
ಮತ್ತ: |

ಮಧುಮಥನ ಮಧುಮಥನ (ಪುಂ) ಮಧುವೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನನ್ನು  
ಸಂಹರಿಸಿದ ವಿಷ್ಣು. ಮಧು ಮಥನಾತಿ-ಮಥ (ವಿಲೋಡನೆ)  
"ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) | "ಮಧುಮಥನವಧೂರಿವಾಹ್ನಯಂತಿ"  
ಮಾಘಂ ೭-೨೫ |

ಮಧುಮಲ್ಲಿ ಮಧುಮಲ್ಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾಲತೀಲತೆ, ಜಾಜಿ  
ಗಿಡ. ಮಧುಪ್ರಧಾನಾ ಮಲ್ಲಿ |

ಮಧುಮಸ್ತಕ ಮಧುಮಸ್ತಕ (ನಂ) ಹಿಟ್ಟಿಗೆ ಜೇನುತುಪ್ಪ  
ತೈಲ ತುಪ್ಪಗಳನ್ನು ಬೆರೆಸಿ ಮಾಡುವ ಒಂದು ವಿಧ ಭಕ್ಷ್ಯ.  
ಮಧುಮೇಹ ಮಧುಮೇಹ (ಪುಂ) ಮೂತ್ರರೋಗ, ಮೂತ್ರಾತಿ  
ಸಾರ.

ಮಧುಯಣ್ಡಿ ಮಧುಯಷ್ಟಿ, -ಯಣ್ಡಿ -ಯಷ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
1. ಕಬ್ಬು. 2. ಅತಿಮಧುರ. ಮಧು: ಮಧುರಾ ಯಣ್ಡಿ: |  
ಮಧುಯಣ್ಡಿಕಾ ಮಧುಯಷ್ಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅತಿಮಧುರ.  
2. ಕಬ್ಬು.

ಮಧುರ ಮಧುರ (ಪುಂ) 1. ಮಧುರ ರಸ, ಸಿಹಿರಸ. ಮಧು  
ಮಾಧುರ್ಯ ರಾತಿ-ರಾ (ದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೪) | ಮಧು  
ಮಾಧುರ್ಯಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ರ:" (೪-೨-೧೦೭) ವಾ | "ಮಧುರಸ್ತು  
ರಸಶ್ಚಿನೋತಿ ಕೇಶಾನ್ ವಪುಷ: ಸ್ಥೈರ್ಯಬಲೋಜೋವೀರ್ಯದಾಯಿ"  
ರಾಜನಿಂ | (ನಂ) 2. ವಿಷ. 3. ತವರ. (ವಿಂ)  
4. ಮಧುರವಾದ, ಸಿಹಿಯಾದ, ರುಚಿಯಾದ. "ಮಧುರಂ  
ಮಧು ಪಿಯುಷಂ ತಸ್ಮಾತ್ತಸ್ಮಾತ್ಕವೇವಂಚ:" ಚಂದ್ರಾಂ | "ನ ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರಂ

ಪಠತಿತಿ ಕಾರಣಂ ನ ಚಾಪಿ ವೇದಾಧ್ಯಯನಂ ದುರಾತ್ಮನ: | ಸ್ವಭಾವ  
ಎವಾತ್ರ ತಥಾತಿರಿಚ್ಯತೇ ಯಥಾ ಪ್ರಕೃತ್ಯಾ ಮಧುರಂ ಗವಾಂ ಪಯ:"  
ಹಿತೋಂ ೧-೧೭ | 5. ಇಂಪಾದ. "ಅಭಿಭವತಿ ಮನ:  
ಕದಂಬವಾಯಿ ಮಧುಮಧುರೇ ಚ ಶಿಷ್ಯಪಿಂಡನಾಂ ನಿರಾಧೇ" ಕಿರಾಂ  
೧೦-೨೩ | 6. ಅಂದವಾದ, ಚೆಲುವಾದ, ಸೊಗಸಾದ.  
"ಯಥಾ ಪ್ರಸಿದ್ಧಮಧುರಂ ಶಿರೋರಹೈರ್ಜಟಾಭಿರಪ್ಯವಮಭೂತದಾನೀಮ್"  
ಕುಮಾಂ ೪-೯ | 7. ಪ್ರಿಯವಾದ, ಹಿತವಾದ, ಸಂತೋಷಕರ  
ವಾದ. "ಮಧುರಂ ಬಹಿರಂತರಪ್ರಿಯಂ ಕೃತಿನಾಽವಾಚಿ ವಚಸ್ತಥಾ  
ತ್ವಯಾ" ಮಾಘಂ ೧೬-೧೭ | 8. ಪ್ರಶಾಂತವಾದ, ಪ್ರಸನ್ನ  
ವಾದ, ಕ್ರೂರವಲ್ಲದ. "ಮಧುರೇವಶಾನಿ ಲಘುಯತ್ರಾಪಿ  
ತೀರ್ಯಶ್ಚಿ ಶಮಂ ನಿರೀಕ್ಷಿತೆ:" ಕಿರಾಂ ೩-೪೪ | (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ)  
9. ಸಿಹಿಯಾಗಿ. 10. ಪ್ರಿಯವಾಗಿ, ಸಂತೋಷಕರವಾಗಿ.  
11. ಪ್ರಶಾಂತವಾಗಿ. 12. ಇಂಪಾಗಿ. 13. ಸೊಗಸಾಗಿ,  
ಅಂದವಾಗಿ. "ಮಧುರಂ ವಿಷಮ್ | ಮಧುರಸ್ತು ಪ್ರಿಯೇ ಸ್ವಾದೋ  
ರಸೇ ಚ ರಸವತ್ಯಪಿ" ಹೇಮಂ |

ಮಧುರಕ ಮಧುರಕ (ಪುಂ) ಹಕ್ಕಿಸಿಕ್ಕಿ ಗಿಡ.

ಮಧುರತಾ ಮಧುರತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಿಹಿ, ಮಾಧುರ್ಯ.  
ಮಧುರಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) | "ವಿಭ್ರತೀ  
ಮಧುರತಾಮತಿಮಾತ್ರಂ ರಾಗಿಭಿರ್ಯುಗಪದೇವ ಪಪಾತೇ" ಮಾಘಂ ೧೦-೮ |  
2. ರಮಣೀಯತೆ. 3. ಇಂಪು. 4. ಸೊಗಸು, ಚೆಲುವು.  
"ತ್ವ:" (೪-೧-೧೧೯) | ಮಧುರತ್ವಮ್ ಮಧುರತ್ವಮ್.  
"ಆಹಿತೇ ನು ಮಧುನಾ ಮಧುರತ್ವೇ ಚೇಷ್ಟಿತಸ್ಯ ಗಮಿತೇ ನು  
ವಿಕಾಸಮ್" ಕಿರಾಂ ೯-೬೯ |

ಮಧುರತ್ರಯ ಮಧುರತ್ರಯ (ನಂ) "ಮಧುತ್ರಯ" ನೋಡಿ.

ಮಧುರಸ ಮಧುರಸ (ಪುಂ) 1. ಕಬ್ಬು, ಇಕ್ಷು. 2. ತಾಳೆ  
ಮರ, ಪನಮರ, ತಾಟಮರ. ಮಧು: ಮಧುರೋ ರಸೋಪ್ಪ |

ಮಧುರಸಾ ಮಧುರಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದ್ರಾಕ್ಷಿಹಣ್ಣು. ಮಧು-  
ಮಧುರೋ ರಸೋಪ್ಪಾ: | 2. ಕುರುಟಿಗೆ ಗಿಡ. 3. ಹಾಲು  
ತೊಟ್ಟಿನ ಗಿಡ. "ಮಧುರಮಧುರಸಾ ದ್ರಾಕ್ಷಾಮುವಿಕಾಡುಗಿಧಿಕಾಸು  
ಚ" ಮೇದಿಂ |

ಮಧುರಾ ಮಧುರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಧುರಾನಗರ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು  
ಅವತರಿಸಿದ ಸ್ಥಳ, ಶೂರಸೇನನ ರಾಜಧಾನಿ. 2. ಅತಿ  
ಮಧುರ. 3. ಹುಳಿತ ಗಂಜಿ. 4. ಸಬ್ಬಸಿಗೆ. 5. ಸಕ್ಕರೆ  
ಕುಂಬಳ, ಸಿಹಿ ಕುಂಬಳ. 6. ಕುರುಟಿಗೆ ಗಿಡ. 7. ಅಜವಾನ,  
ಹಿಮ. ಮಧುರಸ್ತಯಾ: | "ಮಧುರಾ ಮಧುರಾಪುರ್ಯಾ ಯಣ್ಡಿ-  
ಮೋದಾಮಧುಲಿಪು | ಮಧುಕರ್ಕಡಿಕಾಪಾಂ ಚ ಮಿಶ್ರೇಯಾಶತಪುಷ್ಪಯೋ:"  
ಹೇಮಂ | 8. ಲವಣಾಸುರನನ್ನು ಜಯಿಸಿ ಕಾಳಿಂದೀ ನದೀ  
ತೀರದಲ್ಲಿ ಶತ್ರುಘ್ನನು ನಿರ್ಮಿಸಿದ ಒಂದು ನಗರ.



“उपकूलं तु कालिन्दाः पुरीं पौरुषभूषणः। निर्ममे  
निर्ममोऽर्थेषु मधुरां मधुराकृतिः” रघु० १५-२८।

ಮಧುರಾಸ್ಲಕ ಮಧುರಾನ್ಮುಕ (ಪುಂ) ಅಮಟಿ ಮರ.

ಮಧುರಿಕಾ ಮಧುರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಬ್ಬಸಿಗೇಸೊಪ್ಪು. “छत्रा  
मधुरिका मिसिः” अम०।

ಮಧುರಿಪು ಮಧುರಿಪು (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಮಧು: असुरस्य  
रिपुः। “श्रीजयदेवभणितमतिसुन्दरमोहनमधुरिपुरुषम्”  
गीतगो० २-९।

ಮಧುಲ ಮಧುಲ (ನಂ) ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. ಮಧು पुष्परसं लाति  
कारणत्वेन स्वीकरोति—ला (आदाने) “कः”  
(३-२-४)।

ಮಧುಲಿಕಾ ಮಧುಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರಿ ಸಾಸವೆ.

ಮಧುಲಿಹ್ ಮಧುಲಿಹ್ (ಪುಂ) ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಮಧು  
लेढि—लिह (आस्वादाने) “क्विप्” (३-२-७६)।

“नयन्मधुलिहः श्वेत्यमुदग्रदशनांशुभिः” माघ० २-२१।

ಮಧುಲೇಹಿನ್ ಮಧುಲೇಹಿನ್ (ಪುಂ) ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ.

ಮಧು लेढि—लिह (आस्वादाने) “गिनिः” (३-१-१३४)।

ಮಧು लेढुं शीलमस्य “गिनिः” (३-२-७८) वा।

“दत्तावधानं मधुलेहिगीतौ प्रशान्तवेष्टं हरिणं जिघांसुः”

भट्टि० २७।

ಮಧುವನ ಮಧುವನ (ನಂ) 1. ಮಧುವೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನು  
ವಾಸಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಅರಣ್ಯ. ಇದು ಯಮುನಾ ತೀರದಲ್ಲಿದ್ದ  
ಒಂದು ವನ. 2. ಸುಗ್ರೀವನ ಉದ್ಯಾನವನ. (ಪುಂ)  
3. ಕೋಗಿಲೆ.

ಮಧುವರ್ಗ ಮಧುವರ್ಗ (ಪುಂ) ಎಂಟು ವಿಧ ಜೇನುತುಪ್ಪ.  
“माक्षिकं भ्रामरं क्षौद्रं पीतिकं छात्रमेव च। आर्घ्य-  
मौद्गलिकं दालमित्यष्टौ मधुजातयः” योगर०।

(1) ನೀಲಿ ಬಣ್ಣದ ಮಧ್ಯಮಾಕೃತಿಯ ಜೇನುಹುಳ  
ಗಳಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಜೇನುತುಪ್ಪವು ಮಾಕ್ಷಿಕ.

(2) ಭ್ರಮರ (ದುಂಬಿಗಳಿಗಿಂತ ಚಿಕ್ಕದಾದ ಅದೇ  
ಅಕಾರದ ಜೇನುದುಂಬಿ)ಗಳಿಂದ ಸಂಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಜೇನು  
ತುಪ್ಪವು ಭ್ರಾಮರ.

(3) ಹಳದಿಬಣ್ಣದ ಚಿಕ್ಕ ಜೇನುನೋಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ ಜೇನುತುಪ್ಪವು ಕ್ಷೌದ್ರ (ಕಿ ಜೇನು).

(4) ಹಳದಿಬಣ್ಣದ ದೊಡ್ಡ ಜೇನುನೋಣಗಳಿಂದ  
ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಜೇನುತುಪ್ಪವು ಪೀತಿಕ. (ಹಜ್ಜೇನು).

(5) ಕಪಿಲವರ್ಣದ ಜೇನುಹುಳಗಳಿಂದ ಸಂಗ್ರಹಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ ಜೇನುತುಪ್ಪವು ಛಾತ್ರ (ತುಡುವೆ).

(6) ಮಧುವೃಕ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ರವಿಸುವ ಸಾರವು ಅಘ್ಘೃ.

(7) ಗೆದ್ದಲುಹುಳಗಳಿಂದ ಕಟ್ಟಲ್ಪಡುವ ಜೇನು  
ತುಪ್ಪವು ಔದಾಲಕ (ನಸಲಾ).

(8) ಮರಗಳ ಪೊಟರೆಗಳಲ್ಲಿ ಹುಳಗಳು ಕಟ್ಟುವ  
ಅಥವಾ ಆಯಾ ಮರಗಳ ಪುಷ್ಪಗಳಿಂದ ಜಿನುಗಿದ  
ಮಕರಂದವು ಎಲೆಗಳ ಮೇಲೆ ಬೀಳುವುದರಿಂದಾಗುವ  
ಜೇನುತುಪ್ಪವು ದಾಲ. ಈ ಎಂಟು ವಿಧ ಜೇನುತುಪ್ಪ  
ಗಳೂ ಮಧುವರ್ಗಕ್ಕೆ ಸೇರಿದುವು.

ಮಧುವಾರ ಮಧುವಾರ (ಪುಂ) ಮದ್ಯಪಾನದ ಕ್ರಮ, ಪದೇ  
ಪದೇ ಮದ್ಯಪಾನ ಮಾಡುವುದು, ಮದ್ಯಪಾನಾಭ್ಯಾಸ.  
मधुनो मद्यस्य वारः पर्यायः। “फुल्ललोचनविनील-  
सरोजैरङ्गनास्यचषकैर्मधुवारः” किरा० ९-५७।

ಮಧುವ್ರತ ಮಧುವ್ರತ (ಪುಂ) ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಮಧು  
तत्संप्रहो व्रतमस्य। “मालां मधुव्रतवरुथगिरापघुष्टाम्”  
भाग० ३-२८-२८। स्त्रियां “डीष्”। “मधुव्रतीनां  
मधुरैः प्रणादैः प्रियंवदं प्रेषयतीव गन्धम्” याद०  
१८-११४।

ಮಧುಶರ್ಕರಾ ಮಧುಶರ್ಕರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೇನುತುಪ್ಪ  
ದಿಂದಾದ ಸಕ್ಕರೆ. मधुजाता शर्करा।

ಮಧುಶಿಘ್ರ ಮಧುಶಿಘ್ರ (ಪುಂ) ಕೆಂಪು ಹೂವಿನ ನುಗ್ಗೆ ಮರ.  
मधुप्रधानः शिघ्रः। “मधुशिघ्रः सरस्तिक्तः शोफघ्नो  
दीपनः कटुः” सुश्रुत० सूत्र० ४६-२३७।

ಮಧುಶೇಷ ಮಧುಶೇಷ (ನಂ) ಜೇನುಮೇಣ. मधुनः  
शेषोऽत्र।

ಮಧುಶ್ರೇಣಿ ಮಧುಶ್ರೇಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುರಟೆಗೆ ಗಿಡ. मधुनः  
श्रेणिरत्र। “मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि”  
अम०।

ಮಧುಠಿಲ ಮಧುಠಿಲ (ಪುಂ) ಹಿಪ್ಪೆಮರ. मधु ठीवति  
—ठिबु (तिरसने) “कः” (३-१-१३५)। पृषो०।  
“मधुपुष्पे मधुठीलो वानप्रस्थो मधूकवत्” वैज०।

ಮಧುಸಖ ಮಧುಸಖ (ಪುಂ) ಕಾಮದೇವ, ಮನ್ಮಥ.  
मधोर्वसन्तस्य सखा “टच्” (५-४-९१)।

ಮಧುಸೂದನ ಮಧುಸೂದನ (ಪುಂ) 1. ಮಧುವೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸ  
ನನ್ನು ಸುಹರಿಸಿದ ವಿಷ್ಣು. मधु सूदयति—सूद (क्षरणे)  
+ णिच् “ल्युः” (३-१-१३४)। “भक्तानां कर्मणां  
चैव सूदनात्मधुसूदनः”। “मध्वाख्यमसुरं हन्ति सूरीणां  
करणं च वा। उपसंहरति स्वस्मिन् मधुसूदन इष्यते”  
इति निरुक्तिः। “माधवो मधुसूदनः” वि० सं०।



2. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಕೀಃ" (೪-೧-೬೩) ।  
"ಅಥ ಮಧುಸೂತ್ರನಃ । ಭ್ರಮರೇ ಕೇಶವೇ" ಹೇಮಂ ।

ಮಧುಸೂತ್ರ ಮಧುಸೂತ್ರವ (ಪುಂ) 1. ಮೊರಟಗಿಡ. ಮಧುನಿ  
ಸ್ರವಂತ್ಯಸ್ಯಾಃ—ಸು (ಗತೌ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭) ।  
(ಸ್ತ್ರೀಂ)—ಸ್ರವಾ-ಸ್ರವಾ. 2. ಅತಿಮಧುರ. 3. ಶ್ರಾವಣ  
ಮಾಸದ ಶುಕ್ಲ ತದಿಗ. 4. ಸೀಹಾಲೆ ಗಿಡ.

ಮಧುಸೂತ್ರ ಮಧುಸೂತ್ರವಸ್ (ಪುಂ) ಹಿಪ್ಪೆಮರ.

ಮಧುಸ್ವರ ಮಧುಸ್ವರ (ಪುಂ) 1. ಕೋಗಿಲೆ. ಮಧುಃ ಮಧುರಃ  
ಸ್ವರೋಸ್ಯ । (ವಿಂ) 2. ಮಧುರವಾದ ಕಂಠವುಳ್ಳ,  
ಇಂಪಾದ ಸ್ವರವುಳ್ಳ.

ಮಧುಕ ಮಧುಕ (ಪುಂ) 1. ಹಿಪ್ಪೆಮರ. (ನಂ) 2. ಹಿಪ್ಪೆ  
ಹೊವು. 3. ಅತಿಮಧುರ. ಮಹ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಠಕಃ"  
(ತಂ ೪-೪೧) । "ಪರ್ಯಾಕ್ಷಿಪತ್ಕಾಚಿದುದಾರವನ್ಧ್ಯ ದ್ವಾವಿತಾ  
ಪಾಂಡುಮಧುಕದಾಮ್ನಾ" ಕುಮಾಂ ೭-೧೬ ।

ಮಧುಕ್ಷಿಪ್ತ ಮಧುಕ್ಷಿಪ್ತ (ನಂ) ಜೇನುಮೇಣ. ಮಧುನಃ  
ಉಕ್ಷಿಪ್ತಮ್ ।

ಮಧುತ್ಸವ ಮಧುತ್ಸವ (ಪುಂ) ವಸುತೋತ್ಸವ.

ಮಧುಪಘ್ನ ಮಧುಪಘ್ನ (ಪುಂ) ಮಧುವೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನ  
ವಾಸಸ್ಥಾನವಾದ ಲವಣಪುರ, ಮಧುರ. ಮಧುನಃ ಉಪಘ್ನಃ  
ಆಶ್ರಯಃ । "ಸ ಚ ಪ್ರಾಪ ಮಧುಪಘ್ನಂ ಕುಮ್ಮಿಣಿಸ್ಯಾಶ್ಚ ಕುಕ್ಷಿಜಃ"  
ರಘುಂ ೧೪-೧೪ ।

ಮಧುಲ ಮಧುಲ (ಪುಂ) 1. ನೀರುಹಿಪ್ಪೆ ಮರ. ಮಧು  
ಲಾತಿ---ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) । ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಕನ್" । ಮಧುಲಕಃ ಮಧುಲಕಃ. 2. ಸಿಹಿ ಮತ್ತು  
ಕಹಿ ಮಿಶ್ರವಾದ ಕಷಾಯ ರಸ. "ಸ್ವಾದುತಿಕೃಕೃಷಾಣಾಂ ತು  
ಮಧುಲಃ" ವೈಜಂ. (ಪುಂ) 3. ಜೇನುತುಪ್ಪ. "ಮಧುಲಂ  
ತು ಮಧುನೇ ಸ್ತ್ರೀ" ವೈಜಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)—ಲೀ-ಲೀ. 4. ಸಿಹಿ  
ಕುಂಬಳ. 5. ಮಾವಿನ ಮರ. 6. ಅತಿಮಧುರ.

ಮಧುಲಿಕಾ ಮಧುಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕುರಟೆಗೆ ಗಿಡ.  
2. ಅತಿಮಧುರ. ಮಧುಕ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" । "ಠಾಪ್" ।

ಮಧುಲಿ ಮಧುಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಮಧುಲ" ನೋಡಿ.

ಮಧ್ಯ ಮಧ್ಯ (ಪುಂ) 1. (a) ಶರೀರದ ಮಧ್ಯಭಾಗ, ನಡು,  
ಸೊಂಟ. ಮಾಂ ಶೋಭಾಂ ವತ್ಸೇ—ಛಿಧಾಬ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ)  
"ಯಕ್" (ತಂ ೪-೧೧೨) ನಿಪಾಂ. (b) ಸ್ತ್ರೀಯರ  
ಸೊಂಟದ ಮುಂಭಾಗ, ಜಘನ. "ನನಾಮ ಮಧ್ಯೋತಿಗುಲ್ಮ-  
ಭಾಜಾ ನಿತಾಂತಮಾಕ್ರಾಂತ ಇವಾಜ್ಞಾನಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೩-೧೪ ।  
2. ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳ ಅಂತರಪ್ರದೇಶ,  
ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳ ಮಧ್ಯದ ಜಾಗ (ಸ್ಥಳ). 3. ಕಾಲದ

ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಮಧ್ಯಕಾಲ (ಕಾಲಾವಕಾಶ). 4. ವಸ್ತುವಿನ  
ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಒಳಭಾಗ. 5. ವಸ್ತುವಿನ ಮಧ್ಯಭಾಗ.  
"एकं मुक्तागुणमिव भुवः स्थूलमध्येन्द्रनीलम्" मेघಂ  
೧-೪೬ । 6. ಎರಡು ಸ್ಥಾನಗಳ ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶ. 7.  
ಮನುಷ್ಯನ ಆಯುಷ್ಯಾಲದ ಮಧ್ಯಮಾವಸ್ಥೆ, ಹದಿನಾರನೇ  
ವರ್ಷದಿಂದ ಎಪ್ಪತ್ತನೇ ವರ್ಷಗಳವರೆಗಿನ ಕಾಲ. ಬಾಲ್ಯ  
ಮಧ್ಯ ಮತ್ತು ವೃದ್ಧ ಎಂಬುದು ವಯಸ್ಸು ಮೂರು ವಿಧ.  
ಹದಿನಾರು ವರ್ಷಗಳೊಳಗಿನ ವಯಸ್ಸಿನವರು ಬಾಲರು.  
ಬಾಲ್ಯಾವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ಒಂದು ವರ್ಷದವರೆಗೆ ಕ್ಷೀರವನ್ನು  
ಕುಡಿಯುವರು. ಎರಡು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನವರೆಗೆ ಕ್ಷೀರ  
ಮತ್ತು ಅನ್ನ ತಿನ್ನುವರು. ಎರಡು ವರ್ಷಗಳನಂತರ  
ಅನ್ನಾದರು. ಹದಿನಾರು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನನಂತರ  
ಎಪ್ಪತ್ತರವರೆಗೆ ಮಧ್ಯವಯಸ್ಸು. ಈ ಅವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ  
ಬೆಳವಣಿಗೆ (ವೃದ್ಧಿ) ಯೌವನಸಂಪೂರ್ಣತೆ ಮತ್ತು  
ಪರಿಹಾನಿಗಳುಂಟಾಗುವುವು. ಇಪ್ಪತ್ತು ವರ್ಷಗಳವರೆಗೆ  
ವೃದ್ಧಿ. ಮೂವತ್ತರವರೆಗೆ ಯೌವನ (ಪ್ರಾಯ).  
ನಲವತ್ತು ವರ್ಷಗಳವರೆಗೆ ಸಕಲಧಾತುಗಳ ಮತ್ತು  
ಇಂದ್ರಿಯಗಳ ಬಲ ವೀರ್ಯ ಇವುಗಳ ಸಂಪೂರ್ಣತೆ  
ಯುಂಟಾಗುವುದು. ಅನಂತರ ಎಪ್ಪತ್ತನೇ ವಯಸ್ಸಿನ  
ವರೆಗೆ ಪರಿಹಾನಿ. ಎಪ್ಪತ್ತು ವರ್ಷಗಳನಂತರ ಧಾತು  
ಮತ್ತು ಇಂದ್ರಿಯಗಳ ಬಲವು ಕಡಮೆಯಾಗಿ ವೀರ್ಯ  
ತ್ಸಾಹಗಳು ಕುಗ್ಗುವುವು. ಕಾಸಶ್ವಾಸ ಮೊದಲಾದ ಉಪ  
ದ್ರವಗಳಿಂದ ಪೀಡಿತನಾಗಿ ಯಾವ ಕೆಲಸಕ್ಕೂ ಅಸಮರ್ಥ  
ನಾಗುವನು. ಇದು ವೃದ್ಧಾವಸ್ಥೆ. "वयस्तु त्रिविधम्—  
बाल्यम् मध्यम् वृद्धमिति । तत्रोत्पत्तिरवस्थाया बालाः ।  
ते च क्षीरपाः क्षीराश्लाघाः अश्लाघाः इति त्रिविधाः ।  
संवत्सरपराः क्षीरपाः । द्विसंवत्सरपराः क्षीराश्लाघाः ।  
परतोऽश्लाघाः । इयं बाल्यावस्था । षोडशसप्तत्योरन्तरे  
मध्यं वयः । तस्य विकल्पः (भेदः) वृद्धिः यौवनम्  
संपूर्णता परिहाणिरिति । आविशते वृद्धिः । आत्रिशतो  
यौवनम् । आचत्वारिंशतः सर्वधातिविन्द्रियबलवीर्य-  
संपूर्णता । अत ऊर्ध्वं ईषत्परिहाणिर्यावत् सप्ततिरिति ।  
सप्ततेरूर्ध्वं क्षीयमाणधातिविन्द्रियबलवीर्योत्साहमहन्ಯहनि  
वलीपलितजुष्टं कासश्चासप्रभृतिभिः उपद्रवैः परिभूयमानं  
सर्वक्रियास्वसमर्थं वृद्धमाचक्षते" सुश्रुತಂ ಸೂತ್ರಂ ೩೪-೨೯ ।  
(ನಂ) 8. ಹದಿನಾರು ಅಂಕಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಸಂಖ್ಯೆ.  
["परार्ध" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 9. ಒಂದು ಪ್ರದೇಶದ  
ಮಧ್ಯ (ನಡುವಣ) ಭಾಗ. "नेक्षेतोद्यन्तमादित्यं नास्तं  
यन्तं कदाचन । नोपसृष्टं न वारिस्थं न मध्यं नभसो



ಗತಮ್" ಮನುಂ ೪-೩೭. 10. ಅವಸಾನ, ವಿರಾಮ, ಅಂತ್ಯ. "ಅವಸಾನಂ ತು ವಿರಾಮೋ ಮಧ್ಯಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 11. ನೃತ್ಯ ಗೀತ ಮತ್ತು ವಾದ್ಯಗಳ ವಿಲಂಬಿತ ಮತ್ತು ದ್ರುತಗತಿಗಳ ಮಧ್ಯಕಾಲ. "ವಿಲಂಬಿತಂ ದ್ರುತಂ ಮಧ್ಯಂ ತತ್ತ್ವಮೋಘೋ ಧನಂ ಕ್ರಮಾತ್" ಅಮಂ. (ವಿಂ) 12. ನ್ಯಾಯಪ್ರಾಪ್ತವಾದ. 13. ಮಧ್ಯಕಾಲದ. 14. ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶದ. 15. ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ, ಒಳಗಡೆಯಿರುವ. 16. ತಟಸ್ಥನಾದ, ಮಧ್ಯಸ್ಥನಾದ. 17. ಅಧಮ, ನೀಚ. "ಮಧ್ಯಂ ವಿಲಗ್ನೇ ನ ಸ್ತ್ರೀ ಸ್ಯಾನ್ಯಾಯೇಂತರೇಷ್ವಮೇನ್ಯವತ್" ಮೇದಿಂ. 18. ಸಾಮಾನ್ಯವಾದ, ಉತ್ತಮ ಅಥವಾ ನಿಶ್ಚಿಷ್ಟವಲ್ಲದ. "ಪ್ರಾರಮ್ಯ ವಿಜ್ಞವಿಹತಾ: ವಿರಮಂತಿ ಮಧ್ಯಾ:" ಭರ್ತಂ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 19. ಒಂದು ಗುಂಪಿನ ಮಧ್ಯ, -ಮಧ್ಯದಿಂದ, -ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ.

ಮಧ್ಯತಸ್ ಮಧ್ಯತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಮಧ್ಯಭಾಗ. 2. ಮಧ್ಯಭಾಗದಿಂದ. 3. ಮಧ್ಯಭಾಗದಲ್ಲಿ. ಮಧ್ಯ "ತಸಿ:" (ವಾಂ ೪-೪-೪೪) ।

ಮಧ್ಯದೇಶ ಮಧ್ಯದೇಶ (ವ್ಯಂ) ಹಿಮಾಚಲ ಮತ್ತು ವಿಂಧ್ಯ ಪರ್ವತಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ (ಗಂಗಾ-ಯಮುನಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ) ಸರಸ್ವತೀನದಿಯು ಗುಪ್ತಗಾಮಿನಿಯಾಗುವ ಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಮತ್ತು ಪ್ರಯಾಗಕ್ಕೆ ಪಶ್ಚಿಮ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಇರುವ ಪ್ರದೇಶ. "ಹಿಮವದ್ವಿನ್ಯಯೋರ್ಮಧ್ಯಂ ಯತ್ರಾಗ್ನಿವಿನ್ಯಶನಾದಪಿ । ಪ್ರತ್ಯಗೇವ ಪ್ರಯಾಗಾಂಚ ಮಧ್ಯದೇಶ: ಪ್ರಕೀರ್ತित:" ಮನುಂ ೨-೨೧ ।

ಮಧ್ಯದೇಶ ಮಧ್ಯದೇಶ್ಯ (ವಿಂ) ಮಧ್ಯದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಮಧ್ಯದೇಶದಲ್ಲಿರುವ. ಮಧ್ಯದೇಶೋ ಭವ: "ಯತ್" (೪-೩-೪೪) ।

ಮಧ್ಯದಿನ ಮಧ್ಯಂದಿನ (ನಂ) ಹಗಲಿನ ಮಧ್ಯ, ಮಧ್ಯಾಹ್ನ. ಮಧ್ಯ ದಿನಸ್ಯ । ಪೃಷಂ ।

ಮಧ್ಯಮ ಮಧ್ಯಮ (ವ್ಯಂ) 1. ಸಂಗೀತದಲ್ಲಿ ಐದನೆಯ ಸ್ವರ. ಇದು ಕ್ರೋಚಪಕ್ಷಿಯ ಕಂಠಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದ ಸ್ವರ. ನಿಷಾದ ಮುಷಫ ಗಾಂಧಾರ ಷಡ್ಜ ಮಧ್ಯಮ ಧೈವತ ಮತ್ತು ಪಂಚಮಗಳೆಂದು ಸ್ವರಗಳು ಏಳು. "ಸ್ಯು: ಷಡ್ಜಋಮ-ಗಾನ್ವಾರಮಧ್ಯಮಾ: ಪञ्चಮಸ್ತಥಾ । ಧೇವತಾಶ್ಚ ನಿಷಾದಾಶ್ಚ ತನ್ಮರೀಕಿಣ್ಠಾಢ್ನವಾ: ಸ್ವರಾ: । ತೇ ಕೇಕಿಚಾತಕಾಜಕುಡ್ಫಿಕ-ಮೇಕಗಜಸ್ವರಾ:" ವೇಜಂ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಶ್ರುತಮ್" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶ. ["ಮಧ್ಯದೇಶ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 3. (ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಮಧ್ಯಮ ಪುರುಷ. 4. ಮಧ್ಯವರ್ತಿಯಾದ ರಾಜ, ಉದಾಸೀನ, ತಟಸ್ಥ. ಇವನು ಎರಡು ಶತ್ರುರಾಷ್ಟ್ರಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಇರುವ

ದೊರೆ. "ಅರೇಶ್ಚ ವಿಜಿಗಿಷೋಶ್ಚ ಮಧ್ಯಮೋ ಭೂಮ್ಯನಂತರ:" । "ನೃಪಾ ಇವೋಪ್ಪಲವಿನ್: ಪರೇಮ್ಯೋ ಧರ್ಮೋತ್ತರಂ ಮಧ್ಯಮಮಾಶ್ರಯಂತೇ" ರಘುಂ ೧೩-೭. "ಮಧ್ಯಮಸ್ಯ ಪ್ರಚಾರಂ ಚ ವಿಜಿಗಿಷೋಶ್ಚ ವೇಷ್ಟಿತಮ್" ಮನುಂ ೭-೧೫೫. (ಪುನಂ) 5. ನಡು, ಸೊಂಟ. (ವಿಂ) 6. ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ, ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಮಧ್ಯೆ ಭವ: "ಮ:" (೪-೩-೮) । "ತಾಂ ದೇವತಾಪಿತ್ರತಿಥಿಕ್ರಿಯಾರ್ಥ-ಮನ್ವಗ್ಯಯೌ ಮಧ್ಯಮಲೋಕಪಾಲ:" ರಘುಂ ೨-೧೬. 7. ಮಧ್ಯಮ ದರ್ಜೆಯ, ಉತ್ತಮ ಮತ್ತು ಅಧಮಗಳ ಮಧ್ಯವರ್ತಿಯಾದ, ಮಧ್ಯಮ ತರಗತಿಯ. 8. ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ (ಸಹೋದರ). "ಪ್ರಣಮತಿ ಪಿತರೌ ವಾ ಮಧ್ಯಮ: ಪಾಂಡುರೋ-ಯಮ್" ವೇಣೀಂ ೫-೨೬. 9. ತಟಸ್ಥ, ಯಾವ ಪಕ್ಷವನ್ನೂ ಸೇರದಿರುವ. 10. ಸಾಧಾರಣವಾದ, ಹೆಚ್ಚು ಕಡಮೆಯಿಲ್ಲದ. "ತೇನ ಮಧ್ಯಮಶಕ್ತೀನಿ ಮಿತ್ರಾಣಿ ಸ್ಥಾಪಿತಾನ್ಯತ:" ರಘುಂ ೧೭-೫೮ ।

ಮಧ್ಯಮಪದ ಮಧ್ಯಮಪದ (ನಂ) ಸಮಸ್ತ ಪದಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಪದ.

ಮಧ್ಯಮಪದಲೋಪಿನ್ ಮಧ್ಯಮಪದಲೋಪಿನ್ (ವ್ಯಂ) ತತ್ಪುರುಷ ಸಮಾಸದ ಒಂದು ಭೇದ. ಮಧ್ಯಮ ಪದಕ್ಕೆ ಲೋಪ ಬರುವ ಒಂದು ಸಮಾಸ. ಶಾಕಪ್ರಿಯ: ಪಾಥಿವ: ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪ್ರಿಯ ಪದಕ್ಕೆ ಲೋಪಬಂದು ಶಾಕಪಾಥಿವ: ಎಂದಾಗಿರುವುದು. ಅಯಾಪ್ರಧಾನ: ತರು: ಅಯಾತರು: ಇತ್ಯಾದಿ.

ಮಧ್ಯಮಪಾಂಡವ ಮಧ್ಯಮಪಾಂಡವ (ವ್ಯಂ) ಅರ್ಜುನ, ಪಾಂಡವ ಸಹೋದರರಲ್ಲಿ ಮಧ್ಯೆ ಹುಟ್ಟಿದವನು.

ಮಧ್ಯಮಪುರುಷ ಮಧ್ಯಮಪುರುಷ (ವ್ಯಂ) (ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಕ್ರಿಯಾಪದದ ಮಧ್ಯಮಪುರುಷ. [ಸುಬಂತ ಶಬ್ದಗಳಿಗೆ ಏಳು ವಿಭಕ್ತಿಗಳಿರುವಂತೆ ತಿಜನ್ತ (ಕ್ರಿಯಾಪದ) ಗಳಿಗೆ 1. ಪ್ರಥಮಪುರುಷ. 2. ಮಧ್ಯಮಪುರುಷ ಮತ್ತು 3. ಉತ್ತಮಪುರುಷಗಳೆಂದು ಮೂರು ಪುರುಷಗಳಿರುವುವು.]

ಮಧ್ಯಮಭೃತಕ ಮಧ್ಯಮಭೃತಕ (ವ್ಯಂ) ಕೃಷೀವಲ, ರೈತ, ಬೇಸಾಯಗಾರ. [ತನ್ನ ಮತ್ತು ತನ್ನ ಯಜಮಾನನ ಸಲುವಾಗಿ ಕೆಲಸಮಾಡುವುದರಿಂದ ರೈತನಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು.]

ಮಧ್ಯಮಲೋಕ ಮಧ್ಯಮಲೋಕ (ವ್ಯಂ) ಭೂಲೋಕ, ಸ್ವರ್ಗ ಮತ್ತು ಪಾತಾಳಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಇರುವ ಲೋಕ.

ಮಧ್ಯಮಲೋಕಪಾಲ ಮಧ್ಯಮಲೋಕಪಾಲ (ವ್ಯಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ, ಭೂಲೋಕವನ್ನು ಪಾಲಿಸುವ ಪ್ರಭು. "ತಾಂ ದೇವತಾ ಪಿತ್ರತಿಥಿಕ್ರಿಯಾರ್ಥಮನ್ವಗ್ಯಯೌ ಮಧ್ಯಮಲೋಕಪಾಲ:" ರಘುಂ ೨-೧೬ ।



मन - ज्ञाने (दिवा० आत्म० सक० अनि०) मन्यते मन्येते  
मन्यन्ते । मेने मेनाते । मन्ता । मंस्यते । मन्यताम् ।  
अमन्यत । मन्येत ३३०. १. ३९, ७०००. "मन्येऽ-  
मुना कर्णलतामयेन पाशद्वयेन च्छिदुरेतरेण । एकाकिपाशं  
वह्णं विजिग्येऽनङ्गीकृतायासतती रतीशः" नैष० ७-६४ ।  
२. ७५००, ७५००, ७५००. "मन्यसेऽरिवधः श्रेयान्  
प्रीतये नाकिनामिति" माघ० २-१०६ । ३. ७९०००,  
७९०००, ७९०००. "अमस्त ज्ञानेन परार्थ्यजन्मना



ಸ್ಥಿತೇರಭೇತಾ ಸ್ಥಿತಿಮನ್ತಮನ್ವಯಮ್" ರಘುಂ ೩-೨೭. 4. ಕಲ್ಪಿಸು, ಚಿಂತಿಸು, ಭಾವಿಸು. "ಅಕ್ಷಂ ಕೇಽಪಿ ಶಾಶ್ವತೇ ಜಲನಿಘಃ ಪಕ್ಷುಂ ಪರೇ ಮೇನಿರೇ" ಕುವಂ. 1.

ಕರ್ಮಣಿ:—ಕರ್ತೃ ರೂಪದಂತೆ.

ಕೃತು:—ಮನ್ತವ್ಯಮ್. ಮನನೀಯಮ್. ಮಾನ್ಯಮ್. ಮತಮ್, ಮತವಾನ್, -ವತೀ. ಮನ್ಯಮಾನ: 1. ಮನ್ತುಮ್. ಮತಮ್. 1. ಮನನಮ್. ಮತವಾ. 1. ಇತ್ಯಾದಿ.

ಮನನ ಮನನ (ನಂ) 1. ಧ್ಯಾನ, ಚಿಂತನೆ. ಮನ (ಜ್ಞಾನ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫). 2. ಊಹೆ, ಕಲ್ಪನೆ.

ಮನನೀಯ ಮನನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಧ್ಯಾನಿಸಲ್ಪಡುವ, ಚಿಂತಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಧ್ಯಾನಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಧ್ಯಾನಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಮನ (ಜ್ಞಾನ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). 4. ಊಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಊಹಿಸಬೇಕಾದ. 6. ಊಹಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. "ಮನ (ಜ್ಞಾನ) "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬). 1. ಮನಸ್ತವ್ಯ: ಮಂತ್ರವ್ಯ: ಮನು (ಅವಬೋಧನೆ) "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬). 1. ಮನಿತವ್ಯ: ಮಂತ್ರವ್ಯ:.

ಮನ:ಶಿಲಾ ಮನಃಶಿಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೆಣಶಿಲೆ, ಒಂದು ಗೈರಿಕ ಧಾತು. ಮನ:ಶಬ್ದವಾಚ್ಯಾ ಶಿಲಾ—ಶಾಕಪಾಶಿವಾದಿ: 1. "ಅಥಾಙ್ಗುಲಿಮ್ಯಾಂ ಹರಿತಾಲಮಾರ್ಗ ಮಾಙ್ಗಲ್ಯಮಾದಾಯ ಮನ:ಶಿಲಾಂ ಚ" ಕುಮಾಂ ೭-೨೩. 2. ಅರಿಶಿನ. ವೈಜಂ. 1.

ಮನ:ಸಂಜ್ಞ ಮನಃಸಂಜ್ಞ (ಪುಂ) 1. ಮನಸ್ಸಿನ ಸಂಬಂಧ, ಮನಸ್ಸು ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನೊಡನೆ ಸೇರುವುದು, ಮನಸ್ಸು ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಅನುರಾಗ ಹೊಂದುವುದು. 2. ಹತ್ತು ವಿಧ ಮನ್ಮಥಾವಸ್ಥೆಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಚಕ್ಷು:ಪ್ರೀತಿ-ಮನ:ಸಂಜ್ಞೋ ಜಾಗರ: ಕೃಶತಾಽರತಿ: 1. ಹೀತ್ಯಾಗೋತ್ಸಾದ-ಮುಕ್ತಾಂತಾ ಇತ್ಯನಙ್ಗದಶಾ ದಶ" 1.

ಮನಸ್ ಮನಸ್ (ನಂ) 1. ಚಿತ್ತ, ಹೃದಯ. ಮನ (ಜ್ಞಾನ) "ಅಸುನ್" (೩ಂ ೪-೧೮೮). 1. "ದ್ವಿಷನ್ನಿಮಿತ್ತಾ ಯದಿದಂ ದಶಾ ತತ: ಸಮೂಲಮುನ್ಮೂಲಯತೀವ ಮೇ ಮನ:" ಕಿರಾಂ ೧-೪೧. 2. (ತಾರ್ಕಿಕ ಮತದಲ್ಲಿ) ಪೃಥಿವಿ ಮೊದಲಾದ ನವದ್ರವ್ಯಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಪೃಥಿವ್ಯಪ್ತೇಜೋವಾಯ್ವಾಕಾಶಕಾಲದಿಗಾಸ-ಮನಾಸಿ" (ನವದ್ರವ್ಯಾಣಿ). 1. ಇದು ಎಲ್ಲಾ ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನೂ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರವರ್ತಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವ ಮತ್ತು ಸುಖಾದಿ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದ ಒಂದು ಅಂತರ್ದ್ರಿಯ. 3. (ದ್ವೈತ ಮತ್ತು ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತ ಮತ) ಮನಸ್ಸು ಜ್ಞಾನಕ್ರಿಯೋಚ್ಚಯಸಾಧನವಾದ ಒಂದು ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯ. 4. (ಅದ್ವೈತ ಮತ) ಸೂಕ್ಷ್ಮವಿಕಲ್ಪಾತ್ಮಕವಾದ ಒಂದು ಅಂತಃಕರಣ. ಅಂತಃಕರಣವು

ಮನಸ್ಸು ಬುದ್ಧಿ ಮತ್ತು ಅಹಂಕಾರ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. "ಮನೋ ಬುದ್ಧಿರಹಂಕಾರ ಇತ್ಯಂತ:ಕರಣಂ ತ್ರಿಧಾ" 1. ಅಂತಃಕರಣವು ಸುಖದುಃಖಾದಿಗಳಿಗೆ ಆಧಾರವಾದುದು.

5. (ಆಯುರ್ವೇದ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಮೆಣಶಿಲೆಯೆಂಬ ಒಂದು ಗೈರಿಕ ಧಾತು. 6. ಭಾವನೆ, ಕಲ್ಪನೆ, ಊಹೆ. "ಸಾ ದುಃಪ್ರವರ್ಣಾ ಮನಸಾಪಿ ಹಿಂಸೈರೀತೃಶೋಭಾಪ್ರಹಿತೇಕ್ಷಣೇನ" ರಘುಂ ೨-೨೭. 7. ಬುದ್ಧಿ, ಚಿಚ್ಛಕ್ತಿ. "ಮನಶ್ಚಿತ್ತೇ ಮನಿಷಾಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ. 8. ಮನೋಧರ್ಮ, ಭಾವ, ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿ. 9. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ, ಇಚ್ಛೆ. 10. ಉದ್ದೇಶ, ಆಶಯ.

ಮನಸಾ ಮನಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜರತ್ಕಾರು ಮಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿ, ವಾಸುಕಿಯ ಸಹೋದರ, ಆಸ್ತಿಕ ಋಷಿಯ ತಾಯಿ. ["ಜರತ್ಕಾರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. ಇವಳೇ ಮನಸಾದೇವಿ.

ಮನಸಿಜ ಮನಸಿಜ (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ. ಮನಸಿ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಮುಖೇ) "ಹ:" (೩-೨-೯೭). 1. ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಅಲುಕ್ (೬-೩-೧೪). 1. "ಸುರಪತಿಸತನಯೇ ಪರಾ ನಿರಾಸೇ ಮನಸಿಜಜೈಶ್ವರಂ ವಿಲೋಚನಾರ್ಥಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೦-೫೨. 1.

ಮನಸ್ಕಾರ ಮನಸ್ಕಾರ (ಪುಂ) ಮನಸ್ಸನ್ನು ಸುಖದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತ ವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವಿಕೆ, ಇಚ್ಛೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಮನಸ: ಕಾರ: ವ್ಯಾಪಾರ:—ಙ್ಕ ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಘತ್" (೩-೩-೧೮). 1. "ಚಿತ್ತಾಭಿಗೋ ಮನಸ್ಕಾರ:" ಅಮಂ. 1.

ಮನಸ್ತಾಪ ಮನಸ್ತಾಪ (ಪುಂ) 1. ಮನೋವೃಥೆ, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ನೋವುಂಟಾಗುವಿಕೆ. ಮನಸ್ತಾಪ: 1. 2. ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪ.

ಮನಸ್ತುಷ್ಠಿ ಮನಸ್ತುಷ್ಠಿ (ಪುಂ) ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಉಂಟಾಗುವ ಸಂತೋಷ, ತೃಪ್ತಿ. ಮನಸ್ತುಷ್ಠಿ: 1.

ಮನಸ್ವಿತಾ ಮನಸ್ವಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉದಾತ್ತವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನಾಗಿರುವಿಕೆ, ದೊಡ್ಡ ಮನಸ್ಸಿನಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. ಮನಸ್ವಿನೋ ಭಾವ: "ತಲ್" (೫-೧-೧೧೯). 2. ಅಭಿಮಾನದಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. "ನಿರಾಶ್ರಯಾ ಹಂತ ಹತಾ ಮನಸ್ವಿತಾ" ಕಿರಾಂ ೧-೪೩. 1.

ಮನಸ್ವಿನ್ ಮನಸ್ವಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಶರಭವೃಗ. (ವಿಂ) 2. ಅಭಿಮಾನಶಾಲಿ, ಒಳ್ಳೆಯ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು. ಪ್ರಶಸ್ತ ಮನೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ವಿನಿ:" (೫-೨-೧೨೧). 1. "ಸ್ಥಿತೃತಿ-ಕ್ರಾಂತಿಭೀರಣಿ ಸ್ವಚ್ಛಾನ್ಯಾಕುಲಿತಾನ್ಯಪಿ. 1. ತೋಯಾನಿ ತೋಯಾಶಿನಾಂ ಮನಾಸಿ ಚ ಮನಸ್ವಿನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೧-೫೪. 1. 3. ಧೀರ, ಶೂರ, ಧೈರ್ಯಶಾಲಿ. "ಅಭಿಮಾನವತೋ ಮನಸ್ವಿನ: ಪ್ರಿಯಮುಚ್ಛೇ: ಪದಮಾರುಕತ:" ಕಿರಾಂ ೨-೧೩. 1. 4. ಸ್ಥಿರಚಿತ್ತನಾದ. 5. ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿಯಾದ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೫). 1. -ಸ್ವಿನಿ -ಸ್ತ್ರೀ. 6. ಬುದ್ಧಿ



ಶಾಲಿನಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು. "ತಯಾ ಮೇನೇ ಮನಸ್ವಿನ್ಯಾ ಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾ ಚ ವಸುಧಾಧಿಪಃ" ರಘುಂ ೧-೩೨. 7. ದೃಢಚಿತ್ತೃಣಾದ ಹೆಂಗಸು. "ಕದಾಚಿದಾಸನ್ನಸಖೀಮುಖೇನ ಮನೋರಥಜ್ಞಂ ಪಿತರಂ ಮನಸ್ವಿನೀ" ಕುಮಾಂ ೪-೬.

**ಮನಾಕ್ ಮನಾಕ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅಲ್ಪವಾಗಿ, ಕೊಂಚವಾಗಿ. ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಆಕ್" ಬಾಹುಂ. "ಮನಾಗನಮ್ಯಾವೃತ್ಯಾ ವಾ ಕಾಮಂ ಕ್ಷಾಮ್ಯತು ಯಃಕ್ಷಮಿ" ಮಾಘಂ ೨-೪೩. 2. ಮೆಲ್ಲಗೆ, ನಿಧಾನವಾಗಿ. "ಮನಾಗಪ್ಯಲ್ಪಮಂದಯೋಃ" ಮೇದಿಂ.

**ಮನಾಕರ ಮನಾಕೃರ** (ವಿಂ) ಸ್ವಲ್ಪವಾಗಿ ಮಾಡುವ. ಮನಾಕ್ ಕರೋತಿ—ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) "ಠಃ" (೩-೨-೨೦). **ಮನಾಯಿ ಮನಾಯೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನುವಿನ ಪತ್ನಿ. ಮನೋಃ ಸ್ತ್ರೀ—ವಾ "ಏ" (೩-೧-೩೮). ಏಕೋ "ಔ" (೩-೧-೩೮). **ಮನಾವಿ ಮನಾವೀ**. ಏ ಕಾರ ಅಥವಾ ಔ ಕಾರಾದೇಶಗಳು ಬಂದಾಗ ಮಾತ್ರ "ಔಪ್" ಪ್ರತ್ಯಯ ಬರುವುದು. [ಅದು ಸನ್ನಿಯೋಗ ಶಿಷ್ಟ.] ಈ ಆದೇಶಗಳಿಲ್ಲದಿದ್ದಾಗ ಮನು ಎಂದೇ ರೂಪ.

**ಮನಿತ ಮನಿತ** (ವಿಂ) ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಮನು (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ಯಸ್ಯ ವಿಭಾಷಾ" (೭-೨-೧೪). ಇತಿ ನಿಷೇಧಸ್ಯಾನಿತ್ಯತ್ವಾತ್ ಇಡಾಗಮಃ.

**ಮನಿತವತ್ ಮನಿತವತ್** (ವಿಂ) ತಿಳಿದವನು, ಅರಿತವನು. ಮನು (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨).

**ಮನೀಕ ಮನೀಕ** (ನಂ) ಒಂದು ನೇತ್ರಾಂಜನ.

**ಮನೀಷಾ ಮನೀಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬುದ್ಧಿ, ಪ್ರಜ್ಞೆ. ಮನಸಃ ಇಷಾ. ಶಕನ್ವಾದಿತ್ವಾತ್ ಪರರೂಪಮ್. "ಪ್ರವಿಭಜ್ಯ ಪೃಥಕ್-ಮನೀಷಯಾ ಸ್ವಗುಣಂ ಯತ್ಕಿಲ ತತ್ ಕರಿಷ್ಯಸಿ" ಮಾಘಂ ೧೬-೪೨. 2. ಇಚ್ಛೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ. "ಯೋ ದುರ್ಜನಂ ವಶಯಿತುಂ ತನ್ತುತೇ ಮನೀಷಾಮ್" ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೧-೯೪.

**ಮನೀಷಿತ ಮನೀಷಿತ** (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ವಸ್ತು, ಬೇಕಾದ ವಸ್ತು. ಮನಸಃ ಇಷಿತಮ್. "ಮನೀಷಿತಂ ಶೌರಪಿ ಯೇನ ದುಃಖಾ" ರಘುಂ ೪-೩೩. 2. ಪ್ರಿಯವಾದ, ಪ್ರೀತಿ ಪಾತ್ರವಾದ. "ಮನೀಷಿತಾಃ ಸಂತಿ ಗೃಹೇಷು ದೇವತಾಃ ತಪಃ ಕ್ವ ವತ್ಸೇ ಕ್ವ ಚ ತಾವಕಂ ವಪುಃ" ಕುಮಾಂ ೪-೪.

**ಮನೀಷಿನ್ ಮನೀಷಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. ಮನೀಷಾ ಅಸ್ಯಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೬). "ಸಂಸ್ಕಾರ-ವತ್ಯೇವ ಗಿರಾ ಮನೀಷಿ ತಯಾ ಸ ಪೂತಶ್ಚ ವಿಭೂಷಿತಶ್ಚ" ಕುಮಾಂ ೧-೨೮. (ವಿಂ) 2. ಪೂಜ್ಯ, ಸತ್ಪುರುಷ. ಮನಸಃ ಇಷಿ. ಶಕಂ. "ಗೃಹಾನುಪೇತುಂ ಪ್ರಣಯಾದಭಿತ್ಸವೋ ಭವಂತಿ ನಾಪುಷ್ಯ-

ಕೃತಾ ಮನೀಷಿಣಃ" ಮಾಘಂ ೧-೧೪. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಔಪ್" (೪-೧-೪). -ವಿಣಿ -ಷಿಣೀ.

**ಮನು ಮನು** (ಪುಂ) ಸ್ವಾಯಂಭುವ ಮೊದಲಾದ ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಮನುಗಳು. ಈ ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮನುಗಳೂ ಚತುರ್ಮುಖನ ಒಂದು ಕಲ್ಪಕಾಲ (ಬ್ರಹ್ಮನ ಒಂದು ದಿನ)ದಲ್ಲಿ ರಾಜ್ಯಭಾರ ಮಾಡುವರು.

ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮನುಗಳ ರಾಜ್ಯಭಾರ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸ್ವರ್ಗದಲ್ಲಿ ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಇಂದ್ರರು ಆಡಳಿತ ನಡೆಸುವರು.

### ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ

| ಮನುಗಳು                                | ಇಂದ್ರರು    |
|---------------------------------------|------------|
| (1) ಸ್ವಾಯಂಭುವ                         | ಯಜ್ಞ       |
| (2) ಸ್ವಾರೋಚಿಷ                         | ರೋಚನ       |
| (3) ಉತ್ತಮ                             | ಸತ್ಯಜಿತ್   |
| (4) ತಾಮಸ                              | ತ್ರಿಶಿಖಿ   |
| (5) ರೈವತ                              | ವಿಭು       |
| (6) ಚಾಕ್ಷುಷ                           | ಮಂತ್ರದ್ರುಮ |
| (7) ವೈವಸ್ವತ (ಈಗ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ ಮನ್ವಂತರ) | ಪುರಂದರ     |
| (8) ಸಾವರ್ಣಿ                           | ವೈರೋಚನ     |
| (9) ದಕ್ಷಸಾವರ್ಣಿ                       | ಶ್ರುತ      |
| (10) ಬ್ರಹ್ಮಸಾವರ್ಣಿ                    | ಶಂಭು       |
| (11) ಧರ್ಮಸಾವರ್ಣಿ                      | ವೈದೃತ      |
| (12) ರುದ್ರಸಾವರ್ಣಿ                     | ಮತುಧಾಮ     |
| (13) ದೇವಸಾವರ್ಣಿ                       | ದಿವಸ್ವತಿ   |
| (14) ಇಂದ್ರಸಾವರ್ಣಿ                     | ಶುಚಿ       |

ಮನುವೆಂಬುದು ಅಧಿಕಾರದ ಹೆಸರು. ಒಬ್ಬ ವ್ಯಕ್ತಿಯ ಹೆಸರಲ್ಲ. ಈಗಿನ ಬ್ರಹ್ಮನಕಾಲದಲ್ಲಿ ಆರು ಮಂದಿ ಮನುಗಳ ಕಾಲಕಳೆದು ಏಳನೆಯ ವೈವಸ್ವತಮನ್ವಂತರ ನಡೆಯುತ್ತಿದೆ. ಈ ಮನ್ವಂತರದಲ್ಲಿ ಚತುರ್ಮುಖಗಳೂ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ಸಲ ಕಳೆದು ಈಗ ಇಪ್ಪತ್ತೊಂಟನೆಯ ಕಲಿಯುಗವು ನಡೆಯುತ್ತಿದೆ. ಈ ಕಲಿಯುಗವು ಮುಗಿದ ನಂತರ ಹೀಗೆಯೇ ಚತುರ್ಮುಖಗಳು ಮತ್ತೆ ನಲವತ್ತಮೂರು ಸಲ ಕಳೆದರೆ ಈ ವೈವಸ್ವತ ಮನ್ವಂತರವು ಮುಗಿಯುವುದು. ಇನ್ನು ಮುಂದೆ ಸಾವರ್ಣಿ ಮೊದಲಾದ ಏಳು ಮಂದಿ ಮನುಗಳು ರಾಜ್ಯಭಾರ ಮಾಡುವರು. ಬ್ರಹ್ಮನಿಗೆ ಈಗ ಮೊದಲನೆಯ ಪರಾರ್ಥವು ಕಳೆದು ದ್ವಿತೀಯ ಪರಾರ್ಥವು ನಡೆಯುತ್ತಿದೆ. ಈಗ ಬ್ರಹ್ಮನ ಆಯುಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಐವತ್ತೊಂದನೆಯ ವರ್ಷದ ಮೊದಲನೆಯ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಇಪ್ಪತ್ತೈದು



ದಿನಗಳು ಕಳೆದು ಇಪ್ಪತ್ತಾರನೆಯ ಹೊಲಿನ ಮೊದಲನೆಯ ಯಾಮವು ನಡೆಯುತ್ತಿದೆ. ಈಗ ನಾವು ಶ್ಲೋಕವರಾಹ ಕಲ್ಪದಲ್ಲಿದ್ದೇವೆ.

**ಮನುಜ ಮನುಜ** (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯ. ಮನೋಜಯಿತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತವಿ) “ಙ:” (೩-೨-೯೮)। “ಅಯಮಚ್ಯುತಃ ವಚನೇನ ಸರಸಿರಹಜನ್ಮನ: ಪ್ರಜಾ:। ಪಾತುಮಸುರನಿವೇನೇನ ವಿಮ್ ಭುವಮೇತ್ಯ ಮನುಜೇಷು ತಿಷ್ಠತ:” ಕಿರಾಂ ೧೨-೩೫। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಗೌರಾಂ “ಙೀಷ್”। **ಮನುಜಿ ಮನುಜೀ:**

**ಮನುಜಾಧಿಪ ಮನುಜಾಧಿಪ, -ಅಧಿಪತಿ -ಅಧಿಪತಿ** (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯರ ರಾಜ, ದೊರೆ. ಮನುಜಾನಾಮಧಿಪ: ಅಧಿಪತಿರ್ವಾ।

**ಮನುಜ್ಯೇಷ್ಠ ಮನುಜ್ಯೇಷ್ಠ** (ಪುಂ) ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ.

**ಮನುಷ್ಯ ಮನುಷ್ಯ** (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯ, ಮಾನವ. ಮನು “ಯತ್” ಷುಕ್ ಚ (೪-೧-೧೬೧)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಙೀಷ್” (೪-೧-೬೩)। “ದಿವೌಕಸೋ ದೇವಗೃಹಂ ವಿಹಾಯ ಮನುಷ್ಯಸಾಧಾರಣತಾಮವಾಪ್ತಾ:” ಕುಮಾಂ ೧೨-೩೭।

**ಮನುಷ್ಯಧರ್ಮನ್ ಮನುಷ್ಯಧರ್ಮನ್** (ಪುಂ) ಕುಬೇರ. ಮನುಷ್ಯಸ್ಯೇವ ಧರ್ಮೋಽಸ್ಯ “ಅನಿಚ್” (೫-೪-೧೨೪)। “ವಿಭಿನ್ನ-ಶಕ್ತ: ಕಲುಷಿಭವನ್ಮುಹುರ್ಮದೇನ ದಂತೀವ ಮನುಷ್ಯಧರ್ಮಣ:” ಮಾಘಂ ೧-೫೫।

**ಮನುಷ್ಯಯಜ್ಞ ಮನುಷ್ಯಯಜ್ಞ** (ಪುಂ) (ಗೃಹಸ್ಥನು ಪ್ರತಿದಿನ ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ) ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞಗಳಲ್ಲೊಂದು, ಅತಿಥಿ ಸತ್ಕಾರ. [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಪञ್ಚಮಹಾಯಜ್ಞ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].

**ಮನುಷ್ಯಲೋಕ ಮನುಷ್ಯಲೋಕ** (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯರು ವಾಸ ಮಾಡುವ ಲೋಕ, ಭೂಲೋಕ, ಮಧ್ಯಮಲೋಕ. ಮನುಷ್ಯಾಣಾಂ ಲೋಕ:।

**ಮನುಷ್ಯಿ ಮನುಷ್ಯೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನುಷ್ಯಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು. ಮನುಷ್ಯ ಗೌರಾಂ “ಙೀಷ್” (೪-೧-೪೧)।

**ಮನುಷ್ಯೇಶ್ವರ ಮನುಷ್ಯೇಶ್ವರ** (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯರ ಒಡೆಯ, ರಾಜ, ದೊರೆ. ಮನುಷ್ಯಾಣಾಮೀಶ್ವರ:। “ಮಾರ್ಗ ಮನುಷ್ಯೇಶ್ವರ-ಧರ್ಮಪತ್ನೀ ಶ್ರುತೇರಿವಾಶಂ ಸ್ಮೃತೀರ್ನವಗಚ್ಛತ್” ರಘುಂ ೨-೨।

**ಮನುಸಂಹಿತಾ ಮನುಸಂಹಿತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನುಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ. ಮನುಸ್ಮೃತಿ. [ಮನುಸ್ಮೃತಿಯು ಮೊದಲನೆಯ ಮನು ವಾದ ಸ್ವಾಯಂಭುವ ಮನುವಿನಿಂದ ರಚಿತವಾದುದು].  
-ಸ್ಮೃತಿ: -ಸ್ಮೃತಿ:.

**ಮನೋಗತ ಮನೋಗತ** (ವಿಂ) ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿರುವ, ಹೃದಯ ದೊಳಗಿರುವ. ಮನಸಿ ಗತಮ್। “ಮಣಿಜಾಲಮಮಸಿ ನಿಮಗನಮಪಿ ಸ್ಕುರಿತಂ ಮನೋಗತಮಿವಾಕೃತಯ:” ಕಿರಾಂ ೬-೯।

**ಮನೋಗುಪ್ತಾ ಮನೋಗುಪ್ತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೆಣಶಿಲೆ, ಒಂದು ಗೈರಿಕ ಧಾತು. ಮನಸಾ ಗುಪ್ತಾ। (ವಿಂ) 2. ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ರಹಸ್ಯವಾಗಿ (ಮನದೊಳಗೇ) ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಮನೋಜ ಮನೋಜ** (ಪುಂ) 1. ಮನುಷ್ಯ, ಕಾಮದೇವ. ಮನಸಿ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತವಿ) “ಙ:” (೩-೨-೯೭)। 2. ಇಚ್ಛೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ. (ವಿಂ) 3. ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

**ಮನೋಜನ್ಮನ್ ಮನೋಜನ್ಮನ್** (ಪುಂ) 1. ಮನುಷ್ಯ, ಕಾಮ ದೇವ. ಮನಸಿ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ। (ವಿಂ) 2. ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

**ಮನೋಜವ ಮನೋಜವ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಮನಸೋ-ಂತ:ಕರಣಸ್ಯೇವ ಜವೋ ವೇಗೋಽಸ್ಯ। “ಮತ್ತಾನಾಂ ಸಂಪದ: ಕೀದ್ರಂ ಕರೋತಿತಿ ಮನೋಜವ:” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ:। “ಮನೋಜವ: ತೀರ್ಥಕರ:” ವಿಂ ಸಂ। 2. ನಿಷಾದಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಬಾಹ್ಯಾಣ ನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವನು. “ವಿಪ್ರಾದಾವೃತಮುಗ್ರಸ್ತ್ರೀ ನಿಷಾದೀ ತು ಮನೋಜವಮ್” ವೇಜಂ। 3. ಮನಸ್ಸಿನ ವೇಗ. ಮನಸೋ ಜವ:। (ವಿಂ) 4. ಮನಸ್ಸಿನಂತೆ ವೇಗವುಳ್ಳ. ಮನಸ ಇವ ವೇಗೋ ಯಸ್ಯ। “ಮನೋಜವಾನಾಂ ನಿಜಸಾಯಕಾನಾಮ್” ಯಾದಂ ೨೩-೩೭।

**ಮನೋಜವಸ ಮನೋಜವಸ** (ವಿಂ) ತಂದೆಯಂತಿರುವ, ತಂದೆಯನ್ನು ಹೋಲುವ. ಮನೋ ಜವತೇಽಸ್ಮಿನ್ ಪಿತಾ—ಜು “ಅಸಚ್” ಬಾಹುಂ। “ಮನೋಜವಸ: ಪಿತೃಸನ್ನಿಭ:” ಅಮಂ।

**ಮನೋಜವಾ ಮನೋಜವಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಯ ಏಳು (ಸಪ್ತ) ಜಿಹ್ವೆಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಅಗ್ನಿಯ ಏಳು (ಸಪ್ತ) ಜಿಹ್ವೆಗಳು: “ಸಪ್ತ ಜಿಹ್ವಾ ಪುನ: ಕಾಲೀ ಕರಾಲೀ ವಿಷ್ಠುಲಿಜ್ಜಿನೀ। ಧೂಮವರ್ಣಿ ವಿಶ್ವರೂಪಿಣಿಹಿತಾ ಚ ಮನೋಜವಾ” ವೇಜಂ।

**ಮನೋಜ ಮನೋಜ** (ವಿಂ) 1. ಮನೋಹರವಾದ, ಸುಂದರವಾದ, ರಮಣೀಯವಾದ. ಮನಸಾ ಜಾನಾತಿ—ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೇ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೫)। “ಇಯಮಧಿಕಮನೋಜಾ ವಲ್ಕಲೇನಾಪಿ ತನ್ವೀ ಕಿಮಿವ ಹಿ ಮಧುರಾಣಾಂ ಮೃಗಾಣಾಂ ನಾಕೃತೀ-ನಾಮ್” ಶಾಕುಂ ೧-೧೭। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜ್ಞಾ -ಜ್ಞಾ. 2. ಮೆಣಶಿಲೆ, ಒಂದು ಗೈರಿಕ ಧಾತು. 3. ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. 4. ಜೀರಿಗೆ.

**ಮನೋಭವ ಮನೋಭವ** (ಪುಂ) 1. ಮನುಷ್ಯ, ಕಾಮದೇವ. ಮನಸಿ ಭವತಿ—ಮು “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ನಿವೇಶಯಾ-ಮಾಸ ಮಧುರೀರೇಫಾತ್ರಾಮಾಕ್ಷರಾಣಿವ ಮನೋಭವಸ್ಯ” ಕುಮಾಂ ೩-೨೭। 2. ಕಾಮೇಚ್ಛೆ, ಕಾಮತ್ಯಜ್ಞ. “ಅತ್ಯಾಕುಟೋ ಹಿ ನಾರೀಣಾಮಕಾಲಜೋ ಮನೋಭವ:” ರಘುಂ ೧೨-೩೩। (ವಿಂ) 3. ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ, ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ.



**ಮನೋಮ್ ಮನೋಭೂ** (ಪುಂ) 1. ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ. ಮನಸಿ ಭವತಿ—ಮ್ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “ವಿವ್” (3-2-179). “ಉಪೇತಿ ಶುಷ್ಯನ್ ಕಲಮಃ ಸಹಾಂಬಸಾ ಮನೋಭುವಾ ತಪ್ತ ಇವಾಭಿಪಾಣ್ಡುತಾಮ್” ಕಿರಾಂ 4-34. (ವಿಂ) 2. ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ, ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ.

**ಮನೋಯೋನಿ ವಃ ನೋಯೋನಿ** (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ. ಮನಃ ಯೋನಿರೂಪಿತಿಸ್ಥಾನಂ ಯಸ್ಯ |

**ಮನೋರಥ ಮನೋರಥ** (ಪುಂ) ಇಚ್ಛೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ, ಬಯಕೆ. ಮನ ಏವ ರಥೋಽತ್ರ, ಮನಃ ರಥ ಇವ ವಾ | “ಉಮಾಸ್ತನೋದ್ವೇದ-ಮನು ಪ್ರವೃದ್ಧೋ ಮನೋರಥೋ ಯಃ ಪ್ರಥಮಂ ಬಭೂವ” ಕುಮಾಂ 7-24. “ಮನೋರಥಾಃ ಸಫಲೀಕುರವ್” ಕಿರಾಂ 3-44.

**ಮನೋರಮ ಮನೋರಮ** (ವಿಂ) 1. ಸುಂದರವಾದ, ರಮ್ಯವಾದ, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವ. ಮನೋ ರಮಯತಿ—ರಮ್ (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ “ಅಣ್” (3-2-1). “ಮನೋರಮಂ ಪ್ರಾಪಿತಮಂತರಂ ಭುವೋರಲಂಕೃತಂ ಕೇಸರೇಣುನಾಣುನಾ” ಕಿರಾಂ 4-7. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ—ರಮಾ—ರಮಾ. 2. ಸುಂದರಿ, ಚೆಲುವೆ. “ಮನೋರಮಾಮಾತ್ಮವಧುಮಿವ ತ್ರಿಯಮ್” ಕಿರಾಂ 1-31. 3. ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರೋಕ್ತವಾದ ಹತ್ತನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ, ನ ಗಣ ರ ಗಣ ಜ ಗಣ ಮತ್ತು ಒಂದು ಗುರು ಇವುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: “ನರಜಗಂಭವೇನಮನೋರಮಾ” ವೃಂ 20. ಇದರ ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ನ ರ ಜ ಗು  
||| 010 101 0

**ಮನೋರಾಜ್ಯ ಮನೋರಾಜ್ಯ** (ನಂ) ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಕಟ್ಟಿದ ರಾಜ್ಯ, ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಕಟ್ಟಿದ ಆರಮನೆ.

**ಮನೋವ್ಯಥಾ ಮನೋವ್ಯಥಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನೋವೇದನೆ, ಮನಸ್ಸಿನ ನೋವು.

**ಮನೋಹತ ಮನೋಹತ** (ವಿಂ) ಉತ್ಸಾಹ ಕುಂದಿದವನು, ಮನಸ್ಸು ಕೆಟ್ಟಿರುವವನು. ಮನಸಿ ಹತಃ |

**ಮನೋಹರ ಮನೋಹರ** (ಪುಂ) 1. ಕುಂದವೃಕ್ಷ. (ನಂ) 2. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)—ಹರಾ—ಹರಾ. 3. ತಿಪ್ಪಲಿ, ಹಿಪ್ಪಲಿ. (ವಿಂ) 4. ಮನಸ್ಸನ್ನು ಆಕರ್ಷಿಸುವ, ಮನವನ್ನು ಸೆಳೆಯುವ, ಸುಂದರವಾದ. ಮನಃ ಹರತಿ—ಹ್ರ (ಹರಣಿ) “ಅಕ್” (3-2-9). “ಪರ್ಯಾಂತಿಪುಷ್ಪಸ್ತಬಕ-ಸ್ತನಾಮ್ಯಃ ಸ್ಫುರತಪ್ರವಾಲೋಽಮನೋಹರಾಮ್ಯಃ” ಕುಮಾಂ 3-39.

**ಮನೋಹರ್ಮ ಮನೋಹರ್ಮ** (ವಿಂ) ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಹಿತವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ, ಸುಂದರವಾದ, ಮನಸ್ಸನ್ನು ಸೆಳೆ

ಯುವ. ಮನೋ ಹರತಿ—ಹ್ರ (ಹರಣಿ) “ತಕ್” (3-1-133). “ಣಿನಿಃ” (3-1-134). —ಹರಿನ್—ಹಾರಿನ್. “ಅತೋಽಹಸಿ ಕ್ಷಂತುಮಸಾಧು ಸಾಧು ವಾ ಹಿತಂ ಮನೋಹರಿ ಚ ದುರ್ಲಭಂ ವಚಃ” ಕಿರಾಂ 1-4. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಜಿಪ್” (4-1-5). —ಹಾರಿಣಿ—ಹಾರಿಣಿ.

**ಮನೋಹ್ಲಾದ ಮನೋಹ್ಲಾದ** (ಪುಂ) ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಹರ್ಷ, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಆಗುವ ಆನಂದ.

**ಮನೋಹ್ವಾ ಮನೋಹ್ವಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೆಣಶಿಲೆ, ಒಂದು ಗೃಹಕಥಾತು. ಮನಃ ಹ್ವಯತಿ—ಹ್ವೇ (ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) “ಕಃ” (3-2-3).

**ಮನ್ತವ್ಯ ವ ಮನ್ತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಧ್ಯಾನಿಸಲ್ಪಡುವ, ಚಿಂತಿಸಲ್ಪಡುವ. ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) “ತವ್ಯಃ” (3-1-96). “ಆತ್ಮಾವಾರೆ ದ್ರವ್ಯಃ ಶ್ರೋತವ್ಯೋ ಮನ್ತವ್ಯೋ ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಸಿತವ್ಯಃ” ಶ್ರುತಿಃ | 2. ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ.

**ಮನ್ತು ಮಂತು** (ಪುಂ) 1. ಅಪರಂಧ, ತಪ್ಪು. ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) “ತುಃ” (3-1-92). “ಸತೀವ್ರತೇಸ್ತೀವ್ರಮಿಮಂ ತು ಮನ್ತು-ಮನ್ತವರಂ ವಜ್ರಿಣಿ ಮಾರ್ಜಿತಾಸ್ಮಿ” ನೈಷಂ 6-110. 2. ಮನುಷ್ಯ. 3. ಪ್ರಜಾಪತಿ. “ಮನ್ತುಃ ಪುಂಸ್ಯಪರಾಧೇಽಪಿ ಮನ್ತುಷ್ಯೇಽಪಿ ಪ್ರಜಾಪತೌ” ಮೇದಿಂ |

**ಮನ್ತು ಮಂತು** (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಯುವವನು, ಅರಿಯುವವನು. ಮನ್ಯತೇ—ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) “ತುಕ್” (3-2-94). 2. ಧ್ಯಾನಿಸುವವನು, ಚಿಂತನೆಮಾಡುವವನು. 3. ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರಿಸುವವನು.

**ಮನ್ತ್ರ ಮಂತ್ರ** (ಪುಂ) 1. ರಹಸ್ಯ ಭಾಷಣ, ಗುಟ್ಟಾದ ಮಾತುಕತೆ. ಮನ್ಯತೇ—ಮನ್ರಿ (ಗುಪ್ತಭಾಷಣೇ) “ಘ್” (3-3-19). ಭಾವೇ “ಘ್” (3-3-18) ವಾ | “ಮನ್ತ್ರೋ ಯೋಽ ಇವಾಧೀರಃ ಸರ್ವಾಙ್ಗೈಃ ಸಂವೃತೇರಪಿ | ಚಿರಂ ನ ಸಹತೇ ಸ್ಥಾತುಂ ಪರೇಮ್ಯೋ ಭೇದಶಙ್ಕಯಾ” ಮಾಘಂ 2-29. 2. ವೇದ ಮಂತ್ರ, ದೇವತೆ ಮೊದಲಾದವರ ಅನುಗ್ರಹಸಂಪಾದನೆಗಾಗಿ ಹೇಳುವ ವೇದವಾಕ್ಯ. “ಸಮೋಹನಂ ನಾಮ ಸಖೇ ಮಮಾಸ್ತ್ರಂ ಪ್ರಯೋಗಸಂಹಾರವಿಭಕ್ತಮನ್ತ್ರಮ್” ರಘುಂ 4-46. 3. ವೇದದ ಒಂದು ಭಾಗ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣವನ್ನುಳಿದು ಸಹಿತ ಸೇರಿದ ವೇದ. “ಮನ್ತ್ರೋ ವೇದವಿಶೇಷೇ ಸ್ವಾಧೇವಾದೀನಾಂ ಚ ಸಾಧನೇ | ಗುಹ್ಯವಾದೇಽಪಿ ಚ ಪುಮಾನ್” ಮೇದಿಂ | 4. ಮಂತ್ರಾಲೋಚನೆ, ಸಲಹೆಗಾರರೊಡನೆ ನಡೆಸುವ ಮಾತುಕತೆ.

**ಮನ್ತ್ರಕೃತ್ ಮಂತ್ರಕೃತ್** (ಪುಂ) 1. ಮಂತ್ರಿ, ಸಚಿವ, ಸಲಹೆಗಾರ. ಮನ್ತ್ರಂ ಕರೋತಿ—ಕೃ (ಕರಣಿ) “ವಿವ್” (3-2-19). 2. ಮಂತ್ರದ್ರವ್ಯನಾದ ಮುಷ್ಠಿ.



“ಅಪ್ಯಗ್ರಣಿರ್ಮನ್ತ್ರಕೃತಾಮೃಷಿಣಾಂ ಕುಶಾದ್ರಬುದ್ಧೇ ಕುಶಲೀ ಗುರುತೇ”  
ರಘುಂ ೪-೪। 3. ಮಂತ್ರಗಳನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸುವ ಋಷಿ.  
“ತವ ಮನ್ತ್ರಕೃತೋ ಮನ್ತ್ರಃ ದ್ವರಾಪ್ರಶಮಿತಾರಿಭಿಃ” ರಘುಂ ೧-೬೧।

**ಮನ್ತ್ರಜಿಹ್ವ ಮಂತ್ರಜಿಹ್ವ** (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಮನ್ತ್ರ ಎವ  
ಜಿಹ್ವಾ ಯಸ್ಯ। “ಅಮೃತಂ ನಾಮ ಯತ್ಸಂತೋ ಮನ್ತ್ರಜಿಹ್ವೇಷು  
ಜುಹ್ವತಿ” ಮಾಘಂ ೨-೧೦೭। “ಮನ್ತ್ರಜಿಹ್ವಃ ಸಪ್ತಜಿಹ್ವಃ  
ಸುಜಿಹ್ವೋ ಹವ್ಯವಾಹನಃ” ವೇಜಂ।

**ಮನ್ತ್ರಜ್ಞ ಮಂತ್ರಜ್ಞ** (ಪುಂ) 1. ಮಂತ್ರಿ, ರಾಜನ ಸಲಹೆ  
ಗಾರ. 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. 3. ಗೂಢಚಾರ. ಮನ್ತ್ರಂ ಜಾನಾತಿ  
—ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೪)। (ವಿಂ) 4. ಮಂತ್ರವನ್ನು ರಿತವನು. 5. ರಾಜನಿಗೆ ಸಲಹೆ ಕೊಡಲು  
ನಿಪುಣನಾದವನು. “ಮನ್ತ್ರಜ್ಞೈರ್ಮನ್ತ್ರಿಭಿಃಶ್ಚೈವ ವಿನೀತಃ ಪ್ರವಿಶೇ-  
ತ್ಸಭಾಮ್” ಮನುಂ ೮-೧।

**ಮನ್ತ್ರಣ ಮಂತ್ರಣ** (ನಂ) ಮಂತ್ರಾರೋಚನೆ, ರಹಸ್ಯವಾಗಿ  
ಮಾತುಕತೆ ನಡೆಸುವುದು. ಮತ್ರಿ (ಗುಪ್ತಭಾಷಣೆ) + ಣಿಚ್  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪)। “ಯುಚ್” (೩-೩-೧೦೭)।  
ಮನ್ತ್ರಣಾ ಮಂತ್ರಣಾ.

**ಮನ್ತ್ರವ ಮಂತ್ರವ** (ಪುಂ) ಗುರು, ಮಂತ್ರವನ್ನು ಉಪದೇಶಿ  
ಸುವ ಆಚಾರ್ಯ. ಮನ್ತ್ರಂ ದದಾತಿ — ಡು ದಾನ್ (ದಾನೆ)  
“ಕಃ” (೩-೨-೩)। “ತೃಚ್” (೩-೧-೧೩೩)। —ದಾತ್  
—ದಾತ್ಯ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಜಿಪ್” (೪-೧-೪)। —ವಾತ್ರಿ —ವಾತ್ರಿ.

**ಮನ್ತ್ರದರ್ಶಿನ್ ಮಂತ್ರದರ್ಶಿನ್** (ಪುಂ) ಮಂತ್ರವನ್ನು ಸಾಕ್ಷಾ  
ತ್ಕರಿಸುವವನು, ಮಂತ್ರವನ್ನು ನೋಡುವವನು. ಮನ್ತ್ರಂ  
ಪಶ್ಯತಿ—ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) “ಣಿಞಃ” (೩-೧-೧೩೪)।

**ಮನ್ತ್ರದೀಪಿತಿ ಮಂತ್ರದೀಪಿತಿ** (ಪುಂ) ವಹಿ, ಅಗ್ನಿ. ಮನ್ತ್ರೇಣ  
ದೀಪಿತೀರಸ್ಯ। “ಜಾಗವಾಹನಸೃದಾಕುರ್ಬಹಿಃಃ ಸ್ವರ್ಣಸಪ್ತಧೃತ  
ಮನ್ತ್ರದೀಪಿತಿಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಮನ್ತ್ರಪೂತ ಮಂತ್ರಪೂತ** (ವಿಂ) ಮಂತ್ರದಿಂದ ಪರಿಶುದ್ಧ  
ವಾದ. ಮನ್ತ್ರೇಣ ಪೂತಃ। “ಮನ್ತ್ರಪೂತಮನುಪ್ಲವಂ ಹವಿಃ”  
ಯಾದಂ ೧೭-೧೨೬।

**ಮನ್ತ್ರವಾಕ್ಯಿನ್ ಮಂತ್ರವಾದಿನ್** (ಪುಂ) 1. ವೇದಮಂತ್ರ  
ಗಳನ್ನು ಹೇಳುವವನು. 2. ಮಂತ್ರೀಕ, ಮಾಟಗಾರ,  
ಮಾಯಾಗಾರ. ಮನ್ತ್ರಂ ವದತಿ—ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ)  
“ಣಿಞಃ” (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಜಿಪ್” (೪-೧-೪)।  
—ವಾದಿನಿ —ವಾದಿನೀ.

**ಮನ್ತ್ರವಿದ್ ಮಂತ್ರವಿದ್** (ಪುಂ) 1. ಗೂಢಚಾರ. “ಸರ್ವ  
ತತ್ವಂ ಮನ್ತ್ರವಿದ್ವಿಶ್ವೋ ನಿವೇದ್ಯ” ಭಾಂ। (ವಿಂ) 2. ವೇದ  
ಮಂತ್ರವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. “ಸಹಸ್ರಂ ಹಿ ಸಹಸ್ರಾಣಾಮನುಚಾಂ ಯತ್ರ

ಭುಜತೇ। ಏಕಸ್ತಾನು ಮನ್ತ್ರವಿತ್ ಪ್ರೀತಃ ಸರ್ವಾನರ್ಹತಿ ಧರ್ಮತಃ”  
ಮನುಂ ೩-೧೩೧। 3. ರಾಜನಿಗೆ ಸಲಹೆ ಕೊಡುವವನು.  
ಮನ್ತ್ರಂ ವೇತ್ತಿ — ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) “ಕಿವಪ್” (೩-೨-೭೬)।

**ಮನ್ತ್ರವ್ಯಾಖ್ಯಾಕೃತ್ ಮಂತ್ರವ್ಯಾಖ್ಯಾಕೃತ್** (ಪುಂ) ಗುರು,  
ಮಂತ್ರಗಳ ಅರ್ಥವನ್ನು ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳುವ ಆಚಾರ್ಯ.  
ಮನ್ತ್ರಸ್ಯ ವೇದಸ್ಯ ವ್ಯಾಖ್ಯಾಂ ಕರೋತಿ—ಡು ಕೃನ್ (ಕರಣೆ)  
“ಕಿವಪ್” (೩-೨-೭೬)।

**ಮನ್ತ್ರಸಿದ್ಧಿ ಮಂತ್ರಸಿದ್ಧಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂತ್ರದಿಂದ ಉಂಟಾ  
ಗುವ ಒಂದು ಶಕ್ತಿ. ಮಂತ್ರದ ಪ್ರಯೋಗವು ಫಲಿಸುವಂತೆ  
ಪಡೆಯುವ ಒಂದು ವಿಧ ಶಕ್ತಿ.

**ಮನ್ತ್ರಿತ ಮಂತ್ರಿತ** (ವಿಂ) 1. ಮಂತ್ರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಮನ್ತ್ರೋಽಸ್ಯ  
ಸಂಜಾತಃ “ಐತಚ್” (೪-೨-೩೬)। ಅಥವಾ ಮತ್ರಿ (ಗುಪ್ತ-  
ಭಾಷಣೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। 2. ರಹಸ್ಯವಾಗಿ  
ಮಾತಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಮನ್ತ್ರಿನ್ ಮಂತ್ರಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಸಚಿವ, ಅಮಾತ್ಯ. ಮನ್ತ್ರೋ  
ಗುಪ್ತಭಾಷಣಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಐನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪)। ಅಥವಾ  
ಮನ್ತ್ರಯತೇ ಅವಶ್ಯಮ್ — ಮತ್ರಿ (ಗುಪ್ತಭಾಷಣೆ) “ಣಿಞಃ”  
(೩-೩-೧೭೦)। “ಮನ್ತ್ರಜ್ಞೈರ್ಮನ್ತ್ರಿಭಿಃಶ್ಚೈವ ವಿನೀತಃ ಪ್ರವಿಶೇತ್  
ಸಭಾಮ್” ಮನುಂ ೮-೧। 2. ಮಾಯಾಗಾರ, ಮಾಟಗಾರ.  
(ವಿಂ) 3. ವೇದಮಂತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಪರಿಶ್ರಮ ಹೊಂದಿ  
ದವನು. 4. ಮಂತ್ರಾರೋಚನೆಯಲ್ಲಿ ನಿಪುಣನಾದವನು.

**ಮನ್ಯ ಮಂಥ** (ಪುಂ) 1. ಕಡೆಗೋಲು, ಮಂತ್ರು. ಮನ್ಯತೇಽನೇನ  
—ಮನ್ಯ (ವಿಲೋಡನೆ) ಕರಂ “ಘಬ್” (೩-೩-೧೨೧)।  
2. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. ಮನ್ಯತೀತಿ ತ್ರಿಭುವನಂ ಸ್ವಕಿರಣೈಃ—ಮನ್ಯ  
(ವಿಲೋಡನೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। 3. ತುಪ್ಪ  
(ಮೊದಲಾದವುಗಳಿಂದ) ಬೆರಸಿದ ಹುರಿಹಿಟ್ಟು. “ಮನ್ಯಃ  
ಸ್ಯಾತ್ ಪುಂಸಿ ಮನ್ಯಾನೇ ಸಾಕ್ತವೇ ಚ ದಿವಾಕರೇ” ಮೇದಿಂ।  
“ಚಕ್ಷುಷ್ಯಾಃ ಸಕ್ತವಃ ಕಣಾಃ। ತೇ ಧೃತಾದಿಯುತಾ ಮನ್ಯಃ”  
ವೇಜಂ। 4. ನೇತ್ರಮಲ, ಕಣ್ಣಿನ ಒಸುರು. 5. ಸೂರ್ಯನ  
ಕಿರಣ. 6. ನೇತ್ರರೋಗ. “ಮನ್ಯೋ ರವೌ ಮಥಿ। ಸಾಕ್ತವೇ  
ನೆತ್ರರೋಗೇ ಚ” ಹೇಮಂ। 7. ಕಡೆಯುವುದು, ಕಲಕುವುದು.  
“ಪ್ರಾಡ್ ಮನ್ಯಾದನಭಿವ್ಯಕ್ತರತ್ನೋತ್ಪತ್ತಿರಿವಾರ್ಣವಃ” ರಘುಂ  
೧೦-೩।

**ಮನ್ಯವಂಡಕ ಮಂಥದಂಡಕ** (ಪುಂ) ಮಂತ್ರು, ಕಡೆಗೋಲು.

**ಮನ್ಯನ ಮಂಥನ** (ಪುಂ) 1. ಕಡೆಗೋಲು, ಮಂತ್ರು.  
ಮನ್ಯತೀತೇನ—ಮನ್ಯ (ವಿಲೋಡನೆ) ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೪)। (ನಂ) 2. ಕಡೆಯುವುದು, ಕಲಕುವುದು.  
ಮನ್ಯ (ವಿಲೋಡನೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪)।



ಮಂಥನವರ್ತಿ ಮಂಥನವರ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೊಸರು ಕಡೆಯುವ ಪಾತ್ರೆ. ಮಂಥನವರ್ತಿ ವರ್ತಿ.

ಮಂಥನಿ ಮಂಥನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೊಸರು ಕಡೆಯುವ ಪಾತ್ರೆ.

ಮಂಥನೇಷ್ಯಾಮ್—ಮಂಥ (ವಿಲೋಡನೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)।

ಮಂಥರ ಮಂಥರ (ಪುಂ) 1. ಕೋಶ, ಬೊಕ್ಕಸ. 2. ಕೋಪ, ಕೋಪ, ಸಿಟ್ಟು. 3. ಭಲ, ಹೆಚ್ಚು. 4. ಕಡೆಗೋಲು, ಮಂತ್ರ. 5. ಬಾಧೆ, ವಿಘ್ನ, ಅಡ್ಡಿ. 6. ಚಾಡಿ ಹೇಳು ವವನು. (ನಂ) 7. ಕುಸುಂಬೆಗಿಡೆ. (ವಿಂ) 8. ಮಂದ ಗಮನವುಳ್ಳ, ಮೆಲ್ಲಗೆ ನಡೆಯುವ. 9. ವಕ್ರವಾದ, ದೋಷವಾದ. 10. ಅಗಲವಾದ, ವಿಸ್ತಾರವಾದ. 11. ನಿಶ್ಚಲವಾದ, ಅಲುಗಾಡದಿರುವ, ಅಲಸ, ಜಡ. “ಮಂಥರ: ಸ್ವಕೇ ಕೋಶೇ ವಕ್ರೇ ಮಂದೇ ಪೃಥಿ ಮಥಿ। ಮಂಥರಂ ತು ಕುಸುಮ್ಯಾಂ ಸ್ಯಾತ್” ಹೇಮಂ। “ಮಂಥರ: ಕೋಶಫಲಯೋರ್ಬಾಧಮಂಥಾನಯೋ: ಪುಮಾನ್। ಕುಸುಮ್ಯಾಂ ನ ದ್ವಯೋರ್ಮಂದೇ ಪೃಥಿ ವಕ್ರೇಭಿಧೇಯವತ್” ಮೇದಿಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಾ-ರಾ. ಕೈಕಯಿಯ ದಾಸಿ, ಮಂಥರ.

ಮಂಥರ ಮಂಥರ (ಪುಂ) ಚಾಮರದ ಗಾಳಿ. “ಕಠೇ ಮಂಥರ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಮಂಥರ ಮಂಥರ (ಪುಂ) ಮಂದರಪರ್ವತ. ಮಂಥಾಯ ಸಮುದ್ರಮಂಥನಾಯ ಶಿಲ:।

ಮಂಥಾನ ಮಂಥಾನ (ಪುಂ) 1. ಕಡೆಗೋಲು, ಮೊಸರು ಕಡೆಯುವ ಕೋಲು. ಮಂಥನಿ—ಮಂಥ (ವಿಲೋಡನೆ) “ಚಾನಶ್” (೩-೨-೧೨೯)। 2. ಪರಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. 3. ಮಂದರಪರ್ವತ.

ಮಂಥನ್ ಮಂಥನ್ (ವಿಂ) 1. ಮೊಸರು ಕಡೆಯುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಿ-ನಿ. 2. ಮೊಸರು ಕಡೆಯುವ ಪಾತ್ರೆ.

ಮಂದ ಮಂದ (ಪುಂ) 1. ಶನಿಗ್ರಹ. ಮಂದತೆ—ಮದಿ (ಸ್ತುತಿ-ಮೋದಮದಸ್ವಪ್ನಕಾಂತಿಗತಿಷು) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ಭೌಮಗುರುಶುಕ್ರಮಂದಾಶ್ವಂದ್ರಾನ್ಮೇಷುರಣಕ್ಷಗಾ: ಪ್ರಸವೇ। ಜನಯಂತಿ ನರಂ ಧೀರಂ ಕುಟುಂಬಯುಕ್ತಂ ಧನೋಪೇತಮ್” ಸಾರಾಂ। 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಆನೆ. 3. ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. (ವಿಂ) 4. ನಿಧಾನವಾದ, ಚುರುಕಾಗಿಲ್ಲದ. “ಮಿಂದಂತಿ ಮಂದಾ ಗತಿ-ಮಂಥಮುಖ್ಯ:” ಕುಮಾಂ ೧-೧೧। 5. ಚಿಕ್ಕದಾದ, ಅಲ್ಪವಾದ, ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ. 6. ಅಲಸ, ಸೋಮಾರಿ, ಚಟುವಟಿಕೆ ಯಿಲ್ಲದ. “ಪ್ರಾಯೇಣಾಲ್ಪಾಯುಷ: ಸಮ್ಯ ಕಲಾವಸ್ಮಿನ್ ಯುಗೇ ಜನಾ:। ಮಂದಾ: ಸುಮಂದಮತಯೋ ಮಂದಭಾಗ್ಯಾ ಹ್ಯುಪದ್ರುತಾ:” ಭಾಗಂ ೧-೧-೧೦। 7. ಮೂಢ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು, ಮತಿಹೀನ. “ಮಂದ: ಕವಿಯಶ:ಪ್ರಾರ್ಥಿ ಗಮಿಷ್ಯಾಮ್ಯಪಹಾಸ್ಯ-

ತಾಮ್” ರಘುಂ ೧-೩। 8. ಅದೃಷ್ಟಹೀನ, ಭಾಗ್ಯವಿಲ್ಲದವನು. 9. ಸ್ವತಂತ್ರ, ಇತರರ ಅಧೀನದಲ್ಲಿದ್ದ. 10. ಮೂರ್ಖ, ವಿವೇಕವಿಲ್ಲದವನು. “ಪ್ರಯೋಜನಮನುಷ್ಯ ನ ಮಂದೋಪಿ ಪ್ರವರ್ತತೆ”। 11. ಅಶಕ್ತ, ಬಲವಿಲ್ಲದವನು. 12. ರೋಗಿ, ವ್ಯಾಧಿಗ್ರಸ್ತ. 13. ದುರ್ಜನ. “ಮಂದ: ಪುಂಸಿ ರವೇ: ಸುನೌ ಗಜಭೇದೇ ತ್ವಯಂ ತ್ರಿಷು। ಕ್ಷಲಮುಖ್ಯಜಹಸ್ವೇರ-ಸ್ವಲ್ಪನಿರ್ಮಾಣಿರೋಗಿಷು” ನಾನಾರ್ಥರಂ। “ಯಮರಾಜಮುನಾ-ಭ್ರಾತಾ ಮಂದೋ ವೇವಸ್ವತೋಜ್ಞತಕ:” ವೇಜಂ। (ಅವ್ಯಂ) 14. ಮೆಲ್ಲಗೆ, ನಿಧಾನವಾಗಿ. “ಯಾತಂ ಯಚ್ಚ ನಿತಂಬಯೋಗುಹಿತಯಾ ಮಂದಂ ವಿಲಾಸಾದಿವ” ಶಾಕುಂ ೨-೨। 15. ಮೃದುವಾಗಿ, ಮೆತ್ತಗೆ, ಬಿರುಸಾಗಿಲ್ಲದೆ. “ಮಂದಂ ಮಂದಂ ನುದತಿ ಪವನಶ್ಚಾನು-ಕೂಲೋ ಯಥಾ ತ್ವಾಮ್” ಮೇಘಂ ೨-೯।

ಮಂದಗ ಮಂದಗ (ಪುಂ) 1. ಶನಿಗ್ರಹ. (ವಿಂ) 2. ಮೆಲ್ಲಗೆ ನಡೆಯುವ. ಮಂದಂ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಃ:” (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)। -ಗತಿ:-ಗತಿ:.

ಮಂದಗಾಮಿನ್ ಮಂದಗಾಮಿನ್ (ವಿಂ) ನಿಧಾನವಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವ, ಮೆಲ್ಲಗೆ ನಡೆಯುವ. ಮಂದಂ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಗಿತಿ:” (೩-೨-೪೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ -ಗಾಮಿನಿ -ಗಾಮಿನೀ.

ಮಂದಗಾ ಮಂದಗಾ, -ಪ್ರಜಾ -ಬುದ್ಧಿ -ಮತಿ -ಪ್ರಜ್ಞಾ -ಬುದ್ಧಿ -ಮತಿ (ವಿಂ) ಮೂರ್ಖ, ದಡ್ಡ. ಬುದ್ಧಿಯಿಲ್ಲದವನು, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು. ಮಂದಾ ಘಿ: ಪ್ರಜಾ ಬುದ್ಧಿ: ಮತಿರ್ವಾ ಯಸ್ಯ।

ಮಂದನ ಮಂದನ (ನಂ) ಸ್ತೋತ್ರ, ಹೊಗಳಿಕೆ. ಮದಿ (ಸ್ತುತೌ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

ಮಂದಭಾಗ್ಯ ಮಂದಭಾಗ್ಯ (ವಿಂ) ಅದೃಷ್ಟವಿಲ್ಲದವನು, ಭಾಗ್ಯಹೀನ. ಮಂದಂ ಭಾಗ್ಯಂ ಯಸ್ಯ।

ಮಂದರ ಮಂದರ (ಪುಂ) 1. ಮಂದರಪರ್ವತ, ಸಮುದ್ರ ವನ್ನು ಕಡೆದ ಪರ್ವತ. ಮದಿ “ಅರ:” ಬಾಹ್ಯಂ। “ಶೋಮೇವ ಮಂದರಕ್ಷುಬ್ಧಕ್ಷುಭಿತಾಮೋಽವಿವರ್ಣನಾ” ಮಾಘಂ ೨-೧೦೭। ಅಮೃತಕ್ಕಾಗಿ ದೇವಾಸುರರು ಸಮುದ್ರವನ್ನು ಕಡೆಯಲು ಕಡೆಗೋಲಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡ ಪರ್ವತವಿದು. “ಪೃಥ್ವಿ-ಮಂದರೋದ್ಭವ: ಕ್ಷೀರೋಮಯ ಇವಾಚ್ಯುತಮ್” ರಘುಂ ೪-೨೭। 2. ಮಂದಾರವೃಕ್ಷ, ಇಂದ್ರನ ಉದ್ಯಾನವನದಲ್ಲಿರುವ ಪಂಚ ದೇವತರುಗಳಲ್ಲಿಯೊಂದು. 3. ಎಂಟು ಎಳೆಗಳುಳ್ಳ ಮುತ್ತಿನ ಹಾರ. 4. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ. (ವಿಂ) 5. ನಿಧಾನವಾದ, ತಡವಾದ, ಸಾವಕಾಶವಾದ. 6. ದೊಡ್ಡದಾದ, ದಪ್ಪವಾದ, ಸ್ಥೂಲವಾದ. “ಮಂದರಸ್ತು ಪುಮಾನ್,



ಮನ್ಯಶೇಲೆ ಮಂದಾರಪಾದಪೇ । ವಾಚ್ಯವತ್ ಬಹಲೆ ಮಂದೆ " ಮೇದಿಂ ।

"ಮಂದರೋ ಮನ್ಯಪರ್ವತೇ । ಸ್ವಗಮಂದಾರಯೋರ್ಮಂದೆ ಬಹಲೆ " ಹೇಮಂ ।

**ಮಂದಾಕ ಮಂದಾಕ** (ಪುಂ) 1. ಸ್ತುತಿ, ಹೊಗಳಿಕೆ. 2. ಪ್ರವಾಹ. ಮದಿ (ಸ್ತುತಾದೌ) "ಆಕ:" ಬಾಹುಂ ।

**ಮಂದಾಕಿನಿ ಮಂದಾಕಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಂಗಾನದಿ. ಮಂದ ಮಕಿತುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯಾ:—ಅಕ (ಕುಟಿಲಾಯಾಂ ಗತೌ) "ಞಿನಿ:" (೩-೨-೭೮) । "ಮಯೂರಪಿಂಜಾತಪವಾರಣಶ್ರೀಮಂದಾಕಿನಿ-ಹೇಮಸರೋಜಮೃಜ್ಜಿ:" ಯಾದಂ ೧೮-೪೯ । 2. ದೇವನದಿ, ದೇವ ಗಂಗಾ, ಸ್ವರ್ಗಲೋಕದ ನದಿ. "ಮಂದಾಕಿನಿನಂದನಯೋವಿಹಾರೇ ದೇವೇ ಭವೇ ದೇವರಿ ಮಾಭವೇ ಚ । ಶ್ರೇಯ: ಶ್ರಿಯಾಂ ಯಾತಾರಿ ಯಚ್ಚ ಸಖ್ಯಾಂ ತಚ್ಚೇತಸಾ ಮಾವಿನಿ ಭಾವಯಸ್ವ" ನೇಷಂ ೬-೮೩ ।

**ಮಂದಾಕ್ರಾಂತಾ ಮಂದಾಕ್ರಾಂತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೃತ್ತರತ್ನ ಕರೋಕ್ತವಾದ ಹದಿನೇಳನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ, ಪ್ರತಿ ಪಾದದಲ್ಲಿಯೂ ಮ ಗಣ ಮ ಗಣ ನ ಗಣ ತ ಗಣ ದ್ವಯ ಮತ್ತು ಗುರುದ್ವಯವಿದ್ದಲ್ಲಿ ಮಂದಾಕ್ರಾಂತಾ ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: "ಮಂದಾಕ್ರಾಂತಾ ಜಲಧಿಪಟಗಂ-ಮೌನತೌ ತೌ ಗುರು ಚೇತ್" ವೃಂ ೨೦ । ಇದರ ಗಣ ವಿನ್ಯಾಸ:

ಮ ಮ ನ ತ ತ . ಗು ಗು ।  
೦೦೦ ೦೧೧ ೧೧೧ ೦೦೧ ೦೦೧ ೦ ೦

**ಮಂದಾಕ್ಷ ಮಂದಾಕ್ಷ** (ನಂ) 1. ಲಕ್ಷ್ಮಿ, ನಾಚಿಕೆ, ಸಂಕೋಚ. ಮಂದೆ ಸಡ್ಕುಚಿತೇ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಮಾತ್ । "ಮಂದಾಕ್ಷಮಂದಾಕ್ಷರ-ಮುಧ್ರಮುಕ್ತವಾ ತಸ್ಯಾಂ ಸಮಾಕುಚಿತವಾಚಿ ಹಂಸ:" ನೇಷಂ ೩-೬೧ । (ವಿಂ) 2. ಬಲಹೀನವಾದ ನೇತ್ರಗಳುಳ್ಳವನು, ತ್ರಾಣ ಎಲ್ಲದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳವನು. ಮಂದೆ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯ ।

**ಮಂದಾಗ್ನಿ ಮಂದಾಗ್ನಿ** (ಪುಂ) 1. ತಿಂದ ಆಹಾರವನ್ನು ಜೀರ್ಣಿಸಲಾಗದ ಜಾಠರಾಗ್ನಿ. ಜಾಠರಾಗ್ನಿಯು (1) ಮಂದ: (2) ತೀಕ್ಷ್ಣ: (3) ವಿಷಮ: ಮತ್ತು (4) ಸಮ: ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ಮಂದಾಗ್ನಿಯು ಕಫದಿಂದ ಉಂಟಾದ ವಿಕಾರಗಳನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದು. ತೀಕ್ಷ್ಣಾಗ್ನಿಯು ಪಿತ್ತವಿಕಾರಗಳನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದು. ವಿಷಮಾಗ್ನಿಯು ವಾತವಿಕಾರಗಳನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದು. ಸಮಾಗ್ನಿಯು ತಿಂದ ಆಹಾರವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಜೀರ್ಣ ಮಾಡುವುದು. "ವಿಷಮೋ ವಾತಜಾನ್ ರೋಗಾನ್ ತೀಕ್ಷ್ಣ: ಪಿತ್ತಸಮುಜ್ಜವಾನ್ । ಕರೋತ್ಯಗ್ನಿಸ್ತಥಾ ಮಂದೋ ವಿಕಾರಾನ್ ಕಫಸಮ್ಭವಾನ್ । ಸಮೋ ಸಮಾಗ್ನೇರಶಿತಾ ಮಾತ್ರಾ ಸಮ್ಯಗ್ವಿ-ಪಚ್ಯತೇ" । (ವಿಂ) 2. ಅಜೀರ್ಣ ರೋಗವುಳ್ಳವನು.

**ಮಂದಾಯಮಾನ ಮಂದಾಯಮಾನ** (ವಿಂ) ನಿಧಾನವಾಗಿ ಆಗುತ್ತಿರುವ, ಸಾವಕಾಶವಾಗಿ ಆಗುತ್ತಿರುವ. ಮಂದ "ಕೃಷ್" (೩-೧-೧೩) । "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಮಂದಾಯಮಾನಗಮನೋ ಹರಿತಾಯತ್ತರಂ ಕಪಿ:" ಮಹಿಂ ೮-೬೫ ।

**ಮಂದಾರ ಮಂದಾರ** (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರನ ಉದ್ಯಾನವನದಲ್ಲಿರುವ ಐದು ದೇವತರುಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಮಂದಯತೇ ಮೋದಯತೇ—ಮದಿ (ಸ್ತುತಾದೌ) "ಆರನ್" (೩ಂ ೩-೧೩೪) । "ಮಂದಾ-ಕಿನ್ಯಾ: ಸಲಿಲಶಿಶಿರೇ: ಸೇವ್ಯಮಾನಾ ಮಹದ್ಭಿ: ಮಂದಾರಾಣಾ-ಮನುತರಹಾಂ ಛಾಯಯಾ ವಾರಿತೋಷಾ:" ಮೇಘಂ ೨-೪ । 2. ಪಾರಿಜಾತದ ಗಿಡ. 3. ಅರ್ಹವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. "ಮಂದಾರ: ಸ್ಥಾತುರದ್ರುಮೇ । ಪಾರಿಮದ್ರೇರ್ಜವೃಕ್ಷೇ ಚ" ಮೇದಿಂ । 4. ಉಮ್ಮತ್ತಿ ಗಿಡ. 5. ಗಜ, ಆನೆ. "ಮಂದಾರೋ ಹಸ್ತಿ-ಭೂತಯೋ:" ಮೇದಿಂ ।

**ಮಂದಾರಮಾಲಾ ಮಂದಾರಮಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂದಾರ ವೃಕ್ಷದ ಪುಷ್ಪಗಳ ಹಾರ. "ಆಮೃಷ್ಠವಕ್ಷೋಹರಿಚಂದನಾಕ್ಷಾ ಮಂದಾರಮಾಲಾ ಹರಿಣಾ ಪಿನಢಾ" ಶಾಕುಂ ೭-೨ ।

**ಮಂದಿರ ಮಂದಿರ** (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ. ಮದಿ "ಕಿರಚ್" (೩ಂ ೧-೫೧) । 2. ದೇಹ, ಶರೀರ. "ಮಂದಿರಂ ದೇಹ-ಪುಯೋಶ್ಚ" ವೈಜಂ । (ನಂ) 3. ಗೃಹ, ಮನೆ. ಮನ್ಯತೇ ಸುಪ್ಯತೇಶ್ಚ—ಮದಿ (ಸ್ತುತಾದೌ) "ಕಿರಚ್" (೩ಂ ೧-೫೧) । "ಮಂದಿರೋ ಮಕರಾವಾಸೇ ಮಂದಿರಂ ನಗರೇ ಗೃಹೇ" ಹೇಮಂ । 4. ನಗರ, ಪಟ್ಟಣ. "ಪ್ರಾವೇಶಯನ್ಮಂದಿರಮೃದ್ಧಮೇನಮಾಗುಲ್ಫ-ಕೀರ್ಣಾಪಿಣಮಾಗಂಪುಷ್ಪಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೫೫ । 5. ವಾಸಸ್ಥಳ.

**ಮಂದೀಕುರ್ವತ್ ಮಂದೀಕುರ್ವತ್** (ವಿಂ) 1. ನಿಧಾನವಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ತಡಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಕಡಮೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಅಮಂದಂ ಮಂದಂ ಸಂಪದಮಾನಂ ಕುರ್ವನ್—ಮಂದ + ಡಕೃಜ್ (ಕರಣ) ಅಭೂತತಂ "ಚ್ವಿ:" (ವಾಂ ೫-೪-೫೦) । "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

**ಮಂದೀಕೃತ ಮಂದೀಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ನಿಧಾನವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಕಡಮೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಮಂದ: ಮಂದ: ಸಂಪದಮಾನ: ಕೃತ:—ಮಂದ + ಡಕೃಜ್ (ಕರಣ) ಅಭೂತತಂ "ಚ್ವಿ:" (ವಾಂ ೫-೪-೫೦) । "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । "ಛದ್ಧಾತಿನಿ ಭೂಮಿರೀತಿ ಮಥಾ ರಶ್ಮಿಸಂಯಮನಾದ್ರಥಸ್ಯ ಮಂದೀ-ಕೃತೋ ವೇಗ:" ಶಾಕುಂ ೧ ।

**ಮಂದಿಭವತ್ ಮಂದಿಭವತ್** (ವಿಂ) 1. ನಿಧಾನವಾಗಿ ಆಗುತ್ತಿರುವ, ಮೆಲ್ಲಾಗುತ್ತಿರುವ. ಅಮಂದ: ಮಂದ: ಸಂಪದ-ಮಾನೋ ಭವನ್—ಮಂದ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) ಅಭೂತತಂ "ಚ್ವಿ:" (ವಾಂ ೫-೪-೫೦) । "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಕಡಮೆ ಯಾಗುತ್ತಿರುವ.



**ಮಂದಿಭೂತ ಮಂದೀಭೂತ** (ವಿಂ) 1. ನಿಧಾನವಾಗಿ ಆಗಿರುವ, ಮೆಲ್ಲಗಾಗಿರುವ. ಅಮಂದ: ಮಂದ: ಸಂಪದಮಾನಂ ಭೂತಮ್ — ಮಂದ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) ಅಮೂತತಂ “ಛಿವ:” (ವಾಂ ೪-೪-೪೦) । “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨) । 2. ಕಡಮೆಯಾಗಿ ಆಗಿರುವ.

**ಮಂದುರಾ ಮಂದೂರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅತ್ಯಂತ, ಕುದುರೆಯ ಲಾಯ. ಮಂದಂತೇಷ್ವರ — ಮದಿ (ಸ್ತುತ್ಯಾದೌ) “ಉರಚ್” (ಉಂ ೧-೩೮) । “ಪ್ರಭ್ರಷ್ಟೋಷ್ಯ ಪ್ಲವಜ್ಞ: ಪ್ರವಿಶತಿ ನೃಪತೇ-ಮಂದಿರಂ ಮಂದುರಾಯಾ:” ರತ್ನಾಂ ೨-೨ । 2. ಹಾಸಿಗೆ, ಸುಪ್ಪತ್ತಿಗೆ. “ಮಂದುರಾ ವಾಜಿಶಾಲಾಯಾಂ ಶಯನೀಯಾರ್ಥವಸ್ತುನಿ” ಮೇದಿಂ ।

**ಮಂದೋತ್ಕಂಠ ಮಂದೋತ್ಕಂಠ** (ವಿಂ) ಕಡಮೆ ಉತ್ಸಾಹವುಳ್ಳ, ಕಡಮೆ ಆಸೆಯುಳ್ಳ. ಮಂದಾ ಉತ್ಕಂಠಾ ಯಸ್ಯ । “ಮಂದೋತ್ಕಂಠಾ: ಕೃತಾಸ್ತೇನ ಗುಣಾಧಿಕತಯಾ ಗುರೌ” ರಘುಂ ೪-೯ ।

**ಮಂದೋಣ ಮಂದೋಷ್ಣ** (ನಂ) 1. ಕೊಂಚ ಉಷ್ಣ, ಸ್ವಲ್ಪ ಬಿಸಿ. ಮಂದಂ ಚ ತದ್ಗುಣಂ ಚ । (ವಿಂ) 2. ಸ್ವಲ್ಪ ಬಿಸಿಯಾಗಿರುವ, ಬೆಚ್ಚಗಿರುವ. “ಕೋಣಂ ಕವೋಣಂ ಮಂದೋಣಂ ಕದ್ಗುಣಂ ತ್ರಿಪು ತದ್ವತಿ” ಅಮಂ ।

**ಮಂದೋತ್ಸುಕ ಮಂದೋತ್ಸುಕ** (ವಿಂ) ಕಡಮೆ ಉತ್ಸಾಹವುಳ್ಳ, ಹೆಚ್ಚು ಆಸೆಯಿಲ್ಲದ, ಉತ್ಸಾಹದ ಮನಸ್ಸಿಲ್ಲದ. ಮಂದೋತ್ಸುಕಂ ಯಸ್ಯ । “ಮಂದೋತ್ಸುಕಯೋಽಸ್ಮಿ ನಗರಗಮನಂ ಪ್ರತಿ” ಶಾಕುಂ ೧ ।

**ಮಂದ್ರ ಮಂದ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಗಂಭೀರವಾದ (ಧ್ವನಿ), ಶಬ್ದವಾದ (ಶಬ್ದ), ಮೃದುವಾದ (ಶಬ್ದ). ಮದಿ (ಸ್ತುತ್ಯಾದೌ) “ರಕ್” (ಉಂ ೨-೧೩) । “ಮಂದ್ರಸ್ತಿಗ್ಧೇರ್ಧ್ವನಿರಭಿರಬಲಾವೇಣಿಮೋಕ್ಷೋತ್ಸುಕಾನಿ” ಮೇಘಂ ೨-೩೬ । 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಆನೆ. (ವಿಂ) 3. ಗಂಭೀರವಾದ ಧ್ವನಿಯುಳ್ಳ. “ಸಂಧ್ಯಾಂ ನಿಪತಿತನಿಶ್ಚರಾಸು ಮಂದ್ರೈ: ಸಂಮೂರ್ಚಿತಪ್ರತಿನಿನದೇರಧಿತೀಕಾಸು” ಕಿರಾಂ ೭-೨೨ । “ಮಂದ್ರೋ ಮಂದ್ರೋ ಮೃಗ ಇತಿ ಗಜಾ: ಸಂಕರಜಾ-ಸ್ತಥಾ” ವೇಜಂ ।

**ಮಂದ್ರಭದ್ರ ಮಂದ್ರಭದ್ರ** (ಪುಂ) ಮಂದ್ರ ಮತ್ತು ಭದ್ರ ಇವುಗಳ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯ ಆನೆ. “ಮಂದ್ರಭದ್ರಾದಯೋಽಪ್ಯೇವಮಿತಿ ಸಂಕರಜಾ ನವ” ವೇಜಂ ।

**ಮಂದ್ರಭದ್ರಮೃಗ ಮಂದ್ರಭದ್ರಮೃಗ** (ಪುಂ) ಮಂದ್ರಭದ್ರ ಮೃಗಜಾತಿ ಇವುಗಳ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯ ಆನೆ. “ಮಂದ್ರಭದ್ರೋ ಮಂದ್ರಭದ್ರೋ ಮೃಗೋಽಪಿ ಚ” ವೇಜಂ ।

**ಮನ್ಮಥ ಮನ್ಮಥ** (ಪುಂ) 1. ಮದನ, ಕಾಮದೇವ. ಮನೋ ಮನ್ಮಥಾತಿ—ಮನ್ಮಥ (ವಿಲೋಡನೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) ।

“ಮನೋ ಮನ್ಮಥಾತಿ ಸರ್ವೇಷಾಂ ಪಂಚವಾಣೇನ ಕಾಮಿನಾಮ್ । ತನ್ನಾಮ ಮನ್ಮಥಸ್ತೇನ ಪ್ರವದಂತಿ ಮನೋಽಪಿ:” । “ಮಧುಶ್ಚ ತೇ ಮನ್ಮಥ ಸಾಹಚರ್ಯಾದಿಸಾವನುಕ್ತೋಽಪಿ ಸಹಾಯ ಏವ” ಕುಮಾಂ ೩-೨೧ । ಮನ್ಮಥನ ಉತ್ಪತ್ತಿಯ ಕಥೆ: “ಕಾಮ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ. 2. ಕಾಮಚಂಡಿ, ಮನೋವಿಕಾರ. “ಕವ ವಯಂ ಕವ ಪರೋಕ್ಷ-ಮನ್ಮಥೋ ಮೃಗಶಾವೈ: ಸಮಮೇಧಿತೋ ಜನ:” ಶಾಕುಂ ೨-೧೮ । 3. ಕಪಿತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಬೇಲದಮರ.

**ಮನ್ಮಥಾಲಯ ಮನ್ಮಥಾಲಯ** (ಪುಂ) 1. ಚೂತವೃಕ್ಷ, ಮಾವಿನಮರ. ಮನ್ಮಥಸ್ಥಾಲಯ ಇವ । 2. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ.

**ಮನ್ಮನ ಮನ್ಮನ** (ಪುಂ) ದಂಪತಿಗಳ ರಹಸ್ಯಭಾಷಣ. “ಸುರತೇ ಕರ್ಣಮೂಲೇ ತು ನಿಜದೇಶೀಯಭಾಷಯಾ । ದಂಪತಿಯೋ: ಕಥನಂ ಯತು ಮನ್ಮನಂ ತಂ ವಿದುರ್ಬುಧಾ:” ।

**ಮನ್ಯಮಾನ ಮನ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) ಅರಿತಿರುವ, ತಿಳಿದುಕೊಂಡಿರುವ. ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) “ಶಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪) । “ತಥಾ ಶೃಗಾಲೋಽಯಮಿತಿ ಮನ್ಯಮಾನೇನ ಮಮೋಪರಿ ಸ್ವಾಮಿನಾ ಯದ್ವಚನಾ ಕ್ರಿಯತೇ ತದನ್ಯಯುಕ್ತಮ್” ಪಂಚತಂ ೧ ।

**ಮನ್ಯಾ ಮನ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕತ್ತಿನ ಹಿಂದೆ ಇರುವ ನರ. ಮನ್ಯತೇಜಯಾ — ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) “ಕಯ್” (೩-೩-೯೯) । “ಪಶ್ಚಾದ್ಗ್ರೀವಾಸಿರಾ ಮನ್ಯಾ” ಅಮಂ ।

**ಮನ್ಯು ಮನ್ಯು** (ಪುಂ) 1. ಕ್ರೋಧ, ಕೋಪ, ಸಿಟ್ಟು. ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) “ಯುಚ್” (ಉಂ ೩-೨೦) । “ವಸುನಿ ವಾಙ್ಮನವಶೀ ನ ಮನ್ಯುನಾ ಸ್ವಧರ್ಮ ಇತ್ಯೇವ ನಿವೃತ್ತಕಾರಣ:” ಕಿರಾಂ ೧-೧೩ । 2. ಶೋಕ, ದುಃಖ. “ಸ ವಲ್ಕವಾಸಾಂಸಿ ತವಾಧುನಾ ಹರನ್ ಕರೋತಿ ಮನ್ಯು ನ ಕಥಂ ಧನಂಜಯ:” ಕಿರಾಂ ೧-೩೫ । 3. ದೈನ್ಯ, ಕೀಳುತನ, ದುರವಸ್ಥೆ. 4. ಯಾಗ, ಯಜ್ಞ. “ಮನ್ಯುರ್ದೇವೇ ಕೃತೌ ಕೃಧಿ” ಅಮಂ । 5. ಅಹಂಕಾರ, ಗರ್ವ.

**ಮನ್ವಂತರ ಮನ್ವಂತರ** (ನಂ) ಮನುವು ರಾಜ್ಯಭಾರ ಮಾಡುವ ಕಾಲ, ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಮನುಗಳಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ಮನುವಿನ ಆಳ್ವಿಕೆಯ ಕಾಲ, ದೇವತೆಗಳ ಎಷ್ಟೊಂದು ಚತುರ್ಯುಗಗಳ ಕಾಲ. ಮನೋಂತರಮಸ್ಮಿನ್ । “ಮನ್ವಂತರಂ ತು ದಿವ್ಯಾನಾಂ ಯುಗಾನಾಮೇಕಸಪ್ತತಿ:” ಅಮಂ । [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಮನು” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. ಮನವ: ಸ್ವಾಯಂಭುವಾದಯ:, ತೇಷಾಮನ್ತರಮವಕಾಶೋಽವಧಿರಸ್ಮಿನ್ ಇತಿ ವಾ । ಒಂದು ಚತುರ್ಯುಗಕ್ಕೆ 12000 ದೇವವರ್ಷಗಳು. 4320000 ಮಾನುಷವರ್ಷಗಳು. ದೇವತೆಗಳ 71 ಚತುರ್ಯುಗಗಳು ಒಂದು ಮನ್ವಂತರ. ಸ್ವಾಯಂಭುವ ಮೊದಲಾದ ಆರು



ಮನುಗಳ ಆಳ್ವಿಕೆಯ ಕಾಲ ಕಳೆದು ಏಳನೆಯ ಮನುವಾದ ವೈವಸ್ವತ ಮನುವಿನ ಆಳ್ವಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಈಗ ನಾವಿರುವುದರಿಂದ ಇದು ವೈವಸ್ವತ ಮನ್ವಂತರ. ಮುಂದೆ ಸಾವರ್ಣಿ ಮೊದಲಾದ ಏಳು ಮನುಗಳ ಕಾಲ (ಏಳು ಮನ್ವಂತರಗಳು) ಕಳೆದರೆ ಈಗಿನ ಬ್ರಹ್ಮ (ಚತುರ್ಮುಖ)ನ ಒಂದು ಹಗಲು. ಈ ವೈವಸ್ವತಮನ್ವಂತರದಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮನ ದ್ವಿತೀಯ ಪರಾರ್ಧವು ನಡೆಯುತ್ತಿದೆ. ಈಗ ಬ್ರಹ್ಮನ ಆಯುಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಐವತ್ತೊಂದನೆಯ ವರ್ಷದ ಮೊದಲನೆಯ ತಿಂಗಳ ಇಪ್ಪತ್ತೈದು ದಿನಗಳು ಕಳೆದು ಇಪ್ಪತ್ತಾರನೆಯ ಹಗಲಿನ ಮೊದಲನೆಯ ಯಾಮವು ನಡೆಯುತ್ತಿದೆ. ನಾವು ಈಗ ಶ್ವೇತವರಾಹ ಕಲ್ಪದ್ವೈದ್ವೇ.

**ಮಮ ಮಮ** (ಅವ್ಯಂ) ನನ್ನ, ನನ್ನ ಸಂಬಂಧವಾದ. "ಅಸ್ಮದ್" ಶಬ್ದದ ಪಷ್ಕಾರ್ಥದಲ್ಲಿ "ಮಮ" ಎಂಬುದು ಒಂದು ವಿಭಕ್ತಿಪ್ರತಿರೂಪಕಾವ್ಯಯ. ಈ ರೂಪವು ಲಿಂಗ ತ್ರಯದಲ್ಲೂ ಸಮಾನವಾದುದು.

**ಮಮಕಾರ ಮಮಕಾರ** (ಪುಂ) ಸ್ವಾರ್ಥಪರತೆ, ತನ್ನ ಪ್ರಯೋಜನದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿ, ತನಗೆ ಎಂಬ ಭಾವನೆ.

**ಮಮತಾ ಮಮತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನನ್ನದು ತನ್ನದು ಎಂಬ ಅಭಿಮಾನ. ಮಮ ಭಾವೆ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯). "ವತ್ಸ, ಮಮತಾಪಾಸನಾನಿಬಂಧನೋಯಂ ವ್ಯಾಮೋಹಃ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೪. 2. ದರ್ಪ, ಕೊಬ್ಬು. 3. ದೀರ್ಘತಮಸ್ಸಿನ ತಾಯಿ, ಉತ್ತಮನ ಪತ್ನಿ. "ತ್ವಃ" (೪-೧-೧೧೯). ಮಮತ್ವಮ್. "ಕ್ಷುಧ್ರೇಪಿ ನೂನಂ ಶರಣಂ ಪ್ರಪನ್ನೇ ಮಮತ್ವಮುಚ್ಚೇಶಿರಸಾಂ ಸತೀವ" ಕುಮಾರಂ ೧-೧೨.

**ಮಮತ ಮಮುಟಿ** (ಪುಂ) ಕಾವ್ಯಪ್ರಕಾಶವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಪಂಡಿತ.

**ಮಯ ಮಯ** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಆಸುರ, ದಾನವರ ಶಿಲ್ಪಿಯಾದ ಒಬ್ಬ ದೈತ್ಯ. [ಇವನು ಪಾಂಡವವನದಲ್ಲಿ ವಾಸವಾಗಿದ್ದನು. ಅಗ್ನಿಯು ಪಾಂಡವವನವನ್ನು ಸುಡಲು ತೊಡಗಿದಾಗ ಇವನು ಅರ್ಜುನನನ್ನು ಮರೆಹೊಕ್ಕು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಿಂದಲೂ ಅಭಯ ಪಡೆದನು. ಆ ಕೃತಜ್ಞತೆಯನ್ನು ಸೂಚಿಸಲು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಆಜ್ಞೆಯಂತೆ ಯುಧಿಷ್ಠಿರನಿಗೆ ಲೋಕೋತ್ತರವಾದ ಒಂದು ಸಭೆಯನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿಕೊಟ್ಟನು. ಈ ಸಭಾಭವನದಲ್ಲೇ ಧರ್ಮರಾಜನು ರಾಜಸೂಯಯಾಗ ಮಾಡಿದನು. ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ವರ ಪಡೆದು ತಾರಕಾಸುರನ ಮಕ್ಕಳಾದ ತಾರಾಕ್ಷ ಕಮಲಾಕ್ಷ ಮತ್ತು ವಿದ್ಯುನ್ಮಾಲಿಗಳಿಗೆ ಸುವರ್ಣಪುರ ರಜತಪುರ ಮತ್ತು ಅಯೋಪುರಗಳನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿಕೊಟ್ಟನು.] 2. ಉಪ್ಪು, ಒಂಟೆ. ಮಯತೆ—ಮಯ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). 3. ಹೇಸರಗತ್ತೆ,

ಒಂದು ಬೆರಕೆಜಾತಿಯ ಪ್ರಾಣಿ. "ಮಯೋ ದೈತ್ಯೋದ್ರವೇಸರಾಃ" ಹೇಮಂ. (ವಿಂ) 4. ಸಂಚರಿಸುವವನು.

**ಮಯ(ಫ)ಟಕ ಮಯ(ಯು)ಷ್ಕ** (ಪುಂ) ಕಾಡು ಹೆಸರು. ಮಯು ಸ್ತಕತಿ—ಟಕ (ಪ್ರತಿಪಾತೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). ಪೃಷೋಂ.

**ಮಯಟ ಮಯಟಿ** (ಪುಂ) ಹುಲ್ಲಿನ ಗುಡಿಸಲು.

**ಮಯ ಮಯ** (ಪುಂ) 1. ಮೃಗ, ಜಿಂಕೆ. ಡುಮಿಖ (ಪ್ರಸೇಪಣೆ) "ತಃ" (ತಂ ೧-೭). 2. ಕಿನ್ನರ, ಕಿಂಪುರಂಷ. "ಮಯುರ್ನಾ ಕಿನ್ನರೇ ಮೃಗೇ" ಮೇದಿಂ.

**ಮಯೂ ಮಯೂಖ** (ಪುಂ) 1. ಕಿರಣ, ರಶ್ಮಿ. ಮಿಮಿತಿ—ಮಾಙ್ (ಮಾನೇ) "ಋಃ" ಮಯಾದೇಶಾಃ (ತಂ ೪-೨೪). "ಸಕ್ತಿ ಜವಾದಪನಯತ್ಯನಿಲೇ ಲತಾನಾಂ ವೇರೋಚನೇದ್ವಿಗುಣಿತಾಃ ಸಹಸಾ ಮಯೂಖಃ" ಕಿರಾಂ ೪-೪೬. 2. ಕಾಂತಿ, ಪ್ರಭೆ, ತೇಜಸ್ಸು. "ವ್ಯಕ್ತೋದಿತಸ್ಮಿತಮಯೂಖವಿಭಾಸಿತೋಽಸ್ತಿಠನ್ ಮುನೇರಭಿಮುಖಂ ಸ ವಿಕೀರ್ಣಧಾಮನಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೪೯. 3. ಜ್ವಾಲೆ, ಉರಿ. "ಮಯೂಖಃ ಕಿರಣೋಽಪಿ ಚ. ಜ್ವಾಲಾಯಾಮಪಿ ಶೋಭಾಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ.

**ಮಯೂರ ಮಯೂರ** (ಪುಂ) 1. ನವಿಲು. ಮಯತೆ—ಮಯ (ಗತೌ) "ಋನ್" (ತಂ ೧-೬೭). "ಉದಗ್ರಿವೈರನರವಶಾಙ್ಕಯಾ ಮಯೂರಃ ಸೋತಕಂಠಂ ಧ್ವನಿರಪಶುಶ್ರುವೇ ರಥಾನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೭-೨೨. 2. ಹಿಮ, ಅಜವಾನ. 3. ಅಪಾ ಮಾರ್ಗ, ಉತ್ತರಣೆ ಗಿಡ. "ಮಯೂರೋ ಬಹಿಃಕೂಡಾಯಾಮಪಾಮಾಗ್ಂ ಶಿಖಿಷ್ಠಿಢಿನಿ" ಮೇದಿಂ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್"। -ರೀ-ರೀ.

**ಮಯೂರಕ ಮಯೂರಕ** (ಪುಂ) 1. ಅಪಾಮಾರ್ಗ, ಉತ್ತರಣೆ ಗಿಡ. 2. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. (ನಂ) 3. ಮೈಲುತುತ್ತ. ಮಯೂರಸ್ಯ ಪ್ರತಿಭೂತಿಃ "ಕನ್" (೪-೩-೯೬). "ಮಯೂರಕ-ಸ್ವಪಾಮಾಗ್ಂ ಮಯೂರಕಂತು ತುತ್ಯಕೇ" ಹೇಮಂ.

**ಮಯೂರಕೇತು ಮಯೂರಕೇತು** (ಪುಂ) ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪೂಜ್ಯ. ಮಯೂರಃ ಕೇತುಃ ಯಸ್ಯ.

**ಮಯೂರಗ್ರೀವಕ ಮಯೂರಗ್ರೀವಕ** (ನಂ) ಮೈಲುತುತ್ತ.

**ಮಯೂರಚಟಕ ಮಯೂರಚಟಕ** (ಪುಂ) ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ.

**ಮಯೂರಚೂಡಾ ಮಯೂರಚೂಡಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನವಿಲಿನ ಜುಟ್ಟು. 2. ಕೋಳಿಯ ತಲೆಯ ಮೇಲಿನ ಜುಟ್ಟು.

**ಮಯೂರತುತ್ಯ ಮಯೂರತುತ್ಯ** (ನಂ) ಮೈಲುತುತ್ತ.

**ಮಯೂರಜ ಮಯೂರಜ** (ಪುಂ) ಮಣಿಪುರದ ದೊರೆ. [ಇವನು ಧರ್ಮರಾಜನ ಅಶ್ವಮೇಧವ ಕುದುರೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟಿಹಾಕಿ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಬಂದ ಅರ್ಜುನನನ್ನು ಸೋಲಿಸಿದನು. ಕೃಷ್ಣಾರ್ಜುನರು ಆಗ ವಿಪ್ರವೇಷದಿಂದ ಇವನಲ್ಲಿಗೆ



ಹೋಗಿ ಇವನ ಶರೀರವನ್ನು ಇಬ್ಬರಿಗೂ ಅರ್ಧರ್ಧ ಭಾಗ ಮಾಡಿ ಕೊಡಬೇಕೆಂದು ಕೇಳಿಕೊಳ್ಳುವರು. ಮಯೂರ ಧ್ವಜನು ಅದಕ್ಕೆ ಒಬ್ಬ ತನ್ನ ಮಗ ತಾಮ್ರಧ್ವಜನಿಗೆ ಹೇಳಿ ತನ್ನ ಶರೀರವನ್ನು ಕೊಯ್ಯಲು ಅನುವಾಗಿ ಕುಳಿತನು. ಆಗ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಇವನ ಚಿತ್ತಸ್ಥೈರ್ಯಕ್ಕೆ ಮೆಚ್ಚಿ ನಿಜರೂಪವನ್ನು ಪ್ರದರ್ಶಿಸಿ ಅವನಿಂದ ಕುದುರೆಯನ್ನು ಬಿಡಿಸಿ ಕೊಂಡು ಹೊರಟನು.]

**ಮರಕ ಮರಕ (ಪುಂ)** ಒಂದು ವಿಧ ಅಂಟುಜಾಡ್ಡ.

**ಮರಕತ ಮರಕತ (ನಂ)** ಗಾರುತ್ಮತಮಣಿ, ಪಚ್ಚಿ. ಮರಕತರನ್ಯನೇನ — ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) "ತಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮). "ಮರಕತಮಣಿಮೇದಿನಿಷು ಭಾನೋಸ್ತಠವಿಠಪಾಂತರ-ಪಾತಿನೋ ಮಯುಕ್ತಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೫೬.

**ಮರಣ ಮರಣ (ನಂ)** 1. ನಿಧನ, ಸಾವು. ಮೃತ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). "ಸಂಭಾವಿತಸ್ಯಚಾಕೀರ್ತಿ-ಮರಣಾದತಿರಿಚ್ಯತೇ" 2. ಪತ್ರ್ನಾಭವೇಂಬ ಒಂದು ವಿಷ.

**ಮರಂದ ಮರಂದ (ಪುಂ)** ಮಕರಂದ, ಪುಷ್ಪದರಸ. "ಮಕರಂದೋ ಮರಂದೋಽಸ್ಯ ರಸೇ" ವೈಜಂ.

**ಮರಾಲ ಮರಾಲ (ಪುಂ)** 1. ಹಂಸಪಕ್ಷಿ. ಮೃತ್ "ಕಾಲನ್" ಬಾಹುಂ. "ಕೃತಪ್ರಿಯಾದ್ವೈತಮಹೋಪಕಾರಮರಾಲಮೋಹದ್ರದಿಮಾನಮುಹೇ" ನೇಪಂ ೬-೭೨. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಷ್" (೪-೧-೬೩). **ಮರಾಲಿ ಮರಾಲೀ.** 2. ಕೆಂಪು ಗಣಿಗಲಿ ಗಿಡ. "ಚಂಡಾತೋ-ಭರಿದುಃ ಸ್ವೇತೇ ಮರಾಲಸ್ತ್ವತಲೋಹಿತೇ" ವೈಜಂ. (ಪುಂ) 3. ಕಾರಂಡವ ಪಕ್ಷಿ, ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಬಾತುಕೋಳಿ. 4. ಕುದುರೆ. 5. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 6. ದಾಳಿಂಬೆ ಗಿಡದ ಕಾಡು. 7. ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. (ವಿಂ) 8. ಮೃದು ವಾದ, ಕೋಮಲವಾದ. 9. ನಯವಾದ, ನುಣುಪಾದ.

**ಮರಿ(ರೀ)ಚ ಮರಿ(ರೀ)ಚ (ಪುಂ)** 1. ಮೆಣಸಿನ ಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಮೆಣಸು. ಫ್ರಿಯತೇ ವಿಷಮನೇನ—ಮೃತ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೇ) "ಇಚಃ" ಬಾಹುಂ.

**ಮರಿಮನ್ ಮರಿಮನ್ (ಪುಂ)** ಮೃತ್ಯು.

**ಮರೀಚಿ ಮರೀಚಿ (ಪುಂ)** 1. ಮರೀಚಿಮಹರ್ಷಿ, ಬ್ರಹ್ಮನ ಒಬ್ಬ ಮಾನಸಪುತ್ರ. 2. ಸ್ವಾಯಂಭೂವ ಮನುವಿನಿಂದ ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ದಶ ಪ್ರಜಾಪತಿಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ ಮಹರ್ಷಿ. ಮೃತ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೇ) "ರೀಚಿಃ" (೩ಂ ೪-೭೦). "ಅಹಂ ಪ್ರಜಾಃ ಸಿಸೃಕ್ಷುಸ್ತು ತಪಸ್ತಪ್ತ್ವಾ ಸುದುಶ್ವರಮ್ | ಪತೀನ್ ಪ್ರಜಾನಾ-ಮಸೃಜಂ ಮಹರ್ಷಿಣಾದಿತೋ ದಶ || ಮರೀಚಿಮಶ್ವಜ್ಜಿರಸೌ ಪುಲಸ್ತ್ಯಂ ಪುಲಹಂ ಕೃತುಮ್ | ಪ್ರಚೇತಸಂ ವಸಿಷ್ಠಂ ಚ ಭೃಗುಂ ನಾರದಮೇವ ಚ" ಮನುಂ ೧-೩೪, ೩೫. 3. ಕೃಷ್ಣ, ಜಿಪುಣ. (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ)

4. ಕಿರಣ, ರಶ್ಮಿ. "ಜಲದಜಾಲಧನೇರಸಿತಾಶ್ಮನಾಮುಪಹತ-ಪ್ರವೇಹ ಮರೀಚಿಮಿಃ" ಕಿರಾಂ ೫-೪೮. "ಮರೀಚಿಃ ಕೃಪಣೇ ಧೃಣೌ | ಋಷಿಮೇದೇ" ಹೇಮಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 5. ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸು.

**ಮರೀಚಿಕಾ ಮರೀಚಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸೂರ್ಯನ ಕಿರಣದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ನೀಲನ ಭ್ರಮೆ, ಬಿಸಿಲುಕುದುರೆ. ಮರೀಚಿರಿವ "ಕನ್" (೫-೩-೯೬). "ಮಖ್ಯಾಹ್ಲಾಕಮರೀಚಿಕಾಸ್ವಿವ ಪಯಃಪೂರೋ ಯದಜ್ಞಾನತಃ ಕ್ವಂ ವಾಯುರ್ವಲನೋ ಜಲಂ ಕ್ಷಿತೀರಿತಿ ತ್ರೈಲೋಕ್ಯಮುನ್ಮೀಲತಿ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೧-೧.

**ಮರು ಮರು (ಪುಂ)** 1. ಮರುಪ್ರದೇಶ, ನೀರಿಲ್ಲದ ಪ್ರದೇಶ. ಫ್ರಿಯಂತೇಽತ್ರ ಪ್ರಾಣಿನಃ—ಮೃತ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೇ) "ಃ" (೩ಂ ೧-೭). 2. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. "ಮರುನಾ ಗಿರಿಧನ್ವನೋಃ" ಮೇದಿಂ. 3. ಕೆಂಪು ಗೋರಂಟಿಗಿಡ, ಕೆಂಪು ಹೊವಿನ ಮುಳ್ಳು, ಗೋರಂಟಿಗಿಡ. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 4. ದಶೇಶ ದೇಶ.

**ಮರುಜ ಮರುಜ (ಪುಂ)** ನಖಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಗಂಧದ್ರವ್ಯ.

**ಮರುತ್ ಮರುತ್ (ಪುಂ)** 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಮೃತ್ (ಪ್ರಾಣ-ತ್ಯಾಗೇ) "ಃ" (೩ಂ ೧-೯೪). "ಪರೀರೇಮಿರೇಽಭಿ-ಮುಖಮೇತ್ಯ ಸುಖಾಃ ಸುಹೃದಃ ಸಖಾಯಮಿವ ತಂ ಮರುತಃ" ಕಿರಾಂ ೬-೩. 2. ದೇವತೆ. "ವ್ಯಾಹೃತ್ಯ ಮರುತಾಂ ಪತ್ಯಾವಿತಿ ವಾಚಮವಸ್ಥಿತೇ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೩೭. 3. ವಾಯುದೇವತೆ. "ಇತಿ ದರ್ಶಿತವಿಕ್ರಿಯಂ ಸುತಂ ಮರುತಃ ಕೋಪಪರೀತಮಾನಸಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೨೫. 4. ಪ್ರಾಣವಾಯು. "ಅಂತಃಪರಾಣಾಂ ಮರುತಾಂ ನಿರೋಧಾನ್ನಿವಾತನಿಷ್ಕಾಂಪಮಿವ ಪ್ರದೀಪಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೪೮.

**ಮರುತ್ತನಯ ಮರುತ್ತನಯ (ಪುಂ)** 1. ಭೀಮಸೇನ. 2. ಅಂಜನೇಯ.

**ಮರುತ್ಪಥ ಮರುತ್ಪಥ (ಪುಂ)** ಆಕಾಶ.

**ಮರುಪುತ್ರ ಮರುತ್ಪುತ್ರ (ಪುಂ)** 1. ಭೀಮಸೇನ. 2. ಅಂಜನೇಯ. ಮರುತೋ ವಾಯೋಃ ಪುತ್ರಃ.

**ಮರುಪ್ಲವ ಮರುತ್ಪ್ಲವ (ಪುಂ)** ಸಿಂಹ.

**ಮರುತ್ವತ್ ಮರುತ್ವತ್ (ಪುಂ)** 1. ಇಂದ್ರ, ದೇವತೆಗಳ ಒಡೆಯ. ಮರುತಃ ಸಂತ್ಯಸ್ಯ "ಮರುತ್" (೫-೨-೯೪). "ವಿಭಿನ್ನಪರ್ಯಂತಗಮೀನಪಙ್ಕ್ತಯಃ ಪುರೋ ವಿಗಾಢಾಃ ಸಖಿಮಿ-ಮರುತ್ವತಃ" ಕಿರಾಂ ೮-೩೦. 2. ಅಂಜನೇಯ, ಹನುಮಂತ. (ವಿಂ) 3. ವಾಯುಸಹಿತವಾದ, ಗಾಳಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಬಭೌ ಮರುತ್ವಾನ್ ವಿಕೃತಃ ಸಮುದ್ರಃ ಬಭೌ ಮರುತ್ವಾನ್ ವಿಕೃತಃ ಸಮುದ್ರಃ" ಭಟ್ಟಿಂ ೧೦-೧೯.







ಮರ್ಯಲೋಕ ಮರ್ತ್ಯಲೋಕ (ಪುಂ) ಭೂಲೋಕ. ಮರ್ಯಾನಾಂ  
ಲೋಕಃ | "ಮರ್ಯಲೋಕೋ ಜೀವಲೋಕೋ ಮರ್ತೋಽಪಿ" ವೇಜಂ |

"ಕ್ಷೀಣೇ ಪುಣ್ಯೇ ಮರ್ಯಲೋಕಂ ವಿಶಂತಿ" ಗೀತಾ ೯-೨೧ |

"ಮರ್ಯಲೋಕದುರವಾಪಮವಾಪ್ತರಸೋದಯಮ್" ಮಾಘಂ ೧೩-೬೯ |

ಮರ್ದ ಮರ್ದ (ಪುಂ) 1. ಪುಡಿಮಾಡುವುದು. 2. ಉಜ್ಜು  
ವುದು. 3. ಹಿಂಸಿಸುವುದು. 4. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು.  
5. ಒತ್ತುವುದು. ಮೃದ (ಕ್ಷೋದೇ) "ಘ" (೩-೩-೧೮) |  
(ವಿಂ) 6. ಒತ್ತುವ. 7. ಪುಡಿಮಾಡುವ. 8. ಹಿಂಸಿಸುವ.  
9. ನಾಶಪಡಿಸುವ. 10. ಉಜ್ಜುವ, ತೀಡುವ, ತಿಕ್ಕುವ.

ಮರ್ದಕ ಮರ್ದಕ (ವಿಂ) "ಮರ್ದನ" ಪದದ (ವಿಂ) ಅರ್ಥ.  
ಮೃದ (ಕ್ಷೋದೇ) "ಘ" (೩-೩-೧೩೩) |

ಮರ್ದನ ಮರ್ದನ (ನಂ) 1. (ಕೈಕಾಲು ಮೊದಲಾದುವನ್ನು)  
ಒತ್ತುವಿಕೆ. ಮೃದ (ಕ್ಷೋದೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |  
2. ಚೂರ್ಣಮಾಡುವುದು, ಪುಡಿಮಾಡುವುದು. 3. ಉಜ್ಜು  
ವುದು, ತಿಕ್ಕುವುದು, ತೀಡುವುದು. 4. ಹಿಂಸಿಸುವುದು,  
ಹೀಡಿಸುವುದು, ಚಿತ್ರಹಿಂಸೆ ಕೊಡುವುದು. 5. ನಾಶಪಡಿಸು  
ವುದು, ಧ್ವಂಸಮಾಡುವುದು. (ವಿಂ) 6. ಪುಡಿಮಾಡುವ.  
7. ಉಜ್ಜುವ, ತಿಕ್ಕುವ. 8. ಹಿಂಸಿಸುವ, ಹೀಡಿಸುವ.  
9. ನಾಶಪಡಿಸುವ, ಧ್ವಂಸಮಾಡುವ. ಮೃದ "ಲ್ಯು:"  
(೩-೩-೧೩೪) | 10. ಒತ್ತುವ, ಹಿಂಸಿಸುವ. (ಪುಂ)  
11. ಮದ್ದಳೆ. "ಮಡ್ಡುಕೋ ಮರ್ದನೋ ಮೇಂದ್ರಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಮರ್ದನೀಯ ಮರ್ದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಒತ್ತಬೇಕಾದ,  
2. ಪುಡಿಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ನಾಶಪಡಿಸಬೇಕಾದ.  
4. ಹಿಂಸಿಸಬೇಕಾದ. 5. ಉಜ್ಜಬೇಕಾದ. 6. ಉಜ್ಜು  
ಲ್ಪಡುವ. 7. ಪುಡಿಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 8. ನಾಶಪಡಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. 9. ಒತ್ತಲ್ಪಡುವ. 10. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಡುವ.  
ಮೃದ (ಕ್ಷೋದೇ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೩-೯೬) | 11. ಒತ್ತಲು  
ಅರ್ಹವಾದ. 12. ಉಜ್ಜಲು ಅರ್ಹವಾದ. 13. ಪುಡಿ  
ಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 14. ಹಿಂಸಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ.  
15. ನಾಶಪಡಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. "ತವ್ಯಃ" | ಮರ್ದಿತವ್ಯಮ್  
ಮರ್ದಿತವ್ಯಮ್. ಮೃದ+ಞಿ "ಅನೀಯರ್" (೩-೩-೯೬) |  
ಮರ್ದಯಿತವ್ಯಮ್, ಮರ್ದನೀಯಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ ಹೇತು ಮತ್ತು  
ಪ್ರೇರಣಾರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ರೂಪಗಳು.

ಮರ್ದಯತ್ ಮರ್ದಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಒತ್ತಿಸುತ್ತಿರುವ.  
2. ಪುಡಿಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಹಿಂಸೆ ಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ.  
4. ನಾಶಪಡಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 5. ಉಜ್ಜಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. ಮೃದ (ಕ್ಷೋದೇ)+ಞಿ "ಶತ್" (೩-೩-೧೨೪) |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೩-೬) | -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

ಮರ್ದಯಿತ್ ಮರ್ದಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಉಜ್ಜಿಸುವ, ಹೀಡಿ  
ಸುವ. 2. ನಾಶಪಡಿಸುವ. 3. ಒತ್ತಿಸುವ, ಹಿಂಸಿಸು  
ವಂತೆ ಮಾಡುವ. 4. ಪುಡಿಮಾಡಿಸುವ. 5. ಹಿಂಸಿಸುವ.  
ಮೃದ (ಕ್ಷೋದೇ)+ಞಿ "ತು" (೩-೩-೧೩೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
"ಡೀಪ್" (೪-೩-೬) | -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

ಮರ್ದಲ ಮರ್ದಲ (ಪುಂ) ಮದ್ದಳೆಯೆಂಬ ಒಂದು ವಾದ್ಯ.  
ಮೃದಂಗ. ಮರ್ದಮುಪಮರ್ದೆ ಲಾತಿ-ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕಃ"  
(೩-೨-೩) | "ಕೃತಸಮಾಜಂತಮರ್ದಲಮಂಡಲಧ್ವನಿಜಯಾ ನಿಜಯಾ  
ಸ್ವನಸಂಪದಾ" ಮಾಘಂ ೬-೩೧ |

ಮರ್ದಿತ ಮರ್ದಿತ (ವಿಂ) 1. ಪುಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಹಿಂಸಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಉಜ್ಜಲ್ಪಟ್ಟ. 5.  
ಒತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ. ಮೃದ (ಕ್ಷೋದೇ)+ಞಿ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |  
6. ಅರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ.

ಮರ್ದಿಕೀಲ ಮರ್ದಿಕೀಲ (ಪುಂ) ಪತಿ, ಗಂಡ. ಮರ್ಮಣಿ  
ರಹಸ್ಯವಿಷಯ ಕೀಲ ಇವ |

ಮರ್ಮಣ ಮರ್ಮಣ (ವಿಂ) ಹೃದಯವನ್ನು ಭೇದಿಸುವ,  
ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ನೋವುಂಟುಮಾಡುವ. ಮರ್ಮ ಹಂತಿ-ಹನ  
(ಹಿಸಾಗತೋ) "ಕಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೪) |

ಮರ್ಮಚ್ಛಿದ್ ಮರ್ಮಚ್ಛಿದ್ (ವಿಂ) ಹೃದಯವನ್ನು ಕತ್ತರಿ  
ಸುವ. ಮರ್ಮ ಚಿನತಿ-ಚಿದಿರ್ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ಕ್ಷಿಪ್"  
(೩-೨-೬೧) |

ಮರ್ಮಚ್ಛೇದಿನ್ ಮರ್ಮಚ್ಛೇದಿನ್ (ವಿಂ) ಹೃದಯವನ್ನು  
ಕತ್ತರಿಸುವ. ಮರ್ಮ ಚಿನತಿ-ಚಿದಿರ್ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ)  
"ಞಿನಿ:" (೩-೨-೭೮) | "ಪ್ರಹರತಿ ವಿಧಿಮರ್ಮಚ್ಛೇದಿ ನ  
ಕೃಂತತಿ ಜೀವಿತಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೯-೧೨ |

ಮರ್ಮಜ ಮರ್ಮಜ (ವಿಂ) 1. ಮರ್ಮವನ್ನು ಅರಿತವನು,  
ಹೃದಯವನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ಹೃದಯದ ಅಳವನ್ನು ಬಲ್ಲ  
ವನು. ಮರ್ಮ ಜಾನಾತಿ-ಜಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕಃ"  
(೩-೨-೩) | 2. ರಹಸ್ಯವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿದವನು.  
"ತುಲ್ಯಾರ್ಥ ತುಲ್ಯಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಮರ್ಮಜಂ ವ್ಯವಸಾಯಿನಮ್ | ಅರ್ಧರಾಜ್ಯಹರಂ  
ಭೃತ್ಯಂ ಯೋ ನ ಹನ್ಯಾತ್ ಸ ಹನ್ಯತೇ" ಪञ್ಚತಂ ೧-೨೭೧ |  
3. ತತ್ತ್ವವನ್ನು ಅರಿತವನು. 4. ಅವಯವಗಳ ಸಂಧಿ  
ಸ್ಥಾನಗಳನ್ನು ತಿಳಿದವನು. "ತೇಷಾಮಾಪತತಾಂ ವೀರಃ ಶೀಘ್ರಂ  
ಪೂರ್ವಮಥೋ ದೃಢಮ್ | ಕ್ಷಿಪ್ರಾಸ್ತ್ರೋ ನ್ಯವಧಿತ್ ವ್ರಾತಾನ್ ಮರ್ಮಜೋ  
ಮರ್ಮಭೇದಿಭಿಃ" ಭಾಂ |

ಮರ್ಮತ್ರ ಮರ್ಮತ್ರ (ನಂ) ಕವಚ, ಅಂಗಿ. ಮರ್ಮ ತ್ರಾಯತೇ-  
ತ್ರೈಙ್ (ಪಾಲನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) |



**ಮರ್ಮನ್ ಮರ್ಮನ್** (ನಂ) 1. ಹೃದಯ, ಎದೆ, ಶರೀರ ದೊಳಗಿನ ಜೀವಸ್ಥಾನ, ಪ್ರಾಣಾಧಾರಸ್ಥಾನ. ಪ್ರಿಯತೇಜೇನ —ಮೃತ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೇ) “ಮನಿನ್” (ತಂ ೪-೧೪೫) । “ತಥೈವ ತೀವ್ರೋ ಹೃದಿ ಶೋಕಶಡ್‌ಕುರ್ಮರ್ಮಾಣಿ ಕೃಂತನಪಿ ಕಿಂ ನ ಸೋಢಃ” ತಂ ರಾಂ ೩-೩೫ । 2. ರಹಸ್ಯ, ಗುಟ್ಟು. 3. ಕಾವ್ಯದ ಸಾರ, ತಿರುಳು. ತತ್ತ್ವ, ಗೋಢಾರ್ಥ. “ನತ್ವಾ ಗಜ್ಞಾಧರಂ ಮರ್ಮಪ್ರಕಾಶಂ ತನುತೇ ಗುರುಮ್ । ರಸಗಜ್ಞಾಧರಮಣಿ-ರತಿಗುಣಾಥಂಸಂವಿಧೇ” ರಸಗಂ । 4. (ಇನ್ನೊಬ್ಬನ) ಅಶಕ್ತತೆ, ದೌರ್ಬಲ್ಯ. 5. (ಅವಯವಗಳ) ಕೀಲು, ಸಂದು, ಗಂಟು. 6. ಸತ್ಯ, ನಿಜ. 7. ಸ್ವರೂಪ, ತತ್ತ್ವ, ಯಾಥಾರ್ಥ. “ಮೃಗಯಾ ನ ವಿಗೀಯತೇ ನೃಪೇರಪಿ ಧರ್ಮಗಿಮರ್ಮಪಾರಗೈಃ” ನೈಷಂ ೨-೯ ।

**ಮರ್ಮಭಿದ್ ಮರ್ಮಭಿದ್** (ವಿಂ) 1. ಹೃದಯವನ್ನು ಭೇದಿಸುವ, ಎದೆಯನ್ನು ಸೀಳುವ. ಮರ್ಮ ಭಿನತ್ತಿ — ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೬೧) । “ಸುಕುಮಾರಮೇಕ-ಮಣು ಮರ್ಮಭಿದಾಮತಿರ್ದೂರಗಂ ಯುತಮಮೋಘತಯಾ” ಕಿರಾಂ ೬-೪೦ । 2. ರಹಸ್ಯವನ್ನು ಒಡೆಯುವ.

**ಮರ್ಮಭೇದ ಮರ್ಮಭೇದ** (ಪುಂ) 1. ಎದೆಯನ್ನು ಸೀಳುವುದು. 2. ರಹಸ್ಯವನ್ನು ಒಡೆಯುವುದು. 3. ಇತರನ ಹೃದಯದ ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ಹೊರಗೆಡಹುವುದು. ಮರ್ಮಣಃ ಭೇದಃ ।

**ಮರ್ಮಭೇದಕ ಮರ್ಮಭೇದಕ** (ವಿಂ) 1. ಹೃದಯವನ್ನು ಒಡೆಯುವ, ಎದೆಯನ್ನು ಸೀಳುವ. ಮರ್ಮ ಭಿನತ್ತಿ — ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) । 2. ರಹಸ್ಯವನ್ನು ಒಡೆಯುವ.

**ಮರ್ಮಭೇದನ ಮರ್ಮಭೇದನ** (ನಂ) 1. ಎದೆಯನ್ನು ಸೀಳುವುದು. 2. ರಹಸ್ಯವನ್ನು ಒಡೆಯುವುದು. ಮರ್ಮಣಃ ಭೇದನಮ್ । (ವಿಂ) 3. ಹೃದಯವನ್ನು ಭೇದಿಸುವ, ಎದೆಯನ್ನು ಸೀಳುವ. 4. ರಹಸ್ಯವನ್ನು ಒಡೆಯುವ, ಗುಟ್ಟನ್ನು ಹೊರಗೆಡಹುವ. ಮರ್ಮ ಭಿನತ್ತಿ — ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಮರ್ಮಭೇದಿನ್ ಮರ್ಮಭೇದಿನ್** (ವಿಂ) “ಮರ್ಮಭೇದನ” ಪದದ 3 ಮತ್ತು 4 ನೆಯ ಅರ್ಥ.

**ಮರ್ಮರ ಮರ್ಮರ** (ಪುಂ) 1. ಮರ್ಮರ ಶಬ್ದ, ತರಗಲೆಗಳ ಶಬ್ದ, ಗರಿಮುರಿಯಾದ ಬಟ್ಟೆಯ ಶಬ್ದ. “ಮದೋಢತಾಃ ಪ್ರತ್ಯನಿಲಂ ವಿವೇಕವನಸ್ಥಲೀರ್ಮರಪತ್ರಮೋಕ್ಷಾಃ” ಕುಮಾಂ ೩-೩೧ । 2. ಅಸ್ಪಷ್ಟ ಶಬ್ದ. 3. ಮೆಲುನುಡಿ, ಗೊಣಗಾಟ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರೀ -ರೀ. 4. ದೇವದಾರು ವೃಕ್ಷ. “ಮರ್ಮರೋ ವಸ್ತ್ರಪರ್ಣಾದಿ-ತ್ವನೇ ಸ್ತ್ರೀ ಪೀತದಾರುಣಿ” ಮೇಡಿಂ ।

**ಮರ್ಮರೀಕ ಮರ್ಮರೀಕ** (ಪುಂ) 1. ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. ಮೃತ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೇ) “ಇಕನ್” ಕ್ ಕ್ ಚ (ತಂ ೪-೬೦) । ನಿಪಾಂ । 2. ನೀಚ, ಅಧಮ.

**ಮರ್ಮವಿಡ್ ಮರ್ಮವಿಡ್** (ವಿಂ) “ಮರ್ಮಜ್ಞ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ವಿಡ (ಜ್ಞಾನೇ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೬೧) । -ವೇದಿನ್ -ವೇದಿನ್. ವಿಡ “ಣಿನಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಮರ್ಮಸ್ಥಲ ಮರ್ಮಸ್ಥಲ, -ಸ್ಥಾನ -ಸ್ಥಾನ** (ನಂ) ಹೃದಯ ಮೊದಲಾದ ಜೀವಾಧಾರಸ್ಥಾನ, ಅವಯವಗಳ ಸಂಧಿ ಸ್ಥಾನ, ಕೀಲು, ಸಂದು. ಮರ್ಮಣಃ ಸ್ಥಲಂ ಸ್ಥಾನಂ ವಾ ।

**ಮರ್ಮಸ್ಪೃಶ್ ಮರ್ಮಸ್ಪೃಶ್** (ವಿಂ) ಹೃದಯವನ್ನು ಮುಟ್ಟುವ, ಮರ್ಮವನ್ನು ಭೇದಿಸುವ, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ನೋವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ. ಮರ್ಮ ಸ್ಪೃಶತಿ — ಸ್ಪೃಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೇ) “ಕ್ವಿನ್” (೩-೨-೫೮) ।

**ಮರ್ಮವಿತ್ ಮರ್ಮವಿತ್** (ವಿಂ) ಹೃದಯ ಮೊದಲಾದ ಜೀವಸ್ಥಳಗಳನ್ನು ಭೇದಿಸುವ, ಮರ್ಮಸ್ಥಾನವನ್ನು ಕೊರೆಯುವ. ಮರ್ಮಾಣಿ ವಿಚ್ಯತಿ — ವಿಚ (ತಾಡನೇ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬) । ಪೂರ್ವಪದಸ್ಯ ದೀರ್ಘಃ (೬-೩-೧೧೬) । “ಪರಸ್ಯ ಮರ್ಮವಿಧಮುಜ್ಜತಾಂ ನಿಜಂ ದ್ವಿಜಿಹ್ವತಾದೋಷಮಜಿಹ್ವಾಗಾಮಿಭಿಃ” ಮಾಘಂ ೧-೬೩ । ಮರ್ಮವಿತ್ ಮರ್ಮವಿಧೌ ಮರ್ಮವಿಧಃ ।

**ಮರ್ಯಾ ಮರ್ಯಾ** (ಅವ್ಯಂ) ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ. [ಈ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗವೂ ಉಂಟೆಂದು ಕೆಲವರ .]

**ಮರ್ಯಾದಾ ಮರ್ಯಾದಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮರ್ಯಾದೆ, ನ್ಯಾಯ ವಾದ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿರುವುದು, ಯೋಗ್ಯರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಇರುವುದು. ಮರ್ಯಾ ಸೀಮಾ ತತ್ರ ದೀಯತೇ — ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) “ಅಡ್” (೩-೩-೧೦೬) । “ಆಃ ತಾತಾಪವಾದಿನ್, ಭಿನ್ನಮರ್ಯಾದಿ ಅಪಿ ಹಿ ನಾಮ ಪ್ರಗಲ್ಬಸೇ” ತಂ ರಾಂ ೫ । 2. ಸೀಮೆ, ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ. ಇದು ದೇಶರೂಪಮರ್ಯಾದೆ. 3. ಅವಧಿ, ಗಡು, ವಾಯಿದೆ. ಇದು ಕಾಲರೂಪಮರ್ಯಾದೆ. 4. ಕಡಲ ದಡ, ಸಮುದ್ರದ ತೀರ. “ಸ್ತಮ್ಭಿ ಸ್ತಮ್ಭಿರ್ಮಹೋದಧಿಃ । ಕುಲೇಽಸ್ಯ ಮರ್ಯಾದಾ” ವೈಜಂ ।

**ಮರ್ಶ ಮರ್ಶ** (ಪುಂ) ಆಲೋಚನೆ, ಸಾವಧಾನವಾಗಿ ವಿಚಾರ ಮಾಡುವುದು. ಮೃಶ (ಆಮರ್ಶನೇ) ಭಾವೇ “ಫಲ್” (೩-೩-೧೮) ।

**ಮರ್ಶನ ಮರ್ಶನ** (ನಂ) 1. ಆಲೋಚಿಸುವುದು, ವಿಮರ್ಶಿಸುವುದು, ದೀರ್ಘಕಾಲ ವಿಚಾರಮಾಡುವುದು. ಮೃಶ (ಆಮರ್ಶನೇ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಉಜ್ಜುವುದು, ತಿಕ್ಕುವುದು. 3. ವಿವರಿಸುವುದು, ವಿವರವಾಗಿ ತಿಳಿಸುವುದು.



ಮರ್ಘ ಮರ್ಘ (ಪುಂ) 1. ಸಹನೆ, ತಾಳ್ಮೆ. ಮೃಘ (ತಿದಿತಕ್ಷಾಯಾಮ್) "ಘ್" (3-3-18) 2. ಕ್ಷಮೆ.

ಮರ್ಘಕ ಮರ್ಘಕ (ವಿಂ) 1. ಸಹಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ. 2. ಕ್ಷಮಿಸುವ. ಮೃಘ (ತಿದಿತಕ್ಷಾಯಾಮ್) "ಘ್" (3-1-133) 1.

ಮರ್ಘಣ ಮರ್ಘಣ (ನಂ) 1. ಕ್ಷಾಂತಿ, ಸಹನೆ, ತಾಳ್ಮೆ. ಮೃಘ (ತಿದಿತಕ್ಷಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) 2. ದರ್ಪಣ. ವ್ಯಭಿಚಾರ. "ನ ಚಾಪ್ಯಧರ್ಮೋ ನ ಸುಹೃದ್ಭಿರ್ದೇವೇನ ಪರಸ್ವಹಾರೇ ಪರದಾರಮರ್ಘಣೇ" ಭಾಂ. ವನಂ 314-29. (ವಿಂ) 3. ಕ್ಷಮಿಸುವ. 4. ಸಹಿಸುವ. ಮೃಘ + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (3-1-134) 1. "ಇದಂ ಪವಿತ್ರಂ ಪರಮೇಶವೇಷ್ಠಿತಂ ಯಶಸ್ಯಮಾಯುಷ್ಯಮಧೌಷಮರ್ಘಣಮ್" ಭಾಗಂ 4-9-61.

ಮರ್ಘಣೀಯ ಮರ್ಘಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಕ್ಷಮಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಸಹಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ಕ್ಷಮಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 5. ಕ್ಷಮಿಸಬೇಕಾದ. ಮೃಘ (ಸಹನೆ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) 1. "ತವ್ಯ:" (3-1-96) 1. ಮರ್ಘಿತವ್ಯ: ಮರ್ಘಿತವ್ಯ: ಮೃಘ + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" ಮರ್ಘಣೀಯ: ಮರ್ಘಣೀಯ: ಮೃಘ + ಣಿಚ್ "ತವ್ಯ:" (3-1-96) 1. ಮರ್ಘಯಿತವ್ಯ: ಮರ್ಘಯಿತವ್ಯ: "ಮನುಜಸ್ಯ ತದರ್ಚನೇ ವಿಗಾಯನ್ ಮತಿಹೀನ: ಪಶುರೇಷ ಮರ್ಘಣೀಯ:" ಯಾದಂ 14-62.

ಮರ್ಘಯತ್ ಮರ್ಘಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಕ್ಷಮಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಸಹಿಸುತ್ತಿರುವ. ಮೃಘ (ತಿದಿತಕ್ಷಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (4-1-6) 1. -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

ಮರ್ಘಯಿತ್ ಮರ್ಘಯಿತ್ (ವಿಂ) 1. ಕ್ಷಮಿಸುವವನು. 2. ಸಹಿಸುವವನು. ಮೃಘ (ತಿದಿತಕ್ಷಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ತೃಚ್" (3-1-133) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (4-1-6) 1. -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

ಮರ್ಘಿತ ಮರ್ಘಿತ (ನಂ) 1. ಸಹಿಸುವುದು, ತಾಳುವುದು. 2. ಕ್ಷಮಿಸುವುದು. ಮೃಘ (ಸಹನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114) 1. (ವಿಂ) 3. ಸಹಿಸುವವನು, ತಾಳ್ಮೆಯಿಂದಿರುವವನು. ಮೃಘ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-4-92) 1. 4. ಕ್ಷಮಿಸುವವನು, ಕ್ಷಮೆಯಿಂದ ಕೊಡುವವನು. 5. ಸಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಾಳಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಕ್ಷಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಮೃಘ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102) 1.

ಮರ್ಘಿನ್ ಮರ್ಘಿನ್ (ವಿಂ) ತಾಳ್ಮೆಯುಳ್ಳವನು, ಸೈರಣೆಯುಳ್ಳವನು. ಮರ್ಘಿನ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114) 1.

ಮಲ ಮಲ (ಪುಂ) 1. ದೇಹದೊಳಗಿನ ಮತ್ತು ಹೊರಗಿನ ಮಲ, ಶರೀರದೊಳಗಿನ ಮತ್ತು ಮೇಲಿನ ಕೊಳೆ. ಮಲ

(ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (3-1-134) 1. ದೇಹದೊಳಗಿನ ಮತ್ತು ಮೇಲಿನ ಕೊಳೆ 12 ವಿಧ. 12 ವಿಧ ಮಲಗಳು:

(1) ಕೊಬ್ಬು, (2) ಶುಕ್ರಧಾತು (ವೀರ್ಯ), (3) ರಕ್ತ, (4) ಮಜ್ಜೆ, (5) ಮೂತ್ರ, (6) ವಿಷ್ಣು (ಪುರೀಷ), (7) ಕಿವಿಯ ಕೊಳೆ (ಗುಗ್ಗಿ), (8) ಸಿಂಬಳ, (9) ಶ್ಲೇಷ್ಮ (ಕಫ), (10) ಕಣ್ಣೀರು, (11) ನೇತ್ರಮಲ (ಕಣ್ಣಿನ ಪಿಸುರು) ಮತ್ತು (12) ಸ್ವೇದ (ಬೆವರು). ಮನುಂ 4-134. 2. ಕೊಳೆ, ಕಶ್ಮಲ, ಧೂಳಿ. "ಛಾಯಾ ನ ಮುಚ್ಛಂತಿ ಮಲೋಪಹತಪ್ರಸಾದೇ ಶುದ್ಧೇ ತು ದರ್ಪಣತಲೇ ಸುಲಭಾವಕಾಶಾ" ಶಾಕುಂ 9-32. 3. ಪುರೀಷ, ವಿಷ್ಣು, ಹಿಕ್ಕೆ, ಸಗಣೆ. 4. ಪಾಪ, ಪಾತಕ. "ಪಶ್ಚಿಮಾಂ ತು ಸಮಾಸೀನೋ ಮಲಂ ಹಂತಿ ದಿವಾಕೃತಮ್" ಮನುಂ 2-102. 5. ಲೋಹದ ಕೊಳೆ, ಕಿಲುಬು. 6. ಕಪೂರ. 7. ವಾತ ಪಿತ್ತ ಮತ್ತು ಕಫ. 8. ಕಂಚು. "ಘಟಾಸ್ವನಂ ಭೂರಿಲೋಹಂ ರವಣಂ ಲೋಹಜಂ ಮಲಮ್" ವೈಜಂ 1. 9. ಚೀಳಿನ ಬಾಲದ ಕೊಂಡಿ. "ವೃಶ್ಚಿಕೇ ತ್ವಾಲ್ಯಲಿಢ್ಢಾಣಾ ಮಲಂ ತತ್ಪುಚ್ಛಕಢ್ಢಕ:" ವೈಜಂ 1. (ವಿಂ) 10. ಕೃಪಣ, ಜಿಪ್ಪಣ. "ಮಲೋಽಸ್ತರಿ ಪಾಪವಿಡ್ಕಿಡ್ ಕೃಪಣತ್ವಮಿಧೇಯವತ್" ಮೇದಿಂ 1. 11. ದುಷ್ಟವಾದ, ದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಮಲಜನ ಮಲಜನ (ಪುಂ) 1. ಬೂರುಗದ ಮರ. (ವಿಂ) 2. ಮಲವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ, ಕೊಳೆಯನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. 3. ಪಾಪವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. ಮಲಂ ಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಡಕ್" (3-2-43) 1. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜನಿ -ಜ್ನೀ. ನಾಗದಮನಿ ಗಿಡ.

ಮಲಜ ಮಲಜ (ನಂ) ಕೀವು. ಮಲಾಜ್ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಮವಿ) "ಡ:" (3-2-97) 1.

ಮಲದ್ವಪಿತ ಮಲದ್ವಪಿತ (ವಿಂ) ಮಲಿನವಾದ, ಮಾಸಿದ. ಮಲೇನ ದ್ವಪಿತಮ್.

ಮಲನ ಮಲನ (ಪುಂ) 1. ಪಟವಾಸ, ವಸ್ತ್ರಗೃಹ. ಡೇರೆ. ಮಲತೇ ಧಾರಯತಿ ವೃಷ್ಟಿತಾಪಿ - ಮಲ (ಧಾರಣೆ) "ಲ್ಯು:" (3-1-134) 1. (ನಂ) 2. ಆರೆಯುವುದು, ಮರ್ದಿಸುವುದು, ಪುಡಿಮಾಡುವುದು. ಮಲ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) 1. "ಮಲನ: ಪಟವಾಸೇ ನಾ ಮರ್ದನೇ ತು ನಪುಂಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ 1.

ಮಲಪ್ಪ ಮಲಪ್ಪ (ಪುಂ) ಕಲ್ಪತ್ತಿಗಿಡ, ಬ್ರಹ್ಮಮೇಡಿ. ಮಲಂ ಮಲಸ್ಥಾನಂ ಪುನಾತಿ - ಪ್ಪ (ಪವನೇ) "ಕ್ವಿವರ್" (3-2-96) 1.

ಮಲಭುಜ್ ಮಲಭುಜ್ (ಪುಂ) ವಾಯುಸ, ಕಾಗೆ.

ಮಲಮಾಸ ಮಲಮಾಸ (ಪುಂ) ಅಧಿಕಮಾಸ, ಸಂಕ್ರಮಣ ವಿಲ್ಲದ ಚಾಂದ್ರಮಾಸ, ಶೂನ್ಯಮಾಸ. ಮಲೋ ದೃಷ್ಟೋ ಮಾಸ: 1.



ಎರಡು ಅಮಾವಾಸ್ಯೆಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಸೂರ್ಯಸಂಕ್ರಮಣವು ಇಲ್ಲದ ಮಾಸವು ಮಲಮಾಸ. "ಅಮಾವಾಸ್ಯಾಢ್ಯಂ ಯತ್ರ ರವಿಸಂಕ್ರಾಂತಿವರ್ಜಿತಮ್ | ಮಲಮಾಸಃ ಸ ವಿಶೇಷಃ" | ಮಲ ಮಾಸದಲ್ಲಿ ಶುಭಕಾರ್ಯವು ನಿಷಿದ್ಧ. "ಅಧಿಮಾಸೇ ವಿವಾಹಂ ಯಾತ್ರಾಂ ಚೂಡಾಂ ತಥೋಪನಯನಾದಿ | ಕುರ್ಯಾನ್ನಿ ಸಾವಕಾಶಂ ಮಾಙ್ಗಲ್ಯಂ ನ ತು ವಿಶೇಷೇಜ್ಯಾಮ್" |

**ಮಲಯ ಮಲಯ** (ಪುಂ) 1. ಮಲಯಪರ್ವತ, ಭಾರತ ದೇಶದ ದಕ್ಷಿಣ ಘಾಟಿನಲ್ಲಿ ದಕ್ಷಿಣದಿಕ್ಕಿನ ಒಂದು ಪರ್ವತ. ಮಲ (ಧಾರಣೆ) "ಕಯನ್" (ಠಂ ೪-೯೯) | "ದಿನಮುಖಾನ್ ರವಿಹಿಮನಿಗ್ರಹೇವಿಮಲಯನ್ ಮಲಯಂ ನಗಮತ್ಯಜತ್" ರಘುಂ ೯-೨೪ | ಇದು ಜಂಬೂದ್ವೀಪದ ಸಪ್ತಕುಲಪರ್ವತಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. 2. ಮಲಯ ಪರ್ವತದ ಸಮೀಪದ ಒಂದು ದೇಶ, ಮಲೆಯಾಳ ಸೀಮೆ. 3. ಬೆಟ್ಟದ ಒಂದು ಭಾಗ. 4. ಆರಾಮ, ಉದ್ಯಾನವನ. 5. ನಂದನವನ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಯಾ-ಯಾ. 6. ಕೆಂಪುತಿಗಡೆ. "ಮಲಯಃ ಪರ್ವತಾಂತರೇ | ಶಿಲಾಂಶೇ ದೇಶ ಆರಾಮೇ ತ್ರಿವೃತಾಃ ತು ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ | "ಉಚಾನೇ ಮಲಯಂ ನಾ ತು ಗಿರ್ಯಾಶಗಿರಿಭೇದಯೋಃ" ವೈಜಂ | ಎಂದು ವೈಜಯಂತಿಯಲ್ಲಿ ಉದ್ಯಾನವನದ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ನಪುಂಸಕಲಿಂಗವಾಗಿ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ.

**ಮಲಯಜ ಮಲಯಜ** (ಪುಂ) 1. ಚಂದನ ವೃಕ್ಷ, ಗಂಧದ ಮರ. ಮಲಯೇ ಜಾತಃ—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಮವಿ) "ಃ" (೩-೧-೯೭) | 2. ಮಲಯಪರ್ವತದ ಗಾಳಿ, ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನಿಂದ ಬೀಸುವ ಗಾಳಿ. (ವಿಂ) 3. ಮಲಯಾಳ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

**ಮಲಯಪರ್ವತ ಮಲಯಪರ್ವತ, -ಅಚಲ -ಅಜಲ, -ಅದ್ರಿ -ಅದ್ರಿ** (ಪುಂ) ಮಲಯಪರ್ವತ, ಭಾರತದೇಶ ದಲ್ಲಿ ದಕ್ಷಿಣದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಬೆಟ್ಟ.

**ಮಲಯಾನಿಲ ಮಲಯಾನಿಲ, -ಮಾರುತ -ಮಾರುತ, -ವಾತ -ವಾತ, -ಸಮೀರ -ಸಮೀರ** (ಪುಂ) ಮಲಯ ಪರ್ವತದ ಗಾಳಿ, ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನಿಂದ ಬೀಸುವ ವಸಂತ ಕಾಲದ ಗಾಳಿ. "ಲಲಿತಲವಂಜಲತಾಪರಿಶೀಲನಕೋಮಲ-ಮಲಯಸಮೀರೇ" ಗೀತಗೋಂ ೧ | ಮಲಯಮಾರುತವು ಎರಹಗಳಿಗೆ ಕಾಮವೇದನೆಯನ್ನು ಹೆಚ್ಚು ಸುವುದೆಂದು ಕವಿಸಮಯಿಸಿದ್ದು. "ಸ ಏವ ಸುರಭಿಃ ಕಾಲಃ ಸ ಏವ ಮಲಯಾನಿಲಃ | ಸೇವಯಮಬಲಾ ಕಿಂತು ಮನೋಽಯದಿವ ದೃಶ್ಯತೇ" ಸಾಂ ೬೦ |

**ಮಲಯ ಮಲಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಲ್ಪತ್ತಿಗಡ, ಬ್ರಹ್ಮಮೇಡಿ. ಮಲಪು: ಪೃಷೋಂ |

**ಮಲಾಕಾ ಮಲಾಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಮುಕಿ, ಕಾಮಾತುರ ವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. 2. ದೂತಿ. 3. ಹೆಣ್ಣು ಆನೆ. ಮಲ (ಧಾರಣೆ) "ಆಕಃ" (ಠಂ ೪-೧೪) |

**ಮಲಿನ್ ಮಲಿನ್** (ವಿಂ) 1. ದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 2. ಕೊಳಕಾಗಿರುವ. 3. ಪಾಪವುಳ್ಳ. ಮಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಛಿನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) |

**ಮಲಿನ ಮಲಿನ** (ನಂ) 1 ಜಲ, ನೀರು. ಮಲ "ಛಿನಿ" (೪-೨-೧೧೪) | "ಸಲಿಲಂ ಮಲಿನಂ ತೀಯಂ ಮಹಲಂ ಮೇಘಜಂ ಕತಮ್" ವೈಜಂ | (ವಿಂ) 2. ಮಾಸಿದ, ಕೊಳೆಯಾದ, ದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಮಲಿನಂ ರಣರೇಣುಭಿರ್ಮುಹುರ್ವಿಷತಾಂ ಖಾಲಿತಮಜ್ಜನಾಶ್ರುಮಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೬-೬೨ | 3. ದೂಷಿತ ವಾದ, ಕೆಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಪ್ರಕಾಶವಿಲ್ಲದ, ಕಾಂತಿಹೀನ ವಾದ. "ಮಲಿನಮಪಿ ಹಿಮಾಂಶೋಲಕಮ ಲಕ್ಷ್ಮೀಂ ತನೋತಿ" ಶಾಕುಂ ೧-೨೦ | 5. ನಿಕ್ಕಷ್ಟ, ಕೆಳದರ್ಜೆಯ. "ದ್ರುತಿಮಗ್ರ-ಹೀತ್ ಗ್ರಹಗಣೋ ಲಘವಃ ಪ್ರಕಟಿಭವಂತಿ ಮಲಿನಾಶ್ರಯತಃ" ಮಾಘಂ ೯-೨೩ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಾ -ನಾ, -ನೀ -ನೀ. 6. ರಜಸ್ವಲೆ, ಮತುಮತಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು. "ರಜಸ್ವಲಾ ಚ ಮಲಿನಾ ಸ್ತ್ರೀರ್ಧರ್ಮಿಣ್ಯತುಮತ್ಯಪಿ" ವೈಜಂ | "ಮಲಿನೀ ರಜಸ್ವಲಾಯಾಮ್ ಎಂದು ಈಕಾರಾಂತವಾಗಿ ಹೇಮಂ |

**ಮಲಿನತಾ ಮಲಿನತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೊಳೆಯಾಗಿರುವಿಕೆ. ಮಲಿನಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) | 2. ನೀಚತನ, ನಿಕ್ಕಷ್ಟತೆ. "ತ್ವಃ" | ಮಲಿನತ್ವಮ್ ಮಲಿನತ್ವಮ್.

**ಮಲಿನಮುಖ ಮಲಿನಮುಖ** (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ. 2. ಗೋಲಾಂಗೂಲ, ಹಸುವಿನ ಬಾಲದಂತೆ ಬಾಲವುಳ್ಳ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ವಾನರ. (ವಿಂ) 3. ಕ್ರೂರ. "ಮಲಿನಮುಖೋಽಗ್ನಿ ಗೋಲಾಙ್ಗುಲೇ ಪುಂಸಿ ತ್ರಿಷು ಕ್ರೂರೇ" ಮೇದಿಂ | 4. ಕಪ್ಪುಮುಖ ವುಳ್ಳ, ಮಾಸಿದ ಮುಖವುಳ್ಳ.

**ಮಲಿನಿಮನ್ ಮಲಿನಿಮನ್** (ಪುಂ) 1. ಮಾಲಿನ್ಯ, ಕೊಳೆ. ಮಲಿನಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಛಿನಿ" (೪-೧-೧೨೨) | 2. ಕಪ್ಪು, ಮಾಸಲು ಕಪ್ಪು. "ಗುಣವದಾಶ್ರಯಲಂಘಗುಣೋದಯೇ ಮಲಿನಿ-ಮಾಲಿನಿ ಮಾಧವಯೋಷಿತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೬-೪ |

**ಮಲಿನೀಕರಣ ಮಲಿನೀಕರಣ** (ನಂ) ಕೊಳೆಯಾಗಿ ಮಾಡು ವುದು, ಹೊಲಸಾಗಿ ಮಾಡುವುದು, ಕಪ್ಪಾಗಿ ಮಾಡು ವುದು.

**ಮಲಿನೀಕೃತ ಮಲಿನೀಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ಕೊಳೆಯಾಗಿ ಮಾಡ ಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಕಪ್ಪಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಳೆಗಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಮಲಿಮ್ಲುಚ ಮಲಿಮ್ಲುಚ** (ಪುಂ) 1. ಜೋರೆ, ಕಳ್ಳ. ಮಲಿ ಸನ್ ಮಲೋವತಿ ಗಚ್ಛತಿ — ಮ್ಲುಚು (ಗತೌ) "ಕಃ"



(ವಾಂ ೩-೨-೪) । “ನ ಪರೇಷು ಮಹೋಜಸಃ ಕಲಾಪಕುರ್ವಂತಿ  
ಮಲಿಮ್ಲುಚಾ ಇವ” ಮಾಘಂ ೧೬-೪೨ । 2. ಮಶಕ, ಸೊಳ್ಳೆ.  
“ಮಲಿಮ್ಲುಚಾಸ್ತು ಮಶಕಾ ಬಮ್ಮರೀಲಿ ತು ಮಕ್ಷಿಕಾ” ವೈಜಂ ।  
3. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 4. ಅಧಿಕಮಾಸ, ಮಲಮಾಸ. “ಮಲಿ-  
ಮ್ಲುಚೋ ಮಾಸಮೇದೇ ಚೋರಜ್ವಲನಯೋಃ ಪುಮಾನ್” ಮೇದಿಂ । 5.  
ವಾಯು, ಗಾಳಿ. “ಮಲಿಮ್ಲುಚಸ್ತು ತಸ್ಕರೇ । ವಾತೇ” ಹೇಮಂ ।  
6. ಪಂಚ ಮಹಾಯಜ್ಞಗಳನ್ನು ಮಾಡದೆ ಬಿಟ್ಟವನು.  
“ಯಜ್ಞತ್ಯಾಗೀ ವೃಥಾಜಾತೋಽಪಚಯಜ್ಞೋ ಮಲಿಮ್ಲುಚಃ” ವೈಜಂ ।

**ಮಲಿಷಾ ಮಲಿಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಜಸ್ವಲಿ, ಮುತುಮತಿಯಾದ  
ಹೆಂಗಸು. ಅತಿಶಯೇನ ಮಲಿನಿ “ಇಠನ್” (೪-೩-೪೪) ।  
“ಮಲಿಷಾ ಸರಜಾಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಮಲಿಮಸ ಮಲಿಮಸ** (ವಿಂ) 1. ಮಲಿನವಾಗಿರುವ,  
ಕಪ್ಪಾಗಿರುವ. ಮಲೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇಮಸಚ್” (೪-೨-೧೧೪) ।  
“ಋತೇ ರವೇಃ ಕಾಲಯಿತುಂ ಕ್ಷಮೇತ ಕಃ ಕ್ಷಪಾತಮಸ್ಕಾಂಡಮಲಿಮಸಂ  
ನಮಃ” ಮಾಘಂ ೧-೩೮ । 2. ಕಳಂಕದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ದೋಷ  
ದಿಂದ ಕೂಡಿದ. “ಮಾ ತೇ ಮಲಿಮಸವಿಕಾರಘನಾ ಮತಿಭೂತ್”  
ಮಾಲತೀಂ ೧-೩೪ । 3. ನೀಚವಾದ, ಕ್ಷುದ್ರವಾದ, ನಿಂದ್ಯ  
ವಾದ. “ಪಠಃ ಶ್ರುತೇರ್ದರ್ಶಯಿತಾರ ಇಶ್ವರಾ ಮಲಿಮಸಾಮಾದದತೇ  
ನ ಪದ್ಧತಿಮ್” ರಘುಂ ೩-೪೬ । (ನಂ) 4. ಕಪ್ಪಿಣ.  
5. ಮೈಲುತುತ್ತ. 6. ಗಂಧಕಾಮ್ಲವಣ. “ಮಲಿಮಸಂ  
ಪುನಃಪುಷ್ಪಕಾಸೀಸೇ ಮಲಿನಾಯಸೋಃ” ಹೇಮಂ । ಮೇದಿನೀಕೋಶ  
ದಲ್ಲಿ ಪುಂಲಿಂಗವೆಂದು ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. “ಮಲಿಮಸಸ್ತು ಮಲಿನೇ  
ಪುಷ್ಪಕಾಸೀಸಲೋಹಯೋಃ” ಮೇದಿಂ ।

**ಮಲ ಮಲ್ಲ** (ಪುಂ) 1. ಜಟ್ಟಿ, ಬಾಹುಬಲವನ್ನು ಪ್ರದರ್ಶಿಸಿ  
ಯುದ್ಧಮಾಡಬಲ್ಲವನು. ಮಲ್ಲ (ಧಾರಣೆ) “ಅಚ್”  
(೩-೧-೧೩೪) । “ಸುರಾಧಿಪಾಧಿಷ್ಠಿತಹಸ್ತಿಮಲ್ಲಲಿಲಾಂ ದಧೌ  
ರಾಜತಗಂಧಕೇಶಲಃ” ಮಾಘಂ ೪-೧೩ । 2. ಕುಡಿಯುವ  
ಪಾತ್ರೆ. 3. ಕಪೋಲ, ಕೆನ್ನೆ. 4. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು.  
“ಮಲ್ಲಃ ಪಾತ್ರೇ ಕಪೋಲೇ ಚ ಮತ್ಸ್ಯಮೇದೇ ಬಲೀಯಸಿ” ಮೇದಿಂ ।  
5. ಬಲಶಾಲಿಯಾದ ಮನುಷ್ಯ. 6. ಜಾತಿಭ್ರಷ್ಟನಾದ  
ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಂದ ಕ್ಷತ್ರಿಯಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು.  
“ಲಿಚ್ಛಿವಂ ಕ್ಷತ್ರಿಯಾ ವ್ರಾತಯಾತ್ ಜಲಂ ಸಾ ವಿಪ್ರಪೂವಿಕಾ ।  
ವ್ರಾತಯಾತ್ ತು ಸಾ ಮಲ್ಲಂ ಕ್ಷತ್ರಿಯಾ ತು ಸಾ ನಟಮ್” ವೈಜಂ ।  
7. ಒಂದು ದೇಶ. (ನಂ) 8. ಭದ್ರ, ಮಂಗಳ, ಶುಭ.  
“ಭದ್ರಂ ಮಲ್ಲಂ ಶಿವಂ ತಥಾ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಮಲ್ಲಕ ಮಲ್ಲಕ** (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೀಪಸ್ತಂಭ. ಮಲ್ಯತೇ  
ಧಿಯತೇತ್ವ—ಮಲ್ಲ (ಧಾರಣೆ) “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) ।  
2. ದೀಪ. 3. ದನ್ತ, ಹಲ್ಲು. 4. ತೆಂಗಿನ ಚಿಟ್ಟಿನಿಂದ  
ಮಾಡಿದ ಬಟ್ಟಲು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಲಿಕಾ—ಲಿಕಾ.

**ಮಲ್ಲಜ ಮಲ್ಲಜ** (ನಂ) ಮೆಣಸು. ಮಲ್ಲೇ ಮಲ್ಲದೇಶೋ ಜಾಯತೇ  
—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಮದಿ) “ಛಃ” (೩-೧-೧೭) ।

**ಮಲ್ಲತುಯ ಮಲ್ಲತುಯ** (ನಂ) ಜಟ್ಟಿಗಳು ಬಾರಿಸುವ  
ಒಂದು ವಾದ್ಯ, ತುತ್ತೂರಿ ನಗಾರಿ ಮೊದಲಾದುವು.

**ಮಲ್ಲನಾಗ ಮಲ್ಲನಾಗ** (ಪುಂ) 1. ವಾತ್ಸ್ಯಾಯನ ಮುಷಿ.  
2. ಇಂದ್ರನ ಆನೆ, ಐರಾವತ. ಮಲ್ಲೋ ಬಲಿಷ್ಠೋ ನಾಗಃ ।  
3. ವಾರ್ತಾಪತ್ರಗಳನ್ನು ಒಯ್ಯುವವನು, ಲೇಖಕಾರ.  
4. ಒಂದು ಕಾಮಶಾಸ್ತ್ರ ಗ್ರಂಥ. “ಲೇಖಹಾರೆ ಮಲ್ಲನಾಗೋ  
ವಾತ್ಸ್ಯಾಯನಸುರೇಮಯೋಃ” ಹೇಮಂ ।

**ಮಲ್ಲಭೂ ಮಲ್ಲಭೂ, -ಭೂಮಿ -ಭೂಮಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಟ್ಟಿ  
ಗಳ ಕಾಳಗದ ಭೂಮಿ, ಜಟ್ಟಿಗಳ ಯುದ್ಧಕ್ಷೇತ್ರ. ಮಲ್ಲಾನಾಂ  
ಭೂಃ ಭೂಮಿರ್ವಾ ।

**ಮಲ್ಲಯುದ್ಧ ಮಲ್ಲಯುದ್ಧ** (ನಂ) ಕುಸ್ತಿ, ಜಟ್ಟಿಗಳ ಕಾಳಗ.  
ಮಲ್ಲಾನಾಂ ಯುದ್ಧಮ್ ।

**ಮಲ್ಲಶಾಲಾ ಮಲ್ಲಶಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರಡಿಮನೆ.

**ಮಲ್ಲಿಕ ಮಲ್ಲಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಹಂಸದ ಒಂದು ಭೇದ, ಕಂದು  
ಬಣ್ಣದ ಕೊಕ್ಕು ಮತ್ತು ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳ ಹಂಸ. ಮಲ್ಯತೇ  
ಧಾರ್ಯತೇತೌ — ಮಲ್ಲ (ಧಾರಣೆ) “ಇನ್” (೩ಂ ೪-೧೧೭) ।  
ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಕಾ—ಕಾ. 2. ಮಲ್ಲಿಗೆ  
ಗಿಡ. “ವನೇಷು ಸಾಯಂತನಮಲ್ಲಿಕಾನಾಂ ವಿಜೃಂಭಣೋದ್ಗಾಂಧಿಷು  
ಕುಡ್ಭಮಲೇಷು” ರಘುಂ ೧೬-೪೭ । 3. ಮಲ್ಲಿಗೆ ಹೂವು.  
“ಸ್ನಾನಾದ್ರಮುಕ್ತೇಷ್ವನುಧೂಪವಾಸಂ ವಿನ್ಯಸ್ತಸಾಯಂತನಮಲ್ಲಿಕೇಷು”  
ರಘುಂ ೧೬-೪೦ । 4. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. 5. ಮೃತ್ಪಾತ್ರೆ,  
ಮಣ್ಣಿನ ಪಾತ್ರೆ. “ಮಲ್ಲಿಕೋ ಹಂಸಮಿಥ್ಯಪಿ । ಮಲ್ಲಿಕಾ  
ತೃಣಶೂನ್ಯೇಽಪಿ ಮೀನಮೃತ್ಪಾತ್ರಭೇದಯೋಃ” ಮೇದಿಂ । 6. ಪಾನ  
ಪಾತ್ರೆ, ಕುಡಿಯುವ ಪಾತ್ರೆ.

**ಮಲ್ಲಿಕಾಕ್ಷ ಮಲ್ಲಿಕಾಕ್ಷ** (ಪುಂ) ಕಂದುಬಣ್ಣದ ಕೊಕ್ಕು  
ಮತ್ತು ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳ ಹಂಸ. ಮಲ್ಲಿಕಾಪುಷ್ಪಮಿವ ಅಕ್ಷಿಣಿ  
ಯಸ್ಯ “ಅಚ್” (೪-೪-೭೬) । “ಏತಸ್ಮಿನ್ಮದಕಲಮಲ್ಲಿಕಾಕ್ಷ-  
ಪಕ್ಷವ್ಯಾಧೂತಸ್ತುರ್ದುರ್ದೃಢಪುಂಡರೀಕಾಃ” ೩ಂ ರಾಂ ೧-೩೧ ।

**ಮಲ್ಲಿಕಾಪ್ಯ ಮಲ್ಲಿಕಾಪ್ಯ** (ಪುಂ) ಕಂದುಬಣ್ಣದ ಕೊಕ್ಕು  
ಮತ್ತು ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳ ಹಂಸ. ಮಲ್ಲಿಕ ಇತ್ಯಾಪ್ಯಾ ಅಸ್ಯ ।

**ಮಲ್ಲಿ ಮಲ್ಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಲ್ಲಿಗೆ ಗಿಡ. ಮಲ್ಲ (ಧಾರಣೆ)  
“ಇನ್” (೩ಂ ೪-೧೧೭) । “ಮಲ್ಲಿಂ ಚೂತವನಾದಿವ ಸ್ನುಹಿವನೇ  
ಮ್ಲೇಚ್ಛೇನ ಸಂಸ್ಥಾಪಿತಾಮ್” ಚಂ ರಾಂ । 2. ಬೇಯಿಸುವ  
ಪಾತ್ರೆ.

**ಮಲ್ಲಿಕರ ಮಲ್ಲಿಕರ** (ಪುಂ) ಚೋರ, ಕಳ್ಳ.



ಮವಿತ ಮವಿತ (ವಿಂ) ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಮವ (ಬಂಧನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) ।

ಮಶ ಮಶ (ಪುಂ) 1. ಸೊಳ್ಳೆ. 2. ಕೋಪ, ಸಿಟ್ಟು.

ಮಶಕ ಮಶಕ (ಪುಂ) 1. ಸೊಳ್ಳೆ. ಮಶ (ಶಬ್ದ ರೋಕೃತೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । ಸಂಜ್ಞಾ "ಕನ್" (೪-೩-೭೪) ।

"ತುದನ್ಯಾಮತ್ವಂ ದಂಶಾ: ಮಶಕಾ ಮತ್ಕುಣಾದಯ: । ರುದನ್ತಂ ವಿಗತಜ್ಞಾನಂ ಕ್ರಮಯ: ಕ್ರಮಿಕಂ ಯಥಾ" भाग० ३-३१-२७ ।

2. ನೀರು ತುಂಬುವ ತೊಗಲಿನ ಚೀಲ. 3. ಒಂದು ಚರ್ಮರೋಗ. "ಮಶಕ: ಕ್ಷುದ್ರಜನ್ತುಭೇದಯೋ:" ಹೇಮಂ ।

ಮಶಕಹರೀ ಮಶಕಹರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೊಳ್ಳೆ ಪರದೆ.

ಮಶಕಿನ್ ಮಶಕಿನ್ (ಪುಂ) ಉದಂಬರವೃಕ್ಷ, ಅತ್ತಿವರ.

ಮಶಕಾ: ಸನ್ತಯಸ್ಮಿನ್ "ಛಿನ್:" (೪-೨-೧೧೪) ।

ಮಶಿ ಮಶಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಾಯಿ, ಮಶಿ.

ಮಶುನ ಮಶುನ (ಪುಂ) ಶ್ವಾನ, ನಾಯಿ.

ಮಷಿ ಮಷಿ, -ಷಿ-ಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಾಯಿ, ಮಶಿ. ಮಷ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಛಿನ್" (೩-೪-೧೧೭) । ವಾ "ಛಿಷ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೪) ।

ಮಷಿಧಾನ ಮಷಿಧಾನ (ನಂ) ಮಸಿಯ ಕುಡಿಕೆ, ದಾತಿ.

ಮಷಿ ಧೀಯತೇಜ — ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭) । "ಛಿಷ್" (೪-೧-೧೪) — ಧಾನಿ — ಧಾನೀ ಎಂದು ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗದ ರೂಪವೂ ಇದೇ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಉಂಟು.

ಮಸ ಮಸ (ಪುಂ) ಅಳತೆ, ಪರಿಮಾಣ.

ಮಸನ ಮಸನ (ನಂ) 1. ಅಳತೆ, ತೂಕ. 2. ಬಾಹುಜಿಗೆ ಗಿಡ.

ಮಸಾರ ಮಸಾರ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರನೀಲಮಣಿ. ಮಸಂ ಪರಿಮಾಣಂ ಕ್ಷುಚ್ಛತಿ — ಕ್ಷ (ಗತೀ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) । "ಮಸಾರ-ತಾರಾಕ್ಷಿ ಸಸಾರಮಾತ್ಮನಾ ತನೋಷಿ ಸಂಸಾರಮಸಂಶಯಂ ಯತ:" ನೈಷಂ ೧-೧೦೪ ।

ಮಸಿ ಮಸಿ, ಮಸಿ ಮಸಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಸಿ, ಶಾಯಿ. ಮಸ್ಯತಿ — ಮಸಿ (ಪರಿಣಾಮೆ) "ಛಿನ್" (೩-೪-೧೧೭) । ವಾ "ಛಿಷ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೪) । "ವರ್ಣಿಕಾ ಮಸಿ ಮಸಿರ್ನಾ" ಎಂದು ತ್ರಿಕಾಂಡಶೇಷದಲ್ಲಿ ಇಕಾರಾಂತ ಶಬ್ದವು ಪುಲಿಂಗ ವೆಂದೂ ಈಕಾರಾಂತವು ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗವೆಂದೂ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. 2. ದೀಪದ ಕಪ್ಪು, ಕಾಡಿಗೆ.

ಮಸಿ(ಸಿ)ಧಾನ ಮಸಿ(ಸಿ)ಧಾನ (ನಂ) ಮಸಿಯ ಕುಡಿಕೆ, ದಾತಿ. ಮಸಿ(ಸಿ) ಧೀಯತೇಜ — ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣ-ಪೋಷಣಯೋ:) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭) ।

ಮಸಿ(ಸಿ)ಧಾನಿ ಮಸಿ(ಸಿ)ಧಾನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಸಿಯ ಕುಡಿಕೆ, ದಾತಿ. ಮಸಿ: ಧಾನಿ ।

ಮಸಿ(ಸಿ)ಪಣ್ಯ ಮಸಿ(ಸಿ)ಪಣ್ಯ (ಪುಂ) ಗುಮಾಸ್ತೆ, ಲೇಖಕ, ಬರವಣಿಗೆಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಮಸಿ: ಪಣ್ಯಮಸ್ಯ ।

ಮಸಿ(ಸಿ)ಪ್ರಸು ಮಸಿ(ಸಿ)ಪ್ರಸೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲೇಖಿನಿ, ಮಸಿಯನ್ನು ತುಂಬುವ ಕೊಳವೆ, ಮಸಿಯನ್ನು ಹೊರಕ್ಕೆ ತರುವ ಕೊಳವೆಯ ಲೇಖಿನಿ (Fountain pen).

ಮಸಿ(ಸಿ)ಭಾಜನ ಮಸಿ(ಸಿ)ಭಾಜನ (ನಂ) ಮಸಿಯ ಕುಡಿಕೆ, ದಾತಿ. ಮಸಿಭಾಜನಮ್ ।

ಮಸು(ಸು)ರ ಮಸು(ಸು)ರ (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಡುಕಡಲೆ. ಮಸ್ಯತಿ — ಮಸಿ (ಪರಿಣಾಮೆ) "ಛಿನ್" (೩-೪-೧೧೭) । "ಛಿನ್" (೩-೪-೧೧೭) । "ಮಸುರಸ್ತು ಮಸುರಕ:" । ಮಜ್ಜಲ್ಯಂ ಪೃಥುಸೂಪ್ಯಶ್ಚ" ವೈಜಂ । 2. ಮೆಶೆ, ಸೊಳ್ಳೆ. (ಪುಂ) 3. ತಲೆದಿಂಬು. ಸ್ತ್ರೀಯಾ ಮಸುರಾ ಮಸುರಾ, ಮಸುರಾ ಮಸುರಾ. "ಮಸುರಾ ಮಸುರಾ ವಾನಾ ವೇಶ್ಯಾ ವ್ರಿಹಿಪ್ರಭೇದಯೋ: । ಉಪಧಾನೇ ಪುನ: ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ । "ಮಸುರೋ ಮಸುರೋಽಪಿ ಚ । ಮಸುರಾ ಚ ಮಸುರಾ ಚ ಚತ್ವಾರ: ಪಞ್ಚಯೋಷಿತಿ । ತಥಾ ವ್ರಿಹಿವಿಶೇಷೇ ಚ" ಹೇಮಂ ।

ಮಸುರಕ ಮಸುರಕ (ಪುಂ) 1. ತಲೆದಿಂಬು. 2. ಕಾಡು ಕಡಲೆ. "ಮಸುರಸ್ತು ಮಸುರಕ:" ವೈಜಂ ।

ಮಸುರಿಕಾ ಮಸುರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೊಳ್ಳೆ ಪರದೆ, ಸೊಳ್ಳೆ ತರೆ. "ದಂಶಾಶ್ಚ ಮಶಕಾಶ್ಚೈವ ವರ್ಷಿಕಾಲೇ ನಿವಾರಯೇತ್ । ಮಸುರಿಕಾಭಿ: ಪ್ರಾವೃತ್ಯ ಮಂಜಶಾಯಿನಮವ್ಯುತಮ್" ಪಾಠಪುಂ । 2. ತಲೆಹಿಡಕೆ, ಕುಂಟುಗಿತ್ತಿ. 3. ಕಾಡುಕಡಲೆ. 4. ಸಿಡುಬುರೋಗ. "ಮಜ್ಜಲ್ಯಂ ಪೃಥುಸೂಪ್ಯಶ್ಚ ವ್ರಿಹಿವಿಶೇಷೇ ಮಸುರಿಕಾ" ವೈಜಂ ।

ಮಸುರೋ ಮಸುರೋ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೆಂಪುತಿಗಡೆ ಮರ. 2. ಸಿಡುಬುರೋಗ. "ಮಸುರೋ ಕ್ಷುದ್ರರೋಗೇ ಸ್ಯಾದುಪಧಾನೇ ಪುನ: ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ ।

ಮಸುಣ ಮಸುಣ (ವಿಂ) 1. ಸ್ನಿಗ್ಧವಾದ, ಜಿಡ್ಡಾಗಿರುವ. ಸಮುಣೋತಿ — ಕ್ಷು (ಗತೀ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೪) । ಪೃಷಂ । 2. ನಯುವಾದ, ನುಣುಪಾದ. "ಅಯಂ ಬಾಹು: ಕಂಠೇ ಶಿಶಿರಮಸುಣೋ ಮೌಕ್ತಿಕಸರ:" ಉಂ ರಾಂ ೧-೩೮ । 3. ಮೃದುವಾದ, ಮೆತ್ತಾಗಿರುವ, ಕೋಮಲವಾದ, ಕಠಿನವಲ್ಲದ. "ಕರುಣಾಮಸುಣೇ: ಕರಾಕ್ಷಪಾತೇ: ಕುರು ಮಾಮಿವ ಕೃತಾರ್ಥ-ಸಾರ್ಥವಾಹಮ್" । 4. ಅನುರಾಗದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಪ್ರೇಮಪೂರ್ಣವಾದ. "ಮಸುಣಮುಹುಲಿತಾನಾಂ ಪ್ರಾಂತವಿಸ್ತಾರಭಾಜಾಮ್"



ಮಾಲತೀಂ ೧-೩೦ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಣಾ -ಱಾ. 5. ಅಗಸೇಗಿಡ.  
 "ಮಸೃಜೋಷಕರ್ಕಶೇ ಸ್ನಿಗ್ಧೇ ತ್ರಿಷುಮಾಢಾಂ ತು ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ |  
 ಮಸ್ಕರ ಮಸ್ಕುರ (ಪುಂ) 1. ಎಂಶ, ಬಿದಿರು. ಮಸ್ಕತೇಜೇನ—  
 ಮಸ್ಕ (ಗತೌ) "ಅರ:" ಬಾಹುಂ | 2. ಟೊಳ್ಳು, ಬೊಂಬು,  
 ಒಳಗೆ ಪೊಟಿಯಾಗಿರುವ ಬಿದಿರು. 3. ಜ್ಞಾನ. 4.  
 ಗಮನ, ಚಲನೆ.  
 ಮಸ್ಕರಿನ್ ಮಸ್ಕುರಿನ್ (ಪುಂ) ಯತಿ, ಸಂನ್ಯಾಸಿ, ಭಿಕ್ಷು.  
 ಮಸ್ಕರೋ ವೇಣುರಸ್ಯಾಸ್ತಿ— "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) |  
 ಮಸ್ಕರೋ ಜ್ಞಾನಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ ಇತಿ ವಾ "ಇನಿ:" (೬-೧-೧೪೪) |  
 ನಿಪಾಂ |  
 ಮಸ್ತ ಮಸ್ತು (ನಂ) ಶಿರಸ್ಸು, ತಲೆ. ಮಸ್ತೇ ಸ್ಮ—ಮಸೀ  
 (ಪರಿಣಾಮೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |  
 ಮಸ್ತಕ ಮಸ್ತಕ (ಪುಂ) 1. ಶಿರಸ್ಸು, ತಲೆ. ಮಸ್ತ ಸ್ವಾರ್ಥ  
 "ಕ:" (೪-೪-೪) | "ಅತಿಲೋಮಾಭಿಮುತಸ್ಯ ಚಕ್ರಂ ಭ್ರಮತಿ  
 ಮಸ್ತಕೇ" ಪಂಚತಂ ೪-೨೨ | 2. ಶಿಖರ, ತುದಿ. "ನ  
 ಸಸತ್ವೇಶು ಗತೇಶು ನ ಗಂಚನ್ನಾಪಿ ಚ ಸ್ಥಿತ:" | ನ ನದೀತೀರ-  
 ಮಾಸಾಢ್ಯ ನ ಚ ಪರ್ವತಮಸ್ತಕೇ" ಮನುಂ ೪-೪೭ |  
 ಮಸ್ತಕಜ್ವರ ಮಸ್ತಕಜ್ವರ (ಪುಂ) ತಲೆಶೂಲೆ, ತಲೆನೋವು.  
 ಮಸ್ತಕಸ್ನೇಹ ಮಸ್ತಕಸ್ನೇಹ (ಪುಂ) ಮಿದುಳು, ಮಸ್ತಿಷ್ಕ.  
 ಮಸ್ತಿಷ್ಕ ಮಸ್ತಿಷ್ಕ (ನಂ) ತಲೆಯಲ್ಲಿರುವ ಸ್ನೇಹ,  
 ಮಿದುಳು. ಮಸೀ (ಪರಿಣಾಮೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) |  
 ಮಸ್ತಿ ಮಸ್ತೇ—ಮಸ್ಕ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |  
 ಪೃಷಂ | "ಮಸ್ತಿಷ್ಕಾನ್ವವಸಾಭಿಪೂರಿತಮಹಾಮಾಸಾಹುತೀ-  
 ಜುಹ್ವತಾಮ್" ಪ್ರಬೋಧಂ ೩-೧೩ |  
 ಮಸ್ತು ಮಸ್ತು (ನಂ) ಮೊಸರಿನ ಮೇಲಿನ ಕೆನೆ. ಮಸೀ  
 (ಪರಿಣಾಮೇ) "ತುನ್" (೩ಂ ೧-೬೯) | "ಅಥ ಮಸ್ತು  
 ಪ್ರಾಪಾಟೋ ದಧಿಮಂಡಕೇ" ವೇಜಂ |  
 ಮಸ್ತುಲುಙ್ಗ ಮಸ್ತುಲುಂಗ (ಪುಂ) 1. ಮಿದುಳು, ತಲೆ  
 ಯಲ್ಲಿರುವ ಸ್ನೇಹ. (ನಂ) 2. ಮೊಸರಿನ ಮೇಲಿನ ಕೆನೆ.  
 "ಮಸ್ತುಲುಙ್ಗ: ಶಿರ:ಸ್ನೇಹೇ ನ ಸ್ತ್ರೀ ಕಲೀ ದಧಿಮಂಡಕೇ" ವೇಜಂ |  
 ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" | -ಲುಙ್ಗಕ: -ಲುಂಗಕ:  
 ಮಹ ಮಹ (ಪುಂ) 1. ಉತ್ಸವ, ಹಬ್ಬ, ಸಂತೋಷದ ಕಾರ್ಯ.  
 ಮಹತಿ—ಮಹ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |  
 "ನ ಖಲು ದೂರಗತೋಽಪ್ಯತಿವರ್ತತೇ ಮಹಮಸಾವಿತಿ ಬನ್ಧುತಯೋದಿತೆ:"  
 ಮಾಘಂ ೬-೧೯ | 2. ತೇಜಸ್ಸು, ಕಾಂತಿ, ಪ್ರಭೆ. 3. ಯಜ್ಞ.  
 4. ಮಹಿಷ, ಎಮ್ಮೆ. "ಮಹ ಉತ್ಸವತೇಜಸೋ:" ಮೇದಿಂ |  
 ಮಹತ್ ಮಹತ್ (ಪುಂ) 1. ದರ್ಶನಕಾರರು ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುವ  
 ತತ್ತ್ವಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ಮಹತ್ತ್ವತ್ತ್ವ. ["ತತ್ವ" ಪದದಲ್ಲಿ

ನೋಡಿ.] "ಅನ್ಯಾ ತು ಪ್ರಕೃತೇವಿಭಜ್ಯ ಪುರುಷಸ್ಯೋದಾಹರಂತೀ  
 ಮಿದಾಂ ತತ್ತ್ವಾನಾಂ ಗಣನಾಪರಾ ಮಹದಹಂಕಾರಾದಿಸರ್ಗಕ್ರಮೇ:"  
 ಪ್ರಬೋಧಂ ೬-೨೧ | (ನಂ) 2. ರಾಜ್ಯ, ಅಧಿಪತ್ಯ.  
 "ಮಹದ್ರಾಜ್ಯವಿಶಾಲಯೋ:" ವೇಜಂ | 3. ಬ್ರಹ್ಮ. "ಶ್ರುತೇನ  
 ಶ್ರೋತ್ರಿಯೋ ಭವತಿ ತಪಸಾ ವಿಂದತೇ ಮಹತ್" ಮಾಂ ವನಂ  
 ೩೧೪-೪೦ | (ವಿಂ) "ಮಹತ್" ಶಬ್ದದ ಪುಂಲಿಂಗರೂಪ.  
 ಮಹಾನ್ ಮಹಾಂತೋ ಮಹಾಂತ: | ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗದ ರೂಪ:  
 ಮಹತೀ ಮಹತ್ಯೋ ಮಹತ್ಯ: | ಸಪುಂಸಕಲಿಂಗದ ರೂಪ:  
 ಮಹತ್ ಮಹತೀ ಮಹಾಂತಿ | (4) ದೊಡ್ಡದಾದ (ಆಕಾರದಲ್ಲಿ).  
 "ಮಹತಾ ಮತ್ಪ್ರಯುಕ್ತೇನ ವಜ್ರೇಣ ಜ್ವಲಿತಾತ್ಮನಾ" ಯಾದಂ  
 ೧೬-೩೩ | 4. (ಕ) ದೊಡ್ಡದಾದ (ವಿಸ್ತಾರದಲ್ಲಿ).  
 "ಮಹತೋ ದೈತ್ಯನಗರಾತ್ ನಿರಗಾನ್ವರಕಾಸುರ:" ಯಾದಂ ೧೬-೭೮ |  
 ಕರ್ಮಧಾರೆಯ ಮತ್ತು ಬಹುವ್ರೀಹಿಸಮಾಸಗಳಲ್ಲಿ  
 "ಮಹತ್" ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಆ ಕಾರವು ಅಂತಾದೇಶವಾಗಿ ಬರುವುದು.  
 ಕರ್ಮಧಾರೆಯ: "ಮಹಾಗಜಾನಾಂ ಗುಣಮಿಸ್ತು  
 ಗಜಿತೆ:" ಕುಮಾಂ ೧೪-೪೨ | ಬಹುವ್ರೀಹಿ: "ಮಹಾತ್ಮಾನೋಽ-  
 ನುಗೃಹ್ಣಂತಿ ಭಜಮಾನಾನ್ ರಿಪೂನಪಿ" ಮಾಘಂ ೨-೧೦೪ |  
 "ಮಹಾನುಭಾವಾ ಹಿ ನಿತಾಂತಮರ್ಶಿನ:" ಮಾಘಂ ೧-೧೭ |  
 5. ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ, ಹೇರಳವಾದ. "ಮಹತ:  
 ಕುಕುರಾನ್ವಕದ್ವಿಮಾನತಿಮಾತ್ರಂ ದವವದ್ವಹಪಿ" ಮಾಘಂ ೧೬-೭೯ |  
 "ಮಹತಾಪ್ಯರ್ಥಸಾರೇಣ ಯೋ ವಿಶ್ವಾಸಿಸತಿ ಶತ್ರುಷು | ಭಾರ್ಯಾಸು ಚ  
 ವಿರಕ್ತಾಸು ತದಂತಂ ತಸ್ಯ ಜೀವಿತಮ್" ಪಂಚತಂ ೨-೪೮ |  
 6. ಉತ್ತಮವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ಕೃಷ್ಟವಾದ.  
 "ಮಹತೇ ಫಲಾಯ ತದವೇಕ್ಷ್ಯ ಶಿವಂ ವಿಕಸನ್ನಿಮಿತ್ತಕುಸುಮಂ ಸ  
 ಪುರ:" ಕಿರಾಂ ೬-೨೮ | 7. ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ, ಪ್ರಖ್ಯಾತ  
 ವಾದ, ಕೀರ್ತಿಶಾಲಿಯಾದ. "ಸದನಾಗತಸೂದನಾಪವಾದೋ  
 ಮಹತಾಂ ಸಂಪ್ರತಿ ಮಾ ಚ ಭೂದಯಂ ವ:" ಯಾದಂ ೧೪-೮೧ |  
 8. ದೊಡ್ಡವನಾದ, (ಗುಣದಲ್ಲಿ) ಹಿರಿಯನಾದ, ಸತ್ಪುರುಷ  
 ವಾದ, ಶಾಸ್ತ್ರಪಾರಂಗತನಾದ. "ತರ್ಕೋಪ್ರತಿಷ್ಠ: ಶ್ರುತಯೋ  
 ವಿಭಿನ್ನಾ: ನೈಕೋ ಮುನಿರ್ಯಸ್ಯ ಮತಂ ಪ್ರಮಾಣಮ್ | ಧರ್ಮಸ್ಯ ತತ್ತ್ವಂ  
 ನಿಹಿತಂ ಗುಹಾಢಾಂ ಮಹಾಜನೋ ಯೇನ ಗತ: ಸ ಪನ್ಥಾ:" ಮಾಂ ವನಂ  
 ೩೧೩-೧೧೭ | 9. ಮುಖ್ಯವಾದ, ಪ್ರಧಾನವಾದ.  
 10. ಪೂಜ್ಯ, ಗೌರವಾರ್ಹ. "ಮಹತಸ್ತರಸಾ ವಿಲಕ್ಷಯನ್ನಿಜ-  
 ದೋಷೇಣ ಕುಘೀವಿನಶ್ಯತಿ" ಮಾಘಂ ೧೬-೩೪ | "ಮಹತೀ  
 ಮೇದಿನೀ ದೀನಂ ನಿಜಾಙ್ಕೇ ಪತಿಸತಂ ಸುತಮ್" ಯಾದಂ ೧೬-೧೦೯ |  
 11. ಅಧಿಕವಾದ, ಸಹಿಸಲಶಕ್ತವಾದ, ತಾಳಲಾರದ.  
 "ಮಹದಪಿ ಪರದು:ಖಂ ಶೀತಲಂ ಸಮ್ಯಗಾಹು: ಪ್ರಣಯಮಗಣಯಿತ್ವಾ  
 ಯನ್ಮಮಾಪದ್ಗತಸ್ಯ" ವಿಕ್ರಂ ೪-೨೭ | 12. ಉನ್ನತವಾದ,  
 ಎತ್ತರವಾದ. "ಮಹಾಂತೋ ಮಂಡಲಂ ವೇರ್ಮಧ್ಯೇ ಪ್ರತಿಬಲಂ



ದ್ವಿಪಾ: "ಯಾದಂ ೨೨-೧೦೮ | 13. ಗಟ್ಟಿಯಾದ, ಎತ್ತರದ (ದೃಢ, ಶಬ್ದ). "ಮಹಾಸ್ವನ: ಸೈನ್ಯವಿಮದಸಂಭವ: ಕರ್ಣಾಂತಿ-ಕೂಲಕ್ಷತಾಮುಪೇಯಿವಾನ್" ಕುಮಾಂ ೧೪-೩೨ | 14. ಬಹು (ಮೂಲ್ಯದ) ಹೆಚ್ಚು (ಬೆಲೆಬಾಳುವ). "ಮಹಾಹಂಶಯಾ-ಪರಿವರ್ತನಚ್ಯುತ: ಸ್ವಕೇಶಪುಷ್ಪೇರಪಿ ಯಾ ಸ್ಮ ದ್ವಯತೆ" ಕುಮಾಂ ೪-೧೨ | "ಮಹತೀಮುಪದಾಂ ತೇಷಾಂ ದ್ವಿಪರತನಾದಿಶಾಲಿನೀಮ್" ಯಾದಂ ೨೨-೧೮೯ | 15. ಮಂದವಾದ, ದಟ್ಟವಾದ, ಸಾಂದ್ರವಾದ, ನಿಬಿಡವಾದ. 16. ದೀರ್ಘವಾದ, ಉದ್ದವಾದ. "ನಿಡ್ವೆಂದೋ ಹಿ ಮಹಾಬಾಹೋ ಸುಖಂ ಬನ್ಧಾತ್ ಪ್ರಮುಚ್ಯತೆ" ಗೀತಾ ೪-೩ | 17. ಬಲಿಷ್ಠ, ಹೆಚ್ಚು ಪರಾಕ್ರಮವುಳ್ಳವನು. "ಮಹದ್ವಿ: ಸ್ಪರ್ಧಮಾನಸ್ಯ ವಿಪದೇವ ಗರೀಯಸೀ" ಪञ्ಚತಂ ೧-೪೦೪ | 18. ಅಧಿಕವಾದ, ಅತಿಶಯವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. "ಮಹೋಜಸೋ ಮಾನಧನಾ ಧನಾಚಿತಾ ಧನುರ್ಮತ: ಸಂಯತಿ ಲಬ್ಧಕೀರ್ತಯ:" ಕಿರಾಂ ೧-೧೯ | 19. ಹಿರಿಯನಾದ, (ಮಹಿಮೆಯಲ್ಲಿ) ಎಲ್ಲರಿಗಿಂತಲೂ ದೊಡ್ಡವನಾದ. "ನ ವರ್ತಮ ಕಸ್ತನೇಚಿದಪಿ ಪ್ರದೀಯತಾಮಿತಿ ವ್ರತಂ ಮೇ ವಿಹಿತಂ ಮಹರ್ಷಿಣಾ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೧೪ | 20. ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. (ಪರಿಮಾಣದಲ್ಲಿ). "ನ ಮಹಾನಪಿ ಭೂತಿಮಿಚ್ಛತಾ ಫಲ-ಸಂಪತ್ಪ್ರವಣ: ಪರಿಕ್ಷಯ:" ಕಿರಾಂ ೨-೮ |

**ಮಹತೀ ಮಹತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ನಾರದರ ವೀಣೆ. "ಸ್ಕುತೀಭವದ್-ಗ್ರಾಮವಿಶೇಷಮುಚ್ಛೇದನಾಮವೇಕ್ಷಮಾಣಂ ಮಹತೀಂ ಮುಹುರ್ಮುಹುರ:" ಮಾಘಂ ೧-೧೦ | 2. ಒಂದು ವಿಧ ವೀಣೆ. 3. ಹೆಗ್ಗುಳ್ಳದ ಗಿಡ.

**ಮಹತೀದ್ವಾದಶೀ ಮಹತೀದ್ವಾದಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಶ್ರವಣದ್ವಾದಶಿ, ಭಾದ್ರಪದಮಾಸದಲ್ಲಿ ಶ್ರವಣನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ ಕೂಡಿದ ದ್ವಾದಶಿ. ಮಹತೀತಿ ಪ್ರಖ್ಯಾತಾ ದ್ವಾದಶೀ | "ಮಾಸಿ ಭಾದ್ರಪದೇ ಶುಕ್ಲೇ ದ್ವಾದಶೀ ಶ್ರವಣಾನ್ವಿತಾ | ಮಹತೀ ದ್ವಾದಶೀ ಜೇಯಾ ಉಪವಾಸೇ ಮಹಾಫಲಾ" |

**ಮಹತ್ತರ ಮಹತ್ತರ (ನಂ)** "ಮಹತ್" ಪದದ 1 ನೆಯ ಅರ್ಥ.

**ಮಹತ್ತರ ಮಹತ್ತರ (ವಿಂ)** 1. ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ದೊಡ್ಡದಾದ ಒಂದು, ಹೆಚ್ಚು ಉದ್ದವಾದ, ಹೆಚ್ಚು ದಪ್ಪವಾದ. ಅಯಮನಯೋರತಿಶಯೇನ ಮಹಾನ್—ಮಹತ್ "ತರಪ್" (೪-೩-೪೭) | "ದಕ್ಷಿಣ ಭೃಗುದುರ್ದಶಿ ಸರ್ವದೇವೈರಭಿಷ್ಠಿತಮ್ | ಅಣಿಯಾಸಮಗುಮ್ಯಶ್ಚ ಬೃಹದ್ವಿಶ್ವಶ್ಚ ಮಹತ್ತರಮ್" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೨೦೨-೬೬ | 2. ದೊಡ್ಡವನು, ಹಿರಿಯವನು. "ರಘುಕುಲ-ಮಹತ್ತರಾಣಾಂ ವಘು:" ತಂ ರಾಂ ೪ | 3. ಪ್ರಧಾನ, ಮುಖ್ಯ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೪) | -ತರೀ -ತರೀ.

**ಮಹತ್ತರೀ ಮಹತ್ತರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಶೀರ್ವಾದ ಮತ್ತು ಸ್ವಸ್ತಿವಾಚನಗಳನ್ನು ಬಲ್ಲ ವೃದ್ಧ ಹೆಂಗಸು. "ಆಶೀ: ಸ್ವಸ್ತಿಯನಾಭಿಜ್ಞಾ ಯಾ ವೃದ್ಧಾ ಸಾ ಮಹತ್ತರೀ" ವೇಜಂ |

**ಮಹತ್ವ ಮಹತ್ವ (ನಂ)** 1. ಉತ್ಕರ್ಷ, ಹಿರಿಮೆ, ದೊಡ್ಡತನ, ಘನತೆ. ಮಹತೋ ಭಾವ: "ತ್ವ:" (೪-೧-೧೧೯) | "ಮಹತ್ವಯೋಗಾಯ ಮಹಾಮಹಿಮ್ನಾಮಾರಾಧನೀಂ ತಾಂ ನೃಪ ದೇವತಾನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೨೩ | 2. ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ. "ಜನಶ್ಚ ಶೂದ್ರೋಽಪಿ ಮಹತ್ವಮೀಯಾತ್" ರಾಮಾಂ |

**ಮಹನೀಯ ಮಹನೀಯ (ವಿಂ)** ಪೂಜ್ಯನಾದ, ಮಾನ್ಯನಾದ, ಗೌರವಾರ್ಹ, ಗಣ್ಯ. ಮಹತೇ—ಮಹ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | "ಇತ್ಯಂ ವ್ರತಂ ಧಾರಯತ: ಪ್ರಜಾರ್ಥಂ ಸಮಂ ಮಹಿಷ್ಯಾ ಮಹನೀಯಕೀರ್ತೆ:" ರಘುಂ ೨-೨೪ |

**ಮಹರ್ ಮಹರ್ (ಅವ್ಯಂ)** ಸ್ವರ್ಲೋಕ ಮತ್ತು ಜನೋಲೋಕಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಇರುವ ಒಂದು ಲೋಕ, ಭೂರಾದಿ ಸಪ್ತಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಲೋಕ. "ಸ್ವಮಹಶ್ಚ ಕ್ರಮಾಲೋಕಾ: ಮಹರೇವ ಮಹಾನಪಿ | ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯೋ ಜನಸ್ತಸ್ಮಾತ್ ಗೋಲೋಕಸ್ತು ತಪೋ ನ ಪುಮ್" ವೇಜಂ |

**ಮಹಲೋಕ ಮಹಲೋಕ (ಪುಂ)** "ಮಹರ್" ಪದ ನೋಡಿ. "ಭೂಮಿ: ಸ್ವಮಹಶ್ಚೈವ ಜನಶ್ಚ ತಪ ಏವ ಚ | ಸತ್ಯಲೋಕಶ್ಚ ಸತ್ಯೇತೆ ಲೋಕಾಸ್ತು ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾ:" | ಚತುರ್ಮುಖ ಬ್ರಹ್ಮನ ಹಗಲಿನ (ದಿನದ) ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಭೂರಾದಿ ಮೂರು ಲೋಕಗಳೂ ದಗ್ಧವಾಗುವವು. ಆಗ ಆ ತಾಪವನ್ನು ತಡೆಯಲಾರದೆ ಮಹಲೋಕವಾಸಿಗಳು ಜನೋಲೋಕಕ್ಕೆ ತೆರಳುವರು. "ಚತುರ್ಮುಖದಿನಸ್ಯಾಂತೇ ಜಗದೇತಚ್ಚರಾಚರಮ್ | ತದಾ ಹಿ ದಹ್ಯತೇ ಸರ್ವೆ ತ್ರಿಲೋಕ್ಯಂ ಭೂಮಿವಾದಿಕಮ್ | ಜನಂ ಪ್ರಯಾಂತಿ ತಾಪಾರ್ತಾ ಮಹಲೋಕನಿವಾಸಿನ:" |

**ಮಹರ್ಷಿ ಮಹರ್ಷಿ (ಪುಂ)** ದೊಡ್ಡ ಋಷಿ, ಪ್ರಭಾವಶಾಲಿಯಾದ ಋಷಿ, ಹೆಚ್ಚು ಮಹಿಮೆಯುಳ್ಳ ಋಷಿ. ಮಹಾಶ್ವಾಸೋ ಹೃಷಿಶ್ಚ | ವೇದವ್ಯಾಸ ಮೊದಲಾದವರು ಮಹರ್ಷಿಗಳು. "ಇತಿ ಬ್ರಹ್ಮಣೇನ ಮಹೇಂದ್ರಸುನುಂ ಮಹರ್ಷಿಣಾ ತೇನ ತಿರೋಬಭೂವೆ" ಕಿರಾಂ ೩-೩೦ |

**ಮಹಿಲ (ಹಿಲ) ಕ ಮಹಿಲ (ಲಿ) ಕ (ಪುಂ)** ರಾಜನ ಅಂತಃಪುರದ ಕಾವಲುಗಾರ. ಮಹಾಂತಂ ಚರಿತ್ರಗುಣಂ ಲಾಕಯತಿ ಆಸ್ವಾದಯತಿ—ಲಕ (ಆಸ್ವಾದನೆ) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) | ಮಹಾಂತಂ ಚರಿತ್ರಗುಣಂ ಲಿಖತಿ ವಾ—ಲಿಖ "ಕ:" (೩-೧-೧೩೪) | ಪೃಷೋಂ | "ಮುಷ್ಕಶೂನ್ಯೋಽನುಪಸ್ಥೋಯ: ಸ್ತ್ರೀಸ್ವಭಾವೋ ಮಹಿಲಿಕ:" |



ಮಹಸ್ ನುಹಸ್ (ನಂ) 1. ಉತ್ತಮ, ಹೆಚ್ಚು. ಮಹ (ಪೂಜಾಮ್)  
“ಅಸುನ್” (ತಂ ೪-೧೮೯)। 2. ತೇಜಸ್ಸು, ಕಾಂತಿ,  
ಪ್ರಕಾಶ. “ಕಲ್ಯಾಣಾನಾಂ ತ್ವಮಸಿ ಮಹಸಾಂ ಭಾಜನಂ ವಿಶ್ವಮೂರ್ತೆ  
ಧುಯಿ ಲಕ್ಷ್ಮೀಮಿಹ ಮಯಿ ಭುಷಂ ಭೇಹಿ ದೇವ ಪ್ರಸಾದ” ಮಾಲತೀಂ  
೧-೪। “ಮಹಸ್ತುತ್ಸವತೇಜಸೋಃ” ಅಮಂ।

ಮಹಾಕಂದ ಮಹಾಕಂದ (ಪುಂ) 1. ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳು. ಮಹತ್  
ಕಂದಮಸ್ಯ। “ಲಶುನಂ ಗೃಜ್ಜನಾರಿಷ್ಠಮಹಾಕಂದರಸೋನಕಾಃ”  
ಅಮಂ। 2. ಹಸಿರುಂಟಿ. “ಶೃಂಗಿವೇರಂ ಮಹಾಕಂದಂ ಹಂಸಂಶ್ಚ  
ಕಲಾಪಕಮ್” ವೈಜಂ।

ಮಹಾಕಾಯ ಮಹಾಕಾಯ (ಪುಂ) 1. ಗಜ, ಆನೆ. ಮಹಾನ್  
ಕಾಯೋಸ್ಯ। “ದಂತಾವಲೋ ಮಹಾಕಾಯೋ ವಾರಣಃ ಕುಂಜರೋಸ್ತುರಃ”  
ವೈಜಂ। 2. ದೊಡ್ಡ ದೇಹ, ಸ್ಥೂಲವಾದ ಶರೀರ. ಮಹಾ-  
ಶ್ವಾಸೀ ಕಾಯಶ್ಚ। 3. ಈಶ್ವರನ ದ್ವಾರಪಾಲಕನಾದ ನಂದಿ.  
(ವಿಂ) 4. ದೊಡ್ಡ ಶರೀರವುಳ್ಳು.

ಮಹಾಕಾಲ ಮಹಾಕಾಲ (ಪುಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾ  
ದೇವ. “ಕಲನಾರಸಂಭೂತಾನಾಂ ಮಹಾಕಾಲಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ”।  
ಜಗತ್ತಿನ ಪ್ರಲಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ಈಶ್ವರನ ರೂಪವಿದು.  
2. ಪರಮೇಶ್ವರನ ದ್ವಾರಪಾಲಕನಾದ ನಂದಿ. 3. ಇಂದ್ರ  
ವಾರುಣಿ ಗಿಡ, ಹಾವುಮೆಕ್ಕು. “ಮಹಾಕಾಲೋ ಮಹಾದೇವ  
ಕಿಂಪ್ಯಾಕೇ ಪ್ರಮಥಾಂತರೇ” ಮೇದಿಂ। 4. ಬಾಣಾಸುರ. “ಮಹಾ-  
ಕಾಲಸ್ತು ಕಿಂಪ್ಯಾಕೇ ಹರೇ ಬಾಣಾಸುರೇಽಪಿ ಚ” ವೈಜಂ।

ಮಹಾಕಾಲಿ ಮಹಾಕಾಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾರ್ವತಿ, ದುರ್ಗಾ  
ದೇವಿ.

ಮಹಾಕಾವ್ಯ ಮಹಾಕಾವ್ಯ (ನಂ) ಸರ್ಗಬಂಧಗಳಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ಕಾವ್ಯ. ಶಿಶುಪಾಲವಧ, ರಘುವಂಶ, ನೈಷಧ,  
ಕುಮಾರಸಂಭವ, ಕಿರಾತಾರ್ಜುನೀಯ ಮುಂತಾದುವು  
ಮಹಾಕಾವ್ಯಗಳು. ಮಹಾಕಾವ್ಯದ ಲಕ್ಷಣಃ ಸರ್ಗ  
ಬಂಧಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರಬೇಕು. ಸರ್ಗಗಳು ಅತಿ ಚಿಕ್ಕ  
ದಾಗಿಯೂ ಅತಿ ದೊಡ್ಡದಾಗಿಯೂ ಇರಬಹುದು. ಎಂಟು  
ಕೃಂತಿಲೂ ಹೆಚ್ಚು ಸರ್ಗಗಳಿರಬೇಕು. ಪ್ರತಿಯೊಂದು  
ಸರ್ಗದಲ್ಲೂ ಒಂದೇ ಜಾತಿಯ ವೃತ್ತವಿದ್ದು ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ  
ಮಾತ್ರ ಭಿನ್ನವೃತ್ತವಿರಬೇಕು. ಕೆಲವೆಡೆ ಮಾತ್ರ ಭಿನ್ನ  
ವೃತ್ತಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಸರ್ಗವಿರಬಹುದು. (ಮಾಘದಲ್ಲಿ  
ನಾಲ್ಕನೆಯ ಸರ್ಗ ಕಿರಾತಾರ್ಜುನೀಯದಲ್ಲಿ ಐದನೆಯ  
ಸರ್ಗ) ಧೀರೋದಾತ್ತಗುಣದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಬ್ಬ ಸುರ  
(ದೇವತೆ) ಅಥವಾ ಸತ್ಕುಲಪ್ರಸೂತನಾದ ಒಬ್ಬ ಕ್ಷತ್ರಿಯ  
(ರಾಜ)ನಾಗಲಿ ಒಂದೇ ವಂಶದ ಅನೇಕ ರಾಜರಾಗಲಿ  
ನಾಯಕ(ನಾ)ರಾಗಿರಬೇಕು. ಶೃಂಗಾರ ವೀರ ಶಾಂತ

ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವುದಾದರೊಂದು ಪ್ರಧಾನ(ಅಂಗಿ)ರೂ  
ವಾಗಿರಬೇಕು. ಇತಿವೃತ್ತ(ಕಥೆ)ವು ಪುರಾಣಪ್ರಸಿದ್ಧ  
ವಾಗಿ ಅಥವಾ ಸತ್ಪುರುಷರ ವಿಷಯವಾಗಿ ಇರಬೇಕು.  
ಧರ್ಮಾರ್ಥಕಾಮಮೋಕ್ಷರೂಪ ಪುರುಷಾರ್ಥ ಚತುಷ್ಟ  
ಯವು ವರ್ಣಿತವಾಗಿ ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವುದಾದರೊಂದು  
ಮುಖ್ಯ ಫಲವಾಗಿರಬೇಕು. ಕಾವ್ಯದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ  
ಆಶೀರ್ವಾದ ನಮಸ್ಕಾರ ಅಥವಾ ವಸ್ತುನಿರ್ದೇಶರೂಪ  
ವಾದ ಮಂಗಳಾಚರಣೆಯಿರಬೇಕು. ಸತ್ಪುರುಷರ ಗುಣ  
ದುರ್ಜನರ ನಿಂದೆಗಳು ವರ್ಣಿತವಾಗಿರಬೇಕು. ಸರ್ಗದ  
ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಮುಂದಿನ ಸರ್ಗದ ವಿಷಯ ಸೂಚಿತವಾಗಿರ  
ಬೇಕು. ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲ ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರ ರಾತ್ರಿ ಹಗಲು  
ಪ್ರಭಾತ ಬೇಟಿ ಶೈಲ ಋತು ನಗರ ಸಮುದ್ರ ಸಂಭೋಗ  
ಮತ್ತು ವಿಪ್ರಲಂಭಶೃಂಗಾರ ಸ್ವರ್ಗಯಾಗ ಪ್ರಯಾಣ  
ವಿವಾಹ ಮುಂತಾದ ವಿಷಯಗಳು ಯಥೋಚಿತವಾಗಿ  
ವರ್ಣಿತವಾಗಿರಬೇಕು. ಇತ್ಯಾದಿ. ಸಾಂ ೬-೩೧೪-೨೪।  
“ಶ್ಲೋಕೇರಿವ ಮಹಾಕಾವ್ಯಂ ವ್ಯುಹೇತದಮವದಲಮ್” ಮಾಘಂ  
೧೯-೪೧।

ಮಹಾಕುಲ ಮಹಾಕುಲ (ನಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ವಂಶ,  
ಉತ್ತಮ ಸಂತತಿ, ದೊಡ್ಡ ಒೀಳಿಗೆ. ಮಹತ್ವ ತತ್ಕುಲಂ ಚ।  
2. ಹತ್ತು ತಲೆಮಾರೆಯವರಿಗೆ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದ  
ವಂಶ. “ದಶಪುರುಷವಿಷ್ಣುತಾತ್ ಶ್ರೋತ್ರಿಯಾಣಾಂ ಮಹಾಕುಲಾತ್”  
ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೪೪। (ವಿಂ) 3. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ವಂಶದಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟಿದ, ಉತ್ತಮ ಸಂತತಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಮಹತ್ ಕುಲಂ  
ಯಸ್ಯ।

ಮಹಾಕುಲೀನ ಮಹಾಕುಲೀನ (ವಿಂ) ಮಹಾಕುಲದಲ್ಲಿ  
ಜನಿಸಿದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಸಂತತಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಮಹಾ-  
ಕುಲಸ್ಥಾಪಯಮ್ ಪಕ್ಷೇ “ಖಃ” (೪-೧-೧೩೯)।

ಮಹಾಕ್ರತು ಮಹಾಕ್ರತು (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ.  
ಮಹಾನ್ ಸರ್ವಸುಕರಃ ಸಂಸ್ಕಾರಸ್ವಾಧ್ಯಾತಃ ಕ್ರತುಯಜ್ಞಃ ತದ್ವಿ-  
ಲಕ್ಷಿತಾರಾಧನಂ ಚ ಅಸ್ಯ। “ಸರ್ವೇಶ್ವ ಸುಕರಾ ಪೂಜಾ ಯಸ್ಯ  
ಸ್ಯಾತ್ ಸ ಮಹಾಕ್ರತುಃ” ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ। “ಮಹಾಕ್ರತು  
ಮಹಾಯಜ್ಞಾ ಮಹಾಯಜ್ಞೋ ಮಹಾಹವಿಃ” ವಿಂ ಸಂ। 2. ದೊಡ್ಡ  
ಯಜ್ಞ, ಅಶ್ವಮೇಧ ಮೊದಲಾದ ಯಾಗ. “ತದಜ್ಞಮಗ್ರಂ  
ಮಥವನ್ ಮಹಾಕ್ರತೋರಮ್ ತುರಜ್ಞಂ ಪ್ರತಿಮೋಕ್ತುಮರ್ಹಸಿ” ರಘುಂ  
೩-೪೬।

ಮಹಾಕ್ರಮ ಮಹಾಕ್ರಮ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ.  
ಮಹಾನ್ ಕ್ರಮಃ ಪರಮನಿಮ್ನಭವಪಾತಾಲ್ಯಾತ್ ಜೀವಾನಾರೋಹಯತೋ  
ಮಹತ್ಯಾರೋಹಣಸೋಪಾನಪರ್ವಾನುಪೂರ್ವಿ ಅಸ್ಯ। “ಪರಮೋಷತಿ-  
ಮಾತ್ಮಾನಂ ಸೋ ನಿಮ್ನಾಽದ್ಭವಪಾತಕಾತ್। ಜೀವಾನ್ ಸಮಾರೋಹಯತೋ



ಜ್ಞಾನಭಕ್ತಾದಿರೂಪಿಣಿ । ಸರ್ವಾನುಪೂರ್ವಿ ಯಸ್ಯಾಸ್ತಿ ಮಹಾಕ್ರಮ  
ಇತಿರೀತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । "ಮಹಾಕ್ರಮೋ ಮಹಾಕರ್ಮ"  
ವಿಂ ಸಂ ।

**ಮಹಾಖರ್ವ ಮಹಾಖರ್ವ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ದೊಡ್ಡ ಸಂಖ್ಯೆ,  
100,000,000,000. (ವಿಂ) 2. ಬಹಳ ಕುಳ್ಳಿಗಿರುವ,  
ಮೋಟಾಗಿರುವ.

**ಮಹಾಗಣ ಮಹಾಗಣ** (ಪುಂ) ಒಂದು ದೊಡ್ಡ ಸಂಖ್ಯೆ,  
ಒಂದು ಲಕ್ಷ ಬೃಂದ. 100,000,000,000,000. "ಅನ್ಯೇ  
ತ್ವಾಹುಃ ಶತಂ ಕೋಟಿಃ ಶತಕುರ್ಬಂದಂ ಮಹಾಗಣಃ । ಪದ್ಧಂ ಮಹಾಂಬುಜಂ  
ಚೇತಿ ಕ್ರಮಾಲಕ್ಷಗುಣೋತ್ತರಮ್" ವೈಜಂ ।

**ಮಹಾಗದ ಮಹಾಗದ** (ಪುಂ) 1. ಜ್ವರ. 2. ದೊಡ್ಡ ರೋಗ.  
ಮಹಾಶ್ವಾಸೋ ಗದಶ್ಚ । "ವಾತವ್ಯಾಧಿಃ ಪ್ರಮೇಹಶ್ಚ ಕುಷ್ಠಮಶೋ  
ಭಗಂದರಃ । ಅಶ್ಮರೀ ಮೂಗಮಶ್ಚ ತಥೈವೋದರಮಷ್ಟಮಮ್ ।  
ಅಷ್ಟಾವೇತೇ ಪ್ರಕೃತ್ಯೈವ ದುಃಖಿಕಿತ್ಸ್ಯಾ ಮಹಾಗದಾಃ" ಸುಶ್ರುತಂ  
ಸೂತ್ರಂ ೩೩-೪ । 3. ಒಂದು ಡಿಷ್ಡ. (ವಿಂ) 4. ದೊಡ್ಡ  
ರೋಗವುಳ್ಳವನು.

**ಮಹಾಗಂಧ ಮಹಾಗಂಧ** (ಪುಂ) 1. ನೀರುಹಬ್ಬಿ. ಮಹಾನ್  
ಗಂಧೋಽಸ್ಯ । (ನಂ) 2. ಬಾಣಂತಿಬೋಳ. 3. ಅರಿಸಿನ  
ಬಣ್ಣದ ಚಂದನ. (ವಿಂ) 4. ಹೆಚ್ಚು ವಾಸನೆಯುಳ್ಳ.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಗಂಧಾ -ಗಂಧಾ. 5. ಬೋಳೆಗಡಲೆ.

**ಮಹಾಗುರು ಮಹಾಗುರು** (ಪುಂ) ತಾಯಿ ತಂದೆ ಮತ್ತು  
ಅಜ್ಜಾಯ್. ಇವರು ಮಹಾಗುರುಗಳು. "ಪಿತಾ ಮಾತಾ  
ತಥಾಚಾರ್ಯೋ ಮಹಾಗುರೀತಿ ಸ್ಮೃತಃ" । ಹೆಂಗಸರಿಗೆ ಪತಿಯು  
ಮಹಾಗುರು. ಅವಿವಾಹಿತಕನ್ಯೆಗೆ ತಾಯಿ ತಂದೆಗಳು  
ಮಹಾಗುರುಗಳು.

**ಮಹಾಗ್ರೀವ ಮಹಾಗ್ರೀವ** (ಪುಂ) 1. ಉಷ್ಣ, ಒಂಟಿ. ಮಹತೀ  
ಗ್ರೀವಾಽಸ್ಯ । (ವಿಂ) 2. ಉದ್ದವಾದ ಕತ್ತುಳ್ಳ.

**ಮಹಾಘೋಷ ಮಹಾಘೋಷ** (ಪುಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಶಬ್ದ, ಗಟ್ಟಿ  
ಯಾದ ಶಬ್ದ. (ನಂ) 2. ಅಂಗಡಿ, ವ್ಯಾಪಾರಸ್ಥಳ, ಸಂತೆ.  
(ವಿಂ) 3. ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಶಬ್ದವುಳ್ಳ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಘೋಷಾ  
-ಘೋಷಾ. 4. ಅನೇಬೇಲ.

**ಮಹಾಜ್ಞ ಮಹಾಜ್ಞ** (ಪುಂ) ಉಷ್ಣ, ಒಂಟಿ. ಮಹಾನ್ಯಜ್ಞಾನಿ  
ಅಸ್ಯ । "ಉಷ್ಣೇ ಕ್ರಮೇಲಕಮಯಮಹಾಜ್ಞಾಃ ಕರಮಃ ಶಿಶುಃ"  
ಅಮಂ ।

**ಮಹಾಜನ ಮಹಾಜನ** (ಪುಂ) 1. ಗುಣದಲ್ಲಿ ಹಿರಿಯವ  
ನಾದವನು, ದೊಡ್ಡಮನುಷ್ಯ, ವಿವೇಕಿಯಾದ ಮನುಷ್ಯ,  
ಆಸ್ತಿ, ವೇದ ಮತ್ತು ಶಾಸ್ತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ನಂಬಿಕೆಯುಳ್ಳವನು.  
ಮಹಾಶ್ವಾಸೋ ಜನಶ್ಚ । "ಧರ್ಮಸ್ಯ ತತ್ವಂ ನಿಹಿತಂ ಗೃಹಾಃ"

ಮಹಾಜನೋ ಯೇನ ಗತಃ ಸ ಪಂಥಾಃ" ಭಾಂ । 2. ಮಂದಿ, ಜನ  
ಸಮೂಹ. "ವಿಲೋಕ್ಯ ವೃದ್ಧೋಕ್ಷಮಧಿಷ್ಠಿತಂ ತ್ವಯಾ ಮಹಾಜನಃ  
ಸ್ಮೇರಮುಖೋ ಭವಿಷ್ಯತಿ" ಕುಮಾಂ ೪-೭೦ । 3. ಪ್ರಸಿದ್ಧ  
ಮನುಷ್ಯ, ಹೆಸರಾಂತವನು, ಸತ್ತುರುಷ. "ಮಹಾಜನಸ್ಯ  
ಸಂಸರ್ಗಃ ಕಸ್ಯ ನೋತ್ತರತೀಕಾರಕಃ" ।

**ಮಹಾಜಾಲಿ ಮಹಾಜಾಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಳದಿಹೂವಿನ ಕಾಡು  
ಹೀರಿಗಿಡ.

**ಮಹಾತಪಸ್ ಮಹಾತಪಸ್** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ.  
ಮಹತ್ ಪೂಜ್ಯಂ ತಪಃ ಜ್ಞಾನಮಸ್ಯ । "ಮಹತ್ಪೂಜ್ಯಂ ತಪೋ ಜ್ಞಾನಂ  
ಯಸ್ಯೇತಿ ಸ ಮಹಾತಪಾಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । "ಅಮೃತಃ  
ಶಾಶ್ವತಸ್ಥಾನುರ್ವರಾರೋಹೋ ಮಹಾತಪಾಃ" ವಿಂ ಸಂ ।

**ಮಹಾತರು ಮಹಾತರು** (ಪುಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಮರ, ಎತ್ತರ  
ವಾದ ಮರ. 2. ಕಳ್ಳಿಗಿಡ.

**ಮಹಾತಲ ಮಹಾತಲ** (ನಂ) ಕೆಳಗಿನ ಸಪ್ತಲೋಕಗಳ  
ಒಂದು. (1) ಅತಲಮ್ (2) ವಿತಲಮ್ (3) ಸುತಲಮ್  
(4) ತಲಾತಲಮ್ (5) ಮಹಾತಲಮ್ (6) ರಸಾತಲಮ್ ಮತ್ತು  
(7) ಪಾತಾಲಮ್ ಇವು ಏಳು ಅಧೋಲೋಕಗಳು.

**ಮಹಾತೇಜಸ್ ಮಹಾತೇಜಸ್** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ.  
ಮಹತ್ ತಾಮಸಾನಾಮಪಿ ಅನಾಥವಿಜ್ಞಾತಮಸ್ತಸ್ಕರಂ ತೇಜೋಽಸ್ಯ ।  
"ಅನಾಥವಿಜ್ಞಾತಮೋಹಾರಿತೇಜೋ ಮಹದ್ವತಃ । ಮಹಾತೇಜಾಹತಃ  
ಖ್ಯಾತಸ್ತೇಜದೋ ವಸುವರ್ಣಕಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । "ಮಹಾಕ್ರಮೋ  
ಮಹಾಕರ್ಮ ಮಹಾತೇಜಾ ಮಹೋರಗಃ" ವಿಂ ಸಂ । 2.  
ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಷಣ್ಮುಖ. 3. ಶಂಕರ, ಪರಶಿವ, ಮಹಾ  
ದೇವ. 4. ಅಗ್ನಿ. 5. ಹರಳುಗಿಡ. 6. ಚಿತ್ರಮೂಲದ  
ಗಿಡ. (ನಂ) 7. ಪಾದರಸ.

**ಮಹಾತ್ಮನ್ ಮಹಾತ್ಮನ್** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. "ಯುಗಪತ್ನು  
ಪ್ರಲೀಯಂತೇ ಯದಾ ತಸ್ಮಿನ್ ಮಹಾತ್ಮನಿ । ತದಾಯಂ ಸರ್ವಭೂತಾತ್ಮಾ  
ಸುಖಂ ಸ್ವಪಿಪಿತಿ ನಿವೃತ್ತಃ" ಮನುಂ ೧-೪೪ । 2. ಮಹತ್ತ್ವತ್ತ್ವ.  
"ಮನಃ ಪೃಥಿವ್ಯಾ ತಾಮದ್ವಿಃ ತೇಜಸಾಪೋಽನಿಲೇನ ತತ್ । ಖೇ ವಾಯುಂ  
ಧಾರಯಂತಿ ಚ ಭೂತಾದೌ ತಂ ಮಹಾತ್ಮನಿ" ಭಾಗಂ ೯-೭-೨೪ ।  
(ವಿಂ) 3. ದೊಡ್ಡ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು, ಒಳ್ಳೆಯ ಸ್ವಭಾವ  
ದವನು, ಉದಾರಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. ಮಹಾನ್ ಆತ್ಮಾ  
ಯಸ್ಯ । "ಮಹಾತ್ಮಾನೋಽನುಗೃಹ್ಣಂತಿ ಭಜಮಾನಾನ್ ರಿಪೂನಪಿ"  
ಮಾಘಂ ೨-೧೦೪ । 4. ದೊಡ್ಡವನು, ಮಹಾಮಹಿಮ  
ಶಾಲಿ, ಕೀರ್ತಿಶಾಲಿ, ಸತ್ತುರುಷ. "ಸಮುತ್ಥಯನ್ ಭೂತಿಮನಾರ್ಯ-  
ಸಂಗಮಾದ್ವರಂ ವಿರೋಧೋಽಪಿ ಸಮಂ ಮಹಾತ್ಮಮಿಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೮ ।

**ಮಹಾದಶಾ ಮಹಾದಶಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನುಷ್ಯನ ಅದೃಷ್ಟ  
(ಪುಣ್ಯ ಪಾಪ) ಗಳನ್ನನುಸರಿಸಿ ಅವನ ಮೇಲೆ ರವಿ ಚಂದ್ರ



ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹಗಳು ತಮ್ಮ ಪ್ರಭಾವವನ್ನು ಬೀರುವ ಕಾಲ, ತಮ್ಮ ಅಧಿಕಾರಕ್ಕೊಳಪಟ್ಟಿರುವ ಮನುಷ್ಯನ ಮೇಲೆ ಗ್ರಹಗಳು ತಮ್ಮ ಪ್ರಭಾವವನ್ನು ಬೀರುವ ಕಾಲ. ಅವರವರ ಅದೃಷ್ಟಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ ಆಯಾ ಗ್ರಹಗಳು ಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವುವು.

| ದಶಾಧಿಪತಿ ಗ್ರಹಗಳು | ದಶಾಕಾಲ    |
|------------------|-----------|
| ರವಿ              | 6 ವರ್ಷಗಳು |
| ಚಂದ್ರ            | 10 "      |
| ಕುಜ              | 7 "       |
| ರಾಹು             | 18 "      |
| ಗುರು             | 16 "      |
| ಶನಿ              | 19 "      |
| ಬುಧ              | 17 "      |
| ಕೇತು             | 7 "       |
| ಶುಕ್ರ            | 20 "      |

**ಮಹಾದಾನ ಮಹಾದಾನ (ನಂ)** ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ದಾನ. ಮಹಚ್ಛ ತತ್ ದಾನಂ ಚ | ಮಹಾದಾನವು ಹಿರಣ್ಯಗರ್ಭದಾನ, ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡದಾನ, ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷದಾನ, ಗೋಸಹಸ್ರದಾನ, ಸುವರ್ಣದ ಕಾಮಧೇನುದಾನ, ಸುವರ್ಣದ ಅಶ್ವದಾನ, ಭೂದಾನ, ಸುವರ್ಣಗಜದಾನ ಮುಂತಾಗಿ ಹದಿನಾರು ವಿಧ.

**ಮಹಾದಾರ ಮಹಾದಾರು (ಪುಂ)** ದೇವದಾರು ಮರ.

**ಮಹಾದೇವ ಮಹಾದೇವ (ಪುಂ)** 1. ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಶಿವ. ಮಹಾಶ್ರಾಪಿ ದೇವಶ್ರ | "ಬ್ರಹ್ಮಾದಿನಾಂ ಸುರಾಣಾಂ ಚ ಮುನೀನಾಂ ಬ್ರಹ್ಮವಾದಿನಾಮ್ | ತेषಾಂ ಚ ಮಹತಾಂ ದೇವೋ ಮಹಾದೇವಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ" | 2. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಮಹಾನಮ್ಯಧಿಕಃ ಪೂಜ್ಯೋ ವಾ ದೇವಃ ತೈಃ ಕ್ರೀಡನಕೈಃ ಕ್ರೀಡಂತೀತಿ ಮಹಾದೇವಃ | "ಬ್ರಹ್ಮಾದಿಭಿಃ ಕ್ರೀಡಂತಿ ಯೋ ಮಹಾದೇವಃ ಸ ಉಚ್ಯತೇ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | "ಆದಿದೇವೋ ಮಹಾದೇವೋ ದೇವೇಶೋ ದೇವಭೃದ್ಗುರುಃ" ವಿಂ ಸಂ |

**ಮಹಾದೇವಿ ಮಹಾದೇವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಪಾರ್ವತೀದೇವಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ. ಮಹತೀ ಚಾಸೌ ದೇವೀ ಚ | 2. ಮಹಾರಾಣಿ, ರಾಜನ ಪಟ್ಟಮಹಿಷಿ. "ಪೂಜ್ಯತೇ ಯಾ ಸುರೈಃ ಸರ್ವೈಃ ಮಹಾಶಿವೈಃ ಪ್ರಮಾಣತಃ | ಧಾತುಮೇಹೇತಿ ಪೂಜಾಂ ಮಹಾದೇವೀ ತತಃ ಸ್ಮೃತಾ" ದೇವೀಪುಂ |

**ಮಹಾದ್ರೂಮ ಮಹಾದ್ರೂಮ (ಪುಂ)** ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿಮರ. ಮಹಾಶ್ರಾಪಿ ದ್ರೂಮಶ್ರ |

**ಮಹಾದ್ವಾರ ಮಹಾದ್ವಾರ (ನಂ)** ಹೊರಬಾಗಿಲು, ದೇವಸ್ಥಾನದ ಹೊರಗಡೆಯ ಹಿರಿಯ ಬಾಗಿಲು, ದೇವಸ್ಥಾನದ ಒಳಕ್ಕೆ ಪ್ರವೇಶಿಸುವ ಬಾಗಿಲು. ಮಹಚ್ಛ ತತ್ ದ್ವಾರಂ ಚ |

**ಮಹಾಧನ ಮಹಾಧನ (ನಂ)** 1. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 2. ಅಧಿಕ ಬೆಲೆ. 3. ಅಧಿಕ ಬೆಲೆಯುಳ್ಳ ವಸ್ತು. 4. ಲೋಬಾನ, ತುರುಷ್ಯದೇಶದ ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ. "ಮಹಾಧನಂ ಮಹಾಮೂಲ್ಯ ಸುವಸ್ತ್ರೇ ಸಿಂಹಕೇಸರಿ ಚ" ಮೇದಿಂ | (ವಿಂ) 5. ಬಹು ಬೆಲೆಯುಳ್ಳ, ಅಧಿಕ ಬೆಲೆ ಬಾಳುವ. "ಪುರಾಧಿಹಿತಃ ಕ್ಷಯಂ ಮಹಾಧನಂ ವಿಬೋಧಯತೇ ಯಃ ಸ್ತುತಿಗೀತಿಮಜ್ಞಲೈಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೩೮ | 6. ಹೆಚ್ಚು ಐಶ್ವರ್ಯವುಳ್ಳವನು.

**ಮಹಾಧಾತು ಮಹಾಧಾತು (ಪುಂ)** 1. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 2. ಮೇದಸ್ಸು. 3. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.

**ಮಹಾನಟ ಮಹಾನಟಿ (ಪುಂ)** ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಮಹಾನ್ ನಟಃ ನರ್ತಕಃ | "ಮಹಾಕಾಲೋ ಮಹಾನಟಃ" ಅಮಂ |

**ಮಹಾನದ ಮಹಾನದ (ಪುಂ)** ದೊಡ್ಡ ಗಂಡುಹೊಳೆ.

**ಮಹಾನದಿ ಮಹಾನದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ದೊಡ್ಡ ನದಿ, ಬಹಳ ದೂರ (ಸಮುದ್ರದವರೆಗೆ) ಹರಿಯುವ ಹೊಳೆ. ಮಹತೀ ಚ ಸಾ ನದೀ ಚ | "ಸಂಭೂಯಾಂಭೋಧಿಮಮ್ಯೇತಿ ಮಹಾನದಿ ನಗಾಪಗಾ" ಮಾಘಂ ೨-೧೦೦ | 2. ಗಂಗಾನದಿ. "ಅಮ್ಬುಜಮಮ್ಬುನಿ ಜಾತಂ ಜಾತು ನ ಜಾಯತೇ ಅಮ್ಬುಜಾದಮ್ಬು | ಮುರಹರ ತವ ವಿಪರೀತಂ ಪಾದಾಮ್ಬುಜಾನ್ಮಹಾನದೀ ಜಾತಾ" ಉಡ್ಕಂ |

**ಮಹಾನಂದ ಮಹಾನಂದ (ಪುಂ)** 1. ಅತಿಶಯವಾದ ಆನಂದ, ಹೆಚ್ಚು ಸಂತೋಷ. ಮಹಾನ್ ಆನಂದಃ | 2. ಅಪವರ್ಗ, ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ. ಮಹಾನ್ ಆನಂದೋಽಸಿ | 3. ಒಂದು ವಿಧ ವೇಣುವಾದ್ಯ.

**ಮಹಾನಂದಾ ಮಹಾನಂದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮಾಘಶುಕ್ಲ ನವಮಿ. 2. ಒಂದು ನದಿ. 3. ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. "ಮಾಘ-ಮಾಸಸ್ಯ ಯಾ ಶುಕ್ಲಾ ನವಮಿ ಲೋಕಪೂಜಿತಾ | ಮಹಾನಂದೇತಿ ಸಾ ಪ್ರೋಕ್ತಾ" |

**ಮಹಾನವಮಿ ಮಹಾನವಮೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಶ್ವಯುಜ ಶುದ್ಧ ನವಮಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿಯನ್ನು ಪೂಜಿಸುವ ನವಮಿ. ಮಹತೀ ಚಾಸೌ ನವಮಿ ಚ | "ದುರ್ಗಾತಿನ್ವ್ರೇಣ ಮನ್ವ್ರೇಣ ಕುರ್ಯುರ್ದುರ್ಗಾ-ಮಹೋತ್ಸವಮ್ | ಮಹಾನವಮ್ಯಾಂ ಶರದಿ ಬಲಿದಾನಂ ನೃಪಾದಯಃ || ಆಶ್ವಿನೇ ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷಸ್ಯ ಭವೇದಾ ಅಷ್ಟಮಿ ತಿಥಿಃ | ಮಹಾಷ್ಟಮಿತಿ ಸಾ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ದೇವ್ಯಾಃ ಪ್ರೀತಿಕರಾ ಪರಾ || ತತೋಽನುನವಮಿ ಯಾ ಸ್ಯಾತ್ ಸಾ ಮಹಾನವಮಿ ಸ್ಮೃತಾ | ಸಾ ತಿಥಿಃ ಸರ್ವಲೋಕಾನಾಂ ಪೂಜನೀಯಾ ಶಿವಪ್ರಿಯಾ" ಕಾಲಿಕಾಪುಂ |

**ಮಹಾನಸ ಮಹಾನಸ (ನಂ)** ಪಾಕಶಾಲೆ, ಅಡಿಗೆಯ ಮನೆ. ಮಹಚ್ಛ ತತ್ ಅನಶ್ರ "ಟಕ್" (೪-೪-೯೪) | ಮಹಾನಸವು ಶುಚಿಯಾದ ಜಾಗದಲ್ಲಿ ನಿರ್ಮಿತವಾಗಿರಬೇಕು. ಮಹಾನಸ ದೊಳಗೆ ನೈರ್ಮಲ್ಯವನ್ನು ಕಾಪಾಡಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ಅಡಿಗೆ



ಪಾತ್ರಗಳು ಯಾವಾಗಲೂ ಶುಭ್ರವಾಗಿರಬೇಕು. ಜಾಲರಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಗವಾಕ್ಷಗಳಿದ್ದು ಗಾಳಿ ಬೆಳಕು ಬೆನ್ನಾಗಿರಬೇಕು. ಅಲ್ಲಿ ಕೆಲಸಮಾಡುವವರನ್ನು ಆಗಾಗ್ಗೆ ಪರೀಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರಬೇಕು. ವೈದ್ಯಗುಣವುಳ್ಳವನನ್ನು ಮುಖ್ಯಪಾತ್ರಕನನ್ನಾಗಿಯೂ ನೋಡಲು ಲಕ್ಷಣವಾಗಿರುವ ಶುಚಿಯಾಗಿರುವ ವಿನಯಸಂಪನ್ನರಾದ ಮತ್ತು ನಿಷ್ಠುರಾದವರನ್ನು ಪಾತ್ರಕರನ್ನಾಗಿಯೂ ನೇಮಿಸಬೇಕು. "ಪ್ರಶಸ್ತದಿಗದೇಶಕೃತಂ ಶುಚಿಭಾಷ್ಣಂ ಮಹಚ್ಛುಚಿ | ಸಜಾಲಕಂ ಗವಾಕ್ಷಾಡ್ಯಂ ಆಪ್ತ-ವರ್ಗನಿಷೇವಿತಮ್ || ಪರೀಕ್ಷಿತಸ್ತ್ರೀಪುರುಷಂ ಭವೇಚ್ಛಾಪಿ ಮಹಾನಸಮ್ | ತತ್ರಾಪ್ಯಸಂ ನಿಯುಜ್ಜಿತ ಪ್ರಾಯೋ ವೈದ್ಯಗುಣಾವಿತಮ್ | ಶುಚಯೋ ದಕ್ಷಿಣಾ ದಕ್ಷಾ ವಿನೀತಾಃ ಪ್ರಿಯದರ್ಶಿನಾಃ | ತಸ್ಯ ಚಾಜ್ಞಾವಿಧೇಯಾಃ ಸ್ಯುಃ ವಿವಿಧಾಃ ಪರಿಕರ್ಮಿಣಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ಕಲ್ಪಂ ೧ |

**ಮಹಾನಾಟಕ ಮಹಾನಾಟಕ (ನಂ)** ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ದೊಡ್ಡ ನಾಟಕ. ಇದು ಹನುಮದ್ವಿರಚಿತವಾದ ರಾಮಚರಿತ್ರಾತ್ಮಕವಾದ ಒಂದು ನಾಟಕ. ನಾಟಕಕ್ಕೆ ಹೇಳಿರುವ ಎಲ್ಲಾ ಪಾತ್ರಾಸ್ಥಾನಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ ಹತ್ತು ಅಂಕಗಳಿಂದ ರಚಿತವಾದ ನಾಟಕವು ಮಹಾನಾಟಕವೆನಿಸುವುದು. "ಏತದೇವ ಯದಾ ಸರ್ವೇ ಪತಾಕಾಸ್ಥಾನಕರ್ಯುತಮ್ | ಅಕ್ಷಂಶ್ಚ ದಶಮಿ-ರ್ಧಿರಾ ಮಹಾನಾಟಕಮುಚಿರೆ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೨೩ | "ಏಷ ಶ್ರೀಲಹನುಮತಾ ವಿರಚಿತೇ ಶ್ರೀಮನ್ಮಹಾನಾಟಕೇ ವೀರಶ್ರೀಯುತ-ರಾಮಚಂದ್ರಚರಿತೇ ಪ್ರತ್ಯುದ್ಧತೇ ವಿಕರ್ಮಃ | ಮಿಶ್ರಶ್ರೀಮಧುಸೂದನೇನ ಕವಿನಾ ಸಂದರ್ಮ್ಯ ಸಜ್ಜೀಕೃತೇ ಸ್ವರ್ಗಾರೋಹಣನಾಮಕೋಽತ್ರ ನವಮೋ ಯಾತೋಽಙ್ಕು ಏವೇತ್ಯಸೌ" |

**ಮಹಾನಾಟಕ ಮಹಾನಾಟಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಂಡರಾ ಎಂಬ ಮಹಾನಾಟಕ, ಮಹಾಸ್ವಾಯು. ಮಹತೀ ಚಾಸಿ ನಾಟಕ ಚ | ["ಕಂಡರಾ" ಪದದಲ್ಲಿ ವಿವರಕ್ಕೆ ನೋಡಿ.]

**ಮಹಾನಾಟಕ ಮಹಾನಾಟಕ (ಪುಂ)** 1. ಗಜ, ಅನೆ. ಮಹಾನ್ ನಾದೋಸ್ಥ | 2. ದೊಡ್ಡ ಶಬ್ದ, ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಶಬ್ದ. ಮಹಾ-ಶ್ರಾಸಿ ನಾದಶ್ರ | 3. ಸರ್ಜಿಸುವ ಮೇಘ, ಗುಡುಗುವ ಮೇಘ. "ಮಹಾನಾಟಕ: ಕುಂಜರೇ ಸ್ಯಾದ್ವರ್ಣಕಾಂಡೇ ಮಹಾಸ್ವನೇ" ಮೇದಿಂ | 4. ಸಂಹಂ "ಸಿಂಹೋ ಮೃಗೇಂದ್ರ: ಪಂಚಾಸ್ಯ: ಪಾರೀಂದ್ರ: ಐವೇತಪಿಙ್ಗಲ: | ವ್ಯಾಧೀರ್ಗಾಸ್ಯೋ ಮಹಾನಾಟಕ: ಶಾರ್ದೂಲಸ್ತುತ್ಯ-ವಿಕರ್ಮ:" ವೈಜಂ | 5. ಕರ್ಣ, ಕಿವಿ. 6. ಉಷ್ಣ, ಒಂಟಿ. 7. ಗೋಸುಂಚಿ, ಘಳಿಗೆಗೊಂದು ಬಣ್ಣ ಬದಲಾಯಿಸುವ ಒತ್ತಿಕೇತ. 8. ಹೆಚ್ಚುವು, ದಾಸರಹಾವು. (ವಿಂ) 9. ದೊಡ್ಡ ಶಬ್ದವುಳ್ಳ, ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಸದ್ದುಳ್ಳ. "ಶರವರ್ಷಿ ಮಹಾನಾಟಕ: ಸ್ಫುರತ್ಕಾಮುಕೇತನ: | ನೀಲಚ್ಚವಿರಸೌ ರೇಜೇ ಕೇಶವಚ್ಚಲನೀರದ:" ಮಾಘಂ ೧೯-೯೬ |

**ಮಹಾನಿಶಾ ಮಹಾನಿಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ರಾತ್ರಿಯ ಮಧ್ಯದ ಎರಡು ಜಾವ, ರಾತ್ರಿ ಒಂಬತ್ತು ಗಂಟೆಯಿಂದ ಮೂರು ಗಂಟೆಯವರೆಗಿನ ಕಾಲ. "ಮಹಾನಿಶಾ ತು ವಿಜ್ಞೇಯಾ ಮಧ್ಯಮಂ ಪ್ರಹರದ್ವಯಮ್ | ತತ್ರ ಸ್ನಾನಂ ನ ಕುರ್ವೀತ ಕಾಮ್ಯನೈಮಿತ್ತಿಕಾದೃತೇ" ಎಂದು ವಚನವಿರುವುದರಿಂದ ಕಾಮ್ಯವ್ರತ ಮತ್ತು ನೈಮಿತ್ತಿಕ ಕಾರಣಗಳ ಹೊರತು ಮಧ್ಯರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನಾದಿಗಳು ನಿಷಿದ್ಧ.

**ಮಹಾನೀಲ ಮಹಾನೀಲ (ಪುಂ)** 1. ಇಂದ್ರನೀಲಮಣಿ, ನೀಲರತ್ನ. ಮಹಾಶ್ರಾಸಿ ನೀಲಶ್ರ | "ಮಹಾಮಹಾನೀಲಶಿಲಾರುಚಿ: ಪುರೋ ನಿಷೇದಿವಾನ್ ಕಂಸಕೃಷ: ಸ ವಿಷ್ಟರೇ" ಮಾಘಂ ೧-೧೬ | 2. ಭೃಂಗರಾಜ, ಗರಗದ ಸೊಪ್ಪು. 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಅನೆ. "ಮಹಾನೀಲೋ ಭೃಂಗರಾಜೇ ಮಣಿನಾಗವಿಶೇಷಯೋ:" ಮೇದಿಂ |

**ಮಹಾನುಭಾವ ಮಹಾನುಭಾವ (ವಿಂ)** ಮಹಾತ್ಮನಾದ, ಮಹಾಮಹಿಮೆಯುಳ್ಳ, ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಭಾವಶಾಲಿಯಾದ. ಮಹಾನ್ ಅನುಭಾವೋ ಯಸ್ಯ | "ಪ್ರಹೀತುಮಾರ್ಯಾನ್ ಪರಿವರ್ಯಯಾ ಮುಹುರ್ಮಹಾನುಭಾವಾ ಹಿ ನಿತಾಂತಮರ್ಥಿನ:" ಮಾಘಂ ೧-೧೭ |

**ಮಹಾಪಂಚಮೂಲ ಮಹಾಪಂಚಮೂಲ (ನಂ)** ಐದು ಮಹಾ ಮೂಲಿಕೆಗಳು. 1. ಬಿಲ್ವ 2. ಅಗ್ನಿಮಂಥ 3. ಶ್ಯೋನಾಕ (ಹೆಮ್ಮರ) 4. ಕಾಶ್ಮೀರಿ (ಶೀವನೆಯ ಮರ) ಮತ್ತು 5. ಪಾಟಲಾ (ಹಸುರು ಪಾದರಿ) ಇವು (ಐದೂ) ಮಹಾ ಪಂಚ ಮೂಲಗಳು.

**ಮಹಾಪಂಚವಿಷ ಮಹಾಪಂಚವಿಷ (ನಂ)** ದೊಡ್ಡ ವಿಷ ಪಂಚಕ. "ಶೃಂಗೀ ಚ ಕಾಲಕೂಟಶ್ಚ ಮುಸ್ತಕೋ ವತ್ಸನಾಮಕ: | ಶಾಕ್ಷಕರ್ಣೀತಿ ಯೋಗೋಽಯಂ ಮಹಾಪಂಚವಿಷಾಮಿಧ:" |

**ಮಹಾಪಥ ಮಹಾಪಥ (ಪುಂ)** 1. ಮುಖ್ಯ ರಸ್ತೆ, ರಾಜ ಮಾರ್ಗ, ಹೆದ್ದಾರಿ. ಮಹಾಶ್ರಾಸಿ ಪಂಥಾಶ್ಚ "ಅ:" (೪-೪-೭೪) | "ಸಂತಾನಕಾಕೀರ್ಣಮಹಾಪಥಂ ತನ್ವಿನಾಂಶುಕೈ: ಕಲ್ಪಿತಕೇತುಮಾಲಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೩ | 2. ಹಿಮಾಚಲದಿಂದ ಸ್ವರ್ಗಕ್ಕೆ ಹತ್ತುವ ಮಾರ್ಗ.

**ಮಹಾಪದ ಮಹಾಪದ (ಪುಂ)** 1. ಕಂಬೇರನ ಒಂಬತ್ತು ನಿಧಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಮಹಾಪದಶ್ಚ ಪದಾಶ್ಚ ಶಾಕ್ಷೋ ಮಕರ-ಕಚ್ಛಪಿ | ಮುಕುಂದ: ಕುಂದನೀಲೌ ಚ ವರಶ್ಚ ನಿಧಯೋ ನವ" ಅಮಂ | 2. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. "ಶಾಕ್ಷಪಾಲೋ ಮಹಾಪದ: ಕಾಕೋದರ ಇತೀರಿತಾ:" ವೈಜಂ | 3. ಅಷ್ಟದಿಗ್ಗಜಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. 4. ಒಂದು ದೊಡ್ಡ ಸಂಖ್ಯೆ. "ಮಹಾಪದ: ಪುನರ್ನಿಧೌ | ನಾಗಸಂಖ್ಯಾಮಿದೋ:" ಹೇಮಂ | (ನಂ) 5. ಬಿಳಿ ತಾವರೆ, ಶ್ವೇತಕಮಲ, ಪುಂಡರೀಕ. "ಪುಂಡರೀಕಂ ಮಹಾಪದಂ ಪವಿತ್ರಂ ಪುಣ್ಯಗಾಂಧಿಕಮ್" ವೈಜಂ |



**ಮಹಾಪಾತಕ ಮಹಾಪಾತಕ (ನಂ)** ಮಹಾಪಾಪ, ದೊಡ್ಡ ಪಾಪ, ಮಾಡಬಾರದ ಘೋರವಾದ ಪಾಪ. ಮಹತ್ವ ತತ್ ಪಾತಕಂ ಚ । “ಋಹತ್ಯಾ ಸುರಾಪಾನಂ ಸ್ತೇಯಂ ಗುರ್ವಂಜನಾಗಮಃ । ಮಹಾಂತಿ ಪಾತಕಾನ್ಯಾಹುಃ ತತ್ಸಂಸರ್ಗಾಶ್ಚ ಪಶ್ಯಮಃ” ಮನುಂ ೧೧-೪೪ । ಇವು ಐದೂ ಮಹಾಪಾತಕಗಳು.

**ಮಹಾಪಾತಕಿನ್ ಮಹಾಪಾತಕಿನ್ (ವಿಂ)** ಮಹಾಪಾಪ ದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು, ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯೆ ಮೊದಲಾದ ಪಾಪ ಕಾರ್ಯ ಮಾಡಿದವನು. ಮಹಾಪಾತಕಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪) । “ಮಹಾಪಾತಕಿನೋ ಯೇ ಚ ಪತಿತಾಸ್ತೇ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾಃ । ಪತಿತಾನಾಂ ನ ದಾಹಃ ಸ್ಯಾತ್ ನಾನ್ಯೇಷ್ಠಿರ್ನಾಸ್ಥಿ- ಸಂಚಯಃ” ।

**ಮಹಾಪುರಾಣ ಮಹಾಪುರಾಣ (ನಂ)** ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ ಪ್ರಣೀತವಾದ ಪುರಾಣಗಳು, ಸೃಷ್ಟಿ ಮೊದಲಾದ ಹನ್ನೊಂದು ಲಕ್ಷಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪುರಾಣಗಳು. **ಪುರಾಣದ ಹನ್ನೊಂದು ಲಕ್ಷಣಗಳು:** “ಸೃಷ್ಟಿಶ್ಚಾಪಿ ವಿಸೃಷ್ಟಿಶ್ಚ ಸ್ಥಿತಿಸ್ತೇಷಾಂ ಚ ಪಾಲನಮ್ । ಕರ್ಮಣಾಂ ವಾಸನಾ ವಾರ್ತಾ ಮನುನಾಂ ಚ ಕ್ರಮೇಣ ಚ । ವರ್ಣನಂ ಪ್ರಲಯಾನಾಂ ಚ ಮೋಕ್ಷಸ್ಯ ಚ ನಿರೂಪಣಮ್ । ಉತ್ಕೀರ್ತನಂ ಹರೇರೇವ ದೇವಾನಾಂ ಚ ಪೃಥಕ್ ಪೃಥಕ್ । ದಶಾಧಿಕಂ ಲಕ್ಷಣಂ ಚ ಮಹತಾಂ ಪರಿಕೀರ್ತಿಸಮ್” ಋಷಿಂ ।

**ಮಹಾಪುರುಷ ಮಹಾಪುರುಷ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. 2. ಪರಮಪುರುಷ. 3. ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ಮನುಷ್ಯ, ಉತ್ತಮ ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮನುಷ್ಯ, ಗೌರವಾರ್ಹನಾದ ಮನುಷ್ಯ. ಮಹಾನ್ ಪುರುಷಃ । 4. 32 ಲಕ್ಷಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮನುಷ್ಯ.

**ಮಹಾಪುಷ್ಪ ಮಹಾಪುಷ್ಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ವಿಷ್ಣುಕಾಂತ ಗಿಡ.

**ಮಹಾಪುಷ್ಪ ಮಹಾಪುಷ್ಪ (ಪುಂ)** ಉಷ್ಣ, ಒಂಟಿ. ಮಹತ್ ಪುಷ್ಪಂ ಯಸ್ಯ ।

**ಮಹಾಪ್ರಭು ಮಹಾಪ್ರಭು (ಪುಂ)** 1. ದೊಡ್ಡ ಯಜಮಾನ. 2. ಪರಮೇಶ್ವರ. ಮಹಾಪ್ರಾಸಾದೋ ಪ್ರಭುಃ ।

**ಮಹಾಪ್ರಲಯ ಮಹಾಪ್ರಲಯ (ಪುಂ)** ಚತುರ್ಮುಖ (ಬ್ರಹ್ಮ)ನ ಆಯುಸ್ಸಿನ (ಬ್ರಹ್ಮಮಾನದಲ್ಲಿ ನೂರು ವರ್ಷಗಳ) ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಆಗುವ ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶ. ಬ್ರಹ್ಮನ ಒಂದು ಹಗಲಿನ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಸಾಮಾನ್ಯ ಪ್ರಲಯವಾಗುವುದು. ನೂರು ವರ್ಷಗಳ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಸಕಲ ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶವಾಗುವುದು. [ಎವರಕ್ಕೆ “ಪ್ರಾಕೃತಪ್ರಲಯ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಮಹಾಪ್ರಸಾದ ಮಹಾಪ್ರಸಾದ (ಪುಂ)** 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ನೈವೇದ್ಯ ನಿರ್ಮಾಲ್ಯ ಪಾದಾರ್ಪಣ ಮುಂತಾದುವು.

“ಪಾದೋದಕಂ ಚ ನಿರ್ಮಾಲ್ಯಂ ನೈವೇದ್ಯಂ ಚ ವಿಶೇಷತಃ । ಮಹಾಪ್ರಸಾದ ಇತ್ಯುಕ್ತವಾ ಗ್ರಾಹ್ಯಂ ವಿಷ್ಣೋಃ ಪ್ರಯತ್ನತಃ” । 2. ದೇವರು ಗುರು ಹಿರಿಯರು ಮುಂತಾದವರ ಅನುಗ್ರಹ, -ಒಲಿಮೆ.

**ಮಹಾಪ್ರಾಣ ಮಹಾಪ್ರಾಣ (ಪುಂ)** 1. ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸಲು ನಡೆಯುವ ಒಂದು ಯತ್ನ. ಈ ಯತ್ನವು ಅಭ್ಯಂತರ ಮತ್ತು ಬಾಹ್ಯಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಈ ಮಹಾಪ್ರಾಣ ಯತ್ನವು ಹನ್ನೊಂದು ವಿಧ ಬಾಹ್ಯ ಪ್ರಯತ್ನಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಹನ್ನೊಂದು ವಿಧ ಬಾಹ್ಯ ಪ್ರಯತ್ನಗಳು: (1) ವಿವಾರ, (2) ಸಂವಾರ, (3) ಶ್ವಾಸ, (4) ನಾದ, (5) ಘೋಷ, (6) ಅಘೋಷ, (7) ಅಲ್ಪಪ್ರಾಣ, (8) ಮಹಾಪ್ರಾಣ, (9) ಉದಾತ್ತ, (10) ಅನುದಾತ್ತ ಮತ್ತು (11) ಸ್ವರಿತ. 2. ಮಹಾಪ್ರಾಣ ಯತ್ನದಿಂದ ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ವರ್ಣ (ಅಕ್ಷರ). **ಮಹಾಪ್ರಾಣ (ಬಾಹ್ಯ) ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ಅಕ್ಷರಗಳು:** ಕವರ್ಗ ಮೊದಲುಗೊಂಡು ಪ್ರತಿಯೊಂದು ವರ್ಗದ 2 ಮತ್ತು 4 ನೆಯ ಅಕ್ಷರಗಳು. ಖ ಘ ಙ ಞ ಠ ಡ ಧ ಘ ಘ ಮತ್ತು ಶ ಷ ಸ ಹ ಇವು ಮಹಾಪ್ರಾಣ ವರ್ಣಗಳು. [ಇಲ್ಲೊಂದು ತಿದ್ದುಪಡಿ: ಖ ಘ ಙ ಞ ಮೊದಲಾದ ಮಹಾಪ್ರಾಣ ವರ್ಣಗಳು ಅಭ್ಯಂತರ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದುವು ಎಂದು ಪ್ರಮಾದದಿಂದ ತಪ್ಪುಬಿದ್ದಿರುವುದು. “ಬಾಹ್ಯ ಮಹಾಪ್ರಾಣ ಪ್ರಯತ್ನ” ಎಂದು ತಿದ್ದಿ ಕೊಳ್ಳಬೇಕು.] (ವಿಂ) 3. ಹೆಚ್ಚು ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು. “ಏವಂ ಸುರಗಣಾನ್ ಕೃದ್ವೋ ಭಿಷಯನ್ ವಪುಷಾ ರಿಪ್ಸುನ್ । ವ್ಯನದತ್ ಸುಮಹಾಪ್ರಾಣೋ ಯೇನ ಲೋಕಾ ವಿವೇಕತಃ” ಭಾಗಂ ೬-೧೧-೬ । 4. ರಣಹದ್ದು, ಮಂಡಕಾಗೆ.

**ಮಹಾಫಲ ಮಹಾಫಲ (ಪುಂ)** 1. ಬಿಲ್ವವೃಕ್ಷ. (ನಂ) 2. ದೊಡ್ಡ ಫಲ. 3. ಅಧಿಕವಾದ ಪ್ರಯೋಜನ. (ವಿಂ) 4. ದೊಡ್ಡ ಫಲವುಳ್ಳ. 5. ಅಧಿಕವಾದ ಪ್ರಯೋಜನವುಳ್ಳ.

**ಮಹಾಫಲಾ ಮಹಾಫಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಹಾವು ಮೆಕ್ಕೆ. 2. ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ನೇರಳೆ ಗಿಡ, ರಾಜನೇರಳೆ. 3. ಕಹಿ ಸೋರೆ. 4. ಪಡವಲ ಗಿಡ.

**ಮಹಾಬಲ ಮಹಾಬಲ (ಪುಂ)** 1. ವೇಗವಾದ ವಾಯು. ಮಹತ್ ಬಲಂ ಯಸ್ಯ । “ಶುಷ್ಕಿಮಹಾಬಲೋ ವೇಗೀ ನಭೋಜಾತಃ ಸದಾಗತಿಃ” ವೇಜಂ । 2. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಮಹತ್ ಬಲಮ್ ಅಪರಿಮಿತಕ್ರಿಯತ್ವೇಽಪಿ. ಅನಾಕಾಲಿತಶ್ರಮತ್ವಲಕ್ಷಣ-ಶಕ್ತಿರಸ್ಯ । “ಕರ್ಷಂತರಾನಪೇಕ್ಷೋ ಯಃ ಸೃಷ್ಟೇಃ ಸ ಸ್ವಾನ್ಮಹಾ-ಬಲಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । “ಮಹೋತ್ಸಾಹೋ ಮಹಾಬಲಃ” ವಿಂ ಸಂ । 3. ಬುದ್ಧಿ. ಬುದ್ಧಿ ನ ಹತ್ತು ಬಲಗಳು: (1) ದಾನಮ್, (2) ಶೀಲಮ್, (3) ಕ್ಷಮಾ, (4) ವೀರ್ಯಮ್,



(5) ವ್ಯಾನಮ್, (6) ಪ್ರಜ್ಞಾ, (7) ಬಲಮ್, (8) ಉಪಾಯಃ, (9) ಪ್ರಣಿಧಿಃ ಮತ್ಸು (10) ಜ್ಞಾನಮ್ | (ನಂ) 4. ಸೀಸ ಲೋಹ. (ವಿಂ) 5. ಹೆಚ್ಚು ಬಲಶಾಲಿಯಾದ.

ಮಹಾಬಾಹು ಮಹಾಬಾಹು (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. (ವಿಂ) 2. ಉದ್ದವಾದ ತೋಳುಗಳುಳ್ಳವನು.

ಮಹಾವಿಲ ಮಹಾವಿಲ (ನಂ) ಆಕಾಶ, ಅಂತರಿಕ್ಷ.

ಮಹಾಭಾಗ ಮಹಾಭಾಗ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಅದೃಷ್ಟಶಾಲಿ, ಪುಣ್ಯವಂತ, ದಶಾವಂತ. "ಮಹಾಭಾಗ ಸದೃಶಃ ಖಲು ತೇ ನಿರ್ಮಣಸ್ಯ ವಚನಮಧುರತಯಾ" ಮಾಲತೀಂ ೨ |

ಮಹಾಭಾಗ್ಯ ಮಹಾಭಾಗ್ಯ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ಅದೃಷ್ಟ, ಹೆಚ್ಚು ಐಶ್ವರ್ಯ, ಸಮೃದ್ಧಿ, ಅಭ್ಯುದಯ. ಮಹತ್ವ ತತ್ ಭಾಗ್ಯಂ ಚ |

ಮಹಾಭಾರತ ಮಹಾಭಾರತ (ನಂ) ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ ಪ್ರಣೀತ ವಾದ ಒಂದು ಇತಿಹಾಸ ಗ್ರಂಥ. ಮಹಾಂತ ಭಾರಂ ತನೋತಿ — ತನು (ವಿಸ್ತಾರೇ) "ಓ:" (ಕಾಂ ೩-೨-೪೮) | ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ದೇವತೆಗಳೆಲ್ಲರೂ ಸೇರಿ ಒಂದು ತಕ್ಕಡಿಯಲ್ಲಿ ಒಂದು ಕಡೆ ನಾಲ್ಕು ವೇದಗಳನ್ನೂ ಇನ್ನೊಂದು ಕಡೆ ಮಹಾಭಾರತ ವನ್ನೂ ಇಟ್ಟು ತೂಗಿದರು. ನಾಲ್ಕು ವೇದಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಮಹಾಭಾರತವೇ ಹೆಚ್ಚು ಭಾರವಾಗಿ ತೂಗಿತು. ಆಗ ನಿಂದ ವಿಷಯದ ಮಹತ್ವದಿಂದಲೂ ಗುರುತ್ವದಿಂದಲೂ ಈ ಗ್ರಂಥಕ್ಕೆ "ಮಹಾಭಾರತ" ವೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. "ಏಕತಶ್ಚತುರೋ ವೇದಾ ಭಾರತಂ ತ್ರಿಕದೇಶತಃ | ಪುರಾ ಕಿಲ ಸುರೈಃ ಸರ್ವೈಃ ಸಮೇತೃ ತುಲಯಾ ಭೂತಮ್ || ಚತುರ್ಮುಖೈಃ ಸರಹಸ್ಯಮ್ಯೋ ವೇದಮ್ಯೋ ಹ್ಯಧಿಕಂ ಯದಾ | ತದಾಪ್ರಭೃತಿ ಲೋಕೇಽಸ್ಮಿನ್ ಮಹಾ- ಭಾರತಮುಚ್ಯತೇ || ಮಹತ್ವೇ ಚ ಗುಹ್ಯತ್ವೇ ಚ ಧ್ವಿನಿಮಾಣಂ ಯತೋ- ಧಿಕಮ್ | ಮಹತ್ವಾದ್ಭಾರವತ್ವಾಚ್ಚ ಮಹಾಭಾರತಮುಚ್ಯತೇ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧-೨೯೭-೯೯ | [ವಿವರಗಳಿಗೆ "ಭಾರತ" ಪದ ದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಮಹಾಭಾಷ್ಯ ಮಹಾಭಾಷ್ಯ (ನಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ. 2. ಪತಂಜಲಿಮಹರ್ಷಿಯು ಪಾಣಿನಿಸೂತ್ರಗಳಿಗೆ ಬರೆದ ವ್ಯಾಕರಣ ಮಹಾಭಾಷ್ಯ.

ಮಹಾಭೀಷ್ಮ ಮಹಾಭೀಷ್ಮ (ಪುಂ) ಶಂತನು ರಾಜ, ಭೀಷ್ಮನ ತಂದೆ. "ಮಹಾಭೀಷ್ಮಸ್ತು ಶಂತನುಃ ಪ್ರತೀಪಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಮಹಾಭೂತ ಮಹಾಭೂತ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಮಹಾಂತಃ ಮಹಾತ್ಮಾನಃ ಭೂತಾಃ ಸ್ವಭೂತಾ ಅಸ್ಯ | "ಮಹಾಭೂತೋ ಮಹಾತ್ಮಾನಃ ಸ್ವಭೂತಾ ಯಸ್ಯಾಚೋಚ್ಯತೇ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ | "ಮಹಾಭೂತೋ ಮಹಾನಿಧಿಃ" ವಿಂ ಸಂ | (ನಂ) 2. ಪೃಥಿವಿ ಜಲ ಆಕಾಶ ವಾಯು ಮತ್ಸು ತೇಜಸ್ಸುಗಳೆಂಬ ಪಂಚ

ಮಹಾಭೂತಗಳು. "ತಂ ವೇದಾ ವಿಧೇ ನೃನಾಂ ಮಹಾಭೂತ- ಸಮಾಧಿನಾ" ರಘುಂ ೧-೨೯ |

ಮಹಾಭೇರವ ಮಹಾಭೇರವ (ಪುಂ) 1. ಶರಭರೂಪಿಯಾದ ಪರಮೇಶ್ವರ. ಮಹಾನ್ ಭೇರವಃ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಭೇರವೀ -ಭೇರವೀ. 2. ಒಂದು ವಿದ್ಯೆ. "ತನ್ಮಹಾಭೇರವೀ ವಿद्याಂ ವಸಂಶ್ರದ್ಧಯೋರಾಹರಣಾಯ ಪ್ರಸ್ಥಾಪಯಾಮಃ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೩-೨೪ |

ಮಹಾಭೋಗ ಮಹಾಭೋಗ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ವೈಶಾಲ್ಯ, ಪುಳ್ಳು. ಮಹಾನ್ ಆಭೋಗಃ ಪೂರ್ಣತಾ ಯಸ್ಯ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಭೋಗಾ -ಭೋಗಾ. 2. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. ಮಹಾನ್ ಭೋಗಃ ಸುಖರೂಪ- ಮಸ್ಯಾಃ | "ಮಹಾರ್ಥಸಾಧನೀ ದೇವೀ ಮಹಾಭೋಗಾ ತತಃ ಸ್ಮೃತಾ" ದೇವೀಪುಂ |

ಮಹಾಮನಸ್ ಮಹಾಮನಸ್ (ಪುಂ) 1. ಶರಭವೃಗ. (ವಿಂ) 2. ದೊಡ್ಡ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ, ಉದಾರವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ಮಹತ್ ಉತ್ಕೃಷ್ಟಂ ಮನೋ ಯಸ್ಯ |

ಮಹಾಮನ್ತ್ರ ಮಹಾಮನ್ತ್ರ (ಪುಂ) ವೀರ್ಯವತ್ತಾದ ವೇದ ಮಂತ್ರ.

ಮಹಾಮಾಂಸ ಮಹಾಮಾಂಸ (ನಂ) ಪುರುಷನ ಮಾಂಸ. ಮಹತ್ ನಿಂದಿತಂ ಮಾಂಸಮ್ | "ಅಶಸ್ತ್ರಪೂತಮವ್ಯಾಜಂ ಪುರುಷಾಕ್ಷೋಪ- ಕಲ್ಪಿತಮ್ | ವಿಕ्रीयತೇ ಮಹಾಮಾಂಸಂ ಗೃಹ್ಯತಾಂ ಗೃಹ್ಯತಾಮಿತಿ" ಮಾಲತೀಂ ೫-೧೨ |

ಮಹಾಮಾತ್ರ ಮಹಾಮಾತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಧಾನಮಾತ್ಮ, ಮುಖ್ಯ ಮಂತ್ರಿ. ಮಹತೀ ಮಾತ್ರಾ ಗೌರವಪರಿಮಾಣಂ ಯಸ್ಯ | "ಮನ್ತ್ರೇ ಕರ್ಮಣಿ ಭೂಷಾಂ ವಿದ್ವೇ ಮಾನೇ ಪರಿಚ್ಛದೇ | ಮಾತ್ರಾ ಚ ಮಹತೀ ಯೇಷಾಂ ಮಹಾಮಾತ್ರಾಸ್ತು ತೇ ಸ್ಮೃತಾಃ" | 2. ಮಾವಟಿಗರ ಯಜಮಾನ. "ಹಸ್ತಾರೋಹಾ ನಿಷಾದಿನಃ | ತತ್ಪ್ರಧಾನಾ ಮಹಾಮಾತ್ರಾಃ" ವೇಜಂ | (ವಿಂ) 3. ಹೆಚ್ಚು ಐಶ್ವರ್ಯ ವಂತ, ದೊಡ್ಡ ಧನಿಕ. "ಲಕ್ಷ್ಮೀವಾನ್ ಲಕ್ಷ್ಮಣಃ ಶ್ರೀಲೋ ಮಹಾಮಾತ್ರೋಽಧಿಕಧಿಕಃ" ವೇಜಂ |

ಮಹಾಮಾಯಾ ಮಹಾಮಾಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅವಿದ್ಯೆ, ಒಂದು ವಸ್ತುವು ಮತ್ತೊಂದರಂತೆ ತೋರುವುದು. ಇದು ಜಗತ್ತಿಗೆ ಮೂಲಕಾರಣವಾದುದರಿಂದ ಮಹಾಮಾಯಾ ಯೆನಿಸುವುದು.

ಮಹಾಮಾಘ ಮಹಾಮಾಘ (ಪುಂ) ಕಾರಾಮಣಿ, ಅಲಸಂದೆ.

ಮಹಾಮುನಿ ಮಹಾಮುನಿ (ಪುಂ) 1. ಅಗಸ್ತ್ಯಮುನಿ. 2. ಧನಿಯ, ಕೊತ್ತುಂಬರಿ. "ಅಥ ಮಹಾಮುನಿಃ | ಅಗಸ್ತಿ- ಕುಸ್ತುಮ್ಬುರಣೋಃ" ಹೇಮಂ |

ಮಹಾಮೂಲ ಮಹಾಮೂಲ (ನಂ) ರಾಜೀರುಳ್ಳಿ. ಮಹತ್ (ವೀರ್ಯಕಾರಿತ್ವಾತ್) ಶ್ವೇತಂ ಮೂಲಮಸ್ಯ |



**ಮಹಾಮೂಲ್ಯ ಮಹಾಮೂಲ್ಯ** (ನಂ) 1. ಪದ್ಮರಾಗ, ಮಾಣಿಕ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಅಧಿಕ ಬೆಲೆಯುಳ್ಳ, ಹೆಚ್ಚು ಬೆಲೆ ಬಾಳುವ. "ಮಹಾಮೂಲ್ಯಂ ಮಹಾರ್ಥಂ ಸ್ವಾತ್ ಪದ್ಮರಾಗಮಣಾವಪಿ" ವಿಶ್ವಂ.

**ಮಹಾಮೃಗ ಮಹಾಮೃಗ** (ಪುಂ) 1. ಶರಭ, ಕಡವೆಮೃಗ. 2. ದೊಡ್ಡ ಮೃಗ, ಗಜ, ಆನೆ. ಮಹಾನ್ ಮೃಗಃ.

**ಮಹಾಮೋಹ ಮಹಾಮೋಹ** (ಪುಂ) 1. ಅರುಳು-ಮರಳು, ಬುದ್ಧಿನಾಶ, ಅವಿವೇಕ, ಅಜ್ಞಾನ. ಮಹಾನ್ ಮೋಹಃ. "ವತ್ಸ, ಮಯಾ ಮಹಾಮೋಹಸ್ಯ ವಿವೇಕಸಕಾಶಾದತ್ಯಾಹಿತಂ ಶ್ರುತಮ್. ತೇನ ತದ್ವಸ್ತಾನ್ತಂ ಪ್ರತ್ಯೇತುಮಾಗತೋಽಸ್ಮಿ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೨. 2. ವಿಷ ಯೇಚ್ಛೆ, ಸುಖಾನುಭವದ ಅಸೆ. "ತಮೋವಿವೇಕೋ ಮೋಹಃ ಸ್ವಾತ್ ಅಂತಃಕರಣವಿಭ್ರಮಃ. ಮಹಾಮೋಹಸ್ತು ವಿಜ್ಞೇಯೋ ಗ್ರಾಮ್ಯ-ಭೋಗಸುಖೇಷಣಾ" .

**ಮಹಾಯಜ್ಞ ಮಹಾಯಜ್ಞ** (ಪುಂ) ಗೃಹಸ್ಥನು ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಪಂಚ ಮಹಾಯಜ್ಞಗಳು; (1) ಬ್ರಹ್ಮಯಜ್ಞ (ವೇದಾಧ್ಯಯನ), (2) ದೇವಯಜ್ಞ (ಅಗ್ನಿ ಕಾರ್ಯ), (3) ಪಿತೃಯಜ್ಞ (ತರ್ಪಣ), (4) ಭೂತಯಜ್ಞ (ಬಲಿ) ಮತ್ತು (5) ಮನುಷ್ಯಯಜ್ಞ (ಅತಿಥಿ ಸತ್ಕಾರ). "ಅಧ್ಯಾಪನಂ ಬ್ರಹ್ಮಯಜ್ಞಃ ಪಿತೃಯಜ್ಞಸ್ತು ತರ್ಪಣಮ್. ಹೋಮೋ ದೇವೋ ಬಲಿರ್ಮಾನಿತೋ ನೃಪಯಜ್ಞೋತಿಥಿಪೂಜನಮ್" ಮನುಂ ೩-೭೦.

**ಮಹಾರಜತ ಮಹಾರಜತ** (ನಂ) ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ಮಹತ್ವ ತತ್ ರಜತಂ ಚ.

**ಮಹಾರಜನ ಮಹಾರಜನ** (ನಂ) 1. ಕುಸುಂಬೆ ಹೂವು. 2. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. "ಮಹಾರಜನಮುದ್ವಿಷ್ಟಂ ಶಾತಕುಮ್ಮ-ಕುಸುಮಯೋಃ" ವಿಶ್ವಂ.

**ಮಹಾರಥ ಮಹಾರಥ** (ಪುಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ರಥ. ಮಹಾನ್ ರಥಃ. 2. ಮಹಾಶೂರನಾದ ಯೋಧ. "एको दश-सहस्राणि योधयेद्यस्तु धन्विनाम्। शस्त्रशस्त्रप्रवीणश्च विज्ञेयः स महारथः" . ಹತ್ತು ಸಹಸ್ರ ಯೋಧರೊಡನೆ ಯುದ್ಧಮಾಡಬಲ್ಲ ಮತ್ತು ಶಸ್ತ್ರವಿದ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ನಿಪುಣನಾದ ಯೋಧನು ಮಹಾರಥ. 3. ತನ್ನನ್ನೂ ಸಾರಥಿಯನ್ನೂ ಕುದುರೆಗಳನ್ನೂ ರಕ್ಷಿಸಿಕೊಂಡು ಯುದ್ಧ ಮಾಡಬಲ್ಲವನು. "आत्मानं सारथिं चाश्वान् रक्षन् युष्येत यो नरः। स महारथसंज्ञः स्यात् इत्याहुर्नीतिकोविदाः" . "महा-रथः पुण्यरथं रथाङ्गी क्षिप्रं क्षपानाथ इवाधिरूढः" ಮಾಘಂ ೩-೨೨.

**ಮಹಾರಸ ಮಹಾರಸ** (ಪುಂ) 1. ಕಬ್ಬು. 2. ಖರ್ಜೂರದ ಮರ. ಮಹಾನ್ ರಸೋ यस्य. "इक्षुर्वृण्यो मधुतृणे मृत्युपुण्यो

महारसः" वैजं. 3. ಬೆನ್ನುಮೂಳೆ. 4. ಪಾದರಸ. 5. ಗೂಡಿನಲ್ಲಿರುವ ರೇಷ್ಮೆಹುಳು. "महारसः स्यात् खजूरे कोशकारकशेरुणोः" मेदिं. (ನಂ) 6. ಗಂಜಿ, ಅನ್ನದ ಮೇಲಿನ ಕೆನೆ. -ರಸಾ-ರಸಾ. 7. ಎಷ್ಟು ಕ್ರಾಂತಿ ಗಿಡ. "विष्णुकान्ता तु सुमुखी गवसी स्यान्महारसा" वैजं. 8. ನೀಲಿಗಿಡ. "श्रीकल्यां क्लीतकी नीली नीलकेशी महारसा" वैजं.

**ಮಹಾರಾಜ ಮಹಾರಾಜ** (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ, ಅರಸು. ಮಹಾಶಾಸನ ರಾಜಾ ಚ. 2. ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ರಾಜನನ್ನು ಸಂಜೋಧಿಸುವ ಗೌರವ ಪದ. "अथ नाट्योक्तयो राजा देवो भट्टारकोऽपि च। महाराजश्च" वैजं. 3. ನಖ, ಉಗುರು. "पुनर्भवः पाणिहो महाराजः पुनर्भवः" वैजಂ.

**ಮಹಾರಾಜಾಧಿರಾಜ ಮಹಾರಾಜಾಧಿರಾಜ** (ಪುಂ) ಸಾರ್ವಭೌಮ, ಚಕ್ರವರ್ತಿ, ಸಾಮಂತ ರಾಜರ ಅಧಿಪತಿ, ಒಂದು ರಾಷ್ಟ್ರದ ಅಧಿಪತಿ, ಚಕ್ರಾಧಿಪತಿ.

**ಮಹಾರಾಜಿಕ ಮಹಾರಾಜಿಕ** (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) ಗಣದೇವತೆಗಳು. ಮಹತೀ ರಾಜಿಃ ಪಙ್ಕ್ತಿಯೇಷಾಮ್ "कप्" (५-४-१५४). "महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः" अमं.

**ಮಹಾರಾಜ್ಞಿ ಮಹಾರಾಜ್ಞಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಟ್ಟಮಹಿಷಿ, ಪಟ್ಟಾಭಿಷಿಕ್ತಳಾದ ರಾಜನ ಪತ್ನಿ.

**ಮಹಾರಾತ್ರಿ ಮಹಾರಾತ್ರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಾತ್ರಿಯ ಮಧ್ಯದ ಎರಡು ಜಾವಗಳ ಕಾಲ. "महानिशा" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ. 2. ಮಹಾಪ್ರಳಯ, ಬ್ರಹ್ಮನ ನೂರು ವರ್ಷಗಳ ಆಯಸ್ಸು ಕಳೆದ ನಂತರದ ಕಾಲ, ಮಹಾಕಲ್ಪ. "ब्रह्मणश्च निपाते च महाकल्पो भवेन्नृप। प्रकीर्तिता महारात्रिः" .

**ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರ ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ದೊಡ್ಡ ದೇಶ. ಮಹಾನ್ ರಾಷ್ಟ್ರಃ. 2. ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರ ದೇಶ. (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 3. ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರ ದೇಶದ ಜನರು.

**ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರಿ ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರ ದೇಶದ ಭಾಷೆ, ಪ್ರಾಕೃತಭಾಷೆಯ ಒಂದು ಭೇದ. "महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः" काव्याಂ १-३४. 2. ನೀರುಹಿಪ್ಪಲಿ. स देशः कारणत्वेना-स्त्यस्याः "अच्" (५-२-१२७). "डीष्" (४-१-४१).

**ಮಹಾರೋಗ ಮಹಾರೋಗ** (ಪುಂ) ಎಂಟು ವಿಧ ಮಹಾ ವ್ಯಾಧಿಗಳು: (1) ಉಮಾದ, (2) ರಾಜಯಕ್ಷ್ಮಾ (ಕೈಯೇ ರೋಗ), (3) ಶ್ವಾಸ: (ದಮ್ಮು ಉಬ್ಬಿಸ), (4) ತ್ವಗದೋಷ: (ಚರ್ಮವ್ಯಾಧಿ), (5) ಮಧುಮೇಹ: (ಮೂತ್ರರೋಗ),



(6) ಅಶ್ಮರೀ (ಮೂತ್ರಾತಿಸಾರ, ಸ್ಕಂಧರೋಗ), (7) ತದರ-  
ರೋಗ: (ಹೊಟ್ಟೆಶೂಲೆ) ಮತ್ತು (8) ಭಗಂದರ (ಅಸನವ್ರಣ,  
ನಾಡೀವ್ರಣ). "ಉನ್ಮಾದೋ ರಾಜಯಕ್ಮಾ ಚ ಶ್ವಾಸಸ್ವಾದೋಽಽವ  
ಚ | ಮಧುಮೇಹಶ್ವಾಸರೀ ಚ ತಥೋದರಭಗಂದರೋ | ಇತ್ಯೇತೇಷ್ಠಿ  
ಮಹಾರೋಗಾ ಮಹಾಪಾತಕಸಂಭವಾಃ" |

ಮಹಾರೋವ ಮಹಾರೋವ (ಪುಂ) ಇಪ್ಪತ್ತೆಂಟು ವಿಧ  
ನರಕಗಳಿಲ್ಲೊಂದು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ನರಕ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಮಹಾರ್ಥ ಮಹಾರ್ಥ (ವಿಂ) 1. ಬಹು ಬೆಲೆ ಬಾಳುವ.  
ಮಹಾನ್ ಅರ್ಥೋ ಮೂಲಂ ಯಸ್ಯ | (ಪುಂ) 2. ಲಾವಣ್ಯ. "ಮಹಾರ್ಥಸ್ತು  
ಮಹಾಮೂಲೈ ತಥಾ ಲಾವಣ್ಯಪಕ್ಷಿಣಿ" ವಿಶ್ವಂ |

ಮಹಾರ್ಣವ ಮಹಾರ್ಣವ (ಪುಂ) ದೊಡ್ಡ ಸಮುದ್ರ,  
ತುಂಬಿದ ಸಮುದ್ರ. ಮಹಾನ್ ಅರ್ಣವಃ | ಪೂರ್ಣಾನ್ವೋದಯಾ-  
ಕಾಕ್ಷೀ ದೃಷ್ಟಾಂತೋಽ ಮಹಾರ್ಣವಃ" ಮಾಘಂ ೨-೩೧ |

ಮಹಾರ್ಬು ಮಹಾರ್ಬು (ನಂ) ಹತ್ತು ಅರ್ಬು, ನೂರು  
ಕೋಟಿ ಸಂಖ್ಯೆ.

ಮಹಾಹಂ ಮಹಾಹಂ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ಬೆಲೆ ಬಾಳುವ, ಅಧಿಕ  
ಬೆಲೆಯುಳ್ಳ. ಮಹಾನ್ ಅಹಂಃ ಮೂಲಂ ಯಸ್ಯ | "ಮಹಾಹಂಶಯಾ-  
ಪರಿವರ್ತನಚ್ಯುತಃ" ಕೃಷ್ಣಂ ೪-೧೨ |

ಮಹಾಲಯ ಮಹಾಲಯ (ಪುಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಮನೆ, ವಿಶಾಲ  
ವಾದ ಮತ್ತು ಎತ್ತರವಾದ ಮನೆ. ಮಹಾನ್ ಆಲಯಃ |  
2. ದೇವಾಲಯ, ಗುಡಿ. 3. ತೀರ್ಥಸ್ಥಾನ, ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ.  
4. ಕನ್ಯಾಮಾಸದ ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷ. 5. ಯಾತ್ರಾಸ್ಥಳ. 6.  
ಪರಮಾತ್ಮ. ಮಹಾನ್ ಲಯೋಽ |

ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮೀ ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಕ್ಷ್ಮೀದೇವಿ,  
ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಪತ್ನಿ. 2. ಎಂಟು ಭುಜಗಳಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ದುರ್ಗಾದೇವಿ. "ಸೇವೇ ಸೇರಿಮಮದಿನಿಮಿಹ ಮಹಾ-  
ಲಕ್ಷ್ಮೀಂ ಸರೋಜಸ್ಥಿತಾಮ್" |

ಮಹಾವರಾಹ ಮಹಾವರಾಹ (ಪುಂ) ಆದಿವರಾಹ, ಹಿರಣ್ಯ,  
ಕ್ಷನ ಸಂಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಮಹಾವಿಷ್ಣುವು ಕೈಗೊಂಡ ಮೂರ  
ನೆಯ ಅವತಾರ. "ಸಮುಜ್ಜಿಹೀಷ್ಠಂ ಜಗತೀಂ ಮಹಾಭರಾಂ ಮಹಾ-  
ವರಾಹಂ ಮಹತೋರ್ಣವಾವಿವ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೪೦ | "ಮಹಾವರಾಹೋ  
ಗೋವಿಂದಃ" ವಿಂ ಸಂ |

ಮಹಾವರೋಹ ಮಹಾವರೋಹ (ಪುಂ) ಆಲದಮರ, ಮಟ  
ವೃಕ್ಷ. ಮಹಾನ್ ಅವರೋಹೋ ಯಸ್ಯ |

ಮಹಾವಾಕ್ಯ ಮಹಾವಾಕ್ಯ (ನಂ) ಅನೇಕ ಅವಾಂತರ  
ವಾಕ್ಯಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ದೊಡ್ಡ ವಾಕ್ಯ, ದೀರ್ಘ  
ವಾದ ವಾಕ್ಯ, ವಾಕ್ಯಗಳ ಸಮುದಾಯ. ಮಹಾರ್ಥವನ್ನು  
ಕೊಡುವ ವಾಕ್ಯ.

ಮಹಾವಿಷ್ಣು ಮಹಾವಿಷ್ಣು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹತ್ತು ವಿಧ ವಿದ್ಯೆಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು.

ಮಹಾವಿಷ ಮಹಾವಿಷ (ಪುಂ) ಎರಡು ತಲೆ ಹಾವು. ಮಹತ್  
ಉಕ್ತಂ ವಿಷಮಸ್ಯ |

ಮಹಾವಿಷ್ಣು ಮಹಾವಿಷ್ಣು (ನಂ) ಮೇಷಸಂಕ್ರಾಂತಿ.  
ಮಹನ್ವ ತತ್ ವಿಷ್ಣುಶ್ಚ—"ವಃ" (೪-೨-೧೦೯) | ಇಲ್ಲಿ  
ವಿಷ್ಣು ಪದಕ್ಕೆ "ವ" ಪ್ರತ್ಯಯ ವಿಹಿತವಾಗಿದೆ.

ಮಹಾವಿಷ್ಣು ಮಹಾವಿಷ್ಣು (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣ.  
2. ಕಪಿಲ ಮಹರ್ಷಿ. "ಕಪಿಲಸ್ತು ಮಹಾವಿಷ್ಣುಃ" ವೈಜಂ |

ಮಹಾವೀಚಿ ಮಹಾವೀಚಿ (ಪುಂ) ಇಪ್ಪತ್ತೆಂಟು ನರಕಗಳಲ್ಲಿ  
ಒಂದು ನರಕ. ಮಹಾನ್ ಅವೀಚಿರಶ್ಚ |

ಮಹಾವೀರ ಮಹಾವೀರ (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. 2. ಸಿಂಹ,  
3. ಯಾಗದ ಅಗ್ನಿ. 4. ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧ. 5. ಬಿಳಿ  
ಕುದುರೆ. 6. ಗಿಡಗ, ಡೇಗೆ ಹಕ್ಕಿ. "ಮಹಾವೀರಸ್ತು ಗರುಡೇ  
ಶುರೇ ಸಿಂಹೇ ಮಖಾನಲೇ | ವಜ್ರೇ ಶ್ವೇತತುರಗೈ ಚ ಸಂಚಾಲವಿಹಗೋಽಪಿ  
ಚ" ಮೇದಿಂ | 7. ಕೋಗಿಲೆ. 8. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. 9. ಪುತ್ರ,  
ಮಗ. 10. ಹಂಸ. 11. ವಿಷ್ಣು. 12. ಯಾಗದ  
ಪಾತ್ರ. 13. ಒಳ್ಳೆಯ ಯೋಧ, ಉತ್ತಮ ಸೈನಿಕ.  
14. ಅಗ್ನಿ. (ವಿಂ) 15. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ.  
16. ಶೂರ, ಪರಾಕ್ರಮಿ. "ಮಹಾವೀರೋ ಯಜ್ಞಪಾತ್ರೇ ಗರುಡೇ  
ಸುಭಟೇ ಖಗೇ | ವಜ್ರೋಽಶ್ವೇ ತನಯೇ ಹಂಸೇ ಶುರೋಽನಿ ಪ್ರವರೇ ಹರೀ"   
ವೈಜಂ | "ಮಹಾವೀರಃ ಪವೌ ತಾಕ್ಷ್ಯೇ ಶುರೇ ಸಿಂಹೇಽಪಿ ಕೋಕಿಲೇ"   
ವಿಶ್ವಂ |

ಮಹಾವೀರಚರಿತ ಮಹಾವೀರಚರಿತ (ನಂ) ಭವಭೂತಿ ಕವಿ  
ರಚಿತವಾದ ಒಂದು ನಾಟಕ.

ಮಹಾವೀರ್ಯ ಮಹಾವೀರ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. 2.  
ವಾರಾಹ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 3. ಹೆಚ್ಚು ಬಲವುಳ್ಳವನು.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವೀರ್ಯ -ವೀರ್ಯಾ. 4. ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ,  
ಸಂಜ್ಞಾ ದೇವಿ. "ತಸರೆಣುರ್ಮಹಾವೀರ್ಯಾ ಸ್ವಾತಿಸೂರ್ಯಾ ಸುವರ್ಚಲಾ"   
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 5. ಕಾಡುಹತ್ತಿ ಗಿಡ.

ಮಹಾವ್ಯಸನ ಮಹಾವ್ಯಸನ (ನಂ) ದುರ್ಮಾರ್ಗ, ಕೆಟ್ಟ  
ಚಾಳಿ, ತಪ್ಪುದಾರಿ, ದುರ್ನಡತೆ. ಮಹಾವ್ಯಸನವು  
ಏಳು ವಿಧ: (1) ಮೃಗಯಾ (ಬೇಟೆ). (2) ಅಕ್ಷ: (ಪಗಡೆ  
ಯಾಟ), (3) ಸ್ತ್ರೀಯ: (ಪರಸ್ತ್ರೀ ಸಹವಾಸ), (4) ಪಾನಮ್  
(ಕುಡಿತ), (5) ವಾಕ್ಪಾರುಷ್ಯಮ್ (ಕಠಿನವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವಿಕೆ,  
ಮನನೋಯಿಸುವಂತೆ ಮಾತಾಡುವುದು), (6) ಅಭ್ಯರ್ಥನಮ್  
(1. ದುಂದುವೆಚ್ಚ. 2. ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ಆಸ್ತಿ ಹಾಳು  
ಮಾಡುವುದು. 3. ಅಪಾರ್ಥಮಾಡುವುದು) ಮತ್ತು



(7) ದಂಢಪಾರುಷ್ಯಮ್ (ಕಠಿನ ಶಿಕ್ಷೆ ಕೊಡುವುದು). "ಮೃಗಯಾಶಾ: ಸ್ತ್ರೀಯ: ಪಾನಂ ವಾಕ್ಪಾರುಷ್ಯಾಂಶ್ಚಕ್ಷಣೇ | ದಂಢಪಾರುಷ್ಯಮಿತ್ಯೇತತ್ ಮಹಾವ್ಯಸನಸಪ್ತಕಮ್" ವೇಜಂ |

**ಮಹಾವ್ಯಾಹುತಿ ಮಹಾವ್ಯಾಹೃತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಣವಪೂರ್ವಕ ವಾದ ಮುಖ್ಯ: ಸುವ: ಎಂಬ ಮೂರು ವ್ಯಾಹೃತಿಗಳು. "ಆಂಕಾರಪೂರ್ವಿಕಾಸ್ತಿಸ: ಮಹಾವ್ಯಾಹುತಯೋಷ್ಯಯಾ: | ತ್ರಿಪದಾ ಚೈವ ಸಾವಿತ್ರಿ ವಿಜೇಯಂ ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಮುಖಮ್" ಮನುಂ ೨-೮೧ |

**ಮಹಾವ್ರತ ಮಹಾವ್ರತ** (ನಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ವ್ರತ, ದೊಡ್ಡ ನಿಯಮ, ಮತಸಂಘಂಧವಾದ ದೊಡ್ಡ ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ. ಮಹತ್ ವ್ರತಮ್ | "ತೀವ್ರಂ ಮಹಾವ್ರತಮಿವಾತ್ರ ಚರಂತಿ ವಪ್ರಾ:" ಮಾಘಂ ೪-೫೮ | 2. ಮುಖ್ಯ ಕಾರ್ಯ, ಪ್ರಧಾನವಾದ ಧರ್ಮ, ಅವಶ್ಯವಾದ ಕಾರ್ಯ. "ಪ್ರಾಣೇರಪಿ ಹಿತಾ ವೃತ್ತಿ-ರದ್ರೋಹೋ ವ್ಯಾಜವರ್ಜನಮ್ | ಆತ್ಮನೀವ ಪ್ರಿಯಾಧಾನಮೇತನ್ಮೇತಮಹಾ-ವ್ರತಮ್" ಮಂ ವೀಂ ೫-೫೯ |

**ಮಹಾಶಕ್ತ್ಯ ಮಹಾಶಂಖ** (ಪುಂ) 1. ಕಂಬು, ದೊಡ್ಡ ಶಂಖ. 2. ಮನುಷ್ಯನ ಎಲುಬು. 3. ಒಂದು ಸಂಖ್ಯೆ 1000000000000. ["ಪರಾಧಂ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 4. ಲಲಾಟ, ಹಣೆ. "ಮಹಾಶಕ್ತೋ ಮನುಷ್ಯಾಸ್ತಿಸಂಖ್ಯಾಭೇದಾ-ಲಿಕೇಷು ಚ" ಮೇವಿಂ | 5. ಕುಬೇರನ ನವನಿಧಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಮಹಾಶಕ್ತೋ ನಿಧಿಭೇದೇ ಸಂಖ್ಯಾಭೇದೇ ನರಾಸ್ಥಿನಿ" ಹೇಮಂ |

**ಮಹಾಶಿಖ ಮಹಾಶಿಖ** (ಪುಂ) 1. ದತ್ತೂರಿಗಿಡ. (ವಿಂ) 2. ದೊಡ್ಡ ಧೂತ, ಮಹಾ ವೇಷಧಾರಿ, ಮೋಸಗಾರ.

**ಮಹಾಶಯ ಮಹಾಶಯ** (ಪುಂ) ಮಹಾತ್ಮ, ಮಹಾನುಭಾವ, ಉದಾರವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು. ಮಹಾನ್ ಚದಾರ: ಆಶಯೋ ಯಸ್ಯ |

**ಮಹಾಶಲಕ ಮಹಾಶಲಕ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಸಮುದ್ರದ ಮೀನು.

**ಮಹಾಶುಕ್ತಿ ಮಹಾಶುಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಕ್ತಿನ ಚಿಪ್ಪು. ಮಹತೀ ಶುಕ್ತಿ: |

**ಮಹಾಶೂದ್ರ ಮಹಾಶೂದ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಗೊಲ್ಲ, ಗೋಪಾಲಕ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಶಿಷ್" (೪-೧-೬೩) | -ಶೂದ್ರಿ -ಶೂದ್ರೀ. ಗೊಲ್ಲರ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು. "ಆಭೀರಸ್ತು ಮಹಾಶೂದ್ರ: ಗೋಪೋ ಗೋಸಂಖ್ಯಗೋದ್ರೋ" ವೇಜಂ | "ಆಭೀರೀ ತು ಮಹಾಶೂದ್ರಿ" ಅಮಂ | 2. ಉತ್ತಮ ಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರುವ ಶೂದ್ರ.

**ಮಹಾಶ್ವಾಸ ಮಹಾಶ್ವಾಸ** (ಪುಂ) ಕಾಸರೋಗ, ದಮ್ಮು, ಉಬ್ಬುಸ.

**ಮಹಾಶ್ವೇತಾ ಮಹಾಶ್ವೇತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸರಸ್ವತಿ. ಮಹಾನ್ ಶ್ವೇತೋ ವರ್ಣೋ ಯಸ್ಯಾ: | 2. ನೀಲಿ ವಿಷ್ಣುಕಾಂತ. "ವಿಷ್ಣು-

ಕ್ರಾಂತಾ ಪರಾಸ್ಕೋತಾಶ್ಚಲುರೀ ಶೀತಲಾಽತ್ರ ತು | ನೀಲಾಯಾಂ ತು ಮಹಾಶ್ವೇತಾ" ವೇಜಂ |

**ಮಹಾಷಣಿ ಮಹಾಷಷಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದರ್ಶಾದೇವಿ. "ಆಂ ದುಂ ದುಂ ದುಂ ದುಂ ನಾಶಯ ನಾಶಯ ಹನ ಹನ ದಹ ದಹ ಮಯ ಮಯ ವಧ ವಧ ಸರ್ವಹಿಸಾನ್ ಮಹಾಷಣಿರೂಪೇಣ ಬಾಲಕಂ ರಕ್ಷ ರಕ್ಷ ಚಿರಜೀವಿನಂ ಕುರು ಶ್ರೀಂ ಹ್ರೀಂ ಹ್ರೂಂ ಫಡ್ ಸ್ವಾಹಾ" ಮಹಾಷಣಿ-ಕವಚಮ್ |

**ಮಹಾಷಮಿ ಮಹಾಷಮಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಶ್ವಯುಜ ಶುಕ್ಲ ಪಕ್ಷದ ಅಷ್ಠಮಿ. ಮಹತ್ಯಾ: ಮಹಾದೇವ್ಯಾ: ಅಷಮಿ | "ಆಶ್ವಿನೇ ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷಸ್ಯ ಭವೇದಾ ಅಷಮಿತಿಥಿ: | ಮಹಾಷಮಿತಿ ಸಾ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ದೇವ್ಯಾ: ಪ್ರೀತಿಕರಾ ಪರಾ" ಕಾಲಿಕಾಪುಂ |

**ಮಹಾಸತ್ವ ಮಹಾಸತ್ತ್ವ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ದೊಡ್ಡ ಪ್ರಾಣಿ. (ವಿಂ) 2. ದೃಢವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು, ಸಂತೋಷ ಮತ್ತು ದುಃಖಗಳಿಂದ ಮನಸ್ಸು ಕೆಡದವನು. "ಅವಿ-ಕಂತ್ಯನ: ಕ್ಷಮಾವಾನತಿಗಮ್ಭೀರೋ ಮಹಾಸತ್ವ:" ಸಾಂ ೬೦ | 3. ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ, ನೀತಿಜ್ಞ.

**ಮಹಾಸಗ ಮಹಾಸರ್ಗ** (ಪುಂ) ಮಹಾಪ್ರಳಯದನಂತರ ಪುನಃ ನಡೆಯುವ ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿ.

**ಮಹಾಸರ್ಜ ಮಹಾಸರ್ಜ** (ಪುಂ) 1. ಪನಸವೃಕ್ಷ, ಹಲಸಿನ ಮರ. 2. ಹೊನ್ನೆಮರ.

**ಮಹಾಸಹಾ ಮಹಾಸಹಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಗೋರಂಟಿ. "ಅಮ್ಲಾನಸ್ತು ಮಹಾಸಹಾ" ಅಮಂ | 2. ಕಾಡುದ್ದಿನ ಗಿಡ. "ಮಾಷಪರ್ಣಿ ಮಹಾಸಹಾ" ಅಮಂ |

**ಮಹಾಸುಪ್ತಿ ಮಹಾಸುಪ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚತುರ್ಮುಖ ಬ್ರಹ್ಮನ ನಿद्रಾಸಮಯ, ಬ್ರಹ್ಮನ ರಾತ್ರಿ. "ಚತುರ್ಯುಗಸಹಸ್ರಂ ತು ಕಲ್ಪಸ್ತದ್ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ದಿನಮ್ | ತದ್ರಾತ್ರೀ ತು ಮಹಾಸುಪ್ತಿ: ಸಮಸುಪ್ತಿ-ಜಂಗತ್ಸಯ:" ವೇಜಂ |

**ಮಹಾಸೇನ ಮಹಾಸೇನ** (ಪುಂ) 1. ಸೈಂದ, ಕುಮಾರಸ್ವಾಮಿ, ಪೂಜಾರಿ. ಮಹತೀ ಸೇನಾ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ದೊಡ್ಡ ಸೈನ್ಯ ಹೊಂದಿರುವ ಸೇನಾಪತಿ.

**ಮಹಿ ಮಹಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭೂಮಿ. ಮಹ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಃ:" (೩೦ ೪-೧೩೯) | ವಾ "ಶಿಷ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫) | ಮಹಿ ಮಹಿ. 2. ಮಹತ್ತ್ವ. "ವಿಜ್ಞಾನಶಕ್ತಿ ಮಹಿಮಾಮನಂತಿ ಸರ್ವಾತ್ಮನೋಜ್ಞತ:ಕರಣಂ ಗಿರಿತ್ರಮ್" ಭಾಗಂ ೨-೧-೩೫ | 3. ಮಹಿಮೆ. "ತತ ಏರಾವತೋ ನಾಮ ವಾರಣೇಂದ್ರೋ ವಿನಿರ್ಗತ: | ದಂತೇಶ್ವರುಭಿ: ಶ್ವೇತಾದ್ರೇ: ಹರನ್ ಭಗವತೋ ಮಹಿಮ್" ಭಾಗಂ ೮-೮-೪ |

**ಮಹಿಕಾ ಮಹಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಮ, ಮಂಜು. ಮಹ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಕವುನ್" (೩೦ ೨-೩೨) |



**ಮಹಿತ ಮಹಿತ** (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಮಹ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ಗುಣಸಂಪದಾ ಸಮಧಿಗಮ್ಯ ಸಂಪದಂ ಮಹಿಮಾನಮತ್ರ ಮಹಿತೇ ಜಗತಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೪-೨೪ | 2. ಶ್ಲಾಘ್ಯವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಪೂಜ್ಯವಾದ. "ವಿವಿಧಕಾಮಹಿತಾ ಮಹಿತಾಮ್ಹಸ: ಸ್ಕುಟಸರೋಜವನಾ ಜವನಾ ನದಿ:" ಕಿರಾಂ ೪-೭ |

**ಮಹಿನ ಮಹಿನ** (ನಂ) ರಾಜ್ಯ. ಮಹ್ಯತೇ—ಮಹ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಇನ್" (೩ಂ ೨-೪೭) | ಮಹಿನಮ್ ರಾಜ್ಯಮ್ ಸಿಂ ಕೌಂ |

**ಮಹಿಮನ್ ಮಹಿಮನ್** (ಪುಂ) 1. ಮಹತ್ತ್ವ, ಉತ್ಕರ್ಷ, ಘನತೆ, ಹಿರಿಮೆ. ಮಹತೋ ಭಾವ:—ಮಹತ್ "ಇಮನಿಕ್" (೪-೧-೧೨೨) | "ತೃಪ್ತಿಯೋಗ: ಪರೇಣಾಪಿ ನ ಮಹಿಮ್ನಾ ಮಹಾತ್ಮನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೩೧ | 2. ಅಣಮಾದಿ ಎಂಟು ಐಶ್ವರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. 3. ಶಕ್ತಿ, ಪ್ರಭಾವ. "ತಿಸೃಮಿ-ಸ್ವಮವಸ್ಥಾಭಿ: ಮಹಿಮಾನಮುದೀರಯನ್" ಕುಮಾಂ ೨-೬ | "ಪ್ರಾಯ: ಸ್ವಂ ಮಹಿಮಾನಂ ಕೋಭಾತ್ರತಿಪದ್ಯತೇ ಹಿ ಜನ:" ಶಾಕುಂ ೬-೩೧ |

**ಮಹಿರ ಮಹಿರ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. "ಮಹಿರಮಹಿರಪೀಥಾ: ಕಾಲಕೃತ್ಯಪ್ರಾಣಿ: ಸಮಗಿರಣಶೂರಾವಂಶುಮಾನಂಶುಮಾಲಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಮಹಿಲಾ ಮಹಿಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಂಗಸು. ಮಹ್ಯತೇ—ಮಹ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಇಲ್" (೩ಂ ೧-೪೪) | "ಚಿತ್ರಂ ದಿದರ್ಶಯಿಷುಣಾ ಜನಿತಸ್ಯ ಯಸ್ಯಾಂ ಮಧ್ಯಂ ವಿನೇವ ವಿಧಿನಾ ಮಹಿಲಾಜನಸ್ಯ" ಚಂ ಭಾಂ | 2. ಪ್ರಿಯಂಗು ಲತೆ, ಪ್ರೇಂಕಣ ಗಿಡ. "ಮಹಿಲಾ ಫಲಿನೀಸ್ತ್ರಿಯೋ:" ಮೇದಿಂ |

**ಮಹಿಷ ಮಹಿಷ** (ಪುಂ) 1. ಎಮ್ಮೆ, ಕೋಣ. ಮಹ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಡಿಷಕ್" (೩ಂ ೧-೪೪) | "ಮಹಿಷಕ್ಷತಾಗುಸ್ತಮಾಲನಲದ-ಸುರಭಿ: ಸದಾಗತಿ:" ಕಿರಾಂ ೧೨-೪೦ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡಿಷ್" (೪-೧-೬೩) | **ಮಹಿಷಿ ಮಹಿಷಿ**. 2. ಮಹಿಷಾಸುರ.

**ಮಹಿಷಮದಿನಿ ಮಹಿಷಮದಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಹಿಷಾಸುರ ನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದ ಚಾಮುಂಡಾದೇವಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ. ಮಹಿಷಂ ಮಹಿಷಾಸುರಂ ಮೃದ್ನಾತಿ—ಮೃದ (ಕ್ಷೋದೇ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೧-೧೩೪) | "ಡಿಷ್" (೪-೧-೪) |

**ಮಹಿಷವಾಹನ ಮಹಿಷವಾಹನ** (ಪುಂ) ಯಮಧರ್ಮ ರಾಯ.

**ಮಹಿಷಾಸುರ ಮಹಿಷಾಸುರ** (ಪುಂ) ಮಹಿಷನೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸ. [ಇಂದ್ರನು ದಿತಿಯ ಮಕ್ಕಳನ್ನೆಲ್ಲಾ ಸಂಹರಿಸಲು ದಿತಿಯು ಮಕ್ಕಳಿಲ್ಲದೆ ಸುಪಾರ್ಶ್ವಮುಷಿಯ ಅಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಎಮ್ಮೆ ಯಂತೆ ನಿಂತು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಬ್ರಹ್ಮನು ಅಲ್ಲಿಗೆ

ಬಂದು ನಿನಗೆ ಬಲಶಾಲಿಯಾದ ಮಗನು ಹುಟ್ಟುವನೆಂದು ಹೇಳಿ ಹೋದನು. ಸುಪಾರ್ಶ್ವಮುಷಿಯು ನಿನಗೆ ಕೋಣ ದಂತೆ ಮಗನು ಹುಟ್ಟಲಿ ಎಂದು ಹೇಳಲಾಗಿ ಮತ್ತೆ ಬ್ರಹ್ಮ ನನ್ನು ಬೇಡಲು ಮುಖವು ಮಾತ್ರ ಎಮ್ಮೆಯಂತೆಯೂ ಮೈಯೆಲ್ಲಾ ಪುರುಷಾಕೃತಿಯಾಗಿಯೂ ಇರುವುದೆಂದು ಹೇಳಿದನು. ಅದರಂತೆ ಬಹಳ ಬಲಶಾಲಿಯಾದ ಮಹಿಷಾ ಸುರನು ಹುಟ್ಟಿ ಪರಶಿವನಿಂದ ಹೆಂಗಸಿನಿಂದ ಮಾತ್ರ ತನಗೆ ಮರಣವಾಗಬೇಕೆಂಬ ವರವನ್ನು ಪಡೆದನು. ಇವನ ಹಿಂಸೆಯನ್ನು ತಡೆಯಲಾರದ ದೇವತೆಗಳು ತಮ್ಮ ತೇಜಸ್ಸಿ ನಿಂದ ಸುದರಿಯೊಬ್ಬಳನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ಅವಳಿಗೆ ತಮ್ಮ ಆಯುಧಗಳನ್ನು ಕೊಟ್ಟರು. ಈ ತ್ರಿಪುರಸುಂದರಿಯು ಹಿಮವತ್ಸರ್ವತದಲ್ಲಿ ವಿಹರಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಮಹಿಷನು ಇವಳನ್ನು ಮೋಹಿಸಿ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಇವಳಿಂದ ಹತ ನಾದನು.] ಶಿವಪುಂ |

**ಮಹಿಷಿ ಮಹಿಷೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎಮ್ಮೆ. 2. ರಾಜನ ಪಟ್ಟಾಭಿಷಿಕ್ತಳಾದ ಪತ್ನಿ, ರಾಜನ ಮುಖ್ಯ ಪತ್ನಿ. "ಇತ್ಯಂ ಕ್ರತಂ ಧಾರಯತ: ಪ್ರಜಾಘಂ ಸಮಂ ಮಹಿಷ್ಯಾ ಮಹನೀಯಕೀರ್ತೆ:" ರಘುಂ ೨-೨೪ | "ಮಹಿಷಿ ಪಶುರಾಡ್ಪಲ್ಯೋ:" ವೇಜಂ | 3. ಪುಷ್ಯ ಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. "ಪೌಷಿ ತು ಮಹಿಷಿ ಮತಾ" ವೇಜಂ |

**ಮಹಿ ಮಹಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭೂಮಿ. ಮಹ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಃ:" (೩ಂ ೪-೧೩೯) | ಮಹಿ: ವಾ "ಡಿಷ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೪) | "ಅಸ್ತಶೈಲಗಹನಂ ನು ವಿವಸ್ವಾನಾವಿವೇಶ ಜಲಧಿ ನು ಮಹಿ ನು" ಕಿರಾಂ ೯-೭ | 2. ಒಂದು ಹೊಳೆ. "ಮಹಿ ನದಂತರೇ ಭೂಮೌ ಮಹ ಉಸವತೇಜಸೋ:" ಮೇದಿಂ | 3. ರಾಜ್ಯ, ದೇಶ. "ಕೃತಪ್ರಣಾಮಸ್ಯ ಮಹಿಂ ಮಹಿಭುಜೇ ಜಿತಾಂ ಸಪತನೇನ ನಿವೇದಯಿಷ್ಯತ:" ಕಿರಾಂ ೧-೨ |

**ಮಹಿಕ್ಷಿತ್ ಮಹಿಕ್ಷಿತ್** (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಮಹ್ಯಾಂ ಕ್ಷಿಯತಿ—ಕ್ಷಿ (ನಿವಾಸಗತ್ಯೋ:) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬) | "ಆಸೀನ್ಮಹಿಕ್ಷಿತಾಮಾಘ: ಪ್ರಣವಶ್ಚಂದಸಾಮಿವ" ರಘುಂ ೧-೧೧ |

**ಮಹಿಜ ಮಹಿಜ** (ಪುಂ) 1. ಅಗಾರಿಕೆ, ಕುಜಗ್ರಹ. ಮಹ್ಯಾ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಕುಮವಿ) "ಃ:" (೩-೨-೯೮) | 2. ನರಕಾಸುರ. 3. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. (ನಂ) 4. ಹಸಿಶಂಕರಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಜಾ—ಜಾ. 5. ಸೀತಾದೇವಿ.

**ಮಹಿತಲ ಮಹಿತಲ** (ನಂ) ಭೂಮಿ. ಮಹ್ಯಾ: ತಲಮ್ | "ನಿಜೌಜಸೌಜಾಸಯಿತುಂ ಜಗದ್ಬ್ರಹ್ಮಾಮುಪಾಜಿಹೀಥಾ ನ ಮಹಿತಲಂ ಯದಿ" ಮಾಘಂ ೧-೩೭ |

**ಮಹಿಧರ ಮಹಿಧರ** (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಧರತಿ —ಧರ್ಮ (ಧಾರಣೆ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) | ಮಹ್ಯಾ:



ಧರ: । “ಮಹಿಧರಂ ಮಾಗಂವಶಾದುಪೇತಂ ಸೋತೋವಹಾ ಸಾಗರ-  
ಗಾಮಿನೀವ” ರಘುಂ ೬-೪೨ । 2. ಎಷ್ಟು. “ಮಹಿಧರೋ  
ಮಹಿಭಾಗೋ ವೇಗವಾನಮಿತಾಶನ:” ವಿಂ ಸಂ ।

ಮಹಿಧ್ರ ಮಹೀಧ್ರ (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಮಹಿ  
ಧರತಿ — ಧ್ರು (ಧಾರಣೆ) “ಕ:” (ವಾಂ ೩-೨-೪) ।  
“ಯಿಯಾಸತಸ್ತಸ್ಯ ಮಹಿಧ್ರಂಧ್ರಭಿರಾಪಟೀಯಾನ್ ಪಟಹಪ್ರಣಾದ:”  
ಮಾಘಂ ೩-೨೪ । 2. ಎಷ್ಟು.

ಮಹಿಪ ಮಹೀಪ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಮಹಿ ಪಾತಿ—ಪಾ  
(ರಕ್ಷಣೆ) “ಕ:” (೩-೨-೩) ।

ಮಹಿಪತಿ ಮಹೀಪತಿ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ, ಅರಸು.  
ಮಹ್ಯಾ: ಪತಿ: । “ಉಪಸಾಂತವಯಿತು ಮಹಿಪತಿರ್ವಿರದಂ ದುಷ್ಟಮಿವೋಪ-  
ಚಕ್ರಮೇ” ಕಿರಾಂ ೨-೨೪ । -ಪಾಲ: -ಪಾಲ: । “ಅಲಂ  
ಮಹಿಪಾಲ ತವ ಶ್ರಮೇಣ ಪ್ರಯುಕ್ತಮಪ್ಯಸ್ತ್ರಮಿತೋ ವೃಥಾ ಸ್ಯಾತ್”  
ರಘುಂ ೨-೩೪ ।

ಮಹಿಭುಜ್ ಮಹೀಭುಜ್ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಮಹಿ  
ಭುಜ್ವತೇ — ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನೆ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬) ।  
“ಪ್ರವಿಷ್ಯ ಕೃಷ್ಣಾಸದನಂ ಮಹಿಭುಜಾ ತದಾಚಕ್ಷುಃಸುಜಸನ್ನಿಧೌ  
ವಚ:” ಕಿರಾಂ ೧-೨೬ ।

ಮಹಿಭೃತ್ ಮಹೀಭೃತ್ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ಮಹಿ  
ವಿಭತಿ — ಭು ಭು (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) “ಕ್ವಿಪ್”  
(೩-೨-೭೬) । “ದೀಪಿತಸ್ತ್ವಮನುಭಾವಸಂಪದಾ ಗೌರವೇಣ ಲಭಯನ್  
ಮಹಿಭೃತ:” ಕಿರಾಂ ೧೩-೩೮ । “ಸೌಗತಾನಾಮಿವಾತ್ಮಾನ್ಯೋ  
ನಾಸ್ತಿ ಮನ್ತ್ರೋ ಮಹಿಭೃತಾಂ” ಮಾಘಂ ೨-೨೮ । 2. ಪರ್ವತ,  
ಬೆಟ್ಟ, ಗಿರಿ. “ಮಹಿಭೃತಾ ಪಕ್ಷವತೇವ ಭಿಕ್ಷಾ ವಿಗಾಹ್ಯ ಮಧ್ಯಂ  
ಪರವಾರಣೇನ” ಕಿರಾಂ ೧೬-೧೩ ।

ಮಹೀಯಸ್ ಮಹೀಯಾಸ್ (ವಿಂ) 1. ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಒಹಳ  
ದೊಡ್ಡ ವನಾದ ಒಬ್ಬ, -ಒಹಳ ಶ್ರೇಷ್ಠ ನಾದ. ಅನಯೋರತಿ-  
ಶಯೇನ ಮಹಾನ್—ಮಹತ್ “ಇಯಸುನ್” (೪-೩-೪೭) । “ವಿರರಾಮ  
ಮಹೀಯಾಸ: ಪ್ರಕೃತ್ಯಾ ಮಿತಭಾಷಿಣ:” ಮಾಘಂ ೨-೧೩ ।  
“ಮಹೀಯಸಾಂ ಮಹತಿ ದಿಗಂತದಂತಿನಾಮನೀಕಜೇ ರಜಸಿ ಮುಖಾನು-  
ಪಜ್ಜಿನಿ” ಮಾಘಂ ೧೭-೪೭ । 2. ಎರಡರಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು  
ದೊಡ್ಡ ದಾದ ಒಂದು. “ಮುಹುರ್ಮಹಿಮ್ನಾ ಮಹಸಾಂ ಮಹೀಯಸಾಂ”  
ಮಾಘಂ ೧-೬೨ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಹೀಪ್” (೪-೧-೪) । ಮಹೀಯಸೀ  
ಮಹೀಯಾಸೀ.

ಮಹೀರುಹ್ ಮಹೀರುಹ್ (ಪುಂ) ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಮಹ್ಯಾಂ  
ರೋಹತಿ — ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬) ।  
“ಯತ್ರಾಘಿರೂಢನ ಮಹೀರುಹೋಚ್ಚೇರನ್ನಿರ್ದ್ರಪುಷ್ಪಾಕ್ಷಿಸಹಸ್ರಭಾಜಾ”  
ಮಾಘಂ ೪-೧೩ ।

ಮಹೀರುಹ್ ಮಹೀರುಹ್ (ಪುಂ) ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಮಹ್ಯಾಂ ರೋಹತಿ  
—ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೪) । “ದಧು-  
ರಾಯತವಲ್ಲಿವೇಷ್ಟಿತಾನಾಮುಪಮಾನಂ ಮನುಜಾ ಮಹೀರುಹಾಣಾಮ್”  
ಮಾಘಂ ೨೦-೪೯ ।

ಮಹೀಲತಾ ಮಹೀಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎರುಬುಹುಳ, ಕೆಸರಿನ  
ಹುಳ, ಮಳೆಹುಳ. ಮಹ್ಯಾ ಲತೇವ ।

ಮಹೀಸುತ ಮಹೀಸುತ (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯ ಪುತ್ರ (1)  
ಅಂಗಾರಕ. (2) ನರಕಾಸುರ. ಮಹ್ಯಾ: ಸುತ: । (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
—ಸುತಾ — ಸುತಾ. (3) ಸೀತಾದೇವಿ.

ಮಹೀಸುರ ಮಹೀಸುರ (ಪುಂ) ಭೂದೇವತೆ, ವಿಷ್ಣು, ಪ್ರಥಮ  
ವರ್ಣದವನು. ಮಹ್ಯಾ: ಸುರ ಇವ । “ಉಚ್ಚೇರ್ಗತಿರ್ಜಗತಿ  
ಸಿದ್ಧಯತಿ ಧರ್ಮತಶ್ಚೇತಸ್ಯ ಪ್ರಮಾ ಚ ವಚನೇ: ಕೃತಕೇತರೇಶ್ಚೇತ್ ।  
ತೇಷಾಂ ಪ್ರಕಾಶನದಶಾ ಚ ಮಹೀಸುರೇಶ್ಚೇತ್ ತಾನಂತರೇಣ ನಿಪತೇತ್  
ಕವ ನು ಮತ್ಪ್ರಣಾಮ:” ಚಂ ರಾಂ ।

ಮಹೀಸುನ್ ಮಹೀಸುನು (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯ ಮಗ (1)  
ಅಂಗಾರಕ, ಕುಜಗ್ರಹ. (2) ನರಕಾಸುರ. ಮಹ್ಯಾ: ಸುನ್: ।

ಮಹೇಚ್ಛ ಮಹೇಚ್ಛ (ವಿಂ) 1. ಮಹಾಶಯ, ದೊಡ್ಡ  
ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು, ಉದಾರವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು. ಮಹತೀ  
ಇಚ್ಛಾ ಯಸ್ಯ । “ಮಹೀ ಮಹೇಚ್ಛ: ಪರಿಕೀರ್ಯ ಸುನೌ ಮನೀಷಿಣಿ  
ಜೈಮಿನಯೇರ್ಪಿತಾತ್ಮಾ” ರಘುಂ ೧೮-೩೩ । 2. ದೊಡ್ಡ  
ಅಸೆಯುಳ್ಳವನು, ಹಿರಿಮೆಯಲ್ಲಿ ಅಸೆಯುಳ್ಳವನು,  
ಯಶಸ್ಸನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. “ವಿದ್ಯಾವತಾಂ ಮಹೇಚ್ಛಾಣಾಂ  
ಶಿಲ್ಪವಿಕ್ರಮಶಾಲಿನಾಮ್” ಪञ್ಚತಂ ೧-೩೮ ।

ಮಹೇಜ್ಯ ಮಹೇಜ್ಯ (ಪುಂ) ವ್ಯವಧಾನವಿಲ್ಲದೆ ಯಜನವುಳ್ಳ  
ಎಷ್ಟು, ನಾರಾಯಣ. ಮಹತೀ ಅಕಾಮಹತಾ ಇಜ್ಯಾ ಅವ್ಯವ-  
ಧಾನೇನ ಯಜನಮಸ್ಯ । “ಇಜ್ಯಾ ಹಿ ಮಹತೀ ಯಸ್ಯ ಮಹೇಜ್ಯ: ಸ  
ಉದಾಹೃತ:” ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: । “ಯಜ್ಞ ಇಜ್ಯೋ ಮಹೇಜ್ಯಶ್ಚ”  
ವಿಂ ಸಂ ।

ಮಹೇಂದ್ರ ಮಹೇಂದ್ರ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು, ನಾರಾಯಣ.  
ಪೂರ್ಣಪರಮಶ್ರೇಯತಯಾ ಮಹಾಂಶ್ರಾಸಾವಿನ್ದ್ರಶ್ಚ । “ಪರಮೇಶ್ವರೈವತ್ವೇನ  
ಮಹೇಂದ್ರ ಇತಿ ಶಬ್ದತೇ” ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: । “ಸುಮುಜೋ ದುರ್ವಿರೋ  
ವಾಗಮಿ ಮಹೇಂದ್ರೋ ವಸುದೋ ವಸು:” ವಿಂ ಸಂ । 2. ದೇವೇಂದ್ರ,  
ದೇವತೆಗಳ ಒಡೆಯ. “ಇಮಂ ಮಹೇಂದ್ರಪ್ರಮೃತೀನವಿಶ್ರಿಯ:  
ಚತುರ್ದಿಗಿಶಾನವಮತ್ಯ ಮಾನಿನಿ” ಕುಮಾಂ ೪-೪೩ । 3.  
ಮಹೇಂದ್ರಪರ್ವತ. “ಸ ಪ್ರತಾಪಂ ಮಹೇಂದ್ರಸ್ಯ ಮूर्ಧ್ನಿ ತೀಕ್ಷ್ಣಂ  
ನೃವೇಶಯತ್” ರಘುಂ ೪-೩೯ ।

ಮಹೇಂದ್ರಧನುಸ್ ಮಹೇಂದ್ರಧನುಸ್ (ನಂ) ಇಂದ್ರನ ಧನಸ್ಸು,  
ಕಾಮನಬಿಲ್ಲು, ಮಳೆಬಿಲ್ಲು. “ಶಿಲಪತಿರಿವ ಮಹೇಂದ್ರ-  
ಧನು: ಪರಿವೀತಭೀಮಗಹನೋ ವಿವಿಧ್ಯುತೇ” ಕಿರಾಂ ೧೨-೯ ।



ಮಹೇಂದ್ರನಗರೀ ಮಹೇಂದ್ರನಗರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಂದ್ರನ ಪಟ್ಟಣ, ಅಮರಾವತಿ.

ಮಹೇಂದ್ರನಾಥ ಮಹೇಂದ್ರನಾಥ (ಪುಂ) ಕಾಳಿಂಗರಾಜ. "ಶ್ರಿಯ ಮಹೇಂದ್ರನಾಥಸ್ಯ ಜಹಾರ ನ ತು ಮೇದಿನೀಮ್" ರಘುಂ ೪-೪೩.

ಮಹೇರಣಾ ಮಹೇರಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತದುಕನ ಗಿಡ, ಅನೇಬೇಲ. "ಮಹೇರಣಾ ಕುಂದುಕೀ" ಅಮಂ.

ಮಹೇಶ ಮಹೇಶ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಮಹಾಶ್ರಾಸಿ ಇಶಶ್ರ. "ಸ್ವಯ ಮಹೇಶಸ್ತನಯೋ ಗಣೇಶಃ ಸತ್ವಾ ಧನೇಶಃ ಶ್ವಸುರೋ ನಗೇಶಃ" ವಿಶ್ವಗುಂ. -ಇಶಾನಃ -ಈಶಾನಃ, -ಇಶ್ವರಃ -ಈಶ್ವರಃ ಇತ್ಯಾದಿ. "ಹರಿಯೇಕಃ ಪುರುಷೋತ್ತಮಃ ಸ್ಮೃತೋ ಮಹೇಶ್ವರಸ್ಯಮ್ಬಕ ಉ ನಾಪರಃ" ರಘುಂ ೩-೪೯. "ಮಹೇಶ್ವರೋಪಾಂತಿಕವರ್ತಮಾನಮ್" ಕುಮಾಂ ೧೨-೨೫. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಇಶ್ವರೀ -ಈಶ್ವರೀ. 1. ಪಾರ್ವತಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 2. ಕಂಚು. "ರಾಜರೀತ್ಯಾಂ ಬ್ರಹ್ಮರೀತಿಃ ಸ್ವರ್ಣರೀತಿರ್ಮಹೇಶ್ವರೀ" ವೇಜಂ.

ಮಹೋಕ್ಷ ಮಹೋಕ್ಷ (ಪುಂ) ದೊಡ್ಡ ಎತ್ತು, ಬಲಶಾಲಿ ಯಾದ ವೃಷಭ. ಮಹಾಶ್ರಾಸಿ ಉಕ್ಷಾ ಚ "ಅಚ್" (೪-೪-೭೭). "ಉಚ್ಛೃಜ್ಞಿತಾನ್ಯವುಷಭಾಃ ಸರಿತಾಂ ನದಂತೋ ರೋಷಾಂಸಿ ಖೀರ-ಮವಚಸ್ಕರೀರೇ ಮಹೋಕ್ಷಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೬೩.

ಮಹೋತ್ಪಲ ಮಹೋತ್ಪಲ (ಪುಂ) 1. ಸಾರಸಪಕ್ಷಿ. (ನಂ) 2. ಕಮಲ, ತಾವರೆಹೂವು. ಮಹಚ್ಚ ತದ್ಉತ್ಪಲಂ ಚ.

ಮಹೋತ್ಸವ ಮಹೋತ್ಸವ (ಪುಂ) ದೊಡ್ಡ ಹಬ್ಬ, ಸಂತೋಷದ ಸಮಾರಂಭ. ಮಹಾಶ್ರಾಸಿವುತ್ಸವಶ್ಚ. "ಮಹೋತ್ಸವೇ ತತ್ರ ಸಮಾಗತಾನಾಂ ಗಂಧರ್ವವಿದ್ಯಾಧರಸುಂದರೀಣಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೧೧-೩೪.

ಮಹೋತ್ಸಾಹ ಮಹೋತ್ಸಾಹ (ಪುಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಉದ್ಯಮ, ಹೆಚ್ಚು ಉತ್ಸಾಹ, ಅಧಿಕವಾದ ಕ್ರಿಯಾಶಕ್ತಿ. 2. ಹೆಚ್ಚು ಅಭಿಮಾನ, ಅಧಿಕವಾದ ಗರ್ವ. "ಯೇ ಜಾತ್ಯಾದಿಮಹೋತ್ಸಾಹಾ-ಶ್ರೇಂದ್ರಾಶ್ರೋಪಯಾಂತಿ ಚ" ಪञ्ಚತಂ ೧-೩೯. 3. ವಿಷ್ಣು. "ಅತೀಂದ್ರಿಯೋ ಮಹಾಮಾಯೋ ಮಹೋತ್ಸಾಹೋ ಮಹಾಬಲಃ" ವಿಂ ಸಂ. (ವಿಂ) 4. ಹೆಚ್ಚು ಅಭಿಮಾನವುಳ್ಳವನು. 5. ಅಧಿಕ ಪ್ರಯತ್ನವುಳ್ಳವನು.

ಮಹೋದಧಿ ಮಹೋದಧಿ (ಪುಂ) ದೊಡ್ಡ ಸಮುದ್ರ, ತುಂಬಿದ ಸಮುದ್ರ, ವಿಸ್ತಾರವಾದ ಕಡಲು. ಮಹಾನ್ ಉದಧಿಃ. "ಮಹೋದಧಿಃ ಪೂರ ಇವೇಂದ್ರದರ್ಶನಾದ್ಗುರುಃ ಪ್ರಹರ್ಷಃ ಪ್ರಬಭೂವ ನಾತ್ಮನಿ" ರಘುಂ ೩-೧೭.

ಮಹೋದಯ ಮಹೋದಯ (ಪುಂ) 1. ಕಾನ್ಯಕುಬ್ಜ ದೇಶ. ಮಹಾನ್ ಉದಯೋ ವೃದ್ಧಿರಸ್ಯ. 2. ಸ್ವಾಮ್ಯ, ಯಜಮಾನತನ.

3. ಅಪರ್ವರ್ಗ, ಮೋಕ್ಷ. "ಮಹೋದಯಃ ಕಾನ್ಯಕುಬ್ಜೋಪಾಧಿ-ಪತ್ಯಾಪವರ್ಗಯೋಃ" ವಿಶ್ವಂ. 4. ಏಳಿಗೆ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಉತ್ಕರ್ಷ. 5. ಯಜಮಾನ, ಸ್ವಾಮಿ. 6. ಮಹೋದಯ ಪುಣ್ಯಕಾಲ. 7. ಹಿರಿಮೆ, ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ, ಮಹಿಮೆ. (ನಂ) 8. ಕಾನ್ಯಕುಬ್ಜ ದೇಶದ ಒಂದು ಪಟ್ಟಣ. "ಮಹೋದಯ ಪುರೇ. ಮಹೋದಯಃ ಸ್ವಾಮ್ಯಮುಕ್ತಯೋಃ" ಹೇಮಂ. (ವಿಂ) 9. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಯುಳ್ಳ, ಏಳಿಗೆಯುಳ್ಳ. ಮಹಾನ್ ಉದಯೋ ಯಸ್ಯ. "ಮಹೋದಯ-ಸ್ತಸ್ಯ ಹಿತಾನುಬಂಧಿಭಿಃ ಪ್ರತೀಯತೇ ಧಾತುರೀವೇಹಿತಂ ಫಲಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೨೦.

ಮಹೋದರ ಮಹೋದರ (ನಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಹೊಟ್ಟೆ. 2. ಒಂದು ರೋಗ, ಜಲೋದರ. (ವಿಂ) 3. ದೊಡ್ಡ ಹೊಟ್ಟೆಯುಳ್ಳ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರೀ -ರೀ. 4. ಶತಾವರೀ ಗಿಡ, ಪಿಲ್ಲಪಿಚ್ಚರ.

ಮಹೋದಮ ಮಹೋದಮ (ಪುಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಉದ್ಯಮ, ದೊಡ್ಡ ಉದ್ಯೋಗ. (ವಿಂ) 2. ಅಧಿಕವಾದ ಪ್ರಯತ್ನವುಳ್ಳವನು, ಹೆಚ್ಚು ಕ್ರಿಯಾಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು. ಮಹಾನ್ ಉದಯೋ ಯಸ್ಯ. -ಉದ್ಯೋಗಃ -ಉದ್ಯೋಗಃ.

ಮಹೋನ್ನತ ಮಹೋನ್ನತ (ಪುಂ) 1. ತೆಂಗಿನಮರ. 2. ತಾಳ ವೃಕ್ಷ, ಪನೆಮರ. (ವಿಂ) 3. ಬಹಳ ಎತ್ತರವಾದ.

ಮಹೋನ್ನತಿ ಮಹೋನ್ನತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಹಳ ಎತ್ತರ. 2. ಉತ್ಕರ್ಷ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಏಳಿಗೆ. ಮಹತೀ ಉನ್ನತಿಃ.

ಮಹೋಪಕಾರ ಮಹೋಪಕಾರ (ಪುಂ) ದೊಡ್ಡ ಉಪಕಾರ, ಅತಿಶಯವಾದ ಸಹಾಯ. ಮಹಾನ್ ಉಪಕಾರಃ.

ಮಹೋಪಾಧ್ಯಾಯ ಮಹೋಪಾಧ್ಯಾಯ (ಪುಂ) ದೊಡ್ಡ ಗುರು, ಹೆಚ್ಚು ವಿದ್ಯಾವಂತನಾದ ಅಚಾರ್ಯ. ಮಹಾನ್ ಉಪಾಧ್ಯಾಯಃ.

ಮಹೋರಸ್ಕ ಮಹೋರಸ್ಕ (ವಿಂ) ವಿಶಾಲವಾದ ವಕ್ಷಸ್ಥಲವುಳ್ಳವನು, ಅಗಲವಾದ ಎದೆಯುಳ್ಳವನು. ಮಹತ್ ಉರಃ ಯಸ್ಯ. "ಕಪ್" (೪-೪-೧೫೧).

ಮಹೋಜಸ್ ಮಹೋಜಸ್ (ಪುಂ) 1. ಸ್ಕಂದ, ಸುಬ್ರಹ್ಮಣ್ಯ, ಕುಮಾರಸ್ವಾಮಿ, ಪೆಣ್ಣು. "ಸೇನಾನಿಃ ಶಿಖಿವಾಹನಃ. ಸ್ವಾಮೀ ಗಾಙ್ಗೆಯಗೋರೇಯಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿರ್ಮಹೋಜಸ್" ವೇಜಂ. (ನಂ) 2. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಚಕ್ರ. (ವಿಂ) 3. ಹೆಚ್ಚು ಬಲಶಾಲಿ ಯಾದ, ಮಹಾಪರಾಕ್ರಮಶಾಲಿಯಾದ. ಮಹತ್ ಔಜೋ ಯಸ್ಯ. "ಔಜೋ ಮಹೋಜಃ ಕೃತ್ವಾಧಸ್ತತ್ಕ್ಷಣಾದುತ್ತಮೋಜಃ" ಮಾಘಂ ೧೯-೧೬.

ಮಹೋಪಧ ಮಹೋಪಧ (ನಂ) 1. ಒಣಶುಂಠಿ. 2. ಅತಿಬಜ್ಜೆ. 3. ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳಿ. "ಮಹೋಪಧ ತು ಶುಂಠಿಶ್ಚ ಸ್ಯಾದ್ವಿಷಾಯಾಂ ಲಘುನೇಷಿ"



ಚ" ಮೇದಿಂ. 4. ಹಸಿರುಂ. "ಮಹೋಷಂ ಶೃಂಗಿವೇ  
ವಿಷಾಯಾಂ ಲಘುನೇಽಪಿ ಚ" ವಿಷಂ. 5. ಹಿವ್ವಲಿ.

ಮಾ ಮೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. ಮಾ (ಮಾನೇ) "ಕ:"  
(3-2-3). "ಮಾನಿಷಾದ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಂ ತ್ವಮಗಮ: ಶಾಶ್ವತೀ:  
ಸಮಾ:" ರಾಮಾಂ. 2. ಜನನಿ, ತಾಯಿ. 3. ಮೇಧೆ,  
ಬುದ್ಧಿ. 4. ಪ್ರಮಾಣ, ಅಳತೆ. 5. ತೀರ, ದಡ.  
6. ಮೃತಿ. 7. ಮಧ್ಯ ಪ್ರದೇಶ. "ಮಾ ಸ್ತ್ರೀ ಮಾನೇ ಮೃತೌ  
ವೇಲಾಮೇಧಾಶ್ರೀಮಧ್ಯಮಾತೃಬು. ಮಾಜ್ಯಯಂ ಪ್ರತಿಷೇಧೇ ಚ ಜಲೇ ತು  
ಸ್ಯಾನ್ನಪುಂಸಕಮ್" ರತ್ನಂ. (ಅವ್ಯಂ) 8. ತಡೆ, ಅಡ್ಡಿ,  
ಪ್ರತಿಷೇಧ. "ಮಾ ವೇದಿ ಯದಸಾವೇಕೋ ಜೇತವ್ಯಶ್ಚೇದಿರಾಡ್ವಿತಿ"  
ಮಾಘಂ 2-96.

ಮಾಸ ಮೂಸ (ನಂ) 1. ಮೂಸ, ಬಾಡು, ದೇಹದೊಳಗಿನ  
ಒಂದು ಭಾಗ. ಮನ್ಯತೇ—ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಸ:" ದೀರ್ಘ  
(ತಂ 3-64). "ಉತ್ಪಕ್ವಸ್ತಸಿ ಮಾಸಂ ಪ್ರಚಲದುಭಯತ:  
ಸನ್ನಿಧಿನಿರ್ಮುಕ್ತಮಾರಾತ್" ಮಾಲತೀಂ 4-17. "ಮಾಸಮಸ-  
ಯಿತಾಽಮೃತೃ ಯಸ್ಯ ಮಾಸಮಿಹಾಘ್ರಹಮ್. ಉತ್ಪನ್ನಾಸಸ್ಯ ಮಾಸತ್ವಂ  
ಪ್ರವದಂತಿ ಮನೀಷಿಣ:" ಮನುಂ 4-44. (ಪುಂ) 2. ಕೀಟ,  
ಕೃಮಿ. 3. ಒಬ್ಬ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು.

ಮಾಸಕಾರಿ ಮೂಸಕಾಂ (ನಂ) ರಕ್ತ. ರಕ್ತದಿಂದ ಮೂಸ  
ಧಾತುವುಂಟಾಗುವುದು. "ರಸಾದ್ರಕ್ತಂ ತತೋ ಮಾಸಂ ಮಾಸಾ-  
ನ್ಮೇದ: ಪ್ರಜಾಯತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ 14-10.

ಮಾಸಗ್ರಂಥಿ ಮೂಸಗ್ರಂಥಿ (ಪುಂ) ಮೂಸಗ್ರಂಥಿ. ಮಾಸಸ್ಯ  
ಗ್ರಂಥಿ:.

ಮಾಸಜ ಮೂಸಜ (ನಂ) ಮೇದಸ್ಸು, ಕೊಬ್ಬು. ಮಾಸಾ-  
ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತವಿ) "ಜ:" (3-2-96).  
"ಮಾಸಾನ್ಮೇದ: ಪ್ರಜಾಯತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ.

ಮಾಸಪೇಶಿ ಮೂಸಪೇಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗರ್ಭದೊಳಗಿನ  
ಒಂದು ಭಾಗ. 2. ಮೂಸದ ತುಂಡು. 3. ಮೂಸಖಂಡ.

ಮಾಸಲ ಮೂಸಲ (ವಿಂ) 1. ಶಕ್ತನಾಗಿರುವ, ಬಲಶಾಲಿ  
ಯಾದ. ಮಾಸಮಸ್ತಸ್ಯ "ಲಕ್" (4-2-96). 2. ಮೂಸ  
ಪುಷ್ಟಿಯುಳ್ಳ. "ಸ್ತಿಗ್ಧಮಸೃಣಶೋಭಮಾನಮಾಸಲದೇಹಸೌಭಾ-  
ಗ್ಯೇನ" ತಂ ರಾಂ 1. 3. ಸ್ತೀತವಾದ, ದಪ್ಪನಾದ,  
ದೊಡ್ಡದಾದ. "ಛವಿನಿಶ್ಚ ಮಾಜ್ಞಲ್ಯಮದ್ಭ್ರಮಾಸಲ:" ತಂ  
ರಾಂ 6-24. 4. ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅಧಿಕವಾದ. "ಮಾಕರಂದ-  
ನಿಷ್ಯಂದಸಂವಲಿತಮಾಸಲಗಂಧಬಂಧು:" ಮಾಲತೀಂ 9-13.

ಮಾಸವಿಕ್ರಯಿಕ ಮೂಸವಿಕ್ರಯಿಕ (ವಿಂ) ಮೂಸವನ್ನು  
ಮಾರಿ ಜೀವಿಸುವವನು. ಮಾಸವಿಕ್ರಯೇಣ ಜೀವತಿ—ವಿಕ್ರಯ  
"ಠನ್" (4-4-13).

ಮಾಸವಿಕ್ರಯಿನ್ ಮೂಸವಿಕ್ರಯಿನ್ (ವಿಂ) ಮೂಸ  
ವನ್ನು ಮಾರುವವನು. ಮಾಸವಿಕ್ರಯ: ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:"  
(4-2-114).

ಮಾಸಿಕ ಮೂಸಿಕ (ವಿಂ) ಮೂಸ ಮಾರಿ ಜೀವಿಸು  
ವವನು. ಮಾಸಂ ಪಣ್ಯಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (4-4-41).

ಮಾಸಿನಿ ಮೂಸಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಟಾಮೂಸಿ. ಮಾಸವತ್  
ಪದಾರ್ಥೋಽಸ್ಯಾಮಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114). "ಜಿಪ್"  
(4-1-4).

ಮಾಸಿ ಮೂಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಟಾಮೂಸಿ. ಮಾಸವತ್  
ಪದಾರ್ಥೋಽಸ್ಯಾಮಸ್ತಿ "ಅಚ್" (4-2-120).

ಮಾಕಂದ ಮೂಕಂದ (ಪುಂ) 1. ಅಮೃವೃಕ್ಷ, ಮಾವಿನ  
ಮರ. ಮಾ: ಪರಿಮಿತಾ: ಕಂದಾ ಇವ ಫಲಾನ್ಯಸ್ಯ. "ಆಮ್ರೇ  
ಕಾಮಾಜ್ಞಮಾಕಂದೌ" ವೈಜಂ. "ಮಾಕಂದಶಾಲಿನಿ ವನೇ  
ವಿಷವಲ್ಲರೀವ ಹಾ ಹಂತ ಕೇಕಯಕುಲೇ ಕಥಮಾವಿರಾಸೀತ್" ಚಂ  
ರಾಂ. 2. ಅಮಲಕ, ನೆಲ್ಲಿಗಡ. 3. ಒಂದು ನಗರ.  
"ಮಾಕಂದ: ಸಹಕಾರೋಽಸ್ತ್ರೀ ಪಾತ್ರಿನಗರಮೇದಯೋ:" ಮೇದಿಂ.

ಮಾಕರ ಮೂಕರ (ವಿಂ) 1. ಮೂಕರ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಮಕರ-  
ಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (4-3-120). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರೀ -ರೀ.  
2. ಮೂಕರವೂಸದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಮೂಕರ ಶುಕ್ಲ ಸಪ್ತಮಿ.  
ಮಕರಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯತ್ರ—ಮಕರ "ಅನ್" (4-2-21).  
"ತನ್ಮೇ ರೋಗಂ ಚ ಶೋಕಂ ಚ ಮಾಕರೀ ಹಂತುಮರ್ಹತಿ". "ಮಾಘೇ  
ಮಾಸಿ ಸಿತೇ ಪಕ್ಷೇ ಸಪ್ತಮಿ ಕೌಟಿಭಾಸ್ಕರಾ. ದद्याತ್ ಸ್ನಾನಾರ್ಥ-  
ದಾನಾಂಭ್ಯಾಮಾಯುರಾರೋಗ್ಯಸಂಪದ:" ಭವಿಷ್ಯಪುಂ.

ಮಾಕರಂದ ಮೂಕರಂದ (ವಿಂ) ಮೂಕರಂದಸಂಬಂಧ  
ವಾದ, ಪುಷ್ಪರಸದಿಂದಂಟಾದ. ಮಕರಂದಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್"  
(4-3-120). "ಮಾಕರಂದನಿಷ್ಯಂದಸಂವಲಿತಮಾಸಲಗಂಧ-  
ಬಂಧು:" ಮಾಲತೀಂ 9-13.

ಮಾಷಿಕ ಮೂಷಿಕ (ನಂ) 1. ಮಧು, ಜೀನುತುಪ್ಪ,  
ಮಾಷಿಕಾಃ ಕೃತಮ್ "ಅನ್" (4-3-117). 2. ಅಗ್ನಿ  
ಶಿಲೆ, ಸ್ವರ್ಣಮೂಷಿಕ, ಸುವರ್ಣಮುಖಿ ಎಂಬ ಶಿಲೆ.  
"ಅಭ್ರಕಂ ವ್ಯೋಮಮೇಧಾಖ್ಯಂ ಚಕ್ರಸಂಜಂ ತು ಮಾಷಿಕಮ್" ವೈಜಂ.  
ಮಾಷಿಕಮ್ ಮೂಷಿಕಮ್. ದೀರ್ಘ: ನಿಪಾಂ.

ಮಾಗಧ ಮೂಗಧ (ಪುಂ) 1. ಮಂದಿ, ಸ್ತುತಿಪಾಠಕ, ಹೊಗಳಿಕೆ  
ಭಟ. "ವಂದಿ ತು ಸ್ತುತಿಪಾಠಕ:." ವೈಜಂ. 2. ಕೃತ್ರಿಯಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ವೈಶ್ಯನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವನು.  
"ವೈಶ್ಯಾದ್ವೇದೇಹಕಂ ವಿಪ್ರಾ ಕ್ಷತ್ರಕನ್ಯಾ ತು ಮಾಗಧಮ್" ವೈಜಂ. 3. ಅನೂಡೆ (ಮದುವೆಯಾಗದ ಕನ್ಯೆ) ಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ  
ದೂರದ ದಾರಿ ನಡೆಯುವುದರಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು, ಬಾವಿ



ಯಲ್ಲಿಯೂ ಕಶ್ಮಲ ತೆಗೆಯುವುದು ಕೊಳಕುಬಟ್ಟೆ ಒಗೆಯುವುದು ಇವುಗಳಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. "ಮಾಗಧೋಸ್ತಾವನೂಡಾಜಿಂ ಜಂಭಾಕರಿಕವೃತ್ತಿಕಃ | ವಾಪ್ಯಾಶ್ವತರೆಚ್ಚಕ್ಷುಧೈ ಕಾಲಯೇ-  
ನ್ಮಲಿನಾಮ್ಬರಮ್" ವೈಜಂ. 4. ಅಂಗಡಿಬೀದಿಯಲ್ಲಿ ರಾಜನಿಗೆ ಪದಾರ್ಥಗಳ ವಿವರಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವವನು. "ವಣಿಕ್ಪಥೇ ಮಾಗಧಸ್ಯ ವಾಘ್ನಿ ರಾಜಪ್ರಬೋಧನಮ್" ವೈಜಂ. 5. ಆಯೋಗವ, ಚಿತ್ರಕೆಲಸದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. "ಮಾಗಧಶ್ಚಿತ್ರಕರ್ಮಣಾ" ವೈಜಂ. 6. ಬಿಳಿ ಜೀರಿಗೆ. (ವಿಂ) 7. ಮಗಧ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಧೀ. 8. ಹಿಪ್ಪಲಿ ಗಿಡ. 9. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕಾಡು ಮಲ್ಲಿಗೆ. "ಮಾಗಧಿ ಸ್ತ್ರೀ ಕಣಾಯುರ್ವಾಚ್ಯವನ್ಮಗಧೋದ್ಭವೇ | ಪುನಿ ವೇಷ್ಯಾತ್ ಕೃತ್ಯಾಜೇ ಶುಕ್ಲಜೀರಕವಂದಿನೋಃ" ಮೇದಿಂ. 10. ಪ್ರಾಕೃತ ಭಾಷೆಯ ಒಂದು ಭೇದ. [ದೇಶ ಭೇದ ದಿಂದ ಭಾಷೆಯು ಭಿನ್ನವಾಗುವುದು. ಮಗಧ ದೇಶದ ಭಾಷೆಯು ಮಾಗಧೀ. ಶೂರಸೇನ ದೇಶದ ಭಾಷೆ ಶೂರ ಸೇನೀ. ಲಾಟದೇಶದ ಭಾಷೆ ಲಾಟೀ. ಇತ್ಯಾದಿ.] "ಪ್ರಾಕೃತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ. "ಮಾಗಧಿ ಸ್ಯಾತ್ ಪಿಪ್ಪಲಿ | ಯುಕ್ತಿ ಮಾಧ್ಯಮವಿಶೇಷ" ಹೇಮಂ. 11. ಉದ್ದದ ಪಡವಲಕಾಯಿ. "ಅಥ ಜಿಜ್ಞಾ ದೀರ್ಘಕಲಾ ಮಾಗಧಿ ಮಲನೋತ್ತರಾ" ವೈಜಂ. 12. ಮಗಧರಾಜನ ಮಗಳು, ಸುದಕ್ಷಿಣಾದೇವಿ. "ತಯೋ-  
ರ್ಜಗೃಹತುಃ ಪಾದಾನ್ ರಾಜಾ ರಾಜ್ನಿ ಚ ಮಾಗಧಿ" ರಘುಂ ೧-೪೭ |

**ಮಾಧ್ಯಮಾಘ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ಚಂದ್ರಮಾಸ, ಮಾಘ ಮಾಸ. ಮಹಾನಕ್ಷತ್ರೇಣ ಯುಕ್ತಾ ಮಾಧಿ ಪೂರ್ಣಿಮಾ—ಸಾ ಯಸ್ಮಿನ್ ಮಾಸೇ ಸ ಮಾಧಿ ಮಾಸಃ | 2. ಮಾಘಕವಿ, "ಶಿಶುಪಾಲ ವಧ" ಮಹಾಕಾವ್ಯವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಮಹಾಕವಿ. ಮಾಘಕವಿಯ ವಿಷಯವಾಗಿ ಹೆಚ್ಚು ಸಂಗತಿಗಳು ತಿಳಿಯ ದಿದ್ದರೂ ಗ್ರಂಥದಿಂದ ಕೆಲವು ವಿಷಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿಯ ಬಹುದಾಗಿದೆ. ದತ್ತಕಪುತ್ರನಾದ ಮಾಘಕವಿಯು ಮಹಾಪಂಡಿತನಾಗಿದ್ದನು. ಇವನು ಕಾಳಿದಾಸ ಭವಭೂತಿ ಭಾರವಿ ಮೊದಲಾದ ಮಹಾಕವಿಗಳಂತೆ ಕೀರ್ತಿಯನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸುವ ಅಭಿಲಾಷೆಯಿಂದ "ಶಿಶುಪಾಲವಧ" ವೆಂಬ ಮಹಾಕಾವ್ಯವನ್ನು ರಚಿಸಿದನು. "ತಸ್ಯಾತ್ಮಜಃ ಸುಕವಿಕೀರ್ತಿದುರಾಶಯಾದಃ ಕಾವ್ಯಂ ವ್ಯಥತ್ತ ಶಿಶುಪಾಲವಧಾಭಿ-  
ವಾಹನಮ್" | ಪರಮ ದಾರಿದ್ರ್ಯಪೀಡಿತನಾದ ಮಾಘಕವಿಯ ಪತ್ನಿಯು ಭೋಜರಾಜನನ್ನು ಕಾಣಲು ಬಂದು ಪತಿಯಿಂದ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಒಂದು ಪತ್ರವನ್ನು ರಾಜನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟಳು. ಅದರಲ್ಲಿದ್ದ "ಕುಮುದವನಮಪಶ್ರಿ ಶ್ರೀಮದಮ್ಭೋಜಖಂಡಂ ತ್ಯಜತಿ ಮುದಮೂಲಕಃ ಪ್ರೀತಿಮಾಂಶ್ರಕ್ವಾಕಃ | ತದಯಮಹಿಮರಶಿಮರ್ಯಾತಿ ಶೀತಾಂಶುರಸ್ತಂ ಹತವಿಧಿಲಸಿತಾನಾಂ ಹೀ ವಿಚಿತ್ರೋ ವಿಪಾಕಃ"

ಮಾಧ್ಯಮ ೧೧-೬೪ ಎಂಬ ಪ್ರಾತಃಕಾಲದ ವರ್ಣನೆಯ ಶ್ಲೋಕವನ್ನು ಓದಿ ನೋಡಿ ಬಹಳ ಸಂತೋಷಪಟ್ಟು ರಾಜನು ಮೂರು ಲಕ್ಷ ನಾಣ್ಯಗಳನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಮರುದಿನ ಮಾಘಕವಿಯನ್ನು ಕಂಡು ನಮಸ್ಕರಿಸಲು ಬರುವುದಾಗಿ ಪತ್ನಿಯ ಮೂಲಕ ಹೇಳಿಕಳುಹಿಸಿದನು. ಅವಳು ಅದನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಬರುತ್ತಿರುವಾಗ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಪತಿಯ ಗುಣಗಾನವನ್ನು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಯಾಚಕರಿಗೆ ಅವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ದಾನಮಾಡಿ ರಿಕ್ತಹಸ್ತಳಾಗಿ ಬಂದು ತನ್ನ ಪತಿಗೆ ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳನ್ನೂ ತಿಳಿಸಿದಳು. ಮಾಘನು ಅದ ರಿಂದ ಬಹಳ ಸಂತೋಷಗೊಂಡು ಇನ್ನು ಮುಂದೆ ಬರುವ ಯಾಚಕರಿಗೆ ಕೊಡಲು ಏನೂ ಇಲ್ಲವೆಂದು ಬಹಳ ದುಃಖಿಸು ವನು. ಆಗ ಒಬ್ಬ ಯಾಚಕನು ಬಂದು ಮಾಘಕವಿಯನ್ನು ನೋಡಿ "ಆಶ್ವಾಸ್ಯ ಪರ್ವತಕುಲಂ ತಪನೋಪತಪ್ತಮೃದಾಮದಾವ-  
ವಿಧುರಾಣಿ ಚ ಕಾನನಾನಿ | ನಾನಾನದೀನದಶತಾನಿ ಚ ಪೂರ್ಯಿತ್ವಾ ರಿಕ್ತೋಽಸಿ ಯಜ್ಞಲದ ಸೇವ ತವೋತ್ತಮಾ ಶ್ರೀಃ" ಎಂದು ಅವನನ್ನು ಹೊಗಳಿದನು. ಈ ಒಂದೆರಡು ವಿಷಯ ಗಳಿಂದ ಮಾಘಕವಿಯು ಪಾಂಡಿತ್ಯ ಮತ್ತು ದಾನಶೂರತ್ವ ಗಳು ಮಾತ್ರ ತಿಳಿದುಬರುವುವು. ಇದರಿಂದ ಭೋಜ ರಾಜನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಈ ಕವಿಯು ಇದ್ದನೆಂದು ತಿಳಿಯಬಹು ದಾಗಿದೆ. 3. ಮಾಘಕವಿಯಿಂದ ರಚಿತವಾದ "ಶಿಶುಪಾಲ ವಧ" ಕಾವ್ಯ. ಕಾವ್ಯಗಳು ಕವಿಯ ಹೆಸರಿನಿಂದಲೂ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಹೊಂದುವುವು. "ಕವೇವೃತ್ತಸ್ಯ ವಾ ನಾಮ್ನಾ ನಾಯಕಸ್ಯೇತರಸ್ಯ ವಾ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೩೨೪ | "ಪುಷ್ಪೇಷು ಜಾತೀ ನಗರೇಷು ಕಾಂಕ್ಷೀ ನಾರೀಷು ರಮಾ ಪುಷ್ಪೇಷು ವಿಷ್ಣುಃ | ನದೀಷು ಗಂಧಾ ನೃಪತೀ ಚ ರಾಮಃ ಕಾವ್ಯೇಷು ಮಾಧ್ಯಮಃ ಕವಿಕಾಲಿದಾಸಃ" | (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾಧಿ ಮಾಘೀ. 4. ಮಾಘಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ಮಹಾಯುಕ್ತಾ ಪೂರ್ಣಿಮಾಸಿ—ಮಾಧ್ಯಮ "ಅಘ್" (೪-೨-೩) | "ತೀಪ್" (೪-೧-೧೪) |

**ಮಾಧ್ಯಮಾಘ್ಯ (ನಂ)** ಕುಂದಕುಸುಮ, ಮೊಲ್ಲೆಹೂವು. ಮಾಧ್ಯಮ ಭವಮ್ |

**ಮಾಧ್ಯಮಿಕ ಮಾಂಗಲಿಕ (ವಿಂ)** ಮಂಗಳವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ, ಶುಭವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ, ಒಳ್ಳೆಯದಾಗುವುದನ್ನು ತೋರಿಸುವ. ಮಂಗಳ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯) | "ಮುದಮಸ್ಯ ಮಾಧ್ಯಮಿಕತುರ್ಯಕೃತಾಂ ಧ್ವನಯಃ ಪ್ರತೀನುರನುಬ್ರಮಪಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೬-೪ |

**ಮಾಧ್ಯಮ ಮಾಂಗಲ್ಯ (ನಂ)** 1. ಮಂಗಳ, ಕಲ್ಯಾಣ, ಶುಭ. ಮಂಗಳಮೇವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಘಟ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪) | (ವಿಂ) 2. ಮಂಗಳಕ್ಕೆ ಹಿತವಾದ. ಮಂಗಳಾಯ ಹಿತಮ್ "ಯತ್" (೪-೧-೪) |



ಮಾತೆ ಮಾತೆ (ಪುಂ) ರಸ್ತೆ, ದಾರಿ.

ಮಾತೆಲ ಮಾತೆಲ (ಪುಂ) 1. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ. 2. ಮೊಸಳೆ. 3. ರೋಗ. 4. ಹೊಗಳುವಿಕೆ. "ಅಥ ಮಾತೆಲ: |

ವಂದಿವೋ ರಜಿ ಗ್ರಾಹಿ" ಹೇಮಂ |

ಮಾತಿಕಾ ಮಾತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೋಟ. 2. ಅಂಬುಷ್ಯ, ಅಗುರುತುಂಬಿ.

ಮಾತೀರಮ್ ಮಾತೀರಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಶೀಘ್ರವಾಗಿ, ಕ್ಷಿಪ್ರವಾಗಿ, ಜಾಗ್ರತೆಯಾಗಿ. ಮಾತೀರಮ್ | "ಅಥಾವೀಲದಾ ಮತ್ಸ್ಯ: ತಾನುಷಿನ್ ಪ್ರಹಸನ್ ಶನೇ: | ಅಸ್ಮಿನ್ ಹಿಮವತ: ಸೃಜ್ಞೇ ನಾವಂ ಬರ್ಣಿತ ಮಾತೀರಮ್" ಮಾಂ ವನಂ |

ಮಾತೀಜಠ ಮಾಂಜೀಷ್ಯ (ನಂ) 1. ಕೆಂಪುಬಣ್ಣ, ರಕ್ತವರ್ಣ. (ವಿಂ) 2. ಕೆಂಪುಬಣ್ಣದ, ರಕ್ತವರ್ಣದ. 3. ಮಂಜಿಷ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಅದ್ದಿದ, ಮಂಜಿಷ್ಯೆಯ ಬಣ್ಣ ಕಟ್ಟಿದ. ಮಾತೀಜಠಯಾ ರಕ್ತಮ್ "ಅನ್" (೪-೨-೧) | "ಲಗ್ನೋಪ್ಯಗ್ನಿಶ್ಚಾಮರೇಷು ಪ್ರಕಾಮಂ ಮಾತೀಜಠೇಷು ವ್ಯಜ್ಯತೇ ನ ಸ್ಮ ಸೇನ್ಯ:" ಮಾಘಂ ೧೮-೩೪ |

ಮಾತೀಜಠಕ ಮಾಂಜೀಷ್ಯಕ (ವಿಂ) ಮಂಜಿಷ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಅದ್ದಿದ (ವಸ್ತ್ರ), ಮಂಜಿಷ್ಯೆಯ ಬಣ್ಣ ಕಟ್ಟಿದ (ಬಟ್ಟೆ). "ಮೌರ್ಯಾ ಮೇಖಲಯಾ ನಿಯತ್ರಿತಮಥೋ ವಾಸಶ್ಚ ಮಾತೀಜಠಕಮ್" ಮಂ ಬಿಂ ೧-೧೮ |

ಮಾತೆಜ್ಜ ಮಾತೆಂಕ (ಪುಂ) ಉಪ್ಪಿನ ಅಂಗಡಿ. "ಮಾತೆಜ್ಜೋ ಲವಣಾಪಣ:" ವೈಜಂ |

ಮಾತೆರ ಮಾತೆರ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ. ಸೂರ್ಯನ ಪಾಶ್ಚಾತ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಅಂಗದೇವತೆ. ಮನ (ಜ್ಞಾನ) "ಅರ:" ಠಕಾರಶ್ಚಾಂತಾದೇಶ: (ಉಂ ೪-೩೯) | ಮಾತೆರಸ್ಯಾ-ಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೦೪) | 2. ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ. 3. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. "ಮಾತೆರೋ ವ್ಯಾಸವಿಪ್ರಯೋ: | ಸೂರ್ಯನು ಚ" ಹೇಮಂ |

ಮಾತೆ ಮಾತೆ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಂಗಿ, ಕವಚ. "ತನುತ್ವಂ ಕವಚೋ-ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ | ಮಾತೆ: ಸ್ತ್ರೀ ಜಾಗರೋ ವಕ್ಷಚ್ಛದಸ್ಸನಾಹಕಂಕಟೌ" ವೈಜಂ |

ಮಾತೆ ಮಾತೆ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎಲೆಯ ಮಧ್ಯದ ಸಿರೆ, -ನರ. "ಪತ್ರಮವ್ಯಸಿರಾ ಮಾತೆ:" ವೈಜಂ | 2. ದೈನ್ಯ, ಬಡತನ. 3. ಪೂಜೆ, ಗೌರವ, ಸತ್ಕಾರ. "ಮಾತೆದೇನ್ಯಂ ಪತ್ರಸಿರಾಶ್ಚಿ" ಹೇಮಂ |

ಮಾಣವ ಮಾಣವ (ಪುಂ) 1. ಬಾಲಕ, ಹುಡುಗ. ಮನೋ: ಕುತ್ಸಿತಮಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೯೨) | ಣತ್ವಮ್ | "ಅಪತ್ಯೇ ಕುತ್ಸಿತೇ ಮೂಢೇ ಮನೋರೌತ್ಸರ್ಗಿಕ: ಸ್ಮೃತ: | ತಕಾರಸ್ಯ ಚ ಮೂಢನ್ಯ |

ತೇನ ಸಿಂಧ್ಯತಿ ಮಾಣವ:" ಇತಿ ಭಾಷ್ಯಮ್ | 2. ಇಷ್ಟತ್ತು ಎಳೆಗಳ ಹಾರ. "ವಿಶತಿಯಷ್ಟಿಕೋ ಹಾರ: ಮಾಣವ: ಪರಿಕೀರ್ತಿತ:" |

ಮಾಣವಕ ಮಾಣವಕ (ಪುಂ) 1. ಬಾಲಕ, ಹುಡುಗ. ಮಾಣವ "ಕನ್" (೪-೩-೮೪) | "ಮಾಯಾಮಾಣವಕೋ ಹರಿ:" ಭಾಗಂ | 2. ಇಷ್ಟತ್ತು ಎಳೆಗಳ ಹಾರ. 3. ದುರ್ಜನ, ಕೆಟ್ಟ ಮನುಷ್ಯ. "ಮಾಣವಕ: ಕುಪುಸಿ ಸ್ಯಾದ್ಬಾಲಹಾರಭಿದೋರಪಿ" ಹೇಮಂ | 4. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. "ಮಾಣವಕೋ ಹಾರಮೇದೇ ಬಾಲೇ ಕಾಪುರೇ ವರೌ" ಮೇದಿಂ |

ಮಾಣವಿಕಾ ಮಾಣವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುಡುಗಿ. ಬಾಲಿಕೆ.

ಮಾಣವೀನ ಮಾಣವೀನ (ವಿಂ) ಹುಡುಗನಿಗೆ ಹಿತವಾದ. ಮಾಣವಾಯ ಹಿತಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೧) |

ಮಾಣವ್ಯ ಮಾಣವ್ಯ (ನಂ) ಬಾಲಕರ ಸಮೂಹ, ಚಿಕ್ಕ ಹುಡುಗರ ಗುಂಪು. ಮಾಣವಾನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಯನ್" (೪-೨-೪೨) |

ಮಾಣಿಕ್ಯ ಮಾಣಿಕ್ಯ (ನಂ) 1. ರತ್ನ, ಕೆಂಪು. ಮಣಿರವ ಕಾಯತಿ—ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಡ:" (ವಾಂ ೩-೨-೧೦೧) | ಮಣಿಕೇ ಮಣಿಪುರಾಣ್ಯೇ ನಗರೇ ಮವಮ್ "ಯ:" (೪-೩-೯೨) | "ಯನ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪) ವಾ | "ರತ್ನಮೇದಾಸ್ತು ಮೌಕ್ತಿಕಮ್ | ಮಾಣಿಕ್ಯಂ ಪೌಷ್ಕಮ್ ಶಕ್ತು:" ವೈಜಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಯಾ—ಯಾ. 2. ಗಂಜಿ, ಹಲ್ಲೆ. "ದೃಢಿ ಮುಸಲಿ ಪಲ್ಲಿ ಮಾಣಿಕ್ಯಾ ಗೃಹಗೋಧಿಕಾ" ವೈಜಂ |

ಮಾಣಿಮನ್ಯ ಮಾಣಿಮನ್ಯ (ಪುಂ) ಸೈಂಧವಲವಣ. ಮಾಣಿಮನ್ಯಗಿರೌ ಭವ: "ಅನ್" (೪-೩-೪೩) |

ಮಾಣಲಿಕ ಮಾಣಲಿಕ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಮಂಡಲದ ಅಧಿಕಾರಿ, ಒಂದು ಪ್ರಾಂತ (ಸಂಸ್ಥಾನ)ದ ಅಧಿಕಾರಿ, ಒಂದು ದೇಶವನ್ನು ಆಳುವ ಅಧಿಕಾರಿ. 2. ಒಂದು ಜಿಲ್ಲೆಯ ಅಧಿಕಾರಿ.

ಮಾತೆಜ್ಜ ಮಾತೆಂಕ (ಪುಂ) 1. ಗಜ, ಆನೆ. ಮಾತೆಜ್ಜಸ್ಯಾಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | "ತದೀಯಮಾತೆಜ್ಜಘಟಾವಿಧಿವಿಧಿ: ಕಡಸ್ಥಲಪ್ರಾಪಿತದಾನವಾರಿಭಿ:" ಮಾಘಂ ೧-೬೪ | 2. ಕಿರಾತ, ಒಬ್ಬ ಬೆರಕೆಜಾತಿಯವನು.

ಮಾತೆಜ್ಜಿ ಮಾತೆಂಕಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಾರ್ವತಿ. 2. ಹತ್ತು ಮಹಾವಿದ್ಯೆಗಳಲ್ಲಿ ಒಂಬತ್ತನೆಯ ಒಂದು ವಿದ್ಯೆ.

ಮಾತಾಪಿತರೌ ಮಾತಾಪಿತರೌ (ಪುಂವಿಂ) ತಾಯಿ ಮತ್ತು ತಂದೆ. ಮಾತಾ ಚ ಪಿತಾ ಚ—ಮಾತೃಶಬ್ದಸ್ಯ "ಆನಡ್" (೬-೩-೨೪) | ಮಾತೃಶಬ್ದಸ್ಯಾರಡಾದೇಶೋ ಮಾತರಪಿತರೌ ಮಾತರಪಿತರೌ.



**ಮಾತರಿಶ್ವನ್ ಮೂರ್ತಿಕೃತ್** (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾಂಧೀ. ಮಾತರಿ  
ಜನನಾಂ ಶ್ವಯತಿ—ತು ಆಂ ಶ್ವಿ (ಗತಿವೃತ್ತಿಃ) “ಕನಿನ್”  
(ತಂ ೧-೧೫೭) | ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಅಲುಕ್ ಚ ನಿಪಾಂ |  
“ಕಾಂತಾನಾಂ ಗಗನನದೀತರಜ್ಜಿಶೀತಃ ಸಂತಾಪಂ ವಿರಮಯತಿ ಸ್ಮ  
ಮಾತರಿಶ್ವಾ” ಕಿರಾಂ ೭-೧೦ |

**ಮಾತಲಿ ಮೂರ್ತಿಕೃತ್** (ಪುಂ) ಇಂದ್ರನ ಸಾರಥಿ, ಇಂದ್ರನ ರಥದ  
ಚಾಲಕ. ಮತಲಸ್ಯ ಅಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ “ಇಬ್” (೪-೧-೯೫) |  
“ಅಯೇ, ಮಾತಲಿಃ | ಸ್ವಾಗತಂ ಮಹೇಂದ್ರಸಾರಥೇ” ಶಾಕುಂ ೬ |

**ಮಾತಾ ಮೂರ್ತಿಕೃತ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜನನಿ, ತಾಯಿ. ಮಾನ (ಪೂಜಾಯಾಮ್)  
“ತನ್” ನಿಪಾಂ |

**ಮಾತಾಮಹ ಮೂರ್ತಿಕೃತ್** (ಪುಂ) 1. ತಾಯಿಯು ತಂದೆ,  
ತಾಯಿಕಡೆಯ ಅಜ್ಜ. ಮಾತುಃ ಪಿತಾ — ಮಾತು “ತಾಮಹ್”  
(ವಾಂ ೪-೨-೩೬) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಮಹೀ —ಮಹೀ. ತಾಯಿಯು  
ತಾಯಿ, ತಾಯಿಕಡೆಯ ಅಜ್ಜಿ. (ಪುಂ ೭೦೦೦) 2. ತಾಯಿ  
ಕಡೆಯ ಪೂರ್ವಿಕರು, ತಾಯಿವಂಶದ ಹಿರಿಯರು.

**ಮಾತಿ ಮೂರ್ತಿಕೃತ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಳತೆ. 2. ಅಭಿಪ್ರಾಯ.  
3. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ.

**ಮಾತುಲ ಮೂರ್ತಿಕೃತ್** (ಪುಂ) 1. ಸೋದರಮಾವ, ತಾಯಿಯು  
ಸಹೋದರ. ಮಾತುಃ ಭ್ರಾತಾ — ಮಾತು “ತುಲಕ್” (ವಾಂ  
೪-೨-೩೮) | “ಮಾತುಭ್ರಾತಾ ತು ಮಾತುಲಃ” ಅಮಂ | “ಮಾತುಲೋ  
ವಿಹ್ವಲೋ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಕುಂಭಂ ವಾಲಿಸುತೋ ನಗಃ” ಮಹಿಂ ೧೫-೧೧೮ |  
2. ಮದನವೈಕ್ಯ, ದತ್ತೂರಿಗಿಡ. 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ  
ಹಾವು, ಉಸರವಳ್ಳಿ ಹಾವು. 4. ಒಂದು ಧಾನ್ಯ. “ಮಾತುಲೋ  
ಮದನದ್ರುಮೇ | ಧತ್ತೂರೇಽಹಿವ್ರಿಹಿಮಿದೋ ಪಿತುಃ ಸ್ಯಾಲೇ” ಹೇಮಂ |

**ಮಾತುಲಪುತ್ರಕ ಮೂರ್ತಿಕೃತ್** (ಪುಂ) 1. ಸೋದರ  
ಮಾವನ ಮಗ. ಮಾತುಲಸ್ಯ ಪುತ್ರಃ “ಕನ್” | 2. ದತ್ತೂರಿ  
ಕಾಯಿ. ಮಾತುಲಸ್ಯ ಪುತ್ರ ಇವ “ಕನ್” (೫-೩-೯೬) |  
“ಮಾತುಲೋ ಮದನಶ್ರಾಸ್ಯ ಫಲೇ ಮಾತುಲಪುತ್ರಕಃ” |

**ಮಾತುಲಾನಿ ಮೂರ್ತಿಕೃತ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅತ್ತೆ, ಸೋದರ  
ಮಾವನ ಹೆಂಡತಿ. ಮಾತುಲಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ — ವಾ “ಆನುಕ್”  
(೪-೧-೪೯) | ಡಿಃ ಚ | ಪಕ್ಷಿ ಮಾತುಲಿ ಮೂರ್ತಿಕೃತ್.  
2. ಸಣಬು, ಮಂಜಿಯ ನಾರು.

**ಮಾತುಲಾಹಿ ಮೂರ್ತಿಕೃತ್** (ಪುಂ) ಉಸರವಳ್ಳಿ ಹಾವು.  
ಮಾತುಲಶ್ರಾಸಿ ಅಹಿಶ್ವ |

**ಮಾತುಲಿ ಮೂರ್ತಿಕೃತ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೋದರಮಾವನ ಹೆಂಡತಿ.  
ಮಾತುಲಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ “ಡಿಃ” (೪-೧-೪೮) |

**ಮಾತುಲುಜ್ಜಕ ಮೂರ್ತಿಕೃತ್** (ಪುಂ) 1. ಮಾದಳದ ಗಿಡ.  
ಮಾತುಲಾಸಿ ಲುಜ್ಜಶ್ವ — ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” (೫-೩-೭೫) |

“ಫಲಪೂರೋ ಬೀಜಪೂರೋ ರುಚಕೋ ಮಾತುಲುಜ್ಜಕಃ” ಅಮಂ |  
“ತದ್ಭುವೋ ಭಾಗಾಃ ಪ್ರೇಕ್ಷಿತಮಾತುಲುಜ್ಜವೃತಯಃ ಪ್ರೇಯೋ ವಿಧಾಸ್ಯಂತಿ  
ವಾಮ್” ಮಾಲತೀಂ ೬-೧೯ | (ನಂ) 2. ಮಾದಳದ ಹಣ್ಣು.

**ಮಾತು ಮೂರ್ತಿಕೃತ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜನನಿ, ತಾಯಿ. ಮಾನತೇ ಪೂಜಯತೇ  
— ಮಾನ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) “ತುಕ್” (ತಂ ೨-೯೫) | “ಉಮೇತಿ  
ಮಾತ್ರಾ ತಪಸೋ ನಿಷಿದ್ಧಾ ಪಶ್ಚಾದುಮಾಖ್ಯಾಂ ಸುಮುಖೀ ಜಗಾಮ”  
ಕುಮಾಂ ೧-೨೬ | 2. ಬ್ರಾಹ್ಮೀ ಮೊದಲಾದ ಸಪ್ತ  
(ಏಳು) ಮಾತೃಗಳು. (1) ಬ್ರಾಹ್ಮೀ, (2) ಮಾಹೇಶ್ವರೀ,  
(3) ಕೌಮಾರೀ, (4) ವೇಣವೀ, (5) ವಾರಾಹೀ, (6) ಇಂದ್ರಾಣಿ  
ಮತ್ತು (7) ಚಾಮುಂಡಾ ಇವರು ಸಪ್ತಮಾತೃಗಳು. 3.  
ಭೂಮಿ. 4. ಗೋವು. 5. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. 6. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.  
“ಮಾತಾ ಗೌರ್ದುರ್ಗಾ ಜನನಿ ಮಹೀ | ಮಾತರಸ್ತು ಬ್ರಹ್ಮಾಣ್ಯಾಃ”  
ಹೇಮಂ | 7. ಪುಷ್ಕಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. “ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಾ-  
ಗ್ರಹಾಣಿ | ಪೌಷಿ ತು ಮಹಿಷಿ ಮಾತಾ” ವೇಜಂ | 8. ಬೀಸುವ  
ಕಲ್ಲಿನ ಕೆಳಗಿನ ಕಲ್ಲು. 9. “ಅ” ಕಾರ ಮೊದಲಾದ ಅಕ್ಷರ  
ಗಳು. “ಮಾತಾ ತು ಗವ್ಯಕಾರಾದೌ ಬ್ರಾಹ್ಮಾಣ್ಯಾಸು ಪ್ರಸೂಮಯೋಃ”  
ವೇಜಂ | (ವಿಂ) 10. ಅಳತೆಮಾಡುವವನು, ಅಳಿಯು  
ವವನು. ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) “ತುಕ್” |

**ಮಾತುಕ ಮೂರ್ತಿಕೃತ್** (ಪುಂ) 1. ಸೋದರಮಾವ. (ವಿಂ) 2.  
ತಾಯಿಯು ಸಂಬಂಧವಾದ, ತಾಯಿಯು ಕಡೆಯಿಂದ ಬಂದ.  
ಮಾತುರಯಮ್ ಮಾತುರಾಗತೋ ವಾ “ತುಕ್” (೪-೩-೭೮) |  
“ಪಿತ್ರಯಮಂಶಮುಪವೀತಲಕ್ಷಣಂ ಮಾತುಕಂ ಚ ಧನುರ್ಲಜಿತಂ ದಧತ್”  
ರಘುಂ ೧೧-೬೪ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾತುಕಾ ಮೂರ್ತಿಕೃತ್. 3. ಉಪ  
ಮಾತೆ, ದಾದಿ. 4. ಬ್ರಾಹ್ಮೀ ಮೊದಲಾದ ಸಪ್ತ  
ಮಾತೃಗಳು. 5. ವರ್ಣಮಾಲೆ, “ಅ” ಕಾರ ಮೊದಲಾದ  
ಅಕ್ಷರಸಮಾಮಾಯ. 6. ತಾಯಿ, ಜನನಿ. “ಮಾತುಕಾ  
ಧಾತುಕಾಮಾತ್ರೋಃ ದೇವೀಭಿರ್ದರ್ಶನಮಾಲಯೋಃ” ಮೇದಿಂ |

**ಮಾತುಬಂಧು ಮೂರ್ತಿಕೃತ್** (ಪುಂ) ತಾಯಿಯು ಕಡೆಯ  
ನೆಂಟರು. ತಾಯಿಯು ಸೋದರತ್ತೆಯ ಮಕ್ಕಳು, ತಾಯಿಯು  
ಚಿಕ್ಕಮ್ಮ, ದೊಡ್ಡಮ್ಮ ಇವರ ಮಕ್ಕಳು, ತಾಯಿಯು  
ಸೋದರಮಾವನ ಮಕ್ಕಳು ಇವರು ಮಾತುಬಂಧುಗಳು.  
“ಮಾತುಃ ಪಿತೃವಸುಃ ಪುತ್ರಾಃ ಮಾತುಮಾತೃವಸುಃ ಸುತಾಃ |  
ಮಾತುಮಾತುಲಪುತ್ರಾಶ್ಚ ವಿಜ್ಞೇಯಾ ಮಾತುಬಂಧವಃ” |

**ಮಾತುಶಾಸಿತ ಮೂರ್ತಿಕೃತ್** (ಪುಂ) ಮೂರ್ಖ, ತಾಯಿ  
ಯಿಂದ ಶಿಕ್ಷಿಸಿ ಪಳಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಪುತ್ರ, ತಾಯಿಯು ಶಿಕ್ಷಿಸಿ  
ಬೆಳೆಸಿದ ಮಗ. ಮಾತ್ರಾ ಶಾಸಿತಃ | ತಾಯಿಯು ಪುತ್ರ  
ವಾತ್ಸಲ್ಯದಿಂದ ದಂಡಿಸದೆ ಬೆಳೆದ ಮಗನು ಮೂರ್ಖ  
ನಾಗುತ್ತಾನೆ.



ಮಾತೃಷ್ವ ಸ್ತ್ರೀಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಾಯಿಯ ಒಡಹುಟ್ಟಿದವಳು, ತಾಯಿಯ ಅಕ್ಕ ಮತ್ತು ತಂಗಿ, ಚಕ್ಕಮ್ಮ ಮತ್ತು ದೊಡ್ಡಮ್ಮ. ಮಾತು: ಸ್ವಸಾ. ಇಲ್ಲಿ ವಿಕಲ್ಪವಾಗಿ ಅಲಕ್ಷ್ಯ ಸಮಾಸ ಬಂದು ಮಾತು: ಷವಸಾ ಮಾತೃಷವಸಾ ಎಂದೂ ಅಲಕ್ಷ್ಯ ಸಮಾಸ ಬಂದಾಗ ಷತ್ವವು ವಿಕಲ್ಪವಾಗಿ ಬಂದು ಮಾತು: ಸ್ವಸಾ ಮಾತು: ಷವಸಾ ಎಂದೂ ರೂಪಗಳಾಗುವವು.

ಮಾತೃಷ್ವಸೇಯ ಮಾತೃಷ್ವಸೇಯ (ಪುಂ) ತಾಯಿಯ ಒಡಹುಟ್ಟಿದವಳ ಮಗ, ತಾಯಿಯ ಸೋದರಿಯ ಮಗ. ಮಾತೃಷ್ವಸು: ಅಪत्यಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೩೪). "ಠ್ಣ" (೪-೧-೧೩೪). ಮಾತೃಷ್ವಸ್ರೀಯ: ಠಕಿ ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಠೀಪ್" (೪-೧-೧೫). ಮಾತೃಷ್ವಸೇಯ ಮಾತೃಷ್ವಸೇಯೀ. ಠಣಿ "ಠಾಪ್" (೪-೧-೪). ಮಾತೃಷ್ವಸ್ರೀಯಾ ಮಾತೃಷ್ವಸ್ರೀಯಾ.

ಮಾತೃ ಮಾತೃ (ನಂ) 1. ಕಾರ್ತೃ, ಸಾಕಲೈ. 2. ಅವಧಾರಣ. ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ತನ್" (೩ಂ ೪-೧೬೭). ಸಾಕಲೈ—ಪ್ರಾಣಿಮಾತ್ರಂ ನ ಹಿಸತಿ. ಅವಧಾರಣ—ಕ್ಷಣಮಾತ್ರಂ ಪಾತ್ರಂ ಭವತಿ. 3. ಅಳತೆ. —ಇದು ಕಾಲ ಉದ್ದ ಅಗಲ ಎತ್ತರ ಅಂತರ ಈ ಎಲ್ಲಾ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ. ಅಕ್ಷಗುಲಿಮಾತ್ರಮ್. ಕ್ಷಣ-ಮಾತ್ರಮ್. ರೇಖಾಮಾತ್ರಮ್. ಕ್ರೋಶಮಾತ್ರಮ್. ಇತ್ಯಾದಿ. "ರೇಖಾಮಾತ್ರಮಪಿ ಕ್ಷುಣ್ಣಾದಾಮನೋವರ್ಮನ: ಪರಮ್" ರಘುಂ ೧-೧೭. 4. ಕೂಡಲೆ, ಅಕ್ಷಣದಲ್ಲಿ, ಆಗಲೇ. "ಪ್ರವಿಷ್ಟಮಾತ್ರಂ ಏವ ತತ್ರ ಭವತಿ ರಾಜನಿ ನಿರೂಪದ್ರವಾಣಿ ನ: ಕಾರ್ಯಾಣಿ" ಶಾಕುಂ ೩.

ಮಾತೃ ಮಾತೃ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪರಿಚ್ಛದ, ಉಪಕರಣ, ಸಾಧನ. ಮಾತೃತೇಜಯಾ — ಮಾ (ಮಾನೇ) "ತನ್" (೩ಂ ೪-೧೬೭). 2. ಅರ್ಥ, ಐಶ್ವರ್ಯ, ಸಂಪತ್ತು. "ಶೂನ್ಯ-ಮಠಿಕಾಯಾಂ ಮಾತೃ: ಸಮವತಾಯಿ" ದಶಕುಂ. 3. ಅಂಶ, ಭಾಗ. "ಸುರೇಂದ್ರಮಾತ್ರಾಶ್ರಿತಗರ್ಭಗೌರವಾತ್ ಪ್ರಯತ್ನಮುಕ್ತಾಸನಯಾ ಗೃಹಾಗತ:" ರಘುಂ ೩-೧೧. 4. ಅಕ್ಷರದ ಅವಯವ, ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸುವ ಕಾಲ, ಹ್ರಸ್ವವರ್ಣವನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸಲು ಬೇಕಾಗುವ ಕಾಲ. "ಏಕಮಾತ್ರೋ ಭವೇದ್ಭವ: ದ್ವಿಮಾತ್ರೋ ದೀರ್ಘ ಉಚ್ಯತೇ. ತ್ರಿಮಾತ್ರಸ್ತು ಪ್ಲುತೋ ಜ್ಞೇಯ: ವ್ಯಂಜನಂ ತ್ವರ್ಣ-ಮಾತ್ರಕಮ್". 5. ಎಣಿಕೆ, ಪರಿಗಣನೆ. "ಕಾಯಸ್ಥ ಇತಿ ಲಕ್ಷ್ಮೀ ಮಾತೃ" ಮುದ್ರಾಂ ೧. 6. ಮಾನ, ಅಳತೆ. ಪರಿಮಾಣ, ಕಾಲ ಉದ್ದ ಅಗಲ ಎತ್ತರ ಅಂತರ ಇತ್ಯಾದಿ. 7. ಮುನ್ನಡೆ, ಪ್ರಗತಿ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ. 8. ಕರ್ಣಾಭರಣ, ಕಿವಿಯ ಒಡವೆ. "ಮಾತೃ ಪರಿಚ್ಛದೇಶೈಶ್ಚ ಪ್ರವೃತ್ತಿ ಕರ್ಣ-ಭೂಷಣಂ. ಅಕ್ಷರಾವಯವೇ ಮಾನೇ ಮಾತ್ರಂ ಕಾರ್ತೃತ್ವವರ್ಧಾರಣೆ" ವೈಜಂ. 9. ಅಲ್ಪ, ಕೊಂಚ. 10. ಅಭರಣ, ಒಡವೆ.

11. ಇಂದ್ರಿಯವಿಷಯ, ಶಬ್ದಾದಿವಿಷಯಗಳು. "ಮಾತೃ-ಸ್ಪರ್ಶಸ್ತು ಕೌಂತೇಯ ಶೀತೋಷ್ಣಸುಖದುಃಖದಾ:" ಗೀತಾ ೨-೧೪. 12. ಇಂದ್ರಿಯ. 13. ಅವಯವ, ಅಂಗ. "ಚಂದ್ರ-ವಿತ್ತೇಶಯೋಶ್ಚೈವ ಮಾತೃ ನಿರ್ಹೃತ್ಯ ಶಾಶ್ವತೀ:" ಮನುಂ ೭-೪. 14. (ಸಂಗೀತಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಕಾಲದ ಅಳತೆ. 15. ರೂಪ. "ತಸ್ಯ ಮಾತೃ ಗುಣ: ಶಬ್ದ: ಲಿಂಗಂ ಯದ್ವಾಕ್ಯದೃಶ್ಯಯೋ:" ಭಾಗಂ ೨-೫-೨೫.

ಮಾತೃಚ್ಯುತಕ ಮಾತೃಚ್ಯುತಕ (ನಂ) ಒಂದು ಮಾತೃಯನ್ನು ತೆಗೆದುಹಾಕಿ ಓದುವುದರಿಂದ ಬೇರೆ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡತಕ್ಕ ವಾಕ್ಯ. ಮಾತೃಯಾ: ಚ್ಯುತೀತ್ಯಂ. "ಮೂಲಸ್ಥಿತಿ-ಮಥ: ಕುರ್ವನ್ ಪಾತ್ರೇರ್ಜುಷ್ಠೋ ಗತಾಕ್ಷರ:" ವಿಡ: ಸೇವ್ಯ: ಕುಲೀನಸ್ಯ ತಿಷ್ಠತ: ಪಥಿಕಸ್ಯ ಸ:" ಇಲ್ಲಿ ವಿಡ ಪದದ ಇ ಕಾರವನ್ನು ತೆಗೆದು ಓದಲಾಗಿ ವಡ ಪದದ ಅರ್ಥವುಂಟಾಗುವುದು.

ಮಾತೃಚ್ಛಂದಸ್ ಮಾತೃಚ್ಛಂದಸ್, -ವೃತ್ತ-ವೃತ್ತ (ನಂ) ಅಕ್ಷರಗಳ ಮಾತೃಗಳ ಸಂಖ್ಯೆಯಿಂದ ರಚಿಸುವ ಛಂದಸ್ಸು, ಮಾತೃವೃತ್ತ. ಆರ್ಯಾ ವೈತಾಳೀಯ ಗೀತಿ ಉಪಗೀತಿ ಮೊದಲಾದುವು ಮಾತೃವೃತ್ತಗಳು. "ಮಾತೃವರ್ಣವಿಭೇದೇನ ಚಂದಸ್ತದಿಹ ಕಥ್ಯತೇ" ವೃಂ ೨೦.

ಮಾತೃಸ್ಪರ್ಶ ಮಾತೃಸ್ಪರ್ಶ (ಪುಂ) ಶಬ್ದಾದಿ ವಿಷಯಗಳ ಸಂಬಂಧ. ಮಾತೃಯಾಂ ಸ್ಪರ್ಶ: ಸಂಬಂಧ: "ಮಾತೃಸ್ಪರ್ಶಸ್ತು ಕೌಂತೇಯ ಶೀತೋಷ್ಣಸುಖದುಃಖದಾ:" ಗೀತಾ ೨-೧೪.

ಮಾತೃಯ ಮಾತೃಯ (ನಂ) ಅಸೂಯೆ, ಹೊಟ್ಟೆಕಿಚ್ಚು, ಇತರನ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಯಲ್ಲಿ ದ್ವೇಷ. ಮತಸರ ಏವ — ಸ್ವಾರ್ಥ "ಘ್ನ" (ವಾಂ ೫-೧-೧೨೪). "ಮಾತೃಯರಾಗೋಪಹತಾತ್ಮನಾಂ ಹಿ ಸ್ವಲಂತಿ ಸಾಧುಷ್ವಪಿ ಮಾನಸಾನಿ" ಕಿರಾಂ ೩-೫೩.

ಮಾತೃಯಕ ಮಾತೃಯಕ (ವಿಂ) ಮತ್ಸ್ಯವನ್ನು ಹಿಡಿದು ಕೊಲ್ಲುವವನು. ಮಾತೃಯಾನ್ ಹಂತಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೩೫).

ಮಾತೃ ಮಾತೃ (ಪುಂ) 1. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. ಮಥ್ಯತೇ ಪಿಡಚತೇ ಜನೋತ್ತರ — ಮನ್ಯ (ವಿಲೋಡನೆ) ಅಧಿಂ "ಘ್ನ" (೩-೩-೧೨೧). 2. ಕಡೆಯುವಿಕೆ, ಮಥನ. ಮನ್ಯ ಭಾವೇ "ಘ್ನ" (೩-೩-೧೮). 3. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. "ವ್ಯಾಧಿವ್ಯಾಪ್ಯಾಮಯಾ ಮಾತೃ ರೋಗಾಮಾ ದೇಹಮರ್ದನ:" ವೈಜಂ.

ಮಾತೃಯ ಮಾತೃಯ (ಪುಂ) ಬೇವಿನ ಮರ. "ನಿಮ್ಬೇ ಪಾರ್ವತ-ಕೇಡರ್ಯದ್ವೇಷಿಚ್ಛದನಮಾತೃಯಾ:" ವೈಜಂ.

ಮಾತೃಯ ಮಾತೃಯ (ವಿಂ) 1. ಮಧುರೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು, ಮಥುರಾಯಾಂ ಜಾತ: "ಅನ್" (೪-೩-೨೫). 2. ಮಧುರೆಯಿಂದ ಬಂದವನು. ಮಥುರಾಯಾ ಆಗತ: "ಅನ್" (೪-೩-೭೪).



**ಮಾಧ ನೂದ** (ಪುಂ) 1. ಮದ, ಅಮಲು, ಮತ್ಸ್ಯ. ಮದೀ (ಹರ್ಷ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) 2. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. 3. ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ, ಕೊಬ್ಬು.

**ಮಾಧಕ ನೂದಕ** (ವಿಂ) 1. ಮದವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ಅಮಲೇರಿಸುವ. ಮಾದಯತಿ — ಮದೀ (ಹರ್ಷಲೇಪನಯೋಃ) + ಣಿಕ್ "ಫ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) 2. ಸಂತೋಷವುಂಟು ಮಾಡುವ. 3. ಗರ್ವವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ.

**ಮಾಧನ ನೂದನ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಮದೇವ, ಮನ್ಮಥ. ಮಾದಯತಿ — ಮದೀ (ಹರ್ಷಲೇಪನಯೋಃ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) 1. (ನಂ) 2. ಅಮಲೇರಿಸುವುದು, ಮದವುಂಟುಮಾಡುವುದು. 3. ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವುದು. 4. ಗರ್ವವುಂಟುಮಾಡುವುದು. ಮದೀ + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) 1. (ವಿಂ) 5. ಮದವುಂಟು ಮಾಡುವ, ಅಮಲೇರಿಸುವ. 6. ಸಂತೋಷವುಂಟು ಮಾಡುವ. 7. ಗರ್ವವುಂಟುಮಾಡುವ.

**ಮಾಧುಶ್ ನೂದ್ಯತ್** (ವಿಂ) ನನ್ನಂತಿರುವ, ನನಗೆ ಸಮಾನ ನಾದ. ಅಹಮಿವ ದೃಶ್ಯತೇ — ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) "ಕಿವನ್" (೩-೨-೬೦) 1. ಮಾದಕ್ ಮಾದೃಶೌ ಮಾದೃಶಃ 1. "ಕನ್" (೩-೨-೬೦) 1. ಮಾದೃಶಃ ನೂದ್ಯತಃ. "ಕ್ಸಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೫೭) 1. ಮಾದೃಶಃ ನೂದ್ಯತಃ. "ಆತ್ಮವಾತಿಭಿರಹ್ಮಮತಿಗ್ರಹಾನ್ಮಾದೃಶೇತ್ವದಿತರೇಷು ರಾಗಿಮಿಃ" ಯಾದಂ ೧೭-೧೩ 1. "ಪ್ರವೃತ್ತಿಸಾರಾಃ ಕಿಲ ಮಾದೃಶಾಃ ಗಿರಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೨೫ 1.

**ಮಾಧತ್ ನೂದ್ಯತ್** (ವಿಂ) ಸಂತೋಷಪಡುತ್ತಿರುವ. ಮದೀ (ಹರ್ಷ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೨-೬) 1. ಮಾಧಂತೀ ನೂದ್ಯತೀ. "ಪಾಯಂ ಪಾಯಂ ಪ್ರೇಯಸಃ ಕಾಂತಿಮಾಧ್ವಿ ಮಾಧಂತೀಭಿರ್ಮಂಜುಲಾಲಪಿನಿಮಿಃ" ಯಾದಂ ೨೪-೮೮ 1.

**ಮಾಧ್ರೀ ನೂದ್ರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮದ್ರರಾಜನ ಮಗಳು, ಪಾಂಡು ರಾಜನ ಪತ್ನಿ.

**ಮಾಧ್ರೀನಂದನ ನೂದ್ರೀನಂದನ, -ತನಯ -ತನಯ, -ಪುತ್ರ -ಪುತ್ರ, -ಸುತ -ಸುತ** (ಪುಂ) ಮಾದ್ರಿಯ ಮಗ (1) ನಕುಲ. (2) ಸಹದೇವ.

**ಮಾಧವ ನೂಧವ** (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀವಿಷ್ಣು, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಮಾಯಾಃ ಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾಃ ಧವಃ 1. "ಯಾವದರ್ಶವಿದಾಂ ವಾಚಮೇವಮಾದಾಯ ಮಾಧವಃ" ಮಾಧಂ ೨-೧೩ 1. ಮಧುಕುಲೋದ್ಭವತಯಾ ಮಧೋರಪತ್ಯಮ್ ಇತಿ ವಾ ಮಾಧವಃ 1. "ಲೋಕನಾಥತ್ವಸಂಪನ್ನಃ ಶ್ರೀಮತಶ್ಚೇತಿ ಮಾಧವಃ 1. ಮಧೋರ್ವಶೋದ್ಭವತ್ವಾಂಚ ಮಾಧವಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ" ಇತಿ ನಿರಹಿತಃ 1. "ವೀರಹಾ ಮಾಧವೋ ಮಧುಃ" 1. "ಲೋಕಬಂಧು-

ಲೋಕನಾಥೋ ಮಾಧವೋ ಭಕ್ತವತ್ಸಲಃ" ವಿಂ ಸಂ 1. 2. ವಸಂತಯುತು. "ಸ ಮಾಧವೇನಾಮಿಮತೇನ ಸಖ್ಯಾ" ಕುಮಾಂ ೩-೨೩ 1. 3. ವೈಶಾಖಮಾಸ. "ರೇಜತುಗತಿವಶಾತ್ ಪ್ರವೃತ್ತಿತೌ ಭಾಸ್ಕರಸ್ಯ ಮಧುಮಾಧವಾವಿವ" ರಘುಂ ೧೧-೭ 1. 4. ಸರ್ವದರ್ಶನ ಸಂಗ್ರಹವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಮಾಧವಾಚಾರ್ಯರು. ಇವರೂ ಇವರ ಸಹೋದರರಾದ ಸಾಯಣರೂ ಋಗ್ವೇದಕ್ಕೆ ಭಾಷ್ಯವನ್ನು ಬರೆದಿರುತ್ತಾರೆ. 5. ಯಾದವರು. "ಪ್ರಹಿತಃ ಪ್ರಧನಾಯ ಮಾಧವಾನಹಮಾಕಾರಯಿತು ಮಹಿಮತಾ" ಮಾಧಂ ೧೬-೫೨ 1. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವಿ -ವೀ. 6. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. 7. ಕಾಂತಿ. 8. ಕಾಡಿರು ವಂತಿಗೆ ಗಿಡ. "ಪತ್ರಾಣಾಮಿವ ಶೋಷಣೇನ ಮಹತಾ ಸ್ಪೃಷ್ಟಾ ಲತಾ ಮಾಧವೀ" ಶಾಕುಂ ೩-೧೦ 1. "ವಾಸಂತೀ ಮಾಧವೀಲತಾ 1. ರಮಾಯಾಮಪಿ ಶೋಭಾಂ ಮಧುಸಂಬಂಧಿನಿ ತ್ರಿಪು" ನಾನಾರ್ಥರಂ 1. 9. ಕಲ್ಲುಸಕ್ಕರೆ. 10. ತಲೆಹಿಡಕಿ, ಕುಟ್ಟಿನಿ. 11. ಮದ್ಯ. ಹೆಂಡ. 12. ಸಬ್ಬಸಿಗೆ ಗಿಡ. 13. ಹಸು ಎಮ್ಮೆ ಇವುಗಳ ಸಂಪತ್ತು. "ಮಾಧವೋಜೇ ಮಧೌ ರಾಧೇ ಯಾದವೇ ನಾ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಮಿಸೌ 1. ಮಧುಶರ್ಕರಾವಾಸಂತೀಕೃದ್ವಿನಿಮದಿರಾಸು ಚ 1. ಗೋಮಹಿಷ್ಯಾದಿಸಂಪತ್ತೌ" ಮೇದಿಂ 1. (ವಿಂ) 14. ವಸಂತಯುತು ಸಂಬಂಧವಾದ. 15. ಜೇನುತುಪ್ಪದ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಜೇನುತುಪ್ಪದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಮಾಧವಕ ನೂಧವಕ** (ಪುಂ) ಹಿಪ್ಪೆಹೂವಿನ ಹೆಂಡ. ಮಧುನಾ-ಕೃತಃ -- ಮಧು "ಕುಲ್" (೪-೩-೧೧೮) 1. "ಮಧ್ವಾಸವೋ ಮಾಧವಕಃ" ಅಮಂ 1.

**ಮಾಧವಿಕಾ ನೂಧವಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾಧವೀಲತೆ, ಕಾಡಿರು ವಂತಿಗೆ.

**ಮಾಧವೀ ನೂಧವೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಮಾಧವ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ಮಾಧವೇಷ್ಠಾ ನೂಧವೇಷ್ಠಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಂದಿಗೆಡ್ಡೆ.

**ಮಾಧುಕರ ನೂಧುಕರ** (ವಿಂ) 1. ಭ್ರಮರಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ದುಂಬಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಮಧುಕರಸ್ಯ ಅಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) 1. -ಕರೀ -ಕರೀ. 2. ಮಧುಕರದ ವೃತ್ತಿ. ಮಧುಕರ (ಭ್ರಮರ) ವು ಹೂವಿನಿಂದ ಹೂವಿಗೆ ಹೋಗಿ ಮಕರಂದವನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸು ವಂತೆ ಮನೆ ಮನೆಗೂ ಹೋಗಿ ಭಿಕ್ಷೆಯನ್ನು ತಂದು ತೇವಿಸುವುದು ಮಧುಕರ ವೃತ್ತಿ. 3. ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಮನೆ ಗಳಿಂದ ತಂದ ಭಿಕ್ಷೆ.

**ಮಾಧುರ ನೂಧುರ** (ನಂ) 1. ಮಲ್ಲಿಗೆ ಹೂವು. "ಮಲ್ಲಿಕಾರ್ಜುನ ಚ ಮಾಧುರಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1. (ವಿಂ) 2. ಸಿಹಿವಸ್ತುವಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಸಿಹಿವಸ್ತುವಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ.



**ಮಾಧುರೀ ಮಾಧುರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಧ್ಯ, ಹೆಂಡ. 2. ಮಾಧುರ್ಯ, ಸಿಹಿ. ಮವುರ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧)।  
"ವಾಙ್ಮಾಧುರೀವಿರಸೀಕೃತಕಲಕಂಠಾ" ದಶಕುಂ ।

**ಮಾಧುರ್ಯ ಮಾಧುರ್ಯ** (ನಂ) 1. ಸಿಹಿ, ಸವಿ. ಮಧುರಸ್ಯ  
ಭಾವ: "ಪ್ಯಬ್" (೪-೧-೧೨೪) । "ಮಾಧುರ್ಯ ಮಧುಬಿಂದುನಾ  
ರಚಯಿತು ಕ್ಷೀರಾಮ್ಬುಧೇರಿಹತೇ" ಭರ್ತುಂ ೧-೬ । 2. ಕಾವ್ಯದ  
ಒಂದು ಗುಣ, (ಶಬ್ದವನ್ನು) ಕೇಳಿದ ಕೂಡಲೆ ಮನಸ್ಸನ್ನು  
ಅಹ್ಲಾದಗೊಳಿಸುವ ಶಬ್ದದ ಒಂದು ಗುಣ. ದೀರ್ಘ  
ಸಮಾಸಗಳಲ್ಲದೆ ಪ್ರತ್ಯೇಕಪದಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು  
ಮಾಧುರ್ಯ ಗುಣ. "ಪೃಥಕ್ ಪದತ್ವಂ ಮಾಧುರ್ಯಮ್" ಕಾಂಯಾಂ ಸುಂ ।  
೩-೧-೨೦ । 3. ನಾಯಕನ ಎಂಟು ಸಾತ್ವಿಕ ಗುಣಗಳ  
ಒಂದು. "ಶೋಭಾ ವಿಲಾಸೋ ಮಾಧುರ್ಯ ಗಾಂಭೀರ್ಯ ಧೈರ್ಯತೇಜಸೀ ।  
ಲಲಿತೋದಾರ್ಯಮಿತ್ಯಷ್ಟೋ ಸತ್ವಜಾಃ ಪೌರೂಷಾ ಗುಣಾಃ" ಸಾಂ ದಂ  
೩-೪೦ । ಎಂತಹ ಕ್ಷೋಭೆಯ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಯು ಸಂಭವಿಸಿ  
ದರೂ ಉದ್ವೇಗವಿಲ್ಲದಿರುವುದು ಮಾಧುರ್ಯಗುಣ.  
"ಸಂಕ್ಷೋಭೇವಪ್ಯನುಡ್ವೇಗೋ ಮಾಧುರ್ಯಂ ಪರಿಕೀರ್ತಿಸತು" ಸಾಂ ದಂ  
೩-೪೨ ।

**ಮಾಧ್ಯಂದಿನ ಮಾಧ್ಯಂದಿನ** (ವಿಂ) 1. ಮಧ್ಯಾಹ್ನಕಾಲದ,  
ಹಗಲಿನ ಮಧ್ಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ, ಮಧ್ಯಾಹ್ನ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. ಮಧ್ಯಂದಿನೇ ಭವಮ್ "ಅಬ್" (೪-೧-೮೬) ।  
"ಮಾಧ್ಯಂದಿನಾಯ ನಿಯಮಾಯ ಮಹರ್ಷಿಪೀಠಾಂ ಪುಷ್ಯಾಮವಾಪ ತಮಸಾಂ  
ತಮಸಾಂ ನಿಹನ್ತ್ರಿಮ್" ಚಂ ರಾಂ । (ನಂ) 2. ಶುಕ್ಲಯಜುಃ  
ಶಾಖೆ.

**ಮಾಧ್ಯಮ ಮಾಧ್ಯಮ** (ವಿಂ) ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ, ಮಧ್ಯೆ ಭವಮ್  
"ಮನ್" (೪-೩-೬೦) ಸೂತ್ರದ ವೃತ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಕಾಶಿಕಾ  
ವಿಹಿತ ಪ್ರತ್ಯಯ.

**ಮಾಧ್ಯಮಿಕ ಮಾಧ್ಯಮಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಬಾಹ್ಯ ಮತ್ತು ಅಂತರ  
ವಸ್ತು ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳುವ ಶೂನ್ಯವಾದಿ  
ಯಾದ ಬೌದ್ಧ. 2. ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ, ಮಧ್ಯಭಾಗದ.

**ಮಾಧ್ಯಸ್ಥ ಮಾಧ್ಯಸ್ಥ** (ನಂ) 1. ಉದಾಸೀನತೆ, ಸಮವರ್ತಿ  
ಯಾಗಿರುವುದು, ಪಕ್ಷಪಾತವಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ಮಧ್ಯಸ್ಥಸ್ಯ  
ಭಾವ: "ಪ್ಯಬ್" (೪-೧-೧೨೪) । 2. ಉಪೇಕ್ಷೆ, ಆಸೆಯಿಲ್ಲ  
ದಿರುವಿಕೆ, ನಿಃಸ್ಪೃಹತೆ. "ಅಮ್ಯರ್ಥನಾಭಿಜ್ಞಭಯೇನ ಸಾಧು-  
ಮಾಧ್ಯಸ್ಥಾಮಿಷ್ಠೇಷ್ಯವಲಂಬತೇಷ್ಯೇ" ಕುಮಾಂ ೧-೪೨ ।

**ಮಾಧ್ಯಾಹ್ನಿಕ ಮಾಧ್ಯಾಹ್ನಿಕ** (ವಿಂ) ಮಧ್ಯಾಹ್ನದಲ್ಲಿ  
ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ, ಮಧ್ಯಾಹ್ನಕಾಲದಲ್ಲಿ ನೆರವೇರಿಸಬೇಕಾದ.  
ಮಧ್ಯಾಹ್ನೇನ ನಿರ್ವೃತ್ತಮ್ "ಠಬ್" (೪-೧-೭೯) । ಮಧ್ಯಾಹ್ನೇ  
ಭವಮ್ "ಠಬ್" (೪-೩-೧೧) ವಾ ।

**ಮಾಧ್ಯ ಮಾಧ್ಯ** (ಪುಂ) ಶ್ರೀ ಮಧ್ವಾಚಾರ್ಯರ ಮತಾನು  
ಯಾಯಿ, ವೈಷ್ಣವ ಸಂಪ್ರದಾಯದವನು. ಮಧ್ವಸ್ಯಾಯಮ್  
"ಅಬ್" (೪-೩-೧೨೦) ।

**ಮಾಧ್ಯಕ ಮಾಧ್ಯಕ** (ನಂ) ಮಧ್ಯ, ಹೆಂಡ.

**ಮಾಧ್ವಿ ಮಾಧ್ವಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಧ್ಯ, ಹೆಂಡ. ಮಧ್ವ "ಅಬ್"  
(೬-೪-೧೭೪) । "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೪) । "ಮಾಧ್ವಿ ಚ  
ಮಧ್ವ ಮಾಧ್ವಿಕ ಕಪಿಶಿಕಾಚಮಾಲಿಕಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಮಾಧ್ವಿಕ ಮಾಧ್ವಿಕ** (ನಂ) 1. ಮಧ್ಯಕ (ಹಿಪ್ಪೆ) ಪುಷ್ಪ  
ದಿಂದ ತೆಗೆದ ಮಧ್ಯ. ಮಾಧ್ವಿ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" । 2. ದ್ರಾಕ್ಷೆ  
ಹಣ್ಣು. 3. ಮಧ್ಯ, ಮಕರಂದ, ಪುಷ್ಪರಸ. "ಧಯತು  
ನಲಿನೇ ಮಾಧ್ವಿಕ ವಾ ನ ವಾಘಿನವಾಗತಃ" ನೈಷಂ ೧೯-೩೩ ।

**ಮಾನ ಮಾನ** (ಪುಂ) 1. ಆತ್ಮಗೌರವ, ಮರ್ಯಾದೆ. ಮನು  
(ಅವಬೋಧನೆ) "ಫಬ್" (೩-೩-೧೮) । "ಜನ್ಮಿನೋ ಮಾನ-  
ಹೀನಸ್ಯ ತೃಣಸ್ಯ ಚ ಸಮಾ ಗತಿಃ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೪೯ ।  
2. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಪ್ರಣಯಕೋಪ, ಪ್ರೇಮಶಂಕೆಯಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅಸಮಾಧಾನ. "ಮಾನಭಿಜ್ಞಪಡುನಾ ಸುರತೇಚ್ಛಾಂ  
ತನ್ವತಾ ಶ್ರಯತಾ ದೃಶಿ ರಾಗಮ್" ಮಾವಂ ೧೦-೨೪ । 3.  
ಕೋಪ, ಕ್ರೋಧ, ರೋಷ. "ತನ್ನೂನಂ ಪದಮವಲೋಕಯಾಂಬಭುವೇ  
ಮಾನಸ್ಯ ದ್ರುತಮಪಯಾನಮಾಸ್ಥಿತಸ್ಯ" ಮಾವಂ ೯-೮೪ ।  
4. ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ. "ಮಾನಃ ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಕೋಪಭೇದೇ ಗರ್ವೇ  
ಚಿತ್ತೋತ್ತರತಾವಪಿ । ಮಾನಂ ಪ್ರಮಾಣೇ ಪ್ರಸ್ಥಾದೌ" ನಾನಾರ್ಥರಂ ।  
"ಮದಮಾನಸಮುದ್ಭವಂ ನೃಪಂ ನ ವಿಯುಕ್ತೇ ನಿಯಮೇನ ಮೂಢತಾ"  
ಕಿರಾಂ ೨-೪೯ । (ನಂ) 5. ಅಳತೆ, ಪರಿಮಾಣ. (ಉದ್ದ  
ಮತ್ತು ಅಗಲ). ಮಾ (ಮಾನೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) ।  
"ಪೂರ್ವಪರೋ ತೋಯನಿಧಿಃ ವಗಾಹ್ಯ ಸ್ಥಿತಃ ಪೃಥಿವ್ಯಾ ಇವ ಮಾನ-  
ದಂಡಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೧ । 6. (1) ಪಾವು ಸೇರುಗಳಿಂದ  
ಅಳೆಯುವಿಕೆ. (2) ಬೆರಳು ಕೋಲು ಮೊದಲಾದುವು  
ಗಳಿಂದ ಅಳೆಯುವುದು. (3) ತಕ್ಕಡಿಯಿಂದ ತೂಗುವುದು.  
7. ಅಳತೆಯ ಕೋಲು. -ಸರಪಳಿ ಮೊದಲಾದ ಸಾಧನ.  
ಮಾ ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭) । 8. ಪ್ರಮಾಣ,  
ಆಧಾರ, ದಾಖಲೆ. "ಮಾಧುರ್ಯೋಜಃಪ್ರಸಾದಾನಾಂ ರಸಧರ್ಮತ್ವೇ  
ಕಿ ಮಾನಮ್" ರಸಗಂ ।

**ಮಾನಗ್ರಂಥಿ ಮಾನಗ್ರಂಥಿ** (ಪುಂ) 1. ಗರ್ವಭಂಗ, ಅಹಂಕಾರ  
ವನ್ನು ಅಡಗಿಸುವುದು. 2. ಗೌರವಕ್ಕೆ ಹಾನಿಯುಂಟು  
ಮಾಡುವುದು. ಮಾನಸ್ಯ ಗ್ರಂಥಿಃ ಬನ್ಧನಂ ಯಸ್ಮಾತ್ ।

**ಮಾನದ ಮಾನದ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಮಾನ-  
ಮರ್ಜುನಾದಿಭ್ಯಃ ಮಹಾರಥಿಕತ್ವ ಆಧಿರಾಜ್ಯರೂಪಂ ಬಹುಮಾನಂ  
ವದಾತಿ—ಓ ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) । "ಕ



ಮಾನದೋರ್ಜುನಾದಿಮ್ಯೋ ಮಾನಂ ರಾಜ್ಯಂ ಚ ದತ್ತವಾನ್" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | "ಅಮಾನಿ ಮಾನದೋ ಮಾನ್ಯಃ" ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ಗೌರವ ತೋರಿಸುವ, ಮರ್ಯಾದೆ ಕೊಡುವ. ಮಾನಂ ದದಾತಿ — ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | 3. ಗೌರವವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ, ಮರ್ಯಾದೆಗೆ ಹಾನಿಯುಂಟುಮಾಡುವ. ಮಾನಂ ಹತಿ — ದೋ (ಅವಸ್ಥಾಪನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) |

**ಮಾನದಂಡ ಮಾನದಂಡ** (ಪುಂ) ಅಳತೆಯ ಕೋಲು.

**ಮಾನಧನ ಮಾನಧನ** (ವಿಂ) ಮಾನವೇ ಧನವಾಗಿ ಉಳ್ಳ, ಹೆಚ್ಚು ಮಾನಶಾಲಿಯಾದ. ಮಾನಮೇವ ಧನಂ ಯಸ್ಯ | "ಮಹೋಜಸೋ ಮಾನಧನಾ ಧನಾಚಿತಾ ಧನುರ್ಮತಃ ಸಂಯತಿ ಲಬ್ಧಕೀರ್ತಯಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೧೯ |

**ಮಾನನ ಮಾನನ** (ನಂ) 1. ಗೌರವಿಸುವುದು, ಸತ್ಕರಿಸುವುದು. ಮಾನ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ಖೇಡಿಸುವುದು. ಮನ (ಸ್ತಮ್ಭೇ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭) | **ಮಾನನಾ ಮಾನನಾ** "ಭವತೋಽಭಿಮನಾಃ ಸಮೀಹಿತೇ ಸರ್ವಃ ಕರ್ತುಮುಪೇತ್ಯ ಮಾನನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೬-೨ |

**ಮಾನನೀಯ ಮಾನನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಪೂಜ್ಯನಾದ, ಪೂಜಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. 2. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಗೌರವಿಸಬೇಕಾದ. ಮಾನ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | "ವೈವಸ್ವತೋ ಮನುನಿಮ ಮಾನನೀಯೋ ಮನೀಷಿಣಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೧೧ |

**ಮಾನಭಜ್ಜ ಮಾನಭಂಗೆ** (ಪುಂ) ಅವಮಾನ, ತಿರಸ್ಕಾರ.

**ಮಾನಯತ್ ಮಾನಯತ್** (ವಿಂ) ಗೌರವಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸತ್ಕರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಪೂಜಿಸುತ್ತಿರುವ. ಮಾನ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ. "ಮನುಷ್ಯತಾಂ ಮಾನಯತೋ ವಿಹಾರೇಃ ಸ್ವಾಮೇವ ದೇವೀಮುಪಯಂಚತಸ್ತೇ" ಯಾದಂ ೧೩-೯೯ |

**ಮಾನಯಿತ್ ಮಾನಯಿತ್ಯ** (ವಿಂ) ಗೌರವಿಸುವವನು, ಪೂಜಿಸುವವನು, ಸತ್ಕರಿಸುವವನು. ಮಾನ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

**ಮಾನವ ಮಾನವ** (ಪುಂ) 1. ಮನುಷ್ಯ, ನರ. ಮನೋರಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | "ಮಾನವಾಶಕ್ಯನಿರ್ಮಾಣಾ ಕೂರ್ಮಾ-ಚ್ಚಿಬಿಲಾ ಶಿಲಾ | ನ ಶ್ರದ್ಧಾಪಯತೇ ಮೃಗಾಸ್ತೀರ್ಥಿಕಾಘವನಿ ವಃ ಕಥಮ್" ನೆಪಂ ೧೭-೧೦೩ | 2. ಬಾಲಕ, ಹುಡುಗ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ -ವೀ -ವೀ. ಮನುಷ್ಯಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು. "ದಿವೌಕಸಂ ಕಾಮಯತೇ ನ ಮಾನವೀ ನವೀನಮಶ್ರಾವಿ ತವಾನತಾದಿದಮ್" ನೆಪಂ ೯-೪೧ |

**ಮಾನವತ್ ಮಾನವತ್** (ವಿಂ) 1. ಗರ್ವವುಳ್ಳವನು, ಅಹಂಕಾರವುಳ್ಳವನು. 2. ಗೌರವವುಳ್ಳವನು, ಮರ್ಯಾದೆಯುಳ್ಳವನು. ಮಾನೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ವತೀ -ವತೀ. "ಯೋಷಿ-ದುಹಿತಮನೋಮವರಾಗಾ ಮಾನವತ್ಯಪಿ ಯಯೌ ದಯಿತಾಙ್ಕಮ್" ಕಿರಾಂ ೯-೬೮ |

**ಮಾನವಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ ಮಾನವಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ** (ನಂ) ಮನುಷ್ಯನ ಧರ್ಮಗಳನ್ನು ಹೇಳುವ ಮನುಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ, ಮನುಸ್ಮೃತಿ.

**ಮಾನವರಾಕ್ಷಸ ಮಾನವರಾಕ್ಷಸ** (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯ ರೂಪದ ರಾಕ್ಷಸ, ರಾಕ್ಷಸರಂತೆ ಹಿಂಸಿಸುವ ಮನುಷ್ಯ. ಮಾನವೋ ರಾಕ್ಷಸ ಇವ | "ತೇಽಸ್ಮಿ ಮಾನವರಾಕ್ಷಸಾಃ ಪರಹಿತಂ ಸ್ವಾರ್ಥಾಯ ನಿಘ್ನಂತಿ ಯೇ" ಭರ್ತುಂ ೨-೭೪ |

**ಮಾನವಜಿತ ಮಾನವಜಿತ** (ವಿಂ) 1. ಮಾನವಿಲ್ಲದವನು, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಲ್ಲದವನು. 2. ನೀಚ, ಅಧಮ.

**ಮಾನವೀ ಮಾನವೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮನುಷ್ಯಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು. 2. ಮೊಲೆ ಗಿಡ. "ಯುಷಿಕಾಯಾಂ ಮನೋಜ್ವಾಲಾ ಮಾನವೀ ಚ" ವೈಜಂ |

**ಮಾನವೀಯ ಮಾನವೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಮನುಷ್ಯಸಂಬಂಧವಾದ. ಮಾನವಸ್ಯೇದಮ್ "ಛಃ" (೪-೨-೧೧೪) | 2. ಮನುಷ್ಯನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಮಾನವೇ ಜಾತಮ್ "ಛಃ" (೪-೨-೧೧೪) |

**ಮಾನಶಾಲಿನ್ ಮಾನಶಾಲಿನ್** (ವಿಂ) ಅಭಿಮಾನಶಾಲಿ, ಅತ್ಯಗೌರವವುಳ್ಳವನು. ಮಾನೇನ ಶಾಲತೇ — ಶಾಲೃ (ಕತ್ಯನೇ) "ಣಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮) | "ಸ್ವಧರ್ಮಮನುರೂಢಂತೇ ನಾತಿಕರ್ಮ-ಮರಾತಿಭಿಃ | ಪಲಾಯಂತೇ ಕೃತಧ್ವಂಸಾ ನಾಹವಾಮಾನಶಾಲಿನಃ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೭೮ |

**ಮಾನಸ ಮಾನಸ** (ನಂ) 1. ಮನಸ್ಸು, ಚಿತ್ತ, ಅಂತಃಕರಣ. ಮನ್ಯತೇಜನೇ — "ಅಸುನ್" (೩ಂ ೪-೧೫) | ಮನ ಎವ — ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಅನ್" (೫-೪-೩೮) | "ಮಹಾರಥಃ ಸತ್ಯಧನಸ್ಯ ಮಾನಸಂ ದುನೋತಿ ನೋ ಕಂಚಿದಯಂ ವೃಕೋದರಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೩೪ | 2. ಮಾನಸ ಸರೋವರ, ಕೈಲಾಸ ಪರ್ವತದ ಒಂದು ಸರಸ್ಸು (ಕೊಳ). "ವಿಕಚವಾರಿರುಹಂ ದಧತಂ ಸರಃ ಸಕಲಹಂಸಗಣಂ ಶುಚಿ ಮಾನಸಮ್" ಕಿರಾಂ ೫-೧೩ | (ವಿಂ) 3. ಮನಸ್ಸಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಮನಸಃ ಇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | "ಮನುಷ್ಯಾ ಮಾನಸೇರ್ದುಃಕೈಃ ಯುಜ್ಯಂತೇ ಸ್ವರ್ತ್ಯಬುದ್ಧಯಃ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೩೩೮-೪ | 4. ಮನಸ್ಸಿನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ. "ಮಹರ್ಷಯಃ ಸಪ್ತ ಪೂರ್ವೇ ಚತ್ವಾರೋ ಮನವಸ್ತಥಾ | ಮದ್ಭಾವಾ ಮಾನಸಾ ಜಾತಾಃ ಯೇಷಾಂ ಲೋಕ ಇಮಾಃ ಪ್ರಜಾಃ" ಗೀತಾ



೧೦-೬। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಮಾನಸೀ ಮಾನಸೀ. "ಸ ಮಾನಸೀ ಮೇಹಸಖಃ ಪಿತೃಣಾಂ ಕನ್ಯಾ ಕುಲಸ್ಯ ಸ್ಥಿತಯೇ ಸ್ಥಿತಿಜಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೧೮।

**ಮಾನಸವ್ರತ ಮಾನಸವ್ರತ** (ನಂ) ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಕೈಗೊಳ್ಳುವ ನಿಯಮ. ಅಹಿಂಸೆ, ಸತ್ಯ, ಅಸ್ತೇಯ, ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ ಮತ್ತು ಅಲೋಭ ಮುಂತಾದುವು ಮಾನಸವ್ರತಗಳು.

**ಮಾನಸಿಕ ಮಾನಸಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿರುವ, ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಮಾನಸೇ ಭವಃ "ಠಕ್" (ಪುಂ) 2. ವಿಷ್ಣು. "ವೈಕುಣ್ಠ ಅಪರಾಜಿತ ಮಾನಸಿಕ ತಾವಮಿಕ ನಾಮ-ನಾಮಿಕ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೩೪೬-೪।

**ಮಾನಸಿಕಸ್ ಮಾನಸಿಕಸ್** (ಪುಂ) ಹಂಸ. ಮಾನಸ ಮಾನಸ-ಸರಃ ಆಕೋ ಯಸ್ಯ। ವರ್ಷಾರ್ಥವು ಪ್ರಾರಂಭವಾದ ಕೂಡಲೆ ಹಂಸಗಳು ಮಾನಸ ಸರೋವರಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಸೇರುವುವೆಂದು ಕವಿಗಳ ವರ್ಣನೆಯಿದೆ. "ಮೇಘಶ್ಯಾಮಾ ದಿಶೋ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಮಾನಸೋತ್ಸುಕಚೇತಸಾಮ್। ಕೂಜಿತಂ ರಾಜಹಂಸಾನಾಂ ನೇದಂ ನೂಪುರಶಿಂಜಿತಮ್" ವಿಕ್ರಂ ೪-೧೪। "ಯಸ್ಯಾಸ್ತೋಯೇ ಕೃತವಸತಯೋ ಮಾನಸಂ ಸಂತಿಕೃಷ್ಣಂ ನಾಧ್ಯಾಸ್ಯಂತಿ ವ್ಯಪಗತ-ಶುಚಸ್ತ್ವಾಮಪಿ ಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯ ಹಂಸಾಃ" ಮೇಘಂ ೨-೧೩।

**ಮಾನಹೀನ ಮಾನಹೀನ** (ವಿಂ) ಮಾನವಿಲ್ಲದವನು, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಲ್ಲದವನು. ಮಾನೇನ ಹೀನಃ। "ಜನ್ಮಿನೋ ಮಾನಹೀನಸ್ಯ ತೃಣಸ್ಯ ಚ ಸಮಾ ಗತಿಃ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೪೯।

**ಮಾನಿತ ಮಾನಿತ** (ವಿಂ) ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಮಾನ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಅಗ್ರಜೇ ಮಯಿ ದಿವೌಕಸಾಂ ಪಿತುಃ ಪುತ್ರಭಾವಮುಪಸೇದುಷಾ ತ್ವಯಾ। ಮಾನಿತೋಽಹಮವಮಾನಿತಃ ಸ್ವಯಂ ವಾನರಾನುಚರಿತಃ ಸ್ವಚೇಷ್ಟಿತಃ" ಯಾದಂ ೧೭-೯೬।

**ಮಾನಿನ್ ಮಾನಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಸಿಂಹ. ಮಾನೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಙ್ನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಅಭಿಮಾನವುಳ್ಳವನು, ಆತ್ಮಗೌರವವುಳ್ಳವನು. "ಪರೇರಪರ್ಯಾಸಿತವೀರ್ಯಸಂಪದಾಂ ಪರಾಭವೋಽಪ್ಯುತ್ಸವ ಏವ ಮಾನಿನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೪೧। 3. ಪೂಜ್ಯ, ಮರ್ಯಾದೆಯುಳ್ಳವನು, ಗೌರವವುಳ್ಳವನು. "ಮಾನಿನೋ ಮಾನಯಃ ಕಾಲೇ ತ್ರಸ್ತಾನ್ ಪೌಲಸ್ತ್ಯ ಸಾನ್ತವಯಃ" ಭದ್ರಂ ೧೯-೨೪। 4. ಅಹಂಕಾರವುಳ್ಳವನು, ಗರ್ವವುಳ್ಳವನು. "ಕರುಣಮಪಿ ಸಮರ್ಥ ಮಾನಿನಾಂ ಮಾನಭೇದೇ ರುದಿತಮುದಿತ-ಮಸ್ತ್ರಂ ಯೋಷಿತಾಂ ವಿಗ್ರಹೇಷು" ಮಾಘಂ ೧೧-೩೪। 5. (ಸಮಾ ಸಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ) ಭಾವಿಸುವವನು, ತಿಳಿಯುವವನು. ಪಂಡಿತ-ಮಾನಿ ಕಂಡಿತಮಾನೀ. ಪಂಡಿತಮಾತ್ಮಾನಂ ಪನ್ಯತೇ — ಮನ (ಜಾನೇ) "ಞಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಜಿಃ"

(೪-೧-೬)। ಮಾನಿನಿ ಮಾನಿನೀ. 6. ಅಭಿಮಾನಶಾಲಿನಿ ಯಾದ ಹಂಗಸು, ಆತ್ಮಗೌರವವುಳ್ಳ ಹಂಗಸು. "ಯದವೋಚ-ದವೇಕ್ಷ್ಯ ಮಾನಿನೀ ಪರಿತಃ ಸ್ನೇಹಮಯೇನ ಚಕ್ಷುಷಾ" ಕಿರಾಂ ೨-೨। 7. ಪ್ರಣಯ ಕೋಪವುಳ್ಳ ಹಂಗಸು. "ಮಾನಿನೀಭಿ-ರಪಹಸ್ತಿತಧೇಯಃ ಸಾದಯನ್ನಪಿ ಮದೋಽವಲಲಮ್ಬೇ" ಕಿರಾಂ ೯-೩೬।

**ಮಾನುಷ ಮಾನುಷ** (ಪುಂ) 1. ಮನುಷ್ಯ, ಮಾನವ. ಮನು "ಅಬ್" ಷುಗಾಗಮಶ್ಚ (೪-೧-೧೬೧)। "ಮಾನುಷಾನಭಿಲಷ್ಯಂತೀ ರೋಚಿಣ್ಯಾದಿವ್ಯಧರ್ಮಿಣಿ" ಭದ್ರಂ ೪-೨೨। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಮಾನುಷಿ ಮಾನುಷೀ. ಮನುಷ್ಯಹಂಗಸು. "ಮಾತರಂ ತ್ರಿಜಗತಾಂ ತವ ಪ್ರಿಯಾಂ ಮಾನುಷೀತಿ ಮನುತೇ ಸ್ಮ ಮದ್ವಃ" ಯಾದಂ ೧೭-೯೦। 2. ಮನುಷ್ಯಸಂಬಂಧವಾದ. ಮಾನುಷಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಅಕೃತ್ವಾ ಮಾನುಷಂ ಕರ್ಮ ಯೋ ದೈವಮನುವರ್ತತೇ। ವೃಥಾ ಶ್ರಾಮ್ಯತಿ ಸಂಪ್ರಾಪ್ಯ ಪತಿಂ ಕಲಿಬಮಿವಾಙ್ಗನಾ" ಭಾಂ ಅನುಂ ೯-೨೨। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಮಾನುಷಿ ಮಾನುಷೀ. "ದೈವೀನಾಂ ಮಾನುಷೀಣಾಂ ಚ ಪ್ರತಿಹರ್ತಾ ತ್ವಮಾಪದಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೬೦।

**ಮಾನುಷತಾ ಮಾನುಷತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನುಷ್ಯನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಮನುಷ್ಯಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। "ತ್ವಃ" (೪-೧-೧೧೯)। -ಸ್ವಮ್ -ತ್ವಮ್. "ಮಾನುಷತ್ವಕವಚಾನ್ತರಿ-ತೇನ ಸ್ಪರ್ಧತೇ ಸ್ಮ ಹರಿಣಾ ಹತಚಿತ್ತಃ" ಯಾದಂ ೨೧-೧।

**ಮಾನುಷ್ಯ ಮಾನುಷ್ಯ** (ನಂ) 1. ಮನುಷ್ಯತ್ವ. ಮನುಷ್ಯ ನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಮನುಷ್ಯಸ್ಯ ಭಾವಃ। "ಸ ವಶ್ಚಿತೋ ಬತಾತ್ಮಧುಕ್ ಕುಚ್ಛೇಣ ಮಹತಾ ಭುವಿ। ಲಙ್ಕವಾಪವರ್ಯ ಮಾನುಷ್ಯಂ ವಿಷಯೇಷು ವಿಷಜ್ಜತೇ" ಭಾಗಂ ೪-೨೩-೨೮। (ವಿಂ) 2. ಮನುಷ್ಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. "ಮಾನುಷ್ಯೋ ಬಲವಾನ್ ಗಂಧೋ ಘ್ರಾಣಂ ತರ್ಪಯತೀವ ಮೇ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೪೧-೧೧।

**ಮಾನುಷ್ಯಕ ಮಾನುಷ್ಯಕ** (ನಂ) 1. ಮನುಷ್ಯರ ಸಮೂಹ. ಮನುಷ್ಯಾಣಾಂ ಸಮೂಹಃ "ಬುಃ" (೪-೨-೩೯)। "ಮಾಣವಾನಾಂ ತು ಮಾಣವ್ಯಂ ಬಾಹವ್ಯಂ ತು ದ್ವಿಜನ್ಮನಾಮ್। ರಾಜನ್ಯಕಂ ಮಾನುಷ್ಯಕಂ ರಾಜಕಂ ಚ ಪೃಥಕ್ ಪೃಥಕ್" ವೈಜಂ 1. 2. ಮನುಷ್ಯ ಜಾತಿ, ಮನುಷ್ಯ ಜನ್ಮ. "ಯಾವನ್ಮಾನುಷ್ಯಕೇ ಶಕ್ಯಂ ತತ್ಸರ್ವಮುಪಾಹ-ತಾಮ್" ಕಾದಂ 1.

**ಮಾನೋಜಕ ಮಾನೋಜಕ** (ನಂ) ಮನೋಹರವಾಗಿರು-ವಿಕೆ, ಮನೋಜ್ಞತ್ವ. ಮನೋಜಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಬುಃ" (೪-೧-೧೩೩)।

**ಮಾನ್ವಿಕ ಮಾನ್ವಿಕ** (ಪುಂ) ಮಂತ್ರವಾದಿ, ಮಾಯಾಗಾರ, ಮಾಟಗಾರ, ಗಾರುಡಿ. ಮನ್ವೇಣ ಜೀವತಿ — "ಠಕ್" (೪-೪-೧೨)।



**ಮಾನ್ಯ ಮಾಂಥರ್ಯ** (ನಂ) 1. ನಿಧಾನ, ಮಂದ್ಯ. 2. ಅಶಕ್ತ, ದೌರ್ಬಲ್ಯ. ಮನ್ಯರಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಞ್" (೪-೧-೧೨೪) ।

**ಮಾನ್ಯ ಮಾಂದ್ಯ** (ನಂ) 1. ಮದಡು, ಸೋಮಾರಿತನ. ಮನ್ದಸ್ಯ ಭಾವ: "ಯಕ್" (೪-೧-೧೨೮) । 2. ದೌರ್ಬಲ್ಯ, ಅಶಕ್ತ. 3. ದಡ್ಡತನ, ಮೂರ್ಖತನ. 4. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. "ಸಂತಾಪೋಪಾಟವಂ ಮಾನ್ಯಮಾಕುಲ್ಯಂ ಝಜೌ ಸ್ತ್ರಿಯೌ" ವೆಂಜಂ ।

**ಮಾನ್ಯಾತ್ ಮಾಂಧಾತ್ಯ** (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಯುವನಾಶ್ವನ ಮಗ. [ಯುವನಾಶ್ವನು ಸಂತಾನ ವಿಲ್ಲದೆ ಕೊರಗುತ್ತಿರಲು ಋಷಿಗಳು ಪುತ್ರಕಾಮೇಷ್ಟಿಯನ್ನು ಮಾಡಿದರು. ಒಂದು ರಾತ್ರಿ ಒಂದು ಕೆಲಶದಲ್ಲಿ ನೀರನ್ನು ಪುತ್ರಪ್ರದವಾದ ಮಂತ್ರದಿಂದ ಅಭಿಮಂತ್ರಿಸಿ ಅದನ್ನು ಯಜ್ಞವೇದಿಕೆಯ ಮೇಲಿಟ್ಟು ಋಷಿಗಳು ಮಲಗಿದ್ದರು. ಬಾಯಾರಿಕೆಯಿಂದ ಪೀಡಿತನಾದ ರಾಜನು ತಿಳಿಯದೆ ಅದನ್ನು ಕುಡಿದು ತಾನೇ ಗರ್ಭ ಧರಿಸಬೇಕಾಯಿತು. ಗರ್ಭವು ಬೆಳೆದು ಬಲ ಹೊಟ್ಟೆಯನ್ನು ಭೇದಿಸಿಕೊಂಡು ಶಿಶುವು ಹೊರಬಂದಿತು. ಶಿಶುವಿಗೆ ಸ್ತನ್ಯಪಾನಕ್ಕಾಗಿ ಯೋಚಿಸುತ್ತಿರಲು ಇಂದ್ರನು ಬಲಗೈ ಹೆಚ್ಚಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಅಮೃತರಸವನ್ನು ತುಂಬಿಕೊಂಡು ಬಂದು ಮಾಂಧಾತ್ಯನಿಗೆ ಧಾಸ್ಯವಿತ್ತು ಎಂದು ಹೇಳಿದನು. ಆ ಬೆರಳನ್ನು ಚೀಪಿ ಅಮೃತರಸ ಪಾನಮಾಡಿದ್ದರಿಂದ ಶಿಶುವಿಗೆ "ಮಾನ್ಯಾತ್ಮಾ" ಎಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು.] ಭಾಂ ವನಂ ।

**ಮಾನ್ಯಾತ್ ಮಾಂಧೀರ** (ಪುಂ) ಕಪಟದ ಹಕ್ಕಿ, ಬಾವಲಿ. "ಮಾನ್ಯಾತ್ ಮಾಂಧೀರೋ ವಾಗ್ಗುದಸ್ತುಲ್ಯ:" ವೆಂಜಂ ।

**ಮಾನ್ಯ ಮಾನ್ಯ** (ವಿಂ) ಮನ್ಮಥನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಮನ್ಮಥ-ಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) । "ಆಚಾರ್ಯಕಂ ವಿಜಯಿ ಮಾನ್ಯಮಾವಿರಾಸೀತ್" ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೬ ।

**ಮಾನ್ಯ ಮಾನ್ಯ** (ವಿಂ) ಪೂಜ್ಯ, ಗೌರವಾರ್ಹ. ಮಾನ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಽಞ್" (೩-೧-೧೨೪) । "ಮಾನ್ಯ: ಸ ಮೇ ಸ್ಥಾವರಜಙ್ಗಮಾನಾಂ ಸರ್ಗಸ್ಥಿತಿಪ್ರತ್ಯವಹಾರಹೇತು:" ರಘುಂ ೨-೪೪ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಮಾನ್ಯಾ ಮಾನ್ಯಾ. "ಪರಿಣತಿರಮಣೀಯಾ: ಪ್ರೀತಯ-ಸ್ತ್ವದ್ವಿಧಾನಾಮಹಮಪಿ ತವ ಮಾನ್ಯಾ ಹೇತುಭಿಃ ಸ್ತೇಷ್ವ ತೇಷ್ವ" ಮಾಲತೀಂ ೬-೧೬ ।

**ಮಾಪಕ ಮಾಪಕ** (ವಿಂ) ಅಳೆಯುವ, ಅಳತೆಮಾಡುವ. ಮಾ (ಮಾನೇ) + ಣಿಚ್ "ಽಞ್" (೩-೧-೧೨೩) ।

**ಮಾಪನ ಮಾಪನ** (ಪುಂ) 1. ತಕ್ಕಡಿ, ತ್ರಾಸು. ಮಾಪ್ (ಮಾನೇ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । (ನಂ) 2. ಅಳತೆ

ಮಾಡಿಸುವುದು. ಮಾ (ಮಾನೇ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

**ಮಾಮಕ ಮಾಮಕ** (ಪುಂ) 1. ಮಾತುಲ, ಸೋದರಮಾವ. "ಮಾಮಕಂ ತು ಮದೀಯೇ ಸ್ಯಾತ್ ಮಾಮಕೋ ಮಾತುಲೇ ಸ್ಮೃತ:" ಹೇಮಂ । 2. ಕೃಪಣ, ಜಿಪುಣ. (ವಿಂ) 3. ನನ್ನವನು, ನನ್ನ ಸಂಬಂಧದವನು. ಮಾಯಮ್—ಅಸ್ಮದ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧) । ಮಮಕಾದೇಶ: (೪-೩-೩) । "ಮಾಮಕಾ: ಪಾಂಡವಾಶ್ಚೈವ ಕಿಮ-ಕುರ್ವತ ಸಂಜಯ" ಗೀತಾ ೧-೧ ।

**ಮಾಮಕೀನ ಮಾಮಕೀನ** (ವಿಂ) ನನ್ನ ಸಂಬಂಧದವನು, ನನ್ನವನು, ಆತ್ಮೀಯನು. ಮಾಯಮ್—ಅಸ್ಮದ್ "ಽಞ್" (೪-೩-೧) । ಮಮಕಾದೇಶ: (೪-೩-೩) । "ಯೋ ಮಾಮಕೀನಸ್ಯ ಮನಸೋ ದ್ವಿತೀಯಂ ನಿಬನ್ಧನಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೨ ।

**ಮಾಯ ಮಾಯ** (ಪುಂ) 1. ಮಾಯೆಗಾರ, ತಂತ್ರಗಾರ, ಠಕ್ಕ, ಗಾರುಡಿಗ, ಕಣ್ಣುಟ್ಟುಮಾಡುವವನು. ಮಾಯಾಸ್ಥಾಸ್ತಿ— "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) । 2. ಮಯಾಸುರನ ಮಗ. 3. ಶೈಲಾಷ, ನಟ. "ಮಾಯ: ಪೀತಾಂಬರೇಸ್ತುರೇ" ಮೇದಿಂ ।

**ಮಾಯಾ ಮಾಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಾರುಡಿ, ಮಂತ್ರದಿಂದ ಇಲ್ಲದ ವಸ್ತುವನ್ನು ತೋರಿಸುವ ಇಂದ್ರಜಾಲವಿದ್ಯೆ, ಕಣ್ಣುಕಟ್ಟುವ ವಿದ್ಯೆ, ಠಕ್ಕ, ಮೋಸ, ಶಾಂಬರ ಮಾಯೆ. ಮೀಯತೇ ಅಪರೋಕ್ಷವತ್ ಪ್ರದರ್ಶಯತೇ ಅನಯಾ—ಮಾ (ಮಾನೇ) "ಯ:" (೩ಂ ೪-೧೦೯) । "ಸ್ವಪ್ನೋ ನು ಮಾಯಾ ನು ಮತಿಭ್ರಮೋ ನು" ಶಾಕುಂ ೬-೧೦ । 2. ಮೋಕ್ಷಪ್ರದಗಳಾದ ಏಳು ನಗರಿಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. "ಅಯೋಧ್ಯಾ ಮಥುರಾ ಮಾಯಾ ಕಾಶೀ ಕಾಂಚೀ ಅವಂತಿಕಾ । ಪುರೀ ದ್ವಾರವತೀ ಚೈವ ಸಪ್ತೇತಾ ಮೋಕ್ಷದಾಯಿಕಾ:" । 3. ಇಲ್ಲದ ವಸ್ತುವು ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣುವಂತೆ ಮಾಡುವ ಶಕ್ತಿ. "ತಂ ವಿಷ್ಮಿತಂ ಧೇನುರವಾಚ ಸಾಧೋ ಮಾಯಾ ಮಯೋದ್ಭಾವ್ಯ ಪರೀಕ್ಷಿತೋಽಸಿ" ರಘುಂ ೨-೬೨ । 4. ಒಂದಿ, ಪ್ರಜ್ಞೆ. "ಮಾಯಾ ಸ್ಯಾತ್ ಶಾಂಬರೀಬುದ್ಧಯೋ:" ಮೇದಿಂ । 5. ಒಂದು ವಿಧ ರಾಜಕೀಯಚಾತುರ್ಯ, ರಾಜನು ಉಪಯೋಗಿಸಬಹುದಾದ ಒಂದು ಉಪಾಯ. "ಮಾಯೋಪೇಕ್ಷೇಂದ್ರಜಾಲಾನಿ ಕ್ಷುಧ್ರೋಪಾಯಾ ಇಮೇ ತ್ರಯ:" । 6. ಮಿಥ್ಯೆ, ಸುಳ್ಳು, ಇಲ್ಲದುದನ್ನು ಇದೆಯೆಂದು ಹೇಳುವುದು, ಅವಿದ್ಯಾ, ಅಜ್ಞಾನ. "ಬ್ರಹ್ಮ ಸತ್ಯಂ ಜಗನ್ಮಿಥ್ಯಾ" । ಮಿಥ್ಯಾಭೂತವಾದ ಜಗತ್ತನ್ನು ಇದೆಯೆಂದು ಹೇಳುವುದು ಅಜ್ಞಾನದಿಂದ ಅವಿದ್ಯೆಯಿಂದ ಮಾಯೆಯಿಂದ. ಆದುದರಿಂದ ಸತ್ಯವಾದುದು ಬ್ರಹ್ಮ ಮಾತ್ರ. ಅವಿದ್ಯಾನಿವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಮಾತ್ರ ಈ ಜ್ಞಾನವುಂಟಾಗುವುದು. 7. ಪ್ರಕೃತಿ. "ಮಾಯಾ ತು ಪ್ರಕೃತಿ ವಿಧಾತ್ ಮಾಯಿನಂತು ಮಹೇಶ್ವರಮ್" ಪಂಚದಂ । 8. ಪರಮಾತ್ಮನ



ಅನಿರ್ವಚನೀಯವಾದ ಒಂದು ಶಕ್ತಿ. ಮೇಘವು ವರ್ಷಿಸು ವುದೂ ವಾಹಿನಿಗಳೂ ತುಂಬುವುದೂ ಹಾಗೆಯೇ ಜಲ ವಿಲ್ಲದೆ ಒಣಗುವುದೂ ಪರಮಾತ್ಮನ ಮಾಯೆ (ಶಕ್ತಿ). "ಪರ್ಜನ್ಯೋ ವರ್ಷತೇ ಯತ್ರ ತಜ್ಜಲೇನ ಪ್ರಪೂರ್ಯತೇ | ದೇಶೋ ನಿರ್ಜಲತಾಂ ಯಾತಿ ಏಷಾ ಮಾಯಾ ಮಮ ಪ್ರಿಯೇ" | ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರನು ಕ್ಷೀಣನಾಗುವುದೂ ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವುದೂ ಪರಮಾತ್ಮನ ಮಾಯೆ. "ಸೋಮೋಽಪಿ ಕ್ಷೀಯತೇ ಪಕ್ಷೇ ಪಕ್ಷೇ ವಾಪಿ ವಿವರ್ಧತೇ | ಅಮಾಯಾಂ ಸ ನ ದೃಶ್ಯತ ಮಾಯೇಯಂ ಮಮ ಸುಂದರಿ" | ಸೂರ್ಯನು ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಅಸ್ತನಾಗುವುದೂ ಪ್ರಾತಃ ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಉದಯಿಸುವುದೂ ಪರಮಾತ್ಮನ ಮಾಯೆ. "ಪಶ್ಚಿಮಾಂ ದಿಶಮಾಸ್ಥಾಯ ಯದಸ್ತಂ ಯಾತಿ ಭಾಸ್ಕರಃ | ತದೇತಿ ಪೂರ್ವತಃ ಪ್ರಾತಃ ಮಾಯೇಯಂ ಮಮ ಸುಂದರಿ" | ಜೀವನು ಗರ್ಭವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಸುಖ-ದುಃಖ ಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸಿ ತಿಳಿಯುವುದೂ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ನಂತರ ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಮರೆತುಬಿಡುವುದೂ ಪರಮಾತ್ಮನ ಮಾಯೆ. "ಜೀವಃ ಪ್ರವಿಶ್ಯ ಗರ್ಭಂ ತು ಸುಖದುಃಖಾನಿ ವಿಂದತಿ | ಜಾತಶ್ಚ ವಿस्ಮರೇತ್ ಸರ್ವಮೇವಾ ಮಾಯಾ ಮಮೋತ್ತಮಾ" | ಇತ್ಯಾದಿ. ಜನರು ರೋಗಗ್ರಾಹಿತರಾಗಿ ಔಷಧವನ್ನು ಕುಡಿಯುವಾಗ ಆ ಔಷಧದಲ್ಲಿ ನನ್ನ ಮಾಯೆಯಿಂದ ವೀರ್ಯವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುತ್ತೇನೆ. "ರೋಗಾರ್ತಾ ಜಂತವಃ ಕೇचित್ ಭಕ್ಷಯಂತಿ ಮಹೌಷಧಮ್ | ತಸ್ಯ ವೀರ್ಯಂ ಸಮಾಶ್ರಿತ್ಯ ಮಾಯಾಂ ತು ವಿಸೃಜಾಮ್ಯ-ಹಮ್" | ಆಯುಸ್ಸು ಮುಗಿದವರು ಔಷಧ ಕುಡಿಯುವಾಗ ಅದನ್ನು ನಿರ್ವೀರ್ಯವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿ ಅವರನ್ನು ಹರಣ ಮಾಡುವುದೂ ಪರಮಾತ್ಮನ ಮಾಯೆಯಿಂದ. "ಗೌಷಧೇ ದೀಯಮಾನೇ ತು ಜಂತುಃ ಪಶ್ಚತ್ವಮೇತಿ ಯತ್ | ನಿರ್ವೀರ್ಯಮೌಷಧಂ ಕೃತ್ವಾ ಕಾಲೋ ಭೂತ್ವಾ ಹರಾಮ್ಯಹಮ್" | ಒಂದು ಬೀಜವನ್ನು ಬಿತ್ತಿದರೆ ಅದು ದೊಡ್ಡದಾಗಿ ಬೆಳೆದು ಅದು ಅಧಿಕವಾದ ಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವುದಕ್ಕೂ ಅದರಲ್ಲಿ ಪರಮಾತ್ಮನು ಮಾಯೆಯಿಂದ ಅಮೃತವನ್ನು ಸೇರಿಸುವುದೇ ಕಾರಣ. "ಏಕವಿಜಾತ್ ಪ್ರಕೀರ್ಣಾಽಽ ಜಾಯಂತೇ ತಾನಿ ಭೂರಿಸಃ | ತತ್ರಾಮೃತಂ ವಿಸೃಜಾಮಿ ಮಾಯಾಯೋಗೇನ ಮಾಧವಿ" | ಇತ್ಯಾದಿ. ವರಾಹಪುಂ. 9. ಶಾರ್ಙ್ಗ, ಮೂರ್ಖತನ, ಕಪಟ. "ಮಾಯಾ ತು ಶಠತಾ ಶಾಠ್ಯಂ ಕುಸೃತಿರ್ನಿಹೃತಿಶ್ಚ ಸಾ" | 10. ಕೃಪೆ, ದಯೆ. 11. ದರ್ಪ, ಕೊಬ್ಬು.

**ಮಾಯಾಕಾರ ಮಾಯಾಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ಐಂದ್ರಜಾಲಿಕ, ಮಂತ್ರದಿಂದ ಕಣ್ಣು ಕಟ್ಟಿ ಇಲ್ಲದುದನ್ನು ಇರುವಂತೆ ತೋರಿಸುವವನು. ಮಾಯಾಂ ಕರೋತಿ — ಕೃತ್ವಾ (ಕರಣ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) | 2. ಮಾಟಗಾರ, ಶೂನ್ಯಮಾಡುವವನು.

**ಮಾಯಾಕೃತ್ ಮಾಯಾಕೃತ್** (ಪುಂ) "ಮಾಯಾಕಾರ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಮಾಯಾಂ ಕರೋತಿ—ಕೃತ್ "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬) |

**ಮಾಯಾಜೀವಿನ್ ಮಾಯಾಜೀವಿನ್** (ಪುಂ) ಗಾರುಡಿಗ, ಯಕ್ಷಿಣಿಯವನು, ಮಾಯಾಕಾರ, ಇಂದ್ರಜಾಲವಿದ್ಯೆಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಮಾಯಾ ಜೀವತಿ—ಜೀವ (ಪ್ರಾಣ-ಧಾರಣ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೭೮) |

**ಮಾಯಾವ ಮಾಯಾದ** (ಪುಂ) ಮೋಸಳೆ. ಮಾಯಾ ಛಲೇನ ಅತ್ತಿ —ಅದ (ಭಕ್ಷಣ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಜಲಶುಕ್ರ-ಮಾಯಾದಕ್ಷಿಣಾಶನಹೃದ್ರಹಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಮಾಯಾವೇವಿ ಮಾಯಾದೇವೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬುದ್ಧದೇವನ ತಾಯಿ. —ಸುತಃ —ಸುತಃ. ಬುದ್ಧದೇವ.

**ಮಾಯಾವತ್ ಮಾಯಾವತ್** (ವಿಂ) 1. ಮೋಸಗಾರ, ವಂಚಕ, ಕಪಟ. 2. ಮಾಯಗಾರ, ಇಂದ್ರಜಾಲವಿದ್ಯೆಯ ನ್ನರಿತವನು, ಯಕ್ಷಿಣಿಯವನು. ಮಾಯಾಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪) | ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೬) | —ವತೀ —ವತೀ.

**ಮಾಯಾವತೀ ಮಾಯಾವತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಮನ ಪತ್ನಿ, ರತಿ. "ಏಷ ತೇ ತನಯಃ ಸುಭ್ರ ಹೃತ್ವಾ ಶಮ್ಬರಮಾಗತಃ | ಹೃತೋ ಯೇನಾಭವದ್ದಾಲೋ ಭವತ್ಯಾಃ ಸುತಿಕಾಗೃಹಾತ್ || ಇಯಂ ಮಾಯಾವತೀ ಭಾರ್ಯಾ ತನಯಸ್ಯಾಸ್ಯ ತೇ ಸತೀ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ. | 2. ಶಂಬರಾಸುರನ ಹೆಂಡತಿ. [ಶಂಬರಾಸುರನು ರುಕ್ಮಿಣಿಯ ಶಿಶುವನ್ನು (ಜನಿಸಿದ ಕೂಡಲೆ) ಮಾಯೆಯಿಂದ ಎತ್ತಿಕೊಂಡು ಹೋಗಿ ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಹಾಕಿದನು. ಆ ಶಿಶುವನ್ನು ಒಂದು ಮೀನು ನುಂಗಿತು. ಬೆಸ್ತನೊಬ್ಬನು ಆ ಮೀನನ್ನು ಹಿಡಿದು ಶಂಬರನ ಅರಮನೆಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿದನು. ಅದರೊಳಗಿದ್ದ ಶಿಶುವನ್ನು ಮಾಯಾವತಿಯು ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಸಲಹಿ ಮಹಾಮಾಯಾ ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿಸಿ ಶಂಬರಾಸುರನನ್ನು ಕೊಲ್ಲಿಸಿ ನಾರದರಿಂದ ಮನ್ಮಥನೆಂದು ತಿಳಿದ ನಂತರ ಅವನನ್ನು ರುಕ್ಮಿಣಿಯಲ್ಲಿಗೆ ತಂದು ಒಪ್ಪಿಸಿದಳು.] "ಭವಾನ್ ನಾರಾಯಣಸುತಃ ಶಮ್ಬರೇಣಾಹೃತೋ ಗೃಹಾತ್ | ಅಹಂ ತೇಽಧಿಕೃತಾ ಪತ್ನೀ ರತಿಃ ಕಾಮೋ ಭವಾನ್ ಪ್ರಭೋ | ಏಷ ತ್ವಾನಿರ್ದಶಂ ಸಿಂಧಾವಕ್ಷಿಪತ್ ಶಮ್ಬರೋಽ-ಸುರಃ | ಮತ್ಸ್ಯೋಽಗ್ರಸೀತ್ತಿದುರಾತ್ ಇಹ ಪ್ರಾಪ್ತೋ ಭವಾನ್ ಪ್ರಭೋ | ತಮಿಮಂ ಜಹಿ ದುರ್ವಿಧಂ ದುರ್ಜಯಂ ಶತ್ರುಮಾತ್ಮನಃ | ಮಾಯಾಶತವಿದಂ ತ್ವಂ ಚ ಮಾಯಾಭಿಮೋಹನಾದಿಭಿಃ || ಪ್ರಭಾಷ್ಯೇವ ದದೌ ವಿಧಾಂ ಪ್ರಚ್ಯುನ್ನಾಯ ಮಹಾತ್ಮನೇ | ಮಾಯಾವತೀ ಮಹಾಮಾಯಾಂ ಸರ್ವಮಾಯಾ-ವಿನಾಶಿನೀಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ. ಭಾಗಂ ೧೦-೪೪ |

**ಮಾಯಾವಿನ್ ಮಾಯಾವಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಮೋಸಗಾರ, ಕಪಟ, ವಂಚಕ. ಮಾಯಾಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ವಿಣಿಃ" (೪-೨-೧೨೧) |



“ವ್ರಜಂತಿ ತೇ ಮೂಢವಿಃ ಪರಾಭವಂ ಭವಂತಿ ಮಾಯಾವಿಃ ತೇ ನ ಮಾಯಿನ್” ಕಿರಾಂ ೧-೩೦ | 2. ಇಂದ್ರಜಾಲ ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ಮಾಯಾಕಾರ.

**ಮಾಠಿಕ ಮಾಯಿಕ** (ವಿಂ) “ಮಾಯಾವಿನ್” ಪದದ ಅರ್ಥ.

**ಮಾಠಿನ್ ಮಾಯಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಮಾಯಾಕಾರ, ಗಾರುಡಿಗೆ, ಐಂದ್ರಜಾಲಿಕ, ಯಕ್ಷಿಣಿಯವನು. ಮಾಯಾಸ್ತಸ್ಯ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪) | (ವಿಂ) 2. ಮೋಸಗಾರ, ವಂಚಕ, ಕಪಟಿ. “ಭವಂತಿ ಮಾಯಾವಿಃ ತೇ ನ ಮಾಯಿನ್” ಕಿರಾಂ ೧-೩೦ | ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪) | ಮಾಯಿನಿ ಮಾಯಿಣೀ.

**ಮಾಯು ಮಾಯು** (ಪುಂ) 1. ಓತು, ದೇಹದೊಳಗಿರುವ ಒಂದು ಧಾತು. ಮಿನೋತಿ ದೇಹ ಅಪ್ರಾಣಮ್ — ಡುಮಿನ್ (ಪ್ರಕ್ಷೇಪಣೆ) “ಉನ್” (೩೦ ೧-೧) | 2. ಓತುರೋಗ. “ಪಿತ್ತಂ ಮಾಯುಃ ಫಲಂಕರ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಮಾಯುರಾಜ ಮಾಯುರಾಜ** (ಪುಂ) ನಳಕೂಬರ, ಕುಬೇರನ ಮಗ. “ಸುತೋಜಯ ಮಾಯುರಾಜ: ಸ್ಯಾತ್ ತಥಾ ವರ್ಣಕವಿನ್ಧಿ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಮಾಯುರ ಮಾಯೂರ** (ನಂ) 1. ನವಿಲುಗಳ ಗುಂಪು, ಮಯೂರಗಳ ಸಮೂಹ. ಮಯೂರಾಣಾಂ ಸಮೂಹ: “ಅನ್” (೪-೨-೩೭) | (ವಿಂ) 2. ನವಿಲಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಮಯೂರಸ್ಯೇದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) | ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೪) | -ರೀ -ರೀ.

**ಮಾಯುರೀಕ ಮಾಯೂರೀಕ** (ಪುಂ) ನವಿಲನ್ನು ಹಿಡಿದು ಕೊಲ್ಲುವವನು. ಮಯೂರಾನ್ ಹಂತಿ “ಠಕ್” (೪-೪-೩೪) |

**ಮಾಯುರೀ ಮಾಯೂರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾರ್ಜನೆಯ ಒಂದು ಭೇದ, ಮೂರು ವಿಧ ಮೃದಂಗಧ್ವನಿಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಮಾರ್ಜನಾ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಮಯೂರಗಳಿಗೆ ಬಹಳ ಪ್ರಿಯವಾದುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಈ ಹೆಸರು. “ನಿರ್ಹಾರ್ದಿನ್ಯುಪಹಿತಮಭ್ಯಮಸ್ವರೋತ್ಥಾ ಮಾಯುರೀ ಮದಯತಿ ಮಾರ್ಜನಾ ಮನಾಸಿ” ಮಾಲಂ ೧-೨೧ |

**ಮಾರ ಮಾರ** (ಪುಂ) 1. ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ. ಮಾರಯತಿ — ಮೃಡ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೆ) + ಣಿಚ್ “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) | “ಅನುಮಾರ ನ ಮಾರ ಕಥಂ ನು ಸಾ ರತಿರತಿಪ್ರಥಿತಾಪಿ ಪತಿವ್ರತಾ” ನೆಪಂ ೪-೭೬ | 2. ವಿಘ್ನ, ತಡೆ, ಅಡ್ಡಿ. 3. ಮೃತ್ಯು, ಮರಣ. ಅಗ್ರಯಂತೇ ಅನೇನ—ಮೃಡ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೆ) “ಏಕ್” (೩-೩-೧೨೧) | “ಮಾರೋ ಮೃತ್ಯೋ ಸ್ಮರೇ ವಿಧೇ” ಮೇದಿಂ |

**ಮಾರಕ ಮಾರಕ** (ಪುಂ) 1. ಜಾತಕದಲ್ಲಿ ದ್ವಿತೀಯ ಮತ್ತು ಸಪ್ತಮ ಸ್ಥಾನಗಳ ಅಧಿಪತಿ. ಎರಡು ಮತ್ತು ಏಳನೆಯ

ಸ್ಥಾನಗಳು ಮಾರಕಸ್ಥಾನಗಳು. 2. ಪ್ರಾಣ ತೆಗೆಯುವ ವ್ಯಾಧಿ, ಕೊಲ್ಲುವ ರೋಗ. 3. ಗಿಡಗ ಪಕ್ಷಿ, ಡೇಗೆ ಹಕ್ಕಿ. (ಪುಂ) 4. ಪ್ರಳಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ಆಗುವ ಸರ್ವಪ್ರಾಣಿಗಳ ನಾಶ. (ವಿಂ) 5. ಕೊಲ್ಲುವವನು, ನಾಶಪಡಿಸುವವನು. ಮಾರಯತಿ — ಮೃಡ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೆ) + ಣಿಚ್ “ಏಕ್” (೩-೧-೧೩೩) |

**ಮಾರಕಸ್ಥಾನ ಮಾರಕಸ್ಥಾನ** (ನಂ) ಜಾತಕ ಕುಂಡಲಿಯಲ್ಲಿ ಜನ್ಮಲಗ್ನದಿಂದ ಎರಡನೆಯ ಮತ್ತು ಏಳನೆಯ ಸ್ಥಾನಗಳು. “ಅಷ್ಟಮಂ ಚಾಯುಃ ಸ್ಥಾನಮಷ್ಟಮಾಢಟಮಂ ಚ ಯತ್ | ತಯೋರಪಿ ವ್ಯಯಸ್ಥಾನಂ ಮಾರಕಸ್ಥಾನಮುಚ್ಯತೇ” |

**ಮಾರಜಿತ್ ಮಾರಜಿತ್** (ಪುಂ) ಜಿನದೇವ. ಮಾರಂ ಮನ್ಮಥಂ ಜಿತವಾನ್ | “ಮಾರಜಿಲ್ಲೋಕಜಿಜ್ಜಿನ:” ಅಮಂ |

**ಮಾರಣ ಮಾರಣ** (ನಂ) ಕೊಲ್ಲುವಿಕೆ, ಪ್ರಾಣ ತೆಗೆಯುವಿಕೆ ಮೃಡ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೆ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪) |

**ಮಾರಿ ಮಾರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಳಯಕಾಲದಲ್ಲಾಗುವ ಸರ್ವ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ನಾಶ. ಮೃಡ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೆ) + ಣಿಚ್ “ಇನ್” (೩೦ ೪-೧೧೭) | “ಸರ್ವಲೋಕತತೇ ಮೃತ್ಯೋ ಮಾರಿ: ಸ್ತ್ರೀ ಮಾರಕೋಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” ವೈಜಂ | 2. ಸಿಡುಬು, ದೊಡ್ಡಮ್ಮ. “ಮಾರಿಮ್ಸುರೀರೂಢೇದಾ:” ವೈಜಂ | 3. ಕೊಲ್ಲುವುದು, ಪ್ರಾಣ ತೆಗೆಯುವುದು.

**ಮಾರಿತ ಮಾರಿತ** (ವಿಂ) 1. ಕೊಲ್ಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ನಾಶ ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಮೃಡ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೆ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) |

**ಮಾರಿಷ ಮಾರಿಷ** (ಪುಂ) 1. ಆರ್ಯ, ಪೂಜ್ಯ. (ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಈ ಪ್ರಯೋಗ.) ರಿಷ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೪) | ನಿಷೇಧವನ್ನು ಹೇಳುವ ಮಾ ಶಬ್ದದೊಡನೆ ಸಮಾಸ. 2. ಕೀರೆಸೊಪ್ಪು. “ಮಾರಿಷೇ ಜೀವಶಾಕ: ಸ್ಯಾದ-ತ್ರಾಲ್ಪೇ ತಢ್ಢುಲೀಯಕ:” ವೈಜಂ | “ಮಾರಿಷಸ್ತ್ವಾರ್ಯಶಾಕಯೋ:” ಹೇಮಂ |

**ಮಾರಿಷಾ ಮಾರಿಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಕ್ಷಿಣ ತಾಯಿ. “ಮಾರಿಷ: ಶಾಕಭಿವ್ಯಾರ್ಯೇ ನಾಟಯೋಕ್ತೌ ಪುಸಿ ಯೋಷಿತಿ | ದಕ್ಷಾಮ್ಬಾಯಾಮ್” ಮೇದಿಂ |

**ಮಾರೀ ಮಾರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಂಡಿ. 2. ಜನರ ನಾಶ. 3. ಮಾಹೇಶ್ವರ ಶಕ್ತಿ.

**ಮಾರೀಚ ಮಾರೀಚ** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಯಕ್ಷ, ಕಶ್ಯಪಮಹರ್ಷಿ. 2. ತಾಟಕೆಯ ಮಗ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. [ಈ ರಾಕ್ಷಸನು ಸುನಂದನಂಬ ಯಕ್ಷನ ಮಗಳಾದ ತಾಟಕೆಯ ಮಗ. ಆಗಸ್ಯಮಹರ್ಷಿಯ ಶಾಪದಿಂದ ಇವನಿಗೆ ರಾಕ್ಷಸರೂಪ



ಬಂದಿತು. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮಹರ್ಷಿಯ ಯಾಗದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಸಿದ್ಧಾಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಿರಲು ಶ್ರೀರಾಮನ ಬಾಣದಿಂದ ಸಮುದ್ರಕ್ಕೆ ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟನು. ರಾವಣನು ಸೀತೆಯನ್ನು ಅಪಹರಿಸಲು ತನಗೆ ನೆರವಾಗಬೇಕೆಂದು ಕೇಳಲು ಶ್ರೀರಾಮನ ಪರಾಕ್ರಮವನ್ನು ವರ್ಣಿಸಿ ಆ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಕೈಹಾಕದಿರುವಂತೆ ಎಷ್ಟು ಹೇಳಿದರೂ ಕೇಳದ ರಾವಣನ ಪ್ರೇರಣೆಯಂತೆ ಮಾರೀಚನು ಮಾಯಾಮೃಗದ ವೇಷವನ್ನು ತಾಳಿ ಬಹಳ ದೂರಕ್ಕೆ ರಾಮನನ್ನು ಒಯ್ದು ಶ್ರೀರಾಮನಿಂದ ಹತನಾದನು.] 3. ಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡಿ ಸುವ ಪುರೋಹಿತ, ಮುತ್ವಿಕೃ, 4. ರಾಜನ ಆನೆ. (ನಂ) 5. ಮಂಜಿನ ತೋಟ. "ಮಾರೀಚೋದ್ಭ್ರಾಂತಹಾರೀತಾ ಮಲಯಾದ್ರೇ-  
ಫತೃಕಾ:" ರಘುಂ ೪-೪೬. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಚಿ -ಚೀ. 6. ಮಾಯಾದೇವಿ, ಬುದ್ಧದೇವನ ತಾಯಿ.

**ಮಾರುತ ಮಾರುಂಡ (ಪುಂ)** 1. ಹಾವಿನ ಮೊಟ್ಟೆ, ಸರ್ಪದ ತತ್ವ. 2. ಹಸುವಿನ ಸಗಣೆಯ ರಾಶಿ. 3. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. "ಮಾರುತಸ್ತು ಮುಜ್ಜಾಣಢೆ ಮಾರ್ಗೋ ಗೋಮಯಮಂಡಲೇ" ಹೇಮಂ |

**ಮಾರುತ ಮಾರುತ (ಪುಂ)** 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಮರುತ್ ವಾಯು: -ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮) | "ಮುರಲಾಮಾಸ್ತೋದ್ಭೂತ-  
ಮಗಮತಕೈತಕಂ ರಜ:" ರಘುಂ ೪-೪೪ | 2. ಒಂದು ದೇಶ. "ಮಾರುತಾ ಧೇನುಕಾಶ್ಚೈವ ತಜ್ಞಾಃ ಪರತಜ್ಞಾಃ | ಬಾಹ್ಲಿಕಾ-  
ಸ್ತಿತ್ತಿರಾಶ್ಚೈವ ಚೋಲಾಃ ಪಾಂಡ್ಯಾಶ್ಚ ಭಾರತ || ಏತೇ ಜನಪದಾ  
ರಾಜನ್ ದಕ್ಷಿಣಂ ಪಕ್ಷಮಾಶ್ರಿತಾ:" ಭಾಂ ಭೀಷಮಂ ೪೦-೪೧, ೪೨ | (ವಿಂ) 3. ವಾಯುಸಂಬಂಧವಾದ, ಮರುತ: ಇದಮ್  
"ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) |

**ಮಾರುತವ್ರತ ಮಾರುತವ್ರತ (ನಂ)** ರಾಜನ ಧರ್ಮ, ಸ್ವಪರರ ರಾಷ್ಟ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಚಾರರ ಮೂಲಕ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಅಲ್ಲಿಯ ವಿಚಾರವನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವ ರಾಜನ ಕಾರ್ಯ. ಗಾಳಿಯು ಎಲ್ಲಾ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ದೇಹದೊಳಗೂ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಸುಚರಿಸುವಂತೆ ರಾಜನು ಚಾರರ ಮೂಲಕ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಸಕಲ ವಿಷಯಗಳನ್ನೂ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ "ಮಾರುತ-  
ವ್ರತ" ಎಂದು ಹೆಸರು. "ಪ್ರವಿಷ್ಯ ಸರ್ವಭೂತಾನಿ ಯಥಾ ಚರತಿ ಮಾರುತ: | ತಥಾ ಚಾರೈ: ಪ್ರವೇಷ್ಯಂ ವ್ರತಮೇತದ್ವಿ ಮಾರುತಮ್" ಮನುಂ ೯-೩೦೬ |

**ಮಾರುತಾತ್ಮಜ ಮಾರುತಾತ್ಮಜ (ಪುಂ)** 1. ಅಂಜನೇಯ, ಹನುಮಂತ. 2. ಭೀಮಸೇನ. ಮಾರುತಸ್ಯಾತ್ಮಜ:

**ಮಾರುತಾಶನ ಮಾರುತಾಶನ (ಪುಂ)** ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಮಾರುತ: ವಾಯು: ಅಶನಂ ಯಸ್ಯ |

**ಮಾರುತಿ ಮಾರುತಿ (ಪುಂ)** 1. ಅಂಜನೇಯ. "ಪ್ರವೃತ್ತಾವುಪ-  
ಲಬ್ಧಾಃ ತಸ್ಯಾ: ಸಂಪಾತಿರ್ದರ್ಶನಾತ್ | ಮಾರುತಿ: ಸಾಗರಂ ತೀರ್ಣ: ಸಂಸಾರಮಿವ ನಿರ್ಮಮ:" ರಘುಂ ೧೨-೬೦ | 2. ಭೀಮಸೇನ. ಮಾರುತಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಇನ್" (೪-೧-೯೪) | "ಸಂಗ್ರಹೇಸ್ಯ  
ಮಹಾಬಾಹುಮಾರುತಿ: ಕುಪಿತೋಬ್ರವೀತ್" ಭಾಗಂ ೨-೭-೨೧ |

**ಮಾರ್ಕಂಡ ಮಾರ್ಕಂಡ (ಪುಂ)** ಮಾರ್ಕಂಡೇಯಮುನಿ. ಮೃಕಂಡೋಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೯೨) | ಪೃಷಂ |

**ಮಾರ್ಕಂಡೇಯ ಮಾರ್ಕಂಡೇಯ (ಪುಂ)** ಮೃಕಂಡು ಮುನಿಯ ಪುತ್ರ. ಮೃಕಂಡೋಪತ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೩) | ಪೃಷಂ | ಈ ಮುನಿಯು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡಿ ಪರಮೇಶ್ವರನಿಂದ ಹದಿನಾಲ್ಕು ಕಲ್ಪಗಳ ಕಾಲ ದೀರ್ಘಾಯುಷ್ಯವನ್ನು ಪಡೆದನು. "ಪುನಶ್ಚಾರ ಚ ತಪ: ಪರಮೇಶ್ವರತುಷ್ಠಯೇ | ಏವಂ  
ಬಹುತೀ ಕಾಲೇ ಪ್ರಾದುರಾಸೀನ್ಮಹೇಶ್ವರ: | .....ತವಯಾ ತಪ್ತೇನ  
ತಪಸಾ ತೋಷಿತೋಽಹಂ ಭೃಗುಂ ಮುನೇ | ದೀರ್ಘಮಾಯುರ್ಮಯಾ ದತ್ತಂ ಮೃತ್ಯುಶ್ಚ  
ಪ್ರತಿಬೋಧಿತ:" ಭಾಂ ವನಂ ೧೩೦ | ಮಾರ್ಕಂಡೇಯನಿಗೆ ಹನ್ನೆರಡು ವರ್ಷಗಳು ಮಾತ್ರ ಆಯುಸ್ಸೆಂದು ಹೇಳಿದ ಒಬ್ಬ ದೈವಜ್ಞನ ಮಾತನ್ನು ಕೇಳಿ ಅವನ ತಾಯಿ ತಂದೆಗಳು ಬಹಳ ದುಃಖಿತರಾದರು. ಅವರ ದುಃಖದ ಕಾರಣವನ್ನು ತಿಳಿದು ಮಾರ್ಕಂಡೇಯನು ಎಷ್ಟು ವನ್ನು ಕುರಿತು ಉಗ್ರವಾದ ತಪಸ್ಸು ಮಾಡಿ ಎಷ್ಟು ವಿನಿಂದ ಮೃತ್ಯುವನ್ನು ಜಯಿಸುವ ಸ್ತೋತ್ರದ ಉಪದೇಶವನ್ನು ಪಡೆದನು. ಇದನ್ನು ಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಜಪಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಮಾರ್ಕಂಡೇಯನನ್ನು ಕಂಡು ಮೃತ್ಯುವು ಪಲಾಯನ ಮಾಡಿತು. ಮಾರ್ಕಂಡೇಯನು ದೀರ್ಘಾಯುಷ್ಯಂತನಾದನು. ನೃಸಿಂಹಪುಂ | ಮಾರ್ಕಂಡೇಯನು ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು ಕುರಿತು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡಿ ಭಗವನ್ಮಾಯೆಯನ್ನು ತೋರುವಂತೆ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದನು. "ತಸ್ಯೈವ ಯುಜತಶ್ಚಿತ್ತಂ ತಪ: ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯಸಂಯಮೈ: |  
ಅನುಗ್ರಹಾಯಾವಿರಾಸೀನ್ಮಹೇಶ್ವರನಾರಾಯಣೋ ಹರಿ: || .....ಛೋ ಛೋ  
ಬ್ರಹ್ಮಪಿವರ್ಯಾಸಿ ಸಿದ್ಧ ಆತ್ಮಸಮಾಧಿನಾ | ಮಯಿ ಭಕ್ತ್ಯಾ-  
ನಪಾಯಿನ್ಯಾ ತಪ: ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯಸಂಯಮೈ: || ವಯಂ ತೇ ಪರಿತುಷ್ಠಾಃ  
ಸಮ: ತ್ವದ್ಬಹದ್ರವ್ರತಚರ್ಯಯಾ | ವರಂ ಪ್ರತೀಚ್ಛಾಮಹಂ ತೇ ವರದೇಶಾ-  
ದಮೀಪ್ಸಿತಮ್" | ಭಗವನ್ಮಾಯಾಪ್ರದರ್ಶನ: ಮಾರ್ಕಂಡೇಯಮುನಿಯು ಪುಷ್ಪಭದ್ರಾತೀರದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತಿದ್ದಾಗ ಒಂದು ದೊಡ್ಡ ಗಾಳಿಯು ಬೀಸಿತು. ಅದರೊಡನೆ ಭಯಂಕರವಾದ ಪ್ರಚಂಡ ಮೇಘಗಳೂ ಬರಲಾರಂಭಿಸಿ ಗುಡುಗು ಮಿಂಚುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ ಪ್ರಬಲವಾದ ಮಳೆಯು ಸುರಿಯಲಾರಂಭಿಸಿತು. ಭೂಮಿಯೆಲ್ಲವನ್ನೂ ನುಂಗಿಬಿಡುವಂತೆ ನಾಲ್ಕು ಸಮುದ್ರಗಳೂ ವೇಗವಾದ ಗಾಳಿ ಭಯಂಕರವಾದ ಅಲೆಗಳು ಜಲಜಂತುಗಳು ಇವುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ



ಘೋರವಾಗಿ ಶಬ್ದ ಮಾಡುತ್ತಾ ಈ ಮುನಿಯ ಸುತ್ತಲೂ ಆವರಿಸಿದುದರಿಂದ ಮುನಿಗೆ ದಿಕ್ಕೇ ತೋಚದಂತಾಗಿ ಹಸಿವು ಬಾಯಾರಿಕೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ ಮೊಸಳೆ ತಿಮಿಂಗಿಲಗಳಿಂದ ಪೀಡಿತನಾಗಿ ಗಾಢವಾದ ಕೆತ್ತಲೆಯಲ್ಲಿ ಅಲೆದಾಡುತ್ತ ಸಾವಿರಾರು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಕಳೆದನು. ವಿಷ್ಣುಮಾಯಿ ಯಿಂದ ಹೀಗೆ ಅಲೆದಾಡುತ್ತ ಒಂದು ದಿನ ಒಂದು ಆಲದ ಮರದಲ್ಲಿ ಆಲದ ಎಲೆಯ ಮೇಲೆ ಮಲಗಿ ಆಟವಾಡುತ್ತ ತನ್ನ ಪಾದಾರವಿದವನ್ನು ಬಾಯಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಬೆರಳನ್ನು ಚೀಪುತ್ತಿದ್ದ ಬಹಳ ಸುಂದರವಾದ ಶಿಶುವೊಂದನ್ನು ಕಂಡನು. ಆ ಶಿಶುವಿನ ದರ್ಶನದಿಂದ ಮುನಿಯ ಆಯಾಸವೆಲ್ಲಾ ಪರಿಹೃತವಾಗಿ ಆಶ್ಚರ್ಯಚಕಿತನಾಗಿ ಆ ಬಾಲಕನ ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಹೋದನು. ಆಗ ಆ ಶಿಶುವಿನ ಶ್ವಾಸ ಮಾರುತ್ತದಿಂದ ಆಕರ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಅದರ ಶರೀರದೊಳಕ್ಕೆ ಸೇರಿಕೊಂಡನು. ಅಲ್ಲಿ ಸಕಲ ಚರಾಚರ ಜಗತ್ತನ್ನೂ ಪುಷ್ಪಭದ್ರಾತೀರದಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಆಶ್ರಮವನ್ನೂ ಕಂಡನು. ಹೀಗೆ ನೋಡುತ್ತಿದ್ದಾಗಲೇ ಶಿಶುವಿನ ಶ್ವಾಸಮಾರುತ್ತದಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟು ಮತ್ತೆ ಪಟಪತ್ರಶಾಯಿಯಾದ ಆ ಶಿಶುವನ್ನು ಕಂಡು ಅದನ್ನು ಆಲಂಗಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಅದರ ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಹೋದಾಗ ಪರಮಾತ್ಮನು ಅಂತರ್ಧಾನ ಹೊಂದಿದನು. ಆ ಕೂಡಲೇ ಲೋಕವನ್ನೆಲ್ಲಾ ಆವರಿಸಿದ್ದ ನೀರೆಲ್ಲವೂ ಮಾಯವಾಗಿ ಮಾರ್ಕಂಡೇಯಮುನಿಯು ಎಂದಿನಂತೆ ಪುಷ್ಪಭದ್ರಾ ತೀರದಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲೇ ಕುಳಿತನು. ಭಾಗಂ ೧೨-೯.

**ಮಾರ್ಕಂಡೇಯಪುರಾಣ ಮಾರ್ಕಂಡೇಯಪುರಾಣ (ನಂ)**  
ಮಾರ್ಕಂಡೇಯ ಮುನಿಯು ಪಕ್ಷಿಗಳನ್ನು ಕುರಿತು ಜೈಮಿನಿಗೆ ಹೇಳಿದ ಕಥೆ. [ಇದು ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಪ್ರಣೀತವಾದ ಹದಿನೆಂಟು ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಇದರಲ್ಲಿ ಪಕ್ಷಿಗಳ ಪೂರ್ವಜನೃತ್ಯಾಂತ ಇಂದ್ರನ ಬದಲಾವಣೆ ಪಾಂಡವರ ವೃತ್ತಾಂತ ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರನ ಕಥೆ ದತ್ತಾತ್ರೇಯ ಕಥೆ ಸೃಷ್ಟಿವಿಷಯ ಇತ್ಯಾದಿ ವಿಷಯನಿರೂಪಣೆಗಳಿರುವುವು.]  
ನಾರದಪುಂ ೯೭.

**ಮಾರ್ಕವ ಮಾರ್ಕವ (ಪುಂ)** ಗರಗದ ಸೊಪ್ಪು. ಮಾರಯತಿ—  
ಮೃಡ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೆ) + ಗಿಚ್ "ಕಿವ್" (೩-೨-೧೭೮).  
ಮಾರಿ ಕೇಶಶೌಕ್ಯನಾಶನೆ ಕೃಯತೇ—ಕುಡ್ (ಶಬ್ದ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭). "ಮಾರ್ಕವೋ ಭೃಗುರಾಜಃ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ.

**ಮಾರ್ಗ—ಅನ್ವೇಷಣೆ** (ವಾ ಚುರಾಂ ತಮಂ ಸಕಂ ಸಂ). ಮಾರ್ಗಯತಿ, —ತೆ. ಪಕ್ಷಿ ಭವಾಂ ಮಾರ್ಗತಿ. ಅಮಾರ್ಗೀತ್. 1. ಅನ್ವೇಷಣೆ ಮಾಡು, ಹುಡುಕು. 2. ಪ್ರಾರ್ಥಿಸು, ಬೇಡು, ಯಾಚಿಸು. "ವರಂ ವರೇಣ್ಯೋ ನೃಪತೇರಮಾರ್ಗೀತ್" ಭट्टಿಂ ೧-೧೨.

**ಕರ್ಮಣಿ** :—ಮೃಗ್ಯತೇ, ಮಾರ್ಯತೇ. ಅಮಾರ್ಯತ.

**ಕೃತು** :—ಮಾರ್ಗಿತವ್ಯಮ್. ಮಾರ್ಗಣೀಯಮ್. ಮಾರ್ಯಮ್. ಮಾರ್ಗನ್, ಮಾರ್ಗಮಾಣಃ, ಮಾರ್ಗಯನ್, ಮಾರ್ಗಯಮಾಣಃ. ಮಾರ್ಗಿತಃ, —ತಮ್. ಮಾರ್ಗಣಮ್.

**ಮಾರ್ಗ ಮಾರ್ಗ (ಪುಂ)** 1. ದಾರಿ, ರಸ್ತೆ. ಮಾರ್ಯತೇ — ಮಾರ್ಗ (ಅನ್ವೇಷಣೆ) "ಘಮ್" (೩-೩-೧೮). "ಮಾರ್ಗ ಮನುಷ್ಯೇಶ್ವರ-ವರ್ಮಪತ್ನೀ ಶ್ರುತೇರಿವಾರ್ಥ ಸ್ಮೃತಿರನ್ವಗಚ್ಛತ್" ರಘುಂ ೨-೨. 2. ವಿಶಾಲವಾದ ಮಾರ್ಗ, ಅಗಲವಾದ ಪ್ರದೇಶ, ಬಯಲು. "ವಾಯೋರಿಸಂ ಪರಿವಹಸ್ಯ ವದಂತಿ ಮಾರ್ಗಮ್" ಶಾಕುಂ ೭-೬. 3. ಕಲೆ, ಗುರುತು, ಮಜ್ಜೆ. "ಭೌಗಿವೇಷ್ಠನಮಾರ್ಗೇಷು ಚಂದನಾನಾಂ ಸಮರ್ಪಿತಮ್" ರಘುಂ ೪-೪೮. 4. ಉಪಾಯ, ದಾರಿ. "ತದ್ಗುಹಿತಕುಡ್ಮಬಃ ಶಾಂತಿಮಾರ್ಗೋತ್ಸುಕೋಭೂತ್" ರಘುಂ ೭-೪೧. 5. ಗ್ರಂಥದ ಶೈಲಿ, ರೀತಿ. "ಅಸ್ಯನೇಕೋ ಗಿರಾಂ ಮಾರ್ಗಃ ಸೂಕ್ತಮೇದಃ ಪರಸ್ಪರಮ್. ತತ್ರ ವೇದಭಗೋಡೀಯೋ ವರ್ಣಯೇತೇ ಪ್ರಸ್ತುತಾಂತರೋ" ಕಾವ್ಯಾಂ ೧-೪೦. 6. ಆಚಾರ, ಸಂಪ್ರದಾಯ, ಪದ್ಧತಿ. ಕುಲಮಾರ್ಗಃ. 7. ಮೃಗಮದ, ಕಸೂರಿ. 8. ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷಮಾಸ. ಮೃಗೋ ಮೃಗಶಿರಾಃ ತದ್ವಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯತ್ರ—ಮೃಗ "ಅನ್" (೪-೨-೨೧). 9. ಅನ್ವೇಷಣೆ, ಹುಡುಕುವುದು. 10. ಮೃಗಶೀರ್ಷ ನಕ್ಷತ್ರ. "ಮಾರ್ಗೋ ಮೃಗಮದೇ ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷೇ ಚಾನ್ವೇಷಣಾಧವನೋಃ" ಮೇದಿಂ. "ಮಾರ್ಗೋ ಮಾಸೇ ಮೃಗಮದೇಽನ್ವೇಷಣೇ ಪಥಿ ಸೌಮ್ಯಮೇ" ನಾನಾರ್ಥರಂ. 11. ನುಟಕದಲ್ಲಿ ತತ್ತ್ವಾರ್ಥವನ್ನು ಹೇಳುವುದು, ನಿಜವಾದ ಸಂಗತಿಯನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು. "ತತ್ತ್ವಾರ್ಥಿಕಥನಂ ಮಾರ್ಗಃ" ಸಾಂ ೬೦. ಇದು ಗರ್ಭಸಂಧಿಯ ಒಂದು ಅಂಗ. 12. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಉಪಾಸಕಃ ಮೃಗ್ಯತೇ—ಮಾರ್ಗ (ಅನ್ವೇಷಣೆ) ಕರ್ಮಂ "ಘಮ್" (೩-೩-೧೯). "ಉಪಾಸಕಂ ಮೃಗ್ಯಮಾಣೋ ಮಾರ್ಗೋ ವಾಚ್ಛಿತಸಿದ್ಧಯೇ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ. "ವಿಕ್ಷರೋ ರೋಹಿತೋ ಮಾರ್ಗಃ" ವಿಂ ಸಂ.

**ಮಾರ್ಗಕ ಮಾರ್ಗಕ (ಪುಂ)** ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷಮಾಸ.

**ಮಾರ್ಗಣ ಮಾರ್ಗಣ (ಪುಂ)** 1. ಶರ, ಬಾಣ. ಮಾರ್ಗಯತಿ — ಮಾರ್ಗ (ಅನ್ವೇಷಣೆ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪). "ವಿದಧೇ ವಿಸತತಃಪಿಲ್ಲತಾಭಃ ಕಿರಣೈರ್ವ್ಯೋಮನಿ ಮಾರ್ಗಣಸ್ಯ ಮಾರ್ಗಃ" ಕಿರಾಂ ೧೩-೨೨. 2. ಯಾಚಕ, ಭಿಕ್ಷುಕ. ಮಾರ್ಗತಿ—ಮಾರ್ಗ "ಯುಚ್" (೩ಂ ೨-೭೮). (ನಂ) 3. ಅನ್ವೇಷಣೆ, ಹುಡುಕುವುದು. 4. ಯಾಚನೆ, ಭಿಕ್ಷೆಬೇಡುವುದು. "ಮಾರ್ಗಣಂ ಯಾಚನೇಽನ್ವೇಷೇ ಮಾರ್ಗಣಸ್ತು ಶರೇಽರ್ಥಿನಿ" ಹೇಮಂ. —ಣಾ —ಣಾಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 5. ಅನ್ವೇಷಣೆ, ಹುಡುಕುವುದು. "ಮಾರ್ಗಣಾ ತು ಗವೇಷಣಾ. ಪರ್ಯೇಷಣಾ ಪರಿಕ್ಷಾ ಚ" ವೈಜಂ.



**ಮಾರ್ಗಣೀಯ ಮಾರ್ಗಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಹುಡುಕಲ್ಪಡುವ. 2. ಹುಡುಕಬೇಕಾದ. 3. ಹುಡುಕಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 4. ಹುಡುಕಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಮಾರ್ಗ (ಅನ್ವೇಷಣೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೨-೯೬) | "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) | ಮಾರ್ಗಿತವ್ಯ: ಮಾರ್ಗಿತವ್ಯ: 5. ಬೇಡಲ್ಪಡುವ. 6. ಬೇಡಬೇಕಾದ. 7. ಬೇಡಬಹುದಾದ. 8. ಬೇಡಲು ಅರ್ಹವಾದ.

**ಮಾರ್ಗತ್ ಮಾರ್ಗತ್** (ವಿಂ) 1. ಹುಡುಕುತ್ತಿರುವ. ಮಾರ್ಗ (ಅನ್ವೇಷಣೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | 2. ಬೇಡುತ್ತಿರುವ, ಯಾಚಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಶಾನತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಮಾರ್ಗ-ಮಾಣ: ಮಾರ್ಗಮಾಣ:

**ಮಾರ್ಗಯತ್ ಮಾರ್ಗಯತ್** (ವಿಂ) ಹುಡುಕಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅನ್ವೇಷಣೆ ಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಮಾರ್ಗ (ಅನ್ವೇಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಶಾನತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಮಾರ್ಗಯಮಾಣ: ಮಾರ್ಗಯಮಾಣ:

**ಮಾರ್ಗಣಕ ಮಾರ್ಗಣಕ** (ಪುಂ) ಯಾಚಕ, ಭಿಕ್ಷುಕ. ಮಾರ್ಗಣ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" |

**ಮಾರ್ಗತೋರಣ ಮಾರ್ಗತೋರಣ** (ನಂ) ರಸ್ತೆಯಲ್ಲಿ ವಿಜಯೋತ್ಸವದ ನಿಮಿತ್ತ ಕಟ್ಟುವ ತೋರಣ. "ಧನ್ವಿನಿ ತಮೃಷಿಮನ್ವಗಚ್ಛತಾಂ ಪೌರದೃಷ್ಟಿಕ್ರಮಮಾರ್ಗತೋರಣಿ" ರಘುಂ ೧೧-೫ |

**ಮಾರ್ಗದರ್ಶಕ ಮಾರ್ಗದರ್ಶಕ** (ವಿಂ) ದಾರಿಯನ್ನು ತೋರಿಸುವವನು, ಮಾರ್ಗ ದರ್ಶಯತಿ — ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) | -ದರ್ಶಿನ್ -ದರ್ಶಿನ್. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಹೀಪ್" (೪-೧-೫) | -ದರ್ಶಿನಿ -ದರ್ಶಿನೀ.

**ಮಾರ್ಗದರ್ಶನ ಮಾರ್ಗದರ್ಶನ** (ನಂ) 1. ದಾರಿ ತೋರಿಸುವುದು. 2. ಉಪಾಯವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವುದು.

**ಮಾರ್ಗವೇನುಕ ಮಾರ್ಗವೇನುಕ** (ನಂ) ಒಂದು ಯೋಜನ.

**ಮಾರ್ಗಶೋಧಕ ಮಾರ್ಗಶೋಧಕ** (ವಿಂ) ಮಾರ್ಗವನ್ನು ಸುಗಮವಾಗಿ ಮಾಡುವವನು, ರಾಜ ಮತ್ಸ್ಯ ಅವನ ಪರಿವಾರದವರಿಗೆ ದಾರಿಯನ್ನು ಸಂಚಾರಯೋಗ್ಯವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಡುವವನು. ಮಾರ್ಗ ಶೋಧಯತಿ — ಶುಭ (ಶುದ್ಧಿ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |

**ಮಾರ್ಗಶೋಧನ ಮಾರ್ಗಶೋಧನ** (ನಂ) ದಾರಿಯನ್ನು ಸುಗಮವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ಮಾರ್ಗಸ್ಯ ಶೋಧನಮ್ |

**ಮಾರ್ಗಶಿರ ಮಾರ್ಗಶಿರ** (ಪುಂ) ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷಮಾಸ. ಮೃಗಶಿರಾನಕ್ಷತ್ರಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯತ್ರ — ಮೃಗಶಿರಾ "ಅನ್" (೪-೨-೨೧) | "ಶುಕ್ಲೇ ಮಾರ್ಗಶಿರೇ ಪಕ್ಷೇ ಯೋಷಿಃಪುರ್ತುರನುಜಯಾ | ಆರಭೇತ ವ್ರತಮಿದಂ ಸರ್ವಕಾಮಿಕಮಾದಿತ:" ಭಾಗಂ ೬-೧೯-೨ |

**ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷ ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷ ಮಾಸ, ಚಾಂದ್ರಮಾನದ ಒಂಬತ್ತನೆಯ ತಿಂಗಳು. ಮೃಗಶೀರ್ಷೇಣ ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ ಅಸ್ಮಿನ್ "ಅನ್" (೪-೨-೨೧) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷಿ ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷೀ. 2. ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷ ಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ.

**ಮಾರ್ಗಿಕ ಮಾರ್ಗಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಬೇಟೆಗಾರ, ಮೃಗಗಳನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವವನು. ಮೃಗಾನ್ ಹನ್ತಿ — "ಠಕ್" (೪-೪-೩೫) | 2. ಪಥಿಕ, ದಾರಿ ನಡೆಯುವವನು. ಮಾರ್ಗೋಸ್ತಯಸ್ಯ "ಠನ್" (೫-೨-೧೧೫) |

**ಮಾರ್ಗಿತ ಮಾರ್ಗಿತ** (ವಿಂ) 1. ಹುಡುಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಮಾರ್ಗ (ಅನ್ವೇಷಣೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಬೇಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಮಾರ್ಗ್ಯ ಮಾರ್ಗ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಹುಡುಕಲ್ಪಡುವ. 2. ಹುಡುಕಬೇಕಾದ. ಮಾರ್ಗ (ಅನ್ವೇಷಣೆ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) | 3. ಬೇಡಲ್ಪಡುವ. 4. ತೊಳೆಯಲ್ಪಡುವ, ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ತೊಳೆಯಬೇಕಾದ, ಹೋಗಲಾಡಿಸಬೇಕಾದ. ಮೃಜು (ಶುದ್ಧಿ) ವಾ "ಕೃಪ್" ಪಕ್ಷೇ "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) | "ಮನ್ಯುಸ್ತಸ್ಯ ತ್ವಯಾ ಮಾರ್ಗ್ಯೋ ಮೃಜ್ಯ: ಶೋಕಶ್ಚ ತೇನ ತೇ" ಭट्टಿಂ ೬-೫೬ |

**ಮಾರ್ಜ ಮಾರ್ಜ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ರೆಡಕ, ಅಗಸ.

**ಮಾರ್ಜಕ ಮಾರ್ಜಕ** (ಪುಂ) 1. ತೊಳೆಯುವವನು, ಶುದ್ಧ ಮಾಡುವವನು. ಮೃಜುಷ್ (ಶುದ್ಧಿ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | 2. ಉಜ್ಜುವವನು, ಬೆಳಗುವವನು. 3. ಅಳಿಸುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಠಾಪ್" (೪-೧-೪) |

**ಮಾರ್ಜತ್ ಮಾರ್ಜತ್** (ವಿಂ) 1. ಶುದ್ಧಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ತೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ. ಮೃಜುಷ್ (ಶುದ್ಧಿ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | 2. ಉಜ್ಜುತ್ತಿರುವ, ತಿಕ್ಕಿ, ಶುಭ್ರಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಅಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಹೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ತೀ -ತೀ.

**ಮಾರ್ಜನ ಮಾರ್ಜನ** (ಪುಂ) 1. ಲೋಧ್ರವೃಕ್ಷ. (ನಂ) 2. ತೊಳೆಯುವುದು, ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು. ಮೃಜು (ಶೌಚಾಲಂಕಾರಯೋ:) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | "ಸ ವೆ ಮನ: ಕೃಷ್ಣಪದಾರವಿಂದಯೋ: ವಚಾಸಿ ವೈಕುಣ್ಠಗುಣಾನುವರ್ಣನೇ | ಕರೋ ಹರೇಮಂದಿರಮಾರ್ಜನಾದಿಷು ಶ್ರುತಿ ಚಕಾರಾಚ್ಯುತಸತ್ಕಥೋದಯೇ" ಭಾಗಂ ೯-೪-೧೮ | 3. ಉಜ್ಜುವುದು. 4. ಅಳಿಸುವುದು, ತೊಡೆಯುವುದು, ಒರೆಸುವುದು. 5. ಪೋಕ್ಷಿಸುವುದು, ಮಂತ್ರಿಸಿದ ನೀರನ್ನು ಕೈಯಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಪೋಕ್ಷಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 6. ಶುದ್ಧಮಾಡುವ, ತೊಳೆಯುವ. 7. ಅಳಿಸುವ, ತೊಡೆದುಹಾಕುವ. 8. ಉಜ್ಜುವ. 9. ಪೋಕ್ಷಿಸುವ. ಮೃಜು "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) |



**ಮಾರ್ಜನಾ ಮಾರ್ಜನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮದ್ದಳೆಯ ಶಬ್ದ, ಮೃದಂಗದ ಶಬ್ದ. ಮಾರ್ಜ (ಶಬ್ದ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಯುಚ್" (3-3-109). ಮೃದಂಗದ ಧ್ವನಿಯು (ಮಾರ್ಜನೆಯು) (1) ಮಾಯೂರೀ. (2) ಅರ್ಧಮಾಯೂರೀ ಮತ್ತು (3) ಕರ್ಮಾರವಿ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. "ಮಾಯೂರೀ ಚಾರ್ಧ-ಮಾಯೂರೀ ತಥಾ ಕರ್ಮಾರವೀತಿ ಚ | ತಿಸ್ತಸ್ತು ಮಾರ್ಜನಾ ಜ್ಞೇಯಾಃ ಪುಷ್ಕರೇಷು ಸ್ವರಾಶ್ರಯಾಃ" ಭಂ ನಾಂ | "ನಿರ್ಹಾರ್ವಿದ್ಯುಪಹಿತ-ಮಧ್ಯಮಸ್ವರೋತ್ಥಾ ಮಾಯೂರೀ ಮದಯತಿ ಮಾರ್ಜನಾ ಮನಾಸಿ" ಮಾಲಂ 1-21. 2. ಶುದ್ಧಮಾಡುವಿಕೆ, ತೊಳೆಯುವಿಕೆ, ಬೆಳಗುವಿಕೆ. -ನಿ -ಸೀ. 3. ಬರಲು, ಕಸಬರಿಕೆ, ಪೊರಕೆ.

ಮಾರ್ಜಯತೇಜಯಾ—ಮೃಜು (ಶುದ್ಧ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-110) |

**ಮಾರ್ಜನೀಯ ಮಾರ್ಜನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ತೊಳೆಯಲ್ಪಡುವ, ಶುದ್ಧಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಉಜ್ಜಲ್ಪಡುವ, ಅಳಿಸಲ್ಪಡುವ, ಒರೆಸಲ್ಪಡುವ. 3. ತೊಳೆಯಬೇಕಾದ. 4. ಅಳಿಸಬೇಕಾದ. ಮೃಜು (ಶೌಚಾಲಂಕಾರಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) | "ತವ್ಯಃ" (3-1-96) | ಮಾರ್ಜಿತವ್ಯಃ ಮಾರ್ಜಿತವ್ಯಃ. ಮೃಜು + ಣಿಚ್ "ತವ್ಯಃ" (3-1-96) | ಮಾರ್ಜಯಿತವ್ಯಃ ಮಾರ್ಜಯಿತವ್ಯಃ.

**ಮಾರ್ಜಯತ್ ಮಾರ್ಜಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಶುದ್ಧಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ತೊಳೆಯಿಸುತ್ತಿರುವ. ಮೃಜುಷ್ (ಶುದ್ಧ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124) | 2. ಉಜ್ಜಿಸುತ್ತಿರುವ, ತಿಕ್ಕಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ತೊಡೆದುಹಾಕಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ತೀಪ್" (4-1-6) | -ಯಂತೀ -ಯಂತೀ. "ಶಾನತ್" (3-2-124) | -ಯಮಾನಃ -ಯಮಾನಃ.

**ಮಾರ್ಜಾರ ಮಾರ್ಜಾರ** (ಪುಂ) 1. ಬೆಕ್ಕು, ಕೊತ್ತಿ. ಮಾರ್ಜಿ ಮುಖಮ್—ಮೃಜು (ಶುದ್ಧ) "ಆರನ್" (3-1-139) | "ಕಪಾಲೇ ಮಾರ್ಜಾರಃ ಪಯ ಇತಿ ಕರಾನ್ ಲೇಡಿ ಶಶಿನಃ" ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ 10 | 2. ಕಾಡುಬೆಕ್ಕು. 3. ಪುನುಗುಬೆಕ್ಕು. "ಅಥ ಮಾರ್ಜಾರಃ ಸ್ಯಾತ್ ಸ್ವರಾಶಬಿಡಾಲಯೋಃ" ಹೇಮಂ |

**ಮಾರ್ಜಾರಿಕ ಮಾರ್ಜಾರಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಬೆಕ್ಕು. 2. ನವಿಲು. ಮಾರ್ಜಾರಿ ಸಂಜ್ಞಾಯಾಂ "ಕನ್" (4-3-147) | "ಪ್ರಚಲಾಕೀ-ಸಿತಾಪಾಙ್ಗುಶಿಖಾಚಲಗಲ್ಪತಾಃ | ಮಾರ್ಜಾರಿಕಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಮಾರ್ಜಾರಿಕಂಠ ಮಾರ್ಜಾರಿಕಂಠ** (ಪುಂ) ಮಯೂರಂ, ನವಿಲು. ಮಾರ್ಜಾರಿಸ್ಯೇವ ಕಂಠ ಕಂಠಸ್ವರೋಜ್ಯ | "ಮಾರ್ಜಾರಿಕಂಠಃ ಕೇಕಾಲಿವಿಚ್ಛಿರೋ ನರ್ತನಪ್ರಿಯಃ" ವೈಜಂ |

**ಮಾರ್ಜಾರಿಕಣಿ ಮಾರ್ಜಾರಿಕಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಾಮುಂಡಾ ದೇವಿ. "ಮಾರ್ಜಾರಿಕಣಿ ಚಾಮುಂಡಾ ಕರ್ಣಮೋಟಿಶ್ಚ ಚರ್ವಿಕಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಮಾರ್ಜಾರೀ ಮಾರ್ಜಾರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಬೆಕ್ಕು. 2. ಪುನುಗು ಬೆಕ್ಕು. 3. ಕಸೂರಿ.

**ಮಾರ್ಜಾರೀಯ ಮಾರ್ಜಾರೀಯ** (ಪುಂ) 1. ಶೂದ್ರ. 2. ಬಿಡಾಲ, ಬೆಕ್ಕು. 3. ದೇಹವನ್ನು ಶುದ್ಧಗೊಳಿಸುವುದು, ಶರೀರವನ್ನು ತೊಳೆದು ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು. "ಮಾರ್ಜಾರೀಯಃ ಸ್ಮೃತಃ ಶೂದ್ರೇ ಬಿಡಾಲೇ ಕಾಯಶೋಧನೇ" ಮೇದಿಂ | 4. ಯಾಗ ಪಾತ್ರೆಗಳನ್ನು ತೊಳೆಯುವ ಸ್ಥಳ. "ಆತೌ ಚಾರೌ ಭೀತಿವೇಶೋ ಮಾರ್ಜಾರೀಯೋಽಕ್ಷಶೋಧನೇ" ವೈಜಂ | (ವಿಂ) 5. ರಮ್ಯವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ.

**ಮಾರ್ಜಾಲೀಯ ಮಾರ್ಜಾಲೀಯ** (ಪುಂ) 1. ಶೂದ್ರ. 2. ಬಿಡಾಲ, ಬೆಕ್ಕು. 3. ಶರೀರಶೋಧನೆ. ಮೃಜು (ಶುದ್ಧ) "ಆಲೀಯಚ್" (3-1-113) | "ಮಾರ್ಜಾಲೀಯಃ ಶೂದ್ರ-ಬಿಡಾಲಯೋಃ | ಶರೀರಶೋಧನೇ" ಹೇಮಂ |

**ಮಾರ್ಜಿತ ಮಾರ್ಜಿತ** (ವಿಂ) 1. ತೊಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಶುದ್ಧಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಮೃಜು (ಶೌಚಾಲಂಕಾರಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102) | 2. ಅಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಒರೆಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಶಬ್ದಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಮಾರ್ಜ (ಶಬ್ದ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102) |

**ಮಾರ್ಜಿತವ್ಯ ಮಾರ್ಜಿತವ್ಯ** (ವಿಂ) "ಮಾರ್ಜನೀಯ" ನೋಡಿ.

**ಮಾರ್ಜಿತಾ ಮಾರ್ಜಿತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೋಷ (ಶುಂಠಿ ಹಿಪ್ಪಲಿ ಮತ್ತು ಮೆಣಸು) ಚತುರ್ಜಾತ (ಲವಂಗಪಟ್ಟಿ, ಯಾಲಕ್ಕಿ, ಜಾಪತ್ರೆ ಮತ್ತು ನಾಗಕೇಸರಿ) ಗುಡ (ಬೆಲ್ಲ) ಹಸಿಶುಂಠಿ ಮತ್ತು ಜೀರಿಗೆ ಇವುಗಳಿಂದ ಬೆರೆತ (ಹಸಿ) ಮೊಸರು. "ಅಪಕ್ವತಕ್ರಂ ಸಂಯೋಜಿತುರ್ಜುತಗುಡಾರ್ಧಕಮ್ | ಸರ್ಜೀರಕಂ ರಸಾಲಃ ಸ್ಯಾನ್ಮಾರ್ಜಿತಾ" ವೈಜಂ | 2. ಒಂದು ವಿಧ ಭಕ್ಷ್ಯ. ಅರ್ಧ ಅರ್ಧ ಹಳೆಯ (ಹುಳಿ) ಮೊಸರು ಶುಭ್ರವಾದ ಕಲ್ಲುಸಕ್ಕರೆ ಹದಿನಾರು ಪಲದ ತೂಕ ಒಂದು ಪಲ ತುಪ್ಪ, ಒಂದು ಪಲ ಜೇನುತುಪ್ಪ ಎರಡು ಕರ್ಷ ಮೆಣಸು, ಅರ್ಧ ಪಲದ ತೂಕ ಶುಂಠಿ ಚತುರ್ಜಾತದ ಅರ್ಧ ಪಲ. ಇವುಗಳನ್ನು ಪುಡಿಮಾಡಿ ಅರೆದು ಪಚ್ಚಕರ್ಪೂರದ ವಾಸನೆಯನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಮಾಡಿದ ಒಂದು ಭಕ್ಷ್ಯ.

**ಮಾರ್ತಂಡ ಮಾರ್ತಂಡ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಮೃತೇಣ್ವೇ ಭವಃ | ಶಕಂ | 2. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ. 3. ಸೂಕರ, ಹಂದಿ. "ಮಾರ್ತಂಡಃ ಕ್ರೋಡಸೂರ್ಯಯೋಃ" ಮೇದಿಂ | "ಪುನರ್ಮಾರ್ತಂಡಮಾಭರತ್" ಈ ಮಂತ್ರದಲ್ಲಿ ದೀರ್ಘಮಧ್ಯಪ್ರಯೋಗವಿರುವುದರಿಂದ "ಮಾರ್ತಂಡಃ" ಎಂದೂ ರೂಪವುಂಟು.

**ಮಾರ್ತಂಡವಲ್ಲಭಾ ಮಾರ್ತಂಡವಲ್ಲಭಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ.



**ಮಾರ್ತಿಕ ಮಾರ್ತಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಹರಿವೆ, ಮಣ್ಣಿನ ಗಡಿಗೆ. ಮೃತ್ತಿಕಾಢಾ ವಿಕಾರ: "ಠಕ್" (೪-೩-೧೩೪) | (ವಿಂ) 2. ಮಣ್ಣಿನಿಂದ ತಯಾರಾದ.

**ಮಾರ್ತಿಕ ಮಾರ್ತಿಕ** (ನಂ) ಪಟ್ಟಣ, ನಗರ. "ಮಾರ್ತಿಕ ಪತ್ತನಂ ವಿಧು: " ಹಾರಾಂ |

**ಮಾರ್ತಿಕ ಮಾರ್ತಿಕ** (ಪುಂ) ಮದ್ದಳೆಯನ್ನು ಬಾರಿಸು ವವನು. ಮೃದ್ವಾಭಾದನಂ ಶಿಲ್ಪಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೫೫) |

**ಮಾರ್ತಿಕ ಮಾರ್ತಿಕ** (ನಂ) 1. ಮೃದುತ್ವ, ಕೋಮಲತೆ, ಸುಕುಮಾರತ್ವ. ಮೃದೋರ್ಮಾ: ವಾ "ಅನ್" (೫-೧-೧೨೨) | ಪಕ್ಷೆ "ಇಮನಿಚ್" | ಇದಿಮಾ ಮೃದಿನಾ. "ತದಾನಪೇಕ್ಷ್ಯ ಸ್ವಶರೀರಮಾರ್ತಿಕಂ ತಪೋ ಮಹತ್ಸಾ ಚರಿತುಂ ಪ್ರಚಕ್ರಮೆ" ಕುಮಾಂ ೫-೧೮ | 2. ಮೃದುಸ್ವಭಾವ, ಸೌಮ್ಯತೆ, ಶಾಂತವಾಗಿರು ಁಕೆ. "ಸಮವೃತ್ತಿರಪಿತಿ ಮಾರ್ತಿಕಂ ಸಮಯೇ ಯಶ್ಚ ತನೋತಿ ತಿಗ್ಮ- ತಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೩೮ | 3. ದಯೆ, ಕನಿಕರ, ಮನ ಕರಾಂ ಁಕೆ. "ಅತಿಸತ್ಪ್ರಮಯೋಽಪಿ ಮಾರ್ತಿಕಂ ಭಜತೇ ಕೇವ ಕಥಾ ಶರೀರಣಾಮ್" ರವುಂ ೮-೪೩ |

**ಮಾರ್ತಿಕ ಮಾರ್ತಿಕ** (ಪುಂ) ದ್ರಾಕ್ಷಿಹಣ್ಣಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟ ಮದ್ಯ. ಮೃದ್ವಿಕಾ ದ್ರಾಕ್ಷಾ ತಸ್ಯಾ ವಿಕಾರ: "ಅನ್" (೫-೧-೧೩೪) | "ಮಠು ಮಾರ್ತಿಕಮದ್ವಯೋ: " ಅಮಂ |

**ಮಾರ್ತಿಕ ಮಾರ್ತಿಕ** (ವಿಂ) ಮರ್ಮವನ್ನು ಅರಿತವನು, ಒಳರಹಸ್ಯವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. "ಪರಿಣತಮಕರಂದಮಾರ್ತಿಕಾಸ್ತೇ ಜಗತಿ ಭವಂತು ಚಿರಾಯುಷೋ ಮಿಲಿನ್ದಾ: " |

**ಮಾರ್ತಿಕ ಮಾರ್ತಿಕ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶುದ್ಧಮಾಡುವಿಕೆ, ಶೋಧನೆ, ತೊಳೆಯುವುದು, ತಾರಿಸುವುದು. ಮೃಜ್ (ಶುದ್ಧಿ) "ಕ್ವಿನ್" (೩-೩-೯೪) | 2. ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯದಿಂದ ದೇಹಕ್ಕೆ ಲೇಪನ ಮಾಡುವುದು. "ಮಾರ್ತಿಕಶ್ಚರ್ಚಿ ಚ ಚರ್ಚಿಕಯಂ ಸಮಾಲಂಬನ- ಮಿತ್ಯಪಿ" ವೈಜಂ |

**ಮಾಲ ಮಾಲ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಮಾ ಲಕ್ಷ್ಮೀ ಲಾತಿ — ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩) | 2. ಜನ, ಮನುಷ್ಯ. 3. ಮೈಚ್ಛಾಜಾತಿಯವನು. (ನಂ) 4. ಕಪಟ, ರಕ್ಕು, ಬೂಟಾಟಿಕೆ. 5. ಅರಣ್ಯ, ಕಾಡು. "ಮಾಲಂ ತು ಕಪಟೇ ವನೇ | ಮಾಲೋ ಜನೇ ಸ್ಯಾತ್" ಹೇಮಂ | 6. ಉನ್ನತವಾದ ಪ್ರದೇಶ, ಎತ್ತರವಾದ ಭೂಮಿ. "ಮಾಲಮುತ್ರತಮ್:" ನಾನಾರ್ಥರಂ | "ಸದ್ವ: ಸೀರೋಕ್ತವಣಸುರಮಿ ಕ್ಷೇತ್ರಮಾರುಹ್ಯ ಮಾಲಮ್" ಮೇಘಂ | 7. ಏಳು ಅಂತರ ದ್ವೀಪಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಏಳು ಅಂತರ ದ್ವೀಪಗಳು: (1) ವೈದ್ಯುತ್ಪತ, (2) ಮಾಲ, (3) ಮೈನ, (4) ಪ್ರತ, (5) ಜಾಲ, (6) ನಾರ ಮತ್ತ, (7) ಆಸಂಗ. ಈ ಅಂತರ ದ್ವೀಪಗಳು ಭಾರತಕ್ಕೆ

ದಕ್ಷಿಣದಲ್ಲಿರುವುವು. "ಅಥಾಪ್ಯನ್ಯೇಽಂತರದ್ವೀಪಾ: ಭಾರತಾತ ಸತ್ತ ದಕ್ಷಿಣಾ: | ಏಕೋ ವೈದ್ಯುತ್ವತೋ ನಾಮ ವಿದ್ಯುತ್ವಾನ್ ಯತ್ರ ಪರ್ವತ: | ಮಾಲಂ ಮೇನಂ ವ್ರತಂ ಜಾಲಂ ನಾರಾಸಂಜ್ಞೆ ಪರಾಣಿ ಷಟ್" ವೈಜಂ | 8. ಕ್ಷೇತ್ರ, ಭೂಮಿ. "ಮಾಲಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್" ಮೇದಿಂ | 9. ಅರಿದಳ.

**ಮಾಲಕ ಮಾಲಕ** (ಪುಂ) 1. ಬೇವಿನಮರ. ಮಲತೆ — ಮಲ (ಧಾರಣೆ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | "ಅರಿಷ್ಟ: ಸರ್ವತೋ- ಭದ್ರಹಿಗುನಿರ್ಯಾಸಮಾಲಕಾ:" ಅಮಂ | 2. ಅರಣ್ಯ, ಕಾಡು. 3. ಸ್ಥೂಲಪದ್ಮ, ನೆಲದಾವರೆ. 4. ತೆಂಗಿನ ಚಿಪ್ಪಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಪಾತ್ರೆ.

**ಮಾಲತೀ ಮಾಲತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜಾಜಿಗಿಡ. ಮಾ ಲಕ್ಷ್ಮೀ ಲಾತಿ — ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩) | ಮಾಲಂ ವಿಷ್ಣುಂ ಅತತಿ — ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಙೀಫ್" (೪-೧-೪೧) | "ಪರಿಸುರಪತಿಸುನುಧಾಮ ಸದ್ವ: ಸಮುಪದವನ್ಮುಕುಲಾನಿ ಮಾಲತೀನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೦-೨೦ | 2. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. 3. ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಬೆಳದಿಂಗಳು. 4. ರಾತ್ರಿ. 5. ಯುವತಿ, ತರುಣಿ. 6. ಕಾಜಿಗಿಡ. 7. ಒಂದು ನದಿ. "ಮಾಲತೀ ಯುವತೀ ಕಾಕಮಾಚ್ಯಾಂ ಜಾತೀವಿಶಲ್ಯಯೋ: | ಜ್ಯೋತ್ಸನಾಢಾಂ ನಿಶಿ ನದ್ಯಾಂ ಚ" ಹೇಮಂ |

**ಮಾಲತೀತೀರಜ ಮಾಲತೀತೀರಜ** (ಪುಂ) ಟಂಕಣ, ಬಿಳಿಗಾರ.

**ಮಾಲತೀಪತ್ರಿಕಾ ಮಾಲತೀಪತ್ರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಾಯಿ ಪತ್ರೆ.

**ಮಾಲತೀಫಲ ಮಾಲತೀಫಲ** (ನಂ) ಜಾಯಿಕಾಯಿ.

**ಮಾಲತೀಮಾಧವ ಮಾಲತೀಮಾಧವ** (ನಂ) ಭವಭೂತಿ ಕವಿ ರಚಿತವಾದ ಒಂದು ರೂಪಕ (ಪ್ರಕರಣ).

**ಮಾಲಯ ಮಾಲಯ** (ಪುಂ) 1. ಗಂಧದ ಮರ. ಮಲಯೆ ಭವ: "ಅನ್" (೪-೩-೫೩) | (ವಿಂ) 2. ಮಲಯ ಪರ್ವತ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಮಲಯಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) |

**ಮಾಲವ ಮಾಲವ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಮಾಲವದೇಶ, ಮಧ್ಯ ಭಾರತದಲ್ಲಿರುವ ಈಗಿನ ಮಾಲ್ವ. 2. ಮಾಲವ ದೇಶದ ಜನರು.

**ಮಾಲವಕ ಮಾಲವಕ** (ಪುಂ) ಗಂಡನು ಬದುಕಿರುವಾಗ ಜಾರಿನಿಂದ ಶೂದ್ರ ಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. "ಶೂದ್ರಕುಂಡೋ ಮಾಲವಕ:" ವೈಜಂ |

**ಮಾಲಾ ಮಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಾಲೆ, ಹಾರ. ಮಾ ಷೋಭಾ ಲಾತಿ — ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩) | 2. ಪೆಚ್ಚಿ, ಸಾಲು, ಶ್ರೇಣಿ. "ದದೌ ಭುಜಾಲಮ್ಬಮಿವಾತ್ತಶೀಕರಸ್ತರಜ್ಞ-



ಮಾಲಾಂತರಗೋಚರೋನಿಲ: "ಕಿರಾಂ ೮-೨೮ | 3. ಜಪಸರ, ಅಕ್ಷಮಾಲೆ. 4. ಗೆರೆ, ಪಟ್ಟಿ, ಎಳೆ.

• ಮಾಲಾಕೃಷ್ಣ ಮಾಲಾಕಂಠಿ (ಪುಂ) ಅಪಾಮರ್ಗ, ಉತ್ತರೇಣ ಗಿಡ.

ಮಾಲಾಕಾರ ಮಾಲಾಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಹೊವಾಡಿಗ, ಹೊವನ್ನು ಮಾರುವವನು. 2. ಹೊವಿನ ಮಾಲೆಯನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. ಮಾಲಾಂ ಕರೋತಿ—ಡುಕ್ರಂ (ಕರಣ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) |

ಮಾಲಾತೃಣ ಮಾಲಾತೃಣ (ನಂ) ಕಾದಂಬೆ ಹುಲ್ಲು, ಮಾರವಳಿ ಹುಲ್ಲು.

ಮಾಲಾದೀಪಕ ಮಾಲಾದೀಪಕ (ನಂ) ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ, ದೀಪಕ ಮತ್ತು ಏಕಾವಳಿ ಅಲಂಕಾರಗಳ ಲಕ್ಷಣಗಳು ಇರುವಲ್ಲಿ ಮಾಲಾದೀಪಕಾಲಂಕಾರ. "ದೀಪಕ-ಕಾವಲಿಯೋಗಾನ್ಮಾಲಾದೀಪಕಮುಚ್ಯತೇ" ಚಂದ್ರಾಂ |

ಮಾಲಿಕ ಮಾಲಿಕ (ಪುಂ) 1. ಮಾಲಾಕಾರ. ಮಾಲಾ ಪಣ್ಯಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೫) | 2. ಒಂದು ಹಕ್ಕಿ. 3. ಬಣ್ಣ ಬಳಿಯುವವನು.

ಮಾಲಿಕಾ ಮಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಾರ, ಮಾಲೆ, ಸರ. 2. ಪಜ್ಜಿ, ಶ್ರೇಣಿ, ಸಾಲು. 3. ಪುತ್ರಿ, ಮಗಳು. 4. ಕಂಠಾಭರಣ. 5. ಒಂದು ನದಿ. 6. ವೀರಜಾಜಿ, ಹೆಜ್ಜಾಜಿ. "ಮಾಲಿಕಾ ಸಪ್ತಲಾ ಪುತ್ರಿಗ್ರೀವಾಲಂಕರಣೇಷು ಚ | ಪುಷ್ಪಮಾಲೈ ನದೀಭೇದೇ" ಮೇದಿಂ | 7. ಸುಣ್ಣ ಬಳಿದಿರುವ ಉಪ್ಪರಿಗೆ ಮನೆ. "ಸೌಧೋಸ್ತಗ್ರೀ ಸುಧಯಾ ಶ್ವೇತಂ ಮೇಠೋ ಹಮ್ಯಂ ಚ ಮಾಲಿಕಾ" ವೈಜಂ | 8. ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. "ಮಾಧವೀ ಚ ಮಧು ಮಾಧವೀಕಂ ಕಾಪಿಶಿಕಾ ಚ ಮಾಲಿಕಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | "ಆವಲಿ: ಪದ್ಧತಿ: ಪಙ್ಕ್ತೀರಾಲಿಲೇಖಾ ಚ ಮಾಲಿಕಾ" ವೈಜಂ |

ಮಾಲಿನ್ ಮಾಲಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಹೊವಾಡಿಗ, ಹೊವನ್ನು ಮಾರುವವನು. ಮಾಲಾ ಪಣ್ಯತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇತಿ:" (೪-೨-೧೧೬) | 2. ಮಾಲೆಯನ್ನು ಧರಿಸಿರುವವನು. ಮಾಲಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇತಿ:" | ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೫) |

ಮಾಲಿನಿ ಮಾಲಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊವಾಡಿಗನ ಹೆಂಡತಿ. 2. ಗೌರಿ, ಪಾರ್ವತಿ. 3. ಚಂಪಾನಗರ. 4. ಹದಿನೈದ ನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. "ನನಮಯಯುತೇಯ ಮಾಲಿನಿ ಭೋಗಿಲೋಕ:" ವೃಂ ೨೦ | ಇದರ ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ನ ನ ಮ ಯ ಯ  
||| ||| 000 100 100

"ಛಂದಶ್ರಮ್ಪಾ ಚ ಮಾಲಿನಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 5. ಮಾಲಿನೀ ನದಿ. 6. ವಿರಾಟನಗರದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ದ್ರೌಪದಿಯ ಹೆಸರು. 7. ಗಂಗಾನದಿ.

ಮಾಲಿನ್ಯ ಮಾಲಿನ್ಯ (ನಂ) ಕೊಳೆ, ಕೊಳಕು, ಕೆಡುಲ. ಮಲಿನಸ್ಯ ಭಾವ: "ವ್ಯಬ್" (೪-೧-೧೨೪) |

ಮಾಲ್ ಮಾಲು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಂಗಸು, 2. ಒಂದು ಲತೆ.

ಮಾಲ್ಮಾನ್ ಮಾಲ್ಮಾನ್ (ಪುಂ) 1. ಉಸರವಳ್ಳಿ ಹಾವು, ಚಿತ್ರಬಣ್ಣದ ಹಾವು. ಮಾಲ್ಮಾರೋಷಿ, ತತ್ರ ಧಾನಮಸ್ಯ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಧಾನಿ-ಧಾಣೀ. 2. ಒಂದು ಲತೆ.

ಮಾಲ್ಮೂರ ಮಾಲ್ಮೂರ (ಪುಂ) 1. ಬಿಲ್ವಪತ್ರ ಮರ. ಮಾಂ ಪರೇಶಾಂ ಲಕ್ಷ್ಮೀಂ ಲುನಾತಿ—ಲೂ (ಛೇದನೆ) "ರಕ್" ಬಾಹುಂ | "ವಿಲ್ವೇ ಶಾಂಡಿಲ್ಯಶಿಲೂಷಿ ಮಾಲ್ಮೂರಶ್ರೀಫಲಾವಪಿ" ಅಮಂ | 2. ಕಪಿತ್ಥ ವೃಕ್ಷ, ಬೇಲದ ಮರ.

ಮಾಲ್ಯ ಮಾಲ್ಯ (ನಂ) 1. ಪುಷ್ಪ, ಹೂವು. ಮಾಲಾयां ಸಾಧು "ಯತ್" (೪-೪-೧೮) | 2. ಹೊವಿನ ಮಾಲೆ, ಪುಷ್ಪದ ಹಾರ. ಮಾಲೇವ "ವ್ಯಬ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪) | "ಮಾಲ್ಯ ಮಾಲಾಕುಸುಮಯೋ:" ಹೇಮಂ | "ನರಾಧಿಪಮಾಲ್ಯಮಿವಾಸ್ಯ ಶಾಸನಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೨೧ |

ಮಾಲ್ಯವತ್ ಮಾಲ್ಯವತ್ (ಪುಂ) 1. ಸಪ್ತಕುಲಪರ್ವತಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. 2. ಮಾಲ್ಯವಂತ, ರಾವಣನ ಮಂತ್ರಿಗಳ ಲ್ಲೊಬ್ಬ. (ವಿಂ) 3. ಹೊವಿನ ಮಾಲೆಯನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ. ಮಾಲ್ಯಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪) |

ಮಾಶಬ್ದಿಕ ಮಾಶಬ್ದಿಕ (ವಿಂ) ಶಬ್ದವನ್ನು ಮಾಡಬೇಡ ಎಂದು ಹೇಳಿದವನು. ಮಾ ಶಬ್ದ ಕಾರ್ಷಿ: ಇತಿ ಯ ಆಹ ಸ: ಮಾಶಬ್ದಿಕ:—ಮಾಶಬ್ದ "ಠಕ್" (ವಾಂ ೪-೪-೧) |

ಮಾಷ ಮಾಷ (ಪುಂ) 1. ಉದ್ದಿನ ಗಿಡ. 2. ಉದ್ದು. "ಮಾಷಸ್ತು ಮಲದೊ ನಂದಿ" ವೈಜಂ | "ತೀಲೇಮ್ಯ: ಪ್ರತಿಯಂಚ್ಚತಿ ಮಾಷಾನ್" ಸಿಂ ಕೌಂ | 3. ಎಂಟು ಗುಲಗಂಜಿ ತೂಕದ ಚಿನ್ನ, ಒಂದು ಪಣದ 20 ನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. 4. ಮೂರ್ಖ, ತಿಳಿಗೇಡಿ, ದಡ್ಡ. 5. ಚರ್ಮದ ದೋಷ. "ಮಾಷೋ ಬ್ರಹ್ಮಾಂತರೇ ಮೂರ್ಖೋ ಮಾನವಾದೋಷಭೇದಯೋ:" ವಿಶ್ವಂ |

ಮಾಷಪರ್ಣಿ ಮಾಷಪರ್ಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡು ಉದ್ದಿನ ಗಿಡ. ಮಾಷಸ್ಯೇವ ಪರ್ಣಾನ್ಯಸ್ಯ |

ಮಾಷಪರ್ಪಟ ಮಾಷಪರ್ಪಟಿ (ಪುಂ) ಉದ್ದಿನ ಹವ್ಯಳ.

ಮಾಷವರ್ಧಕ ಮಾಷವರ್ಧಕ (ಪುಂ) ಸ್ವರ್ಣಕಾರ, ಅಕ್ಕಸಾಲಿಗ. ಮಾಷ ಮಾಷಪರಿಮಿತಂ ಸ್ವರ್ಣಂ ವರ್ಧಯತಿ—ವರ್ಧ (ಛೇದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |

ಮಾಷಾದ ಮಾಷಾದ (ಪುಂ) ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ.

ಮಾಷೀಣ ಮಾಷೀಣ (ನಂ) ಉದ್ದು ಬೆಳೆಯಲು ಯೋಗ್ಯ ವಾದ ಭೂಮಿ. ಮಾಷಾಣಾಂ ಭವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್—ಮಾಷ ವಾ "ಖಬ್" (೪-೨-೪) | ಪಕ್ಷೆ "ಯತ್" ಮಾಷ್ಯಮ್ |



**ಮಾಸ್ ಮಾಸ್** (ಪುಂ) 1. ಮಾಸ್, ತಿಂಗಳು. ಮಾಙ್ (ಮಾನೇ) "ಅಸಿ:" | ಬಾಹುಂ | ಮಾ: ಮಾಸೌ ಮಾಸ: | "ಚತುರ್ಥೆ ಮಾಸಿ ಕರ್ತವ್ಯಂ ಗೃಹಾಸ್ಥಿಕ್ರಮಣಂ ಶಿಶೋ:" ಮನುಂ ೨-೩೪ | 2. ಚಂದ್ರ.

**ಮಾಸ ಮಾಸ** (ಪುಂ) ಮಾಸ, ತಿಂಗಳು. ಮಸ್ಯತೇ ಪರಿಮೀಯತೇ-  
ನೆನ — ಮಸೌ (ಪರಿಮಾಣೇ) "ಘಙ್" (೩-೩-೧೨೧) |  
"ನ ಮಾಸೇ ಪ್ರತಿಪತ್ತಾಸೇ ಮಾಂ ಚೇನ್ಮರ್ತಾಸಿ ಮೇಞಿಲಿ" ಮೃದ್ವಿಂ  
೮-೯೫ | ಮಾಸವು ಚಂದ್ರ ಸಾವನ ಮತ್ತು ಸೌರಗಳೆಂದು  
ಮೂರು ವಿಧ. ಶುಕ್ಲ ಪ್ರತಿಪತ್ತಿ (ಪಾಡ್ಯ) ನಿಂದ ಆಮಾವಾಸ್ಯೆ  
ವರೆಗೆ ಚಂದ್ರಮಾಸ. ಮೂವತ್ತು ದಿನಗಳು ಪೂರ್ಣ  
ವಾದರೆ ಸಾವನಮಾಸ. ಸೂರ್ಯನು ಒಂದು ರಾಶಿಯಲ್ಲಿ  
ರುವ ಕಾಲವು ಸೌರಮಾಸ. "ಚಾಂದ್ರ: ಶುಕ್ಲಾದಿದರ್ಶಂತಿ:  
ಸಾವನಸ್ತ್ರಿಶತಾ ಬುಧಿ: | ಏಕರಾಶೌ ರವಿರ್ಯಾವತ್ ಕಾಲಂ ಮಾಸ:  
ಸ ಭಾಸ್ಕರ:" |

**ಮಾಸಜಾತ ಮಾಸಜಾತ** (ವಿಂ) ಒಂದು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ,  
ಹುಟ್ಟಿ ಒಂದು ತಿಂಗಳಾಗಿರುವ. ಮಾಸೌ ಜಾತಸ್ಯ |

**ಮಾಸದೇಯ ಮಾಸದೇಯ** (ವಿಂ) ಒಂದು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಕೊಡೆ  
ಬೇಕಾದ. ಮಾಸೇ ದೇಯಮ್ |

**ಮಾಸಪ್ರಮಿತ ಮಾಸಪ್ರಮಿತ** (ವಿಂ) ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಚಂದ್ರ,  
ಪಾಡ್ಯದ (ಬಾಲ) ಚಂದ್ರ. ಮಾಸಂ ಪ್ರಮಿತ: | ಮಾಸಂ  
ಪರಿಚ್ಛೇತ್ತುಮಾರಂಭವಾನ್ ಇತ್ಯರ್ಥ: |

**ಮಾಸಪ್ರವೇಶ ಮಾಸಪ್ರವೇಶ** (ಪುಂ) ಮಾಸದ ಪ್ರಾರಂಭ,  
ತಿಂಗಳಿನ ಪ್ರಾರಂಭ.

**ಮಾಸರ ಮಾಸರ** (ಪುಂ) ಅನ್ನದ ಕೆನೆ, ಅನ್ನದ ಮೇಲಿನ ಗಂಜಿ.  
ಮಾ ಶ್ರೀ: ಸರತ್ಯತ್ರ—ಸೃ (ಗತೌ) "ಘ:" (೩-೩-೧೧೮) |

**ಮಾಸಾವರ ಮಾಸಾವರ** (ವಿಂ) ಒಂದು ತಿಂಗಳು ಚಿಕ್ಕವನು,  
ಒಂದು ತಿಂಗಳು ಕಿರಿಯವನು. ಮಾಸೇನ ಅವರ: |

**ಮಾಸಿಕ ಮಾಸಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತಿಮಾಸದಲ್ಲಿ ಬರುವ,  
ಒಂದೊಂದು ತಿಂಗಳಲ್ಲೂ ಬರುವ. ಮಾಸೇ ಭವಮ್ "ಠಙ್"  
(೪-೩-೧೧) | 2. ಪ್ರತಿ ತಿಂಗಳಲ್ಲೂ ಕೊಡಬೇಕಾದ  
(ಸಂಬಳ, ಕೂಲಿ, ಬಡ್ಡಿ ಇತ್ಯಾದಿ). 3. ಒಂದು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ  
ಕೊಡಬೇಕಾದ (ಸಾಲ). 4. ಪ್ರತಿ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡ  
ಬೇಕಾದ ಶ್ರದ್ಧೆ.

**ಮಾಸುರೀ ಮಾಸುರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಿಕ್ಕಮ್ಮ, ದೊಡ್ಡಮ್ಮ.  
"ಪಿತೃವಸಾ ಪಿತುರ್ಮನೀ ಮಾತುರ್ಮನೀ ಚ ಮಾಸುರೀ"  
ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ |

**ಮಾಸ್ಮ ಮಾಸ್ಮ** (ಅವ್ಯಂ) ತಡೆ, ನಿವಾರಣೆ, ನಿಷೇಧ. ಮಾ  
ಚ ಸ್ಮ ಚಾನಯೋ: ಸಮಾಹಾರ: |

**ಮಾಹಾಕುಲ ಮಾಹಾಕುಲ** (ವಿಂ) ದೊಡ್ಡ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ  
ದವನು, ಸತ್ಕುಲದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು. ಮಾಹಾಕುಲೇ ಭವ:—ವಾ  
"ಅಙ್" "ಉಙ್" ಚ (೪-೧-೧೪೧) | ಅಖಿ ಮಾಹಾಕುಲ: |  
ಖಿ ಮಾಹಾಕುಲೀನ: | ಪಕ್ಷೇ "ಉ:" (೪-೧-೧೩೧) |  
ಮಾಹಾಕುಲೀನ: |

**ಮಾಹಾಜನಿಕ ಮಾಹಾಜನಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಮಹಾಜನರಿಗೆ  
ಹಿತವಾದ, ಮಹಾಜನರಿಗೆ ಅರ್ಹವಾದ. ಮಾಹಾಜನಾಯ  
ಹಿತಮ್ "ಠಙ್" (ವಾಂ ೫-೧-೯) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ—ಜನಿಕೀ  
—ಜನಿಕೀ. 2. ಧನಿಕರಿಗೆ ಹಿತವಾದ.

**ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ** (ನಂ) 1. ಮಹಿಮೆ, ಪ್ರಭಾವ,  
ಮಹತ್ತ್ವ, ಹಿರಿಮೆ. ಮಾಹಾತ್ಮನೋ ಭಾವ: "ಉಙ್"  
(೫-೧-೧೨೪) | "ತ್ವಂ ವಹ್ನಿರ್ಮುನಯೋ ವಸಿಷ್ಠಗೃಹಿಣಿ ಗಜ್ಞಾ  
ಚ ಯಸ್ಯಾ ವಿದುರ್ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯಂ ಯದಿ ವಾ ರಥೋ: ಕುಲಗುಹ: ದೇವ:  
ಸ್ವಯಂ ಭಾಸ್ಕರ:" ತಂ ರಾಂ ೪-೫ | 2. ಮಯ್ಯಾದೆ,  
ಗೌರವ.

**ಮಾಹಾನಸ ಮಾಹಾನಸ** (ವಿಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಗಾಡಿಯ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. 2. ಮಹಾನಸ (ಅಡಿಗೆ ಮನೆ) ಸಂಬಂಧ  
ವಾದ. ಮಾಹಾನಸಂ ಇದಮ್ ಮಾಹಾನಸಸ್ಯ ಇದಂ ವಾ "ಅಙ್"  
(೪-೩-೧೨೦) |

**ಮಾಹಿರ ಮಾಹಿರ** (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ಮಾಹಿರೇ ಪೂಜ್ಯತೇ -- ಮಾಹಿ  
(ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಇರಙ್" | ಬಾಹುಂ |

**ಮಾಹಿಷ ಮಾಹಿಷ** (ವಿಂ) ಮಹಿಷ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಮಾಹಿಷ.  
ಸ್ಯದಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦) |

**ಮಾಹಿಷಿಕ ಮಾಹಿಷಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಹಾದರಗಿತ್ತಿಯ ಗಂಡ,  
ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿಯ ಗಂಡ, ಜಾರ. "ಮಾಹಿಷೀತ್ಯುಚ್ಯತೇ ನಾರೀ  
ಯಾ ಚ ಸ್ಯಾದವ್ಯಭಿಚಾರಿಣೀ | ತಾಂ ದುಷ್ಠಾಂ ಕಾಮಯತಿ ಯ: ಸ ವೈ  
ಮಾಹಿಷಿಕ: ಸ್ಮೃತ:" | 2. ವ್ಯಭಿಚಾರದ ಹೆಣ್ಣಿನಿಂದ  
ಜೀವಿಸುವವನು. "ಮಾಹಿಷೀತ್ಯುಚ್ಯತೇ ನಾರ್ಯಾ ಭಗನೋಪಾಜಿತಂ  
ವನಮ್ | ಉಪಜೀವತಿ ಯಸ್ತಸ್ಯಾ: ಸ ವೈ ಮಾಹಿಷಿಕ: ಸ್ಮೃತ:" |

**ಮಾಹಿಷ್ಮತೀ ಮಾಹಿಷ್ಮತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೈಹಯ ರಾಜರ  
ರಾಜಧಾನಿ, ಹೈಹಯ ದೇಶದ ಮುಖ್ಯ ಪಟ್ಟಣ. "ನಿರ್ದ-  
ವಿವಧಾಸಾರಪ್ರಸಾರಾ ಗಾ ಇವ ವ್ರಜಮ್ | ಉಪರಂಧಂತು ದಾಶಾಹಿ:  
ಪುರೀ ಮಾಹಿಷ್ಮತೀ ದ್ವಿಪ:" ಮಾಘಂ ೨-೬೪ |

**ಮಾಹಿಷ್ಯ ಮಾಹಿಷ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ವೈಶ್ಯ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಕ್ಷತ್ರಿಯ  
ನಿಗೆ ಹುಟ್ಟಿದ ಸಂಕರ ಜಾತಿಯವನು. "ಸುನಂ ವಿಪ್ರಾ ನೃಪಾ-  
ದ್ವೇಷ್ಯಾ ಮಾಹಿಷ್ಯಮ್ (ಸುತೇ)" ವೇಜಂ | 2. ನೈತೃ ಗೀತೆಗಳನ್ನು  
ತಿಳಿದಿರುವ ಬೇಡರೆ ಜಾತಿಯವನು. "ನಿಷಾದೋ ಮೃಗಾಘಾತಾತ್ಸ  
ಮಾಹಿಷ್ಯೋ ನೃತ್ಯಗೀತವಿತ್" ವೇಜಂ |



**ಮಾಹೇಂದ್ರ ಮಾಹೇಂದ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರಕೀಲಪರ್ವತ, ಮಹೇಂದ್ರಗಿರಿ. "ಮಾಹೇಂದ್ರ ನಗಮಭಿತ: ಕರಣುರ್ವಾ: ಪರ್ಯಂತ-ಸ್ಥಿತಜಲದಾ ದಿವ: ಪತಂತ:" ಕಿರಾಂ ೭-೨೦ | (ವಿಂ) 2. ಇಂದ್ರನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಮಹೇಂದ್ರಸ್ಯದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | "ನಿರ್ದಾವಕಾಲೋಲ್ಬಣತಾಪಯೇವ ಮಾಹೇಂದ್ರಮಮ್ಮ: ಪ್ರಥಮಂ ಪೃಥಿವ್ಯಾ" ಕುಮಾಂ ೭-೮೪ | 3. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸ್ತ್ರೀ-ಸ್ತ್ರೀ. 4. ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕು. 5. ಇಂದ್ರನ ಪತ್ನಿ. ಶಬೀದೇವಿ. 6. ಹಸು, ಆಕಳು. 7. ಮಧುರಂಗದ ಬಾಳೆ ಗಿಡ. "ಕೃಣ್ಣಾ ತು ಲಮ್ಪಾ ಕದಲಿ ಮಾಹೇಂದ್ರಿ ತು ಬೃಹತ್‌ಫಲಾ" ವೇಜಂ |

**ಮಾಹೇಯ ಮಾಹೇಯ** (ಪುಂ) 1. ಭೂಮಿಯ ಪುತ್ರ (1) ಕುಜ ಗ್ರಹ. (2) ನರಕಾಸುರ. ಮಹಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಹಕ್" (೪-೧-೧೨೦) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಯಿ-ಯಿ. 2. ಹಸು, ಆಕಳು. ಮಹ್ಯತೇ ಪೂಜ್ಯತೇ-ಮಹ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಘ:" (೩-೩-೧೧೮) | "ಮಾಹೇಯಿ ಸೌರಭೇಯಿ ಗೌ:" ಅಮಂ |

**ಮಾಹೇಶಿ ಮಾಹೇಶಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

**ಮಾಹೇಶ್ವರ ಮಾಹೇಶ್ವರ** (ವಿಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಮಹೇಶ್ವರಸ್ಯದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | 2. ಪರಮೇಶ್ವರನಿಂದ ಬಂದ. ಮಹೇಶ್ವರಾದಾಗತಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೭೪) | "ಮಹೇಶ್ವರಾದಾಗತಾನಿ ಮಾಹೇಶ್ವರಾಣಿ" (ಚತುರ್ದಶಸೂತ್ರಾಣಿ ಅಙ್‌ಙ್‌ ಇತ್ಯಾದಿನಿ) ಸಿಂ ಕೌಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರೀ-ರೀ. ಪಾರ್ವತಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

**ಮಿತ ಮಿತ** (ವಿಂ) 1. ಪರಿಮಿತವಾದ, ಅಲ್ಪವಾದ, ಒಂದು ಪರಿಮಿತಿಯುಳ್ಳ, ಒಂದು ಅಳತೆಗೊಳಪಟ್ಟಿರುವ. ಮಾ (ಮಾನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | ಇಕಾರಾದೇಶ: (೭-೪-೪೦) | "ಸುರಭಿಗನ್ಧಿಷು ಶುಶ್ರುವಿರೇ ಗಿರ: ಕುಸುಮಿತಾಸು ಮಿತಾ ವನ-ರಾಜಯ:" ರಘುಂ ೧-೩೪ | "ಮಿತಂ ಚ ಸಾರಸ್ವ ವಚೋ ಹಿ ವಾಗ್ಮಿತಾ" ನೆಪಂ ೧-೮ | 2. ಅಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | 3. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ತುಮಿನ್ (ಪ್ರಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | (ಅವ್ಯಂ) 4. ಬೆಕ್ಕದಾಗಿ. 5. ಕೊಂಚವಾಗಿ. "ಕಿಷ್ಕಿನ್ಮಾತ್ರಂ ಮಿತಮ್" ವೇಜಂ | 6. ಹೇಳಿದ, ಶಬ್ದಮಾಡಿದ. ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಕ್ತ:" |

**ಮಿತಙ್ಗಮ ಮಿತಂಗಳಮ** (ಪುಂ) 1. ಗಜ, ಆನೆ. (ವಿಂ) 2. ಸ್ವಲ್ಪ ನಡೆಯುವವನು. ಮಿತಂ ಗಚ್ಛತಿ-ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಖಚ್" (ವಾಂ ೩-೨-೩೮) | ಮುಮಾಗಮ: (೬-೩-೬೭) | 3. ನಿಧಾನವಾಗಿ ನಡೆಯುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪) | -ಗಮಾ -ಗಮಾ.

**ಮಿತದ್ಧ ಮಿತದ್ಧ** (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ. ಮಿತಂ ದ್ರವತಿ ದ್ಧ (ಗತೌ) "ಡು:" (ವಾಂ ೩-೨-೧೮೦) | "ವಾಧಿ-ಮಿತದ್ಧುತಿಮಿಕೋಶಮಹಾಶಯಾಶ್ಚ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | (ವಿಂ) 2. ಮಿತವಾಗಿ ನಡೆಯುವವನು. 3. ನಿಧಾನವಾಗಿ ನಡೆಯುವವನು.

**ಮಿತಭಾಷಿನ್ ಮಿತಭಾಷಿನ್** (ವಿಂ) ಸ್ವಲ್ಪವಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವ, ಅವಶ್ಯವಾದಷ್ಟು ಮಾತ್ರ ಮಾತನಾಡುವ. ಮಿತಂ ಭಾಷಿತುಂ ಶೀಲಂ ಯಸ್ಯ-ಭಾಷ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಣಿನಿ:" (೩-೨-೭೮) | "ತ್ಯಾಗಾಯ ಸಂಭೃತಾರ್ಥಿನಾಂ ಸತ್ಯಾಯ ಮಿತ-ಭಾಷಿಣಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೭ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪) | -ಭಾಷಿಣಿ -ಭಾಷಿಣೀ.

**ಮಿತಸ್ಪಚ ಮಿತಂಪಚ** (ವಿಂ) 1. ಕೃಪಣ, ಜಿಪುಣ. ಮಿತಂ ಪರಿಮಿತಂ ಪಚತಿ-ಡುಪಚಪ್ (ಪಾಕೇ) "ಖಚ್" (೩-೨-೩೪) | ಮುಮಾಗಮ: (೬-೩-೬೭) | 2. ಕಡಮೆಯಾಗಿ ಅಡಿಗೆ ಮಾಡುವವನು, ಅಲ್ಪಪ್ರಮಾಣದಲ್ಲಿ ಅಡಿಗೆ ಮಾಡುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಟಾಪ್" (೪-೧-೪) | -ಪಚಾ -ಪಚಾ. "ಮಿತಸ್ಪಚಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಿ" ಸಿಂ ಕೌಂ |

**ಮಿತಿ ಮಿತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪರಿಮಾಣ ಅಳತೆ. ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ ಶಬ್ದೇ ಚ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | 2. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. 3. ಅವಶ್ಯವಾದ, ನಿರ್ಣಯ, ನಿರ್ಧಾರ. 4. ಎಸೆಯುವುದು, ಬಿಡುವುದು. ತುಮಿನ್ (ಪ್ರಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಕ್ತಿನ್" | "ಮಿತಿಮನಿಷ್ಯವಚ್ಛೇದೇ" ಮೇದಿಂ |

**ಮಿತ್ರ ಮಿತ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಅರ್ಹ, ಸೂರ್ಯ. ಮಿಮಿಡಾ (ಸ್ನೇಹನೇ) "ಕ್ತ:" (೩ಂ ೪-೧೬೪) | "ಮಿತ್ರಸ್ಯ ಲುಪ್ತತಮಸೋಽಪ್ಯತಿ-ರಾಗಭಾಜ:" ಯಾದಂ ೧೧-೭೪ | 2. ಅರ್ಹವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. (ನಂ) 3. ಗೆಳೆಯ, ಸ್ನೇಹಿತ. "ತಸ್ಯ ಮಿತ್ರಾಪ್ಯಮಿತ್ರಾಸ್ತೇ ಯೇ ಚ ಯೇ ಚೋಭಯೇ ನೃಪಾ:" ಮಾಘಂ ೨-೧೦೨ | "ತನ್ಮಿತ್ರಮಾಪದಿ ಸುಖೇ ಚ ಸಮಕ್ರಿಯಂ ಯತ್" ಭರ್ತುಂ ೨-೬೮ | 4. (ರಾಜನಿಗೆ) ತನ್ನ ಪಕ್ಕದ ದೇಶಕ್ಕೆ ಮುಂದಿನ ದೇಶದ ರಾಜ. "ವಿಷಯಾ-ನಂತರೋ ರಾಜಾ ಶತ್ರುಮಿತ್ರಮತ: ಪರಮ್" ಅಮಂ | ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷದಲ್ಲಿ (ಎದುರಿಗೆ) ಬೆಣ್ಣೆಯಂತೆ ಮಾತನಾಡುತ್ತ ಪರೋಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಕಾರ್ಯಾಘಾತಕನಾಗಿ ದ್ರೋಹಮಾಡತಕ್ಕ ಸ್ನೇಹಿತನನ್ನು ದೂರದಲ್ಲಿಡಬೇಕು. "ಪರೋಕ್ಷೇ ಕಾರ್ಯಹಂತಾರಂ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷೇ ಪ್ರಿಯ ವಾದಿನಮ್ | ವರ್ಜಯೇತಾದೃಶಂ ಮಿತ್ರಮ್ ಮಾಯಾಮಯಮರ್ಹಿ ತಥಾ" ಹಿತಂ ೧-೭೭ |

**ಮಿತ್ರಕಾರ್ಯ ಮಿತ್ರಕಾರ್ಯ**, -ಕೃತ್ಯ -ಕೃತ್ಯ (ನಂ) ಸುಹೃತ್ಕಾರ್ಯ, ಸ್ನೇಹಿತನ ಕೆಲಸ. ಮಿತ್ರಸ್ಯ ಕಾರ್ಯಂ ಕೃತ್ಯಂ ವಾ | "ಮಿತ್ರಕೃತ್ಯಮಪದಿಷ್ಯ ಪಾರ್ಶ್ವತ: ಪ್ರಸ್ಥಿತಂ ತಮನವಸ್ಥಿತಂ ಪ್ರಿಯಾ:" ರಘುಂ ೧೧-೩೨ |



**ಮಿತ್ರತ್ವ ಮಿತ್ರತ್ವ** (ನಂ) ಗೆಳೆತನ, ಸ್ನೇಹ, ಮೈತ್ರಿ.

**ಮಿತ್ರದ್ರುಹ ಮಿತ್ರದ್ರುಹ** (ವಿಂ) ಸ್ನೇಹಿತನಿಗೆ ದ್ರೋಹ ಮಾಡುವವನು, ಗೆಳೆಯನಿಗೆ ಮೋಸಮಾಡುವವನು, ಮಿತ್ರನಿಗೆ ಕೆಡುಕುಮಾಡುವವನು. ಮಿತ್ರಾಯ ದ್ರುಹತಿ—ದ್ರುಹ (ಜಿಘಾಂಸಾಯಾಮ್) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೬೧) ।

**ಮಿತ್ರಭೇದ ಮಿತ್ರಭೇದ** (ಪುಂ) ಸ್ನೇಹವನ್ನು ಮುರಿಯುವುದು, ಸ್ನೇಹಕ್ಕೆ ಭಂಗತಂದು ದ್ವೇಷವುಂಟುಮಾಡುವುದು, ಪರಸ್ಪರ ಜಗಳವುಂಟುಮಾಡುವುದು. ಮಿತ್ರಾಣಾಂ ಭೇದಃ ।

**ಮಿತ್ರಯು ಮಿತ್ರಯು** (ಪುಂ) 1. ಸ್ನೇಹಿತ, ಗೆಳೆಯ, ಮಿತ್ರ. ಮಿತ್ರಂ ಯಾತಿ—ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಕ್ರುಃ” (೩ಂ ೧-೩೭) । (ವಿಂ) 2. ಸ್ನೇಹಮನೋಭಾವವುಳ್ಳವನು, ಸ್ನೇಹಿತರಲ್ಲಿ ಪ್ರೇಮವುಳ್ಳವನು. “ಸಮ್ಬಂಧಿ ಗುಣವಾನ್ ಸಮ್ಯಕ್ಮಿತ್ರಯು-ಮಿತ್ರವತ್ಸಲಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಮಿತ್ರಲಾಭ ಮಿತ್ರಲಾಭ** (ಪುಂ) ಸ್ನೇಹಿತನ ಸಂಪಾದನೆ, ಪರಸ್ಪರ ಮೈತ್ರಿಯಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಮಿತ್ರನ ಲಾಭ. ಮಿತ್ರಸ್ಯ ಲಾಭಃ ।

**ಮಿತ್ರವಿಂದಾ ಮಿತ್ರವಿಂದಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಅಷ್ಟಮಹಿಷಿಯರಲ್ಲೊಬ್ಬಳು. ಇವಳು ಅವಂತಿ ದೇಶದ ದೊರೆಯಾದ ಜಯಸೇನನ ಮಗಳು. ವಸುದೇವನ ತಂಗಿಯಾದ ರಾಜಾಧಿದೇವಿಯು ಇವಳ ತಾಯಿ. ಮಿತ್ರವಿಂದೆಗೆ ವೃಕ ಹರ್ಷ ಅನಿಲ ಗೃಧ್ರ ವರ್ಧನ ಉನ್ನಾದ ಮಹಾಶ ಪಾವನ ವಹ್ನಿ ಮತ್ತು ಕ್ಷುಧಿಯೆಂಬ ಹತ್ತು ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳು.

**ಮಿತ್ರಶೀ ಮಿತ್ರಶೀ** (ಪುಂ) ಮಿತ್ರನನ್ನು ಶಿಕ್ಷಿಸುವವನು. ಮಿತ್ರಂ ಶಾಸ್ತಿ—ಶಾಸ್ತು (ಅನುಶಿಂಘೀ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬) । ಇತ್ವಮ್ ದೀರ್ಘಃ ।

**ಮಿತ್ರಸಪ್ತಮಿ ಮಿತ್ರಸಪ್ತಮಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾರ್ಗಶಿರ ಶುದ್ಧ ಸಪ್ತಮಿ. ಮಿತ್ರಸ್ಯ ಸಪ್ತಮಿ । ಕಶ್ಯಪನಿಂದ ಆದಿತಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಮಿತ್ರನೆಂಬ ಸೂರ್ಯನು ಮಾರ್ಗಶಿರ ಶುದ್ಧ ಸಪ್ತಮಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದುದರಿಂದ ಈ ತಿಥಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು. “ಆದಿತೇಃ ಕಸ್ಯಪಾಜ್ಜತೇ ಮಿತ್ರೋ ನಾಮ ದಿವಾಕರಃ । ಮಾರ್ಗ-ಶಿರಸ್ಯ ಮಾಸಸ್ಯ ಶುಕ್ಲೇ ಪಕ್ಷೇ ಶುಭೇ ತಿಥಿಃ । ಸಪ್ತಮ್ಯಾಂ ತೇನ ಸಾ ಲ್ಯಾತಾ ಲೋಕಃ ಸ್ಮಿನ್ ಮಿತ್ರಸಪ್ತಮಿ ” ।

**ಮಿತ್ರಾ ಮಿತ್ರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸುಮಿತ್ರ, ದಶರಥನ ಒಬ್ಬ ಪತ್ನಿ, ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಶತ್ರುಘ್ನರ ತಾಯಿ. 2. ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸು.

**ಮಿಥಸ್ ಮಿಥಸ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅನೋನ್ಯವಾಗಿ, ಪರಸ್ಪರವಾಗಿ. ಮೇಯತಿ—ಮೇಶು (ಸಂಗಮೇ) “ಅಸುನ್” (೩ಂ ೪-೧೭೯) । ಪೃಷೋಂ । “ಬಲವದಪಿ ಬಲಂ ಮಿಥೋ ವಿರೋಧಿ ಪ್ರಭವತಿ ನೈವ

ವಿಪಕ್ಷನಿರ್ಜಯಾ” ಕಿರಾಂ ೧ಂ-೩೭ । 2. ರಹಸ್ಯವಾಗಿ, ಗುಟ್ಟಾಗಿ. “ತಯಾಪಿ ವಾಚಾಲತಯಾ ಯುಕ್ತಿ ಮಾ ಮಿಥಸ್ತವದಾ-ಭಾಷಣಲೋಪಂ ಮನಃ” ಮಾತ್ರಂ ೧-೪೦ । “ಅಥ ವಿಶ್ವಾತ್ಮನೇ ದೇವೀ ಸಂದಿದೇಶ ಮಿಥಃ ಸಖೀಮ್” ಕುಮಾಂ ೬-೧ ।

**ಮಿಥಿ ಮಿಥಿ** (ಪುಂ) ನಿಮಿರಾಜನ ಪುತ್ರ, ಜನಕಮಹಾರಾಜ. ಮೇಯತೇ ಶತ್ರುಕುಲಮ್—ಮೇಶು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಇನ್” (೩ಂ ೪-೧೧೭) । ಪೃಷೋಂ । “ನಿಮಿಃ ಪರಮಧರ್ಮಾತ್ಮಾ ಸರ್ವಸತ್ತವತಾಂ ವರಃ । ತಸ್ಯ ಪುತ್ರೋ ಮಿಥಿನಾಮಿ ಜನಕಃ” ರಾಮಾಂ ।

**ಮಿಥಿಲ ಮಿಥಿಲ** (ಪುಂ) 1. ಜನಕರಾಜ. “ಜನ್ಮನಾ ಜನಕಃ ಸೌಭೂತ್ ವೇದೇಹಸ್ತು ವಿವೇಹಜಃ । ಮಿಥಿಲೋ ಮಥನಾಜ್ಜಾತೋ ಮಿಥಿಲಾ ಯೇನ ನಿರ್ಮಿತಾ” ಭಾಗಂ ೯-೧೩ । (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ಮಿಥಿಲಾನಗರದ ಜನರು.

**ಮಿಥಿಲಾ ಮಿಥಿಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಿಥಿಲಾನಗರ, ವಿದೇಹ ದೇಶದ ರಾಜಧಾನಿ. ಮಥ್ಯಂತೇಽತ್ರ ರಿಪವಃ—ಮನ್ಯ (ವಿಲೋಡನೆ) “ಇಲಕ್” ಅನುನಾಸಿಕಲೋಪಃ ಅಕಾರಸ್ಯ ಇತ್ವಂ ಚ ನಿಪಾಂ (೩ಂ ೧-೫೭) ।

**ಮಿಥುನ ಮಿಥುನ** (ನಂ) 1. ದ್ವಂದ್ವ, ಎರಡು, ಒಂದು ಜೊತೆ. ಮಿಥಿ (ಸೌತ್ರಘಾತುಃ) “ಉನ್” (೩ಂ ೩-೫೫) । “ತೀರಾಂತರಾಣಿ ಮಿಥುನಾನಿ ರಥಾಙ್ಗನಾಮ್ನಾಂ ನೇತ್ವಾ ವಿಲೋಲಿತ-ಸರೋಜವನಶ್ರಿಯಸ್ತಾಃ” ಕಿರಾಂ ೮-೫೬ । 2. ಮೇಷ ಮೊದಲುಗೊಂಡು ಮೂರನೆಯ ರಾಶಿ (ಮಿಥುನ ರಾಶಿ). 3. ಫುತ, ತುಪ್ಪ. 4. ಜೇನುತುಪ್ಪ. “ಮಧು ಸರ್ಪಿಷ್ಠ ಮಿಥುನಮ್” ವೇಜಂ । 5. ಸ್ತ್ರೀ ಪುರುಷರ ಜೋಡಿ. “ಮಿಥುನಂ ನ ದ್ವಯೋ ರಾಶಿಭೇದೇ ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸಯುಗ್ಮಕೇ” ಮೇದಿಂ । “ಮಾನಿಷಾದ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಂ ತ್ವಮಗಮಃ ಶಾಶ್ವತೀಃ ಸಮಾಃ । ಯತ್ಕೌಚಮಿಥುನಾದೇಕ-ಮವಧೀಃ ಕಾಮಮೋಹಿತಮ್” ರಾಮಾಂ ।

**ಮಿಥ್ಯಾ ಮಿಥ್ಯಾ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅಸತ್ಯ, ಸುಳ್ಳು, ಸಟೆ. ಮಥೆ (ವಿಲೋಡನೆ) “ಯಕ್” (೩ಂ ೪-೧೧೨) ನಿಪಾಂ । “ಮಿಥ್ಯೈವ ವ್ಯಸನಂ ವದಂತಿ ಮೃಗಯಾಮೀಡ್ವಿವಿನೋದಃ ಕುತಃ” ಶಾಕುಂ ೨-೫ । 2. ವ್ಯರ್ಥವಾಗಿ, ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದೆ. “ಮಿಥ್ಯಾ ಕಾರಯತೇ ಚಾರೈರ್ವಿಷಣಾಂ ರಾಕ್ಷಸಾಧಿಪಃ” ಭಟ್ಟಿಂ ೮-೪೪ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಅರ್ಥಮರ್ಥದ ಪತ್ನಿ. ವಂಚಕರೆಲ್ಲರೂ ಇವಳನ್ನು ಪೂಜಿಸುವರು. ಇವಳು ಸತ್ಯ (ಕೃತ) ಯುಗದಲ್ಲಿ ಯಾರ ದೃಷ್ಟಿಗೂ ಬೀಳುವುದಿಲ್ಲ. ತ್ರೇತಾಯುಗದಲ್ಲಿ ಸೂಕ್ಷ್ಮರೂಪದಿಂದ ಗೋಚರವಾಗುವಳು. ದ್ವಾಪರ ಯುಗದಲ್ಲಿ ಭಯದಿಂದ ಅರ್ಧ ಮಾತ್ರ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾಳೆ. ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ ಅರ್ಥಮರ್ಥದ ಪ್ರಾಚುರ್ಯ



ವಾದಂತೆಲ್ಲಾ ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ವ್ಯಾಪಿಸಿ  
ವಳು. ತನ್ನ ಸಹೋದರನಾದ ಕಪಟದೊಡನೆ ಸೇರಿ ಪ್ರತಿ  
ಯೊಂದು ಮನೆಯಲ್ಲೂ ಭಯವಿಲ್ಲದೆ ತನ್ನ ಮಹಿಮೆ  
ಯನ್ನು ತೋರುತ್ತಿರುವಳು. "ಅಥಮಪತ್ನೀ ಮಿಥ್ಯಾ ಸಾ  
ಸರ್ವಭೂತೇಷು ಪೂಜಿತಾ । ಯಥಾ ವಿಶ್ವಾ ಜಗತ್ಸುಕ್ತಮುಚ್ಚನ್ನವಿಧಿ-  
ನಿರ್ಮಿತಮ್ । ಸತ್ಯೇ ಚಾದರ್ಶನಾ ಯಾ ಚ ತ್ರೇತಾಯಾಂ ಸೂಕ್ಷ್ಮರೂಪಿಣಿ ।  
ಅರ್ಥಾವಯವರೂಪಾ ಚ ದ್ವಾಪರೇ ಸಂವೃತಾ ಭಿಷಾ । ಕಲೌ ಮಹಾಪ್ರಮತ್ತಾ  
ಚ ಸರ್ವತ್ರ ವ್ಯಪಿಕಾ ಬಲಾತ್ । ಕಪಟೇನ ಸಮಂ ಭ್ರಾತೃ ಭ್ರಮತ್ಯೇವ  
ಗೃಹೇ ಗೃಹೇ" ಇಹವೇಂ ।

**ಮಿಥ್ಯಾಗ್ರಹ ಮಿಥ್ಯಾಗ್ರಹ** (ಪುಂ) ತಪ್ಪುತಿಳಿವಳಿಕೆ, ತಪ್ಪಾಗಿ  
ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವುದು.

**ಮಿಥ್ಯಾಚರ್ಯಾ ಮಿಥ್ಯಾಚರ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇಷ, ಬೂಟಾಟಿಕೆ,  
ಇನ್ನೊಬ್ಬರಿಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಕಪಟಾಚರಣೆ.

**ಮಿಥ್ಯಾಚಾರ ಮಿಥ್ಯಾಚಾರ** (ಪುಂ) 1. ಕಪಟಾಚಾರ,  
ಇನ್ನೊಬ್ಬನನ್ನು ಮೆಚ್ಚಿಸಲು ಮಾಡುವ ದಂಭಾಚಾರ.  
(ವಿಂ) 2. ಕಪಟಾಚಾರವುಳ್ಳವನು, ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಗಾಗಿ  
ವೇಷಹಾಕಿ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು. ಮಿಥ್ಯಾ ಆಚಾರೋ ಯಸ್ಯ ।  
"ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಾಣಿ ಸಂಯಮ್ಯ ಯ ಆಸ್ತೇ ಮನಸಾ ಸ್ಮರನ್ ।  
इन्द्रियार्थान् विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते"  
ಗೀತಾ ೩-೬ ।

**ಮಿಥ್ಯಾಜ್ಞಾನ ಮಿಥ್ಯಾಜ್ಞಾನ** (ನಂ) ತಪ್ಪುತಿಳಿವಳಿಕೆ,  
ಭ್ರಾಂತಿ.

**ಮಿಥ್ಯಾದೃಷ್ಟಿ ಮಿಥ್ಯಾದೃಷ್ಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಿಜವಾಗಿ ಇರುವುದನ್ನು  
ಸುಳ್ಳಾಗಿ ನೋಡುವುದು, ಇರುವ ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ  
ಇಲ್ಲವೆಂಬ ಬುದ್ಧಿ. 2. ಪರಲೋಕವಿಲ್ಲವೆಂಬ ಬುದ್ಧಿ,  
ನಾಸ್ತಿಕತೆ. ಮಿಥ್ಯಾಚಾಸೌ ದೃಷ್ಟಿಶ್ಚ । 3. ವಿವೇಕತತ್ತ್ವ  
ವಾದ ಮಹಾಮೋಹನ ಪತ್ನಿ. "ಶ್ರದ್ಧಾಂ ವ್ಯಾಕ್ರಾಂ ಮಿಥ್ಯಾ-  
ದೃಷ್ಟಿರೇವ ವಿಲಾಸಿನಿ ಪರಂ ಪ್ರಗಲ್ಭೇತಿ ತದಸ್ಮಿನ್ ವಿಷಯೇ ಸೇವ  
ನಿಬಂಧಿತಾ" ಪ್ರಬಂಧಂ ೨ ।

**ಮಿಥ್ಯಾಧ್ಯವಸತಿ ಮಿಥ್ಯಾಧ್ಯವಸತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರ್ಥಾ  
ಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಒಂದು ವಿಷಯದ ಮಿಥ್ಯಾತ್ವ  
ಸಿದ್ಧಿಗಾಗಿ ಮತ್ತೊಂದು ಮಿಥ್ಯಾಭೂತವಿಷಯಕಲ್ಪ  
ನೆಯು ಮಿಥ್ಯಾಧ್ಯವಸತಿಯೆಂಬ ಅಲಂಕಾರವಾಗುವುದು.

"किञ्चिन्मिथ्यात्वसिद्धयर्थं मिथ्यार्थान्तरकल्पनम् ।

मिथ्याध्यवसितिर्वैक्यां वशयेत् ससजं वहन्" ಚಂದ್ರಾಂ ।

**ಮಿಥ್ಯಾಧ್ಯವಸಾಯ ಮಿಥ್ಯಾಧ್ಯವಸಾಯ** (ಪುಂ) 1.  
ಮಿಥ್ಯೋತ್ಸಾಹ. 2. ಮಿಥ್ಯಾಪ್ರಯತ್ನ. ಮಿಥ್ಯಾಭೂತೋ-  
ಪದ್ರವಸಾಯ: ।

**ಮಿಥ್ಯಾನಿರಸನ ಮಿಥ್ಯಾನಿರಸನ** (ನಂ) ಶಪಥ, ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ.  
ಮಿಥ್ಯಾ ಅಸತ್ಯಂ ನಿರಸ್ಯತೇ ಅನೇನ — ನಿರ್ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣಂ)  
ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) ।

**ಮಿಥ್ಯಾಪವಾದ ಮಿಥ್ಯಾಪವಾದ** (ಪುಂ) ಇಲ್ಲದ ದೋಷ  
ಹೇಳುವುದು, ಸಲ್ಲದ ದೋಷಣೆಯನ್ನು ಮಾಡುವುದು. .

**ಮಿಥ್ಯಾಪ್ರತಿಜ್ಞ ಮಿಥ್ಯಾಪ್ರತಿಜ್ಞ** (ವಿಂ) ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯನ್ನು  
ಸುಳ್ಳುಮಾಡಿದವನು, ಪ್ರತಿಜ್ಞಾಭಂಗಮಾಡಿದವನು.  
ಮಿಥ್ಯಾ ಅಸತ್ಯಾ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ ಯಸ್ಯ ।

**ಮಿಥ್ಯಾಭಿಯೋಗ ಮಿಥ್ಯಾಭಿಯೋಗ** (ಪುಂ) ಇಲ್ಲದ್ದನ್ನು  
ಆರೋಪಿಸಿ ಮಾತನಾಡುವುದು, ಸುಳ್ಳುಹೇಳಿ ವಾದಮಾಡು  
ವುದು, ಸುಳ್ಳು ಅಪಾದನೆ. ಮಿಥ್ಯಾ ಅಸತ್ಯಮಭಿಯೋಗ: ।

**ಮಿಥ್ಯಾಭಿಶಂಸನ ಮಿಥ್ಯಾಭಿಶಂಸನ** (ನಂ) ಸುಳ್ಳುಹೇಳಿ  
ಅಪರಾಧ ಹೊರಿಸುವುದು, ಮಿಥ್ಯಾರೋಪ. ಮಿಥ್ಯಾ  
ಅಸತ್ಯಸ್ಯ ಅಭಿಶಂಸನಮ್ ।

**ಮಿಥ್ಯಾಭಿಶಾಪ ಮಿಥ್ಯಾಭಿಶಾಪ** (ಪುಂ) ಮಿಥ್ಯಾಪವಾದ,  
ಸುಳ್ಳು ಅಪಾದನೆ, ಸುಳ್ಳುಹೇಳಿ ತಪ್ಪುಹೊರಿಸುವುದು.  
ಮಿಥ್ಯಾ ಅಭಿಶಾಪ: ।

**ಮಿಥ್ಯಾಮತಿ ಮಿಥ್ಯಾಮತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭ್ರಾಂತಿ, ತಪ್ಪು  
ತಿಳಿವಳಿಕೆ, ಒಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು ಬೇರೆ ವಸ್ತುವನ್ನಾಗಿ  
ತಿಳಿಯುವುದು. ಮಿಥ್ಯಾಚಾಸೌ ಮತಿಶ್ಚ ।

**ಮಿಥ್ಯಾವಾದ ಮಿಥ್ಯಾವಾದ** (ಪುಂ) ಸುಳ್ಳುಮಾತು, ಅಸತ್ಯ  
ವಾದ ಮಾತು.

**ಮಿಥ್ಯಾವಾದಿನ್ ಮಿಥ್ಯಾವಾದಿನ್** (ವಿಂ) ಸುಳ್ಳು ಹೇಳು  
ವವನು, ಅಸತ್ಯವನ್ನು ನುಡಿಯುವವನು. ಮಿಥ್ಯಾ ವದತಿ  
— ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಗಿನಿ:" (೩-೨-೭೮) ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ತೀಪ್" (೪-೨-೪) । —ವಾದಿನಿ —ವಾದಿನೀ.  
"ಮಿಥ್ಯಾವಾದಿನಿ ಹೃತಿ ಬಾಂಧವಜನಸ್ಯಾಜ್ಞಾತಪಿಡಾಗಮೇ"  
ಅಮರಂ ೧೦೪ ।

**ಮಿಥ್ಯಾಸಾಕ್ಷಿನ್ ಮಿಥ್ಯಾಸಾಕ್ಷಿನ್** (ವಿಂ) ಸುಳ್ಳು ಸಾಕ್ಷಿ,  
ನೋಡದಿದ್ದುದನ್ನು ನೋಡಿದುದಾಗಿ ಸುಳ್ಳು ಹೇಳುವ  
ಸಾಕ್ಷಿ. ಮಿಥ್ಯಾಭಾವಿ ಸಾಕ್ಷಿ ।

**ಮಿಥ್ಯೋತ್ತರ ಮಿಥ್ಯೋತ್ತರ** (ನಂ) ಸುಳ್ಳು ಉತ್ತರ,  
ಮಾತನ್ನು ಬದಲಾಯಿಸಿ ಹೇಳುವುದು, ಅಪಲಾಪ. ಸುಳ್ಳು  
ಹೇಳುವುದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ: (1) ಇದು ಸುಳ್ಳು.  
(2) ಇದು ನನಗೆ ತಿಳಿಯದು. (3) ನಾನು ಅಲ್ಲಿರಲಿಲ್ಲ.  
ಮತ್ತು (4) ನಾನು ಆಕಾಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿಯೇ ಇರಲಿಲ್ಲ.  
"मिथ्यैतन्नाभिजानामि मम तत्र न सन्निधिः । अजात-  
श्चास्मि तत्काले इति मिथ्या चतुर्विधम्" ।



**ಮಿಥ ಮಿಥ** (ನಂ) 1. ಚಿತ್ತಸಂಕೋಚ. 2. ನಿಧಿ. 3. ಸೋಮಾರಿತನ. "ಮಿಥಂ ಚಿತ್ತಾಮಿಸಂಕ್ಷೇಪೇ ನಿಧಾಯಾಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. "ಮಿಥಂ ಚಿತ್ತಾಮಿಸಂಕ್ಷೇಪೇ ಕ್ಲಿಬಮಾಲಸ್ಯನಿಧಯೋಃ" ಮೇದಿಂ.

**ಮಿಥ ಮಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಕೊಬ್ಬಿರುವ, ಪುಷ್ಪವಾಗಿರುವ. ಮಿಮಿಧಾ (ಸ್ತೇಹನೆ) "ಕ್ತ:" (3-4-92). 2. ಕೊಬ್ಬು ಬಳಿದಿರುವ. 3. ಜಿಡ್ಡು ಬಳಿದಿರುವ. 4. ಪ್ರೀತಿಯ ಮನೋಭಾವವುಳ್ಳ.

**ಮಿನ್ಮಿನ ಮಿನ್ಮಿನ** (ವಿಂ) ಅರೆಮೂಗ, ಅನುನಾಸಿಕ ಸಹಿತ ವಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವವನು. ಕಫಸಹಿತವಾದ ವಾಯುವು ಧಮನಿಗಳನ್ನು ಆವರಿಸಿಕೊಂಡು ಮನುಷ್ಯನನ್ನು ಮೂಕ ನನ್ನಾಗಿಯೂ ಅರೆಮೂಗನನ್ನಾಗಿಯೂ ತೊಡಲುತ್ಯ ಮಾಡುವವನನ್ನಾಗಿಯೂ ಮಾಡುವುದು. "ಆವೃತ್ಯ ವಾಯುಃ ಸಕಪೋ ಧಮನೀಃ ಶಬ್ದವಾಹಿನೀಃ. | ನರಾನ್ ಕರೋತ್ಯ- ಕ್ರಿಯಕಾನ್ ಮೂಕಮಿನ್ಮಿನಗದ್ಗದಾನ್".

**ಮಿಮಿಕ್ಷಾ ಮಿಮಂಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಲು ಆಸೆ, ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಇಳಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಮಿಮಿಕ್ಷುಮಿಮಿಕ್ಷಾ ಟು ಮಸ್ತಜಿ (ಶುದ್ಧಿ) + ಸನ್ "ಅ:" (3-3-102).

**ಮಿಮಿಕ್ಷು ಮಿಮಂಕ್ಷು** (ವಿಂ) ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಮಿಮಿಕ್ಷುಮಿಮಿಕ್ಷು:—ಡುಮಸ್ತಜಿ (ಶುದ್ಧಿ) + ಸನ್ "ಃ:" (3-2-166). "ಯದ್ವಿತ್ತಿನ: ಕಡಕಟಾಹತಟಾನ್ಮಿ- ಮಿಮಿಕ್ಷೋರ್ಮಿಮಿಕ್ಷುಪಾತಿ ಪರಿತ: ಪಟಲೇರಲಿನಾಮ್" ಮಾಘಂ 4-39.

**ಮಿಮಿರ ಮಿಮಿರ** (ವಿಂ) ಎವೆಯಿಕ್ಕದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ, ರವೆ ಮುಚ್ಚದೆ ನೋಡುತ್ತಿರುವ. "ಮಿಮಿರ: ಸ್ತಬ್ಧ- ಲೋಚನ:" ವೈಜಂ.

**ಮಿಲತ್ ಮಿಲತ್** (ವಿಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುತ್ತಿರುವ, ಒಟ್ಟು ಗೊಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಎದುರುಗೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ಮಿಲ (ಸಂಗಮ) "ಶತ್" (3-2-124). "ಶಾನಚ್" (3-2-124). ಮಿಲಮಾನ: ಮಿಲಮಾನಃ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-2-6). —ತೀ-ತೀ, —ತೀ-ತೀ.

**ಮಿಲನ ಮಿಲನ** (ನಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು, ಒಟ್ಟು ಗೊಡುವುದು. ಮಿಲ (ಸಂಗಮ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ಜಿರೆತಿರುವುದು, ಮಿಶ್ರವಾಗಿರುವುದು. 3. ಎದುರು ಗೊಳ್ಳುವುದು. 4. ಭೇಟಿಯಾಗುವುದು.

**ಮಿಲಿತ ಮಿಲಿತ** (ವಿಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿರುವ, ಒಂದು ಗೊಡಿರುವ, ಒಂದು ಕಡೆ ಕಲೆತಿರುವ. ಮಿಲ (ಸಂಗಮ) ಕತಂ "ಕ್ತ:" (3-4-92). "ಮಿಲಿತೇಷು ಮಿಥೋ ಯೋಡ್ವ ದಂತಿಷು ಪ್ರಸಂಭಂ ಭಟಾಃ" ಕುಮಾಂ 16-31. 2. ಬೆರೆತಿರುವ, ಮಿಶ್ರ

ವಾಗಿರುವ. 3. ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ, ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವ. "ಮಿಶ್ರಿತೋರ ಮಿಲಿತಾಧರಂ ಮಿಥ:" ನೆಪಂ 16-142. (ನಂ) 4. ಬೆರೆತಿರುವುದು, ಮಿಶ್ರ ವಾಗಿರುವುದು. ಮಿಲ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114).

**ಮಿಲಿತವತ್ ಮಿಲಿತವತ್** (ವಿಂ) 1. ಒಂದುಗೂಡಿರುವ, ಒಂದು ಕಡೆ ಸೇರಿರುವ. ಮಿಲ (ಸಂಗಮ) "ಕ್ತವತು:" (3-2-102). 2. ಬೆರೆತಿರುವ, ಮಿಶ್ರವಾಗಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-6). —ತೀ-ತೀ.

**ಮಿಲಿನ್ದ ಮಿಲಿನ್ದ** (ಪುಂ) ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. "ಪರಿಣತ- ಮಕರನ್ದಮಾಮಿಕಾಸ್ತೇ ಜಗತಿ ಭವಂತು ಚಿರಾಯುಷೋ ಮಿಲಿನ್ದಾಃ" ಭಾಮಿಂ ವಿಂ.

**ಮಿಶ್ರ ಮಿಶ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠ, ಗೌರವದ ಮನುಷ್ಯ ಮತ್ತು ಪೂಜ್ಯರಲ್ಲಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಪದ. ಆರ್ಯಮಿಶ್ರ: ಮಂಜನಮಿಶ್ರ: ಕೃಷ್ಣಮಿಶ್ರ: ಇತ್ಯಾದಿ. 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಅನೆ. 3. ಕೃತ್ರಿಕ ಮತ್ತು ವಿಶಾಖಾ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಗುಂಪು. (ನಂ) 4. ಬೆರೆಕೆ, ಬೆರೆತಿರುವುದು. (ವಿಂ) 5. ಬೆರೆ ತಿರುವ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಕಲೆತಿರುವ. ಮಿಶ್ರ (ಸಂಪರ್ಕ) ಅಚ್ (3-1-134). "ಕರಮ್ಬ: ಕರಮ್ಬೋ ಮಿಶ್ರ: ಸಂಪುಕ್ತ: ಖಚಿತ: ಸಮಾಃ" ವೈಜಂ.

**ಮಿಶ್ರಕ ಮಿಶ್ರಕ** (ನಂ) 1. ದೇವೋದ್ಯಾನ, ದೇವತೆಗಳ ಉದ್ಯಾನವನ. "ದೇವೋದ್ಯಾನಾನಿ ವೈಭ್ರಾಜಂ ಮಿಶ್ರಕಂ ಸಿಂಧ- ಕಾರಣಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 2. ಉಷ್ಣರ ಲವಣ, ಉಪ್ಪು ಮಂಜಿನಿಂದ ತಯಾರಾದ ಉಪ್ಪು. 3. ಬೆರೆಕೆ. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿರುವುದು. (ವಿಂ) 4. ಬೆರೆತಿರುವ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿ ರುವ.

**ಮಿಶ್ರಜ ಮಿಶ್ರಜ** (ಪುಂ) ಹೇಸರಗತ್ತ. ಮಿಶ್ರಾತ್ ಮಿಶ್ರಜಾತಿ- ಯೋಃ ಸಂಪರ್ಕಾತ್ ಜಾಯತೇ —ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃಭವಿ) "ಃ:" (3-2-96).

**ಮಿಶ್ರಜಾತಿ ಮಿಶ್ರಜಾತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬೆರೆಕೆಜಾತಿ. (ವಿಂ) 2. ಬೆರೆಕೆಜಾತಿಯ.

**ಮಿಶ್ರಣ ಮಿಶ್ರಣ** (ನಂ) ಬೆರೆಸುವುದು, ಒಂದಾಗಿ ಸೇರಿಸು ವುದು. ಮಿಶ್ರ (ಸಂಪರ್ಕ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

**ಮಿಶ್ರಣೀಯ ಮಿಶ್ರಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಬೆರೆಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಬೆರೆಸಬೇಕಾದ. 3. ಬೆರೆಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಮಿಶ್ರ (ಸಂಪರ್ಕ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96). "ತವ್ಯ:" (3-1-96). ಮಿಶ್ರಿತವ್ಯ: ಮಿಶ್ರಿತವ್ಯಃ.

**ಮಿಶ್ರಪುಷ್ಪಾ ಮಿಶ್ರಪುಷ್ಪಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂತ್ಯ. ಮಿಶ್ರಾಣಿ ಪರಸ್ಪರಂ ಸಂಶಿಲಷ್ಠಾನಿ ಪುಷ್ಪಾಣ್ಯಸ್ಯಾಃ.



**ಮಿಶ್ರವರ್ಣ ಮಿಶ್ರವರ್ಣ** (ನಂ) 1. ಕೃಷ್ಣಾಗರು. 2. ಬೆರಕೆ ಬಣ್ಣ. 3. ಬೆರಕೆ ಜಾತಿ. (ವಿಂ) 4. ಬೆರಕೆಜಾತಿಯ. 5. ಬೆರಕೆ ಬಣ್ಣದ.

**ಮಿಶ್ರಶಬ್ದ ಮಿಶ್ರಶಬ್ದ** (ಪುಂ) ಬೆರಕೆಜಾತಿಯ ಹೇಸರಗತ್ತೆ. ಮಿಶ್ರ: ಮಿಲಿತ: ಅಶ್ವರಾಸಭಯೋರಿವ ಶಬ್ದೋಜ್ಯ.

**ಮಿಶ್ರಿತ ಮಿಶ್ರಿತ** (ವಿಂ) 1. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಬೆರಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಒಂದುಗೂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಮಿಶ್ರ (ಸಂಪರ್ಕ) + ಣಿच् "ಕ್ತ:" (3-2-102). 4. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. "ಮಿಶ್ರಿತೋ ಮಿಲಿತಾಧರಂ ಮಿಶ್ರ:" ನೆಪಂ 16-152.

**ಮಿಶ್ರೇಯಾ ಮಿಶ್ರೇಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಬ್ಬಸಿಗೆಸೊಪ್ಪು. ಮಿಶ್ರಯತಿ —ಮಿಶ್ರ (ಸಂಪರ್ಕ) + ಣಿच् "ಅच्" (3-1-134). ಇಯತೇ—ಇನ್ (ಗತೌ) "ಯತ್" (3-2-99). ಮಿಶ್ರಾಚಾಸೌ ಏಯಾ ಚ. ಶಕಂ.

**ಮಿಷ ಮಿಷ** (ನಂ) 1. ವ್ಯಾಜ, ನೆಪ. ಮಿಷ (ಸ್ಪರ್ಧಾಯಾಮ್) "ಕ:" (3-1-134). "ಪ್ರಿಯಾಸು ಬಾಲಾಸು ರತಕ್ಷಮಾಸು ಚ ದ್ವಿಪತ್ರಿತಂ ಪಲ್ಲವಿತಂ ಚ ವಿಭ್ರತಮ್. ಸ್ಮರಾಜಿತಂ ರಾಗಮಹೀರಹಾಂ-ಕುರಂ ಮಿಷೇಣ ಚಂಚವಾಶ್ಚರಣದ್ವಯಸ್ಯ ಚ" ನೆಪಂ 1-118. 2. ಮೋಸ, ವಂಚನೆ. 3. ಸ್ಪರ್ಶ, ಸಂಬಂಧ. (ಪುಂ) 4. ಸ್ಪರ್ಧೆ, ಮೇಲಾಟ. "ಇತಿ ವ್ಯಾಯನ್ ಮಿಷಂ ಕೃತ್ವಾ ತದೇವಾಸ್ಕುಟಯಾ ಗಿರಾ. ನಿಗಾಂತೇವ ವಿಶುದ್ಧಾತ್ಮಾ ಧನದೇವಾಂತಿಕಂ ಯಯಿ" ಕಥಾಸಂ. "ಮಿಷಂ ವ್ಯಾಜೇ ಸ್ಪರ್ಧನೇ ನಾ" ಮೇದಿಂ.

**ಮಿಷತ್ ಮಿಷತ್** (ವಿಂ) 1. ನೋಡುತ್ತಿರುವ. ಮಿಷ (ಸ್ಪರ್ಧಾಯಾಮ್) "ಶತ್" (3-2-124). "ಯಜ್ವಭಿ: ಸಂಮೃತಂ ಹವ್ಯಂ ವಿತತೇಷ್ವರ್ವರೇಷು ಸ: ಜಾತವೇದೋಮುಖಾನ್ಮಾಯಿ ಮಿಷತಾಮಾಚ್ಛಿನಂತಿ ನ:" ಕುಮಾಂ 2-46. 2. ಹೋರಾಡುತ್ತಿರುವ, ಸ್ಪರ್ಧಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ.

**ಮಿಷಿ ಮಿಷಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜಟಾಮಾಂಸಿ. 2. ಸಬ್ಬಸಿಗೆ ಸೊಪ್ಪು. 3. ಕಾಡು ಸಬ್ಬಸಿಗೆ.

**ಮಿಷಿಕಾ ಮಿಷಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಟಾಮಾಂಸಿ.

**ಮಿಷಿತ ಮಿಷಿತ** (ವಿಂ) ಚಲಿಸಿದ, ಹೊರಳಾಡಿದ. ಮಿಷ (ಸ್ಪರ್ಧಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (3-4-92).

**ಮಿಷಿ ಮಿಷಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಟಾಮಾಂಸಿ.

**ಮಿಷ್ಠ ಮಿಷ್ಠ** (ಪುಂ) 1. ಮಧುರರಸ, ಸಿಹಿ. ಮಿಷ್ಠ (ಸೇವನೆ) "ಕ್ತ:" (3-4-92). (ನಂ) 2. ಮಿಠಾಯಿ. (ವಿಂ) 3. ಮಧುರವಾದ, ಸಿಹಿಯಾದ. "ತರುಣಂ ಸರ್ವಪಶಾಕಂ ನವೋದನಂ ಪಿಚ್ಛಿಲಾನಿ ಚ ದಧಿನಿ. ಅಲ್ಪವ್ಯಯೇನ ಸುಂದರಿ ಗ್ರಾಮ್ಯಜನೋ ಮಿಷ್ಠಮಸ್ತುತಿ" 4. ಚಿಮುಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ತೇವಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಹೋರಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸ್ಪರ್ಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಮಿಷ್ಠ (ಸೇವನೆ, ಸ್ಪರ್ಧಾಯಾ ವಾ) "ಕ್ತ:" (3-2-102).

**ಮಿಷ್ಠಾನ್ಮ ಮಿಷ್ಠಾನ್ಮ** (ನಂ) ಮಧುರರಸದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಅನ್ನ ಮುಂತಾದುದು. ಮಿಷ್ಠಮನ್ಮ.

**ಮಿಸಿ(ಸಿ) ಮಿಸಿ(ಸಿ)** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಡು ಸಬ್ಬಸಿಗೆ. 2. ಸಬ್ಬಸಿಗೆಸೊಪ್ಪು. ಮಸಿ (ಪರಿಣಾಮೇ) "ಇನ್" (3-4-119). ಇಕಾರ: ಬಾಹುಂ. 3. ಜಟಾಮಾಂಸಿ. 4. ಅಜವಾನ, ಹಿಮ.

**ಮಿಹಿಕಾ ಮಿಹಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಮ, ಮಂಜು. ಮಿಹ (ಸೇವನೆ) "ಕ್ವನ್" (3-2-32). "ತುಷಾರಸ್ತುಹಿನಂ ಹಿಮಮ್. ಪ್ರಾಲೇಯಂ ಮಿಹಿಕಾ" ಅಮಂ. "ವಿಶತಿ ಧ್ರುವತಿಯಾಗೇ ರಾತ್ರಿಮುಚಂ ಮಿಹಿಕಾರುಚಮ್" ನೆಪಂ 19-34.

**ಮಿಹಿರ ಮಿಹಿರ** (ಪುಂ) 1. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. ಮಿಹ (ಸೇವನೆ) "ಕಿರಕ್" (3-1-42). "ಪೃಥುವರ್ತುಲತನ್ನಿತಮ್ಬಕೃನ್ಮಿಹಿರ-ಸ್ಯಂದನಶಿಲ್ಪಶಿಕ್ಷಯಾ" ನೆಪಂ 2-36. 2. ವೃದ್ಧ, ಮುದುಕ. "ಮಿಹಿರೋ ಭಾಸ್ಕರೇ ವೃದ್ಧೇ" ವಿಶ್ವಂ. 3. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 4. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 5. ಚಂದ್ರ. 6. ಅರ್ಧವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 7. ಬಾದ್ಧದೇವ. "ಮಿಹಿರೋ-ಕಂಞ್ವುದೇ ಬುದ್ಧೇ" ಹೇಮಂ. "ಮಿಹಿರಾ ವಾಯುಮೇಧಾರ್ಕಿ:" ವೇಜಂ. 8. ವರಾಹಮಿಹಿರ, ವಿಕ್ರಮಾದಿತ್ಯನ ಆಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿದ್ದ ನವರತ್ನಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ ಪಂಡಿತ (ರತ್ನ). "ಸ್ಯಾತೋ ವರಾಹ-ಮಿಹಿರೋ ನೃಪತೇ: ಸಭಾಯಾಂ ರತ್ನಾನಿ ವೈ ವರಕುಚಿರ್ನವ ವಿಕ್ರಮಸ್ಯ".

**ಮಿಥ ಮಿಥ** (ಪುಂ) 1. ಟಗರು, ಮೇಷ. ಮಿಹ (ಸೇವನೆ) "ಕ್ತ:" (3-4-92). "ಏಡಕೋಪ್ಯುರಗೋ ಮಿಥ ಉರಶ್ಚೋ ರೋಮಶೋಪ್ಯವಿ:" ವೇಜಂ. (ವಿಂ) 2. ಮೂತ್ರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಮಿಹ "ಕ್ತ:" (3-2-102). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಢಾ -ಢಾ. 3. ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದ ಹೆಂಗಸು. "ಪ್ರಸಭಾ ನಿರೀಣಾ ಮಿಥಾ ನಿಲಂಜಾ ಧರ್ಷಣೀತಿ ಚ" ವೇಜಂ.

**ಮೀನ ಮೀನ** (ಪುಂ) 1. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. ಮೀಯತೇ — ಮೀನ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ನಕ್" (3-3-3). ನಿಧಾಂ. "ಅಥ ಸ್ಫುರನ್ಮೀನವಿಧೂತಪಕ್ಷಜಾ" ಕಿರಾಂ 6-29. 2. ಮಹಾ ವಿಷ್ಣುವಿನ ಮೊದಲನೆಯ ಅವತಾರ, ಮತ್ಸ್ಯಾವತಾರ. 3. ಮೇಷ ಮೊದಲಾಗಿ ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ಲಗ್ನ ಮತ್ಸ್ಯ ರಾಶಿ.

**ಮೀನಕೇತನ ಮೀನಕೇತನ** (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ. ಕಾಮದೇವ. ಮೀನ: ಕೇತನಂ ಯಸ್ಯ.



ಮಿನಗೋಷಿಕಾ ಮೀನಗೋಷಿಕಾ (ಸ್ತಂ) ಸರಸ್ವತೀ, ಕೊಳ, ಜಲಾಶಯ. "ಪಲ್ವಲಂ ದೀಪಿಕಾ ವಾಪಿ ಯಷ್ಟಿಕಾ ಮಿನ-ಗೋಷಿಕಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | ವೇಜಂ |

ಮಿನಘಾತಿನ ಮೀನಘಾತಿನ (ಪುಂ) 1. ಬಕಪಕ್ಷಿ. ಮಿನಂ ಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತಿಯು) "ಘಿತಿ:" (೩-೨-೭೮) | (ವಿಂ) 2. ಮೀನನ್ನು ಹಿಡಿದು ಕೊಲ್ಲುವವನು.

ಮಿನರಕ್ಷ ಮೀನರಂಕ (ಪುಂ) ಮತ್ಸ್ಯವನ್ನು ಹಿಡಿದು ತಿನ್ನುವ ಪಕ್ಷಿ.

ಮಿನಾ ಮೀನಾ (ಸ್ತಂ) ಗುದ್ದಲಿಯ ಕಾವು. "ಯಷ್ಟಿನ ಕಲಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾ ಮಿನಾ ಖನಿಶ್ರೀ ತು ವಿಶಾಲಿಕಾ" ವೇಜಂ |

ಮಿನಾಕ್ಷ ಮೀನಾಂಕ (ಪುಂ) ಮದನ, ಮನ್ಮಥ. ಮಿನ: ಅಕ್ಷೋಸ್ಯ | "ಕಂದರ್ಪೋ ದರ್ಪಕೋನಕ್ಷ: ಮಿನಾಕ್ಷೋ ಮಕರಚ್ವಜ:" ವೇಜಂ |

ಮಿನಾಕ್ಷಿ ಮೀನಾಕ್ಷೀ (ಸ್ತಂ) ಮತ್ಸ್ಯದಂತೆ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಮಿನಸ್ಯ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಇವ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯಾ: |

ಮಿನಾಕ್ಷಿಣ ಮೀನಾಕ್ಷಿಣ (ಪುಂ) 1. ಕಾಡಿಗೆಸೊಗಸಿನ ಹಕ್ಕಿ, ದಾಸರಿಹಕ್ಕಿ. 2. ಮೀನಿನ ಸಾರು.

ಮೀಮಾಂಸಕ ಮೀಮಾಂಸಕ (ಪುಂ) 1. (ಪೂರ್ವ)ಮೀಮಾಂಸಾ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನರಿತವನು. 2. ಮೀಮಾಂಸಾ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು. ಮೀಮಾಂಸಾ ವೇತ್ತಿ ಅಪೀತೇ ವಾ "ಕುನ್" (೪-೨-೬೧) | ಜೈಮಿನಿಯು ಪೂರ್ವ ಮೀಮಾಂಸಾ ಸೂತ್ರಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದರು. ಅದಕ್ಕೆ ಕುಮಾರಿಲಭಟ್ಟರು ವೃತ್ತಿಯನ್ನು - ಬರೆದರು. ಶಬರ ಸ್ವಾಮಿಯು ಭಾಷ್ಯವನ್ನು ರಚಿಸಿದರು. ವೇದವ್ಯಾಸ ಮುನಿಯು ಉತ್ತರ ಮೀಮಾಂಸಾ ಸೂತ್ರಗಳನ್ನು ಬರೆದರು. ಅವಕ್ಕೆ ಶ್ರೀ ಶಂಕರಾಚಾರ್ಯರು ಅದ್ವೈತ ಭಾಷ್ಯವನ್ನೂ ಶ್ರೀ ರಾಮಾನುಜಾಚಾರ್ಯರು ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತ ಭಾಷ್ಯವನ್ನೂ ಶ್ರೀ ಮಧ್ವಾಚಾರ್ಯರು ದ್ವೈತಭಾಷ್ಯವನ್ನೂ ಬರೆದರು.

ಮೀಮಾಂಸಾ ಮೀಮಾಂಸಾ (ಸ್ತಂ) 1. ವಿಚಾರ, ವಿಮರ್ಶೆ, ಶೋಧನೆ. ಅನ್ವೇಷಣ. ಮಾನ (ವಿಚಾರ) + "ಸನ್" (೩-೧-೬) | "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨) | "ರಸಗಾಙ್ಗಾಧರ-ನಾಮ್ನಿ ಕರೋತಿ ಕುತುಕೇನ ಕಾವ್ಯಮೀಮಾಂಸಾಮ್" ರಸಗಂ | 2. ವೇದಾರ್ಥ ವಿಚಾರಮಾಡುವ ಗ್ರಂಥ. 3. ಮೀಮಾಂಸಾ ದರ್ಶನ. ಇದು ಮುಖ್ಯವಾದ ಆರು ದರ್ಶನಗಳಲ್ಲೊಂದು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಮೀಮಾಂಸಾದರ್ಶನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].

ಮೀಮಾಂಸಾಕಾರ ಮೀಮಾಂಸಾಕಾರ (ಪುಂ) ಮೀಮಾಂಸಾ ಸೂತ್ರಗಳನ್ನು ಬರೆದ ಜೈಮಿನಿಮುನಿ.

ಮೀಮಾಂಸಾದರ್ಶನ ಮೀಮಾಂಸಾದರ್ಶನ, -ಶಾಸ್ತ್ರ -ಶಾಸ್ತ್ರ

(ನಂ) ಮೀಮಾಂಸಾಶಾಸ್ತ್ರ, ವೇದಾರ್ಥವಿಚಾರಶಾಸ್ತ್ರ.

ಮೀಮಾಂಸಾಶಾಸ್ತ್ರವು ಕರ್ಮಮೀಮಾಂಸಾ (ಪೂರ್ವಮೀಮಾಂಸಾ)

ಮತ್ತು ಬ್ರಹ್ಮಮೀಮಾಂಸಾ (ಉತ್ತರಮೀಮಾಂಸಾ) ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ.

ಧರ್ಮ ಅರ್ಥ ಕಾಮ ಮತ್ತು ಮೋಕ್ಷಗಳೆಂಬ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಪುರುಷಾರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಧರ್ಮವೆಂದರೆ

ಮನುಷ್ಯನು ಇಹ ಪರದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಕರ್ಮ (ಕಾರ್ಯ) ಗಳು. ಈ ಕರ್ಮ (ಧರ್ಮ) ಗಳು

ವೇದದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಇವುಗಳನ್ನು ವಿಚಾರ

ಪೂರ್ವಕ ನಿರ್ಣಯಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೆ ಕರ್ಮಮೀಮಾಂಸಾ (ಪೂರ್ವ-

ಮೀಮಾಂಸಾ) ಎಂದೂ ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ

ವೇದಾರ್ಥವಿಚಾರಕ್ಕೆ ಬ್ರಹ್ಮಮೀಮಾಂಸಾ (ಉತ್ತರಮೀಮಾಂಸಾ)

ಎಂದೂ ಹೆಸರು. ಈ ಪೂರ್ವಮೀಮಾಂಸಾಶಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೆ

ಜೈಮಿನಿಮುನಿಯು ಸೂತ್ರಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುತ್ತಾರೆ.

"ಅಥಾತೋ ಧರ್ಮಜಿಜ್ಞಾಸಾ" ಇದು ಮೊದಲನೆಯ ಸೂತ್ರ.

ಮೊದಲು ಧರ್ಮವಿಚಾರವನ್ನು ಪ್ರಸ್ತಾಪಿಸಿ "ಚೋದನಾ-

ಲಕ್ಷಣೋರ್ಯೋ ಧರ್ಮ:" ಎಂದು ಧರ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು ತಿಳಿಸಿ

ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಮುಂದುವರೆಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಪ್ರಾಯಃ ಒಂದು

ಹೊಸ ಪದ್ಧತಿಯು ಏರ್ಪಡಬೇಕಾದರೆ ಹಿಂದೆ ಅದಕ್ಕೆ

ವಿರುದ್ಧವಾದ ಪದ್ಧತಿಯೊಂದು ಇರಲೇಬೇಕು. ಎಲ್ಲಕ್ಕೂ

ವೈದಿಕಪದ್ಧತಿಯು ಪ್ರಾಚೀನವಾದುದರಿಂದ ಇದರಲ್ಲಿ

ಜನರಿಗೆ ಆಲಸ್ಯವೇ ಹೊಸ ಪದ್ಧತಿಗೆ ಕಾರಣವಾಗಿರಬೇಕು.

ಇಂತಹ ಆಲಸ್ಯಮೂಲಕವಾದ ಧರ್ಮವಿರುದ್ಧವಾದ ಪದ್ಧ

ತಿಯು ಶುದ್ಧವಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ವೈದಿಕಮತೋದ್ಧಾರ

ಕ್ಕಾಗಿ ಅದರ ಖಂಡನಾತ್ಮಕವಾದ ಹೊಸ ಮತವೊಂದು

ಪ್ರಾರಂಭವಾಗಬೇಕಾಗುವುದು. ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಕರ್ಮಾ

ಚರಣೆಯು ಕ್ಲೇಶಕರವಾದುದರಿಂದ ಅದರಲ್ಲಿ ಆಲಸ್ಯ

ವುಂಟಾಗಿ ಯಾವ ಕರ್ಮನಿರ್ಬಂಧವೂ ಇಲ್ಲದ ಹೇತು

ದರ್ಶನಗಳು ಹುಟ್ಟಿದುವು. ಈ ಕರ್ಮನಿರ್ಬಂಧವಿಲ್ಲದೆ

ಸ್ವೇಚ್ಛಾಚಾರಕ್ಕೆ ಅವಕಾಶವುಂಟಾಯಿತು. ಭಕ್ತ್ಯಾಭಿಕ್ಷು

ವ್ಯವಸ್ಥೆಯಿಲ್ಲದಂತಾಯಿತು. ದೇಹವು ಸದಾ ಮಲಿನ

ವೆಂದೂ ಆತ್ಮನೇ ಸದಾ ಪರಿಶುದ್ಧನೆಂದೂ ಸ್ನಾನಾದಿಗಳಿಂದ

ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲವೆಂದೂ ಅಹಿಂಸಾತತ್ತ್ವವೇ ಸರ್ವ

ಶ್ರೇಷ್ಠವೆಂದೂ ಕೆಲವು ಜನರಲ್ಲಿ ಭಾವನೆಯುಂಟಾಯಿತು.

ಇಂತಹ ಹೇತುವಾದದಲ್ಲಿ ದೃಷ್ಟಿಯಿಡದೆ ಕೇವಲ ಧರ್ಮ

ದಲ್ಲೇ ದೃಷ್ಟಿಯುಳ್ಳ ಮಹಾಜನರಿಂದ ಪರಿಗೃಹೀತವಾದ

ವೇದಕ್ಕೆ ಪ್ರಾಮಾಣ್ಯಕೊಡುವ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ಈ

ಮೀಮಾಂಸಾದರ್ಶನವು ಹುಟ್ಟಿತು. ಇದಕ್ಕೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ

ಮೀಮಾಂಸಾದರ್ಶನವು ಹುಟ್ಟಿತು. ಇದಕ್ಕೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ

ಮೀಮಾಂಸಾದರ್ಶನವು ಹುಟ್ಟಿತು. ಇದಕ್ಕೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ



ಚಾರ್ವಾಕಾದಿಮತಗಳನ್ನು ನಿರಾಕರಿಸಲು ಈ ಮತವು ಹುಟ್ಟಿಬೇಕಾಯಿತು.

ವೇದವೆಂದರೆ ಅನಾದಿಸಂಪ್ರದಾಯದಿಂದ ಬಂದ ಮತ್ತು ಮಹಾಜನರಿಂದ ಪರಿಗೃಹೀತವಾದ ಗ್ರಂಥರಾಶಿ. ಇದು ನಿಯಮಪೂರ್ವಕವಾಗಿ ಗುರುಶಿಷ್ಯಪರಂಪರೆಯಿಂದ ಮಹಾತ್ಮರಾದ ಮುಖಗಳ ಹೃದಯದಲ್ಲಿರುವುದು. ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲಿ ಕಂಡುಬರುವ ವೇದವಾಕ್ಯಗಳು ಲೌಕಿಕವಾಕ್ಯಗಳಾದುದರಿಂದ ಅವಕ್ಕೆ ಅಧ್ಯಯನ ನಿಯಮವಿಲ್ಲ. ಅವನ್ನು ಎಲ್ಲರೂ ಅಧಿಕರಿಸಬಹುದು. ಈ ವಿಷಯವನ್ನು ಕುಮಾರಿಲ ಭಟ್ಟರು "ತಾನೇವ ವೈದಿಕಾನ್ ವರ್ಣಿನ್ ಭಾರತಾದಿನಿವೇಶಿತಾನ್ | ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯನಿಯಮಂ ಹಿತ್ವಾ ಲೋಕಬುದ್ಧಯಾ ಪ್ರಯುಜ್ಜತೇ" ಎಂದು ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ.

**ಮೀರ ಮೀರ** (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ. 2. ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ. 3. ಜಲ, ನೀರು. 4. ಪರ್ವತದ ಒಂದು ಭಾಗ.

**ಮೀಲ - ನಿಮೇಷಣೆ** (ಮಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಮೀಲತಿ ಮೀಲತಃ ಮೀಲಂತಿ | ಮಿಮೀಲ ಮಿಮೀಲತುಃ ಮಿಮೀಲುಃ | ಮೀಲಿತಾ | ಮೀಲಿಷ್ಯತಿ | ಮೀಲತು | ಅಮೀಲತ್ | ಮೀಲೇತ್ | ಮೀಲ್ಯಾತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಮುಚ್ಚು, ಮುಚ್ಚಿಕೊ. "ಮೀಲತಿಸೌ ಕುಮುದಿನಿ ಸಹ ತಾರಕಾಭಿಃ" | ಯಾದಂ ೧೯-೭೪ |

**ಕರ್ಮಿಣಿಃ**—ಮೀಲಯತೇ | ಮಿಮೀಲೇ | ಮೀಲಿತಾ | ಮೀಲಯತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಗಿಣಿಃ**—ಮೀಲಯತಿ, -ತೇ | ಮೀಲಯಾಂ ಚಕಾರ -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಮೀಲಯಿತಾ | ಮೀಲಯತು, -ತಾಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತುಃ**—ಮೀಲಿತವ್ಯಮ್ | ಮೀಲನೀಯಮ್ | ಮೀಲ್ಯಮ್ | ಮೀಲಿತಃ | ಮೀಲಿತವಾನ್ | ಮೀಲನ್, -ಂತಿ | ಮೀಲಿತುಮ್ | ಮೀಲಿತಮ್ | ಮೀಲನಮ್ | ಮೀಲಿತ್ವಾ | ತನ್ಮೀಲಯ |

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು :

(1) **ಉ + ಮೀಲ = ತನ್ಮೀಲತಿ** | ತನ್ಮೀಲನಮ್ | ತನ್ಮೀಲಿತಃ | ತನ್ಮೀಲಯ | 1. ಬಿಚ್ಚು, (ಕಣ್ಣು) ತೆರೆ. "ತನ್ಮೀಲಯ ನೇತ್ರಯುಗಮುತಮಪಞ್ಜರಸ್ಥಾಃ ಪಾತ್ರಾವಶಿಷ್ಟ-ಕದಲೀಫಲಾಯಸಾನಿ" | 2. ಉದ್ದೇಶಗೊಳ್ಳು, ಉದ್ದೇಶಿತ ನಾಗು, ಪ್ರೇರಿತನಾಗು. "ಬೋಧಿತಸ್ತನುಶಯಸ್ತಠಣೀನಾಮುನ್ಮಿ-ಮೀಲ ವಿಶದಂ ವಿಷಮೇಷುಃ" | ಮಾಧಂ ೧೦-೭೪ | 3. ಕಾಣಿಸಿಕೊ, ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷನಾಗು. "ತಂ ವಾಯುರ್ಜ್ವಲನೋ ಜಲಂ ಕ್ಷಿತಿರೀರಿತಿ ತ್ರೈಲೋಕ್ಯಮುನ್ಮೀಲತಿ" | ಪ್ರಬೋಧಂ ೧-೧ | 4. ಅರಳು, ವಿಕಾಸ ಗೊಳ್ಳು. "ತನ್ಮೀಲನ್ಮುಕುಲಕರಾಲಕುಂದಕೋಶಪ್ರಚ್ಯೋತದ್ವನ-ಮಕರಂದಗಂಧಬಂಧೋ" | ಮಾಲತೀಂ ೨-೪೧ | 5. ಪ್ರದರ್ಶಿಸು, ತೋರಿಸು. "ತ್ವಯಾಽಽ ಸಾಧುತ್ವಮುನ್ಮೀಲಿತಮ್" |

(2) **ನಿ + ಮೀಲ = ನಿಮೀಲತಿ** | ನಿಮೀಲಿತಃ | ನ್ಯಮೀಲತ್ | 1. ಕಣ್ಣು ಮುಚ್ಚಿಕೊ. "ಶೃङ್ಗೇಣ ಚ ಸ್ಪರ್ಶನಿಮೀಲಿತಾಕ್ಷಿಂ ಮೃಗೀಮಕಂಠಯತ ಕೃಷ್ಣಸಾರಃ" | ಕುಮಾಂ ೩-೩೬ | 2. (ಅರಳಿದ ಹೂವು) ಮುಕುಳಿತವಾಗುವುದು. "ನಿಮೀಲಿತಾನಾಮಿವ ಪಕ್ಷುಜಾನಾಮ್" | 3. ಮರೆಯಾಗು, ಕಾಣಿಸದಿರು. "ಛೌನಿಮೀಲಿತನಕ್ಷತ್ರಾ" | 4. ಅಪ್ರಸಿದ್ಧ ನಾಗು, ಅಪ್ರಕಾಶನಾಗು. "ಸೋಹಮಿಜ್ಯಾವಿಶುದ್ಧಾತ್ಮಾ ಪ್ರಜಾಲೋಪನಿಮೀಲಿತಃ" | ರಘುಂ ೨-೬೮ |

**ಮೀಲತ್ ಮೀಲತಃ** (ವಿಂ) 1. (ಕಣ್ಣು) ಮುಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳು ತ್ತಿರುವ. ಮೀಲ (ನಿಮೇಷಣೆ) "ಘಾತು" (೩-೨-೧೨೪) | "ಮಿಖತಾಂ ಮೀಲತಾಂ ವಾಪಿ ದ್ರುತಂ ಧಾವತಿ ಜೀವಿತೇ | ಅನಥ ತನುತ ಕ್ಷೇಮ್ಯಮಾಂತರಂ ಧನಮಕಥಮ್" | ಯಾದಂ ೨೨-೪೦ | 2. ಅರಳುತ್ತಿರುವ, ವಿಕಾಸಹೊಂದುತ್ತಿರುವ.

**ಮೀಲನ ಮೀಲನ** (ನಂ) 1. ಕಣ್ಣು ಮುಚ್ಚುವುದು, ರಿಪ್ಪೆ ಯಾಡುವುದು. ಮೀಲ (ನಿಮೇಷಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಮುಕುಳಿತವಾಗುವುದು, ಅರಳಿದ ಹೂವು ಮುಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

**ಮೀಲಿತ ಮೀಲಿತ** (ನಂ) 1. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಸಾದೃಶ್ಯದಿಂದ ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳಿಗೆ ಪರಸ್ಪರ ಭೇದವೇ ತಿಳಿಯದಿರುವ ಕಡೆ ಮೀಲಿತಾಲಂಕಾರ. "ಮೀಲಿತಂ ಯದಿ ಸಾದೃಶ್ಯಾಽಘೋಷೇನ ಏವ ನ ದೃಶ್ಯತೇ" | ಉದಾಃ "ರಸೋ ನಾಲಕ್ಷಿ ಲಾಕ್ಷಾಽಯಾಶ್ಚರಣೇ ಸಹಜಾರುಣೇ" | ಚಂದ್ರಾಂ | ಸಹಜ ವಾಗಿಯೇ ಕೆಂಪಾಗಿರುವ ಕಾಲಿಗೂ ಅದಕ್ಕೆ ಬಳಿದಿರುವ ಲಾಕ್ಷಾರಸಕ್ಕೂ ಭೇದವೇ ತಿಳಿಯಲಿಲ್ಲವೆಂದು ವರ್ಣಿತ ವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ ಮೀಲಿತಾಲಂಕಾರ. (ವಿಂ) 2. ಮುಚ್ಚಿಕೊಂಡಿರುವ, ಮುಕುಳಿತವಾಗಿರುವ, ಅರಳದೆ ಇರುವ. (ಹೂವು) 3. ಮುಚ್ಚಿಕೊಂಡಿರುವ (ಕಣ್ಣು). 4. ಕಣ್ಮರೆಯಾದ, ತಿರೋಧಾನ ಹೊಂದಿದ.

**ಮೀವರ ಮೀವರ** (ಪುಂ) ಸೇನೆಯ ಅಧಿಕಾರಿ, ಸೇನಾಪತಿ. ಡು ಮೀವ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಪ್ವರವ್" (೩ಂ ೩-೧) | ನಿಪಾಂ |

**ಮೀವಾ ಮೀವಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 2. ಹೊಟ್ಟೆ ಯಲ್ಲಿ ಅನ್ನನುಳದಲ್ಲಿ ಸೇರಿ ಬಾಧೆ ಪಡಿಸುವ ಲಾಡಿಹುಳ. ಮೀವ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ವನ್" (೩ಂ ೧-೧೫೨) | ನಿಪಾಂ | ಮೀವಾ ತದರಕ್ರಮಿಃ ವಾಯುಶ್ಚ ಸಿಂ ಕೌಂ | 3. ಶೀತರ, ನೀರಿನ ಹನಿ. 4. ಸಾರ, ತಿರುಳು.

**ಮು ಮು** (ಪುಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರ. 2. ಸಂಸಾರಬಂಧನ ದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ, ಮೋಕ್ಷ. 3. ನಿರ್ಬಂಧ, ಸೆರೆ, ಬಂಧನ.



**ಮುಕ ಮುಕ** (ಪುಂ) 1. ಸಗಣೆಯ ವಾಸನೆ. 2. ಹಸುವಿನ ಗಂಜಲ (ಮೂತ್ರ) ದ ವಾಸನೆ. "ತದ್ಗಂಧೋ ದೇಹಲಿಂಗೋ ವಿ-  
ಷ್ಣುತ್ರಯೋಃ ಮುಕಮುರೋ" ವೇಜಂ.

**ಮುಕ್ತ ಮುಕು** (ಪುಂ) ಅಪವರ್ಗ, ಮೋಕ್ಷ, ಸಂಸಾರ ಬಂಧನ ದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ. ಮುಕ್ತ (ಮೋಕ್ಷಣ) "ಕು:" ಬಾಹುಂ.

**ಮುಕ್ತ ಮುಕುಟ** (ನಂ) ಕಿರೀಟ. ಮಕ್ಕತೇಜೇನ — ಮಕಿ (ಮಂಡನೆ) "ಠ:" ಬಾಹುಂ. ಪೂಂ. "ಮುಕ್ತಾಂಶುರಜ್ಜಿತ-  
ಪರಾಗಮಪ್ರತಃ ಸ ನ ಯಾವದಾಪ ಶಿರಸಾ ಮಹಿತಲಮ್" ಮಾಘಂ 13-9.

**ಮುಕ್ತ ಮುಕುಟೇ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆರಳುಗಳನ್ನು ಉಜ್ಜಿ ಚಿಟ್ಟುಕಿ ಹಾಕುವುದು, ಬೆರಳುಗಳನ್ನು ಉಜ್ಜಿ ಶಬ್ದ ಮಾಡುವುದು.

**ಮುಕ್ತ ಮುಕುಂದ** (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ, ವಿಷ್ಣು. ಮುಕ್ತ ಮೋಕ್ಷಂ ದದಾತಿ — ಡು ದಾನ್ (ದಾನ) "ಕ:" (3-2-3). ಪೂಂ. "ತೈಃ ಪ್ರಾರ್ಥಿತಃ ಸ್ವಯಂ ಮುಕ್ತಿ ಮುಕ್ತುಂದಃ ಸ್ಥಾಪದಾತಿ ಸಃ" ಇತಿ ನಿಹಕ್ತಿಃ. "ಜೀವೋ ವಿನಯಿತಾ ಸಾಕ್ಷಿ ಮುಕ್ತುಂದೋ ಮಿತವಿಕ್ರಮಃ" ವಿಂ ಸಂ. "ಮುಕ್ತುಂದ ಮೂರ್ನಾ ಪ್ರಣಿಪತ್ಯ ಯಾಚೇ ಭವಂತಮೇಕಾಂತಮಿಯಂತಮರ್ಯಮ್" ಮುಂ ಮಾಂ. 2. ಕುಬೇರನ ನವನಿಧಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಮಹಾಪದ್ಮಾಶ್ಚ ಪದ್ಮಾಶ್ಚ ಶಾಹ್ನೋ ಮಕರಕಂಠಪಿ. ಮುಕ್ತುಂದಃ ಕುಂದನೀಲೋ ಚ ವರಶ್ಚ ನಿಧಯೋ ನವ" ಅಮಂ. 3. ಪಾದರಸ, ಪಾರದ. 4. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ರತ್ನ. "ಮುಕ್ತುಂದಃ ಪಾರದೇ ರತ್ನವಿಶೇಷೇ ಗರ್ಭಾವಜೇ" ಹೇಮಂ. 5. ಕುಂದುರುಷ್ಯವೆಂಬ ಗುಂದಿಗರ ಒಂದು ಸಂಕು, ಪಾಲಕ. "ಮುಕ್ತುಂದಃ ನಿಧಿಭಿರ್ದಿಷ್ಟು-  
ರತ್ನಭೇದೇ ಚ ಕುಂದುರೋ" ಮೇದಿಂ.

**ಮುಕ್ತ ಮುಕುಂದಕ** (ಪುಂ) 1. ಈರುಳ್ಳಿ. "ಪಲಾಂಧುಸ್ತು ಶ್ವೇತಕಂದೋ ಮುಕ್ತುಂದಕಃ" ವೇಜಂ. 2. ಒಂದು ಧಾನ್ಯ.

**ಮುಕ್ತ ಮುಕುಮ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಭಕ್ತಿರಸ. 2. ಪ್ರೇಮ. "ಮುಕ್ತುಮ್ ಭಕ್ತಿರಸಪ್ರೇಮವಚನಂ ವೇದಸಮ್ಮತಮ್. ಯಸ್ತದ್ವದಾತಿ ಭಕ್ತೇಭ್ಯೋ ಮುಕ್ತುಂದಸ್ತೇನ ಕೀರ್ತಿತಃ" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ. 3. ನಿರ್ವಾಣ. ಮೋಕ್ಷ. "ಮುಕ್ತುಮವ್ಯಯಮಾಂತಂ ಚ ನಿರ್ವಾಣಂ ಮೋಕ್ಷವಾಚಕಮ್".

**ಮುಕ್ತ ಮುಕುರ** (ಪುಂ) 1. ದರ್ಪಣ, ಕನ್ನಡಿ. ಮಕ್ಕತೇ — ಮಕಿ (ಮಂಡನೆ) "ಠ:" (3-2-3). ಉಕಾರಶ್ಚ ನಿಪಾಂ. "ಮುಕ್ತುರೇಣ ವೇಪಯುತೋತ್ತಿಮರಾತ್ ಕಥಮಪ್ಯಪಾತಿ ನ ವಧುಕರತಃ" ಮಾಘಂ 9-93. 2. ರತ್ನಗನ್ನಡಿ. 3. ಕುಲಾಲನ ದಂಡೆ, ಕುಂಬಾರನ ಕೋಲು. "ಕುಲಾಲದಂಡೇ ಮುಕ್ತುರೋ ವರ್ಣಾದರ್ಶಯೋರಪಿ" ನಾನಾರ್ಥಂ. 4. ವಕುಳ ವೃಕ್ಷ. 5. ಕೋರಕ, ಮೊಗ್ಗು. "ಮುಕ್ತುರೋ ಮುಕ್ತುರೋ ಯಥಾ. ಕುಲಾಲ ದಂಡೇ ವಕುಲೇ ಕೋರಕಾದರ್ಶಯೋರಪಿ" ಹೇಮಂ.

**ಮುಕ್ತ ಮುಕುಲ** (ಪುಂ) 1. ಅರಳುತ್ತಿರುವ ಮೊಗ್ಗು. ಮಕಿ (ಮಂಡನೆ) "ಠ:" ಬಾಹುಂ. ನಿಪಾಂ. "ಕಲಿಕಾ ಕೋರಕಶ್ಚಾಥ ಕುಡ್ಮಲೋ ಮುಕ್ತುಲೋಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ವೇಜಂ. 2. ಮೊಗ್ಗಿನಂತಿರುವ ವಸ್ತು. "ಆಲಕ್ಷ್ಯದಂತಮುಕ್ತುಲಾನ್" ಶಾಕುಂ 9-19.

**ಮುಕ್ತ ಮುಕುಲಿತ** (ವಿಂ) 1. ಹೊವಿನ ಮೊಗ್ಗು ಬಿಚ್ಚಿರುವ. ಮುಕ್ತುಲೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ "ಠ:" (4-2-36). 2. ಅರ್ಧ ಮೊಗ್ಗಾಗಿರುವ, ಅರ್ಧ ಅರಳಿರುವ. 3. ಅರ್ಧ ಮುಚ್ಚಿರುವ, ಅರ್ಧ ಮುಚ್ಚಿಕೊಂಡಿರುವ. "ಸಪದಿ ಮುಕ್ತುಲಿತಾಕ್ಷಿಂ ರತ್ನಸಂರಮ್ಭಮೀತ್ಯಾ" ಕುಮಾಂ 3-96.

**ಮುಕ್ತ ಮುಕುಲಿತ** (ಪುಂ) ಜಾಪಾಳ.

**ಮುಕ್ತ ಮುಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟವನು, ಸ್ವತಂತ್ರ ನಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟವನು. ಮುಕ್ತ (ಮೋಕ್ಷಣ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102). "ಮುಕ್ತಾ ಬಭೂವುರಧುನಾ ತದಿಮಾನ್ ವಿಹಾಯ ಕರ್ತಾಸ್ಮಯಮ್ ಸಮರಭೂಮಿಪಶುಪಹಾರಮ್" ಕುಮಾಂ 19-9. 2. ಬಿಡುಗಡೆಹೊಂದಿದ, ಸ್ವತಂತ್ರನಾದ. 3. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಸಂಬಂಧ ಬಿಟ್ಟುಬಂದಿರುವ, ಒಂದು ವಸ್ತುವಿ ನಿಂದ ಕಳಚಿ ಬಂದಿರುವ. "ಕೃಪಾಣಮಿತ್ರದ್ವಿಪಕ್ವಮಮುಕ್ತಾ ಮುಕ್ತಾಃ ಪತಂತ್ಯೋ ರಣವಪ್ರಭೂಮೌ" ಯಾದಂ 20-42. ಮುಕ್ತ ಕರ್ತಂ "ಕ್ತಃ" (3-4-92). 4. ಮೋಕ್ಷ ಹೊಂದಿ ದವನು, ಸಂಸಾರಬಂಧನದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಹೊಂದಿದವನು. "ಸುಭಾಷಿತೇನ ಗೀತೇನ ಯುವತೀನಾಂ ಚ ಲೀಲಯಾ. ಮನೋ ನ ಮಿಥ್ಯತೇ ಯಸ್ಯ ಸ ವೈ ಮುಕ್ತೋಽಯವಾ ಪಶುಃ". 5. ತೃಪ್ತಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಮುಕ್ತಮೂಲಲಘುಜ್ಜಿತಪೂರ್ವಃ ಪಶ್ಚಿಮೇ ನಮಸಿ ಸಂಭೂತಸಾಂದ್ರಃ" ಕಿರಾಂ 9-4. 6. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಬಾಣ). "ಮುಕ್ತಾನೇಕ-  
ಶರಂ ಪ್ರಾಣಾನಹರದಭೂಯಸಾಂ ದ್ವಿಷಾಮ್" ಮಾಘಂ 19-101. 7. ಸುರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಮಳೆಯ ನೀರು). "ಮುಕ್ತಂ ಮುಕ್ತಾಗೌರಮಿಹ ಕೋರಮಿವಾಭ್ರೈಃ ವಾಪಿ-  
ಜ್ವಂತಲೀನಮಹಾನೀಲದಲಾಸು" ಮಾಘಂ 4-44. 8. ಹೊರ ದೂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ ದಬ್ಬಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಮುಕ್ತ ಮುಕ್ತಕ** (ನಂ) 1. ಯಂತ್ರ ಅಥವಾ ಬಂದೂಕು ಇದರಿಂದ ಹಾರಿಸಲಾಗುವ ಒಂದು ಅಸ್ತ್ರ, ಕ್ಷಿಪಣಿ. ಮುಕ್ತ (ಮೋಕ್ಷಣ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102). 2. ಒಂದು ವಿಧ ಕಾವ್ಯ. "ವೃತ್ತಗಂಧೋಜ್ಜಿತಂ ಗಂಧಂ ಮುಕ್ತಕಂ ವೃತ್ತಗಂಧಿ ಚ" ಸಾಂ ದಂ 6.

**ಮುಕ್ತಕಂಚುಕ ಮುಕ್ತಕಂಚುಕ** (ಪುಂ) ಪರಬಿಟ್ಟ ಹಾವು. ಮುಕ್ತಃ ಕಂಚುಕೋ ಯೇನ.



**ಮುಕ್ತಕಂಠ ಮುಕ್ತಕಂಠ** (ವಿಂ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗು ತಿರುವ. (ಖ್ಯಂ) 2. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ.

**ಮುಕ್ತರಸಾ ಮುಕ್ತರಸಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣ್ಣ ರಾಸ್ಮಿ. ಮುಕ್ತೋ ರಸೋ ಯಸ್ಯಾ: |

**ಮುಕ್ತಲಜ್ಜ ಮುಕ್ತಲಜ್ಜ** (ವಿಂ) ಲಜ್ಜೆಯನ್ನು ತೊರೆದವನು, ನಾಚಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು. ಮುಕ್ತಾ ಲಜ್ಜಾ ಯೇನ |

**ಮುಕ್ತಸಂಘ ಮುಕ್ತಸಂಘ** (ಪುಂ) 1. ಸಂನ್ಯಾಸಿ. ಮುಕ್ತ: ಸಂಘೋ ವಿಷಯಸಂವೃತ್ಯೋ ಯೇನ | (ವಿಂ) 2. ಫಲಸಂಘ ಪರಿತ್ಯಾಗಮಾಡಿದವನು. "ಮುಕ್ತಸಂಘೋನಹಂವಾದಿ ಧೃತ್ಯುತ್ಸಾಹ-ಸಮನ್ವಿತ:" ಗೀತಾ ೧೮-೨೬ |

**ಮುಕ್ತಹಸ್ತ ಮುಕ್ತಹಸ್ತ** (ವಿಂ) ದಾನಶೀಲ, (ದಾನಕ್ಕಾಗಿ) ತೆರೆದ ಕೈಯುಳ್ಳವನು. ಮುಕ್ತೋ ದಾನಾಯ ಪ್ರಸಾರಿತೋ ಹಸ್ತೋ ಯೇನ |

**ಮುಕ್ತಾ ಮುಕ್ತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುಕ್ತಾಫಲ, ಮುತ್ತು. ಮುಚ್ಯತೇ ಶುಕ್ತಿಭಿಃ | "ಮುಕ್ತಾಭಿಃ ಸಲಿಲರಯಾಸ್ತಶುಕ್ತಿಪೇಶಿ ಮುಕ್ತಾಭಿಃ ಕೃತರಶಿ ಸೈಕತಂ ನದೀನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೮-೯ | 2. ಸ್ವೈರೀಣ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ. "ಪುಂಶ್ಚಲ್ಯಾಂ ಮೌಕ್ತಿಕೇ ಮುಕ್ತಾ" ವೈಜಂ |

**ಮುಕ್ತಾಕಲಾಪ ಮುಕ್ತಾಕಲಾಪ** (ಪುಂ) ಮುಕ್ತಿನ ಹಾರ. ಮುಕ್ತಾನಾಂ ಕಲಾಪಃ ಸಮೂಹೋಽಸ್ಮಿನ್ | "ಕಂಠಸ್ಯ ತಸ್ಯಾಃ ಸ್ತನವನ್ವುರಸ್ಯ ಮುಕ್ತಾಕಲಾಪಸ್ಯ ಚ ನಿಸ್ತಲಸ್ಯ" ಕುಮಾಂ ೧-೪೨ |

**ಮುಕ್ತಾಗಾರ ಮುಕ್ತಾಗಾರ** (ನಂ) ಮುಕ್ತಿನ ಚಿಪ್ಪು. ಮುಕ್ತಾಯಾಃ ಅಗಾರಮಿವ |

**ಮುಕ್ತಾದಾಮನ್ ಮುಕ್ತಾದಾಮನ್** (ನಂ) ಮುಕ್ತಿನಹಾರ. "ಸುವಾನಿಷ್ಯಂದಿಭಿಃ ಸ್ಥೂಲೈಃ ಮುಕ್ತಾದಾಮಭಿರಾವೃತಮ್" ಯಾದಂ ೧೬-೧೩೫ |

**ಮುಕ್ತಾಪ್ರಸು ಮುಕ್ತಾಪ್ರಸು** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಕ್ತಿನ ಚಿಪ್ಪು. ಮುಕ್ತಾಂ ಪ್ರಸುತೇ-ಪ್ರ+ಷಟ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭವಿಮೋಚನೆ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧) |

**ಮುಕ್ತಾಫಲ ಮುಕ್ತಾಫಲ** (ನಂ) 1. ಮುತ್ತು. ಮುಕ್ತಾ ಫಲಮಿವ | "ವಿದಂತಿ ಮಾರ್ಗಂ ನಕ್ಷರಂಧ್ರಮುಕ್ತೈಃ ಮುಕ್ತಾಫಲೈಃ ಕೇಸರಿಣಾಂ ಕಿರಾತಾಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೬ | 2. ಕರ್ಪೂರ. 3. ಸೀತಾಫಲ. "ಮುಕ್ತಾಫಲಂ ವನಸಾರೆ ಮೌಕ್ತಿಕೇ ಲವಲಿ-ಫಲೇ" ಹೇಮಂ |

**ಮುಕ್ತಾಲತಾ ಮುಕ್ತಾಲತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಕ್ತಿನ ಹಾರ, ಮುಕ್ತಿನ ಸರ. ಮುಕ್ತಾಭಿಃ ಲತೇವ |

**ಮುಕ್ತಾವಲಿ ಮುಕ್ತಾವಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುಕ್ತಾಹಾರ, ಮುಕ್ತಿನ ಸರ. ಮುಕ್ತಾನಾಮಾವಲಿರತ್ರ | 2. ಸಿದ್ಧಾಂತ ಮುಕ್ತಾವಲಿ, ಒಂದು ತರ್ಕಶಾಸ್ತ್ರದ ಗ್ರಂಥ.

**ಮುಕ್ತಾಸ್ಕೂಟ ಮುಕ್ತಾಸ್ಕೂಟ** (ಪುಂ) ಮುಕ್ತಿನ ಚಿಪ್ಪು. ಮುಕ್ತಾಃ ಸ್ಕೂಟಂತಯತ್ರ | ಸ್ಕೂಟ (ವಿಕಸನೆ) "ಘಂ" (೩-೩-೧೨೧) |

**ಮುಕ್ತಿ ಮುಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಿಡುಗಡೆ. ವಿಮೋಚನೆ. ಮುಕ್ತ (ಮೋಕ್ಷಣೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | 2. ಸಂಸಾರ ಬಂಧನ ನಿವೃತ್ತಿ, ಆನಂದಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಅಪವರ್ಗ, ಮೋಕ್ಷ, ಸಂಸಾರ ಪಾಶದಿಂದ ವಿಮೋಚನೆ. "ಇತಿ ತ್ಯಾಜ್ಯೇ ಭವೇ ಭವ್ಯೋ ಮುಕ್ತಾವುತ್ಥಿಷ್ಠತೇ ಜನಃ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೧೩ |

**ಮುಕ್ತಿಸ್ವರೂಪಃ** ನಿರವಧಿಕಸುಖ, ಬ್ರಹ್ಮಾನುಭವ, ಅವಿದ್ಯಾನಾಶಪೂರ್ವಕ ಪರಮಾತ್ಮಾನುಭವ. ಭಕ್ತಿ ಅಥವಾ ಪ್ರಪತ್ತಿರೂಪವಾದ ಮೋಕ್ಷೋಪಾಯದಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನ ಅನುಗ್ರಹಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರನಾಗಿ ದೇಹಾವಸಾನ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಸುಷುಮ್ನಾನಾಡೀಮೂಲಕ ಸುಖವಾಗಿ ಪ್ರಯಾಣಮಾಡಿ ಶ್ರೀವೈಕುಂಠದಲ್ಲಿ ಸಕಲವೈಭವದೊಡನೆ ಶ್ರೀಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮೀಸಮೇತನಾಗಿ ಬಿಜಯಮಾಡಿಸಿರುವ ಶ್ರೀ ಪರವಾಸುದೇವನ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ನಿತ್ಯಸೂರಿಗಳೊಡನೆ ನಿತ್ಯಕಿಂಕರನಾಗಿ ಪರಮಾತ್ಮಾನುಭವವೆಂಬ ಆನಂದವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವುದು ಮುಕ್ತಿ ಎಂದು ನಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತ ಸಿದ್ಧಾಂತ.

ಅದ್ವೈತಸಿದ್ಧಾಂತದಲ್ಲಿ ಈಶ್ವರಾರ್ಪಣಬುದ್ಧಿಯಿಂದ ಮಾಡಿದ ವಿಹಿತ ಕರ್ಮಾಚರಣೆಯಿಂದ ಚಿತ್ತಶುದ್ಧಿಯುಂಟಾಗಿ ಸಂಸಾರದಲ್ಲಿ ಅಸಾರತ್ವಬುದ್ಧಿಯೂ ಕರ್ಮಫಲದಲ್ಲಿ ಪ್ರಬಲವೈರಾಗ್ಯವೂ ಪುತ್ರಕಳತ್ರಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ಜಿಹಾಸೆಯೂ ಉಂಟಾಗಿ ಸದ್ಗುರುವಿನಿಂದ ಉಪದೇಶವನ್ನು ಪಡೆದು ಶ್ರವಣಮನನ ನಿದಿಧ್ಯಾಸನಗಳ ಸಾಹಾಯ್ಯದಿಂದ ಪರಬ್ರಹ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಹೊಂದಿ ಅಜ್ಞಾನನಿವೃತ್ತಿಯ ಮೂಲಕ ಸಂಸಾರದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆಹೊಂದಿ ಬ್ರಹ್ಮಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಪಡೆಯುವುದೇ ಮುಕ್ತಿ.

ದ್ವೈತಸಿದ್ಧಾಂತದಲ್ಲಿ ಗುರುಕುಲವಾಸ ಗುರುಭಕ್ತಿ ಸಚ್ಚಾಸ್ತ್ರಶ್ರವಣ ಸಂಸಾರದುಃಖಾನುಭವದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ವೈರಾಗ್ಯ ನಿವೃತ್ತಿಧರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನ ತಾರತಮ್ಯಜ್ಞಾನ ಪರಮಾತ್ಮಭಕ್ತಿ ಮೊದಲಾದ ಸಾಧನಗಳಿಂದ ಅಪರೋಕ್ಷಜ್ಞಾನವುಂಟಾಗಿ ಅದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನ ಅನುಗ್ರಹಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರನಾಗಿ ಪ್ರಕೃತಿಸಂಬಂಧವಿನಾಶವುಂಟಾಗುವುದು. ದೇಹಾವಸಾನಕಾಲದಲ್ಲಿ ಜೀವನು



ಬ್ರಹ್ಮನಾಡೀಮೂಲಕ ಹೊರಟು ಅರ್ಚಾರಾದಿಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ಲೋಕಾಧಿಪತಿಗಳಿಂದ ಸತ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಭಗವದ್ಲೋಕದಲ್ಲಿ ತಾರತಮ್ಯಾನುಗುಣವಾಗಿ ಲಭಿಸುವ ಸಾಲೋಕ, ಸಾಮೀಪ್ಯ ಸಾರೂಪ್ಯ ಮತ್ತು ಸಾಯುಜ್ಯ ರೂಪವಾದ ಅನುದಾನುಭವವೇ ಮೋಕ್ಷ (ಮುಕ್ತಿ).

ಶಕ್ತಿವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತಸಿದ್ಧಾಂತದಲ್ಲಿ ಲಿಂಗಧಾರಣಾತ್ಮಕವಾದ ಶಿವದೀಕ್ಷೆಯಿಂದ ಭಕ್ತ ಮಹೇಶ ಪ್ರಸಾದಿ ಪ್ರಾಣಲಿಂಗಿ ಶರಣ ಮತ್ತು ಐಕ್ಯಗಳೆಂಬ ಪಟ್ ಸೋಪಾನಗಳ ಮೂಲಕ ಮಲತ್ರಯನಿವೃತ್ತಿಹೊಂದಿ ಬ್ರಹ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವಾಗುವುದೇ ಮುಕ್ತಿ.

ಮುಕ್ತಿಯು ಎರಡು ವಿಧ. (1) ನಿರ್ವಾಣರೂಪ. (2) ಹರಿಭಕ್ತಿರೂಪ. ವೈಷ್ಣವರು ಹರಿಭಕ್ತಿರೂಪವಾದ ಮುಕ್ತಿಯನ್ನೂ ಇತರರು ನಿರ್ವಾಣರೂಪವಾದ ಮುಕ್ತಿಯನ್ನೂ ಆಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಾರೆ. "ಮುಕ್ತಿस्तು ದ್ವಿವಿಧಾ ಸಾಫ್ವಿ ಶ್ರುತ್ಯುಕ್ತಾ ಸರ್ವಸಂಮತಾ | ನಿರ್ವಾಣಪದದಾತ್ರಿ ಚ ಹರಿಭಕ್ತಿಪ್ರದಾ ನೃಣಾಮ್ | ಹರಿಭಕ್ತಿರೂಪಾಚ್ಚ ಮುಕ್ತಿರ್ವಾಚ್ಛಂತಿ ವೈಷ್ಣವಾಃ | अन्ये निर्वारणरूपाश्च मुक्तिमिच्छन्ति साधवः" ब्रह्मवै० | 3. ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ, ದಾಸ್ಯದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆಹೊಂದುವುದು. 4. ಸಂಪೂರ್ಣ ದಾಖಲೆ ನಿವೃತ್ತಿ, ಶಾಶ್ವತವಾದ ಸುಖಾನುಭವ, ಕೈವಲ್ಯ.

ಮುಕ್ತಿಮಾರ್ಗ ಮುಕ್ತಿಮಾರ್ಗ (ಪುಂ) ಮೋಕ್ಷದ ಮಾರ್ಗ, ಮೋಕ್ಷದ ಉಪಾಯ. ಮುಕ್ತೇ: ಮೋಕ್ಷಸ್ಯ ಮಾರ್ಗ: ಉಪಾಯ: | "असंमतः कस्तव मुक्तिमार्गं पुनर्भवकलेशभयात्प्रपन्नः" कुमा० ३-५ |

ಮುಖ ಮುಖ (ನಂ) 1. ಮುಖ, ಬಾಯಿ, ವದನ. ಖನ್ಯತೇ ಖನು (ಅವದಾರಣೆ) "अच्" घातोर्मुडागमश्च (उ० ५-२०) | "प्राक् खनो मुहुदात्तश्च ततोऽञ्च प्रत्ययो भवेत् | प्रजासृजा यतः खातं तस्मादाहुर्मुखं बुधाः" इति निरुक्तम् | "मुखेन सा पद्मसुगन्धिना निशि प्रवेपमाना-धरपत्रशोभिना | तुषारवृष्टिक्षतपद्मसंपदां सरोजसन्धान-मिवाकरोदपाम्" कुमा० ५-२७ | ಮುಖ (ವದನ) ವು ಏಳು ಅವಯವಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು. (1) ತುಟಗಳು, (2) ತಾಲು, (ದವಡೆ), (3) ಗಲ (ಗಂಟಲು), (4) ದಂತ ಮೂಲ. (5) ದಂತ. (6) ಜಿಹ್ವೆ (ನಾಲಗೆ) ಮತ್ತು (7) ಗಲಾದಿ (ಗಂಟಲಿನ ಅಡಿಭಾಗ) ಇವು ಮುಖದ (ಬಾಯಿಯ) ಏಳು ಅವಯವಗಳು. "ओष्ठौ च दन्तमूलानि दन्ता जिह्वा च तालु च | गलो गलादि सकलं संज्ञाङ्गं मुखमुच्यते" भावप्र० | 2. ಮುಖ, ಮೋರೆ. "मुखैः सरोजानि च दीर्घलोचनैः सुरस्त्रियः

साम्यगुणान्निरासिरे" किरा० ८-२९ | 3. (ಪ್ರಾಣಿಗಳ) ಮೂತಿ, ಮುಸುಡಿ, ಬಾಯಿ. "मुखैरसौ विद्रुमभङ्ग-लोहितैः शिखाः पिशङ्गीः कलमस्य बिभ्रती" किरा० ५-३६ | 4. ಬಾಣದ ಅಗ್ರಭಾಗ, ಬಾಣದ ಕೊನೆಯ ಭಾಗ (ತುದಿ). "बभूव युद्धं तुमुलं जयैषिणोरघोमुखै-रुर्वमुखैश्च पत्रिभिः" रघु० ३-५७ | 5. ಪ್ರಾರಂಭ, ಆದಿಭಾಗ, ಉಪಕ್ರಮ. "अय विधिमवसारय शास्त्रदृष्टं दिवसमुखोचितमञ्चिताक्षिपक्ष्मा" रघु० ५-७६ | 6. ಮುಖ್ಯ, ಪ್ರಧಾನ, ಮುಖಂಡ, ನಾಯಕ. "राजा मुखं मनुष्याणां नदीनां सागरो मुखम् | नक्षत्राणां मुखं चन्द्र आदित्यस्तेजसां मुखम्" भा० सभा० ४१-२८ | 7. ಸ್ಪೃಂದವಲವಣ. "विशुन्थलवणं संगं सिन्धि सिन्धुद्वयं मुखम्" वैज० | 8. ಉಪಾಯ. 9. ತಾಮ್ರಲೋಹ. 10. ಪ್ರಧಾನ ದ್ವಾರ, ಹೊರಬಾಗಿಲು. "मुखं तु वदने मुख्ये ताम्रे द्वाराभ्युपाययोः" वैज० | 11. ಮನೆಯಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ಬರುವ ದಾರಿ, ಬೀದಿಯ ಬಾಗಿಲಿನ ಪ್ರವೇಶ ಮಾರ್ಗ. "क्षिप्ते मुखं निःसरणम्" अम० | 12. ನಾಟಕದ ಪಂಚಸಂಧಿಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯದು. "मुखं प्रतिमुखं गर्भो विमर्श उपसंहृतिः" सा० द० ६-७५ | 13. ಶಬ್ದ. "मुखं निःसरणे वक्त्रे प्रारम्भोपाययोरपि | सन्ध्यन्तरे नाटकादेः शब्देऽपि च नपुंसकम्" मेदि० | 14. ಸ್ತನಾಗ್ರ, ಚೂಚುಕ, ಸ್ತನದ ತುದಿ. "स्तनद्वयं पाण्डु तथा प्रवृद्धम् | मध्ये यथा श्याममुखस्य तस्य मृणालसूत्रान्तरमप्यलम्ब्यम्" कुमा० १-४० | 15. ವೇದ. 16. ಅಗ್ರಭಾಗ. "तस्मात्सर्वप्रयत्नेन प्रबोध-यितुमीश्वरीम् | ब्रह्मद्वारमुखे सुप्तां मुद्राम्यासं समाचरेत्" हठ० ३-५ |

ಮುಖಕಮಲ ಮುಖಕಮಲ (ನಂ) ಕಮಲದಂತಿರುವ ಮುಖ. ಮುಖ ಕಮಲಮಿವ | "मुखकमलमधूपमैः प्रकामम्" याद० २४-६० |

ಮುಖಗಾಂಧಕ ಮುಖಗಾಂಧಕ (ಪುಂ) ಈರುಳ್ಳಿ. ಮುಖ ಗಾಂಧೋಸ್ತಾತ್ "कप्" (५-४-१५४) |

ಮುಖಜ ಮುಖಜ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ವಿಪ್ರ. ಬ್ರಾಹ್ಮಣಿ ಮುಖಾಜಾಯತೆ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಕುಭವಿ) "डः" (३-२-९८) | "ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्" श्रुतिः | (वि०) 2. ಮುಖ ದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ.

ಮುಖದ್ವಯ ಮುಖದ್ವಯ (ಪುಂ) ಪಶಾಂಡು, ಈರುಳ್ಳಿ. ಮುಖ ದ್ವಯತೇಜೇನ—ದ್ವಯ (ವೈಕಲ್ಯ) + ಣಿಚ್ "ल्युट्" (३-३-११७) |



**ಮುಖ್ಯವಿಕಾ ಮುಖ್ಯದೂಷಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಖವನ್ನು  
ವಿಕಾರಗೊಳಿಸುವ ಗುಳ್ಳೆ. ಮುಖಂ ದೂಷಯತಿ—ದೂಷ (ವಿಕೃತ್ಯ)  
+ ಣಿच् “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) ।

**ಮುಖದೋಷ ಮುಖದೋಷ** (ಪುಂ) ಮಾತಿನ ದೋಷ,  
ನಾಲಗೆಯ ದೋಷ, ಮಾತಾಡುವಾಗ ಉಂಟಾಗುವ  
ನಾಲಗೆಯ ದೋಷ.

**ಮುಖಧಾವನ ಮುಖಧಾವನ** (ನಂ) ಮುಖಪ್ರಕ್ಷಾಲನ,  
ಮುಖವನ್ನು ತೊಳೆಯುವುದು. ಮುಖಸ್ಯ ಧಾವನಮ್ ।

**ಮುಖನಿರೀಕ್ಷಕ ಮುಖನಿರೀಕ್ಷಕ** (ಪುಂ) ಅಲಸ, ಸೋಮಾರಿ.  
ಮುಖಂ ನಿರೀಕ್ಷತೇ—ನಿರ್ + ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) “ಫ್ವಲ್”  
(೩-೧-೧೩೩) ।

**ಮುಖನಿವಾಸಿನಿ ಮುಖನಿವಾಸಿನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸರಸ್ವತಿ,  
ವಾಗ್ಗೇವಿ. ಮುಖೇ ನಿವಸತಿ—ನಿ + ವಸ (ನಿವಾಸೇ) “ಞಿನಿಃ”  
(೩-೧-೧೩೪) । ಸರಸ್ವತಿಯು ವಾಗ್ಗೇವತೆಯಾದುದರಿಂದ  
ಈ ಹೆಸರು.

**ಮುಖಪಟ ಮುಖಪಟ** (ಪುಂ) ಪರದೆ, ಬುರುಕಿ, ಮುಸುಕು.

**ಮುಖಪಾಕ ಮುಖಪಾಕ** (ಪುಂ) ಬಾಯಿಯ ಉರಿತ.

**ಮುಖಪ್ರಸಾದ ಮುಖಪ್ರಸಾದ** (ಪುಂ) ಮುಖದಲ್ಲಿ ತೋರುವ  
ದಯೆ, ಮುಖದಲ್ಲಿ ಆನಂದವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ  
ನೋಟ.

**ಮುಖಪ್ರಿಯ ಮುಖಪ್ರಿಯ** (ಪುಂ) 1. ಕಿತ್ತಲೆ. (ನಂ) 2.  
ಲವಂಗ. (ವಿಂ) 3. ಬಾಯಿಗೆ ಹಿತವಾಗಿರುವ. ಮುಖಸ್ಯ  
ಪ್ರಿಯಃ ।

**ಮುಖಬಂಧ ಮುಖಬಂಧ** (ಪುಂ) ಪ್ರಸ್ತಾವನೆ, ಪೀಠಿಕೆ,  
ಉಪೋದ್ಘಾತ.

**ಮುಖಬಂಧನ ಮುಖಬಂಧನ** (ನಂ) 1. ಪ್ರಸ್ತಾವನೆ,  
ಪೀಠಿಕೆ. 2. ಅನುಕ್ರಮಣಿಕೆ, ವಿಷಯಸಂಗ್ರಹ.

**ಮುಖಭೂಷಣ ಮುಖಭೂಷಣ** (ನಂ) 1. ತಾಂಬೂಲ. 2.  
ಮುಖದ ಅಲಂಕಾರ, ಮುಖಕ್ಕೆ ಹಾಕುವ ಒಡವೆ.

**ಮುಖಭೇದ ಮುಖಭೇದ** (ಪುಂ) ಮುಖವು ಒಡೆಯುವಿಕೆ,  
ಮುಖವು ವಿಕಾರಹೊಂದುವುದು.

**ಮುಖಮಂಡನ ಮುಖಮಂಡನ** (ನಂ) ಮುಖದ ಅಲಂಕಾರ.

**ಮುಖಮಂಡನಕ ಮುಖಮಂಡನಕ** (ಪುಂ) 1. ತಿಲಕವೃಕ್ಷ.  
(ವಿಂ) 2. ಮುಖವನ್ನು ಅಲಂಕರಿಸುವ. ಮುಖಂ ಮಂಡಯತಿ  
—ಮಡಿ (ಭೂಷಾಯಾಮ್) + ಣಿच् “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಮುಖಯನ್ತ್ರಣ ಮುಖಯಂತ್ರಣ** (ನಂ) ಕುದುರೆಯ ಕಡಿ  
ವಾಣಿ, ಲಗಾಮು. ಮುಖಂ ಅಶ್ವಾನಾಂ ಯನ್ತ್ರಯತೇಜೇನ — ಯತ್ರಿ  
(ಸಂಕೋಚ) ಕರಂ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭) ।

**ಮುಖರ ಮುಖರ** (ಪುಂ) 1. ಮುಂದಾಳು, ಮುಖಂಡ,  
ಪ್ರಧಾನ, ಮುಖ್ಯ. ಮುಖಂ ಮುಖ್ಯಕಾರ್ಯಂ ರಾತಿ—ರಾ (ದಾನೇ)  
“ಕಃ” (೩-೨-೩) । “ನ ಗಣಸ್ಥಾಪಿತೋ ಗಚ್ಛೇತ್ ಸಿದ್ಧೇ  
ಕಾರ್ಯಂ ಸಮಂ ಫಲಮ್ । ಯದಿ ಕಾರ್ಯವಿಪತ್ತಿಃ ಸ್ಯಾತ್ ಮುಖರಸ್ತತ್ರ  
ಹನ್ಯತೇ” ಹಿತೋ ೧-೨೯ । 2. ಶಂಖ. 3. ಕಾಗೆ.  
ವಾಯೆಸ. (ವಿಂ) 4. ವಾಚಾಳಿ, ಹರಟೆಹೊಡೆಯು  
ವವನು. 5. ಅಪ್ರಿಯವಾದ ಮಾತುಗಳನ್ನಾಡುವವನು,  
ಬಿರುನುಡಿಯಾಡುವವನು, ದುರ್ಮುಖ. “ಏಕಾ ಭಾರ್ಯಾ  
ಪ್ರಕೃತಿಮುಖರಾ ಚಂಚಲಾ ಚ ದ್ವಿತೀಯಾ” । 6. ಶಬ್ದಮಾಡುವ,  
ಸದ್ದುಮಾಡುವ. “ವಿಯದ್ಗತಃ ಪುಷ್ಪಕಚಂದ್ರಶಾಲಾಃ ಕ್ಷಣಂ  
ಪ್ರತಿಶ್ರುನ್ಮುಖರಾಃ ಕರೋತಿ” ರಘುಂ ೧೩-೪೦ ।

**ಮುಖರಜ್ಜು ಮುಖರಜ್ಜು** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂಗುದಾರ.

**ಮುಖರಾಗ ಮುಖರಾಗ** (ಪುಂ) ಮುಖದ ಬಣ್ಣ. ಮುಖದ  
ಧಾಯೆ, ಮುಖದ ಕಾಂತಿ. ಮುಖಸ್ಯ ರಾಗಃ । “ದದೃಶುಃ  
ವಿस्मिताಸ್ತಸ್ಯ ಮುಖರಾಗಂ ಸಮಂ ಜನಾಃ” ರಘುಂ ೧೨-೮ ।

**ಮುಖರಿತ ಮುಖರಿತ** (ವಿಂ) ಶಬ್ದದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಸದ್ದಿ  
ನಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಶಬ್ದವುಂಟಾದ. ಮುಖರೋಜ್ಯ ಸಂಜಾತಃ  
“ಐತತ್” (೪-೨-೩೬) । “ಗಂಧೋಡ್ವಿನಾಲಿಮಾಲಾಮುಖರಿತ-  
ಕಕುಭಸ್ತಾಂಢವೇ ಶೂಲಭಾಣಃ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೨ ।

**ಮುಖರೀಕೃತ ಮುಖರೀಕೃತ** (ವಿಂ) ಶಬ್ದವುಳ್ಳದ್ದನ್ನಾಗಿ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. “ಅಮರೀಕವರೀಭಾರಭರಮರೀಮುಖರೀಕೃತಮ್”  
ಕುವಂ ।

**ಮುಖರೋಗ ಮುಖರೋಗ** (ಪುಂ) ಬಾಯೊಳಗೆ ಬರುವ  
ರೋಗ, ಹುಣ್ಣು ಅಮೃತಗ್ರಂಥಿ ಮೊದಲಾದುದು.  
ಮುಖಕ್ಕೆ ಸಪ್ತಾವಯವಗಳಿರುವುವು. [“ಮುಖ” 1.  
ನೋಡಿ.] ಈ ಸಪ್ತಾವಯವಗಳಿಗೂ 67 ವಿಧ ರೋಗ  
ಗಳು ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗುವುವು. ಅವುಗಳ ವಿವರಃ

|                     |       |
|---------------------|-------|
| (1) ತುಟಿಗಳಿಗೆ       | 8 ವಿಧ |
| (2) ದಂತಮೂಲಕ್ಕೆ      | 16 .. |
| (3) ದಂತಗಳಿಗೆ        | 8 ..  |
| (4) ನಾಲಗೆಗೆ         | 5 ..  |
| (5) ತಾಲುವಿ (ದವಡೆ)ಗೆ | 9 ..  |
| (6) ಕಂಠಕ್ಕೆ         | 18 .. |
| ಮತ್ತು               |       |
| (7) ಎಲ್ಲಕ್ಕೂ        | 3 ..  |

ಒಟ್ಟು 67 ವಿಧ



“ಸ್ಯುರಪ್ತಾವೋಷಯೋದಂತಮೂಲೇ ತು ದಶ ಪಡ್ ತಥಾ । ದಂತೋಷವೃಷ್ಟಿ  
ರಸಜ್ಞಾಪಾಂ ಪಶ್ಚ ಸ್ಯುರ್ನವ ತಾಲುನಿ । ಕಂಠೇವೃಷ್ಟಾದಶ ಪ್ರೋಕ್ತಾ-  
ಸ್ತತ್ರಯಃ ಸರ್ವೇಷು ಚ ಸ್ಮೃತಾಃ” ಭಾವಪ್ರಂ । ಇವಕ್ಕೆ ಕಾರಣ  
ಮತ್ತು ಚಿತ್ತಿತ್ವಗಳಿಗಾಗಿ ಭಾವಪ್ರಕಾಶದಲ್ಲಿ ಮುಖ  
ರೋಗಾಧಿಕಾರ ನೋಡಿ.

ಮುಖಲಾಙ್ಗಲ ಮುಖಲಾಂಗಲ (ಪುಂ) ವರಾಹ, ಹಂದಿ.  
ಮುಖಂ ಲಾಂಗಲಮಿವಾಸ್ಯ ।

ಮುಖವಾಚ ಮುಖವಾದ್ಯ (ನಂ) ಬಾಯಿಂದ ನುಡಿಸುವ  
ವಾದ್ಯ, ಬಾಯಿಂದ ಶಬ್ದಮಾಡಿಸುವ ವಾದ್ಯ. ಮುಖೇನ  
ವಾಚಮ್ ।

ಮುಖವಾಸ(ನ) ಮುಖವಾಸ(ನ) (ಪುಂ) ಬಾಯನ್ನು  
ಸುಗಂಧವಾಗಿ ಮಾಡುವ ದ್ರವ್ಯ, ಬಾಯಿಗೆ ವಾಸನೆ  
ಯುಂಟುಮಾಡುವ ದ್ರವ್ಯ. ಮುಖಸ್ಯ ವಾಸಃ ಸೌರಮ್ಯ-  
ಮಸ್ಮಾತ್ । ಮುಖಂ ವಾಸಯತಿ—ವಾಸ (ಉಪಸೇವಾಯಾಮ್) + ಣಿच्  
“ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪) ಇತಿ ವಾ ।

ಮುಖವಿಷ್ಣು ಮುಖವಿಷ್ಣು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿರಣಿ. ಮುಖೇ ವಿಷ್ಣು  
ಮಲಮಸ್ಯಾಃ ।

ಮುಖವ್ಯಾಧಾನ ಮುಖವ್ಯಾಧಾನ (ನಂ) 1. ಬಾಯಿತೆರೆಯು  
ವುದು. 2. ಆಕಳಿಕೆ. ಮುಖಸ್ಯ ವ್ಯಾಧಾನಮ್ ।

ಮುಖಶುದ್ಧಿ ಮುಖಶುದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಯನ್ನು ಶುದ್ಧ  
ಮಾಡುವಿಕೆ, ಬಾಯಿ ತೊಳೆಯುವುದು. ಮುಖಸ್ಯ ಶುದ್ಧಿಃ ।

ಮುಖಶೋಧನ ಮುಖಶೋಧನ (ನಂ) 1. ದಾಲ್ಚಿನ್ನಿ.  
2. ಬಾಯನ್ನು ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು, ಬಾಯಿತೊಳೆಯು  
ವುದು. (ವಿಂ) 3. ಬಾಯನ್ನು ಶುದ್ಧಗೊಳಿಸುವ. ಮುಖಂ  
ಶೋಧಯತಿ—ಶುಭ (ಶೋಧೇ) + ಣಿच् “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಮುಖಶೋಧಿನ್ ಮುಖಶೋಧಿನ್ (ಪುಂ) ನಿಂಬೆ ಗಿಡ. ಮುಖಂ  
ಶೋಧಯತಿ—ಶುಭ (ಶೋಧೇ) + ಣಿच् “ಞಿನಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಮುಖಶ್ರೀ ಮುಖಶ್ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಖದ ಕಾಂತಿ, ಮುಖದ  
ಸೌಂದರ್ಯ. ಮುಖಸ್ಯ ಶ್ರೀಃ ।

ಮುಖಸ್ರಾವ ಮುಖಸ್ರಾವ (ಪುಂ) ಲಾಲಾಜಲ, ಬಾಯಿಂದ  
ಬೀಳುವ ಜೊಲ್ಲು.

ಮುಖಾನಿ ಮುಖಾನ್ನಿ (ಪುಂ) 1. ವಿಪ್ರ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣ.  
ಮುಖಮಗ್ನಿರವಾಸ್ಯ । 2. ದಾವಾಗ್ನಿ, ಕಾಡುಕೆಚ್ಚು. 3.  
ಕೊಳ್ಳಿಪಿಶಾಚ. ಇದರ ಬಾಯಲ್ಲಿ ಬೆಂಕಿ ಉರಿಯುತ್ತಿರು  
ವುದು. 4. ಯಾಗಾಗ್ನಿ.

ಮುಖಾಸ್ತ್ರ ಮುಖಾಸ್ತ್ರ (ಪುಂ) ನಳ್ಳಿ, ಏಡಿ. ಮುಖಂ ಅಸ್ತ್ರ-  
ಮಿವಾಸ್ಯ ।

ಮುಖ್ಯ ಮುಖ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಉತ್ತಮ ಪಕ್ಷಿ, ಪ್ರಥಮ ಕಲ್ಪ.  
ಮುಖಮಿವ—ಮುಖ “ಯಃ” (೪-೩-೧೦೩) । “ಮುಖ್ಯಃ ಸ್ವಾತ್  
ಪ್ರಥಮಃ ಕಲ್ಪಃ” ಅಮಂ । 2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮ  
ವಾದ. 3. ಪ್ರಧಾನ, ಪ್ರಮುಖ.

ಮುಖ್ಯಮನ್ವಿನ್ ಮುಖ್ಯಮಂತ್ರಿನ್ (ಪುಂ) ಪ್ರಧಾನ ಸಚಿವ,  
ಮಂತ್ರಿ ಮಂಡಲದಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ಮಂತ್ರಿ. ಮುಖ್ಯಃ  
ಪ್ರಧಾನಃ ಮನ್ತ್ರಿ ।

ಮುಖ್ಯಾರ್ಥ ಮುಖ್ಯಾರ್ಥ (ಪುಂ) ವಾಚ್ಯಾರ್ಥ, ಅಭಿಧಾವೃತ್ತಿ  
ಯಿಂದ ತೋರುವ ಶಬ್ದದ ಅರ್ಥ. “ಮುಖ್ಯಾರ್ಥೋಽಭಿಧಯಾ  
ಬೋಧ್ಯೋ ಲಕ್ಷ್ಯೋ ಲಕ್ಷಣಯಾ ಮತಃ । ವ್ಯತ್ಯಯೋ ವ್ಯಂಜನಯಾ  
ತಾಃ ಸ್ಯುಃ ತಿಸ್ರಃ ಶಬ್ದಸ್ಯ ಶಕ್ತಯಃ” ಸಾಂ ದಂ ।

ಮುಖ್ಯೋಪಾಯ ಮುಖ್ಯೋಪಾಯ (ಪುಂ) ಮುಖ್ಯವಾದ  
ನಾಲ್ಕು ಉಪಾಯಗಳು, ಉಪಾಯಚತುಷ್ಟಯಂ. (1)  
ಸಾಮ, (2) ದಾನ, (3) ಭೇದ ಮತ್ತು (4) ದಂಡ ಇವು  
ನಾಲ್ಕು ಮುಖ್ಯೋಪಾಯಗಳು.

ಮುಖ್ಯ ಮುಖ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅರಿವಿಲ್ಲದ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದ,  
ಅನುಭವವಿಲ್ಲದ, ಸರಳರೀತಿಯ. ಮುಹ (ವೇದಿಕೆಯ) “ಕ್ತಃ”  
(೩-೪-೭೨) । “ಕದಮ್ಬಗೋಲಾಕೃತಿಮಾಶ್ರಿತಃ ಕಥಂ ವಿಶುದ್ಧ-  
ಮುಖಃ ಕುಲಕನ್ಯಕಾಜನಃ” ಮಾಲತೀಂ ೭-೧ । 2. ಅಜ್ಞ,  
ತಿಳಿಗೇಡಿ, ಮೂಢ. “ಶಶಾಂಕಃ ಕೇನ ಮುಖೇನ ಸುಧಾಂಶುರೀತಿ  
ಭಾಷಿತಃ” ಭಾಂ ವಿಂ । 3. ಮಂಕುಹಿಡಿದ, ಮುಬ್ಬು  
ಹಿಡಿದ. 4. ತಬ್ಬಿಬ್ಬಾದ, ಗಾಬರಿಗೊಂಡ, ಕಳವಳಗೊಂಡ.  
5. ಕೃತ್ರಿಮಸ್ವಭಾವವಿಲ್ಲದ, ಸ್ವಲ್ಪವೂ ಕಪಟವಿಲ್ಲದ,  
ಸರಳಸ್ವಭಾವದ. “ಅಯಮಾಚರತ್ಯವಿನಯಂ ಮುಖಾಸು ತಪಸ್ವಿ-  
ಕನ್ಯಾಸು” ಶಾಕುಂ ೧-೨೧ । 6. ಸುಂದರವಾದ, ಚೆಲು  
ವಾದ, ಆಕರ್ಷಕವಾದ, ಸೌಮ್ಯವಾದ. ಮುಹ (ವೇದಿಕೆಯ) +  
ಣಿच् “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) । “ಮುಖಾಃ ಸ್ವಮುಷ್ಟಿಪರಿಮೇಯ-  
ಮನೋಜ್ಞಮಖ್ಯಾಃ ಪರ್ಯಾಯಾಪಲತಿಕಾ ಇವ ಪಶ್ಚವಾಣಃ” ಯಾದಂ  
೧೯-೨೪ । 7. ನವೀನವಾದ, ಹೊಸದಾದ. “ಸ ಮುಖ-  
ಕಾಂತಾಸ್ತನಸಂಭವಗುರೈರೋವಿದಾರಂ ಪ್ರತಿಚಕ್ರೇ ನಖಃ”  
ಮಾಘಂ ೧-೪೭ । 8. ಮೋಹಗೊಂಡ, ಮೋಹಪರವಶ  
ಳಾದ. “ಮುಖಾ ದಧಾಮಿ ಕಥಮಿತ್ಯಮಯಾಪಶಾಂಕಾಂ ಸಂಕ್ರಂದನಾ-  
ದಿಕಪಟಃ ಸ್ಕುಟಮೀದೃಶೋಽಯಮ್” ನೆಪಂ ೧೩-೪೬ । (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಮುಖಾ -ಗಾ. 9. ಸ್ವಕೀಯನಾಯಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಒಂದು  
ಭೇದ, ಯೌವನದಿಂದ ಮನವನ್ನಾಕರ್ಷಿಸುವ ಹೆಂಗಸು.  
ಮುಖಾ ಮಖ್ಯಾ ಮತ್ತು ಪ್ರಗಲ್ಭಾ ಎಂದು ಸ್ವಕೀಯ ನಾಯಿಕೆಯ  
ಭೇದಗಳು ಮೂರು. ಹೊಸ ಯೌವನ ಮತ್ತು ಮದ  
ವಿಕಾರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ ರತಿಯಲ್ಲಿ ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿದ್ದರೂ ಲಜ್ಜೆ



ಯಿಂದ (ರತಿ) ಪ್ರತಿಕೂಲಳಾಗಿರುವವಳು ಮುಚ್ಚನಾಯಿಕಾ  
“ಸಾಪಿ ಕಥಿತಾ ತ್ರಿಭೇದಾ ಮುಚ್ಚಾ ಮಧ್ಯಾ ಪ್ರಗಲ್ಭೇತಿ |  
ಪ್ರಥಮಾವರ್ತಿಗೈವನಮದವಿಕಾರಾ ರತೌ ವಾಮಾ | ಕಥಿತಾ  
ಮದುಶ್ಚ ಮಾನೇ ಸಮಧಿಕಲಜ್ಜಾವತೀ ಮುಚ್ಚಾ” ಸಾಂ ದಂ  
೩-೪೭, ೪೮ |

**ಮುಚಿರ ಮುಚಿರ (ಪುಂ)** 1. ಧರ್ಮವೆಂದು ಮಾಡುವ  
ದಾನ, ಪರೋಪಕಾರಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ದಾನ. (ವಿಂ)  
2. ಉದಾರ ಸ್ವಭಾವದವನು, ಮುಕ್ತಹಸ್ತ, ಕೊಡುಗೆ  
ಯುಳ್ಳವನು, ದಾನಶೀಲ. “ಮುಚಿರೋ ಧರ್ಮದಾತಾರೋ”  
ವೈಜಂ |

**ಮುಚುಕ್ತು ಮುಚುಕ್ತು (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯವಂಶದ  
ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಮಾಂಧಾತೃರಾಜನ ಮಗ. ಪುರುಕುತ್ಸ  
ಮತ್ತು ಅಂಬೀಷಮಹಾರಾಜ ಇವನ ಸಹೋದರರು.  
ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಸಾಹಾಯ್ಯ ಮಾಡಿದ್ದಕ್ಕಾಗಿ  
ದೇವತೆಗಳು ಇವನಿಗೆ ಯಾರಿಂದಲೂ ತೊಂದರೆಯಾಗದ  
ಮತ್ತು ದೀರ್ಘವಾದ ನಿದ್ರಾರೂಪ ವರವನ್ನೂ ಯಾರಿಂದ  
ಅದರೂ ನಿದ್ರಾಭಂಗವಾದರೆ ಅವರು ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ಭಸ್ಮ  
ವಾಗಲಿ ಎಂದು ವರವನ್ನೂ ಕೊಟ್ಟರು. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು  
ಕಾಲಯಾವನನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಲು ಅಟ್ಟಿಕೊಂಡು ಬರು  
ತ್ತಿರುವಾಗ ಅವನು ಮುಚುಕ್ತುಂದನು ನಿದ್ರಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಗುಹೆ  
ಯೊಳಕ್ಕೆ ಸೇರಿದನು. ಆಗ ಮುಚುಕ್ತುಂದನ ನೇತ್ರಾಗ್ನಿ  
ಯಿಂದ ಕಾಲಯಾವನನು ದಗ್ಧನಾದನು. ಅದರಿಂದ  
ಮುಚುಕ್ತುಂದನು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಅನುಗ್ರಹಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರನಾದನು.  
2. ಒಂದು ಮರ. 3. ಒಬ್ಬ ಮುನಿ. 4. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ.  
“ಮುಚುಕ್ತುಸ್ತು ದ್ವುಭೇದೇ ಮುನಿದೈತ್ಯಯೋಃ” ಹೇಮಂ |

**ಮುಚುಕ್ತುಪ್ರಸಾದಕ ಮುಚುಕ್ತು (ಪುಂ)**  
ಮುಚುಕ್ತುಂದನನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. [“ಮುಚು-  
ಕ್ತು” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಮುಚುಟಿ ಮುಚುಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮುಷ್ಟಿ, ಹಿಡಿ. “ಅಕಲಿಬೌ  
ಮುಚುಟಿಮುಸ್ತೌ ದ್ವೌ ಸಂಗ್ರಾಹೌ ಮುಚುಟಿಃ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” ವೈಜಂ |

**ಮುಚುಲಿನ್ದ ಮುಚುಲಿನ್ದ (ಪುಂ)** ಕಡಾರದ ಗಿಡ, ದೊಡ್ಡ  
ಹರಿಳೆ ಗಿಡ.

**ಮುಚ್ಚ - ಮೋಕ್ಷಣೆ** (ತುಡಾಂ ತುಡಾಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) | ಮುಚ್ಚತಿ,  
-ತೇ | ಮುಮೋಚ, ಮುಮೋಚೆ | ಮುಮೋಚಾ | ಮುಚ್ಚತು, ಮುಚ್ಚತಾಮ್ |  
ಅಮುಚ್ಚತ್, -ತ | ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಬಿಡು, ಬಂಧನದಿಂದ  
ಬಿಡುಗಡೆಮಾಡು, ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಾಗಿರುವಂತೆ ಬಿಡು. “ವನಾಯ  
ಪಿತೃಪ್ರತಿಬದ್ಧವತ್ಸಾಂ ಯಶೋಧನೋ ಧೇನುಮೇವಮುಮೋಚ” ರಘುಂ ೨-೧ |  
2. ಸಡಿಲಿಸು, ಬಿಗಿತಪ್ಪಿಸು. “ಕಂಠ ಮುಚ್ಚತಿ ಬಹಿಣಃ

ಸಮದನೋ ನೌಪಃ ಪ್ರದೀಪಾಯತೇ” ಮೃಚ್ಛಂ ೪-೧೪ | 3. ಬಿಡು,  
ಶಬ್ದಹೊರಡಿಸು, ಧ್ವನಿಯನ್ನು ಕೊಡು. “ಸಂಯಾಮವಂತೋ  
ಯತಿವನ್ನಿಗದಾನಪರೇಮುಚನ್” ಭಟ್ಟಿಂ ೭-೪೭ | 4. ಅಸ್ತವನ್ನು  
ಬಿಡು, ಪ್ರಯೋಗಮಾಡು, ಎಸೆ. “ಸ ತಾಮವಿಭ್ರಮದ್ವಿಮಾಂ  
ವಾನರೇಂದ್ರಸ್ಯ ಚಾಮುಚತ್” ಭಟ್ಟಿಂ ೧೪-೪೩ | 5. ಬಿಡು,  
ತೃಪ್ತಿಸು, ಬಿಟ್ಟುಬಿಡು, ತೊರೆದುಬಿಡು. “ರಾತ್ರಿಗಂತಾ  
ಮತಿಮತಾಂ ವರ ಮುಚ್ಚ ಶಯ್ಯಾಮ್” ರಘುಂ ೪-೬೬ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕರ್ಮಣಿಃ**—ಮುಚ್ಯತೇ | ಮುಮೋಚೆ | ಮುಚ್ಯತಾಮ್ | ಅಮುಚ್ಯತ |  
ಮುಚ್ಯತೇ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಮುಚಿಃ**—ಮೋಚಯತಿ, -ತೇ, ಮೋಚಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ  
-ಬಭೂವ, ಆಸ | ಮೋಚಯಿತಾ | ಮೋಚಯತು, -ತಾಮ್ |  
ಅಮೋಚಯತ್, -ತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಮುಕ್ತುಃ**—ಮೋಕ್ಷಣೀಯಃ | ಮೋಕ್ಷಣೀಯಃ | ಮುಕ್ತಃ |  
ಮುಕ್ತವಾನ್ | ಮುಚ್ಚನ್, -ಂತೀ, -ಂತಿ | ಮುಚ್ಚಮಾನ್ | ಮೋಕ್ಷಯನ್  
-ಂತೀ, -ಂತಿ | ಮೋಕ್ಷಯತು | ಮುಕ್ತಮ್ | ಮುಕ್ತವಾ |

**ಮುಚ್ಚತ್ ಮುಚ್ಚತ್ (ವಿಂ)** 1. ಬಿಡುತ್ತಿರುವ, ತೃಪ್ತಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. ಮುಚ್ಚ (ಮೋಕ್ಷಣೆ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) |  
“ತತ್ಪ್ರತಿತಂ ಹಿ ತಾತೇನ ಮಾಂ ಚ ಪ್ರಾಣಾಂಶ್ಚ ಮುಚ್ಚತಾ” ತಂ ರಾಂ  
೧-೪೧ | 2. ಸುರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳಿಸುತ್ತಿರುವ.  
“ಸ್ತೇಹವ್ಯಕ್ತಿಶ್ಚಿರವಿರಹಜಂ ಮುಚ್ಚತೋ ಬಾಣಮುಷ್ಣಮ್” ಮೇಘಂ  
೧-೧೨ | 3. ಬಿಡುತ್ತಿರುವ, (ಬಾಣ) ಪ್ರಯೋಗಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. “ಮುಚ್ಚತೀಶೋ ಶರಾನ್ ಜಿಷ್ಣೌ ಪಿನಾಕಸ್ವನಪೂರಿತಃ”  
ಕಿರಾಂ ೧೪-೩೪ | “ಶಾನ್” (೩-೨-೧೨೪) | ಮುಚ್ಚಮಾನ್ಃ  
ಮುಚ್ಚಮಾನ್ಃ. ಕರ್ಮಂ “ಶಾನ್” | ಮುಚ್ಯಮಾನ್ಃ ಮುಚ್ಯ  
ಮಾನ್ಃ, ಬಿಡಲಿಡುತ್ತಿರುವ. “ಮೋಹನಾಂತರ್ವರತನುರಿಯಂ  
ಲಕ್ಷಯತೇ ಮುಚ್ಯಮಾನ್ಃ” ವಿಕ್ರಂ ೧-೯ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಚಿಪ್”  
(೪-೧-೬) | -ಂತೀ -೨೭. “ವಿಲೋಚನಾಂಶ್ಚ ಮುಚ್ಚಂತೀಮ್”  
ಭಟ್ಟಿಂ ೯-೮೭ |

**ಮುಚ್ಚ ಮುಚ್ಚ (ಪುಂ)** 1. ಹೆಗ್ಗವನ್ನು ಮಾಡುವ ಮುಚ್ಚ  
ವೆಂಬ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹುಲ್ಲು, ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಯು  
ನಡುವಿಗೆ ಕಟ್ಟಿಕೊಳ್ಳುವ ವಸ್ತ್ರವನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ  
ಹುಲ್ಲು. “ಮುಚ್ಚಾಲಾಭೇ ತು ಕರ್ತವ್ಯಾಃ ಕುಶಾಸಮಂತಕಬಲ್ಬಜೈಃ |  
ತ್ರಿವೃತಾ ಗ್ರನ್ಥಿನೇಕೇನ ತ್ರಿಭಿಃ ಪಂಚಭಿರೇವ ವಾ” ಮನುಂ  
೨-೪೩ | 2. ಭೋಜನರಾಜನ ಚಿಕ್ಕಪ್ಪ, ಧಾರಾನಗರದ  
ದೊರೆ.

**ಮುಚ್ಚಕೇಶ ಮುಚ್ಚಕೇಶ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. 2.  
ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಶಿವ. ಮುಚ್ಚ ಇವ ಕೇಶಾ ಅಸ್ಯ |  
“ಗದಾಗ್ರಜೋ ಮುಚ್ಚಕೇಶೋ ದಾಶಾಹೋ ದಶರೂಪಮುಚ್ಚ” ಅಮಂ |



ಮುಂಜನ ಮುಂಜನ (ನಂ) ಶಬ್ದ, ದ್ವನಿ. ಮುಜಿ (ಶಬ್ದ)  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। “ಕಣಿಹದಿ ರಸಿ ಧ್ವನಿ ಧೋ  
ಗುಂಜನಮುಂಜನೇ” ವೇಜಂ।

ಮುಂಜರ ಮುಂಜರ (ನಂ) ಕಮಲ ನೈದಿಲೆ ಮೊದಲಾದುವು  
ಗಳ ಗಡ್ಡೆ.

ಮುಂಡ ಮುಂಡ (ಪುಂ) 1. ರಾಹು. 2. ಒಬ್ಬ ದೈತ್ಯ, ಮುಡಿ  
(ಖಂಡನೆ) ಭಾವೇ “ಘ” (೩-೩-೧೮)। ಮುಂಡ: ಮುಂಡನಮ್  
ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಅ” (೫-೨-೧೨೭)। (ಪುಂ) 3. ಶಿರಸ್ಸು,  
ತಲೆ. ಮುಂಡಯತೆ—ಮುಡಿ ಕರ್ಮಂ “ಘ” (೩-೩-೧೯)।  
4. ನಾಪಿತ, ಕ್ಷೌರಿಕ. ಮುಂಡೋ ಮುಂಡನಂ ಜೀವಿಕಾತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ  
“ಅ”। 5. ಅಯಸ್ಸು, ಕಬ್ಬಿಣ. (ವಿಂ) 6. ಮುಂಡನ  
(ಕ್ಷೌರಿ) ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟವನು. “ಮುಂಡೋಽಸ್ತೀ ಮಸ್ತಕೋಽಪ್ಯಸ್ತೀ”  
ವೇಜಂ। ಮುಂಡೋ ಮುಂಡಿತಶೀರ್ಷಯಃ। ರಾಹೌ ದೇತ್ಯಾಂತರೇ”  
ಹೇಮಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಘ-ಞ್. 7. ಮುಂಡೀರಿಕೆಯೆಂಬ  
ಗಿಡ. “ಮುಂಡೋ ದೇತ್ಯಾಂತರೇ ರಾಹುಗ್ರಹೇ ನಾ ಮುಂಡಿತೇ ತ್ರಿಷು।  
ಮುಂಡಾ ಮುಂಡೀರಿಕಾಯಾಂ ಸ್ಯಾತ್ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮಸ್ತೀ ತು ಮೂರ್ಧನಿ”  
ಮೇದಿಂ।

ಮುಂಡಕ ಮುಂಡಕ (ಪುಂ) 1. ನಾಪಿತ, ಕ್ಷೌರಿಕ. ಮುಂಡಯತಿ—  
ಮುಡಿ (ಖಂಡನೆ) + ಣಿಕ್ “ಉಲ್” (೩-೧-೧೩೩)।  
(ನಂ) 2. ಶಿರಸ್ಸು, ತಲೆ. ಮುಂಡ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್”।  
3. ತಲೆಯೆಲ್ಲಾ ಸವರಿ ಗುಂಡಗೆ ಮಾಡಿರುವ ಮರ.

ಮುಂಡಕೋಪನಿಷತ್ ಮುಂಡಕೋಪನಿಷತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
ಅಧರ್ವವೇದದ ಒಂದು ಉಪನಿಷತ್ತು.

ಮುಂಡಚಗಕ ಮುಂಡಚಗಕ (ಪುಂ) ನೆಲಗಡಲೆಕಾಯಿ.

ಮುಂಡನ ಮುಂಡನ (ನಂ) 1. ಕ್ಷೌರಿ, ಚೌಳ. ಮುಡಿ (ಖಂಡನೆ)  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। 2. ರಕ್ಷಣೆ, ಪಾಲನೆ. “ಮುಂಡನಂ  
ರಕ್ಷಣೆ ಕೋರೆ” ಹೇಮಂ। 3. ಉಜ್ಜುವುದು, ತಿಕ್ಕುವುದು.  
ಮುಡಿ (ಮರ್ದನೆ) “ಲ್ಯುಟ್”।

ಮುಂಡನೀಯ ಮುಂಡನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಕ್ಷೌರಮಾಡ  
ಬೇಕಾದ. 2. ಕ್ಷೌರಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಮುಡಿ (ಖಂಡನೆ)  
“ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೧೬)। 3. ಉಜ್ಜುಬೇಕಾದ. 4.  
ಉಜ್ಜಲ್ಪಡುವ. ಮುಡಿ (ಮರ್ದನೆ) “ಅನೀಯರ್”।

ಮುಂಡಫಲ ಮುಂಡಫಲ (ಪುಂ) 1. ತೆಂಗಿನ ಮರ. ಮುಂಡವತ್  
ಫಲಮಸ್ಯ। (ನಂ) 2. ತೆಂಗಿನಕಾಯಿ.

ಮುಂಡಮಂಡಲಿ ಮುಂಡಮಂಡಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಳಮಟ್ಟದ  
ಜನರ ಗುಂಪು, ಹೀನಜನರ ಗುಂಪು. “ವರಮಲ್ಪವಲಂ ಸಾರಂ  
ನ ಕುರ್ಯನ್ಮುಂಡಮಂಡಲೀಮ್” ಹಿತೋಂ ೩-೮೯।

ಮುಂಡಲೋಹ ಮುಂಡಲೋಹ (ಪುಂ) ಕಬ್ಬಿಣ.

ಮುಂಡಶಾಲಿ ಮುಂಡಶಾಲಿ (ಪುಂ) ಮುಳ್ಳಿಲ್ಲದ ಬತ್ತ,  
ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಚೂಪಾಗಿಲ್ಲದ ಬತ್ತ. ಮುಂಡ: ಶೂಕಶೂನ್ಯ:  
ಶಾಲಿ:।

ಮುಂಡಿತ ಮುಂಡಿತ (ವಿಂ) 1. ಕ್ಷೌರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟವನು.  
2. ರೆಂಬೆ ಕತ್ತರಿಸಿ ಗುಂಡಗೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ (ಮರ.) ಮುಡಿ  
(ಮಂಡನೆ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)।

ಮುಂಡಿನ್ ಮುಂಡಿನ್ (ಪುಂ) ದಿವಾಕೀರ್ತಿ, ನಾಪಿತ, ಕ್ಷೌರಿಕ.  
ಮುಂಡಯತಿ—ಮುಡಿ (ಖಂಡನೆ) + ಣಿಕ್ “ಣಿನಿ:”  
(೩-೧-೧೩೪)।

ಮುಡ್ ಮುಡ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. ಮುಡ (ಹರ್ಷ)  
“ಕ್ವಿಪ್” (ವಾಂ ೩-೩-೯೪)। “ಮುಡೇ ಮುರಾರೇರಮರೇ:  
ಸುಮೇರೋರಾನೀಯ ಯಸ್ಯೋಪಚಿತಸ್ಯ ಶೃಂಗೈ:” ಮಾಘಂ ೪-೧೦।

ಮುಡಾ ಮುಡಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. ಮುಡ (ಹರ್ಷ)  
“ಕ್ವಿಪ್” (ವಾಂ ೩-೩-೯೪)। “ಠಾಪ್”। “ಆಪಂ ಚೈವ  
ಹಲ್ಂತಾನಾಂ ಯಥಾ ವಾಚಾ ನಿಶಾ ದಿಶಾ” ಭಾಗುರಿ:।

ಮುದಿತ ಮುದಿತ (ನಂ) 1. ಸಂತೋಷ, ಹರ್ಷ. (ವಿಂ)  
2. ಅನಂದಗೊಂಡ, ಹರ್ಷಗೊಂಡ. ಸಂತೋಷವಟ್ಟು.  
ಮುಡ (ಹರ್ಷ) “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨)। “ಮುದಿತೇಸ್ತದೇತಿ  
ದಿತೀಜನ್ಮನಾಂ ರಿಪೌ” ಕಿರಾಂ ೧೩-೨೪। 3. ತೃಪ್ತಿ  
ಹೊಂದಿದ, ಸಮಾಧಾನ ಹೊಂದಿದ. “ದವತೀ ಕ್ಷತೀ:  
ಪರಿಣತದ್ವಿರದೇ ಮುದಿತಾಲಿಯೋಷಿತಿ ಮದಸ್ತುತಿभि:” ಕಿರಾಂ  
೬-೭।

ಮುದಿತವತ್ ಮುದಿತವತ್ (ವಿಂ) ಸಂತೋಷಗೊಂಡ,  
ಹರ್ಷಹೊಂದಿದ. ಮುಡ “ಕ್ತವತು:” (೩-೨-೧೦೨)।  
“ಙೀಪ್” (೪-೧-೬)। -ವತೀ -ವತೀ.

ಮುದಿರ ಮುದಿರ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಮೋದಂತೇನೇನ  
—ಮುಡ (ಹರ್ಷ) “ಕಿರಕ್” (೩ಂ ೧-೫೧)। “ಮುಂಚಸಿ  
ನಾಥಾಪಿ ಕೃಷಂ ಭಾಮಿನಿ ಮುದಿರಾಲಿಕದಿಯಾಯ” ಭಾಂ ವಿಂ।  
2. ಕಾಮುಕ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ. “ಮುದಿರ: ಕಾಮುಕೇ ಮೇಘೇ”  
ಹೇಮಂ। 3. ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ.

ಮುಡ್ ಮುಡ್ (ಪುಂ) 1. ಹೆಸರು. ಮುಡ (ಹರ್ಷ) “ಗಕ್”  
(೩ಂ ೧-೧೨೫)। 2. ನೀರುಕಾಗೆ.

ಮುಡ್ಪಣಿ ಮುಡ್ಪಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡುಹೆಸರು ಗಿಡ.  
ಮುಡ್ಪಣಿಸದೃಶ: ಪಣೋಽಸ್ಯಾ: “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬೪)।

ಮುಡ್ಗರ ಮುಡ್ಗರ (ಪುಂ) 1. ಗಡೆ, ಕಬ್ಬಿಣದ ಒಂದು ಅಸ್ತ್ರ.  
ಗ್ (ನಿಗರಣೆ) “ಅ” (೩-೧-೧೩೪)। ಮುಡೋ ಗರ:।  
“ಪಾದಪಾವಿಡ್ಪರಿಶ: ಶಿಲಾನಿಷ್ಪಿಷ್ಟಮುಡ್ಗರ:” ರಘುಂ ೧೨-೭೩।



2. ಚಮುಟಿಗೆ, ಕೊಡತಿ, ಸುತ್ತಿಗೆ. 3. ಕೋರಕ. ಮೊಗ್ಗು. "ಮುರ: ಕೋರಕಾಸ್ತ್ರಯೋ: ಲೋಟಾದಿಮೇದನೇ" ಹೇಮಂ.

**ಮುರಣ ಮುದ್ರಣ (ನಂ)** 1. ಅಚ್ಚುಮಾಡುವುದು, ಅಚ್ಚುತ್ತುವುದು. 2. ಮುದ್ರೆ ಹಾಕುವುದು, ಮೊಹರು ಹಾಕುವುದು, ಠಸ್ಸೆಹಾಕುವುದು.

**ಮುದ್ರಾ ಮುದ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮೊಹರು, ಠಸ್ಸೆ, ಮುದ್ರೆ. ಮುದ್ರ (ಹಬ್) "ರಕ್" (ಉಂ ೧-೧೭೦)। "ಮುದ್ರಾ ಪ್ರತ್ಯಯ-ಕಾರಿಣಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 2. ಮುದ್ರೆಯ ಉಂಗುರ, ಮೊಹರು ಹಾಕುವ ಉಂಗುರ. "ಅನಯಾ ಮುದ್ರಯಾ ಮುದ್ರಯೇನಮ್" ಮುದ್ರಾಂ ೧। 3. ಪರವಾನೆ, ರಹದಾರಿ, ಅಪ್ಪಣೆ ಚೀಟಿ. "ಅಗೃಹೀತಮುದ್ರ: ಸಲೇಖ: ಪುರುಷೋ ಗೃಹೀತ:" ಮುದ್ರಾಂ ೫। 4. ನಾಣ್ಯ, ಅಂಗಳಿಂದ ಗುರುತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಟಂಕ. 5. ಗುರುತು, ಚಿಹ್ನೆ, ಅಂಕಿತ. "ನಾಗಮುದ್ರಾಸನಾಥಮಹ್ಗುಲೀಯಕಂ ಸ್ನಿಗ್ಧಂ ನಿಮಾಲಯಂತೀ ತವೋಪಾಲಮ್ ಪತಿತಾಸ್ಮಿ" ಮಾಲಂ ೧। 6. ಬಿರುದಿನ ಬಿಲ್ಲೆ, ಪದಕ. 7. ದೇವರ ಪೂಜೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಮತ್ತು ಪ್ರವಚನ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಅಂಗುಷ್ಠ ದೊಡನೆ ಇತರ ಬೆರಳುಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಒಂದು ರೀತಿ, -ಸ್ಥಿತಿ, -ಅವಸ್ಥೆ. 8. ಐದು ವಿಧ ಲಿಪಿಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. (1) ಮುದ್ರಾಲಿಪಿ: (2) ಶಿಲ್ಪಾಲಿಪಿ: (3) ಲೇಖನಿ-ಲಿಪಿ: (4) ಗುಣ್ಡಿಕಾಲಿಪಿ: ಮತ್ತು (5) ಧ್ವನಿಲಿಪಿ: ಇವು ಐದು ವಿಧ ಲಿಪಿಗಳು. "ಮುದ್ರಾಲಿಪಿ: ಶಿಲ್ಪಾಲಿಪಿ: ಲಿಪಿ-ಲೇಖನಿಸಮವಾ। ಗುಣ್ಡಿಕಾಧ್ವನಿಸಂಭೂತಾ ಲಿಪಯ: ಪಂಚಭಾ-ಸ್ಮತಾ:" ವಾರಾಹೀತನ್ಮಮ್.

**ಮುದ್ರಾಕ್ಷಿತ ಮುದ್ರಾಂಕಿತ (ವಿಂ)** 1. ಮೊಹರು ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಠಸ್ಸೆಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುದ್ರಾ ಅಕ್ಷಿತ: 2. ಗುರುತು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಿಹ್ನೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಮುದ್ರಾಲಿಪಿ ಮುದ್ರಾಲಿಪಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಐದು ವಿಧ ಲಿಪಿಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. ["ಮುದ್ರಾ" 8 ನೆಯ ಅರ್ಥ ನೋಡಿ.]

**ಮುದ್ರಾಯನ್ತ್ರ ಮುದ್ರಾಯಂತ್ರ (ನಂ)** ಛಾಪಿಸುವ ಯಂತ್ರ, ಪುಸ್ತಕ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಮುದ್ರಿಸುವ ಯಂತ್ರ, ಅಚ್ಚು ಹಾಕುವ ಯಂತ್ರ.

**ಮುದ್ರಾರಾಕ್ಷಸ ಮುದ್ರಾರಾಕ್ಷಸ (ನಂ)** ವಿಶಾಖದತ್ತ ಕವಿ ವಿರಚಿತವಾದ ಒಂದು ನಾಟಕ.

**ಮುದ್ರಿಕಾ ಮುದ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮುದ್ರೆಯ ಉಂಗುರ, ಮೊಹರು ಹಾಕುವ ಉಂಗುರ. 2. ಮೊಹರು, ಮುದ್ರೆ, ಠಸ್ಸೆ. ಮುದ್ರಾ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"। 3. ಮುದ್ರೆ ಒತ್ತುವುದು. 4. ಅಂಗಳಿಂದ ಗುರುತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ನಾಣ್ಯ.

**ಮುದ್ರಿತ ಮುದ್ರಿತ (ವಿಂ)** 1. ಮುದ್ರೆ ಒತ್ತುಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುದ್ರೆಯಿಂದ ಗುರುತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಮುದ್ರಾ ಅಸ್ಯ ಸಂಜಾತಾ "ಇತ್ಯ" (೫-೨-೩೬)। 2. ಗುರುತುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಿಹ್ನೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ತ್ಯಾಗ: ಸಪ್ತಸಮುದ್ರಮುದ್ರಿತಮಹೀನಿವ್ಯಜಿದಾನಾವಧಿ:" ಮಂ ವೀಂ ೨-೩೬। 3. ಅಚ್ಚುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುದ್ರಣ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ (ಪುಸ್ತಕ ಮೊದಲಾದುದು). 4. ಮುಚ್ಚಿ ಕೊಂಡಿರುವ, ಅರಳದಿರುವ (ಹೂವಿನ ಮೊಗ್ಗು). 5. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರ್ಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿವಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಮುದ್ರಿತಾನ್ಯಜನಸಂಕಥನ: ಸನ್ನಾರದಂ ಬಲರಿದು: ಸಮವಾದೀತ್" ನೇಪಂ ೫-೧೨।

**ಮುಖಾ ಮುಖಾ (ಅವ್ಯಂ)** 1. ಮೃದ್ಧವಾಗಿ, ಪ್ರಯೋಜನ ವಿಲ್ಲದೆ. ಮುಹ (ವೇದಿತ್ಯ) "ಕಾ" ಬಾಹುಂ। ಪೃಥಂ। "ಮುಖಾಪಾದೋಮುಖಾಕ್ಷಿ ಸ್ವಾಮುಖಾಮ ಕಿಲಾಮ್ಬುಜಮ್" ಚಂದ್ರಾಂ। "ಮುಖಾಪಿತಂ ಮುಖಸು ರತ್ನಮೇಮಿ:" ನೇಪಂ ೧೦-೬೩। 2. ಸುಳ್ಳಾಗಿ, ಮಿಥ್ಯೆಯಾಗಿ.

**ಮುನಿ ಮುನಿ (ಪುಂ)** 1. ಮುನಿ. (ವ್ಯಾಸ ವಸಿಷ್ಠ ಪರಾಶರ ಮೊದಲಾದವರು). ಮನ (ಜ್ಞಾನ) "ಇನ್" ಉಚ್ಚ (ಉಂ ೪-೧೨೩)। "ಹೇತು ತದಭ್ಯಾಗಮನೇ ಪರೀಪ್ಸು: ಸುಖೋಪವಿಷ್ಟಂ ಮುನಿಮಾಬಮಾಃ" ಕಿರಾಂ ೩-೪। 2. ತಪಸ್ವಿ, ಮನವ್ರತ ವುಳ್ಳವನು. ಸುಖದುಃಖಗಳನ್ನು ಸಮನಾಗಿ ಭಾವಿಸುವವನೂ ಕಾಮಕ್ರೋಧಭಯಗಳನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದವನೂ ಮುನಿಯೆನಿಸುವನು. "ದುಃಖೇವನುದ್ವಿಗ್ನಮನಾ: ಸುಖೇವ ವಿಗತ-ಸ್ಪೃಹ:। ವೀತರಾಗಭಯಕ್ರೋಧ: ಸ್ಥಿರಧೀರ್ಮುನಿರಹ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೨-೫೬। "ಮುನಿರಸ್ಮಿ ನಿರಾಗಸ: ಕುತೋ ಮೇ ಭಯಮಿತ್ಯೇಷ ನ ಭೂತಯೇಷಮಿಮಾನ:" ಕಿರಾಂ ೧೩-೭। 3. ಕುಶಲ, ದರ್ಬೆಹುಲ್ಲು. "ಕುಶೋ ಮುನಿ: ಕುಥೋ ದರ್ಮ:" ವೇಜಂ। 4. ಪಲಾಶವೃಕ್ಷ. 5. ಪ್ರಿಯಾಲವೃಕ್ಷ, ಮೊರಟೆ ಗಿಡ. 6. ಜಿನದೇವ. 7. ಅಗಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿ. "ಮುನಿವಾಚ್ಯಮೇ-ಹಂತಿ। ಪ್ರಿಯಾಲೋಗಸ್ತಿ: ಪಾಲಾಶ:" ಹೇಮಂ। 8. ಬುದ್ಧ ದೇವ. "ಮುನೀಂದ್ರ: ಶ್ರೀಧನ: ಶಾಸ್ತಾ ಮುನಿ:" ಅಮಂ। 9. ಸಪ್ತ (ಏಳು) ಸುಖ್ಯ. "ಮುನಿಶರವಿರತಿರ್ಮಯೋ ಪುಟೋಪಮ್" ವೃಂ ೨೦।

**ಮುನಿಕುಮಾರ ಮುನಿಕುಮಾರ, -ದಾರಕ -ದಾರಕ (ಪುಂ)** ಮುನಿಪುತ್ರ.

**ಮುನಿಚಂದ್ರ ಮುನಿಚಂದ್ರ (ಪುಂ)** ಏಳೆಲೆ ಬಾಳೆಗಿಡ. ಮುನಿ-ಸಂಖ್ಯಾಕಾ: ಚಂದ್ರಾ: ಯಸ್ಯ।

**ಮುನಿತ್ರಯ ಮುನಿತ್ರಯ (ನಂ)** ಪಾಣಿನಿ ಕಾತ್ಯಾಯನ ಮತ್ತು ಪತಂಜಲಿಮುನಿಗಳು.



**ಮುನಿಬ್ರಹ್ಮ ಮುನಿಬ್ರಹ್ಮ** (ಪುಂ) ಹೆಮ್ಮರ, ಅಗಸ್ತ್ಯವೃಕ್ಷ. ಮುನಿರಗಸ್ತ್ಯಸ್ಯ ಪ್ರಿಯೋ ದ್ರುಮಃ। “ಮುನಿಬ್ರಹ್ಮಃ ಕೋರಿಕಿತಃ ಶಿತಿವೃತ್ತಿಃ ಕ್ವೇನುನಾಽಮನ್ಯತ ಸಿಹಿಕಾಸುತಃ” ನೈಷಂ ೧-೧೬।

**ಮುನಿಪಿತ್ತಲ ಮುನಿಪಿತ್ತಲ** (ನಂ) ತಾಮ್ರಲೋಹ. ಮುನೀನಾಂ ಪಿತ್ತಲಮಿವ।

**ಮುನಿಪುಷ್ಪ ಮುನಿಪುಷ್ಪ** (ಪುಂ) ಋಷಿಶ್ರೇಷ್ಠ. ಮುನಿಷು ಪುಷ್ಪವಃ।

**ಮುನಿಪುತ್ರಕ ಮುನಿಪುತ್ರಕ** (ಪುಂ) ಕಾಡಿಗೆಸೊಗಸಿನ ಹಕ್ಕಿ. “ಕಾಕಚಿದಿಃ ಸ್ವಜ್ಜಲೇಲಸ್ತಾತನೋ ಮುನಿಪುತ್ರಕಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಮುನಿಭೇಜ ಮುನಿಭೇಜ** (ನಂ) 1. ಅಳಲೆಕಾಯಿ. ಮುನೀನಾಂ ಭೇಜಮ್। 2. ಉಫನ, ಉಪವಾಸ. 3. ಅಗಸ್ತ್ಯವೃಕ್ಷ. “ಮುನಿಭೇಜಂ ತ್ವಗಸ್ತಿಪಥ್ಯಾಯಾಂ ಲಕ್ಷಣೇಽಪಿ ಚ” ಹೇಮಂ।

**ಮುನಿವೃತ್ತಿ ಮುನಿವೃತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಋಷಿಯ ಜೀವನ. ಋಷಿಯು ನಡೆಸುವ ಜೀವನ. ಮುನಿಃ ವೃತ್ತಿಃ। (ವಿಂ) 2. ಋಷಿಯಂತೆ ಜೀವನ ನಡೆಸುವವನು, ಋಷಿಯಂತೆ ಕಂದ ಮೂಲಾದಿಗಳನ್ನು ತಿಂದು ಜೀವಿಸುವವನು. ಮುನಿಃ ವೃತ್ತಿರಿವ ವೃತ್ತಿರಸ್ಯ। “ವಾರ್ಧಕೇ ಮುನಿವೃತ್ತಿನಾಂ ಯೋಗನಾಂತೇ ತನ್ಮುಖ್ಯಜಾಮ್” ರಘುಂ ೧-೮।

**ಮುನಿವ್ರತ ಮುನಿವ್ರತ** (ನಂ) ಋಷಿಗಳ ನಿಯಮ, ಋಷಿಗಳು ಆಚರಿಸುವ ಬಾಂದ್ರಾಯಣಾದಿವ್ರತ. ಮುನೀನಾಂ ವ್ರತಮ್। “ಮುನಿವ್ರತೇಸ್ತವಾಮತಿಮಾತ್ರಕಶಿತಾಂ ದಿವಾಕರಾಪ್ಲುಷ್ಠ-ವಿಭೂಷಣಾಸ್ಪದಾಮ್” ಕುಮಾಂ ೫-೪೮।

**ಮುನೀಂದ್ರ ಮುನೀಂದ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಋಷಿಶ್ರೇಷ್ಠ, ಮಹಾ ತಪಸ್ವಿಯಾದ ಋಷಿ. ಮುನೀನಾಂ ಯೋಗಿನಾಮಿन्द्रಃ ಶ್ರೇಷ್ಠಃ। “ಉದ್ವಿಗ್ಧ ಮೇಧಸ್ತತಃ ಏವ ತೋಮರ್ಯ ಮುನೀಂದ್ರೇರಿವ ಸಂಪ್ರಣೀತಾಃ” ಮಾಘಂ ೩-೭೫। 2. ಬುದ್ಧದೇವ.

**ಮುಮುಕ್ಷು ಮುಮುಕ್ಷು** (ವಿಂ) 1. ಮೋಕ್ಷಹೊಂದಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಮುಕ್ತಿಪಡೆಯಲು ಇಚ್ಛಿಸುತ್ತಿರುವ. ಮುಚ್ಛ (ಮೋಕ್ಷಣ) + ಸನ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। 2. ಬಿಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ತ್ಯಜಿಸಲು ಇಚ್ಛಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಬಿಡುಗಡೆಮಾಡಲು ಇಚ್ಛಿಸುತ್ತಿರುವ.

**ಮುಮುಕ್ಷಾ ಮುಮುಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೋಕ್ಷಹೊಂದಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಮುಕ್ತಿಪಡೆಯಲು ಇಚ್ಛೆ. ಮುಚ್ಛ (ಮೋಕ್ಷಣ) + ಸನ್ “ಅಃ” (೩-೩-೧೦೨)। 2. ತ್ಯಜಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. 3. ಬಿಡುಗಡೆಮಾಡಲು ಇಚ್ಛೆ. 4. (ಬಾಣವನ್ನು) ಎಸೆಯಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಪ್ರಯೋಗಿಸಲು ಆಸೆ.

**ಮುಮುಕ್ಷು ಮುಮುಕ್ಷು** (ವಿಂ) 1. ಮೋಕ್ಷಹೊಂದಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಮುಕ್ತಿಪಡೆಯಲು ಆಸೆಪಡುವ. ಮುಕ್ತು-ಮಿಚ್ಛುಃ—ಮುಚ್ಛ (ಮೋಕ್ಷಣ) + ಸನ್ “ತಃ” (೩-೨-೧೬೮)। “ಕರ್ಮಬಂಧಚ್ಛಿದಂ ಧರ್ಮಂ ಭವಸ್ಯೇವ ಮುಮುಕ್ಷವಃ” ಕುಮಾಂ ೨-೫೧। 2. (ಬಾಣ) ಪ್ರಯೋಗಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. “ತಸ್ಯಾಪ-ರೇಷ್ವಪಿ ಮೃಗೇಷು ಶರಾನ್ಮುಮುಕ್ಷೋಃ” ರಘುಂ ೯-೫೮। 3. ಬಿಡುಗಡೆಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ.

**ಮುಮುಷಿಷತ್ ಮುಮುಷಿಷತ್** (ವಿಂ) ಕದಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅಪಹರಿಸಲು ಇಚ್ಛಿಸುತ್ತಿರುವ. ಮುಷ (ಸ್ತೇಯ) + ಸನ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)।

**ಮುಮುಷಿಷಾ ಮುಮುಷಿಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕದಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಅಪಹರಿಸಲು ಆಸೆ. ಮುಷಿತುಮಿಚ್ಛಾ—ಮುಷ (ಸ್ತೇಯ) + ಸನ್ “ಅಃ” (೩-೩-೧೦೨)।

**ಮುಮುಷಿಷು ಮುಮುಷಿಷು** (ವಿಂ) ಅಪಹರಿಸಲು ಆಸೆಪಡುವ, ಕದಿಯಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ. ಮುಷಿತುಮಿಚ್ಛುಃ—ಮುಷ (ಸ್ತೇಯ) + ಸನ್ “ತಃ” (೩-೨-೧೬೮)।

**ಮುಮುರ್ಷತ್ ಮುಮುರ್ಷತ್** (ವಿಂ) ಪ್ರಾಣಬಿಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಜೀವವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಲು ಇಚ್ಛಿಸುತ್ತಿರುವ. ಮರ್ತುಮಿಚ್ಛನ್—ಮೃಡ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗ) + ಸನ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)।

**ಮುಮುರ್ಷಾ ಮುಮುರ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಾಣಬಿಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಜೀವವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಲು ಆಸೆ. ಮರ್ತುಮಿಚ್ಛಾ—ಮೃಡ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗ) + ಸನ್ “ಅಃ” (೩-೩-೧೦೨)। “ಜ್ಯಾಘ್ರಷ್ಟ-ಕಠಿನಾಙ್ಗುಲಂ ರಾಮಮಾಯಾನ್ಮುಮುರ್ಷಯಾ” ಭದ್ರಂ ೫-೫೭।

**ಮುಮುರ್ಷು ಮುಮುರ್ಷು** (ವಿಂ) ಪ್ರಾಣಬಿಡಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ, ಜೀವವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಲು ಆಸೆಪಡುವ. ಮರ್ತುಮಿಚ್ಛುಃ—ಮೃಡ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗ) + ಸನ್ “ತಃ” (೩-೨-೧೬೮)।

**ಮುರ ಮುರ** (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಿಂದ ಹತನಾದ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. “ಯಿಷ್ಕಮಾಣೇನಾಹುತಃ ಪಾರ್ಥೇನಾಥ ದ್ವಿಷನ್ ಮುರಮ್” ಮಾಘಂ ೨-೧। (ನಂ) 2. ಅವರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ, ಸುತ್ತಿ ವರಿಯುವುದು. ಮುರ(ಸಂವೇಷಣ) ಭಾವೇ “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೫)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಾ-ರಾ. 3. ಮುರೆಯೆಂಬ ಒಂದು ಗಂದಿಗರ ವಸ್ತು.

**ಮುರಜ ಮುರಜ** (ಪುಂ) 1. ಮೃದಂಗ, ಮದ್ದಳೆ. ಮುರಾಕ್ಷೇಪನಾ-ಜಾತಃ—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) “ಙಃ” (೩-೨-೧೮)। 2. ತಮಟೆ, ಡಬ್ಬಿ, ಟುಮಕು.

**ಮುರಜಿತ್ ಮುರಜಿತ್** (ಪುಂ) ಮುರಾಸುರನನ್ನು ಜಯಿಸಿದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಮುರಂ ಜಿತವಾನ್—ಜಿ (ಜಯ) “ಕ್ವಿಪ್”



(೩-೨-೬೧)। एवं -द्विष् -द्विष्, -भिद् -भिद्, -विद्विष् -विद्विष्. "मुखमव्यरोहि मुरविद्विष्: श्रिया" माघ० १३-११। "सुदृशो (वदनारविन्दम्) रराज मुरजिद्विद्वक्षया" माघ० १३-३५।

**ಮುರರಿಪು ಮುರರಿಪು, -ವೇರಿನ್ -ವೈರಿನ್ (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ.**  
ಮುರಸ್ಯ ರಿಪು: ವೇರಿ ವಾ। "न ममो कपाटतटविस्तृतं तनौ मुरवैरिवक्ष उरसि क्षमामुजः" माघ० १३-१०।  
"जिह्वे कीर्तय केशवं मुररिपुं चेतो भज श्रीधरम्" मु० मा०।

**ಮುರಲಾ ಮುರಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುರಲಾನದಿ, ಕೇರಳ ದೇಶದ ಒಂದು ನದಿ. ಮುರಂ ವೇಷ್ಠನ ಲಾತಿ-ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। "ಮುರಲಾಮಾಸ್ತೋದ್ಭೂತಮಗಮತ್ಕೇತಕಂ ರಜ:" ರಘು० ೪-೫೫। 2. ನರ್ಮದಾನದಿ. "ತತ: ಪ್ರವಿಶತಿ ನದೀದ್ವಯं तमसा मुरला च" उ० रा० २।**

**ಮುರಲಿ ಮುರಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೊಳಲಾ, ಬಿದರಿನ ಕೊಳವೆ ಯಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಒಂದು ವಾದ್ಯ. "ವಂಶೆ ತು ವಂಶಿಕಾ ಪೂರಿ ಮುರಲಿ ವೇಣುಕಾ ಚ ಸಾ" ವೈಜಂ। "ವಾದಯನ್ ಮುರಲಿಂ ಕೃಷ್ಣ: शृङ्गं वेणुं तयापरम्"।**

**ಮುರಲಿಧರ ಮುರಲಿಧರ (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ, ವೇಣು ಗೋಪಾಲ. ಮುರಲ್ಯಾ: ಧರ:**

**ಮುರಾರಿ ಮುರಾರಿ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ, ಮುರನೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನ ವೈರಿ. ಮುರಸ್ಯಾರಿ:। "न केवलं य: स्वतया मुरारेनन्यसाधारणतां दधानः" माघ० ३-१९। 2. ಅನರ್ಘರಾಘವವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಕವಿ.**

**ಮುರ್ಮಣಿ ಮುರ್ಮಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಷ್ವಕೆ.**

**ಮುರ್ಮುರ ಮುರ್ಮುರ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯನ ಕುದುರೆ. 2. ಮನ್ಮಥ. 3. ತುಷಾಗ್ನಿ, ಹೊಟ್ಟಿನಿಂದ ಮಾಡಿದ ಬೆಂಕಿ. ಮುರ (ವೇಷ್ಠನೆ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫)। ಪೃಷಂ। "मुर्मुरस्तुषवह्नी स्यात् मन्मथे रविवाजिनि" मेदि०। 4. ಗೋಮೂತ್ರ. 5. ಗೋಮಯ, ಸಗಣೆ. "उद्देशे देहलिर्गोविष्मूत्रयोर्मुकमुर्मुरौ" वैज०।**

**ಮುಷ - ಸ್ತೇಯೆ (ಕ್ರಘಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸಂ)। ಮುಷ್ಣಾತಿ। ಮುಮುಷ। ಮುಷಿತಾ। ಮುಷಿಷ್ಯತಿ। ಮುಷ್ಣಾತು, ಮುಷ್ಣಿತಾತ್। ಮುಷಾಣ। ಅಮುಷ್ಣಾತ್। ಮುಷ್ಣಿಯಾತ್। ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಕದಿ, ಕಳ್ಳತನ ಮಾಡು. "पुरीमवस्कन्द लुनीहि नन्दनं मुषाण रत्नानि हरामराङ्गनाः" माघ० १-५१। 2. ಕಸಿದುಕೊ, ಸುಲಿಗೆ ಮಾಡು. 3. ಓಡಿಸು, ದೂರಮಾಡು. "कि देव्या: कृतदीर्घरोषमुषितस्निग्धस्मितं तन्मुखम्" रत्ना० ३-१९।**

4. ವಂಚಿಸು, ಮೋಸಮಾಡು. "शीघ्रं न यात यदि तन्मुषिता: स्य मूढाः" रत्ना० ४-३। 5. ಆವರಿಸು, ಮುಚ್ಚು. "सैन्यरेणुमुषिताकंदीधितिः" रघु० ११-५१। 6. ಅತಿಶಯವಾಗಿರು, ಮೇಲಾಗಿರು, ಮೀರಿಸು. "मुष्णन्तमिव तेजांसि विस्तीर्णोरःस्थलं पुरः" भट्टि० ९-९२। ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕರ್ಮಣಿ:—ಮುಷ್ಯತೇ। ಮುಮುಷೇ। ಮುಷಿತಾ। ಮುಷ್ಯತಾಮ್। ಅಮುಷ್ಯತ। ಇತ್ಯಾದಿ.**

**ಕೃತು:—ಮುಷಿತವ್ಯಮ್। ಮುಷಿಣೀಯಮ್। ಮುಷ್ಯಮ್। ಮುಷಿತ:। ಮುಷಿತವಾನ್। ಮುಷ್ಣನ್, -ತೀ। ಮುಷಿತುಮ್। ಮುಷಿತಮ್। ಮುಷಣಮ್। ಮುಷಿತ್ವಾ, ಮುಷಿತ್ವಾ। ಪರಿಮುಷ್ಯ। ಪರಿಮುಷ್ಯ।**

**ಮುಷ್ ಮುಷ್ (ವಿಂ) (ಸಮಾಸಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ) 1. ಕದಿಯುವ. ಮುಷ (ಸ್ತೇಯೆ) "क्विप्" (३-२-१७८)। 2. ವಂಚಿಸುವ. 3. ಮುಚ್ಚುವ, ಕವಿಯುವ, ಆವರಿಸುವ. 4. ಕಸಿದುಕೊಳ್ಳುವ, ಸುಲಿಗೆಹೊಡೆಯುವ. 5. ಮೀರುವ, ಅತಿಶಯವಾಗಿರುವ, ಮೇಲಾಗಿರುವ. "संप्रत्येष सरोरुह-द्युतिमुषः पादांस्तवासेवितुम्" रत्ना० १-२२।**

**ಮುಷಾ ಮುಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ಲೋಹವನ್ನು ಕರಗಿಸುವ) ಮೂಸೆ, ಕೂವೆ. ಮುಷ (ಸ್ತೇಯೆ) "कः" (३-१-१३५)।**

**ಮುಷಿತ ಮುಷಿತ (ನಂ) 1. ಕದಿಯುವುದು, ಕಳ್ಳತನ, ಅಪಹರಿಸುವುದು. ಮುಷ (ಸ್ತೇಯೆ) ಭಾವೇ "क्तः" (३-३-११४)। (ವಿಂ) 2. ಕದಿಯಲ್ಪಟ್ಟು, ಅಪಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಮುಷ "क्तः" (३-२-१०२)। 3. ವಂಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಮೋಸಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. "शीघ्रं न यात यदि तन्मुषिता: स्य मूढा: याता सुदूरमधुना गजगामिनी सा" रत्ना० ४-३। 4. ಕಸಿದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು, ಸುಲಿಯಲ್ಪಟ್ಟು. 5. ಆವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಕವಿಯಲ್ಪಟ್ಟು, ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟು. "उच्चचाल बलभित्सखो वशी सैन्यरेणुमुषिताक-दीधितिः" रघु० ११-५१। 6. ಮಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು."**

**ಮುಕ್ಕ ಮುಕ್ಕ (ಪುಂ) 1. ಅಂಡಕೋಶ, ಬೀಜ, ವೃಷಣ. ಮುಷ್ಣಾತಿ ರೇತ:—ಮುಷ (ಸ್ತೇಯೆ) "कक्" (उ० ३-४१)। "स्थानाच्युतममुक्तं हि मुष्कयोरन्तरेऽनिलः" वाग्भटः। 2. ಮೋಕ್ಷಕವೃಕ್ಷ, ಮೋಕ್ಷ ಮರ. 3. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು, ರಾಶಿ. 4. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ. 5. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. "मुष्कोऽण्डकोशे मोक्षेऽद्रौ" नानार्थर०। (वि०) 6. ಪುಷ್ಪಿಯಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವ. "मुष्को मोक्षद्रुमे सङ्घे तस्करे मांसलाण्डयोः" हेम०।**



ಮುಕ್ಕಕ ಮುಷ್ಕಕ (ಪುಂ) 1. ಮೋಕ್ಷಕವೃಕ್ಷ, ಮೋಕ್ಷ ಮರ.

2. ಅಂಡಕೋಶ, ವೃಷಣ. ಮುಕ್ಕಕ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"

ಮುಕ್ಕರ ಮುಷ್ಕರ (ವಿಂ) ಜೋಲಾಡುವ ವೃಷಣಗಳುಳ್ಳವನು. ಪ್ರಶಸ್ತ: ಮುಕ್ಕೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ರ:" (೪-೨-೧೦೭) 1.

ಮುಷ್ಟಿ ಮುಷ್ಟಿ (ಪುಂ) 1. ಹಿಡಿ, ಬಿಗಿಹಿಡಿದ ಕೈ, ಮುಚ್ಚಿದ ಹಸ್ತ. ಮುಷ್ಯತೇಜನಯಾ—ಮುಷ (ಸ್ತೇಯ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) 1. "ತಸ್ಯಾಪರೇಷ್ವಪಿ ಮುಗೇಷು ಶರಾನ್ಮುಮುಕ್ತೋ: ಕರ್ಣಾಂತಿಮೇತ್ಯ ಬಿಭಿಡೇ ನಿಬಿಡೋಽಪಿ ಮುಷ್ಟಿ:" ರಘುಂ ೯-೪೮ 1. 2. ಒಂದು ಪಲದ ತೂಕ. 3. ತುಂಬಿದ ಒಂದು ಹಿಡಿ. "ಶ್ಯಾಮಾಕಮುಷ್ಟಿಪರಿವೃದ್ಧಿತಕೋ ಜಹಾತಿ ಸೌಜ್ಯಂ ನ ಪುತ್ರಕೃತಕ: ಪದವಿ ಮಗಸ್ತೇ" ಶಾಕುಂ ೪-೧೩ 1. 4. ಖಡ್ಗದ ಮುಷ್ಟಿ, ಕತ್ತಿಯ ಹಿಡಿ. "ಮುಷ್ಟಿರ್ದೈವೋ: ಪಲೇ. ಬದ್ಧಪಾಣೌ ತ್ಸರೌ" ಮೇದಿಂ 1. 5. ಕದಿಯುವುದು, ಕಕ್ಕತನ.

ಮುಷ್ಟಿಕ ಮುಷ್ಟಿಕ (ಪುಂ) 1. ಕಂಸನ ಆಸ್ಥಾನದ ಒಬ್ಬ ಜಟ್ಟಿ. ಇವನು ಬಲರಾಮ ಮತ್ತು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣರೊಡನೆ ಕುಸ್ತಿಮಾಡಿ ಹೆತನಾದನು. "ಮುಷ್ಟಿಕಾಸುರಾಣೂರಮಲ್ಲಯುಧ-ವಿಶಾರದ:" 1. 2. ಅಕ್ಕಸಾಲಿ, ಚಿನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿ ಕೆಲಸದವನು. ಮುಷ್ಟಿಮೌಘಣಂ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯) 1.

ಮುಷ್ಟಿವ್ಯಯ ಮುಷ್ಟಿಂಧಯ (ಪುಂ) 1. ಬಾಲಕ, ಸಣ್ಣ ಮಗು. ಮುಷ್ಟಿ ಧಯತಿ ಪಿಬತಿ—ಧೆಡ್ (ಪಾನೇ) "ಖಸ್" (೩-೨-೩೦) 1. ಮುಗಮ: (೬-೩-೬೭) 1. (ವಿಂ) 2. ನುಂಗುವ, ಕಬಳಿಸುವ. "ಅಪಿ ನಿಖಿಲಲೋಕಸುಚರಿತ-ಮುಷ್ಟಿವ್ಯಯದ್ವಾರಿತಮುಚ್ಚನಾದುಷ್ಟಮ್" ದಯಾಂ 1.

ಮುಷ್ಟಿಬಂಧ ಮುಷ್ಟಿಬಂಧ (ಪುಂ) ಕೈ ಬಿಗಿಹಿಡಿಯುವಿಕೆ, ಹಸ್ತವನ್ನು ಮುಚ್ಚಿ ಹಿಡಿಯುವಿಕೆ.

ಮುಣ್ಣತ್ ಮುಷ್ಣತ್ (ವಿಂ) 1. ಕದಿಯುತ್ತಿರುವ, ಅಪಹರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಮುಷ (ಸ್ತೇಯ) "ಣತ್" (೩-೨-೧೨೪) 1. 2. ನಿವಾರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೋಗಲಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. "ರಾಜೀವರಾಜೀವಶಲೋಮೃಗ್ಗಂ ಮುಣ್ಣಂತಮುಣ್ಣಂ ತತಿಮಿ-ಸ್ತರುಣಾಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೯ 1. 3. ಎಸೆರುತ್ತಿರುವ, ಎಗಿಲಾಗಿರುವ, ಅತಿಶಯವಾಗಿರುವ. "ಮುಣ್ಣಂತಮಿವ ತೇಜಾಸ್ತಿ-ವಿಸ್ತೀರ್ಣೋರ:ಸ್ಯಲಂ ಪುರ:" ಭಟ್ಟಿಂ ೯-೯೨ 1. 4. ವಂಚಿಸುತ್ತಿರುವ, ಮೋಸಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 5. ಹಿಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ದೂರಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 6. ಮುಚ್ಚುತ್ತಿರುವ, ಕವಿಯುತ್ತಿರುವ, ಅವರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) 1. -ತೌ -ತೇ.

ಮುಸಲ ಮುಸಲ (ಪುಂ) 1. ಒನಕೆ. ಮುಸ್ಯತೇನ — ಮುಸ (ಖಂಡನೆ) "ಕಲಕ್" (೩ಂ ೧-೧೦೬) 1. "ನ್ಯಪ್ತನ್

ಮುಸಲೇ ಗೃಧ್ರಾ ದೀಪ್ತಯಾಪಾತಿ ಚೋಲಕಯಾ" ಭಟ್ಟಿಂ ೧೪-೨೭ 1. 2. ಒನಕೆಯ ಶಬ್ದ, ಧನ್ಯವನ್ನು ಕುಟ್ಟುವಾಗ ಆಗುವ ಒನಕೆಯ ಸದ್ದು. "ಮುಸಲಮಿದಮಿಮಂ ಚ ಪಾತಕಾಲೇ ಮುಹುರನು-ಯಾತಿ ಕಲೇನ ಹುಕ್ತೇನ" ಮುಡ್ರಾಂ ೧-೪ 1. 3. ಗದೆ.

ಮುಸಲಪಾಣಿ ಮುಸಲಪಾಣಿ (ಪುಂ) ಬಲರಾಮ. ಮುಸಲ: ಪಾಣೌ ಯಸ್ಯ 1. "ಸಂಪ್ರತ್ಯಸಾಂಪ್ರತಂ ವಕ್ತುಮುಕ್ತೇ ಮುಸಲಪಾಣಿನಾ" ಮಾಘಂ ೨-೭೦ 1.

ಮುಸಲಾಯುಧ ಮುಸಲಾಯುಧ (ಪುಂ) ಬಲರಾಮ. ಮುಸಲ-ಮಾಯುಧಂ ಯಸ್ಯ 1.

ಮುಸಲಿನ್ ಮುಸಲಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಬಲರಾಮ. ಮುಸಲ-ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಙಿನ್:" (೪-೨-೧೧೪) 1. 2. ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಬಣ್ಣದ ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳ ಕುದುರೆ. "ಮುಸಲಯನ್ಯಪ್ರಮೇಕಾಙ್ಗಿ: ಕರಾಲಿ ತು ಜಝರ:" ವೇಜಂ 1.

ಮುಸಲಿ ಮುಸಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಂಜಿ, ಹಲ್ಲಿ. 2. ನೆಲತಾಳೆ. "ಗೋವಾ ನಿಹಾಕಾ ಮುಸಲಿ" 1. "ಡೆನಿ ಮುಸಲಿ ಪಲ್ಲಿ" ವೇಜಂ 1. "ಮುಸಲಿ ತಾಲಮೂಲಿಕಾ" ಅಮಂ 1.

ಮುಸಲಯ ಮುಸಲಯ (ವಿಂ) ಒನಕೆಯಿಂದ ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಡುವವನು. ಮುಸಲೇನ ವಧ್ಯ: "ಯತ್" (೪-೧-೬೬) 1. "ವಿಷ್ಯೋ ವಿಷೇಣ ಯೋ ವಧ್ಯೋ ಮುಸಲಯೋ ಮುಸಲೇನ ಯ:" ಅಮಂ 1.

ಮುಸ್ತ ಮುಸ್ತ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ವಿಷ. "ವತ್ಸನಾಭೋ ಹಲಾಹಲ:" 1. ಮುಸ್ತ: ಕುಷ್ಟೋ ಮೇಷಶೃಗ್ಗ: ಇತ್ಯಾದ್ಯಾಶ್ಚ" ವೇಜಂ 1.

ಮುಸ್ತಕ ಮುಸ್ತಕ (ಪುಂ) 1. ಭದ್ರಮುಸ್ತೆ, ಕೊನ್ನಾರಿಯ ಒಂದು ಭೇದ. ಮುಸ್ತಯತಿ — ಮುಸ್ತ (ಸಂಧಾತೇ) + ಣಿಕ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) 1. (ಪುಂ) 2. ಒಂದು ವಿಧ ವಿಷ. "ಚತ್ವಾರಿ ವತ್ಸನಾಭಾನಿ ಮುಸ್ತಕೇ ದ್ವೇ ಪ್ರಕೀರ್ತितೇ" ಸುಶ್ರುತಂ ಕಲ್ಪಂ ೨ 1.

ಮುಸ್ತಾ ಮುಸ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭದ್ರಮುಸ್ತೆ, ಕೊನ್ನಾರಿಯ ಒಂದು ಭೇದ. ಮುಸ್ತಯತಿ — ಮುಸ್ತ (ಸಂಧಾತೇ) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) 1. "ವಿಸ್ತಂಭಂ ಕ್ರಿಯತಾಂ ವರಾಹ-ತತಿಮಿ: ಮುಸ್ತಾಭತಿ: ಪಲ್ವಲೇ" ಶಾಕುಂ ೨-೬ 1.

ಮುಸ್ತಾದ ಮುಸ್ತಾದ (ಪುಂ) ವರಾಹ, ಹಂದಿ. ಮುಸ್ತಾಮತಿ — ಅದ (ಭಕ್ಷಣೇ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) 1.

ಮುಸ್ತು ಮುಸ್ತು (ಪುಂ) ಮುಷ್ಟಿ, ಹಿಡಿ, ಬಿಗಿಹಿಡಿದ ಕೈ. ಮುಸ್ತಯತಿ ಖಂಡಯತೇನ — ಮುಸ (ಖಂಡನೆ) "ತುಕ್" ಬಾಹುಂ 1. "ಅಕಲಿಬೌ ಮುಷ್ಟಿಮುಸ್ತು ದ್ವೌ ಸಂಭ್ರಾಹೌ ಮುಚ್ಚುತಿ: ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ವೇಜಂ 1.

ಮುಹಿರ ಮುಹಿರ (ಪುಂ) 1. ಕಾಮದೇವ, ಮನ್ಮಥ. 2. ಮೂರ್ಖ, ಅಜ್ಞ, ಅವಿವೇಕಿ. ಮುಹ್ಯತಿ ಸಭಾಯಾಮ್ — ಮುಹ



(ವೆಚ್ಚಿಲೆ) "ಕಿರಕ್" (೩೦ ೧-೪೨) | "ಮುಹಿರ: ಕಾಮ-  
ಮೂರ್ಖಯೋ: ಮೇದಿಂ |

**ಮುಹುಸ್ ಮುಹುಸ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಮತ್ತೆ, ಪುನಃ, ತಿರುಗಿ.  
ಮುಹ (ವೆಚ್ಚಿಲೆ) "ಉಸ್" ಬಾಹುಂ | "ಜಯಮಿಚ್ಚತಿ ತಸ್ಯ  
ಜಾತಶಕ್ತೇ ಮನಸೀಮ್ ಮುಹುರಾದೇ ವಿತರ್ಕಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೩-೨ |  
2. ಸ್ವಲ್ಪಕಾಲ. "ಅಸೇಸ್ತಾವನ್ಮುಹುರಪಿತೆ: ದೃಷ್ಟಿರಾಲ್ಪಯತೇ  
ಮೇ" ಮೇಘಂ ೨-೪೨ | "ಮುಹು: ಕ್ಷಣೇನುಕ್ಷಣೇ ಚ" ವೇಜಂ |

**ಮುಹುತ ಮುಹೂರ್ತ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಮುಹೂರ್ತಕಾಲ,  
ನಲವತ್ತೆಂಟು (48) ನಿಮಿಷಗಳ ಕಾಲ, ಎರಡು ಘಳಿಗೆಗಳ  
ಕಾಲ, ಹನ್ನೆರಡು ಕ್ಷಣಗಳ ಕಾಲ, ದಿವಸದ ಹದಿನೈದನೆಯ  
ಒಂದು ಭಾಗ. ಹುಣ್ಣಿ (ಕೌಡಿಲೆ) "ಕ್ತ:" ಮುಡಾಗಮಶ್ಚ  
(೩೦ ೩-೮೯) | ಬಾಹುಂ |

|                  |            |
|------------------|------------|
| ಹದಿನೈದು ನಿಮಿಷಗಳು | 1 ಕಾಷ್ಠಾ   |
| ಮೂವತ್ತು ಕಾಷ್ಠಗಳು | 1 ಕಲೆ      |
| ಮೂವತ್ತು ಕಲೆಗಳು   | 1 ಕ್ಷಣ     |
| ಹನ್ನೆರಡು ಕ್ಷಣಗಳು | 1 ಮುಹೂರ್ತ. |

2. ಒಂದು ಕ್ಷಣಕಾಲ, ಅಲ್ಪಕಾಲ. "ತೇ ಮುಹುತಮಯ ಮುತಿಮ-  
ಪಿಪ್ಯನ್ ಪ್ರೇಮ ಮಾನಮವಧುಯ ವಧು: ಸ್ವಾ:" ಮಾಘಂ ೧೦-೨ |  
"ನವಾಮ್ಬುದಾನಿಕಮುಹುತಲಾಂಛನೇ ಧನುಷ್ಯಮೋಘಂ ಸಮವತ್ ಸಾಯ-  
ಕಮ್" ರಘುಂ ೩-೪೩ | "ಮುಹುತಮಲ್ಪಕಾಲೇ ಸ್ಪಾದ್ಘಟಿಕಾ-  
ದ್ವಿತಯೇಷಿ ಚ" ಹೇಮಂ |

**ಮುಕ್ ಮೂಕ** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ದಾನವ, ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ.  
"ಸುರಕೃತ್ಯಮೇತದವಗಮ್ಯ ನಿಪುಣಮಿತಿ ಮುಕ್ದಾನವ:" ಕಿರಾಂ  
೧೨-೩೬ | 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. "ಆತ್ಮಾಶಿ  
ಶಂಬರೋ ಮುಕ್:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 3. ಹೇಸರಕತ್ತೆಯಿಂದ  
ಹೆಣ್ಣು ಕುದುರೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಪ್ರಾಣಿ. "ಮುಕ್ಕುಂಡೌ ತು  
ವೇಸರಾತ್" ವೇಜಂ | 4. ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. (ವಿಂ) 5.  
ಮೂಗ, ವಾಗಿದ್ರಿಯವಿಲ್ಲದವನು. ಮು ಇತಿ ಶಬ್ದಂ ಕಾಯತಿ  
—ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩) | "ಮೌನಾನ್ಮುಕ್:  
ಪ್ರವಚನಪटुर्वाचिको जल्पको वा" ಭರ್ತುಂ ೧-೪೭ | "ವಿರೋಧಿ-  
ವಚಸೋ ಮುಕ್ತಾನ್ ವಾಗೀಶಾತಪಿ ಕುರ್ವಂತೆ" ಮಾಘಂ ೨-೨೪ |  
"ಮುಕ್ತೋ ದೇವಾಸ್ವಾಧೀನೇಷು" ಹೇಮಂ |

**ಮುಕ್ತಾನ್ವಾ ಮುಕ್ತಾಂಜಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

**ಮುಹ ಮೂಢ** (ವಿಂ) 1. ಅಜ್ಞ, ತಿಳಿಗೇಡಿ, ಅವಿವೇಕಿ,  
ಮೂರ್ಖ. ಮುಹ (ವೆಚ್ಚಿಲೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) |  
"ಮುಹ ಬುಧಮಿವಾತ್ಮಾನಂ ಹೇಮಿಭೂತಮಿವಾಯಸಮ್" ಕುರ್ಮಾಂ ೬-೪೪ |  
2. ಮರುಳುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಭ್ರಮೆಹಿಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಪ್ಪಿಬ್ಬ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಂಕುಹಿಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರತ್ಯಾಸನ್ನವಿಪತ್ತಿ-

ಮೂಮನಸಾಂ ಪ್ರಾಯೋ ಮತಿ: ಕ್ಷೀಯತೇ" ಪञ्चतಂ ೨-೪ |  
3. ದಡ್ಡ, ಪೆದ್ದ, ಮಂಕ, ಮಡ್ಡಿ, ವಿವೇಚನಾಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲ  
ದವನು. "ಸಂತ: ಪರೀಕ್ಷಾನ್ಯತರದ್ಭಜಂತೇ ಮೂಢ: ಪರಪ್ರತ್ಯಯನೇಯ-  
ಬುದ್ಧಿ:" ಮಾಲಂ ೧-೨ | 4. ಗಾಬರಿಗೊಂಡ, ಕಳವಳ  
ಗೊಂಡ. "ಹಿಮೂಢಾನ್ ಭವತಿ ವಿಫಲಪ್ರೇರಣಾ ಕೂರ್ಣಮುಷ್ಟಿ:"  
ಮೇಘಂ ೨-೪ | 5. ಪ್ರಜ್ಞೆತಪ್ಪಿದವನು, ಮೂರ್ಖರೋಗ  
ಹಿಡಿದವನು. 6. ಬುದ್ಧಿಯಿಲ್ಲದವನು, ಯೋಚನೆ ಮಾಡ  
ದವನು. "ಅಲ್ಪಸ್ಯ ಹೇತುರ್ಬಹು ಹಾತುಮಿಚ್ಛನ್ ವಿಚಾರಮೂಢ:  
ಪ್ರತಿಭಾಸಿ ಮೇ ತ್ವಮ್" ರಘುಂ ೨-೪೭ | 7. ಅಲಸ,  
ಸೋಮಾರಿ. "ಮೂಢೇ ಮೂಢೋ ಮೋಹಿನಿ ತನ್ದ್ರಿತೇ" ವೇಜಂ |  
"ಮೂಢಸ್ತನ್ದ್ರಿತೇ ಜಙ್ಘೇ" ಹೇಮಂ |

**ಮೂಢಚೇತನ ಮೂಢಚೇತನ, -ಮತಿ -ಮತಿ** (ವಿಂ)  
ಅಜ್ಞಾನಿ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು, ಮೂರ್ಖ. ಮೂಢಾ  
ಚೇತನಾ ಯಸ್ಯ | "ಅವಗच्छति मूढचेतनः प्रियनाशं हृदि  
शल्यमपितम्" ರಘುಂ ೮-೮೮ |

**ಮೂಢತಾ ಮೂಢತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಜ್ಞತೆ, ತಿಳಿಗೇಡಿತನ,  
ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಮೂಢಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್"  
(೪-೧-೧೧೯) | "ತ್ವ:" -ತ್ವಮ್ -ತ್ವಮ್.

**ಮೂಢಿ ಮೂಢಧೀ** (ವಿಂ) ದಡ್ಡ, ತಿಳಿಗೇಡಿ, ಮಂಕ,  
ಮಡ್ಡಿ. ಮೂಢಾ ಧೀರಸ್ಯ | "ವ್ರಜಂತಿ ತೇ ಮೂಢಧಿ: ಪರಾಭವಂ  
ಭವಂತಿ ಮಾಯಾವಿಷು ಯೇ ನ ಮಾಯಿನ:" ಕಿರಾಂ ೧-೩೦ |

**ಮೂತ ಮೂತ** (ವಿಂ) 1. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೂಢ (ಬನ್ವನೇ) "ಕ್ತ:"  
(೩-೨-೧೦೨) | 2. ಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೆರೆಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ.  
"ಬದ್ಧೇ ಸಂದಾನಿತಂ ಮೂತಮುಧಿತಂ ಸಂದಿತಂ ಸಿತಮ್" ಅಮಂ |

**ಮೂತ್ರ ಮೂತ್ರ** (ನಂ) ಮೂತ್ರ, ಉಚ್ಚಿ. ಮೂತ್ರ (ಪ್ರಸವಣೇ)  
ಕರ್ಮಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೯) | "ನಾಪ್ಸು ಮೂತ್ರಂ ಪುರೀಷಂ ವಾ  
ಷಿವನಂ ವಾ ಸಮುತ್ಸಜೇತ್" ಮನ್ವಂ ೪-೪೬ | ಆಹಾರದ  
ಸಾರಾಂಶವು ರಸವಾಗುವುದು. ಸಾರವಿಲ್ಲದ ವಸ್ತುವು  
ಮಲದ್ರವವಾಗುವುದು. ಆ ದ್ರವವಸ್ತುವು ಸಿರೆಗಳ  
ಮೂಲಕ ಬಿಟ್ಟು ಒಂದು ಅದು ಮೂತ್ರವಾಗುವುದು.  
"ಆಹಾರಸ್ಯ ರಸ: ಸಾರ: ಸಾರಹೀನೋ ಮಲದ್ರವ: | ಸಿರಾभि-  
स्तज्जलं नीतं बस्तौ मूत्रत्वमाप्नुयात्" |

**ಮೂತ್ರಕೃಚ್ಛ ಮೂತ್ರಕೃಚ್ಛ** (ನಂ) ಉರಿಮೂತ್ರ, ಅಶ್ಮರೀ  
ರೋಗ, ಮೂತ್ರರೋಗ. ಮೂತ್ರೇ ಕೃಚ್ಛಮ್ |

**ಮೂತ್ರಕೋಶ ಮೂತ್ರಕೋಶ** (ಪುಂ) ಹೊಕ್ಕಳಿನ ಕೆಳಭಾಗ,  
ಬಿಸ್ತ.

**ಮೂತ್ರಕಥ ಮೂತ್ರಕಥ** (ಪುಂ) ಸರಿಯಾಗಿ ಮೂತ್ರ  
ಇಳಿಯದಿರುವಿಕೆ.



ಮೂಲೋಪ ಮೂಲೋಪ (ಪುಂ) ಮೂಲೋಪ. ಮೂಲೋಪ ದೋಷೋ ಯಸ್ಮಾತ್ ।

ಮೂಲೋಪ ಮೂಲೋಪ (ಪುಂ) ಪುನಃ ಬಿಕ್ಕು.

ಮೂಲೋಪ ಮೂಲೋಪ (ನಂ) ನಾಭಿಯ ಅಧೋಭಾಗ, ಹೊಕ್ಕಿನ ಕೆಳಭಾಗ, ಕೆಳಹೊಟ್ಟೆ. ಮೂಲೋಪ ಪುಟಮ್ ।

ಮೂಲೋಪ ಮೂಲೋಪ (ಪುಂ) ಮೂಲೋಪವನ್ನು ತಡೆ ಗಟ್ಟುವ ಒಂದು ರೋಗ. ಈ ರೋಗವು ಹದಿಮೂರು ವಿಧ.

ಮೂಲೋಪ ಮೂಲೋಪ (ಪುಂ) ಹೊಕ್ಕಿನ ಕೆಳಭಾಗ. ಮೂಲೋಪಾಶಯಃ ।

ಮೂಲೋಪ (ವಿಂ) 1. ದಡ್ಡ, ಮಂಕ, ಪೆದ್ದ. ಮೂಲೋಪ — ಮೂಲೋಪ (ವೈಚಿತ್ಯ) “ಕು:” ಮೂಲೋಪ (ತಂ ೪-೨೨) । 2. ಅಜ್ಜ, ತಿಳಗೇಡಿ, ವಿವೇಕವಿಲ್ಲದವನು, ವಿವೇಚನಾಶಕ್ತಿ ಯಿಲ್ಲದವನು. “ಮುಜ್ಜಮಪಿ ಕೋಪಿತಂ ಶಿರಸಿ ಪುಷ್ಪವದಾರ-ಯೇತ್ ನ ತು ಪ್ರತಿನಿವಿಷ್ಟಮೂಲೋಪವಿತ್ತಮಾರಾಧಯೇತ್” ಭರ್ತೃಂ ೨-೩ । 3. ಮಾಷ, ಉದ್ದು. “ಮೂಲೋಪ: ಪುರೀಷಮೋ ಮಾಷ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಮೂಲೋಪ ಮೂಲೋಪ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಡ್ಡತನ, ಮಂಕು. 2. ತಿಳಗೇಡಿತನ, ಅವಿವೇಕ, ವಿವೇಚನಾಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಮೂಲೋಪ ಭಾವ: “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯) । “ತವ:” । -ತವಮ್ -ತವಮ್.

ಮೂಲೋಪ ಮೂಲೋಪ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ವರದ ಬೆಳವಣಿಗೆ, ಧ್ವನಿಯು ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವುದು, ಸ್ವರಗಳ ಆರೋಹಣಾ ವರೋಹಣ. ಮೂಲೋಪ (ಮೋಹಸಮುಚ್ಚಾಯಯೋ:) “ಯುಕ್” (೩-೩-೧೨೮) । ಸ್ವರವು ಕ್ರಮವಾಗಿ ಬೆಳೆದು ರಾಗವಾಗಿ ಪರಿಣಮಿಸುವುದು ಮೂಲೋಪವೆ. ಇದು ಗ್ರಾಮದ (ಸ್ವರಗಳ ಸಮೂಹದ) ಏಳನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. “ಸ್ವರ: ಸಂಮೂಲೋಪೋ ಯತ್ರ ರಾಗತಾಂ ಪ್ರತಿಪದ್ಯತೇ । ಮೂಲೋಪಾಮಿತಿ ತಾಮಾಹು: ಕವಯೋ ಗ್ರಾಮಸಂಭವಾಮ್” ಸಂ ದಾಂ । “ಸ್ಕುಟಿಭವದ್-ಗ್ರಾಮವಿಶೇಷಮೂಲೋಪಮವೇಕ್ಷಮಾಣಂ ಮಹತೀ ಮುಹುರ್ಮುಹು:” ಮಾಘಂ ೧-೧೦ । 2. ಮೂಲೋಪ ರೋಗ.

ಮೂಲೋಪ ಮೂಲೋಪ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೂಲೋಪ ರೋಗ. ಮೂಲೋಪ (ಮೋಹಸಮುಚ್ಚಾಯಯೋ:) “ಅಜ್” (೩-೩-೧೦೬) । “ಪ್ರಹಾರಮೂಲೋಪಗಮೇ ರಥಸ್ಯಾ ಯನ್ತುನುಪಾಲಮ್ಯ ನಿವರ್ತಿತಾಶ್ವಾನ್” ರಘುಂ ೭-೪೪ । 2. ಲೋಹದ ಭಸ್ಮಗಳನ್ನು ಮಾಡುವ ವಿಧಾನ. 3. ಸ್ವರದ ಬೆಳವಣಿಗೆ, ಸ್ವರದ ಆರೋಹಣಾ ವರೋಹಣ. 4. ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವುದು, ಬೆಳೆಯುವುದು.

ಮೂಲೋಪ ಮೂಲೋಪ (ವಿಂ) ಮೂಲೋಪ ರೋಗ ಹಿಡಿದವನು, ಜ್ಞಾನತಪ್ಪಿದವನು. ಮೂಲೋಪಾಶಯಸ್ಯ “ಲಕ್” (೪-೨-೯೭) ।

ಮೂಲೋಪ ಮೂಲೋಪ (ವಿಂ) 1. ಮೂಲೋಪ ರೋಗ ಹಿಡಿದವನು. ಮೂಲೋಪ ಸಂಜಾತ: “ಇತಕ್” (೪-೨-೨೬) । 2. ಬೆಳೆಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಮೂಲೋಪ ಮೂಲೋಪ (ವಿಂ) 1. ಮೂಲೋಪ ರೋಗವುಳ್ಳವನು. ಮೂಲೋಪ (ಮೋಹಸಮುಚ್ಚಾಯಯೋ:) “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨) । ನ ನತ್ವಮ್ (೮-೨-೪೭) । 2. ಬೆಳೆಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ದಡ್ಡ, ಹೆಡ್ಡ, ಮಂಕ. 4. ಮೂಲೋಪ ಯುಕ್, ಶರೀರವನ್ನು ತಾಳಿದ. “ಮೂಲೋಪ ವಿಜ್ಞಾನಸ್ತಪಸ ಇವ ನೋ ಭಿನ್ನಸಾರಜ್ಞಯುತ:” ಶಾಕುಂ ೧-೩೩ । 5. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಮೂಲೋಪ (ಬನ್ಧನೇ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) । 6. ಕಠಿಣವಾದ. ನ್ಯಾಯಮತದಲ್ಲಿ ಪೃಥಿವಿ ಜಲ ತೇಜಸ್ಸು ವಾಯು ಮತ್ತು ಮನಸ್ಸು ಇವು ಮೂಲೋಪದ್ರವ್ಯಗಳು. “ಪೃಥಿವ್ಯಪ್ತೇಜೋವಾಯುಮನಾಸಿ ಮೂಲೋಪದ್ರವ್ಯಾಣಿ” । “ಕ್ರಿಯಾಶ್ರಯತ್ವಂ ಮೂಲೋಪಮ್” ನ್ಯಾಯಬೋಧಿನಿ ।

ಮೂಲೋಪ ಮೂಲೋಪ (ನಂ) 1. ಒಂದು ಆಕಾರ ಹೊಂದಿರುವಿಕೆ, ರೂಪವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವಿಕೆ. 2. ಗೊತ್ತಾದ ಒಂದು ಆಳತೆಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ ಅಥವಾ ಜಲನೆಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. “ಪರಿಚ್ಛಿನ್ನಪರಿಮಾಣವತ್ವಮ್ ಕ್ರಿಯಾವತ್ವಂ ವಾ ಮೂಲೋಪಮ್” ।

ಮೂಲೋಪ ಮೂಲೋಪ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಕಾರ, ರೂಪ, ದೇಹ. ಮೂಲೋಪ (ಮೋಹಸಮುಚ್ಚಾಯಯೋ:) “ಕ್ತಿನ” (೩-೩-೯೪) । “ಧ್ವಜಾಭ್ರಮಾ ದದೃಶೇಶ ಶರೀರ: ಸಂಕ್ರಾಂತಮೂಲೋಪಮಿತಿ-ನಿಷ್ಠು” ಮಾಘಂ ೩-೨೩ । 2. ವಿಗ್ರಹ, ಪ್ರತಿಮೆ. 3. ಸ್ವರೂಪ. “ಆಚಾರ್ಯೋ ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಮೂಲೋಪ: ಪಿತಾ ಮೂಲೋಪ: ಪ್ರಜಾಪತೇ: । ಆತಾ ಮೂಲೋಪತೇ ಮೂಲೋಪ: ಮಾತಾ ಸಾಕ್ಷಾತ್ ಕ್ಷಿತೇ-ಸ್ತನು:” ಮಾಘಂ ೬-೭-೨೯ । 4. ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ, ಮೈದೋರು ವಿಕೆ, ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. 5. ಕಾಠಿಣ್ಯ, ದೃಢತೆ. 6. ಕಾಗೆ, ವಾಯುಸ. “ಮೂಲೋಪದೇಹಪ್ರತಿಮಯೋ: ಕಾಕಕಾಠಿಣ್ಯಯೋರಪಿ” ವೇಜಂ ।

ಮೂಲೋಪ ಮೂಲೋಪ (ವಿಂ) 1. ದೇಹವನ್ನು ತಾಳಿದ, ಆಕಾರವನ್ನು ಹೊಂದಿದ. ಮೂಲೋಪಾಶಯಸ್ತಿ — “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪) । “ಸ್ವಯಮಾಗೃಹಿತಕಮನೀಯಕಂಕಣಸ್ತವ ಮೂಲೋಪ-ಮಾನಿವ ಮೂಲೋಪವ: ಕರ:” ಮಾಲತೀಂ ೯-೯ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಜಿಪ್” (೪-೧-೬) । -ಮತೀ -ಮತೀ. “ಶಕುಂತಲಾ ಮೂಲೋಪತೀ ಚ ಸತ್ಕಿಯಾ” ಶಾಕುಂ ೪-೧೫ । 2. ಕಠಿಣವಾದ, ಗಟ್ಟಿಯಾದ. (ಪುಂ) 3. ದೇಹ, ಶರೀರ.



ಮೂರ್ಖಕರ್ಪರಿ ಮೂರ್ಧಕರ್ಪರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಛಿತ್ರಿ, ಕೂಡ.

“ಕಾವಾರಿ ಮೂರ್ಖಕರ್ಪರಿ” ಹಾರಾಂ.

ಮೂರ್ಜ ಮೂರ್ಧಜ (ಪುಂ) ತಲೆಯ ಕೂದಲು. ಮೂರ್ಜಿ

ಜಾಯತೆ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತವಿ) “ಜ:” (೩-೨-೧೭) ।

“ಬಂಧೇ ಸಂಸಿನಿ ಚೈಕಹಸ್ತಯಮಿತಾ: ಪರ್ಯಾಕ್ರೂಲಾ ಮೂರ್ಜಾ:”  
ಶಾಕುಂ ೧-೨೬ ।

ಮೂರ್ನ್ ಮೂರ್ಧನ್ (ಪುಂ) 1. ಶಿರಸ್ಸು, ತಲೆ. ಮುಹ್ಯಂತ್ಯಸ್ಮಿನ್

—ಮುಹ (ವೈಚಿತ್ಯ) “ಕನಿ:” (೩-೧-೧೫೭) । ಉಪಾ-

ದೇವ: ಧೌಜ್ಞಾದೇಶ: ರಾದೇಶಶ್ಚ ನಿಶಾಂ । “ಪಾದಾಹತಂ ಯದ್ವತ್ಯಾಯ

ಮೂರ್ವನಮಧಿರೋಹತಿ” ಮಾಘಂ ೨-೪೬ । 2. ಶಿಖರ, ತುದಿ,

ಮೇಲುಭಾಗ. “ಸಪ್ರತಾಪಂ ಮಹೇಂದ್ರಸ್ಯ ಮೂರ್ಜಿ ತೀಕ್ಷ್ಣಂ

ನ್ಯವೇಶಯತ್” ರಘುಂ ೪-೩೯ । 3. ಮುಂಭಾಗ, ಮುಂದೆ

ಇರುವ ಬಯಲು ಪ್ರದೇಶ. “ಸ ಕಿಲ ಸಂಯುಗಮೂರ್ಜಿ

ಸಹಾಯತಾಂ ಮವತ: ಪ್ರತಿಪದ್ಯ ಮಹಾರಥ:” ರಘುಂ ೯-೧೯ ।

4. ಮುಂದಲೆ, ಹಣೆ. 5. ಮುಂದಾಳು, ಮುಖಂಡ.

ಮೂರ್ವ್ಯ ಮೂರ್ಧನ್ಯ (ವಿಂ) 1. ತಲೆಯಲ್ಲಿರುವ, ತಲೆಯ

ಮೇಲಿರುವ. ಮೂರ್ಜಿ ಭವ: “ಯತ್” (೪-೩-೫೫) ।

“ಸ್ವೇದಾಯತಶ್ಚಸಿತವೇಗನಿರಸ್ತಮುಖಮೂರ್ವ್ಯರತ್ನನಿಕರೇರಿವ

ಹಾಸ್ತಿಕಾನಿ” ಮಾಘಂ ೫-೩೦ । 2. ಮೂರ್ಧಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ

ಹುಟ್ಟುವ ಋತು (ಠ ಠ ಡ ಢ ಣ) ರ ಮತ್ತು ಷ ವರ್ಣ

ಗಳು. “ಋತುರಾಣಾಂ ಮೂರ್ವಿ” । 3. ಪ್ರಧಾನ, ಮುಖ್ಯ,

ಮುಖಂಡ.

ಮೂರ್ಪುಷ್ಯ ಮೂರ್ಧಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) ಶಿರೀಷವೃಕ್ಷ, ಬಾಗಿ ಮರ.

ಮೂರ್ಜಿ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ ।

ಮೂರ್ರಸ ಮೂರ್ಧರಸ (ಪುಂ) ಅನ್ನದ ಮೇಲಿನ ರಸ,

ಮಂಡ, ಕೆನೆ. ಮೂರ್ಜಿ ಭವ: ರಸ: ।

ಮೂರ್ವೇಟನ ಮೂರ್ಧವೇಷ್ಯನ (ನಂ) ರುಮಾಲು, ಶಿರ

ಸ್ತ್ರಾಣ, ಪೇಟಾ. ಮೂರ್ಜಿ: ವೇಟನಮ್ ।

ಮೂರ್ವಿಮಿಷಿಕ್ತ ಮೂರ್ಧಾಭಿಷಿಕ್ತ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ್ಯದ

ಸಿಂಹಾಸನಾರೋಹಣ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ ಮಾಡ

ಲ್ಪಟ್ಟ ರಾಜ, —ಕ್ಷತ್ರಿಯ. ಮೂರ್ಜಿ ಅಮಿಷಿಕ್ತ: ।

“ಮಹೋತ್ತರೇನಾಪ್ಯಭಿನಂದ್ಯ ಮೂರ್ವಿ ಮೂರ್ವಿಮಿಷಿಕ್ತಂ ಕುಮುದೋ

ಬಭಾಷೆ” ರಘುಂ ೧೬-೮೧ । 2. ಕ್ಷತ್ರಿಯ, ರಾಜ, ದೊರೆ.

3. ಮಂತ್ರಿ, ಸಚಿವ, ಅಮಾತ್ಯ. “ಮೂರ್ವಿಮಿಷಿಕ್ತೋ ಭೂಪಾಲೇ

ಮನ್ವಿಣಿ ಕ್ಷತ್ರಿಯೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ ।

ಮೂರ್ವಿಮಿಷೇಕ ಮೂರ್ಧಾಭಿಷೇಕ (ಪುಂ) ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ,

ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಗೆ ರಾಜದೀಕ್ಷೆಯನ್ನು ಕೊಡಲು ಮಾಡುವ

ಅಭಿಷೇಕ.

ಮೂರ್ವಿಸಿಕ್ತ ಮೂರ್ಧಾವಸಿಕ್ತ (ಪುಂ) 1. ಪಟ್ಟಾಭಿಷಿಕ್ತ,

ನಾದ ದೊರೆ. 2. ಸೇನಾಪತಿ. 3. ಧನುರ್ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು

ಕಲಿತವನು. 4. ಬಿಲ್ಲನ್ನು ಹಿಡಿದವನು, ಧನುರ್ಧರ.

5. ರತ್ನಪರೀಕ್ಷೆ ಮಾಡುವವನು, ರತ್ನದ ಗುಣವನ್ನರಿತ

ವನು. 6. ಔಷಧಗಳ ಮೂಲಿಕೆಗಳನ್ನು ಬಲ್ಲವನು. ಮೂರ್ವಿ-

ಸಿಕ್ತಸ್ತೇನೇಶೋ ಧನುರ್ವೇದಸ್ತವಾರಕ: । ಮಣಿರತ್ನೋಪಧಿಜ್ಞಶ್ಚ”

ವೇಜಂ । 7. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಂದ (ವಿವಾಹಿತ) ಕ್ಷತ್ರಿಯ

ಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು.

ಮೂರ್ವಿ ಮೂರ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುರಚಿಗೆ ಬಳ್ಳಿ. ಮೂರ್ವತಿ—ಮೂರ್ವಿ

(ಬನ್ವನೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಮೂಲ ಮೂಲ (ಪುಂ) 1. ಮೂಲನಕ್ಷತ್ರ, ಅಶ್ವಿನಿ ಮೊದಲು

ಗೊಂಡು ಹತ್ತೊಂಬತ್ತನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ. ಮೂಲತಿ — ಮೂಲ

(ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಯಾಮ್) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೫) । “ಹಸ್ತಾ ಸ್ವಾತೀ

ಶ್ರವಣಾ ಅಕಲಿಬೇ ಮೃಗಶಿರೋ ನ ಪುಂಸಿ । ಸ್ಯಾತ್ ಪುಂಸಿ

ಪುನರ್ವಸುಪುಷ್ಯೌ ಮೂಲಂ ತ್ವಸ್ತ್ರೀ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಶಿಷಾ:” । 2. ಶಿಫೆ,

ಬಿಳಲು. 3. ನಿಕುಂಜ, ಪೊದರು. 4. ಬೇರು, ಗಿಡ

ಮರಗಳನ್ನು ಭದ್ರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲಿಸುವ ಭೂಮಿಯೊಳಗಿರುವ

ಮರದ ಭಾಗ. “ಬದ್ಧಮೂಲಸ್ಯ ಮೂಲಂ ಹಿ ಮಹದೈರತರೋ: ಸ್ತ್ರಿಯ:”

ಮಾಘಂ ೨-೩೮ । 5. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಕೆಳಭಾಗ, ಅಡಿ

ಭಾಗ, ಬುಡ. “ಕಸ್ಯಾಽಪಿ ದಾಸೀದ್ರಶನಾ ತದಾನಿಮಙ್ಗುಲಾ-

ಮೂಲಾಪಿತಸೂತ್ರಶಿಷಾ” ರಘುಂ ೭-೧೦ । 6. ಮರದ ಬುಡ,

ಮರದ ಅಡಿಯ ಭಾಗ, ಮರದ ಕೆಳಭಾಗ. 7. ಕಾರಣ,

ನಿದಾನ. “ತೌ ಹಿ ಮೂಲಮುಢೇಷ್ಯಂತ್ಯಾ: ಜಿಗಿಷೋರಾತ್ಮಸಂಪದ:”

ಮಾಘಂ ೨-೭೬ । 8. ಪ್ರಾರಂಭ, ಮೊದಲು. 9. ಸಮೀಪ,

ಹತ್ತಿರ. 10. ಶಿಲೆ, ಕಲ್ಲು. 11. ವಶೀಕರಣ. 12.

ಪ್ರತಿಷ್ಠೆ. 13. ಆಧಾರ, ಮೂಲಕಾರಣ. “ರಕ್ಷೋಗೃಹಸ್ಥಿತಿ-

ಮೂಲಮಗ್ನಿಶುದ್ಧೌ ತ್ವನಿಶ್ಚಯ:” ತಂ ರಾಂ ೧-೬ । 14. ಮೂಲ

ಗ್ರಂಥ, ವ್ಯಾಖ್ಯಾನದಿಂದ ವಿವರಿಸಲ್ಪಡುವ ಗ್ರಂಥ,

ಮೂಲ ಪಾಠ. 15. (ರಾಜನ) ರಾಜ್ಯ, (ರಾಜನ) ವಾಸ

ಸ್ಥಳ. “ಸ ಗುಪ್ತಮೂಲಪ್ರತ್ಯಂತ: ಶುದ್ಧಪಾಣಿರಯಾನ್ವಿತ:”

ರಘುಂ ೪-೨೬ । 16. ಮೂಲಧನ, ಬಂಡವಾಳ. 17.

ಪಾಶ್ವರ್ಯ, ಒಂದು ಪಕ್ಷ. 18. ತಳ, ಕೆಳಭಾಗ. “ಮೂಲಂ

ಪಾರ್ವಾಳಿಯೊಡನೆ । ನಿಕುಂಜಶಿಫಯೋ: ಸ್ವೀಯೇ ಶಿಲಾಯಾಂ ಚ

ವಶೀಕೃತೌ । ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಯಾಮ್” ಹೇಮಂ । 19. ಹಿಪ್ಪಲಿ

ಬೇರು. 20. ಸೂರಣ ಗೆಡ್ಡೆ. 21. ತನ್ನದಲ್ಲದ

(ಇತರನ) ಆಸ್ತಿಯನ್ನು ಮಾರುವವನು. 22. ಮೂಲ

ಕಾರಣ, ಮೂಲಪ್ರಕೃತಿ. 23. ಅದ್ಭುತರಹಿತವಾದ

ಪರಬ್ರಹ್ಮ, ಚರಾಚರಸಕಲ ಜಗತ್ತಿಗೂ ಕಾರಣನಾದ

ಪರಮಾತ್ಮ.



**ಮೂಲಕ ಮೂಲಕ** (ನಂ) ಮೂಲಂಗಿ ಗೆಡ್ಡೆ. ಮೂಲಕತಿ — ಮೂಲ (ರೋಪಣೆ) “ವುನ್” (ತಂ ೨-೩೨)। “ವರ್ಜನೀಯಂ ಸದಾ ವಿಪ್ರಮೂಲಕಂ ಮದಿರಾಸಮಮ್” ಬ್ರಾಹ್ಮಪುಂ ।

**ಮೂಲಕರ್ಮನ್ ಮೂಲಕರ್ಮನ್** (ನಂ) ಹಿಂಸಾಕೃತ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಮೂಲಿಕಾಪ್ರಯೋಗ, ಮೂಲಿಕೆಗಳ ಮೂಲಕ ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಕಾರ್ಯ.

**ಮೂಲಕಾರ ಮೂಲಕಾರ** (ಪುಂ) ಮೂಲಗ್ರಂಥವನ್ನು ರಚಿಸಿದವನು. ಮೂಲ ಕರೋತಿ — ಟುಕೃತ್ (ಕರಣ) “ಅನ್” (೩-೨-೧) ।

**ಮೂಲಕಾರಣ ಮೂಲಕಾರಣ** (ನಂ) 1. ಆದ್ಯಕಾರಣ, ಪ್ರಧಾನಕಾರಣ. ಮೂಲ ಕಾರಣಮ್ । “ಕ್ರಿಯಾಣಾಂ ಖಲು ಧರ್ಮಿಣಾಂ ಸತ್ಪತ್ಯಯೋ ಮೂಲಕಾರಣಮ್” ಕುರ್ಮಾಂ ೬-೧೩. 2. ಸಾಂಖ್ಯ ಮತೋಕ್ತವಾದ ಮೂಲಪ್ರಕೃತಿ.

**ಮೂಲಕಾರಿಕಾ ಮೂಲಕಾರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೂಲ ಗ್ರಂಥದ ವಿಷಯವನ್ನು ವಿವರಿಸುವ ಪದ್ಯರೂಪವಾದ ಗ್ರಂಥ. 2. ಮೂಲಧನದ ಬಡ್ಡಿ.

**ಮೂಲಜ ಮೂಲಜ** (ನಂ) 1. ಬೇರು ಅಥವಾ ಗೆಡ್ಡೆಯಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ. (1) ಹಸಿಶುಂಠಿ (2) ಅರಿಶಿನ (3) ಪದ್ಮ, ಕಮಲ. (ವಿಂ) 2. ಮೂಲನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. 3. ಮೂಲತತ್ತ್ವದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ.

**ಮೂಲತ್ರಿಕೋಣ ಮೂಲತ್ರಿಕೋಣ** (ನಂ) ರವಿ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹಗಳ ರಾಶಿರೂಪವಾದ ಗೃಹ.

|           |         |
|-----------|---------|
| ರವಿಗೆ     | ಸಿಂಹ    |
| ಚಂದ್ರನಿಗೆ | ವೃಷಭ    |
| ಕುಜನಿಗೆ   | ಮೇಷ     |
| ಬುಧನಿಗೆ   | ಕನ್ಯಾ   |
| ಗುರುನಿಗೆ  | ಧನುಸ್ಸು |
| ಶುಕ್ರನಿಗೆ | ತುಲಾ    |
| ಶನಿಗೆ     | ಕುಂಭ    |

ಇವು ಮೂಲತ್ರಿಕೋಣಗಳು. “ಸಿಂಹೋ ವೃಷಶ್ಚ ಮೇಷಶ್ಚ ಕನ್ಯಾ ಧನುರ್ವಿ ಷಡೌ ಷಡಃ । ಅರ್ಕಾದಿನಾಂ ತ್ರಿಕೋಣಾನಿ ಮೂಲಾನಿ ರಾಶಯಃ ಕ್ರಮಾತ್” ।

**ಮೂಲದೇವ ಮೂಲದೇವ** (ಪುಂ) ಕುಸ. “ಕುಸಃ ಸ್ಯಾದ್ಬ್ರಹ್ಮಸೇನಜಃ । ಕರ್ಣಿಸುತೋ ಮೂಲದೇವಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಮೂಲದ್ರವ್ಯ ಮೂಲದ್ರವ್ಯ, -ವನ -ಧನ** (ನಂ) ಮೂಲ ಧನ, ಬಂಡವಾಳ.

**ಮೂಲಧಾತು ಮೂಲಧಾತು** (ಪುಂ) ಕೀವು, ಲಸಿಕೆ, ಮೈನೀರು.

**ಮೂಲಪರ್ಣಿ ಮೂಲಪರ್ಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂಜಿಷ್ಠೆ. ಮೂಲ ಪರ್ಣಮಸ್ಯಾಃ ।

**ಮೂಲಪ್ರಕೃತಿ ಮೂಲಪ್ರಕೃತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಧಾನ, ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಮೂಲಕಾರಣವಾದ ಆದಿಶಕ್ತಿ. ಮೂಲಾಚಾರಿ ಪ್ರಕೃತಿಶ್ಚ । ಸಕಲ ಜಗತ್ತಿಗೂ ತ್ರಿಗುಣಾತ್ಮಕವಾದ ಪ್ರಕೃತಿಯೇ ಮೂಲಕಾರಣವೆಂದು ಸಾಂಖ್ಯರ ಮತ. ಕೇವಲ ಪ್ರಕೃತಿಯೇ ಮೂಲಪ್ರಕೃತಿ. ಪ್ರಕರೋತಿ ಇತಿ ಪ್ರಕೃತಿಃ ಎಂಬ ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಯಿಂದ ಇದು ಮತ್ತೊಂದರ ವಿಕೃತಿಯಲ್ಲ. ಮಹದಾದಿತತ್ತ್ವಗಳ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಇದು ಮೂಲವಾದುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಮೂಲವಾದುದು ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲ. “ಪ್ರಕೃತೇರ್ಮಹಾನ್ ತತೋಽಹಂಕಾರಸ್ತಸ್ಮಾದ್ಗುಣಶ್ಚ ಷೋಡಶಕಃ । ತಸ್ಮಾದಪಿ ಷೋಡಶಕಾತ್ ಪಂಚಮ್ಯಃ ಪಂಚ ಭೂತಾನಿ” ಸಾಂ ಕಾಂ । (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ವಿಜಿಗೀಷು ಅರಿ ಮಧ್ಯಮ ಮತ್ತು ಉದಾಸೀನರೆಂಬ ರಾಷ್ಟ್ರ ಪ್ರಮುಖರು. ಅಮಾತ್ಯ ರಾಷ್ಟ್ರ ದುರ್ಗ ಮತ್ತು ಅರ್ಥ ಮುಂತಾದ ದ್ರವ್ಯಪ್ರಕೃತಿಗಳಿಗೆ ಮೇಲಿನ ನಾಲ್ಕು ಪ್ರಕೃತಿಗಳು ಮೂಲವು. “ಮನ್ಯಮಸ್ಯ ಪ್ರಚಾರಂ ಚ ವಿಜಿಗೀಷುಶ್ಚ ಚೇಷ್ಟಿತಮ್ । ಉದಾಸೀನಪ್ರಚಾರಂ ಚ ಶತ್ರುಶ್ಚೈವ ಪ್ರಯತನತಃ । ಉತಾಃ ಪ್ರಕೃತಯೋ ಮೂಲ ಮಂಡಲಸ್ಯ ಸಮಾಸತಃ” ಮನುಂ ೭-೧೫೫, ೧೫೬ ।

**ಮೂಲಭೂತ ಮೂಲಭೂತ** (ಪುಂ) ಮಂಶಪರಂಪರೆಯಿಂದ ಬಂದಿರುವ ಸೇವಕ.

**ಮೂಲರಸ ಮೂಲರಸ** (ಪುಂ) ಕುರಟಿಗೆ ಬಳ್ಳಿ.

**ಮೂಲವಿತ್ತ ಮೂಲವಿತ್ತ** (ನಂ) ಮೂಲಧನ, ಬಂಡವಾಳ.

**ಮೂಲವರ್ತನ್ ಮೂಲವರ್ತನ್** (ವಿಂ) ಗೆಡ್ಡೆ ಗೆಣಸುಗಳನ್ನು ತಿಂದು ಜೀವಿಸುವವನು.

**ಮೂಲಶಾಕಟ ಮೂಲಶಾಕಟ** (ನಂ) ಗೆಡ್ಡೆ ಗೆಣಸುಗಳನ್ನು ಬೆಳೆಯುವ ಭೂಮಿ. ಮೂಲಾನಾಂ ಭವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ — ಮೂಲ “ಶಾಕಟಃ” (ವಾಂ ೫-೨-೨೯) । —ಶಾಕಿನಮ್ — ಶಾಕಿನಮ್.

**ಮೂಲಸ್ಥಾನ ಮೂಲಸ್ಥಾನ** (ನಂ) 1. ಪರಬ್ರಹ್ಮ. 2. ತಳಹದಿ, ಆಧಾರ. 3. ವಾಯು, ಗಾಳಿ.

**ಮೂಲ ಮೂಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶತಾವರೀ ಗಿಡ.

**ಮೂಲಾಧಾರ ಮೂಲಾಧಾರ** (ಪುಂ) ಗುಹ್ಯಸ್ಥಾನ ಮತ್ತು ಜನನೇಂದ್ರಿಯಗಳ ಮಧ್ಯದ ಎರಡು ಅಂಗುಲಗಳ ಪ್ರದೇಶ. ಇದು ದೇಹದೊಳಗಿನ ಸಕಲ ನಾಡಿಗಳಿಗೂ ಮೂಲಸ್ಥಾನವಾಗಿರುವುದು. ಈ ಮೂಲಾಧಾರಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಸುವರ್ಣ ವರ್ಣದ ಚತುರ್ಧಲ ಪದ್ಮವೊಂದಿರುವುದು. ಆ ಪದ್ಮದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಇಚ್ಛಾಜ್ಞಾನಕ್ರಿಯಾತ್ಮಕವಾದ ತ್ರಿಕೋಣವೊಂದಿರುವುದು. ಅದರ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಕೋಟಿಸೂರ್ಯ ಸಮಾನಕಾಂತಿಯುಳ್ಳ ಸ್ವಯಂಭುಲಿಂಗವಿರುವುದು.



“ಮೂಲಾಕ್ಷಾಂ ತ್ರಿಕೋಣಾಕ್ಷಾಂ ಇಚ್ಛಾಜ್ಞಾನಕ್ರಿಯಾತ್ಮಕೇ । ಮಧ್ಯೇ  
ಸ್ವಯಂಮುಲಿಂ ತ್ವಂತು ಕೋಡಿಸುರೈರಸಮಪ್ರಭಮ್ ” ತನ್ವಸಾಂ ।

ಮೂಲಾಕ್ಷ ಮೂಲಾಕ್ಷ (ನಂ) ಮೂಲಾಕ್ಷಿ. ಮೂಲಾಕ್ಷಾ  
ಅಸ್ಯ ।

ಮೂಲಿನ್ ಮೂಲಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಮೂಲಿನ್, ಮೂಲಿನ್, ಗಿಡ, ಲತೆ.  
ಮೂಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇತಿ:” (೪-೨-೧೧೫) । “ಠನ್”  
ಮೂಲಿಕ: ಮೂಲಿಕ: 2. ಸುಳುಸುಳು. “ಮಧ್ಯಸ್ಥ:  
ಪ್ರಾಶ್ನಿಕ: ಸಾಕ್ಷಿ ಮೂಲಿ ಸ್ಯಾತ್ಪುಟಸಾಕ್ಷಿಣಿ” ವೈಜಂ ।

ಮೂಲೋಚ್ಛೇದನ ಮೂಲೋಚ್ಛೇದನ (ನಂ) ಬುಡವನ್ನು  
ಕಿತ್ತುಹಾಕುವುದು, ಬುಡಸಹಿತ ನಾಶಪಡಿಸುವುದು,  
ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. ಮೂಲೋಚ್ಛೇದನಮ್ ।

ಮೂಲೋತ್ಪಾದನ ಮೂಲೋತ್ಪಾದನ (ನಂ) ಬೇರುಸಹಿತ  
ಕಿತ್ತುಹಾಕುವುದು, ಬುಡಸಹಿತ ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. ಮೂಲ  
+ಉತ್+ಪದ (ಭಾವಾರ್ಥ) +ಣಿವ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।

ಮೂಲ ಮೂಲ (ನಂ) 1. ಬೆರೆ, ಧಾರಣೆ. 2. ವೇತನ,  
ಕೂಲಿ. ಮೂಲನಾಮ್ಯಮ್ ಮೂಲನ ಸಮೋ ವಾ “ಯತ್” (೪-೪-೧೧) ।  
“ಮೂಲಂ ವೇತನವಸ್ತಯೋ:” ವೈಜಂ । (ವಿಂ) 3. ಬೇರು  
ಸಹಿತ ಕೀಳಲ್ಪಡುವ, ಬುಡಸಹಿತ ಕೀಳಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.  
ಮೂಲತ: ಉತ್ಪಾದಯತೇ—ಮೂಲಮಾರ್ಗಿಹಿ ಯಸ್ಯ ಮೂಲಯೋ ಮುಕ್ತಾದಿ:  
ಮೂಲ “ಯತ್” (೪-೪-೮೮) ।

ಮೂಷ ಮೂಷ (ಪುಂ) 1. ಲೋಹವನ್ನು ಕರಗಿಸುವ ಮೂಷಿ,  
ಕೂವೆ. 2. ಮೂಷಕ, ಇಲಿ. ಮೂಷ (ಸ್ತೇಯ) “ಅಚ್”  
(೩-೧-೧೩೪) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಜಾತಿಂ “ಛೀಪ್” (೪-೧-೬೩) ।  
ಮೂಷಿ ಮೂಷೀ.

ಮೂಷಕ ಮೂಷಕ (ಪುಂ) 1. ಇಲಿ, ಹೆಣ್ಣು. ಮೂಷ (ಸ್ತೇಯ)  
“ಛೀಪ್” (೩-೧-೧೩೩) । 2. ಬೋರ, ಕಳ್ಳ.

ಮೂಷಕಪರ್ಣಿ ಮೂಷಕಪರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಲಿಯಾಲದ ಗಿಡ,  
ಇಲಿ ಕಿವಿಯ ಗಿಡ. ಮೂಷಕ ಇವ ಪರ್ಣಾನ್ಯಸ್ಯಾ: “ಛೀಪ್”  
(೪-೧-೬೪) । “ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಶ್ರೇಣಿ ಸುತಶ್ರೇಣಿ ರಣ್ಡಾ ಮೂಷಕ-  
ಪರ್ಣಿಪಿ” ಅಮಂ ।

ಮೂಷಕಾ ಮೂಷಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ಇಲಿ. ಮೂಷ (ಸ್ತೇಯ)  
“ಛೀಪ್” (೩-೧-೧೩೩) । “ಛೀಪ್” (೪-೧-೪) ।

ಮೂಷಕಾರಾತಿ ಮೂಷಕಾರಾತಿ (ಪುಂ) ಮೂಷಕಾರ, ಬೆಕ್ಕು.  
ಮೂಷಕಸ್ಯಾರಾತಿ: ।

ಮೂಷಣ ಮೂಷಣ (ನಂ) ಕಳ್ಳತನ, ಕಳ್ಳವು. ಮೂಷ (ಸ್ತೇಯ)  
ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।

ಮೂಷಣೀಯ ಮೂಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಕದಿಯಲ್ಪಡುವ.  
2. ಕದಿಯಬೇಕಾದ. 3. ಕದಿಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ.

4. ಕದಿಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಮೂಷ (ಸ್ತೇಯ) “ಅನೀಯರ್”  
(೩-೧-೧೬) । “ತವ್ಯ:” । ಮೂಷಣೀಯ: ಮೂಷಣೀಯ:.

ಮೂಷತ್ ಮೂಷತ್ (ವಿಂ) ಕದಿಯುತ್ತಿರುವ, ಅಪಹರಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. ಮೂಷ (ಸ್ತೇಯ) “ಛೀಪ್” (೩-೧-೧೩೪) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ  
“ಛೀಪ್” (೪-೧-೬) । —ಸ್ತ್ರೀ-ಛೀಪ್.

ಮೂಷಾ ಮೂಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲೋಹವನ್ನು ಕರಗಿಸುವ ಮೂಷಿ,  
ಕೂವೆ. ಮೂಷ (ಸ್ತೇಯ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೫) । “ಬೃಹದ್ಭಾಂಡೇ  
ತುಷ: ಪೂರ್ಣಂ ಮಧ್ಯೇ ಮೂಷಾಂ ವಿಧಾರಯೇತ್ । ಕ್ಷಿಪ್ತ್ವಾಗ್ನಿಂ ಮುಧ್ರಯೇದ್ಭಾಂಡಂ  
ತದ್ಭಾಂಡಂ ಪುಟಮುಚ್ಯತೇ” ಭಾವಪ್ರಂ ।

ಮೂಷಾತುತ್ಯ ಮೂಷಾತುತ್ಯ (ನಂ) ನೀಲ ಮೈಲುತುತ್ಯ.  
ಮೂಷಾಜಾತಂ ತುತ್ಯಮ್ ।

ಮೂಷಿಕ ಮೂಷಿಕ (ಪುಂ) 1. ಇಲಿ. ಮೂಷಾತಿ ಧಾನ್ಯಾದಿಕಮ್  
—ಮೂಷ (ಸ್ತೇಯ) “ಕಿಕನ್” (೩-೨-೪೨) । ದೀರ್ಘಶ್ಚ ।  
“ಧನೇನ ಬಲವಾನ್ ಸರ್ವೋ ಧನಾಽದ್ಭವತಿ ಪಣ್ಡಿತ: । ಪಶ್ಯಾಯಂ  
ಮೂಷಿಕ: ಪಾಪ: ಸ್ವಜಾತಿಸಮತಾಂ ಗತ:” ಹಿತಂ । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ  
“ಛೀಪ್” (೪-೧-೪) । —ಕಾ-ಛೀಪ್. 2. ಹೆಣ್ಣು ಇಲಿ.  
3. ಕಾಡು ಇಲಿ. 4. ಜೇಡರಹುಳು. “ಮೂಷಿಕಾ ಲೂತಿಕಾ  
ಲೂತಾ ತನ್ತುವಾಯುಶ್ಚ ಜಾಲಿಕ:” ವೈಜಂ । 5. ಮೂಷಿ,  
ಕೂವೆ.

ಮೂಷಿಕವಾಹನ ಮೂಷಿಕವಾಹನ (ಪುಂ) ವಿನಾಯಕ,  
ಗಣಪತಿ.

ಮೂಷಿಕಾಚನ ಮೂಷಿಕಾಚನ (ಪುಂ) ವಿನಾಯಕ, ಗಣಪತಿ.

ಮೂಷಿಕಾಹ್ವಯ ಮೂಷಿಕಾಹ್ವಯ (ಪುಂ) ಇಲಿಯಾಲದ  
ಗಿಡ.

ಮೂಷಿ ಮೂಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂಷಿ, ಕೂವೆ, ಲೋಹವನ್ನು  
ಕರಗಿಸುವ ಮೂಷಿನ ಪಾತ್ರೆ.

ಮೂಕಂಡು ಮೂಕಂಡು (ಪುಂ) ಮೂಕಂಡು ಮುಷಿ. ಮೂಕ  
ಕಂಡು: ಪೃಷ್ಠಂ ಗಲೋಪ: ।

ಮೂಗ ಮೂಗ (ಪುಂ) 1. ಬೆಂಕೆ, ಹುಲ್ಲೆ, ಬೆಂಕಿ. ಮೂಗತೇ ವ್ಯಾಧಿ:  
—ಮೂಗ (ಅನ್ವೇಷಣ) “ಛೀಪ್” (೩-೩-೧೧) । “ಅಕ್ಷಾಧಿ-  
ರೋಪಿತಮೂಗಾಂಶ್ರಮಾ ಮೂಗಾಂಶ್ರಮಾ:” ಮಾಘಂ ೨-೫೬ । 2.  
ಪ್ರಾಣಿ, ಪಶು, ತೀರ್ಯಕ್ ಜಂತು. “ನ ವಿರೋಧಿನಿ  
ರೂಪಮಿಯಾ ಪಥಿ ಮೂಗವಿಹೃಜ್ಜಸಂಹತಿ:” ಕಿರಾಂ ೧೨-೪೬ ।  
“ನಾಭಿಷೇಕೋ ನ ಸಂಸ್ಕಾರ: ಸಿಂಹಸ್ಯ ಕ್ರಿಯತೇ ಮೂಗ: ।  
ವಿಕ್ರಮಾಜಿತರಾಜ್ಯಸ್ಯ ಸ್ವಯಮೇವ ಮೂಗೇಂದ್ರತಾ” । 3. ಅನ್ವೇಷಣ,  
ಹುಡುಕುವುದು. “ಪರ್ಯೇಷಣಾ ಪರಿಚ್ಛಾ ಚ ಮೂಗಾನ್ವೇಷಣಾ  
ಮೂಗ:” ವೈಜಂ । 4. ಮೂಗಶೀರ್ಷನಕ್ಷತ್ರ. “ಮೂಗಸ್ತು  
ಮೂಗಶೀರ್ಷಪಿ” ವೈಜಂ । 5. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಅನೆ.



6. ಯಾಚನೆ, ಬೇಡಿಕೆ. 7. ಬೇಟೆ. "ಮೃಗ: ಕುರಙ್ಗೇ  
ಯಾಚ್ಛಾ ಯಾ ಮೃಗಯಾ ಗಜಾಂತರೇ | ಪಶೌ ನಕ್ಷತ್ರಭೇದೇಪಿ" ಹೇಮಂ |  
8. ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷಮಾಸ. 9. ಮಹರರಾಶಿ. "ಮೃಗಕರ್ಕ-  
ಸಂಕ್ರಾಂತಿ ದ್ವೇ ತುದಗದಕ್ಷಿಣಾಯಾನೇ | ವಿಷುವತೀ ತುಲಾಮೇಷೇ ಗೋಲಮಧ್ಯೇ  
ತಥಾಪರಾ:" |

ಮೃಗಜಲ ಮೃಗಜಲ (ನಂ) ಮರೀಚಿಕೆ, ಬಿಸಿಲ್ಲದುದು.

ಮೃಗಜಾಲಿಕಾ ಮೃಗಜಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೃಗಗಳನ್ನು  
ಹಿಡಿಯಲು ಬೀಸುವ ಬಲೆ. ಮೃಗಾಣಾಂ ಜಾಲಿಕಾ |

ಮೃಗಜೀವನ ಮೃಗಜೀವನ (ಪುಂ) ವ್ಯಾಧಿ, ಕಿರಾತ, ಬೇಡ  
ರವನು. ಮೃಗಜೀವತಿ—ಜೀವ (ಪ್ರಾಣವಾರಣೆ) "ಲ್ಯು:"  
(3-1-134) |

ಮೃಗಣಾ ಮೃಗಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನ್ವೇಷಣ, ಹುಡುಕುವುದು.  
ಮೃಗ (ಅನ್ವೇಷಣೆ) + ಣಿವ್ "ಯುಕ್" (3-3-109) |  
"ಮಾರ್ಗಂ ಮೃಗಣಾ ಮೃಗ:" ಅಮಂ |

ಮೃಗತೃಷ್ ಮೃಗತೃಷ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರೀಚಿಕೆ, ಬಿಸಿಲ್ಲದುದು.  
ಮೃಗಾಣಾಂ ತೃಡ್ ಅಸ್ತೃತಃ | एवं ಮೃಗತೃಷಾ ಮೃಗತೃಷಾ,  
-ತೃಷಾ -ತೃಷ್ಣಾ.

ಮೃಗತೃಷ್ಣಿಕಾ ಮೃಗತೃಷ್ಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಸಿಲ್ಲದುದು.  
ಮೃಗತೃಷ್ಣಾ ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕ:" | "ಟಾಪ್" (4-1-4) |  
"ಸೋತೌವಹಾಂ ಪಥಿ ನಿಹಾಮಜಲಾಮತೀತ್ಯ ಜಾತ:ಸಕ್ಷೇ ಪ್ರಣಯವಾನ್  
ಮೃಗತೃಷ್ಣಿಕಾಯಾಮ್" ಶಾಕುಂ 6-16 | ಬಾಯಾರಿದ ಜಿಂಕೆ  
ಗಳು ದೂರದಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯಕಿರಣವನ್ನು ನೋಡಿ ನೀರಿನ  
ಭ್ರಾನ್ತಿಯಿಂದ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಹಿಡಿದುಹೋಗುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ಮೃಗದಂಶಕ ಮೃಗದಂಶಕ (ಪುಂ) ನಾಯಿ. ಮೃಗಾನ್ ದಶತಿ—  
ದಶ (ದಶನೆ) "ಫ್ವಲ್" (3-1-133) | "ಕೌಲೇಯಕ:  
ಸಾರಮೇಯ: ಕುಕುರೋ ಮೃಗದಂಶಕ:" ಅಮಂ |

ಮೃಗದೃಶ್ ಮೃಗದೃಶ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿಂಕೆಯಂತೆ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ  
ಹೆಂಗಸು. ಮೃಗಸ್ಯ ದೃಗಿವ ದೃಕ್ ಯಸ್ಯಾ: | "ಹಿಮಧಾಮ್ನಿ  
ದರ್ಪಣತಲೇ ಚ ಮುಹು: ಸ್ವಮುಖಶ್ರಿಯಂ ಮೃಗದೃಶೋ ದದೃಶು:" ಮಾಘಂ  
9-43 |

ಮೃಗದ್ವಿಷ್ ಮೃಗದ್ವಿಷ್ (ಪುಂ) 1. ಸಿಂಹ. 2. ವ್ಯಾಘ್ರ,  
ಹುಲಿ. ಮೃಗಾನ್ ದ್ವೇಷಿ—ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) "ಕ್ವಿಪ್"  
(3-2-61) |

ಮೃಗಧರ ಮೃಗಧರ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಮೃಗಸ್ಯ ಧರ: |

ಮೃಗಧೂತ ಮೃಗಧೂತ (ಪುಂ) ಜಂಬುಕ, ನರಿ. ಮೃಗೇಭು ಧೂತ: |  
ಸಂಜಾಯಾಂ "ಕನ್" (4-3-34) | -ಧೂತಕ: -ಧೂತಕಃ |

ಮೃಗನಾಭಿ ಮೃಗನಾಭಿ (ಪುಂ) ಮೃಗಮದ, ಕಸ್ತೂರಿ.  
ಮೃಗಸ್ಯ ನಾಭಿ: | "ಪ್ರಸ್ಯಂ ಹಿಮಾದ್ರೇಮೃಗನಾಭಿಗಾಂಧಿ ಕಿಂಚಿ-  
ತ್ಕವಣತ್ಕಿವರಮಂಶುವಾಸ" ಕುಮಾಂ 1-44 |

ಮೃಗನಾಭಿಜಾ ಮೃಗನಾಭಿಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೃಗದ ನಾಭಿ  
ಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಕಸ್ತೂರಿ. ಮೃಗನಾಭಿ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ  
(ಪ್ರಾಕುಭವಿ) "ಙ:" (3-2-99) |

ಮೃಗನೆತ್ರಾ ಮೃಗನೆತ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೃಗಶೀರ್ಷನಕ್ಷತ್ರವೇ  
ನಾಯಕನಾಗಿ ಉಳ್ಳ ರಾಶಿಗಳು. ಮೃಗೋ ಮೃಗಶೀರ್ಷ ನೇತಾ  
ಯಾಸಾಂ ತಾ ಮೃಗನೆತ್ರಾ ರಾತ್ರಯ:—ಮೃಗ + ನೇತ್ "ಅಪ್" (ವಾಂ  
4-4-114) |

ಮೃಗಪತಿ ಮೃಗಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಮೃಗರಾಜ, ಸಿಂಹ. ಮೃಗಾಣಾಂ  
ಪತಿ: | "ಯಲ್ಲಿಲಾಂ ಮೃಗಪತಿರಾದೇಜನವದ್ಯಾಮಾದಾತುಂ ಸ್ವಜನ-  
ಮನಾಸ್ತುದಾರವೀರ್ಯ:" ಭಾಗಂ 4-24-10 | 2. ಗಂಡು  
ಜಿಂಕೆ. 3. ವ್ಯಾಘ್ರ, ಹುಲಿ.

ಮೃಗಪಿಲ್ಲ ಮೃಗಪಿಲ್ಲ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ, ಮೃಗವೇ ಲಾಂಛನ  
ವಾಗಿರುವ ಹಿಮಾಯು. ಮೃಗ: ಕುರಙ್ಗ: ಪಿಲ್ಲುರಸ್ಮಿನ್ |  
"ಸುಭಾಂಗಮೌ ದ್ವೌ ಮೃಗಪಿಲ್ಲುಪಕ್ಷಜೌ ದಶಾಶ್ವಸಿಪ್ರಪ್ರಹಣೇಮಿ-  
ಚಂದಿರಾ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಮೃಗಪೊತ ಮೃಗಪೊತ (ಪುಂ) ಜಿಂಕೆಯ ಮರಿ. ಮೃಗಸ್ಯ ಪೊತ: |  
-ಪೊತಕ: -ಪೊತಕಃ, -ಶಾವ: -ಶಾವಃ, -ಶಾವಕ:  
-ಶಾವಕಃ. "ಕವ ವಯಂ ಕವ ಪರೋಕ್ಷಮನ್ಮಯೋ ಮೃಗಶಾವೇ:  
ಸಮಮೇಧಿತೋ ಜನ:" ಶಾಕುಂ 2-16 |

ಮೃಗಬಂಧನಿ ಮೃಗಬಂಧನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೃಗಗಳನ್ನು ಹಿಡಿ  
ಯುವ ಬಲೆ. ಮೃಗಾ ಬಂಧಂತೇಜನಯಾ—ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ)  
"ಲ್ಯುಡ್" (3-3-119) | "ಙೀಪ್" (4-1-14) |

ಮೃಗಬಂಧಿನಿ ಮೃಗಬಂಧಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೃಗಗಳನ್ನು ಹಿಡಿ  
ಯುವ ಬಲೆ. ಮೃಗಾನ್ ಬಂಧನಾತಿ—ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ) "ಣಿನಿ:"  
(3-1-134) | "ಙೀಪ್" (4-1-4) |

ಮೃಗಮದ ಮೃಗಮದ (ಪುಂ) ಕಸ್ತೂರಿ. ಮೃಗಸ್ಯ ಮದ: |

ಮೃಗಯಾ ಮೃಗಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೇಟೆ. ಮೃಗಯಂತೇಜನ ಮೃಗಾ:—ಮೃಗ  
(ಅನ್ವೇಷಣೆ) "ಶ:" ಯಕ್ ಚ ನಿಪಾಂ (ವಾಂ 3-3-101) |  
"ಮಿಥ್ಯೈವ ವ್ಯಸನಂ ವದಂತಿ ಮೃಗಯಾಮಿದೃಗ್ವಿನೋದ: ಕುತ:"  
ಶಾಕುಂ 2-4 |

ಮೃಗಯು ಮೃಗಯು (ಪುಂ) ವ್ಯಾಧಿ, ಬೇಟೆಗಾರ, ಬೇಡರ  
ವನು. ಮೃಗಾನ್ ಯಾತಿ—ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ್ರು:" (3-1-39) |  
"ಹಂತಿ ನೊಪಶಯಸ್ಯೋಽಪಿ ಶಯಾಲುರ್ಮೃಗಯುರ್ಮೃಗಾನ್" ಮಾಘಂ  
2-60 |

ಮೃಗರಾಜ್ ಮೃಗರಾಜ್ (ಪುಂ) 1. ಮೃಗಗಳ ರಾಜ, ಸಿಂಹ.  
ಮೃಗಾಣಾಂ ರಾಡ್ | "ಪತಿಸ್ತೇ ಪತಙ್ಗಮೃಗರಾಜಿ ನಿಜಪ್ರತಿಬಿಂಬ-  
ರೂಪಿತ ಇವಾಂಬುನಿಧೌ" ಮಾಘಂ 9-16 | -ರಾಜ: -ರಾಜಃ.  
ಮೃಗಾಣಾಂ ರಾಜಾ | "ದವ್" (4-4-91) | "ಶಿಲಾವಿಮಜ್ಜೈ-



ಮಗರಜಶಾವಸ್ತುಜ್ಞ ನಗೋತ್ಸಜ್ಞಮಿವಾರೋಹ" ರಘುಂ ೬-೩ |

2. ಸಿಂಹರಾಶಿ. 3. ಚಂದ್ರ.

ಮಗರಪು ಮೃಗರಾಶಿ (ಪುಂ) ಸಿಂಹ. ಮೃಗಾಣಾಂ ರಿಪುಃ |

ಮಗರೋಮನ್ ಮೃಗರೋಮನ್ (ನಂ) ಉಚ್ಛ್ರಾಯ, ತುಪಟ.

ಮಗಸ್ಯ ರೋಮ |

ಮಗರೋಮಜ ಮೃಗರೋಮಜ (ನಂ) ರಾಂಕವ, ಶಾಲು,

ಉಚ್ಛ್ರಾಯ ಬಿಟ್ಟು. ಮಗಸ್ಯ ರೋಮ್ಯೋ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ

(ಪ್ರಾದುಮಿವಿ) "ಙ:" (೩-೨-೯೮) |

ಮಗಲಾಂಛನ ಮೃಗಲಾಂಛನ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಮಗೋ

ಲಾಂಛನಂ ಯಸ್ಯ | "ಅಕ್ಷಾಧಿರೋಪಿತಮಗ್ನಾಂಛನಮಾ ಮಗ-

ಲಾಂಛನ:" ಮಾಘಂ ೨-೫೩ |

ಮಗಲೋಚನ ಮೃಗಲೋಚನ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)

—ಲೋಚನಾ —ಲೋಚನಾ. 2. ಜಿಂಕೆಯ ಕಣ್ಣುಗಳಂತೆ

ಕಣ್ಣುಗಳಳ್ಳು ಹೆಂಗಸು. ಮಗಸ್ಯ ಲೋಚನೇ ಇವ ಲೋಚನೇ

ಯಸ್ಯಾಃ |

ಮಗವಜಾಜೀವ ಮೃಗವಜಾಜೀವ (ಪುಂ) ಮೃಗಗಳನ್ನು

ಕೊಂದು ಜೀವಿಸುವ ವ್ಯಾಧಿ, ಬೇಡರವನು. ಮಗವಜೇನ

ಆಜೀವತಿ — ಆ + ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಕ:"

(೩-೧-೧೩೫) |

ಮಗವಿದ್ವಿಷ ಮೃಗವಿದ್ವಿಷ (ಪುಂ) ಸಿಂಹ. ಮೃಗಾಣಾಂ ವಿದ್ವಿಡ್ |

"ಮಗವಿದ್ವಿಷಾಮಿವ ಯದಿತ್ಯಮಜನಿ ಮಿಷತಾಂ ಪೃಥಾಸುತೆ:"

ಮಾಘಂ ೧೫-೩೪ |

ಮಗವ್ಯ ಮೃಗವ್ಯ (ನಂ) ಬೇಟೆ. ಮಗಾಃ ವ್ಯಯಂತೇಷ್ವ —ವ್ಯಯ

(ಗತೌ) "ಙ:" (ವಾಂ ೩-೨-೧೦೧) | "ಅಯಮೇವ ಮಗವ್ಯ-

ಸತ್ರಕಾಮಃ ಪ್ರಹರಿಷ್ಯನ್ ಮಯಿ ಮಾಯಯಾ ಶಮಸ್ಯೇ" ಕಿರಾಂ

೧೩-೯ |

ಮಗಶಿರಸ್ ಮೃಗಶಿರಸ್ (ನಂ) ಮೃಗಶೀರ್ಷನಕ್ಷತ್ರ.

ಮಗಸ್ಯೇವ ಶಿರೋಽಸ್ಯ | —ಶಿರಾ —ಶಿರಾ. ಎಂದು ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗ

ರೂಪವೂ ಉಂಟು.

ಮಗಶೀರ್ಷ ಮೃಗಶೀರ್ಷ (ನಂ) ಮೃಗಶೀರ್ಷ ನಕ್ಷತ್ರ.

ಮಗಸ್ಯೇವ ಶೀರ್ಷಮಸ್ಯ | —ಶೀರ್ಷಾ —ಶೀರ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಶೀರ್ಷನ್

—ಶೀರ್ಷನ್ (ಪುಂ) ರೂಪಗಳೂ ಉಂಟು.

ಮಗಹನ್ ಮೃಗಹನ್ (ಪುಂ) ವ್ಯಾಧಿ. ಬೇಡರವನು, ಮೃಗ

ಗಳನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವವನು, ಬೇಟೆಗಾರ.

ಮಗಾಕ್ಷಿ ಮೃಗಾಕ್ಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜಿಂಕೆಯಂತೆ ಕಣ್ಣು

ಗಳಳ್ಳು ಹೆಂಗಸು. ಮಗಸ್ಯೇವ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯಾಃ "ಏಕ್"

(೫-೪-೧೧೩) | "ಅಪಯಾತಿ ಸರೋಪಯಾ ನಿರಸ್ತೇ ಕೃತಕಂ

ಕಾಮಿನಿ ಚುಕ್ಷುವೇ ಮಗಾಕ್ಷ್ಯಾ" ಮಾಘಂ ೯-೮೩ | 2. ಇಂದ್ರ

ವಾರುಣೀ ಲತೆ, ಹಾವುಮೆಕ್ಕಿ ಗಿಡ. 3. ರಾಶಿ. "ಮಗಾಕ್ಷಿ

ಮಗಲೋಚನಾ | ತ್ರಿಯಾಮೇಂದ್ರವಾರುಣಿ ಚ" ಹೇಮಂ |

ಮಗಾಕ್ಷ ಮೃಗಾಂಕ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಮಗಃ ಅಕ್ಷೋ ಯಸ್ಯ |

"ವಿನಿರ್ದ್ರವತ್ರಾಲಿಗತಾಲಿಕೇತವಾತ್ ಮಗಾಕ್ಷಚ್ಚೂಡಾಮಣಿವಜನಾಜಿ-

ತಮ್" ನೇಷಂ ೧-೭೮ |

ಮಗಾಕ್ಷಮತಿ ಮೃಗಾಂಕಮೂರ್ತಿ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ.

ಮಗಾಕ್ಷಾ ಮತೀರಸ್ಯ | "ಉತ್ಸಜ್ಜಸಜ್ಜಿಹರಿಣಸ್ಯ ಮಗಾಕ್ಷ-

ಮತೀ:" ಮಾಘಂ ೪-೨೨ |

ಮಗಾಕ್ಷಿನಾ ಮೃಗಾಂಕನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ಜಿಂಕೆ, ಹುಲ್ಲೆ.

ಮಗಸ್ಯಾಕ್ಷಿನಾ | "ತಯಾ ಗೃಹೀತಂ ನು ಮಗಾಕ್ಷಿನಾಮ್ಯಸ್ತತೋ ಗೃಹೀತಂ

ನು ಮಗಾಕ್ಷಿನಾಭಿ:" ಕುಮಾಂ ೧-೪೬ |

ಮಗಾಜಿನ ಮೃಗಾಜಿನ (ನಂ) ಕೃಷ್ಣಾಜಿನ, ಜಿಂಕೆಯ

ಚರ್ಮ. ಮಗಸ್ಯ ಅಜಿನಂ ಚರ್ಮ |

ಮಗಾಜೀವ ಮೃಗಾಜೀವ (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಾಧಿ, ಮೃಗಗಳನ್ನು

ಬೇಟೆಯಾಡಿ ಜೀವಿಸುವವನು. 2. ಚಿರತೆ, ಕಿರುಬ, ಶಿವಂಗಿ.

ಮಗಾಂಜಾ ಮೃಗಾಂಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಸೂರಿ. ಮಗಸ್ಯ

ಅಂಜಾಕಾರಾತ್ ನಾಭಿಸ್ಥಿತಪಿಂಡಾತ್ ಜಾಯತೇ |

ಮಗಾದನ ಮೃಗಾದನ (ಪುಂ) ನಾಯಿಹುಲಿ, ಕತ್ತೆಕಿರುಬ.

ಮಗಾನ್ ಅತ್ತಿ — ಅದ. (ಭಕ್ಷಣೆ) "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) |

ಮಗಾಧಿಪ ಮೃಗಾಧಿಪ (ಪುಂ) ಸಿಂಹ, ಮೃಗಗಳ ರಾಜ.

ಮಗಾಣಾಮಧಿಪಃ | "ಕಿಮಪೇಕ್ಷ್ಯ ಫಲಂ ಪಯೋಧರಾನ್ ಧ್ವನತಃ

ಪ್ರಾರ್ಥಯತೇ ಮಗಾಧಿಪಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೨೧ | —ಅಧಿರಾಜಃ

—ಅಧಿರಾಜಃ. ಮಗಾಣಾಮಧಿರಾಜಃ | "ಇತಿ ಪ್ರಗಲ್ಭಂ ಪುರುಷಾಧಿ-

ರಾಜೋ ಮಗಾಧಿರಾಜಸ್ಯ ವಚೋ ನಿಶಮ್ಯ" ರಘುಂ ೨-೪೧ |

ಮಗಾರಾತಿ ಮೃಗಾರಾತಿ (ಪುಂ) 1. ಸಿಂಹ. 2. ನಾಯಿ.

3. ಹುಲಿ, ವ್ಯಾಧಿ. ಮಗಾಣಾಮರಾತಿಃ |

ಮಗಿತ ಮೃಗಿತ (ವಿಂ) ಅನ್ವೇಷಣೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹುಡುಕ

ಲ್ಪಟ್ಟ. ಮಗ (ಅನ್ವೇಷಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

ಮಗೀ ಮೃಗೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಜಿಂಕೆ, ಹುಲ್ಲೆ. 2. ಒಂದು

ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು.

ಮಗೇಕ್ಷಣಾ ಮೃಗೇಕ್ಷಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿಂಕೆಯಂತೆ ನೇತ್ರ

ಗಳಳ್ಳು ಹೆಂಗಸು. ಮಗಸ್ಯೇವೇಕ್ಷಣೇ ಯಸ್ಯಾಃ |

ಮಗೇಂದ್ರ ಮೃಗೇಂದ್ರ (ಪುಂ) 1. ಸಿಂಹ, ಮೃಗಗಳ ರಾಜ.

ಮಗಾಣಾಮಿन्द्रಃ | "ಆಕ್ಷಿಪ್ಯಮಾಣಂ ರಿಪುಃ ಪ್ರಮಾದಾತ್

ನಾಗೈರಿವಾಲನಸಂ ಮಗೇಂದ್ರಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೫೦ | 2. ಸಿಂಹ

ರಾಶಿ. 3. ವ್ಯಾಧಿ, ಹುಲಿ.

ಮಗೇಂದ್ರಚಟಕ ಮೃಗೇಂದ್ರಚಟಕ (ಪುಂ) ಗಿಡಗಪ್ಪು, ಡೇಗೆ.

ಮಗೇಂದ್ರ ಇವ ಹಿನ್ನೆ: ಚಟಕಃ |



ಮೃಗ್ಯ ಮೃಗ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹುಡುಕಲ್ಪಡುವ. 2. ಹುಡುಕಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಮೃಗ (ಅನ್ವೇಷಣೆ) "ಘೃತ್" (3-1-124)। "ತತ್ರ ಕೌಶೋ ಮೃಗ್ಯಃ"। "ತತ್ರ ಮೂಲಂ ಮೃಗ್ಯಮ್"।

ಮೃಗ್ಯಮಾಣ ಮೃಗ್ಯಮಾಣ (ವಿಂ) ಹುಡುಕಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಮೃಗ್ಯತೇ —ಮೃಗ (ಅನ್ವೇಷಣೆ) "ಶಾನ್" (3-2-124)। ಮುಗಾಗಮಃ (3-2-12)। "ಮೃಗ್ಯಮಾಣಮಪಿ ಯದ್ವಾ ರಾಸದಂ ಭೂರಿಸಾರಮುಪನೀಯ ತತ್ಸ್ವಯಮ್" ಮಾಘಂ 14-39।

ಮೃಜಾ ಮೃಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು, ತೊಳೆಯುವುದು. ಮೃಜುಷ್ (ಶುದ್ಧ) "ಅಙ್" (3-3-104)। 2. ಶುದ್ಧ, ಶುಚಿ, ನೈರ್ಮಲ್ಯ.

ಮೃಜಾವತ್ ಮೃಜಾವತ್ (ವಿಂ) ನಿರ್ಮಲವಾದ, ಶುದ್ಧವಾದ, ಶುಚಿಯಾದ. ಮೃಜಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (4-2-94)। "ಕಮಂಡಲಕಪಾಲೇನ ಶಿರಸಾಚ ಮೃಜಾವತಾ" ಭದ್ರಂ 4-62।

ಮೃಜತ್ ಮೃಜತ್ (ವಿಂ) 1. ಶುದ್ಧಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ತೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ. 2. ತಾರಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಉಜ್ಜುತ್ತಿರುವ. ಮೃಜುಷ್ (ಶುದ್ಧ) "ಶತ್" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (4-1-6)। -ತೀ -ತೀ.

ಮೃಜಿತ ಮೃಜಿತ (ನಂ) 1. ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು, ತೊಳೆಯುವುದು. 2. ತಾರಿಸುವುದು. 3. ಉಜ್ಜುವುದು, ತಿಕ್ಕುವುದು. ಮೃಜುಷ್ (ಶುದ್ಧ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-3-114)। 4. ಶುದ್ಧಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ತಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಉಜ್ಜಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿಕ್ಕಿ ಬೆಳಗಲ್ಪಟ್ಟ. ಮೃಜುಷ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

ಮೃಜಿತವತ್ ಮೃಜಿತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಶುದ್ಧಮಾಡಿದವನು. 2. ತಾರಿಸಿದವನು. 3. ಉಜ್ಜಿದವನು. ಮೃಜುಷ್ (ಶುದ್ಧ) "ಕ್ತವತುಃ" (3-2-102)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (4-1-6)। -ವತೀ -ವತೀ.

ಮೃಡ ಮೃಡ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. ಮೃಡ (ಸುಖ) "ಕಃ" (3-1-134)।

ಮೃಡಾನಿ ಮೃಡಾನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಈಶ್ವರನ ಪತ್ನಿ, ಪಾರ್ವತಿ. ಮೃಡಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ — "ಙೀಪ್" ಆನುಕ್ ಚ (4-1-49)।

ಮೃಣಾಲ ಮೃಣಾಲ (ಪುಂ) 1. ಬಿಸ, ತಾವರೆಯ ದಿಂಡು (ದಂಟು). ಮೃಣತೇ —ಮೃಣ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕಾಲನ್" (3-1-114)। "ಮಧ್ಯೆ ಯಥಾ ಕ್ಯಾಮಮುಖಸ್ಯ ತಸ್ಯ ಮೃಣಾಲಸೂತ್ರಾಂತರಮಪ್ಯಲಮ್ಯಮ್" ಕುಮಾಂ 1-40। (ನಂ) 2. ಲಾಂಛನದ ಬೇರು. "ಮೃಣಾಲಂ ತಲದೇ ಕಲಿಬಂ ಪುನಃಪುನಃಕಯೋ-ವಿಸೇ" ಮೇದಿಂ 1.

ಮೃಣಾಲಸೂತ್ರ ಮೃಣಾಲಸೂತ್ರ (ನಂ) ತಾವರೆಯ ದಂಟಿನ ನಾರು, -ಎಳೆ, -ತಂತು. "ಮೃಣಾಲಸೂತ್ರಾಮಲಮಂತರೇಣ ಸ್ಥಿತಶ್ಚ ಸಂವಾಮರಯೋದ್ವಯಂ ಸಃ" ಮಾಘಂ 3-3।

ಮೃಣಾಲಿಕಾ ಮೃಣಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಾವರೆಯ ದಂಟಿನ ನಾರು, ಬಿಸತಂತು. ಮೃಣಾಲಿ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"। "ಮೃಣಾಲಿಕಾಪೇಲವಮೇವಮಾದಿಭಿವ್ರತೇಃ ಸ್ವಮಜ್ಜಂ ಗಲಯಂತ್ಯಹನಿಷಮ್" ಕುಮಾಂ 4-29।

ಮೃಣಾಲಿನಿ ಮೃಣಾಲಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಮಲಲತೆ, ತಾವರೆಯ ಬಳ್ಳಿ. ಮೃಣಾಲಮಸ್ಯಾ ಅಸ್ತಿ "ಙಿನಿಃ" (4-2-114)। "ಙೀಪ್"। "ಮೃಣಾಲಿನಿನಾಮನುರಂಜಿತಂ ತ್ವಿಷಾ ವಿಭಿನ್ನಮಂಭೋಜಪಲಾಶಶೋಭಯಾ" ಕಿರಾಂ 4-20। 2. ಕಮಲಗಳ ಸಮೂಹ. 3. ಕಮಲಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇಶ. ಮೃಣಾಲಾನ್ಯತ್ರ ದೇಶೇ ಸಂತಿ — "ಙಿನಿಃ" (4-2-114)।

ಮೃಣಾಲಿ ಮೃಣಾಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಸತಂತು, ತಾವರೆಯ ದಂಟಿನ ನಾರು, -ಎಳೆ. ಮೃಣಾಲ ಗೌರಾಂ "ಙೀಪ್" (4-1-63)। "ಪರಿಮೃದಿತಮೃಣಾಲಿಮ್ಲಾನಮಜ್ಜಂ ಪ್ರವೃತ್ತಿಃ ಕಯಮಪಿ ಪರಿವಾರ-ಪ್ರಾರ್ಥನಾಭಿಃ ಕ್ರಿಯಾಸು" ಮಾಲತೀಂ 1-24।

ಮೃತ ಮೃತ (ನಂ) 1. ಮೃತ್ಯು, ಮರಣ. ಮೃತ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-3-114)। 2. ಭಿಕ್ಷೆ ಬೇಡಿತಂದ ಆಹಾರ. "ಮೃತಂ ತು ಯಾಚಿತಂ ಭಿಕ್ಷಮ್" ಮನುಂ 4-4। ಬೇಡಿತಂದ ಆಹಾರದಿಂದ ಜೀವಿಸುವುದು ಮೃತಜೀವನ. ಬೇಡದೆ ತಾನಾಗಿ ಲಭಿಸಿದ ಆಹಾರವು ಅಮೃತ. (ವಿಂ) 3. ಮರಣಹೊಂದಿದ, ಪ್ರಾಣವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದ. ಮೃತ್ "ಕ್ತಃ" (3-4-102)। 4. ಉಪಯೋಗಕ್ಕೆ ಬಾರದವನು, ವ್ಯರ್ಥ ಜೀವನವುಳ್ಳವನು, ಇಂತಹ ಮನುಷ್ಯನು ಮೃತಪ್ರಾಯ. "ಮೃತೋ ದರಿದ್ರಃ ಪುರುಷೋ ಮೃತಂ ಮೇಯುನಮಪ್ರಜಮ್। ಮೃತಮಶ್ವಾತ್ರಿಯಂ ಶ್ರಾದ್ಧಂ ಮೃತೋ ಯಜಸ್ವದಕ್ಷಿಣಃ" ಪञ್ಚತಂ 2-94। "ಮೃತಂ ಶರೀರಮುತ್ಸೃಜ್ಯ ಕಾಠಲೋಷ್ಠಸಮಂ ಕ್ಷಿತೌ। ವಿಮುಕ್ತಾ ಬಾಂಧವಾ ಯಂತಿ ಧರ್ಮಸ್ತಮನುಗಂಞತಿ" ಮನುಂ 4-241।

ಮೃತಕ ಮೃತಕ (ನಂ) 1. ಮರಣಾಶೌಚ. ಮೃತೇನ ಮರಣೇನ ಕಾಯತಿ — ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕಃ" (3-2-4)। (ವಿಂ) 2. ಮರಣಹೊಂದಿದವನು.

ಮೃತಕಲ್ಪ ಮೃತಕಲ್ಪ (ವಿಂ) ಸತ್ತವನಂತಿರುವ, ಪ್ರಜ್ಞೆ ತಪ್ಪಿರುವ, ಮೈಮರೆಯಿರುವ. ಇವದಸಮಾಪ್ತೌ ಮೃತಃ — "ಕಲ್ಪಪ್" (4-3-67)।

ಮೃತಜೀವ ಮೃತಜೀವ (ಪುಂ) ತಿಲಕದ ಮರ. ಮೃತಃ ನಷ್ಟಃ ಸನ್ ಪುನಃ ಜೀವತಿ।

ಮೃತವತ್ಸಾ ಮೃತವತ್ಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಕಳೆದು ಕೊಂಡ ತಾಯಿ. 2. ಕರುಸತ್ತ ಹಸು.



**ಮೃತಸಂಜೀವನ ಮೃತಸಂಜೀವನ (ನಂ) 1.** ಸತ್ತವನು ಪುನಃ ಬದುಕಿಕೊಳ್ಳುವುದು. -ಮತ್ತೆ ಜೀವಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 2. ಸತ್ತವನನ್ನು ಮತ್ತೆ ಬದುಕಿಸುವ. ಮೃತ ಸಂಜೀವಯತಿ - ಸಮ್ + ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಲ್ಯು:" (3-1-134) ।

**ಮೃತಸಂಜೀವಿನಿ ಮೃತಸಂಜೀವಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1.** ಸತ್ತವನನ್ನು ಬದುಕಿಸುವ ಮಂತ್ರ. 2. ಸತ್ತವನನ್ನು ಬದುಕಿಸುವ ಔಷಧ. ಮೃತ ಸಂಜೀವಯತಿ - ಸಮ್ + ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-113) । "ಛಿಪ್" (4-1-14) ।

**ಮೃತಿ ಮೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರಣ, ಸಾವು. ಮೃತ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೆ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94) ।**

**ಮೃತ್ತಿಕಾ ಮೃತ್ತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಣ್ಣು.**

**ಮೃತಕರ ಮೃತಕರ (ಪುಂ) ಕುಲಾಲ, ಕುಂಬಾರ. ಮೃದಾಂ ಕರಃ ।**

**ಮೃತ್ಯು ಮೃತ್ಯು (ಪುಂ) 1.** ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. 2. ಮರಣ, ಸಾವು. ಮೃತ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೆ) "ಲ್ಯುಕ್" (3-3-21) । "ಭಯಂಕರಃ ಪ್ರಾಣಮೃತಾ ಮೃತ್ಯೋರ್ಭುಜ ಇವಾಪರಃ" ಕಿರಾಂ 11-16 । "ಮೃತ್ಯುರ್ನಾ ಮರಣೇ ಯಮೇ" ಮೇದಿಂ ।

**ಮೃತ್ಯುಜಯ ಮೃತ್ಯುಜಯ (ಪುಂ) ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಮೃತ್ಯುಂ ಜಿತವಾನ್ - ಜಿ (ಜಯೇ) "ಜ್ವ" (3-2-46) । ಮುಗಾಗಮಃ (6-3-67) ।**

**ಮೃತ್ಯುನಾಶಕ ಮೃತ್ಯುನಾಶಕ (ವಿಂ) 1.** ಪಾದರಸ. (ರಸಾಯನ ಶಾಸ್ತ್ರೀತಾ) ಪಾದರಸವನ್ನು ಶೋಧಿಸಿ ಸೇವಿಸಿದರೆ ಸಾವನ್ನು ತಡೆಯುವುದು. (ವಿಂ) 2. ಸಾವನ್ನು ತಡೆಯುವ, ತಡೆಗಟ್ಟುವ.

**ಮೃತ್ಯುನಾಶನ ಮೃತ್ಯುನಾಶನ (ನಂ) ಸುಧೆ, ಅಮೃತ. ಅಮೃತಪಾನವು ಮೃತ್ಯುವನ್ನು ತಡೆಗಟ್ಟುವುದು.**

**ಮೃತ್ಯುಫಲಾ ಮೃತ್ಯುಫಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕದಳಿ ಗಿಡ, ಬಾಳೆ ಗಿಡ. ಮೃತ್ಯುವೇ ಫಲಮಸ್ಯಾಃ ।**

**ಮೃತ್ಯುಬೀಜ ಮೃತ್ಯುಬೀಜ (ಪುಂ) ಬಿದಿರು. ಮೃತ್ಯುವೇ ಆತ್ಮನಾಶಾಯ ಬೀಜಮಸ್ಯ । "ಮೃತ್ಯುಬೀಜಸ್ತು ವಂಶಃ ಸ್ಯಾತ್ ಕೇತಕಃ ಕಕಚಚ್ಛದಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।**

**ಮೃತ್ಯುಭೃತ್ಯ ಮೃತ್ಯುಭೃತ್ಯ (ಪುಂ) ವ್ಯಾಧಿ, ರೋಗ. ಮೃತ್ಯೋಃ ಭೃತ್ಯ ಇವ ।**

**ಮೃತ್ಯುಸ್ಮೃತಿ ಮೃತ್ಯುಸ್ಮೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಏಡಿ, ನಳ್ಳಿ. ಮೃತ್ಯುವೇ ಸ್ಮೃತಿಃ ಪ್ರಸವೋ ಯಸ್ಯಾಃ ।**

**ಮೃತ್ಸಾ ಮೃತ್ಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1.** ಉತ್ತಮವಾದ ಮಣ್ಣು, ಮೃತ್ತಿಕೆ. ಮೃದ್ "ಸಃ" (4-4-40) । 2. ತೊಗರಿಗಿಡ. "ಮೃತ್ಸಾ ಕಾಕ್ಷ್ಯಾಂ ಶ್ರೇಷ್ಠಮೃದಿ" ಮೇದಿಂ ।

**ಮೃತ್ಸಾ ಮೃತ್ಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1.** ಉತ್ತಮವಾದ ಮಣ್ಣು, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಮೃತ್ತಿಕೆ. ಪ್ರಶಸ್ತಾ ಮೃತ್ "ಸಃ" (4-4-40) । "ತ್ವಮಾದಿರಂತೋ ಜಗತೋಽಸ್ಯ ಮಧ್ಯಂ ಘಟಸ್ಯ ಮೃತ್ಸೇವ ಪರಃ ಪರಸ್ಮಾತ್" ಭಾಗಂ 6-6-10 । 2. ತೊಗರಿ. "ಮೃತ್ಸಾ ಮೃತ್ಸಾತುರ್ವಯೋಃ ಸ್ತ್ರೀ" ಮೇದಿಂ ।

**ಮೃದ್ ಮೃದ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೃತ್ತಿಕೆ, ಮಣ್ಣು. ಮೃದತೇ - ಮೃದ (ಕ್ಷೋಧೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (ವಾಂ 3-3-108) । "ಪ್ರಭವತಿ ಶುಚಿರ್ಬಿಮ್ಬಗ್ರಾಹೇ ಮಣಿನಂ ಮೃದಾಂ ಚಯಃ" ತಂ ರಾಂ 2-4 । "ಠಾಪ್" । ಮೃದಾ ಮೃದಾ. "ಆಪಂ ಚೈವ ಹಲ್ಂತಾನಾಂ ಯಥಾ ವಾಚಾ ನಿಶಾ ದಿಶಾ" ।**

**ಮೃದ್ಜ ಮೃದಂಗ (ಪುಂ) 1.** ಮದ್ದಳೆ, ತಬಲ. ಮೃದತೇ - ಮೃದ (ಕ್ಷೋಧೇ) "ಅಜ್ಜಿಪ್" (ತಂ 1-1-18) । "ಸಮುಚ್ಛಿ-ಕ್ಷಲಧುಮಾನರನ್ಧ್ರಭಿನ್ನಃ ಪ್ರಸ್ಥಾನಂ ಸಮಭಿದಧೇ ಮೃದ್ಜನಾದಃ" ಕಿರಾಂ 9-1 । 2. ಘೋಷ, ಶಬ್ದ. "ಮೃದ್ಜಃ ಪಠಹೇ ಧೋಷೇ" ಮೇದಿಂ । 3. ಬಿದಿರಿನ ಜಲ್ಲೆ.

**ಮೃದ್ಜಫಲ ಮೃದಂಗಫಲ (ಪುಂ) 1.** ಹಲಸಿನ ಮರ. ಮೃದ್ಜಃ ಇವ ಫಲಮಸ್ಯ । (ನಂ) 2. ಹಲಸಿನ ಹಣ್ಣು.

**ಮೃದಿತ ಮೃದಿತ (ವಿಂ) 1.** ಉಜ್ಜಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿಕ್ಕಲ್ಪಟ್ಟ. "ಮೃದಿತಕಿಸಲಯಃ ಸುರಾಜ್ಞಾನಾನಾಂ ಸಸಿಲಿಲವತ್ಕಲಭಾರಭುಗನ-ಶಾಖಃ" ಕಿರಾಂ 10-9 । "ಮೃದಿತೋ ಕಂಠಮೂಷಣಃ" ಯಾದಂ 16-66 । 2. ಹಿಂಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಪುಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಒತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಡಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಮೃದ (ಕ್ಷೋಧೇ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-2-102) । "ಕಲಾಶೇಷಶ್ಚಂದ್ರಃ ಸುರತಮೃದಿತಾ ಬಾಲವನಿತಾ ತನಿಮ್ನಾ ಶೋಭಂತೇ ಗಲಿತವಿಭವಾ-ಶ್ರಾಥಿಷು ನೃಪಾಃ" ಮತೃಂ 1-35 ।

**ಮೃದು ಮೃದು (ವಿಂ) 1.** ಮೆದುವಾದ, ಮೆತ್ತಗಿರುವ, ಕಠಿನವಲ್ಲದ. ಮೃದ (ಕ್ಷೋಧೇ) "ಕ್ರುಃ" (ತಂ 1-28) । "ಸ್ತೃಣತಾ ತೃಣೈಃ ಪ್ರತಿನಿಶಂ ಮೃದುಭಿಃ ಶಯನೀಯತಾಮುಪಯತೀತಿ ವಸುಧಾಮ್" ಕಿರಾಂ 6-26 । 2. ಕೋಮಲವಾದ, ಸುಕುಮಾರವಾದ. "ಮೃದುಚರಣತಲಾಗ್ರದುಃಸ್ಥಿತತ್ವಾದಸಹರಾ ಕುಚಕುಮ್ಮಯೋರ್ಭರಸ್ಯ" ಮಾಘಂ 9-48 । 3. ಶಾಂತವಾದ, ಸೌಮ್ಯವಾದ. "ಬಾಣಂ ಕೃಪಾಮೃದುಮನಾಃ ಪ್ರತಿಸಂಜಹಾರ" ರಘುಂ 9-49 । 4. ಅಶಕ್ತ, ದುರ್ಬಲ. "ತತಸ್ತೇ ಮೃದವೋಽಭುವನ್ ಗಂಧರ್ವಾಃ ಶರಪೀಡಿತಾಃ" ಭಾಂ । 5. ನಿಧಾನವಾದ, ವೇಗವಲ್ಲದ, ಮಂದಗತಿಯುಳ್ಳ. "ಪಾತಯತ್ಯಪಿ ಮೃದುಸ್ತತ್ಪ್ರಮಮ್" ರಘುಂ 11-66 । 6. ಮೌನವಾದ, ಹರಿತವಲ್ಲದ, ಮೌನವಾಗಿಲ್ಲದ. (ಪುಂ) 7. ಶನಿಗ್ರಹ. (ನಂ) 8. ಮೌನವಾದ, ಮೆತ್ತಗಿರುವಿಕೆ.



9. ಕೋಮಲವಾಗಿರುವಿಕೆ. (ಅವ್ಯಂ) 10. ಮೆಲ್ಲಗೆ, ಮೆತ್ತಗೆ, ಕೋಮಲವಾಗಿ. "ರಹಸ್ಯಾಖ್ಯಾಯಿಕೆ ಸ್ವನಸಿ ಮೃದು ಕರ್ಣಾಂತಿಕಚರಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೨೦. | ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ವಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೪) | ಮೃದ್ವಿ ಮೃದುಃ |

ಮೃದುವಿನ ಮೃದುಚರ್ಮಿನ್, -ಸ್ವಚ್ -ತ್ವಚ್ (ಪುಂ) 1. ಭುಜಪತ್ರಗಿಡ. ಮೃದು ಕೊರಳು ಚರ್ಮಸ್ಥಿತ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೬) | 2. ಮುಂಜವೆಂಬ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹುಲ್ಲು, ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಯು ಧರಿಸುವ ನಡುಕಟ್ಟು (ಮೌಂಜಿ) ಮಾಡುವ ಹುಲ್ಲು. "ಮುಂಜಸ್ತು ಯಜ್ಞಿಯೋ ಮೇಧ್ಯೋ ಮೃದುವಕ್ ಬ್ರಹ್ಮಮೇಖಲಃ" ವೇಜಂ |

ಮೃದುಚರ್ಮ ಮೃದುಚರ್ಮಿನ್ (ಪುಂ) ಭುಜಪತ್ರ ಗಿಡ. ಮೃದವಃ ಛದಾಃ ಅಸ್ಯ |

ಮೃದುತಾ ಮೃದುತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೃದುತ್ವ, ಮೃದುವ. ಮೃದೋರ್ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) | 2. ಸೌಮ್ಯಭಾವ, ಶಾಂತತೆ. "ಸ ಚಾನುನೀತಃ ಪ್ರಣತೇನ ಪಶ್ಚಾತ್ ಮಯಾ ಮಹರ್ಷಿ-ಮೃದುತಾಮಗಚ್ಛತ್" ರಘುಂ ೪-೪೪ |

ಮೃದುವಕ್ ಮೃದುತ್ವಚ್ (ಪುಂ) ಭುಜಪತ್ರ ಗಿಡ. ಮೃದುವಕ್ ಯಸ್ಯ | "ಮೃಜೇ ಚರ್ಮಮೃದುವಕ್ಚಿ" ಅಮಂ |

ಮೃದುಪರ್ವಕ ಮೃದುಪರ್ವಕ (ಪುಂ) 1. ಬೆತ್ತದ ಹುಲ್ಲು. (ವಿಂ) 2. ಮೆದುವಾದ ಗಿಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ. ಮೃದ್ವಿನಿ ಪರ್ವಾಪ್ಯಸ್ಯ | "ಕಪ್" |

ಮೃದುಪುಷ್ಪ ಮೃದುಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಶಿರೀಷವೃಕ್ಷ, ಬಾಗೆ ಮರ. ಮೃದ್ವಿನಿ ಪುಷ್ಪಾಪ್ಯಸ್ಯ | (ನಂ) 2. ಕೋಮಲವಾದ ಹೂವು. (ವಿಂ) 3. ಕೋಮಲವಾದ ಪುಷ್ಪಗಳುಳ್ಳ.

ಮೃದುಫಲ ಮೃದುಫಲ (ಪುಂ) 1. ಹುಳಿಬೇಲದ ಮರ. ಮೃದ್ವಿನಿ ಫಲಾಪ್ಯಸ್ಯ | (ನಂ) 2. ಕೋಮಲವಾದ ಹಣ್ಣು. (ವಿಂ) 3. ಕೋಮಲವಾದ ಹಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ. ಮೃದ್ವಿನಿ ಫಲಾನಿ ಯಸ್ಯ |

ಮೃದುರೋಮನ್ ಮೃದುರೋಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಶಶ, ಮೊಲ. ಮೃದ್ವಿನಿ ರೋಮಾಪ್ಯಸ್ಯ | (ನಂ) 2. ಕೋಮಲವಾದ ಕೂದಲು. (ವಿಂ) 3. ಕೋಮಲವಾದ ಕೂದಲುಳ್ಳ. ಮೃದ್ವಿನಿ ರೋಮಾಪಿ ಯಸ್ಯ |

ಮೃದುಲ ಮೃದುಲ (ವಿಂ) 1. ಮೆತ್ತಗಿರುವ, ಮೆದುವಾಗಿರುವ. ಮೃದುಗುಣೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಲಚ್" (೪-೨-೯೭) | 2. ಕೋಮಲವಾದ, ಸುಕುಮಾರವಾದ.

ಮೃದ್ವಿಕಾ ಮೃದ್ವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದ್ರಾಕ್ಷಿಯುಳ್ಳ. ಮೃದ್ವತೇ — ಮೃದ (ಕೋದೇ) "ಕೀಕನ್" (೨೦ ೪-೨೪) |

ಮೃದ ಮೃದ (ನಂ) ಯುದ್ಧ, ಕಾಳಗ. ಮೃದ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಧರ್ಮ "ಕಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೪೮) | "ಮೃದಮಾಸ್ಕಂದನಂ ಸಂಖ್ಯಂ ಸಮೀಕಂ ಸಾಂಪರಾಯಿಕಮ್" ಅಮಂ |

ಮೃದ-ತೀತೀಕ್ಷಾಯಾಮ್ (ದಿವಾಂ ಉಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ಮೃದ್ವತಿ, -ತೇ | ಮಮರ್ಷ, ಮಮರ್ಷೆ | ಮರ್ಷಿತಾ | ಮರ್ಷಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ಮೃದ್ವತು, ಮೃದ್ವತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಸಹಿಸು, ತಾಳು. "ಮೃದ್ವತಾಂ ಮಮ ವಿಮೋ ವ್ಯತೀಕ್ರಮಃ ಪ್ರಸ್ತುತತ್ವದ್ವಿಪಕಾರಪದ್ಧತೇಃ" ಯಾದಂ ೧೭-೧೧೮ | 2. ಕ್ಷಮಿಸು, ಮನ್ನಿಸು. "ಮೃದ್ವನ್ವಿದಾನೀಂ ಲವಸ್ಯ ಬಾಲಿಷತಾಂ ತಾತಪಾದಾಃ" ಉಂ ರಾಂ ೬ |

ಕರ್ಮಣಿಃ—ಮೃದ್ವತೇ | ಮಮರ್ಷೆ | ಮರ್ಷಿತಾ | ಮೃದ್ವತಾಮ್ | ಅಮೃದ್ವತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸುಃ—ಮರ್ಷಿತವ್ಯಮ್ | ಮರ್ಷಣೀಯಮ್ | ಮೃದ್ವಮ್ | ಮರ್ಷಿತಃ | ಮರ್ಷಿತವಾನ್ | ಮೃದ್ವನ್ -ಂತಿ | ಮರ್ಷಣಮ್ | ಮರ್ಷಿತಮ್ |

ಮೃದಾ ಮೃದಾ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಮಿಥ್ಯೆ, ಸುಳ್ಳು. ಮೃದ್ವತೇ — ಮೃದ (ಸಹನೆ) "ಕಾ" | "ನ ಮೃದಾ ಪರಮಾರ್ಥಮೇವ ಮೇ ಶೃಣು ವಿಜ್ಞಾಪನಮೇಕಮಗ್ರತಃ" ಸ್ತೋತ್ರಂ | 2. ವ್ಯರ್ಥವಾಗಿ, ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದೆ.

ಮೃದಾರ್ಥಕ ಮೃದಾರ್ಥಕ (ನಂ) ಅಸುಭವದ ಮಾತು, ಸುಳ್ಳು ಎಂಬುದನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಮಾತು. ಮೃದಾರ್ಥೋ ಯಸ್ಯ | "ಕರ್ಮಲೋಮತನುತ್ರಾಣಃ, ಶಶಶ್ಚೃಜ್ಞಧನುರ್ಧರಃ | ಏಷ ವನ್ಧ್ಯಾಸುತೋ ಯಾತಿ, ಖಪುಷ್ಪಕೃತಶೇಖರಃ" ಇತ್ಯಾದಿ.

ಮೃದಾಜ್ಞಾನ ಮೃದಾಜ್ಞಾನ (ನಂ) ತಪ್ಪು ತಿಳಿವಳಿಕೆ.

ಮೃದಾಭಾಷಿನ್ ಮೃದಾಭಾಷಿನ್ (ವಿಂ) ಸುಳ್ಳು ಹೇಳುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಮೃದಾ ಭಾಷತೇ—ಭಾಷ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೭೮) | ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೪) | —ಭಾಷಿಣಿ —ಭಾಷಿಣೀ. एवं —ವಾದಿನ್ —ವಾದಿನ. "ಡೀಪ್" —ವಾದಿನಿ —ವಾದಿನೀ.

ಮೃದಾವಾದ ಮೃದಾವಾದ (ಪುಂ) ಸುಳ್ಳು ಮಾತು, ನಿಜವಲ್ಲದ ಮಾತು.

ಮೃದಾಸಾಕ್ಷಿನ್ ಮೃದಾಸಾಕ್ಷಿನ್ (ವಿಂ) ಸುಳ್ಳು ಸಾಕ್ಷಿ, ಹೇಳುವವನು.

ಮೃದೋ ಮೃದೋ (ನಂ) ಮಿಥ್ಯಾವಚನ, ಸುಳ್ಳು ಮಾತು. ಮೃದಾ ಉಚ್ಯತೇ — ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಕರ್ಮಂ "ಕಪ್" (೩-೧-೧೧೪) | "ಮೃದೋ ಪ್ರವದಂತಿ ತಾಂ ಸತ್ಯವದ್ವಿ ರಥೂತಮಃ" ಭಟಿಂ ೪-೬೦ |

ಮೃದ ಮೃದ (ನಂ) 1. ಮೆಣಸು. (ವಿಂ) 2. ಶೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಶುದ್ಧ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಮೃಜ (ಶುದ್ಧ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | 3. ತೊಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.



ತೊಡೆದುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು. "ಮೃತಚಂದನವಿಶೇಷಕಮಕ್ತಿಶ್ರೇಷ್ಠ-  
ಭೂಷಣಕದರ್ಶಿತಮಾಲಯ:" ಮಾಘಂ ೧೦-೮೪।

ಮೃತೇಕ ಮೃಷ್ಯೇರುಕ (ವಿಂ) 1. ವದಾನ್ಯ, ದಾನಶೀಲ,  
ಕೊಡುಗೈಯುಳ್ಳವನು. 2. ಭೋಗಿ, ಮಿಷ್ಠಾನ್ನವನ್ನು  
ಭುಜಿಸುವವನು. 3. ಸ್ವಾರ್ಥಪರ, ಕೃಪಣ, ಜಿಪುಣ,  
ಅತಿಥಿಗಳನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸುವವನು. "ಮೃತೇಕೋ ವದಾನ್ಯೇಷಿಂ  
ಮಿಷ್ಠಾಶಿನ್ಯತಿಥಿವಿಧಿವಿ" ಮೇದಿಂ।

ಮೇಕ ಮೇಕ (ಪುಂ) ಛಾಗ, ಆಡು, ಮೇಕೆ.

ಮೇಕಲ ಮೇಕಲ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ವಿಂಧ್ಯಪರ್ವತದ  
ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ದೇಶ. 2. ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶಕ್ಕೆ  
ಸೇರಿದ ಒಂದು ದೇಶ. "ಮೇಕಲಾ: ಕುಸಠಾ: ಸೇರಾ ಜಾಹ್ನಲಾ:  
ಪೃಥವಾ ವೃಕಾ:। ಪಟವರಾದಯಶ್ಚಾನ್ಯೇ ಮಧ್ಯದೇಶಸ್ಯ ನಿಕೃತ:"  
ವೇಜಂ। 3. ಒಂದು ಪರ್ವತ.

ಮೇಕಲಕನ್ಯಕಾ ಮೇಕಲಕನ್ಯಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನರ್ಮದಾನದಿ.  
ಮೇಕಲಸ್ಪಾದ್ರೇ: ಕನ್ಯಕಾ। "ರೇವಾ ತು ನರ್ಮದಾ ಸೋಮೋದ್ಭವಾ  
ಮೇಕಲಕನ್ಯಕಾ" ಅಮಂ।

ಮೇಖಲಾ ಮೇಖಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಡಾಬು, ವಡ್ಡಾಣ,  
ಹೊಗಸರ ನಡುಕಟ್ಟು. ಮಹಿ ಗತಿ ಲಾತಿ—ಲಾ (ಆದಾನೆ)  
"ಕ:" (೩-೨-೩)। ಪೃಷೋಂ। "ನಾರಾವಂ ವ್ಯತನುತ ಮೇಖಲಾ-  
ಕಲಾಪ: ಕಸ್ಮಿನ್ ವಾ ಸಜಲಗುಣೇ ಗಿರಾಂ ಪಟುವಮ್" ಮಾಘಂ  
೮-೪೫। 2. ಪರ್ವತದ ತಪ್ಪಲು ಪ್ರದೇಶ. "ಆಮೇಖಲಂ  
ಸಂಚರತಾಂ ಧನಾನಾಂ ಛಾಯಾಮಧ:ಸಾನುಗತಾಂ ನಿಷೇವ್ಯ" ಕುಮಾಂ  
೧-೫। 3. ಮಂಜಿ, ಮುಂಜತ್ತಿಣದಿಂದ ಮಾಡಿದ ಬ್ರಹ್ಮ  
ಚಾರಿಯ ನಡುಕಟ್ಟು. "ಮೌಞಿ ತ್ರಿವೃತ್ತಸಮಾ ಶಲಕ್ಷಣಾ ಕಾರ್ಯಾ  
ವಿಪ್ರಸ್ಯ ಮೇಖಲಾ" ಮನುಂ ೨-೪೨। 4. ಕತ್ತಿಯನ್ನು ತಗಲಾ  
ಹಾಕುವ ನಡುಕಟ್ಟು. 5. ನಿತಂಬ, ಕಟಿಪ್ರದೇಶ. "ಅಥ  
ಮೇಖಲಾ। ಶ್ರೋಣಿಸ್ಥಾನೇಽದ್ರಿಕಟಕೇ ಕಟಿವಂಧೇಽಸಿಬಂಧನೇ"  
ವೇಜಂ।

ಮೇಖಲಿನ್ ಮೇಖಲಿನ್ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ.

ಮೇಘ ಮೇಘ (ಪುಂ) 1. ಮೋಡ, ಮುಗಿಲು. ಮೇಹತಿ—ಮಿಹ  
(ಸೇವನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಉದ್ವೃತ್ಯ ಮೇಘೇಸ್ತತ  
ಏವ ತೋಮಯ ಮುನೀಂದ್ರಿರೀವ ಸಂಪ್ರಣೀತಾ:" ಮಾಘಂ ೩-೭೫।  
2. ಕೊನ್ನೂರಿ ಹುಲ್ಲು. "ಮೇಘ:ಸ್ಯಾನ್ಮುಸ್ತಕೇ ಘನೇ" ವಿಶ್ವಂ।

ಮೇಘಕಫ ಮೇಘಕಫ (ಪುಂ) ಅಲಿಕ್ಕಲ್ಲು, ಮುಗಿಲ್ಲಲ್ಲು.  
ಮೇಘಾನಾಂ ಕಫ ಇವ।

ಮೇಘಘೋಷ ಮೇಘಘೋಷ (ಪುಂ) ಮೋಡದ ಶಬ್ದ,  
ಗುಡುಗು. ಮೇಘಾನಾಂ ಘೋಷ:। "ಸಾದೃಶ್ಯಂ ದಧತಿ ಗಂಭೀರಮೇಘ-  
ಘೋಷ:" ಕಿರಾಂ ೭-೩೯।

ಮೇಘಚಿಂತಕ ಮೇಘಚಿಂತಕ (ಪುಂ) 1. ಚಾತಕಪಕ್ಷಿ.  
ಮೇಘಾನಾಂ ಚಿಂತಕ:। (ವಿಂ) 2. ಮೇಘದ ಚಿಂತೆಯುಳ್ಳವನು.  
ಮೇಘಜೀವನ ಮೇಘಜೀವನ (ಪುಂ) ಚಾತಕಪಕ್ಷಿ. ಮೇಘ  
ಜೀವನಮಸ್ಯ।

ಮೇಘಜ್ಯೋತಿಸ್ ಮೇಘಜ್ಯೋತಿಸ್ (ಪುಂ) ಮೋಡಗಳ  
ಪರಸ್ಪರ ತಿಕ್ಕಾಟದಿಂದ ಹೊರಡುವ ಮಿಂಚಿನ ಪ್ರಮಾಹ,  
ಮೋಡದ ಕಾಂತಿ. ಮೇಘಾದುತ್ಪತ್ತಿ ಜ್ಯೋತಿ:।

ಮೇಘತಮ್ಬರ ಮೇಘತಮ್ಬರ (ಪುಂ) ಮೇಘದ ಗರ್ಜನೆ,  
ಗುಡುಗು.

ಮೇಘದೀಪ ಮೇಘದೀಪ (ಪುಂ) ಮಿಂಚು. ಮೇಘಸ್ಯ ದೀಪ ಇವ।  
ಮೇಘದೂತ ಮೇಘದೂತ (ನಂ) ಕಾಳದಾಸ ಎರಚಿತವಾದ  
ಒಂದು ಕಾವ್ಯ.

ಮೇಘದ್ವಾರ ಮೇಘದ್ವಾರ (ನಂ) ಆಕಾಶ, ಗಗನ, ಅಂತರಿಕ್ಷ.

ಮೇಘನಾದ ಮೇಘನಾದ (ಪುಂ) 1. ವರುಣ. ಮೇಘ ನಾದಯತಿ  
—ಘದ+ಞಿಚ್ "ಅಞ್" (೩-೨-೧)। 2. ಮೇಘದ ಶಬ್ದ,  
ಗುಡುಗು. 3. ಇಂದ್ರಜಿತ್ತು. "ಮೇಘನಾದೋಽಬ್ದುಧ್ವಾನೇ  
ವರुणे ರಾವಣಾತ್ಮಜೇ" ಹೇಮಂ। "ಮೇಘನಾದ: ಪರಿಷ್ಕಂದನ್  
ಪರಿಷ್ಕಂದಂತಮಾಶ್ವರೀಮ್" ಭट्टಿಂ ೯-೭೫। "ಗರ್ಹಾಪಾತ-  
ವಿಘ್ನಿಷ್ಠಮೇಘನಾದಾಸ್ತ್ರಬಂಧನ:" ರಘುಂ ೧೨-೭೬।

ಮೇಘನಾದಾನುಲಾಸಕ ಮೇಘನಾದಾನುಲಾಸಕ, -ಅನು-  
ಲಾಸಿನ್-ಅನುಲಾಸಿನ್ (ಪುಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು.  
ಮೇಘನಾದಮನುಲಸತಿ — ಅನು + ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣಕೀಡನಯೋ:)  
"ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಞಿಞಿ:" (೩-೨-೭೮) ವಾ।  
"ಶಿಖಾವಲ: ಶಿಖೀ ಕೇಕೀ ಮೇಘನಾದಾನುಲಾಸ್ಯಪಿ" ಅಮಂ।

ಮೇಘನಾಮನ್ ಮೇಘನಾಮನ್ (ಪುಂ) ಮುಸೈ, ಕೊನ್ನೂರಿ  
ಹುಲ್ಲು. ಮೇಘಸ್ಯ ನಾಮೇವ ನಾಮ ಯಸ್ಯ।

ಮೇಘನಿರ್ಧೋಷ ಮೇಘನಿರ್ಧೋಷ (ಪುಂ) ಮೇಘದ ಶಬ್ದ,  
ಗುಡುಗು. ಮೇಘಸ್ಯ ನಿರ್ಧೋಷ:।

ಮೇಘಪುಷ್ಪ ಮೇಘಪುಷ್ಪ (ನಂ) 1. ಜಲ, ನೀರು. ಮೇಘಸ್ಯ  
ಪುಷ್ಪಮಿವ। 2. ನದಿಯ ನೀರು. 3. ಹಿಮದ ಗಡ್ಡೆ.  
"ಮೇಘಪುಷ್ಪಂ ತು ನಾದೇಯೇ ಪಿಂಡಾಶ್ರೇ ಸಲಿಲೇಽಪಿ ಚ" ಹೇಮಂ।  
(ಪುಂ) 4. ಇಂದ್ರನ ಕುದುರೆ. ಮೇಘ ಇವ ಪುಷ್ಯತಿ  
ಪ್ರಕಾಶತೇ — ಪುಷ್ಪ (ವಿಕಸನೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।

ಮೇಘಭೂತಿ ಮೇಘಭೂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಜ್ರಾಯುಧ. ಮೇಘಾತ್  
ಭೂತಿರಸ್ಯ।

ಮೇಘಮಾಲಾ ಮೇಘಮಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೇಘಗಳ ಸಾಲ,  
ಮೇಘಗಳ ಪಜ್ಜೆ. ಮೇಘಾನಾಂ ಮಾಲಾ। "ಮೇಘಮಾಲೇವ  
ಯಶ್ಚಾಯಮಾರಾದಿವ ವಿಭಾವ್ಯತೇ" ತಂ ರಾಂ ೨-೨೪।



ಮೆಘಯೋನಿ ಮೇಘಯೋನಿ (ಪುಂ) ಧೂಮ, ಹೊಗೆ. ಮೆಘಸ್ಯ  
ಯೋನಿ:—उत्पत्तिकारणम् ।

ಮೆಘವರ್ಮನ್ ಮೇಘವರ್ತುನ್ (ನಂ) ಗಗನ, ಆಕಾಶ,  
ಅಂತರಿಕ್ಷ. ಮೆಘಸ್ಯ ವರ್ಮ ।

ಮೆಘವಹ್ನಿ ಮೇಘವಹ್ನಿ (ಪುಂ) 1. ಬಳ್ಳಿ ಮಿಂಚು, ಸರಪಳಿ  
ಮಿಂಚು. 2. ಸಿಡಿಲು. ಮೆಘಸ್ಯ ವಹ್ನಿ: ।

ಮೆಘವಾಹನ ಮೇಘವಾಹನ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. ಮೆಘಾ  
ವಾಹನಮಸ್ಯ, ಮೆಘಾನ್ ವಾಹಯತಿ—वह (प्रापणे)+णिच्  
“ಲ್ಯು:” (3-1-134) ವಾ । “अवलम्बितैलविलपाणि-  
पल्लवः श्रयति स्म मेघमिव मेघवाहनः” भाष०  
13-16 । 2. ರೌದ್ರ, ಶಿವ. “रुद्रेन्द्रो मेघवाहनो”  
ವೆಂಜಂ ।

ಮೆಘವೇಷಮನ್ ಮೇಘವೇಷ್ಮನ್ (ನಂ) ಆಕಾಶ, ಗಗನ,  
ಅಂತರಿಕ್ಷ. ಮೆಘಾನಾಂ ವೇಷಮ ।

ಮೆಘಾಗಮ ಮೇಘಾಗಮ (ಪುಂ) ವರ್ಷಾಕಾಲ, ವರ್ಷಾರ್ತು.  
ಮೆಘಾನಾಮಾಗಮೋಽತ್ರ ।

ಮೆಘಾನಂದಿನ್ ಮೇಘಾನಂದಿನ್ (ಪುಂ) ಮಯೂರ,  
ನವಿಲು. ಮೆಘೇನ ಆನಂದತಿ—टुनदि (समृद्धौ) “णिनि:”  
(3-2-96) ।

ಮೆಘಾಂತ ಮೇಘಾಂತ (ಪುಂ) ಶರತ್ಕಾಲ, ಶರದೃತು. ಮೆಘಾನಾ-  
ಮಂತೋಽತ್ರ ।

ಮೆಘಾಸ್ಥಿ ಮೇಘಾಸ್ಥಿ (ನಂ) ಅಲೆಕಲ್ಲು, ಮುಗಿಲ್ಲಲ್ಲು.  
ಮೆಘಾನಾಮಸ್ಥಿವ । “करकः स्यात् घनकुको बीजोदक-  
मिराचरम् । मेघास्थि” त्रिकाण्ड० ।

ಮೆಚಕ ಮೇಚಕ (ಪುಂ) 1. ನವಿಲುಗರಿಯ ಕಣ್ಣು. ಮೆಚಕೋ  
ವರ್ಣೋಽಸ್ತಸ್ಯ “अच्” (4-2-127) । “मेचको बह-  
चन्द्रकः” ವೆಂಜಂ । “प्रेह्णद्भूरिमयूरमेचकचयैरुन्मेषिचाष-  
च्छदच्छाया” मालती० 6-5 । 2. ಕೃಷ್ಣವರ್ಣ, ನೀಲ  
ವರ್ಣ. 3. ಮೇಘ, ಮೋಡ. (ನಂ) 4. ಅಂಧಕಾರ,  
ತಿಮಿರ. “मेचकः श्यामले कृष्णे तिमिरे बहिचन्द्रके”  
हेम० । 5. ಸೋತೋಜ್ಜನ, ಸೋವೀರೋಜನ. “मेचकस्तु  
मयूरस्य चन्द्रके श्यामले पुमान् । तद्युक्ते वाच्यवत्  
क्लीबं स्रोतोऽञ्जनान्वकारयोः” मेदि० । 6. ಚೂಚುಕ,  
ಸುನಾಗ್ರ. “स्तनाग्रे पिप्पलं वृत्तं चूचुकं मेचकं शिला”  
मेदि० । (ವಿಂ) 7. ಕಪ್ಪುಗಿರುವ, ಕೃಷ್ಣವರ್ಣದ. “गज-  
कदम्बकमेचकमुच्चकैर्नभसि वीक्ष्य नवाम्बुदमम्बरे”  
भाष० 6-26 ।

ಮೆಚಟಿಕ ಮೇಚಟಿಕ (ಪುಂ) ಎಣ್ಣೆಯ ಗಬ್ಬು ನಾತ, ಹಳೆ  
ಯೆಣ್ಣೆಯ ದುರ್ವಾಸನೆ. “स्नेहदोषे मेचटिकः” ವೆಂಜಂ ।

ಮೆಟ ಮೇಟಿ (ಪುಂ) ಸುಣ್ಣು ಬಳಿದ ಮಾಳಿಗೆಯ ಮನೆ.  
“सौधोज्ज्वी सुधया श्वेतं मेटो हर्म्यं च मालिका”  
ವೆಂಜಂ ।

ಮೆಠ ಮೇಠ (ಪುಂ) ಹಸ್ತಿಪಕ, ಮಾವಟಿಗ, ಗಜಪಾಲಕ.  
“मेठो मेण्डो हस्तिपके” त्रिकाण्ड० ।

ಮೆಡ್ ಮೇಡ್ (ಪುಂ) 1. ಪುರುಷನ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ.  
ಮೆಹಲ್ಯನೇನ—मिह (सेचने) “ष्टन्” (3-2-162) ।  
2. ಟಗರು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “डीष्” (4-1-63) ।

ಮೆಠ್ ಮೇಠ್ (ಪುಂ) ಹಸ್ತಿಪಕ, ಮಾವಟಿಗ.

ಮೆಠ್ ಮೇಠ್ (ಪುಂ) ಟಗರು, ಕುರಿ.

ಮೆಥಿ(ಥಿ) ಮೇಥಿ(ಥಿ) (ಪುಂ) ಮೇಟಿಕುಂಬ, ಕಣದಲ್ಲಿ  
ಕಡ್ಡಿ ಕಾಳುಗಳನ್ನು ತುಳಿಯಲು ಎತ್ತುಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವ  
ಕುಂಬ. ಮೆಥು(ಥು) (हिसायाम्) “इन्” (उ० 4-119) ।  
“पुंसि मेथिः खले दार न्यस्तं यत्पशुबन्धने” अम० ।

ಮೆಥಿಕಾ ಮೇಥಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೆಂತ್ಯದ ಸೊಪ್ಪು.  
ಮೆಥು (हिसायाम्) “ण्वल्” (3-1-133) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
“टाप्” । 2. ಮೆಂತ್ಯ.

ಮೆಥಿ ಮೇಥಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೆಂತ್ಯ. 2. ಮೆಂತ್ಯದ  
ಸೊಪ್ಪು. ಮೆಥು (हिसायाम्) ಕೃದಿಕಾರಾದಕ್ತಿನ: इति पक्षे  
“डीष्” (ग० 4-1-45) ।

ಮೆಡಕ ಮೇಡಕ (ಪುಂ) ಮದ್ಯವನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ ವಸ್ತು,  
ಬಟ್ಟು ಇಳಿಸುವ ವಸ್ತು. ಮೆಡತಿ—वि मिदा (स्नेहने)  
“ण्वल्” (3-1-133) । “वुन्” (उ० 4-13) । ವಾ ।

ಮೆಡಸ್ ಮೇಡಸ್ (ನಂ) ಕೊಬ್ಬು, ಮೂಸದಿಂದ ಉಂಟಾದ  
(ಧಾತು) ರಸ. ವಿ ಮಿದಾ (ಸ್ನೆಹನೆ) “असुन्” (उ०  
4-169) । “मेदश्छेदकशोदरं लघु भवत्युत्थानयोग्यं  
वपुः” शाकु० 2-5 ।

ಮೆಡಸ್ಕುತ್ ಮೇಡಸ್ಕುತ್ (ನಂ) ಮೂಸ. ಮೆದ: करोति—डु  
कृञ् (करणे) “क्विप्” (3-2-61) ।

ಮೆಡಸ್ವಿನ್ ಮೇಡಸ್ವಿನ್ (ವಿಂ) ಬಲಶಾಲಿಯಾದ, ಧಾತು  
ಬಲವುಳ್ಳ, ರಸಪುಷ್ಟಿಯುಳ್ಳ. ಮೆದೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ—“विनिः”  
(4-2-121) । “मेदस्विनः सरमसोपगतानभीकान्”  
भाष० 4-64 ।

ಮೆದಿನಿ ಮೇದಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಧೂಮಿ, ನೆಲ. ಮೆದತಿ—  
ಮೆದೋಽಸ್ಯಾ ಅಸ್ತಿ “इनिः” (4-2-115) । “स्वयं  
प्रदुग्धेऽस्य गुणैरुपस्तुता वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी”



ಕಿರಾಂ ೧-೧೮ | 2. ಮೇದಿನಿಕರ ಪಂಡಿತನಿಂದ ರಚಿತ  
ವಾದ ನಾನಾರ್ಥಶಬ್ದಕೋಶವೆಂಬ ಒಂದು ನಿಘಂಟು.

**ಮೇದಿನೀಪತಿ ಮೇದಿನೀಪತಿ** (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ,  
ಭೂಮಿಯ ಒಡೆಯ. ಮೇದಿನ್ಯಾ: ಪತಿ: | "ಅಧಿಪತಿಃ  
ಲೋಕಮೋಜಸಾ ಸ ವಿವಸ್ವಾನಿವ ಮೇದಿನೀಪತಿ:" ಕಿರಾಂ  
೨-೩೮ |

**ಮೇದಿನೀಶ ಮೇದಿನೀಶ** (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಮೇದಿನ್ಯಾ ಇಶ: |  
**ಮೇದುರ ಮೇದುರ** (ವಿಂ) 1. ದಟ್ಟವಾದ, ನಿಬಿಡವಾದ,  
ತುಂಬಿರುವ. ತ್ರಿ ಮಿಡಾ (ಸ್ನೇಹನೆ) "ಮೇದುರ" (೩-೨-೧೬೧) |  
"ಮೇದಮೇದುರಮ್ಬರಂ ವನಮುಖ: ಸ್ಯಾಮಾಸ್ತಮಾಲದ್ರುಮ:" ಗೀತಗೋ  
೧-೧ | 2. ಬಹಳ ಮೃದುವಾದ, ಬಹಳ ನುಣುಪಾದ.  
"ಸಾಂದ್ರಸ್ನಿಗ್ಧಸ್ತು ಮೇದುರ:" ಅಮಂ |

**ಮೇದುರಿತ ಮೇದುರಿತ** (ವಿಂ) ಸಾಂದ್ರವಾಗಿರುವ, ದಟ್ಟ  
ವಾಗಿರುವ, ನಿಬಿಡವಾಗಿರುವ. ಮೇದುರ "ಇತತ್" (೪-೨-೩೬) |  
"ಸಂತತಮಭಿಷ್ಯಂದಮಾನಮೇಧಮೇದುರಿತನೀಲಿಮಾ ಜನಸ್ಥಾನ-  
ಮಧ್ಯಗೋ ಗಿರಿ:" ಉಂ ರಾಂ ೧ |

**ಮೇದೋಜ ಮೇದೋಜ** (ನಂ) ಅಸ್ಥಿ, ಮೂಳೆ, ಎಲುಬು.  
ಮೇದಸೋ ಜಾಯತೇ—ಜನೀ (ಪ್ರಾಕೃತವಿ) "ಢ:" (೩-೨-೯೮) |  
**ಮೇಧ ಮೇಧ** (ಪುಂ) 1. ಯಾಗ, ಯಜ್ಞ. ಮೇಧಯೇತ್ರ—ಮೇಧ  
(ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಮೇ" (೩-೩-೧೨೧) | "ಮೇಧ: ಕ್ಷತೌ  
ಮೇಧಾ ತು ಶಮುಷಿ" ಹೇಮಂ | 2. ಯಾಗದ ಪಶು. ಮೇಧ ಕರ್ಮಂ  
"ಮೇ" (೩-೩-೧೨೧) |

**ಮೇಧಾ ಮೇಧಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗ್ರಹಣಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ ಬುದ್ಧಿ,  
ಜ್ಞಾಪಕಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ ಬುದ್ಧಿ. ಮೇಧತೇ ಸಂಗಚ್ಛತೇ ಸರ್ವಮಸ್ಯಾಮ್  
—ಮೇಧ (ಸಂಗಮೇ) "ಅ:" (೩-೩-೧೦೩) | "ವಿಷ್ಣಿ-  
ರಣಾವತೀ ಮೇಧಾ" ಅಮಂ | ನಖ್ ದುಸ್ ಮತ್ಸು ಸು ಇವು  
ಗಳಿಗೆ ಪರದಲ್ಲಿರುವ ಮೇಧಾ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಬಹುವ್ರೀಹಿಯಲ್ಲಿ  
"ಅಸಿಚ್" (೪-೪-೧೨೨) ಪ್ರತ್ಯಯ ಬಂದು ಅಮೇಧಾ:  
ದುರ್ಮೇಧಾ: ಸುಮೇಧಾ: ಎಂದು ರೂಪಗಳಾಗುವುವು. "ನಾಯಮಾತ್ಮಾ  
ಪ್ರವಚನೇನ ಲಮ್ಯೋ ನ ಮೇಧಯಾ ನ ಬಹುನಾ ಶ್ರುತೇನ | ಯಮೇವೈಶ  
ವೃಣುತೇ ತೇನ ಲಮ್ಯಸ್ತಸ್ಯೈಶ ಆತ್ಮಾ ವಿವೃಣುತೇ ತನುಂ ಸ್ವಾಮ್"  
ಮುಂಡಕಂ | 2. ಬುದ್ಧಿ. 3. ಧನ.

**ಮೇಧಾಜಿತ ಮೇಧಾಜಿತ** (ಪುಂ) ವರರೂಪಿ ಮುನಿ,  
ಕೌತೂಹಲವಂತ ಮಹರ್ಷಿ. ಮೇಧಾಂ ಜಿತವಾನ್ | "ಅಥ ಮೇಧಾ-  
ಜಿತ ಕಾತ್ಯ: ಕಾತ್ಯಾಯನಶ್ಚ ಸ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಮೇಧಾತಿಥಿ ಮೇಧಾತಿಥಿ** (ಪುಂ) 1. ಮನುಷ್ಯರಿಗೆ  
ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಬರೆದ ಒಬ್ಬ ಮುನಿ. 2. ಕರ್ಮಮಪ್ರಜಾ  
ಪತಿಯ ಒಬ್ಬ ಪುತ್ರ. ಮೇಧಾಯಾ ಅತಿಥಿರಿವ |

**ಮೇಧಾವಿನ್ ಮೇಧಾವಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಶುಕವಕ್ಷಿ, ಗಿಣಿ.  
ಮೇವಾಸ್ತಸ್ಯ "ವಿನಿ:" (೪-೨-೧೨೧) | "ಶುಕಸ್ತ್ರಿಕೇತು-  
ಮೇಧಾವಿ ಶ್ರೀಮಾನ್ ವಾಗ್ಮೀ ಫಲಾಶನ:" ವೇಜಂ | 2. ಪಂಡಿತ,  
ವಿದ್ವಾಂಸ. "ವಿದ್ವಾನ್ ಸನ್ ಕೋವಿದ: ಸುರಿಸಮೇಧಾವಿ ಪಂಡಿತೋ  
ಬುಧ:" ವೇಜಂ | (ವಿಂ) 3. ಬುದ್ಧಿವಂತ, ಜ್ಞಾಪಕಶಕ್ತಿ  
ಯುಳ್ಳವನು. "ಯಸ್ಯ ಯಸ್ಯ ಹಿ ಯೋ ಭಾವ: ತಸ್ಯ ತಸ್ಯ  
ಹಿ ತಂ ನರ: | ಅನುಪ್ರವಿಷ್ಯ ಮೇಧಾವಿ ಕ್ಷಿಪ್ರಮಾತ್ಮವಶಂ ನಯೇತ್"  
ಪञ್ಚತಂ ೧-೨೪ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪) | —ವಿನಿ  
—ವಿನೀ.

**ಮೇಧಾವಿನಿ ಮೇಧಾವಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬ್ರಹ್ಮನ ಪತ್ನಿ.  
"ಮೇಧಾವಿ ನಾ ಶುಕೇ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಂ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಮೇಧಾವಿನೀ ತ್ರಿಪು"  
ಮೇದಿಂ |

**ಮೇಧಿ ಮೇಧಿ** (ಪುಂ) ಮೇಟಿಕುಬ, ಕಣದಲ್ಲಿ ಧಾನ್ಯಗಳನ್ನು  
ತುಳಿಯಲು ಎತ್ತುಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಕುಬ. ಮೇಧ (ಹಿಸಾ-  
ಯಾಮ್) "ಇನ್" (ಉಂ ೪-೧೨೨) |

**ಮೇಧಿರ ಮೇಧಿರ** (ವಿಂ) ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿ, ಜ್ಞಾಪಕಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ  
ವನು, ಧಾರಣಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು. ಮೇಧಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇರನ್"  
(೪-೨-೧೦೯) | ಇತಿ ಕಾಶಿಕಾ |

**ಮೇಧ್ಯ ಮೇಧ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಮುಂಜತ್ಯಣ, ಮಂಜಿಹುಲ್ಲು,  
ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಯು ನಡುವಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಮಂಜಿಯನ್ನು  
ಮಾಡುವ ಒಂದು ವಿಧ ಹುಲ್ಲು. ಮೇಧಾಯೇ ಹಿತ: "ಯತ್"  
(೪-೧-೨) | "ಮುಂಜಸ್ತು ಯಜ್ಞಿಯೋ ಮೇಧ್ಯೋ ಮೃದುವಕ್ ಬ್ರಹ್ಮ-  
ಮೇಖಲ:" ವೇಜಂ | 2. ಕಗ್ಗಲಿ ಮರ. 3. ಮೇಕೆ. (ವಿಂ)  
4. ಪವಿತ್ರವಾದ, ಶುದ್ಧವಾದ. ಮೇಧಯೇ—ಮೇಧ "ಯತ್"  
(೩-೧-೧೨೪) | "ಮುಖಂ ಕೋಣೇನ ಕುಂಡೋನಿ ಮೇಧೇನಾವ-  
ಭೃತಾದಪಿ | ಪ್ರಸ್ತವೇನಾಭಿವರ್ಷಂತಿ" ರಘುಂ ೧-೮೪ | 5.  
ಯಾಗಸಂಬಂಧವಾದ, ಯಾಗಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ. ಮೇಧಮಹಂತಿ  
—"ಯತ್" (೪-೧-೬೩) | "ಗುರೋರ್ಯಜ್ಞೋ: ಕಪಿಲೇನ  
ಮೇಧೇ ರಸಾತಲಂ ಸಂಕ್ರಮಿತೇ ತುರಜ್ಞೇ" ರಘುಂ ೧೩-೩ | (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
—ಯಾ—ಧನ್ಯ. 6. ಕೆಂಪು ಬಜೆ. 7. ಬನ್ನಿ ಮರ. 8. ಕೆಂಪು  
ಬೂರುಗದ ಮರ.

**ಮೇನಕಾ ಮೇನಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಿಮವಂತನ ಪತ್ನಿ, ಮೇನಕಾ  
ದೇವಿ. ಮೇನೇವ ಮೇನಕಾ | 2. ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸು,  
ಶಕುಂತಲೆಯ ತಾಯಿ.

**ಮೇನಕಾತ್ಮಜಾ ಮೇನಕಾತ್ಮಜಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೇನಕೆಯ  
ಪುತ್ರಿ, ಪಾರ್ವತಿ. ಮೇನಕಾಯಾ ಆತ್ಮಜಾ |

**ಮೇನಾ ಮೇನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಿಮವಂತನ ಪತ್ನಿ, ಪಾರ್ವತಿಯ  
ತಾಯಿ. ಮಾನ್ಯತೇ ಪೂಜ್ಯತೇ—ಮಾನ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಇನಚ್"



(ಉಂ ೨-೫೦) । “ಮೆನಾ ಮುನೀನಾಮಪಿ ಮಾನನೀಯಾಮಾತ್ಮಾನು-  
ರೂಪಾ ವಿಧಿನೋಪಯೇಮೆ” ಕುಮಾಂ ೧-೧೮ । 2. ಒಂದು ನದಿ.

ಮೆನಾದ ಮೇನಾದ (ಪುಂ) 1. ಮಯೂರ, ನವಿಲು.  
2. ಮೇಕೆ, ಆಡು. ಮೇ ಇತಿ ನಾದೋಽಸ್ಯ । 3. ಮಾರ್ಜಾರ,  
ಬೆಕ್ಕು. “ಮೆನಾದಃ ಕೇಕಿನಿ ಚ್ಚಾಗೇ ಮಾರ್ಜರಿ” ಹೇಮಂ ।

ಮೆನ್ದಿಕಾ ಮೇಂಧಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋರಂಟಿ ಗಿಡ. ಮಾ  
ಶೋಭಾ ಇನ್ದಯತಿ — ಪ್ರಕಾಶಯತಿ ।

ಮೆನ್ದಿ ಮೇಂಧೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋರಂಟಿ ಗಿಡ. ಮಾ ಶೋಭಾ  
ಇನ್ದಯತಿ — ನಿ ಇನ್ದಿ (ದೀಪ್ತ) + ನಿಚ್ “ಅನ್”  
(೩-೨-೧) । “ಜಿಪ್” (೪-೧-೧೫) ।

ಮೇಯ ಮೇಯ (ವಿಂ) 1. ಅಳೆಯಲ್ಪಡುವ. 2. ಅಳೆಯಲು  
ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಅಳೆಯಬೇಕಾದ. 4. ಅಳೆಯಲು  
ಶಕ್ಯವಾದ. ಮಾಙ್ (ಮಾನೇ) ಕರ್ಮಂ “ಯತ್” (೩-೧-೯೭) ।  
5. ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ. 6. ತಿಳಿಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.  
7. ತಿಳಿಯಬೇಕಾದ. 8. ತಿಳಿಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ.

ಮೇರು ಮೇರು (ಪುಂ) 1. ಮೇರುಪರ್ವತ, ಸುಮೇರುಪರ್ವತ.  
ಮಿನೋತಿ ಪ್ರಕ್ಷಿಪತಿ ಜ್ಯೋತೀಷಿ—ಙ್ ಮಿನ್ (ಪ್ರಕ್ಷೇಪಣ) “ಃ”  
(ಉಂ ೪-೧೦೧) । “ಪ್ರೋಷಿತಾರ್ಯಮಣ ಮೇರೂರ್ವಹಾರಸ್ತದೀ-  
ಮಿವ” ಮಾಘಂ ೨-೩೯ । 2. ಜಪಮಾಲೆಯ ಮಧ್ಯದ  
ಮಣಿ. 3. ಹಾರದ ಮಧ್ಯದ ಮಣಿ.

ಮೇರುಕ ಮೇರುಕ (ಪುಂ) ಯಕ್ಷಧೂಪ, ಸಾಲವೃಕ್ಷದ ರಸ.  
ಮಿನೋತಿ ಕ್ಷಿಪತಿ ಗಂಧಾನ್ — ಙ್ ಮಿನ್ (ಪ್ರಕ್ಷೇಪಣ) “ಃ”  
(ಉಂ ೪-೧೦೧) । ಸಂಜಾಯಾ “ಕನ್” ।

ಮೇಸಾರ್ವಣಿ ಮೇರುಸಾರ್ವಣಿ (ಪುಂ) ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮನು  
ಗಳಲ್ಲಿ ಹನ್ನೊಂದನೆಯ ಮನು. “ತತಸ್ತು ಮೇಸಾರ್ವಣಿಬ್ರಹ್ಮ-  
ಸುನುಮನುಃ ಸ್ಮೃತಃ । ಋತುಶ್ಚ ಋತುಧಾಮಾ ಚ ವಿಷ್ವಕ್ಸೇನೋ  
ಮನುಸ್ತಥಾ” ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ ।

ಮೇಲ ಮೇಲ (ಪುಂ) ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು, ಒಂದುಕಡೆ  
ಕೂಡುವುದು. ಮಿಲ (ಶ್ಲೇಷಣ) ಭಾವೇ “ಘ್”  
(೩-೩-೧೮) ।

ಮೇಲಕ ಮೇಲಕ (ಪುಂ) 1. ಸಂಗಮ. 2. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರು  
ವುದು. ಮೇಲ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕಃ” ।

ಮೇಲನ ಮೇಲನ (ನಂ) 1. ಸೇರುವುದು, ಒಂದು ಕಡೆ  
ಕೂಡುವುದು. 2. ಸಂಗಮ. ಮಿಲ (ಶ್ಲೇಷಣ) “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೫) । “ಯತ್ತಯಾ ಮೇಲನಂ ತತ್ರ ಲಾಭೋ ಮೇ ಯಶ್ಚ  
ತದ್ರತಃ । ತದೇತಲ್ಕಾಕತಾಲೀಯಮವಿತರ್ಕಿತಸಂಭವಮ್” ಚಂದ್ರಾಂ ।

ಮೇಲಾ ಮೇಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೇರುವಿಕೆ, ಒಂದು ಕಡೆ  
ಕೂಡುವುದು. 2. ಸಂಗಮ. 3. ಅಂಜನ. 4. ಮಸಿ,

ಶಾಯಿ. “ಮೇಲಾತ್ವಜ್ಜನೇ ಮೇಲಕೇಽಪಿ ಚ” ಹೇಮಂ । “ಮೇಲಾ  
ಮೇಲಕೇ ಮಸಿ” ಮೇದಿಂ ।

ಮೇಲಾನಂದಾ ಮೇಲಾನಂದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಸಿಯ ಕುಡಿಕೆ,  
ಮಸಿಯ ಪಾತ್ರೆ. ಮೇಲಯಾ ಆನಂದೋಽಸ್ಯಾಃ ।

ಮೇಲಾಂಧು ಮೇಲಾಂಧು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಸಿಯ ಕುಡಿಕೆ, ದಾತಿ.

ಮೇಲಾಂಬು ಮೇಲಾಂಬು (ಪುಂ) ಮಸಿಯ ಕುಡಿಕೆ, ದಾತಿ,  
“ಮೇಲಾನಂದಾ ಮಸಿಘಟಿ ಮೇಲಾಂಬುರ್ಮಲಿನಾಂಬು ಚ” ವೈಜಂ ।

ಮೇಷ ಮೇಷ (ಪುಂ) 1. ಟಗರು, ಗಂಡು ಕುರಿ. ಮಿಷತಿ—  
ಮಿಷ (ಸ್ಪರ್ಧಿಯಾಮ್) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ಪಿತೃಣಾಂ  
ಪ್ರಾಭವಾಲ್ಲೇಭೇ ಮೇಷಸ್ಯ ವೃಷಣಂ ವೃಷಾ” ಚಂ ರಾಂ । 2. ಮೇಷ  
ರಾಶಿ, ದ್ವಾದಶರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ರಾಶಿ,  
ಸೂರ್ಯನು ಅಶ್ವಿನಿ, ಭರಣಿ ಮತ್ತು ಕೃತ್ತಿಕೆಯ ಮೊದಲ  
ನೆಯ ಪಾದದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ ರಾಶಿ. 3. ಮೇಷಲಗ್ನ.  
ಮೇಷಮಾಸದಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯೋದಯದ ಲಗ್ನ. 4. ಮೇಷ  
ಮಾಸ, ಸೂರ್ಯನು ಅಶ್ವಿನಿ, ಭರಣಿ ಮತ್ತು ಕೃತ್ತಿಕೆಯ  
ಮೊದಲನೆಯ ಪಾದದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ ಮಾಸ (ಕಾಲ).

“ಯದಾ ತಪನಃ ಮೇಷತುಲಯೋವರ್ತಂತೇ ತದಾಹೋರಾತ್ರಾಣಿ ಸಮಾನಾನಿ  
ಭವಂತಿ, ಯದಾ ವೃಷಭಾದಿಷು ಪಂಚಸು ರಾಶಿಷು ಚರತಿ ತದಾಹಾನ್ಯೇವ  
ವರ್ಧಂತೇ ಹಸತಿ ಚ ಮಾಸಿ ಮಾಸ್ಯೇಕಾ ಷಡಿಕಾ ರಾತ್ರಿಷು, ಯದಾ  
ವೃಶ್ಚಿಕಾದಿಷು ಪಂಚಸು ವರ್ತಂತೇ ತದಾಹೋರಾತ್ರಾಣಿ ವಿಪರ್ಯಯಾಣಿ  
ಭವಂತಿ” ಭಾಗಂ ೨೧-೪, ೫ ।

ಮೇಷಕಂಬಲ ಮೇಷಕಂಬಲ (ಪುಂ) ಕುರಿಯ ಕೂದಲಿ  
(ಉಜ್ಜೆ) ನಿಂದ ತಯಾರಾದ ಕಂಬಳ. ಮೇಷಣ ತಲ್ಲೋಮ್ನಾ  
ನಿರ್ಮಿತಃ ಕಂಬಲಃ । “ಮೇಷಕಂಬಲ ಉರ್ಗಾಯುಃ” ಅಮಂ ।

ಮೇಷಪಾಲ ಮೇಷಪಾಲ (ಪುಂ) ಕುರಿ ಕಾಯುವವನು, ಕುರಿ  
ಯನ್ನ ರಕ್ಷಿಸುವವನು, ಕುರುಬ. ಮೇಷ ಪಾಲಯತಿ — ಪಾಲ  
(ರಕ್ಷಣ) “ಅನ್” (೩-೨-೧) । “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) ।  
—ಪಾಲಕಃ — ಪಾಲಕಃ ।

ಮೇಷಶೃಂಗಿ ಮೇಷಶೃಂಗೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಲಮುರಿ ಗಿಡ,  
ಕುರುಟಿಗೆ ಗಿಡ.

ಮೇಷಾ ಮೇಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣ್ಣ ಯಾಲಕ್ಕಿ. ಮಿಷ್ಯತೇ—ಮಿಷ  
(ಸ್ಪರ್ಧಿಯಾಮ್) ಕರ್ಮಂ “ಘ್” (೩-೩-೧೯) ।

ಮೇಷಾಂಡ ಮೇಷಾಂಡ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ಮೇಷಾಂಡಮಿವಾಂಡ-  
ಮಸ್ಯ ।

ಮೇಷಿ ಮೇಷೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುರಿ.

ಮೆಹ ಮೆಹ (ಪುಂ) 1. ಕುರಿ, ಟಗರು. 2. ಮೂತ್ರ.  
ಮಿಹ (ಸೇಚನೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । 3. ಮೂತ್ರ  
ರೋಗ. ಮಿಹತಿ ಶುಕ್ರಾದಿರೇನ—ಮಿಹ “ಘ್” (೩-೩-೧೨೧) ।



ಮೆಹಣಿ ಮೇಹಫೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಂದ್ರ, ಅರಿಶನ. ಮೆಹ  
ಹಂತಿ—ಹನ (ಹಿಸಾಗತಿಯೆ:) “ಡಕ್” (೩-೨-೪೩)।

ಮೆಹನ ಮೇಹನ (ನಂ) 1. ಶಿಶು, ಪುರುಷನ ಜನನಂದ್ರಿಯ,  
ಲಿಂಗ. ಮಿಹಲ್ಯನೇನ —ಮಿಹ (ಸೆವನೆ) “ಲ್ಯುಡ್”  
(೩-೩-೧೧೭)। 2. ಮೂತ್ರ. ಮಿಹ ಕರ್ಮಂ “ಲ್ಯುಡ್”  
(೩-೩-೧೧೩)। “ಮೆಹನ ಮೂತ್ರಶಿಶನಯೋಃ” ಮೇದಿಂ। 3.  
ಮೂತ್ರಿಸುವುದು, ಜಲವನ್ನು ವಿಸರ್ಜಿಸುವುದು. ಮಿಹ  
ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪)।

ಮೆಹಲ ಮೇಹಲ (ಪುಂ) ಮೂತ್ರದ ದುರ್ವಾಸನೆ,  
ಮೂತ್ರದ ನಾತ. “ಚಿತ್ರೋ ಯಕೃತಿ ಪೂಯೇ ತು ಪೂತಿಮೃತೇ ತು  
ಮೆಹಲಃ” ವೇಜಂ।

ಮೆತ್ರ ಮೈತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ವಿಪ್ರ. “ವಕ್ತವಜಸ್ತವನಮೋ  
ವಿಪ್ರೋ ವರ್ಣಜ್ಯೇಷ್ಠಃ ಕಥೋ ದ್ವಿಜಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 2. ಮಿತ್ರ,  
ಸುಹೃತ್ತು, ಸ್ನೇಹಿತ. ಮಿತ್ರಮೇವ—ಸ್ವಾರ್ಥ “ಅನ್” (೪-೪-೩೮)।  
3. ಸೂರ್ಯೋದಯದ ಮುಹೂರ್ತದಿಂದ ಮೂರನೆಯ  
ಮುಹೂರ್ತ. “ಆದ್ರ್ವಃ ಸಾದ್ರ್ವಃ ತಥಾ ಮೆತ್ರಃ ಶುಭೋ ವಾಸವ  
ಏವ ಚ”। “ಮೆತ್ರೇ ಮುಹೂರ್ತೇ ಶಶಲಾಂಶ್ಚನೇನ ಯೋಗ ಗತಾಸ್ತುತರ-  
ಫಲ್ಗುನೀಷು” ಕುಮಾಂ ೭-೬। 4. ಒಬ್ಬ ಮಿತ್ರಜಾತಿ  
ಯವನು, ವೈಶ್ಯವಾತ್ಯ, ಸಂಸ್ಕಾರವಿಲ್ಲದ ವೈಶ್ಯನಿಂದ  
ಜನಿಸಿದವನು. “ಮೆತ್ರಂ ಸಾ ವೈಶ್ಯಪೂರ್ವಿಕಾ” ವೇಜಂ। (ನಂ)  
5. ಸ್ನೇಹ, ಗೆಳೆತನ. ಮಿತ್ರಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಅನ್”। “ಲೋಭಾತ್  
ಮೋಹಾದ್ಭಯಾನ್ಮೇವಾತ್ಕಾಮಾತ್ಕೋಪಾತ್ತರ್ಯಂ ಚ। ಅಜ್ಞಾನಾದ್ವಿ-  
ಭಾವಾಂಶ್ಚ ಸಾಕ್ಷ್ಯಂ ವಿತಥಮುಚ್ಯತೇ” ಮನುಂ ೮-೧೧೮।  
6. ಅನೂರಾಧಾ ನಕ್ಷತ್ರ. ಮಿತ್ರೋ ದೇವತಾಸ್ಯ “ಅನ್”  
(೪-೨-೨೪)। 7. ಮಲವಿಸರ್ಜನೆ. (ವಿಂ) 8. ಮಿತ್ರ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. ಮಿತ್ರಸ್ಯೇದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦)।  
“ಋತಂ ಮೆತ್ರಂ ಚ ಭಾಷಂತೇ ತೇ ನರಾಃ ಸ್ವರ್ಮಗಾಮಿನಃ” ಭಾಂ।  
9. ಮಿತ್ರನಿಂದ ಬಂದ, ಸ್ನೇಹಿತನಿಂದ ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ.  
ಮಿತ್ರಾದಾಗತಃ “ಅನ್” (೪-೩-೭೪)।

ಮೆತ್ರಕ ಮೈತ್ರಕ (ಪುಂ) ಬೌದ್ಧ ದೇವಾಲಯದ ಅರ್ಚಕ.  
“ಮಾರುಪಸ್ತವಚೇನ್ಮಾತುಃ ಶಾಕ್ಯಚೇತ್ಯಾದಿ ಮೆತ್ರಕಃ” ವೇಜಂ।

ಮೆತ್ರಭ ಮೈತ್ರಭ (ನಂ) ಅನೂರಾಧಾ ನಕ್ಷತ್ರ. ಮೆತ್ರಂ ಚ ತತ್  
ಭವತಿ।

ಮೆತ್ರಾವರಣ ಮೈತ್ರಾವರಣ (ಪುಂ ದ್ವಿಂ) 1. ಮಿತ್ರ  
ಮತ್ತು ವರಣ ದೇವತೆಗಳು. ಮಿತ್ರಶ್ಚ ವರಣಶ್ಚ “ಆನಡ್”  
(೬-೩-೨೬)। (ಪುಂ) 2. ವಸಿಷ್ಠ ಮಹರ್ಷಿ. “ತ್ವಾಂ  
ಮೆತ್ರಾವರಣೋಽಭಿನಂದತು” ತಂ ರಾಂ ೪-೨೮।

ಮೆತ್ರಾವರಣಿ ಮೈತ್ರಾವರಣಿ (ಪುಂ) ಆಗಸ್ಟ ಮಹರ್ಷಿ.  
ಮಿತ್ರಾವರಣಯೋರಪತ್ಯಮ್ “ಇಜ್” (೪-೧-೯೪)।

ಮೆತ್ರಿ ಮೈತ್ರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ನೇಹ, ಸೌಹಾರ್ದ. ಮಿತ್ರಸ್ಯ  
ಭಾವಃ “ಏಜ್” (೪-೧-೧೨೪)। “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪೧)।  
“ಅಸಮೇತ್ರಿ ಹಿ ದೋಷಾ ಕೂಲಚ್ಛಾಯೇವ ಸೇವಿತಾ” ಕಿರಾಂ  
೧೧-೪೪।

ಮೆತ್ರೇಯ ಮೈತ್ರೇಯ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಈ  
ಮುಖಿಯು ಪರಾಶರಮುನಿಯಿಂದ ಶ್ರೀವಿಷ್ಣುಪುರಾಣ  
ವನ್ನು ಕೇಳಿ ತಿಳಿದುಕೊಂಡನು. “ಪರಾಶರಂ ಮುನಿವರಂ ಕೃತ-  
ಪೌರ್ವಾಹ್ನಿಕಕ್ರಿಯಮ್। ಮೆತ್ರೇಯಃ ಪರಿಪ್ರಚ್ಛ ಪ್ರಣಿಪತ್ಯಾಭಿವಾಚ  
ಚ” ವಿಷ್ಣುಪುಂ ೧-೧। 2. ಬುದ್ಧದೇವನ ಅನುಯಾಯಿ  
ಒಬ್ಬ ಬೌದ್ಧ. 3. ಒಬ್ಬ ಮಿತ್ರಜಾತಿಯವನು.

ಮೆತ್ರೇಯಿ ಮೈತ್ರೇಯೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ಉಪನಿಷತ್ತು.  
2. ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕ್ಯಮುಖಿಯ ಪತ್ನಿ.

ಮೆಥಿಲ ಮೈಥಿಲ (ಪುಂ) 1. ಮಿಥಿಲೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಜನಕ  
ರಾಜ. ಮಿಥಿಲಾಭಿಭಾವಃ “ಅನ್” (೪-೩-೪೩)। “ತಂ  
ನಯಮನ್ವಯತ ಸಮೃತಕ್ರುತುಃ ಮೆಥಿಲಃ ಸ ಮಿಥಿಲಾಂ ವ್ರಜನ್ ವಶೀ”  
ರಘುಂ ೧೧-೩೨। (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 2. ಮಿಥಿಲೆಯಲ್ಲಿ  
ವಾಸಿಸುವ ಜನರು.

ಮೆಥಿಲಿ ಮೈಥಿಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೈಥಿಲಪುತ್ರಿಯಾದ  
ಸ್ನೇಹದೇವಿ. ಮೆಥಿಲಸ್ಯಾಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ “ಅನ್” (೪-೧-೯೨)।  
“ಡೀಪ್” (೪-೧-೧೪)। “ಮಾಯಾಮೃಗೇಣ ತವ ಮೆಥಿಲಿ  
ವಜ್ರಿವತಾಯಾಃ ಶಾಖಾಮೃಗೇಣ ಪುನರಾಗತಿರೀತಯುಕ್ತಮ್” ಚಂ  
ರಾಂ।

ಮೆಥಿಲೇಯ ಮೈಥಿಲೇಯ (ಪುಂ) ಮೈಥಿಲಿಯ ಪುತ್ರ.  
1. ಕುತ. 2. ಲವ. ಮೆಥಿಲಿಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ “ಡಕ್”  
(೪-೧-೧೨೦)।

ಮೆಥುನ ಮೈಥುನ (ನಂ) 1. ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯ, ದಂಪತಿಗಳು  
ಮಾಡುವ ಅಗ್ನಿಧಾನ್ಯರೂಪವಾದ ಕಾರ್ಯ. ಮೆಥುನಸ್ಯ  
ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸಯೋರ್ಯುಗಲಸ್ಯ ಕರ್ಮ “ಅನ್” (೪-೧-೧೨೯)। 2.  
ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ಸಂಗಮ, ಸಂಭೋಗ, ಸಂರತ, ರತಿಕ್ರೀಡೆ.  
“ಅಸಪಿಂಡಾ ತು ಯಾ ಮಾತುಃ ಅಸಗೋತ್ರಾ ಚ ಯಾ ಪಿತುಃ। ಸಾ  
ಪ್ರಸಸ್ತಾ ದ್ವಿಜಾತೀನಾಂ ದಾರಕರ್ಮಣಿ ಮೆಥುನೇ”। “ವ್ಯವಾಯೋ  
ಗ್ರಾಮ್ಯವರ್ಮೋ ಮೆಥುನಂ ನಿಧುವನಂ ರತಮ್” ಅಮಂ। 3. ಸಂಬಂಧ.  
ಒಟ್ಟುಗೂಡುವುದು, ಕೂಟ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು.  
“ಸಮ್ಬಂಧೇ ಮೆಥುನಂ ರತೇ” ವೇಜಂ।

ಮೆನಾಕ ಮೈನಾಕ (ಪುಂ) ಮೈನಾಕಪರ್ವತ, ಹಿಮವಂತನ  
ಪುತ್ರ, ಮೇನಾದೇವಿಯ ಮಗ. ರೆಕ್ಕೆಗಳ ಬಲದಿಂದ  
ಹಾರಾಡುತ್ತ ಜನರಿಗೆ ತೊಂದರೆ ಕೊಡುತ್ತಿದ್ದ ಪರ್ವತಗಳ  
ರೆಕ್ಕೆಗಳನ್ನು ಇಂದ್ರನು ಕತ್ತರಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಮೈನಾಕ



ಪರ್ವತವು ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಆಶ್ರಯ ಪಡೆದು ರೆಕ್ಕೆ ಗಳನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಿಕೊಂಡು ಇಂದ್ರನಿಂದ ಒದಗಿದ್ದ ಭಯ ದಿಂದ ಪಾರಾಯಿತು. ಇದರಿಂದ ಮೈನಾಕನಿಗೆ ಸಮುದ್ರದ ಸ್ನೇಹವು ಬೆಳೆಯಿತು. "ಅಸುತ ಸಾ ನಾಗವಕ್ಷುಪಮೋಘೈ ಮೈನಾಕ-ಮಮ್ಮೋನಿಧಿಬದ್ಧಸಹ್ಯಮ್ | ಕುಡ್ವೇಪಿ ಪಕ್ಷಚ್ಚಿದಿ ವೃತ್ತಶತ್ವಾವ-ವೇದನಾಂ ಕುಲಿಶಕ್ಷತಾನಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೨೦ |

ಮೈನಿಕ ಮೈನಿಕ (ಪುಂ) ಬೆಸ್ಮರವನು, ಮೀನು ಹಿಡಿಯುವವನು. ಮೀನು ಹಿಡಿದು—ಮೀನ "ಠಕ್" (೪-೪-೩೫) |

ಮೈನದ ಮೈನದ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಅಸುರ. 2. ಒಬ್ಬ ವಾನರ.

ಮೈರೇಯ ಮೈರೇಯ (ನಂ) ಇಕ್ಷುರಸ ಪುಷ್ಪರಸ ಮುಂತಾದವುಗಳಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮದ್ಯ, ಒಂದು ವಿಧ ಅಸವ. ಮಿರಾಯಾ ಭವಮ್ "ಠಕ್" (೪-೨-೯೭) | ನಿಪಾಂ | "ಮೈರೇಯಾತಕೀಪುಷ್ಪಗುಡ್ಧಾನಾದಿಸಂಹಿತಮ್" | "ಅಧಿರಜನಿ ವಧೂಮಿ: ಪೀತಮೈರೇಯರಿಕ್ತಂ ಕನಕಚಪಕಮೇತದ್ರೋಚನಾಲೋಹಿತೇನ" ಮಾ. ೧೧-೫೧ |

ಮೋಕ್ಷ ಮೋಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಪಶು, ಚತುಷ್ಟಪದಪ್ರಾಣಿ. "ಪಶುಸ್ತು ಮಲೂಕೋ ಮೋಕ್ಷ: " ವೇಜಂ | 2. ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ, ಶಿಷ್ಯ. "ಶಾಸ್ತ್ರಸ್ತು ಶಿಷ್ಯೋ ಮೋಕ್ಷ: ಸ್ಯಾತ್" ವೇಜಂ |

ಮೋಕ್ಷ ಮೋಕ್ಷ (ವಿಂ) 1. ಬಿಡುವ, ಬಿಡುಗಡೆಮಾಡುವ. 2. ಸ್ವತಂತ್ರನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವ, ನಿರ್ಬಂಧವನ್ನು ತಪ್ಪಿಸುವ. ಮುಕ್ತ (ಮೋಕ್ಷಣ) "ತು" (೩-೧-೧೩೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಹೀಪ್" (೪-೧-೫) | -ಕೃತಿ-ಕೃತಿ.

ಮೋಕ್ಷ ಮೋಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಅಪವರ್ಗ, ಸಂಸಾರದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ, ಜನ್ಮ ಮತ್ತು ಮರಣಗಳಿಂದ ಪಾರಾಗುವುದು, ಚತುರ್ವಿಧವು ಸಾಧ್ಯವಾಗುತ್ತದೆ. "ಧರ್ಮಾರ್ಥಕಾಮ-ಮೋಕ್ಷಾಣಾಮವತಾರ ಇವಾಜ್ಞವಾನ್" ರಘುಂ ೧೦-೮೪ | "ತದಿತ್ಯನಮಿಸ್ವಾಹಯ ಫಲಂ ಯಜ್ಞತಪ:ಕ್ರಿಯಾ: | ದಾನಕ್ರಿಯಾಃ ವಿವಿಧಾ: ಕ್ರಿಯಂತೇ ಮೋಕ್ಷಕಾಙ್ಕ್ಷಿಮಿ:" ಗೀತಾ ೧೭-೨೫ | 2. ಸ್ವತಂತ್ರ, ಬಂಧನದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ. "ಲಂಘಮೋಕ್ಷಾಸ್ತ-ದಾದೇಶಾತ್ ಯಥೇಷ್ಠಗತಯೋಽಭವನ್" ರಘುಂ ೧೭-೨೦ | 3. ಬಿಡುಗಡೆ, ಬಿಟ್ಟುಕೊಡುವುದು. "ತಾಮ್ಯೋ ಮೋಕ್ಷಸ್ತವ ಯದಿ ಸಖೇ ಧರ್ಮಲಂಘಸ್ಯ ನ ಸ್ಯಾತ್" ಮೇವಂ ೧-೬೧ | 4. ಮೇರು ಪರ್ವತ, ದೇವತೆಗಳ ವಿಹಾರಸ್ಥಾನ. 5. ಮರಣ. "ಮೋಕ್ಷಸ್ತು ಮೃತ್ಯೋ ಮಹದ್ಗಿರೋ" ವೇಜಂ | 6. ಮೋಕ್ಷಮಾರ್ಗ. 7. ಬಾಣಗಳನ್ನು ಬಿಡುವುದು, ಬಾಣಗಳ ಪ್ರಯೋಗ. 8. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳುವುದು, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಉದುರುವುದು. "ಮದೋ-ಢತಾ: ಪ್ರತಿನಿಲಂ ವಿವೇಕವನಸ್ಯಲಿರ್ಮರಪತ್ನಮೋಕ್ಷಾ:" ಕುಮಾಂ

೩-೩೧ | 9. ಮೋಚನ, ಬಿಡಿಸುವುದು. "ಮೋಕ್ಷೋಪವಗೌ ಮೃತ್ಯೌ ಚ ಮೋಚನೇ ಮುಷ್ಕಕದ್ರುಮೇ" ನಾನಾರ್ಯಂ |

ಮೋಕ್ಷ ಮೋಕ್ಷ (ವಿಂ) ಬಿಡಿಸುವವನು, ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿಸುವವನು. ಮೋಕ್ಷ "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | "ಅಸಂದಿತಾನಾಂ ಸಂದಾತಾ ಸಂದಿತಾನಾಂ ಚ ಮೋಕ್ಷಕ:" ಮನುಂ ೮-೩೪೨ |

ಮೋಕ್ಷ ಮೋಕ್ಷ (ನಂ) 1. ಬಿಡಿಸುವುದು, ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿಸುವುದು, ನಿರ್ಬಂಧ ತಪ್ಪಿಸುವುದು. 2. ಎಸೆಯುವುದು. 3. ಬಾಣವನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸುವುದು, ಬಾಣವನ್ನು ಬಿಡುವುದು. ಮೋಕ್ಷ (ಅಸನೇ) ಭಾವ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |

ಮೋಕ್ಷಾರ್ಥಿನ್ ಮೋಕ್ಷಾರ್ಥಿನ್ (ವಿಂ) ಮೋಕ್ಷವನ್ನು ಆಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. ಮೋಕ್ಷಾರ್ಥಯತೇ—ಅರ್ಥ (ಉಪಾಯಾರ್ಥಮ್) + ಣಿಕ್ "ಣಿತಿ:" (೩-೧-೧೩೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಹೀಪ್" (೪-೧-೫) | -ಅರ್ಥಿನ್-ಅರ್ಥಿನ್.

ಮೋಚ ಮೋಚ (ವಿಂ) 1. ಮೃತ್ಯುವಾದ, ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ. ಮುಹಂತ್ಯಸ್ಮಿನ್—ಮುಹ (ವಿಚಿತ್ತೇ) "ಛಕ್" (೩-೩-೧೨೧) | "ತತ್ರ ನಾಹಮನುಮಂತುಮತ್ಸಹೇ ಮೋಚವೃತ್ತಿ ಕಲಮಸ್ಯ ಚೇಷ್ಟಿತಮ್" ರಘುಂ ೧೧-೩೯ | 2. ದೀನ. 3. ಹೀನವಾದ, ಇಲ್ಲದಿರುವ. "ಸಜ್ಜನ ಉಹಿ ವಿಶ್ವಾ ಶೋಭಾಯೆ ಭವತಿ ದುರ್ಜನೇ ಹೀನಾ" | (ಪುಂ) 4. ಬೇಲಿ. "ಮೋಚೋ ದೀನೇ ನಿಷ್ಕಲೇ ಚ ಮೋಚಾ ಸ್ಯಾತ್ಪಾಟಲಾತರೋ" ಹೇಮಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಚಾ -ಚಾ. 5. ಹಸುರು ಪಾದರಿ ಗಿಡ.

ಮೋಚಪುಷ್ಪಾ ಮೋಚಪುಷ್ಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಜಿ, ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಹಡೆಯದ ಹೆಂಗಸು.

ಮೋಚ ಮೋಚ (ಪುಂ) 1. ಮುಗ್ಧಮಾರ್ಗ. ಮುಚ್ಚಿತಿ ತ್ವಚಮ್—ಮುಚ್ಚ (ಮೋಕ್ಷಣ) "ಚಕ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಪನಸಾಂ-ಲಿಲಿಕ್ತುಚಾನ್ ಮೋಚಾನ್ ಸರ್ಜುರಾನಮ್ಲವೇತಸಾನ್" ಮಾಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಚಾ -ಚಾ. 2. ತಾಲ್ಮಲಿ ವೃಕ್ಷ. 3. ಬಾಳೆಗಿಡ. "ಮೋಚ: ಶೋಭಾಜ್ಞನೇ ಪುಷ್ಪಿ ಮೋಚಾ ಶಾಲ್ಮಲಿರಮ್ಭಯೋ:" ಮೇದಿಂ |

ಮೋಚಕ ಮೋಚಕ (ಪುಂ) 1. ಮುಗ್ಧಮಾರ್ಗ. 2. ಬಾಳೆಗಿಡ. ಮುಚ್ಚಿತಿ ತ್ವಚಮ್—ಮುಚ್ಚ (ಮೋಕ್ಷಣ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | 3. ಅಪವರ್ಗ, ಮೋಕ್ಷ, ಸಂಸಾರದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಹೊಂದುವ ಸಾಧನ. ಮೋಚಯತಿ ಸಂಸಾರಾತ್—ಮುಚ್ಚ+ಣಿಕ್ "ಫುಲ್" | 4. ಯತಿ, ವಿರಕ್ತ, ವೈರಾಗ್ಯ ಹೊಂದಿದವನು. ಮುಚ್ಚಿತಿ ವಿಷಯಾನ್ | 5. ಮೋಕ್ಷಮಾರ್ಗ. "ಮೋಚಕೋ ಮೋಕ್ಷಕದಲಿ ಶಿಷ್ಯದ್ವಮವಿರಾಗಿಃ" ಹೇಮಂ | (ವಿಂ) 6. ಬಿಡಿಸುವವನು, ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿಸುವವನು, ನಿರ್ಬಂಧ



ದಿಂದ ಪಾರುವಾಡುವವನು. ಮುಕ್ತ + ಣಿಕ್ "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಮೊಚನ ಮೋಚನ (ನಂ) 1. ಬಿಡಿಸುವುದು, ನಿರ್ಬಂಧದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿಸುವುದು. ಮುಕ್ತ (ಮೋಕ್ಷಣ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಮುಕ್ತಿ, ಮೋಕ್ಷ, ಅಪವರ್ಗ. ಮುಕ್ತ "ಲ್ಯುಟ್"। 3. ಋಣವಿಮೋಚನೆ. ಸಾಲದ ತೀರ್ಪು. 4. ಬಿಡುಗಡೆಹೊಂದುವುದು. (ವಿಂ) 5. ಸಾಲವನ್ನು ತೀರಿಸುವ, ಋಣವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸಿ ಕೊಡುವ. ಮುಕ್ತ (ಮೋಕ್ಷಣ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಫಿಪ್" (೪-೧-೪)। -ನಾ -ನಾ. 6. ಬಿಡಿಸುವ, ನಿರ್ಬಂಧ ತಪ್ಪಿಸುವ.

ಮೊಚಯತ್ ಮೋಚಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಬಿಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ನಿರ್ಬಂಧ ತಪ್ಪಿಸುತ್ತಿರುವ. ಮುಕ್ತ (ಮೋಕ್ಷಣ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। 2. ಋಣವಿಮುಕ್ತನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸಾಲವನ್ನು ತೀರಿಸಿಕೊಡುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಫಿಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

ಮೊಚಯಿತ್ ಮೋಚಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಬಿಡಿಸುವ, ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿಸುವ, ನಿರ್ಬಂಧ ತಪ್ಪಿಸುವ. ಮುಕ್ತ (ಮೋಕ್ಷಣ) + ಣಿಕ್ "ತುಕ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಋಣಬಾಧೆಯನ್ನು ತಪ್ಪಿಸುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಫಿಪ್" (೪-೧-೫)। -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

ಮೊಚಾಡ ಮೋಚಾಟಿ (ಪುಂ) 1. ಕರಿ ಜೀರಿಗೆ. 2. ಬಾಳೆ ದಿಂಡು. 3. ಗಂಧದ ಮರ. "ಮೊಚಾಡ: ಕೃಷ್ಣಜೀರೆ ಚ ರಮಾಸ್ಥಿನ್ ಮಲಯೋಕ್ಷುಕೇ" ಮೇದಿಂ।

ಮೊಟಕ ಮೋಟಕ (ಪುಂ) ಶ್ರಾದ್ಧದಲ್ಲಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಮೂರು ದರ್ಭೆಗಳಿಂದ ಮಾಡಿದ ಭುಗ್ಗೆ, ಎರಡಾಗಿ ಮಾಡಿ ಸಿದ ಕುಶತ್ರಯ. ಮುಟ (ಮರ್ದನೆ) "ಫುಲ್" (೩-೩-೧೧೫)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"।

ಮೊಟನ ಮೋಟನ (ನಂ) 1. ಮರ್ದನ, ಜಜ್ಜುವುದು, ನಜ್ಜುಗುಜ್ಜುವುದು. ಮುಟ (ಸಂಚೂರ್ಣನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। (ಪುಂ) 2. ವಾಯು, ಗಾಳಿ.

ಮೊಡಾಯಿತ ಮೋಡಾಯಿತ (ನಂ) ಪ್ರಿಯನ ವಿರಹಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸದಾ ಅವನ ಚಿಂತೆಯಲ್ಲೇ ಇರುವ ಪ್ರೇಮಸಿಯು ಅವನ ವಿಷಯವಾದ ಮಾತುಗಳನ್ನು ಕೇಳಿ ಕಿವಿಯನ್ನು ಕೆರೆಯುವುದು ಆಕಳಿಸುವುದು ಮೈಮುರಿಯುವುದು ಮೊದಲಾಗಿ ಮಾಡುವ ಚೇಷ್ಟೆ. "ತದ್ಭಾವಭಾವಿತೇ ಚಿತ್ತೇ ಚಲ್ಲಭಸ್ಯ ಕಥಾದಿಭು। ಮೊಡಾಯಿತಮಿತಿ ಪ್ರಾಹು: ಕರ್ಣ-ಕುಣ್ಡಯನಾದಿಕಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೦೨।

ಮೊದ ಮೋದ (ಪುಂ) ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. ಮುಡ (ಹರ್ಷ) "ಫುಲ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಯತ್ರಾನಂದಾಶ್ರ ಮೋದಾಶ್ರ ಯತ್ರ ಪುಷ್ಪಾಶ್ರ ಸಂಪದ:। ವೆರಾಜಾನಾಮ ತೇ ಲೋಕಾಸ್ತೇಜಸಾ: ಸಂತು ತೇ ಶಿವಾ:" ಉಂ ರಾಂ ೨-೧೨।

ಮೊದಕ ಮೋದಕ (ಪುಂ) 1. ಕಡುಬು, ಇಡ್ಲಿ. ಮೊದಯತಿ - ಮುಡ (ಹರ್ಷ) + ಣಿಕ್ "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಕಿಮೇತೇನ ಖಂಡೇನ ಮೊದಕಾ: ಕ್ರಿಯಂತೇ?" ರತ್ನಾಂ ೧। (ಪುಂ) 2. ಶೂದ್ರಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಂದ ಜನಿಸಿದ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯನು. (ವಿಂ) 3. ಹರ್ಷವುಂಟುಮಾಡುವ, ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವ.

ಮೊದನ ಮೋದನ (ನಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವುದು, ಹರ್ಷವುಂಟುಮಾಡುವುದು. ಮುಡ (ಹರ್ಷ) + ಣಿಕ್ ಭಾವ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. 3. ಸಂತೋಷಪಡುವುದು. ಮುಡ ಭಾವ "ಲ್ಯುಟ್"। 4. ಜೇನುಮೇಣ. (ವಿಂ) 5. ಹರ್ಷವುಂಟುಮಾಡುವ, ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವ. ಮುಡ+ಣಿಕ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)।

ಮೊದನೀಯ ಮೋದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡಬೇಕಾದ. 2. ಸಂತೋಷಪಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಮುಡ (ಹರ್ಷ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೧೫)। 3. ಸಂತೋಷಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಸಂತೋಷಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 5. ಸಂತೋಷಪಡಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. ಮುಡ + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೧೫)। ಮುಡ "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೧೫)। ಮೊದಿತವ್ಯ: ಮೋದಿತವ್ಯ: ಮುಡ+ಣಿಕ್ "ತವ್ಯ:"। ಮೊದಯಿತವ್ಯ: ಮೋದಯಿತವ್ಯ:.

ಮೊದಮಾನ ಮೋದಮಾನ (ವಿಂ) ಸಂತೋಷಪಡುತ್ತಿರುವ. ಮುಡ (ಹರ್ಷ) "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)।

ಮೊದಯತ್ ಮೋದಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಹರ್ಷವುಂಟುಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಸಂತೋಷಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಮುಡ (ಹರ್ಷ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। 2. ಬೆರಸುತ್ತಿರುವ, ಮಿಶ್ರಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಮುಡ (ಸಂಸರ್ಗ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್"। "ಫಿಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ. "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)। -ಯಮಾನ: -ಯಮಾನ:.

ಮೊದಯಿತ್ ಮೋದಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವ, ಹರ್ಷವುಂಟುಮಾಡುವ. ಮುಡ (ಹರ್ಷ) + ಣಿಕ್ "ತುಕ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಬೆರಕೆಮಾಡಿಸುವ, ಮಿಶ್ರಮಾಡಿಸುವ. ಮುಡ (ಸಂಸರ್ಗ) + ಣಿಕ್ "ತುಕ್"। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಫಿಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

ಮೊದಾ ಮೋದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಜಮಾನ, ಓಮ. ಮೊದಯತಿ ಗಂಧೇನ-ಮುಡ (ಹರ್ಷ) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪)।



ಮೊವಿತ ನೋದಿತ (ವಿಂ) ಸಂತೋಷಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಹರ್ಷವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಮುದ (ಹರ್ಷ) + ಗಿನ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

ಮೊದಿತ ನೋದಿತ (ವಿಂ) ಸಂತೋಷಪಡುವ. ಮುದ (ಹರ್ಷ) "ತು" (3-1-133)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಕೀಪ್" (4-1-6)। -ಶ್ರೀ-ಶ್ರೀ.

ಮೊದಿನ್ ನೋದಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಹರ್ಷವುಂಟುಮಾಡುವ, ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವ. ಮುದ (ಹರ್ಷ) + ಗಿನ್ "ಗಿನ್ತಿ:" (3-1-134)। 2. ಮಿಶ್ರಮಾಡುವ, ಬೆರಸುವ. ಮುದ (ಸಂಸರ್ಗ) + ಗಿನ್ "ಗಿನ್ತಿ:"। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಕೀಪ್" (4-1-4)। ಮೊದಿನೋದಿನ್.

ಮೊದಿನೋದಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಜವಾನ, ಓಮ. ಮೊದಯತಿ—ಮುದ (ಹರ್ಷ) + ಗಿನ್ "ಗಿನ್ತಿ:" (3-1-134)। 2. ಕಸೂರಿ. 3. ಮದ್ಯ. 4. ಒಂದುಬಗೆ ಕಾಡುಮಲ್ಲಿಗೆ.

ಮೊರಕ ನೋರಕ (ನಂ) ಕರುಹಾಕಿದ ಏಳು ದಿನಗಳ ನಂತರದ ಹಸುವಿನ ಹಾಲು. "ಆಸಪ್ತಾಹಾತು ಪಿಯುಷಂ ತತೋರತಮೋರಕೇ" ವೇಜಂ।

ಮೊರಟ ನೋರಟ (ನಂ) 1. ಇಕ್ಷುಮೂಲ, ಕಬ್ಬಿನ ಬೇರು. ಮುರ (ಸಂವೇಶನ) "ಅನ್" (3-4-61)। 2. ತಕ್ಕ, ಮಜ್ಜಿಗೆ. 3. ಅಂಕೂಲ ಹೂವು. 4. ಕರುಹಾಕಿದ ಏಳು ದಿನಗಳನಂತರದ ಹಸುವಿನ ಹಾಲು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಠಾ-ಠಾ. 5. ಗರಿಕೆಹುಲ್ಲು. 6. ಕುರಟೆಗೆ ಗಿಡ. "ದ್ವಯಾಂ ಸ್ತ್ರೀಕ್ಷುಮೂಲೇ ಕಲೀ ಗೋರಸೇಷಿ ಚ ಮೊರಟಮ್" ವೇಜಂ। "ಮೊರಟಂ ತು ಮವೇದಿಕ್ಷುಮೂಲಾಕ್ಷೋತಸುನಯೋಃ। ಸಪ್ತರಾತ್ರಾತ್ಪರಕ್ಷೀರೇ ಮೃವಿಕಾಯಾಂ ತು ಮೊರಟಾ" ಮೇದಿಂ।

ಮೊಷ ನೋಷ (ಪುಂ) 1. ಕದಿಯುವುದು, ಕಳ್ಳತನ, ಚೌಕು. ಮುಷ (ಸ್ತೇಯ) "ಘ್" (3-3-14)। 2. ಅಪಹಾರ, ಸೂರೆ. "ನ ಪುಷ್ಯಮೊಷಮಹಂತ್ಯುಜ್ವಾನಲತಾ" ಮುಚ್ಚಂ 1।

ಮೊಷಕ ನೋಷಕ (ಪುಂ) ಚೋರ, ತಸ್ಮರ, ಕಳ್ಳ. ಮುಷಾತಿ —ಮುಷ (ಸ್ತೇಯ) "ಘ್" (3-1-133)। "ದಸ್ಯುತಸ್ಕರ-ಮೊಷಕಾಃ" ಅಮಂ।

ಮೊಷಣ ನೋಷಣ (ನಂ) 1. ಕದಿಯುವುದು. 2. ಕಳ್ಳತನ, ಕಳ್ಳವು. ಮುಷ (ಸ್ತೇಯ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। (ವಿಂ) 3. ಕದಿಯುವವನು, ಅಪಹರಿಸುವವನು. ಮುಷ "ಲ್ಯು:" (3-1-134)।

ಮೊಷಣೀಯ ನೋಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಕದಿಯಲ್ಪಡುವ. 2. ಕದಿಯಬೇಕಾದ. 3. ಕದಿಯಲು ಶಕ್ತವಾದ. 4. ಕದಿಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಮುಷ (ಸ್ತೇಯ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-134)।

(3-1-134)। "ತವ್ಯ:" (3-1-134)। ಮೊವಿತವ್ಯಮ್ ನೋಷಿತವ್ಯಮ್.

ಮೊವಿತು ನೋಷಿತು (ವಿಂ) ಕದಿಯುವವನು, ಕಳ್ಳತನ ಮಾಡುವವನು. ಮುಷ (ಸ್ತೇಯ) "ತು" (3-2-134)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಕೀಪ್" (4-1-4)। -ಶ್ರೀ-ಶ್ರೀ.

ಮೊಹ ನೋಹ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಜ್ಞೆ ತಪ್ಪುವಿಕೆ, ಜ್ಞಾನ ಹೋಗುವಿಕೆ. ಮುಹ (ವೈಚಿತ್ಯ) "ಘ್" (3-3-14)। "ತೀವ್ರಾಭಿ-ವಿಜ್ಞಾನಪ್ರಮೇಷಣ ವೃತ್ತಿ ಮೋಹನ ಸಂಸ್ತಮಭಯತೇಂದ್ರಿಯಾಗಾಮ್" ಕುಮಾಂ 3-93। ವಾತಾದಿ ದೋಷಗಳಿಂದ ಪ್ರಜ್ಞೆಯು ಹರಿಯುವ ನಾಡಿಗಳಲ್ಲಿ ತಮಸ್ಸು (ತಮೋಗುಣ) ಸೇರುವುದು. ಇದು ಪ್ರಾಣಿಯ ಸುಖದುಃಖಾದಿ ಅನುಭವವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು. ಸುಖದುಃಖಾನುಭವದ ನಾಶದಿಂದ ಮನುಷ್ಯನು ಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದೆ ನೆಲಕ್ಕೆ ಬೀಳುವನು. ಇದೇ ಮೋಹ. "ಸಂಜ್ಞಾವಹಾಸು ನಾಡಿಷು ಪಿಹಿತಾಸ್ವನಿಲಾದಿಮಿಃ। ತಮೋಽಭ್ಯುಪೇತಿ ಸಹಸಾ ಸುಖದುಃಖವ್ಯಪೋಹಕತ್|| ಸುಖದುಃಖ-ವ್ಯಪೋಹಾಚ್ಚ ನರಃ ಪತತಿ ಕಾಠವತ್। ಮೋಹೋ ಮುಚ್ಛೇತಿ ತಾಂ ಪ್ರಾಹುಃ" ಸುಶ್ರುತಂ 1-21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40, 41, 42, 43, 44, 45, 46, 47, 48, 49, 50, 51, 52, 53, 54, 55, 56, 57, 58, 59, 60, 61, 62, 63, 64, 65, 66, 67, 68, 69, 70, 71, 72, 73, 74, 75, 76, 77, 78, 79, 80, 81, 82, 83, 84, 85, 86, 87, 88, 89, 90, 91, 92, 93, 94, 95, 96, 97, 98, 99, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 106, 107, 108, 109, 110, 111, 112, 113, 114, 115, 116, 117, 118, 119, 120, 121, 122, 123, 124, 125, 126, 127, 128, 129, 130, 131, 132, 133, 134, 135, 136, 137, 138, 139, 140, 141, 142, 143, 144, 145, 146, 147, 148, 149, 150, 151, 152, 153, 154, 155, 156, 157, 158, 159, 160, 161, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 168, 169, 170, 171, 172, 173, 174, 175, 176, 177, 178, 179, 180, 181, 182, 183, 184, 185, 186, 187, 188, 189, 190, 191, 192, 193, 194, 195, 196, 197, 198, 199, 200, 201, 202, 203, 204, 205, 206, 207, 208, 209, 210, 211, 212, 213, 214, 215, 216, 217, 218, 219, 220, 221, 222, 223, 224, 225, 226, 227, 228, 229, 230, 231, 232, 233, 234, 235, 236, 237, 238, 239, 240, 241, 242, 243, 244, 245, 246, 247, 248, 249, 250, 251, 252, 253, 254, 255, 256, 257, 258, 259, 260, 261, 262, 263, 264, 265, 266, 267, 268, 269, 270, 271, 272, 273, 274, 275, 276, 277, 278, 279, 280, 281, 282, 283, 284, 285, 286, 287, 288, 289, 290, 291, 292, 293, 294, 295, 296, 297, 298, 299, 300, 301, 302, 303, 304, 305, 306, 307, 308, 309, 310, 311, 312, 313, 314, 315, 316, 317, 318, 319, 320, 321, 322, 323, 324, 325, 326, 327, 328, 329, 330, 331, 332, 333, 334, 335, 336, 337, 338, 339, 340, 341, 342, 343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 350, 351, 352, 353, 354, 355, 356, 357, 358, 359, 360, 361, 362, 363, 364, 365, 366, 367, 368, 369, 370, 371, 372, 373, 374, 375, 376, 377, 378, 379, 380, 381, 382, 383, 384, 385, 386, 387, 388, 389, 390, 391, 392, 393, 394, 395, 396, 397, 398, 399, 400, 401, 402, 403, 404, 405, 406, 407, 408, 409, 410, 411, 412, 413, 414, 415, 416, 417, 418, 419, 420, 421, 422, 423, 424, 425, 426, 427, 428, 429, 430, 431, 432, 433, 434, 435, 436, 437, 438, 439, 440, 441, 442, 443, 444, 445, 446, 447, 448, 449, 450, 451, 452, 453, 454, 455, 456, 457, 458, 459, 460, 461, 462, 463, 464, 465, 466, 467, 468, 469, 470, 471, 472, 473, 474, 475, 476, 477, 478, 479, 480, 481, 482, 483, 484, 485, 486, 487, 488, 489, 490, 491, 492, 493, 494, 495, 496, 497, 498, 499, 500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508, 509, 510, 511, 512, 513, 514, 515, 516, 517, 518, 519, 520, 521, 522, 523, 524, 525, 526, 527, 528, 529, 530, 531, 532, 533, 534, 535, 536, 537, 538, 539, 540, 541, 542, 543, 544, 545, 546, 547, 548, 549, 550, 551, 552, 553, 554, 555, 556, 557, 558, 559, 560, 561, 562, 563, 564, 565, 566, 567, 568, 569, 570, 571, 572, 573, 574, 575, 576, 577, 578, 579, 580, 581, 582, 583, 584, 585, 586, 587, 588, 589, 590, 591, 592, 593, 594, 595, 596, 597, 598, 599, 600, 601, 602, 603, 604, 605, 606, 607, 608, 609, 610, 611, 612, 613, 614, 615, 616, 617, 618, 619, 620, 621, 622, 623, 624, 625, 626, 627, 628, 629, 630, 631, 632, 633, 634, 635, 636, 637, 638, 639, 640, 641, 642, 643, 644, 645, 646, 647, 648, 649, 650, 651, 652, 653, 654, 655, 656, 657, 658, 659, 660, 661, 662, 663, 664, 665, 666, 667, 668, 669, 670, 671, 672, 673, 674, 675, 676, 677, 678, 679, 680, 681, 682, 683, 684, 685, 686, 687, 688, 689, 690, 691, 692, 693, 694, 695, 696, 697, 698, 699, 700, 701, 702, 703, 704, 705, 706, 707, 708, 709, 710, 711, 712, 713, 714, 715, 716, 717, 718, 719, 720, 721, 722, 723, 724, 725, 726, 727, 728, 729, 730, 731, 732, 733, 734, 735, 736, 737, 738, 739, 740, 741, 742, 743, 744, 745, 746, 747, 748, 749, 750, 751, 752, 753, 754, 755, 756, 757, 758, 759, 760, 761, 762, 763, 764, 765, 766, 767, 768, 769, 770, 771, 772, 773, 774, 775, 776, 777, 778, 779, 780, 781, 782, 783, 784, 785, 786, 787, 788, 789, 790, 791, 792, 793, 794, 795, 796, 797, 798, 799, 800, 801, 802, 803, 804, 805, 806, 807, 808, 809, 810, 811, 812, 813, 814, 815, 816, 817, 818, 819, 820, 821, 822, 823, 824, 825, 826, 827, 828, 829, 830, 831, 832, 833, 834, 835, 836, 837, 838, 839, 840, 841, 842, 843, 844, 845, 846, 847, 848, 849, 850, 851, 852, 853, 854, 855, 856, 857, 858, 859, 860, 861, 862, 863, 864, 865, 866, 867, 868, 869, 870, 871, 872, 873, 874, 875, 876, 877, 878, 879, 880, 881, 882, 883, 884, 885, 886, 887, 888, 889, 890, 891, 892, 893, 894, 895, 896, 897, 898, 899, 900, 901, 902, 903, 904, 905, 906, 907, 908, 909, 910, 911, 912, 913, 914, 915, 916, 917, 918, 919, 920, 921, 922, 923, 924, 925, 926, 927, 928, 929, 930, 931, 932, 933, 934, 935, 936, 937, 938, 939, 940, 941, 942, 943, 944, 945, 946, 947, 948, 949, 950, 951, 952, 953, 954, 955, 956, 957, 958, 959, 960, 961, 962, 963, 964, 965, 966, 967, 968, 969, 970, 971, 972, 973, 974, 975, 976, 977, 978, 979, 980, 981, 982, 983, 984, 985, 986, 987, 988, 989, 990, 991, 992, 993, 994, 995, 996, 997, 998, 999, 1000.

ಮೊಹಕಲಿಕಾ ನೋಹಕಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. "ಪ್ರಸನ್ನಾ ಮದಿರಾ ಸುರಾ। ಮದನಾ ಮೊಹಕಲಿಕಾ ಮದಿಷ್ಟಾ ಕಾಚಮಾಲಿಕಾ" ವೇಜಂ।

ಮೊಹಕಲಿಲ ನೋಹಕಲಿಲ (ನಂ) ಮೋಹರೂಪವಾದ ಹಾಲುಷ್ಯ. "ಯದಾ ತೇ ಮೊಹಕಲಿಲಂ ಬುದ್ಧಿವ್ಯತ್ತಿರರ್ಥಿತಿ" ಗೀತಾ 2-42।

ಮೊಹನ ನೋಹನ (ಪುಂ) 1. ಮನ್ಮಥನ ಪಂಚಬಾಣಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. ಮೊಹಯತಿ—ಮುಹ (ವೈಚಿತ್ಯ) + ಗಿನ್ "ಲ್ಯು:" (3-1-134)। "ಅಸ್ಯ ಬಾಣಾ ಮೊಹನೋಮಾದನೌ ತಥಾ।



ಸಂತಾಪನ: ಶೋಷಣಾಶ್ಚ ನಿಶ್ಚೇಷಾಕರಣೋಽಪಿ ಚ " ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |  
2. ದತ್ತೂರಿ ಗಿಡ. (ನಂ) 3. ಸುರತ, ಸಂಭೋಗ.  
"ನವಿಮೋ ಮಾನಸಂ ಮೋಹನಂ ಪರಸ್ಪರಮನುಭವತ:" ಮಾಲತೀಂ ೪ |  
4. ದಿಗ್ಭ್ರಮೆಯುಂಟುಮಾಡುವುದು, ತಬ್ಬಿಬ್ಬುಮಾಡು  
ವುದು. 5. ಬುದ್ಧಿಗೆ ಮಂಕು ಹಿಡಿಸುವುದು. 6. ಸತೀತ್ವ  
ವನ್ನು ನಾಶಗೊಳಿಸುವುದು, ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು.  
7. ಮೂರ್ಛೆ. (ವಿಂ) 8. ಮೋಹಗೊಳಿಸುವ. 9. ವಶ  
ಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ. " ಮಲಾನಸ್ಯ ಜೀವಕುಸುಮಸ್ಯ ವಿಕಾಸನಾನಿ  
ಸಂತರ್ಪಣಾನಿ ಸಕಲೇಂದ್ರಿಯಮೋಹನಾನಿ " ಮಾಲತೀಂ ೬-೮ |  
10. ಮರುಳುವಾಡುವ, ಭ್ರಮೆಯುಂಟುಮಾಡುವ.  
11. ಮಂಕುಹಿಡಿಸುವ. 12. ಜ್ಞಾನ ತಪ್ಪಿಸುವ.

ಮೊಹನಾಸ್ತ್ರ ಮೋಹನಾಸ್ತ್ರ (ನಂ) ಪ್ರಜ್ಞೆ ತಪ್ಪಿಸುವ ಅಸ್ತ್ರ.

ಮೊಹನೀಯ ಮೋಹನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಮೋಹಗೊಳಿಸ

ಲ್ಪಡುವ, ಮರುಳುಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಮುಹ (ವೈಚಿತ್ಯ)

" ಅನೀಯರ್ " (೩-೧-೧೬) | 2. ಮೋಹಗೊಳಿಸಬೇಕಾದ.

3. ಮೋಹಗೊಳಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 4. (ಬುದ್ಧಿಗೆ) ಮಂಕು

ಹಿಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಮಂಕು ಹಿಡಿಸಬೇಕಾದ. 6. ಮಂಕು

ಹಿಡಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 7. ಪ್ರಜ್ಞೆ ತಪ್ಪಿಸಲ್ಪಡುವ.

8. ಪ್ರಜ್ಞೆ ತಪ್ಪಿಸಬೇಕಾದ. 9. ಪ್ರಜ್ಞೆ ತಪ್ಪಿಸಲು ಅರ್ಹ

ನಾದ. " ತತ್ತ್ವ: " (೩-೧-೧೬) | ಮೊಹಿತವ್ಯ: ಮೋಹಿತವ್ಯ:

ಮೊಹಯತ್ ಮೋಹಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಮೋಹವುಂಟು

ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಮಂಕುಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಭ್ರಾಂತಿ

ಯುಂಟುಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 4. ಪ್ರಜ್ಞೆ ತಪ್ಪಿಸುತ್ತಿರುವ.

ಮುಹ (ವೈಚಿತ್ಯ) + ಣಿಚ್ " ಶತ್ " (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ

" ಡೀಪ್ " (೪-೧-೬) | -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ. " ಶಾನಿಚ್ "

(೩-೨-೧೨೪) -ಯಮಾನ: -ಯಮಾನ:

ಮೊಹಯಿತ್ ಮೋಹಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಮೋಹಗೊಳಿಸುವ.

2. ಮಂಕುಹಿಡಿಸುವ. 3. ಜ್ಞಾನತಪ್ಪಿಸುವ. 4. ಭ್ರಾಂತಿ

ಯುಂಟುಮಾಡುವ. ಮುಹ (ವೈಚಿತ್ಯ) + ಣಿಚ್ " ತುಚ್ "

(೩-೧-೧೩೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ " ಡೀಪ್ " (೪-೧-೫) | -ಯಿತ್ರಿ

-ಯಿತ್ರಿ.

ಮೊಹರಾತ್ರಿ ಮೋಹರಾತ್ರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೈನಂದಿನ ಪ್ರಳಯ,

ಚತುರ್ಮುಖಬ್ರಹ್ಮನ ಪ್ರತಿದಿನದ (ಹಗಲಿನ) ಕೊನೆ

ಯಲ್ಲಾಗುವ ಅಪಾಂತರಪ್ರಳಯ, ಚತುರ್ಮುಖನ

ಐವತ್ತು ವರ್ಷಗಳು ಕಳೆದು ಉಂಟಾಗುವ ಪ್ರತಿದಿನದ

ಕೊನೆಯಲ್ಲಾಗುವ ಮೋಹರಾತ್ರಿ. ಉಳಿದ ದಿನಗಳ

ಕೊನೆಯಲ್ಲಾಗುವ ಪ್ರಳಯವು ಕಾಲರಾತ್ರಿ. " ಏವಂ

ಪಂಚಾಶದಶೇ ಚ ಗತೇ ತು ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ನೃಪ | ದೈನಂದಿನಸ್ತು ಪ್ರಲಯ

ವೇದೇಶು ಪರಿಕೀರ್ತಿಸಿತು | ಮೊಹರಾತ್ರಿಶ್ಚ ಸಾ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ವೇದವಿಧಿ:

ಪುರಾತನ: " | ಈ ಪ್ರಳಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕಕ್ಕೆ

ಕಳೆಗಿರುವ ಎಲ್ಲಾ ಲೋಕಗಳೂ ನಷ್ಟವಾಗಿ ಆದಿತ್ಯರು

ವಸುಗಳು ರುದ್ರರು ಎಲ್ಲಾ ಋಷಿಗಳು ಚಂದ್ರ ಸೂರ್ಯ

ಮತ್ತು ದಿಕ್ಷಾಲಕರು ಮನುಗಳು ಇಂದ್ರರು ರಾಕ್ಷಸರು

ಮತ್ತು ಸಕಲ ಮಾನವರೂ ನಾಶಹೊಂದಿ ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕ

ವನ್ನು ಸೇರುವರು. " ತತ್ರ ಸರ್ವೇ ಪ್ರಣವಾಶ್ಚ ಚಂದ್ರಾಕೀದಿ-

ದಿಗಿಶ್ವರಾ: | ಆದಿತಯಾ ವಸವೋ ರುದ್ರಾ: ಮನ್ವಿನ್ದ್ರಾ ಮಾನವಾ-

ದಯ: | ಋಷಯೋ ಮುನಯಶ್ಚೈವ ಗಂಧರ್ವಾ ರಾಕ್ಷಸಾದಯ: | ನಾಡೀ

ಜಹ್ನೋ ಬಕಶ್ಚೈವ ಸರ್ವೇ ನಷ್ಟಾಶ್ಚ ತತ್ರ ವ: | ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕಾದಯ:

ಸರ್ವೇ ಲೋಕಾ ನಾಗಾಲಯಾಸ್ತಥಾ | ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕಂ ಯು: ಸರ್ವೇ ಬ್ರಹ್ಮ-

ಲೋಕಾದಯಸ್ತಥಾ " | ಈ ಪ್ರಳಯಕಾಲ ಕಳೆದನಂತರ

ಚತುರ್ಮುಖನು ಪುನಃ ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಕಾರ್ಯವನ್ನು

ಆರಂಭಿಸುವನು. " ಗತೇ ದೈನಂದಿನೇ ಬ್ರಹ್ಮಾ ಲೋಕಾಶ್ಚ ಸಸೃಜೇ

ಪುನ: " ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ |

ಮೊಹಶಾಸ್ತ್ರ ಮೋಹಶಾಸ್ತ್ರ (ನಂ) ಮೋಹವನ್ನುಂಟು

ಮಾಡುವ ಶಾಸ್ತ್ರ, ಅವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ

ಶಾಸ್ತ್ರ.

ಮೊಹಿತ ಮೋಹಿತ (ವಿಂ) 1. ಮೋಹವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

2. ಮಂಕುಹಿಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಜ್ಞಾನತಪ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

4. ಭ್ರಾಂತಿಯುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಮುಹ (ವೈಚಿತ್ಯ) + ಣಿಚ್

" ಕ: " (೩-೨-೧೦೨) |

ಮೊಹಿನ್ ಮೋಹಿನ್ (ವಿಂ) " ಮೊಹಯತ್ " ಪದದ ಅರ್ಥ.

ಮುಹ (ವೈಚಿತ್ಯ) + ಣಿಚ್ " ಣಿನಿ: " (೩-೧-೧೩೪) |

ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ " ಡೀಪ್ " (೪-೧-೫) | ಮೊಹಿನಿ ಮೋಹಿನೀ.

ಮೊಹಿನಿ ಮೋಹಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಮುದ್ರಮಥನದ

ನಂತರ ರಾಕ್ಷಸರನ್ನು ವಂಚಿಸಿ ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಅಮೃತವನ್ನು

ಹಂಚಲು ಮಹಾವಿಷ್ಣುವು ತಾಳಿದ ಒಂದು ಅವತಾರ.

ಮೊಹಯತಿ ಸೌಂದರ್ಯತಿ—ಮುಹ (ವೈಚಿತ್ಯ) + ಣಿಚ್ " ಣಿನಿ: "

(೩-೧-೧೩೪) | " ಡೀಪ್ " (೪-೧-೫) |

ಮೌಠಿಕ ಮೌಠಿಕ (ಪುಂ) ವಾಯುಸ, ಕಾಗೆ. " ಗುಂಜತ್ಕುಂಜ-

ಕುರೀರಕೌಶಿಕಃ ಟಾಘರಕಾರವತ್ಕೀಚಕಸ್ತಮ್ಬಾಡಮ್ಬರಮೂಕ-

ಮೌಠಿಕುಲ: ಕೌಂಚಾಮಿಥೋಷ್ಯಂ ಗಿರಿ: " ತಂ ರಾಂ ೨-೨೯ |

ಮೌಠಿಕ ಮೌಠಿಕ (ನಂ) ಮುತ್ತು, ಮುಕ್ಕಾಫಲ.

ಮುಕ್ತೇವ " ಠಕ್ " (೫-೪-೩೪) | " ಧರ್ಮಜನಿತಪುಲಕೇನ

ಲಸದ್ಗಜಮೌಠಿಕಾವಲಿಗುಣೇನ ವಕ್ಷಸಾ " ಕಿರಾಂ ೧೨-೪೦ |

" ಶೇಲೇ ಶೇಲೇ ನ ಮಾಣಿಕ್ಯಂ ಮೌಠಿಕಂ ನ ಗಜೇ ಗಜೇ | ಸಾಧವೋ

ನ ಹಿ ಸರ್ವತ್ರ ಚಂದನಂ ನ ವನೇ ವನೇ " ಚಾಣಕ್ಯಂ |



ಮೌಕ್ತಿಕದಾಮ ಮೌಕ್ತಿಕದಾಮ (ನಂ) ನಾಲ್ಕು ಜಗಣಿ  
ಗಣಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ:  
“ಚತುರ್ಜಗಣಂ यदि मौक्तिकदाम”। ಈ ವೃತ್ತದ  
ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ಜ ಜ ಜ ಜ  
101 101 101 101

ಮೌಕ್ತಿಕದಾಮನ್ ಮೌಕ್ತಿಕದಾಮನ್ (ನಂ) ಮುಕ್ತಿನ  
ಸರ. ಮೌಕ್ತಿಕಾನಾಂ ದಾಮ।

ಮೌಕ್ತಿಕಸರ ಮೌಕ್ತಿಕಸರ (ಪುಂ) ಮುಕ್ತಿನ ಸರ.  
ಮೌಕ್ತಿಕಾನಾಂ ಸರ:। “अयं बाहु: कण्ठे शिशिरमसृणो  
मौक्तिकसर:” उ० रा० १-३८।

ಮೌಕ್ಯ ಮೌಕ್ಯ (ನಂ) ಮೂಕತನ, ಮೂಗು, ಮಾತಾಡುವ  
ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ಮೂಕಸ್ಯ ಭಾವ: “अव्यक्”  
(५-१-१२४)।

ಮೌಖ್ಯ ಮೌಖ್ಯ (ನಂ) ವಾಚಾಳತನ, ಬಹುವಾಗಿ  
ಮಾತಾಡುವುದು, ಹರಟೆ. ಮುಖಸ್ಯ ಭಾವ: “अव्यक्”  
(५-१-१२४)।

ಮೌಖ್ಯ ಮೌಖ್ಯ (ನಂ) ಮುಖ್ಯವಾಗಿರುವುದು, ಅದ್ಭುತ,  
ಮೊದಲು ಬರುವುದು. ಮುಖ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ:।

ಮೌಗ್ಯ ಮೌಗ್ಯ (ನಂ) 1. ತಿಳಿಗೇಡಿತನ, ಅಜ್ಞತೆ. ಮುಗ್ಧಸ್ಯ  
ಭಾವ: “अव्यक्” (५-१-१२४)। 2. ಕಪಟವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ,  
ಸರಳತೆ, ಕೃತ್ರಿಮವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ಸೌಂದರ್ಯ,  
ಲಾವಣ್ಯ, ಸೊಬಗು.

ಮೌಜಿ ಮೌಜಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಯ ಕಟಿಸೂತ್ರ,  
ಮುಂಜತೃಣದಿಂದ ಮಾಡಿದ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಯ ಉಡುದಾರ.  
ಮುಂಜಸ್ಯೇಯಮ್ “अण्” (४-३-१२०)। “ओप्”  
(४-१-१५)। “प्रतिक्षणं सा कृतरामविक्रियां व्रताय  
मौजिं त्रिगुणां बभार याम्” कुमा० ५-१०।  
“पिशङ्गमौजियुजमर्जुनच्छविम्” माघ० १-५।

ಮೌಜಿಬಂಧ ಮೌಜಿಬಂಧ (ಪುಂ) ಮೌಜಿಯನ್ನು  
ಧರಿಸುವುದು, ಉಪನಯನಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮೌಜಿಯ ಕಟಿ  
ಸೂತ್ರವನ್ನು ಕಟ್ಟುವುದು. ಮೌಜ್ಯಾ: ಬಂಧ: ಬಂಧನಮ್।  
“मौजिबन्ध: शुभ: प्रोक्तश्चैत्रे मीनगते रवौ”।

ಮೌಡ್ಯ ಮೌಡ್ಯ (ನಂ) 1. ದಡ್ಡತನ, ಮೂರ್ಖತನ. ಮೌಡಸ್ಯ  
ಭಾವ: “अव्यक्” (५-१-१२४)। “यो मां सर्वेषु भूतेषु  
सन्तमात्मानमीश्वरम्। हित्वाचां भजते मौढ्याद्भस्मान्येव  
जुहोति स:” भाग० ३-२९-२२। 2. ಬಾಲ್ಯ, ಹುಡುಗು  
ತನ. 3. ಪ್ರಜ್ಞೆ ತಪ್ಪುವುದು. (ಪುಂ) 4. ಮೂಢನ  
ಮಗ. ಮೌಡ “अव्यक्” (४-१-१५१)।

ಮೌಡ್ಯ ಮೌಡ್ಯ (ನಂ) 1. ಕ್ಷೌರ. 2. ಒಟ್ಟುತಲೆ.  
ಮುಂಡಸ್ಯ ಭಾವ:।

ಮೌದ್ಗಲಿ ಮೌದ್ಗಲಿ (ಪುಂ) ವಾಯಸ, ಕಾಗೆ. “कारव:  
परमृत्युश्च लुण्टाको मौदगलिद्विक:” त्रिकाण्ड०।

ಮೌದ್ಗಲಿ ಮೌದ್ಗಲಿ (ಪುಂ) ಮುದ್ದಲ ಋಷಿಯ ಮಗ.  
ಮೌದ್ಗಲಿ ಮೌದ್ಗಲಿ (ನಂ) ಹೆಸರು ಬೆಳೆಯಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ ಕ್ಷೇತ್ರ (ಭೂಮಿ). ಮುದ್ಗಾನಾಂ ಭವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ “खण्”  
(५-२-१)।

ಮೌನ ಮೌನ (ನಂ) 1. ಮಾತಾಡದಿರುವಿಕೆ. ಮುನೇ: ಕರ್ಮ  
ಭಾವೋ ವಾ “अण्” (५-१-१३१)। “मौनान्मूक:  
प्रवचनपटुर्वचिको जल्पको वा” भर्तृ० १-४७। 2. ಗದ್ದಲ  
ವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಶಬ್ದಮಾಡದಿರುವಿಕೆ. 3. ಮಾತನಾಡ  
ದಿರುವ ನಿಯಮ. “मौनेन व्रतनिष्ठानां स्वाक्रीशं  
मन्यते स्म स:” नैष० १७-१७८।

ಮೌನಿನ್ ಮೌನಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಮುನಿ, ತಪಸ್ವಿ. ಮೌನಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ  
—“इति:” (५-२-११५)। (ವಿಂ) 2. ಮಾತನಾಡ  
ದಿರುವ, ಮೌನವ್ರತವನ್ನಾಚರಿಸುವ. 3. ಮಾತನಾಡದೆ  
ಸುಮ್ಮನಿರುವ. 4. ಮಾತನಾಡದಿರುವ, ಗದ್ದಲಮಾಡದಿ  
ರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ “ओप्” (४-१-५)। ಮೌನಿನಿ ಮೌನಿನೀ.  
“मौनिन्यामेव सा तस्यां तदुक्तीरिव शृण्वती” नैष०  
२०-६५।

ಮೌರಜಿಕ ಮೌರಜಿಕ (ಪುಂ) ಮೃದಂಗವನ್ನು ಬಾರಿಸು  
ವವನು, ಮೃದಂಗ ವಿದ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ನಿಪುಣನಾದವನು. ಮುರಜ-  
ವಾಚ್ಯಂ ಶಿಲ್ಪಮಸ್ಯ “ठक्” (४-४-५५)। “मार्दङ्गिका  
मौरजिका:” अम०।

ಮೌರ್ಖ್ಯ ಮೌರ್ಖ್ಯ (ನಂ) ದಡ್ಡತನ, ಅವಿವೇಕ, ಮೂರ್ಖತನ.  
ಮೂರ್ಖಸ್ಯ ಭಾವ: “अव्यक्” (५-१-१२४)।

ಮೌರ್ವಿ ಮೌರ್ವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಲ್ಲಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ತೊಗಲಿನ  
ಹಗ್ಗ, ಹೆದೆ. ಮೌರ್ವಿಯಾ ವಿಕಾರ: “अण्” (४-३-१३५)।  
“ओप्” (४-१-१५)। “शास्त्रेष्वकुण्ठिता बुद्धिमौर्वी  
धनुषि चातता” रघु० १-१९।

ಮೌಲ ಮೌಲ (ಪುಂ) 1. ಅಪ್ಪನಾದ ಸಹಿವ, ವಂಶಪರಂಪರೆ  
ಯಿಂದ ಬಂದ ಮಂತ್ರಿ. “समौलरक्षोहरिभि: ससैन्यस्तूर्य-  
स्वनानन्दितपीरवर्ग:” रघु० १४-१०। (ವಿಂ) 2.  
ಮೂಲಭೂತವಾದ, ಮೊದಲಿನಿಂದ ಬಂದ, ಬಹಳ  
ಹಿಂದಿನ. ಮೂಲಾದಾಗತ: “अण्” (४-३-७४)। 3. ಮೂಲ  
ವನ್ನು ಅರಿತವನು, ಗೃಹ ಕ್ಷೇತ್ರ ಮುಂತಾದುವುಗಳ  
ಹಿಂದಿನ ಸ್ಥಿತಿಗತಿಗಳನ್ನು ತಿಳಿದವನು. 4. ಮೂಲಸಂಬಂಧ  
ವಾದ, ಬುಡಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.



**ಮೊಲಿ ಮೌಲಿ** (ಪುಂ.) 1. ಮಸ್ತಕ, ತಲೆ, ಶರಸ್ರು. ಮೂಲಸ್ಯಾದೇ ಭವ: "ಓ" (೪-೨-೮೦)। "ಯದೇನ ಮೊಲಿದಲನೇಷ್ಯದಾಸಿತಂ ಸುಚಿರಂ ಸ್ತ್ರೀಯೇವ ನೃಪಚಕ್ರಸನ್ನಿವಿ" ವೇಣಿಂ ೩-೩೯। 2. ಕಿರೀಟ, ಮುಕುಟ. "ಕರೋತಿ ಪಾದಾ-ವುಗಮ್ಯ ಮೊಲಿನಾ ವಿವಿಧಮಂದಾರರಜೋಣಾಡ್ಗುಲಿ" ಕುಮಾಂ ೪-೮೦। 3. ಜುಟ್ಟು. 4. ಜಡೆ, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಿದ ತಲೆಯ ಕೂದಲು, ಮುಡಿಗುಟ್ಟು. "ದ್ರುಶಾಸನೇನ ಕಚಕರ್ಷಣಭಿಷ್ಣ-ಮೊಲಿ: ಸಾ ದ್ರೌಪದೀ ಕಥಯತ ಕ್ವ ಪುನ: ಪ್ರದೇಶೇ" ವೇಣಿಂ ೬-೩೪। 5. (ಪರ್ವತದ ಶಿಖರದ) ಅಗ್ರಭಾಗ, (ಶಿಖರದ) ತುದಿ. "ಮೇಘಾಲಮ್ಬಿತಮೊಲಿನಿಲಶಿಖರಾ: ಕ್ಷೋಣಿಮೃತೋ ದಕ್ಷಿಣಾ:" ತಂ ರಾಂ ೨-೩೦। (ಪುಂ) 6. ಅಶೋಕವೃಕ್ಷ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 7. ಭೂಮಿ. "ಮೊಲಿ: ಕಿರೀಟೇ ಧಮ್ಮಿಲ್ಲೇ ಚೂಡಾಯಾಮನಪುಂಸಕಮ್। ನಾಶೋಕದ್ರೌ ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಮೂಮಿ" ಮೇಡಿಂ। "ಮೊಲಿ: ಕಿರೀಟೇ ಧಮ್ಮಿಲ್ಲೇ ಚೂಡಾಕಣ್ಣಲಿಮೂರ್ಧಸು" ಹೇಮಂ।

**ಮೊಲಿಕ ಮೌಲಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಬೇರುಗಳನ್ನು ಮಾರುವವನು, ಮೂಲಿಕೆಗಳ ವರ್ತಕ. ಮೂಲ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೪೧)। (ವಿಂ) 2. ಮೂಲಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಮೊದಲಿನ, ಪ್ರಾರಂಭದ. 3. ಬೇರಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಬೇರಿನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ. 4. ಮೂಲರೂಪದ, ಮೂಲರೂಪಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. 5. ಮೊದಲನೆಯ, ಪ್ರಧಾನವಾದ, ಪ್ರಮುಖವಾದ. "ಸಂಜ್ಞಿವನೋಪಾಯಸ್ತು ಮೊಲಿಕ ಎವ ರಾಮ-ಭದ್ರಸ್ಯ ಸನ್ನಿಹಿತ:" ತಂ ರಾಂ ೩।

**ಮೊಲಿ ಮೌಲಿ** (ನಂ) 1. ಕ್ರಯ, ಬೆಲೆ, ಧಾರಣೆ. ಮೂಲ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮)। 2. ವೇತನ, ಕೂಲಿ.

**ಮೊಲಿ ಮೌಷ್ಠಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಷ್ಟಿಯೇ ಆಯುಧವಾಗಿರುವ ಕ್ರೀಡೆ. ಮುಷ್ಟಿ: ಪ್ರಹರಣಮಸ್ಯಾಂ ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್—ಮುಷ್ಟಿ "ಞ:" (೪-೨-೪೭)।

**ಮೊಲಿಕ ಮೌಷ್ಠಿಕ** (ಪುಂ) 1. ವೆಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. 2. ಅಕ್ಕಸಾಲೆ. "ನಾಡ್ವಿಧಮ: ಸ್ವರ್ಣಕಾರ: ಕಲಾದೋ ಮೊಲಿಕ: ಸಮಾ:" ವೇಜಂ।

**ಮೊಸಲ ಮೌಸಲ** (ನಂ) 1. ಮೌಸಲಪರ್ವ, ಮಹಾಭಾರತದ ಒಂದು ಪರ್ವ. [ಈ ಪರ್ವದಲ್ಲಿ ಯಾದವರು ಪ್ರಭಾಸ ಕ್ಷೇತ್ರಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಪರಸ್ಪರ ಮುಸಲಪ್ರಹಾರದಿಂದ ಹೊಡೆದಾಡಿ ಮಡಿದ ಕಥೆಯಿರುವುದು.] ಮುಸಲಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। 2. ಮುಸಲ (ಒನಕೆ) ದಿಂದ ಮಾಡುವ ಯುದ್ಧ.

**ಮೊಹುತ ಮೌಹೂರ್ತ** (ಪುಂ) ದೈವಜ್ಞ, ಜೋಯಿಸ, ಜ್ಯೋತಿಷಾಸ್ತ್ರ ತಿಳಿದವನು. ಮೂಹುತಮಧಿಕೃತ್ಯ ಕೃತಂ ಗ್ರಂಥಮಧೀತೇ ವೇದ ವಾ "ಅನ್" (೪-೨-೪೯)। "ಮಿಥುಕಾ: ಪ್ರಾಡ್ವಿವಾಕಾಶ್ರ ಮೊಹುತಾ ದೈವಚಿಂತಕಾ:" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೧೨೧-೪೬.1

**ಮೊಹುತ ಮೌಹೂರ್ತ** (ಪುಂ) ದೈವಜ್ಞ, ಜೋಯಿಸ, ಜ್ಯೋತಿಷಾಸ್ತ್ರ ತಿಳಿದವನು. ಮೂಹುತಮಧಿಕೃತ್ಯ ಕೃತಂ ಗ್ರಂಥಮಧೀತೇ ವೇದ ವಾ "ಠಕ್" (೪-೨-೬೦)।

**ಮೊಹುತ ಮೌಹೂರ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಅಭ್ಯಾಸಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮತ್ತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಅಭ್ಯಾಸಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಲಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಮ್ನಾ (ಅಮ್ಯಾಸೇ) "ಠಕ್" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಮೊಹುತ ಮೌಹೂರ್ತ** (ಪುಂ) 1. ತನ್ನ ದೋಷವನ್ನು ಮುಚ್ಚಿ ಕೊಳ್ಳುವುದು, ತನ್ನ ತಪ್ಪು ಯಾರಿಗೂ ತಿಳಿಯದಿರುವಂತೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಮೊಹುತ (ಸಂವಾತೇ) "ಠಕ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ರಾಶಿ, ಗುಂಪು. "ಸ್ವದೋಷಗುಹನಂ ಮೊಹುತ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಮೊಹುತ ಮೌಹೂರ್ತ** (ನಂ) 1. ತೈಲ, ಎಣ್ಣೆ. ಮೊಹುತ (ಸಂವಾತೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ರಾಶಿಹಾಕುವುದು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕೂಡುಹಾಕುವುದು.

**ಮೊಹುತ ಮೌಹೂರ್ತ** (ಪುಂ) 1. ಮೃದುತ್ವ, ಮೃದುವ, ಮೃತ್ವಗಿರುವಿಕೆ. 2. ದೌರ್ಬಲ್ಯ, ಅಶಕ್ತತೆ. 3. ಶಾಂತತೆ, ಸೌಮ್ಯತೆ, ನಮ್ರತೆ. ಮೃದೋ: ಭಾವ: "ಇಮನಿಕ್" (೪-೧-೧೨೨)। "ತುಲ್ಯೇಷರಾಘೇ ಸ್ವರ್ಮಾನು: ಭಾನುಮಂತಂ ಚಿರೇಣ ಯತ್। ಹಿಮಾಂಶುಮಾಶು ಗ್ರಸತೇ ತನ್ಮಾದಿಮ್ನ: ಸ್ಫುಟಂ ಫಲಮ್" ಮಾಧಂ ೨-೪೯।

**ಮೊಹುತ ಮೌಹೂರ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಮೃದುವಾದ, ಬಹಳ ಮೃತ್ವಗಿರುವ, ಕೋಮಲವಾದ. ಅತಿಶಯೇನ ಮೃದು: "ಇಯಸುನ್" (೪-೩-೪೭)। "ಮೊಹುತಸಾ ಸ್ನಾನಜಲಸ್ಯ ವಾಸಸಾ" ನೇಷಂ ೧೪-೨೪। 2. ಶಾಂತವಾಗಿರುವ, ಸೌಮ್ಯವಾಗಿರುವ. 3. ಬಹಳ ನುಣುಪಾಗಿರುವ, ಬಹಳ ನಯವಾಗಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಸೀ. "ಮೊಹುತಸೀಮಪಿ ಧನಾಮನಲ್ಪಗುಣಕಲ್ಪಿತಾಮ್" ಮಾಧಂ ೨-೭೪।

**ಮೊಹುತ ಮೌಹೂರ್ತ** (ಪುಂ) 1. ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಕಪ್ಪೆ. ಮಲೆ (ಹರ್ಷಕಯೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಮಂಡೂಕಶ್ಚೇಷ ಗೃಹಜೋ ಮೊಹುತ:" ವೇಜಂ। (ವಿಂ) 2. ಬಾಡಿದ, ಸೊರಗಿದ, ಕಳೆಗುಂದಿದ. "ಮೊಹುತಸ್ಯ ಜೀವಕುಸುಮಸ್ಯ ವಿಕಾಸ-ನಾನಿ" ಮಾಲತೀಂ ೬-೮। 3. ಮಲಿನವಾದ, ಕೊಳೆಯಾದ. "ಮಲಿನಂ ಕಂಞರಂ ಮೊಹುತಂ ಕಂಞರಂ ಚ ಮಲಿಮಸಮ್" ಅಭಿಂ ವಿಂ। 4. ದುರ್ಬಲವಾದ, ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ. 5. ದಣಿದಿರುವ, ಆಯಾಸಗೊಂಡಿರುವ (ನಂ) 6. ಬಾಡುವುದು. 7. ಮಲಿನವಾಗುವುದು. 8. ದುರ್ಬಲ ವಾಗುವುದು. 9. ದಣಿಯುವುದು.

**ಮೊಹುತ ಮೌಹೂರ್ತ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಾಡುವುದು, ಕಳೆಗುಂದು ವುದು. ಮಲ (ಹರ್ಷಕಯೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।



2. ಮಾಲಿನ್ಯ, ಕೊಳೆ. "ಸ್ಲಾನಿಃ ಸ್ಪರ್ಶನಿವೇಶಮೇ: ಸೇಯಂ ತ್ರಿಶಂಕುರೀವ ಸಂಪದಸ್ಯ" ನೆಪಂ ೨೨-೩೬. 3. ದಣಿವು. ಆಯಾಸ. 4. ದೌರ್ಬಲ್ಯ, ಅಶಕ್ತತೆ.

ಸ್ಲಾನೀಯ ಮ್ಲಾನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಬಾಡಬೇಕಾದ. 2. ದಣಿಯಬೇಕಾದ. ಮ್ಲೆ (ಹರ್ಷಕೃತೇ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬). ಸ್ಲಾತವ್ಯ: ಮ್ಲಾತವ್ಯಃ. ಮ್ಲೆ + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್". ಸ್ಲಾಪನೀಯ: ಮ್ಲಾಪನೀಯಃ. "ತವ್ಯ:". ಸ್ಲಾಪಯಿತವ್ಯ: ಮ್ಲಾಪಯಿತವ್ಯಃ. 3. ಬಾಡಿಸಬೇಕಾದ, ಕಳೆಗುಂದಿಸಬೇಕಾದ. 4. ದಣಿಸಬೇಕಾದ, ಆಯಾಸಗೊಳಿಸಬೇಕಾದ.

ಸ್ಲಾಯತ್ ಮ್ಲಾಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಬಾಡುತ್ತಿರುವ, ಸೊರಗುತ್ತಿರುವ, ಕಳೆಗುಂದುತ್ತಿರುವ. ಮ್ಲೆ (ಹರ್ಷಕೃತೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). 2. ದುರ್ಬಲವಾಗುತ್ತಿರುವ. 3. ಮಲಿನವಾಗುತ್ತಿರುವ. ಮ್ಲೆ + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ಲಾಪಯತ್ ಮ್ಲಾಪಯತ್. 4. ಬಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಕಳೆಗುಂದಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಸ್ಲಾಪಯನ್ನಮಿಮಾನೋಣೈವನಮಾಲಾಂ ಮುಖಾನಿಲೇ:" ಮಾಘಂ ೨-೧೭. 5. ಮಲಿನವಾಗಿ ಬಾಡುತ್ತಿರುವ, ಕೊಳೆ ಬಾಡುತ್ತಿರುವ. 6. ದಣಿಸುತ್ತಿರುವ, ಆಯಾಸಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬). ಸ್ಲಾಯಂತೀ ಮ್ಲಾಯಂತೀ. ಸ್ಲಾಪಯಂತೀ ಮ್ಲಾಪಯಂತೀ.

ಸ್ಲಾಯಿನ್ ಮ್ಲಾಯಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಬಾಡುವ, ಕಳೆಗುಂದುವ, ಸೊರಗುವ. 2. ಕ್ಷೀಣವಾಗುವ, ನಾಶಹೊಂದುವ, ಇಳಿಮುಖವಾಗುವ. ಸ್ಲಾಯತಿ—ಮ್ಲೆ (ಹರ್ಷಕೃತೇ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೧-೧೩೪). "ಮಾನೇ ಸ್ಲಾಯಿನಿ ಖಣ್ಡಿತೇ ಚ ವಸುನಿ ವ್ಯರ್ಥೇ ಪ್ರಯಾತೇರ್ಥಿನಿ" ಭರ್ತಂ ೩-೭೮.

ಸ್ಲಿಷ್ಠ ಮಿಷ್ಠ (ನಂ) 1. ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾದ ಮಾತು, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಆಡದ ಮಾತು, ಅರ್ಥವಾಗದ ಮಾತು. ಸ್ಲೇಚ್ಚ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಕ್ತ:" (೭-೨-೧೮). ನಿಪಾಂ. (ವಿಂ) 2. ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವ. 3. ಬಾಡಿದ, ಸೊರಗಿದ, ಕಳೆಗುಂದಿದ. "ಸ್ಲಿಷ್ಠಂ ತ್ರಿವಿಧವ್ಯಕ್ತವಾಚಿ ಸ್ಲಾನೇ" ಮೇದಿಂ. "ಅಥ ಸ್ಲಿಷ್ಠಮವಿಷ್ಠಮಾಪಿತಮ್" ಹೇಮಂ.

ಸ್ಲೇಚ್ಚ ಮ್ಲೇಚ್ಛ (ಪುಂ) 1. ಅನಾಗರಕ, ಕಾಡುಮನುಷ್ಯ, ಮ್ಲೇಚ್ಛರ ಮಾತಾಡುವ ಕಿರಾತ. ಸ್ಲೇಚ್ಚ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಸ್ಲೇಚ್ಛಾ: ಸ್ಯುವಿಪ್ರಕೃಷ್ಠಾ ಯೇ ಸ್ಲೇಚ್ಛವಾಚೋ ವನಿಕಸ:" ವೇಜಂ. 2. ವ್ಯವಸಾಯ ಮತ್ತು ಆಯುಧ ತಯಾರಿಕೆ ಇವುಗಳಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. "ದಸ್ಯುಸ್ಲೇಚ್ಛಗಣಾನಾಂತು ಕೃಷಿಸಸ್ತ್ರೋಪಜೀವನಮ್" ವೇಜಂ.

3. ಮ್ಲೇಚ್ಛ ಜಾತಿ, ಕಿರಾತ ಜಾತಿ. 4. ತುರುಷ್ಕರ ಜಾತಿ, ಪಾಮರ ಜಾತಿ. 5. ಅನಾಗರಕ ಮಾತು. "ಅಥ ಸ್ಲೇಚ್ಛೋ ಜಾತಿಭೇದೋಪಮಾಣಃ" ಹೇಮಂ. "ಗೋಮಾಂಸಸ್ವಾದಕೋ ಯಸ್ತು ವಿರುಢ್ಢಂ ಬಹು ಭಾಷತೇ. ಸರ್ವಾಚಾರವಿಹೀನಶ್ಚ ಸ್ಲೇಚ್ಛ ಇತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ" ಬೋಧಾಯನಃ. (ನಂ) 6. ತಾಮ್ರಲೋಹ. "ಸ್ಲೇಚ್ಛಂ ವರಿಠಂ ಸ್ಲೇಚ್ಛಾಸ್ಯಮ್" ವೇಜಂ.

ಸ್ಲೇಚ್ಛಕಂದ ಮ್ಲೇಚ್ಛಕಂದ (ಪುಂ) ಲಶುನ, ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳಿ. ಸ್ಲೇಚ್ಛಪ್ರಿಯಃ ಕಂದಃ. "ಲಶುನಸ್ತು ರಸೋನಃ ಸ್ಯಾದ್ಭುಗಂಧೋ ಮಹೋಷಮ್. ಅರಿಷ್ಟೋ ಸ್ಲೇಚ್ಛಕಂದಶ್ಚ ಪವನೇಷ್ಠೋ ರಸೋನಕಃ." ಸ್ಲೇಚ್ಛಜಾತಿ ಮ್ಲೇಚ್ಛಜಾತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಾವ ವಿಧವಾದ ಆಚಾರವೂ ಇಲ್ಲದ ಒಂದು ಜಾತಿ, ಗೋಮಾಂಸ ತಿನ್ನುವ ಜಾತಿ. ಸ್ಲೇಚ್ಛರೂಪಾ ಜಾತಿಃ. "ಸರ್ವಾಚಾರವಿಹೀನಶ್ಚ ಸ್ಲೇಚ್ಛ ಇತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ".

ಸ್ಲೇಚ್ಛದೇಶ ಮ್ಲೇಚ್ಛದೇಶ (ಪುಂ) ತುರುಷ್ಕರು ವಾಸ ಮಾಡುವ ದೇಶ. ಜಾತಿ ಮತ್ತು ಆಚಾರವ್ಯವಸ್ಥೆಯಿಲ್ಲದ ದೇಶ. ಆರ್ಯಾವರ್ತಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೊರಗಿನ ದೇಶ. ಸ್ಲೇಚ್ಛಾನಾಂ ದೇಶಃ. "ಚಾತುರ್ವರ್ಣ್ಯವ್ಯವಸ್ಥಾನಂ ಯಸ್ಮಿನ್ ದೇಶೇ ನ ವಿಧತೇ. ಸ್ಲೇಚ್ಛದೇಶಃ ಸ ವಿಜ್ಞೇಯಃ ಆರ್ಯಾವರ್ತಃ ತತಃ ಪರಮ್".

ಸ್ಲೇಚ್ಛಭಾಷಾ ಮ್ಲೇಚ್ಛಭಾಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತುರುಷ್ಕರ ಭಾಷೆ, ಹಿಂದೂಸ್ತಾನಿ ಮಾತು. ಸ್ಲೇಚ್ಛಾನಾಂ ಭಾಷಾ.

ಸ್ಲೇಚ್ಛಭೋಜನ ಮ್ಲೇಚ್ಛಭೋಜನ (ಪುಂ) 1. ಗೋಧಿ. ಭುಜ್ಯತೇ—ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩). ಸ್ಲೇಚ್ಛಾನಾಂ ಭೋಜನಃ. "ಗೋಧೂಮೋ ಸ್ಲೇಚ್ಛ-ಭೋಜನಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. (ನಂ) 2. ಅಲಸಂಧಿ.

ಸ್ಲೇಚ್ಛಭೋಜ್ಯ ಮ್ಲೇಚ್ಛಭೋಜ್ಯ (ಪುಂ) ಗೋಧೂಮ, ಗೋಧಿ. ಸ್ಲೇಚ್ಛಾನಾಂ ಭೋಜ್ಯಮ್. "ಗೋಧೂಮಸ್ತು ಸ್ಲೇಚ್ಛಭೋಜ್ಯಃ ಸುಮನಃ ಶಲೇಷ್ಮಲೋ ಗುಹಃ" ವೇಜಂ.

ಸ್ಲೇಚ್ಛಮಂಡಲ ಮ್ಲೇಚ್ಛಮಂಡಲ (ನಂ) ಮ್ಲೇಚ್ಛರ ದೇಶ. ಸ್ಲೇಚ್ಛಾನಾಂ ಮಂಡಲಂ ಸಮೂಹೋ ಯತ್ರ.

ಸ್ಲೇಚ್ಛಮುಖ ಮ್ಲೇಚ್ಛಮುಖ (ನಂ) ತಾಮ್ರಲೋಹ. ಸ್ಲೇಚ್ಛೇ ಸ್ಲೇಚ್ಛದೇಶೋ ಮುಖಮುತ್ಪತ್ತಿರಸ್ಯ. "ಶುಲ್ಬಂ ಸ್ಲೇಚ್ಛಮುಖಂ ದ್ವ್ಯಷ್ಟವರಿಠೋದ್ಭವರಾಣಿ ಚ" ಅಮಂ.

ಸ್ಲೇಚ್ಛಾಶ ಮ್ಲೇಚ್ಛಾಶ (ಪುಂ) ಗೋಧೂಮ, ಗೋಧಿ. ಸ್ಲೇಚ್ಛೇರಸ್ಯತೇ—ಅಶ (ಭೋಜನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೯).

ಸ್ಲೇಚ್ಛಿತ ಮ್ಲೇಚ್ಛಿತ (ನಂ) 1. ಅವಶ್ಯ, ಮ್ಲೇಚ್ಛರ ಭಾಷೆ, ಹೊರ ದೇಶದ ಭಾಷೆ. 2. ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾದ ಮಾತು, ಅರ್ಥವಾಗದ ಮಾತು. "ಸ್ಲೇಚ್ಛಿತಂ ಪರಭಾಷಾಯಾಮ್" ಹಾರಾಂ.

ಇತಿ "ಮ" ಕಾರಾವಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್.



# ಯ

ಯ ಯ ಇದು ವರ್ಣಮಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಇಪ್ಪತ್ತಾರನೆಯ ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರ. ಅವರ್ಗೀಯ ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ಹೆಲ್ ವರ್ಣ. ಈ ವರ್ಣ (ಅಕ್ಷರ) ವೃ ತಾಲು (ದವಡೆ) ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಅಭ್ಯಂತರಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಅಂತಸ್ತ ಅಲ್ಪಪ್ರಾಣಾಕ್ಷರ. “ಯರಲವಾ ಅಂತಸ್ತಾ:” | “ವರ್ಗಾಣಾಂ ಪ್ರಥಮತೃತೀಯಮೌ ಯರಲವಾಪ್ರಾಣಾ:” ಸಿಂ ಕೌಂ |

ಯ ಯ (ಪುಂ) 1. ಯಶಸ್ಸು, ಕೀರ್ತಿ. 2. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಯಾತಿ ವಾತಿ —ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಡ:” | 3. ತ್ಯಾಗ, ವರ್ಜಿಸುವುದು. 4. ನಡೆಯುವವನು, ಚಲಿಸುವವನು. 5. ರಥ, ವಾಹನ. 6. ದಾನಮಾಡುವವನು. “ಯಶೋ ಯ: ಕಥಿತ: ಪ್ರಾಜ್ಞಯೋ ವಾಯುರೀತಿ ಶಬ್ದಿತ: | ಯಾನೇ ಯಾತರೀ ಯಸ್ತಾಗೇ ಕಥಿತ: ಶಬ್ದವೇದಿಭಿ:” ಏಕಾಂ | 7. ಯಮ. 8. ಮನೆ, ವಾಸಸ್ಥಳ. “ಯಸ್ತಾಗೇ ನಿಲಯೇ ವಾಯೋ ಯಮೇ ದಾತರೀ ಯಾತರೀ” ನಾನಾರ್ಥಂ | 9. ಅದಿಯಲ್ಲಿ ಲಘು ವರ್ಣವುಳ್ಳ ಮೂರು ವರ್ಣಗಳ ಒಂದು ಗಣ, ಯಗಣ. “ಆದಿಮಧ್ಯಾವಸಾನೇಷು ಯರತಾ ಯಾಂತಿ ಲಾಘವಮ್ | ಭಜಸಾ ಗೌರವಂ ಯಾಂತಿ ಮನೀ ತು ಗುಣಲಾಘವಮ್” ವೃಂ ರಂ | 10. ಸಂಯಮ, ತಡೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಾ ಯಾ. 11. ವಾಹನ, ಬಂಡಿ, ಗಾಡಿ. 12. ಪುಷ್ಪಗುಚ್ಛ, ಹೂವಿನ ಗೊಂಬೆಲು. 13. ಶೋಭೆ, ಕಾಂತಿ. 14. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. 15. ನಿರ್ಮಾಣ, ತಯಾರಿಕೆ. “ಯಾ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಯಾನಮಂಜಯೋ: ಶೋಭಾಲಕ್ಷ್ಮಯೋಶ್ಚ ನಿರ್ಮಿತೌ” ನಾನಾರ್ಥಂ |

ಯಕಾರ ಯಕಾರ (ಪುಂ) “ಯ” ವರ್ಣ, ಯ ಎಂಬ ಅಕ್ಷರ.

ಯಕೃತ್ ಯಕೃತ್ (ನಂ) 1. ಹೊಟ್ಟೆಯ ಬಲಗಡೆ ಇರುವ ಒಂದು ಮಾಂಸದ ಹಿಂಡ. ಯಂ ಸಂಯಮಂ ಕರೋತಿ —ತು ಕೃತ್ (ಕರಣೆ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬) | “ಕಾಲಕ್ರಾಂತಯಕೃತೀ ತು ಸಮೇ ಇಮೇ” ಅಮಂ | 2. ಈ ಮಾಂಸಹಿಂಡವನ್ನು ಬೆಳೆಸುವ ಒಂದು ರೀತಿ. “ಅಥೋ ದಕ್ಷಿಣತಶ್ಚಾಪಿ ಹೃದಯಾಚ್ಚಕೃತ: ಸ್ಥಿತಿ: | ತತ್ತು ರಜ್ಜಕಪಿತ್ತಸ್ಯ ಸ್ಥಾನಂ ಶೋಣಿತಜಂ ಮತಮ್” ಭಾವಪ್ರಂ |

ಯಕೃದಾತ್ಮಿಕಾ ಯಕೃದಾತ್ಮಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿರಣಿ, ಜೊಂಡಿಗ. ಯಕೃತ ಇವ ಆತ್ಮಾ ಸ್ವರೂಪಂ ಯಸ್ಯಾ: |

ಯಕೃದೇರಿನ್ ಯಕೃದೈರಿನ್ (ಪುಂ) ಮುಳ್ಳುಮುತ್ತುಗದ ಗಿಡ. ಯಕೃತೌ ವೇರೀ ನಾಶಕ: | “ಪ್ಲಿಹ್ಣೋ ಮಾಸದಲನೌ ಯಕೃದೇರೀ ಚಲಚ್ಛದ:” |

ಯಕ್ಷ ಯಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ದೇವಯೋನಿವಿಶೇಷ, ಕುಬೇರನ ಅನುಚರರು, ಕುಬೇರನ ಬೊಕ್ಕಸ ಮತ್ತು ಉದ್ಯಾನ ಗಳನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವವರು. ಯಕ್ಷಯತೇ ಪೂಜಯತೇ—ಯಕ್ಷ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) “ಯಕ್” (೩-೩-೧೯) | “ಯಸ್ಯಾಂ ಯಕ್ಷಾ: ಸಿತ್ತಮಣಿಮಯಾನೀತ್ಯ ಹಮ್ಯಂಸ್ಥಲಾನಿ” ಮೇಘಂ ೨-೩ | 2. ಕುಬೇರ, ಯಕ್ಷರ ರಾಜ. ಇಂ ಲಕ್ಷ್ಮೀಮಣೀತಿ —ಅಕ್ಷ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) “ಅಣ್” (೩-೨-೧) | “ಯಕ್ಷೋ ಗುಹ್ಯಕಮಾತ್ರೇ ಚ ಗುಹ್ಯಕಾಧೀಶ್ವರೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ | 3. ನಾಯಿ. “ದೀರ್ಘನಾದೀ ಗೃಹಮುಗ: ಕುಕ್ಕುರ: ಕ್ರೋಧನ: ಶುನಿ: | ಯಕ್ಷ ಇಂದ್ರಮಹಿಷಾಲ:” ವೇಜಂ | (ಪುಂಂ) 4. ಪೂಜೆ.

ಯಕ್ಷಕರ್ಮ ಯಕ್ಷಕರ್ಮ (ಪುಂ) ಪಚ್ಚಕರ್ಪೂರ ಅಗುರು ಕಸ್ತೂರಿ ತಕ್ಕೋಲ ಇವುಗಳ ಬೆರಕೆಯಿಂದ ಮಾಡಿದ ಒಂದು ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯ. ಯಕ್ಷಪ್ರಿಯ: ಕರ್ಮ: |

ಯಕ್ಷತರು ಯಕ್ಷತರು (ಪುಂ) ವಟುವು, ಅಲದ ಮರ. ಯಕ್ಷೇಣ ಉಪಾಶ್ರಿತೌ ವೃಕ್ಷ: |

ಯಕ್ಷಧೂಪ ಯಕ್ಷಧೂಪ (ಪುಂ) ಸರ್ಪರಸ, ಸಾಲವೃಕ್ಷ (ಮತ್ತಿಮರ)ದ ಹಾಲು. ಯಕ್ಷಪ್ರಿಯೌ ಧೂಪ: |

ಯಕ್ಷಪ್ರದನ ಯಕ್ಷಪ್ರದನ (ಪುಂ) ಪಾಂಡವರು ವನವಾಸ ವನ್ನು ಮುಗಿಸಿಕೊಂಡು ಅಜ್ಞಾತವಾಸಕ್ಕೆ ಬರುವ ಮುಂಚೆ ಅವರನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸಲು ಯಮಧರ್ಮರಾಯನು ಜಿಂಕೆಯ ರೂಪದಿಂದ ಬಂದು ಅವರಿಗೆ ಹಾಕಿದ ಪ್ರಶ್ನೆ. ಯಮಧರ್ಮ ರಾಯನು ಜಿಂಕೆಯ ರೂಪವನ್ನು ತಾಳಿ ಪಾಂಡವರ ಆಶ್ರಮದ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿದ್ದ ಒಬ್ಬ ಮೃಗಿಯ ಅರಣ್ಯವನ್ನು ಒಯ್ದನು. ಅದನ್ನು ಬಿಡಿಸಲು ಹೋದ ಭೀಮಾರ್ಜುನ ನಕುಲ ಸಹದೇವರನ್ನು ಮರೆಯಾಗಿ ನಿಂತು ಕೆಲವು ಪ್ರಶ್ನೆ ಗಳನ್ನು ಕೇಳಿ ಅವರು ಜ್ಞಾನತಪ್ಪಿ ಬೀಳುವಂತೆ ಮಾಡಿ ದನು. ಅನಂತರ ಧರ್ಮರಾಜನು ಬಂದು ಆ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳಿಗೆ ಉತ್ತರವನ್ನು ಸಮರ್ಪಕವಾಗಿ ಹೇಳಿ ತಮ್ಮಂದಿರನ್ನು ಬದುಕಿಸಿದನು.

ಯಕ್ಷರಸ ಯಕ್ಷರಸ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಮದ್ಯ.

ಯಕ್ಷರಾಜ್ ಯಕ್ಷರಾಜ್ (ಪುಂ) ಕುಬೇರ, ಯಕ್ಷರ ಒಡೆಯ. ಯಕ್ಷೇಷು ರಾಜತೇ—ರಾಜ್ (ದೀಪ್ತೌ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೬೧) | —ರಾಜ:—ರಾಜ: | ಯಕ್ಷಾಣಾಂ ರಾಜಾ “ರಕ್” (೪-೪-೯೧) |

ಯಕ್ಷರಾತ್ರಿ ಯಕ್ಷರಾತ್ರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ತಿಕ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ರಾತ್ರಿ. ಯಕ್ಷಪ್ರಿಯಾ ರಾತ್ರಿ: |

ಯಕ್ಷಾಧಿಪ ಯಕ್ಷಾಧಿಪ (ಪುಂ) ಕುಬೇರ.



ಯಕ್ಷಾಪಾಸ ಯಕ್ಷ್ಯಾಪಾಸ (ಪುಂ) ಪಟವ್ಯಕ್ಷ್ಯ, ತಿಲದ ಮರ.

ಯಕ್ಷಾಣಾಮಾಪಾಸ: ।

ಯಕ್ಷಿಣಿ ಯಕ್ಷ್ಯಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಂಬೀರನ ಪತ್ನಿ. 2. ಯಕ್ಷನ ಪತ್ನಿ.

ಯಕ್ಷಿ ಯಕ್ಷ್ಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಂಬೀರನ ಪತ್ನಿ. ಯಕ್ಷಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ "ಜಿಪ್" (೪-೨-೪೮) । 2. ಯಕ್ಷನ ಪತ್ನಿ.

ಯಕ್ಷಮಣಿ ಯಕ್ಷ್ಯಮಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದ್ರಾಕ್ಷಿ. ಯಕ್ಷಮಾಣಂ ಹಂತಿ —ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಡಕ್" (೩-೨-೫೩) । "ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೫) ।

ಯಕ್ಷಮನ್ ಯಕ್ಷ್ಯಮನ್ (ಪುಂ) ಕ್ಷಯರೋಗ. ಯಕ್ಷಯತೇ —ಯಕ್ಷ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಮನಿನ್" (೩ಂ ೪-೧೫೦) । ಮಲಮೂತ್ರ ಗಳನ್ನು ಬಹಳ ಹೊತ್ತು ತಡೆಯುವದರಿಂದಲೂ ಧಾತು ಕ್ಷಯದಿಂದಲೂ ಬಲಿಷ್ಠರೊಡನೆ ಹೋರಾಡುವುದ ರಿಂದಲೂ ಅತ್ಯಲ್ಪ ಭೋಜನ ಅಧಿಕ ಭೋಜನ ಅಥವಾ ಅಕಾಲ ಭೋಜನ ಇವುಗಳಿಂದಲೂ ಕ್ಷಯರೋಗವು ಬರು ವುದು. "ವೇಗರೋಧಾತ್ ಕ್ಷಯಾಂಚೈವ ಸಾಹಸಾದ್ವಿಷಮಾಶನಾತ್ । ತ್ರಿದೋಷೋ ಜಾಯತೇ ಯಕ್ಷ್ಮಾ ಗದೋ ಹೇತುಚತುಷ್ಟಯಾತ್" ಚರಕಂ । ಈ ರೋಗವು ಚಂದ್ರನಿಗೂ ಇರುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ "ರಾಜಯಕ್ಷ್ಮಾ" ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. "ರಾಜಶ್ಚಂದ್ರಮಸೌ ಯಸ್ಮಾದಮೂಢೇಷ ಕಿಲಾಮಯ: । ತಸ್ಮಾತ್ತಂ ರಾಜಯಕ್ಷ್ಮೇತಿ ಕೇಚಿ- ದಾಹುಮನೀಷಿಣ:" ।

ಯಕ್ಷಿಮನ್ ಯಕ್ಷ್ಯಮನ್ (ವಿಂ) ಕ್ಷಯರೋಗವುಳ್ಳವನು. ಯಕ್ಷ್ಮಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫) । "ಯಕ್ಷ್ಮಿ ಚ ಪಶುಪಾಲಶ್ಚ ಪರಿವೇತ್ತಾ ನಿರಾಕೃತಿ:" ಮನುಂ ೩-೧೫೪ ।

ಯಕ್ಷತ್ ಯಕ್ಷ್ಯತ್ (ವಿಂ) ದಾನಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಕೊಡು ತ್ತಿರುವ. ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಶತೃ" (೩-೨-೧೨೪) ।

ಯಜ — ದೇವಪೂಜಾಸಂಹಿತಿಕರಣದಾನೇಷು (ಮ್ವಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) ।

ಲಡ್ — ಪರಂ ಯಜತಿ ಯಜತ: ಯಜಂತಿ ।

ಆತ್ಮಂ ಯಜತೇ ಯಜತೇ ಯಜಂತೇ ।

ಲಿಡ್ — ಪರಂ ಇಯಾಜ ಇಜತು: ಇಜು: ।

ಇಯಜಿತ } ಇಜತು: ಇಜ ।

ಇಯಾಜ } ಇಜಿವ ಇಜಿಮ ।

ಇಯಜ } ಇಜಿವ ಇಜಿಮ ।

ಆತ್ಮಂ ಇಜೇ ಇಜಾತೇ ಇಜೀರೇ ।

ಲುಡ್ — ಪರಂ } ಯಜಾ ಯಜಾರೌ ಯಜಾರ: ।

ಆತ್ಮಂ } ಯಜಾಸಿ ಯಜಾಸ್ಯ: ಯಜಾಸ್ಯ ।

ಯಜಾಸೇ ಯಜಾಸಾಥೇ ಯಜಾಧೇ ।

ಲುಡ್ — ಪರಂ ಯಜಯತಿ ಯಜಯತ: ಯಜಯಂತಿ ।

ಆತ್ಮಂ ಯಜಯತೇ ಯಜಯತೇ ಯಜಯಂತೇ ।

ಲೋಡ್ — ಪರಂ } ಯಜತು ಯಜತಾಮ್ ಯಜಂತು ।

ಆತ್ಮಂ } ಯಜತಾಮ್ ಯಜತಾಮ್ ಯಜಂತಾಮ್ ।

ಲುಡ್ — ಪರಂ } ಅಯಜತ್ ಅಯಜತಾಮ್ ಅಯಜನ್ ।

ಆತ್ಮಂ } ಅಯಜತ ಅಯಜತಾಮ್ ಅಯಜಂತ ।

ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಪೂಜಿಸು, ಯಾಗ ಮಾಡು.

"ಯಜತಾಂ ಪಾಣ্ডವ: ಸ್ವರ್ಗಮವತ್ವಿನ್ದ್ರಸ್ತಪತ್ವಿನ್:" ಮಾಧಂ

೨-೬೫ । "ಇಜುರ್ದೇವಾನ್ ಪುರೋಹಿತಾ:" ಮೃಗ್ವಿಂ ೧೪-೯೦ ।

2. ಅರ್ಪಿಸು, ಸಮರ್ಪಣೆ ಮಾಡು. "ವಾಗ್ದೇವತ್ಯೇಷ್ವ

ಚರಭಿರ್ಯಜೇರಸ್ತೇ ಸರಸ್ವತೀಮ್" ಮನುಂ ೮-೧೦೫ । 3. ಕೊಡು,

ದಾನಮಾಡು.

ಕರ್ಮಣಿ: —ಇಜ್ಯತೇ । ಇಜೇ । ಯಜಾ । ಯಜಯತೇ ।

ಇಜ್ಯತಾಮ್ । ಇಜ್ಯತ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಯಜಿ: —ಯಾಜಯತಿ । ಯಾಜಯಾಂ ಚಕಾರ, —ಬಭೂವ,

—ಆಸ । ಯಾಜಯಿತಾ । ಯಾಜಯಿಷ್ಯತಿ । ಯಾಜಯತು । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಯಜಿ: —ಯಿಷ್ಯತಿ । ಯಿಷ್ಯಾಂ ಚಕಾರ, —ಬಭೂವ, —ಆಸ ।

ಯಿಷ್ಯತಿ । ಯಿಷ್ಯತು । ಅಯಿಷ್ಯತು । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಯಜತು: —ಯಜತು: । ಯಜತು: । ಯಜತು: । ಇಷ್ಟ: ।

ಇಷ್ಟವಾನ್ । ಯಜನ್, —ಂತಿ । ಯಜಮಾನ್: । ಯಜತು: । ಇಷ್ಟಮ್ ।

ಯಜನಮ್ । ಇಷ್ಟವಾ ।

ಯಜ ಯಜ (ಪುಂ) 1. ಯಜ್ಞ, ಯಾಗ. 2. ಅಗ್ನಿ.

"ಸಂತತಂತುರ್ಮುಖ: ಸವ: । ಸಹಸಾನುರೈಜ: ಸಾನು: ವಸುನೋ

ವಿಶ್ವಹರೈಕ:" ವೇಜಂ ।

ಯಜತ ಯಜತ (ಪುಂ) ಯಜ್ಞಕ್ಕು, ಯಾಗದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು

ನಿರ್ವಹಿಸುವವನು. ಯಜತಿ —ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾಯಾಮ್)

"ಅತಚ್" (೩ಂ ೩-೧೧೦) ।

ಯಜತ್ ಯಜತ್ (ವಿಂ) ಯಾಗ ಮಾಡುತ್ತಿರುವವನು.

ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾದೌ) "ಶತೃ" (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ

"ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) । —ಂತಿ —೩೭೯.

ಯಜತಿ ಯಜತಿ (ಪುಂ) ಯಾಗ, ಯಜ್ಞ. ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾದೌ)

"ಅತಿ:" ಬಾಹುಂ ।

ಯಜತ್ರ ಯಜತ್ರ (ಪುಂ) ಯಾಗದ ಉಪಕರಣ. ಯಜ

(ದೇವಪೂಜಾದೌ) "ಅತ್ರನ್" (೩ಂ ೩-೧೦೪) । "ಅಥ

ಯಜೋಪಕರಣಂ ಯಜತ್ರಂ ಯಜನಂ ಚ ತತ್" ವೇಜಂ ।

ಯಜನ ಯಜನ (ನಂ) 1. ಯಾಗ. ಇಜ್ಯತೇ —ಯಜ

(ದೇವಪೂಜಾದೌ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಯಾಗದ ಸ್ಥಳ,



ಯಾಗ ಮಾಡುವ ಸ್ಥಾನ. ಇಜ್ಯತೇ—ಅಧಿಂ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭) । 3. ಯಾಗದ ಉಪಕರಣ. ಇಜ್ಯತೇನೆನ —ಯಜ ಕರಂ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭) । 4. ಯಾಗ ಮಾಡುವುದು. ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” । “ಅಧ್ಯಾಪನಂ ಅಧ್ಯಯನಂ ಯಜನಂ ಯಜನಂ ತಥಾ । ದಾನಂ ಪ್ರತಿಗ್ರಹಶ್ಚೈವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾನಾಮ-ಕಲ್ಪಯತ್” ಮನುಂ ೧೦-೮೮ ।

ಯಜನೀಯ ಯಜನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಪೂಜಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಪೂಜಿಸಬೇಕಾದ. (ದೇವತೆ) ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾದೌ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೧೬) ।

ಯಜಂತ ಯಜಂತ (ಪುಂ) ಯಾಗ ಮಾಡುವವನು. ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾದೌ) “ಜಕ್” ಬಾಹುಂ ।

ಯಜಮಾನ ಯಜಮಾನ (ಪುಂ) 1. ಯಾಗ ಮಾಡುವವನು. ಯಾಗ ಮಾಡಿ ಅದರ ಫಲವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವವನು. ಯಜತೇ—ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾದೌ) ಕತಂ “ಶಾನನ್” (೩-೨-೧೨೮) । “ಧುರಂ ನಿಧಾಯೈಕನಿಧಿಗುಣಾನಾಂ ಜಗಾಮ ಯಜ್ವಾ ಯಜಮಾನ-ಲೋಕಮ್” ರಘುಂ ೧೮-೧೨ । 2. ಮುಖಂಡ, ಮುಖ್ಯ. (ಗಣಪ್ರಯೋಗ) ।

ಯಜಿ ಯಜಿ (ಪುಂ) 1. ಯಾಗ, ಯಜ್ಞ. ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾದೌ) “ಇನ್” (೩-೪-೧೧೭) । “ಆಜೀವನಾಶ್ಚ ಧರ್ಮಸ್ತು ದಾನ-ಮಧ್ಯಯನಂ ಯಜಿಃ” ಮನುಂ ೧೦-೭೯ । 2. ಯಾಗ ಮಾಡುವವನು, ಯಜಮಾನ. 3. ಯಜ ಧಾತು. “ಇಕ್ಷಿತಪೌ ಧಾತುನಿರ್ದೇಶೇ” (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮) ।

ಯಜುವದ ಯಜುವೇದ (ಪುಂ) ನಾಲ್ಕು ವೇದಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. ವೇದವು ಮಗ್ನೇದ ಯಜುವೇದ ಸಾಮವೇದ ಮತ್ತು ಅಥರ್ವವೇದಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧವಾಗಿ ವಿಂಗಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದು. ಅಖಂಡವಾದ ವೇದರಾಶಿಯನ್ನು ಮುಂದೆ ಅಲ್ಪಾಯುಗಳಾದ ಜನರು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗಲಾರದೆಂದು ತಿಳಿದು ಮಹರ್ಷಿಗಳು ವಿಭಾಗ ಮಾಡಿದರು. “ಕ್ಷೀಣಾಯುಷಃ ಕ್ಷೀಣಸತ್ತ್ವಾನ್ ದುರ್ಮೇಧಾನ್ ವೀಕ್ಷ್ಯ ಕಾಲತಃ । ವೇದಾನ್ ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಯೋ ವ್ಯಸ್ಯನ್ ಹೃದಿಸ್ತ್ಯಾಚ್ಯುತ-ಚೋದಿತಾಃ” ಭಾಗಂ ೧೨-೬-೪೭ । ಪರಾಶರಸುತರಾದ ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಗಳು ಈ ವೇದರಾಶಿಯನ್ನು ಮಗ್ನಜ್ಞ ಸ್ವಾಮಾಥರ್ವಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧವಾಗಿ ಮಾಡಿದರು. “ಪರಾಶರಾತ್ ಸತ್ಯವತ್ಯಾಮಂಶಾಂಶಕಲಯಾ ವಿಶ್ವಃ । ಅವತೀರ್ಣೋ ಮಹಾಭಾಗ ವೇದಂ ಚಕ್ರೇ ಚತುರ್ವಿಧಮ್ । ಋಗರ್ಯಜುಃಸಾಮ್ನಾಂ ರಾಶಿನುದ್ವೃತ್ಯ ವರ್ಗಶಃ । ಚತುರ್ದಶಃ ಸಂಹಿತಾಶ್ಚಕ್ರೇ ಮನ್ತ್ರೈರ್ಮಣಿಗಂಗಾ ಇವ” ಭಾಗಂ ೧೨-೬-೪೯, ೫೦ । [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಕೃಷ್ಣಯಜು-ವೇದ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಯಜುಸ್ ಯಜುಸ್ (ನಂ) ಯಜುವೇದದ ಮಂತ್ರ. ಇಜ್ಯತೇನೆನ —ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾದೌ) “ಜಸಿಃ” (೩-೨-೧೧೭) । ಯಜುಸ್ಸಾಮಗಳಿಗಿಂತ ಬೇರೆಯಾದ ಗಾನರಹಿತವಾದ ಮಂತ್ರಗಳು ಯಜುವೇದ ಮಂತ್ರಗಳು. ಶೇಷೇ ಯಜುಃ ಶಬ್ದಃ । ಶೇಷೇ ಋಕ್ಸಾಮಭಿಷ್ಠೇ ಮನ್ವಜಾತೇ ಯನ್ಮನ್ವಜಾತಂ ಪ್ರಶಿಲಯ ಪಠಿತಂ ಗಾನಾದಿವಿಚ್ಛೇದರಹಿತಂ ತದ್ವಜುರೀತಿ ಜೈಮಿನಿಃ । [“ಕೃಷ್ಣಯಜುರ್ವೇದ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಯಜ್ಞ ಯಜ್ಞ (ಪುಂ) 1. ಯಾಗ, ದೇವಪೂಜೆ. ಇಜ್ಯಂತೇ ದೇವತಾ ಅತ್ರ—ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾದೌ) “ನಜ್” (೩-೩-೯೦) । “ಯಜೇನ ಯಜಮಯಜಂತ ದೇವಾಃ” । “ದುದೋಹ ಗಾಂ ಸ ಯಜಾಯ” ರಘುಂ ೧-೨೬ । ಯಜ್ಞವು ಸಾತ್ವಿಕ ರಾಜಸ ಮತ್ತು ತಾಮಸಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. (1) ಕರ್ತವ್ಯವೆಂದು ತಿಳಿದು ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದೆ ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ ಮಾಡುವ ಯಾಗವು ಸಾತ್ವಿಕ. “ಅಫಲಾಕಾಂಕ್ಷಿಭಿರಯಂಜೋ ವಿಧಿದೃಷ್ಟೋ ಯ ಇಜ್ಯತೇ । ಯಜತವ್ಯಮೇವೇತಿ ಮನಃ ಸಮಾಧಾಯ ಸ ಸ್ವಾತ್ವಿಕಃ” ಗೀತಾ ೧೭-೧೧ । (2) ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ದಂಭಕ್ಕಾಗಿ ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ ಮಾಡುವ ಯಜ್ಞವು ರಾಜಸ. “ಅಭಿಸಂಧಾಯ ತು ಫಲಂ ದಮ್ಭಾರ್ಥಮಪಿ ಚೈವ ಯಃ । ಇಜ್ಯತೇ ಸರತಶ್ರೇಷ್ಠ ತಂ ಯಜ್ಞಂ ವಿಧಿ ರಾಜಸಮ್” ಗೀತಾ ೧೭-೧೨ । (3) ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಅಶ್ರದ್ಧೆಯಿಂದಲೂ ಅಮಂತ್ರಕವಾಗಿಯೂ ಮಾಡುವ ಯಾಗವು ತಾಮಸ. “ವಿಧಿಹೀನ-ಮಸೃಷ್ಠಾನ್ ಮನ್ವಜಾತಮದಕ್ಷಿಣಮ್ । ಶ್ರದ್ಧಾವಿರಹಿತಂ ಯಜ್ಞಂ ತಾಮಸಂ ಪರಿಚಕ್ಷತೇ” ಗೀತಾ ೧೭-೧೩ । ಇದು ದ್ರವ್ಯಯಜ್ಞ ತಪೋಯಜ್ಞ ಜ್ಞಾನಯಜ್ಞ ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯಯಜ್ಞ ಮುಂತಾಗಿ ನಾನಾವಿಧ. “ದ್ರವ್ಯಯಜ್ಞಾಸ್ತಪೋಯಜ್ಞಾ ಯೋಗಯಜ್ಞಾ-ಸ್ತಥಾಪರೇ । ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯಜ್ಞಾನಯಜ್ಞಾಶ್ಚ ಯತಯಃ ಸಂಶಿತವ್ರತಾಃ” ಗೀತಾ ೪-೨೮ । 2. ಗೃಹಸ್ಥನು ಪ್ರತಿದಿನ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಪಂಚ ಮಹಾಯಜ್ಞಗಳು. [“ಪञ्ಚಮಹಾಯಜ್ಞ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 3. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಸ್ವಾರಾಧನ-ಧರ್ಮಸಮೃದ್ಧಿರಿತ್ತಾನಾಂ ತದರ್ಥಿನಾಂ ಸ್ವಯಮೇವ ಯಜಃ ತಾದೃಶೋ ಧರ್ಮಃ—ಯಜ “ನಜ್” । “ಜಪಯಜ್ಞಸ್ವರೂಪತ್ವಾತ್ ಯಜ್ಞ ಇತ್ಯುಚ್ಯತೇ ಬ್ರಹ್ಮಣಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । “ಯಜ್ಞೋ ಯಜ್ಞಪತಿಯೆವ ಯಜ್ಞಾಂ ಯಜ್ಞವಾಹನಃ” ವಿಂ ಸಂ । 4. ಆತ್ಮ, ಜೀವ. 5. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. “ಯಜ್ಞೋಽನ್ಯಾತ್ಮಹರೀಷ್ಟಿಷ್ಠ” ವೇಜಂ ।

ಯಜ್ಞಕುಂಡ ಯಜ್ಞಕುಂಡ (ಪುಂ) ಯಾಗಾಗ್ನಿಯನ್ನು ಪ್ರತಿಷ್ಠಿಸಲು ಮಾಡಿದ ಗುಳಿ.

ಯಜಕೃತ್ ಯಜಕೃತ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಜಗದ್ವಿಠಾಯ ಯಜ್ಞಂ ಕರೋತಿ ಆದೌ ಸೃಜತಿ—ಓ ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೬೧) । “ಜಗದ್ವಿಠಾಯ ಕೃತವಾನ್ಯಜಮಾದೌ ಸ ಯಜಕೃತ್”







ಸ್ವತತ್ವಜ್ಞಾನತಃ ಕ್ಷಣಾತ್ । ನಿರಪೇಕ್ಷಂ ಯಃ ಕರೋತಿ ಸ ಯಜ್ಞಾಂತ-  
ಕೃದುಚ್ಯತೇ" ಇತಿ ನಿರ್ದಿಷ್ಟಿಃ । "ಯಜ್ಞಾಂತಕೃತ್ಯಜಗುಹ್ಯಃ"  
ವಿಂ ಸಂ ।

ಯಜ್ಞಿಕ ಯಜ್ಞಿಕ (ಪುಂ) ಪಠಾಶವೃಕ್ಷ, ಮುತ್ತುಗದ ಮರ.

ಯಜ್ಞಿಯ ಯಜ್ಞಿಯ (ಪುಂ) 1. ದ್ವಾಪರಯುಗ. ಯಜ್ಞಾಯ  
ಹಿತಃ । "ಕೃತಂ ಸತ್ಯಯುಗಂ ತ್ರೇತಾನಾಯಿ ದ್ವಾಪರಯಜ್ಞಿಯೌ"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 2. ದೇವತೆ. 3. ಮೌಂಜಿಹುಲ್ಲು. "ಮುಂಜಸ್ತು  
ಯಜ್ಞಿಯೋ ಮೇಧ್ಯೋ ಮೃದುವಕ್ ಬ್ರಹ್ಮಮೇಷಲಃ" ವೇಜಂ । 4. ಕೆಗ್ಗಲಿ  
ಮರ. 5. ಪಠಾಶವೃಕ್ಷ, ಮುತ್ತುಗದ ಮರ. (ವಿಂ) 6. ಯಾಗಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಯಾಗಾರ್ಹವಾದ. "ಯಜ್ಞಿಯಂ  
ಯಜ್ಞಕರ್ಮಾಹಿ" ವೇಜಂ । 7. ಯಾಗಸಂಬಂಧವಾದ.

ಯಜ್ಞಿಯದೇಶ ಯಜ್ಞಿಯದೇಶ (ಪುಂ) ಯಾಗಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ ದೇಶ. ಯಜ್ಞಿಯೋ ದೇಶಃ । "ಕೃಷ್ಣಸಾರಸ್ತು ಚರತಿ  
ಮೃಗೋ ಯತ್ರ ಸ್ವಭಾವತಃ । ಸ ಜ್ಞೇಯೋ ಯಜ್ಞಿಯೋ ದೇಶಃ ಮ್ಲೇಚ್ಛದೇ-  
ಶಸ್ತತಃ ಪರಃ" ಮನುಂ ೧೩-೨೩ ।

ಯಜ್ಞಿಯಶಾಲಾ ಯಜ್ಞಿಯಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಾಗಶಾಲೆ,  
ಯಾಗಮಂಟಪ. ಯಜ್ಞಿಯಾ ಶಾಲಾ ।

ಯಜ್ಞೀಯ ಯಜ್ಞೀಯ (ಪುಂ) 1. ಉದುಂಬರ ವೃಕ್ಷ, ಅತ್ತಿ  
ಮರ. ಯಜ್ಞ "ಛಃ" (೪-೨-೧೩೮) । (ವಿಂ) 2. ಯಾಗ  
ಸಂಬಂಧವಾದ.

ಯಜ್ಞೇಶ್ವರ ಯಜ್ಞೇಶ್ವರ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಯಜ್ಞಾನಾಮೀಶ್ವರಃ ।

ಯಜ್ಞೋಪವೀತ ಯಜ್ಞೋಪವೀತ (ನಂ) ಮಂತ್ರಪೂರ್ವಕ  
ವಾಗಿ ಧರಿಸುವ ಯಜ್ಞಸೂತ್ರ, ಮುಮ್ಮಡಿಯಾದ ಪವಿತ್ರ  
ಸೂತ್ರ. ಯಜ್ಞೇನ ಸಂಸ್ಕೃತಮುಪವೀತಮ್ । ವಿಪ್ರನಿಗೆ ಕಾರ್ಪಾಸ  
(ಹತ್ತಿಯ) ಸೂತ್ರ ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಗೆ ಶಣಸೂತ್ರ ವೈಶ್ಯನಿಗೆ  
ಕುಂಯ ಉಣ್ಣೆಯಿಂದ ಮಾಡಿದ ಸೂತ್ರ. "ಕಾರ್ಪಾಸ-  
ಮುಪವೀತಂ ಸ್ಯಾದ್ವಿಪ್ರಸ್ಯೋರ್ಧ್ವವೃತಂ ತ್ರಿವೃತ್ । ಶಣಸೂತ್ರಮಯಂ ರಾಜಃ  
ವೈಶ್ಯಸ್ಯಾವಿಕಸೌತ್ರಿಕಮ್" ಮನುಂ ೨-೪೪ ।

ಯಜ್ಞ್ಯ ಯಜ್ಞ್ಯ (ಪುಂ) ಯಜ್ಞಾರ್ಹವನ್ನು ತಿಳಿದ  
ಅಧ್ಯಯುಕ್ತ. ಯಜತಿ — ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಯುಚ್"   
(೩-೨-೨೦) ।

ಯಜ್ವನ್ ಯಜ್ವನ್ (ಪುಂ) 1. ಶಾಸ್ತ್ರಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಯಾಗ  
ಮಾಡಿದವನು. ಯಜತೇ — ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಙ್ವನಿಪ್"   
(೩-೨-೧೦೩) । "ಗ್ರಾಮೇಶ್ವಾತ್ಮವಿಸೃಷ್ಟೇಷು ಯುಪವಿಹ್ಲೇಷು  
ಯಜ್ವನಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೪೪ । "ಯಜ್ವಮಿಃ ಸಂಭೃತಂ ಹವ್ಯಂ  
ವಿತತೇಷ್ವಧ್ವರೇಷು ಸಃ" ಕುಮಾರಂ ೨-೪೬ । 2. ವಿಷ್ಣು,  
ನಾರಾಯಣ. ಅಶಕ್ತಾನುಷ್ಠೇಯಂ ಸಂಧ್ಯಾದಿಕಂ ಕರ್ಮ ಸ್ವಯಮೇ-  
ವಾನುಷ್ಠಾಯ ತದರ್ಥ ಸ್ವಯಮೇವ ಯಜತೇ — ಯಜ "ಙ್ವನಿಪ್" ।

"ಅಶಕ್ತಂ ತು ಸ್ವಯಂ ಯಜತಾ ತಂ ಯಜ್ವೇತಿ ಪ್ರಚಕ್ಷತೇ" ಇತಿ  
ನಿರ್ದಿಷ್ಟಿಃ । "ಯಜ್ಞೋ ಯಜ್ಞಪತಿಯಂಜ್ವಾ" ವಿಂ ಸಂ ।

ಯಜ್ವರ ಯಜ್ವರ (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. 2. ಅಧ್ವರ,  
ಯಾಗ. "ಯಜ್ವರೋ ತು ಹಯಾಧ್ವರೋ" ವೇಜಂ ।

ಯತ್ ಯತ್ (ಅವ್ಯಂ) ಹೇತು, ಕಾರಣ. ಯಾವ ಕಾರಣ  
ದಿಂದ. ಯಮ (ಉಪರಮೆ) "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೧೭೮) ।

"ಅತ್ರ ಸ್ಥಿತಾ ತೃಣಮದಾದ್ವಹುಶೋ ಯದೇಶ್ಯಃ" ಉಂ ರಾಂ ೩-೨೧ ।

ಯತ್ ಯತ್ (ವಿಂ) ಹೋಗುತ್ತಿರುವ, ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ.  
ಇನ್ (ಗತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙಿಪ್"   
(೪-೧-೬) । ಯತೀ ಯತೀ. "ಅಭಿವೀಕ್ಷ್ಯ ಸಾಮಿಕ್ರತಮಂಜನಂ  
ಯತೀಃ ಕರಣಧನೀವಿಗಲದಂಶುಕಾಃ ಸ್ತ್ರೀಯಃ" ಮಾಘಂ ೧೩-೩೧ ।

ಯತ ಯತ (ನಂ) 1. ಮಾವಟಗನು ಅನೆಯನ್ನು ಕಾಲಿ  
ನಿಂದ ನಡೆಸುವುದು. "ಆರೋಹಾ ಗಜಜೀವನಾಃ । ಪಾದಕರ್ಮ  
ಯತಂ ತೇಷಾಮ್" ವೇಜಂ । (ವಿಂ) 2. ವಿಧೇಯ, ವಿನೀತ,  
ನಮ್ರ. "ಪ್ರಣೇಯಃ ಪ್ರಶ್ನಿತೋ ವಕ್ಯೋ ವಿಧೇಯೋ ನಿಭೃತೋ ಯತಃ"  
ವೇಜಂ । 3. ವಿಶ್ರಾಂತಿಹೊಂದಿದ, ವಿರಾಮಹೊಂದಿದ.  
4. ಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. "ಬದ್ಧೋಪರತಯೋರೈತಃ"  
ವೇಜಂ । 5. ನಿರೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ವಶದಲ್ಲಿರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಯತೇಂದ್ರಿಯಮನೋಬುದ್ಧಿಃ ಮುನಿರ್ಮೋಕ್ಷ-  
ಪರಾಯಣಃ" ಗೀತಾ ೫-೨೮ ।

ಯತತ್ ಯತತ್ (ವಿಂ) ಪ್ರಯತ್ನಮಾಡುತ್ತಿರುವ,  
ಪ್ರಯತ್ನಶೀಲನಾಗಿರುವ. ಯತೀ (ಪ್ರಯತ್ನೇ) "ಶತ್"   
(೩-೨-೧೨೪) । ಆತ್ಮನೇಪದಿಯಾದ ಯತೀ ಧಾತುವು  
ಪರಸ್ಪ್ರಪದದಲ್ಲಿಯೂ ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. "ಯತತೋ  
ಹ್ಯಪಿ ಕೌಂತೇಯ ಪುರುಷಸ್ಯ ವಿಪಶ್ಚಿತಃ" ಗೀತಾ ೨-೬೦ ।

ಯತನ ಯತನ (ನಂ) ಪ್ರಯತ್ನ. ಯತೀ (ಪ್ರಯತ್ನೇ) ಭಾವೇ  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

ಯತನೀಯ ಯತನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಯತ್ನಿಸಬೇಕಾದ.  
2. ಯತ್ನಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಯತೀ (ಪ್ರಯತ್ನೇ) "ಅನೀಯರ್"   
(೩-೧-೯೬) । "ತವ್ಯಃ" । ಯತಿಸ್ತಥ್ಯಮ್ ಯತಿಸತ್ಯಮ್ ।

ಯತಮ ಯತಮ (ವಿಂ) ಇವರ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಯಾರು ?  
ಈ ಬಹು ಮಂದಿಗಳಲ್ಲಿ ಯಾರು ? ಈ ಅನೇಕ ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ  
ಯಾವುದು ? ಏಕಾಂ ಮಧ್ಯೇ ಯಃ ? ಯದ್ — ವಾ "ಙತಮಚ್"   
(೫-೩-೯೩) । ಬಹುನಾಮ್ ಮಧ್ಯೇ ನಿರ್ಧಾರಣೇ ವಾ ಙತಮಚ್ ।

ಯತಮಾನ ಯತಮಾನ (ವಿಂ) ಪ್ರಯತ್ನಪಡುತ್ತಿರುವ.  
ಯತೀ (ಪ್ರಯತ್ನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಯಾ  
ನ ಯಯಿ ಪ್ರಿಯಮನ್ಯವಧೂಮ್ಯಃ ಸಾರತರಾಗಮನಾ ಯತಮಾನಮ್"  
ಮಾಘಂ ೪-೪೫ ।



ಯತರ ಯತರ (ವಿಂ) ಈ ಇಬ್ಬರ ಮಧ್ಯೆ ಯಾರು? ಈ ಎರಡರ ಮಧ್ಯೆ ಯಾವುದು? ಉತ್ತರೋತ್ತರೇ ಯಃ?—ಯತ್? ।  
ಯದ್ "ಏತರತ್" (೪-೩-೧೨) ।

ಯತಸ್ ಯತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಯಾರಿಂದ? ಯಾವುದರಿಂದ? ಎಲ್ಲಿಂದ? ಯದ್ "ತಸಿಲ್" (೪-೩-೭) । ಯಸ್ಮಾತ್ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ — "ಅಪ್ಯಗ್ರಣಿಮನ್ತ್ರಕೃತಾಮೃಷಿಣಾಂ ಕುಶಾಗ್ರಬುದ್ಧೇ ಕುಶಲೀ ಗುರುತೇ । ಯತಸ್ತ್ವಯಾ ಜ್ಞಾನಮಶೇಷಮಾಪ್ತಂ ಲೋಕೇನ ಚೈತನ್ಯಮಿವೋಷ್ಣರಶ್ಮಿಃ" ರಘುಂ ೪-೪ । "ಯತಶ್ಚ ಭಯಮಾ-ಶಕ್ತೇತ್ ಪ್ರಾಚೀಂ ತಾಂ ಕಲ್ಪಯೇದ್ವಿಶಮ್" ಮನುಂ ೭-೧೮೯ ।  
2. ಯಾವ ಕಾರಣದಿಂದ? ಯಾರಿಂದ? ಯಾವಿಂದ? ಯೆನ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ — ಯದ್ "ತಸಿಲ್" (೪-೩-೧೪) । "ಯದ್ವಪ್ ಯದವಿಷ್ಠಾನಂ ಯತಃ ಸೃಷ್ಟಿಮಿದಂ ಪ್ರಭೌ" ಭಾಗಂ ೨-೪-೨ ।  
3. ಎಲ್ಲಿ? ಯಾರಲ್ಲಿ? 4. ಯಾವಾಗ. ಯದಾ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ "ದಿಶಾಮಘಿಶಾಶ್ಚತುರೋ ಯತಃ ಸುರಾನ್ ಅಪಾಸ್ಯ ತಂ ರಾಗಹೃತಾಃ ಸಿಘೇವಿರೇ" ಮಾಘಂ ೧-೪೪ ।

ಯತಸ್ತ್ಯ ಯತಸ್ತ್ಯ (ವಿಂ) ಯಾವ ಕಡೆಯಿಂದ ಬಂದಿರುವ. ಯತಃ ಆಗತಃ "ತ್ಯಪ್" (೪-೨-೧೦೪) ।

ಯತಿ ಯತಿ (ಪುಂ) 1. ಸಂನ್ಯಾಸಿ, ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ಜಯಿಸಿ ದವನು. ಯತೇ ಮೋಕ್ಷಾಯ — ಯತಿ (ಪ್ರಯತ್ನೇ) "ಃ" (೩-೪-೧೧೭) । "ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ ಗೃಹಸ್ಥಶ್ಚ ವಾನಪ್ರಸ್ಥೋ ಯತಿಸ್ತಥಾ । ಏತೇ ಗೃಹಸ್ಥಪ್ರಮವಾಶ್ಚತ್ವಾರಃ ಪೃಥಗಾಶ್ರಮಾಃ" ಮನುಂ ೬-೮೭ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಸುಖವಾಗಿ ಉಚ್ಚರಿಸಲು ಸೂಕ್ತಯೋಗವಾಗುವಂತೆ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಮಧ್ಯೆ ಮಧ್ಯೆ ಪದಗಳಿಗೆ ಕೊಡುವ ವಿರಾಮ, ಶ್ಲೋಕಗಳನ್ನು ಹೇಳುವಾಗ ನಾಲಗೆಗೆ ಮಧ್ಯೆ ಮಧ್ಯೆ ಕೊಡುವ ವಿರಾಮ. ಯಮ್ಯತೇಽತ್ರ ಜಿಹ್ವಾ — ಯಮ (ಉಪರಮೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪) । "ಜ್ಞೇಯಃ ಪಾದಶ್ಚತುರ್ಯೋಶೋ ಯತಿವಿಚ್ಛೇದಸಂಜ್ಞಿಕಾ" ವೃಂ ೨೦ । 3. ಕಾರಾಗೃಹ, ಸೆರೆ ಮನೆ. 4. ಸಂಯಮ, ಸ್ವರಣ, ತಾಳ್ಮೆ. "ಕಾರಾಸಂಯಮಯಂತಿಃ" ವೇಜಂ । 5. ಪರಿಭವ, ಅವಮಾನ. "ಯತಿಃ ಸ್ತ್ರೀ ಪಾಠವಿಚ್ಛೇದೇ ನಿಕಾರಯತಿನೋಃ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ ।

ಯತೀ ಯತೀ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಯತ್ನಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಯತ (ನಿಕಾರೋಪಸ್ಕಾರಯೋಃ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।

ಯತೀನ್ ಯತೀನ್ (ಪುಂ) ಸಂನ್ಯಾಸಿ, ಭಿಕ್ಷು, ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ಜಯಿಸಿದವನು. ಯಮ (ಉಪರಮೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) । ಯತಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಃ" (೪-೨-೧೧೪) । "ಕರ್ಮಂದೀ ಮಸ್ಕರೀ ಯತಿ" ವೇಜಂ । "ಯೇ ನಿಜಿತೇಂದ್ರಿಯಗ್ರಾಮಾ ಯತಿನೋ ಯತಯಶ್ಚ ತೇ" ಅಮಂ ।

ಯತ ಯತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಯತ್ನಪಟ್ಟಿರುವ, ಪ್ರಯತ್ನ ನಡೆಸಿರುವ. ಯತಿ (ಪ್ರಯತ್ನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೧೧೭) । 2. ಎಚ್ಚರಿಕೆ ವಹಿಸಿರುವ, ಜಾಗರೂಕನಾಗಿರುವ, ಕಾವಲಾಗಿ ನಿಂತಿರುವ. 3. ಸಿದ್ಧನಾಗಿರುವ. "ಭೃಗುಮಾರಾಧನೇ ಯತಃ ಸ್ವಾರಾಜ್ಯಸ್ಯ ಮಹತ್ವತಃ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೪೪ ।

ಯತ್ನ ಯತ್ನ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಯತ್ನ, ಉದ್ಯೋಗ. ಯತಿ (ಪ್ರಯತ್ನೇ) "ನ್" (೩-೩-೧೦) । "ನ ಜಾತಂ ತಾತ ಯತ್ನಸ್ಯ ಪೌರ್ವಪ್ರಯಮಮುಷ್ಯ ತೇ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೪೨ । 2. ಎಚ್ಚರಿಕೆ, ಕಾವಲು, ಜಾಗರೂಕತೆ. "ಭವಾನಪೀದಂ ಪರವಾನವೇತಿ ಮಹಾನ್ಹಿ ಯತ್ನಸ್ತವ ದೇವದಾರೌ" ರಘುಂ ೨-೪೬ । 3. ಆಯಾಸ, ಶ್ರಮ, ಕಷ್ಟ. "ಶೌಭಾಜ್ಞನಿರ್ಮಾಣವಿಧೌ ವಿಧಾತುರ್ಲವಿಷ್ಯ ಉಪಾಧೌ ಇವಾಸ ಯತ್ನಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೩೪ । ಯತ್ನೇನ ಯತ್ನೇನ ಯತ್ನತಃ ಯತ್ನತಃ ಯತ್ನಾತ್ ಯತ್ನಾತ್ (ಅವ್ಯಂ) ಬಹಳ ಎಚ್ಚರಿಕೆಯಿಂದ, ಜಾಗರೂಕತೆಯಿಂದ.

ಯತ್ನವತ್ ಯತ್ನವತ್ (ವಿಂ) ಪ್ರಯತ್ನವುಳ್ಳವನು. ಯತ್ನೋಪಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪) ।

ಯತ್ರ ಯತ್ರ (ಅವ್ಯಂ) ಎಲ್ಲಿ? ಯಾವ ಜಾಗದಲ್ಲಿ, ಯಾರಲ್ಲಿ, ಯಾವ ಕಾಲದಲ್ಲಿ. ಯದ್ "ತ್ರಲ್" (೪-೩-೧೦) । "ಯತ್ರ ಕೌಪೇಃ ಕೃತಾಃ ಸ್ತ್ರೀಣಾಮಾಪ್ರಸಾದಾರ್ಥಿನಃ ಪ್ರಿಯಾಃ" ಕುಮಾಂ ೬-೪೪ । ಯತ್ರ ಯತ್ರ ಯಾವ ಯಾವ ಕಡೆಯಲ್ಲಿ, ಯಾವ ಯಾವ ಜಾಗದಲ್ಲಿ. "ಯತ್ರ ಯತ್ರ ಭೂಮಸ್ತತ್ರತತ್ರಾಗ್ನಿಃ" ತಂ ಸಂ । ಯತ್ರ ಕುತ್ರಚಿತ್ ಯತ್ರ ಕ್ವಚನ ಯಾವುದಾದರೂ ಒಂದು ಕಡೆ, ಯಾವುದಾದರೂ ಒಂದು ಕಾಲದಲ್ಲಿ.

ಯತ್ರತ್ಯ ಯತ್ರತ್ಯ (ವಿಂ) ಯಾವ ಜಾಗದಲ್ಲಿರುವ, ಯಾವ ಕಡೆಯಿರುವ. ಯತ್ರ "ತ್ಯಪ್" (೪-೨-೧೦೪) ।

ಯಥಾ ಯಥಾ (ಅವ್ಯಂ) ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಇದರ ಪ್ರಯೋಗ. 1. ಹೇಗೆ, ಯಾವ ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ, ಯಾವ ರೀತಿಯಾಗಿ. ಯದ್ "ಥಾಲ್" (೪-೩-೨೩) । ಅತ್ವಮ್ (೭-೨-೧೦೨) । "ಯಥಾ ಪ್ರಹ್ಲಾದನಾಚ್ಚಂದ್ರಃ ಪ್ರತಾಪಾತ್ಪತನೋ ಯಥಾ । ತಥೈವ ಸೋಽಭೂದನ್ವಯೋ ರಾಜಾ ಪ್ರಕೃತಿರಂಜನಾತ್" ರಘುಂ ೪-೧೨ । 2. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ. "ವಿತರತಿ ಗುರುಃ ಪ್ರಾಜ್ಞಃ ವಿಧ್ಯಾಂ ಯಥೈವ ತಥಾ ಜಡಃ" ತಂ ರಾಂ ೨-೪ । 3. ಒಂದು ವಿಷಯವನ್ನಾಗಲಿ ಒಂದು ವಸ್ತುವನ್ನಾಗಲಿ ದೃಢವಾಗಿ ಸ್ಥಿರಪಡಿಸಿ ಹೇಳುವುದು. "ಅಕಥಿತೋಽಪಿ ಜಾಯತ ಏವ ಯಥಾಯಮಾಭೋಗಸ್ತಪೋವನಸ್ಯೇತಿ" ಶಾಕುಂ ೨ । 4. ಯೋಗ್ಯತೆ, ಅನುರೂಪ, ಸಾಮಂಜಸ್ಯ, ಹೊಂದಿಕೆ. 5. ಅನುಲ್ಲಂಘನೆ, ಅಜ್ಞೆಯನ್ನು ಮೀರಿದಿರುವುದು. "ಯಥಾ ಸಾದೃಶ್ಯಯೋಗ್ಯತ್ವವಿಪ್ಲಾಸ್ವರ್ಥಾನತಿಕ್ರಮೇ" ವೇಜಂ । 6. ಕಾರಣ,



ಹೇತು. "ಯಥೇತೋಮುಖಾಗತೇರಸ್ಮಾಭಿಃ ಕಲಕಲಃ ಶ್ರುತಸ್ತಥಾ ತರ್ಕಯಾಮಿ ಪಾರಕಯಂ ಬಲಮನ್ಯದಪಿ ಉಪಗತಮಿತಿ" ಮಾಲತೀಂ ೮. 7. (ಯಥಾ) ಹೇಗೋ (ತಥಾ) ಹಾಗೆ ಎನ್ನುವ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗ. "ಯಥಾ ಕಸ್ಯಾಪಿ ಪಿಂಡಜ್ವರೇ- ಲ್ಲೇಜಿತಸ್ಯ ತಿನ್ತಿಷ್ಯಾಮಭಿಲಾಘೋ ಭವೇತ್ ತಥಾ ಸ್ತ್ರೀರನ್ತ- ಪರಿಭಾವಿನೋ ಭವತ ಇಯಮ್ಪರ್ಯನಾ" ಶಾಕುಂ ೨. 8. "ಯಥಾ ತಥಾ" ಹೇಗೆ ಆಗಬೇಕೋ ಹಾಗೆ ಮಾಡು. "ತಸ್ಮಾ- ನ್ಮುಚ್ಯೇ ಯಥಾ ತಾತ ಸಂವಿಧಾತುಂ ತಥಾಹೇಸಿ" ರಘುಂ ೧-೭೨. ಯಥಾ ಪದವು ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಅವ್ಯಯೀಭಾವ ಸಮಾಸದಲ್ಲಿ ಯಥಾ ಪದವು ಅನುಗುಣ, ಅನುರೂಪ, ಅನತಿ ಕ್ರಮ, ಸಾದೃಶ್ಯ, ಯೋಗ್ಯ ಮುಂತಾದ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಕೊಡುವುದು.

**ಯಥಾಕಾಮಮ್ ಯಥಾಕಾಮಮ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಇಷ್ಟ ದಂತೆ, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ತೋಚಿದಂತೆ. ಕಾಮಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ ಯಥಾ- ಕಾಮಮ್ | ಅವ್ಯಯಿಂ | "ಯಥಾವಿಧಿ ಹುತಾಗ್ನಿನಾಂ ಯಥಾಕಾಮಾ- ಚಿತಾರ್ಥಿನಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೬. 2. ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯದಿಂದ, ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ, ತನಗೆ ತೋರಿದಂತೆ, ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ. "ಸ ನಿವಿಷ್ಯ ಯಥಾಕಾಮಂ ತಟೇವಾಲಿನವಂದನೌ" ರಘುಂ ೪-೫೧. (ವಿಂ) 3. ಇಷ್ಟಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಾದ.

**ಯಥಾಕಾಮಿನ್ ಯಥಾಕಾಮಿನ್** (ವಿಂ) ಸ್ವತಂತ್ರ್ಯನಾದ, ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ವರ್ತಿಸುವ, ಇಚ್ಛೆಗೆ ಮೀರದೆ ನಡೆಯುವ, ಇಷ್ಟಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಾದ ನಡವಳಿಕೆಯುಳ್ಳ. ಯಥಾಕಾಮೋ- ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) |

**ಯಥಾಕಾಲಮ್ ಯಥಾಕಾಲಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಕಾಲವನ್ನು ಮೀರದೆ, ಸಮಯವನ್ನು ಅತಿಕ್ರಮಿಸದೆ. ಕಾಲಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ ಯಥಾಕಾಲಮ್ | ಅವ್ಯಯಿಂ | "ಯಥಾಕಾಲಪ್ರಬೋಧಿನಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೬ |

**ಯಥಾಕ್ರಮಮ್ ಯಥಾಕ್ರಮಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಕ್ರಮವನ್ನು ಮೀರದೆ, ಕ್ರಮವಾಗಿ, ಸರಿಯಾದ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ. ಕ್ರಮಮನತಿ- ಕ್ರಮ್ಯ ಯಥಾಕ್ರಮಮ್ | ಅವ್ಯಯಿಂ | "ಯಥಾಕ್ರಮಂ ಪುಸವನಾದಿಕಾಃ ಕ್ರಿಯಾಃ ಧೃತೇಶ್ಚ ಧೀರಃ ಸದೃಶೀರ್ವ್ಯವಹತಃ" ರಘುಂ ೩-೧೦ |

**ಯಥಾಗತಮ್ ಯಥಾಗತಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಬಂದಂತೆ, ಬಂದ ಮಾರ್ಗದಿಂದಲೇ. ಆಗತಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ | "ತಥೇಪಿ ಕಾಮಂ ಪ್ರತಿಶುಶ್ರುವಾನ್ರಥೋರ್ಯಥಾಗತಂ ಮಾತಲಿಸಾರಥಿರ್ಯಯೌ" ರಘುಂ ೩-೬೭ |

**ಯಥಾಜಾತಮ್ ಯಥಾಜಾತಮ್** (ವಿಂ) ಮೂರ್ಖ, ಅಜ್ಞ, ಅರಿವಿಲ್ಲದವನು, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು, ಹುಟ್ಟುವಾಗ ಇದ್ದಂತೆಯೇ ಇರುವವನು. ಜಾತಂ ಜನ್ಮಸಮಯಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ

ಯಥಾಜಾತಮ್ | ಅವ್ಯಯಿಂ | ಯಥಾಜಾತಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) | "ಅಜ್ಞೇ ಮೂಢಯಥಾಜಾತಮೂರ್ಖವೈಧೇಯಬಾಲಿಷಾಃ" ಅಮಂ |

**ಯಥಾತಥಮ್ ಯಥಾತಥಮ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ನಿಜವಾಗಿ, ಸತ್ಯ ವಾಗಿ. ತಥಾನತಿಕ್ರಮ್ಯ ಯಥಾತಥಮ್ | ಅವ್ಯಯಿಂ | ಯಥಾವರ್ತತೇ ತಥಾ | 2. ಯೋಗ್ಯವಾಗಿ, ಅನುರೂಪವಾಗಿ.

**ಯಥಾಪರಾಧಮ್ ಯಥಾಪರಾಧಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಅಪರಾಧಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ, ತಪ್ಪಿಗೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ. ಅಪರಾಧಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ | ಅವ್ಯಯಿಂ | "ಯಥಾಪರಾಧದಂಡಾನಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೬ |

**ಯಥಾಪೂರ್ವಮ್ ಯಥಾಪೂರ್ವಮ್** (ವಿಂ) ಮೊದಲಿನಂತಿರುವ, ಹಿಂದೆ ಇದ್ದಂತೆ ಇರುವ. ಯಥಾಪೂರ್ವಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) | "ತೇಸ್ತ್ರಯಾಣಾಂ ಶಿತೇರ್ಬಾಣೀರ್ಯಥಾಪೂರ್ವವಿಶು- ದ್ವಿಮಿಃ" ರಘುಂ ೧೨-೪೮ |

**ಯಥಾಪೂರ್ವಮ್ ಯಥಾಪೂರ್ವಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಇದ್ದಂತೆಯೇ, ಮೊದಲು ಇದ್ದಂತೆ, ಹಿಂದೆ ಇದ್ದಂತೆ. ಪೂರ್ವ- ಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ | ಅವ್ಯಯಿಂ | "ಧಾತಾ ಯಥಾಪೂರ್ವಮಕಲ್ಪಯತ್" |

**ಯಥಾಪ್ರದೇಶಮ್ ಯಥಾಪ್ರದೇಶಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಯೋಗ್ಯ ವಾದ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ, ಸರಿಯಾದ ಜಾಗದಲ್ಲಿ. ಪ್ರದೇಶಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ | ಅವ್ಯಯಿಂ | "ಸರ್ವೋಪಮಾದ್ರವ್ಯಸಮುಚ್ಚಯೇನ ಯಥಾಪ್ರದೇಶಂ ವಿನಿ- ವೇಶಿತೇನ" ಕುಮಾಂ ೧-೪೯ |

**ಯಥಾಪ್ರಧಾನಮ್ ಯಥಾಪ್ರಧಾನಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಯೋಗ್ಯತೆಗೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ, ದರ್ಜೆಗೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ. ಪ್ರಧಾನಮನತಿ- ಕ್ರಮ್ಯ ಯಥಾಪ್ರಧಾನಮ್ | ಅವ್ಯಯಿಂ | "ಕಂಪೇನ ಮೂರ್ಛಃ ಶತಪತ್ರ- ಯೋನಿಂ ವಾಚಾ ಹರಿಂ ವೃತ್ರಹಣಂ ಸ್ಮಿತೇನ | ಆಲೋಕಮಾತ್ರೇಣ ಸುರಾನಶೇಷಾನ್ ಸಂಭಾವಯಾಮಾಸ ಯಥಾಪ್ರಧಾನಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೪೬ |

**ಯಥಾಪ್ರಾಪ್ತಮ್ ಯಥಾಪ್ರಾಪ್ತಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಕ್ರಮಪ್ರಾಪ್ತ ವಾದ, ಯೋಗ್ಯವಾದ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ದೊರೆತ.

**ಯಥಾಭಾಗಮ್ ಯಥಾಭಾಗಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಯೋಗ್ಯವಾದ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ, ಕ್ಷೇಪ್ರವಾದ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ. ಭಾಗಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ ಯಥಾಭಾಗಮ್ | ಅವ್ಯಯಿಂ | "ಕಶ್ಚಿದ್ವಿಧಾಭಾಗಮವಸ್ಥಿತೇಽಪಿ ಸ್ವಸನ್ನಿವೇಶಾದ್ವಚತೀಲಿಜ್ಜಿನೀವ" ರಘುಂ ೬-೧೯ |

**ಯಥಾಭಾಗಶಃ ಯಥಾಭಾಗಶಃ** (ಅವ್ಯಂ) ಭಾಗವನ್ನನು ಸರಿಸಿ, ಪ್ರಮಾಣಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ.

**ಯಥಾಭಿಲಷಿತಮ್ ಯಥಾಭಿಲಷಿತಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಇಷ್ಟಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆಗೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ. -ಅಭಿಲಷಿತಮ್ -ಅಭಿರುಚಿತಮ್, -ಅಪೀಡಮ್ -ಅಭೀಷ್ಟಮ್. ಅಭಿಲಷಿ- ತಮ್ ಅಭಿರುಚಿತಮ್ ಅಪೀಡಂ ವಾ ಅನತಿಕ್ರಮ್ಯ | ಅವ್ಯಯಿಂ |



ಯಾಮುಖೀನ ಯಥಾಮುಖೀನ (ವಿಂ) ನೇರವಾಗಿ ಎಂದು  
ರಿಗೆ ನೋಡುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರತಿಬಿಂಬಕ್ಕೆ ಅಶ್ರಯವಾಗಿರುವಂತಿರುವ.  
ಮುಖಸ್ಯ ಸದೃಶಂ ಯಾಮುಖಮ್ ಪ್ರತಿವಿಂಬಮ್  
ಸಾದೃಶ್ಯೇಷ್ಯಯಿಭಾವಃ | ನಿಪಾಂ | ದೃಶ್ಯತೇತಿ ದರ್ಶನಃ—  
ಯಾಮುಖಂ ದರ್ಶನಃ | “ಯಾಮುಖೀನಃ ಸೀತಾಯಾಃ ಪುಪ್ಲುವೇ ಬಹು  
ಲೋಭಯನ್” ಭट्टಿಂ ೪-೪೮ |

ಯಥಾಯಮ್ ಯಥಾಯಮ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಯೋಗ್ಯತೆಗೆ  
ಅನುಗುಣವಾಗಿ, ಗುಣಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ, ಸ್ವಭಾವಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ.  
ಯಥಾ ಶಬ್ದಸ್ಯ ವೀಕ್ಷಾಪಾಂ ದ್ವಿತ್ವಂ ನಿಪಾಂ (೮-೧-೧೪) |  
“ಅಸಕ್ತಮಾರಾಧಯತೋ ಯಥಾಯಮ್ ವಿಭಜ್ಯ ಭಕ್ತ್ಯಾ ಸಮಪಕ್ಷ-  
ಪಾತಯಾ” ಕಿರಾಂ ೧-೧೧ | 2. ತಮ್ಮಷ್ಟಕ್ಕೆ, ತಾವಾಗಿ.

ಯಥಾರ್ಥ ಯಥಾರ್ಥ (ವಿಂ) 1. ನಿಜವಾದ, ಸತ್ಯವಾದ.  
ಅರ್ಥಮನತಿಕ್ರಮಃ | “ಸೌಮ್ಯೇತಿ ಚಾಭಾಷ್ಯ ಯಥಾರ್ಥಭಾಷಿ”  
ರಘುಂ ೧೪-೪೪ | “ಯಥಾರ್ಥಶೌರ್ಯಾ ಯದುವೀರಯೋಧಾಃ” ಯಾದಂ  
೨೦-೧೮ | 2. ಅರ್ಥಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾದ. “ಕರಿಷ್ಯಮಿವ  
ನಾಮಾಸ್ಯ ಯಥಾರ್ಥಮರಿನಿಗ್ರಹಾತ್” ರಘುಂ ೧೪-೬ | (ಅವ್ಯಂ)  
3. ಅರ್ಥಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ. 4. ನಿಜವಾಗಿ, ಸತ್ಯವಾಗಿ.  
ಅರ್ಥಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ | ಅವ್ಯಯಿಂ |

ಯಥಾರ್ಥತಸ್ ಯಥಾರ್ಥತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ತತ್ತ್ವರೂಪದಿಂದ,  
ಸತ್ಯರೂಪದಿಂದ. ಯಥಾರ್ಥ “ತಸಿಲ್” (೪-೩-೧೪) |  
“ರಥಾಧಿರೂಢಂ ಚ ರಥಂ ಚ ರಕ್ಷನ್ ಯಥಾರ್ಥತೋ ದರ್ಶಯತಿ ಸ್ಮ  
ಯಂತಾ” ಯಾದಂ ೨೩-೨೨ |

ಯಥಾರ್ಥನಾಮನ್ ಯಥಾರ್ಥನಾಮನ್ (ವಿಂ) ಅನುರೂಪ  
ವಾದ ಹೆಸರುಳ್ಳವನು, ಅರ್ಥಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣ (ಸರಿಯಾದ)  
ವಾದ ಹೆಸರುಳ್ಳವನು. ಯಥಾರ್ಥ ನಾಮಾಸ್ಯ | “ರಾಜಾ ಪ್ರಜಾ-  
ರಂಜನಲಬ್ಧವರ್ಣಃ ಪರಂತಪೋ ನಾಮ ಯಥಾರ್ಥನಾಮಾ” ರಘುಂ  
೬-೨೧ |

ಯಥಾಹ್ ಯಥಾರ್ಥ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಯೋಗ್ಯತೆಗೆ ತಕ್ಕಂತೆ,  
ಅರ್ಹತೆಯನ್ನು ಮೀರದೆ. ಅಹಂ ಯೋಗ್ಯಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ |  
ಅವ್ಯಯಿಂ | “ಯಥಾಹ್ ಸಂಸೃಷ್ಟೋ ಯದುಭಿರಖಿಲೈರವಿರಚಿತಪದಃ”  
ಯಾದಂ ೧೪-೧೩೪ | (ವಿಂ) 2. ಉಚಿತವಾದ, ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ, ತಕ್ಕದಾದ. ಅಹಮನತಿಕ್ರಮಃ | “ಯಥಾಹ್ಸೇವಾ-  
ವಸರೇ ಪ್ರಮಾಣತಾಂ ಯದನ್ವಿತಃ ಸನ್ನಿಭಿಗಮ್ಯತಾಂ ಯಯಿ” ಯಾದಂ  
೧೪-೭೪ |

ಯಥಾಹ್ವರ್ಣ ಯಥಾರ್ಥವರ್ಣ (ಪುಂ) ಗೊಡ್ಡಹಾರ, ದೂತ.  
ಯಥಾಹ್ ವರ್ಣಯತಿ—ವರ್ಣ (ವರ್ಣಕ್ರಿಯಾವಿಸ್ತಾರಗುಣವಚನೇಷು) +  
ಣಿच् “ಅच्” (೩-೧-೧೩೪) | “ಯಥಾಹ್ವರ್ಣಃ ಪ್ರಣಿಧಿ-  
ರಪಸೃಪಶ್ವರಃ ಸ್ಪಶಃ” ಅಮಂ |

ಯಥಾವಕಾಶಮ್ ಯಥಾವಕಾಶಮ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅವ  
ಕಾಶಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ, ಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ. 2. ಬಿಡುವಿಗೆ  
ತಕ್ಕಂತೆ, ಪುರಸ್ಕಾರಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ. ಸಮಯಕ್ಕೆ ಅನು  
ಗುಣವಾಗಿ. 3. ಸ್ಥಾನವನ್ನು ಅತಿಕ್ರಮಿಸದೆ, ಸ್ವಸ್ಥಾನ  
ವನ್ನು ಮೀರದೆ. ಅವಕಾಶಂ ಪ್ರದೇಶಂ ಕಾಲಂ ಸ್ಥಾನಂ ವಾ ಅನತಿ-  
ಕ್ರಮ್ಯ | “ಪ್ರಾಲಂಬಮುಕ್ತುಷ್ಯ ಯಥಾವಕಾಶಂ ನಿನಾಯ ಸಾಚೀಕೃತ-  
ಚಾರುವಕ್ತ್ರಃ” ರಘುಂ ೬-೧೪ |

ಯಥಾವತ್ ಯಥಾವತ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಯೋಗ್ಯವಾಗಿ, ಸರಿ  
ಯಾಗಿ, ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ. ಯಥಾ “ವತಿಃ” (೪-೧-೧೧೭) |  
“ತತೋ ಯಥಾವದ್ವಿಹಿತಾಶ್ವರಾಯ ತಸ್ಮೈ ಸಮಯಾವೇಶವಿವರ್ಜಿತಾಯ”  
ರಘುಂ ೪-೧೯ | 2. ಕ್ರಮವಾಗಿ, ಸರಿಯಾಗಿ. “ಲಿಪಿ-  
ಯಥಾವದ್ಗ್ರಹಣೇನ ವಾಡ್ಮಯಂ ನದೀಮುಖೇನೇವ ಸಮುದ್ರಮಾವಿಶತ್”  
ರಘುಂ ೩-೨೮ | 3. ನಿಜವಾಗಿ, ಸತ್ಯವಾಗಿ.

ಯಥಾವಿಧಿ ಯಥಾವಿಧಿ (ಅವ್ಯಂ) ನಿಯಮಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ,  
ಶಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ. ವಿಧಿಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ | ಅವ್ಯಯಿಂ |  
“ಯಥಾವಿಧಿ ಹುತಾಗ್ನಿನಾಮ್” ರಘುಂ ೧-೬ |

ಯಥಾವೃದ್ಧಮ್ ಯಥಾವೃದ್ಧಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಹಿರಿಯರ  
ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ, ಹಿರಿಯರನ್ನು ಮೀರದೆ. ವೃದ್ಧಾನನತಿಕ್ರಮ್ಯ —  
ಅವ್ಯಯಿಂ | “ಗಗನಾದವತೀರ್ಣಾ ಸಾ ಯಥಾವೃದ್ಧಪರಮ್ಪರಾ”  
ಕುಮಾಂ ೬-೪೯ |

ಯಥಾವೃತ್ತಮ್ ಯಥಾವೃತ್ತಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ನಡೆದಂತೆ,  
ನಡೆದಹಾಗೆ, ವಾಸ್ತವವಾಗಿ ನಡೆದಿರುವ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ.  
ವೃತ್ತಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ ಯಥಾವೃತ್ತಮ್ |

ಯಥಾಶಕ್ತಿ ಯಥಾಶಕ್ತಿ (ಅವ್ಯಂ) ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಮೀರದೆ,  
ಶಕ್ತಿಗೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ. ಶಕ್ತಿಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ ಯಥಾಶಕ್ತಿ |  
ಅವ್ಯಯಿಂ | “ಪಞ್ಚ ಮಾಂ ನಿಜಿತಂ ಶಕ್ತವೃಕ್ಷಣಾಯುಧಭುಜಂ ಮೃಧೇ |  
ಘಟಮಾನಂ ಯಥಾಶಕ್ತಿ ತವ ಪ್ರಾಣಜಿಹೀರ್ಷಯಾ” ಭಾಗಂ  
೬-೧೨-೧೬ |

ಯಥಾಶಾಸ್ತ್ರಮ್ ಯಥಾಶಾಸ್ತ್ರಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಶಾಸ್ತ್ರ ರೀತಿ  
ಯಲ್ಲಿ, ಶಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ. ಶಾಸ್ತ್ರಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ  
ಯಥಾಶಾಸ್ತ್ರಮ್ | ಅವ್ಯಯಿಂ | “ಸರ್ವೇಪಿ ಕ್ರಮಶಸ್ವೇತೇ ಯಥಾ-  
ಶಾಸ್ತ್ರಂ ನಿಷೇವಿತಾಃ | ಯಥೋಕ್ತಕಾರಿಣಂ ವಿಪ್ರಂ ನಯಂತಿ ಪರಮಾಂ  
ಗತಿಮ್” ಮನುಂ ೬-೮೮ |

ಯಥಾಶ್ರುತಮ್ ಯಥಾಶ್ರುತಮ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಶಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೆ  
ಅನುಸಾರವಾಗಿ, ಶಾಸ್ತ್ರರೀತಿಯಲ್ಲಿ. ಶ್ರುತಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ |  
ಅವ್ಯಯಿಂ | 2. ಕೇಳಿದ್ದಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ, ಕೇಳಿದ ಹಾಗೆ.  
“ಸತ್ತಾಮನನ್ಯಾಮಿವ ಸದ್ಗುಣಾನಾಂ ಯಥಾಶ್ರುತಂ ಪ್ರೇಕ್ಷತ ಯಾದೇವೇಂದ್ರಃ”  
ಯಾದಂ ೧೩-೨ |



ಯಾಸಹ್ಯ ಯಥಾಸಂಖ್ಯ (ನಂ) ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಸಮಸಂಖ್ಯೆಯಿಂದ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಹೇಳಿದ ಪದಗಳಿಗೆ ಆ ಸಂಖ್ಯಾಕ್ರಮದಿಂದ ಅನ್ವಯ ಹೇಳುವಲ್ಲಿ ಯಥಾಸಂಖ್ಯಾಲಂಕಾರ. ಮೊದಲನೆಯ ಪದಕ್ಕೆ ಮೊದಲನೆಯ ಪದದೊಡನೆಯೂ ಎರಡನೆಯದಕ್ಕೆ ಎರಡನೆಯ ಪದದೊಡನೆಯೂ ಈ ರೀತಿ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಹೇಳುವುದು ಯಥಾಸಂಖ್ಯವಾಗುವುದು. “ಯಾಸಹ್ಯ ಕ್ರಮೇವ ಕ್ರಮಿಕಾಣಾಂ ಸಮನ್ವಯಃ” । उदा०: “शत्रुं मित्रं विपत्तिं च जय रञ्जय भञ्जय” । ಇಲ್ಲಿ ಶತ್ರುಂ ಜಯ ಮಿತ್ರಂ ರಂಜಯ ವಿಪತ್ತಿಂ ಭಂಜಯ ಎಂದು ಕ್ರಮವಾಗಿ ಪದಗಳಿಗೆ ಅನ್ವಯವು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. “ಯಾಸಹ್ಯಮನುಷ್ಯಾಃ ಸಮಾನಾಮ್” ಪಾಂ ಸೂಂ ೧-೩-೧೦ ।

ಯಾಸಮಯಮ್ ಯಥಾಸಮಯಮ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಸರಿಯಾದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ. 2. ಒಪ್ಪಂದಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ. ಸಮಯಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ ।

ಯಾಸುಖಮ್ ಯಥಾಸುಖಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಸುಖರವಾಗಿ, ಸಂತೋಷವುಂಟಾಗುವಂತೆ. “ಸುಖಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ । “ಅಥ ಯಾಸುಖಮಾತಂವಮುತ್ಸವಂ ಸಮನುಭೂಯ ವಿಲಾಸವತೀಸಲಃ” ರಘುಂ ೯-೪೮ ।

ಯಾಸ್ಥಾನಮ್ ಯಥಾಸ್ಥಾನಮ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಯೋಗ್ಯವಾದ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ, ಸರಿಯಾದ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ. 2. ಮೊದಲಿನ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ. ಸ್ಥಾನಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ । “ಯಾಸ್ಥಾನಂ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಯಾಮಿ” ।

ಯಾಸ್ಥಿತ ಯಥಾಸ್ಥಿತ (ವಿಂ) 1. ಇದ್ದಂತೆ ಇರುವ, ಬದಲಾವಣೆಯಿಲ್ಲದ. 2. ನಿಜವಾದ, ಸತ್ಯವಾದ. ಸ್ಥಿತಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ । “ರಾಮಂ ಯಾಸ್ಥಿತಂ ಸರ್ವಂ ಭ್ರಾತಾ ಭೃತೇ ಸ್ಮ ವಿಹ್ವಲಃ” ಭದ್ರಂ ೬-೮ । (ಅವ್ಯಂ) 3. ಪರಿಸ್ಥಿತಿಗೆ ತಕ್ಕಂತೆ. 4. ನಿಜವಾಗಿ, ಸತ್ಯವಾಗಿ.

ಯಾಸ್ಥಿತಿಯ ಯಥಾಸ್ಥಿತಿಯ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪರಿಸ್ಥಿತಿಗೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ, ಸಂದರ್ಭಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ. 2. ವಾಡಿಕೆಯಂತೆ, ಪದ್ಧತಿಯಂತೆ.

ಯಾಸ್ವಮ್ ಯಥಾಸ್ವಮ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ತಮ್ಮದನ್ನು ಆತಿಕ್ರಮಿಸದೆ, ತಮ್ಮ ತಮ್ಮ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ. ಸ್ವಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ ಯಾಸ್ವಮ್ । ಅವ್ಯಯಿಂ । “ಅಧ್ಯಾಸತೇ ಚೀರಮೃತೋ ಯಾಸ್ವಂ ಚಿರೋಜ್ಜಿತಾನ್ಯಾಶ್ರಮಮಂಡಲಾನಿ” ರಘುಂ ೧೩-೨೨ । 2. ನಿಜವಾಗಿ, ಸತ್ಯವಾಗಿ. 3. ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿ. 4. ಯೋಗ್ಯವಾಗಿ, ಕ್ರಮವಾಗಿ. “ಯಾಸ್ವಮಾಶ್ರಮೇಶ್ವಕೇ ವರ್ಣೇರಪಿ ಪತಂಭಾಕ್” ರಘುಂ ೧೭-೬೫ ।

ಯಥೇಚ್ಛಮ್ ಯಥೇಚ್ಛಮ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ತೋಚಿದಂತೆ. ಇಚ್ಛಾಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ । ಅವ್ಯಯಿಂ । 2. ಇಷ್ಟಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ, ಅಪೇಕ್ಷೆಗೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ. (ವಿಂ) 3. ಇಷ್ಟಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಾದ, ಅಪೇಕ್ಷೆಗೆ ಅನುಗುಣವಾದ. -ಇಚ್ಛಮ್ -ಇಷ್ಟಮ್, -ಇಚ್ಛಿತಮ್ -ಇಷ್ಟಿತಮ್. ಇಚ್ಛಮ್ ಇಚ್ಛಿತಮ್ ವಾಚನತಿಕ್ರಮ್ಯ । “ಕುರ್ಯುರ್ಯಥೇಷಂ ತತ್ಸರ್ವಮಿ-ಶಾಸ್ತೇ ಸ್ವವನಸ್ಯ ವೇ” । “ತಾನ್ ಪ್ರತ್ಯವಾದೀದಥ ಸಾಧವೋಽಪಿ ಯಥೇಚ್ಛಿತಂ ಪ್ರಸ್ತುತಕರ್ಮ ಧರ್ಮಮ್” ಭದ್ರಂ ೨-೨೮ ।

ಯಥೋಕ್ತ ಯಥೋಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಮೊದಲು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಂದೆ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಉಕ್ತಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ । “ಪ್ರಾತರ್ಯಥೋಕ್ತ-ವ್ರತಪಾರ್ಶ್ವಾಂತೇ ಪ್ರಾಸ್ಥಾನಿಕಂ ಸ್ವಸ್ತಿಯನಂ ಪ್ರಯುಜ್ಯ” ರಘುಂ ೨-೭೦ । (ಅವ್ಯಂ) 2. ಮೇಲೆ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಂತೆ, ಹಿಂದೆ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಂತೆ.

ಯಥೋಚಿತ ಯಥೋಚಿತ (ವಿಂ) 1. ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಅನುರೂಪವಾದ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಯೋಗ್ಯವಾಗಿ, ಅನುರೂಪವಾಗಿ, ಅನುಗುಣವಾಗಿ. ಉಚಿತಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ । “ಕರ್ಮಾಣಿ ಚ ಯಥಾಕಾಲಂ ಯಥಾದೇಶಂ ಯಥಾಬಲಮ್ । ಯಥೋಚಿತಂ ಯಥಾವಿತ್ತ-ಮಕರೋದ್ರಹಸಾಹಿತಮ್” ಭಾಗಂ ೪-೨೨-೫೦ ।

ಯಥೋದಿತ ಯಥೋದಿತ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂದೆ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೇಲೆ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಹೇಳಿದ್ದಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ, ಹೇಳಿದ್ದನ್ನು ಆತಿಕ್ರಮಿಸದೆ. ಉದಿತಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ । ಅವ್ಯಯಿಂ ।

ಯಥೋದ್ವಿಷ್ಟ ಯಥೋದ್ವಿಷ್ಟ (ವಿಂ) 1. ಉದ್ವೇಶ ಮಾಡಿದ್ದಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾದ, ಸೂಚನೆ ಮಾಡಿ ತೋರಿಸಿದ್ದಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಾದ. ಉದ್ವಿಷ್ಟಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ । (ಅವ್ಯಂ) 2. ಸೂಚನೆಗೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ. ಉದ್ವಿಷ್ಟಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ । ಅವ್ಯಯಿಂ ।

ಯಥೋದ್ದೇಶಮ್ ಯಥೋದ್ದೇಶಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಉದ್ದೇಶಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ, ಸೂಚನೆಗೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ. ಉದ್ದೇಶಮನತಿಕ್ರಮ್ಯ । ಅವ್ಯಯಿಂ ।

ಯಥ್ ಯಥ್ (ವಿಂ) ಇದೊಂದು ಸಂಬಂಧಾರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಸರ್ವನಾಮಪದ. ಮೂರು ಲಿಂಗಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಇದರ ರೂಪಗಳು:

|       |         |          |        |
|-------|---------|----------|--------|
| (ಪುಂ) | ಯಃ      | ಯಿ       | ಯೇ     |
|       | ಯಮ್     | ಯಿ       | ಯಾನ್   |
|       | ಯೇನ     | ಯಾಸ್ಯಾಮ್ | ಯೈಃ    |
|       | ಯಸ್ಮಿ   | ”        | ಯಸ್ಮೈಃ |
|       | ಯಸ್ಮಾತ್ | ”        | ”      |
|       | ಯಸ್ಯ    | ಯಯಿಃ     | ಯೇಷಾಮ್ |
|       | ಯಸ್ಮಿನ್ | ”        | ಯೇಷು । |



|           |         |          |        |
|-----------|---------|----------|--------|
| (ಸ್ತ್ರೀಂ) | ಯಾ      | ಯೇ       | ಯಾ:    |
|           | ಯಾಮ್    | ಯೇ       | ಯಾ:    |
|           | ಯಯಾ     | ಯಾಮ್ಯಾಮ್ | ಯಾಮಿ:  |
|           | ಯಸ್ಯ    | "        | ಯಾಮ್ಯ: |
|           | ಯಸ್ಯಾ:  | "        | "      |
|           | ಯಸ್ಯಾ:  | ಯಯೋ:     | ಯಾಸಾಮ್ |
|           | ಯಸ್ಯಾಮ್ | "        | ಯಾಸು   |
| (ನಂ)      | ಯತ್     | ಯೇ       | ಯಾನಿ   |
|           | "       | "        | "      |
|           | ಯೇನ     | ಯಾಮ್ಯಾಮ್ | ಯೈ:    |

ಮುಂತಾಗಿ ಪುಂಲಿಂಗದಂತೆ ರೂಪಗಳು. ಯಾರು ಯಾವಳು ಯಾವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಪಟ್ಟು ತದ್ ಶಬ್ದದಿಂದ ವಾಕ್ಯ ಪೂರ್ತಿಯಾಗುವುದು. "ಯಸ್ಯ ಚೇತಸಿ ವರ್ತೇತಾ: ಸ ತಾವತ್ ಕೃತಿನಾಂ ವರ:" ಕುಮಾಂ ೬-೧೮. "ಅಧ್ಯುಷುಷೋ ಯಾಮ-ಭವಜ್ಜನಸ್ಯ ಯಾ: ಸಂಪದಸ್ತಾ ಮನಸೋಽಪ್ಯಗಮ್ಯಾ:" ಮಾಘಂ ೩-೫೯. ಕೆಲವು ಕಡೆ ಅದಸ್ ಇದಮ್ ಮತ್ಯು, ಏತದ್ ಶಬ್ದಗಳಿಂದಲೂ ಇದರ ವಾಕ್ಯವು ಪೂರ್ತಿಯಾಗುವುದು. "ಜಗತ್ಪರ್ಯಾಪ್ತಸಹಸ್ರಮಾನುನಾ ನ ಯನ್ನಿಯಂತು ಸಮಮಾವಿ ಭಾನುನಾ | ಪ್ರಸಹ್ಯ ತೇಜೋಭಿರಸಹ್ಯತಾಂ ಗತೇರದಸ್ತವಯಾ ನುತ್ತಮ-ನುತ್ತಮಂ ತಮ:" ಮಾಘಂ ೧-೨೭. "ಆಲಪ್ಯಾಲಮಿದಂ ಬಭ್ರೋಯತ್ಸ ದಾರಾನಪಾಹರತ್ | ಕಥಾಪಿ ಕ್ಷಲು ಪಾಪಾನಾಮಲಮಶ್ರೇಯಸೇ ಯತ:" ಮಾಘಂ ೨-೪೦. "ಯದ್" ಶಬ್ದವು ಪ್ರಶ್ನಾರ್ಥಕ ಸರ್ವನಾಮ ದೊಡನೆಯಾಗಲಿ ಸರ್ವನಾಮಾವ್ಯಯದೊಡನೆಯಾಗಲಿ ಸೇರಿದಾಗ ಅನಿರ್ದಿಷ್ಟವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನೂ ಕೊಡುವುದು. "ಸುತೋ ವಾ ಸುತಪುತ್ರೋ ವಾ ಯೋ ವಾ ಕೋ ವಾ ಭವಾಮ್ಯಹಮ್" ವೇಣೀಂ ೩-೩೩. ಇಲ್ಲಿ ಯಾವನಾದರೂ ಎಂಬ ಅರ್ಥವನ್ನೂ ಯತ್ರಕುತ್ರಾಪಿ ಯತ್ರವಾಪಿ ಯತ್ರಕುತ್ರಚಿತ್ ಎಲ್ಲಾದರೂ ಒಂದು ಕಡೆ ಯ:ಕಷ್ಠಿತ್ ಯಾವನಾದರೂ ಒಬ್ಬ ಯತ್ಕಿಂಚಿತ್ ಯಾವುದಾದರೂ ಒಂದು ಯಾಕಾಚಿತ್ ಯಾವಳಾದರೂ ಒಬ್ಬಳು ಇತ್ಯಾದಿ ಅನಿರ್ದಿಷ್ಟವಾದ ಅರ್ಥಗಳನ್ನೂ ಕೊಡುವುದು. (ಅವ್ಯಂ) ಹೇತು, ಕಾರಣ. ತದ್ ತತ: ಎಂಬ ಹೇತುರ್ವರ್ತಕ ಅವ್ಯಯದಿಂದ ವಾಕ್ಯಪೂರ್ತಿಯಾಗುವುದು. "ದ್ವಿಷ-ನ್ನಿಮಿತ್ತಾ ಯದ್ವಿಂ ದಶಾ ತತ: ಸಮೂಲಮುನ್ಮೂಲಯತೀವ ಮೇ ಮನ:" ಕಿರಾಂ ೧-೪೧.

ಯದರ್ಥಮ್ ಯದರ್ಥಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಯಾತಕ್ಕೋಸ್ಕರಂ?, ಯಾತಕ್ಕಾಗಿ?, ಯಾರಿಗಾಗಿ? ಯಸ್ಮಿ ಇದಮ್ ಯದರ್ಥಮ್ | ಅಸ್ವಪದವಿಗ್ರಹ: (ವಾಂ ೨-೧-೩೬) | "ಯದರ್ಥಮಮ್ಬೋಜ-ಮಿವೋಷಣವಾರಣಂ ಕೃತಂ ತಪ:ಸಾಧನಮೇತಯಾ ವಪು:" ಕುಮಾಂ ೫-೫೨.

ಯದಪಿ ಯದಪಿ (ಅವ್ಯಂ) ಆದರೂ, ಹಾಗಾದರೂ, ಏನೇ ಆದರೂ. "ವಕ್ರ: ಪನ್ಥಾ ಯದಪಿ ಭವತ: ಪ್ರಸ್ಥಿತಸ್ಯೋತ್ತರಾ-ಶಾಮ್" ಮೇಘಂ ೧-೨೭.

ಯದಾ ಯದಾ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಯಾವಾಗ?, ಯಾವ ಕಾಲದಲ್ಲಿ? "ತದಾ" ಪದವು ಇದರ ವಾಕ್ಯ ಪೂರ್ತಿಯಾಗುವುದು. ಯದ್ ಕಾಲೇ "ದಾ" (೫-೩-೧೫) | "ಯದಾ ಚ ತಸ್ಯಾಧಿಗಮೇ ಜಗತ್ಪತೇರಪಶ್ಯದನ್ಯಂ ನ ವಿಧಿ ವಿಚಿನ್ವತೀ | ತದಾ ಸಹಾಸ್ತಮಾಭಿರನುಜ್ಞಯಾ ಗುರೋರಿಯಂ ಪ್ರಪನ್ನಾ ತಪಸೇ ತಪೋವನಮ್" ಕುಮಾಂ ೫-೫೯. 2. ಯಾವ ಕಾರಣದಿಂದ? "ಯದಾ ಬುದ್ಧಿ: ಸರ್ವಗತಸ್ತವಮುಚ್ಯತೇ ನ ವೇದಿಸಿ ಭಾವಸ್ಥಮಿಮಂ ಕಥಂ ಜನಮ್" ಕುಮಾಂ ೫-೫೮. 3. —ರೆ. (ಆದರೆ, ಹೋದರೆ, ಬಂದರೆ, ಮಾಡಿದರೆ ಇತ್ಯಾದಿ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ.)

ಯದಿ ಯದಿ (ಅವ್ಯಂ) 1. —ರೆ, ಆದರೆ. ಯತೀ (ಪ್ರಯತ್ನೇ) "ಇನ್" (ತಂ ೪-೧೧೮) | ಪೃಷೋಂ | ಯದಿ ಪದದ ಪ್ರಯೋಗವಿದ್ದಲ್ಲಿ ಅರ್ಥವು ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ತಹಿ ಪದ ದಿಂದ ಪೂರ್ಣವಾಗುವುದು. "ಯದಿ ಪ್ರಭಾಣೀಕೃತಮಾರ್ಯಚೇಷ್ಟಿತಂ (ತಹಿ) ಕಿಮಿತ್ಯದೋಷೇಣ ತಿರಸ್ಕೃತಾ ವಯಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೪-೧೧. ಕೆಲವೆಡೆ ತತ್ ತತ: ತದಾ ಮತ್ಯು, ಅತ್ರ ಇವು ಗಳಿಂದಲೂ ಅರ್ಥವು ಪೂರ್ತಿಯಾಗುವುದು. "ಯದಿ ಕುತ್ರಚಿತ್ ತಂ ಜೀವಂತಂ ಪಶ್ಯಸಿ ತದ್ಗತ್ವಾ ತ್ವಮರಣ್ಯಂ ಶೋಧಯ" ಪञ्ಚತಂ ೨. "ಯದಿ ನ ಸ್ಯಾನ್ನರಪತಿ: ಸಮ್ಯಕ್ಜ್ಞೇತಾ ತತ: ಪ್ರಜಾ | ಅಕರ್ಣಧಾರಾ ಜಲಧೌ ವಿಪ್ಲವೇನೇಹ ನೋರಿವ" ಪञ್ಚತಂ ೩-೭೧. "ಯದಿ ಸ್ಯಾತ್ ಪಾವಕ: ಶೀತ: ಪ್ರೋಣೋ ವಾ ಶಶಲಾಂಜನ: | ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ತದಾ ಸತೀತ್ವಂ ಸ್ಯಾತ್ ಯದಿ ಸ್ಯಾ-ದ್ಜನೋ ಹಿತ:" ಪञ್ಚತಂ ೩-೧೯೩. 2. —ರೆ. (ಆದರೆ, ಹೋದರೆ, ಬಂದರೆ, ಮಾಡಿದರೆ ಇತ್ಯಾದಿ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ.) "ನಿಜೋಜಸೋಜಾಸಯಿತುಂ ಜಗದ್ಬ್ರಹ್ಮಾಮುಪಾಜಿಹೀತಾ ನ ಮಹೀತಲಂ ಯದಿ" ಮಾಘಂ ೧-೩೭. 3. ಹಾಗಾದರೆ, ಒಂದುವೇಳೆ, ಪಕ್ಷಾಂತರದಲ್ಲಿ. "ಪೂರ್ವಂ ಸ್ಪೃಷ್ಟಂ ಯದಿ ಕಿಲ ಭವೇದ್ಭ್ರಮೇಭಿ-ಸ್ತವೇತಿ" ಮೇಘಂ ೨-೪೪. 4. ಯಾವಾಗ? 5. ಸಂಭಾವನೆ, ಊಹೆ. 6. ನಿಂದೆ. 7. ಎಕಲ್ಪ. "ಯದಿ ಗರ್ಹಾವಿಕಲ್ಪಯೋ:" ಮೇದಿಂ | ಯದಪಿ—1. ಆದರೂ, ಹಾಗಾದರೂ. "ಯದ್ವಾಪೇತೇ ನ ಪಶ್ಯಂತಿ ಲೋಭೋಪಹತಚೇತಸ:" ಗೀತಾ ೧-೩೮. 2. ಅವಧಾರಣ, ನಿಶ್ಚಯ. "ಭೂಯಾಸ: ಕ್ವಚಿದಪಿ ಕಾಮ-ಮಸ್ವಲಂತಸ್ತುಜ್ಞತ್ವಂ ದಧತಿ ಚ ಯದಪಿ ದ್ವಯೇಽಪಿ" ಮಾಘಂ ೧೬-೮೨. ಯದಿ ವಾ ಅರ್ಥವಾ. "ಯದ್ವಾ ಜಯೇಮ ಯದಿವಾ ನೋ ಜಯೇಯು:" ಗೀತಾ ೨-೬.

ಯದೀಯ ಯದೀಯ (ವಿಂ) ಯಾರ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಯಾವುದರ ಸಂಬಂಧವಾದ: ಯಸ್ಯಾಯಂ — ಯದ್ "ಛ:"



(೪-೨-೧೧೪) । “ಯಶೀಯಮಿತೀ ಪ್ರತಿವಿಮ್ಬಿತಾಙ್ಗಮಾತ್ಮಾನ-  
ಮಾಲೋಕೃಣಾ ಕರೀಂದ್ರಾಃ” ಕುಮಾಂ ೧-೪೨ ।

ಯ ಯದು (ಪುಂ) 1. ಯಯಾತಿರಾಜನ ಹಿರಿಯ ಮಗ,  
ಯಾದವರ ಮೂಲಪುರುಷ, ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರ ಮಗಳಾದ  
ದೇವಯಾನಿಯ ಪುತ್ರ. ಇವನು ತಂದೆಯ ಮುದಿತನ  
ವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ತನ್ನ ಯೌವನವನ್ನು ತಂದೆಗೆ  
ಕೊಡಲು ಸಂಮತಿಸದೆ ತಂದೆಯ ಶಾಪದಿಂದ ತನಗೂ ತನ್ನ  
ವಂಶದವರಿಗೂ ರಾಜ್ಯಾಧಿಕಾರವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡನು.  
ಈ ಕಾರಣದಿಂದ ಇವನ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನೂ  
ಸಹ ಕಂಸನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದ ನಂತರವೂ ಸಿಂಹಾಸನವನ್ನೇರ  
ಲಿಲ್ಲ. 2. ಯದುವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು.

ಯದುನಂದನ, -ನಾಥ, -ಶ್ರೇಷ್ಠ ಯದುನಂದನ, -ನಾಥ,  
-ಶ್ರೇಷ್ಠ (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. “ಯದುನಂದನೇನ ತದುದನ್ವತಃ  
ಪಯಃ ಶಶಿನೇವ ರಾಜಕುಲಮಾಪ ನಂದಯಮ್” ಮಾಘಂ ೧೩-೬೫ ।

ಯದುನಾಥ, -ಪತಿ ಯದುನಾಥ, -ಪತಿ (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ.  
ಯದ್ನಾ ನಾಥಃ ಪತಿರ್ವಾ ।

ಯದ್ವಿಚ್ಛಾ ಯದ್ವಿಚ್ಛಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ, ಇತರರಿಗೆ  
ಅಧೀನನಾಗಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಅಡ್ಡಿ ಆತಂಕಗಳಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
ವಿಚ್ಛಾ (ಗತೌ) “ಅಃ” (೩-೩-೧೦೪) । ಯಾವಿಚ್ಛಾ  
ಯದ್ವಿಚ್ಛಾ । “ಯದ್ವಿಚ್ಛಯಾಚೋಪಪನ್ನಂ ಸ್ವರ್ಗದ್ವಾರಮಪಾವೃತಮ್”  
ಗೀತಾ ೨-೩೨ । 2. ಸ್ವೇಚ್ಛೆ, ತನ್ನ ಇಷ್ಟ. “ಸಸಂಚರಿಸ್ತು-  
ಭುವನಾಂತರೇಷು ಯಾಂ ಯದ್ವಿಚ್ಛಯಾಶಿಶ್ರಯದಾಶ್ರಯಃ ಶ್ರಿಯಃ” ಮಾಘಂ  
೧-೪೬ । 3. ಆಕಾಂಕ್ಷೆ, ಅನಿರೀಕ್ಷಿತ, ದೈವಗತಿ. “ವಸಿಷ್ಠ-  
ವೇನುಷ್ಠ ಯದ್ವಿಚ್ಛಯಾಗತಾ ಶ್ರುತಪ್ರಭಾವಾ ದದೃಶೇಷ್ಯ ನಂದಿನೀ”  
ರಘುಂ ೩-೪೦ ।

ಯದ್ವಿಚ್ಛಾಲಾಭ ಯದ್ವಿಚ್ಛಾಲಾಭ (ಪುಂ) ಪ್ರಯತ್ನವಿಲ್ಲದೆ  
ತಾನಾಗಿ ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗುವುದು, ಯಾಚಿಸದೆ ಆಕಾಂಕ್ಷಾತ್ಮಾಗಿ  
ಬಂದೊದಗುವುದು. ಯದ್ವಿಚ್ಛಾಲಾಭಃ । “ಯದ್ವಿಚ್ಛಾಲಾಭ-  
ಸಂತುಷ್ಟಃ ಕ್ಷುಧಾತೀತೋ ವಿಮತ್ಸರಃ” ಗೀತಾ ೪-೨೨ ।

ಯದ್ವಿಚ್ಛಾಶಬ್ದ ಯದ್ವಿಚ್ಛಾಶಬ್ದ (ಪುಂ) ಸಂಜ್ಞೆಯ ಪದ,  
ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ ಶಬ್ದ, ಜಾತಿ ಗುಣ ಕ್ರಿಯಾದಿಗಳಿಲ್ಲದ ಶಬ್ದ.  
ಹಿತೈಷಿ ಡವಿತೈಷಿ ಮೊದಲಾದ ಶಬ್ದಗಳು ಒಬ್ಬನನ್ನು ಸಂಬೋ-  
ಧಿಸಿ ಕರೆಯಲು ಮಾತ್ರ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಶಬ್ದಗಳೇ  
ಹೊರತು ಅವಕ್ಕೆ ಅರ್ಥವಿಲ್ಲ. “ಅಸಂಪಾದಯತಃ ಕಂಚಿದರ್ಥಂ  
ಜಾತಿಕ್ರಿಯಾಗುಣೈಃ । ಯದ್ವಿಚ್ಛಾಶಬ್ದವತ್ಪುಂಸಃ ಸಂಜ್ಞಾಯೇ ಜನ್ಮ  
ಕೇವಲಮ್” ಮಾಘಂ ೨-೪೭ ।

ಯದ್ವಿಚ್ಛಾತಸ್ ಯದ್ವಿಚ್ಛಾತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಆಕಾಂಕ್ಷಾತ್ಮಾಗಿ,  
ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾಗಿ. ಯದ್ವಿಚ್ಛಾ “ತಸಿಲ್” (೫-೩-೭) ।

ಯದ್ವಿಚ್ಛಾ ಯದ್ವಿಚ್ಛಾ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಆದರೂ, ಹಾಗಾದರೂ.  
“ಯದ್ವಿಚ್ಛೇತೇ ನ ಪಶ್ಯಂತಿ ಕಾಮೋಪಹತಚೇತಸಃ” ಗೀತಾ ೧-೩೮ ।  
2. ಅವಧಾರಣೆ, ನಿಶ್ಚಯ. “ತುಙ್ಗತ್ವಂ ದಘತಿ ಚ ಯದ್ವಿಚ್ಛಾ  
ದ್ವೇಷಿ” ಮಾಘಂ ೧೬-೮೨ । ಇಲ್ಲಿ ಯದ್ವಿಚ್ಛಾ ದಘತಿ ದಘತ್ಯೇವ  
ಎಂದು ಯದ್ವಿಚ್ಛಾ ಪದಕ್ಕೆ ಅವಧಾರಣೆಯ ಅರ್ಥ.

ಯದ್ವತ್ ಯದ್ವತ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪ್ರಶ್ನೆ. 2. ಸಂಶಯ.  
“ಯದ್ವತ್ ಪ್ರಶ್ನೇ ವಿಕರ್ತಕಂ ಚ” ಮೇದಿಂ ।

ಯದ್ವಾ ಯದ್ವಾ (ಅವ್ಯಂ) ಅಥವಾ, ಒಂದು ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ,  
ಪಕ್ಷಾಂತರದಲ್ಲಿ. “ಯದ್ವಾ ಜಯೇಮ ಯಾದಿ ವಾ ನೋ ಜಯೇಮಃ”  
ಗೀತಾ ೨-೬ ।

ಯನ್ತ ಯನ್ತ (ಪುಂ) 1. ಸಾರಥಿ, ರಥವನ್ನು ನಡೆಸುವವನು,  
ಗಾಡಿ ನಡೆಸುವವನು. ಯಮ (ಉಪರಮೆ) “ತೃಚ್”  
(೩-೧-೧೩೩) । “ಅಥ ಯನ್ತಾರಮಾದಿಶ್ಯ ಧುರ್ಯಾನ್ ವಿಶ್ರಾಮಯೇತಿ  
ಸಃ” ರಘುಂ ೧-೫೪ । 2. ಮಾವಟಿಗ, ಆನೆಯ ಸವಾರ.  
“ಅಡ್ಡಕುಶಂ ದ್ವಿರದಸ್ಯೇವ ಯನ್ತಾ ಗಮ್ಭೀರವೇದಿನಃ” ರಘುಂ ೪-೩೯ ।  
“ಯನ್ತಾ ಯಾತುಃ ಪ್ರತ್ಯರೀಮಂ ದ್ವಿಪಸ್ಯ” ಮಾಘಂ ೧೮-೩೦ ।  
(ವಿಂ) 3. ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡುವವನು, ಹೆತೋಟಿಯಲ್ಲಿಡು-  
ವವನು.

ಯನ್ತ್ರ ಯನ್ತ್ರ (ನಂ) 1. ಕೋಟೆಯ ಕಂದಕದ ಹೊರಗಡೆ  
ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ತಡೆಯಲು ಇಟ್ಟಿರುವ ಚಕ್ರ. ಯಮ (ಉಪರಮೆ)  
“ಘ್ನನ್” (೩ಂ ೪-೧೫೯) । “ವಾರಕಾದೀನಿ ಯನ್ತ್ರಾಣಿ  
ಪರಿಕ್ಷಾಪಾ ಬಹಿರ್ಭುವಿ” ವೇಜಂ । 2. ಅಗಲ, ಬಾಗಿಲಿನ  
ಅಡ್ಡಪಟ್ಟಿ ಅಥವಾ ಬೀಗ. 3. ಭೀತಿ ಮತ್ತು ರೋಗ  
ನಿವಾರಣೆಗಾಗಿ ದೇವತೆ ಮತ್ತು ಮಂತ್ರಗಳನ್ನು ಬರೆದಿ-  
ರುವ ಲೋಹದ ತಗಡು, ತಾಯಿತಿ, ರಕ್ಷಾಕರಂಡ.  
4. ಉಪಕರಣ, ಸಾಧನ, ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಸಹಾಯಕವಾದ  
ಸಾಮಾನು (ವಸ್ತು). ಕೂಪಯನ್ತ್ರಮ್ ಬಾವಿಯಿಂದ ನೀರನ್ನು  
ಎಳೆಯುವ ರಾಟೆ. ಗೃಹಯನ್ತ್ರಮ್ ಮನೆಯ ಮೇಲೆ ಧ್ವಜ  
(ಬಾವುಟ) ವನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಕಂಬ. “ಗೃಹಯನ್ತ್ರಪತಾಕಾಶೀರ-  
ಪೌರಾದರನಿಮಿತಾ” ಕುಮಾಂ ೬-೪೧ । 5. ಸಂಯಮ,  
ಅಂಕೆ, ನಿರ್ಬಂಧ. 6. ಬೈರಿಗೆ, ಬಡಗಿಯು ಮರವನ್ನು  
ಕೊರೆಯುವ (ತೂತುಮಾಡುವ) ಸಾಧನ. 7. ಔಷಧ  
ವನ್ನು ಕುದಿಯಿಸಿ ಪಾಕಮಾಡುವ ಭಾಂಡ. 8. ದೇವತೆ  
ಗಳನ್ನು ಆವಾಹನ ಮಾಡುವ ಚಕ್ರ, ಮೊದಲಾದುದು.  
9. ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಉಗುಳುವ ಬಂದೂಕ ಫಿರಂಗಿ ಮೊದಲಾ-  
ದುದು. 10. ವೈದ್ಯನು ಶಸ್ತ್ರಚಿಕಿತ್ಸೆಯನ್ನು ಮಾಡು-  
ವಾಗ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಮೊಂಡಾದ ಹರಿತವಲ್ಲದ  
ಒಂದು ಆಯುಧ, ಚಿಮುಟಿ ಇತ್ಯಳ ಮೊದಲಾದುದು.



ಈ ಯಂತ್ರವು ಸ್ವಸ್ತಿಕಯಂತ್ರ ಸಂದಂಶಯಂತ್ರ ತಾಲಯಂತ್ರ ನಾಡೀಯಂತ್ರ ಶಲಾಕಾಯಂತ್ರ ಮತ್ತು ಉಪಯಂತ್ರಗಳೆಂದು ಆರು (6) ವಿಧ. (1) ಸ್ವಸ್ತಿಕಯಂತ್ರವು ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು (24) ವಿಧ. (2) ಸಂದಂಶಯಂತ್ರವು ಎರಡು (2) ವಿಧ. (3) ತಾಲಯಂತ್ರವು ಎರಡು (2) ವಿಧ. (4) ನಾಡೀಯಂತ್ರವು ಇಪ್ಪತ್ತು (20) ವಿಧ. (5) ಶಲಾಕಾಯಂತ್ರವು ಇಪ್ಪತ್ತಂಟು (28) ವಿಧ. (6) ಉಪಯಂತ್ರವು ಇಪ್ಪತ್ತೈದು (25) ವಿಧ. "ತಾನಿ ಯನ್ತ್ರಾಣಿ ಸ್ವಸ್ತಿಕಯನ್ತ್ರಾಣಿ, ಸಂದಂಶಯನ್ತ್ರಾಣಿ, ತಾಲಯನ್ತ್ರಾಣಿ, ನಾಡೀಯನ್ತ್ರಾಣಿ, ಶಲಾಕಾಯನ್ತ್ರಾಣಿ, ಉಪಯನ್ತ್ರಾಣಿ ಚೇತಿ ಷಡ್-ಪ್ರಕಾರಾಣಿ" ಸುಸೃತಂ ಸೂತ್ರಂ ೭. 11. ಮರ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಯಂತ್ರದಂತಿರುವ ಪ್ರಕೃತಿಯೆಂಬ ಯಂತ್ರ. "ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति । भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया" ಗೀತಾ ೧೮-೬೧.

**ಯನ್ತ್ರಕ ಯಂತ್ರಕ** (ಛಂ) 1. ಯಂತ್ರವನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. 2. ಯಂತ್ರಗಳ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ನುರಿತವನು. (ನಂ) 3. ಗಾಯದ ಮೇಲೆ ಕಟ್ಟುವ ಪಟ್ಟಿ. 4. ಗುಡಿಗಾರನ ಚಕ್ರ, ಕಡತ ಹಿಡಿಯುವವನ ಚಕ್ರ. (ವಿಂ) 5. ತಡೆಯುವವನು, ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡುವವನು. ಯನ್ತ್ರಯತಿ—ಯತಿ (ಸಂಕೋಚ) + ಗಿच् "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩). 6. ಅಣಕಟ್ಟನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸುವವನು.

**ಯನ್ತ್ರಕರಣಿಕಾ ಯಂತ್ರಕರಂಡಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಾಯಿತಿ, ಮಂತ್ರ ಬರೆದಿರುವ ತಗಡನ್ನು ಇಡುವ ಕೊಳವೆ.

**ಯನ್ತ್ರಕರ್ಮಕೃತ್ ಯಂತ್ರಕರ್ಮಕೃತ್** (ಛಂ) 1. ಅಕ್ಕಸಾಲೆ, ಪಂಚಾಳ. 2. ಕಲೆಯನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ಚಿತ್ರಕಲೆ ಮುಂತಾದುದರಲ್ಲಿ ನಿಪುಣನಾದವನು.

**ಯನ್ತ್ರಗೃಹ ಯಂತ್ರಗೃಹ** (ನಂ) 1. ಎಣ್ಣೆಯ ಗಿರಣಿ. 2. ಯಂತ್ರಗಳಿಂದ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ ಕಾರಖಾನೆ. ಯನ್ತ್ರಸ್ಯ ಗೃಹಮ್. 3. ಎಣ್ಣೆಯಿಂದ ನಡೆಸುವ ಯಂತ್ರದ ಮನೆ.

**ಯನ್ತ್ರಚೇಷ್ಟಿತ ಯಂತ್ರಚೇಷ್ಟಿತ** (ನಂ) 1. ಮಂತ್ರ, ಮೋಹನ ವಿಧಿ. 2. ಮಂತ್ರಗಳಿಂದ ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

**ಯನ್ತ್ರಗೋಲ ಯಂತ್ರಗೋಲ** (ಛಂ) ನೆಲಗಡಲೆ ಬಟಾಣಿ ಮುಂತಾದ ಕಾಳು (ಬೀಜ).

**ಯನ್ತ್ರಣ ಯಂತ್ರಣ** (ನಂ) 1. ತಡೆಹಿಡಿಯುವುದು, ನಿರ್ಬಂಧದಲ್ಲಿಡುವುದು, ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡುವುದು. ಯಮ (ಉಪರಮೆ)

"ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫). "ಕರಯನ್ತ್ರಣದಂತುರಾಂತರೇ ವ್ಯಾಲಿಸ್-ವ್ಯಾಚ್ಛಪುಟೇನ ಪಕ್ಷತಿ" ನೆಪಂ ೨-೨. 2. ರಕ್ಷಣೆ. "ಯನ್ತ್ರಣಂ ರಕ್ಷಣೇ ಸ್ಮೃತಮ್. ಬನ್ಧನೇ ಸ್ಯಾನಿರಯಮನೇ" ಮೇದಿಂ. ಯಮ + ಗಿच् "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭). ಯನ್ತ್ರಣಾ ಯಂತ್ರಣಾ. 3. ಅಂಕೆ, ಹೆತೋಟಿ, ನಿರ್ಬಂಧ. "ಹ್ನೀಯನ್ತ್ರಣಾಂ ತತ್ಕ್ಷಣ-ಮನ್ವಭುವನ್ನಯೋನ್ಯಲೋಲಾನಿ ವಿಲೋಚನಾನಿ" ಕುಮಾಂ ೭-೭೫. 4. ಬಂಧಿಸುವುದು, ಕಟ್ಟುವುದು. "ನಿಬಿಡಪೀತಕುಚದ್ವಯ-ಯನ್ತ್ರಣಾ ತಮಪರಾಧಮಧಾತ್ ಪ್ರತಿಬಂಧಂತಿ" ನೆಪಂ ೪-೧೦. 5. ಕ್ಲೇಶ, ತೊಂದರೆ, ಹೀಡೆ. "ಅಲಮಲಮುಪಚಾರಯನ್ತ್ರಣಯಾ" ಮಾಲಂ ೪.

**ಯನ್ತ್ರಪೇಷಣಿ ಯಂತ್ರಪೇಷಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರೆಯುವ ಯಂತ್ರ, ಪುಡಿಮಾಡುವ ಯಂತ್ರ. ಯನ್ತ್ರಮೇವ ಪೇಷಣಿ.

**ಯನ್ತ್ರಿಕಾ ಯಂತ್ರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪತ್ತಿಯ ಕಿರಿಯ ತಂಗಿ, ಹೆಂಡತಿಯ ತಂಗಿ. ಯನ್ತ್ರಯತಿ ಪಿಡಯತಿ—ಯತಿ + ಗಿच् "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩). "ಕನಿಷ್ಠಾ ಸ್ಯಾಲಿಕಾ ಹಾಲೀ ಯನ್ತ್ರಿಕಾ ಕೆಲಿಕುಶ್ವಿಕಾ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ.

**ಯನ್ತ್ರಿತ ಯಂತ್ರಿತ** (ವಿಂ) 1. ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರ್ಬಂಧದಲ್ಲಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಯತಿ (ಸಂಕೋಚ) + ಗಿच् "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). 2. ಸೆರೆಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೇಡಿ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಯನ್ತ್ರಿನ್ ಯಂತ್ರಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಕುದುರೆಯ ಅಲಂಕಾರ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು. 2. ಯಂತ್ರಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು. 3. ಬಂಧಿಸುವವನು, ಸೆರೆಹಿಡಿಯುವವನು. "ಅಸ್ತ್ರೇಣೋತ್ಕುತಮಾತ್ಮಾನಂ ಜಾತವಾ ಪೇತಾಮಹಾದ್ವರಾತ್. ಮರ್ಯನ್ ರಾಕ್ಷಸಾನ್ ವೀರೋ ಯನ್ತ್ರಣಸ್ತಾನ್ ಯದೃಚ್ಛಯಾ" ರಾಮಾಂ. **ಯಮನ ಯಭನ** (ನಂ) ಸಂಭೋಗ, ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರಿಬ್ಬರ ಸಂಗಮ. ಯಮ (ಮೆಣುನೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫).

**ಯಮ - ಉಪರಮೆ** (ಭಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ). ಯಚ್ಛತಿ. ಯಯಾಮ ಯಮತು: ಯಮು: | ಯೆಮಿಶ, ಯಯನ್ಯ ಯಮಶು: ಯಮ | ಯಯಾಮ, ಯಯಮ ಯೆಮಿವ ಯೆಮಿಮ | ಯನ್ತಾ | ಯಸ್ಯತಿ | ಯಚ್ಛತು | ಅಯಚ್ಛತ್ | ಯಚ್ಛೇತ್ | ಯಮ್ಯಾತ್ | 1. ತಡೆಗಟ್ಟು, ನಿರ್ಬಂಧಿಸು, ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡು. 2. ನಿಲ್ಲಿಸು, ವಿರಾಮ ಹೊಂದು. "ಪಾಪಾಽಯಚ್ಛತಿ" | 3. ಕಟ್ಟು, ಕಟ್ಟಿಹಾಕು, ಬಂಧಿಸು.

**ಕರ್ಮಣಿ:**—ಯಮ್ಯತೇ | ಯೇಮೇ ಯೇಮಾತೇ ಯೇಮಿರೇ | ಯನ್ತಾ | ಯಸ್ಯತೇ | ಯಮ್ಯತಾಮ್ | ಅಯಮ್ಯತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತ್ಸು:**—ಯನ್ತವ್ಯ: | ಯಮನೀಯ: | ಯಮ್ಯ: | ಯತ: | ಯತವಾನ್, -ವತಿ | ಯಚ್ಛನ್, -ಂತಿ | ಯನ್ತುಮ್ | ಯತಮ್ | ಯಮನಮ್ | ಯತ್ವಾ | ಸಂಯಮ್ಯ |



ಯಮ - ಪರಿವೇಷಣೆ (ಚುರಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ಯಮಯತಿ,  
-ತೇ । ಸುತುಂವರಿ, ಸುತುಂಗಟ್ಟು. "ಯಮಯತಿ ಚಂದ್ರಮ್"  
ಪರಿವೇಷತೇ ಇತ್ಯರ್ಥಃ ।

ಯಮ ಯಮಂ (ಪುಂ) 1. ಯೋಗದ ಎಂಟು ಅಂಗಗಳ  
ಠೊಂದಂ. ಯಮ (ಉಪರಮೆ) ವಾ "ಅಪ್" (೩-೩-೬೩) ।  
ಪಕ್ಷೆ "ಏನ್" । ಯಮಃ ಯಮಾಃ. ಯಮವು (1) ಅಹಿಂಸಾ  
(2) ಅಸ್ತೇಯಮ್ (3) ಸತ್ಯಮ್ (4) ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಮ್ ಮತ್ತು  
(5) ಅಪರಿಗ್ರಹಃ ಎಂದು ಐದು ವಿಧ. ಶರೀರಮಾತ್ರ  
ದಿಂದ ಯಾವಜ್ಜೀವವೂ ಮಾಡಬಹುದಾದ ಅಹಿಂಸೆ ಸತ್ಯ  
ಅಸ್ತೇಯ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ ಮತ್ತು ಅಪರಿಗ್ರಹಗಳು  
ಯಮವು. "ಶರೀರಸಾಧನಾಪೇಕ್ಷಾಂ ನಿಯಮಂ ಯಮಃ"  
ಅಮಂ । "ಅಹಿಂಸಾಸತ್ಯಾಸ್ತೇಯಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾಪರಿಗ್ರಹಾಃ ಯಮಾಃ"  
ಪಾಂ ಯಂ ಸುಂ । "ಯಮನಿಯಮಕುಶೀಕೃತಸ್ಥಿರಾಜ್ಞಃ ಪರಿದದೃಶೋ  
ವಿಧೃತಾಯುಧಃ ಸ ತಾಭಿಃ" ಕಿರಾಂ ೧೦-೧೦ । 2. ವಿಷ್ಣು.  
ಯಚ್ಛತಿ ಅಕಂಠಕಮ್ ಅನುಕೂಲಂ ಚ ನಿಖಿಲಮ್—ಯಮ "ಅಚ್"  
(೩-೧-೧೩೪) । "ಅಕಂಠಕಂ ಚಾನುಕೂಲಂ ಯಚ್ಛತೀತ್ಯಖಿಲಂ  
ಯಮಃ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ । "ಧೃತಾತ್ಮಾ ನಿಯಮೋ ಯಮಃ"  
ವಿಂ ಸಂ । 3. ಅಂಕೆ, ಹತ್ತೊಂಟಿ, ನಿರ್ಬಂಧ. 4. ಆತ್ಮ  
ಸಂಯಮನ, ಇಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹ. 5. ಯಮಧರ್ಮ  
ರಾಯ. 6. ಬಹಳ ಚಿಕ್ಕ ಅಥವಾ ದೊಡ್ಡ ಗಾತ್ರದ  
ಕುದುರೆ. "ಯಮೋ ಹೀನಾಧಿಕಾಜ್ಞಕಃ" ವೈಜಂ । 7. ಒಂದು  
ಜೊತೆ, ಒಂದು ಜೋಡಿ. "ಮಿಥುನಂ ದ್ವಿತಯಂ ದ್ವೈತಂ ದ್ವಯಂ ದ್ವಂದ್ವಂ  
ಯುಗಂ ಯಮಮ್" ವೈಜಂ । 8. ಶನಿಗ್ರಹ. 9. ಕಾಗೆ, ವಾಯುಸ.  
(ವಿಂ) 10. ಅವಳಿಯಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಯಚ್ಛತಿ ಏಕತ್ರ  
ಗರ್ಭಾಶಯೇ—ಯಮ (ಉಪರಮೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।  
"ಯಮೋಜ್ಯಲಿಂಗೋ ಯಮಜೇ ನಾ ಕಾಕೇ ಶಮನೇ ಶನೌ । ಶರೀರ-  
ಸಾಧನಾಪೇಕ್ಷಾನಿಯಮಕರ್ಮಣಿ ಸಂಯಮೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಯಮಕ ಯಮಕಂ (ನಂ) 1. ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ.  
ಯಮಂ ಯುಗ್ಮಭಾವಂ ಕಾಯತಿ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ—ಕೆ (ಶಬ್ದ) "ಕಃ"  
(೩-೨-೩) । ಅಕ್ಷರಗಳ ಪದಗಳ ಮತ್ತು ಪಾದಗಳ  
ಅವ್ಯಕ್ತಿಯು ಯಮಕವೆನಿಸುವುದು. ಈ ಅವ್ಯಕ್ತಿಯು  
ಅವ್ಯವಹಿತವಾಗಿಯೂ ವ್ಯವಹಿತವಾಗಿಯೂ ಇರುವುದು.  
"ಅವ್ಯಪೇತವ್ಯಪೇತಾತ್ಮಾ ವ್ಯಾವೃತ್ತಿವರ್ಣಸಂಹತೇಃ । ಯಮಕಮ್" ।  
ಈ ವಿಧವಾದ ಯಮಕವು ಪಾದಗಳ ಅದಿ ಮಧ್ಯ ಮತ್ತು  
ಅಂತ್ಯಗಳಲ್ಲೂ ಇದ್ದು ಮೂರು ವಿಧ ಯಮಕಗಳಾಗು  
ವುವು. "ತದ್ವ ಪಾದಾನಾಮಾದಿಮಧ್ಯಾಂತಗೋಚರಮ್" ಕಾವ್ಯಾಂ  
೩-೧ । ಈ ಮೂರು ಭೇದಗಳೂ ಪಾದಾದಿಗಳಲ್ಲೂ ಪಾದ  
ಮಧ್ಯಗಳಲ್ಲೂ ಪಾದಾಂತ್ಯಗಳಲ್ಲೂ ಒಂದು (ನಾಲ್ಕು  
ಪಾದಗಳಿರುವ ಶ್ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ) ಒಟ್ಟು ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ

ಗಳಾಗುವುವು. "ಏಕದ್ವಿತ್ರಿಚತುಷ್ಟಾದಯಮಕಾನಾಂ ವಿಕಲ್ಪನಾಃ ।  
ಆದಿಮಧ್ಯಾಂತ ಮಧ್ಯಾಂತ ಮಧ್ಯಾಂತಾದಿಮಧ್ಯಾಂತಸರ್ವತಃ । ಅತ್ಯಂತ-  
ಬಹವಸ್ತೇಷಾಂ ಭೇದಾಃ ಸಂಭೇದಯೋನಯಃ" ಕಾವ್ಯಾಂ ೩-೨, ೩ ।

ಪ್ರಥಮ ಪಾದಾದಿಯಮಕಂ—"ಮಾನೇನ ಮಾನೇನ  
ಸಖಿ ಪ್ರಣಯೋಽಭೂತ್ ಪ್ರಿಯೇ ಜನೇ । ಕ್ಷಣಿಹಿತಾ ಕಂಠಮಾಶ್ಲಿಷ್ಯ  
ತಮೇವ ಕುರು ಸತ್ಪಪಮ್" ।

ದ್ವಿತೀಯ ಪಾದಾದಿಯಮಕಂ—"ಮೇಧನಾದೇನ ಹಂಸಾನಾಂ  
ಮದನೋ ಮದನೋದಿನಾ । ನುಭಮಾನಂ ಮನಃ ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಸಹ ರತ್ಯಾ  
ವಿರಾಜತೇ" ॥

ತೃತೀಯ ಪಾದಾದಿಯಮಕಂ—"ರಾಜನ್ವತ್ಯಃ ಪ್ರಜಾ  
ಜಾತಾ ಭವಂತಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ಸತ್ಪತಿಮ್ । ಚತುರಂ ಚತುರ್ಮುಖಧಿರಸನೋ-  
ವೀಕರಗ್ರಹೇ" ॥

ಚತುರ್ಥ ಪಾದಾದಿಯಮಕಂ—"ಅರಣ್ಯಂ ಕೇಶ್ವಿದಾ-  
ಕ್ರಾಂತಂ ಕೇಶ್ವಿತಸ್ತದಿ ದಿವೋಕಸಾಮ್ । ಪದಾತಿರಯನಾಗಾಶ್ವರಹಿತೇ-  
ರಹಿತೇಸ್ತವ" ।

ಪ್ರಥಮ ದ್ವಿತೀಯ (ಅದಿನಾಧ್ಯ) ಪಾದಗತ  
ಯಮಕಂ—"ಮಧುರಂ ಮಧುರಂಭೋಜವದನೇ ವದನೇತ್ರಯೋಃ ।  
ವಿಭ್ರಮಂ ಭರಮಂಭ್ರಾಂತಯಾ ವಿಡಂಬಯತಿ ಕಿಂ ನು ತೇ" ॥

ಪ್ರಥಮ ತೃತೀಯ (ಅದಿನಾಧ್ಯ) ಪಾದಗತ  
ಯಮಕಂ—"ವಾರಣೋ ವಾರಣೋದಾಮೋ ಹಯೋ ವಾ ಸ್ಮರ ದುರ್ಬರಃ ।  
ನ ಯತೋ ನಯತೋಜ್ಜತಂ ನಃ ತದಹೋ ವಿಕರಮಸ್ತವ" ॥

ಪ್ರಥಮ ಚತುರ್ಥ (ಅದಿನಾಧ್ಯ) ಪಾದಗತ  
ಯಮಕಂ—"ರಾಜಿತೇ ರಾಜಿತೇಕ್ಷಣೇನ ಜೀಯತೇ ತ್ವಾದೃಶಂನೃಪಃ ।  
ನಿಯತೇ ಚ ಪುನಸ್ತೃಪ್ತಿ ವಸುಧಾ ವಸುಧಾರಯಾ" ॥ ಹೀಗೆಯೇ  
ದ್ವಿತೀಯ ತೃತೀಯಪಾದಗತ ದ್ವಿತೀಯ ಚತುರ್ಥ  
ಪಾದಗತ ತೃತೀಯ ಚತುರ್ಥಪಾದಗತ ಪ್ರಥಮ  
ದ್ವಿತೀಯ ತೃತೀಯಪಾದಗತ ದ್ವಿತೀಯ ತೃತೀಯ  
ಚತುರ್ಥಪಾದಗತ ಪ್ರಥಮ ತೃತೀಯ ಚತುರ್ಥ  
ಪಾದಗತ ಪ್ರಥಮ ದ್ವಿತೀಯ ತೃತೀಯ ಚತುರ್ಥ  
ನಾಲ್ಕು ಪಾದಗತ ಮುಂತಾದ ಅವ್ಯವೇತ ಯಮಕಗಳೂ  
ಮುಂದೆ ವ್ಯವೇತಯಮಕಗಳೂ ಅವ್ಯವೇತವ್ಯವೇತಮಿತ್ರ  
ಯಮಕಗಳೂ ಸೇರಿ ಅಸಂಖ್ಯಾತ ಭೇದಗಳುಂಟಾಗುವುವು.  
2. ಪೂಹ, ಸಮೂಹ. "ಯಮಕಂ ಮಂಡಲಂ ಕೃತ್ವಾ ತಾನ್  
ಯೋಷಾನ್ ಪ್ರತ್ಯವಾಡಯತ್" ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೫೭-೪೨ । (ಪುಂ)  
3. ಸಂಯಮ, ಅಡ್ಡಿ, ಅಂಕೆ, ನಿರ್ಬಂಧ, ನಿಗ್ರಹ. ಯಮ  
ಭಾವೇ "ಅಪ್" (೩-೩-೬೩) । "ಯಮಕಂ ಯಮಜೇ ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರೇ  
ಪುಂಸಿ ಸಂಯಮೇ" ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ) 4. ಸದೃಶವಾದ, ಸಮಾನ  
ವಾದ. "ಮಂಡಲಾನಿ ವಿಚಿತ್ರಾಣಿ ಯಮಕಾನೀತರಾಣಿ ಚ ।



ಸಂಖ್ಯಾನಿ ಚ ವಿಚಿತ್ರಾಣಿ ದಕ್ಷಿಣಾನಿ ಚ ಸರ್ವಶಃ" ಮಾಂ  
ವನಂ ೧೯-೮। 5. ಅವಳಿಯಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು.

ಯಮಜ ಯಮಜ (ಪುಂ ದ್ವಿವಂ) ಅವಳಿಯಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದವರು,  
ಒಂದೇ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಜೊತೆಯಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದವರು. ಯಮಿ  
ಸಂತಿ ಜಾयेते—ಜನಿ "ಙ:" (೩-೨-೧೦೧)।

ಯಮಕೃತ ಯಮದೂತ (ಪುಂ) ಯಮಧರ್ಮರಾಯನ  
ಸೇವಕ. ಯಮಸ್ಯ ಕೃತಃ।

ಯಮಕೃತಕ ಯಮದೂತಕ (ಪುಂ) ವಾಯಸ, ಕಾಗೆ.

ಯಮಕೃತಿಕಾ ಯಮದೂತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುಣಸೆ ಮರ.

ಯಮದೇವತಾ ಯಮದೇವತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭರಣೀನಕ್ಷತ್ರ. ಯಮಿ  
ದೇವತಾಸ್ಯಾಃ।

ಯಮದ್ವಿತೀಯಾ ಯಮದ್ವಿತೀಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ತಿಕ ಶುದ್ಧ  
ದ್ವಿತೀಯ (ಬಿದಿಗೆ). ಈ ಬಿದಿಗೆಯ ದಿನ ಹೆಣ್ಣು ಮಕ್ಕಳು  
ತಮ್ಮ ಸಹೋದರರನ್ನು ಕರೆದು ಸತ್ಕರಿಸಬೇಕು. "ಕಾರ್ತಿಕೇ  
ತು ದ್ವಿತೀಯಾಂ ಶುಕ್ಲಾಂ ಭ್ರಾತೃಪೂಜನಮ್। ಯಾ ನ ಕುರ್ಯಾತ್  
ವಿನಶ್ಯಂತಿ (ತಸ್ಯಾಃ) ಭ್ರಾತರಃ ಸಪ್ತಜನ್ಮನಿ"। "ಕಾರ್ತಿಕೇ  
ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷಸ್ಯ ದ್ವಿತೀಯಾಂ ಯುಧಿಷ್ಠಿರಃ। ಯಮಿ ಯಮುನಯಾ ಪೂರ್ವ  
ಭೋಜಿತಃ ಸ್ವಗೃಹೇ ಸ್ವಯಮ್" ಮಾಂ।

ಯಮನ ಯಮನ (ಪುಂ) 1. ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. ಯಮಯತಿ  
ನಿಯಮಯತಿ—ಯಮ (ಉಪರಮೆ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪)।  
(ನಂ) 2. ಬಂಧನ, ಕಟ್ಟುವುದು. 3. ತಡೆಯುವುದು,  
ನಿರ್ಬಂಧದಲ್ಲಿಡುವುದು, ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿರಿಸುವುದು. 4. ಕೆಲಸ  
ದಿಂದ ವಿಶ್ರಾಂತಿಪಡೆಯುವುದು, ವಿರಾಮಹೊಂದುವುದು.

ಯಮ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಯಮನಂ ಬನ್ಧನೇ  
ಚೋಪರತೌ ಕಲಿಬ್ ಯಮೇ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ।

ಯಮನಿಕಾ ಯಮನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೆರೆ, ಪರದೆ.

ಯಮಪತ್ನಿ ಯಮಪತ್ನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಮಧರ್ಮರಾಯನ  
ಪತ್ನಿ—(1) ಧೂಮೋರ್ಣಿ, (2) ವಿಜಯಾ. —ಭಾರ್ಯಾ  
—ಭಾರ್ಯಾ.

ಯಮಪ್ರಿಯ ಯಮಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) ವಟುವು, ಅಲದಮರ.

ಯಮಭಗಿನಿ ಯಮಭಗಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಮುನಾನದಿ,  
ಯಮಧರ್ಮರಾಯನ ತಂಗಿ. —ಸ್ವಸಾ —ಸ್ವಸಾ.

ಯಮರಾಜ್ ಯಮರಾಜ್ (ಪುಂ) ಯಮಧರ್ಮರಾಜ.  
—ರಾಜಃ —ರಾಜಃ.

ಯಮಲ ಯಮಲ (ನಂ) 1. ಜೊತೆ, ಜೋಡಿ. ಯಮ್ ಲಾತಿ—  
ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩)। (ಪುಂ ದ್ವಿವಂ)  
2. ಅವಳಿಯಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದವರು. "ಯಮಲಾರ್ಜುನದೃಷ್ಟಬಾಲ-  
ಕೇಲಿ ಯಮುನಾಸಾಕ್ಷಿಕಯೌವತಂ ಯುವಾನಮ್" ಗೋಪಾಲವಿಂ।

(ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಲಿ —ಲಿ. 3. ವಸ್ತ್ರದ ಎರಡು ತುಂಡು  
ಗಳಿಂದ ತಯಾರಿಸಿದ ಉಡುಪು. "ಯಮಲಂ ಯುಗಲೇ ಕಲಿಬ್  
ಯಮಲಿ ಚೋಟಿಕಾಹ್ವಯೇ" ಮೇದಿಂ।

ಯಮಲಪತ್ರಕ ಯಮಲಪತ್ರಕ (ಪುಂ) ಕೋವಿದಾರ ವೃಕ್ಷ,  
ಕೆಂಗಾಂಬಾಳ ಗಿಡ. ಯಮಲಂ ಯಮಜಂ ಪತ್ರಮಸ್ಯ "ಕಪ್"  
(೫-೪-೧೫೪)।

ಯಮಲಾರ್ಜುನ ಯಮಲಾರ್ಜುನ (ಪುಂ ದ್ವಿವಂ) ನಂದ  
ಗೋಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಎರಡು ಮತ್ತಿ ಮರಗಳು. ಯಮಲಿ  
ಚ ತೌ ಅರ್ಜುನೌ ಚ। ಕುಬೇರನ ಮಕ್ಕಳಾದ ನಳಕೂಟರ-  
ಮಣಿಗ್ರೀವರು ನಾರದಮಹರ್ಷಿಯ ಶಾಪದಿಂದ ಈ ವೃಕ್ಷ  
ಗಳಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ಶಾಪ  
ವಿಮೋಚನೆ ಹೊಂದಿದರು.

ಯಮವತ್ ಯಮವತ್ (ವಿಂ) ಆತ್ಮಸಂಯಮವುಳ್ಳವನು,  
ಇಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹವುಳ್ಳವನು, ಕಾಮಕ್ರೋಧಗಳನ್ನು  
ಜಯಿಸಿದವನು. ಯಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪)।  
"ದಶರಥಃ ಪ್ರಶಾಸಾಸ ಮಹಾರಥೋ ಯಮವತಾಮವತಾಂ ಚ ಭುರಿ  
ಸ್ಥಿತಃ" ರಘುಂ ೯-೧।

ಯಮವಾಹನ ಯಮವಾಹನ (ಪುಂ) ಮಹಿಷ, ಎಮ್ಮೆ.  
ಯಮಸ್ಯ ವಾಹನಃ।

ಯಮಾನಿಕಾ ಯಮಾನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಜವಾನ, ಓಮ,  
ವಾದಕ್ಕಿ. ಯಮಾನಿ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"।

ಯಮಾನಿ ಯಮಾನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಜವಾನ, ಓಮ.

ಯಮಿತ ಯಮಿತ (ವಿಂ) 1. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಗಂಟುಹಾಕ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಯಮ (ಉಪರಮೆ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।  
"ಬನ್ಧೇ ಸ್ತಸಿನಿ ಚೈಕಹಸ್ತಯಮಿತಾಃ ಪರ್ಯಕ್ತುಲಾ ಮೂರ್ಛಜಾಃ"  
ಶಾಕುಂ ೧-೨೬। 2. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ನಿರ್ಬಂಧದಲ್ಲಿಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಯಮಿನ್ ಯಮಿನ್ (ವಿಂ) ಇಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹವುಳ್ಳವನು,  
ಆತ್ಮಸಂಯಮವುಳ್ಳವನು. ಯಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ — "ಇನಿಃ"  
(೫-೨-೧೧೫)।

ಯಮಿತವತ್ ಯಮಿತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಗಂಟುಹಾಕಿಸಿದವನು,  
ಕಟ್ಟಿಸಿದವನು. 2. ಇಂದ್ರಿಯವನ್ನು ಜಯಿಸಿದವನು.  
ಯಮ + ಣಿಕ್ "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಯಮಿ ಯಮೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಮುನಾನದಿ. "ತಾಪಿ ತು ಯಮುನಾ  
ಯಮಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। "ತೃತೀಯಾಂ ವಡಕಾಮೇಕೇ ತಾಸಾಂ ಸಂಜ್ಞಾ-  
ಸುತಾಸ್ತ್ರಯಃ। ಯಮಿ ಯಮಿ ಶ್ರಾದ್ಧದೇವಃ ಛಾಯಾಶ್ರ ಸುತಾನ್  
ಶೃಣು" ಮಾಗಂ ೮-೧೩-೯।



ಯಮುನಾ ಯಮುನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯಮುನಾನದಿ, ಕಾಳಿಂದೀ ನದಿ. ಏತದ್ವಿತಿ—ಯಮ (ತಪರಮೇ) “ತನನ್” (ತಂ ೩-೬೧)।

“ಯಮುನಾಮತೀತಮಥ ಶುಶ್ರುವಾನಮ್ ತಪಸಸ್ತನುಜ ಇತಿ ನಾಭುನೋ-  
ಚ್ಯತೇ” ಮಾಘಂ ೧೩-೧। 2. ಪಾರ್ವತಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

ಯಯಾತಿ. ಯಯಾತಿ (ಪುಂ) ನಹುಷ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಮಗ.  
ಯಸ್ಯ ವಾಯೋರಿವ ಯಾತಿ: ಸರ್ವತ್ರ ರಥಗಮನಮಸ್ಯ। [ಶುಕ್ರಾ  
ಚಾರ್ಯರ ಮಗಳಾದ ದೇವಯಾನಿ ಮತ್ತು ವೃಷಪರ್ವ  
ರಾಜನ ಮಗಳಾದ ಶರ್ಮಿಷ್ಠೆ ಇಬ್ಬರೂ ಯಯಾತಿಯ  
ಪತ್ನಿಯರು. ದೇವಯಾನಿಯ ಮಕ್ಕಳು ಯದು ಮತ್ತು  
ತುರ್ವಸು. ಶರ್ಮಿಷ್ಠೆಯ ಮಕ್ಕಳು ಅನು ದ್ರುಹ್ಯು  
ಮತ್ತು ಪೂರು. ದೇವಯಾನಿಯು ಯಯಾತಿಯನ್ನು  
ಮದುವೆಯಾದಾಗ ಶರ್ಮಿಷ್ಠೆಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗ  
ಕೂಡದೆಂದೂ ಅವಳು ಎಂದೆಂದಿಗೂ ತನಗೆ ದಾಸಿಯಾಗಿರ  
ಬೇಕೆಂದೂ ಹೇಳಿ ಅವನಿಂದ ಮಾತು ಪಡೆದಿದ್ದಳು.  
ಅನಂತರ ಶರ್ಮಿಷ್ಠೆಯು ಯಯಾತಿಯಿಂದ ರಹಸ್ಯದಲ್ಲಿ  
ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪಡೆದ ವಿಷಯವನ್ನು ಕೇಳಿ ದೇವಯಾನಿಯು  
ತಾನು ಅಲ್ಲಿರುವುದಿಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳಿ ಹೊರಟುಹೋದಳು.  
ಈ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿದ ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರು ಯಯಾತಿಗೆ  
ಮುದುಕನಾಗುವಂತೆ ಶಾಪವಿತ್ತರು. ಅನಂತರ ಇವನ  
ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಂತೆ ಬೇರೊಬ್ಬನ ಯೌವನವನ್ನು ಪಡೆದು  
ಮುದಿತನವನ್ನು ಅವನಿಗೆ ಕೊಡಬಹುದೆಂದು ಹೇಳಿದರು.  
ತಮ್ಮ ಯೌವನವನ್ನು ಕೊಡಲು ಸಮ್ಮತಿಸದ ಯದು  
ಅನು ದ್ರುಹ್ಯು ಮತ್ತು ತುರ್ವಸುಗಳಿಗೆ ಶಾಪವನ್ನಿತ್ತು  
ತನಗೆ ಯೌವನವನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಮುದಿತನವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದ  
ಪೂರುವಿಗೆ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಕೊಟ್ಟನು. ಅನೇಕ ವರ್ಷಗಳ  
ಕಾಲ ಯೌವನಸೌಖ್ಯವನ್ನು ಅನುಭವಿಸಿ ಕೊನೆಗೆ ವೈರಾಗ್ಯ  
ಹೊಂದಿ ತನ್ನ ಮುದಿತನವನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಪಡೆದು ತಪಸ್ಸಿಗೆ  
ತೆರಳಿದನು.]

ಯಯಿ ಯಯೀ (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗದ ಕುದುರೆ.  
ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಃ” (ತಂ ೩-೧೩೯)। 2. ಪರಮೇಶ್ವರ.  
ಯಾಯತೇ ಪ್ರಾಪ್ಯತೇ ಭಕ್ತಃ: -- ಯಾ “ಃ”।

ಯಯು ಯಯು (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗದ ಕುದುರೆ.  
ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ತ:” (ತಂ ೧-೨೧)। 2. ಅಶ್ವ,  
ಕುದುರೆ. “ಯಯು: ಪುಮಾನಶ್ವಮೇಧತುರಗೈ ತುರಗೇಷು ಚ” ಮೇದಿಂ।  
“ತುಣಮಥ ಯಯುಮಿವಾನುಯಯುರ್ದಮಘೋಷಸುನುಮವನೀಶಸುನವ:” ಮಾಘಂ  
೧೫-೬೯। 3. ಮೋಕ್ಷಮಾರ್ಗ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ಪ್ರಾಪ್ತಿ,  
ಹೊಂದುವುದು, ಪಡೆಯುವುದು. (ವಿಂ) 5. ಉದ್ಭವಾದ  
ಕೋಲು ಹಿಡಿದಿರುವವನು. “ಯಯುನಿ ಮೋಕ್ಷಮಾರ್ಗೇಷ್ವ  
ಸ್ತೌತ್ವಾಪ್ತೌ ದೀರ್ಘಯಶಿಕೇ” ವೈಜಂ।

ಯಹಿ ಯಹಿ (ಅವ್ಯಂ) ಯಾವಾಗೆ?, ಯಾವ ಸಮಯ  
ದಲ್ಲಿ. ಯದ್ “ಹಿಲ್” (೫-೩-೨೧)। ಇದೊಂದು  
ಸಂಬಂಧಾರ್ಥಕ ಅವ್ಯಯ. ತಹಿ ಏತಹಿ ಇವು ಇದರ  
ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿದಾಗ ವಾಕ್ಯ ಪೂರ್ತಿಯಾಗುವುದು.

ಯವ ಯವ (ಪುಂ) 1. ಜವೆಗೋಧಿ, ಯವಧಾನ್ಯ. ಪೌತಿ—  
ಯು (ಮಿಶ್ರಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ಯವಾ: ಪ್ರಕೀರ್ಣಾ  
ನಿ ಭವಂತಿ ಶಾಲಯ:” ಸ್ಮೃತಂ ೪-೧೭। 2. ಹೆಬ್ಬೆರಳಿ  
ನಲ್ಲಿರುವ ಯವಾಕಾರದ ರೇಖೆ, ಧನಧಾನ್ಯಾದಿ ಲಾಭ  
ವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಒಂದು ರೇಖೆ. 3. ಆರು ಗೌರ  
ಸರ್ವಪಗಳ ಅಥವಾ 576 ತ್ರಸರೇಣುಗಳ ಪರಿಮಾಣ.  
“ಜಾಲಾಂತರಗತೇ ಭಾನೌ ಯತ್ ಸೂಕ್ಸಮಂ ದೃಶ್ಯತೇ ರಜ:। ತೇಶ್ವತು-  
ಮಿಮಂವೇಲಿಲಿಖ್ಯಾ ಲಿಖ್ಯಾಷಟ್ಠಿಮಿಷ್ಠ ಸರ್ವಪ:। ಷಟ್ಸರ್ವಪ-  
ಯವಸ್ತ್ವೇಕೋ ಗುಜ್ಜೇಕಾ ತು ಯವೇಸ್ತ್ರಿಮಿ:”। 4. ಬೇರ್ಪಡಿಸು  
ವುದು. ಯು (ಅಮಿಶ್ರಣೆ) “ಅಪ್” (೩-೩-೫೭)। “ಯವೋ  
ವಾನ್ಯೇ ಪೃಥಕ್ಕೃತೌ” ಹೇಮಂ।

ಯವಕ ಯವಕ (ಪುಂ) ಜವೆಗೋಧಿಯ ಒಂದು ಭೇದ.  
“ಯವಕೇ ತೋಪಗ್ನಿಕಾ” ವೈಜಂ।

ಯವಕಯ ಯವಕೈ (ನಂ) ಗೋಧಿಯನ್ನು ಬೆಳೆಯುವ  
ಭೂಮಿ. ಯವಕಾನಾಂ ಭವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ “ಯತ್” (೫-೨-೩)।

ಯವಕ್ಷಾರ ಯವಕ್ಷಾರ (ಪುಂ) ಪೆಟ್ಟುಪ್ಪು, ಸೋರುಪ್ಪು.  
ಯವಾನಾಂ ಕ್ಷಾರ:।

ಯವಕ್ಷುಣ್ ಯವಕ್ಷುಣ್ (ನಂ) ಗೋಧಿಹಿಟ್ಟು.

ಯವಜ ಯವಜ (ಪುಂ) ಯವಕ್ಷಾರ, ಪೆಟ್ಟುಪ್ಪು.

ಯವಜೋದ್ಭವ ಯವಜೋದ್ಭವ (ನಂ) ತವಕ್ಷೀರ.

ಯವದ್ವೀಪ ಯವದ್ವೀಪ (ಪುಂ) ಆರು ಅನುದ್ವೀಪಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು. ಆರು ಅನುದ್ವೀಪಗಳು: (1) ಅಂಗದ್ವೀಪ  
(2) ಯವದ್ವೀಪ (3) ಮಲಯದ್ವೀಪ (4) ಶಂಖದ್ವೀಪ  
(5) ಕುಶದ್ವೀಪ ಮತ್ತು (6) ವರಾಹದ್ವೀಪ. “ಅನುದ್ವೀಪಾಶ್ಚ  
ಷಡ್ ತೇಷಾಮಙ್ಗದ್ವೀಪಾದಯೋ ಯಥಾ। ಅಙ್ಗದ್ವೀಪಂ ಯವದ್ವೀಪಂ ಮಲಯ-  
ದ್ವೀಪಮಿತ್ಯಪಿ। ಶಂಖದ್ವೀಪಂ ಕುಶದ್ವೀಪಂ ವರಾಹದ್ವೀಪಮಿತ್ಯಪಿ”  
ವೈಜಂ। ಈ ಯವದ್ವೀಪವು ಪೂರ್ವಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿರು  
ವುದು. “ಪೂರ್ವಾಂಶೌ ತು ಯವದ್ವೀಪಂ ಯತ್ರ ಕಾಲೋದಕೋರ್ಣವ:”  
ವೈಜಂ।

ಯವನ ಯವನ (ಪುಂ) 1. ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಂದ ವೈಶ್ಯ ಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟಿದವನು. “ಸುತಂ ವಿಪ್ರಾ ನೃಪಾದೇಶ್ಯಾ ಮಾಹಿಷ್ಯಂ  
ಯವನಶ್ಚ ಸ:” ವೈಜಂ। 2. ಅನೆಗಳನ್ನು ಹಿಡಿಯುವವನು.  
“ನಿಷಾದೋ ವ್ಯಾಲಾದಿವಧಾಘವನ: ಕುಜರಗ್ರಹಾತ್” ವೈಜಂ।  
3. ಚೌಳುಪ್ಪು, ಉಪ್ಪುಮಣ್ಣಿನಿಂದ ತೆಗೆದ ಉಪ್ಪು.



“ಋಷಮೂರ್ಜಂ ಸೇತ್ಯಂ ಪಾಸುಜಂ ಯವನಂ ಪಡು” ವೈಜಂ ।

4. ಮಹಮ್ಮದೀಯ ಅಥವಾ ಮ್ಲೇಚ್ಛಜಾತಿಯವನು.

“ವೃಷಲತ್ವಂ ಗತಾ ಲೋಕೇ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾ ದರ್ಶನೇನ ಚ । ಪೌಂಡ್ರಕಾಶ್ವಿಂ-

ದ್ರವಿಡಾಃ ಕಾಮ್ಬೋಜಾ ಯವನಾಃ ಶಕಾಃ । ಪಾರದಾಃ ಪಲ್ಲವಾ-

ಶ್ಚಿನಾಃ ಕಿರಾತಾ ದರದಾಃ ಕ್ಷಶಾಃ” ಮನುಂ ೧೦-೪೪ ।

(ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 5. ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ದೇಶ.

“ಅಥೋದೀಚ್ಯಾ ಜನಪದಾಸ್ತತ್ರ ಚೀನಾಃ ಸ್ವರಃಭರಾಃ । ಗಾಂಧಾ-

ರಾಸ್ತು ದಿಹಿಷ್ಠಾಃ ಸ್ಯುಃ ಯವನಾಸ್ತು ಹುಣ್ಕರಾಃ” ವೈಜಂ ।

6. ಯವನ ದೇಶದ ಜನರು. 7. ಯವನ ದೇಶದ

ರಾಜರು. “ಯದವಸ್ತತ್ರ ನಿಸ್ತ್ರಾಸಾಃ ಯವನೈಃ ಸ್ತನಯಿತ್ಸುಭಿಃ”

ಯಾದಂ ೨೨-೯೧ । 8. ವೇಗ. 9. ಅಧಿಕ ವೇಗವುಳ್ಳ

ಹೆಂಡು. “ಯವನೋ ದೇಶಭೇದೇ ನಾ ವೇಗವೇಗಾಧಿಕಾಶ್ವಯೋಃ”

ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ) 10. ಅಧಿಕ ವೇಗವುಳ್ಳ. “ತಮಶ್ವವಾರಾ

ಯವನಾಶ್ವಯಾನಿನಂ ಪ್ರಕಾಶರೂಪಾ ಮನುಜೇಶಮನ್ವಯುಃ” ನೈಷಂ ।

ಯವನಾನಿ ಯವನಾನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯವನರ ಲಿಪಿ, ಯವನ

ಭಾಷೆಯ ಅಕ್ಷರ. ಯವನಾನಾಂ ಲಿಪಿಃ “ಆನುಕ್” “ಡೀಪ್”

ಚ (೪-೧-೪೯) ।

ಯವನಿಕಾ ಯವನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪರದೆ, ತೆರೆ. ಯುನಾಲ್ಪಾ-

ವುಣೋತ್ಪನ್ನಯಾ—ಯುಬ್ (ಬಂಧನ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭) ।

2. ಯವನಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು, ಮಹಮ್ಮದೀಯ

ಹೆಂಗಸು.

ಯವನಿ ಯವನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯವನಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು.

ಯವನ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬೩) । “ಯವನೀಮುಖಪದ್ಮಾನಾಂ ಸೇಹೇ

ಮಧುಮದಂ ನ ಸಃ” ರಘುಂ ೪-೬೧ ।

ಯವನೇಷ್ಠ ಯವನೇಷ್ಠ (ಪುಂ) 1. ಹತ್ತು ವಿಧ ಈರುಳ್ಳಿ

ಯಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. ಯವನಾನಾಮಿಷ್ಠಃ । “ಗೃಜ್ಜನೋ

ಯವನೇಷ್ಠಃ ಪಲಾಂಶೋದಶ ಜಾತಯಃ” ವೈಜಂ । 2. ಬೇವಿನ

ಮರ. “ಪಿಚುಮಂದಃ ಪಾರಿಭದ್ರೋ ನೇತಾ ಕಾಕಫಲಶ್ಚ ಸಃ ।

ಯವನೇಷ್ಠಃ ಪೀತಸಾರಃ” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ । (ನಂ) 3. ಸೀಸಲೋಹ.

“ಅಥ ಸೀಸೋಸ್ತ್ರೀ ಯೋಗೇಷ್ಠಂ ಭುಜಗಾಹ್ವಯಮ್ । ಯವನೇಷ್ಠಂ

ಸಮೋಲೂಕಮ್” ವೈಜಂ । 4. ರಾಜೀರುಳ್ಳಿ. 5. ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳಿ.

6. ಮೆಣಸು. “ಮರೀಚಂ ಮರೀಚಂ ಚಾಪಿ ಮಿರೀಚಂ ಮಿರೀಚಂ

ಪುನಃ । ಯವನೇಷ್ಠಂ ವೃತ್ತಫಲಮ್” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ನೇಷ್ಠಾ

—ನೇಷ್ಠ್ಯ. ಖರ್ಜೂರದ ಮರ. “ಹೃದ್ರಾಪ್ರಿಯಾ ತು ನಿಃಶ್ರೇಣಿ

ಯವನೇಷ್ಠಾ ದುರಾರಹಾ” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ ।

ಯವಫಲ ಯವಫಲ (ಪುಂ) 1. ಬಿದಿರು ಮೆಳೆ. ಯವ ಇವ

ಫಲಾನ್ಯಸ್ಯ । 2. ಬೆಟ್ಟಮಲ್ಲಿಗೆ. 3. ಜಟಾಮಾಂಸಿ.

“ಮವೇದ್ಯಫಲೋ ವೇಣೋ ಮಾಂಸಿಕುಟಜಯೋರಪಿ” ಮೇದಿಂ ।

ಯವಲಾಸ ಯವಲಾಸ (ಪುಂ) ಯವಕ್ಷಾರ, ಪೆಟ್ಟುಪ್ಪು.

ಯವಶೂಕ ಯವಶೂಕ (ಪುಂ) ಯವಕ್ಷಾರ, ಪೆಟ್ಟುಪ್ಪು.

ಯವಸ ಯವಸ (ನಂ) (ಹಸು ಎಮ್ಮೆ ಮೊದಲಾದುವು

ತನ್ನೊಡನೆಹೊಂದಿದ) ಹುಲ್ಲು. ಯೌತಿ—ಯು (ಮಿಶ್ರಣ ಅಮಿಶ್ರಣ

ಚ) “ಅಸತ್” (೩ಂ ೩-೧೧೯) । “ತತ್ಸ್ಯಾದಾಯುಧಸಂಪನ್ನಂ

ಧನಧಾನ್ಯೇನ ವಾಹನೈಃ । ಬ್ರಾಹ್ಮಣೈಃ ಶಿಲ್ಪಿಮಿರ್ಯನ್ತೈಃ ಯವಸೇನೋದ-

ಕೇನ ಚ” ಮನುಂ ೭-೭೫ ।

ಯವಾ ಯವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಾಸಿವಾಳದ ಗಿಡ. “ಆಡ್ರಕಾ

ಪ್ರಾತಿಕಾ ಸೂರ್ಯಪ್ರಿಯಾ ಚಾಪಿ ಯವಾ ಪುನಃ” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ ।

ಯವಾಗ್ನು ಯವಾಗ್ನು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಕ್ಕಿಯ ಗಂಜಿ, ಅನ್ನದ

ಮೇಲಿನ ಅಂಚಲಿ. ಯೌತಿ—ಯು (ಮಿಶ್ರಣ ಅಮಿಶ್ರಣ ಚ)

“ಆಗ್ನುತ್” (೩ಂ ೩-೮೧) ।

ಯವಾಗ್ರಜ ಯವಾಗ್ರಜ (ಪುಂ) ಯವಕ್ಷಾರ, ಪೆಟ್ಟುಪ್ಪು,

ಸೋರುಪ್ಪು. ಯವಾಗ್ರಾತ್ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುರ್ಭವಿ)

“ಛಃ” (೩-೨-೯೭) । “ಯವಕ್ಷಾರೋ ಯವಾಗ್ರಜಃ” ಅಮಂ ।

ಯವಾನಿ ಯವಾನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಜವಾನ, ಓಮ, ವಾದಕ್ಕಿ.

ದುಷ್ಟೋ ಯವಃ “ಆನುಕ್” (೪-೧-೪೯) । “ಡೀಪ್” ಚ ।

“ಕನ್” (೫-೩-೯೬) । ಯವಾನಿಕಾ ಯವಾನಿಕಾ.

“ಅಜಮೋದಾತ್ಪ್ರಗಂಧಾ ಬ್ರಹ್ಮಾದರ್ಭಾ ಯವಾನಿಕಾ” ಅಮಂ ।

ಯವಾಪತ್ಯ ಯವಾಪತ್ಯ (ನಂ) ಯವಕ್ಷಾರ. ಯವಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ ।

ಯವಾಸ ಯವಾಸ (ಪುಂ) ತೀಟಕ ಸಂಧಿ. ಯು (ಮಿಶ್ರಣ ಅಮಿಶ್ರಣ

ಚ) “ಆಸಃ” (೩ಂ ೪-೨) । “ಯಾಸೋ ಯವಾಸೋ ದುಸ್ಪರ್ಶಃ”

ಅಮಂ ।

ಯವಾಸಕ ಯವಾಸಕ (ಪುಂ) ತೀಟಕ ಸಂಧಿ. ಯವಾಸ ಸ್ವಾರ್ಥ

“ಕನ್” । “ಗುಡ್ಡುಚಿತ್ರಫಲಾಪಾಸಾತ್ರಾಯಮಾಣಾಯವಾಸಕಃ ।

ಕ್ವಥಿತೈವಿಧಿವತ್ ಪಕ್ವಮೇತೈಃ ಕಲ್ಕೀಕೃತೈಃ ಸಮೈಃ । ಪೀತಂ ಸರ್ಪಿಃ

ಕ್ಷಯಶ್ವಾಸಕಾಸಜೀರ್ಣಜ್ವರಾನ್ ಜಯೇತ್” ಸುಶ್ರುತಂ ೩೯ ।

ಯವಿಷ್ಠ ಯವಿಷ್ಠ (ವಿಂ) ಇವರಲ್ಲಿ ಇವನು ಬಹಳ ಕಿರಿಯ,

ಬಹಳ ಎಳೆಯ ಪ್ರಾಯದವನು. ಅಯಮೇವಾಮತಿಶಯೇನ

ಯವಾ—ಯವನ್ “ಇಷ್ಠನ್” (೫-೩-೫೫) । ವನೋ ಲೋಪಃ

ಗುಣಃ ಅವಾದೇಶಃ (೬-೪-೧೫೬) ।

ಯವೀಯಸ್ ಯವೀಯಸ್ (ಪುಂ) 1. ತಮ್ಮ, ಅನುಜ.

(ವಿಂ) 2. ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಇವನು ಕಿರಿಯ, —ಎಳೆಯ,

—ಚಿಕ್ಕ ವಯಸ್ಸಿನವನು. ಅಯಮನಯೋರತಿಶಯೇನ ಯವಾ—ಯವನ್

“ಇಯಸುನ್” (೫-೩-೫೭) । ವನೋ ಲೋಪಃ ಗುಣಃ (೬-೪-೧೫೬) ।

ಅವಾದೇಶಃ । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೫) । ಯವೀಯಸೀ

ಯವೀಯಸೀ. “ಅವಾಚ್ಯೋ ದೀಕ್ಷಿತೋ ನಾಮ್ನಾ ಯವೀಯಾನಪಿ

ಯೋ ಭವೇತ್” ಮನುಂ ೨-೧೨೮ । (ಪುಂ) ಯವೀಯಾನ್ ಯವೀಯಾಂಸಿ



ಯವೀಯಾಸಃ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯವೀಯಸೀ ಯವೀಯಸ್ಯೌ ಯವೀಯಸ್ಯಃ |  
(ನಂ) ಯವೀಯಃ ಯವೀಯಸೀ ಯವೀಯಾಸಿ |

ಯವೀಯಸ ಯವೀಯಾಸ (ನಂ) ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ.

ಯವ್ಯ ಯವ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಚಾಂದ್ರಮಾಸ. ಯವ್ಯೋ  
ಹಿತಃ "ಯತ್" (೪-೧-೭) | "ಯವ್ಯದ್ವಯಂ ಶ್ರಾವಣಾದಿ ಸರ್ವಾ ನದೀ-  
ರಜಸ್ವಲಾಃ | ತಾಸು ಸ್ನಾನಂ ನ ಕುರ್ವೀತ ವರ್ಜಯಿತ್ವಾ ಸಮುದ್ರಗಾಃ"  
ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತತತ್ವಮ್ | (ನಂ) 2. ಜವೆಗೋಧಿಯನ್ನು ಬೆಳೆ  
ಯುವ ಕ್ಷೇತ್ರ (ಭೂಮಿ). ಯವಾನಾಂ ಭವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ "ಯತ್"  
(೪-೨-೩) | (ವಿಂ) 3. ಗೋಧಿಗೆ ಹಿತವಾದ. ಯವಾಯ  
ಹಿತಃ "ಯತ್" |

ಯಶಃಪಟಹ ಯಶಃಪಟಹ (ಪುಂ) ಡವಣಿ (ಢಕ್ಕೆ) ಯೆಂಬ  
ಒಂದು ವಾದ್ಯ. ಯಶಃಸೂಚಕಃ ಪಟಹಃ |

ಯಶಃಶರೀರ ಯಶಃಶರೀರ (ನಂ) ಕೀರ್ತಿಯ ರೂಪದಲ್ಲಿ  
ರುವ ದೇಹ, ಕೀರ್ತಿಯೆಂಬ ಶರೀರ. ಯಶ ಎವ ಶರೀರಮ್ |  
"ಕಿಮಪ್ಯಹಿಸ್ಯಸ್ತವ ಚೇನ್ಮತೋಽಹಂ ಯಶಃಶರೀರೇ ಭವ ಮೇ  
ದಯಾಲುಃ" ರಘುಂ ೨-೪೭ |

ಯಶಃಶೇಷ ಯಶಃಶೇಷ (ವಿಂ) ಕೀರ್ತಿಯಿಂದ ಮಾತ್ರ  
ಉಳಿದಿರುವವನು, ಭೌತಿಕ ಶರೀರವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದವನು.  
ಯಶ ಎವ ಶೇಷೋ ಯಸ್ಯ | -ಶೇಷತಾ ಶೇಷತಾ. ಕೀರ್ತಿರೂಪ  
ವಾದ ಶರೀರದಿಂದ ಮಾತ್ರ ಉಳಿದಿರುವುದು. ಯಶಃ ಶೇಷಸ್ಯ  
ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) |

ಯಶದ ಯಶದ (ನಂ) ತವರವೆಂಬ ಒಂದು ಧಾತು. "ಯಶದಂ  
ತುವರಂ ತಿಕ್ತಂ ಶೀತಲಂ ಕಫಪಿತ್ತಹೃತ್" ಭಾವಪ್ರಂ |

ಯಶಸ್ ಯಶಸ್ (ನಂ) ಕೀರ್ತಿ, ಖ್ಯಾತಿ, ಪ್ರತಿಷ್ಠೆ. ಅಶನೋತಿ  
ವ್ಯಾಪ್ನೋತಿ—ಅಶು (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಅಸುನ್" (೩ಂ ೪-೧೯೦) |  
ಯುತ್ ಚ | "ಯಶೋಽಧಿಗಂತುಂ ಸುಖಲಿಪ್ಸಯಾ ವಾ ಮನುಷ್ಯಸಂಖ್ಯಾ-  
ಮತಿವರ್ತಿಸುಂ ವಾ" ಕಿರಾಂ ೩-೪೦ |

ಯಶಸ್ಕರ ಯಶಸ್ಕರ (ವಿಂ) ಕೀರ್ತಿಯನ್ನು ಉಂಟು  
ಮಾಡುವ. ಯಶಃ ಕರೋತಿ—ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಃ"  
(೩-೨-೨೦) | ವಿಸರ್ಗಸ್ಯ ಸತ್ವಮ್ (೮-೩-೪೬) | "ಎತೇಷಾಂ  
ನಿಗ್ರಹೋ ರಾಜಃ ಪಚ್ಚಾನಾಂ ವಿಷಯೇ ಸ್ವಕೇ | ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯಕ್ರ-  
ತ್ಸಜಾತೀಯೇ ಲೋಕೇ ಚೈವ ಯಶಸ್ಕರಃ" ಮನುಂ ೮-೩೮೭ |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೫) | ಯಶಸ್ಕರೀ ಯಶಸ್ಕರೀ.

ಯಶಸ್ಯ ಯಶಸ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಯಶಸ್ಸಿಗೆ ಹಿತವಾದ. ಯಶಸೇ  
ಹಿತಮ್ "ಯತ್" (೪-೧-೫) | "ಆಯುಷ್ಯಂ ಪ್ರಾಡ್‌ಮುಖೋ ಭುಕ್ತೇ  
ಯಶಸ್ಯ ದಕ್ಷಿಣಾಮುಖಃ | ಶ್ರಿಯಂ ಪ್ರತ್ಯಡ್‌ಮುಖೋ ಭುಕ್ತೇ ಋತಂ  
ಭುಕ್ತೇ ಹ್ಯದ್‌ಮುಖಃ" ಮನುಂ ೨-೪೨ | -ಸ್ಯಾ -ಸ್ಯಾ.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಸೇಹಾಳೆ ಗಿಡ.

ಯಶಸ್ವತ್ ಯಶಸ್ವತ್ (ವಿಂ) ಕೀರ್ತಿ ಪಡೆದವನು,  
ಯಶಸ್ಸುಳ್ಳವನು. ಯಶೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪) |

ಯಶಸ್ವಿನ್ ಯಶಸ್ವಿನ್ (ವಿಂ) ಕೀರ್ತಿಶಾಲಿ, ಯಶಸ್ಸನ್ನು  
ಪಡೆದವನು. ಯಶೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ವಿನಿಃ" (೪-೨-೧೨೨) |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೫) | -ಸ್ವಿನೋ -ಸ್ವಿನೀ.

ಯಶೋದ ಯಶೋದ (ಪುಂ) 1. ಪಾದರಸ, ರಸಧಾತು.  
"ರಸವಾತುರ್ಹರತೇಜೋ ಯಶೋದಃ" ಕಲ್ಪದ್ರುಂ | (ವಿಂ) 2. ಯಶ  
ಸ್ಸನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ, ಕೀರ್ತಿಯನ್ನು ಕೊಡುವ. ಯಶೋ  
ದದಾತಿ—ಙ್ ದಾತ್ (ದಾನ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ವಾ -ವಾ. 3. ನಂದಗೋಪನ ಪತ್ನಿ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ  
ಸಾಕುತಾಯಿ.

ಯಶೋಧನ ಯಶೋಧನ (ವಿಂ) ಕೀರ್ತಿಯೇ ಧನವಾಗಿ  
ಉಳ್ಳವನು, ಯಶಸ್ಸೇ ಐಶ್ವರ್ಯವಾಗಿ ಉಳ್ಳವನು. ಯಶ  
ಎವ ಧನಂ ಯಸ್ಯ | "ವನಾಯ ಪೀತಪ್ರತಿಬದ್ಧವತ್ಸಾಂ ಯಶೋಧನೋ  
ಧೇನುಮೃಷೇಮುಮೋಚ" ರಘುಂ ೨-೧ |

ಯಶೋಧರ ಯಶೋಧರ (ವಿಂ) ಕೀರ್ತಿಶಾಲಿ, ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ  
ಯನ್ನು ಪಡೆದವನು. ಧರತಿ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |  
ಯಶಸೋ ಧರಃ |

ಯಜ್ಞ ಯಜ್ಞ (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಂಡ, ಕೋಲು, ಬೆತ್ತ,  
ದೊಣ್ಣೆ. ಯಜ್ಯತೇ—ಯಜ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಿಚ್"  
(೩-೩-೧೭೪) | ಕಲೋಪಃ (೮-೨-೨೯) | ಷ್ಠತ್ವಮ್  
(೮-೪-೪೧) | "ದಂಙೋಽಸ್ತೀ ಲಗುಢಃ ಪುಮಾನ್ | ಯಜ್ಞಿತ್ವಯೋಃ  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಯಜ್ಞಿ" ಕಲ್ಪದ್ರುಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಜ್ಞಿ ಯಜ್ಞೀ.  
2. ಗದೆ. 3. ಕಂಬ, ಗಣಿ. 4. ಹಕ್ಕಿಗಳು ಕೂರುವ  
ಕೋಲು. 5. ಧ್ವಜದಂಡ, ಧ್ವಜ (ಪತಾಕೆ) ಎರಿಸುವ  
ಕಂಬ. 6. ಹಾರದ ಎಳೆ, ಮುಕ್ತಾಹಾರ. "ವಿಮುಚ್ಯ  
ಸಾ ಹಾರಮಹಾರ್ಯನಿಶ್ರಯಾ ವಿಲೋಲಯಜ್ಞಿಪ್ರವಿಲುಪ್ತಚಂದನಮ್"  
ಕುಮಾಂ ೪-೮ | 7. ಉದ್ದವಾಗಿಯೂ ಮೃದು (ಕೋಮಲ)  
ವಾಗಿಯೂ ಇರುವ ಕತ್ತಿ. "ಹರಕಸ್ತರವಾರಿ ಸ್ತ್ರೀ ಯಜ್ಞಿ-  
ಶ್ರಾಪಿ ಮೃದೌ ಪೃಥೌ" ವೈಜಂ | 8. ಅತಿಮಧುರ, ಜ್ಯೇಷ್ಠ  
ಮಧು. 9. ಭಾರಂಗಿ, ಭಾರಿಗ. "ಯಜ್ಞಿಭಾರಿಗಾ ಮಧುಯಜ್ಞಿ  
ಛವಜದಂಙೇಸ್ತ್ರಹಾರಯೋಃ" ಹೇಮಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 10. ಬಳ್ಳಿ,  
ಲತೆ. 11. ವೃಕ್ಷದ ಶಾಖೆ, ಮರದ ರೆಂಬೆ. "ಸ್ಯಾವಲಿ  
ಸ್ರಗಲತಾ ಯಜ್ಞಿಃ" ಕಲ್ಪದ್ರುಂ | "ಚೂತಯಜ್ಞಿರವಾಮ್ಯಾಶೇ ಮಧೌ  
ಪರಮೃತೋನ್ಮುಖಿ" ಕುಮಾಂ ೬-೨ | (ವಿಂ) 12. ತೆಳುವಾದ,  
ಸಣ್ಣದಾದ. "ತಂ ವೀಕ್ಷ್ಯ ವೇಪಥುಮತೀ ಸರಸಾಙ್ಗಯಜ್ಞಿಃ"  
ಕುಮಾಂ ೪-೮೫ | (ಪುಂ) 13. ಭುಜದಂಡ, ತೋಳು.  
14. ಕತ್ತಿಯ ಹಿಡಿ. "ಬದ್ಧಪಾಣೌ ತ್ಸರೌ ಯಜ್ಞಿಃ ಪುಸಿ



ಸ್ಯಾದ್ಭುಜದಂಡಕೇ । ದ್ವಯೋರ್ಹರಲತಾಭಾಗ್ಯೋಮಂಧುಕಾಶಸ್ತಭೇದಯೋಃ”  
ಮೇದಿಂ ।

ಯಟಿಕ ಯಷ್ಟಿಕ (ಪುಂ) 1. ನೀರುಕೋಳಿ. ಯಟಿರಿವ—  
“ಕನ್” (೪-೩-೯೬) । 2. ದಂಡ, ಕೋಲು, ದೊಣ್ಣೆ.  
ಯಟಿ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” ।

ಯಟಿಕಾ ಯಷ್ಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಾರ, ಸರ. ಯಟಿ  
ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” । 2. ವಾರಾಹಿ ಗಿಡ, ಹಂದಿಗಡ್ಡೆ. “ಅಥ  
ವಾರಾಹಿ ಬ್ರಹ್ಮಪುತ್ರಿ ಚ ಯಟಿಕಾ” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ । 3. ಪುಷ್ಕರಿಣಿ,  
ಸರಸ್ಸು, ಕೊಳ. “ಅಥ ಪುಷ್ಕರಿಣೀತ್ಯಪಿ । ದೀರ್ಘಾ ಸ್ತ್ರೀ  
ಯಟಿಕಾ ವಾಪಿ” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ । 4. ದೊಣ್ಣೆ, ಕೋಲು.  
“ಅಥ ಶಕ್ತಿಶ್ಚ ಶಕ್ತೀ ಚ ಯಟಿರ್ಯಟಿ ಚ ಯಟಿಕಾ ।  
ದಂಡಃ ಕಾಂಡೋಽಪಿ ಲಗುಡಃ ಪಶುಘ್ನೋ ದಂಡಕೋಽಪಿ ಚ”  
ಶಬ್ದರತ್ನಾವಲಿಃ ।

ಯಟಿಗ್ರಹ ಯಷ್ಟಿಗ್ರಹ (ವಿಂ) ಕೋಲನ್ನು ಹಿಡಿದಿರು  
ವವನು, ದೊಣ್ಣೆಯನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವವನು. ಯಟಿ ಗೃಹ್ಣಾತಿ  
—ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) “ಅಚ್” (ವಾಂ ೩-೨-೯) ।

ಯಟಿನಿವಾಸ ಯಷ್ಟಿನಿವಾಸ (ಪುಂ) ಹಕ್ಕಿಗಳು ಕೂರಲು  
ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಹಾಕಿರುವ ಅಡ್ಡಕೋಲು ಅಥವಾ ಕಬ್ಬಿಣದ  
ಕಂಬಿ. ಯಟಿರೇವ ನಿವಾಸಃ ವಾಸಸ್ಥಾನಮ್ । “ವೃಕ್ಷೇಶಯಾ  
ಯಟಿನಿವಾಸಮಜ್ಞಾನ್ಮದಜ್ಞಶಬ್ದಾಪಗಮಾದಲಾಸ್ಯಾಃ” ರಘುಂ  
೧೬-೧೪ ।

ಯಟಿಮಧು ಯಷ್ಟಿಮಧು (ನಂ) ಅತಿಮಧುರ, ಜ್ಯೇಷ್ಠ  
ಮಧು. ಯಟಿಮಧು ಮಾಧುರ್ಯಮಸ್ಯ । “ಕನ್” (೪-೪-೧೪೪) ।  
—ಮಧುಕಮ್ —ಮಧುಕಮ್ ।

ಯಟಿ ಯಷ್ಟೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅತಿಮಧುರ. ಯಟಿ “ಜಿಃ”  
(ಗಂ ೪-೧-೪೫) । 2. ಒಂದು ವಿಧ ಹಾರ.

ಯಟಿಕ ಯಷ್ಟೀಕ (ನಂ) ಅತಿಮಧುರ.

ಯಟಿಮಧು ಯಷ್ಟೀಮಧು (ನಂ) ಅತಿಮಧುರ.

ಯಟ್ ಯಷ್ಟ್ಯ (ಪುಂ) ಯಜಮಾನ, ಯಾಗಮಾಡುವವನು.  
ಯಜತೇ —ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾಯಾಮ್) “ತುಚ್” (೩-೧-೧೩೩) ।

ಯಸು — ಪ್ರಯತ್ನೇ (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸೇಂ) । ಯಸ್ಯತಿ, ಯಸತಿ ।  
ಯಾಸ । ಯಸಿತಾ । ಯಸ್ಯತು, ಯಸತು । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಯಾತ್ಸು, ಪ್ರಯಾತ್ಸುಪಡು, ಶ್ರಮಿಸು, ಹೋರಾಡು.

ಯಾ — ಪ್ರಾಪಣೇ (ಅದಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) ।

|      |      |      |         |
|------|------|------|---------|
| ಲಟ್— | ಯಾತಿ | ಯಾತಃ | ಯಾಂತಿ । |
|      | ಯಾಸಿ | ಯಾಃ  | ಯಾಃ ।   |
|      | ಯಾತಿ | ಯಾವಃ | ಯಾಮಃ ।  |

ಲಿಟ್— ಯಯಿ ಯಯತುಃ ಯಯುಃ ।

ಯಯಿ } ಯಯುಃ ಯಯಿ ।  
ಯಯಾಥ }

ಯಯಿ ಯಯಿವ ಯಯಿಮ ।

ಲುಟ್— ಯಾತಾ ಯಾತಾರಿ ಯಾತಾರಃ ।

ಲೂಟ್— ಯಾಸ್ಯತಿ । ಲೋಟ್—ಯಾನು, ಯಾತಾತ್, ಯಾಹಿ,  
ಯಾತಾತ್ । ಲಙ್—ಅಯಾತ್ ।

ವಿಧಿಲಿಟ್— ಯಾತಾತ್ ಯಾತಾತಾಮ್ । ಆಶೀಲಿಟ್—ಯಾತಾತ್  
ಯಾತಾಸ್ತಾಮ್ ಯಾತಾಸುಃ ।

ಲುಙ್— ಅಯಾಸೀತ್ । ಲಙ್—ಅಯಾಸ್ಯತ್ ।

1. ಹೋಗು, ನಡೆ. “ತಾಂ ದೇವತಾಪಿತ್ರತೀರ್ಥಿಕ್ರಿಯಾರ್ಥ-  
ಮನ್ವಗ್ಯಯೋ ಮಧ್ಯಮಲೋಕಪಾಲಃ” ರಘುಂ ೨-೧೬ । 2.  
ಹೊರಡು, ಮುಂದೆ ಹೋಗು. “ಯಾಸ್ಯತ್ಯಥ ಶಕುಂತಲೇತಿ  
ಹೃದಯಂ ಸಂಸ್ಪೃಷ್ಟಮುಕ್ತಗಂಧತೇ” ಶಾಕುಂ ೪-೫ । 3. ಹೊಂದು,  
ಪಡೆ. “ಶಿರೀಷಪುಷ್ಪಾಧಿಕಸೌಕುಮಾರ್ಯಃ ಸ್ವೇದಂ ಸ ಯಾತಾಪಿ  
ಮೂಷಣೇನ” ರಘುಂ ೧೮-೪೫ । 4. ಹೊಂದು, ತಲಾಪು,  
ಸೇರು. “ಯಾ ನ ಯಯಿ ಪ್ರಿಯಮನ್ಯವಧೂಮ್ಯಃ ಸಾರತರಾಗಮನಾ  
ಯತಮಾನಮ್” ಮಾಗಂ ೪-೪೫ । 5. ಕಳೆದುಹೋಗು (ಕಾಲಂ).  
“ವಿನಯಾದಿವ ಯಾಪಯಂತಿ ತೇ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರಾತ್ಮಜಮಾತ್ಮಸಿದ್ಧಯೇ”  
ಕಿರಾಂ ೨-೪೫ । 6. ವಹಿಸಿಕೊ, ಕೈಗೊಳ್ಳು, ಕೈಗೆ  
ತೆಗೆದುಕೊ. 7. ಅದೃಶ್ಯವಾಗು, ಮರೆಯಾಗು. “ಭಾಗ್ಯ-  
ಕ್ರಮೇಣ ಹಿ ಧನಾನಿ ಭವಂತಿ ಯಾಂತಿ” ಮೃಚ್ಛಂ ೧-೧೩ ।

ಗಿಚಿಃ—ಯಾಪಯತಿ, —ತೇ । ಯಾಪಯಾಂ —ಚಕಾರ, —ಚಕ್ರ,  
—ಬಮುವ, —ಆಸ । ಯಾಪಯಿತಾ —ಸಿ, —ಸೇ, —ಹೇ । ಯಾಪಯತು,  
—ತಾಮ್ । ಅಯಾಪಯತ್, —ತ । ಯಾಪಯೇತ್, —ತ । ಯಾಪ್ಯಾತ್ ।  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸುಃ—ಯಾತವ್ಯಃ । ಯಾನೀಯಃ । ಯೇಯಃ । ಯಾತಃ ।  
ಯಾತವಾನ್ । ಯಾನ್, ಯಾಂತೀ । ಯಾತುಮ್ । ಯಾತಮ್ । ಯಾನಮ್ ।  
ಯಾತ್ವಾ । ಪ್ರಯಾಪ ।

ಯಾಗ ಯಾಗ (ಪುಂ) ಯಜ್ಞ, ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ  
ಅಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಹೋಮ. ಇಜ್ಯತೇ —ಯಜ (ದೇವ-  
ಪೂಜಾಯಾಮ್) “ಘಜ್” (೩-೩-೧೯) ।

ಯಾಚ್ — ಯಚ್ಚಾಯಾಮ್ (ಭಾಂ ಉಮಂ ಡಿಕ್ ಸೇಂ) ।

ಲಟ್— ಪರಂ ಯಾಚತಿ ಯಾಚತಃ ಯಾಚಂತಿ ।

ಆತ್ಮಂ ಯಾಚತೇ ಯಾಚತೇ ಯಾಚಂತೇ ।

ಯಾಚಸೇ ಯಾಚೇಥೇ ಯಾಚಂತೇ ।

ಯಾಚೇ ಯಾಚಾವಹೇ ಯಾಚಾಮಹೇ ।

ಲಿಟ್— ಪರಂ ಯಾಚತುಃ ಯಾಚತುಃ ಯಾಚುಃ ।

ಆತ್ಮಂ ಯಾಚತೇ ಯಾಚಾತೇ ಯಾಚಿರೇ ।



याच्या यज्ञात् (स्त्री०) १. प्राप्तिः सुखं, धैर्यं  
 यदु. टु याच् (याच्यायाम्) "नङ्" (३-३-९०) ।  
 "तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद् रत्नधुर्गतोऽहं याच्या मोघा  
 वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा" मेघ० १-६ । २. धीर्



ಬೇಡುವುದು, ತಿರುಪೆ ಕೇಳುವುದು. "ಅಥಾಸ್ತಿ ಶಕ್ತಿ: ಕೃತಮೇವ ಯಾಚ್ಯಾ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೨೦ ।

ಯಾಚ್ಯ ಯಾಚ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಬೇಡಲ್ಪಡುವ, ಪೂರ್ಣಿಸಲ್ಪಡುವ. ಟು ಯಾಚ್ (ಯಾಚ್ಯಾಯಾಮ್) "ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) । 2. ಭಿಕ್ಷೆ ಬೇಡಲ್ಪಡುವ.

ಯಾಜ ಯಾಜ (ಪುಂ) ಕಾಶ್ಯಪನ ಸಂತತಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ಮಹರ್ಷಿ. ಈ ಋಷಿಯು ದ್ರುಪದರಾಜನಿಂದ ಸಂತಾನಪ್ರಾಪ್ತಿಗಾಗಿ ಯಾಗ ಮಾಡಿಸಿದನು.

ಯಾಜಕ ಯಾಜಕ (ಪುಂ) 1. ಋತ್ವಿಕ್ಕು, ಯಜಮಾನನಿಂದ ದಕ್ಷಿಣೆ ಪಡೆದು ಯಾಗಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸುವವನು. ಯಾಜಯತಿ — ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾದೌ) + ಣಿಕ್ "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । 2. ಮದಿಸಿದ ಆನೆ. 3. ಯಾಗ ಮಾಡುವವನು. 4. ರಾಜನ ಆನೆ. "ಯಾಜಕೋ ರಾಜಕುಂಜರೇ । ಯಾಜ್ಞಿಕೇ ಚ" ಹೇಮಂ ।

ಯಾಜನ ಯಾಜನ (ನಂ) ಯಾಗ ಮಾಡಿಸುವುದು. ಯಾಜ್ಯತೇ — ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾದೌ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ವಿಹಿತವಾದ ಪಟ್ಟಮರ್ಗಗಳೆಲ್ಲವೂ. ಪಟ್ಟ ಕರ್ಮಗಳು: (1) ಯಜನಮ್ (2) ಯಾಜನಮ್ (3) ಅಧ್ಯಯನಮ್ (4) ಆಧ್ಯಾಪನಮ್ (5) ದಾನಮ್ ಮತ್ತು (6) ಪ್ರತಿಗ್ರಹ: । "ಅಧ್ಯಾಪನಾಧ್ಯಯನೇ ಯಜನಂ ಯಾಜನಂ ತಥಾ । ದಾನಂ ಪ್ರತಿಗ್ರಹೇವ ಪಡ್ಕರ್ಮಾಣ್ಯಗ್ರಜನ್ಮನ: " ಮನುಂ ೧೦-೨೫ ।

ಯಾಜನೀಯ ಯಾಜನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಯಾಗ ಮಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಯಾಗ ಮಾಡಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಯಾಗ ಮಾಡಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾದೌ) + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೨೬) । "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೨೬) । -ಯಿತವ್ಯ: -ಯಿತವ್ಯ:.

ಯಾಜಯತ್ ಯಾಜಯತ್ (ವಿಂ) ಯಾಗ ಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾದೌ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

ಯಾಜಯಿತ್ ಯಾಜಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) ಯಾಗ ಮಾಡಿಸುವವನು, ಋತ್ವಿಕ್ಕು. ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾದೌ) + ಣಿಕ್ "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

ಯಾಜಿ ಯಾಜಿ (ಪುಂ) 1. ಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡುವವನು. ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾದೌ) "ಇಜ್" (೩-೪-೧೨೪) । 2. ಯಾಗ, ಯಜ್ಞ.

ಯಾಜಿತ ಯಾಜಿತ (ವಿಂ) 1. ಯಾಗ ಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನು. ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾದೌ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । (ನಂ) 2. ಯಾಗ ಮಾಡಿಸುವುದು. ಯಜ + ಣಿಕ್ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" ।

ಯಾಜಿತವತ್ ಯಾಜಿತವತ್ (ವಿಂ) ಯಾಗ ಮಾಡಿಸಿದವನು.

ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ "ಕ್ವತು:" (೩-೨-೧೦೨) ।

ಯಾಜಿನ್ ಯಾಜಿನ್ (ವಿಂ) (ಸಮಾಸಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ) ಯಾಗ ಮಾಡುವವನು. ಯಜತೇ — ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾದೌ) "ಞಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) । "ಸೋಮಪಾಯಿನಿ ಭವಿಷ್ಯತೇ ಮಯಾ ವಾಙ್ಮಿತೋತ್ತಮವಿತಾನಯಾಜಿನಾ" ಮಾಘಂ ೧೪-೧೦ ।

ಯಾಜುಷ ಯಾಜುಷ (ವಿಂ) 1. ಯಜುರ್ವೇದ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಯಜುಷ: ಅಯಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) । 2. ಯಜುಃ ಶಾಖೆಗೆ ಸೇರಿದವನು, ಯಜುರ್ವೇದದ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು.

ಯಾಜ್ಯಾ ಯಾಜ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಋಗ್ವೇದಿ ಋತ್ವಿಕ್ಕು ಪರಿಸುವ ಋಕ್ಕು. ಇತ್ಯತೇಜಯಾ — ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾದೌ) "ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) । "ಯಾಜ್ಯಯಾ ಯಜನಕರ್ಮಿಣೋತ್ಯಜನ್ ದ್ರವ್ಯಜಾತಮಪದಿಷ್ಯ ದೇವತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೨೦ ।

ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕಯ ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕಯ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಸ್ಮೃತಿಕಾರರು, ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ ಬರೆದ ಒಬ್ಬ ಮಹರ್ಷಿ. ಇವರು ರಚಿಸಿದ ಸ್ಮೃತಿಯು "ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕಯಸ್ಮೃತಿ" ಯೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಆಚಾರ, ವ್ಯವಹಾರ ಮತ್ತು ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಅಧ್ಯಾಯಗಳಿವೆ. ಇವರು ಶುಕ್ಲಯಜುರ್ವೇದಪ್ರವರ್ತಕರಾದ ಒಬ್ಬ ಋಷಿ. ಈ ಋಷಿಯು ತಮ್ಮ ಗುರುಗಳಾದ ವೈಶಂಪಾಯನಋಷಿಯ ಶಿಷ್ಯರನ್ನು ತಿರಸ್ಕರಿಸಿ ಮಾತನಾಡಿದುದರಿಂದ ವೈಶಂಪಾಯನರ ಶಾಪಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರರಾಗಿ ಅವರಿಂದ ಕಲಿತ ವೇದಗಳನ್ನು ವಾಂತಿ ಮಾಡಿದರು. ಆಗ ಇತರ ಋಷಿಗಳು ಆ ವೇದಗಳನ್ನು ತಿತ್ತಿರಿಪಕ್ಷಿರೂಪದಿಂದ ಪರಿಗ್ರಹಿಸಿದರು. ಅನಂತರ ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕಯಋಷಿಯು ಸೂರ್ಯನಿಂದ ಶುಕ್ಲಯಜುರ್ವೇದವನ್ನು ಪರಿಗ್ರಹಿಸಿ ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಪ್ರಚಾರಪಡಿಸಿದರು.

ಯಾಜ್ಞಸೇನಿ ಯಾಜ್ಞಸೇನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಜ್ಞಸೇನನ ಮಗಳು, ದ್ರುಪದರಾಜನ ಮಗಳು, ದ್ರೌಪದೀದೇವಿ. ಯಜ್ಞಸೇನಸ್ಯ ಹೃಪದಸ್ಯ ಅಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ "ಇಜ್" (೪-೧-೧೨೫) । "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೨೫) ।

ಯಾಜ್ಞಿಕ ಯಾಜ್ಞಿಕ (ಪುಂ) 1. ಯಾಗವಿದ್ಯೆ ತಿಳಿದ ಋತ್ವಿಕ್ಕು, ದಕ್ಷಿಣೆ ಪಡೆದು ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ಯಾಗವನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸುವವನು. ಯಜ್ಞಂ ಯಜ್ಞವಿಧಾಮಧೀತೇ ವೇದ ವಾ — ಯಜ್ಞ "ಠಕ್" (೪-೨-೬೦) । 2. ಯಾಗ ಮಾಡುವವನು, ಯಜಮಾನ. ಯಜ್ಞ: ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೫-೧-೧೦೯) । "ಇಷ್ಟವೇಹ ದೇವತಾ ಯಜ್ಞ: ಸ್ವಲೋಕಂ ಯಾತಿ ಯಾಜ್ಞಿಕ:" ಭಾಗಂ ೧೧-೧೦-೨೩ ।



3. ದರ್ಭ, ಕುಶ. ಯಜ್ಞಮಹಂತಿ—“ಠಕ್” (೪-೧-೬೩) ।

4. ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿ ಮರ. 5. ಖದಿರವೃಕ್ಷ, ಕಗ್ಗಲಿ ಮರ. 6. ಮುತ್ತಗದ ಮರ.

ಯಾಜ್ಞಿಕ ಯಾಜ್ಞಿಕ (ನಂ) ಯಾಜ್ಞಿಕನ ಕಾರ್ಯ, ಯಾಜ್ಞಿಕನ ಧರ್ಮ, ಯಜ್ಞ. ಯಾಜ್ಞಿಕ “ಯಜ್ಞ” (೪-೩-೧೨೯) ।

ಯಾಜ್ಯ ಯಾಜ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಯಜಮಾನ, ಯಾಗ ಮಾಡಿಸ ಲ್ಪಡುವವನು. ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾದೌ) “ಯಜ” (೩-೧-೧೨೪) । “ಗುರೌ ಶಿಷ್ಯಶ್ಚ ಯಾಜ್ಯಶ್ಚ ಸ್ತೇನೌ ರಾಜನಿ ಕಿಲ್ಬಿಷಮ್” ಮನುಂ ೮-೩೧೭ । 2. ಯಾಗಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸುವ ಋತ್ವಿಜ. (ನಂ) 3. ಯಾಗಭೂಮಿ. ಇಜ್ಯತೇತ್ಯ—ಯಜ “ಯಜ” (೩-೧-೧೨೪) । 4. ಋತ್ವಿಜಿಗೆ ಕೊಡುವ ಸಂಭಾವನೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಯಾ—ಯಾ. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಉಪ ಯೋಗಿಸುವ ಋತ್ವಿಜ. ಇಜ್ಯತೇತ್ಯಯಾ—ಯಜ ಕರಂ “ಯಜ” (೩-೧-೧೨೪) । “ಯಾಜ್ಯಯಾ ಯಜನಕರ್ಮಿಣೋಽಯಜನ್ ದ್ರವ್ಯ-ಜಾತಮಪದ್ರಿಸ್ಯ ದೇವತಾಮ್” ಮಾಘಂ ೧೪-೨೦ ।

ಯಾತ್ ಯಾತ್ (ವಿಂ) ಹೋಗುತ್ತಿರುವ, ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ. ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಯಾ” (೩-೨-೧೨೪) । “ಯಾಂತೋಽನ್ಯತಃ ಪ್ಲುತಕೃತಸ್ವರಮಾಶು ದ್ವಾರಾದ್ಬಾಹುನಾ ಜುಹುವಿರೇ ಮುಹುರಾತ್ಮವರ್ಯಾಃ” ಮಾಘಂ ೫-೧೫ । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಛೀಪ್” (೪-೧-೬) । —ತೀ—ತೀ, —ಂತೀ—ಂತೀ. “ಯಾಂತೀನಾಂ ಸಮಸಿತಭ್ರುವಾಂ ನತತ್ವಾದಸಾನಾಂ ಮಹತಿ ನಿತಾಂತಮಂತರೇಽಪಿ” ಮಾಘಂ ೮-೨ ।

ಯಾತ ಯಾತ (ನಂ) 1. ಗಮನ, ನಡೆಗೆ, ಚಲನೆ. ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪) । “ಸಲೀಲಯಾತಾನಿ ನ ಮರ್ತುರಭ್ರಮೋನ್ ವಿತ್ರಮುಚ್ಚೇಶ್ರವಸಃ ಪದಕ್ರಮಮ್” ಮಾಘಂ ೧-೫೨ । 2. ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವುದು, ಮುಂದೆ ಸಾಗುವುದು. 3. ಅಂಕುಶದಿಂದ ಅನೆಯನ್ನು ನಡೆಸುವುದು. “ಪಾದಕರ್ಮ ಯತ ತೇಫಾಂ ಯಾತಮಂಕುಶವಾರಣಮ್” ವೇಜಂ । (ವಿಂ) 4. ನಡೆದ, ಮುಂದೆ ಸಾಗಿದ. ಯಾ ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) । 5. ಹೊಡೆದುಹೋದ. 6. ಕಳೆದು ಹೋದ (ಕಾಲ). 7. ಹೊಂದಿದ, ಸಂಪಾದಿಸಿದ, ಪಡೆದ, ಪಾಪವಾದ. “ಯಾತೇಶ್ಚಾತುರ್ವಿಧ್ಯಮಸ್ತ್ರಾದಿಭೇದಾದವ್ಯಾಸಂಜ್ಞೈಃ ಸೌಘವಾಲ್ಮಾಘವಾಂಶ್ಚ” ಮಾಘಂ ೧೮-೧೧ ।

ಯಾತನಾ ಯಾತನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ವೇದನೆ, ಬಹಳ ನೋವು, ಸಹಿಸಲಾಗದ ನೋವು. ಯತ (ನಿಕಾರೋಪಸ್ಕಾರಯೋಃ) + ಣಿच् “ಯುಚ್” (೩-೩-೧೦೭) । “ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುಃ ಪುತ್ರಂ ಪ್ರಹ್ಲಾದಂ ಕೇಶವಪ್ರಿಯಮ್ । ಜಿಘಾಂಸುರಕರೋತ್ತಮಾಯಾತನಾ

ಮೃತ್ಯುಹೇತವೇ” ಭಾಗಂ ೭-೧ । 2. ನಡೆಶಿಕ್ಷೆಯಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ನೋವು. “ಮಾ ಭೀರ್ಮಂದಮನೋ ವಿಚಿಂತ್ಯ ಬಹುಧಾ ಯಾಮಿಶ್ಚಿರಂ ಯಾತನಾಃ” ಮುಂ ಮಾಂ ।

ಯಾತಯಾಮ ಯಾತಯಾಮ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಕಾಲ ಕಳೆದಿರುವ, ಹೆಚ್ಚು ವಯಸ್ಸು ಕಳೆದಿರುವ, ಮುದುಕ. ಯಾತಾ ಯಾಮಾಃ ಯಸ್ಯ । “ಯಾತಯಾಮಂ ವಿಜಿತವಾನ್ ಸ ರಾಮೋ ಯದಿ ಕಿ ತತಃ” ಮಹಿಂ ೫-೩೯ । 2. ಜೀರ್ಣವಾದ, ತಿಂದು ಅರಗಿದ. 3. ಉಪಭೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅನುಭವಿಸಿ ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. “ಜೀರ್ಣಂ ಚ ಪರಿನುಕ್ತಂ ಚ ಯಾತಯಾಮಮಿದಂ ದ್ವಯಮ್” ಅಮಂ । 4. ಪರ್ಯುಷಿತವಾದ, ಹಳೆಯದಾದ. ಯಾತೋ ಗತೋ ಯಾಮಃ ಉಪಭೋಗಕಾಲೋ ಯಸ್ಯ । 5. ಬಹಳ ಕಾಲದಿಂದಿರುವ ಅಹಾರ, ಹೆಚ್ಚು ಕಾಲ ಕಳೆದು ಗುಣವನ್ನು ಕಳೆದು ಕೊಂಡಿರುವ ಅಹಾರ. “ಯಾತಯಾಮಂ ಗತರಸಂ ಪುತಿ ಪರ್ಯುಷಿತಶ್ಚ ಯತ್” ಗೀತಾ ೧೭-೧೦ ।

ಯಾತವತ್ ಯಾತವತ್ (ವಿಂ) ಹೊರಟಿರುವ. ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಕ್ತವತುಃ” (೩-೧-೯೬) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಛೀಪ್” (೪-೧-೬) । —ವತೀ—ವತೀ.

ಯಾತವ್ಯ ಯಾತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹೋಗಬೇಕಾದ. 2. ಹೋಗಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಹೊರಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬) । 4. ಎದುರಿಸಿ ಹೋಗಲು ಅರ್ಹನಾದ, ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ಹೊರಟು ಎದುರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. “ಯಾತವ್ಯವಾಣಿಗ್ರಾಹಾದಿಮಾಲಾಯಾಮಧಿಕಶ್ಚುತಿಃ” ಮಾಘಂ ೨-೯೨ । “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । ಯಾನೀಯಃ ಯಾನೀಯಃ ।

ಯಾತಿಕ ಯಾತಿಕ (ವಿಂ) ಪ್ರಯಾಣಿಕ, ಪಾಂಥ, ಯಾತ್ರಿಕ. ಯಾತಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಠನ್” (೫-೨-೧೧೫) ।

ಯಾತು ಯಾತು (ಪುಂ) 1. ಕಾಲ, ಸಮಯ. 2. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ತುಃ” (೩ಂ ೧-೭೨) । (ನಂ) 3. ರಾಕ್ಷಸ. “ಯಾತು ನಃ ಪದವೀ ಸೇವಾ ಯಾತುನಶ್ಚಾಸ್ಯ ಲಕ್ಷ್ಮಣ” ಚಂ ರಾಂ । (ವಿಂ) 4. ಪ್ರಯಾಣಿಕ, ಯಾತ್ರಿಕ, ಪಥಿಕ. “ಯಾತುರಧ್ವಗಕಾಲಯೋಃ । ರಕ್ಷಸಿ ಕಲಿಬಮ್” ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ಯಾತುಕ ಯಾತುಕ (ಪುಂ) ಒಂದು ಯಾಮ, ಒಂದು ಜಾವ, ಮೂರು ಗಂಟೆಗಳ ಕಾಲ. “ಯಾಮೇ ಪ್ರಹರಯಾತುಕೌ” ವೇಜಂ ।

ಯಾತುಧಾನ ಯಾತುಧಾನ (ಪುಂ) ರಾಕ್ಷಸ. ಯಾತುನಿ ರಕ್ಷಾಂಸಿ ದಧಾತಿ ಪುಷ್ಪಾತಿ—ಙ್ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೩) । “एको दाशरथिः कामं यातुधानाः सहस्रशः” ರವುಂ ೧೨-೪೫ । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಛೀಪ್” (೪-೧-೧೫) । —ಧಾನಿ—ಧಾನಿ.



ಯಾತ್ರೆ ಯಾತ್ರೆ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಯಾಣಕ, ದಾರಿ ನಡೆಯುವವನು, ಪಥಿಕ. ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣ) "ತೃ" (೩-೧-೧೩೩).  
ಯಾತಾ ಯಾತಾರೋ ಯಾತಾರಃ | "ಉಲ್ಕಾ ಶುಮದಾ ಪುರತೋದಿವಾಕರ  
ವಿನಿಃಸೃತಾ ಯಾತುಃ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೩೩-೧೩ | 2. ಸಾರಥಿ, ರಥ  
ನಡೆಸುವವನು. "ಯಾನಸ್ಯ ಚೈವ ಯಾತುಶ್ಚ ಯಾನಸ್ವಾಮಿನ  
ಎವ ಚ" ಮನುಂ ೮-೨೯೦ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಸಹೋದರನ  
ಪತ್ನಿ, ಅಣ್ಣತಮ್ಮಂದಿರ ಪತ್ನಿಯರು. (ಪರಸ್ಪರ). ಯಾತಾ  
ಯಾತರೋ ಯಾತರಃ | "ಭಾರ್ಯಸ್ತು ಭ್ರಾತೃವರ್ಗಸ್ಯ ಯಾತರಃ ಸ್ಯುಃ  
ಪರಸ್ಪರಮ್" ಅಮಂ |

ಯಾತ್ರಿಕ ಯಾತ್ರಿಕ (ಪುಂ) ಪಾಂಥ, ಪ್ರಯಾಣಕ.

ಯಾತ್ಯ ಯಾತ್ಯ (ಪುಂ) 1. ನರಕದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ ಪ್ರಾಣಿ  
ಗಳು. "ನಾರಕಾ ಜಂತವಃ ಪ್ರೇತಾ ಯಾತ್ಯಾ ಅಪ್ಯಾತಿವಾಹಿಕಾಃ"  
ವೈಜಂ | (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಯತ್ನಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಪ್ರಯತ್ನಿ  
ಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಯತಿ (ಪ್ರಯತ್ನ) "ಪ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) |

ಯಾತ್ರಾ ಯಾತ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಯಾಣ, ಗಮನ, ಹೊರಟು  
ಬರುವುದು. ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣ) "ತ್ರಿ" (೩ಂ ೪-೧೬೭) |  
"ಯಾತ್ರಾ ತೌ ಪರಿವಚ್ಚಿತುಂ ಕಿಸಲಯಂ ಮಾರೀಚಮಾಯಾವಿಧಿಃ"  
ಮಂ ಬಿಂ ೬-೧ | 2. ಜೈತ್ರಯಾತ್ರೆ, ಶತ್ರುಜಯಕ್ಕಾಗಿ  
ರಾಜನ ಪ್ರಯಾಣ. "ಶಕ್ಯೇವೇವಾಮವಚ್ಚಾತ್ರಾ ತಸ್ಯ ಶಕ್ತಿಮತಃ  
ಸತಃ" ರಘುಂ ೧೭-೫೬ | 3. ತೀರ್ಥಯಾತ್ರೆ, ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಕೈಗೊಳ್ಳುವ ಸಂಚಾರ. 4. ದೇವರ ಉತ್ಸವ, ಹಬ್ಬ,  
ಜಾತ್ರೆ. "ಅಥ ಸಲು ಭಗವತಃ ಕಾಲಪ್ರಿಯಾನಾಥಸ್ಯ ಯಾತ್ರಾ-  
ಮಾರ್ಯಮಿಶ್ರಾನ್ ವಿಜ್ಞಾಪಯಾಮಿ" ತಂ ರಾಂ ೧ | 5. ಶರೀರ  
ಯಾತ್ರೆ, ದೇಹಪೋಷಣೆ, ದೇಹಧಾರಣೆ, ಜೀವನ. "ಶರೀರ-  
ಯಾತ್ರಾಪಿ ಚ ತೇ ನ ಪ್ರಸಿದ್ಧಚೇದಕರ್ಮಣಃ" ಗೀತಾ ೩-೮ |  
6. ವ್ಯವಹಾರ, ನಡವಳಿಕೆ, ಸಾಮಾಜಿಕ ಕಾರ್ಯ. "ಪ್ರತ್ಯಹಂ  
ಲೋಕಯಾತ್ರಾಃ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಂ ಸ್ತ್ರೀನಿಬಂಧನಮ್" ಮನುಂ ೯-೨೭ |  
7. ಕಾಲ ಕಳೆಯುವುದು. "ಯಾತ್ರಾಮಾತ್ರಂ ತ್ವಹರಹದೇವಾ-  
ದುಪನಮತ್ಯುತ" ಭಾಗಂ ೧೦-೮೬-೧೫ | 8. ಮೆರವಣಿಗೆ.  
"ಪ್ರತ್ಯಾಸನ್ನಸ್ತವಯತೀತರಾಂ ಜನ್ಯಯಾತ್ರಾಪ್ರವೇಶಃ" ಮಾಲತೀಂ  
೬-೨ | 9. ಸಂಪ್ರದಾಯ, ಪದ್ಧತಿ, ಆಚಾರ, ವಾಡಿಕೆ.  
"ಏಷೋದಿತಾ ಲೋಕಯಾತ್ರಾ ನಿಯಮಂ ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸಯೋಃ ಪರಾ" ಮನುಂ  
೯-೨೫ | 10. ಉಪಾಯ. "ಯಾತ್ರಾ ತು ಯಾಪನೋಪಿ  
ಸ್ಯಾದ್ಗಮನೋತ್ಸವಯೋಃ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ | "ಯಾತ್ರಾ ತು  
ಯಾಪನೋಪಾಯೇ ಗತೌ ದೇವಾರ್ಚನೋತ್ಸವೇ" ವಿಶ್ವಂ |

ಯಾತ್ರಿಕ ಯಾತ್ರಿಕ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಯಾಣಕ, ಪಥಿಕ, ದಾರಿ  
ನಡೆಯುವವನು. 2. ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವವನು.  
3. ದೇಹಯಾತ್ರೆ ನಡೆಸುವವನು, ಜೀವನ ನಡೆಸುವವನು.

4. ನಡೆಯುವವನು, ಹೋಗುವವನು. (ನಂ) 5. ದಂಡ  
ಯಾತ್ರೆ, ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಪ್ರಯಾಣ.

ಯಾತ್ರಾತ್ಮಕ ಯಾತ್ರಾತ್ಮಕ (ನಂ) 1. ನಿಜಸ್ಥಿತಿ, ಸತ್ಯ,  
ಇರಬೇಕಾದ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಇರುವಿಕೆ. ಯಾತ್ರಾತ್ಮಕಾ ಭಾವಃ  
"ಏವ" (೫-೧-೧೨೪) | 2. ಅರ್ಜವ, ಯಜುಸ್ವಭಾವ,  
ಸರಳತೆ, ಕಪಟವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

ಯಾತ್ರಾರ್ಥ ಯಾತ್ರಾರ್ಥ (ನಂ) ಅರ್ಥಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿರು  
ವಿಕೆ, ನಿಜಸ್ಥಿತಿ. ಯಾತ್ರಾರ್ಥಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಏವ" (೫-೧-೧೨೪) |  
"ಗೃಹೀತದಿವಕರಪುನರ್ನಿವೃತ್ತಿಭಿಶ್ಚಿರಾಯ ಯಾತ್ರಾರ್ಥಮಲಗ್ನಿ  
ದಿಗ್ಗಜಃ" ಮಾಘಂ ೧-೬೪ |

ಯಾದಃಪತಿ ಯಾದಃಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಜಲಚರ  
ಪ್ರಾಣಿಗಳ ರಕ್ಷಕ. ಯಾದಸಾಂ ಜಲಜನ್ತುನಾಂ ಪತಿಃ | 2. ವರಾಣ  
"ಅಥ ವರಣೇ ಯಾದಸಾಂ ಪತಿಃ | ಯಾದಃಪತಿಶ್ಚ ತಾವಣ್ವಿ"  
ವೈಜಂ |

ಯಾದವ ಯಾದವ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಯದೋಗೋತ್ರಾಪತ್ಯ  
ಪುಮಾನ್ "ಅನ್" (೪-೧-೯೨) | "ಸಖೇತಿ ಮತ್ವಾ ಪ್ರಸಮಂ  
ಯದುಕ್ತಂ ಹೇ ಕೃಷ್ಣ ಹೇ ಯಾದವ ಮಾಧವೇತಿ" ಗೀತಾ ೧೧-೪೧ |  
2. ಯದುವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. "ಯಾದವಾಮ್ಭೋನಿಧಿನ್  
ಕುಂಭೇ ವೇಲೇವ ಭವತಃ ಕ್ಷಮಾ" ಮಾಘಂ ೨-೫೮ | (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಬಿ-ವೀ. (1) ಯದುವಂಶದ ಹೆಂಗಸು. (2) ದುರ್ಗಾ  
ದೇವಿ. (ನಂ) 3. ಹಸು ಎಮ್ಮೆ ಮೊದಲಾದ  
ಸಂಪತ್ತು.

ಯಾದಸ್ ಯಾದಸ್ (ನಂ) 1. ಜಲಚರ ಪ್ರಾಣಿ, ಜಲಜಂತು.  
ಯಾನ್ತಿ ವೇಗೇನ—ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಅಸುನ್" (೩ಂ ೪-೧೮೯) |  
"ಅಭೃಷ್ಯಶ್ಚಾಭಿಗಮ್ಯಶ್ಚ ಯಾದೋರನ್ತೇರಿವಾಣಂವಃ" ರಘುಂ ೧-೧೬ |  
2. ಜಲ, ನೀರು. "ಜೀವನಂ ಭುವನಂ ಯಾದಃ ಪಾವನಂ ಕ್ಷಣದಂ  
ದಕಮ್" ಕಲ್ಪದ್ರುಂ |

ಯಾದಸಾನಾಥ ಯಾದಸಾನಾಥ, -ಪತಿ -ಪತಿ (ಪುಂ)  
1. ಸಮುದ್ರ. 2. ವರಾಣ. ಯಾದಸಾಂ ನಾಥಃ ಪತಿರ್ವಾ—ವಾ  
ಷಠ್ಯಾ ಅಲುಕ್ (೬-೩-೧೪) | ಪಕ್ಷಿ ಯಾದೋನಾಥಃ, ಯಾದಃಪತಿಃ |  
"ಯಾದೋನಾಥಃ ಶಿವಜಲಪಥಃ ಕರ್ಮಣೇ ನೌವರಾಣಾಮ್" ರಘುಂ  
೧೭-೮೧ |

ಯಾದೃಕ್ಷ ಯಾದೃಕ್ಷ (ವಿಂ) ಯಾವ ವಿಧವಾದ, ಯಾವ  
ತೆರನಾದ. ಯ ಇವ ಪಶ್ಯತಿ —ದೃಶಿರ್ "ಕ್ಷಃ" (ವಾಂ  
೩-೨-೫೭) | "ಕ್ಷ" (೬-೨-೬೦) | ಯಾದೃಶಃ ಯಾದೃಶಃ  
ಚಾತ್ "ಕ್ಷಿವನ್" (೩-೨-೬೦) | ಯಾದೃಶ್ ಯಾದೃಶಃ.  
"ತತ್ ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಯದ್ವಾ ಯಾದೃಕ್ ಚ ಯದ್ವಿಕಾರಿ ಯತಶ್ಚ ಯತ್" ಗೀತಾ  
೧೩-೩ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಯಾದೃಶೀ ಯಾದೃಶೀ.



**ವಾದ್ವಿಚಿತ್ರ ಯಾದ್ಯಚ್ಚಿಕ (ವಿಂ)** ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ ಸಂಭವಿಸಿದ, ತಾನಾಗಿ ಒದಗಿಬಂದ, ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾಗಿ ಬಂದು ಸೇರಿದ.

**ಯಾನ ಯಾನ (ನಂ)** 1. ವಾಹನ, ಅನೆ ಕುದುರೆ ರಥ ಮೊದಲಾದ ಸಂಚಾರದ ಸಾಧನ. ಯಾನ್ಯನೇನ — ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭)। "ಯಾನಾಜನ: ಪರಿಜನೇರವತಾಯಮಾಣಾ ರಾಜೀನೇರಾಪನಯನಾಕುಲಸೌವಿದಲ್ಲಾ:" ಮಾಘಂ ೪-೧೭। 2. ಗಮನ, ಸಂಚಾರ, ನಡೆ. ಯಾ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪)। 3. ಪ್ರಯಾಣ, ಹೊರಟು ಬರುವುದು. "ಸಮೇತ್ಯ ಸಿಹಿಮಿವ ತಾಮನಯಾಂ ಯಾನೋದತಂ ಯಾದವಪ್ಪವತ್ರಮ್" ಯಾದಂ ೧೩-೩೪। 4. ರಾಜನ ಆರು ಗುಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. ರಾಜನ ಆರು ಗುಣಗಳು: (1) ಸನ್ಧಿ: (2) ವಿಗ್ರಹ: (3) ಯಾನಮ್ (4) ಆಸನಮ್ (5) ದ್ವಿವಿಭಾವ: ಮತ್ತು (6) ಸಮಾಶ್ರಯ:। ಯಾನವು (1) ವಿಗ್ರಹಯಾನಮ್ (2) ಸನ್ಧಾಯಾನಮ್ ಮತ್ತು (3) ಸಂಖ್ಯಯಾನಮ್ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ.

(1) ಶತ್ರುವು ವ್ಯಸನಪೀಡಿತನೆಂದು ತಿಳಿದಾಗಲೂ ತನ್ನ ಸೈನ್ಯದಿಂದ ಪೀಡಿತರಾದ ಶತ್ರುವಿನ ಪ್ರಕೃತಿಗಳು ಅವನಲ್ಲಿ ಅನುರಾಗತೂನ್ಯರಾಗಿರುವರೆಂದು ತಿಳಿದಾಗಲೂ ಶತ್ರುವಿಗೆ ಅಗ್ನಿ ಪ್ರವಾಹ ವ್ಯಾಧಿ ದುರ್ಭಿಕ್ಷ ಮುಂತಾದುವುಗಳಿಂದ ಕೋಶ ಮತ್ತು ರಕ್ಷಣೆಯ ಕೊರತೆಯುಂಟಾಗಿರುವುದು ಎಂದು ತಿಳಿದಾಗಲೂ ಕೈಗೊಳ್ಳುವ ಪ್ರಯಾಣವು ವಿಗ್ರಹಯಾನ. "ಯದಾ ವಾ ಪಶ್ಯೇತ್ "ವ್ಯಸನೀ ಪರ: ಸ್ವಚಕ್ರಪಿಡಿತಾ ವಿರಕ್ತಾ ವಾಙ್ಮಯ ಪ್ರಕೃತಯ: ಕಶಿತಾ ನಿರುತ್ಸಾಹಾ: ಪರಸ್ಪರಂ ಭಿನ್ನಾ: ಅನ್ಯುದಕವ್ಯಾಧಿಧುರ್ಮಿಷಾಧಿನಿಮಿತ್ತಕ್ಷೀಣಪುರುಷರಕ್ಷಾವಿಧಾನ:" ಇತಿ ತದಾ ವಿಗ್ರಹ ಯಾತ್" ಅರ್ಥಶಾಂ ಅಧಿಂ ೭-ಅಧ್ಯಾಂ ೪।

(2) ವಿಗ್ರಹಯಾನಕ್ಕೆ ಉಕ್ತವಾದ ಸನ್ನಿವೇಶವು ತನ್ನಲ್ಲಿಲ್ಲವೆಂದು ತಿಳಿದಾಗ ಕೈಗೊಳ್ಳುವ ಪ್ರಯಾಣವು ಸಂಧಾಯಯಾನ. "ಏತದ್ವಿಪರ್ಯಯೇ ಸನ್ಧಾಯ ಯಾತ್" ಅರ್ಥಶಾಂ ೭-೪।

(3) ಸಹಾಯಕರಿಲ್ಲದೆ ತಾನೊಬ್ಬನೇ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲವೆಂದು ತಿಳಿದಾಗ ತನಗೆ ಸಮ, ತನಗಿಂತಲೂ ಬಲಿಷ್ಠ ಮತ್ತು ತನಗಿಂತಲೂ ಹೀನರಾದ ಸಾಮವಾಯಿಕರೊಡನೆ ಕೂಡಿ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಹೊರಡುವುದು ಸಂಭೂಯಯಾನ. "ಯದಾ ವಾ ಪಶ್ಯೇತ್—ನ ಶಕ್ಯಮೇಕೇನ ಯಾತುಂ ಅವಶ್ಯಂ ಚ ಯಾತವ್ಯಮ್" ಇತಿ ತದಾ ಸಮಹೀನಜಯಾಯಿಮಿ: ಸಾಮವಾಯಿಕೇ: ಸಂಖ್ಯ ಯಾತ್" ಅರ್ಥಶಾಂ ೭-೪।

**ಯಾನಪಾತ್ರ ಯಾನಪಾತ್ರ (ನಂ)** ಚಕ್ರ ಹಡಗು, ಹುಟ್ಟು ಹಾಕಿ ನಡೆಸುವ ಹಡಗು. ಯಾನಸಾಧನಂ ಪಾತ್ರಮ್।

**ಯಾನಮುಖ ಯಾನಮುಖ (ನಂ)** ಗಾಡಿಯ ಮೂಕಿ, ರಥದ ಮುಂಭಾಗ. ಯಾನಸ್ಯ ಮುಖಮ್।

**ಯಾನ್ತ್ರಿಕ ಯಾಂತ್ರಿಕ (ವಿಂ)** ಯಂತ್ರಸಂಬಂಧವಾದ, ಯಂತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ಯಂತ್ರವಿಷಯವನ್ನು ವಿವರಿಸುವ. ಯನ್ತ್ರವಿಷಯಕಗ್ರಂಥಸ್ಯ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನೋ ಯನ್ತ್ರೇ ಭವೋ ವಾ "ಠಕ್" (೪-೩-೭೨)।

**ಯಾಪನ ಯಾಪನ (ನಂ)** 1. ನಡೆಯಿಸುವುದು, ಮುಂದೆ ಸಾಗುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು, ಹೊರಡಿಸುವುದು. 2. ಕಾಲ ಕಳೆಯುವುದು. ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) + ಣಿವ್ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪)। 3. ನೃತ್ಯ, ಕುಣಿದಾಟ. 4. ಎಸೆಯುವುದು, ಬಿಸಾಡುವುದು. "ಯಾಪನಂ ಸ್ಯಾಗ್ನಿರಸನೇ ನೃತ್ತೇ ಪ್ರಸ್ಥಾಪನೇಽಪಿ ಚ" ವೇಜಂ। "ಪ್ರಸ್ಥಾಪನೇ ನಿರಸನೇ ಕಾಲಕ್ಷೇಪೇ ಚ ಯಾಪನಮ್" ನಾನಾಧರಂ। 5. ರೋಗ ವಾಸಿಮಾಡುವುದು.

**ಯಾಪಿತ ಯಾಪಿತ (ವಿಂ)** 1. ಕಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ (ಕಾಲ). 2. ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) + ಣಿವ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಯಾಪ್ಯ ಯಾಪ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಕೆಳದರ್ಜೆಯವನು, ನೀಚ, ಅಧಮ, ನಿಂದೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದವನು. ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) + ಣಿವ್ "ಯತ್" (೩-೧-೯೭)। 2. ಚಿಕ್ಕಿತ್ತಿಗೆ ಅಸಾಧ್ಯವಾದ. "ಶೋಣಿತಂ ತದಸಾಧ್ಯಂ ಸ್ಯಾಪ್ಯಾಪ್ಯಂ ಸಂವತ್ಸರೋತ್ತಿತಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ನಿರ್ದಾನಂ ೧-೪೦। 3. ಚಿಕ್ಕಿತ್ತೆ ನಡೆಸಿದರೂ ಗುಣವಾಗದೆ ವ್ಯಾಧಿ, ಚಿಕ್ಕಿತ್ತೆಯನ್ನು ನಡೆಸಬಾರದ ವ್ಯಾಧಿ. "ಸಾಧ್ಯಾ ಯಾಪ್ಯಾ ಅಸಾಧ್ಯಾಶ್ಚ ವ್ಯಾಧಯಸ್ತ್ರಿವಿಧಾ: ಸ್ಮೃತಾ:। ಸುಖಸಾಧ್ಯ: ಕಷ್ಟಸಾಧ್ಯೋ ದ್ವಿವಿಧ: ಸಾಧ್ಯ ಉಚ್ಯತೇ" ಭಾವಪ್ರಂ। "ಯಾಪನೀಯಂ ತು ತಂ ವಿಶ್ವಾತ್ಕ್ರಿಯಾಂ ಧಾರಯತೇ ಹಿತಾಮ್। ಕ್ರಿಯಾಯಾಂ ತು ನಿವೃತ್ತಾಯಾಂ ಸದ್ವೋ ಯಶ್ಚ ವಿನ್ಶಯತಿ। ಪ್ರಾಪ್ತಾ ಕ್ರಿಯಾ ಧಾರಯತಿ ಯಾಪ್ಯವ್ಯಾಧಿತಮಾತುರಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೨೩।

**ಯಾಪ್ಯಯಾನ ಯಾಪ್ಯಯಾನ (ನಂ)** ಕೆಳದರ್ಜೆಯವರಿಂದ ಹೊರಲ್ಪಟ್ಟ ಒಂದು ವಾಹನ, ಮೇನಾ, ಪಲ್ಲಕ್ಕಿ. ಯಾಪ್ಯ: ವಾಹನಂ ಯಾನಮ್। "ಶಿವಿಕಾ ಯಾಪ್ಯಯಾನಂ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ।

**ಯಾಭ ಯಾಭ (ಪುಂ)** ಮೈಥುನ, ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ಕಂಭೋಗ. ಯಮ್ಯತೇ—ಯಭ (ಮೈಥುನ) "ಭವ್" (೩-೩-೧೮)। "ಶಿವಾನಂ ಇಮಶ್ಚುಲಂ ಪ್ರೇಷಂ ಮಿಥುನಂ ಯಾಭಕೋವಿದಮ್" ಭಾಗಂ ೯-೧೯-೬।

**ಯಾಸ ಯಾಸ (ಪುಂ)** 1. ಜಾವ, ದಿವಸದ ಎಂಟನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ, ಮೂರು ಗಂಟೆಗಳ ಕಾಲ. ಯತಿ — ಯಾ



(ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಮನ್” (ಉಂ ೧-೧೪೦)। “ಪಶ್ಚಿಮಾ-  
ಚಾಮಿನಿಯಾಮಾತ್ ಪ್ರಸಾದಮಿವ ಚೇತನಾ” ರಘುಂ ೧೭-೧।  
“ಭೂಷಮಾಯಾಮಿಯಾಮಾಸು ಯಾಮಿನಿಷ್ವಭಿತಪ್ಯತೇ” ಕಿರಾಂ  
೧೧-೪೯। 2. ಸಂಯಮಂ, ಇಂದ್ರಿಯ ನಿಗ್ರಹ, ತಾಳ್ಮೆ,  
ಸೈರಣಿ. “ಸಂಯಮಸಂಯಮೋ ಯಾಮಃ” ವೈಜಂ। “ಯಾಮೋ  
ಪ್ರಹರಸಂಯಮೋ” ಹೇಮಂ। 3. ಕವಚ, ಅಂಗಿ. “ಕಚ್ಚುಕೋ  
ವಾರವಾಣೋ ನಾ ಯಾಮಸ್ತುಲಯುತೋಽಪ್ಯಥ” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ। 4. ಹಿರಿಯ  
ವನು, ವಯಸ್ಸಾದವನು. “ಜ್ಞಾಂರೋಽಪಿ ಚ ಯಾಮಃ ಸ್ಯಾದ್ವರ್ಷಿ-  
ಯಾನ್ ದಶಮೀತ್ಯಪಿ” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ।

**ಯಾಮಘೋಷ ಯಾಮಘೋಷ** (ಪುಂ) ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ.  
ಯಾಮೇ ಪ್ರತಿಯಾಮಂ ಘೋಷೋ ರವೋಽಸ್ಯ। ರಾತ್ರಿ ಪ್ರತಿಯಾಮಂ  
ದಲ್ಲಿಯೂ ಕೋಳಿಯು ಕೂಗುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಘೋಷಾ -ಕೋಷಾ. ರಾತ್ರಿವೇಳೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿ  
ಯಾಮದಲ್ಲಿಯೂ ಜಾವದ ಗಂಟೆ ಹೊಡೆಯುವ  
ಗಡಿಯಾರ ಅಥವಾ ಜಾಗಟೆ.

**ಯಾಮನಾಲಿ ಯಾಮನಾಲೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಾವದ ಗಂಟೆ  
ಹೊಡೆಯುವ ಜಾಗಟೆ. “ನಾಲಿಘಟೀ ಯಾಮನಾಲಿ ದण्डवका  
यमेरुका। यामघोषा:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಯಾಮಲ ಯಾಮಲ** (ನಂ) 1. ಯುಗ್ಮ, ಒಂದು ಜೊತೆ,  
ದ್ವಂದ್ವ. “ಯುಗಲಬ್ದಯುಗ್ಮಾನಿ ಯುಗಂ ಯಮಲಯಾಮಲೇ”  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 2. ಒಂದು ತಂತ್ರಶಾಸ್ತ್ರ. ಇದು (1)  
ಆದಿಯಾಮಲಮ್ (2) ಬ್ರಹ್ಮಯಾಮಲಮ್ (3) ವಿಷ್ಣುಯಾಮಲಮ್  
(4) ರುದ್ರಯಾಮಲಮ್ (5) ಗಣೇಶಯಾಮಲಮ್ ಮತ್ತು (6)  
ಆದಿತ್ಯಯಾಮಲಮ್ ಎಂದು ಆರು ವಿಧ.

**ಯಾಮವತೀ ಯಾಮವತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾತ್ರಿ. ಯಾಮಾಃ ಪ್ರಹರಾಃ  
ಸಂತ್ಯಸ್ಯಾಮ್ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪)। “ತಾರಾವಿತಾನಂತರಲಾ  
ಇವ ಯಾಮವತಯಃ” ಕಿರಾಂ ೮-೪೬।

**ಯಾಮಿ ಯಾಮಿ, -ಮೀ -ಮೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಂಗಸು, ಮಹಿಳೆ.  
ಯಾತಿ ಕುಲಾತ್ ಕುಲಾಂತರಮ್—ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಮಿಃ” ಬಾಹುಂ।  
“ಜೋಷಿಜೋಷಾ ಮಹೇಲೀ ಚ ಯಾಮಿಯಾಮೀ ಚ ಜಾದಿಮೇ”  
ಕಲ್ಪದ್ರುಂ।

**ಯಾಮಿಕ ಯಾಮಿಕ** (ಪುಂ) ರಾತ್ರಿಯ ವೇಳೆಯ ಕಾವಲು  
ಗಾರ, ಪೊಲೀಸನವನು. ಯಾಮೇ ನಿಯುಕ್ತಃ “ಠಕ್”  
(೪-೪-೬೯)। “ಯಾಮಿಕಾನನುಪಮೃಶ್ಚ ಚ ಮಾದಕ್ ತಾಂ  
ನಿರೀಕ್ಷಿತುಮಪಿ ಕ್ಷಮತೇ ಕಃ?” ನೈಷಂ ೪-೧೧೦। (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಕಾ -ಕಾ.

**ಯಾಮಿನಿ ಯಾಮಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಾತ್ರಿ. ಯಾಮಾಃ ಸಂತ್ಯ-  
ಸ್ಯಾಮ್—ಯಾಮ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪)। “ಜಿಪ್”

(೪-೧-೪)। “ಯಾಮಿನೀದಿವಸಸಂಧಿಸಂಭವೇ ತೇಜಸಿ ವ್ಯವಹಿತೇ  
ಸುಮೇರುಣಾ” ಕುಮಾಂ ೮-೪೪। 2. ಅರಿಶಿನ.

**ಯಾಮಿನಿಪತಿ ಯಾಮಿನೀಪತಿ** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಯಾಮಿನ್ಯಾಃ  
ಪತಿಃ। -ಇಶಃ -ಕುಶಃ. “ಯಾಮಿನಿಪತಿರಿವೇಷ ದಿನಾಂತೇ”  
ಭಾಗಂ।

**ಯಾಮಿ ಯಾಮೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕು. ಯಮಸ್ಯೇಯಮ್  
“ಅಞ್” (೪-೩-೧೨೦)। “ಜಿಪ್” (೪-೧-೧೪)।  
2. ಕುಲಸ್ಥಿತಿ, ಪತಿವ್ರತೆಯಾದ ಹೆಂಗಸು. “ಮಾತಾಪಿತೃಮ್ಯಾಂ  
ಯಾಮಿಭಿಃ ಭ್ರಾತೃ ಪುತ್ರೇಣ ಭಾರ್ಯಯಾ। ದುಹಿತೃ ದಾಸವರ್ಗೇಣ  
ವಿವಾದಂ ನ ಸಮಾಚರೇತ್” ಮನುಂ ೪-೧೮೦। 3. ಧರ್ಮ  
ಪುರುಷನ ಪತ್ನಿ. (ವಿಂ) 4. ಯಮನ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
“ಮಾ ಭೀಮೇಂದಮನೋ ವಿಚಿಂತ್ಯ ಬಹುಭಾ ಯಾಮಿಶ್ಚಿರಂ ಯಾತನಾಃ”  
ಮುಂ ಮಾಂ।

**ಯಾಮುನ ಯಾಮುನ** (ನಂ) 1. ಅಂಜನ, ಕಣ್ಣಿನ ಕಪ್ಪು,  
ಕಾಡಿಗೆ. “ಅಥಾಜ್ಜನಮ್। ನಾದೇಯಂ ಯಾಮುನಂ ಕೃಷ್ಣಂ ಚಕ್ಷುಷ್ಯಂ  
ವಾರಿಸಂಭವಮ್” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ। (ವಿಂ) 2. ಯಮುನಾ  
ನದಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಯಮುನಾ ಯಾ ಇದಮ್। “ಆಹ್ಲಾದಿ  
ಕಹ್ಲಾರಸಮೀರಣಾಹತೇ ಪುರಃ ಪಪಾತಾಂಮಸಿ ಯಾಮುನೇ ರಜಃ”  
ಮಾಘಂ ೧೨-೬೬।

**ಯಾಮೇಯ ಯಾಮೇಯ** (ಪುಂ) ಭಾಗಿನೇಯ, ಒಡೆಹುಟ್ಟಿದವಳ  
ಮಗ. ಯಾಮೇರಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್—“ಠಕ್” (೪-೧-೧೨೦)।

**ಯಾಮ್ಯ ಯಾಮ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಅಗಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿಃ. ಯಾಮೀ  
ದಿಕ್ ನಿವಾಸೋಽಸ್ಯ “ಯತ್”। 2. ಗಂಧದ ಮರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಮ್ಯಾ -ಮ್ಯಾ. 3. ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕು. 4. ಭರಣಿ ನಕ್ಷತ್ರ.  
(ವಿಂ) 5. ದಕ್ಷಿಣದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ. “ಯಾಮ್ಯಾಽವಾಚ್ಯಾಂ  
ಭರಣ್ಯಾಂ ಚ ಪುಂಸ್ಯಗಸ್ತಯೇ ಚ ಚಂದ್ರನೇ” ಮೇದಿಂ।

**ಯಾಯಜೂಕ ಯಾಯಜೂಕ** (ಪುಂ) ಪದೇ ಪದೇ ಯಾಗ  
ಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಪುನಃ ಪುನಃ ಯಜತೇ—ಯಜ  
(ದೇವಪೂಜಾದೌ) “ಯಜ್” (೩-೧-೨೨)। “ಞಕಃ” (೩-೨-೧೬೬)।  
“ತಂ ಯಾಯಜೂಕಾಃ ಸಹ ಮಿಕ್ಷುಮುಖ್ಯೈಃ ತಪಃಕೃಷಾಃ ಶಾಂತ್ಯುದಕುಮ್ಮ-  
ಹಸ್ತಾಃ” ಭट्टಿಂ ೨-೨೦।

**ಯಾಯಾವರ ಯಾಯಾವರ** (ಪುಂ) 1. ಜರತ್ಕಾರು ಮಹರ್ಷಿಃ.  
“ಯಾಯಾವರೋ ಜರತ್ಕಾರುದ್ವಿಸಾಸ್ತು ಕುಶಾರಣಿಃ” ವೈಜಂ।  
2. ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗದ ಕುದುರೆ. ಪುನಃ ಪುನಃ ಯಾತಿ  
ದೇಶಾದೇಶಾಂತರಮ್—ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಯಜ್” (೩-೧-೨೨)।  
“ವರಚ್” (೩-೨-೧೭೬)। “ಯಾಯಾವರೋಶ್ವಮೇಧೀಯಃ ಪಾರಸೀಕಃ  
ಪರಾದನಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 3. ಗ್ರಾಮ್ಯಕರಾತ್ರ ಸಂಚರಿಸುವ  
ಸಂನ್ಯಾಸಿ.







ಯುಗ ಯುಗ (ಪುಂ) 1. ನೇಗಿಲಿನ ಮೆತ್ತು, ಬಂಡಿಯ ನೋಗ.  
2. ಗಾಡಿಯ ಮಧ್ಯದ ಉದ್ದದ ಮೆರೆ, ಬಂಡಿಯ ಮೂಕಿ  
ಮೆರೆ. ಯುಜ್ಯತೇ — ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) “ಘ” (೩-೩-೧೯)।  
“ಯುವಾ ಯುಗವ್ಯಾಯತವಾಹುರಸಲಃ ಕಪಾಡವಕ್ಷಾಃ ಪರಿಣದ್ವಕನ್ಧರಃ”  
ರಘುಂ ೩-೩೪। (ನಂ) 3. ಎರೆಡು, ಒಂದು ಜೊತೆ.  
“ಯುಗಂ ತು ಯುಗಲಂ ಯುಗಮ್” ಅಮಂ । “ಉಪನೇತುಮುನ್ನತಿಮತೇವ  
ದಿವಂ ಕುಚಯೋರ್ಯುಗೇನ ತರಸಾ ಕಲಿತಾಮ್” ಮಾಘಂ ೯-೭೨।  
4. ಕೃತ ತ್ರೇತಾ ದ್ವಾಪರ ಮತ್ತು ಕಲಿ ಎಂಬ ನಾಲ್ಕು



ಯುಗಗಳು. [ಯುಗಗಳ (ವರ್ಷ) ಪರಿಮಾಣಕ್ಕೆ "ಅಬ್ಧ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಚತುರ್ಯುಗ ಪರಿಮಾಣ (ಮಾನುಷ ವರ್ಷಗಳು) 432000 ವರ್ಷಗಳು. "ಪರಿಶ್ರಾಣಾಯ ಸಾಧುನಾಂ ವಿನಾಶಾಯ ಚ ದುಷ್ಕೃತಾಮ್ | ಧರ್ಮಸಂಸ್ಥಾಪನಾರ್ಥಾಯ ಸಂಭವಾಮಿ ಯುಗೇ ಯುಗೇ" | 5. ನಾಲ್ಕು ಹಸ್ತಗಳ ಪ್ರಮಾಣ, ನಾಲ್ಕು ಮೂಳೆಗಳ ಅಳತೆ. "ಚತುರ್ಹಸ್ತೋ ಚತುರ್ದಂಡೋ ಧನು ಧನ್ವಂತರಂ ಯುಗಮ್" ವೈಜಂ. 6. ನಾಲ್ಕು ಸಂಖ್ಯೆ. 7. ಒಂದು ಸಂತತಿ, ಒಂದು ತಲೆಮಾರು. "ಜಾತ್ಯುತ್ಕರ್ಷೋ ಯುಗೇ ಜ್ಞೇಯಃ ಪಶ್ಚಿಮೇ ಸಪ್ತಮೇಷು ವಾ" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೧೬ | 8. ವೃದ್ಧಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಗುಂಡಿಗರ ವಸ್ತು. "ಯುಗೋ ರಥಹಲಾದೃಶೋ ನ ದ್ವಯೋಸ್ತು ಕೃತಾದಿಷು | ಯುಗೇ ಹಸ್ತಚತುರ್ದೇಶಃ ಪಿ ವೃದ್ಧಿನಾಮೌಷಧೇಷು ಚ" ಮೇದಿಂ |

**ಯುಗಕೀಲಕ ಯುಗಕೀಲಕ** (ಪುಂ) ಕಡೆಗೂಟ, ನೋಗವು (ಎತ್ತಿನ ಕತ್ತಿನಿಂದ) ಜಾರದಿರಲು (ನೋಗದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ) ಹುಕುವ ಗೂಟ. ಯುಗಸ್ಯ ಕೀಲಃ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" | "ಶಮ್ಯಾ ಸ್ತ್ರೀ ಯುಗಕೀಲಕಃ" ಅಮಂ |

**ಯುಗಧರ ಯುಗಧರ** (ಪುಂ) ಬುಡಿಯ ಮೂಕಿ ಮರ. (ನೋಗವನ್ನಿಟ್ಟು ಕಟ್ಟುವ) ಗಾಡಿಯ ಮರ. ಯುಗಂ ಬನ್ಧನ-ಕಾಠಂ ಧಾರಯತಿ—ಧೃಜ್ (ಧಾರಣೆ) + ಗಿಚ್ "ಖಚ್" (೩-೨-೪೬) | ಮುಮಾಗಮಃ (೬-೩-೬೭) |

**ಯುಗಪತ್ ಯುಗಪತ್** (ಅಂ) ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಒಂದೇ ಸಮಯದಲ್ಲಿ. "ಅಥ ರಿರಸುಮಮ್ ಯುಗಪದ್ಗಿರೋ ಕೃತಯಥಾ-ಸ್ವತರಪ್ರಸವಶ್ರಿಯಾ" ಮಾಘಂ ೬-೧ |

**ಯುಗಪತ್ರ ಯುಗಪತ್ರ** (ಪುಂ) ಕೋವಿದಾರ ವೃಕ್ಷ. ಯುಗಂ ಪತ್ರಂ ಯಸ್ಯ | ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" | -ಪತ್ರಕಃ—ಪತ್ರಕಃ |

**ಯುಗಪಾರ್ವಣ ಯುಗಪಾರ್ವಣ** (ಪುಂ) ಪಳಗಿಸಲು ನೋಗಕ್ಕೆ ಕಟ್ಟಿರುವ ಎತ್ತು. ಯುಗಸ್ಯ ಪಾರ್ವಣಿ ಗಂಚತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತಿಯ) "ಹಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) | "ಪ್ರಠವಾಹ್ ಯುಗಪಾರ್ವಣಃ" ಅಮಂ | ಎತ್ತುಗಳನ್ನು ಗಾಡಿಗೆ ಪಳಗಿಸಲು ಮೊದಲು ನೋಗದ ತುದಿಗೆ ಕಟ್ಟಿ ನಡೆಸುವರು.

**ಯುಗಲ ಯುಗಲ** (ನಂ) ಒಂದು ಜೊತೆ, ಎರಡು, ಒಂದು ಜೋಡಿ. ಯುಗಂ ಯುಗಮ್ ಲಾತಿ—ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | "ಭುಜಯೋಸ್ತಯಾಪಿ ಯುಗಲೇನ ದೀರ್ಘಯೋಃ ವಿಕಟೀ-ಕೃತೇನ ಪರಿತೋಽಭಿಷವಜೇ" ಮಾಘಂ ೧೩-೧೦ |

**ಯುಗಲಮನ್ತ್ರ ಯುಗಲಮಂತ್ರ** (ಪುಂ) ಲಕ್ಷ್ಮೀನಾರಾಯಣ ಮಂತ್ರ, ಶರಣಾಗತಿ ಮಂತ್ರ. ಯುಗಲಾಸ್ಯೋ ಮನ್ತ್ರಃ |

**ಯುಗಾಂಶಕ ಯುಗಾಂಶಕ** (ಪುಂ) ವರ್ಷ, ಸಂವತ್ಸರ. ಯುಗಸ್ಯ ಅಂಶಕಃ | "ಕಾಲಗ್ರಂಥಿಃ ಸಮಾಃ ಸಂವತ್ಸರಸಮಾನೋ ಯುಗಾಂಶಕಃ" ಹಾರಾಂ | "ವತ್ಸರಸ್ತು ಯುಗಾಂಶಕಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಯುಗಾಢಾ ಯುಗಾಢಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯುಗವು ಪ್ರಾರಂಭವಾಗುವ ತಿಥಿ. ಯುಗಸ್ಯಾಢಾ ಆದಿಮೂತಾ (ತಿಥಿಃ) | ವೈಶಾಖ ಶುಕ್ಲ ತೃತೀಯಾ ತಿಥಿಯು ಕೃತಯುಗಾದಿ ತಿಥಿ. ಕಾರ್ತಿಕ ಶುಕ್ಲ ಪಕ್ಷದ ನವಮಿಯು ತ್ರೇತಾಯುಗಾದಿಯ ತಿಥಿ. ಭಾದ್ರಪದ ಕೃಷ್ಣ ತ್ರಯೋದಶಿಯು ದ್ವಾಪರಯುಗಾದಿಯ ತಿಥಿ. ಮೂಘ ಶುಕ್ಲ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯು ಕಲಿಯುಗಾದಿಯ ತಿಥಿ. "ವೈಶಾಖೇ ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷೇ ತು ತೃತೀಯಾಂ ಕೃತಂ ಯುಗಮ್ | ಕಾರ್ತಿಕೇ ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷೇ ತು ತ್ರೇತಾಂ ನವಮೇಽಹನಿ | ಅಥ ಭಾದ್ರಪದೇ ಕೃಷ್ಣತ್ರಯೋದಶ್ಯಾಂತು ದ್ವಾಪರಮ್ | ಮಾಘೇ ಚ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಾಂ ವೈ ಧೋರಂ ಕಲಿಯುಗಂ ಸ್ಮೃತಮ್" ಬ್ರಾಹ್ಮಪುಂ |

**ಯುಗಾಂತ ಯುಗಾಂತ** (ಪುಂ) 1. ಯುಗದ ಕೊನೆ, ಕೃತಯುಗ ಮೊದಲಾದ ನಾಲ್ಕು ಯುಗಗಳ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಆಗುವ ಪ್ರಳಯ. ಯುಗಾಂತಮಂತೋ ಯತ್ರ || "ಯುಗಾಂತಕಾಲ-ಪ್ರತಿಸಂಹೃತಾತ್ಮನೋ ಜಗಂತಿ ಯಸ್ಯಾಂ ಸರ್ವಿಕಾಸಮಾಸತ" ಮಾಘಂ ೧-೨೩ | 2. ನೋಗದ ಕೊನೆಯ ಭಾಗ.

**ಯುಗಿನ್ ಯುಗಿನ್** (ಪುಂ) ಸಾಗಮೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು, ವೇದ ಮತ್ತು ವೇದಾಂಗಗಳನ್ನು ಓದಿದವನು. "ಅಧೀತಸಾಙ್ಗವೇದೋ ಯಃ ಸೋಽನ್ಯುಚಾನೋ ಯುಗೀ ಗಣಿಃ" ವೈಜಂ |

**ಯುಗ್ಮ ಯುಗ್ಮ** (ನಂ) 1. ಎರಡು, ಒಂದು ಜೊತೆ, ಒಂದು ಜೋಡಿ. ಯುಜ್ಯತೇ—ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) "ಮಕ್" (ಉಂ ೧-೧೪೩) | "ತತ್ರ ಯುಗ್ಮಚಾರಿಣೋಃ ಕೌಚಯೋರೇಕಂ ವ್ಯಾಧೇನ ವ್ಯಮಾನಂ ದದಶ್" ಉಂ ರಾ ೨ | 2. ಮಿಥುನರಾಶಿ. 3. ಒಂದೇ ವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ಅನ್ವಯವಾಗುವಂತೆ ಎರಡು ಶ್ಲೋಕಗಳ ರಚನೆ. "ದ್ವಾಮ್ಯಾಂ ಯುಗ್ಮಮಿತಿ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ತ್ರಿಮಿಃ ಶ್ಲೋಕೈವಿಶೇಷಕಮ್ | ಕಾಲಾಪಕಂ ಚತುರ್ಮಿಃ ಸ್ಯಾತ್ತದ್ಧೃವ್ ಕುಲಕಂ ಮತಮ್" | (ವಿಂ) 4. ಸಮವಾದ, ಸಮಸಂಖ್ಯೆಯು. "ಯುಗ್ಮಾಸು ಪುತ್ರಾ ಜಾಯಂತೇ ಸ್ತ್ರಿಯೋಽಯುಗ್ಮಾಸು ರಾತ್ರಿಷು" ಮನುಂ ೩-೪೮ |

**ಯುಗ್ಮಜ ಯುಗ್ಮಜ** (ವಿಂ) ಅವಳಿಯಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದ. **ಯುಗ್ಮಪತ್ರ ಯುಗ್ಮಪತ್ರ** (ಪುಂ) ಕೆಂಪು ಕಾಂಚವಾಳದ ಗಿಡ. ಯುಗ್ಮಂ ಪತ್ರಸ್ಯ |

**ಯುಗ್ಯ ಯುಗ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಗಾಡಿಯನ್ನು ಎಳೆಯುವ ಎತ್ತು, ಕುದುರೆ ಮೊದಲಾದುವು. ಯುಗಂ ಬಹತಿ "ಯತ್" (೪-೪-೭೬) | "ಹಿರಿಯುಗ್ಯಂ ರಥಂ ತಸ್ಮೈ ಪ್ರಜಿಘಾಪ ಪುರಂದರಃ" ರಘುಂ ೧೨-೮೪ | (ನಂ) 2. ರಥ, ಗಾಡಿ, ವಾಹನ. "ಯತ್ರಾಪವರ್ತತೇ ಯುಗ್ಯಂ ವೈಗುಣ್ಯಾತ್ಪ್ರಾಜಕಸ್ಯ ತು | ತತ್ರ ಸ್ವಾಮೀ ಭವೇದ್ಧೃವೋ ಹಿಸಾಪಾಂ ದ್ವಿಷತಂ ದಮಮ್" ಮನುಂ ೮-೨೯೩ | 3. ಕಶ್ಯಪನ ಧನುಸ್ಸು, ಪರಿಶಿವನ ಬಿಲ್ಲು. "ಪಿನಾಕೋಽಜಗದಂ ಯುಗ್ಮಮಜಗಾವಮಜಿಗವಮ್" ವೈಜಂ |



(2) अभि + युजिर् = अभियुज्यते । अभियोगः ।  
 1. ಉದ್ಯೋಗಶೀಲನಾಗು, ಕಾರ್ಯತತ್ಪರನಾಗು. "एते  
 वयं स्वकर्मणि अभियुज्यामहे । प्रियं नः, वयमपि स्वकर्मणि  
 अभियुज्यामहे" मुद्रा० ३ । 2. ಆಶ್ರಮಿಸು, ಮೇಲೆ  
 ಬೀಳು, ಮುತ್ತಿಗೆ ಹಾಕು. "स प्रापदप्राप्तपराभियोगं  
 नरेन्द्रगुप्तं नगरं मुहूर्तत्" कुमा० ७-५० । 3. ಹೊಸ  
 ದಾದ ಅವಮಾನ, ಪರಾಭವ. "अभियोग इमान्  
 महीभुजो भवता तस्य कृतः कृतावधेः" किरा० २-४६ ।  
 4. ಅಪರಾಧದ ಅಪಾದನೆಗೊಳಗಾಗು. "अभियोग-  
 मनिस्तीर्य नैनं प्रत्यभियोजयेत्" याज्ञ० २-९ । 5.  
 ಅಭಿನಿವೇಶಹೊಂದು, ಆಸಕ್ತಿಹೊಂದು. "अथ कस्यां  
 कलायामभियोगो भवतः?" । 6. ಹಕ್ಕಿನಿಂದ ಕೇಳು,  
 ಅಧಿಕಾರದಿಂದ ಕೇಳು, ನಿರ್ಬಂಧಿಸಿ ಕೇಳು. "विभावितक-  
 देशेन देयं यदभियुज्यते" विक्र० ४-३३ । 7. ತಡೆಗಟ್ಟು.



“ಕ್ಷಮಿತಂ ವನಗೋಚರಾಭಿಯೋಗಾತ್” ಕಿರಾಂ ೧೩-೧೦ |  
8. ಹೇಳು, ಮಾಡು. “ನಾಭಿಯೋಕ್ತುಮನುತಂ ತ್ವಮಿಷ್ಯಸೇ  
ಕಸ್ತಪಸ್ವಿವಿಶಿಷ್ಠೇಷು ಚಾದರಃ” ಕಿರಾಂ ೧೩-೫೮ |

(3) ಆ + ಯುಜಿರ್ = ಆಯುಜ್ಯತೇ | ಆಯುಕ್ತಃ | ಆಯೋಗಃ |  
ಆಯೋಜಿತಃ | 1. (ಮನಸ್ಸನ್ನು) ಒಂದು ಕಡೆ ಸ್ಥಿರವಾಗಿ  
ನಿಲ್ಲಿಸು. “ಆಯೋಜಿತಸ್ತಪಸ್ಯಾತ್ಮಾ” ಕಾದಂ | 2. ನೇಮಿಸು,  
ನೇಮಕಮಾಡು. “ಕುಶಲೋಽನ್ವೇಷಣಸ್ಯಾಹಮಾಯುಕ್ತೋ ದ್ವಿತ-  
ಕರ್ಮಣಿ” ಭದ್ರಿಂ ೮-೧೧೫ | 3. ಸೇರಿಸು, ಸಂಬಂಧ  
ಹೊಂದಿಸು.

(4) ಉ + ಯುಜಿರ್ = ಉಯುಜ್ಯತೇ | ಉಯುಕ್ತಃ | ಉಯೋಗಃ |  
ಪ್ರಯುಜ್ಯತೇ | “ಭವಂತಮಭಿಯೋಕ್ತುಮುಯುಜ್ಯತೇ” ದಶಕುಂ |

(5) ಉಪ + ಯುಜಿರ್ = ಉಪಯುಜ್ಯತೇ | ಉಪಯುಜ್ಯತಃ |  
ಉಪಯುಕ್ತಃ | ಉಪಯೋಗಃ | 1. ಉಪಯೋಗಿಸು, ಬಳಸು.  
“ಪಾಡ್ಗುಣ್ಯಮುಪಯುಜ್ಯತೇ ಶಕ್ತಪೇಕ್ಷೋ ರಸಾಯನಮ್” ಮಾಘಂ  
೨-೯೩ | 2. ಅನುಭವಿಸು. “ಸರ್ವಾಣಿ ತಾವಚ್ಛ್ರುತವೃದ್ಧ-  
ಯೋಗಾತ್ಕಲಾನ್ಯುಪಾಯುಜ್ಯತೇ ಸ ದಂಡನೀತೇ” ರಘುಂ ೧೮-೪೬ |  
3. ಪ್ರೀತಿಸು, ಪ್ರೀತಿಯಿಡು. “ನ ವೈ ಪ್ರಾಜ್ಞಾ ಗತಶ್ರೀಕಂ  
ಭರ್ತಾರಮುಪಯುಜ್ಯತೇ” | 4. ಖರ್ಚು ಮಾಡು, ಸ್ವಂತಕ್ಕೆ  
ಬಳಸು. “ದಾತವ್ಯಂ ಸರ್ವವರ್ಣೇಭ್ಯೋ ರಾಜಾ ಚೋರೇಹಿತಂ ವನಮ್ |  
ರಾಜಾ ತದುಪಯುಜ್ಯತೇ ಚೋರಸ್ಯಾಪ್ನೋತಿ ಕಿಲ್ವಿಷಮ್” ಮನುಂ  
೮-೪೦ |

(6) ನಿ + ಯುಜಿರ್ = ನಿಯುಜ್ಯತೇ | ನಿಯುಕ್ತಃ | ನಿಯೋಗಃ |  
1. ನೇಮಿಸು, ನೇಮಕಮಾಡು, ಒಂದು ಕೆಲಸಕ್ಕಾಗಿ ಅಜ್ಜೆ  
ಮಾಡು. “ಅವಮಿ ತೇ ಸಾರಮತಃ ಕ್ಷಲು ತ್ವಂ ಕಾರ್ಯೇ ಗುಣ್ಯಾತ್ಮ-  
ಸಮಂ ನಿಯೋಜ್ಯೇ ಕುಮಾರಂ ೩-೧೩ | 2. ಪ್ರತಿನಿಧಿಯನ್ನಾಗಿ  
ಕಳುಹಿಸು. “ಯನ್ಮಾಂ ವಿಧೇಯವಿಷಯೇ ಸಮವಾನ್ ನಿಯುಜ್ಯತೇ”  
ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೨ |

(7) ಪ್ರ + ಯುಜಿರ್ = ಪ್ರಯುಜ್ಯತೇ | ಪ್ರಯುಜ್ಯತಃ | ಪ್ರಯೋಗಃ |  
ಪ್ರಯುಕ್ತಃ | 1. ಪ್ರಯೋಗಿಸು, ಬಳಸು. “ಸದ್ಭಾವೇ  
ಸಾಧುಭಾವೇ ಚ ಸದಿತೀತತ್ ಪ್ರಯುಜ್ಯತೇ” ಗೀತಾ ೧೭-೨೬ |  
2. ಉಪಯೋಗಿಸು. “ಸಭಾಜನೇ ಮೇ ಭುಜಮುರ್ವವಾಹುಃ ಸವ್ಯತರಂ  
ಪ್ರಾಶ್ವಮಿತಃ ಪ್ರಯುಜ್ಯತೇ” ರಘುಂ ೧೩-೪೩ | 3. ಅನುಗ್ರಹಿಸು,  
ದಯಪಾಲಿಸು. “ಆಶಿಷಂ ಪ್ರಯುಜ್ಯತೇ ನ ವಾಹಿನೀ ಸಾ ಹಿ  
ರಕ್ಷಣವಿಧೌ ತಯೋಃ ಕ್ಷಮಾ” ರಘುಂ ೧೧-೬ | 4. ಪ್ರೇರಿಸು,  
ಒತ್ತಾಯಪಡಿಸು. “ಅಥಾವಮಾನೇನ ಪಿತುಃ ಪ್ರಯುಕ್ತಾ ದಕ್ಷಸ್ಯ  
ಕನ್ಯಾ ಭವಪೂರ್ವಪತ್ನೀ” ಕುಮಾರಂ ೧-೨೧ | 5. ಮಾಡು,  
ಅಚರಿಸು, ನೆರವೇರಿಸು. “ಇತ್ಯಂ ವಿವಿಜ್ಞೇನ ಪುರೋಹಿತೇನ  
ಪ್ರಯುಕ್ತಪಾಣಿಗ್ರಹಣೋಪಚಾರೋ” ಕುಮಾರಂ ೭-೮೬ | 6. ಪ್ರಯೋಗ  
ಿಸು, ಬಿಡು, ಎಸೆ. “ಅಲಂ ಮಹೀಪಾಲ ತವ ಶ್ರಮೇನ

ಪ್ರಯುಕ್ತಮಪ್ಯಸ್ತ್ರಮಿತೋ ವೃಥಾ ಸ್ಯಾತ್” ರಘುಂ ೨-೩೪ | 7.  
ಅಭಿನಯಿಸು, ಮಾಡಿಕೊಡು. “ತವಾಕ್ಷಿಸಾದೃಶ್ಯಮಿವ  
ಪ್ರಯುಜ್ಯತೇ” ಕುಮಾರಂ ೫-೩೫ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಯುಜಿನ್ ಯುಜಿನ್ (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ)  
“ಇನ್” (ಉಂ ೨-೪೮) | “ಮಾತರಿಶ್ವಾ ಸಮೀರಣಃ |  
ಯುಜಿನೋ ಲಘುಗೋ ವಾತಿಃ” ವೇಜಂ |

ಯುಜ್ಜಾನ ಯುಜ್ಜಾನ (ಪುಂ) 1. ಸಾರಥಿ, ರಥ ನಡೆಸು  
ವವನು. 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) “ಶಾನಮ್”  
(೩-೨-೧೨೪) | “ಯುಜ್ಜಾನಃ ಸಾರಥೌ ವಿಪ್ರೇ” ವೇಜಂ |  
3. ಬ್ರಹ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ ಪಡೆಯಲು ಸಮಾಧಿಯಲ್ಲಿ ಇರುವ  
ಯೋಗಿ. ಯುಜ (ಸಮಾಧಿ) “ಶಾನಮ್” (೩-೨-೧೨೪) |  
(ವಿಂ) 4. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕಲೆಯುವ, ಒಟ್ಟಿಗೆ  
ಒಂದೇ ಕಡೆ ಕೂಡುವ. “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) |  
ಯುಜ್ಯತ ಯುಜ್ಯತಃ.

ಯುತ ಯುತ (ನಂ) 1. ನಾಲ್ಕು ಹಸ್ತಗಳ ಪ್ರಮಾಣ,  
ನಾಲ್ಕು ಮೊಳಗಳ ಅಳತೆ. (ವಿಂ) 2. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ,  
ಕೂಡಿಕೊಂಡಿರುವ. “ಸ್ತ್ರೀಮಿರುತಾನ್ಯಪ್ಸರಸಾಮಿವೌಷಮೇರೋಃ  
ಶಿರಾಂಸಿವ ಗೃಹಾಣಿ ಯಸ್ಯಾಮ್” ಭದ್ರಿಂ ೧-೭ | 3. ಬೆರೆ  
ತಿರುವ, ಮಿಶ್ರವಾದ. 4. ಬೆರೆಯದಿರುವ, ಮಿಶ್ರವಾಗ  
ದಿರುವ, ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿರುವ. ಯು (ಮಿಶ್ರಣಃ) ಮಿಶ್ರಣೇ ಚ)  
“ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) | “ಪೃಥಕ್ ಸಂಯುಕ್ತಯೋರುತಮ್” ವೇಜಂ |  
“ಯುತೋ ಯುಕ್ತೋಽಪೃಥಗ್ಮತೇ ಕಲಿಬಂ ಹಸ್ತಚತುರ್ದಶೈಃ” ಮೇದಿಂ |

ಯುತಕ ಯುತಕ (ನಂ) 1. ಜೊತೆ, ಜೋಡಿ, ದ್ವಂದ್ವ.  
2. ವಿವಾಹ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಮಗಳು ಮತ್ತು ಅಳಿಯನಿಗೆ  
ಕೊಡುವ ಉಡುಗೊರೆ. 3. ಹೆಂಗಸರು ಧರಿಸುವ ಉಡುಪು.  
4. ಹೆಂಗಸರ ವಸ್ತ್ರದ ಅಂಚು, -ಸೇರಗು. 5. ಮೈತ್ರಿ  
ಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದು, ಸ್ನೇಹವನ್ನು ಉಂಟು  
ಮಾಡುವುದು. 6. ಮೊರದ ತುದಿಯ ಭಾಗ. 7.  
ಅನಾಥಾಶ್ರಮ, ಅನಾಥರ ರಕ್ಷಣಾಲಯ. 8. ಸಂತಯ,  
ಸಂದೇಹ. (ವಿಂ) 9. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಕೂಡಿಕೊಂಡಿ  
ರುವ. “ಯುತಕಂ ಯುಗಲೇ ಯುಕ್ತೇ ಯೋತಕೇ ವಸನಾಂಚಲೇ | ಸಂಶಯೋ  
ಚ ಶೂರ್ಪಸ್ಯ ವಸ್ತ್ರಭೇದೇ ಚ ಯೋಷಿತಃ” ವೇಜಂ |

ಯುತಿ ಯುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವಿಕೆ, ಸೇರಿ  
ಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ. 2. ಒಗ್ಗಟ್ಟು, ಐಕ್ಯ. 3. ಕೂಡುವುದು,  
ಸೇರುವುದು. ಯು (ಮಿಶ್ರಣಃ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) |

ಯುಧ ಯುಧ (ನಂ) 1. ಸಮರ, ಕಾಳಗ. ಯುಧ (ಸಂಪ್ರಹಾರೇ)  
ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪) | “ಯುಧಾಯ ಭಾವತಾಂ ಧೀರಂ  
ವೀರಾಣಾಮಿತರೇತರಮ್” ಕುಮಾರಂ ೧೬-೩ | 2. ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ



ಗ್ರಹಗಳು ಸುಚರಿಸುವಾಗ ಪರಸ್ಪರ ಸಂಭವಿಸುವ ಗ್ರಹಗಳ ಯುದ್ಧ.

**ಗುರುತು ಯುದ್ಧ ರಂಗ (೪೦) 1.** ಯುದ್ಧ ಮಾಡುವ ಭೂಮಿ, ಯುದ್ಧದ ಕ್ಷೇತ್ರ. **ಗುರುತು ರಣ:** 2. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪುಷ್ಯ. **ಗುರುತು ರಣೋತ್ಸವ:** "ಅನ್ಯೋನ್ಯಂ ಜಗ್ನಿರೇ ಕೃಷ್ಣಾ: ಗುರುತುರಣಗತಾ ನರಾ:" ಭಾಂ ಕ್ರೋಧಂ ೧೭-೧೮.

**ಗುರುತು ಯುದ್ಧ ನೀರ (೪೦) 1.** ನೀರ, ಶೂರ, ಪರಾಕ್ರಮ. 2. ನಾಯಕನ ಒಂದು ಭೇದ. ಉತ್ಸಾಹಸ್ಥಾಯಿ ಭಾವವುಳ್ಳ ನೀರರಸದಲ್ಲಿ ನಾಯಕನು (1) ದಾನನೀರ (2) ಧರ್ಮನೀರ (3) ಯುದ್ಧನೀರ ಮತ್ತು (4) ದಯಾ ನೀರ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ದಾನ ಧರ್ಮ ಯುದ್ಧ ಮತ್ತು ದಯೆ ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಉದಾತ್ತನಾಗಿ (ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಮೀರಿಸಿ) ಇರುವವನು ಆಯಾಸಂಜ್ಞೆ ಹೊಂದುತ್ತಾನೆ. "ಸ ಚ ದಾನವಮ್‌ಯುದ್ಧೇದಯಾ ಚ ಸಮನ್ವಿತ: ಚತುರ್ಥಿ ಸ್ಯಾತ್" ಸಾಂ ೬೦ ೩-೨೩೪.

**ಗುರುತು ಯುದ್ಧ ಕ್ಷೇತ್ರ (೫೦) -ಭೂ -ಭೂ -ಭೂಮಿ -ಭೂಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯುದ್ಧ ಮಾಡುವ ಭೂಮಿ, ಕದನ ನಡೆಯುವ ಜಾಗ.**

**ಗುರುತು ಯುದ್ಧ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯುದ್ಧ, ಕದನ, ಜಗಳ. ಗುರುತು (ಸಂಪ್ರಹಾರೇ) "ಕಿವಿ" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮) 1. "ಗುರುತು ಪರೇ: ಸಹ ದೃಢವದಕಕ್ಷಯಾ ಕಲಕವಗಮಧುಕುಲೋಪಗೀತಯಾ" ಮಾಧಂ ೧೭-೨೪.**

**ಗುರುತು ಯುದ್ಧಾಜಿತ್ (೪೦) ಕೇಕಯ ದೇಶದ ಅಶ್ವಪತಿ ರಾಜನ ಮಗ, ಕೈಕಯಿಯ ಸಹೋದರ, ಭರತನ ಸೋದರ ಮಾವ.**

**ಗುರುತು ಯುದ್ಧಾನ (೪೦) 1.** ಯೋಧ, ಭಟ, ಸೈನಿಕ. **ಗುರುತು (ಸಂಪ್ರಹಾರೇ) "ಗಾನ್" (೮೦ ೨-೧೦) 2.** ರಿಪು, ಶತ್ರು.

**ಗುರುತು ಯುದ್ಧಾಕ್ಷಿರ (೪೦) 1.** ಧರ್ಮರಾಜ, ಪಾಂಡು ರಾಜನ ಹಿರಿಯ ಮಗ. **ಗುರುತು ಸ್ಥಿರ:** 1. ಪವಮ್ (೮-೩-೧೪) 1. ಸತ್ಯಮಾ ಅಲ್ಪಮ್ (೬-೩-೧) 1. ಇವನಿಗೆ ಧರ್ಮಪುತ್ರ ಅಜಾತಶತ್ರು ಮುಂತಾದ ಹೆಸರಗಳು ಉಂಟು. ಧರ್ಮ ರಾಜನು ಪಾಂಡುವಿನ ಹಿರಿಯ ಹೆಂಡತಿಯಲ್ಲಿ ಯಮ ಧರ್ಮರಾಜನ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ಜನಿಸಿದನು. ಧರ್ಮರಾಜನಿಗೆ ಕೃಪಾಚಾರ್ಯ ಮತ್ತು ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರು ಗಳಲ್ಲಿ ಅಸ್ತ್ರವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ನಡೆಯಿತು. ಇವನಿಗೆ ಯೌವ ರಾಜ್ಯಾಭಿಷೇಕ ನಡೆದ ನಂತರ ದುರ್ಯೋಧನನು ಅಸೂಯೆಯಿಂದ ತಾಯಿ ಮತ್ತು ಸಹೋದರರೊಡನೆ ಇವನನ್ನು

ಅರಗಿನ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ನಾಶಪಡಿಸಲು ಯತ್ನಿಸಿದಾಗ ಈ ರಹಸ್ಯವನ್ನು ವಿಧುರಿಂದ ತಿಳಿದ ಭೀಮಸೇನನು ಸುರಂಗ ಮಾರ್ಗದ ಮೂಲಕ ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಹೊರಕ್ಕೆ ಸಾಗಿಸಿ ರಕ್ಷಿಸಿದನು. ಧರ್ಮರಾಜನು ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ವೇಷದಿಂದ ಸಹೋದರರೊಡನೆ ದ್ರುಪದನ ನಗರಕ್ಕೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ದ್ರೌಪದೀ ಸ್ವಯಂವರವಾದನಂತರ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ದುರ್ಯೋಧನನನ್ನು ಸೋಲಿಸಿದನು. ಅನಂತರ ದ್ರೌಪದಿಯೊಡನೆ ಹಸ್ತಿನಾವತಿಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಪಟ್ಟಾಭಿಷಿಕ್ತನಾದನು. ದ್ರೌಪದಿಯಲ್ಲಿ ಇವನಿಗೆ ಪ್ರತಿವಿಧ್ಯನೆಂಬ ಪುತ್ರನು ಜನಿಸಿದನು. ಇಂದ್ರಪ್ರಸ್ಥದಲ್ಲಿ ಮಯನಿರ್ಮಿತವಾದ ಸಭೆಯನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನನ್ನು ಬರಮಾಡಿಕೊಂಡು ರಾಜಸೂಯಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡಿದನು. ದ್ರೂತದಲ್ಲಿ ಸೋತು ಹನ್ನೆರಡು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಪಶ್ಚಿ ಮತ್ತು ಸಹೋದರರೊಡನೆ ಅರಣ್ಯವಾಸ ಅನುಭವಿಸಿದನು. ವನವಾಸದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿ ಅಕ್ಷಯ ಪಾತ್ರೆಯನ್ನು ಪಡೆದನು. ದುರ್ಯೋಧನನು ತನ್ನ ಸಕಲ ವೈಭವದೊಡನೆ ದ್ವೈತವನಕ್ಕೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಪಾಂಡವರಿಗೆ ಸಂಕಟವುಂಟುಮಾಡಲು ಯತ್ನಿಸಿದಾಗ ಗಂಧರ್ವರಾಜನಾದ ಚಿತ್ರಸೇನನು ಹಿಂಗೆಟ್ಟು ಬಿಗಿದು ದುರ್ಯೋಧನನನ್ನು ಎತ್ತಿಕೊಂಡು ಹೋಗುತ್ತಿರಲು ದುರ್ಯೋಧನನ ಮಂತ್ರಿಗಳ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯನ್ನು ಆಲಿಸಿ ಧರ್ಮರಾಜನು ಅಪ್ಪಣೆಮಾಡಿ ಗಂಧರ್ವರಿಂದ ದುರ್ಯೋಧನನನ್ನು ಬಿಡಿಸಿ ಕಳುಹಿಸಿದನು. ಹನ್ನೆರಡು ವರ್ಷಗಳ ವನವಾಸ ಕಳೆದು ವಿರಾಟನಗರದಲ್ಲಿ ಒಂದು ವರ್ಷ ಅಜ್ಞಾತವಾಸ ಮಾಡುತ್ತಿರುವಾಗ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನು ಸಂಜಯನನ್ನು ಸಂಧಿಗಾಗಿ ಧರ್ಮರಾಜನಲ್ಲಿಗೆ ಕಳುಹಿಸಲು ಇಂದ್ರಪ್ರಸ್ಥ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಕೊಡದಿದ್ದರೆ ಸಂಧಿಯಾಗುವುದಿಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳಿಕಳುಹಿಸಿದನು. ಅನಂತರ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಮೂಲಕ ಸಂಧಿಗಾಗಿ ಯತ್ನಿಸಿದಾಗ ಯುದ್ಧವಾಗಲೇ ಬೇಕೆಂದು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಹೇಳಲು ಸೇನಾಸಮೇತನಾಗಿ ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ತನ್ನ ಏಳು ಅಕ್ಷೌಹಿಣೀ ಸೈನ್ಯಕ್ಕೂ ದ್ರುಪದಾದಿಗಳನ್ನು ಪ್ರಮುಖರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿ ಧೃಷ್ಟದ್ಯುಮ್ನನನ್ನು ಸರ್ವಸೇನಾಪತಿಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದನು. ಯುದ್ಧರಂಗದಲ್ಲಿ ರಥದಿಂದ ಇಳಿದು ಭೀಷ್ಮ ದ್ರೋಣರನ್ನು ನಮಸ್ಕರಿಸಿ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಜಯಪಡೆಯುವಂತೆ ವರ ಪಡೆದನು. ಹದಿನೆಂಟು ದಿನಗಳ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಕೌರವರೆಲ್ಲರನ್ನೂ ನಾಶಪಡಿಸಿ ಬಂಧುಗಳ ನಾಶದಿಂದ ಧರ್ಮರಾಜನು ದುಃಖಗೊಂಡು ರಾಜ್ಯ ಪರಿತ್ಯಾಗಮಾಡಿ ತಪಸ್ಸಿಗಾಗಿ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಹೊರಡಲು ಯತ್ನಿಸಿದಾಗ ರಾಜ್ಯ



ಬಿಟ್ಟು ಹೋಗುವುದು ಬಹಳ ಅವಮಾನಕರವೆಂದು ಭೀಮಾರ್ಜುನಾದಿಗಳು ಹೇಳಿ ತಡೆದರು. ಹಸ್ತಿನಾವತಿ ಯಲ್ಲಿ ಪಟ್ಟಾಭಿಷಿಕ್ತನಾಗಿ ಅನಂತರ ವ್ಯಾಸರಿಂದ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಧರ್ಮಗಳನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಂಡು ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯರಿಂದ ರಾಜಧರ್ಮಗಳ ಉಪದೇಶ ಪಡೆದನು. ಬಂಧುಗಳ ಹತ್ಯೆಯಿಂದಂಟಾದ ದೋಷಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಅಶ್ವಮೇಧ ಯಾಗ ಮಾಡಿ ಧರ್ಮದಿಂದ ರಾಜ್ಯವಾಳಿದನು. 2. ಮಹೇಂದ್ರ, ದೇವರಾಜ, ಶಕ್ರ. "ಮುರಿಸ್ತವಾಶ್ವಿತ್ರಯ-ಸ್ತುನಾಸೀರೋ ಯುಧಿಷ್ಠಿರಃ" ವೈಜಂ.

ಯುಗ್ಮ ಯುಧ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಯೋಧ, ಭಟ, ಸೈನಿಕ. 2. ಯುದ್ಧ. 3. ಬಾಣ. 4. ಧನಸ್ಸು, ಬಿಲ್ಲು. ಯುಧ (ಸಂಪ್ರಹಾರೇ) "ಮಕ್" (ಃಂ ೧-೧೪೨) ।

ಯುಧ್ಯಮಾನ ಯುಧ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ಯುದ್ಧಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಯುಧ (ಸಂಪ್ರಹಾರೇ) "ಶಾನಕ್" (ಃಂ ೨-೧೨೪) । "ಯುಧ್ಯಮಾನಾ ಹ್ಯಾರೂಢಾ ದೇವಾನಾಮಪಿ ದುರ್ಜಯಾಃ" ಹಿತಂ ೩-೮೫ ।

ಯುಯುತಸ್ತಾ ಯುಯುತಸ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯುದ್ಧಮಾಡುವ ಆಸೆ, ಯುದ್ಧದ ಆಪೇಕ್ಷೆ. ಯೋಧಮಿಚ್ಛಾ—ಯುಧ (ಸಂಪ್ರಹಾರೇ)+ಸನ್ "ಜಃ" (ಃಂ ೩-೩-೧೦೨) । "ಸಪದಿ ಕಂಕುಭಾಮೀಶನಮ್ಯಾಗಮತ್ಸ ಯುಯುತಸ್ಯಾ" ಕುಮಾಂ ೧೬-೪೧ ।

ಯುಯುತಸ್ತು ಯುಯುತಸ್ತು (ಪುಂ) 1. ದೃಢರಾಷ್ಟ್ರನ ದಾಸಿಯ ಮಗ. (ವಿಂ) 2. ಯುದ್ಧ ಮಾಡಲು ಆಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು. ಯೋಧಮಿಚ್ಛು—ಯುಧ (ಸಂಪ್ರಹಾರೇ) + ಸನ್ "ಃಃ" (ಃಂ ೩-೨-೧೬೮) । "ಧರ್ಮಕ್ಷೇತ್ರೇ ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರೇ ಸಮವೇತಾ ಯುಯುತಸಃ । ಮಾಮಕಾಃ ಪಾಂಡವಾಶ್ಚೈವ ಕಿಮಕುರ್ವಂತ ಸಂಜಯ" ಗೀತಾ ೧-೧ । "ಯುಯುತಸ್ತುನೈವ ಕವಚಂ ಕಿಮಾಮುಕ್ತಮಿದಂ ತ್ವಯಾ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೧೫ ।

ಯುಯುಧಾನ ಯುಯುಧಾನ (ಪುಂ) 1. ಯದುವಂಶದ ಸತ್ಯಕೇನ ಮಗ ಸಾತ್ಯಕಿ. "ಶೇನೇಯಸ್ತು ಶಿಣೇನೇಪ್ತಾ ಯುಯುಧಾನಾಶ್ಚ ಸಾತ್ಯಕಿಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । ಇವನು ಮರುತ್ತೂಗಳ ಅಂಶದಿಂದ ಜನಿಸಿದವನು. ಕೌರವರೊಡನೆ ಪಾಂಡವರು ಸಂಧಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಕೂಡದೆಂದೂ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಜಯಿಸಬೇಕೆಂದೂ ಇವನು ಸಂಧಿಯ ಪ್ರಯತ್ನವನ್ನು ತಡೆದನು. 2. ಇಂದ್ರ. 3. ಕ್ಷತ್ರಿಯ. 4. ಭಟ, ಯೋಧ.

ಯುವಲಲತಿ ಯುವಲಲತಿ (ವಿಂ) 1. ಬಕ್ತೃತರುಣ, ಪಟ್ಟಿ ತಲೆಯ ತರುಣ. ಯುವಾ ಲಲತಿಃ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಲಲತೀ —ಬಲತೀ. 2. ಪಟ್ಟಿ ತಲೆಯ ಹೆಂಗಸು.

ಯುವತಿ ಯುವತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಾಯದ ಹೆಂಗಸು. ಯುವನ್ "ತಿಃ" (ಃಂ ೪-೧-೭೭) । "ಹಿಮಶ್ಚತಾವಪಿ ತಾಃ ಸ್ಮ

ಮೃಗಾಶ್ವಿದೋ ಯುವತಯಃ ಸುತರಾಮುಪಕಾರಿಣಿ" ಮಾಘಂ ೬-೬ । 2. ಯಾವುದಾದರೂ ಹೆಣ್ಣು ಪ್ರಾಣಿ.

ಯುವತೀ ಯುವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಾಯದ ಹೆಂಗಸು. ಯು (ಮಿಶ್ರಣೇಽಮಿಶ್ರಣೇ ಚ) "ಶತ್" (ಃಂ ೩-೨-೧೨೪) । "ಛಿಪ್" (ಃಂ ೪-೧-೬) । "ವಿಯುವತೀರ್ಯುವತೀಃ ಶಿಶಿರಾನಿಲಃ" ಮಾಘಂ ೬-೬೨ । 2. ಯಾವುದಾದರೂ ಹೆಣ್ಣು ಪ್ರಾಣಿ.

ಯವನ್ ಯುವನ್ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾಯದ ಹುಡುಗ, ಹದಿನಾರು ವರ್ಷ ಮೀರಿದ ತರುಣ. ಯು (ಮಿಶ್ರಣೇಽಮಿಶ್ರಣೇ ಚ) "ಕನಿನ್" (ಃಂ ೧-೧೫೪) । ಯುವಾ ಯುವಾನಿ ಯುವಾನಃ । "ಯಸ್ಯಾಮಸೇವಂತ ನಮಃಪ್ರೀತಾಃ ಸಮಂ ವಭೂಮಿರ್ವಲಮೀರ್ಯುವಾನಃ" ಮಾಘಂ ೩-೫೩ । "ಆಪೊಢಶಾಙ್ಗವೇದಾಲಃ ತತಸ್ತರಣ ಉಚ್ಯತೇ" (ವಿಂ) 2. ಸ್ವಭಾವವಾಗಿ ಶಕ್ತಿವಂತನಾದ. 3. ಶ್ರೇಷ್ಠ, ಉತ್ತಮ. "ಯುವಾ ಸ್ಯಾತ್ತರಣೇ ಶ್ರೇಷ್ಠೇ ನಿಸರ್ಗಬಲಶಾಲಿನಿ" ಮೇದಿಂ ।

ಯವರಾಜ ಯುವರಾಜ (ಪುಂ) ರಾಜಕುಮಾರ, ಅರಸಿನ ಮಗ. ಯುವಾ ಚಾಸೀ ರಾಜಾ ಚ । "ನಿಸರ್ಗಸಂಸ್ಕಾರವಿನೀತ ಇತ್ಯಸೌ ನೃಪೇಣ ಚಕ್ರೇ ಯವರಾಜಶಬ್ದಭಾಕ್" ರಘುಂ ೩-೩೫ ।

ಯುಷ್ಮದ್ ಯುಷ್ಮದ್ (ವಿಂ) ನೀನು ಎಂಬ ಅರ್ಥಕೊಡುವ ಒಂದು ಸರ್ವನಾಮ ಪದ, ಕ್ರಿಯಾಪದದ ಮಧ್ಯಮ ಪುರುಷದ ಒಂದು ಕರ್ತೃಪದ. ಲಿಂಗತ್ರಯದಲ್ಲಿಯೂ ಇದರ ರೂಪ ಸಮಾನವಾದುದು. ಯುಷ್ಮದ್ "ತ್ವ" ಆದೇಶಃ (ಃಂ ೨-೧೪) ।

|           |              |              |
|-----------|--------------|--------------|
| ತ್ವಮ್     | ಯುವಾಮ್       | ಯುಷ್ಮಮ್ ।    |
| ತ್ವಾಮ್ }  | ಯುವಾಮ್ }     | ಯುಷ್ಮಾನ್ }   |
| ತ್ವಾ }    | ವಾಮ್ }       | ವಃ }         |
| ತ್ವಯಾ     | ಯುವಾಮ್ಯಾಮ್   | ಯುಷ್ಮಾಭಿಃ ।  |
| ತುಮ್ಯಮ್ } | ಯುವಾಮ್ಯಾಮ್ } | ಯುಷ್ಮಮ್ಯಮ್ } |
| ತೇ }      | ವಾಮ್ }       | ವಃ }         |
| ತ್ವತ್     | ಯುವಾಮ್ಯಾಮ್   | ಯುಷ್ಮತ್ ।    |
| ತವ }      | ಯುವಯೋಃ }     | ಯುಷ್ಮಾಕಮ್ }  |
| ತೇ }      | ವಾಮ್ }       | ವಃ }         |
| ತ್ವಯಿ     | ಯುವಯೋಃ       | ಯುಷ್ಮಾಸು ।   |

"ತ್ವಮೇವ ಹವ್ಯಂ ಹೊತಾ ಚ ಭೋಜ್ಯಂ ಭೋಕ್ತಾ ಚ ಶಾಶ್ವತಃ" ಕುಮಾಂ ೨-೧೫ । "ತ್ವಾಮಾಮನಂತಿ ಪ್ರಕೃತಿ ಪುರುಷಾರ್ಥ-ಪ್ರವರ್ತಿनीಮ್" ಕುಮಾಂ ೨-೧೩ । "ತ್ವಯಾ ಸಾಧು ಸಮಾರಮ್ಭಿ ನವೇ ವಯಸಿ ಯತ್ತಪಃ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೧೦ । "ನಮಸ್ತ್ರಿಮೂರ್ತೇ ತುಮ್ಯಂ ಪ್ರಾಕ್ಸೃಷ್ಟೇಃ ಕೇವಲಾತ್ಮನೇ" ಕುಮಾಂ ೨-೪ । "ಸ ಚಿಂತಯತ್ಯೇವ ಭಿಷತ್ವದೇಷ್ಯತೀಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೨೩ । "ತವೈವ ಸಂಕಲ್ಪಕಲಾಂಶತಃ ಕ್ವಚಿತ್ ಸಮರ್ಥವಾದಾಃ ಪರಮೇಷ್ಠಿನಾಮಪಿ"



ಯಾದಂ ೧೪-೩೯। "ತ್ವಯಿ ನಸ್ತಿಷ್ಠತೇ ಪ್ರೀತಿಸ್ತುಮ್ಯ  
ತಿಷ್ಠಾಮಹೇ ವಯಮ್" ಭೃಂ ೮-೧೨। ಬಹುವಚನ ವಿವಕ್ಷ್ಯ  
ಯಿರುವಾಗ ಸಮಾಸದ ಅದಿಯಲ್ಲಿ ಈ ರೂಪವಿರುವುದು.

ಯುಷ್ಮಚ್ಚಾಲಾ, ಯುಷ್ಮತ್ಪುತ್ರಃ, ಯುಷ್ಮಚ್ಚಾಸನಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಯುಷ್ಮದೀಯ ಯುಷ್ಮದೀಯ (ವಿಂ) ನಿಮ್ಮ ಸಂಬಂಧವಾದ.

ಯುಯೋ: ಯುಷ್ಮಾಕಂ ವಾ ಅಯಮ್ "ಃ" (೪-೩-೧)।

ಯುಷ್ಮಾದೃಶ್ ಯುಷ್ಮಾದೃಶ್ (ವಿಂ) ನಿಮ್ಮಂತಹ, ನಿಮಗೆ  
ಸಮಾನವಾಗಿರುವ. ಯುಯಿವ ಪಶ್ಯತಿ—ಯುಷ್ಮದ್ + ದೃಶಿರ್  
(ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) "ಕಿವನ್" (೩-೨-೬೦)। ಸೂತ್ರೇ ಚಕಾರಾತ್  
"ಕಃ" ಚ। ಯುಷ್ಮಾದೃಶಃ: ಯುಷ್ಮಾದೃಶಃ.

ಯುಕ್ ಯುಕ್ (ಪುಂ) ಹೇನು, ಕೂರೆ. ಯೌತಿ—ಯು (ಮಿಶ್ರಣೇಽ-  
ಮಿಶ್ರಣೇ ಚ) "ಕನ್" (೩ಂ ೩-೪೭)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಠಾಪ್" (೪-೧-೪)। ಯುಕ್ ಯುಕ್: "ಸ್ವೇದಜಂ ದಂಶಮಶಕಂ ಯುಕ್-  
ಮಕ್ಷಿಕಮತ್ಕುಣಮ್" ಮನುಂ ೧-೪೫।

ಯುತಿ ಯುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಿಶ್ರಣ, ಬೆರೆಕೆ. ಯು (ಮಿಶ್ರಣೇಽಮಿಶ್ರಣೇ  
ಚ) "ಕಿತನ್" (೩-೩-೯೭)। ದೀರ್ಘ ನಿಪಾಂ।

ಯುಥ ಯುಥ (ಪುಂ) ತೀರ್ಥಕ್ಕೆ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಗುಂಪು, ಪಶು  
ಪ್ರಾಣಿಗಳು ಮತ್ತು ಹಕ್ಕಿಗಳ ಸಮೂಹ. ಯೌತಿ—ಯು  
(ಮಿಶ್ರಣೇ) "ಥಕ್" (೩ಂ ೨-೧೨)। ನಿಪಾಂ।  
"ಬೃಂದೇ ತಿರಸ್ತ್ರಾಂ ಯುಥೋಽಸ್ಮಿ" ವೇಜಂ। "ಯುಥಾನಿ  
ಸತ್ವಾರ್ಯಂ ರವಿಪ್ರತಪ್ತಃ ಶೀತಂ ದಿವಾ ಸ್ಥಾನಮಿವ ದ್ವಿಪೇಂದ್ರಃ"  
ಶಾಕುಂ ೫-೫।

ಯುಥನಾಥ ಯುಥನಾಥ (ಪುಂ) ಸಲಗ, ಕಾಡಾನೆಗಳ  
ಗುಂಪಿಗೆ ಮುಖಂಡವಾದ ಅನೆ. ಯುಥಸ್ಯ ಹಸ್ತಿಬೃಂದಸ್ಯ  
ನಾಥಃ। -ಪಃ-ಃ, -ಪತಿಃ-ಃ. ಯುಥಾನ್ ಪಾತಿ  
ಯುಥಾನಾಂ ಪತಿರ್ವಾ।

ಯುಥಿಕಾ ಯುಥಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಡುಮಲ್ಲಿಗೆ. ಯು-  
ಮಸ್ತಸ್ಯಾ: "ಠನ್" (೫-೨-೧೧೫)। "ಉಚ್ಚಾನಾನಾಂ ನವಜಲ-  
ಕರ್ಣಯುಥಿಕಾಜಾಲಕಾನಿ" ಮೇಘಂ ೧-೨೬। 2. ದೊಡ್ಡ  
ಗೋರಂಟಿ ಮರ. "ಯುಥಿಕಾಮ್ಲಾನಕೇ ಪುಷ್ಪವಿಶೇಷೇಽಪಿ ಚ  
ಯೌಷ್ಣಿತಿ" ಮೇದಿಂ।

ಯುಥಿ ಯುಥಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡುಮಲ್ಲಿಗೆ. ಯುಮಸ್ತಸ್ಯ  
"ಅಚ್" (೫-೨-೧೨೭)।

ಯುಪ ಯುಪ (ಪುಂ) 1. ಯಾಗದ ಪಶುವನ್ನು ಕಟ್ಟುವ  
ಕಂಬ. ಯು (ಮಿಶ್ರಣೇ) "ಪಃ" ದೀರ್ಘ (೩ಂ ೩-೨೭)।  
"ಗ್ರಾಮೇಷ್ವಾತ್ಮವಿಸೃಷ್ಟೇಷು ಯುಪಚಿಹ್ನೇಷು ಯಜ್ವನಾಮ್" ರಘುಂ  
೧-೪೪। 2. ಜಯಸ್ತಂಭ. "ಅಷ್ಟಾದಶದ್ವೀಪನಿಷ್ಠಾತಯುಪಃ"  
ರಘುಂ ೬-೩೮।

ಯುಪಕಟಕ ಯುಪಕಟಕ (ಪುಂ) ಯಾಗದ ಪಶುವನ್ನು  
ಕಟ್ಟುವ ಕಂಬದ ತುದಿಯಲ್ಲಿರುವ ಬಳೆ. ಯುಪಸ್ಯ ಕಟಕಃ।  
"ಚಳಾಲೋ ಯುಪಕಟಕಃ" ಅಮಂ।

ಯುಪಾಸ್ರ ಯುಪಾಸ್ರ (ನಂ) ಯಜ್ಞಪಶು ಸ್ತಂಭದ ಕೊನೆಯ  
ಭಾಗ.

ಯುಷ ಯುಷ (ನಂ) ಮೂಸದ ಸಾರು.

ಯೇನ ಯೇನ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಯಾವ ಕಾರಣದಿಂದ. "ಕಿಂ ತತ್  
ಯೇನ ಮನೋ ಹರ್ತುಮಲಂ ಸ್ಥಾತಾಂ ನ ಶೃಣ್ವತಾಮ್" ರಘುಂ ೧೫-೬೪।  
2. ಯಾವುದರ ಮೂಲಕ. 3. ಯಾವುದರಿಂದ. "ಯೇನಾಪ-  
ವಿದ್ವಸಲಿಲಃ ಸ್ಫುಟನಾಗಸತ್ವಾ ದೇವಾಸುರೇರಮೃತಮಮ್ಬುನಿಧಿ-  
ಮಮನ್ಯೇ" ಕಿರಾಂ ೫-೩೦। ಇತ್ಯಾದಿ. 4. ಅದರಿಂದ.  
"ದರ್ಶಯ ತಂ ಚೋರಸಿಂಹಂ ಯೇನ ವ್ಯಾಪಾದಯಾಮಿ" ಪञ्ಚತಂ ೪।

ಯೋಕ್ತೃ ಯೋಕ್ತೃ (ವಿಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸುವವನು,  
ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸುವವನು. ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಎತ್ತಿನ ಕತ್ತಿಗೆ ನೋಗವಿಟ್ಟು ಕಟ್ಟು  
ವವನು. 3. ಸಾರಥಿ, ಗಾಡಿ ನಡೆಸುವವನು.

ಯೋಕ್ತ್ರ ಯೋಕ್ತ್ರ (ನಂ) 1. ನೇಗಿಲಿನ ನೋಗಕ್ಕೆ ಕಟ್ಟುವ  
ಹಗ್ಗ. 2. ಎತ್ತಿನ ಕೊರಳಿಗೆ ನೋಗವನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟುವ  
ಹಗ್ಗ. ಯುಜ್ಯತೇನೇನ—ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ಛ್ರನ್" (೩-೨-೧೮೨)। 3. ದನಕರುಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟಿಹಾಕುವ ಹಗ್ಗ.

ಯೋಗ ಯೋಗ (ಪುಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು, ಸಂಧಿಸು  
ವುದು, ಪರಸ್ಪರ ಸಮಾಗಮ. ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) ಭಾವೇ  
"ಛಕ್" (೩-೩-೧೮)। "ಶ್ರಿಯಮತಿಶಯಿನಾಂ ಸಮೇತ್ಯ  
ಜಗಮುಃ ಗುಣಮಹತಾಂ ಮಹತೇ ಗುಣಾಯ ಯೋಗಃ" ಕಿರಾಂ  
೧೦-೨೫। 2. ಮಿಶ್ರಣ, ಬೆರೆಕೆ, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸುವುದು.  
3. ಉಪಾಯ, ಸಾಧನ. 3(a). ಸಂಬಂಧ. "ತಮಾಹ್ನ-  
ಮಾರೋಪ್ಯ ಶರೀರಯೋಗಜಃ ಸುಖೇನಿಷಿಜ್ಜಂತಮಿವಾಮೃತಂ ತ್ವಚಿ"  
ರಘುಂ ೩-೨೬। 4. ಧ್ಯಾನ, ಧ್ಯೇಯವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ  
ಮನಸ್ಸನ್ನು ಸ್ಥಿರವಾಗಿರಿಸುವುದು. ಯುಜ (ಸಮಾಧೌ) ಭಾವೇ  
"ಛಕ್" (೩-೩-೧೮)। "ವಾರ್ಧಕೇ ಮುನಿವೃತ್ತಿನಾಂ ಯೋಗನಾಂತೇ  
ತನುತ್ಯಜಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೬। ಇದು ಯೋಗದ ಎಂಟು  
ಅಂಗಗಳಲ್ಲೊಂದು. 5. ಯುಕ್ತ, ಉಪಾಯ, ತಂತ್ರ.  
6. ಸನ್ನಾಹ, ಸಿದ್ಧತೆ, ಸಜ್ಜು. 7. ಸಾಮ ದಾನ ಮೊದ  
ಲಾದ ಉಪಾಯ. "ತನ್ಮಾಪಾವಿವಿದಾ ಯೋಗಮಂಥಲಾನ್ಯಧಿ-  
ತಿಷ್ಠತಾ" ಮಾಘಂ ೨-೮೮। 8. ನೋಗ. 9. ಕವಚ  
ಧಾರಣೆ, ಅಂಗಿ ತೊಡುವುದು. 10. ಅಪೂರ್ವ ಧನಲಾಭ,  
ಹೊಸ ಸಂಪಾದನೆ. 11. ಪ್ರಯತ್ನ. "ಇಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ  
ಜಯೇ ಯೋಗಂ ಸಮಾತಿಷ್ಠೇದ್ವಿನಿಶಾಮ್" ಮನುಂ ೭-೪೪।



12. ಮೂಲಿಕೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ಸ್ತಂಭ ನಾದಿಪ್ರಯೋಗ, ಮಂತ್ರಪ್ರಯೋಗ. 13. ದೇಹದಾರ್ಢ್ಯ. 14. ಔಷಧ. 14(a). ವಿಶ್ವಾಸಘಾತಕ, ನಂಬಿದವನಿಗೆ ದ್ರೋಹಮಾಡುವವನು. 15. ಧನ, ಐಶ್ವರ್ಯ, ಸಂಪತ್ತು. 16. ಪ್ರಯೋಗ, ಉಪಯೋಗಿಸುವುದು, ಬಳಸುವುದು. "ಸುರಗಜ ಇವ ದಂತೆ: भग्नवेत्यासिधारै: नय इव पणबन्ध-व्यक्तयोगैरुपायै:" ರಘುಂ ೧೦-೮೬. 17. (ಜ್ಯೋತಿಷ ದಲ್ಲಿ) ವಿಷ್ಕಂಭ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ಯೋಗಗಳು. (1) ವಿಷ್ಕಂಭ (2) ಪ್ರೀತಿ (3) ಆಯುಷ್ಮಾನ್ (4) ಸೌಭಾಗ್ಯ (5) ಶೋಭನ (6) ಅತಿಗಂಡ (7) ಸುಕರ್ಮ (8) ಧೈತಿ (9) ಶೂಲ (10) ಗುಡೆ (11) ವೃದ್ಧಿ (12) ಧ್ರುವ (13) ವ್ಯಾಘಾತ (14) ಹರ್ಷಣ (15) ವಜ್ರ (16) ಸಿದ್ಧಿ (17) ವ್ಯತಿಪಾತ (18) ವರೀಯಾನ್ (19) ಪರಿಘ (20) ಶಿವ (21) ಸಿದ್ಧ (22) ಸಾಧ್ಯ (23) ಶುಭ (24) ಶುಕ್ಲ (25) ಬ್ರಹ್ಮ (26) ಐಂದ್ರ ಮತ್ತು (27) ವೈದ್ಯತಿ ಇವು ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ಯೋಗಗಳು. 18. ತಿಥಿ, ವಾರ ಮತ್ತು ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅಮೃತಾದಿ ಯೋಗಗಳು. 19. (ಸೂರ್ಯನನ್ನಳಿದು) ಗ್ರಹಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರನ ಸಂಚಾರದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಯೋಗ. ಅನಘಾ ಸುನಘಾ ಮತ್ತು ದುರಘರಾ ಎಂದು ಈ ಯೋಗಗಳು ಮೂರು. "ಹಿತ್ವಾಕಂ ಸುನಘಾನಘಾ ದುರಘರಾ: ಸ್ವಾಂತ್ಯೋಭಯಸಂಘ್ರಹೈ: ಶೀತಾಂಶೋ:" ಬೃಹಂ ೧೩-೩. "ದಧತೇವ ಯೋಗಮುಖ್ಯಗ್ರಹಾಂತರಸ್ಥಿತಿಕಾರಿತಂ ದುರಘರಾಖ್ಯಮಿಂದುನಾ" ಮಾಘಂ ೧೩-೨೨. 20. ಲಗ್ನ ಮೊದಲಾದ ಹನ್ನೆರಡು ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಗ್ರಹಗಳ ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ರಾಜಯೋಗ, ನಾಭಸಯೋಗ ಇತ್ಯಾದಿ. 21. ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿನಿರೋಧ, ಇತರ ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳಿಂದಲೂ ಮನಸ್ಸನ್ನು ತಡೆಯುವುದು. "ಯೋಗಶ್ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿನಿರೋಧ:" ಪಾಂ ಯಂ ಸ್ಕಂ. ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿ ನಿರೋಧರೂಪವಾದ ಈ ಯೋಗದಿಂದ ಪರಿಶುದ್ಧವಾದ ಆತ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವೂ ಪರಮಾತ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವೂ ಆಗುವವು. ಈ ಜೀವಾತ್ಮ-ಪರಮಾತ್ಮ ಸಂಯೋಗವೇ ಯೋಗವು. "ಸಂಯೋಗೋ ಯೋಗ ಇತ್ಯುಕ್ತೋ ಜೀವಾತ್ಮಪರಮಾತ್ಮನೋ:" ಯಾಜ್ಞಂ. ಜೀವಾತ್ಮರು ಪರಮಾತ್ಮಸಮರಾಗಿ ಮೋಕ್ಷದಲ್ಲಿರುವರೆಂದೂ ಸರ್ವ ಪ್ರಪಂಚಸಂಬಂಧವನ್ನೂ ತ್ಯಜಿಸಿ ಜೀವಾತ್ಮನು ತನ್ನ ಸ್ವರೂಪದಲ್ಲಿ ಶಾಶ್ವತವಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವುದೇ ಮೋಕ್ಷವೆಂದೂ ಈ ಯೋಗದರ್ಶನಕಾರರಾದ ಪತಂಜಲಿಮಹರ್ಷಿಯ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. ಈ ಯೋಗಕ್ಕೆ (1) ಯಮ: (2) ನಿಯಮ: (3) ಆಸನಮ್ (4) ಪ್ರಾಣಾಯಾಮ: (5) ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರ: (6) ಧಾರಣಾ

(7) ಧ್ಯಾನಮ್ ಮತ್ತು (8) ಸಮಾಧಿ: ಎಂದು ಎಂಟು ಅಂಗಗಳು ಇರುವುವು. [ಇವುಗಳ ಅರ್ಥವನ್ನು ಆಯಾ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿ ನಿರೋಧರೂಪವಾದ ಈ ಯೋಗವು ರಾಜಯೋಗ ಮತ್ತು ಹಠಯೋಗಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ರಾಜಯೋಗವು ಪತಂಜಲಿ ಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಉಕ್ತವಾದುದು. ಹಠಯೋಗವು ತಂತ್ರ ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾದುದು. ಕರ್ಮಯೋಗ: ಜ್ಞಾನಯೋಗ: ಮತ್ತು ಭಕ್ತಿಯೋಗ: ಎಂದು ಯೋಗ (ಉಪಾಯ) ವು ಮತ್ತೆ ಮೂರು ವಿಧ. "ಯೋಗಾಸ್ತ್ರಯೋ ಮಯಾ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ನೃಣಾಂ ಶ್ರೇಯೋ-ವಿಧಿವಿತ್ಸಯಾ. ಜ್ಞಾನಂ ಕರ್ಮ ಚ ಭಕ್ತಿಶ್ಚ ನೋಪಾಯೋನ್ಯೋಸ್ತಿ ಕುತ್ರचित್" ಭಾಗಂ ೧೧-೨೦. "ಸ್ವಧರ್ಮಸ್ಥೋ ಯಜನ್ ಯಜ್ಞ: ಅನಾಶೀ: ಕಾಮ ಉದ್ಭವ. ನ ಯಾತಿ ಸ್ವರ್ಗನರಕೌ ಯದನ್ಯತ್ರ ಸಮಾಚರೇತ್. ಅಸ್ಮಿಲ್ಲೋಕೇ ವರ್ತಮಾನ: ಸ್ವಧರ್ಮಸ್ಥೋನಘ: ಶುಚಿ: ಜ್ಞಾನಂ ವಿಶುದ್ಧಮಾಪ್ನೋತಿ ಮಹಾಭಕ್ತಿ ವಾ ಯದ್ವಿಚ್ಛಯಾ" ಭಾಗಂ ೧೧-೨೦. 22. ಶಬ್ದದ ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಯಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ಶಕ್ತಿ, ಪದದ ಅವಯವ ಶಕ್ತಿ. ಅಭಿಧಾ ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಯಿಂದ ಅರ್ಥಕೊಡುವ ಶಬ್ದವು (1) ರೂಢ (2) ಯೋಗ ಮತ್ತು (3) ಯೋಗರೂಢವೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. (1) (ಶಬ್ದದ) ಕೇವಲ ಸಮುದಾಯ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಅರ್ಥಕೊಡುವ ಶಬ್ದವು ರೂಢವೆನಿಸುವುದು. ಉದಾ: ತಿಲ: ತಿಲೀ: ಇತ್ಯಾದಿ. (2) ಕೇವಲ ಅವಯವಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಅರ್ಥಕೊಡುವ ಶಬ್ದವು ಯೋಗವೆನಿಸುವುದು. ಉದಾ: ಪಾಠಕ: ಪಾಠಕ: ಇತ್ಯಾದಿ. ಇಲ್ಲಿ ಅರ್ಥವು ಧಾತು ಮತ್ತು ಪ್ರತ್ಯಯಗಳ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದು. ಇದು ಕೇವಲ ಅವಯವಾರ್ಥ. (3) ಶಬ್ದಸಮುದಾಯ ಮತ್ತು ಅವಯವ ಶಕ್ತಿಗಳಿಂದ ಅರ್ಥಕೊಡುವ ಶಬ್ದವು ಯೋಗರೂಢವೆನಿಸುವುದು. ಉದಾ: ಪಕ್ಷಜಮ್. ಪಂಕ ಪಲ್ಲಿ ಮಂಡೂಕ ಮೊದಲಾದುವು ಹುಟ್ಟಿದರೂ ಶಬ್ದದ ಅವಯವ ಮತ್ತು ಸಮುದಾಯಶಕ್ತಿಗಳು ಕಮಲ ರೂಪವಾದ ಅರ್ಥದಲ್ಲೇ ಇರುವುದರಿಂದ ಪಕ್ಷಜ ಶಬ್ದವು ಯೋಗರೂಢ. 23. ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಪ್ರಭಾವ, ಮಹಿಮೆ. ಯೋಗಕ್ಷೇಮ ಯೋಗಕ್ಷೇಮ (ನಂ) ಹೊಸ ಸಂಪಾದನೆ ಮತ್ತು ಅದರ ರಕ್ಷಣೆ. ಯೋಗಕ್ಷೇಮಂ ಚ ಅನಯೋ: ಸಮಾಹಾರ: "ಅಲಂಕಾರಸ್ಯ ಲಾಭೋ ಯೋಗ: (ಸ್ಯಾತ್) ಕ್ಷೇಮಂ ತತ್ಪರೀಕ್ಷಣಮ್" "ಅನನ್ಯಾಶ್ಚಿಂತಯಂತೋ ಮಾ ಯೇ ಜನಾ: ಪರ್ಯುಪಾಸತೇ. ತೇಷಾಂ ನಿಯತಾಭಿಯುಕ್ತಾನಾಂ ಯೋಗಕ್ಷೇಮಂ ವಹಾಮ್ಯಹಮ್" ಗೀತಾ ೯-೨೨. ಹೊಸದಾಗಿ ಲಭಿಸಿದ ಧನವು ಯೋಗ. ಅದರ ಸಂರಕ್ಷಣೆಯು ಕ್ಷೇಮ. ಇದು ಯೋಗಕ್ಷೇಮ. ಇದರಂತೆಯೇ ಪರಮಾತ್ಮಪ್ರಾಪ್ತಿಯು ಯೋಗವಾಗುವುದು, ಪರಮಾತ್ಮ



ಪ್ರಾಪ್ತಿಯಾದನಂತರ ಅವುಗಳನ್ನು ವ್ಯಕ್ತಿರೂಪವಾದ ಮೋಕ್ಷವು ಕ್ಷೇಮವಾಗುವುದು. ಯೋಗೋಪಮಂ ವಹಾಮ್ಯಹಮ್ ಎಂಬ ಗೀತಾಚಾರ್ಯನ ಸೂಕ್ತಿಗೆ ಇದೇ ಅರ್ಥ.

**ಯೋಗಚಕ್ರ ಯೋಗಚಕ್ರ (೧೦)** ವಿಷಯ, ಪ್ರಥಮ ವರ್ಣದವನು.

**ಯೋಗಚಕ್ರ ಯೋಗಚಕ್ರ (೧೦)** ಮಂತ್ರಿಸಿದ ಪುಡಿ, ಜನರನ್ನು ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ತಯಾರಿಸುವ ಮುಕು ಬೊದಿ. "ಕಲ್ಪಿತಮನೇನ ಯೋಗಚಕ್ರಮಿಶ್ರಿತಮೌಷಧಿಂ ಚಂದ್ರ-ಗುಪ್ತಾಯ" ಮುಕ್ತಾಂ ೨.

**ಯೋಗನಿद्रಾ ಯೋಗನಿद्रಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಪ್ರಳಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ಪರಮಾತ್ಮನ ಯೋಗದಂತೆ, ಪ್ರಳಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ಪರಮೇಶ್ವರನು ಸಕಲ ಜೀವರಾಶಿಗಳನ್ನೂ ತನ್ನ ಉದರದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸಿಕೊಂಡು ಮಾಡುವ ನಿದ್ರೆ, ಪ್ರಳಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ಪರಮಾತ್ಮನು ಅಂತರ್ಮುಖನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಯೋಗರೂಪ ನಿद्रಾ | ಯೋಗೋ ಮನಸೋ ವಿಷಯಾಂತರವ್ಯಾಪ್ತಿ: ತದ್ವಿಧಾ ನಿद्रಾ | "ಯೋಗನಿद्रಾಂತವಿಶದೇ: ಪಾವನೇರವಲೋಕನೇ:" ರಘುಂ ೧೦-೧೪ | 2. ಎಚ್ಚರ ಮತ್ತು ನಿದ್ರೆ ಇವುಗಳ ಮಧ್ಯದ ಅವಸ್ಥೆ, ಜಾಗೃತವಸ್ಥೆ ಮತ್ತು ಸುಷುಪ್ತವಸ್ಥೆ ಇವುಗಳ ಮಧ್ಯದ ಅವಸ್ಥೆ, ಸಮಾಧಿವಸ್ಥೆ. "ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನಾಮ್ಯಸನವಿಧಿನಾ ಯೋಗನಿद्रಾಂ ಗತಸ್ಯ" ಭರ್ತುಂ ೩-೯೮ |

**ಯೋಗಪದ್ಮ ಯೋಗಪದ್ಮ (ನಂ)** ಯೋಗಾಭ್ಯಾಸ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಬೆನ್ನು ಮತ್ತು ಮೊಣಕಾಲುಗಳನ್ನು ಬಳಸಿ (ಸುತ್ರಿ) ಕಟ್ಟುವ ವಸ್ತು. ಯೋಗಾಮ್ಯಾಸಾಂ ಪದ್ಮ | "ಪೃಷ್ಠಜಾಂವೋ: ಸಮಾಯೋಗೋ ವಸ್ತ್ರಂ ವಲಯವಹೃತಮ್ | ಪರಿವೇಷ್ಟಯ ಯದ್ವಚ್ಚಕ್ಷು: ತಿಷ್ಠೇತ್ತಯೋಗಪದ್ಮಕಮ್" |

**ಯೋಗಪೀಠ ಯೋಗಪೀಠ (ನಂ)** ಯೋಗಾಭ್ಯಾಸಕ್ಕೆ ತಕ್ಕ ಆಸನ. ಯೋಗಯೋಗ್ಯಮಾಸನಮ್ |

**ಯೋಗಮಾಯಾ ಯೋಗಮಾಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಪರಮಾತ್ಮನ ಜಗತ್ಸೃಷ್ಟಿಶಕ್ತಿ. 2. ಪರಮಾತ್ಮನ ಅನಿರ್ವಚನೀಯವಾದ ಒಂದು ಶಕ್ತಿ, ಮನುಷ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಆಕಾರವನ್ನು ಹೊಂದುವ ಒಂದು ಶಕ್ತಿ. "ನಾಹಂ ಪ್ರಕಾಶ: ಸರ್ವಸ್ಯ ಯೋಗಮಾಯಾಸಮಾವೃತ: | ಮೂಢಾಶ್ಯಂ ನಾಭಿಜಾನಾತಿ ಲೋಕೋ ಮಾಮಜಮವ್ಯಯಮ್" ಗೀತಾ ೭-೨೫ | 3. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. ಯೋಗ ಏವ ಮಾಯಾ | "ತತಶ್ಚ ಶೌರಿರ್ಮಗವರಪ್ರಚೋದಿತ: ಸ್ತುತಂ ಸಮಾಧಾಯ ಸ ಸ್ಮೃತಿಕಾಗೃಹಾತ್ | ಯದಾ ಬಹಿರ್ಗಂತುಮಿಷೇಶ ತಹ್ಯಂಜಾ ಯಾ ಯೋಗಮಾಯಾಜನಿ ನಂದಜಾಯಯಾ" ಭಾಗಂ ೧೦-೩-೪೭ |

**ಯೋಗರೂಢ ಯೋಗರೂಢ (ಪುಂ)** ಅವಯವಶಕ್ತಿ ಮತ್ತು ಸಮುದಾಯಶಕ್ತಿಗಳಿಂದ ಅರ್ಥಕೊಡುವ ಶಬ್ದ. ಯೋಗಶ್ಚ

ಛೇದಿಶ್ಚ ಯೋಗರೂಢಿ—ತೌ ಸ್ತೋತ್ರಸ್ಯ "ಯಮ್" (೪-೨-೧೨೭) | ಯೋಗ ಮತ್ತು ರೂಢಿಗಳ ಪರಸ್ಪರ ಸಹಕಾರದಿಂದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಪದವು ಯೋಗರೂಢ. ಪಕ್ಷಜ ಪದವು ಪಕ್ಷಾಜ್ಞಾಯತೆ ಎಂಬ ಅವಯವ ಶಕ್ತಿಯಿಂದಲೂ ಪಂಕದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವುದೆಂಬ ರೂಢಿಯಿಂದಲೂ ಕಮಲ ರೂಪವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವುದರಿಂದ ಪಕ್ಷಜ ಪದವು ಯೋಗರೂಢ.

**ಯೋಗರೂಢಿ ಯೋಗರೂಢಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಶಬ್ದದ ಅವಯವ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಸಮುದಾಯ ಶಕ್ತಿ. ಇದು ಅಭಿಧಾ ವೃತ್ತಿಯ ಒಂದು ಭೇದ. ಯೋಗೇನ ಸಹಿತಾ ಛೇದಿ: | ಪಕ್ಷಜ ಪದದಲ್ಲಿ ಪಂಕದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಕಮಲರೂಪವಾದ ಅರ್ಥವೇ ರೂಢಿಯಾಗಿರುವುದು. ಇಲ್ಲಿ ಅವಯವಶಕ್ತಿ ಮತ್ತು ಸಮುದಾಯಶಕ್ತಿಗಳೆರಡರಿಂದಲೂ ಕಮಲ ರೂಪವಾದ ರೂಢ್ಯರ್ಥಬೋಧವುಂಟಾಗುವುದರಿಂದ ಈ ಪದವು ಯೋಗರೂಢ. ಈ ಪದದಲ್ಲಿ ಈ ಅರ್ಥವು ರೂಢಿ. ಯತ್ರ ಯೋಗಾರ್ಥಾನ್ವಿತರೂಢ್ಯರ್ಥಾವಿಬೋಧ: ತತ್ರ ಸರ್ವತ್ರ ಯೋಗರೂಢಿ: |

**ಯೋಗವಾಹ ಯೋಗವಾಹ (ಪುಂ)** ಅನುಸ್ವಾರ ವಿಸರ್ಗ ಜಿಹ್ವಾಮೂಲೀಯ ಮತ್ತು ಉಪಧ್ಮಾನೀಯ. ಯೋಗ ವರ್ಣಾಂತರೇಣ ಸಂಬಂಧ ವಾಹಯತಿ—ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ + ಣಿಕ್ "ಯನ್" (೩-೨-೧) |

**ಯೋಗವಾಹಿನ್ ಯೋಗವಾಹಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ಪಾದರಸ. 2. ಅಮೃತಯನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ ಕ್ಷಾರ. (ನಂ) 3. ಜೇನುತುಪ್ಪ.

**ಯೋಗಸಾರ ಯೋಗಸಾರ (ಪುಂ)** ಸಕಲ ರೋಗಗಳನ್ನೂ ನಿವಾರಿಸುವ ಉಪಾಯ. ಯೋಗಸ್ಯ ಔಷಧಪ್ರಯೋಗಸ್ಯ ಸಾರ: |

**ಯೋಗಸೂತ್ರ ಯೋಗಸೂತ್ರ (ನಂ)** ಪತಂಜಲಿಮಹರ್ಷಿ ಪ್ರಣೀತವಾದ ಯೋಗಶಾಸ್ತ್ರದ ಸೂತ್ರಗಳು.

**ಯೋಗರೂಢ ಯೋಗರೂಢ (ಪಿಂ)** ಯೋಗಸಿದ್ಧಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿದವನು. ಆತ್ಮವೈರಿಕವಾದ ಪ್ರಾಕೃತ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿಯೂ ತತ್ಸಂಬಂಧವಾದ ಕರ್ಮಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಸಂಬಂಧವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿ ಆತ್ಮಾವಲೋಕನ ಮಾಡುವವನು ಯೋಗಾ ರೂಢನಾಗುತ್ತಾನೆ. "ಯದಾ ಹಿ ನೇಂದ್ರಿಯಾಣ್ಯೇಷು ನ ಕರ್ಮಸ್ವನು-ಷಜ್ಜತೇ | ಸರ್ವಸಂಕಲ್ಪಸಂನ್ಯಾಸೀ ಯೋಗರೂಢಸ್ತದೋಚ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೬-೪ |

**ಯೋಗಸನ ಯೋಗಸನ (ನಂ)** ಯೋಗಾಭ್ಯಾಸಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಅಂಗವಿನ್ಯಾಸ, ಬ್ರಹ್ಮಾಸನ, ಧ್ಯಾನಾಸನ. ಯೋಗಸಾಧನಮಾಸನಮ್ | ಪದ್ಮಾಸನ, ಸ್ವಸ್ತಿಕಾಸನ,



ಕುಕ್ಕುಟಾಸನ, ಕೂರ್ಮಾಸನ, ಧನುರಾಸನ, ವೀರಾಸನ ಇತ್ಯಾದಿ. "ಧ್ಯಾನಯೋಗಾಸನೇ ಬ್ರಹ್ಮಾಸನಮ್" ಅಮಂ. "ಇತ್ಯುಕ್ತ್ವಾ ಸರ್ವಂ ಏವಾಸ್ಥು: ಬದ್ಧವಾ ಯೋಗಾಸನಾನಿ ತೇ" ಭಟ್ಟಿಂ ೭-೭೭. [ಅಸನಗಳ ವಿವರಕ್ಕೆ "ಹರಯೋಗ ಪ್ರದೀಪಿಕಾ" ಪ್ರಥಮೋಪದೇಶ ನೋಡಿ.]

**ಯೋಗಿನ್ ಯೋಗಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಜಿತೇಂದ್ರಿಯನಾಗಿ ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲೇ ಚಿತ್ತವನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸಿ ಲೌಕಿಕವಿಷಯಗಳಾವುದರಲ್ಲೂ ಆಸೆಯನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದವನು, ಸ್ವರ್ಣಲೋಷ್ಮ ಗೃಹ ವನ ಮುಂತಾದ ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲೂ ಸಮಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ ಸುನ್ಯಾಸಿ. ಯುಜ (ಸಮಾಧಿ) "ಚಿನ್ಮು" (೩-೨-೧೪೨). "ಸ್ವರ್ಣಂ ಲೋಕೇ ಗೃಹೇಽಪ್ಯೇ ಸುಸ್ಥಿರಗ್ಧೇ ಚಂದ್ರೇ ತಥಾ | ಸಮತಾಭಾವನಾ ಯಸ್ಯ ಸ ಯೋಗಿ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ" ಬ್ರಹ್ಮವೆಂ. 2. ಸುಖವಾಗಲಿ ದುಃಖವಾಗಲಿ ತನ್ನಂತೆಯೇ ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಸಮಾನವಾದುದೆಂದು ತಿಳಿಯುವವನು. "ಆತ್ಮೋಪಮೇನ ಸರ್ವತ್ರ ಸಮಂ ಪश्यತಿ ಯೋಜುನ್ | ಸುಖಂ ವಾ ಯದಿ ವಾ ದುಃಖಂ ಸ ಯೋಗಿ ಪರಮೋ ಮತಃ" ಗೀತಾ ೬-೩೨. 3. ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು, ಪರಮಾತ್ಮನ ಧ್ಯಾನದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದವನು. "ತ್ವಮೇವ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರಣೀಯ ಇತ್ಯತಃ ಕಿಮಸ್ತಿ ಕಾರ್ಯಂ ಗುರು ಯೋಗಿನಾಮಪಿ" ಮಾಘಂ ೧-೩೧. 4. ಮಾಂತ್ರಿಕ, ಮಾಟಗಾರ. 5. ವಿಷ್ಣು. ಅಘಟಿತಾರ್ಥ ಘಟನರೂಪವಾದ ಪ್ರಭಾವವಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ಯೋಗೋಽಹ-ಘಟಿತಾರ್ಥಸ್ಯ ಘಟನಂ ತೇನ ಸರ್ವದಾ | ಯಸ್ಯಾಸ್ತಿ ನಿಯತಸಂಬಂಧಃ ಸ ಯೋಗಿ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ. "ಭಾರಭೂತ ಕಥಿತೋ ಯೋಗಿ" ವಿಂ ಸಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಿ-ನೀ. 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 2. ಮಾಟಗಾರ್ತಿ, 3. ಧ್ಯಾನಾಸಕ್ತಳಾದ ಹೆಂಗಸು, ಯೋಗಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿದ ಹೆಂಗಸು.

**ಯೋಗೀಶ ಯೋಗೀಶ**, -**ಇಶ್ವರ** -**ಈಶ್ವರ** (ಪುಂ) 1. ಯೋಗಿರಾಜ, ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ಯೋಗಿ, ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ತಪಸ್ವಿ. ಯೋಗಿನಾಮ್ ಇಶಃ ಇಶ್ವರೋ ವಾ. 2. ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕ್ಯಮುನಿ.

**ಯೋಗೀಶ್ವರಿಯೋಗೀಶ್ವರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

**ಯೋಗೇಶ್ವರ ಯೋಗೇಶ್ವರ** (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠ. ಯೋಗಿನಾಮ್ ಇಶ್ವರಃ. "ಯತ್ರ ಯೋಗೇಶ್ವರಃ ಕೃಷ್ಣೋ ಯತ್ರ ಪಾರ್ಥೋ ಭನುರ್ಧರಃ | ತತ್ರ ಶ್ರೀವಿಜಯೋ ಭೂತಿಃ ಧಿವಾ ನಿಯತಿರ್ಮತಿರ್ಮಮ" ಗೀತಾ ೧೮-೭೮. "ಯೋಗೇಶ್ವರೋ ಯುವತಿಮಿಃ ಸಹ ಮೋದಮಾನಃ" ಶಾದಂ ೨೪-೮೭. 2. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. "ನಮಸ್ತೇ ಭಗವನ್ ದೇವ ನಮಸ್ತೇ ಭಕ್ತವತ್ಸಲ | ಯೋಗೇಶ್ವರ ನಮಸ್ತೇಽಸ್ತು ನಮಸ್ತೇ ವಿಶ್ವಸಂಭವ" ಭಾಂ ಅನುಂ. -**ಇಶ್ವರೀ** -**ಈಶ್ವರೀ**. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

**ಯೋಗೇಶ್ವರ ಯೋಗೇಶ್ವರ** (ನಂ) ಸೀಸಲೋಹ. ಯೋಗಾಯ ಯೋಗಾಯ ಇಷ್ಟಮ್. "ನಾಗಸೀಸಕಯೋಗೇಶ್ವರಪ್ರಾಣಿ" ಅಮಂ. **ಯೋಗ್ಯ ಯೋಗ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಪುಷ್ಕ ನಕ್ಷತ್ರ. ಯುಜ್ಯತೇ-ಯಜಿರ್ (ಯೋಗ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪). "ಯೋಗ್ಯಃ ಸಿದ್ಧಿಶ್ಚ ಪುಷ್ಕಃ ಸ್ಥಾತ್" ವೈಜಂ. (ನಂ) 2. ವಾಹನ, ಗಾಡಿ, ರಥ. "ವಾಹನಂ ವಾಹನೋರಣಿ | ಯೋಗ್ಯಂ ಚಾಸ್ಥಿಮ್ ಚಕ್ರಯುತೇ" ವೈಜಂ. 3. ಕ್ಷೀರ, ಹಾಲು. "ಗವ್ಯಂ ಜ್ಯೇಷ್ಠಂ ಮಧುಕ್ಷೀರಂ ಯೋಗ್ಯಮ್" ವೈಜಂ. 4. ಯಂತ್ರ. 5. ಚಂದನ, ಗಂಧ. 6. ಅಪೂಪ, ರೊಟ್ಟಿ. 7. ಅಭ್ಯಾಸ. 8. ಮುದ್ದಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಗಂದಿಗರ ವಸ್ತು. "ಯೋಗ್ಯಮೃದ್ಧಿಃ ಸಿದ್ಧಿಲಕ್ಷ್ಮಯಿ" ಅಮಂ. (ವಿಂ) 9. ನಿಪುಣ, ಸಮರ್ಥ, ಪ್ರವೀಣ. 10. ಶಕ್ತಿ, ಸಮರ್ಥ. 11. ಅರ್ಹನಾದ, ಯುಕ್ತನಾದ, ಒಪ್ಪುವ, ಹೊಂದಿಕೆಯುಳ್ಳ. "ಯೋಗ್ಯೇಶ್ವರಜಙ್ಗಮಃ ನೃಪಜಾಂ ವರೀತುಂ ವೀರೇ-ರನಹಃ ಪ್ರಸಮೇನ ಹರ್ತುಮ್" ನೈಷಂ ೧೦-೩. 12. ಯೋಗಾಭ್ಯಾಸಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದವನು. ಯೋಗಾಯ ಪ್ರಭವತಿ "ಯತ್" (೪-೧-೧೦೨). 13. ಉಪಾಯವನ್ನು ಅರಿತವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಯಾ-ಯಾ. 14. ಅಭ್ಯಾಸ. 15. ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ. 16. ಪುಣ್ಯ. 17. ಭೂಮಿ. "ಯೋಗ್ಯಂ ಕಲೀಬ್ರಹ್ಮಪು-ಯಾನವಂದನಾಮ್ಯಾಸವಾಚಕಮ್ | ಪ್ರವೀಣೋಪಾಯವಚ್ಚಕ್ತಯೋಗಾಹ್-ವ್ಯಪ್ಯಯಂ ತ್ರಿಪು" ನಾನಾರ್ಥಂ. "ಯೋಗ್ಯಃ ಪ್ರವೀಣಯೋಗಾಹ್-ಪಾಯಿಶಕ್ತೇಷು ವಾಚ್ಯವತ್ | ಕಲೀಬ್ರಹ್ಮಧೃಷ್ಣಿ ಪುಷ್ಕೇ ನಾ ಸ್ಯನ್ಯಮ್ಯಾಸಾಕಂಯೋಷಿತೋ" ಮೇದಿಂ. "ಯೋಗ್ಯಾಮ್ಯಾಸಃ ಕ್ಷಮಾ-ಪುಷ್ಕೇ" ವೈಜಂ.

**ಯೋಗ್ಯತಾ ಯೋಗ್ಯತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶಕ್ತಿ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. ಯೋಗ್ಯತಾ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯). "ನ ಯುಕ್ತ-ಯೋಗ್ಯತಾಮಸ್ಯ ಪಶ್ಯಾಮಿ ಸಹ ರಾಕ್ಷಸೇಃ" ರಾಮಾಂ ಬಾಲಂ. 2. ಅರ್ಹತೆ, ಯೋಗ್ಯನಾಗಿರುವಿಕೆ. "ಶರೀರಭಾಜಾಂ ಭವದೀಯದರ್ಶನಂ ವ್ಯನಕ್ತಿ ಕಾಲತ್ರಯೇಽಪಿ ಯೋಗ್ಯತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೨೬. 3. (ತಾರ್ಕಿಕ ಮತದಲ್ಲಿ) ಪದಾರ್ಥಗಳ ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧದ ಅರ್ಹತೆ, ಪದಾರ್ಥಗಳಿಗೆ ಪರಸ್ಪರ ಬಾಧೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ವಾಕ್ಯಾರ್ಥಬೋಧಕ್ಕೆ ಪ್ರಯೋಜಕವಾದ ಶಬ್ದಗಳ ಯೋಗ್ಯತೆ. "ಏಕಪದಾರ್ಥೋಽಪರಪದಾರ್ಥಸಂಸರ್ಗೋ ಯೋಗ್ಯತಾ" ತರ್ಕಕೌಂ. "ಯೋಗ್ಯತಾ ಪದಾರ್ಥಾನಾಂ ಪರಸ್ಪರಸಂಬಂಧೇ ಬಾಧಾಭಾವಃ" ಸಾಂ ದಂ. "ವಹ್ನಿನಾ ಸಿಂಹವತಿ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ವಹ್ನಿಗೆ ಸೇಚನಕರಣತ್ವವು ಬಾಧಿತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ ಶಬ್ದಗಳಿಗೆ ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧದ ಯೋಗ್ಯತೆಯಿಲ್ಲದೆ ಶಾಬ್ದ ಬೋಧವುಂಟಾಗುವುದಿಲ್ಲ.

**ಯೋಜಕ ಯೋಜಕ** (ವಿಂ) 1. ಸೇರಿಸುವವನು, ಎತ್ತುಗಳನ್ನು ನೋಗಕ್ಕೆ ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟುವವನು. ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ)



“ಶ್ಕಲ್” (3-1-133) 1. ಸೇರಿಸುವವನು, ಒಟ್ಟು ಗೂಡಿಸುವವನು. 3. ಉಪಾಯವನ್ನರಿತವನು, ಯುಕ್ತಿ ಮಂಡ. “ಅಮನ್ಮಮಕ್ಷರಂ ನಾಸ್ತಿ ನಾನೌಷಧಿವನಸ್ಪತಿಃ। ಅಯೋಗ್ಯಃ ಪುರುಷೋ ನಾಸ್ತಿ ಯೋಜಕಸ್ತತ್ರ ದುರ್ಮಃ” ।

ಯೋಜನ ಯೋಜನ (ನಂ) 1. ಎತ್ತಿನ ಕತ್ತಿಗೆ ನೋಗವನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟುವುದು. ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114) 2. ಸೇರಿಸುವಿಕೆ, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸುವುದು. 3. ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸುವ ಸಾಧನ, ಸೇರಿಸುವ ಸಲಕರಣೆ. ಯುಜಿರ್ ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-119) 4. ನಾಲ್ಕು ಕ್ರೋಶಗಳ ದೂರದ ಅಳತೆ, ಎಂಟು ಮೈಲಿಗಳ ದೂರ. “ಯೋಜನಾನಿ ಪರಿರಮ್ಭಣೇಜ್ಜತರಂ ರೋಮಹರ್ಷಜಮಪಿ ಸ್ಮ ಬೋಧತಃ” ನೆಪಂ 1-113. “ನ ಯೋಜನವತಂ ದೂರಂ ಬಾಹ್ಯಮಾನಸ್ಯ ತೃಣಯಾ। ಸಂತುಷ್ಟಸ್ಯ ಕರಪ್ರಾಪ್ತೇಷ್ಯಯೇ ಭವತಿ ನಾದರಃ” ಹಿತಂ 1-148. 5. ಪರಮಾತ್ಮ. 6. ಯೋಗ. “ಯೋಜನಂ ಪರಮಾತ್ಮನಿ। ಚತುಷ್ಕೋಶ್ಯಾಂ ಚ ಯೋಗೇ” ಮೇದಿಂ. 7. ಏರ್ಪಾಡು, ವ್ಯವಸ್ಥೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಾ -ನಾ. 8. ವ್ಯಾಕರಣ ನಿಯಮದಂತೆ ವಾಕ್ಯಗಳ ಜೋಡಣೆ.

ಯೋಜನಗನ್ಧಾ ಯೋಜನಗಂಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸತ್ಯವತಿ, ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯ ತಾಯಿ. 2. ಸೀತಾದೇವಿ. 3. ಕಸ್ತೂರಿ. “ಯೋಜನಗನ್ಧಾ ಸೀತಾ ಕಸ್ತೂರಿ ವ್ಯಾಸಮಾತಾ ಚ” ವೇಜಂ. 1.

ಯೋಜನೀಯ ಯೋಜನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸೇರಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. 2. ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ಸೇರಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) ಕರ್ಮದೊ “ಅನೀಯರ್” (3-1-96) 1. “ತವ್ಯಃ” ।  
ಯೋಜಯಿ: ಯೋಜಯಿ.

ಯೋಜಯಿತ್ಯ ಯೋಜಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ನೋಗಕ್ಕೆ ಎತ್ತು ಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟುವವನು. 2. ಸೇರಿಸುವವನು, ಜೊತೆ ಗೂಡಿಸುವವನು. ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) + ಣಿಚ್ “ತೃಚ್” (3-1-133) 1. “ಕನಕಮೃಣಸಂಗ್ರಹಣೋಚಿತೋ ಯದಿ ಮಣಿ-ಸ್ವಪುಣಿ ಪ್ರತಿಬಂಧಯತೇ। ನ ಸ ವಿರೋತಿ ನ ಚಾಪಿ ನ ಶೋಭತೇ ಭವತಿ ಯೋಜಯಿತ್ವಚನೀಯತಾ” ಪಂಚತಂ 1-11. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್” (4-1-4) 1. -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

ಯೋಜಿತ ಯೋಜಿತ (ವಿಂ) 1. ಒಂದು ಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ನೇಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತಃ” (3-2-102) 1. “ಯೋಜಿತೋಽಯ ದ್ವಂದ್ವಶೇತುನಾ ಕ್ಷಾತ-ಕೀರ್ತಿರಮೃತಾಪಹಾರತಃ” ಯಾದಂ 1-10-44. 2. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಂದುಗೂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಯೋಜಿತೋಽದ-ಕರೋ ಯುಯಾತೇ ದ್ವಂದ್ವಾಕ್ಷಾಪದಿಸಾಗಜಸತ್ಯಾ” ಯಾದಂ 2-1-44.

ಯೋತ್ರ ಯೋತ್ರ (ನಂ) ಎತ್ತಿನ ಕತ್ತಿಗೆ ನೋಗವನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟುವ ಮಿಳಿ, -ಹಗ್ಗ. ಯು (ಮಿಶ್ರಣ) “ಫ್ಲನ್” (3-2-142) 1.

ಯೋದ್ಧ ಯೋದ್ಧ (ಪುಂ) ಯುದ್ಧಮಾಡುವವನು, ಕಾದಾಡುವವನು, ಭಟ. ಯುಧ (ಸಂಪ್ರಹಾರ) “ತೃಚ್” (3-1-133) 1. “ಭಗನೇಷಿಭೇ ಸ್ವೇ ಪರಾವರ್ತಯೇ ದೇಹಂ ಯೋದ್ಧಾ ಸಾರ್ಥಂ ವ್ರಿಡಯಾ ಮುಚ್ಛತೇಷುನ್” ಮಾಘಂ 1-14-39.

ಯೋಧ ಯೋಧ (ಪುಂ) 1. ಭಟ, ಬಂಟ, ಯುದ್ಧಮಾಡುವ ಸೈನಿಕ. ಯುಧ (ಸಂಪ್ರಹಾರ) “ಅಚ್” (3-1-134) 1. “ಮನ್ವೋ ಯೋಧ ಇವಾಧೀರಃ ಸರ್ವಾಕ್ಷೈಃ ಸಂವೃತೇರಪಿ” ಮಾಘಂ 2-29. 2. ಯುದ್ಧ, ಕಾಳಗ, ಕದನ. ಯುಧ ಭಾವೇ “ಘಬ್” (3-3-14) 1.

ಯೋಧನ ಯೋಧನ (ಪುಂ) 1. ಸೈನಿಕ, ಭಟ. ಯುಧ (ಸಂಪ್ರಹಾರ) “ಲ್ಯು:” (3-1-134) 1. (ನಂ) 2. ಅಸ್ತ್ರ, ಆಯುಧ. ಯುಧತೇಜೇನ — ಯುಧ ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-119) 1. 3. ಯುದ್ಧದ ಶಬ್ದ. “ಯುಧ್ವಾನೇ ಕ್ಷುದನಯೋಧನೇ” ವೇಜಂ. 4. ಯುದ್ಧ, ಕದನ. ಯುಧ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114) 1.

ಯೋಧಸಂರಾಘ ಯೋಧಸಂರಾಘ (ಪುಂ) ಎರೆಯ ಪರಸ್ಪರ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಅಡ್ಡಾನ ಕೊಡುವುದು.

ಯೋನಿ ಯೋನಿ (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೂಲ, ಕಾರಣ. ಯೋನಿ—ಯು (ಮಿಶ್ರಣ) “ನಿಃ” (3-1-91) 1. “ಶ್ವಪಯೋ ರಾಕ್ಷಸೀ-ಮಾಹುರ್ವಾಚಮುನ್ಮತ್ತದೃಪ್ತಯೋಃ। ಸಾ ಯೋನಿಃ ಸರ್ವವೈರಾಣಾಂ ಸಾ ಹಿ ಲೋಕಸ್ಯ ನಿಷ್ಕೃತಿಃ” ತಂ ರಾಂ 4-29. 2. ಸ್ಥಾನ, ಜಾಗ, ಸ್ಥಳ. 3. ತಾಮ್ರಲೋಹ. 4. ಗಣ. 5. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ. 6. ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನ. “ಯೋನಿಶ್ಚ ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನೇ ಭಗೇಽಪಿ ಚ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 1. “ಯೋನಿಃ ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಮಗಸ್ಥಾನೇ ಕಾರಣೇ ತಾಮ್ರಕೇಽಪ್ಯಪಣ್” ವೇಜಂ. 1. “ಯೋನಿಃ ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸಯೋಶ್ಚ ಸ್ವಾಧಾಕರೇ ಸ್ಮರಮಂದಿರೇ” ಮೇದಿಂ. 1. ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನವು ಎಂಬತ್ತನಾಲ್ಕು ಲಕ್ಷವಿಧ. ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿಯು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. “ಚತುರಸೀತಿ ಲಕ್ಷಾಣಿ ಚತುರ್ಮಂದಾಶ್ಚ ಜಂತವಃ। ಅಂಡಜಾಃ ಸ್ವೇದಜಾಶ್ಚೈವ ತಕ್ಷಿಜಾಶ್ಚ ಜರಾಯುಜಾಃ” 11 ಇವುಗಳಲ್ಲಿ

- (1) ಪಕ್ಷಿ ಸರ್ಪ ಮೊದಲಾದ ಅಂಡಜಗಳು 21 ಲಕ್ಷ ವಿಧ.
- (2) ಕೃಮಿ ನೋಣ ,, ಸ್ವೇದಜಗಳು 21 ಲಕ್ಷ ವಿಧ.
- (3) ಗಿಡ ಮರ ,, ಉದ್ಭಿಜ್ಜಗಳು 21 ಲಕ್ಷ ವಿಧ.
- (4) ಮನುಷ್ಯ ಪಶು ,, ಜರಾಯುಜಗಳು 21 ಲಕ್ಷ ವಿಧ.
7. ಜಲ, ನೀರು. 8. ಉತ್ಪತ್ತಿ ಸ್ಥಾನ. 9. ಪೂರ್ವ ಫಲಗುಣ ನಕ್ಷತ್ರ.



**ಯೋಗ ಯೋಗಿಣಿ** (ವಿಂ) 1. ಜರಾಯುಜ, ಗರ್ಭಕೋಶ ದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಮನುಷ್ಯ ಮತ್ತು ಪಶುಗಳು. 2. ಮೊಟ್ಟೆಯಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಪಕ್ಷಿ ಸರ್ಪ ಮೊದಲಾದವು. ಯೋಗಿಣಿಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತ) “ಙ:” (೩-೨-೧೮) ।

**ಯೋಗಿಣಿರೋಗ** (ಪುಂ) ಸ್ತ್ರೀಯರ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ ದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ವ್ಯಾಧಿ. ಈ ವ್ಯಾಧಿಯು ಹದಿನಾರು ವಿಧ. (1) ತದಾಕ್ಷತಾ (2) ವನ್ಯಾ (3) ವಿಪ್ಲವಾ ವಾತ ದೋಷದಿಂದ 5 ವಿಧ ಪಿತ್ತ ದೋಷದಿಂದ 5 ವಿಧ ಕಫ ದೋಷದಿಂದ 5 ವಿಧ ಮತ್ತು ತ್ರಿದೋಷಗಳಿಂದ 1 ವಿಧ

**ಯೋಗಿಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಂಗಸು. ಯೋಗಿಣಿ — ಯುಗ (ಸೇವಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) । “ಯೋಗಿಣಿ ಸ್ಮರಾಸನ್ನತಾಪಾಙ್ಗಯಾ ಸೇವ್ಯತೇನೇಕಯಾ ಸಂತಾಪಾಙ್ಗಯಾ” ಮಾಘಂ ೪-೪೨ ।

**ಯೋಗಿಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಂಗಸು. ಯುಗ (ಸೇವಾಯಾಮ್) “ಙಿತಿ:” (೩ಂ ೧-೧೭) । “ಅಮ್ಯಮ್: ಕಯಮಪಿ ಯೋಗಿಣಿ ಸಮೂಹ: ತೇರವಿಂನಿಹಿತಕಲ್ಪದಂ ಪ್ರವೇಶೇ” ಮಾಘಂ ೮-೧ । ಹಲಂತವಾದುದರಿಂದ ಯೋಗಿಣಿ ಎಂದೂ ರೂಪವಾಗುವುದು. “ಸ್ತ್ರೀ ವಧೂರ್ಯೋಗಿಣಿ ರಾಮಾ ಮಂಡಯಂತಿ ವಧೂಜನ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಯೋಗಿಣಿಪ್ರಿಯಾ ಯೋಗಿಣಿಪ್ರಿಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರಿಶಿನ. ಯೋಗಿಣಿ: ಪ್ರಿಯಾ ।

**ಯೋಗಿಣಿ** (ಪುಂ) 1. ರಾಜನ ನಮಸ್ಕಾರವಿಧ. (ವಿಂ) 2. ಯೋಗಿಯಿಂದ ಬಂದ, ಉಪಾಯದಿಂದ ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ. | ಯುಕ್ತಿಯಾಗತ: “ಙ್” (೪-೩-೭೪) ।

**ಯೋಗಿಣಿ** (ನಂ) 1. ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ, ಒಂದೇ ಸಮಯದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ. ಅನೇಕ ವಸ್ತುಗಳು ಅಥವಾ ಅನೇಕ ವಿಷಯಗಳು ಏಕಸಮಯದಲ್ಲಿರುವುದು ಯೋಗಿಣಿ ಪದ್ಯ. ಯುಗಪದೋ ಭಾವ: “ಘ್” (೪-೧-೧೨೪) । 2. ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವಿಕೆ. “ಅಯೋಗಿಣಿಜಾಯತೇ” ಭಾಷ್ಯಂ ।

**ಯೋಗಿಣಿ** (ನಂ) ಅವಯವಾರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಪದ. ಅವಯವಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಅರ್ಥಕೊಡುವ ಪದ. ಯೋಗಾತ್ ಪ್ರಕೃತಿಪ್ರತ್ಯಯಾರ್ಥಸಂಬಂಧಾತ್ ಅರ್ಥಪ್ರತಿಪಾದಕಂ ಪದಮ್ । ಯೋಗಾಯ ಪ್ರಭವತಿ — “ಙ್” (೪-೧-೧೦೨) । “ಪಚತಿ” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪ್ರಕೃತಿ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಪಾಕ

ಮಾಡುವವನು ಎಂಬ ಅರ್ಥವುಂಟಾಗುವುದು. “ಯೋಗ-ಲಮ್ಯಾರ್ಥಮಾತ್ರಸ್ಯ ಬೋಧಕಂ ನಾಮ ಯೋಗಿಕಮ್ । ಸಮಾಸಸ್ತದ್ವಿ-ತಾಂತಂ ಚ ಕೃದಂತಃಪ್ರೇತಿ ತತ್ಪ್ರಿಧಾ” ಎಂದು ಯೋಗಿಣಿ ಪದವು ಮೂರು ವಿಧ.

**ಯೋಗಿಣಿ** (ವಿಂ) ಅವಯವಾರ್ಥ ಮತ್ತು ರೂಪಾರ್ಥಗಳನ್ನು ಕೊಡುವ ಪದ. ಯೋಗಿಕಂ ತದ್ವತ್ ಚ । “ಅಶ್ವಗಂಧಾ” ಪದವು ಅಶ್ವಸ್ಯ ಗಂಧೋಽಸ್ಯಾಮ್ ಎಂಬ ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಯಿಂದ ಕುದುರೆಯ ಲಾಯ (ವಾಜಿಶಾಲಾ) ಎಂಬ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುದಾದರೂ ಅಶ್ವ ಪದದ ಸಂಬಂಧದಿಂದ “ಅಶ್ವಗಂಧಾ” ಪದವು ಒಂದು ಔಷಧದಲ್ಲೇ ರೂಪವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಇದು ಯೋಗಿಣಿರೂಪವು. ಇಲ್ಲಿ ಯೋಗಿಣಿ ಮತ್ತು ಸಮುದಾಯಾರ್ಥಗಳಿರಡಕ್ಕೂ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯ.

**ಯೋಗಿಣಿ** (ವಿಂ) ಒಂದು ನೂರು ಯೋಜನದಷ್ಟು ದೂರ ನಡೆಯುವವನು. ಯೋಗಿಣಿ ಗಚ್ಛತಿ “ಙ್” (ವಾಂ ೪-೧-೭೪) ।

**ಯೋಗಿಣಿ** (ವಿಂ) ಒಂದು ಯೋಜನದಷ್ಟು ದೂರ ನಡೆಯುವವನು. ಯೋಗಿಣಿ ಗಚ್ಛತಿ “ಙ್” (೪-೧-೭೪) ।

**ಯೋಗಿಣಿ** (ನಂ) 1. ಮದುವೆಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಗಳು ಮತ್ತು ಅಳಿಯನಿಗೆ ಕೊಡುವ ಧನ, -ಬಳುವಳಿ. ಯುತಯೋ-ವ್ಯವಹಾರಯೋ: ಇದಮ್ “ಙ್” (೪-೩-೧೨೦) । “ಮಾತುಸ್ತು ಯೋಗಿಣಿ ಯತ್ಸ್ಯಾತ್ ಕುಮಾರೀಭಾಗ ಏವ ಸ:” ಮನುಂ ೧-೧೩೧ । (ವಿಂ) 2. ಸ್ವಂತ ಆಸ್ತಿ, ನ್ಯಾಯ ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ ತನ್ನ ಪಾಲಿನ ಆಸ್ತಿ. “ಪಿತ್ರಾದೇ: ಕನ್ಯಯಾಪ್ತೇರ್ಯೇ ಕಲೀ ಸ್ವೀಯೇ ತ್ರಿಷು ಯೋಗಿಣಿಮ್” ವೈಜಂ ।

**ಯೋಗಿಣಿ** (ನಂ) ಒಂದು ಅಳತೆ. ಯು (ಮಿಶ್ರಣ) “ತುನ್” ಬಾಹುಂ । ಯೋಗಿಣಿ: ತಸ್ಯೇದಮ್ “ಙ್” (೪-೩-೧೨೦) ।

**ಯೋಗಿಣಿ** (ನಂ) ಮದುವೆಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಗಳಿಗೆ ಮತ್ತು ಅಳಿಯನಿಗೆ ಕೊಡುವ ಧನ, -ಬಳುವಳಿ. “ಕನ್ಯಾದಾನೇ ತು ಯದ್ವತ್ ಯೋಗಿಣಿ ಯೋಗಿಣಿ ಚ ತತ್” ವೈಜಂ ।

**ಯೋಗಿಣಿ** (ನಂ) ತರುಣಿಯರ ಸಮೂಹ, ಯುವತಿ ಯರ ಗುಂಪು. ಯುವತೀನಾಂ ಸಮೂಹ: “ಙ್” (೪-೨-೩೮) । “ಅವಧೃತ್ಯ ದಿವೋಽಪಿ ಯೋಗಿಣಿ ಸಹಾಧೀವತೀಮಿಮಾಮಹಮ್” ನೆಪಂ ೨-೪೧ ।

**ಯೋಗಿಣಿ** (ನಂ) 1. ತಾರುಣ್ಯ, ಪ್ರಾಯ, ಹದಿನಾರು ವರ್ಷಗಳು ಮೀರಿದ ವಯಸ್ಸು. ಯುನೋ ಭಾವ: “ಙ್” (೪-೧-೧೩೦) । “ವಿಪುಲಕಮಪಿ ಯೋಗಿಣಿವತೀನಾಂ



ಘನಪುಲಕೋದಯಕೋಮಲಂ ಚಕಾಶಂ" ಮಾಘಂ ೭-೭೦. 2. ಯುವತಿಯರ ಸಮೂಹ, ಪ್ರಾಯದ ಹೆಂಗಸರ ಗುಂಪು. "ರಾಜನ್ಯಕಂ ಮಾನುಷ್ಯಕಂ ರಾಜಕಂ ಚ ಪೃಥಕ್ ಪೃಥಕ್. ಗಾರ್ಭಿಣಿಂ ಯೌವನಂ ತಾಸಾಮ್" ವೈಜಂ.

ಯೌವನಲಕ್ಷಣ ಯೌವನಲಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಲಾವಣ್ಯ, ಮೋಹವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಸೌಂದರ್ಯ. ಯೌವನಸ್ಯ ಲಕ್ಷಣಮ್. ಯೌವನಂ ಲಕ್ಷಯತೇನೇನ. 2. ಸ್ತನ, ಕುಚ, ಇವುಗಳ ಅವಿಭಾವವು ಯೌವನದ ಲಕ್ಷಣ. "ಯೌವನಲಕ್ಷಣ-ಮಪ್ಯಾಖ್ಯಾತಂ ಲಾವಣ್ಯಕುಚಯೋಶ್ಚ" ಮೇದಿಂ.

ಯೌವನಾಶ್ರ ಯೌವನಾಶ್ರ (ಪುಂ) ಯೌವನಾಶ್ರ ರಾಜನ ಮಗ, ಮಾಂಧಾತ್ಯ ಚಕ್ರವರ್ತಿ. ಯುವನಾಶ್ರಸ್ಯ ಅಪत्यಮ್ "ಅನ್" (೪-೨-೧೧).

ಯೌವರಾಜ್ಯ ಯೌವರಾಜ್ಯ (ನಂ) ಯೌವರಾಜಪದವಿ, ಯೌವರಾಜನ ಕಾರ್ಯ. ಯುವರಾಜಸ್ಯ ಕರ್ಮ ಭಾವೋ ವಾ "ಽನ್" (೪-೧-೧೨೪). "ಸ ಯೌವರಾಜ್ಯೇ ನವಯೌವನೋದ್ಭವಂ ನಿಧಾಯ ದುಃಶಾಸನಮಿಹಶಾಸನಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೨೨.

ಯೌಷ್ಮಾಕ ಯೌಷ್ಮಾಕ (ವಿಂ) ನಿಮ್ಮ ಸಂಬಂಧವಾದ, ನಿಮ್ಮದಾದ. ಯುಷ್ಮಾಕಮಿದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦). ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫). -ಕೀ -ಕೀ.

ಯೌಷ್ಮಾಕೀಣ ಯೌಷ್ಮಾಕೀಣ (ವಿಂ) ನಿಮ್ಮ ಸಂಬಂಧವಾದ, ನಿಮ್ಮದಾದ. ಯುಷ್ಮಾಕಮಿದಮ್ ಪಕ್ಷೇ "ಅನ್" (೪-೩-೧). ಅಣಿ ಯುಷ್ಮಾಕಾದೇಶಃ (೪-೩-೨).

ಇತಿ "ಯ" ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್.

ರ

ರ ರ ಇದು ಅವರ್ಗೀಯ ವ್ಯಂಜನಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡನೆಯ ವರ್ಣ (ಅಕ್ಷರ). ಈ ವರ್ಣವು ಈಷತ್ಸ್ಪೃಷ್ಠ ಪ್ರಯತ್ನ ದಿಂದ ಮೂರ್ಧಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಅಂತಃಸ್ಥವರ್ಣ. "ಋತುರಣಾಣಾಂ ಮೂರ್ಧಾ" "ಯರಲವಾ ಅಂತಃಸ್ಥಾಃ" "ಈಷತ್ ಸ್ಪೃಷ್ಠಮಂತಃಸ್ಥಾನಾಮ್" ಸಿಂ ಕೌಂ.

ರ ರ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 2. ಉಷ್ಣ, ಬಿಸಿ. 3. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. 4. ವಜ್ರ. 5. ಕ್ಷಯ, ನಾಶ. 6. ಹಸ್ತ, ಕೈ. 7. ಋತು. "ರಃ ಪುಮಾನ್ ಪಾವಕೇ ಕಾಮೇ ಕ್ಷಯೇ ವಜ್ರೇ ಶಯೇ ಋತೌ" ಮೇದಿಂ. 8. ಭಂದಃಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಮಧ್ಯ ಲಘುವುಳ್ಳ ಒಂದು (ರ) ಗಣ. 9. ಧೈರ್ಯ. 10. ಧನ, ಸಂಪತ್ತು. 11. ರಾಜನಿಂದ ಭಯ. 12. ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ. 13. ಹೆಂಗಸು. 14. ಗಾಳಿ, ವಾಯು. (ನಂ) 15. ರಕ್ತ. 16. ಶಿರಸ್ಸು, ತಲೆ. 17. ಧ್ಯಾನ. 18. ಆಕಾಶ, ಗಗನ. 19. ನಕ್ಷತ್ರ. 20. ಉದರ, ಹೊಟ್ಟೆ. 21. ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ. 22. ತ್ಯಾಗ, ದಾನ. 23. ವಕ್ತ್ರ, ಮುಖ. (ವಿಂ) 24. ಬಿಸಿಯಾದ. 25. ವಿರಸವಾದ. "ರಃ ಪುಮಾನ್ ಪಾವಕೇ ಕಾಮೇ ಕ್ಷಯೇ ವಜ್ರೇ ಶಯೇ ಧೃತೌ. ರಂ ಕಲಿಬೇ ಧಿರೇ ಮೃಣಿ ವ್ಯಾನವ್ಯೋಮೋಡುಕ್ಷಿಪು. ವಕ್ತ್ರೇ ಭಯೇ ಚ ತ್ರಿಪು ತು ವಿರಸೇ ಸ್ವಾಗತೀಕ್ಷಣಯೋಃ" ನಾನಾರ್ಥರಂ. (ಪುಂ) 26. ರಾಮ.

27. ಭೂಮಿ. 28. ಇಂದ್ರಿಯ. "ರಶ್ಮಿ ರಾಮೇನಿಲೇ ವಹ್ನಿ ಭೂಮಾವಪಿ ಧನೇಷಿ ಚ. ಇಂದ್ರಿಯೇ" ಹಾರಾಂ.

ರಹಸ್ ರಹಸ್ (ನಂ) ವೇಗ. ರಹಸ್ಯತೇನ — ರಹಿ (ಗತೌ) "ಅಸುನ್" (ತಂ ೪-೨೧೩). "ರೋಷಾವೇಶಾದಾಭಿಮುಖ್ಯೇನ ಕೌಚಿತ್ ಪಾಣಿಗ್ರಾಹಂ ರಹಸ್ಯವೋಪಯಾತೌ" ಮಾಘಂ ೧೮-೧೨.

ರಕ್ತ ರಕ್ತ (ಪುಂ) 1. ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣ. 2. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. 3. ಕುಸುಂಬೆ ಹೂವು. (ನಂ) 4. ರಕ್ತ, ನೆತ್ತರು. ರಜ್ಯತೇ ಸ್ಮ — ರಜ್ಜ (ರಾಗೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ಆದೌ ರಕ್ತಂ ಸೈನಿಕಾನಾಮಜೀವೇಜೀವಿಃ ಪಶ್ಚಾತ್ ಪತ್ರಿಪೂರ್ಣರಪಾಯಿ" ಮಾಘಂ ೧೮-೭೪. 5. ತಾಮ್ರಲೋಹ. "ತಾಮ್ರಂ ಶುಲ್ಕಂ ಮರ್ಕಟಾಸ್ಯ ರಕ್ತಂ ವ್ಯುಷ್ಣಂ ಕನೀಯಸಮ್" ವೈಜಂ. 6. ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣದ ಚಂದನ. 7. ಪ್ರಾಚೀನಾಮಲಕ. 8. ನೀರು ಹಲಸಿನ ಮರ. 9. ಸಿಂಧೂರ. 10. ಸ್ತ್ರೀಯರ ರಜಸ್ಸು, ಹೆಂಗಸರ ಮುಟ್ಟು. "ಋತುಃ ಪುಂಸ್ಯಾರ್ತವಂ ರಕ್ತಮ್" ವೈಜಂ. (ವಿಂ) 11. ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣದ, ಕೆಂಪು ಜಾತಿಯ. "ರಕ್ತಾ-ಶೋಕಲತಾವಿಶೋಷಿತಗುಣಃ ಬಿಂಬಾಪರಾಲತಕಃ" ಮಾಲಂ ೩-೫. 12. ಬಣ್ಣ ಕಟ್ಟಿದ, ಬಣ್ಣದಲ್ಲಿ ಅದ್ದಲ್ಪಟ್ಟ. 13. ಕೆಂಪು ಗಿರುವ. "ಆಭಾತಿ ಬಾಲಾತಪರಕ್ತಸಾನುಃ ಸನಿಶ್ಚಿರೋದ್ವಾರ ಇವಾದ್ರಿರಾಜಃ" ರಘುಂ ೬-೬೦. 14. ಮಧುರವಾದ,



ಇಂಬಾದ. "ಅಕ್ಷಯಾಂತರ್ಮವನಿವಯ: ಪ್ರತ್ಯಹಂ ರಕ್ತಕಣಃ"  
ಮೇಘಂ ೨-೮. 15. ಅನುರಾಗವುಳ್ಳ, ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ.  
16. ಕ್ರೋಡಾಸಕ್ತನಾದ, ಅಟದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದ.

ರಕ್ತಕ ರಕ್ತಕ (ಪುಂ) 1. ಕೆಂಪು ದಾಸಿವಾಳದ ಗಿಡ.  
2. ದೊಡ್ಡ ಗೋರಂಟಿ. 3. ಕೆಂಪು ಬಟ್ಟೆ. (ವಿಂ) 4.  
ಅನುರಾಗವುಳ್ಳ, ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ. "ರಕ್ತಕೋಽಮಲಾನವನ್ಮುಕ  
ರಕ್ತವಸ್ತ್ರಾನುರಾಗಿಣಿ" ಮೇದಿಂ.

ರಕ್ತಕಂದ ರಕ್ತಕಂದ (ಪುಂ) 1. ಈರುಳ್ಳಿ. 2. ಹವಳದ  
ಗಿಡ. ರಕ್ತ: ಕಂದೋಽಸ್ಯ.

ರಕ್ತಕಮಲ ರಕ್ತಕಮಲ (ನಂ) ಕೆಂದಾವರೆ.

ರಕ್ತಕೇಸರ ರಕ್ತಕೇಸರ (ಪುಂ) ಪಾರಿಜಾತ ವೃಕ್ಷ.

ರಕ್ತಕೇರವ ರಕ್ತಕೇರವ (ನಂ) ಕೆಂಪು ನೈದಿಲೆ. ರಕ್ತವರ್ಣ  
ಕೇರವಮ್.

ರಕ್ತಕೋಕನದ ರಕ್ತಕೋಕನದ (ನಂ) ಕೆಂಪು ನೈದಿಲೆ,  
ರಕ್ತೋತ್ಪಲ. ರಕ್ತಂ ಕೋಕನದಮ್.

ರಕ್ತಗಂಧಕ ರಕ್ತಗಂಧಕ (ನಂ) ಬಾಣಂತಿಬೋಳ. ರಕ್ತವರ್ಣ  
ಗಂಧಕಮ್.

ರಕ್ತಜ್ವರ ರಕ್ತಜ್ವರ (ಪುಂ) 1. ಮುಳ್ಳುಮುತ್ತಗದ ಗಿಡ.  
ರಕ್ತಂ ಹಂತಿ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:) "ಠಕ್" (೩-೨-೪೩).  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಜ್ವರ —ಝೇ. 2. ಗರಿಕೆಹುಲ್ಲು.

ರಕ್ತಚೂರ್ಣ ರಕ್ತಚೂರ್ಣ (ನಂ) 1. ಸಿಂಧೂರ. 2. ಕೆಂಪು  
ಬಣ್ಣದ ಪುಡಿ.

ರಕ್ತಜಿಹ್ವ ರಕ್ತಜಿಹ್ವ (ಪುಂ) ಸಿಂಹ.

ರಕ್ತತುಂಡ ರಕ್ತತುಂಡ (ಪುಂ) ಶುಕ, ಗಿಣಿ. ರಕ್ತಂ ತುಂಡಮಸ್ಯ.

ರಕ್ತತೇಜಸ್ ರಕ್ತತೇಜಸ್ (ನಂ) ಮಾಂಸ.

ರಕ್ತತ್ರಿವೃತ್ ರಕ್ತತ್ರಿವೃತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಂಪು ತಿಗಡೆ ಮರ.  
ರಕ್ತಾ ತ್ರಿವೃತ್.

ರಕ್ತದಂತಿಕಾ ರಕ್ತದಂತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ.  
—ದಂತಿ —ದಂತಿ.

ರಕ್ತದೃಶ ರಕ್ತದೃಶ (ಪುಂ) 1. ಕಪೋತ, ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ.  
ರಕ್ತಾ ದೃಶಸ್ಯ. —ದೃಶಿ: —ದೃಶಿ, —ನೇತ್ರ: —ನೇತ್ರ,  
ಇತ್ಯಾದಿ. (ವಿಂ) 2. ಕೆಂಪಾದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ.

ರಕ್ತಧಾತು ರಕ್ತಧಾತು (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಗೈರಿಕ ಧಾತು,  
ಶಿಲಾಜಿತು. ರಕ್ತವರ್ಣಂ ಧಾತು: 2. ತಾಮ್ರಲೋಹ.

ರಕ್ತಪ ರಕ್ತಪ (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ. ರಕ್ತಂ ಪಿಬತಿ — ಪಾ  
(ಪಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩). (ವಿಂ) 2. ರಕ್ತವನ್ನು  
ಕುಡಿಯುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಪಾ —ಪಾ. 3. ಜಿಗಣೆ, ಜಲೂಕೆ.

4. ಡಾಕಿನಿ. "ರಕ್ತಪಾ ಸ್ಯಾಜ್ಜಲೋಕಾಯಾಂ ಡಾಕಿನ್ಯಾಂ ನಾ ತು  
ರಾಕ್ಷಸೇ" ಮೇದಿಂ.

ರಕ್ತಪಲ್ಲವ ರಕ್ತಪಲ್ಲವ (ಪುಂ) ಅಶೋಕವೃಕ್ಷ. ರಕ್ತ:  
ಪಲ್ಲವೋಽಸ್ಯ.

ರಕ್ತಪಾದ ರಕ್ತಪಾದ (ಪುಂ) 1. ಶುಕ, ಗಿಣಿ. 2. ಗಜ,  
ಆನೆ. ರಕ್ತ: ಪಾದೋಽಸ್ಯ. "ರಕ್ತಪಾದೋ ಮತಃಪ್ರಜೇ" ಹೇಮಂ.

ರಕ್ತಪಾಯಿನ್ ರಕ್ತಪಾಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ತಿಗಣೆ. (ವಿಂ)  
2. ರಕ್ತವನ್ನು ಕುಡಿಯುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ರಕ್ತಂ ಪಾತು  
ಶೀಲಮಸ್ಯ — ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಪಿನಿ:" (೩-೨-೪೮).  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಪಾಯಿನಿ —ಪಾಯಿನಿ. 3. ಜಿಗಣೆ, ಜಲೂಕೆ.

ರಕ್ತಪಾರದ ರಕ್ತಪಾರದ (ನಂ) ರಸಸಿಂಧೂರ, ಇಂಗಲಿಣಿ.  
"ವಾರವಂ ತು ಹಿಕ್ಷುಲ: ಸ್ಯಾದ್ವಿಙ್ಗುಲಂ ರಕ್ತಪಾರದಮ್"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ರಕ್ತಪಿತ್ತ ರಕ್ತಪಿತ್ತ (ನಂ) ಒಂದು ರೋಗ, ರಕ್ತದ  
ತಾರುಮಾರು, ಪಿತ್ತವಿಕಾರದಿಂದಂಟಾದ ರಕ್ತದ  
ಅವ್ಯವಸ್ಥೆ, ಮಿತಿಮೀರಿದ ಆತಪಸೇವನೆ, —ವ್ಯಾಯಾಮ,  
—ಶೋಕ, —ದಾಶಿ ನಡೆಯುವಿಕೆ, —ವ್ಯವಾಯು (ಮೈಥುನ,  
ಸಂಭೋಗ) —ತೀಕ್ಷ್ಣ (ಚುರುಕಾದ ಮೆಣಸು ಮುಂತಾ  
ದುದು) —ಉಷ್ಣ (ಬೆಂಕಿಯ ಶಾಖ), —ಕ್ಷಾರ, —ಲವಣ,  
—ಹುಳಿ ಮತ್ತು ಕಹಿ ಇವುಗಳ ಸೇವನೆಯಿಂದ ರಕ್ತವು  
ಶೋಷಿತವಾಗಿ ಪಿತ್ತೋಲ್ಪಣವಾಗಿ "ರಕ್ತಪಿತ್ತ"  
ರೋಗವುಂಟಾಗುವುದು.

ರಕ್ತಪಿತ್ತಹ ರಕ್ತಪಿತ್ತಹ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರಿಕೆಹುಲ್ಲು. ರಕ್ತ-  
ಪಿತ್ತಂ ಹಂತಿ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:) "ಕಿವ್" .

ರಕ್ತಗುಣ ರಕ್ತಗುಣ (ಪುಂ) 1. ದಾಳಿಂಬೆ ಗಿಡ. 2.  
ದಾಸಿವಾಳದ ಗಿಡ. 3. ಪುನ್ನಾಗ ವೃಕ್ಷ, ಸುರಗಿ ಮರ.  
4. ಗಣಿಗಲಿ ಗಿಡ. ರಕ್ತಂ ಗುಣಮಸ್ಯ. —ಗುಣಾ —ಗುಣಾ,  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) 5. ಶಾಲ್ಮಲಿ ವೃಕ್ಷ.

ರಕ್ತಫಲ ರಕ್ತಫಲ (ಪುಂ) 1. ಅಂಜೂರದ ಗಿಡ. 2. ವಟಿ  
ವೃಕ್ಷ, ಆಲದ ಮರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಫಲಾ —ಫಲಾ. 3. ತೊಂಡೆ  
ಗಿಡ. (ನಂ) 4. ತೊಂಡೆಹಣ್ಣು. 5. ಅಂಜೂರದ  
ಹಣ್ಣು. 6. ಆಲದ ಹಣ್ಣು.

ರಕ್ತವಿಜ ರಕ್ತವಿಜ (ಪುಂ) 1. ದಾಳಿಂಬೆ ಗಿಡ. ರಕ್ತ-  
ವರ್ಣಾನಿ ಬಿಜಾನ್ಯಸ್ಯ. 2. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. [ಇವನು  
ಈಶ್ವರನನ್ನು ತಪಸ್ಸಿನಿಂದ ಮೆಚ್ಚಿಸಿ ತನ್ನ ಶರೀರದಿಂದ  
ನೇಲದ ಮೇಲೆ ಬಿದ್ದ ಒಂದೊಂದು ರಕ್ತದ ಬಿಂದುವು  
ಒಬ್ಬೊಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸನಾಗಿ ಹುಟ್ಟುವಂತೆ ವರವನ್ನು ಪಡೆದನು.  
ಶುಂಭ ನಿಶುಂಭ ರಾಕ್ಷಸರು ತ್ರಿಪುರಸುಂದರಿಯೊಡನೆ



ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಬಂದಾಗ ಅವನ ಸಾಹಾಯ್ಯಕ್ಕೆ ಬಂದ ರಕ್ತ ಬೀಜನ ಶರೀರದಿಂದ ಬಿದ್ದ ರಕ್ತಬಿಂದುಗಳೆಲ್ಲವೂ ರಾಕ್ಷಸ ರಾಗುತ್ತಾ ಬರಲು ಜಾಮುಂಡಾಂಬಿಕೆಯು ಅವನ ರಕ್ತ ವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಪಾನಮಾಡುತ್ತ ಅವನ ಶರ್ಮೆಯೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಕುಗ್ಗಿಸುತ್ತ ಬಂದಳು. ಆಗ ತ್ರಿಪುರಸುಂದರಿಯಿಂದ ಹೆತ ನಾದನು.]

ರಕ್ತಮಂಜರ ರಕ್ತಮಂಜರ (ಪುಂ) ನೀರುಹಲಸಿನ ಮರ. ರಕ್ತಾ ಮಂಜರೀ ಅಸ್ಯಸ್ಯಾ: "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭)।

ರಕ್ತರೇಣು ರಕ್ತರೇಣು (ಪುಂ) 1. ಸಿಂಧೂರ. ರಕ್ತಾ ರೇಣವೋ-  
ಸ್ಮಿನ್. 2. ಮುತ್ತಗದ ಹೂವಿನ ಮೊಗ್ಗು. 3. ಪುನ್ನಾಗ  
ವೃಕ್ಷ, ಸುರಗಿ ಮರ. "ರಕ್ತರೇಣುಸ್ತು ಸಿನ್ಧುರೇ ಪಲಾಶಕೋರಕೇ  
ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ।

ರಕ್ತರೇಣುಕಾ ರಕ್ತರೇಣುಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುತ್ತಗದ ಮೊಗ್ಗು.

ರಕ್ತವಾಲುಕಾ ರಕ್ತವಾಲುಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಿಂಧೂರ.

ರಕ್ತಶಾಲಿ ರಕ್ತಶಾಲಿ (ಪುಂ) ಕೆಂಪು ಜಾತಿಯ ಬತ್ತ.

ರಕ್ತಸಂದೇಶಿಕಾ ರಕ್ತಸಂದೇಶಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿಗಣೆ, ಜಲೂಕೆ.  
ರಕ್ತಪಾನಾಯ ಸಮ್ಯಕ್ ದಶತಿ — ದಂಶ (ದಶನೆ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ರಕ್ತಸಂಧ್ಯಕ ರಕ್ತಸಂಧ್ಯಕ (ನಂ) ಕೆಂಪುನೈದಿಲೆ. ರಕ್ತಂ  
ಸಂಧ್ಯೇವ — ಇವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೪-೩-೯೬)।

ರಕ್ತಸರೋಹ ರಕ್ತಸರೋಹ (ನಂ) ಕೆಂದಾವರೆ. ರಕ್ತಂ  
ಸರೋಹಮ್।

ರಕ್ತಸಾರ ರಕ್ತಸಾರ (ಪುಂ) 1. ಕೆಂಪು ಕಗ್ಗಲಿ ಮರ.  
2. ಹುಳಿಹಟ್ಟಿ ಗಿಡ. (ನಂ) 3. ಕೆಂಪು ಚಂದನ.

ರಕ್ತಸೌಗಂಧಿಕ ರಕ್ತಸೌಗಂಧಿಕ (ನಂ) ಕೋಕನದ, ಕೆಂಪು  
ನೈದಿಲೆ. ರಕ್ತವರ್ಣ ಸೌಗಂಧಿಕಮ್।

ರಕ್ತಾ ರಕ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗುಲಗಂಜಿ.

ರಕ್ತಾಕ್ತ ರಕ್ತಾಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೆಂಪು  
ಬಣ್ಣದಲ್ಲಿ ಆದ್ದಲ್ಪಟ್ಟ. ರಕ್ತೇನ ರಕ್ತವರ್ಣೇನ ಅಕ್ತಮ್।  
(ನಂ) 2. ಕೆಂಪು ಚಂದನ.

ರಕ್ತಾಕ್ಷ ರಕ್ತಾಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಕಪೋತ, ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ.  
ರಕ್ತೇ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಅಸ್ಯ। "ಫಚ್" (೪-೪-೧೧೩)। 2.  
ರಾಕ್ಷಸ. 3. ಎಮ್ಮೆ. "ರಕ್ತಾಕ್ಷೋ ರಕ್ತೋಮಹಿಷೋ" ವೇಜಂ।  
4. ಚಕೋರ ಪಕ್ಷಿ. (ವಿಂ) 5. ಕ್ರೂರ, ಕೆಂಗಣ್ಣುಳ್ಳವನು.  
"ರಕ್ತಾಕ್ಷ: ಕಾಸರೇ ಕ್ರೂರೇ ಪಾರಾವತಚಕೋರಯೋ:" ಮೇದಿಂ।  
"ರಕ್ತಾಕ್ಷೋ ರಕ್ತಲೋಚನೇ। ಚಕೋರೇ ಮಹಿಷೇ ಕ್ರೂರೇ ಪಾರಾವತೇ"  
ಹೇಮಂ।

ರಕ್ತಾಕ್ಷ ರಕ್ತಾಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಕುಜ, ಅಂಗಾರಕ. 2.  
ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. 3. ತಿಗಣೆ. 4. ಕಟಲೆಹಿಟ್ಟು ಎಂಬ  
ಔಷಧ. (ಪುಂ) 5. ಎದ್ದುಮ, ಹವಳ. "ರಕ್ತಾಕ್ಷೋ  
ಶೋಮವಿದ್ವಮೋ" ನಾನಾರ್ಥಂ। (ನಂ) 6. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) — ಕ್ಷೀ — ಜ್ಞೇ. ಸೀಹಾಲೆ ಗಿಡ. "ರಕ್ತಾಕ್ಷಸ್ತು  
ಮಹಿಸುತೇ। ಕಮ್ಪಿಲ್ಲೇ ಸ್ತ್ರೀ ತು ಜೀವಂತ್ಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ।

ರಕ್ತಾತಿಸಾರ ರಕ್ತಾತಿಸಾರ (ಪುಂ) ಒಂದು ರೋಗ. ದೇಹ  
ದಿಂದ ರಕ್ತವು ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಹೋಗುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.  
ರಕ್ತಮತ್ಯಂತ ಸರತ್ಯಸ್ಮಾತ್ — ಸ್ (ಗತೌ) "ಫಚ್"  
(೩-೩-೧೨೧)।

ರಕ್ತಾಧಾರ ರಕ್ತಾಧಾರ (ಪುಂ) ಚರ್ಮ. ದೇಹವನ್ನು ಮುಚ್ಚು  
ವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ರಕ್ತಾಮ್ಬರ ರಕ್ತಾಮ್ಬರ (ನಂ) 1. ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣದಲ್ಲಿ ಆದ್ದಿದ  
ವಸ್ತ್ರ. ಕಾಷಾಯ ವಸ್ತ್ರ. ರಕ್ತಂ ರಂಜಿತಮಮ್ಬರಮ್। (ವಿಂ)  
2. ಕಾಷಾಯ ವಸ್ತ್ರವನ್ನು ಧರಿಸಿದ ಯತಿ. ರಕ್ತಮಮ್ಬರಂ  
ಯಸ್ಯ।

ರಕ್ತಾಮ್ಲಾನ ರಕ್ತಾಮ್ಲಾನ (ಪುಂ) ಕೆಂಪು ಗೋರಂಟಿ.

ರಕ್ತಾಶಸ್ ರಕ್ತಾಶಸ್ (ನಂ) ರಕ್ತ ಸೋರುವ ಮೂಲ  
ವ್ಯಾಧಿ.

ರಕ್ತಾಶಯ ರಕ್ತಾಶಯ (ಪುಂ) ದೇಹದಲ್ಲಿ ರಕ್ತವು ಶೇಖರ  
ವಾಗುವ ಸ್ಥಾನ.

ರಕ್ತಿ ರಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನುರಾಗ, ಪ್ರೀತಿ, ಪ್ರೇಮ.  
2. ಸಂತೋಷ.

ರಕ್ತೋತ್ಪಲ ರಕ್ತೋತ್ಪಲ (ನಂ) ಕೋಕನದ, ಕೆಂಪು ನೈದಿಲೆ.  
ರಕ್ತಂ ಚ ತತ್ ಉತ್ಪಲಂ ಚ।

ರಕ್ತೋಪಲ ರಕ್ತೋಪಲ (ಪುಂ) ಕೆಂಪು ಶಿಲೆ, ಒಂದು ಗೃಹ  
ಧಾತು. ರಕ್ತ ಉಪಲ:।

ರಕ್ಷ:ಸಂಭ ರಕ್ಷ:ಸಂಭ (ನಂ) ರಾಕ್ಷಸರ ಸಭೆ. ರಕ್ಷಸಾಂ ಸಮಾ।  
ನಪುಂಸಕತ್ವಮ್ (೨-೪-೨೩)।

ರಕ್ಷಕ ರಕ್ಷಕ (ವಿಂ) 1. ರಕ್ಷಿಸುವವನು, ಕಾಪಾಡುವವನು.  
ರಕ್ಷತಿ — ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।  
2. ಕಾವಲುಗಾರ.

ರಕ್ಷಣ ರಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ರಕ್ಷಿಸುವುದು, ಕಾಪಾಡುವುದು.  
ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಪ್ರಜಾನಾಂ  
ವಿನಯಾಧಾನಾದ್ರಕ್ಷಣಾದ್ಭರಣಾದಪಿ" ರಘುಂ ೧-೨೪। 2.  
ಕಾಯುವುದು, ಕಾವಲು.

ರಕ್ಷಣಾರಕ ರಕ್ಷಣಾರಕ (ಪುಂ) ಮೂತ್ರ ರೋಗ.



ರಕ್ಷಣೀಯ ರಕ್ಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವವನು. 2. ರಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದವನು. 3. ರಕ್ಷಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದವನು. ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) । ರಕ್ಷಿತವ್ಯ: ರಕ್ಷಿತವ್ಯಃ. "ರಕ್ಷಣೀಯೇನ ಸತತಂ ಬಾಲೇನಾಜಾನುವರ್ತಿನಾ" ವೇಣೀಂ ೪-೭ ।

ರಕ್ಷತ್ ರಕ್ಷತ್ (ವಿಂ) ಕಾಪಾಡುತ್ತಿರುವ. ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ರಕ್ಷನ್ ಧರ್ಮೇಣ ಭೂತಾನಿ ರಾಜಾ ವಚ್ಯಾಂಶ್ಚ ಧಾತಯನ್" ಮನುಂ ೮-೩೦೬ । ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಂತಿ-೨೭.

ರಕ್ಷಸ್ ರಕ್ಷಸ್ (ನಂ) ರಾಕ್ಷಸ. ರಕ್ಷಂತ್ಯಸ್ಮಾದ್ವಿ: — ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಅಸುನ್" (೩-೪-೧೮೯) । "ಸ ರಾವಣೋ ನಾಮ ನಿಕಾಮಭಿಷಣಂ ಬಭೂವ ರಕ್ಷ: ಕ್ಷತರಕ್ಷಣಂ ದಿವ:" ಮಾಘಂ ೧-೪೮ ।

ರಕ್ಷಾ ರಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಕ್ಷಣೆ, ಕಾಪಾಡುವುದು. ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಅ:" (೩-೩-೧೦೩) । "ರಕ್ಷಾಪದೇಶಾನ್ಮುನಿಹೋಮ-ಧೇನೋರ್ವನ್ಯಾನ್ ವಿನೇಷ್ಯನ್ನಿವ ದುಷ್ಟಸತ್ತ್ವಾನ್" ರಘುಂ ೨-೮ । 2. ಕಾವಲು, ಕಾಯುವುದು. 3. ಭಸ್ಮ, ವಿಭೂತಿ, "ಸ್ತ್ರಿಯಾ ರಕ್ಷಾ ವಿಭೂತಿ: ಸ್ಯಾತ್" ಕಲ್ಪದ್ರುಂ । 4. ಅರಗು, ಯಾವಕೆ. "ರಕ್ಷಾ ಜತುರಕ್ಷಣಯೋ:" ಮೇದಿಂ । 5. ಯಂತ್ರ, ಕಾಪು. "ಅಹೋ ರಕ್ಷಾಕರಣಡಕಮಸ್ಯ ಮಣಿಬಂಧೇ ನ ದೃಶ್ಯತೇ" ಶಾಕುಂ ೭ । 6. ಕಂಕಣ. (ಯಾವ ವಿಧವಾದ ಕೆಡಕೂ ಉಂಟಾಗದಂತೆ ಧರಿಸುವ) ಮಂತ್ರಿಸಿದ ಒಂದು ರಕ್ಷಣೆಯ ಸಾಧನ.

ರಕ್ಷಾಕರಣಡಕ ರಕ್ಷಾಕರಣಡಕ (ನಂ) ಮಂತ್ರಿಸಿದ ಯಂತ್ರ ವನ್ನಿಡುವ ಒಂದು ತಾಯಿತಿ, ಯಂತ್ರವು ಭದ್ರವಾಗಿರಲು ಅದನ್ನು ಇಡುವ ಡಬ್ಬಿ.

ರಕ್ಷಾಗೃಹ ರಕ್ಷಾಗೃಹ (ನಂ) ಪ್ರಸವ ಗೃಹ, ಸೂತಿಕಾ ಗೃಹ, ಶಿಶು ಬಾಣಂತಿಯರು ಸುಖ ಮತ್ತು ಕ್ಷೇಮದಿಂದಿರುವುದ ಕ್ಕಾಗಿ ಯಂತ್ರ ಮಂತ್ರಾದಿಗಳಿಂದ ಸುರಕ್ಷಿತವಾದ ಗೃಹ. "ರಕ್ಷಾಗೃಹಗತಾ ದೀಪಾ: ಪ್ರತ್ಯಾದಿಷ್ಟಾ ಇವಾಭವನ್" ರಘುಂ ೧೦-೬೮ ।

ರಕ್ಷಾಪುರ ರಕ್ಷಾಪುರ (ಪುಂ) 1. ಕಾವಲುಗಾರ, ಪಹರೆಯವನು. 2. ಪೋಲಿಸಿನವನು.

ರಕ್ಷಾಪ್ರದೀಪ ರಕ್ಷಾಪ್ರದೀಪ (ಪುಂ) ಭೂತಾದಿಗಳ ಭಯ ನಿವಾರಣೆಗಾಗಿ ಇಡುವ ದೀಪ.

ರಕ್ಷಾಬಂಧನ ರಕ್ಷಾಬಂಧನ (ನಂ) ಕೈಗೆ ಕಂಕಣವನ್ನು ಕಟ್ಟುವುದು, ಯಾವ ವಿಧವಾದ ತೊಂದರೆಯೂ ಆಗದಂತೆ ಕೈಗೆ ಮಂತ್ರಿಸಿದ ಸೂತ್ರವನ್ನು ಕಟ್ಟುವುದು.

ರಕ್ಷಿಕ ರಕ್ಷಿಕ (ಪುಂ) 1. ಪೋಲಿಸಿನವನು. 2. ಕಾವಲುಗಾರ, ಪಹರೆಯವನು.

ರಕ್ಷಿತ ರಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) 1. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಾಪಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । "ರಾಕ್ಷಸೀಮಕೃತ ರಕ್ಷಿತಪ್ರಜಸ್ತೇಜಸಾಧಿಕವಿಭಿಷಣಾಂ ಪುರೀಮ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೫೧ । 2. ಕಾಯಲ್ಪಟ್ಟ.

ರಕ್ಷಿತು ರಕ್ಷಿತು (ವಿಂ) 1. ಕಾಪಾಡುವವನು, ರಕ್ಷಣೆ ಕೊಡುವವನು. ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ತೃವ್" (೩-೧-೧೩೩) । "ರಕ್ಷಿತಾರಮಿತಿ ತತ್ರ ಕರ್ಮಣಿ ನ್ಯಸ್ಯ ದುಷ್ಟದಮನಕ್ಷಮಂ ಹರಿಮ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೫೧ । 2. ಕಾವಲುಗಾರ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) । -ತ್ರಿ-೨೭.

ರಕ್ಷಿನ್ ರಕ್ಷಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಕಾಪಾಡುವವನು. ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಗಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) । "ನಿಪೀಯ ಯಸ್ಯ ಕ್ಷಿತೀರಕ್ಷಿಣ: ಕಥಾಸ್ತಥಾದ್ರಿಯಂತೇ ನ ಬುಧಾ: ಸುಧಾಮಪಿ" ನೈಷಂ ೧-೧ । 2. ಕಾವಲುಗಾರ, ಪಹರೆಯವನು. "ರಕ್ಷಿಲಕ್ಷವೃತತ್ವೇನ ಬಾಧತಂ ನ ತಪೋವನೇ:" ನೈಷಂ ೧೭-೨೦೯ ।

ರಕ್ಷಿವರ್ಗ ರಕ್ಷಿವರ್ಗ (ಪುಂ) ಅಂಗರಕ್ಷಕ ಸೇನೆ, ಮೈಗಾವಲಿನ ಪಡೆ. ರಕ್ಷಿಣಾಂ ವರ್ಗ: ।

ರಕ್ಷೋಘನ ರಕ್ಷೋಘನ (ಪುಂ) 1. ಬಿಳಿಯ ಸಾಸುವೆ. ರಕ್ಷೋ ಹಂತಿ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:) "ಡಕ್" (೩-೨-೫೩) । "ತ್ರಿಷ್ಟುಮಭ್ರಾತ್ರರಕ್ಷೋಘನಾಕ್ಷಾಠ: ಸಿದ್ಧಾರ್ಥತೊಡಕೋ" ವೈಜಂ । 2. ಗೇರುಮರ. "ಅಶೋಹಿತಸ್ತು ರಕ್ಷೋಘನೋ ಭಲ್ಲಾತಕಯಥ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । (ನಂ) 3. ಅಕ್ಕಿಯ ಗಂಜಿ, ಅಂಬಲಿ. "ಕಾಞ್ಜಿಕಂ ತು ತುಪೊದಕಮ್ । ಗೃಹಾಮ್ಲಂ ಸಿದ್ಧಸಲಿಲಂ ರಕ್ಷೋಘನಂ ಛಾತುನಾಶನಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 4. ಹಿಂಗು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಙ್ತೀ-೫೭. 5. ಬಜೆ.

ರಕ್ಷಣ ರಕ್ಷಣ (ಪುಂ) ರಕ್ಷಣೆ, ಕಾಪಾಡುವಿಕೆ. ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ನಡ್" (೩-೩-೯೦) । "ರಕ್ಷಣಸ್ತ್ರಾಣೇ ರಣ: ಕವಣೇ" ಅಮಂ ।

ರಕ್ಷ್ಯ ರಕ್ಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕಾಪಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಕಾಪಾಡಬೇಕಾದ. 3. ಕಾಯಲ್ಪಡುವ. 4. ಕಾಯಬೇಕಾದ. ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಪ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) ।

ರಕ್ಷು ರಕ್ಷು (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯವಂಶದ ದಿಲೀಪರಾಜನ ಮಗ, ಅಜಮಹಾರಾಜನ ತಂದೆ. ಲಘಿ (ಗತೌ) "ಕ್ರು:" (೩-೧-೨೯) । ಲಘು । ರಸ್ಯ ವಾ "ಲ:" (೩-೧-೨೯) । ಸಕಲ ಶಬ್ದಾರ್ಥಭಿಜ್ಞನಾದ ದಿಲೀಪ ಮಹಾರಾಜನು ಲಘಿ ಧಾತುವಿನ ಅರ್ಥವನ್ನು ಯೋಚಿಸಿ ತನ್ನ ಕುಮಾರನು ಸಕಲ ಶಾಸ್ತ್ರಪಾರಂಗತನೂ ಶತ್ರುಗಳನ್ನು



ಭೇದಿಸಿಕೊಂಡು ಪಾರವನ್ನು ಮುಟ್ಟಲು ಸಮರ್ಥನೂ ಆಗುವನೆಂದು ತಿಳಿದು ಅವನಿಗೆ "ರಘು" ಎಂದು ನಾಮಕರಣ ಮಾಡಿದನು. "ಶ್ರುತಸ್ಯ ಯಾಥಾದಯಮಂತಮರ್ಹಕ-  
ಸ್ತಥಾ ಪರೇಷಾಂ ಯುಷಿ ಚೇತಿ ಪಾರ್ಥಿವಃ | ಅವೇಕ್ಷ್ಯ ಧಾತೋಗಮನಾಥ-  
ಮರ್ಯವಿಚ್ಛಕಾರ ನಾಮ್ನಾ ರಘುಮಾತ್ಮಸಂಭವಮ್" ರಘುಂ ೩-೨೧ |  
ಇದಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ ರಘುಮಹಾರಾಜನು ದಿಗ್ವಿಜಯ ಕಾಂಕ್ಷೆ ಹೊರಟು ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನಿಂದ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ಎಲ್ಲಾ ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲೂ ರಾಜರನ್ನು ಗೆದ್ದು ಕೀರ್ತಿಪತಾಕೆಯನ್ನು ಹಾರಿಸಿ ಜಯಸ್ತಂಭಗಳನ್ನು ನೆಡಿಸಿ ರಾಜಧಾನಿಗೆ ಹಿಂತಿರುಗಿ "ವಿಶ್ವಜಿತ" ಎಂಬ ಯೋಗವನ್ನು ನೆಡೆಸಿದನು. "ಸ  
ಗುಪ್ತಮೂಲಪ್ರತ್ಯಂತಃ ಶುದ್ಧಪಾರ್ಣಿರಯಾನ್ವಿತಃ | ಷಡ್ವಿಧಂ ಬಲಮಾ-  
ದಾಯ ಪ್ರತಸ್ತೇ ದಿಗ್ವಿಜಯಿಷಯಾ | ಸ ಯಯೌ ಪ್ರಥಮಂ ಪ್ರಾಚೀಂ ತುಲ್ಯಃ  
ಪ್ರಾಚೀನಬಾಹಿಣಿ | ಅಹಿತಾನನಿಲೋದ್ಭುತಃ ತರ್ಜಯನ್ನಿವ ಕೇತುಮಿಃ" ರಘುಂ ೪-೨೬, ೨೮ | (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ರಘುವಂಶದ ದೊರೆಗಳು. ರಘೋಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಮ್ "ಅಘ್" (೪-೧-೧೬೬) | ಅಘೋ ಲುಕ್ (೨-೪-೬೨) | 3. ರಘುವಂಶ ಮಹಾಕಾವ್ಯ. ರಘುಮಹಿಮಾ ಕೃತೋ ಗ್ರಂಥಃ "ಅಘ್" (೪-೩-೮೭) | ಲುಕ್ (ವಾಂ ೪-೨-೬೦) |

ರಘುಕಾರ ರಘುಕಾರ (ಪುಂ) ರಘುವಂಶ ಮಹಾಕಾವ್ಯವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಕಾವ್ಯದಾಸ ಕವಿ. "ರಘುಕಾರಃ ಕಾಲಿದಾಸೋ ಮೇಘ-  
ಕರ್ದಶ್ಚ ಕೋಟಿಜಿತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ರಘುನಂದನ ರಘುನಂದನ (ಪುಂ) ಶ್ರೀರಾಮ, ದಶರಥ ಮಹಾರಾಜನ ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಪುತ್ರ. ರಘು ನಂದಯತಿ ರಘುವಂಶ-  
ಪ್ರಭವಾನ್ ಸಂತೋಷಯತಿ—ಠ ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) |

ರಘುನಾಥ ರಘುನಾಥ, —ಕುಲನಾಥ —ಕುಲನಾಥ (ಪುಂ) ಶ್ರೀರಾಮ. ರಘುಣಾ ರಘುಕುಲಸ್ಯ ವಾ ನಾಥಃ | "ಅಯ  
ರಘುಕುಲನಾಥೋ ಮವ್ಯಮಾಮ್ಬಾನಿಯೋಗಾತ್" ಚಂ ರಾಂ | "ರಘು-  
ನಾಥೋಽಪ್ಯಗಸ್ಯೇನ ಮಾರ್ಗಸಂದರ್ಶಿತಾತ್ಮನಾ" ರಘುಂ ೧೫-೫೪ |

ರಘುಪತಿ ರಘುಪತಿ (ಪುಂ) ಶ್ರೀರಾಮ. ರಘುಣಾಂ ಪತಿಃ |

ರಘುವಂಶ ರಘುವಂಶ (ಪುಂ) 1. ರಘುಮಹಾರಾಜನ ವಂಶ, —ಸಂತತಿ, —ಪೀಠಿಕೆ. ರಘುಣಾಂ ವಂಶಃ ಸಂತತಿಃ | (ನಂ) 2. ಕಾವ್ಯದಾಸ ಮಹಾಕವಿಯಿಂದ ವಿರಚಿತವಾದ ಒಂದು ಮಹಾಕಾವ್ಯ. ರಘುವಂಶಮಹಿಮಾ ಕೃತೋ ಗ್ರಂಥಃ "ಅಘ್" (೪-೩-೮೭) | ಅಘೋ ಲುಕ್ (ವಾಂ ೪-೨-೬೦) | ಕಾವ್ಯ ವಿಶೇಷಣವಾದುದರಿಂದ ನಪುಂಸಕತ್ವ.

ರಘುವಂಶತೀತಕ ರಘುವಂಶತೀತಕ, —ಪ್ರದೀಪ —ಪ್ರದೀಪ (ಪುಂ) ರಘುವಂಶಕ್ಕೆ ತೀತಕಪ್ರಾಯವೂ ದೀಪಪ್ರಾಯವೂ

ಆದ ಶ್ರೀರಾಮ. "ಜಯತಿ ರಘುವಂಶತೀತಕಃ ಕೌಸಲ್ಯಾ-  
ನಂದವರ್ಧನೋ ರಾಮಃ" ರಾಮಾಂ |

ರಘುವರ ರಘುವರ, —ಶ್ರೇಷ್ಠ —ಶ್ರೇಷ್ಠ (ಪುಂ) ರಘುವಿನ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ಶ್ರೀರಾಮ.

ರಘುವಹ ರಘುವಹ (ಪುಂ) ಶ್ರೀರಾಮ. ರಘುಣಾಮುಹಹಃ |

ರಙ್ಗ ರಂಕ (ಪುಂ) 1. ದೀನ, ಬಡವ, ಹಸಿದಿರುವವನು. ರಕಿ (ಗತೌ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಆತ್ಮಸ್ನಾತ್ವಾ-  
ನ್ವನೇತ್ರಃ ಪ್ರಕಟಿತದಶನಃ ಪ್ರೇತರಙ್ಗಃ ಕರಣ್ಣಾತ್" ಮಾಲತೀಂ ೫-೧೬ | (ವಿಂ) 2. ನಿಧಾನವಾದ, ಮಂದವಾದ, ಅಲಸ್ಯ ದಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ರಙ್ಗಃ ಕೃಪಣಮಂದಯೋಃ" ಮೇದಿಂ | 3. ಕೃಪಣ, ಲೋಭಿ. "ರಙ್ಗಸ್ಯ ನೃಪತೇರ್ವಾಪಿ ಜಿಹ್ವಾಸೌಖ್ಯಂ ಸಮಂ ಸ್ಮೃತಮ್" ಪञ्ಚತಂ ೧-೨೭೭ |

ರಙ್ಗು ರಂಕು (ಪುಂ) ಹರಿಣ, ಜಿಂಕೆ, ಚಿಗರಿ. ರಮತೇ —ರಮ (ಕೌಡಾಯಾಮ್) "ಕ್ರುಃ" (೩ಂ ೧-೩೭) | "ಬಹುರೂಪಕಸಾಲ-  
ಭಜ್ಜಿಕಾಮುಖಚಂದ್ರೇಷು ಕಲಹ್ಲರಙ್ಗವಃ" ನೈಷಂ ೨-೮೩ |

ರಙ್ಗ ರಂಗ (ಪುಂ) 1. ರಂಗಭೂಮಿ, ಅಭಿನಯ ಸ್ಥಳ, ನೃತ್ಯ ಸ್ಥಾನ. ರಂಜಯೇತ್ —ರಂಜ (ರಾಗೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧) | "ಯನ್ನಾಡಯವಸ್ತುನಃ ಪೂರ್ವಂ ರಙ್ಗವಿಘ್ನೋಪಶಾಂತಯೇ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೨ | 2. ರಂಗಭೂಮಿಯಲ್ಲಿರುವ ಪ್ರೇಕ್ಷಕರ ಸಮೂಹ, —ಸಾಮಾಜಿಕರ ಗುಂಪು. "ರಙ್ಗಂ ಪ್ರಸಾದ ಮಧುರಃ ಶ್ಲೋಕಃ ಕಾವ್ಯಾರ್ಥಸೂಚಕಃ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೮ | 3. ಯುದ್ಧ ಭೂಮಿ. ರಂಜತಿ ಆಸಂಜ್ಜತಿ ಯೋಜಯೇತ್ —ರಂಜ (ರಾಗೇ) ಅಧಿಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧) | "ವೃಣ್ಣಿಣಾಂ ಪರದೇವತೇತಿ ವಿದಿತೋ ರಙ್ಗಂ ಗತಃ ಸಾಗ್ರಜಃ" ಭಾಗಂ ೧೦-೪೩-೧೭ | 4. ನೃತ್ಯ, ನರ್ತನ. "ರಙ್ಗೋಪಜೀವಿ ಕೇವಲಃ ಕುಂಡಾಶೀ ಗರದಸ್ತಥಾ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ | 5. ಬಣ್ಣ. 6. ಅನುರಾಗ. 7. ಯುದ್ಧಃ (ಪುನಂ) 8. ತವರ. "ರಙ್ಗೋ ನಾ ರಾಗೇ ನೃತ್ಯೇ ರಂಜಿತೌ | ಅಸ್ತ್ರೀ ತ್ರಪುಣಿ" ಮೇದಿಂ | 9. ಸೀಸಲೋಹ. "ತೃಪು ನಾಗಂ ಚೀನಪಟಂ ರಙ್ಗಮಪ್ಯಯ ಪಿಚ್ಛಡಮ್ | ರಙ್ಗಂ ವಜ್ರಂ ತೃಪು ಕೋಮ್ಯಮ್" ವೈಜಂ | (ವಿಂ) 10. ದುರ್ಜನ, ದುಷ್ಕ. "ನೃತ್ಯೇ ರಣೇ ಖಲೇ ರಾಗೇ ರಙ್ಗಃ ಕಲೀಕೇ ತೃಪುಣಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | "ರಙ್ಗಂ ತೃಪುಣಿ ರಙ್ಗೋ ನಾ ರಾಗೇ ನೃತ್ಯಸ್ಥಲೇ ರಣೇ" ನಾನಾರ್ಥರಂ |

ರಙ್ಗಕಾರ ರಂಗಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಬಣ್ಣ ಬಳಿಯುವವನು. 2. ಚಿತ್ರಕಾರ.

ರಙ್ಗಚರ ರಂಗಚರ (ಪುಂ) 1. ನಟ, — ರಂಗಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವವನು. 2. ಭಟ, ಯೋಧ, ಯುದ್ಧ ಭೂಮಿ ಯಲ್ಲಿ ಓಡಾಡುವವನು. ರಂಜೇ ಚರತಿ —ಚರ (ಗತೌ) "ಠಃ" (೩-೨-೧೬) |



ರಜ್ಜ ರಂಗಜ (ನಂ) ಸಿದ್ಧಾರ, ಚಂದ್ರ, ಒಂದು ಗೃಹ ಧಾತು.

ರಜ್ಜಜೀವಕ ರಂಗಜೀವಕ (ಪುಂ) 1. ನಟ, ರಂಗಸ್ಥಾನದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು, ನಾಟ್ಯದಿಂದ ಜೀವನ ನಡೆಸುವವನು. 2. ಚಿತ್ರಕಾರ, ಚಿತ್ರ ಬರೆದು ಜೀವನ ನಡೆಸುವವನು. 3. ಬಣ್ಣ ಬಳಿದು ಜೀವಿಸುವವನು. ರಜ್ಜೇಣ ಜೀವತಿ—ಜೀವ (ಪ್ರಾಣವಾರಣ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ರಜ್ಜದ ರಂಗದ (ಪುಂ) 1. ಟಂಕೆ, ಬಿಳಿಗಾರ. 2. ಖದಿರ ರಸ, ಕಗ್ಗಲಿಮರದ ಸಾರ. ರಜ್ಜೇ ಛತಿ—ಶೋ (ಅವಲಗಡನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩)।

ರಜ್ಜಪತ್ನಿ ರಂಗಪತ್ನೀ, -ಪುಷ್ಪಿ -ಪುಷ್ಪೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀಲಿ ಗಿಡ.

ರಜ್ಜಬೀಜ ರಂಗಬೀಜ (ನಂ) ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ. ರಜ್ಜ ಬೀಜಮುತ್ಪತ್ತಿಕಾರಣಮಸ್ಯ। "ಝಪ್ಪೇವೇತಂ ರಜ್ಜಬೀಜಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ರಜ್ಜಭೂಮಿ ರಂಗಭೂಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಾಟ್ಯಸ್ಥಳ, ಅಭಿನಯ ಸ್ಥಾನ. 2. ಯುದ್ಧಕ್ಷೇತ್ರ. ರಜ್ಜಸ್ಯ ಭೂಮಿಃ।

ರಜ್ಜಮಂಡಪ ರಂಗಮಂಡಪ (ಪುಂ) ನಾಟ್ಯಶಾಲೆ, ಅಭಿನಯ ಸ್ಥಾನ, ರಂಗಭೂಮಿ.

ರಜ್ಜಮಾತು ರಂಗಮಾತು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅರಗು, ಲಾಕ್ಷಿ. 2. ಕುಟ್ಟಿನಿ, ತಲೆಹಿಡಕೆ. 3. ಮರಗಳಿಗೆ ಬರುವ ಒಂದು ರೋಗ. "ರಜ್ಜಮಾತಾ ತ ಕುಡ್ಡನ್ಯಾ ವೃಕ್ಷರೋಗಾಂತರೇ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ।

ರಜ್ಜಶಾಲಾ ರಂಗಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾಟ್ಯಶಾಲೆ, ಅಭಿನಯ ಸ್ಥಾನ.

ರಜ್ಜಾಜೀವ ರಂಗಾಜೀವ (ಪುಂ) 1. ಚಿತ್ರಕಾರ. 2. ಬಣ್ಣ ಬಳಿಯುವವನು. ರಜ್ಜಾಜೀವೋ ಜೀವನೋಪಾಯೋ ಯಸ್ಯ। "ರಜ್ಜಾಜೀವಸ್ತು ಚಿತ್ರಕೃತ್" ವೈಜಂ। 3. ನಟ, ಅಭಿನಯ ದಿಂದ ಜೀವನ ನಡೆಸುವವನು. "ರಜ್ಜಾಜೀವಸ್ತು ಚಿತ್ರಕೃತ್" ವೈಜಂ। "ಶಿಲಾಲಿ ಭರತೋ ನಟಃ। ರಜ್ಜಾಜೀವೋ ನೃತುನಪ್ರಃ" ವೈಜಂ।

ರಜ್ಜಾವತಾರಿನ್ ರಂಗಾವತಾರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ನಟ, ವೇಷ ಧರಿಸಿ (ಅಭಿನಯಕ್ಕಾಗಿ) ರಂಗಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ಒಂದು ನಿಲ್ಲುವವನು. ರಜ್ಜಾವತರತಿ — ಅವ + ತ (ಪಲವನತರಣಯೋಃ) "ಜಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)। "ರಜ್ಜಾಜೀವೋ ನೃತುನಪ್ರೋ ನೃಪೋ ರಜ್ಜಾವತಾರ್ಯಪಿ" ವೈಜಂ। 2. ರುದ್ರನ ಪಾತ್ರವನ್ನು ವಹಿಸುವ ನಟ. "ನರತಂಕೋ ಭೂಮಿಕಾಂ ಪ್ರಾಪ್ತೋ ದೇವಾನಾಮರ್ಷ-ಮಾನುಷಃ। ರಜ್ಜಾವತಾರೀ ರುದ್ರಸ್ಯ" ವೈಜಂ।

ರಚನಾ ರಚನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾರ್ಯ, ಕೆಲಸ. ರಚ (ಪ್ರತಿಯತನೆ) + ಣಿಚ್ "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭)। "ಸತ್ಮಜ್ಜಲೋಪ-ಚಾರಾಣಾಂ ಸೇವಾದಿರಚನಾಮವತ್" ರಘುಂ ೧೦-೭೭। 2. ಏರ್ಪಾಡು, ವ್ಯವಸ್ಥೆ. 3. ಉದ್ಯಮ, ಪ್ರಯತ್ನ. "ದೇವಾ-ಹುತಾರ್ಥರಚನಾ ಕೃಷಯೋಽಪಿ ದೇವ ಯುಷ್ಮತ್ಪ್ರಸಜ್ಜವಿಮುಕ್ತಾ ಇಹ ಸಂಸರಂತಿ" ಭಾಗಂ ೩-೯-೧೦। 4. ರಚಿಸುವುದು, ತಯಾರಿಸುವುದು. "ಕುಸುಮಾನ್ಯಾದಾಯ ವಿದಗ್ಧರಚನಾಮನೋಹರಾಂ ಸಜಮಮಿನಿರ್ಮಾತುಮಾರಬ್ಧವಾನ್" ಮಾಲತೀಂ ೧। 5. ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಬರೆಯುವುದು, ಪ್ರಬಂಧ ತಯಾರಿಸುವುದು. "ಅನ್ಯನಂ ಗ್ರಂಥನಂ ಗುಪ್ತಃ ಸಂದರ್ಶೋ ರಚನಾ ನ ನಾ" ವೈಜಂ। 6. ತಯಾರಿಸುವುದು, ಅಸಾಧಾರಣಚಮತ್ಕಾರಜನಕವಾದ ನಿರ್ಮಾಣ. "ಅಸಾಧಾರಣಚಮತ್ಕಾರಕಾರಿಣಿ ರಚನಾ ಹಿ ನಿರ್ಮಿತಿಃ" ಅಲಂ ಕೌಸ್ತುಂ। 7. (ತಲೆಯ) ಜಡೆ ಹೆಣೆದು ಅಲಂಕರಿಸುವುದು, ಗಂಧ ಪುಷ್ಪಾದಿಗಳಿಂದಲೂ ಚಿತ್ರ ಮೊದಲಾದ ಅಲಂಕಾರಗಳಿಂದಲೂ ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವ ಕೆಲಸ. "ರಚನಾ ಸ್ವಾತ್ಪರಿಸ್ಪಂದಃ" ಅಮಂ। ಇದೇ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಭಾವೇ "ಸ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। ರಚನಮ್ ರಚನಮ್ ಎಂದೂ ರೂಪವಾಗುವುದು.

ರಚನೀಯ ರಚನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಮಾಡಬೇಕಾದ. 2. ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 3. ಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 4. ಮಾಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ರಚ (ಪ್ರತಿಯತನೆ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। 5. ರಚಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ರಚಿಸಬೇಕಾದ, ತಯಾರಿಸಬೇಕಾದ. 7. ರಚಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ನಿರ್ಮಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 8. ತಯಾರಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ, ರಚಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ ಇತ್ಯಾದಿ. "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬)। ರಚಯಿತವ್ಯಮ್ ರಚಯಿತವ್ಯಂ.

ರಚಯತ್ ರಚಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ರಚಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ನಿರ್ಮಿಸುತ್ತಿರುವ, ತಯಾರಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಅಲಂಕರಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಬರೆಯುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರಬಂಧವನ್ನು ತಯಾರಿಸುತ್ತಿರುವ. ರಚ (ಪ್ರತಿಯತನೆ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

ರಚಯಿತ್ ರಚಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಬರೆಯುವವನು. 2. ನಿರ್ಮಿಸುವವನು, ತಯಾರಿಸುವವನು. 3. ಚಿತ್ರಕಾರ್ಯಗಳಿಂದ ಅಲಂಕರಿಸುವವನು. 4. ಏರ್ಪಡಿಸುವವನು, ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಮಾಡುವವನು. ರಚ (ಪ್ರತಿಯತನೆ) + ಣಿಚ್ "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.



ರಚಿತ ರಚಿತ (ವಿಂ) 1. ಬರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ (ಗ್ರಂಥ). 2. ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ರಚ (ಪ್ರತಿಯತ್ನೆ) + ಣಿच् "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ವಿಸ್ಮೇರಾನ್ ಗಗನಸದಃ ಕರೋತ್ಯಮುಷ್ಮಿ-  
ನ್ನಾಕಾಶ ರಚಿತಮಭಿತ್ತಿ ಚಿತ್ರಕರ್ಮ" ಮಾಘಂ 4-53. 5. ಏರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ರಜ ರಜ (ಪುಂ) 1. ರೇಣು, ಧೂಳು. 2. ಪರಾಗ, ಪುಷ್ಪದ ಧೂಳು. ರಜ್ಜಯತಿ—ರಜಿ (ಮಾಘಾಣೆ) + ಣಿच् "ಅच्" (3-1-134). 3. ಸ್ತ್ರೀಯರ ರಜಸ್ಸು, ಹೆಂಗಸರ ಮುಟ್ಟು. 4. ರಜೋಗುಣ ಸತ್ತ್ವ ಮೊದಲಾದ ಮೂರು ಗುಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ರಜೋ ರೇಣೌ ಪರಾಗೇ ಸ್ವಾದಾತೇ ವೇ ಚ ಗುಣಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ. "ರಜೋಽರಜಸಾ ಸಾರ್ಥಂ ಸ್ತ್ರೀಪುಷ್ಪ-  
ಗುಣಭೂಲಿಘು" |

ರಜಕ ರಜಕ (ಪುಂ) 1. ಅಗಸ, ಮಡಿವಾಳ, ದೋಬಿ. ರಜತಿ—ರಜ್ಜ (ರಾಗೆ) "ಕೃನ್" (3-2-20). "ನಗನಕ್ಷಪಣಕೇ ದೇಶೇ ರಜಕಃ ಕಿಂ ಕರಿಷ್ಯತಿ" | ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (4-1-46). ರಜಕೀ ರಜಕೀ. ಅಗಸನ ಹೆಂಡತಿ. 2. ರಜಸ್ವಲೆಯಾಗಿ ಮೂರನೆಯ ದಿನದಲ್ಲಿರುವ ಹೆಂಗಸು.

ರಜತ್ ರಜತ್ (ವಿಂ) 1. ಬಣ್ಣ ಬಳಿಯುತ್ತಿರುವ. 2. ಹೀಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ರಜ್ಜ (ರಾಗೆ) "ಶತ್" (3-2-124). ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (4-1-46). -ಸ್ತೀ -ಸ್ತೀ. "ಶಾನಚ್" | ರಜಮಾನಃ ರಜಮಾನಃ.

ರಜತ ರಜತ (ನಂ) 1. ಬೆಳ್ಳಿ. ರಜತೇಜೇನ—ರಜ್ಜ (ರಾಗೆ) "ಅತಚ್" (3-1-111). "ಸಮುಂಞಿತಾಂ ರಜತಭಿತ್ತಿ-  
ಮಯುಖಜಾಲೆಃ" ಕಿರಾಂ 4-41. 2. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 3. ರಕ್ತ, ನೆತ್ತರು. 4. ಮುಕ್ತಾಹಾರ, ಮುತ್ತಿನ ಸರ. 5. ಹ್ರದ, ಮಡು, ಜಲಾಶಯ. 6. ಶೈಲ, ಬೆಟ್ಟ. 7. ಅನೆ. 8. ದನ್ತ, ಹಲ್ಲು. (ವಿಂ) 9. ಬಿಳುಪಾಗಿರುವ. "ರಜತೋ ದಂತಿದಂತಯೋಃ | ಧವಲೇ ಶೋಣಿತೇ ಹಾರೆ ದುರ್ವಣಿ  
ಹೃದಶಲಯೋಃ" ಹೇಮಂ. "ರಜತಂ ಹೇಮಿನಿ ರೂಪ್ಯೇ ಸಿತೇ ತ್ರಿಘ್ನು" ಅಮಂ. ಕೋಶಕಾರರು ಪುಂಲಿಂಗ ಮತ್ತು ನಪುಂಸಕ ಎರಡು ಲಿಂಗಗಳಲ್ಲೂ ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ.

ರಜತಶ್ಚುತಿ ರಜತಶ್ಚುತಿ (ಪುಂ) ಅಂಜನೇಯ. ರಜತಸ್ಯೇವ ಶ್ಚುತಿರಸ್ಯ |

ರಜತಪ್ರಸ್ಯ ರಜತಪ್ರಸ್ಯ (ಪುಂ) ಕೈಲಾಸಪರ್ವತ. ರಜತಮಯಃ ಪ್ರಸ್ಯೋ ಯಸ್ಯ |

ರಜತಾಚಲ ರಜತಾಚಲ, -ಅದ್ರಿ-ಅದ್ರಿ (ಪುಂ) ಕೈಲಾಸ ಪರ್ವತ, ಬೆಳ್ಳಿಯ ಬೆಟ್ಟ.

ರಜನ ರಜನ (ನಂ) 1. ರಾಗ, ಬಣ್ಣ. ರಜ್ಜ (ರಾಗೆ) "ಕೃನ್" (3-2-20). 2. ಕುಸುಂಬೆ ಹೂವು.

ರಜನಿ ರಜನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾತ್ರಿ. ರಜ್ಜ (ರಾಗೆ) "ಅನಿಃ" | ಬಾಹುಂ. "ಅಭಜತ ಪರಿವೃತ್ತಿ ಸಾಥ ಪರ್ಯಂತಹಸ್ತಾ ರಜನಿ-  
ರವನತೇನುಲಂಜಯಾಧೋಮುಖೀವ" ಮಾಘಂ 10-91.

ರಜನೀ ರಜನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಾತ್ರಿ. ರಜನಿ "ಙೀಪ್" (ಗಂ 4-1-46). "ಭವಂತಿ ಯತ್ರೌಷಧಯೋ ರಜನ್ಯಾಮತೇಲ-  
ಪೂರಾಃ ಸುರತಪ್ರದೀಪಾಃ" ಕುಮಾಂ 1-10. 2. ಹರಿದ್ರೆ, ಅರಿಶಿನ. 3. ನೀಲಿಗಿಡೆ. ರಜತೇಜಯಾ—ರಜ್ಜ (ರಾಗೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (3-2-117). 4. ಕೆಂಪು ಅರಗು. "ರಜನೀ ನೇಲಿನೀರಾತ್ರಿಹರಿದ್ರಾಜತುಕಾಸು ಚ" ಮೇದಿಂ.

ರಜನೀಕರ ರಜನೀಕರ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ರಜನೀಂ ಕರೋತಿ —ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣೆ) "ಠಃ" (3-2-20). "ರಜನೀಕರಃ ಕಿಮಿವ ಚಿತ್ರಮದೋ ಯದುರಾಗಿನಾಂ ಗಣಮನಙ್ಗಲಘುಮ್" ಮಾಘಂ 9-36. 2. ಕರ್ಪೂರ.

ರಜನೀಚರ ರಜನೀಚರ (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ. ರಜನ್ಯಾಂ ಚರತಿ —ಚರ (ಗತೌ) "ಠಃ" (3-2-16). 2. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ. 3. ಕಾವಲುಗಾರ, ಪಹರೆಯವನು. (ವಿಂ) 4. ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವವನು. -ಪತಿಃ -ಪತಿಃ, -ರಾಜಃ -ರಾಜಃ. ರಾಕ್ಷಸಾಧಿಪ, -ಚಕ್ರವರ್ತಿ.

ರಜನೀಜಲ ರಜನೀಜಲ (ನಂ) ಘನೀಭೂತವಾದ ಮಂಜು, ಗಡ್ಡೆಯಾಗಿರುವ ಇಬ್ಬನಿ. ರಜನ್ಯಾ ಜಲಮ್. "ಹಿಮ-  
ಮಿಂದ್ರಾಗ್ನಿಧೂಮಶ್ಚ ಸ್ವಾಘ್ನೋ ರಜನೀಜಲಮ್" ಹಾರಾಂ.

ರಜನೀಪುಷ್ಪ ರಜನೀಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) ತಪಸಿಗಿಡೆ. ರಜನ್ಯಾಃ ಹರಿದ್ರಾಃ ಪುಷ್ಪಮಿವ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ |

ರಜನೀಮುಖ ರಜನೀಮುಖ (ನಂ) ಸಾಯಂಕಾಲ, ರಾತ್ರಿಯ ಪ್ರಾರಂಭಕಾಲ, ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲ, ಸಂಜೆ. ರಜನ್ಯಾಃ ಮುಖಮ್ |

ರಜಸ್ ರಜಸ್ (ನಂ) 1. ಪರಾಗ, ಹೂವಿನ ಧೂಳು. ರಜ್ಜ (ರಾಗೆ) "ಅಸುನ್" (3-2-117). "ಪುನರಭಸಿ  
ವಿವಿಕ್ತೇಮತೀರಿಸ್ವಾಜ್ವಚೂರ್ಣ್ಯ ಜ್ವಲಯತಿ ಮದನಾಗ್ನಿ ಮಾಲತೀನಾಂ ರಜೋಮಿಃ" ಮಾಘಂ 11-17. 2. ರೇಣು, ಧೂಳು. "ರಜೋಮಿಃ ಸ್ಯಂದನೋದ್ಭೂತಗಂಜೇಶ್ಚ ಧನಸನ್ನಿಭಃ" ರಘುಂ 4-29.

3. ಸತ್ತ್ವ ಮೊದಲಾದ ಮೂರು ಗುಣಗಳಲ್ಲೊಂದು; ರಜೋಗುಣ. "ರಜೋಜುಷೇ ಜನ್ಮನಿ ಸತ್ತ್ವವೃತ್ತಯೇ ಸ್ಥಿತೌ ಪ್ರಜಾನಾಂ ಪ್ರಲಯೇ ತಮಃಸ್ಪೃಶೋ" ಕಾದಂ. 4. ಅರ್ತವ, ಸ್ತ್ರೀಯರ ರಜಸ್ಸು, ಹೆಂಗಸರ ಮುಟ್ಟು. "ನಾರೀನಾಂ



ರಜಸಿ ಚೋಪಚೀಯಮಾನೇ ಶನೇ: ಶನೇ: ಸ್ತನಗರ್ಭಶಯಯೋನ್ಯಮಿ-  
ವೃದ್ಧಿರ್ಭವತಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೧೪ | 5. ಶರದ್ಯುತಂ, ಶರತ್  
ಕಾಲ. "ಶರದ್ರೇವಾತಂವೇ ರಜ:" ವೈಜಂ | 6. ರೇತಸ್ಸು,  
ವೀರ್ಯಂ. "ರೇತಸ್ಯಪಿ ರಜ:" ವೈಜಂ | 7. ಗಮಾಕ್ಷದ  
ವಿವರಗಳಲ್ಲಿ ಬೀಳುವ ಸೂರ್ಯಕಿರಣದಲ್ಲಿ ಕಾಣುವ ಅತಿ  
ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ಧೂಳಿನ ಕಣ, ತ್ರಸರೇಣು, ಅರು ಪರಮಾಣು  
ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಧೂಳಿನ ಕಣ. "ಜಾಲಾಂತರಗತೇ ಭಾನೌ  
ಯತ್ಸೂಕ್ಷಮಂ ದೃಶ್ಯತೇ ರಜ: | ಪ್ರಥಮಂ ತತ್ಪ್ರಮಾಣಾನಾಂ ತ್ರಸರೇಣುಂ  
ಪ್ರಚಕ್ಷತೇ" ಮನುಂ ೮-೨೩೨ | 8. ಕುಸುಂಬಿ ಹೂವು. "ರಜ:  
ಕಲಿಬಂ ಗುಣಾಂತರೇ | ಆತಂವೇ ಚ ಪರಾಗೇ ಚ ರೇಣುಮಾತ್ರೇ ಚ  
ದೃಶ್ಯತೇ" ಮೇದಿಂ | 9. ಚಿತ್ತಕ್ಷೋಭ, ಮನೋವಿಕಾರ.  
"ಅಪಥೇ ಪದಮರ್ಪಯಂತಿ ಹಿ ಶ್ರುತವಂತೋಽಪಿ ರಜೋನಿಮಿಲಿತಾ:"  
ರಘುಂ ೯-೭೪ | 10. ತವರ. 11. ಅಂಧಕಾರ,  
ಕತ್ತಲೆ.

ರಜ:ಶಯ ರಜಶಯಂ (ಪುಂ) ಕುಕ್ಕುರ, ನಾಯಿ. ರಜಸಿ  
ಶೇತೆ — ಶಿಶ್ವ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಅಚ್" (೩-೨-೧೫) |

ರಜಸಾನು ರಜಸಾನುಂ (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ. ರಜ್ಜ  
(-ರಾಗೇ) "ಅಸಾನು:" ಉಪಾಂ |

ರಜಸ್ವಲ ರಜಸ್ವಲಂ (ಪುಂ) 1. ಮಹಿಷ, ಎಮ್ಮೆ. ರಜೋ-  
ಸ್ತೃಸ್ವ "ವಲಚ್" (೪-೨-೧೧೨) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಷ್" (೪-೧-೬೩) | -ಲಿ-ಲೀ. (ವಿಂ) 2. ರಜೋಗುಣ  
ದಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಜರಾಶೋಕಸಮಾವಿಷ್ಟಂ ರೋಗಾಯತನಮಾತುರಮ್ |  
ರಜಸ್ವಲಮನಿತ್ಯಂ ಚ ಭೂತಾವಾಸಮಿಮಂ ತ್ಯಜೇತ್" ಮನುಂ ೬-೭೭ |  
3. ಧೂಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ತಂ ಶಯಾನಂ ಧರೋಪಸ್ಥೇ ಕಾವೇರ್ಯಾ  
ಸಹಸಾನುನಿ | ರಜಸ್ವಲೇಸ್ತನುದೇಶೈರ್ನಿಗೂಡಾಮಲತೇಜಸಮ್" ಭಾಗಂ  
೭-೧೩-೧೨ |

ರಜಸ್ವಲಾ ರಜಸ್ವಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿತ್ತುಮತ್ತಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು,  
ಮುಟ್ಟಾದ ಹೆಂಗಸು. ರಜೋಸ್ತೃಸ್ವಾ: "ವಲಚ್" (೪-೨-೧೧೨) | "ಅಥ ರಜಸ್ವಲಾ | ಸ್ತ್ರೀರ್ಭರ್ಮಿಣ್ಯವಿರಾತ್ರೇಯಿ"  
ಅಮಂ | "ಸಮುಲ್ಲಸಹಿನಕರವಕ್ತ್ರಕಾಂತಯೋ ರಜಸ್ವಲಾ: ಪರಿ-  
ಮಲಿತಾಮ್ಬರಶ್ರಿಯ:" ಮಾಘಂ ೧೭-೬೧ |

ರಜೋಗುಣ ರಜೋಗುಣಂ (ಪುಂ) ಸತ್ತ್ವ ಮೊದಲಾದ  
ಮೂರು ಗುಣಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡನೆಯ ಗುಣ. "ಗುಣಾ: ಸತ್ತ್ವಂ  
ರಜಸ್ತಮ:" ಅಮಂ | "ಕಾಮ ಏವ ಕ್ರೋಧ ಏವ ರಜೋಗುಣ-  
ಸಮುದ್ಭವ: | ಮಹಾಶನೋ ಮಹಾಪಾತ್ಮಾ ವಿದ್ವಚ್ಚೇನಮಿಹ ವೇರಿಣಮ್"  
ಗೀತಾ ೩-೩೭ | ಕಾಮ ಕ್ರೋಧಗಳು ರಜೋಗುಣದಿಂದ  
ಹುಟ್ಟಿದುವು. ಕಾಮವು ಮಹಾಶಕ್ತಿಯಾಗಿ ವಿಷಯಗಳ  
ಕಡೆ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಆಕರ್ಷಿಸುವುದು. ಇಷ್ಟಪ್ರಾಪ್ತಿಗೆ ವಿಘ್ನ

ವುಂಟಾದರೆ ಇದು (ಕಾಮವು) ಕ್ರೋಧವಾಗಿ ಪರಿಣಮಿಸಿ  
ಪರಹಿಂಸಾದಿಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರವರ್ತಿಸುವಂತೆ ಮಾಡು-  
ವುದು. ಅದುದರಿಂದ ಇದು ಮಹಾಪಾಪಿಯಾದ ಶತ್ರು.

ರಜೋಬಲ ರಜೋಬಲಂ (ನಂ) ಅಂಧಕಾರ, ಕತ್ತಲೆ. ರಜ  
ಇವ ವಲತೇ — ವಲ (ಸंचलने) "अच्" (३-१-१३४) |  
"तमसन्तु निशाचर्म नीलपङ्के रजोबलम्" त्रिकाण्डं |  
ರಜೋಬನ್ಧ ರಜೋಬಂಧಂ (ಪುಂ) ಸ್ತ್ರೀಯರಿಗೆ ರಜಸ್ಸು  
ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವುದು. ರಜಸೋ ಬನ್ಧ: |

ರಜೋಹರ ರಜೋಹರಂ (ಪುಂ) ರಜಕ, ಅಗಸ. ರಜೋ ಹರತಿ—  
ಹ್ರಮ್ (हरणे) "अच्" (३-२-९) |

ರಜ್ಜು ರಜ್ಜು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಾಶ, ಹಗ್ಗ. ಸೃಜ್ಯತೇ — ಸೃಜ  
(विसर्गे) "उ:" असुम् सलोपश्च (उ० १-१५) |  
"उदयति विततोर्ध्वरश्मिरज्जावहिमरुचौ हिमघाम्नि  
याति चास्तम्" ಮಾಘಂ ೪-೨೦ | 2. ವೇಣ, ತಲೆಯ  
ಜಡ, ಹೆರಳು. "ರಜ್ಜುರ್ವೇಣ್ಯಾಂ ಗುಣೇ ಯೋಷಿತ್" ಮೇದಿಂ |  
3. ಎಂಟು ಹಸ್ತಗಳ ಅಥವಾ 192 ಅಂಗುಲಗಳ ಅಳತೆ.

ರಜ್ಜುಬಾಲಕ ರಜ್ಜುಬಾಲಕಂ (ಪುಂ) ಕಾಡುಕೋಳಿ.

ರಜ್ಯತ್ ರಜ್ಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಕೆಂಪಗಾಗುತ್ತಿರುವ. ರಜ್ಜ  
(ರಾಗೇ) "ಶತ್" (३-२-१२४) | "किरति कलित-  
किञ्चित्कोपरज्यन्मुखश्री:" उ० रा० ५-२ | 2. ಬಣ್ಣ  
ಹಾಕುತ್ತಿರುವ. 3. ಪ್ರೀತಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಸಂತೋಷ  
ಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಶಾನಚ್" (३-२-१२४) | ರಜ್ಯಮಾನ:  
ರಜ್ಯಮಾನಃ. "हिमरुचिररणिम्ना राजते रज्यमानै:  
जरठकमलकन्दच्छेदगौरैर्मयूखै:" ಮಾಘಂ ೧೧-೧೪ |

ರಜ್ಜಕ ರಂಜಕಂ (ಪುಂ) 1. ಬಣ್ಣ ಬಳಿಯುವವನು.  
ರಜ್ಜಯತಿ — ರಂಜಿ (भाषार्थे) + णिच् "ण्वल्"  
(३-१-१३३) | 2. ಪ್ರೀತಿಸುವವನು, ಉತ್ತೇಜನ  
ಕೊಡುವವನು, ಹುರಿದುಂಬಿಸುವವನು. (ನಂ) 3.  
ಸಿದ್ಧಾರ. 4. ರಕ್ತಚಂದನ.

ರಜ್ಜನ ರಂಜನಂ (ನಂ) 1. ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವುದು.  
ರಜ್ಜ (ರಾಗೇ) ಮಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (३-३-११५) | "यथा  
प्रह्लादिनाच्चन्द्रः प्रतापात्तपनो यथा | तथैव सोऽभूदन्वर्थो  
राजा प्रकृतिरज्जनात्" ರಘುಂ ೪-೧೨ | 2. ಬಣ್ಣ  
ಬಳಿಯುವುದು. 3. ಬಣ್ಣ, ವರ್ಣ. ರಜ್ಯತೇನ — ರಜ್ಜ  
ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (३-३-११७) | 4. ಹಿಂಗುಳಿ, ಸಿದ್ಧಾರ.  
5. ಕೆಂಪುಗಂಧ, ರಕ್ತಚಂದನ. (ವಿಂ) 6. ಸಂತೋಷ  
ವುಂಟುಮಾಡುವವನು. 7. ಬಣ್ಣ ಬಳಿಯುವವನು.  
ರಜ್ಜ + ಣಿच् "ಲ್ಯು:" (३-१-१३४) |



**ರಜ್ಜನಿ ರಂಜನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೀಲಿಗಿಡ. ರಜ್ಯತೇಜಯಾ—  
ರಜ್ಜ (ರಾಗೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-119)। “ರಜ್ಜನಿ  
ಶ್ರೀಫಲಿ ತುತ್ಯಾ ದ್ರೋಣಿ ದೋಲಾ ಚ ನೀಲಿನಿ” ಅಮಂ।  
2. ಹರಿದ್ರ, ಅರಿಶಿನ. 3. ಮಂಜಿಷ್ಠ. 4. ಮದ್ಯ,  
ಹೆಂಡ. “ಶುಣ್ಧಾರೋಚನಿಕಾನೀಲಿಮಜ್ಜಿಷ್ಠಾಸು ಚ ರಜ್ಜನಿ”  
ಮೇದಿಂ।

**ರಜ್ಜನೀಯ ರಂಜನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಬಣ್ಣ ಬಳಿಯಬೇಕಾದ.  
2. ಪ್ರೀತಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಸಂತೋಷಪಡಿಸಬೇಕಾದ.  
ರಜ್ಜ (ರಾಗೆ) “ಅನೀಯರ್” (3-1-96)। “ತವ್ಯ:”।  
ರಜ್ಜತವ್ಯಮ್ ರಂಜತವ್ಯಮ್.

**ರಜ್ಜಿತ ರಂಜಿತ** (ವಿಂ) 1. ಬಣ್ಣ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. ರಜ್ಜ  
(ರಾಗೆ) “ಕ್ತ:” (3-2-102)। “ರಜ್ಜಿತಾ ನು  
ವಿವಿಧಾಸ್ತಶಲಿ ನಾಮಿತಂ ನು ಗಗನಂ ಸ್ಥಗಿತಂ ನು” ಕಿರಾಂ  
9-14। 2. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸಂತೋಷಪಡಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ.

**ರತತ್ ರಟಿತ್** (ವಿಂ) ಕರ್ಕಶವಾಗಿ ಕೂಗುತ್ತಿರುವ, ಅರಚು  
ತ್ತಿರುವ. ರಟ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) “ಶತೃ” (3-2-124)।  
ಸ್ವಿಯಾ “ಜಿಪ್” (4-2-6)। -ಂತಿ-೨೨೬.

**ರತನ ರಟಿನ** (ನಂ) ಅರಚುವುದು, ಕರ್ಕಶವಾಗಿ ಕೂಗು  
ವುದು. ರಟ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114)।

**ರತನೀಯ ರಟಿನೀಯ** (ವಿಂ) ಅರಚಬೇಕಾದ, ಕರ್ಕಶವಾಗಿ  
ಕಿರುಚಬೇಕಾದ. ರಟ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) “ಅನೀಯರ್”  
(3-1-96)। “ತವ್ಯ:”। ರಟಿತವ್ಯಮ್ ರಟಿತವ್ಯಮ್.

**ರತಿತ ರಟಿತ** (ನಂ) ಕರ್ಕಶವಾಗಿ ಶಬ್ದ ಮಾಡುವುದು. ರಟ  
(ಪರಿಭಾಷಣೆ) ಭಾವೆ “ಕ್ತ:” (3-3-114)।

**ರಣ ರಣ** (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯುದ್ಧ, ಕದನ, ಕಾಳಗ. ರಣಂತಿ  
ಶಬ್ದಾಯಂತೇಜ—ರಣ (ಶಬ್ದ) “ಅಪ್” (ವಾಂ 3-3-46)।  
“ರಣೇಶು ತಸ್ಯ ಪ್ರಹಿತಾ: ಪ್ರಚೇತಸಾ ಸರೋಽಹಂಕಾರಪರಾಙ್‌ಮುಖಿ-  
ಕೃತಾ:” ಮಾಘಂ 1-46। (ಪುಂ) 2. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು.  
ರಣ “ಅಚ್” (3-1-134)। “ರಣೋಜ್ವಲಿ ಯುಧಿ ನಾ  
ಧ್ವನಿ” ವೇಂ. 3. ವೀಣೆ ಖಚಿಲು ಮೊದಲಾದು  
ವನ್ನು ಬಾರಿಸುವ ಸಾಧನ. “ರಣ: ಕೋಣ ಕವಣೇ ಯುಧಿ”  
ಹೇಮಂ. 4. ಗತಿ, ಗಮನ, ನಡೆ.

**ರಣಕ್ಷೇತ್ರ ರಣಕ್ಷೇತ್ರ** (ನಂ) ಯುದ್ಧಭೂಮಿ, ಕಾಳಗ  
ಮಾಡುವ ಜಾಗ.

**ರಣತ್ ರಣತ್** (ವಿಂ) ಶಬ್ದ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ರಣ (ಶಬ್ದ)  
“ಶತೃ” (3-2-124)। “ರಣಾಙ್ಗಿರಾಪದನಯಾ ನಮಸ್ವತ:  
ಪೃಥಿವಿಭಿನ್ನಶ್ರುತಿಮಂಡಲ: ಸ್ವರ:” ಮಾಘಂ 1-10।

**ರಣತುಯ ರಣತುಯ** (ನಂ) ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಬಾರಿಸುವ  
ನಗಾರಿ, ರಣದೊಂದುಭಿ. ರಣಸ್ಯ ತುಯಮ್। “ವೀರನಿಜರವ-  
ವಿಲಿನಗುರಪ್ರತಿಶಬ್ದಮಸ್ಯ ರಣತುಯಮಾವಧಿ” ಮಾಘಂ 14-93।

**ರಣತ್ಕಾರ ರಣತ್ಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ರಣ ರಣ ಎಂದು ಶಬ್ದ  
ಮಾಡುವುದು. 2. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು. 3. ದುಂಬಿಯಂತೆ  
ಮಾಡುವ ರೋಷಕಾರ ಶಬ್ದ.

**ರಣಧುರಾ ರಣಧುರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯುದ್ಧಭೂಮಿಯ  
ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ನಿಂತು ವಹಿಸುವ ಯುದ್ಧದ ಹೊಣೆ,  
-ಧಾರ. ರಣಸ್ಯ ಧುರಾ। “ತಾತೇ ಚಾಪದ್ವಿತೀಯೇ ವಹತಿ  
ರಣಧುರಾಂ ಕೋ ಭಯಸ್ಯಾವಕಾಶ:” ವೇಣೀಂ 3-9।

**ರಣನ ರಣನ** (ನಂ) 1. ಶಬ್ದ ಮಾಡುವುದು. ರಣ (ಶಬ್ದ)  
ಭಾವೆ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114)। 2. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು.

**ರಣನೀಯ ರಣನೀಯ** (ವಿಂ) ಶಬ್ದ ಮಾಡಬೇಕಾದ. ರಣ  
(ಶಬ್ದ) “ಅನೀಯರ್” (3-1-96)। “ತವ್ಯ:”।  
ರಣಿತವ್ಯಮ್ ರಣಿತವ್ಯಮ್.

**ರಣಪಣ್ಡಿತ ರಣಪಂಡಿತ** (ಪುಂ) ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ನಿಪುಣನಾದ  
ಯೋಧ. ರಣೇ ಪಣ್ಡಿತ:। “ರಣಪಣ್ಡಿತೋಽಗ್ರವಿಬುಧಾರಿಪುರೇ  
ಕಲಹಂ ಸ ರಾಮಮಹಿತ: ಕೃತವಾನ್” ಮದ್ವಿಂ 10-2।

**ರಣಪ್ರಿಯ ರಣಪ್ರಿಯ** (ಪುಂ) 1. ಶ್ಲೋನಪಕ್ಷಿ, ಗಿಡಗದ ಹಕ್ಕಿ.  
2. ವಿಷ್ಣು. “ಸ್ತವ್ಯ: ಸ್ತವಪ್ರಿಯ: ಸ್ತೋತ್ರಂ ಸ್ತುತಿ: ಸ್ತೋತಾ  
ರಣಪ್ರಿಯ:” ವಿಂ ಸಂ. (ವಿಂ) 3. ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿ  
ಯುಳ್ಳವನು, ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು. ರಣ:  
ಪ್ರಿಯೋ ಯಸ್ಯ।

**ರಣಭೂ ರಣಭೂ, -ಭೂಮಿ-ಭೂಮಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯುದ್ಧ  
ಕ್ಷೇತ್ರ, ಯುದ್ಧಮಾಡುವ ಜಾಗ. “ರಣಭುವಿ ಶರತಲ್ಪೇ  
ಲೀಲಯಾ ಶಾಯಿತೇನ” ಯಾದಂ 23-61।

**ರಣಮುಖ ರಣಮುಖ** (ನಂ) ಯುದ್ಧಭೂಮಿಯ ಮುಂಭಾಗ.  
ರಣಸ್ಯ ಮುಖಮ್।

**ರಣಮೂರ್ಧನ್ ರಣಮೂರ್ಧನ್** (ಪುಂ) ಯುದ್ಧ ಭೂಮಿಯ  
ಮುಂಭಾಗ. ರಣಸ್ಯ ಮೂರ್ಧ್ನ।

**ರಣರಜ್ಜ ರಣರಂಕ** (ಪುಂ) 1. ಅನೆಯ ಕೊಂಬುಗಳ ಮಧ್ಯ  
ಭಾಗ. 2. ಅನೆ, ಗಜ.

**ರಣರಜ್ಜ ರಣರಂಗ** (ಪುಂ) ಯುದ್ಧಭೂಮಿ, ಕದನ ನಡೆ  
ಯುವ ಜಾಗ.

**ರಣರಣ ರಣರಣ** (ಪುಂ) 1. ಜಿಗಟೆ, ಸೊಳ್ಳೆ. ರಣರಣ ಇತಿ  
ಶಬ್ದೋಽಸ್ಯ “ಅಚ್” (4-2-129)। “ಮಶಕೋ ಘೋ  
ರಣರಣಾಽಽ ಸ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. (ನಂ) 2. ಉದ್ಗಾಹ,



ವಿವಾಹ, ಮದುವೆ. “ಅಥೋದಾಹನಂ ರಣರಣಂ ಚ ತತ್”  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1. 3. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಆಸೆ.

ರಣರಣಕ ರಣರಣಕ (ಪುಂ) 1. ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ.

“ರಣರಣಕೋ ರತಿರಮಣಃ ಸಂತಾರಗುರ್ಮನೋಜನ್ಮಾ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1.

2. ಉತ್ಕಂಠೆ, ಹಂಬಲ, ಚಿಂತೆ, ಲಾಲಸೆ. “ರಣರಣಕ-  
ವಿವೃದ್ಧಿ ವಿಭ್ರದಾವರ್ತಮಾನಂ ಜ್ವಲತಿ ಹೃದಯಮಂತಸ್ತನ್ಮಯತ್ವಂ ಚ  
ಧತ್ತೆ” ಮಾಲತೀಂ 1-88.

ರಣಸಂಕುಲ ರಣಸಂಕುಲ (ನಂ) ತಾಮುಲಯಾದ್ಯ,  
ದೊಂಬಿ ಕಾಳಗ. ರಣಸ್ಯ ಸಂಕುಲಮ್.

ರಣಸಮದ ರಣಸಮದ (ಪುಂ) ಯುದ್ಧದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ  
ಹರ್ಷ. ರಣೇನ ಸಮದಃ. “ರಣಸಮದೋದಯವಿಕಾಸಿಬಲ-  
ಕಲಕಲಾಕುಲೀಕೃತೇ” ಮಾಘಂ 14-99.

ರಣಾಙ್ಗಣ ರಣಾಂಗಣ (ನಂ) ಯುದ್ಧಕ್ಷೇತ್ರ, ಕದನ  
ನಡೆಯುವ ಭೂಮಿ. ರಣಸ್ಯಾಙ್ಗಣಮ್. -ಅಜಿರಮ್  
-ಅಜಿರವಸ್.

ರಣಾಭಿಯೋಗ ರಣಾಭಿಯೋಗ (ಪುಂ) 1. ಯುದ್ಧದ  
ಪ್ರಯತ್ನ. 2. ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿ. 3. ಯುದ್ಧದ  
ಅಭ್ಯಾಸ. ರಣಸ್ಯ ಅಭಿಯೋಗಃ.

ರಣಿತ ರಣಿತ (ನಂ) 1. ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ. ರಣ (ಶಬ್ದ) ಭಾವೆ  
“ಕ್ತಃ” (3-3-118). (ವಿಂ) 2. ಶಬ್ದಮಾಡಿದ,  
ಸದ್ದು ಮಾಡಿದ. ರಣ ಕರ್ತಂ “ಕ್ತಃ” (3-8-92).

ರಣಿತವತ್ ರಣಿತವತ್ (ವಿಂ) ಶಬ್ದಮಾಡಿದ, ಸದ್ದು  
ಮಾಡಿದ. ರಣ (ಶಬ್ದ) “ಕ್ತವತುಃ” (3-2-102).  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಙೀಪ್” (8-1-6). -ವತಿ-ವತೀ.

ರಣಡ ರಂಡ (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರಸಂತಾನವಿಲ್ಲದ ಮನುಷ್ಯ.  
2. ಗೊಡ್ಡುಮರ, ಫಲಬಿಡದ ವೃಕ್ಷ. ರಮು (ಕೃಡಾಯಾಮ್)  
“ಙಃ” (3-1-111).

ರಣಡಾ ರಂಡಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿತಂತ್ರು. 2. ಇಲಿಯಾಲದ ಮರ.  
ರಮು (ಕೃಡಾಯಾಮ್) “ಙಃ” (3-1-112). “ರಣಡಾ  
ಮೂಕಪರ್ಣ್ಯಾ ಚ ವಿಘವಾಃ ಚ ಯೋಷಿತಿ” ಮೇದಿಂ.

ರತ ರತ (ನಂ) 1. ಸಂಭೋಗ, ಮೈಥುನ, ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ  
ಸಂಗಮ. ರಮು (ಕೃಡಾಯಾಮ್) ಭಾವೆ “ಕ್ತಃ” (3-3-118).  
“ಅನ್ವಭೂತ್ಪರಿಜನಾಙ್ಗನಾರತಂ ಸೋಜರೋಘಭಯವೇಪಯುತರಮ್”  
ರಘುಂ 19-23. “ಯದ್ರತಂ ಚ ಸದಯಂ ಪ್ರಿಯಸ್ಯ ತತ್ಪಾರ್ವತೀ  
ವಿಘಹತೇ ಸ್ಮ ನೇತರತ್” ಕುಮಾರಂ 6-9. 2. ಗುಹ್ಯಸ್ಥಾನ.  
“ರತಂ ಸುರತಗುಹ್ಯಯೋಃ” ಮೇದಿಂ. (ವಿಂ) 3. ಅನುರಾಗ  
ವುಳ್ಳವನು, ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳವನು. “ರತಸ್ತ್ರಿಷ್ವನುರಕ್ತೇ  
ಸ್ಯಾತ್” ಮೇದಿಂ. 4. ಉತ್ಸಾಹವುಳ್ಳವನು. “ಹೃತೇ

ಯೋಧುಂ ಜನಃ ಪಾಸೌ ಸ ದ್ವೃಷಿ ರತೋ ಯಾ” ಮಾಘಂ  
10-96. 5. ಆಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು, ಶ್ರದ್ಧೆಯುಳ್ಳವನು.  
“ತೇಷ್ವೇವ ನಿಯಂ ಶುಶ್ರೂಷಾಂ ಕುರ್ಯಾತ್ಪ್ರಿಯಾಹಿತೇ ರತಃ” ಮನುಂ  
2-234.

ರತಕೀಲ ರತಕೀಲ (ಪುಂ) ನಾಯಿ. ರತೆ ಮೆಥುನೆ ಕೀಲತಿ—  
ಕೀಲ (ಬಂಧನೆ) “ಕಃ” (3-1-134).

ರತಕೂಜಿತ ರತಕೂಜಿತ (ನಂ) ಸಂಭೋಗಕಾಲದ ಮಾತು,  
ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ಸಂಗಮಕಾಲದಲ್ಲಿ ಆಡುವ ರಹಸ್ಯ ಗೊಣ  
ಗಾಳಿ. ರತೆ ಕೂಜಿತಮ್ ಅಸ್ಪಷ್ಟವಚನಮ್.

ರತಕ್ರಿಯಾ ರತಕ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಭೋಗ, ಮೈಥುನ.  
ರತರೂಪಾ ಕ್ರಿಯಾ.

ರತಗುರು ರತಗುರು (ಪುಂ) ಪತಿ, ಗಂಡ. ರತಃ ಗುರುಃ.  
“ಪ್ರಾಣನಾಥಃ ಸುಖೋತ್ಸವಃ. ಹೃದಯೇಶೋ ರತಗುರುಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1.

ರತಜ್ವರ ರತಜ್ವರ (ಪುಂ) ವಾಯುಸ, ಕಾಗೆ. “ಕಾಕೋ  
ರತಜ್ವರಃ ಸೂತ್ರೀ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1.

ರತತಾಲಿನ್ ರತತಾಲಿನ್ (ಪುಂ) ವೈಭಿಚಾರಿ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ.  
ರತೆ ತಾಲಯತಿ—ತಲ (ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಯಾಮ್) “ಗಿಣಿಃ”  
(3-2-96).

ರತತಾಲಿ ರತತಾಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಟ್ಟಿನಿ, ತಲೆಹಿಡಕಿ. “ಅಥ  
ಕುಟ್ಟಿನಿ. ಇಜ್ಯಾ ಸ್ಯಾದ್ರತತಾಲಿ ಚ ಘಟದಾಸೀ ಗಣೇಶ್ವರಾ”  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1.

ರತನಾರೀಚ ರತನಾರೀಚ (ಪುಂ) 1. ನಾಯಿ. 2. ಸ್ಮರ,  
ಮನ್ಮಥ, 3. ಹೆಂಗಸರ ಸೀತಾರ. “ರತನಾರೀಚೋ ನಾರೀಣಾಂ  
ಸೀತಕಾರೇ ಚ ಶುನಿ ಸ್ಮರೇ” ಮೇದಿಂ. 4. ವೈಭಿಚಾರಿ.

ರತದ್ವಿಕ ರತದ್ವಿಕ (ನಂ) 1. ಸುಖಿಸ್ಥಾನ. 2. ದಿವಸ,  
ಹಗಲು. 3. ಅಷ್ಟವಿಧ ಮಂಗಲವಸ್ತುಗಳು. [“ಅಷ್ಟ-  
ಮಂಗಳ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. ರತಸ್ಯ ಇದ್ವಿರತ್ನ “ಕಪ್”  
(4-8-148). “ರತದ್ವಿಕಂ ತು ದಿವಸೇ ಸುಖಸ್ಥಾನೇಷ್ಠ-  
ಮಂಗಳೇ” ಹೇಮಂ.

ರತವ್ರಣ ರತವ್ರಣ (ಪುಂ) ನಾಯಿ. ರತೇನ ವ್ರಣೋಽಸ್ಯ.

ರತಹಿಂಠಕ ರತಹಿಂಠಕ (ಪುಂ) ಹೆಂಗಸರನ್ನು ಅಪಹರಿಸು  
ವವನು, ವೈಭಿಚಾರಿ. ರತಾರ್ಥಂ ಹಿಂಠತೇ—ಹಿಡಿ (ಗತ್ಯ-  
ನಾದರಯೋಃ) “ಫುಲ್” (3-1-133).

ರತಾಮದ ರತಾಮದ (ಪುಂ) ನಾಯಿ. ರತೆ ರತಕಾಲೇ  
ಆಮದೋಽಸ್ಯ.

ರತಾರ್ಥಿನ್ ರತಾರ್ಥಿನ್ (ಪುಂ) ಸುರತವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸು  
ವವನು, ಸಂಭೋಗದ ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು. ರತಮರ್ಥಯತೇ—  
ಅರ್ಥ (ಯಾಚ್ಛಾಯಾಮ್) “ಗಿಣಿಃ” (3-1-134).



(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಾಶಿನಿ -೮೫೫೬. ಕಾಮುಕ ಹೆಂಗಸು, ಕಾಮಾತುರವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. "ಕಾಮುಕೀ ತು ವೃಷಸ್ಯಂತಿ ರತಾಶಿನಿ" ವೇಜಂ 1.

**ರತಿ ರತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮನ್ಮಥನ ಪತ್ನಿ. ರಮ್ಯತೇಜನಾ - ರಮು (ಕೃಡಾಯಾಮ್) "ಕ್ರಿತನ್" (೩-೩-೯೪). "ರತಿದ್ವಿತೀಯೇನ ಮನೋಮೇವೇನ ಹೃದಾತ್ಸುಧಾಃ ಪ್ರವಿಗಾಹಮಾನಾತ್" ಕುಮಾಂ ೯-೪. 2. ಸಂಭೋಗ, ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ಸಂಗಮ. "ಕಾಂತವೇಶಮ ಬಹು ಸಂದಿಶತೀಭಿರಾತಿಮೇವ ರತಯೇ ರಮಣಿಭಿಃ" ಕಿರಾಂ ೯-೩೭. 3. ಅನುರಾಗ, ಪ್ರೀತಿ. "ಕಾಮಂ ಪ್ರಿಯಾ ನ ಸುಲಭಾ ಮನಸ್ತು ತದ್ಭಾವದರ್ಶನಾಯಾಸಿ. ಅಕೃತಾರ್ಥೇಽಪಿ ಮನಸಿಜೇ ರತಿಮುಮಯಪ್ರಾರ್ಥನಾ ಕುರುತೇ" ಶಾಕುಂ ೨-೧. 4. ಎಂಟು ವಿಧ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವಗಳಲ್ಲೊಂದು, ಶೃಂಗಾರ ರಸದ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ. "ರತಿಹಾಸಿಶ್ಚ ಶೋಕಶ್ಚ ಕ್ರೋಧೋತ್ಸಾಹೋ ಭಯಂ ತಥಾ. ಜುಗುಪ್ಸಾ ವಿಸ್ಮಯಶ್ಚೇತ್ಯಮಷ್ಟೈ ಪ್ರೋಕ್ತಾಃ ಶಮೋಽಪಿ ಚ" ಸಾಂ ೬೦ ೩-೧೭೫. 5. ಶ್ರದ್ಧೆ, ಆಸಕ್ತಿ. "ತಸ್ಯಾ ವರ್ಮರತೇರಾಸೀದ್ವೃದ್ಧವಂ ಜರಸಾ ವಿನಾ" ರಘುಂ ೧-೨೩. 6. ಪ್ರಮೋದ, ಸಂತೋಷ. "ಸೇವತೇ ಸ್ಮ ಶಯನಂ ಪರಾಙ್ಮುಖಾ ಸಾ ತಯಾಪಿ ರತಯೇ ಪಿನಾಕಿನಃ" ಕುಮಾಂ ೮-೨. 7. ಗುಹ್ಯ ಸ್ಥಾನ. "ರತಿಃ ಸ್ತ್ರೀ ಸ್ಮರದಾರೆಣ ರಾಗೇ ಸುರತಗುಹ್ಯಯೋಃ" ಮೇದಿಂ 1.

**ರತಿಕರ್ಮನ್ ರತಿಕರ್ಮನ್ (ನಂ)** ಸಂಭೋಗ, ಮೈಥುನ.

**ರತಿಕುಹರ ರತಿಕುಹರ (ನಂ)** ಯೋನಿ.

**ರತಿಕೂಜಿತ ರತಿಕೂಜಿತ (ನಂ)** ಸಂಭೋಗಕಾಲದಲ್ಲಿ ಆಡುವ ರಹಸ್ಯ ಗೊಣಗಾಟ.

**ರತಿಗೃಹ ರತಿಗೃಹ, -ಭವನ -ಭವನ, -ಮಂದಿರ -ಮಂದಿರ (ನಂ)** 1. ಮಲಗುವ ಮನೆ. ಸಂಭೋಗದ ಮನೆ. 2. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಗುಹ್ಯಸ್ಥಾನ, ಯೋನಿ.

**ರತಿಸ್ಕರ ರತಿಸ್ಕರ (ಪುಂ)** ಸಂಭೋಗಕ್ಕಾಗಿ ಪ್ರೇರಿಸುವವನು, ಸಂತೋಷವನ್ನು ನಾಶಗೊಳಿಸುವವನು, ವ್ಯಭಿಚಾರಿ.

**ರತಿಪತಿ ರತಿಪತಿ, -ಪ್ರಿಯ -ಪ್ರಿಯ (ಪುಂ)** ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮ. ರತ್ಯಾಃ ಪತಿಃ ಪ್ರಿಯೋ ವಾ. "ದಧತಿ ಸ್ಕೃತಂ ರತಿಪತೇರಿಷವಃ" ಮಾಘಂ ೯-೬೬.

**ರತಿರಸ ರತಿರಸ (ಪುಂ)** ಸಂಭೋಗದ ಸೌಖ್ಯ, ಸಂಭೋಗ ದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಆನಂದ.

**ರತೀಲಕ್ಷ ರತೀಲಕ್ಷ (ನಂ)** ಮೈಥುನ, ಸಂಭೋಗ. ರತಿ ಲಕ್ಷಯತಿ - ಲಕ್ಷ + ಣಿವ್ "ಅವ್" (೩-೧-೧೩೪).

**ರತಿಸೂರ ರತಿಸೂರ (ವಿಂ)** ಸಂಭೋಗಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು, ಪ್ರಜನನ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವುಳ್ಳವನು.

**ರತಿಸರ್ವಸ್ವ ರತಿಸರ್ವಸ್ವ (ನಂ)** ಸಂಭೋಗದ ಮೂಲ ಕಾರಣ. ರತೇಃ ಸರ್ವಸ್ವಮ್. "ಕರೋ ವ್ಯಾಧುನ್ವತ್ಯಾಃ ಪಿಬಸಿ ರತಿಸರ್ವಸ್ವಮಧರಮ್" ಶಾಕುಂ ೧-೨೦.

**ರತ್ನ ರತ್ನ (ನಂ)** 1. ಮಣಿ. 2. ಮುತ್ತು, ಮಾಣಿಕ್ಯ ಹವಳ ಪಚ್ಚಿ ವೈಡೂರ್ಯ ಮುಂತಾದುವು. ರಮಂತೇಽಸ್ಮಿನ್ - ರಮು (ಕೃಡಾಯಾಮ್) "ನಃ" (೩ಂ ೩-೧೪). "ರತ್ನ-ಸ್ತಂಭೇಷು ಸಂಕ್ರಾಂತಪ್ರತಿಮಾಸ್ತೇ ಚಕಾಶಿರೇ" ಮಾಘಂ ೨-೪. 3. ಶ್ರೇಷ್ಠವಸ್ತು, ಉತ್ತಮವಾದ ಪದಾರ್ಥ. "ಜಾತೌ ಜಾತೌ ಯದ್ವತ್ಕೃಷ್ಣಂ ತದ್ರತ್ನಮಭಿವಿಧೀಯತೇ" "ಸ್ತ್ರೀರತ್ನಸೃಷ್ಟಿರಪರಾ ಪ್ರತಿಭಾತಿ ಸಾ ಮೇ ಧಾತುರ್ವಿಭುತ್ವಮನುಚಿಂತ್ಯ ವಪುಶ್ಚ ತಸ್ಯಾಃ" ಶಾಕುಂ ೨-೯. 4. ಬೆಲೆಬಾಳುವ ವಸ್ತು, ಅಮೂಲ್ಯ ವಾದ ಪದಾರ್ಥ. 5. ಅಯಸ್ಕಾಂತ, ಸೂಜಿಗಲ್ಲು.

**ರತ್ನಗರ್ಭ ರತ್ನಗರ್ಭ (ಪುಂ)** 1. ಸಮುದ್ರ. ರತ್ನಂ ಗರ್ಭೇಽಸ್ಯ. 2. ಕುಬೇರ. "ಕುಡಃ ಪುಣ್ಯಜನೇಶ್ವರಃ. ಇಚ್ಛಾವಸೂರತ್ನಗರ್ಭೋ ರತ್ನಹಸ್ತಃ ಸಿತೋದರಃ" ವೇಜಂ 1. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಗರ್ಭಾ -ಗರ್ಭಾ. ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ. "ರತ್ನಗರ್ಭಾ ಕಾಶ್ಯಪಿ ಭೂಃ ಕುಹ್ಲಯ-ವನಿಶ್ವರಾ" ವೇಜಂ 1.

**ರತ್ನದರ್ಪಣ ರತ್ನದರ್ಪಣ (ಪುಂ)** ರತ್ನವಿಚಿತ್ರ ಕನ್ನಡಿ, ಮಣಿ ಕೆತ್ತಿರುವ ಕನ್ನಡಿ.

**ರತ್ನನಿಧಿ ರತ್ನನಿಧಿ (ಪುಂ)** 1. ಸಮುದ್ರ. 2. ವಿಷ್ಣು. 3. ಮೇರುಪರ್ವತ.

**ರತ್ನಪ್ರಭಾ ರತ್ನಪ್ರಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ.

**ರತ್ನಮಾಲಾ ರತ್ನಮಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ರತ್ನಹಾರ, ಮುತ್ತುನ ಹಾರ.

**ರತ್ನರಾಜ ರತ್ನರಾಜ (ಪುಂ)** ಮಾಣಿಕ್ಯ, ಕೆಂಪು, ಪದ್ಮರಾಗ.

**ರತ್ನಸಾನು ರತ್ನಸಾನು (ಪುಂ)** ಮೇರುಪರ್ವತ, ರತ್ನಗಳ ತಪ್ಪಲು ಪ್ರದೇಶವುಳ್ಳ ಬೆಟ್ಟ.

**ರತ್ನಸು ರತ್ನಸು (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ. ರತ್ನಾನಿ ಸುಯತೇ-ಷಟ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭವಿಮೋಚನೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧). "ನ ಮಾಮವತಿ ಸದ್ವಿಪಾ ರತ್ನಸುರಪಿ ಮೇದಿನಿ" ರಘುಂ ೧-೬೫.

**ರತ್ನಾಕರ ರತ್ನಾಕರ (ಪುಂ)** 1. ಸಮುದ್ರ, ಕೆಡಲು. ರತ್ನಾನಾ-ಮಾಕರಃ. "ರತ್ನಾಕರಂ ವೀಕ್ಷ್ಯ ಮಿಥಃ ಸ ಜಾಯಾ ರಾಮಾಭಿ-ಘಾನೋ ಹರಿಸ್ತಿಯುವಾಚ" ರಘುಂ ೧೩-೧. 2. ರತ್ನಗಳ ಗಣ, ಮಣಿಗಳು ಸಿಕ್ಕುವ ಸ್ಥಳ.

**ರತ್ನಾಭರಣ ರತ್ನಾಭರಣ (ನಂ)** ರತ್ನವಿಚಿತ್ರವಾದ ಒಡವೆ.

**ರತ್ನಾವಲಿ, -ಲಿ ರತ್ನಾವಲಿ, -ಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ರತ್ನದ ಹಾರ, ಮುತ್ತುನ ಹಾರ, -ಸರ. ರತ್ನಾನಾಮಾವಲಿಃ ಅವಲಿ



ವಾ । “ಪ್ರೆಂಪೋಪಕಂ ಮಹುರಕ್ಷಮಾಜಿ ರತ್ನಾವಲೀರಮ್ಬುಧಿ-  
ರಾಬಬನ್ವ” ಮಾಘಂ ೩-೩೬ । 2. ಶ್ರೀಹರ್ಷ ಕವಿ ವಿರಚಿತ  
ವಾದ ಒಂದು ಉಪರೂಪಕ (ನಾಟಕ). ರತ್ನಾವಲೀಮಧಿಕೃತ್ಯ  
ಕೃತೌ ಧನ್ಯ: “ಅನ್” (೪-೩-೮೭) । ಅಣಿ ಲುಕ್ (ವಾಂ  
೪-೨-೬೦) ।

ರತ್ನ ರತ್ನ (ಪುಸ್ತಕಂ) ಒಂದು ಗುಡ್ಡುಮೊಳ, ಬೆರಳುಗಳನ್ನು  
ಮಡಿಸಿಕೊಂಡು ಹಾಕುವ ಮೊಳ. ಕೃಚ್ಛತಿ—ಕೃ (ಗತೌ)  
“ಕಲಿಚ್” (೩ಂ ೪-೨) । “ಹಸ್ತೋ ಮುಷ್ಠಾ ತು ಬದ್ಧಯಾ ।  
ಸ ರತ್ನ: ಸ್ಯಾತ್” ಅಮಂ ।

ರಥ ರಥ (ಪುಂ) 1. ರಥ, ತೇರು. ರಮ (ಕೌಡಾಯಾಮ್)  
“ಕಥನ್” (೩ಂ ೨-೨) । “ಶನೇರನೀಯಂತ ರಥಾತ್ಪತಂತಿ  
ರಥಾ: ಕಿರ್ತಿ ಹಸ್ತಿನಖಾದಖೇದೇ:” ಮಾಘಂ ೩-೬೮ । 2. ಬಂಡಿ,  
ಗಾಡಿ. 3. ಹೆಬ್ಬಗಿಡ, ಲಕ್ಕಿಗಿಡ. “ಶೀತೋಽಭ್ರಪುಷ್ಪೋ  
ವಾನೀರೋ ವಜ್ರಜುಲೋ ವೇತಸೋ ರಥ:” ವೈಜಂ । 4. ಯುದ್ಧದ  
ಗಾಡಿ. 5. ಚಕ್ರವಾಕ ಪಕ್ಷಿ. “ಚಕ್ರವಾಕೋ ರಥ: ಕೋಕ-  
ಶ್ಚಕ್ರಶ್ಚಕ್ರಾಹ್ವಯಾಹ್ವಯ:” ವೈಜಂ । 6. ಅಂಗ, ಅವಯವ.  
“ರಥ: ಪುಮಾನವಯವೇ ಸ್ಯಂದನೇ ವೇತಸೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ ।  
7. ಶರೀರ, ದೇಹ. “ಆತ್ಮಾನಂ ರಥಿನಂ ವಿವಿಧಿ ಶರೀರಂ  
ರಥಮೇವ ವಾ” ಕಠಂ । 8. ಪಾದ, ಚರಣ, ಕಾಲು. “ರಥ:  
ಸ್ಯಾತ್ ಸ್ಯಂದನೇ ಕಾಪೇ ಚರಣೇ ವೇತಸೇಽಪಿ ಚ” ವಿಶ್ವಂ ।  
9. ಪುರುಷ, ಪುರುಷ ಪ್ರಯತ್ನ, ಪುರುಷನ ಕಾರ್ಯ.  
“ರಥ: ಪೌರೂಷದೇಹಯೋ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ರಥಕಡಾ ರಥಕಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಥಗಳ ಸಮೂಹ, ಗಾಡಿ  
ಗಳ ಗುಂಪು. ರಥಾಣಾ ಸಮೂಹ: “ಕಡಾಚ್” (೪-೨-೫೧) ।  
“ರಥಕಡಾ ರಥವ್ರಜೇ” ಅಮಂ ।

ರಥಕಾರ ರಥಕಾರ (ಪುಂ) 1. ರಥಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸು  
ವವನು, ಬಡಗಿ, ಮರಗೆಲಸದವನು. ರಥಂ ಕರೋತಿ —  
ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) “ಅನ್” (೩-೨-೧) । “ರಥಕಾರಶ್ಚ  
ಕಾಠತತ್” ಅಮಂ । 2. ಮಾಹಿಷ್ಯನಿಂದ ಕರಣಿಯಲ್ಲಿ  
ಹೆಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು. [ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಂದ  
ವೈಶ್ಯಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹೆಟ್ಟಿದವನು ಮಾಹಿಷ್ಯ. ವೈಶ್ಯನಿಂದ  
ಶೂದ್ರಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹೆಟ್ಟಿದವನು ಕರಣಿ:] “ರಥಕಾರಸ್ತು  
ಮಾಹಿಷ್ಯಾತ್ಕರಣ್ಯಾ ಯಸ್ಯ ಸಂಭವ:” ಅಮಂ । 3. ನಿಧಿಯ  
ವಿಷಯ ಜೂಜಿನ ವಿಷಯ ಮತ್ತು ವ್ಯಾಪಾರ ವಿಷಯ  
ವಾಗಿ ಪ್ರಶ್ನೆ ಹೇಳುವವನು. “ರಥಕಾರೋ ನಿಧಿಪ್ರಶ್ನ-  
ಶ್ಚತಾಪಣನಿರೂಪಣಾತ್” ವೈಜಂ । 4. ಜಿಂಕೆ ಮತ್ತು ಕಾಡು  
ಮೃಗಗಳನ್ನು ಕೊಂದು ಜೀವಿಸುವವನು “ರಥಕಾರೋ  
ವ್ಯಾಲಮೃಗಹಿಸಾವೃತ್ತಿರिति ಕ್ವಚಿತ್” ವೈಜಂ । 5 ಗೃಹ

ನಿರ್ಮಾಣಕಾರ್ಯ (ವಾಸ್ತುಶಿಲ್ಪ) ಪೂಜಾವಿಧಾನ ಯಜ್ಞ  
ಕಾರ್ಯ ಮತ್ತು ಉಪನಯನ ಇವುಗಳ ವಿಷಯವನ್ನು  
ತಿಳಿದಿರುವವನು. “ರಥಕಾರೋ ವಾಸ್ತುವೃತ್ತಿರಿಯಾಧಾನೋ-  
ಪನೀತಿಮಾನ್” ವೈಜಂ ।

ರಥಕುಡುಂಬಿನ್ ರಥಕುಟುಂಬಿನ್ (ಪುಂ) ಸಾರಥಿ, ರಥವನ್ನು  
ನಡೆಸುವವನು. ರಥಂ ಕುಡುಂಬಯಿತು ಶಿಲಮಸ್ಯ “ಣಿನಿ:”  
(೩-೨-೭೮) ।

ರಥಕೂಬರ ರಥಕೂಬರ (ಪುಂ) ಗಾಡಿಯ ಮೂಕಿ, ನೋಗ  
ವನ್ನಿಟ್ಟು ಕಟ್ಟುವ ಮೂಕಿಯ ಮರ.

ರಥಗರ್ಭಕ ರಥಗರ್ಭಕ (ಪುಂ) ಹೆಗಲಿನಿಂದ ಒಯ್ಯ  
ಲ್ಪಡುವ ಪಲ್ಲಕ್ಕಿ ಡೋಲಿ ಮುಂತಾದುವು. “ಕರ್ಣಿರಥ:  
ಪ್ರವಹಣಂ ಡಯನಂ ರಥಗರ್ಭಕೇ” ವೈಜಂ ।

ರಥಗುಪ್ತಿ ರಥಗುಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ಬಾಣ ಮೊದಲಾದುವು  
ಗಳಿಂದ) ರಥವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವ ಚರ್ಮದ ಬುರುಕಿ ಅಥವಾ  
ಲೋಹದ ಆವರಣ. ರಥಸ್ಯ ಗುಪ್ತಿ: ಶರಾದಿಮ್ಯೋ ರಕ್ಷಾರ್ಥ-  
ಮಾವರಣಮ್ ।

ರಥಚರಣ ರಥಚರಣ (ಪುಂ) 1. ರಥದ ಚಕ್ರ, ಗಾಡಿಯ  
ಗಾಲಿ. ರಥಸ್ಯ ಚರಣ: । 2. ಚಕ್ರಾಯುಧ. “ರಥಚರಣ-  
ಧರಾಙ್ಗನಾಕರಾಜ್ಯವ್ಯತಿಕರಸಂಪದ್ವಿಪಾತ್ತಸೌಮನಸ್ಯಾ:” ಮಾಘಂ  
೭-೨೮ । (ಪುಂ) 3. ಚಕ್ರವಾಕಪಕ್ಷಿ.

ರಥದ್ವ ರಥದ್ವ (ಪುಂ) ನೆಮ್ಮಿಗಿಡ. ರಥಸ್ಯ ದ್ವ: । ರಥ  
ನಿರ್ಮಾಣಕ್ಕಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಮರ.

ರಥಮುಖ ರಥಮುಖ (ನಂ) ರಥದ ಮೂಕಿ, ಗಾಡಿಯ  
ಮುಂಭಾಗ.

ರಥಯಾತ್ರಾ ರಥಯಾತ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವರ ರಥೋತ್ಸವ.  
ರಥೇನ ಯಾತ್ರಾ ।

ರಥಸಪ್ತಮಿ ರಥಸಪ್ತಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾಘಶುದ್ಧ ಸಪ್ತಮಿ.

ರಥಾಕ್ಷ ರಥಾಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ರಥದ ಚಕ್ರ. 2. ರಥದ  
ಅಚ್ಚು, ಗಾಡಿಯ ಅಚ್ಚು. 3. 104 ಅಂಗುಲಗಳ ಅಳತೆ.

ರಥಾಙ್ಗ ರಥಾಙ್ಗ (ನಂ) 1. ಗಾಡಿಯ ಚಕ್ರ. 2. ರಥದ  
ಅವಯವ, ಗಾಡಿಯ ಭಾಗ. ರಥಸ್ಯಾಙ್ಗಮ್ । “ರಥೋ  
ರಥಾಙ್ಗಭವಿನಾ ವಿಜಙ್ತೆ ವಿಲೋಲವೃಷಾಕವಣಿತೇನ ನಾಗ:”  
ರಘುಂ ೭-೪೧ । 3. ವಿಷ್ಣುವಿನ ಚಕ್ರಾಯುಧ. “ರಥಾಙ್ಗ-  
ಸತ್ವೇಭಿನವಂ ವರಾಯ ಯಸ್ಯಾ: ಪಿತೇವ ಪ್ರತಿಭಾದಿತಾಃ” ಮಾಘಂ  
೩-೩೬ । 4. ಕುಂಬಾರನ ಚಕ್ರ. (ಪುಂ) 5. ಚಕ್ರವಾಕ  
ಪಕ್ಷಿ. “ಇಹ ಸಹವರೀ ನಾಮಗ್ರಾಹಂ ರಥಾಙ್ಗವಿಹಙ್ಗಮಾ:” ನೈಷಂ  
೧೯-೩೫ ।



ರಥಾಕ್ಷನಾಮನ್ ರಥಾಂಗನಾಮನ್ (ಪುಂ) ಚಕ್ರವಾಹಪಕ್ಷಿ.

ರಥಾಕ್ಷ ಇತಿ ನಾಮ ಯಸ್ಯ । “ಅರ್ಥೋಪಮುಕ್ತೇನ ವಿಸೇನ ಜಾಯಾಂ  
ಸಂಭಾವಯಾಮಾಸ ರಥಾಕ್ಷನಾಮಾ” ಕುಮಾಂ ೩-೩೭ ।

ರಥಾಕ್ಷಪಾಣಿ ರಥಾಂಗನಾಮನ್ (ಪುಂ) ಚಕ್ರಾಯುಧವನ್ನು

ಕೈಯಲ್ಲಿ ಧರಿಸುವ ಶ್ರೀ ವಿಷ್ಣು. ರಥಾಕ್ಷ ಪಾಣಿ ಯಸ್ಯ ।

“ರಥಾಕ್ಷಪಾಣಿ: ಪಟಲೇನ ರೋಚಿಷಾಮೃಷಿವಿಷ: ಸಂವಲಿತಾ  
ವಿರೇಜಿರೆ” ಮಾಘಂ ೧-೨೧ ।

ರಥಾಕ್ಷಾಕ್ಷಯ ರಥಾಂಗಾಕ್ಷಯ (ಪುಂ) ಚಕ್ರವಾಹ ಪಕ್ಷಿ.

ರಥಾಕ್ಷಸ್ಯಾಕ್ಷಯೋ ನಾಮ ಯಸ್ಯ ।

ರಥಾಕ್ಷಮನ್ ರಥಾಕ್ಷಮನ್ (ಪುಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಂದ ರಥಕಾರಿ

ಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು. “ವಿಪ್ರಾದಾವೃತಮುಪ್ರಸ್ತೌ  
ನಿಷಾದೀ ತು ಮನೋಜವಮ್ । ರಥಕಾರೀ ರಥಾಕ್ಷಮಾನಮಾವೃತೀ ತು  
ಖರಜ್ಜಕಮ್” ವೇಜಂ ।

ರಥಿಕ ರಥಿಕ (ಪುಂ) 1. ರಥದ ಯಜಮಾನ. ರಥೋಪಾಸ್ತಿ

“ಠನ್” (೪-೨-೧೧೪) । 2. ತಿನಿಶವೃಕ್ಷ, ನೆಮ್ಮಿಗಿಡ.  
(ವಿಂ) 3. ರಥದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವವನು. ರಥೇನ ಚರತಿ —  
“ಠನ್” (೪-೪-೧೦) । 4. ರಥದಲ್ಲಿ ನಿಂತು ಯುದ್ಧ  
ಮಾಡುವವನು.

ರಥಿನ್ ರಥಿನ್ (ಪುಂ) 1. ರಥದ ಸ್ವಾಮಿ, ಗಾಡಿಯ

ಯಜಮಾನ. ರಥೋಪಾಸ್ತಿ “ಠಿನ್:” (೪-೨-೧೧೪) ।  
(ವಿಂ) 2. ರಥವನ್ನು ಏರಿ ಯುದ್ಧಮಾಡುವವನು.

“ಪತ್ತಿ: ಪತ್ತಿಮಭಿಯಾಯ ರಣಾಯ ರಥಿನ್ ರಥಿನ್” ಕುಮಾಂ ೧೬-೨ ।

ರಥಿನ್ ರಥಿನ್ (ಪುಂ) ರಥದ ಯಜಮಾನ. ರಥಸ್ಯೇನ: ಪ್ರಭು: ।

ಶಕಂ ।

ರಥ್ಯ ರಥ್ಯ (ಪುಂ) 1. ರಥವನ್ನು ಎಳೆಯುವ ಕುದುರೆ,

ಗಾಡಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಕುದುರೆ. ರಥಂ वहति — “ಯತ್”  
(೪-೪-೭೬) । “ವಿಭಿನ್ನವರ್ಣಾ ಗರुಡಾಗ್ರಜೇನ ಸೂರ್ಯಸ್ಯ ರಥ್ಯಾ:  
ಪರಿತ: ಸ್ಫುರಂತ್ಯಾ” ಮಾಘಂ ೪-೧೪ । “ಧಾವಂತ್ಯಮಿ  
ಮೃಗಜವಾಕ್ಷಮಯೇವ ರಥ್ಯಾ:” ಶಾಕುಂ ೧-೮ । 2. ರಥದ

ಒಂದು ಭಾಗ, ಗಾಡಿಯ ಚಕ್ರ ಮುಂತಾದುದು. ರಥಸ್ಯೇದಮ್  
“ಯತ್” (೪-೩-೧೨೧) । (ವಿಂ) 3. ರಥಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯ

ವಾದ, ರಥಕ್ಕೆ ಹಿತವಾದ, ಗಾಡಿಗೆ ಬೇಕಾದ. “ರಥ್ಯೋ  
ರಥಹಿತೇಷು ಷ್ಯ ಸ್ವೀಯೇಷ್ಯಾಃವೇ ಚ ವೋಡಿರಿ” ವೇಜಂ ।

ರಥ್ಯಾ ರಥ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುಖ್ಯ ರಸ್ತೆ, ದೊಡ್ಡ ರಸ್ತೆ,

ಹೆದ್ದಾರಿ. ರಥಂ वहति — “ಯತ್” (೪-೪-೭೬) । “ನರೇಂದ್ರ-  
ಮಾರ್ಗಂ ರಥ್ಯೇವ ಪಪಾತ ದ್ವಿಪತಾಂ ಬಲಮ್” ಮಾಘಂ ೧೯-೪೩ ।

“ವಶೀ ವಿವೇಶ ಚಾಯೋಷ್ಯಾಂ ರಥ್ಯಾಸಂಸ್ಕಾರಶೋಭಿತಾಮ್” ರಘುಂ  
೧೪-೩೮ । 2. ರಥಗಳ ಸಮೂಹ, ಗಾಡಿಗಳ ಗುಂಪು.

ರಥಾನಾಂ ಸಮೂಹ: “ಯತ್” (೪-೨-೪೦) । “ರಥ್ಯಾಘೋಷೈರ್ಬೃಹಣಿ”

ವೀರಣಾನಾಮಕಯಂ ಗच्छन् वाजिनां ह्येषया च” ಮಾಘಂ

೧೮-೩ । 3. ನಾಲ್ಕು ರಸ್ತೆಗಳು ಸೇರುವ ಚೌಕ.

4. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. “ರಥ್ಯಾ ತು ರಥಸಂಘಾತೇ ಪ್ರತೋಲ್ಯಾಂ  
ಪಥಿ ಚತ್ವರೇ” ಹೇಮಂ ।

ರಥ್ಯಾಮೃಗ ರಥ್ಯಾಮೃಗ (ಪುಂ) ನಾಯಿ.

ರಥ್ಯಾವಾದ ರಥ್ಯಾವಾದ (ಪುಂ) ಬೀದಿಯ ಮಾತು, ದಾರಿ

ಹೋಕರ ಮಾತು.

ರದ ರದ (ಪುಂ) 1. ದನ್ತ, ಹಲ್ಲು. ರದತಿ—ರದ (ವಿಲೇಖನೆ)

“ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । “उत्क्षिप्योच्चै: प्रस्फुरन्तं  
रदाम्यामीषादन्त: कुञ्जरं शात्रवीयम्” ಮಾಘಂ ೧೮-೩೮ ।

2. ಪರಚುವುದು. 3. ಹಲ್ಲು (ಗುಳಿ) ಬೀಳುವಂತೆ ಗೀರು  
ವುದು. ರದ — ಮಾವೇ “ಅಚ್” । “ರದೋ ದಂತವಿಲೇಖಯೋ:”  
ವೇಜಂ ।

ರದಚ್ಛದ ರದಚ್ಛದ (ಪುಂ) ತುಟಿ, ಒಸಡು, ಅಧರ.

ರದಾಕ್ಷಾಛಂತೇಜೇನ — ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ “ಛ:”  
(೩-೩-೧೧೮) ।

ರದನ ರದನ (ಪುಂ) 1. ದನ್ತ, ಹಲ್ಲು. ರದಂತೇಜೇನ — ರದ

(ವಿಲೇಖನೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭) । (ನಂ) 2. ಸೀಳು  
ವುದು, ಗುಳಿಬೀಳುವಂತೆ ಗೀರುವುದು. ರದ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೭) ।

ರದನಚ್ಛದ ರದನಚ್ಛದ (ಪುಂ) ತುಟಿ, ಅಧರ, ಒಸಡು.

ರದನಾಕ್ಷಾಛಂತೇಜೇನ — ಛದ (ಅಪವಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ “ಛ:”  
(೩-೩-೧೧೮) ।

ರದಿನ್ ರದಿನ್ (ವಿಂ) ಗಡ, ಅನೆ. ರದಿ ಪ್ರಶಸ್ತದಂತಾವಸ್ಯ

“ಠಿನ್:” (೪-೨-೧೧೪) । ಏವಮ್ ರದಿನ್ ರದಿನ್.

ರಂತವ್ಯ ರಂತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಶ್ರೇಡಿಸಬೇಕಾದ, ಅಟವಾಡ

ಬೇಕಾದ. 2. ಸಂಭೋಗಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ಸಂತೋಷ  
ಪಡಬೇಕಾದ. ರಮು (ಕೌಡಾಯಾಮ್) “ತವ್ಯ:” (೩-೧-೯೬) ।  
“ಅನೀಯರ್” । ರಮಣೀಯಮ್ ರಮಣೀಯಮ್.

ರಂತಿವೇವ ರಂತಿವೇವ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ.

“ಕಾಲಕ್ರಾಂತೋ ರಂತಿವೇವ: ಕೇಶವೋ ಗರುಡವಜ:” ವೇಜಂ ।

2. ಚಂದ್ರವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. [ಈ ರಾಜನು ಅನೇಕ  
ಯೋಗಮಾಡಿ ಯಜ್ಞಪಶುಗಳ ಚರ್ಮಗಳನ್ನು ರಾಶಿಹಾಕಿ  
ದ್ದನು. ಅದರಿಂದ ಒಂದು ನದಿಯು ಹರಿದು ಬಂದಿತು.

ಇದೇ ಚರ್ಮಾಣ್ವತೀ ನದಿ. ಈ ರಾಜನು ಪತ್ನೀಪುತ್ರ  
ರೊಡನೆ ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ತಪಸ್ಸುಮಾಡುತ್ತ ಒಂದು ಸಲ 48

ದಿನಗಳ ಉಪವಾಸಮಾಡಿದನು. 49 ನೆಯ ದಿನ ದೇವ



ಲೋಕದಿಂದ ಪಡ್ರಸೋಪೇತವಾದ ಭೋಜನವು ಇವನಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದಿತು. ಅದನ್ನು ಪತ್ನೀಪುತ್ರರಿಗೆ ಹಂಚಿ ಉಳಿದು ದನ್ನು ತಾನು ಊಟಮಾಡಲು ಕುಳಿತಾಗ ಒಬ್ಬ ವಿಪ್ರನು ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬರಲು ಅವನಿಗೆ ಬಡಿಸಿ ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸಿದನು. ಅಷ್ಟ ರಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ಶೂದ್ರನು ಬಂದು ಅನ್ನವನ್ನು ಬೇಡಲಾಗಿ ಅವನಿಗೂ ಬಡಿಸಿ ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸಿದನು. ಅಕೂಡಲೇ ಒಬ್ಬ ಬೇಡನು ನಾಯಿಗಳೊಡನೆ ಬಂದು ಅನ್ನವನ್ನು ಕೇಳಲಾಗಿ ಉಳಿದುದೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಅವನಿಗೂ ನಾಯಿಗಳಿಗೂ ಕೊಟ್ಟು ಪರಮಾತ್ಮಧ್ಯಾನಾಸಕ್ತನಾಗಿ ಕುಳಿತಿದ್ದನು. ಅವನಲ್ಲಿ ಉಳಿದಿದ್ದ ನೀರನ್ನು ಒಬ್ಬ ಹರಿಜನನು ಬಂದು ಯಾಚಿಸಲು ಅವನಿಗೂ ಅದನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಹಸಿವು ಬಾಯಾರಿಕೆಗಳಿಂದ ಪೀಡಿತನಾಗಿದ್ದರೂ ಯಾವ ವಿಕಾರವನ್ನೂ ತೋರಿಸಿ ಕೊಳ್ಳದೆ ಧ್ಯಾನದಲ್ಲಿರುವಾಗ ಬ್ರಹ್ಮಾದಿದೇವತೆಗಳು ಬಂದು ಇವನ ಮಾಯಾಪಾಶವನ್ನು ಕಳಚಿಹಾಕಲು ಇವನು ಪರಮಜ್ಞಾನಿಯಾದನು]. ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ।

ರನ್ತು ರಂತು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನದಿ, ಹೊಳೆ. 2. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ.

ರನ್ಧಕ ರಂಧಕ (ತ್ರಿಂ) ಗವಸಣಿಗೆ, ಕತ್ತಿಯ ಒರೆ. "ಭವೇತ್ ಕುರಸಮುದ್ಗಂ ತು ತ್ರಿಪ್ವಾಕರ್ಣಕರನ್ಧಕೇ" ವೈಜಂ ।

ರನ್ಧ್ರ ರಂಧ್ರ (ನಂ) 1. ಬಿಲ, ವಿವರ, ಕಂಡಿ, ತೂತು, ಛಿದ್ರ. ರನ್ಧ್ರ (ಹಿಸಾಸಂರಾಢ್ಯಾಃ) "ರಕ್" ಬಾಹುಂ । "ಅಧಿಗಮ್ಯ ಚ ರನ್ಧ್ರಮನ್ತರಾ ಜನಯನ್ ಮಂಡಲಭೇದಮನ್ಯತಃ" ಮಾಘಂ ೧೬-೨೩ । "ಎವಮುಕ್ತೇ ತದಾ ಸಾಂಖ್ಯಾ ರನ್ಧ್ರಾತ್ಸಂಖ್ಯಾ-ಭವಾದ್ಭುವಃ" ರಘುಂ ೧೫-೮೨ । ಮನುಷ್ಯನ ಶರೀರ ದಲ್ಲಿರುವ ರಂಧ್ರಗಳು : ಕಣ್ಣು ಕಿವಿ ಮತ್ತು ಮೂಗು ಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡೆರಡು ರಂಧ್ರಗಳು. ಜನನೇಂದ್ರಿಯ ಗುದ ಮತ್ತು ಬಾಯಿಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದೊಂದು ಹೀಗೆ ದೇಹದಲ್ಲಿ ಒಂಬತ್ತು ರಂಧ್ರಗಳಿರುವುವು. ಅಲ್ಲದೆ ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮ ರಂಧ್ರವೂ ಸೇರಿ ಹತ್ತು ರಂಧ್ರಗಳು. "ನಾಸಾನಯನಕರ್ಣಾನಿ ದ್ವೇ ದ್ವೇ ರನ್ಧ್ರೇ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತೇ । ಮೇಹನಾಪಾನವಕ್ತ್ರಾಣಾಮೇಕೈಕಂ ರನ್ಧ್ರ-ಮುಚ್ಯತೇ । ದಶಮಂ ಮಸ್ತಕೇ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ರನ್ಧ್ರಾಣಿತಿ ನೃಣಾಂ ವಿಧುಃ । ಹೆಂಗಸರಿಗೆ ಸ್ತನಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡು ಮತ್ತು ಗರ್ಭದ್ವಾರ ವೊಂದು ಸೇರಿ ಪುರುಷರಿಗಿಂತಲೂ ಮೂರು ರಂಧ್ರಗಳು ಅಧಿಕವಾಗಿರುವುವು. "ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ತ್ರಿಪಿಂಚಿಕಾನಿ ಸ್ಯುಃ ಸ್ತನಯೋ-ಗಮೆವರ್ಮನಃ" ಶಾತ್ಲೇಖರಃ । 2. ಯೋನಿ. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ. 3. ದರ್ಬಲ್ಯ, ಆಕ್ರಮಣ ಮಾಡಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗುವ ಸ್ಥಿತಿ. "ಆವೃಣೋದಾತ್ಮನೋ ರನ್ಧ್ರಂ ರನ್ಧ್ರೇಷು ಪ್ರಹರನ್ ರಿಪ್ಪನ್" ರಘುಂ ೧೭-೬೧ । 4. ಒಂಬತ್ತು ಸಂಖ್ಯೆಯ

ಸಂಕೇತ. 5. ದೂಷಣ, ನಿಂದೆ. "ರನ್ಧ್ರಂ ತು ದೂಷಣೇ ಚಿದ್ರೇ" ಮೇದಿಂ । 6. ಲಗ್ನದಿಂದ ಎಂಟನೆಯ ಸ್ಥಾನ.

ರನ್ಧ್ರಬಂಧು ರಂಧ್ರಬಂಧು (ಪುಂ) ಮೂಷಕ, ಇಲಿ. ರನ್ಧ್ರ ಬಂಧುರಿವ । "ಉದ್ರುಸ್ತುರ್ಮೋ ರನ್ಧ್ರಬಂಧುಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ರಮಸ ರಭಸ (ಪುಂ) 1. ವೇಗ, ತ್ವರೆ. ರಮತೇಜೇನ — ರಮ (ರಾಮಸ್ಯೇ) "ಅಸಕ್" (ತಂ ೩-೧೧೭) । "ರಮತೇನ ಹಾರಪದದತ್ತಕಾಂಕ್ಷಯಃ ಪ್ರತಿಮೂರ್ಷಜಂ ವಿಹಿತಕರ್ಣಪೂರಕಾಃ" ಮಾಘಂ ೧೩-೩೨ । 2. ದುಡುಕು, ಯೋಚಿಸದೆ ಕೆಲಸಮಾಡುವಿಕೆ. "ಅತಿರಮಸಃಕೃತಾನಾಂ ಕರ್ಮಣಾಮಾವಿಪತ್ತೇಃ" ಭೃತಂ ೧-೧೫ । 3. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. "ರಮಸೋ ವೇಗಹರ್ಷಯೋಃ" ಮೇದಿಂ । 4. ಔತ್ಸುಕ್ಯ, ಉತ್ಸಾಹ. "ಮನಸಿ ರಮಸವಿಭವೇ ಹರಿಹರದಯತು ಸುಕೃತೇನ" ಗೀತಗೋಂ ೫ । 5. ವಿಷ, ನಂಜು. 6. ಸಿಟ್ಟು, ಕೋಪ. (ವಿಂ) 7. ವೇಗವಾದ, ಜೋರಾದ. 8. ಉತ್ಕಟವಾದ. "ಅಥ ಜಯಾಯ ನು ಮೇಘಮಹಿಮತೋ ರಮಸಯಾ ನು ದಿಗಂತದಿವ್ಯಕಯಾ" ಕಿರಾಂ ೫-೧ । 9. ಸಂತೋಷವುಳ್ಳ, ಹರ್ಷವುಳ್ಳ.

ರಮ ರಭೂ (ಪುಂ) ದೂತ, ಸಂದೇಶವನ್ನು ಒಯ್ಯುವವನು. "ದೂತಃ ಸಾಂದೇಶಿಕೋ ರಮಃ" ವೈಜಂ ।

ರಮ ರಮ (ಪುಂ) 1. ಪತಿ, ಗಂಡ. 2. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ರಮತೇ — ರಮು (ಕೃಡಾಯಾಮ್) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) । 3. ಕೆಂಪು ಅಶೋಕ ವೃಕ್ಷ. "ರಮಃ ಕಾಂತೋ ರಕ್ತಾಶೋಕೋ ಮನ್ಮಥೇ ಚ" ಹೇಮಂ ।

ರಮಕ ರಮಕ (ಪುಂ) ಪತಿ, ಗಂಡ. ರಮತೇ — ರಮು (ಕೃಡಾಯಾಮ್) "ಕ್ವುನ್" (ತಂ ೨-೩೪) ।

ರಮಠ ರಮಠ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ದೇಶ. (ನಂ) 2. ಹಿಂಗು. ರಮು (ಕೃಡಾಯಾಮ್) "ಅಠಃ" ಬಾಹುಂ । (ವಿಂ) 3. ರಮಠ ದೇಶದ ನಿವಾಸಿ.

ರಮಣ ರಮಣ (ಪುಂ) 1. ಪತಿ, ಗಂಡ. ರಮಯತಿ — ರಮು (ಕೃಡಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) । "ರಮಣ-ಮೃಜುತಯಾ ಪುರಃ ಸಖಿನಾಮಕಲಿತಚಾಪಲದೋಷಮಾಲಿಲಿಜ್ಞ" ಮಾಘಂ ೭-೪೬ । 2. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. 3. ಅರುಣ, ಸೂರ್ಯನ ಸಾರಥಿ. 4. ಗರ್ವಭ, ಕತ್ತೆ. (ನಂ) 5. ಜಘನ, ಹೆಂಗಸರ ಸೊಂಟದ ಮುಂಭಾಗ. 6. ಪಡವಲದ ಬೇರು. "ರಮಣಂ ಪುನಃ । ಪಟೋಲಮೂಲೇ ಜವನೇ ರಮಣೋ ರಾಸಮೇ ಪ್ರಿಯೇ" ಹೇಮಂ । 7. ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ. 8. ಸಂತೋಷ, ಆನಂದ. 9. ಸುರತಕ್ರೀಡೆ, ಸಂಭೋಗ. ರಮು ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) । "ಪ್ರಮದಮದನಮಾಚ-ಶ್ವಿನೋದಾಮರಾಮರಮಣರಮಸಖೇದಸ್ವೇದವಿಚ್ಛೇದದಕ್ಷಃ" ಮಾಘಂ



೧೧-೧೯। (ವಿಂ) 10. ರಮಣೀಯವಾದ, ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ.

ರಮಣಾ ರಮಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪತ್ನಿ, ಹೆಂಡತಿ.

ರಮಣಿ ರಮಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಂಗಸು. 2. ಪತ್ನಿ, ಹೆಂಡತಿ.

ರಮ್ಯತೇಜ್ಯಾಮ್—ರಮು (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)।

“ಕ್ಷುಮ್ಯಂತಿ ಪ್ರಸಮಮಹೋ ವಿನಾಪಿ ಹೇತೋಃ ಲೀಲಾಭಿಃ ಕಿಮು ಸತಿ ಕಾರಣೇ ರಮಣ್ಯಃ” ಮಾಘಂ ೮-೨೪। 3. ಸುಂದರಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು.

ರಮಣೀಯ ರಮಣೀಯಾ (ವಿಂ) 1. ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ. ರಮು (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬)। “ವಿತರಸಿ ದಿಕ್ಷು ರಣೇ ದಿಕ್ಷಾತಿಕಮನೀಯಂ ದಶಮುಖಮಾಲಿಬಾಲಿ ರಮಣೀಯಮ್” ಗೀತಗೋಂ ೧-೭। 2. ಸಂತೋಷಗೊಳಿಸುವ, ಆನಂದವುಂಟುಮಾಡುವ. “ಪ್ರಾತಿಭಂ ತ್ರಿಸಕರೇಣ ಗತಾನಾಂ ವಕ್ರವಾಕ್ಯರಚನಾರಮಣೀಯಃ” ಮಾಘಂ ೧೦-೧೨। 3. ಆಟವಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ಆಟವಾಡಬೇಕಾದ. 5. ಸಂತೋಷಪಡಬೇಕಾದ.

ರಮಣೀಯತಾ ರಮಣೀಯತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುಂದರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಮನೋಹರವಾಗಿರುವಿಕೆ. ರಮಣೀಯಸ್ಯ ಭಾವಃ “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯)। “ಕ್ಷಣೇ ಕ್ಷಣೇ ಯಜ್ಞವತಾಮುಪೇತಿ ತದೇವ ರೂಪಂ ರಮಣೀಯತಾಯಾಃ” ಮಾಘಂ ೪-೧೭।

ರಮಣ್ಯ ರಮಣ್ಯ (ವಿಂ) ರಮಣೀಯವಾದ, ಸುಂದರವಾದ. ರಮು (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) “ಅನ್ಯಃ” (೩ಂ ೩-೧೦೧)।

ರಮತಿ ರಮತಿ (ಪುಂ) 1. ಕಾಲ, ಸಮಯ. 2. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ರಮು (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) “ಅತಿಃ” (೩ಂ ೪-೬೩)। “ರಮತಿಃ ಕಾಲಕಾಮಯೋಃ” ಸಿಂ ಕೌಂ। 3. ನಾಯಕ. 4. ಸ್ವರ್ಗ. “ರಮತಿನಾಯಿಕೇ ನಾಕೇ” ಮೇದಿಂ। 5. ವಾಯುಸ, ಕಾಗೆ.

ರಮಾ ರಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿ. ರಮಯತಿ—ರಮು (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ಏಷ ಪ್ರಸನ್ನವದನೋ ರಮಯಾತ್ಮಶಕ್ತ್ಯಾ ಯದ್ವತ್ಕರಿಷ್ಯತಿ ಗೃಹಿತಗುಣಾವತಾರಃ” ಭಾಗಂ ೩-೯-೨೩। 2. ಶೋಭೆ, ಕಾಂತಿ. 3. ಸಂಪತ್ತು, ಐಶ್ವರ್ಯ. 4. ಅದೃಷ್ಟ, ಸುಯೋಗ.

ರಮಾಕಾಂತ ರಮಾಕಾಂತ, -ನಾಥ -ನಾಥ, -ಪತಿ -ಪತಿ (ಪುಂ) ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿಯ ಪತಿ, ಶ್ರೀ ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ರಮಾಯಾಃ ಕಾಂತಃ ನಾಥಃ ಪತಿರ್ವಾ। “ರಮಾಪತೌ ಗಾರುಡಭೂರಣ್ವತೌ ರಸಾಧಿಕಾ ರತ್ನಲತೇವ ಸೌ ಬಭೌ” ಯಾದಂ ೧೪-೪೭।

ರಮು - ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್ (ಶ್ವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ)। ರಮತೇ ರಮತೇ ರಮತೇ. ರೇಮೆ ರೇಮಾತೇ ರೇಮಿರೇ. ರಂತಾ, -ಸೇ, -ಹೇ।

ರಂಸ್ಯತೇ। ರಮತಾಮ್। ರಮೆ ರಮಾವಹೇ ರಮಾಮಹೇ। ಅರಮತ। ರಮೇತ। ರಂಸಿಷ್ಠ। ಅರಂಸ್ತ। ಅರಂಸ್ಯತ। 1. ಸಂತೋಷಪಡು, ಆನಂದಿಸು. “ವ್ರಜತಿ ವಿರಹೇ ವೇಚಿತ್ರ್ಯಂ ನಃ ಪ್ರಸೀದತಿ ಸನ್ನಿಧೌ ರಹಸಿ ರಮತೇ ಪ್ರೀತ್ಯಾ ವಾಚಂ ದದಾತುನುವರ್ತತೇ” ಮಾಲತೀಂ ೩-೨। 2. ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ, ಅಟವಾಡು. 3. ಸ್ತ್ರೀಯ ರೊಡನೆ ಸಂಭೋಗಮಾಡು, ರತಿಶ್ರೇಷ್ಠ ನಡೆಸು.

ಭಾವೇಃ—ರಮ್ಯತೇ। ರೇಮೆ। ರಂತಾ। ರಂಸ್ಯತೇ। ರಮ್ಯತಾಮ್। ಅರಮ್ಯತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಣಿಚಿಃ—ರಮಯತಿ, -ತೇ। ರಮಯಾಂ ಚಕಾರ-ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ-ಆಸ। ರಮಯಿತಾ। ರಮಯತು, -ತಾಮ್। ಅರಮಯತು, -ತಂ। ರಮಯೇತ್, -ತ। ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕ್ರತುಃ—ರಂತವ್ಯಮ್। ರಮಣೀಯಮ್। ರಮ್ಯಮ್। ರತಮ್। ರತವಾನ್। ರಮಾಣಃ। ರಂತುಮ್। ರತಮ್। ರಮಣಮ್। ರತ್ವಾ। ವಿರಮ್ಯ।

ವಿ ಆಡ್ ಪರಿ ಈ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಈ ಧಾತುವು ಪರಸ್ಮೈಪದಿಯಾಗುವುದು.

ವಿ + ರಮು = ವಿರಮತಿ। ವಿರರಾಮ। “ವಿರರಾಮ ಮಹೀಯಾಸಃ ಪ್ರಕೃತ್ಯಾ ಮಿತಭಾಷಿಣಃ” ಮಾಘಂ ೨-೧೩।

ಆ + ರಮು = ಆರಮತಿ।

ಪರಿ + ರಮು = ಪರಿರಮತಿ।

ಉಪ ಉಪಸರ್ಗದ ಯೋಗದಿಂದ ಸಕರ್ಮಕ ರಮು ಧಾತುವು ನಿತ್ಯವಾಗಿಯೂ ಅಕರ್ಮಕ ರಮು ಧಾತುವು ಏಕಲ್ಪವಾಗಿಯೂ ಪರಸ್ಮೈಪದಿಯಾಗುವುದು. ಸಕಂ—ಯಜ್ಞದತ್ತಮುಪರಮತಿ—ಅಂತರ್ಭಾವಿತಣ್ಣರ್ಥ. ಉಪರಮಯತಿ ಎಂಬ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುದರಿಂದ ಸಕರ್ಮಕ. ಅಕಂ—ಉಪರಮತಿ ಉಪರಮತೇ ವಾ ನಿವರ್ತತೇ ಇತ್ಯರ್ಥಃ।

ರಮ್ಯ ರಂಭ (ಪುಂ) 1. ವೇಣು, ಬಿದಿರು. 2. ಒಬ್ಬ ವಾನರ. ರಮಿ (ಶಬ್ದ) “ಘ್” (೩-೩-೧೧೯)। “ರಮ್ಯಾ ಕದಲ್ಯ-ಪ್ರಸರೋರ್ನಾ ವೇಣೌ ವಾನರಾಂತರೇ” ಮೇದಿಂ। 3. ಕಳೆವಳದಿಂದ ಕೂಗುವುದು, ಗರ್ಜಿಸುವುದು, ಅಬ್ಬರಿಸುವುದು. ರಮಿ ಭಾವೇ “ಘ್” (೩-೩-೧೮)। “ಸ್ಯಾದಾಕ್ರಂದಃ ಪಿಂಜ-ರಮೌ” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ। 4. ದಂಡ, ಕೋಲು. “ರಮ್ಯಸ್ತು ದಂಡೋ ದರಕರೋಪಿ ಚ” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ।

ರಮ್ಯಣ ರಂಭಣ (ನಂ) ದನಗಳ ಕೂಗು, ಹಸುಗಳು ಕೂಗುವ ಧ್ವನಿ. ರಮಿ (ಶಬ್ದ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। “ತಂದನಂ ರಮ್ಯಣಂ ರಮ್ಯಾ ರಮ್ಯತಂ ಚ ಗವಾಂ ಧ್ವನಿಃ” ವೈಜಂ।

ರಮಾ ರಂಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಾಳೆಯ ಗಿಡ. ರಮ (ರಾಭಸ್ಯ) “ಘ್” (೩-೩-೧೧೯)। “ತರ್ಮುಖ್ಯುಗೇನ ಸುಂದರೀ ಕಿಮು ರಮ್ಯಾಂ



ಪರಿಣಾಹಿನಾ ಪರಮ್" ನೆಪಂ ೨-೩೭. 2. ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಪರಸ್ಸು, ನಳಕೂಬರನ ಪತ್ನಿ, ಸ್ವರ್ಗಲೋಕದಲ್ಲಿ ಅತಿಮಂದರಿ ಯಾದ ಹೆಂಗಸು. "ರಮಾ ಕದಲ್ಯಪರಸೋ" ಮೇದಿಂ. 3. ವೇಶ್ಯ, ಸೂಳೆ. 4. ಹೆಸುಗಳು ಕೂಗುವ ಧ್ವನಿ. 5. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಅರಚುವುದು, ಗಾಬರಿಯಿಂದ ಕೂಗಿ ಕೊಳ್ಳುವುದು. 6. ಬಿಳಿಯ ಎಲೆಯ ಬಾಳೆಯ ಗಿಡ. "ಕದಲಿ ದೀರ್ಘಿಣಿ ಚ ರಮಾ ಸಾ ಗೌರಪಣಿಕಾ" ವೈಜಂ. 7. ನೂಲಿನ ಉಡುದಾರ, ನಡುವಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ನೂಲಿನ ದಾರ. "ಮೌವೀತ್ವಿಕಲಮಾತ್ರಿಕಾ. ಸೀತಾ ತು ಧಟಿನಿ ರಮಾ" ವೈಜಂ.

**ರಮಾಗರ್ಭ ರಂಭಾಗರ್ಭ** (ಪುಂ) ಬಾಳೆಯ ದಿಂಡು. ರಮಾಯಾ ಗರ್ಭ: "ರಮಾಗರ್ಭನಿಭಂ ತವೋಽಯುಗಲಂ ಬ್ರಾಹ್ಮ ಮೃಣಾಲೋಪಮೌ" ರತ್ನಾಂ ೩-೧೧.

**ರಮಿತ ರಂಭಿತ** (ನಂ) ದನಗಳ ಕೂಗು, ಹೆಸುಗಳು ಕೂಗುವ ಶಬ್ದ. "ರಮಿತಂ ಚ ಗವಾಂ ಧ್ವನಿ:" ವೈಜಂ.

**ರಮ್ಯ ರಮ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಸಂಪಿಗೆ ಮರ. ರಮ್ಯತೇಜೇನ — ರಮ್ಯ (ಕೃಷ್ಣಾಯಾಮ್) "ಯತ್" (೩-೧-೯೮). (ನಂ) 2. ಪಡವಲದ ಬೇರು. (ವಿಂ) 3. ಅಂದವಾದ, ಸುಂದರ ವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ. "ಗತ್ವಾ ನೂನಂ ವೈಬುಧಂ ಸದಾ ರಮ್ಯಂ ಮುಚ್ಛಾಭಾಜಾಮಾಜಗಾಮಾಂತರಾತ್ಮಾ" ಮಾಘಂ ೧೮-೬೩. 4. ಸಂತೋಷಪುಂಜಮಾಡುವ, ಅನಂದವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ. "ರಮ್ಯಾಸ್ತಪೋಧನಾನಾಂ ಪ್ರತಿಹತವಿಘ್ನಾ: ಕ್ರಿಯಾ: ಸಮವಲೋಕ್ಯ. ಜ್ಞಾಸ್ಯಸಿ ಕ್ರಿಯದ್ಭುಜೋ ಮೇ ರಕ್ಷತಿ ಮೌವೀ-ಕಿಣಾಕ್ಷ ಇತಿ" ಶಾಕುಂ ೧-೧೨. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಮ್ಯಾ ರಮ್ಯಾ. 5. ರಾತ್ರಿ. "ರಮ್ಯಾ ರಾತ್ರೌ ಚಂಪಕೇ ನಾ ಮನೋಜ್ವಲಭಿ-ಧೇಯವತ್. ನಪುಂಸಕಂ ಪಟೋಲಸ್ಯ ಮೂಲೇ ಸುರಿದಿರಿಷ್ಯತೇ" ಮೇದಿಂ.

**ರಮ್ಯಕ ರಮ್ಯಕ** (ನಂ) 1. ನೀಲವರ್ಣಕ್ಕೆ ಉತ್ತರದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ದೇಶ. "ಉದಕ್ ತು ರಮ್ಯಕಂ ನೇಲಂ ನೀಲಾದ್ರೇಶ್ವರಂ ಹಿ ಯತ್" ವೈಜಂ. 2. ಪಡವಲದ ಬೇರು. "ಪಟೋಲಂ ಸ್ಯಾದ್ರಾಜಫಲಂ ತಸ್ಯ ಮೂಲೇ ತು ರಮ್ಯಕಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ರಯ ರಯ** (ಪುಂ) 1. ವೇಗ, ಜೋರು. ರಯತೇಜೇನ — ರಯ (ಗತೌ) "ಯ:" (೩-೩-೧೧೮). "ಶನೈರನೀಯಂತ ರಯಾ-ತ್ಪತಂತೋ ರಯಾ: ಕ್ಷಿತಿಂ ಹಸ್ತಿನಖಾದಿವೇದ:" ಮಾಘಂ ೩-೬೮. 2. ನದಿಯ ಪ್ರವಾಹ. "ತಸ್ಯಾಸ್ತಿಕ್ತೈರ್ವನಗಜಮದೇವಾಸಿತಂ ವಾನ್ತವೃಷ್ಟಿರ್ಜಂಬುಕುಂಜಪ್ರತಿಹತರಥಂ ತೋಮಾದಾಯ ಗಂಧ:" ಮೇಘಂ ೧-೨೦.

**ರಯಿ ರಯೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧನ, ಐಶ್ವರ್ಯ, ಸಂಪತ್ತು. "ಋಷ್ಣಂ ಸ್ತ್ರಿಯೌ ರಾ ರಯಿ ನಾ ಕೋಶೋಽರ್ಯೌ ವಿಭವೇಽಪಿ ಚ" ಕಲ್ಪದ್ರುಂ.

**ರಲ್ಲಕ ರಲ್ಲಕ** (ಪುಂ) 1. ಕಂಬಳ, ಶಾಲು. ರತ್ ಇಚ್ಛಾ, ತಾಂ ಲಾತಿ — ಲಾ (ಬಾದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩). ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"। ರತ್ ಕೃಷ್ಣಾಂ ಲಾತಿ — ಲಾ "ಕನ್" ವಾ. 2. ಕಂಬಲಮೃಗ. ಈ ಮೃಗದ ಕೂದಲಿನಿಂದ ಶಾಲು ತಯಾರಾಗುವುದು. "ರಲ್ಲಕ: ಕಂಬಲೇ ಸ್ಮೃತ:। ತಯೇವ ಕಂಬಲಮೃಗೇ" ಹೇಮಂ. 3. ರೆಪ್ಪೆಯ ಕೂದಲು. "ಯುವತಿ-ರಲ್ಲಕಮಲ್ಲಸಮಾಹತೌ ಭವತಿ ಕೌ ನ ಯುಷಾ ಗತಚೇತನ:".

**ರವ ರವ** (ಪುಂ) 1. ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ. ರ (ಶಬ್ದ) "ಅಚ್" (೩-೩-೪೭). "ರವ: ಕಠಿನಕರ್ಷಣವೃದ್ಧಿತ್ವಾಪಜನ್ಮಾ ಕ್ಷಣಾತ್" ಚಂ ರಾಂ. 2. ಮೃಗಗಳ ಶಬ್ದ, ಅನೇ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಗರ್ಜನೆ. "ಇಹ ಮುಹುರ್ಮುದಿತ: ಕಲಮೇ ರವ: ಪ್ರತಿದಿಶಂ ಕ್ರಿಯತೇ ಕಲಮೇರವ:" ಮಾಘಂ ೪-೬೦.

**ರವಣ ರವಣ** (ಪುಂ) 1. ಉಷ್ಣ, ಒಂಟೆ. ರೌತಿ — ರ (ಶಬ್ದ) "ಯುಚ್" (೩-೨-೧೪೮). "ಅರ್ಥೋಜ್ಜಿತೋದ್ಧಾರವಿಕ್ಷಣ್ಣ-ಸ್ವರ: ಸ್ವನಾಮ ನಿನ್ಯೇ ರವಣ: ಸ್ಫುಟಾರ್ಥತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೨-೯. 2. ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ, ಸದ್ದು. "ನಿಹ್ನಾದೋ ರವಣೋ ನಾದ:" ವೈಜಂ. 3. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. "ಅಯೋಷ್ಠೇ-ಲೋ ರವಣ:" ವೈಜಂ. 4. ಕಹಿಪಡವಲದ ಗಿಡ. "ಪಟೋಲಕೇ ತು ರಾಜೀವಾನ್ ರವಣ: ಕಂಕಶ: ಪಟು:" ವೈಜಂ. (ನಂ) 5. ಕಂಚು. "ಘಂಟಾಸ್ವನಂ ಭೂರಿಲೋಹಂ ರವಣಂ ಲೋಹಜಂ ಮಲಮ್" ವೈಜಂ. (ವಿಂ) 6. ಕೂಗಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಶಬ್ದ ಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದ. "ಉತ್ಕಂಠಾವರ್ಧನ: ಶುಭ್ರಂ ರವಣ-ರಮ್ಬರಂ ತತಮ್" ಭಟ್ಟಿಂ ೭-೧೪. 7. ಚಂಚಲವಾದ. 8. ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ.

**ರವಥ ರವಥ** (ಪುಂ) ಕೋಗಿಲೆ. ರ (ಶಬ್ದ) "ಅಥ:" (೩ಂ ೩-೧೧೩).

**ರವಾ ರವಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆತ್ತಿಗಿಡ.

**ರವಿ ರವಿ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ರುಯತೇ ಸ್ತುಯತೇ — ರ (ಶಬ್ದ) "ಇ:" (೩ಂ ೪-೧೩೯). "ಪ್ರಧ್ವಂಸಿತಾನ್ಧತಮಸ: ತತ್ರೋ-ದಾಹರಣಂ ರವಿ:" ಮಾಘಂ ೨-೩೩. "ಸಹಸ್ರಗುಣಮುತ್ಸಾಹಮಾದತ್ತೇ ಹಿ ರಸಂ ರವಿ:" ರಘುಂ ೧-೧೮. 2. ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 3. ಹನ್ನೆರಡು ಸಂಖ್ಯೆಯ ಸಂಕೇತ. (ಅದಿತ್ಯರ ಸಂಖ್ಯೆ 12).

**ರವಿಗ್ರಾವನ್ ರವಿಗ್ರಾವನ್** (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯಕಾಂತ ಶಿಲೆ. "ಸ್ಫಟಿಕೋಽಕೋ ರವಿಗ್ರಾವಾ ಸೂರ್ಯಕಾಂತೋಽನ್ಯಲೋಪಮ:" ವೈಜಂ.

**ರವಿಜ ರವಿಜ**, -ತನಯ -ತನಯ, -ಪುತ್ರ -ಪುತ್ರ, -ಸುತ -ಸುತ, -ಸುನು -ಸುನು (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯನ ಪುತ್ರ. (1) ಸುಗ್ರೀವ. (2) ಕರ್ಣ. (3) ಶನಿಗ್ರಹ.



(4) ವೈವಸ್ವತಮನು. (5) ಧರ್ಮರಾಯ. (6) ಸಾವರ್ಣಿ ಮನು. [ಸಂಜ್ಞಾ ದೇವಿಯಲ್ಲಿ ವೈವಸ್ವತಮನುವೂ ಛಾಯಾ ದೇವಿಯಲ್ಲಿ ಸಾವರ್ಣಿಮನುವೂ ಜನಿಸಿದರು.]

ರವಿವಿನ ರವಿವಿನ (ನಂ) ಭಾನುವಾರ, ಆದಿತ್ಯವಾರ, ಮೊದಲನೆಯ ವಾರ.

ರವಿನೇತ್ರ ರವಿನೇತ್ರ (ಪುಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ರವಿನೇತ್ರ ಲೋಕನ ಯಸ್ಯ ।

ರವಿಪ್ರಿಯ ರವಿಪ್ರಿಯ (ಪಂ) 1. ಗನ್ನೇರಳ ಗಿಡ. (ನಂ) 2. ತಾಮ್ರಲೋಹ. 3. ರಕ್ತಕಮಲ, ಕಿಂದಾವರೆ.

ರವಿರತ್ನ ರವಿರತ್ನ (ನಂ) ಮಾಣಿಕ್ಯ, ಪದ್ಮರಾಗ, ಕೆಂಪು. ರವಿ: ಪ್ರಿಯ ರತ್ನಮ್ ।

ರಶನಾ ರಶನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಡ್ಡಾಣ, ಡಾಬು. ಅಶನಾತಿ— ಅಶ (ಭೋಜನೆ) “ಯುಕ್” ರಶಾದೇಶಾ (ತಂ ೨-೭೬) । “ರಶನಾಕಲಾಪಕಗುಣೇನ ವಧೂರ್ಮಕರಣವಜದ್ವಿರದಮಾಕಲಯತ್” ಮಾಘಂ ೧-೪೫ । 2. ಹೆಗ್ಗ, ರಜ್ಜು. 3. ಚಿಹ್ನೆ, ನಾಲಗೆ.

ರಶ್ಮಿ ರಶ್ಮಿ (ಪುಂ) 1. ಕಿರಣ. ಅಶ್ನುತೇ— ಅಶ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) “ಮಿ:” ಛಾತೋ: ರಶಾದೇಶಾ (ತಂ ೪-೪೬) । “ಸುದೃಶೋ- ಭಿಮತೃಶಶಿರಶ್ಮಿಗಲಜ್ಜಲಬಿಂದುಮಿಂದುಮಣಿಧಾರವಧೂಮ್” ಮಾಘಂ ೧-೩೫ । 2. ರಜ್ಜು, ಹೆಗ್ಗ. “ಸಯಲಸುತಾಯತ- ರಶ್ಮಿಭುಗನಗ್ರಿವಾಗ್ರಸಂಸ್ತಯುಗೇಸ್ತುರಜ್ಞ:” ಮಾಘಂ ೩-೬೮ । 3. ಅಗ್ನಿಜ್ವಾಲೆ, ಬೆಂಕಿಯ ಉರಿ. “ರಶ್ಮಿಜ್ವಾಲಾಪ್ರಗ್ರಹೌ ಚ” ವೈಜಂ । 4. ರೆಪ್ಪೆಯ ಕೊದಲು. “ರಶ್ಮಿ: ಪುಮಾನ್ ದೀಧಿತೌ ಸ್ಯಾತ್ ಪಕ್ಷಮಪ್ರಗ್ರಹಯೋರಪಿ” ಮೇದಿಂ । 5. ಕಾಂತಿ, ಪ್ರಭೆ. “ರಶ್ಮಿಸ್ತು ಪ್ರಗ್ರಹೇ ದೃತೌ” ನಾನಾರ್ಥಂ । 6. ಚಾವಟಿ, ಗಾಡಿಯ ಎತ್ತು ಕುದುರೆಗಳನ್ನು ಓಡಿಸಲು ಉಪಯೋಗಿ ಸುವ ಬಾಳುಗೋಲು.

ರಶ್ಮಿಮಾಲಿನ್ ರಶ್ಮಿಮಾಲಿನ್ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ರಶ್ಮಿನಾ ಮಾಲಾಽಪ್ಯಾಸ್ತಿ — “ಇನಿ:” (೫-೨-೧೧೬) ।

ರಸ ರಸ (ಪುಂ) 1. ಗಿಡ ಮರ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಸಾರ. ರಸ್ಯತೇ— ರಸ (ಆಸ್ವಾದನೆ) “ಛನ್” (೩-೩-೧೯) । 2. ಜಲ, ನೀರು. “ಸಹಸ್ರಗುಣಮುತ್ಸ್ರಷ್ಟುಮಾದತೇ ಹಿ ರಸಂ ರವಿ:” ರಘುಂ ೧-೧೮ । 3. ಪಾದರಸ. “ರಸಸ್ತು ಪಾರದ: ಸೂತೋ ಹಿಡ್ಗುಲೋ ದಾರದೋ ರಸ:” ವೈಜಂ । 4. ದ್ರವವಸ್ತು, ತಿಳಿಯಾದ ವಸ್ತು. “ನೃಪಾಕ್ಷರಾ ಛಾತುರಸೇನ ಯತ್ರ ಭೂಜ- ತ್ವಚ: ಕುಂಜರಬಿಂದುಶೋಭಾ:” ಕುಮಾರಂ ೨-೭ । 5. ಮದ್ಯ. “ವರ್ಜಯೇನ್ಮಧು ಮಾಸಂ ವ ಗಂಧಂ ಮಾಲ್ಯಂ ರಸಾನ್ ಸ್ತ್ರೀಯ:” ಭನುಂ ೨-೧೭೭ । 6. ವಿಷ, ನಂಜು. “ಅಸ್ಮತ್ಪ್ರಯುಕ್ತೈ: ತೀಕ್ಷ್ಣ- ರಸದಾಪಿಮಿ: ಕಿಮನುಷ್ಠಿತಮ್” ಮುದ್ರಾಂ ೨ । 7. ಅಹ್ಲಾದ,

ಸಂತೋಷ. “ವಿಶ್ರಾಮೋ ಹೃದಯಸ್ಯ ಯತ್ರ ಜರಸಾ ಯಸ್ಮಿನ್ನಹಾರ್ಯೋ ರಸ:” ತಂ ರಾಂ ೧-೩೯ । 8. ಸ್ಪೃಹೆ, ಇಚ್ಛೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ. “ಇಹೇ ವಸ್ತುನ್ಯುಪಚಿತರಸಾ: ಪ್ರೇಮರಾಶಿ ಭವಂತಿ” ಮೇಘಂ ೨-೪೯ । 9. ಮಧುರ (ಸಿಹಿ) ಮೊದಲಾದ ಆರು ಭೋಜ್ಯ (ಊಟದ) ರಸಗಳು. (1) ಮಧುರ (ಸಿಹಿ) (2) ಅಮ್ಲ (ಹುಳಿ) (3) ಲವಣ (ಉಪ್ಪು) (4) ಕಟು (ಕಾರ) (5) ತಿಕ್ತ (ಕಹಿ) ಮತ್ತು (6) ಕಷಾಯ (ಒಗರು) ಇವು ಆರು ಭೋಜ್ಯ ರಸಗಳು.

(1) ಪೃಥ್ವಿ ಮತ್ತು ಜಲದ ಅಧಿಕಾಂಶದಿಂದ ಮಧುರ ರಸವೂ

(2) ಪೃಥ್ವಿ ಮತ್ತು ಅಗ್ನಿಯ ಅಧಿಕಾಂಶದಿಂದ ಅಮ್ಲ ರಸವೂ

(3) ಜಲ ಮತ್ತು ಅಗ್ನಿಯ ಅಧಿಕಾಂಶದಿಂದ ಲವಣ ರಸವೂ

(4) ವಾಯು ಮತ್ತು ಅಗ್ನಿಯ ಅಧಿಕಾಂಶದಿಂದ ಕಟುರಸವೂ

(5) ವಾಯು ಮತ್ತು ಆಕಾಶದ ಅಧಿಕಾಂಶದಿಂದ ತಿಕ್ತರಸವೂ ಮತ್ತು

(6) ಪೃಥ್ವಿ ಮತ್ತು ವಾಯುವಿನ ಅಧಿಕಾಂಶದಿಂದ ಕಷಾಯರಸವೂ ಉತ್ಪತ್ತಿಹೊಂದುವುವು. ಮಧುರ ಅಮ್ಲ ಮತ್ತು ಲವಣಗಳು ವಾತಹರ. ಮಧುರ ತಿಕ್ತ ಮತ್ತು ಕಷಾಯಗಳು ಪಿತ್ತಹರ. ಕಟು ತಿಕ್ತ ಮತ್ತು ಕಷಾಯ ಗಳು ಶ್ಲೇಷ್ಮಹರ. 10. (ವಿಭಾವ ಅನುಭಾವ ಮತ್ತು ವ್ಯಭಿಚಾರಿಭಾವಗಳಿಂದ ಪುಷ್ಪವಾದ ರಶಿ ಮೊದಲಾದ ಸ್ಥಾಯಿ ಭಾವಗಳುಳ್ಳ) ಶೃಂಗಾರ ಮೊದಲಾದ ಎಂಟು ಅಥವಾ ಒಂಬತ್ತು ರಸಗಳು. (1) ಶೃಂಗಾರ (2) ವೀರ (3) ಕರುಣ (4) ಅದ್ಭುತ (5) ಹಾಸ್ಯ (6) ಭಯಾನಕ (7) ಬೀಭತ್ಸ ಮತ್ತು (8) ರೌದ್ರ ಎಂದು ರಸಗಳು ಎಂಟು. (9) ಶಾಂತರಸವೂ ಸೇರಿ ಒಂಬತ್ತು. “ಶೃಂಗಾರ- ಹಾಸ್ಯಕರುಣರೌದ್ರವೀರಭಯಾನಕಾ: । ಬಿಮತ್ಸೋಽದ್ಭುತ ಇತ್ಯಷ್ಟೌ ರಸಾ: ಶಾಂತಸ್ತಥಾ ಮತ:” ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೮೨ । (1) ರಶಿ (2) ಉತ್ಸಾಹ (3) ಶೋಕ (4) ವಿಸ್ಮಯ (5) ಹಾಸ (6) ಭಯ (7) ಜುಗುಪ್ಸೆ ಮತ್ತು (8) ಕ್ರೋಧ ಇವು ಶೃಂಗಾರ ಮೊದಲಾದ ರಸಗಳ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವಗಳು. ಶಮ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವವುಳ್ಳ ಶಾಂತರಸವೂ ಸೇರಿ ಒಂಬತ್ತು ರಸ ಗಳು. 11. ಧ್ವನಿ, ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು. “ಕವೇಡೋ ಛಾನೋ ಛನಿ: ಕವ: । ಕಣಿಹಾದಿ ರಸೋ ಧ್ವನಿ:” ವೈಜಂ । 12. ಗಂಧ ರಸ, ರಕ್ತಜೋಳ. “ಪ್ರಾಣೋ ಗಂಧರಸೋ ರಸ:” ವೈಜಂ । 13. ಮಂಗಾರಿ ಗಿಡ. “ಮದನೇ ತು ಫಣಿ ರಸ: । ಪಿಂಜಿತಕೌ



ಮಹವಕ: "ವೈಜಂ. 14. ಹಸುರು ಕರುಳ್ಳು. "ಪಲಾಣ್ಡುಸ್ತು  
 ಸ್ವೇತಕಂದೋ ಮುಕುಂದಕ:। ಹರಿತೇಽಸ್ಮಿನ್ ಲತಾರ್ಕ: ಸ್ಯಾತ್  
 ಫಣ್ಣೋ ದುಕ್ರಮೋ ರಸ:" ವೈಜಂ. 15. ದೇಹದ ಸಾರ.  
 ಮೈಯೊಳಗಿನ ರಸಿಕೆ, ಶರೀರದೊಳಗಿನ ಸಪ್ತ ಧಾತುಗಳ  
 ಲ್ಲೊಂದು. 16. ವೀರ್ಯ, ರೇತಸ್ಸು. 17. ವೀರ್ಯ,  
 ಪರಾಕ್ರಮ. 18. ರುಚಿ, ಸವಿ. "ಸ್ವಾದನೇನ ಸುತನೋರವಿ-  
 ಚಾರಾತ್ ಆಂಠತ: ಸಮಚರಿಷ್ಠ ರಸೋಽ" ಮಾಘಂ 10-9।  
 19. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 20. ಅಮೃತ. 21. ಪ್ರೀತಿ.  
 22. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. 23. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. "ರಸೋ ರಾಗೇ  
 ವಿಷೇ ವೀರ್ಯೇ ತಿಕ್ತಾದೌ ಪಾರದೇ ದ್ರವೇ। ರೇತಸ್ಯಾಸ್ವಾದನೇ ಹೇಮಿನಿ  
 ನಿಯಸಿಸ್ಮೃತಶಬ್ದಯೋ:" ವೈಜಂ. "ರಸ: ಸ್ವಾದೇ ಜಲೇ ವೀರ್ಯೇ  
 ಶುಕ್ಲಾರಾದೌ ವಿಷೇ ದ್ರವೇ। ಚೋಲೇ ರೋಗೇ ದೇಹಾತೌ ತಿಕ್ತಾದೌ  
 ಪಾರದೇಽಪಿ ಚ" ಹೇಮಂ. 24. ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನ, ಬ್ರಹ್ಮಾನಂದ.  
 "ರಸೋ ವೈ ಸ:। ರಸೇ ಹ್ಯೇವಾಯಂ ಲಙ್ಘಾನಂದಿ ಭವತಿ" ಶ್ರುತಿ:।

**ರಸಕ ರಸಕ (ಪುಂ)** 1. ಕಬ್ಬಿಣದ ಸಾರ. "ರಸಕಸ್ತ್ವಯಸ:  
 ಸಾರ:" ವೈಜಂ. 2. ಹಿಂದೆ ಕಂಡು ಅನುಭವಿಸಿದ ವಸ್ತು  
 ವಿನ ವಿಷಯವಾದ ಸ್ವಪ್ನ. "ಸಂಸ್ಕಾರಮಾತ್ರಜ: ಸ್ವಪ್ನ:  
 ಕಾಮಿಕೋ ರಸಕೋಽಪಿ ಚ" ವೈಜಂ. 3. ಅಮೃತಯನ್ನು  
 ನಿವಾರಿಸುವ, ಯೋಗವಾಹಿ. 4. ಮೂಸದ ಸಾರು.  
 ಅಂಬ್ರ. "ರಸಕೋ ಮಾಸನಿಷ್ಕವಾಃ ಪಿಷ್ಟಮಾಸಕೃತೋ ರಸ:"  
 ವೈಜಂ. 5. ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. "ಚಪಕೋ ರಸಕ: ಸಿಂಧು:"  
 ಕಲ್ಪದ್ರೂಂ.

**ರಸಕರ್ಪುರ ರಸಕರ್ಪೂರ (ಪುಂ)** ಪಾದರಸದ ಭಸ್ಮ.

**ರಸಕರ್ಮನ್ ರಸಕರ್ಮನ್ (ನಂ)** ಪಾದರಸವನ್ನು ತಯಾರಿಸಿ  
 ಸುವ ಕಾರ್ಯ.

**ರಸಕೇಸರ ರಸಕೇಸರ (ನಂ)** ಕರ್ಪೂರ.

**ರಸಗಮ ರಸಗರ್ಭ (ಪುಂ)** 1. ರಸಾಂಜನ. 2. ಹಿಂಗುಳ,  
 ಗಂಧರಸ, ಗಂಧಕಾಮ್ಲ.

**ರಸಜ ರಸಜ (ನಂ)** 1. ರಕ್ತ. ಭುಕ್ತಾನರಸಾಜ್ಜಾಯತೇ—ಜನಿ  
 (ಪ್ರಾದುರಭಿ) "ಠ:" (3-2-96)। (ಪುಂ) 2. ಬೆಲ್ಲ  
 ಸಕ್ಕರೆ ಕಾಕಂಬಿ. ರಸಾತ್ ಇಕ್ಷುರಸಾತ್ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ  
 "ಠ:"।

**ರಸಜ ರಸಜ್ಞ (ವಿಂ)** 1. ರಸಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಅರಿತವನು.  
 2. ರಸವಾದಿ, ರಸಮಿಶ್ರಿತವಸ್ತುವನ್ನು ತಯಾರಿಸಿ  
 ವವನು. 3. ಕವಿ. ರಸಂ ಜಾನಾತಿ—ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ)  
 "ಕ:" (3-2-3)।

**ರಸಜ್ಞ ರಸಜ್ಞ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಜಿಹ್ವೆ, ನಾಲಗೆ. ರಸಂ ಜಾನಾತಿ—  
 ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ:" (3-2-3)।

**ರಸತ್ ರಸತ್ (ವಿಂ)** ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಕೂಗುತ್ತಿರುವ.

ರಸ (ಶಬ್ದ) "ಶತೃ" (3-2-124)। "ರಸವರೋದಿತ್  
 ಭೃಗುಮ್ಬುವರ್ಣವ್ಯಾಜೇನ ಯಸ್ಯಾ ಬಹಿರಮ್ಬುವಾಹ:" ಮಾಘಂ 3-42।

**ರಸದೋಷ ರಸದೋಷ (ಪುಂ)** ಶೃಂಗಾರಾದಿ ರಸಗತವಾದ  
 ದೋಷ, ರಸದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ದೋಷ. ರಸದ ವರ್ಣ  
 ನೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ರಸಶಬ್ದ ಶೃಂಗಾರ ವೀರ ಮೊದಲಾದ  
 ಶಬ್ದ ಸ್ಥಾಯಿ ಸಂಚಾರಿಭಾವಗಳ ಶಬ್ದ ಇವುಗಳನ್ನು ಆಯಾ  
 ಶಬ್ದಗಳಿಂದ ಹೇಳುವುದು ರಸಗತವಾದ ದೋಷವಾಗು  
 ವುದು. ಮತ್ತು ವಿರುದ್ಧ ರಸಗಳ ಅಂಗವಾದ ವಿಭಾವಾದಿ  
 ಗಳ ವರ್ಣನೆ ಅಂಗಿ (ಪ್ರಧಾನ) ರಸದ ವಿಚ್ಛೇದ  
 ಅಪ್ರಧಾನರಸದ ವರ್ಣನೆ ಅನುಚಿತವಾದ ಅರ್ಥ  
 ವರ್ಣನೆ ಇವೂ ರಸಗತವಾದ ದೋಷಗಳು. "ರಸಸ್ಯೋಕ್ತಿ:  
 ಸ್ವಶಬ್ದೇನ ಸ್ಥಾಯಿಸಂಚಾರಿಣೋರಪಿ। ಪರಿಪನ್ಥಿರಸಾಜ್ಞಸ್ಯ  
 ವಿಭಾವಾದೇ: ಪರಿಗ್ರಹ:" ಇತ್ಯಾದಿ ಸಾಂ 40-12।

**ರಸ ಮತ್ತು ಶೃಂಗಾರಶಬ್ದ:** "ತಾಮುಕ್ತೀಕ್ಷ್ಯ  
 ಕುರಜ್ಞಾಕೀ ರಸೋ ನ: ಕೋಪ್ಯಜಾಯತ। ಚಂದ್ರಮಂಡಲಮಾಲೋಕ್ಯ  
 ಶುಕ್ಲಾರೇ ಮಗನಮನ್ತರಮ್।"

**ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ ಶಬ್ದ:** "ಅಜಾಯತ ರತಿಸ್ತಸ್ಯಾ:  
 ತ್ವಯಿ ಲೋಚನಗೋಚರೇ"।

**ರಸಧಾತು ರಸಧಾತು (ಪುಂ)** ಪಾದರಸ, ಪಾರದ. ರಸಾಖ್ಯೋ  
 ಧಾತು:।

**ರಸನ ರಸನ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಆಸ್ವಾದನ, ರುಚಿ ನೋಡು  
 ವುದು. ರಸ (ಆಸ್ವಾದನ) ಭಾವ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।  
 2. ಜಿಹ್ವೆ, ನಾಲಗೆ. (ನಂ) 3. ಶಬ್ದ ಮಾಡುವುದು,  
 ಕೂಗಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 4. ರುಚಿನೋಡುವ ಇಂದ್ರಿಯ.  
 ಜಿಹ್ವೇಂದ್ರಿಯ. "ಇಂದ್ರಿಯಂ ರಸಗ್ರಾಹಕಂ ರಸನಮ್। ತಚ್ಚ  
 ಜಿಹ್ವಾಪ್ರವೃತ್ತಿ" ತಂ ಸಂ. 5. ಕಷಾಯ. 6. ಅನ್ನ.  
 7. ದ್ರವ. 8. ಸ್ನೇಹ, ಜಿಡ್ಡು. 9. ನಂಜು, ವಿಷ.  
 10. ಫಲ, ಹಣ್ಣು. 11. ನಿಯಾಸ, ಮರದ ಅಂಟು.  
 12. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 13. ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ. "ರಸನಂ ಕಲಿ  
 ಕರ್ಪಾಯೇಽನ್ವೇ ದ್ರವೇ ಸ್ತೇಹೇ ವಿಷೇ ಫಲೇ। ನಿಯಸಿಸಿ ಹೇಮಿನಿ ರೂಪೇ ಚ  
 ಜಿಹ್ವಾಸ್ವಾದನಯೋರ್ನ ನಾ" ವೈಜಂ.

**ರಸನಾ ರಸನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಜಿಹ್ವೆ, ನಾಲಗೆ. ರಸಯತಿ—ರಸ  
 (ಆಸ್ವಾದನ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (3-1-134)। "ರಸನಾಗ್ರ-  
 ಲಗ್ನಕಿರಣಾಙ್ಕುರಾನ್ ಜನೋ ಹರಿಣಾನ್ ಗೃಹಿತಕವಲಾನಿವೇಕ್ಷತ"  
 ಮಾಘಂ 13-46। 2. ಸಣ್ಣ ರಾಶಿ. "ರಸನಂ ಸ್ವಾದನೇ  
 ಧವನಿ। ಜಿಹ್ವಾಯಾಂ ಚ ನ ಪುಂಸಿ ಸ್ಯಾತ್ ರಾಸನಾಯಾಂ ರಸನಾ  
 ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ.



ರಸನಾಥ ರಸನಾಥ (ಪುಂ) ಪಾರದ, ಪಾದರಸ. ರಸಾನಾ  
ನಾಥ: ಶ್ರೇಷ್ಠ: |

ರಸಪಾಕಜ ರಸಸಾಕಜ (ಪುಂ) 1. ಬೆಲ್ಲ, ಗಂಡ. ರಸಪಾಕಾ-  
ಜ್ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಕುಭವಿ) “ಙ:” (೩-೨-೯೮) |  
2. ರಕ್ತ.

ರಸಫಲ ರಸಫಲ (ಪುಂ) ತೆಂಗಿನ ಮರ. ರಸೋ ಜಲಂ ಫಲೇ  
ಯಸ್ಯ | “ನಾರಿಕೇಲ: ಶಿರ:ಫಲ: | ಸದಾಫಲೋ ರಸಫಲ:”  
ಕಲ್ಪದ್ರುಂ |

ರಸಭಜ ರಸಭಂಗ (ಪುಂ) ರಸದ ವಿಚ್ಛೇದ, ವಿರುದ್ಧ ರಸದ  
ವರ್ಣನೆಯಿಂದ ಪ್ರಕೃತರಸಾನುಭವಕ್ಕೆ ಉಂಟಾಗುವ  
ಅಡ್ಡಿ.

ರಸಮಯ ರಸಮಯ (ವಿಂ) 1. ರಸಸ್ವರೂಪವಾದ, ರಸ  
ರೂಪವಾದ, ರಸಾತ್ಮಕವಾದ, ದ್ರವರೂಪವಾದ. ರಸ  
“ಮಯ” (೪-೪-೨೧) | 2. ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ರಸಮಲ ರಸಮಲ (ನಂ) ಪುರೀಷ, ವಿಷ್ಣು.

ರಸಮಾನ ರಸಮಾನ (ವಿಂ) ಶಬ್ದಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದ,  
ಕೂಗುವ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ. ರಸ (ಶಬ್ದ) “ಚಾನಶ್”  
(೩-೨-೧೨೯) | “ಪರೀರ್ಮಭವಿ ತತಿರ್ಜಲಾನಾಮಭಿನವಾ  
ರಸಮಾನಸಾರಸೇನ” ಮಾಘಂ ೬-೨೪ |

ರಸರಾಜ ರಸರಾಜ (ಪುಂ) 1. ಪಾರದ, ಪಾದರಸ. 2.  
ರಸಾಂಜನ.

ರಸವತ್ ರಸವತ್ (ವಿಂ) 1. ರಸದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ರಸಭರಿತ  
ವಾದ. ರಸೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪) | 2.  
ಅನುರಾಗದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವ.  
“ನಾಸೇವಂತೇ ರಸವತ್ತ ನವರತಮಮಂದರಾಗತಾಮರಸದೃಶ:” ಮಾಘಂ  
೪-೪೧ | 3. ರುಚಿಯಾಗಿರುವ, ಹಿತವಾಗಿರುವ: “ಸಂಸಾರ-  
ಸುಖವೃಕ್ಷಸ್ಯ ದ್ವೇ ಎವ ರಸವತ್ಫಲೇ | ಕಾವ್ಯಾಮೃತಸುಖಾಸ್ವಾದ:  
ಸಂಪರ್ಕ: ಸಜ್ಜನ: ಸಹ” | 4. ರಮಣೀಯವಾದ, ಸೊಗ  
ಸಾದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) | -ವತೀ -ವತಿ:  
“ರೋಷೋಪಿ ರಸವತೀನಾಂ ನ ಕರ್ಕಶೋ ವಾ ಚಿರಾನುಬಂಧಿ ವಾ” |

ರಸವತೀ ರಸವತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾಕಶಾಲೆ, ಅಡಿಗೆಯ ಮನೆ.  
ರಸೋ ಸ್ವಾಭರಸೋ ವಿವರೇಜ—ರಸ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪) |  
“ಡೀಪ್” (೪-೨-೬) | “ವಾತಾಯನಂ ಗವಾಕ್ಷಶ್ಚ ರಸವತ್ಯಾಂ  
ಮಹಾನಸಮ್” ವೈಜಂ |

ರಸವತ್ತಾ ರಸವತ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಮಣೀಯತೆ, ಸೊಗಸು,  
ಸೌಂದರ್ಯ. ರಸವತೋ ಭಾವ: “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯) |  
“ತ್ವಮ್” | ರಸವತ್ತ್ವಮ್ ರಸವತ್ತ್ವಮ್.

ರಸವರ ರಸವರ (ಪುಂ) ಪಾರದ, ಪಾದರಸ.

ರಸಸಿದ್ಧ ರಸಸಿದ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಭಗವತ್ಪ್ರಾಪ್ತಾರ ರೂಪ  
ವಾದ ಸಿದ್ಧಿಯನ್ನು ಪಡೆದಿರುವ. “ರಸೋ ವೈ ಸ:” |  
ಸಿದ್ಧೋ ರಸೋ ಯಸ್ಯ | 2. ಕವಿ, ಶೃಂಗಾರ ಮೊದಲಾದ  
ರಸಸಿದ್ಧಿಯನ್ನು ಪಡೆದವನು, ನವರಸಭರಿತವಾದ ಕಾವ್ಯ  
ನಿರ್ಮಾಣದಲ್ಲಿ ನಿಪುಣನಾದವನು. ಸಿದ್ಧೋ ರಸೋ ಶೃಂಗಾರಾದಿ:  
ಯಸ್ಯ | “ಜಯಂತಿ ತೇ ಸುಕೃತಿನೋ ರಸಸಿದ್ಧಾ: ಕವೀಶ್ವರಾ:”  
ಭರ್ತುಂ ೧-೨೦ |

ರಸಸಿದ್ಧರ ರಸಸಿದ್ಧರ (ನಂ) ಸತು ಪಾದರಸ ಗಂಧ  
ಕಾಮ್ಲ ಮತ್ತು ಯವಕ್ಷಾರಗಳಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ  
ಒಂದು ಔಷಧ, ಸಿದ್ಧರ ರಸ. ರಸಜಾತಂ ಸಿದ್ಧರಮ್ |

ರಸಾ ರಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ. ರಸೋಽಸ್ಯಾಮಸ್ತಿ  
“ಅಚ್” (೪-೨-೧೨೭) | “ಕರ್ಣಾವತಸ್ತ್ವಾಸಯಿತುಂ ರಸಾಯಾ-  
ಸ್ತಲಂ ವಿವಕ್ಷಂತಿವ ಪತ್ರಗಾರಿ:” ಮಾಘಂ ೩-೨೩ | 2. ದ್ರಾಕ್ಷಿ.  
3. ಅಗುರು ಶುಂಠಿ. “ಪಾಠಾಮ್ಬಾ ವಿವಕ್ಷಂತಿಂ ಪ್ರಾಚೀನಾ  
ಶ್ರೇಯಸೀ ರಸಾ” ಅಮಂ | 4. ಜಿಹ್ವೆ, ನಾಲಗೆ. ರಸ್ಯತೇಽನಯಾ  
—ರಸ (ಆಸ್ವಾದನೆ) “ಘಬ್” (೩-೩-೧೨೧) | 5. ಸಲ್ಲಕೀ  
ವೃಕ್ಷ, ಅನೇಬೇಲ. “ರಸಾ ತು ರಸನಾ ಪಾಠಾಸಲ್ಲಕೀಕ್ಷಿತಿ-  
ಕಡ್ಗುಣು” ಹೇಮಂ | 6. ನವಣೆ. 7. ಪಾತಾಳಲೋಕ,  
ಭೂಮಿಯ ಕೆಳಗಿನ ಲೋಕ. “ರಸಾತಲಂ ತಲಂ ನಾಗಲೋಕೋ  
ದೈತ್ಯಲೋಕೋ ರಸಾ” ವೈಜಂ |

ರಸಾಗ್ರ ರಸಾಗ್ರ (ಪುಂ) ಅನ್ನದ ಮೇಲಿನ ಕೆನೆ, ಗಂಜಿ.  
“ಕ್ಷೇರೇಯಿ ಚಾಥ ಮೃದೋಽಸ್ತೀ ರಸಾಗ್ರ:” ವೈಜಂ |

ರಸಾಂಜನ ರಸಾಂಜನ (ನಂ) ಕಾಡಿಗೆ, ಒಂದು ವಿಧ  
ಅಂಜನ.

ರಸಾತಲ ರಸಾತಲ (ಪುಂ) 1. ವಾಸನೆಹಟ್ಟಿದ ಎಳ್ಳೆದಲೆಯ  
ತಟ್ಟಿ. “ನಾಗವಲ್ಲಿಪಲಾಶಾನಾಂ ತೈಲಾಕ್ತಾನಾಂ ರಸಾತಲ:”  
ವೈಜಂ | (ನಂ) 2. ಪಾತಾಳಲೋಕ. “ಜಗ್ರಾಹ ವೇದಾ-  
ನಖಿಲಾನ್ ರಸಾತಲಗತೋ ಹರಿ:” ಭಾಂಶಾಂತಿಂ ೩೪೭-೪೮ |  
3. ಸಪ್ತಪಾತಾಳ ಲೋಕಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಅತಲಮ್ ವಿತಲಮ್  
ಸುತಲಮ್ ತಲಾತಲಮ್ ಮಹಾತಲಮ್ ರಸಾತಲಮ್ ಮತ್ತು ಪಾತಾಲಮ್  
ಇವು ಸಪ್ತ ಅಧೋಲೋಕಗಳು.

ರಸಾಧಾರ ರಸಾಧಾರ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ರಸಾಂ ಪೃಥ್ವೀಂ ಧರತಿ  
—ಘಬ್ (ಧಾರಣೆ) “ಅಣ್” (೩-೨-೧) |

ರಸಾಧಿಕ ರಸಾಧಿಕ (ಪುಂ) 1. ಟಂಕಣ, ಬಿಳಿಗಾರ. ರಸಾನಾಂ  
ಸ್ವರ್ಣಾದಿಲೋಹಾನಾಂ ದ್ರಾವಣಾಯ ಅಧಿಕ: | (ವಿಂ) 2. ರುಚಿ  
ಯಾಗಿರುವ, ಸವಿಯಾಗಿರುವ. ರಸೇನ ಅಧಿಕ: | 3.  
ಸೊಗಸಾಗಿರುವ, ಉತ್ತಮವಾಗಿರುವ, ಶೃಂಗಾರಾದಿ ರಸ  
ಗಳು ಮತ್ತು ಮಧುರಾದಿ ರಸಗಳು ಇವುಗಳಿಂದ ಉತ್ಪತ್ತಿ



ಮಾಗಿರುವ. “ಭವನೇಷು ರಸಾಧಿಕೇಷು ಸರ್ವ ಕ್ಷಿತಿರಕ್ಷಾಂ-  
ಮುಶಂತಿ ಯೇ ನಿವಾಸಮ್” ಶಾಕುಂ ೭-೨೦ |

**ರಸಾಧಿಕಾ ರಸಾಧಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದ್ರಾಕ್ಷಿ-**

**ರಸಾಭಾಸ ರಸಾಭಾಸ (ಪುಂ) ಅಯೋಗ್ಯ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ನಡೆ**  
ಯುವ ರಸವರ್ಣನೆ. [ಭರತಮುನಿಯು ಹೇಳಿರುವ  
ಸಂಪೂರ್ಣಲಕ್ಷಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರದೆ ಕೆಲವು ಲಕ್ಷಣಗಳಿಂದ  
ಮಾತ್ರ ಕೂಡಿರುವುದು ಅನುಚಿತವಾದ ವರ್ಣನೆ  
(ಅಯೋಗ್ಯ ರೀತಿಯದು)]. ಸತ್ಕುಲಪ್ರಸೂತ ಮತ್ತು  
ಸದ್ವ್ಯವಹಾರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ನಾಯಿಕಾ ನಾಯಕರಿಗೆ  
ನಿಷಿದ್ಧ ನಾಯಕ ಮತ್ತು ನಾಯಕಿಯರಲ್ಲಿ ಅನುರಾಗ  
ವರ್ಣನೆಯು ಅನುಚಿತವಾದುದು. [ಉಪನಾಯಕ ಮುನಿ  
ಮುನಿಪತ್ನಿ ಗುರು ಗುರುಪತ್ನಿ ಇತ್ಯಾದಿ ನಿಷಿದ್ಧ  
ನಾಯಿಕಾ ನಾಯಕರು.] ನಾಯಿಕಾ ನಾಯಕರಿಬ್ಬರಲ್ಲೂ  
ಇಲ್ಲದೆ ಯಾರೊಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಅನುರಾಗ ವರ್ಣನೆಯೂ  
ನಾಯಕಿಗೆ ಅನೇಕ ನಾಯಕರಲ್ಲಿ ಮತ್ತು ಪ್ರತಿನಾಯಕನಲ್ಲಿ  
ಅನುರಾಗವರ್ಣನೆಯೂ ಅನುಚಿತವಾದುದರಿಂದ ಶೃಂಗಾರ  
ರಸಾಭಾಸ.

ವೀರರಸದಲ್ಲಿ ಅಧಮಪಾತ್ರದಿಂದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣವಧ  
ವರ್ಣನೆ.

ಕರುಣರಸದಲ್ಲಿ ದೈವಿಕವಾದ ತೊಂದರೆಯಿಲ್ಲದ  
ವ್ಯಕ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಶೋಕವರ್ಣನೆ.

ಅದ್ಭುತರಸದಲ್ಲಿ ಉದಾಸೀನವ್ಯಕ್ತಿಗತವಾದ ಅಶ್ಚರ್ಯ  
ವರ್ಣನೆ.

ಹಾಸ್ಯರಸದಲ್ಲಿ ಗುರುಹಿರಿಯರ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಹಾಸ್ಯ  
ವರ್ಣನೆ.

ಭಯಾನಕರಸದಲ್ಲಿ ಉತ್ತಮಪಾತ್ರದಲ್ಲಿ ಭಯ  
ವರ್ಣನೆ.

ಬೀಭತ್ಸರಸದಲ್ಲಿ ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನವಿಷಯಕವಾದ  
ಜುಗುಪ್ಸಾವರ್ಣನೆ.

ರೌದ್ರರಸದಲ್ಲಿ ಗುರುಹಿರಿಯರ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಕ್ರೋಧ  
ವರ್ಣನೆ.

ಶಾಂತರಸದಲ್ಲಿ ಹೀನಪಾತ್ರಗತವಾದ ಶಮವರ್ಣನೆ.  
ಇವೆಲ್ಲವೂ ಅನುಚಿತವಾದುದರಿಂದ ರಸಾಭಾಸವಾಗುವುದು.

ಸಾಂ ೬೦ ೩-೨೬೩-೨೬೪ |

**ರಸಾಯನ ರಸಾಯನ (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. 2. ಪಕ್ಷಿ**  
ರಾಜ, ಗಂಡ. (ನಂ) 3. ಜರಾವ್ಯಾಧಿನಾಶಕವಾದ  
ಔಷಧ. ರಸಾ: ರಸರಕ್ತಾದಯ: ಔಷಂತೇ ಅನೇನ — ಔಡ್ (ಗತೌ)  
“ಲ್ಪುಡ್” (೩-೩-೧೧೭) | “ಛಾಡ್ಗುಣ್ಯಮುಪಯುಜ್ಜಿತ ಶಕ್ಯ-

ಪೇಕ್ಷೋ ರಸಾಯನಮ್” ಮಾಘಂ ೨-೯೩ | “ಯಜ್ಜರಾವ್ಯಾಧಿ-  
ವಿಘ್ವಂಸಿ ವಯಸಸ್ತಮ್ಭಕಂ ತಥಾ | ಚಕ್ಷುಷ್ಯಂ ಬೃಹಣಂ ವೃಷ್ಯಂ  
ಭೇಷಜಂ ತದ್ರಸಾಯನಮ್” | “ರಸಾಯನೋ ವಿಹೃಜ್ಜಮೇ | ಪಕ್ಷಿನ್ದ್ರೇ,  
ರಸಾಯನಂ ತು ಜರಾವ್ಯಾಧಿಜಿದೌಷಧೇ” ಹೇಮಂ |

**ರಸಾಯನಫಲಾ ರಸಾಯನಫಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಳಲೆ ಗಿಡ.**

ರಸಾಯನಮಿವ ಫಲಮಸ್ಯಾ: | “ರಸಾಯನಫಲಾ ಪಥ್ಯಾ ಶಕ್ತಸೃಷ್ಟಾ  
ಸುಖೋದ್ಭವಾ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ರಸಾಯನೀ ರಸಾಯನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ.**  
“ವಿಶಲ್ಯಾಪಿ ರಸಾಯನೀ” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ | 2. ಕಾಚಿಗಿಡ, ಗಣಕಿ  
ಗಿಡ. “ರಸಾಯನೀ ಕಾಕಮಾಚಿ ಸ್ವಾದುಪಾಕಾ ವಿರಾವಿಣಿ”  
ಕಲ್ಪದ್ರುಂ | 3. ಕಬ್ಬು. “ಗೋರಕ್ಷದ್ರುಗಾ ಗೋರಕ್ಷಿ ತಾಮ್ರದ್ರುಗಾ  
ರಸಾಯನೀ” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ |

**ರಸಾಲ ರಸಾಲ (ಪುಂ) 1. ಮಾವಿನ ಮರ. ರಸಮಲತಿ —**  
ಅಲ (ಭೂಷಣಾದಿ) “ಅಲ್” (೩-೨-೧) | “ರಸಾಲವನ್ಯಾ  
ಮಧುಪಾನುವಿಡ್ಧಂ ಸೌಭಾಗ್ಯಮಪ್ರಾಪ್ತವಸಂತಯೇವ” ನೈಷಂ ೩-೪೬ |  
2. ಇಕ್ಷು, ಕಬ್ಬು. ರಸೇನ ಅಲತಿ — ಅಲ “ಅಲ್”  
(೩-೧-೧೩೪) | “ರಸಾಲಶ್ಚೇಕ್ಷುತಯೋ:” ಮೇದಿಂ | 3.  
ವೈಷ (ಶುಂಠಿ ಹಿಪ್ಪಲಿ ಮತ್ತು ಮೆಣಸು) ಚತುರ್ಜಾತ  
(ಲವಂಗಪಟ್ಟಿ ದಾಲ್ಚಿನ್ನಿ) ಯಾಲಕ್ಕಿ ಜಾಪತ್ರ ಮತ್ತು  
ನಾಗಕೇಸರ (ನಾಗಸುಪಿಗಿ) ಗುಡ ಅದ್ರಕ (ಹಸಿಶುಂಠಿ)  
ಮತ್ತು ಜೀರಿಗೆ ಇವನ್ನು ಬೆರೆಸಿದ ಹಸಿ ಮೊಸರು.  
“ಅಪಕ್ವತಕ್ರಂ ಸಂಯೋಜತುರ್ಜಾತಿಗುಡಾರ್ಧಕಮ್ | ಸಜೀರಕಂ ರಸಾಲ:  
ಸ್ಯಾತ್” ವೈಜಂ | 4. ಗೋಧಿ. “ಗೋಧುಮ: ಸುಮನೋ  
ಪೂ: ಕ್ಷೀರೀ ನಿಸ್ತುಫ ಇತ್ಯಪಿ | ರಸಾಲಶ್ಚ” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ |  
(ನಂ) 5. ಸಿಹ್ಲಕ, ಲೋಬಾನ, ತುರುಷ್ಯದೇಶದ  
ವಾಸನಾದ್ರವ್ಯ. 6. ಬಾಣಂತಿ ಬೋಳೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
—ಲಾ —ಲಾ. 7. ಜಿಹ್ವೆ, ನಾಲಗೆ. 8. ಗರಿಕೆಹುಲ್ಲು.  
9. ಬಿಳಿಯ ನೆಲಗುಂಬಳೆ. 10. ವೈಷ ಚತುರ್ಜಾತ  
ಗುಡ ಅದ್ರಕ ಜೀರಿಗೆ ಇವುಗಳೊಡನೆ ಬೆರೆತ ಹಸಿ  
ಮೊಸರು. “ರಸಾಲಾ ರಸನಾಡ್ವರ್ವಿವಿದಾರಿಮಾಜಿತಾಸು ಚ |  
ರಸಾಲಂ ಸಿಹ್ಲಕೇ ಬೋಲೆ ರಸಾಲಶ್ಚೇಕ್ಷುತಯೋ:” ಮೇದಿಂ |

**ರಸಾಲೀ ರಸಾಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕಬ್ಬು,**  
ರಸದಾಳಿ ಕಬ್ಬು.

**ರಸಾಸ್ವಾದ ರಸಾಸ್ವಾದ (ಪುಂ) 1. ಮಧುರ ಮೊದಲಾದ**  
ಭೋಜ್ಯರಸದ ಸವಿ ನೋಡುವುದು. ರಸಸ್ಯ ಆಸ್ವಾದ:  
ಆಸ್ವಾದನಮ್ | 2. ಶೃಂಗಾರ ವೀರ ಮೊದಲಾದ ರಸಗಳ  
ಅನುಭವ. 3. ಬ್ರಹ್ಮಾನಂದಾನುಭವ. ರಸಸ್ಯ ಮಧುರಾದೀನಾಂ  
ಶೃಂಗಾರಾದೀನಾಂ ಬ್ರಹ್ಮಾನಂದಸ್ಯ ಚಾಸ್ವಾದ: ಅನುಭವ: |



ರಸಾಸ್ವಾದಿನ್ ರಸಾಸ್ವಾದಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಮಧುರ (ಸಿಹಿ) ಮೊದಲಾದ ಭೋಜ್ಯರಸಗಳ ರುಚಿನೋಡುವವನು. 2. ಶೃಂಗಾರ ಮೊದಲಾದ ನಾಟ್ಯರಸಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವವನು. 3. ಬ್ರಹ್ಮಾನಂದವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವವನು. ರಸಮಾಸ್ವದತೆ — ಆ + ಷದ (ಆಸ್ವಾದನೆ) “ಗಿನಿ:” (3-1-134)। (ಪುಂ) 4. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ರಸ ಪುಷ್ಪರಸಮಾಸ್ವದತೆ — ಷದ “ಗಿನಿ:”। ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಙೀಪ್” (4-1-4)। —ಆಸ್ವಾದಿನಿ — ಅಸ್ವಾದಿನೀ.

ರಸಿಕ ರಸಿಕ (ಪುಂ) 1. ಕಾಯಿಸಲ್ಪಡದ ಕಬ್ಬಿನ ರಸ. “ಪಕ್ವೇರಿಕ್ಷುರಸೇರಸ್ತೀ ಶಿಖು: ಪಕ್ಷರಸ: ಶಿವ:। ಶೀತಪಕ್ಷೋ ರೂಕ್ಷಣಿಯೋಪ್ಯಪಕ್ವೇರಸಿಕಾಸವೌ” ವೈಜಂ. 2. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. 3. ಗಜ, ಆನೆ. 4. ಸಾರಸಪಕ್ಷಿ, ತಾವರೆಹಕ್ಕಿ. (ವಿಂ) 5. ಸುಂದರವಾದ ವಸ್ತುವನ್ನು ಮೆಚ್ಚುವವನು, ಉತ್ತಮವಾದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮೆಚ್ಚುಗೆಕೊಡುವವನು, ಗುಣಗ್ರಹಣಮಾಡುವವನು. “ರಸಿಕ: ಪ್ರೇಕ್ಷತ ನದೀ ರತ್ನಪರ್ಯಂತನತೆಕೀಮ್” ಯಾದಂ 22-166. 6. ಮಧುರಾದಿ ಭೋಜ್ಯರಸದ ಸವಿಯನ್ನು ತಿಳಿದವನು. 7. ಶೃಂಗಾರಾದಿ ರಸಾನುಭವವುಳ್ಳವನು. ರಸೋಽಸ್ತಿ — ರಸ “ಠನ್” (4-2-114)। 8. ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳವನು. “ತತ್ಸಂಪರ್ಕ ಪ್ರಾಪ್ಯ ಪುರಾ ಮೋಹನಲೀಲಾಂ ಕಾಮೇಕಾಂತೇ ಸಾ ರಸಿಕಾ ಕಾ ಕುಸ್ತೇ ನ” ಮಾಘಂ 6-96. “ಪಿಬತ ಭಾಗವತಂ ರಸಮಾಲಯಂ ಮುಹುರಹೋ ರಸಿಕಾ ಭುವಿ ಮಾನವಾ:” ಭಾಗಂ 1-1-3. 9. ಕಾವ್ಯರಸಾಭಿಜ್ಞ.

ರಸಿಕಾ ರಸಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಡಾಟು, ಹೆಂಗಸರ ನಡುಕಟ್ಟು. 2. ಜಿಹ್ವೆ, ನಾಲಗೆ. 3. ದ್ರಾಕ್ಷಿಬಳ್ಳಿ. 4. ಕಬ್ಬಿನ ರಸ.

ರಸಿತ ರಸಿತ (ನಂ) 1. ಮೇಘದ ಶಬ್ದ, ಗುಡುಗು. ರಸ (ಶಬ್ದ) ಭಾವೇ “ಕ್ತ:” (3-3-114)। “ತರಮೇಂದ್ರ-ಮೂರ್ಘರಹರತನಸಂತಿಧೇಮುಹುರಹರತಸ್ಯ ರಸಿತ: ಪಯೋಮುಚ:” ಮಾಘಂ 13-46. 2. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು, ಧ್ವನಿ. “ಪರ್ಯಂತಭೂಷರ-ನಿಕುಂಜವಿಜುಮ್ಮುಣೇನ ಹೇರಮ್ಬಕಂಠರಸಿತಪ್ರತಿಮಾನಮೇತಿ” ಮಾಲತೀಂ 9-3. 3. ತಿರ್ಯಕ್ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಶಬ್ದ, ಪಶು ಪಕ್ಷಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಕೂಗು. (ವಿಂ) 4. ಸ್ವರ್ಣ ಖಚಿತವಾದ, ಚಿನ್ನದಿಂದ ಮೆರಗು ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. “ರಸಿತಂ ಸ್ವರ್ಣಾದಿಲಿಪ್ತೇ ಕ್ತಸ್ತನಿತಯೋರಪಿ” ಹೇಮಂ. 5. ಶಬ್ದ ಮಾಡುವ. ರಸ ಕರ್ತಂ “ಕ್ತ:” (3-4-92)। 6. ರೋದನಮಾಡುವ.

ರಸಿತು ರಸಿತು (ವಿಂ) 1. ಕೂಗುವ, ಶಬ್ದ ಮಾಡುವ. ರಸ (ಶಬ್ದ) “ತುಚ್” (3-1-133)। 2. ರೋದನ

ಮಾಡುವ, ಅಳುವ. “ಆಶಿಲಿಪ್ತಭೂಮಿ ರಸಿತಾಸ್ತುಚ್ಚೇ: ಲೋಲಭುಜಾಕಾರಬಹುರತ್ನಮ್” ಮಾಘಂ 3-92।

ರಸಿನ್ ರಸಿನ್ (ವಿಂ) 1. ರಸವುಳ್ಳ, ರಸದಿಂದಕೂಡಿದ. 2. ರಸಾನುಭವವುಳ್ಳವನು. 3. ರಸಾಭಿಜ್ಞನಾದ. ರಸೋಽಸ್ತಿ “ಙಿನಿ:” (4-2-114)।

ರಸೇಂದ್ರ ರಸೇಂದ್ರ (ಪುಂ) ಪಾರದ, ಪಾದರಸ. ರಸಾನಾಮಿन्द्र:। “ಅಸಾಧ್ಯೋ ಯೋ ಭವೇದ್ರೋಗೋ ಯಸ್ಯ ನಾಸ್ತಿ ಚಿಕಿತ್ಸತಮ್। ರಸೇಂದ್ರೋ ಹಂತಿ ತಂ ರೋಗಂ ನರಕುಂಜರವಾಜಿನಾಮ್” ಭಾವಪ್ರಂ.।

ರಸೋತ್ತಮ ರಸೋತ್ತಮ (ಪುಂ) 1. ಉತ್ತಮವಾದ ರಸ. ರಸೇಷು ಉತ್ತಮ:। 2. ಮುದ್ದ, ಹೆಸರು. ರಸ: ಉತ್ತಮೋ ಯಸ್ಯ।

ರಸೋದ್ಭವ ರಸೋದ್ಭವ (ನಂ) 1. ಸಿಂದೂರ. ರಸಾತ್ ಪಾರದಾದುದ್ಭವತಿ — ಉದ್ + ಭೂ “ಅಪ್” (3-3-49)। 2. ಮುತ್ತು. (ವಿಂ) 3. ಪಾದರಸದಿಂದ ಉಂಟಾದ.

ರಸೋನ ರಸೋನ (ಪುಂ) ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳಿ. ರಸೇ ಆಸ್ವಾದನೇ ಅನ್ಯತೇ ಪಾತಕಹೇತುತ್ವಾತ್ — ಙನ (ಪರಿಹಾಣ) “ಘಬ್” (3-3-19)। ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” (4-3-94)। ರಸೋನಕ: ರಸೋನಕ:

ರಸೋಪಲ ರಸೋಪಲ (ನಂ) ಮುತ್ತು, ಮೌಕ್ತಿಕೆ. ರಸವತ್ ಉಪಲಮ್। “ಅಥ ಮೌಕ್ತಿಕಮ್। ರಸೋಪಲಂ ಶುಕ್ತಿವಿಜಮ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.।

ರಸ್ಯ ರಸ್ಯ (ನಂ) 1. ರಕ್ತ. ರಸಾತ್ ಭುಕ್ತಾನರಸಾತ್ ಆಗತಮ್। (ವಿಂ) 2. ರಸವತ್ತಾದ, ರಸಭರಿತವಾದ. ರಸ್ಯಂತೇ — ರಸ (ಆಸ್ವಾದನೇ) “ಯತ್” (3-1-97)। “ರಸ್ಯಾ: ಸ್ನಿಗ್ಧಾ: ಸ್ಥಿರಾ ಹೃದಾ ಆಹಾರಾ: ಸಾತ್ವಿಕಪ್ರಿಯಾ:” ಗೀತಾ 17-2. ರಸ್ಯಾ ರಸ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣ್ಣರಾಶಿ. ರಸಾಯ ಹಿತಾ। “ರಾಸ್ತಾ ಯುಕ್ತರಸಾ ರಸ್ಯಾ ಸುವಹಾ ರಸನಾ ರಸಾ” ಭಾವಪ್ರಂ.।

ರಹಣ ರಹಣ (ನಂ) ಬಿಡುವುದು, ತ್ಯಜಿಸುವುದು. ರಹ (ತ್ಯಾಗ) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114)।

ರಹಸ್ ರಹಸ್ (ನಂ) 1. ನಿರ್ಜನಪ್ರದೇಶ, ಏಕಾಂತ ಸ್ಥಳ. ರಹ (ತ್ಯಾಗ) “ಅಸುನ್” (3-4-169)। “ಯದೇವ ಕುರುವೇ ಕುಚಿರೇಮ್ಯ: ಸುಭ್ರವೋ ರಹಸಿ ತತ್ತದಕುರ್ವನ್” ಮಾಘಂ 10-99. 2. ಸುರತ, ಸಂಭೋಗ. 3. ತತ್ತ್ವ, ನಿಜ, ಸತ್ಯ. 4. ಗೋಪ್ಯ, ಗುಟ್ಟು, ರಹಸ್ಯ. “ರಹಸ್ತತ್ವೇ ರತೇ ಗುಹ್ಯೇ” ಮೇದಿಂ. (ಅವ್ಯಂ) 5. ರಹಸ್ಯವಾಗಿ, ಗುಟ್ಟಾಗಿ. “ತೇನ ಸಹೇಹ ಬಿಭರತಿ ರಹ: ಸ್ತ್ರೀ ಸಾರತರಾಗಮ-ನಾಯತಮಾನಮ್” ಮಾಘಂ 4-45. “ವಿವಿಕ್ತವಿಜನಚ್ಚ-ನಿ:ಶಲಾಕಾಸ್ತಥಾ ರಹ:। ರಹಸ್ತೋಪಾಂಶುಚಾಲಿಜ್ಞೇ” ಅಮಂ.।



**ರಹಸ್ಯ ರಹಸ್ಯ (ನಂ) 1.** ಗುಟ್ಟು. ರಹಸಿ ಭವಮ್ "ಯತ್" (೪-೩-೪೪)। "ರಹಸ್ಯಂ ಸಾಧುನಾಮನುಪಧಿ ವಿಶುದ್ಧಂ ವಿಜಯತೇ" ಉಂ ರಾಂ ೨-೨। 2. ಗೂಢವಾದ ವಿಷಯ, ಅರ್ಹರಲ್ಲ ದವರಿಗೆ ಉಪದೇಶಿಸಬಾರದಾದ ವಿಷಯ. "ಮಕ್ತೋಽಸಿ ಮೇ ಸಖಾ ಚೇತಿ ರಹಸ್ಯಂ ಹೃತದುತ್ತಮಮ್" ಗೀತಾ ೪-೩। (ವಿಂ) 3. ರಹಸ್ಯವಾದ, ಗುಟ್ಟಾದ, ಗೋಪ್ಯವಾದ. "ಗುಹ್ಯಸುಚಿತರಹಸ್ಯಸಾಹಸಃ ಸುಭ್ರವಾಂ ಪ್ರವೃತ್ತೇ ಪರಿಹಾಸಃ" ಮಾಘಂ ೧೦-೧೨। (ಅವ್ಯಂ) 4. ಗುಟ್ಟಾಗಿ, ಯಾರಿಗೂ ತಿಳಿಯದಂತೆ. "ಅನಭಿಷ್ಠಾತದೋಷಸ್ತು ರಹಸ್ಯಂ ವ್ರತಮಾಚರೇತ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೩೦೦। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸ್ಯಾ-ಸ್ಯಾ. 5. ಒಂದು ನದಿ. "ರಹಸ್ಯಾ ಸ್ತ್ರೀ ನದೀಭೇದೇ ಗೋಪನೀಯೇಽಭಿಧೇಯವತ್" ಮೇದಿಂ।

**ರಹಸ್ಯಭೇದ ರಹಸ್ಯಭೇದ (ಪಂ) ಗುಟ್ಟಾದ ವಿಷಯವನ್ನು ಹೊರಗೆಡುಹುವುದು, ಗುಟ್ಟನ್ನು ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವುದು. ರಹಸ್ಯಸ್ಯ ಭೇದಃ।**

**ರಹಿತ ರಹಿತ (ವಿಂ) 1.** ಬೇರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರತ್ಯೇಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ರಹ (ತ್ಯಾಗೇ) "ಕ್ತ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಗುಣಲವರಹಿತಂ ಮಾಂ ಗೋಪ್ತುಕಾಮಾ ದಯೇ ತ್ವಮ್" ದಯಾಶಂ। "ರಹಿತಂ ಕಲಾಮಿರಖಿಲಾಭಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೪-೩।

**ರಾ ರಾ (ರೆ ರೈ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1.** ಧನ, ಐಶ್ವರ್ಯ, ಸಂಪತ್ತು. ರಾ (ದಾನೇ) "ಕೆಃ" (ಉಂ ೨-೬೭)। ರಾಃ ರಾಯೋ ರಾಯಃ। "ಆತ್ಮಾನಮನು ಯೇ ಚೇಹ ಯೇ ರಾಯಃ ಪಶವೋ ಗೃಹಾಃ। ವಿಸೃಜ್ಯ ಸರ್ವಾನಿತ್ಯಾಂಶ್ರ ಮಾಮೇವಂ ವಿಶ್ವತೋಮುಖಮ್" ಭಾಗಂ ೩-೨೪-೩೯। 2. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 3. ಮೇಘ, ಮೋಡ. "ರಾಸ್ತು ಸುವರ್ಣಂ ಜಲದೇ ಧನೇ" ಹೇಮಂ। 4. ಶಾಲೆ, ಮನೆ. 5. ಪ್ರಾರ್ಥನೆ, ಕೋರಿಕೆ. 6. ಗತಿ, ಗಮನ, ನಡೆಗೆ. ರಾ (ದಾನೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (ವಾಂ ೩-೩-೯೪)। "ರಾ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಹೇಮಿನಿ ಶಾಲಾಯಾಮಾಶಂಸಾಯಾಂ ಗತಾವಪಿ" ನಾನಾರ್ಥಂ।

**ರಾಕ ರಾಕ (ಪಂ) 1.** ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. ರಾ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (ಉಂ ೩-೪೦)। "ರಾಗೋಽನುರಾಗೇ ಲಾಕ್ಷಾದೌ ತ್ವಿಷಿ ರಾಕಸ್ತು ಪೂಜಿ ಚ" ವೇಜಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ-ಕಾ. 2. ಪೂರ್ಣಮ, ಸಂಪೂರ್ಣಚಂದ್ರನುಳ್ಳ, ತಿಥಿ. ರಾತಿ ಶುಭಮ್ - ರಾ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (ಉಂ ೩-೪೦)। "ಪೂರ್ಣಂ ರಾಕಾ ನಿಶಾಕರೇ" ಅಮಂ। 3. ಯಾವನಾವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿದ ಹೆಂಗಸು, ಯಾವತಿ, ಪ್ರಾಯದ ಹೆಡುಗಿ. "ಪ್ರಾಪ್ತರ್ತುರ್ದಿವ್ಯಕರೀ ರಾಕಾ ಯುವತಿಃಸ್ತಲ್ಯುನಿ ಚರೀ" ವೇಜಂ। 4. ಒಂದು ನದಿ. 5. ನವೆ, ತುರಿ. "ರಾಕಾ ನದಂತರೇ

ಕಚ್ಚವಾಂ ನವಜಾತರಜಃಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್। ಸಂಪೂರ್ಣೇಂದ್ರತಿಯೋ" ಮೇದಿಂ। 6. ಖರ ಮತ್ತು ಶೂರ್ಪಣಖೆಯರ ತಾಯಿ.

**ರಾಕ್ಷಸ ರಾಕ್ಷಸ (ಪಂ) 1.** ರಾಕ್ಷಸ, ದೇವತೆಗಳ ಶತ್ರು. ರಕ್ಷ ಎವ-ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಣ್" (೪-೪-೩೮)। "ರಾಕ್ಷಸಾನಾಂ ಮಯಿ ಗತೇ ರಾಮಃ ಪ್ರಣಿಹನಿಷ್ಯತಿ" ಭದ್ರಿಂ ೮-೧೨೧। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಜಾತಿಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೩)। -ಸೀ -ಸೀ. ರಾಕ್ಷಸ ಹೆಂಗಸು. "ತವೋಪಶಾಯಿಕಾ ಯಾವದ್ರಾಕ್ಷಸ್ಯೇತಯಂತಿ ನ" ಭದ್ರಿಂ ೮-೧೨೩। 2. ಎಂಟು ವಿಧ ವಿವಾಹಗಳಲ್ಲೊಂದು ವಿಧ. "ಬ್ರಾಹ್ಮೋ ದೇವಸ್ತಥೈವಾರ್ಷಃ ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯಸ್ತಥಾಸುರಃ। ಗಾಂಧರ್ವೋ ರಾಕ್ಷಸಶ್ಚೇವ ಪೇಶಾಚಶ್ಚಾಷ್ಟಮೋಽಧಮಃ" ಮನುಂ ೩-೨೧। ಕನ್ಯೆಯ ಬಂಧುಗಳನ್ನು ಹೊಡೆದು ಬಡಿದು, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಅಳುತ್ತಿರುವ ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ಮನೆಯಿಂದ ಎಳೆದುಕೊಂಡು ಹೋಗಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ ವಿವಾಹವು ರಾಕ್ಷಸವಿವಾಹ. "ಹತ್ವಾ ಛಿತ್ವಾ ಚ ಮಿತ್ವಾ ಚ ಕ್ರೋಶಂತಿ ರುದಂತಿ ಗೃಹಾತ್। ಪ್ರಸಹ್ಯ ಕನ್ಯಾಹರಣಂ ರಾಕ್ಷಸೋ ವಿಧಿರುಚ್ಯತೇ" ಮನುಂ ೩-೩೩। 3. ನಂದರಾಜನ ಮಂತ್ರಿ, ಅವಾತ್ಯ ರಾಕ್ಷಸ. (ವಿಂ) 4. ರಾಕ್ಷಸ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬೪)। -ಸೀ -ಸೀ. "ರಾಕ್ಷಸೀಮಕೃತ ರಕ್ಷಿತಪ್ರಜಸ್ತೇಜಸಾಧಿಕ-ವಿಮಿಷಣಾಂ ಪುರೀಮ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೮೧। 5. ರಾಕ್ಷಸ ಕೃತ್ಯಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದ, ಕ್ರೂರವಾದ. "ಮುನಯೋ ರಾಕ್ಷಸೀಮಾಹುಃ ವಾಚಮುನ್ಮತ್ತದೃಷ್ಟಯೋಃ" ಉಂ ರಾಂ ೪-೩೦। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸೀ -ಸೀ. 6. ಕರಿಯ ಕಚೋರ. "ಅಥ ರಾಕ್ಷಸೋ। ಚಂಡಾ ಧನಹರೀ ಕ್ಷೇಮದುಷ್ಪತ್ರಗಣಹಾಸಕಾಃ" ಅಮಂ। 7. ಕೋರೆ ಹಲ್ಲು. 8. ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲ, ಸಾಯಂಕಾಲ. "ಸಾಯಾ ಹ್ನಸ್ತ್ರಿ-ಮುಹುರತಃ ಸ್ಯಾತ್ ಶ್ರಾದ್ಧಂ ತತ್ರ ನ ಕಾರಯೇತ್। ರಾಕ್ಷಸೀ ನಾಮ ಸಾ ವೇಲಾ ಗಹಿತಾ ಸರ್ವಕರ್ಮಸು"।

**ರಾಕ್ಷಸೇಂದ್ರ ರಾಕ್ಷಸೇಂದ್ರ (ಪಂ) ರಾಕ್ಷಸರಾಜನಾದ ರಾವಣ. ರಾಕ್ಷಸಾನಾಮಿन्द्रಃ।**

**ರಾಕ್ಷಾ ರಾಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಾವಕೆ, ಅಲಕ್ಷ, ಅರಗು. ರಕ್ಷಯತೇಜಯಾ - ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩)।**

**ರಾಗ ರಾಗ (ಪಂ) 1.** ಪ್ರೀತಿ, ವಿಶ್ವಾಸ. ರಜ್ಜ (ರಾಗೇ) "ಘ" (೩-೩-೧೮)। "ರಾಗಂ ದರ್ಶಯತೇ ಸೇಷಾ ವಯಸ್ಯಾಃ ಸುನೃತಾಮೃತಃ। ಮಮ ತ್ವಮಿತಿ ವಕ್ತುಂ ಮಾಂ ಮೌನಿನಿ ಮಾನಿನಿ ಪುನಃ" ನೈಷಂ ೨೦-೩೩। 2. ಪ್ರೇಮ, ಅನುರಾಗ. "ರಾಗಕಾಂತನಯನೇಷು ನಿತಾಂತಂ ವಿಧುಮಾರುಣಕಪೋಲತಲೇಷು" ಕಿರಾಂ ೯-೬೩। 3. ಕೆಂಪುಬಣ್ಣ. "ಅಭ್ಯುಪಗತಾಙ್ಗುಣನಖ-ಪ್ರಭಾಮಿನಿಕ್ಷೇಪಣಾದ್ರಾಗಮಿವೋದ್ಗಿರಂತಿ" ಕುಮಾಂ ೧-೩೩। 4. ಅಂಗರಾಗ, ಅನುಲೇಪನ, ಚಂದನ ಮೊದಲಾದುದು. "ಯೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಃ ಸ ಖಲು ಜಲೈರನಿರಾಸಿ ರಾಗೋ ಯಶ್ಚಿತ್ತೇ ಸ ತು



ತದವಸ್ಯ ಏವ ತೇಷಾಮ್" ಮಾಘಂ ೮-೪೮ | 5. ಬಣ್ಣ, ವರ್ಣ.  
 "ವಿಸೃಷ್ಟರಾಗಾದೃಶವರ್ತಿನಃ ಸ್ತನಾಙ್ಗರಾಗಾಣಿತಾಂಶ್ಚ  
 ಕಂಡುಕಾತ್" ಕುಮಾಂ ೪-೧೧ | 6. ಸಂಗೀತದ ಕ್ರಮಬದ್ಧ  
 ವಾದ ಸ್ವರ, ತಾಳಬದ್ಧವಾದ ಸ್ವರ: ವಸಂತ, ಲಲಿತ  
 ಶಂಕರಾಭರಣ ತೋಡಿ ಭೈರವಿ ಮೊದಲಾದ ರಾಗಗಳು.  
 ಮೂರು ಲೋಕ ನಿವಾಸಿಗಳಿಗೂ ಹೃದಯರಂಜಕವಾಗುವ  
 ಸ್ವರವಿಶೇಷವೇ ರಾಗ. "ಯೇಸ್ತು ಚೇತಾಸಿ ರಜ್ಯಂತೆ  
 ಜಗತ್ಪ್ರತಯವರ್ತಿನಾಂ | ತೇ ರಾಗಾ ಇತಿ ಕಥ್ಯಂತೆ ಮುನಿಮಿ  
 ಭರತಾದಿभिಃ" | "ತವಾಸ್ಮಿ ಗೀತರಾಗೇಣ ಹಾರಿಣಾ ಪ್ರಸಮಂ  
 ಹೃತಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೪ | 7. ಶೃಂಗಾರಾದಿ ರಸಾನುಗುಣ  
 ವಾದ ರಾಗ. ಇದು (1) ಪುಂರಾಗ (2) ಸ್ತ್ರೀರಾಗ  
 ಮತ್ತು (3) ನಪುಂಸಕರಾಗಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ವೀರ  
 ಅದ್ಭುತ ಮತ್ತು ರೌದ್ರ-ಪುಂರಾಗ. ಶೃಂಗಾರ ಹಾಸ್ಯ  
 ಮತ್ತು ಕರುಣ-ಸ್ತ್ರೀರಾಗ. ಭಯಾನಕ ಬೀಭತ್ಸ ಮತ್ತು  
 ಶಾಂತ-ನಪುಂಸಕರಾಗ. "ರೌದ್ರೇಽದ್ಭುತೇ ತಥಾ ವೀರೇ ಪುಂರಾಗೇಣ  
 ಪ್ರಗೀಯತೇ | ಶೃಂಗಾರಹಾಸ್ಯಕರುಣಾಃ ಸ್ತ್ರೀರಾಗೇಣ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾಃ |  
 ಭಯಾನಕೇ ಚ ಬೀಭತ್ಸೇ ಶಾಂತೇ ಗೇಯೋ ನಪುಂಸಕೇ" | "ತೌ  
 ಸಂಧಿಭು ವ್ಯಜ್ಜಿತವೃತ್ತಿಭೇದಂ ರಸಾಂತರೇಷು ಪ್ರತಿಬದ್ಧರಾಗಮ್"  
 ಕುಮಾಂ ೭-೧೧ | 8. ಸಂಗೀತದ ಮೂಲಭೂತವಾದ  
 ರಾಗಗಳು. (1) ಭೈರವ (2) ಕೌಶಿಕ (3) ಹಿಂದೋಳ  
 (4) ದೀಪಕ (5) ಶ್ರೀರಾಗ ಮತ್ತು (6) ಮೇಘರಾಗ  
 ಗಳೆಂದು ರಾಗಗಳು ಆರು ವಿಧ. 9. ಮಾತ್ಸರ್ಯ,  
 ಅಸೂಯೆ, ಹೊಟ್ಟೆಕಿಚ್ಚು. 10. ಇಷ್ಟವಾದ ವಿಷಯ  
 ದಲ್ಲಿ ತೋರುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಇದು ಯೋಗಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತ  
 ವಾದ ಪಂಚಕ್ಷೇಪಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಅವಿಧಾ ಅಸ್ಮಿತಾ ರಾಗಃ  
 ದ್ವೇಷಃ ಮತ್ತು ಅಭಿನಿವೇಶಃ ಇವು ಪಂಚಕ್ಷೇಪಗಳು.  
 ಅಭಿಮತವಿಷಯಾಭಿಲಾಷಃ ಕಲೇಶಃ | 11. ರಾಜ, ದೊರೆ.  
 12. ಕಾಂತಿ, ಪ್ರಭೆ. "ರಾಗೋನುರಾಗೇ ಲಾಕ್ಷಾದೌ ತ್ವಿವಿ  
 ರಾಕಸ್ತು ಪೂಜಿ ಚ" ವೈಜಂ. "ರಾಗಸ್ತು ಮಾತ್ಸರ್ಯ  
 ಲೋಹಿತಾದಿಭು | ಕಲೇಶಾದಾನುರಾಗೇ ಚ ಗಾಂವಾರಾದೌ ನೃಪೇಽಪಿ  
 ಚ" ಮೇದಿಂ. 13. ಚಂದ್ರ. 14. ಸೂರ್ಯ.

**ರಾಗಚೂರ್ಣ ರಾಗಚೂರ್ಣ** (ಪುಂ) 1. ಮದನ, ಮನ್ಮಥ.  
 ರಾಗಸ್ಯ ಚೂರ್ಣ ಇವ | 2. ಖದಿರವೃಕ್ಷ, ಕಗ್ಗಲಿ ಮರ.  
 "ರಾಗಚೂರ್ಣಸ್ತು ಖದಿರೇ ಮಕರಚ್ವಜೇ" ಹೇಮಂ. 3. ಅರಗು,  
 ಯಾವಕ. 4. ಕೆಂಪುಬಣ್ಣದ ಪುಡಿ.

**ರಾಗದಾಲಿ ರಾಗದಾಲಿ** (ಪುಂ) ಕಾಡುಕಡಲೆ.

**ರಾಗಪುಷ್ಪ ರಾಗಪುಷ್ಪ** (ಪುಂ) 1. ದಾಸಿವಾಳದ ಗಿಡ.  
 2. ಕೆಂಪು ಗೋರಂಟಿ ಗಿಡ. ರಾಗಯುಕ್ತಂ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ |

**ರಾಗಬಂಧ ರಾಗಬಂಧ** (ಪುಂ) ರಂಜನೆಯಾಗುವಂತೆ ರಾಗಗಳ  
 ನಿರೂಪಣೆ. ರಾಗಾಣಾಂ ಬಂಧಃ ರಂಜನತ್ವಯೋಗಃ | "ಭಾವೋ  
 ಭಾವಂ ನುದತಿ ವಿಷಯಾದ್ರಾಗಬಂಧಃ ಸ ಏವ" ಮಾಲಂ ೨-೮ |

**ರಾಗರಜ್ಜು ರಾಗರಜ್ಜು** (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ. ರಾಗೋ ರಜ್ಜುರಿವ  
 ಯಸ್ಯ |

**ರಾಗಲತಾ ರಾಗಲತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನ್ಮಥನ ಪತ್ನಿ, ರತಿ.

**ರಾಗವತ್ ರಾಗವತ್** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೇಮವುಳ್ಳ, ಪ್ರೀತಿ  
 ಯುಳ್ಳ, ಅನುರಾಗವುಳ್ಳ. ರಾಗೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್"  
 (೪-೨-೧೪) | "ಮನಸಿ ರಾಗವತಾಮನುರಾಗಿತಾ ನವನವಾ  
 ವನವಾಯುಭಿರಾದಧೇ" ಮಾಘಂ ೬-೩೨ | 2. ರಕ್ತವರ್ಣದ,  
 ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣದಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಶಶವರಮಹರಾದೌ ರಾಗ-  
 ವಾನುಷ್ಣರಸಿಮಃ" ಮಾಘಂ ೧೧-೬೨ |

**ರಾಗಸೂತ್ರ ರಾಗಸೂತ್ರ** (ನಂ) 1. ರಕ್ತಸೂತ್ರ, ಕೆಂಪುದಾರ.  
 2. ಬಣ್ಣದ ದಾರ. 3. ರೇಷ್ಮೆ ದಾರ. 4. ತಕ್ಕಡಿಯ  
 ದಾರ. "ರಾಗಸೂತ್ರಂ ಪದ್ಮಸೂತ್ರೇ ತುಲಾಸೂತ್ರೇ ನಪುಂಸಕಮ್"  
 ಮೇದಿಂ |

**ರಾಗಾಡ್ಯಾ ರಾಗಾಡ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂಜಿಷ್ಠೆ.

**ರಾಗಾಶನಿ ರಾಗಾಶನಿ** (ಪುಂ) ಬುದ್ಧದೇವ. ರಾಗಸ್ಯ  
 ವಿಷಯಸ್ಯ ಅಶನಿರಿವ |

**ರಾಗಿನ್ ರಾಗಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಕಾಮುಕ. ರಾಗೋನುರಾಗೋಽ-  
 ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) | "ಅನಿಮಿಷಮವಿರಾಮಾ  
 ರಾಗಿಣಾಂ ಸರ್ವರಾತ್ರಂ ನವನಿಘನಲಿಲಾಃ ಕೌತುಕೇನಾತಿವೀಕ್ಷ್ಯ"  
 ಮಾಘಂ ೧೧-೧೮ | 2. ಬಣ್ಣ ಹಾಕುವವನು. 3. ಪ್ರೇಮ  
 ವುಳ್ಳವನು, ಅನುರಾಗವುಳ್ಳವನು. "ರಾಗಿ ಕಾಮಿನಿ  
 ರಜ್ಜುತರಿ" ಹೇಮಂ. 4. ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳವನು, ವಿಶ್ವಾಸ  
 ವುಳ್ಳವನು. "ಸ್ಯಾದ್ರಕ್ತಃ ಕಾಮೀ ಚ ರಾಗಿಣಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |  
 ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೪) | -ಣಿ -ಣೀ. ಕಾಮುಕಿ,  
 ಹೆಚ್ಚು ಕಾಮವಿಕಾರವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು.

**ರಾಗಿಣಿ ರಾಗಿಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೇನಕೆಯ ಒಬ್ಬ ಮಗಳು.  
 "ರಾಗಿಣಿ ನಾಮ ಸಂಜಾತಾ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ಮೇನಾಸುತಾ ಮುನೇ" |  
 2. ಲಕ್ಷ್ಮಿ.

**ರಾಘವ ರಾಘವ** (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀರಾಮ. 2. ರಘುವಂಶ  
 ದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ದೊರೆ. ರಘೋಗೌತ್ರಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಅನ್"  
 (೪-೧-೧೨) | "ದೇವಸೂತಮುಜಾಲಂಬೀ ಜೈತ್ರಮಧ್ಯಾಸ್ತ ರಾಘವಃ"  
 ರಘುಂ ೧೨-೮೪ | 3. ಸಮುದ್ರದ ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ  
 ಮೀನು. "ತಿಮಿಙ್ಗಿಲಗಿಲೋಽಪ್ಯಸ್ತಿ ತದಗಿಲೋಽಪ್ಯಸ್ತಿ  
 ರಾಘವಃ" | "ರಾಘವೋಽಘಮೆಹಾಮೀನಭೇದೇ ಚ ರಘುಬಂಜಜೇ"  
 ಮೇದಿಂ |



ರಾಜ್ಯ ರಾಂಕನ (ನಂ) 1. ಶಾಲು, ರಂಕುಮೆಂಬ ಮೃಗದ ರೋಮದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ವಸ್ತ್ರ. ರಾಜ್ಯವಿಕಾರ: "ಅನ್" (೪-೩-೧೩೭) 1. ಕಂಬಳ. "ರಾಜ್ಯವ ಮೃಗ-ರೋಮಜಮ್" ಅಮಂ 1. (ವಿಂ) 3. ರಂಕುಮೃಗ ಸಂಬಂಧವಾದ.

ರಾಜ್ಯ ರಾಜ್ಯ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ರಾಜ್ಯ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೬೧) 1. "ಸಮಿತಾವಿತಿ ವಿಕ್ರಮಾನಮುಖ್ಯನ್ ಗತ-ಭೀರಾಹಿತ ಚೇದಿರಾಢ್ಮುರಾರಿಮ್" ಮಾಘಂ ೨೦-೧ 1.

ರಾಜಕ ರಾಜಕ (ನಂ) 1. ರಾಜರ ಸಮೂಹ. ರಾಜಾ ಸಮೂಹ: "ಬು" (೪-೨-೩೯) 1. "ಮಖವಿಧನಾಯ ಸಕಲಮಿತ್ಯಮುತ್ಯಾಯ ರಾಜಕಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೧೦೨ 1. (ಪುಂ) 2. ರಾಜ, ದೊರೆ. "ತವಾಙ್ಗ ತಿಲಶ:ಕೃತ್ವಾ ಶ್ರಮ್ಯೋ ದಾಸ್ಯಾಮಿ ರಾಜಕ" ಹರಿವಂ 1.

ರಾಜಕೀಯ ರಾಜಕೀಯ (ವಿಂ) ರಾಜನ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಸರ್ಕಾರದ ಸಂಬಂಧವಾದ. ರಾಜನ್ "ಛ:" ಕಕಾರಶ್ಚಾಂತಾ-ವೇಶ: (೪-೨-೧೪೦) 1.

ರಾಜಕುಲ ರಾಜಕುಲ (ನಂ) 1. ರಾಜನ ವಂಶ, ರಾಜನ ಸಂತತಿ. 2. ರಾಜನ ವಾಸಗೃಹ, ಆರಮನೆ. ರಾಜ: ಕುಲಮ್ 1. "ಯದುನಂದನೇನ ತದುದನ್ವತ: ಪಯ: ಶಶಿನೇವ ರಾಜ-ಕುಲಮಾಪ ನಂದಯುಮ್" ಮಾಘಂ ೧೩-೬೫ 1.

ರಾಜಸರ್ಜುರೀ ರಾಜಸರ್ಜುರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಂಡಬಿಜೂರ್. ರಾಜಪ್ರಿಯಾ ಸರ್ಜುರೀ 1.

ರಾಜಗಾಮಿನ್ ರಾಜಗಾಮಿನ್ (ವಿಂ) ರಾಜನನ್ನು ಸೇರುವ, ರಾಜನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ರಾಜಾನಂ ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಗಿಗಿ:" (೩-೧-೧೩೪) 1. "ಅನೃತಂ ಚ ಸಮುತ್ಕರ್ಷ ರಾಜಗಾಮಿ ಚ ಪೇಶುನಮ್ 1. ಗುರೋಶ್ಚಾಲಿಕನಿಬಂಧ: ಸಮಾನಿ ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯಯಾ" ಮನುಂ ೧೧-೫೫ 1. ಪುತ್ರಸಂತಾನವಿಲ್ಲದವನ ಧನವು ಪತ್ನಿಗೆ ಸೇರುವುದು. ಪತ್ನಿಯಿಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ತಾಯಿಗೆ. ತಾಯಿಯಿಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ಸಹೋದರರು ಭಾಗಿಗಳು. ಅವರೂ ಇಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ಅವರ ಪುತ್ರರು. ಅವರೂ ಇಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ಆತನ ವಂಶದವರು. ಅವನ ಕುಲದವರು ಯಾರೂ ಇಲ್ಲದಾಗ ಬಂಧುಗಳು. ಬಂಧುಗಳು ಇಲ್ಲದಾಗ ಶಿಷ್ಯರು ಭಾಗಿಗಳು. ಶಿಷ್ಯರೂ ಇಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ಸಹಾಧ್ಯಾಯಿಗೆ ಸೇರುವುದು. ಸಹಾಧ್ಯಾಯಿಯೂ ಇಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ರಾಜನಿಗೆ ಸೇರುವುದು. (ರಾಜಗಾಮಿಯಾಗುವುದು).

ರಾಜಗ್ರೀವ ರಾಜಗ್ರೀವ (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮತ್ಸ್ಯ.

ರಾಜಧ ರಾಜಧ (ವಿಂ) ರಾಜನನ್ನು ವಧಿಸುವವನು. ರಾಜಾನಂ ಹಂತಿ — ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತೌ: "ಡಕ್" (ವಾಂ ೩-೨-೫೫) 1.

"ಪ್ರದಕ್ಷಿಣೀಕೃತ್ಯ ಜಯಾಯ ಸೃಷ್ಟಯಾ ರಾಜ ನರಾಜನಯಾ ಸ ರಾಜಧ:" ನೆಪಂ ೧-೧೦ 1.

ರಾಜಜಂಬೂ ರಾಜಜಂಬೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಿಂಡಬಿಜೂರ್. ಜಂಬೂನಾ ರಾಜಾ — ಪರಿನಿಪಾತ: (೨-೨-೩೧) 1. 2. ಜಂಬು ನೇರಳೆ.

ರಾಜತ್ ರಾಜತ್ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ. ರಾಜ್ (ದೀಪ್ತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) 1. "ರಾಜಾಙ್ಗ: ಪಥಿ ಮಹತಾಮಭಿವ್ರೂಪೇಶ್ವರ್ಕಾರ್ಚಿ:ಸ್ಫುಟಗತಿಮಿ-ಧ್ವಂಜಾಂಶುಕಾನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೭-೬ 1.

ರಾಜತ ರಾಜತ (ವಿಂ) 1. ಬೆಳ್ಳಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಬೆಳ್ಳಿಯಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ. ರಾಜತಸ್ಯ ವಿಕಾರ: "ಅನ್" (೪-೩-೧೫೪) 1. 2. ರಾಜತಮಯವಾದ. "ಸುರಾಧಿಪಾ-ಧಿಷ್ಠಿತಹಸ್ತಿಮಲ್ಲಲಿಲಾಂ ದಧೌ ರಾಜತಗಂಧಶೈಲ:" ಮಾಘಂ ೪-೧೩ 1. (ನಂ) 3. ಬೆಳ್ಳಿ.

ರಾಜತರ ರಾಜತರ (ಪುಂ) 1. ಕಕ್ಕಿಗಿಡ. 2. ಬೆಟ್ಟ ಗಡಗಿಲೆ. ತರಣಾ ರಾಜಾ 1. ಪರಿನಿಪಾತ: (೨-೨-೩೧) 1.

ರಾಜತಾ ರಾಜತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾಜನ ಭಾವ, ರಾಜತ್ವ, ರಾಜನಾಗಿರುವಿಕೆ. ರಾಜಾ ಭಾವ: "ತಲ್" (೫-೧-೧೧೯) 1. "ತ್ವ:" 1. ರಾಜತ್ವಮ್ ರಾಜತ್ವಮ್.

ರಾಜತಾಲ ರಾಜತಾಲ (ಪುಂ) ಅಡಕೆಮರ.

ರಾಜದಂಡ ರಾಜದಂಡ (ಪುಂ) ರಾಜನು ವಿಧಿಸುವ ಶಿಕ್ಷೆ. ರಾಜಾ ದಂಡ: 1.

ರಾಜದಂತ ರಾಜದಂತ (ಪುಂ) ಮೇಲುಸಾಲಿನ ಮಧ್ಯದ ಎರಡು ಹಲ್ಲುಗಳು. ದಂತಾನಾ ರಾಜಾ 1. ಪರಿನಿಪಾತ: 1. (೨-೨-೩೧) 1.

ರಾಜಧರ್ಮ ರಾಜಧರ್ಮ (ಪುಂ) ರಾಜನ ಕರ್ತವ್ಯವಾದ ಪ್ರಜಾಪರಿಪಾಲನೆ. ರಾಜಾ ಧರ್ಮ: 1. ಅರಾಜಕವಾದ ಲೋಕದಲ್ಲಿ ದುಷ್ಟರಿಂದ ಹೀಡಿತರಾದ ಪ್ರಜೆಗಳನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಲು ಪರಮಾತ್ಮನು ರಾಜನನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದನು. "ಅರಾಜಕೇ ಹಿ ಲೋಕಾಃ ಸ್ಮಿನ್ ಸರ್ವತೋ ವಿದ್ರುತೇ ಭಯಾತ್ 1. ರಕ್ಷಾರ್ಯಮಸ್ಯ ಸರ್ವಸ್ಯ ರಾಜಾನಮಸೃಜತ್ಪ್ರಭು:" ಮನುಂ ೭-೩ 1. ರಾಜನು ಸದಾ ಉದ್ಯಮಶೀಲನಾಗಿರಬೇಕು. ಹಾಗಿಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ಯಾರೂ ಅವನಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವಾಸವಿಡುವುದಿಲ್ಲ. "ನಿತ್ಯೋದ್ಯುಕ್ತೇನ ವೇ ರಾಜಾ ಭವಿತವ್ಯಂ ಯುಧಿಷ್ಠಿರ 1. ಪ್ರಶಸ್ಯತೇ ನ ರಾಜಾ ಹಿ ನಾರೀವೋದಮ-ವರ್ಜಿತ:" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೫೬-೧ 1. ಗರ್ವದಿಂದ ಕರ್ತವ್ಯ ಕರ್ತವ್ಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿಯದೆ ಉನ್ಮಾದಪ್ರವೃತ್ತನಾದವನು ಅಚಾರ್ಯನಾಗಿದ್ದರೂ ಅವನನ್ನು ರಾಜನು ಪರಿತ್ಯಜಿಸಬೇಕು. "ಗುರೋರಪ್ಯವಲಿಪ್ತಸ್ಯ ಕಾರ್ಯಾರ್ಯಮಜಾನತ: 1. ತತ್ಪಥಂ



ಪ್ರತಿಪನ್ನಸ್ಯ ಪರಿತ್ಯಾಗೋ ವಿಧೀಯತೇ" ಭಾಂ.ಶಾಂತಿಂ ೪೬-೭. ರಾಜನಿಗೆ ಪ್ರಜೆಗಳ ವಿಶ್ವಾಸಗಳಿಸುವುದೇ ಶಾಶ್ವತವಾದ ಧರ್ಮ. ಸತ್ಯ ಪರಿಪಾಲನೆ ವ್ಯವಹಾರಗಳಲ್ಲಿ ಯಜುವಾದ ಮಾರ್ಗ ಇವೂ ರಾಜನಿಗೆ ಮುಖ್ಯವಾದ ಧರ್ಮ. "ಲೋಕ-ರಕ್ಷಣಮೇವಾತ್ರ ರಾಜಾಂ ಧರ್ಮಃ ಸನಾತನಃ | ಸತ್ಯಸ್ಯ ರಕ್ಷಣಂ ಚೈವ ವ್ಯವಹಾರಸ್ಯ ಚಾರ್ಜವಮ್" ಭಾಂ.ಶಾಂತಿಂ ೪೬-೧೧. ರಾಜನು ಚಾರ್ತುವರ್ಣ್ಯದ ಧರ್ಮಗಳನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುತ್ತ ಧರ್ಮಗಳ ಸಾಂಕರ್ಯವುಂಟಾಗದಂತೆ ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುವುದೂ ಅವನಿಗೆ ಮುಖ್ಯವಾದ ಸನಾತನಧರ್ಮ. "ಚಾತುರ್ವರ್ಣ್ಯಸ್ಯ ಧರ್ಮಾಶ್ಚ ರಕ್ಷಿತವ್ಯಾ ಮಹೀಕ್ಷಿತಾ | ಧರ್ಮಸಂಕರ-ರಕ್ಷಾ ಚ ರಾಜಾಂ ಧರ್ಮಃ ಸನಾತನಃ" ಭಾಂ.ಶಾಂತಿಂ ೪೬-೧೫. ಯಾವ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಸಜ್ಜನರಿಂದ ದ್ರವ್ಯವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸ ಕೊಡದು. ದುರ್ಜನರಿಂದ ಸ್ವೀಕರಿಸಿ ಅದನ್ನು ಸತ್ಪುರುಷ ರಿಗೆ ದಾನಮಾಡಬೇಕು. "ನ ಚಾದದೀತ ವಿದ್ವಾನ್ ಸತಾಂ ಹಸ್ತಾನ್ ಕದಾಚನ | ಅಸದ್ವಚಶ್ಚ ಸಮಾಧಾಯ ಸದ್ವಚಸ್ತು ಪ್ರತಿ-ಪಾದಯೇತ್" ಭಾಂ.ಶಾಂತಿಂ ೪೬-೨೧. ರಾಜನು ತನಗೆ ರಾಜ್ಯಭಾರನಿರ್ವಾಹಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಹಾಯಕರಾಗಿರುವವರಿಗೆ ಧನಕನಕಾದಿಗಳಿಂದ ತೃಪ್ತಿಯುಂಟುಮಾಡಿ ಭೋಗದಲ್ಲಿಯೂ ಇಬ್ಬರೂ ಸಮಾನರಾಗಿರಬೇಕು. ಅದರ ಛತ್ರ ಚಾಮರಾದಿ ಗೌರವ ಮತ್ತು ರಾಜಾಜ್ಞೆ ಈ ವಿಷಯ ಗಳಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ರಾಜನು ಪ್ರಭುವಾಗಿರಬೇಕು. "ಸಹಾಯಾನ್ ಸತತಂ ಕುರ್ಯದ್ರಾಜಾ ಭೂತಿಪರಿಷ್ಕೃತಾನ್ | ತೇಶ್ಚ ತುಲ್ಯೋ ಭವೇ-ತ್ಪ್ರೋಗೈಶ್ಚ ತ್ರಮಾತ್ರಾಜಾಽಧಿಕಃ" ಭಾಂ.ಶಾಂತಿಂ ೪೬-೨೫. ತಂದೆಯ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಪುತ್ರರು ಸೌಖ್ಯನಿಮ್ಮದಿಗಳಿಂದ ವಾಸಿಸುವಂತೆ ಯಾವನ ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರಜೆಗಳು ಸೌಖ್ಯ ಸಂಪತ್ತುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ ಭಯವಿಲ್ಲದೆ ಸಂಚರಿಸುವರೋ ಅಂತಹ ರಾಜನೇ ರಾಜಪುಂಗವನೆನಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ. "ಪುತ್ರಾ ಇವ ಪಿತುರ್ಗೃಹೇ ವಿಷಯೇ ಯಸ್ಯ ಮಾನವಾಃ | ನಿರ್ಮಯಾ ವಿಚರಿಸ್ಯಂತಿ ಸ ರಾಜಾ ರಾಜಸತ್ತಮಃ" ಭಾಂ.ಶಾಂತಿಂ ೪೬-೩೩. ಯಾವ ರಾಜನ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಪುರಜನರೆಲ್ಲರೂ ತಮ್ಮ ಸಂಪತ್ತನ್ನು ನಿಗೂಢವಾಗಿಡದೆ ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ ರಾಗಿರುವರೋ ಮತ್ತು ನೀತಿ ಅನೀತಿಗಳನ್ನು ಅರಿತಿರುವರೋ ಅಂತಹವನೇ ರಾಜಶ್ರೇಷ್ಠನು. "ಅಗೃಹವಿಮವಾ ಯಸ್ಯ ಪೌರಾ ರಾಷ್ಟ್ರನಿವಾಸಿನಃ | ನಯಾಪನಯವೇತ್ತಾರಃ ಸ ರಾಜಾ ರಾಜಸತ್ತಮಃ" ಭಾಂ.ಶಾಂತಿಂ ೪೬-೩೪. ರಾಜನು ದೇಶ ದಲ್ಲಿ ಸುಳ್ಳು ವಂಚನೆ ಮಾತ್ಸರ್ಯ ಮಾಯೆ ಮೊದಲಾ ದುವುಗಳಿಗೆ ಅವಕಾಶಕೊಡದೆ ಪ್ರಜೆಗಳನ್ನು ಸುರಕ್ಷಿತ ರನ್ನಾಗಿ ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು ಅವನ ಸನಾತನಧರ್ಮ. "ನ ಯಸ್ಯ ಕೂಟಂ ಕಪಟಂ ನ ಮಾಯಾ ನ ಚ ಮತ್ಸರಃ | ವಿಷಯೇ

ಭೂಮಿಪಾಲಸ್ಯ ತಸ್ಯ ಧರ್ಮಃ ಸನಾತನಃ" ಭಾಂ.ಶಾಂತಿಂ ೪೬-೩೭. ಇತ್ಯಾದಿ.

**ರಾಜಧಾನಿ ರಾಜಧಾನಿ, -ಧಾನಕ -ಧಾನಕ (ನಂ) ರಾಜನು ವಾಸಿಸುವ ನಗರ.**

**ರಾಜಧಾನಿ ರಾಜಧಾನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾಜನು ವಾಸವಾಡುವ ನಗರ, ರಾಜ್ಯಾಡಳಿತ ನಡೆಸುವ ಮುಖ್ಯನಗರ. ರಾಜಾನಿ ಧೀಯಂತೇಜ - ಡು ಖಾಲ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | "ಸ ತಕ್ಷಪುಷ್ಕಲೌ ಪುತ್ರೌ ರಾಜಧಾನ್ಯೋಸ್ತದಾಖ್ಯಯೋಃ" ರಘುಂ ೧೫-೮೯.**

**ರಾಜಧಾಮನ್ ರಾಜಧಾಮನ್ (ನಂ) ರಾಜನ ವಾಸ್ತುಹ, ಅರಮನೆ. ರಾಜನಿ ಧಾಮ ನಿವಾಸಃ |**

**ರಾಜನ್ ರಾಜನ್ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ, ಅರಸ. ರಾಜತೆ - ರಾಜ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕನಿನ್" (೩ಂ ೧-೧೫೪) | "ಉದೇತುಮತ್ಯಜಗ್ರಾಹಾಂ ರಾಜಸು ದ್ವಾದಶಸ್ವಪಿ" ಮಾಘಂ ೨-೮೧. 2. ಚಂದ್ರ. "ರಾಜಪ್ರಿಯಾಃ ಕೇರವಿಷ್ಯೋ ರಮಂತೇ ಮಧುಪೇಃ ಸಹ" ಮಾಮಿಂ ವಿಂ. 3. ಕ್ಷತ್ರಿಯ. "ತತ್ಸುರಾಜಿ ಭವತಿ ಸ್ಥಿತೇ ಪುನಃ ಕಃ ಕೃತುಂ ಯಜತು ರಾಜಲಕ್ಷಣಮ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೧೪. 4. ಪ್ರಭು, ಸ್ವಾಮಿ, ಯಜಮಾನ. 5. ಸೋಮಲತೆ. "ರಾಜಾ ತು ಕ್ಷತ್ರಿಯೇ ಚಂದ್ರೇ ಲತಾಭೇದೇ ನೃಪೇ ಪ್ರಭೌ" ವೈಜಂ. 6. ಶಕ್ರ, ಇಂದ್ರ. 7. ಯಕ್ಷ. "ರಾಜಾ ಪ್ರಭೌ ಚ ನೃಪತೌ ಕ್ಷತ್ರಿಯೇ ರಜನಿಪತೌ | ಯಜ್ಞೇ ಶಕ್ರೇ ಚ ಪುನಿ ಸ್ಥಾತ್" ಮೇದಿಂ.**

**ರಾಜನಯ ರಾಜನಯ, (ಪುಂ) -ನೀತಿ -ನೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)**

1. ರಾಜ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ. ರಾಜ್ಯದ ಆಡಳಿತವನ್ನು ನಡೆಸಲು ಅನುಸರಿಸಬೇಕಾದ ವ್ಯವಹಾರದ ತಂತ್ರ. ರಾಜನಿ ನಯಃ ನೀತಿರ್ವಾ | ಪ್ರಜಾಪರಿಪಾಲನೆಗಾಗಿ ರಾಜನು ರಾಜನೀತಿ ಯನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅಭ್ಯಸಿಸಬೇಕು. ಸಾಮಾನ್ಯ ಉಪಾಯ ಚತುಷ್ಟಯವನ್ನು ಸರಿಯಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸಬೇಕು. ರಾಜ್ಯ ಭಾರವು ಸುಸೂತ್ರವಾಗಿ ಸುವ್ಯವಸ್ಥಿತವಾಗಿ ನಡೆಯಲು ಅವಶ್ಯವಾದ ದ್ರವ್ಯಾರ್ಜನೆಯನ್ನು ಧರ್ಮಕ್ಕೆ ವಿರೋಧ ವಿಲ್ಲದೆಯೂ ಪ್ರಜೆಗಳ ಹಿತಕ್ಕೆ ಕಿಂಚಿತ್ತೂ ಬಾಧೆಯು ಉಂಟಾಗದಂತೆಯೂ ಮಾಡಬೇಕು. ಇದರಿಂದ ಮಾತ್ರ ರಾಜನು ಕೀರ್ತಿಶಾಲಿಯಾಗಿಯೂ ಪ್ರಜಾನುರಾಗಸಂಪನ್ನ ನಾಗಿಯೂ ವಿರಾಜಿಸುವನು. "ಅವಿರೋಧೇನ ಧರ್ಮಸ್ಯ ಅರ್ಯಸ್ಯೋಪಾರ್ಜನಂ ಚ ಯತ್ | ಸರ್ವಸತ್ತ್ವಾನುಗಮನಂ ಕಾಮವರ್ಗಫಲಂ ಚ ಯತ್ | ಪರತ್ರೇಹ ಚ ಯಚ್ಛ್ರೇಯಃ ಪುತ್ರ ತತ್ ಕರ್ಮ ಚಾಚರ | ಯಥಾ ಇಲಾಘಾಂ ಪ್ರಯಾಸ್ಯಥ ಯಥಾ ಕೀರ್ತಿರ್ಭವೇತ್ತವ" ಚಾಣಕ್ಯಃ | ರಾಜನು ತನಗೆ ಯಾರಿಂದಲೂ ಪರಿಭವವುಂಟಾಗದೆ ಗೌರವ



ದಿಂದ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವಾಗ ಶಾಂತಚಿತ್ತನಾಗಿ ಎಲ್ಲ ರಲ್ಲೂ ಕ್ಷಮೆಯನ್ನು ತೋರಿಸುತ್ತಿರಬೇಕು. ಪರಿಭವ ವೊದಗಿದಾಗ ಮಾತ್ರ ತನ್ನ ಪರಾಕ್ರಮವನ್ನು ಪ್ರದರ್ಶಿಸುತ್ತಾ ವಿರೋಧಿಗಳ ನಾಶಕ್ಕೆ ಯತ್ನಿಸಬೇಕು. ರಾಜನು ಸಾಮಾನ್ಯಪ್ರಾಯಗಳನ್ನು ಸಮಯಾನುಸಾರವಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುತ್ತ ಚಾರರ ಮೂಲಕ ಸ್ವಪರರಾಷ್ಟ್ರಗಳ ವಿಚಾರಗಳನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಂಡು ವ್ಯವಸ್ಥಿತವಾಗಿ ರಾಜ್ಯವಾಳಬೇಕು. "ಇತಿ ಕ್ರಮಾತ್ಪ್ರಯುಜ್ಜಾನೋ ರಾಜನೀತಿ ಚತುರ್ವಿಧಾಮ್ | ಆತೀರ್ಥಾದಿಪ್ರತೀಧಾತಂ ಸ ತಸ್ಯಾಃ ಫಲಮಾನಶಃ" ರಘುಂ ೧೭-೬೮ | ರಾಜನು ಸದಾ ತನ್ನ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಯನ್ನೂ ಶತ್ರುಗಳ ಅವನತಿಯನ್ನೂ ಗಮನದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ವರ್ತಿಸಬೇಕು. ಕೇವಲ ಅಲ್ಪವಾದ ಸಂಪತ್ತಿನಿಂದಲೇ ತೃಪ್ತಿಹೊಂದಿ ಅದೇ ಸ್ಥಿರವೆಂದು ತಿಳಿದು ಪೌರುಷಹೀನನಾಗಿ ಕುಳಿತಿರುವ ಅಲ್ಪ ಸಂತುಷ್ಟನಾದ ರಾಜನನ್ನು ದೈವವು ಲಕ್ಷಿಸದೆ ಅವನ ಆ ಸಂಪತ್ತನ್ನು ಎಂದೆಂದಿಗೂ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವುದಿಲ್ಲ. "ಸಂಪದಾ ಸುಸ್ಥಿರಮನ್ಯೋ ಭವತಿ ಸ್ವಲ್ಪಯಾಪಿ ಯಃ | ಕೃತಕೃತ್ಯೋ ವಿಧಿಮನ್ಯೋ ನ ವರ್ಧಯತಿ ತಸ್ಯ ತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೩೨ | ಈ ಕಾರಣಗಳಿಂದ ರಾಜನು ತನ್ನ ಪ್ರಭುಶಕ್ತಿಗೆ ನಿರ್ದಾನ ಭೂತವಾದ ಮಂತ್ರೋತ್ಸಾಹ ಶಕ್ತಿಗಳನ್ನು ತನ್ನಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಯತ್ನಿಸಬೇಕು. "ಪ್ರಜ್ಞೋತ್ಸಾಹಾವತಃ ಸ್ವಾಮಿ ಯತೇತಾಧಾತುಮಾತ್ಮನಿ | ತೌ ಹಿ ಮೂಲಮುದೇಷ್ಯಂತ್ಯಾ ಜಿಗಿಷೌ ರಾತ್ಮಸಂಪದಃ" ಮಾಘಂ ೨-೭೬ | ಪ್ರಜೆಗಳಿಗೆ ರಾಜನು ತಂದೆಯಂತೆಯೂ ರಾಜನಿಗೆ ಪ್ರಜೆಗಳು ಪುತ್ರರಂತೆಯೂ ಇರುವುದರಿಂದ ರಾಜನು ಪ್ರಜೆಗಳನ್ನು ತನ್ನ ಮಕ್ಕಳಂತೆ ಪಾಲಿಸಬೇಕು. "ರಾಜಾನಃ ಪಿತರಃ ಪ್ರೋಕ್ತಾಃ ಪುತ್ರಾ ಜನಪದಾಸ್ತಥಾ | ಅತೌ ಭೂಪಾಃ ಪಾಲಯಂತಿ ಪ್ರಜಾಃ ಪುತ್ರಾನಿವೌರಸಾನ್" | ತನ್ನ ರಾಜ್ಯಕ್ಕೆ ಕಲ್ಯಾಣವುಂಟಾಗಬೇಕೆಂಬ ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ ರಾಜನು ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಹಿತಾಹಿತಗಳ ವಿಷಯವಾಗಿ ಚಿಂತಿಸುತ್ತಿರಬೇಕು. "ನೃಪಾಃ ಕಲ್ಯಾಣಮಿಚ್ಛಂತೋ ನಿಜರಾಜ್ಯಶುಭಾಶುಭಮ್ | ಪಶ್ಯಂತಿ ನಿದ್ರಾಂ ವಿಪ್ರೇಂದ್ರ ಸತ್ವರಾಶ್ವಾರಚಕ್ಷುಃ" ಪಾಶ್ವಪುಂ | 2. ರಾಜ್ಯಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ಗ್ರಂಥ. ಕಾವಂದಕೀಯ ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರ, ಶುಕ್ರನೀತಿ ಮುಂತಾದುವು.

**ರಾಜನ್ಯ ರಾಜನ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಕ್ಷತ್ರಿಯ, ರಾಜವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ರಾಜೋಪತ್ಯಮ್ "ಯತ್" (೪-೧-೧೩೭) | "ಕಾಕುತ್ಸ್ಥಶ್ಚಿರವಿರಹೋತ್ಸುಕಾವರೋಧಾನ್ ರಾಜನ್ಯಾನ್ ಸ್ವಪುರ-ನಿವೃತ್ತಯೇಜುಮೇ" ರಘುಂ ೪-೮೭ | 2. ಅಗ್ನಿ.

**ರಾಜನ್ಯಕ ರಾಜನ್ಯಕ** (ನಂ) 1. ಕ್ಷತ್ರಿಯರ ಸಮೂಹ. ರಾಜನ್ಯಾನಾಂ ಸಮೂಹಃ "ಬು" (೪-೨-೩೯) | "ರಾಜನ್ಯಕಾ-ನ್ಯಪಾಯಜ್ಞೇರೇಕಾರ್ಥಾನಿ ವರೇಸ್ತವ" ಮಾಘಂ ೨-೧೧೪ |

(ಪುಂ) 2. ರಾಜಪುತ್ರ (ಕ್ಷತ್ರಿಯ)ರ ದೇಶ. ರಾಜನ್ಯ "ಬು" (೪-೨-೪೩) |

**ರಾಜನ್ವತ್ ರಾಜನ್ವತ್** (ವಿಂ) ರಾಜಧರ್ಮಪರಾಯಣನಾದ ರಾಜನನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ (ದೇಶ). ಶೋಮನೋ ರಾಜಾ ಯಸ್ಯ - ರಾಜನ್ ಪ್ರಶಂಸಾಯಾಂ "ಮತುಪ್" (೮-೨-೧೪) | ನಿಪಾಂ | ರಾಜನ್ವಾನ್ ದೇಶಃ | ರಾಜನ್ವತೀ ಭೂಮಿಃ | "ಕಾಮ್ ನೃಪಾಃ ಸಂತು ಸಹಸ್ರಶೋಽನ್ಯೇ ರಾಜನ್ವತೀಮಾಹುರನೇನ ಭೂಮಿಮ್" ರಘುಂ ೬-೨೨ |

**ರಾಜಪಥ ರಾಜಪಥ** (ಪುಂ) 1. ರಾಜನು ಸಂಚರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಮಾರ್ಗ, ಹತ್ತು ಧನಸ್ಸುಗಳಷ್ಟು ಅಗಲವಾದ ರಸ್ತೆ. ರಾಜಗಮನಯೋಗ್ಯಃ ಪಥಾಃ - ಪಥಿನ್ "ಅಃ" (೪-೪-೭೪) | "ಧನುಷಿ ದಶ ವಿस्तಾರೇ ಶ್ರೀಮಾನ್ ರಾಜಪಥಃ ಸ್ಮೃತಃ | ನೃವಾಜಿರಥನಾಗಾನಾಮಸಂಭಾಷಃ ಸುಸಂಚರಃ" ದೇವೀಪುಂ | "ತಾವತ್ಪತಾಕಾಕುಲಮಿಂದುಮೋಲಿಹತೋರಣಂ ರಾಜಪಥಂ ಪ್ರಪೇದ" ಕುಮಾಂ ೭-೬೩ | 2. ವಿಸ್ತಾರವಾದ ರಸ್ತೆ, ಅಗಲವಾದ ರಸ್ತೆ, ಮುಖ್ಯ ರಸ್ತೆ. 3. ರಾಜನು ಅನುಸರಿಸುವ ಮಾರ್ಗ, -ಪದ್ಧತಿ, -ರೀತಿ. -ಮಾರ್ಗಃ -ಮಾರ್ಗಃ.

**ರಾಜಪಲಾಙ್ಕ ರಾಜಪಲಾಂಡು** (ಪುಂ) ಕೆಂಪು ಈರುಳ್ಳಿ. ಪಲಾಙ್ಕನಾಂ ರಾಜಾ | ಪರಿನಿಪಾತಃ (೨-೨-೩೧) |

**ರಾಜಪುತ್ರ ರಾಜಪುತ್ರ** (ಪುಂ) 1. ರಾಜಕುಮಾರ, ದೊರೆಯ ಮಗ. 2. ಚಂದ್ರನ ಮಗ, ಬುಧಗ್ರಹ. "ಬುಧೋ ಹೇಮಾ ರಾಜಪುತ್ರ ಏಕದೇಹಃ ಪ್ರಹರ್ಷಣಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 3. ವೇಶ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಅಂಬಷ್ಟನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಿಶ್ರಜಾತಿಯವನು.

**ರಾಜಫಲ ರಾಜಫಲ** (ಪುಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಪಡವಲ ಗಿಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಫಲಾ -ಫಲಾ. 2. ನೇರಳೆ ಮರ.

**ರಾಜಬಲಾ ರಾಜಬಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಾರಣೆ ಗಿಡ, ಮುಳ್ಳುಗಸೆ ಗಿಡ. ಬಲಾನಾಂ ಬಲಪ್ರದಾನಾಂ ರಾಜೇವ |

**ರಾಜಬದರ ರಾಜಬದರ** (ನಂ) 1. ಲವಣ, ಉಪ್ಪು. 2. ಕೆಂಪು ನೆಲ್ಲಿ.

**ರಾಜಬೀಜಿನ್ ರಾಜಬೀಜಿನ್** (ಪುಂ) ಕ್ಷತ್ರಿಯ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು, ರಾಜನ ಸಂತತಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು. ರಾಜೋ ಬೀಜಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) | "ರಾಜಬೀಜಿ ರಾಜವಂಶಃ" ಅಮಂ |

**ರಾಜಭದ್ರಕ ರಾಜಭದ್ರಕ** (ಪುಂ) 1. ದೇವದಾರು ವೃಕ್ಷ. 2. ನಿಯ ವೃಕ್ಷ.

**ರಾಜಭೋಗ ರಾಜಭೋಗ** (ಪುಂ) 1. ರಾಜನ ಆಹಾರ, ರಾಜ ಭೋಜನ. ರಾಜೋ ಭೋಗಃ | 2. ರಾಜನು ಅನುಭವಿಸುವ ಆನಂದ, -ಸಂತೋಷ.



**ರಾಜಭೋಗ ರಾಜಭೋಗ** (ಪುಂ) 1. ಒಯಾಲ ವೃಕ್ಷ, ಮೊರಟೆ ಮರ. (ನಂ) 2. ಜಾಯಿಕಾಯಿ. (ವಿಂ) 3. ರಾಜನು ಅನುಭವಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ರಾಜನಿಂದ ಅನುಭವಿಸಲ್ಪಡುವ (ವಸ್ತು). ರಾಜಾ ಭೋಗ್ಯಂ ಯೋಗ್ಯಂ — ಮುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) “ಆತ್” (೩-೧-೧೨೪)।

**ರಾಜಮಲ್ಲ ರಾಜಮಲ್ಲ** (ಪುಂ) ಉದ್ದತ, ಕೊಬ್ಬಿದವನು.

**ರಾಜಮಾರ್ಗ ರಾಜಮಾರ್ಗ** (ಪುಂ) “ರಾಜಪಥ” ನೋಡಿ.

**ರಾಜಮಾಘ ರಾಜಮಾಘ** (ಪುಂ) 1. ಕಾರಾಮಣಿ, ಅಲಸಂದೆ, ತಡಗುಣ. 2. ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಉದ್ದು. ಮಾಘೇ ರಾಜಾ । ಪರಿನಿಪಾತ: (೨-೨-೩೧) । “ರಾಜಮಾಘಸ್ತು ಬರ್ಬಟ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ರಾಜಮುಕ್ತ ರಾಜಮುಕ್ತ** (ಪುಂ) ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಹೆಸರು. ಮುಕ್ತಾನಾ ರಾಜಾ । ಪರಿನಿಪಾತ: (೨-೨-೩೧) ।

**ರಾಜಯಕ್ಷಮನ್ ರಾಜಯಕ್ಷಮನ್** (ಪುಂ) ಕ್ಷಯರೋಗ. ರಾಜಾ ಚಾಸೌ ಯಕ್ಷಮಾ ಚ, ರಾಜ: ಚಂದ್ರಸ್ಯ ಕ್ಷಯಕಾರಕೋ ಯಕ್ಷಮಾ ವಾ । ಕ್ಷಯರೋಗವು ಸಕಲ ರೋಗಗಳಿಗೂ ಆಕರವಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. “ಮಾ ವೇದಿ ಯದಸಾವೇಕೋ ಜೇತವ್ಯಶ್ಚೇದಿರಾಡಿತಿ । ರಾಜಯಕ್ಷಮೇವ ರೋಗಾಣಾಂ ಸಮೂಹ: ಸ ಮಹಿಮತಾಮ್” ಮಾಘಂ ೨-೨೬ । “ಅನೇಕರೋಗಾನುಗತೋ ಬಹುರೋಗಪುರೋಗಮ: । ರಾಜ-ಯಕ್ಷಮಾ ಕ್ಷಯ: ಶೋಷೋ ರೋಗರಾಡಿತಿ ಚ ಸ್ಮೃತ: ॥ ನಕ್ಷತ್ರಾಣಾಂ ದ್ವಿಜಾನಾಂ ಚ ರಾಜಾಂಭೂದಯಂ ಪುರಾ । ಯನ್ವ ರಾಜಾ ಚ ಯಕ್ಷಮಾ ಚ ರಾಜಯಕ್ಷಮಾ ತತೋ ಮತ:” ॥ ಇತಿ ವಾಗ್ಭಟ: ।

**ರಾಜಯೋಗ ರಾಜಯೋಗ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಪುರುಷಾರ್ಥ (ಮೋಕ್ಷ) ಸಾಧನವಾದ ಎರಡು ವಿಧ ಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ವಿಧ. ಬಾಹ್ಯವಿಷಯಗಳಿಂದ ನಿರೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಂದ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಸ್ಥಿರಗೊಳಿಸಿ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರಿಸ ಬೇಕಾದ ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲಿ ಮನಸ್ಸು ನಿರಂತರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವಂತೆ (ಲಯ) ಮಾಡುವುದು ಯೋಗ. ಇದೇ ಸಮಾಧಿ. ಇದು ಪರಮಾತ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಕ್ಕೆ ಉಪಾಯವಾದುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ಯೋಗವೆಂದು ಹೆಸರು. ಈ ಯೋಗವು (1) ರಾಜಯೋಗ ಮತ್ತು (2) ಹಠಯೋಗಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಈ ರಾಜಯೋಗವು ಪತಂಜಲಿಮುನಿಯಿಂದ ಉಕ್ತವಾದುದು. ಯೋಗಾನಾಂ ರಾಜಾ । ಪರಿನಿಪಾತ: ।

ವೃತ್ತಾಂತರ ನಿರೋಧಪೂರ್ವಕ ಧಾರಾವಾಹಿ ನಿರ್ವಿಕಲ್ಪ (ಜ್ಞಾತೃ ಮತ್ತು ಜ್ಞೇಯಗಳ ಭೇದತೋರದೆ ಧ್ಯೇಯ ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲೇ ಲಯಹೊಂದಿದ) ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿಯು ರಾಜ ಯೋಗ.

ರಾಜಯೋಗದಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯವಾದ ಧಾರಣಾಧ್ಯಾನ ಸಮಾಧಿಗಳಲ್ಲಿ ಧಾರಣೆಯಿಂದ ಪಂಚಭೂತಜಯವೂ ಪ್ರಕೃತಿವಶಿತ್ವ ಸರ್ವಜ್ಞತ್ವಾದಿ ಸಿದ್ಧಿಗಳೂ ಧ್ಯಾನದಿಂದ ಸುಗುಣೇಶ್ವರಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವೂ ನಿರ್ವಿಕಲ್ಪಸಮಾಧಿಯಿಂದ ಸಂಜ್ಞಿದಾನಂದರೂಪವಾದ ಸ್ವರೂಪಾವಸ್ಥಿತಿಯೂ ಉಂಟಾಗುವವು. ಇದೇ ಪರಮಪುರುಷಾರ್ಥವಾದ ಮೋಕ್ಷ.

ರಾಜಯೋಗವಿಲ್ಲದೆ ಹಠಯೋಗೋಕ್ತವಾದ ಆಸನಾದಿಗಳು ಅಪೂರ್ಣವಾಗುವವು. ಆದುದರಿಂದ ರಾಜಯೋಗದಿಂದಲೇ ಹಠಯೋಗಕ್ಕೆ ಸಾರ್ಥಕತ್ವ. “ರಾಜಯೋಗಂ ವಿಶ್ವಾ ಪೃಥಿವೀ ರಾಜಯೋಗಂ ವಿಶ್ವಾ ನಿಶಾ । ರಾಜಯೋಗಂ ವಿಶ್ವಾ ಮುಕ್ತಾ ವಿಶ್ವಾಪಿ ನ ಶೋಭತೇ” ಹಠಂ ೩-೨೬ ।

ರಾಜನ (ದೊರೆಯ) ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ ಭೂಮಿಗೆ ಕೆಳೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಂತೆ ರಾಜಯೋಗವಿಲ್ಲದ ಪೃಥ್ವೀಶಬ್ದ ಲಕ್ಷಿತವಾದ ಆಸನಾದಿಗಳೂ ರಾಜನ (ಚಂದ್ರನ) ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ ಪ್ರಾಣಸಂಚಾರರಹಿತವಾದ ರಾತ್ರಿಯು ಶೋಭಿಸದಿರುವಂತೆ ನಿಶಾಶಬ್ದ ಲಕ್ಷಿತವಾದ ಪ್ರಾಣಸಂಚಾರವಿಲ್ಲದ ಕುಂಭಕವೂ ರಾಜಯೋಗವಿಲ್ಲದೆ ಶೋಭಿಸದು.

ರಾಜನ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ ಮುದ್ರೆಗೆ (ಮೊಹರಿಗೆ) ಗೌರವವಿಲ್ಲದಿರುವಂತೆ ರಾಜಯೋಗವಿಲ್ಲದ ಮಹಾ ಮುದ್ರಾದಿಗಳು ವಿಚಿತ್ರವಾಗಿದ್ದರೂ ಶೋಭಿಸುವುದಿಲ್ಲ.

ರಾಜಯೋಗದಿಂದ ಜ್ಞಾನ ವಿದೇಹಮುಕ್ತಿ ಜೀವನ್ಮುಕ್ತಿ ಮತ್ತು ಅಣಿಮಾದಿಸಿದ್ಧಿಗಳು ಲಭಿಸುವುದರಿಂದ ರಾಜಯೋಗದ ಮಹಿಮೆಯು ಅಪಾರವಾದುದು. ಇದು ಆಚಾರ್ಯರ ಕೃಪಾಮಾತ್ರಲಭ್ಯ. “ರಾಜಯೋಗಸ್ಯ ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯಂ ಕೌ ವಾ ಜಾನಾತಿ ತತ್ವತ: । ಜ್ಞಾನಂ ಮುಕ್ತಿ: ಸ್ಥಿತಿ: ಸಿದ್ಧಿ: ಗುರುಬಾಕೇನ ಲಭ್ಯತೇ” ಹಠಂ ೪-೮ । 2. ರಾಜನಾಗುವುದನ್ನು ಸೂಚಿಸಲು ಮನುಷ್ಯನ ಜನನಕಾಲದಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸುವ ಗ್ರಹಗಳ ಸಂಬಂಧ, ಇಂತಹ ಗ್ರಹಗಳ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅನೇಕ ರಾಜಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ ಕೆಲವನ್ನು ಮಾತ್ರ ಇಲ್ಲಿ ಕೊಡಲಾಗಿದೆ.

(1) ಜನನಕಾಲದಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರನು ಮೀನದಲ್ಲಿಯೂ ಕುಜನು ಉಚ್ಚಸ್ಥಾನವಾದ ಮಕರದಲ್ಲಿಯೂ ಸೂರ್ಯನು ಸಿಂಹದಲ್ಲಿಯೂ ಶನಿಯು ಕುಂಭದಲ್ಲಿಯೂ ಇದ್ದರೆ ಸಕಲಕಲಾವಲ್ಲಭನಾದ ರಾಜನಾಗುತ್ತಾನೆ. “ಉದಯತಿ ಮೀನೇ ಶಶಿನಿ ನರೇಂದ್ರ: ಸಕಲಕಲಾಢಯ: ಕ್ಷಿತಿಸುತ ಉಚ್ಚೇ । ಮೃಗಪತಿಸಂಸ್ಥೇ ದಶಶತರಶ್ಮಯೋ ಧರಣಿ ಸ್ಯಾಧಿನಕರಪುತ್ರೇ” ಸಾರಾಂ ೩೫-೧೪ ।

(2) ಜನನಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕುಂಭದಲ್ಲಿ ಶುಕ್ರನೂ ಮೇಷದಲ್ಲಿ ಕುಜನೂ ಉಚ್ಚಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ (ಕುಟಕರಾಶಿಯಲ್ಲಿ)



ಗುರುವು ಇದ್ದರೆ ಒಳ್ಳೆಯ ಕೀರ್ತಿಶಾಲಿಯಾದ ರಾಜನಾಗುವನು. "ಶುಕ್ರೋ ಘಟೇ ಕುಜೋ ಮೇಘೇ ಸ್ವೋಚ್ಛೇ ದೇವಪುರೋಹಿತಃ |  
ಯದಿ ರಾಜಾ ಭವೇನ್ನನಂ ಸ್ವಯಶೋಧೌತದಿಡ್ಢಮುಖಃ" ಸಾರಾಂ 34-17.

(3) ಗುರುವು ಧನುಸ್ಸಿನಲ್ಲೂ ಶನಿಯು ಚಂದ್ರನೊಡನೆ ತುಲಾರಾಶಿಯಲ್ಲೂ ಸೂರ್ಯನು ಉಚ್ಚನಾಗಿ ಲಗ್ನವಾದ ಮೇಷರಾಶಿಯಲ್ಲೂ ಇದ್ದರೆ ಬಹಳ ಕೀರ್ತಿಶಾಲಿಯಾದ ರಾಜನಾಗುತ್ತಾನೆ. "ಕಾರ್ಮುಕೇ ತ್ರಿದಶನಾಯಕಮಂತ್ರಿ ಭಾನುಜೋ  
ವರ್ಣಿಜಿ ಚಂದ್ರಸಮೇತಃ | ಮೇಘಗಸ್ತು ತಪನೋ ಯದಿ ಲಗ್ನೇ ಭೂಪತಿ-  
ರ್ಭವತಿ ಸೌಜ್ವಲಕೀರ್ತಿಃ" ಸಾರಾಂ 34-24.

(4) ಶುಕ್ರ ಬುಧ ಮತ್ತು ಕುಜರು ಲಗ್ನದಲ್ಲಿಯೂ ಗುರುವಿನೊಡನೆ ಚಂದ್ರನು ಸಪ್ತಮದಲ್ಲಿಯೂ ಇದ್ದು ಶನಿಯಿಂದ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟರೆ ರಾಜನಾಗುತ್ತಾನೆ. "ಲಗ್ನಗಾಃ  
ಸಿತಶಶಾಂಕಜಮೌಮಾಃ ಸಪ್ತಮೇ ಶಶಿನಿ ವಾಕ್ಪತಿಯುಕ್ತೇ |  
ತಿಗ್ಮರಶ್ಮಿತನಯೇನ ಚ ದೃಷ್ಟೇ ಜಾಯತೇ ಪೃಥುಯಶಾಃ ಪೃಥಿವೀಶಃ" ಸಾರಾಂ 34-22.

(5) ಅಂಭ (ಏಕಾದಶ) ಮತ್ತು ಧರ್ಮ (ನವಮ) ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಸೌಮ್ಯಗ್ರಹಗಳೂ ಕರ್ಮ (ದಶಮ) ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಪಾಪಗ್ರಹಗಳೂ ಇದ್ದರೆ ರಾಜನಾಗುತ್ತಾನೆ. "ಲಾಭ-  
ವರ್ಮಸ್ಥಿತಾಃ ಸೌಮ್ಯಾಃ ಪಾಪಾಃ ಕರ್ಮಣಿ ಸಂಸ್ಥಿತಾಃ | ನೃಪತೀ-  
ನಾಮಯಂ ಯೋಗಃ ಭವೇತ್ಕಲಶಸಂಜಿತಃ" ಸಾರಾಂ 34-26.

(6) ತನ್ನ ಉಚ್ಚಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿರುವ ಲಗ್ನಾಧಿಪತಿಯು ಚಂದ್ರನನ್ನು ವೀಕ್ಷಿಸುತ್ತಿದ್ದರೆ ಗಜತುರಗಬಲದೊಡನೆ ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಜಯಿಸುವ ರಾಜನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಾನೆ. "ಲಗ್ನಾಧಿಪತಿಃ ಸ್ವೋಚ್ಛೇ ಪಶ್ಯನ್ ಮೃಗಲಾಂಞನಂ ನೃಪಂ ಕುಸ್ತೇ |  
ಬಹುಗಜತುರಗಬಲೈಃ ಕ್ಷಪಿತವಿಪಕ್ಷಂ ಮಹಾವಿಭವಮ್" ಸಾರಾಂ 34-21.

**ರಾಜಯೋಗ್ಯ ರಾಜಯೋಗ್ಯ** (ವಿಂ) ರಾಜನಿಗೆ ಅರ್ಹವಾದ, ರಾಜನು ಉಪಯೋಗಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ರಾಜೋ ಯೋಗ್ಯಃ |  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಯೋಗ್ಯಾ -ಯೋಗ್ಯಾ. ರಾಜನಿಗೆ ಯೋಗ್ಯಳಾದ ಹೆಂಗಸು. ಜಾತಕದಲ್ಲಿ ಬುಧಗ್ರಹವು ತ್ರಿಕೋಣ ಮತ್ತು ಕೇಂದ್ರಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲೂ ಪಾಪಗ್ರಹವು ಉಪಚಯ (3, 6, 10, 11) ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿಯೂ ಇರುವ ಹೆಂಗಸು ರಾಜಯೋಗ್ಯಳು. "ತ್ರಿಕೋಣಕಂಠಕೇ ಸೌಮ್ಯೇ ಪಾಪೇ ಚೋಪಚಯಸ್ಥಿತೇ |  
ರಾಜಯೋಗ್ಯಾ ಭವೇನ್ನಾರಿ ಸುಂದರೀ ಕುಲವರ್ಧಿನೀ" ಜಾತಕಾಮೃತಮ್ |

**ರಾಜರತ್ನ ರಾಜರಂಗ** (ನಂ) ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ. ರಾಜಾಹಂ ರತ್ನಮ್ |

**ರಾಜರಾಜ ರಾಜರಾಜ** (ಪುಂ) 1. ಧನಾಧಿಪತಿ, ಕುಬೇರ, ಯಕ್ಷರ ರಾಜ. ರಾಜಾಂ ಯಕ್ಷಾಣಾಂ ರಾಜಾ - ರಾಜನ್ "ರತ್ನ"

(4-8-91) | "ಇತ್ಯುಕ್ತವಾ ಸಪದಿ ಹಿತಂ ಪ್ರಿವಾಹೇ ಭಾಮ ಸ್ವಂ ಗತವತಿ ರಾಜರಾಜಭೃತ್ಯೇ" ಕಿರಾಂ 4-41 | 2. ಸಾರ್ವಭೌಮ, ಚಕ್ರಾಧಿಪತಿ, ರಾಜರ ರಾಜ. ರಾಜಾಮಪಿ ರಾಜಾ | 3. ಚಂದ್ರ. "ರಾಜರಾಜಃ ಕುಬೇರೇಽಪಿ ಸಾರ್ವಭೌಮೇ ಸುಭಾಕರೇ" ಮೇದಿಂ |

**ರಾಜರೋತಿ ರಾಜರೋತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿತ್ತಾಳೆ.

**ರಾಜರ್ಷಿ ರಾಜರ್ಷಿ** (ಪುಂ) 1. ಧಾರ್ಮಿಕ ಜೀವನ ಮತ್ತು ದೈವಭಕ್ತಿಯುಳ್ಳ ರಾಜ, ಮುಷಿಯಂತೆ ನಿಯಮಗಳನ್ನು ಪಾಲಿಸುವ ದೊರೆ. ರಾಜಾ ಕೃಷಿರೀತಿ | "ರಾಜರ್ಷಿವಂಶಸ್ಯ ರವಿಪ್ರಸುತೇಽಪಸ್ಥಿತಃ ಪಶ್ಯತ ಕೀದೃಶೋಽಯಮ್" ರಘುಂ 14-37 | 2. ಜನಮೇಜಯ, ಪರೀಕ್ಷಿತಿನ ಮಗ. "ರಾಜರ್ಷಿಜನಮೇಜಯ-  
ಸಂಜಕಃ | ಪಾರಿಕ್ಷಿತೋಽಪಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ರಾಜಲಕ್ಷ್ಮೀ ರಾಜಲಕ್ಷ್ಮೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಾಜನ ಸಂಪತ್ತಿನ ಅಧಿಷ್ಠಾತ್ಯ ದೇವತೆ. 2. ರಾಜನ ಮುಖದಲ್ಲಿ ತೋರುವ ಪ್ರಭುತ್ವದ ವರ್ಚಸ್ಸು. 3. ರಾಜನಿರಬೇಕಾದ ಛತ್ರ ಚಾಮರ ಮೊದಲಾದ ಚಿಹ್ನೆ. ರಾಜೋ ಲಕ್ಷ್ಮೀಃ |

**ರಾಜವಂಶ ರಾಜವಂಶ** (ಪುಂ) ಕ್ಷತ್ರಿಯವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ರಾಜವಂಶ ಭವಃ "ಯತ್" (4-3-44) |

**ರಾಜವತ್ ರಾಜವತ್** (ವಿಂ) ರಾಜನುಳ್ಳ, ರಾಜನಿರುವ (ದೇಶ.) ರಾಜಾಸ್ಥಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (4-2-94) | ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ರಾಜನಿಂದ ಕೂಡಿದದೇಶವು "ರಾಜನ್ವಾನ್" ಎಂದೂ ಸಾಮಾನ್ಯ ರಾಜನಿರುವ ದೇಶವು "ರಾಜವಾನ್" ಎಂದೂ ಆಗುವುದು.

**ರಾಜವರ್ಮನ್ ರಾಜವರ್ಮನ್** (ನಂ) ರಾಜವರ್ಮ, ರಾಜನು ಸಂಚರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ರಸ್ತೆ. ರಾಜೋ ವರ್ಮಃ |

**ರಾಜವಾಹ ರಾಜವಾಹ** (ಪುಂ) ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. ರಾಜಾನಂ ವಹತಿ - ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಅನ್" (3-2-1) |

**ರಾಜವಾಹ್ಯ ರಾಜವಾಹ್ಯ** (ಪುಂ) ರಾಜನನ್ನು ಒಯ್ಯುವ ಆನೆ. ರಾಜಾಂ ವಾಹ್ಯಃ | "ರಾಜವಾಹ್ಯೋ ವಿಜಯಕುಂಜರಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ರಾಜವೃಕ್ಷ ರಾಜವೃಕ್ಷ** (ಪುಂ) ಕೆಕ್ಕಿಣ್ಣ.

**ರಾಜಸ ರಾಜಸ** (ವಿಂ) 1. ರಜೋಗುಣ ಸಂಬಂಧವಾದ, ರಜೋಗುಣದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ. ರಜಸಃ ಇದಮ್ "ಅನ್" (4-3-120) | 2. ರಜೋಗುಣ. 3. ಪ್ರಖ್ಯಾತಿ ಹೊಂದಲು ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ, ಹೊಗಳಿಕೆಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ. ರಾಜಸಂ ಜ್ಞಾನಮ್ | ರಾಜಸೀ ಬುದ್ಧಿಃ | ರಾಜಸಂ ದಾನಮ್ | "ಸತ್ಕಾರಮಾನಪೂಜಾರ್ಥಂ ತಪೋ ದಮ್ಭೇನ ಚೈವ ಯತ್ |  
ಕ್ರಿಯತೇ ತದಿಹ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ರಾಜಸಂ ಚಲಮಧ್ರುವಮ್" ಗೀತಾ |  
ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ರಾಜಸೀ ರಾಜಸೀ.



ರಾಜಸದನ ರಾಜಸದನ (ನಂ) ರಾಜನ ಗೃಹ, ಅರಮನೆ.

ರಾಜ: ಸದನಮ್ | "ಸೌಧೋಸ್ತೃ ರಾಜಸದನಮ್" ಅಮಂ |

—ಸಮನ್ —ಸದ್ಗುಣ.

ರಾಜಸಭಾ ರಾಜಸಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾಜನ ಸಭೆ. ರಾಜ:

ಸಭಾ | ರಾಜಪರ್ಯಾಯಪದವು ಮಾತ್ರ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ

ರುವ ಸಭಾ ಪದವು ನಪುಂಸಕವಾಗುವುದು. ಇನಸಭಮ್

ಇಶ್ವರಸಭಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ.

ರಾಜಸರ್ಪ ರಾಜಸರ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಕೆರಿ ಸಾಸವೆ. ಸರ್ಪಪಾಣಿ

ರಾಜಾ | ಪರನಿಪಾತ: (೨-೨-೩೧) | 2. ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು

ತೃಸರೇಣುಗಳ ಪರಿಮಾಣ. ಆರು ಪರಮಾಣುಗಳಿಂದ

ಕೂಡಿದ ಧೂಳಿನ ಕಣವು ತೃಸರೇಣು. "ತೃಸರೇಣವೋಷ್ಠೌ

ವಿಜ್ಞೇಯಾ ಲಿಕ್ಷೇಕಾ ಪರಿಮಾಣತ: | ತಾ ರಾಜಸರ್ಪಪಸ್ತಿಸ್ತೇ

ತ್ರಯೋ ಗೌರಸರ್ಪಪ: " ಮನುಂ ೮-೧೩೩ |

ರಾಜಸೂಯ ರಾಜಸೂಯ (ಪುಂ) ರಾಜನು (ಮಾತ್ರ) ಮಾಡ

ಬೇಕಾದ ಯಾಗ. ರಾಜಾ ಸೋಮಲತಾ ಸೂಯತೇ — ರಾಜಾ

ಸೂಯತೇ ವಾ—ಉ (ಪ್ರಸವೇಶ್ವರಯೋ: " ಕೃಷ್ಣ " (೩-೧-೧೧೪) |

ರಾಜನು ಸಮಸ್ತ ರಾಜರನ್ನೂ ಜಯಿಸಿ ಸಾರ್ವಭೌಮ

ನಾಗಿ ರಾಜಸೂಯ ಅಶ್ವಮೇಧ ಮೊದಲಾದ ಯಾಗ

ಗಳನ್ನು ಮಾಡಬೇಕು. "ಯಶ್ಯಂತಿ ಚ ನರವ್ಯಾಘ್ರಾ

ನಿಜಿತೈ ಪೃಥಿವೀಮಿಮಾಮ್ | ರಾಜಸೂಯಾಶ್ವಮೇಧಾಘ್ರೈ: ಕ್ತುಭಿರ್ಮುರೀ-

ದಕ್ಷಿಣೈ: " |

ರಾಜಸ್ವ ರಾಜಸ್ವ (ನಂ) 1. ರಾಜನ ಧನ. 2. ರಾಜನಿಗೆ

ಕೊಡಬೇಕಾದ ತೆರಿಗೆ, ಕಂದಾಯ. ರಾಜೋ ದೇಯ (ಕರೂಪಂ)

ಸ್ವಂ ಧನಮ್ |

ರಾಜಸ್ಕಂಧ ರಾಜಸ್ಕಂಧ (ಪುಂ) ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. "ರಾಜ-

ಸ್ಕಂಧೋ ಮರುದ್ರಥ: | ವಾತಾಯನಶ್ಚೈಕಶಫ: " ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ರಾಜಹಂಸ ರಾಜಹಂಸ (ಪುಂ) 1. ಹಂಸಪಕ್ಷಿ, ಕೆಂಪು ಕೊಕ್ಕು

ಮತ್ತು ಕಾಲುಗಳಿಲ್ಲದ ಹಂಸ. ಹಂಸಾನಾಂ ರಾಜಾ | ಪರನಿಪಾತ:

(೨-೨-೩೧) | "ರಾಜಹಂಸಾಸ್ತು ತೇ ಚಚ್ಚುರಣಲೋಹಿತೈ:

ಸಿತಾ: " ಅಮಂ | "ಸಾ ರಾಜಹಂಸೇರಿವ ಸಂತಾಙ್ಗೀ ಗತೇಷು

ಲೀಲಾಶ್ಚಿತವಿಕ್ರಮೇಷು" ಕುಮಾಂ ೧-೩೪ | 2. ದೊಡ್ಡ

ಜಾತಿಯ ಪಕ್ಷಿ. 3. ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ದೊರೆ. ರಾಜಾ ಹಂಸ

ಇವ |

ರಾಜಾದನ ರಾಜಾದನ (ನಂ) 1. ಪ್ರಿಯಾಲ ವೃಕ್ಷ, ಮೊರಟೆ

ಗಿಡ. ರಾಜಭಿರಾಜತೇ — ಅದ (ಭಕ್ಷಣಂ) ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್"

(೩-೩-೧೧೩) | "ರಾಜಾದನಂ ಪ್ರಿಯಾಲ: ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ |

(ಪುಂ) 2. ಹಾಲೆಗಿಡ. 3. ಮುತ್ತಗಡಗಿಡ, ಕಿಂಚುಕೆವೃಕ್ಷ.

"ರಾಜಾದನ: ಪ್ರಿಯಾಲದ್ರೋಕ್ಷೀರಿಕಾಯಾಂ ತ್ರಿಪತ್ರಕೇ" ಹೇಮಂ |

ರಾಜಾಧಿರಾಜ ರಾಜಾಧಿರಾಜ (ಪುಂ) ಸಾರ್ವಭೌಮ.

ಚಕ್ರವರ್ತಿ, ರಾಜರಿಗೆ ರಾಜ.

ರಾಜಾಧಿಷ್ಠಾನ ರಾಜಾಧಿಷ್ಠಾನ (ನಂ) (ರಾಜನ) ರಾಜಧಾನಿ.

ರಾಜನ ಮುಖ್ಯ ಪಟ್ಟಣ.

ರಾಜಾಪಸದ ರಾಜಾಪಸದ (ಪುಂ) ನೀಚನಾದ ದೊರೆ,

ಅಧಮನಾದ ರಾಜ, ಅಯೋಗ್ಯನಾದ ರಾಜ.

ರಾಜಾರ್ಕ ರಾಜಾರ್ಕ (ಪುಂ) ಬಿಳಿ ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. ಅರ್ಕಾಣಿ

ರಾಜಾ | ಪರನಿಪಾತ: (೨-೨-೩೧) |

ರಾಜಾಲಾಬ್ ರಾಜಾಲಾಬಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಿಹಿ ಸೋರೆ.

ಅಲಾಬುನಾ ರಾಜಾ | ಪರನಿಪಾತ: (೨-೨-೩೧) |

ರಾಜಾವರ್ತ ರಾಜಾವರ್ತ (ಪುಂ) 1. ಕೆಳದರ್ಜೆಯ ವಜ್ರ,

ಕೆಳಮಟ್ಟದ ವಯಿರ. ರಾಜಾನಮಾವರ್ತಯತಿ — ಆ + ವೃತು

(ವರ್ತನೆ) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) | (ನಂ) 2.

ಚೇಟಿಬಟ್ಟೆ, ಚಿತ್ರವರ್ಣದ ಬಟ್ಟೆ. "ರಾಜಾವರ್ತ ಚಿತ್ರಪಟೆ"

ವೇಜಂ |

ರಾಜಾಹ ರಾಜಾಹ (ನಂ) 1. ಆಗುರು ಚಂದನ. ರಾಜಾಹ-

ಮಹೇತಿ — ಅಹಂ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಅಘ್" (೩-೨-೧) |

(ವಿಂ) 2. ರಾಜನಿಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ (ವಸ್ತು). ರಾಜಾ-

ಮಹಮ್ | "ರಾಜಾಹಂ ಜೋಗ್ಯಕೇ ಕಲಿಬಂ ರಾಜಯೋಗ್ಯಸಮಿಧೇಯವತ್"

ಮೇದಿಂ |

ರಾಜಿ ರಾಜಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಂಕ್ತಿ, ಸಾಲು. ರಾಜತಿ — ರಾಜ್

(ದೀಪ್ತೌ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೮) | "ತಂ ಸ ದ್ವಿಪೇಂದ್ರ-

ತುಲಿತಾತುಲತುಙ್ಗಶ್ಚುಙ್ಗಮಮ್ಯುಲ್ಲಸತ್ಕದಲಿಕಾವನರಾಜಿಮುಂಚೈ:"

ಮಾಘಂ ೪-೨ | 2. ರೇಖೆ, ಗೆರೆ. "ಚಕ್ರೇವ ಲಲನೋರುಷು

ರಾಜಿ: ಸ್ಪರ್ಶಲೋಭವಶಲೋಲಕರಾಣಾಮ್ | ಕಾಮಿನಾಮನಿಭುತಾ-

ನ್ಯಪಿ ರಮಾಸ್ತಮ್ಮಕೋಮಲತಲೇಷು ನಖಾನಿ" ಮಾಘಂ ೧೦-೬೬ |

ರಾಜಿಕಾ ರಾಜಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಂಕ್ತಿ, ಸಾಲು. ರಾಜಿ

ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:" | 2. ರೇಖೆ, ಗೆರೆ. 3. ಕೆರಿ ಸಾಸವೆ.

4. ಕೇದಾರ, ಬತ್ತ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಬೆಳೆಯುವ ಗದ್ದೆ.

"ರಾಜಿಕಾ ಚಾಪಿ ಕೇದಾರೆ ರಾಜಸರ್ಪರೇಖಯೋ:" ಮೇದಿಂ |

"ರಾಜಿಕಾ ಪಙ್ಕ್ತೌ ರೇಖಾಯಾಂ ಕೇದಾರೆ ರಾಜಸರ್ಪೇ" ಹೇಮಂ |

ರಾಜಿಮತ್ ರಾಜಿಮತ್ (ಪುಂ) ಮುಂಡಲದ ಹಾವು, ಮೈ

ಮೇಲೆ ಪಟ್ಟಿಗಳಿರುವ ಹಾವು. "ರಾಜಿಮತ್ತೋ ರಾಜಿಯುತಾ

ರಾಜಿಲಾ:" ವೇಜಂ |

ರಾಜಿಲ ರಾಜಿಲ (ಪುಂ) 1. ಎರಡು ತಲೆಗಳಿರುವ ವಿಷವಿಲ್ಲದ

ಹಾವು. ರಾಜಿ: ರೇಖಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಲಕ್" (೪-೨-೧೭) |

"ಸಮೌ ರಾಜಿಲಙ್ಗುಡುಭೌ" ಅಮಂ | "ಕಿ ಮಹೋರಗವಿಸರ್ಪಿ-

ವಿಕ್ರಮೋ ರಾಜಿಲೇಷು ಗಠಃ ಪ್ರವರ್ತತೇ" ರಘುಂ ೧೧-೨೭ |



2. ಮಂಡಲದ ಹಾವು, ಮೈಮೇಲೆ ಪಟ್ಟಿಗಳಿರುವ ಹಾವು.  
"ರಾಜಿಮಂತೋ ರಾಜಿಯುತಾ: ರಾಜಿಲಾ ರಾಜಿಲಾಶ್ಚ ತೇ"  
ವೈಜಂ.

ರಾಜಿ ರಾಜೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಂಕ್ತಿ, ಸಾಲು. ರಾಜತಿ — ರಾಜ್  
(ದೀಪ್ತೌ) "ಇನ್" (ತಂ ೪-೧೧೮) । "ಜಿ಼಼" (ಗಂ  
೪೦) । "ರಾಜಿವರಾಜಿವಶಲೋಲಮೃಙ್ಗಂ ಮುಷ್ಣಂತಮುಷ್ಣಂ ತತಿಮಿ  
ಸ್ತರೂಣಾಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೯ ।

ರಾಜಿಮತ್ ರಾಜೀಮತ್ (ಪುಂ) ಮಂಡಲದ ಹಾವು.

ರಾಜಿಲ ರಾಜೀಲ (ಪುಂ) ಮಂಡಲದ ಹಾವು, ಮೈಮೇಲೆ  
ಪಟ್ಟಿಗಳಿರುವ ಹಾವು. "ರಾಜಿಮಂತೋ ರಾಜಿಯುತಾ: ರಾಜಿಲಾ  
ರಾಜಿಲಾಶ್ಚ ತೇ" ವೈಜಂ ।

ರಾಜಿವ ರಾಜೀವ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ,  
ತಲೆಯಿಂದ ಬಾಲದವರೆಗೂ ಬಿನ್ನಿನ ಮೇಲೆ ಬಿಳಿಯ ಗೆರೆ  
ಯಿರುವ ಜಿಂಕೆ. ರಾಜಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ವ:" (ವಾಂ ೪-೨-೧೦೯) ।  
"ಯಜ್ಞಾಙ್ಗ ಣಸ್ತಾಙ್ಗಸ್ತು ಹರಿಣಸ್ತುಣಸಂಚರ: । ರಾಜಿವಸ್ತವೇಶ  
ರಾಜಿಮಾನ್" ವೈಜಂ । 2. ಮೈಮೇಲೆ ಗೆರೆಗಳಿರುವ ಒಂದು  
ಜಾತಿಯ ಮೀನು. 3. ಗಜ, ಆನೆ. "ಹಸ್ತಿ ಮಹಾಮೃಗೋ  
ಪಿಲು: ಸಿಂಧುರೋ ದೀರ್ಘಮಾರುತ: । ರಾಜಿವೋ ಜಲಕಾಙ್ಕುಶ್ಚ"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿ಼಼" (೪-೧-೬೩) । (ನಂ)  
4. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ, ತಾವರೆ. ರಾಜಿ ದಲರಾಜಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ  
"ವ:" (ವಾಂ ೪-೨-೧೦೯) । "ರಾಜಿವರಾಜಿವಶಲೋಲ-  
ಮೃಙ್ಗಂ ಮುಷ್ಣಂತಮುಷ್ಣಂ ತತಿಮಿಸ್ತರೂಣಾಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೯ ।

ರಾಜಿವತ್ ರಾಜೀವತ್ (ಪುಂ) ಪಡವಲ ಗಿಡ. "ಪದಲಕೇ  
ತು ರಾಜಿವಾನ್" ವೈಜಂ ।

ರಾಜೇನ್ದು ರಾಜೀಂದ್ರ (ಪುಂ) ಉತ್ತಮನಾದ ರಾಜ, ಶ್ರೇಷ್ಠ  
ನಾದ ದೊರೆ. ರಾಜಾ ಇನ್ದುರಿವ । "ದಿಲೀಪ ಇತಿ ರಾಜೇನ್ದು-  
ರಿನ್ದು: ಕ್ಷೀರನಿಧಾವಿವ" ರಘುಂ ೧-೧೨ ।

ರಾಜೇನ್ದ್ರ ರಾಜೀಂದ್ರ (ಪುಂ) ಉತ್ತಮನಾದ ರಾಜ, ಶ್ರೇಷ್ಠ  
ನಾದ ದೊರೆ. ರಾಜಾ ಇನ್ದ್ರ ಇವ । ನಾಲ್ಕು ಯೋಜನ  
ಪ್ರದೇಶದ ಅಧಿಪತಿಯು ನೃಪ. ಅದಕ್ಕೆ ನೂರರಷ್ಟು  
ಹೆಜ್ಜಿನವನು ಮಂಡಲೇಶ್ವರ. ಅದಕ್ಕೆ ಹತ್ತರಷ್ಟು ಅಧಿಕ  
ಪ್ರದೇಶದ ಅಧಿಪತಿಯು ರಾಜೀಂದ್ರ. "ಚತುರ್ಯೋಜನ-  
ಪರ್ಯಂತಮಧಿಕಾರಿ ನೃಪೋ ಭವೇತ್ । ಯೋ ರಾಜಾ ತಚ್ಚತುರ್ಯೋಜನ: ಸ  
ಏವ ಮಂಡಲೇಶ್ವರ: । ತಸ್ಮಾದ್ವಿಂಶತಿಗುಣೋ ರಾಜಾ ರಾಜೇನ್ದ್ರ:"  
ಬ್ರಹ್ಮವೈಂ ।

ರಾಜಿ ರಾಜೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಾಣಿ, ರಾಜನ ಮಹಿಷಿ,  
ದೊರೆಯ ಪತ್ನಿ. ರಾಜ: ಸ್ತ್ರೀ "ಜಿ಼಼" (೪-೧-೪೮) ।  
"ಯಾನಾಜ್ಜನ: ಪರಿಜನೇರವತಾರ್ಯಮಾಣಾ ರಾಜಿನೇರಾಪನಯನಾಕುಲ-

ಸೌವಿದಲ್ಲಾ:" ಮಾಘಂ ೪-೧೨ । 2. ಚಿನ್ನದ ಬಣ್ಣದ  
ಹಿತ್ತಾಳೆ ಅಥವಾ ಕಂಚು. "ಕಾಂಚಿನಿ ಕಪಿಲಾ ರಾಜಿ  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣಿ ಕಪಿಲೋಹಕಮ್" ವೈಜಂ । 3. ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ.  
"ರಾಜಿ ರಾಜಪ್ರಿಯಾಂ ಚ ಭಾರ್ಯಾಂ ಮಾಸ್ಕರಸ್ಯ ಚ" ಮೇದಿಂ ।

ರಾಜ್ಯ ರಾಜ್ಯ (ನಂ) 1. ರಾಜತ್ವ, ಪ್ರಭುತ್ವ, ದೊರೆತನ.  
ರಾಜೋ ಭಾವ: "ಯಕ್" (೪-೧-೧೨೮) । "ಕಿ ನೋ ರಾಜ್ಯೇನ  
ಗೋವಿಂದ ಕಿ ಭೋಗೈರ್ಜೀವಿತೇನ ವಾ" ಗೀತಾ ೧-೩೨ ।  
2. ಪ್ರಜಾಪರಿಪಾಲನರೂಪವಾದ ರಾಜನ ಕಾರ್ಯ.  
ರಾಜ: ಕರ್ಮ: "ಯಕ್" (೪-೧-೧೨೮) । "ಸ ರಾಜ್ಯಂ ಗುಣಾ  
ದತ್ತಂ ಪ್ರತಿಪದ್ಯಾಧಿಕಂ ಬಭೌ" ರಘುಂ ೪-೧ । 3. ರಾಷ್ಟ್ರ,  
ದೇಶ. "ರಾಜ್ಯೇನ ಕಿ ತದ್ವಿಪರೀತವೃತ್ತ: ಪ್ರಾಣೈರಪಕ್ರೋಶ  
ಮಲೀಮಸೇವಾ" ರಘುಂ ೨-೪೩ । ಒಂದು ಲಕ್ಷ ಗ್ರಾಮಗಳುಳ್ಳ  
ಪ್ರದೇಶವು ರಾಜ್ಯ. ಹತ್ತು ಲಕ್ಷ ಗ್ರಾಮಗಳುಳ್ಳ ಪ್ರದೇಶವು  
ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯ. ನೂರು ಲಕ್ಷ ಗ್ರಾಮಗಳುಳ್ಳ ಪ್ರದೇಶವು  
ಮಹಾಸಾಮ್ರಾಜ್ಯ. "ಲಕ್ಷಾಧಿಪತ್ಯಂ ರಾಜ್ಯಂ ಸ್ಯಾತ್ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯಂ  
ದಶಲಕ್ಷಕೇ । ಶತಲಕ್ಷೇ ಮಹೇಶಾನಿ ಮಹಾಸಾಮ್ರಾಜ್ಯಮುಚ್ಯತೇ"  
ವರದಾತನ್ತ್ರಮ್ ।

ರಾಜ್ಯಚ್ಯುತ ರಾಜ್ಯಚ್ಯುತ (ವಿಂ) ರಾಜ್ಯಭ್ರಷ್ಟನಾದ,  
ರಾಜ್ಯದ ಅಧಿಕಾರವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡ. ರಾಜ್ಯಾತ್ ಚ್ಯುತ: ।  
-ಭ್ರಷ್ಟ: -ಭ್ರಷ್ಟ: । ರಾಜ್ಯಾತ್ ಭ್ರಷ್ಟ: ।

ರಾಜ್ಯತನ್ತ್ರ ರಾಜ್ಯತನ್ತ್ರ (ನಂ) ರಾಜ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ, ರಾಜ್ಯದ  
ಆಡಳಿತವನ್ನು ನಡೆಸಲು ಬೇಕಾದ ರಾಜನೀತಿ, ರಾಜ್ಯಭಾರದ  
ವ್ಯವಸ್ಥೆ, ರಾಜ್ಯಾಡಳಿತದ ವಿವರಣೆ. ರಾಜ್ಯಸ್ಯ ತನ್ತ್ರಮ್ ।  
"ವೃಷಲ ಏವ ಕೇವಲಂ ಪ್ರಧಾನಪ್ರಕೃತಿ: ಅಸ್ಮಾಸು ಆರೋಪಿತ-  
ರಾಜ್ಯತನ್ತ್ರಭಾರ: ಸತತಮುದಾಸ್ತೇ" ಮುद्रಾಂ ೧ ।

ರಾಜ್ಯಧುರಾ ರಾಜ್ಯಧುರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾಜ್ಯಾಡಳಿತದ ಹೊಣೆ  
ಗಾರಿಕೆ. ರಾಜ್ಯಸ್ಯ ಧುರಾ । -ಭಾರ: -ಧಾರಾ: ।

ರಾಜ್ಯಲೋಭ ರಾಜ್ಯಲೋಭ (ಪುಂ) ರಾಜ್ಯದ ಆಸೆ, ರಾಜ್ಯ  
ವನ್ನು ಆಳುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ.

ರಾಜ್ಯಾಙ್ಗ ರಾಜ್ಯಾಙ್ಗ (ನಂ) ರಾಜ್ಯದ ಆಡಳಿತಕ್ಕೆ ಅವಶ್ಯ  
ವಾಗಿರಬೇಕಾದ ಅಂಗಗಳು, ರಾಜನು ಮಾಡಬೇಕಾದ  
ಪ್ರಜಾಪರಿಪಾಲನ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಮುಖ್ಯವಾದ ಸಾಧನಗಳು.  
ರಾಜ್ಯಸ್ಯ ಅಙ್ಗಾನಿ । ಈ ಅಂಗಗಳು (1) ಸ್ವಾಮಿ (ರಾಜ)  
(2) ಅಮಾತ್ಯ: (ಮಂತ್ರಿ) (3) ಸುಹೃತ್ (ಮಿತ್ರ) (4) ಕೌಶ:  
(ಬೋಧಕ) (5) ರಾಷ್ಟ್ರಮ್ (ಜನಪದ) (6) ದುರ್ಮ್ (ಕೋಟಿ)  
ಮತ್ತು (7) ಬಲಮ್ (ಸೈನ್ಯ) ಎಂದು ಏಳು. ಮತ್ತು  
ಪೌರರೂ ಸೇರಿ ಎಂಟು ರಾಜ್ಯಾಙ್ಗಗಳು. "ಸ್ವಾಮ್ಯಮಾತ್ಯಶ್ಚ  
ರಾಷ್ಟ್ರಂ ಚ ದುರ್ಮ್ ಕೌಶೋ ಬಲಂ ಸುಹೃತ್ । ಪರಸ್ಪರೋಪಕಾರೀದ್"



ಸಪ್ತಾಹ್ನಂ ರಾಜ್ಯಮುಚ್ಯತೇ । ಪೌರಶ್ರೇಣಿಭಿಃ ಸಹ ಅಷ್ಟಾಹ್ನಮಪಿ ರಾಜ್ಯಮ್" ಕಾಮಂದಂ ।

ರಾಜ್ಯಾಧಿಕಾರ ರಾಜ್ಯಾಧಿಕಾರ (ಪುಂ) ಪ್ರಭುತ್ವ, ರಾಜ್ಯದ ಒಡೆತನ, ರಾಜ್ಯದ ಮೇಲಿರುವ ಸ್ವಾಮಿತ್ವ. ರಾಜ್ಯಸ್ಯ ಅಧಿಕಾರಃ ಸ್ವಾಮಿತ್ವಮ್ ।

ರಾತಿ ರಾತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಕುಟ ಹಕ್ಕು. ರಾಟಯತಿ — ರಟ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) + ಸ್ವಾರ್ಥೆ ಣಿಚ್ "ಇನ್" (ಉಂ ೪-೧೧೮) । 2. ಯುದ್ಧ, ಸಮರ, ಕಾಳಗ. ರಾಟಯತಿ ಆಹ್ವಾದಯತಿ ಅತ್ರ — ರಟ + ಣಿಚ್ "ಇನ್" (ಉಂ ೪-೧೧೮) । ರಾತಿ: ರಾತಿ, ರಾತಿ: ರಾತಿ.

ರಾಟಾ ರಾಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶೋಭೆ, ಕಾಂತಿ, ಪ್ರಕಾಶ. 2. ಗೌಡ ದೇಶದ ಒಂದು ಜಿಲ್ಲೆ. 3. ಆ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಮುಖ್ಯ ಪಟ್ಟಣ. "ಗೌಡ ರಾಷ್ಟ್ರಮನುಷ್ಯಮ್ ನಿರೂಪಮಾ ತತ್ರಾಪಿ ರಾಟಾಪುರೀ" ಪ್ರಬೋವಂ ೨-೭ । 4. ಸುಹೃದೇಶ. 5. ಸುಹೃದೇಶದ ಜನರು. "ಆತ್ಮಾ ಸಂರಕ್ಷಿತಃ ಸುಹೃದೇಶಮಾಶ್ರಿತಃ ವೇತಸೀಮ್" ರಘುಂ ೪-೩೫ । "ರಾಟಾ ಸ್ತ್ರೀ ಸುಹೃದೇಶಮಯೋಃ" ಮೇದಿಂ ।

ರಾತ್ರ ರಾತ್ರ (ನಂ) 1. ಜ್ಞಾನ. "ರಾತ್ರಂ ಚ ಜ್ಞಾನವಚನಂ ಜ್ಞಾನಂ ಪञ्चವಿಧಂ ಸ್ಮೃತಮ್" । 2. ರಾತ್ರಿ. "ಕ್ಷೇತ್ರಪ್ರತಿಗ್ರಹೇ ಚೈವ ಗ್ರಹಸೂತಕಯೋಸ್ತಥಾ । ತ್ರಿಣಿ ರಾತ್ರಾಣ್ಯುಪೋಷಿತ್ವಾ ತೇನ ಪಾಪಾ-ದ್ವಿಮುಚ್ಯತೇ" ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೩೬-೧೧ ।

ರಾತ್ರಕ ರಾತ್ರಕ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ವರ್ಷಕಾಲ ವೇಶ್ಯಾ ಗೃಹದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವವನು. (ನಂ) 2. ಐದು ರಾತ್ರಿಗಳ ಕಾಲ. ರಾತ್ರಂ ಜ್ಞಾನಂ ತೇನ ಕಾರಯತಿ — ಕೈ (ಶಬ್ದ) "ಕ:" (೩-೨-೩) । "ರಾತ್ರಕಂ ಪञ್ಚರಾತ್ರೇ ನಾ ವೇಶ್ಯಾವೇಶ್ಮಾನ್ದ-ವಾಸಿನಿ" ಮೇದಿಂ ।

ರಾತ್ರಿ ರಾತ್ರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಾತ್ರಿ, ಇರುಳು. ರಾತಿ ಸುಖಮ್ — ರಾ (ದಾನೆ) "ತ್ರಿಪ್" (ಉಂ ೪-೬೭) । "ಪ್ರಣಿಜ-ಗದುರಕಾಕುಶ್ರಾವಕಸ್ತಿಗ್ಧಕಂಠಾಃ ಪರಿಣತಿಮಿತಿ ರಾತ್ರೇರ್ಮಗಿಧಾ ಮಾಧವಾಯ" ಮಾಘಂ ೧೧-೧ । 2. ಹರಿದ್ರ, ಅರಿಶಿನ. ಮನುಷ್ಯರ ಒಂದು ತಿಂಗಳಕಾಲ ಪಿತೃದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಒಂದು ದಿನ (ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷ ಹಗಲು ಮತ್ತು ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷ ರಾತ್ರಿ). ಮನುಷ್ಯರ ಒಂದು ವರ್ಷಕಾಲ ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಒಂದು ದಿನ. (ಉತ್ತರಾಯಣ ಹಗಲು ಮತ್ತು ದಕ್ಷಿಣಾಯನ ರಾತ್ರಿ). "ಮಾಸೇನ ಚ ನರಾಣಾಂ ಚ ಪಿತೃಣಾಂ ತದಹನಿಶಮ್ । ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷೇ ದಿನಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಶುಕ್ಲೇ ರಾತ್ರಿಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ । ವತ್ಸರೇನ ನರಾಣಾಂ ಚ ದೇವಾಣಾಂ ಚ ದಿವಾನಿಶಮ್ । ಉತ್ತರಾಯಣೇ ದಿನಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ರಾತ್ರಿಶ್ಚ ದಕ್ಷಿಣಾಯನೇ" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ ।

ರಾತ್ರಿಕರ ರಾತ್ರಿಕರ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ರಾತ್ರಿ ಕರೋತಿ — ಇ ಕೃಬ್ (ಕರಣ) "ರ:" (೩-೨-೨೧) ।

ರಾತ್ರಿಚರ ರಾತ್ರಿಚರ (ಪುಂ) 1. ರಾತ್ರಿ. ರಾತ್ರಿ ಚರತಿ — ಚರ (ಗತೌ) "ರ:" (೩-೨-೧೬) । ಪಕ್ಷೆ ಮುಮಭಾವಃ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಚೀಪ್" (೪-೧-೧೫) । -ಚರೀ -ಚರೀ. "ಯಾನ್ತಂ ವನೇ ರಾತ್ರಿಚರೀ ಡುಡುಕೇ" ಭಟ್ಟಿಂ ೨-೨೩ । 2. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ. 3. ಕಾವಲುಗಾರ. (ವಿಂ) 4. ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವವನು. ಮುಮಾಗಮಃ (೬-೩-೭೨) । ರಾತ್ರಿಚರಃ ರಾತ್ರಿಚರಃ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ -ಚರೀ -ಚರೀ.

ರಾತ್ರಿಚರ್ಯಾ ರಾತ್ರಿಚರ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾತ್ರಿಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯ.

ರಾತ್ರಿಜಾಗರ ರಾತ್ರಿಜಾಗರ (ಪುಂ) 1. ರಾತ್ರಿಕಾಲದಲ್ಲಿ ಎಚ್ಚರವಾಗಿರುವುದು. ರಾತ್ರಿ ಜಾಗರಃ । "ಆಹುರೋಹ ಕುಮುದಾ-ಕರೋಮಾಂ ರಾತ್ರಿಜಾಗರಪರೋ ದಿವಾಶಯಃ" ರಘುಂ ೧೯-೩೪ । 2. ಕುಕ್ಕುರ, ನಾಯಿ. "ಜಿಹ್ವಾಪಾನಃ ಪುರೋಗಾಮಿ ಕೃತಜ್ಞೋ ರಾತ್ರಿಜಾಗರಃ" ವೇಜಂ । 3. ಕಾವಲುಗಾರ. (ವಿಂ) 4. ರಾತ್ರಿಕಾಲದಲ್ಲಿ ಎಚ್ಚರವಾಗಿರುವವನು. ರಾತ್ರಿ ಜಾಗತಿ — ಜಾಗೃ (ನಿದ್ರಾಕ್ಷಯ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।

ರಾತ್ರಿನ್ದಿವಮ್ ರಾತ್ರಿನ್ದಿವಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ರಾತ್ರಿಹಗಲು, ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲೂ ಹಗಲಿನಲ್ಲೂ. ರಾತ್ರಿ ಚ ದಿವಾ ಚ । ರಾತ್ರಿ-ಶಬ್ದಸ್ಯ ಮಾನ್ತತ್ವಂ ನಿಪಾತ್ಯತೇ । ದಿವಾ ಇತ್ಯಾಕಾರಾಂತಮವ್ಯಯಮ್ (೫-೪-೭೭) । "ಮಾನುಃ ಸಕೃದ್ವುಕ್ತತುರಗ್ಗ್ವಾ ಎವ ರಾತ್ರಿನ್ದಿವಂ ಗಂಭಿರವಹಃ ಪ್ರಯಾತಿ" ಶಾಕುಂ ೫-೪ ।

ರಾತ್ರಿಪುಷ್ಪ ರಾತ್ರಿಪುಷ್ಪ (ನಂ) ಕನ್ನೆದಿಲೆ ಹೂವು, ಉತ್ಪಲ.

ರಾತ್ರಿಮಟ ರಾತ್ರಿಮಟ (ಪುಂ) 1. ರಾತ್ರಿ. ರಾತ್ರಿ ಅಟತಿ — ಅಟ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ಸಂಧ್ಯಾಬಲೋ ರಾತ್ರಿಮಟೋ ಹನುಷಃ ಶಮನೀಷದಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । ಪಕ್ಷೆ ಮುಮಭಾವೇ ರಾತ್ರಿಮಟಃ ರಾತ್ರಿಮಟಃ. (ವಿಂ) 2. ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವವನು.

ರಾತ್ರಿಮಣಿ ರಾತ್ರಿಮಣಿ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ರಾತ್ರಿಮಣಿರಿವ । 2. ಕಪೂರ.

ರಾತ್ರಿವಾಸಸ್ ರಾತ್ರಿವಾಸಸ್ (ನಂ) 1. ರಾತ್ರಿಕಾಲದಲ್ಲಿ ಉಡುವ ವಸ್ತ್ರ. 2. ಅಂಧಕಾರ, ಕತ್ತಲೆ.

ರಾತ್ರಿವಿಗಮ ರಾತ್ರಿವಿಗಮ (ಪುಂ) ಪ್ರಭಾತ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲ. ರಾತ್ರಿವಿಗಮೋ ಯಸ್ಮಿನ್ ।

ರಾತ್ರಿವಿಶ್ಲೇಷಗಾಮಿನ್ ರಾತ್ರಿವಿಶ್ಲೇಷಗಾಮಿನ್ (ಪುಂ) ಚಕ್ರವಾಕ ಪಕ್ಷಿ. ರಾತ್ರಿ ವಿಶ್ಲೇಷಂ ವಿಚ್ಛೇದಂ ಗच्छತಿ — ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೭೮) ।



ರಾತ್ರಿಹಾಸ ರಾತ್ರಿಹಾಸ (ಪುಂ) ಬಿಳನ್ನೆದಿಲೆ. ರಾತ್ರಿ ಹಾಸೆ  
ವಿಕಾಸೆ ಯಸ್ಯ | ರಾತ್ರಿಹಾಸ ಇವ ವಾ |

ರಾತ್ರಿಹಿಡಕ ರಾತ್ರಿಹಿಡಕ (ಪುಂ) ರಾಜನ ಅಂತಃಪುರದ  
ಕಾವಲುಗಾರ. ರಾತ್ರಿ ಹಿಡಕತಿ ಭ್ರಮತಿ — ಹಿಡಕಿ (ಗತೌ)  
“ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) |

ರಾತ್ರಿ ರಾತ್ರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾತ್ರಿ, ಇರುಳು. ರಾ (ದಾನೇ)  
“ತ್ರಿಪ್” (೩ಂ ೪-೬೭) | ವಾ “ಡಿಪ್” (ಗಂ ೪-೧-೪೫) |

ರಾತ್ರಿ ರಾತ್ರಿ (ಪುಂ) 1. ರಾತ್ರಿ. ರಾತ್ರಿ ಅದತಿ—ಅದ  
(ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) | (ವಿಂ) 2. ರಾತ್ರಿಯ  
ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವವನು.

ರಾತ್ರಿ ರಾತ್ರಿ (ಪುಂ) 1. ವಾಯಸ ಮುಂತಾದ  
ಪಕ್ಷಿ. ರಾತ್ರಿವನ್ಶಃ ದೃಷ್ಟಿವನ್ಶಃ | (ವಿಂ) 2. ಸಂಜೆಗಣ್ಣೆ  
ನವನು, ರಾತ್ರಿಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕಣ್ಣು ಕಾಣಿಸದವನು. ದೇವ  
ದಾರುವಿನ ಚೂರ್ಣವನ್ನು ಅಡಿನ ಮೂತ್ರದಲ್ಲಿ ಕಲಸಿ  
ಇಪ್ಪತ್ತೊಂದು ವಾರಗಳಕಾಲ ಆ ಅಂಜನವನ್ನು ಕಣ್ಣಿಗೆ  
ಹಾಕಿದರೆ ಇರುಳುಗಣ್ಣಿನ ದೋಷವು ನಾಶವಾಗುವುದು.  
“ದೇವದಾರೋಶ್ವ ವೈ ಚೂರ್ಣಂ ಅಜಾಮೂತ್ರೇಣ ಭಾವಯೇತ್ | ಏಕವಿಂಶತಿ  
ವೈ ವಾರಮಕ್ಷಿಣಿ ತೇನ ಚಾಂಜಯೇತ್ | ರಾತ್ರಿವನ್ಶತಾ ಪಟಲತಾ  
ನಶ್ಯೇದಿತಿ ವಿನಿಶ್ಚಯಃ” ಗರುಡಪುರಾಣಮ್ |

ರಾತ್ರಿ ರಾತ್ರಿ (ವಿಂ) 1. ಸಿದ್ಧವಾದ, ಪಕ್ವವಾದ. ರಾಧ  
(ಸಂಸಿದ್ಧಿ) ಕರ್ತಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) | 2. ಸಫಲ  
ವಾದ, ಯಶಸ್ವಿಯಾದ. 3. ಸಿದ್ಧವಾದ, ಸಜ್ಜಾಗಿರುವ.  
4. ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಲಿಸಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ರಾಧ  
ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) | 5. ಸಂಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. “ಪೂರ್ತೇನ ತಪಸಾ ಯಜ್ಞೇದಿನೈಯೋಗೈಃ ಸಮಾಧಿನಾ |  
ರಾತ್ರಿ ನಿಃಶ್ರೇಯಸಂ ಪುಸಾಂ ಮಃಪ್ರೀತಿಃ ಸ್ತತ್ತ್ವವಿನ್ಮತಮ್” ಭಾಗಂ  
೩-೧-೪೧ | 6. ಸಾಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನೆರವೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 7.  
ಸಿದ್ಧವಾದ, ತೀರ್ಮಾನವಾದ.

ರಾತ್ರಿ ರಾತ್ರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಾಧನೆ, ನೆರವೇರಿಸುವಿಕೆ. ರಾಧ  
(ಸಂಸಿದ್ಧಿ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) | 2. ಸಫಲವಾಗು  
ವಿಕೆ, ಕೈಗೊಡುವಿಕೆ. 3. ಪಡೆಯುವುದು, ಸಂಪಾದಿಸು  
ವುದು.

ರಾಧ ರಾಧ (ಪುಂ) ವೈಶಾಖ ಮಾಸ. ರಾಧಾ ವಿಶಾಖಾ, ತದ್ವತೀ  
ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ ರಾಧೀ—ರಾಧೀ ಅಸ್ಮಿನ್ನಸ್ತಿ “ಅಣ್” (೪-೨-೨೧) |

ರಾಧ ರಾಧ (ನಂ) 1. ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಲಾಭ, ಗಳಿಕೆ. ರಾಧ  
(ಸಂಸಿದ್ಧಿ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಸಾಧನೆ.  
3. ಉಪಾಯ. 4. ತೃಪ್ತಿ, ಸಂತೋಷ. “ರಾಧನಂ  
ಪ್ರಾಪ್ತಿಸ್ತೋಪಯೋಃ | ಸಾಧನೇ” ಹೇಮಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ನಾ—ನಾ.

5. ಭಾಷಣ. “ರಾಧನಂ ಸಾಧನೇ ಪ್ರಾಪ್ತೌ ರಾಧನಾ ಭಾಷಣೇ  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” ಮೇದಿಂ |

ರಾಧ ರಾಧ (ಪುಂ) 1. ನೇಗಿಲು. 2. ಶೇಕರ,  
ನೀರಿನ ತುಂತುರು, ಜಲಕಣ. 3. ಅಲಿಕ್ಕಲು, ವರ್ಷೋಪಲ.  
“ರಾಧರಾಧಃ ಪುಮಾನ್ ಸೀರೇ ಶೀಕರೇ ಚ ಧನೋಪಲೇ”  
ಮೇದಿಂ |

ರಾಧ ರಾಧ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿಶಾಖಾನಕ್ಷತ್ರ. ರಾಧ(ಸಂಸಿದ್ಧಿ)  
“ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) | “ರಾಧಾ ವಿಶಾಖಾ” ಅಮಂ |  
2. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಸಖಿಯಾದ ಒಬ್ಬ ಗೋಪಾಂಗನೆ. “ಮೇಧೇ-  
ಮೇದುರಮಮ್ಬರಂ ವನಮುಖಃ ಕ್ಷಾಮಾಸ್ತಮಾಲದ್ರುಮಃ | ನವತಂ ಶೀಕರಯಂ  
ತ್ವಮೇವ ತದಿಮಂ ರಾಧೇ ಗೃಹಂ ಪ್ರಾಪಯ | ಇತ್ಯಂ ನಂದನಿದೇಶತ-  
ಶ್ಚಲಿತಯೋಃ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಕುಂಜದ್ರುಮಂ ರಾಧಾಮಾಧವಯೋರ್ಜಯಂತಿ ಯಮುನಾ-  
ಕುಲೇ ರಹಕೇಲಯಃ” ಗೀತಗೋಂ | 3. ಕರ್ಣನ ಸಾಕುತಾಯಿ.  
4. ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು. 5. ವಿಷ್ಣುಕಾಂತ ಗಿಡ. 6.  
ಬಿಲ್ಲುಗಾರನ ಒಂದು ನಿಲುವು, ಬಾಣ ಪ್ರಯೋಗಿಸುವಾಗ  
ನಿಲ್ಲುವ ಒಂದು ಭಂಗಿ. 7. ನೆಲ್ಲಿಗಿಡ. “ರಾಧಾ ಚಿತ್ರಭೇದೇ  
ಚ ಧನ್ವಿನಾಮ್ | ಗೋಪೀ ವಿಶಾಖಾಮಲಕೀ ವಿಷ್ಣುಕ್ರಾಂತಾಸು  
ವಿದ್ಯುತಿ” ಮೇದಿಂ | “ರಾಧಾ ಕರ್ಣಸ್ಯೋಪಮಾತಾ ವಿಶಾಖಾ-  
ಗೋಪಿಕಾಸು ಚ | ನಾ ವೈಶಾಖೇ” ನಾನಾರ್ಥರಂ |

ರಾಧಾಕಾಂತ ರಾಧಾಕಾಂತ, —ಪತಿ —ಪತಿ, —ರಮಣ  
—ರಮಣ (ಪುಂ) ರಾಧೆಯ ಪತಿಯಾದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ.  
ರಾಧಾಃ ಕಾಂತಃ ಪತಿಃ ರಮಣೋ ವಾ |

ರಾಧಾತನಯ ರಾಧಾತನಯ, —ಸುತ —ಸುತ, —ಸುನು —ಸುನು  
(ಪುಂ) ರಾಧೆಯ ಮಗನಾದ ಕರ್ಣ. ರಾಧಾಃ ತನಯಃ  
ಸುತಃ ಸುನುರ್ವಾ |

ರಾಧಿ ರಾಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೈಶಾಖಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ರಾಧಯಾ  
ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ |

ರಾಧಾಭೇದಿನ್ ರಾಧಾಭೇದಿನ್ (ಪುಂ) ಅರ್ಜುನ. ರಾಧಾ  
ಧನ್ವಿನಾಂ ಚಿತ್ರವಿಶೇಷಂ ಭಿನತ್ತಿ —ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ)  
“ಗಿಣಿಃ” (೩-೨-೭೮) |

ರಾಧೇಯ ರಾಧೇಯ (ಪುಂ) ರಾಧೆಯ ಮಗನಾದ ಕರ್ಣ.  
ರಾಧಾಃ ಅಪತ್ಯಮ್ “ಠಕ್” (೪-೧-೧೨೦) | ರಾಧೇಯು  
ಕರ್ಣನನ್ನು ಪುತ್ರನೆಂದು ಭಾವಿಸಿ ಪೋಷಿಸಿದುದರಿಂದ  
ಅಪತ್ಯಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ಪ್ರತ್ಯಯ ವಿಹಿತವಾಗಿದೆ.

ರಾಧ ರಾಧ (ವಿಂ) ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. ರಾ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ  
ವಾಚಿ) ಕರ್ಮಂ “ಘ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೬) |

ರಾಧ ರಾಧ (ನಂ) 1. ವೇಗ. ರಾಧಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಘ್ಯತ್”  
(೪-೧-೧೨೪) | 2. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ.



**ರಾಮ ರಾಮ** (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀರಾಮ, ರಾಮಚಂದ್ರ, ದಶರಥನ ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಪುತ್ರ. ರಮಂತೆ ಯೋಗಿನೋಽಸ್ಮಿನ್—ರಮು (ಕೃಷ್ಣಾಯಾಮ್) "ಘ" (೩-೩-೧೨೧)। "ರಾಶಬ್ದೋ ವಿಶ್ವವಚನೋ ಮಶ್ವಾಪೀಶ್ವರವಾಚಕಃ। ವಿಶ್ವಾನಾಮೀಶ್ವರೋ ಯೋ ಹಿ ತೇನ ರಾಮಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ। "ಪಿತುರ್ನಿರ್ದೇಶಾದ್ವನವಾಸಮೇವ ನಿರಸ್ತೀರ್ಯ ರಾಮಃ ಪ್ರತಿಪನ್ನರಾಜ್ಯಃ। ಧರ್ಮಾರ್ಥಕಾಮೇಷು ಸಮಾಂ ಪ್ರಪೇದೇ ಯಥಾ ತಥೆವಾವರಜೇಷು ವೃತ್ತಿಮ್" ರಘುಂ ೧೪-೨೧। [ಶ್ರೀ ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಹೆತು ಅವತಾರಗಳಲ್ಲಿ ಶ್ರೀ ರಾಮಾವತಾರವು ಏಳನೆಯದು. ಶ್ರೀರಾಮನು ರಾಕ್ಷಸರ ನಿಗ್ರಹಕ್ಕಾಗಿ ದಶರಥನ ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಪತ್ನಿಯಾದ ಕೌಸಲ್ಯೆಯ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಮನುಷ್ಯ ರೂಪದಿಂದ ಅವತರಿಸಿದನು. ಶಬ್ದಪ್ರಪಂಚದಲ್ಲಿ ಅತಿಮಧುರವೂ ಸರಳವೂ ಆಹ್ಲಾದಕರವೂ ಪಾವನವೂ ಸಕಲಸಂಕಷ್ಟಗಳನ್ನೂ ಪರಿಹರಿಸಿ ಪರಮಪುರುಷಾರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡಲು ಸಮರ್ಥವೂ ಆದ "ರಾಮ" ಎಂಬ ನಾಮ ಧೇಯವನ್ನು ಮನಸಾ ಯೋಚಿಸಿ ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿಯು "ರಾಮ" ಎಂದು ನಾಮಕರಣಮಾಡಿದರು. "ರಾಮ ಇತ್ಯಭಿರಾಮೇಣ ವಪುಷಾ ತಸ್ಯ ಚೋದಿತಃ। ನಾಮಧೇಯಂ ಗುರುಶ್ಚಕ್ರೇ ಜಗತ್ಪ್ರಥಮಮಂಜಲಮ್" ರಘುಂ ೧೦-೬೭। ಪ್ರಾಪ್ತವಯಸ್ಕ ನಾದ ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮಹರ್ಷಿಯು ತನ್ನ ಯಾಗದ ಸಂರಕ್ಷಣೆಯ ವ್ಯಾಜದಿಂದ ಕರೆದುಕೊಂಡುಹೋಗಿ ಜನಕರಾಜನ ತನುಜೆಯಾದ ಸೀತೆಯೊಡನೆ ವಿವಾಹ ಮಾಡಿಸಿದನು. ದಶರಥನು ಶ್ರೀರಾಮನಿಗೆ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕಕ್ಕೆ ಯತ್ನಿಸಿದಾಗ ಪರಮಾತ್ಮನು ತನ್ನ ಸಂಕಲ್ಪದಂತೆ ಕೈಕಯಿಯ ಮೂಲಕ ವಿಘ್ನವಂಟುಮಾಡಿಸಿ ಅವತಾರದ ಉದ್ದೇಶದ ಸಾಫಲ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ವನವಾಸದ ವ್ಯಾಜದಿಂದ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ತೆರಳಿ ಅಲ್ಲಿ ಮಹರ್ಷಿಗಳ ತಪಸ್ಸು ಮತ್ತು ಯಜ್ಞಗಳಿಗೆ ನಾನಾರೀತಿಯಿಂದ ತೊಂದರೆಯುಂಟು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ರಾಕ್ಷಸರನ್ನು ಸಂಹರಿಸುತ್ತ ಮುಖ್ಯವಾದ ರಾವಣನ ನಿಗ್ರಹಕ್ಕೆ ಸಂಕಲ್ಪಿಸಿ ಶೂರ್ಪಣಖೆಯ ಮೂಲಕ ರಾವಣನಿಗೆ ರಾಕ್ಷಸರ ವಧೆಯ ವೃತ್ತಾಂತ ತಿಳಿಯುವಂತೆ ಮಾಡಿ ರಾವಣನಿಂದ ಸೀತಾಪಹಾರ ರೂಪವಾದ ಅಪರಾಧ ಮಾಡಿಸಿ ರಾವಣನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ವಾನರೇಶ್ವರ ನಾದ ಸುಗ್ರೀವನ ಸಖ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಂಡು ವಾನರ ಸೇನೆಯೊಡನೆ ಸಮುದ್ರತರಣಮಾಡಿ ರಾವಣನನ್ನು ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಸಂಹರಿಸಿ ಸೀತಾದೇವಿಯೊಡನೆ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಬಿಜಯಮಾಡಿ ಪಟ್ಟಾಭಿಷಿಕ್ತನಾಗಿ ಹನ್ನೊಂದು ಸಹಸ್ರ ವರ್ಷಗಳಕಾಲ ಧರ್ಮದಿಂದ ಪ್ರಜಾಪರಿಪಾಲನ ಮಾಡಿದನು.] 2. ಪರಶುರಾಮ, ಜಮದಗ್ನಿ ಮಹರ್ಷಿಯ ಪುತ್ರ. "ರಾಮೇಣ ತ್ರಿಃಸಪ್ತಕೃತ್ವೋ ಹೃದಾನಾಂ ಚಿತ್ರಂ ಚಕ್ರ

ಪञ್ಚಕಂ ಕ್ಷತ್ರಿಯಾಸ್ತೇಃ" ಮಾಘಂ ೧೮-೭೦। ["ಪರಶುರಾಮ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. 3. ಬಲರಾಮ. ಬಲರಾಮನು ವಸುದೇವನ ಪತ್ನಿಯಾದ ದೇವಕಿಯ ಏಳನೆಯ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದನು. ಬಲರಾಮನು ಆದಿಶೇಷಾವತಾರ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಬಲರಾಮ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. "ಆಂಶೇನ ರಾಮೋ ರಾಮೋಽ-ವಿಶ್ವಚುಮ್ಬನಚುಮ್ಬನಾ" ಮಾಘಂ ೨-೧೪। 4. ವರುಣ, ನೀರಿನ ಅಧಿದೇವತೆ. 5. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. 6. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. (ನಂ) 7. ಕುಷ್ಮರೋಗ. 8. ಚಕ್ಷೂತದ ಸೊಪ್ಪು. (ವಿಂ) 9. ಕಪ್ಪಗಿರುವ, ಕೃಷ್ಣವರ್ಣದ. 10. ಬಿಳಿಯ ಬಣ್ಣದ. 11. ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಾ -ಮಾ. 12. ಸುಂದರಿ, ಚೆಲುವಾದ ಹೆಂಗಸು. ರಮಂತೆ—ರಮು (ಕೃಷ್ಣಾಯಾಮ್) "ಞಃ" (೩-೧-೧೪೦)। "ಆಬದ್ಧಪ್ರಚುರಾರ್ಥೈಕಿಕಿಣೀಕೋ ರಾಮಾಣಾಮನವರತೋದಗಾಹ-ಭಾಜಾಮ್" ಮಾಘಂ ೮-೪೫। 13. ಹಿಂಗು. 14. ನದಿ, ಹೊಳೆ. "ರಾಮಾ ಯೋಷಾ ಹಿಂಜ್ಞತಃ ಕ್ಲಿಬ್ ವಾಸ್ತುಕ-ಕುಠಯೋಃ। ನಾ ರಾಘವೇ ಚ ವರುಣೇ ರೇಣುಕೇ ಹಲಾಯುಧೇ। ಹಯೇ ಚ ಪಶುಮೇ ಚ ತ್ರಿಷು ಚಾರೌ ಸಿತೇಽಸಿತೇ" ಮೇದಿಂ।

**ರಾಮಕ ರಾಮಕ** (ಪುಂ) 1. ಬಟ್ಟೆಯ ಹೊಲಿಗೆ ಮತ್ತು ಬಣ್ಣ ಹಾಕುವುದರಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. "ಮೌಕಲ್ಯೋ ರಾಮಕೋ ವಸ್ತ್ರಸ್ಯುತಿರಂಜನಜೀವನಾತ್" ವೈಜಂ। 2. ದೊಡ್ಡ ತನದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. "ಧೀವರೋ ಮಾರ್ಗಸಂತ್ರಾಣಾತ್ ರಾಮಕೋ ದೈತ್ಯಜೀವನಾತ್" ವೈಜಂ।

**ರಾಮಗಿರಿ ರಾಮಗಿರಿ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಪರ್ವತ. ಈ ಪರ್ವತವು ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ನಾಗಪುರದ ಸಮೀಪ ದಲ್ಲಿರುವುದು. ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಶಂಭೂಕನು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಶ್ರೀರಾಮನು ಆತನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದ್ದು ಇದೇ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ. ಕಾಳಿದಾಸ ಕವಿಯು ಮೇಘದೂತ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ವರ್ಣಿಸಿರುವುದೂ ಇದೇ ಪರ್ವತ. "ಯಕ್ಷಶ್ಚಕ್ರೇ ಜನಕ-ತನಯಾಸ್ನಾನಪುಷ್ಪೋದಕೇಷು ಸ್ನಿಗ್ಧಚ್ಛಾಯಾತರಘು ವರ್ಷತಿ ರಾಮ-ಗಿರ್ಯಾಶ್ರಮೇಷು" ಮೇಘಂ ೧-೧।

**ರಾಮಚಂದ್ರ ರಾಮಚಂದ್ರ** (ಪುಂ) ಶ್ರೀರಾಮ, ದಶರಥ ಮಹಾರಾಜನ ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಪುತ್ರ, ಶ್ರೀಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಒಂದು ಅವತಾರ. ರಾಮಚಂದ್ರ ಇವ।

**ರಾಮಜನನಿ ರಾಮಜನನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶ್ರೀರಾಮನ ತಾಯಿ ಕೌಸಲ್ಯಾದೇವಿ. 2. ಪರಶುರಾಮನ ತಾಯಿ ರೇಣುಕಾದೇವಿ. 3. ಬಲರಾಮನ ತಾಯಿ ರೋಹಿಣೀ ದೇವಿ.

**ರಾಮಕ ರಾಮಕ** (ನಂ) 1. ಹಿಂಗು. ರಮಂತೇನ — ರಮು (ಕೃಷ್ಣಾಯಾಮ್) "ಅಃ" ವೃದ್ಧಿಶ್ಚ (೩ಂ ೧-೧೦೧)।



“ಬಾಹ್ಲಿಕಂ ಹಿಕ್ಷು ರಾಮಠಮ್” ಅಮಂ. (ಪುಂ) 2. ಒಂದು ದೇಶ. 3. ಅಂಕೋಲೆ ಮರ.

**ರಾಮಣೀಯಕ ರಾಮಣೀಯಕ** (ನಂ) 1. ಸೌಂದರ್ಯ. ಚೆಲುವು. ರಮಣೀಯಸ್ಯ ಭಾವ: “ಬುಖ್” (೪-೧-೧೩೨). “ಸಾ ರಾಮಣೀಯಕನಿಧೇರಧಿವೇತಾ ವಾ ಸೌಂದರ್ಯಸಾರಸಮುದಾಯ-ನಿಕೇತನಂ ವಾ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೪. (ವಿಂ) 2. ಸುಂದರ ವಾದ, ಚೆಲುವಾದ.

**ರಾಮಕೃತ ರಾಮದೂತ** (ಪುಂ) ಅಜನೇಯ, ಶ್ರೀರಾಮ ಚಂದ್ರನ ಒಬ್ಬ ಸೇವಕ. ರಾಮಸ್ಯ ಕೃತ:.

**ರಾಮನವಮಿ ರಾಮನವಮೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚೈತ್ರ ಶುಕ್ಲನವಮಿ, ಶ್ರೀರಾಮನ ಅವತಾರದ ದಿನ.

**ರಾಮಭದ್ರ ರಾಮಭದ್ರ** (ಪುಂ) ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರ. ರಾಮ ಏವ ಭದ್ರ: ಮಂಜಲಪ್ರದತ್ವಾತ್.

**ರಾಮಾ ರಾಮಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) “ರಾಮ” ಪದದ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೋಡಿ.

**ರಾಮಾಯಣ ರಾಮಾಯಣ** (ನಂ) ಶ್ರೀರಾಮನ ಚರಿತ್ರೆ ಯನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ ಮಹಾಕಾವ್ಯ. ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಆದಿಕಾವ್ಯ ಮತ್ತು ಎಲ್ಲಾ ಕವಿಗಳಿಗೂ ಒಂದು ಆಕರಗ್ರಂಥ. ರಾಮಸ್ಯ ಅನಂತಮಹಿಮಾ ಕೃತೋ ಗ್ರಂಥ: “ಅಣ್” (೪-೩-೮೭). ರಾಮಾಯಣ ಗ್ರಂಥದ ಪ್ರಮಾಣ :

ಇದರ ಸರ್ಗಗಳು 500

ಒಟ್ಟು ಶ್ಲೋಕಗಳು 24000

(1) ಬಾಲಕಾಂಡ (2) ಆಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡ (3) ಅರಣ್ಯ ಕಾಂಡ (4) ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾಕಾಂಡ (5) ಸುಂದರಕಾಂಡ (6) ಯುದ್ಧಕಾಂಡ ಮತ್ತು (7) ಉತ್ತರಕಾಂಡಗಳೆಂದು ಸಪ್ತ ಕಾಂಡಗಳಿರುವುವು. “ಪ್ರಾಪ್ತರಾಜ್ಯಸ್ಯ ರಾಮಸ್ಯ ವಾಲ್ಮೀಕಿ-ಭಗವಾನ್ ಶ್ರುಷಿ:। ಚಕಾರ ಚರಿತಂ ಕೃತ್ಸನ್ ವಿಚಿತ್ರಪದ-ಮರ್ಯವತ್। ಚತುರ್ವಿಂಶತ್ಸಹಸ್ರಾಣಿ ಶ್ಲೋಕಾನಾಮುಕ್ತವಾನ್ ಶ್ರುಷಿ:। ತಥಾ ಸರ್ಗಶತಾನ್ ಪಞ್ಚ ಷಡ್ಕಾಂಡಾನಿ ತಥೋತ್ತರಮ್” ರಾಮಾಂ ಬಾಲಕಾಂಡಮ್। ಶ್ರೀಮಹಾವಿಷ್ಣುವು ಶ್ರೀರಾಮರೂಪ ದಿಂದ ಅವತರಿಸಿದ ಪರತತ್ತ್ವವೆಂದು ಶ್ರೀರಾಮಾಯಣದ ಸಪ್ತಕಾಂಡಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಪ್ರತಿಪಾದಿತವಾಗಿದೆ. “ಶ್ರೀವಿಷ್ಣೋ: ಪ್ರಥಮೇಕಾಂಡೇ ಜಗಜ್ಜನನಹೇತುತಾ। ದ್ವಿತೀಯೇ ಸ್ಥಿತಿಹೇತುತ್ವಂ ತೃತೀಯೇ ಮೋಕ್ಷದಾಯಿತಾ। ಚತುರ್ಥೇ ಗುಣಸಂಪತ್ತಿ: ಪಞ್ಚಮೇ ಸರ್ವ-ಹರ್ತೃತಾ। ಷಷ್ಠೇ ವೇದಾಂತವೇದತ್ವಂ ಸಪ್ತಮೇ ಸ್ನಿಹಹೇತುತಾ। ಏವಂ ವಿಷ್ಣು: ಪರಂ ತತ್ತ್ವಂ ರಾಮಾತ್ಮೇತಿ ಸುನಿಶ್ಚಿತಮ್”। ಈ ರೀತಿ ಯಾದ ಪರತತ್ತ್ವದ ಪ್ರಾಪ್ತಿಗೆ ಉಪಾಯಭೂತವಾದ

ಶರಣಾಗತಿಯು ಶ್ರೀಮದ್ವಾಲ್ಮೀಕಿರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಪ್ರಾರಂಭದಿಂದ ಉಪಸಂಹಾರದವರೆಗೂ ನಿರೂಪಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದರಿಂದ ಈ ರಾಮಾಯಣಕ್ಕೆ “ಶರಣಾಗತಿ ಶಾಸ್ತ್ರ”ವೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಯಿದೆ. ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ “ದೇವಗಂಧರ್ವಯಕ್ಷಾಶ್ಚ ತತಸ್ತ್ವಾಂ ಶರಣಂ ಗತಾ:” ಎಂದು ರಾವಣವಧರೂಪವಾದ ಫಲಕ್ಕಾಗಿ ದೇವಜಾತಿಯ ಶರಣಾಗತಿಯು ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. ಅನಂತರ “ಇಹ ಮೇ ಸ್ಥಣ್ಣಿಡಲೇ ಶೀಘ್ರಂ ಕುಶಾನಾಸ್ತರ ಸಾರಥೇ। ಆಯಂ ಪ್ರತ್ಯುಪವೇಕ್ಷಾಮಿ ಯಾವನ್ಮೇ ನ ಪ್ರಸೀದತಿ” ಎಂದು ಶ್ರೀರಾಮಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕರೂಪ ಫಲಕ್ಕಾಗಿ ಭರತನ ಶರಣಾಗತಿ. “ನಗರಸ್ಯೋ ವನಸ್ಯೋ ವಾ ತ್ವಂ ನೌ ರಾಜಾ ಜನೇಶ್ವರ” ಎಂದು ದಂಡಕಾರಣ್ಯವಾಸಿಗಳಾದ ಋಷಿಗಳಿಂದ ರಾಕ್ಷಸವಧರೂಪಫಲಕ್ಕಾಗಿ ಶರಣಾಗತಿ. “ಸ ಪಿತ್ರಾ ಚ ಪರಿತ್ಯಕ್ತ: ಸುರೇಶ್ಚ ಸಮಹರ್ಷಿಭಿ:। ತ್ರಿನ್ ಲೋಕಾನ್ ಸಂಪರಿಕ್ರಮ್ಯ ತಮೇವ ಶರಣಂ ಗತ:” ಎಂದು ಕಾಕಾಸುರನ ಶರಣಾಗತಿ. ಅನಂತರ ಸುಗ್ರೀವನ ಶರಣಾಗತಿ. “ಸರ್ವಲೋಕಶರಣ್ಯಾಯ ರಾಘವಾಯ ಮಹಾತ್ಮನೇ। ನಿವೇದಯತ ಮಾಂ ಕ್ಷಿಪ್ರಂ ವಿभीಷಣಮುಪಸ್ಥಿತಮ್” ಎಂದು ವಿಭೀಷಣನ ಶರಣಾಗತಿ. ಈ ರೀತಿ ರಾಮಾಯಣದ ಆದ್ಯಂತ ಶರಣಾಗತಿ ನಿರೂಪಿತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಇದು ಶರಣಾಗತಿಶಾಸ್ತ್ರ ವಾಯಿತು. “ಶ್ರೀಮದ್ಭಾಗವತಂ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಮೂಲಮನ್ತ್ರೋಪಬೃಂಹಣಮ್। ಚರಮಶ್ಲೋಕತಾತ್ಪರ್ಯಗ್ರಾಹಕಂ ಭಾರತಂ ಮಹತ್। ಇದಂ ರಾಮಾಯಣಂ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ದ್ವಯಮನ್ತ್ರೋಪಬೃಂಹಣಮ್”।

**ರಾಮಿಲ ರಾಮಿಲ** (ಪುಂ) 1. ಪತಿ, ಗಂಡ. 2. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. “ರಾಮಿಲೋ ರಮಣೋ ಕಾಮೇ” ಹೇಮಂ.

**ರಾಮ ರಾಂಭ** (ಪುಂ) 1. ವೇಣುದಂಡ, ಬಿದಿರಿನ ಕೋಲು. 2. ಸಂನ್ಯಾಸಿಯ ದಂಡ. ರಾಮಸ್ಯ ವೇಣೋ: ವಿಕಾರ: “ಅಣ್” (೪-೩-೧೪೧). “ಪಾಲಾಶೋ ದಂಡ ಆಘಾತೋ ವ್ರತೇ ರಾಮಸ್ತು ವೇಣವ:” ಅಮಂ.

**ರಾಲ ರಾಲ** (ಪುಂ) ಸಜ್ಜರಸ, ಸರ್ಜವೃಕ್ಷದ ರಸ, ಮತ್ತಿ ಮರದ ಹಾಲು. ನ ರಾತಿ ದು:ಖಮ್ — ರಾ (ದಾನೇ) “ಲಕ್” ಬಾಹುಂ.

**ರಾವ ರಾವ** (ಪುಂ) ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು, ಧ್ವನಿ.

**ರಾವಣ ರಾವಣ** (ಪುಂ) ರಾಕ್ಷಸರ ರಾಜ, ರಾಕ್ಷಸಾಧಿಪತಿ, ಲಂಕಾಪುರದ ದೊರೆ. ವಿಶ್ವವಸೋಽಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ “ಅಣ್” (೪-೧-೯೨). ಪ್ರಕೃತೇ: ರವಣಾदेश:। ರಾವಯತಿ—ಹ (ಶಬ್ದ) + ಣಿच् “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪). ಇತಿ ವಾ। “ಯಸ್ಮಾ-ಲೋಕತ್ರಯಂ ಚೇತತ್ ರಾವಿತಂ ಭಯಮಾಗತಮ್। ತಸ್ಮಾತ್ತ್ವಂ ರಾವಣೋ ನಾಮ ನಾಮ್ನಾ ವೀರೋ ಭವಿಷ್ಯಸಿ” ರಾಮಾಂ. “ಸ ರಾವಣೋ



ನಾಮ ನಿಕಾಮಮಿಷಣಂ ಬಭೂವ ರಕ್ಷ: ಕ್ಷತರಕ್ಷಣಂ ದಿವ: " ಮಾಘಂ ೧-೪೮. [ರಾವಣನು ಬ್ರಹ್ಮನ ಮೂನಸಪುತ್ರನಾದ ಪುಲಸ್ತ್ಯಮುನಿಯ ಮೊಮ್ಮಗನಾದ ವಿಶ್ವವಸ್ತಿನ ಮಗ. ಇವನ ತಾಯಿ ಕೈಕಸಿ. ಕುಂಭಕರ್ಣ ಮತ್ತು ವಿಭೀಷಣರು ಇವನ ಸಹೋದರರು. ರಾವಣನು ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಸಂಪನ್ನ. ಇವನು ಗೋಕರ್ಣದಲ್ಲಿ ತಪಸ್ಸುಮಾಡಿ ಬ್ರಹ್ಮನನ್ನು ಮೆಚ್ಚಿಸಿ ಮನುಷ್ಯರು ಹೊರತು ಮತ್ತಾರಿಂದಲೂ ತನಗೆ ಮರಣ ಕೊಡದೆಂದು ವರವನ್ನು ಪಡೆದನು. ನಂದಿಯನ್ನು ಹಾಸ್ಯಮಾಡಿ ಕಪಿಗಳ ಮೂಲಕ ತನ್ನ ವಂಶ ನಿರ್ಮೂಲವಾಗಲೆಂದು ಶಾಪಹೊಂದಿದನು. ಕೈಲಾಸ ಪರ್ವತವನ್ನು ಎತ್ತಲು ಹೋಗಿ ಅದರ ಭಾರವನ್ನು ತಡೆಯಲಾರದೆ ಕೂಗಿಕೊಳ್ಳಲು ಪರಮೇಶ್ವರನು ಇವನಿಗೆ ದೀರ್ಘಾಯುಷ್ಯವನ್ನೂ ರಾವಣನೆಂಬ ಹೆಸರನ್ನೂ ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದನು. ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಮೊಮ್ಮಗನಾದ ವೇದವತಿಯನ್ನು ಬಲಾತ್ಕರಿಸಿದಾಗ ಆಕೆ ಅಗ್ನಿಪ್ರವೇಶ ಮಾಡುತ್ತ "ಮತ್ತೊಂದು ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಆಯೋನಿಜೆಯಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿ ನಿನ್ನ ನಾಶಕ್ಕೆ ಕಾರಣಳಾಗುತ್ತೇನೆ" ಎಂದು ಶಪಿಸಿದಳು. ರಂಭೆಯನ್ನು ಬಲಾತ್ಕರಿಸಿ "ಪರಸ್ತ್ರೀಯನ್ನು ಮತ್ತೆ ಬಲಾತ್ಕರಿಸಿದರೆ ಅದೇ ನಿನಗೆ ಮೃತ್ಯುವಾಗಲಿ" ಎಂಬ ಶಾಪಪಡೆದನು. ಆಯೋನಿಜೆಯಾಗಿ ಜನಿಸಿದ (ವೇದವತಿ) ಸೀತೆಯು ಶ್ರೀರಾಮನೊಡನೆ ಅರಣ್ಯವಾಸದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಅವಳ ಸೌಂದರ್ಯಾತಿಶಯವನ್ನು ಕೇಳಿ ತಿಳಿದ ರಾವಣನು ಮಾರೀಚನ ಸಾಹಾಯ್ಯದಿಂದ ಸೀತೆಯನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿ ಲಂಕೆಯಲ್ಲಿಟ್ಟಿದ್ದನು. ವಿಭೀಷಣಾದಿಗಳು ಮಾಡಿದ ಉಪದೇಶವನ್ನೂ ತ್ರಿಜಟೆಯು ತಿಳಿಸಿದ ದುರ್ನಿಮಿತ್ತಗಳನ್ನೂ ಲಕ್ಷಿಸದೆ ಕುಂಭಕರ್ಣ ಮಹಾಪಾರ್ಶ್ವ ಮುಂತಾದವರ ಸಲಹೆಯಂತೆ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಸನ್ನದ್ಧನಾಗಿ ವಾನರಸೇನೆ ಯೊಡನೆ ಒಂದ ಶ್ರೀರಾಮನೊಡನೆ ಘೋರ ಯುದ್ಧ ಮಾಡಿ ಶ್ರೀರಾಮನಿಂದ ಹತನಾದನು.] "ರಾಣಸ್ಯಾಪಿ ರಾಮಾಸ್ತೊ ಮಿತ್ವಾ ಹೃದಯಮಾಶುಗ:। ವಿವೇಶ ಭುವಮಾಖ್ಯಾತು- ಮುರಗೇಷ್ಯ ಇವ ಪ್ರಿಯಮ್" ರಘುಂ ೧೨-೯೧. "ರಾಮರಾಣಯೋ- ರ್ಯುಧ್ವಂ ರಾಮರಾಣಯೋರಿವ"।

ರಾಣಾರಿ ರಾವಣಾಶಿ (೪೦) ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರ. ರಾಣಸ್ಯ ಅರಿ:।

ರಾಣಿ ರಾವಣಿ (೪೦) ರಾವಣನ ಮಗ, ಇಂದ್ರಜಿತ್ತು. ರಾಣಸ್ಯ ಅಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಇನ್" (೪-೧-೧೫)।

ರಾಶಿ ರಾಶಿ (೪೦) 1. ಧಾನ್ಯ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಗುಪ್ತೆ, ಗುಡ್ಡೆ. ಅನ್ಯುತೆ — ಅಸ (ವ್ಯಾಪ್ತ) "ಇನ್" ರೂಪಗಮ

(೩೦ ೪-೧೩೨)। "ರಾಶಿಮಂಗಳಿನಾಮಿವ ಗಾಢಾನಾಂ ಸಪತ್ನ- ರಾಗ: ಕಾಲಿತೋ ವಿಭಾತಿ" ರಘುಂ ೧೩-೫೩. 2. ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ ಜ್ಯೋತಿರ್ವಂಶಲದ ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ, 27 ನಕ್ಷತ್ರಗಳ 12ನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ, ಎರಡೂ ಕಾಲು (24) ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಗುಂಪು. ಹನ್ನೆರಡು ರಾಶಿಗಳು: (1) ಮೇಷ: (2) ವೃಷಭ: (3) ಮಿಥುನಮ್ (4) ಕರ್ಕಾಟಕ: (5) ಸಿಂಹ: (6) ಕನ್ಯಾ (7) ತುಲಾ (8) ವೃಶ್ಚಿಕ: (9) ಧನು: (10) ಮಕರ: (11) ಕುಮ್ಮ: ಮತ್ತು (12) ಮೀನ:। 24 ನಕ್ಷತ್ರಗಳಿಗೆ ಒಂದು ರಾಶಿಯಂತೆ 27 ನಕ್ಷತ್ರಗಳಿಗೆ 12 ರಾಶಿಗಳು. ಒಂದು ನಕ್ಷತ್ರಕ್ಕೆ 4 ಪಾದಗಳು. 24 ನಕ್ಷತ್ರಗಳಿಗೆ 9 ಪಾದಗಳು. "ರಾಶಿಮಂಗಳಾದಿಪುಂಜಯೋ:" ಮೇದಿಂ।

ರವಿ ಮೊದಲಾದ ನವಗ್ರಹಗಳು ದ್ವಾದಶ (12) ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ ಕಾಲ:

|                        |                             |
|------------------------|-----------------------------|
| ಸೂರ್ಯನು ಒಂದು ರಾಶಿಯಲ್ಲಿ | 1 ತಿಂಗಳು                    |
| ಚಂದ್ರ                  | 24 ದಿನಗಳು                   |
| ಕುಜ                    | ಮೂರು ಪಕ್ಷಗಳು<br>(45 ದಿನಗಳು) |
| ಬುಧ                    | 18 ದಿನಗಳು                   |
| ಗುರು                   | 1 ವರ್ಷ<br>(12 ತಿಂಗಳು)       |
| ಶುಕ್ರ                  | 28 ದಿನಗಳು                   |
| ಶನಿ                    | 24 ವರ್ಷಗಳು<br>(30 ತಿಂಗಳು)   |
| ರಾಹು ಮತ್ತು ಕೇತು        | 1½ ವರ್ಷಗಳು<br>(18 ತಿಂಗಳು)   |

"ರವಿಮಸಿಂ ನಿಶಾನಾಥ: ಸಪಾದದಿವಸದ್ವಯಮ್। ಪಕ್ಷತ್ರಯಂ ಭೂಮಿಪುತ್ರೋ ಬುಧೋಽಷ್ಟಾದಶವಾಸರಾನ್॥ ವರ್ಷಮೇಕಂ ಸುರಾಚಾರ್ಯ- ಆಷ್ಠಾವಿಂಶದಿನಂ ಭಗು:। ಶನಿ: ಸಾರ್ಧದ್ವಯಂ ವರ್ಷಂ ಸ್ವರ್ಮಾನು: ಸಾರ್ಧವತ್ಸರಮ್। एवं ಪ್ರಮಾಣಾತ್ ಸಕಲಾ: ಸ್ವರಾಶಿ ಭುಂಜತೇ ಗ್ರಹಾ:" ಜ್ಯೋತಿಷ್ತತ್ವಮ್।

ರಾಶಿಚಕ್ರ ರಾಶಿಚಕ್ರ (೧೦) ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ ದ್ವಾದಶ (12) ರಾಶಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ಮಂಡಲ (ವೃತ್ತ). ರಾಶಿನಾಂ ಚಕ್ರಮ್। ರಾಶಿಗಳ ಮಂಡಲ, ಕುಂಡಲಿ.

ರಾಶಿಭಾಗ ರಾಶಿಭೋಗ (೪೦) ದ್ವಾದಶ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹಗಳ ಸಂಚಾರ.



ರಾಜ್ಯಾಧಿಪತಿ ರಾತ್ಯಧಿಪತಿ (ಪುಂ) ದ್ವಾದಶ (12) ರಾಶಿಗಳ ಅಧಿಪತಿಗಳು.

| ರಾಶಿಗಳು      | ಅಧಿಪತಿ |
|--------------|--------|
| ಮೇಷ, ವೃಶ್ಚಿಕ | ಕುಜ    |
| ವೃಷಭ, ತುಲಾ   | ಶುಕ್ರ  |
| ಮಿಥುನ, ಕನ್ಯಾ | ಬುಧ    |
| ಕರ್ಕಟಕ       | ಚಂದ್ರ  |
| ಸಿಂಹ         | ಸೂರ್ಯ  |
| ಧನುಸ್ಸು, ಮೀನ | ಗುರು   |
| ಮಕರ, ಕುಂಭ    | ಶನಿ    |

ರಾಷ್ಟ್ರ ರಾಷ್ಟ್ರ (ನಂ) 1. ಜನಪದ, ದೇಶ. ರಾಜತಿ—ರಾಜ (ದೀಪ್ತಿ) “ರಾ” (ತಂ ೪-೧೫೮)। ಇದು ಸಪ್ತ (7) ರಾಜ್ಯಾಂಗಗಳಲ್ಲಿಯೊಂದು. “ಸ್ವಾಮ್ಯಮಾತ್ಯಸುಹೃತೋಸರಾಷ್ಟ್ರ-ದ್ವಿಗಬಲಾನಿ ಚ | ರಾಜ್ಯಾಂಗಾನ್” ಅಮಂ | 2. ನೂರ ಕೊಂಠಲೂ ಹೆಚ್ಚು ಗ್ರಾಮಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇಶ. “ರಾಷ್ಟ್ರಂ ತು ವಿಷಯಃ ಸೋಽಪಿ ಯುಕ್ತೋ ಗ್ರಾಮಃ ಶತಾಧಿಕಃ” ವೈಜಂ | (ಪುಂ ನಂ) 3. ಜಂತು, ಪ್ರಾಣಿ, “ರಾಷ್ಟ್ರೋಸ್ತೃತ್ರಿ ವಿಷಯೇ ಜಂತೌ” ವೈಜಂ | 4. ಉಪದ್ರವ, ವಿಪ್ಲವ, ದುರ್ವ್ಯಯನ. “ರಾಷ್ಟ್ರಂ ಸ್ಥಾದುಪವರ್ತನೇ | ಉಪದ್ರವೇ ಕಲಿಬಂಧುಃ” ಮೇದಿಂ |

ರಾಷ್ಟ್ರಿಕ ರಾಷ್ಟ್ರಿಕ (ಪುಂ) ರಾಷ್ಟ್ರದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವವನು.

ರಾಷ್ಟ್ರಿಕಾ ರಾಷ್ಟ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಳ್ಳು ಬದನೆಕಾಯಿ, ಹೆಣ್ಣುಳ್ಳು. “ಪ್ರಚೋದನಿ ಕುಲಿ ಕುಡ್ರಾ ದುಸ್ಪರ್ಶಾ ರಾಷ್ಟ್ರಿಕೇತ್ಯಪಿ” ಅಮಂ |

ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ (ಪುಂ) 1. ರಾಷ್ಟ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ವಾಸ ಮಾಡುವವನು. ರಾಷ್ಟ್ರೇ ಜಾತಃ ಭವೋ ವಾ “ಋ” (೪-೨-೯೩)। “ರಾಷ್ಟ್ರೀಯಃ ಸಹ ತದ್ರಾಷ್ಟ್ರಂ ಕ್ಷಿಪ್ರಮೇವ ವಿನಶ್ಯತಿ” ಮನುಂ ೧೦-೬೧ | 2. (ನಾಟ್ಯೋಕ್ತಿಯಲ್ಲಿ) ರಾಜನ ಭಾವ ಮೈದುನ. ರಾಷ್ಟ್ರೇಽಧಿಕೃತಃ—ರಾಷ್ಟ್ರ “ಋ” | “ರಾಜ-ಶ್ಯಾಲಸ್ತು ರಾಷ್ಟ್ರೀಯಃ” ಅಮಂ | 3. ರಾಜ, ದೊರೆ. “ತತಃ ಸಂಪ್ರೇಷಯೇದ್ರಾಷ್ಟ್ರೇ ರಾಷ್ಟ್ರೀಯಾಯ ಚ ದರ್ಶಯೇತ್” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೮೫-೧೨ |

ರಾಸ ರಾಸ (ಪುಂ) 1. ಗೋಪಾಲಕರ ಕ್ರೀಡೆ, ರಾಸಕ್ರೀಡೆ. ರಾಸ (ಶಬ್ದ) “ಋ” (೩-೩-೧೮) | “ತನ್ವಾರಮತ ಗೋವಿಂದೋ ರಾಸಕ್ರೀಡಾಮನುಷ್ಠತಃ | ಸ್ತ್ರೀರತ್ನೇರನ್ವಿತಃ ಪ್ರೀತಿ-ರನ್ಯೋನ್ಯಾಬದ್ಧಬಾಹುಭಿಃ | ರಾಸೋತ್ಸವಃ ಸಂಪ್ರವೃತ್ತೋ ಗೋಪೀಮಂಡಲ-ಮಂಡಿತಃ | ಯೋಗೇಶ್ವರೇಣ ಕೃಷ್ಣೇನ ತಾಸಾಂ ಮಧ್ಯೆ ದ್ವಯೋರ್ವಿಧೋಃ” ಭಾಗಂ ೧೦-೩೩-೨, ೩ | 2. ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ, ಸದ್ದಿ. 3. ನರ್ತನ, ಕುಣಿತ.

ರಾಸಕ ರಾಸಕ (ನಂ) ಉಪರೂಪಗಳಲ್ಲಿಯೊಂದು ಭೇದ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣಃ ಇದರಲ್ಲಿ ಐದು ಪಾತ್ರಗಳಿರಬೇಕು. ಮುಖ ಮತ್ತು ನಿರ್ವಹಣ ಸಂಧಿಗಳು ಮಾತ್ರ. ಭಾರತೀ ಮತ್ತು ಕೈಶಿಕೀ ವೃತ್ತಿಗಳು. ಸೂತ್ರಧಾರನಿಲ್ಲ. ಒಂದು ಅಂಕ ಮಾತ್ರ. ಪ್ರಸಿದ್ಧಳಾದ ನಾಯಕಿ. ಮೂರ್ಖ ನಾಯಕ. ಈ ಲಕ್ಷಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು ರಾಸಕ. “ರಾಸಕಂ ಪञ्ಚಪಾತ್ರಂ ಸ್ಯಾನ್ಮುಖನಿರ್ವಹಣಾನ್ವಿತಮ್ | ಭಾಷಾ-ವಿಭಾಷಾಮೃಷಿಂ ಭಾರತೀ ಕೈಶಿಕೀಯುತಮ್ | ಅಸುತ್ರಧಾರಮೇಕಾಂ ಸರ್ವೀಶ್ಯಂ ಕಲಾನ್ವಿತಮ್ | ಶಿಲಿಷ್ಠನಾಂದೀಯುತಂ ಸ್ವಾತನಾಯಿಕಂ ಮೂಲನಾಯಕಮ್” ಸಾಂ ದಂ ೬-೨೮೮-೯೦ |

ರಾಸನ ರಾಸನ (ನಂ) 1. ಶಬ್ದಮಾಡುವುದು, ಧ್ವನಿಕೊಡುವುದು. 2. ನರ್ತನ ಮಾಡಿಸುವುದು, ಕುಣಿದಾಡಿಸುವುದು. ರಾಸ (ಶಬ್ದ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) | (ವಿಂ) 3. ನಾಲಗೆಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ರಸನಾಯಾ ಇವಮ್ “ಅಣ್” (೪-೩-೧೨೦) |

ರಾಸಭ ರಾಸಭ (ಪುಂ) ಗರ್ವಭ, ಕಡ್ಡೆ. ರಾಸತೇ—ರಾಸ (ಶಬ್ದ) “ಅಮಚ್” (ತಂ ೩-೧೨೫) | “ಭೂಣುನಾ ರಾಸಭಖಸರೇಣ ತಿರೋಹಿತೇ ವರ್ಮನಿ ಲೋಚನಾನಾಮ್” ಕಿರಾಂ ೧೩-೭ | ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಙೀಷ್” (೪-೧-೬೩) | -ಭೀ-ಭೀ.

ರಾಸಮಂಡಲ ರಾಸಮಂಡಲ (ನಂ) ನರ್ತನಕ್ಕಾಗಿ ಸರಪಣಿಯ ಹೆಣಿಗೆಯಂತೆ ಇಬ್ಬಿಬ್ಬರ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಸುತ್ತುಡಲು ಮಂಡಲಾಕಾರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವುದು, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ರಾಸಕ್ರೀಡಾ ಮಂಡಲ.

ರಾಸೇರಸ ರಾಸೇರಸ (ಪುಂ) 1. ಗೋಷ್ಠಿ, ಸಭೆ. 2. ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ, ನರ್ತನ. 3. ಶೃಂಗಾರರಸ. 4. ಪಕ್ಷೀಜಾಗರ. ಪ್ರಸವವಾದನಂತರ ಆರನೆಯ ದಿನದ ರಾತ್ರಿ. 5. ರಸ ಸಿದ್ಧಿ, ರಸದ ನೈಪುಣ್ಯ. ರಾಸೇ ಕ್ರೀಡಾವಿಷಯೇ ರಸಃ “ಅಲುಕ್” (೬-೩-೯) |

ರಾಸ್ತಾ ರಾಸ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಣ್ಣ ರಾಸ್ತೆ. ರಾಸ್ತ (ಶಬ್ದ) “ನಃ” (ತಂ ೩-೧೫) | “ಎಲಾಪರ್ಣಿ ತು ಸುಖಾ ರಾಸ್ತಾ ಯುಕ್ತರಸಾ ಚ ಸಾ” ಅಮಂ | 2. ಈಶ್ವರೀಹಂಭು, ಸರ್ಪಾಕ್ಷಿ. “ನಾಕುಲಿ ಸುರಸಾ ರಾಸ್ತಾ ಸುಗಂಧಾ ಗಂಧನಾಕುಲಿ” ಅಮಂ |

ರಾಹು ರಾಹು (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ, ಸಿಂಹಕೆಯೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸಿಯ ಮಗ. ರಹಿತ ಗೃಹೀತ್ವಾ ತ್ಯಜತಿ ಚಂದ್ರಮ್—ರಹ (ತ್ಯಾಗ) “ಊ” ಬಾಹುಂ | ರಾಹುವು ನವಗ್ರಹಗಳಲ್ಲಿ ಎಂಟನೆಯ ಗ್ರಹ. ಸಮುದ್ರ ಮಥನದಿಂದ ಲಬ್ಧವಾದ ಅಮೃತವನ್ನು ಪರಮಾತ್ಮನು ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಹಂಚುತ್ತಿದ್ದಾಗ ದೇವತೆಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ರಾಹುವು ಬಂದು



ಕುಳಿತಿದ್ದುದನ್ನು ಕೂಡ ಸೂರ್ಯ-ಚಂದ್ರರು ವಿಷ್ಣುವಿಗೆ ಈ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಸಿದರು. ವಿಷ್ಣುವು ರಾಹುವಿನ ಶಿರಶ್ಚೇದನ ಮಾಡಿದನು. ಅದರಿಂದ ಕುಳಿತನಾದ ರಾಹುವು ಸೂರ್ಯ-ಚಂದ್ರರಿಗೆ ಪರಮಶತ್ರುವಾಗಿ ಅವರ ಮೇಲೆ ಆಕ್ರಮಣ ಮಾಡುತ್ತಿರುವನು. ಆದೇ ಗ್ರಹಣ. ಶಿರಶ್ಚೇದನ ಮಾಡಿದಾಗ ರಾಹುವು ಕೊಂಚ ಅಮೃತಪಾನ ಮಾಡಿದ್ದರಿಂದ ಜೀವವು ಹೋಗದೆ ಶಿರಸ್ಸು ಮತ್ತು ದೇಹಗಳು ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿ ರಾಹು ಮತ್ತು ಕೇತು ಎಂಬ ಹೆಸರು ಪಡೆದವು. ರಾಹುವು ಒಂದು ಪಾಪಗ್ರಹ. ಕನ್ಯಾರಾಶಿ ಈ ಗ್ರಹಕ್ಕೆ ಸ್ವಕ್ಷೇತ್ರ. ಸಿಂಹರಾಶಿ ಮೂಲ ತ್ರಿಕೋಣ. ಮಿಥುನ ರಾಶಿಯು ಉಚ್ಚ. ಧನುಸ್ಸು ನೀಚ ರಾಶಿ. ರಾಹುಗ್ರಹದ ದಶಾವರ್ಷಗಳು 18. ಇತರ ಗ್ರಹಗಳ ದಶೆಗಳಲ್ಲಿ ರಾಹುವಿನ ಅಂತರ್ದಶಾ (ಭುಕ್ತಿ) ಮಾನ :

| ದಶೆ      | ವರ್ಷ | ಮಾಸಗಳು | ದಿನಗಳು |
|----------|------|--------|--------|
| ರವಿದಶೆ   | —    | 10     | 24     |
| ಚಂದ್ರದಶೆ | 1    | 6      | —      |
| ಕುಜದಶೆ   | 1    | 0      | 18     |
| ರಾಹುದಶೆ  | 2    | 8      | 12     |
| ಗುರುದಶೆ  | 2    | 4      | 24     |
| ಶನಿದಶೆ   | 2    | 10     | 6      |
| ಬುಧದಶೆ   | 2    | 6      | 18     |
| ಕೇತುದಶೆ  | 1    | 0      | 18     |
| ಶುಕ್ರದಶೆ | 3    | 0      | 0      |

ರಾಹುದಶೆಯಲ್ಲಿ ತನ್ನ (ಸ್ವ) ಮತ್ತು ಇತರ ಗ್ರಹಗಳ ಅಂತರ್ದಶಾ (ಭುಕ್ತಿ) ಮಾನ :

| ಭುಕ್ತಿ      | ವರ್ಷ | ಮಾಸಗಳು | ದಿನಗಳು |
|-------------|------|--------|--------|
| ಸ್ವಭುಕ್ತಿ   | 2    | 8      | 12     |
| ಗುರುಭುಕ್ತಿ  | 2    | 4      | 24     |
| ಶನಿಭುಕ್ತಿ   | 2    | 10     | 6      |
| ಬುಧಭುಕ್ತಿ   | 2    | 6      | 18     |
| ಕೇತುಭುಕ್ತಿ  | 1    | 0      | 18     |
| ಶುಕ್ರಭುಕ್ತಿ | 3    | 0      | 0      |
| ರವಿಭುಕ್ತಿ   | 0    | 10     | 24     |
| ಚಂದ್ರಭುಕ್ತಿ | 1    | 6      | 0      |
| ಕುಜಭುಕ್ತಿ   | 1    | 0      | 18     |

ರಾಹುವು 3, 6 ಮತ್ತು 11 ರಲ್ಲಿದ್ದರೆ ಶುಭಫಲಪ್ರದ ನಾಗುವನು.

ರಾಹುಗ್ರಹನ ರಾಹುಗ್ರಹನ (ನಂ) ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರರ ಗ್ರಹಣ, ರಾಹುವು ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರರನ್ನು ಸುಂಗುವುದು. ರಾಹೋ: ಗ್ರಹಣಮ್ | -ಗ್ರಾಸ: -ಗ್ರಾಸಃ, -ಗ್ರಾಹ: -ಗ್ರಾಹಃ, -ಸ್ಪರ್ಶ: -ಸ್ಪರ್ಶಃ.

ರಾಹುಗ್ರಹನ ರಾಹುಗ್ರಹನ (ವಿಂ) ರಾಹುವಿನಿಂದ ಸುಂಗಲ್ಪಟ್ಟ (ಸೂರ್ಯ, ಚಂದ್ರ). ರಾಹುಗ್ರಾ ಗ್ರಹಣಃ |

ರಾಹುಗ್ರಹನ ರಾಹುಗ್ರಹನ (ನಂ) ಹಸಿಶುರಿ.

ರಾಹುಗ್ರಹನ ರಾಹುಗ್ರಹನ (ವಿಂ) ರಾಹುವಿನಿಂದ ಸುಂಗಲ್ಪಟ್ಟ (ಸೂರ್ಯ, ಚಂದ್ರ). ರಾಹುಗ್ರಾ ಗ್ರಹಣಃ |

ರಾಹುಗ್ರಹನ ರಾಹುಗ್ರಹನ (ವಿಂ) ರಾಹುವಿನಿಂದ ಸುಂಗಲ್ಪಟ್ಟ (ಸೂರ್ಯ, ಚಂದ್ರ). ರಾಹುಗ್ರಾ ಗ್ರಹಣಃ |

ರಾಹುಗ್ರಹನ ರಾಹುಗ್ರಹನ (ವಿಂ) ರಾಹುವಿನಿಂದ ಸುಂಗಲ್ಪಟ್ಟ (ಸೂರ್ಯ, ಚಂದ್ರ). ರಾಹುಗ್ರಾ ಗ್ರಹಣಃ |

ರಾಹುಗ್ರಹನ ರಾಹುಗ್ರಹನ (ವಿಂ) ರಾಹುವಿನಿಂದ ಸುಂಗಲ್ಪಟ್ಟ (ಸೂರ್ಯ, ಚಂದ್ರ). ರಾಹುಗ್ರಾ ಗ್ರಹಣಃ |

ರಾಹುಗ್ರಹನ ರಾಹುಗ್ರಹನ (ವಿಂ) ರಾಹುವಿನಿಂದ ಸುಂಗಲ್ಪಟ್ಟ (ಸೂರ್ಯ, ಚಂದ್ರ). ರಾಹುಗ್ರಾ ಗ್ರಹಣಃ |

ರಾಹುಗ್ರಹನ ರಾಹುಗ್ರಹನ (ವಿಂ) ರಾಹುವಿನಿಂದ ಸುಂಗಲ್ಪಟ್ಟ (ಸೂರ್ಯ, ಚಂದ್ರ). ರಾಹುಗ್ರಾ ಗ್ರಹಣಃ |

ರಾಹುಗ್ರಹನ ರಾಹುಗ್ರಹನ (ವಿಂ) ರಾಹುವಿನಿಂದ ಸುಂಗಲ್ಪಟ್ಟ (ಸೂರ್ಯ, ಚಂದ್ರ). ರಾಹುಗ್ರಾ ಗ್ರಹಣಃ |

ರಾಹುಗ್ರಹನ ರಾಹುಗ್ರಹನ (ವಿಂ) ರಾಹುವಿನಿಂದ ಸುಂಗಲ್ಪಟ್ಟ (ಸೂರ್ಯ, ಚಂದ್ರ). ರಾಹುಗ್ರಾ ಗ್ರಹಣಃ |

ರಾಹುಗ್ರಹನ ರಾಹುಗ್ರಹನ (ವಿಂ) ರಾಹುವಿನಿಂದ ಸುಂಗಲ್ಪಟ್ಟ (ಸೂರ್ಯ, ಚಂದ್ರ). ರಾಹುಗ್ರಾ ಗ್ರಹಣಃ |

ರಾಹುಗ್ರಹನ ರಾಹುಗ್ರಹನ (ವಿಂ) ರಾಹುವಿನಿಂದ ಸುಂಗಲ್ಪಟ್ಟ (ಸೂರ್ಯ, ಚಂದ್ರ). ರಾಹುಗ್ರಾ ಗ್ರಹಣಃ |

ರಾಹುಗ್ರಹನ ರಾಹುಗ್ರಹನ (ವಿಂ) ರಾಹುವಿನಿಂದ ಸುಂಗಲ್ಪಟ್ಟ (ಸೂರ್ಯ, ಚಂದ್ರ). ರಾಹುಗ್ರಾ ಗ್ರಹಣಃ |

ರಾಹುಗ್ರಹನ ರಾಹುಗ್ರಹನ (ವಿಂ) ರಾಹುವಿನಿಂದ ಸುಂಗಲ್ಪಟ್ಟ (ಸೂರ್ಯ, ಚಂದ್ರ). ರಾಹುಗ್ರಾ ಗ್ರಹಣಃ |



ಗುರ್ಮ್ | ದೇವಜಂ ಪುತ್ರಕಂ ಮಿತ್ರಂ ಫಲೇನ ಫಲಮಾದಿಶೇತ್ |

“ಅಹಮಪಿ ದೇವಿಂ ಪ್ರೇಕ್ಷಿತುಮರಿಕ್ತಪಾಣಿರ್ಭವಾಮಿ” ಮಾಲಂ ೧ |

-ಹಸ್ತ: -ಹಸ್ತಃ.

ರಿಕ್ತಾ ರಿಕ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಿಕ್ತಾತಿಥಿ, (ಶುಕ್ಲ ಮತ್ತು ಕೃಷ್ಣ) ಪಕ್ಷಗಳ ಚತುರ್ಥಿ, ನವಮಿ ಮತ್ತು ಚತುರ್ದಶಿ ತಿಥಿಗಳು.

“ನಂದಾ ಭದ್ರಾ ಜಯಾ ರಿಕ್ತಾ ಪೂರ್ಣಾ ಚ ತಿಥಯಃ ಕ್ರಮಾತ್”  
ತಿಥಿತತ್ವಮ್ |

ರಿಕ್ತಾ ರಿಕ್ತಾ (ನಂ) 1. ಧನ, ಹಣ. ರಿಕ್ತಾತಿ — ರಿಕ್ತಾತಿ  
(ವಿರೇಚನೆ) “ಯಕ್” (ಉಂ ೨-೭) | “ಬಾಲದಾಯಾದಿಕಂ  
ರಿಕ್ತಂ ತಾವದ್ರಾಜಾನುಪಾಲಯೇತ್ | ಯಾವತ್ಸ ಸ್ವಾತ್ಸಮಾವೃತ್ತೋ ಯಾವ-  
ಚ್ಚಾತೀತಶೇಷವಃ” ಮನುಂ ೮-೨೭ | 2. ಸ್ವತ್ತು, ಆಸ್ತಿ.  
“ಋಶ್ವಂ ಪಿತುಶ್ಚ ಮಾತುಶ್ಚ ಸಮೇತ್ಯ ಭ್ರಾತರಃ ಸಮಮ್ | ಭಜೇರನ್  
ಪೌತೃಕಂ ರಿಕ್ತಮನೋಶಾಸ್ತೇ ಹಿ ಜೀವತೋಃ” ಮನುಂ ೯-೧೦೪ |

ರಿಕ್ತಾಗ್ರಾಹ ರಿಕ್ತಾಗ್ರಾಹ (ವಿಂ) ಪಿತ್ರಾರ್ಜಿತ ಆಸ್ತಿಯ  
ಪಾಲುದಾರ, ಆಸ್ತಿಯ ಹಕ್ಕುದಾರ. ರಿಕ್ತಂ ಗೃಹ್ಣಾತಿ—  
ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) “ಅನ್” (೩-೨-೧) |

ರಿಕ್ತಾಗ್ರಾಹಿನ್ ರಿಕ್ತಾಗ್ರಾಹಿನ್ (ವಿಂ) ಆಸ್ತಿಯ ಹಕ್ಕು  
ದಾರ, ಪಾಲುದಾರ. ರಿಕ್ತಂ ಗೃಹ್ಣಾತಿ—ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ)  
“ಗಿರಿನಿಃ” (೩-೨-೭೮) | -ಭಾಗಿನ್ -ಭಾಗಿನ್,  
-ಹಾರಿನ್ -ಹಾರಿನ್.

ರಿಕ್ತಾನ್ ರಿಕ್ತಾನ್ (ವಿಂ) 1. ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ, ಧನಿಕ.  
ರಿಕ್ತಮಸ್ಥಾಸ್ತಿ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪) | 2. ಆಸ್ತಿಯ  
ಪಾಲುದಾರ.

ರಿಕ್ಷಣ ರಿಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ತವಳುವುದು, ಅಂಬಿಗಾಲಿಡು  
ವುದು, ಹರಿದಾಡುವುದು. ರಿಕ್ಷಿ (ಗತೌ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೪) | “ಮುಕ್ತವಾಥ ರಿಕ್ಷಣವಿಧಿ ಪಾದಚಕ್ರಮಂ-  
ಕ್ಷಮಃ | ಕುಮಾರಃ ಪಂಚವರ್ಷೀಯಃ ಕಲಾಮ್ಯಾಸಂ ವಿಧಾಸ್ಯತಿ” |  
2. ಮಾರ್ಗಬಿಟ್ಟುಹೋಗುವುದು, ದಾರಿತಪ್ಪಿ ನಡೆಯು  
ವುದು.

ರಿಕ್ಷಾ ರಿಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಶ್ವಗತಿಯ ಒಂದು ಭೇದ.  
2. ನರ್ತನ. 3. ನಸುಗುಣಿ ಗಿಡ. 4. ಕುದುರೆಯ  
ಗೊರಸು.

ರಿಕ್ಷಣ ರಿಕ್ಷಣ (ನಂ) “ರಿಕ್ಷಣ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ರಿಗಿ  
(ಗತೌ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) |

ರಿಪು ರಿಪು (ಪುಂ) 1. ವೈರಿ, ಶತ್ರು, ಹಗೆ. ರಪತಿ — ರಪ  
(ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಕ್ರುಃ” ಇತ್ ಚ (ಉಂ ೧-೨೬) |  
“ಧ್ರಿಯತೇ ಯಾವದೇಕೋಽಪಿ ರಿಪುಸ್ತಾವತ್ಕುತಃ ಸುಖಮ್ | ಪುರಃ  
ವಿಲಕ್ಷನಾತಿ ಸೋಮಂ ಹಿ ಸೇಹಿಕೇಯೋಽಸುರದ್ರುಹಾಮ್” ಮಾಘಂ ೨-೩೪ |

2. (ಜ್ಯೋತಿಷದಲ್ಲಿ) ಲಗ್ನದಿಂದ ಆರನೆಯ ಸ್ಥಾನ, ಶತ್ರು  
ಸ್ಥಾನ. “ಷಷ್ಠಂ ಚ ರಿಪುರೀತ್ಯಾಹುಃ ಕೃತ ಇತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ” |

3. ಕಾಮ ಕ್ರೋಧ ಲೋಭ ಮೋಹ ಮದ ಮತ್ತು  
ಮಾತ್ಸರ್ಯಗಳೆಂಬ ಆರು ಶತ್ರುಗಳು, ಅರಿಷಡ್ವರ್ಗ.

ರಿಪುಧಾತಿನ್ ರಿಪುಧಾತಿನ್, -ಛನ್ -ಛನ್, -ಸೂದನ್  
-ಸೂದನ್ (ವಿಂ) ಶತ್ರುವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ, ಹಗೆ  
ಯನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವ. ರಿಪುಂ ಹಂತಿ — ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತೃಯಃ)  
“ಗಿರಿನಿಃ” (೩-೨-೮೬) | “ಕಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೪) |  
ರಿಪುಂ ಸೂದಯತಿ — ಷೂದ (ಕ್ಷರಣಂ) + ಗಿನ್ “ಲ್ಯುಃ”  
(೩-೧-೧೩೪) ವಾ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಛಿಪ್” (೪-೧-೪) |  
-ಧಾತಿನಿ -ಧಾತಿನಿ. “ಟಾಪ್” (೪-೧-೪) | -ಛನ್  
-ಛನ್, -ಸೂದನ್ -ಸೂದನ್.

ರಿಪುಜಯ ರಿಪುಜಯ (ವಿಂ) ಶತ್ರುವನ್ನು ಜಯಿಸು  
ವವನು. ರಿಪುಂ ಜಯತಿ — ಜಿ (ಜಯೇ) “ಖಚ್” (೩-೨-೪೬) |  
ಮುಮಾಗಮಃ (೬-೩-೬೭) |

ರಿಪ್ಪ ರಿಪ್ಪ (ಪುಂ) ಲಗ್ನದಿಂದ ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ಸ್ಥಾನ.

ರಿಪ್ರ ರಿಪ್ರ (ನಂ) 1. ಪಾಪ. 2. ಧೂಳು. (ವಿಂ) 3.  
ಅಧಮ, ನೀಚ.

ರಿರಂಸಮಾಣ ರಿರಂಸಮಾಣ (ವಿಂ) ರಮಿಸಲು ಇಚ್ಛಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ಆಟವಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ರಂತುಮಿಚ್ಛನ್  
—ರಮು (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) + ಸನ್ “ಶಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪) |

ರಿರಂಸಾ ರಿರಂಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಟವಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಕ್ರೀಡೆ  
ಸಲು ಆಸೆ. ರಂತುಮಿಚ್ಛಾ — ರಮು (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) + ಸನ್  
“ಅಃ” (೩-೩-೧೦೨) |

ರಿರಂಸು ರಿರಂಸು (ವಿಂ) ಆಟವಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ,  
ಕ್ರೀಡಿಸಲು ಇಚ್ಛೆಯುಳ್ಳ. ರಂತುಮಿಚ್ಛುಃ — ರಮು — (ಕ್ರೀಡಾ-  
ಯಾಮ್) + ಸನ್ “ಃ” (೩-೨-೧೬೮) | “ಅಥ ರಿರಂಸುಮಮ್  
ಯುಗಪದ್ಗಿರೌ ಕೃತಯಥಾಸ್ವತರಪ್ರಸವಶ್ರಿಯಾ” ಮಾಘಂ ೬-೧ |  
“ರಿರಂಸವೋ ಯತ್ರ ಸುರಾಃ ಪ್ರಿಯಾಭಿಃ” ಕುಮಾರಂ ೯-೪೪ |

ರಿಶ್ಯ ರಿಶ್ಯ (ಪುಂ) ಜಂಕೆ, ಚಿಗರಿ, ಹುಲ್ಲೆ. ರಿಶತಿ — ರಿಶ  
(ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಯಕ್” (ಉಂ ೪-೧೧೧) | “ಞಃ  
ಕುರಜ್ಜಮೋ ರಿಶ್ಯಃ ಸಾದೃಶ್ಯಶ್ಚಾಹಲೋಚನಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ರಿಶಿತ ರಿಶಿತ (ವಿಂ) ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ರಿಶ  
(ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) | ವಾ ಇಡಾಗಮಃ  
(೭-೨-೪೮) | ಇಡಭಾವೇ ರಿಷಃ |

ರಿಷ ರಿಷ (ಪುಂ) 1. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. 2. ಅಂಟವಾಳದ  
ಗಿಡ. 3. ಸೀಗೆಗಿಡ. (ನಂ) 4. ಕ್ಷೇಮ. 5. ಅಶುಭದ  
ಅಭಾವ, ಶುಭ. 6. ಅಶುಭ, ಅಮಂಗಳ. 7. ನಾಶ.



8. ಪಾಪ. 9. ತೊಂದರೆ, ಒಡೆ. (ವಿಂ) 10. ಒಡಿಸಿ ಲುಟ್ಟ. 11. ಅದೃಷ್ಟಹೀನ. ರಿಷ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (3-2-102). "ರಿಷಂ ಕ್ಷೇಮಾಶುಭಾಭಾವೇ ಪುನಿ ಖಡ್ಗೇ ಚ ಫೇನಿಲೇ" ಮೇದಿಂ. "ರಿಷಂ ಸ್ವಾದಶುಭಕ್ಷೇಮನಾಶನಿಸ್ತ್ರಿಶ-ಪಾಪಮು" ನಾನಾರ್ಥಂ.

ರಿಷಿ ರಿಷ್ಠಿ (ಪಂ) 1. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. ರಿಷ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಿವ್" (3-2-104). (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಅಶುಭ, ಅಮಂಗಳ. "ರಿಷಿ: ಖಡ್ಗೇ ನಾಶ್ಚುಭೇ ಸ್ತ್ರೀ" ಮೇದಿಂ.

ರಿಷಿ ರಿಷ್ಠಿ (ಪಂ) ಚಿಂಕ, ಚಿಗರಿ, ಹುಲ್ಲೆ. ರಿಷ್ಯತೇ—ರಿಷ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಯಕ್" (3-2-111). "ಋಷ್ಯ ಋಷ್ಯೋ ರಿಷ್ಯರಿಷ್ಯೋ ಣ: ಸ್ವಾದೇಣಕೋಽಪಿ ಚ" ಕೊಶ:

ರಿಷಿ ರಿಷ್ಠಿ (ವಿಂ) ಫಾತುಕ, ಕೊಲ್ಲುವವನು. ರಿಷ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ವನ್" (3-2-111). ನಿಪಾಂ.

ರೀ ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗತಿ, ಗಮನ, ಚಲನೆ. ರೀ (ಗತೌ) "ವಿವ್" (3-2-106). 2. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು. 3. ವಧೆ.

ರೀಡಾ ರೀಡಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅವಹೇಳನ, ಅವಮಾನ, ತಿರಸ್ಕಾರ, ಪರಿಭವ. ರಿಹ (ನಿಂದಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" ನಿಪಾಂ. 2. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. 3. ಅಗೌರವ.

ರೀಣ ರೀಣ (ವಿಂ) ಸೋರಿಹೋಗಿರುವ, ಸುರಿದುಹೋಗಿರುವ. ರೀಡ್ (ಪ್ರಸವಣ) "ಕ್ತ:" (3-2-102).

ರೀತಿ ರೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಿತ್ತಾಳೆ. ರೀಯತೇ—ರೀಡ್ (ಪ್ರಸವಣ) "ಕ್ತಿವ್" (3-2-104). "ರೀತಿ: ಸ್ತ್ರಿಯಾಮಾರಕೂಟ:" ಅಮಂ. 2. ಸ್ವವಿಸುವಿಕೆ, ಸೋರುವಿಕೆ. 3. ಲೋಹದ ಮಲ, ಕಬ್ಬಿಣ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಕಿಲುಬು. 4. ಸೀಮೆ, ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ. 5. ಸಂಚಾರ, ನಡೆ, ಗಮನ. "ರೀತಿ: ಪ್ರಚಾರೆ ಸ್ಯಂದೇ ಚ ಲೋಹಕಿಡ್ಡಾರಕೂಟಯೋ:" ವಿಶ್ವಂ. "ರೀತಿ: ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಸ್ಯಂದಪ್ರಚಾರಯೋ: ಪಿತ್ತಲೇ ಲೋಹಕಿಡ್ಡೇ ಚ" ಮೇದಿಂ. 6. ವಾಕ್ಸರಣೆ, ವಾಕ್ಯಪ್ರಯೋಗದ ಕ್ರಮ, ರಸಾನುಗುಣವಾದ ಪದಗಳ ಜೋಡಣೆ, ಕಾವ್ಯಕ್ಕೆ ಅತ್ಯಭೂತವಾದ ರಸಗಳಿಗೆ ಅನುಗುಣವಾದ ಪದವಿನ್ಯಾಸ. "ಪದಸಂಘಟನಾ ರೀತಿರಕ್ಷಸಂಸ್ಥಾವಿಶೇಷವತ್. ಉಪಕರ್ತೃ ರಸಾದೀನಾಮ್" ಸಾಂ 2-1. ರೀತಿಯು ವೈದರ್ಭೀ ಗೌಡೀ ಪಾಂಚಾಲೀ ಮತ್ತು ಲಾಟೀ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ.

(1) ಲಲಿತ ಮತ್ತು ಕೋಮಲವರ್ಣಗಳಿಂದಲೂ ಮತ್ತು ಅಲ್ಪಸಮಾಸಗಳಿಂದಲೂ ಕೂಡಿದ ಪದವಿನ್ಯಾಸವು ವೈದರ್ಭೀ ರೀತಿ.

(2) ಸಮಾಸಭೂಯಿಷ್ಯವಾದ ಮತ್ತು ಮಹಾ ಪ್ರಾಣಾಕ್ಷರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಸರಣಿಯು ಗೌಡೀ ರೀತಿ.

(3) ನಾಲ್ಕಾರು ಸಮಸ್ತಪದಗಳಿಂದಕೂಡಿದ ಶೈಲಿಯು ಪಾಂಚಾಲೀ ರೀತಿ.

(4) ವೈದರ್ಭೀಮಿಶ್ರವಾದ ಪಾಂಚಾಲೀರೀತಿಯು ಲಾಟೀ ರೀತಿ. ಸಾಂ 2-2-4.

ರೀತಿಪುಷ್ಪ ರೀತಿಪುಷ್ಪ (ನಂ) ಕುಸುಮಾಂಜನ. ರೀತಿ: ಪಿತ್ತಲಸ್ಯ ಪುಷ್ಪಮಿವ.

ರೂಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಾ ರೂಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರೋಗದ ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆ, ಚಿಕಿತ್ಸೆ. ರೂಪ: ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಾ.

ರೂಪ ರೂಪ (ನಂ) 1. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ರೋಚತೇ ಶೋಭತೇ—ರೂಪ (ದೀಪ್ತೌ) "ಮಕ್" ಕುಷ್ಠ (3-2-113). 2. ಸ್ವರ್ಣಾಭರಣ, ಚಿನ್ನದ ಒಡವೆ. "ಪರಿತಶ್ಚ ಧೌತಮುಕ್ತ-ರೂಪವಿಲಸದಹಿಮಾಂಶುಮಂಡಲಾ:" ಮಾಘಂ 1-96. 3. ಲೋಹ, ಕಬ್ಬಿಣ. (ಪಂ) 4. ಉಮ್ಮತ್ತಿ ಗಿಡ. 5. ನಾಗಕೇಸರ ವೃಕ್ಷ. 6. ಒಂದು ವಿಧ ಅಂಜನ. (ವಿಂ) 7. ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ. "ರೂಪಂ ಹೇಮ ಸುಲೋಹಂ ಚ" ಹೇಮಂ.

ರೂಪಕಾರಕ ರೂಪಕಾರಕ (ಪಂ) ಚಿನ್ನ ಮತ್ತು ಬೆಳ್ಳಿಯು ಕೆಲಸಮಾಡುವ ಅಕ್ಕಸಾಲೆ. ರೂಪಂ ಸ್ವರ್ಣಾಭರಣಂ ಕರೋತಿ—ಠುಕ್ತ್ವ (ಕರಣ) "ಅನ್" (3-2-1). ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (4-2-4). "ನಾಡ್ವಿಮ: ಸ್ವರ್ಣಕಾರ: ಕಲಾದೌ ರೂಪ-ಕಾರಕೇ" ಅಮಂ.

ರೂಪಿಣಿ ರೂಪಿಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೀಷ್ಮಕುರಾಜನ ಮಗಳು, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಹಿರಿಯ ರಾಣಿ. ರೂಪಿಣಿಯು ತಂದೆಯಾದ ಭೀಷ್ಮಕುರಾಜನು ಇವಳನ್ನು ಶಿಶುಪಾಲನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು ವಿವಾಹ ಮಾಡಬೇಕೆಂದು ಗೊತ್ತುಮಾಡಿದ್ದು ರೂಪಿಣಿಗೆ ಇದು ಸಂಮತವಾಗದೆ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಿಗೆ ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಕಾಗದ ಬರೆದು ಕಳುಹಿಸಿದಳು. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಗೌರೀಪೂಜೆಗಾಗಿ ದೇವಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಹೋಗಿದ್ದ ರೂಪಿಣಿಯನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿ ಮದುವೆಯಾದನು. ರೂಪಿಣಿಯು ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿಯ ಅವತಾರವಾಗಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಪತ್ನಿಯಾದಳು. "ರಾಘವತ್ವೇ-ಭವತ್ ಸೀತಾ ರೂಪಿಣಿ ಕೃಷ್ಣಜನ್ಮಿನಿ. ಅನ್ಯೇಷು ಚಾವತಾರೆಷು ವಿಷ್ಣೋರೇವಾನಪಾಯಿನಿ" ಪಾಶ್ಚೋತ್ತರಖಂಡ:

ರೂಪಿಣಿ ರೂಪಿಣಿ (ಪಂ) 1. ಭೀಷ್ಮಕುರಾಜನ ಹಿರಿಯ ಮಗ, ರೂಪಿಣಿಯ ಅಣ್ಣ. (ವಿಂ) 2. ಸ್ವರ್ಣವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು. ರೂಪಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114). 3. ಸ್ವರ್ಣದ ಅಭರಣವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವವನು. 4. ಸ್ವರ್ಣದ ಮುಲಾಮು ಹಾಕಿದ ಅಭರಣ.

ರೂಪ ರೂಪ (ವಿಂ) 1. ಕಠಿನವಾದ, ಒರಟಾಗಿರುವ. 2. ಸ್ನೇಹ ವಿಲ್ಲದ, ಜಿಡ್ಡಿನ ಅಂಶವಿಲ್ಲದ. 3. ನುಣುಪಾಗಿಲ್ಲದ,



ಹುಣ ರುಗ್ಗ (ವಿಂ) 1. ರೋಗಗುಣಿತನಾದವನು. 2. ಬಗ್ಗಿಸ್  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ವಕ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಒಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುರಿಯ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಹುಣಿ (ಭಜ್ಜೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)।  
ನತ್ವಮ್ (6-2-84)। "ಭಗನೋರೋಧ: ಪರಿಪೂರ್ಣತಾಮಸ:  
ಸಮಸ್ಯಲೀಕೃತ್ಯ ಪುರಾತನೀನದೀ:" ಮಾಘಂ 12-60।

ಹುಣ-ದೀಪ್ತಾವಭಿಪ್ರೀತೌ ಚ (ಭಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಸಂ)।  
ರೋಚತೇ ರೋಚತೇ ರೋಚಂತೇ, ಹುಣೇ ಹುಣಾತೇ ಹುಣಿರೇ।  
ರೋಚಿತಾ। ರೋಚಿಷ್ಯತೇ। ರೋಚತಾಮ್। ಅರೋಚತ। ಇತ್ಯುಡಿ.  
ಉಡ್-ವಾ ಪರಸ್ಪದಮ್-ಅರೋಚತ್, ಅರೋಚಿಷ್ಠ।

ಭಾವೇ:-ಹುಣ್ಯತೇ। ಹುಣ್ಯತಾಮ್। ಅಹುಣ್ಯತ। ಹುಣ್ಯತೇ।  
ಅರೋಚಿ। ಇತ್ಯುಡಿ.

ಣಿಚಿ:-ರೋಚಯತೇ। ರೋಚಯಾಂಚಕ್ರೇ। ರೋಚಯಿತಾ।  
ರೋಚಯತಾಮ್। ಇತ್ಯುಡಿ.

1. ಪ್ರಕಾಶಿಸು, ಹೊಳೆ. "ವಿಕಚಬಾಣದಲಾವಲಯೋಽ-  
ಧಿಕಂ ಹುಣಿರೇ ಹುಣಿರೇಷಣವಿಭ್ರಮಾ:" ಮಾಘಂ 6-47।  
2. ಇಷ್ಟಪಡು, ಒಪ್ಪು, ಸಂಮತಿಸು. "ಯದೇವ ರೋಚತೇ  
ಯಸ್ಮೈ ಭವೇತ್ತತಸ್ಯ ಸುಂದರಮ್" ಹಿತಂ 2-43। "ನ ಸಜ್ಜಾ  
ಹುಣಿರೇ ರಮಣೀಮ್ಯ:" ಕಿರಾಂ 9-35। "ಇಯಮಿಷ್ಟಗುಣಾಯ  
ರೋಚತಾಂ ಹುಣಿರಾರ್ಥಾ ಭವತೇಽಪಿ ಭಾರತೀ" ಕಿರಾಂ 2-5।

ಹುಣ ರುಚ್ಛ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. ಹುಣ (ದೀಪ್ತೌ)  
"ಕ್ವಿಪ್" (3-2-106)। "ಕ್ರಾಂತಂ ಹುಣಾ ಕಾಂಚನ-  
ವಪ್ರಭಾಸಾ ನವಪ್ರಭಾಜಾಲಮೃತಾಂ ಮಣೀನಾಮ್" ಮಾಘಂ 4-3।  
2. ಕಾಂತಿ, ಪ್ರಭೆ. "ಭೇಜೇಽಭಿತ: ಪಾತುಕಸಿದ್ಧಸಿಂಧೋ-  
ರಮೃತಪೂರ್ವಾ ಹುಣಮಮ್ಬುರಾಶಿ:" ಮಾಘಂ 3-3। 3. ಜ್ವಾಲೆ,  
ಉರಿ. 4. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಬಯಕೆ. "ಹುಣ್ವಾಲಾಕಾಂತಿವಾಂಞಾಸು"  
ವೆಂಜಂ। 5. ಕಿರಣ, ಮಂಶಿ. "ಕ್ಷಿಪ್ತಾ ಇವೇಂದೋ: ಸ  
ಹುಣೋಽಧಿವೇಲಂ ಮುಕ್ತಾವಲೀರಾಕಲಯಾಂ ಚಕಾರ" ಮಾಘಂ 3-63।

ಹುಣಕ ರುಚ್ಛಕ (ಪುಂ) 1. ಮಾದಳದ ಗಿಡ. 2. ದನ್ತ,  
ಹಲ್ಲು. 3. ಕಪೋತ, ಪಾರಿವಾಳ. 4. ನಿಷ್ಕ. ರೋಚತೇ-  
ಹುಣ (ದೀಪ್ತಾವಭಿಪ್ರೀತೌ ಚ) "ಕ್ವುನ್" (3-2-32)।  
(ನಂ) 5. ಭೂಷಣ, ಅಶ್ವದ ಅಭರಣ. 6. ಹೂವಿನ  
ಮಾಲೆ. 7. ಲವಣ. 8. ಸದೃಶ್ವಾರ. 9. ಸಂವರ್ಚ  
ಲವಣ. 10. ಮಂಗಲದ್ರವ್ಯ. 11. ವಾಯುವಿಳಂಗ.  
12. ಗೋರೋಚನ. (ವಿಂ) 13. ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಒಪ್ಪುವ.  
ರುಚಿಸುವ. 14. ಉತ್ಕಟವಾದ, ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ. "ಹುಣಕೋ  
ವಿಜಯೇ ಚ ನಿಷ್ಕೇ ದಂತಕಪೋತಯೋ:। ನ ದ್ವಯೋ: ಸರ್ಜಿಕಾ-  
ಕ್ಷಾರೇಽಪ್ಯಶ್ವಾಭರಣಮಾಲ್ಯಯೋ:। ಸೌವರ್ಚಲೇಽಪಿ ಮಾಂಜ್ಞಲ್ಯದ್ರವ್ಯ  
ಚಾಪ್ಯುತ್ಕಟೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ।

ಹುಣ ರುಚ್ಛಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಹುಣ್" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಹುಣ್ ವಾ  
"ಠಾಪ್"। "ಆಪಂ ಚೈವ ಹುಣ್ತಾನಾಂ ಯಥಾ ವಾಚಾ ನಿಶಾ  
ದಿಶಾ" ಭಾಗುರಿ:।

ಹುಣಿ ರುಚ್ಛಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. ಹುಣಿ (ದೀಪ್ತಾವಭಿ-  
ಪ್ರೀತೌ ಚ) "ಇನ್" (3-2-119)। 2. ಕಾಂತಿ,  
ಪ್ರಭೆ, ಶೋಭೆ. "ಹುಣಿಮಾಸನೇ ಹುಣಿರವಾಮ್ನಿ ವಿಭ್ರತಾ-  
ವಲಗುನ್ಯಥ ನ್ಯಯದತಾಂ ನೃಪಾಚ್ಯುತೌ" ಮಾಘಂ 13-64।  
3. ಕಿರಣ, ರಂಜಿ. "ಹುಣಿಮರ್ತುರಸ್ಯ ವಿರಹಾಭಿಗಮಾದಿತಿ  
ಸನ್ಯಯಾಪಿ ಸಪದಿ ವ್ಯಗಮಿ" ಮಾಘಂ 9-17। 4. ಅಪೇಕ್ಷೆ,  
ಇಷ್ಟೆ, ಆಸೆ. "ಹುಣಿಕರಮಪಿ ನಾರ್ಥವದ್ಭೂವ ಸ್ತಿಮಿತ-  
ಸಮಾಧಿಸುಕೌ ಪೃಥಾತನುಜೇ" ಕಿರಾಂ 10-62। 5. ಇಷ್ಟ,  
ಅಭಿರುಚಿ, ಪ್ರೀತಿ. "ತೃಗುಣ್ಯೋದ್ಭವಮತ್ರ ಲೋಕವರಿತಂ ನಾನಾರಸಂ  
ದೃಶ್ಯತೇ ನಾಡ್ಯಂ ವಿಭ್ರಹುಣೇರ್ಜನಸ್ಯ ಬಹುಧಾಪ್ಯೇಕಂ ಸಮಾರಾಧನಮ್"  
ಮಾಲಂ 1-4। 6. ಅನುರಾಗ, ಪ್ರೇಮ, ಪ್ರೀತಿ.  
7. ಆಸಕ್ತಿ. 8. ಗೋರೋಚನ. 9. ರುಚಿ, ಸವಿ.  
10. ಹಲ್ಲುಗಳು ಕಾಣುವಂತೆ ನಗುವುದು. "ಹುಣಿ: ಸ್ತ್ರೀ  
ಹಸಿತಂ ದೃಷ್ಟದಂತೇ ವಿಹಸಿತಂ ಶ್ರುತೇ" ವೆಂಜಂ। 11. ಹಸಿವು,  
ಉಪ್ಪದ ಬಯಕೆ. "ಹುಣಿ: ಸ್ತ್ರೀ ದೀಪ್ತೌ ಶೋಭಾ-  
ಮಭಿಷ್ವಜ್ಞಾಭಿಲಾಷಯೋ:" ಮೇದಿಂ।

ಹುಣಿತ ರುಚ್ಛಿಠ (ನಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಅಭಿರುಚಿ, ಬಯಕೆ.  
ಹುಣಿ (ದೀಪ್ತಾವಭಿಪ್ರೀತೌ ಚ) "ಕ್ತ:" (3-2-114)।  
"ವಸಾಮೇಹ ಕ್ಷಪಾಮೇಕಾಂ ಹುಣಿತಂ ಯದಿ ತೇಜಃ" ಭಾಂ ವನಂ  
96-62। (ವಿಂ) 2. ಇಷ್ಟವಾದ, ಅಪೇಕ್ಷಿತವಾದ.  
"ಮಾತಲೇ ಕಶ್ಚಿದತ್ರಾಪಿ ಹುಣಿತಸ್ತೇ ವರೋ ಭವೇತ್" ಭಾಂ  
ಉದ್ಯೋಗಂ 100-16।

ಹುಣಿರ ರುಚ್ಛಿಠ (ನಂ) 1. ಮೂಲಂಗಿ. 2. ಲವಂಗ.  
3. ಕುಂಕುಮ ಕೇಸರಿ. ಹುಣಿ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕಿರಣ್" (3-2-119)।  
(ವಿಂ) 4. ಸುದೂರವಾದ, ಮನೋಹರ  
ವಾದ. "ಸ್ನಾಂತೀನಾಂ ಬೃಹದಮಲೋದಬಿಂದುಚಿತ್ರೌ ರೇಜಾತೇ ಹುಣಿರ-  
ದೃಶಾಮುರೋಜಕುಮ್ಭೌ" ಮಾಘಂ 6-43। 5. ಮಧೂರವಾದ,  
ಸಹಿಯಾದ. ಹುಣಿ ರಾತಿ-ರಾ (ದಾನೇ) "ಕ:" (3-2-3)।  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಾ-ಠಾ. 6. ಗೋರೋಚನ.

ಹುಣಿಷ್ಯ ರುಚ್ಛಿಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸಹಿಯಾದ, ಮಧೂರವಾದ.  
ಹುಣ್ಯತೇ-ಹುಣಿ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕಿಷ್ಯನ್" (3-2-106)।  
"ಸಿಂಧಾಕೀ ವಾತಲಾ ಸಾಂದ್ರಾ ಹುಣಿಷ್ಯಾನಲದೀಪಿನೀ" ಸುಶ್ರುತಂ।  
2. ಇಷ್ಟವಾದ.

ಹುಣಿ ರುಚ್ಛೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಹುಣಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ. ವಾ  
"ಜಿಷ್" (ಗಂ 4-1-84)।



ಕು ರುಚು (ಪುಂ) 1. ಕುರಿಯ ಆಕಾರದ ಬಿಳಿಯ ಜಿಂಕೆ.

2. ಹಂದಿಯ ಆಕಾರದ ಹಳದಿ ಜಿಂಕೆ. "ಕುಸ್ತು ಶುಕ್ಲೋ  
ಮೇವಾಃ ಸ ಪೀತಃ ಸುಕರಾಕೃತಿಃ" ವೈಜಂ.

ಕುಚ್ಯ ರುಚ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಪತಿ, ಗಂಡ. ರೋಚತೇ — ಕು

(ದೀಪ್ತೌ) "ಕುಪ್" (೩-೧-೧೧೪). "ಕುಚ್ಯಃ ಪ್ರಿಯಃ  
ಪತಿರ್ಮತಾ ಸೇವತಾ ವರಯಿತಾ ಧವಃ" ವೈಜಂ. 2. ಕುತಕವೃಕ್ಷ,  
ಚಿಲ್ಲದ ಗಿಡ. "ಕುಚ್ಯಸ್ತಿಕ್ತುಫಲೋ ಗುಚ್ಛಾಫಲಃ ಕತಫಲಶ್ಚ  
ಸಃ" ಕಲ್ಪದ್ರುಂ. (ನಂ) 3. ಸೌವರ್ಣಲವಣ, ಸದ್ಯಕ್ಷಾರ.

"ಜರಣಂ ಕೃಷ್ಣಲವಣಮಕ್ಷಯಂ ಕೋದ್ರವಿಕಂ ಪುನಃ. ಕುಚ್ಯಂ ಸ್ಯಾತ್"  
ಕಲ್ಪದ್ರುಂ. (ವಿಂ) 4. ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋಹರ  
ವಾದ. "ಕಾಂತಂ ಮನೋಹರಂ ಕುಚ್ಯಮ್" ಅಮಂ.

ಕುಚ್ಯಕಂದ ರುಚ್ಯಕಂದ (ಪುಂ) ಸೂರಣದ ಗಿಡ. ಕುಚ್ಯಃ

ಕಂದೋ ಯಸ್ಯ. "ಕುಚ್ಯಕಂದಸ್ತೀವಕಂದಃ ಸೂರಕಂದಃ ಸಿತೋಪರಃ"  
ಕಲ್ಪದ್ರುಂ.

ಕುಜ್ ರುಜ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ, ಬೇನೆ. ಕುಜತಿ

ದೇಹಮ್ — ಕುಜೋ (ಭಜ್ಜೇ) "ಕುಜ್" (ವಾಂ ೩-೨-೧೭೮).

"ಇತ್ಯದೃಶಿತಕುಜೋಽಸ್ಯ ಮನ್ವಿಣಃ ಶಶ್ವದ್ವಚುರಧಶಕ್ವಿಣಿಃ  
ಪ್ರಜಾಃ" ರಘುಂ ೧೯-೫೨. 2. ಒಡೆಯುವಿಕೆ, ಮುರಿಯುವಿಕೆ.  
"ಸಸ್ತಾಙ್ಗಸಂಖೌ ವಿಗತಾಕ್ಷಪಾಡವೇ ಕುಜಾ ನಿಕಾಮಂ  
ವಿಕಲೀಕೃತೇ ರಥೇ" ಮಾಘಂ ೧೨-೨೫. 3. ನೋವು,  
ವೇದನೆ.

ಕುಜತ್ ರುಜತ್ (ವಿಂ) 1. ನೋವುಂಟುಮಾಡುತ್ತಿರುವ.

2. ಒಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಮುರಿಯುತ್ತಿರುವ. ಕುಜೋ (ಭಜ್ಜೇ)  
"ಕುಜತ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಕುಜನ್ಮಹೇಷುನ್ ಬಹುಧಾಶುಪಾತಿನೋ  
ಮುಹುಃ ಕಾರೌವೇರಪವಾರಯನ್ ದಿಶಃ" ಕಿರಾಂ ೧೫-೫೧. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ  
"ಕುಜಿ" (೪-೧-೬). -ತೀ -ತಿ, -ಂತೀ -ಂತಿ.

ಕುಜಾ ರುಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. 2. ಭಂಗ,

ಮುರಿಯುವಿಕೆ. ಕುಜೋ (ಭಜ್ಜೇ) "ಕುಜ್" (ವಾಂ ೩-೨-೧೭೮).  
ವಾ "ಕುಜಿ". 3. ನೋವು. "ಆಪಂ ಕೇವ ಹಲಂತಾನಾಂ  
ಯಥಾ ವಾಚಾ ನಿಶಾ ದಿಶಾ" ಭಾಗುರಿಃ. "ಕವ ಕುಜಾ ಹೃದಯ-  
ಪ್ರಮಾಥಿನಿ ಕವ ಚ ತೇ ವಿಷಮಯನೀಯಮಾಯುಧಮ್" ಮಾಲಂ ೩-೨.  
"ಕುಜಾತ್ವಾಮಯಭಜ್ಜಯೋಃ" ಹೇಮಂ. 4. ಹಿಂಸೆ, ಒಡೆ.  
ಕುಜ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ "ಕುಜಿ". "ಕುಜಿ".

ಕುಜಾಕರ ರುಜಾಕರ (ಪುಂ) 1. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. ಕುಜಾಯಾಃ

ಕರಃ. (ವಿಂ) 2. ನೋವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ವೇದನೆ  
ಯನ್ನು ಕೊಡುವ.

ಕುಂಡ ರುಂಡ (ಪುಂ) 1. ತಲೆಯಿಲ್ಲದ ದೇಹ, ಕತ್ತಿಗೆ ಕೆಳಗಿನ

ಶರೀರ. "ಕುಂಡೋಽಶಿರಾಃ ಕಬನ್ಯೋಽಸ್ತ್ರೀ" ವೈಜಂ.

2. ಶರೀಕಪಾಲ, ತಲೆಯಿರುವ. "ವೆಲ್ಲಪ್ಪೇರವಣ್ಣಪ್ಪಣ್ಣ-  
ನಿಕರೇವೀರೋ ವಿಧತ್ತೇ ಮುವಮ್" ತಂ ರಾಂ ೫-೬.

ಕುಂಡಿಕಾ ರುಂಡಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯುದ್ಧಭೂಮಿ. 2.

ಮನೆಯ ಬಾಗಿಲಿನ ಹೊಸ್ತಿಲು. 3. ದೂತಿ. "ಕುಂಡಿಕಾ  
ದ್ವಾರಪಿಂಡ್ಯಾಂ ಚ ದ್ವಿತೀಯಾಂ ರಣಕ್ಷಿತೌ" ಮೇದಿಂ.

ಕುತ ರುತ (ನಂ) ತಬ್ಬ, ಪಶು ಪಕ್ಷಿ ಮೊದಲಾದವುಗಳ

ಕೂಗಾಟ. ಕು (ಶಬ್ದ) "ಕುತಃ" (೩-೩-೧೧೪).

"ತಿರಸ್ತ್ರಾಂ ವಾಶಿತಂ ಕುತಮ್" ಅಮಂ. "ಕುತಮಥ ಕುಕವಾಕೋ-  
ಸ್ತಾರಮಾಕರ್ಣ್ಯ ಕಲ್ಯೇ" ಮಾಘಂ ೧೧-೯.

ಕುತಜ ರುತಜ್ಜ (ವಿಂ) ಪಕ್ಷಿಗಳ ಮಾತುಗಳನ್ನು ತಿಳಿದವನು,

ಶಕುನ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. ಕುತಂ ಜಾನಾತಿ — ಜಾ  
(ಅವಬೋಧನೆ) "ಕುತಃ" (೩-೨-೩).

ಕುದತ್ ರುದತ್ (ವಿಂ) ಅಳುತ್ತಿರುವ, ರೋದನಮಾಡು

ತ್ತಿರುವ. ಕುದಿರ್ (ಅಶ್ರುವಿಮೋಚನೆ) "ಕುದತ್" (೩-೨-೧೨೪).

"ಕುಡಿಯಾ ಕುದದಿವಾಲಿವಿರಾವೇನೀಲನೀರಜಮಗಚ್ಛದಧಸ್ತಾತ್"

ಮಾಘಂ ೧೦-೧೧. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಕುಡಿ" (೪-೧-೬). -ತೀ

-ತಿ. "ದಿವಸಂ ಭೂಷಣಕುಚಿಪಾದಹತಾಂ ಕುದತೀಮಿವಾನವರತಾ-  
ಲಿಕುತಃ" ಮಾಘಂ ೯-೩೪.

ಕುದಥ ರುದಥ (ಪುಂ) 1. ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ. ರೋದತಿ —

ಕುದಿರ್ (ಅಶ್ರುವಿಮೋಚನೆ) "ಕುದಥಃ" (ತಂ ೩-೧-೧೬).

2. ಕುಕ್ಕುರ, ನಾಯಿ. "ಕುದಥಃ ಕುಕ್ಕುಟಶುನೋಃ" ಹೇಮಂ.

3. ಶಿಶು, ಮಗು.

ಕುದಿತ ರುದಿತ (ನಂ) ಅಳುವುದು, ರೋದನಮಾಡುವುದು.

ಕುದಿರ್ (ಅಶ್ರುವಿಮೋಚನೆ) ಮಾವೆ "ಕುತಃ" (೩-೩-೧೧೪).

"ನೂನಂ ತಸ್ಯಾಃ ಪ್ರಬಲಕುದಿತೋಚ್ಛ್ರಾಂತೇ ಪ್ರಿಯಾಯಾಃ" ಮೇವಂ  
೨-೨೧.

ಕುಡ ರುಡ್ಧ (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರತಿಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಕುಡಿರ್ (ಆವರಣ) "ಕುತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ಅಮೋಘಿ-

ರೋವಸಿ ಪೃಥುಪ್ರತಿಮಾನಭಾಗಕುಡೋಕುಡಂತಮುಸಲಪ್ರಸರೋ ನಿಪೇತೇ"

ಮಾಘಂ ೫-೩೬. "ಕುಡಾಲೋಕೇ ನರಪತಿಪಥೇ ಸುಚಿಮೇಘೈ-

ಸ್ತಮೋಘಿಃ" ಮೇವಂ ೧-೩೭. 2. ಅವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುತ್ತು

ವರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಗತ್ವೋದೇಕಂ ಜಘನಪುಲಿನೇ ಕುಡಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶಃ"

ಕಾಮಶ್ರುದ್ಧಮಭುಜಲತಾಃ ಪೂರ್ಣನಾಭಿಹದಾಂತಃ" ಮಾಘಂ ೭-೭೪.

3. ಮುತ್ತಿಗೆಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಕುರ ರುರ (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ.

ರೋದಯತಿ — ಕುರಿದಿರ್ (ಅಶ್ರುವಿಮೋಚನೆ) + ಣಿಕ್ "ಕುರಃ"

(ತಂ ೨-೨೨). ಣಿಕ್ ಲೋಪಶ್ಚ. "ಇಂದ್ರೋ ಮಹೇಂದ್ರಃ ಸುರ-

ನಾಯಕೋ ವಾ ಕುರಸ್ತ್ರಿಣೇತ್ರಸ್ತ್ರಿಪುರಾಂತಕೋ ವಾ" ರಾಮಾಂ.



(ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 2. ಏಕಾದಶ ರುದ್ರರು, ಗಣದೇವತೆಗಳ ಒಂದು ಗುಂಪು. ರೋದಯಂತುರಾನ್ | ಏಕಾದಶ ರುದ್ರರು: (1) ಅಜೇಕಪಾತ್ (2) ಅಹಿರ್ಬುಧ್ನಿ: (3) ವಿರೂಪಾಕ್ಷ: (4) ಸುರೇಶ್ವರ: (5) ಜಯಂತ: (6) ಬಹುರೂಪ: (7) ತ್ರ್ಯಮ್ಬಕ: (8) ಅಪರಾಜಿತ: (9) ವೈವಸ್ವತ: (10) ಸಾವಿತ್ರ: ಮತ್ತು (11) ಹರ: | "ರೂಢಾಣಾಮಪಿ ಮೂರ್ಧನಿ: ಕ್ಷತಹಂಕಾರಶಾಸಿನ:" ಕುಮಾಂ ೨-೨೬ | 3. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 4. ಹನ್ನೊಂದು ಸಂಖ್ಯೆ. "ರಸೇ ರೂಢೈಶ್ಚಿತ್ತಾ ಯಮನಸಮಲಾಗ: ಶಿಕ್ಷಾರಿಣಿ" ವುಂ ೨೦ |

**ಹದ್ರಕವಚ ರುದ್ರಕವಚ (ನಂ)** ಸಕಲ ಅವಯವಗಳನ್ನೂ ರಕ್ಷಿಸುವ ಈಶ್ವರನ ನಾಮಗಳು. "ರೂಢೋ ಮಾಮಗ್ರತ: ಪಾತು ಪೃಠತ: ಪಾತು ಶಕ್ತುರ: | ಕಪದೀ ದಕ್ಷಿಣೇ ಪಾತು ವಾಮಪಾರ್ಶ್ವೇ ತಥಾ ಹರ: | ಶಿವ:ಶಿರೋ ಮೇ ಚ ಪಾತು ಲಲಾಟೇ ನೀಲಲೋಹಿತ: | ನೇತ್ರಯೋಸ್ತ್ಯಮ್ಬಕ: ಪಾತು ಮುಖೇ ಪಾತು ಮಹೇಶ್ವರ: | ಕರ್ಣಯೋರ್ನಾಸಿಕಾಯಾಂ ಚ ಜಿಹ್ವಾಯಾಂ ಶಂಭುರವ್ಯಯ: | ಶ್ರೀಕಂಠಸ್ತು ಗಲೇ ಪಾತು ಬಾಹ್ವೋ: ಪಾತು ಪಿನ್ಯಾಕವಕ್ತ್ರ: | ಹೃದಯಂ ಮೇ ಮಹಾದೇವ: ಇಶ್ವರಸ್ತು ತಥೋದರಮ್ | ನಾಭೌ ಕುಕ್ಷೌ ಕಂಠಸ್ಥಾನೇ ಪಾತು ಸರ್ವಂ ಪ್ರಜಾಪತಿ: | ಋಜು ಜಾನ್ ಮಹಾದೇವ: ಪಾದೌ ಪಾತು ಮಹೇಶ್ವರ: | ಸರ್ವಂ ರಕ್ಷತು ಭೂತೇಶ: ಸರ್ವಗಾತ್ರಾಣಿ ಯತ್ನತ:" ತನ್ವಸಾಂ |

**ಹದ್ರಗಣ ರುದ್ರಗಣ (ಪುಂ)** ಈಶ್ವರನ ಪ್ರಮುಖಗಣಗಳು.

**ಹದ್ರಜ ರುದ್ರಜ (ಪುಂ)** 1. ಪಟ್ಟಾಬಿ, ಕುಮಾರಸ್ವಾಮಿ. (ನಂ) 2. ಪಾದರಸ. ರೂಢಾತ್ ಜಾಯತೇ-ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುರ್ಭವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೯೮) |

**ಹದ್ರಭೂಮಿ ರುದ್ರಭೂಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪಿತೃವನ.

**ಹದ್ರವಿಂಶತಿ ರುದ್ರವಿಂಶತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪ್ರಭವ ವಿಭವ ಮೊದಲಾದ ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಮೂರನೆಯ (ಕೊನೆಯ) ಇಪ್ಪತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳು. ಮೊದಲನೆಯ ಇಪ್ಪತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳು ಬೃಹದೇವತಾಕವಾದುವು. ಎರಡನೆಯ ಇಪ್ಪತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳು ವಿಷ್ಣುದೇವತಾಕವಾದುವು. ಮೂರನೆಯ (ಕೊನೆಯ) ಇಪ್ಪತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳು ರುದ್ರದೇವತಾಕವಾದುವು. "ಆಚಾ ತು ವಿಂಶತಿರ್ಬ್ರಾಹ್ಮಿ ದ್ವಿತೀಯಾ ವೈಷ್ಣವೀ ಸ್ಮೃತಾ | ತೃತೀಯಾ ರೂಢದೇವತ್ಯಾ ಶ್ರೇಷ್ಠಾ ಮಧ್ಯಾಧಮಾ ಭವೇತ್" |

**ಹದ್ರಸಾರ್ವಣಿ ರುದ್ರಸಾರ್ವಣಿ (ಪುಂ)** ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮನುಗಳಲ್ಲಿ ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ಮನು. ["ಇಂದ್ರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಹದ್ರಾಕ್ಷ ರುದ್ರಾಕ್ಷ (ಪುಂ)** 1. ರುದ್ರಾಕ್ಷ ವೃಕ್ಷ. (ನಂ) 2. ರುದ್ರಾಕ್ಷ ವೃಕ್ಷದ ಬೀಜ, ಜಪಮಾಲೆಗೆ ಉಪಯೋಗಿ

ಸುವ ರುದ್ರಾಕ್ಷ. ರುದ್ರಾಕ್ಷದ ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ. "ವಿನಾ ಭಸ್ಮತ್ರಿಪುಂಡ್ರೇಣ ವಿನಾ ರೂಢಾಕ್ಷಮಾಲಯಾ | ಪೂಜಿತೋಽಪಿ ಮಹಾದೇವೋ ನ ಸ್ವಾತ್ತಸ್ಯ ಫಲಪ್ರದ:" | ರುದ್ರಾಕ್ಷದ ಭೇದಗಳು: ರುದ್ರಾಕ್ಷವು ಒಂದರಿಂದ ಹದಿನಾಲ್ಕು ವದನಗಳವರೆಗೆ ಇರುವುದರಿಂದ ಹದಿನಾಲ್ಕು ಭೇದಗಳಾಗಿರುವುವು. ರುದ್ರಾಕ್ಷವನ್ನು ಮಂತ್ರವಿಲ್ಲದೆ ಧರಿಸಿದರೆ ದೋಷ. "ವಿನಾ ಮನ್ತ್ರೇಣ ಯೋ ಧತ್ತೇ ರೂಢಾಕ್ಷಂ ಭುವಿ ಮಾನವ: | ಸ ಯಾತಿ ನರಕಾನ್ ಧೋರಾನ್ ಯಾವದಿಂದ್ರಾಶ್ಚತುರ್ದಶ" |

**ಹದ್ರಾಕ್ಷಮಾಲಾ ರುದ್ರಾಕ್ಷಮಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ರುದ್ರಾಕ್ಷಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಜಪಮಾಲೆ. ರೂಢಾಕ್ಷ: ನಿರ್ಮಿತಾ ಮಾಲಾ | "ಭಸ್ಮೋದ್ಭೂತನ ಭದ್ರಮಸ್ತು ಭವತೇ ರೂಢಾಕ್ಷಮಾಲೇ ಶುಭಂ ಹಾ ಸೋಗಾನಪರಂಪರೇ ಗಿರಿಸುತಾಕಾಂತಾಲಯಾಲಂಕೃತೇ" ಕುವಂ |

**ಹದ್ರಾಣಿ ರುದ್ರಾಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ರುದ್ರನ ಪತ್ನಿ, ಪಾರ್ವತಿ. ರೂಢಸ್ಯ ಪತ್ನಿ - ರೂಢ "ಓಷ್" ಆನುಕ್ ಚ (೪-೧-೪೯) |

**ಹದ್ರಾರಿ ರುದ್ರಾರಿ (ಪುಂ)** ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ರೂಢೋಽರಿಯಸ್ಯ |

**ಹದ್ರಿರ್ - ಆವರಣ** (ರೂಢಾಂ ಉಭಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) | ರೂಢದ್ವಿ, ರೂಢ್ಯೇ | ರೂಢ್ಯ, ರೂಢ್ಯೇ | ರೂಢ್ಯಾ | ರೂಢ್ಯಾತಿ, -ತೇ | ಅರೂಢ್ಯತ್ | ಅರೂಢ್ಯಾತಿ | ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ತಡೆ, ಅಡ್ಡಿಮಾಡು, ಪ್ರತಿಬಂಧಿಸು. "ಆಶಾಬಂಧ: ಕುಸುಮಸದೃಶಂ ಪ್ರಾಯಶೋಹ್ಯಜ್ಞಾನಾಂ ಸದ್ವಿ:ಪಾತಿ ಪ್ರಣಯಿ ಹೃದಯಂ ವಿಪ್ರಯೋಗೇ ರೂಢದ್ವಿ" ಮೇಘಂ ೧-೧೦ | 2. ಅವರಿಸು, ಸುತ್ತುವರಿ, ಬಳಸು. "ರೂಢದ್ವಿಮಿ ಸವಿತುರ್ಮಗ್ನಿಂ ಭಿನದಿ ಕುಲಪರ್ವತಾನ್" ಭದ್ರಿಂ ೬-೩೫ | 3. ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸು. "ಇದಂ ರೂಢದ್ವಿ ಮಾಂ ಪದ್ಮಮಂತ:ಕವಣಿತಪದ್ಮದಮ್" ವಿಕ್ರಂ ೪-೪೦ | 4. ಮುಟ್ಟುಗೊಡು. "ರೂಢ್ಯಾಂತಿ ವಾರಣಾಟಾ ನಗರಂ ಮದೀಯಾ:" ಸುಧಾಂ ೪-೧೭ |

**ಕರ್ಮಣಿ:**-ರೂಢ್ಯತೇ | ರೂಢ್ಯತಾಮ್ | ಅರೂಢ್ಯತ | ರೂಢ್ಯತ | ಅರೂಢ್ಯ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕುತ್ಸು:**-ರೂಢ್ಯಮ್ | ರೂಢ್ಯನೀಯಮ್ | ರೂಢ್ಯಮ್ | ರೂಢ್ಯ: | ರೂಢ್ಯಾನ್ | ರೂಢ್ಯನ್, -ತೀ | ರೂಢ್ಯಾನ್: | ರೂಢ್ಯಮ್ | ರೂಢ್ಯನಮ್ |

**ಹದ್ರಿರ್ ರೂಢಿರ್ (ಪುಂ)** 1. ಅಂಗಾರಕ, ಕುಜ. 2. ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣ. ಹದ್ರಿರ್ (ಆವರಣ) "ಕಿರಕ್" (೩ಂ ೧-೫೯) | (ನಂ) 3. ಮೈಯೊಳಗಿನ ಒಂದು ಧಾತು, ರಕ್ತ. "ಪಾನಾಥೇ ಹದ್ರಿರಂ ಧಾತೌ ರಕ್ಷಾಥೇ ಭುವನಂ ಶರಾ:" ಮಾಧಂ ೧೯-೧೦೩ | 4. ಕುಂಕುಮ ಕೇಸರಿ. "ಅಸುಕ್ಕುಂಕುಮಯೋ: ಕಲಿಬಮ್" | "ಹದ್ರಿರಂ ಭೂಸುತೇ ಪುಮಾನ್" ನಾನಾರ್ಥಂ | "ಗಂಧವದ್ರುಧಿರ-ಚಂದನೋಕ್ಷಿತಾ" ರಘುಂ ೧೧-೨೦ |

**ಹದ್ರತ್ ರೂಢತ್ (ವಿಂ)** 1. ತಡೆಯುವ, ಅಡ್ಡಿಮಾಡುವ, ಪ್ರತಿಬಂಧಿಸುವ. ಹದ್ರಿರ್ (ಆವರಣ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |



2. ತಡೆಹಿಡಿಯುವ, ಹಿಡಿದು ನಿಲ್ಲಿಸುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ತೀ-ತಿಃ. "ಉತ್ತರೀಯವಿನಯಾತ್ ತ್ರಪಮಾಣಾ ಲುಘತೀ ಕಿಲ ತದೀಕ್ಷಣಮಾರ್ಗಮ್" ಮಾಘಂ ೧೦-೪೨ ।

ಕರ್ಮಾ ರುನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸುಗ್ರೀವನ ಹೆಂಡತಿ. 2. ಉಪ್ಪು ಸಮುದ್ರ. "ಕರ್ಮಾ ಸುಗ್ರೀವಭಾರ್ಯಾಂ ಸೇವ ಸ್ಯಾಲ್ಲವಣಾಕರೇ" ನಾನಾರ್ಥರಂ ।

ಕರ್ಮಾಭವ ರುನಾಭವ (ನಂ) ಲವಣ, ಉಪ್ಪು.

ಕರ್ಮ ರುರು (ಪುಂ) 1. ಹರಿಣ, ಜಿಂಕೆ, ಹುಲ್ಲೆ. ರೋತಿ — ಕ (ಶಬ್ದೇ) "ಕುನ್" (೩೦ ೪-೧೦೩) । "ತುರಗವಲಗನ-ಚಕ್ರಲಕುಂಡಲೋ ವಿಹರಣಿ ಕರ್ಮೇಷ್ವರತಮಿಷು" ರಘುಂ ೯-೫೧ । 2. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. "ದೇವಭೇದೇ ಮಗೇ ಕರ್ಮ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 3. ಸರ್ಪಶೃಂಗಂತಲೂ ಕ್ರೂರವಾದ ಒಂದು ಪ್ರಾಣಿ. ಈ ಪ್ರಾಣಿಯಿಂದ ಈ ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಹೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಜಂತುಗಳೇ ಮುಂದೆ ರುರುಗಳಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿ ನರಕದಲ್ಲಿ ಅದನ್ನು ಹಿಂಸಿಸುವುವು. "ಇಹ ಲೋಕೇಽಮುನಾ ಯೇ ತು ಹಿಸಿತಾ ಜಂತವಃ ಪುರಾ । ತ ಏವ ಕರ್ಮೋ ಭೂತ್ವಾ ಪರತ್ರ ಪಿಡಯಂತಿ ತಮ್" ದೇವಿಭಾಂ । ಆದುದರಿಂದ ಆ ನರಕಕ್ಕೆ "ರೋರವಃ" ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು.

ಕರ್ಮಕತ್ ರುರುಕ್ಷತ್ (ವಿಂ) 1. ಅವಿರ್ಭವಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಕರ್ಮ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡುಭವಿ ಚ) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಬೆಳೆಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ.

ಕರ್ಮಾ ರುರುಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅವಿರ್ಭವಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಕರ್ಮ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡುಭವಿ ಚ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨) । 2. ಬೆಳೆಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ.

ಕರ್ಮಕು ರುರುಕ್ಷು (ವಿಂ) 1. ಅವಿರ್ಭವಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಕರ್ಮ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡುಭವಿ ಚ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮) । 2. ಬೆಳೆಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ.

ಕರ್ಮದಿಷತ್ ರುರುದಿಷತ್ (ವಿಂ) ಅಳಲು ಇಚ್ಛಿಸುತ್ತಿರುವ. ರೋದಿತುಮಿಚ್ಛನ್ — ರದಿರ್ (ಅಶ್ರುವಿಮೋಚನೆ) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ತೀ-ತಿಃ.

ಕರ್ಮದಿಷಾ ರುರುದಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಳಲು ಆಸೆ. ರೋದಿತುಮಿಚ್ಛಾ — ರದಿರ್ (ಅಶ್ರುವಿಮೋಚನೆ) + ಸನ್ "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೨) । "ಕರ್ಮದಿಷಾ ವದನಾಂಬುಹಶ್ರಿಯಃ ಸುತನು ಸತ್ಯಮಲಂಕರಣಾಯ ತೇ" ಮಾಘಂ ೬-೧೭ ।

ಕರ್ಮದಿಷು ರುರುದಿಷು (ವಿಂ) ಅಳಲು ಆಸೆಪಡುವ. ರೋದಿತುಮಿಚ್ಛುಃ — ರದಿರ್ (ಅಶ್ರುವಿಮೋಚನೆ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮) ।

ಕರ್ಮ ರುನಾ (ಪುಂ) 1. ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ. 2. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು, ಧ್ವನಿ. "ಕರ್ಮತಃ ಕುಕ್ಕುಟೇ ಧ್ವನಿ" ವೈಜಂ ।

ಕರ್ಮ ರುವು (ಪುಂ) ಏರಂಡವೃಕ್ಷ, ಹರಳುಗಿಡ.

ಕರ್ಮಕ ರುವುಕ (ಪುಂ) ಏರಂಡವೃಕ್ಷ, ಹರಳುಗಿಡ.

ಕರ್ಮತ್ ರುತತ್ (ವಿಂ) ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಿರುವ. ಕರ್ಮ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ತೀ-ತಿಃ, -ಂತೀ-ಂತಿಃ.

ಕರ್ಮತೀ ರುತತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಶುಭವಾದ ಮಾತು, ಅಮಂಗಳ ವಚನ. ಕರ್ಮ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬) ।

ಕರ್ಮ ರುಷ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೋಪ, ಸಿಟ್ಟು, ಮುನಿಸು. ಕರ್ಮ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕಿವಪ್" (ವಾಂ ೩-೩-೯೪) । "ಕರ್ಮಾ ಮಿಥೋ ಮಿಲದ್ವಂತಿದಂತಸಂಘರ್ಷಜೋಜನಲಃ" ಕುಮಾಂ ೧೬-೩೨ ।

ಕರ್ಮಾ ರುಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಿಟ್ಟು, ಕೋಪ. ಕರ್ಮ "ರಾಪ್" । "ಆಪಂ ಚೈವ ಹಲಂತಾನಾಂ ಯಥಾ ವಾಚಾ ನಿಶಾ ದಿಶಾ" ಭಾಗುರಿಃ ।

ಕರ್ಮಿತ ರುಷಿತ (ವಿಂ) 1. ಕೋಪಗೊಂಡ, ಸಿಟ್ಟುಪಡಿಸಿದ. ಕರ್ಮ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕತಃ" (೩-೪-೭೨) । ವಾ ಇಡಾಗಮಃ (೭-೨-೨೮) । ಇಡಭಾವೇ ಕರ್ಮಿತಃ ರುಷ್ಯಃ. "ಜಘಾನ ಕರ್ಮಿತೋ ಕರ್ಮಿತಾನ್ ತ್ವರಿತಸ್ತೂರ್ಣಮಾಗತಾನ್" ಭಟ್ಟಿಂ ೯-೨೦ । (ನಂ) 2. ಕೋಪ, ಕೋಪ, ಸಿಟ್ಟು. ಷ ಭಾವೇ "ಕತಃ" (೩-೩-೧೧೪) । ಸ್ತ್ರೀಯಾ ಕರ್ಮಿತಾ ರುಷ್ಯಾ. "ಇತ್ಯಂ ಶಶಾಪಾದಿಸುತಾ ಹುತಾಶಂ ಕರ್ಮಿತಾ ರತಾನಂದಸುಖಸ್ಯ ಭಜ್ಜಾತ್" ಕುಮಾಂ ೯-೧೬ ।

ಕರ್ಮಿತ ರುಷ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕ್ರೋಧ, ಕೋಪ, ಸಿಟ್ಟು. ಕರ್ಮ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕಿತನ್" (೩-೩-೯೪) ।

ಕರ್ಮ — ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡುಭವಿ ಚ (ಭ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ) । ರೋಹತಿ । ಕರೋಹ । ರೋಹಾ । ರೋಹಯತಿ । ರೋಹತು । ಅರೂಹತ್ । 1. ಹುಟ್ಟು, ಜನ್ಮತಾಳು. 2. ಬೆಳೆ, ಬೆಳೆಗುರು, ಮೊಳಕೆಯೇಳು. "ಛಿನ್ನೋಽಪಿ ರೋಹತಿ ತಃ ಕ್ಷಿಣೋಽಪ್ಯುಪಚೀಯತೇ ಚಂದ್ರಃ" ಭರ್ತಂ ೧-೭೯ ।

ಭಾವೇ:—ರೂಹತೇ । ಕರೋಹೇ । ರೋಹಾ । ಕರೂಹತಾಮ್ । ಅರೂಹತ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗಿಣಿಃ:—ರೋಪಯತಿ, -ತೇ, ರೋಹಯತಿ, -ತೇ । ರೋಹಯಾ, ರೋಪಯಾ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ । ರೋಪಯಿತಾ, ರೋಹಯಿತಾ । ರೋಪಯತು, -ತಾಮ್, ರೋಹಯತು, -ತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಪ್ರಯತ್ನಾತ್ ಕರ್ಮಣಿ:—ರೋಪಯತೇ, ರೋಹಯತೇ । ರೋಪಯಾ, -ರೋಹಯಾ ಚಕ್ರೇ, -ಬಭೂವೇ, ಆಸೇ । ರೋಪಯಿತಾ, ರೋಪಿತಾ, ರೋಹಯಿತಾ, ರೋಹಿತಾ । ರೋಪಯತಾಮ್, ರೋಹಯತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.



ಕೃತು:—ರೋಹ್ಯಮ್ | ರೋಹಣೀಯಮ್ | ರೋಹಮ್ | ರೂಃ | ರೂವಾನ್ | ರೋಹನ್, -ಂತಿ | ರೂಮ್ | ರೋಹಣಮ್ |

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

ಆ + ರಹ = ಆರೋಹತಿ | ಆರೂಃ | ಆರೋಹ | ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರು. "ಆರೂಃ ಪತಿತ ಇತಿ ಸ್ವಸಂಬವೋಪಿ" ಮಾಘಂ ೮-೪೪ |

ಅವ + ರಹ = ಅವರೋಹತಿ | ಅವರೂಹ | ಅವರೋಹ | ಕೆಳಗೆ ಇಳಿ. "ತವಾಕ್ರೋಮ್ಯ ಯಶೋರಾಶಿ ನಿವೇಶ್ಯಾವರೂಹ ಸಃ" ರಘುಂ ೪-೮೦ |

ರಹ ರೂಃ (ವಿಂ) (ಸಮಾಸದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ) 1. ಹುಟ್ಟಿದ, 2. ಬೆಳೆದ. ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬) | "ವಿಪಾಕಪಿಙ್ಗಾಸ್ತುಹಿನಸ್ಯಲೀರಹಃ" ಮಾಘಂ ೧-೫ |

ರಹ ರೂಃ (ವಿಂ) (ಸಮಾಸದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ) 1. ಹುಟ್ಟುವ, 2. ಬೆಳೆಯುವ. ರೋಹತಿ—ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೪) | "ವಿಹಙ್ಗರಾಜಾಙ್ಗರಹೈರವಾಯತೇಹಿರಣ್ಮಯೋ-ವೀರಹವಲಿತಂತುಭಿಃ" ಮಾಘಂ ೧-೭ | -ಹಾ-ಹಾ. ಗರಿಕೆ ಹುಲ್ಲು.

ರೂಕ್ಷ ರೂಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. "ತರುಃ ಶಾಖೀ ಕುಠಃ ಕುಜಃ | ವಸುಃ ಕರಾಲಿಕೋಗಂಧೋ ಜಗ್ಣೋ ರೂಕ್ಷಃ ಪುಲಾಹ್ಯಪಿ" ವೈಜಂ | (ನಂ) 2. ಅನೆಯ ಮದೋದಕದ ವಾಸನೆ. 3. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಕಬ್ಬಿಣ. "ಅಥ ಕಾಲಾಯಸಂ ತೀಕ್ಷ್ಣಂ ಸುಲೋಹ ರೂಕ್ಷಮಾಸುರಮ್" ವೈಜಂ | (ವಿಂ) 4. ಕಠಿನವಾದ, ಗಟ್ಟಿ ಯಾದ, ಮೆದುವಾಗಿಲ್ಲದ, ಬಿರುಸಾದ ಶಬ್ದ. (ಮಾತು.) "ರೂಕ್ಷಸ್ವರಂ ವಾಶತಿ ವಾಯಸೋಽಯಮ್" ಮೃಚ್ಛಂ ೯-೧೦ | "ವಿಲಿಙ್ಘಿತಸ್ಥಿತಿಸಮಿವೀಕ್ಷ್ಯ ರೂಕ್ಷಯಾ ರಿಪೋಗಿರಾ ಗುರ್ಮಪಿ ಗಾಂದಿನೀಸುತಮ್" ಮಾಘಂ ೧೭-೧೨ | 5. ಕಠಿನವಾದ, ಒರಟಾಗಿರುವ. "ಕರ್ಣಿಪಿತೋ ಲೋಘಕವಾಯರೂಕ್ಷೋ ಗೋರೋಚನಾ-ಕ್ಷೇಪನಿತಾಂತಗೌರೇ" ಕುಮಾರಂ ೭-೧೭ | 6. ಕಠಿನವಾಗಿ ಮಾತ ನಾಡುವವನು, ಬಿರುಸಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವವನು. "ಶಕಲೋ ಮಧುರವಾಕ್ ಚಾಥ ರೂಕ್ಷೋ ಲಕ್ಷೋ ವಿಪರ್ಯಯೇ" ವೈಜಂ | 7. ದಯೆ ಯಿಲ್ಲದವನು. "ನಿತಾಂತರೂಕ್ಷಾಭಿನಿವೇಶಮೀಶಮ್" ರಘುಂ ೧೪-೪೩ | 8. ನುಣುಪಾಗಿಲ್ಲದ, ಒರಟಾಗಿರುವ. "ರೂಕ್ಷೋ ನಿಘ್ರೇಷ್ಯಚಿಕ್ಷುಕಣೇ" ವೈಜಂ | 9. ಒಣಗಿಹೋಗಿರುವ, ಬತ್ತಿಹೋದ, ರಸವಿಲ್ಲದೆ ಬೆಂದುಹೋಗಿರುವ. "ಸ್ನಿಗ್ಧ-ಶ್ಯಾಮಾಃ ಕ್ವಚಿದಪರತೋ ಭಿಷಣಾಭಾಗರೂಕ್ಷಾಃ" ತಂ ರಾಂ ೨-೧೪ |

ರೂಕ್ಷಗಂಧ ರೂಕ್ಷಗಂಧ (ಪುಂ) ಗುಗ್ಗುಲು. ರೂಕ್ಷೋ ಗಂಧೋ ಯಸ್ಯ |

ರೂಕ್ಷಣ ರೂಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಒಣಗಿಸುವಿಕೆ. 2. ದೇಹದಲ್ಲಿ ಮೇದಸ್ಸನ್ನು ಕಡಮೆಮಾಡಲು ನಡೆಯುವ ಚಿಕಿತ್ಸೆ.

ರೂಕ್ಷಣೀಯ ರೂಕ್ಷಣೀಯ (ಪುಂ) ಕಬ್ಬಿನ ರಸದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮದ್ಯ, -ಹೆಂಡ. "ಪಕ್ವೇರಿಕ್ಷುರಸೇರಸ್ತ್ರೀ ಶಿಘ್ರಃ ಪಚ್ಛರಸಃ ಶಿವಃ | ಶೀತಪಚ್ಛೋ ರೂಕ್ಷಣೀಯಃ" ವೈಜಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಯಾ-ಯಾ. ಕಾಡುಗೋಧಿ. "ರೂಕ್ಷಣೀಯಾ ಜನ್ತುಫಲಾ ಗವೇಶುಶ್ಚ ಗವೇಷುಕಾ" ವೈಜಂ |

ರೂಕ್ಷಪತ್ರ ರೂಕ್ಷಪತ್ರ (ಪುಂ) ಶಾಮೀಟುವೃಕ್ಷ, ಕಾರಗಿಡ. ರೂಕ್ಷಾಣಿ ಪತ್ರಾಣ್ಯಸ್ಯ |

ರೂಕ್ಷಸ್ವರ ರೂಕ್ಷಸ್ವರ (ಪುಂ) 1. ಗದಗದ, ಕತ್ತ. ರೂಕ್ಷಃ ಸ್ವರೋ ಯಸ್ಯ | "ರೂಕ್ಷಸ್ವರೋ ಭೂಮಕರ್ಣೋ ನೇಮಿಭಾರಿಸಹಃ ಶಲಃ" ವೈಜಂ | 2. ವಾಯು, ಕಾಗೆ.

ರೂಕ್ಷಿತ ರೂಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) 1. ಕಠಿನವಾಗಿರುವ. 2. ಒರಟಾಗಿ ರುವ. ರೂಕ್ಷೋಽಪಿ ಸಂಜಾತಃ "ಇತತ್" (೪-೨-೩೬) | 3. ಒರಟಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಒಣಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ರೂಕ್ಷ (ಪ್ರಾರುಣ್ಯ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

ರೂಢ ರೂಢ (ಪುಂ) 1. ಯವಧಾನ್ಯ. "ಯವೇ ರೂಢೋ ದೀರ್ಘಶೂಕ-ಶಿಸತಶೂಕೋ ಮಹಾಬುಮಃ" ವೈಜಂ | 2. (ಪ್ರಕೃತಿ ಪ್ರತ್ಯಯ ಗಳ ಅರ್ಥವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸದೆ) ಸಮುದಾಯ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಶಬ್ದ, ರೂಢಿ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಅರ್ಥ ವನ್ನು ಕೊಡುವ ಶಬ್ದ, ಸಂಕೇತ ಶಬ್ದ, ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿರಹಿತ ವಾದ ಶಬ್ದ. "ನಸ್ವದೇ ಮುಖಸುರಂ ಪ್ರಮದಾಮ್ಯೋ ನಾಮ ರೂಢಮಪಿ ಚ ವ್ಯುದಾಧಿ" ಮಾಘಂ ೧೦-೨೩ | (ವಿಂ) 3. ಪ್ರಸಿದ್ಧ ವಾದ, ನಡೆನುಡಿಗಳಿಂದ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಪಡೆದ. "ತಸ್ಯ ದಾಕ್ಷಿಣ್ಯ-ರೂಢೇನ ನಾಮ್ನಾ ಮಗಧವಂಶಜಾ" ರಘುಂ ೧-೩೧ | 4. ಅವಯ ವಾರ್ಥ (ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿ) ದಿಂದ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ, ಪ್ರಕೃತಿ ಪ್ರತ್ಯಯಾರ್ಥಗಳಿಂದ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಹೊಂದಿದ. "ಕ್ಷತಾತ್ ಕಿಲ ತ್ರಾಯತ ಇತ್ಯುದ್ರಃ ಕ್ಷತ್ರಸ್ಯ ಶಬ್ದೋ ಭುವನೇಷು ರೂಢಃ" ರಘುಂ ೨-೪೩ | 5. ಹುಟ್ಟಿದ, ಉತ್ಪತ್ತಿಹೊಂದಿದ, ಉಂಟಾದ. ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | "ಯೇನ ಶ್ರಿಯಃ ಸಂಶ್ರಯದೋಃ ರೂಢಂ ಸ್ವಭಾವಲೋಲೇತ್ಯಯಶಃ ಪ್ರಮೃಷ್ಟಮ್" ರಘುಂ ೬-೪೧ | 6. ಬೆಳೆದ, ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿದ.

ರೂಢಿ ರೂಢಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟುವುದು. 2. ಬೆಳೆವಣಿಗೆ, ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವುದು. ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | 3. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ. 4. ಶಬ್ದದ ಸಮುದಾಯ ಶಕ್ತಿ, ಅವಯವಾರ್ಥವಿಲ್ಲದೆ ಶಬ್ದದ ಅರ್ಥಕ್ಕಿರುವ ಸಂಕೇತ.

ಠಿಲಕ್ಷಣ ರೂಢಿಲಕ್ಷಣ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ನಿಠಿಲಕ್ಷಣ" ಪದದ ಅರ್ಥ.



**ರೂಪ ರೂಪ (ನಂ)** 1. ಸೌಂದರ್ಯ ಲಾವಣ್ಯಾದಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಆಕಾರ. ರೂಪಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭)।  
 "ಮಾನುಷೀಷು ಕಥಂ ವಾ ಸ್ಯಾದಸ್ಯ ರೂಪಸ್ಯ ಸಂಭವಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೨೨। 2. ಆಕಾರ. "ರೂಪಪ್ರತಿವಿಧಾನಮನೋಜ್ಞಂ ಪ್ರೇಮ ಕಾರ್ಯಮನಪೇಕ್ಷ್ಯ ವಿಕಾಸಿ" ಮಾಘಂ ೧೦-೩೭। 3. ಸ್ವಭಾವ. 4. ಬಿಳುವು ಹಸುರು ಕೆಂಪು ಮೊದಲಾದ ಬಣ್ಣ, ತಾರ್ಕಿಕರು ಹೇಳಿರುವ 24 ಗುಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಈ ಗುಣವು ಚಿಕ್ಕ ರಿಂದ್ರಿಯದಿಂದ ಮಾತ್ರ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವುದು. "ಚಕ್ಷುರ್ಮಾತ್ರ-ಗ್ರಾಹ್ಯೋ ಗುಣೋ ರೂಪಮ್" ತಂ ಸಂ. ಇದು ಶುಕ್ಲ ನೀಲ ಪೀತ ರಕ್ತ ಹರಿತ ಕಪಿತ ಮತ್ತು ಚಿತ್ರಗಳೆಂದು ಸಪ್ತವಿಧ. 5. ಸೌಂದರ್ಯ, ಸೊಬಗು. 6. ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯ, ನಾಟಕ ಮೊದಲಾದ ರೂಪಕ. 7. ಶ್ಲೋಕ, ಪದ್ಯ. 8. ಪಶು. 9. ಶಬ್ದ, ಪದ, (ಸುಬನ್ತ ಅಥವಾ ತಿಜನ್ತ). 10. ಗ್ರಂಥದ ಅವ್ಯಕ್ತಿ, ಕಂಠಸ್ಥವಾಗುವಂತೆ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಓದುವುದು. "ರೂಪಂ ಸ್ವಭಾವೇ ಸೌಂದರ್ಯೇ ನಾಣಕೇ ಪಶುಶಬ್ದಯೋಃ। ಖನ್ಯಾವೃತ್ತಿ ನಾಡಕಾದಾವಾಕಾರಶ್ಲೋಕಯೋರಪಿ" ವಿಶ್ವಂ. 11. ತತ್ತ್ವ, ಲಕ್ಷಣ, ನಿಜಸ್ವರೂಪ. "ರೂಪಂ ತತ್ತ್ವಂ ಸತತ್ತ್ವಂ ಚ ಸ್ವರೂಪಂ ಚ ಸಲಕ್ಷಣಮ್" ವೈಜಂ. "ಕ್ಷಣೇ ಕ್ಷಣೇ ಯನ್ನವತಾ-ಮುಪೇತಿ ತದೇವ ರೂಪಂ ರಮಣೀಯತಾಯಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೧೭। 12. ರಜತಲೋಹ, ಬೆಳ್ಳಿ. "ದ್ವರ್ಣಂ ಪುಂಸಿ ವಾ ರೂಪ್ಯಂ ರೂಪಂ ರೌಪ್ಯಂ ಯವೀಯಸಮ್" ಕಲ್ಪದ್ರುಂ. 13. ನಾಣ್ಯ. "ರೂಪಮಾಕಾರ ಸೌಂದರ್ಯನಾಣಕೇವಪಿ ದೃಶ್ಯತೇ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ರೂಪಕ ರೂಪಕ (ಪುಂ)** 1. ರೂಪಾಯಿ ನಾಣ್ಯ. (ನಂ) 2. ನಾಟಕ ಮೊದಲಾದ ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯ. ನಟನಲ್ಲಿ ರಾಮಾದಿಗಳ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಆರೋಪಮಾಡುವುದರಿಂದ ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯವು ರೂಪಕವೆನಿಸುವುದು. "ತದ್ವಿಪಾರೋಪಾತು ರೂಪಕಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧। "ಯಥಾ ಮುಖಾದೌ ಪದ್ಮಾದೇರಾರೋಪೋ ರೂಪಕಮತಮ್। ತಥೈವ ನಾಯಕಾರೋಪೋ ನಟೇ ರೂಪಕಮುಚ್ಯತೇ"। ಈ ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯವು (ರೂಪಕವು) (1) ನಾಟಕಮ್ (2) ಪ್ರಕರಣಮ್ (3) ಭಾಗಃ (4) ಪ್ರಹಸನಮ್ (5) ಡಿಮಃ (6) ವ್ಯಾಯೋಗಃ (7) ಸಮವಾಕಾರಃ (8) ವೀಥಿ (9) ಅಕ್ಷುಃ ಮತ್ತು (10) ಇಹಾಮೃಗಃ ಎಂದು ಹತ್ತು ವಿಧ. ಸಾಂ ದಂ ೬-೩। 3. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಉಪಮೇಯದಲ್ಲಿ ಉಪಮಾನದ ಅರ್ಹಾರ್ಥಭೇದ ಅಥವಾ ತಾದ್ರೂಪ್ಯ ರಂಜನವು ರೂಪಕಾಲಂಕಾರ. "ವಿಷಯಭೇದತಾದ್ರೂಪ್ಯರಂಜನಂ ವಿಷಯಸ್ಯ ಯತ್। ರೂಪಕಂ ತತ್" ಚಂದ್ರಾಂ. ರೂಪಕಾಲಂಕಾರವು ಅಭೇದ ಮತ್ತು ತಾದ್ರೂಪ್ಯಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ ಇವೆರಡೂ ನ್ಯೂನ ಅಧಿಕ ಮತ್ತು ಅನುಭಯಭೇದಗಳಿಂದ ಆರು ವಿಧಗಳಾಗುವುವು. "ತ್ರಿವಿಧಾಧಿಕಯನ್ಯುನತ್ವಾನು-

ಮಯೋವಿತಮಿಃ" ಚಂದ್ರಾಂ. (ವಿಂ) 4. ರೂಪವುಳ್ಳ, ಶರೀರವುಳ್ಳ.

**ರೂಪಣ ರೂಪಣ (ನಂ)** ಸಾದೃಶ್ಯದಿಂದ ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಮತ್ತೊಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಆರೋಪ. ರೂಪ (ರೂಪಕಿಯಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।

**ರೂಪತನ್ಮಾತ್ರ ರೂಪತನ್ಮಾತ್ರ (ನಂ)** ಉತ್ಕಟಾವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿದ ರೂಪಗುಣವುಳ್ಳ ಮತ್ತು ರಸತೂನ್ಯವಾದ ದ್ರವ್ಯ, ಪಂಚಭೂತಗಳಿಗೂ ಉಪಾದಾನಕಾರಣವಾದ ತನ್ಮಾತ್ರಗಳಲ್ಲೊಂದು. ರೂಪತನ್ಮಾತ್ರವು ತೇಜಸ್ಸಿಗೆ ಉಪಾದಾನಕಾರಣ.

**ರೂಪಧಾರಿನ್ ರೂಪಧಾರಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ನಟ, ವೇಷಧರಿಸಿ ಅಭಿನಯ ಮಾಡುವವನು. ರೂಪಂ ಧಾರಯತಿ—ಙ್ ಧಾಙ (ಧಾರಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಣಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪)। (ವಿಂ) 2. ಸುಂದರ, ರೂಪವಂತ.

**ರೂಪವತ್ ರೂಪವತ್ (ವಿಂ)** 1. ಆಕಾರವುಳ್ಳ, ಮೂರ್ತಿ ಮತ್ತಾದ. ರೂಪಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪)। "ವಾಯೋರಪಿ ವಿಕುರ್ವಾಣಾತ್ ಕಾಲಕಮಸ್ವಭಾವತಃ। ತದಪಙ್ಗತ ವೈ ತೇಜೋ ರೂಪವತ್ ಸ್ಪರ್ಶಶಬ್ದವತ್" ಭಾಗಂ ೨-೪-೨೭। 2. ಸೌಂದರ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ರೂಪವಾನ್ ಸುಭಗಃ ಶ್ರೀಮಾನ್ ಕಂದರ್ಪ ಇವ ಮूर्ತಿಮಾನ್"। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ವತೀ -ವತೀ. ಸುಂದರಿ, ಚೆಲುವಾದ ಹೆಂಗಸು.

**ರೂಪಾಜಿವಾ ರೂಪಾಜೀವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸೌಂದರ್ಯದಿಂದ ಜೀವಿಸುವ ವೇಶ್ಯೆ. ರೂಪಾಜಿವೋ ಜೀವಿಕಾ ಅಸ್ಯಾಃ। "ವಾರಸ್ತ್ರೀ ಗಣಿಕಾ ವೇಶ್ಯಾ ರೂಪಾಜಿವಾ" ಅಮಂ।

**ರೂಪಿನ್ ರೂಪಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ರೂಪವನ್ನು ಹೊಂದಿದ, ಮೂರ್ತಿಮತ್ತಾದ, ದೇಹವನ್ನು ಧರಿಸಿದ. ರೂಪಸ್ಯಾಸ್ತಿ —"ಙಿನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪)। "ರೂಪಿ ಕೋಪ ಇವ ವ್ಯಾಘ್ರಃ" ದಶಕುಂ. 2. ಸುಂದರವಾದ ಆಕಾರವುಳ್ಳ, ಚೆಲುವಾದ ಶರೀರವುಳ್ಳ. ಪ್ರಶಸ್ತಂ ರೂಪಂ ಯಸ್ಯ।

**ರೂಪ್ಯ ರೂಪ್ಯ (ನಂ)** 1. ಮುದ್ರಿಸಿದ ಬೆಳ್ಳಿ ಅಥವಾ ಚಿನ್ನದ ನಾಣ್ಯ, ರೂಪಾಯಿ. ಆಹುತಂ ರೂಪಮಸ್ಯ "ಯಪ್" (೪-೨-೧೨೦)। 2. ಕರಗಿಸಿದ, ಕರಗಿಸದೆ ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿರುವ ಚಿನ್ನ ಮತ್ತು ಬೆಳ್ಳಿ. 3. ಬೆಳ್ಳಿ, ರಜತಲೋಹ. 4. ಬೆಳ್ಳಿಯ ಒಡವೆ, ರಜತಲೋಹದ ಅಭರಣ. "ರಾಜತೇ ಭೂಷಣೇ ರೂಪ್ಯಂ ರಜತೇ ಹೇಮಿನಿ ಚಾಹತೇ" ವೈಜಂ. (ಪುಂ) 5. ಒಂದು ತದ್ವಿಧ ಪ್ರತ್ಯಯ. "ಹೇತುಮನುಷ್ಯೇಭ್ಯೋನ್ಯತರಸ್ಯಾಂ ರೂಪ್ಯಃ" ಪಾಂ ಸೂಂ (೪-೩-೮೧)। (ವಿಂ) 6. ಸುಂದರವಾದ, ಅಂದವಾದ. ಪ್ರಶಸ್ತಂ ರೂಪಂ ಯಸ್ಯ — ರೂಪ ಪ್ರಶಂಸಾಯ,



“ಯಃ” (೪-೨-೧೨೦) । “ಹೃದಯಃ ಸ್ಯಾತ್ ಸುಂದರೇ ತ್ರಿಪು ।  
ಆಹತಸ್ವರ್ಣರಜತೇ ರಜತೇ ಚ ನಪುಂಸಕಮ್” ಮೇದಿಂ ।

ಹೃದಯಕ ರೂಪಕ (ಪುಂ) ನಾಣ್ಯ, ರೂಪಾಯಿ.

ಹೃದಯಾಧ್ಯಕ್ಷ ರೂಪಾಧ್ಯಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಕೋಶಾಧಿಕಾರಿ,  
ಬೋಕ್ಸದ ಯಜಮಾನ. 2. ಟಂಕಸಾಲೆಯ ಅಧಿಕಾರಿ,  
ನಾಣ್ಯವನ್ನು ಮುದ್ರಿಸುವ ಶಾಲೆಯ ಅಧಿಕಾರಿ. ಹೃದಯಾ-  
ಧ್ಯಕ್ಷಃ ।

ಹೃದಯಕ ರೂಪಕ (ಪುಂ) ಏರಂಡ ವೃಕ್ಷ, ಹರಳು ಗಿಡ.

ಹೃದಯಕ ರೂಪಕ (ಪುಂ) ಬಣ್ಣ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಬಳಿಯು-  
ವವನು, ಲೇಪನಮಾಡುವವನು. ಹೃ (ಭೂಷಾಯಾಮ್)  
“ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) ।

ಹೃದಯ ರೂಪಣ (ನಂ) 1. ಬಳಿಯುವುದು, ಲೇಪನಮಾಡು-  
ವುದು. 2. ಅಲಂಕರಿಸುವುದು. ಹೃ (ಭೂಷಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) ।

ಹೃದಿತ ರೂಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಅಲಂಕರಿಸ-  
ಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ. ಹೃ (ಭೂಷಾಯಾಮ್) “ಕ್ತಃ”  
(೩-೨-೧೦೨) । “ಪರಿಭ್ರಮೆಲ್ಲೋಹಿತಚಂದನೋಚಿತಃ ಪದಾತಿ-  
ರಂತಗಿರಿ ರೇಣುಹಿತಃ” ಕಿರಾಂ-೧-೩೪ । 4. ಬೆರಸಲ್ಪಟ್ಟು,  
ಮಿಶ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು.

ರೇ ರೇ (ಅವ್ಯಂ) ಸಂಬೋಧನಾರ್ಥಕ ಅವ್ಯಯ, ನೀಚ  
ಸಂಬೋಧನ. “ರೇ ರೇ ರಾಕ್ಷಸ ಮಾ ವಧು ಪ್ರಹದತಿ ಮುಚೇತಿ  
ಗೃಧ್ರಾಧಿಪಃ” ಚಂ ರಾಂ ।

ರೇಕ ರೇಕ (ಪುಂ) 1. ಶಂಕೆ, ಸಂಶಯ, ಸಂದೇಹ. ರೇಕ  
(ಶಂಕಾಯಾಮ್) “ಘ್” (೩-೩-೧೮) । 2. ವಿರೇಚನ,  
ಭೇದಿ. ರಿಚಿರ್ (ವಿರೇಚನೆ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮) ।  
3. ನೀಚ. “ರೇಕಃ ಶಂಕಾವಿರೇಕಯೋಃ । ಹೀನೇಽಪಿ” ಹೇಮಂ ।  
“ರೇಕಃ ಶಂಕಾನಿವಿರೇಚನೆ” ಮೇದಿಂ ।

ರೇಕಣಸ್ ರೇಕಣಸ್ (ನಂ) ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ರಿಚಿರ್  
(ವಿರೇಚನೆ) “ಅಸುನ್” (೩ಂ ೪-೧೯೮) । ನುಡಾಗಮಶ್ಚ ।

ರೇಖಾ ರೇಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೆರೆ, ಎಳೆ. ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರ-  
ವಿನ್ಯಾಸೇ) “ಅಙ್” (೩-೩-೧೦೪) । ಲಸ್ಯ ರಃ ।  
“ರೇಖಾಮಾತ್ರಮಪಿ ಕ್ಷುಣ್ಣಾದಾಮನೋವರ್ಮನಃ ಪರಮ್” ರಘುಂ  
೧-೧೭ । 2. ಪಂಕ್ತಿ, ಸಾಲು. 3. ಬರವಣಿಗೆ, ಬರೆಯು-  
ವುದು. “ರೇಖಾ ತು ಶ್ರೇಣಿಲೇಖಯೋಃ” ನಾನಾರ್ಥರಂ । 4. ಅಲ್ಪ,  
ಸ್ವಲ್ಪ. 5. ಕಪಟ, ಮೋಸ, ವಂಚನೆ. 6. ಅಭೋಗ,  
ಪೂರ್ಣವಾಗಿರುವಿಕೆ. “ರೇಖಾ ಸ್ಯಾದಲ್ಪಕೇ ಕೃತ್ಯಾಭೋಗೋ-  
ಲ್ಲೇಖಯೋರಪಿ” ವಿಷ್ಣುಂ । 7. ಚಿತ್ರಬರೆಯುವ ಮೊದಲು

ಗುರುತಿಸುವ ಅಕೃತಿ ಸೂಚಕವಾದ ರೂಪರೇಖೆ. “ತಥಾಪಿ  
ತಸ್ಯಾ ಲಾವಣ್ಯಂ ರೇಖಯಾ ಕಿಂಚಿದನ್ವಿತಮ್” ಶಾಕುಂ ೬-೧೪ ।  
ರೇಖಾಗಣಿತ ರೇಖಾಗಣಿತ (ನಂ) ಜ್ಯಾಮಿತಿ, ಗೆರೆಯು  
ಮೂಲಕ ಕ್ಷೇತ್ರಗಳ ಪ್ರಮಾಣಸಂಬಂಧವಾದ ಶಾಸ್ತ್ರ.  
ರೇಖಾಯಾ ಗಣಿತಂ ಪ್ರಮಾಣಸ್ಯ ರೂಪಂ ಯತ್ರ ।

ರೇಚಕ ರೇಚಕ (ಪುಂ) 1. ಯವಕ್ಕಾರ. ರೇಚಯತಿ — ರಿಚ  
(ವಿಯೋಜನಸಂಪರ್ಚನಯೋಃ) + ಗಿಚ್ “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) ।  
“ಕಾರಂ ತು ಸ್ಯಾಧವಕ್ಷಾರೇ ಯವಶುಕ್ಶ್ರ ರೇಚಕಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।  
2. ತಿಲಕವೃಕ್ಷ. “ತಿಲಕಾಹ್ವಸ್ತು ರೇಚಕಃ” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ ।  
3. ಚೀರುಕೋಳವಿ, ಖಚಕಾರಿ. 4. ಉಸಿರನ್ನು ಹೊರಗೆ  
ಬಿಡುವುದು, ಶ್ವಾಸಕೋಶವನ್ನು ಖಾಲಿಮಾಡುವುದು.  
(ನಂ) 5. ಭೇದಿಮಾಡಿಸುವ ಔಷಧಿ. (ವಿಂ) 6.  
ಉಸಿರನ್ನು ಹೊರಗೆಬಿಡಿಸುವ. 7. ಮಲಬಂಧವನ್ನು  
ಪರಿಹರಿಸುವ, ಭೇದಿಮಾಡಿಸುವ. 8. ಹೊಟ್ಟೆಯನ್ನು  
ಬರಿದುಮಾಡುವ.

ರೇಚತ್ ರೇಚತ್ (ವಿಂ) 1. ಉಸಿರನ್ನು ಹೊರಗೆ ಬಿಡು-  
ತ್ತಿರುವ. 2. ಭೇದಿಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಬರಿದುಮಾಡು-  
ತ್ತಿರುವ. ರಿಚಿರ್ (ವಿರೇಚನೆ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) ।

ರೇಚನ ರೇಚನ (ನಂ) 1. ಭೇದಿಯಾಗುವಿಕೆ. 2. ಉಸಿರನ್ನು  
ಹೊರಗೆಬಿಡುವುದು. 3. ಹೊಟ್ಟೆಯನ್ನು ಬರಿದುಮಾಡು-  
ವುದು. ರಿಚಿರ್ (ವಿರೇಚನೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) ।

ರೇಚನಿ ರೇಚನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜಾಪಾಳ. 2. ಕೆಂಪು ತಿಗಡೆ  
ಮರ. “ರೇಚನಿ ಗುಂದಾ ದಂತಿ ರೋಚನಿಕಾ ತ್ರಿವೃತ್” ಹೇಮಂ ।

ರೇಚನೀಯ ರೇಚನೀಯ (ವಿಂ) 1. (ಉಸಿರನ್ನು) ಹೊರಗೆ  
ಬಿಡಬೇಕಾದ. 2. ಹೊರಗೆಬಿಡಲ್ಪಡುವ. 3. ಬರಿದು  
ಮಾಡಬೇಕಾದ. 4. ಬರಿದುಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ರಿಚಿರ್  
(ವಿರೇಚನೆ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । 5. ಭೇದಿಮಾಡಿಸ-  
ಬೇಕಾದ. 6. ಬರಿದುಮಾಡಿಸಬೇಕಾದ. 7. ಉಸಿರನ್ನು  
ಹೊರಗೆ ಬಿಡಿಸಬೇಕಾದ.

ರೇಚಯತ್ ರೇಚಯತ್ (ವಿಂ) 1. (ಉಸಿರನ್ನು) ಹೊರಗೆ  
ಬಿಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಬರಿದುಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಭೇದಿ  
ಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ರಿಚ (ವಿಯೋಜನಸಂಪರ್ಚನಯೋಃ) + ಗಿಚ್  
“ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) ।

ರೇಚಿತ ರೇಚಿತ (ವಿಂ) 1. ಭೇದಿಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ರಿಚಿರ್  
(ವಿರೇಚನೆ) + ಗಿಚ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಖಾಲಿ  
ಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಬರಿದುಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ರಿಚ (ವಿಯೋಜನ-  
ಸಂಪರ್ಚನಯೋಃ) + ಗಿಚ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । “ರೇಚಿತಂ  
ಪರಿಜನೇನ ಮಹೀಯಃ ಕೇವಲಾಭಿರತದಂಪತಿ ಧಾಮ” ಮಾಘಂ



೧೦-೪೪। (ನಂ) 3. ಕುದುರೆಯ ನಡೆಯ ಒಂದು ಭೇದ. ರಿಚಿರ್ (ವಿರೇಚನೆ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪)। "ಆಸ್ಕಂದಿತಂ ಧೋರಿತಂ ರೇಚಿತಂ ವಲಗಿತಂ ಲುತಮ್" ಅಮಂ। 4. ಒಂದು ಹುಬ್ಬನ್ನು ಮಾತ್ರ ಗಂಟು ಹಾಕುವುದು. "ರೇಚಿತಂ ತ್ವೇಕಯಾ ಭ್ರೂವಾ" ವೇಜಂ। 5. ಉಸಿರನ್ನು ಹೊರಗೆ ಬಿಡುವುದು. 6. ಪಾಲಿಮಾಡುವುದು, ಹೊಟ್ಟೆಯನ್ನು ಬರಿದುಮಾಡುವುದು.

ರೇಖ ರೇಚ್ಯ (ಪುಂ) ಪ್ರಾಣಾಯಾಮಸಮಯದಲ್ಲಿ ಹೊರಗೆ ಬಿಡಲ್ಪಡುವ ವಾಯು.

ರೇಣು ರೇಣು (ಪುಂ) 1. ಧೂಳು, ಹುಡಿಮಣ್ಣು. ರೀ (ಗತಿರೇಖಣಯೋಃ) "ಣುಃ" (೩ಂ ೩-೩೮)। "ನಮಸ್ತಲಂ ಬಹುಲತರೇಣ ರೇಣುನಾ ತತೋಽಗಮತ್ ತ್ರಿಜಗದಿವೇಕತಾಂ ಸ್ಫುಟಮ್" ಮಾಘಂ ೧೭-೬೪। 2. ಪರಾಗ, ಹೂವಿನ ಕೇಸರದ ಧೂಳು. (ಪುಂ) 3. ಪರ್ಪಟ, ಹೆಪ್ಪಳ.

ರೇಣುಕಾ ರೇಣುಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜಮದಗ್ನಿ ಮಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿ, ಪರಶುರಾಮನ ತಾಯಿ, ಪ್ರಸೇನಜಿತ್ತಂಟ ದೊರೆಯ ಮಗಳು. ರೇಣುಕೆಗೆ ರುಮಣ್ಣಂತ ಸುಷೇಣ ವಸು ವಿಶ್ವಾವಸು ಮತ್ತು ಪರಶುರಾಮ ಎಂಬ ಐವರು ಪುತ್ರರು. ರೇಣುಕೆಯು ಒಂದು ದಿನ ಗಂಗಾನದಿಗೆ ನೀರು ತರಲು ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ತನ್ನ ಪತ್ನಿಯರೊಡನೆ ಜಲಕ್ರೀಡೆ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಚಿತ್ರರಥ ಗುಂಧರ್ವನನ್ನು ನೋಡಿ ಮೋಹದಿಂದ ಅಲ್ಲೇ ಕೆಲವುಕಾಲವಿದ್ದು ಕಾಲಮೀರಿ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಹೋಗಲಾಗಿ ಪಾತಿವ್ರತ್ಯಭಂಗವಾಯಿತೆಂದು ತಿಳಿದು ಇವಳ ಕತ್ತನ್ನು ಕತ್ತರಿಸುವಂತೆ ಜಮದಗ್ನಿಯು ತನ್ನ ಹಿರಿಯ ನಾಲ್ಕು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಹೇಳಲು ಅವರು ಹಿಂಜರಿದರು. ಅವರನ್ನೂ ರೇಣುಕೆಯನ್ನೂ ಕೊಲ್ಲಲು ಪರಶುರಾಮನಿಗೆ ಅಜ್ಞಾ ಪಿಸಲಾಗಿ ಅವನು ಆ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಿದನು. ಇದರಿಂದ ಸಂತುಷ್ಟನಾದ ತಂದೆಯಿಂದ ವರವನ್ನು ಪಡೆದು ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿದನು. 2. ಒಂದು ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯ.

ರೇಣುಕಾತನಯ ರೇಣುಕಾತನಯ, -ಪುತ್ರ -ಪುತ್ರ, -ಸುನ್ಯ -ಸೂನು (ಪುಂ) ರೇಣುಕಾದೇವಿಯ ಮಗ, ಪರಶುರಾಮ. ರೇಣುಕಾಯಾಃ ತನಯಃ ಪುತ್ರಃ ಸುನ್ಯಾಃ।

ರೇಣುಕುಷಿತ ರೇಣುಕುಷಿತ (ಪುಂ) 1. ಗರ್ದಭ, ಕತ್ತೆ. (ವಿಂ) 2. ಧೂಳಿನಿಂದ ಪ್ಯಾಪ್ತವಾದ, ಧೂಳಿನಿಂದ ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ರೇಣುನಾ ಕುಷಿತಃ। "ಪದಾತಿರಂತಗಿರಿ ರೇಣುಕುಷಿತಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೩೪।

ರೇಣುವಾಸ ರೇಣುವಾಸ (ಪುಂ) ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. "ಇಂದಿ-ಂದಿರಃ ಪುಷ್ಪಕೀಟಃ ಮಧುರೋ ಮಧುಕೇಶಃ। ರೇಣುವಾಸಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ರೇಣುಸಾರ ರೇಣುಸಾರ (ಪುಂ) ಕರ್ಪೂರ. "ರೇಣುಸಾರಸ್ತು ಕರ್ಪೂರಶ್ಚಂದ್ರಮಸ್ಮ ಹಿಮಾಹ್ವಯಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ರೇತಸ್ ರೇತಸ್ (ನಂ) 1. ವೀರ್ಯ, ಶುಕ್ರಶೋಣಿತ, ದೇಹದೊಳಗಿನ ಮಜ್ಜೆಯನ್ನು ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡುವ ಒಂದು ಧಾತು. ರಿಣಾತಿ - ರೀ (ಗತಿರೇಖಣಯೋಃ) "ಅಸುನ್" (೩ಂ ೪-೨೦೧)। ತುಡಾಗಮಶ್ಚ। 2. ಪಾದರಸ, ಪಾರದ. "ರೇತಃ ಶುಕ್ರೇ ಪಾರದೇ ಚ" ಮೇದಿಂ। 3. ಜಲ, ನೀರು. "ರೇತಸಿ ಶುಕ್ರಮಮ್ಬು ಚ" ವೇಜಂ।

ರೇತ ರೇತ (ನಂ) ವೀರ್ಯ, ಶುಕ್ರಶೋಣಿತ ಇತ್ಯಾದಿ. "ರೇತಸ್" ಪದದ ಅರ್ಥ. "ಸರ್ವೇ ಸಾಂತಾ ಅದಂತಾಶ್ಚ" ಎಂಬ ನ್ಯಾಯದಿಂದ "ರೇತ" ಎಂದು ಅದಂತವೂ ಉಂಟು.

ರೇತಜ ರೇತಜ (ನಂ) 1. ಸಂತಾನ, ಶಿಶು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜಾ -ಜಾ. 2. ಮರಳ.

ರೇತನ ರೇತನ (ನಂ) ಶುಕ್ರಧಾತು.

ರೇತ್ರ ರೇತ್ರ (ನಂ) 1. ರೇತಸ್ಸು, ವೀರ್ಯ. 2. ಸುಧೆ, ಅಮೃತ. 3. ಸುಗಂಧಚೂರ್ಣ. ವಾಸನೆಯ ಪುಡಿ. 4. ಪಾರದ, ಪಾದರಸ. 5. ಸೂತಕ. "ರೇತ್ರ ರೇತಸಿ ಪೀಯುಷೇ ಪಟವಾಸೇ ಚ ಸೂತಕೇ" ಮೇದಿಂ।

ರೇಪ ರೇಪ (ವಿಂ) 1. ಕ್ರೂರ, ದಯೆಯಿಲ್ಲದವನು. 2. ನೀಚ, ಅಧಮ. "ರೇಪಃ ಕ್ಷುರೇ ವಿಗ್ರಹಿತೇ" ಹೇಮಂ।

ರೇಪಸ್ ರೇಪಸ್ (ವಿಂ) 1. ಅಧಮ, ನೀಚ. 2. ಕ್ರೂರ, ದಯೆಯಿಲ್ಲದವನು. 3. ಕೃಪಣ, ಜಿಪುಣ. "ರೇಪಾಃ ಸ್ಯಾದಧಮೇ ಕ್ಷುರೇ ಕೃಪಣೇಽಪಿಮಿಧೇಯವತ್" ಮೇದಿಂ। 4. ದುಷ್ಟ.

ರೇಫ ರೇಫ (ಪುಂ) 1. "ರ" ಎಂಬ ಅಕ್ಷರ, ರ ವರ್ಣ. ರ "ಫಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮)। (ವಿಂ) 2. ನೀಚ, ಅಧಮ. ರಿಫಯತೇ - ರಿಫ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಫಖ್" (೩-೩-೧೧)। "ರೇಫೋ ವರ್ಣೋ ಚ ಪುನಿ ಸ್ಯಾತ್ ಕುತ್ಸಿತೇ ಪುನರನ್ಯವತ್" ಮೇದಿಂ।

ರೇಫಸ್ ರೇಫಸ್ (ವಿಂ) "ರೇಪಸ್" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ರೇಖ ರೇಖ (ನಂ) ಹಸುವಿನ ಶಬ್ದ, ಆಕಳುವಿನ ಕೂಗು. ರೇಖ (ಶಬ್ದ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ಹುಮಾ ರೇಖಂ ಚ ಗವಾಂ ಛವನೌ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ರೇಖಾಣ ರೇಖಾಣ (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 2. ಒಬ್ಬ ಅಸುರ. "ರೇಖಾಣಸ್ತು ಪುನಿ ಸ್ಯಾತ್ ಮಾದೇವಃ-ಸುರೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ।

ರೇಖ ರೇಖ (ಪುಂ) 1. ಸೂಕರ, ಹಂದಿ. ರೇಖ (ಪ್ಲವಗತೀ) "ಅಡ್" ಬಾಹುಂ। 2. ವೇಣು. 3. ಉನ್ನತ, ಹುಚ್ಚ. 4. ವಿಷವೈದ್ಯ.



**ರೇವತೀ ರೇವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಬಲರಾಮನ ಪತ್ನಿ, ರೇವತ ರಾಜನ ಮಗಳು. "ರೇವತೀವದನೋಚ್ಚಿಷ್ಟಪರಿಪೂತಪುಟೇ ದೃಶೌ" ಮಾಘಂ ೨-೧೬. 2. ರೇವತೀನಕ್ಷತ್ರ. ಇಪ್ಪತ್ತೈಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಕೊನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ. 3. ಅಕಳು, ಹಸು. "ರೇವತೀ ಹಲಿಪತ್ಯಾಂ ಭೇ" ತ್ರಿಕಾಣಡಂ. 4. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 5. ಒಂದು ನದಿ.

**ರೇವತೀಜ ರೇವತೀಜ (ಪುಂ)** 1. ಪುಷ್ಕರಿಣಿ, ಸ್ಕಂದ. "ಪುಷ್ಕರಿಣಿ-ಪ್ರಿಯೋ ರೇವತೀಜಃ ಪವಿತ್ರೋ ಮಾತೃವತ್ಸಲಃ" ಕಲ್ಪದ್ರುಂ. 2. ಶನಿಗ್ರಹ. "ಸೌರಿಃ ಕ್ರೋಡೋ ರೇವತೀಜಃ" ಕಲ್ಪದ್ರುಂ.

**ರೇವತೀರಮಣ ರೇವತೀರಮಣ (ಪುಂ)** ಬಲರಾಮ.

**ರೇವಾ ರೇವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ನರ್ಮದಾನದಿ. 2. ರತಿ, ಮನ್ಮಥನ ಪತ್ನಿ. 3. ನೀಲಿಗಿಡ. "ಅಥ ರೇವಾ ಸ್ವಾತೀಲ್ಯಾಂ ರತ್ಯಾಂ ನದೀಭಿಃ" ಮೇದಿಂ.

**ರೇಷಣ ರೇಷಣ (ನಂ)** 1. ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ಪೀಡಿಸುವುದು. ರಿಷ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). 2. ಕುದುರೆ ಯಂತೆ ಕೆನೆಯುವುದು.

**ರೇ ರೈ (ಪುಂ)** 1. ಧನ, ಹಣ. ರಾತಿ ಸುಖಮ್ — ರಾ (ದಾನೇ) "ಕೈ" (೩-೨-೬೭). 2. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 3. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. "ರಾಸ್ತು ಸುರ್ವಣೇ ಜಲದೇ ಧನೇ" ಹೇಮಂ. ರಾಃ ರಾಯೋ ರಾಯಃ. ರಾಯಂ ರಾಯೋ ರಾಯಃ. ರಾಯಾ ರಾಭ್ಯಾಮ್ ರಾಭಿಃ. ಇತ್ಯಾದಿ. (ಪುಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ಧ್ವನಿ, ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು. "ರಾಸ್ತು ದ್ವಯೋರ್ವನೋ ಸ್ವರ್ಣೇ" ರತನಂ.

**ರೇವತ ರೈವತ (ಪುಂ)** 1. ರೈವತಕ ಪರ್ವತ, ರೇವತೀನದಿಯ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಪರ್ವತ. ರೇವತಿಯಾ ಅದ್ದೇ ದೇಶ ಭವಃ "ಅನ್" (೪-೨-೭೦). 2. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 3. ಕಕ್ಕಿಗಿಡ. "ರೇವತಸ್ತು ಸುರ್ವಣಾಲೌ ಶೈಲಭೇದಃಪಿ ಶುಕ್ಲೇ" ಮೇದಿಂ. 4. ಶನಿಗ್ರಹ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ". ರೇವತಕಃ ರೈವತಕಃ. "ರೇವತ" ಪದದ ಅರ್ಥ. "ನೀಲೋಪಲಸ್ಯುತ-ವಿಚಿತ್ರವಾತುಮಸೌ ಗಿರಿರೇವತಕಂ ದದರ್ಶ" ಮಾಘಂ ೪-೧.

**ರೋಕ ರೋಕ (ಪುಂ)** 1. ದೀಪ್ತಿ, ಪ್ರಕಾಶ. 2. ಅಂಶು, ಕಿರಣ. ರುಚಿ (ದೀಪ್ತೌ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧). 3. ನಗದು ವ್ಯಾಪಾರ. (ನಂ) 4. ನೌಕೆ, ಹಡಗು, ಜಹಜು. 5. ರಂಧ್ರ, ವಿವರ, ಬಿಲ್. "ರೋಕೋ ರಶ್ಮಯೋ ಬಿಲೇ ನ ಪುಮ್" ವೈಜಂ. (ವಿಂ) 6. ಚಲಿಸುವ. "ರೋಕಂ ಕ್ರಯಣಭೇದೇ ನಾವಿ ಬಿಲೇ ಚಲೇ. ರೋಕೋಽಶೌ" ಹೇಮಂ. "ರೋಕಸ್ತು ಕ್ರಯಭಿಹೀಪ್ಯೋಃ ರೋಕಂ ನಾವಿ ಬಿಲೇ ಚಲೇ" ಮೇದಿಂ.

**ರೋಕಯ ರೋಕಯ (ನಂ)** ಶೋಣಿತ, ರಕ್ತ. "ರೂಢಿರಂ ಲೋಹಿತಂ ರಕ್ತಮಸ್ರಂ ಕತಜಮಾಸುರಮ್. ರೋಕಯಂ ಶೋಷಮ್" ವೈಜಂ.

**ರೋಗ ರೋಗ (ಪುಂ)** ವ್ಯಾಧಿ, ಜಾಡ್ಯ. ಕೃತಿ — ಕೃತೋ (ಭಜ್ಜೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೬). "ಇತಿ ನರಪತಿರಸ್ತ್ರಂ ಯದಾವಿಷ್ಣುಕಾರ ಪ್ರಕೃಪಿತ ಇವ ರೋಗಃ ಕ್ಷಿಪ್ರಕಾರಿ ವಿಕಾರಮ್" ಮಾಘಂ ೨೦-೭೬. ವ್ಯಾಧಿಯು (1) ಆಗಂತುಕ (2) ಶಾರೀರ (3) ಮಾನಸ ಮತ್ತು (4) ಸ್ವಾಭಾವಿಕ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ.

(1) ಅಭಿಘಾತ (ಅಪಘಾತ) ದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ವ್ಯಾಧಿಯು ಆಗಂತುಕ.

(2) ಆಹಾರ ಪಾನೀಯಗಳ ದೋಷದ ಕಾರಣ ವಾತ ಪಿತ್ತ ಕಫ ಶೋಣಿತಾದಿಗಳ ವೈಷಮ್ಯದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ವ್ಯಾಧಿಯು ಶಾರೀರ.

(3) ಕೋಪ ದುಃಖ ಭಯ ಈರ್ಷ್ಯೆ ಹರ್ಷ ಮಾತ್ಸರ್ಯ ಕಾಮ ಲೋಭ ಮುಂತಾದುವು ಮಾನಸವ್ಯಾಧಿಗಳು.

(4) ಹಸಿವು ಬಾಯಾರಿಕೆ ಮುಪ್ಪು ನಿದ್ರೆ ಮೊದಲಾದುವು ಸ್ವಾಭಾವಿಕವ್ಯಾಧಿಗಳು. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ಜನ್ಮಾಂತರದಿಂದಲೂ ಕೆಲವು ಕರ್ಮದಿಂದಲೂ ಕೆಲವು ಎರಡರಿಂದಲೂ ಉಂಟಾಗುವವು.

**ರೋಗಜ ರೋಗಜ (ನಂ)** 1. ಔಷಧ, ಮದ್ದು. ರೋಗಂ ಹಂತಿ — ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) "ಡಕ್" (೩-೨-೫೩). 2. ವೈದ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ, ಚಿಕಿತ್ಸಾಶಾಸ್ತ್ರ. (ವಿಂ) 3. ರೋಗ ವನ್ನು ಗುಣಪಡಿಸುವ, ವ್ಯಾಧಿಯನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ.

**ರೋಗಭೂ ರೋಗಭೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ರೋಗಕ್ಕೆ ಆಶ್ರಯವಾದ ಶರೀರ, ರೋಗವು ಹುಟ್ಟಲು ಸ್ಥಾನವಾದ ದೇಹ. ರೋಗಾಣಾಂ ಭೂಃ.

**ರೋಗರಾಜ ರೋಗರಾಜ (ಪುಂ)** ಕ್ಷಯರೋಗ.

**ರೋಗಲಕ್ಷಣ ರೋಗಲಕ್ಷಣ (ನಂ)** ವ್ಯಾಧಿಯ ಗುರುತು, ರೋಗದ ಚಿಹ್ನೆ. ದೇಹದೊಳಗಿನ ಧಾತುಗಳ ವೈಷಮ್ಯದಿಂದ ರೋಗಗಳು ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವು. ವಾತ ಪಿತ್ತ ಕಫಗಳ ವಿರೋಧಗಳಿಂದ ರೋಗಗಳ ಚಿಹ್ನೆಗಳು ಕಂಡುಬರುವವು. ಅವು ಸಮವಾಗಿದ್ದರೆ ಆರೋಗ್ಯವೆಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕು. "ರೋಗಸ್ತು ದೋಷವೈಷಮ್ಯಂ ದೋಷಸಾಮ್ಯಮರೋಗತಾ".

**ರೋಗಶಿಲಾ ರೋಗಶಿಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮೆಣಶಿಲೆಯೆಂಬ ಒಂದು ಧಾತು.

**ರೋಗಹರ ರೋಗಹರ (ನಂ)** 1. ಔಷಧ. ರೋಗಾನ್ ಹರತಿ — ಹೃ (ಹರಣೇ) "ಅಚ್" (೩-೨-೯). (ವಿಂ) 2. ರೋಗವನ್ನು ವಾಸಿಮಾಡುವ.

**ರೋಗಹಾರಿನ್ ರೋಗಹಾರಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ವೈದ್ಯ, ಚಿಕಿತ್ಸಕ. ರೋಗಾನ್ ಹರತಿ — ಹೃ (ಹರಣೇ) "ಗಿರಿಃ" (೩-೨-೭೮). (ವಿಂ) 2. ರೋಗವನ್ನು ವಾಸಿಮಾಡುವ.



ರೋಗಿನ್ ರೋಗಿನ್ (ವಿಂ) ರೋಗವುಳ್ಳವನು, ವ್ಯಾಧಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದವನು. ರೋಗೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇತಿ:" (೪-೨-೧೧೫)।

"ದರ್ಶನಸ್ಪರ್ಶನಪ್ರಶ್ನ: ಪರೀಕ್ಷೇದಥ ರೋಗಿಣಮ್ | ಆಯುರಾದಿ ದೃಶಾ ಸ್ಪರ್ಶಾಚ್ಛಿಂತಾದೇ: ಪ್ರಶ್ನತೋಽಪರಮ್" ವಾಗ್ಭಟ: |

ರೋಚಕ ರೋಚಕ (ಪುಂ) 1. ಗೋಣೇಚೇಲ. "ಹಸ್ತಿ-ಕರ್ಣಸ್ತು ರೋಚಕ: | ಶಾಣಿ ಗೋಣಿ ಛಿದ್ರವಸ್ತ್ರೇಶ್ಚೀರಂ ಕಂಡಲ-ಮಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಹೇಮಂ | (ನಂ) 2. ಹಸಿವು. 3. ಚಟ್ಟಿ. 4. ಕದಳೀಫಲ, ಬಾಳೆಹಣ್ಣು. 5. ರಾಜೀರುಳ್ಳಿ. (ವಿಂ) 6. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ. 7. ಸುಖಕರವಾದ, ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವ. 8. ಹಸಿವುಂಟುಮಾಡುವ. ರುಚ (ದೀಪ್ತೌ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |

ರೋಚನ ರೋಚನ (ಪುಂ) 1. ಕೆಂಪು ಬೂರುಗದ ಮರ, ಚಟ್ಟಿ ಬೂರುಗದ ಮರ. ರೋಚಯತಿ—ರುಚ (ದೀಪ್ತಾವಭಿ-ಪ್ರೀತೌ ಚ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ಜೀರ್ಣ-ಕಾರಿಯಾದ ಔಷಧ, ಹಸಿವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಔಷಧ. 3. ಮನ್ಮಥನ ಪಂಚಬಾಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. 4. ಇಷ್ಟವಾಗುವ, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಒಪ್ಪುವ. (ವಿಂ) 5. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ. 6. ಸುಂದರವಾದ, ಸೊಗಸಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ನಾ —ನಾ 7. ಗೋರೋಚನ. "ತ್ವಂ ರೋಚನಾಗೌರವಶರೀರ-ಯಶ್ಚಿ:" ರಘುಂ ೬-೬೫ | 8. ಕೆಂಪುನೈದಿಲೆ. 9. ಶ್ರೇಷ್ಠ ಹೆಂಗಸು, ಸುಂದರಿ. 10. ಈರುಳ್ಳಿ. 11. ಕೆಕ್ಕಿಗಿಡ. "ರೋಚನ: ಕೂಡಶಾಲ್ಮಲೌ | ರೋಚನಾ ರಕ್ತಕಲ್ಲಾರೇ ಗೋಪಿತೇ ವರಯೋಷಿತಿ" ಹೇಮಂ | "ರೋಚನ: ಕೂಡಶಾಲ್ಮಲ್ಯಾ ಪುಸಿ ಸ್ಯಾದ್ರೋಚಕೇ ತ್ರಿಪು | ರೋಚನಾ ರಕ್ತಕಲ್ಲಾರೇ ಗೋಪಿತವರ-ಯೋಷಿತೋ:" ಮೇದಿಂ |

ರೋಚನಕ ರೋಚನಕ (ಪುಂ) ನಿಂಬೆಗಿಡ. ರೋಚನಾಯ ಕಾಯತಿ —ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩) |

ರೋಚನಾ ರೋಚನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ರೋಚನ" ನೋಡಿ.

ರೋಚನೀ ರೋಚನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಪಿಲೆಹಿಟ್ಟು ಎಂಬ ಒಪ್ಪಧಿ.

ರೋಚಮಾನ ರೋಚಮಾನ (ಪುಂ) 1. ಕುದುರೆಯು ಕತ್ತಿನ ಮೇಲಿರುವ ಒಂದು ಸುಳಿ, —ರೋಮಾವರ್ತ. "ಶ್ರೀವೃಕ್ಷಕೋ ಹೃದಾವರ್ತ: ರೋಚಮಾನೋ ಗಲೋದ್ಭವ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ, ಹೊಳೆಯುವ. ರುಚ (ದೀಪ್ತಾವಭಿ-ಪ್ರೀತೌ ಚ) "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) | 3. ಇಷ್ಟವಾಗಿ ರುವ, ಸಂತುಷ್ಟವಾಗಿರುವ, ಒಪ್ಪುವ. "ರೋಚಮಾನ: ಕುದೃಷ್ಟಿಮ್ಯೋ ರಕ್ಷೋಮ್ಯ: ಪ್ರತವಾನ್ ಶ್ರಿಯಮ್" ಭट्टಿಂ ೮-೭೩ |

ರೋಚಿಣ್ಣು ರೋಚಿಣ್ಣು (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ. ರುಚ (ದೀಪ್ತೌ) "ಇಣ್ಣುಚ್" (೩-೨-೧೩೬) | "ರೋಚಿಣ್ಣು-

ಕಾಚನಚಯಾಂಶುಪಿಶ್ಜಿತಾಶಾ ವಂಶಧ್ವಜೇರ್ಜಲದಸಂಹತಿಮುಲ್ಲಿ-ಖನ್ಯ:" ಮಾಘಂ ೪-೨೦ |

ರೋಚಿಸ್ ರೋಚಿಸ್ (ನಂ) ಪ್ರಭೆ, ಕಾಂತಿ, ಪ್ರಕಾಶ. ರುಚ (ದೀಪ್ತೌ) "ಇಸಿ:" (೩-೨-೧೦೮) | "ರಥಾಜ್ಞಾಪಾಣೇ: ಪಟಲೇನ ರೋಚಿಷಾಮೃಷಿತ್ವಿಷ: ಸಂವಲಿತಾ ವಿರೇಜಿರೆ" ಮಾಘಂ ೧-೨೧ |

ರೋಡಿಕಾ ರೋಡಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರೊಟ್ಟಿ, ಹಿಟ್ಟಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಿದ ಒಂದು ವಿಧ ಭಕ್ಷ್ಯ.

ರೋಡ ರೋಡ (ಪುಂ) 1. ಅರೆಯುವುದು, ಪುಡಿಮಾಡುವುದು. ರೋಡ (ಅನಾದರೇ) ಭಾವೇ "ಛತ್" (೩-೩-೧೮) | (ವಿಂ) 2. ತೃಪ್ತಿಹೊಂದಿದ, ಸಮಾಧಾನ ಹೊಂದಿದ. "ರೋಡ: ಕೋದೇ ಭವೇತ್ಪುಸಿ ತೃಪ್ತೇ ತು ವಾಚ್ಯಲಿಙ್ಗಕ:" ಮೇದಿಂ |

ರೋದನ ರೋದನ (ನಂ) ಅಳುವುದು. ರುದಿರ್ (ಅಶ್ರುವಿಮೋಚನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | "ದುರ್ಬಲಸ್ಯ ಬಲಂ ರಾಜಾ ಬಾಲಾನಾಂ ರೋದನಂ ಬಲಮ್ | ಬಲಂ ಮುಖಸ್ಯ ಮೌನಿತ್ವಂ ಚೋರಾಣಾ-ಮನುತಂ ಬಲಮ್" ಚಾಣಕ್ಯಂ | ಮೃತರಿಗಾಗಿ ಅತ್ತರೆ ಅವರಿಗೆ ನೆರಕಪ್ರಾಪ್ತಿಯಾಗುವುದು. "ಜ್ಞಾನಿನೋ ಮಾ ರುದನ್ತೇವ ಮಾ ರೋದಿ: ಪುತ್ರ ಸಾಂಪ್ರತಮ್ | ರೋದನಾಶ್ರುಪ್ರಪತನಾನ್ಮೃತಾನಾಂ ನರಕಂ ಧ್ರುವಮ್" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ |

ರೋದನಿಕಾ ರೋದನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೀಟಕಸಂಧಿ.

ರೋದನೀ ರೋದನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೀಟಕಸಂಧಿ.

ರೋದನೀಯ ರೋದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಅಳಬೇಕಾದ. 2. ಅಳಲು ಅರ್ಹವಾದ. ರುದಿರ್ (ಅಶ್ರುವಿಮೋಚನೇ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) | ರೋದಿತವ್ಯ: ರೋದಿತವ್ಯಃ.

ರೋದಸ್ ರೋದಸ್ (ನಂ) 1. ಸ್ವರ್ಗ. 2. ಭೂಮಿ. ರುದಿರ್ (ಅಶ್ರುವಿಮೋಚನೇ) "ಅಸುನ್" (೩-೪-೧೫೦) | 3. ಸ್ವರ್ಗ ಮತ್ತು ಭೂಮಿ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೪೧) | ರೋದಸೀ ರೋದಸೀ. "ರೋದೋರಂಭಂ ವ್ಯಶ್ನು-ವಾನಾನಿ ಲೋಲೇರಜ್ಜಸ್ಯಾನ್ತರ್ಮಾಪಿತೆ: ಸ್ಥಾವರಾಣಿ" ಮಾಘಂ ೧೮-೧೫ | "ರೋದಶ್ಚ ರೋದಸೀತಿ ಚ | ದಿವಿ ಭೂಮೌ ಪೃಥಕ್ ಚ ಸ್ಯಾತ್ ಸಹೋಕ್ತಯಾಪ್ಯೇತಯೋಸ್ತಥಾ" ಮೇದಿಂ |

ರೋದಸೀ ರೋದಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ರೋದಸ್" ನೋಡಿ. ರೋದಸೀ ಇತ್ಯವ್ಯಯಮಪಿ | "ರವ: ಶ್ರವಣಭೇರವ: ಸ್ಥಗಿತರೋದಸೀ-ಕಂದರ:" ವೇಣಿಂ ೨-೪ |

ರೋದಸ್ಯೌ ರೋದಸ್ಯೌ (ಸ್ತ್ರೀಂ ದ್ವಿಂ) ಸ್ವರ್ಗ ಮತ್ತು ಭೂಮಿ. "ಭೂದಾವೌ ರೋದಸ್ಯೌ ರೋದಸೀ ಚ ತೇ" ಅಮಂ |



**ರೋದ್ಯ ರೋದ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಲ್ಪಡುವ, ಅಡ್ಡಿಮಾಡಲ್ಪಡುವ. **ರಥಿರ್** (ಆವರಣ) "ತವ್ಯ:" (3-1-96)। 2. ಅವರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಸುತ್ತುವರಿಯಲ್ಪಡುವ. 3. ಮುತ್ತಿಗೆಹಾಕಲ್ಪಡುವ. 4. ತಡೆಯಬೇಕಾದ. 5. ಸುತ್ತುವರಿಯಬೇಕಾದ. 6. ಮುತ್ತಿಗೆಹಾಕಬೇಕಾದ. "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। **ರೋಧನೀಯ:** ರೋಧನೀಯಃ.

**ರೋದ್ಯ ರೋದ್ಯ** (ವಿಂ) ತಡೆಯುವವನು, ಅಡ್ಡಿಮಾಡುವವನು.

**ರೋಧ ರೋಧ** (ಪುಂ) 1. ತಡೆಯುವುದು, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವುದು. **ರಥಿರ್** (ಆವರಣ) ಭಾವೇ "ವ್ಯ" (3-3-18)। "ವಿತತಶೀಕರರಾಶಿಮಿಹಚ್ಚಿತ್ತೇಫಲರೋವಿವರ್ತಿಭಿರಮ್ಬುಮಿ:" ಕಿರಾಂ 4-15। 2. ಅವರಿಸುವಿಕೆ, ಸುತ್ತುವರಿಯುವಿಕೆ. "ಪ್ರೀತಿರೋಧಮಸಹಿಷ್ಠ ಸಾ ಪುರೀ ಸ್ತ್ರೀವ ಕಾಂತಪರಿಮೋಗ-ಮಾಯತಮ್" ರಘುಂ 11-42। 3. ತಡೆದುನಿಲ್ಲಿಸುವುದು. 4. ನದಿಯ ತೀರ, ಹೊಳೆಯ ದಡ. 5. ಶರ, ಬಾಣ. "ಚಿತ್ರಪುಷ್ಕೋ ವೀರಶತ್ರು: ಶರೋ ರೋಧ ಇವುನ್ ಷನ್" ವೈಜಂ।

**ರೋಧನ ರೋಧನ** (ನಂ) 1. ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವುದು. ತಡೆಯುವುದು, **ರಥಿರ್** (ಆವರಣ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ತಡೆದುನಿಲ್ಲಿಸುವುದು. 3. ಸುತ್ತುವರಿಯುವುದು. (ವಿಂ) 4. ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವವನು. 5. ತಡೆದುನಿಲ್ಲಿಸುವವನು. 6. ಮುತ್ತಿಗೆಹಾಕುವವನು. **ರಥಿರ್** ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (3-1-134)। (ಪುಂ) 7. ಬುಧಗ್ರಹ. "ಸ್ಯಾತ್ ಪಚ್ಚಾಚಿ: ಶ್ರವಿಷ್ಠಾಜಯಾಮಾ ಜ್ಞೇಕಾಜ್ಞೇರೋಧನಾ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ರೋಧನೀಯ ರೋಧನೀಯ** (ವಿಂ) "ರೋದ್ಯ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿರಿ.

**ರೋಧಸ್ ರೋಧಸ್** (ನಂ) ನದಿಯ ತೀರ, ಹೊಳೆಯ ದಡ. **ರಥಿರ್** (ಆವರಣ) "ಅಸುನ್" (3-4-189)। "उच्छृङ्खितान्यवृषभा: सरितां नदन्तो रोधांसि धीरमपचस्करिरे महोक्षा:" ಮಾಘಂ 4-63।

**ರೋಧಿನ್ ರೋಧಿನ್** (ವಿಂ) ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸುವವನು.

**ರೋಧೋವಕಾ ರೋಧೋವಕ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನದಿ, ಹೊಳೆ. ರೋಧಸಾ ವಕ್ರಾ। "नदी निर्झरिणी रोधोवक्रा सागर-गामिनी" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ರೋಧ್ರ ರೋಧ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಲೋಧ್ರವೃಕ್ಷ. (ನಂ) 2. ಅಪರಾಧ, ತಪ್ಪು. 3. ಪಾಪ. **ರೂಢ್ಯತೇನೇನ** — **ರಥಿರ್** (ಆವರಣ) "ನ್" ಬಾಹುಂ।

**ರೋಪ ರೋಪ** (ಪುಂ) 1. ಶರ, ಬಾಣ, ಅಂಚು. **ರೋಪ್ಯತೇ** — **ರೂಪ** (ವಿಮೋಹನೆ) + **ಗಿನ್** "ವ್ಯ" (3-3-19)। "एकीषै: समकालमभ्रमुदयी रोपैस्तदाऽऽतस्तरे" ಮಾಘಂ 19-120। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಿಸುವುದು, ಹತ್ತಿಸುವುದು. 3. ಬೀಜ ಬಿತ್ತುವುದು, ಬೀಜ ನೆಡುವುದು. **ರಹ** (ಬೀಜ-ಜನ್ಮಾದೌ) + **ಗಿನ್** "ವ್ಯ" (3-3-18)। (ನಂ) 4. ರಂಧ್ರ, ಬಿಲ್. "रोपी रोपणेषू रोपं रन्ध्रे" ಹೇಮಂ।

**ರೋಪಣ ರೋಪಣ** (ನಂ) 1. ಏರಿಸುವುದು, ಹತ್ತಿಸುವುದು. **ರಹ** (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) + **ಗಿನ್** "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। **ಹಸ್ಯ** ಪ: (3-3-43)। 2. ನೆಡುವುದು, ಗಿಡಗಳನ್ನು ನೆಟ್ಟು ಬೆಳೆಸುವುದು. 3. ಬತ್ತಿಸುವುದು, ಔಷಧಾದಿಗಳಿಂದ ವ್ರಣವನ್ನು ಒಣಗಿಸುವುದು, ಗಾಯವನ್ನು ವಾಸಿ ಮಾಡುವುದು. 4. ಅನ್ಯಥಾಜ್ಞಾನ, ಒಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು ಮತ್ತೊಂದು ವಸ್ತುವನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯುವುದು. (ವಿಂ) 5. ಏರಿಸುವವನು, ಹತ್ತಿಸುವವನು. 6. ಬಿತ್ತುವವನು, ಬಿತ್ತಿ ಬೆಳೆಸುವವನು. 7. ವ್ರಣವನ್ನು ಒಣಗಿಸುವವನು. 8. ಒಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು ಅನ್ಯಥಾ ತಿಳಿಯುವವನು.

**ರೋಪಿತ ರೋಪಿತ** (ವಿಂ) 1. ನೆಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಏರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹತ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಬೆಳೆಸಲ್ಪಟ್ಟ. **ರಹ** (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) + **ಗಿನ್** "ಕ್ತ:" (3-2-102)। **ಹಸ್ಯ** ಪ: (3-3-43)।

**ರೋಮಕ ರೋಮಕ** (ನಂ) ಪಾಂಸುಲವಣ.

**ರೋಮಕರ್ಣ ರೋಮಕರ್ಣ** (ಪುಂ) ಶಶ, ಮೊಲ. **ರೋಮಾಣಿ** ಕರ್ಣೇಷ್ಯ। "शशस्तु रोमकर्णः स्यान्मृदुरोमा च शूलिक:" ವೈಜಂ।

**ರೋಮಕೂಪ ರೋಮಕೂಪ** (ಪುಂ) (ಮೈಯಲ್ಲಿ) ಕೂದಲು ಹುಟ್ಟುವ ಗುಳಿ. **ರೋಮಾಂ ಕೂಪ** ಇವ।

**ರೋಮಗುತ್ಸ ರೋಮಗುತ್ಸ** (ಪುಂ) ಚಾಮರ. **ರೋಮಾಂ** ಗುತ್ಸ: ಸ್ತವಕ:। "चामरं रोमगुत्सं च केसरं चाव-चूलकम्" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ರೋಮಗುಚ್ಛಕ ರೋಮಗುಚ್ಛಕ** (ಪುಂ) ಚಾಮರ.

**ರೋಮನ್ ರೋಮನ್** (ನಂ) ಮೈಗೂದಲು, ಮೈಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ತುಂಡು ಕೂದಲು. **ಹ** (ಶಬ್ದ) "ಮನಿನ್" (3-4-140)। **ನಿಪಾಂ**। "अयुगेन सपदि प्रतिपेदे रोमभिश्च सममेव विभेद:" ಮಾಘಂ 10-63।

**ರೋಮನ್ಯ ರೋಮನ್ಯ** (ಪುಂ) ಮೆಲಕುಹಾಕುವುದು, ತಿಂದ ಆಹಾರವನ್ನು ಪುನಃ ಬಾಯಿಗೆ ಬರಮಾಡಿಕೊಂಡು



ಅಗಿಯುವುದು. ರೋಗಂ ಮಥ್ನಾತಿ—ಮನ್ಯ (ವಿಲೋಡನೆ)

“ಅನ್” (೩-೨-೧) | ಪೃಷೋಂ | “ಛಾಯಾಬದ್ಧಕದಂಬಕಂ ಮೃಗಕುಲಂ ರೋಮನ್ಯಮಸ್ಯಸ್ಯತು” ಶಾಕುಂ ೨-೬ |

**ರೋಮಭೂಮಿ ರೋಮಭೂಮಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೂದಲು ಹುಟ್ಟುವ ಸ್ಥಳ, ಚರ್ಮ. ರೋಮ್ಣಾಂ ಭೂಮಿರಿವ |

**ರೋಮರಂಧ್ರ ರೋಮರಂಧ್ರ** (ನಂ) ರೋಮಕೂಪ, ಕೂದಲು ಹುಟ್ಟುವ ಗುಳಿ. ರೋಮ್ಣಾಂ ರಂಧ್ರಮ್ |

**ರೋಮರಾಜಿ ರೋಮರಾಜಿ**, -ಲತಾ-ಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರೋಮಪುಷ್ಪ, ಕೂದಲಿನ ಸಾಲು. ರೋಮ್ಣಾಂ ರಾಜಿಃ ಲತೇವ ವಾ | “ಮದನರಸಮಹೌಘಪೂರ್ಣನಾಭಿಹೃದಪರಿವಾಹಿತರೋಮ-ರಾಜಯಸ್ತಾಃ” ಮಾಘಂ ೭-೨೩ |

**ರೋಮವತ್ ರೋಮವತ್** (ವಿಂ) ರೋಮಯುಕ್ತವಾದ, ಕೂದಲಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. ರೋಮಾಣಿ ಸಂತ್ಯಸ್ಯ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪) |

**ರೋಮವಿಕಾರ ರೋಮವಿಕಾರ** (ಪುಂ) ರೋಮಾಂಚ. ರೋಮ್ಣಾಂ ವಿಕಾರಃ |

**ರೋಮವಿಭೇದ ರೋಮವಿಭೇದ** (ಪುಂ) ರೋಮಾಂಚ, ಮೈ ಮುಳ್ಳು, ನಿಲುಗೂದಲು. ರೋಮ್ಣಾಂ ವಿಭೇದಃ | “ಮಾನಿನಿ-ಮಭಿಮುಖಾಹಿತಚಿತ್ತಾಂ ಶಂಸತಿ ಸ್ಮ ಧನರೋಮವಿಭೇದಃ” ಕಿರಾಂ ೯-೪೬ |

**ರೋಮಶ ರೋಮಶ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಷ, ಟಿಗರು. ರೋಮಾಣಿ ಸಂತ್ಯಸ್ಯ “ಶಃ” (೪-೨-೧೦೦) | “ಏಡಕೋಽಪ್ಯುರಣೋ ಮಿಥ ಉರಭೋ ರೋಮಶೋಽಪ್ಯವಿಃ” ವೈಜಂ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬೩) | -ಶೀ-ಶೀ. 2. ನಿಂಬವೃಕ್ಷ, ಬೇವಿನ ಮರ. “ನಿಂಬೇ ಪಾರ್ವತಕೇಡ್ಯದ್ವೇಷಿಣ್ಣದನಮಾಧಿಕಾಃ | ರೋಮಶಃ ಪಿಚುಮಂದಶ್ಚ” ವೈಜಂ | 3. ವರಾಹ, ಹಂದಿ. -ಶೀ-ಶೀ. ಹೆಣ್ಣು ಹಂದಿ. (ವಿಂ) 4. ಮೈಯಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಕೂದಲುಳ್ಳ, ವನು, ಹೆಚ್ಚು ಕೂದಲುಳ್ಳ ಪ್ರಾಣಿ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಙೀಪ್” | -ಶೀ-ಶೀ.

**ರೋಮಹರ್ಷ ರೋಮಹರ್ಷ** (ಪುಂ) ರೋಮಾಂಚ, ಮೈ ಮುಳ್ಳು, ನಿಲುಗೂದಲು. ರೋಮ್ಣಾಂ ಹರ್ಷ ಇವ | “ವೇಪಥುಶ್ಚ ಶರೀರೇ ಮೇ ರೋಮಹರ್ಷಶ್ಚ ಜಾಯತೇ” ಗೀತಾ ೧-೨೯ |

**ರೋಮಹರ್ಷಣ ರೋಮಹರ್ಷಣ** (ಪುಂ) 1. ತಾರೆಗಿಡ. ರೋಮಾಣಿ ಹರ್ಷಯತಿ—ಹೃಷ (ತುಷ್ಟಿ)+ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪) | (ನಂ) 2. ರೋಮಾಂಚ, ನಿಲುಗೂದಲು. ರೋಮ್ಣಾಂ ಹರ್ಷಣಮ್ | “ಸ್ಯಾದ್ರೋಮಹರ್ಷಣಾಖ್ಯಾ ತು ರೋಮೋದ್ರಮೇ ವಿಭಿತಕೇ” ಹೇಮಂ | (ವಿಂ) 3. ರೋಮಾಂಚವುಂಟುಮಾಡುವ. “ಸಂವಾದಮಿಮಮಶ್ರೌಷಮದ್ಭುತಂ ರೋಮಹರ್ಷಣಮ್” ಗೀತಾ ೧೮-೭೪ |

**ರೋಮಾಂಚ ರೋಮಾಂಚ** (ಪುಂ) ಮೈ ಮುಳ್ಳುಬರುವುದು, ನಿಲುಗೂದಲು. ರೋಮ್ಣಾಮಾಂಚನಮ್—ಅಂಚು (ಗತಿಪೂಜನಯೋಃ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮) | ಇದು ಎಂಟು ವಿಧ ಸಾತ್ತ್ವಿಕ ಭಾವಗಳಲ್ಲಿಯೊಂದು. “ಸ್ತಂಭಃ ಸ್ವೇದೋಽಥ ರೋಮಾಂಚಃ ಸ್ವರ-ಭಜ್ಞೋಽಥ ವೇಪಥುಃ | ವೈವರ್ಣ್ಯಮಶ್ರುಪ್ರಲಯಃ ಇತ್ಯಷ್ಟೌ ಸಾತ್ತ್ವಿಕಾಃ ಸ್ಮೃತಾಃ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೩೬ | ಸಂತೋಷ ಅಶ್ಚರ್ಯ ಭಯ ಮೊದಲಾದ ಕಃಠಿಣಗಳಿಂದ ರೋಮಾಂಚವುಂಟಾಗುವುದು. “ಹರ್ಷಾದ್ಭುತಭಯಾದಿಭ್ಯೋ ರೋಮಾಂಚೋ ರೋಮವಿಕ್ರಿಯಾ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೩೭ |

**ರೋಮಾಂಚಿತ ರೋಮಾಂಚಿತ** (ವಿಂ) ರೋಮಾಂಚವುಂಟಾಗಿರುವ, ನಿಲುಗೂದಲುಂಟಾಗಿರುವ. ರೋಮಾಂಚಃ ಸಂಜಾತೋಽಸ್ಯ “ಇತಚ್” (೪-೨-೩೬) | “ರೋಮಾಂಚಿತಾಙ್ಗಿಮನು ತತ್ಕಡಾಕ್ಷೇ ಭ್ರಾಂತೀನ ಕಾಂತೀನ ರತೀನಿರ್ದಿಷ್ಟಃ” ನೈಷಂ ೬-೨೩ |

**ರೋಮಾಲಿ ರೋಮಾಲಿ**, -ಆವಲಿ-ಆವಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರೋಮಪುಷ್ಪ, ಹೊಕ್ಕಳಿನ ಮೇಲಿನ ಕೂದಲಿನ ಸಾಲು. ರೋಮ್ಣಾಮಾಲಿಃ ಆವಲಿರ್ವಾ—ವಾ “ಙೀಪ್” (ಗಂ ೪-೧-೪೫) | ಆವಲಿ ಆವಲಿ. “ಲೋಭಯತಿ ತವ ತನುದರೀ ಜಘನತಲಾ-ದ್ವುಪರೀ ರೋಮಾಲಿ” | “ರೋಮಾಲೀರಂಜುರೋಜಕುಮ್ಮಿ” ನೈಷಂ ೭-೮೪ |

**ರೋಮೋದ್ರ ರೋಮೋದ್ರ**, -ಉದ್ರ-ಉದ್ರ (ಪುಂ) ರೋಮಾಂಚ. ರೋಮ್ಣಾಮೋದ್ರಗಮಃ ಉದ್ರೇದೋ ವಾ | “ರೋಮೋದ್ರಗಮಃ ಪ್ರಾದುರಭೂದುಮಾಯಾಃ ಸ್ವಿನ್ನಾಙ್ಗುಲಿಃ ಪುಂಗವ-ಕೇತುರಾಸೀತ್” ಕುಮಾರಂ ೭-೭೭ |

**ರೋಮಲಂಬ ರೋಮಲಂಬ** (ಪುಂ) ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ರೋತಿ—ಕ (ಶಬ್ದೇ) “ವಿಚ್” | ರೋಃ ಕೂಜನ್ ಸನ್ ಲಂಬತೇ—ಲಬಿ (ಅವಸಂಸನೇ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) | “ಭರಮರಶ್ಚಾಶ್ವರೀಕಃ ಸ್ಯಾದ್ರೋಮಲಂಬೋ ಮಧುಸೂದನಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ರೋಷ ರೋಷ** (ಪುಂ) ಕ್ರೋಧ, ಕೋಪ, ಸಿಟ್ಟು. ಕೃಷ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಘ್” (೩-೩-೧೮) | “ಆದ್ರಂತಾಂ ಹೃದಯಮಾಪ-ಚ ರೋಷೋ ಲೋಲತಿ ಸ್ಮ ವಚನೇಷು ವಧೂನಾಮ್” ಮಾಘಂ ೧೦-೩೬ |

**ರೋಷಣ ರೋಷಣ** (ಪುಂ) 1. ಒರೆಗಲ್ಲು, ಚಿನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿಗಳನ್ನು ಉಜ್ಜಿ ಬಣ್ಣ ನೋಡುವ ಕಲ್ಲು. 2. ಪಾದರಸ. 3. ಉಪರ ಭೂಮಿ, ಕರಳು ಭೂಮಿ. (ನಂ) 4. ಕೋಪವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವುದು. ಕೃಷ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) | (ವಿಂ) 5. ಕೋಪವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಕೃಷ “ಯುಚ್” (೩-೨-೧೫೧) | 6. ಕೋಪ ವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಕೃಷ ಕರಂ “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪) |



ರೋಷಣೀಯ ರೋಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಕೋಪವುಂಟು ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಕೋಪವುಂಟುಮಾಡಬೇಕಾದ. ಣ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। "ತವ್ಯ:" (3-1-96)। ರೋಷಿತವ್ಯ: ರೋಷಿತವ್ಯಃ. ಇಹಭಾವೇ ರೋಷಿತವ್ಯ: ರೋಷಿತವ್ಯಃ.

ರೋಷಿತ ರೋಷಿತ (ವಿಂ) ಕೋಪವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಣ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

ರೋಹ ರೋಹ (ಪುಂ) 1. ಅಚ್ಚುರ, ಮೊಳಕೆ. ರೂ (ಬೀಜ-ಜನ್ಮಾದೌ) "ಅಚ್" (3-1-134)। "ಅಗ್ನಿ: ಸ್ತೋಕೋ ವರ್ಧತೇಽಪ್ಯಾಜ್ಯಸಿಕ್ತೋ ಬೀಜಂ ಚೈಕಂ ರೋಹಸಾಹಸ್ರಮೇತಿ। ಆಯ-ವ್ಯಯೌ ವಿಪುಲೌ ಸನ್ನಿಶಾಮ್ಯ ತಸ್ಮಾದಲ್ಪಂ ನಾವಮನ್ಯೇತ ವಿಸ್ತಮ್" ಭಾಂ ಶಾಂತಿ 120-38। 2. ಬೆಳೆಯುವುದು, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುವುದು. 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರುವುದು, ಹತ್ತುವುದು. ರೂ ಭಾವೇ "ಘಜ್" (3-3-18)। (ವಿಂ) 4. ಬೆಳೆಯುವ, ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವ. 5. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರುವ, ಹತ್ತುವ.

ರೋಹಣ ರೋಹಣ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಪರ್ವತ. ರೋಹಣ್ಯಸ್ಮಿನ್ — ರೂ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-117)। (ನಂ) 2. ಹತ್ತುವುದು. 3. ಬೆಳೆಯುವುದು, ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುವುದು. ರೂ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-117)। (ವಿಂ) 4. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತುವ. 5. ಬೆಳೆಯುವ, ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುವ.

ರೋಹಂತ ರೋಹಂತ (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಂತಿ-ಃ. 2. ಲತೆ. ಬಳ್ಳಿ.

ರೋಹಿ ರೋಹಿ (ಪುಂ) 1. ಧಾರ್ಮಿಕ ಮನುಷ್ಯ. 2. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. 3. ಬೀಜ. 4. ಜೊಕೆ, ಹರಿಣ, ಹುಲ್ಲೆ. ರೂ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಇನ್" (3-4-118)।

ರೋಹಿಣಿ ರೋಹಿಣಿ (ಪುಂ) 1. ವಟುವು, ಆಲದಮರ. 2. ಮುಳ್ಳು, ಮುತ್ತಗದ ಮರ. 3. ಶಾಲ್ಮಲಿದ್ವೀಪದ ಒಂದು ಪರ್ವತ.

ರೋಹಿಣಿ ರೋಹಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರೋಹಿಣೀದೇವಿ, ವಸುದೇವನ ಪತ್ನಿ, ಬಲರಾಮನ ತಾಯಿ. 2. ಆಕಳು, ಕೆಂಪು ಹಸು. ರೋಹಿತ "ಜಿಪ್" ನಕಾರಾದೇಶಶ್ಚ (4-1-39)। "ವರ್ಧಿಣ್ಯಧಾರಾಶ್ವನಿ ರೋಹಿಣಿ: ಪೃಥ್ವೀರಂ ನಿರ್ದಯೌ ದುಹಿತ: ಸ ಗೋದುಹ:" ಮಾಘಂ 12-40। 3. ರೋಹಿಣೀ ನಕ್ಷತ್ರ. 27 ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ 4ನೆಯದು. 4. ಮಿಂಚು. 5. ಕಟುಕ ರೋಹಿಣಿ. 6. ಒಂಬತ್ತು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನ ಕನ್ಯೆ. "ಅಷ್ಟವರ್ಷಾ ಭವೇತ್ಕನ್ಯಾ ನವವರ್ಷಾ ಚ ರೋಹಿಣಿ"। 7. ಒಂದು

ಎಳೆ ಕಂಠರೋಗ. 8. ಬಿಳಿ ಕಣ್ಣು ಮರ. "ರೋಹಿಣಿ ಕಂಠರೋಗಿಭಿಃ"। ತಟಿಕಾಡಮ್ಮರಾಸೋಮವಲ್ಕೇಷು ಲೋಹಿತಾಗವಾ: "ಮೇದಿಂ"। 9. ಅಳಲೆ ಗಿಡ. 10. ಆಕಳು, ಹಸು. 11. ಪಾರ್ವತಿ. "ರೋಹಿಣಿ ರೋಹಿತಾ ಪಥ್ಯಾ ಕನ್ಯೋಮಾಕಡುರೋಹಿಣಿ। ಗೌಸ್ತಾರಾ ಕಂಠರೋಗಶ್ಚ" ನಾನಾರ್ಥಂ।

ರೋಹಿಣಿಶ ರೋಹಿಣೀಶ, —ಪತಿ —ಪತಿ (ಪುಂ) 1. ರೋಹಿಣೀದೇವಿಯ ಪತಿಯಾದ ವಸುದೇವ. ರೋಹಿಣ್ಯಾ: ಇಶ: ಪತಿರ್ವಾ। 2. ಚಂದ್ರ.

ರೋಹಿಣಿಜಾನಿ ರೋಹಿಣೀಜಾನಿ (ಪುಂ) 1. ವಸುದೇವ. 2. ಚಂದ್ರ. ರೋಹಿಣಿ ಜಾಯಾ ಯಸ್ಯ — ಜಾಯಾಯಾ ನಿಜಾದೇಶ: (4-4-134)।

ರೋಹಿಣಿತನಯ ರೋಹಿಣೀತನಯ, —ಸುತ —ಸುತ, —ಸುನು —ಸೂನು (ಪುಂ) 1. ಬಲರಾಮ. 2. ಬುಧಗ್ರಹ.

ರೋಹಿಣ್ಯಷ್ಠಮಿ ರೋಹಿಣ್ಯಷ್ಠಮೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರೋಹಿಣೀ ನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಭಾದ್ರಪದ ಕೃಷ್ಣಾಷ್ಠಮಿ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ ಜನ್ಮಾಷ್ಠಮಿ.

ರೋಹಿತ್ ರೋಹಿತ್ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ರೋಹಿತಿ — ರೂ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಇತಿ:" (3-1-97)। 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮತ್ಸ್ಯ, —ಮೀನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಹೆಣ್ಣು ಜೊಕೆ. 4. ಒಂದು ಲತೆ. (ವಿಂ) 5. ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ. "ರೋಹಿಮೃಗ್ಯಾ ಲತಾಭೇದೇ ಸ್ತ್ರೀ ನಾಕೆ ಲಲಿತಂ ತ್ರಿಪು" ಮೇದಿಂ।

ರೋಹಿತ ರೋಹಿತ (ಪುಂ) 1. ಕೆಂಪುಬಣ್ಣ. ರೋಹಿತಿ — ರೂ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಇತನ್" (3-3-94)। "ಲೋಹಿತೋ ರೋಹಿತೋ ರಕ್ತ:" ಅಮಂ। 2. ಜೊಕೆ, ಚಿಗರಿ, ಹುಲ್ಲೆ. "ಗೋಕರ್ಣಪೃಷ್ಠತೇರ್ಣಯರೋಹಿತಾ:" ಅಮಂ। 3. ರಕ್ತಮತ್ಸ್ಯ. ಕೆಂಪು ಮೀನು. ಈ ಮೀನಿನ ಹೊಟ್ಟೆ ಮುಖ ಕಣ್ಣು ಮತ್ತು ರೆಕ್ಕೆಗಳು ಕೆಂಪುಗೂ ಮತ್ತು ರೆಕ್ಕೆಗಳು ತೆಳು ವಾಗಿಯೂ ಇರುವವು. "ರಕ್ತೋದರೋ ರಕ್ತಮುಖೋ ರಕ್ತಾಕ್ಷೋ ರಕ್ತಪಕ್ಷಿತಿ:" ರಕ್ತಪಕ್ಷಿ ಷಷ್ಠಶ್ಚ ರೋಹಿತ: ಕಥಿತೋ ಬುಧ:" ಭಾವಪ್ರಂ। 4. ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರ ಮಹಾರಾಜನ ಮಗ. 5. ಮುಳ್ಳುಮುತ್ತಗದ ಮರ. "ರೋಹಿತೇ ರೋಹಿಣಿ ರೋಹಿ ರಕ್ತೋ ರೋಹಿತಕೋಽಪಿ ಚ" ವೈಜಂ। 6. ಜಂಬುಕ, ನರಿ. (ನಂ) 7. ರಕ್ತ, ನೆತ್ತರು. 8. ನೆಟ್ಟಗಿರುವ ಇಂದ್ರ ಧನುಸ್ಸು. "ರೋಹಿತಮೃಗುಶಕ್ರಾಸ್ತ್ರೇ ರಕ್ತೇ ನಾ ಮೃಗಮೀನಯಾ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 9. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. "ರೋಹಿತಂ ಕುಂಕುಮೇ ರಕ್ತೇ ಶ್ರುಜುಶಕ್ರಶರಾಸನೇ। ಪುಂಸಿ ಸ್ಯಾನ್ಮೀನಮೃಗಯೋರ್ದೇ ರೋಹಿತಕ-ದ್ರುಮೇ" ಮೇದಿಂ।



ರೋಹಿತಕ ರೋಹಿತಕ (ಪುಂ) ಮುಳ್ಳುಮುತ್ತುಗದ ಮರ.  
ರೋಹಿತ "ಕನ್" (೪-೩-೨೫)।

ರೋಹಿತಾಶ್ವ ರೋಹಿತಾಶ್ವ (ಪುಂ) 1. ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರ ಮಹಾ  
ರಾಜನ ಮಗ. 2. ಅಶ್ವ, ಬಿಳಿ. "ರೋಹಿತಾಶ್ವಶ್ಚಿತ್ರಮಾನೋ  
ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರನಾತ್ಮಜೇ" ಮೇದಿಂ।

ರೋಹಿನ್ ರೋಹಿನ್ (ಪುಂ) 1. ರೋಹಿತಕವೃಕ್ಷ, ಮುಳ್ಳು  
ಮುತ್ತುಗದ ಮರ. 2. ಮಟವೃಕ್ಷ, ಅಲದ ಮರ.  
3. ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿ ಮರ. "ರೋಹಿ ರೋಹಿತಕೇಶ್ವತೇ  
ವಟೇ" ಹೇಮಂ। (ವಿಂ) 4. ಹತ್ತುವ, ಏರುವ. 5. ಬೆಳೆ  
ಯುವ, ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವ.

ರೋಹಿಷ ರೋಹಿಷ (ಪುಂ) 1. ಜಿಂಕೆ, ಹುಲ್ಲೆ. 2. ಕಾಚಿ  
ಹುಲ್ಲು, ಗಣಕೆಹುಲ್ಲು. 3. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. "ಅಥ  
ರೋಹಿಷಃ। ಮೃಗಕರ್ತೃಣಮತ್ಸ್ಯೇಷು" ಹೇಮಂ।

ರೋಹಿಮ ರೋಹಿಮ (ವಿಂ) 1. ಸುವರ್ಣ ಸಂಬಂಧವಾದ. ರುಕ್ಮ-  
ಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೨೨೦)। 2. ಸುವರ್ಣದಿಂದ  
ತಯ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುವರ್ಣದ ವಿಕಾರ. ರುಕ್ಮಸ್ಯ ವಿಕಾರಃ  
"ಅನ್" (೪-೩-೨೫೪)। "ರೋಹಿಮಾ ರೇಜುಃ ಸ್ಥಾಪಕಾ  
ಮೃತಿಭಾಜಃ" ಮಾಘಂ ೧೮-೫।

ರೋಹಿಮಣೇಯ ರೋಹಿಮಣೇಯ (ಪುಂ) ರುಕ್ಮಿಣಿಯ ಪುತ್ರ  
ಪ್ರದ್ಯುಮ್ನ. ರುಕ್ಮಿಣ್ಯಾಃ ಅಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೨೨೦)।

ರೋಹಿಮ ರೋಹಿಮ (ನಂ) 1. ಪಾರುಷ್ಯ, ಕಾಠಿನ್ಯ, ಗಟ್ಟಿ  
ಯಾಗಿರುವಿಕೆ. ರುಕ್ಮಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಽಽನ್" (೪-೧-೨೨೪)।  
2. ಒರಟಾಗಿರುವಿಕೆ, ನಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ದಯೆಯಿಲ್ಲ  
ದಿರುವಿಕೆ, ಕ್ರೂರತನ. "ತಸ್ಮಾದ್ರುಪಚ್ಛಂದಯತಿ ಪ್ರಯೋಜ್ಯ  
ಮಯಿ ತ್ವಯಾ ನ ಪ್ರತಿಬೇಧರೋಹಿಮ್" ರಘುಂ ೫-೫೮।

ರೋಹಿ ರೋಹಿ (ಪುಂ) 1. ಶೃಂಗಾರ ಮೊದಲಾದ ಅಪ್ಪ (ನವ?)  
ರಸಗಳಲ್ಲೊಂದು. ರೋಹಿರಸಕ್ಕೆ ಕ್ರೋಧವು ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ.  
ರಕ್ತವರ್ಣ. ರುದ್ರಾಧಿದೇವತಾಕವಾದುದು ರೋಹಿರಸ.  
ಶತ್ರುವು ಅಲಂಬನ ವಿಭಾವ. ಶತ್ರುವಿನ ಕ್ರೂರವಾದ  
ವ್ಯಾಪಾರವು ಉದ್ದೀಪನ ವಿಭಾವ. ಭೂಭಂಗ ಭುಜಾ  
ಸ್ಥಾಲನ ಅತ್ಯಪ್ರಶಂಸೆ ರೋಮಾಂಚ ಸ್ವೇದ ಮುಂತಾ  
ದುವು ಅನುಭಾವಗಳು. ಮೋಹ ಅವಮರ್ಷ ಕ್ರೂರದೃಷ್ಟಿ  
ಮುಂತಾದುವು ವ್ಯಭಿಚಾರಿ ಭಾವಗಳು. ರುಕ್ಮಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್"

(೪-೩-೨೨೦)। "ರೋಹಿಃ ಕ್ರೋವಸ್ಯಾಪಿಭಾವೋ ರಕ್ತೋ ರುಧ್ರಾಧಿ-  
ದೇವತಃ। ಆಲಂಬನಮರಿಸ್ತತ್ರ ತಚ್ಚೇಷ್ಟೋದ್ದೀಪನಂ ಮತಮ್।  
ಭೂವಿಭಜ್ಞಿಷ್ಠನಿರ್ದೇಶಬಾಹುಸ್ಕೊಡನತರ್ಜನಾಃ। ಆತ್ಮಾವದಾನ-  
ಕಥನಮಾಯುಧೋತ್ಸೇಪಣಾನಿ ಚ। ಉಗ್ರತಾವೇಗರೋಮಾಶ್ವೇದವೇಪಥವೋ  
ಮದಃ। ಅನುಭಾವಾಸ್ತಥಾಕ್ಷೇಪಕೂರಸುಂದರ್ಶನಾದಯಃ। ಮೋಹಮರ್ಷಿ-  
ದಯಸ್ತತ್ರ ಭಾವಾಃಸ್ಯುಭ್ಯಂಭಿಚಾರಿಣಃ" ಸಾಂ ೧೦ ೩-೨೨೭-೩೧।  
(ನಂ) 2. ಅಶ್ವ, ಬಿಳಿ. "ಅಥಾತಪೋ ರೋಹಿಮಿಡಮ್"  
ವೈಜಂ। 3. ಕ್ರೂರ್ಯ. 4. ಭಯಂಕರವಾಗಿರುವಿಕೆ.  
(ವಿಂ) 5. ಉಗ್ರವಾದ, ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ, ಬಿರುಸಾದ.  
6. ಭಯಂಕರವಾದ. 7. ತೀವ್ರವಾದ. 8. ರುದ್ರ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರೋ-ದ್ರೀ. ಪಾರ್ವತಿ,  
ಗೌರಿ. "ರೋಹಿ ಭೀಷ್ಮೇ ರಸೇ ತೀವ್ರೇ ರೋಹಿ ಗೌರಿಯಮ್"  
ಹೇಮಂ।

ರೋಹಿ ರೋಹಿ (ನಂ) ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ. ರೂಪ್ಯಮ್ ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಅನ್"  
(೪-೪-೩೮)।

ರೋಹಿ ರೋಹಿ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ನರಕ, ತಾಮ್ರ ಮೊದ  
ಲಾದ ಇಷ್ಟತ್ವಂಟು ನರಕಗಳಲ್ಲೊಂದು. [ವಿವರಕ್ಕೆ  
"ನರಕ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. (ವಿಂ) 2. ಭಯಂಕರ  
ವಾದ. "ರೋಹಿ ಭೀಷ್ಮೇ ನರಕಾಂತರೇ" ಹೇಮಂ।  
3. ಜಿಂಕೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ರೂಃ ಮೃಗಸ್ಯ ಇದಮ್ "ಅನ್"  
(೪-೩-೨೨೦)।

ರೋಹಿ ರೋಹಿ (ಪುಂ) 1. ಚಂದನವೃಕ್ಷ, ಗುಧದ ಮರ.  
2. ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿ ಮರ.

ರೋಹಿಣೇಯ ರೋಹಿಣೇಯ (ಪುಂ) 1. ಬಲರಾಮ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ  
ಅಜ್ಜ. ರೋಹಿಣ್ಯಾಃ ಅಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೨೨೦)।  
"ಯಾ ರೇವತೀಜಾನಿರೀಷ ಹಾತು ನ ರೋಹಿಣೇಯೋ ನ ಚ ರೋಹಿಣಿಶಃ"  
ಮಾಘಂ ೩-೬೦। 2. ಬಂಧಗ್ರಹ. 3. ವತ್ಸ, ಕರು.  
"ವತ್ಸೇ ವಲೇ ವುಧೇ ರೋಹಿಣೇಯಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। (ನಂ) 4.  
ಮರಕತಮಣಿ.

ರೋಹಿ ರೋಹಿ (ಪುಂ) 1. ಜಿಂಕೆ, ಬಿಳಿ, ಹುಲ್ಲೆ. ರೋಹಿ  
ಕರ್ತೃಣಮತಿ—"ಅನ್" (೪-೨-೯೧)। (ನಂ) 2. ಕಾಚಿ  
ಹುಲ್ಲು, ಕೆಂಪು ಗಣಕೆಹುಲ್ಲು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರೋ-ಹೀ.  
3. ಹೆಣ್ಣು ಜಿಂಕೆ. 4. ಲತೆ, ಬಳ್ಳಿ. 5. ಒಂದು ಜಾತಿಯ  
ಗರಿಕೆ ಹುಲ್ಲು.

ಇತಿ "ರೋಹಿ" ವಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್।



ಲ

ಲ ಲ ಇದು ಅವರ್ಗೀಯವ್ಯಂಜನಗಳಲ್ಲಿ ಮೂರನೆಯ ವರ್ಣ. ಇದು ದನ್ತ ಮೂಲದಲ್ಲಿ ಬಾಹ್ಯ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಅಂತಃಸ್ಥ ಅಲ್ಪಪ್ರಾಣ ವರ್ಣ. "ಲೃತುಲಸಾನಾಂ ದಂತಾಃ" | "ಪ್ರಥಮತೃತೀಯಮೌ ಯರಲವಾಶ್ಚ ಅಲ್ಪಪ್ರಾಣಾಃ" | "ಯರಲವಾ ಅಂತಃಸ್ಥಾಃ" ಸಿಂ ಕೌಂ |

ಲ ಲ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. 2. ದೀಪ್ತಿ, ಪ್ರಕಾಶ. 3. ಭೂಮಿ. 4. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. 5. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 6. ಶ್ಲೇಷ. 7. ಲವಣ, ಉಪ್ಪು. 8. ಪ್ರಳಯ. 9. ಭಯ. 10. ಆಶ್ರಯ, ಅಭಿಪ್ರಾಯ. 11. ಸಾಧನ. 12. ಮನಸ್ಸು. 13. ವರಾಣ. 14. ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸುವುದು. 15. ಆಹ್ಲಾದನ, ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವುದು. "ಲೋ ದೀಪ್ತೌ ಛಾಂ ಲಶ್ಚ ಭೂಮೌ ಭಯೇ ಚಾಹ್ಲಾದನೇಷಿ ಚ | ಲೋ ವಾತೇ ಲವಣೇ ಚ ಸ್ಯಾಲ್ಲೋ ದಾನೇ ಚ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ | ಲಃಶ್ಲೇಷೇ ಚಾಶ್ರಯೇ ಚೈವ ಪ್ರಲಯೇ ಸಾಧನೇಷಿ ಲಃ | ಮಾನಸೇ ವರುಣೇ ಚೈವ ಲಕಾರಃ ಸಾಂತ್ವನೇಷಿ ಚ" ಏಕಾಂ | 16. (ಭಂದಃಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಲಘು ವರ್ಣ. 17. (ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಲಕಾರ. ಲಡ್ ಲಿಡ್ ಲುಡ್ ಲೃಡ್ ಲೌಡ್ ಲಙ್ ಆಶೀಲಿಡ್ ವಿಧಿಲಿಡ್ ಲುಡ್ ಲೃಡ್ ಇವು ಲಕಾರಗಳು. "ಲಃ ಕರ್ಮಣಿ ಚ ಭಾವೇ ಚಾಕರ್ಮಕೇಭ್ಯಃ" ಪಾಂ ಸುಂ ೩-೪-೬೯ | 18. ಚಂದ್ರ.

ಲಕುಚ ಲಕುಚ (ಪುಂ) 1. ಗಜನಿಂಬೆ ಗಿಡ. ಲಕುಚೇ—ಲಕ (ಆಸ್ವಾದನೇ) "ಉಚಃ" ಬಾಹ್ಯಂ | (ನಂ) 2. ಗಜನಿಂಬೆ ಹೆಣ್ಣು.

ಲಕ್ತಕ ಲಕ್ತಕ (ಪುಂ) ಯಾವಕ, ಅರಗು, ಲಾಕ್ಷ. ರಕ್ತೇನ ರಕ್ತವರ್ಣೇನ ಕಾಯತಿ—ಕೈ (ಶಬ್ದೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) |

ಲಕ್ಷ ಲಕ್ಷ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ನೂರು ಸಾವಿರ, ಒಂದು ಲಕ್ಷ, ಒಂದು ಸಾವಿರ ನೂರು. ಲಕ್ಷಯತಿ—ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನಾಕ್ಷನಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಲಕ್ಷಃ ಕವಣತ್ಕಾಚ್ಚನಕಿಕ್ಷಿಣಿಕ್ವಲೇರಮಜ್ಜಿ ಧೂಲಿಜಲವೌ ನಮೋಗತೇ" ಕುಮಾಂ ೧೪-೪೬ | (ನಂ) 2. ಲಕ್ಷ್ಮಿ, ಗುರಿ. ಲಕ್ಷಯತಿ—ಲಕ್ಷ (ಆಲೋಚನೇ) "ಛಬ್" (೩-೩-೧೯) | 3. ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು. 4. ವ್ಯಾಜ, ನೆಪ. "ಲಕ್ಷಂ ಛಬಿನಿ ವಿಖ್ಯಾತಂ ಲಕ್ಷಂ ಸಂಖ್ಯಾಶರವ್ಯಯೋಃ" ವಿಶ್ವಂ | "ಸಂಖ್ಯಾಯಾಂ ತು ನ ನಾ ಲಕ್ಷಂ ಕಲಿಬ್ ವ್ಯಾಜಶರವ್ಯಯೋಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಲಕ್ಷಕ ಲಕ್ಷಕ (ಪುಂ) 1. ಲಕ್ಷಣಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಅರ್ಥವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಬ್ದ. ಲಕ್ಷಯತಿ—ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನಾಕ್ಷನಯೋಃ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | ["ಲಕ್ಷಣಾ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

2. ಒಂದು ನೂರು ಸಾವಿರ, ಒಂದು ಲಕ್ಷ. (ವಿಂ) 3. ತೋರಿಸುವ, ಸೂಚಿಸುವ.

ಲಕ್ಷಣ ಲಕ್ಷಣ (ಪುಂ) 1. ಲಕ್ಷಣ, ಶ್ರೀರಾಮನ ತಮ್ಮ, ಸುಮಿತ್ರೆಯ ಮಗ. "ಲಕ್ಷಣಸ್ತು ಸೌಮಿತ್ರೌ ಲಕ್ಷ್ಮಣೋ ಯಥಾ" ಹೇಮಂ | (ನಂ) 2. ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು. ಲಕ್ಷಯತಿ—ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನಾಕ್ಷನಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ನಃ" ಅಡಾಗಮಶ್ಚ (೩ಂ ೩-೭) | ಲಕ್ಷಯತೇನ—ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" ವಾ | "ವಘ್ದುಕೂಲಂ ಕಲಹಂಸ ಲಕ್ಷಣಂ ಗಜಾಜಿನಂ ಶೋಣಿತಬಿಂದುವರ್ಷಿ ಚ" ಕುಮಾಂ ೪-೬೭ | 3. ಸೂಚನೆ. "ಅವ್ಯಾಕ್ರೋಧೋ ಭವಿಷ್ಯತ್ಯಾಃ ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧೇಹಿ ಲಕ್ಷಣಮ್" ರಘುಂ ೧೦-೬ | 4. ಸ್ವರೂಪ ವಿವರಣೆ, ಗುಣ ನಿರೂಪಣೆ. "ಉಪಕಾರಾಪಕಾರಿ ಹಿ ಲಕ್ಷ್ಯಂ ಲಕ್ಷಣಮೇತಯೋಃ" ಮಾಘಂ ೨-೩೭ | 5. ಹೆಸರು, ನಾಮಧೇಯ. "ತೇಷಾಂ ದಿಕ್ಷು ಪ್ರಥಿತವಿದಿಶಾಲಕ್ಷಣಾಂ ರಾಜಧಾನೀಮ್" ಮೇಘಂ ೧-೨೪ | 6. ಮುದ್ರೆ, ಮೊಹರು. 7. ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ, ಮೇಲ್ಮೈ, ಗುಣೋತ್ಕರ್ಷ. "ಇಕ್ಷ್ವಾಕುಂಭಯಃ ಕಕ್ರುದ್ ನೃಪಾಣಾಂ ಕಾಕುತ್ಸ್ಥ ಇತ್ಯಾಹಿತಲಕ್ಷಣೋಽಭೂತ್" ರಘುಂ ೬-೭೧ | 8. ತೆರಿಗೆಯ ದರ, ಸುಂಕದ ದರ, ನಿಗದಿಯಾದ ಸುಂಕ. "ನದೀತೀರೇಷು ತದ್ವಿಚಾರಾತ್ ಸಮುದ್ರೇ ನಾಸ್ತಿ ಲಕ್ಷಣಮ್" ಮನುಂ ೮-೪೦೬ | 9. ದರ್ಶನ, ನೋಟ. 10. ಅಸಾಧಾರಣ ಧರ್ಮ, ಇತರ ವ್ಯಾವರ್ತಕ ಧರ್ಮ. ಇದು ಸ್ವರೂಪಲಕ್ಷಣ ಮತ್ತು ತಟಸ್ಥಲಕ್ಷಣಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. "ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತಾದಾನಂದೋ ಬ್ರಹ್ಮ" "ಚೋದನಾಲಕ್ಷಣೋಽರ್ಥೋ ಭರ್ಮಃ" ಇಲ್ಲಿ ಸ್ವರೂಪ ಲಕ್ಷಣ. "ಪತಾಕಾವತ್ ದೇವದತ್ತಗೃಹಮ್" "ಗಂಧವತೀ ಪೃಥಿವೀ" ಇಲ್ಲಿ ತಟಸ್ಥಲಕ್ಷಣ. 11. ಆಲೋಚನೆ. 12. ಪ್ರತಿ ಪಾದ್ಯವಾದ ವಿಷಯ.

ಲಕ್ಷಣಾ ಲಕ್ಷಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ತಾವರೆ ಹಕ್ಕಿ, ಹೆಣ್ಣು ಸಾರಸ ಪಕ್ಷಿ. 2. ಒಂದು ವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯುಕ್ತವಾದ ಪದಕ್ಕೆ ಆ ವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯಾರ್ಥವು ಬಾಧಿತವಾಗಿ ಮುಖ್ಯಾರ್ಥದ ಶಕ್ತಿಸಂಬಂಧದಿಂದ ಬೇರೊಂದು ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಶಕ್ತಿ. ಮುಖ್ಯಾರ್ಥಸಂಬಂಧ ಹೊಂದುವುದರಿಂದ ರೂಢಿ ಅಥವಾ ಯಾವುದಾದರೊಂದು ಪ್ರಯೋಜನವಿರಬೇಕು. "ಗಜ್ಜಾಃ ಕೋಟಿಃ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪ್ರವಾಹರೂಪವಾದ ಗಂಗೆಯಲ್ಲಿ ಘೋಷ (ಆಭೀರಪಲ್ಲಿ) ವಿರುವುದು ಅಸಂಭವವಾಗಿ ಗಜ್ಜಾ ಪದಕ್ಕೆ ಗಂಗಾತೀರವೆಂಬ ಅರ್ಥವು ಲಕ್ಷಣಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ತೋರುವುದು. ಈ ರೀತಿ ಮುಖ್ಯಾರ್ಥಸಂಬಂಧದಿಂದ ಗಂಗಾತೀರದಲ್ಲಿ ಶೈತ್ಯ



ಮತ್ತು ಪಾವನತ್ವರೂಪವಾದ ಪ್ರಯೋಜನ ಲಭಿಸು ವುದು. ಆದುದರಿಂದ ಗಾಙ್ಗಾ ಪದಕ್ಕೆ ಗಂಗಾತೀರದಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷಣ. "ಮುಖ್ಯಾರ್ಥವಾಚಿ ತದ್ಭವತೋ ಯಾನ್ಯಾರ್ಥಃ ಪ್ರತೀಯತೇ | ಕೃತಃ ಪ್ರಯೋಜನಾಪ್ತೌ ಲಕ್ಷಣಾ ಶಕ್ತಿರಪಿತಾ" ಸಾಂ ದಂ ೨-೪ | ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನಾಕ್ಷನಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭) | ಈ ಲಕ್ಷಣಯು ಅನೇಕ ವಿಧವಾಗಿರು ವುದು. [ಕಾವ್ಯಪ್ರಕಾಶ ಮತ್ತು ಸಾಹಿತ್ಯದರ್ಪಣ ನೋಡಿ].

**ಲಕ್ಷಾ ಲಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀನಂ) ಒಂದು ಲಕ್ಷ, ಒಂದು ನೂರು ಸಾವಿರ, ಒಂದು ಸಾವಿರ ನೂರು. ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನಾಕ್ಷನಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಏಪ್" | "ಲಕ್ಷಾ ನ ಪುಂಸಿ ಸಂಖ್ಯಾಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ |

**ಲಕ್ಷಿತ ಲಕ್ಷಿತ** (ವಿಂ) 1. ಲಕ್ಷಣಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ತಿಳಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟ ಅರ್ಥ. ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನಾಕ್ಷನಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಗಾಙ್ಗಾಯಾಂ ಛೋಃ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಗಂಗಾ ತೀರ ರೂಪವಾದ ಅರ್ಥವು ಲಕ್ಷಣಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಉಂಟಾ ದುದರಿಂದ ಈ ಅರ್ಥವು ಲಕ್ಷಿತ. 2. ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ದ್ರುತಸಮೀರಚಲಃ ಕ್ಷಣಲಕ್ಷಿತವ್ಯವಹಿತಾ ವಿಡಪೇರಿವ ಮಂಜರಿ" ಮಾಘಂ ೬-೨೮ | 3. ಆಲೋಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಲಕ್ಷ (ಆಲೋಚನೇ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

**ಲಕ್ಷಿತಲಕ್ಷಣಾ ಲಕ್ಷಿತಲಕ್ಷಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲಕ್ಷಿತ ಪದದ ತಕ್ಕಸಂಬಂಧದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ (ಲಕ್ಷಣ) ಅರ್ಥ. ಲಕ್ಷಿತಸ್ಯ ಪದಸ್ಯ ಲಕ್ಷಣಾ | "ದ್ವಿರೇಫ" ಪದದಿಂದ ಎರಡು ರೇಫಗಳುಳ್ಳ ಭ್ರಮರಪದಕ್ಕೆ ಲಕ್ಷಣಾ. ಈ ಲಕ್ಷಣೆಯಿಂದ ಭ್ರಮರರೂಪವಾದ ಅರ್ಥಕ್ಕೆ ಲಕ್ಷಣಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಬೋಧವುಂಟಾಗುವುದು. ಆದುದರಿಂದ "ದ್ವಿರೇಫ" ಪದಕ್ಕೆ ಭ್ರಮರದಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷಿತಲಕ್ಷಣೆಯೆಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕು.

**ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಲಕ್ಷ್ಮಣ** (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀರಾಮನ ಅನುಜ (ತಮ್ಮ), ದಶರಥನ ಪತ್ನಿ ಸುಮಿತ್ರೆಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಪುತ್ರ. ಲಕ್ಷ್ಮಣಮಸ್ಯಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) | ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ಶ್ರೀರಾಮನಲ್ಲಿ ಬಾಲ್ಯದಿಂದಲೂ ಭಕ್ತಿವಿಶ್ವಾಸಗಳಿಂದ ಇದ್ದು ಅವನ ಎಲ್ಲಾ ಕಷ್ಟ ಸುಖಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಭಾಗಿಯಾಗಿ ದ್ದನು. ಶ್ರೀರಾಮನು ಸೀತಾದೇವಿಯನ್ನು ಮದುವೆ ಯಾದಾಗ ಲಕ್ಷ್ಮಣನೂ ಉರ್ಮಿಳೆಯನ್ನು ಮದುವೆ ಯಾದನು. ಇವನಿಗೆ ಅಗದ ಮತ್ತು ಚಂದ್ರಕೇತುಗಳೆಂಬ ಇಬ್ಬರು ಪುತ್ರರು. ಶ್ರೀರಾಮನ ಹದಿನಾಲ್ಕು ವರ್ಷಗಳ ವನವಾಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ತಾನೂ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿದ್ದು ಶ್ರೀರಾಮ ಮತ್ತು ಸೀತಾದೇವಿಯವರ ಚರಣಸೇವೆಯಲ್ಲಿ ನಿರತ ನಾಗಿದ್ದನು. ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಶೂರ್ಪಣಖೆಯ ಕರ್ಣನಾಸಾ ಜ್ಞೇದನಮಾಡಿದನಂತರ ರಾವಣನಿಂದ ಸೀತೆಯು

ಅಪಹರಿಸಲ್ಪಡಲು ಶ್ರೀರಾಮನೊಡನೆ ಲಂಕೆಗೆ ತೆರಳಿ ಅನೇಕ ರಾಕ್ಷಸರನ್ನೂ ಸುಹರಿಸಿದನು. ಬಹಳ ಪರಾಕ್ರಮಿ ಯೆನಿಸಿದ ಇಂದ್ರಜಿತ್ತಿನ ನಾಗಪಾಶಪ್ರಯೋಗದಿಂದ ಮೂರ್ಛಿತನಾಗಿ ಅಂಜನೇಯನು ತಂದ ಸಂಜೀವನ ಮೂಲಿಕೆಗಳಿಂದ ಬದುಕಿದನು. ಇಂದ್ರಜಿತ್ತಿನ ವಧೆಯು ಹದಿನಾಲ್ಕು ವರ್ಷಗಳ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯೆಯಲ್ಲಿದ್ದವನಿಂದ ಆಗಬೇಕೆಂಬ ಬ್ರಹ್ಮನ ವರದಂತೆ ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ಈ ಹದಿನಾಲ್ಕು ವರ್ಷಗಳಕಾಲ ನಿದ್ರಾಹಾರಗಳಿಲ್ಲದೆ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯೆಯಲ್ಲಿದ್ದು ನಿಕುಂಬಿಳಾಯಾಗಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಇಂದ್ರಜಿತ್ತನ್ನು ಸುಹರಿಸಿದನು. ರಾವಣನ ಸಂಹಾರಾ ನಂತರ ಸೀತಾರಾಮರೊಡನೆ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ತೆರಳಿ ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ ಶುಭ ಸಮಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಭಾಗವಹಿಸಿ ಸದಾ ಶ್ರೀರಾಮನ ಸೇವೆಯಲ್ಲಿ ನಿರತ ನಾಗಿದ್ದನು. 2. ತಾವರೆಹಕ್ಕಿ, ಸಾರಸಪಕ್ಷಿ, ಹಂಸದ ಒಂದು ಭೇದ. -ಗಾ-ಣಾ. ಹೆಣ್ಣು ತಾವರೆಹಕ್ಕಿ. (ನಂ) 3. ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು. (ವಿಂ) 4. ಶುಭ ಚಿಹ್ನೆಯುಳ್ಳ.

**ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಲಕ್ಷ್ಮಣ** (ನಂ) 1. ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು. ಲಕ್ಷಯತೇ— ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) "ಮನಿನ್" (೩ಂ ೪-೧೪೫) | "ಪ್ರತಿದಿಶಂ ಲವಗಾಧಿಪಲಕ್ಷಮಣಾ ವಿಶಿಖಸಂಹಿತಾಪಿತಮೂರ್ತಿಮಿಃ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೬೪ | 2. ಕಲೆ, ಚಿಹ್ನೆ, ಬೊಟ್ಟು. "ಮಲ್ಲಿನ- ಮಪಿ ಹಿಮಾಂಶೋಲಕ್ಷಮ ಲಕ್ಷ್ಮಿಂ ತನೋತಿ" ಶಾಕುಂ ೧-೧೭ | 3. ಪ್ರಧಾನ, ಮುಖ್ಯ. ಲಕ್ಷಯತೇನೇನ — ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) "ಮನಿನ್" (೩ಂ ೪-೧೪೫) | "ಲಕ್ಷಮ ಚಿಹ್ನಪ್ರಧಾನಯೋಃ" ಅಮಂ | (ವಿಂ) 4. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ. "ಲಕ್ಷಮ ಚಿಹ್ನವರಿಣಯೋಃ" ವೈಜಂ |

**ಲಕ್ಷ್ಮಿ ಲಕ್ಷ್ಮಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿಷ್ಣುವಿನ ಪತ್ನಿ, ಜಗನ್ಮಾತೆ. ಲಕ್ಷಯತಿ ಪಶ್ಯತಿ ನೇತಿಶಮ್ — ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನಾಕ್ಷನಯೋಃ) "ಕ್ಷಿಃ" ಮುಡ್ ಚ (೩ಂ ೩-೧೬೦) | ದೇವದಾನವರು ಅಮೃತಕ್ಕಾಗಿ ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರವನ್ನು ಮಥನಮಾಡಿದಾಗ ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿಯು ಆವಿರ್ಭವಿಸಿ ವಿಷ್ಣುವಿನ ಪಾಣಿಗ್ರಹಣ ಮಾಡಿದಳು. ದುರ್ವಾಸಮಹರ್ಷಿಯ ಶಾಪದಿಂದ ಇಂದ್ರನು ರಾಜ್ಯಭ್ರಷ್ಟನಾಗಲು ಲಕ್ಷ್ಮಿಯು ಸ್ವರ್ಗವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿ ವೈಕುಂಠವನ್ನು ಸೇರಿದಳು. ಆಗ ಪರಮದುಃಖಾ ಕ್ರಾಂತರಾದ ದೇವತೆಗಳೆಲ್ಲರೂ ಚತುರ್ಮುಖ ಬ್ರಹ್ಮ ನನ್ನು ಪುರಸ್ಕರಿಸಿ ವೈಕುಂಠದಲ್ಲಿ ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು ಶರಣು ಹೊಂದಿದರು. ಪರಮದಯಾಳುವಾದ ವಿಷ್ಣುವಿನ ಆಜ್ಞೆಯಂತೆ ದೇವತೆಗಳು ಅಮೃತಕ್ಕಾಗಿ ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರವನ್ನು ಮಥಿಸಲು ಮಹೇಂದ್ರನ ಸಂಪತ್ಸ್ವರೂಪಿನಿಯಾದ



ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿಯು ಅಲ್ಲಿ ಅವಿರ್ಭವಿಸಿ ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ವರವನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದಳು. ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿಯ ವರವನ್ನು ಪಡೆದು ದೇವತೆಗಳು ಅಸುರರನ್ನು ಜಯಿಸಿ ಮತ್ತೆ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಪಡೆದರು.

**ಲಕ್ಷ್ಮಿಯ ಅನುಗ್ರಹಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರರು:** ಶೀಘ್ರಭೋಜಿಯೂ ಚಿರಸ್ನಾಯಿಯೂ ಪುಷ್ಪವನ್ನು (ಮೂಗಿನಿಂದ) ಆಘ್ರಾಣಮಾಡುವವನೂ ನಗ್ನಸ್ತ್ರೀಯನ್ನು ನೋಡದಿರುವವನೂ ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿಯ ಅನುಗ್ರಹಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರನಾಗುವನು. "ಚಿರಂ ಸ್ನಾತಿ ದ್ರುತಂ ಮುಕ್ತೇ ಪುಷ್ಪಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ನ ಜಿಗ್ರತಿ | ಯೋ ನ ಪಶ್ಯೇತ್ ಸ್ತ್ರೀಯಂ ನಗ್ನಾಂ ನಿಯತಂ ಸ ಚ ಮೇ ಪ್ರಿಯಃ" ||

ಧರ್ಮಶೀಲನೂ ಇಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹವುಳ್ಳವನೂ ವಿದ್ಯೆಯಿಂದ ವಿನೀತನೂ ಇತರರನ್ನು ಹಿಂಸಿಸದವನೂ ಗರ್ವವಿಲ್ಲದವನೂ ಜನಾನುರಾಗ ಸಂಪಾದಿಸಿದವನೂ ಅವ ಪುರುಷನಲ್ಲಿ ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿಯ ಕೃಪೆಯು ಉಂಟಾಗುವುದು. "ಯೋ ಧರ್ಮಶೀಲೋ ವಿಜಿತೇಂದ್ರಿಯಶ್ಚ ವಿಶ್ವಾವಿನೀತೋ ನ ಪರೋಪತಾಪಿ | ಅಗರ್ವಿತೋ ಯಶ್ಚ ಜನಾನುರಾಗೀ ತಸ್ಮಿನ್ ಸದಾಹಂ ಪುರುಷೇ ವಸಾಮಿ" |

(1) ಶಿರಸ್ಸನ್ನು (ಸ್ನಾನದಿಂದ) ಶುಚಿಯಾಗಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವುದು. (2) ಪಾದಗಳನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತೊಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. (3) ಉತ್ತಮಸ್ತ್ರೀಸಹವಾಸವು. (4) ಅಲ್ಪಭೋಜನ. (5) ವಸ್ತ್ರವನ್ನುಟ್ಟು ಮಲಗುವುದು ಮತ್ತು (6) ಪರ್ವಕಾಲ ಬಿಟ್ಟು ಸ್ತ್ರೀಸಂಗಮ ಇವು ಆರೂ ನಷ್ಟವಾದ ಐಶ್ವರ್ಯವನ್ನು ಮತ್ತೆ ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಡುವುವು. "ಶಿರಃ ಸುಧೌತಂ ಚರಣೌ ಸುಮಾರ್ಜಿತೌ ವರಾಜ್ಞನಾಸೇವನಮಲ್ಪ-ಸೌಜನಮ್ | ಅನಗ್ನಶಾಯಿತವಮವಮೇಶುನಂ ಚಿರಪ್ರಣಟಾಂ ಶ್ರಿಯ-ಮಾನಯಂತಿ ಷಟ್" || 2. ಐಶ್ವರ್ಯ, ಸಂಪತ್ತು, ಭಾಗ್ಯ. "ಅಚಿರಾಂಶುವಿಲಾಸಚ್ಚಲಾ ನನು ಲಕ್ಷ್ಮಿಃ ಫಲಮಾನುಷಜ್ಞಿಕಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೧೯ | 3. ಕಾಂತಿ, ಸೊಬಗು, ಸೌಂದರ್ಯ. "ಸರಸಿಜಮನುವಿಧ್ವಂಸೇವಲೇನಾಪಿ ರಮ್ಯಂ ಮಲಿನಮಪಿ ಹಿಮಾಂಶೋ-ಲಕ್ಷ್ಮಿ ಲಕ್ಷ್ಮಿಂ ತನೋತಿ" ಶಾಕುಂ ೧-೨೦ | 4. ಲವಂಗ. "ಲಕ್ಷ್ಮೀರಿವ ಲವಣ್ಣೇಶ್ರೀಃ ಪದ್ಮಾಃ ಕಾಂತಿಸಂಪದೋಃ" ವೈಜಂ | 5. ಒಂಬತ್ತು ವಿಧ ವಿಷ್ಣು ಶಕ್ತಿಗಳೆಲ್ಲವೂ. "ಆಚಾರಾ ವೈಷ್ಣವೀ ಸೂಕ್ಷ್ಮಾ ಲಕ್ಷ್ಮಿಃ ಪುಷ್ಪಿಣಿರಂಜಿತಾ | ಜೀವನಿ ಮೋಹಿನಿ ಮಾಯಾ ನವೇತಾ ವಿಷ್ಣುಶಕ್ತಯಃ" ವೈಜಂ | 6. ಕರಿಗೆಜ್ಜುಗದ ಗಿಡ. 7. ಮದ್ದಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಔಷಧ. "ಲಕ್ಷ್ಮಿಃ ಸಂಪತ್ತಿಶೋಭಯೋಃ | ಋದ್ಧೌಷಧೇ ಚ ಪದ್ಮಾಃ ವೃದ್ಧಿನಾಮೌಷಧೇಷು ಚ | ಫಲಿನ್ಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ | 8. ವೈಭವ. "ಅಖಿಲವಿಬುಧಚಮುನಾಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ಲಕ್ಷ್ಮೀಮನುನಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೧೩-೫೧ |

**ಲಕ್ಷ್ಮೀಕಾಂತ ಲಕ್ಷ್ಮೀಕಾಂತ, -ಪತಿ -ಪತಿ, -ರಮಣ -ರಮಣ (ಪುಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣು.** ಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾಃ ಕಾಂತಃ ಪತಿಃ ರಮಣೋ ವಾ |

**ಲಕ್ಷ್ಮೀಗೃಹ ಲಕ್ಷ್ಮೀಗೃಹ (ನಂ) ಲಕ್ಷ್ಮಿಗೆ ವಾಸಸ್ಥಾನವಾದ ಉತ್ಪಲ.** ಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾಃ ಗೃಹಮ್ ವಾಸಸ್ಥಾನಮ್ |

**ಲಕ್ಷ್ಮೀಜನಾರ್ದನ ಲಕ್ಷ್ಮೀಜನಾರ್ದನ (ಪುಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ.**

**ಲಕ್ಷ್ಮೀನಾಥ ಲಕ್ಷ್ಮೀನಾಥ (ಪುಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣು.** ಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾಃ ನಾಥಃ |

**ಲಕ್ಷ್ಮೀಪತಿ ಲಕ್ಷ್ಮೀಪತಿ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. 2. ರಾಜ, ದೊರೆ.** ಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾಃ ಪತಿಃ | "ವಿಹಾಯ ಲಕ್ಷ್ಮೀಪತಿ-ಲಕ್ಷ್ಮಿ ಕಾಮುಕಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೪೪ | "ಲಕ್ಷ್ಮೀಪತಿಃ ಪುಮಾನ್ ವಾಸುದೇವೇ ನರಪತಾವಪಿ" ಮೇದಿಂ |

**ಲಕ್ಷ್ಮೀಪುತ್ರ ಲಕ್ಷ್ಮೀಪುತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. 2. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. 3. ಲವ ಮತ್ತು ಕುಶ.** ಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾಃ ಪುತ್ರಃ |

**ಲಕ್ಷ್ಮೀಫಲ ಲಕ್ಷ್ಮೀಫಲ (ಪುಂ) ಬಿಲ್ವಪತ್ರ, ಮರ, ಬಿಲ್ವ ವೃಕ್ಷ.** ಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾಃ ಸ್ತನಜಂ ಫಲಂ ಯಸ್ಯ |

**ಲಕ್ಷ್ಮೀವತ್ ಲಕ್ಷ್ಮೀವತ್ (ಪುಂ) 1. ಕತಕದ ಬೀಜ, ನೀರನ್ನು ತಿಳಿಯಾಗಿಮಾಡುವ ಚಿಲ್ಲದ ಬೀಜ.** ಲಕ್ಷ್ಮಿಃ ಶೋಭಾಸ್ತಸ್ಯ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪) | 2. ಮಹಾ ವಿಷ್ಣು. "ಸರ್ವಲಕ್ಷಣಲಕ್ಷ್ಯೋ ಲಕ್ಷ್ಮೀವಾನ್ ಸಮಿತಿಂಜಯಃ" ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 3. ಅವ್ಯಷ್ಟಶಾಲಿ, ಭಾಗ್ಯವಂತ, ಪುಣ್ಯವಂತ. 4. ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ. 5. ಸೌಂದರ್ಯವಾದ, ಲಕ್ಷಣವಾದ, ಕಾಂತಿಯುಕ್ತವಾದ. ಲಕ್ಷ್ಮೀರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" | "ಲಕ್ಷ್ಮೀವಾನ್ ಸರಸಿ ರರಾಜ ಕೇಶಹಸ್ತಃ" ಮಾಘಂ ೮-೨೭ | 6. ಜಯಲಕ್ಷ್ಮಿಯೊಡನೆ ಕೂಡಿದ. "ಲಕ್ಷ್ಮೀವತಃ ಕ್ಷಿತಿಪತೇಸ್ತನಯಸ್ಯ ಬಿರ್ಮಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೪-೫೩ |

**ಲಕ್ಷ್ಮೀವೇಷ್ಠ ಲಕ್ಷ್ಮೀವೇಷ್ಠ (ಪುಂ) ಸರಳವೃಕ್ಷದ ಹಾಲು ಮಡ್ಡಿ.** ಲಕ್ಷ್ಮೀಯುಕ್ತೋ ವೇಷ್ಠಃ |

**ಲಕ್ಷ್ಯ ಲಕ್ಷ್ಯ (ನಂ) 1. ಉದ್ದೇಶ, ಗುರಿ.** ಲಕ್ಷ್ಯತೇ—ಲಕ್ಷ (ಆಲೋಚನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೯೭) | "ಉತ್ಕರ್ಷಃ ಸ ಚ ಧನ್ವಿನಾಂ ಯದಿಷವಃ ಸಿದ್ಧಯಂತಿ ಲಕ್ಷ್ಯೇ ಚಲೇ" ಶಾಕುಂ ೨-೫ | 2. ವ್ಯಾಜ, ನೆಪ. ಲಕ್ಷ "ಪ್ರತ್" (೩-೧-೧೨೪) | "ರೋಮಾಂಶುಲಕ್ಷ್ಯೇಣ ಸ ಗಾತ್ರಯಶ್ಚಿತಿ ಮಿತ್ವಾ ನಿರಾಕಾಮದರಾಲ-ಕೇಶ್ಯಾಃ" ರಘುಂ ೬-೮೧ | "ಲಕ್ಷ್ಯಂ ಸ್ವಾಧ್ಯಾಪದೇಶೋಽಪಿ ಶರಣ್ಯೋಽಪಿ ನಪುಂಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ | 3. ಉದಾಹರಣೆ, ಲಕ್ಷಣದ ಸಮನ್ವಯ ಸ್ಥಳ. "ಅಲಕ್ಷ್ಯಾಣು ಬಾಲಾನಾಮವಗಾಹನಸಿದ್ಧಯೇ |



ಲಲಿತ: ಕ್ರಿಯತೇ ತೇಷಾಂ ಲಕ್ಷ್ಯಲಕ್ಷಣಸಂಗ್ರಹ: " ಚಂದ್ರಾಂ ।

4. ಲಕ್ಷಣವೃತ್ತಿಯಿಂದ ತಿಳಿಯುವ ಅರ್ಥ. (ವಿಂ)

5. ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗುವ, ನೋಡಬಹುದಾದ.

"ದೂರಾಲಕ್ಷ್ಯಂ ಸುರಪತಿಫನುಷ್ಠಾಣಾಂ ತೋರಣಂ" ಮೇಘಂ ೨-೧೨ ।

6. ತಿಳಿಯಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ, ತಿಳಿಯಬಹುದಾದ. "ಯಮಾ-

ಮನನ್ಯಾತ್ಮಮುಖೋಽಪಿ ಕಾರಣಂ ಕಥಂ ಸ ಲಕ್ಷ್ಯಪ್ರಭವೋ ಭವಿಷ್ಯತಿ"

ಕುಮಾರಂ ೪-೮೧ । 7. ಉಚಿತವಾದ, ಶಕ್ಯವಾದ. "ಪ್ರವೇಷ-

ಮಾನಾಧರಲಕ್ಷ್ಯಕೋಪಯಾ" ಕುಮಾರಂ ೪-೭೪ ।

**ಲಕ್ಷ್ಯಭೇದ ಲಕ್ಷ್ಯಭೇದ** (ಪುಂ) ಗುರಿಯಿಟ್ಟು ಹೊಡೆಯುವುದು.

ಲಕ್ಷ್ಯಸ್ಯ ಭೇದ: । "ಸಹ ಪೂರ್ವತರಂ ನು ಚಿತ್ತವೃತ್ತೇ-

ಪತಿತ್ವಾ ನು ಚಕಾರ ಲಕ್ಷ್ಯಭೇದಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೩-೨೭ ।

**ಲಕ್ಷ್ಯಮಾಣ ಲಕ್ಷ್ಯಮಾಣ** (ವಿಂ) ಕಾಣುತ್ತಿರುವ, ದೃಷ್ಟಿಗೆ

ಗೋಚರವಾಗುತ್ತಿರುವ. ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) "ಶಾನಮ್"

(೩-೨-೧೨೪) । "ಸ್ವಸ್ತಾವಗುಣಪಟಾ: ಕ್ಷಣಲಕ್ಷ್ಯಮಾಣ-

ವಕ್ತೃಶ್ರಿಯ: ಸಮಯಕೌತುಕಮೀಕ್ಷತೇ ಸ್ಮ" ಮಾಘಂ ೪-೧೭ ।

**ಲಕ್ಷಣ ಲಕ್ಷಣ** (ನಂ) 1. ಸಂದರವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ.

"ಲಕ್ಷಣಂ ಮದ್ರಕಂ ನ್ಯುಕ್ತಂ ಲಡಹಂ ಚಾರು ಬನ್ಧುರ:"

ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 2. ಇರುವ, ಮಧುರವಾದ.

**ಲಗನ ಲಗನ** (ನಂ) ಸೇರುವುದು, ಸಂಬಂಧಹೊಂದುವುದು.

ಲಗೇ (ಸಜ್ಜೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) ।

**ಲಗಿತ ಲಗಿತ** (ನಂ) 1. ಸೇರುವುದು, ಸಂಬಂಧಹೊಂದುವುದು.

ಲಗೇ (ಸಜ್ಜೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) ।

(ವಿಂ) 2. ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಬಂಧವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಲಗೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೦೨) ।

**ಲಗುಡ ಲಗುಡ** (ಪುಂ) ಕೋಲು, ದಂಡ, ದೊಣ್ಣೆ. ಲಗೇ

(ಸಜ್ಜೆ) "ಉಡು" ಬಾಹುಂ । "ಅಲಗುಪ್ರಯೋಜನಕೃತೋತ್ತರಪ್ರಯಾಸೇ-

ಹದ್ಗುಣಲೋಪಲಗುಡೇ: ಪರಿತೋಜ್ಞವಿಧಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೨೪ ।

**ಲಗನ ಲಗ್ನ** (ನಂ) 1. ಮೇಷ ವೃಷಭ ಮೊದಲಾದ ರಾಶಿ

ಗಳ ಉದಯ. ಲಗತಿ ಫಲೇ — ಲಗೇ (ಸಜ್ಜೆ) "ಕ್ತ:"

(೭-೨-೧೮) । ನಿಗಾಂ । ಒಂದು ದಿನದ ಹಗಲು ಮತ್ತು

ರಾತ್ರಿಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಹನ್ನೆರಡು ರಾಶಿಗಳು ಉದಯಿಸುವುವು.

ಪೂರ್ವಾರ್ಧ ಸಂಬಂಧವೇ ಉದಯ. ಈ ಸಂಬಂಧದಿಂದ

ಲಗ್ನವೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. "ರಾಶೀನಾಮುದಯೋ ಲಗ್ನಂ ತೇ

ತು ಮೇವವಾದಯ:" ಅಮಂ । "ಲಗ್ನೇ ಕರ್ಕಟಕೇ ಪುನರ್ವಸುಯುತೇ

ಮೇಷಂ ಗತೇ ಪೂರ್ಣಿ" ಚಂ ರಾಂ ।

**ದ್ವಾದಶ (12) ಲಗ್ನಗಳು:** (1) ಮೇಷ. (2)

ವೃಷಭ. (3) ಮಿಥುನ (4) ಕರ್ಕಟಕ (5) ಸಿಂಹ

(6) ಕನ್ಯಾ (7) ತುಲಾ (8) ವೃಶ್ಚಿಕ (9) ಧನಸ್ಸು

(10) ಮಕರ (11) ಕುಂಭ ಮತ್ತು (12) ಮೀನ (ಪುಂ)

2. ಸ್ತುತಿಪಾಠಕ, ಹೊಗಳಿಕೆ. "ಲಗ್ನಾ: ಪ್ರಾತರ್ಗೇಯಾ:

ಸ್ತುತಿಪಾಠಾ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 3. ಮದಿಸಿದ ಅನೆ. "ಲಗ್ನೋ

ಮದಕಲೋ ಮತ: ಪ್ರಭಿವೃದ್ಧಿಃ ನಿರ್ಮದ:" ವೈಜಂ । (ವಿಂ) 4.

ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಸಂಬಂಧಹೊಂದಿರುವ. "ಲಗ್ನದ್ವಿರೇಕಾ-

ಽಜನಭಕ್ತಿಚಿತ್ರಂ ಮುಖೇ ಮಬುಶ್ರೀಸ್ತಿಕಂ ಪ್ರಕಾಶಮ್" ಕುಮಾರಂ

೩-೩೦ । 5. ಲಜ್ಜಿತ, ನಾಚಿಕೆಗೊಂಡ. ಅಲಸಜ್ಜಿ (ಬ್ರಿಡಾ-

ಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" । ತಸ್ಯ ನ: (೮-೨-೪೪) । ಜಸ್ಯ ಗ: ।

ನಿಪಾಂ । "ಲಗ್ನಂ ರಾಶ್ಯುದಯೇ ಕಲೀಬಂ ಸಕ್ತಲಜ್ಜಿತಯೋಸ್ತ್ರಿಪು"

ಮೇದಿಂ ।

**ಲಗನಕ ಲಗ್ನಕ** (ಪುಂ) ಜಾಮೀನುದಾರ, ಹೊಣೆಗಾರ.

ಲಜ್ಯತೇ ಸ್ಮ — ಅಲಸಜ್ಜಿ (ಬ್ರಿಡಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:"

(೩-೪-೭೨) । ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಕ್ತ:" (೪-೪-೪) । "ಸ್ಯುಲಗನಕಾ:

ಪ್ರತಿಭುವ:" ಅಮಂ ।

**ಲಗ್ನಿಕಾ ಲಗ್ನಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮತುಮತಿಯಾದ ಕನ್ಯೆ.

**ಲಘಿ ಲಘಿ** (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಲಘಿ (ಗತೀ)

"ಅಡಿ:" (೩ಂ ೧-೧೩೨) ।

**ಲಘಯತ್ ಲಘಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಲಘುವಾಗಿ ಮಾಡು

ತ್ತಿರುವ, ಹಗುರವಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಲಘಿ (ಗತೀ) +

ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ತಿರಸ್ಕರಿಸುತ್ತಿರುವ,

ತುಚ್ಛವಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. "ಲಘಯನ್ ಕ್ಷಲು ತೇಜಸಾ

ಜಗತ್ಸ ಮಹಾನಿಚ್ಛತಿ ಭೂತಿಮನ್ಯತ:" ಕಿರಾಂ ೨-೧೮ ।

3. ಲಘುವಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಕೆಳಮಟ್ಟದ್ದಾಗಿ ಮಾಡು

ತ್ತಿರುವ. "ಸಮುದಿತಂ ನಿವೇಶನೇ ತದಿತ್ವತೀಂ ಲಘಯತಾ

ಶರದ್ಭುದಸಂಹತಿಮ್" ಕಿರಾಂ ೪-೪ ।

**ಲಘಿಮನ್ ಲಘಿಮನ್** (ಪುಂ) 1. ಲಘುವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಹಗುರ

ವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಲಘಿಭಾವ: — ಲಘು "ಫಮನಿಕ್" (೪-೧-೧೨೨) ।

"ಛಾತ್ವಾ ಹವಿರ್ಗಂಧಿ ರಜೋವಿಮುಕ್ತ: ಸಮಸ್ತುತೇ ಮೇ ಲಘಿಮಾನ-

ಮಾತಮಾ" ಋಷಿಂ ೧೩-೩೭ । 2. ಪರಮೇಶ್ವರನ ಅಷ್ಟ

ವಿಧ ಐಶ್ವರ್ಯಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಅಣಿಮಾ ಮಹಿಮಾ ಚೈವ

ಗರಿಮಾ ಲಘಿಮಾ ತಥಾ । ಪ್ರಾಪ್ತಿ: ಪ್ರಾಕಾಮ್ಯಮೀಶಿತ್ವಂ ವಶಿತ್ವಂ

ಚಾಷ್ಟಭೂತಯ:" ಅಮಂ । 3. ಕೀಳುತನ, ತುಚ್ಛಭಾವ.

"ಮಾನುಷತಾಸುಲಭೋ ಲಘಿಮಾ ಮಾಂ ಪ್ರಶನಕರ್ಮಣಿ ನಿಯೋಜಯತಿ"

ಕಾದಂ । 4. ಸಣ್ಣದಾಗಿರುವಿಕೆ, ಚಿಕ್ಕದಾಗಿರುವಿಕೆ. 5.

ಸೂತನ, ಕೆಳಮಟ್ಟದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ. "ಯದಿ ಮಯಿ ಲಘಿಮಾನ-

ಮಾಗತಾಯಾಮ್" ಮಾಘಂ ೭-೧೪ ।

**ಲಘಿಠ ಲಘಿಠ** (ವಿಂ) 1. ಎಲ್ಲಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬಹಳ ಹಗುರ

ವಾದ. ಅಯಮೇತೇಪಾಮತಿಶಯೇನ ಲಘು: — ಲಘು "ಫಮನಿಕ್"



(೪-೩-೫೫) 1. ಎಲ್ಲರಿಗಿಂತಲೂ ಕೆಳವಟ್ಟುದು, ಎಲ್ಲ ಕಿಂತಲೂ ತುಚ್ಛವಾದ. 3. ಬಹಳ ಚಿಕ್ಕದಾದ, ಸಣ್ಣದಾದ.

ಲಘೀಯಸ್ ಲಘೀಯಾಸ್ (ವಿಂ) 1. ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಬಹಳ ನಿಕ್ಕಷ್ಟನಾದ ಒಬ್ಬ, ಗೌರವವಿಲ್ಲದ, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಲ್ಲದ. ಅಯಮನಯೋರತೀತೇನ ಲಘು:—ಲಘು "ಇಯಸುನ್" (೧-೩-೫೫) 1. "ತತ್ತ್ವೇರ್ಭವತಿ ಲಘೀಯಸಾ ಹಿ ಧಾಟ್ಯಮ್" ಮಾಘಂ ೮-೬೦ 1. 2. ಎರಡರಲ್ಲಿ ಬಹಳ ಹಗುರವಾದ ಒಂದು. 3. ಬಹಳ ಚಿಕ್ಕದಾದ, —ಸಣ್ಣದಾದ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ತೀಪ್" (೪-೧-೬): —ಯಸೀ —ಯಸೀ.

ಲಘು ಲಘು (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾಣಿಯಾದ ಒಂದು ಭೇದ. ಪ್ರಾಣಿಯಾದವು ಲಘು ಮಧ್ಯ ಮತ್ತು ಉತ್ತಮ ಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. "ಲಘುಮಂಯೋತರೀಶಾಖ್ಯ: ಪ್ರಾಣಾ-ಯಾಮಸ್ತ್ರಿಧೋದಿತ:" 1. "ಲಘುರ್ದಿಶಮಾತ್ರಸ್ತು ದ್ವಿಗುಣ: ಸ ತು ಮಂಯಮ: 1. ತ್ರಿಗುಣಾಭಿಸ್ತು ಮಾತ್ರಾಭಿರುತ್ತಮ: ಪರಿಕೀರ್ತित:" 1. (ನಂ) 2. ಅಶ್ವಿನಿ ಪುಷ್ಯ ಮತ್ತು ಹಸ್ತ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು. "ಲಘು ಹಸ್ತಾಶ್ವಿನಪುಷ್ಯಾ: ಪರ್ಯಂತಿಜ್ಞಾನಭೂಷಣಕಲಾಸು 1. ಶಿಲ್ಪವೈಶ್ಯಯಾನಾದಿಷು ಸಿದ್ಧಿಕರಾಣಿ ಪ್ರದಿಷ್ಟಾನಿ" ಬೃಹತ್ಸಂ 1. 3. ಅಗುರು 4. ಉಮಂಚದ ಬೇರು. "ಲಾಮಜ್ಜಕಂ ಲಘು ಲಯಮದದಾಹೇಟಕಾಪಥೇ" ಅಮಂ 1. 5. ಶಿಫ್ರ ಬೇಗ. "ಶೀಘ್ರಂ ತ್ವರಿತಂ ಲಘುಶಿಘ್ರಮರಂ ದ್ರುತಮ್" ಅಮಂ 1. 6. ಹ್ರಸ್ವಾಕ್ಷರ (ಅ, ಇ, ಉ ಇತ್ಯಾದಿ.) (ವಿಂ) 7. ಶಿಫ್ರವಾದ. ವೇಗವಾದ, ಜಾಗ್ರತೆಯಾದ. "ಸಂಹಾರ-ವಿಕ್ಷೇಪಲಘುಕ್ರಿಯೇಣ ಹಸ್ತೇನ ತೀರಾಭಿಮುಖ: ಸಶಬ್ದಮ್" ರಘುಂ ೫-೪೫ 1. 8. ಸುಲಭವಾದ, ಕಷ್ಟವಲ್ಲದ. "ಮಹಾಣಂ ಪರಿಕ್ಷೇಪಂ ಲಘ್ವಾಃ ಪರಿಖಾಲಘುಮ್" ರಘುಂ ೧೨-೬೬ 1. 9. ನೀಚ, ಅಧಮ. "ದ್ರುತಿಮಗ್ರಹೀದ್ರಹಗುಣೋ ಲಘವ: ಪ್ರಕಟಿ-ಭವಂತಿ ಮಲಿನಾಶ್ರಯತ:" ಮಾಘಂ ೯-೨೩ 1. 10. ಅಹ್ಲಾದ ಕರವಾದ, ಸಂತೋಷವಂಟುಮಾಡುವ, ಪ್ರಿಯವಾದ. "ಪೂರ್ವಜನ್ಮಾನುಷಾ ಸಮಾಗತ: ಸೋತಿಮಾತ್ರಲಘುದರ್ಶನೋಭವತ್" ರಘುಂ ೧೧-೮೦ 1. 11. ಸಾರವಿಲ್ಲದ, ಬಳಗೆ ತಿರುಳಿಲ್ಲದ, ಅಂತಃಸತ್ತವಿಲ್ಲದ. 12. ಕೆಳವಟ್ಟುದು, ತುಚ್ಛವಾದ. 13. ಎಳೆಯ ವಯಸ್ಸಿನ, ಪ್ರಾಯದ. "ದೀವ್ಯತೃಣೈಲಘು-ರಘುಪತಿ:" ಸಂ ವೀಂ ೬-೫೩ 1. 14. ಚಿಕ್ಕದಾದ, ಸಣ್ಣದಾದ. 15. ಹಗುರವಾದ, ಭಾರವಿಲ್ಲದ. "ಮೇದಶ್ಚೇದ-ಕೃಶೋದರಂ ಲಘು ಭವತ್ಯುತ್ಥಾನಯೋಗ್ಯಂ ವಪು:" ಶಾಕುಂ ೨-೫ 1. 16. ಸಂಗ್ರಹವಾದ, ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತವಾದ. "ಲಘುಸಂದೇಶಪದಾ ಸರಸ್ವತೀ" ರಘುಂ ೮-೭೭ 1. 17. ಹ್ರಸ್ವವಾದ, ಉದ್ದವಲ್ಲದ. 18. ರೋಗವಿಲ್ಲದ, ಆರೋಗ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

19. ಮನೋಹರವಾದ, ಸೊಗಸಾದ. "ಲಘುಗುರೋ ಮನೋಜೇ ನಿಸಾರೆ ವಾಚ್ಯವತ್ ಕಲೀಬಮ್ 1. ಕೃಣಾಗುಣಿ ಚ ಪೃಕ್ವಾನಾಮೋಪಧೌ ತು ಸ್ತ್ರೀ" ಮೇದಿಂ 1. "ಅಲಾಸ್ತುರಗದೋ ನೋಗಾತಾತ್ ಕ್ವೋ ಲಘು: ಪುನ:" ಕಲ್ಪದ್ರುಂ 1. 20. ದೇಹವನ್ನು ಹಗುರವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವ. "ಪಿತ್ತಪ್ರಕೋಪಿ ತೀಕ್ಷ್ಣೋಷ್ಣಂ ರೂಕ್ಷಂ ದೀಪನರೋಚನಮ್ 1. ರಸೇ ಫಾಕೇ ಚ ಕಟುಕಂ ಕಫಕಂ ಮರಿಚಂ ಲಘು" ಅಷ್ಟಾಂಗಂ 1. 21. ಅಲ್ಪವಾದ, ಸ್ವಲ್ಪವಾದ, ಕೊಂಚವಾದ. "ಲಘುತುಷಾರತುಷಾರಜಲಶ್ಚ್ಯುತಂ ಧೃತಸದಾನ-ಮದಾನನದಂತಿತಮ್" ಕಿರಾಂ ೫-೯ 1. 22. ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ, ಪೌರಂಷ ಶೂನ್ಯವಾದ. "ನಿರ್ದರ್ಶನಮಸಾರಾಣಾಂ ಲಘುಬಂಹುತೃಣಂ ನರ:" ಮಾಘಂ ೨-೫೦ 1. (ಅವ್ಯಂ) 23. ಜಾಗ್ರತೆಯಾಗಿ, ಶಿಫ್ರವಾಗಿ, ವೇಗವಾಗಿ. 24. ಸುಲಭವಾಗಿ, ಕಷ್ಟವಿಲ್ಲದೆ. 25. ಸುಂದರವಾಗಿ, ಸೊಗಸಾಗಿ. 26. ಹಗುರವಾಗಿ, ಭಾರವಿಲ್ಲದೆ. 27. ಅಲ್ಪವಾಗಿ, ಸ್ವಲ್ಪವಾಗಿ. "ಪ್ರಯಮೋಕ್ತಂ ಮನ್ವತ: ಪ್ರತಿಪತ್ಯಾ ಲಘು ಮನ್ಯತೇ ಭವಾನ್" ಶಾಕುಂ ೭-೧ 1. ಸ್ತ್ರೀಯಾ ವಾ "ತೀಪ್" (೪-೧-೪೪) 1. ಲಘ್ವೀ ಲಘು: ಲಘ್ವೀ ಲಘು: "ಕಾಯಸ್ಯ ಇತಿ ಲಘ್ವೀ ಮಾತ್ರಾ" ಮುद्रಾಂ ೧ 1.

ಲಘು ಲಘು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ವೈಕಾ ಎಂಬ ಓಷಧಿ.

ಲಘುಕಾಯ ಲಘುಕಾಯ (ಪುಂ) 1. ಅಡು, ಮೇಕೆ. ಲಘು: ಕಾಯೋಸ್ಯ 1. "ಅಲ್ಪಾಯುರ್ಲಘುಕಾಯಶ್ಚ ಮೇನಾದ: ಪರ್ಣಭೋಜನ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1. (ವಿಂ) 2. ಸಣ್ಣ ಮೈಯುಳ್ಳ, ಚಿಕ್ಕ ದೇಹವುಳ್ಳ.

ಲಘುಗಣ ಲಘುಗಣ (ಪುಂ) ಅಶ್ವಿನಿ ಪುಷ್ಯ ಮತ್ತು ಹಸ್ತ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಗುಂಪು.

ಲಘುಚಿರ್ಮತೀ ಲಘುಚಿರ್ಮತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣ್ಣ ಜಾತಿಯ ಸೊತೆಗಿಡ.

ಲಘುಜಙ್ಗಲ ಲಘುಜಙ್ಗಲ (ಪುಂ) ಉವಕಪಕ್ಷಿ, ಗೀಜಗದ ಹಕ್ಕಿ.

ಲಘುತಾ ಲಘುತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಣ್ಣ ತನ, ಕೆಳವಟ್ಟುದಲ್ಲಿರು ಎಕೆ. ಅಲ್ಪತನ. ಲಘುಭಾವ: "ತಲ್" (೫-೧-೧೧೯) 1. "ನ ಚ ಮೇಷ್ವಗಂಚ್ಛತಿ ಯಥಾ ಲಘುತಾಂ ಕರುಣಾಂ ಯಥಾ ಚ ಕುರುತೇ ಸ ಮಯಿ" ಮಾಘಂ ೯-೫೬ 1. 2. ಹಗುರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಭಾರವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. "ವ್ರಜದಪಿ ಲಘುತಾಂ ವಭೂವ ಭಾರ: ಸಪದಿ ಹಿರಣ್ಮಯಮಗಡನಂ ಸಪತ್ನ्या:" ಮಾಘಂ ೭-೫೯ 1. 3. ಸಣ್ಣದಾಗಿರುವಿಕೆ, ಚಿಕ್ಕದಾಗಿರುವಿಕೆ. 4. ಅಗೌರವ, ಅವಮರಾದ್ಯ. "ತ್ವ:" (೫-೧-೧೧೯) 1. ಲಘುತ್ವಮ್ ಲಘುತ್ವಮ್. "ಅಭಿ-ಪತಿಸುಮನಾ ಲಘುತ್ವಭೀತೇರಭವದಮುಚ್ಛತಿ ವಲ್ಲಭೇತಿಗುರ್ವಿ" ಮಾಘಂ ೭-೫೧ 1.



ಲಘುಮಾಸ ಲಘುಮಾಸ (ನಂ) ತಿತ್ತಿರಿಪಕ್ಷ.

ಲಘುಲಯ ಲಘುಲಯ (ನಂ) ಲಾಮಂಚದ ಬೇರು. ಲಘು  
ಲೀಯತೆ—ಲಿಡ್ (ಶ್ಲೇಷಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)।

ಲಘುಹಸ್ತ ಲಘುಹಸ್ತ (ವಿಂ) ಶೀಘ್ರವಾಗಿ ಕೆಲಸಮಾಡುವ  
ಹಸ್ತಗಳುಳ್ಳ, ಚುರುಕಾದ ಕೈಗಳುಳ್ಳ. ಲಘು: ಕ್ಷಿಪ್ರಕಾರಿ  
ಹಸ್ತೋ यस್ಯ ।

ಲಘವಿ ಲಘವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸುಕುಮಾರಳಾದ ಹೆಂಗಸು,  
ಸೊಗಸಾಗಿ ಅಲಂಕರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಹೆಂಗಸು. 2. ಚಿಕ್ಕ ರಥ.  
ಹಗುರವಾದ ಗಾಡಿ. "ಲಘವಿ ಲಾಘವಯುಕ್ತಾಯಾಂ ಪ್ರಭೇದೇ  
ಸ್ಯಂದನಸ್ಯ ಚ" ಮೇದಿಂ । "ಕ್ಷಿಪ್ತಾವರೋವಾಙ್ಗನಮುತ್ಪನ್ನೇನ ಗಾಂ  
ವಿಲಕ್ಷ್ಯಚ ಲಘವಿ ಕರಮಿ ವಮಂಜತು:" ಮಾಘಂ ೧೨-೨೪ ।  
3. ಲಘುವವುಳ್ಳ, ಗೌರವವಿಲ್ಲದ, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಲ್ಲದ.  
4. ಹಗುರವಾದ, ಭಾರವಿಲ್ಲದ.

ಲಕ್ಷಾ ಲಂಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಂಕಾಪಟ್ಟಣ, ರಾವಣನ  
ರಾಜಧಾನಿ. ಲಕ (ಆಸ್ವಾದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್"  
(೩-೩-೪೬) । ಪೃಷಂ । "ಪಯೋವಿಮಾಬದ್ಧಚಲಜ್ವಲಾವಿಲಂ  
ವಿಲಕ್ಷ್ಯಚ ಲಕ್ಷಾ ನಿಕಷಾ ಹನಿಷ್ಯತಿ" ಮಾಘಂ ೧-೬೮ ।  
2. ಶಾಖೆ, ರೇಖೆ. 3. ವೇಶ್ಯೆ, ಸೂಳೆ. 4. ಶಾಕಿನಿ.  
"ಲಕ್ಷಾ ರಕ್ಷ:ಪುರೀಶಾಖಾಶಾಕಿನೀಕುಲಟಾಸು ಚ" ಮೇದಿಂ ।

ಲಕ್ಷಾಧಿಪತಿ ಲಂಕಾಧಿಪತಿ (ಪುಂ) ಲಂಕೆಯ ದೊರೆಯಾದ  
ರಾವಣ. -ನಾಥ: -ನಾಥಃ, -ಪತಿ: -ಪತಿಃ, -ईश: -ಈಶಃ,  
-ईश्वर: ಈಶ್ವರಃ.

ಲಕ್ಷ ಲಂಕ (ಪುಂ) 1. ಸಂಗ. ಸಂಬಂಧ. 2. ವಿಟ, ಸ್ತ್ರೀ  
ಲೋಲ, ಕಾಮುಕ, ಉಪಪತಿ. ಲಕ್ಷತಿ—ಲಗಿ (ಗತೌ)  
"ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ಲಕ್ಷಸ್ತು ಸಜ್ಜಪಿಡಗಯೋ:"  
ಮೇದಿಂ ।

ಲಕ್ಷನ ಲಂಕನ (ನಂ) ಗಮನ, ಗತಿ, ನಡೆಯುವುದು.  
ಲಗಿ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) ।

ಲಕ್ಷಗುಲ ಲಂಕೂಲ (ನಂ) ಲಾಂಗೂಲ, ಬಾಲ.

ಲಕ್ಷನ ಲಂಕನ (ನಂ) 1. ದಾಟುವುದು, ಹಾರುವುದು.  
ಲಘಿ (ಗತೌ ಅಭೋಜನೇ ಚ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) ।  
"ಹಂಸಾ ನಮೋಲಕ್ಷನಲೋಲಪಕ್ಷಾ:" ರಘುಂ ೧೬-೩೩ । 2. ಉಪ  
ವಾಸ. "ತತ್ರಾಮೇ ಲಕ್ಷನಂ ಕಾರ್ಯ ವಿರೂಪೇ ವಮನಂ ಹಿತಮ್ ।  
ವಿಷ್ಣುಃ ಸ್ವೇದನಂ ಪಥ್ಯಂ ರಸಶೇಷೇ ಶಯಿತ ಚ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ।  
"ಆಪ್ತೇನ ತಕ್ಷಣಾ ಭಿಷಜೇವ ತಕ್ಷಣಂ ಪ್ರಚಕ್ರಮೇ ಲಕ್ಷನಪೂರ್ವಕ:  
ಕ್ರಮ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೨೪ । 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರುವುದು,  
ಉನ್ನತಸ್ಥಾನ ಹೊಂದುವುದು. "ಯಥಾಶ್ರುತಂ ವೇದವಿದಾಂ  
ವರತ್ವಯಾ ಜನೋಜ್ಯಮುಚ್ಚೇ: ಪದಲಕ್ಷನೋತ್ಸುಕ:" ಕುಮಾರಂ ೪-೬೪ ।

4. ಆಕ್ರಮಿಸುವುದು, ಮುತ್ತಿಗೆಹಾಕುವುದು. 5. ಮೀರು  
ವುದು, ಅತಿಕ್ರಮಿಸುವುದು. "ದೀರ್ಘದರ್ಶಿಭಿರಕಾರಿ ವಭೂನಾಂ  
ಲಕ್ಷನಂ ನ ನಯನೇ: ಶ್ರವಣಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೧೦-೪೦ ।

ಲಕ್ಷನೀಯ ಲಂಕನೀಯ (ವಿಂ) 1. ದಾಟಲ್ಪಡುವ.  
2. ಮೀರಲ್ಪಡುವ. 3. ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಮೇಲಕ್ಕೆ  
ಏರಲ್ಪಡುವ. ಲಘಿ (ಗತೌ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) ।  
5. ದಾಟಬೇಕಾದ. 6. ಮೀರಬೇಕಾದ, ಅತಿಕ್ರಮಿಸ  
ಬೇಕಾದ. 7. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಬೇಕಾದ. 8. ಆಕ್ರಮಿಸ  
ಬೇಕಾದ. 9. ದಾಟಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 10. ಮೀರಲು  
ಶಕ್ಯವಾದ, ಅತಿಕ್ರಮಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 11. ಆಕ್ರಮಿಸಲು  
ಶಕ್ಯವಾದ. 12. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತುಲು ಶಕ್ಯವಾದ. "ಆತ್ಮೋ-  
ದತ್ತೇರಪಿ ರಜೋಭಿರಲಕ್ಷನೀಯಾ ಭಾವತ್ಯಮಿ ಮೃಗಜವಾಕ್ಷಮಯೇವ  
ರಥಾ:" ಶಾಕುಂ ೧-೮ । "ತ್ವ:" (೩-೧-೧೬) ।  
ಲಕ್ಷಿತವ್ಯಮ್ ಲಂಕಿತವ್ಯಮ್.

ಲಕ್ಷಯತ್ ಲಂಕಯತ್ (ವಿಂ) 1. ದಾಟುತ್ತಿರುವ. ಲಘಿ  
(ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಅತಿಕ್ರಮಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ಮೀರುತ್ತಿರುವ. "ಲಕ್ಷಯತ್ರಹರಹಂವದಾಜಾಮಸ್ಮಿ  
ಹಾ ವಿಧಿನಿಪೇಧಮಯಿ ಯ:" ನೆಪಂ ೨೧-೧೧೬ । 3. ಆಕ್ರಮಿ  
ಸುತ್ತಿರುವ, ಮುತ್ತಿಗೆ ಹಾಕುತ್ತಿರುವ. 4. ಮೇಲಕ್ಕೆ  
ಏರುತ್ತಿರುವ.

ಲಕ್ಷಿತ ಲಂಕಿತ (ವಿಂ) 1. ದಾಟಲ್ಪಟ್ಟ. ಲಘಿ (ಗತೌ)  
"ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । "ಅವಿಲಕ್ಷಿತಃ ಉಪವಾನರಮಟೆ:  
ಕಿಂ ತ್ವಸ್ಯ ಗಮ್ಭೀರತಾಮಾಪಾತಾಲನಿಮಗ್ನಪೀವರತನುಜನಾತಿ  
ಮನ್ಯಾಚಲ:" ಅನರ್ಥಂ । 2. ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಲಕ್ಷಿತ  
ಏಷ ಭೂಯೋಪಿ ಶಕ್ರುಂತಲಾವ್ಯಾಧಿನಾ" ಶಾಕುಂ ೬ । 3. ಮೀರ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಅತಿಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಜ್ವಾಲಾಸಡೆಲಕ್ಷಿತಮೇವ-  
ಪಕ್ತಿ:" ಕಿರಾಂ ೧೬-೪೦ ।

ಲಕ್ಷಯ ಲಂಕಯ (ವಿಂ) 1. ದಾಟಲ್ಪಡುವ. 2. ದಾಟಲು  
ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ದಾಟಬೇಕಾದ. ಲಘಿ (ಗತೌ) "ಘ್ಯತ್"  
(೩-೧-೧೨೪) । 4. ಮೀರಲ್ಪಡುವ. 5. ಮೀರಲು  
ಶಕ್ಯವಾದ. 6. ಮೀರಬೇಕಾದ. "ಅಧ್ವಾನಮಧ್ವಾಂತವಿಕಾರ-  
ಲಕ್ಷಯಸ್ತತಾರ ತಾರಾಧಿಪಖಂಡವಾರಿ" ಕುಮಾರಂ ೭-೪೮ ।

ಲಜ್ಜಮಾನ ಲಜ್ಜಮಾನ (ವಿಂ) ನಾಚಿಕೆಪಡುತ್ತಿರುವ.  
ಅಃ ಲಜ್ಜಿ (ಗ್ರೀಡಾಯಾಮ್) "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) ।  
"ಅಜ್ಜಮಾರೋಪಯಾಮಾಸ ಲಜ್ಜಮಾನಾಮರುಣವತಿ" ಕುಮಾರಂ ೬-೯೧ ।

ಲಜ್ಜರೀ ಲಜ್ಜರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಟ್ಟಿದರೆ ಮುನಿಯೆಂಬ ಗಿಡ.

ಲಜ್ಜಾ ಲಜ್ಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಾಚಿಕೆ, ಅವಮಾನ. ಅಃ  
ಲಜ್ಜಿ (ಗ್ರೀಡಾಯಾಮ್) "ಅ:" (೩-೩-೧೦೩) । (ಮೂಡ



ಬಾರದ ಅಕಾಯವನ್ನು ಮಾಡಿ ಇತರರಿಗೆ ಮುಖ ತೋರಿಸಲಾ ಅವಕಾಶಕೊಡದಿರುವ ಮನೋಭಾವ.)  
“ಸ ತ್ವಂ ನಿವರ್ತಸ್ವ ವಿಹಾಯ ಲಜ್ಜಾಂ ಗುರೋರ್ಮವಾನ್ ದರ್ಶಿತಶಿಷ್ಯ ಭಕ್ತಿಃ” ರಘುಂ ೨-೪೦. 2. ನಾಚಿಕೆ, ಸಂಕೋಚ, ಸಿಗ್ಗು.  
“ನಿತಿಮ್ವಿನೋಮಿಚ್ಛಸಿ ಮುಕ್ತಲಜ್ಜಾಮ್ ಕಂಠೇ ಸ್ವಯಂಭಾಹಿನಿವಕ್ತ-  
ವಾಹುಮ್” ಕುಮಾಂ ೩-೭. 3. ಮುಟ್ಟಿದರೆ ಮುನಿಯೆಂಬ  
ಗಿಡ. “ಸ್ಪರ್ಶಲಜ್ಜಾಪಿ ಲಜ್ಜಾಲುಃ ಸ್ವಾಲ್ಪಲಜ್ಜಾ ಲಜ್ಜರೀ-  
ತ್ಯಪಿ” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ. 1.

ಲಜ್ಜಾಲು ಲಜ್ಜಾಲು (ಪುಂ) ಮುಟ್ಟಿದರೆ ಮುನಿಯೆಂಬ  
ಗಿಡ. “ಸ್ಪರ್ಶಲಜ್ಜಾಪಿ ಲಜ್ಜಾಲುಃ” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ. 1.

ಲಜ್ಜಾವತ್ ಲಜ್ಜಾವತ್ (ವಿಂ) ನಾಚಿಕೆಯುಳ್ಳವನು.

ಲಜ್ಜಾಶೀಲ ಲಜ್ಜಾಶೀಲ (ವಿಂ) ನಾಚಿಕೆಯ ಸ್ವಭಾವ  
ದವನು, ಸಂಕೋಚದ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಲಜ್ಜಾ ಶೀಲಮಸ್ಯ.

ಲಜ್ಜಿತ ಲಜ್ಜಿತ (ವಿಂ) 1. ನಾಚಿಕೆಗೊಂಡವನು. ಲಜ್ಜಾಸ್ಯ  
ಸಂಜಾತಾ “ಇತತ್” (೪-೨-೩೬). 2. ಅವಮಾನ  
ಗೊಂಡವನು. “ಲಜ್ಜಿತೋದಧಿಘೋಷಣ ಲಜ್ಜಾಧೀಪಮಕಮ್ಯಯತ್”  
ಯಾದಂ ೨೨-೧೮೭.

ಲಜ್ಜ ಲಜ್ಜ (ಪುಂ) 1. ಕಾಲು, ಪಾದ. 2. ಕಚ್ಚಿ, ನಡುವಿ  
ನೊಳಗೆ ಮಡಿಸಿ ಸಿಕ್ಕಿಸುವ ಉಡುವ ಪಂಚೆಯ ಸೆರಗು.  
“ಲಜ್ಜಃ ಪದೇ ಚ ಕಂಠೇ ಚ” ಹೇಮಂ. 3. ಪುಚ್ಚ, ಬಾಲ.

ಲಜ್ಜಿಕಾ ಲಜ್ಜಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೇಲೆ, ಸೂಳೆ. ಲಜ್ಜಯತಿ  
—ಲಜ್ಜಿ (ಭಾಷಾರ್ಥ) “ಉಲ್” (೩-೧-೧೩೩).

ಲಡ್ವಾ ಲಡ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗುಬ್ಬಿಚ್ಚಿ. 2. ಫಲ, ಹಣ್ಣು.  
3. ಒಂದು ವಿಧ ವಾದ್ಯ. 4. ಹೊಂಗೆ ಮರ. “ಲಡ್ವಾ  
ಕರಜ್ಜಭೇದೇ ಸ್ವಾತ್ ಫಲೇ ವಾಘೇ ಖಗಾಂತರೇ” ಮೇದಿಂ. 1.  
5. ಹೆಣ್ಣೆಯ ಮೇಲಿರುವ ಗುಂಗುರು ಕೂದಲು. 6.  
ಕುಸುಂಭದ ಹೂವು. “ಲಡ್ವಾ ಪಕ್ಷಿಕುಸುಂಭಯೋಃ” ಹೇಮಂ. 1.

ಲಡಹ ಲಡಹ (ವಿಂ) ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ.  
“ಕಯಂ ನಾಮ ನವವಶ್ವವಿಲಸ್ಮಣೋಗಾಯಾಭಿಜ್ಞಂ ಲಡಹಂ ವಿದಗ್ಧಂ  
ಮಶ್ವರಭಾಷಿಣಮರೋಷಣಂ ತೇ ಭ್ರಾತರಮಾಸಾಘ ನ ದುರ್ಮನಾಘಿಪ್ಯತೇ  
ಮೇ ಪ್ರಿಯಸಖೀ” ಮಾಲತೀಂ ೭.

ಲಡ್ಡು ಲಡ್ಡು (ಪುಂ) ಲಾಡು, ಕಡಲೆಹಿಟ್ಟಿನ ಅರಳು ಮತ್ತು  
ಸಕ್ಕರೆಗಳಿಂದ ತಯಾರಿಸಿದ ಉಂಡೆ. ಲಡ (ವಿಲಾಸೇ)  
“ಡುಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೧೮೦). 1. ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕಃ” ಲಡ್ಡುಕುಃ. 1.

ಲಡ ಲಂಡ (ಪುಂ) ಸಾಲಾಗಿ ಬಿದ್ದಿರುವ ಗಟ್ಟಿಯಾದ  
ಕುದುರೆಯ ಲದ್ದಿ, ಕುದುರೆಯ ಹಿಕ್ಕಿ, —ಮೆಲ. ಲಡಿ  
(ಉತ್ಸೇವಗೇ) “ಘತ್” (೩-೩-೧೯). 1. “ವಿಷ್ಣು ಚಾಪ್ಯಥ  
ಲಂಡೋಽಸ್ಮಿ ವಿಷ್ಣು ರಾಜಿಪುತ್ರಾ ದೃಢಾ” ವೈಜಂ. 1.

ಲಾಡು ಲಂಡ (ಪುಂ) ಲಂಡನ್ ನಗರ, ಇಂಗ್ಲಿಷರ ರಾಜಧಾನಿ.

ಲತಾ ಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಳ್ಳಿ, ಹೆಂಬು. ಲತತಿ —ಲತ  
(ಆಧಾತೇ) “ಬತ್” (೩-೧-೧೩೪). 1. “ನಿವದ್ವನಿಶ್ವಾಸ-  
ವಿಕಮ್ಪಿತಾವರಾ ಲತಾ ಇವ ಪ್ರಸ್ಕುರಿತಕಪಲ್ಲವಾಃ” ಕಿರಾಂ  
೪-೧೫. 2. ಕವಲು ಹೆಂಬುಗಳಿಂದ ಹರಡಿಕೊಂಡಿರುವ  
ಬಳ್ಳಿ. “ಲತಾ ಪ್ರತಾನಿನಿ ವೀರ್ದಗುಲಿಮನ್ಯುಲಪ ಇತ್ಯಪಿ”  
ಅಮಂ. 3. ಪ್ರೇಂಕಣ ಗಿಡ. 4. ಶಾಖೆ, ರೆಂಬೆ.  
5. ಮಾಧವಿಲತೆ, ಕಾಡಿರುವಂತಿಕೆ. 6. ಗರಿಕೆಹುಲ್ಲು.  
7. ಸ್ವಲ್ಪಕ್ಕಾ ಎಂಬ ಒಂದು ಗಂಧದ್ರವ್ಯ. 8. ಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತೀ  
ಲತೆ, ಕಂಗೊಂಗೆ ಗಿಡ. 9. ಕಸೂರಿ. “ಲತಾ ಜ್ಯೋತಿ-  
ಷ್ಮತೀದ್ವರ್ವಾಶಾಖಾವಲ್ಲಿಪ್ರಿಯಜ್ಜುಷು. ಸ್ಪೃಕ್ತಕಾಮಾಧವ್ಯೋಃ ಕಸ್ತೂ-  
ರಾಮ್” ಹೇಮಂ. 10. ಚಪ್ಪರದಬವನೆ ಗಿಡ. “ವಾತಕೋ  
ಹಿಜ್ಜದೀ ಕುಲಿ. ಲತಾ ಬೃಹತ್ಯಾ ಸುಸ್ವಿಗ್ಧಾ ಧನ್ಯಾ ಪ್ರಹಸನೀ  
ಲತಾ” ವೈಜಂ. 11. ಚಾವಟಿಯ ಮುಖ. 12. ಹೆಂಗಸು.

ಲತಾಗೃಹ ಲತಾಗೃಹ (ನಂ) ಬಳ್ಳಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮನೆ,  
ಲತೆಗಳಿಂದ ಆವೃತವಾದ ಮನೆ, ಪೊವರು. “ಲತಾಗೃಹ-  
ದ್ವಾರಗತೋಽಥ ನಂದಿ ವಾಮತ್ರಕೋಽರ್ಚಿತಹೇಮವೇಶಃ” ಕುಮಾಂ  
೩-೪೧.

ಲತಾಜಿಹ್ವ ಲತಾಜಿಹ್ವ (ಪುಂ) ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಲತೇವ  
ಜಿಹ್ವಾಸ್ಯ. 1. —ರಸನಃ —ರಸನಃ.

ಲತಾತರ ಲತಾತರು (ಪುಂ) 1. ಕಿತ್ತಲೆ ಗಿಡ. 2. ತಾಳೆ  
ಮರ. 3. ಸಾಲವೃಕ್ಷ, ಮತ್ತಿಮರ. ಲತೇವ ದೀರ್ಘಸ್ತರಃ. 1.

ಲತಾಪ್ರತಾನ ಲತಾಪ್ರತಾನ (ಪುಂ) ಬಳ್ಳಿಗಳ ಸಣ್ಣ ಕುಡಿ,  
ಬಳ್ಳಿಗಳ ಸಣ್ಣ ಹೆಂಬು. ಲತಾನಾಂ ಪ್ರತಾನಃ. 1. “ಲತಾ-  
ಪ್ರತಾನೋದ್ಗ್ರಥಿತಃ ಸ ಕೇಶೇರಧಿಜ್ಯವನ್ವಾ ವಿಚವಾರ ದಾವಮ್”  
ರಘುಂ ೨-೮.

ಲತಾಬೃಹತೀ ಲತಾಬೃಹತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಪ್ಪರದ ಬವನೆ ಗಿಡ,  
ಸೀಮೆಬವನೆ ಗಿಡ.

ಲತಾಭವನ ಲತಾಭವನ (ನಂ) ಲತಾಗೃಹ, ಪೊವರು.  
ಲತೆಗಳಿಂದ ಆವೃತವಾದ ಮನೆ.

ಲತಾಮಣಿ ಲತಾಮಣಿ (ಪುಂ) ಪ್ರವಾಳ, ಹವಳ.

ಲತಾಮಂಡಪ ಲತಾಮಂಡಪ (ಪುಂ) ಲತಾಗೃಹ, ಪೊವರು,  
ಬಳ್ಳಿಗಳಿಂದ ಆವೃತವಾದ ಮನೆ.

ಲತಾಮಾಧವೀ ಲತಾಮಾಧವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾಧವಿಲತೆ,  
ಕಾಡಿರುವಂತಿಗೆ ಗಿಡ. ಲತಾಪ್ರವಾನಾ ಮಾಧವೀ. 1.

ಲತಾಯಾವಕ ಲತಾಯಾವಕ (ನಂ) ಪ್ರವಾಳ, ಹವಳ.  
“ಕಿಸ್ತತ್ರಮಪಿ ತಹರಾಗಂ ವಿದುರ್ಲತಾಯಾವಕಂ ಪ್ರವಾಲಂ ಚ”  
ಹಾರಾಂ. 1.



ಲಮ್ಯ ಲಭ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲ್ಪಡುವ. 2. ಹೊಂದಬೇಕಾದ. "ಲಮ್ಯಾ ಧರೀತಿ ತವ ವಿಕ್ರಮೇನ ಜ್ಯಾಯಾಂಶ್ರವೀಯಸ್ವಿವಲೇವಿಪಕ್ಷಃ" ಕಿರಾಂ ೩-೧೭. 3. ಹೊಂದಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ಹೊಂದಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಡುಲಮಷ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಯತ್" (೩-೧-೯೮). "ಲಮ್ಯಾ ಕಥಂ ನು ವೇದೇಹಿ ಶಕ್ಯೋ ದ್ರಷ್ಟುಂ ಕಥಂ ರಿಪುಃ" ಮದ್ವಿಂ ೬-೪೭. 5. ನ್ಯಾಯವಾದ, ಯೋಗ್ಯವಾದ. "ನ್ಯಾಯಲಕ್ಷಣವ್ಯಯೋಲಮ್ಯಮ್" ವೈಜಂ.



**ಲಮಕ ಲಂಕ** (ಪುಂ) ಎಟಪ್ಪುರುಪ್ಪ. ವ್ಯಭಿಚಾರಿ, ಕಾಮುಕ.  
ರಮತೆ — ರಮು (ಕೌಡಾಯಾಮ್) “ಕವುನ್” (ತಂ ೨-೩೪) ।  
ರಸ್ಯ ವಾ ಲಂ: । ಪಕ್ಷೇ ರಮಕ: ರಮಕ:

**ಲಮ್ಪಟ ಲಂಕಟ** (ಪುಂ) 1. ಪರಸ್ತ್ರೀಲೋಲ, ಜಾರ, ಕಾಮುಕ. (ವಿಂ) 2. ಅತಿಯಾದ ಆಸೆಯುಳ್ಳ. ರಮು (ಕೌಡಾಯಾಮ್) “ಅಟನ್” (ತಂ ೪-೮೧) । “ಛೋಽಪಿ ದಧಿಭಕ್ತಲಮ್ಪಟ: ಉತ್ಪಂಜರಮುಢ್ಢಾಟಯ ದುಷ್ಟವಾನರ: ಅತಿಕ್ರಾಂತ:” ರತ್ನಾಂ ೨ ।

**ಲಮ್ಪಾ ಲಂಪಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಡಿ ಬಾಳೆಗಿಡ. “ಕದಲಿ ದೀರ್ಘಪತ್ರಾ ಚ ರಮಾ ಸಾ ಗೌರಪ್ಪಣಿಕಾ । ಕೃಷ್ಣಾ ತು ಲಮ್ಪಾ ಕದಲಿ” ವೈಜಂ ।

**ಲಮ್ಪಾಕ ಲಂಪಾಕ** (ಪುಂ) 1. ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ, ಕಾಮುಕ, ಜಾರ. (ಪುಂ ಬಂವಂ) 2. ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಿನ ಒಂದು ದೇಶ. “ಲಮ್ಪಾಕೋ ಲಮ್ಪಾಕೇ ದೇಶೇ” ಹೇಮಂ ।

**ಲಮ್ಪ ಲಂಫ** (ಪುಂ) ನೆಗೆಯುವುದು, ಹಾರುವುದು.

**ಲಮ್ಪನ ಲಂಫನ** (ನಂ) ನೆಗೆಯುವುದು, ಹಾರುವುದು.

**ಲಮ್ಬ ಲಂಬ** (ಪುಂ) 1. ನರ್ತಕ, ಕುಣಿಯುವವನು. 2. ಅಂಗ, ಅವಯವ. 3. ಉತ್ಕೃಷ್ಟ, ಲಂಚ. (ವಿಂ) 4. ಜೋಲಾಡುತ್ತಿರುವ. “ಪಾಂಡುಚ್ಯಮಸಾರ್ಪಿತಲಮ್ಬಹಾರ: ಕಲ್ಪತಾಜ್ಜರಾಗೋ ಹರಿವಂದನೇನ” ರಘುಂ ೬-೬೦ । 5. ಸುಂದರ ವಾದ, ಅಂದವಾದ. ಲಬಿ (ಶಬ್ದೇವಸಂಸೇನೆ ಚ) । “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । 6. ದೀರ್ಘವಾದ, ಉದ್ದವಾದ. “ದೂರತ: ಶೋಭತೇ ಮೂರ್ಖ: ಲಮ್ಬಶಾಟಪಟಾವುತ: । ತಾವಚ್ಚ ಶೋಭತೇ ಮೂರ್ಖೋ ಯಾವತ್ ಕಿಂಚಿತ್ತ ಭಾಷತೇ” ಚಾಣಕ್ಯಂ ।

**ಲಂಬಕರ್ಣ ಲಂಬಕರ್ಣ** (ಪುಂ) 1. ಆಡು, ಮೇಕೆ. 2. ಗರ್ವಭ, ಕತ್ತೆ. 3. ಗಜ, ಆನೆ. 4. ಶೈಲಪಕ್ಷಿ, ಗಿಡಗ. 5. ಜೋಲಾಡುವ ಕಿವಿ. “ಲಂಬಕರ್ಣಲಲಾಟಂ ಚ ಲಂಬೋದರ-ಪಯೋಧರಾಮ್” ರಾಮಾಂ । 6. ರಾಕ್ಷಸ. 7. ಅಂಕೋಲಿ ಮರ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬೪) । —ಕರ್ಣಿ — ಕರ್ಣಿ: ಜೋಲಾ ಕಿವಿಯುಳ್ಳ, ಹೆಂಗಸು. (ವಿಂ) 8. ಜೋಲಾ ಕಿವಿಯುಳ್ಳ. ಲಂಬೋ ಕರ್ಣಿ ಯಸ್ಯ ।

**ಲಂಬಕೇಶ ಲಂಬಕೇಶ** (ಪುಂ) 1. ಉದ್ದವಾದ ಕೂದಲು. 2. ಉದ್ದವಾದ ಅಗ್ರದಿಂದ ಕೂಡಿದ ದರ್ಭಾಸನ. “ಋಷಿ-ಕೇಶೋ ಭವೇದ್ಬ್ರಹ್ಮಾ ಲಂಬಕೇಶಸ್ತು ವಿಷ್ಣು:” । (ವಿಂ) 3. ಉದ್ದವಾದ ಕೂದಲುಳ್ಳ. ಲಂಬಾ: ಕೇಶಾ ಯಸ್ಯ ।

**ಲಂಬನ ಲಂಬನ** (ಪುಂ) 1. ಕಫ, ಶ್ಲೇಷ್ಮ. (ನಂ) 2. ಸೆರೆ, ಹೊಕ್ಕಳಿನವರೆಗೂ ಜೋಲಾಡುವ ಹಾರ. ಲಮ್ಬತೆ — ಲಬಿ (ಅವಸಂಸೇನೆ) “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪) । 3. ಕುಚ್ಚು, ಗೊಂಡೆ. 4. ಧ್ವನಿ, ಶಬ್ದ.

**ಲಮ್ಬಮಾನ ಲಂಬಮಾನ** (ವಿಂ) ಜೋಲಾಡುತ್ತಿರುವ, ತೂಗಾಡುತ್ತಿರುವ. ಲಬಿ (ಅವಸಂಸೇನೆ) “ಶಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪) । “ಪ್ರಸ್ಥಾನಂ ತೇ ಕಥಮಪಿ ಸಖೇ ಲಮ್ಬಮಾನಸ್ಯ ಭಾವಿ” ಮೇಘಂ ೧-೪೧ ।

**ಲಮ್ಬಾ ಲಂಬಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. 2. ಗೌರಿ, ಪಾರ್ವತಿ. 3. ಕಹಿ ಸೋರೆ. “ಲಮ್ಬಾ ಪಶಾಲಯಾಗೌರ್ಯೋ: ತಿಕ್ತತುಮ್ಯಾ-ಮಪಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” ಮೇದಿಂ । 4. ಲಂಚ, ಉತ್ಕೃಷ್ಟ. “ಲಮ್ಬಾ ತುತ್ಕೋಚ ಆಮಿಷ:” ವೈಜಂ ।

**ಲಮ್ಬಿಕಾ ಲಂಬಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಿರುನಾಲಗೆ. ಲಬಿ (ಅವಸಂಸೇನೆ) “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) । 2. ತಾಲು, ದವಡೆ. “ಸುಧಾಸ್ರವಾ ಲಮ್ಬಿಕಾ ಸ್ಯಾತ್” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ । 3. ದರ್ಭಾದೇವಿ. “ವೃಷಾಕಪಾಯಿ ಷಣ್ಣಿ ಸ್ಯಾತ್ತಾಮಸ್ಯಪಿ ಚ ಲಮ್ಬಿಕಾ” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ ।

**ಲಮ್ಬಿತ ಲಂಬಿತ** (ವಿಂ) 1. ಜೋಲಾಡುವ. ತೂಗಾಡುವ. ಲಬಿ (ಅವಸಂಸೇನೆ) “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨) । 2. ಕೆಳಗೆ ಇಳಿದಿರುವ. 3. ಕೆಳಗೆ ಇಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಲಬಿ (ಅವಸಂಸೇನೆ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) । 4. ತೂಗುಹಾಕ ಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಶಬ್ದಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಲಬಿ (ಶಬ್ದೇ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) । 6. ಬಾಚಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಂದಕ್ಕೆ ನೀಡಲ್ಪಟ್ಟ. “ಕರೇಣ ವಾತಾಯನಲಮ್ಬಿತೇನ ಸ್ಪೃಷ್ಟಸ್ತವಯಾ ಚಣ್ಡಿ ಕುತುಹಲಿನ್ಯಾ” ರಘುಂ ೧೩-೨೧ ।

**ಲಂಬೋದರ ಲಂಬೋದರ** (ಪುಂ) 1. ಗಣಪತಿ, ವಿನಾಯಕ. ವಿಘ್ನೇಶ್ವರ. ಲಂಬೋದರಂ ಯಸ್ಯ । 2. ತಿಂಡಿಪೋತ, ಹೊಟ್ಟೆ ಬಾಕ. (ವಿಂ) 3. ದೊಡ್ಡ ಹೊಟ್ಟೆಯುಳ್ಳ. “ಲಂಬೋದರ: ಸ್ಯಾದಾಶ್ಚುನೇ ಪ್ರಮಯಾನಾಂ ಚ ನಾಯಕೇ” ಹೇಮಂ ।

**ಲಂಬೋಠ ಲಂಬೋಠ** (ಪುಂ) 1. ಉಪ್ಪು, ಒಂಟೆ. ಲಂಬೋ ಆಠಿ ಯಸ್ಯ । “ತಾಲುನಾಶಶ್ಚ ಲಂಬೋಠೋಽಶ್ವಗೋ ಭೋಲಿರ್ಮಹ-ಪ್ರಿಯ:” ಕಲ್ಪದ್ರುಂ । (ವಿಂ) 2. ಜೋಲಾಡುವ ತುಟಿ ಯುಳ್ಳ, ಉದ್ದವಾದ ತುಟಿಯುಳ್ಳ.

**ಲಮ್ಬನ ಲಂಬನ** (ನಂ) ಪ್ರಾಪ್ತಿ. ಪಡೆಯುವುದು. ಡುಲಮಫ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) ।

**ಲಮ್ಬಿತ ಲಂಬಿತ** (ವಿಂ) 1. ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಯೋಗಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಡುಲಮಫ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) । “ಅನಾರತಂ ತೇನ ಪದೇಫು ಲಮ್ಬಿತಾ ವಿಭಜ್ಯ ಸಮ್ಯಗ್ವಿನಿಯೋಗಸತ್ಕ್ರಿಯಾ:” ಕಿರಾಂ ೧-೧೪ । 2. ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಚೂರ್ಣಮುಷ್ಟಿರಿವ ಲಮ್ಬಿತಕಾಂತಿರ್ವಾಸವಸ್ಯ ದಿಶಮಂಶಸಮೂಹ:” ಕಿರಾಂ ೯-೧೭ । 3. ಸ್ವೀಕರಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವಂತೆ



ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. "ಸ್ವಾದಿತಃ ಸ್ವಯಮಭಿವಿತ್ತಮಾನಂ ಲಮ್ಬಿತಃ ಪ್ರಿಯತಮೈಃ ಸಹ ಪೀತಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೫೫. 4. ಸ್ವೀಕರಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಕೈಗೊಳ್ಳುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. "ಗೋಪಿತುಂ ಭುವಮಿಮಾಂ ಮಹತ್ವತಾ ಶೈಲವಾಸಮನುನೀಯ ಲಮ್ಬಿತಃ" ಕಿರಾಂ ೧೩-೬೭. 5. ಸ್ವೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಒಳಪಡುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. "ಚಿರಮತಿರಸಲೌಲ್ಯಾದ್ಧನ್ಯನಂ ಲಮ್ಬಿತಾಂತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೬೦.

ಲಯ ಲಯ (ಪುಂ) 1. ಸಂಶ್ಲೇಷ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ, ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ. ಲಿಙ್ (ಶ್ಲೇಷಣ) "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬). 2. ನೃತ್ಯಗೀತವಾದ್ಯಗಳ ಕಾಲಸಾಮ್ಯ. ನೃತ್ಯಗೀತಮತ್ತು ವಾದ್ಯ ಇವುಗಳ ಏಕತಾನತಾರೂಪವಾದ ಸಾಮ್ಯ. "ಅಙ್ಗೈರಂತರ್ನಿಹಿತವಚನೈಃ ಸೂಚಿತಃ ಸಮ್ಯಗರ್ಥಃ ಪಾದನ್ಯಾಸೌ ಲಯಮುಪಗತಃ ತನ್ಮಯತ್ವಂ ರಸೇಷು" ಮಾಲಂ ೨-೮. 3. ಪ್ರಳಯ ಕಾಲ, ಜಗತ್ತಿನ ವಿನಾಶದ ಸಮಯ. 4. ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶ. ಅಳಿವು. 5. ವಿವಿಧ ವಸ್ತುಗಳು ಒಂದುಗೂಡುವಿಕೆ, ಒಂದು ಮತ್ತೊಂದು ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ (ಕಾಣದೆ) ಸೇರಿ ಹೋಗುವಿಕೆ. 6. ಚಿತ್ತದ ಏಕಾಗ್ರತೆ, ಮನಸ್ಸನ್ನು ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲಿಸುವಿಕೆ, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ವಿಷಯಾಂತರವೃತ್ತಿ ನಿರೋಧ. "ಪಶ್ಯಂತಿ ಶಿವರೂಪಿಣಿಂ ಲಯವಶಾದಾತ್ಮಾನಮಮ್ಯಾಗತಾ" ಮಾಲತೀಂ ೫-೨. 7. (ಸಂಗೀತದಲ್ಲಿ) ನಿಲುಗಡೆ, ವಿರಾಮ, ಯತಿಸ್ಥಾಯಿ. 8. ವಿಶ್ರಾಂತಿ ಸ್ಥಾನ. 9. ಮೂರ್ಚ್ಚೆ, ಜ್ಞಾನತಪ್ಪುವುದು. 10. ಬಾಣದ ಅಧೋ ಮುಖವಾದ ವೇಗ, ಬಾಣವು ಕೆಳಮುಖವಾಗಿ ವೇಗದಿಂದ ಹೋಗುವುದು. "ಕೈರಾತಿ ಗತಿರ್ದರ್ಶನಃ ಪ್ರಕರ್ಷಸ್ತು ಗತೇ ಲಯೇ" ವೈಜಂ. 11. ವಾದ್ಯ. 12. ಅಲಿಂಗನ, ಆಶ್ಲೇಷ. "ಶ್ಲೇಷವಾಚಯೋಃ ಲಯಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 13. ಪರಮಾತ್ಮ.

ಲಯನ ಲಯನ (ನಂ) 1. ಗೃಹ, ಮನೆ. ಲೀಯತೇಷು — ಲಿಙ್ (ಶ್ಲೇಷಣ) ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭). "ಲಯನೇಷು ಲೋಹಿತಕನಿಮಿತಾ ಭುವಃ ಶಿತೀರನರಶಿಮಹೀರೀತಿ ಕೃತಾಂತರಾಃ" ಮಾಘಂ ೧೩-೫೨. 2. ವಿಶ್ರಾಂತಿ. 3. ವಿಶ್ರಾಂತಿಸ್ಥಾನ. 4. ಸೇರಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಅಂಟಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಲಲ ಲಲ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ. ಹೊಳೆಯುವ. ಲಲತಿ — ಲಲ (ವಿಲಾಸೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಲಲೌ ಲಲಾಂ ಲಲೋಲೋಲಃ ಸಶಿಸಿಶಿಸಿಶುಶಿಃ ಸಶನ್" ಕಿರಾಂ ೧೫-೫. 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಆಸೆಪಡುವ. 3. ಆಟ ಮಾಡುವ. 4. ಜೋಲಾಡುತ್ತಿರುವ.

ಲಲಜಿಹ್ವ ಲಲಜಿಹ್ವ (ಪುಂ) 1. ಉಷ್ಣ, ಬಂಟೆ. 2. ನಾಯಿ. (ವಿಂ) 3. ಹಿಂಸಿಸುವ, ಕೊಲ್ಲುವ. 4. ಜೋಲಾಡುವ

ನಾಲಿಗೆಯುಳ್ಳ. ಲಲಾ ಜಿಹ್ವಾ ಯಸ್ಯ. "ಲಲಜಿಹ್ವೋನ್ಯವತ್ ಹಿಸೇ ಕಮಲಕಸುನೋಃ ಪುಮಾನ್" ಹೇಮಂ.

ಲಲಜಿಹ್ವ ಲಲಜಿಹ್ವ (ಪುಂ) "ಲಲಜಿಹ್ವ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ಲಲತ್ ಲಲತ್ (ವಿಂ) 1. ಆಡುತ್ತಿರುವ, ಆಲಂಗಾಡುತ್ತಿರುವ. ಲಲ (ವಿಲಾಸೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಪ್ರವಿಗಲದಸೃಕ್ಪಕ್ಷುಃ ಪಾಣಿಲಲನರಜಾಙ್ಗಲಃ" ಮಾಲತೀಂ ೫-೫. 2. ಜೋಲಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಆಟಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 4. ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ.

ಲಲನ ಲಲನ (ಪುಂ) 1. ಬಾಲಕ. 2. ಸಾಲವೃಕ್ಷ. 3. ಪ್ರಿಯಾಲವೃಕ್ಷ, ಮೊರೆಟೆ ಮರ. (ನಂ) 4. ಆಟ, ಕ್ರೀಡೆ. 5. ಜೋಲಾಡುವುದು. ಲಲ (ವಿಲಾಸೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

ಲಲನಾ ಲಲನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಂಗಸು. ಲಲತೇ — ಲಲ (ವಿಲಾಸೇ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪). "ಯುಚ್" (೩-೨-೭೮) ವಾ. "ಪ್ರಮದಾ ಮಾನಿನಿ ಕಾಂತಾ ಲಲನಾ ಚ ನಿತಮ್ಬಿನಿ" ಅಮಂ. "ಶಠ ನಾಕಲೋಕಲಲನಾಭಿರವಿರತರತಂ ರಿರಸತೇ" ಮಾಘಂ ೧೫-೮೮. 2. ಜಿಹ್ವೆ, ನಾಲಿಗೆ. 3. ಸ್ವೈರೀ, ಕಾಮುಕ ಹೆಂಗಸು. ಲಲತೇ — ಲಲ (ವಿಲಾಸೇ) "ಲ್ಯುಃ". "ಲಲನಾ ಕಾಮಿನಿನಾರಿಭೇದಜಿಹ್ವಾಸು ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ.

ಲಲನಾಪ್ರಿಯ ಲಲನಾಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) 1. ಕದಂಬವೃಕ್ಷ. ಲಲನಾನಾಂ ಪ್ರಿಯಃ. (ನಂ) 2. ಮಡಿವಾಳ. (ವಿಂ) 3. ನಾಲಿಗೆಗೆ ಇಷ್ಟವಾದ. 4. ಸ್ತ್ರೀಯರಿಗೆ ಪ್ರಿಯವಾದ. ಲಲನಿಕಾ ಲಲನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಯೆತೋರಿಸಲು ಅರ್ಹಳಾದ ಹೆಂಗಸು, ಸಣ್ಣ ಹೆಂಗಸು. ಲಲನಾ ಅಲ್ಪಾರ್ಥ "ಕನ್" (೫-೩-೭೬).

ಲಲಂತಿಕಾ ಲಲಂತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊಕ್ಕಳಿನವರೆಗೂ ಜೋಲಾಡುವ ಹಾರ, ಉದ್ದವಾದ ಹಾರ. ಲಲತಿ — ಲಲ (ವಿಲಾಸೇ) "ಶತ್" (೩-೩-೧೨೪). "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬). ಲಲಂತೀವ — ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೫-೪-೫). 2. ಹಲ್ಲಿ, ಗಾಳಿ.

ಲಲಾಟ ಲಲಾಟ (ನಂ) ಫಾಲ, ಹಣೆ, ನೊಸಲು. ಲಲ-ಮೀಪ್ಸಾಮಟಿ — ಅಟ (ಗತೌ) "ಅಞ್" (೩-೨-೧). "ಅಯ ದರಿದ್ರೋ ಭವಿತೇತಿ ವೈವಸೀಂ ಲಿಪಿ ಲಲಾಟೇರ್ಥಜನಸ್ಯ ಜಾಘ-ತೀಮ್" ನೈಷಂ ೧-೧೫. "ನೃಪಸ್ತಂ ಲಲಾಟೇ ತಿಲಕಂ ದಧಾನಃ" ರಘುಂ ೧೮-೪೪.

ಲಲಾಟಕ ಲಲಾಟಕ (ನಂ) ಅದವಾದ ಹಣೆ.



**ಲಲಾಟಾಂತರ ಲಲಾಟಾಂತರ (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯ. ಲಲಾಟಾಂತರ - ತಪ (ಸಂತಾಪ) "ಲಲ" (೩-೨-೩೬)। ಮುಗಾಮ: (೬-೩-೬೭)। (ವಿಂ) 2. ಹಣೆಯನ್ನು ತಾಪಗೊಳಿಸುವ. "ಹವಿರ್ಭುಜಮಿಧವತಾಂ ಚತುರ್ಣಾಂ ಮಧ್ಯಲಲಾಟಾಂತರಸಪ್ತಸಪ್ತಿ:" ರಘುಂ ೧೩-೪೧।

**ಲಲಾಟಪಟ ಲಲಾಟಪಟ (ಪುಂ)** 1. ಹಲಗೆಯಂತೆ ವಿಶಾಲವಾದ ಹಣೆ. 2. ತಲೆಯ ಕೂದಲನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಪಟ್ಟಿ, ತಲೆಕಟ್ಟುಪಟ್ಟಿ.

**ಲಲಾಟಿಕಾ ಲಲಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ನೋಸಲಿನ ಒಡವೆ, ಹಣೆಯ ಮೇಲೆ ಧರಿಸುವ ಆಭರಣ. ಲಲಾಟಸ್ಯಾಲಂಕಾರ: "ಕನ್" (೪-೩-೬೫)। "ಪತ್ರವಾಸ್ಯಾ ಲಲಾಟಿಕಾ" ಅಮಂ। 2. ತಿಲಕ, (ಕಸ್ತೂರಿ ಮೊದಲಾದ ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯಗಳಿಂದ ಮಾಡಿದ) ಹಣೆಯ ಮೇಲಿನ ಬಟ್ಟು. "ತದಾ-ಪ್ರಭುತ್ಯುನ್ಮದನಾ ಪಿತುರ್ಗೃಹೇ ಲಲಾಟಿಕಾಚಂದನಧೂಸರಾಲಕಾ" ಕುಮಾಂ ೫-೫೫।

**ಲಲಾಮ ಲಲಾಮ (ನಂ)** 1. ಭೂಷಣ, ಒಡವೆ, ಅಲಂಕಾರ. ಲಲಾಮಮತಿ - ಅಮ (ಗತ್ಯಾದೌ) "ಅನ್" (೩-೨-೧)। "ಅಮ್ಯೇತಿ ಭಸ್ಮಾರಿಪಾಂಡುರಿಸ್ಮರಾರೇಖಾಕ್ಷಿಲೋಚನಲಲಾಮ-ಲಲಾಟಲೀಲಾಮ್" ಮಾಧಂ ೪-೨೮। 2. ಪುಟ್ಟ, ಬಾಲ. 3. ಶೃಂಗ, ಕೊಂಬು. 4. ಧ್ವಜ, ಪತಾಕೆ. 5. ತಿಲಕ. 6. ಚಿಪ್ಪೆ, ಗುರುತು. 7. ಆತ್ಮ, ಕುದುರೆ. 8. ಪೌರುಷ, ಪರಾಕ್ರಮ. 9. ಪಂಕ್ತಿ, ಸಾಲು, ಶ್ರೇಣಿ. 10. ಪ್ರಭಾವ. 11. ಸೌಂದರ್ಯ. 12. ಕುದುರೆಯ ಹಣೆಯಲ್ಲಿ ಬರೆಯುವ ಚಿತ್ರ. "ಲಲಾಮ್ ಲಾಂಛನೇ ಧ್ವಜೇ। ಸೃಜ್ಞೇ ಪ್ರಧಾನೇ ಭೂಷಾಂ ತಥಾ ವಾಲಧಿಪುಂಡ್ರಯೋಃ। ತುರಜ್ಞೇ ಚ ಪ್ರಭಾವೇ ಚ" ಮೇದಿಂ। (ವಿಂ) 13. ರಮ್ಯವಾದ, ಸುಂದರವಾದ. "ರಮ್ಯೇ ಪ್ರಧಾನೇ ಭೂಷಾಯಾಂ" ಹೇಮಂ। ಲಲಾಮನ್ ಲಲಾಮನ್ ಎಂದು "ನ" ಕಾರಾಂತವೂ ಉಂಟು. "ಲಲಾಮವಲ್ಲಲಾಮಾಶ್ವೇ" ಹೇಮಂ। 14. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ. "ಲಲಾಮೋಸ್ತೀ ಲಲಾಮಾಪಿ ಪ್ರಭಾವೇ ಪೌರಷೇ ಧ್ವಜೇ। ಶ್ರೇಷ್ಠೇ ಭೂಪುಂಡ್ರಶೃಂಗಪುಂಚ್ಚಿಹ್ನಾಶ್ಚಲಿಕ್ಷಿಣು" ವೇಜಂ।

**ಲಲಾಮಕ ಲಲಾಮಕ (ನಂ)** ಮುಖ (ಹಣೆ) ದ ಮೇಲೆ ಜೋಲಾಡುವಂತೆ ಕಟ್ಟಿರುವ ಹೂವಿನ ಸರ. "ಪ್ರಭ್ರಷ್ಟಕಂ ಶಿಖಾಲಂಬಿ ಪುರೋನ್ಯಸ್ತಂ ಲಲಾಮಕಮ್" ಅಮಂ।

**ಲಲಿತ ಲಲಿತ (ನಂ)** 1. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಪ್ರಸ್ತುತವಾದ ಧರ್ಮಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ವಾಕ್ಯಾರ್ಥದ ವರ್ಣನೆಯಿಲ್ಲದೆ ಅವಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದ (ಪ್ರತಿಬಿಂಬ) ವಾಕ್ಯಾರ್ಥವರ್ಣನೆಯಿರುವಲ್ಲಿ "ಲಲಿತ" ಅಲಂಕಾರ.

"ಪ್ರಸ್ತುತೇ ವರ್ಣ್ಯವಾಕ್ಯಾರ್ಥಪ್ರತಿಬಿಂಬಸ್ಯ ವರ್ಣನಮ್"। ತದಾ: "ಲಲಿತಂ ನಿಗತೇ ನೇರೇ ಸೇತುಮೇವಾ ಚಿಕಿರ್ದತಿ"। ಇಲ್ಲಿ ಕೋಪದಿಂದ ನಾಯಕನನ್ನು ತಿರಸ್ಕರಿಸಿ ಪುನಃ ಅವನನ್ನು ಕರೆತರುವ ಪ್ರಯತ್ನ ಮಾಡಿದ ನಾಯಕಾವೃತ್ತಾಂತ ವರ್ಣನೆಯಿಲ್ಲದೆ ಅವಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದ ಗತಜಲಸೇತು ಬಂಧನ ರೂಪವಾಕ್ಯಾರ್ಥವರ್ಣನೆಯಿರುವುದರಿಂದ ಲಲಿತಾ ಲಂಕಾರ. 2. ಶೃಂಗಾರರಸಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾದ ಅಂಗ ಚಿಪ್ಪೆ, ಸ್ತ್ರೀಯರ ಮನೋಹರವಾದ ಶೃಂಗಾರರಸ ಸೂಚಕವಾದ ವಿಶಾಸ, ಸ್ತ್ರೀಯರ ಸ್ವಭಾವಜನ್ಯವಾದ ಅಲಂಕಾರಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಸುಕುಮಾರತಯಾಜ್ಞಾನಾಂ ವಿನ್ಯಾಸೋ ಲಲಿತಂ ಭವೇತ್" ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೦೫। "ಸಲಲಿತಚಲಿತ-ತ್ರಿಕಾಭಿರಾಮಾ ಶಿರಸಿತ್ರಸಂಯಮನಾಕುಲೇಕಪಾಣಿ:" ಕಿರಾಂ ೧೦-೫೨। 3. ಒಂದು ವಿಧ ಹಾರ. (ವಿಂ) 4. ಸುಂದರವಾದ, ಸೊಗಸಾದ. "ಹಾರಭೇದೇ ವಿಲಾಸೇ ಚ ಲಲಿತಂ ಸುಂದರೇ ತ್ರಿಪು" ನಾನಾಥರಂ। "ಲಲಿತಮಧುರಾಸ್ತೇ ತೇ ಭಾವಾಃ ಕ್ಷಿಪಂತಿ ಚ ಧೀರತಾಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೦। 5. ರಮಣೀಯವಾದ, ಮಧುರವಾದ, ರಮ್ಯವಾದ. "ಕಾಂತಾಪರಾಧ-ಕುಪಿತೇಷ್ವನಯಾ ವಿನೇತುಃ ಸಂದರ್ಶಿತೇವ ಲಲಿತಾಭಿನಯಸ್ಯ ಶಿಕ್ಷಾ" ಮಾಲಂ ೪-೯। 6. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ಲಲಿತಂ ಹಾರಭೇದೇ ಸ್ಯಾದೋಷಿತೇ ಲಲಿತೇಷು ಚ" ವಿಷ್ಣಂ। 7. ಸುಕುಮಾರವಾದ, ಕೋಮಲವಾದ. "ಅವಸಿತಲಲಿತಾಕ್ರಿಯೇಣ ಬಾಹ್ಯೋ-ಲಲಿತತರೇಣ ತನೀಯಸಾ ಯುಗೇನ" ಮಾಧಂ ೭-೬೪।

**ಲಲಿತಲಲಿತ ಲಲಿತಲಲಿತ (ವಿಂ)** ಸುಕುಮಾರವಾದ, ಕುಸುಮಕ್ಕಿಂತಲೂ ಸುಕುಮಾರವಾದ, ಬಹಳ ಕೋಮಲವಾದ. ಲಲಿತಾದಿಪಿ ಲಲಿತಮ್। "ಲಲಿತಲಲಿತೈರ್ಯೋತ್ಸಾ-ಪ್ರಾಯೇರಕೃತ್ರಿಮವಿಭ್ರಮೇ:" ತಂ ರಾಂ ೧-೨೦।

**ಲಲಿತಾ ಲಲಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 2. ಕಸ್ತೂರಿ. 3. ಹೆಂಗಸು. 4. ಕಾಮುಕಿ, ಸ್ವೈರಿಣಿ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ. **ಲಲಿತಾಪಷ್ಪಮಿ ಲಲಿತಾಪಷ್ಪಮೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಆಶ್ಚಯುಜ ಶುಕ್ಲ ಪಂಚಮಿ.

**ಲಲಿತಾಸಪ್ತಮಿ ಲಲಿತಾಸಪ್ತಮೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಭಾದ್ರಪದ ಶುಕ್ಲ ಸಪ್ತಮಿ.

**ಲಲ ಲಲ (ಪುಂ)** 1. ಶ್ರೀರಾಮನ ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಪುತ್ರ. ಸೀತೆಯ ಅವಳಿಮಕ್ಕಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. ವಾಲ್ಮೀಕಿಮಹರ್ಷಿಯು ಕುಶ ಮತ್ತು ಗೋಪುಜ್ಞರೋಮಗಳಿಂದ ರಕ್ಷಗಾಗಿ ಸೀತೆಯ ಗರ್ಭವನ್ನು ಸವರಿದುದರಿಂದ ಇವರಿಗೆ ಕುಶ ಮತ್ತು ಲಲ ಎಂದು ನಾಮಕರಣ ಮಾಡಿದರು. "ಸ ತೌ ಕುಶಲವೋನ್ಮುಕ್ತ-ಗರ್ಭಕಲದೌ ತದಾಪ್ಯಯಾ। ಕವಿಃ ಕುಶಲವಾವೇವ ಚಕಾರ ಕಿಲ



ನಾಮತಃ" ರಘುಂ ೧೫-೩೨ | [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಕುಶ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ಲೇಶ, ಅಲ್ಪ, ಕೊಚ್ಚೆ, ಸಣ್ಣ ಪ್ರಮಾಣ. 3. ಜಲಬಿಂದು. "ದ್ವಿಪಾನ್ ರಾನೀತಲವಜ್ಜಪುಷ್ಪರಪಾಕುತ-ಸ್ವೇದಲವಾ ಮಹದ್ವಿಃ" ರಘುಂ ೬-೫೭ | 4. ಚೂರು, ತುಂಡು. 5. ಲಯ, ವಿನಾಶ. 6. ಕೊಯ್ಯುವುದು, ಕತ್ತರಿಸುವುದು. "ಲಗೋ ಲೇಶೇ ವಿಶಾಶೇ ಚ ಛೇದನೇ ರಾಮನಂದನೇ" ಮೇದಿಂ | 7. ಎರಡು ಕಾಷ್ಠಗಳ ಕಾಲ. (18ಸಲ ರೆಪ್ಪೆಗಳ ನ್ನಾಡಿಸುವ ಕಾಲವು ಒಂದು ಕಾಷ್ಠ.) 8. ಗೋಪುಚ್ಛದ ಕೂದಲು, ಹಸುವಿನ ಬಾಲದ ಕೂದಲು. 9. ವಿಲಾಸ, ಕ್ರೀಡೆ. 10. ಕಿಂಜಲ್ಕ, ಹೂವಿನ ಕುಸುರು. 11. ಕಣ್ಣಿನ ರೆಪ್ಪೆಯ ಕೂದಲು. "ಲವಃ ಕಾಲಭಿದಿ ಛಿದಿ | ವಿಲಾಸೇ ರಾಮಜೇ ಕಲೇಶೇ ತಥಾ ಕಿಂಜಲ್ಕರಕ್ಷಮಣಿಃ | ಗೋಪುಚ್ಛಲೋಮಸ್ವಪಿ ಚ" ಹೇಮಂ | (ನಂ) 12. ಮೇಕೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಕೂದಲು. "ಲವಃ ಮೇಖಾದಿಲೋಮಿನಿ ಸ್ಯಾತ್" ನಾನಾರ್ಥಂ | 13. ಲವಂಗ. 14. ಜಾಯಿಕಾಯಿ. 15. ಲಾಮಂಚದ ಬೇರು. (ಅಖ್ಯಂ) 16. ಸ್ವಲ್ಪವಾಗಿ, ಕೊಂಚವಾಗಿ.

**ಲವಜ್ಜ ಲವಂಗ** (ಪುಂ) 1. ಲವಂಗದ ಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಲವಂಗ. ಲೂ (ಛೇದನ) "ಅಜ್ಜವ್" (ಠಂ ೧-೧೨೦) | "ಲವಜ್ಜಮಾಲಾಕಲಿತಾವತಂಸಾಸ್ತೇ ನಾರಿಕೇಲಾಂತರಪಃ ಪಿಬಂತಃ" ಮಾಘಂ ೩-೮೧ |

**ಲವಜ್ಜಕ ಲವಂಗಕ** (ನಂ) ಲವಂಗ.

**ಲವಜ್ಜಕಲಿಕಾ ಲವಂಗಕಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲವಂಗ.

**ಲವಣ ಲವಣ** (ಪುಂ) 1. ಸಪ್ತ ಸಮುದ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. ಲುನಾತಿ — ಲೂ (ಛೇದನ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) | (1) ಲವಣ (2) ಇಕ್ಷು (3) ಸುರಾ (4) ಸರ್ಪಿಸ್ (5) ದಧಿ (6) ಕ್ಷೀರ ಮತ್ತು (7) ಜಲ ಸಮುದ್ರಗಳೆಂದು ಸಮುದ್ರಗಳು ಏಳು. 2. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. ಇವನು ಶ್ರೀರಾಮನ ತಮ್ಮನಾದ ಶತ್ರುಘ್ನನಿಂದ ಹತನಾದನು. "ಲವಣೇನ ವಿಲೃಪ್ತೇಜ್ಯಾಸ್ತಾಮಿಲೇಣ ತಮಮ್ಯಯುಃ | ಮುನಯೋ ಯಮುನಾಭಾಜಃ ಶರಪ್ಯಂ ಶರಣಾಶಿನಃ" ರಘುಂ ೧೫-೨ | 3. ಲವಣರಸ, ಆರು ಭೋಜ್ಯರಸಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. (ನಂ) 4. ಉಪ್ಪು. (ವಿಂ) 5. ಲವಣರಸದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಉಪ್ಪು ಬೆರೆಕೆಯಾಗಿರುವ. ಲವಣೇನ ಸಂಸೃಷ್ಟಃ "ಠಕ್" (೪-೪-೨೨) | ಠಕೋ ಲುಕ್ (೪-೪-೨೪) | ಲವಣಂ ಶಾಕಮ್ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ಣಾ — ಣಾ. 6. ಒಂದು ನದಿ. 7. ದೀಪ್ತಿ, ಕಾಂತಿ, ಪ್ರಕಾಶ. "ಲವಣಂ ಸೈನ್ಧವಾದೌ ನಾ ಸಿನ್ಧುರಕ್ಷೋಭಿದೌ ರಸೇ | ತದ್ವುಕ್ತೇ ವಾಚ್ಯಲಿಙ್ಗಃ ಸ್ಯಾತ್ ನದಿಭೇದವಿವಿಧಃ ಸ್ವಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ |

**ಲವಣಾಕರ ಲವಣಾಕರ** (ಪುಂ) ಲವಣಸಮುದ್ರ, ಉಪ್ಪು ನೀರಿನ ಸಮುದ್ರ. — ಅರ್ಥಃ — ಅರ್ಣವಃ |

**ಲವಣಾಂತಕ ಲವಣಾಂತಕ** (ಪುಂ) ಶತ್ರುಘ್ನ.

**ಲವಣಾಶಿ ಲವಣಾಶಿ**, — ಅಮ್ಬುರಾಶಿ — ಅಂಬುರಾಶಿ (ಪುಂ) ಲವಣಸಮುದ್ರ, ಉಪ್ಪು ನೀರಿನ ಸಮುದ್ರ. "ಆಭಾತಿ ವೇಲಾ ಲವಣಾಂಬುರಾಶಿರ್ಧಾರಾನಿಬದ್ಧೇವ ಕಲಙ್ಕರೇಸಾ" ರಘುಂ ೧೩-೧೫ |

**ಲವಣಾಮ್ಬಸ್ ಲವಣಾಂಭಸ್** (ಪುಂ) 1. ಉಪ್ಪು ನೀರಿನ ಸಮುದ್ರ. ಲವಣಮಮ್ಬಃ ಯಸ್ಯ | "ಸ ಸೇತುಂ ಬನ್ಧಯಾಮಾಸ ಲವಣೇಲವಣಾಮ್ಬಸಿ" ರಘುಂ ೧೨-೭೦ | (ನಂ) 2. ಉಪ್ಪು ನೀರು.

**ಲವಣೋತ್ತಮ ಲವಣೋತ್ತಮ** (ನಂ) ಸೈಂಧವ ಲವಣ.

**ಲವಣೋದ ಲವಣೋದ** (ಪುಂ) ಲವಣಸಮುದ್ರ, ಉಪ್ಪು ನೀರಿನ ಸಮುದ್ರ. ಲವಣಮುದಕಂ ಯಸ್ಯ | ತದಕಸ್ಯೋದಾದೇಶಃ (ವಾಂ ೬-೩-೫೭) |

**ಲವನ ಲವನ** (ನಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸುವುದು, ಕೊಯ್ಯುವುದು. ಲೂ (ಛೇದನ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಕುಡ ಗೋಲು. 3. ಈಶಗೆಮಣಿ. ಲೂತೇನ — ಲೂ ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭) |

**ಲವನೀಯ ಲವನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಕತ್ತರಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಕತ್ತರಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 4. ಕತ್ತರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಲೂ (ಛೇದನ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬) | ಲವಿತವ್ಯಃ ಲವಿತವ್ಯಃ |

**ಲವಲಿ ಲವಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲವಲಿಲತೆ.

**ಲವಿ ಲವಿ** (ವಿಂ) ಕತ್ತರಿಸುವ ಹರಿತವಾದ ಅಲುಗುಳ್ಳ (ಆಯುಧ). ಲೂತೇನ — ಲೂ (ಛೇದನ) "ಃ" (ಠಂ ೪-೧೩೮) |

**ಲವಿತ್ರ ಲವಿತ್ರ** (ನಂ) ಕುಡಗೋಲು. ಕೊಯ್ಯುವ, — ಕತ್ತರಿಸುವ ಒಂದು ಆಯುಧ. ಲೂತೇನ — ಲೂ (ಛೇದನ) "ಃ" (೩-೨-೧೮೪) |

**ಲಶುನ ಲಶುನ** (ನಂ) ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳಿ. ಅನಾತಿ — ಅಶ (ಭೋಜನ) "ತನನ್" ಲಶ್ ಚ (ಠಂ ೩-೫೭) | "ಮಕ್ಷಿತೇಽಪಿ ಲಶುನೇ ನ ಶಾಂತೋ ವ್ಯಾಧಿಃ" |

**ಲಷಣ ಲಷಣ** (ನಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು, ಆಸೆಪಡುವುದು. ಲಷ (ಕಾಂತಿ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) |

**ಲಷಣೀಯ ಲಷಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ.



ಲಘ (ಕಾಂತೌ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । "ತವ್ಯಃ" ।  
ಲಘಿತವ್ಯಮ್ ಲಘಿತವ್ಯಮ್.

ಲಘಿತ ಲಘಿತ (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷಿಸು. ಲಘ (ಕಾಂತೌ)  
"ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । (ನಂ) 2. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಇಚ್ಛೆ,  
ಅಭಿಪ್ರಾಯ. ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) ।

ಲಘ್ಯತ್ ಲಘ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಇಚ್ಛಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. ಲಘ (ಕಾಂತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) ।  
"ಶಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪) । -ಮಾಣಃ ನೂಣಃ, ವಾ  
"ಶ್ಯನ್" (೩-೧-೭೦) । ಪಕ್ಷೆ ಲಘತ್ ಲಘತ್, ಲಘಮಾಣಃ  
ಲಘನೂಣಃ. ಶತ್ವಂತಾತ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) । ಲಘ್ಯತೀ  
-ಂತೀ, ಲಘ್ಯತೀ -೨೨, ಲಘಂತೀ ಲಘ೨೨.

ಲಸತ್ ಲಸತ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ.  
ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣ ಕ್ರೀಡನೇ ಚ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) ।  
"ಲಸದ್ವಿಸಂಕ್ಷೇಪದಸಿತಾಙ್ಗಸಂಕ್ಷಿಪ್ತಾ" ಮಾಘಂ ೨-೮ । 2.  
ಪ್ರಸರಿಸಿರುವ, ಹರಡಿರುವ. "ಮಧ್ಯಮೋಲನಿಭೇ ಲಸದಂಶಾ-  
ವೇಕತಶ್ಚುತಿಮುಪೇಯುಷಿ ಭಾನೌ" ಕಿರಾಂ ೧-೨ । 3. ಅಟ  
ವಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) । ಲಸಂತೀ  
ಲಸ೨೨. "ಶಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪) । ಲಸಮಾನಃ  
ಲಸನೂಣಃ. "ವಹತಿ ಯಃ ಪರಿತಃ ಕನಕಸ್ಯಲಿಃ ಸಹರಿತಾ-  
ಲಸಮಾನನವಾಂಶುಕಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೨೧ ।

ಲಸಾ ಲಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹರಿದ್ರೆ, ಅರಿಶಿನ. ಲಸತಿ-ಲಸ  
(ಶ್ಲೇಷಣಕ್ರೀಡನಯೋಃ) "ಅವ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ಪ್ರಹರ್ಷಿಣಿ  
ನಿಶಾಹ್ನಾ ಚ ಲಸಾ ಗಂಧಕಲಾಸಿಕಾ" ಹಾರಾಂ । 2.  
ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ.

ಲಸಿಕಾ ಲಸಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ನಾಯು, ಮಾಂಸಖಂಡ.  
2. ಲಾಲಾ, ಜೊಲ್ಲು.

ಲಸಿತ ಲಸಿತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ.  
2. ಸುಂತೋಷಗೊಂಡಿರುವ. ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣಕ್ರೀಡನಯೋಃ)  
"ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) ।

ಲಸಿಕಾ ಲಸಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೇಹಸಾರ, ಮೈಯೊಳಗಿನ  
ರಸಕೆ. 2. ಕೀವು. 3. ಲಾಲಾಜಲ, ಜೊಲ್ಲು. 4. ಕಬ್ಬಿನ  
ರಸ.

ಲಸ್ತ ಲಸ್ತ (ವಿಂ) 1. ಆಲಿಂಗನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಪ್ಪಿ  
ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।  
2. ಆಟವಾಡಿದ, ಕ್ರೀಡಿಸಿದ. ಲಸ (ಕ್ರೀಡನೇ) "ಕ್ತಃ"  
(೩-೪-೭೨) । ಆಗಮಶಾಸ್ತ್ರಸ್ಯಾನಿತ್ಯತ್ವಾತ್ ನೆಡಾಗಮಃ ।  
ಇಡಾಗಮೇ ಲಸಿತಃ ಲಸಿತಃ.

ಲಸ್ತಕ ಲಸ್ತಕ (ಪುಂ) ಧನುಸ್ಸಿನ ಮಧ್ಯಭಾಗ. ಲಸ್ತ ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಕನ್" (೪-೪-೩೮) । "ಲಸ್ತಕಸ್ತು ಧನುರ್ಮಧ್ಯಮ್" ಅಮಂ ।

ಲಸ್ತಕಿನ್ ಲಸ್ತಕಿನ್ (ಪಂ) ಬಿಲ್ಲು. ಲಸ್ತಕ "ಇನಿಃ"  
(೪-೨-೧೧೪) ।

ಲಹರಿ(ರೀ) ಲಹರಿ(ರೀ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೊಡ್ಡ ಅಲೆ, ಮಹಾ  
ತರಂಗ. "ಕರಣೋತ್ಪಿಪ್ತಾಸ್ತೇ ಜನನಿ ವಿಜಯನ್ತಾಃ ಲಹರಯಃ"  
ಗಜಾಲಂ ।

ಲಹುಡ ಲಹುಡ (ಪುಂ) ಅಲ್ಪ, ಸ್ವಲ್ಪ, ಕೊಂಚ. "ಅಪಿ  
ಸ್ಯಾಲ್ಲಹುಡಃ ಸ್ವಲ್ಪೇ" ಕಲ್ಪದ್ರುಂ ।

ಲಾ ಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ವೀಕರಿಸುವುದು, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳು  
ವುದು. 2. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. "ಲಃಸಕ್ತೇ ಲಾ ತು ದಾನೇ  
ಸ್ಯಾತ್ ಗ್ರಹಣೇಽಪಿ ನಿಗದ್ಯತೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಲಾಕ್ಷಣಿಕ ಲಾಕ್ಷಣಿಕ (ಪುಂ) 1. ಲಕ್ಷಣಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ  
ಅರ್ಥಕೊಡುವ ಶಬ್ದ, ವಾಚ್ಯ ಮತ್ತು ವ್ಯಂಗ್ಯಗಳ  
ಗೊತ್ತಲೂ ಅತಿರಿಕ್ತವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಶಬ್ದ.  
"ಸ್ಯಾಹ್ವಾಚಕೋ ಲಾಕ್ಷಣಿಕಃ ಶಬ್ದೋಽತ್ರ ವ್ಯಂಜಕಸ್ತ್ರಿಧಾ"  
ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ । (ವಿಂ) 2. ಲಕ್ಷಣವನ್ನು ತಿಳಿದವನು ಅಥವಾ  
ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು. ಲಕ್ಷಣಮವಿತ್ತೇ ವೇದ ವಾ-ಲಕ್ಷಣ  
"ಠಕ್" (೪-೨-೬೦) ।

ಲಾಕ್ಷಾ ಲಾಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲಾಖಿ, ಅರಗು. ಲಕ್ಷಯತೇಜಯಾ-  
ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩) । ಪೃಷಂ । "ದಿವ್ಯ-  
ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಸಚರಣಲಾಕ್ಷಾರಾಗಾ ರಾಗಾಯಾತೇ ನಿಪತಿತಪುಷ್ಪಾಪಿಙ್ಡಾಃ"  
ಕಿರಾಂ ೪-೨೩ ।

ಲಾಕ್ಷಾರಸ ಲಾಕ್ಷಾರಸ (ಪುಂ) ಅರಗಿನ ರಸ. ಲಾಕ್ಷಾಯಾ  
ರಸಃ । "ನಿಠಚ್ಛುತಶ್ಚರಣೋಪಭೋಗಸುಲಭೋ ಲಾಕ್ಷಾರಸಃ  
ಕೇನचित್" ಶಾಕುಂ ೪-೪ ।

ಲಾಕ್ಷಾತರ ಲಾಕ್ಷಾತರ (ಪುಂ) ಪಲಾಶವೃಕ್ಷ, ಮುತ್ತಗದ  
ಮರ. ಲಾಕ್ಷಾಯಾ ತರಾದಕಃ ತರಃ ।

ಲಾಘವ ಲಾಘವ (ನಂ) 1. ಲಘುತ್ವ, ಹಗುರವಾಗಿರುವುದು,  
ಭಾರವಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ಲಘುಭಾವಿಃ "ಅಙ್" (೪-೧-೧೩೧) ।  
2. ಸಂಕ್ಷೇಪ, ಸಂಗ್ರಹ. "ಪ್ರಸಾದರಮ್ಯಮೋಜಸ್ವೀ ಗರೀಯೋ  
ಲಾಘವಾನ್ವಿತಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೧-೩೮ । 3. ಪಟುತ್ವ, ಚಟು  
ವಟಿಕೆ, ಕೈಚಳಿಕೆ. "ಪರಿಮೋಹಯಮಾಣೇನ ಶಿಕ್ಷಾಲಾಘವಲಿಲಯಾ"  
ಕಿರಾಂ ೧೪-೩೬ । 4. ಅಗೌರವ, ಅವಮರ್ಯಾದೆ.  
"ಸೇವಾ ಲಾಘವಕಾರಿಣಿಂ ಕೃತಧಿಯಃ ಸ್ಥಾನೇ ಶ್ವವೃತ್ತಿ ವಿಧುಃ"  
ಮುद्रಾಂ ೩-೧೪ । 5. ಸಾಮರ್ಥ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಪೌರುಷ  
ಹೀನತೆ, ಕಾರ್ಯಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. "ಕುರತೇಽಸ್ಮಿನ್ನ-  
ಮೋಽಪಿ ನಿರ್ವಾಣಾಲಾತಲಾಘವಮ್" ಕುಮಾಂ ೨-೨೩ । 6.  
ಆರೋಗ್ಯ, ವಾತಾದಿರೋಗವಿಲ್ಲದೆ ದೇಹವು ಹಗುರ  
ವಾಗಿರುವಿಕೆ. 7. ಸಣ್ಣತನ, ಚಿಕ್ಕದಾಗಿರುವುದು, 8. ಅಲ್ಪ



ತನ, ನೀಚತನ. "ಗೌರವೇಣ ದದೃಶೆ ಸಮುಚ್ಚಿತಲಿಖವೇನ ಚ ನತಿತದ್ಭುತಮ್" ಯಾದಂ ೧೭-೮೧. 9. ಶೀಘ್ರತೆ, ವೇಗ. "ಲಾಙ್ಗಲಿ ಜಲಖಿಲಜ್ಜನದಕ್ಷಂ ಲಾಘವೇನ ಲಘಯನ್ ವಿಚಾರ" ಯಾದಂ ೨೧-೫೭. 10. ಸಮಾಜಸವಾಗಿ, ಶೀಘ್ರಾರ್ಥೋಪ ಸ್ಥಿತಿಗೆ ಕಾರಣವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಶೀಘ್ರವಾಗಿ ಅರ್ಥಬೋಧಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ಸುಲಭೋಪಾಯ. 11. ಅಲ್ಪ, ಸ್ವಲ್ಪ ವಾಗಿರುವುದು, ಮಿತವಾಗಿರುವುದು. "ಅಕ್ರೋಧೋ ಗುರುಶುಶ್ರೂಷಾ ಶೌಚಮಾಹಾರಲಾಘವಮ್".

**ಲಾಙ್ಗಲ ಲಾಂಗಳ (ನಂ)** 1. ನೇಗಿಲ, ಏರು. ಲಙ್ಗತಿ—ಲಗಿ (ಗತೌ) "ಕಲಚ್" (ಗಂ ೧೯೭). ವೃದ್ಧಿಶ್ಚ. 2. ತಾಳವೃಕ್ಷ, ಪನೆಯೆರ. 3. ಗೃಹನಿರ್ಮಾಣಕ್ಕಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಮರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಿ-ಲೀ. 4. ನೀರುಹಿಪ್ಪಲಿ. 5. ಒಂದು ಪುಷ್ಪ. "ಲಾಙ್ಗಲಿ ತೋಯಪಿಪ್ಪಲಾಂ ಕಲಿಬಂ ತು ಕುಸುಮಾಂತರೇ. ಗೋದಾರಣೆ ತೃಣರಾಜಗೃಹದಾರವಿಶೇಷಯೋಃ" ಮೇದಿಂ. 6. ಶಿಶು, ಪುರುಷನ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ. "ಲಿಙ್ಗಂ ತು ಲಾಙ್ಗಲಂ ಶೇಫಃಸಾಧನಂ ಮದನಾಹ್ನುಕುಶಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಲಾಙ್ಗಲದಂಡ ಲಾಂಗಳದಂಡ (ಪುಂ)** ನೇಗಿಲಿನ ಈಚೆ, ನೇಗಿಲಿನ ಉದ್ದದ ಮರ. ಲಾಙ್ಗಲಸ್ಯ ದಂಡಃ.

**ಲಾಙ್ಗಲಧವಜ ಲಾಂಗಳಧವಜ (ಪುಂ)** ಬಲರಾಮ.

**ಲಾಙ್ಗಲಪದ್ಧತಿ ಲಾಂಗಳಪದ್ಧತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ನೇಗಿಲಿನ ಜಾಡು, ನೇಗಿಲಿನ ಗೆರೆ. ಲಾಙ್ಗಲಸ್ಯ ಪದ್ಧತಿಃ. "ಸೀತಾ ಲಾಙ್ಗಲಪದ್ಧತಿಃ" ಅಮಂ.

**ಲಾಙ್ಗಲಿನ್ ಲಾಂಗಳಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ನೇಗಿಲನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ ಬಲರಾಮ. ಲಾಙ್ಗಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫). "ಹಿತ್ವಾ ಹಾಲಾಮಭಿಮತರಸಾಂ ರೇವತೀಲೋಚನಾಙ್ಗಾಂ ಬಂಧುಪ್ರೀತ್ಯಾ ಸಮರವಿಮುಖೋ ಲಾಙ್ಗಲಿ ಯಃ ಪ್ರಪೇದೇ" ಮೇಷಂ ೧-೪೯. 2. ತೆಂಗಿನ ಮರ. "ಲಾಙ್ಗಲಿ ನಾರಿಕೇಲದ್ರೋ ರೇವತೀರಮಣೇ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ.

**ಲಾಙ್ಗಲಿ ಲಾಂಗಳೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ನೀರುಹಿಪ್ಪಲಿ. "ಲಾಙ್ಗಲಿ ತೋಯಪಿಪ್ಪಲಾಮ್" ಮೇದಿಂ. 2. ಕೋಳಿಕುಟುಕನ ಗಿಡ. "ಲಾಙ್ಗಲಿ ಶಾರದೀ ತೋಯಪಿಪ್ಪಲಿ" ಅಮಂ. "ಸ್ಯಾಲ್ಲಾಙ್ಗಲೀತ್ವಗ್ನಿಶಿಖಾ" ಅಮಂ.

**ಲಾಙ್ಗಲ ಲಾಂಗಳಲ (ನಂ)** 1. ತಿರ್ಯಕ್ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಬಾಲ, ಪುಚ್ಚ. ಲಙ್ಗತಿ—ಲಗಿ (ಗತೌ) "ಕಲಚ್" (ತಂ ೪-೯೦). "ಅನ್" (೪-೪-೩೮). "ಲಾಙ್ಗಲ-ವಿಕ್ಷೇಪವಿಸರ್ಪಿಶೋಭೇರಿತಸ್ತತಶ್ಚಂದ್ರಮರೀಚಿಗೌರೇಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೧೩. 2. ಶಿಶು, ಲಿಂಗ, ಪುರುಷನ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ. "ಲಾಙ್ಗಲಂ ಪುಚ್ಚಸೇಕಯೋಃ" ಮೇದಿಂ.

**ಲಾಙ್ಗಲಿಕಾ ಲಾಂಗಳಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ನರಿ ಬಾಲದ ಹುಲ್ಲು. "ಲಾಙ್ಗಲಿಕಾ ಸಿಂಹಪುಚ್ಚಿ" ಕಲ್ಪದ್ರುಂ.

**ಲಾಜ ಲಾಜ (ಪುಂ)** 1. ನೆನೆಸಿದ ಅಕ್ಕಿ, ಒದ್ದೆಯಾದ ಅಕ್ಕಿ. ಲಜ (ಭಜನೆ ಭರ್ತನೆ ಚ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೯). (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ಅಕ್ಕಿ, ಒಡೆಯದ (ಪೂರ್ಣವಾದ). ಅಕ್ಕಿ. 3. ಹುರಿದ ಅಕ್ಕಿ, ಪುರಿ. "ಅವಾಕಿರನ್ ಬಾಲಲತಾಃ ಪ್ರಸುನೇರಾಚಾರಲಾಜೇರಿವ ಪೌರಕನ್ಯಾಃ" ರಘುಂ ೨-೧೦. (ನಂ) 4. ಲಾಮಂಚದ ಬೇರು. "ಲಾಜಾಃ ಪುಂಭೂಮಿ-ಚಾಕ್ಷತಾಃ" ಅಮಂ. "ಲಾಜಃ ಸ್ಯಾದಾದ್ರತಪ್ಪುಲೇ. ಲಾಜಾಸ್ತು ಭ್ರಷ್ಟಧಾನ್ಯೇ ಸ್ಯುರ್ಲಜಿಂ ಪುನಃಶೀರಕೇ" ಹೇಮಂ.

**ಲಾಙ್ಚನ ಲಾಂಚನ (ನಂ)** 1. ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು. ಲಾಙ್ಚಯತೇ—ಲಾಙ್ಚಿ (ಲಕ್ಷಣೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫). "ಕ್ಷಿತಿಪು ದದೃಶಿರೇ ಪದಾನಿ ಜಿಣ್ಣೋರೂಪಹಿತಕೇತುರಥಾಙ್ಗಲಾಙ್ಚನಾನಿ" ಕಿರಾಂ ೧೦-೭. 2. ಕಳಂಕ, ಮಚ್ಚೆ. "ದಿವಾಪಿ ನಿಷ್ಕಚ್ಛತ-ಮರೀಚಿಮಾಸಾ ಬಾಲ್ಯಾದನಾವಿಷ್ಕೃತಲಾಙ್ಚನೇನ" ಕುಮಾಂ ೭-೩೫. 3. ಹೆಸರು, ಸಂಜ್ಞೆ. "ಲಾಙ್ಚನಂ ಲಕ್ಷಮಸಂಜಯೋಃ" ಹೇಮಂ. "ಪವಿತ್ರಕೀರ್ತೆಃ ನೇಲಕಂಠಸ್ಯ ಪುತ್ರಃ ಶ್ರೀಕಂಠಪದ-ಲಾಙ್ಚನಃ ಪದವಾಕ್ಯಪ್ರಮಾಣಜ್ಞೋ ಭವಭೂತಿರನಿಮಿ" ಮಾಲತೀಂ ೧. "ತತ್ರಭವಾನ್ ಕಾಶ್ಯಪಃ ಶ್ರೀಕಂಠಪದಲಾಙ್ಚನೋ ಭವಭೂತಿರನಿಮಿ" ತಂ ರಾಂ ೧. 4. ಅಪವಾದ, ಅಪೇಕ್ಷೆ. 5. ಗುರುತು ಮಾಡುವುದು.

**ಲಾಙ್ಚನಿ ಲಾಂಚನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸ್ವೈರಿಣಿ, ಕುಲಟಿ, ಹಾದರಗಿತ್ತಿ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ. "ಬಂಧುಕೀ ಲಾಙ್ಚನೀ ಕ್ಷುಡ್ಧ-ಶೀಲಾ" ಕಲ್ಪದ್ರುಂ.

**ಲಾಙ್ಚಿಕಾ ಲಾಂಚಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸ್ವೈರಿಣಿ, ಕುಲಟಿ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ.

**ಲಾಙ್ಚಿತ ಲಾಂಚಿತ (ವಿಂ)** 1. ಗುರುತುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಲಾಙ್ಚಿ (ಲಕ್ಷಣೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). 2. ಶೃಂಗರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಬಿಭ್ರದ್ರಹುನಯನೇನ ಕ್ವಂ ಶಿಖಿಪಿಚ್ಛಲಾಙ್ಚಿತಕಪಾಲಮಿತ್ತಿನಾ" ಕಿರಾಂ ೧೨-೪೧. 3. ಹೆಸರಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಬಣ್ಣಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿರ್ಮಲೇಪಿ ಶಯನಂ ನಿಶಾತ್ಯಯೇ ನೋಜ್ಜಿತಂ ಚರಣರಾಗಲಾಙ್ಚಿತಮ್" ಕುಮಾಂ ೮-೮೯.

**ಲಾಡ ಲಾಟಿ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ)** 1. ಲಾಟದೇಶ. (ಪುಂ) 2. ಲಾಟದೇಶದ ದೊರೆ. 3. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. 4. ಹಳೆಯಬಟ್ಟೆ, ಒಡವೆ ಮುಂತಾದುವು. "ಲಾಟೋ ದೇಶಾಂತರೇಶುಕೇ" ಮೇದಿಂ.

**ಲಾಡಾನುಪ್ರಾಸ ಲಾಟಾನುಪ್ರಾಸ (ಪುಂ)** ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ, ಐದು ವಿಧ ಅನುಪ್ರಾಸಗಳಲ್ಲೊಂದು.



ಅನುಪ್ರಾಸವು (1) ಛೇಕಾನುಪ್ರಾಸ: (2) ವೃತ್ತಾನುಪ್ರಾಸ: (3) ಶ್ರುತಾನುಪ್ರಾಸ: (4) ಅನ್ಯಾನುಪ್ರಾಸ: ಮತ್ತು (5) ಲಾಟಾನುಪ್ರಾಸ: ಎಂದು ಐದು ವಿಧ. ಶಬ್ದ ಮತ್ತು ಅರ್ಥಗಳ ಪೋಷಣೆಯಿರುವ ತಾತ್ಪರ್ಯವಿಷಯಾನುವಯದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಭೇದವಿರುವುದು ಲಾಟಾನುಪ್ರಾಸ. "ಶಬ್ದಾರ್ಥಯೋ: ಪೌನ-ಹುತ್ಯಂ ಭೇದೇ ತಾತ್ಪರ್ಯಮಾತ್ರತ: | ಲಾಟಾನುಪ್ರಾಸ ಇತ್ಯುಕ್ತ:" ಸಾಂ ೧೦-೨೧. "ಸ್ಮೇರೇ ರಾಜೀವನಯನೇ ನಯನೇ ಕಿಂ ನಿಮಿಲಿತೇ | ಪಶ್ಯ ನಿಜಿತಕಂದರ್ಪೇ ಕಂದರ್ಪವಶಗಂ ಪ್ರಿಯಮ್" | ಇಲ್ಲಿ "ನಯನ" ಪದಕ್ಕೂ ಅದರ ಅರ್ಥಕ್ಕೂ ಪೋಷಣೆಯಿರುವುದು ಮೊದಲನೆಯ "ನಯನ" ಪದಕ್ಕೆ ಸಂದರ್ಭಗುಣ ವಿಶಿಷ್ಟತ್ವರೂಪವಾದ ತಾತ್ಪರ್ಯದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಭೇದವಿರುವುದರಿಂದ ಲಾಟಾನುಪ್ರಾಸ.

**ಲಾಟಿ ಲಾಟೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಾಟದೇಶದ ಭಾಷೆ, ಪ್ರಾಕೃತ ಭಾಷೆಯ ಒಂದು ಭೇದ. "ಶೌರಸೇನೋ ಚ ಗೌಡೀ ಚ ಲಾಟೀ ಚಾನ್ಯಾ ಚ ತಾದೃಶೀ | ಯಾತಿ ಪ್ರಾಕೃತಮಿತ್ಯೇವಂ ವ್ಯವಹಾರೇಷು ಸನ್ನಿಧಿಮ್" ಕಾವ್ಯಾಂ ೧-೩೫. 2. ಭಾಷಾಶೈಲಿಯ ಒಂದು ಭೇದ, ಲಾಟದೇಶದ ಕವಿಗಳು ಅನುಸರಿಸುವ ಭಾಷಾಶೈಲಿ (ರೀತಿ). ಮೃದುರ್ವರ್ಣಪದಘಟಿತಸಮಸ್ತಪದಗಳಿಂದಲೂ ಹೆಚ್ಚು ಅಸಂಯುಕ್ತ ವರ್ಣಗಳಿಂದಲೂ ಯೋಗ್ಯವಿಶೇಷಣಗಳಿಂದಲೂ ಕೂಡಿರುವುದು ಲಾಟೀ ಶೈಲಿ (ರೀತಿ).

**ಲಾತ ಲಾತ** (ನಂ) 1. ಸ್ವೀಕಾರ, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು ಲಾ (ಆದಾನೆ) ಭಾವ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪). (ವಿಂ) 2. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ವೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಲಾ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |

**ಲಾತವತ್ ಲಾತವತ್** (ವಿಂ) ತೆಗೆದುಕೊಂಡವನು. ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ವತೀ -ವತೀ.

**ಲಾತವ್ಯ ಲಾತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಡುವ. 2. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಬೇಕಾದ. 3. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಬಹುದಾದ. ಲಾ (ಆದಾನೆ) ಕರ್ಮದಿ "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) | "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | -ನೀಯ: -ನೀಯಾ:.

**ಲಾತಿ ಲಾತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಸ್ವೀಕರಿಸುವುದು. ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) |

**ಲಾಪ ಲಾಪ** (ಪುಂ) ಮಾತಾಡುವುದು, ಹೇಳುವುದು. ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಭಾವ "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮) |

**ಲಾಪನ ಲಾಪನ** (ನಂ) ಮಾತಾಡಿಸುವುದು, ಮಾತಾಡುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಚ್ "ಸ್ಯತ್" (೩-೩-೧೧೫) |

**ಲಾಪನೀಯ ಲಾಪನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಮಾತಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | 2. ಮಾತಾಡಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಮಾತಾಡಿಸಬಹುದಾದ. "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) | ಲಾಪಯಿತವ್ಯ: ಲಾಪಯಿತವ್ಯ:.

**ಲಾಪಯತ್ ಲಾಪಯತ್** (ವಿಂ) ಮಾತಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೇಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಯಂತೀ -ಯಂತೀ.

**ಲಾಪಿತ ಲಾಪಿತ** (ನಂ) 1. ಮಾತಾಡಿಸುವುದು. ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಚ್ ಭಾವ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) | (ವಿಂ) 2. ಮಾತಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಲಪ + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |

**ಲಾಪಿತವತ್ ಲಾಪಿತವತ್** (ವಿಂ) ಮಾತಾಡಿಸಿದವನು. ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ವತೀ -ವತೀ.

**ಲಾಪ್ಯ ಲಾಪ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. 2. ಹೇಳಬೇಕಾದ, ಮಾತಾಡಬೇಕಾದ. ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಕರ್ಮಂ "ಘಜ್" (೩-೧-೧೨೪) |

**ಲಾಭ ಲಾಭ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಸಂಪಾದನೆ. ಡುಲಭಃ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮) | "ಅತೌ ನೃಪಾಶ್ಚಾಸ್ಮಿರೇ ಸಮೇತಾ: ಸ್ತ್ರೀರತ್ನಲಾಭಂ ನ ತದಾತ್ಮಜಸ್ಯ" ರಘುಂ ೭-೩೪ | 2. ಹೆಚ್ಚು ಸಂಪಾದನೆ, ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಯೋಜನ, ಖರ್ಚು ಕಳೆದು ಉಳಿದ ಆದಾಯ. "ಸುಖದೃಃ ಸಮೇ ಕೃತ್ವಾ ಲಾಭಾಲಾಭೋ ಜಯಾಜಯೋ | ತತೌ ಯುಧಾಯ ಯುಜ್ಯಸ್ವ ನೈವಂ ಪಾಪ-ಮವಾಪ್ಸ್ಯಸಿ" ಗೀತಾ ೨-೩೮ |

**ಲಾಭಕರ ಲಾಭಕರ** (ವಿಂ) ಲಾಭವನ್ನು ಕೊಡುವ, ಹೆಚ್ಚು ವರಮಾನವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ, ಹೆಚ್ಚು ಆದಾಯವನ್ನು ಕೊಡುವ. ಲಾಭಸ್ಯ ಕರ: |

**ಲಾಭಜಕ ಲಾಭಜಕ** (ನಂ) ಲಾಭಮಾಡಿದ ದೇವರು. ಲಾತಿ ದೋಷಾನ್—ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೧೭೮) | ಲಾ ಮಜ್ಜಾ ಸಾರೋಪ್ಯ | "ಕಪ್" (೫-೪-೧೫೪) | "ಲಾಭಜಕಂ ಲಘುಲಯಮವದಾಹೇಷ್ಟಕಾಪಥೇ" ಅಮಂ |

**ಲಾಲಕ ಲಾಲಕ** (ವಿಂ) 1. ಲಾಲಿಸುವವನು, ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರೀತಿಸುವವನು, ಮುದ್ದಾಡುವವನು. ಲಲ (ಪ್ರೀತಾಯಾಮ್) "ಘಜ್" (೩-೧-೧೩೩) | 2. ಮಕ್ಕಳಂತೆ ಮಾತಾಡುವವನು, ತೊದಲುತ್ವ ಮಾತಾಡುವವನು. "ಲಾಲಕೋ ಬಾಲಾನುಕೃತೌ" ವೈಜಂ |



**ಲಾಲನ ಲಾಲನ** (ಪುಂ) 1. ಸಜ್ಜರಸ, ರಾಳ. "ಅಥ ಸರ್ಜನೋ ಲಾಲನೋ ರಸಃ" ವೈಜಂ. (ನಂ) 2. ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರೀತಿಸುವುದು, ಮುದ್ದಾಡುವುದು. ಲಲ (ಔಪಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). "ದೊರ್ಮನ್ಯಾನ್ವಪತಿವಿನಶ್ಯತಿ ಯತಿಃ ಸಜ್ಜಾತ್ ಸುತೋ ಲಾಲನಾತ್" ಭರ್ತಂ 1-33.

**ಲಾಲಸ ಲಾಲಸ** (ಪುಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಆಸೆ, ಹೆಚ್ಚು ಅಭಿಲಾಷೆ. ಲಸ (ಕಾಂತಿ) ಭೂಶಾರ್ಥ "ಯಜ್" (3-1-22). "ಛಬ್" (3-3-114). (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸಾ-ಸಾ. ಯಜಂತಾತ್ "ಅಃ" (3-3-102). "ಟಾಪ್". "ಯುಧೇ ತ್ರಿಲೋಕೀ-ಜಯಕೇಲಿಲಾಲಸಃ" ಕುಮಾಂ 14-4. 2. ಔತ್ಸುಕ್ಯ, ತವಕ. 3. ಯಾಚನೆ, ಬೇಡಿಕೆ. 4. ಗರ್ಭಿಣಿಯ ಬಯಕೆ. (ವಿಂ) 5. ಉತ್ಸಾಹದಿಂದ ಆಸೆಪಡುವ, ಕುತೂಹಲದಿಂದ ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. "ತಸ್ಮಿನ್ ಮುಹುರ್ತೇ ಸುರಸುಂದರೀಣಾಮೀಶಾನಸಂದರ್ಶನ-ಲಾಲಸಾನಾಮ್" ಕುಮಾಂ 10-66. 6. ಔತ್ಸುಕ್ಯವುಳ್ಳ. 7. ಆಸಕ್ತನಾದ, ಶ್ರದ್ಧೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಛಾಯಾಂ ನಿಜಸ್ತ್ರೀಚಟು-ಲಾಲಸಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ 4-6. "ಲಾಲಸೋ ಲೋಲಯಾಚ್ಚಯೋಃ ತುಣಾತಿರೇಕೇ ಆತ್ಮಸುಖ್ಯೇ" ಹೇಮಂ.

**ಲಾಲಾ ಲಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಯಿನೀರು, ಜೊಲ್ಲು. ಲಲ (ಔಪಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (3-1-134). "ಕುಮಿ-ಕುಲಚಿತಂ ಲಾಲಾವಿಲಸಂ ವಿಗಂಧಿ ಜುಗುಪ್ಸಿತಮ್" ಭರ್ತಂ 1-9.

**ಲಾಲಾಟಿಕ ಲಾಲಾಟಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಅಲಿಂಗನದ ಒಂದು ಭೇದ, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುವುದು. (ವಿಂ) 2. ಹಣೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಹಣೆಯ ಮೇಲಿರುವ. 3. ಯಜಮಾನನ ಮುಖವನ್ನು ನೋಡುತ್ತ ನಿಂತಿರುವ, ಯಜಮಾನನ ಮುಖಭಾವವನ್ನು ನೋಡುತ್ತಿರುವ. ದೂರ ಸ್ಥಿತವಾಗಿ ಪ್ರಭೋಃ ಲಾಲಾಟಂ ಪಶ್ಯತಿ ನ ತು ಕಾರ್ಯೇಷು ಉಪತಿಷ್ಠತೇ - ಲಾಲಾಟ "ಠಕ್" (4-4-46). 4. ಅಪ್ರಯೋಜಕ, ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಬಾರದವನು, ಸೋಮಾರಿ. "ಲಾಲಾಟಿಕಃ ಸ್ವಾಧಾಶ್ಲೇಷಭೇದೇ ಕಾರ್ಯಕ್ಷಮೇಽಪಿ ಚ | ಪ್ರಭೋರ್ಬಾಲದರ್ಶಿನಿ ಚ" ಹೇಮಂ.

**ಲಾಲಾವಿಷ ಲಾಲಾವಿಷ** (ಪುಂ) ಜೇಡರ ಹುಳ. ಲಾಲಾಯಾಂ ವಿಷಮಸ್ಯ |

**ಲಾಲಾಪ್ರಾಪ ಲಾಲಾಪ್ರಾಪ** (ಪುಂ) 1. ಜೇಡರ ಹುಳ. ಲಾಲಾಂ ಪ್ರಾಪಯತಿ - ಸ್ತು (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಅಞ್" (3-2-1). 2. ಜೊಲ್ಲು ಸುರಿಯುವುದು. ಲಾಲಾಯಾಃ ಪ್ರಾಪಃ |

**ಲಾಲಿಕ ಲಾಲಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಮಹಿಷ, ಎಮ್ಮೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ-ಕಾ. 2. ಎನೋದವಾಗಿ ಕೊಡುವ ಉತ್ತರ.

**ಲಾಲಿತ ಲಾಲಿತ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೀತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುದ್ದಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಬೇರೆ ಗುಣ ಹೊಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರವಸತಃ

ಸುತರಾಮುದಕಮ್ಪಯದ್ವಿದಲಕಂದಲಕಮ್ಪನಲಾಲಿತಃ" ಮಾಘಂ 6-30. 3. ಸತ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಶ್ರೀಯ-ಮಲಿಕುಲಗೀತೇರ್ಲಾಲಿತಾ ಪಚ್ಚಜಾಂತರ್ಮವನಮಧಿಶಯಾನಾಮಾದರಾ-ತ್ಪಶ್ಯತೀವ" ಮಾಘಂ 11-61.

**ಲಾಲಿತ ಲಾಲಿತ** (ನಂ) ಮಾಧುರ್ಯ, ಸೌಂದರ್ಯ, ಸೊಬಗು. ಲಾಲಿತಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಛಬ್" (4-1-124). "ಉಪಮಾ ಕಾಲಿದಾಸಸ್ಯ ಭಾರವೇರ್ಥಗೌರವಮ್ | ದೃಢಿನಃ ಪದಲಾಲಿತಂ ಮಾಘೇ ಸಂತಿ ತ್ರಯೋ ಗುಣಾಃ" |

**ಲಾವ ಲಾವ** (ಪುಂ) ಲಾವಕ್ಕಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹಕ್ಕಿ. ಲೂ (ಛೇದನ) ಸ್ವಾರ್ಥ "ಣಿಚ್" "ಅಚ್" (3-1-134). ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" | ಲಾವಕಃ ಲಾವಕಃ |

**ಲಾವಕ ಲಾವಕ** (ವಿಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸುವವನು, ಛೇದಿಸುವವನು. ಲೂ (ಛೇದನ) "ಞ್" (3-1-133). 2. ಲಾವಕ್ಕಿ.

**ಲಾವಣ ಲಾವಣ** (ವಿಂ) ಲವಣ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಲವಣ-ಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (4-3-120) |

**ಲಾವಣಿಕ ಲಾವಣಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಉಪ್ಪು ಮಾರುವವನು, ಉಪ್ಪಿನ ವರ್ತಕ. ಲವಣಂ ಪಣ್ಯಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (4-4-42). (ವಿಂ) 2. ಲಾವಣ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಲಾವಣ್ಯಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಠನ್" (4-2-114). ಏಕಃ (10-3-40). ಯಲೋಪಃ (6-4-140). "ಲೀಲಯೇವ ಸುತನೋಸ್ತುಲಯಿತ್ವಾ ಗೌರವಾಡ್ಯ-ಮಪಿ ಲಾವಣಿಕೇನ" ಮಾಘಂ 10-38. 3. ಲವಣದಿಂದ ಸಂಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಲವಣೇನ ಸಂಸ್ಕೃತಮ್ - ಲವಣ "ಠಕ್" (4-4-3). (ನಂ) 4. ಲವಣದ ಪಾತ್ರೆ.

**ಲಾವಣ್ಯ ಲಾವಣ್ಯ** (ನಂ) 1. ಲವಣತ್ವ, ಲವಣದ ಭಾವ. ಲವಣಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಛಬ್" (4-1-124). 2. ದೇಹ ಸೌಂದರ್ಯ, ಮೈ ಸೊಬಗು. ಲವಣಾ ದೀಪ್ತಿಃ - ಸ್ವಾರ್ಥ "ಛಬ್" (4-1-123). "ಮುಕ್ತಾಫಲೇಷು ಚ್ಚಾಯಾಸ್ತರಲತ್ವ-ಮಿವಾಂತರಾ | ಪ್ರತಿಭಾತಿ ಯದ್ವಜ್ರೇಷು ತಲ್ಲಾವಣ್ಯಮಿಹೋಚ್ಯತೇ" | "ಸೌವರ್ಣಂ ವಲಯಮವಾಗಲ್ಕರಾಗ್ರಾತ್ ಲಾವಣ್ಯಶ್ರೀಯ ಇವ ಶೇಷ-ಮಜ್ಜನಾಯಾಃ" ಮಾಘಂ 6-34.

**ಲಾಘುಕ ಲಾಘುಕ** (ವಿಂ) ಅತಿ ಆಸೆಪಡುವವನು, ಲೋಭಿ. ಲಘ (ಕಾಂತಿ) "ಉಕಬ್" (3-2-144) |

**ಲಾಸ ಲಾಸ** (ಪುಂ) 1. ನೃತ್ಯ, ಅನುಕರಣಾತ್ಮಕವಾದ ಕುಣಿತ. ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣಕ್ರೀಡನಯೋಃ) ಭಾವೇ "ಛಬ್" (3-3-114). 2. ಸ್ತ್ರೀಯರ ನರ್ತನ, ಹೆಂಗಸರ ಕುಣಿತ. 3. ಮಂಸದ ಸಾರು.

**ಲಾಸಕ ಲಾಸಕ** (ಪುಂ) 1. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಲಸತಿ - ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣಕ್ರೀಡನಯೋಃ) "ಞ್" (3-1-133) |



2. ನರ್ತಕ, ಕುಣಿದಾಡುವವನು, ನರ್ತನ ಮಾಡುವವನು.  
"ಲಾಸಕೌ ಕೇಕಿನರ್ತಕೌ" ಹೇಮಂ । 3. ಆಲಿಂಗನ. (ವಿಂ)  
4. ಪ್ರಕಾಶವುಂಟುಮಾಡುವ, ಬೆಳಕನ್ನು ಕೊಡುವ.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕೌ-ಕೇ. 5. ನರ್ತಕ, ನರ್ತನ ಮಾಡುವ  
ಹೆಂಗಸು.

**ಲಾಸಿಕಾ ಲಾಸಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನರ್ತಕ, ನರ್ತನಮಾಡುವ  
ಹೆಂಗಸು. 2. ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ, ಸ್ವೈರೀಣಿ, ವೇಶ್ಯ. ಲಸತಿ  
—ಲತ (ಶ್ಲೇಷಣಕೌಡನಯೋಃ) "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।  
"ಠಾಪ್" । "ನರ್ತಕೀಲಾಸಿಕೇ ಸಮೇ" ಅಮಂ ।

**ಲಾಸ್ಯ ಲಾಸ್ಯ** (ನಂ) 1. ನರ್ತನ, ನೃತ್ಯ, ಕುಣಿತ. "ಲಸ  
(ಶ್ಲೇಷಣಕೌಡನಯೋಃ) "ಫ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) । "ವೃಕ್ಷೇಶಯಾ  
ಯಃಪಿವಾಸಮಜ್ಞಾತ್ ಮೃದ್ವಜ್ಜಶಬ್ದಾಪಗಮಾದಲಾಸ್ಯಾಃ" ರಘುಂ  
೧೩-೧೪ । 2. ಸಂಗೀತ ಮತ್ತು ವಾದ್ಯಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ  
ಸ್ತ್ರೀಯರ ನರ್ತನ. "ಲಾಸ್ಯಂ ತೌರ್ಯವಿಕೇ ಮತಮ್ । ನೃತ್ಯೇ  
ಚ 'ಮೇದಿಂ । "ಪುನೃತ್ಯಂ ತಾಪ್ತವಂ ಪ್ರಾಹುಃ ಸ್ತ್ರೀನೃತ್ಯಂ ಲಾಸ್ಯ-  
ಮುಚ್ಯತೇ" । 3. ಅನುಕರಣಾತ್ಮಕವೂ ಭಾವಾಶ್ರಯವೂ  
ಆದ ನೃತ್ಯ.

**ಲಿಕುಚ ಲಿಕುಚ** (ಪುಂ) 1. ಗಜನಿಬಿಗಿಡ. ಲಕ(ಆಸ್ವಾದನೇ)  
"ಉಚಃ" ಬಾಹುಂ । ಪೃಷಂ । "ಲಿಕುಚೋ ಲಿಕುಚೋ ಡಹುಃ"  
ಅಮಂ । (ನಂ) 2. ಚಕ್ಕೋತದ ಸೊಪ್ಪು. "ದಲಾಮ್ಲಂ  
ಚುಕ್ರಾಸ್ತುಕಂ ಲಿಕುಚಮ್" ಕಲ್ಪದ್ರುಂ ।

**ಲಿಕ್ಷಾ ಲಿಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೇನಿನ ಮೊಟ್ಟೆ, ಕೂರೆಯ  
ತಟ್ಟಿ, ಸೀರು. ಲಕ್ಷ (ಆಲೋಚನೇ) "ಛನ್" (೩-೩-೧೯) ।  
ಪೃಷಂ । "ಮಹಿಷಸ್ಯಾ ಮಹಶ್ಯುಕಾ ಲಿಕ್ಷಾ ಯುಕ್ತಾಪ್ತಮ್" ಕಲ್ಪದ್ರುಂ ।  
2. ಎಟು ತ್ರಸರೇಣುಗಳು. "ತ್ರಸರೇಣುಭಿರಟಾಭಿಲಿಕ್ಷಾ"  
ವಂಜಂ । 3. ಗವಾಕ್ಷ ಮೊದಲಾದ ಸ:ದಿ (ಕುಡಿ)ಯಲ್ಲಿ  
ಬೀಳುವ ಸೂರ್ಯ ರಶ್ಮಿಯಲ್ಲಿ ಅತಿಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿ ಕಾಣುವ  
ಧೂಳು ತ್ರಸರೇಣು. ಅಂತಹ 8 ತ್ರಸರೇಣುಗಳಿಗೆ ಒಂದು  
"ಲಿಕ್ಷಾ" ಎಂದು ಹೆಸರು. "ಜಾಲಾಂತರಗತೇ ಭಾನೌ  
ಯತ್ಸೂಕ್ಷ್ಮಂ ದೃಶ್ಯತೇ ರಜಃ । ಪ್ರಥಮಂ ತತ್ಪ್ರಮಾಣಾನಾಂ ತ್ರಸರೇಣು  
ಪ್ರಚ್ಛತೇ । ತ್ರಸರೇಣವೋಷ್ಟೌ ವಿಜ್ಞೇಯಾ ಲಿಕ್ಷೇಕಾ ಪರಿಮಾಣತಃ"  
ಮನುಂ ೮-೧೩೨, ೩೩ ।

**ಲಿಖ ಲಿಖ** (ಪುಂ) ಲೇಖಕ, ಬರವಣಿಗೆಯವನು, ಬರೆಯು  
ವವನು. ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಲಿಖನ ಲಿಖನ** (ನಂ) 1. ಲೇಖನ, ಬರವಣಿಗೆ. ಲಿಖ  
(ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) । 2.  
ಬರಹ, ಲಿಖ, ಲಿಖಿತ. "ವಿಧಾತುಶ್ಚ ವಿಧಾತಾಽಹಂ ಯೇಷಾಂ  
ಯಲ್ಲಿಖನಂ ಕೃತಮ್ । ಬ್ರಹ್ಮಾದೀನಾಂ ಚ ಕ್ಷುಧ್ರಾಣಾಂ ನ ತತ್ ಕ್ಷುಧ್ರಂ

ಕದಾಚನ" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ । 3. ಗೀರುವುದು, (ಕಡ್ಡಿ ಮೊದಲಾ  
ದುವುಗಳಿಂದ) ಗೆರೆ ಎಳೆಯುವುದು. 4. ಚಿತ್ರ ಬರೆಯು  
ವುದು, ನಕ್ಷೆ ತಯಾರಿಸುವುದು.

**ಲಿಖಿತ ಲಿಖಿತ** (ಪುಂ) 1. ಒಟ್ಟು ಸ್ತೋತಾರರು, ಶಂಖ  
ರಾಬ ಮುನಿಯ ಸಹೋದರರು. (ನಂ) 2. ಲೇಖನ,  
ಬರವಣಿಗೆ. 3. ಕಾಗದ, ಪತ್ರ, ದಸ್ತಾವೇಜು. 4. ಲಿಖಿ.  
5. ಬರೆದ ಪುಸ್ತಕ. (ವಿಂ) 6. ಬರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 7. ಚಿತ್ರ  
ಬರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಲೀನೇವ ಪ್ರತಿವಿಮ್ಬಿತೇವ ಲಿಖಿತೇವೋ-  
ತ್ಕೀರ್ಣರೂಪೇವ ಚ" ಮಾಲತೀಂ ೪-೧೦ । ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ)  
ಭಾವೇ ಕರ್ಮಣಿ ಚ "ಕ್ತಃ" ।

**ಲಿಗು ಲಿಗು** (ಪುಂ) 1. ಮೂರ್ಖ, ಅಜ್ಞ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲ  
ದವನು. 2. ಜಿಂಕೆ, ಚಿಗರಿ, ಹರಿಣ. ಲಗ (ಸಂಕ್ಷೇಪ) "ಕ್ರುಃ"  
(೩ಂ ೧-೩೬) । (ನಂ) 3. ಚಿತ್ರ, ಮನಸ್ಸು. "ಲಿಗು  
ಚಿತ್ತಮ್ ಲಿಗುಮುಖಃ" ಸಿಂ ಕೌಂ । 4. ಭೂಭಾಗ,  
ಭೂಮಿಯ ಮೇಲಣ ಭಾಗ. "ಭೂಪ್ರದೇಶೋ ಮಗ್ಗೇ ಲಿಗುಃ"  
ವಂಜಂ ।

**ಲಿಙ್ಗ ಲಿಂಗ** (ನಂ) 1. ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು, ಲಕ್ಷಣ. ಲಿಗಿ  
(ಗತೌ) "ಛನ್" (೩-೩-೧೨೧) । "ಯಥತುಲಿಙ್ಗಾನ್ಯತವಃ  
ಸ್ವಯಮೇವರ್ತುಪರ್ಯಯೇ । ಸ್ವಾನಿ ಸ್ವಾನ್ಯಭಿಪದಂತೇ ತಥಾ ಕರ್ಮಾಣಿ  
ದೇಹಿನಃ" ಮನುಂ ೧-೩೦ । 2. ವೇಷ, ಸೋಗು. "ಸ ಚ  
ಮಯಾ ಕ್ಷಣಕಾಲಿಙ್ಗಧಾರಿ ನಂದವಧಪ್ರತಿಜ್ಞಾನಂತರಮೇವ ಕುಸುಮ-  
ಪುರಮುಪನೀಯ ನಂದಾಮಾತೃಯಃ ಸಹ ಸಖ್ಯಂ ಗ್ರಾಹಿತಃ" ಮೃದಾಂ ೧ ।  
3. ಶಬ್ದರೂಪದ ಲಿಂಗ, ಶಬ್ದದ ಸಾಧುತ್ವವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ  
ಶಬ್ದದಲ್ಲಿರುವ ಧರ್ಮ. ಪುಲಿಙ್ಗಃ ಸ್ತ್ರೀಲಿಙ್ಗಃ ನಪುಂಸಕ-  
ಲಿಙ್ಗಃ । 4. ಅನುಮಾನ, ವ್ಯಾಪ್ತಿಯ ಆಶ್ರಯ. 5. ರೋಗದ ಚಿಹ್ನೆ, ರೋಗವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಲಕ್ಷಣ.  
6. ಸಾಂಖ್ಯಮತೋಕ್ತವಾದ ಪ್ರಕೃತಿ. "ತತ್ರ ಜರಾಮರಣ-  
ಕೃತಂ ದುಃಖಂ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ ಚೇತನಃ ಪುರುಷಃ । ಲಿಙ್ಗಸ್ಯಾವಿವಿವೃತ್ತೇಃ  
ತಸ್ಮಾದ್ಧುಃಖಂ ಸ್ವಭಾವೇನ" ಸಾಂ ಕಾಂ । 7. ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ  
ಭೇದವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಚಿಹ್ನೆ. "ಗುಣಾಃ ಪೂಜಾಸ್ಥಾನಂ ಗುಣಿಷು  
ನ ಚ ಲಿಙ್ಗಂ ನ ಚ ವಯಃ" ಉಂ ರಾಂ ೪-೧೧ । 8. ಪುರುಷನ  
ಜನನೇಂದ್ರಿಯ. "एका लिङ्गे गुदे तिस्रस्तथैकत्र  
करे दश" ಮನುಂ ೪-೧೩೪ । 9. ಪರಿಶಿವನ ಒಂದು  
ಮೂರ್ತಿ, ಒಂದು ರೂಪ. "ಲಿಙ್ಗಂ ಚಿಹ್ನೇಜ್ಞಮಾನೇ ಚ  
ಸಾಹ್ಚಯೋಕ್ತಪ್ರಕೃತಾವಪಿ । ಶಿವಮೂರ್ತಿವಿಶೇಷೇಽಪಿ ಮೇಹನೇಽಪಿ  
ನಪುಂಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ । 10. ಶಬ್ದದ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಪದ  
ಗಳಿಗೆ ಅರ್ಥಕೊಡುವ ಪರಸ್ಪರವಿರುವ ಒಂದು ಸಂಬಂಧ.  
"ಸಂಯೋಗೋ ವಿಪ್ರಯೋಗಶ್ಚ ಸಾಹ್ಚಯಂ ವಿರೋಧಿತಾ । ಅರ್ಥಃ  
ಪ್ರಕರಣಂ ಲಿಙ್ಗಂ ಶಬ್ದಸ್ಯಾನ್ಯಸ್ಯ ಸನ್ನಿಧಿಃ" ಸಾಂ ೮೦ ।



“ಕುಪಿತೋ ಮಕರಃ” ಎಂಬಲ್ಲಿ “ಕುಪಿತ” ಪದದ ಸುಬಂಧವು “ಮಕರಃ” ಪದಕ್ಕೆ ಕಾಮ (ಮನ್ಮಥ) ನಲ್ಲೇ ಅರ್ಥವನ್ನು ನಿಯಂತ್ರಿಸುವುದು. 11. ಪ್ರಮಾಣ, ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸುವ ನಿದರ್ಶನ. 12. ಒಂದು ಪುರಾಣ, [“ಲಿಙ್ಗಪುರಾಣ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 13. ಹೇತು, ಕಾರಣ.

**ಲಿಙ್ಗಕ ಲಿಂಗಕ (ಪುಂ)** ಕಪಿತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಬೇಲದ ಮರ.

**ಲಿಙ್ಗಪುರಾಣ ಲಿಂಗಪುರಾಣ (ನಂ)** ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ ಪ್ರಣೀತವಾದ ಅಷ್ಟಾದಶ ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. [ಈ ಪುರಾಣದಲ್ಲಿ ಯೋಗದ ವಿಷಯ ಕಲ್ಪ ಲಿಂಗದ ಉತ್ಪತ್ತಿ ಲಿಂಗದ ಪೂಜೆ ದಧೀಚಿ ಚರಿತ್ರೆ ಯುಗಧರ್ಮಗಳು ಸೃಷ್ಟಿ ಕ್ರಮ ಲಿಂಗಪ್ರತಿಷ್ಠೆ ಸದಾಚಾರವಿವರಣೆ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ ಕಾಶಿ ಮತ್ತು ಶ್ರೀಶೈಲದ ವರ್ಣನೆ ವರಾಹಾವತಾರ ಮತ್ತು ನೃಸಿಂಹಾವತಾರಕಥೆ ಶಿವಸಹಸ್ರನಾಮ ದಕ್ಷ ಯಜ್ಞಧ್ವಂಸ ಕಾಮದಹನ ಗಿರಿಜಾಕಲ್ಯಾಣ ವಿನಾಯ ಕೋಪಾಖ್ಯಾನ ಪರಮೇಶ್ವರನ ನೃತ್ಯ ಮುಂತಾದ ಅನೇಕ ವಿಷಯಗಳು ವರ್ಣಿತವಾಗಿವೆ.]

**ಲಿಙ್ಗವರ್ಧಿನಿ ಲಿಂಗವರ್ಧಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಪಾಮಾರ್ಗ, ಉತ್ತರೇಣಿ ಗಿಡ. ಲಿಙ್ಗ ವರ್ಧಯತಿ—ವೃಧ್ (ವರ್ಧನೆ)+ಣಿच् “ಣಿನಿ:” (3-1-134).

**ಲಿಙ್ಗವಿಪರ್ಯಯ ಲಿಂಗವಿಪರ್ಯಯ (ಪುಂ)** ಶಬ್ದದ ಲಿಂಗ ಬದಲಾವಣೆ.

**ಲಿಙ್ಗವೃತ್ತಿ ಲಿಂಗವೃತ್ತಿ (ವಿಂ)** ಜೀವಿಕೆ (ಹೊಟ್ಟೆಪಾಡಿ) ಗಾಗಿ ವೇಷ ಹಾಕಿದವನು. ಧಾರ್ಮಿಕ ವೇಷಧರಿಸಿ ಜೀವಿಸುವವನು. ಲಿಙ್ಗ ವೇವವಾರಣವೇ ವೃತ್ತಿ: ಜೀವನೋಪಾಯೋ यस್ಯ । “ಧರ್ಮಧ್ವಜಿ ಲಿಙ್ಗವೃತ್ತಿ:” ಅಮಂ । “ಜೀವಿಕಾದಿನಿಮಿತ್ತಂ ತು ಯೋ ವಿಭಜತಿ ಜಟಾದಿಕಮ್ । ಧರ್ಮಧ್ವಜಿ ಲಿಙ್ಗವೃತ್ತಿರ್ದಯ ತತ್ರ ನಿಗದತೇ” ।

**ಲಿಙ್ಗಿನ್ ಲಿಂಗಿನ್ (ಪುಂ)** 1. (ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ) ವೇಷಧರಿಸಿದವನು, ಜೀವಿಕೆಗಾಗಿ ವೇಷ ಹಾಕಿದವನು. ಲಿಙ್ಗಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (4-2-114) । “ಸ ವರ್ಣಿಲಿಙ್ಗಿ ವಿವಿಧ: ಸಮಾಯಯೋ ಯುಧಿಷ್ಠಿರಂ ದೈತವನೇ ವನೇಶ್ವರ:” ಕಿರಾಂ 1-1 । 2. ಹೇತುವಿನಿಂದ ಕೂಡಿರುವ ವಹ್ಯ. ಲಿಙ್ಗ ಹೇತುರಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (4-2-114) । “ಪರ್ವತೋ ವಹ್ನಿಮಾನ್ ಭೂಮಾತ್” ಎಂಬಲ್ಲಿ ವಹ್ಯಯು ಹೇತುವಾದ ಧೂಮಸಹಿತವಾದುದರಿಂದ ವಹ್ಯಯು ಲಿಂಗಿಯಾಯಿತು. 3. ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ. 4. ಯತಿ, ಸುನ್ಯಾಸಿ. “ಸ್ತ್ರೀವಿಪ್ರಲಿಙ್ಗಿಬಾಲೇಷು ಪ್ರಹರ್ತವ್ಯಂ ನ ಕರ್ಹಿಚಿತ್” ಪञ्ಚತಂ 4-40 । 5. ಗಜ, ಆನೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನೀ-ನೀ. ಪರಿವ್ರಾಜಿಕೆ, ಸುನ್ಯಾಸಿನಿ.

**ಲಿಪಿ ಲಿಪಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ವರ್ಣ, ಅಕ್ಷರ. ಲಿಪ್ಯತೇ—ಲಿಪ (ಉಪದೇಹ) “ಇಕ್” (ವಾಂ 3-3-108) । “ಲಿಪೇಯಾ-ವದ್ಗ್ರಹಣೇನ ವಾಕ್ಮಯಂ ನದೀಮುಖೇನೇವ ಸಮುದ್ರಮಾವಿಶತ್” ರಘುಂ 3-28 । 2. ಲೇಖನ, ಬರಹ, ಬರವಣಿಗೆ. “ಅಯಂ ದರಿದ್ರೋ ಭವಿತೇತಿ ವೇದಸೀ ಲಿಪಿ ಲಲಾಟೇಶಿಜನಸ್ಯ ಜಾಗ್ರತೀಮ್” ನೈಷಂ 1-14 । 3. ಬಣ್ಣಬಳಿಯುವುದು, ಲೇಪನಮಾಡುವುದು. 4. ಬರೆದ ಕಾಗದ ಪುಸ್ತಕ ಮೊದಲಾದುವು. “ಲಿಪಿನಂ ದೇವೀ ಸುಪಥಾ ಭುವೀತಿ” ನೈಷಂ 6-99 । ವಾ “ಕೌಷ್” (ಗಂ 4-1-44) । -ನೀ-ನೀ.

**ಲಿಪಿಕರ ಲಿಪಿಕರ (ಪುಂ)** 1. ಗುಮಾಸ್ತ, ಬರವಣಿಗೆಯವನು. ಲಿಪಿ ಕರೋತಿ—ಙ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ಠ:” (3-2-21) । 2. ಲೇಪನಮಾಡುವವನು, ಬಳಿಯುವವನು. “ವ್ಯೋಮಾಙ್ಗಣೇ ಲಿಪಿಕರಾನ್ ಕಿರಣಪ್ರರೋಹೈ: ಸಾಂದ್ರ-ಶೇಷಕಕ್ರುಭಾಂ ಪಲಿತಕರಿಣಾನ್” ಕುಮಾಂ 19-20 ।

**ಲಿಪಿಕಾ ಲಿಪಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಲಿಪಿ, ಅಕ್ಷರ, ವರ್ಣ. ಲಿಪಿ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” ।

**ಲಿಪಿಜ್ಞ ಲಿಪಿಜ್ಞ (ಪುಂ)** ಬರವಣಿಗೆಯನ್ನು ತಿಳಿದವನು. ಲಿಪಿ ಜಾನಾತಿ—ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) “ಕ:” (3-2-3) ।

**ಲಿಪಿಫಲಕ ಲಿಪಿಫಲಕ (ನಂ)** ಬರೆಯುವ ಹಲಗೆ.

**ಲಿಪ್ತ ಲಿಪ್ತ (ವಿಂ)** 1. ಲೇಪನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಲಿಪ (ಉಪದೇಹ) “ಕ್ತ:” (3-2-102) । ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” (4-4-4) । ಲಿಪ್ತಕ: ಲಿಪ್ತಕ: 2. ವಿಷದಿಂದ ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ (ಬಾಣ). “ಲಿಪ್ತಂ ಭುಕ್ತವಿಲಿಪ್ತಯೋ: ವಿಷಾಕ್ತೇ” ಹೇಮಂ । 3. ಭಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿನ್ನಲ್ಪಟ್ಟ. “ಲಿಪ್ತೋ ಭಕ್ಷಿತದಿಗ್ಧಯೋ:” ವೈಜಂ । 4. ಮಿಶ್ರಿತವಾದ, ಬೆರೆತಿರುವ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. “ಶುಕ್ಲಾಙ್ಗುಲೋಪಲನಿಮಿತಾನಾಂ ಲಿಪ್ತೇಷು ಭಾಸಾ ಗೃಹದೇಹಲೀನಾಮ್” ಮಾಘಂ 3-48 ।

**ಲಿಪ್ತಕ ಲಿಪ್ತಕ (ಪುಂ)** ವಿಷದ ಲೇಪನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಬಾಣ.

**ಲಿಪ್ತಾ ಲಿಪ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಹೊಂದಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಪಡೆಯಲು ಆಸೆ. ಲಙ್ಘಮಿಚ್ಛಾ—ಙ್ ಲಙ್ಘ (ಪ್ರಾಪ್ತೆ)+ಸನ್ “ಅ:” (3-3-102) । “ಯಶೋಽಧಿಗಂತುಂ ಸುಖಲಿಪ್ತಯಾ ವಾ ಮನುಷ್ಯಸಂಖ್ಯಾಮತಿವರ್ತಿಸುಂ ವಾ” ಕಿರಾಂ 3-40 । 2. ಆಸೆ, ಇಚ್ಛೆ, ಬಯಕೆ. “ವಾಚ್ಛಾ ಲಿಪ್ತಾ ಸನೋರಥ:” ಅಮಂ ।

**ಲಿಪ್ತು ಲಿಪ್ತು (ವಿಂ)** ಹೊಂದಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಪಡೆಯಲು ಆಸೆಪಡುವ. ಲಙ್ಘಮಿಚ್ಛು—ಙ್ ಲಙ್ಘ (ಪ್ರಾಪ್ತೆ)+ಸನ್ “ಉ:” (3-2-168) ।



ಲಿಖಿ ಲಿಖಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಲಿಪಿ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಪಸ್ಯ ವಾ  
"ಬ:" (೩-೨-೨೧) । ವಾ "ಲಿಪಿ" (ಗಂ ೪-೧-೪೫) ।  
-ಬಿ -ಬಿ.

ಲಿಪ್ಯ ಲಿಪ್ಯ (ಪುಂ) ಸುಣ್ಣ ಮೊದಲಾದುದನ್ನು ಬಳಿಯುವ,  
ಲೇಪನಮಾಡುವ. ಲಿಪ್ಯತಿ -ಲಿಪ (ಉಪದೇಹ) "ಶ:"  
(೩-೧-೧೩೮) ।

ಲಿಪ್ಯತ ಲಿಪ್ಯತ (ವಿಂ) 1. ಅತಿಯಾದ ಅಸೆಯುಳ್ಳ.  
2. ಪರಸ್ಪರೀಕೋಲ, ಜಾರ, ಕಾಮುಕ.

ಲಿಪ್ಯತ್ ಲಿಪ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಲೇಪನಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಬಳಿಯು  
ತ್ತಿರುವ. ಲಿಪ (ಉಪದೇಹ) "ಶತ" (೩-೨-೧೨೪) ।  
"ತಪ್ತಹೇಮದ್ರವೀಣೇ ಲಿಪ್ಯಂತಿ ದಿಶೋ ದಶ" ಯಾದಂ ೧೬-೫೩ ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಲಿಪ್" (೪-೧-೬) । ಲಿಪ್ಯಂತಿ, -ಂತಿ ।

ಲಿಪ್ಯಾಕ ಲಿಪ್ಯಾಕ (ಪುಂ) 1. ನಿರ್ದಿಗಿತ. 2. ಗರ್ವಭ.  
ಕತ್ತೆ.

ಲಿಪ್ಯ ಲಿಪ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಚಿಕ್ಕದಾಗಿಮಾಡಿರುವ, ಸಣ್ಣದಾಗಿ  
ಮಾಡಿರುವ. ಲಿಪ (ಅಲ್ಪಿಭಾವ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) ।  
2. ಕೊಂಚವಾಗಿಮಾಡಿರುವ.

ಲಿಪ್ಯ ಲಿಪ್ಯ (ಪುಂ) ನರ್ತಕ. ಲಪ (ಕಾಂತಿ) "ವನ್"  
(೩-೧-೧೫೧) । ಇತ್ವಮಪಿ । ನಿಪಾಂ ।

ಲಿಹ - ಆಸ್ವಾದನೆ (ಅದಾಂ ಉಮಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) ।

ಲಹ- ಲೇಹಿ ಲಿಹ: ಲಿಹಂತಿ ।

ಲಿಹೇ ಲಿಹಾತೇ ಲಿಹತೇ ।

ಲಿಹ- ಲಿಲೇಹ ಲಿಲಿಹತು: ಲಿಲಿಹು: ।

ಲಿಲಿಹೇ ಲಿಲಿಹಾತೇ ಲಿಲಿಹಿರೇ ।

ಲಹ- ಲೇಹಾ ಲೇಹಾರೌ ಲೇಹಾರ: ।

ಲೇಹಾಸಿ, -ಸೇ । ಲೇಹಾಸಿಮ, -ಹೇ ।

ಲಿಹ- ಲೇಹ } ಲಿಹಾಮ್ ಲಿಹಂತು ।  
ಲಿಹಾತ್ }

ಲೇಹಾನಿ ಲೇಹಾವ ಲೇಹಾಮ ।

ಲಿಹಾಮ್ ಲಿಹಾತಾಮ್ ಲಿಹತಾಮ್ ।

ಲೇಹೇ ಲೇಹಾವಹೇ ಲೇಹಾಮಹೇ ।

ಲಹ- ಅಲೇಹ ಅಲಿಹಾಮ್ ಅಲಿಹನ್ ।

ಅಲಿಹ ಅಲಿಹಾತಾಮ್ ಅಲಿಹತ ।

ಇತ್ಯಾದಿ. ನೆಕ್ಕು, ರುಚಿನೋಡು.

ಕರ್ಮಣಿ: -ಲಿಹತೇ । ಲಿಹತಾಮ್ । ಅಲಿಹತ ।

ಲಿಹತೇ । ಅಲೇಹಿ । ಉಳಿದ ಲಹಾರಗಳ ರೂಪಗಳು ಕರ್ತೃ  
ಲಹಾರದ ಆತ್ಮನೇ ಪದದ ರೂಪಗಳಂತಾಗುವುವು.

ಕೃತು: -ಲೇಹಯಮ್ । ಲೇಹನೀಯಮ್ । ಲೇಹಮ್ । ಲಿಹ: ।

ಲಿಹವಾನ್ । ಲಿಹನ್, -ಂತಿ । ಲಿಹಾನ್: । ಲಿಹಮ್ । ಲೇಹನಮ್ ।

ಲಿಹ ಲಿಹ (ಪುಂ) ಮೃದುವಾದ ವಾಯು, ಮಂದ  
ಮಾರುತ. "ಮೃದುವಾತಶ್ಚಿಶ್ವಿಲಿಕೋ ಲೇಹಾ ಲಿಹ ಸೋರತೋಽಪಿ  
ಚ" ವೇಜಂ ।

ಲಿಹತ್ ಲಿಹತ್ (ವಿಂ) 1. ಆಸ್ವಾದಿಸುತ್ತಿರುವ, ರುಚಿ  
ನೋಡುತ್ತಿರುವ. 2. ನೆಕ್ಕುತ್ತಿರುವ. ಲಿಹ (ಆಸ್ವಾದನೆ)  
"ಶತ" (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಲಿಪ್" (೪-೧-೬) ।  
ಲಿಹಂತಿ ಲಿಹಂತಿ. "ಪ್ರೀತ್ಯಾ ನಿಯುಕ್ತಾನ್ ಲಿಹಂತಿ: ಸ್ತನಂಧ-  
ಯಾನ್ ನಿಗೃಹ್ಯ ಪಾರಿಮುಖೇನ ಜಾನುನೋ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೪೦ ।  
"ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) । ಲಿಹಾನ್: ಲಿಹಾನ್: ।

ಲಿ ಲಿ (ವಿಂ) 1. ಆಲಿಂಗಿಸುವ, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುವ.  
2. ಅಂಟಿಕೊಳ್ಳುವ, ಸೇರಿಕೊಳ್ಳುವ. 3. ಕರಗುವ.  
4. ಅವಿತುಕೊಳ್ಳುವ, ಅಡಗಿಕೊಳ್ಳುವ. 5. ಅದೃಶ್ಯ  
ವಾಗುವ, ಕಾಣದೆಹೋಗುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 6. ಭಯ,  
ಹೆದರಿಕೆ. 7. ಆಲಿಂಗನ. "ಲಿ: ಶ್ಲೇಷೇ ಚ ಭಯೇಽಪಿ ಚ"  
ರತ್ನಂ । ಲಿಙ್ (ಶ್ಲೇಷಣ) "ವಿವಪ್" (ವಾಂ ೩-೩-೯೪) ।  
ಲಿಂ (ದ್ರವೀಕರಣ) ವಾ "ವಿವಪ್" ।

ಲಿಙ್ - ಸಂಶ್ಲೇಷಣ (ದಿವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ) ।  
ಲೀಯತೇ । ಲೀಯತೇ । ಲೀಯತೇ, ಲೀಯತೇ ।  
ಲೀಯತಾಮ್ । ಅಲೀಯತ । ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಅಪ್ಪಿಕೊ,  
ಆಲಿಂಗಿಸು. 2. ಅಂಟಿಕೊ, ಸೇರಿಕೊ. 3. ಅದೃಶ್ಯ  
ವಾಗು, ಕಾಣದೆಹೋಗು. 4. ಅವಿತುಕೊಂಡಿರು, ದೃಷ್ಟಿಗೆ  
ಬೀಳದಿರು. 5. ಕರಗಿಹೋಗು.

ಕೃತು: -ಲೇತವ್ಯಮ್, ಲೀತವ್ಯಮ್ । ಲೀನೀಯಮ್, ಲೀನೀಯಮ್ ।  
ಲೇಯಮ್ । ಲೀನ: । ಲೀನವಾನ್ । ಲೀಯಮಾನ್: । ಲೀನಮ್ ।

ಲಿಙ್ ಲಿಙ್ (ವಿಂ) 1. ಆಸ್ವಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ರುಚಿನೋಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟು. ಲಿಹ (ಆಸ್ವಾದನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) ।  
"ಪರಿಸರವಿಷಯೇಷು ಲಿಙ್ ಮುಕ್ತಾ: ಹರಿತತೃಣೋದ್ಗಮಶಕ್ತ್ಯಾ  
ಮೃಗೀಭಿ:" ಕಿರಾಂ ೫-೩೮ । 2. ನೆಕ್ಕಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ತಿನ್ನ  
ಲ್ಪಟ್ಟು.

ಲೀನ ಲೀನ (ವಿಂ) 1. ಐಕ್ಯವಾಗಿರುವ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ.  
ಲಿಙ್ (ಶ್ಲೇಷಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) । 2. ಕುಳಿತಿ  
ರುವ, ವಿಶ್ರಾಂತಿ ಪಡೆಯುತ್ತಿರುವ. "ಕಾರ್ಯಾ ಸೈಕತಲೀನ-  
ಹಂಸಮಿಥುನಾ ಸೋತೋವಹಾ ಮಾಲಿನಿ" ಶಾಕುಂ ೬-೧೭ ।  
3. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಅದೃಶ್ಯವಾಗಿರುವ, ಕಾಣದೆ  
ಹೋಗಿರುವ, ಅವಿತುಕೊಂಡಿರುವ. "ದಿವಾಕರಾದ್ರಕ್ಷತಿ  
ಯೋ ಗುಹಾಸು ಲೀನಂ ದಿವಾಭಿತಮಿವಾನ್ವಕಾರಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೧೨ ।  
4. ಕರಗಿ ಹೋಗಿರುವ, ದ್ರವವಾಗಿ ಹೋಗಿರುವ.  
"ಲೀನೇವ ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿತೇವ ಲಿಖಿತೇವೋತ್ಕೀರ್ಣರೂಪೇವ ಚ"



ಮಾಲತೀಂ ೪-೧೦ | 5. ಅಪ್ಪಿಕೊಂಡಿರುವ, ಅಲಿಂಗನ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವ.

ಲಿಯಮಾನ ಲೀಯಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಐಕ್ಯವಾಗುತ್ತಿರುವ, ಸೇರಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ಲೀಡ್ (ಶ್ಲೇಷಣೆ) "ಶಾನಿ" (೩-೨-೧೨೪) | 2. ಅವಿತುಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಅದೃಶ್ಯವಾಗುತ್ತಿರುವ, 3. ಕರಗಿಹೋಗುತ್ತಿರುವ. 4. ಕುಳಿತು ಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. 5. ಒಳಗೆ ಸೇರಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. "ಉತ್ಕಿಪ್ತಕಾಂಕ್ಷಪಟಕಾಂತರಲಿಯಮಾನಮಂದಾನಿಲಪ್ರಸಮಿತಶ್ರಮ-ಘರ್ಮತಯೇ:" ಮಾಧಂ ೪-೨೨ |

ಲೀಲಾ ಲೀಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ. ಲೀಡ್ (ಶ್ಲೇಷಣೆ) "ಕಿವ್" (ವಾಂ ೩-೩-೧೪) | ಲೀ: | ಲಿಯ ಲಾತಿ-ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩) | "ಕಲಮ್ ಯಯಿ ಕನ್ದುಕ-ಲೀಲಯಾಪಿ ಯಾ ತಯಾ ಮುನೀನಾಂ ಚರಿತಂ ವ್ಯಗಾಹತ" ಕುಮಾಂ ೪-೧೯ | 2. ವಿಲಾಸ, ಸ್ತ್ರೀಯರ ಶೃಂಗಾರ ಭಾವದ ಕಾರ್ಯ. "ಲೀಲಯೇವ ಸುತನೋಸ್ತುಲಯಿತ್ವಾ ಗೌರವಾತ್ಯಮಪಿ ಲಾವಣಿಕೇನ" ಮಾಧಂ ೧೦-೩೮ | 3. ಪತಿಯನ್ನು ಅನು ಕರಿಸುವುದು, ಪತಿಯು ಮಾಡಿದಂತೆ ಮಾಡುವುದು. "ವಲ್ಲಭಾನುಕೃತಿಲೀಲಾ" ವೆಂಜಂ | "ಅಜ್ಞೇವೇಶರಲಕ್ಷ್ಮೀ: ಪ್ರೇಮಭಿವಚನೇರಪಿ | ಪ್ರೀತಿಪ್ರಯೋಜಿತಲೀಲಾಂ ಪ್ರಿಯಸ್ಯಾನುಕೃತಿ ವಿದು:" ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೮ | 4. ಶೋಭೆ, ಕಾಂತಿ. "ಲಲಿ ಲೀಲಾಂ ಲಲೋಜ್ಜಲ: ಶಶಿಶಶಿಶುಶಿ: ಶಶನ್" ಕಿರಾಂ ೧೪-೪ | 5. ಆಯಾಸವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಶ್ರಮವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. "ಸಾವರೋಧಮಪಿ ಸಾತ್ವತಾಂ ಪತಿ ಲೀಲಯೇವ ಗೃಹೋ ಬಹನ್ ಯಯಿ" ಯಾದಂ ೧೭-೧ | 6. ಅತಿಶಯ, ಸಮೃದ್ಧಿ. "ಪರಿಮೋಹ-ಮಾಣೇನ ಶಿಕ್ಷಾಲಾಭವಲೀಲಯಾ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೩೬ | 7. ರೂಪ, ಆಕಾರ, ಬೆಡಗು. "ಮಹೇಂದ್ರಮಾಸ್ಥಾಯ ಮಹೋಕ್ಷರೂಪ ಯ: ಸಂಯತಿ ಪ್ರಾಪ್ತಪಿನಾಕಿಲಿಲ:" ರಘುಂ ೬-೭೨ | 8. ಸುಂದರ್ಯ, ಸುಭಾಗ್ಯ, ರಮಣೀಯತೆ. "ವೇಮಾನಿಕಾಂ ಮಹತಾಮಪಶ್ಯದಾಕ್ಷುಷಲೀಲಾನರಲೋಕಪಾಲಾನ್" ರಘುಂ ೬-೧ | 9. ವ್ಯಾಜ, ನೆಪ.

ಲೀಲಾಚತುರ ಲೀಲಾಚತುರ (ವಿಂ) ವಿಲಾಸದಿಂದ ರಮಣೀಯವಾಗಿರುವ, ಹಾವಭಾವಗಳಿಂದ ಸುಂದರ ವಾಗಿರುವ. ಲೀಲಯಾ ಚತುರ: | "ತಾಂ ವೀಕ್ಷ್ಯ ಲೀಲಾ-ಚತುರಾಮನಜ್ಞ: ಸ್ವಚಾಪಸೌಂದರ್ಯಮದಂ ಮುಮೋಚ" ಕುಮಾಂ ೧-೪೭ |

ಲೀಲಾಮನುಷ್ಯ ಲೀಲಾಮನುಷ್ಯ (ಪುಂ) ನೆಪಮಾತ್ರಕ್ಕೆ ಮನುಷ್ಯ, ಕಪಟ ಮನುಷ್ಯ, ಮನುಷ್ಯನಂತೆ ನಡೆಸುವವನು.

ಲೀಲಾವತ್ ಲೀಲಾವತ್ (ವಿಂ) 1. ಕ್ರೀಡಾಸಕ್ತ, ಆಟದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತನಾದ. ಲೀಲಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತು" (೪-೧-೧೪) |

2. ವಿಲಾಸದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 3. ಸುಂದರವಾದ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ವತೀ -ವತೀ.

ಲೀಲಾವತೀ ಲೀಲಾವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿಲಾಸದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹೆಗಸು, ಹಾವಭಾವಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹೆಗಸು. ಲೀಲಾ ಅಸ್ಯಸ್ಯಾ: 2. ಭಾಸ್ಕರಾಚಾರ್ಯವಿರಚಿತ ಒಂದು ಜ್ಯೋತಿಷ ಗ್ರಂಥ.

ಲೀಲೋದ್ವಾನ ಲೀಲೋದ್ವಾನ (ನಂ) ಆಟಕ್ಕಾಗಿ ನಿರ್ಮಿತ ವಾದ ಉದ್ಯಾನವನ, ವಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಏರ್ಪಡಿಸಿದ ಕೈತೋಟ. ಲೀಲಾರ್ಥಮ್ ಉದ್ವಾನಮ್ |

ಲುಕ್ ಲುಕ್ (ಪುಂ) ಲೋಪ, ಅದರ್ಶನ. "ಲುಕ್ ತದ್ವಿತ-ಲುಕ್" (೧-೨-೪೯) | ತದ್ವಿತಪ್ರತ್ಯಯಕ್ಕೆ ಲೋಪ ಬಂದಾಗ ಉಪಸರ್ಜನವಾದ ಸ್ತ್ರೀಪ್ರತ್ಯಯಕ್ಕೆ "ಲುಕ್" ಲೋಪಬರುವುದು. ಫಲಗುನ್ಯೋಜಿತ: ಎಂಬಲ್ಲಿ ವಿಹಿತವಾದ "ಅನ್" ಪ್ರತ್ಯಯಕ್ಕೆ ಲೋಪ ಬಂದು "ಅನ್" ಪ್ರತ್ಯಯ ನಿಮಿತ್ತವಾದ ಸ್ತ್ರೀಪ್ರತ್ಯಯಕ್ಕೆ ಲೋಪವುಂಟಾಗಿ ಫಲಗುನ್: ಎಂದಾಗುವುದು.

ಲುಚ್ಚತ್ ಲುಚ್ಚತ್ (ವಿಂ) ಕೀಳುತ್ತಿರುವ. ಲುಚ್ಚ (ಅಪನಯನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |

ಲುಚ್ಚನ ಲುಚ್ಚನ (ನಂ) ಕಿತ್ತುಹಾಕುವುದು, ತೆಗೆದುಹಾಕು ವುದು. ಲುಚ್ಚ (ಅಪನಯನೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) |

ಲುಚ್ಚನೀಯ ಲುಚ್ಚನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಕೀಳಲ್ಪಡುವ. 2. ಕಿತ್ತುಹಾಕಬೇಕಾದ. 3. ಕಿತ್ತುಹಾಕಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 4. ಕಿತ್ತುಹಾಕಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಲುಚ್ಚ (ಅಪನಯನೆ) ಕರ್ಮದಿ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) | ಲುಚ್ಚಿತವ್ಯ: ಲುಚ್ಚಿತವ್ಯ:

ಲುಚ್ಚಿತ ಲುಚ್ಚಿತ (ವಿಂ) ಕಿತ್ತುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಲುಚ್ಚ (ಅಪನಯನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |

ಲುಚ್ಚಿತಃ ಲುಚ್ಚಿತಃ (ವಿಂ) ಕೀಳುವವನು, ಕಿತ್ತುಹಾಕು ವವನು. ಲುಚ್ಚ (ಅಪನಯನೆ) "ತು" (೩-೧-೧೩೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೪) | -ಶ್ರೀ -ಶ್ರೀ.

ಛಡಿ(ಠ)ನ ಲುಟಿ(ಠಿ)ನ (ನಂ) ಶ್ರಮಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಕುದುರೆಯು ಹೊರಳಾಡುವುದು, ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಉರುಳಾಡುವುದು. ಛಡಿ(ಠ) (ಸಂಶ್ಲೇಷಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) |

ಛಡಿ(ಠಿ)ತ ಲುಟಿ(ಠಿ)ತ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರಮಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಹೊರಳಾಡಿದ ಕುದುರೆ. ಛಡಿ(ಠ) (ಪ್ರತಿಘಾತೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | (ನಂ) 2. ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಹೊರಳಾಡುವುದು.



ಲೂಕಿತಿ ಲುಡಿತಿ (ನಂ) 1. ಕಲಕುವುದು, ಕದಡುವುದು.

ಲುಡ (ವಿಲೋಡನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಕಲಕ  
 ಲ್ಪಟ್ಟ, ಕದಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಲುಡ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

लुण्टक ७००६४ (वि०) डैमर, मधु, लुटि (स्तेये)  
 "प्वुल्" (३-१-१३३) ।

लुट् लुङ् (वि०) कदियुत्तिरुव, अषकरिषु  
त्तिरुव. लुटि (स्तेये) "शतृ" (३-२-१२४)।

ಲ್ಱುಱನ ಲುಂಟಿನ (ನಂ) ಕದಿಯುವುದು, ಅಪಹರಿಸುವುದು.  
 ಲ್ಱುಱಿ (ಸ್ತೇಯೆ) ಢಾವೆ "ಲ್ಱುಱ್" (೩-೩-೨೨೪) ।

लुटाक लुंठोच (वि०) 1. कदियुव स्रुधुवदवनु,  
 कृत्तनद बाळियुवनु. लुटि (स्तेये) "षाकन्"  
 (३-२-१५५)। 2. वायुस, काग. "श्रावको गूढ-  
 मैयुनः। कारवः परमृत्युश्च लुटाको मोद्गलिद्विपौ"  
 त्रिकाण्ड०।

ಲುಢಿತ ಲಾಂಟಿಡ (ನಂ) 1. ಕಳ್ಳಡನ. ಲುಡಿ (ಸ್ತೇಯೆ)  
 ಭಾವೆ "ಕ:" (3-3-114)। (ವಿಂ) 2. ಕದಿಯು  
 ಲ್ಪಟ್ಟು. ಅಪಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಲುಡಿ (ಸ್ತೇಯೆ) "ಕತ:"  
 (3-2-102)।

ಲ್ಠಕ ಲಂಠಕ (ವಿಂ) ಕವಿಯುವವನು, ಕಳ್ಳತನ ಮಾಡು  
 ವವನು. ಲ್ಠಿ (ಸ್ತೇಫೆ) "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

ಲ್ಘುಠತ್ ಅಂಠತ್ (ವಿಂ) ಕದಿಯುತ್ತಿರುವ. ಲ್ಘು (ಸ್ತೇಯೆ)  
 “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) ।

ಲ್ಘುಠನ ಉಂಠನ (ನಂ) ಕದಿಯುವುದು, ಕಳ್ಳತನ ಮಾಡು  
 ವುದು. ಲ್ಘುಠಿ (ಸ್ತೇಯೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಘುಠ್" (೩-೩-೧೧೫) ।  
 "ಯದಸ್ಯ ದೇಶಾ ಇವ ಲ್ಘುಠನಾಯ ಕಾವ್ಯಾರ್ಥಚೌರಾಃ ಪ್ರಗುಣಿ-  
 ಭವಂತಿ" ವಿಂ ದಂ ಚಂ ೧-೧೧ ।

ಲಘು ಲಂಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಚ್ಚತನೆ, ಕದಿಯುವುದು.

लुण्ठित ७०००० (वि०) कदियल्लुप्पु. लुठि (स्तेये)  
 "कः" (३-२-१०२)।

ಲುಠ್ಯ ಲುಠ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಕೊಲ್ಲುವುದು. 2. ಹಿಂಸಿಸುವುದು.  
 ಲುಠಿ (ಹಿಸಾಸಂಕಲನಯೋ:) "ಘ" (೩-೩-೧೮)।

ಲುಢ್ಯತ ಲುಢ್ಯತ (ನಂ) 1. ಹುಸುಸುಢ್ಯದು, ಪಿಢ್ಯದು.  
 2. ಕುಢ್ಯದು. ಲುಢ್ಯ (ಹಿಸುಸುಢ್ಯತನಯಃ) "ಲ್ಯುಢ್ಯ"  
 (3-3-114) ।

लुप - विमोहने (दिवा० पर० अक० से०) । लुप्यति ।  
लुलोप । लोपिता । लोपिष्यति । लुप्युः । अलुप्यत् ।  
लुप्येत् । लुप्यात् । १३०८.

कृत्सु :—लोपितव्यम् । लोपनीयम् । लोप्यम् ।

ಛುತಃ । ಛುತವಾನ್ । ಛುಪ್ಯನ್, -ಂತಿ । ಛುಪ್ತಮ್ । ಛೋಪನಮ್ ।  
ನಷ್ಟವಾಗು, ಕಳೆದುಹೋಗು, ನಾಶಹೊಂದು.

ಲುಪ್ತ ಲುಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ನಷ್ಟವಾದ, ಕಳೆದುಹೋದ. ಲುಪ್ತ (ವಿಮೋಹನೆ) ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೨೨)। "ಸಾ ಲುಪ್ತಸಂಜ್ಞಾ ನ ವಿವೇದ ದುಃಖಂ ಪ್ರತ್ಯಾಗತಾಸುಃ ಸಮತ್ಯತಾಂತಃ" ರಘುಂ ೧೪-೫೬। 2. ಗಾಬರಿಪಟ್ಟಿರುವ, ಕಳವಳಗೊಂಡಿರುವ. 3. ಕದಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಪಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಲುಪ್ತ (ಛೇದನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 4. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. (ನಂ) 5. ಕದಿಯಲ್ಪಟ್ಟವಸ್ತು, ದರೋಡೆ ಮಾಡಿತಂದ ವಸ್ತು. 6. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. 7. ಗಾಬರಿಪಡುವುದು, ಕಳವಳಗೊಳ್ಳುವುದು. 8. ಕತ್ತರಿಸುವುದು. ಲುಪ್ತ (ಛೇದನೆ) ಲುಪ್ತ (ವಿಮೋಹನೆ) ವಾ—ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)।

ಉತ್ತಪ್ರತಿಜ್ಞಾ ಉಪ್ಪಪ್ರತಿಜ್ಞಾ (ವಿಂ) ಅಡಿದಮಾತಿಗೆ ತಪ್ಪಿ  
 ದವನು, ಮಾತಿಗೆ ತಪ್ಪಿ ನಡೆದವನು. ಲಾತಾ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ ಯೇನು ।

ಲುಬ್ಧ ಲುಬ್ಧ (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಾಧ, ಬೇಡುವನು. ಲುಬ್ಧ  
 (ಗಾಢ್ಯ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) । 2. ಕಾಮುಕ, ವ್ಯಭಿ  
 ಚಾರಿ. 3. ಅತಿಯಾದ ಆಸೆಯುಳ್ಳವನು. "ವೃಣತೇ ಹಿ  
 ವಿಮೃಶ್ಯಕಾರಿಣಿ ಗುಣಲುಬ್ಧಾಃ ಸ್ವಯಮೇವ ಸಂಪದಃ" ಕಿರಾಂ  
 2-30 । 4. ಗಾಬರಿಯಾಗುತ್ತ, ಕಳವಳಗೊಂಡ. ಲುಬ್ಧ  
 (ವಿಮೋಹನೆ) "ಕ್ತ:" (3-4-92) । "ಲುಬ್ಧ ಆಕಾಂಕ್ಷಿಣಿ  
 ವ್ಯಾಧೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಲುಘಕ ಲುಘಕ (ಪುಂ) 1. ಬೇಟೆಗಾರ, ವ್ಯಾಧ, ಬೇಡರ  
 ವನು. ಲುಘ ಸಂಜಾಯಾಮ್ "ಕನ್" (೪-೩-೭೪)। "ಮೃಗಮೀನ  
 ಸಜ್ಜನಾನಾಂ ತೃಗಜಲಸಂತೋಷವಿಹಿತವೃತ್ತಿನಾಮ್। ಲುಘಕವೀರ-  
 ಪಿಶುನಾ ನಿಷ್ಕಾರಣವೇರಿಣೋ ಜಗತಿ" ಭರ್ತುಂ ೨-೬೧।  
 2. ವ್ಯಭಿಚಾರಿ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ, ಕಾಮುಕ. (ವಿಂ) 3.  
 ಅತಿಯಾದ ಆಸೆಯುಳ್ಳವನು.

ಲುಭಿತ ಲುಭಿತ (ವಿಂ) ಗಾಬರಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಭ್ರಮೆ  
 ಹಿಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಬ್ಬಿಬ್ಬು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಲುಭ (ವಿಮೋಹನೆ)  
 "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) ।

ಲುಲಾಯ ಲಾಲಾಯ (ಪುಂ) ಮಹಿಷ, ಐಮೈ. ಲುಲಂ ಚಲನ-  
 ಮಯತೇ—ಅಯ (ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಲುಲಿತ ಲಾಲಿತ (ವಿಂ) 1. ಕಲಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಲಾಗಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕ್ಷೋಭೆ ಹೊಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಲುಲ (ವಿಮರ್ಶನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಸುರಾಲಯಪ್ರಾಪ್ತಿನಿಮಿತ್ತಮಮಸ್ವೈಸ್ರೋತಸಂ ನೌಲುಲಿತಂ ವವಂದೆ" ರಘುಂ ೧೬-೩೪। 2. ಕೆದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ತಲೆಗೂದಲು). 3. ತಿಕ್ಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಅದುಮಲ್ಪಟ್ಟ, ನಜ್ಜು ಗುಜ್ಜುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ತಸ್ಯಾ: ಪುಷ್ಪಮಯಿ ಶರೀರಲುಲಿತ



ಶಯ್ಯಾ ಶಿಲಾಯಾಮಿಯಮ್" ಶಾಕುಂ ೩-೨೩. 4. ಆಯಾಸಪಡಿಸೆ  
ಲೃಟ್ಯ, ದಸೆಸೃಟ್ಯ. "ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾಮಂ ನವಮಿವ ರತಿಮಾಲತೀ  
ಮಾಧವಂ ಯದ್ಗಾಡೋಕ್ತಾ ಲುಲಿತಲುಲಿತೇರಜ್ಜಕೇಸ್ತಾಮ್ಯತೀತಿ"  
ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೮. 5. ಸುಂದರವಾದ, ರಮಣೀಯವಾದ.  
"ವಿಚಿತ್ರಸ್ತಬಕೋದ್ಭಾಸಿ ವನಂ ಲುಲಿತಪಲ್ಲವಮ್" ಭಟ್ಟಿಂ  
೧-೫೬. 6. ಕಲಃಪಿತವಾದ, ಕರಳಿಸೃಟ್ಯ. "ಲುಲಿತ-  
ನಯನತಾರಾ: ಕಾಮವಕ್ತುಬಿಂಬಾ:" ಮಾಧಂ ೧೧-೨೦.  
7. ಭ್ರಮಣಮಾಡಿದ, ಭಯದಿಂದ ಚಕ್ರದಂತೆ ತಿರುಗಿದ.  
"ಲುಲಿತದೃಷ್ಟಿ ಮದಾದಿವ ಚಸ್ವಲೇ" ಕಿರಾಂ ೧೮-೬.

ಲೂತಾ ಲೂತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜೇಡರ ಹುಳ. 2. ಇರುವೆ.  
ಲೂ (ಛೇದನೆ) "ತನ್" (೩ಂ ೩-೮೬). 3. ರೋಗ,  
ವ್ಯಾಧಿ. "ಲೂತಾ ತು ರೋಗಿ ಪಿಪಿಲಿಕೋರ್ಣನಾಭಯೋ:" ಹೇಮಂ.

ಲೂತಾತ ಲೂತಾತ (ಪುಂ) ಬಿಬಿಲಿಕೆ, ಇರುವೆ. "ಛುಣ:  
ಕೃಮಿ: ಕಾಠಭವೋ ಲೂತಾತ: ಸ್ಯಾತ್ ಪಿಪಿಲಿಕಾ" ವೈಜಂ.

ಲೂತಾಪದ್ ಲೂತಾಪದ್ (ಪುಂ) ಜೇಡರಹುಳದ ಮೊಟ್ಟೆ.  
"ಲೂತಾಪದ್ಸ್ತು ತತ್ಕೋಶ:" ವೈಜಂ.

ಲೂತಿಕಾ ಲೂತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೇಡರಹುಳ. "ಮೃಷಿಕಾ  
ಲೂತಿಕಾ ಲೂತಾ ತನ್ತುರಾಯಶ್ಚ ಜಾಲಿಕ:" ವೈಜಂ.

ಲೂನ ಲೂನ (ವಿಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಲೂ (ಛೇದನೆ)  
"ಕತ:" (೩-೨-೧೦೨). ನತ್ವಮ್ (೮-೨-೪೪). ಲೂನ-  
ಭೂರಭುಜಶಾಖಮುಜ್ಜಿತಚ್ಚಾಯಮರ್ಜುನವನಂ ವ್ಯವಾಧಯಮ್" ಮಾಧಂ  
೧೪-೮೦. 2. ಕೀಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಹೊವು).  
"ತಸ್ಯಾ: ಸಖೀಮ್ಯಾಂ ಪ್ರಣಿವಾತಪೂರ್ವಂ ಸ್ವಹಸ್ತಲೂನ: ಶಿಶಿರಾತ್ಯ-  
ಯಸ್ಯ. ವ್ಯಕೀರ್ಯತ ತ್ಯಮ್ಬಕಾದಮೂಲೇ ಪುಷ್ಪೋಚ್ಚಯ: ಪಲ್ಲವ-  
ಭಜ್ಜಮಿಶ್ನ:" ಕುಮಾಂ ೩-೬೧.

ಲೂನಕ ಲೂನಕ (ಪುಂ) 1. ಪಶು, ತೀರ್ಯಕ್ಪ್ರಾಣಿ.  
(ವಿಂ) 2. ಭಾಗಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಕತ್ತರಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. "ಲೂನಕೋ ಭೇದಿತೇ ಪಶೌ" ಮೇದಿಂ.

ಲೂಮ ಲೂಮ (ನಂ) ಲಾಂಗೂಲ, ಪುಚ್ಚ, ಬಾಲ. ಲೂಯೇ-  
ಲೂ (ಛೇದನೆ) "ಮಕ್" ಬಾಹುಂ. "ಪುಚ್ಚೋಽಸ್ಮಿ ಲೂಮ-  
ಲಾಙ್ಗಲೇ" ಅಮಂ.

ಲೂಮವಿಷ ಲೂಮವಿಷ (ಪುಂ) ಬಾಲದಲ್ಲಿ ವಿಷವುಳ್ಳ ಜೇಳು  
ಮೊದಲಾದುದು. ಲೂಮೇ ವಿಷಂ ಯಸ್ಯ.

ಲೇಖ ಲೇಖ (ಪುಂ) 1. ಬರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ ಕಾಗದ, ಕಾಗದ,  
ಪತ್ರ, ದಸ್ತಾವೇಜು. ಲಿಖ್ಯತೇ-ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ)  
ಕರ್ಮಂ "ವಚ್" (೩-೩-೧೯). "ಅಯಂ ಸ ಮುದ್ರಿತೋ ಲೇಖ:"  
ಮುद्रಾಂ ೧. "ಲೇಖೋಽಯಂ ನ ಮಮೇತಿ ನೋತ್ತರಮಿದಂ ಮುದ್ರಾ ಮದೀಯಾ  
ಯತ: ಸೌಹಾರ್ದಂ ಶಕಟೇನ ಖಂಡಿತಮಿತಿ, ಶ್ರದ್ಧಯಮೇತತ್ ಕಥಮ್?"

ಮುद्रಾಂ ೫-೧೮. 2. ಲೇಖನ, ಬರವಣಿಗೆ. ಲಿಖ್ಯತೇ-  
ಲಿಖ ಭಾವೇ "ವಚ್" (೩-೩-೧೮). 3. ಬರೆಯುವ  
ಕಾಗದ. ಲಿಖ್ಯತೇ-ಲಿಖ ಅಧಿಂ "ವಚ್" (೩-೩-೧೨೧).  
4. ದೇವತೆ, ಆದಿತಿಯ ಮಕ್ಕಳು. "ಆದಿತೀಯಾ ದಿವಿಪದೋ  
ಲೇಖಾ ಅದಿತಿನಂದನಾ:" ಅಮಂ.

ಲೇಖಕ ಲೇಖಕ (ಪುಂ) 1. ಬರಹಗಾರ, ಗ್ರಂಥ ಬರೆಯು  
ವವನು. 2. ಗುಮಾಸ್ತೆ, ಕಾರಕೂನ, ಕರಣಕ. ಲಿಖತಿ  
-ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ) "ಛುನ್" (೩-೧-೧೪೫).  
ಉತ್ತಮ ಗುಮಾಸ್ತೆಯ ಲಕ್ಷಣ: ಒಂದು ಸಲ  
ಹೇಳಿದ ಮಾತ್ರದಿಂದಲೇ ಗ್ರಹಿಸಬಲ್ಲವನೂ ಶೀಘ್ರವಾಗಿ  
ಬರೆಯುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವುಳ್ಳವನೂ ಒಳ್ಳೆಯ ಅಕ್ಷರಜ್ಞನ  
ವುಳ್ಳವನೂ ಸಕಲಶಾಸ್ತ್ರಾಭಿಜ್ಞನೂ ಉತ್ತಮ ಗುಮಾಸ್ತೆ.  
"ಸಕೃದ್ಭೂತಗೃಹೀತಾರ್ಥೋ ಲಘುಹಸ್ತೋ ಜಿತಾಕ್ಷರ: | ಸರ್ವಶಾಸ್ತ್ರ-  
ಸಮಾಲೋಕೀ ಪ್ರಕೃಷ್ಟೋ ಲೇಖಕ: ಸ್ಮೃತ:" ವಾಣಕಯ: |  
3. ಚಿತ್ರಗಾರ, ಒಳ್ಳೆಯ ಚಿತ್ರಗಳನ್ನು ಬರೆಯುವವನು.

ಲೇಖನ ಲೇಖನ (ನಂ) 1. ಬರವಣಿಗೆ, ಬರಹ. ಲಿಖ್ಯತೇ-  
ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).  
2. ಚಿತ್ರ ಬರೆಯುವುದು. 3. ಕತ್ತರಿಸುವುದು, ಗೀರು  
ವುದು, ಗಾಯಮಾಡುವುದು. 4. ಉದ್ರೇಕಗೊಳಿಸು  
ವುದು, ಪ್ರೇರಿಸುವುದು. 5. ಬರೆಯುವ ಸಾಧನ, ಕಾಗದ  
ಓಲೆಗಿರಿ ಮುಂತಾದುವು. 6. ಭುಜಪತ್ರ, ಗಿಡ. 7. ಕತ್ತರಿ  
ಸುವ ಸಾಧನ, ಕತ್ತರಿ ಚಾಕು ಮುಂತಾದುವು. "ಅಥ  
ಲೇಖನಮ್ | ಮೂರ್ಜೆ ಛೇದೇ ಲಿಪಿನ್ಯಾಸೇ" ಹೇಮಂ. 8. ಮಾತಿ  
ಮಾಡುವುದು. "ಲೇಖನಂ ಛೇದನೇ ಮೂರ್ಜೆ ಲಿಪಿನ್ಯಾಸೇ" ಮೇದಿಂ.  
(ಪುಂ) 9. ಜಜ್ಜು ಹುಲ್ಲು, ಕಾಶತ್ಯಣ. ಲಿಖ ಕರ್ಮಂ  
"ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪).

ಲೇಖನಿಕ ಲೇಖನಿಕ (ಪುಂ) 1. ಬರಹಗಾರ, ಗುಮಾಸ್ತೆ,  
ಕಾರಕೂನ. ಲೇಖನಂ ಶಿಲ್ಪಮಸ್ಯ "ಶಕ್" (೪-೪-೫೫).  
2. ಲೇಖಕಾರಕ, ಕಾಗದವನ್ನು ಒಯ್ದು ತಲುಪಿಸುವವನು.  
3. ತನ್ನ ಸಹಿಯನ್ನು ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಂದ ಮಾಡಿಸುವವನು,  
ಬರೆಯಲು ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದೆ ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಂದ ತನ್ನ ಹಸ್ತಾಕ್ಷರ  
ಬರೆಯಿಸುವವನು.

ಲೇಖನೀ ಲೇಖನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬರೆಯುವ ಸಾಧನ, ಬರೆ  
ಯುವ ಕಡ್ಡಿ, ಲೆಕ್ಕಣಿಕೆ. ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ) "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೦). "ಕೀಪ್" (೪-೧-೧೫). 2. ವರ್ತಕ,  
ಬಣ್ಣಹಾಕುವ ಕುಂಚ, ತೂಲಿಕೆ. "ಲೇಖನೀ ವರ್ಣತೂಲಿಕಾ"  
ಹಾರಾಂ.

ಲೇಖನೀಯ ಲೇಖನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಬರೆಯಲ್ಪಡುವ.  
2. ಬರೆಯಬೇಕಾದ. 3. ಬರೆಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಲಿಖ



(ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸ) ಕರ್ಮದೊ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) ।  
 "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೬) । ಲೇಖಿತವ್ಯಮ್ ಲೇಖಿತವ್ಯಮ್.  
 ಲೇಖನಂ ಲೇಖನಂ (ಪುಂ) ಶಕ್ರ, ಇಂದ್ರ, ದೇವೇಂದ್ರ.  
 ಲೇಖನಂ ಕೃಷಮ: । "ಜಿಣ್ಣುಲೇಖನಂ:ಶಕ್ರ:" ಅಮಂ ।  
 ಲೇಖಹಾರ ಲೇಖಹಾರ (ಪುಂ) ಕಾಗದವನ್ನು ಒಯ್ಯುವವನು.  
 ಲೇಖಂ ಪತ್ರಂ ಹರತಿ — ಹು (ಹರಣಿ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) ।  
 "ಪ್ಪುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । -ಹಾರಕ: -ಹಾರಕ:  
 ಲೇಖಾ ಲೇಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಂಕ್ತಿ, ಸಾಲು, ನಿರಂತರವಾದ  
 ಗೆರೆ, ಸೇರಿದಂತೆ ಹಾಕುವ ಗೆರೆ. ಲಿಖ್ಯತೇ—ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರ-  
 ವಿನ್ಯಾಸ) "ಅಙ್" (೩-೩-೧೦೪) । "ಕಾಂತಿಶ್ರೀವೋರಾಯತ-  
 ಲೇಖಯೋರ್ವಾ" ಕುಮಾಂ ೧-೪೭ । 2. ಚಿತ್ರ ಮೊದಲಾದವು  
 ವನ್ನು ಬರೆಯುವುದು. "ಪಾಣಿಲೇಖಾವಿಧಿಷು ನಿದರಾಂ ವರ್ತತೇ  
 ಕಿಂ ಕರೋಮಿ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೩೮ । 3. ಚಂದ್ರನ ಕಲೆ.  
 "ಲೇಖಯಾ ವಿಮಲವಿದ್ವಮಭಾಸಾ ಸಂತತಂ ತಿಮಿರಮಿಂದುರ್ದಾಸೇ"  
 ಕಿರಾಂ ೧-೨೨ । 4. ಮುದ್ರೆ, ಒಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು  
 ಒತ್ತುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಗುರುತು, ಒಂದು ವಸ್ತು  
 ವಿನ ಹೊರ ರೂಪ, -ಹೊರ ಆಕೃತಿ. "ಇಹ ಸನಿಯಮಯೋ:  
 ಸುರಾಪಗಾಯಾಮುಖಸಿ ಸಯಾವಕಸವ್ಯಪಾದೇಕ್ಷಾ" ಕಿರಾಂ ೫-೪೦ ।  
 5. ಲಿಖಿ, ವರ್ಣ, ಅಕ್ಷರ. "ಲೇಖೋ ಲೇಖ್ಯೇ ದೇವತೇ ಚ ಲೇಖಾ  
 ರಾಜ್ಯಾಂ ಲಿಪಾವಪಿ" ಹೇಮಂ । 6. ತೋಳು ಕೆನ್ನೆ ಸ್ತನ  
 ಗಳಲ್ಲಿ ಬರೆಯುವ ಚಿತ್ರ. "ಪತ್ತಿस्तು ಪತ್ರಕಂ ಲೇಖಾ ಬಾಹು-  
 ಗಂಧಸ್ತನಾದಿಷು" ವೇಂಜಂ ।  
 ಲೇಖ್ಯ ಲೇಖ್ಯ (ನಂ) 1. ಬರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ ಕಾಗದ. ಲಿಖ  
 (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸ) "ಘ್" (೩-೧-೧೨೪) । "ತಸ್ಯ-  
 ವಾಪರಲೇಖ್ಯಸುಚಿತಮಿದಂ ಪತ್ರಂ ಪ್ರಯೋಗಾಶ್ರಯಮ್" ಮುದ್ರಾಂ ೫-೧೫ ।  
 2. ಶಾಸನ, ಶಿಲೆ ನಾಣ್ಯ, ಲೋಹದ ಪಟ್ಟಿಗಳಲ್ಲಿ ಕೆತ್ತಿದ  
 ಮಾತುಗಳು. 3. ಕೈಯಕ್ಷರದಲ್ಲಿ ಬರೆದ ನಕಲು, ಮೂಲ  
 ಪ್ರತಿಗೆ ಸರಿಯಾದ ಹಸ್ತಲಿಖಿತ ಪತ್ರ. 4. ದಾಖಲೆ ಪತ್ರ,  
 ಪ್ರಮಾಣ ಪತ್ರ. 5. ಚಿತ್ರ ಬರೆಯುವುದು, ಬಣ್ಣ ಹಾಕು  
 ವುದು. 6. ಬರೆಯಲು ಅರ್ಹವಾದ ಕಾಗದ.  
 ಲೇಖಪತ್ರ ಲೇಖಪತ್ರ (ನಂ) ಬರೆಯಲು ಅರ್ಹವಾದ  
 ಕಾಗದ. ಲೇಖ್ಯ ಲೇಖಾಹೆ ಪತ್ರಮ್ ।  
 ಲೇಖಸ್ಥಾನ ಲೇಖಸ್ಥಾನ (ನಂ) ಟಿಪಾಲು ಕಚೇರಿ, ಅಂಚೆ  
 ಕಚೇರಿ. ಲೇಖಾನಾಂ ಸ್ಥಾನಮ್ । "ಲೇಖಸ್ಥಾನಂ ಗ್ರಂಥಕೂಟ:"  
 ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।  
 ಲೇಖ ಲೇಖ (ನಂ) ಪುರೀಷ, ಮಲ.  
 ಲೇಪ ಲೇಪ (ಪುಂ) 1. ಲೇಪನಮಾಡುವುದು, ಬಳಿಯು  
 ವುದು. ಲಿಪ್ಯತೇ—ಲಿಪ (ಅಪದೇಹ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) ।

2. ಭೋಜನ, ಊಟ. 3. ಸುಣ್ಣ. ಲಿಪ್ಯತೇ ಅನೇನ—  
 ಲಿಪ ಕರಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧) । "ಲೇಪಸ್ತು ಲೇಪನೇ ।  
 ಅಶನೇ ಚ ಸುಧಾಯಾಂ ಚ" ಹೇಮಂ । 4. ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ.  
 "ಲೇಪೋ ಭೋಜನಗರ್ವಯೋ:" ನಾನಾರ್ಥರಂ । 5. ಮುಲಾಮು.  
 6. ಗಂಧ ಮೊದಲಾದ ವಾಸನೆಯ ದ್ರವ್ಯವನ್ನು ಹಚ್ಚು  
 ವುದು. 7. ಪಾಪ. 8. ಕಳಂಕ, ಕಲೆ, ದೋಷ.  
 ಲೇಪಕ ಲೇಪಕ (ವಿಂ) 1. ಸುಣ್ಣ ಬಳಿಯುವವನು.  
 ಲಿಪ್ಯತೇ—ಲಿಪ (ಅಪದೇಹ) "ಘ್" (೩-೧-೧೩೩) ।  
 "ಪಲಗಂಧಸ್ತು ಲೇಪಕ:" ಅಮಂ । 2. ಬಣ್ಣ ಹಾಕುವವನು.  
 3. ಎರಕ ಹೊಯ್ಯುವವನು. 4. ಮುಲಾಮು ಹಾಕು  
 ವವನು.  
 ಲೇಪನ ಲೇಪನ (ನಂ) 1. ಸುಣ್ಣ ಬಳಿಯುವುದು. 2. ಬಣ್ಣ  
 ಹಾಕುವುದು. ಲಿಪ (ಅಪದೇಹ) "ಘ್" (೩-೩-೧೧೫) ।  
 3. ಮುಲಾಮು. 4. ಗಂಧ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಹಚ್ಚು  
 ವುದು. (ಪುಂ) 5. ಗುಗ್ಗಳ, ಧೂಪದ ಪುಡಿ. ಲಿಪ  
 ಕರಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೧೭) ।  
 ಲೇಪನಿ ಲೇಪನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಾರೆ ಬಳಿಯುವ ಕರಣ.  
 2. ಸುಣ್ಣ ಬಳಿಯುವ ಮಟ್ಟಿ. 3. ಬಣ್ಣ ಬಳಿಯುವ  
 ಕುಂಚಿ.  
 ಲೇಪನೀಯ ಲೇಪನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಲೇಪನ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ.  
 2. ಲೇಪನ ಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ಲೇಪನ ಮಾಡಲು  
 ಅರ್ಹವಾದ. ಲಿಪ (ಅಪದೇಹ) ಕರ್ಮದೊ "ಅನೀಯರ್"  
 (೩-೧-೧೬) । "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೬) । ಲೇಪನವ್ಯಮ್  
 ಲೇಪನವ್ಯಮ್.  
 ಲೇಪಿನ್ ಲೇಪಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಬಣ್ಣ ಬಳಿಯುವವನು.  
 2. ಸುಣ್ಣ ಬಳಿಯುವವನು. ಲಿಪ (ಅಪದೇಹ) "ಗಿಣಿ:"  
 (೩-೧-೧೩೪) । 3. ಗಂಧ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಹಚ್ಚು  
 ವವನು. 4. ಮುಲಾಮು ಹಚ್ಚುವವನು. 5. ಲೇಪನ  
 ದಿಂದ ಕೂಡಿದ.  
 ಲೇಪ್ಯ ಲೇಪ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಲೇಪನ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಬಳಿಯ  
 ಲ್ಪಡುವ. ಲಿಪ (ಅಪದೇಹ) "ಘ್" (೩-೧-೧೨೪) ।  
 (ನಂ) 2. ಲೇಪನ, ಬಳಿಯುವುದು. 3. ಗಂಧ ಹಚ್ಚು  
 ವುದು. 4. ಸುಣ್ಣ ಬಳಿಯುವುದು.  
 ಲೇಪ್ಯಕೃತ್ ಲೇಪ್ಯಕೃತ್ (ವಿಂ) ಲೇಪನ ಮಾಡುವವನು.  
 ಲೇಪ್ಯಂ ಕರೋತಿ — ಕೃತ್ "ವಿವ್" (೩-೨-೭೬) ।  
 ಲೇಲಿಹಾನ ಲೇಲಿಹಾನ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಪುನ:  
 ಪುನ: ಅತಿಶಯೇನ ವಾ ಲೇಡಿ —ಲಿಹ (ಆಸ್ವಾದನೆ) + ಯಙ್  
 "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ವಾಯುಪರ್ಯಾಯಭಕ್ಷಾಶ್ಚ ಲೇಲಿಹಾನೋ



ವಿಷಾಯುಧಃ" ಕಲ್ಪದ್ರುಂ 1. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. (ವಿಂ)  
3. ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ರಸವನ್ನು ಹೀರುವ ಸ್ವಭಾವದ.

ಲೇಶ ಲೇಶ (ಪುಂ) 1. ಚೂರು, ತುಂಡು, ಸಣ್ಣದಾದ ಒಂದು ಭಾಗ. ಲಿಶ (ಅಲ್ಪಿಭಾವೇ) "ಘ್" (3-3-19)।  
"ರವಿಕಿರಣಸಹಿಷ್ಣು ಸ್ವೇದಲೇಶರಭಿಷ್ಣು" ಶಾಕುಂ 2-4।  
2. ಅಲ್ಪ, ಸ್ವಲ್ಪ, ಕೊಂಚ. "ಲವಲೇಶಕರ್ಣಾವಃ" ಅಮಂ।  
"ಏಷ ತೇ ರಾಜವರ್ಮಿಣಾಂ ಲೇಶಃ ಸಮನುರ್ವಣಿತಃ" ಭಾಂ  
ಶಾಂತಿಂ 5-24। 3. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ.  
ಗುಣದಲ್ಲಿ ದೋಷವೂ ದೋಷದಲ್ಲಿ ಗುಣವೂ ವರ್ಣಿತ  
ವಾಗಿರುವಲ್ಲಿ ಲೇಶಾಲಂಕಾರ. "ಲೇಶಃ ಸ್ವಾದೋಷಗುಣಯೋ-  
ಗುಣದೋಷತ್ವಕಲ್ಪನಮ್"। ಉದಾ: "ಅಖಿಲೇಷ ವಿಹಂಜೇಷು  
ಹಂತ ಸ್ವಚ್ಛಂದವಾರಿಷು। ಶುಕ ಪಂಜರಬಂಧಸ್ತೇ ಮಧುರಾಣಾಂ  
ಗಿರಾಂ ಫಲಮ್" ಚಂದ್ರಾಂ।

ಲೇಷ್ಠ ಲೇಷ್ಠ (ಪುಂ) ಮಣ್ಣಿನ ಹೆಂಟೆ. ಲಿಶ (ಅಲ್ಪಿಭಾವೇ)  
"ತುನ್" ಬಾಹುಂ। "ಲೇಷ್ಠಮಸ್ಯಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಲೇಷ್ಠಃ" ಕಲ್ಪದ್ರುಃ।  
ಲೇಷ್ಠಭೇದನ ಲೇಷ್ಠಭೇದನ (ಪುಂ) ಮಣ್ಣಿನ ಹೆಂಟೆಯನ್ನು  
ಒಡೆಯುವ ಕೊಡೆತಿ. ಲೇಷ್ಠ ಭಿನತ್ತಿ—ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ)  
"ಲ್ಯುಃ" (3-1-134)।

ಲೇಹ ಲೇಹ (ಪುಂ) 1. ಆಸ್ವಾದನೆ, ನಾಲಗೆಯಿಂದ ಹೀರಿ  
ರುಚಿನೋಡುವುದು. 2. ನೆಕ್ಕುವುದು. ಲಿಹ (ಆಸ್ವಾದನೆ)  
"ಘ್" (3-3-18)। 3. ಆಹಾರ. 4. ಲೇಹ್ಯ. ಲಿಹ  
ಕರ್ಮಂ "ಘ್" (3-3-19)। "ಪಚೇಲ್ಲೇಹಂ ಸಿತಾಕ್ಷೌದ್ರ-  
ಪಲಾಧಿಕ್ವವಾನ್ವಿತಮ್। ತ್ರಿವಿಚ್ಛರ್ಣಯುತಂ ಶೀತಂ ಪಿತ್ತಿಷ್ಣಂ ತದ್ವಿ-  
ರೇಚನಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ 44-18। (ವಿಂ) 5. ಆಸ್ವಾದನೆ  
ಮಾಡುವ, ನಾಲಗೆಯಿಂದ ಹೀರಿ ರುಚಿನೋಡುವ.  
6. ನೆಕ್ಕುವ. ಲಿಹ —ಕರ್ಮಂ "ಘಃ" (3-1-141)।  
"ದಹೋಹಂ ಮಧುನೋ ಲೇಹೈರ್ದೇವೈರಗ್ರೈಶ್ಚಾ ಗಿರಿಃ" ಭಟ್ಟಿಂ 6-22।

ಲೇಹನ ಲೇಹನ (ನಂ) ನಾಲಗೆಯಿಂದ ಹೀರಿ ರುಚಿನೋಡುವ  
ವುದು. ಲಿಹ (ಆಸ್ವಾದನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-115)।  
"ಜಿಹ್ವಾಸ್ವಾದಸ್ತು ಲೇಹನಮ್" ವೈಜಂ।

ಲೇಹನೀಯ ಲೇಹನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಆಸ್ವಾದಿಸಲ್ಪಡುವ,  
ರುಚಿನೋಡಲ್ಪಡುವ. 2. ನೆಕ್ಕಲ್ಪಡುವ. 3. ರುಚಿನೋಡ  
ಬೇಕಾದ. 4. ನೆಕ್ಕಬೇಕಾದ. 5. ರುಚಿನೋಡಬಹುದಾದ.  
6. ನೆಕ್ಕಬಹುದಾದ. ಲಿಹ (ಆಸ್ವಾದನೆ) "ಅನೀಯರ್"  
(3-1-96)। "ತವ್ಯಃ" (3-1-96)। ಲೇಹವ್ಯಮ್  
ಲೇಹವ್ಯಮ್.

ಲೇಹ್ಯ ಲೇಹ್ಯ (ನಂ) 1. ಅಮೃತ. 2. ನಾಲಗೆಯಿಂದ  
ನೆಕ್ಕಿ ತಿನ್ನುವ ಆಹಾರ. ಲಿಹ (ಆಸ್ವಾದನೆ) "ಘ್" (3-3-19)।

(3-1-124)। ಆಹಾರವು (1) ಚೂಷ್ಯಮ್ (2) ಪೇಯಮ್  
(3) ಲೇಹ್ಯಮ್ (4) ಭೋಜ್ಯಮ್ (5) ಭಕ್ಷ್ಯಮ್ ಮತ್ಯು (6) ಚವ್ಯಮ್  
ಎಂದು ಆರು ವಿಧ. "ಆಹಾರಃ ಪಿತ್ತಿಷ್ಣಂ ಚೂಷ್ಯಂ ಪೇಯಂ ಲೇಹ್ಯಂ  
ತಥೈವ ಚ। ಭೋಜ್ಯಂ ಭಕ್ಷ್ಯಂ ತಥಾ ಚವ್ಯಂ ಗುರು ವಿಶ್ವಾಧ್ಯಾತ್ಯೋತ್ತ-  
ರಮ್" ಭಾವಪ್ರಂ। (ವಿಂ) 3. ನಾಲಗೆಯಿಂದ ನೆಕ್ಕಲ್ಪಡುವ.  
ಲಿಹ ಕರ್ಮಂ "ಘ್" (3-3-19)।

ಲೇಙ್ಗ ಲೇಙ್ಗ (ನಂ) 1. ಲಿಂಗಪುರಾಣ, ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ  
ರಚಿತವಾದ ಅಷ್ಟಾದಶ ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಲಿಙ್ಗ-  
ಮಧಿಕೃತ್ಯ ಕೃತೋ ಗ್ರಂಥಃ "ಅಙ್" (4-3-69)। [ವಿವರಕ್ಕೆ  
"ಲಿಙ್ಗಪುರಾಣ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. (ವಿಂ) 2. ಲಿಂಗ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. ಲಿಙ್ಗಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಙ್" (4-3-120)।

ಲೇಙ್ಗಿಕ ಲೇಙ್ಗಿಕ (ವಿಂ) 1. ಲಿಂಗದರ್ಶನದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ  
(ಜ್ಞಾನ). ಲಿಙ್ಗೇನ ನಿರ್ವೃತ್ತಮ್। "ಯತ್ರ ಭೂಮಸ್ತವಾಗ್ನಿಃ"  
ಎಂಬ ಸಾಹಚರ್ಯನಿಯಮದಿಂದ ಪರ್ವತೋ ಬಹ್ನಿಮಾನ್  
ಭೂಮಾತ್ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಭೂಮರೂಪವಾದ ಲಿಂಗದರ್ಶನದಿಂದ  
ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ವಹ್ನಿ ಮತ್ಯು ಜ್ಞಾನವುಂಟಾಗುವುದು. ಇದು  
ಲೇಙ್ಗಿಕ. 2. ಲಿಂಗದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು, ಲಿಂಗವ್ಯಾಪಾರ  
ದಿಂದ ಜೀವನ ನಡೆಸುವವನು. ಲಿಙ್ಗೇನ ಜೀವತಿ—ಲಿಙ್ಗ  
"ಠಕ್" (4-4-12)। 3. ಲಿಂಗಸಂಬಂಧವಾದ.

ಲೋಕ ಲೋಕ (ಪುಂ) 1. ಭುವನ, ಜಗತ್ತು, ಪ್ರಪಂಚ.  
ಲೋಕಯತೇ—ಲೋಕ (ದರ್ಶನೆ) "ಘ್" (3-3-19)। "ನ  
ಹಿ ಶ್ರೀಶ್ವರವ್ಯಾಹತಯಃ ಕದಾಚಿತ್ಪುಣ್ಯಂತಿ ಲೋಕೇ ವಿಪರೀತಮರ್ಥಮ್"  
ಕುಮಾಂ 3-63। 2. ಜನ, ಮನುಷ್ಯ. "ಸ ವಿಶೇಷಪದೇಷು  
ದಕ್ಷತಾಂ ನಿಯತಿಂ ಲೋಕಃ ಇವಾನುರೂಪಯತೇ" ಕಿರಾಂ 2-11।  
3. ದರ್ಶನ, ನೋಟ. ಲೋಕ ಭಾವೇ "ಘ್" (3-3-18)।  
4. ಹದಿನಾಲ್ಕು ಸಂಖ್ಯೆ. ಲೋಕಗಳು ಹದಿನಾಲ್ಕು—  
ಊರ್ಧ್ವಲೋಕಗಳು ಏಳು. ಅಧೋಲೋಕಗಳು ಏಳು.

ಊರ್ಧ್ವಲೋಕಗಳು: (1) ಭೂಲೋಕ: (2) ಭುವಲೋಕ:  
(3) ಸ್ವಲೋಕ: (4) ಮಹಲೋಕ: (5) ಜನಲೋಕ: (6) ತಪಾಲೋಕ:  
ಮತ್ಯು (7) ಸತ್ಯಲೋಕ:।

ಅಧೋಲೋಕಗಳು: (1) ಅತಲಮ್ (2) ವಿತಲಮ್  
(3) ಸುತಲಮ್ (4) ತಲಾತಲಮ್ (5) ಮಹಾತಲಮ್ (6) ರಸಾತಲಮ್  
ಮತ್ಯು (7) ಪಾತಾಲಮ್। ಈ 14 ಲೋಕಗಳು ವಿರಾಟ್  
ಪುರುಷನ ಅವಯವಗಳಾಗಿ ಕಲ್ಪಿತವಾಗಿವೆ. ["ಚತುರ್ದಶ-  
ಭುವನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಲೋಕಚಕ್ಷುಸ್ ಲೋಕಚಕ್ಷುಸ್ (ಪುಂ) ರವಿ, ಸೂರ್ಯ.  
ಲೋಕಾನಾಂ ಚಕ್ಷುರಿವ।

ಲೋಕಜನನಿ ಲೋಕಜನನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಗನ್ನಾತೆ, ಮಹಾ  
ಲಕ್ಷ್ಮಿ. ಲೋಕಾನಾಂ ಜನನಿ।



**ಲೋಕಜಿತ್ ಲೋಕಜಿತ್** (ಪುಂ) 1. ಬುದ್ಧದೇವ. ಲೋಕ  
ಜಯತಿ—ಜಿ (ಜಯ) “ಕ್ವಿಪ್” (3-2-61)। “ಸಮಂತ-  
ಭದ್ರೋ ಭಗವಾನ್ ಮಾರಜಿಲ್ಲೋಕಜಿಜ್ಜಿನಃ” ಅಮಂ। (ವಿಂ)  
2. ಲೋಕವನ್ನು ಜಯಿಸಿದವನು.

**ಲೋಕತ್ರಯ ಲೋಕತ್ರಯ** (ನಂ) ಸ್ವರ್ಗ ಮರ್ತ್ಯ ಮತ್ತು  
ಪಾತಾಳಗಳೆಂಬ ಮೂರು ಲೋಕಗಳು. ಲೋಕಾನಾಂ ತ್ರಯಮ್।  
“ಉತ್ಪಾತಲೋಕತ್ರಯಕಂಡಕೇಽಪಿ ಸತ್ಯಪ್ರತಿಜ್ಞಾಪ್ಯವಿಕಲ್ಪನೇಽಪಿ”  
ರಘುಂ 18-93।

**ಲೋಕನಾಥ ಲೋಕನಾಥ** (ಪುಂ) ಜಗತ್ತಿನ ಒಡೆಯ. ಬ್ರಹ್ಮ  
ವಿಷ್ಣು ಮತ್ತು ಮಹೇಶ್ವರ. ಲೋಕಾನಾಂ ನಾಥಃ। “ಲೋ-  
ಕಬನ್ಧುಲೋಕನಾಥೋ ಮಾಧವೋ ಭಕ್ತವತ್ಸಲಃ” ವಿಂ ಸಂ।

**ಲೋಕಪಾಲ ಲೋಕಪಾಲ** (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ಲೋಕಾನ್  
ಪಾಲಯತಿ—ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಕ್ವ “ಅಣ್” (3-2-1)।  
2. ಇಂದ್ರ ಮೊದಲಾದ ಅಷ್ಟದಿಕ್ಪಾಲಕರು. (1) ಇಂದ್ರ  
(2) ವಹ್ನಿ (3) ಪಿತೃಪತಿ (ಯಮ) (4) ನೈರ್ಮತ  
(5) ವರುಣ (6) ವಾಯು (7) ಕುಬೇರ ಮತ್ತು  
(8) ಈಶ್ವರ ಇವರು ಎಂಟು ದಿಕ್ಪಾಲಕರು. “ತಂ ಲೋ-  
ಕಪಾಲಾಃ ಪುಹೂತಮುಖಾಃ ಶ್ರೀಲಕ್ಷಣೋತ್ಸರ್ಗವಿನೀತವೇಷಾಃ” ಕುಮಾಂ  
9-84। (ವಿಂ) 2. ಲೋಕವನ್ನು ಕಾಪಾಡುವವನು.

**ಲೋಕಪ್ರವಾದ ಲೋಕಪ್ರವಾದ** (ಪುಂ) ಜನರು ಅಡಿಕೊಳ್ಳುವ  
ಮಾತು. ಲೋಕಸ್ಯ ಜನಸ್ಯ ಪ್ರವಾದಃ। “ಲೋಕಪ್ರವಾದಃ  
ಸತ್ಯೋಽಯಂ ಪಿಂಡಿತಃ ಸಮುದಾಹೃತಃ” ರಾಮಾಂ।

**ಲೋಕಬನ್ಧು ಲೋಕಬಂಧು** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. ಲೋಕಾನಾಂ  
ಬನ್ಧುಃ। “ಲೋಕಬನ್ಧುಲೋಕನಾಥಃ” ವಿಂ ಸಂ। -ಬಾಂಧವಃ  
-ಬಾಂಧವಃ. 2. ಸೂರ್ಯ.

**ಲೋಕಬಾಹ್ಯ ಲೋಕಬಾಹ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಜಗತ್ತಿನಿಂದ  
ದೂರವಾದವನು. 2. ಸಮಾಜದಿಂದ ಹೊರದೂಡಲ್ಪಟ್ಟ  
ವನು, ಜನರ ಗುಂಪಿನಿಂದ ದೂರವಾದವನು, ಬಹಿಷ್ಕರಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟವನು.

**ಲೋಕಮರ್ಯಾದಾ ಲೋಕಮರ್ಯಾದಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲೋಕ  
ರೂಢಿ, ಜನರ ಸಂಪ್ರದಾಯ, ವೃದ್ಧಾಚಾರ, ಸತ್ಪುರುಷರ  
ನಡೆವಳಿಕೆ. -ಆಚಾರಃ -ಆಚಾರಃ.

**ಲೋಕಮಾತೃ ಲೋಕಮಾತೃ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಗನ್ಮಾತೆ, ಮಹಾ  
ಲಕ್ಷ್ಮಿ. ಲೋಕಾನಾಂ ಮಾತಾ। “ಇಂದಿರಾ ಲೋಕಮಾತಾ ಮಾ  
ರಮಾ ಮङ್ಗಲದೇವತಾ” ಅಮಂ।

**ಲೋಕಾಚಾರ ಲೋಕಾಚಾರ** (ಪುಂ) ಜನರ ಆಚಾರ, ಜನರು  
ಅನುಸರಿಸುವ ಪದ್ಧತಿ, -ಸಂಪ್ರದಾಯ.

**ಲೋಕಾಯತ ಲೋಕಾಯತ** (ಪುಂ) 1. ದೇಹಾತ್ಮವಾದಿ,  
ನಾಸ್ತಿಕ, ಚಾರ್ವಾಕಮತನುಯಾಯಿ. (ನಂ) 2.  
ಚಾರ್ವಾಕಮತ. ಲೋಕೇಷು ಆಯತಂ ವಿಸ್ತೀರ್ಣಮ್। [ಚಾರ್ವಾಕ  
ಮತತತ್ತ್ವವು ಕೆಲವು ಜನರಿಗೆ ಬಹಳ ಹಿತವಾಗಿ ಕಂಡು  
ಬಂದಿದ್ದರಿಂದ ಅದು ಲೋಕಾಯತ ಮತವಾಯಿತು.]

**ಲೋಕಾಯತಿಕ ಲೋಕಾಯತಿಕ** (ಪುಂ) ದೇಹಾತ್ಮವಾದಿ,  
ನಾಸ್ತಿಕ, ಚಾರ್ವಾಕ. ಲೋಕಾಯತಂ ಮತಮಸ್ಯ “ಠನ್”  
(4-2-114)।

**ಲೋಕಾಲೋಕ ಲೋಕಾಲೋಕ** (ಪುಂ) ಚಕ್ರವಾಳ ಪರ್ವತ,  
ಭೂಮಿಯನ್ನು ಸುತ್ತಲೂ ಆವರಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ ಒಂದು  
ಪರ್ವತ. ಲೋಕಯತೇ—ಲೋಕ (ದರ್ಶನೆ) “ಛತ್” (3-3-14)।  
ನ ಲೋಕಃ ಅಲೋಕಃ। ಲೋಕಾಲೋಕೌ ಪ್ರಕಾಶಾನ್ವಕಾರೌ  
ಸ್ತೌತ್ವಃ। ಲೋಕಾಶ್ಚಾಸಾವಲೋಕಾಶ್ಚ ಇತಿ ವಾ। ಈ ಪರ್ವತವು  
ಭೂಮಿಯ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ಸೂರ್ಯಕಿರಣವು  
ಕೆಲವು ಕಡೆ ಬಿದ್ದು ಪ್ರಕಾಶವಾಗಿಯೂ ಕೆಲವು ಕಡೆ ಬೀಳದೆ  
ಅಂಧಕಾರಾವೃತವಾಗಿಯೂ ಇರುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ  
ಲೋಕಾಲೋಕಮೆಂದು ಹೆಸರು. “ಪ್ರಕಾಶಾಶ್ಚಾಪ್ರಕಾಶಾಶ್ಚ  
ಲೋಕಾಲೋಕ ಇತಿ ಚಲಃ” ರಘುಂ 1-64।

**ಲೋಕೇಶ ಲೋಕೇಶ** (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ.  
ಲೋಕಾನಾಮೀಶಃ। “ಹಿರಣ್ಯಗರ್ಭೋ ಲೋಕೇಶಃ” ಅಮಂ।  
2. ಇಂದ್ರ, ಲೋಕಪಾಲ. “ತವೈವ ಸಂದೇಶಹರಾದ್ವಿಶಾಂಪತಿಃ  
ಶೃಣೋತಿ ಲೋಕೇಶ ತಥಾ ವಿಧೀಯತಾಮ್” ರಘುಂ 3-66।  
3. ರಾಜ, ದೊರೆ. 4. ಜಗತ್ತಿನ ಅಧಿಪತಿ. -ಈಶ್ವರಃ  
-ಈಶ್ವರಃ.

**ಲೋಕಲೋಕ ಲೋಕಲೋಕ** (ಪುಂ) 1. ಕಣ್ಣಿನ ಗುಡ್ಡೆ. 2. ನೀರಿ  
ಬಟ್ಟಿ. 3. ಹೆಂಗಸರ ನೆತ್ತಿಯ ಆಭರಣ, ನೆತ್ತಿಯ  
ಬೊಟ್ಟು, ಚುಟ್ಟಿ ಪದಕ. 4. ಬಾಳೆಗಿಡ. ಲೋಕ (ದರ್ಶನೆ)  
“ಛಲ್” (3-1-133)। 5. ಕರ್ಣಾಭರಣ. 6. ಹೆದೆ,  
ಬಿಲ್ಲಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಅಂಬು. 7. ಕಣ್ಣಿನ ಕಪ್ಪು, ಕಾಡಿಗೆ.  
8. ಮಾಂಸಪಿಂಡ. 9. ನೀರಿ ಗಿಡ. 10. ಚರ್ಮ,  
ತೊಗಲು. 11. ಹುಬ್ಬು. 12. ಕೆಂಪು ಬಟ್ಟೆ. (ವಿಂ)  
13. ಕೆಟ್ಟ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. 14. ಕ್ಷೀರವೇ ಆಹಾರ  
ವಾಗಿರುವವನು. “ಲೋಕಲೋಕೋ ಮಾಂಸಪಿಂಡೇ ಸ್ಯಾನ್ನಿಲಿನ್ಯಾಂ  
ಚರ್ಮಣಿ ಭುವಿ। ರಕ್ತಾಂಶುಕೇ ದುಷ್ಟಬುದ್ಧಿ ಕ್ಷೀರಾಹಾರಸ್ತು  
ಲೋಕಲೋಕಃ” ವೈಜಂ। “ಲೋಕಲೋಕೋ ಮಾಂಸಪಿಂಡೇಕ್ಷಿತಾರಕಾಃ  
ಚ ಕಜ್ಜಲೇ। ಲಲಾಟಾಭರಣೇ ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಕದಲಿನೀಲ-  
ವಸ್ತ್ರಯೋಃ। ನಿಬುದ್ಧಿ ಕರ್ಣಪುರೇ ಚ ಮೌರ್ವ್ಯಾ ಭ್ರೂಲಯಚರ್ಮಣಿ”  
ಮೇದಿಂ।



**ಲೋಚನ ಲೋಚನ** (ನಂ) 1. ನೇತ್ರ, ಕಣ್ಣು. ಲೋಚ (ದರ್ಶನೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-117) 1. "ಅಗ್ಧಭಾವಾಪಿ ವಲೋಕನೇ ಸಾ ನ ಲೋಚನೇ ಮೀಲಯಿತು ವಿವೇಹೇ" ಕಿರಾಂ 3-36. 2. ನೋಟ, ನೋಡುವುದು. ಲೋಚ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-115) 1.

**ಲೋಚಮಸ್ತಕ ಲೋಚಮಸ್ತಕ** (ಪುಂ) ಅಜವಾನ, ಹಿಮ. "ಕಾರವಿ ಚ ಖರಾಶ್ವಾಗ್ರಾ ದೀಪ್ಯಕಾ ಲೋಚಮಸ್ತಕ:" ವೈಜಂ.

**ಲೋಚಮಾಲಕ ಲೋಚಮಾಲಕ** (ಪುಂ) ರಾತ್ರಿ 9 ಗಂಟೆಯ ಮೇಲೆ 12 ಗಂಟೆಯೊಳಗೆ ಆಗುವ ಸ್ವಪ್ನ, ಅರ್ಧ ರಾತ್ರಿ ಯಲ್ಲಿ ಆಗುವ ಸ್ವಪ್ನ. "ಪ್ರದೋಷೇ ಬಲಕಃ ಸ್ವಪ್ನಃ ನಿಶಿಥೇ ಲೋಚಮಾಲಕಃ" ವೈಜಂ.

**ಲೋಚನ ಲೋಚನ** (ನಂ) 1. ಉರುಳಾಡುವುದು, ಹೊರಳಾಡುವುದು. 2. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ತೇಲಾಡುವುದು. "ಸಂವೀಕ್ಷಣಂ ವಿಚಯನಂ ಲೋಚನಂ ತು ವಿವೇಚನಮ್" ವೈಜಂ.

**ಲೋಚನ ಲೋಚನ** (ನಂ) ಅಡಿಸುವುದು, ಕಲಕುವುದು. ಲೋಚ (ಉನ್ಮಾದೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-115) 1.

**ಲೋತ ಲೋತ** (ಪುಂ) 1. ಕಣ್ಣೀರು. ಲೂ (ಛೇದನೆ) "ತನ್" (3-3-116) 1. 2. ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು. "ಲೋತೋಶ್ಚ ನಯನೋದಕಮ್" ವೈಜಂ. "ಲೋತಃ ಸ್ಯಾದಶ್ಚುಚಿಹ್ನಯೋಃ" ಸಿಂ ಕೌಂ. (ನಂ) 3. ಲೂಟಿಮಾಡಿ ತಂದ ಹಣ, ಕದ್ದುತಂದ ವಸ್ತು.

**ಲೋತ್ರ ಲೋತ್ರ** (ನಂ) ಕದ್ದುತಂದ ವಸ್ತು, ಲೂಟಿಮಾಡಿ ತಂದ ಹಣ. ಲೂ (ಛೇದನೆ) "ಫ್ಲನ್" (3-3-116) 1. "ಲೋತ್ರೇಣ ಗೃಹಿತಸ್ಯ ಕುಮ್ಮಿಲಕಸ್ಯ ಅಸ್ತಿ ವಾ ಪ್ರತಿವಚನಮ್" ವಿಕ್ರಂ.

**ಲೋಧ ಲೋಧ** (ಪುಂ) 1. ಲೋಧ್ರವೃಕ್ಷ. ಸಾಂಬ್ರಾಣಿ ಗಿಡ. "ಗಾಲವಃ ಶಾಬರೋ ಲೋಧಃ" ಅಮಂ. "ಲೋಧ್ರಮ್ ಸಾನುಮತಃ ಪ್ರಫುಲ್ಲಮ್" ರಘುಂ 2-29. (ನಂ) 2. ಲೋಧ್ರ ವೃಕ್ಷದ ಪುಷ್ಪ. "ಶರೀರಸಾದಾದಸಮಗ್ರಭೂಷಣಾ ಮುಖೇನ ಸಾಲಕ್ಷಯತ ಲೋಧ್ರಪಾಂಡುನಾ" ರಘುಂ 3-2.

**ಲೋಪ ಲೋಪ** (ಪುಂ) 1. ಅಭಾವ, ಇಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಲುಪ್ (ಛೇದನೆ) "ಘ್" (3-3-116) 1. "ಸೋಹ್ಮಿಜ್ಯಾ-ವಿಶುದ್ಧಾತ್ಮಾ ಪ್ರಜಾಲೋಪನಿಮೀಲಿತಃ" ರಘುಂ 1-68. 2. ನಾಶ, ಧ್ವಂಸ, ಪ್ರಳಯ. 3. ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವ ಅದರ್ಶನ (ವರ್ಣನಾಶ) ರೂಪವಾದ ಲೋಪ. "ಅದರ್ಶನಂ ಲೋಪಃ" ಪಾಂ ಸೂಂ 1-1-60. 4. ನಾಶ, ಚ್ಯುತಿ, ತಪ್ಪಿನಡೆಯುವುದು, ಉಲ್ಲಂಘನೆ.

"ಧರ್ಮಲೋಪಭಯಾದ್ರಾಜೀಮತುಸ್ತಾತಾಮಿಮಾಂ ಸ್ಮರನ್. ಪ್ರದಕ್ಷಿಣ-ಕ್ರಿಯಾರ್ಹಿಣಿಂ ತಸ್ಯಾಂ ತ್ವಂ ಸಾಧು ನಾಚರಃ" ರಘುಂ 1-96.

**ಲೋಪಕ ಲೋಪಕ** (ಪುಂ) ತುಪ್ಪ ಮತ್ತು ಬೆಲ್ಲ ಬೆರೆಸಿದ ರೊಟ್ಟಿಯ ಹಿಟ್ಟು. "ಅನುಪಚೂರ್ಣಂ ಸಗುಡೇ ಚುರಿಸೋದಕ-ಇತ್ಯಯನ್. ಪಿಪ್ಪಲೇ ಷುತಗುಡೋನ್ಮಿಶ್ರೇ ಲೋಪಕಃ" ವೈಜಂ.

**ಲೋಪನ ಲೋಪನ** (ನಂ) 1. ಉಲ್ಲಂಘಿಸಿ ನಡೆಯುವುದು, ತಪ್ಪಿನಡೆಯುವುದು, ಮೀರಿನಡೆಯುವುದು. ಲುಪ್ (ಛೇದನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-115) 1. 2. ಲೋಪ, ಅಭಾವ.

**ಲೋಪಾ ಲೋಪಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗಸ್ತ್ಯಮುನಿಯ ಪತ್ನಿ, ವಿವರ್ಧರಾಜನ ಪತ್ನಿ.

**ಲೋಪಾಕ ಲೋಪಾಕ** (ಪುಂ) 1. ನೀರುಕೋಳಿ. 2. ಜಂಬುಕ, ನರಿ. ಲೋಪಂ ಶೀಘ್ರಮದರ್ಶನಂ ಅಕತಿ ಗಂಚತಿ — ಅಕ (ಕುಡಲಿಗಾಯಿ ಗತೌ) "ಅನ್" (3-2-1) 1. ಲೋಪಮದರ್ಶನಮ್ ಆಪ್ನೋತಿ—ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಫ್ವಲ್" (3-1-133) 1. ಲೋಪಾಕಃ ಲೋಪಾಕಃ.

**ಲೋಪಾಮುಖಾ ಲೋಪಾಮುಖಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗಸ್ತ್ಯ ಮಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿ, ವಿವರ್ಧರಾಜನ ಪತ್ನಿ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಅಗಸ್ತ್ಯ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].

**ಲೋಪಾಶ ಲೋಪಾಶ** (ಪುಂ) ಜಂಬುಕ, ನರಿ. ಲೋಪಮದರ್ಶನ-ಮನುತೇ ದ್ರುತಮ್—ಅಶ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಅಚ್" (3-1-134) 1. "ಜಂಬುಕೋ ವನಮತಃ ಸ್ಯಾಲ್ಲೋಪಾಶೋ ವನಕುಕ್ಕುರಃ" ವೈಜಂ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಲೋಪಾಶೋ ಲೋಪಾಶೀ. "ಲೋಪಾಶ್ಯುಕ್ತಕಾಮುಖೀ ಗಣಿಡಃ" ವೈಜಂ.

**ಲೋಪಾಶಿಕಾ ಲೋಪಾಶಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣುನರಿ. "ಶಿವಾ ಲೋಪಾಶಿಕಾ ಜೇಯಾ" ಹಾರಾಂ.

**ಲೋಪ್ರ ಲೋಪ್ರ** (ನಂ) ಕದ್ದುತಂದ ವಸ್ತು (ಧನ). ಲುಪ್ಯತೇ — ಲುಪ್ (ಛೇದನೆ) "ಫ್ಲನ್" (3-3-116) 1. "ಚೋರಿಕಾ ಸ್ತನ್ಯವೋರ್ಯೇ ಚ ಸ್ತೇಯಂ ಲೋಪ್ರಂ ತು ತದ್ವನಮ್" ಅಮಂ.

**ಲೋಭ ಲೋಭ** (ಪುಂ) 1. ಅತಿಆಸೆ, ಇತರರ ಧನವನ್ನು ಕಸಿಯುವ ಇಚ್ಛೆ. ಲುಭ (ಗಾಢ್ಯೇ) "ಘ್" (3-3-116) 1. "ಪರವಿತ್ತಾದಿಕಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ನೇತುಂ ಯೋ ಹೃದಿ ಜಾಯತೇ. ಅಮಿಲಾಘೋ ದ್ವಿಜಶ್ರೇಷ್ಠಃ ಸ ಲೋಭಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ" ಪದ್ಮಪುಂ. "ಲೋಭಾ-ದ್ವಯಾದ್ವಾಭಿಗತಃ ಕಪಿನ್ದ್ರೋ ನ ರಾಘವಂ ಯೇನ ಭವೇದ್ವಿಭೇದಃ" ಮಹಿಂ 12-40. 2. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಆಸೆ, ಬಯಕೆ. "ಕರ್ಣೋ ಲೋಭಃ ಕಥಯಿತುಮಭೂದಾನನಸ್ಪರ್ಶಲೋಭಾತ್" ಮೇಘಂ 2-40.

**ಲೋಭನ ಲೋಭನ** (ನಂ) 1. ಆಸೆತೋರಿಸಿ ಮರುಳುಗೊಳಿಸುವುದು, ಆಸೆತೋರಿಸಿ ಮೋಹವುಂಟುಮಾಡುವುದು. ಲುಭ (ವಿಮೋಹನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-115) 1.



2. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ, ಬಂಗಾರ. "ಲೋಮನಂ ಕನಕಂ ಶುಕ್ರಂ ಸುವರ್ಣಂ ಚಂದ್ರಕಾಂಕ್ಷನೇ" ವೈಜಂ. 3. ಆಸೆತೋರಿಸುವುದು.

**ಲೋಮನೀಯ ಲೋಭನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಚಿತ್ತಾಕರ್ಷಕವಾದ, ಆಪೇಕ್ಷಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಲುಭ (ಗಾಘ್ಯ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-26). "ಕುಸುಮಿವ ಲೋಮನೀಯಂ ಯೌವನಮಂಜೇಷು ಸನದಮ್" ಶಾಕುಂ 1-18. 2. ಮರುಳುಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಆಸೆತೋರಿಸಿ ಮೋಹಗೊಳಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. ಲುಭ (ವಿಮೋಹನೆ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-26).

**ಲೋಮಿನ್ ಲೋಭಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಅತಿ ಆಸೆಯುಳ್ಳವನು, ಪರಧನವನ್ನು ಕಸಿಯಲು ಆಸೆಪಡುವವನು. ಲೋಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ" ಇತಿ: (4-2-114). 2. ಮೋಹಗೊಳಿಸುವವನು, ಮರುಳುಮಾಡುವವನು. ಲೋಮಯತಿ — ಲುಭ (ವಿಮೋಹನೆ) + ಣಿಚ್ "ಣಿತಿ:" (3-1-134).

**ಲೋಮ್ಯ ಲೋಭ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಆಸೆಪಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ಆಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. ಲುಭ (ಗಾಘ್ಯ) "ಯತ್" (3-1-124). 3. ಮರುಳುಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. ಲುಭ (ವಿಮೋಹನೆ) + ಣಿಚ್ "ಯತ್" (3-1-96). (ಪುಂ) 4. ಹೆಸರುಕಾಳು. "ಮುಧ್ಗಸ್ತು ಪ್ರತಮೋ ಲೋಮ್ಯೋ ಬಲಾಙ್ಗೋ ಹರಿತೋ ಹರಿ:" ವೈಜಂ.

**ಲೋಮಕರ್ಣ ಲೋಮಕರ್ಣ** (ಪುಂ) 1. ಶಶ, ಮೊಲ. ಲೋಮಾನಿ ಕರ್ಣೌ ಯಸ್ಯ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಕೀಘ್" (4-1-64). (ವಿಂ) 2. ಕೂದಲಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕಿವಿಯುಳ್ಳ. ಲೋಮಯುಕ್ತೌ ಕರ್ಣೌ ಯಸ್ಯ.

**ಲೋಮಕೂಪ ಲೋಮಕೂಪ** (ಪುಂ) ಕೂದಲಿನ ಗುಳಿ, ಮೈಯಲ್ಲಿ ಕೂದಲು ಹುಟ್ಟುವ ರಂಧ್ರ. ಲೋಮ್ನಾಂ ಕೂಪ ಇವ.

**ಲೋಮಗತ ಲೋಮಗತ** (ಪುಂ) ಕೂದಲಿನ ಗುಳಿ, ಮೈಯಲ್ಲಿ ಕೂದಲು ಹುಟ್ಟುವ ರಂಧ್ರ.

**ಲೋಮಹನ ಲೋಮಹನ** (ನಂ) ತಲೆಯ ಕೂದಲನ್ನು ಉದುರಿಸುವ ಒಂದು ರೋಗ. ಲೋಮಾನಿ ಹಂತಿ — ಹನ (ಹಿಸ್ತಾಗತ್ಯಾ:) "ಹಕ್" (3-2-43). ರೋಮಕೂಪದ ಹಿತ್ತವು ವಾತದೊಡನೆ ಬೆರೆತು ಕೂದಲನ್ನು ಉದುರಿಸುವುದು. ಬಳಿಕ ಕಫವು ರಕ್ತದೊಡನೆ ಸೇರಿ ರೋಮಕೂಪವನ್ನು ಮುಚ್ಚುವುದರಿಂದ ಮುಂದೆ ಕೂದಲು ಬೆಳೆಯುವುದಿಲ್ಲ. ಇದರಿಂದ ಬಟ್ಟು ತಲೆಯವನಾಗುತ್ತಾನೆ.

**ಲೋಮನ್ ಲೋಮನ್** (ನಂ) ಮೈ ಕೂದಲು. ಲೂಯತೇ — ಲೂ (ಛೇದನೆ) "ಮನಿನ್" (3-2-94). "ಏಠೇ ಮಾಸಿ ಚ ನಾರೀಣಾಂ ವೈದಿಕೇ ನಾಧಿಕಾರಿತಾಃ. ತದರಸ್ಯಸ್ಯ ಬಾಲಸ್ಯ ನಖಲೋಮಪ್ರವರ್ತನಾತ್" ಇತಿ ಸ್ಮೃತಿ:

**ಲೋಮಪಾದ ಲೋಮಪಾದ** (ಪುಂ) ಅಂಗದೇಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. ಲೋಮಾನಿ ಪಾದಯೋರಸ್ಯ. ಈ ದೊರೆಯು ಋಷ್ಯಶೃಂಗಯುಷಿಯ ಶ್ವಶುರ (ಮಾವ). ರೋಮಪಾದನೆಂದೂ ಇವನಿಗೆ ನಾಮಾನ್ತರ. ಇವನು ದಶರಥನ ಪುತ್ರಿಯಾದ ಶಾಂತಾದೇವಿಯನ್ನು ಸಾಕುಮಗಳನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಋಷ್ಯಶೃಂಗಮಹರ್ಷಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು ವಿವಾಹಮಾಡಿದನು. ಅನಾವೃಷ್ಟಿಪೀಡಿತವಾಗಿದ್ದ ರೋಮಪಾದನ ರಾಜ್ಯಕ್ಕೆ ಈ ಯುಷಿಯು ಪ್ರವೇಶಿಸಿದ ಕೂಡಲೆ ಒಳ್ಳೆಯ ಮಳೆಯಾಗಿ ದೇಶವು ಸುಖಿಕ್ಷವಾಯಿತು.

**ಲೋಮಶ ಲೋಮಶ** (ಪುಂ) 1. ಟಗರು, ಗಂಡುಕುರಿ. ಲೋಮಾನಿ ಬಾಹ್ಯಲೇನ ಸನ್ತಸ್ಯ "ಶ:" (4-2-100). 2. ಒಬ್ಬ ಋಷಿ. (ವಿಂ) 3. ಹೆಚ್ಚು ಕೂದಲಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಧಾನ್ಯಂ ಹೃತ್ವಾ ತು ಪುರುಷೋ ಲೋಮಶ: ಸಂಪ್ರಜಾಯತೇ" ಭಾಂ ಅನುಂ 104-120. "ಲೋಮಶೋ ಮುನಿಮೇಷಯೋಃ ಲೋಮಾನ್ವಿತೇ ಚ" ಮೇದಿಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಶಾ —ಶಾ. 4. ಹೆಣ್ಣು ನರಿ. 5. ನಸುಗುನ್ನಿ. 6. ಮಹಾಮೇದ. 7. ಶಾಕಿನಿ. —ಶಾ —ಶೀ. 8. ಜಟಾಮಾಂಸಿ.

**ಲೋಮಶರ್ಪಣಿಕಾ ಲೋಮಶರ್ಪಣಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡುದ್ದಿನ ಗಿಡ.

**ಲೋಮಶಪುಷ್ಪಕ ಲೋಮಶಪುಷ್ಪಕ** (ಪುಂ) ಶರೀಷ ವೃಕ್ಷ, ಜಾಗೆಮರ.

**ಲೋಮಶಾತನ ಲೋಮಶಾತನ** (ನಂ) ಕೂದಲನ್ನು ಉದುರಿಸುವ ಔಷಧ. ಲೋಮಾನಿ ಶಾತಯತಿ — ಶಾಲ್ (ಶಾತನೆ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (3-1-134).

**ಲೋಮಹರ್ಷಣ ಲೋಮಹರ್ಷಣ** (ನಂ) 1. ರೋಮಾಂಚ, ಮೈಮುಳ್ಳು, ಏಳುವುದು. ಲೋಮ್ನಾಂ ಹರ್ಷಣಮ್. (ವಿಂ) 2. ರೋಮಾಂಚವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. "ತಸ್ಮಿನ್ ಮಹಾಭಯೋರೇ ತುಮುಲೇ ಲೋಮಹರ್ಷಣೇ" ಭಾಂ.

**ಲೋಲ ಲೋಲ** (ಪುಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಯುದ್ಧ, ಘೋರವಾದ ಕದನ. "ವೀರಾಶಂಸನಮಾಜೇರ್ಮುರ್ಧೋರೋ ಲೋಲೋ ಮಹಾರಣಮ್" ವೈಜಂ. (ವಿಂ) 2. ಚೆಂಚಲವಾದ, ಚಲಿಸುವ. ಲೋಲತಿ — ಲುಡ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಅಚ್" (3-1-134). ಡಲಯೋರಭೇದ: "ಲೋಲದೃಷ್ಟಿ ವದನಂ ದಯಿತಾಯಾಶ್ಚುಮ್ಭವತಿ ಪ್ರಿಯತಮೇ ರಮಸೇನ" ಕಿರಾಂ 9-49. 3. ಕಂಪಿಸುವ, ನಡುಗುವ, ಅಲುಗಾಡುವ. "ಲೋಲೈರಲೋಲದೃತಿಭಾಜಿಜ ಮುಣ್ಣನ್ ರತ್ನಾನಿ ರತ್ನಾಕರತಾಮವಾಪ" ಮಾಘಂ 3-38. 4. ಚೆಂಚಲವಾದ, ಕ್ಷಣಿಕವಾದ, ಸ್ಥಿರವಲ್ಲದ. "ಯೇನ ಶ್ರಿಯ: ಸಂಶ್ರಯದೋಷರೂಢಂ ಸ್ವಭಾವಲೋಲೇತ್ಯಯಶ: ಪ್ರಮೃಷ್ಠಮ್" ರಘುಂ 6-41. 5. ಆಸೆಯಿಂದ



ಕೂಡಿದ, ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. "ವಸನಮಪಿ ನಿಶಾಂತೇ ನೇಪ್ಯತೇ ತತ್ಪದಾತುಂ ರಥಚರಣವಿಶಾಲಶ್ರೋಣಿಲೋಕ್ಷಣೇನ" ಮಾಘಂ ೧೧-೨೩. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ-ಅ. 6. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. 7. ಬಿಹ್ನು. ನಾಲಗೆ. "ಲೋಲ: ಸ್ಯಾದ್ವಾಚ್ಯಲಿಂಗಕ: | ಸತೃಣೇ ಚವೇಲೇ ಲೋಲಾ ಜಿಹ್ವಾಕಮಲಯೋ: ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ. 8. ವಿದ್ಯುತು, ಮಿಂಚು.

**ಲೋಲಮಾನ ಲೋಲಮಾನ** (ವಿಂ) ಚಂಚಲಸ್ವಭಾವದ. ಲುಡ (ವಿಲಾಸೇ) "ಚಾನಶ್" (೩-೨-೧೨೯). "ಲೋಲಮಾನ-ವಿತತಾಙ್ಗುಲಿಹಸ್ತೇ:" ಮಾಘಂ ೧೦-೪೯.

**ಲೋಲಮ್ಬ ಲೋಲಂಬ** (ಪುಂ) ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. "ಅಲಿ-ದ್ವಿರೇಫೋ ಲೋಲಮ್ಬೋ ಭಾಲಸ: ಪುಷ್ಪಲೋಲುಪ:" ವೈಜಂ.

**ಲೋಲಿಕಾ ಲೋಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯುವ ಒಂದು ತೃಣ ಧಾನ್ಯ. "ಅವ್ಯಾಧಾ ಲೋಲಿಕಾ ಸೇವ್ಯಾ ಜಲಜಾ ತೃಣಧಾನ್ಯಕಮ್" ವೈಜಂ. 2. ಪುಲ್ಲಂಪುರಿಚಿ. "ಚಾಙ್ಗೆರೀ ಚುಕ್ಕಿಕಾ ದಂತಶಠಾಂಬಾಠಾಢ್ಲಲೋಗಿಕಾ" ಅಮಂ. "ಕುಡ್ರಾ ದಂತಶಠಾಂಬಾಠಾ ಚಾಙ್ಗೆರೀ ಲೋಲಿಕಾ ಚ ಸಾ".

**ಲೋಲಿತ ಲೋಲಿತ** (ವಿಂ) ಅಲುಗಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕುಲಕ ಲುಟ್ಟು. ಲುಡ (ವಿಲೋಡನೆ)+ಣಿಚ್ "ಕ್ರ:" (೩-೨-೧೦೨). ಲಡಯೋರಭೇದ:

**ಲೋಲುಪ ಲೋಲುಪ** (ವಿಂ) ಅತಿ ಆಸೆಯುಳ್ಳ, ತವಕ ಪಡುವ, ಆತುರಪಡುವ. ಗಹಿತಂ ಲುಮ್ಪತಿ - ಲುಲ್ (ಛೇದನೆ)+ಯಡ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಅಭಿನವ-ಮಧುಲೋಲುಪಸ್ತವಮ್" ಶಾಕುಂ ೪-೧. "ಆಶ್ಲೇಷಲೋಲುಪವಧು-ಸ್ತನಕಾರ್ಕಶ್ಯಸಾಕ್ಷಿಣೀಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೧೭. "ಲೂಮ (ಗಾಘ್ಯ) +ಯಡ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). ಲೋಲುಮ: ಲೋಲುಘ: ಇದೇ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ.

**ಲೋಲ ಲೋಲ** (ನಂ) 1. ಮಣ್ಣಿನ ಹೆಂಟೆ. ಲೋಲತೇ - ಲೋಲ (ಸಂಭಾತೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಉದ್ಗುಣ್-ಲೋಲಗುಡೆ: ಪರಿತೋಜ್ಞವಿದ್ವಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೨೪. 2. ಲೋಹಮಲ, ಕಬ್ಬಿಣದ ತುಕ್ಕು.

**ಲೋಲಭಜನ ಲೋಲಭಜನ** (ಪುಂ) "ಲೋಲಭೇದನ" ನೋಡಿ.

**ಲೋಲಭೇದನ ಲೋಲಭೇದನ** (ಪುಂ) 1. ಮಣ್ಣಿನ ಹೆಂಟೆ ಯನ್ನು ಒಡೆಯುವ ಕೊಡೆತಿ. ಲೋಲಂ ಭಿನತ್ತಿ - ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪). "ಕೋಡಿಶೋ ಲೋಲಭೇದನ:" ಅಮಂ. 2. ಕುಂಟೆ, ಹೊಲವನ್ನು ಹರಗುವ ಸಲಿಕೆ, ಹಲಕು. "ಪ್ರತೋದ: ಪ್ರಾಜನಂ ತೋತ್ರಂ ಕೋಡಿಶೋ ಲೋಲ-ಭಜನ:" ವೈಜಂ.

**ಲೋಲ ಲೋಲ** (ಪುಂ) ಮಣ್ಣಿನ ಹೆಂಟೆ.

**ಲೋಹ ಲೋಹ** (ಪುಂ) 1. ಕಬ್ಬಿಣ. ಲೂಯೇನೇನ - ಲೂ (ಛೇದನೆ) "ಹ:" ಬಾಹುಂ. 2. ಆಗುರು. ಲುಹತೇ - ಲೂ (ಗಾಘ್ಯ) "ಘ್" (೩-೩-೧೯). "ವಂಶಕಾಗುರಾಜಾಹ್ಲೋಹಂ ಕ್ರಮಿಜಜೋಜ್ಞಕಮ್" ಅಮಂ. 3. ಧಾತುಸಾಮಾನ್ಯ, ಹಿತ್ತಾಳೆ ತಾಮ್ರ, ಚಿನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿ ಕಂಚು ತವರ ಸೀಸ ಮತ್ತು ಕಬ್ಬಿಣ ಉಕ್ಕು ಮೊದಲಾದ ಲೋಹಗಳು. "ಸರ್ವ ಸ್ಯಾತೇಜಸಂ ಲೋಹಮ್" ಅಮಂ. 4. ಆಯುಧ. "ಲೋಹೋ ಸ್ತ್ರೀ ಶಸ್ತ್ರಕೇ ಲೋಹೇ ಜೋಜ್ಞಕೇ ಸರ್ವತೇಜಸೇ" ಮೇದಿಂ. 5. ರಕ್ತ. (ವಿಂ) 6. ರಕ್ತವರ್ಣದ, ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣದ. "ಭ್ರಮತಶ್ಚ ವರಾಹಸ್ಯ ಲೋಹಸ್ಯ ಪ್ರಮುಖೇ ಸಮಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ. 7. ಕಬ್ಬಿಣದ, ಲೋಹಮಯವಾದ. "ತಂ ಶಮ್ಭುರಾಕ್ಷಿಪ್ತ-ಮಹೇಜಾಲಂ ಲೋಹೈ: ಶರೇರ್ಮಮಸು ನಿಸ್ತುತೋದ" ಕಿರಾಂ ೧೭-೪೩.

**ಲೋಹಾಂತ ಲೋಹಾಂತ** (ಪುಂ) ಆಯಸ್ಕಾಂತಶಿಲೆ, ಸೂಜಿಗಲ್ಲು. ಲೋಹ: ಕಾಂತೋಷ್ಯ.

**ಲೋಹಾರ ಲೋಹಾರ** (ಪುಂ) ಲೋಹದ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ ಕಮ್ಮಾರ, ಕಬ್ಬಿಣದ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು, ಕಬ್ಬಿಣದ ಶಸ್ತ್ರಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. ಲೋಹಂ ಕರೋತಿ - ಡುಕ್ರಾ (ಕರಣೆ) "ಅಞ್" (೩-೨-೧). "ಫ್ಲು" (೩-೧-೧೩೩). -ಕಾರಕ: -ಕಾರಕಿ.

**ಲೋಹಕಿಡ್ ಲೋಹಕಿಟ್ಟ** (ನಂ) ಕಬ್ಬಿಣದ ತುಕ್ಕು, -ಕಿಲುಬು.

**ಲೋಹಕುಣ ಲೋಹಕುಣ** (ನಂ) ಲೋಹಮಲ, ಕಬ್ಬಿಣದ ತುಕ್ಕು, -ಕಿಲುಬು.

**ಲೋಹಜ ಲೋಹಜ** (ನಂ) ಲೋಹಮಲ, ಕಬ್ಬಿಣದ ತುಕ್ಕು, -ಕಿಲುಬು. ಲೋಹಾಜ್ಜಾಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭಾವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೯೬).

**ಲೋಹಾವಿನ್ ಲೋಹಾವಿನ್** (ಪುಂ) ಟಂಕಣ. ಬಿಳಿಗಾರ.

**ಲೋಹನಾಲ ಲೋಹನಾಲ** (ಪುಂ) ಬಾಣ. ಲೋಹಸ್ಯ ನಾಲೋ ಯಸ್ಯ.

**ಲೋಹಪುಠ ಲೋಹಪುಷ್ಪ** (ಪುಂ) ಕಂಕಪಕ್ಷಿ, ರಣಹದ್ದು. ಲೋಹಸ್ಯೇವ ಕಠಿನಂ ಪುಠಮಸ್ಯ.

**ಲೋಹಪ್ರತಿಮಾ ಲೋಹಪ್ರತಿಮಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲೋಹಮಯ ವಿಗ್ರಹ. ಲೋಹಮಯಿ ಪ್ರತಿಮಾ.

**ಲೋಹಲ ಲೋಹಲ** (ವಿಂ) 1. ಅಸ್ಪೃಷ್ಯವಾದ ಮಾತುಳ್ಳ ವನು, ಅಸ್ಪೃಟವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವವನು. ಲೂಹ (ಗಾಘ್ಯ) ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೬). ಲೋಹಂ ಲಾತಿ - ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩). 2. ಕಬ್ಬಿಣದ ಸರಪಳಿಯ ಒಂದು ವಲಯ. "ಲೋಹಲೋಹಕುಡವಾದಿನಿ | ಶೃಂಗಲಾಧಾರ್ಯ" ಹೇಮಂ.

**ಲೋಹವರ ಲೋಹವರ** (ನಂ) ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ಲೋಹೇಷು ವರಾ



ಲೋಹಲೇಖ ಲೋಹಶ್ಲೇಷಣ (ಪುಂ) ಟಂಕಣ, ಬಿಳಿಗಾರ.

ಲೋಹಾನಿ ಶ್ಲೇಷಯತಿ—ಶಿಲಿಷ+ಣಿच् "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)।

ಲೋಹಾಭಿಸಾರ ಲೋಹಾಭಿಸಾರ (ಪುಂ) 1. ರಾಜನು ವಿಜಯಯಾತ್ರೆಗೆ ಪೂರ್ವ ಮಹಾನವಮಿಯ ದಿನ ಮಾಡುವ ಆಯುಧಗಜಾಶ್ವಪೂಜೆ. ಲೋಹ ಶಸ್ತ್ರ ಅಭಿ-ಸಾರ್ಯತೆ ಪ್ರಸಾಧ್ಯತೇತ್—ಅಭಿ+ಸ (ಗತೌ) + ಣಿच् "ಬ್" (೩-೩-೧೨೧)। 2. ರಾಜನು ಆಯುಧ ಗಜಾಶ್ವ ಪೂಜೆ ಮಾಡಿದ ನಂತರ ಆಯುಧಗಳನ್ನು ಧೂಪಿ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಹೊರಟಾಗ ರಕ್ಷೆಯಾಗಿ ಅವನಿಗೆ ಆರತಿ ನಿವಾಳಿಸುವುದು.

ಲೋಹಾಭಿಹಾರ ಲೋಹಾಭಿಹಾರ (ಪುಂ) ಆಯುಧಗಳನ್ನು ಧೂಪಿ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಹೊರಟ ರಾಜನಿಗೆ ರಕ್ಷೆಯಾಗಿ ಆರತಿ ಎತ್ತುವುದು.

ಲೋಹಿ ಲೋಹಿ (ನಂ) ಬಿಳಿಯ ಟಂಕಣ.

ಲೋಹಿಕಾ ಲೋಹಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಬ್ಬಿಣದ ಪಾತ್ರೆ.

ಲೋಹಿತ ಲೋಹಿತ (ಪುಂ) 1. ರಕ್ತವರ್ಣ, ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣ. 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. 3. ಒಂದು ನದಿ. 4. ಅಗಾರಕ, ಕುಜ. 5. ರುಹ (ಬ್ರಿಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಇತನ್" ರಸ್ಯ ವಾ ಲ: (೩-೩-೯೪)। 5. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. (ನಂ) 6. ತಾಮ್ರಲೋಹ. 7. ರಕ್ತ. "ತತೋಽನುಪೂರ್ವಯತವೃತ್ತ-ಬಾಹು:ಶ್ರೀಮಾನ್ ಕ್ಷರಲೋಹಿತದಿಗ್ಧದೇಹ:" ಕಿರಾಂ ೧೭-೫೦। 8. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. 9. ಯುದ್ಧ. 10. ರಕ್ತ ಚಂದನ. (ವಿಂ) 11. ರಕ್ತವರ್ಣದ, ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣದ. "ಸಸ್ತಾಂಸಾ-ವತಿಮಾತ್ರಲೋಹಿತತಲಿ ಬಾಹು ಘಟೋಕ್ಷೇಪಣಾತ್" ಶಾಕುಂ ೧-೨೬। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ವಾ "ಙೀಪ್" ತಕಾರಸ್ಯ ನಕಾರಾದೇಶಶ್ಚ (೪-೧-೩೯)। ಲೋಹಿನಿ ಲೋಹಿನೀ. ಪಕ್ಷಿ ಲೋಹಿತಾ ಲೋಹಿತಾ.

ಲೋಹಿತಕ ಲೋಹಿತಕ (ಪುಂ) 1. ಪದ್ಮರಾಗ. ಲೋಹಿತ ಉಪ್ಪು "ಕನ್"। "ಲಯನೇಷು ಲೋಹಿತಕನಿರ್ಮಿತಾ ಭುವ: ಶಿತೀರನರಗ್ನಿಹರಿತೀಕೃತಾಂತರಾ:" ಮಾಘಂ ೧೩-೫೨। 2. ಅಗಾರಕ ಗ್ರಹ. (ನಂ) 3. ಹಿತ್ತಾಳೆ. (ವಿಂ) 4. ರಕ್ತವರ್ಣದ, ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣದ. "ನೀಲಪಿಂತಾಸಿತಶ್ಯಾಮೇ: ಸಿತಲೋಹಿತಕರಪಿ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ।

ಲೋಹಿತಕೃಣ ಲೋಹಿತಕೃಷ್ಣ (ವಿಂ) ಕೆಂಪು ಮತ್ತು ಕಪ್ಪು ಬೆರೆತ ಬಣ್ಣ, ಎಳೆಗೆಂಪು ಬಣ್ಣ.

ಲೋಹಿತಚಂದನ ಲೋಹಿತಚಂದನ (ಪುಂ) 1. ಕೆಂಪು ಗಂಧ. 2. ಕೇಸರಿ. ಲೋಹಿತಂ ಚಂದನಮ್। "ಪರಿಭ್ರಮನ್ ಲೋಹಿತ-ಚಂದನೋಚಿತ: ಪದಾತಿರನ್ತಗಿರೀ ರೇಣುಲಿಖಿತ:" ಕಿರಾಂ ೧-೩೪।

ಲೋಹಿತಪುಷ್ಪಕ ಲೋಹಿತಪುಷ್ಪಕ (ಪುಂ) ದಾಳಿಂಬೆ ಗಿಡ. ಲೋಹಿತಂ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ।

ಲೋಹಿತಾಙ್ಗ ಲೋಹಿತಾಂಗ (ಪುಂ) 1. ಅಗಾರಕ ಗ್ರಹ. ಕುಜಗ್ರಹ. ಲೋಹಿತಮಙ್ಗಮಸ್ಯ। 2. ಕಪಿಲಹಿಟ್ಟು ಎಂಬ ಓಷಧಿ.

ಲೋಹಿತಾನನ ಲೋಹಿತಾನನ (ಪುಂ) ನಕುಲ, ಕೀರೆ, ಮುಂಗಸಿ.

ಲೋಹಿತಾಯಸ್ ಲೋಹಿತಾಯಸ್ (ನಂ) ತಾಮ್ರಲೋಹ. ಲೋಹಿತಮಯ:।

ಲೋಹಿತಮನ್ ಲೋಹಿತಮನ್ (ಪುಂ) ಕೆಂಪು. ಲೋಹಿತಸ್ಯ ಭಾವ:—ಲೋಹಿತ "ಇಮನಿच्" (೫-೧-೧೨೨)।

ಲೋಕಾಯತಿಕ ಲೋಕಾಯತಿಕ (ಪುಂ) ಚಾರ್ವಾಕಮತಾನುಯಾಯಿ, ಚಾರ್ವಾಕಮತ ತತ್ತ್ವವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನಮಾಡಿ ದವನು ಮತ್ತು ತಿಳಿದವನು. ಲೋಕಾಯತಮವೀತೇ ವೇದ ವಾ "ಠಕ್" (೪-೨-೬೦)।

ಲೋಕಿಕ ಲೋಕಿಕ (ವಿಂ) 1. ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲರಿಗೂ ತಿಳಿದಿರುವ, ಲೋಕಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ. ಲೋಕೇ ವಿದಿತ: "ಠಕ್" (೫-೧-೪೪)। 2. ಲೋಕವ್ಯವಹಾರಸಿದ್ಧವಾದ. "ಜಾಯಾಪತಿ ಲೋಕಿಕಮೇಷಣೀಯಮಾರ್ಗಾಕ್ಷಿತಾರೋಪಣಮನ್ವಭೂತಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೮೮। 3. ಲೋಕವ್ಯವಹಾರವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ. ಲೋಕಂ ವೇತ್ತಿ—"ಠಕ್" (೪-೨-೫೯)। "ಲೋಕಿಕಾನಾಂ ಹಿ ಸಾಧುನಾಮರ್ಥ ವಾಗ್ನುವರ್ತತೇ। ಋಷಿಣಾಂ ಪುನರಾಶಾನಾಂ ವಾಚಮರ್ಯೋಽನುವಾತಿ" ತಂ ರಾಂ ೧-೧೦।

ಲೋಹಿ ಲೋಹಿ (ನಂ) 1. ಚಂಚಲತೆ, ಅಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವಿಕೆ. 2. ಹೆಚ್ಚು ಆಸೆಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ, ಕುತೂಹಲದಿಂದಿರುವಿಕೆ. ಲೋಹಿತ್ಯ ಭಾವ: "ಽಽಙ್" (೫-೧-೧೨೪)। "ನಾನೇನ ಲೋಹಿಯಾತ್ ಕುಮುದೇನ ನೂನಮುಪಾತ್ತಮಸ್ತಹ್ಲದವಾಸಿನಾ ತತ್" ರಘುಂ ೧೬-೭೬।

ಲೋಹಿ ಲೋಹಿ (ಪುಂ) 1. ಕಬ್ಬಿಣ, ಲೋಹ. ಲೋಹಿ ಉಪ್ಪು "ಅಙ್" (೫-೪-೩೮)। "ಲೋಹಿಭಾರಸಹಸ್ರೇಣ ನಿರ್ಮಿತಾ ನಿರಕಾರಿ ಮೇ" ಭಟ್ಟಂ ೧೫-೫೪। (ವಿಂ) 2. ಲೋಹ ನಿರ್ಮಿತವಾದ, ಕಬ್ಬಿಣದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ತಾಮ್ರ ಲೋಹ ಸಂಬಂಧವಾದ.

ಲೋಹಿತೀಕ ಲೋಹಿತೀಕ (ವಿಂ) ಕೆಂಪಾಗಿರುವಂತೆ ಕಾಣುವ, ಬೇರೆ ವಸ್ತುವಿನ ಸಂಪರ್ಕದಿಂದ ಕೆಂಪಾಗಿ ಕಾಣುವ. ಲೋಹಿತ ಇವ "ಈಕಕ್" (೫-೩-೧೧೦)।

ಲೋಹಿತ್ಯ ಲೋಹಿತ್ಯ (ನಂ) 1. ಕೆಂಪು. ಲೋಹಿತಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಽಙ್" (೫-೧-೧೨೪)। (ಪುಂ) 2. ಒಂದು ನದಿ, ಒಂದು ಗುಡುಹೊಳೆ. "ಲೋಹಿತ್ಯಂ ಲೋಹಿತತ್ವೇ ಚ ಕಲಿಬ್ ಪುಸಿ ನದಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ। "ಚಕ್ರಮೇ ತೀರ್ಣಲೋಹಿತ್ಯೇ ತಸ್ಮಿನ್ ಪ್ರಾಜ್ಯೋತಿಷೇಶ್ವರ:" ರಘುಂ ೪-೮೧।

ಇತಿ "ಲ" ಕಾರಾವಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್।



## ವ

ವ ವ ಇದು ವರ್ಣಮಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಇಪ್ಪತ್ತೊಂಬತ್ತನೆಯ ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರ. ಅವರ್ಣೀಯ ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಹೆಲ್ವರ್ಣ. ಈ ವರ್ಣ (ಅಕ್ಷರ)ವು ದನ್ತ ಮತ್ತು ಓಷ್ಠಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಈಷತ್ ಸ್ಪೃಷ್ಟ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಅಂತಃಸ್ಥ ಅಲ್ಪಪ್ರಾಣಾಕ್ಷರ. “ಯರಲವಾ ಅಂತಃಸ್ಥಾ:” | “ईषत्स्पृष्टमन्तःस्थानाम्” | “वर्णाणि प्रथमतृतीययमौ यरलवाश्चाल्पप्राणा:” | ಸಿಂ ಕೊಂ |

ವ ನ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 2. ವರುಣ, ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕಿನ ಅಧಿಪತಿ. 3. ಸಾಂತ್ವನ, ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸುವುದು. 4. ಸಂಯಮ. 5. ಮನ್ಮಥ. ವಾ (ಗತಿಗಂಧನಯೋ:) “वल्” (३-३-१८) | “वः सान्त्वने च वाते च वरुणे च निगद्यते” | ಮೆದಿಂ | 6. ಕಲ್ಯಾಣ, ಮಂಗಳ. 7. ವರುಣನ ಗೃಹ. 8. ಕನ್ನೈದಿಲೆ ಕೆಂಪುನ್ನೈದಿಲೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಗಡ್ಡೆ. (ನಂ) 9. ವರುಣ. (ಅವ್ಯಂ) 10. ಇವ ಶಬ್ದದ ಅರ್ಥ. “व प्रचेतसि जानीयात् इवार्थे च तदव्ययम्” | ಮೆದಿಂ |

ವಂಶ ವಂಶ (ಪುಂ) 1. ಸಂತತಿ, ಕುಲ, ಬುಡಕಟ್ಟು. ವಂಶ (ಕಾಂತಿ) “वल्” (३-३-१९) | ನುಮ್ (७-१-८०) | “क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः” | ರಘುಂ १-२ | 2. ಬಿಡಿರು. “धनुर्वंशविशुद्धोऽपि निर्गुणः किं करिष्यति” | ಹಿತೊಂ | 3. ವೇಣು, ಕೊಳಲು ವಾದ್ಯ. “स कीचकैर्नास्तपूर्णरन्ध्रैः कूजद्विरापादितवंशकृत्यम्” | ರಘುಂ २-१२ | 4. ಗುಂಪು, ರಂತಿ, ಸಮೂಹ. “उत्थापितः संयति रेणुरखैः सान्दीकृतः स्यन्दनवंशचक्रैः” | ರಘುಂ ७-३९ | 5. ಬೆನ್ನಿನ ಮೂಳೆ. 6. ಬಿಡಿರಿನ ಗಿಣ್ಣು. “वंशः संवेज्वये वेणी पृष्ठावयवेष्वपि च” | ಹೇಮಂ | 7. ಇಕ್ಷು, ಕಬ್ಬು. 8. ಸಾಲವೃಕ್ಷ, ಮತ್ತಿಮರ.

ವಂಶಕ ವಂಶಕ (ಪುಂ) 1. ಬಿಡಿರಿನ ಗಿಣ್ಣು. 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕಬ್ಬು. 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. 4. ಅಗುರು. ವಂಶ ಇವ ಪ್ರತಿಕ್ರತಿ: “कन्” (५-३-९६) |

ವಂಶಕರ ವಂಶಕರ (ಪುಂ) ಪುತ್ರ, ಮಗ. “वंशस्थिति वंशकरेण तेन संभाव्य भावी स सखा मघोनः” | ರಘುಂ १८-३१ |

ವಂಶಚರಿತ ವಂಶಚರಿತ (ನಂ) ಒಂದು ಕುಟುಂಬದ ಚರಿತ್ರೆ.

ವಂಶಜ ವಂಶಜ (ವಿಂ) 1. ಒಂದು ಸತ್ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ವಂಶ ಜಾಯತೆ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತವಿ) “जः” (३-२-९७) | “तस्य दाक्षिण्यरुढेन नाम्ना मगधवंशजा” | ರಘುಂ १-३१ | (ಪುಂ) 2. ಸಂತಾನ. 3. ಬಿಡಿರಿನ ಅಕ್ಕಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ತವಕ್ಷೀರ.

ವಂಶತುಲ ವಂಶತುಲ (ಪುಂ) ಬಿಡಿರಿನ ಅಕ್ಕಿ.

ವಂಶಧರ ವಂಶಧರ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಂಶವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ, ಒಂದು ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ಬೆಳೆದಿರುವ, ಒಂದು ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ಅದನ್ನು ಬೆಳೆಗುವ. “अन्तर्जले प्रसूतासि रघुवंशधरौ सुतौ” | ತಂ ರಾಂ ७-३ |

ವಂಶಪರಂಪರಾ ವಂಶಪರಂಪರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಂಶದ ಶ್ರೇಣಿ, ಸಂತತಿಯ ಅನುಕ್ರಮ, ಸಂತಾನವು ಒಂದಾದ ಮೇಲೆ ಮತ್ತೊಂದು ಬರುವಿಕೆ, ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ ಬಂದ ಸಂತತಿ.

ವಂಶರೋಚನಾ ವಂಶರೋಚನಾ, -ಲೋಚನಾ- ಲೋಚನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತವಕ್ಷೀರ.

ವಂಶಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ವಂಶಪ್ರತಿಷ್ಠಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಂಶವು ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಂತು ಭದ್ರವಾಗಿರುವಿಕೆ.

ವಂಶಸ್ಥಿತಿ ವಂಶಸ್ಥಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಲವು ಬೆಳೆದು ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವುದು. ವಂಶಸ್ಯ ಸ್ಥಿತಿ: |

ವಂಶಾಡ್ಕುರ ವಂಶಾಡ್ಕುರ (ಪುಂ) 1. ಬಿಡಿರಿನ ಮೊಳಕೆ. 2. ವಂಶದ ಚಿಗುರು, ವಂಶಕ್ಕೆ ಮೊಳಕೆಯಂತಿರುವ ಸಂತಾನ.

ವಂಶಾನುಚರಿತ ವಂಶಾನುಚರಿತ (ನಂ) ವಂಶದ ಚರಿತ್ರೆಯ ವರ್ಣನೆ. ವಂಶಸ್ಯ ಅನುಚರಿತಮ್ | ಇದು ಪುರಾಣದ ಐದು ಲಕ್ಷಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. “सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च | वंशानुचरितं चेति लक्षणानां तु पञ्चकम्” |

ವಂಶಾವಲಿ ವಂಶಾವಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ವಂಶದ (ಸಂತತಿಯ) ಪರಂಪರೆ, ವಂಶದ ಅನುಕ್ರಮ, ಪೀಳಿಗೆ. ವಂಶಸ್ಯ ಆವಲಿ: |

ವಂಶಿಕ ವಂಶಿಕ (ನಂ) ಅಗುರು ಚಂದನ. ವಂಶೋಽಸ್ಯಸ್ಯ | “ठन्” (५-२-११५) |

ವಂಶೀ ವಂಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೇಣುವಾದ್ಯ, ಕೊಳಲು. ವಂಶ: ಕಾರಣತ್ವೇನಾಸ್ತಯಸ್ಯಾ: “अच्” (५-२-१२७) | ಗೌರಾಂ “डीष्” (४-१-४१) | 2. ರಕ್ತಕೋಶಕ್ಕೆ ರಕ್ತವನ್ನು ತುಂಬುವ ರಕ್ತನಾಳ. 3. ನಾಲ್ಕು ಕರ್ಷಗಳ ತೂಕ.



**ವಂಶ ವಂಶ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ವಂಶದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು. ವಂಶ ಭವ: "ಯತ್" (೪-೩-೪೪)। "ನುನ ಮತ್ತ: ಪರ ವಂಶಾ: ಪಿಂಡವಿಚ್ಛೇದದರ್ಶಿನ:" ರಘುಂ ೧-೬೬। (ವಿಂ) 2. ಸತ್ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. 3. ಒಂದು ವಂಶಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಒಂದು ಕುಟುಂಬಕ್ಕೆ ಸೇರಿದ. 4. ವಂಶದಲ್ಲಿ ಉತ್ಪನ್ನವಾದ. "ವಂಶಾ ಗುಣಾ: ಕ್ವಲಪಿ ಲೋಕಕಾಂತಾ: ಪ್ರಾರಂಭ-ಸೂಕ್ತಾ: ಪ್ರಥಿಮಾನಮಾಪು:" ರಘುಂ ೧೮-೪೯। 5. ಮನೆಯ ಮೇಲುಭಾಗದ ಮರದ ದೂಲ, ತೊಲೆ. 6. ತೋಳಿನ ಎಲುಬು.

**ವಕ್ತುಲ ವಕ್ತುಳ** (ಪುಂ) ವಕ್ತುಳವೃಕ್ಷ, ಪವಳದ ಗಿಡ. ವಕ್ತುಲೇ — ವಕ್ತಿ (ಗತೌ) "ಉಲಕ್"। ಬಾಹುಂ। "ವಮಂಜು-ರಮಿತಾಮೋದಾನ್ ವಕ್ತುಲಾನ್ ವೃಷಿಕ್ವುಂಜರಾ:" ಯಾದಂ ೨೨-೨೧೩।

**ವಕ್ತವ್ಯ ವಕ್ತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. 2. ಹೇಳಬೇಕಾದ. 3. ಹೇಳಲು ಅರ್ಹವಾದ. ವಕ್ (ಪರಿಭಾಷಣಂ) "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬)। 4. ನಿಂದಾರ್ಹ, ಅಸಭ್ಯ. 5. ನೀಚ. ಹೀನ. "ವಕ್ತವ್ಯೋ ವಾಚ್ಯವದ್ಗರ್ಹೈ ವಚೋಹ-ಹೀನಯೋರಪಿ" ಹೇಮಂ। (ನಂ) 6. ವಚನ, ಮಾತು. ವಕ್ ಮಾತ್ರೇ "ತವ್ಯ:"। 7. ನಿಂದೆ, ಬೈಗಳು.

**ವಕ್ತ ವಕ್ತೃ** (ವಿಂ) 1. ಮಾತನಾಡುವವನು, ಹೇಳುವವನು. ವಕ್ (ಪರಿಭಾಷಣಂ) "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ವಿಶೇಷವಿದುಷ: ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಯತ್ನೋದ್ಗ್ರಾಹ್ಯತೇ ಪುರ:। ಹೇತು: ಪರಿಚಯಸ್ಥಯೇ ವಕ್ತುರ್ಗುಣನಿಕೇವ ಸಾ" ಮಾಧಂ ೨-೭೪। 2. ಭಾಷಣ—, ಪ್ರವಚನ—, ಉಪನ್ಯಾಸ ಮಾಡುವವನು. "ಕಿ ಕರಿಷ್ಯಂತಿ ವಕ್ತಾರ: ಶ್ರೋತಾ ಯತ್ರ ನ ವಿಧ್ಯತೇ"। 3. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ಯಾವಂತ. 4. ಋಜುಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿರುವ, ನ್ಯಾಯಪರನಾದ, ಕಪಟವಿಲ್ಲದ. 5. ವಾಗ್ಮಿ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಹೀಪ್" (೪-೧-೪)। ವಕ್ತೃ ವಕ್ತೃಃ "ವಕ್ತೃ ವೇದಾನ್ ಭಾತು ಮೇ ವಾಜಿವಕ್ತೃ" ಹ್ಯಗ್ರಿಂ। "ವಕ್ತಾ ತು ಪಿಂಡಿತೇಽಪಿ ಸ್ಯಾದ್ವಾಗ್ಮಿನ್ಯಪ್ಯನ್ಯಲಿಙ್ಗಕ:" ಮೇದಿಂ।

**ವಕ್ತ್ರ ವಕ್ತ್ರ** (ನಂ) 1. ಮುಖ, ಬಾಯಿ. ಉಚ್ಯತೇನ— ವಕ್ (ಪರಿಭಾಷಣಂ) "ತ್ರ:" (೩ಂ ೪-೧೬೬)। "ಕಕುಚಿ-ಕನ್ಯಾವಕ್ತ್ರಾಂತರ್ವಾಸಿಲಬ್ಧಾಧಿವಾಸಯಾ" ಮಾಧಂ ೨-೨೦। 2. ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ಭೇದ. "ವಕ್ತ್ರ ನಾಡಾನಸೌ ಸ್ಯಾತಾಮಂತ್ರೇಯೋಽನುಷ್ಠುಮಿ ಸ್ಯಾತಮ್" ವೃಂ ೨೦। 3. ಬಾಣದ ಅಗ್ರಭಾಗ, ಬಾಣದ ಮೊನಚಾದ ಕೊನೆ. 4. ಪ್ರಾರಂಭ.

**ವಕ್ತ್ರವುರ ವಕ್ತ್ರವುರ** (ಪುಂ) ದಂತ, ಹಲ್ಲು. ವಕ್ತ್ರವುರ ಕ್ಷುರ ಇವ। ಪೃಷ್ಠಂ।

**ವಕ್ತ್ರಜ ವಕ್ತ್ರಜ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪ್ರಥಮ ವರ್ಣದವನು. ವಕ್ತ್ರಾತ್ ಬ್ರಹ್ಮಣೋ ಮುಖಾತ್ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಕುಭವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೯೮)। "ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋಽಸ್ಯ ಮುಖಮಾಸೀತ್" ಶ್ರುತಿ:। (ವಿಂ) 2. ಮುಖದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ.

**ವಕ್ತ್ರತಾಲ ವಕ್ತ್ರತಾಲ** (ಪುಂ) ಮುಖವಾದ್ಯ, ಬಾಯಿಂದ ನುಡಿಸುವ ವಾದ್ಯ. ವಕ್ತ್ರಸ್ಯ ತಾಲಮ್।

**ವಕ್ತ್ರಪಟ ವಕ್ತ್ರಪಟ** (ಪುಂ) ಕುದುರೆಗೆ ಕಾಳನ್ನು ತಿನ್ನಿಸುವ ಜೇಲ.

**ವಕ್ತ್ರಭೇದಿನ್ ವಕ್ತ್ರಭೇದಿನ್** (ಪುಂ) ತಿಕ್ತರಸ, ಕಹಿರಸ. ವಕ್ತ್ರಂ ಭಿನತ್ತಿ—ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣಂ) "ಗಿತ್ತಿ:" (೩-೨-೭೮)।

**ವಕ್ತ್ರವಾಸ ವಕ್ತ್ರವಾಸ** (ಪುಂ) 1. ನಾರಂಗಫಲ, ಕಿತ್ತಲೆ ಹಣ್ಣು. ವಕ್ತ್ರಂ ವಾಸಯತಿ—ವಸ+ಗಿನ್ "ಅನ್" (೩-೨-೧)। 2. ಬಾಯಿಯ ವಾಸನೆ.

**ವಕ್ತ್ರಶೋಧನ ವಕ್ತ್ರಶೋಧನ** (ನಂ) 1. ಬಾಯನ್ನು ತೊಳೆಯುವುದು, ಬಾಯನ್ನು ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು. ವಕ್ತ್ರಸ್ಯ ಶೋಧನಮ್। 2. ನಿಂಬೆಯ ಹಣ್ಣು.

**ವಕ್ತ್ರಶೋಧಿನ್ ವಕ್ತ್ರಶೋಧಿನ್** (ಪುಂ) 1. ನಿಂಬೆಯ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 2. ಮುಖವನ್ನು (ಬಾಯನ್ನು) ಶುದ್ಧಮಾಡುವ. ವಕ್ತ್ರಂ ಶೋಧಯತಿ—ಶುಧ (ಶೌಚೇ) + ಗಿನ್ "ಗಿತ್ತಿ:" (೩-೨-೭೮)।

**ವಕ್ರ ವಕ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಶನಿಗ್ರಹ. ವಕ್ರಯತಿ—ವಕ್ರು (ಪ್ರಲೋಮನೆ) +ಗಿನ್ "ರಕ್" (೩ಂ ೨-೧೩)। 2. ಕುಜ, ಅಂಗಾರಕ ಗ್ರಹ. 3. ರುದ್ರ. 4. ಪರ್ವತ, ಹಪ್ಪಳ. 5. ವಕ್ರಗತಿ ಯುಳ್ಳ ಗ್ರಹ. (ನಂ) 6. ಹೊಳೆಯ ತಿರುವು, ನದಿಯ ವಕ್ರತೆ. 7. ಗ್ರಹಗಳ ವಕ್ರಗತಿ, ಗ್ರಹಗಳ ಹಿಂಚಲನೆ. (ವಿಂ) 8. ವಕ್ರವಾಗಿರುವ, ಬಗ್ಗಿರುವ, ಡೊಂಕಾಗಿರುವ. "ವಲೇಽದ್ವಕ್ರಾಽಪ್ಯವಿಕಾಸಭಾವಾದ್ವಮು: ಪಲಾಶಾನ್ಯತಲೋಹಿ-ತಾನಿ" ಕುಮಾಂ ೩-೨೯। 9. ನೇರವಲ್ಲದ, ಬಳಸಾದ, ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದ. ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸದ. "ಪ್ರಾತಿಭಂ ತ್ರಿಸರಕೇಣ ಗತಾನಾಂ ವಕ್ರವಾಕ್ಯರಚನಾರಮಣೀಯ:" ಮಾಧಂ ೧೦-೧೨। 10. ಕೂರವಾದ. "ವಕ್ರ: ಶನೇಶ್ವರೇ ಪುಂಸಿ ಪುಟಭೇದೇ ನಪುಂಸಕಮ್। ತ್ರಿಪು ಕ್ಕರೇ ಚ ಕುಟಿಲೇ" ಮೇದಿಂ।

**ವಕ್ರಕಣ್ಡ ವಕ್ರಕಂಟ** (ಪುಂ) ಬದರವೃಕ್ಷ, ಎಲಚಿ ಮರ, ಬೋರೆ ಮರ. ವಕ್ರಾ: ಕಣ್ಡಾ: ಕಣ್ಡಕಾ: ಅಸ್ಯ।

**ವಕ್ರಕಣ್ಡಕ ವಕ್ರಕಂಟಕ** (ಪುಂ) ಬದರವೃಕ್ಷ, ಕಗ್ಗಲಿ ಮರ.

**ವಕ್ರಖಜ್ಜ ವಕ್ರಖಜ್ಜ** (ಪುಂ) ಬಾಗುಕತ್ತಿ, ಕೊಂಕುಕತ್ತಿ, ಸ್ವಲ್ಪ ಬಗ್ಗಿರುವ ಕತ್ತಿ. ವಕ್ರ: ಖಜ್ಜ:।



ವಕ್ರಗತಿ ವಕ್ರಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಡೊಂಕು ನಡೆಗೆ, ವಕ್ರವಾಗಿ ಹೋಗುವುದು, ಬಳಸಿ ಹೋಗುವುದು. ವಕ್ರಗತಿ: | (ವಿಂ) 2. ಬಳಸಿಕೊಂಡು ಹೋಗುವ, ನೇರವಾಗಿ ಹೋಗದಿರುವ. ವಕ್ರಗತಿಯಸ್ಯ | 3. ಹಿಂಚಲನೆ. -ಗಾಮಿನ್ -ಗಾಮಿನ್. ವಕ್ರಂ ಗಚ್ಛತಿ -ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಗಿತಿ:" (3-2-36) | ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಛಿಪ್" (4-1-4) | -ಗಾಮಿನಿ -ಗಾಮಿನೀ.

ವಕ್ರಗ್ರೀವ ವಕ್ರಗ್ರೀವ (ಪುಂ) ಉಷ್ಣ, ಒಂಟೆ. ವಕ್ರಾ ಗ್ರೀವಾ ಅಸ್ಯ |

ವಕ್ರವಚ್ಚು ವಕ್ರಚಂಚು (ಪುಂ) ಶುಕಪಕ್ಷಿ, ಗಿಣಿ. ವಕ್ರಾ ವಚ್ಚುರಸ್ಯ |

ವಕ್ರತಾ ವಕ್ರತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕುಟಲವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಮುಜುವಾಗಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ನೇರವಾಗಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. "ಋಜುತಾ ವಕ್ರತಾ ಪ್ರಾಪ ವಕ್ರತಾ ಚ ತಥಾರ್ಜವಮ್" ಚಂ ರಾಂ |

ವಕ್ರತುಂಡ ವಕ್ರತುಂಡ (ಪುಂ) 1. ವಿನಾಯಕ, ಗಣಪತಿ. 2. ಶುಕಪಕ್ಷಿ, ಗಿಣಿ. ವಕ್ರಂ ತುಂಡಂ ಯಸ್ಯ |

ವಕ್ರದಂಟ ವಕ್ರದಂಷ್ಟ (ಪುಂ) ಸೂಕರ, ಹಂದಿ. ವಕ್ರಾ ದಂಟಾ ಅಸ್ಯ |

ವಕ್ರನಕ್ರ ವಕ್ರನಕ್ರ (ಪುಂ) 1. ಶುಕಪಕ್ಷಿ, ಗಿಣಿ. ವಕ್ರ: ನಕ್ರ ಇವ ಹಿಸ್ರಾ | 2. ಮರ್ಜನ. "ವಕ್ರನಕ್ರಸ್ತು ಪಿಶುನೇ ತಥೈವ ಶುಕಪಕ್ಷಿಣಿ" ಮೇಡಿಂ |

ವಕ್ರನಾಸಿಕ ವಕ್ರನಾಸಿಕ (ಪುಂ) ಉಲೂಕ, ಘೂಕ, ಗೂಬೆ.

ವಕ್ರಪುಚ್ಚ ವಕ್ರಪುಚ್ಚ (ಪುಂ) ಶ್ವಾನ, ನಾಯಿ. ವಕ್ರಂ ಪುಚ್ಚಂ ಯಸ್ಯ | -ವಾಲಧಿ -ವಾಲಧಿ.

ವಕ್ರಪುಷ್ಪ ವಕ್ರಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) ಕಿಶುಕವೃಕ್ಷ, ಮುತ್ತಗದ ಮರ. ವಕ್ರಾಪಿ ಪುಷ್ಪಾಪ್ಯಸ್ಯ |

ವಕ್ರಭಣಿತ ವಕ್ರಭಣಿತ (ನಂ) ವಕ್ರವಾದ ಮಾತು, ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸದ ಮಾತು, ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದ ಮಾತು. ವಕ್ರಂ ಕುಟಿಲಂ ಭಣಿತಮ್ |

ವಕ್ರಮ ವಕ್ರಮ (ಪುಂ) ಪಲಾಯನ, ಹಿಡೆಹೋಗುವುದು. ಅವ + ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) ಭಾವೇ "ಛ" (3-3-18) | ಅಲೋಪ: | "ವಕ್ರಿತ ಭಾಗುರೀರಲೋಮವಾಪ್ಯೋರೂಪಸಂಗಯೋ:" |

ವಕ್ರವಕ್ರ ವಕ್ರವಕ್ರ (ಪುಂ) 1. ಸೂಕರ, ಹಂದಿ. ವಕ್ರಂ ವಕ್ರಂ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ವಕ್ರವಾದ ಮುಖವುಳ್ಳ.

ವಕ್ರಾಂಗ ವಕ್ರಾಂಗ (ಪುಂ) 1. ಹಂಸ. ವಕ್ರಮಾಂಗಸ್ಯ | (ನಂ) 2. ವಕ್ರವಾದ ಅಂಗ, -ಅವಯವ. (ವಿಂ) 3. ವಕ್ರವಾದ ಅವಯವವುಳ್ಳ.

ವಕ್ರಿನ್ ವಕ್ರಿನ್ (ವಿಂ) 1. ವಕ್ರವಾಗಿರುವ, ಬಗ್ಗಿರುವ, ಡೊಂಕಾಗಿರುವ. ವಕ್ರೋಸ್ತಾಸ್ತಿ "ಛಿ:" (4-2-114) | 2. ಹಿಂಚಲನೆಯುಳ್ಳ.

ವಕ್ರಿಮನ್ ವಕ್ರಿಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಡೊಂಕಾಗಿರುವಿಕೆ, ಕುಟಲ. ವಕ್ರಮ ಭಾವ: -"ಇಮನಿವ್" (4-1-122) | 2. ಬಳಸಿಕೊಂಡು (ಮಾತು) ಆಡುವುದು, ಪ್ರತಿಕೂಲವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವುದು. "ತದ್ವಕ್ರಾಮ್ಬಜಸೌರಭಂ ಸ ಚ ಸುಧಾಸ್ಯಂದಿ ಗಿರಾಂ ವಕ್ರಿಮಾ" ಗೀತಗೋಂ 3-4 |

ವಕ್ರಿಕೃತ ವಕ್ರಿಕೃತ (ವಿಂ) ವಕ್ರವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಡೊಂಕಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವಕ್ರ: ವಕ್ರ: ಸಂಪದನಾತ: ಕೃತ: -ವಕ್ರ + ಕೃ (ಕರಣಂ) "ಛಿ:" (ವಾಂ 4-4-40) | "ಕ್ರ:" (3-2-102) |

ವಕ್ರಿಭೂತ ವಕ್ರಿಭೂತ (ವಿಂ) ವಕ್ರವಾಗಿ ಆಗಿರುವ, ಬಗ್ಗಿರುವ, ಡೊಂಕಾಗಿರುವ. ಅವಕ್ರ: ವಕ್ರ: ಸಂಪದಮಾನೋ ಭೂತ: -ವಕ್ರ + ಭೂ (ಸತಾಯಾಮ್) "ಛಿ:" (ವಾಂ 4-4-40) | "ಕ್ರ:" (3-4-32) |

ವಕ್ರಿಕೃತಿ ವಕ್ರಿಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕುಟಲವಾದ ಮಾತು, ಸುದಿಗ್ಧವಾದ ಮಾತು, ಶ್ಲೇಷಾರ್ಥವುಳ್ಳ ಮಾತು. ವಕ್ರಾ ಛಿತಿ: | 2. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಒಬ್ಬನು ಹೇಳಿದ ಮಾತಿಗೆ ಶ್ಲೇಷ ಅಥವಾ ಕಾಕುವಿನಿಂದ ಅರ್ಥಾಂತರವನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸಿ ಉತ್ತರ ಹೇಳುವುದು "ವಕ್ರಿಕೃತಿ" ಅಲಂಕಾರವಾಗುವುದು. "ವಕ್ರಿಕೃತಿ: ಶ್ಲೇಷಕಾಕುಭ್ಯಾಮಪರಾರ್ಥ-ಪ್ರಕಲ್ಪನಮ್" ಚಂದ್ರಾಂ | ಉದಾ: "ಮುಚ ಮಾನಂ ದಿನಂ ಪ್ರಾಪ್ತಂ ನೇಹ ನಂದಿ ಹರಾಂತಿಕೇ" ಚಂದ್ರಾಂ |

ವಕ್ರಿಕೃತಿಕಾ ವಕ್ರಿಕೃತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂದಸ್ಥಿತ, ಮುಗುಳ್ಳಗೆ. ವಕ್ರ: ಖಿಂಟಾಸ್ತಸ್ಯಾ: "ಛಿ:" (4-2-114) |

ವಕ್ರಿಣ ವಕ್ರಿಣ (ನಂ) ವಕ್ಷಸ್ಸು, ಎದೆ. ವಕ್ಷಾತ್ಯನೇನ -ವಕ್ಷ (ರೋಪೆ ಸಂವಾತೇ ಚ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-113) |

ವಕ್ರಿಸ್ ವಕ್ರಿಸ್ (ನಂ) ಎದೆ. ವಕ್ಷಾತಿ -ವಕ್ಷ (ಸಂವಾತೇ) "ಅನುನ್" (ತಂ 4-1-18) | "ತೇನೋಪನೀಯೇತ ತಮಾಲನೀಲ-ಮಾಮುಕ್ತಮುಕ್ತಾತಲಮಸ್ಯ ವಕ್ಷ:" ಮಾಧಂ 3-6 |

ವಕ್ರಿಪೀಠಿ ವಕ್ರಿಪೀಠೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಕ್ಷಸ್ಥಳವೇ ಪೀಠವಾಗಿ ಉಳ್ಳ.

ವಕ್ರಿಃಸ್ಯಲ ವಕ್ರಿಃಸ್ಯಲ (ನಂ) ಎದೆ. ವಕ್ಷಾತ್: ಸ್ಯಲಮ್ |

ವಕ್ರಿಜ ವಕ್ರಿಜ (ನಂ) ಸ್ತನ, ಕುಚ. ವಕ್ಷಾಸಿ ಜಾಯತೇ -ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುರ್ಭವೇ) "ಛಿ:" (3-2-93) | "ಛಿತಿಪ್ರಿಯಕರಕುಡ್ಮಲಾಪವಿಡ್ವಕ್ರಿಜದ್ವಯಮಭಿಷಿಕ್ತಮನ್ಯನಾರ್ಥ:" ಮಾಧಂ 6-33 |



**ವಕ್ಶೋಹ ವಕ್ಶೋರುಹ** (ಪುಂ) ಸ್ತನ, ಕುಚ. ವಕ್ಶಸಿ  
ರೋಹಿತಿ — ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡುರ್ಭವಿ ಚ) “ಕ:”  
(೩-೧-೧೩೫) ।

**ವಕ್ಶ್ಯಮಾಣ ವಕ್ಶ್ಯಮಾಣ** (ವಿಂ) ಮುಂದೆ ಹೇಳಲ್ಪಡುವ,  
ಭವಿಷ್ಯತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) +  
ಸ್ಯ: + ಶಾನ್ (೩-೨-೧೨೪) । ಸುಗಾಗಮ: (೭-೨-೮೨) ।

**ವಗಾಹ ವಗಾಹ** (ಪುಂ) ನೀರಿನಲ್ಲಿಳಿಯುವುದು, ನೀರಿನೊಳಕ್ಕೆ  
ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು. ಅವ + ಗಾಹ (ವಿಲೋಡನೆ) “ಘ”  
(೩-೩-೧೧೫) । ಅಲ್ಲೋಪ: । “ವಙ್ಗಿತ್ ಭಾಗುರೀರಲ್ಲೋಪ-  
ಮವಾಪ್ಯೋರೂಪಸರ್ಗಯೋ:” ।

**ವಗ್ನು ವಗ್ನು** (ಪುಂ) 1. ಮಾತನಾಡುವವನು. ವಚ (ಪರಿ-  
ಭಾಷಣೆ) “ನು:” ಗನ್ (೩-೩-೩೩) । 2. ಹೆಚ್ಚು ಮಾತ  
ನಾಡುವವನು, ಅತಿಯಾಗಿ ಹರಚಿಹೊಡೆಯುವವನು.

**ವಜ್ಜ ವಜ್ಜ** (ಪುಂ) 1. ಕುದುರೆಯ ಜೀನಿನ ಅಗ್ರಭಾಗ.  
2. ನದಿಯ ಪಾತ್ರ. 3. ನದಿಯ ತಿರುವು. ನದಿಯು  
ವಕ್ರವಾಗಿ ತಿರುಗಿ ಹರಿಯುವುದು. ವಕ್ (ಕೌಟಿಲ್ಯೇ ಗತೌ  
ಚ) “ಅ” (೩-೧-೧೩೪) । “ವಜ್ಜ: ಪರ್ಯಣಿಭಾಗೋ ನಾ  
ನದೀಪಾತ್ರೇ ಚ ಭಜ್ಜುರೇ” ಮೇದಿಂ ।

**ವಜ್ಜಿಲ ವಜ್ಜಿಲ** (ಪುಂ) ಕಂಟಕ, ಮುಳ್ಳು. ವಕ್ (ಕೌಟಿಲ್ಯೇ)  
“ಇಲ” ಬಾಹುಂ ।

**ವಜ್ಜಿಕ್ರಿ ವಜ್ಜಿಕ್ರಿ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ವಿಧ ವಾದ್ಯ. ವಕ್ (ಕೌಟಿಲ್ಯೇ)  
“ಕ್ರಿ” (೩-೪-೬೬) । 2. ಪಾಶ್ಚಾತ್ಯ, ಪಕ್ಕಗಳ ಎಲ್ಲುಬು. 3. ಮನೆಯ ಮೇಲುಭಾವನೆಯ  
ಮರ. “ವಜ್ಜಿಕ್ರಿವಿಭೇದೋ ಗೃಹದಾರ ಪಾರ್ವಾಸ್ಥಿ ಚ”  
ಸಿಂ ಕೌಂ ।

**ವಜ್ಜಿಣ ವಜ್ಜಿಣ** (ಪುಂ) ತೊಡೆಗಳ ಸಂಧಿ. ವಕ್ (ಸಂಧಾತೇ)  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೩) । ನುಮಾಗಮ: (೭-೧-೮೦) ।

**ವಜ್ಜಿ ವಜ್ಜಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗುಗಾನದಿಯ ಒಂದು ಶಾಖೆ.

**ವಜ್ಜ ವಜ್ಜ** (ನಂ) 1. ಸೀಸಲೋಹ. 2. ತವರ. (ಪುಂ)  
3. ಬದನೆ ಗಿಡ. 4. ಹತ್ತಿ. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 5. ವಂಗ  
ದೇಶ. ವಗಿ (ಗತೌ) “ಅ” (೩-೧-೧೩೪) । “ವಜ್ಜಂ  
ಸೀಸಕರಜ್ಜಯೋ: । ವಾತಕಿಂಽಪಿ ಚ ಕಾಪಸಿ ಪುಂಭೂಮಿ  
ನಿವೃದ್ಧತರೇ” ಮೇದಿಂ । 6. ವಂಗದೇಶದ ರಾಜರು.  
“ವಜ್ಜಾನುತ್ವಾಯ ತರಸಾ ನೇತಾ ನೌಸಾಧನೋದ್ಧತಾನ್” ರಘುಂ  
೪-೩೬ ।

**ವಜ್ಜಜ ವಜ್ಜಜ** (ನಂ) 1. ಸಿಂಧೂರ. (ವಿಂ) 2. ವಂಗ  
ದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ವಜ್ಜಾತ್ ವಜ್ಜೇ ವಾ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ  
“ಜ:” (೩-೨-೯೮, ೯೭) ।

**ವಚ ವಚ** (ಪುಂ) 1. ಶುಕಪಕ್ಷಿ, ಗಿಣಿ. ವಕ್ತಿ — ವಚ  
(ಪರಿಭಾಷಣೆ) “ಅ” (೩-೧-೧೩೪) । 2. ಬಚೆ.  
3. ಮಾತನಾಡಬಲ್ಲ ಒಂದು ಪಕ್ಷಿ. “ವಚ: ಕೀರೇ ವಚೌಷಧೌ ।  
ಶಾರಿಕಾಽಯಾಂ ಚ” ಮೇದಿಂ ।

**ವಚಕ್ನು ವಚಕ್ನು** (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ವಕ್ತಿ — ವಚ  
(ಪರಿಭಾಷಣೆ) “ಅ” (೩-೧-೧೩೪) । (ವಿಂ)  
2. ವಾಗ್ಮಿ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವವನು. “ವಚಕ್ನು-  
ವಿಪ್ರವಾಗ್ಮಿನೋ:” ಸಿಂ ಕೌಂ । “ವಚಕ್ನುಸ್ತು ಪುಮಾನ್ ವಿಪ್ರೇ  
ವಾವದ್ಕೋಽಭಿಧೇಯವತ್” ಮೇದಿಂ ।

**ವಚನ ವಚನ** (ನಂ) 1. ಮಾತು, ನುಡಿ. ವಚ (ಪರಿ-  
ಭಾಷಣೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । “ವಚನೇರಸತಾಂ  
ಮಹೀಯಸೀ ನ ಖಲು ವ್ಯೇತಿ ಗುರತ್ವಮುದ್ಧತೆ:” ಮಾಘಂ ೧೬-೨೭ ।  
2. ಭಾಷಣ, ಹೇಳಿಕೆ, ಉಪನ್ಯಾಸ. “ನನು ವಕ್ತೃವಿಶೇಷ-  
ನಿ:ಸ್ಪೃಹಾ ಗುಣಗೃಹಾ ವಚನೇ ವಿಪಶ್ಚಿತ:” ಕಿರಾಂ ೨-೫ ।  
3. ಅರ್ಥವನ್ನು ಹೇಳತಕ್ಕ ಪದ, ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ  
ಶಬ್ದ. ಮೇವವಚನ: ಪಯೋವರಶಬ್ದ: । 4. (ವ್ಯಾಕರಣ  
ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಸಂಖ್ಯೆಯನ್ನು ಹೇಳುವ ಸ್ವ ಮತ್ತೂ ತಿಡ್  
ಪ್ರತ್ಯಯ. ಏಕವಚನ ದ್ವಿವಚನ ಮತ್ತೂ ಬಹುವಚನ  
ಗಳೆಂದು ವಚನಗಳು ಮೂರು. ಈ ಮೂರು ವಚನಗಳೂ  
ಕ್ರಮವಾಗಿ ಒಂದು ಎರಡು ಮೂರು ಮತ್ತೂ ಅದ  
ಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚು ಸಂಖ್ಯೆಗಳನ್ನು ಹೇಳುವುವು. “ದ್ವಯಕಯೋ-  
ದ್ವಿವಚನೇಕವಚನೇ” ಪಾಂ ಸುಂ ೧-೪-೨೨ । “ಬಹುಷು ಬಹು-  
ವಚನಮ್” ಪಾಂ ಸುಂ ೧-೪-೨೧ । 5. ಶೃಂಗಿ.

**ವಚನಕರ ವಚನಕರ** (ವಿಂ) ವಿಧೇಯ, ಹೇಳಿದುದನ್ನು  
ಮಾಡುವವನು. ಕರೋತಿ—ಙ ಕೃತ್ (ಕರಣೆ) “ಅ”  
(೩-೧-೧೩೪) । ವಚನಸ್ಯ ಕರ: ।

**ವಚನಕಾರಿನ್ ವಚನಕಾರಿನ್** (ವಿಂ) ಮಾತಿನಂತೆ ನಡೆದು  
ಕೊಳ್ಳುವವನು, ಹೇಳಿದ ಕೆಲಸವನ್ನು ಮಾಡುವವನು.  
ವಚನ + ಙ ಕೃತ್ (ಕರಣೆ) “ಣಿಣಿ:” (೩-೨-೭೮) ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ — ಕಾರಿಣಿ — ಕಾರಿಣೀ.

**ವಚನಗ್ರಾಹಿನ್ ವಚನಗ್ರಾಹಿನ್** (ವಿಂ) ವಿಧೇಯ, ಆಜ್ಞೆ  
ಯಂತೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ವಚನಂ ಗೃಹ್ಣಾತಿ — ಗ್ರಹ  
(ಉಪಾದಾನೆ) “ಣಿಣಿ:” (೩-೨-೭೮) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ — ಗ್ರಾಹಿಣಿ  
— ಗ್ರಾಹಿಣೀ.

**ವಚನೀಯ ವಚನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. ವಚ  
(ಪರಿಭಾಷಣೆ) “ಅನೀಯ” (೩-೧-೯೬) । 2. ಹೇಳ  
ಬೇಕಾದ. “ಉಚ್ಯತಾಂ ಸ ವಚನೀಯಮಶೇಷಂ ನೇಶ್ವರೇ ಪಠತಾ  
ಸಖಿ ಸಾಧ್ವಿ” ಕಿರಾಂ ೯-೩೯ । 3. ಹೇಳಲು ಅರ್ಹ



ವಾದ. (ನಂ) 4. ನಿಂದೆ, ಬೈಗಳು. 5. ಅಪವಾದ.  
“ಮಮಾತ್ರ ಭಾವೇಕರಸಂ ಮನಃಸ್ಥಿತಂ ನ ಕಾಮವೃತ್ತಿವಚನೀಯಮೀಕ್ಷತೇ”  
ಕುಮಾಂ ೪-೮೨.

**ವಚನೀಯತಾ ವಚನೀಯತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲೋಕಾಪವಾದ,  
ಜನತೆಯ ನಿಂದೆ. ವಚನೀಯಸ್ಯ ಭಾವ: “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯).  
**ವಚನೇಸ್ಥಿತ ವಚನೇಸ್ಥಿತ** (ವಿಂ) ಹೇಳಿದಂತೆ ನಡೆಯು  
ವವನು, ವಿಧೇಯ. ವಚನೇ ಸ್ಥಿತ:—ಸಪ್ತಮ್ಯಾ: “ಅಲುಕ್”  
(೬-೩-೧೪).

**ವಚರ ವಚರ** (ಪುಂ) 1. ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ. 2. ಚೋರ,  
ಕಳ್ಳ. 3. ಧೂತ, ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. ಅವ ಅಂತರೇ  
ಚರತಿ—ಚರ (ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪).  
ಅಲೋಪ: “ವಠಿ ಭಾಗುರೀರಲ್ಲೊಪಮವಾಯೋಪಸರ್ಗಯೋ:”.

**ವಚಲು ವಚಲು** (ಪುಂ) ವೈರಿ, ಶತ್ರು.

**ವಚಸ್ ವಚಸ್** (ನಂ) 1. ಮಾತು, ನುಡಿ. उच्यते—ವಚ  
(ಪರಿಭಾಷಣ) ಭಾವೇ “ಅಸುನ್” (೩ಂ ೪-೧೮೮).  
“ವಚಸಸ್ತಸ್ಯ ಸಪದಿ ಕ್ರಿಯಾ ಕೇವಲಮುತರಮ್” ಮಾಘಂ  
೨-೨೨. 2. ಪಕ್ಷಿಗಳ ಗಾನ, ಹಕ್ಕಿಗಳ ಮಧುರವಾದ ಶಬ್ದ.  
“ಕಲಯತಾ ವಚಸ: ಪರಿವಾದಿನೋಸ್ವರಜಿತಾ ರಜಿತಾ ವಶಮಾ-  
ಯು:” ಮಾಘಂ ೬-೯.

**ವಚ:ಪ್ರವೃತ್ತಿ ವಚ:ಪ್ರವೃತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾಗ್ವ್ಯಾಪಾರ,  
ಮಾತನಾಡುವ ಪ್ರಯತ್ನ. ವಚಸಾಂ ಪ್ರವೃತ್ತಿ: | “ಅವ್ಯಕ್ತ-  
ವರ್ಗರಮಣೀಯವಚ:ಪ್ರವೃತ್ತಿನ್” ಶಾಕುಂ ೭-೧೭.

**ವಚಸಾಂಪತಿ ವಚಸಾಂಪತಿ** (ಪುಂ) ಬೃಹಸ್ಪತಿ. ವಚಸಾಂ  
ವಾಚಾಂ ಪತಿ: | ಷಠ್ಯಾ ಅಲುಕ್. ಬಾಹುಂ.

**ವಚಸ್ಕರ ವಚಸ್ಕರ** (ವಿಂ) ವಿಧೇಯ, ಹೇಳಿದಂತೆ ಮಾಡು  
ವವನು. ವಚಸ: ಕರ:.

**ವಚಾ ವಚಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಚೆ. ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣ) ಅಂತ-  
ಭಾವಿತಣಿಚ್ “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪). “ವಚೋಗ್ರಮ್ವಾ  
ಷಡ್ಗನ್ಯಾ” ಅಮಂ.

**ವಚೋಗ್ರಹ ವಚೋಗ್ರಹ** (ಪುಂ) ಕರ್ಣ, ಕಿವಿ. ಗೃಹ್ಣಾತಿ—ಗ್ರಹ  
(ಉಪಾದಾನ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪). ವಚಸಾಂ ಗ್ರಹ:.

**ವಜ್ರ ವಜ್ರ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣುಂಭ ಮೊದಲಾದ 27 ಯೋಗ  
ಗಳಲ್ಲೊಂದು. (ಪುಸ್ತಕೀಂ) 2. ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧ,  
ವೃತ್ರಾಸುರನ ವಧಕ್ಕಾಗಿ ಇಂದ್ರನ ಆಜ್ಞೆಯಂತೆ ದಧೀಚಿ  
ಮಹರ್ಷಿಯ ಅಸ್ಥಿಯಿಂದ ವಿಶ್ವಕರ್ಮನಿಂದ ನಿರ್ಮಿತ  
ವಾದ ಒಂದು ಆಯುಧ. ವಜ್ರ (ಗತೌ) “ರನ್” (೩ಂ  
೨-೨೮). “ಆಶಾಂಸಂತೇ ಸುರಯುತಯೋ ಬದ್ಧವೇರಾ ಹಿ ದೈತ್ಯ-  
ರಸ್ಯಾಧಿಜ್ಯೇ ಧನುಷಿ ವಿಜಯಂ ಪೂರುಹಿತೇ ಚ ವಜ್ರೇ” ಶಾಕುಂ

೨-೧೪. 3. ವಜ್ರ, ನವರತ್ನಗಳಲ್ಲೊಂದು ರತ್ನ. **ವಜ್ರ**  
(ರತ್ನ) ದ ಗುಣ: ಸರ್ವ ರೋಗಗಳನ್ನೂ ಗುಣಪಡಿಸು  
ವುದು. ಸಕಲ ಪಾಪಗಳನ್ನೂ ನಿವಾರಣೆಮಾಡುವುದು.  
ಸಕಲವಿಧ ಸೌಖ್ಯವನ್ನೂ ಉಂಟುಮಾಡುವುದು. ಶರೀರಕ್ಕೆ  
ಬಲವನ್ನು ಕೊಡುವುದು. “ಮಣಿ ವಜ್ರಸಮುತ್ಕೀರ್ಣ ಸೂತ್ರಸ್ಯ-  
ವಾಸ್ತಿ ಮೇ ಗತಿ:” ರಘುಂ ೧-೪. (ನಂ) 4. ಬಾಲಕ,  
ಮಗು. 5. ಅಮಲಕ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜಾ -ಜ್ಯಾ.  
6. ಕಳ್ಳಗಿಡ. 7. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. 8. ಎಳ್ಳಿನ ಹೊವು.  
9. ಉಕ್ಕು. -ಜಿ -ಜ್ರೀ. 10. ಕಳ್ಳಗಿಡದ ಒಂದು ಭೇದ.  
“ವಜ್ರಂ ಸ್ಯಾತ್ ಬಾಲಕೇ ಖಾತ್ರಾಂ ಕಲಿಬಂ ಯೋಗಾಂತರೇ ಪುಮಾನ್ |  
ವಜ್ರಾ ಸ್ನುಹ್ಯಾಂ ಗುಡ್ಡಾಂ ಚ ವಜ್ರೀ ಸ್ನುಹ್ಯಾಂತರೇ ಸ್ಮೃತಾ |  
ದಮ್ಬೋಲೈ ಹೀರಕೇಷ್ಯಸ್ತ್ರೀ” ಮೇದಿಂ. 11. ಕಾಗೆಬಂಗಾರ.  
12. ವಜ್ರದಂತೆ ಕಠಿನವಾದ ವಸ್ತು. “ವಜ್ರಾದಪಿ  
ಕಠೋರಾಣಿ ಮೃದ್ವಾನಿ ಕುಸುಮಾದಪಿ | ಲೋಕೋತ್ತರಾಣಾಂ ಚೇತಾಸಿ ಕೌ  
ಹಿ ವಿಜ್ಞಾತುಮರ್ಹತಿ” ತಂ ರಾಂ ೨-೭.

**ವಜ್ರಕ ವಜ್ರಕ** (ನಂ) ಒಂದು ತೈಲ. ಈ ತೈಲದ ಅಭ್ಯಂಗ  
ದಿಂದ ಕುಷ್ಮರೋಗ ನಿವಾರಣೆಯಾಗುವುದು. ಸುಶ್ರುತಂ  
ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ಅಧ್ಯಾಂ ೯.

**ವಜ್ರಕಡ್ಡಕ ವಜ್ರಕಜ್ಜಟ** (ಪುಂ) ಅಂಜನೇಯ, ಹನುಮಂತ.  
ವಜ್ರ: ದೃಢ: ಕಡ್ಡಕೋ ದೇಹಾವರಣಮಸ್ಯ.

**ವಜ್ರಕುಂಡಕ ವಜ್ರಕುಂಡಕ** (ಪುಂ) 1. ಕೊಳವಳಿಗೆ ಗಿಡ.  
2. ಕಳ್ಳಗಿಡ.

**ವಜ್ರಕೋಲ ವಜ್ರಕೋಲ** (ಪುಂ) ವಜ್ರದಂತೆ ಕಠಿನವಾದ ಕೀಲು.  
“ಭಾರ: ಕಾಯೋ ಜೀವಿತಂ ವಜ್ರಕೋಲಮ್” ಮಾಲತೀಂ ೯-೩೭.

**ವಜ್ರಜಿತ್ ವಜ್ರಜಿತ್** (ಪುಂ) ಗರುಡ. ವಜ್ರಂ ಜಯತಿ—ಜಿ  
(ಜಯ) “ಕಿವಪ್” (೩-೨-೬೧).

**ವಜ್ರಜ್ವಾಲಾ ವಜ್ರಜ್ವಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು.  
ವಜ್ರಸ್ಯ ಜ್ವಾಲಾ.

**ವಜ್ರತುಂಡ ವಜ್ರತುಂಡ** (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. 2. ಗಣಪತಿ,  
ವಿನಾಯಕ. ವಜ್ರತುಲ್ಯಂ ಕಠಿನಂ ತುಂಡಮಸ್ಯ. 3. ಗೃಧ್ರ,  
ಹದ್ದು. 4. ಮತಕ, ಸೊಳ್ಳೆ.

**ವಜ್ರದಂತ ವಜ್ರದಂತ** (ಪುಂ) 1. ಮೂಷಿಕ, ಇಲಿ. 2.  
ಪಂಜ, ಹಂದಿ. ವಜ್ರಮಿವ ಕಠಿನಾ ದಂತಾ ಅಸ್ಯ |  
-ರವ: -ರವಃ, -ರವನ: -ರವನಃ.

**ವಜ್ರದ್ವ ವಜ್ರದ್ವ** (ಪುಂ) ಮುಂಡಕಳ್ಳಿ ಗಿಡ.

**ವಜ್ರಧರ ವಜ್ರಧರ** (ಪುಂ) 1. ದೇವೇಂದ್ರ. ವಜ್ರಸ್ಯ ಧರ: |  
“ತತ: ಪರಂ ವಜ್ರಧರಪ್ರಭಾವಸ್ತದಾತ್ಮಜ: ಸಂಯತಿ ವಜ್ರಧೋಷ:”  
ರಘುಂ ೧೮-೨೧. 2. ಉಲ್ಲಾಸ, ಘೋಕ, ಗೂಬೆ. -ಭೃತ್  
-ಭೃತ್.



ವಜ್ರನಿರ್ವಾಣ ವಜ್ರನಿರ್ವಾಣ (ಪುಂ) ಸಿಡಿಲಿನ ಶಬ್ದ.  
ವಜ್ರಸ್ಯ ನಿರ್ವಾಣಃ |

ವಜ್ರಪಾಣಿ ವಜ್ರಪಾಣಿ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. ವಜ್ರಂ ವಜ್ರಾಯುಧಂ  
ಪಾಣೌ ಯಸ್ಯ | "ಜಡೀಕೃತಸ್ಯ ಮೃಗವೀಕ್ಷಣೇನ ವಜ್ರಂ ಮುಮುಕ್ಷುಃ  
ವಜ್ರಪಾಣಿಃ" ರಘುಂ ೨-೪೨ | 2. ಉಲೂಕ, ಗೂಬೆ.

ವಜ್ರಪಾತ ವಜ್ರಪಾತ (ಪುಂ) ಸಿಡಿಲು ಬೀಳುವುದು, ಸಿಡಿಲಿನ  
ಹೊಡೆತ.

ವಜ್ರಪುಷ್ಪ ವಜ್ರಪುಷ್ಪ (ನಂ) ಎಳ್ಳಿನ ಹೂವು. ವಜ್ರಮಿವ  
ಪುಷ್ಪಮ್ |

ವಜ್ರಪುಷ್ಪಾ ವಜ್ರಪುಷ್ಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡುಸೊಬ್ಬಸಿಗೆ. ವಜ್ರಮಿವ  
ಪುಷ್ಪಂ ಯಸ್ಯಾಃ |

ವಜ್ರಲೇಪ ವಜ್ರಲೇಪ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಸಿಮೆಂಟು, ಕಲ್ಲು  
ಗಾರೆ, ಬೆಲ್ಲ ಉದ್ದಿನ ರಸ ಮುಂತಾದುವುಗಳಿಂದ ಕಲಸಿದ  
ಗಾರೆ. "ಪ್ರತ್ಯುಪ್ತೇವ ಚ ವಜ್ರಲೇಪಫಲಿತೇವೋತ್ಕರ್ಷಿಣೀರೂಪೇವ ಚ"  
ಮಾಲತೀಂ ೪-೧೦ |

ವಜ್ರವೃಕ್ಷ ವಜ್ರವೃಕ್ಷ (ಪುಂ) ಮುಂಡಕಳ್ಳಿ ಗಿಡ.

ವಜ್ರಶಲ್ಯ ವಜ್ರಶಲ್ಯ (ಪುಂ) ಮುಳ್ಳುಹಂದಿ. ವಜ್ರಮಿವ  
ಶಲ್ಯಂ ಲೋಮಶಲಾಕಾ ಯಸ್ಯ |

ವಜ್ರಸಾರ ವಜ್ರಸಾರ (ವಿಂ) ವಜ್ರದಂತೆ ಕಠಿನವಾಗಿರುವ,  
ವಜ್ರದಂತೆ ಬಲಶಾಲಿಯಾದ.

ವಜ್ರಾ ವಜ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ವಜ್ರ" ಪದದ (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
ನೋಡಿ.

ವಜ್ರಾಙ್ಗ ವಜ್ರಾಙ್ಗ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ವಜ್ರ-  
ಮಿವಾಙ್ಗಮಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ವಜ್ರದಂತೆ ದೃಢವಾದ  
ಅಂಗವುಳ್ಳವನು.

ವಜ್ರಾಙ್ಗಿನ್ ವಜ್ರಾಙ್ಗಿನ್ (ವಿಂ) ವಜ್ರಖಚಿತವಾದ  
ಅಂಗವುಳ್ಳ. ವಜ್ರಾಙ್ಗಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಛಿನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) |

ವಜ್ರಾಘಾತ ವಜ್ರಾಘಾತ (ಪುಂ) 1. ಸಿಡಿಲಿನ ಹೊಡೆತ.  
ವಜ್ರಸ್ಯಾಘಾತಃ | 2. ಅಕಸ್ಮಿಕ ಘಟನೆಯಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ  
ಗಾಬರಿ, ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ ಸಂಭವಿಸುವುದರಿಂದ ಆಗುವ  
ಕಳವಳ.

ವಜ್ರಾಯುಧ ವಜ್ರಾಯುಧ (ನಂ) 1. ಇಂದ್ರನ ಆಯುಧ.  
(ಪುಂ) 2. ಇಂದ್ರ. ವಜ್ರಮಾಯುಧಮಸ್ಯ |

ವಜ್ರಿನ್ ವಜ್ರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ, ವಜ್ರಾಯುಧವನ್ನು  
ಹೊಂದಿರುವ ದೇವತೆಗಳ ಒಡೆಯ. ವಜ್ರಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ —  
"ಛಿನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) | "ವಜ್ರಿಣಃಶರಣಃ ಸಮಾಪತ-  
ನ್ವಾಹುತೇ ಖಗಪತೌ ಮುರದ್ವಿಃ" ಯಾದಂ ೧೭-೪೪ | 2.  
ಉಲೂಕ, ಘೂಕ, ಗೂಬೆ.

ವಜ್ರಿ ವಜ್ರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಳ್ಳಿಗಿಡದ ಒಂದು ಭೇದ,  
ಮುಂಡಕಳ್ಳಿ.

ವಜ್ರಕ ವಂಚಕ (ಪುಂ) 1. ಜಂಬುಕ, ನರಿ. ವಜ್ರಯತೇ  
ಪ್ರಲೋಭಯತಿ — ವಜ್ರ (ಪ್ರಲೋಭನೆ) + ಣಿಕ್ "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | 2. ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಸಾಕಿದ ಮುಂಗುಸಿ.  
(ವಿಂ) 3. ಧೂರ್ತ, ಮೋಸಗಾರ. 4. ದುರ್ಜನ,  
ಅಸಭ್ಯ. "ವಜ್ರಕಸ್ತು ಖಲೇ ಭೃತೇ ಗೃಹವಾಸಿ ಚ ಜಮ್ಬುಕೇ"  
ಮೇದಿಂ |

ವಜ್ರತ ವಂಚತ (ವಿಂ) ಮೋಸಗಾರ, ಧೂರ್ತ. ವಜ್ರತಃ  
ಪ್ರಲೋಭಯತಿ — ವಜ್ರ (ಗತೌ) "ಅಥಃ" (೩-೧-೧೩೩) |

ವಜ್ರನ ವಂಚನ (ನಂ) 1. ಮೋಸಮಾಡುವುದು. ವಜ್ರ (ಗತೌ)  
ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | "ವಜ್ರನಂ  
ಚಾಪಮಾನಂ ಚ ಮತಿಮಾತ್ರ ಪ್ರಕಾಶಯೇತ್" ಚಾಣಕ್ಯಃ | (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ನಾ -ನಾ. ವಜ್ರ + ಣಿಕ್ "ಯುಕ್" (೩-೩-೧೦೭) | 2. ಮೋಸ.  
ಪ್ರತಾರಣೆ, ಭ್ರಾಂತಿಯುಂಟುಮಾಡುವುದು, ಮಿಥ್ಯಾಜ್ಞಾನವುಂಟುಮಾಡುವುದು.  
"ಸ್ವರ್ಗಾಭಿಸಂನ್ವಿಸುಕೃತಂ ವಜ್ರನಾಮಿವ ಮೇನಿರೇ" ಕುಮಾಂ ೬-೪೭ | 3. ಅಡ್ಡಿ,  
ತಡೆ, ಪ್ರತಿಬಂಧ. "ಮನ್ಯತೇ ಸ್ಮ ಪಿಬತಾಂ ವಿಲೋಚನೈಃ ಪಕ್ಷ-  
ಪಾತಮಪಿ ವಜ್ರನಾಂ ಮನಃ" ರಘುಂ ೧೧-೩೬ |

ವಜ್ರತ್ ವಂಚತ್ (ವಿಂ) ಹೋಗುತ್ತಿರುವ. ವಜ್ರ (ಗತೌ)  
"ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಫ್" (೪-೧-೬) |  
-ಸ್ತೌ -ಸ್ತೌ.

ವಜ್ರನೀಯ ವಂಚನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಮೋಸಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ.  
ವಜ್ರ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | 2. ಮೋಸಪಡಿಸಬೇಕಾದ.  
3. ಮೋಸಪಡಿಸಲು ಶಕ್ಯ  
ನಾದ. 4. ಮೋಸಪಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. 5. ಹೋಗ  
ಬೇಕಾದ, ತಲುಪಬೇಕಾದ. 6. ಹೋಗಲು ಶಕ್ಯವಾದ.  
7. ಹೋಗಲು ಅರ್ಹವಾದ. ವಜ್ರ (ಗತೌ) "ಅನೀಯರ್"  
(೩-೧-೯೬) | "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬) | ವಜ್ರಿತವ್ಯಃ  
ವಂಚಿತವ್ಯಃ |

ವಜ್ರಿತ ವಂಚಿತ (ವಿಂ) 1. ಮೋಸಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಜ್ರ  
(ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಅವೇಮಿ  
ಸೌಭಾಗ್ಯಮದೇನ ವಜ್ರಿತಂ ತವ ಪ್ರಿಯಂ ಯಶ್ಚತುರಾವಲೋಕಿನಃ"  
ಕುಮಾಂ ೪-೪೯ | 2. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ವಜ್ರಕ ವಂಚಕ (ವಿಂ) ಮೋಸಪಡಿಸುವ ಸ್ವಭಾವ  
ದವನು. ವಜ್ರ (ಗತೌ) "ಉಕ್" ಬಾಹುಂ |

ವಜ್ರಯ ವಂಚ್ಯ (ವಿಂ) ಮೋಸಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ವಜ್ರ  
(ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) |



ವಜ್ರಜಾಲ ವಂಜುಲ (ಪುಂ) 1. ತಿನಿಶವೃಕ್ಷ, ನೆಮ್ಮಿಗಿಡ. ವಜ್ರ (ಗತೌ) "ಉಲ್" ಬಾಹುಂ ನುಮ್ ಚ | 2. ಹಬ್ಬಿಗಿಡ. 3. ಅಶೋಕವೃಕ್ಷ. "ವಜ್ರಜಾಲ: ಪುಂಸಿ ತಿನಿಶೇ ವೇತಸಾಶೋಕಯೋ-ರಪಿ" ಮೇದಿಂ | 4. ಬೆತ್ತ, ಟೊಳ್ಳುನಾಳದ ಗಿಡ. "ಆಮಜ್ಜುವಜ್ರಜಾಲತಾನಿ ಚ ತಾನ್ಯಮನಿ" ಉಂ ರಾಂ ೨-೨೩ |

ವಜ್ರಜಾಲದ್ರುಮ ವಂಜುಲದ್ರುಮ, -ವೃಕ್ಷ -ವೃಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಅಶೋಕ ವೃಕ್ಷ. 2. ತಿನಿಶವೃಕ್ಷ. 3. ಹಬ್ಬಿಗಿಡ.

ವಜ್ರಜಾಲಾ ವಂಜುಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಹಾಲುಕರೆಯುವ ಹಸು. 2. ಒಂದು ನದಿ.

ವಟ ವಟಿ (ಪುಂ) 1. ನೈಗೋಧ ವೃಕ್ಷ, ಅಲದಮರ. ವಟತಿ -ವಟ (ವೇಷ್ಠನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ತ್ವಯಾ ಪುರಸ್ತಾದುಪಯಾಚಿತೋ ಯಃ ಸೌಖ್ಯಂ ವಟಃ ಕ್ಯಾಮ ಇತಿ ಪ್ರತೀತಃ" ರಘುಂ ೧೩-೫೩ | 2. ಸಾಮ್ಯ, ಸಾದೃಶ್ಯ. 3. ಹಗ್ಗ, ದಾರ. 4. ಒಂದು ಗುಂಡಾದ ಆಕೃತಿ. 5. ಕವಡೆ. 6. ಒಂದು ವಿಧ ಭಕ್ಷ್ಯ. "ವಟೋ ಗೋಲೇ ಗುಣೇ ಮಧ್ಯೇ ವೃಕ್ಷೇ ಸಾಮ್ಯವರಾಡಯೋಃ" ಹೇಮಂ | -ಪತ್ರಮ್ -ಪತ್ರಮ್. ಅಲದ ಎರೆ.

ವಟಕ ವಟಿಕ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಭಕ್ಷ್ಯ, ವಡೆ. 2. ಮಾತ್ರ, ಗುಳಿಗೆ.

ವಟರ ವಟರ (ಪುಂ) 1. ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ. 2. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ. 3. ಚಾವೆ. 4. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. (ವಿಂ) 5. ಶರ, ಮೂರ್ಖ. "ವಟರಃ ಕುಕ್ಕುಟೇ ವಸ್ತ್ರೇ ಶರೇ ಚ" ಮೇದಿಂ |

ವಟವಾಸಿನ್ ವಟವಾಸಿನ್ (ಪುಂ) ಯಕ್ಷ. ವಟೇ ವಟವೃಕ್ಷೇ ವಸತಿ -ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ಗಿತಿ:" (೩-೨-೭೮) |

ವಟಾಕರ ವಟಾಕರ (ಪುಂ) ನೂಲು, ದಾರ.

ವಟಾರಕ ವಟಾರಕ (ಪುಂ) ನೂಲು, ದಾರ, ಹಗ್ಗ.

ವಟಿ ವಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೆದ್ದಲು.

ವಟಿಕಾ ವಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾತ್ರ, ಗುಳಿಗೆ.

ವಟಿ ವಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಾತ್ರ, ಗುಳಿಗೆ. ವಟ (ವೇಷ್ಠನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | ಗೌರಾಂ "ಛಿಪ್" (೪-೧-೪೧) | (ವಿಂ) 2. ರಜ್ಜು, ಹಗ್ಗ.

ವಡು ವಟು (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ. ವಟ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) "ಉ:" (ಉಂ ೧-೮) | "ನಿವಾರ್ಯತಾಮಾಲಿ ಕಿಮಪ್ಯಯಂ ವಡು: ಪುನರ್ವಿವಕ್ಷು: ಸ್ಫುರಿಸ್ತೋತ್ತರಾಧರ:" ಕುಮಾಂ ೫-೮೩ | 2. ಬಾಲಕ, ಹುಡುಗ.

ವಡುಕ ವಟುಕ (ಪುಂ) 1. ಬಾಲಕ, ಹುಡುಗ. ವಡು ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" | 2. ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ.

ವಠರ ವಠರ (ಪುಂ) 1. ಮೂರ್ಖ, ದಡ್ಡ, ಅಜ್ಞ, ಅವಿವೇಕ. ವಠ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) "ಅರ:" ಠಶ್ಚಾದೇಶಃ (ಉಂ ೫-೩೯) | 2. ನೀಚ, ಅಸಭ್ಯ. 3. ವೈದ್ಯ.

ವಡವಾ ವಡವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣುಕುದುರೆ. 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಹೆಂಗಸು. 3. ಕುಂಭದಾಸಿ, ಸೇವಕಿ, ದಾಸಿ. 4. ವೇಶ್ಯ, ಸೂಳೆ. "ವಡವಾ ದ್ವಿಜಯೋಪಿತಿ | ಅಶ್ವಾಸಾಂ ಕುಮ್ಮದಾಸಾಂ ಚ ನಾರಿಜಾತ್ಯಂತರೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ | 5. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು. ["ವಡವಾ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ವಡವಾಗ್ನಿ ವಡವಾಗ್ನಿ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಕುದುರೆಯ ಮುಖದಿಂದ ಹೊರಟ ಅಗ್ನಿ. -ಅನಲಃ -ಅನಲಃ, -ಮುಖಃ -ಮುಖಃ.

ವಡ್ಡ ವಡ್ಡ (ವಿಂ) ದೊಡ್ಡದಾದ, ಬೃಹತ್ತಾದ, ವಿಸ್ತಾರ ವಾದ. ವಲ (ಸಂವರಣೆ) "ರಕ್" ಬಾಹುಂ | ಲಡಯೋರಭೇದಃ |

ವಣಿಜ್ ವಣಿಜ್ (ಪುಂ) 1. ವರ್ತಕ, ವ್ಯಾಪಾರಿ. ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರೇ ಸ್ತುತೌ ಚ) "ಇಜಿ:" ಪಸ್ಯ ವಕಾರಾದೇಶಶ್ಚ (ಉಂ ೨-೭೦) | "ಯಸ್ಯಾಗಮಃ ಕೇವಲಜೀವಿಕಾಯೈ ತಂ ಜ್ಞಾನಪಥ್ಯಂ ವಣಿಜಂ ವದಂತಿ" ಮಾಲಂ ೧-೧೭ | 2. ತುಲಾರಾಶಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ವಾಣಿಜ್ಯ, ವ್ಯಾಪಾರ. 4. ಒಂದು ಕರಣ. "ವಣಿಗ್ವಾಣಿಜ್ಯಜೀವಿನಿ | ವಾಣಿಜ್ಯೇ ಕರಣೇ ಭೇದಃ" ಹೇಮಂ |

ವಣಿಜ ವಣಿಜ (ಪುಂ) 1. ವರ್ತಕ, ವ್ಯಾಪಾರಿ. 2. ತುಲಾರಾಶಿ.

ವಣಿಜ್ಯಾ ವಣಿಜ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವ್ಯಾಪಾರ, ವರ್ತಕನು ಮಾಡುವ ಕ್ರಯ ಮತ್ತು ವಿಕ್ರಯ ಕಾರ್ಯ. ವಣಿಜಿ ಸಾಧು: "ಯತ್" (೪-೪-೯೮) | ವಣಿಜ್ಯಮಪಿ |

ವಣಿ ವಂಟಿ (ಪುಂ) 1. ಮದುವೆಯಾಗದವನು, ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ. 2. ಒಂದು ಭಾಗ, ಒಂದು ಅಂಶ. 3. ಕುಡುಗೋಲಿನ ಹಿಡಿ, ಕುಯಿಲು ಕತ್ತಿಯ ಮುಷ್ಟಿ.

ವಣಕ ವಂಟಕ (ಪುಂ) 1. ಭಾಗ, ಅಂಶ. ವಣ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" | "ಅಂಶಭಾಗೌ ತು ವಣಕಃ" ಅಮಂ | (ವಿಂ) 2. ಭಾಗಮಾಡುವವನು. ವಟಿ (ವಿಭಾಜನೆ) "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |

ವಣಾಲ ವಂಟಾಲ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ವಿಧ ಯುದ್ಧ. 2. ನಾಕೆ, ಹಡಗು. 3. ಗುದ್ದಲಿಯೆಂಬ ಆಯುಧ, ಅಗೆ ಯುವ ಒಂದು ಸಾಧನ. "ವಣಾಲೋ ಯುದ್ಧಭೇದೇ ಚ ನೌಕಾಸಾಂ ಚ ಸನ್ನಿವೃತ್ತೇ" ಮೇದಿಂ |

ವಣಿ ವಂಟ (ಪುಂ) 1. ಕುಂತಾಯುಧ, ಕೊಂತ. 2. ವಾವನ, ಕುಬ್ಜ, ಕುಳ್ಳ. 3. ಸೇವಕ, ಆಳು. 4. ಮದುವೆಯಾಗದವನು, ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ. "ವಣಿ: ಸ್ಯಾದಕೃತೋದಾಹೇ ನಾನ್"



ಕುಂತಾಯುಧೇಷಿ ಚ" ಮೇದಿಂ । "ವರ್ಣ: ಕುಂತಾಯುಧೇ ಖವೆ  
ಭೃತ್ಯಾಕೃತವಿವಾಹಯೋ:" ಹೇಮಂ ।

ವರ್ಣರ ವಂಶರ (ಪುಂ) 1. ಮೂರ್ಖ, ದಡ್ಡ. 2. ಶರ, ಅಯೋಗ್ಯ: "ವರ್ಣರೋ ಮೂರ್ಖಶಠಯೋ:" ಹೇಮಂ । 3. ನಾಯಿಯ ಬಾಲ. 4. ತಾಳಗಿಡದ ಚಿಗುರು. 5. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 6. ನಾಯಿ. 7. ಬಿವಿವಿನ ಚಿಗುರಿನ ಮೇಲಿನ ಪೊರೆ, -ಹೊದಿಕೆ.

ವರ್ತನ ವರ್ತನ (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಣಾಭರಣ, ಕಿವಿಯಲ್ಲಿ ಧರಿಸುವ ಒಡವೆ. ಅವತಂಸ್ಯತೇಜೇನ — ಅವ + ತಸಿ (ಅಲಕ್ಷ್ಯಾಂತ) "ವತ್" (೩-೩-೧೨೧). ಅಲ್ಲೋಪ: । 2. ಶಿರೋಭೂಷಣ, ತಲೆಯಲ್ಲಿ ಧರಿಸುವ ಒಡವೆ. "ವರ್ತನಸ್ತು ಪುಮಾನ್ ಕರ್ಣಪೂರ-ಶೇಖರಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ ।

ವತ್ನ ವತ್ನ (ಪುಂ) 1. ರಸ್ತೆ, ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. 2. ಕಣ್ಣಿನ ರೋಗ, ಒಂದು ವಿಧ ನೇತ್ರರೋಗ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ದೇವ ನದಿ, ಅಕಾಶಗುಗ್ಗ.

ವತೋಕಾ ವತೋಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುತ್ರಸಂತಾನವಿಲ್ಲದ ಹೆಂಗಸು. ಅವಗತಂ ತೋಕಂ ಯಸ್ಯಾ: । ಅಲ್ಲೋಪ: ಇತಿ ಭಾಗುರಿ: ।

ವತ್ಸ ವತ್ಸ (ಪುಂ) 1. ಹೆಸುವಿನ ಕರು. 2. ಪಶುಪ್ರಾಣಿಗಳ ಶಿಶು, -ಮರಿ. ವದತಿ—ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ವತ್ಸ:" (೩-೩-೬೨) । "ಯಂ ಸರ್ವಶೈಲಾ: ಪರಿಕಲ್ಪ್ಯ ವತ್ಸಂ ಮೇರೌ ಸ್ಥಿತೇ ದೋಗ್ಧರಿ ದೋಹದಕ್ಷೇ" ಕುಮಾರಂ ೧-೨ । 3. ಪುತ್ರ, ಮಗ, ಮಗು. ಈ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಬಹಳ ಪ್ರೀತಿ ಮತ್ತು ಅಭಿಮಾನಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ಪ್ರಯೋಗ. "ಉತ್ತಿಷ್ಠ ವತ್ಸೇತ್ಯಮೃತಾಯಮಾನಂ ವಚೋ ನಿಶಮ್ಯೋತ್ಥಿತಮುತ್ಥಿತ: ಸನ್" ರಘುಂ ೨-೬೧ । "ವತ್ಸಾಯಾಶ್ಚ ರಘುರಹಸ್ಯ ಚ ಶಿಶಾವ-ವಸ್ಮಿನ್ನಭಿವ್ಯಜ್ಯತೇ" ಉಂ ರಾಂ ೪-೨೨ । 4. ಸುವತ್ಸರ, ವರ್ಷ. 5. ವತ್ಸದೇಶ, ಉದಯನಮೆಂಬ ಹೆಸರುಳ್ಳ ವತ್ಸರಾಜನು ಆಳುತ್ತಿದ್ದ ದೇಶ. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 6. ಆ ದೇಶದ ಜನರು. (ನಂ) 7. ಉರಸ್ಥಲ, ವಕ್ಷಸ್ಥಲ ಎದೆ. "ವತ್ಸ: ಪುತ್ರಾದಿವರ್ಷಯೋ: । ತರ್ಣಕೇ ನೋರಸಿ" ಮೇದಿಂ । ವತ್ಸಾ ವತ್ಸಾ. 8. ಹೆಣ್ಣು ಕರು. 9. ಪುತ್ರಿ, ಮಗಳು.

ವತ್ಸಕ ವತ್ಸಕ (ಪುಂ) 1. ಸಣ್ಣ ಕರು, ಚಿಕ್ಕ ಕರು. ವತ್ಸ ಹ್ರಸ್ವೇ "ಕನ್" (೪-೩-೮೬) । 2. ಮಗು, ಶಿಶು. 3. ಬೆಟ್ಟಮಲ್ಲಿಗೆ. "ಕುಟಜ: ಶಕ್ರೋ ವತ್ಸಕೋ ಗಿರಿಮಲ್ಲಿಕಾ" ಅಮಂ । (ನಂ) 4. ಗಾಧಕಾಮ್ನ ಲವಣ. ವತ್ಸಸಂಜ್ಞಾಯಾಂ "ಕನ್" ।

ವತ್ಸಕಾಮಾ ವತ್ಸಕಾಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪುತ್ರಸಂತಾನವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ ಹೆಂಗಸು. 2. ಕರುಮಗಾಗಿ ಅಸೆಪಡುತ್ತಿರುವ ಆಕಳು. ವತ್ಸಂ ಕಾಮಯತೇ—ಕಮು (ಕಾಂತೌ) + ಣಿಚ್ "ಅನ್" (೩-೨-೧) ।

ವತ್ಸತರ ವತ್ಸತರ (ಪುಂ) ಪಳಗಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ ವಯಸ್ಸಿನ ಹೋರಿ. ವತ್ಸ "ಸ್ತರಚ್" (೪-೩-೯೧) । "ಮಹೋಕ್ತಾಂ ವತ್ಸತರ: ಸ್ತುಶನ್ನಿವ ದ್ವಿಪೇಂದ್ರಭಾವಂ ಕಲಮ: ಶ್ರಯನ್ನಿವ" ರಘುಂ ೩-೩೨ । -ತರೀ -ತರೀ. ಕಡಸು, ಕರುಹಾಕದಿರುವ ಎಳೆಯ ಹಸು. "ಶ್ರೋತ್ರಿಯಾಯಾಮಾಗತಾಯ ವತ್ಸತರೀಂ ಮಹೋಕ್ತಂ ವಾ ಪವಂತಿ ಗೃಹಮೇಧಿನ:" ಉಂ ರಾಂ ೪ ।

ವತ್ಸನಾಭ ವತ್ಸನಾಭ (ಪುಂ) ಉಗ್ರವಾದ ಒಂದು ವಿಷ. ವತ್ಸಾನ್ ನಮ್ನಾತಿ — ಣಮ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಅನ್" (೩-೨-೧) ।

ವತ್ಸಪಾಲ ವತ್ಸಪಾಲ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ವತ್ಸಾನ್ ಪಾಲಯತಿ—ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೇ) + ಣಿಚ್ "ಅನ್" (೩-೨-೧) । 2. ಬಲರಾಮ. (ವಿಂ) 3. ಮಕ್ಕಳನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವವನು. "ಸ ತತ್ರ ವಯಸಾ ತುರ್ಯೈ: ವತ್ಸಪಾಲೈ: ಸಹಾನಭ:" ।

ವತ್ಸರ ವತ್ಸರ (ಪುಂ) 1. ಸುವತ್ಸರ, ವರ್ಷ. ವಸಂತಿ ಕೃತುಮಾಸಾದಯೋಽನ್ — ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ಸರ:" (ಉಂ ೩-೭೧) । ಸಸ್ಯ ತಕಾರ: (೭-೪-೪೯) । "ದಾತಾಽಸ್ಯಾ: ಸ್ವರ್ಗಮಾನೋತಿ ವತ್ಸರಾನ್ ರೋಮಸಂಮಿತಾನ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೨೦೪ । 2. ವಿಷ್ಣು. "ಪುರುಷಾರ್ಥಸಥಾಪನಾಯ ಸರ್ವಾಂತಿವಸನಾಚ್ಚ ಯ: । ಧರ್ಮಾತ್ಮಾ ವತ್ಸರ: ಸ. ಸ್ಯಾತ್ ಮುನ್ಯರ್ಣೋ ಭೀಷ್ಮದೋ ಮನು:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । "ವತ್ಸರೋ ವತ್ಸಲೋ ವತ್ಸೀ" ವಿಂ ಸಂ ।

ವತ್ಸರಾಂತಕ ವತ್ಸರಾಂತಕ (ಪುಂ) ಫಾಲ್ಗುಣ ಮಾಸ. ವತ್ಸಲ ವತ್ಸಲ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ವತ್ಸಾನ್ ಸ್ವಾತ್ಸುಕಾನ್ ಕಾಮಯತೇ—ವತ್ಸ "ಲಚ್" (೪-೨-೯೮) । "ಸರ್ವಸ್ಯಾಂತ-ನಿವಸನೇ ಹೇತು: ಸ್ಯಾದ್ವತ್ಸಲ: ಸ್ಮೃತ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । "ವತ್ಸರೋ ವತ್ಸಲೋ ವತ್ಸೀ" ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ) 2. ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿಯಿರುವ, ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪ್ರೀತಿಸುವ. ವತ್ಸೇ ಪುತ್ರೇಽಭಿಲಾಷಾಂಸ್ತಸ್ಯ "ಲಚ್" (೪-೨-೯೮) ।

ವತ್ಸಾದನ ವತ್ಸಾದನ (ಪುಂ) 1. ವೈಕ, ತೋಳ. ವತ್ಸಾನಾ-ಮದನೋ ಮಕ್ಷಕ: । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಅದನೋ -ಅದನೇ. 2. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. ವತ್ಸೇರಯತೇ—ಅದ (ಮಕ್ಷಣೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೩) ।

ವದ -ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ (ಭ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ) । ವದತಿ । ಉವಾದ । ವದಿತಾ । ವದಿಷ್ಯತಿ । ವದತು । ಅವದತ್ । ವದೇತ್ । ಉವಾತ್ । ಅವಾದೀತ್ । ಅವದಿಷ್ಯತ್ ।



ಹೇಳು, ಮಾತನಾಡು. “ವದ ವಿಧುಂತುಮಾಲಿ ಮದೀರಿತೆ: ತ್ಯಜಸಿ ಕಿ ದ್ವಿಜರಾಜಧಿಯಾ ರಿಪುಮ್” ನೆಪಂ ೪-೭೦ ।

ಕರ್ಮಣಿ:—ವದತೇ । ಉದೇ । ವದಿತಾ । ವದಿಷ್ಯತೇ ।  
ವದತಾಮ್ । ವದಿತಾ । ವದತೇ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗಿಣಿ:—ವಾದಯತೇ । ವಾದಯಾಂ ಚಕ್ರೆ, -ವಮುವ, -ವಾಸ ।  
ವಾದಯಿತಾ । ವಾದಯಿಷ್ಯತೇ । ವಾದಯತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ವ್ಯಂತಾತ್ ಕರ್ಮಣಿ:—ವಾದಯತೇ । ವಾದಯಾಂ ಚಕ್ರೆ, -ವಮುವೆ,  
-ವಾಸೇ । ವಾದಯಿತಾ, ವಾದಿತಾ । ವಾದಯತಾಮ್ । ಅವಾದಯತ ।  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತು:—ವದಿತವ್ಯಮ್ । ವದನೀಯಮ್ । ಅನುವಾದಮ್ ।  
ಬ್ರಹ್ಮೋದಮ್, ಬ್ರಹ್ಮವದಮ್ । ವದಿತ: । ವದಿತವಾನ್ । ವದನ್,  
-ವಂತಿ । ವಿವದಮಾನ್: । ವದಿತುಮ್ । ವದಿತಮ್ । ವದನಮ್ ।  
ವದಿತವಾ । ಅನುಜ್ಞೆ ।

ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಅತಿ + ವದ = ಅತಿವದತಿ । ಅತಿವಾದ: ।  
1. ಹೆಚ್ಚು ಮಾತನಾಡು, ವಿಶಿಷ್ಟವಾಗಿ ಮಾತನಾಡು. 2. ಕಠಿಣ  
ವಾಗಿ ಮಾತನಾಡು, ವಿಶಿಷ್ಟವಾಗಿ ಮಾತನಾಡು. “ಅತಿವಾದಾನ್  
ತೀತೀತೇ ನಾವಮನ್ಯೇತ ಕಚ್ಚನ” ಮನುಂ ೬-೪೭ ।

(2) ಅನು + ವದ = ಅನುವದತಿ । ಅನುವಾದ: ।  
1. ಹೇಳಿದುದನ್ನು ಮತ್ತೆ ಹೇಳುವುದು, ಒಬ್ಬನು  
ಹೇಳಿದುದನ್ನು ಪುನಃ ಹೇಳುವುದು. “ಅನುವದತಿ ಶುಕ್ಲೇ  
ಮಂಜುಬಾಹುಪಜರಸ್ಥ:” ರಘುಂ ೫-೭೪ । 2. ಪ್ರತಿಯಾಗಿ  
ಹೇಳು, ಪ್ರತಿಧ್ವನಿಸು. “ಸಮಾಭಿತಿಪ್ರತಿಧ್ವಾನೇ: ಸಮಾ-  
ದನ್ವವದನ್ವಿವ” ಮಾಘಂ ೨-೬೭ । 3. ಪುನಃ ಹೇಳು,  
ಮತ್ತೆ ಉಚ್ಚರಿಸು. “ನಿಜಮನೋರಥಮನುವದತಿ” । 4.  
ವಿವರಿಸಿಹೇಳು. 5. ಭಾಷಾಂತರಮಾಡು, ಪರಿವರ್ತಿಸು.  
ಇತ್ಯಾದಿ.

(3) ಅಪ + ವದ = ಅಪವದತಿ । ಅಪವಾದ: ।  
1. ನಿಂದಿಸು, ತೆಗಳಿಸು, ಅಕ್ಷೇಪಿಸು. “ನಾತೋಪ್ಯಪವದೇದ್ವಿಪ್ರಾನ್  
ನ ದತ್ವಾ ಪರಿಕೀರ್ತಯೇತ್” ಮನುಂ ೪-೨೩೬ । 2. ನಿರಾಕರಿಸು,  
ತಳ್ಳಿಸು. “ನ್ಯಾಯಮಪವದತೇ” ಸಿಂ ಕೌಂ । 3. ವಿರೋಧಿಸಿ  
ಹೇಳು, ತಪ್ಪೆಂದು ಹೇಳು, ತಪ್ಪೆಂದು ನಿರೂಪಿಸು.  
“ಸ್ನಾತಾನಪವದೇಯುಸ್ತಾನಿತಿಹಾಸೇ: ಪುರಾತನೇ:” ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೭ ।

(4) ಪ್ರ + ವದ = ಪ್ರವಾದ: । ಪ್ರವದತಿ । 1. ಬೇಡಿ  
ಮಾತು, ಸುದ್ದಿ, ಸಮಾಚಾರ. “ಅನುರಾಗಪ್ರವಾದಸ್ತು ವತ್ಸಯೋ:  
ಸಾರ್ವಲೋಕಿಕ:” ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೬ । 2. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ.  
“ಅನುಪಭೋಗನಿರರ್ಥಕವದೋಪಪ್ರವಾದಮಮೃಜನಗನಿಮ್ನಗಾನಾಮ್”

ಮಾಘಂ ೫-೨೮ । 3. ಪರಸ್ಪರ ಪ್ರತಿಭಟಿಸಿ ಮಾತನಾಡು  
ವುದು. “ಇತ್ಯಂ ಪ್ರವಾದಂ ಯುಧಿ ಸಂಪ್ರಹಾರಂ ಪ್ರವಕ್ತು ರಾಮನಿಶಾ-  
ವಿಹಾರೌ” ಭದ್ರಂ ೨-೩೬ ।

(5) ಪ್ರತಿ + ವದ = ಪ್ರತಿವದತಿ । ಪ್ರತಿವಾದ: ।  
ಪ್ರತ್ಯವದತ್ । 1. ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಹೇಳು, ಉತ್ತರ ಹೇಳು.  
“ನರೇಂದ್ರಸುತು: ಪ್ರತಿಸಂಹರಣಿಷು ಪ್ರಿಯವದ: ಪ್ರತ್ಯವದತ್ಸುರೇಶ್ವರಮ್”  
ರಘುಂ ೩-೬೪ । 2. ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಹೇಳು, ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ  
ಹೇಳು. 3. ತಿರಸ್ಕರಿಸಿ ಹೇಳು. ಇತ್ಯಾದಿ.

ವದ ವದ (ವಿಂ) ಮಾತನಾಡುವವನು. ವದತಿ—ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ  
ವಾಚಿ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) ।

ವದತ್ ವದತ್ (ವಿಂ) ಮಾತನಾಡುತ್ತಿರುವ, ಹೇಳುತ್ತಿರುವ.  
ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) ।  
“ಇತಿ ವದತಿ ಸಖೀಜನೇನುರಾಗಾದ್ವಿತತಮಾಮಪರಾಶ್ವರಂ  
ಪ್ರತೀಕ್ಷ್ಯ” ಮಾಘಂ ೭-೧೩ । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಜೀಪ್” (೪-೧-೬) ।  
ವದಂತಿ ವದಂತಿ.

ವದನ ವದನ (ನಂ) 1. ಮಾತಿ, ವೇದನೆ. ವದಂತ್ಯನೇನ—ವದ  
(ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಕರಂ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭) ।  
“ಆಸೀದ್ವಿವೃತ್ತವದನಾ ಚ ವಿಮೋಚಯಂತಿ ಶಾಖಾಸು ವಲ್ಕಲ-  
ಮಸಕ್ತಮಪಿ ದ್ರುಮಾಣಾಮ್” ಶಾಕುಂ ೨-೧೨ । 2. ಬಾಯಿ.  
“ರೇವತೀವದನೋಚ್ಚಿಷ್ಟಪರಿಪೂತಪುಟೇ ದೃಶೌ” ಮಾಘಂ ೨-೧೬ ।  
3. ಹೇಳುವುದು, ಮಾತನಾಡುವುದು. ವದ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್”  
(೩-೩-೧೧೫) । 4. ಅಗ್ರಭಾಗ, ತುದಿ.

ವದನಾಸವ ವದನಾಸವ (ಪುಂ) ಅಧರಾಮೃತ.

ವದನೀಯ ವದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. 2. ಹೇಳ  
ಬೇಕಾದ. 3. ಹೇಳಬಹುದಾದ. ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ)  
“ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । “ತವ್ಯ:” (೩-೧-೯೬) ।  
ವದಿತವ್ಯಮ್ ವದಿತವ್ಯಮ್.

ವದಾನ್ಯ ವದಾನ್ಯ (ವಿಂ) 1. ದಾನಶೀಲ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ದಾನ  
ಮಾಡುವವನು. ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಆನ್ಯ:”  
(ತಂ ೩-೧೦೪) । “ಗತೋ ವದಾನ್ಯಾನ್ತರಮಿತ್ಯಯಂ ಸೇ ಮಾಭೂತ್  
ಪರಿವಾದನವಾವತಾರ:” ರಘುಂ ೫-೨೪ । 2. ವಾಗ್ಮಿ, ಚೆನ್ನಾಗಿ  
ಮಾತನಾಡುವವನು. 3. ಉದಾರವಾಗಿ ನೀಡುವವನು,  
ಧಾರಾಳವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು. “ವದಾನ್ಯೋ ದಾನಶೀಲಃ ಚ  
ಚಾರ್ವಾದಿನಿ ವಾಚ್ಯವತ್” ಮೇದಿಂ ।

ವದಾವದ ವದಾವದ (ವಿಂ) ಮಾತನಾಡುವವನು. ವದತಿ—  
ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । ವಾ  
ದ್ವಿತ್ವಮ್ ಆಗಾಗಮಶ್ಚ (ವಾಂ ೩-೧-೧೩೪) । ಪಕ್ಷೇ ವದ: ।  
“ವದೋ ವದಾವದೋ ವಕ್ತಾ” ಅಮಂ ।







**ವನಜ ವನಜ** (ಪುಂ) 1. ಮುಸ್ತಕ, ಕೊನ್ನಾರಿ ಗೆಡ್ಡೆ. ವನೇ ಜಲೇ ಜಾಯತೇ—ಜನೀ (ಪ್ರಾದುರ್ಮವಿ) “ಛ:” (೩-೨-೧೭) । 2. ಗಜ, ಆನೆ. (ನಂ) 3. ಪದ್ಮ, ತಾವರೆ. “ನಿರ್ದ್ರಾ ವಿಹಾಯ ವನಜಾಕ್ಷ ವನಾಯುರೇಷ್ಯಾ:” ರಘುಂ ೫-೭೩ । (ವಿಂ) 4. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. 5. ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಜಾ-ಜಾ. 6. ಕಾಡುಹೆಸರು ಗಿಡ. 7. ಕಾಡು ಹೆತ್ತಿ. 8. ಸಬ್ಬಸಿಗೆ. “ವನಜೋ ಮುಸ್ತಕೇ ಸ್ತಮ್ಬೇರಮೇ ವನಜಮಮ್ಬುಜೇ । ವನಜಾ ತು ಮುಹುರ್ಯಾಮ್” ಹೇಮಂ ।

**ವನತೀಕ್ಷಕಾ ವನತೀಕ್ಷಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗುರು ಶುಂಠಿ.

**ವನದ ವನದ** (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ. ವನಂ ಜಲಂ ದದಾತಿ —ತು ದಾನ್ (ದಾನೇ) “ಕ:” (೩-೨-೩) ।

**ವನಪಿಪ್ಪಲಿ ವನಪಿಪ್ಪಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡುಹಿಪ್ಪಲಿ.

**ವನಪ್ರಿಯ ವನಪ್ರಿಯ** (ಪುಂ) 1. ಕೋಗಿಲೆ. ವನಂ ಪ್ರಿಯಮಸ್ಯ । “ಅಪಿ ವನಪ್ರಿಯ ವಿಸ್ಮೃತ ಏವ ಕಿಂ ಬಲಿಭುಜೋ ವಿವಸೋ ಭವತಾಧುನಾ” ತ್ವಷ್ಟ: । (ನಂ) 2. ಲವಂಗಪಟ್ಟಿ, ದಾಲ್ಚಿನ್ನಿ. (ವಿಂ) 3. ಅರಣ್ಯವೇ ಪ್ರಿಯವಾಗಿರುವ.

**ವನಮಕ್ಷಿಕಾ ವನಮಕ್ಷಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡುನೋಣ.

**ವನಮಲ್ಲಿ ವನಮಲ್ಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡುಮಲ್ಲಿಗೆ.

**ವನಮಾಲಾ ವನಮಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಧರಿಸುವ ಮಾಲೆ. ವನಜಾತಪುಷ್ಪನಿರ್ಮಿತಾ ಮಾಲಾ । “ಆಜಾನುಲಂಬಿನಿ ಮಾಲಾ ಸರ್ವತುಕ್ಸುಮೋಜ್ಜ್ವಲಾ । ಮಧ್ಯೇ ಸ್ಥೂಲಕದಂಬಾಠಚಾ ವನಮಾಲೇತಿ ಕೀರ್ತಿತಾ” ।

**ವನಮಾಲಿನ್ ವನಮಾಲಿನ್** (ಪುಂ) ಎಷ್ಟು. ವನಮಾಲಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೫-೨-೧೧೬) । “ವನಮಾಲಿ ಬಲಿಧ್ವಂಸಿ ಕಂಸಾರಾತಿರಘೋಕ್ಷಜ:” ಅಮಂ । “ವನಮಾಲಿ ತು ಗೋವಿಂದೇ” ಮೇದಿಂ । “ಧೀರಸಮೀರೇ ಯಮುನಾತೀರೇ ವಸತಿ ವನೇ ವನಮಾಲಿ” ಗೀತಗೋಂ ।

**ವನಮಾಲಿನಿ ವನಮಾಲಿನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಂದಿ ಗೆಡ್ಡೆ. 2. ದ್ವಾರಕಾನಗರ. ವನಮಾಲಿ ಅಸ್ಯಾಮಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೫-೨-೧೧೬) । “ಜೀಪ್” (೪-೧-೫) । “ದ್ವಾರಕಾ ವನಮಾಲಿನಿ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । “ವಾರಾಹ್ಯಾ ವನಮಾಲಿನಿ” ಮೇದಿಂ ।

**ವನಮುಕ್ ವನಮುಕ್** (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ. ವನಂ ಜಲಂ ಮುಚ್ಛತಿ — ಮುಕ್ತ (ಮೋಕ್ಷಣೇ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೬೧) ।

**ವನಮುಗ್ಧ ವನಮುಗ್ಧ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಡುಹೆಸರು. ವನಜಾತೋ ಮುಗ್ಧ: । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ದ್ವಾ ದ್ವಾ. 2. ಕಾಡುಹೆಸರು ಗಿಡ.

**ವನರಕ್ಷಕ ವನರಕ್ಷಕ** (ಪುಂ) ಅರಣ್ಯವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವ ಅಧಿಕಾರಿ.

**ವನರಾಜ ವನರಾಜ** (ಪುಂ) ಸಿಂಹ. ವನಸ್ಯ ರಾಜಾ—ರಾಜನ್ “ಠ್” (೫-೪-೧೧) ।

**ವನವಾಸ ವನವಾಸ** (ಪುಂ) ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವುದು. ವನೇ ವಾಸ: । “ತರ್ಮಿರಿಯ ವನವಾಸಬಂಧುಭಿ:” ಶಾಕುಂ ೪-೧ । “ಇಚ್ಛಾವಿಹಾರವನವಾಸಮಹೋತ್ಸವಾನಾಮ್” ಮಾಧಂ ೫-೫೦ ।

**ವನವಾಸನ ವನವಾಸನ** (ಪುಂ) ಪುನುಗುಬೆಕ್ಕು. ವನಂ ವಾಸಯತಿ —ವಸ (ಸ್ನೇಹಚ್ಛೇದಾಪಹರಣೇಷು) + ಣಿನ್ “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪) । “ಗಂಧೀತು: ಸದೃಶೋ ವನವಾಸನ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ವನವಾಸಿನ್ ವನವಾಸಿನ್** (ಪುಂ) 1. ವಾನಪ್ರಸ್ಥಾಶ್ರಮದಲ್ಲಿರುವವನು. (ವಿಂ) 2. ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವವನು. ವನೇ ವಸತಿ —ವಸ (ನಿವಾಸೇ) “ಣಿನಿ:” (೩-೨-೭೮) ।

**ವನಶೃಂಗಾಟ ವನಶೃಂಗಾಟ** (ಪುಂ) ನೆಗ್ಗಿಲು ಗಿಡ. ವನಸ್ಯ ಶೃಂಗಾಟ ಇವ । “ಗೋಕುಂಡಕೋ ಗೋಕುರಕೋ ವನಶೃಂಗಾಟ ಇತ್ಯಪಿ” ಭಾವಪ್ರಂ । ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” । ವನಶೃಂಗಾಟಕ: ।

**ವನಶ್ವನ್ ವನಶ್ವನ್** (ಪುಂ) 1. ಸೈಗಾಲ, ಜುಬುಕ, ನರಿ. ವನಸ್ಯ ಶ್ವಾ । 2. ವ್ಯಾಘ್ರ, ಹುಲಿ. 3. ಪುನುಗು ಬೆಕ್ಕು. “ವನಶ್ವಾ ಗಂಧಮಾಜರಿ ವಚ್ಚಕವ್ಯಾಘ್ರಯೋ: ಪುಮಾನ್” ಮೇದಿಂ ।

**ವನಸಂಕಟ ವನಸಂಕಟ** (ಪುಂ) ಕಾಡುಕಡಲೆ.

**ವನಸಮೂಹ ವನಸಮೂಹ** (ಪುಂ) ಅರಣ್ಯಗಳ ಸಮೂಹ. ವನಾನಾಂ ಸಮೂಹ: ।

**ವನಸ್ಥ ವನಸ್ಥ** (ಪುಂ) 1. ಮೃಗ, ಹರಿಣ, ಜಿಂಕೆ. ವನೇ ತಿಷ್ಠತಿ —ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) “ಕ:” (೩-೨-೪) । 2. ವಾನಪ್ರಸ್ಥ, ಮೂರನೇ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿರುವವನು. “ತ್ರಿಗುಣಂ ಸ್ವಾಧ್ಯಾನಸ್ಥಾನಾಂ ಯತೀನಾಂ ತು ಚತುರ್ಗುಣಮ್” ಮನುಂ ೫-೧೩೭ । (ವಿಂ) 3. ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವವನು.

**ವನಸ್ಥಲಿ ವನಸ್ಥಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರಣ್ಯಪ್ರದೇಶ, ಅರಣ್ಯದ ಭೂಮಿ. ವನಸ್ಯ ಸ್ಥಲಿ । “ಸದ್ಯೋ ವಸಂತೇನ ಸಮಾಗತಾನಾಂ ನಖಕ್ಷತಾನೀವ ವನಸ್ಥಲಿನಾಮ್” ಕುಮಾಂ ೩-೨೯ ।

**ವನಸ್ಪತಿ ವನಸ್ಪತಿ** (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ವನಸ್ಯ ಪತಿ: —ಸುಡಾಗಮ: (೬-೧-೧೫೭) । “ತಮಾಶು ವಿಷ್ಣಂ ತಪಸ್ತಪಸ್ವೀ ವನಸ್ಪತಿ ವಜ್ರ ಇವಾವಭಜ್ಯ” ಕುಮಾಂ ೩-೭೪ । 2. ಪುಷ್ಪವಿಲ್ಲದೆ ಫಲಿಸುವ ವೃಕ್ಷ. “ವಾನಸ್ಪತಯ: ಫಲಂ: ಪುಷ್ಪಾತ್ ತೇರಪುಷ್ಪಾದ್ವನಸ್ಪತಿ:” ಅಮಂ । “ಅಪುಷ್ಪಾ: ಫಲವಂತೋ ಯೇ ತೇ ವನಸ್ಪತಯ: ಸ್ಮೃತಾ:” ಮನುಂ ೧-೪೭ ।



ವನಹರಿದ್ರಾ ವನಹರಿದ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡು ಅರಿಶಿನ.

ವನಸಂಜಾತಾ ಹರಿದ್ರಾ ।

ವನಾಶ್ರು ವನಾಶ್ರು (ಪುಂ) ಮೊಲ, ಶಶ. ವನಸ್ಯ ಆಶ್ರುಃ ।

ವನಾಯು ವನಾಯು (ಪುಂ) ಒಂದು ದೇಶ.

ವನಾಯುಜ ವನಾಯುಜ (ಪುಂ) ವನಾಯುದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಕುದುರೆ. ವನಾಯುಜೇ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುರ್ಭಾವಿ)

“ತಃ” (೩-೨-೧೭) ।

ವನಾರ್ಚಕ ವನಾರ್ಚಕ (ಪುಂ) ಹೂವಾಡಿದ, ಪುಷ್ಪ ಮಾಲೆ ಯನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. ವನಸ್ಯ ಅರ್ಚಕ ಇವ ।

ವನಾಶ್ರಮ ವನಾಶ್ರಮ (ಪುಂ) ವಾನಪ್ರಸ್ಥಾಶ್ರಮ, ಮೂರನೇ ಆಶ್ರಮ.

ವನಾಶ್ರಮಿನ್ ವನಾಶ್ರಮಿನ್ (ಪುಂ) ವಾನಪ್ರಸ್ಥಾಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಇರುವವನು. ವನಾಶ್ರಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪) ।

ವನಾಶ್ರಯ ವನಾಶ್ರಯ (ಪುಂ) 1. ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವವನು. 2. ದ್ರೋಣಕಾಕ, ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಕಾಗೆ.

ವನಿ ವನಿ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ. ವನ (ಸಂಭಕ್ತೌ) “ಇಃ” (೩ಂ ೪-೧೩೯) । 2. ಪ್ರಾರ್ಥನೆ, ಯಾಚನೆ, ಬೇಡಿಕೆ.

ವನು (ಯಾಚನೆ) “ಇನ್” (೩ಂ ೪-೧೧೮) ।

ವನಿಕಾ ವನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಿಕ್ಕ ಅರಣ್ಯ, ಸಣ್ಣ ಕಾಡು.

ವನಿತ ವನಿತ (ವಿಂ) 1. ಯಾಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೇಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವನು (ಯಾಚನೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಸೇವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಆರಾಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ವನಿತಾ ವನಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಹಿಳೆ, ಹೆಂಗಸು. ವನ್ಯತೇ—ವನ (ಸಂಭಕ್ತೌ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । “ಪೃಥು ನಿರಂತರಮಿಷ್ಟಭುಜಾಂತರಂ ವನಿತಯಾಽನಿತಯಾ ನ ವಿಘೇಹಿರೇ” ಮಾವಂ ೬-೬೦ । 2. ಅನುರಾಗವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. 3. ಪತ್ನಿ, ಹೆಂಡತಿ. “ವಸಿಷ್ಠಧೇನೋರನುಯಾಯಿನಂ ತಮಾವರ್ತಮಾನಂ ವನಿತಾ ವನಾಂತಾತ್” ರಘುಂ ೨-೧೯ ।

ವನಿನ್ ವನಿನ್ (ಪುಂ) ವಾನಪ್ರಸ್ಥಾಶ್ರಮ ಸ್ವೀಕರಿಸಿದವನು.

ವನೀ ವನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರಣ್ಯ, ಕಾಡು.

ವನೀಕ ವನೀಕ (ವಿಂ) ಯಾಚಿಸುವವನು, ಬೇಡುವವನು.

ವನೀಯಕ ವನೀಯಕ (ವಿಂ) ಯಾಚಕ, ಭಿಕ್ಷುಕ. ವನಿ ಯಾಚಾಮಿಚ್ಛತಿ — “ವ್ಯಕ್” (೩-೧-೮) । ವನೀಯ “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) । “ವನೀಯಕೋ ಯಾಚನಕೋ ಮಾರ್ಗಣೋ ಯಾಚಕಾರ್ಥಿನೋ” ಅಮಂ । “ವನೀಯಕಾನಾಂ ಸ ಹಿ ಕಲ್ಪಮೂಢಃ” ನೈಷಂ ೧೪-೬೦ ।

ವನೇಚರ ವನೇಚರ (ಪುಂ) ಕಿರಾತ, ಬೇಟೆಗಾರ. ವನೇ ಚರತಿ — ಚರ (ಗತೌ) “ಛಃ” (೩-೨-೧೬) । ಅಲುಕ್

(೬-೩-೧೪) । “ಸ ವರ್ಣಿಲಿಙ್ಗೀ ವಿವಿಧಃ ಸಮಾಯಯಿ ಯುಧಿಷ್ಟಿರಂ ದೈತವನೇ ವನೇಚರಃ” ಕಿರಾಂ ೧-೧ ।

ವನೀಕಸ್ ವನೀಕಸ್ (ಪುಂ) 1. ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವ ತಪಸ್ವಿ, ಋಷಿ. ವನಮ್ ಆಕೋ ಯಸ್ಯ । 2. ವಾನಪ್ರಸ್ಥ, ಮೂರನೇ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿರುವವನು. 3. ವಾನರ, ಕಪಿ.

“ವನೀಕಸಾಂ ಪತ್ಯುರಹೀಂದ್ರಶೋಭಿತಾ” ಯಾದಂ ೧೪-೪೬ ।

ವಂದಕ ವಂದಕ (ಪುಂ) 1. ಭಾರಂಗಿ. (ವಿಂ) 2. ನಮಸ್ಕರಿಸುವವನು.

ವಂದಯ ವಂದಯ (ಪುಂ) 1. ಹೊಗಳುವವನು, ಸ್ತೋತ್ರ ಮಾಡುವವನು. ವಂದತೇ ಸ್ತೋತಿ—ವದಿ (ಅಭಿವಾದನ-ಸ್ತುತೃಃ) “ಅಥಃ” (೩ಂ ೩-೧೧೩) । 2. ಹೊಗಳಿಸಿ ಕೊಳ್ಳಲು ಅರ್ಹನಾದವನು. ವಂದಯಃ ಸ್ತೋತಾ ಸ್ತುತೃಶ್ಚ ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ವಂದನ ವಂದನ (ನಂ) 1. ನಮಸ್ಕಾರ, ಪ್ರಣಾಮ. ವದಿ (ಅಭಿವಾದನಸ್ತುತೃಃ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) । 2. ಪೂಜಿಸುವುದು, ಆರಾಧಿಸುವುದು. ಇದು ಹದಿನಾರು ವಿಧ ಭಕ್ತಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. “ಆದ್ಯಂ ತು ವೇಣವಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಶಕ್ತಚಕ್ರಾಕ್ಷುಃ ಹರೇಃ । ಧಾರಣಂ ಚೋರ್ವಪುಷ್ಪಾಣಾಂ ತನ್ಮನ್ತ್ರಾಣಾಂ ಪರಿಗ್ರಹಃ ॥ ಅರ್ಚನಂ ಚ ಜಪೋ ವ್ಯಾನಂ ತನ್ನಾಮಸ್ಮರಣಂ ತಥಾ । ಕೀರ್ತನಂ ಶ್ರವಣಂ ಚೈವ ವಂದನಂ ಪಾದಸೇವನಮ್ ॥ ತತ್ಪಾದೋದಕ-ಸೇವಾ ಚ ತನ್ನಿವೇದಿತಭೋಜನಮ್ । ತದೀಯಾನಾಂ ಚ ಸಂಸೇವಾ ದ್ವಾದಶೀಭಿರನಿಷ್ಠತಾ ॥ ತುಲಸೀರೋಪಣಂ ವಿಷ್ಣೋರ್ದೇವದೇವಸ್ಯ ಶಾರ್ಙ್ಗಿಣಃ । ಭಕ್ತಿಃ ಷೋಡಶಭಿರಪ್ರೋಕ್ತಾ ಭವಬಂಧವಿಮುಕ್ತಯೇ” ॥ 3. ಹದಿನಾರು ವಿಧ ಪೂಜೋಪಚಾರಗಳಲ್ಲೊಂದು. (1) ಆಸನಮ್ (2) ಸ್ವಾಗತಮ್ (3) ಪಾಞ್ಚಮ್ (4) ಅರ್ಘ್ಯಮ್ (5) ಆಚಮನೀಯಮ್ (6) ಮಧುಪಕಂ (7) ಆಚಮನಮ್ (8) ಸ್ನಾನಮ್ (9) ವಸನಮ್ (10) ಆಭರಣಮ್ (11) ಗಂಧಃ (12) ಪುಷ್ಪಮ್ (13) ಧೂಪಃ (14) ದೀಪಃ (15) ನೈವೇದ್ಯಮ್ ಮತ್ತು (16) ವಂದನಮ್ ಇವು ಪೂಜೋಪಚಾರಗಳು.

ವಂದನಮಾಲಾ ವಂದನಮಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಳೆಕಂಬಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟಿ ಅಲ್ಲಿ ಹಾಕುವ ಮಾವಿನ ಎಲೆಯ ತೋರಣ. ವಂದನಾರ್ಥಿ ಮಾಲಾ । “ಕುರ್ಯಾದ್ವಂದನಮಾಲಾಂ ಯೋ ರಮಾಸ್ತಸ್ಮಿಃ ಸುಶೋಭನಃ । ಚೂತವೃಕ್ಷೋದ್ಭವಃ ಪತ್ರೈರ್ಜಗೀರೇ ಚಕ್ರಪಾಣಿನಃ । ಯುಗಾನ್ ಪತ್ರಸಂಖ್ಯಾನಾಂ ಸ್ವರ್ಗೋ ತಸ್ಯೋತ್ಸವೋ ಭವೇತ್ । ಪೂಜ್ಯತೇ ವಾಸವಾಕ್ಷೇಶ್ಚ ಕ್ರೀಡತೇ ಚಾಪ್ಸರೋವೃತಃ” । —ಮಾಲಿಕಾ —ಮಾಲಿಕಾ.

ವಂದನಾ ವಂದನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ತುತಿ, ಹೊಗಳಿಕೆ. ವದಿ (ಅಭಿವಾದನಸ್ತುತೃಃ) “ಯುಕ್” (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೭) । 2. ಪೂಜೆ.



**ವನ್ದನಿ ವಂದನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಣಾಮ, ನಮಸ್ಕಾರ. 2. ಜೀವನೋಪಧ, ಬದುಕಿಸುವ ಔಷಧ. 3. ಯಾಚಿಸುವುದು, ಬೇಡುವುದು.

**ವನ್ದನೀಯ ವಂದನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ನಮಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ನಮಸ್ಕರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. 3. ಸ್ತುತಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹೊಗಳಲ್ಪಡುವ. 4. ಸ್ತುತಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. ವದಿ (ಅಭಿವಾದನಸ್ತುತಿಯೋ:) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) ।

**ವನ್ದನೀಯಾ ವಂದನೀಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋರೋಚನ.

**ವನ್ದಾ ವಂದಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬದನಿಕೆ ಗಿಡ, ಮರದ ಮೇಲೆ ಬೆಳೆಯುವ ಒಂದು ಬಳ್ಳಿ. ವಂದತೇ ವೃಕ್ಷಾಂತರಮ್ — ವದಿ (ಅಭಿವಾದನಸ್ತುತಿಯೋ:) "ಅವ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ಠಾಪ್" (೪-೧-೪) । 2. ಭಿಕ್ಷುಕಿ, ಭಿಕ್ಷೆಬೇಡುವ ಹೆಂಗಸು. "ವನ್ದಾ ಲತಾಂತರೇ ಸ್ಮೃತಾ । ಭಿಕ್ಷುಕ್ಯಾಮಪಿ" ಮೇದಿಂ ।

**ವನ್ದಾಕ ವಂದಾಕ** (ಪುಂ) ಬದನಿಕೆ ಗಿಡ. ವನ್ದಾಕಾ ವಂದಾಕಾ, ವನ್ದಾಕೀ ವಂದಾಕೀ.

**ವನ್ದಾರ ವಂದಾರ** (ವಿಂ) ನಮಸ್ಕರಿಸುವವನು. ವದಿ (ಅಭಿವಾದನಸ್ತುತಿಯೋ:) "ಆಹ:" (೩-೨-೧೭೩) । "ವನ್ದಾರ-ರಭಿವಾದಕ:" ಅಮಂ ।

**ವಂದಿ ವಂದಿ** (ಪುಂ) 1. ಸ್ತುತಿಪಾಠಕ. 2. ಸೆರೆಯಾಳು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಹೊಗಳಿಕೆ, ಸ್ತೋತ್ರ.

**ವಂದಿಗ್ರಾಹ ವಂದಿಗ್ರಾಹ** (ಪುಂ) ಚೋರ, ಕಳ್ಳ, ಡಕಾಯಿತ. ವಂದಿಮಿವ ಗೃಹ್ಣಾತಿ—ಗ್ರಹ(ಉಪಾದಾನೇ) "ಞ:" (೩-೧-೧೪೩) । "ವಂದಿಗ್ರಾಹಾನ್ ತಥಾ ವಾಜಿಕುಂಜರಾಣಾಂ ಚ ಹಾರಿಣಃ । ಅಸಹ್ಯವಾತಿನಶ್ಚೈವ ಶೂಲಾನಾರೋಪಯೇನ್ನರಾನ್" ।

**ವಂದಿಚೋರ ವಂದಿಚೋರ** (ಪುಂ) ಡಕಾಯಿತ, ಕಳ್ಳ, ಮನೆ ಯಲ್ಲಿರುವವನನ್ನು ಸೆರೆಹಿಡಿದು (ಕಟ್ಟಿಹಾಕಿ) ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ದೋಚಿಕೊಳ್ಳುವವನು. ವಂದಿಮಿವ ಕೃತ್ವಾ ಚೋರಃ ।

**ವಂದಿನ್ ವಂದಿನ್** (ಪುಂ) ಹೊಗಳುವವನು, ಸ್ತುತಿಸುವವನು, ಹೊಗಳುಭಟ. ವಂದತೇ ಸ್ತುತಿ—ವದಿ (ಅಭಿವಾದನ-ಸ್ತುತಿಯೋ:) "ಞಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) । "ಪರಿಕಲ್ಪಿತ-ಸಾಂನಿಧ್ಯಾ ಕಾಲೇ ಕಾಲೇ ಚ ವಂದಿಷು । ಸ್ತುತ್ಯಂ ಸ್ತುತಿಭಿ-ರರ್ಥ್ಯಾಭಿರೂಪತಸ್ಯೇ ಸರಸ್ವತೀ" ರಘುಂ ೪-೬ ।

**ವಂದಿಪಾಠ ವಂದಿಪಾಠ** (ಪುಂ) ಸ್ತೋತ್ರಗ್ರಂಥ. ವಂದಿ: ಸ್ತೋತ್ರಂ ತಸ್ಯ ಪಾಠೋಽವ ।

**ವಂದಿ ವಂದಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ತೋತ್ರ, ಹೊಗಳಿಕೆ. ವಂದಿ—ವಾ "ಜಿಪ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫) ।

**ವನ್ದ ವಂದ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ನಮಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ನಮಸ್ಕರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. ವದಿ (ಅಭಿವಾದನಸ್ತುತಿಯೋ:) "ಞ್ಯತ್"

(೩-೧-೧೨೪) । "ಲಕ್ಷ್ಮೀಶ್ವರಪ್ರಣತಿಭಿಃ ಸ್ತುತಂ ತದ್ವನ್ದಂ ಯುಗಂ ಚರಣಯೋರ್ಜನಕಾತ್ಮಜಾಯಾ:" ರಘುಂ ೧೩-೭೮ । 3. ಸ್ತುತಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹೊಗಳಲ್ಪಡುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಛಾ —ಢ್ಯಾ. 4. ಗೋರೋಚನ.

**ವನ್ದ ವಂದ್ಯ** (ನಂ) 1. ಕಲ್ಯಾಣ, ಶುಭ. ವನ್ದತೇ ಸ್ತುತೇ—ವದಿ (ಅಭಿವಾದನಸ್ತುತಿಯೋ:) "ರಕ್" (೩ಂ ೨-೧೩) । (ವಿಂ) 2. ಪೂಜಿಸುವವನು.

**ವನ್ದ್ಯ ವಂದ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಫಲಿಸದ ವೃಕ್ಷ, ಫಲಬಿಡದ ಮರ. ಬನ್ಧೇ ಸಾಧು: "ಯತ್" (೪-೪-೯೮) । ವಬಯೋರಭೇದಃ । "ಸಿಕ್ತಂ ಸ್ವಯಮಿವ ಸ್ನೇಹಾದ್ವನ್ದ್ಯಮಾಶ್ರಮವೃಕ್ಷಕಮ್" ರಘುಂ ೧-೭೦ । 2. ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ, ಫಲವಿಲ್ಲದ, ವೃಥಾ ವಾದ. "ವನ್ದ್ಯಾಶ್ರಮಾಸ್ತೇ ಸರಯು ವಿಗಾಹ್ಯ ತಮುಚುರ್ಮಲಾನಮುಖ-ಪ್ರಸಾದಾ:" ರಘುಂ ೧೬-೭೫ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಛಾ —ಢ್ಯಾ. 3. ಗೊಡ್ಡು ಹೆಂಗಸು, ಬಂಜೆ ಹೆಂಗಸು, ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಹಡೆಯದ ಹೆಂಗಸು. 4. ಕರುಹಾಕದಿರುವ ಹಸು, ಬಂಜೆ ಹಸು.

**ವನ್ಯ ವನ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಹಂದಿಗಡ್ಡೆ, ಮಾರಾಹೀಕಂದ. 2. ಕಾಡುಪ್ರಾಣಿ. ವನೇ ಭವ: "ಯತ್" । 3. ಕರಿಯ ನೆಲಗುಂಬಳ. (ನಂ) 4. ಲವಂಗಪಟ್ಟಿ. 5. ಕೊನ್ನಾರಿಯ ಒಂದು ಭೇದ. 6. ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಗೆಡ್ಡೆ ಗೆಣಸು. "ರಾಮೋಽಪಿ ಸಹ ವೇದೇಹ್ಯಾ ವನೇ ವನ್ಯೇನ ವರ್ತಯನ್" ರಘುಂ ೧೨-೨೦ । (ವಿಂ) 7. ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. "ವನ್ಯೇಭಮಸ್ತಕನಿಷ್ಠಾತನಖಾಘ್ರಮುಕ್ತಮುಕ್ತಾಫಲಪ್ರಕರಮಾಜ್ಞಿ ಗುಹಾಗುಹಾಣಿ" ಮಾಘಂ ೫-೧೨ ।

**ವನ್ಯಾ ವನ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅರಣ್ಯಗಳ ಸಮೂಹ, ದಟ್ಟ ವಾದ ಕಾಡು. ವನಾನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಯ:" (೪-೨-೪೯) । 2. ಜಲಪ್ರವಾಹ. "ವನ್ಯಂ ತ್ರಿಘ್ನ ವನೋಢ್ಢತೇ ಸ್ತ್ರೀ ವನಾಮ್ಬು-ಸಮೂಹಯೋ:" ಮೇದಿಂ ।

**ವನ್ ವನ್** (ಪುಂ) ಭಾಗವನ್ನು ಪಡೆಯುವವನು, ಪಾಲುದಾರ. ವನ (ಸಂಭವತೀ) "ರನ್" (೩ಂ ೨-೨೮) । "ವನ್ ವಿಭಾಗೀ" ಸಿಂ ಕೌಂ ।

**ವಪತ್ ವಪತ್** (ವಿಂ) 1. ಬೀಜವನ್ನು ಬಿತ್ತುತ್ತಿರುವವನು. ಡು ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಕ್ಷೌರ ಮಾಡುತ್ತಿರುವವನು. 3. ಬಟ್ಟೆ ನೇಯುತ್ತಿರುವವನು. "ಶಾನತ್" (೩-೨-೧೨೪) । —ಮಾನ: —ಮಾನಃ.

**ವಪನ ವಪನ** (ನಂ) 1. ಬೀಜ ಬಿತ್ತುವುದು. 2. ಕ್ಷೌರ ಮಾಡುವುದು. ಡು ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನೇ) । ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) । "ವಪನಂ ಬೀಜಾಧಾನೇ ಚ ಮುಢನೇ" ಮೇದಿಂ ।



वसत् वसु० (वि०) 1. वा०तिमा०डु०त्ति०रु०व०. ६ वसु  
(उ०गि०रणे) "शत" (३-२-१२४)। 2. ह०र०ग०



ಬಿಡುತ್ತಿರುವ, ಹೊರಗೆ ಹೊರಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ  
“ಜಿಪ್” (೪-೧-೬) । ವಮಂತಿ ವಮಂತೀ.

ವಮಶ್ಚ ವಮಂಥಂ (ಪುಂ) 1. ಪಾಂತಿ. ಟುವಮು (ಉದ್ಗಿರಣಂ)  
“ಅಶ್ಚು” (೩-೩-೮೯) । 2. ಅನೆಯ ಸೊಂಡಿಲಿನಿಂದ  
ಹೊರಟ ಜಲ. “ರಜನಿವಮಶ್ಚಪ್ರಾಲೇಯಾಃ ಕಣಸಮತೇ:”  
ನೈಷಂ ೧೯-೬ ।

ವಮನ ವಮನ (ನಂ) 1. ಪಾಂತಿ, ಛದ್ವನ. ಟುವಮು  
(ಉದ್ಗಿರಣಂ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) । “ಮಧುರಾಮ್ಲಿ  
ರಸೌ ವಾಪಿ ವಮನಾಯ ಪ್ರದಾಪಯೇತ್” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ।  
2. ಹೊರಕ್ಕೆ ತೆಗೆಯುವುದು, ಹೊರಗೆ ಬರಮಾಡುವುದು.  
“ಸ್ವರ್ಗಾಭಿಷ್ಯಂದವಮನಂ ಕೃತ್ವೇವೋಪನಿವೇಶಿತಮ್” ಕುಮಾಂ  
೬-೩೭ । (ಪುಂ) 3. ಸಣಬಿನ ಗಿಡ.

ವಮನೀಯ ವಮನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಪಾಂತಿಮಾಡಲ್ಪಡುವ.  
2. ಪಾಂತಿಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ಪಾಂತಿಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ. ಟುವಮು (ಉದ್ಗಿರಣಂ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) ।  
ಟುವಮು + ಣಿವ್ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । ವಮನೀಯಃ,  
ವಾಮನೀಯಃ ವಮನೀಯಃ, ವಾಮನೀಯಃ. 4. ಪಾಂತಿ  
ಮಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಪಾಂತಿ ಮಾಡಿಸಬೇಕಾದ. 6.  
ಪಾಂತಿಮಾಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬) ।  
ಣಿಜಭಾವೇ ವಮಿತವ್ಯಃ ವಮಿತವ್ಯಃ. ಣಿಚಿ ವಮಯಿತವ್ಯಃ,  
ವಾಮಯಿತವ್ಯಃ ವಮಯಿತವ್ಯಃ, ವಾಮಯಿತವ್ಯಃ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
ವಮನೀಯಾ ವಮನೀಯಾ ಮಕ್ಷಿಕ, ನೋಣ.

ವಮನಿ ವಮನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿಗಣೆ, ಜಲಾಕೆ.

ವಮಿ ವಮಿ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ವಮತಿ — ಟುವಮು  
(ಉದ್ಗಿರಣಂ) “ಇಕ್” (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮) । 2. ಧೂರ್ತ,  
ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಪಾಂತಿ. ಟುವಮು  
“ಇನ್” (ಉಂ ೪-೧-೧೭) । “ಆಮಲಕ್ಯಾ ರಸೇನಾಶ್ಚ ಘೃಣಂ  
ಚಂದನಕಂ ಮಧುಃ ಗುಡಿಕಾಮಲಮಾನೇನ ಲೇಹೋ ಹಂತಿ ವಮಿ ಧ್ರುವಮ್” ।

ವಮಿತ ವಮಿತ (ವಿಂ) 1. ಪಾಂತಿಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಟುವಮು  
(ಉದ್ಗಿರಣಂ) + ಣಿವ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । ವಾ  
ಮಿತ್ವಮ್ । ಮಿತ್ವಾಭಾವೇ ವಾಮಿತಃ ವಾಮಿತಃ. (ನಂ) 2.  
ಪಾಂತಿಮಾಡಿಸುವುದು. ವಮು + ಣಿವ್ ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ”  
(೩-೩-೧೧೪) ।

ವಮಿತವತ್ ವಮಿತವತ್ (ವಿಂ) ಪಾಂತಿಮಾಡಿಸಿದವನು.  
ಟುವಮು (ಉದ್ಗಿರಣಂ) “ಕ್ತವತುಃ” (೩-೨-೧೦೨) । ವಾ  
ಮಿತ್ವಮ್ । ವಾಮಿತವಾನ್ ವಾಮಿತವಾನ್.

ವಯತ್ ವಯತ್ (ವಿಂ) ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ನೇಯುತ್ತಿರುವ.  
ವೇ (ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರೀಯಾ

“ಜಿಪ್” (೪-೧-೬) । —ಂತಿ —ಂತೀ. “ಶಾನವ್”  
(೩-೨-೧೨೪) । ವಯಮಾನಃ ವಯಮಾನಃ.

ವಯನ ವಯನ (ನಂ) ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ನೇಯುವುದು. ವೇ  
(ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) ।

ವಯಸ್ ವಯಸ್ (ನಂ) 1. ಬಾಲ್ಯ ಕಾಮಾರ ಯೌವನ  
ಮೊದಲಾದ ಅವಸ್ಥೆ, ಜೀವಿತದ ಕಾಲ. ವಯತೇ — ವಯ  
(ಗತೌ) “ಅಸುನ್” (ಉಂ ೪-೧-೮೮) । “ವಯಸಿ ಶಿಶುತಾ  
ತದುತ್ತರೇ ಸುದೃಢಿ ಸ್ವಾಭಿವಿಧಿ ವಿಧಿಸುನಿ” ನೈಷಂ ೨-೩೦ ।  
2. ಯೌವನ, ಪ್ರಾಯ. 3. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. “ವಯಃ  
ಪಕ್ಷಿಣಿ ಬಾಲ್ಯಾದೌ ಯೌವನೇ ಚ ನಪುಂಸಕಮ್” ಮೇದಿಂ ।  
“ಆಲೋಕಶಬ್ದಂ ವಯಸಾಂ ವಿರಾವೇ” ರಘುಂ ೨-೯ । ವಯಸ್ಸು  
ಬಾಲ್ಯ ಮಧ್ಯ ಮತ್ತೂ ವೃದ್ಧಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ.  
[ವಿವರಕ್ಕೆ “ಮಧ್ಯ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] “ತುಲ್ಯಶೀಲ-  
ವಯೋವೃತ್ತಾಂ ತುಲ್ಯಾಭಿಜನಲಕ್ಷಣಾಮ್ । ರಾಘವೋಽಹಂತಿ ವೇದೇಹಿ  
ತಂ ಚಯಮಸಿತೇಕ್ಷಣಾಮ್” ರಾಮಾಂ ।

ವಯಸ್ಥ ವಯಸ್ಥ (ವಿಂ) ಪ್ರಾಯದವನು. ವಯಸಿ  
ಯೌವನೇ ತಿಷ್ಠತಿ—ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) “ಕಃ” (೩-೨-೪) ।  
“ಪಿತ್ರಾ ಪುತ್ರೋ ವಯಸ್ಥೋಽಪಿ ಸತತಂ ವಾಚ್ಯ ಏವ ತು” ಭಾಂ  
ಆದಿಂ ೪೨-೪ ।

ವಯಸ್ಥಾ ವಯಸ್ಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೆಲ್ಲಿಮರ. 2. ಅಳಲೆ  
ಗಿಡ. 3. ಹೊನ್ನಗೊನೆಸೊಪ್ಪು. 4. ಕಾಕೋಳಿಸೊಪ್ಪು.  
5. ಸಣ್ಣ ಯಾಲಕ್ಕಿ. “ವಯಸ್ಥಾ ತು ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಿ-  
ಗುಡ್ಯಾಮಲಕೀಭು ಚ । ಸೂಕ್ಷ್ಮಲಾಢ್ಯಾಂ ಚ ಕಾಕೋಲ್ಯಾಮ್”  
ಮೇದಿಂ ।

ವಯಸ್ಯ ವಯಸ್ಯ (ಪುಂ) ಮಿತ್ರ, ಗೆಲೆಯ, ಸಮಾನ ವಯಸ್ಸು  
ನವನು. ವಯಸಾ ತುಲ್ಯಃ — ವಯಸ್ “ಯತ್” (೪-೪-೯೧) ।  
“ದ್ರುತಪದಮಿತಿ ಮಾ ವಯಸ್ಯ ಯಾಸಿಃ ತನು ಸುತನುಂ ಪರಿಪಾಲಯಾ-  
ನುಯಾಂತಿಮ್” ಮಾಘಂ ೭-೧೨ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಸ್ಯಾ —ಸ್ಯಾ.  
ಗೆಲೆತಿ, ಸಖಿ.

ವಯುನ ವಯುನ (ಪುಂ) 1. ದೇವಾಲಯ. ವೀಯತೇ ಗಮ್ಯತೇಽತ್ರ  
ಅಜ (ಗತೀಕ್ಷೇಪಣಯೋಃ) “ಉನ್” ವೀಭಾವಃ ಗುಣಃ ಅಪಾದೇಶಃ  
(ಉಂ ೩-೬೦) । “ವಯುನಂ ದೇವಮಂದಿರಮ್” ಸಿಂ ಕೌಂ ।  
2. ಜ್ಞಾನ. ವೀಯತೇ ಪ್ರಾಪ್ಯತೇ ಗಮ್ಯತೇ ವಿಷಯೋನೇನ ।  
“ಹಸ್ತಾಘ್ರಾಹ್ಯೇ ರಚಯತಿ ವಿಧಿ ಪಿಠಕೋಲ್ಮುಖಲಾಢ್ಯೇಽಛಿದ್ರಂ ಹಸ್ತ-  
ನಿಹಿತವಯುನಃ ಶಿಕ್ಷ್ಯಭಾಂಡೇಷು ತದ್ವಿತ್” ಭಾಗಂ ೧೦-೮-೩೦ ।

ವಯೋಧಸ್ ವಯೋಧಸ್ (ಪುಂ) ಯುವಕ, ತರುಣ.  
ಪ್ರಾಯದವನು. ವಯಃ ಯೌವನಂ ದಧಾತಿ — ವಯಸ್ + ಧಾ  
“ಅಸಿಃ” (ಉಂ ೪-೨೨೮) । ವಯೋಧಾಸ್ತರಣಃ ಸಿಂ ಕೌಂ ।



**ವಯೋವಸ್ಥಾ ವಯೋಽವಸ್ಥಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೀವಮಾನದ ಕಾಲ, ಬಾಲ್ಯ, ಕೌಮಾರ ಯೌವನ ಮೊದಲಾದ ಅವಸ್ಥೆಗಳು. ವಯಸಃ ಅವಸ್ಥಾ । “ವಯೋವಸ್ಥಾ ತಸ್ಯಾಃ ಶೃಣುತು ಸುಹೃದೋ ಯತ್ರ ಮದನಃ ಪ್ರಗಲ್ಭವ್ಯಾಪಾರಶ್ಚರತಿ ಹೃದಿ ಮುಘಶ್ಚ ವಪುಷಿ” ಮಾಲತೀಂ ೯-೨೯ ।

**ವಯೋವೃದ್ಧ ವಯೋವೃದ್ಧ** (ವಿಂ) ಮುದುಕ, ಹೆಚ್ಚು ವಯಸ್ಸಾದವನು. ವಯಸಾ ವೃದ್ಧಃ ।

**ವರ ವರ** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆಗಳ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ಲಭಿಸುವ ಇಷ್ಟಾರ್ಥ, ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿ ಪಡೆಯುವ ಹಿತವಾದ ಇಷ್ಟಾರ್ಥ. ವೃನ್ (ವರಣೆ) “ಅಪ್” (೩-೩-೪೮) । 2. ಅಶ್ವಿಯು. “ಪ್ರಮುದಿತವರಪಕ್ಷಮೇಕತಸ್ತತ್ ಕ್ಷಿತಿಪತಿ-ಮಂಡಲಮನ್ಯತೋ ವಿತಾನಮ್” ರಘುಂ ೬-೮೬ । 3. ವರಣ, ಆಯ್ಕೆ. 4. ವಿಟ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿ. (ವಿಂ) 5. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ. “ರಥಾಕ್ಷಮತ್ಸಂಭಿನವಂ ವರಾಯ” ಮಾಘಂ ೩-೩೬ । (ನಂ) 6. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. “ವರೋ ಜಾಮಾತರೀ ವೃತೌ ದೇವತಾದೇರಭಿಪ್ಸಿತೇ । ಪಿಚ್ಛೇ ಪುಂಸಿ ತ್ರಿವು ಶ್ರೇಷ್ಠೇ ಕುಚ್ಛುಮೇ ತು ನಪುಂಸಕಮ್” ಮೇದಿಂ । (ಅವ್ಯಂ) 7. ಶ್ರೇಷ್ಠ, ಉತ್ತಮ, ಒಳ್ಳೆಯದು. “ವರಂ ವಿರೋಧೋಪಿ ಸಮಂ ಮಹಾತ್ಮಮಿಃ” ಕಿರಾಂ ೧-೮ ।

**ವರಕ್ರತು ವರಕ್ರತು** (ಪುಂ) ದೇವೇಂದ್ರ. ವರಾಃ ಶ್ರೇಷ್ಠಾಃ ಕ್ರತವೋ ಯಸ್ಯ ।

**ವರಟ ವರಟ** (ಪುಂ) ಹಂಸಪಕ್ಷಿ. ವೃಣೋತಿ ಸೇವತೇ—ವೃಡ್ (ಸಂಭಕ್ತೌ) “ಅಟನ್” (೩ಂ ೪-೮೧) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಟಾ—ಟಾ. ಹೆಣ್ಣು ಹಂಸ. “ಮದೇಕಪುತ್ರಾ ಜನನಿ ಜರಾತುರಾ ನವಪ್ರಸುತಿರ್ವರಟಾ ತಪಸ್ವಿನಿ” ನೈಷಂ ೧-೧೩೫ ।

**ವರಟಾ ವರಟಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಣಜದ ಹಂಸ. ವೃಣೋತಿ—ವೃನ್ (ವರಣೆ) “ಅಟನ್” (೩ಂ ೪-೮೧) । “ಗಂಢೋಲಿ ವರಟಾ ದ್ವಯೋಃ” ಅಮಂ । 2. ಹೆಣ್ಣು ಹಂಸ.

**ವರಟಿ ವರಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ಹಂಸ. ವರಟ ಜಾತಿಂ “ಡೀಫ್” (೪-೧-೬೩) ।

**ವರಣ ವರಣ** (ಪುಂ) 1. ಕೋಟಿ, ಪ್ರಾಕಾರ. ವೃಣೋತಿ—ವೃನ್ (ವರಣೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೩) । 2. ವಲಸೆ ಗಿಡ. 3. ಉಷ್ಣ, ಒಂಟಿ. (ನಂ) 4. ಆಯ್ಕೆ, ಇಷ್ಟವಾದುದನ್ನು ಆರಿಸುವುದು. 5. ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ವರಿಸುವುದು, (ತನಗೆ) ಇಷ್ಟವಾದ ವಧುವನ್ನು ಆರಿಸುವುದು. ವೃನ್ (ವರಣೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । “ನ ಚ ವಿಪ್ರೇಶ್ವರೋ ವಿದ್ಯತೇ ವರಣಂ ಪ್ರತಿ । ಸ್ವಯಂವರಃ ಕನ್ಯಾಪ್ರಾಪ್ತಿಯಾಂ ಪ್ರಥಿತಾ ಶ್ರುತಿಃ” ಮಾಂ ಆದಿಂ ।

6. ಪ್ರಾರ್ಥಿಸುವುದು, ಬೇಡುವುದು. 7. ಸುತ್ತುವರಿಯುವುದು.

**ವರಣಮಾಲಾ ವರಣಮಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ವಿವಾಹಸಮಯದಲ್ಲಿ) ವಧುವರರು ಪರಸ್ಪರ ಹಾಕುವ ಪುಷ್ಪಮಾಲೆ. ವರಣಾರ್ಥಿ ಮಾಲಾ ।

**ವರಣೀಯ ವರಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಬೇಡಲ್ಪಡುವ, ಯಾಚಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಇಷ್ಟಾರ್ಥವನ್ನು ಯಾಚಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಯಾಚಿಸಬಹುದಾದ. 3. ಯಾಚಿಸಬೇಕಾದ, ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಬೇಕಾದ. ವೃನ್ (ವರಣೆ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । “ಪ್ರಥಮಾ ಚರನಾ ಚ ದೇವತಾ ತ್ವಂ ವರಣೀಯಾ ವರದಾ ಚ ವಿಶ್ವವಂದ್ಯಾ” ಯಾದಂ ೧೫-೨೧ । “ತವ್ಯಃ” । ವರಣೀಯಃ ವರಿತವ್ಯಃ.

**ವರಣಕ ವರಣಕ** (ಪುಂ) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. 2. ಮನೆಯ ಮುಖಮಂಟಪ, ದ್ವಾರಮಂಟಪ. 3. ಒಂದು ವಿಧ ಮುಖರೋಗ, ಮುಖದ ಮೇಲೆ ಏಳುವ ಗುಳ್ಳೆ. ವೃನ್ (ವರಣೆ) “ಅಂಡನ್” (೩ಂ ೧-೧೨೬) ।

**ವರಣಕ ವರಣಕ** (ಪುಂ) 1. ಆನೆಯ ಮೇಲೆ ಕೂಡಲು ಹಾಕುವ ಆಸನ. 2. ಮುಖದ ಮೇಲೆ ಏಳುವ ಗುಳ್ಳೆ. 3. ಗೋಡೆ. 4. ವರ್ತುಲ, ಗೋಳ. ವರಣಕ ಸಂಜಾಯಾಂ “ಕನ್” । 5. ದಿಬ್ಬ, ಭೂಮಿಯ ದಿಣ್ಣೆ. “ವರಣಕಸ್ತು ಮಾತೃಜೀವೇಷಾಂ ಯೌವನಕಂಡಕೇ । ವರ್ತುಲೇ” ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ) 6. ವಿಸ್ತಾರವಾದ. 7. ಭಯಗ್ರಸ್ತ. 8. ಕೃಪಣ, ದರಿದ್ರ, ಬಡವ.

**ವರಣಾ ವರಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚೂರಿ, ಕತ್ತಿ. 2. ದೀಪದ ಬತ್ತಿ. 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಪಕ್ಷಿ. “ವರಣಾ ಶಾರಿಕಾ-ವರ್ತಿಸಸ್ತ್ರಭೇದೇ ಚ ಯೋಷಿತಿ” ಮೇದಿಂ ।

**ವರಣಾಲು ವರಣಾಲು** (ಪುಂ) ಹರಳುಗಿಡ, ಏರಂಡವೃಕ್ಷ.

**ವರತ್ರಾ ವರತ್ರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತೋಲಿನ ಹಗ್ಗ. ತ್ರಿಯತೇಜೇನ—ವೃನ್ (ವರಣೆ) “ಅತ್ರನ್” (೩ಂ ೩-೧೦೭) । “ವಿತತ-ಪೃಥುರತ್ರಾತುಲ್ಯರೂಪಮೈಶ್ವರೈಃ ಕಲಶ ಇವ ಗರಿಯಾನ್ ದಿಗ್ಭಿ-ರಾಕೃಷ್ಯಮಾಣಃ” ಮಾಘಂ ೧೧-೪೪ । 2. ಆನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ.

**ವರತ್ವಚ ವರತ್ವಚ** (ಪುಂ) ನಿಂಬವೃಕ್ಷ.

**ವರದ ವರದ** (ವಿಂ) 1. ವರವನ್ನು ಕೊಡುವವನು, ಬೇಡಿದುದನ್ನು ಕೊಡುವವನು. ವರಂ ದದಾತಿ—ಕು ದಾನ್ (ದಾನೇ) “ಕಃ” (೩-೨-೩) । 2. ಶಾಂತಚಿತ್ತನಾದ. “ವರದಃ ಪುನಃ । ಪ್ರಸನ್ನೋ ಶಾಂತಚಿತ್ತೋ ಚ ವರದಾ ತು ಕುಮಾರಿಕಾ” ಹೇಮಂ । 3. ಪ್ರಸನ್ನನಾಗಿರುವ, ಸುಮುಖನಾಗಿರುವ.



“ವರದಾ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ | ಕನ್ಯಾयां वाच्यलिङ्गस्तु प्रसन्ने च समर्द्धके” मेदि० | “वरद वरदारोघोवृक्षैः सहावनतो रिपुः” माघ० ५-१ | “वरणीया वरदा च विश्ववन्द्या” याद० १५-२१ |

**ವರವಕ್ಷಿಣಾ ವರದಕ್ಷಿಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕನ್ಯೆಯ ತಂದೆಯು ವರನಿಗೆ ಬಹುಮಾನವಾಗಿ ಕೊಡುವ ಧನ. (ಈ ಅನಿಷ್ಟ ಪದ್ಧತಿಯು ಬಹಳ ಕಾಲದಿಂದಲೂ ಇದ್ದು ಈಗಲೂ ಕನ್ಯಾಪಿತನಿಗೆ ಬಹಳ ಆತಂಕಕರವಾಗಿದೆ.)

**ವರದಾ ವರದಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕನ್ಯೆ. 2. ಒಂದು ನದಿ. ವರದ “ದಾಪ್” (४-१-४) |

**ವರದಾತ್ ವರದಾತ್** (ವಿಂ) ಬೇಡಿದ ಇಷ್ಟಾರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವವನು. ವರಂ ದದಾತಿ—ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) “ತೃಚ್” (३-१-१३३) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್” (४-१-६) | -ವಾತ್ರಿ -ದಾತ್ರಿ.

**ವರದಾನ ವರದಾನ** (ನಂ) ವರವನ್ನು ಕೊಡುವುದು. ಇಷ್ಟ ವಾದ ಬೇಡಿಕೆಯನ್ನು ಪೂರೈಸುವುದು. ವರಸ್ಯ ದಾನಮ್ |

**ವರಪಕ್ಷ ವರಪಕ್ಷ** (ಪಂ) (ವಿವಾಹದಲ್ಲಿ) ವರನಕಡೆಯ ಬಾಧುಗಳು. ವರಸ್ಯ ಪಕ್ಷಃ | “प्रमुदितवरपक्षमेकतस्तत्-क्षितिपतिमण्डलमन्यतो वितानम्” रघु० ६-८६ |

**ವರಪ್ರದ ವರಪ್ರದ** (ವಿಂ) 1. ವರವನ್ನು ಕೊಡುವವನು. ವರಂ ಪ್ರದದಾತಿ—ದಾನ್ “ಕಃ” (३-२-३) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪ್ರದಾ -ಪ್ರದಾ. 2. ಅಗಸ್ತ್ಯ ಮಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿ ಲೋಪಾಮುದ್ರೆ.

**ವರಫಲ ವರಫಲ** (ಪಂ) ತೆಂಗಿನಮರ.

**ವರಯಾತ್ರಾ ವರಯಾತ್ರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವರನು ವಿವಾಹಕ್ಕಾಗಿ ಶುಭಮುಹೂರ್ತದಲ್ಲಿ ಕನ್ಯೆಯ ಮನೆಗೆ ಹೊರಟುಬರುವುದು. ಶುಭವಿವಾಹಕ್ಕಾಗಿ ವರನು ಪ್ರಯಾಣಮಾಡಿ ಹೊರಟುಬರುವುದು. ವರಸ್ಯ ವಿವಾಹಾರ್ಥ ಯಾತ್ರಾ |

**ವರಯಿತ್ ವರಯಿತ್** (ವಿಂ) 1. ಬೇಡುವವನು, ಯಾಚಿಸುವವನು. (ಪಂ) 2. ವಿವಾಹಕ್ಕಾಗಿ ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ವರಿಸುವವನು. ವರಯತೇ—ವೃನ್ (ವರಣೆ) + ಣಿಚ್ “ತೃಚ್” (३-१-१३३) |

**ವರರ ವರರ** (ವಿಂ) ವರವನ್ನು ಕೊಡುವವನು, ಬೇಡಿದ ಇಷ್ಟಾರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವವನು. ವರಾನ್ ರಾತಿ ದದಾತಿ—ರಾ (ದಾನೇ) “ಕಃ” (३-२-३) | “वररोऽविवरो वैरिविवारी वारिरारवः” माघ० १९-१०० |

**ವರಕಿ ವರಕಿ** (ಪಂ) ಒಬ್ಬ ದೊಡ್ಡ ಕವಿ, ಪ್ರಸಿದ್ಧ ನಾದ ಒಬ್ಬ ಮಹಾಕವಿ. ಈ ಕವಿಯು ವಿಕ್ರಮಾದಿತ್ಯ

ರಾಜನ ಆಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿದ್ದ ಒಂಬತ್ತು ಕವಿ (ನವರತ್ನ) ಗಳ ಲೋಬ್ಬ. “धन्वन्तरिः क्षपणकामरसिंहशङ्कुवेतालभट्ट-घटकपर्णकालिदासाः | ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य” | ಈ ಕವಿಯೇ ಪಾಣಿನಿಸೂತ್ರಗಳಿಗೆ ವಾರ್ತಿಕವನ್ನು ಬರೆದ ಕಾತ್ಯಾಯನ ರೆಂದು ಕೆಲವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

**ವರಲಕ್ಷ್ಮಿ ವರಲಕ್ಷ್ಮಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಭೀಷ್ಟವನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸುವ ಲಕ್ಷ್ಮಿ.

**ವರವತ್ಸಲಾ ವರವತ್ಸಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅತ್ಯ ಪತ್ನಿಯ ತಾಯಿ. ವರೇ ವತ್ಸಲಾ |

**ವರವರ್ಣಿನಿ ವರವರ್ಣಿನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠ ಹೆಂಗಸು, ಉತ್ತಮಸ್ತ್ರೀ. ವರಃ ವರ್ಣೋऽस्त्यस्याಃ “इतिः” (५-२-११५) | “ಜೀಪ್” (४-१-५) | “शीते सुखोष्ण-सर्वाङ्गी ग्रीष्मे या सुखशीतला | भतृभक्ता च या नारी सा भवेद्वरवर्णिनी” | 2. ಹರಿದ್ರೆ, ಅರಿಶಿನ. 3. ಗೋರೋಚನ. 4. ಲಾಕ್ಷ್ಮಿ, ಅರಗು. 5. ಪ್ರೇಂಕಣ ಗಿಡ. 6. ಕಟುಕರೋಹಿಣಿ. 7. ಹೆಂಗಸು. “वरवर्णिन्यङ्गना-लाक्षा प्रियङ्गुषु | रोचनायां हरिद्रायामथ स्यात् शकुलादनी | कट्वाम्” हेम० | 8. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. 9. ಸರಸ್ವತಿ. 10. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

**ವರಸಜ್ಜ ವರಸಜ್ಜ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿವಾಹಸಮಯದಲ್ಲಿ ವಧೂ ವರರು ಪರಸ್ಪರ ಹಾಕುವ ಹೂವಿನಮಾಲೆ.

**ವರಾ ವರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಮಲಕ. 2. ಅಳಲೆಕಾಯಿ. 3. ತಾರಕಾಯಿ. 4. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. 5. ಹೊನ್ನಗೊನೆ ಸೊಪ್ಪು. 6. ವಾಯಿವಿಳಂಗ. 7. ಅಗರುಶುಂಠಿ. 8. ಅರಿಸಿನ.

**ವರಾಕ ವರಾಕ** (ಪಂ) 1. ಯುದ್ಧ, ಕದನ. ವೃಡ್ (ಸಂಖ್ಯಾ) “षाकन्” (३-२-१५५) | 2. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. (ವಿಂ) 3. ಬಹಳ ಕಷ್ಟಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರುವವನು, ಅದೃಷ್ಟ ಹೀನ, ಶೋಚನೀಯ, ದೀನ. “तन्मया न युक्तं कृतं यत्स वराकः संमानेन वियोजितः” पञ्चत० १ | 4. ನೀಚ, ನಿಕ್ಕಷ್ಟ, ಅಧಮ. “यं कञ्चित्पुरुषाधमं कतिपयग्रामेशमल्पार्थं दं सेवार्थं मृगयामहे नरमहो मूका वराका वयम्” मु० मा० | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್” (४-१-५) | **ವರಾಕಿ ವರಾಕಿ**.

**ವರಾಕ್ಷ ವರಾಕ್ಷ** (ಪಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ವರಂ ದೇವಕಯಾ ಪ್ರಿಯಮಾಣಮ್ ಅಕ್ಷಮ್ ಆಪನಿಷದಮ್ ಅನಿಹ್ನುತ-ದಿಂಯಚಿಹ್ನುಮಾವಿಹ್ನುತಂ ರೂಪಮಸ್ಯ | “देवक्याः प्रीतये गुप्त-



ದಿವ್ಯಲಾಂಛನಮಂಗಲಮ್ । ಆವಿಷ್ಕೃತಂ ಸ್ವತಃ ಯೇನ ವರಾಹಃ :  
ಸ ತು ಕಥ್ಯತೇ " ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । " ಸುರ್ವರ್ಣವರ್ಣೋ ಹೇಮಾಂಜನೋ  
ವರಾಹಃ ಸ್ವಪ್ನದನಾಂಜನೋ " ವಿಂ ಸಂ । 2. ಗಜ, ಅನೇ.  
(ನಂ) 3. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಅವಯವ. 4. ಲವಂಗಪಟ್ಟಿ.  
ದಾಲ್ಚಿನ್ನಿ. 5. ಯೋನಿ, ಸ್ತ್ರೀಯರ ಗುಹ್ಯಪ್ರದೇಶ.  
6. ಮಸ್ತಕ, ತಲೆ. "ವರಾಹಃ ಯೋನಿಮಾತೃಜ್ಞಮಸ್ತಕೇಷು  
ಗುಡತ್ವವಿ " ಮೇದಿಂ ।

ವರಾಹಕ ವರಾಂಗಕ (ನಂ) 1. ಲವಂಗಪಟ್ಟಿ, ದಾಲ್ಚಿನ್ನಿ.  
ವರಮಂಗಲಮ್ । " ಕಪ್ " । (ವಿಂ) 2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ  
ಅವಯವಗಳುಳ್ಳವನು.

ವರಾಹನಾ ವರಾಂಗನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಅವಯವ  
ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹೆಂಗಸು. ವರಾ ಶ್ರೇಷ್ಠಾ ಅಂಜನಾ ।

ವರಾಹಿನ್ ವರಾಂಗಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಹುಳಿಹಟ್ಟಿ. (ವಿಂ)  
2. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಅವಯವಗಳುಳ್ಳವನು. ವರಾಣಿ ಶ್ರೇಷ್ಠಾ-  
ನ್ಯಜ್ಞಾನಿ ಯಸ್ಯ " ಇತಿ: " (೪-೨-೧೧೪) ।

ವರಾಹೋ ವರಾಂಗೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹರಿದ್ರ. ಅರಿಶಿನ. ವರಮಂಜ-  
ಮಂತರಾವಯವೋಪಾಸ್ಯಾ: ।

ವರಾಟ ವರಾಟಿ (ಪುಂ) 1. ಕವಡೆ. 2. ರಜ್ಜು, ಹಗ್ಗ.  
ವರಮತಿ—ಅಟ (ಗತೌ) " ಅಣ್ " (೩-೨-೧) ।

ವರಾಟಕ ವರಾಟಕ (ಪುಂ) 1. ಕವಡೆ. ವರಮತಿ — ಅಟ  
(ಗತೌ) " ಕ್ವುನ್ " (೩ಂ ೨-೩೨) । " ಪ್ರಾಪ್ತಃ ಕಾಣವರಾ-  
ಟಕೋಽಪಿ ನ ಮಯಾ ತೃಣೇ ಸಕಾಮಾ ಭವ " ಭರ್ತೃಂ ೩-೩ ।  
2. ತಾವರಕಾಯಿ. 3. ರಜ್ಜು, ಹಗ್ಗ. ವರಾಟ ಸಂಜ್ಞಾयां  
" ಕನ್ " (೪-೩-೭೪) । " ವರಾಟಕಃ ಪದ್ಮಬೀಜಕೋಶೇ ರಜ್ಜೌ  
ಕಪದಂಕೇ " ಮೇದಿಂ ।

ವರಾಟಿಕಾ ವರಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕವಡೆ. ವರಾಟ ಸಂಜ್ಞಾयां  
" ಕನ್ " (೪-೩-೭೪) । " ಟಾಪ್ " (೪-೧-೪) । " ಬಹುಕಮ್ಬು-  
ಮಣಿವರಾಟಿಕಾಗಣನಾಟಕರಕರ್ದೋತಕರ: " ನೈಷಂ ೨-೮೭ ।

ವರಾಣ ವರಾಣ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ತ್ರಿಯತೇ—ವೃಡ್ (ಸಂಭಕ್ತೌ)  
" ಯುಕ್ " ಪೃಷೋಂ ।

ವರಾರಕ ವರಾರಕ (ನಂ) ವಜ್ರ. ವರಂ ಶ್ರೇಷ್ಠಂ ಧನಿನಂ  
ಋಣ್ಣತಿ — ಋ (ಗತೌ) " ಷ್ವಲ್ " (೩-೧-೧೩೩) ।

ವರಾರೋಹ ವರಾರೋಹ (ಪುಂ) 1. ಮೊವಟಗ. ವರ:  
ಆರೋಹೋ ಯಸ್ಮಿನ್ । 2. ಇಳಿಯುವುದು. " ವರಾರೋಹಸ್ತು  
ಕಥಿತೋ ಹಸ್ತಾರೋಹಾವರೋಹಯೋ: " ವಿಶ್ವಂ ।

ವರಾರೋಹಾ ವರಾರೋಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರೂಪಲಾವಣ್ಯಾದಿ  
ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಉತ್ತಮ ಹೆಂಗಸು. ವರ: ಆರೋಹೋ  
ನಿತಮ್ಬೋ ಯಸ್ಯಾ: । " ಕಾಮಂ ಕುರು ವರಾರೋಹೇ ದೇಹಿ ಮೇ

ಪರಿಸಂಭವಮ್ " ಮಾಲತೀಂ ೬-೧೧ । 2. ಸ್ತ್ರೀಯರ ನಿಲಂಬ  
ಪ್ರದೇಶ. " ವರಾರೋಹೋ ಗಜಾರೋಹೇ ವರಾರೋಹಾ ಕಡಾವಪಿ "   
ಹೇಮಂ ।

ವರಾಶಿ ವರಾಶಿ (ಪುಂ) ದಪ್ಪ ಬಟ್ಟಿ. " ವರಾಶಿ: ಸ್ಥೂಲ-  
ಶಾಟಕ: " ಅಮಂ ।

ವರಾಸನ ವರಾಸನ (ಪುಂ) 1. ಎಟಪುರುಷ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ,  
ವೈಭಿಚಾರಿ. ವರಾಂ ಸ್ವಾಂ ವನಿತಾಮ್ ಅಸ್ಯತಿ ಪರಿಸಂಭವತಿ —  
ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೇ) " ಲ್ಯು: " (೩-೧-೧೩೪) । 2. ದ್ವಾರ  
ಮಾಲಕ. ವರಾನ್ ಶ್ರೇಷ್ಠಾನ್ ಜನಾನ್ ಅಸ್ಯತಿ ನಿಷ್ಕಾಸಯತಿ—  
ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೇ) " ಲ್ಯು: " । (ನಂ) 3. ಉತ್ತಮವಾದ  
ಆಸನ. 4. ದಾಸಿವಾಳದ ಹೂವು.

ವರಾಸಿ ವರಾಸಿ (ಪುಂ) 1. ದಪ್ಪಬಟ್ಟಿ. 2. ಖಡ್ಗವನ್ನು  
ಧರಿಸಿರುವವನು. ವರಾಸಿ: ಯಸ್ಯ ।

ವರಾಹ ವರಾಹ (ಪುಂ) 1. ಸೂಕರ, ಹಂದಿ. ವರಾನ್ ಆಹಂತಿ  
— ಆ + ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತೃಯೋ: ) " ಙ: " (೩-೨-೧೦೧) ।  
" ವಿಸ್ತೃತಂ ಕ್ರಿಯತಾಂ ವರಾಹತತಿಮಿ: ಮುಸ್ತಾಕ್ಷತಿ: ಪಲ್ವಲೇ "   
ಶಾಕುಂ ೨-೬ । 2. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಒಂದು ಅವತಾರ.   
ಪ್ರಳಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ಭೂಮಿಯು ಸಮುದ್ರದೊಳಗೆ  
ಮುಳುಗಿಹೋಗಲಾಗಿ ಪ್ರಜೆಗಳೆಲ್ಲರಿಗೂ ಆಶ್ರಯವಿಲ್ಲ  
ದಂತಾಗಲು ಬ್ರಹ್ಮನು ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು ಧ್ಯಾನಿಸತೊಡಗಿ  
ದನು. ಧ್ಯಾನದಲ್ಲಿದ್ದ ಬ್ರಹ್ಮನ ನಾಸಾರಂಧ್ರದಿಂದ ಒಂದು  
ವರಾಹಶಿಶುವು ಅವಿರ್ಭವಿಸಿ ಹೊರಗೆಬಂದು ಒಂದು  
ಕ್ಷಣಕಾಲದಲ್ಲಿ ಗಜದಂತೆ ಬೆಳೆದು ಬೃಹದ್ರೂಪವನ್ನು  
ತಾಳಿತು. ಆಗ ಚತುರ್ಮುಖನು ಪರಮಾತ್ಮನೆಂದು ತಿಳಿದು  
ಆ ವರಾಹವನ್ನು ಸ್ತುತಿಸಿದನು. ಆ ವರಾಹಮೂರ್ತಿ  
ಯಾದ ಮಹಾವಿಷ್ಣುವು ಪ್ರಳಯಾರ್ಣವದ ಮಧ್ಯೆ  
ಮುಳುಗಿ ಭೂಮಿಯನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ತನ್ನ ಶಕ್ತಿ  
ಯಿಂದ ಜಲದ ಮೇಲೆ ನಿಲ್ಲಿಸಿ ಅಂತರ್ಧಾನಹೊಂದಿದನು.  
" ಪರಮೇಷ್ಠಿ ತ್ವಯಾಂ ಮಯೇ ತಥಾ ಸನ್ಮಾಮೇಕ್ಷ್ಯ ಗಾಮ್ । ಕಥಮೇನಾಂ  
ಸಮುಚ್ಛೇಷ್ಯ ಇತಿ ದಯಾ ದಿಯಾ ಚಿರಮ್ । ಸೃಜತೋ ಮೇ ಕ್ಷಿತಿರ್ವಿಭಿ:   
ಪ್ಲಾವ್ಯಮಾನಾ ರಸಾಂ ಗತಾ । ಅಥಾತ್ರ ಕಿಮನುಷ್ಠೇಯಮಸ್ಮಾಭಿ:   
ಸರ್ಗಯೋಜಿತೈ: । ಇತ್ಯಭಿಧ್ಯಾಯತೋ ನಾಸಾವಿವರಾಹಸಹಸಾನಘ ।   
ವರಾಹತೋಕೋ ನಿರಗಾದಹ್ನುಗುಣಪರಿಮಾಣಕ: ॥ ತಸ್ಯಾಭಿಪ್ರಯತ:   
ಸ್ವಸ್ಥ: ಕ್ಷಣೇನ ಕಿಲ ಭಾರತ । ಗಜಮಾತ್ರ: ಪ್ರವವೃಧೇ ತದ್ಭೂತ-   
ಮಭೂನ್ಮಹತ್ " ॥ " ಸ ಇತ್ಯಂ ಭಗವಾನುರ್ವಿ ವಿಶ್ವಕಸೇನ:   
ಪ್ರಜಾಪತಿ: । ರಸಾಯಾ ಲೀಲಯೋಗೀತಾಮಪ್ಸು ನ್ಯಸ್ಯ ಯೌ ಹಿರ: "   
ಭಾಗಂ ೩-೧೩ । 3. ಒಂದು ಅಳತೆ. 4. ಒಂದು ಪರ್ವತ.   
5. ಮುಸ್ಸೆ, ಕೊನ್ನಾರಿ. " ವರಾಹ: ಸೂಕರೇ ವಿಷ್ಣು ಮಾನಭೇದ-   
ದ್ರಿಮುಸ್ತಯೋ: " ಮೇದಿಂ । 6. ಒಂದು ನಾಣ್ಯ. 7. ಮೇಘ,



ಮೋಡ. "ವರಾಹೋ ನಾಣಕೇ ಕಿರೋ. ಮೇಘೇ ಮುಸ್ತೌ ಗಿರೋ ವಿಷ್ಣೋ" ಹೇಮಂ.

ವರಾಹಕವ ವರಾಹಕವಂ (ಪುಂ) ಹಂದಿಗಡ್ಡೆ. ವರಾಹಪ್ರಿಯ: ಕವದ:.

ವರಾಹಕವ ವರಾಹಕವಂ (ಪುಂ) ಚತುರ್ಮುಖ ಬ್ರಹ್ಮನ ಮೂವತ್ತು ಕಲ್ಪಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ಶ್ವೇತವರಾಹಕವಂ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಕವ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಈ ಕಲ್ಪದಲ್ಲಿ ವರಾಹಾವತಾರವಾದುದು.

ವರಾಹಮಿಹಿರ ವರಾಹಮಿಹಿರಂ (ಪುಂ) ಬೃಹತ್ಸಂಹಿತೆಯನ್ನು ರಚಿಸಿದ ವರಾಹಮಿಹಿರಾಚಾರ್ಯರು. ಇವರು ಪ್ರಸಿದ್ಧರಾದ ದೈವಜ್ಞರು. ಇವರು ವಿಕ್ರಮಾದಿತ್ಯರಾಜನ ಆಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿದ್ದ ನವರತ್ನಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬರೆಂದು ಪ್ರತೀತಿ. "ಖ್ಯಾತೋ ವರಾಹಮಿಹಿರೋ ನೃಪತೇ: ಸಮಾಘಾಂ ರತ್ನಾನಿ ವೈ ವರಾಹಚಿರ್ಮವಿಕ್ರಮಸ್ಯ" |

ವರಿವಸಿತ ವರಿವಸಿತಂ (ವಿಂ) 1. ಉಪಾಸನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಶುಶ್ರೂಷಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸೇವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವರಿವಸ್ "ವ್ಯವ್" (3-1-19). "ಕ್ತ:" (3-2-102). ವಾ ಯಲೋಪ: (6-4-40). ಪಕ್ಷೇ ವರಿವಸಿತ: ವರಿವಸಿತಃ.

ವರಿವಸ್ಯಾ ವರಿವಸ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶುಶ್ರೂಷೆ, ಸೇವೆ. 2. ಪೂಜೆ, ಗೌರವಿಸುವುದು, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ಕಾಣುವುದು. ವರಿವಸ್ "ವ್ಯವ್" (3-1-19). "ಅ:" (3-3-102). "ಅಯಜಂತ ಪುರಾ ಯಮೇಕಮಾಚಂ ವರಿವಸ್ಯಾಮಿಹ ತಸ್ಯ ವಾರಯೇತ್ಕ:" ಯಾದಂ 15-65.

ವರಿಷ ವರಿಷಂ (ಪುಂ) ವರ್ಷ, ಸಂವತ್ಸರ. "ವರ್ಷ: ಸ್ವಾತ್ ವರಿಷೋಽಪಿ ಚ" | "ವರ್ಷಾ: ಸ್ಯುವರಿಷಾಭಿಷ್ವ" ಶಬ್ದ ಭೇದಪ್ರಕಾಶ: |

ವರಿಷ್ಠ ವರಿಷ್ಠಂ (ಪುಂ) 1. ತಿತ್ತಿರಿ ಪಕ್ಷಿ. (ನಂ) 2. ತಾಮ್ರಲೋಹ. 3. ಮೆಣಸು. (ವಿಂ) 4. ಎಲ್ಲರಿಗಿಂತಲೂ ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ. 5. ಎಲ್ಲಕ್ಕಿಂತಲೂ ದೊಡ್ಡದಾದ. ಅಯಮೇತೇಷಾಮತಿಶಯೇನ ಉಃ — ಉಃ "ಱ್ಠನ್" (4-3-44). ವರ್ ಆದೇಶ: (6-4-147). "ಸ್ಯಾಱ್ಠರಿಷ್ಠಸ್ತು ತಿತ್ತಿರೀ | ವರಿಷ್ಠಂ ಮರಿಚೇ ತಾಮ್ರೇ ವರೋಽತಮಯೋಸ್ತ್ರಿಷು" ಹೇಮಂ |

ವರೀ ವರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶತಾವರಿ ಗಿಡ. ವೃಣೋತಿ ಗಂಧೇನೆಂದ್ರಿಯಮ್ — ವೃ (ವರಣೇ) "ಅವ್" (3-1-134). ಗೌರಾಂ "ಱಿಪ್" (4-1-41). "ಅಮೋಱಿವರೀ ವರೀ" ಅಮಂ. 2. ಛಾಯಾದೇವಿ, ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ. "ಛಾಯಾ ಸ್ವಾತ್ಪತೀಮಂದಜನನೀ ಭೂಮಯೀ ವರೀ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ :

ವರೀಯಸ್ ವರೀಯಸ್ (ವಿಂ) 1. ಎರಡರಲ್ಲಿ ಉತ್ತಮವಾದ ಒಂದು, ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ಒಬ್ಬ. ಅಯಮನಯೋರತಿಶಯೇನ ವರ: — ವರ "ಱಿಸುನ್" (4-3-47). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಱಿಪ್" (4-1-41). —ಯಸೀ —ಯಸೀ. 2. ವಿಷ್ಣುಂಭಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ಯೋಗಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಈ ಯೋಗದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು ಫಲ. ಒಳ್ಳೆಯ ದಾನಶೀಲ. ದಯಾಳು. ಒಳ್ಳೆಯ ವೇಷಭೂಷಣವುಳ್ಳವನು. ಸತ್ಕಾರ್ಯ ನಿರತನು. ಹಿತವಾದ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳವನು. ಬಲಶಾಲಿ. ಧನಿಕ. ಜನಬಲವುಳ್ಳವನು. ಯೋಗಿ. "ದಾತಾ ದಯಾಲು: ಸುತರಾಂ ಸುವೇಶ: ಸತ್ಕಾರ್ಯಕರ್ತಾ ಮಧುರಸ್ವಭಾವ: | ನರೋ ಬಲೀಯಾನ್ ಧನವಾನ್ ಜನಾಡಯ: ಯೋಗಿ ವರೀಯಾನ್ ಯದಿ ಜನ್ಮಕಾಲೇ" |

ವರೀವದ ವರೀವದಂ (ಪುಂ) ಬಲೀವದಂ, ಎತ್ತು, ಹೋರಿ.

ವರೀಷ ವರೀಷಂ (ಪುಂ) ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ.

ವರುಡ ವರುಡಂ (ಪುಂ) ನಿಮ್ಮವರ್ಗದವನು.

ವರುಣ ವರುಣಂ (ಪುಂ) 1. ಜಲಾಧಿದೇವತೆ, ನೀರಿನ ಅಧಿಪತಿ. ವೃಣೋತಿ — ವೃ (ವರಣೇ) "ಱನ್" (3-3-43). ವರುಣನು ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕಿನ ಅಧಿಪತಿಯಾದುದರಿಂದ ಅಷ್ಟದಿಕ್ಪಾಲಕರಲ್ಲೊಬ್ಬ. "ಅತಿಸಕ್ತಿಮೇತ್ಯ ವರುಣಸ್ಯ ದಿಶಾ ಮೃಗಮನ್ವರಜ್ಯದತುಷಾರಕರ:" ಮಾಘಂ 9-6. 2. ವಲಸೆ ಗಿಡ. 3. ಜಲ, ನೀರು. 4. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ, ದ್ವಾದಶ ಆದಿತ್ಯರಲ್ಲೊಬ್ಬ. "ವರುಣೋಽಂಕುಷತೀ ವೃಕ್ಷೇ" ಹೇಮಂ. "ವರುಣಸ್ತರಭೇದೇಽಸು ಪಶ್ಚಿಮಾಶಾಪತಾವಪಿ" ಮೇದಿಂ. 5. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಸಕಲ ಜಗತ್ತನ್ನೂ ಆವರಿಸಿಕೊಂಡಿರುವುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ವರುಣ. "ಯ: ಸ್ಥಿತ: ಸರ್ವಮಾವೃತ್ಯ ವರುಣ: ಸ ತು ಕಥ್ಯತೇ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: | "ವರುಣೋ ವಾರುಣೋ ವೃಕ್ಷ:" ವಿಂ ಸಂ |

ವರುಣದೇವತ ವರುಣದೈವತಂ (ನಂ) ಶತಭಿಷಕ್ ನಕ್ಷತ್ರ.

ವರುಣಾತ್ಮಜಾ ವರುಣಾತ್ಮಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. ವರುಣಾತ್ಮಜಾ |

ವರುಣಾನಿ ವರುಣಾನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವರುಣನ ಪತ್ನಿ. ವರುಣಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ — ವರುಣ ಆನುಕ್ "ಱಿಪ್" ಚ (4-1-49).

ವರುತ್ರ ವರುತ್ರಂ (ನಂ) ಹೊದೆಯುವ ವಸ್ತ್ರ. ವೃಣೋತಿ — ವೃ (ವರಣೇ) "ಱನ್" (3-3-43).

ವರುಥ ವರುಥಂ (ಪುಂ) 1. ರಥವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವ ಚರ್ಮದ ಪೊದಿಕೆ. (ನಂ) 2. ಚರ್ಮ. 3. ಗೃಹ, ಮನೆ. 4. ಕವಚ, ಆಂಗಿ. ತ್ರಿಯತೇಜೇನ — ವೃ (ವರಣೇ) "ಱನ್" (3-2-6). "ವರುಥೋ ರಥಗುಪ್ತೀ ಸ್ವಾತ್ ವರುಥಂ ಚರ್ಮವೇಶಮನೋ:" ಮೇದಿಂ. 5. ಸೈನ್ಯ. "ತೇಜೀಕಪಾ ರಥಗುಪ್ತೇ-



ರಹಿತವು ಸರ್ವೆ ದ್ವಂದ್ವ ವಹುತಮಿಹಪತ್ತಿರತಾಶ್ರಯೋಃ" ಭಾಗಂ  
೯-೧೦-೨೦ |

ವಹುತನ್ ವರೂಢಿನ್ (ವಿಂ) ರಥವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವ  
ಚರ್ಮದ ಹೊದಿಕೆಯುಳ್ಳ. ವಹುತ: ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇತಿ:"  
(೪-೨-೧೧೫) | "ಅವನಿಮೇಕರಯೇನ ವಹುತಿನಾ ಜಿತವಂತ:  
ಕಿಲ ತಸ್ಯ ಧನುರ್ಮತ:" ರಘುಂ ೯-೧೧ |

ವಹುತಿನಿ ವರೂಢಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೈನ್ಯ. ವಹುತಂ ತನುತ್ರಾದಿಕ-  
ಮಸ್ಯಸ್ಯ "ಇತಿ:" (೪-೨-೧೧೫) | "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) |  
"ಚಿವಿಲಶುಭೃಷತಯಾ ವಹುತಿನಿಮುತದಾ ಇವ ನದೀರಯಾ:  
ಸ್ಥಲೀಮ್" ರಘುಂ ೧೧-೫೮ |

ವರೇಣ್ಯ ವರೇಣ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ, ಉತ್ಕೃಷ್ಟ  
ನಾದ, ಸರ್ವೋತ್ತಮನಾದ. ವೃಜ್ (ವರಣ) "ಆಪ್ತ:"  
(೩ಂ ೩-೯೮) | "ಅಮಂಸ ಕರ್ಣಾಪಿತವಾಹುಪಾಶಾಂ ವಿಧರ್ಮ-  
ರಾಜಾವರಜಾಂ ವರೇಣ್ಯ:" ರಘುಂ ೭-೮೪ | 2. ಅಪೇಕ್ಷಣೀಯ  
ನಾದ, ಇಷ್ಟನಾದ. "ಅನೇನ ಚೇದಿಚ್ಛಸಿ ಗೃಹ್ಯಮಾಣಂ ಪಾಣಿ  
ವರೇಣ್ಯೇನ ಕುಹ ಪ್ರವೇಶೇ" ರಘುಂ ೬-೨೪ | 3. ಪ್ರಧಾನ,  
ಮುಖ್ಯ. "ಸಂತರ್ಪಣೋ ನಾಕಸದಾಂ ವರೇಣ್ಯ:" ಭೃಗುಂ ೧-೪ |  
(ನಂ) 4. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ.

ವರೋಟ ವರೋಟಿ (ಪುಂ) ಮರುಗ.

ವರ್ಕರ ವರ್ಕರ (ಪುಂ) 1. ಕುರಿಮರಿ. 2. ಅಡಿನ ಮರಿ.  
ವೃಕಯತೆ—ವೃಕ (ಆದಾನೆ) "ಅರ:" ಬಾಹುಂ | 3. ಪರಿಹಾಸ್ಯ,  
ವಿನೋದದ ಮಾತು. 4. ಯುವಪಶು, ಯಾವುದಾದರೂ  
ಪಶುಪ್ರಾಣಿಯ ಮರಿ. 5. ಛಾಗ, ಮೇಕೆ, ಆಡು. "ವರ್ಕರ:  
ಪರಿಹಾಸೇ ಸ್ವಾಚ್ಛಾಗೇ ಯುವಪಶಾವಪಿ" ಮೇದಿಂ |

ವರ್ಕರಾಟ ವರ್ಕರಾಟಿ (ಪುಂ) 1. ಕಟಾಕ್ಷ, ಕಡಗಣ್ಣಿನ  
ನೋಟ. 2. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಪಯೋಧರ ಮತ್ತು ಉರು  
ಪ್ರದೇಶಗಳಲ್ಲಿ ಆಗಿರುವ ದನ್ತಕ್ಷತ ನವಿಕ್ಷತಗಳು. "ವರ್ಕರಾಟ:  
ಕಟಾಕ್ಷೇ ಸ್ವಾತ್ತರಣಾದಿತ್ಯರೋಚಿಷಿ | ನಾರೀಪಯೋಧರೋತ್ಸಂ-  
ಕಾಂತದಂತನಲಕ್ಷತೇ" ಮೇದಿಂ | 3. ಉದಯಿಸಿ ಮೇಲಕ್ಕೆ  
ಬರುತ್ತಿರುವ ಸೂರ್ಯನ ಕಿರಣ.

ವರ್ಗ ವರ್ಗ (ಪುಂ) 1. ಸಮಾನಜಾತಿಯ ಮೃಗಗಳ ಮತ್ತು  
ಸಮಾನಧರ್ಮವುಳ್ಳ ಮನುಷ್ಯರ ಸಮೂಹ. ವೃಜಯತೆ—  
ವೃಜಿ (ವರ್ಜನೆ) "ವಜ್" (೩-೩-೧೯) | "ವ್ರತಾಯ ತೇನಾನ್ಯು-  
ಚರೇಣ ಧನೋರ್ಯಥೇಧಿ ಶೇಖೋಽನ್ಯನುಯಾಯಿವರ್ಗ:" ರಘುಂ ೨-೪ |  
2. ಒಂದು ಗುಂಪು, ಒಂದು ಪಕ್ಷ, ಒಂದು ಮಂಡಲ.  
"ವರ್ಗಾವಿಮೌ ದೇವಮಹಿಧರಾಣಾಮ್" ಕುಮಾರಂ ೭-೫೩ | 3.  
ಒಂದು ವಿಭಾಗ. 4. ಭಿನ್ನವಸ್ತುಗಳು ಸೇರಿದ ಒಂದು  
ಗುಂಪು. ತ್ರಿವರ್ಗ; ತ್ರಯಾಣಾಂ ಧರ್ಮಕಾಮಾರ್ಥಿನಾಂ ವರ್ಗ: ಸಮೂಹ: |

ವರ್ಗಮೂಲ ವರ್ಗಮೂಲ (ನಂ) ಸಮಾನವಾದ ಎರಡು  
ಸಂಖ್ಯೆಗಳನ್ನು ಗುಣಿಸಿ ಬಂದ ಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಮೂಲ ಸಂಖ್ಯೆಯು  
ವರ್ಗಮೂಲ,

4 x 4 = 16 ಈ ಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಮೂಲ 4  
9 x 9 = 81 ಈ ಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಮೂಲ 9  
15 x 15 = 225 ಈ ಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಮೂಲ 15  
16ಕ್ಕೆ ವರ್ಗಮೂಲ 4  
81ಕ್ಕೆ ವರ್ಗಮೂಲ 9  
225ಕ್ಕೆ ವರ್ಗಮೂಲ 15 ಎಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕು.

ವರ್ಗಶಸ್ ವರ್ಗಶಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಗುಂಪುಗುಂಪಾಗಿ.  
2. ವರ್ಗಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ. ವರ್ಗ "ಶಸ್" (೪-೪-೪೨) |

ವರ್ಗೀಯ ವರ್ಗೀಯ (ವಿಂ) ವರ್ಗಗಳಿಗೆ ಸೇರಿದ (ವ್ಯಂಜನ)  
ವರ್ಣಗಳು, ಕವರ್ಗ ಚವರ್ಗ ಮೊದಲಾದ ವರ್ಗಗಳಿಗೆ  
ಸೇರಿದ ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳು. ಕವರ್ಗ ಮೊದಲಾಗಿ ಪ್ರತಿ  
ಯೊಂದು ವರ್ಗದಲ್ಲಿಯೂ ಇರುವ ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳು.  
ಕಾದಿ ಪಂಚ ಚಾದಿ ಪಂಚ ಟಾದಿ ಪಂಚ ತಾದಿ ಪಂಚ  
ಮತ್ತು ಪಾದಿ ಪಂಚ ವರ್ಣಗಳು ವರ್ಗೀಯವ್ಯಂಜನಾ  
ಕ್ಷರಗಳು.

ವರ್ಗ್ಯ ವರ್ಗ್ಯ (ವಿಂ) ಒಂದೇ ಗುಂಪಿಗೆ ಸೇರಿದವನು,  
ಒಂದು ಗುಂಪಿನಲ್ಲಿರುವವನು. ವರ್ಗ ಭವ: — ವರ್ಗ "ಯತ್"  
(೪-೩-೫೪) | "ತಾವದ್ಭೂಮಿಕಾಸ್ತಥೈವ ಭಾವೇನ ಸರ್ವೆ ವರ್ಗ್ಯಾ:  
ಪಾಠಿತಾ:" ಮಾಲತೀಂ ೧ |

ವರ್ಚಸ್ ವರ್ಚಸ್ (ನಂ) 1. ತೇಜಸ್ಸು. ವರ್ಚ (ದೀಪ್ತ) |  
"ಅಸುನ್" (೩ಂ ೪-೧೮೯) | 2. ರೂಪ, ಆಕಾರ.  
3. ವಿಷ್ಣು, ಮಲ, ಅಮೇಧ್ಯ. "ವರ್ಚೋ ಮುಚ್ಛತ್ಯಲ್ಪಮಲ್ಪಂ  
ಸರ್ಪತಂ ರೂಪಂ ಕ್ಷಯಾಂ ಸಾನಿಲಂ ಮಾರುತೇನ" ಸುಶ್ರುತಂ ೩-೨೨೦ |  
(ಪುಂ) 4. ಚಂದ್ರನ ಮಗ. "ವರ್ಚೋ ನಪುಂಸಕಂ ರೂಪೇ  
ವಿಷ್ಣಾಯಾಮಪಿ ತೇಜಸಿ | ಪುಂಸಿ ಚಂದ್ರಸ್ಯ ತನಯೇ" ಮೇದಿಂ |  
"ರೋಹಿಣ್ಯಾಮಭವದ್ವರ್ಚಾ ವರ್ಚಸ್ವೀ ಯೇನ ಚಂದ್ರಮಾ:" |

ವರ್ಚಸ್ಕ ವರ್ಚಸ್ಕ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಮಲ, ಪುರೀಷ.  
ವರ್ಚಸ್ ಕುತಸಾಯಾಂ "ಕನ್" (೪-೩-೭೪) | 2. ದೀಪ್ತಿ,  
ಪ್ರಕಾಶ. 3. ವೀರ್ಯ, ಶಕ್ತಿ.

ವರ್ಚಸ್ವಿನ್ ವರ್ಚಸ್ವಿನ್ (ವಿಂ) 1. ತೇಜಃಶಾಲಿಯಾದ  
ವನು. 2. ಶಕ್ತಿಸಂಪನ್ನನಾದವನು. 3. ಪ್ರಕಾಶಮಾನ  
ವಾದ, ಹೊಳೆಯುವ. ವರ್ಚೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ—ವರ್ಚಸ್ "ವಿನಿ:"  
(೪-೨-೧೨೧) | (ಪುಂ) 4. ಚಂದ್ರ.

ವರ್ಜಕ ವರ್ಜಕ (ವಿಂ) ತ್ಯಜಿಸುವವನು, ಬಿಡುವವನು.  
ವೃಜಿ (ವರ್ಜನೆ) + ಣಿಕ್ "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |



**ವರ್ಜನ ವರ್ಜನ** (ನಂ) 1. ತ್ಯಜಿಸುವುದು, ಬಿಟ್ಟುಬಿಡುವುದು, ತೊರೆದುಬಿಡುವುದು. ವೃಜಿ (ವರ್ಜನೆ) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) 2. ಹಿಂಸಿಸುವುದು. "ವರ್ಜನಂ ತ್ಯಾಗಹಿಸಯೋಃ" ಹೇಮಂ 1.

**ವರ್ಜನೀಯ ವರ್ಜನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಬಹಿಷ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ. ತೊರೆಯಲ್ಪಡುವ. ವೃಜಿ (ವರ್ಜನೆ) + ಣಿच् "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) 2. ಬಹಿಷ್ಕರಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಬಹಿಷ್ಕರಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. "ತಥ್ಯಃ" 1. ವರ್ಜಿತವ್ಯಃ ವರ್ಜಿತವ್ಯಃ 1. 4. ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ತ್ಯಜಿಸಬೇಕಾದ. 6. ತ್ಯಜಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ.

**ವರ್ಜಯತ್ ವರ್ಜಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಬಿಟ್ಟುಬಿಡುತ್ತಿರುವ, ಬಹಿಷ್ಕರಿಸುತ್ತಿರುವ. ವೃಜಿ (ವರ್ಜನೆ) + ಣಿच् "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) 2. ತ್ಯಜಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೫) 1. -ಯಂತಿ -ಯಂತಿಃ. "ವರ್ಜಯಂತ್ಯಾ ಜನಃ ಸಂಜ್ಞಮೇಕಾಂತತಃ" ಮಾಘಂ ೪-೪೨ 1.

**ವರ್ಜಿತ ವರ್ಜಿತ** (ವಿಂ) ಬಹಿಷ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವೃಜಿ (ವರ್ಜನೆ) + ಣಿच् "ಕತಃ" (೩-೨-೧೦೨) 1.

**ವರ್ಜ್ಯ ವರ್ಜ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಬಿಡಲ್ಪಡುವ, ತೊರೆಯಲ್ಪಡುವ, ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಡುವ. ವೃಜಿ (ವರ್ಜನೆ) + ಣಿच् "ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) 2. ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಡುವ, ಬಹಿಷ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ.

**ವರ್ಣ ವರ್ಣ** (ಪುಂ) 1. ಬಣ್ಣ. ವರ್ಣ (ವರ್ಣಕ್ರಿಯಾಯಾಮ್) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) 1. "ಕೃತ್ವಾ ತಾಸಾಮಭಿಗಮಮಪಾಂ ಸೌಮ್ಯ ಸಾರಸ್ವತೀನಾಮಂತಃ ಶುಭಸ್ತವಮಪಿ ಭವಿತಾ ವರ್ಣಮಾತ್ರೇಣ ಕೃಷ್ಣಃ" ಮೇಘಂ ೧-೪೯ 1. 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಮೊದಲಾದ ಜಾತಿ. ವರ್ಣತಃ ಪ್ರೇಯತಃ-ವರ್ಣ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೯) 1. "ಚಾತುರ್ವರ್ಣ್ಯಂ ಮಯಾ ಸೃಷ್ಟಂ ಗುಣಕರ್ಮವಿಭಾಗಶಃ" (ಗೀತಾ ೪-೧೩) ಎಂಬ ಗೀತಾಚಾರ್ಯನ ಸೂಕ್ತಿಯಂತೆ ಸತ್ತಾದಿ ಗುಣ ಮತ್ತು ಕರ್ಮಗಳ ವಿಭಾಗದ ಮೇಲೆ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ವೈಶ್ಯ ಮತ್ತು ಶೂದ್ರ ಎಂಬ ನಾಲ್ಕು ವರ್ಣ (ಜಾತಿ) ಗಳು ಏರ್ಪಟ್ಟುವು. ಶಮಃ (ಬ್ರಾಹ್ಮೇಂದ್ರಿಯನಿಯಮನ) ದಮಃ (ಅಂತರಿಂದ್ರಿಯ ನಿಯಮನ) ತಪಃ (ಸೌಖ್ಯದಲ್ಲಿ ಅಪೇಕ್ಷೆಯನ್ನು ತೊರೆದು ಶಾಸ್ತ್ರಸಿದ್ಧವಾದ ಕಾಯಕ್ಷೇಶ) ಶೌಚಮ್ (ಶಾಸ್ತ್ರವಿಹಿತ ಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನಯೋಗ್ಯತೆ) ಜ್ಞಾನಿಃ (ಇತರಿಂದ ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟರೂ ಚಿತ್ತವಿಕಾರ ಹೊಂದದಿರುವುದು) ಆರ್ಜವಮ್ (ಕಪಟವಿಲ್ಲದೆ ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿರುವಂತೆಯೇ ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ) ಜ್ಞಾನಮ್ (ಪರಾವರತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನ) ವಿಜ್ಞಾನಮ್ (ಪರತತ್ತ್ವ ಗತವಾದ ಅಸಾಧಾರಣ ವಿಶೇಷಜ್ಞಾನ) ಆಸ್ತಿಕ್ಯಮ್

(ವೇದಾರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ದೃಢವಾದ ನಂಬಿಕೆ) ಇವೆಲ್ಲವೂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ಸ್ವಭಾವಸಿದ್ಧವಾದ ಕರ್ಮಗಳು. "ಶಮೋ ದಮಸ್ತಪಃ ಶೌಚಂ ಜ್ಞಾನಿರಾರ್ಜವಮೇವ ಚ 1 ಜ್ಞಾನಂ ವಿಜ್ಞಾನಮಾಸ್ತಿಕ್ಯಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ಕರ್ಮ ಸ್ವಭಾವಜಮ್" ಗೀತಾ ೧೮-೪೨ 1.

ಶೌರ್ಮ (ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಭಯವಿಲ್ಲದೆ ಪ್ರವೇಶಿಸುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) ತೇಜಃ (ಇತರಿಂದ ಪರಾಭವಗೊಳ್ಳದಿರುವುದು) ಧೃತಿಃ (ಧೈರ್ಯ) ದಾಕ್ಷಿಣ್ಯಮ್ (ಎಲ್ಲಾ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನೂ ಸಾಧಿಸುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) ಯುಧೇ ಅಪಲಾಯನಮ್ (ಯುದ್ಧಕ್ಷೇತ್ರದಿಂದ ಹಿಜರಿಯದಿರುವುದು) ದಾನಮ್ (ಕೊಡುಗೆ) ಕ್ಷೇಮರಭಾವಃ (ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಒಂದು ಅಂಕಿಯಲ್ಲಿಡುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಗೆ ಇವೆಲ್ಲವೂ ಸ್ವಭಾವಸಿದ್ಧ ಕರ್ಮಗಳು. "ಶೌರ್ಮ ತೇಜೋ ಧೃತಿರ್ದಾಕ್ಷಿಣ್ಯಂ ಯುಧೇ ಚಾಪ್ಯಪಲಾಯನಮ್ 1 ದಾನಮೀಶ್ವರಭಾವಶ್ಚ ಜ್ಞಾನಂ ಕರ್ಮ ಸ್ವಭಾವಜಮ್" ಗೀತಾ ೧೮-೪೩ 1.

ಕೃಷಿಃ (ಭೂಮಿಯನ್ನು ಉತ್ತು ಬೆಳೆಯುವುದು) ಗೋರಕ್ಯಮ್ (ಪಶುಪಾಲನೆ) ವಾಣಿಜ್ಯಮ್ (ಕ್ರಯ ವಿಕ್ರಯ ರೂಪವಾದ ವ್ಯಾಪಾರ) ಇವು ವೈಶ್ಯನ ಕರ್ಮಗಳು.

ಪರಿಚರ್ಯಾ (ಸೇವೆ) ಇದು ನಾಲ್ಕನೇ ವರ್ಣದವನಿಗೆ ಸ್ವಭಾವಸಿದ್ಧವಾದ ಕರ್ಮ. "ಕೃಷಿಗೋರಕ್ಯವಾಣಿಜ್ಯಂ ವೈಶ್ಯಂ ಕರ್ಮ ಸ್ವಭಾವಜಮ್ 1 ಪರಿಚರ್ಯಾತ್ಮಿಕಂ ಕರ್ಮ ಶೂದ್ರಸ್ಯಾಪಿ ಸ್ವಭಾವಜಮ್" ಗೀತಾ ೧೮-೪೪ 1. 3. ಅಕ್ಷರ, ಲಿಪಿ, ಅಕಾರ ಮೊದಲಾದ ವರ್ಣ. ವರ್ಣಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿಕ್ರಮಃ ಆತ್ಮನು ಬುದ್ಧಿಯೊಡನೆ ಸೇರಿ ಬಾಹ್ಯವಿಷಯಗಳ ಸಂಪರ್ಕ ಹೊಂದಿ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಮಾತನಾಡಲು ಪ್ರೇರಿಸುವನು. ಮನಸ್ಸು ಶರೀರದೊಳಗಿನ ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ತಟ್ಟುವುದು. ಆ ಅಗ್ನಿಯು ವಾಯುವನ್ನು ಪ್ರೇರಿಸುವುದು. ವಾಯುವು ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುತ್ತ ಕಂಠದ ಮೂಲಕ ಶಿರಸ್ಸಿನ ವರೆಗೂ ಹೋಗಿ ಅಲ್ಲಿಂದ ವಕ್ತ್ರವನ್ನು ಮುಟ್ಟಿ ವರ್ಣಗಳನ್ನು ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡುವುದು. "ಆತ್ಮಾ ಬುದ್ಧಿಶ್ಚ ಸಮೇತ್ಯಾ-ರ್ಥಾನ್ ಮನೋ ಯುಕ್ತೇ ವಿವಕ್ಷಯಾ 1 ಮನಃ ಕಾಯಾಗ್ನಿಮಾಹುಂತಿ ಸ ಪ್ರೇರಯತಿ ಮಾರುತಮ್ 1 ಸೋದಿಗಂ ಮೂರ್ಧ್ನಭಿಹತೋ ವಕ್ತ್ರಮಾಪದ ಮಾರುತಃ 1 ವರ್ಣಾನ್ ಜನಯತಃ ತೇಷಾಂ ವಿಭಾಗಃ ಪञ್ಚಘಾ ಮತಃ" ಪಾಂ ಶಿಂ 1. ವರ್ಣಗಳು ಹುಟ್ಟುವ ಸ್ಥಾನಗಳು :

| ವರ್ಣಗಳು               | ಸ್ಥಾನ  |
|-----------------------|--------|
| ಅ ಕವರ್ಗ ಹ ವಿಸರ್ಗಾಣಾಮ್ | ಕಂಠಃ   |
| ಇ ಚವರ್ಗ ಯಶಾಣಾಮ್       | ತಾಲುಃ  |
| ಋ ಟವರ್ಗ ರಣಾಣಾಮ್       | ಮೂರ್ಧಾ |
| ಌ ತವರ್ಗ ಲಸಾಣಾಮ್       | ದಂತಾಃ  |
| ಊ ಪವರ್ಗ ಉಪಧಮಾನೀಯಾಣಾಮ್ | ಒಂಟಿ   |



| ವರ್ಣಗಳು        | ಸ್ಥಾನ                            |
|----------------|----------------------------------|
| ವಕಾರಸ್ಯ        | ದಂತೋಷ್ಠಮ್                        |
| ಎದಂತೋ:         | ಕಂಠತಾಲು                          |
| ಓದಂತೋ:         | ಕಂಠೋಷ್ಠಮ್                        |
| ಜಿಹ್ವಾಮೂಲೀಯಸ್ಯ | ಜಿಹ್ವಾಮೂಲಮ್                      |
| ಅಮಙ್ಗನಾನಾಮ್    | {ನಾಸಿಕಾ ಸ್ವ<br>ಸ್ವವರ್ಗೀಯಸ್ಥಾನಂ ಚ |
| ಅನುಸ್ವಾರಸ್ಯ    | ನಾಸಿಕಾ                           |

“ವರ್ಣಃ ಕತಿಪಯೇವ ಪ್ರಥಿತಸ್ಯ ಸ್ವರೇರಿವ । ಅನಂತಾ  
ವಾಡ್ಮಯಸ್ಯಾಹೋ ಗೇಯಸ್ಯೇವ ವಿಚಿತ್ರತಾ” ಮಾಘಂ ೨-೭೨ ।  
4. ರೂಪ, ಆಕಾರ. 5. ಸ್ವರ, ಚಿಹ್ನೆ. 6. ಪ್ರಕೃತಿ.  
7. ಗುಣ. 8 ಭೇದ. 9. ಚಿತ್ರ. 10. ಯಶಸ್ಸು.  
“ರಾಜಾ ಪ್ರಜಾರಜ್ಜನಲಬ್ಧವರ್ಣಃ ಪರಂತಪೋ ನಾಮ ಯಾರ್ಯನಾಮಾ”  
ರಘುಂ ೬-೨೧ । 11. ಸ್ತುತಿ, ಹೊಗಳಿಕೆ. 12. ವಿಲೇಪನ,  
ಮೈಗೆ ವಾಸನಾದ್ರವ್ಯವನ್ನು ಪೂಸುವುದು. 13. ಸಂಗೀತದ  
ಒಂದು ತಾಳ. 14. ಅನೇಯ ಮೇಲೆ ಹಾಸುವ ರತ್ನಗುಂಬಳ.  
(ನಂ) 15. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. “ವರ್ಣಃ ಸ್ವರ್ಣಂ ವ್ರತೇ ಸ್ತುತೌ ।  
ರೂಪೇ ದ್ವಿಜಾದೌ ಶುಕ್ಲಾದೌ ಕುಠಾಯಾಮಕ್ಷರೇ ಗುಣೇ । ಭೇದೇ  
ಗೀತತ್ರಮೇ ಚಿತ್ರೇ ಯಶಸ್ತಾಲವಿಶೇಷಯೋಃ । ಅಙ್ಗರಾಗೇ ಚ ವರ್ಣ  
ತು ಕುಙ್ಕುಮೇ” ಹೇಮಂ ।

**ವರ್ಣಕ ವರ್ಣಕ** (ಪುಂ) 1. ನರ್ತನಕಾಲದಲ್ಲಿ ಹಾಕಿಕೊಳ್ಳುವ  
ಮುಖದ ಮುಸುಕು, ಮುಖಕಾಪು, ಮೊಗವಾಡ. ವರ್ಣಯತಿ  
ನೃತ್ಯಾದಿನ್ ವಿस्तಾರಯತಿ — ವರ್ಣ (ವರ್ಣಕ್ರಿಯಾವಿಸ್ತಾರಗುಣ-  
ವಚನೇಷು) “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) । 2. ಸ್ತುತಿಸುವವನು,  
ಹೊಗಳುವವನು. (ಪುಂ) 3. ಗಂಧ. 4. ವಿಲೇಪನ,  
ಬಣ್ಣಬಳಿಯುವುದು. 5. ಅಂಗರಂಗ. “ವರ್ಣಕಶ್ಚಾರಣೇಸ್ತ್ರೀ  
ತು ಚಂದನೇ ಚ ವೀಲೇಪನೇ” ಮೇದಿಂ । “ಅಪಿ ರಹಸಿ  
ಕೃತಾನಾಂ ವಾಗ್ವಿಹೀನೋಽಪಿ ಜಾತಃ ಸುರತವಿಲಸಿತಾನಾಂ ವರ್ಣಕೋ  
ವರ್ಣಕೋಽಸೌ” ಮಾಘಂ ೧೧-೨೯ । (ನಂ) 6. ಚಂದನ  
ಲೇಪನ, ಗಂಧಪೂಸುವುದು. 7. ಅರಿದಳ. 8. ವಲಯ,  
ಮಂಡಲ.

**ವರ್ಣಕೃಪಿಕಾ ವರ್ಣಕೂಪಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೌತಿ ಮಣೆ,  
ಮಸೀಕುಡಿಕೆಗಳನ್ನಡುವ ಮಣೆ. “ಮಾಸಿಧಾನಿ ಮಸಿ  
ಮಣಿಮೇಲಾನ್ಧುರ್ವರ್ಣಕೃಪಿಕಾ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ವರ್ಣಚಾರಕ ವರ್ಣಚಾರಕ** (ಪುಂ) ಚಿತ್ರಕಾರ, ಚಿತ್ರವನ್ನು  
ಬರೆಯುವವನು. ವರ್ಣಾನ್ ಚಾರಯತಿ ವಿस्तಾರಯತಿ — ಚರ  
(ಗತೌ) + ಣಿಕ್ “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) ।

**ವರ್ಣಜ್ಯೇಷ್ಠ ವರ್ಣಜ್ಯೇಷ್ಠ** (ಪುಂ) 1. ಎಪ್ರ, ಮೊದಲನೆಯ  
ವರ್ಣದವನು. ವರ್ಣಜ್ಯೇಷ್ಠಃ । “ವಕ್ತ್ರಜಸ್ತ್ವನಮೋ ವಿಪ್ರೋ

ವರ್ಣಜ್ಯೇಷ್ಠಃ ಕಠೋ ದ್ವಿಜಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 2. (ಜ್ಯೇಷ್ಠಿಷ  
ದಲ್ಲಿ) ಕರ್ಕಾಟಕ, ವೃಶ್ಚಿಕ ಮತ್ತು ಮೀನ ರಾಶಿಗಳು.  
“ಮೀನಕರ್ಕಟವೃಶ್ಚಿಕವಿಪ್ರಾಃ ಸಿಹತುಲಾಧನುಃ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಉಕ್ತಃ ।  
ಕುಘನರದ್ವಯಮೇವಿಶಃ ಸ್ಯುಃ ಮಕರವೃಷಸ್ತ್ರೀ ಕಥಿತಾವರ-  
ಜಾತಿಃ” ।

**ವರ್ಣತುಲಿ ವರ್ಣತೂಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲೇಖಿನಿ, ಬರೆಯುವ  
ಕಡ್ಡಿ. 2. ಕುಂಚ. ವರ್ಣಿನಾಂ ತುಲಿರಿವ । -ತುಲಿಕಾ  
-ತೂಲಿಕಾ, -ತೂಲಿ-ತೂಲೀ. “ಲೇಖಿನಿ ವರ್ಣತೂಲಿ ಸ್ಥಾತ್”  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ವರ್ಣದಾत्री ವರ್ಣದಾತ್ರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಂದ್ರೆ, ಅರಿಶಿನ.  
ವರ್ಣಸ್ಯ ದಾತ್ರಿ ।

**ವರ್ಣದ್ವಿತ ವರ್ಣದ್ವಿತ** (ಪುಂ) ಪತ್ರ, ಕಾಗದ. ವರ್ಣಿ ಎವ  
ದ್ವಿತಾ ಯತ್ರ । “ಲೇಖೋ ವಾಚಿಕಹಾರಕಃ । ವರ್ಣದ್ವಿತಃ ಸ್ವಸ್ತಿ-  
ಮುಖಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ವರ್ಣಧರ್ಮ ವರ್ಣಧರ್ಮ** (ಪುಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಮೊದಲಾದ  
ವರ್ಣದವನಿಗೆ ಉಕ್ತವಾದ ಧರ್ಮ (ಕರ್ಮ). ಬ್ರಾಹ್ಮಣ  
ನಿಗೆ ಯಜನ-ಯಾಜನ ಅಧ್ಯಯನ-ಅಧ್ಯಾಪನ ಮತ್ತು  
ದಾನ-ಪ್ರತಿಗ್ರಹ ಈ ಆರು ಕರ್ಮಗಳು. ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಮತ್ತು  
ವೈಶ್ಯನಿಗೆ ದಾನ ಅಧ್ಯಯನ ಯಜ್ಞ ಈ ಮೂರು ಕರ್ಮ  
ಗಳು. ತುರಿಯ ವರ್ಣದವನಿಗೆ ಪರಿಚರ್ಯೆಯು ಕರ್ಮ.

**ವರ್ಣನ ವರ್ಣನ** (ನಂ) 1. ಸ್ತುತಿಸುವುದು, ಹೊಗಳುವುದು.  
ವರ್ಣ (ಸ್ತುತೌ) “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೫) । 2. ಎವರಿಸಿ  
ಹೇಳುವುದು. “ಉತ್ಥಾಯ ಕೃಣ್ಣಗುಣವರ್ಣನಜಾತಮನ್ಯುಃ” ಭಾಗಂ  
೧೦-೭೪-೩೦ । 3. ಬಣ್ಣಹಾಕುವುದು. 4. ಬರೆಯು  
ವುದು. ವರ್ಣ + ಣಿಕ್ “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೦೭) । ವರ್ಣನಾ  
ವರ್ಣನಂ. ವರ್ಣಿಸುವುದು, ಗುಣಕಥನ. “ಶೋಭೇವ ಮಂದರ-  
ಕ್ಷುಬ್ಧಕ್ಷುಭಿತಾಮ್ಭೋಧಿವರ್ಣನಾ” ಮಾಘಂ ೨-೧೦೭ ।

**ವರ್ಣನೀಯ ವರ್ಣನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ಎವರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. 3. ಸ್ತುತಿಸಲ್ಪಡುವ,  
ಹೊಗಳಲ್ಪಡುವ. 4. ಎವರಿಸಿ ಹೇಳಬೇಕಾದ. 5. ಎವರಿಸಿ  
ಹೇಳಲು ಅರ್ಹವಾದ. 6. ಸ್ತುತಿಸಬೇಕಾದ. 7. ಸ್ತುತಿ  
ಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. ವರ್ಣ (ಸ್ತುತೌ) + ಣಿಕ್ “ಅನೀಯರ್”  
(೩-೧-೯೬) । “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬) । ವರ್ಣಿತವ್ಯಮ್  
ವರ್ಣಿತವ್ಯಮ್.

**ವರ್ಣಪ್ರಸಾದನ ವರ್ಣಪ್ರಸಾದನ** (ನಂ) ಅಗುರು. ವರ್ಣಸ್ಯ  
ಪ್ರಸಾದನಂ ಯಸ್ಮಾತ್ ।

**ವರ್ಣಮಾತೃ ವರ್ಣಮಾತೃ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲೇಖಿನಿ, ಬರೆಯುವ  
ಕಡ್ಡಿ. ವರ್ಣಸ್ಯ ಮಾತೇವ ಅಕ್ಷರಜನಕತ್ವಾತ್ ।



**ವರ್ಣಮಾತೃಕಾ ವರ್ಣಮಾತೃಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸರಸ್ವತಿ. ವರ್ಣಿನಾಂ  
ವರ್ಣಮಾಲಾನಾಂ ಮಾತೃಕೇವ |

**ವರ್ಣಮಾಲಾ ವರ್ಣಮಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವರ್ಣಗಳ ಶ್ರೇಣಿ,  
ಅಕ್ಷರಗಳ ಸಮೂಹ. ವರ್ಣಿನಾಂ ಮಾಲಾ ಶ್ರೇಣಿ: |

**ವರ್ಣಯತ್ ವರ್ಣಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಸ್ಮೃತಿಸ್ಮೃತಿರೂಪ,  
ಹೊಗಳುತ್ತಿರುವ. 2. ಕಥಾವಸ್ತುವನ್ನು ವಿಸ್ತರಗೊಳಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. 3. ಬಣ್ಣಹಾಕುತ್ತಿರುವ. ವರ್ಣ (ವರ್ಣಕ್ರಿಯಾ-  
ವಿಸ್ತಾರಗುಣವಚನೇಷು) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

**ವರ್ಣಯಿತ್ ವರ್ಣಯಿತ್** (ವಿಂ) 1. ಹೊಗಳುವವನು,  
ಸ್ಮೋತ್ರಮಾಡುವವನು. 2. ಕಥೆಯನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸು  
ವವನು. 3. ಬಣ್ಣಹಾಕುವವನು. ವರ್ಣ + ಣಿಚ್ "ತೃಚ್"  
(೩-೧-೧೩೩) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) | -ಯಿತ್ರಿ  
-ಯಿತ್ರಿ.

**ವರ್ಣೇ(ಲೇ)ವಾ ವರ್ಣೇ(ಲೇ)ವಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಣ್ಣ  
ಹಾಕುವ ಕುಂಚ. 2. ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಬರೆಯುವ ಲೇಖನಿ.  
ವರ್ಣಿ: ಲಿಖ್ಯಂತೇನಯಾ - ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ) ಕರಂ  
"ಘಲ್" (೩-೩-೧೨೧) | ರಲ್ಯೋರಭೇದ: | "ವರ್ಣಲೇಖಾ ಚ  
ಕಠಿನಿ ಕಕ್ಷತಿ ಟಿ ಟಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ವರ್ಣವತೀ ವರ್ಣವತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹರಿದ್ರೆ, ಅರಿಶಿನ. ವರ್ಣ-  
ಸ್ತೃತ್ಯಾಂ ವರ್ಣ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೫) |

**ವರ್ಣವಿಪರ್ಯಯ ವರ್ಣವಿಪರ್ಯಯ** (ಪುಂ) ಅಕ್ಷರದ  
ಬದಲಾವಣೆ. ವರ್ಣಸ್ಯ ವಿಪರ್ಯಯ: | "ಭವೇದ್ವರ್ಣಗಮಾಡ್ವಸ:  
ಸಿಂಹೋ ವರ್ಣವಿಪರ್ಯಯಾತ್" |

**ವರ್ಣವಿಲೋಡಕ ವರ್ಣವಿಲೋಡಕ** (ಪುಂ) 1. ಕೃತಿಚೋರ,  
ಇನ್ನೊಬ್ಬನು ಬರೆದಿದ್ದನ್ನು ಕದ್ದು ಬರೆಯುವವನು,  
ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ಗ್ರಂಥದಿಂದ ವಿಷಯವನ್ನು ತೆಗೆದು ಬರೆದು  
ತನ್ನದೆಂದು ಹೇಳುವವನು. ವರ್ಣನ್ ವಿಲೋಡಯತಿ-ವಿ+  
ಲೂಡ (ಸ್ತೇಯೇ) + ಣಿಚ್ "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |  
2. ಮನೆಗೆ ಕನ್ನಹಾಕುವವನು, ಗೋಡೆಯನ್ನು ಕೊರೆದು  
ಕದಿಯುವವನು. "ವರ್ಣವಿಲೋಡಕ ಏಷ ಲೋಕಸ್ತೇನೇ ಚ  
ಸಂವಿಚೋರೇ ಚ" ಮೇದಿಂ |

**ವರ್ಣವೃತ್ತ ವರ್ಣವೃತ್ತ** (ನಂ) ಅಕ್ಷರಗಳ ಸಂಖ್ಯೆಯ ನಿಯಮ  
ದಿಂದ ರಚಿಸುವ ವೃತ್ತ. ವರ್ಣಸಂಖ್ಯಯಾ ರಚಿತಂ ವೃತ್ತಮ್ |  
"ಮಾತ್ರಾವರ್ಣವಿಭೇದೇನ ಛಂದಸ್ತದಿಹ ಕಥ್ಯತೇ" ವೃಂ ೨೦ |

**ವರ್ಣಸಂಸರ್ಗ ವರ್ಣಸಂಸರ್ಗ** (ಪುಂ) 1. ಭಿನ್ನವರ್ಣಗಳ  
ಸಂಖ್ಯಾಧ, ಬೇರೆಬೇರೆ ಜಾತಿಗಳ ಸಂಖ್ಯಾಧ. ವರ್ಣಿನಾಂ  
ಮಿಶ್ರಜಾತೀನಾಂ ಸಂಸರ್ಗ: ಸಂಬಂಧ: ವಿವಾಹಾದಿನಾ | 2. ಬೇರೆ  
ಬೇರೆ ಬಣ್ಣಗಳ ಸಂಖ್ಯಾಧ.

**ವರ್ಣಸಂಕರ ವರ್ಣಸಂಕರ** (ಪುಂ) 1. ಮಿಶ್ರಜಾತಿ. ವರ್ಣಿನಾಂ  
ಸಂಕರೋ ಮಿಶ್ರಣಂ ಯತ್ರ | 2. ವರ್ಣಗಳ ಸಂಕರ್ಯ, ಬೇರೆ  
ಬೇರೆ ವರ್ಣಗಳ ಮಿಶ್ರಣ. "ಸ್ತ್ರೀಬು ದುಷ್ಠಾಸು ವಾಣ್ಯೇ  
ಜಾಯತೇ ವರ್ಣಸಂಕರ:" ಗೀತಾ ೧-೪೧ |

**ವರ್ಣಸಮಾನ್ಯ ವರ್ಣಸಮಾನ್ಯ** (ಪುಂ) ವರ್ಣ  
ಮಾಲೆ, ಅಕ್ಷರಮಾಲೆ, ಅಕ್ಷರದಿಂದ ಹೆಚ್ಚಾದವರಿಗಿನ  
ಅಕ್ಷರಗಳು.

**ವರ್ಣಸಿ ವರ್ಣಸಿ** (ಪುಂ) ಜಲ, ನೀರು. ವರ್ಣೋತಿ ಭೂಮಿಮ್-ವರ್ಣ  
(ವರ್ಣೇ) "ಅಸಿ:" ಧಾತೋ: ನುಗಾಗಮಶ್ಚ (೩ಂ ೪-೧೦೭) |

**ವರ್ಣಾಟ ವರ್ಣಾಟ** (ಪುಂ) 1. ಗಾಯಕ, ಹಾಡುಗಾರ,  
ಸಂಗೀತಗಾರ. ವರ್ಣನ್ ಅಟತಿ - ಅಟ (ಗತೌ) "ಅಚ್"  
(೩-೧-೧೩೪) | 2. ಚಿತ್ರಗಾರ, ಚಿತ್ರಗಳನ್ನು ಬರೆಯು  
ವವನು. 3. ಹೆಂಗಸಿನ ಸಂಪಾದನೆಯಿಂದ ಜೀವಿಸು  
ವವನು. "ವರ್ಣಾಟೋ ಗಾಯನೇ ಚಿತ್ರಕರೇ ಸ್ತ್ರೀಕೃತಜೀವನೇ"  
ಮೇದಿಂ |

**ವರ್ಣಾತ್ಮಮ್ ವರ್ಣಾತ್ಮಮ್** (ಪುಂ) ಶಬ್ದ, ಪದ. ವರ್ಣ: ಅಕ್ಷರಮ್  
ಆತ್ಮಾ ಸ್ವರೂಪಂ ಯಸ್ಯ |

**ವರ್ಣಾಧಿಪ ವರ್ಣಾಧಿಪ** (ಪುಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಮೊದಲಾದ  
ವರ್ಣಗಳ ಅಧಿಪತಿ. ವರ್ಣಿನಾಂ ವಿಪ್ರಾಧೀನಾಮಧಿಪ: | ಮೊದಲ  
ನೆಯ ವರ್ಣದ ಅಧಿಪತಿಯು ಗುರು ಮತ್ತು ಶುಕ್ರ.  
ಎರಡನೆಯ ವರ್ಣದ ಅಧಿಪತಿಯು ಸೂರ್ಯ ಮತ್ತು  
ಅಗಾರಕ. ಮೂರನೆಯ ವರ್ಣದ ಅಧಿಪತಿಯು ಚಂದ್ರ.  
ತುರಿಯವರ್ಣದ ಅಧಿಪತಿಯು ಬುಧ. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ಶುಕ್ರ-  
ವಾಣೀಶೋ ಧಾತ್ರೀಶೋ ಭೂಮಿಶಾಸ್ತ್ರೀಶೋ | ಚಂದ್ರೋ ವೈಶ್ಯೇಶೋ ಬೃಹಶ್ಚ ಶೂದ್ರೇ  
ಪತಿ:" ಜ್ಯೋತಿಷ್ಠತ್ವಮ್ |

**ವರ್ಣಾಶ್ರಮ ವರ್ಣಾಶ್ರಮ** (ಪುಂ ೨ಂ ೨ಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾದಿ  
ವರ್ಣಗಳಿಗೆ ವಿಹಿತವಾದ ಆಶ್ರಮಗಳು. ಬ್ರಾಹ್ಮಚರ್ಯಾ  
ಶ್ರಮ ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮ ವಾನಪ್ರಸ್ಥಾಶ್ರಮ ಮತ್ತು  
ಸಂನ್ಯಾಸಾಶ್ರಮ ಎಂದು ಈ ಆಶ್ರಮಗಳು ನಾಲ್ಕು.  
"ಬ್ರಾಹ್ಮಚಾರಿ ಗೃಹಿ ವಾನಪ್ರಸ್ಥೋ ಮಿಕ್ಷುಶ್ಚತುಷ್ಟಯೇ |  
ಆಶ್ರಮೋಽಸ್ಮಿ" ಅಮಂ | "ವರ್ಣಾಶ್ರಮಾಣಾಂ ಗುರವೇ ಸ ವರ್ಣಿ  
ವಿಚಕ್ಷಣ: ಪ್ರಸ್ತುತಮಾವಚಕ್ಷೇ" ರಘುಂ ೫-೧೯ |

**ವರ್ಣಿ ವರ್ಣಿ** (ನಂ) ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ವರ್ಣ (ವರ್ಣಕ್ರಿಯಾ-  
ವಿಸ್ತಾರಗುಣವಚನೇಷು) "ಙ್" (೩ಂ ೪-೧೨೩) |

**ವರ್ಣಿಕ ವರ್ಣಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಲೇಖಕ, ಬರೆಯುವವನು.  
ವರ್ಣಿ ಲೇಖ್ಯತ್ವೇನಾಸ್ತೃತ್ಯ - ವರ್ಣ "ಠ್" (೫-೨-೧೧೫) |  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ -ಕಾ. 2. ಲೇಖನಿ. 3. ಬಣ್ಣಹಾಕುವ  
ಕುಂಚ. 4. ಮುಸಿ. "ವರ್ಣಿಕಾ ಮಸಿ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |



5. (ನಾಟಕದಲ್ಲಿ) ನಟನ ಪಾತ್ರ. “ಪ್ರಕರಣನಾಯಕಸ್ಯ ಮಾಲತೀವಲ್ಲಭಸ್ಯ ಮಾಧವಸ್ಯ ವರ್ಣಿಕಾಪರಿಗ್ರಹಃ ಕಥಮ್” ಮಾಲತೀಂ ೧ |

**ವರ್ಣಿತ ವರ್ಣಿತ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ತುತಿಸಲ್ಲಟ್ಟು, ಸೊತ್ತೆ ಮೂಡಲ್ಲಟ್ಟು. ವರ್ಣ (ವರ್ಣಕ್ರಿಯಾವಿವರಣೆಗುಣವಚನೇ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) | 2. ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಲಟ್ಟು. “ವರ್ಣಿತಂ ಜಯದೇವೇನ ಹರೇರಿದಂ ಪ್ರಣತೇನ” ಗೀತಗೋಂ | 3. ವಿಸ್ತರಿಸಲ್ಲಟ್ಟು. “ಚತುರ್ಮತದ್ವಿಪುಲಂ ವೈರಾಡಂ ಪವಂ ವರ್ಣಿತಮ್” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨ | 4. ಬಣ್ಣಹಾಕಲ್ಲಟ್ಟು.

**ವರ್ಣಿನ್ ವರ್ಣಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಲೇಖಕ. ವರ್ಣಿ: ಅಕ್ಷರಾಣಿ ಲೇಖ್ಯತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ — ವರ್ಣ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪) | 2. ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ, ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ. ವರ್ಣ: ಸ್ತುತಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೩೪) | “ಸಖಿ ತಸ್ಯಾ ತಮುವಾಚ ವರ್ಣಿನಂ ನಿಬೋಧ ಸಾಧೋ ತವ ಚೇತುತುಹಲಮ್” ಕುಮಾಂ ೪-೪೨ | 3. ಬಣ್ಣಹಾಕುವವನು. “ವರ್ಣಿ ಸ್ಥಾಲೇಷಕೇ ಚಿತ್ರಕರೇಷಿ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಣಿ” ಮೇದಿಂ | (ವಿಂ) 4. ಬಣ್ಣದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

**ವರ್ಣಿನಿ ವರ್ಣಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಹಿಳೆ, ಹೆಂಗಸು. 2. ಅರಿಸಿನ.

**ವರ್ಣ್ಯ ವರ್ಣ್ಯ** (ವಿಂ) ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಡುವ. ವರ್ಣ + ಣಿಚ್ “ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪) | ಇದು ಅಲಂಕಾರ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಪ್ರಕೃತ ಪ್ರಸ್ತುತ ಮತ್ತು ಉಪಮೇಯ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವುದು. “ವರ್ಣ್ಯೋಪಮಾನವರ್ಣಿಣಾ-ಮುಪಮಾವಾಚಕಸ್ಯ ಚ | ಏಕದ್ವಿತ್ಯನುಪಾದಾನಾದ್ವಿತ್ತಾ ಲುಪ್ತೋಪಮಾಢಿಧಾ” |

**ವರ್ತಕ ವರ್ತಕ** (ಪುಂ) 1. ಅವಕ್ಕಿ, ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಪಕ್ಷಿ. ವೃತು (ವರ್ತನೆ) “ಉಲ್” (೩-೧-೧೩೩) | 2. ಕುದುರೆಯ ಕಾಲಿನ ಗೊರಸು. (ನಂ) 3. ಹಿತ್ತಾಳೆ. (ವಿಂ) 4. ಪೂಜಿಸುವವನು, ಆರಾಧಿಸುವವನು. ಸ್ತ್ರೀಯಾ ವರ್ತಕಾ ವರ್ತಕಾ.

**ವರ್ತಜನ್ಮನ್ ವರ್ತಜನ್ಮನ್** (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ.

**ವರ್ತನ ವರ್ತನ** (ನಂ) 1. ವೃತ್ತಿ, ಜೀವನೋಪಾಯ. ವರ್ತಂತೇ ಜೀವಂತೀನೇನ — ವೃತು (ವರ್ತನೆ) ಕರಂ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭) | “ದೇವತಾಪಿತೃಮರ್ತ್ಯಾನಾಮತಿಥಿನಾಂ ಚ ವರ್ತನಮ್ | ಯಸ್ಯಾವಶಿಷ್ಟೇನಾತ್ರೇನ ಪುಂಸಸ್ತಸ್ಯ ಗೃಹಂ ತ್ಯಜ” ಮಾರ್ಕಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಹತ್ತಿಯ ಪಂಜಿ, ಹತ್ತಿಯನ್ನು ಬಿಡಿಸಿ ನೂಲಲು ಅನುಕೂಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಿದ ಪಂಜಿ. 3. ಕವಿರು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿರುಗಲು ಅನುಕೂಲಿಸುವಂತೆ ಅದರ

ತಳದಲ್ಲಿ ಕಟ್ಟುವ ಭಾರವಾದ ಮಣ್ಣಿನ ಗುಂಡು.

4. ಜೀವನ, ಬದುಕು. ವೃತು ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪) |

5. ಇರುವಿಕೆ, ವಾಸಮಾಡುವುದು. “ಸ್ಮರಸಿ ಸುತನು ತಸ್ಮಿನ್ ಪವಂತೇ ಲಕ್ಷಮಣೇನ ಪ್ರತಿವಿಹಿತಸರ್ಪಾಸುಸ್ಥಯೋಸ್ತಾನ್ಯ-ಹಾನಿ | ಸ್ಮರಸಿ ಸರಸನೀರಾಂ ತತ್ರ ಗೋದಾವರೀಂ ವಾ ಸ್ಮರಸಿ ಚ ತದ್ಭವಾಂತೇಷ್ವಾವಯಂತನಾನಿ” ತಂ ರಾಂ ೧-೨೬ | (ಪುಂ) 6. ವಾಸನ, ಕುಳು. (ವಿಂ) 7. ಇರುವ, ವಾಸಮಾಡುವ. “ವರ್ತಂತೋ ವಾಮನೇ ಕಲಿಬಂ ವೃತ್ತೋ ಸ್ತ್ರೀ ಪೇಷಣಾಧವನೋ | ನ ಪುಂಸಿ ತುಲನಾಲಯಾಂ ತಕುಂಪಿಣಿ ಚ ಜೀವನೇ | ವರ್ತಿಣೌ ತ್ರಿಭು” ಮೇದಿಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ನೀ-೩೬. 8. ಅರೆಯುವುದು, ಪುಡಿಮಾಡುವುದು. 9. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ.

**ವರ್ತನಿ ವರ್ತನಿ** (ಪುಂ) 1. ಭಾರತದ ಪೂರ್ವಪ್ರದೇಶ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. ವೃತು (ವರ್ತನೆ) “ಅನಿ:” (ತಂ ೨-೧೦೭) | ವಾ “ಡೀಫ್” (ಗಂ ೪-೧-೪೪) | —ನೀ-೩೬.

**ವರ್ತನೀಯ ವರ್ತನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಇರಬೇಕಾದ. 2. ಇರಲು ಅರ್ಹವಾದ. 3. ಇರಲು ಶಕ್ತವಾದ. ವೃತು (ವರ್ತನೆ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೧೬) | “ತವ್ಯ:” | ವರ್ತಿತವ್ಯಮ್ ವರ್ತಿತವ್ಯಮ್.

**ವರ್ತಮಾನ ವರ್ತಮಾನ** (ಪುಂ) 1. (ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ) ಈಗ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ ಕಾಲ. “ವರ್ತಮಾನಸಾಮೀಪ್ಯೇ ವರ್ತಮಾನ-ವದ್ವಾ” (೩-೩-೧೩೧) | ಏಷೋಽಹಂ ಗಚ್ಛಾಮಿ — ಏಷೋಽಹಂ ಗಮಿಷ್ಯಾಮಿ | (ವಿಂ) 2. ಈಗ ಇರುವ, ಈಗ ಜೀವಿಸಿರುವ. “ಪ್ರಥಿತಯಶಸಾಂ ಭಾಸಸೋಮಿಲ್ಲಕಕವಿಪುತ್ರಾದೀನಾಂ ಪ್ರಬಂಧಾನತಿಕರ್ಮ್ಯ ವರ್ತಮಾನಕವೇ: ಕಾಲಿದಾಸಸ್ಯ ಕ್ರಿಯಾಯಾಂ ಕಥಂ ಬಹುಮಾನ:” ಮಾಲಂ ೧ | “ಛಾಯಾಮಪಾಸ್ಯ ಮಹತೀಮಪಿ ವರ್ತಮಾನಾಮಾಗಾಮಿನೀಂ ಜಗೃಹೀರೇ ಜನತಾಸ್ತರ್ಣಾಮ್” ಮಾಧಂ ೪-೧೪ | 3. ಈಗಿನ ಕಾಲದ. 4. ತಿರುಗುತ್ತಿರುವ, ಸುತ್ತಲೂ ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ.

**ವರ್ತರೂಪ ವರ್ತರೂಪ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ನದಿ. 2. ನೀರಿನ ಗುಂಡಿ, ನೀರು ನಿಂತಿರುವ ಹಳ್ಳಿ. 3. ಕಾಗೆಯ ಗೂಡು. 4. ದ್ವಾರಪಾಲಕ. 5. ಜಲಾವರ್ತ, ನೀರಿನ ಸುಳಿ. ವರ್ತಂ ವರ್ತನಂ ರಾತಿ ಗೃಹ್ಣಾತಿ—ರಾ “ಝಕ:” ಬಾಹುಂ | “ವರ್ತರೂಕೋ ನದೀಭೇದೇ ಕಾಕನಿಡೇ ಜಲಾವರೇ” ಮೇದಿಂ | ದ್ವಾ:ಸ್ಥಿತೋ ವೇತ್ರಧಾರಕ: | ದೌ:ಸಾಧಿಕೋ ವರ್ತರೂಕೋ ಗರ್ವಾಡೋ ದಂಡವಾಸಿನಿ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ವರ್ತಲೋಹ ವರ್ತಲೋಹ** (ನಂ) ಹಿತ್ತಾಳೆ. ವರ್ತಶ್ರಾಸಿ ಲೋಹಶ್ರ |



**ವರ್ತಿ ವರ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೀಪದ ಬತ್ತಿ. ವರ್ತಂತೆ — ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಣಿಚ್ "ಃ" (ಉಂ ೪-೧೩೯) । "ಉಜ್ವಲಾ-  
ಲೋಕಯಾ ಸ್ನಿಗ್ಧಾ ತ್ವಯಾ ತ್ಯಕ್ತಾ ನ ರಾಜತೇ । ಮಲಿಮಸಮುಖೀ  
ವರ್ತಿ: ಪ್ರದೀಪಶಿಖಯಾ ಯಥಾ" ಮಾಲತೀಂ ೧೦-೪ । 2. ಕಣ್ಣಿನ  
ಅಂಜನ, ಮುಲಾಮು, ಕಣ್ಣಿನ ಕಪ್ಪು. "ಇಯಂ ಗೌರೀ  
ಲಕ್ಷ್ಮೀರಿಯಮಮೃತವರ್ತಿನಯನಯೋ:" ಉಂ ರಾಂ ೧-೩೮ । 3.  
ವಸ್ತ್ರದ ಕೊನೆ, ಬಟ್ಟೆಯ ಸೆರಗು. 4. ಔಷಧವನ್ನು  
ತಯಾರಿಸುವುದು. 5. ರೇಖೆ, ಗೆರೆ, ಗೀಟು. 6. ಪಾತ್ರೆಯ  
ಸುತ್ತಲೂ ಉಬ್ಬಿರುವ ಭಾಗ. 7. ಗುಂಪದ ಬಿಲ್ಲೆ.  
8. ದೀಪ. "ವರ್ತಿಗಾತ್ರಾನುಲೇಪನಾಂ ದಶಾಢಾಂ ದೀಪಕಸ್ಯ ಚ ।  
ದೀಪೇ ಭೇಷಜನಿರ್ಮಾಣಿ ನಯನಾಙ್ಗನಲೇಖಯೋ:" ಹೇಮಂ । ವಾ  
"ಙೀಷ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫) । **ವರ್ತೀ ವರ್ತಿ**.

**ವರ್ತಿಕ ವರ್ತಿಕ** (ಪುಂ) ಲಾವಣ್ಯ, ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಪಕ್ಷಿ.

**ವರ್ತಿಕಾ ವರ್ತಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಣ್ಣಹಾಕುವ ಕುಂಚ,  
ತೂಲಿಕೆ. "ವರ್ತಂತೆ ಸ್ಮ ಸ ಕಥಂಚಿದಾಲಿಖನ್ನಙ್ಗುಲಿ-  
ಕ್ಷರಣಸನ್ನವರ್ತಿಕ:" ರಘುಂ ೧೯-೧೯ । 2. ದೀಪದ ಬತ್ತಿ.  
3. ಲಾವಣ್ಯ. "ಶ್ಯೇನಾವಪಾತಚಕಿತಾನನವರ್ತಿಕೇವ ಕಿ  
ನೇಕ್ಷಸೇ ನನು ಮಯಾ ಕವಲೀಕೃತಾಸಿ" ಮಾಲತೀಂ ೮-೮ ।

**ವರ್ತಿನ ವರ್ತಿನ** (ವಿಂ) (ಸಮಾಸದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಇದರ  
ಪ್ರಯೋಗ) 1. ಇರುವ, ವಾಸವಾಗಿರುವ. ವರ್ತಂತೆ — ವೃತು  
(ವರ್ತನೆ) "ಞಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) । 2. ಸುಚರಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಙೀಷ್" (೪-೧-೫) ।  
**ವರ್ತಿನಿ ವರ್ತಿನಿ**. "ಅಥೋ ವಯಸ್ಯಾಂ ಪರಿಪಾಶ್ವರ್ವರ್ತಿನೀಮ್"  
ಕುಮಾಂ ೫-೫೧ ।

**ವರ್ತಿಣ್ಣ ವರ್ತಿಣ್ಣ** (ವಿಂ) 1. ಇರುವವನು, ಸ್ಥಿರವಾಗಿ  
ನಿಲ್ಲುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಙ್ಣುಚ್"  
(೩-೨-೧೩೬) । 2. ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಹಿಂಜರಿಯದೆ ಧೈರ್ಯ  
ವಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. "ನಿರಾಕರಿಣ್ಣ ವರ್ತಿಣ್ಣ  
ವರ್ತಿಣ್ಣ ಪರಿತೋ ರಣಮ್" ಭಟ್ಟಂ ೫-೧ ।

**ವರ್ತಿಷ್ಯಮಾಣ ವರ್ತಿಷ್ಯಮಾಣ** (ವಿಂ) 1. ಭವಿಷ್ಯತ್  
ಕಾಲದ, ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವ ಕಾಲದ, ಮುಂದೆ ನಡೆ  
ಯುವ. "ವೃತ್ತವರ್ತಿಷ್ಯಮಾಣಾನಾಂ ಕಥಾಂಶಾನಾಂ ನಿರ್ದರ್ಶಕ:" ।  
2. ಭವಿಷ್ಯತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿರುವ. "ವರ್ತಿಷ್ಯಮಾಣಮಾತಮಾನಂ ಸೀತಾ  
ಪತ್ಯುರಿವಾಂತಿಕೇ" ಭಟ್ಟಂ ೮-೩೮ ।

**ವರ್ತುಲ ವರ್ತುಲ** (ಪುಂ) 1. ಬಟಾಣಿಬೀಜ, ಬಟಾಣಿಕಾಳು.  
ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಉಚ್" ಬಾಹುಂ । (ನಂ) 2. ವೃತ್ತ,  
ಚಕ್ರಾಕಾರ, ದುಂಡು. (ವಿಂ) 3. ಗುಂಡಾಗಿರುವ, ಚಕ್ರದ  
ಆಕಾರದಲ್ಲಿರುವ, ಗೋಳಾಕಾರದಲ್ಲಿರುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)

-ಲಾ -ಲಾ. 4. ಕದಿರು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿರುಗಲು ಅನುಕೂಲಿಸು  
ವಂತೆ ಅದರ ತಳದಲ್ಲಿ ಕಟ್ಟುವ ಭಾರವಾದ ಮಣ್ಣಿನ  
ಗುಂಡು. -ಲೀ -ಲೀ. 5. ಗಡಹಿಪ್ಪಲಿ.

**ವರ್ತಮನ್ ವರ್ತಮನ್** (ನಂ) 1. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. ವರ್ತಂತೇನ—  
ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಮನಿನ್" (ಉಂ ೪-೧೪೫) । "ಪಾರಸೀಕಾನ್  
ತತೋ ಜೇತುಂ ಪ್ರತಸ್ಥೇ ಸ್ಥಲವರ್ತಮನಾ" ರಘುಂ ೪-೬೦ ।  
2. ಅಚಾರ, ಪದ್ಧತಿ. "ರೇಖಾಮಾತ್ರಮಪಿ ಕ್ಷುಣ್ಣಾದಾಮನೋ-  
ವರ್ತಮನ: ಪರಮ್" ರಘುಂ ೧-೧೭ । 3. ಅವಕಾಶ, ಆಸ್ಪದ.  
"ನ ವರ್ತಮ ಕಸ್ಮೇಚಿದಪಿ ಪ್ರದೀಯತಾಮಿತಿ ವ್ರತಂ ಮೇ ವಿಹಿತಂ  
ಮಹರ್ಷಿಣಾ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೧೪ । 4. ಕಣ್ಣಿನ ರೆಪ್ಪೆ.  
"ಸಿತಾಸಿತಂ ಚ ತನ್ಮಧ್ಯೇ ನೇತ್ರಯೋರ್ಮಂಡಲಂ ಹಿ ಯತ್ । ಪ್ರಚ್ಛಾದನಂ  
ಭವೇತ್ ವರ್ತಮ ಚಾಕ್ಷಿಕೂಟಮತ: ಪರಮ್" ।

**ವರ್ತಮಿನಿ ವರ್ತಮಿನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. ವೃತು (ವರ್ತನೆ)  
"ಅನಿ:" ಮುಡಾಗಮಶ್ಚ (ಉಂ ೨-೧೦೬) । ವಾ "ಙೀಷ್"  
(ಗಂ ೪-೧-೪೫) । **ವರ್ತಮಿನಿ ವರ್ತಮಿನಿ**.

**ವರ್ತಮ್ಯತ್ ವರ್ತಮ್ಯತ್** (ವಿಂ) ಅಭಿವೃದ್ಧಿಹೊಂದುತ್ತಿರುವ.  
ವೃಥು (ವೃದ್ಧಿ) ಲೃಟ: ಸತ್ (೩-೩-೧೪) । "ಶತ್"  
(೩-೨-೧೨೪) । ಇಡಭಾವ: (೭-೨-೫೯) । "ಸಮೋ ಹಿ  
ಶಿಷ್ಟೇರಾಮನಾತೌ ವರ್ತಮ್ಯಂತಾವಾಮಯ: ಸ ಚ" ಮಾಘಂ ೨-೧೦ ।

**ವರ್ಧಕ ವರ್ಧಕ** (ಪುಂ) 1. ಭಾರಂಗಿ. 2. ಮರಗೆಲಸದವನು,  
ಬಡಗಿ. (ವಿಂ) 3. ತುಂಬುವವನು. 4. ಕತ್ತರಿಸು  
ವವನು. ವರ್ಧ (ಛೇದನೇ ಪೂರಣೇ ಚ) + ಣಿಚ್ "ಫ್ಲುಲ್"  
(೩-೧-೧೩೩) । 5. ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವವನು.

**ವರ್ಧಕಿ ವರ್ಧಕಿ** (ಪುಂ) ಬಡಗಿ, ಮರಗೆಲಸದವನು.  
ವರ್ಧಂತೆ ಛಿನತ್ತಿ—ವರ್ಧ (ಛೇದನೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।  
ವರ್ಧ ಕವತಿ—ಕಪ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಡಿ:" ಬಾಹುಂ ।  
"ಕರ್ಮಾಂತಿಕಾನ್ ಶಿಲ್ಪಕರಾನ್ ವರ್ಧಕೀನ್ ಖನಕಾನಪಿ"  
ರಾಮಾಂ ।

**ವರ್ಧಕಿನ್ ವರ್ಧಕಿನ್** (ಪುಂ) ಬಡಗಿ, ಮರಗೆಲಸದವನು.

**ವರ್ಧನ ವರ್ಧನ** (ನಂ) 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವುದು, ಏಳಿಗೆ  
ಹೊಂದುವುದು. ವರ್ಧ (ಛೇದನಪೂರಣಯೋ:) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್"  
(೩-೩-೧೧೫) । 2. ಹೆಚ್ಚುವುದು, ಅಧಿಕವಾಗುವುದು.  
3. ಬೆಳೆಯುವುದು. 4. ಕತ್ತರಿಸುವುದು, ತುಂಡುಮಾಡು  
ವುದು. "ಪ್ರಾಙ್ನಾಭಿವರ್ಧನಾತ್ ಪುಂಸೋ ಜಾತಕರ್ಮ ವಿಧೀಯತೇ"  
ಮನುಂ ೨-೨೯ । 5. ತುಂಬುವುದು. (ವಿಂ) 6. ಬೆಳೆಯು  
ವವನು, ಅಭಿವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ವರ್ಧಂತೆ—  
ವೃಥು (ವೃದ್ಧಿ) "ಯುಚ್" (೩-೨-೧೪೯) । 7. ಕತ್ತರಿಸು  
ವವನು. ವರ್ಧ (ಛೇದನೇ) "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) ।



8. ವಿಷ್ಣು. "ವರ್ಧನೋ ವರ್ಧಮಾನಶ್ಚ" ವಿಂ ಸಂ | ವೃಥು (ವೃದ್ಧಿ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯು:" (3-1-138) |

ವರ್ಧನಿ ವರ್ಧನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಣ್ಣಿನ ಹೂಜಿ. 2. ಸುಮಾರ್ಜನಿ, ಪೊರಕೆ. 3. ಸಣ್ಣ ಮಣ್ಣಿನ ಗಡಿಗೆ.

ವರ್ಧನೀಯ ವರ್ಧನೀಯ (ವಿಂ) 1. ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಬೆಳೆಸಲ್ಪಡುವ. 4. ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 5. ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಬೇಕಾದ. 6. ಬೆಳೆಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. 7. ಬೆಳೆಯಬೇಕಾದ. 8. ಅಭಿವೃದ್ಧಿಹೊಂದಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 9. ಅಭಿವೃದ್ಧಿಹೊಂದಬೇಕಾದ. ವೃಥು (ವೃದ್ಧಿ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) | "ವರ್ಧನೀಯವಿಭವಾ ವರ್ಧಂ ಪುನಃ ತ್ವತ್ಪ್ರದಿಷ್ಟಪುರಪತ್ತನೇಶ್ವರಾಃ" ಯಾದಂ 10-106 | 10. ಕೆತ್ತರಿಸಲ್ಪಡುವ. 11. ಕೆತ್ತರಿಸಬೇಕಾದ. 12. ಕೆತ್ತರಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 13. ತುಂಬಲ್ಪಡುವ. 14. ತುಂಬಬೇಕಾದ. 15. ತುಂಬಲು ಅರ್ಹವಾದ. ವರ್ಧ (ಛೇದನ-ಪೂರ್ಣಯೋಃ) + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) | "ತವ್ಯಃ" | ವರ್ಧಿತವ್ಯಮ್ ವರ್ಧಿತವ್ಯಮ್.

ವರ್ಧಮಾನ ವರ್ಧಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಬೆಳೆಯುತ್ತಿರುವ. "ಯದ್ವುಕ್ತವಮಾತಜ್ಞಃ ವರ್ಧಮಾನ ಇವಾಭವತ್" ಯಾದಂ 22-218 | 2. ಅಭಿವೃದ್ಧಿಹೊಂದುತ್ತಿರುವ, ಏಳಿಗೆಹೊಂದುತ್ತಿರುವ. 3. ಹೆಚ್ಚುತ್ತಿರುವ. (ಪುಂ) 4. ಎರಡುವಕ್ಕ, ಹರಳುಗಿಡ. 5. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ವರ್ಧಯನ್ ಭಕ್ತಾನ್ ಸ್ವಯಮಪಿ ವರ್ಧತೇ - ವೃಥು (ವೃದ್ಧಿ) "ಶಾನಕ್" (3-2-128) | "ವರ್ಧಯಂತಾನ್ ಸ್ವಯಮಪಿ ವರ್ಧಮಾನಶ್ಚ ವರ್ಧನಾತ್" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ | "ವರ್ಧನೋ ವರ್ಧಮಾನಶ್ಚ" ವಿಂ ಸಂ | 6. ಶರಾವ, ಶ್ರಾವೆ. 7. ದಕ್ಷಿಣಭಾಗದಲ್ಲಿ ಬಾಗಿಲಿಲ್ಲದ ಮನೆ. "ದ್ವಾರಾಲಿಂಗೋತ್ತಗತಃ ಪ್ರದಕ್ಷಿಣೋನ್ಯಃ ಶುಭಸ್ತತಶ್ಚಾನ್ಯಃ | ತದ್ವಚ್ಚ ವರ್ಧಮಾನೇ ದ್ವಾರಂ ತು ನ ದಕ್ಷಿಣಂ ಕುರ್ಯಾತ್" ಬೃಹತ್ಸಂ |

ವರ್ಧಮಾನಕ ವರ್ಧಮಾನಕ (ಪುಂ) ಶರಾವ, ಶ್ರಾವೆ. ವರ್ಧಮಾನ ಸಂಜ್ಞಾಃ "ಕನ್" (4-3-64) |

ವರ್ಧಯತ್ ವರ್ಧಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಬೆಳೆಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಅಭಿವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತಿರುವ. ವೃಥು (ವೃದ್ಧಿ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (3-2-128) | 4. ಕೆತ್ತರಿಸುತ್ತಿರುವ. 5. ತುಂಬುತ್ತಿರುವ. ವರ್ಧ (ಛೇದನ-ಪೂರ್ಣಯೋಃ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (3-2-128) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್" (4-1-6) | -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ. "ರಮ್ಯಾ ಇತಿ ಪ್ರಾಪ್ತವತೀಃ ಪತಾಕಾ ರಾಗಂ ವಿವಿಕ್ತಾ ಇತಿ ವರ್ಧಯಂತಿಃ" ಮಾಘಂ 3-43 |

ವರ್ಧಯಿತ್ ವರ್ಧಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಬೆಳೆಸುವವನು. 2. ಅಭಿವೃದ್ಧಿಗೊಳಿಸುವವನು. 3. ಹೆಚ್ಚಿಸುವವನು. ವೃಥು (ವೃದ್ಧಿ) + ಣಿಕ್ "ತೃಕ್" (3-1-133) | 4. ಕೆತ್ತರಿಸುವವನು. 5. ತುಂಬುವವನು. ವರ್ಧ (ಛೇದನ-ಪೂರ್ಣಯೋಃ) + ಣಿಕ್ "ತೃಕ್" (3-1-133) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್" (4-1-6) | -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

ವರ್ಧಾಪನ ವರ್ಧಾಪನ (ನಂ) 1. ಹೊಕ್ಕುಳಿನ ಕುಡಿಯನ್ನು ಕೆತ್ತರಿಸುವುದು. 2. ಕೆತ್ತರಿಸುವುದು, ಛೇದಿಸುವುದು. 3. ಜನ್ಮದಿನ ಮಹೋತ್ಸವ, ಹುಟ್ಟುಹಬ್ಬ. 4. ಆಭ್ಯುದಯಕ್ಕಾಗಿ ಆಚರಿಸುವ ಶುಭಕಾರ್ಯ.

ವರ್ಧಿತ ವರ್ಧಿತ (ವಿಂ) 1. ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಕೆತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟ. ವರ್ಧ (ಛೇದನ-ಪೂರ್ಣಯೋಃ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102) | 4. ವೃದ್ಧಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಬೆಳೆಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವೃಥು (ವೃದ್ಧಿ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102) | "ವರ್ಧಿತಂ ಪ್ರಸೃತೇ ಛಿನ್ನೇ ಪೂರಿತೇ" ಮೇದಿಂ |

ವರ್ಧಿಣ್ಯ ವರ್ಧಿಣ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಬೆಳೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದ. 2. ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವ ಸ್ವಭಾವದ. 3. ಅಧಿಕವಾಗುವ ಸ್ವಭಾವದ. ವೃಥು (ವೃದ್ಧಿ) "ಋಣುಕ್" (3-2-136) | "ವೈರೋಚನೇದನಿಜಲಾವಸೇಕಾದ್ವರ್ಧಿಣ್ಯುನಾ ವಾಮನಪಾದಪೇನ" ಯಾದಂ 18-49 |

ವರ್ಧ್ವ ವರ್ಧ್ವ (ನಂ) 1. ಚರ್ಮ. ವೃಥು (ವೃದ್ಧಿ) "ರನ್" (3-2-28) | 2. ತೊಗಲಿನ ಹಗ್ಗ. "ವರ್ಧ್ವಾದಿವಾ ಧೌರಿತೇನ ಪ್ರಯಾತಾಮಶ್ವೀಯಾನಾಮುಚ್ಚಕೇಶ್ಚಲಂತಃ" ಮಾಘಂ 18-4 |

ವರ್ಧ್ವಿ ವರ್ಧ್ವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೊಗಲಿನ ಹಗ್ಗ. ವರ್ಧ್ವ "ಛೀಪ್" (4-1-41) |

ವರ್ಮನ್ ವರ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ಕವಚ, ಅಂಗಿ. ವೃಕ್ (ವರಣ) "ಮನಿನ್" (3-2-64) | "ಅಮ್ಯಭೂತ ವಾಹನಾಂ ಚರತಾಂ ಗಾತ್ರಶಿಷ್ಟಿತಃ | ವರ್ಮಿಃ ಪವನೋದ್ಭೂತರಾಜತಾಲಿವನಿವಿಧಿಃ" ರವುಂ 4-46 | 2. ರಕ್ಷಣೆ, ಕಾಪು. "ತಸ್ಯೇವ ಬುದ್ಧಿ-ವಿಶಿಷ್ಟೇನ ಭಿನಿಷಿ ಮರ್ಮ ವರ್ಮಿವೇದ್ಯಾದಿ ನ ದೇವಮಮೃಶ್ಯಮಾನಮ್" ಮುद्रಾಂ 2-8 | (ಪುಂ) 3. ಕ್ಷತ್ರಿಯನು ತನ್ನ ಹೆಸರಿನ ಜೊತೆಗೆ ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಒಂದು ಪದ. "ಕೌಲೂತ-ಶ್ಚಿತ್ರವರ್ಮಾ ಮಲಯನರಪತಿಃ ಸಿಂಹನಾದೋ ನೃಸಿಂಹಃ" ಮುद्रಾಂ 1-20 |

ವರ್ಮಿತ ವರ್ಮಿತ (ವಿಂ) 1. ಕವಚವನ್ನು ತೊಟ್ಟಿರುವವನು. ವರ್ಮ ಸಂಜ್ಞಾತಮಸ್ಯ "ಇತಕ್" (4-2-36) | 2. ಸಿದ್ಧಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಡುಗೆ ತೊಡಿಗೆಗಳಿಂದ ಸಿದ್ಧವಾದ.



“ವಾಜಿನಾಂ ವರ್ಮಿತಾಙ್ಗಾನಾಂ ಕ್ರುದ್ಧಸ್ಯ ಮಮ ಸಾಯಕಾಃ। ಅಥ  
ಭಿತ್ತ್ವಾ ಪ್ರವೇಷ್ಯಂತಿ ಶರೀರಾಣಿ ಮಯೇರಿತಾಃ” ರಾಮಾಂ।

**ವರ್ಮುಷ ವರ್ಷುಷ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮತ್ಸ್ಯ,  
-ಮೀನು.

**ವರ್ಯ ವರ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ವರ್ಯತೆ ಪ್ರಾರ್ಥಯೆ  
—ವರ (ईप्सायाम्) “ಯತ್” (३-१-१७)। (ವಿಂ)  
2. ಪ್ರಧಾನ, ಮುಖ್ಯ. “ಅನ್ವೀತಃ ಸ ಕತಿಪಯಃ ಕಿರಾತ-  
ವಯಃ” ಕಿರಾಂ १२-५४। 3. ಶ್ರೇಷ್ಠ, ಉತ್ತಮ.  
“ಯಥಾ ವರ್ಮದಿವಶ್ಚಾರ್ಥಾಃ ಮುನಿವರ್ಯಾನ್ತುಕೀರ್ತಿತಾಃ” ಭಾಗಂ  
३-१-५७। 4. ವರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಆಯ್ಕೆಮಾಡಲ್ಪಡುವ.  
ವ್ರಿಯತೆ—ವೃ (ವರಣೆ) “ಯತ್” (३-१-१७)। (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ರ್ಯಾ-ರ್ಯಾ. 5. ತನ್ನ ಪತಿಯನ್ನು ತಾನೇ ಆಯ್ಕೆ  
ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಕನ್ಯೆ. ವೃ (ಸಂಭವತೌ) “ಯತ್”  
(३-१-१०१)।

**ವರ್ವರ ವರ್ವರ** (ಪುಂ) 1. ಪಾಮರ, ನಿಮ್ಮವರ್ಗದವನು.  
2. ಕೇಶ, ಕೂದಲು. 3. ವರ್ವರದೇಶ. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ)  
4. ವರ್ವರ ದೇಶದ ಜನರು.

**ವರ್ವರಕ ವರ್ವರಕ** (ನಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಗಂಧದ ಮರ.

**ವರ್ವರೀಕ ವರ್ವರೀಕ** (ಪುಂ) 1. ಗುಂಗುರು ಕೂದಲು.  
ವೃ (ವರಣೆ) “ईकन्” ಖಾತೋದ್ವಿತ್ವಂ ರುಗಾಗಮಶ್ಚ (उ०  
४-१९)। 2. ನಾರಂಬೇಳೆ ಗಿಡ.

**ವರ್ಷ ವರ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಸಂವತ್ಸರ, ಹನ್ನೆರಡು ತಿಂಗಳ ಕಾಲ.  
ವೃ (ವರಣೆ) “अच्” (वा० ३-३-५६)। “ಶಾಪೇನಾಸ್ತಂ-  
ಗಮಿತಮಹಿಮಾ ವರ್ಷಭೋಗೇಣ ಭರ್ತುಃ” ಮೇಘಂ १-१। 2.  
ವೃಷ್ಯ, ಮಳೆ. “ಮಹದ್ವಿರಪಿ ತತ್ಸೇನ್ಯೇ ಸಂಪತದ್ವಿಃ ಸುಹೃದಲಃ।  
ನ ವೃದ್ಧಿರಭವದ್ಧೃಷ್ಯಾ ವರ್ಷತೋರ್ಯಿವಾಮ್ಬುಧಿ” ಯಾದಂ २२-६७।  
3. ಪುಷ್ಪ ಕನಕ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಸುರಿಮಳೆ. “ಸುರಮಿ  
ಸುರವಿಮುಕ್ತಂ ಪುಷ್ಪವರ್ಷಂ ಪಪಾತ” ರಘುಂ १२-१०२।  
4. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ವರ್ಷತಿ—ವೃ (ವರಣೆ) “अच्” (३-१-१३४)।  
5. ಜಂಬೂದ್ವೀಪದ ಒಂದು ಭಾಗ. ಜಂಬೂದ್ವೀಪವು  
ಒಂಬತ್ತು ಭಾಗಗಳಾಗಿದೆ. ಅವುಗಳಿಗೆ ವರ್ಷವೆಂದು  
ಹೆಸರು. ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಭಾರತವರ್ಷವು ಒಂಬತ್ತನೆಯ  
ಒಂದು ಭಾಗ. [“ಭಾರತವರ್ಷ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]  
“ಉತ್ತರಗುರುಭಾರ ಭಾರತಂ ವರ್ಷಮಥ ಮಮ ವರ್ತತೇ ವಶೇ” ಮಾಘಂ  
१४-५। (ಸ್ತ್ರೀಂ ಬಂ ವಂ) 6. ಒಂದು ಋತು, ವಸಂತ  
ಮೊದಲಾದ ಆರು ಋತುಗಳಲ್ಲೊಂದು. “ವರ್ಷಾತಿಕಾಲ-  
ಜಲದಧುತಯೋ ನಮೋಂತೇ” ಕುಮಾರಂ १७-३५। “ವರ್ಷಾಸ್ತ್ರೀ  
ಭಾರತಾದೌ ಚ ಜಂಬೂದ್ವೀಪಾದ್ವೃಷ್ಟಿಃ। ಪ್ರಾವೃತ್ಕಾಲೇ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
ಭೂಮಿ” ಮೇದಿಂ।

**ವರ್ಷಕರೀ ವರ್ಷಕರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೀರುಂಡೆ. ವರ್ಷ ವರ್ಷಸೂಚನಾಂ  
ಕರೋತಿ ಶಬ್ದೇನ—ಡು ಕೃತ್ “टः” (३-२-२०)।

**ವರ್ಷಕೋಶ ವರ್ಷಕೋಶ** (ಪುಂ) 1. ದೈವಜ್ಞ, ಜೋಯಿಸ.  
ವರ್ಷಸ್ಯ ವತ್ಸರಸ್ಯ ಕೋಶ ಇವ। ಒಂದು ಪೂರ್ಣವರ್ಷದ  
ಫಲವನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವುದರಿಂದ ಜೋಯಿಸನು ಕೋಶ  
ದಂತಿರುವನು. 2. ಮಾಸ, ತಿಂಗಳು.

**ವರ್ಷಜ ವರ್ಷಜ** (ವಿಂ) 1. ಮಳೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ.  
2. ಸಂವತ್ಸರದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. 3. ಮೇಘದಿಂದ ಉಂಟಾದ.  
4. ಜಂಬೂದ್ವೀಪದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ವರ್ಷಾತ್ ವರ್ಷೇ ವಾ ಜಾತಃ  
ಜನಿ “डः” (३-२-१८, १७)।

**ವರ್ಷಗ ವರ್ಷಗ** (ನಂ) 1. ವೃಷ್ಯ, ಮಳೆ ಸುರಿಯುವುದು.  
2. ಕೆಳಗೆ ಸುರಿಯುವುದು. ವೃ (ವರಣೆ) “ल्युट्”  
(३-३-११५)।

**ವರ್ಷಣಿ ವರ್ಷಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯೋಗ, ಯಜ್ಞ. 2. ಮಳೆ  
ಸುರಿಯುವುದು. 3. ವರ್ತನ, ಇರುವಿಕೆ. ವೃ (ವರಣೆ)  
“अनिः” (उ० २-१०२)।

**ವರ್ಷಪ್ರತಿಬಂಧ ವರ್ಷಪ್ರತಿಬಂಧ** (ಪುಂ) ಮಳೆಗೆ ಉಂಟಾ  
ಗುವ ತಡೆ, ಮಳೆಯು ಬೀಳದಿರುವುದು. ಬರ, ಕ್ಷಾಮ.  
ವರ್ಷಸ್ಯ ಪ್ರತಿಬಂಧಃ।

**ವರ್ಷವರ ವರ್ಷವರ** (ಪುಂ) ಪೆಂಡೆ, ನೆಪುಂಸಕ. ವೃ (ವರಣೆ)  
“अच्” (३-१-१३४)। ವರ್ಷಸ್ಯ ರೇತಃಪಾತಸ್ಯ ವರಃ। “ಯೆ  
ತ್ವಲ್ಪಸತ್ವಾಃ ಪ್ರಥಮಾ ಕಲಿಬಾಶ್ಚ ಸ್ತ್ರೀಸ್ವಭಾವಿನಃ। ಜಾತ್ಯಾ  
ನ ದುಷ್ಠಾಃ ಕಾರ್ಯೇಷು ತೇ ವೈ ವರ್ಷವರಾಃ ಸ್ಮೃತಾಃ”। “ನಷ್ಟಂ  
ವರ್ಷವರೇನುಪ್ಯಗಣನಾಭಾವಾದಪಾಸ್ಯ ತ್ರಪಾಮ್” ರತ್ನಾಂ २-३।

**ವರ್ಷವೃದ್ಧಿ ವರ್ಷವೃದ್ಧಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜನ್ಮದಿನ, ಹುಟ್ಟುಹಬ್ಬದ  
ದಿವಸ. ವರ್ಷಸ್ಯ ವೃದ್ಧಿರ್ಯತ್ರ। “ಸರ್ವೇಶ್ಚ ಜನ್ಮದಿವಸೇ  
ಸ್ಮಾರ್ತಮೆಜ್ಜಲಯಾಣಿಭಿಃ। ಗುರುದೇವಾಗ್ನಿವಿಪ್ರಾಶ್ಚ ಪೂಜನೀಯಾಃ  
ಪ್ರಯತ್ನತಃ”।

**ವರ್ಷಶತ ವರ್ಷಶತ** (ನಂ) ಒಂದು ನೂರು ವರ್ಷಗಳು.  
ವರ್ಷಾಣಾಂ ಶತಮ್।

**ವರ್ಷಾಶ ವರ್ಷಾಂಶ** (ಪುಂ) ವರ್ಷದ ಭಾಗ, ಮಾಸ, ತಿಂಗಳು.  
ವರ್ಷಸ್ಯಾಂಶಃ।

**ವರ್ಷಾಕಾಲ ವರ್ಷಾಕಾಲ** (ಪುಂ) ವರ್ಷಾಯತು, ಮಳೆ  
ಗಾಲ

**ವರ್ಷಾಭಿ ವರ್ಷಾಭಿ** (ಪುಂ) 1. ಭೇಕ, ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ.  
ವರ್ಷಾಸು ಭವತಿ—ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “क्विप्” (३-२-१०९)।  
2. ಎರೆಹುಳು, ಮಣ್ಣುಹುಳು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಪುನರ್ನವಾ,  
ಕೊಮ್ಮೆಗಿಡ.



**ವರ್ಷಾಂವಿ ವರ್ಷಾಂವಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣುಕಪ್ಪೆ. “ಭೇಷ್ಯಾಂ ಪುನರ್ನವಾಂ ಸ್ತ್ರೀ ವರ್ಷಾಂವಿ ಪುಮಾನ್” । ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗದಲ್ಲೂ ವರ್ಷಾಂವಿ ಎಂದೇ ಸರಿಯಾದ ರೂಪವೆಂದು ಕೆಲವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

**ವರ್ಷಾಮದ ವರ್ಷಾಮದ** (ಪುಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ವರ್ಷಾಮತುವಿನಲ್ಲಿ ಮಯೂರವು ಮದಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ವರ್ಷಾಸು ಮದೋಸ್ಯ ।

**ವರ್ಷಾಚಿಸ್ ವರ್ಷಾಚಿಸ್** (ಪುಂ) ಕುಜಗ್ರಹ, ಮಂಗಳ ಗ್ರಹ, ಅಂಗಾರಕ.

**ವರ್ಷಾವಸಾನ ವರ್ಷಾವಸಾನ** (ಪುಂ) ಶರದೃತು. ವರ್ಷಾಣಾಮವಸಾನಮತ್ರ ।

**ವರ್ಷಿಣಿ ವರ್ಷಿಣಿ** (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಮುದುಕನಾಗಿರುವ. ಅಯಮೇಷಾಮತಿಶಯೇನ ವೃದ್ಧಃ—ವೃದ್ಧ “ಇಠನ್” (೪-೩-೪೪) । ವೃದ್ಧಸ್ಯ ವರ್ಷಿಃ ಆದೇಶಃ (೬-೪-೧೪೭) । 2. ಬಹಳ ಹಳೆಯದಾದ.

**ವರ್ಷೀಯಸ್ ವರ್ಷೀಯಸ್** (ವಿಂ) ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಮುದುಕನಾದ ಒಬ್ಬ. ಅಯಮನಯೋರತಿಶಯೇನ ವೃದ್ಧಃ—ವೃದ್ಧ “ಇಯಸುನ್” (೪-೩-೪೭) । ವರ್ಷಿರಾದೇಶಃ (೬-೪-೧೪೭) । ಸುಮಾರು ತೊಂಬತ್ತು ವರ್ಷಗಳು ಮೀರಿದವನು. “ಆಪೊಡಶಾಙ್ಗವೇದಾಲಃ ತರುಣಸ್ತತಃ ಉಚ್ಯತೇ । ವೃದ್ಧಃ ಸ್ಯಾತ್ಸಪ್ತತೇಋಷಿ ವರ್ಷೀಯಾನ್ ನವತೇಃ ಪರಮ್” ಸ್ಮೃತಿಃ ।

**ವರ್ಷುಕ ವರ್ಷುಕ** (ವಿಂ) ಮಳೆಯನ್ನು ಸುರಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ. ವರ್ಷತಿ—ವೃಷು (ಸೇವನೆ) “ಉಕಾ” (೩-೨-೧೪೪) । “ಜಗಮುಃ ಪ್ರಸಾದಂ ದ್ವಿಜಮಾನಸಾನಿ ಶೌರ್ವರ್ಷುಕಾ ಪುಷ್ಪಚಯಂ ಬ್ರಹ್ಮವ” ಭಟ್ಟಿಂ ೨-೩೭ ।

**ವರ್ಷುಕಾಢ ವರ್ಷುಕಾಢ** (ಪುಂ) ಮಳೆಯನ್ನು ಸುರಿಸುವ ಮೇಘ. ವರ್ಷುಕಾಸೌ ಅಬ್ದಶ್ಚ ।

**ವರ್ಷೋಪಲ ವರ್ಷೋಪಲ** (ಪುಂ) ಅಲಿಕ್ಕಲ್ಲು. ವರ್ಷಾಣಾಮುಪಲಃ ।

**ವರ್ಷಮನ್ ವರ್ಷಮನ್** (ನಂ) 1. ದೇಹ, ಶರೀರ. ವೃಷ್ಯತೇ—ವೃಷು (ಸೇವನೆ) “ಮನಿನ್” (೩ಂ ೪-೧೪೪) । 2. ಪ್ರಮಾಣ, ಎತ್ತರದ ಅಳತೆ. “ಗಜವರ್ಷಮ್ ಕಿರಾತೇಮ್ಯಃ ಶಶಸುರ್ದೇವದಾರವಃ” ರಘುಂ ೪-೭೬ । 3. ಮೇಲುಭಾಗ, ಹೊರಭಾಗ. “ಶಕ್ರುನಿಶಬಲನಿಡಾನೋಕಹಸ್ತಿಗವರ್ಷಮ್” ಮಾಲತೀಂ ೧-೪ । 4. ಸುಂದರವಾದ ಅಕಾರ. “ವರ್ಷಮ್ ದೇಹಪ್ರಮಾಣಾತಿ-ಸುಂದರಾಕೃತಿಷು ಸ್ಮೃತಮ್” ।

**ವಲತ್ ವಲತ್** (ವಿಂ) 1. ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೋಗುತ್ತಿರುವ. ವಲ (ಸಂಚಲನೆ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಅಧಿಕವಾಗುತ್ತಿರುವ, ಹೆಚ್ಚುತ್ತಿರುವ. “ವಲದ್ವಾಘಾಂ

ರಾಘಾಂ ಸರಸಮಿದಮ್ ಸಹವರೀ” ಗೀತಗೋಂ 1. 3. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತಿರುಗುತ್ತಿರುವ.

**ವಲನ ವಲನ** (ನಂ) 1. ಚಲಿಸುವುದು, ಮುಂದೆ ಸಾಗುವುದು. ವಲ (ಸಂಚಲನೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) । 2. ಅಧಿಕವಾಗುವುದು, ಹೆಚ್ಚುವುದು. 3. ತಿರುಗುವುದು, ಚಕ್ರಾಕಾರವಾಗಿ ಸುತ್ತುವುದು.

**ವಲಮಿ(ಮಿ) ವಲಮಿ(ಮಿ)** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಂಚುಹೊದಿಸುವ ಇಳುಜಾರು ಚಾವಣಿಯ ಸೂರಿಗೆ ಅಧಾರವಾದ ಮರದ ಪಟ್ಟಿ. ವಲತಿ—ವಲ (ಸಂವರಣ) “ಅಮಚ್” ಬಾಹುಂ । “ತೀಪ್” (೪-೧-೪೧) । “ಸೌಖ್ಯಾನ್ಯತ್ಯರ್ಥತಾಪಾ-ಫಲಮಿಪರಿಚಯದ್ವೇಷಿಪಾರಾವತಾನಿ” ಮಾಲಂ ೨-೧೨) । 2. ಮನೆಯ ಎತ್ತರವಾದ ಭಾಗ. “ದೃಷ್ಟ್ವಾ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಭವನ-ವಲಮಿತುಜ್ಜವಾತಾಯನಸ್ಯಾ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೮ ।

**ವಲಯ ವಲಯ** (ಪುಂ) 1. ಬಳೆ, ಕೈಕಡಗ. ವಲತೇ—ಆವೃಣೋತಿ ಹಸ್ತಮ್—ವಲ (ಸಂವರಣ) “ಕಯನ್” (೩ಂ ೪-೯೯) । “ನಿಸರ್ಗಾರಕ್ತವೆಲಯಾವನದತ್ತಾಮ್ರಾಸ್ಮರಸಿಮ್ಚ್ಚುರಿತೇ-ನೇಲಾಗ್ರೈಃ” ಮಾಘಂ ೩-೭ । 2. ಮಂಡಲ, ಗುಂಡಗಿರುವ ಅವರಣ. “ಸ ವೇಲಾವಪ್ರವಲಯಾಂ ಪರಿಕ್ಷೀಕೃತಸಾಗರಾಮ್” ರಘುಂ ೧-೩೦ । 3. ಸುರಳಿ ಸುತ್ತಿಕೊಂಡಿರುವ ವಸ್ತು, ವಿನ ಸುತ್ತ, ಸುರಳಿ ಸಿಂಬಿ. “ಪಾದಾಕೃಷ್ಣವ್ರತತಿವಲಯಾ-ಸಂಜ್ಞಸಂಜಾತಪಾಶಃ” ಶಾಕುಂ ೧-೨೯ । (ಪುಂ) 4. ಒಂದು ವಿಧ ಕುಂತರೋಗ. “ವಲಯಃ ಕಂಠರೋಗೋ ನಾ ಕಡಕೇ ಪುನಃಪುನಃಕಮ್” ಮೇದಿಂ । 5. ಬೇಲಿ.

**ವಲಯತ್ ವಲಯತ್** (ವಿಂ) ಚಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ವಲ (ಸಂಚಲನೆ) + ಣಿಚ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೦) । “ತನುತರಜ್ಜತತಿ ಸರಸಾಂ ದಲತುಕುಲಯಂ ವಲಯಮದಾವವೌ” ಮಾಘಂ ೬-೩ ।

**ವಲಯಿತ ವಲಯಿತ** (ವಿಂ) 1. ಸುತ್ತುಗಟ್ಟುಲಟ್ಟು, ಅವರಿಸುತ್ತಟ್ಟು. ವಲಯೋಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ—ವಲಯ “ಇತಚ್” (೪-೨-೩೬) । “ಜ್ಯಾಜಿಹ್ವಯಾ ವಲಯಿತೋಕ್ತಕೋದಿಂಧ್ರಮ್” ೩ಂ ರಾಂ ೪-೨೯ । 2. ಗುಂಡಾಗಿ ಆಗಿರುವ, ವಲಯಾಕಾರವಾಗಿ ಆಗಿರುವ. “ವಾತ್ಯಾಸಂವೇಗವಿಷ್ವಗ್ವಿತತವಲಯಿತಸ್ಕೀತ-ಧೂಮ್ಯಾಪ್ರಕಾಶಮ್” ಮಾಲತೀಂ ೪-೬ ।

**ವಲಾಹಕ ವಲಾಹಕ** (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಬಲಾಹಾಭಿ-ಹ್ರಿಯತೇ ಗಮ್ಯತೇ—ಆ ಹಾಡ್ (ಗತೌ) “ಕ್ವುನ್” (೩ಂ ೨-೩೭) । “ಅಪಾಮಪಾಯಧವಲಾ ವಲಾಹಕತತೀಃ” ಮಾಘಂ ೪-೪೪ ।

**ವಲಿ(ಲಿ) ವಲಿ(ಲಿ)** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉದರದ ಮೇಲುಭಾಗದಲ್ಲಿ ಕಾಣುವ ಚರ್ಮದ ಮಡಿಕೆ, ಪದರ. ಇದು



ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಸ್ತ್ರೀಯರ ಉದರದಲ್ಲಿ ಕಾಣುವುದು. ಪುರುಷರಿಗಿದ್ದರೆ ಅದು ಮಹಾಭಾಗ್ಯಸೂಚಕಮಹಾಪುರುಷ ಲಕ್ಷಣ. "ಪ್ರಣಯಿನ: ಪರಿರಂಧುಮಥಾಜ್ಞನಾ ವವಲಿರೆ ವಲಿ-  
ರೆವಿತಮಧ್ಯಮಾ:" ಮಾಘಂ ೬-೩೮. "ತವಲಿವಾನ್ ತ್ರಯವಂತ:  
ಚತುರ್ವ್ಯಂಜಘಸ್ವಿಶಿರ್ಷವಾನ್" ರಾಮಾಂ. 1. ಮುದುಕರ  
ಮೈಯಲ್ಲಿ ಕಾಣಬಹುದಾದ ಸುಕ್ಕು. "ವಲಿಭಿರ್ಮುಖ-  
ಮಾಕ್ರಾಂತಂ ಪಲಿತೇನಾಜ್ಞಿತಂ ಶಿರ:" ಭರ್ತುಂ ೩-೮.

**ವಲಿನ ವಲಿನ** (ವಿಂ) 1. ಸುಕ್ಕುಹಿಡಿದ ಮೈಯುಳ್ಳವನು, ಮುಖ್ಯನಿಂದ ಜೋಲುಬಿದ್ದ ದೇಹವುಳ್ಳವನು. ವಲಿ  
"ನ:" (೪-೨-೧೦೦). 2. ಉದರದಲ್ಲಿ ಚರ್ಮದ  
ಮಡಿಕೆಯಿರುವವನು. -ಭ: -ಭ: ವಲಿಸ್ಯಾಸ್ತಿ-ವಲಿ  
"ಭ:" (೪-೨-೧೩೯). ಸ್ತ್ರೀಯಾ -ಭಾ -ಭಾ. ಉದರ  
ದಲ್ಲಿ ಚರ್ಮದ ಮಡಿಕೆಯುಳ್ಳ ಸುಂದರ ಹೆಂಗಸು. ವಲಯ:  
ತವಲಯೋ ವಿವೃಂತೇ ಯಸ್ಯಾ: 1. "ಪ್ರಣಯಿನಂ ರಮಸಾದುದರಶ್ರಿಯಾ  
ವಲಿಭಯಾಲಿಭಯಾದಿವ ಸಸ್ವಜೇ" ಮಾಘಂ ೬-೧೩.

**ವಲಿಭ ವಲಿಭ** (ವಿಂ) "ವಲಿನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ವಲಿರ ವಲಿರ** (ವಿಂ) ಮಾಲುಗಣ್ಣುಳ್ಳವನು, ಓರೆನೋಟ  
ದವನು. ವಲತೇ-ವಲ (ಸಂವರಣ) "ಕಿರಚ್" ಬಾಹುಂ.

**ವಲಿಶ ವಲಿಶ** (ನಂ) ಮೀನು ಹಿಡಿಯುವ ಗಾಳಿ.

**ವಲಿಕ ವಲಿಕ** (ನಂ) ಹುಲ್ಲು ಅಥವಾ ತೆಂಗಿನ ಗಿರಿಗಳಿಂದ  
ಮಾಡಿದ ಚಾವಣಿಯ ಸೂರು. -ಚಾವಣಿಯ ತುದಿ.  
ವಲತೇ ಆವೃಣೋತಿ ಕುಡ್ಯಾದಿಕಮ್-ವಲ (ಸಂವರಣ)  
"ಕೀಕನ್" (೩ಂ ೪-೨೫). ನಿಪಾಂ. 1. "ಯಸ್ಯಾ-  
ಮಸೇವಂತ ನಮದಲಿಕಾ: ಸಮಂ ವಭೂಭಿರ್ವಲಮೀಯುವಾನ್:" ಮಾಘಂ  
೩-೫೩.

**ವಲಿಮುಖ ವಲಿಮುಖ** (ಪುಂ) ವಾನರ. ವಲಿ ಮುಖೇಷ್ಯ.

**ವಲೂಕ ವಲೂಕ** (ನಂ) ಕಮಲದ ಬೇರು, ತಾವರೆಯ  
ಬುಡ. ವಲ (ಸಂವರಣ) "ಝಕ:" (೩ಂ ೪-೪೦).

**ವಲಕ ವಲಕ** (ಪುಂ) 1. (ಮರದ) ತೊಗಟೆ. ವಲ  
(ಸಂವರಣ) "ಕನ್" (೩ಂ ೩-೪೨). "ಸ ವಲಕವಾಸಾಂಸಿ  
ತವಾಧುನಾ ಹರನ್" ಕಿರಾಂ ೧-೩೫. 2. ಶಕಲ, ತುಂಡು.  
ಚೂರು.

**ವಲಕಲ ವಲಕಲ** (ಪುಂ) 1. ತೊಗಟೆ. ವಲ (ಸಂವರಣ)  
"ಕಲ:" ಬಾಹುಂ. 2. ತೊಗಟೆ (ಮರದ ನಾರು)  
ಯಿಂದ ಮಾಡಿದ ವಸ್ತ್ರ. ನಾರುಬಟ್ಟೆ. "ಇಯಮಧಿಕಮನೋಜ್ಞಾ  
ವಲಕಲೇನಾಪಿ ತನ್ವಿ" ಶಾಕುಂ ೧-೧೭.

**ವಲಿಕಲ ವಲಿಕಲ** (ಪುಂ) ಕಂಟಕ, ಮುಳ್ಳು. ವಲಕ "ಇಲಚ್"  
ಬಾಹುಂ.

**ವಲಗತ್ ವಲಗತ್** (ವಿಂ) 1. ಹೋಗುತ್ತಿರುವ, ಚಲಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. ವಲ್ಗು (ಗತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪).  
"ವಲ್ಗದ್ಧನಸ್ತನತಡಸ್ವಲಿತಾನಿ ಮಂದಮ್" ಮಾಘಂ ೫-೨೯.  
2. ಅಡುತ್ತಿರುವ, ನಡುಗುತ್ತಿರುವ. "ವಲ್ಗದ್ಗರೀಯ:  
ಸ್ತನಕಮ್ಪಕಚ್ಚುಕಂ ಯಯು:" ಮಾಘಂ ೧೨-೨೦. 3. ಕಂಟದಾಡು  
ತ್ತಿರುವ. "ಸನ್ಯೈ: ಕಂಠಚ್ಛೇದಲೀನೇ ಕಬಂಧಾಙ್ಗಯೋ ವಿಮ್ಯೇ  
ವಲ್ಗತ: ಸಾಸಿಪಾಣೇ:" ಮಾಘಂ ೧೮-೫೩.

**ವಲಗನ ವಲಗನ** (ನಂ) 1. ನಡೆಯುವುದು, ಚಲಿಸುವುದು.  
ವಲ್ಗು (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫). "ತುರಗ-  
ವಲಗನಚ್ಚಲಕುಂಡಲೋ ವಿರುಹೇ ರುಹೇಷ್ಠಿತಭೂಮಿಷು" ರಘುಂ  
೯-೫೧. 2. ಕಂಟೆಯುವುದು. 3. ಅಡುವುದು, ನಡುಗು  
ವುದು.

**ವಲ್ಗಾ ವಲ್ಗಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುದುರೆಯ ಕಡಿವಾಣ, ಲಗಾಮು.  
ವಲ್ಯತೇಜಯಾ-ವಲ್ಗು (ಗತೌ) ಕರಂ "ವಬ್" (೩-೩-೧೨೧).  
"ಆಲಾನೇ ಗೃಹ್ಯತೇ ಹಸ್ತೀ ವಾಜೀ ವಲ್ಗಾಸು ಗೃಹ್ಯತೇ" ಮೃಚ್ಛಂ  
೧-೫೦. "ವಲ್ಗಾವಿಭಾಗಕುಶಲೋ ಗಮಯಾಂಬಮುವ" ಮಾಘಂ  
೫-೬೦.

**ವಲಿಗತ ವಲಿಗತ** (ನಂ) 1. ಅಶ್ವದ ಒಂದು ವಿಧ ಗತಿ.  
ಕುದುರೆಯ ನಾಗಾಲೋಟ. ವಲ್ಗು (ಗತೌ) ಭಾವೇ  
"ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪). "ಆಸ್ಕಂದಿತಂ ಧೋರಿತಕಂ ರೇಚಿತಂ  
ವಲಿತಂ ಪ್ಲುತಮ್" ಅಮಂ. 2. ಅಹಂಕಾರದ ಮಾತು,  
ಜಂಬದ ಮಾತು, ಗರ್ವದ ಮಾತು, "ನಿಮಿತ್ತಾದಪರಾಢೇಷೋ-  
ಧನಿಷ್ಕಸ್ಯೇವ ವಲಿತಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೨೭. (ವಿಂ) 3. ಅಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಂಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಲ್ಗ ಕರಂ "ಕ್ತ:"  
(೩-೨-೧೦೨). "ವಲಿತಭ್ರು ಗಲದ್ಧಮಂಜಲಮಾಲೋಹಿತೇ  
ಕ್ಷಣಮ್" ಕಾವ್ಯಾಂ ೨-೭೩.

**ವಲ್ಗು ವಲ್ಗು** (ಪುಂ) 1. ಅಜ, ಮೇಕೆ, ಅಡು. ವಲತೇ-ವಲ  
(ಸಂವರಣ) "ಝ:" ಗುಗಾಗಮಶ್ಚ (೩ಂ ೨-೨೦).  
(ವಿಂ) 2. ಸುಂದರವಾದ, ರಮಣೀಯವಾದ. "ತದ್ವಲ್ಗುನಾ  
ಯುಗಪದ್ವಿನ್ಮಿಷಿತೇನ ತಾವತ್" ರಘುಂ ೫-೬೮. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಸುಂದರವಾಗಿ, ಮನೋಹರವಾಗಿ. "ವಲ್ಗುವಲ್ಗದ್ಧನ  
ಸ್ತನತಡಸ್ವಲಿತಾನಿ ಮಂದಮ್" ಮಾಘಂ ೫-೨೯. "ವಲ್ಗು:  
ಸ್ಯಾತ್ ಛಗಲೇ ಪುಂಸಿ ಸುಂದರೇ ಚಾಪ್ಯಭಿಧೇಯವತ್"  
ಮೇದಿಂ.

**ವಲ್ಗುಕ ವಲ್ಗುಕ** (ನಂ) 1. ಚಂದನ, ಗಂಧ. 2. ಅರಣ್ಯ,  
ಕಾಡು. 3. ಬೆಲೆ, ಮೂಲ್ಯ. (ವಿಂ) 4. ಸುಂದರವಾದ,  
ಅಂದವಾದ.

**ವಲ್ಗುಲಿಕಾ ವಲ್ಗುಲಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿರಣಿ.



ವಲಭನ ವಲ್ಲಭ (ನಂ) 1. ಭೋಜನ, ಊಟ. 2. ಆಹಾರ.

ವಲಭ (ಭೋಜನ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

ವಲಮಿಕಿ ವಲ್ಮೀಕಿ (ಪುಂ) 1. ಹುಟ್ಟು. ವಲಂತೆ ಪ್ರಾಣಿನೋಜ್ವ

—ವಲ (ಸಂಚಲನೆ) "ಕೀಕನ್" (೩ಂ ೪-೨೫) ।

ನಿರ್ವಾಂ । "ವಲಮಿಕಿಗಾತ್ರ ಪ್ರಭವತಿ ಧನುಃಖಂಡಮಾಖಂಡಲಸ್ಯ"

ಮೇಘಂ ೧-೧೫ । (ಪುಂ) 2. ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹರ್ಷಿ. 3.

ದೇಹದ ಚರ್ಮವು ಅನೆಯ ಚರ್ಮದಂತೆ ಉದಿಕ್ಕೊಳ್ಳುವ

ಒಂದು ರೋಗ. "ವಲಮಿಕಿ ನಾಕುವಾಲ್ಮಿಕಯೋ ರೋಗಭೇದೇ"

ಹೇಮಂ । "ವಲಮಿಕಿ ರೋಗಭೇದೇ ಚ ನಾಕೌ ಚ ಪುನಃಪುನಃಕಮ್"

ಮೇದಿಂ ।

ವಲ್ಲ ವಲ್ಲ (ಪುಂ) 1. ಒಂದೂವರೆ ಗುಲಗಂಜಿ ತೂಕ.

2. ಎರಡು ಗುಲಗಂಜಿ ತೂಕ. 3. ಮೂರು ಗುಲಗಂಜಿ

ತೂಕ. ವಲ್ಲತೆ—ವಲ್ಲ (ಸಂವರಣ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।

4. ಮುಚ್ಚಳ. 5. ಧಾನ್ಯವನ್ನು ತೂರಿ ಶುದ್ಧಮಾಡು

ವವನು.

ವಲ್ಲಕಿ ವಲ್ಲಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೀಣೆ. ವಲ್ಲ (ಸಂವರಣ)

"ವವುನ್" (೩ಂ ೨-೩೨) । "ಅಜಸ್ರಮಾಸ್ಫಾಲಿತವಲ್ಲಕೀ-

ಗುಣಕ್ಷತೋಜ್ಜವಲಾಙ್ಗುಠನಖಾಶುಭಿನ್ನಯಾ" ಮಾಘಂ ೧-೯ ।

2. ಸಲ್ಲಕೀವೃಕ್ಷ, ಅನೇಬೇಲ.

ವಲ್ಲಭ ವಲ್ಲಭ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಿಯ, ಪತಿ. ವಲ್ಲ (ಸಂವರಣ)

"ಅಭವ್" (೩ಂ ೩-೧೨೫) । "ವ್ಯವಹಿತಮವಿಜಾನತೀ

ಕಿಲಾಂತರ್ವನಭುವಿ ವಲ್ಲಭಮಾಭಿಮುಖ್ಯಭಾಜಮ್" ಮಾಘಂ

೭-೩೫ । 2. ಅದ್ಭುತ. 3. ಒಳ್ಳೆಯ ಲಕ್ಷಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ

ಕುಂದುರೆ. "ವಲ್ಲಭೋ ದಯಿತೋಽಪ್ಯಕ್ಷೋ ಸಲ್ಲಕ್ಷಣತುರಙ್ಗಮೇ"

ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ) 4. ಪ್ರೀತಿಪಾತ್ರನಾದ, ಇಷ್ಟನಾದ.

—ಭಾ—ಭಾ. ಪತ್ನಿ. "ಯೇಸ್ತೋಯೇರಸಿಚತ ವಲ್ಲಭಾಂ ವಿಲಾಸೀ"

ಮಾಘಂ ೮-೩೮ ।

ವಲ್ಲರ ವಲ್ಲರ (ನಂ) 1. ಕೃಷ್ಣಾಗುರು. 2. ಲತಾಗೃಹ.

3. ಪೊದೆ, ಮೆಳೆ, ಕಾಡು. 4. ಗೊಂಚಲು.

ವಲ್ಲರಿ(ರಿ) ವಲ್ಲರಿ(ರಿ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೊಂಚಲು,

ಗುಚ್ಚ. ವಲ್ಲಂ ಕೃಚ್ಛತಿ—ಕೃ (ಗತೀ) "ಇಃ" (೩ಂ

೪-೧೩೯) । ವಾ "ಡೀಫ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫) ।

"ಕಿಂಜಲಕವ್ಯತಿಕರಪಿಂಜರಾಂತರಾಭಿಶ್ಚಿತ್ರಶ್ರೀರಲಮಲಕಾಗ್ರ

ವಲ್ಲರೀಭಿಃ" ಮಾಘಂ ೮-೫೬ । 2. ಲತೆ, ಬಳ್ಳಿ. "ಅನ-

ಪಾಯಿನಿ ಸಂಶ್ರಯದ್ರುಮೇ ಗಜಭಗ್ನೇ ಪತನಾಯ ವಲ್ಲರೀ" ಕುಮಾಂ

೪-೩೧ । 3. ಚಿತ್ರಮೂಲ.

ವಲ್ಲವ ವಲ್ಲವ (ಪುಂ) 1. ಗೋಪಾಲಕ, ಗೊಲ್ಲ. "ಶಶಿನ-

ಮಿವ ಸುರೀಧಾಃ ಸಾರಮುದ್ಧತುಮೇತೇ ಕಲಶಿಮುದ್ಧಿಗುರ್ವಿ ವಲ್ಲವಾ

ಲೋಡಯಂತಿ" ಮಾಘಂ ೧೧-೮ । 2. ಭೀಮಸೇನ. ಭೀಮಸೇ

ನನು ವಿರಾಟನಗರದಲ್ಲಿ ಅಜ್ಞಾತವಾಸದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಈ ಹೆಸರ

ನ್ನಿಟ್ಟುಕೊಂಡಿದ್ದನು. "ಪೀರೋಗವೋ ಬ್ರುವಾಣೋಽಹಂ ವಲ್ಲವೋ

ನಾಮ ನಾಮತಃ । ಉಪಸ್ಥಾಪ್ಯಾಮಿ ರಾಜಾನಂ ವಿರಾಟಮಿತಿ ಮೇ

ಮತಿಃ" ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೨-೧ । 3. ಅಡಿಗೆಯವನು.

ವಲ್ಲವಿ ವಲ್ಲವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೊಲ್ಲರ ಹೆಗ್ಗಸು. ವಲ್ಲವಸ್ಯ

ಸ್ತ್ರೀ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೪೮) । "ನಿರೀಕ್ಷಿತುಂ ನೋಪರರಾಮ

ವಲ್ಲವೀರಭಿಪ್ರನೃತ್ತಾ ಇವ ವಾರಯೋಷಿತಃ" ಕಿರಾಂ ೪-೧೭ ।

ವಲ್ಲಿ ವಲ್ಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲತೆ, ಬಳ್ಳಿ. ವಲ್ಲ (ಸಂವರಣ)

"ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೮) । "ಭೂತೇಶಸ್ಯ ಭುಜಙ್ಗವಲ್ಲಿ

ವಲಯಸತ್ಪನ್ನದ್ವಜಾಜಟಾಃ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೨ । ವಾ "ಡೀಫ್"

(ಗಂ ೪-೧-೪೫) । ವಲ್ಲಿ ವಲ್ಲಿ. "ಅವಚಿತಕುಸುಮಾ

ವಿಹಾಯ ವಲ್ಲಿಃ ಪುಷ್ಪತಿಃ ಕೋಮಲಮಾಲ್ಯಮಾಲಿನೀಃ" ಮಾಘಂ

೭-೬೧ ।

ವಲ್ಲಿವರ್ವಾ ವಲ್ಲಿವರ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಳ್ಳಿಯಾಗಿ ಹಬ್ಬುವ

ಗಂಟೆ. ವಲ್ಲಿರೂಪಾ ದ್ವರ್ವಾ ।

ವಲ್ಲಿ ವಲ್ಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲತೆ, ಬಳ್ಳಿ. ವಲ್ಲಿ "ಡೀಫ್"

(ಗಂ ೪-೧-೪೫) । 2. ಅಜಮಾನ, ವಾದಕ್ಕಿ. "ವಲ್ಲಿ

ಸ್ಯಾದಜಮೋದಾಯಾಂ ವ್ರತತ್ಯಾಮಪಿ ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ ।

ವಲ್ಲಿಜ ವಲ್ಲಿಜ (ನಂ) ಮೇಣಸು. ವಲ್ಲಭಾಂ ಜಾಯತೇ—

ಜನೀ (ಪ್ರಾದುರಭವಿ) "ಙಃ" (೩-೨-೯೮) ।

ವಲ್ಲಿಮುದ್ರ ವಲ್ಲಿಮುದ್ರ (ಪುಂ) ಕಾಡುಹೆಸರು.

ವಲ್ಲರ ವಲ್ಲರ (ವಿಂ) 1. ಒಣಗಿಸಿದ ಮೂಂಸ. 2. ಕಾಡು

ಹಂದಿಯ ಮೂಂಸ. ವಲ್ಲಯತೇ ಸಂವ್ರಿಯತೇ—ವಲ್ಲ (ಸಂವರಣ)

"ಉರವ್" ವಾಹುಂ । (ನಂ) 3. ಕ್ಷೇತ್ರ. 4. ಗೊಂಚಲು.

5. ಜಲವಿಲ್ಲದ ಪ್ರದೇಶ. 6. ಉಪರಭೂಮಿ. 7. ಪೊದೆ,

ಕಾಡು, ಮೆಳೆ. "ವಲ್ಲರೋ ತ್ರಿಘು ಸಂಶುಷ್ಕಮಾಂಸಸೂಕರ

ಮಾಂಸಯೋಃ । ವಲ್ಲರಂ ಸ್ಯಾಡ್ವನಕ್ಷತ್ರೇ ಗಹನೋಪರಯೋರಿಪಿ" ಮೇದಿಂ ।

ವಲ್ಲಾ ವಲ್ಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧಾತ್ರೀವೃಕ್ಷ, ನೆಲ್ಲಿಮರ.

"ಮಂಡಾ ತಿಷ್ಯಕಲಾ ಧಾತ್ರೀ ವಲ್ಲಾ ಪಂಚರಸಾ ಶಿವಾ"

ಹಾರಾಂ ।

ವಶ ವಶ (ನಂ) 1. ಇಚ್ಛೆ, ಆಪೇಕ್ಷೆ. 2. ಅಧೀನವಾಗಿರು

ವಿಕೆ. "ಆಕ್ರಾಂತಿತೋ ನ ವಶಮೇತಿ ಮಹಾನ್ ಪರಸ್ಯ" ಮಾಘಂ

೫-೪೧ । 3. ಪ್ರಭುತ್ವ, ಅಧಿಕಾರ. (ವಿಂ) 4. ಅಧೀನ

ದಲ್ಲಿರುವ, ಅಂಕಿಯಲ್ಲಿರುವ. ವಶ (ಕಾಂತೀ) "ಅಪ್"

(ವಾಂ ೩-೩-೫೮) । (ಪುಂ) 5. ವೇಶ್ಯಾಗೃಹ. 6. ಜನ್ಮ,

ಹುಟ್ಟು, ಉತ್ಪತ್ತಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಶಾ—ಶಾ. 7. ವಂಧ್ಯ,

ಬಂಜೆ, ಗೊಡ್ಡೆ. 8. ಮಗಳು. 9. ಅಕ್ಕಳ, ಹೆಸು.



10. ಹೆಂಗಸು. 11. ಹೆಣ್ಣು ಅನ. "ವಶಾ ವನ್ಯಾ-ಸುತಾ. ಪೌಷಾಸ್ತ್ರೀಗವೀಕರಿಣೀಷು ಚ | ತ್ರಿವ್ಯಾಯತೇ ಕಲೀಬರ್ಮಾಯತತ್ವೇ ಚೇಚ್ಛಾಪ್ರಮುತ್ವಯೋಃ" ಮೇದಿಂ | 12. ಗೊಡ್ಡು ಹಸು, ಬಂಜೆ ಯಾದ ಆಕಳು.

**ವಶವದ ವಶಂವದ** (ವಿಂ) ಒಬ್ಬನಿಗೆ ವಿಧೇಯನಾಗಿರುವವನು, ಒಬ್ಬನ ಆಜ್ಞೆಯನ್ನು ಪಾಲಿಸುವವನು, ಒಬ್ಬನಿಗೆ ತಲೆಬಾಗಿ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ವಶಂ ಆತ್ಮಾನಮಧೀನಂ ವದತಿ—ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಖಚ್" (3-2-38) | ಮುಗಾಗಮಃ (6-3-69) | "ವಿಶಿಷ್ಯ ಸಾ ಭೀಮನರೇಂದ್ರತಂದನಾ ಮನೋಭವಾಜ್ಞೇಕವಶವದಂ ಮನಃ" ನೆಪಂ 1-33 |

**ವಶಕ್ರಿಯಾ ವಶಕ್ರಿಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಕಾರ್ಯ, ತನ್ನ ಅಧೀನದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವ ಕಾರ್ಯ.

**ವಶಗ ವಶಗ** (ವಿಂ) ಒಬ್ಬನಿಗೆ ಅಧೀನವಾಗಿರುವ, ವಿಧೇಯನಾಗಿರುವ. ವಶಂ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಙಃ" (ವಾಂ 3-2-48) | "ನಮಸ್ಯಾಮೋ ದೇವಾನ್ಮನು ಹತವಿಧೇಸ್ತೇಽಪಿ ವಶಗಾಃ" ಭರ್ತಂ 1-91 |

**ವಶಾ ವಶಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ವಶ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ವಶಿ ವಶಿ** (ನಂ) ಅಧೀನವಾಗಿರುವಿಕೆ. ವಶ (ಕಾಂತೌ) ಭಾವೇ "ಇನ್" |

**ವಶಿಕ ವಶಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಶೂನ್ಯವಾದ, ಬರಿದಾದ. ವಶಿ "ಕನ್" (4-3-64) | 2. ತುಚ್ಛವಾದ, ನಿಶ್ಚಪ್ಪವಾದ. "ವಶಿಕಂ ತುಚ್ಛರಿತಕೇ" ಅಮಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ-ಕಾ. 3. ಅಗುರು. "ವಶಿಕನುಪಗೃಹೇ ಸಾ ವಾಸುಧೇವೇಽಪ್ಯದೀವ್ಯತ್" ಯಾದಂ 13-109 |

**ವಶಿತಾ ವಶಿತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಧೀನದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. 2. ಜಿತೇಂದ್ರಿಯನಾಗಿರುವಿಕೆ, ತನ್ನ ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ಹತೋಟಿಯಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ವಶಿತೋ ಭಾವಃ "ತಲ್" (4-1-119) | "ತ್ವಃ" | ವಶಿತವಮ್ ವಶಿತಮ್. 3. ಈಶ್ವರನ ಆಜ್ಞೆಯುಳ್ಳವನು. "ಅಣಿಮಾ ಮಹಿಮಾ ಚೈವ ಗರಿಮಾ ಲಘಿಮಾ ತಥಾ | ಪ್ರಾಪ್ತಿಃ ಪ್ರಾಕಾಮ್ಯ-ಮಿಶಿತವಂ ವಶಿತವಂ ಚಾಪ್ಯಭೂತಯಃ" |

**ವಶಿನ್ ವಶಿನ್** (ವಿಂ) 1. ತನ್ನ ವಶದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವವನು. ವಶೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (4-2-114) | 2. ಪ್ರಭುತ್ವವುಳ್ಳವನು, ಅಧಿಕಾರವುಳ್ಳವನು. 3. ಇಂದ್ರಿಯ ನಿಗ್ರಹವುಳ್ಳವನು. "ವಶಿನಂ ಚಿತೇರಯನಯಾವಿವೇಶ್ವರಂ ನಿಯಮೋ ಯಮಶ್ಚ ನಿಯತಂ ಯತಿ ಯಥಾ" ಮಾಧಂ 13-23 |

**ವಶಿನಿ ವಶಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶರ್ಮಾವೃಕ್ಷ. 2. ಬದನಿಕೆ ಗಿಡ.

**ವಶಿರ ವಶಿರ** (ನಂ) 1. ಸಮುದ್ರದ ಉಪ್ಪು. (ಪುಂ) 2. ಗಜಹಿಪ್ಪಲಿ. ವಶ (ಕಾಂತೌ) "ಕಿರಚ್" ಬಾಹುಂ | 3. ಉತ್ತರೇಣಿ ಗಿಡ. "ವಶಿರಶ್ಚುಮಾನ್ | ಕಿಣಿಹೀಗಜ-ಪಿಪ್ಪಲಯೋಃ ಕಲೀವೇಽಪಿಲವಣೇ ಸ್ಮೃತಃ" ಮೇದಿಂ | 4. ಬಜೆ. 5. ಜಿವ್ಯ.

**ವಶೀಕರಣ ವಶೀಕರಣ** (ನಂ) 1. ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಮಂತ್ರ ಮತ್ತು ಮಾಯೆಗಳಿಂದ ತನಗೆ ಅಧೀನವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ವಶ+ಕೃತ್ "ಚ್ವಿಃ" (4-4-40) | "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) | 2. ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಸಾಧನ. ವಶ+ಕೃತ್ "ಚ್ವಿಃ" (4-4-40) | ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) | "ಏಕೈಕಮೇವ ಹಿ ವಶೀಕರಣಂ ಗರೀಯಃ" ಮಾಲತೀಂ 6-19 |

**ವಶೀಕೃತ ವಶೀಕೃತ** (ವಿಂ) ವಶಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ತನ್ನ ಇಚ್ಛೆಗೆ ಅಧೀನವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಶ+ಕೃತ್ (ಕರಣೇ) "ಚ್ವಿಃ" (4-4-40) | "ಕ್ತಃ" (3-2-102) |

**ವಶೀಭೂತ ವಶೀಭೂತ** (ವಿಂ) ವಶನಾಗಿರುವ, ಒಬ್ಬನಿಗೆ ಅಧೀನನಾಗಿ ಆಗಿರುವ. ವಶ+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಚ್ವಿಃ" (4-4-40) | "ಕ್ತಃ" (3-4-92) |

**ವಶ್ಯ ವಶ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಅಧೀನವಾಗಿರುವ, ವಿಧೇಯನಾಗಿರುವ, ಒಬ್ಬನ ವಶದಲ್ಲಿರುವ. ವಶಂ ಗತಃ "ಯತ್" (4-4-66) | "ಆತ್ಮವಶ್ಯವಿಧೇಯಾತ್ಮಾ ಪ್ರಸಾದಮವಿಗಚ್ಛತಿ" ಗೀತಾ 2-64 | 2. ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ದಮನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಶ್ಯಾತ್ಮನಾ ತು ಯತತಾ ಶಕ್ಯೋಽ-ವಾಪ್ತುಮುಪಾಯತಃ" ಗೀತಾ 6-36 | 3. ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಶಕ್ಯನಾದ. ವಶ (ಕಾಂತೌ) "ಯತ್" (3-1-124) | "ಮನೋ ನವದ್ವಾರನಿಷಿದ್ಧವೃತ್ತಿ ಹೃದಿ ವ್ಯವಸ್ಥಾಪ್ಯ ಸಮಾಧಿ-ವಶ್ಯಮ್" ಕುಮಾಂ 3-40 | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಶ್ಯಾ-ಶ್ಯಾ. ವಶಳಾಗಿ ವಿಧೇಯಳಾಗಿರುವ ಹೆಂಗಸು (ಪತ್ನಿ).

**ವಶಟ್ ವಶಟ್** (ಅವ್ಯಂ) ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಹವಿಸ್ಸನ್ನು ಅರ್ಪಿಸುವ ಮಂತ್ರ. ಉಹಿತೇ ಹವಿರನೇನ—ವಹ (ಪ್ರಾಪ್ತೇ) "ಙಷಟ್" |

**ವಶಡ್ಕಾರ ವಶಡ್ಕಾರ** (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಹವಿಸ್ಸನ್ನು ಅರ್ಪಿಸುವುದು. (ಹೋಮಮಾಡುವುದು).

**ವಶಡ್ಕೃತ ವಶಡ್ಕೃತ** (ವಿಂ) ದೇವತೆಗಳ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ಅರ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಹೋಮಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ) (ಹವಿಸ್ಸು). ವಶಡಿತ ಮನ್ತ್ರೇಣ ಕೃತಮ್ |

**ವಸ - ಆಚ್ಛಾದನೆ** (ಅವಾಂ ಆತ್ಮಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) | ವಸ್ತೇ ವಸಾತೇ ವಸತೇ | ವಸ್ಸೇ ವಸಾಥೇ | ವವಸೇ | ವಸಿತಾ |



ವಸಿಷ್ಯತೇ । ವಸ್ತಾಮ್ ವಸಾತಾಮ್ ವಸತಾಮ್ । ವಸ್ವ ವಸಾಥಾಮ್  
ವಚಮ್ । ಅವಸ್ತ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕರ್ಮಣಿ :—ವಸ್ಯತೇ । ವವಸೇ । ವಸ್ಯತಾಮ್ । ಅವಸ್ಯತ ।  
ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು :—ವಸಿತವ್ಯಮ್ । ವಸನೀಯಮ್ । ವಾಸ್ಯಮ್ । ವಸಿತಃ ।  
ವಸಿತವಾನ್ । ವಸಾನಃ । ವಸಿತಮ್ । ವಸನಮ್ । ಹೊಡೆ,  
ಉಡು, ತೊಡು, ಧರಿಸು. “ಸ್ಕುರದ್ವಾರಭಿತ್ತಿ ವಸನಂ  
ವವಸೇ” ಮಾಘಂ ೧-೭೫ ।

ವಸ - ನಿವಾಸೇ (ಭಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ) । ವಸತಿ ।  
उवास ऊषतुः ऊषुः । उवसिथ, उवस्थ ऊषथुः ऊष ।  
उवास उवस ऊषिव ऊषिम । वस्ता । वत्स्यति ।  
वसतु । अवसत् । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಭಾವೇ :—उष्यते । ऊषे । वस्ता । वत्स्यते । उष्यताम् ।  
ಇತ್ಯಾದಿ.

णिचि :—वासयते । वासयां चक्रे, -बभूव, -आस ।  
वासयिता । वासयताम् । ಇತ್ಯಾದಿ.

कृत्सु :—वस्तव्यम् । वसनीयम् । वास्यम् । उषितः ।  
उषितवान् । वसन्, वसन्ती । उषितम् । वसनम् ।  
ವಾಸವಾಗಿರು, ವಾಸಮಾಡು, ನೆಲಸು. “वसन्ति हि  
प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि” किरा० ८-३७ ।

वसत् वसत् (वि०) ವಾಸಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ವಸ (ನಿವಾಸೇ)

“शतृ” (३-२-१२४) । “वसन् ददर्शिवतरन्तमम्बरात्”  
माघ० १-१ । स्त्रियां “डीष्” (४-१-६) । -न्ती -३१.

वसति वसति (स्त्री०) 1. ವಾಸಮಾಡುವುದು. ವಸ  
(ನಿವಾಸೇ) “अतिः” (उ० ४-६०) । “ग्रामीणैः  
पुनरध्वगस्य वसतिप्रामि निषिद्धा यथा” अमर० १३ ।  
2. ಗೃಹ, ಮನೆ. ವಸಂತ್ಯಸ್ಯಾಮ್ — ವಸ “अतिः” ।  
“वसतिं प्रिय कामिनां प्रियास्त्वदृते प्रापयितुं क ईश्वरः”  
कुमा० ४-११ । 3. ರಾತ್ರಿ. “तस्य मार्गवशादेका  
बभूव वसतिर्यतः” रघु० १५-११ । वा “डीष्” (ग०  
४-१-४५) । -ती -३१.

वसथ वसथ (न०) ಪಕ್ಕಗಳ ಗೂಡು, ಹಕ್ಕಿಗಳ ವಾಸಸ್ಥಾನ.

वसन वसन (न०) 1. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. ವಸ್ಯತೇ ಆಚ್ಛಾದ್ಯತೇನೇನ  
—वस (आच्छादने) कर० “ल्युट्” (३-३-११७) ।  
“गृहमेव्यति प्रियतमे सुदृशां वसनाङ्गरागसुमनःसुमनः”  
माघ० १-५० । 2. ಹೊಡೆಯುವುದು, ಉಡುವುದು,  
ಧರಿಸುವುದು, ವಸ ಭಾವೇ “ल्युट्” (३-३-११५) ।  
3. ವಾಸಮಾಡುವುದು. ವಸ (ನಿವಾಸೇ) ಭಾವೇ “ल्युट्”

(३-३-११५) । 4. ಗೃಹ, ಮನೆ. ವಸಂತ್ಯಸ್ಮಿನ್—वस  
अधि० “ल्युट्” (३-३-११७) । 5. ವಡ್ಡಾಣ, ಡಾಬು,  
ಹೆಂಗಸರ ನಡುಕಟ್ಟು.

वसना वसना (स्त्री०) ವಡ್ಡಾಣ, ಡಾಬು, ಹೆಂಗಸರ  
ನಡುಕಟ್ಟು.

वसन्त वसन्त (पुं०) 1. ಒಂದು ಋತು, ಆರು ಋತು  
ಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯದು. ವಸಂತ್ಯತ್ರ ಮದನೋತ್ಸವಾಃ—वस  
(निवासे) “अच्” (उ० ३-१२८) । ಚೈತ್ರ ಮತ್ತು  
ಮೈಥಾಖಿ ಎರಡು ತಿಂಗಳು ಸೇರಿದ ಋತುವು ವಸಂತರ್ತು.  
“सद्यो वसन्तेन समागतानां नखक्षतानीव वनस्थलीनाम्”  
कुमा० ३-२९ । 2. ಮೂರ್ತಿಮತ್ತಾದ ವಸಂತಋತು,  
ಶರೀರವನ್ನು ತಾಳಿದ ಮನ್ಮಥನ ಮಿತ್ರ ವಸಂತಋತು.  
3. ಸಂಗೀತದ ಒಂದು ರಾಗ. 4. ಅತಿಸಾರ ರೋಗ.  
5. ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ವಿದೂಷಕನ ಹೆಸರು.

वसन्तकाल वसन्तकाल (पुं०) ವಸಂತಋತು.

वसन्तघोषिन् वसन्तघोषिन् (पुं०) ಕೋಗಿಲೆ.

वसन्ते घोषति—घुषिर् “णिनिः” (३-१-१३४) ।

वसन्ततिलक वसन्ततिलक (न०) ವೃತ್ತರತ್ನಕರೋಕ್ತ  
ವಾದ ಹದಿನಾಲ್ಕನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ.  
ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: “उक्तं वसन्ततिलकं तमजा जगौ  
गः” । ಇದರ ಗಣನಿನ್ಯಾಸ:

त भ ज ज गु गु  
००॥ ०॥ १०॥ १०॥ ० ०

उवा: “दृष्ट्वा वसन्ततिलकं सहकारवाटीं सिंहोद्धता-  
न्वितगती रघुवीरसिंहः । उद्धर्षिणीं मनसिजस्य यथास्त्र-  
पङ्क्ति शोभावतीं जनकजां मनसा जगाम” ।

वसन्तद्वत वसन्तद्वत (पुं०) 1. ಕೋಗಿಲೆ. ವಸಂತಸ್ಯ  
द्वतः । 2. ಚೈತ್ರಮಾಸ. 3. ಸಂಗೀತದಲ್ಲಿ ಪಂಚಮರಾಗ.  
“वसन्तद्वतश्चित्रे स्यात् पिकपञ्चमरागयोः” मेदि० ।

वसन्तद्वती वसन्तद्वती (स्त्री०) 1. ಕಾಡೆರುವಂತಿಗೆ  
ಗಿಡ. ವಸಂತಸ್ಯ ದ್ವತೀವ । 2. ಹಸುರು ಪಾದರಿ.

वसन्तद्रुम वसन्तद्रुम (पुं०) ಆಮ್ರವೃಕ್ಷ, ಮಾವಿನ  
ಮರ. वसन्तस्य द्रुमः ।

वसन्तबन्धु वसन्तबन्धु (पुं०) ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ.

वसन्तोत्सव वसन्तोत्सव (पुं०) ವಸಂತಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ಆಚರಿಸುವ ಹಬ್ಬ.

वसा वसा (स्त्री०) ಮೇದಸ್ಸು, ಕೊಬ್ಬು, ಎಲುವಿನ ನೆಣ.  
वस (निवासे) “अच्” (३-१-१३४) । “निर्वान्त्य-



ಛಾಪಿ ನೇತೆ ಸ್ತುತಬಹಲವಸಾವಾಹಿನೋ ಹವ್ಯವಾಹಾ:” ಮುಧಾಂ 3-261.

**ವಸಾನ ವಸಾನ** (ವಿಂ) ಉಟ್ಟಿರುವ, ಧರಿಸಿರುವ. ವಸ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) “ಶಾನವ್” (3-2-124)। “ಮಾನ್ಯಮಗ್ರಜ-ವರ್ಣೇನ ವಸಾನೋ ದಿವ್ಯಮಮ್ಬರಮ್” ಯಾದಂ 16-49.

**ವಸಿ ವಸಿ** (ಪುಂ) 1. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. ವಸ್ತೇ ಆಚ್ಛಾದಯತಿ ಶರೀರಮನೇನ—ವಸ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) “ಃ” (ಉಂ 4-139)। 2. ಗೃಹ, ಮನೆ. ವಸತ್ಯತ್ರ—ವಸ (ನಿವಾಸೇ) “ಃ” (ಉಂ 4-139)।

**ವಸಿರ ವಸಿರ** (ನಂ) 1. ಸಮುದ್ರದ ಉಪ್ಪು. ವಸಿ ರಾತಿ—ರಾ (ದಾನೇ) “ಕ:” (3-2-3)। (ಪುಂ) 2. ಗಜಹಿಪ್ಪಲಿ. ವಸ್ತೇ—ವಸ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) “ಕಿರವ್” ಬಾಹುಂ। 3. ಅಪಾಮಾರ್ಗ, ಉತ್ತರೇಣ ಗಿಡೆ. “ವಸಿರ: ಪುಮಾನ್। ಕಿಣಿಹೀಹಸ್ತಿಪಿಪ್ಪಲಯೋ:” ಮೇದಿಂ।

**ವಸಿಠ ವಸಿಷ್ಠ** (ಪುಂ) ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿ, ಸೂರ್ಯ ಮಂಶದ ಚಕ್ರವರ್ತಿಗಳ ಪುರೋಹಿತರು. ಈ ಮಹರ್ಷಿಯು ಸ್ವಾಯಂಭುವ ಮನ್ವಂತರದಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಾನಸಪುತ್ರರು. ಅರುಂಧತಿಯು ಈ ಮಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿ. ವಸಿಷ್ಠ ಮಹರ್ಷಿಯು ಅರುಂಧತಿಯಲ್ಲಿ ಶಕ್ತಿಮಹರ್ಷಿಯನ್ನು ಪಡೆದರು. ವಶವತಾಂ ವಶಿನಾಂ ಜಿತೇಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ ಶ್ರೇಷ್ಠ: “ಋಷಿಃ”। ಮತುಪೋ ಲುಕ್ (4-3-64)। ವಸಿಷ್ಠ ಮಹರ್ಷಿಯು ಅನೇಕ ವೇದಮಂತ್ರಗಳನ್ನು ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರಿಸಿ ದವರು. ಇವರ ಅಪಾರವಾದ ಮಹಿಮೆಯನ್ನು ಕಂಡ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರರು ಅವರಂತೆ ತಾವೂ ಬ್ರಹ್ಮವರ್ಚಸ್ಸನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಬೇಕೆಂದು ಅನೇಕ ಸಹಸ್ರ ವರ್ಷಗಳಕಾಲ ತಪಸ್ಸು ನ್ನುಚರಿಸಿ ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿ ಎನಿಸಿ ಕೊಂಡರು.

**ವಸು ವಸು** (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 1. ದೇವತೆಗಳ ಒಂದು ಗಣ. ವಸಂತಿ—ವಸ (ನಿವಾಸೇ) “ಃ” (ಉಂ 1-10)। ಈ ದೇವತೆಗಳು (1) ಧರ: (2) ಭುವ: (3) ಸೋಮ: (4) ವಿಷ್ಣು: (5) ಅನಿಲ: (6) ಅನಲ: (7) ಪ್ರತ್ಯುಷ: ಮತ್ತು (8) ಪ್ರಭಾಸ: ಎಂದು ಎಂಟು ಮಂದಿ. ಇವರೆಲ್ಲರೂ ತಮ್ಮ ಪತ್ನಿಯರೊಡನೆ ಕೂಡಿ ವಿಹರಿಸುತ್ತೆ ವಸಿಷ್ಠ ಮಹರ್ಷಿಯ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿದ್ದ ನಂದಿನೀಧೇನುವನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿಕೊಂಡು ಹೋಗುತ್ತಿರಲು ಕ್ರೂರರಾದ ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿಯು ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಮನುಷ್ಯರಾಗಿ ಹುಟ್ಟುವಂತೆ ಶಪಿಸಿದರು. ಈ ವೇಳೆಗೆ ಸರಿಯಾಗಿ ಬ್ರಹ್ಮನ ಶಾಪದಿಂದ ಭೂಮಿಗೆ ಇಳಿದುಬಂದ ಗಂಗೆಯ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ

ಇವರೆಲ್ಲರೂ ಮನುಷ್ಯರಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದರು. ಗಂಗೆಯು ಏಳು ಮಕ್ಕಳನ್ನೂ ಹುಟ್ಟಿದ ಕೂಡಲೆ ಪ್ರವಾಹದಲ್ಲಿ ಬಿಸಾಡುತ್ತಿದ್ದಳು. ಪತಿಯಾದ ಶಂತನು ಮಹಾರಾಜನು ಎಂಟನೆಯ ಮಗುವನ್ನು ಅವಳ ಕೈಗೆ ಕೊಡದೆ ರಕ್ಷಿಸಿ ಕೊಂಡನು. ಆ ಶಿಶುವೇ ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯನು. (ಪುಂ) 2. ಅಗ್ನಿ. 3. ಎತ್ತಿನ ಕತ್ತಿಗೆ ನೊಗವನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟುವ ಮಿಳಿ, -ಹಗ್ಗ. 4. ಬಕಪುಷ್ಪ. 5. ರಾಜ, ದೊರೆ. 6. ಕುಬೇರ. 7. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. 8. ಎಂಟುಸಂಖ್ಯೆಯ ಸಂಕೇತ. 9. ಸೂರ್ಯ. 10. ರಶ್ಮಿ, ಕಿರಣ. (ನಂ) 11. ಧನ, ಸಂಪತ್ತು. ವಸತ್ಯತ್ರ ಗುಣ:—ವಸ (ನಿವಾಸೇ) “ಃ” (ಉಂ 2-10)। “ನಿರಕಾಸಯದ್ರವಿಮಪೇತವಸು ವಿಯದಾಲಯಾದಪರದಿಗ್ಗಣಿಕಾ” ಮಾಘಂ 9-10। 12. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 13. ಜಲ, ನೀರು. 14. ಒಂದು ವಿಧ ಲವಣ. 15. ರತ್ನ. 16. ವೃದ್ಧಿಯೆಂಬ ಔಷಧ. (ವಿಂ) 17. ಮಧುರವಾದ, ಸಿಹಿಯಾದ. 18. ಶುಷ್ಕ ವಾದ, ಒಣಗಿರುವ. “ವಸುರ್ನಾ ದೇವಭೇದಾಗ್ನಿಭಾಯಿಕ್ವಬಕ-ರಾಜಸು। ಕಲಿಬೇ ವೃದ್ಧಯೌಷಠೇ ಶ್ಯಾನರೇರತೇ ಮಧುರೇ ತ್ರಿಪು” ಮೇದಿಂ।

**ವಸುಕ ವಸುಕ** (ಪುಂ) 1. ಬಕಪುಷ್ಪ. 2. ಅರ್ಕಪರ್ಣ, ಎಕ್ಕದ ಎಲೆ. (ನಂ) 3. ಸಮುದ್ರದ ಉಪ್ಪು. “ವಸುಕಂ ರೋಮಕೇ ಪುಸಿ ಶಿವಮಲ್ಯಕರ್ಪಣಯೋ:” ಮೇದಿಂ।

**ವಸುಕೂಟ ವಸುಕೂಟ** (ಪುಂ) ಯಾಚಕ, ಭಿಕ್ಷುಕ. ವಸುನಿ ಧನೇ ಕೂಟ ಇವ।

**ವಸುದ ವಸುದ** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ವಸು ದದಾತಿ ಲಘುಭ್ಯ:—ಓ ದಾನ್ (ದಾನೇ) “ಕ:” (3-2-3)। “ವಸುದೋ ಧನ-ದಾನಾಚ್ಚ ಧನಾಯದ್ಭಯೋ ವಿಶೇಷತ:” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ:। “ಮಹೇಂದ್ರೋ ವಸುದೋ ವಸು:” ವಿಂ ಸಂ।

**ವಸುಧೇವ ವಸುಧೇವ** (ಪುಂ) ಯದುವಂಶದ ಶೂರರಾಜನ ಮಗ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ತಂದೆ. ವಸುಧು ದೀವ್ಯತಿ—ದಿವ್ಯ (ಶ್ರೀಡಾದಿ) “ಅವ್” (3-1-134)।

**ವಸುಧೇವತಾ ವಸುಧೇವತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಸುಗಳು ದೇವತೆ ಗಳಾಗಿ ಉಳ್ಳ ಧನಿಷ್ಠಾನಕ್ಷತ್ರ. ವಸವೋ ದೇವತಾ ಅಸ್ಯಾ:।

**ವಸುಧೇವತನಯ ವಸುಧೇವತನಯ, -ಪುತ್ರ -ಪುತ್ರ,**  
-ಸುತ -ಸುತ, -ಸುನು -ಸುನು (ಪುಂ) ವಸುಧೇವನ ಮಗನಾದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ವಸುಧೇವಸ್ಯ ತನಯ: ಪುತ್ರ: ಸುತ: ಸುನುರ್ವಾ।

**ವಸುಧಾ ವಸುಧಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೃಥಿವಿ, ಭೂಮಿ. ವಸುನಿ ರತ್ನಾನಿ ದಧಾತಿ ಧಾರಯತಿ—ಓ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:)



“ಕ:” (೩-೨-೩) । “ರಥೇನಾನುದ್ವಾತಸ್ತಿಮಿತಗತಿನಾ  
ತೀರ್ಣಜಲಧಿ: ಪುರಾ ಸಪ್ತದ್ವೀಪಾಂ ಜಯತಿ ವಸುಧಾಮಪ್ರತಿರಥ:”  
ಶಾಕುಂ ೭-೩೩ । 2. ನೆಲ.

**ವಸುಧಾಧಿಪ ವಸುಧಾಧಿಪ** (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯ ಒಡೆಯ,  
ರಾಜ, ದೊರೆ. ವಸುಧಾಧಿಪ: ।

**ವಸುಧರಾ ವಸುಧರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೂಮಿ. ವಸುಧರಾ  
—ಧೃ (ಧಾರಣೆ) + ಣಿಕ್ “ಸಕ್” (೩-೨-೪೬) ।  
ಹ್ರಸ್ವ: (೪-೬-೭೪) । ಮು (೬-೩-೬೭) । “ವಸುಧರಾಂ  
ಕೃತ್ಸನಾಂ ನಾಸ್ತಿ ವಾಲಿಸಮೋ ಬಲಿ” ಭಟಿಂ ೬-೧೦೮ ।

**ವಸುಪ್ರಭಾ ವಸುಪ್ರಭಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಯ ಸಪ್ತಜಿಹ್ವೆ  
ಗಳಲ್ಲೊಂದು.

**ವಸುಪ್ರಾಣ ವಸುಪ್ರಾಣ** (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ, ವಹ್ನಿ.

**ವಸುಮತ್ ವಸುಮತ್** (ವಿಂ) 1. ಧನಿಕ, ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ.  
ವಸು ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಢೀಪ್”  
(೪-೧-೬) । -ಮತೀ -ಮತೀ. 2. ಭೂಮಿ. “ಅನ್ಯೇಷಾಂ  
ಯುಷ್ಣಿರ್ಠಿರಪ್ರಭೃತಯೋ ಯಾತಾ ದಿವ ಭೂತಲೇ ನೈಕೇನಾಪಿ ಸಮಂ ಗತಾ  
ವಸುಮತೀ ಮುಜ್ಜ ತ್ವಯಾ ವಾಸ್ಯತಿ” ಭೋಜಪ್ರಂ ।

**ವಸುರೋಚಿಸ್ ವಸುರೋಚಿಸ್** (ನಂ) ಯಜ್ಞ. ವಸವೋ  
ರೋಚಂತೇಽಸ್ಮಿನ್—ಠ್ವ (ದೀಪ್ತ) “ಇಸಿಮ್” (೩ಂ ೨-೧೧೨) ।  
ವಸುರೋಚಿರ್ಯಜ್ಞ: ಸಿಂ ಕೌಂ ।

**ವಸುಶ್ಲೇಷ ವಸುಶ್ಲೇಷ** (ನಂ) 1. ಬೆಳ್ಳಿ, ರಜತ. ವಸುನಾ  
ದೀಪ್ಯಾ ಶ್ಲೇಷಮ್ । 2. ಶುದ್ಧಮಾಡಿದ ಚಿನ್ನ.

**ವಸುಷೇಣ ವಸುಷೇಣ** (ಪುಂ) ಕರ್ಣ.

**ವಸುಸ್ಥಲಿ ವಸುಸ್ಥಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಬೇರನ ಪಟ್ಟಣ,  
ಅಲಕಾನಗರ.

**ವಸ್ಕಯ ವಸ್ಕಯ** (ಪುಂ) ಒಂದು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನ  
ಕರು.

**ವಸ್ಕಯಿಣಿ ವಸ್ಕಯಿಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಹಳಕಾಲ ಕಳೆದು ಕರು  
ಹಾಕಿದ ಹಸು. ವಸ್ಕಯೋಸ್ತಸ್ಯಾ: “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೫) ।  
“ಢೀಪ್” (೪-೧-೫) ।

**ವಸ್ತಿ ವಸ್ತಿ** (ಪುಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಾಸಮಾಡುವುದು. ವಸ  
(ನಿವಾಸ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) । 2. ಪಿಚೆಕಾರಿ,  
ದೇಹದೊಳಗಿನ ದೋಷವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸಲು  
ಪ್ರಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ಸಾಧನ. 3. ನಾಭಿಯ ಅಧೋ  
ಭಾಗ, ಹೊಕ್ಕುಳಿನ ಕೆಳಭಾಗ, ಮೂತ್ರಾಶಯ. ವಸ್ತಿ  
ಮೂತ್ರಾದಿಕಮತ್ರ—ವಸ “ತಿ:” (೩ಂ ೪-೧೭೯) ।

**ವಸ್ತಿಮಲ ವಸ್ತಿಮಲ** (ನಂ) ಮೂತ್ರ. ವಸ್ತೆ: ನಾಭರಥೋ  
ಮಾಗಸ್ಯ ಮಲಮ್ ।

**ವಸ್ತು ವಸ್ತು** (ನಂ) 1. ದ್ರವ್ಯ, ವಿದ್ಯಾರ್ಥ. ವಸ್ತಿ—ವಸ  
(ನಿವಾಸ) “ತುನ್” (೩ಂ ೧-೭೫) । “ವಸ್ತು ವಿಶ್ವಮುದರೆ  
ತವ ದೃಷ್ಟಾ ವಾಹ್ಯವತ್ ಕಿಲ ಮೃಕೃತನುಜ:” ತೇಷಂ  
೨೧-೧೦೮ । 2. ಧನ, ಐಶ್ವರ್ಯ, ಸಂಪತ್ತು. “ಗೃಹೇಷು  
ದಾರೆಷು ಸುತೇಷು ಬಂಧುಷು ದ್ವಿಪೌತ್ತಮಸ್ಯಂದನವಾಜಿವಸ್ತುಷು” ಭಾಗಂ  
೯-೪-೨೭ । 3. (ನಾಟಕದಲ್ಲಿ) ಕಥಾವಿಷಯ. “ಅಹಮಸ್ಯಾಂ  
ಕಾಲಿದಾಸಗ್ರಥಿತವಸ್ತುನಾ ನವೇನ ತ್ರೋಟಕೇನ ಉಪಸ್ಥಾಸ್ಯೇ”  
ವಿಕ್ರಂ ೧ । “ಪೂರ್ವರಜ್ಞ: ಪ್ರಸಜ್ಞಾಯ ನಾಟಕೀಯಸ್ಯ ವಸ್ತುನ:”  
ಮಾಘಂ ೨-೮ । 4. ವಿಷಯದ ಸಾರ, ವಿಷಯದ ತಿರುಳು.  
5. ವಿಷಯ, ಅಲೋಚನೆಯ ವಸ್ತು, ಭಾಷಣದ ವಸ್ತು.  
ಇತ್ಯಾದಿ. “ಅಥಾಕ್ಷರಸಮಗ್ರಂಥಮುದಾಹರಣವಸ್ತುಷು” ಕುಮಾಂ  
೬-೬೫ ।

**ವಸ್ತುಕ ವಸ್ತುಕ** (ನಂ) ವಾಸ್ತುಕ, ಚಿಕ್ಕೋತದಸೊಪ್ಪು.

**ವಸ್ತು ವಸ್ತು** (ನಂ) ಗೃಹ, ಮನೆ. ವಸ (ನಿವಾಸ)  
“ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) । ವಸ್ತೌ ಸಾಧು “ಯತ್” (೪-೪-೯೮) ।

**ವಸ್ತ್ರ ವಸ್ತ್ರ** (ನಂ) ಬಟ್ಟೆ. ವಸ್ತ್ರತೇ ಆಚ್ಛಾದ್ಯತೇಽನೇನ—ವಸ  
(ಆಚ್ಛಾದನೆ) “ಛನ್” (೩ಂ ೪-೧೫೯) । “ವಸ್ತ್ರಂ  
ಪತ್ರಮಲಂಕಾರಂ ಕೃತಾನ್ಮುದಕಂ ಸ್ತ್ರೀಯ: । ಯೋಗಕ್ಷೇಮಂ ಪ್ರಚಾರಂ ಚ ನ  
ವಿಭಾಜ್ಯಂ ಪ್ರಚಕ್ಷತೇ” ಮನುಂ ೯-೨೧೯ । ಯಾವಾಗಲೂ  
ಶುಭ್ರವಾದ ಮತ್ತು ಶುಚಿಯಾದ ವಸ್ತ್ರವನ್ನು ಧರಿಸ  
ಬೇಕು. ಇನ್ನೊಬ್ಬ ಧರಿಸಿದ್ದ ಮಲಿನವಾದ ಅಂಚೆಲ್ಲದ  
ಜೀರ್ಣವಾದ ಮತ್ತು ರಕ್ತವರ್ಣದ ವಸ್ತ್ರವನ್ನು ಧರಿಸ  
ಕೂಡದು. “ವಸ್ತ್ರಂ ನಾನ್ಯಧೃತಂ ವಾಯಂ ನ ರಕ್ತಂ ಮಲಿನಂ ತಥಾ ।  
ಜಿರ್ಣಂ ವಾಪದಶಂ ಚೈವ ಕ್ವೇತಂ ವಾಯಂ ಪ್ರಯತ್ನತ:” ।

**ವಸ್ತ್ರಕುಡ್ಡಿಮ ವಸ್ತ್ರಕುಟ್ಟಿಮ** (ನಂ) 1. ಛತ್ರ, ಕೊಡೆ.  
ವಸ್ತ್ರನಿರ್ಮಿತಂ ಕುಡ್ಡಿಮಮಿವ । “ಪ್ರೋತೋತ್ಸಾದನಂ ವಸ್ತ್ರಕುಡ್ಡಿಮಮ್ ।  
ಛತ್ರಂ ಪುಟೋಜಮ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 2. ವಸ್ತ್ರಗೃಹ, ಡೇರೆ,  
ಗುಡಾರ.

**ವಸ್ತ್ರಗೃಹ ವಸ್ತ್ರಗೃಹ** (ನಂ) ಡೇರೆ, ಗುಡಾರ. ವಸ್ತ್ರನಿರ್ಮಿತಂ  
ಗೃಹಮ್ । —ವೇಶಮನ್—ವೇಶ್ಮನ್.

**ವಸ್ತ್ರಪುತ್ರಿಕಾ ವಸ್ತ್ರಪುತ್ರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುತ್ರಿಕೆ, ವಸ್ತ್ರ  
ದಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಬೊಂಬೆ. ವಸ್ತ್ರನಿರ್ಮಿತಾ ಪುತ್ರಿಕಾ ।

**ವಸ್ತ್ರಪೂತ ವಸ್ತ್ರಪೂತ** (ವಿಂ) ವಸ್ತ್ರದಿಂದ ಶೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
(ನೀರು ಮುಂತಾದುದು). “ದೃಷ್ಟಿಪೂತಂ ಪದಂ ನ್ಯಸ್ಯೇತ್ ವಸ್ತ್ರಪೂತಂ  
ಜಲಂ ಪಿಬೇತ್ । ಸತ್ಯಪೂತಾಂ ವದೇದ್ವಾಚಂ ಮನ:ಪೂತಂ ಸಮಾಚರೇತ್”  
ಮನುಂ ೬-೪೬ ।

**ವಸ್ನ ವಸ್ನ** (ನಂ) 1. ವೇತನ, ಸಂಬಳ, ಕೂಲಿ. ವಸ್ನತ್ರ  
—ವಸ (ನಿವಾಸ) “ನ:” (೩ಂ ೩-೬) । 2. ಮೂಲ್ಯ.



ವಹಲ ವಹಲ್ಯ (ನಂ) 1. ದೋಣಿ. 2. ತೆಪ್ಪು. ಉದಾಹರಣೆ  
—ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಅಲವ್” ವಾಹುಂ । “ಪಹಲಂ ವಾಹಿಂ  
ಪಾತಃ” ಹಾಸಂ । (ವಿಂ) 3. ದೃಢವಾದ.



ವಹಾ ವಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನದಿ, ಹೊಳೆ. ವಹತಿ—ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ)  
“ಅನ್” (೩-೧-೧೩೪) ।

ವಹಿತ್ರ ವಹಿತ್ರ (ನಂ) 1. ದೋಣಿ. 2. ತೆಪ್ಪ. ವಹತಿ  
ಜನಾನ್—ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಇತ್ರ:” (೩ಂ ೪-೧೭೧) ।  
“ವಹಿತ್ರ ವಾರ್ವಟ: ಪುಮಾನ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । “ಪ್ರಲಯಪಯೋಜಿಜಲೇ  
ಭೃತವಾನಸಿ ವೇದ ವಿಹಿತವಹಿತ್ರಚರಿತ್ರಮಖೇದಮ್” ಗೀತಗೋಂ ।  
ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” । ವಹಿತ್ರಕಮ್ ವಹಿತ್ರಕಮ್.

ವಹ್ನಿ ವಹ್ನಿ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ವಹತಿ ಹವ್ಯಮ್—ವಹ  
(ಪ್ರಾಪಣೆ) “ನಿ:” (೩ಂ ೪-೫೧) । “ಜಯೇತಿ ವಾಚಾ  
ಮಹಿಮಾನಮಸ್ಯ ಸಂವರ್ಧಯಂತೌ ಹವಿಷೇವ ವಹ್ನಿಮ್” ಕುಮಾಂ  
೭-೪೩ । 2. ಚಿತ್ರಮೂಲದ ಗಿಡ. “ವಹ್ನಿವೈಶ್ವಾನರೇಽಪಿ  
ಸ್ಯಾಚ್ಚಿತ್ರಕಾಲ್ಯಾಯಿಷಧೌ ಪುಮಾನ್” ಮೇದಿಂ । 3. ಗೇರು  
ಮರ. 4. ಜಾತರಾಗ್ನಿ, ದೇಹದೊಳಗೆ ಅಹಾರವನ್ನು  
ಪಚನಮಾಡುವ ಶಕ್ತಿ.

ವಹ್ನಿಗನ್ಧ ವಹ್ನಿಗಂಧ (ಪುಂ) ಸಜ್ಜರಸ, ಸಾಲವೃಕ್ಷದ ರಸ.

ವಹ್ನಿಗರ್ಭ ವಹ್ನಿಗರ್ಭ (ಪುಂ) 1. ವಂಶ, ಬಿದಿರು. ವಹ್ನಿ-  
ಗರ್ಭೇಷ್ಯ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಗರ್ಭಾ —ಗರ್ಭಾ. 2. ಶಮೀವೃಕ್ಷ,  
ಬನ್ನಿಮರ.

ವಹ್ನಿದೀಪಕ ವಹ್ನಿದೀಪಕ (ಪುಂ) 1. ಕುಸುಂಬೆ ಗಿಡ.  
ವಹ್ನಿ ದೀಪಯತಿ—ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೌ) + ಣಿಚ್ “ಫ್ವಲ್”  
(೩-೧-೧೩೩) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ದೀಪಿಕಾ —ದೀಪಿಕಾ.  
2. ಅಜವಾನ, ಓಮ, ವಾದಕ್ಕಿ.

ವಹ್ನಿನಾಮನ್ ವಹ್ನಿನಾಮನ್ (ಪುಂ) ಗೇರುಮರ.

ವಹ್ನಿಭೋಗ ವಹ್ನಿಭೋಗ (ನಂ) ಪೃತ, ಅಜ್ಜ, ತುಪ್ಪ.  
ವಹ್ನಿಭೋಗ್ಯಮ್ ಭೋಗಾರ್ಹಮ್ ।

ವಹ್ನಿರೇತಸ್ ವಹ್ನಿರೇತಸ್ (ಪುಂ) ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.  
ವಹ್ನಿ ರೇತೋಷ್ಯ ।

ವಹ್ನಿಶಿಖ ವಹ್ನಿಶಿಖ (ನಂ) ಕುಸುಂಬೆ ಹೂವು.

ವಹ್ನಿಸಂಜಕ ವಹ್ನಿಸಂಜಕ (ಪುಂ) ಚಿತ್ರಮೂಲದ ಗಿಡ.

ವಹ್ನಿಸಖ ವಹ್ನಿಸಖ (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ವಹ್ನಿ: ಸಖಾ  
“ಏತ್” (೫-೪-೯೧) ।

ವಹ್ಯ ವಹ್ಯ (ನಂ) 1. ವಾಹನ. 2. ರಥ, ಗಾಡಿ. ವಹಲ್ಯ-  
ನೆನ—ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಯತ್” (೩-೧-೧೦೨) । ನಿಪಾಂ ।

ವಾ ವಾ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಉಪಮಾ, ಸಾದೃಶ್ಯ. ವಾ (ಗತಿ-  
ಗನ್ಧನಯೋ: ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೧೭೮) । “ಜಾತಾಂ ಮನ್ಯೇ  
ಶಿಶಿರಮಥಿತಾಂ ಪದ್ಮಿನೀಂ ವಾನ್ಯರೂಪಾಂ” ಮೇಘಂ ೨-೨೦ ।  
2. ವಿಕಲ್ಪವಾಗಿ, ಪಕ್ಷಾಂತರದಲ್ಲಿ, ಅಥವಾ ಎಂಬ ಅರ್ಥ  
ದಲ್ಲಿ. “ಅವಲೋಹಸನಾಭಿರಶ್ವಸೇನ: ಪ್ರಸಮಂ ಕ್ಷಾಂಡವಜಾತ-

ವೇದಸಾ ವಾ । ಪ್ರತಿಕರ್ತುಮುಪಾಗತ: ಸಮನ್ಯು: ಕೃತಮನ್ಯುರ್ಯದಿ ವಾ  
ವೃಕೋದರೇಣ” ಕಿರಾಂ ೧೩-೧೧ । 3. ಸಮುಚ್ಚಯ.  
“ಯಶೋಽಧಿಗಂತುಂ ಸುಖಲಿಪ್ಸಯಾ ವಾ ಮನುಷ್ಯಸಂಖ್ಯಾಮತಿವರ್ತಿಸುಂ  
ವಾ” ಕಿರಾಂ ೩-೪೦ । 4. ವಿತರ್ಕ, ಊಹೆ. 5.  
ಅವಧಾರಣ, ನಿಜವಾಗಿ, ನಿಶ್ಚಯವಾಗಿ. “ಸುತಾ ನ ಯುಯಂ  
ಕಿಮು ತಸ್ಯ ರಾಜ: ಸುಯೋಧನಂ ವಾ ನ ಗುಣೇರತೀತಾ:” ಕಿರಾಂ  
೩-೧೩ । 6. ಪಾದಪೂರಣ. “ದೇವಾಸುರಗಣಾನ್ ವಾಪಿ  
ಸಗನ್ಧವೋರಗಾನ್ ಭುವಿ” ರಾಮಾಂ ।

ವಾ — ಗತಿಗನ್ಧನಯೋ: (ಅದಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ) । ವಾತಿ  
ವಾತ: ವಾಂತಿ । ವವೌ ವವತು: । ವಾತಾ । ವಾಸ್ಯತಿ । ವಾತು ।  
ವಾಹಿ । ಅವಾತ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸು:—ವಾತವ್ಯಮ್ । ವಾನೀಯಮ್ । ವೇಯ: । ವಾತ: ।  
ವಾತವಾನ್ । ವಾನ್, —ಂತಿ । ವಾತಮ್ । ವಾನಮ್ । 1. ಬೀಸು,  
ತೀಡು, ಹಿಂಸಿಸು. 2. ಸೂಚಿಸು. 3. ಚಲಿಸು. “ವಾತಾ  
ವವು: ಸೌಖ್ಯಕರಾ: ಪ್ರಸೇದುರಾಶಾ ವಿಧೂಮೌ ಹೃತಭುಗ್ವಿದಿವೇ”  
ಕುಮಾಂ ೧೧-೩೭ ।

ವಾಂಶ ವಾಂಶ (ವಿಂ) ವಂಶದಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿದಿರಿ  
ನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಂಶಸಂಬಂಧವಾದ. ವಂಶಸ್ಯೇದಮ್  
“ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ವಾಂಶೀ.

ವಾಂಶಿಕ ವಾಂಶಿಕ (ಪುಂ) 1. ವೇಣುವಾದ್ಯವನ್ನು ನುಡಿಸು  
ವವನು. ವಂಶಿವಾದನಂ ಶಿಲ್ಪಮಸ್ಯ “ಠಕ್” (೪-೪-೫೫) ।  
(ವಿಂ) 2. ಭಾರವಾದ ವಂಶವನ್ನು ಒಯ್ಯುವವನು  
ಮತ್ತು ಹೊರುವವನು, ಬಿದಿರಿನ ಹೊರೆಯನ್ನು ಒಯ್ಯು  
ವವನು ಮತ್ತು ಹೊರುವವನು. ಭಾರಭೂತಾನ್ ವಂಶಾನ್  
ಹರತಿ ವಹತಿ ಅವಹತಿ ವಾ “ಠಕ್” (೫-೧-೫೦) ।

ವಾಂಶೀ ವಾಂಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತವಕ್ಷೀರ.

ವಾಕ್ ವಾಕ್ (ಪುಂ) 1. ವಾಕ್ಯ, ಮಾತು. उच्यतेऽनेन—ವಚ  
(ಪರಿಭಾಷಣೆ) “ಘ” (೩-೩-೧೨೧) । “ಇದಂ ಕವಿಮ್ಯ:  
ಪೂರ್ವಮ್ಯ: ನಮೋವಾಕ್ಯಂ ಪ್ರಶಾಸ್ಮಹೇ” ಉಂ ರಾಂ ೧-೧ । (ನಂ)  
2. ಬಕಪಕ್ಷಿಗಳ ಸಮೂಹ. ಬಕಾನಾಂ ಸಮೂಹ: “ಅನ್”  
(೪-೨-೩೭) । (ವಿಂ) 3. ಬಕಪಕ್ಷಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
ಬಕಸ್ಯೇದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) । ವಕಯೋರಭೇದ: ।

ವಾಕ್ಯುಚಿ ವಾಕ್ಯುಚಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಹುಜಿಗೆ ಗಿಡ.

ವಾಕ್ಯಕೀರ ವಾಕ್ಯಕೀರ (ಪುಂ) ಸ್ಥೂಲ, ಪತ್ನಿಯ ಸಹೋದರ.  
ವಾಚಿ ಕೀರ ಇವ ।

ವಾಕ್‌ಚಾಪಲ್ಯ ವಾಕ್‌ಚಾಪಲ್ಯ (ನಂ) ದುಡುಕಿ ಮಾತ  
ನಾಡುವುದು, ಯೋಚಿಸದೆ ಮಾತನಾಡುವುದು, ಅವಿವೇಕ  
ದಿಂದ ಮಾತನಾಡುವುದು.



**ವಾಕ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ** (ನಂ) ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಮಾತು, ಉಪಾಯದಿಂದ ನುಣುಚಿಕೊಳ್ಳುವಂತೆ ನೆಪಹಾಕಿ ಅಡುವ ಮಾತು. ವಾಚಾ ಶಾಸ್ತ್ರಂ.

**ವಾಕ್ಯಪತಿ ವಾಕ್ಯಪತಿ** (ಪುಂ) 1. ಮಾತಿಗೆ ಅಧಿಪತಿಯಾದ ಬೃಹಸ್ಪತಿ. ವಾಚಾ ಪತಿಃ। "ಉದಗಾರೋಽಯಮುಪಾಕ್ಷೇಮಕರೋ ವಾಕ್ಯಪತಿಶ್ಚರನ್ ಮಾನಾಮ್" ಬೃಹತ್ಸಂ. (ವಿಂ) 2. ದೋಷ ರಹಿತವಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವವನು, ನಿರರ್ಗಳವಾಗಿ ಪಟುವಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವವನು.

**ವಾಕ್ಯಪಾಠ್ಯ ವಾಕ್ಯಪಾಠ್ಯ** (ನಂ) ಕಠಿನವಾದ ಮಾತು. ಬಿರುಸಾದ ಮಾತು, ಅಪ್ರಿಯವಾದ ಮಾತು. ವಾಚಾ ಪಾಠ್ಯಮ್। ಇದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ವಾಕ್ಯಪಾಠ್ಯವುಳ್ಳ ಲ್ಲೊಂದು ವಿಧ. ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ವಾಕ್ಯಪಾಠ್ಯ ಸಾಪೇಕ್ಷಗಳು: (1) ವಾಕ್ಯಪಾಠ್ಯಮ್ (2) ಅನೃತಮ್ (3) ಪೆಶುನ್ಯಮ್ ಮತ್ತು (4) ಅಸಮ್ಬದ್ಧಪ್ರಲಾಪಃ।

**ವಾಕ್ಯ ವಾಕ್ಯ** (ನಂ) ಪದಗಳ ಸಮೂಹ. ಉಚ್ಯತೇ—ವಚ (ಪರಿಮಾಪಣೆ) "ವಚ" (೩-೧-೧೨೪)। ಸುಖಂ ಪದಗಳ ಅಥವಾ ತಿಜ್ಞಂ ಪದಗಳ ಸಮೂಹ ಅಥವಾ ಕಾರಕದೊಡಗೂಡಿದ ಕ್ರಿಯೆಯು ವಾಕ್ಯ. "ಸುಪ್ತಿಕಂತ-ಚಯೋ ವಾಕ್ಯಂ ಕ್ರಿಯಾ ವಾ ಕಾರಕಾನ್ವಿತಾ" ಅಮಂ। ಸುಖಂ ಚಯಂ "ಪ್ರಕೃತಿಸಿದ್ಧಮಿದಂ ಹಿ ಮಾತಮನಾಮ್"। ತಿಜ್ಞಂ ಚಯಂ "ವಾಚತಿ ಪಶ್ಯ"। ಕಾರಕಾನ್ವಿತಕ್ರಿಯೆ (ಸುಪ್ತಿಕಂತಚಯಃ) "ರಾಜಾ ಸುತಮುವಾಚ"। "ತಮೋಪಹೇ-ಸ್ತತ್ವವಿದಾಮೃಷಿಣಾಂ ವಾಕ್ಯೇಸ್ವಿವೇದೀಮನುಸಂಜಿಹಾನೇಃ" ಯಾದಂ ೨೩-೨।

**ವಾಗರ ವಾಗರ** (ಪುಂ) 1. ಮುಮುಕ್ಷು, ಮೋಕ್ಷಾರ್ಥಿ. 2. ಧೈರ್ಯಶಾಲಿ. 3. ಒರಗಲ್ಲು. 4. ನಿರ್ಣಯ, ನಿಶ್ಚಯ. 5. ಅಡ್ಡಿ, ತಡೆ. 6. ಬಡಬಾಗಿ. 7. ವೃಕ, ತೋಳ. 8. ಪಂಡಿತ. ವಾಚಾ ಇಯತಿ—ಋ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೨೪)। "ವಾಗರೋ ವಾಡಕೇ ಶಾಣೇ ನಿರ್ಣಯೇ ವಾಡಕೇ ವೃಕೇ। ಮುಮುಕ್ಷೋ ಪಿಂಡಿತೇ ಚಾಪಿ ಪರಿತ್ಯಕ್ತಭಯೇಷಿ ಚ" ಹೇಮಂ।

**ವಾಗಾರ ವಾಗಾರು** (ವಿಂ) ವಚನಭ್ರಷ್ಟ. ಮಾತಿಗೆ ತಪ್ಪಿದವನು, ಅಸಂಯುತವಾದ ಮಾತಿನಂತೆ ನಡೆಯುವವನು.

**ವಾಗೀಶ ವಾಗೀಶ** (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖಿ. ವಾಚಾ ವಿಜ್ಞಾನಾಮೀಶಃ। "ವಾಗೀಶಂ ವಾಗ್ವಿಮರ್ಶಯಿಷಿಃ ಪ್ರಣಿಪತ್ಯೋ-ಪತಸ್ಥಿರೇ" ಕುಮಾಂ ೨-೩। 2. ಬೃಹಸ್ಪತಿ, ದೇವತೆಗಳ ಗುರು. (ವಿಂ) 3. ವಾಗ್ಮಿ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವವನು. -ಇವರ: -ಅಶ್ವರಃ.

**ವಾಗೀಶಾ ವಾಗೀಶಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸರಸ್ವತಿ, ವಾಗ್ಮೀವಿ. ವಾಚಾಮೀಶಾ। "ವಾಗೀಶಾ ಯಸ್ಯ ವದತೇ ಲಕ್ಷ್ಮೀಯಸ್ಯ ಚ ವಕ್ಷಸಿಃ। ಯಸ್ಯಾಸ್ತೇ ಹೃದಯೇ ಸಂವಿತ್ ತಂ ನೃಸಿಹಮಹಂ ಭಜೇ"। -ಇವರ: -ಅಶ್ವರಃ.

**ವಾಗುಜಿ ವಾಗುಜೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಹುಜಿಗೆ ಗಿಡ.

**ವಾಗುಸ ವಾಗುಸಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೃಗಗಳನ್ನು ಹಿಡಿಯುವ ಬಲಿ. ವಾ (ಗತಿಗನ್ಧನಯೋಃ) "ಉಚ್" ಗುಣಾಗಮಶ್ಚ (ಉಂ ೧-೪೨)। "ವಾಗುಸಾ ಮೃಗಬಂಧಿನಿ" ಅಮಂ।

**ವಾಗುರಿಕ ವಾಗುರಿಕ** (ಪುಂ) ವ್ಯಾಧಿ, ಬೇಡರವನು. ವಾಗುರಿಯಾ ಚರತಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೮)। "ಶ್ವಗಣಿವಾಗುರಿಕಃ ಪ್ರಥಮಾ-ಸ್ಥಿತಂ ವ್ಯಪಗತಾನಲದಸ್ಯ ವಿವೇಶ ಸಃ" ರಘುಂ ೧-೪೩।

**ವಾಗುಲಿಕ ವಾಗುಲಿಕ** (ಪುಂ) ರಾಜನಿಗೆ ತಾಂಬೂಲವನ್ನು ಕೊಡುವವನು. "ತಾಂಬೂಲದೋ ವಾಗುಲಿಕಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ವಾಗ್ಜಾಲ ವಾಗ್ಜಾಲ** (ನಂ) ಅಡಂಬರದ ಮಾತು, ಜಂಬದ ಮಾತು. ವಾಚೋ ಜಾಲಮ್। "ಅನಿಲೋದಿತಕಾರ್ಯಸ್ಯ ವಾಗ್ಜಾಲಂ ವಾಗ್ವಿನೋ ಯಥಾ" ಮಾಘಂ ೨-೨೭।

**ವಾಗ್ವಾಡ ವಾಗ್ವಾಡ** (ಪುಂ) ವಾಗ್ವಾಪವಾದ ಶಿಕ್ಷೆ, ಕಠಿನ ವಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವುದು. ವಾಗ್ವಾಪೋ ವಾಡಃ।

**ವಾಗ್ವಾನ್ ವಾಗ್ವಾನ್** (ನಂ) ಮಾತುಕೊಡುವುದು, ಸಾಹಾಯ್ಯಮಾಡುವ ಮಾತನಾಡುವುದು. ವಾಚಾ ದಾನಮ್।

**ವಾಗ್ವಾಡ ವಾಗ್ವಾಡ** (ವಿಂ) ಮಾತಿನಿಂದ ಅಸಭ್ಯನಾದ ವನು. ವಾಚಾ ದುಷ್ಠಃ।

**ವಾಗ್ವೇವತಾ ವಾಗ್ವೇವತಾ, -ವೇವಿ -ವೇವೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾಗ್ವೇವತೆಯಾದ ಸರಸ್ವತಿ. ವಾಚೋ ದೇವತಾ ದೇವಿ ವಾ। "ವಾಗ್ವೇವತಾಪಿ ಸ್ಮಿತಪೂರ್ವಮುಪಾಕ್ಷೇಮವರಾಜಂ ರಶಸಾಽಭಿಷೇ" ನೆಪಂ ೧೪-೮೬।

**ವಾಗ್ವೋಷ ವಾಗ್ವೋಷ** (ಪುಂ) 1. ಮಾತಿನ ದೋಷ, ಮಾತಿ ನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ದೋಷ. ವಾಚಿ ದೋಷಃ। 2. ಮಾತಿನ ಧ್ವನಿಯಲ್ಲಿರುವ ದೋಷ. "ದ್ವಿಪಿಚರ್ಮಪರಿಚ್ಛಿನ್ನೋ ವಾಗ್ವೋಷಾತ್ ಗದಂಭೋ ಹತಃ" ಹಿತಂ। 3. ವಾಗ್ವೋಷವುಳ್ಳವನಾದ ಮಾತು. 4. ನಿಂದೆ, ಬೈಗುಳ.

**ವಾಗ್ವಾನ್ ವಾಗ್ವಾನ್** (ನಂ) ಮಾತನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು, ಮಾತನಾಡುವುದನ್ನು ತಡೆಗಟ್ಟುವುದು. ವಾಚೋ ಬಂಧನಮ್। "ಕರ್ಣಾಲಿಂಬಿತಪದ್ಮರಾಗಶಕಲಂ ವಿನ್ಯಸ್ಯ ಚಕ್ರವಾಃ ಪುರೋ ಬ್ರೂಹತಾಂ ಪ್ರಕರೋತಿ ದಾಡಿಮಫಲವ್ಯಾಜೇನ ವಾಗ್ವಾನ್" ಅಮರಂ ೧೬।

**ವಾಗ್ವಿಮ್ ವಾಗ್ವಿಮ್** (ಪುಂ) 1. ಬೃಹಸ್ಪತಿ, ದೇವಗುರು. "ವಾಗ್ವಿಮಿ ಪಡೌ ಸುರಾಚಾರ್ಯ" ಮೇದಿಂ। 2. ಎಷ್ಟು. "ಸುಮುಜೋ



ದುರ್ಧರೋ ವಾಗ್ಮೀ" ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 3. ಮಾತಾಡುವವನು, ಮಾತಾಡುವುದರಲ್ಲಿ ಚತುರನಾದವನು. ವಾಕ್ ಪ್ರಶಸ್ತಾಸ್ಥಾಸ್ತಿ "ಗ್ಮಿನಿ:" (೪-೨-೧೨೪)। "ನೌಪತಾಪಿ ಮನ: ಸೌಷ್ಣ ವಾಗೇಕಾ ವಾಗ್ಮಿನ: ಸತ:" ಮಾಧಂ ೨-೧೦೯। 4. ಪಟುವಾದವನು, ಚಟುವಟಿಕೆಯುಳ್ಳವನು.

**ವಾಗ್ಯ ನಾಗ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ವಲ್ಪಮಾತಾಡುವವನು, ಮಿತ ಭಾಷಿ. 2. ಸತ್ಯ ನುಡಿಯುವವನು. ವಾಚಂ ಪರಿಮಿತ-ವಾಕ್ಯಂ ಯಾತಿ—ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। (ಪುಂ) 3. ನಿರ್ವೇದ. 4. ವಿನಯ, ವಿಧೇಯತೆ.

**ವಾಗ್ಯತ ನಾಗ್ಯತ** (ವಿಂ) ಮಾತಿನಲ್ಲಿ ಸಂಯಮವುಳ್ಳವನು, ಮಿತಭಾಷಿ, ವಿವೇಕದಿಂದ ತಡೆದು ಮಾತಾಡುವವನು. ವಾಚಿ ಯತ:।

**ವಾಗ್ಯಮ ನಾಗ್ಯಮ** (ಪುಂ) ಮಾತಿನಲ್ಲಿ ಸಂಯಮ, ಮಾತಿನಲ್ಲಿ ಹೆತೋಟಿ, ಸಂದರ್ಭವನ್ನು ಅರಿತು ಅಸಂಗತ ವಾಗಿ ಮಾತಾಡದಿರುವುದು. ವಾಚಿ ಯಮ:।

**ವಾಗ್ಯಾಮ ನಾಗ್ಯಾಮ** (ಪುಂ) ಮಾತನಾಡಲು ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದೆ ಮೌನದಿಂದ ಇರುವುದು.

**ವಾಗ್ಯುಡ್ಧ ನಾಗ್ಯುಡ್ಧ** (ನಂ) ಮಾತಿನಿಂದ ನಡೆಯುವ ಯುದ್ಧ, ಬಿರುಸಾದ ಮಾತಿನಿಂದ ನಡೆಯುವ ಕಾಳಗ. ವಾಚಾ ಯುದ್ಧಮ್।

**ವಾಗ್ವಜ್ರ ನಾಗ್ವಜ್ರ** (ಪುಂ) ವಜ್ರದಂತಿರುವ ಮಾತು, ಕಠಿನ ವಾದ ಮಾತು, ಮನನೋಯಿಸುವ ಮಾತು. ವಾಕ್ ವಜ್ರ ಇವ। "ಅಹಹ ಅತಿತೀದ್ರೋಷಂ ವಾಗ್ವಜ್ರ:" ತಂ ರಾಂ ೧।

**ವಾಗ್ವಿಭವ ನಾಗ್ವಿಭವ** (ಪುಂ) ವಾಕ್ ಸಂಪತ್ತು, ವಾಕ್ ಶಕ್ತಿ, ವಿಷಯಗಳನ್ನು ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳುವ ಶಕ್ತಿ. ವಾಚಾಂ ವಿಭವ: ಸಂಪತ್। "ರಘುಣಾಮನ್ವಯಂ ವಕ್ಷ್ಯೆ ತನುವಾಗ್ವಿಭವೋಽಪಿ ಸನ್" ರಘುಂ ೧-೯।

**ವಾಗ್ವಿಲಾಸ ನಾಗ್ವಿಲಾಸ** (ಪುಂ) ಸೊಗಸಾದ ಮಾತು, ಲಲಿತವಾದ ಮಾತು, ಮಾತಿನಲ್ಲಿರುವ ಲಾಲಿತ್ಯ, ಭಾಷಣದ ಸೊಬಗು.

**ವಾಗ್ವ್ಯವಹಾರ ನಾಗ್ವ್ಯವಹಾರ** (ಪುಂ) ಕೇವಲ ಮಾತಿನ ವ್ಯವಹಾರ, ಮಾತಿನಿಂದಲೇ ನಡೆಯುವ ಚರ್ಚೆ. ವಾಚಾ ವ್ಯವಹಾರ:। "ಪ್ರಯೋಗಪ್ರಧಾನಂ ಹಿ ನಾಟಕಶಾಸ್ತ್ರಂ ಕಿಮತ್ರ ವಾಗ್ವ್ಯವಹಾರೇಣ" ಮಾಲಂ ೧।

**ವಾಗ್ವ್ಯಾಪಾರ ನಾಗ್ವ್ಯಾಪಾರ** (ಪುಂ) 1. ಮಾತನಾಡುವ ಕಾರ್ಯ, ವಾಗ್ವಿಧಿಯಾದ ಕ್ರಿಯೆ. 2. ಮಾತನಾಡುವ ರೀತಿ.

**ವಾಙ್ಮ ನಾಂಕ** (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. "ಪುಮಾನ್ ಕವಜ್ಜಲೋ ವಾಙ್ಮ: ಕೂಲಕ್ಷುಪರಾಙ್ಮವಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ವಾಙ್ಮನಸ ನಾಙ್ಮನಸ** (ನಂ ದ್ವಿಂ) ಮಾತು ಮತ್ತು ಮನಸ್ಸು. ವಾಕ್ ಚ ಮನಸ್ಸ—ಅಜಂತ ನಿಪಾಂ (೪-೪-೭೭)।

**ವಾಙ್ಮಯ ನಾಙ್ಮಯ** (ನಂ) 1. ಭಾಷೆ, ಮಾತು. ವಾಕ್ ಪ್ರಾಚುರ್ಯ ಸಮೂಹ ಸ್ವಾರ್ಥೆ ವಾ "ಮಯಟ್" (೪-೪-೨೨)। "ಸಮಸ್ತಂ ವಾಙ್ಮಯಂ (ವಾಗ್ವಾಲಮ್) ವ್ಯಾಪ್ತಂ ತ್ರೈಲೋಕ್ಯಮಿವ ವಿಷ್ಣುನಾ" ವೃಂ ೨೦। "ಅನಂತಾ ವಾಙ್ಮಯಸ್ವಾಹೋ ಗೇಯಸ್ಯೇವ ವಿಚಿತ್ರತಾ" ಮಾಧಂ ೨-೭೨। 2. ಕವಿಗಳಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಕಾವ್ಯಗ್ರಂಥ, ಕಾವ್ಯರೂಪವಾದ ವಾಕ್ಯಸಮೂಹ. "ಆದಿ-ರಾಜಯಶೋಬಿಂಬಸಾದರ್ಶಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ವಾಙ್ಮಯಮ್" ಕಾವ್ಯಾಂ ೧-೪। —ಮಯಿ—ಮಯಿ. 3. ಸರಸ್ವತಿ.

**ವಾಙ್ಮುಖ ನಾಙ್ಮುಖ** (ನಂ) ಉಪನ್ಯಾಸದ ಪ್ರಾರಂಭ, ಭಾಷಣದ ಹೀರಿಕೆ. ವಾಚಾಂ ಮುಖಮಿವ। ಮುಖಮುಪಕ್ರಮ:।

**ವಾಚ್ ನಾಚ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಾಕ್ಯ, ಮಾತು, ವಾಕ್ಯ. ಉಚ್ಯತೇನಯಾ—ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) "ವಿವಪ್" (ತಂ ೨-೪೮)। ದೀರ್ಘ: ಅಸಂಪ್ರಸಾರಣಂ ಚ। "ಅದೀಯಸೀಮಪಿ ಧನಾಮನಲ್ಪಗುಣಕಲ್ಪಿತಾಮ್। ಪ್ರಸಾರಯಂತಿ ಕುಶಲಾಸ್ತ್ರೀಶ್ಚಿತ್ರಾಂ ವಾಚಂ ಪಟಿಮಿವ" ಮಾಧಂ ೨-೭೪। 2. ಸರಸ್ವತಿ, ವಾಗ್ವೇದಿ. "ಪ್ರಣಮ್ಯ ವಾಚಂ ನಿ:ಶೇಷಪದಾರ್ಥೋದ್ವಿತ್ತದೀಪಿಕಾಮ್" ಕಥಾಸಂ।

**ವಾಚಂಯಮ ನಾಚಂಯಮ** (ಪುಂ) 1. ಮೌನವ್ರತವನ್ನಾಚರಿ ಸುವ ಮುನಿ. ವಾಚ: ಯಚ್ಛತಿ—ಯಮ (ಉಪರಮೆ) "ಸುಚ್" (೩-೨-೪೦)। ವಾಚ: ಅಮನ್ತತ್ವಂ ನಿಪಾತ್ಯತೇ (೬-೩-೬೯)। "ವಾಚಂಯಮೋಽಹಮನೃತೇ ಸತ್ಯಮೇತದ್ಬ್ರವೀಮಿ ತೇ" ಭದ್ರಿಂ ೬-೧೦೨। (ವಿಂ) 2. ಮೌನದಿಂದಿರುವ, ಮಾತನಾಡದಿರುವ. "ವಾಚಂಯಮಾನ್ ಸ್ಥಣ್ಡಿಲಶಾಯಿನಶ್ಚ ಯುಯುಕ್ಷಮಾಣಾನಿಶಾಂ ಮುಮುಕ್ಷುನ್" ಭದ್ರಿಂ ೩-೪೨।

**ವಾಚಕ ನಾಚಕ** (ಪುಂ) 1. ಅರ್ಥವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಬ್ದ. ವಕ್ತಿ ಅಭಿಧಾವೃತ್ಯಾ ಬೋಧಯತ್ಯರ್ಥಾನ್—ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಸಾಕ್ಷಾತ್ ಸಂಕೇತಿಸಂ ಯೋರ್ಯ-ಮಭಿವರ್ತತೇ ಸ ವಾಚಕ:" ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ। 2. ಪಠಿಸುವವನು, ಪಠಿಸಿ ಹೇಳುವವನು. ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। 3. ಮಾತಾಡುವವನು.

**ವಾಚನ ನಾಚನ** (ನಂ) 1. ಓದುವುದು, ಪಠಿಸುವುದು. ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಪ್ರತಿಪಾದನೆ, ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವುದು. "ಶಬ್ದ: ಸ್ವಭಾವಾ-ದೇಕಾರ್ಥ: ಶ್ಲೇಷೋಽನೇಕಾರ್ಥವಾಚನಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೧೦-೪೮।

**ವಾಚನಕ ನಾಚನಕ** (ನಂ) ಪ್ರಹೇಳಿಕಾ, ಒಗಟು, ಗೊಡ್ಡಾರ್ಥವುಳ್ಳ ಮಾತು. ವಾಚನೇನ ಕಾಯತಿ—ಕೆ (ಶಬ್ದೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। "ಪ್ರಹೇಲಕಂ ವಾಚನಕಮ್" ಹಾರಾಂ।



**ವಾಚನಿಕ ನಾಚನಿಕ** (ವಿಂ) ಕೇವಲ ಮಾತಿನಿಂದ ನಡೆದಿರುವ, ಬಾಯಿಮಾತಿನಿಂದ ಆಗಿರುವ. ವಚನೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠ್" (೪-೧-೭೯) ।

**ವಾಚಸ್ಪತಿ ನಾಚಸ್ಪತಿ** (ವುಂ) 1. ಮಾತಿನ ಅಧಿಪತಿ, ಬೃಹಸ್ಪತಿ, ದೇವತೆಗಳ ಗುರು. ವಾಚಾಂ ಪತಿಃ । "ವಾಚಸ್ಪತಿ-ಕವಾಚೇದಂ ಪ್ರಾಜ್ಞಲಿಜಲಜಾಸನಮ್" ಕುಮಾಂ ೨-೩೦ । 2. ಬೃಹಸ್ಪತಿದೇವತಾಕವಾದ ಪುಷ್ಯನಕ್ಷತ್ರ.

**ವಾಚಸ್ಪತ್ಯ ನಾಚಸ್ಪತ್ಯ** (ನಂ) ವಾಗ್ವಿತ್ವ, ಸಭೆಗಳಲ್ಲಿ ಪಟುವಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವಿಕೆ, ವಾಚಸ್ಪತೇಃ ಭಾವಃ "ಞ್" (೪-೧-೧೨೪) । "ತದ್ದುರೀಕೃತ್ಯ ಕೃತಿಭಿಃ ವಾಚಸ್ಪತ್ಯಂ ಪ್ರತಾಯತೇ" ಮಾಘಂ ೨-೩೦ ।

**ವಾಚಾ ನಾಚಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಾಕ್ಯ, ಮಾತು. ವಾಕ್ "ಠ್" । "ಆಪಂ ಚೈವ ಹಲಂತಾನಾಂ ಯಥಾ ವಾಚಾ ನಿಶ್ಚಾ ದಿಶಾ" ಮಾಗುರಿಃ । 2. ಸರಸ್ವತಿ, ವಾಗ್ವೇದಿ.

**ವಾಚಾಡ ನಾಚಾಟಿ** (ವಿಂ) 1. ಹರಟೆಹೊಡೆಯುವವನು, ಬಹಳ ಮಾತಾಡುವವನು, ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದೆ ಅಧಿಕ ವಾಗಿ ಗರ್ವದ ಮಾತಾಡುವವನು. ವಾಕ್ "ಆಡ್" (೪-೨-೧೨೪) । "ತ್ಯಜ ನಕ್ತಂಚರಿದ್ವಿಂಶಿ ವಾಚಾಡೇ ರಾವಣೋ ಹೃಹ್ಮ" ಭಟ್ಟಿಂ ೪-೨೩ । 2. ಜಂಬದ ಮಾತಾಡುವವನು. 3. ಹೆಚ್ಚು ಮಾತಾಡುವವನು. 4. ಮಾತಾಡುವ, ಶಬ್ದ ಮಾಡುವ. "ಆಲಾಕ್" (೪-೨-೧೨೪) । **ವಾಚಾಲಃ** ನಾಚಾಲಃ. "ವಾಚಾಲರತ್ನವಲಯೇನಿಜಹಸ್ತತಾಲೇಃ" ಯಾದಂ ೧೯-೯ ।

**ವಾಚಿಕ ನಾಚಿಕ** (ನಂ) 1. ಬಾಯಲ್ಲಿ ಹೇಳಿಕಳುಹಿಸಿದ ಮಾತು. ವಾಕ್ "ಠ್" (೪-೪-೩೬) । "ಸಂದೇಶ-ವಾಗ್ವಾಚಿಕಂ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ । "ನಿರ್ಧಾರಿತೇಷ್ಯ ಲೇಖನ ಖಲೂಕ್ವಾ ಖಲು ವಾಚಿಕಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೭೦ । 2. ವಾಕ್ಯ ರಂಭ. 3. ವೃತ್ತಾಂತ, ಸಮಾಚಾರ.

**ವಾಚಿಕಪತ್ರ ನಾಚಿಕಪತ್ರ** (ನಂ) ವ್ಯವಹಾರ ಪತ್ರ, ಸಂದೇಶ ಪತ್ರ.

**ವಾಚಿಕಹಾರಕ ನಾಚಿಕಹಾರಕ** (ವುಂ) 1. ಸಂದೇಶವನ್ನು ತಲುಪಿಸುವ ಪತ್ರ. 2. ಸಂದೇಶವನ್ನು ತಲುಪಿಸುವ (ಒಯ್ಯುವ) ದೂತ, ಪತ್ರವನ್ನು ಅಥವಾ ಬಾಯಿ ಮಾತನ್ನು ಒಯ್ಯುವ ಸೇವಕ. ವಾಚಿಕಸ್ಯ ಸಂದೇಶಸ್ಯ ಹಾರಕಃ ।

**ವಾಚಿನ್ ನಾಚಿನ್** (ವಿಂ) ಹೇಳುವ, ತಿಳಿಸುವ, ಅರ್ಥ ವನ್ನು ಕೊಡುವ. (ಸಮಾಸಾಂತರದಲ್ಲಿ) ವಕ್ತಿ — ವಚ (ಪರಿಭಾಷಣೆ) "ಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) ।

**ವಾಚೋಯುಕ್ತಿ ನಾಚೋಯುಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಾತಿನ ಭಂಗಿ, ವಾಕ್ಯಜೋಡಣೆ. ವಾಚೋ ಯುಕ್ತಿಃ । ಅಲುಕ್ (ವಾಂ ೬-೩-೨೧) । "ಯತ್ರ ಖಲ್ವಿದಂ ವಾಚೋಯುಕ್ತಿಃ" ಮಾಲತೀಂ ೧ । 2. ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಆಡುವ ಮಾತು.

**ವಾಚೋಯುಕ್ತಿಪಟು ನಾಚೋಯುಕ್ತಿಪಟು** (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾತನಾಡಲು ಸಮರ್ಥನಾದವನು. ವಾಚೋಯುಕ್ತೋ ಪಟುಃ ।

**ವಾಚ್ಯ ನಾಚ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. ವಚ (ಪರಿ-ಭಾಷಣೆ) ಕರ್ಮಂ "ಞ್" (೩-೧-೧೨೪) । "ವಾಚ್ಯಸ್ತವಯಾ ಮದ್ವಚನಾತ್ಸ ರಾಜಾ ವಹ್ನಿ ವಿಶುಭಾಮಪಿ ಯತ್ಸಮಕ್ಷಮ್" ರಘುಂ ೧೪-೬೧ । 2. ಹೇಳಬೇಕಾದ. 3. ಹೇಳಲು ಅರ್ಹನಾದ. "ಭಾಗ್ಯಾಯತ್ತಮತಃ ಪರಂ ನ ಖಲು ತದ್ವಾಚ್ಯಂ ವಧೂಬಂಧುಭಿಃ" ಶಾಕುಂ ೪-೧೬ । 4. ನಿಂದೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದ. 5. ಹೀನ, ತುಚ್ಛ. "ಗುರವೋಽಪಿ ನಿಷದ್ವಯದ್ರೋಹನುಪಿ ಕ್ಷಮಾಪತಯೋ ನ ವಾಚ್ಯಮೇತತ್" ಮಾಘಂ ೨೦-೩೪ । (ನಂ) 6. ಅವಮಾದ. "ಶ್ರೀನಿರ್ಮಿತಪ್ರಾಪ್ತಧುಣಕ್ಷತೇಕವರ್ಣೋಪಮಾವಾಚ್ಯಮಲಂ ಮಮಾರ್ಜ" ಮಾಘಂ ೩-೪೮ । 7. ವಿಶೇಷಣ, ಗುಣವಾಚಕ. (ವಿಂ) 8. ಅಭಿಧಾತೃಯಿಂದ ಬೋಧ್ಯವಾಗುವ ಅರ್ಥ. "ಅಥಾ ವಾಚ್ಯಶ್ಚ ಲಕ್ಷ್ಯಶ್ಚ ವ್ಯಜ್ಞಶ್ಚೇತಿ ತ್ರಿಧಾ ಮತಃ" ಸಾಂ ದಂ ೨-೨ । "ವಾಚ್ಯೋಽರ್ಥೋಽಭಿಧಯಾ ಬೋಧ್ಯೋ ಲಕ್ಷ್ಯೋ ಲಕ್ಷಣಯಾ ಮತಃ । ವ್ಯಜ್ಞಯೋ ವ್ಯಜ್ಞನಯಾ ತಾಃ ಸ್ಯುಸ್ತಿಸ್ತಃ ಶಬ್ದಸ್ಯ ಶಕ್ತಯಃ" ಸಾಂ ದಂ ೨-೩ ।

**ವಾಚ್ಯತಾ ನಾಚ್ಯತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. ವಾಚ್ಯಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) । "ತ್ವಃ" । ವಾಚ್ಯತವಮ್ ನಾಚ್ಯತವಮ್. 2. ಅಪಕೀರ್ತಿ, ಅಪಖ್ಯಾತಿ.

**ವಾಚಿ - ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್** (ಮ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) । ವಾಚಿತಿ । ವವಾಚಿ । ವಾಚಿತಿತಾ । ವಾಚಿಚಿಷ್ಯತಿ । ವಾಚಿಚ್ಛತು । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕರ್ಮಣಿಃ—ವಾಚಿಚಿಷ್ಯತೇ । ವವಾಚಿಚಿ । ವಾಚಿಚಿತಿತಾ । ವಾಚಿಚಿಷ್ಯತೇ । ವಾಚಿಚಿಷ್ಯತಾಮ್ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತುಃ—ವಾಚಿಚಿತವ್ಯಃ । ವಾಚಿಚಿಣೀಯಃ । ವಾಚಿಚಿಃ । ವಾಚಿಚಿತಃ । ವಾಚಿಚಿತವಾನ್ । ವಾಚಿಚಿನ್, -ಂತಿ । ವಾಚಿಚಿತಮ್ । ವಾಚಿಚನಮ್ । ಇಚ್ಛಿಸು, ಅಪೇಕ್ಷಿಸು, ಬಯಸು. "ನ ಸಂಹತಾಸ್ತಸ್ಯ ನ ಭಿನ್ನವೃತ್ತಯಃ ಪ್ರಿಯಾಣಿ ವಾಚಿಚಿಂತಯಿಸುಃ ಸಮೀಹಿತುಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೧೯ ।

**ವಾಜ ನಾಜ** (ವುಂ) 1. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು. 2. ಬಾಣದ ಗರಿ, ಬಾಣದ ರೆಕ್ಕೆ. ವಜ್ರತ್ಯನೇನ — ವಜ (ಗತೌ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧) । "ತದ್ಭೂಮಸೇತ್ಯಂ ಭಗವಾನ್ ಗದಾಗ್ರಜೋ



ವಿಚಿತ್ರವಾಜೇನಿಶಿತೈಃ ಶಿಲೀಮುಖೈಃ" भाग० १०-५९-१६।

3. ವೇಗ. 4. ಶಕ್ತಿ, ಬಲ. (ನಂ) 5. ಪೃಥ, ತುಪ್ಪ. 6. ಯಜ್ಞ. 7. ಅನ್ನ. 8. ಸಲಿಲ, ನೀರು, ಜಲ.

"ವಾಜೋ ನಿಃಸ್ವನಪಕ್ಷಯೋಃ | ವೇಗೇ ಪುಮಾನಥ ಕಲೀವೇ ಧೃತಯಜ್ಞಾನ್-  
ವಾರಿಷು" मेदि०। 9. ಗರಿ, ರೆಕ್ಕೆ. 10. ಮುನಿ.

"ವಾಜಸ್ತು ಪಕ್ಷೇ ಮುನೌ ನಿಃಸ್ವನವೇಗಯೋಃ" हेम०।

**ವಾಜಪೇಯ ವಾಜಸನೇಯ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಯಾಗ. ವಾಜಃ  
ಧೃತಮ್ ಪೇಯಮತ್ರ |

**ವಾಜಸನೇಯ ವಾಜಸನೇಯ** (ಪುಂ) ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕ್ಯಮುನಿ.  
ವಾಜಸನೇಯ ಸಂಹಿತೆಯು ಈ ಮುನಿಯಿಂದ ಪ್ರೋಕ್ತ  
ವಾದುದು.

**ವಾಜಸನೇಯಿನ್ ವಾಜಸನೇಯಿನ್** (ಪುಂ) ವಾಜಸನೇಯ  
ಮುನಿಯಿಂದ ಪ್ರೋಕ್ತವಾದ ವೇದವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ  
ಮಾಡಿದವನು, ಯಜುರ್ವೇದಿ. ವಾಜಸನೇಯೇನ ಪ್ರೋಕ್ತ-  
ಮಸ್ಯಸ್ಯ "इति:" (५-२-११५)। "ब्रह्मदत्तेति  
विख्यातो विप्रो वाजसनेयिनाम्"।

**ವಾಜಿಗಂಧಾ ವಾಜಿಗಂಧಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಶ್ವಗಂಧಾ.

**ವಾಜಿದಂತ(ಕ) ವಾಜಿದಂತ(ಕ)** (ಪುಂ) ಅಡುಸೋಗ.  
ವಾಜಿನೋ ದಂತ ಇವ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ | ಸ್ವಾರ್ಥ "कन्"।  
-दन्तकः -दन्तकः.

**ವಾಜಿನ್ ವಾಜಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. ವಾಜೋ  
ವೇಗೋಽಸ್ಯಸ್ಯ "इति:" (५-२-११५)। "ध्वजेषु नागेषु  
रथेषु वाजिषु क्षणेन तस्थौ सुरसैन्यजं रजः" कुमा०  
१४-३४। 2. ಶರ, ಬಾಣ. ವಾಜಃ ಪಕ್ಷೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ  
"इति:" (५-२-११५)। "वाजिनः शत्रुसैन्यस्य  
समारब्धनवाजिनः" माघ० १९-६२। 3. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ.  
"वाजिबाणाश्वपक्षिषु" मेदि०। (वि०) 4. ವೇಗವುಳ್ಳ,  
ವೇಗವಾದ. 5. ಬಲಶಾಲಿಯಾದ, ಶಕ್ತಿವಂತ. ವಾಜೋಃ-  
ಸ್ಯಾಸ್ತಿ | "इति:"। 6. ರೆಕ್ಕೆಗಳುಳ್ಳ, ಗರಿಗಳುಳ್ಳ.  
स्त्रियां "डीप्" (४-१-५)। वाजिनी वाजिनी.  
1. ಹೆಣ್ಣು ಕುದುರೆ. 2. ಅಶ್ವಗಂಧಾ.

**ವಾಜಿಭಕ್ಷ ವಾಜಿಭಕ್ಷ** (ಪುಂ) ಚೂಕ, ಕಡಲೆ. ವಾಜಿಮಿಃ  
भक्ष्यते — भक्ष (अदने) "घम्" (३-३-१९)।

**ವಾಜಿಭೋಜನ ವಾಜಿಭೋಜನ** (ಪುಂ) ಮುದ್ದ, ಹೆಸರು  
ಕಾಳು. ವಾಜಿಮಿಃ भुज्यते — भुज (पालनाभ्यवहारयोः)  
"ल्युट्" (३-३-११३)।

**ವಾಜಿಶಾಲಾ ವಾಜಿಶಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುದುರೆಯ ಶಾಲೆ.  
ವಾಜಿನಾಂ ಶಾಲಾ |

**ವಾಜೀಕರಣ ವಾಜೀಕರಣ** (ವಿಂ) ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವ,  
ಬಲವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವ. अवाजी वाजी क्रियतेऽनेन  
—डुकृञ् (करणे) + च्वि: "ल्युट्" (३-३-११७)।  
"यद्रव्यं पुरुषं कुर्यात् वाजिवत् सुरतक्षमम् | तद्वाजीकर-  
माख्यातं मुनिभिर्भिषजां वरैः | "वाजीकरणमन्विच्छेत्  
सततं विषयी पुमान् | तुष्टिः पुष्टिरपत्यं च गुणवत्तत्र  
संश्रितम्" वाग्भटः।

**ವಾಜ್ಞತ್ ವಾಂಞತ್** (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಇಚ್ಛಿಸು-  
ತ್ತಿರುವ, ಬಯಸುತ್ತಿರುವ. वाञ्छि (इच्छायाम्) "शतृ"  
(३-२-१२४)। "वसूनि वाञ्छन्न वशी न मन्युना"  
किरा० १-१३। स्त्रियां "डीप्" (४-१-५९)।  
-न्ती -न्ती.

**ವಾಜ್ಞನ ವಾಂಞನ** (ನಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು, ಬಯಸು-  
ವುದು, ಇಚ್ಛಿಸುವುದು. वाञ्छि (इच्छायाम्) "ल्युट्"  
(३-३-११५)।

**ವಾಜ್ಞನೀಯ ವಾಂಞನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ.  
वाञ्छि (इच्छायाम्) कर्मादौ "अनीयर्" (३-१-९६)।  
"तव्यः"। वाञ्छितव्यः वाञ्छितव्यः.

**ವಾಜ್ಞಾ ವಾಂಞಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಇಚ್ಛೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ.  
वाञ्छि (इच्छायाम्) "अः" (३-३-१०३)। "वाञ्छेव  
सूचयति पूर्वतरं भविष्यत् पुंसां यदन्यतनुजं त्वशुभं शुभं  
वा" पञ्चत० २-८७।

**ವಾಜ್ಞಿತ ವಾಂಞಿತ** (ನಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಇಚ್ಛೆ, ಬಯಕೆ.  
वाञ्छि (इच्छायाम्) भावे "क्तः" (३-३-११४)।  
(वि०) 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. वाञ्छि कर्म० "क्तः"  
(३-२-१०२)। "वाञ्छितादधिकार्यस्य संसिद्धिश्च  
प्रहर्षणम्" चन्द्रा०।

**ವಾಜ್ಞಿತವತ್ ವಾಂಞಿತವತ್** (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದವನು,  
ಬಯಸಿದವನು. वाञ्छि (इच्छायाम्) "क्तवतुः"  
(३-२-१०२)। स्त्रियाम् "डीप्" (४-१-६)। -वती  
-वती.

**ವಾಜ್ಞಿತ್ಯ ವಾಂಞಿತ್ಯ** (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. वाञ्छि  
(इच्छायाम्) "ल्युट्" (३-१-१२४)।

**ವಾಟ ವಾಟ** (ಪುಂ) 1. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ, ರಸ್ತೆ. वट  
(वेष्टने) "घम्" (३-३-१९)। 2. ಊರ ಹೊರಗಡೆ  
ಜೇಲಿಹಾಕುವ ಸ್ಥಾನ. (ನಂ) 3. ವರಾಂಡೆ, ಮನೆಯ  
ಹೊರ ಅವರಣ, ಮೊಗಸಾಲೆ. (ವಿಂ) 4. ವಟ ಸಂಖ್ಯಂಧ



ವಾದ, ಅಲದಮರೆದ ಸಂಬಂಧವಾದ. ವಟಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) । "ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ಬೆಲ್ವಪಾಲಾಶೌ ಕ್ಷತ್ರಿಯೋ ವಾಟಾಧಿರೌ" ಮನುಂ ೨-೪೫ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಟಿ-ಟೀ. 5. ಕುಟೀರ, ಸಣ್ಣಮನೆ, ಗುಡಿಸಲು. 6. ವಾಸ್ತು, ಗೃಹದ ನಿರ್ಮಾಣ. "ವಾಟೋ ಮಾರ್ಗೇ ವೃತ್ತಿस्थಾನೇ ಸ್ವಾತ್ ಕುಟಿವಾಸ್ತುನೋ: ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ ।

**ವಾಟಶೃಂಗಲಾ ನಾಟಶೃಂಗಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾರ್ಗಕ್ಕೆ ತಡೆ ಯಾಗಿ ಹಾಕುವ ಸರಪಳಿ, ದಾರಿಯನ್ನು ತಡೆಗಟ್ಟುವ ಸರಪಳಿ. ವಾಟರೋಧಿಕಾ ಶೃಂಗಲಾ ।

**ವಾಟಿಕಾ ನಾಟಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೋಟ, ಫಲವುಷ್ಟುಗಳ ತೋಟ. ವಟಯತೇ ವೇಷಯತೇ ಪ್ರಾಂತವೃತ್ತಿಮಿ:—ವಟ (ವೇಷನೆ) "ಪ್ವಲ್" (೩-೩-೧೦೯) । "ಅಯೇ ದಕ್ಷಿಣೇನ ವೃಕ್ಷವಾಟಿಕಾ-ಮಾಲಾಪ ಇವ ಶ್ರೂಯತೇ" ಶಾಕುಂ ೧ ।

**ವಾಟಚಾಲ(ಕ) ನಾಟ್ಯಾಲ(ಕ)** (ಪುಂ) ಕಳ್ಳಂಗಡಲೆ. ವಾಟಿಮಲತಿ — ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) । ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಕನ್" (೪-೩-೭೫) ।

**ವಾಟಚಾಲಿ ನಾಟ್ಯಾಲೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಳ್ಳಂಗಡಲೆ. ವಾಟಿಮಲತಿ ಭೂಷಯತಿ — ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) । ಗೌರಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧) ।

**ವಾಡವ ನಾಡವ** (ಪುಂ) ಬಡಬಾಗಿ. ಬಡವಾಯಾ ಭವ: "ಅನ್" (೪-೩-೫೩) । ವಬಯೋರಭೇದ: ।

**ವಾಣಿ ನಾಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೇಯಿಗೆ, ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ನೇಯುವುದು. ವಣ (ಶಬ್ದೇ) + ಣಿಚ್ "ಃ" (೩ಂ ೪-೧೩೯) । 2. ನೇಯುವ ಕೋಲು, ನೇಯುವ ಕೊಳವಿ, ತಾಕುಹಲಗೆ. ವಣ ಕರಂ "ಃ" (೩ಂ ೪-೧೩೯) । "ವಾಣಿವ್ಯುತಿ: ಸ್ತ್ರಿಯೌ ತುಲ್ಯೇ" ಅಮಂ । 3. ಸರಸ್ವತಿ. 4. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 5. ಬೆಲೆ. "ವಾಣಿರಮ್ಬುಡೇ । ವ್ಯುತೌ ಮೂಲ್ಯೇ ಸರಸ್ವತಿಯಾಮ್" ಹೇಮಂ ।

**ವಾಣಿಜಕ ನಾಣಿಜಕ** (ಪುಂ) 1. ವರ್ತಕ. 2. ಬಡಬಾಗಿ. "ಅಥೋ ವಾಣಿಜಕೋ ವಾಡಬಾಗನೌ ವಾಣಿಜ್ಯಪಿ" ಮೇದಿಂ ।

**ವಾಣಿಜ್ಯ ನಾಣಿಜ್ಯ** (ನಂ) ವ್ಯಾಪಾರ, ವರ್ತಕತನ. ವಾಣಿಜೋ ಭಾವ: "ಽಪ್ಯನ್" (೪-೧-೧೨೪) ।

**ವಾಣಿನಿ ನಾಣಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವರ್ತಕಿ, ವರ್ತನಮಾಡುವವಳು. 2. ಮತ್ತಳಾದ ಹೆಂಗಸು. ವಣ (ಶಬ್ದೇ) "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) । "ಯಸ್ಮಿನ್ ಮಹಿಂ ಶಾಸತಿ ವಾಣಿನಿನಾಂ ನಿಧ್ರಾಂ ವಿಹಾರಾರ್ಥಪಥೇ ಗತಾನಾಮ್" ರಘುಂ ೬-೭೫ । 3. ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು. "ವಾಣಿನಿ ನರ್ತಕೀ-ಮತ್ತಾವಿದಾಧವನಿತಾಸು ಚ" ಮೇದಿಂ ।

**ವಾಣಿ ನಾಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸರಸ್ವತಿ, ವಾಗ್ವೇದಿ. ವಣ (ಶಬ್ದೇ) "ಃ" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮) । "ಡೀಪ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫) । "ವಾಣಿವಿಲಾಸಮಪರತ್ರ ಕೃತೋಪಲಮ್ಭ-ಮಂಭೋಜಮೂರಸಹಮಾನ ಇವಾವಿರಾಸೀತ್" ಚಂ ೨೦ । 2. ಮಾತು, ವಚನ. "ವಾಣಿಭಿರಾಭಿ: ಪರಿಪಕ್ವಿತ್ರಮಾಭಿನೇಂದ್ರ-ಮಾನಂದಜಡ ಚಕಾರ" ನೈಷಂ ೨೨-೧೦೧ । "ಸತ್ಯಪೂತಾಂ ವದೇದ್ವಾಣಿಂ ಬುದ್ಧಿಪೂತಂ ಚ ಚಿಂತಯೇತ್" । "ಇತಿ ಸಂರಮ್ಭಿಣೋ ವಾಣಿಬಲಸ್ಯಾಲೇಖ್ಯದೇವತಾ:" ಮಾಘಂ ೨-೬೭ ।

**ವಾತ ನಾತ** (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ವಾತಿ — ವಾ (ಗತಿಗನ್ವನಯೋ:) "ತನ್" (೩ಂ ೩-೮೬) । "ಸಾ ಚಾಮರೌವೈರಪವಯಮಾಣಾ ವಾತಾವಧೂತೇರಿವ ಕಾಶಜಾಲೇ:" ಯಾದಂ ೧೩-೨೯ । 2. ಪುಚ್ಚ ಮಹಾಭೂತಗಳಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಭೂತ. ವಾಯು ಭೂತದ ಗುಣಗಳು: (1) ಧಾರಣಮ್ (2) ಚಾಲನಮ್ (3) ಕ್ಷೇಪ: (4) ಸಂಕೋಚ: ಮತ್ತು (5) ಪ್ರಸರಣಮ್ । "ಧಾರಣಂ ಚಾಲನಂ ಕ್ಷೇಪ: ಸಂಕೋಚ: ಪ್ರಸರಸ್ತಥಾ । ವಾಯು: ಪञ್ಚಗುಣ: ಪ್ರೋಕ್ತ: ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನೇನ ಭಾಷಿತಮ್" ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನತಂತ್ರಮ್ । 3. ದೇಹದ ಉತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ ಮೂರು ಧಾತುಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು, (1) ವಾತ: (2) ಪಿತ್ತಮ್ ಮತ್ತು (3) ಕಫ: ಇವು ಮೂರು ಧಾತುಗಳು. ಇವಕ್ಕೆ ತ್ರಿದೋಷಗಳೆಂದು ಹೆಸರು. ಈ ವಾತಧಾತುವು ಶರೀರದ ಅಧೋಭಾಗ (ಶ್ರೋಣಿ ಮತ್ತು ಗುದ) ದಲ್ಲಿ ಇರುವುದು. ಈ ಮೂರು ಧಾತುಗಳೂ ಸಮಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿದ್ದರೆ ಮೂರು ಕಂಬಗಳ ಆಧಾರದ ಮೇಲೆ ಗೃಹವು ಭದ್ರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವಂತೆ ಶರೀರವೂ ಆರೋಗ್ಯದಿಂದಿರುವುದು. ಇವು ವಿಷಮಿಸಿದರೆ ಆರೋಗ್ಯವು ಕೆಟ್ಟು ಶರೀರನಾಶಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗುವುದು. "ವಾತಪಿತ್ತಶ್ಲೇಷ್ಮಾಣ ಏವ ದೇಹಸಂಭವಹೇತವ: । ತೇರೇವಾವ್ಯಾಪನ್ನ-ರಧೋಮವ್ಯೋರ್ವಸ್ಥಿತೇ: ಶರೀರಮಿದಂ ಧಾರಯತೇಜಾರಮಿವ ಸ್ಥೂಣಾಭಿ-ಸ್ತಿಸ್ತುಮಿ: । ತ ಏವ ಚ ವ್ಯಾಪನ್ನಾ: ಪ್ರಲಯಹೇತವ:" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೨೨-೩ । "ವಾತ: ಶ್ರೋಣಿಗುದಸಂಶ್ರಯ:, ತದ್ವಿಪರ್ಯಾಯೋ ನಾಭಿ: ಪಕ್ವಾಶಯ:, ಪಕ್ವಾಮಾಶಯಮಧ್ಯಂ ಪಿತ್ತಸ್ಯ, ಆಮಾಶಯ: ಶ್ಲೇಷ್ಮಣ: ಇತಿ ದೋಷಸ್ಥಾನಾನಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೨೧-೬ । 4. ವಾಯುದೇವತೆ. 5. ವಾತರೋಗ, ಮಂಡಿ ಮೊಳಕ್ಕೆ ಮೊದಲಾದವುಗಳ ಕೀಲುಗಳಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ನೋವು. ಊತ ಉರಿ ಮೊದಲಾದ ವ್ಯಾಧಿಗಳು, ಸುಧಿವಾತ.

**ವಾತಕ ನಾತಕ** (ಪುಂ) ಜಾರ, ವಿಟಪುರುಷ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿ. ವಾತ ಇವ ಚञ್ಚಲ: — ಇವಾರ್ಥೇ "ಕನ್" (೪-೩-೯೬) ।

**ವಾತಕಿನ್ ನಾತಕಿನ್** (ವಿಂ) ವಾತರೋಗವುಳ್ಳವನು. ವಾತೋಽತಿಶಯೇನಾಸ್ತಿ — ವಾತ "ಃ" ಕುಕ್ ಆಗಮಶ್ಚ (೪-೨-೧೨೯) । "ವಾತಕೀ ವಾತರೋಗಿ ಸ್ವಾತ್" ಅಮಂ ।



ವಾತಕುಸ್ಥ ನಾತಕುಂಭ (ಪುಂ) ಅನೆಯ ಕುಂಭಸ್ಥಲದ ಕೆಳಭಾಗ.

ವಾತಕೇತು ನಾತಕೇತು (ಪುಂ) ಧೂಳು. ವಾತಸ್ಯ ಕೇತುರಿವ ।

ವಾತಕೇಲಿ ನಾತಕೇಲಿ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಯತಮನ ದನ್ತಕ್ಷತ. 2. ಸುರತಕಾಲದಲ್ಲಿ ಗುಟ್ಟಾಗಿ ಹೇಳುವ ಪಿಸುವಾತು, ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಪಿಸುಗುಟ್ಟುವುದು. "ವಾತಕೇಲಿ: ಕಲಾಲಾಪೇ ಷಿಙ್ಗದಂತಕ್ಷತೇ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ ।

ವಾತಖುಡಾ ನಾತಖುಡಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿರುಗಾಳಿ.

ವಾತಗಾಮಿನ್ ನಾತಗಾಮಿನ್ (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಗಾಳಿಯಲ್ಲಿ ಹಾರಾಡುವ ಹಕ್ಕಿ. ವಾತೇನ ಸಹ ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಗಿಗಿ:" (೩-೧-೧೩೪) ।

ವಾತಗುಲಮ ನಾತಗುಲಮ (ಪುಂ) 1. ಚಂಡಮಾರುತ, ಬಿರುಗಾಳಿ. 2. ವಾತರೋಗ.

ವಾತಘನ ನಾತಘನ (ವಿಂ) 1. ವಾತವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. ವಾತಂ ಹಂತಿ—ಹನ (ಹಿಸಾಮತ್ಯಾಃ) "ಹಕ್" (೩-೨-೪೩) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಘನಿ—ಘ್ನ. 2. ಸಾಲಪರ್ಣ, ಮೂರೆಲೆ ಹೊನ್ನೆ.

ವಾತಛವಜ ನಾತಛವಜ (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ. ವಾತೋ ಛವಜೋ ಯಸ್ಯ ।

ವಾತಪುತ್ರ ನಾತಪುತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಭೀಮಸೇನ. 2. ಅಂಜನೇಯ. 3. ವಂಚಕ, ಧೂರ್ತ, ಮೋಸಗಾರ. "ವಾತಪುತ್ರೋ ಮಹಾಭೂತಂ ಭೀಮಸೇನೇ ಹನುಮತಿ" ಮೇದಿಂ ।

ವಾತಪೋಷ ನಾತಪೋಷ (ಪುಂ) ಪಲಾಶವೃಕ್ಷ, ಮುತ್ತಗದ ಮರ. ವಾತಂ ವಾತರೋಗಂ ಪುಷ್ಯತಿ ಹಿನಸ್ತಿ—ಪುಷ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಅಞ್" (೩-೨-೧) । "ಪಲಾಶೋ ಕಿಂಶುಕಃ ಪರ್ಣೋ ವಾತಪೋಷಃ" ಅಮಂ ।

ವಾತಪ್ರಮಿ ನಾತಪ್ರಮಿ (ಪುಂ ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಾಳಿಗೆ ಎದುರಾಗಿ ನಡೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದ ವಾಯುಮೃಗ. ವಾತಂ ಪ್ರಮಿಮೀತೆ—ಪ್ರ+ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ಃ" (೩ಂ ೪-೧) । —ಮೃಗಃ—ಮೃಗಃ.

ವಾತಮಂಡಲಿ ನಾತಮಂಡಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುಂಟರ ಗಾಳಿ, ಬಿರುಗಾಳಿಯ ಸಮೂಹ. ವಾತಸ್ಯ ಮಂಡಲಿ ।

ವಾತಮೃಗ ನಾತಮೃಗ (ಪುಂ) "ವಾತಪ್ರಮಿ" ಪದ ನೋಡಿ.

ವಾತರಙ್ಗ ನಾತರಂಗ (ಪುಂ) ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿಮರ.

ವಾತರಥ ನಾತರಥ (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ. ವಾತೋ ರಥೋ ಯಸ್ಯ ।

ವಾತರಾಯಣ ನಾತರಾಯಣ (ಪುಂ) 1. ಉನ್ನತ, ಹುಚ್ಚು ಹಿಡಿದವನು. 2. ಮದ್ಯಪಾನ ಮಾಡಿ ಅಮಲೇರಿದವನು.

3. ಸೋಮಾರಿ, ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ ಮನುಷ್ಯ. 4. ಶರ. ಬಾಣ. 5. ಎತ್ತರವಾದ ಪ್ರದೇಶ, ಶೃಂಗ, ಶಿಖರ. 6. ಗರಗಸ. 7. ಸರಳವೃಕ್ಷ. 8. ಬಾಣದ ಎಸೆತದ ದೂರ. "ವಾತರಾಯಣ ಉನ್ಮತ್ತೇ ನಿಷ್ಪ್ರಯೋಜನಪುಷ್ಪಃ । ಕಾಣ್ಡೇ ಚ ಕರಪತ್ರೇ ಚ ಕೂಡೇ ಚ ಶರಸಂಕ್ರಮೇ" ವಿಷಂ ।

ವಾತರೂಪ ನಾತರೂಪ (ಪುಂ) 1. ವಾತಸಮೂಹ, ಸುಂಟರ ಗಾಳಿ, ಬಿರುಗಾಳಿ. 2. ಉತ್ಕೋಚ, ಲಂಚ. 3. ಇಂದ್ರನ ಬಿಲ್ಲು. ವಾತೇನ ರೂಪ್ಯತೇ—ರೂಪ (ಮೂಷಾಯಾಮ್) "ಛಬ್" (೩-೩-೧೯) । "ವಾತರೂಪಸ್ತು ವಾತುಲೋಕೋಚಯೋಃ ಶಕ್ತು-ಕಾಮುಕೇ" ಮೇದಿಂ ।

ವಾತರೋಗ ನಾತರೋಗ (ಪುಂ) ವಾತದೋಷದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ವ್ಯಾಧಿ. ವಾತಸಂಭವೋ ರೋಗಃ । —ವ್ಯಾಧಿಃ—ವ್ಯಾಧಿ.

ವಾತರೋಗಿನ್ ನಾತರೋಗಿನ್ (ವಿಂ) ವಾತವ್ಯಾಧಿಯುಳ್ಳವನು. ವಾತರೋಗೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಛನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) ।

ವಾತಲ ನಾತಲ (ಪುಂ) 1. ಚಣಕ, ಕಡಲೆಕಾಳು. ವಾತಂ ಲಾತಿ—ಲಾ (ಆಧಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) । 2. ಗಾಳಿಯ ಸಮೂಹ. (ವಿಂ) 3. ಗಾಳಿಯಿಂದ ತೊಂದರೆಪಡುವ, ವಾತದ ತೊಂದರೆಯನ್ನು ತಡೆಯಲಾರದ. "ವಾತಲಃ ಪುನಿ ವಾತ್ಯಾಯಾಂ ವಾಚ್ಯವನ್ಮಾರುತಾಸಹೇ" ಮೇದಿಂ ।

ವಾತಾಪಿ ನಾತಾಪಿ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ, ಇಲ್ಲಲನ ತಮ್ಮ. ಈ ರಾಕ್ಷಸನು ಮಾಯೆಯಿಂದ ಅನೇಕ ಯುಷ್ಕಗಳ ಹೊಟ್ಟೆಯೊಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಅವರ ಹೊಟ್ಟೆಯನ್ನು ಸೀಳಿ ಹೊರಗೆ ಬರುತ್ತಿದ್ದನು. ಈ ರೀತಿ ಯುಷ್ಕಗಳ ನಾಶಕ್ಕೆ ಕಾರಣವನ್ನು ತಿಳಿದು ಅಗಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿಯು ಪೂಂಸರೂಪದಿಂದ ತಮ್ಮ ಉದರದೊಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿದ ಈ ರಾಕ್ಷಸನನ್ನು ತಮ್ಮ ತಪಶ್ಚಕ್ತಿಯಿಂದ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಜೀರ್ಣವಾಗುವಂತೆ ಮಾಡಿ ಅವನನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸಿದರು.

ವಾತಾಪಿಢಿಷ್ ನಾತಾಪಿಢಿಷ್, —ಸೂದನ—ಸೂದನ (ಪುಂ) ಅಗಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿ.

ವಾತಾಯನ ನಾತಾಯನ (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವ. ಕುದುರೆ. ವಾತಸ್ಯೇವಾಯನಂ ಯಸ್ಯ । "ವಾತ್ಯಾಯನಃ ಕೈಕಾಶಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 2. ಗವಾಕ್ಷ, ಕೆಟ್ಟಿ. ವಾತಸ್ಯ ಅಯನಂ ಮಾರ್ಗಃ । "ಭೂಯೋ ಭೂಯಃ ಸವಿಧನಗರೀರಯಯಾ ಪರ್ಯಂತಂ ದೃಷ್ಟಾ ದೃಷ್ಟಾ ಭವನ-ವಲಭಿತುಙ್ಗವಾತಾಯನಸ್ಯಾ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೮ । 3. ವಿವರ, ಸಂದು, ಕಂಡಿ. "ದಧತಿ ಪರಿಪತನ್ತಯೋ ಜಾಲವಾತಾಯನೇಭ್ಯಃ" ಮಾಘಂ ೧೧-೪೦ ।

ವಾತಾಯು ನಾತಾಯು (ಪುಂ) ಹರಿಣ, ಜಿಂಕೆ, ಹುಲ್ಲೆ. ವಾತಮಯತೇ—ಅಯ (ಗತೌ) "ಅಞ್" ಬಾಹುಂ ।



ವಾತಾರಿ ವಾತಾರಿ (ಪುಂ) ಏರಂಡವೃಕ್ಷ, ಹರಳುಗಿಡ.

ವಾತಸ್ಯ ವಾತರೋಗಸ್ಯ ಅರಿ: ।

ವಾತಾಲಿ ವಾತಾಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾಯುವಿನ ಸಮೂಹ, ಬಿರುಗಾಳಿ. ವಾತಾನಾಮಾಲಿಯೆತ್ರ ।

ವಾತಾಶ್ವ ವಾತಾಶ್ವ (ಪುಂ) ಉತ್ತಮವಾದ ಕುದುರೆ, ಒಳ್ಳೆಯ ಜಾತಿಯ ಕುದುರೆ. ವಾತ ಇವ ಶೀಘ್ರಗಾಮಿ ಅಶ್ವ: ।

ವಾತಿ ವಾತಿ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ವಾತಿ—ವಾ (ಗತಿಗನ್ವನಯೋ:) “ಅತಿ:” (ತಂ ೪-೬) । 2. ಸೂರ್ಯ. 3. ಚಂದ್ರ. “ವಾತಿರಾದಿತ್ಯಸೋಮಯೋ:” ಕೋಶ: ।

ವಾತಿಕ ವಾತಿಕ (ಪುಂ) ವಾತದೋಷದಿಂದಂಟಾದ ವ್ಯಾಧಿ. ವಾತಾದಾಗತ: “ಠಕ್” (೪-೩-೭೮) ।

ವಾತಿಕ್ಷಣ ವಾತಿಕ್ಷಣ (ಪುಂ) ಬದನೆಗಿಡ. “ವಾತಿಗಣಸ್ತು ವಾತಿಕ್ಷಿ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ವಾತೀಯ ವಾತೀಯ (ನಂ) 1. ಕಾಂಚಿಕ, ಅಕ್ಕಿಯ (ಅನ್ನದ) ಗಂಜಿ. ವಾತಾಯ ಹಿತಮ್ “ಠ:” (೪-೧-೪) । (ವಿಂ) 2. ವಾಯುಸಂಬಂಧವಾದ. ವಾತಸ್ಯೇದಮ್ “ಠ:” (೪-೨-೧೧೪) ।

ವಾತುಲ ವಾತುಲ (ಪುಂ) 1. ಸುಂಟರಗಾಳಿ, ಬಿರುಗಾಳಿ, ಸುಳಿಗಾಳಿ. ವಾತಾನಾಂ ಸಮೂಹ: “ಠಲ:” ಬಾಹುಂ । (ವಿಂ) 2. ಗಾಳಿಯನ್ನು ಸಹಿಸದಿರುವ. ವಾತಂ ನ ಸಹತೇ “ಠಲ:” ಬಾಹುಂ । 3. ವಾತರೋಗವನ್ನು ಸಹಿಸದಿರುವ. 4. ಉನ್ಮತ್ತ, ಹುಚ್ಚ. “ವಾತುಲೋ ವಾತುಲೋಽಪಿ ಸ್ಯಾತ್” ।

ವಾತುಲ ವಾತುಲ (ಪುಂ) 1. “ವಾತುಲ” ಪದದ ಅರ್ಥ. ವಾತಸ್ಯ ಸಮೂಹ: “ಠಲ:” (ವಾಂ ೪-೨-೧೨೧) । (ವಿಂ) 2. ವಾತರೋಗವನ್ನು ಸಹಿಸದಿರುವ. ವಾತಂ ನ ಸಹತೇ । “ವಾತುಲ: ಪುಂಸಿ ವಾಲ್ಯಾಯಾಮಪಿ ವಾತಾಸಹೇ ತ್ರಿಷು” ಅಮಂ ।

ವಾಲ್ಯಾ ವಾಲ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾಯು ಸಮೂಹ, ಸುಂಟರ ಗಾಳಿ, ಸುಳಿಗಾಳಿ. ವಾತಸ್ಯ ಸಮೂಹ: “ಯ:” (೪-೨-೪೯) । “ಅಥ ಕ್ಷಣಾದಂತರಿತಾಂತರಿಕ್ಷಾ ವಾಲ್ಯಾ ವಿಹ್ವಲೇಂದ್ರವಿಹಾರ-ಜಾತಾ” ಯಾದಂ ೨೦-೩೮ ।

ವಾತ್ಸಕ ವಾತ್ಸಕ (ನಂ) 1. ಕರುಗಳ ಸಮೂಹ, ಕರುಗಳ ಗುಂಪು. ವತ್ಸಾನಾಂ ಸಮೂಹ: “ವು” (೪-೨-೩೬) । 2. ಬೆಟ್ಟಮಲ್ಲಿಗೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ವತ್ಸಕಸ್ಯೇದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) ।

ವಾತ್ಸಲ್ಯ ವಾತ್ಸಲ್ಯ (ನಂ) 1. ಸ್ನೇಹ, ಪ್ರೀತಿ. ವತ್ಸಲಸ್ಯ ಭಾವ: “ಽನ್” (೪-೧-೧೨೪) । “ವಿಜ್ಞಾತಪೋಯೋಗ-ಪಥಮಾಸ್ಥಿತಂ ತಮವಿಶ್ವರಮ್ । ಚರಂತಂ ವಿಶ್ವಸುಹೃದಂ ವಾತ್ಸಲ್ಯಾ-

ಲೋಕಮಜ್ಞಲಮ್” ಭಾಗಂ ೪-೬-೩೪ । ಪುತ್ರಮಿತ್ರಾದಿ ಗಳಲ್ಲಿ ವಾತ್ಸಲ್ಯವು ಸ್ನೇಹವೆನಿಸುವುದು. ಪತಿಪತ್ನಿ ಗತವಾದ ವಾತ್ಸಲ್ಯವು ಅನುರಾಗವೆನಿಸುವುದು. “ಗುಹೋಽಪಿ ಯೇಷಾಂ ಪ್ರಥಮಾಪ್ತಜನ್ಮನಾಂ ನ ಪುತ್ರವಾತ್ಸಲ್ಯಮಪಾಕರೀಷ್ಯತಿ” ಕುಮಾಂ ೪-೨೪ । “ಅನ್ವಿತ: ಪತಿವಾತ್ಸಲ್ಯಾತ್ ಗೃಹವರ್ಜ-ಮಯೋವ್ಯಯಾ” ರಘುಂ ೧೪-೯೮ । (ಪುಂ) 2. ಶಾಂತರಸದಂತೆ ಒಂದು ರಸ, ಶೃಂಗಾರಾದಿರಸಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ರಸ.

ವಾತ್ಸ್ಯ ವಾತ್ಸ್ಯ (ಪುಂ) ವತ್ಸಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು. ವತ್ಸಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ “ಯನ್” (೪-೧-೧೦೪) ।

ವಾತ್ಸ್ಯಾಯನ ವಾತ್ಸ್ಯಾಯನ (ಪುಂ) 1. ವಾತ್ಸ್ಯಾಯನ ಮುನಿ. ವತ್ಸಸ್ಯ ಗೋತ್ರಾಪತ್ಯಂ ಯುವಾ-ವತ್ಸ “ಯನ್” (೪-೧-೧೦೪) । ಯುನಿ “ಫಕ್” (೪-೧-೧೦೧) । ಈ ಮುನಿಯು “ಕಾಮಸೂತ್ರ” ವೆಂಬ ಕಾಮಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ರಚಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. 2. ನ್ಯಾಯಸೂತ್ರಗಳಿಗೆ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಬರೆದ ಒಬ್ಬ ಮುನಿ.

ವಾಙ ವಾಙ (ಪುಂ) 1. ತತ್ತ್ವವನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಆಡುವ ಮಾತು, ತತ್ತ್ವನಿರ್ಣಯಕ್ಕಾಗಿ ತರ್ಕಬದ್ಧವಾಗಿ ಆಡುವ ಮಾತು. ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ವಾನ್” (೩-೩-೧೮) । ಈ ವಾದವು ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ ಹೇತು: ಉದಾಹರಣಮ್ ಉಪನಯ: ಮತ್ತು ನಿಗಮನಮ್ ಎಂಬ ಐದು ನ್ಯಾಯದ ಅವಯವಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರಬೇಕು. “ಅಜ್ಞಾತ್ಮವಿಜ್ಞಾ ವಿಜ್ಞಾನಾಂ ವಾದ: ಪ್ರವದತಾಮಹಮ್” ಗೀತಾ ೧೦-೩೨ । 2. ಅಭಿಪ್ರಾಯ ವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಮಾತು, ತನಗೆ ಇಷ್ಟವಾದ ವಿಷಯ ವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಮಾತು. ಈ ವಾದವು ಸತ್ಕಾರ್ಯವಾದ: ಅಸತ್ಕಾರ್ಯವಾದ: ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಪರಿಣಾಮವಾದ: ಮತ್ತು ವಿವರಣೆವಾದ: ಎಂದು ಸತ್ಕಾರ್ಯವಾದವು ಎರಡು ವಿಧ. ಪರಿಣಾಮವಾದವನ್ನು ಸಾಂಖ್ಯರು ಮತ್ತು ರಾಮಾನುಜೀಯರು ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುತ್ತಾರೆ, ಕಾರಣ ದ್ರವ್ಯವೇ ಕಾರ್ಯರೂಪವಾಗಿ ಪರಿಣಮಿಸುವುದೆಂದು ಇವರ ಮತ. ಇದೇ ಪರಿಣಾಮವಾದ. ಅದ್ವೈತಿಗಳು ವಿವರಣೆವಾದವನ್ನು ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಇವರ ಮತ ದಲ್ಲಿ ಕಾರಣವು ಕಾರ್ಯರೂಪದಿಂದ ತೋರುವುದಾದುದ ರಿಂದ ಕಾರಣವು ಸತ್ಯವೆಂದೂ ಕಾರ್ಯವು ಅಸತ್ಯವೆಂದೂ ಇವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. ದ್ವೈತಿಗಳು ಅಸತ್ಕಾರ್ಯ ವಾದ ವನ್ನು ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಇವರ ಮತದಲ್ಲಿ ಮೊದಲು ಕಾರ್ಯವು ಇಲ್ಲದೆ ಅನಂತರ ಸಾಮಗ್ರೀರೂಪವಾದ ಕಾರಣದಿಂದ ಘಟಾದಿಕಾರ್ಯವು ಉಂಟಾಗುವುದೆಂದು ಅಭಿಪ್ರಾಯ. ಪೂರ್ವಮಸದೇವ ಘಟಾದಿಕಾರ್ಯ ದೃಢವಕ್ರಮಾದಿ-ಕಾರಣಾತ್ ಭಿನ್ನಂ ಸದ್ವತ್ಯುಚಿತೆ ಎಂದು ಇವರು ಹೇಳು ತ್ತಾರೆ. 3. ಉಕ್ತಿ, ಮಾತು. “ಸಾಮವಾದಾ: ಸಕೋಪಸ್ಯ



ತಸ್ಯ ಪ್ರತ್ಯುತ ದೀಪಿಕಾ: " ಮಾಘಂ ೨-೫೫ । 4. ಇತಿಹಾಸ ವಿಷಯ, ಕಥೆ. " ಶಾಕುಂತಲಾದಿನಿಹಾಸವಾದಾನ್ಪ್ರಸ್ತಾವಿತಾನನ್ಯಪರೈವಚೋಮಿ: " ಮಾಲತೀಂ ೩-೩ । 5. ಚರ್ಚೆ, ವಿಷಯ ಜಿಜ್ಞಾಸೆಯಿಂದ ಚರ್ಚಿಸುವುದು.

**ವಾದಕ ನಾಡಕ** (ವಿಂ) 1. ಮಾತಾಡುವವನು, ಹೇಳುವವನು. ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಢಾಂ ವಾಚಿ) " ಫ್ವಲ್ " (೩-೧-೧೩೩) । 2. ವಾದ್ಯವನ್ನು ನುಡಿಸುವವನು. ವದ + ಣಿಕ್ " ಫ್ವಲ್ " । " ಕ್ವಚಿನ್ನತ್ಯತ್ಸು ಚಾನ್ಯೇಫು ಗಾಯಕೌ ವಾದಕೌ ಸ್ವಯಮ್ । ಶಶಂಸತುರ್ಮಹಾರಾಜ ಸಾಧು ಸಾಧ್ವಿತಿ ವಾದಿನೌ " ಭಾಗಂ ೧೦-೧೮-೧೩ ।

**ವಾದನ ನಾಡನ** (ನಂ) 1. ವಾದ್ಯ. ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಢಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಕ್ ಕರ್ಮಂ " ಲ್ಯುಡ್ " (೩-೩-೧೧೩) । 2. ನುಡಿಸುವುದು. ವದ + ಣಿಕ್ ಭಾವೇ " ಲ್ಯುಡ್ " (೩-೩-೧೧೫) ।

**ವಾದನೀಯ ನಾಡನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಮಾತಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಮಾತಾಡಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಮಾತಾಡಿಸಬಹುದಾದ. 4. ಮಾತಾಡಿಸಲು ಶಕ್ಯನಾದ. ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಢಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಕ್ " ಅನೀಯರ್ " (೩-೧-೧೬) । 5. ನುಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ನುಡಿಸಬೇಕಾದ. 7. ನುಡಿಸಬಹುದಾದ. 8. ನುಡಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. " ತವ್ಯ: " । ವಾದಯಿತವ್ಯ: ನಾಡಯಿತವ್ಯ: ।

**ವಾದಯತ್ ನಾಡಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಮಾತಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ನುಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ವದ + ಣಿಕ್ " ಶತ್ " (೩-೨-೧೨೪) । " ಶೈಲಸ್ಯ ದರ್ಢುರಪುಟಾನಿವ ವಾದಯಂತ: " ಮಾಘಂ ೫-೯ ।

**ವಾದಯಮಾನ ನಾಡಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಮಾತಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ನುಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಢಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಕ್ " ಶಾನಕ್ " (೩-೨-೧೨೪) ।

**ವಾದಾಲ ನಾಡಾಲ** (ಪುಂ) ಸಾವಿರ ಕೋರಹಲ್ಲುಗಳುಳ್ಳ ಮೀನು.

**ವಾದಿತ ನಾಡಿತ** (ನಂ) 1. ಮಾತಾಡಿಸುವುದು. 2. ನುಡಿಸುವುದು. ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಢಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಕ್ " ಕ: " (೩-೩-೧೧೪) । 3. ಮಾತಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವದ + ಣಿಕ್ ಕರ್ಮಂ " ಕ: " (೩-೨-೧೦೨) । " ವಾದಿತೇಫು ವಿಹಗೇಷ್ವ-ನುಷಣಂ ಮಂಜು ಗಾಯತಿ ಚ ಷಟ್ಪದವ್ರಜೇ " ಧಾದಂ ೧೭-೨೦ । 4. ನುಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಾದಿತ್ರ ನಾಡಿತ್ರ** (ನಂ) 1. (ವೀಣೆ ಮೊದಲಾದ ತಂತೀ ವಾದ್ಯ ಮೃದಂಗ ಮೊದಲಾದ ಚರ್ಮವಾದ್ಯ ಕೊಳಲು ಮೊದಲಾದ ಮುಖವಾದ್ಯ ತಾಳ ಮೊದಲಾದ ಕಂಚಿನ ವಾದ್ಯ) ಈ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ವಾದ್ಯಗಳು. ವಾಚತೇ — ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಢಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಕ್ " ಣಿತ್ರನ್ " (೩ಂ ೪-೧೭೦) ।

(ವಿಂ) 2. ಯಾಚಕರನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವವನು. ವಾದಿನ: ಅರ್ಥಿನ-ಸ್ತ್ರಾಯತೇ — ತ್ರೆಡ್ (ಪಾಲನೆ) " ಕ: " (೩-೨-೩) ।

**ವಾದಿನ್ ನಾಡಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಮಾತಾಡುವವನು, ಹೇಳುವವನು. ವದತಿ — ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಢಾಂ ವಾಚಿ) " ಣಿನಿ: " (೩-೧-೧೩೪) । " ನ ಚ ಹನ್ಯಾತ್ ಸ್ಥಲಾರೂಢಂ ನ ಕಲಿಬಂ ನ ಕೃತಾಂಜಲಿಮ್ । ನ ಮುಕ್ತಕೇಶಂ ನಾಸೀನಂ ನ ತವಾಸ್ಮೀತಿ ವಾದಿನಮ್ " ಮನ್ಮಂ ೭-೯೧ । 2. ಚರ್ಚೆಮಾಡುವವನು, ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ವಾದಮಾಡುವವನು. " ತಸ್ಯಾಜ್ಞೀಕರಣೇನ ವಾದಿನ ಇವ ಸ್ಯಾತ್ ಸ್ವಾಮಿನೌ ನಿಗ್ರಹ: " ಮುಡ್ರಾಂ ೫-೧೦ । 3. ಅರ್ಥಿ, ಯಾಚಕ. 4. ದೂರುವವನು, ತಪ್ಪನ್ನು ಆಪಾದಿಸುವವನು.

**ವಾದಿರಜ್ಞ ನಾಡಿರಂಗ** (ಪುಂ) ಆಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿಮರ.

**ವಾಢ ನಾಡ್ಯ** (ನಂ) 1. ನುಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಒಂದು ಸಾಧನ, ನುಡಿಸಲ್ಪಡುವ ಒಂದು ವಸ್ತು. ವಾಚತೇ ಧ್ವನ್ಯತೇ — ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಢಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಕ್ " ಯತ್ " (೩-೧-೧೭) । ಈ ವಾದ್ಯವು (1) ವೀಣೆ ಮೊದಲಾದ ತಂತೀವಾದ್ಯ (2) ಮೃದಂಗ ಮೊದಲಾದ ಚರ್ಮವಾದ್ಯ (3) ವೇಣು (ಕೊಳಲು) ಮೊದಲಾದ ಮುಖವಾದ್ಯ ಮತ್ತು (4) ತಾಳ ಮೊದಲಾದ ಕಂಚಿನ ವಾದ್ಯಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ಈ ನಾಲ್ಕು ವಾದ್ಯಗಳೂ ಸೇರಿದರೆ ವಾದಿತ್ರವಾಗುವುದು. " ಚತುರ್ವಿಧಮಿದಂ ವಾಢಂ ವಾದಿತ್ರಾತೋಢನಾಮಕಮ್ " ಅಮಂ । 2. ವಾದ್ಯದ ಧ್ವನಿ, ವಾದ್ಯದ ಶಬ್ದ. " ಶ್ರೋತ್ರೇಫು ಸಮುಚ್ಛತಿ ರಕ್ತಮಾಸಾಂ ಗೀತಾನುಗಂ ವಾರಿಮೃದ್ವಾಢಮ್ " ರಘುಂ ೧೬-೬೪ ।

**ವಾಢಕರ ನಾಡ್ಯಕರ** (ವಿಂ) ವಾದ್ಯ ನುಡಿಸುವವನು, ಸಂಗೀತಗಾರ, ಹಾಡುವವನು. ವಾಢಂ ಕರೌತಿ ।

**ವಾಢಭಾಂಡ ನಾಡ್ಯಭಾಂಡ** (ನಂ) ಜಲತರಂಗವೆಂಬ ವಾದ್ಯದ ಪಾತ್ರೆ. ವಾಢಂ ವಾದನೀಯಂ ಭಾಂಡಮ್ ।

**ವಾಢುಕಯ ನಾಢುಕೈ** (ನಂ) ವಿವಾಹ, ಮದುವೆ. " ದಾರ-ಕರ್ಮಗ್ರಹ: । ವಾಢುಕಯಂ ಚ ವಿವಾಹೇ ಸ್ಯಾತ್ " ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ವಾನ ನಾನ** (ನಂ) 1. ಒಣಗಿದ ಕಾಯಿ, ಒಣಗಿದ ಹಣ್ಣು. ವನ್ಯತೇ — ವನು (ಯಾಚನೆ) " ಷಬ್ " (೩-೩-೧೮) । " ಶುಷ್ಕೇ ವಾನಮ್ " ಅಮಂ । 2. ಬಟ್ಟೆ ನೇಯುವುದು. 3. ಗಮನ, ಗತಿ, ಚಲನೆ. 4. ಸುರಂಗ. 5. ಸೌರಭ, ಪರಿಮಳ. 6. (ಗಾಳಿ) ಬೀಸುವುದು. 7. ನೀರಿನ ಮೇಲೆ ಬೀಸಿದ ವಾತದ ತರಂಗಗಳು. (ವಿಂ) 8. ಒಣಗಿದ, ಶುಷ್ಕವಾದ. 9. ಬೀಸಿದ (ಗಾಳಿ). " ವಾನಂ ಶುಷ್ಕಫಲೇ ಶುಷ್ಕೇ ಸೀವನೇ ಗಮನೇ ಕಟೇ । ಜಲಸಂಪ್ಲುತವಾತೌಮಿಸುರಜ್ಞಾ-ಸೌರಭೇಫು ಚ " ಹೇಮಂ । 10. ವನಸಂಬಂಧವಾದ. ವನಸ್ಯೇದಮ್ " ಅಣ್ " (೪-೩-೧೨೦) ।



**ವಾನಪ್ರಸ್ಥ ನಾನಪ್ರಸ್ಥ** (ಪುಂ) 1. ಮಧೂಕ ವೃಕ್ಷ, ಹಿಪ್ಪೆ ಮರ. ವನಪ್ರಸ್ಥೇ ವನೇಕದೇಶೋ ಭವಃ "ಅಞ್" (೪-೩-೫೩) । 2. ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾ ಮೊದಲಾದ ನಾಲ್ಕು ಆಶ್ರಮಗಳಲ್ಲಿ ಮೂರನೆಯ ಆಶ್ರಮ. "ವಾನಪ್ರಸ್ಥೋಮಘೋಽಪಿ ಸ್ಯಾತ್ ತೃತೀಯಾಶ್ರಮೇ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ । ಮಕ್ಕಳು ಪ್ರಾಪ್ತವಯಸ್ಕರಾದ ನಂತರ ತಾಯಿ ತಂದೆಗಳು ವನವಾಸದಲ್ಲಿದ್ದುಕೊಂಡು ವನದಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದ ಹಣ್ಣು ಗೆಡ್ಡೆ ಗಿಣಿಸುಗಳನ್ನು ಆಹಾರವಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುತ್ತ ತಪಸ್ಸು ಮತ್ತು ಪರಮಾತ್ಮನ ಪೂಜಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ನಿರತರಾಗಿರಬೇಕು. ಇದೇ ವಾನಪ್ರಸ್ಥಾಶ್ರಮ. "ಅಪತ್ಯಸಂತತಿ ದೃಷ್ಟಾ ಪ್ರಾಜ್ಞೋ ದೇಹಸ್ಯ ಚಾಯತಿಮ್ । ವಾನಪ್ರಸ್ಥಾಶ್ರಮಂ ಗಂಢೇದಾತ್ಮನಃ ಶುದ್ಧಿಕಾರಣಾತ್" ವಾಂ ಪುಂ ।

**ವಾನರ ವಾನರ** (ಪುಂ) 1. ಮರ್ಕಟ, ಕಪಿ. ವಾ ವಿಕಲ್ಪೇನ ನರಃ । "ವಾನರಾ ಮುಷ್ಟಿಭಿರ್ಜನ್ತುರ್ವದಂಶುರ್ದಶನೇಸ್ತಥಾ । ನಿರಾಸುಖಗಿರೀಸ್ತುಜ್ಞಾನ್ ದ್ರುಮಾನ್ ವಿಚಕರಸ್ತಥಾ" ಮಹಿಂ ೧೪-೨೫ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಫ್" -ರೀ -ರೀ. (ವಿಂ) 2. ವಾನರ ಸುಬಂಧವಾದ. ವಾನರಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) ।

**ವಾನರೇನ್ದ್ರ ನಾನರೇಂದ್ರ** (ಪುಂ) ವಾನರಾಧಿಪತಿ, ಸುಗ್ರೀವ. ವಾನರಾಣಾಮಿನ್ದ್ರಃ ।

**ವಾನಸ್ಪತ್ಯ ನಾನಸ್ಪತ್ಯ** (ಪುಂ) ಪುಷ್ಪಬಿಟ್ಟು ಫಲಿಸುವ ವೃಕ್ಷ, ಪುಷ್ಪದಿಂದ ಫಲಬಿಡುವ ಮರ. ವನಸ್ಪತೌ ಭವಃ "ಞಃ" (೪-೧-೮೫) । "ವಾನಸ್ಪತ್ಯಃ ಫಲೈಃ ಪುಷ್ಪಾತ್" ಅಮಂ । ಪುಷ್ಪಸದೆ ಫಲಕೊಡುವ ಮರವು ವನಸ್ಪತಿ. "ತೇರಪುಷ್ಪಾತ್ ವನಸ್ಪತಿಃ" ಅಮಂ ।

**ವಾನಾ ನಾನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗವುಜಗಹಕ್ಕಿ, ಲಾವಕ್ಕಿ.

**ವಾನಾಯ ನಾನಾಯು** (ಪುಂ) ಭಾರತದೇಶಕ್ಕೆ ಉತ್ತರ ಪಶ್ಚಿಮ (ವಾಯವ್ಯ) ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ದೇಶ.

**ವಾನಾಯುಜ ನಾನಾಯುಜ** (ಪುಂ) ವನಾಯು ದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಕುದುರೆ. ವನಾಯುರ್ದೇಶೋ ಭವಃ "ಜಃ" (೩-೨-೯೭) । ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಞ್" (೫-೪-೩೮) ।

**ವಾನೀರ ನಾನೀರ** (ಪುಂ) ಬೆತ್ತ, ಲಾಳದ ಗಿಡ. "ವಾನೀರಪ್ರಸವೇನಿಕುಂಜಸರಿತಾಮಾಸಕ್ತವಾಸಂ ಪಯಃ" ಮಾಲತೀಂ ೯-೧೫ ।

**ವಾನೀರಕ ನಾನೀರಕ** (ಪುಂ) ಮುಂಜತ್ಯಣ.

**ವಾನೇಯ ನಾನೇಯ** (ನಂ) ಕೈವರ್ತಮುಸ್ಸೆ, ಕೊನ್ನಾರಿಯ ಭೇದ. ವನೇ ಜಲೇ ಭವಮ್ — "ಠಕ್" (೪-೨-೯೭) ।

**ವಾಂತ ನಾಂತ** (ವಿಂ) 1. ವಾಂತಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಟು ವಮ್ (ಉದ್ಗಿರಣ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್" (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊರಗೆ ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಾಂತಾದ ನಾಂತಾದ** (ಪುಂ) ನಾಯಿ, ಶ್ವಾನ. ವಾಂತಮ ಅತ್ತಿ — ಅದ (ಭಕ್ಷಣ) "ಅಞ್" (೩-೨-೧) ।

**ವಾಂತಿ ನಾಂತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಛರ್ದಿ, ವಮನ. ಟು ವಮ್ (ಉದ್ಗಿರಣ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) । 2. ಹೊರಕ್ಕೆ ಹೊರಡಿಸುವುದು, ಹೊರಕ್ಕೆ ಬಿಡುವುದು.

**ವಾಪ ನಾಪ** (ಪುಂ) 1. ಬೀಜ ಬಿತ್ತುವುದು. ಟು ವಪ್ (ಬೀಜ-ಸಂತಾನ) "ಘಮ್" (೩-೩-೧೮) । "ಕಾಲಂ ಪ್ರತೀಕ್ಷಸ್ವ ಸುಖೋದಯಸ್ಯ ಪಕ್ವಿತ ಫಲಾನಾಮಿವ ಬೀಜವಾಪಃ" ಭಾಂ ಸಮಾಂ । 2. ನೇಯುವುದು. 3. ಮುಂಡನ, ಭ್ರೂಧಾರಣ, ಕ್ಷೌರ. "ಕೃತವಾಪೋ ವಸೇದ್ಗೋಷ್ಠೇ ಚರ್ಮಣಾ ತೇನ ಸಂವೃತಃ" ಮನುಂ ೧೧-೧೦೯ । 4. ಗರ್ಭಾಧಾನ ಮಾಡುವುದು.

**ವಾಪಕ ನಾಪಕ** (ವಿಂ) 1. ಬೀಜ ಬಿತ್ತಿಸುವವನು. ಟು ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನ) + ಣಿಕ್ "ಫಲ್" (೩-೧-೧೨೩) । 2. ಬಟ್ಟೆ ನೇಯಿಸುವವನು. 3. ಕ್ಷೌರ ಮಾಡಿಸುವವನು.

**ವಾಪದಂಡ ನಾಪದಂಡ** (ಪುಂ) ತಾಕುಹಲಗೆ, ನೇಯುವ ಕೊಳವಿ, ನೇಯಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಹಾಸು ಎಳೆಗಳ ನಡುವೆ ಹೊಕ್ಕು ಎಳೆಗಳನ್ನು ಹಾಯಿಸುವ ಲಾಳಿ. ವಾಪಾಯ ದಂಡಃ ।

**ವಾಪನ ನಾಪನ** (ನಂ) 1. ಬೀಜ ಬಿತ್ತಿಸುವುದು. 2. ಬಟ್ಟೆ ನೇಯಿಸುವುದು. 3. ಕ್ಷೌರಮಾಡಿಸುವುದು. ಟು ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನ) + ಣಿಕ್ ಭಾವ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

**ವಾಪನೀಯ ನಾಪನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಬೀಜ ಬಿತ್ತಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಬಿತ್ತಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಬಿತ್ತಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಟು ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನ) + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । 4. ಬಟ್ಟೆ ನೇಯಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಬಟ್ಟೆ ನೇಯಿಸಬೇಕಾದ. 6. ಬಟ್ಟೆ ನೇಯಿಸಬಹುದಾದ. "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬) ।  
**ವಾಪಯಿತವ್ಯಃ ನಾಪಯಿತವ್ಯಃ** .

**ವಾಪಯತ್ ನಾಪಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಬೀಜ ಬಿತ್ತಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಬಟ್ಟೆ ನೇಯಿಸುತ್ತಿರುವ. ಟು ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಫ್" (೪-೧-೬) । -ಂತಿ -೨೯. "ಶಾನಕ್" । -ಯಮಾನಃ -ಯಮಾನಃ.

**ವಾಪಿತ ನಾಪಿತ** (ವಿಂ) 1. ಬೀಜ ಬಿತ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಬಟ್ಟೆ ನೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಟು ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನ) + ಣಿಕ್ "ಕ್" (೩-೨-೧೦೨) । 3. ಕ್ಷೌರ ಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಾಪಿತವತ್ ನಾಪಿತವತ್** (ವಿಂ) 1. ಬೀಜ ಬಿತ್ತಿಸಿದವನು. 2. ಬಟ್ಟೆ ನೇಯಿಸಿದವನು. 3. ಕ್ಷೌರಮಾಡಿಸಿದವನು. ಟು ವಪ್ (ಬೀಜಸಂತಾನ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।



ವಾಪಿ(ಪಿ) ವಾಪಿ(ಪಿ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಸ್ಕೃತ, ಕೊಳ.

उप्यतेऽस्यां पद्मादि — डु वप् (बीजसन्ताने) “इव्” (उ० ४-१२४) । “वाप्यो भवन्ति विमलाः स्फुटन्ति कमलानि वापीषु । कमलेषु पतन्त्यलयः करोति संगीत-मलिषु पदम्” । वा “ङीष्” (ग० ४-१-४५) ।

वापीह वಾಪೀಹ (ಪುಂ) ಚಾತಕಪಕ್ಷಿ. ವಾಪಿ ಜಹಾತಿ—ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) “ಕಃ” (३-२-३) ।

वाप्य ವಾಪ್ಯ (ನಂ) 1. ಚಂಗಲುಕೋಷ್ಠ. ವಾಪ್ಯಾ ಭವಮ್ “ಯತ್” (४-३-५४) । “वाप्यं पाकलमुत्पलम्” अम० । “वातश्लेष्मकरं वाप्यं सक्षारं कटुपित्तलम्” सुश्रुत० सूत्र० ४५ । (वि०) 2. ಬಿತ್ತಲ್ಪಡುವ. 3. ಮುಂಡನ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. डु वप् (बीजसन्ताने) “ण्यत्” (३-१-१२४) ।

वाम वाम (ನಂ) 1. ಧನ, ಐಶ್ವರ್ಯ, ಸಂಪತ್ತು. वा (गतिगन्धनयोः) “मन्” (उ० १-१३७) । (वि०) 2. ಸುಂದರವಾದ, ಅಂದವಾದ, ಸೊಗಸಾದ. “वामभ्रुवां वलयपङ्क्तिषु सञ्चरन्त्यो मञ्जु क्वणन्ति मणिपञ्जर-शारिकास्ते” याद० १९-१२ । 3. ಎಡಗಡೆಯ, ಎಡ ಭಾಗದ. डु वमु (उद्गिरणे) “णः” (३-१-१४०) । “वामपादतललुप्तमन्मथश्रीमदेन मुखवीक्षिणानिशम्” नैष० १८-११० । 4. ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದ, ವಿರುದ್ಧವಾದ. “यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः” शाकु० ४-१७ । 5. ಅಧಮ, ನೀಚ. “आसक्ता-स्तास्वमी मूढा वामशीला हि जन्तवः” किरा० ११-२४ । (पुं०) 6. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 7. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. 8. ಪಯೋಧರ, ಸ್ನನ, ಕುಚ. “वामं धने पुंसि हरे कामदेवे पयोधरे । वलुप्रतीपसव्येषु त्रिषु” मेदि० । (स्त्री०) —मा —मा. 9. ಹೆಂಗಸು. —मी —मी. 10. ಹೆಣ್ಣು ನರಿ. 11. ಹೆಣ್ಣು ಕುದುರೆ. “अथोष्ट्रवामी-शतवाहितार्थं प्रजेश्वरं प्रीतमना महर्षिः” रघु० ५-३२ । 12. ಹೆಣ್ಣು ಆನೆ. 13. ಹೆಣ್ಣು ಕತ್ತ. “नार्यां स्त्रियामय । वामी शृगालीबडवा रासमीकरभीषु च” मेदि० ।

वामवृक्ष वಾಮವೃಕ್ಷ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುಂದರವಾದ ಕಣ್ಣು ಗಂಟು, ಹೆಂಗಸು. वामा मनोहरा दृक् यस्याः ।

वामदेव वಾಮದೇವ (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. वामयति दुष्टानां मदम्—डु वमु (उद्गिरणे)+णिच् “अच्” (३-१-१३४) । वामश्चासी देवश्च ।

वामक वामक (वि०) 1. ಎಡಗಡೆಯ, ಎಡಭಾಗದ. 2. ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದ, ವಿರುದ್ಧವಾದ, ವಿಪರೀತವಾದ. “विवृण्वतेव कल्याणमान्तरज्ञेन चक्षुषा । स्फुरता वामकेनापि दाक्षिण्यमवलम्बते” मालती० १-११ ।

वामन वामನ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಐದನೆಯ ಅವತಾರ, ಉಪೇಂದ್ರಾವತಾರ. वामयति दुष्टानां मदम् —डु वमु (उद्गिरणे)+णिच् “ल्युः” (३-१-१३४) । ಪರಮವಿಷ್ಣು ಭಕ್ತನೂ ಪರಮಧಾರ್ಮಿಕನೂ ಆದ ಬಲಿ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯು ಸಕಲ ದೇವತೆಗಳನ್ನೂ ಜಯಿಸಿ ಇಂದ್ರಲೋಕವನ್ನು ಸ್ವಾಧೀನಪಡಿಸಿಕೊಂಡು ರಾಜ್ಯ ವನ್ನಾಳುತ್ತಿದ್ದನು. ದೇವೇಂದ್ರನ ಈ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಕಂಡು ಕಶ್ಯಪನು ಪತ್ನಿಯೊಡನೆ ತಪಸ್ಸನ್ನಾಚರಿಸಿ ಮಹಾ ವಿಷ್ಣುವನ್ನು ಪೂಜಿಸಿ ತನಗೆ ಪುತ್ರನಾಗಿ ಜನಿಸಿ ಬಲಿನಿಗ್ರಹ ಮಾಡಿ ಇಂದ್ರನಿಗೆ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಡಬೇಕೆಂಬ ವರ ಕೇಳಿಕೊಳ್ಳಲು ಪರಮಾತ್ಮನು ಅದಕ್ಕೆ ಸಂಮತಿಸಿ ಅದಿತಿಯ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಇಂದ್ರನಿಗೆ ತಮ್ಮನಾಗಿ ಉಪೇಂದ್ರ ನಾಗಿ ಜನಿಸಿದನು. ಮೌಂಜ್ಯಜಿನದಂಡಧಾರಿಯಾಗಿ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿವೇಷದಲ್ಲಿ ಅವತರಿಸಿದ ವಿಷ್ಣುವನ್ನು ಇಂದ್ರಾದಿ ದೇವತೆಗಳೆಲ್ಲರೂ ಸ್ತುತಿಸಿ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿ ಕೊಡಲು ಬೇಡಿದರು. ವಾಮನಾವತಾರ ಮಾಡಿದ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಯು ಬಲಿಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಯಾಗಶಾಲೆಗೆ ಹೋಗಿ ಮೂರು ಅಡಿಗಳಷ್ಟು ಭೂಮಿಯನ್ನು ಯಾಚಿಸಿ ದನು. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವೇ ತನ್ನಲ್ಲಿಗೆ ಒಂದು ಯಾಚಿಸಿದಾಗ ಬಹಳ ಸಂತೋಷಗೊಂಡ ಬಲಿ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯು ಅದಕ್ಕೆ ಸಂಮತಿಸಲು ಸಕಲ ಪೃಥ್ವೀಮಂಡಲವನ್ನು ಒಂದು ಪಾದದಿಂದಲೂ ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕವನ್ನು ಇನ್ನೊಂದು ಪಾದ ದಿಂದಲೂ ಆಕ್ರಮಿಸಿ ಮೂರನೆಯ ಪಾದವನ್ನು ಬಲಿ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಶಿರಸ್ಸಿನಲ್ಲಿಟ್ಟು ಬಲಿಯನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸಿ ಇಂದ್ರನಿಗೆ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಟ್ಟನು. ಇದೇ ವಾಮನ ಅಥವಾ ತ್ರಿವಿಕ್ರಮಾವತಾರ. “प्रतिगृह्य बलेलोकान् वटुवेषेण दैत्यहा । महेंद्राय ददौ प्रीत्या काश्यपिर्विष्णुरव्ययः” पाद्योत्तरखण्डः । 2. ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನ ದಿಗ್ಗಜ. 3. ಅಂಕೋಟದ ವೃಕ್ಷ. 4. ಪಾಣನಿಯ ಸೂತ್ರ ಗಳಿಗೆ ಕಾಶಿಕಾವೃತ್ತಿಯೆಂಬ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನವನ್ನು ಬರೆದ ಒಬ್ಬ ಪಂಡಿತ. “वामनोऽप्यतिखर्वे च त्रिषु पुंसि तु दिग्गजे । हरावच्छोटवृक्षे च” मेदि० । (वि०) 5. ಕುಳ್ಳ, ಗಿಡ್ಡ, ಮೋಟ. “प्राङ्गुलभ्ये फले लोमा-दुद्धाहुरिव वामनः” रघु० १-३ । 6. ನೀಚ, ಅಧಮ.



ವಾಮಲೂರ ನಾನುಲೂರ (ಪುಂ) ವಲ್ಮೀಕಿ, ಹುತ್ತ್.

ವಾಮಾ ನಾಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಂಗಸು. 2. ಗೌರಿ, ಪಾರ್ವತಿ.

3. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. 4. ಸರಸ್ವತಿ. ವಮತಿ ಸೌಂದರ್ಯಮ್ — ವಮು (उद्गिरणे) “णः” (३-१-१४०) । “शिल्प्यति कामपि चुम्बति कामपि कामपि रमयति वामाम्” गीतगो० ।

ವಾಮಾಚಾರ ನಾಮಾಚಾರ (ಪುಂ) 1. ರಮ್ಯವಾದ ಆಚಾರ,

ಶ್ಲಘ್ಯವಾದ ಆಚಾರ. ವಾಮ: मनोहर: आचार: ।

2. ವಿರುದ್ಧವಾದ ಆಚಾರ, ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದ ಆಚಾರ.

ವಾಮ: प्रतिकूल: आचार: । “क्वौ युवां युवानौ, कुतस्त्यौ, वामाचारवत् प्रतिभाति वामाचारः” च० रा० ।

ವಾಮಾವರ್ತ ನಾಮಾವರ್ತ (ಪುಂ) ಬಲಗಡೆಯಿಂದ ಎಡಗಡೆಗೆ ಸುತ್ತುರುವ ಸುಳಿ. ವಾಮ: आवर्तः ।

ವಾಮಿಲ ನಾಮಿಲ (ವಿಂ) 1. ಸುಂದರವಾದ, ಅಂದವಾದ.

2. ದಾಂಭಿಕ, ಕಪಟಿ. 3. ಗರ್ವವುಳ್ಳವನು, ದರ್ಪವುಳ್ಳವನು. “वामिलो दाम्भिके वामे” मेदि० ।

ವಾಮಿ ನಾಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) “ವಾಮ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ವಾಮೋರ ನಾಮೋರೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುಂದರವಾದ ತೊಡೆ

ಗಳುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ವಾಮೌ सुन्दरावूरु यस्या: — वामोर

“ऊङ्” (४-१-७०) । “तस्यन्ती चलशफरीविघट्टितोरु-

र्वामोरुरतिशयमाप विभ्रमस्य” भाष० ८-२४ ।

ವಾಯ ನಾಯ (ಪುಂ) ಬಟ್ಟೆ ನೇಯುವುದು. ವೇ (तन्तु-

सन्ताने) भावे “घञ्” (३-३-१८) ।

ವಾಯಕ ನಾಯಕ (ಪುಂ) 1. ನೇಯಿಗೆಯವನು, ಬಟ್ಟೆ

ನೇಯುವವನು. ವೇ (तन्तुसन्ताने) “ञ्वल्” (३-१-१३३) ।

2. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು.

ವಾಯನ ನಾಯನ (ನಂ) 1. ಬಟ್ಟೆ ನೇಯಿಸುವುದು.

ವೇ (तन्तुसन्ताने) + णिच् “ल्युट्” (३-३-११५) ।

2. ಒಂದು ವಿಧ ಸಿಹಿಭಕ್ಷ್ಯ.

ವಾಯವಿ ನಾಯವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾಯು ದಿಕ್ಕು, ಉತ್ತರ

ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕು. ವಾಯೋरियम् “अण्” (४-३-१२०) ।

“ऊीप्” (४-१-१५) ।

ವಾಯವ್ಯ ನಾಯವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ವಾಯುಸಂಬಂಧವಾದ

(ದಿಕ್ಕು). 2. ವಾಯುದೇವತಾಕವಾದ (ಹವಿಸ್ಸು).

ವಾಯुदेवता यस्य — वायु “यत्” (४-२-३१) ।

3. ವಾಯು ದೇವತಾಕವಾದ ಆಸ್ತ್ರ. “वायव्यास्त्रेण तं

पाणि रामोऽञ्जंत्सीत्सहायुधम्” भट्टि० १५-६७ ।

ವಾಯಸ ನಾಯಸ (ಪುಂ) 1. ಕಾಗೆ. ವಯತೆ — वय (गती)

“असच्” (उ० ३-१२०) । “विरसमिह रटन्तो

रक्तगन्धानुलिप्तं बलिमिव परिभोक्तुं वायसास्तर्कयन्ति”

मृच्छ० १०-३ । 2. ಅಗುರುವೃಕ್ಷ. 3. ಸರಳ ವೃಕ್ಷದ

ಹಾಲುಮಡ್ಡಿ. (ವಿಂ) 4. ವಾಯಸ ಸಂಬಂಧವಾದ.

ವಾಯಸಾದನಿ ನಾಯಸಾದನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಹಾಜ್ಯೋತಿ

ಷ್ಠತೀ ಲತೆ.

ವಾಯಸಾರಾತಿ ನಾಯಸಾರಾತಿ (ಪುಂ) ಉಲ್ಲಾಸ, ಗೊಜೆ,

ಘೋಕ. ವಾಯಸಸ್ಯಾರಾತಿ: ।

ವಾಯಸಿ ನಾಯಸಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಲ್ಲತ್ತಿಗಿಡ. 2. ಕಾಚಿ

ಗಿಡ, ಗಣಕೆ ಗಿಡ. “वायसी काकोदुम्बरी काकमाच्यपि”

हेम० ।

ವಾಯಸೋಲಿ ನಾಯಸೋಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಕೋಲಿಯೆಂಬ

ವಿಷ.

ವಾಯು ನಾಯು (ಪುಂ) 1. ಗಾಳಿ. ವಾತಿ — वा (गति-

गन्धनयोः) “उण्” (उ० १-१) । युक् (७-३-३३) ।

ವಾಯುವು ಸಪ್ತಸ್ಯಂಧವಾಗಿ ಅಂತರಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸು

ವುದು. (1) ಆವಹ: (2) ಪ್ರವಹ: (3) ವಿವಹ: (4) ಪರಾವಹ:

(5) ಸಂವಹ: (6) ತದ್ವಹ: ಮತ್ತು (7) ಪರಿವಹ: । ಈ ಏಳು

ವಾಯುಗಳು ಅಂತರಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಒಂದರ ಮೇಲೆ ಒಂದರಂತೆ

ಮೇಲುಭಾಗದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವುವು. “भूवायुरावह इह

प्रवहस्तदूर्ध्वः स्यादुद्धहस्तदनु संवहसंज्ञकश्च । अन्य-

स्ततोऽपि सुवहः परिपूर्वकोऽस्मात् वाहः परावह इमे

पवनाः प्रसिद्धाः” सिद्धान्तशि० । “तस्य द्वितीय-

हरिविक्रमनिस्तमस्कं वायोरिमं परिवहस्य वदन्ति मार्गम्”

शाकु० ७-६ । 2. ಉತ್ತರ ಪಶ್ಚಿಮ ದಿಕ್ಕುಗಳ ಮಧ್ಯದ

ವಿಧಿಕ್ತಿನ ಅಧಿಪತಿ. 3. ಪಂಚ ಮಹಾಭೂತಗಳಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕು

ನೆಯ ಒಂದು ಭೂತ. 4. ಶರೀರದೊಳಗಿರುವ ಪಂಚ

ವಾಯುಗಳು. (1) ಪ್ರಾಣ: (2) ಅಪಾನ: (3) ಸಮಾನ:

(4) ತದಾನ: ಮತ್ತು (5) ವ್ಯಾನ: ಇವು ಪಂಚವಾಯು

ಗಳು. ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಈ ಪಂಚವಾಯುಗಳ ಸ್ಥಾನ:

ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಣವಾಯು

ಗುದ್ರಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಅಪಾನವಾಯು

ನಾಭಿಯಲ್ಲಿ ಸಮಾನವಾಯು

ಕಂಠದಲ್ಲಿ ಉದಾನವಾಯು

ಶರೀರದ ಎಲ್ಲಾ ಭಾಗಗಳಲ್ಲೂ ವ್ಯಾನವಾಯು.

ವಿವರಕ್ಕೆ “ಪ್ರಾಣ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ. 5. ವಾಯು

ದೇವತೆ.



**ವಾಯುಕೇತು ವಾಯುಕೇತು** (ಪುಂ) ಧೂಳು. ವಾಯು: ಕೇತು: ಧವಜೋ ಯಸ್ಯ |

**ವಾಯುಗುಂಡ ವಾಯುಗುಂಡ** (ಪುಂ) ಉದರದಲ್ಲಿ ವಾಯು ತುಂಬಿರುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅಜೀರ್ಣವ್ಯಾಧಿ.

“ಅಜೀರ್ಣೋ ವಾಯುಗುಂಡೋಸ್ತರ್ವಮಿಶ್ರಪಲತಾಶಯ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ವಾಯುಗುಲ್ಮ ವಾಯುಗುಲ್ಮ** (ಪುಂ) ನೀರಿನ ಸುಳಿ. ವಾಯುನಾ ಕೃತ: ಗುಲ್ಮ ಇವ | “ಅಮ್ಭಸಾಂ ಭ್ರಮ: | ತಾನೂರೋ ವಾಯು-ಗುಲ್ಮಶ್ಚ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ವಾಯುದಾರು ವಾಯುದಾರು** (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ. ವಾಯುನಾ ದೀಯಂತೆ—ದ್ (ವಿದಾರಣೆ) “ಉ” (ಉಂ ೧-೩) | “ಮದಯಿತ್ನುರ್ವಾಯುದಾರು:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ವಾಯುಪುತ್ರ ವಾಯುಪುತ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಭೀಮಸೇನ. 2. ಅಂಜನೇಯ. ವಾಯೋ: ಪುತ್ರ: | —ಸುತ: —ಸುತಃ, —ಸುತು: —ಸೂನು: |

**ವಾಯುಪುರಾಣ ವಾಯುಪುರಾಣ** (ನಂ) ಅಷ್ಟಾದಶ (18) ಪುರಾಣಗಳಿಗೆ ಸದೃಶವಾದ ಹದಿನೆಂಟು ಉಪಪುರಾಣಗಳ ಲ್ಲೊಂದು.

**ವಾಯುಫಲ ವಾಯುಫಲ** (ನಂ) 1. ಇಂದ್ರಧನುಸ್ಸು. 2. ಅಲಿಕಲ್ಲು. ವಾಯುನಾ ಫಲತಿ—ಫಲ (ವಿಶರಣೆ) “ಅ” (೩-೧-೧೩೪) | “ಅಥ ವಾಯುಫಲಂ ಶಕ್ತಕಾಮುಕೇ ಕರಕೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ |

**ವಾಯುಭಕ್ಷ ವಾಯುಭಕ್ಷ** (ಪುಂ) ವಾಯುವೇ ಆಹಾರವಾಗಿ ಉಳ್ಳ. 1. ತಪಸ್ವಿ. 2. ಸರ್ಪ. ವಾಯು ಭಕ್ಷಯತಿ—ಭಕ್ಷ (ಅದನು) + ಣಿಚ್ “ಅ” (೩-೧-೧೩೪) |

**ವಾಯುವತ್ಮನ್ ವಾಯುವತ್ಮನ್** (ನಂ) ಅಂತರಿಕ್ಷ, ಆಕಾಶ. ವಾಯೋವತ್ಮನ್ |

**ವಾಯುವಾಹ ವಾಯುವಾಹ** (ಪುಂ) ಧೂಮ, ಹೊಗೆ. ವಾಯುನಾ ಉಹತು—ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ವ” (೩-೩-೧೯) |

**ವಾಯುವಾಹಿನಿ ವಾಯುವಾಹಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಿರೆ, ಧಮನಿ. ನೆರೆ. ವಾಯುಂ ವಹತಿ—ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಣಿ” (೩-೧-೧೩೪) | “ಙೀ” (೪-೧-೪) |

**ವಾಯುಸಖ ವಾಯುಸಖ** (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ವಾಯೋ: ಸಖಾ—ಸಖಿ “ಟ” (೪-೪-೯೧) | ವಾಯು: ಸಖಾಽಸ್ಯ ಎಂದು ಬಹುವ್ರೀಹಿಸಮಾಸವಾದಲ್ಲಿ ಸಖಿ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ “ಅನ” (೭-೧-೯೩) ಆದೇಶ ಬಂದು ವಾಯುಸಖಾ ಎಂದು ರೂಪವಾಗುವುದು.

**ವಾರ್ ವಾರ್** (ನಂ) ಜಲ, ನೀರು. ವಾರಯತಿ—ವೃ (ವರಣೆ) + ಣಿಚ್ “ವಿ” (೩-೨-೧೭೮) | ವಾ: ವಾರಿ ವಾರಿ | ವಾರಾ ವಾರ್ಯಾಮಿ ವಾರ್ತಿ: ಇತ್ಯಾದಿ ರೂಪಗಳು.

**ವಾರ ವಾರ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹಗಳು ಅಧಿಪತಿಯಾಗಿರುವ ದಿವಸ. ವಾರಗಳಿಗೆ ಚರಕ್ಷಿಪ್ರಾದಿ ಸಂಜ್ಞೆಗಳು: ಬುಧ-ಚರ, ಗುರು-ಕ್ಷಿಪ್ರ, ಶುಕ್ರ-ಮೃದು, ರವಿ-ಧ್ರುವ, ಶನಿ-ದಾರುಣ, ಭೂಮಿ (ಕುಜ)-ಉಗ್ರ, ಚಂದ್ರ-ಸಮ. “ಚರಕ್ಷಿಪ್ರ: ಪ್ರಯಾತವ್ಯಂ ಪ್ರವೇಷತವ್ಯಂ ಮೃದುಧ್ರುವ: | ದಾರುಣೋಽಗ್ನಿಶ್ಚ ಯೋಧವ್ಯಂ ಕ್ಷತ್ರಿಯೇಜ್ಯಕಾಙ್ಕ್ಷಿಣಿಭಿ: || ನೃಪಾಭಿಷೇಕೋಽಗ್ನಿಕಾರ್ಯಂ ಸೂರ್ಯವಾರೆ ಪ್ರಶಸ್ಯತೇ | ಸೋಮೇ ತು ಲೇಪಯಾನ್ ಚ ಕುರ್ಯಾಚ್ಚಿವ ಗೃಹಾದಿಕಮ್ || ಸೈನಾಪತ್ಯಂ ಶೌರ್ಯಯುಧಂ ಶಸ್ತ್ರಾಮ್ಯಾಸ: ಕುಜೇ ತಥಾ | ಸಿದ್ಧಿಕಾರ್ಯಂ ಚ ಮನ್ತ್ರಶ್ಚ ಯಾತ್ರಾ ಚೈವ ಬುಧೇ ಸ್ಮೃತಾ || ಪಠನಂ ದೇವಪೂಜಾ ಚ ವಸ್ತ್ರಾಘಾಭರಣೇ ಗುರೌ | ಕನ್ಯಾದಾನಂ ಗಜಾರೋಹ: ಶುಕ್ರೇ ಸ್ಥಾತ್ ಸಮಯ: ಸ್ತ್ರಿಯಾ: || ಸ್ಥಾಪ್ಯಂ ಗೃಹಪ್ರವೇಶಶ್ಚ ಗಜವನ್ಧ: ಶನೌ ಶುಭ:” | ವಾರವು ಸೂರ್ಯೋದಯಾನಂತರ ಮರುದಿನ ಸೂರ್ಯೋದಯದವರೆಗೆ ಗಣಿಸಲ್ಪಡುವುದು. ಸೂರ್ಯನು ಸರ್ವದಾ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವುದರಿಂದ ಅವನಿಗೆ ಉದಯಾಸ್ತಗಳಿಲ್ಲ. ನಮ್ಮ ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಗೋಚರವಾದಾಗ ಉದಯ ಮತ್ತು ಹಗಲೆಂದೂ ಗೋಚರವಾಗದಾಗ ಅಸ್ತ ಮತ್ತು ರಾತ್ರಿ ಯೆಂದೂ ವ್ಯವಹಾರ. “ನೈವಾಸ್ತಮನಮರ್ಕಸ್ಯ ನೋದಯ: ಸರ್ವದಾ ಸತ: | ಉದಯಾಸ್ತಮನಾಖ್ಯಂ ಹಿ ದರ್ಶನಾದರ್ಶನಂ ರವಿ:” ವಿಷ್ಣುಪುಂ | 2. ದ್ವಾರ, ಬಾಗಿಲು. 3. ರಾಶಿ, ಗುಂಪು. 4. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 5. ಸಮೂಹ. “ವಾರೀ ವಾರೆ: ಸಸ್ತಮೇ ವಾರಣಾನಾಮ್” ಮಾಘಂ ೧೮-೪೬ | 6. ಸರದಿ, ಅವಕಾಶ, ಸಮಯ. “ತೇನ ದ್ವಿತಿವಿದಿತಂ ನಿವೇದ್ಯ ಪೃಷ್ಠತ: ಸುರತವಾರರಾತ್ರಿಭು” ರಘುಂ ೧೯-೧೮ | 7. ಸಲ, ಸರತಿ, ಬಾರಿ. 8. ಸಂದರ್ಭ, ಸಮಯ, ಅವಕಾಶ. 9. ಕುಬ್ಜ ವೃಕ್ಷ. “ವಾರ: ಸೂರ್ಯಾದಿವಾಸರೇ | ದ್ವಾರೆ ಹರೇ ಕುಬ್ಜವೃಕ್ಷೇ ವೃಂದಾವಸರಯೋಕ್ಷಣೇ” ಮೇದಿಂ | (ನಂ) 10. ಮದ್ಯದ ಪಾತ್ರೆ.

**ವಾರಕ ವಾರಕ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕುದುರೆ. 2. ಕುದುರೆಯ ಒಂದು ವಿಧ ನಡೆಗೆ. ವೃ (ವರಣೆ) + ಣಿಚ್ “ಋ” (೩-೧-೧೩೩) | (ನಂ) 3. ಕಷ್ಟದ ಸ್ಥಾನ, ತೊಂದರೆಯ ಸ್ಥಳ. 4. ಮುಡಿವಾಳ. (ವಿಂ) 5. ತಡೆಯುವವನು, ನಿಷೇಧಿಸುವವನು.

**ವಾರಕಿನ್ ವಾರಕಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಶತ್ರು, ವೈರಿ. ವಾರಕೋಽಸ್ಯಸ್ಯ “ಙಿ” (೪-೨-೧೧೪) | 2. ಪಯೋಧಿ, ಸಮುದ್ರ. 3. ಚಿತ್ರಾಶ್ವ. 4. ಎಲೆಗಳನ್ನು ತಿಂದು ಜೀವಿಸುವವನು. “ವಾರಕೀ ಶತ್ರುಚಿತ್ರಾಶ್ವಪರ್ಣಾಜಿವಿ-ಪಯೋಧಿಭು” ಮೇದಿಂ |



**ವಾರಕೀರ ವಾರಕೀರ** (ಪುಂ) 1. ಸ್ಥೂಲ, ಪಶ್ಚಿಮ ಸಹೋದರ. ವಾರೆ ಅವಸರೆ ಕಿರತಿ — ಕ್ (ವಿಕ್ಷೇಪ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೫)। “ನಾಗರೋ ದೇವ: ಸ್ಯಾಲೋ ವಾರಕೀರ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 2. ಬಡಬಾಗಿ. 3. ಬಾಚಣಿಗೆ. 4. ಹೇನು. (ವಿಂ) 5. ಆರತಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಕುದುರೆ. 6. ಮೂಟೆ ಹೊರುವವನು. “ವಾರಕೀರಸ್ತು ಪುಸಿ ಸ್ಯಾತ್ ಭಾರಗ್ರಾಹಿಣಿ ಬಾಡವೇ। ಯುಕ್ತಾಂ ವೇಣಿವೇದಿನ್ಯಾ ನೋರಾಜಿತಹಯೇಽಪಿ ಚ ಮೇದಿಂ।

**ವಾರಕ್ಕು ವಾರಂಕ** (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. “ಸ್ಯು: ಖಗೋತ್ಪತ್ತಿ-ವಾರಕ್ಕುಕಾಠಾಗ್ನಿವ್ಯೋಮಚಾರಿಣ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ವಾರಙ್ಗ ವಾರಂಗ** (ಪುಂ) ಕತ್ತಿ ಮೊದಲಾದ ಆಯುಧಗಳ ಹಿಡಿ. ವೃನ್ (ವರಣ) “ಅಙ್ಗಚ್” (೩-೧-೧೧೯)। “ಮೂಲೇಙ್ಗುಕುಶವದಾವೃತ್ತವಾರಙ್ಗಾಣಿ ಸ್ವಸ್ತಿಕಯನ್ತ್ರಾಣಿ” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೭।

**ವಾರಟ ವಾರಟ** (ನಂ) 1. ಕ್ಷೇತ್ರ, ಭೂಮಿ, ಜಮೀನು. ವಾರ್ ಜಲಮಟತಿ — ಅಟ (ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ಕ್ಷೇತ್ರೇ ವಾರಟಮುಚ್ಯತೇ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 2. ಕ್ಷೇತ್ರಗಳ ಸಮೂಹ — ಟಾ-ಟಾ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಹೆಣ್ಣು ಹಂಸ. ವಾರಿ ಜಲೇ ಅಟತಿ—ಅಟ (ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)।

**ವಾರಣ ವಾರಣ** (ಪುಂ) 1. ಗಜ, ಆನೆ. ವಾರಯತಿ ಶತ್ರುನ್ — ವೃನ್ (ಆವರಣ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪)। “ನಾಗೇನ ಲಬ್ಧಪರವಾರಣಮಾರುತೇನ” ಮಾಘಂ ೫-೩೬। 2. ಯುದ್ಧ ಕವಚ. “ವಾರಣಾ ಯಸ್ಯ ಸೌವರ್ಣಾ: ಪೃಥಕ ಭಾಸಂತಿ ದಕ್ಷಿಣಾ:” ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೪೨-೨। (ನಂ) 3. ಪ್ರತಿಷೇಧ, ತಡೆಯುವಿಕೆ, ನಿಷೇಧಿಸುವಿಕೆ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವುದು. ವೃನ್ + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। “ನ ಭವತಿ ಬಿಸತಂತು-ವಾರಣಂ ವಾರಣಾನಾಮ್” ಭಾಮಿಂ ವಿಂ। “ವಾರಣಂ ಪ್ರತಿಷೇಧೇ ಸ್ಯಾದ್ವಾರಣಸ್ತು ಮತಙ್ಗಜೇ” ಮೇದಿಂ। (ವಿಂ) 4. ತಡೆಯುವ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವ. 5. ನಿಷೇಧಿಸುವ. 6. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ವಾರಿ ಜಲೇ ರಣತಿ—ರಣ (ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)।

**ವಾರಣಬುಸಾ ವಾರಣಬುಸಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಳೆಗಿಡ. ವಾರಣಾನಾಂ ಬುಸಾ—ಬುಸ (ಉತ್ಸರ್ಗ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೫)। “ಕದಲಿ ವಾರಣಬುಸಾ” ಅಮಂ।

**ವಾರಣವಲ್ಲಭಾ ವಾರಣವಲ್ಲಭಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕದಳಿ ವೃಕ್ಷ, ಬಾಳೆಗಿಡ. ವಾರಣಾನಾಂ ವಲ್ಲಭಾ ಪ್ರಿಯಾ।

**ವಾರಣಸೀ ವಾರಣಸೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾರಾಣಸಿ, ಕಾಶಿ. ವರಣಾ ಚ ಅಸೀ ಚ ನದೀದ್ವಯಮ್—ತಸ್ಯ ಅದ್ವೇ ಭವಾ “ಅನ್” (೪-೨-೭೦)। ಪೃಷೋಂ।

**ವಾರಣಾ ವಾರಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಡೆಯುವುದು, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವುದು, ನಿಷೇಧಿಸುವುದು. ವೃನ್ (ಆವರಣ) + ಣಿಚ್ “ಯುಚ್” (೩-೩-೧೦೭)। “ವಾರಣಾಮಿವ ವಿಧಾತುಮಭೀಕ್ಷಣಂ ಕಕ್ಷಯಾ ಚ ವಲಯೇಶ್ಚ ಶಿಶಿಷ್ಜೇ” ಮಾಘಂ ೧೦-೬೨।

**ವಾರಣಾವತ ವಾರಣಾವತ** (ನಂ) ಹಸ್ತಿನಾವತಿಗೆ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಪಟ್ಟಣ, ಪಾಂಡವರು ಕೆಲವುಕಾಲ ವಾಸವಾಗಿದ್ದ ಒಂದು ನಗರ. ಇದು ಪಾಂಡವರು ದುರ್ಯೋಧನನೊಡನೆ ಸಂಧಿಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲು ತಾವು ಕೇಳಿ ಕೊಂಡ ಐದು ಗ್ರಾಮಗಳಲ್ಲೊಂದು. (1) ಅವಿस्थಲಮ್ (2) ವೃಕಸ್ಥಲಮ್ (3) ಮಾಕಂದಿ (4) ವಾರಣಾವತಮ್ ಮತ್ತು (5) ದುರ್ಯೋಧನನಿಗೆ ಇಷ್ಟವಾದ ಯಾವುದಾದರೂ ಒಂದು ಗ್ರಾಮ. ಇವು ಐದು ಗ್ರಾಮಗಳು. “ಅವಿस्थಲಂ ವೃಕಸ್ಥಲಂ ಮಾಕಂದೀ ವಾರಣಾವತಮ್। ಅವಸಾನಂ ಅವತ್ವತ್ರ ಕಿಂಚಿದೇಕಂ ಚ ಪञ್ಚಮಮ್” ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೩೧-೧೯।

**ವಾರಣೀಯ ವಾರಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ತಡೆಯಲ್ಪಡುವ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ನಿಷೇಧಿಸಬೇಕಾದ. 4. ತಡೆಯಬೇಕಾದ. 5. ನಿಷೇಧಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 6. ತಡೆಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. ವೃನ್ (ಆವರಣ) + ಣಿಚ್ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬)। “ತವ್ಯ:”। ವಾರಯಿ-ತವ್ಯ: ವಾರಯಿತವ್ಯ:।

**ವಾರತ್ರ ವಾರತ್ರ** (ನಂ) ತೊಗಲ ಹಗ್ಗ.

**ವಾರವಾಣ ವಾರವಾಣ** (ಪುಂ) 1. ಯುದ್ಧ ಕವಚ. ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಬಾಣವನ್ನು ತಡೆಯುವ ನಿಲುವಂಗಿ. ಬಾಣ ವಾರಯತಿ ವೃನ್ (ಆವರಣ) + ಣಿಚ್ “ಅನ್” (೩-೨-೧)। ಪರಿನಿಪಾತ: (೨-೨-೩೧)। “ಪೀನಕುಚತಟನಿಪೀಡದಲದ್ವಾರ-ವಾಣಮುರಸಾಲಿಲಿಜ್ಜಿರೇ” ಮಾಘಂ ೧೫-೮೪। 2. ಹೆಂಗಸರ ಕುಪ್ಪಸ. “ವಾರವಾಣಸ್ತು ಕೂರ್ಪಾಸೇ ಕವಚೇಽಪಿ ಚ” ಹೇಮಂ।

**ವಾರಬುಘಾ ವಾರಬುಘಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕದಳಿವೃಕ್ಷ, ಬಾಳೆಗಿಡ.

**ವಾರಮುಖ್ಯಾ ವಾರಮುಖ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇಶ್ಯೆಯರಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯಳಾದವಳು, ಜನರಿಂದ ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಸೂಳೆ. ವಾರೆಷು ವೇಶ್ಯಾಸಮೂಹೇಷು ಮುಖ್ಯಾ। “ವಾರಮುಖ್ಯಾಶ್ಚ ಶತಶೋ ಯಾನೇಸ್ತದ್ದರ್ಶನೋತ್ಸುಕಾ:” ಭಾಗಂ ೨-೬-೧೯।

**ವಾರಯತ್ ವಾರಯತ್** (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯುತ್ತಿರುವ. 2. ನಿಷೇಧಿಸುತ್ತಿರುವ.

**ವಾರಯಿತ್ ವಾರಯಿತ್** (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯುವ, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವ. 2. ನಿಷೇಧಿಸುವ. ವೃನ್ (ಆವರಣ) + ಣಿಚ್ “ತುಚ್” (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ತೀಪ್” (೪-೧-೫)। -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ:।



ವಾರವಧು ವಾರನಧೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇಶ್ಯ, ಸೂಳೆ. ವಾರಸ್ಯ  
ಸಮೂಹಸ್ಯ ವಧು: — ಸರ್ವಸಾಧಾರಣಾ ।

ವಾರಲಾ ವಾರಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಹಂಸ. 2. ಕಣಜದ  
ಹಂಸ. ವಾರಂ ಲಾತಿ—ಲಾ (ಆದಾನೇ) “ಕ:” (೩-೨-೩) ।

“ವರಲಾ ವಾರಲಾ ಚಾಪಿ ಗಂಧೋಲಿಹಂಸಕಾಂತಯೋ:” ಮೇದಿಂ ।

ವಾರವಾಣಿ ವಾರವಾಣಿ (ಪುಂ) 1. ವೇಣುವಾದ್ಯವನ್ನು  
ನುಡಿಸುವವನು. 2. ಗಾಯಕ, ಸಂಗೀತಗಾರ. 3.  
ಸಂವತ್ಸರ. 4. ನ್ಯಾಯಪಾಲ, ನ್ಯಾಯಾಧೀಶ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
5. ಸ್ವೇರಿಣಿ, ವೇಶ್ಯ, ಸೂಳೆ. “ವೇಶ್ಯಾ ಶೂಲಾ ವಾರವಾಣಿ:”  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ವಾರವಾಣಿ ವಾರವಾಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಹುಜನರ ಆದರಕ್ಕೆ  
ಪಾತ್ರಳಾದ ವೇಶ್ಯ.

ವಾರವಿಲಾಸಿನಿ ವಾರವಿಲಾಸಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇಶ್ಯ, ಸೂಳೆ.  
ವಾರಸ್ಯ ಜನಸಮೂಹಸ್ಯ ವಿಲಾಸಿನಿ ।

ವಾರವೃಷಾ ವಾರವೃಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಳೆಗಿಡ.

ವಾರಸುಂದರೀ ವಾರಸುಂದರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇಶ್ಯ, ಸೂಳೆ.  
ವಾರಸ್ಯ ಜನಸಮೂಹಸ್ಯ ಸುಂದರೀ ।

ವಾರಸ್ತ್ರೀ ವಾರಸ್ತ್ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇಶ್ಯ, ಸೂಳೆ. ವಾರಸ್ಯ  
ಜನಸಮೂಹಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀಂ ।

ವಾರಂವಾರಮ್ ವಾರಂವಾರಮ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪದೇ ಪದೇ,  
ಪುನಃ ಪುನಃ, ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ. 2. ಪ್ರತಿಕ್ಷಣದಲ್ಲಿಯೂ.  
“ವಾರಂವಾರಂ ತಿರಯತಿ ದೃಶಾವುದ್ಗತೋ ಬಾಣಪುರ:” ಮಾಲತೀಂ  
೧-೩೮ ।

ವಾರಾಂನಿಧಿ ವಾರಾಂನಿಧಿ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ವಾರಾಂ  
ನಿಧಿ: — ಷಠ್ಯಾ ಅಲುಕ್ ಬಾಹುಂ ।

ವಾರಾಣಸೀ ವಾರಾಣಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಶೀ ನಗರ. ವರಣಾ ಚ  
ಅಸೀ ಚ ತಯೋರ್ನದೋರದ್ವೇ ಭವಾ “ಅನ್” (೪-೨-೭೦) ।  
ಪೃಷೋಂ । “ವರಣಾಸೀ ಚ ನದೀ ದ್ವೇ ಪುಣ್ಯೇ ಪಾಪಹರೇ ಉಭೇ ।  
ತಯೋರಂತರ್ಗತಾ ಯಾ ತು ಸೇವಾ ವಾರಾಣಸೀ ಸ್ಮೃತಾ ” ।

ವಾರಾಣಸೇಯ ವಾರಾಣಸೇಯ (ವಿಂ) 1. ವಾರಾಣಸಿ  
ಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. 2. ವಾರಾಣಸಿಯಲ್ಲಿರುವವನು.  
ವಾರಾಣಸ್ಯಾಂ ಜಾತೋ ಭವೋ ವಾ “ಠಕ್” (೪-೨-೯೭) ।

ವಾರಾಶಿ ವಾರಾಶಿ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ. ವಾರಾಂ ರಾಶಿರತ್ರ ।

ವಾರಾಸನ ವಾರಾಸನ (ನಂ) 1. ಜಲಾಶಯ, ನೀರು ನಿಂತಿ  
ರುವ ಕೆರೆ ಕೊಳ ಮುಂತಾದುವು. ವಾರಾಮ್ ಆಸನಮ್ ।  
2. ನೀರುತೊಟ್ಟಿ, ನೀರು ತುಂಬಿರುವ ತೊಟ್ಟಿ. “ವಾರಾಸನಂ  
ವಾ:ಸದನಮ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ವಾರಾಹ ವಾರಾಹ (ಪುಂ) 1. ವರಾಹ, ಸೂಕರ, ಹಂದಿ.  
ವರಾಹ ಏವ — ಸ್ವಾರ್ಥೇ “ಅನ್” (೪-೪-೩೮) ।  
2. ಶ್ವೇತವರಾಹಕಲ್ಪ, ಚತುರ್ಮುಖಿನ ಮೂವತ್ತು  
ಕಲ್ಪಗಳಲ್ಲೊಂದು. “ಅಯಂ ತು ಕಥಿತ: ಕಲ್ಪೋ ದ್ವಿತೀಯಸ್ಯಾಪಿ  
ಭಾರತ । ವಾರಾಹ ಇತಿ ವಿಖ್ಯಾತೋ ಯತ್ರಾಸೀತ್ ಸೂಕರೋ ಹರಿ:”  
ಭಾಗಂ ೩-೧೧-೩೭ । (ನಂ) 3. ಅಗುರು. (ವಿಂ)  
4. ವರಾಹಸಂಬಂಧವಾದ. ವರಾಹಸ್ಯೇದಮ್ “ಅನ್”  
(೪-೩-೧೨೦) । 5. ರಾಜಯೋಗ್ಯವಾದ.

ವಾರಾಹೀ ವಾರಾಹೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಂದಿಗಡ್ಡೆ. ವರಾಹ-  
ಸ್ಯೇದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) । “ಛೀಪ್” (೪-೧-೧೪) ।  
“ವಿಷ್ವಕ್ಸೇನಪ್ರಿಯಾ ಧೃಷ್ಟಿವಾರಾಹೀ ಬದರೇತ್ಯಪಿ” ಅಮಂ ।  
2. ವರಾಹಾವತಾರವೆತ್ತಿದ ಶ್ರೀ ವಿಷ್ಣುವಿನ ಶಕ್ತಿ. “ಯಜ್ಞ-  
ವಾರಾಹಮತುಲಂ ರೂಪಂ ಯಾ ವಿಭ್ರತೋ ಹರೇ: । ಶಕ್ತಿ: ಸಾಪ್ಯಾಯಯೌ  
ತತ್ರ ವಾರಾಹೀಂ ವಿಭ್ರತೀ ತನುಮ್” । 3. ಒಂದು ಅಳತೆ.  
4. ಬ್ರಾಹ್ಮೀ ಮೊದಲಾದ ಸಪ್ತ ಮಾತೃಕೆಯರಲ್ಲಿ ಐದನೆಯ  
ಮಾತೃಕೆ. “ಬ್ರಾಹ್ಮೀ ಮಾಹೇಶ್ವರೀ ಚೈವ ಕೌಮಾರೀ  
ವೈಷ್ಣವೀ ತಥಾ । ವಾರಾಹೀ ಚೈವ ಚಂದ್ರಾಣಿ ಚಾಮುಂಡಾ:  
ಸಪ್ತ ಮಾತರ:” ಅಮಂ । “ವಾರಾಹೀ ಮಾತೃಭೇದೇ ಸ್ಯಾತ್  
ವಿಷ್ವಕ್ಸೇನಪ್ರಿಯೌಷಧಿ । ರಾಜಾಹಂಜೋಜ್ಜ್ವಲೇ ಕ್ಲಿಬಂ ರಾಜ-  
ಯೋಗ್ಯೇಽಭಿಧೇಯವತ್” ಮೇದಿಂ ।

ವಾರಿ ವಾರಿ (ನಂ) 1. ಜಲ, ನೀರು. ವೃತ್ (ವರಣಂ) + ಣಿಕ್  
“ಇನ್” (೩ಂ ೪-೧೨೪) । “ಯಸ್ಯಾಶ್ಚಲದ್ವಾರಿಧಿವಾರಿ-  
ವೌಚಿಚ್ಛಟಿಂಚ್ಛಲಂಚ್ಛಕ್ವುಲಾಕುಲೇನ ” ಮಾಧಂ ೩-೩೭ ।  
2. ಮುಡಿವಾಳ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ವಾಕ್ಕು. 4. ಸರಸ್ವತಿ.  
5. ಗಜಬಂಧನಸ್ಥಲ, ಅನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಜಾಗ.  
6. ಅನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ, —ಸರಪಳಿ. “ವಾರಿ-  
ವಾಗ್ಗಜಬಂಧನಯೋ: ಸ್ತ್ರೀ ಕ್ಲಿಬೇಽಮ್ಬುನಿ ಬಾಲಕೇ । ಹ್ಲಿಬೇರೆ”  
ಮೇದಿಂ । “ಬಮೌ ಸಭಿನ್ದನ್ ಬೃಹತಸ್ತರಜ್ಞಾನ್ ವಾಯಂಗಲಾಭಜ್ಞ  
ಇವ ಪ್ರವೃತ್ತ:” ರಘುಂ ೪-೪೫ । 7. ಸರಿಯಾಳು, ಬಂದಿ,  
ಕೈದಿ. 8. ಸಣ್ಣ ಬಿಂದಿಗೆ.

ವಾರಿಕಣ್ಡಕ ವಾರಿಕಂಟಕ (ಪುಂ) ಕುಬ್ಜಕ ವೃಕ್ಷ. ವಾರಿಣ:  
ಕಣ್ಡಕ ಇವ । “ಕುಬ್ಜಕೋ ವಾರಿಕಣ್ಡಕ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।  
ವಾರಿಕುಬ್ಜ: —ಕುಬ್ಜಕ: ಇತ್ಯಾದಿ.

ವಾರಿಕ್ರಮಿ ವಾರಿಕ್ರಮಿ (ಪುಂ) ಜಲಾಶಯ, ಜೊಳೆ. ವಾರಿಣ:  
ಕ್ರಮಿ: । “ವಾರಿಕ್ರಮಿಸ್ತು ಜಲಮಕ್ಷಿಕಾ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ವಾರಿಚರ ವಾರಿಚರ (ಪುಂ) 1. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. ವಾರಿಣು  
ಚರತಿ — ಚರ (ಗತೌ) “ಠ:” (೩-೨-೧೬) । (ವಿಂ)  
2. ಜಲಚರ ಪ್ರಾಣಿ. 3. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ.



ವಾರಿಚಾಮರ ವಾರಿಚಾಮರ (ನಂ) ಶೈವಾಲ, ಪಾಚಿ.

ವಾರಿಣ: ಚಾಮರಮಿವ.

ವಾರಿಜ ವಾರಿಜ (ನಂ) 1. ಕಮಲ, ತಾವರೆ, ಪದ್ಮ.

ವಾರಿಣಿ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುರ್ಭಾವಿ) “ಹ:” (೩-೨-೯೭)।

“ನಾರೀಭಿರ್ಗುಣಜನಸ್ಯಲಾಹತಾನಾಮಾಸ್ಯಶ್ರೀವಿಜಿತವಿಕಾಸಿ-

ವಾರಿಜಾನಾಮ್” ಮಾಘಂ ೮-೪೭। 2. ಲಮಗ. (ಪುಂ)

3. ಶಂಖ. 4. ಕಪ್ಪೆಚಿಪ್ಪು. (ವಿಂ) 5. ನೀರಿನಲ್ಲಿ

ಹುಟ್ಟಿದ.

ವಾರಿತಸ್ಕರ ವಾರಿತಸ್ಕರ (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ.

ವಾರಿತ್ರಾ ವಾರಿತ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಛತ್ರಿ, ಕೊಡೆ. ವಾರಿಣ:

ತ್ರಾಯತೇ—ತೃಡ್ (ಪಾಲನೆ) “ಕ:” (೩-೨-೪)।

ವಾರಿದ ವಾರಿದ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ವಾರಿ

ದದಾತಿ—ಡು ದಾನ್ (ದಾನೆ) “ಕ:” (೩-೨-೩)। “ನವ-

ತಮಾಲನಿಮಸ್ಯ ನಮಸ್ತರೋರಚಿರೋಚಿರೋಚತ ವಾರಿದೇ.”

ಮಾಘಂ ೬-೨೮। 2. ಮುಸೈ, ಕೊನ್ನಾರಿ. (ವಿಂ)

3. ನೀರನ್ನು ಕೊಡುವವನು. “ವಾರಿದಸ್ತುತಿಮಾನ್ಯೋತಿ

ಸುಖಮಕ್ಷಯಮನ್ನದ:” ಮನುಂ ೪-೨೨೯।

ವಾರಿಧರ ವಾರಿಧರ (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ. ವಾರಿಣಿ

ಧರ:। “ವಿಗತವಾರಿಧರಾವರಣಾ: ಕ್ವಚಿತ್ ದದೃಶುಸ್ತುಲಿಸಿತಾಽ-

ಸಿಲತಾಽಸಿತಾ:” ಮಾಘಂ ೬-೪೧।

ವಾರಿಧಾರಾ ವಾರಿಧಾರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧಾರಾಕಾರವಾದ ಮಳೆ,

ಸುರಿಮಳೆ.

ವಾರಿಧಿ ವಾರಿಧಿ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ವಾರಿಣಿ

ಧೀಯಂತೇಽಸ್ಮಿನ್—ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) “ಕಿ:”

(೩-೩-೯೩)। “ತಸ್ಯ ತೇ ನ ಖಲು ತತ್ವವೇದಿನೋ ವಾರಿಧೇರಿವ

ವಯಂ ತದಸ್ಥಿತಾ:” ಯಾದಂ ೧೭-೧೧೩।

ವಾರಿನಾಥ ವಾರಿನಾಥ (ಪುಂ) 1. ವರುಣ. 2. ಸಮುದ್ರ.

ವಾರೀಣಾಂ ನಾಥ:।

ವಾರಿನಿಧಿ ವಾರಿನಿಧಿ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ವಾರಿಣಿ

ನಿಧೀಯಂತೇಽನ್—ನಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) “ಕಿ:”

(೩-೩-೯೨)।

ವಾರಿಪಥಿಕ ವಾರಿಪಥಿಕ (ವಿಂ) ನೀರಿನ ಮಾರ್ಗದಿಂದ

ಹೋಗುವ ಅಥವಾ ತರಲ್ಪಟ್ಟ. ವಾರಿಪಥೇನ ಗಂಚತಿ

ಆಹುತಂ ವಾ “ಠ್” (ವಾಂ ೪-೧-೭೭)।

ವಾರಿಪಣಿ ವಾರಿಪಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರುಕಾಣೆ, ಕಡಲ

ಹೆಕ್ಕು. ವಾರಿಣಿ ಪಣಾನ್ಯಸ್ಯಾ: “ಙೀಃ” (೪-೧-೬೪)।

ವಾರಿಪ್ರವಾಹ ವಾರಿಪ್ರವಾಹ (ಪುಂ) ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ

ನದಿಯ ಪ್ರವಾಹ. ವಾರಿಣ: ಪ್ರವಾಹ:।

ವಾರಿಮಸಿ ವಾರಿಮಸಿ (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ.

ವಾರಿಮುಚ್ ವಾರಿಮುಚ್ (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ. ವಾರಿ

ಮುಚ್ಚತಿ—ಮುಚ್ಚ (ಮೋಕ್ಷಣ) “ಕಿವ್” (೩-೨-೭೬)।

“ಆದಾನಂ ಹಿ ವಿಸರ್ಗಾಯ ಸತಾಂ ವಾರಿಮುಚಾಮಿವ” ರಘುಂ ೪-೮೬।

ವಾರಿಮೂಲಿ ವಾರಿಮೂಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರುಕಾಣೆ, ಕಡಲ

ಹೆಕ್ಕು. ವಾರಿಣಿ ಮೂಲಂ ಯಸ್ಯಾ:।

ವಾರಿರಥ ವಾರಿರಥ (ಪುಂ) 1. ದೋಣಿ. 2. ತಪ್ಪ.

3. ಹಡಗು. ವಾರಿಣಿ ರಥ ಇವ। “ವಾರಿರಥೋ ನೌಸ್ತರಿಕ:

ಪ್ಲವ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ವಾರಿರಾಶಿ ವಾರಿರಾಶಿ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು.

ವಾರೀಣಾಂ ರಾಶಯೋ ಯತ್ರ। “ವಾರಿರಾಶಿರಶನಾಮವಲಿಂಪನ್”

ಯಾದಂ ೨೧-೪೮। 2. ತಟಾಕ, ಕೆರೆ, ಜಲಾಶಯ.

ವಾರಿರುಹ ವಾರಿರುಹ (ನಂ) 1. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ, ತಾವರೆ.

ವಾರಿಣಿ ರೋಹತಿ—ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾಡುರ್ಭಾವಿ ಚ)

“ಕ:” (೩-೧-೧೩೪)। “ದಯಿತಾವಲೋಕವಿಕಸನ್ನಯನ

ಪ್ರಸರಪ್ರಗುಣಮಿವ ವಾರಿರುಹಮ್” ಮಾಘಂ ೯-೭೧। “ವಿಕಚ-

ವಾರಿರುಹಂ ದಧತಂ ಸರ:” ಕಿರಾಂ ೪-೧೩। (ವಿಂ) 2. ನೀರಿ

ನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

ವಾರಿಲೋಮನ್ ವಾರಿಲೋಮನ್ (ಪುಂ) ವರುಣ. ವಾರಿ

ಲೋಮಿನಿ ಯಸ್ಯ।

ವಾರಿವಾಸ ವಾರಿವಾಸ (ಪುಂ) ಮದ್ಯವನ್ನು ಮಾರುವವನು.

ವಾರಿಸಮೀಪೇ ವಾಸೋಽಸ್ಯ।

ವಾರಿವಾಹ ವಾರಿವಾಹ (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ. ವಾರಿ

ವಹತಿ—ವಹ (ಪ್ರಾಪಣ) “ಅಃ” (೩-೨-೧)।

ವಾರಿವಾಹಕ ವಾರಿವಾಹಕ (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ.

ವಾರೀಣಾಂ ವಾಹಕ:। -ವಾಹನ:-ವಾಹನ:। “ಚಾತಕ: ಕೋ

ವರಾಕೋಽಯಂ ಯಸ್ಯೇಂದ್ರೋ ವಾರಿವಾಹಕ:” ಪञ्ಚತಂ ೨-೧೪೯।

ವಾರಿಸಂಭವ ವಾರಿಸಂಭವ (ನಂ) 1. ಲಮಗ. 2.

ಲಾಮಂಚದ ಬೇರು. 3. ಸಂವೀರಾಂಜನ.

ವಾರಿ ವಾರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನೆಯನ್ನು ಹಿಡಿದುಹಾಕುವ

ಸ್ಥಳ. 2. ಅನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ. ವಾಯಂತೇಜನಯಾ—

ವೃಜ್ (ವರಣ) + ಣಿಚ್ “ಇವ್” (೩ಂ ೪-೧೨೪)।

“ವಾರಿ ತು ಗಜಬಂಧಿನಿ” ಅಮಂ। 3. ಅನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟಿ

ಹಾಕುವ ಸ್ಥಳ, ಗಜಶಾಲೆ. “ವಾರ್ಯಗಲಾಭಙ್ಗ ಇವ ಪ್ರಕೃತ:”

ರಘುಂ ೪-೪೪। 4. ಕಲಶ, ಘಟ, ಬಿದಿಗೆ. “ವಾರಿ

ಸ್ಯಾದ್ಗಜಬಂಧಿನ್ಯಾಂ ಕಲಸ್ಯಾಮಪಿ ಯೋಷಿತಿ” ಮೇದಿಂ।

ವಾರೀಡ ವಾರೀಡ (ಪುಂ) ಗಜ, ಅನೆ. ವಾಯಮಿಡತಿ—ಇಡ

(ಗತೌ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೪)।



ವಾರೀಶ ವಾರೀಶ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ. ವಾರೀಣಾಮೀಶ: |

ವಾರ ವಾರು (ಪುಂ) ಯುದ್ಧದ ಅನೇ. ವಾರಯತಿ ಶತ್ರುನ್ —  
ವೃನ್ (ಆವರಣ) + ಣಿನ್ "ಉನ್" ಬಾಹುಂ |

ವಾರಣ ವಾರುಣ (ನಂ) 1. ಜಲ, ನೀರು. ವರುಣೋ ದೇವತಾಸ್ಯ  
"ಅನ್" (೪-೨-೨೪) | 2. ಶತಭಿಷಾನ್ ಕ್ಷತ್ರ. (ಪುಂ)  
3. ಭಾರತವರ್ಷದ ಒಂದು ಬಿಂಡ. (ವಿಂ) 4. ವರುಣ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. ವರುಣಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) |  
5. ವರುಣ ದೇವತಾಕವಾದ. "ಸ ಸ್ಮೇರವಕ್ರಕಮಲೋನ್ಧಕ-  
ಶತ್ರುಸುನುರ್ಬಾಣಾಸನೇನ ಸಮಧತ್ತ ಸ ವಾರುಣಾಸ್ತ್ರಮ್" ಕುಮಾಂ  
೧೭-೪೦ |

ವಾರುಣಿ ವಾರುಣಿ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿಮಹರ್ಷಿ. ವರುಣಸ್ಯಾ-  
ಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಇನ್" (೪-೧-೯೫) | "ಸಮುದ್ರಂ ಸ ಸಮಾಸಾಽಽ  
ವಾರುಣಿಮಂಗವಾನುಷಿ: | ಉವಾಚ ಸಹಿತಾನ್ ದೇವಾನುಷೀಶ್ವೇವ  
ಸಮಾಗತಾನ್" ಭಾಂ ವನಂ ೧೦೫-೧ | 2. ಭೃಗುಮುನಿ.  
"ಸತ್ಯಾಗ್ನಿರ್ವಾರುಣಿವಿನ್ಧ್ಯಕೂಟೋ ವಾತಾಪಿಸುದನ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |  
"ಮೃಗುರ್ವೇ ವಾರುಣಿ: | ವರುಣಂ ಪಿತರಮುಪಸಸಾರ" ತೇಂ ೩೦ |

ವಾರುಣಿ ವಾರುಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮದ್ಯ. ವರುಣಸ್ಯೇದಮ್  
"ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | "ವಾರುಣಿಮದವಿಶಕ್ತಮಥಾವಿ-  
ಶ್ವಕುಪೋಭವದಸಾವಿವ ರಾಗ:" ಮಾಘಂ ೧೦-೧೯ | 2. ಮದ್ಯದ  
ಅಧಿದೇವತೆ. "ಕಿಮೇತದಿತಿ ಸಿದ್ಧಾನ್ತಾಂ ದಿವಿ ಚಿಂತಯತಾಂ  
ತತ: | ಬಮುವ ವಾರುಣಿ ದೇವಿ ಮದಾಭೂಷಿತಲೋಚನಾ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ |  
3. ವರುಣನ ಪತ್ನಿ. 4. ಪತ್ನಿಮ ದಿಕ್ಕು. "ಕಿಮು ದಿವಂ  
ಪುನರೇತಿ ಯದೀದೃಶ: ಪತಿತ ಏಷ ನಿಷೇವ್ಯ ಹಿ ವಾರುಣಿಮ್"  
ನೈಷಂ ೪-೭೦ | 5. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಗರಿಕೆಹುಲ್ಲು.  
"ವಾರುಣಿ ಗಣ್ಡದ್ವಾರಿಣಿ ಪ್ರತೀಚೀಸುರಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ |  
6. ಶತಭಿಷಾನ್ ಕ್ಷತ್ರ ಕೂಡಿದ ಚೈತ್ರ ಕೃಷ್ಣ ತ್ರಯೋದಶಿ.  
7. ವಾರುಣೀವಿದ್ಯೆ.

ವಾರುಣಿವಲ್ಲಭ ವಾರುಣೀವಲ್ಲಭ (ಪುಂ) ವರುಣ. ವಾರುಣಾ  
ವಲ್ಲಭ: |

ವಾರುಣಿ ವಾರುಣಿ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ವಗಂಧ ರಾಜ. (ಪುಂ)  
2. ದೋಣಿಯಿಂದ ನೀರನ್ನು ಹೊರಗೆ ಚೆಲ್ಲುವ ಪಾತ್ರೆ.  
3. ನೇತ್ರಮಲ. 4. ಕರ್ಣಮಲ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಣ್ಣಿ-ಣ್ಣೀ.  
5. ಬಾಗಿಲ ಹೊಸ್ತಿಲಮೆಟ್ಟಿಲು "ವಾರುಣಿ ದ್ವಾರಪಿಂಡಿಣಿ  
ಸ್ತ್ರೀ ಫಣಿನಾಂ ರಾಜಕೇ ಪುಮಾನ್ | ನ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಸೇಕಪಾತ್ರೇ ಚ  
ಮಲೇಷ್ಣ: ಶ್ರವಣಸ್ಯ ಚ" ಮೇದಿಂ |

ವಾರುಣಿ ವಾರುಣಿ (ಪುಂ) 1. ಬಟ್ಟೆಯ ಸೆರಗು. 2. ಅಗ್ನಿ.  
ಪಂಜರ. 4. ಕವಾಟಿ, ಕದ, ಬಾಗಿಲು. 5. ತಟ, ದಡ.  
"ವಾರುಣಿ: ಸಮ್ಬಲೇ ವಸ್ತ್ರಾಶ್ಚಲೇಽನೌ ಪಂಜರೇಶ್ವರೇ" ಹೇಮಂ |

ವಾರ್ಷಿ ವಾರ್ಷಿ (ನಂ) 1. ವಸ, ಅರಣ್ಯ, ಕಾಡು. ವೃಕ್ಷಾಣಾಂ  
ಸಮೂಹ: "ಅನ್" (೪-೨-೩೭) | 2. ವೃಕ್ಷ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
ವೃಕ್ಷಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) |

ವಾರ್ಷಿಕ ವಾರ್ಷಿಕ (ಪುಂ) ಗುಮಾಸ್ತೆ. ವರ್ಣಲೇಖನಂ ಶಿಲ್ಪಮಸ್ಯ  
"ಠನ್" (೪-೪-೫೫) |

ವಾರ್ತ ವಾರ್ತ (ನಂ) 1. ಆರೋಗ್ಯ. "ಹರೀರಾಕುಮಾರ-  
ಮಖಿಲಾಭಿಷಾನವಿತ್ ಸ್ವಜನಸ್ಯ ವಾರ್ತಮಯಮನ್ವಯುಕ್ತ ಚ"  
ಮಾಘಂ ೧೩-೬೮ | 2. ಜಾಣ್ಮೆ, ಚಾತುರ್ಯ, ನಿಪುಣತೆ.  
"ಅನುಯುಕ್ತ ಇವ ಸ್ವವಾರ್ತಮುಚ್ಛೇ: ಪರಿರೇಭೇ ನು ಭೃಗಂ ವಿಲೋಚನಾ-  
ಭ್ಯಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೩-೩೪ | (ವಿಂ) 3. ರೋಗವಿಲ್ಲ  
ದವನು. ವೃತ್ತಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಞ:" (ವಾಂ ೫-೨-೧೦೧) |  
4. ಉದ್ಯೋಗಶಾಲಿ, ವೃತ್ತಿನಿರತ, ಕಸಬುದಾರ. ವೃತ್ತಿ-  
ರಸ್ಯಸ್ಯ | 5. ಸಾರವಿಲ್ಲದ, ತಿರುಳಿಲ್ಲದ. "ವಾರ್ತೆ ತ್ವಾರೋಗ್ಯಾ-  
ರೋಗಫಲಗುಣು | ವೃತ್ತಿಶಾಲಿನಿ" ಹೇಮಂ | "ವಾರ್ತೆ ಪಾಟವ-  
ಮಾರೋಗ್ಯಮ್" ಪಾದವ: |

ವಾರ್ತ ವಾರ್ತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜೀವನೋಪಾಯ, ಜೀವನಾ  
ಧಾರ, ಹೊಟ್ಟೆಪಾಡು. ವೃತ್ತಿರಸ್ಯಸ್ಯಾಮ್ — ವೃತ್ತಿ "ಞ:"  
(ವಾಂ ೫-೨-೧೦೧) | "ಆಜೀವೋ ಜೀವಿಕಾ ವಾರ್ತೆ"  
ಅಮಂ | 2. ಕೃಷಿ, ವ್ಯವಸಾಯ, ವೃತ್ತಿನ ಉದ್ಯೋಗ,  
-ಕಸಬು. "ತೇ ಸೇತುವಾರ್ತಗಿಜಬನ್ಧಮುಖ್ಯೇರಮ್ಯುಚ್ಛಿತಾ:  
ಕರ್ಮಿರಪ್ಯವನ್ಯೈ:" ರಘುಂ ೧೬-೨ | 3. ಬದನೆಗಿಡ.  
4. ವೃತ್ತಾಂತ, ಸಮಾಚಾರ. 5. ಮಾತು. "ವಾರ್ತಾಪಿ  
ನಾಸತ್ಯಪಿ ಸಾನ್ಯಮೇತಿ ಯೋಗಾದರಣ್ಣೇ ಹೃದಿ ಯಾಂ ನಿರುನ್ವೇ"  
ನೈಷಂ ೩-೪೪ | 6. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

ವಾರ್ತಿಕ ವಾರ್ತಿಕ (ಪುಂ) ಬದನೆಗಿಡ. ವಾರ್ತಮಾರೋಗ್ಯ-  
ಮಾಕಯತಿ — ಅಕ (ಕುಟಿಲಾಪಾಂ ಗತೀ) + ಣಿನ್ "ಅನ್"  
(೩-೨-೧) | ಜಾತಿಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬೩) | ವಾರ್ತಿಕೀ  
ವಾರ್ತಿಕೀ.

ವಾರ್ತಿಕಿನ್ ವಾರ್ತಿಕಿನ್ (ಪುಂ) ಬದನೆಗಿಡ.

ವಾರ್ತಿಕು ವಾರ್ತಿಕು (ಪುಂ) ಬದನೆಗಿಡ. ವರ್ತತೇಜೇನ—ವೃತು  
(ವರ್ತನೆ) "ಕಾಕ್ರು:" (ತಂ ೩-೭೯) | "ವಾರ್ತಿಕುಣಸ್ತು  
ವಾರ್ತಿಕು:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ವಾರ್ತಿಯನ ವಾರ್ತಿಯನ (ಪುಂ) ಪ್ರಾಣಧಿ, ದೂತ,  
ಬಾಯಿಮಾತಿನಿಂದ ಸಮಾಚಾರ ತಿಳಿಸುವವನು. ವಾರ್ತಿನಾ-  
ಮಯನಮೇನ |

ವಾರ್ತವಿಹ ವಾರ್ತವಹ (ಪುಂ) 1. ಅಡ್ಡೆ ಹೊರುವವನು,  
ಕಾವಡಿ ಹೊರುವವನು. 2. ಸಂದೇಶವನ್ನು ಒಯ್ಯು-  
ವವನು, ಬಾಯಿಮಾತನ್ನು ತಲುಪಿಸುವವನು. ವಾರ್ತಿಯಾ:  
ವಹ: | ವಾರ್ತಿಯಾ ಹರ: —ವಾರ್ತಾಹರ: ವಾರ್ತಾಹರ:



**ವಾರ್ತಿಕ ವಾರ್ತಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಸಮಾಚಾರವನ್ನು ತಿಳಿದ  
ವನು. ವೃತ್ತಿ ವೇದ "ಠಕ್" (೪-೨-೬೦)। 2. ಚರ,  
ದೂತ, ಸಂದೇಶವನ್ನು ಒಯ್ಯುವವನು. "ಅಯ ವಾರ್ತಿಕಃ।  
ವಾರ್ತಿಯನಃ ಪ್ರವೃತ್ತಿಜಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। (ನಂ) 3. ಗ್ರಂಥ  
ಸೂತ್ರಗಳ ವಿವರಣೆಯನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ,  
ಸೂತ್ರಗಳಲ್ಲಿರುವ ನ್ಯೂನಾತಿರೇಕಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಗ್ರಂಥ.  
"उक्तानुक्तदुरुक्तार्थचिन्ताकारि तु वार्तिकम्"। ವೃತ್ತಿಃ  
ग्रन्थसूत्रविवरणम्, तत्र साधुः "ठक्" (೪-೪-೧೦೨)।

**ವಾರ್ತೆನ್ ವಾರ್ತೆನ್** (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರಪುತ್ರನಾದ  
ಅರ್ಜುನ. ವೃತ್ತೆನ್: ಅಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ — ವೃತ್ತೆಹನ್ "ಅನ್"  
(೪-೧-೯೨)। "सव्यसाची सुभद्रेशः शब्दभेदी कपिध्वजः।  
वार्तन्श्चापि बीमत्सुः" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। "अथ भूतानि  
वार्तन्शरैर्म्यस्तत्र तत्रसुः" ಕಿರಾಂ ೧೪-೧। 2.  
ಜಯನ್ತ. (ವಿಂ) 3. ಇಂದ್ರನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ವೃತ್ತೆನ್:  
इदम् "अण्" (೪-೩-೧೨೦)।

**ವಾರ್ತೆರ್ ವಾರ್ತೆರ್** (ನಂ) 1. ಗುಲಗಂಜಿ. 2. ಬಲಗಡೆ ಸುಳಿ  
ಯಿರುವ ಶಂಖ. 3. ಜಲ, ನೀರು. 4. ಗುಲಗಂಜಿಯ  
ಬಳ್ಳಿ. 5. ಮಾತು, ವಾಕ್ಯ. "वार्तं कृष्णलाबीज-  
दक्षिणावर्तशङ्खयोः। नीरे च काकचिञ्चायां भारत्यां  
च नपुंसकम्" ಮೇದಿಂ। 6. ಮಾವಿನ ಬೀಜ. "काक-  
चिञ्चाम्रबीजेषु वाचि वार्तैर्मिष्यते" ವಿಶ್ವಂ।

**ವಾರ್ತೆಲ ವಾರ್ತೆಲ** (ನಂ) 1. ದುರ್ದಿನ, ಮೇಘದಿಂದ  
ಆವೃತವಾದ ದಿನ. ವಾರ್ತೆಲ: ದಲತಿ — ದಲ (ವಿಶರಣೆ)  
"घः" (೩-೩-೧೧೮)। (ಪುಂ) 2. ಮಸಿಕುಡಿಕೆ. "वार्तलं  
दुदिने मेलानन्दायां वार्तलः स्मृतः" ಮೇದಿಂ।

**ವಾರ್ತೆಕ ವಾರ್ತೆಕ** (ನಂ) 1. ಮುಪ್ಪು, ಮುದಿತನ. ವೃದ್ಧಸ್ಯ  
भावः "बुल्" (೪-೧-೧೩೩)। "वार्तके मुनिवृत्तीनां  
योगेनात्ते तनुत्यजाम्" ರಘುಂ ೧-೮। 2. ವೃದ್ಧನ  
ಕಾರ್ಯ. ವೃದ್ಧಸ್ಯ ಕರ್ಮ "बुल्" (೪-೧-೧೩೩)।  
3. ವೃದ್ಧರ ಸಮೂಹ. ವೃದ್ಧಾನಾಂ ಸಮೂಹ: "बुल्" (ವಾಂ  
೪-೨-೩೯)। "स्थितैः समादाय महर्षिवार्तकाद्वने  
तदातिथ्यमशिक्षि शाखिमिः" ನೈಷಂ ೧-೭೭।

**ವಾರ್ತೆಕ ವಾರ್ತೆಕ** (ನಂ) ಮುಪ್ಪು, ಮುದಿತನ. ವಾರ್ತೆಕ  
स्वार्थे "व्यल्" (೪-೧-೧೨೪)।

**ವಾರ್ತೆ ವಾರ್ತೆ** (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ವಾರಿ  
जलं धीयतेऽत्र — डु धात् (धारणपोषणयोः) "किः"  
(೩-೩-೯೩)।

**ವಾರ್ತೆಷಿ ವಾರ್ತೆಷಿ** (ಪುಂ) ಬಡ್ಡಿಯ ಹಣದಿಂದ ಜೀವಿಸು  
ವವನು. ವಾರ್ತೆಷಿಕ ಪೃಷಂ ಕಲೋಪಃ।

**ವಾರ್ತೆಷಿಕ ವಾರ್ತೆಷಿಕ** (ಪುಂ) ಬಡ್ಡಿಯ ಹಣದಿಂದ  
ಬದುಕುವವನು. ವೃದ್ಧಯಥೆ ದ್ರವ್ಯ ವೃದ್ಧಿಃ, ತಾಂ ಪ್ರಯಚ್ಛತಿ  
"ठक्" (೪-೪-೩೦)। ವೃದ್ಧೆಃ ವೃದ್ಧಿಭಾವಃ (ವಾಂ  
೪-೪-೩೦)।

**ವಾರ್ತೆಷ್ಯ ವಾರ್ತೆಷ್ಯ** (ನಂ) ಅಧಿಕ ಬಡ್ಡಿಯನ್ನು ಸಂಪಾ  
ದಿಸುವುದು. ವಾರ್ತೆಷೆಭಾವಿಃ "व्यल्" (೪-೧-೧೨೪)।  
"वार्तष्यं धान्यवर्धनी" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ವಾರ್ತೆ ವಾರ್ತೆ** (ನಂ) ಚರ್ಮದ ಹಗ್ಗ. ವದ್ಧಯೆ ಇದಮ್  
"अण्" (೪-೧-೧೪)।

**ವಾರ್ತೆಣಿಸ ವಾರ್ತೆಣಿಸ** (ಪುಂ) 1. ಖಡ್ಗ ಮೃಗ, ಘೇಂಡಾ  
ಮೃಗ. 2. ಕಾಡುಮೇಕೆ.

**ವಾರ್ತೆ ವಾರ್ತೆ** (ಪುಂ) ಮೊಸಳೆ. ವಾರಿ ಜಲೇ ಭಟ ಇವ।  
**ವಾರ್ತೆ ವಾರ್ತೆ** (ನಂ) ಕವಚಗಳ ಸಮೂಹ. ವಾರ್ತೆಣಾಂ  
समूहः "अण्" (೪-೨-೩೮)।

**ವಾರ್ತೆ ವಾರ್ತೆ** (ನಂ) ಕವಚವನ್ನು ತೊಟ್ಟಿರುವ  
ಯೋಧರ ಸಮೂಹ. ವಾರ್ತೆಣಾಂ ಸಮೂಹ: "अण्"  
(೪-೨-೩೮)।

**ವಾರ್ತೆ ವಾರ್ತೆ** (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ. ವಾಃ ವಾರಿ  
मुञ्चति — मुञ्च (मोक्षणे) "क्विप्" (೩-೨-೭೬)।

**ವಾರ್ತೆ ವಾರ್ತೆ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲ್ಪಡುವ, ಕೋರ  
ಲ್ಪಡುವ. 2. ಯಾಚಿಸಲ್ಪಡುವ, ಬೇಡಲ್ಪಡುವ. ವೃತ್  
(संभक्तौ) "ण्यत्" (೩-೧-೧೨೪)।

**ವಾರ್ತೆ ವಾರ್ತೆ** (ವಿಂ) ತಡೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.  
वृत् (आवरणे) + णिच् कर्म "शानच्" (೩-೨-೧೨೪)।  
"सन्तुः सरोषपरिचारकवार्यमाणा दामाञ्चलस्त्रलित  
लोलपदं तुरङ्गाः" ಮಾಘಂ ೪-೬೧।

**ವಾರ್ತೆ ವಾರ್ತೆ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀಲಿನೋಣ.

**ವಾರ್ತೆ ವಾರ್ತೆ** (ವಿಂ) 1. ವರ್ಷಸಂಬಂಧವಾದ. 2. ಮಳೆಯ  
ಸಂಬಂಧವಾದ.

**ವಾರ್ತೆ ವಾರ್ತೆ** (ನಂ) 1. ಕಹಿದಸು, ನೀರಾಮ ಬಳ್ಳಿ.  
वर्षासु साधु "ठक्" (೪-೩-೧೮)। (ವಿಂ) 2. ವರ್ಷ  
ದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ಒಂದು ಸಂವತ್ಸರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ವರ್ಷ  
भवः "ठक्" (೪-೩-೧೧)। "यात्राबलिविधानं च  
सर्ववार्षिकपर्वसु" भागಂ ೧೧-೧೧-೩೭। 3. ವರ್ಷ  
ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ವರ್ಷಾಸು ಭವಮ್ "ठक्" (೪-೩-೧೧)।  
"वार्षिकं संजहारेन्द्रो धनुर्जैत्रं रघुर्दधौ" ರಘುಂ ೪-೧೬।

**ವಾರ್ತೆ ವಾರ್ತೆ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಲಿಕ್ಕಲು, ಶಿಲಾವೃಷ್ಟಿ,  
ವರ್ಷೋಪಲ. ವಾರಿಜಾತಾ ಶಿಲಾ। ಪೃಷಂ।



ವಾರ್ಷಿಕ ವಾರ್ಷಿಕ (ವಿಂ) ಮಳೆಯನ್ನು ಸುರಿಸುವ, ನೀರನ್ನು ಸುರಿಸುವ. ವೃಷ (ಸೆವನೆ) "ಉಕ್" (೩-೨-೧೪೪) | ಸ್ವಾರ್ಥ "ಉಕ್" |

ವಾರ್ಷಿಕ ವಾರ್ಷಿಕ (ವಿಂ) ವೃಷವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು, ಯಾದವರ ಸಂತತಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು. ವೃಣ-ಗೌತ್ರಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್—ವೃಣಿ "ಉಕ್" (೪-೧-೧೨೨) | "ಸರ್ವಿತೃತೀನಾಮಿವ ಸನ್ನಿಪಾತೇ ವಾರ್ಷಿಕದೇವತೆಯಬಲೋದಯಿನಾಮ್" |

ಯಾದಂ ೨೦-೨೨ |

ವಾಲ ವಾಲ (ವಿಂ) ಕೇಶ, ಕೂದಲು. ವಲತಿ—ವಲ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ಉಕ್" (೩-೧-೧೪೦) | ವಬಯೋರಭೇದಃ | ಮುಂತಾಗಿ ವಾಲ ಪದದ ಅರ್ಥ.

ವಾಲಕ ವಾಲಕ (ವಿಂ) "ವಾಲಕ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ. ವಬಯೋರಭೇದಃ |

ವಾಲಿನ್ ವಾಲಿನ್ (ವಿಂ) ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾಧಿಪತಿಯಾಗಿದ್ದ ಒಬ್ಬ ವಾನರರಾಜ, ಇಂದ್ರನ ಪುತ್ರ, ಸುಗ್ರೀವನ ಅಣ್ಣ. ಇವನ ಪತ್ನಿ ತಾರೆ. ಅಂಗದನು ಇವನ ಪುತ್ರ. [ಋಕ್ಷರಜ ಸ್ತೇಷ ವಾನರನೊಬ್ಬನು ಒಂದು ದಿನ ಸ್ತ್ರೀರೂಪ ಪಡೆದಿದ್ದಾಗ ಸೂರ್ಯನ ತೇಜಸ್ಸು ಕಂಠದ ಮೇಲೆ ಬಿದ್ದು ಅದರಿಂದ ಸುಗ್ರೀವನು ಹುಟ್ಟಿದನು. ಇಂದ್ರನ ತೇಜಸ್ಸು ಬಾಲದ ಮೇಲೆ ಬಿದ್ದು ವಾಲಿಯು ಹುಟ್ಟಿದನು. ಋಕ್ಷರಜ ಸ್ತನ ತರುವಾಯ ವಾಲಿಯು ರಾಜನಾದನು. ವಾಲಿಯು ಮಹಾಬಲಶಾಲಿ. ಎದುರಾಳಿಯು ಯುದ್ಧ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಅವನ ಅರ್ಧ ಶಕ್ತಿಯು ಇವನಿಗೆ ಬರುವಂತೆ ವರವನ್ನು ಪಡೆದಿದ್ದನು. ಒಂದು ಸಮಯದಲ್ಲಿ ತನಗೆ ಅಹಿತಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಿದನೆಂಬ ಶಂಕೆಯಿಂದ ಸುಗ್ರೀವ ನೆನ್ನೂ ರಾಜ್ಯದಿಂದ ಓಡಿಬಿಟ್ಟನು. ಇದರಿಂದ ಹೆದರಿದ ಸುಗ್ರೀವನು ವಾಲಿಗೆ ಪ್ರವೇಶವಿಲ್ಲದ ಮತಂಗಿಯುಷಿಯ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ತನ್ನ ಸಂಗಡಿಗರೊಡನೆ ಹೋಗಿ ನೆಲೆಸಿದನು. ಸೀತಾಪಹಾರವಾದ ನಂತರ ಸೀತೆಯನ್ನು ಹುಡುಕಿಕೊಂಡು ಲಕ್ಷ್ಮಣನೊಡನೆ ಶ್ರೀರಾಮನು ಸುಗ್ರೀವನಿದ್ದ ಋಶ್ಯಮೂಕ ಪರ್ವತಕ್ಕೆ ಬರಲು ಸುಗ್ರೀವನು ಶ್ರೀರಾಮನೊಡನೆ ಸಖ್ಯವನ್ನು ಬೆಳೆಸಿ ತನ್ನ ಕಷ್ಟವನ್ನು ನಿವೇದಿಸಿಕೊಂಡನು. ಶ್ರೀರಾಮನ ಬಲದಿಂದ ಸುಗ್ರೀವನು ವಾಲಿಯೊಡನೆ ಯುದ್ಧ ಮಾಡಲು ಹೊರಟಾಗ ವಾಲಿಯು ಶ್ರೀರಾಮ ನಿಂದ ಹತನಾದನು. ಶ್ರೀರಾಮನು ಸುಗ್ರೀವನಿಗೆ ರಾಜ್ಯ ವನ್ನು ವಹಿಸಿಕೊಟ್ಟು ಅಂಗದನನ್ನು ಯುವರಾಜನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದನು.]

ವಾಲುಕ ವಾಲುಕ (ನಂ) 1. ಸುರುಸುರುಕೆ ಗಿಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ-ಕಾ. 2. ಮರಳು.

ವಾಲಕ ವಾಲಕ (ನಂ) 1. ನಾರುಬಟ್ಟೆ. ವಲ್ಕಸ್ಯ ವಿಕಾರಃ "ಉಕ್" (೪-೩-೧೩೪) | (ವಿಂ) 2. ನಾರಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ವಾಲಕಲ ವಾಲಕಲ (ನಂ) 1. ನಾರುಬಟ್ಟೆ. (ವಿಂ) 2. ನಾರಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಲ್ಕಲಸ್ಯೇದಮ್ "ಉಕ್" (೪-೩-೧೨೦) |

ವಾಲ್ಮೀಕಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ (ವಿಂ) ವಾಲ್ಮೀಕಿಮಹರ್ಷಿ, ರಾಮಾಯಣ (ಆದಿಕಾವ್ಯ) ವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಆದಿಕವಿ, ಪ್ರಚೀತಸನ ಪುತ್ರ. ವಲ್ಮೀಕಿ ಭವಃ ವಲ್ಮೀಕಿಸ್ಥಾಪತ್ಯಂ ವಾ "ಉಕ್" (೪-೧-೯೪) | [ಈ ಮಹರ್ಷಿಯು ಬೇಡರ ಸಹವಾಸದಿಂದ ದೊಡ್ಡ ಚೋರನಾಗಿದ್ದನು. ಒಂದು ದಿನ ಸಪ್ತರ್ಷಿಗಳು ಮಾಡಿದ ಉಪದೇಶದಿಂದ ರಾಮಧ್ಯಾನ ಪರಾಯಣನಾಗಿದ್ದ ಈ ಋಷಿಯ ಮೇಲೆ ವಲ್ಮೀಕಿ (ಹುತ್ತ)ವು ಬೆಳೆದುಹೋಗಿದ್ದಿತು. ಮತ್ತೆ ಸಪ್ತರ್ಷಿಗಳು ಬಂದು ಇವನನ್ನು ಹುತ್ತದಿಂದ ಹೊರಗೆ ಬರಮಾಡಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯೆಂದು ಹೆಸರಿಟ್ಟರು. ವಾಲ್ಮೀಕಿಮಹರ್ಷಿಯು ಒಮ್ಮೆ ನದಿಗೆ ಸ್ನಾನಕ್ಕಾಗಿ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಕ್ರೌಂಚ ದಂಪತಿಗಳಲ್ಲಿ ಪುರುಷಪಕ್ಷಿಯೊಂದನ್ನು ಒಬ್ಬ ಬೇಡನು ಸಂಹರಿಸಿದ್ದನ್ನು ಕಂಡು ಅವನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟ ಶಾಪವು ಛಂದೋಬದ್ಧವಾದ ವಾಕ್ಯವಾಗಿ ಹೊರಟಿತು. ಇದರಿಂದ ಚಿಂತೆಗೊಳಗಾಗಿದ್ದ ಈ ಋಷಿಯನ್ನು ಬ್ರಹ್ಮನು ಸಂಧಿಸಿ ಆ ವಾಕ್ಯವು ಮಂಗಳಾರ್ಥಪ್ರದವಾದುದೆಂದು ಹೇಳಿ ಈ ಮಂಗಳ ಶ್ಲೋಕದಿಂದ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ಶ್ರೀಮದ್ರಾಮಾಯಣ ವನ್ನು ರಚಿಸಬೇಕೆಂದು ಹೇಳಿ ಅಂತರ್ಧಾನನಾದನು. ಅನಂತರ ರಾಮಾಯಣದ ಕಥಾಸಾರವನ್ನು ನಾರದ ಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ತಿಳಿದುಕೊಂಡು ಕರತಲಾಮಲಕವಾದ ರಾಮಾಯಣ ಕಥೆಯನ್ನು ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು ಸಹಸ್ರಗ್ರಂಥ (ಶ್ಲೋಕ)ಗಳಿಂದ ರಚಿಸಿದರು. ಇದರಿಂದ ಶ್ರೀಮದ್ ರಾಮಾಯಣಕ್ಕೆ "ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ" ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಶ್ರೀರಾಮನ ಆಜ್ಞೆಯಂತೆ ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ಸೀತಾದೇವಿಯನ್ನು ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಬಿಟ್ಟುಹೋಗಲು ವಾಲ್ಮೀಕಿಮಹರ್ಷಿಯು ತನ್ನ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಕರೆದುಕೊಂಡು ಹೋಗಿ ಋಷಿಪತ್ನಿಯರಮೂಲಕ ಸೀತೆಯನ್ನು ಉಪಚರಿಸಿದರು. ಅಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯು ಪ್ರಸವಿಸಿದ ಅವಳ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಲವಕುಶರೆಂದು ನಾಮಕರಣಮಾಡಿದರು. ಲವಕುಶರಿಗೆ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸಿ ಶ್ರೀರಾಮನ ಬಳಿಗೆ ಬಂದು ಅವರಿಂದ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಹಾಡಿಸಿದರು. ಇತ್ಯಾದಿ.] "ವಾಲ್ಮೀಕೀರರಹಿತರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣಗಾಥಾಂ ಸಾಧಯ್ಯ ದಧತಿ ಗಿರಾಂ ಮಹಾಸರಸ್ಯಃ" | ಮಾಘಂ ೪-೪೯ |



ವಾಲ್ಮೀಕಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ (ನಂ) ಪ್ರೀತಿ, ಪ್ರೇಮ. ವಾಲ್ಮೀಕಿ  
ಭಾವ: "ವ್ಯಕ್" (೪-೧-೧೨೪) ।

ವಾವದೂಕ ವಾವದೂಕ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ಮಾತಾಡುವವನು,  
ಹರಟೆಹೊಡೆಯುವವನು. ಅತಿಶಯೇನ ವದತಿ - ವದ  
(ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + "ಯಜ್" (೩-೧-೨೨) । "ಋಕ:"  
(೩ಂ ೪-೪೧) । ಯಜೋ ಲುಕ್ (೨-೪-೭೪) । "ವಾವದೂಕೋ-  
ತಿವಕ್ತಾರಿ" ಅಮಂ । "ಅನೃತಸ್ಯಾವಮಂತಾರೋ ವಕ್ತಾರೋ  
ಜನಸಂಸದಿ । ಚರಂತಿ ವಸುಧಾಂ ಕೃತ್ಸನಾಂ ವಾವದೂಕಾ ಬಹುಶ್ರುತಾ:"  
ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೧೯-೨೮ ।

ವಾವಯ ವಾವಯ (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ತುಲಸಿ.

ವಾವುಟ ವಾವುಟ (ಪುಂ) 1. ಹಡಗು. 2. ದೋಣಿ.  
3. ತಪ್ಪ.

ವಾವುತ ವಾವುತ (ವಿಂ) ಅರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಆಯ್ಕೆಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ವಾವುತು (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) ।

ವಾವುತಮಾನ ವಾವುತಮಾನ (ವಿಂ) ಪರಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ  
ಯುಳ್ಳವನು, ಆಯ್ಕೆ ಮಾಡುವವನು. ವಾವುತು (ವರ್ತನೆ)  
"ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ತತೋ ವಾವುತಮಾನಾಸ್ಸೌ  
ರಾಮಶಾಲಾಂ ನ್ಯವಿಕ್ಷತ" ಭದ್ರಂ ೪-೨೮ ।

ವಾಶಕ ವಾಶಕ (ಪುಂ) 1. ಅಡುಸೋಗೆ. (ವಿಂ) 2. ಶಬ್ದ  
ಮಾಡುವ, ಸದ್ದುಮಾಡುವ. ವಾಶು (ಶಬ್ದ) "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । "ವಾಶಕೋ ವಾಜಿದಂತಕ:" ಅಮಂ ।

ವಾಶನ ವಾಶನ (ನಂ) 1. ಶಬ್ದಮಾಡುವುದು, ಕೂಗಿಕೊಳ್ಳು  
ವುದು. ವಾಶು (ಶಬ್ದ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।  
2. ಪಕ್ಷಿಗಳ ಕೂಗು, ಪಕ್ಷಿಗಳ ಧ್ವನಿ. 3. ದುಂಬಿಯ  
ರೋಷಕಾರ. (ವಿಂ) 4. ಶಬ್ದಮಾಡುವ. 5. ಕೂಗಿ  
ಕೊಳ್ಳುವ. ವಾಶು "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) ।

ವಾಶಿಕಾ ವಾಶಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಡುಸೋಗೆ ಗಿಡ.

ವಾಶಿತ ವಾಶಿತ (ನಂ) ಪಕ್ಷಿಗಳ ಶಬ್ದ, ಹಕ್ಕಿಗಳ ಕೂಗು.  
ವಾಶು (ಶಬ್ದ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) । "ನೇರಂತರ್ಯಾ-  
ಚ್ಚಿತ್ತದೇಹಾಂತರಾಲಂ ದುರ್ಭಕ್ಷಸ್ಯ ಜ್ವಾಲಿನಾ ವಾಶಿತೇನ" ಮಾಘಂ  
೧೮-೭೬ ।

ವಾಶಿತಾ ವಾಶಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಂಗಸು. 2. ಹೆಣ್ಣು  
ಆನೆ.

ವಾಶುರಾ ವಾಶುರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾಶಿ. ವಾಶುರೇಷ್ಯಾಮ್ - ವಾಶು  
(ಶಬ್ದ) "ಉರಕ್" (೩ಂ ೧-೩೮) ।

ವಾಶಿ ವಾಶಿ (ಪುಂ) 1. ದಿವಸ, ಒಂದು ದಿನ. (ನಂ)  
2. ವಾಸಗೃಹ, ಮನೆ. 3. ಚತುಷ್ಟಯ, ನಾಲ್ಕು ರಸ್ತೆಗಳು  
ಕೂಡುವ (ಚೌಕ) ಜಾಗ. ವಾಶುರೇಷ್ಯಾಮ್ - ವಾಶು (ಶಬ್ದ)

"ರಕ್" (೩ಂ ೨-೧೩) । "ವಾಶೋ ನಾ ದಿವಸೇ ಕಲಿಬಂ  
ಮಂದಿರೇ ಚ ಚತುಷ್ಟಯೇ" ಮೇದಿಂ ।

ವಾಸ ವಾಸ (ಪುಂ) 1. ಗೃಹ, ಮನೆ. ವಸಂತ್ಯಸ್ಮಿನ್ - ವಸ  
(ನಿವಾಸೇ) "ವಜ್" (೩-೩-೧೨೧) । "ನೇವವಿಧೇಷು ವಾಸೇಷು  
ಭಯಮಸ್ತಿ ವರಾನನೇ" ಹರಿವಂ । 2. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. ವಾಸ್ಯತೇ  
-ವಾಸ (ಉಪಸೇವಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ "ವಜ್" (೩-೩-೧೨೧) ।  
3. ವಾಸಮಾಡುವುದು, ಇರುವುದು, ಅವಸ್ಥಾನ. ವಸ  
(ನಿವಾಸೇ) "ವಜ್" (೩-೩-೧೮) । "ವಾಸೋ ವೇಶ್ಮನ್ಯ-  
ವಸ್ಥಾನೇ" ಹೇಮಂ । "ಸೌಧವಾಸಮುತ್ಥೇನ ವಿಸ್ಮೃತ:" ರಘುಂ  
೧೯-೨ । 4. ಪರಿಮಳ, ಸೌರಭ, ಕಂಪು. 5. ಒಂದು  
ಜಾತಿಯ ಕಬ್ಬು.

ವಾಸಕ ವಾಸಕ (ಪುಂ) 1. ಅಡುಸೋಗೆ ಗಿಡ. 2. ದಿವಸ.  
3. ವಾಸಗೃಹ. (ವಿಂ) 4. ವಾಸನೆಯುಂಟುಮಾಡುವ.  
ವಾಸಕರ್ಣಿ ವಾಸಕರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯಜ್ಞಶಾಲೆ, ಯಾಗ  
ನಡೆಯುವ ಜಾಗ. 2. ಪ್ರದರ್ಶನ ಶಾಲೆ.

ವಾಸಕಸಜ್ಜಾ ವಾಸಕಸಜ್ಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಕೀರ್ತದ ದಿವಸ,  
ಪ್ರಿಯನ (ನಾಯಕನ) ಸಮಾಗಮವನ್ನು ಪ್ರತಿಕ್ಷಿಸುತ್ತ  
ಶಯನಗೃಹಾಲಂಕಾರ ಮಾಡುವ ನಾಯಿಕೆ. ವಾಸಕೇ  
ಪ್ರಿಯಾಗಮನವಾಸರೇ ಸಜ್ಜತಿ - ಪಸಜ (ಗತೌ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ಕುರುತೇ ಮಂಡನಂ ಯಸ್ಯಾ: ಸಜ್ಜಿತೇ  
ವಾಸವೇಶ್ಮನಿ । ಸಾ ತು ವಾಸಕಸಜ್ಜಾ ಸ್ಯಾದ್ವಿದಿತಪ್ರಿಯಸಂಗಮಾ"  
ಸಾಂ ದಂ ।

ವಾಸಕಾ ವಾಸಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಡುಸೋಗೆ ಗಿಡ.

ವಾಸಗೃಹ ವಾಸಗೃಹ (ನಂ) ಮನೆಯ ಒಳಭಾಗ, ಅಂತ  
ಗೃಹ, ಶಯನಗೃಹ. ವಾಸಸ್ಯ ಗೃಹಮ್ । "ದೇವ್ಯಾಸ್ತತೋ  
ವಿಮನಸ: ಪರಿಸಾಂತವನಾಯ ಧರ್ಮಸಿನಾದಿಶತಿ ವಾಸಗೃಹಂ  
ನರೇಂದ್ರ:" ೩ಂ ರಾಂ ೧-೭ ।

ವಾಸತೇಯ ವಾಸತೇಯ (ವಿಂ) 1. ವಾಸಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ. ವಸತೌ ಸಾಧು "ಫಲ್" (೪-೪-೧೦೪) । "ವನೇಷು  
ವಾಸತೇಯೇಷು ನಿವಸನ್ ಪರ್ಣಸಂಸ್ತರ:" ಭದ್ರಂ ೪-೮ । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ  
"ಛೀಪ್" (೪-೧-೧೫) । ವಾಸತೇಯಿ ವಾಸತೇಯೀ. 2.  
ರಾಶಿ. "ವಾಸಾಗಾರಂ ಪ್ರಭುರಧಿಗತೋ ವಾಸತೇಯಿ ನಿನಾಯ"  
ಯಾದಂ ೧೮-೧೩೬ ।

ವಾಸಭವನ ವಾಸಭವನ (ನಂ) ವಾಸಮಾಡುವ ಮನೆ.  
-ಮಂದಿರಮ್ - ಮಂದಿರಮ್, -ಸದನಮ್ - ಸದನಮ್.

ವಾಸನ ವಾಸನ (ನಂ) 1. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. ವಾಸ್ಯತೇ - ವಾಸ  
(ಉಪಸೇವಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩) ।  
2. ವಾಸನೆಯುಂಟುಮಾಡುವುದು. ವಸ (ಸ್ನೇಹನೇ) + ಣಿಕ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್"



(೩-೩-೧೧೫) 1. ಪೂರ್ವಾತ್ಮಹಿಸುವುದು, ಉತ್ಸಾಹ ವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದು. 4. ಗಿಂಡಿ ಹೂಜಿ ಮುಂತಾದ ನೀರು ತುಂಬಿಡುವ ಪಾತ್ರೆ. "ವಾಸನಂ ಧುಪನೇಪಿ ಚ | ವಾರಿಧಾನ್ಯಾಂ ಚ ವಸ್ತ್ರೇ ಚ" ಮೇದಿಂ | 5. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. 6. ವಾಸಮಾಡುವುದು. 7. (ಒಂದು ವಸ್ತು ವಿಗೆ) ಆಧಾರವಾದ ಪೆಟ್ಟಿಗೆ, ವಸ್ತುವನ್ನಿಟ್ಟು ಮೊಹರು ಮಾಡಿದ ಪೆಟ್ಟಿಗೆ. (ವಿಂ) 8. ವಸ್ತ್ರಸಂಬಂಧವಾದ. ವಸ್ತ್ರಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | 9. ವಸ್ತ್ರದಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ವಸನೇನ ಕ್ರೀತಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೨೭) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಾ-ನಾ. 10. ಪ್ರತ್ಯಾಶ್ರಯ, ಪ್ರತೀಕ್ಷೆ, ಎದುರು ನೋಡುವುದು. ವಸ + ಣಿಚ್ "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭) | 11. ಜ್ಞಾನ. 12. ಸ್ಮರಣೆಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ ಸಹಜವಾದ ಒಂದು ಶಕ್ತಿ, ಜನ್ಮಾಂತರ ವಿಷಯವನ್ನು ಸ್ಮೃತಿಗೆ ತರುವ ಒಂದು ಶಕ್ತಿ. 13. ಒಲುವು, ಪ್ರೀತಿ, ವಾತ್ಸಲ್ಯ. 14. ವಾಸನೆಕಟ್ಟುವುದು. "ಪ್ರತ್ಯಾಶಾಜ್ಞಾನಯೋಃ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ |

**ವಾಸಂತ ವಾಸಂತ** (ಪುಂ) 1. ಕೋಗಿಲೆ. ವಸಂತೇ ಭವಃ "ಅನ್" (೪-೩-೧೧೫) | 2. ಒಂಟಿಯ ಮರಿ. 3. ಅನೆಯ ಮರಿ. 4. ಮಲಯ ಮಾರುತ, ಮಲಯ ಪರ್ವತದಿಂದ ಬೀಸುವ ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನ ಗಾಳಿ. 5. ವಿಟಪುರುಷ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿ. (ವಿಂ) 6. ವಸಂತಯುತುವಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ವಸಂತ-ಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | 7. ವಸಂತಯುತುವಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ವಸಂತೇ ಭವಃ "ಅನ್" (೪-೩-೧೧೫) | 8. ಗಮನಿಸುವ, ಲಕ್ಷ್ಯವಿಟ್ಟು ನೋಡುವ. "ವಾಸಂತಃ ಪರಪುಂಠೇ ಸ್ಯಾತುರಭೇವಹಿತೇ ವಿಠೇ" ಹೇಮಂ |

**ವಾಸಂತಕ ವಾಸಂತಕ** (ವಿಂ) ವಸಂತಯುತುವಿನಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತ ಲ್ಪಟ್ಟ. ವಸಂತೇ ಉಪ್ತಮ್ - ವಾ "ವು" (೪-೩-೪೬) | ಪಕ್ಷೇ ವಾಸಂತಮ್ |

**ವಾಸಂತಿಕ ವಾಸಂತಿಕ** (ವಿಂ) 1. ವಸಂತಯುತುವನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು ಅಥವಾ ತಿಳಿದವನು. ವಸಂತಃ ವಸಂತವರ್ಣನಪರೋ ಗ್ರಂಥಃ - ತಮಧೀತೇ ವೇದ ವಾ - "ಠಕ್" (೪-೨-೬೩) | 2. ವಸಂತ ಸಂಬಂಧವಾದ. ವಸಂತಸ್ಯೇದಮ್ "ಠಕ್" (೪-೩-೨೦) | "ಸಪ್ರಣವಶಿರಸ್ವಿಪದಾಂ ಸಾವಿತ್ರಿಂ ಗ್ರೇಷ್ಮವಾಸಂತಿಕಾನ್ ಮಾಸಾ- ನಧೀಯಾನಮಪ್ಯಸಮವೇತರೂಪಂ ಗ್ರಾಹಯಾಮಾಸ" ಭಾಗಂ ೫-೧-೫ | (ಪುಂ) 3. (ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ) ವಿದೂಷಕ.

**ವಾಸಂತಿ ವಾಸಂತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಡಿರುವಂತಿಗೆ ಗಿಡ. ವಸಂತಸ್ಯೇಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | 2. ಒಂದು

ಜಾತಿಯ ಕಾಡುಮಲ್ಲಿಗೆ. 3. ಹಸರು ಪಾದರಿ ಗಿಡ.

"ವಾಸಂತಿ ಮಾಧವೀ ಯುಯಿಪಾಟಲಾಸು" ಹೇಮಂ |

**ವಾಸಯೋಗ ವಾಸಯೋಗ** (ಪುಂ) ವಾಸನೆಯ ಪುಡಿ, ಸುಗಂಧ ಚೂರ್ಣ. ವಾಸಾಯ ಯೋಗಃ ಉಪಾಯಃ |

**ವಾಸರ ವಾಸರ** (ಪುಂ) 1. ದಿವಸ, ಹಗಲು. ವಾಸಯತಿ - ವಸ (ನಿವಾಸ) + ಣಿಚ್ "ಅರಃ" (೩-೩-೧೩೨) | "ನವಕನಕಪಿಶಾಂಜ್ಞಂ ವಾಸರಾಣಾಂ ವಿವಾತುಃ ಕಕುಭಿ ಕುಲಿಷಪಾಣಿ- ಭೀತಿ ಭಾಸಾಂ ವಿವಾತನಮ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೪೩ | (ಪುಂ) 2. ಒಂದು ನಾಗ, ಒಂದು ಸರ್ಪ. "ವಾಸರಸ್ತು ಪುಮಾನ್ ನಾಗಪ್ರಭೇದೇ ದಿವಸೇಃಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ |

**ವಾಸರಪತಿ ವಾಸರಪತಿ** (ಪುಂ) ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. ವಾಸರಸ್ಯ ದಿವಸಸ್ಯ ಪತಿಃ |

**ವಾಸವ ವಾಸವ** (ಪುಂ) 1. ಶಕ್ರ, ಇಂದ್ರ. ವಸುನಿ ರತ್ನಾನ್ಯಸ್ಯ ಸಂತಿ - ವಸು "ಅನ್" (ವಾಂ ೫-೨-೧೦೩) | "ವಾಸವಸ್ಯ ವಚನಂ ನಿಶಮ್ಯ ತದ್ಭಾವಶುದ್ಧಿಪರಿಕರ್ಮಿತಾಕ್ಷರಮ್" ಯಾದಂ ೧೭-೧೨೧ | (ನಂ) 2. ವಸುದೇವತಾಕವಾದ ಧನಿಷ್ಠಾ ನಕ್ಷತ್ರ. (ವಿಂ) 3. ಇಂದ್ರನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ವಾಸವ-ಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | ವಾಸವೀ ವಾಸವೀ. "ರಕ್ಷಾಹೇತೋರ್ನವಶಶಿಭೂತಃ ವಾಸವೀನಾಂ ಚಮುನಾಮ್" ಮೇಘಂ ೧-೪೩ |

**ವಾಸವೀ ವಾಸವೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸತ್ಯವತಿ, ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯ ತಾಯಿ. ವಾಸರಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ - ವಸು "ಅನ್" (೪-೧-೧೨) | "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | "ದೃಷ್ಟ್ವೈವ ಸ ಚ ತಾಂ ಭೀಮಾಂಶ್ಚಕಮೇ ಚಾರುಹಾಸಿನೀಮ್ | ದಿವ್ಯಾಂ ತಾಂ ವಾಸವೀಂ ಕನ್ಯಾಂ ರಮ್ಭೋರ್ಲ ಮುನಿಪುಂಜವಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೪-೮೬ |

**ವಾಸಸ್ ವಾಸಸ್** (ನಂ) ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. ವಸ್ಯತೇಜೇನ - ವಸ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) ಕರಂ "ಅಸುನ್" (೩ಂ ೪-೨೧೮) | "ಗ್ರಂಥಿ- ಮುದಗ್ರಥಯಿತುಂ ಹೃದಯೇ ವಾಸಸ್ಃ ಸ್ಪೃಶತಿ ಮಾನವನಾಯಾಃ" ಮಾಘಂ ೧೦-೬೩ | "ಉಪಾನಹೌ ಚ ವಾಸಸ್ತ್ರ ಧೃತಮನ್ಯೇನ ವಾರಯೇತ್" ಮನುಂ ೪-೬೬ |

**ವಾಸಾಗಾರ ವಾಸಾಗಾರ** (ನಂ) 1. ವಾಸಗೃಹ. 2. ಮನೆಯ ಒಳಗಿರುವ ಕೋಣ, ಶಯನಗೃಹ. ವಾಸಸ್ಯ ಗೃಹಮ್ | "ವಾಸಾಗಾರಂ ಪ್ರಮುರಧಿಗತಃ ವಾಸತೇಯಿ ನಿನಾಯ" ಯಾದಂ ೧೮-೧೩೬ |

**ವಾಸಿ ವಾಸಿ** (ಪುಂ) ಬಾಚಿ, ಮರವನ್ನು ಕೆತ್ತುವ ಮರಗಲಸ ದವನ (ಬಡಗಿಯ) ಒಂದು ಆಯುಧ. ವಸ (ನಿವಾಸ) "ಙ್" (೩ಂ ೪-೧೨೪) |

**ವಾಸಿತ ವಾಸಿತ** (ನಂ) 1. ತಿರ್ಯಕ್ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಶಬ್ದ, ಪಶುಪಕ್ಷಿಗಳ ಕೂಗು. ವಾಸು (ಶಬ್ದ) ಭಾವೇ "ಕ್" |



(೩-೩-೧೧೪) | 2. ಜ್ಞಾನ, ಅಭಿಮಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. (ವಿಂ) 3. ವಾಸನೆಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ ವಸ್ತು. ವಾಸ್ಯತೆ — ವಸ (ಸ್ನೇಹ-ನಾದಿ) + ಣಿच् "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ವಾಸಿತಂ ಭಾವಿತೇ ಸ್ತೇ" ಮೇದಿಂ | 4. ವಸ್ತುವಿಂದ ಸುತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಟ್ಟೆಯಿಂದ ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಾಸಿತಂ ಸುರಮೀಕೃತೇ | ಜ್ಞಾನಮಾತ್ರೇ ಸ್ವಗಾರಾವೇ ವಾಸಿತಂ ವಸ್ತ್ರವೇಷ್ಠಿತೇ" ವಿಶ್ವಂ |

**ವಾಸಿತಾ ವಾಸಿತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಂಗಸು. 2. ಹೆಣ್ಣು ಆನೆ. ವಾಸಯತಿ — ವಸ (ನಿವಾಸೇ) + ಣಿच् "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | "ವಾಸಿತಾ ಕರಿಣಿನಾರ್ಯೋ:" ವಿಶ್ವಂ |

**ವಾಸಿಷ್ಠ ವಾಸಿಷ್ಠ** (ಪುಂ) 1. ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿಯ ಪುತ್ರ. ವಸಿಷ್ಠಸ್ಯಾಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | 2. ವಸಿಷ್ಠ ಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಗ್ರಂಥ. ವಸಿಷ್ಠೇನ ಕೃತೋ ಗ್ರಂಥ: "ಅನ್" (೪-೩-೧೧೬) | (ವಿಂ) 3. ವಸಿಷ್ಠ ಮಹರ್ಷಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ವಸಿಷ್ಠಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) |

**ವಾಸೀ ವಾಸೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಚಿ, ಮರವನ್ನು ಕೆತ್ತುವ (ಬಡಗಿಯ) ಒಂದು ಆಯುಧ.

**ವಾಸು ವಾಸು** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ವಸಂತ್ಯತ್ರ ಸರ್ವೇ — ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ಊನ್" ಬಾಹುಂ | "ಕೋಕ: ಪುರಾಣಪುರೂಷೋ ನಲಿನೇಶಯಶ್ಚ ವಾಸುನರಾಯಣಪುನರ್ವಸುವಿಶ್ವರೂಪಾ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ವಾಸುಕಿ ವಾಸುಕಿ** (ಪುಂ) ಸರ್ಪಗಳ ರಾಜ. ವಸುಕಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಇನ್" (೪-೧-೧೫) | "ವಾಸುಕಿಸ್ತು ಸರ್ಪರಾಜ:" ಅಮಂ | "ಽವಲಂಘನಿಶಿಖಾರ್ಚನಂ ವಾಸುಕಿಪ್ರಹಿತಾ ನಿಶಿ" ಕುಮಾಂ ೨-೩೮ |

**ವಾಸುಕೇಯ ವಾಸುಕೇಯ** (ಪುಂ) ವಾಸುಕಿ, ಸರ್ಪಗಳ ರಾಜ. ವಸುಕಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೩) |

**ವಾಸುದೇವ ವಾಸುದೇವ** (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ, ವಸುದೇವನ ಪುತ್ರ. ವಸುದೇವಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೧೪) | ವಸತಿ — ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ಊನ್" ಬಾಹುಂ | ವಾಸುಶ್ವಾಸೌ ದೇವಶ್ಚ ಇತಿ ವಾ | 2. ಮಹಾವಿಷ್ಣು, ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣ. "ಸರ್ವತ್ರಾಸೌ ಸಮಸ್ತಂ ವಾ ವಸತೀತಿ ವೈ ಯತ: | ತತೋಽಸೌ ವಾಸುದೇವೇತಿ ವಿವೃದ್ಧಿ: ಪರಿಗೀಯತೇ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ ೧-೨-೧೨ | "ವಾಸುದೇವ: ಸರ್ವಮಿತಿ ಸ ಮಹಾತ್ಮಾ ಸುದುರ್ಲಭ:" ಗೀತಾ ೭-೧೯ |

**ವಾಸುರಾ ವಾಸುರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಂಗಸು. 2. ರಾತ್ರಿ. 3. ಭೂಮಿ. "ವಾಸುರಾ ವಾಸಿತಾರಾಶ್ಯೋಭಿವಿ" ಹೇಮಂ | "ವಾಸುರಾ ವಾಸಿತಾಯಾಂ ಸ್ಯಾದ್ವಾಸಿತೇಯಾಂ ಮಾತಾ ಭುವಿ" ವಿಶ್ವಂ | 4. ಹೆಣ್ಣು ಆನೆ.

**ವಾಸು ವಾಸೂ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಲಿಕೆ, ಚಿಕ್ಕ ಹುಡುಗಿ. ವಾಸ್ಯತೇ ಸ್ವಗೃಹೇ — ವಸ (ನಿವಾಸೇ) + ಣಿच् "ಊ:" ಬಾಹುಂ | (ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಇದರ ಪ್ರಯೋಗ).

**ವಾಸೌಕಸ್ ವಾಸೌಕಸ್** (ನಂ) ವಾಸದ ಮನೆ, ಗರ್ಭಗೃಹ, ಒಳಮನೆ, ಶಯನಗೃಹ. ವಾಸಾಯ ಆಕ: |

**ವಾಸ್ತವ ವಾಸ್ತವ** (ನಂ) ನಿಜವಾದ ವಸ್ತು, ಸ್ಥಿರವಾದ ವಸ್ತು, ಶಾಶ್ವತವಾದ ವಸ್ತು. ವಸ್ತು ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮) | "ಧರ್ಮ: ಪ್ರಾಜ್ಞಿತಕೃತವೋಽಪಿ ಪರಮೋ ನಿರ್ಮಲರಾಣಾಂ ಸತಾಂ ವೇದಾಂ ವಾಸ್ತವಮತ್ರ ವಸ್ತು ಶಿವದಂ ತಾಪತ್ರಯೋ-ನ್ಮೂಲನಮ್" ಭಾಗಂ ೧-೧-೨ |

**ವಾಸ್ತವಿಕ ವಾಸ್ತವಿಕ** (ವಿಂ) ಶಾಶ್ವತವಾದ (ವಸ್ತು), ಸ್ಥಿರವಾದ (ವಸ್ತು), ನಿಜವಾಗಿರುವ (ವಸ್ತು). ವಸ್ತುನಾ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೭೯) |

**ವಾಸ್ತವ್ಯ ವಾಸ್ತವ್ಯ** (ವಿಂ) ವಾಸಮಾಡುವವನು, ಇರುವವನು. ವಸತಿ — ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ತವ್ಯತ್" (ವಾಂ ೩-೧-೯೬) | "ಪ್ರಸೂನಕಲ್ಪಿತಿ ದಧತ: ಸದರ್ಶವ: ಪುರೇಽಸ್ಯ ವಾಸ್ತವ್ಯಕುಡ್ಮಿವಿತಾಂ ಯಯು:" ಮಾಧಂ ೧-೬೬ |

**ವಾಸ್ತು ವಾಸ್ತು** (ಪುಂ) 1. ಗೃಹದ ನಿರ್ಮಾಣ, ಮನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಸ್ಥಳ, ಗೃಹನಿರ್ಮಾಣಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ಭೂಮಿ. ವಸಂತ್ಯತ್ರ — ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ತುನ್" ಸ ಚ ಣಿತ್ (ತಂ ೧-೭೦) | "ವೇಶಮಭೂವಸ್ತುರಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಅಮಂ | ಗೃಹನಿರ್ಮಾಣ (ವಾಸ್ತು) ಶಾಸ್ತ್ರವು ಪ್ರಥಮತಃ ಬ್ರಹ್ಮ ನಿಂದ ಗರ್ಗಮಹರ್ಷಿಗೆ ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಅನಂತರ ಅವರಿಂದ ಪರಾಶರರಿಗೆ ಅವರಿಂದ ಬೃಹದ್ರಥನಿಗೆ ಈ ರೀತಿ ಮುನಿ ಪರಂಪರೆಯಿಂದ ವಿಶ್ವಕರ್ಮನಿಗೆ ಉಪದಿಷ್ಟವಾಗಿ ಈಗ ಜಗತ್ತಿನ ಹಿತಕ್ಕಾಗಿ ಪ್ರಚಾರಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. "ವಾಸ್ತುಜ್ಞಾನಮಥಾತ: ಕಮಲಭವಾನ್ಮುನಿ ಪರಂಪರಾಯಾತಮ್ | ಕ್ರಿಯತೇಽಧುನಾ ಮಯೇದಂ ವಿದಗ್ಧಸಾಂವತ್ಸರಪ್ರೀತ್ಯೈ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೫೩-೧ | "ಇತಿ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ವಾಸ್ತುಶಾಸ್ತ್ರಂ ಪೂರ್ವಂ ಗರ್ಗಾಯಿ ಧೀಮತೇ | ಗರ್ಗಾ-ತ್ಪರಾಶರ: ಪ್ರಾಪ ತಸ್ಮಾತ್ಪ್ರಾಪ ಬೃಹದ್ರಥ: || ಬೃಹದ್ರಥಾಧಿಶ್ವಕರ್ಮಾ ಪ್ರಾಪ್ತವಾನ್ ವಾಸ್ತುಶಾಸ್ತ್ರಕಮ್ | ಸ ವಿಶ್ವಕರ್ಮಾ ಜಗತೋ ಹಿತಾಯಾಕಥಯತ್ಪುನ:" ವಿಶ್ವಕರ್ಮಪ್ರಕಾಶಿಕಾ | **ವಾಸ್ತು ಪುರುಷನ ಸೃಷ್ಟಿ:** ತನ್ನ ಶರೀರದಿಂದ ಭೂಮಾಕಾಶಗಳನ್ನು ತಡೆದು ಅಡಚಣೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಒಂದು ಭೂತವನ್ನು ದೇವತೆಗಳು ನಿಗ್ರಹಿಸಿ ಅದನ್ನು ಅಧೋಮುಖವಾಗಿ ಇಟ್ಟು ಅದರ ಶರೀರದ ಮೇಲೆ ನಿಂತರು. ಬ್ರಹ್ಮನು ಅದನ್ನು ಅಮರವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿ ವಾಸ್ತುಪುರುಷನನ್ನಾಗಿ ಕಲ್ಪಿಸಿದನು. "ಕಿಮಪಿ ಕಿಲ



ಭೂತಮವದ್ಭವಾನಂ ರೋದಸೀ ಶರೀರೇಣ । ತದಮರಗಣೇನ ಸಹಸಾ  
ವಿನಿಗೃಹ್ಯಾಧೋಮುಖಂ ನ್ಯಸ್ತಮ್ ॥ ಯತ್ರ ಚ ಯೇನ ಗೃಹೀತಂ  
ವಿಬುಧೇನಾಧಿಷ್ಠಿತಃ ಸ ತತ್ರೈವ । ತದಮರಮಯಂ ವಿಘಾತಾ ವಾಸ್ತುನರಂ  
ಕಲ್ಪಯಾಮಾಸ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೫೩-೨, ೩ । ಸಕಲದೇವದಾನವ  
ರಲ್ಲರೂ ಇದರ ಮೇಲೆ ನಿಂತಿರುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ  
ವಾಸ್ತುವೆಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು. "ಯೇನ ಯತ್ರೈವ ಚಾಕ್ರಾಂತಂ ಸ  
ತತ್ರೈವಾಭವತ್ ಪುನಃ । ನಿವಾಸಾತ್ ಸರ್ವದೇವಾನಾಂ ವಾಸ್ತುರಿದ್ಯಮಿ-  
ವೀಯತೇ" ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ । ಗೃಹನಿರ್ಮಾಣಾನಂತರ ಗೃಹ  
ಪ್ರವೇಶಸಮಯದಲ್ಲಿ ವಾಸ್ತುಪೂಜೆ ಹೋಮಗಳು  
ನಡೆಯಬೇಕು. ವಾಸ್ತುವಿನ ಮಧ್ಯೆ ಇಡುವ ಬಲೆಯೇ  
ವಾಸ್ತುಪುರುಷನಿಗೆ ಆಹಾರ. ಸಕಲವಿಘ್ನ ಪರಿಹಾರ  
ಪೂರ್ವಕ ಸನ್ಮಂಗಳಪ್ರಾಪ್ತಿಗಾಗಿ ಈ ವಾಸ್ತುಪೂಜಾ  
ಹೋಮಗಳು ನಡೆಯಬೇಕು. "ತತಃ ಬ್ರಹ್ಮಾದಿಮಿಃ ಪ್ರೋಕ್ತಂ  
ವಾಸ್ತುಮಧ್ಯೇ ತು ಯೋ ಬಲಿಃ । ಆಹಾರೋ ವೈಶ್ವದೇವಾಂತೇ ನ್ಯೂನಮಸ್ಮಿನ್  
ಭವಿಷ್ಯತಿ । ವಾಸ್ತುಪುಷಮನೋ ಯಜ್ಞಸ್ತವಾಹಾರೋ ಭವಿಷ್ಯತಿ ।  
ಏವಮುಕ್ತಸ್ತತಃ ಹೃಷ್ಠಃ ಸ ವಾಸ್ತುರಭವತ್ತದಾ । ವಾಸ್ತುಯಜ್ಞಃ  
ಸ್ಮೃತಸ್ತಸ್ಮಾತ್ ತತಃ ಪ್ರಭೃತಿ ಶಾಂತಯೇ" ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ । 2. ಗೃಹ,  
ಮನೆ. "ರವೇರವಿಷಯೇ ವಾಸ್ತು ಕಿಂ ನ ದೀಪಃ ಪ್ರಕಾಶಯೇತ್" ।

**ವಾಸ್ತುಕ ವಾಸ್ತುಕ** (ನಂ) ಚಕ್ಷುರ್ದೃಶ್ಯದ ಸೊಪ್ಪು. ವಾಸ್ತು  
ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" । ವಾಸ್ತುಕಮ್ ವಾಸ್ತುಕಮ್.

**ವಾಸ್ತೇಯ ವಾಸ್ತೇಯ** (ವಿಂ) 1. ವಾಸಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ. 2. ಹೊಟ್ಟೆಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. 3. ಮೇಕೆಯ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. ವಸ್ತಿ "ಠ್" (೪-೩-೫೬) । 4. ವಸ್ತಿ  
ಸದೃಶವಾದ. ವಸ್ತಿರಿವ — "ಠ್" (೫-೩-೧೦೧) ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) । ವಾಸ್ತೇಯಿ ವಾಸ್ತೇಯಿ.

**ವಾಸ್ತೋಪಪತಿ ವಾಸ್ತೋಪಪತಿ** (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ವಾಸ್ತೋಃ  
ಗೃಹಕ್ಷೇತ್ರಸ್ಯ ಪತಿಃ । ನಿಪಾತನಾತ್ (೪-೨-೩೨) ಅಲುಕ್ ।  
ಪತ್ವಮ್ (೮-೩-೪೮) । "ವಾಸ್ತೋಪಪತಿಃ ಸುರಪತಿಃ" ಅಮಂ ।

**ವಾಸ್ತ್ರ ವಾಸ್ತ್ರ** (ಪುಂ) 1. ವಸ್ತ್ರಗಳಿಂದ ಸುತ್ತಲೂ  
ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ರಥ. ವಸ್ತ್ರೇಣ ಪರಿವೃತೋ ರಥಃ "ಅನ್"  
(೪-೨-೧೦) । 2. ವಸ್ತ್ರಸಂಬಂಧವಾದ. ವಸ್ತ್ರಸ್ಯೇದಮ್  
"ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) ।

**ವಾಸ್ತ್ರ ವಾಸ್ತ್ರ** (ಪುಂ) ದಿನ, ದಿವಸ. "ವಾಸ್ತ್ರೋ ವ್ಯುಷಾಂಶಕೇ  
ದಿನಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ವಾಹ ವಾಹ** (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. ಉಹತೇಜೇನ — वह  
(ಪ್ರಾಪಣೇ) ಕರಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೯) । "ಅಮ್ಯಮೃತ  
ವಾಹಾನಾಂ ಚರತಾಂ ಗಾತ್ರಸಿಂಜಿತೈಃ" ರಘುಂ ೪-೫೬ ।  
2. ವ್ಯವಸ್ಥೆ, ಎತ್ತು. "ಖೇ ಖೇಲಗಾಮೀ ತಮುವಾಹ ವಾಹಃ

ಸಶಬ್ದಚಾಮೀಕರಕಿಕಿಣೀಕಃ" ಕುಮಾಂ ೭-೪೯ । 3.  
ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 4. ಬಾಹು, ತೋಳು. 5. ನಾಲ್ಕು  
ಭಾರಗಳಿಗೆ ಸಮಾನವಾದ ಒಂದು ಅಳತೆ. "ವಾಹೋ ಭುಜೇ  
ಪುಮಾನ್ ಮಾನಭೇದಾಶ್ವವೃಷವಾಯುಷು" ಮೇದಿಂ । "ಸಾರ್ಥಸುರೈಃ ಭವೇತ್  
ಖಾರೀ ದ್ವೇ ಸಾಯಿ" ಗೋಪುದಾಹತಾ । ತಾಮೇವ ಭಾರಂ ಜಾನೀಯಾತ್  
ವಾಹೋ ಭಾರಚತುಷ್ಟಯಮ್" । 6. ಪ್ರವಾಹ. "ಗಜಾಯಮನಯೋ-  
ವಾಹೋ ಭಾರಃ ಸುಗತಯೇ ನೃಣಾಮ್" ಕಥಾಸಂ । 7. ವಾಹನ,  
ಸಂಚಾರಸಾಧನ. "ತಚ್ಛ್ರುತ್ವಾ ತತ್ರ ಭೇಕಾನಾಂ ರಾಜಾ  
ವಾಹಸಮುತ್ಸುಕಃ । ಜಲಾದುತ್ಥೀಯ ತತ್ಪೃಥಮಾರೋಹತ್ ಗತಭೀರ್ಮದಾ"  
ಕಥಾಸಂ ।

**ವಾಹಕ ವಾಹಕ** (ವಿಂ) ಮೂಟೆ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು  
ಹೊರುವವನು, ಹೊತ್ತು ತರುವವನು. वहति — वह  
(ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಫ್ಲು" (೩-೧-೧೩೩) । "ಆಚೇರ್ವಿವಿಧಾಃ  
ಕ್ರೋಡಾಃ ವಾಹ್ಯವಾಹಕಲಕ್ಷಣಾಃ" ಭಾಗಂ ೧೦-೧೮-೨೧ ।

**ವಾಹದ್ವಿಷತ್ ವಾಹದ್ವಿಷತ್** (ಪುಂ) ಮಹಿಷ, ಎಮ್ಮೆ.  
ವಾಹಾನಾಂ ದ್ವಿಷನ್ । "ವಾಹದ್ವಿಷತ್ಕಾಸರಸೇರಿಭಾಃ" ಅಮಂ ।

**ವಾಹನ ವಾಹನ** (ನಂ) 1. ಪ್ರಯಾಣಸಾಧನ, ಸಂಚಾರ  
ಸಾಧನ, ರಥ ಅನೇ ಕುದುರೆ ಮೊದಲಾದುವು. ವಾಹಯತಿ—  
वह (प्रापणे) + स्वार्थे णिच् "ल्युट्" (೩-೩-೧೧೩) ।  
"ಉಹಮಾನ ಇವ ವಾಹನೋಚಿತಃ ಪಾದಚಾರಮಪಿ ನ ವ್ಯಮಾವಯತ್"  
ರಘುಂ ೧೧-೧೦ । 2. ಮೂಟೆ ಹೊರಿಸುವುದು. वह +  
णिच् "ल्युट्" (೩-೩-೧೧೫) । (ವಿಂ) 3. ಮೂಟೆ  
ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಹೊತ್ತು ತರುವವನು. वह + णिच्  
"ल्युः" (೩-೧-೧೩೪) ।

**ವಾಹಸ ವಾಹಸ** (ಪುಂ) 1. ಅಜಗರ, ಹೆಬ್ಬಾವು, ದಾಸರ  
ಹಾವು. उह्यते — वह (प्रापणे) "असच्" (೩ಂ  
೩-೧೧೯) । 2. ನೀರು ಹೊರಡುವುದು, ನೀರು ಹರಿಯು  
ವುದು. 3. ನೀರುಚಂಚಲಿ ಗಿಡ. "ವಾಹಸಃ ಸ್ಯಾದಜಗರೇ-  
ಮ್ಬುನಿರ್ಯಾಣಿಸುನಿಷಣ್ಣಯೋಃ" ಹೇಮಂ ।

**ವಾಹಿಕ ವಾಹಿಕ** (ವಿಂ) ನಾಲ್ಕು ಭಾರಗಳಿಂದ ಕೊಳ್ಳು  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ವಾಹೇನ ಕ್ರೀತಃ—वाह "ठक्" (೫-೧-೨೦) ।

**ವಾಹಿತ ವಾಹಿತ** (ನಂ) ಅನೇಯ ಕುಂಭಸ್ಥಳದ ಕೆಳಭಾಗ,  
ಅನೇಯ ಹಣೆಯ ಕೆಳಭಾಗ. अवश्यं वहति — वह  
(प्रापणे) "णिनिः" (೩-೩-೧೭೦) । ಸಃ ತಿಷ್ಠತೀತ್ಯತ್ರ—ठ  
(गतिनिवृत्तौ) "कः" (ವಾಂ ೩-೩-೫೮) । "ಅಧಃ  
ಕುಮ್ಮಸ್ಯ ವಾಹಿತಮ್" ಅಮಂ ।

**ವಾಹಿನಿ ವಾಹಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೈನ್ಯ, ಸೇನೆ. ವಾಹಾಃ  
ವಾಜಿಪ್ರಭೃತಯಃ ಸಂತಯಸ್ಯಾಮ್ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫) ।



“ಹರೇರಪಿ ಪ್ರತಿ ಪರಕೀಯವಾಹಿನೀರವಿಸ್ತದಂ ಪ್ರವೃತ್ತಿರೇ  
ಚಮುಚರಾ:” ಮಾಘಂ ೧೭-೪೦ | 2. ಮೂರು ಗಣಗಳು  
ಸೇನಾಸಮೂಹ.

|            |            |
|------------|------------|
| 3 ಪತ್ರಿಗಳು | 1 ಸೇನಾಮುಖಿ |
| 3 ಸೇನಾಮುಖಿ | 1 ಗುಲ್ಮ    |
| 3 ಗುಲ್ಮಗಳು | 1 ಗಣ       |
| 3 ಗಣಗಳು    | 1 ವಾಹಿನಿ.  |

81 ಅನೆಗಳು 81 ರಥಗಳು 243 ಕುದುರೆಗಳು 405  
ಪದಾತಿಗಳು ಒಂದು ವಾಹಿನಿ. 3. ನದಿ, ಹೊಳೆ. ವಹತಿ—  
ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಣಿತಿ:” (೩-೧-೧೩೪) | “ನಾವ:  
ಸಮುಪಕರ್ಷಣಂ ತಾರಯಿಷ್ಯಾಮ ವಾಹಿನೀಮ್” ರಾಮಾಂ | “ವಾಹಿನಿ:  
ಸ್ಯಾತ್ತರಕ್ಷಿಣ್ಯಾಂ ಸೇನಾ ಸೈನ್ಯಪ್ರಭೇದಯೋ:” ಮೇದಿಂ |

ವಾಹಿನಿಪತಿ ವಾಹಿನೀಪತಿ (ಪುಂ) ಸೇನಾಪತಿ, ದಳಪತಿ.  
ವಾಹಿನೀನಾಂ ಪತಿ: |

ವಾಹ್ಯ ವಾಹ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹೊರಲ್ಪಡುವ, ವಹಿಸಲ್ಪಡುವ.  
ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಘತ್” (೩-೧-೧೨೪) | “ಮನುಷ್ಯವಾಹ್ಯಂ  
ಚತುರಸ್ರಯಾನಮಧ್ಯಾಸ್ಯ ಕನ್ಯಾ ಪರಿವಾರಶೋಭಿ” ರಘುಂ ೬-೧೦ |  
2. ಹೊರಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಹೊರಲು ಶಕ್ಯವಾದ.  
(ಪುಂ) 4. ಎತ್ತು, ವೃಷಭ. (ನಂ) 5. ರಥ, ಗಾಡಿ.

ವಿ ವಿ (ಪುಂ) 1. ನೇತ್ರ, ಕಣ್ಣು. 2. ಆಕಾಶ. 3. ವಾಯು.  
4. ಪರಮಾತ್ಮ. 5. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. “ವಿಶ್ವಕ್ಷುಪಿ ವ್ಯೋಮ್ನಿ  
ವಾತೇ ಪರಮಾತ್ಮನಿ ಪಕ್ಷಿಣಿ” ನಾನಾರ್ಥರಂ | ವಾ  
(ಗತಿಗನ್ವನಯೋ:) “ಇನ್” (೩ಂ ೪-೧೩೩) | “ವೀನಾ-  
ಸುಪಸರಂ ದೃಷ್ಟಾ ತೇಜ್ಯೋನ್ಯೋಪಹವಾ ಗುಹಾಮ್” ಭಟ್ಟಿಂ ೭-೬೦ |  
(ಅವ್ಯಂ) 6. ನಿಯೋಗ. 7. ನಿಗ್ರಹ, ದಂಡಿಸುವುದು.  
8. ಪಾದಪೂರಣ. 9. ನಿಶ್ಚಯ, ನಿರ್ಣಯ. 10. ಅಸಹನೆ.  
11. ಹೇತು, ಕಾರಣ. 12. ಅಲ್ಪ, ಸ್ವಲ್ಪ. 13. ಪರಿಭವ,  
ಅವಮಾನ. 14. ವಿನಿಯೋಗ, ಉಪಯೋಗಿಸುವುದು.  
15. ಅವ್ಯಾಪ್ತಿ. 16. ಶುದ್ಧಿ. 17. ಆಲಂಬನ, ಆಶ್ರಯ.  
18. ವಿಜ್ಞಾನ. “ವಿ ನಿಗ್ರಹೇ ನಿಯೋಗೇ ಚ ತಥೈವ ಪಾದಪೂರಣೇ |  
ನಿಶ್ಚಯೇಷ್ವಹನೇ ಹೇತಾವ್ಯಾಪ್ತಿವಿನಿಯೋಗಯೋ: | ಇವದರ್ಥೇ  
ಪರಿಭವೇ ಶುದ್ಧಾವಾಲ್ಮಬನೇಽಪಿ ಚ | ವಿಜ್ಞಾನೇ” ಮೇದಿಂ |  
ಇದೊಂದು ಉಪಸರ್ಗ. ಇದು ಕ್ರಿಯಾಪದ ಮತ್ತು  
ನಾಮಪದಗಳೊಡನೆ ಸೇರಿದಾಗ ಈ ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ ದ್ವ್ಯೇತಕ  
ವಾಗುವುದು. 1. ಬೇರೆಯಾಗು, ಬೇರ್ಪಡು, ಪ್ರತ್ಯೇಕ  
ವಾಗು, ಅಗಲು. “ವಿಯೋಗಮಾಜಾಂ ಹೃದಿ ಕೃಷ್ಣಕೇ: ಕಟು-  
ನಿಧಿಯಸೇ ಕರ್ಣಿಶರ: ಸ್ಮರಣ ಯತ್” ನೈಷಂ ೧-೭೯ |  
2. ಲೀಲೆ, ಆಟ, ಅನಾಯಾಸ. “ವಿಹಾರಸಂಕ್ಷೋಭಿತ-  
ವೈರಿಸಿಂಧು:” ಯಾದಂ ೧೩-೨೭ | 3. ಹೆಚ್ಚಾಗು, ವೃದ್ಧಿ

ಹೊಂದು. “ಯದ್ಬಹುಬಿಹಾರವಾಪ್ಯ ವಿಕಾಸಂ ವ್ಯಾನಶೇ ತನುರಹಾ-  
ಪ್ಯಪಿ ಹರ್ಷ:” ಮಾಘಂ ೧೦-೪೦ | 4. ಕ್ರೇಡೆ, ಆಟ.  
“ವಿಹರಸ್ಯವರೋತ್ತರಕ್ರಮೇಷು ಸ್ವವಶೇವ ಸುರಾಸುರೇ: ಸ್ವತನ್ತ್ರ:”  
ಯಾದಂ ೧೪-೨೨ | 5. ಸಂಚಾರ. “ವಿಹರನ್ ವನೇ ವಿಜನ  
ಏವ ಮಹತಿ ದಧದೇಶ ಗೋಪತಾಮ್” ಮಾಘಂ ೧೪-೨೪ |  
6. ವೈರೋಧ. 7. ವಿಶೇಷ, ಶ್ರೇಷ್ಠ, ಉತ್ತಮ. “ವಪು-  
ವಿಶೇಷೇಷವತಿಗೌರವಾ: ಕ್ರಿಯಾ:” ಕುಮಾಂ ೪-೩೧ | 8.  
ವಿರುದ್ಧ, ವ್ಯತಿರಿಕ್ತ. ಕ್ರಯ:-ವಿಕ್ರಯ: | ಸ್ಮೃತಿ:-ವಿಷ್ಮೃತಿ: |  
9. ವಿರೋಧ, ಅಡ್ಡಿ, ಅಡಚಣೆ. “ವಿರೋಧಿ ಸಿದ್ಧೇರಿತಿ  
ಕರ್ತುಮುಚತ: ಸ ವಾರಿತ: ಕಿಂ ಭವತಾ ನ ಭೂಪತಿ:” ಕಿರಾಂ  
೧೪-೮ | 10. ವ್ಯತ್ಯಾಸ, ಬದಲಾವಣೆ. “ವಿಕಾರಂ ಯಾತಿ  
ನೋ ಚಿತ್ತಂ ವित್ತೇ ಯಸ್ಯ ಕದಾಚನ” ಪञ್ಚತಂ ೨-೧೧೬ |  
11. ಅನೇಕ, ನಾನಾ. “ವಿವಿಧಪರಾಗವಿಮಕ್ತಚೂರ್ಣಚಿತ್ರಮ್”  
ಯಾದಂ ೨೪-೨೯ | 12. ವ್ಯತ್ಯಾಸ, ತಾರತಮ್ಯ, ಅಂತರ.

ವಿಶ ವಿಂಶ (ವಿಂ) 1. ಇಪ್ಪತ್ತನೆಯ. ವಿಶತೇ: ಪೂರಣ:  
“ಛತ್” (೪-೨-೪೮) | (ಪುಂ) 2. ಇಪ್ಪತ್ತನೆಯ ಒಂದು  
ಭಾಗ. “ಕುರ್ಯುಷಂ ಯಥಾಪಣ್ಯಂ ತತೋ ವಿಶಂ ನೃಪೋ ಹರೇತ”  
ಮನುಂ ೮-೩೯೮ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಛಿಪ್” (೪-೧-೧೪) |  
ವಿಶಿ ವಿಂಶೀ.

ವಿಶಕ ವಿಂಶಕ (ವಿಂ) ಇಪ್ಪತ್ತರಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ.  
ವಿಶತಯಾ ಕ್ರೀತ:—ವಿಶತಿ “ಛ್ವುನ್” (೪-೧-೨೪) |  
ಅಕಾಡೇಶ: | ತಿಲೋಪ: (೬-೪-೧೪೨) |

ವಿಶತಿ ವಿಂಶತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಪ್ಪತ್ತು. ದ್ವಿ ದಶತೌ ಪರಿಮಾಣ-  
ಮಸ್ಯ ಸಂಖ್ಯಸ್ಯ “ಶತಿಚ್” ಪ್ರಕೃತೇ: ವಿನಿ ಭಾವ: ಅನುಸ್ವಾರಶ್ಚ  
ನಿಪಾಂ (೪-೧-೪೯) | “ವಿಶತಯಾಃ ಸದೇಕತ್ವೇ ಸರ್ವಾ:  
ಸಂಖ್ಯೇಯಸಂಖ್ಯಯೋ:” ಅಮಂ | ವಿಶತಿ ಮೊದಲಾಗಿ ಎಲ್ಲಾ  
ಸಂಖ್ಯಾಶಬ್ದಗಳಿಗೂ ಏಕವಚನದಲ್ಲೇ ಪ್ರಯೋಗ.  
ವಿಶತಿಗಾವಿ: | ವಿಶತಿಗಿಂಜಾ: | ತ್ರಿಶತ್ ಹಯಾ: | ಚತ್ವಾರಿಶತ್  
ರಥಾ: ಇತ್ಯಾದಿ.

ವಿಶತಿಕ ವಿಂಶತಿಕ (ವಿಂ) ಇಪ್ಪತ್ತಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ.  
ವಿಶತಿ “ಕನ್” (೪-೧-೨೪) |

ವಿಶತಿತಮ ವಿಂಶತಿತಮ (ವಿಂ) ಇಪ್ಪತ್ತನೆಯ. ವಿಶತೇ:  
ಪೂರಣ:—ವಾ “ತಮತ್” (೪-೨-೪೬) | ಪಕ್ಷ “ಛತ್” |  
ವಿಶ: ವಿಂಶ: | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಛಿಪ್” (೪-೧-೧೪) | —ತಮಿ  
—ತಮೀ.

ವಿಶಿನ್ ವಿಂಶಿನ್ (ಪುಂ) ಇಪ್ಪತ್ತು ಗ್ರಾಮಗಳ ಅಧಿಪತಿ.  
ವಿಶತಿ: ಗ್ರಾಮಾ: ಸಂತ್ಯಸ್ಯ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪) | “ದಶಿ  
ಕುಲಂ ತು ಭುಜ್ಜೀತ ವಿಶಿ ಪञ್ಚಕುಲಾನಿ ಚ” ಮನುಂ ೭-೧೧೯ |



**ವಿಕ ವಿಕ್ (ನಂ)** ಸದ್ಯಃ ಕರುಹಾಕಿದ ಹಸುವಿನ ಹಾಲು.

“ಕೀರಂ ಸದ್ಯಃ ಪ್ರಸೂತಾಯಾಃ ಪೇಯಂ ಪಾಲನಂ ವಿಕಮ್” ।

**ವಿಕಚ್ಚುತ ವಿಕ್ಂಕತ (ಪುಂ)** ಹುಳಿ ಬೇಲ. ಇದರಿಂದ

ಯಜ್ಞದ ಪಾತ್ರೆಗಳನ್ನು ಮಾಡುವರು. ವಿ + ಕಕಿ

(ಗತೌ) “ಅತಚ್” ಬಾಹುಂ ।

**ವಿಕಚ ವಿಕ್ಚ (ವಿಂ)** 1. ವಿಕಸಿತವಾಗಿರುವ, ಅರಳಿರುವ.

ಕಚತಿ—ಕಚ (ಬಂಧನೇ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । ವಿಗತಃ

ಕಚೋಽಸ್ಮಾತ್ । “ವಿಕಚಕಮಲಗಂಧೇರನ್ಧಯನ್ ಭೃಂಗಮಾಲಾಃ

ಸುರಭಿತಮಕರಂದಂ ಮಂದಮಾತಿ ವಾತಃ” ಮಾಘಂ ೧೧-೧೯ ।

2. ಕೇಶವಿಲ್ಲದ, ಕೂದಲು ಇಲ್ಲದ. 3. ವಿಸ್ತೃತವಾದ,

ಹರಡಿರುವ. “ಧೃತಪ್ರೇಮಾ ಬಾಹುವಿಕಚವಿಕರಾಲವ್ರಣಮುಖಃ”

ತಂ ರಾಂ ೪-೨೬ । (ಪುಂ) 4. ಬೌದ್ಧಸಂನ್ಯಾಸಿ, ಕ್ಷುಪಣಕ.

5. ಗುರುವಿನ 65 ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳು. “ವಿಕಚಾ ನಾಮ

ಗುರುಸುತಾಃ ಸಿತಕಂತಾರಾಃ ಶಿಕ್ಷಾಪರೀಕ್ಷಾಃ” ಬೃಹತ್ಸಂ

೧೧-೧೯ । ಇವು ಪ್ರತಿಯೊಂದೂ ವಿಕಚಾರಾತ್ಮಕವಾದ

ಶುಭ್ರವಾದ ಬಿಳಿಯ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು. 6. ಕೇಶು. “ವಿಕಚಃ

ಕ್ಷಪಣೇ ಕೇತೌ ನಾಸ್ತೇಶೋ ಸ್ಫುಟಿತೇಜ್ಯವತ್” ಮೇದಿಂ ।

**ವಿಕಟ ವಿಕ್ಟಿ (ಪುಂ)** 1. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

“ದುರ್ಮದೋ ದುಷ್ಪ್ರಹರ್ಷಶ್ಚ ವಿವಿತ್ಸುವಿಕಟಃ ಸಮಃ” ಭಾಂ ಆದಿಂ ।

2. ಹೊಪ್ಪೆ, ಕುರು. (ವಿಂ) 3. ವಿಶಾಲವಾದ, ಅಗಲ

ವಾದ. “ಆವರಿಷ್ಟ ವಿಕಟೇನ ವಿವೋದುವಕ್ಷಸೇವ ಕುಚಮಂಡಲ-

ಮನ್ಯಾ” ಮಾಘಂ ೧೦-೪೨ । 4. ಭಯಂಕರವಾದ. “ಕರ್ಣಿ-

ಮ್ಯರ್ಣವಿದೀರ್ಣಸೃಕವಿಕಟವ್ಯಾಧಾನದೀಪ್ತಾಗ್ನಿಮಿಃ” ಮಾಲತೀಂ

೪-೧೩ । 5. ಸುಂದರವಾದ.

**ವಿಕತ್ಯನ ವಿಕ್ತೃನ (ನಂ)** 1. ಆತ್ಮಶ್ಲಾಘನೆ, ಜಂಬ,

ಬಡಾಯಿ, ಆತ್ಮಸ್ತುತಿ. ವಿ + ಕತ್ಯ (ಶ್ಲಾಘಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ

“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) । “ವಿಕತ್ಯನಂ ಸಂಯತಿ ವಿಕಲವಾನಾಂ

ವಿರೋಧೌ ಗೋಷದವದ್ವಿಲಿಖ್ಯೇ” ಯಾದಂ ೨೦-೪೬ । (ವಿಂ)

2. ಆತ್ಮಶ್ಲಾಘನೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವವನು, ತನ್ನನ್ನು ತಾನೇ

ಹೊಗಳಿಕೊಳ್ಳುವವನು. ವಿಕತ್ಯತೇ—ವಿ + ಕತ್ಯ “ಲ್ಯುಃ”

(೩-೧-೧೩೪) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಕತ್ಯನಾ—ಕತ್ಕನಾ. ಆತ್ಮ

ಸ್ತುತಿ, ತನ್ನನ್ನು ಹೊಗಳಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ವಿ + ಕತ್ಯ + ಣಿಚ್

“ಯುಚ್” (೩-೩-೧೦೭) ।

**ವಿಕತ್ಯನೀಯ ವಿಕ್ತೃನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಶ್ಲಾಘಿಸಲ್ಪಡುವ,

ಹೊಗಳಲ್ಪಡುವ. ವಿ + ಕತ್ಯ (ಶ್ಲಾಘಾಯಾಮ್) “ಅನೀಯರ್”

(೩-೧-೯೬) । “ಹೃತಸ್ಯ ಶೇಷಾನಿವ ಕುಡ್ಕುಮಸ್ಯ ತಾನ್

ವಿಕತ್ಯನೀಯಾನ್ ದಧುರನ್ಯಥಾ ಸ್ತ್ರಿಯಃ” ಕಿರಾಂ ೮-೩೪ ।

2. ಹೊಗಳಬೇಕಾದ. 3. ಹೊಗಳಲು ಅರ್ಹವಾದ.

**ವಿಕತ್ಯಮಾನ ವಿಕ್ತೃಮಾನ (ವಿಂ)** ಆತ್ಮಸ್ತುತಿ ಮಾಡಿ

ಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ತನ್ನನ್ನು ತಾನೇ ಹೊಗಳಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ.

ವಿ + ಕತ್ಯ (ಶ್ಲಾಘಾಯಾಮ್) “ಶಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪) ।

**ವಿಕತ್ಯಿನ್ ವಿಕ್ತೃನ್ (ವಿಂ)** 1. ಆತ್ಮಶ್ಲಾಘನೆಯ

ಸ್ವಭಾವದವನು. ವಿ + ಕತ್ಯ (ಶ್ಲಾಘಾಯಾಮ್) “ಫಿನ್ಯುಃ”

(೩-೨-೧೪೩) । 2. ಹೆಚ್ಚು ಗರ್ಜಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ.

“ವಿಕತ್ಯಿ ಯಾಚತೇ ಪ್ರತಮವಿಶ್ರಮ್ಭಿ ಮುಹುರ್ಜಲಮ್” ಮೃದ್ವಿಂ

೭-೧೧ ।

**ವಿಕರ್ಮನ ವಿಕ್ರಂಪನ (ನಂ)** ಹೆಚ್ಚು ಅಲುಗಾಡುವುದು,

ಹೆಚ್ಚು ನಡುಗುವುದು. ವಿ + ಕಪಿ (ಚಲನೇ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್”

(೩-೩-೧೧೪) ।

**ವಿಕರ್ಮಿತ ವಿಕ್ರಂಪಿತ (ವಿಂ)** ಹೆಚ್ಚು ನಡುಗಿದ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ

ಅದುರಿದ. ವಿ + ಕಪಿ (ಚಲನೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) ।

**ವಿಕರಣ ವಿಕ್ರಣ (ಪುಂ)** ತಿಜ್ಜಾ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರತ್ಯಯ

ಗಳು ಪರವಾದಾಗ ಧಾತುಗಳಿಗೆ ವಿಧಿಸಲ್ಪಡುವ ಶಬ್

ಮೊದಲಾದ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು. ಇವಕ್ಕೆ ವಿಕರಣಗಳೆಂದು

ಸಂಜ್ಞೆ.

**ವಿಕರಾಲ ವಿಕ್ರಾಲ (ವಿಂ)** ಭಯಂಕರವಾದ. ವಿಶೇಷಣ

ಕರಾಲಃ । “ಧೃತಪ್ರೇಮಾ ಬಾಹುವಿಕಚವಿಕರಾಲವ್ರಣಮುಖಃ”

ತಂ ರಾಂ ೪-೨೬ ।

**ವಿಕರ್ಣ ವಿಕ್ರ್ಣ (ಪುಂ)** 1. ಕೌರವರ ಕಡೆಯ ಒಬ್ಬ ಯೋಧ.

(ವಿಂ) 2. ಕರ್ಣಗಳಿಲ್ಲದವನು, ಕಿವಿಗಳನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡ

ವನು. ವಿಗತೌ ಕರ್ಣೌ ಯಸ್ಯ ।

**ವಿಕರ್ತನ ವಿಕ್ರ್ತನ (ಪುಂ)** 1. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. ವಿಕರ್ತಯತಿ

ರೋಗಾನ್—ವಿ + ಕೃತೌ (ಹೇದನೇ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಟ್”

(೩-೩-೧೧೪) । “ಆರೋಗ್ಯಂ ಭಾಸ್ಕರಾದಿಚ್ಛೇತ್” । 2. ಅರ್ಹ

ವ್ಯಕ್ತ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

**ವಿಕರ್ಮಕೃತ್ ವಿಕ್ರಮಕೃತ್ (ವಿಂ)** ನಿಷಿದ್ಧವಾದ ಕಾರ್ಯ

ವನ್ನು ಮಾಡುವವನು. ವಿಕರ್ಮ ನಿಷಿದ್ಧ ಕರ್ಮ ಕರೋತಿ—

ಡುಕೃತ್ (ಕರಣೇ) “ವಿವಪ್” (೩-೨-೭೬) । “ನ ಸಾಕ್ಷಿ

ನೃಪತಿಃ ಕಾರ್ಯಃ ನ ಕಾರಕಕುಶಿಲವೌ । ನಾಪ್ಯಧೀನೋ ನ

ವಕ್ತವ್ಯೋ ನ ದಸ್ಯುನ್ ವಿಕರ್ಮಕೃತ್” ಮನುಂ ೮-೬೬ ।

**ವಿಕರ್ಮಸ್ಥ ವಿಕ್ರಮಸ್ಥ (ವಿಂ)** ನಿಷಿದ್ಧಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ

ತೊಡಗಿರುವವನು, ವಿರುದ್ಧವ್ಯವಹಾರದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದ

ವನು. ವಿಕರ್ಮಣಿ ತಿಷ್ಠತಿ—ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) “ಕಃ”

(೩-೨-೪) । “ಪಾಪಿಣಿಡನೋ ವಿಕರ್ಮಸ್ಥಾನ್ ಬೆಡಾಲವ್ರತಿಕಾನ್

ಶಾಠಾನ್ । ಹೈತುಕಾನ್ ಬಕವೃತ್ತಿಶ್ಚ ವಾಙ್ಮಾತ್ರೇಣಾಪಿ ನಾರ್ಚಯೇತ್”

ಮನುಂ ೪-೩೦ ।



**ವಿಕರ್ಷ ವಿಕರ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಬಾಣ. ವಿಕೃಷ್ಯಂತೆ ಪರಪ್ರಾಣಾ  
ಅನೇನ—ವಿ+ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) “ವಖ್” (೩-೩-೧೨೧) ।  
2. ಎಳೆಯುವುದು. ವಿ+ಕೃಷ ಭಾವೇ “ವಖ್” (೩-೩-೧೮) ।

**ವಿಕರ್ಷಣ ವಿಕರ್ಷಣ** (ನಂ) 1. ಆಕರ್ಷಣ, ಎಳೆಯುವುದು.  
ವಿ+ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) ।  
“ಅವಿಲಕ್ಷ್ಯ ವಿಕರ್ಷಣಂ ಪರೈಃ ಪ್ರಥಿತಜ್ಞಾರವಕರ್ಮ ಕಾರ್ಮುಕಮ್”  
ಕಿರಾಂ ೩-೪೭ । 2. ವಿಭಾಗಿಸುವುದು, ಭಾಗಮಾಡು  
ವುದು, ವಿಂಗಡಿಸುವುದು. “ಋಷಿಣಾಂ ಜನ್ಮಕರ್ಮಾಣಿ ವೇದಸ್ಯ  
ಚ ವಿಕರ್ಷಣಮ್” ಭಾಗಂ ೩-೭-೨೯ ।

**ವಿಕಲ ವಿಕಲ** (ವಿಂ) 1. ಯಾವುದಾದರೊಂದು ಕೊರತೆ  
ಯುಳ್ಳು, —ನೊಂದತೆಯುಳ್ಳು. ವಿಗತಾ ಕಲಾ ಯಸ್ಯ ।  
“ಭೂಯಿಷ್ಠದ್ವಿಜಬಾಲವೃದ್ಧವಿಕಲಸ್ತ್ರೇಣಶ್ಚ ಪೌರೋ ಜನಃ” ತಂ  
ರಾಂ ೪-೨೫ । 2. ಭಯದಿಂದ ಗಾಬರಾಗೊಂಡ, ಹೆದರಿಕೆ  
ಯಿಂದ ಕಳೆವಳಾಗೊಂಡ. “ನಾದಸ್ತಾವದ್ವಿಕಲಕುರೀಕೃಜಿತ-  
ಸ್ಲಿಂಗತಾರಃ” ಮಾಲತೀಂ ೫-೨೦ । 3. ಸ್ವಭಾವ ಶೂನ್ಯ  
ವಾದ, ಎದೆಗುಂದಿದ, ಶಕ್ತಿಯುಡುಗಿದ. “ವಹತಿ  
ವಿಕಲಃ ಕಾಯೋ ಮೋಹಂ ನ ಮುಚ್ಛತಿ ಚೇತನಾಮ್” ತಂ ರಾಂ  
೩-೩೧ ।

**ವಿಕಲಾ ವಿಕಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಜಸ್ವಲೆಯಾಗಿರುವ ಹೆಂಗಸು.  
ವಿಗತಃ ಕಲೋ ಮಧುರಶಬ್ದೋ ಯಸ್ಯಾಃ । ಋತುಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ಸ್ತ್ರೀಯರು ಮೌನವನ್ನು ಆಚರಿಸಬೇಕೆಂದು ಸದಾಚಾರ  
ವಿರುವುದು.

**ವಿಕಲಾಂಗ ವಿಕಲಾಂಗ** (ವಿಂ) ಯಾವುದಾದರೊಂದು  
ಅವಯವವಿಲ್ಲದ, ಅಂಗಹೀನನಾದ. ವಿಕಲಮಾಂಗಂ ಯಸ್ಯ ।  
“ವಿಕಲಾಂಗಸ್ತು ಪೂಗಂಧಃ” ಅಮಂ ।

**ವಿಕಲೇಂದ್ರಿಯ ವಿಕಲೇಂದ್ರಿಯ** (ವಿಂ) ಇಂದ್ರಿಯವನ್ನು  
ಕಳೆದುಕೊಂಡಿರುವ, ಇಂದ್ರಿಯ ಶೂನ್ಯನಾದ. ವಿಕಲಾನಿ  
ಇಂದ್ರಿಯಾಣಿ ಯಸ್ಯ ।

**ವಿಕಲ್ಪ ವಿಕಲ್ಪ** (ಪುಂ) 1. ಭ್ರಾಂತಿ, ಭ್ರಮೆ, ವಸ್ತುವಿಗಿ  
ವಿರುದ್ಧವಾದ ಕಲ್ಪನೆ. ವಿ+ಕೃಪ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) “ವಖ್”  
(೩-೩-೧೮) । 2. ಸಂಶಯ, ಸಂದೇಹ. “ರಾತ್ರಿದಿವ-  
ವಿಭಾಗೇಷು ಯದಾದಿಷ್ಟಂ ಮಹೀಕ್ಷಿತಾಮ್ । ತದ್ವಿಷೇವೇ ನಿಯೋಗೇನ ಸ  
ವಿಕಲ್ಪಪರಾಙ್ಮುಖಃ” ರಘುಂ ೧೭-೪೯ । 3. ಅನೇಕವಿಧ,  
ನಾನಾಬಗೆ. “ಪ್ರಚ್ಛನ್ನಂ ವಾ ಪ್ರಕಾಶಂ ವಾ ತನ್ನಿಷೇವೇತ ಯೋ  
ನರಃ । ತಸ್ಯ ದೃಷ್ಟವಿಕಲ್ಪಃ ಸ್ಯಾದ್ವಿಷೇಷಂ ನೃಪತೇಸ್ತಥಾ” ಮನುಂ  
೯-೨೨೮ । 4. ಉಪಾಯ, ತಂತ್ರ. “ಮಾಯಾವಿಕಲ್ಪರಚಿತೈರಪಿ  
ಯೇ ತದೀಯೇನ ಸ್ಯಂದನೇಸ್ತುಲಿತಕೃತ್ರಿಮಮಾಶೋಭಾಃ” ರಘುಂ  
೧೩-೭೫ । 5. (ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಪಕ್ಷಾಂತರ,

ಸಂದರ್ಭಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ ಇಚ್ಛೆಗೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ ಮಾರ್ಪಡಿಸು  
ವುದು, —ಬದಲಾಯಿಸುವುದು, ಎರಡು ವಿಧಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವ  
ದಾದರೊಂದನ್ನು ಆಯ್ದು ವಿಧಿಸುವುದು. “ಗ್ರೀಹಿಭಿರ್ವಾ  
ಯವೇರ್ವಾ ಯಜೇತ” । 6. ದೋಷ, ತಪ್ಪು. 7. ದೇವತೆ.  
“ವಿಕಲ್ಪಃ ಪುನಿ ಭ್ರಾಂತೋ ಚ ಕಲ್ಪನೇ” ಮೇದಿಂ ।

**ವಿಕಲ್ಪನ ವಿಕಲ್ಪನ** (ನಂ) 1. ಸಂಶಯಪಡುವುದು.  
2. ಇಚ್ಛೆಗೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ ಹೇಳುವುದು. 3. ಪರ್ಯಾ  
ಲೋಚಿಸದೆ ಕಾರ್ಯಮಾಡುವುದು, ದುಡುಕಿ ಕಾರ್ಯ  
ಮಾಡುವುದು. 4. ಒಂದು ನಿರ್ಣಯಕ್ಕೆ ಬಾರದಿರುವುದು.  
ವಿಪರೀತಂ ಕಲ್ಪನಮ್ ।

**ವಿಕಲ್ಪಿತ ವಿಕಲ್ಪಿತ** (ವಿಂ) ಸಂಶಯವುಂಟಾದ, ಸಂದೇಹ  
ವುಂಟಾದ (ಸದೃಶವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಸಂಶಯ).  
ವಿಕಲ್ಪೋಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ “ಇತತ್” (೫-೨-೩೬) । “ವಿಕಲ್ಪಿ-  
ತಾನಿ ತ್ರಿದಿವೇನ ಭೂಮಿ ವರ್ಷಾಣಿ ದಿವ್ಯಾನಿ ವಿಲೋಕಯೇಥಾಃ”  
ಯಾದಂ ೧೮-೧೨ ।

**ವಿಕಲ್ಪ್ಯಮಾನ ವಿಕಲ್ಪ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) (ಸಂವರಣವಾಗಿರು  
ವುದರಿಂದ) ಸಂಶಯವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ+  
ಕೃಪ (ಸಾಮರ್ಥ್ಯ) ಕರ್ಮಂ “ಶಾನತ್” (೩-೨-೧೨೪) ।  
“ವಿಲೇ ತದೀಯೇ ವಿಬುಧಾಲಯೋಷ್ಠೇ ವಿಕಲ್ಪ್ಯಮಾನಾಕೃತಿಮಪ್ಸರೋ-  
ಗಣೈಃ” ಯಾದಂ ೧೪-೫೯ ।

**ವಿಕಸ ವಿಕಸ** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ವಿಕಸತಿ — ಕಸ (ಗತೌ)  
“ಅವ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ತಾರಾಪಿಡಃ ಸ್ವಚಮಸೋ ವಿಕಸಃ  
ಸಿಂಧುನಂದನಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ವಿಕಸತ್ ವಿಕಸತ್** (ವಿಂ) 1. ವಿಕಾಸವನ್ನು ಹೊಂದು  
ತ್ತಿರುವ, ಅರಳುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ಕಸ (ಗತೌ) “ಸತ್”  
(೩-೨-೧೨೪) । “ದಧತಿ ಚ ವಿಕಸದ್ವಿಚಿತ್ರಕಲ್ಪದ್ರುಮಕುಸುಮೇ-  
ರಭಿಗುಮ್ಮಿತಾನಿವೇತಾಃ” ಮಾಧಂ ೪-೫೦ । 2. ಪ್ರಸರಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ಹರಡುತ್ತಿರುವ. “ಯಾಂ ಚಂದ್ರಕರ್ಮದಜಲಸ್ಯ ಮಹಾ-  
ನದೀನಾಂ ನೇತ್ರಾಶ್ರಯಂ ವಿಕಸತೋ ವಿಧಧುಗಂಜೇಂದ್ರಾಃ” ಮಾಧಂ ೫-೪೦ ।  
3. ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುತ್ತಿರುವ, ಅಧಿಕವಾಗುತ್ತಿರುವ, ಹೆಚ್ಚು  
ತ್ತಿರುವ. 4. ಶೋಭಿಸುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ.  
5. ಸಂತೋಷಪಡುತ್ತಿರುವ. “ಪರಗುಣಪರಮಾಣು ಪರ್ವತೀ-  
ಕೃತ್ಯ ನಿಯಂ ನಿಜಹೃದಿ ವಿಕಸಂತಃ ಸ್ಯಾಪಯಂತಃ ಕಿಯಂತಃ”  
ಮೃತ್ಯುಂ ೧-೭೦ ।

**ವಿಕಸನ ವಿಕಸನ** (ನಂ) 1. ಅರಳುವುದು, ವಿಕಾಸಹೊಂದು  
ವುದು. 2. ಹೆಚ್ಚುವುದು, ಅಧಿಕವಾಗುವುದು. 3. ಪ್ರಸರಿಸು  
ವುದು, ಹರಡುವುದು. ವಿ+ಕಸ (ಗತೌ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೪) । 4. ಶೋಭಿಸುವುದು, ಪ್ರಕಾಶಿಸುವುದು.



**ವಿಕಸಾ ವಿಕ್ಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮಂಜಿಷ್ಠಿ. ವಿಕಸತಿ — ವಿ + ಕಸ (ಗತೌ) “ಅವ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ಮಜ್ಜಿಷ್ಠಾ ವಿಕಸಾ ಜಿಜ್ಞಿ” ಅಮಂ ।

**ವಿಕಸಿತ ವಿಕ್ಸಿತ (ವಿಂ)** 1. ವಿಕಾಸಹೊಂದಿದ, ಅರಳಿದ. ವಿ + ಕಸ (ಗತೌ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) । “ವಿಕಸಿತ-ಕುಸುಮಾಧರಂ ಹಸಂತಿ ಕುರವಕರಾಜಿವಧುಂ ವಲೋಕಯಂತಮ್” ಕಿರಾಂ ೧೦-೩೨ । 2. ಅಭಿವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿದ, ಅಧಿಕವಾದ.

**ವಿಕಸ್ವರ ವಿಕ್ಸುರ (ವಿಂ)** 1. ಅರಳುವ ಸ್ವಭಾವದ. ವಿ + ಕಸ (ಗತೌ) “ವರವ್” (೩-೨-೧೭೫) । “ಕುಶೇಶಯೇವ ಜಲಾಶಯೋಷಿತಾ ಮುದಾ ರಮಂತೆ ಕಲಮಾ ವಿಕಸ್ವರಃ” ಮಾಘಂ ೪-೩೩ । 2. ಗಟ್ಟಿಯಾದ, ಎತ್ತರವಾದ, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೇಳಿಸುವ (ಶಬ್ದ). “ಉದ್ಭವತ ವೈಕೃತಾತ್ಕರಗ್ರಹಜಾದಸ್ಯ ವಿಕಸ್ವರಸ್ವರಃ” ನೈಷಂ ೨-೫ ।

**ವಿಕಾರ ವಿಕಾರ (ಪುಂ)** 1. ಸ್ವಭಾವದ ವ್ಯತ್ಯಾಸ, —ಬದಲಾವಣೆ, —ಮಾರ್ಪಾಡು. ವಿ + ಡುಕ್ರಾ (ಕರಣೆ) “ಛನ್” (೩-೩-೧೮) । “ವಿಕಾರಂ ಯಾತಿ ನೌ ಚಿತ್ತಂ ವಿದ್ವೇದಸ್ಯ ಕದಾಚನ” ಪञ್ಚತಂ ೨-೧೧೬ । 2. ಕೆರಳುವುದು, ಉದ್ರೇಕಗೊಳ್ಳುವುದು, ಕ್ಷೋಭೆಹೊಂದುವುದು. “ಪ್ರಸೇದಿವಾಂಸಂ ನ ತಮಾಪ್ ಕೋಪಃ ಕುತಃ ಪರಸ್ಮಿನ್ ಪುರುಷೇ ವಿಕಾರಃ” ಕಿರಾಂ ೧೭-೨೩ । 3. ವಕ್ರತೆ, ಹಾಸ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಮುಖವನ್ನು ವಕ್ರವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. “ಅಪಿ ಶಯನಸಖೀಮ್ಯೋ ದತ್ತವಾಚಂ ಕಥಂಚಿತ್ಪ್ರಮಥಮುಖವಿಕಾರೇಹಾಸಯಾಮಾಸ ಗೂಢಮ್” ಕುಮಾರಂ ೭-೧೫ । 4. ಭಾವನೆ, ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿ, ವಿಶೇಷ, ಮನೋಭಾವ. “ತವ ಸ್ಪರ್ಶೋ ಸ್ಪರ್ಶೋ ಮಮ ಹಿ ಪರಿಮೂಢೇಂದ್ರಿಯಗಣೋ ವಿಕಾರ-ಶ್ಚೈತನ್ಯಂ ಭ್ರಮಯತಿ ಚ ಸಂಮೀಲಯತಿ ಚ” ಉಂ ರಾಂ ೧-೩೫ । 5. ಪ್ರಕೃತಿಯು ವಿಕಾಸಹೊಂದುವುದು, ಪ್ರಕೃತಿಯು ಬದಲಾವಣೆಹೊಂದುವುದು. 6. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. “ವಿಕಾರಂ ಖಲು ಪರಮಾರ್ಥತೋಜ್ಞಾತ್ವಾನ್ಯಾರಮ್ಭಃ ಪ್ರತೀಕಾರಸ್ಯ” ಶಾಕುಂ ೪ ।

**ವಿಕಾರಿನ್ ವಿಕಾರಿನ್ (ವಿಂ)** ವಿಕಾರವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಪ್ರಕೃತಿಯನ್ನು ಬದಲಾಯಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಮನೋಭಾವವನ್ನು ವ್ಯತ್ಯಾಸಗೊಳಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ. ವಿ + ಡುಕ್ರಾ (ಕರಣೆ) “ಣಿನಿಃ” (೩-೨-೭೮) । “ಭ್ರಮತಿ ಭುವನೇ ಕಂದರ್ಪಾಜ್ಞಾ ವಿಕಾರಿ ಚ ಯೌವನಂ ಲಲಿತ-ಮವುರಾಸ್ತೇ ತೇ ಭಾವಾಃ ಕ್ಷಿಪಂತಿ ಚ ಧೀರತಾಮ್” ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೦ ।

**ವಿಕಾಲ ವಿಕಾಲ (ಪುಂ)** ವಿರುದ್ಧವಾದ ಕಾಲ, ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಲ್ಲದ ಕಾಲ. ವಿರುದ್ಧಃ ಕಾಲಃ । ಸಾಯಂಕಾಲವು

ಯಾವ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೂ ಅರ್ಹವಲ್ಲದ ಕಾಲ. “ನ ಲಕ್ಷ್ಯೇ-ತಯೇವಾಸುಕೃಷ್ಣಿವನೋದ್ಭವನಾನಿ ಚ । ನೋದಾನಾದೌ ವಿಕಾಲೇಷು ಪ್ರಾಜ್ಞಸ್ತಿಷ್ಠೇತ್ಕದಾಚನ” ಮಾರ್ಕಂ ।

**ವಿಕಾಲಿಕಾ ವಿಕಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ನೀರ್ಗಡಿಯಾರ, ಗಂಟೆ (ಕಾಲ) ಯನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಒಂದು ವಿಧ ಹಳೆಯ ಕಾಲದ ಗಡಿಯಾರ. ವಿಜ್ಞಾತಃ ಕಾಲೋ ಯಾ । ಸುತ್ತಲೂ ಸಣ್ಣದಾಗಿ ರೂಪಮಾಡಿದ ಒಂದು ತಾಮ್ರದ ಪಾತ್ರೆಯನ್ನು ನೀರಿನಲ್ಲಿಟ್ಟು ಅದರೊಳಗೆ ನೀರು ತುಂಬಿದಂತೆಲ್ಲಾ ಸಮಯವನ್ನು (ಗಂಟೆಯನ್ನು) ತಿಳಿಯುವ ಪ್ರಾಚೀನ ಕಾಲದ ಒಂದು ವಿಧ ಗಡಿಯಾರವನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸುತ್ತಿದ್ದರು.

**ವಿಕಾಶ ವಿಕಾಶ (ಪುಂ)** 1. ಪ್ರಸಾರ, ಅಡ್ಡಿ ಆತಂಕಗಳಿಲ್ಲದ ಗತಿ. ವಿಶೇಷಣ ಕಾಶಃ ಪ್ರಕಾಶಃ । “ವಿಕಾಶಮೀಯುರ್ಜಗತಿಶ-ಮಾರ್ಗಣಾಃ” ಜಗತಿಶಸ್ಯ ಅರ್ಜುನಸ್ಯ ಮಾರ್ಗಣಾಃ ಬಾಣಾಃ ಪ್ರಸಾರ-ಮೀಯುಃ । 2. (ಪ್ರತಿರೋಧದಿಂದ) ವಿರುದ್ಧವಾದ ಗತಿ. ಇಶಮಾರ್ಗಣಾಃ ಗಿರೀಶಬಾಣಾಃ ವಿಕಾಶಂ ವಿಷಮಗತಿಮೀಯುಃ । 3. ಉಲ್ಲಾಸ, ಸಂತೋಷ. ಜಗತಿಶಮಾರ್ಗಣಾಃ ದಾನವಾನಾಂ ಮಾರಃ ಮಾರಕಾಃ ಗಣಾಃ ಪ್ರಮಥಾಃ ವಿಕಾಶಮುಲ್ಲಾಸಮೀಯುಃ । 4. ಆಕಾಶ, ಅಂತರಿಕ್ಷ. ಜಗತಿಶಮಾರ್ಗಣಾಃ ತ್ರೈಲೋಕ್ಯನಾಥಸ್ಯ ಮಾರ್ಗಣಾಃ ಅನ್ವೇಷಕಾಃ ಕೃಷಯೋ ದೇವತಾಶ್ಚ ವಿಕಾಶಂ (ವಿನಾಂ ಪಕ್ಷಿಣಾಂ ಕಾಶೋ ಯತ್ರ) ಆಕಾಶಮೀಯುಃ । “ವಿಕಾಶಮೀಯು-ರ್ಜಗತಿಶಮಾರ್ಗಣಾ ವಿಕಾಶಮೀಯುರ್ಜಗತಿಶಮಾರ್ಗಣಾಃ । ವಿಕಾಶ-ಮೀಯುರ್ಜಗತಿಶಮಾರ್ಗಣಾಃ ವಿಕಾಶಮೀಯುರ್ಜಗತಿಶಮಾರ್ಗಣಾಃ” ಕಿರಾಂ ೧೫-೫೨ । 5. ವಿಕಾಸಹೊಂದುವುದು, ಅರಳುವುದು. 6. ರಹಸ್ಯ.

**ವಿಕಾಸ ವಿಕಾಸ (ಪುಂ)** 1. ಅರಳುವುದು, ವಿಕಾಸಹೊಂದುವುದು. ವಿ + ಕಸ (ಗತೌ) “ಛನ್” (೩-೩-೧೮) । 2. ಶೋಭೆ, ಕಾಂತಿ. “ವಿಭೃತೇ ದಿವಾ ಸವಯಸಾ ಚ ಪುರಃ ಪರಿಪೂರ್ಣಮಂಡಲವಿಕಾಸಭೃತಿ” ಮಾಘಂ ೯-೫೩ । 3. ವೃದ್ಧಿ, ಅಧಿಕ. “ಯದ್ಬಹುಬಿಹಿರವಾಪ್ಯ ವಿಕಾಸಂ ವ್ಯಾನಶೇ ತನುರಹಾನ್ಯಪಿ ಹೃಷಃ” ಮಾಘಂ ೧೦-೫೦ । 4. ಔತ್ಸುಕ್ಯ, ಉತ್ಸಾಹ. “ಯುಗಪದ್ವಿಕಾಸಮುದಯಾದ್ರಮಿತೇ ಶಶಿನಃ ಶಿಲೀಮುಖಗಣೋಲಭತ” ಮಾಘಂ ೯-೪೧ ।

**ವಿಕಾಸನ ವಿಕಾಸನ (ನಂ)** 1. ಅರಳಿಸುವುದು, ವಿಕಾಸ ಹೊಂದಿಸುವುದು. ವಿ + ಕಸ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । 2. ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವುದು, ಅಧಿಕಗೊಳಿಸುವುದು. 3. ಶೋಭಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು.

**ವಿಕಾಸಯತ್ ವಿಕಾಸಯತ್ (ವಿಂ)** 1. ಅರಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಕಸ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) ।



2. ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತಿರುವ, ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಪ್ರಕಾಶ ಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

**ವಿಕಾಸಿತ ವಿಕಾಸಿತ** (ವಿಂ) 1. ಅರಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ವೃದ್ಧಿ ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಕಾಂತಿಯುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಕಸ (ಗತೌ)+ಣಿವ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) ।

**ವಿಕಾಸಿನ್ ವಿಕಾಸಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಪುಲ್ಲವಾಗುವ, ಅರಳುವ. ವಿ+ಕಸ (ಗತೌ) "ಣಿವಿ:" (೩-೧-೧೩೪) । "ನಾರೀಭಿರ್ಗುಹಜನಸ್ಥಲಾಹತಾನಾಮಾಸ್ಯಶ್ರೀವಿಜಿತವಿಕಾಸಿ-ವಾರಿಜಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೮-೪೭ । 2. ಅಧಿಕವಾಗುವ, ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವ. "ಋಷಮಪ್ರತಿವಿಧಾನಮನೋಜ್ಞಂ ಪ್ರೇಮ ಕಾರ್ಯ-ಮನಪೇಕ್ಷ್ಯ ವಿಕಾಸಿ" ಮಾಘಂ ೧೦-೩೭ । 3. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಶೋಭಿಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ. "ಅಸಕಲಕಲಿಕಾಕುಲಿ-ಕೃತಾಲಿಪ್ತಲತವಿಕೀರ್ಣವಿಕಾಸಿಕೇಸರಾಣಾಮ್" ಮಾಘಂ ೭-೨೬ ।

**ವಿಕಿರ ವಿಕಿರ** (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ವಿಕರತಿ—ವಿ+ಕ್ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫) । "ಕವಕೋಲಿಫಲಜಘ-ಮುಖವಿಕಿರವ್ಯಾಹಾರಿಣಸ್ತದ್ಭುವೋ ಭಾಗಾಃ ಪ್ರೇಕ್ಷಿತಮಾತುಲುಙ್ಗ-ವೃತಯಃ ಪ್ರಯೋ ವಿಧಾಸ್ಯಂತಿ ವಾಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೬-೧೯ । 2. ಎರಚಲ್ಪಟ್ಟ ವಸ್ತು, ಬಿಸಾಡಿದ ಪದಾರ್ಥ. ವಿಕೀಯಂತೆ —ವಿ+ಕ್ ಧವರ್ಥೆ "ಕ:" (ವಾಂ ೩-೩-೫೮) । 3. ಕೂವ, ಬಾವಿ. "ಅನ್ವುವಿಕಿರಶ್ಚೂಡಕಶ್ಚ ಸ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ವಿಕಿರಣ ವಿಕಿರಣ** (ನಂ) 1. ಎರಚುವುದು, ಚೆಲ್ಲುವುದು. ವಿ+ಕ್ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಹರಡುವುದು. 3. ಹಿಂಸಿಸುವುದು. 4. ಜ್ಞಾನ, ಅರಿವು, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. (ಪುಂ) 5. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

**ವಿಕಿರತ್ ವಿಕಿರತ್** (ವಿಂ) 1. ಎರಚುತ್ತಿರುವ, ಚೆಲ್ಲುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ಕ್ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಹರಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) ।

**ವಿಕೀರ್ಣ ವಿಕೀರ್ಣ** (ವಿಂ) 1. ಚೆಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ, ಎರಚಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಕ್ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. "ರಿಸಸಥಿಪತಿ ಭೂಃ ಶಾಪಮಗ್ರೇ ವಿಕೀರ್ಣ ಪೃಥುರಚಪಲೌಠಃ ಪ್ರಸ್ಕುರತಪ್ರೋಮಶ್ವ:" ಮಾಘಂ ೧೧-೧೧ । 3. ಚೆಲ್ಲಾಪಿಲ್ಲಿಯಾಗಿ ಬಿದ್ದಿರುವ, ಚೆದುರಿಹೋಗಿರುವ. "ರತಿಕಲಹವಿಕೀರ್ಣಭೂಷಣೇರಚಿತೇಷು" ಮಾಘಂ ೧೧-೩೬ । 4. ಪ್ರಸರಿಸಿರುವ, ಹರಡಿರುವ. "ತಿಲಿಠಮುನೇರಭಿಮುಖಂ ಸ ವಿಕೀರ್ಣಧಾಮ್ನ:" ಕಿರಾಂ ೨-೫೯ ।

**ವಿಕುಕ್ಷಿ ವಿಕುಕ್ಷಿ** (ಪುಂ) ಇಕ್ಷ್ವಾಕುರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಪುತ್ರ. "ವೈವಸ್ವತಮನೋರಾಸೀದಿಕ್ಷವಾಕ್ತುಃ ಪೃಥಿವೀಪತಿಃ । ತಸ್ಯ ಪುತ್ರಶತಂ ಚಾಸೀದ್ವಿಕುಕ್ಷಿಜ್ಯೇಷ್ಠ ಉಚ್ಯತೇ" ।

**ವಿಕುರ್ವಾಣ ವಿಕುರ್ವಾಣ** (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡುತ್ತಿರುವ, ಹರ್ಷಗೊಂಡಿರುವ. ವಿಕುರತೇ —ವಿ+ಕ್ವಾ (ಕರಣೇ) "ಶಾನ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಹರ್ಷಮಾಣೋ ವಿಕುರ್ವಾಣಃ ಪ್ರಮನಾ ಹೃಷ್ಠಮಾನಸಃ" ಅಮಂ । 2. ಎಕಾರ ವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ, ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದಿದ. "ಆಕಾ-ಶಸ್ತು ವಿಕುರ್ವಾಣಃ ಸ್ಪರ್ಶಮಾತ್ರಂ ಸಸರ್ಜ ಹ । ಬಲವಾನಭವದ್ವಾಯುಃ ತಸ್ಯ ಸ್ಪರ್ಶೋ ಗುಣೋ ಮತಃ" । 3. ವಿವಿಧವಾದ ಸ್ವರವನ್ನು ಮಾಡುವ. "ವಿಕುರ್ವಾಣಃ ಸ್ವರಾನಽಥ ಬಲಂ ತಸ್ಯ ನಿಹನ್ಯಮಹಮ್" ಭट्टಿಂ ೮-೨೦ ।

**ವಿಕುಸ ವಿಕುಸ** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ವಿ+ಕಸ (ಗತೌ) "ರಕ್" ಉಪಧಾಯಾಃ ಉತ್ವಂ ಚ (ಉಂ ೨-೧೮) । ವಿಕುಸ-ಶ್ಚಂದ್ರಃ ಸಿಂ ಕೌಂ ।

**ವಿಕೃತ ವಿಕೃತ** (ನಂ) 1. ವ್ಯತ್ಯಾಸ, ಬದಲಾವಣೆ, ಮಾರ್ಪಾಡು. ವಿ+ಡುಕ್ವ (ಕರಣೇ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) । 2. ವ್ಯಾಧಿ, ರೋಗ. 3. ಜುಗುಪ್ಸೆ. (ವಿಂ) 4. ಭಯಂಕರವಾದ. 5. ಜುಗುಪ್ಸೆಯುಂಟು ಮಾಡುವ. 6. ರೋಗಿ, ವ್ಯಾಧಿಪೀಡಿತ. 7. ಅಂಗವಿಹೀನ, ಯಾವುದಾದರೊಂದು ಅವಯವವಿಲ್ಲದ. 8. ಉದ್ರೇಕ, ವೃಳ್ಳ, ಕೋಪಗೊಂಡ. "ನಿಭೃತೇರಪಿ ಪೂರ್ವಮಕಮತ್ಯಾತ್ ವಿಕೃತಸ್ಯಾಥ ವಿರುದ್ಧವೇಷ್ಠಿತಾನಿ" ಯಾದಂ ೧೫-೧೦೭ ।

**ವಿಕೃತಿ ವಿಕೃತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎಕಾರ, ರೂಪಬದಲಾವಣೆ, ರೂಪವ್ಯತ್ಯಾಸ. ವಿ+ಡುಕ್ವ (ಕರಣೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೧೪) । "ಶರೀರಮಾತ್ರಂ ವಿಕೃತಿ ಪ್ರಪೇದೇ ತಥೈವ ತಸ್ಯುಃ ಫಣರತ್ತಶೋಭಾಃ" ಕುರ್ಮಾಂ ೭-೩೪ । 2. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. 3. ಉದ್ರೇಕ, ಕೆರಳುವುದು. "ಸಾವಲೇಪಮುಪಲಿಪ್ತಿಸ್ತೇ ಪರೇ-ರಮ್ಯುಪೇತಿ ವಿಕೃತಿ ರಜಸ್ಯಪಿ" ಕಿರಾಂ ೧೩-೫೬ । 4. (ಸಾಂಖ್ಯಮತದಲ್ಲಿ) ಮೂರನೆಯ ತತ್ತ್ವವಾದ ಅಹಂಕಾರತತ್ತ್ವದಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನವಾದ ಹದಿನಾರು ತತ್ತ್ವಗಳ ಸಮೂಹ, ಸಾತ್ತ್ವಿಕ ರಾಜಸ ಮತ್ತು ತಾಮಸಗಳೆಂಬ ಮೂರು ವಿಧ ತತ್ತ್ವಗಳಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಹದಿನಾರು ತತ್ತ್ವಗಳ ಗಣ. ಸಾತ್ತ್ವಿಕಾಹಂಕಾರದಿಂದ ಮನಸ್ಸು, ಸೇರಿ ಎಕಾದಶೇಂದ್ರಿಯಗಳೂ ತಾಮಸಾಹಂಕಾರದಿಂದ ವೃಥಿವಿ ಮೊದಲಾದ ಪಂಚಭೂತಗಳ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಸ್ಥೆಗಳಾದ ಪಂಚತನ್ಮಾತ್ರಗಳೂ ಹುಟ್ಟುವುವು. ಇವೇ ಮೋಡತ ಗಣ. ರಾಜಸಾಹಂಕಾರವು ಸಾತ್ತ್ವಿಕ ಮತ್ತು ತಾಮಸ



ಗಣಿ ಸಹಕಾರಿಯಾಗಿರುವುದು. "ಪ್ರಕೃತೇಮ್ಹಾನ್ ತತೋ-  
ಹಂಕಾರಸ್ತಸ್ಮಾದ್ಗಣಶ್ಚ ಷೋಡಶಕಃ | ತಸ್ಮಾದಪಿ ಷೋಡಶಕಾ-  
ತ್ಯಶ್ಚಮ್ಯಃ ಪञ್ಚ ಭೂತಾನಿ" ಸಂ ೬೦ ಸಂ | "ಷೋಡಶಕಸ್ತು  
ವಿಕಾರಃ" ಸಾಂ ಕಾಂ | 5. ಭಯ ಮತ್ತು ಕೋಪ  
ಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಮನೋವಿಕಾರ. "ಸತ್ವಾನಾಮಪಿ  
ಲಕ್ಷ್ಯತೇ ವಿಕೃತಿಮನ್ವಿತಂ ಭಯಕ್ರೋಧಯೋಃ" ಶಾಕುಂ ೨-೫ |  
6. ಸ್ವಭಾವದ ಬದಲಾವಣೆ, ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿಯ ವಿಕಾರ.  
7. ಪ್ರಭವ ಮೊದಲಾದ ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ  
ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕನೆಯ ಸಂವತ್ಸರ.

**ವಿಕೃಷ್ಣ ವಿಕ್ರಮ** (ವಿಂ) 1. ಆಕರ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಎಳೆಯ  
ಲಟ್ಟ. ವಿ + ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ"  
(೩-೨-೧೦೨) | "ವಿಕೃಷ್ಣವಾ ವಿಸಸಜಂ ಬಾಣಾನ್"  
ಯಾದಂ ೨೦-೭೬ | 2. ದರದರನೆ ಎಳೆದಾಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಇಲ್ಲಿಂದಲ್ಲಿಗೆ ಎಳೆದಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಿಕೃಷ್ಯಮಾಣ ವಿಕ್ರಮ** (ವಿಂ) 1. ಎಳೆಯಲ್ಪಡು-  
ತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್"  
(೩-೨-೧೨೪) | "ಕರ್ಣಾಂತಿಮೇತ್ಯ ದಿತೀಜೇನ ವಿಕೃಷ್ಯಮಾಣಂ  
ಕೋದೃಹಮೇತದಭಿತಃ ಸುಪುಲೇ ಶರೋವಾನ್" ಕುಮಾಂ ೧೭-೨೦ |  
2. ದರದರನೆ ಎಳೆದಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

**ವಿಕೋಶ ವಿಕ್ರಮ** (ವಿಂ) ಕೋಶವಿಲ್ಲದ, ಒರೆಯದ  
ಹೊರಕ್ಕೆ ತೆಗೆದಿರುವ. ವಿಗತಃ ಕೋಶೋ ಯಸ್ಯ | "ವಿಕೋಶ-  
ನಿರ್ವೃತ್ತತನೋರ್ಮಹಾಸೇಃ ಫಣಾವತಶ್ಚ ತ್ವಚಿ ವಿಚ್ಯುತಾಯಾಮ್"  
ಕಿರಾಂ ೧೭-೪೫ |

**ವಿವಕ ವಿಕ್ರಮ** (ಪುಂ) ಆನೆಯ ಮರಿ. ವಿಕ್ ಇತಿ ಕಾಯತಿ  
ಶಬ್ದಂ ಕರೋತಿ—ಕೈ (ಶಬ್ದೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | "ಮದ-  
ಪ್ರಯೋಗೋ ವ್ಯಸ್ತಾರೋ ವಿವಕಸ್ತು ಕರಿಸಾವಕಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ವಿಕ್ರಮ ವಿಕ್ರಮ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ, ವಿನಾ  
ತ್ರಯೀಮಯೇನ ವೇನತೇಯೇನ ಕ್ರಮಃ ಕ್ರಮಣಮಸ್ಯ—ಕ್ರಮು (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ)  
"ಘ್" (೩-೩-೧೮) | "ಗಮನಂ ಪಕ್ಷಿರಾಜೇನ ಯಸ್ಯ ವಿಕ್ರಮ  
ಉಚ್ಯತೇ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | "ಇಶ್ವರೋ ವಿಕ್ರಮೋ ಧನ್ವಿ  
ಮೇಧಾವಿ ವಿಕ್ರಮಃ ಕ್ರಮಃ" ವಿಂ ಸಂ | 2. ಶಕ್ತಿ,  
ಪರಾಕ್ರಮ. "ವಿಕ್ರಮಪ್ರಭವೇ ತೇಷಾಂ ವಿಜಯಶ್ರೀಸ್ವಯಂವರೇ |  
ವಂದಿಕೃತ್ಯಂ ದ್ವಿಪಶ್ಚಕ್ರೂಪಸರೋಮಿಃ ಸ್ವಯಂವತಾಃ" ಯಾದಂ  
೨೨-೧೩೬ | 3. ಪಾದನ್ಯಾಸ, ಹೆಜ್ಜೆಯಿಡುವುದು. "ಸಾ  
ರಾಜಹಂಸೇರಿವ ಸಂತಾಪ್ತಾ ಗತೇಷು ಲೀಲಾಶ್ಚಿತವಿಕ್ರಮೇಷು" ಕುಮಾಂ  
೧-೩೪ | 4. ಪ್ರಭವ ಮೊದಲಾದ ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಹದಿನಾಲ್ಕನೆಯ ಸಂವತ್ಸರ. 5. ಅತಿಶಯವಾದ  
ಪರಾಕ್ರಮ, ಅನ್ಯಾದೃಶವಾದ ವೀರ್ಯ. "ಅನ್ಯೋನ್ಯದರ್ಶನ-  
ಪ್ರಾಪ್ತವಿಕ್ರಮಾವಸರಂ ಚಿರಾತ್" ರಘುಂ ೧೨-೮೭ | 6. ಸ್ಥಿತಿ.

"ಸಂಪಲವಃ ಸರ್ವಭೂತಾನಾಂ ವಿಕ್ರಮಃ ಪ್ರತಿಸಂಕ್ರಮಃ" ಭಾಗಂ  
೨-೮-೨೦ | 7. ಸಂಚರಿಸುವುದು, ನಡೆಯುವುದು.  
8. ಉಜ್ಜಯಿನಿ ದೊರೆಯಾದ ವಿಕ್ರಮಾದಿತ್ಯ ರಾಜ. ಈ  
ರಾಜನ ಆಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ನವಮಣಿ ಪ್ರಾಯರಾದ ಒಂಬತ್ತು  
ಮಂದಿ ಉದ್ಧಾಮ ಪಂಡಿತರಿದ್ದರು. "ಘೃತವನ್ತರೀಕ್ಷಣಕಾ-  
ಮರಸಿಂಹಶತ್ರುಕುಬೇತಾಲಭದೃಘಟಕರ್ಪರಕಾಲಿದಾಸಾಃ | ಕ್ಷಾತೋ  
ವರಾಹಮಿಹಿರೋ ನಪತೇಃ ಸಭಾಭಾಂ ರತ್ನಾನಿ ವೈ ವರಕಿರ್ನಿವ  
ವಿಕ್ರಮಸ್ಯ" |

**ವಿಕ್ರಮಣ ವಿಕ್ರಮಣ** (ನಂ) 1. ಸಂಚರಿಸುವುದು, ನಡೆಯು-  
ವುದು. 2. ದೊಡ್ಡ ಹೆಜ್ಜೆಯಿಡುವುದು, ದಾಪುಗಾಲು  
ಹಾಕುವುದು. ವಿ + ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೫) | "ಛಲಯಸಿ ವಿಕ್ರಮಣೋ ಬಲಿಮದ್ಭುತವಾಮನ  
ಪದನಖನೀರಜನಿತಜನಪಾವನ" ಗೀತಗೋಂ ೧-೫ |

**ವಿಕ್ರಮಾದಿತ್ಯ ವಿಕ್ರಮಾದಿತ್ಯ** (ಪುಂ) ಉಜ್ಜಯಿನಿಯ  
ಅಧಿಪತಿಯಾದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ.

**ವಿಕ್ರಮಾರ್ಕ ವಿಕ್ರಮಾರ್ಕ** (ಪುಂ) ವಿಕ್ರಮಾದಿತ್ಯ ದೊರೆ.

**ವಿಕ್ರಮಿನ್ ವಿಕ್ರಮಿನ್** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ.  
ವಿಕ್ರಮಃ ನಿಯಮತಿಸಾಧನಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೩೭) |  
"ವಿಕ್ರಮಂ ಪೌರೂಷಂ ಪ್ರೋಕ್ತಃ ತದ್ವತ್ವಾತ್ ವಿಕ್ರಮೋ ಬುಧಃ" ಇತಿ  
ನಿರೂಪಿತಃ | "ಇಶ್ವರೋ ವಿಕ್ರಮೋ ಧನ್ವಿ" ವಿಂ ಸಂ |  
2. ಸಿಂಹ. (ವಿಂ) 3. ಪರಾಕ್ರಮಶಾಲಿಯಾದ, ವೀರ  
ನಾದ. "ವ್ಯೋಮಿನಿ ಕಥಮಪಿ ಚಕರ್ಥ ಪದಂ ವ್ಯಪದಿಷ್ಯಸೇ ಜಗತಿ  
ವಿಕ್ರಮೀತ್ಯತಃ" ಭಾಷಂ ೧೫-೨೮ |

**ವಿಕ್ರಯ ವಿಕ್ರಯ** (ಪುಂ) 1. ಮಾರಾಟ, ಕ್ರಯಮಾಡು-  
ವುದು, ಮಾರುವುದು. ಡುಕ್ರೀನ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯೇ) "ಅಕ್"  
(೩-೩-೫೬) | "ನಾನ್ಯದನ್ಯೇನ ಸಂಸೃಷ್ಟರೂಪಂ ವಿಕ್ರಯಮಹಂತಿ"  
ಮನುಂ ೮-೨೦೩ | 2. ಮಾರುಕಟ್ಟೆ, ಮಾರಾಟದ ಸ್ಥಳ.  
ವಿಕ್ರೀಯತೇಽಸ್ಮಿನ್ ಇತಿ ವಿಕ್ರಯದೇಶೋ ವಿಕ್ರಯಃ | "ವಿಕ್ರಯಾಘೋ  
ಘನಂ ಕಿಂಚಿತ್ ಗೃಹ್ಣೀಯಾತ್ಕುಲಸನ್ನಿಧಿ" ಮನುಂ ೮-೨೦೧ |

**ವಿಕ್ರಯಣ ವಿಕ್ರಯಣ** (ನಂ) ಮಾರುವುದು, ಮಾರಾಟ.  
ವಿ + ಡುಕ್ರೀನ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |

**ವಿಕ್ರಯಿಕ ವಿಕ್ರಯಿಕ** (ವಿಂ) ಮಾರುವವನು, ದ್ರವ್ಯ  
ವನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಅದರ ಬೆಲೆಯನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು,  
ವಸ್ತುವನ್ನು ಮಾರಿ ಅದರಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ವಿಕ್ರಯಣ  
ಜೀವತಿ—ವಿಕ್ರಯ "ಠನ್" (೪-೪-೧೩) | "ದೀಕ್ಷಿತಸ್ಯ  
ಕದರ್ಯಸ್ಯ ಕ್ರುತವಿಕ್ರಯಿಕಸ್ಯ ಚ | ತಕ್ಷಣಶ್ಚರ್ಮಾವಿಕರ್ತುಂ ಪುಂಶ್ಚಲ್ಯಾ  
ರಜಕಸ್ಯ ಚ | ಚಿಕಿತ್ಸಕಸ್ಯ ಯಚ್ಚಾನ್ತರ್ಮುಖ್ಯಂ ರಕ್ಷಿಣ-  
ಸ್ತಥಾ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೩೫-೨೯, ೩೦ |



**ವಿಕ್ರಯಿನ್ ವಿಕ್ರಯಿನ್** (ವಿಂ) ಮಾರುವವನು, ವಿಕ್ರಯಿಸುವವನು. ವಿಕ್ರೀಣಾತಿ — ವಿ + ಡು ಕ್ರೀನ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯ) “ಗಿನ್” (೩-೧-೧೩೪) ।

**ವಿಕ್ರಾಂತ ವಿಕ್ರಾಂತ** (ವಿಂ) 1. ಎರ, ಪರಾಕ್ರಮ. ವಿಕ್ರಾಮತಿ—ವಿ+ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕೋಪ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) । “ವಿಕ್ರಾಂತೇನಯಶಾಲಿಭಿಃ ಸುಸಚಿವೈಃ ಶ್ರೀವಕ್ರನಾಸಾದಿಭಿಃ” ಮುರಾಂ ೨-೨೩ । (ಪುಂ) 2. ಸಿಂಹ. (ನಂ) 3. ಹೆಜ್ಜೆಯಿಡುವುದು. 4. ಪರಾಕ್ರಮ, ಶೌರ್ಯ. 5. ವೈಕ್ರಾಂತ ಮಣ. [“ವೈಕ್ರಾಂತ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 6. ವಾಮನಾವತಾರದಲ್ಲಿ ವಿಷ್ಣುವು ಎರಡನೆಯ ಹೆಜ್ಜೆಯಿಟ್ಟ ಅಂತರಿಕ್ಷ. “ಹೇ ದ್ವಿತೀಯಪ್ರಕರಂ ತ್ವಂ ವಿಷ್ಣೋವಿಕ್ರಾಂತಂ ದ್ವಿತೀಯಪಾದಪ್ರಕ್ಷೇಪಣ ಜಿತಮನ್ತರಿಕ್ಷಮಸಿ” ।

**ವಿಕ್ರಾಂತಿ ವಿಕ್ರಾಂತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಶ್ವದ ಒಂದು ವಿಧ ಗತಿ, ಕುದುರೆಯ ಒಂದು ವಿಧ ನಡೆಗೆ. ವಿ+ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕೋಪ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) । “ವಿಕ್ರಾಂತಿस्तು ಪಲಾಯಿತಮ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 2. ಪಾದನ್ಯಾಸ, ಹೆಜ್ಜೆಯಿಡುವುದು. 3. ಪರಾಕ್ರಮ, ವೀರ್ಯ, ಶೌರ್ಯ.

**ವಿಕ್ರಾಯಕ ವಿಕ್ರಾಯಕ** (ವಿಂ) ವಿಕ್ರಯಿಸುವವನು, ವರ್ತಕ, ಮಾರುವವನು. ವಿ+ಡು ಕ್ರೀನ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯ) “ಫ್ಲು” (೩-೧-೧೩೩) ।

**ವಿಕ್ರಿಯಾ ವಿಕ್ರಿಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಾರ್ಪಾಟು, ಬದಲಾವಣೆ. ವಿ+ಡು ಕ್ರೀನ್ (ಕರಣ) “ಶಃ” (೩-೩-೧೦೦) । “ಶಮಶ್ರುಪ್ರವೃದ್ಧಿಜನಿತಾನನವಿಕ್ರಿಯಾಂಶ್ಚ ಪ್ಲಕ್ಷಾನ್ ಪ್ರರೋಹಜಟಿಲಾನಿವ ಮನ್ರಿವೃದ್ಧಾನ್” ರಘುಂ ೧೩-೭೧ । 2. ಮನೋವಿಕಾರ, ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಉದ್ರೇಕ. “ಪ್ರಯತ್ನ-ಸಂಸ್ತಮ್ಭಿತವಿಕ್ರಿಯಾಣಾಂ ಕಥಂಚಿದೀಶಾ ಮನಸಾಂ ಬಭೂವುಃ” ಕುರ್ಮಾಂ ೩-೩೪ । 3. ಎರಡು ಕಾರ್ಯದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅಪಚಾರ. “ಇತ್ಯಾಪ್ತವಚನಾದ್ರಾಮೋ ವಿನ್ಯೇಷ್ಯನ್ ವರ್ಣವಿಕ್ರಿಯಾಮ್” ರಘುಂ ೧೪-೪೮ । 4. ಸ್ವಭಾವದ ವ್ಯತ್ಯಾಸ, ಸ್ವಭಾವದ ಬದಲಾವಣೆ. 5. ಕೋಪ ಈರ್ಷ್ಯ ಮುಂತಾದುವುಗಳ ಮನೋಭಾವ. “ಲಿङ್ಗಮೃದಃ ಸಂವೃತವಿಕ್ರಿಯಾಸ್ತೇ ಹೃದಾಃ ಪ್ರಸಕ್ತಾ ಇವ ಗೂಢನಕ್ರಾಃ” ರಘುಂ ೭-೩೦ ।

**ವಿಕ್ರೀಣತ್ ವಿಕ್ರೀಣತ್** (ವಿಂ) ಮಾರುತ್ತಿರುವವನು, ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ಕೊಡುತ್ತಿರುವವನು. ವಿ+ಡು ಕ್ರೀನ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) । **ವಿಕ್ರೀಣತೀ ವಿಕ್ರೀಣತೀ**. “ಶಾನತ್” (೩-೨-೧೨೪) । **ವಿಕ್ರೀಣಾನ್ ವಿಕ್ರೀಣಾನ್**. “ಸಂಭೂಯ ವರ್ಣಿಜಾಂ ಪಞ್ಚಮನರ್ವಣೋಪರಂಭತಾಮ್ । ವಿಕ್ರೀಣತಾಂ ವಾ ವಿಹಿತೋ ದಂಡಃ ಕ್ಷಮಸಾಹಸಃ” ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೨೪೦ ।

**ವಿಕ್ರೀತ ವಿಕ್ರೀತ** (ವಿಂ) ವಿಕ್ರಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಾರಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಡು ಕ್ರೀನ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । “ಅದತ್ತತ್ಯಕ್ತವಿಕ್ರೀತಂ ಕೃತ್ವಾ ಸ್ವಂ ಲಭತೇ ಧನೀ” । ವಿಕ್ರೀತ-ಮಪಿ ವಿಕ್ರೇಯಂ ಪೂರ್ವಕೇತಯಗ್ಲಹತಿ” ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೨೪೪ ।

**ವಿಕ್ರೂಟ ವಿಕ್ರೂಟ** (ನಂ) 1. ಕೂಗಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ರಕ್ಷಣೆ ಗಾಗಿ ಕರೆಯುವುದು. ವಿ+ಕ್ರೂ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೇ ಚ) ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪) । 2. ಅಳುವುದು, ಕಿರಿಚುವುದು. 3. ನಿಂದೆ, ಬೈಗುಳ. (ವಿಂ) 4. ನಿಷ್ಕರವಾದ, ಕಠಿನವಾದ, ದಯೆಯಿಲ್ಲದ.

**ವಿಕ್ರೇತ ವಿಕ್ರೇತ** (ವಿಂ) ವರ್ತಕ, ಮಾರುವವನು. ವಿ+ಡು ಕ್ರೀನ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯ) “ತೃತ್” (೩-೧-೧೩೩) । “ವಿಕ್ರೇತು-ರ್ದೇಶನಾಚ್ಚುದ್ಧಿಃ ಸ್ವಾಮೀ ದ್ರವ್ಯಂ ನೃಪೋ ದಮಮ್” ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೭೦ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೪) । -ತೀ-ಕ್ರೀ.

**ವಿಕ್ರೇಯ ವಿಕ್ರೇಯ** (ವಿಂ) ವಿಕ್ರಯಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ, ಮಾರಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ವಿಕ್ರೇತುಂ ಯೋಗ್ಯಮ್—ವಿ+ಡು ಕ್ರೀನ್ (ದ್ರವ್ಯವಿನಿಮಯ) “ಯತ್” (೩-೧-೯೭) ।

**ವಿಕ್ಲವ ವಿಕ್ಲವ** (ವಿಂ) 1. ಮೂಢವಾದ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯವಿಲ್ಲದ. ವಿಕ್ಲವತೇ—ವಿ+ಕ್ಲಬ್ (ಗತೀ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ನಿಸರ್ಗದ್ವರ್ಬೋಧಮಬೋಧವಿಕ್ಲವಾಃ ಕ್ವ ಮೃಪತೀನಾಂ ಚರಿತಂ ಕ್ವ ಜನ್ತವಃ” ಕಿರಾಂ ೧-೬ । 2. ಭಯಗೊಂಡ, ಭೀತನಾದ. “ಆಚಕಾಙ್ಕ್ಷಾ ಧನಶಬ್ದವಿಕ್ಲವಾಃ ತಾ ವಿವೃತ್ಯ ವಿಶತೀರ್ಭುಜಾಂತರಮ್” ರಘುಂ ೧೯-೩೮ । 3. ಜುಗುಪ್ಸೆಹೊಂದಿದ, ಬೇಸರಗೊಂಡ. “ಮಮಾಪಿ ಕಾಷ್ಯಪಸುತಾಮನುಸ್ಮತ್ಯ ಮೃಗಯಾವಿಕ್ಲವಂ ಚೇತಃ” ಶಾಕುಂ ೨ । 4. ಶಕ್ತಿಕುಂದಿದ, ಬಳಲಿದ, ಸೋತಿಯವ. “ಪ್ರಸ್ಥಾನ-ವಿಕ್ಲವಗತೇರವಲಂಬನಾರ್ಥ” ಶಾಕುಂ ೪-೩ ।

**ವಿಕ್ಲಿಷ್ಣ ವಿಕ್ಲಿಷ್ಣ** (ವಿಂ) 1. ನೆನೆದಿರುವ, ಒದ್ದೆಯಾದ, ತೇವವಾದ. ವಿ+ಕ್ಲಿಷ್ (ಆದ್ರಿಭಾವೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) । 2. ಮುಖ್ಯನಿಂದ ಜೀರ್ಣವಾದ. 3. ಶಿಥಿಲವಾದ, ಕ್ಷೀಣವಾದ. “ವಿಕ್ಲಿಷ್ಣೋ ಜರಸಾ ಜಿಗೃಣ್ಣಿ ಶಿಗೃಣ್ಣಿ ಚ ವಾಚ್ಯವತ್” ಮೇದಿಂ । 4. ಮೆದುವಾದ, ಮೃದುವಾದ, ಕೋಮಲವಾದ.

**ವಿಕ್ಲಿಷ್ಣಿ ವಿಕ್ಲಿಷ್ಣಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೆದುವಾಗುವುದು, ಪಾಕದಿಂದ (ತುಡುಲ ಮೊದಲಾದುವು) ಮೃದುವಾಗುವುದು. ವಿ+ಕ್ಲಿಷ್ (ಆದ್ರಿಭಾವೇ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) ।

**ವಿಕ್ಲಿಷ್ಣ ವಿಕ್ಲಿಷ್ಣ** (ನಂ) 1. ತಪ್ಪು ಉಚ್ಚಾರಣೆ, ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾದ ಉಚ್ಚಾರಣೆ. (ವಿಂ) 2. ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಂದರೆ ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಕ್ಲಿಷ್ (ವಿವಾಧನೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) ।



**ವಿಕಲೇದ ವಿಕಲೇದ** (ಪುಂ) 1. ಒಡ್ಡೆಯಾಗುವುದು, ತೇವವಾಗುವುದು. 2. ಕರಗುವುದು, ದ್ರವವಾಗುವುದು. ವಿ + ಕಿಲ್ (ಆದ್ರಿಭಾವೇ) "ಘ್" (3-3-18)। 3. ಮೆದುವಾಗುವುದು.

**ವಿಕಲೇದನ ವಿಕಲೇದನ** (ನಂ) 1. ತೇವಮಾಡುವುದು, ಒಡ್ಡೆ ಮಾಡುವುದು. ವಿ + ಕಿಲ್ (ಆದ್ರಿಭಾವೇ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ಕರಗಿಸುವುದು. 3. ಮೆದುವಾಡುವುದು.

**ವಿಕಲೇಶ ವಿಕಲೇಶ** (ಪುಂ) ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾದ ಉಚ್ಚಾರಣೆ, ಬಹಳ ಕಷ್ಟದಿಂದ ಮಾಡುವ ಉಚ್ಚಾರಣೆ. ವಿ + ಕಿಲ್ (ಆದ್ರಿಭಾವೇ) "ಘ್" (3-3-18)।

**ವಿಕೃತ ವಿಕೃತ** (ನಂ) 1. ಗಾಯದ ಹುಣ್ಣು, ಪ್ರಣ. ವಿ + ಕ್ಷು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (3-4-62)। (ವಿಂ) 2. ಗಾಯಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ + ಕ್ಷು "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

**ವಿಕ್ಷಾವ ವಿಕೃತ** (ಪುಂ) 1. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು. ವಿ + ಕ್ಷು (ಶಬ್ದೇ) "ಘ್" (3-3-24)। 2. ಸೀನುವುದು, ಸೀನುವ ಶಬ್ದ. "ಯಾತ ಯುಯಂ ಯಮಶ್ರಾಯಂ ದಿಶಂ ನಾಥೇನ ದಕ್ಷಿಣಾಮ್"। ವಿಕ್ಷಾವೇಸ್ತೋಯವಿಶ್ರಾವಂ ತರ್ಜಯಂತೋ ಮಹೋದಧಿಃ" ಮೃತ್ರಿಂ ೭-೩೬।

**ವಿಕ್ಷಿಪತ್ ವಿಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ನೀಡುತ್ತಿರುವ, ಮುಂದಕ್ಕೆ ಚಾಚುತ್ತಿರುವ. 2. ಎಸೆಯುತ್ತಿರುವ. 3. ಬಿಡುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರಯೋಗಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. (ಗಮನವನ್ನು) ಬೇರೆ ಕಡೆಗೆ ತಿರುಗಿಸುತ್ತಿರುವ, ಮನಸ್ಸನ್ನು ಬೇರೆ ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಎಳೆಯುತ್ತಿರುವ. 5. ತಿರಸ್ಕರಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಶತ್" (3-2-124)। "ವಿಕ್ಷಿಪನ್ ಭುವಿ ನಿಸ್ತ್ರಿಶೋ ವಕ್ತ್ರಪುಷ್ಪಾಣಿ ವೇರಿಣಾಮ್" ಯಾದಂ ೨೨-೧೪೦। 6. ಇಡುತ್ತಿರುವ, ಇರಿಸುತ್ತಿರುವ. 7. ಎರಚುತ್ತಿರುವ, ಚೆಲ್ಲುತ್ತಿರುವ. "ವಿಕ್ಷಿಪನ್ ಭುವಿ ನಿಸ್ತ್ರಿಶಃ" ಯಾದಂ ೨೨-೧೪೦।

**ವಿಕ್ಷಿಪ್ತ ವಿಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟು, ಬಿಸಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಎರಚಲ್ಪಟ್ಟು, ಚೆಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ + ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। "ವಾಯುವಿಕ್ಷಿಪ್ತಕುಸುಮೇಸ್ತಥಾನ್ಯೇರಪಿ ಪಾದಪೈಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೭-೭। 3. ಬೇರೆ ಕಡೆಗೆ ತಿರುಗಿದ (ಮನಸ್ಸು). 4. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. (ಬಾಣ). 5. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 6. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟು. 7. ಅಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಅಚ್ಚಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

**ವಿಕ್ಷೇಪ ವಿಕೃತ** (ಪುಂ) 1. ಇಡುವುದು, ಇರಿಸುವುದು. 2. ಎರಚುವುದು, ಚೆಲ್ಲುವುದು. ವಿ + ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ)

"ಘ್" (3-3-18)। 3. ಬಿಡುವುದು, ಪ್ರಯೋಗಿಸುವುದು. 4. (ಮನಸ್ಸನ್ನು) ಬೇರೆ ಕಡೆಗೆ ತಿರುಗಿಸುವುದು. 5. ಎಸೆಯುವುದು, ಬಿಸಾಡುವುದು. 6. ಅಡಿಸುವುದು, ಅಚ್ಚಾಡಿಸುವುದು. "ಲಾಙ್ಗೂಲವಿಕ್ಷೇಪವಿಸರ್ಪಿಶೋಭೇರಿತಸ್ತತಃ ಚಂದ್ರಮರೀಚಿಗೋರೈಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೧೩। 7. ನೀಡುವುದು, ಮುಂದಕ್ಕೆ ಚಾಚುವುದು. "ಸಂಹಾರವಿಕ್ಷೇಪಲಘುಕ್ರಿಯೇಣ ಹಸ್ತೇನ ತೀರಾಭಿಮುಖಃ ಸಶಬ್ದಮ್" ರಘುಂ ೪-೪೪। ವಿ + ಕ್ಷಿಪ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। -ಕ್ಷೇಪಣಮ್ -ಕ್ಷೇಪಣಮ್.

**ವಿಕ್ಷೋಭ ವಿಕೃತ** (ಪುಂ) 1. ಚಲಿಸುವುದು. 2. ಕಲಕುವುದು, ಕದಡುವುದು. 3. ತಿಕ್ಕಾಟ. 4. ಹೊಡೆತ, ಬಡಿತ. ವಿ + ಕ್ಷು (ಸಂಚಲನೆ) "ಘ್" (3-3-18)। "ಸರಸೀ-ಪ್ಪರವಿಂದಾನಾಂ ವೀಚಿವಿಕ್ಷೋಭಶೀತಲಮ್" ರಘುಂ ೧-೪೩।

**ವಿಕ್ಷುರ ವಿಖುರ** (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ. "ಪಲಾಶೋ ವಿಕ್ಷುರಃ ಶಂಕುಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 2. ಜೋರ, ಕಳ್ಳ.

**ವಿಖ್ಯ ವಿಖ್ಯ** (ವಿಂ) ನಾಸಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು, ಮೂಗಿಲ್ಲದವನು. ವಿಗತಾ ನಾಸಿಕಾ ಯಸ್ಯ। ನಾಸಿಕಾಯಾಃ ಖ್ಯಾದೇಶಃ (ವಾಂ ೮-೪-೨೮)।

**ವಿಖ್ಯಾತ ವಿಖ್ಯಾತ** (ವಿಂ) ಪ್ರಖ್ಯಾತಿಹೊಂದಿದ, ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಹೊಂದಿದ. ವಿ + ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

**ವಿಖ್ಯಾತಿ ವಿಖ್ಯಾತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ. ವಿ + ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)।

**ವಿಖ್ಯಾಪನ ವಿಖ್ಯಾಪನ** (ನಂ) ಪ್ರಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವುದು. ವಿ + ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

**ವಿಖ್ಯಾಪಯತ್ ವಿಖ್ಯಾಪಯತ್** (ವಿಂ) ಪ್ರಸಿದ್ಧಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ.

**ವಿಖ್ಯಾಪಯಿತ್ ವಿಖ್ಯಾಪಯಿತ್** (ವಿಂ) ಪ್ರಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವವನು. ವಿ + ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) + ಣಿಕ್ "ತೃಕ್" (3-೧-133)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ಯಿತ್ರಿ.

**ವಿಗಣನ ವಿಗಣನ** (ನಂ) ಸಾಲ ಅಥವಾ ಕರ (ಕಂದಾಯ) ವನ್ನು ತೀರಿಸುವುದು, ಸಾಲವನ್ನು ತೀರಿಸುವುದು ಮತ್ತು ಕಂದಾಯ ಪಾವತಿಮಾಡುವುದು. ವಿ + ಗಣ (ಸಂಖ್ಯಾನೆ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। ವಿಗಣನಮ್ ಕೃಣಾದೇಃ ನಿಯತಿನಮ್ ಸಿಂ ಕೌಂ (೧-೩-೩೬)।

**ವಿಗತ ವಿಗತ** (ವಿಂ) 1. ಹೊರಟುಹೋದ, ತೆರಳಿದ. ವಿ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (3-4-62)। 2. ಬಿಟ್ಟು



ಹೋದ, ಅದೃಶ್ಯವಾದ. “ವಿಗತತಿಮಿರಪಕ್ಷಂ ಪಶ್ಯತಿ  
ವ್ಯೋಮ ಯಾವತ್ ಧುವತಿ ವಿರಹಖಿನ್ನ: ಪಕ್ಷತಿ ಯಾವದೇವ”  
ಮಾಘಂ ೧೧-೨೬. 3. ಇಲ್ಲದಿರುವ, ರಹಿತವಾದ. “ವಿಗತ-  
ಸಸ್ಯಜಿಘತ್ಸಾಘಟಯತ್ ಕಲಮಗೋಪವರ್ಣನ ಮೃಗವ್ರಜಮ್” ಮಾಘಂ  
೬-೪೯. 4. ಪ್ರಕಾಶರಹಿತವಾದ, ಕಾಂತಿಶೂನ್ಯವಾದ,  
ಕೆತ್ತಲಾಗಿರುವ. 5. ಶಾಂತನಾಗಿರುವ. “ವಿಗತೋ ನಿಘ್ರಮೇ  
ವೀತೇ” ಹೇಮಂ. (ನಂ) 6. ಪಕ್ಷಿಗಳ ಗಮನ, ಹಕ್ಕಿಗಳ  
ಹಾರಾಟ. ವೀನಾಂ ಪಕ್ಷಿಣಾಂ ಗತಂ ಗಮನಮ್. “ವಿಗತಂ ವಿಗತಂ  
ಲಲಿತಂ ಲಲಿತಮ್” ಭट्टಿಂ ೧೦-೯.

**ವಿಗತಕಲ್ಮಷ ವಿಗತಕಲ್ಮಷ** (ವಿಂ) ಪಾಪವನ್ನು ಕಳೆದು  
ಕೊಂಡಿರುವ, ಶುದ್ಧತನಾದ. ವಿಗತಂ ಕಲ್ಮಷಂ ಯಸ್ಯ.

**ವಿಗತಸ್ಪೃಹ ವಿಗತಸ್ಪೃಹ** (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದವನು,  
ಅಸೆಯನ್ನು ತೊರೆದವನು. ವಿಗತಾ ಸ್ಪೃಹಾ ಯಸ್ಮಾತ್.

**ವಿಗತಾರ್ತವಾ ವಿಗತಾರ್ತವಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಟ್ಟುನಿಂತು  
ಹೋದ ಹೆಂಗಸು. ವಿಗತಮಾರ್ತವಂ ರಜೋಽಸ್ಯಾಃ.

**ವಿಗಮ ವಿಗಮ** (ಪುಂ) 1. ವಿರಾಮ, ಅವಸಾನ, ಕೊನೆ.  
ವಿ + ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಅಪ್” (೩-೩-೪೮). “ಚಾಹ  
ನೃತ್ಯವಿಗಮೇ ಚ ತನ್ಮುಖಂ ಸ್ವೇದಭಿನ್ನತಲಿಕಂ ಪರಿಶ್ರಮಾತ್”  
ರಘುಂ ೧೯-೧೪. 2. ನಾಶ, ಅಳಿವು. “ಆಶಾಸ್ಯಮೀತಿ-  
ವಿಗಮಪ್ರಭೃತಿ ಪ್ರಜಾನಾಮ್” ಮಾಲಂ ೪-೨೦.

**ವಿಗರ್ಹಣ ವಿಗರ್ಹಣ** (ನಂ) 1. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. ವಿ + ಗರ್ಹ  
(ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪). 2. ಹೆದರಿಸು  
ವಿಕೆ. “ಕೃಷ್ಣಂ ಚ ಭವತೋ ದ್ವೇಷ್ಯೇ ವಸುಧೇವವಿಗರ್ಹಣಾತ್”.

**ವಿಗರ್ಹಣಾ ವಿಗರ್ಹಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ.  
ವಿ + ಗರ್ಹ (ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) + ಣಿच् “ಯುच्” (೩-೩-೧೦೭).  
“ಪ್ರಾಪ್ತಾ ನಾಮ ವಿಗರ್ಹಣಾ ಸ್ಥಿತಿಮತಾಂ ಮಧ್ಯೇಽನುಜಾನಾಮಪಿ”  
ವೇಣೀಂ ೧-೧೨. 2. ಬೆದರಿಕೆ.

**ವಿಗರ್ಹಿತ ವಿಗರ್ಹಿತ** (ವಿಂ) 1. ನಿಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ದೂಷಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಗರ್ಹ (ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨).  
“ವಿಗರ್ಹಿತಂ ಧರ್ಮಧನೈವಿವರ್ಹಣಂ ವಿಶಿಷ್ಯ ವಿಶ್ವಾಸಜುಷಾಂ  
ದ್ವಿಷಾಮಪಿ” ನೈಷಂ ೧-೧೩೧. 2. ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರತಿ  
ಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡ್ಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ನೀಚ, ಅಸಭ್ಯ,  
ಅಧಮ. 4. ದುರ್ಜನ.

**ವಿಗಲತ್ ವಿಗಲತ್** (ವಿಂ) 1. ಕಡಮೆಯಾಗುತ್ತಿರುವ,  
ಇಳಿಮುಖವಾಗುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಗಲ (ಅವಸ್ರಂಸನೆ) +  
ಣಿच् “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪). “ಮಧ್ಯಮಂದವಿಗಲತ್ಪಪ-  
ಮಿಷನ್ವಕ್ಷುರ್ಮಿಷಿತಪಕ್ಷಮ ದಧತ್ಯಾ” ಮಾಘಂ ೧೦-೧೭. 2. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ  
ಜಾರುತ್ತಿರುವ. 3. ಹೊರಡುತ್ತಿರುವ.

“ವಿಗಲನ್ಮಧುವ್ರತಕುಲಾಶ್ರುಜಲಂ ನ್ಯಮಿಮಿಲದಂಜನಯನಂ ನಲಿನೀ”  
ಮಾಘಂ ೯-೧೧. 4. ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುತ್ತಿರುವ, ಕೆಳಗೆ ಉದುರು  
ತ್ತಿರುವ. “ಕಬರೀಕಲಾಪಮಂಸಾವಸಕ್ತಂ ವಿಗಲತ್ಪ್ರಸೂನಮ್”  
ಕುಮಾರಂ ೯-೨೧.

**ವಿಗಲಿತ ವಿಗಲಿತ** (ವಿಂ) 1. ಜಾರಿದ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಸರಿದ.  
ವಿಶೇಷಣ ಗಲಿತಃ. “ವಿಗಲಿತವಸನಂ ಪರಿಹೃತರಶನಂ ಧಟಯ  
ಜಘನಮಪಿಧಾನಮ್” ಗೀತಗೋಂ. 2. ಜೆನುಗಿದ, ಸ್ರವಿಸಿದ.  
3. ಶಿಥಿಲವಾದ, ಸಡಿಲವಾದ. “ಕೌಶೇಯಂ ವ್ರಜದಪಿ ಗಾಢತಾ-  
ಮಜಙ್ಗಂ ಸಸ್ರಸೇ ವಿಗಲಿತನೀವಿ ನೇರಜಾಕ್ಷಯಾಃ” ಮಾಘಂ ೮-೬. 4. ನಾಶವಾದ,  
ಅಳಿದುಹೋದ. “ಸಿತಕರವಪುಷಾಸೌ  
ಲಕ್ಷ್ಯತೇ ಸಂಪ್ರತಿ ದ್ವಿವಿಗಲಿತಕಿರಣೇನ ವ್ಯಜ್ಜಿತಕೇಷಣೇವ”  
ಮಾಘಂ ೧೧-೬೩. 5. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬಿದ್ದಿರುವ. “ಸ್ತ್ರೀಲೋಕಃ  
ಪರಿಕಲಯಾಂಚಕಾರ ತುಲ್ಯಂ ಪಲ್ಯಂ ದ್ವಿವಿಗಲಿತಹಾರಚಾರುಭಿಃ ಸ್ವೈಃ”  
ಮಾಘಂ ೮-೯.

**ವಿಗಾಡ ವಿಗಾಡ** (ವಿಂ) 1. ಅತಿಯಾದ, ಬಹಳವಾದ,  
ಹೆಚ್ಚಾದ. ವಿ + ಗಾಹ್ (ವಿಲೋಡನೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨).  
“ಅವಿನ್ದತಸ್ತ್ವಾಮಮಿತಾಮೃತೋದಧಿ ವಿಗಾಡತೃಷ್ಣಾವಿವಶಾಂತ-  
ರಾತ್ಮನಃ” ಯಾದಂ ೧೪-೪೦. 2. ನೀರಿನ ಒಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿ  
ಸಿದ, ನೀರಿನೊಳಗೆ ಮುಳುಗಿ ಸ್ನಾನಮಾಡಿದ. “ವಿಗಾಡ-  
ಮಾತ್ರೇ ರಮಣಿಭಿರಂಭಸಿ ಪ್ರಯತ್ನಸಂವಾಹಿತಪೀವರೂಢಿಃ”  
ಕಿರಾಂ ೮-೩೧.

**ವಿಗಾಡ ವಿಗಾಡ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಒಳಗೆ ನುಗ್ಗುವವನು, ಒಳಗೆ  
ಪ್ರವೇಶಿಸುವವನು. 2. ನೀರಿನೊಳಗೆ ಮುಳುಗುವವನು,  
ಮುಳುಗಿ ಸ್ನಾನಮಾಡುವವನು. ವಿ + ಗಾಹ್ (ವಿಲೋಡನೆ)  
“ತೃಕ್” (೩-೧-೧೩೩). “ವಿಗಾಡಾರಂ ವನಸ್ಯಾಸೌ ಶತ್ರುಣಾಂ  
ಗಾಹಿತಾ ಕಪಿಃ” ಭट्टಿಂ ೯-೨೯.

**ವಿಗಾನ ವಿಗಾನ** (ನಂ) ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. ವಿಗ್ರಹಂ ಗಾನಮ್.

**ವಿಗಾಹ ವಿಗಾಹ** (ಪುಂ) 1. ನೀರಿನೊಳಗೆ ಇಳಿದು ಸ್ನಾನ  
ಮಾಡುವುದು. ವಿ + ಗಾಹ್ (ವಿಲೋಡನೆ) “ಘನ್”  
(೩-೩-೧೮). 2. ಒಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು.

**ವಿಗಾಹನ ವಿಗಾಹನ** (ನಂ) 1. ಒಳಗೆ ನುಗ್ಗುವುದು, ಒಳಗೆ  
ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು. ವಿ + ಗಾಹ್ (ವಿಲೋಡನೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೪). 2. ನೀರಿನೊಳಗೆ ಇಳಿದು ಸ್ನಾನಮಾಡು  
ವುದು.

**ವಿಗಾಹನೀಯ ವಿಗಾಹನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರವೇಶಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. 3. ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಅರ್ಹ  
ವಾದ. ವಿ + ಗಾಹ್ (ವಿಲೋಡನೆ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬).  
“ವಿಗಾಹನೀಯಾಃ ಪ್ರತಿಭಾಂತಿ ವೀಚಿಕಾ ಮರೀಚಿಕಾನಾಮಪಿ



ಮೋಗಸಂಪದಾಮ್" ಧಾ. ೧೪-೫೦. 4. ಇಳಿದು ಸ್ನಾನ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 5. -ಸ್ನಾನಮಾಡಲು ಶಕ್ತವಾದ. 6. -ಸ್ನಾನಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೬).  
-ಗಾಹಿತವ್ಯ: -ಗಾಹಿತವ್ಯಃ, -ಗಾಹವ್ಯ: -ಗಾಹವ್ಯಃ.

**ವಿಗಾಹಮಾನ ವಿಗಾಹಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರವೇಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ಬಳಗಿ ನುಗ್ಗುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ಗಾಹ (ವಿಲೋಢನೆ) "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಸ್ವಚ್ಛಂದಮೇಕವರಮುಜ್ಜವಲ-ದಾನಶಕ್ತಿಮುತ್ಸೇಕಿನಾ ಬಲಮದೇನ ವಿಗಾಹಮಾನಮ್" ಮೃದ್ಧಾಂ ೧-೨೬. 2. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಇಳಿದು ಸ್ನಾನಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಕ್ಷೋಭೆಯುಂಟುಮಾಡುತ್ತಿರುವ. "ನಮೋ ವಿಮಾನೇನ ವಿಗಾಹಮಾನೋ ಮನೋತಿವೇಗೇನ ಜಗಾಮ ತತ್ರ" ಕುಮಾಂ ೧೧-೪.

**ವಿಗಾಹ್ಯ ವಿಗಾಹ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರವೇಶಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಇಳಿದು ಸ್ನಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ವಿ+ಗಾಹ (ವಿಲೋಢನೆ) "ಪ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪).

**ವಿಗಾಹ್ಯಮಾನ ವಿಗಾಹ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರವೇಶಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ನೀರಿನೊಳಗೆ ಇಳಿದು ಸ್ನಾನಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ಗಾಹ (ವಿಲೋಢನೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಋತ್ವಾಪಣಂ ರಾಜಪಥಂ ಸ ಪಶ್ಯನ್ ವಿಗಾಹ್ಯ-ಮಾನಾಂ ಸರಯುಂ ಚ ನೌಭಿ:" ರಘುಂ ೧೪-೩೦.

**ವಿಗೀತ ವಿಗೀತ** (ವಿಂ) 1. ನಿಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ವಿ+ಗೈ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). 2. ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿಶೇಷಣ ಗೀತಮ್. 4. ತಪ್ಪಾಗಿ ಹಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿರುದ್ಧ ಗೀತಮ್. "ಯಶ್ಚಾಧರೋತ್ತರಾನರ್ಥಾನ್ ವಿಗೀತಾಸ್ತಾವಬುದ್ಧ್ಯತೇ" ಮನುಂ ೮-೫೩.

**ವಿಗೀತಿ ವಿಗೀತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಿಂದೆ, ದೋಷಣೆ. 2. ತಪ್ಪಾಗಿ ಹೇಳುವುದು, ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಹೇಳುವುದು. ವಿರುದ್ಧಾ ಗೀತಿ:

**ವಿಗುಣ ವಿಗುಣ** (ವಿಂ) 1. ವಿರುದ್ಧವಾದ ಗುಣವುಳ್ಳ, ವಿಪರೀತವಾದ ಗುಣವುಳ್ಳ. ವಿರುದ್ಧೋ ಗುಣೋ ಯಸ್ಯ. "ಫಲೇ-ಹೀನಾ ವೃಕ್ಷಾ ವಿಗುಣವಿಧಿಯೋಗಾದಿವ ನಯಾ:" ಮೃದ್ಧಾಂ ೬-೧೧. 2. ಗುಣಶೂನ್ಯನಾದ, ಯಾವುದೊಂದು ಗುಣವೂ ಇಲ್ಲದ. ವಿಗತೋ ಗುಣೋ ಯಸ್ಯ. "ಅವಸನ್ನತಾಪಮತಮಿಸ್ತಮಭಾವಪದೋ-ಛತೇವ ವಿಗುಣಸ್ಯ ಗುಣ:" ಮಾಘಂ ೯-೧೨. 3. ದಾರವಿಲ್ಲದ, ಸೂತ್ರವಿಲ್ಲದ. 4. ಮೌರ್ವಿಯಿಲ್ಲದ, ಹೆದೆ (ತೊಗಲಿನ ಹಗ್ಗ) ಯಿಲ್ಲದ (ಧನುಸ್ಸು).

**ವಿಗೃಹ ವಿಗೃಹ** (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ರಹಸ್ಯವಾದ, ಬಹಳ ಗುಟ್ಟಾದ. ವಿಶೇಷಣ ಗೃಹಃ. 2. ನಿಂದಿತವಾದ, ತೆಗಳಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಿಗೃಹೋ ಗೃಹಿತೇಷು ಚ. ಗುಪ್ತೇಷು ತ್ರಿಭು" ಮೇದಿಂ.

**ವಿಗೃಹಿತ ವಿಗೃಹಿತ** (ವಿಂ) 1. ಬಲಾತ್ಕಾರವಾಗಿ ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಲಾತ್ಕಾರವಾಗಿ ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). 2. ಎದುರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಪ್ರತಿಭಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡ್ಡಿಯುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಬನ್ಧುನಾ ವಿಗೃಹಿತೋಽಹಂ ಭಯಾಂಸಂ ಜೀವಕಃ ಕಥಮ್" ಮೃದ್ಧಿಂ ೬-೮೬.

**ವಿಗ್ನ ವಿಗ್ನ** (ವಿಂ) ಭಯಗ್ರಸ್ತವಾದ, ಹೆದರಿದ. ಔವಿಜಿ (ಭಯಚಲನಯೋಃ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). ನಿಷ್ಠಾ-ತಕಾರಸ್ಯ ನತ್ವಮ್ (೮-೨-೪೫). "ಮಹತಾ ಸದಗನ್ಧೇನ ತಸ್ಯ ವಿಗ್ನಾ ವಿಬಂಧಮು:" ಧಾ. ೧೬-೨೦.

**ವಿಗ್ರ ವಿಗ್ರ** (ವಿಂ) ಮೂಗಿಲ್ಲದವನು, ಮೂಗನ್ನು ಕಳೆದು ಕೊಂಡವನು. ವಿಗತಾ ನಾಸಿಕಾ ಯಸ್ಯ, ನಾಸಿಕಾಶಬ್ದಸ್ಯ ಪ್ರಾದೇಶಃ (ವಾಂ ೫-೧-೧೧೮). "ವಿಗ್ರಸ್ತು ಗತನಾಸಿಕಃ" ಅಮಂ.

**ವಿಗ್ರಹ ವಿಗ್ರಹ** (ಪುಂ) 1. ದೇಹ, ಶರೀರ. ವಿವಿಧಂ ಸುಖಂ ಗೃಹ್ಣಾತಿ—ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). ವಿವಿಧವ್ಯಾಧಿಭಿಃ ಗೃಹ್ಯತೇ ವಾ—ಗ್ರಹ "ಅಪ್" (೩-೩-೫೮). "ಕುಸುಮಕಾಮೈಕಕಾಮೈಕಸಂಹತಿದ್ರವತಶಿಲೀಮುಖಖಂಡಿತವಿಗ್ರಹಾ:" ಮಾಘಂ ೬-೧೬. 2. ಪ್ರಣಯ ಕಲಹ, ಪ್ರೀತಿಯ ಜಗಳ. "ಕರುಣಮಪಿ ಸಮರ್ಥಂ ಮಾನಿನಾಂ ಮಾನಭೇದೇ ಉದಿತಮುದಿತಮಸ್ಯಂ ಯೋಷಿತಾಂ ವಿಗ್ರಹೇಷು" ಮಾಘಂ ೧೧-೩೫. 3. ಯುದ್ಧ, ಕದನ, ಸಂಗ್ರಾಮ. ರಾಜನಲ್ಲಿರಬೇಕಾದ ಆರು ಗುಣಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. "ಸನ್ನಿಹ ಚ ವಿಗ್ರಹಂ ಚೈವ ಯಾನಮಾಸನಮೇವ ಚ. ದ್ವೇಷಿಭಾವಂ ಸಂಶ್ರಯಂ ಚ ಷಡ್ಗುಣಾಂಶ್ಚಿಂತಯೇತ್ಸದಾ" ಮನುಂ. ಯುದ್ಧವು ಪ್ರಕಾಶಯುದ್ಧ ಕೂಟಯುದ್ಧ ಮೌನಯುದ್ಧ ಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. "ವಿಗ್ರಹಸ್ತವ ಶಕ್ತೇಣ ಬೃಹಸ್ಪತಿ-ಪುರೋಹಿತಾ. ಸಾರ್ಥ ಕುಮಾರಸೇನಾನ್ಯಾ ಶೂನ್ಯಶ್ವಾಸೀತಿ ಕೋ ನಯ:" ಮೃದ್ಧಿಂ ೫-೭. 4. ವಿಭಾಗ, ಒಂದು ಪಾಲು. 5. ವಿಸ್ತರಿಸುವುದು. "ವಿಗ್ರಹೋ ಯುಷಿ ವಿಸ್ತಾರೇ ಪ್ರವಿಭಾಗಶರೀರಯೋಃ" ಹೇಮಂ. 6. ಸಮಸ್ತ ಪದಗಳ ಅರ್ಥವು ಸರಿಯಾಗಿ ತಿಳಿಯುವಂತೆ ಪದಗಳನ್ನು ಬಿಡಿಸಿ ಹೇಳುವ ವಾಕ್ಯ, ಸಮಾಸ ವೃತ್ತಿಯೋಗ್ಯವಾದ ವಿಭಕ್ತಿಯಂತೆ ಪದಗಳ ಸಮೂಹ. "ವೃತ್ತರ್ಥಾವಿವಿಧಕಂ ವಾಕ್ಯಂ ವಿಗ್ರಹಃ" ಸಿಂ ಕೌಂ. 7. ಪಕ್ಷಿಗಳನ್ನು ಹಿಡಿಯುವುದು. ವೀನಾಂ ಪಕ್ಷಿಣಾಂ ಗ್ರಹೋ ಗ್ರಹಣಮ್.

**ವಿಗ್ರಹವತ್ ವಿಗ್ರಹವತ್** (ವಿಂ) ಶರೀರವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ, ಮೂರ್ತಿಮತ್ತಾದ. ವಿಗ್ರಹೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪). "ಏಷ ವಿಗ್ರಹವಾನ್ ಭರ್ಮ:" ಸ್ವಿರ್ಯಾಂ "ಛೀಪ್" (೪-೨-೬). ವಿಗ್ರಹವತೋ ವಿಗ್ರಹವತಃ. "ತ್ರಯಿ ವಿಗ್ರಹವತ್ಯೇವ ಸಮಮರ್ಯಾತ್ಮವಿಧಯಾ" ಮಾಲಂ ೧-೧೪.



ವಿಘ್ರಹಾರ ವಿಗ್ರಹಾವರ (ನಂ) ಪೃಷ್ಠಭಾಗ, ದೇಹದ  
ಹಿಂಭಾಗ. ವಿಘ್ರಹವಾಣೋತಿ- ಆ + ವೃ (ವರಣೆ) "ಅಚ್"  
(೩-೧-೧೩೪) ।

ವಿಘಟನ ವಿಘಟಿನ (ನಂ) 1. ಒಡೆಯುವುದು, ಬೇರ್ಪಡು  
ವುದು, ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗುವುದು. ವಿ + ಘಟ (ಘಟಾಯಾಮ್)  
ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಒಡೆಯುವುದು,  
ಬೇರ್ಪಡಿಸುವುದು, ಪ್ರತ್ಯೇಕಿಸುವುದು. ವಿ + ಘಟ + ಣಿಚ್  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 3. ಚೆದರಿಹೋಗುವುದು,  
ಪ್ರಸರಿಸುವುದು. 4. ನಾಶ, ಅಳಿವು. 5. ನಾಶಮಾಡು  
ವುದು, ಹಾಳುಮಾಡುವುದು.

ವಿಘಟನೀಯ ವಿಘಟಿನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ಬೇರ್ಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಬೇರ್ಪಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ. 4. ಬೇರ್ಪಡಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ವಿ + ಘಟ  
(ಘಟಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । 5.  
ಚೆದರಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ಚೆದರಿಸಬೇಕಾದ. 7. ಚೆದರಿಸಲು  
ಯೋಗ್ಯವಾದ. 8. ಚೆದರಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 9. ನಾಶ  
ಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 10. ನಾಶಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 11. ನಾಶ  
ಪಡಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 12. ನಾಶಪಡಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ.  
"ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) । -ಘಟಿತವ್ಯಮ್ -ಘಟಿತವ್ಯಮ್.

ವಿಘಟಿಕಾ ವಿಘಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಘಟಿಗೆ, ಘಟಿಗೆಯ  
60ನೇ ಒಂದು ಭಾಗ.

ವಿಘಟಿತ ವಿಘಟಿತ (ವಿಂ) 1. ಒಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೇರ್ಪಡಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಘಟ (ಘಟಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:"  
(೩-೨-೧೦೨) । 2. ಚೆದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ನಾಶಪಡಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪಾಲಸ್ತಸ್ಯ ಜಠಾಯುಷಾ ವಿಘಟಿತ: ಕಾಣ್ಣಾ-  
ಯಸೋಽಯಂ ರಥಸ್ತೇ ಚೇತೇ ಪುರತ: ಪಿಶಾಚವದನಾ: ಕಚ್ಛಾಲಶೇಷಾ:  
ಸರಾ:" ತಂ ರಾಂ ೩-೪೩. 4. ವಿಶ್ಲೇಷಣೆಹೊಂದಿದ,  
ಸಂಬಂಧಬಿಟ್ಟಿರುವ, ದೂರಸರಿದಿರುವ. "ಘಟಿತ-  
ವಿಘಟಿತ: ಪ್ರಿಯಸ್ಯ ವಕ್ಷಸ್ತಃ ಪುನಿ ಕನ್ದುಕವಿಭ್ರಮಂ ಬಭಾರ"  
ಮಾಘಂ ೭-೧೫ ।

ವಿಘಟನ ವಿಘಟಿನ (ನಂ) 1. ಹೊಡೆತ, ತಿಕ್ಕಾಟ,  
ಉಜ್ಜಾಟ, ಘರ್ಷಣೆ. ವಿ + ಘಟ (ಚಲನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೫) । "ಗಾಮ್ಭೀಯಂ ದಧದಪಿ ರನ್ತುಮಜ್ಞನಾಭಿ:  
ಸಂಕ್ಷೋಭಂ ಜಘನವಿಘಟನೇನ ನೇತ:" ಮಾಘಂ ೮-೨೬ ।  
2. (ಕರಾರನ್ನು) ಮುರಿಯುವುದು, ಉಲ್ಲಂಘಿಸುವುದು.  
3. ಚೆದರಿಸುವುದು, ಓಡಿಸುವುದು.

ವಿಘಟನೀಯ ವಿಘಟಿನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಅತಿಯಾಗಿ  
ಕುಲುಕಿಸಬೇಕಾದ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಅಳಿಸಬೇಕಾದ. ವಿ + ಘಟ

(ಚಲನೆ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । 2. ಉಜ್ಜ  
ಬೇಕಾದ, ತಿಕ್ಕಬೇಕಾದ, ತೀಡಬೇಕಾದ.

ವಿಘಟಿತ ವಿಘಟಿತ (ವಿಂ) 1. ಉಜ್ಜಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿಕ್ಕಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಹೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಘಟ (ಚಲನೆ) "ಕ್ತ:"  
(೩-೨-೧೦೨) । "ತಸ್ಯಂತೀ ಚಲಶಫರೀವಿಘಟಿತೋರ್ವಾಮೋ-  
ರತಿಸಯಮಾಪ ವಿಭ್ರಮಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೮-೨೪ । 2. ಚೆದರಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ತದೀಯಮಾತಃ ಪಟಾವಿಘಟಿತ:  
ಕಟಸ್ಯಲಪ್ರೊಪಿತದಾನವಾರಿಮಿ:" ಮಾಘಂ ೧-೬೪ । 3.  
ಮುಚ್ಚಳ ತೆಗೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಡಿಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ವಿಘನ ವಿಘನ (ಪುಂ) ಕಬ್ಬಿಣದ ಸುತ್ತಿಗೆ.

ವಿಘಸ ವಿಘಸ (ಪುಂ) 1. ಭೋಜನಶೇಷ, ದೇವತೆಗಳು  
ಪಿತ್ಯಗಳು ಮತ್ತು ಅತಿಥಿಗಳು ಊಟಮಾಡಿದ ನಂತರ  
ಉಳಿದ (ಅಹಾರ) ಅನ್ನ. ವಿಶಿಷ್ಟ: ಗುರ್ವಾದಿಭಿರದತ್ತೇ-ಅದ  
(ಮಕ್ಷಣೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೯) । ಅದೇ: ಘಸ್ಮ ಆದೇಶ:  
(೨-೪-೩೮) । 2. ಅಹಾರ. "ಅಯಿ ವನಪ್ರಿಯ ವಿಘಸ್ಮತ  
ಎವ ಕಿ ಬಲಿಮುಜೋ ವಿಘಸೋ ಭವತಾಽಘುನಾ" ತ್ಸುತ: ।  
(ನಂ) 3. ಜೇನುಮೇಣ.

ವಿಘಸಾಶಿನ್ ವಿಘಸಾಶಿನ್ (ವಿಂ) ಪಿತ್ಯಗಳು ಗುರುಗಳು  
ಮತ್ತು ಅತಿಥಿಗಳು ಭೋಜನಮಾಡಿದನಂತರ ಉಳಿದ  
ಅನ್ನವನ್ನು ಊಟಮಾಡುವವನು. ವಿಘಸಮನಾತಿ — ಅಶ  
(ಭೋಜನೇ) "ಣಿನಿ:" (೩-೨-೭೮) ।

ವಿಘಾತ ವಿಘಾತ (ಪುಂ) 1. ವಿಘ್ನ, ಪ್ರತಿಬಂಧ. ವಿ + ಹನ  
(ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) । "ಅಜಸ್ರದೀಕ್ಷಾ-  
ಪ್ರಯತಸ್ಯ ಮದ್ಗುರೋ: ಕ್ರಿಯಾವಿಘಾತಾಯ ಕಥಂ ಪ್ರವರ್ತಸೇ" ರಘುಂ  
೩-೪೪ । 2. ನಾಶ, ಅಳಿವು. "ತವ ಪ್ರಯಾತಸ್ಯ ಜಯಾ  
ತೇಷಾಂ ಕ್ರಿಯಾದವಾನಾಂ ಮಘವಾ ವಿಘಾತಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೫೨ ।  
3. ಸಂಹಾರ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. "ದ್ವಿಷಾಂ ವಿಘಾತಾಯ ವಿಘಾತು-  
ಮಿಚ್ಛತೋ ರಹಸ್ಯನುಜ್ಞಾಮಧಿಗಮ್ಯ ಭೂತ:" ಕಿರಾಂ ೧-೩ ।  
4. ಎಟು, ಹೊಡೆತ.

ವಿಘಾತಕ ವಿಘಾತಕ (ವಿಂ) 1. ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವ, ವಿಘ್ನ  
ವುಂಟುಮಾಡುವ. 2. ನಾಶಪಡಿಸುವ. 3. ಸಂಹರಿಸುವ.  
4. ಹೊಡೆಯುವ. ವಿ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) ।

ವಿಘಾತಿನ ವಿಘಾತಿನ (ವಿಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸುವ.  
2. ಹೊಡೆಯುವ. 3. ಸಂಹರಿಸುವ. ವಿಘಾತೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ  
"ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫) । 4. ವಿಘ್ನವುಂಟುಮಾಡುವ.

ವಿಘ್ನಂತ್ ವಿಘ್ನಂತ್ (ವಿಂ) ಭ್ರಮಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಸುತ್ತಾಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಘ್ಣ (ಭ್ರಮಣೆ) "ಶತ್"



(೩-೨-೧೨೪)। “ಕಾಪಿಶಾಯನಸುಗಂಧಿ ವಿವರ್ಣಮನೋ-  
ವಿಶಯಿತು ಸಮಶೇತ” ಮಾಘಂ ೧೦-೪೦। ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಛೀಪ್”  
(೪-೧-೬)। -ವರ್ಣಂತಿ -ಘೋಷ೨೯.

ವಿವರ್ಣನ ವಿಘೋಷನ (ನಂ) ತಿರುಗುವುದು, ಸುತ್ತಾಡು-  
ವುದು. ವಿ+ವರ್ಣ (ಭ್ರಮಣ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।  
ವಿವರ್ಣಯತ್ ವಿಘೋಷಯತ್ (ವಿಂ) ತಿರುಗಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಸುತ್ತಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ವರ್ಣ (ಭ್ರಮಣ) + ಣಿच् “ಶತ್”  
(೩-೨-೧೨೪)।

ವಿವರ್ಣಿತ ವಿಘೋಷಿತ (ವಿಂ) ತಿರುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುತ್ತಿಸ-  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ವರ್ಣ (ಭ್ರಮಣ)+ಣಿच् “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)।

ವಿವಿಧ ವಿಘ್ನ (ಪುಂ) 1. ಅಡ್ಡಿ, ಅಡಚಣೆ, ಎಡರು.  
ವಿಹನ್ಯತೇನ — ವಿ + ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತೃಃ) ಧಮ್ಯೇ “ಕಃ”  
(ವಾಂ ೩-೩-೫೮)। “ಅತರ್ಕಯದ್ವಿವಿಧಮಿವೇಷ್ಠಸಾಹಸಃ ಪ್ರಸಾದ-  
ಮಿಚ್ಛಾಸದೃಶ ಪಿನಾಕಿನಃ” ಮಾಘಂ ೧-೪೯। (ವಿಂ) 2.  
ವಿಘ್ನವುಂಟುಮಾಡುವ. “ವಿರಾಧಂ ತಪಸಾಂ ವಿವಿಧಮ್”  
ಭದ್ರಂ ೯-೧೩೩।

ವಿವಿಧಕರ ವಿಘ್ನಕರ (ವಿಂ) ವಿಘ್ನವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ,  
ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವ. ವಿವಿಧಸ್ಯ ಕರಃ। ಡುಕ್ರನ್ (ಕರಣ) “ಠಃ”  
(೩-೨-೨೦)।

ವಿವಿಧಕಾರಿನ್ ವಿಘ್ನಕಾರಿನ್ (ವಿಂ) 1. ವಿಘ್ನವನ್ನುಂಟು-  
ಮಾಡುವ, ಅಡ್ಡಿಯನ್ನೊಡ್ಡುವ. ವಿವಿಧಂ ಕರ್ತುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ  
— ಡುಕ್ರನ್ (ಕರಣ) “ಞಿನಿಃ” (೩-೨-೭೮)। 2.  
ಭಯಂಕರವಾಗಿ ಕಾಣುವ. “ವಿವಿಧಕಾರಿ ವಿವಿಧತಸ್ಯ ಕಾರಕೇ  
ಘೋರದರ್ಶನೇ” ಹೇಮಂ।

ವಿವಿಧಕೃತ್ ವಿಘ್ನಕೃತ್ (ವಿಂ) ವಿಘ್ನವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ,  
ಅಡಚಣೆಯುಂಟುಮಾಡುವ. ವಿವಿಧಂ ಕರೋತಿ — ಡುಕ್ರನ್  
(ಕರಣ) “ವಿವಿಪ್” (೩-೨-೭೬)।

ವಿವಿಧವ್ಯಸ ವಿಘ್ನವ್ಯಸ (ಪುಂ) ವಿಘ್ನದ ನಾಶ, ವಿಘ್ನದ  
ನಿವಾರಣೆ. ವಿವಿಧಸ್ಯ ವ್ಯಸಃ।

ವಿವಿಧನಾಯಕ ವಿಘ್ನನಾಯಕ (ಪುಂ) ವಿಘ್ನಗಳಿಗೆ ಯಜ-  
ಮಾನನಾದ ಗಣಪತಿ, ವಿಘ್ನಗಳನ್ನು ತನಗೆ ಅಧೀನ  
ಮಾಡಿಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವುದರಿಂದ ಗಣಪತಿಗೆ ಈ ಹೆಸರು.  
ವಿವಿಧಾನಾಂ ನಾಯಕಃ ನಿಯಂತಾ।

ವಿವಿಧನಾಶಕ ವಿಘ್ನನಾಶಕ (ಪುಂ) 1. ಗಣಪತಿ. ವಿವಿಧಾನ್  
ನಾಶಯತಿ — ಣಶ (ಅದರ್ಶನ) “ಞ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩)।  
“ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪)। -ನಾಶನಃ -ನಾಶನಃ (ವಿಂ)  
2. ವಿಘ್ನಗಳನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವ.

ವಿವಿಧರಾಜ ವಿಘ್ನರಾಜ (ಪುಂ) ಗಣಪತಿ. ವಿವಿಧಾನಾಂ ರಾಜಾ  
— ರಾಜನ್ “ಠ್” (೫-೪-೯೧)।

ವಿವಿಧಹಾರಿನ್ ವಿಘ್ನಹಾರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಗಣಪತಿ. ವಿವಿಧಾನ್  
ಹರತಿ — ಹನ್ (ಹರಣ) “ಞಿನಿಃ” (೩-೨-೭೮)।  
(ವಿಂ) 2. ವಿಘ್ನಗಳನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಛೀಪ್”  
(೪-೧-೬)। -ಹಾರಿಣಿ -ಹಾರಿಣೀ.

ವಿವಿಧಿತ ವಿಘ್ನಿತ (ವಿಂ) ವಿಘ್ನವುಂಟಾದ, ಅಡಚಣೆ  
ಯುಂಟಾದ. ವಿವಿಧಿಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ “ಇತ್” (೫-೨-೩೬)।

ವಿವಿಧೇಶ ವಿಘ್ನೇಶ, -ईशान-ಈಶಾನ, -ईश्वर-ಈಶ್ವರ  
(ಪುಂ) ಗಣಪತಿ. ವಿವಿಧಾನಾಮೀಶಃ ईशानಃ ईश्वರೋ ವಾ।

ವಿವಿಧ ವಿಂಖ (ಪುಂ) ಕುದುರೆಯ ಕಾಲಿನ ಗೊರಸು.  
“ಪ್ರತೋದೋಷ ಸುರೋ ವಿವಿಧಃ ಪುಟಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ವಿವಿಧಕಿಲ ವಿಚಕಿಲ (ಪುಂ) 1. ಮದನವೃಕ್ಷ, ಮಂಗಾರಿ-  
ಗಿಡ. 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮಲ್ಲಿಗೆ. “ಭವೇದ್ವಿವಿಧಕಿಲೋ  
ಮಲ್ಲಿಪ್ರಭೇದೇ ಮದನೇ ಪುಮಾನ್” ಮೇದಿಂ।

ವಿವಿಧಕ್ಷಣ ವಿಚಕ್ಷಣ (ಪುಂ) 1. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ.  
ವಿವಿಧೇ — ವಿ + ಚಕ್ಷಿಙ್ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಯುಚ್”  
(೩-೨-೧೪೯)। “ಹರಿವಿಪ್ರತಿಷೇಧಂ ತಮಾಚವಕ್ಷೇ ವಿವಿಧಕ್ಷಣಃ”  
ಮಾಘಂ ೨-೬। (ವಿಂ) 2. ನಿಪುಣ, ಸಮರ್ಥ, ಪ್ರವೀಣ.  
“ತಸ್ಮಾತ್ ಪುರಃಸರವಿಭಿಷಣದರ್ಶಿತೇನ ಸೇವಾವಿವಿಧಕ್ಷಣಹರೀಶ್ವರ-  
ದತ್ತಹಸ್ತಃ” ರಘುಂ ೧೩-೬೯।

ವಿವಿಧಕ್ಷುಸ್ ವಿಚಕ್ಷುಸ್ (ವಿಂ) 1. ಅಂಧ, ಕುರುಡ.  
2. ತಬ್ಬಿಬ್ಬಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟವನು, ಭ್ರಮೆಹಿಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನು.

ವಿವಿಧ ವಿಚಯ (ಪುಂ) ಅನ್ವೇಷಣ, ಹುಡುಕುವುದು.  
ವಿ + ಚಿಙ್ (ಚಯನ) “ಅಚ್” (೩-೩-೫೬)। “ತುರಗ-  
ವಿವಿಧವ್ಯಗ್ರಾನುರ್ವಿಭಿದಃ ಸಗರಾಧವರೇ ಕಪಿಲಮಹಸಾ ರೋಷಾ-  
ತ್ಪ್ಲುಷ್ಠಾನ್ ಪಿತುಷ್ಚ ಪಿತಾಮಹಾನ್” ಉಂ ರಾಂ ೧-೨೩।  
ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। -ವಿವಿಧಮ್ -ವಿವಿಧಮ್.  
“ಅನ್ವೇಷಣಂ ವಿವಿಧಯಂ ಮಾರ್ಗಣಂ ಮೃಗಣಾ ಮೃಗಃ” ಅಮಂ।

ವಿವಿಧರಣ ವಿಚರಣ (ನಂ) ಚರಿಸುವುದು, ಸಂಚರಿಸುವುದು,  
ತಿರುಗಾಡುವುದು. ವಿ + ಚರ (ಗತೌ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೫)।

ವಿವಿಧರಣೀಯ ವಿಚರಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸಂಚರಿಸಬೇಕಾದ,  
ತಿರುಗಾಡಬೇಕಾದ. 2. ಸಂಚರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.  
ವಿ + ಚರ (ಗತೌ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬)।

ವಿವಿಧರತ್ ವಿಚರತ್ (ವಿಂ) ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವ, ನಡೆಯು-  
ತ್ತಿರುವ, ತಿರುಗಾಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಚರ (ಗತೌ)  
“ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಛೀಪ್” (೪-೧-೬)।  
-ವಿವಿಧಂತಿ -ವಿವಿಧಂತಿ.



**ವಿಚರಿಸ ವಿಚರಿಸ** (ವಿಂ) 1. ಸಂಚರಿಸಿದ, ತಿರುಗಾಡಿದ.

ವಿ + ಚರ (ಗತೌ) ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) ।

(ನಂ) 2. ಸಂಚರಿಸುವುದು, ಚಲಿಸುವುದು, ನಡೆಯುವುದು. ವಿ + ಚರ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) ।

**ವಿಚರ್ಚಿಕಾ ವಿಚರ್ಚಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಜ್ಜಿ, ತುರಿ, ನವೆಯಿಂದ

ಕೂಡಿದ ಒಂದು ಅಂಟುರೋಗ. ವಿಚರ್ಚಂತೆ — ಚರ್ಚ (ಅಧ್ಯಯನ) "ಫಲ್" (೩-೩-೧೦೮) । "ಕಚ್ಚಾಂ ತು ಪಾಮ ಪಾಮಾ ವಿಚರ್ಚಿಕಾ" ಅಮಂ ।

**ವಿಚಲ ವಿಚಲ** (ವಿಂ) ಚಲಿಸುವ, ಕಂಪಿಸುವ, ಅಳುತ್ತಿರುವ.

ವಿಶೇಷಣ ಚಲತಿ—ಚಲ (ಕಂಪನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।

**ವಿಚಲತ್ ವಿಚಲತ್** (ವಿಂ) 1. ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸರಿಯು

ತಿರುವ. ವಿ + ಚಲ (ಕಂಪನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

2. ದಾರಿತಪ್ಪಿ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಅಕ್ರಮವಾಗಿ ವರ್ತಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ತೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಚಲಂತಿ -ಚಲಂತೀ.

**ವಿಚಲನ ವಿಚಲನ** (ನಂ) 1. ಚಲಿಸುವುದು, ಕಂಪಿಸುವುದು,

ನಡುಗುವುದು. 2. ಭ್ರಷ್ಟನಾಗುವುದು, ದಾರಿತಪ್ಪಿ ನಡೆಯುವುದು, ಅಕ್ರಮವಾಗಿ ವರ್ತಿಸುವುದು. ವಿ + ಚಲ (ಕಂಪನೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

**ವಿಚಲಿತ ವಿಚಲಿತ** (ವಿಂ) 1. ಚಲಿಸಿದ, ಕದಲಿದ.

ವಿ + ಚಲ (ಕಂಪನೆ) ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) ।

"ಛವಿರಚಿತ್ರತನುಹಶಾಲಿಭಿವಿಚಲಿತಃ ಪರಿತಃ ಪ್ರಿಯಕವ್ರಜಃ" ಮಾಘಂ ೪-೩೨ । 2. ದಾರಿತಪ್ಪಿ ನಡೆದ, ನಿಯಮವನ್ನು ಮೀರಿ ನಡೆದ, ಅಕ್ರಮವಾಗಿ ವರ್ತಿಸಿದ. "ದೃಢೋ ಹಿ ಸುಮಹತ್ ತೇಜೋ ದುರ್ವಿರಶ್ಚಾಕೃತಾತ್ಮಮಿಃ । ಧರ್ಮಾದಿವಿಚಲಿತಂ ಹಂತಿ ನೃಪಮೇವ ಸಬಾನ್ಧವಮ್" ಮನುಂ ೭-೨೮ । (ನಂ) 3. ಚಲಿಸುವುದು, ಕದಲುವುದು. ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" । 4. ದಾರಿತಪ್ಪಿ ನಡೆಯುವುದು.

**ವಿಚಾರ ವಿಚಾರ** (ಪುಂ) 1. ಪರ್ಯಾಲೋಚನೆ, ವಿಮರ್ಶೆ.

ವಿ + ಚರ (ಗತೌ) "ವಚ್" (೩-೩-೧೮) । "ಅಲ್ಪಸ್ಯ ಹೇತೋಃ ಬಹು ಹಾತುಮಿಚ್ಛನ್ ವಿಚಾರಮೂಢಃ ಪ್ರತಿಭಾಸಿ ಮೇ ತ್ವಮ್" ರಘುಂ ೨-೪೭ । 2. ಚರ್ಚೆ, ಸಂದಿಗ್ಧವಾದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ತತ್ತ್ವಪರೀಕ್ಷೆಗಾಗಿ ಪ್ರಮಾಣಪೂರ್ವಕ ಮಾಡುವ ವಾದ. 3. ತತ್ತ್ವನಿರ್ಣಯ. 4. ವಿಚಾರಣೆ, ಪರೀಕ್ಷೆ. "ವಿಷ-ಸಲಿಲತುಲಾಗ್ನಿಪ್ರಾಥಿತೇ ಮೇ ವಿಚಾರೆ ಕ್ಷಕವಮಿಹ ಶರೀರೇ ವೀಕ್ಷ್ಯ ದಾತವ್ಯಮನ್ವ" ಮೃಚ್ಛಂ ೯-೪೩ । 5. ಯುಕ್ತಿಯುಕ್ತ ವಾದ ಮಾತುಗಳಿಂದ ಪರೋಕ್ಷವಾದ ವಿಷಯವನ್ನು ಸಾಧಿಸುವುದು. "ವಿಚಾರೋ ಯುಕ್ತಿವಾಕ್ಯಯದಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾರ್ಥ-

ಸಾಧನಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೮೩ । 6. ತನಿಖೆ, ವಿಚಾರಣೆ.

7. ವಿವೇಕ, ವಿವೇಚನೆ.

**ವಿಚಾರಜ ವಿಚಾರಜ್ಞ** (ವಿಂ) 1. ವಿಮರ್ಶಿಸಲು ತಿಳಿವಳಿಕೆ

ಯುಳ್ಳವನು, ವಿಮರ್ಶೆಮಾಡಬಲ್ಲವನು. ವಿಚಾರಂ ಜಾನಾತಿ —ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩) । 2. ನಿರ್ಣಯಿಸಬಲ್ಲವನು, ತೀರ್ಮಾನಕೊಡಲು ಶಕ್ತನಾದವನು, ತೀರ್ಪುಗಾರ.

**ವಿಚಾರಣ ವಿಚಾರಣ** (ನಂ) 1. ವಿಮರ್ಶೆ, ವಿವೇಚನೆ.

ವಿ + ಚರ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

2. ಪರೀಕ್ಷೆ, ವಿಚಾರಣೆ. 3. ಸಂದಿಗ್ಧವಾದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ತತ್ತ್ವಾಂಶವನ್ನು ತಿಳಿಯಲು ಮಾಡುವ ಚರ್ಚೆ. 4. ತನಿಖೆ. 5. ಶಂಕೆ, ಸಂಶಯ, ಅನಿಶ್ಚಯತೆ. ವಿ + ಚರ (ಸಂಶಯ) + ಣಿಚ್ "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭) । -ಚಾರಣಾ -ಚಾರಣಾ.

**ವಿಚಾರಣೀಯ ವಿಚಾರಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ವಿಮರ್ಶಿಸ

ಲ್ಪಡುವ. 2. ವಿಮರ್ಶೆಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ವಿಚಾರ ಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. ವಿ + ಚರ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । "ವೃದ್ಧಾಸ್ತೇ ನ ವಿಚಾರಣೀಯ-ಚರಿತಾಸ್ತಿಷ್ಠಂತು ಹುಂ ವರ್ತತೇ ಸುಂದಸ್ತೀಮಥನೇಽಪ್ಯಕುಠ್ಯಶಸೋ ಲೋಕೇ ಮಹಾಂತೋ ಹಿ ತೇ" ತಂ ರಾಂ ೫-೩೪ । 4. ಪರೀಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಪರೀಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ. 6. ಪರೀಕ್ಷಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ.

**ವಿಚಾರದೃಶ್ ವಿಚಾರದೃಶ್** (ವಿಂ) ವಿವೇಕವೇ ನೇತ್ರವಾಗಿ

ರುವ, ವಿವೇಕದಿಂದ ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ನೋಡುವ. ವಿಚಾರೋ ವಿವೇಕೋ ದೃಶ್ಯಸ್ಯ । "ಅಮಿತ್ರಜಿನ್ಮಿತ್ರಜಿದೋಜಸಾ ಸ ಯದ್ವಿಚಾರ-ದೃಕ್ಚಾರದೃಗಪ್ಯವರ್ತತ" ನೈಷಂ ೧-೧೩ ।

**ವಿಚಾರಯತ್ ವಿಚಾರಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಸಂಚಾರ

ಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಚರ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಊಟಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಚರ (ಭಕ್ಷಣ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

**ವಿಚಾರಿತ ವಿಚಾರಿತ** (ವಿಂ) 1. ವಿಮರ್ಶೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪರ್ಯಾಲೋಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಪರೀಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಚರ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । "ಆಪತ್ಕಲ್ಪೇನ ಯೋ ಧರ್ಮ ಕುರುತೇನಾಪದಿ ದ್ವಿಜಃ । ಸ ನಾನ್ವಿನೋತಿ ಫಲಂ ತಸ್ಯ ಪರತ್ರೇತಿ ವಿಚಾರಿತಮ್" ಮನುಂ ೧೧-೨೮ ।

**ವಿಚಾಲ ವಿಚಾಲ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು ಅನೇಕ

ಭಾಗಮಾಡಿ ಅದಕ್ಕೆ ಆ ಭಾಗಗಳ ಸಂಖ್ಯೆಯನ್ನೂ ಕೊಡುವುದು. ಏಕಂ ರಾಶಿ ಪಞ್ಚವಾ ಕುರು ಎಂಬಲ್ಲಿ ಒಂದು ರಾಶಿಯನ್ನು ಐದು ಭಾಗಗಳಾಗಿ ಮಾಡಿ ಆ ಭಾಗಗಳಿಗೆ ಐದು



ಸಂಖ್ಯೆಯನ್ನು ಹೇಳುವ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಏಕವನ್ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ  
“ಛಾ” ಪ್ರತ್ಯಯ ಬಂದಿರುವುದು. (೪-೩-೪೩) ನೋಡಿ.  
2. ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಒಳಭಾಗ.

**ವಿಚಾಲನ ವಿಚಾಲನ** (ನಂ) ಕದಲಿಸುವುದು, ಅಳಾಡಿಸು  
ವುದು. ವಿ + ಚಲ (ಕಂಪನೆ) + ಣಿच् “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೪) ।

**ವಿಚಾಲನೀಯ ವಿಚಾಲನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಕದಲಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ಕದಲಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಕದಲಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 4. ಕದಲಿ  
ಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ವಿ + ಚಲ (ಕಂಪನೆ) + ಣಿच्  
“ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । “ತವ್ಯಃ” । -ಚಾಲಯಿತವ್ಯಃ  
-ಚಾಲಯಿತವ್ಯಃ ।

**ವಿಚಾಲಿತ ವಿಚಾಲಿತ** (ವಿಂ) ಕದಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಅಳಾಡಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ + ಚಲ (ಕಂಪನೆ) + ಣಿच् “ಕ್ತಃ”  
(೩-೨-೧೦೨) ।

**ವಿಚಾಲ್ಯ ವಿಚಾಲ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಕದಲಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಕದಲಿ  
ಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ವಿ + ಚಲ (ಕಂಪನೆ) + ಣಿच् “ಯತ್”  
(೩-೧-೯೭) ।

**ವಿಚಿ ವಿಚಿ** (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) ತರಂಗ, ಅಲೆ, ತೆರೆ. ವಿನಕ್ತಿ  
ಜಲಾನಿ ಪೃಥಗಿವ ಕರೋತಿ — ವಿಚಿರ್ (ಪೃಥಗಭಾವೇ) “ಇನ್”  
(೩ಂ ೪-೧೧೯) ।

**ವಿಚಿಕಿತ್ಸಾ ವಿಚಿಕಿತ್ಸಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಶಯ, ಸಂದೇಹ,  
ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಅದಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಾದ ಅನೇಕ  
ವಸ್ತುಗಳ ಜ್ಞಾನ. ವಿ + ಕಿತ್ (ಸಂಶಯೇ) + ಸನ್ “ಅಃ”  
(೩-೩-೧೦೨) ।

**ವಿಚಿಚೀಷತ್ ವಿಚಿಚೀಷತ್** (ವಿಂ) ಅನ್ವೇಷಣಮಾಡಲು  
ಇಚ್ಛಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹುಡುಕಲು ಇಷ್ಟಪಡುತ್ತಿರುವ.  
ವಿಚೇತುಮಿಚ್ಛನ್ — ವಿ + ಚಿ (ಚಯನೆ) + ಸನ್ “ಶತ್”  
(೩-೨-೧೨೪) ।

**ವಿಚಿಚೀಷಾ ವಿಚಿಚೀಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುಡುಕಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ,  
ಹುಡುಕಲು ಇಚ್ಛೆ. ವಿ + ಚಿ (ಚಯನೆ) + ಸನ್ “ಅಃ”  
(೩-೩-೧೦೨) ।

**ವಿಚಿಚೀಷು ವಿಚಿಚೀಷು** (ವಿಂ) ಹುಡುಕಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ  
ಯುಳ್ಳವನು, ಹುಡುಕಲು ಇಚ್ಛಿಸುವವನು. ವಿ + ಚಿ (ಚಯನೆ)  
+ ಸನ್ “ಃ” (೩-೨-೧೬೮) ।

**ವಿಚಿತ ವಿಚಿತ** (ವಿಂ) 1. ಅನ್ವೇಷಣ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು,  
ಹುಡುಕಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ + ಚಿ (ಚಯನೆ) “ಕ್ತಃ” ೩-೨-೧೦೨ ।  
(ನಂ) 2. ಹುಡುಕುವುದು. ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪) ।

**ವಿಚಿತ ವಿಚಿತ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹುಡುಕುವುದು. ವಿ + ಚಿ (ಚಯನೆ)  
“ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) ।

**ವಿಚಿತ್ರ ವಿಚಿತ್ರ** (ವಿಂ) 1. ನಾನಾಬಗೆಯ, ಅನೇಕ ವಿಧ  
ವಾದ, ವಿವಿಧ ಬಣ್ಣದ. ವಿಶೇಷಣ ಚಿತ್ರಮ್ । “ದಧತಿ ಚ  
ವಿಕಸದ್ವಿಚಿತ್ರಕಲ್ಪದ್ರುಮಕುಸುಮೇರಭಿಗುಮ್ಮಿತಾನಿವೇತಾಃ” ಮಾಘಂ  
೪-೫೦ । 2. ಅದ್ಭುತವಾದ, ಅಶ್ಚರ್ಯಕರವಾದ. “ರೇಜೆ  
ವಿಚಿತ್ರೇರಪಿ ಯಾ ಸಚಿತ್ರಃ ಗೃಹೈವಿಶಾಲೇರಪಿ ಭೂರಿಸಾಲೇಃ”  
ಮಾಘಂ ೩-೫೦ । 3. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ.  
ವಿರುದ್ಧವಾದ ಫಲವನ್ನು ಪಡೆಯುವ ಆಸೆಯಿಂದ ನಡೆಸುವ  
ಪ್ರಯತ್ನದ ವರ್ಣನೆಯಿರುವಲ್ಲಿ **ವಿಚಿತ್ರಾಲಂಕಾರ**.  
“ವಿಚಿತ್ರಂ ತತ್ಪ್ರಯತ್ನಶ್ಚೇದ್ವಿಪರೀತಫಲೇಷಯಾ” ಚಂದ್ರಾಂ ।  
ತದಾಃ “ನಮಂತಿ ಸಂತಸ್ತಲೋಕಾದಪಿ ಲಬ್ಧಂ ಸಮುನ್ನತಿಮ್” ।  
ಸತ್ಪುರುಷರು ಮೂರು ಲೋಕಕ್ಕಿಂತಲೂ ಔನ್ನತ್ಯವನ್ನು  
ಹೊಂದಲು ಬಗ್ಗಿ ನಡೆಯುತ್ತಾರೆ. ಇಲ್ಲಿ ಬಗ್ಗಿ ನಡೆಯುವ  
ಪ್ರಯತ್ನಕ್ಕೆ ಇನ್ನೂ ಅಧೋಗತಿಯು ಫಲವಾಗಬೇಕು.  
ಆದರೆ ಅದಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಾದ ಔನ್ನತ್ಯರೂಪ ಫಲದ ಆಸೆ  
ಯಿಂದ ನಮನರೂಪ ಪ್ರಯತ್ನವು ನಡೆದಿರುವುದರಿಂದ  
ವಿಚಿತ್ರಾಲಂಕಾರ.

**ವಿಚಿತ್ರಕ ವಿಚಿತ್ರಕ** (ಪುಂ) ಭೂರ್ಜವೃಕ್ಷ, ಭುಜಪತ್ರಗಿಡ.

**ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯ ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯ** (ಪುಂ) ಶಂತನು ರಾಜನಿಗೆ  
ಸತ್ಯವತಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ (ಪುತ್ರ). [ಅಂಚಿಕೆ  
ಮತ್ತು ಅಂಚಾಲಿಕೆ ಇವರು ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯನ ಪತ್ನಿಯರು.  
ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯನು ಸಂತಾನಹೀನನಾಗಿ ಕಾಲವಾಗಲು  
ಸತ್ಯವತಿಯು ಆಜ್ಞೆಯಿಂದ ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯ ಅನುಗ್ರಹದ  
ಫಲವಾಗಿ ಈತನ ಪತ್ನಿಯರಲ್ಲಿ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರ ಮತ್ತು  
ಪಾಂಡು ಎಂಬ ಪುತ್ರರು ಜನಿಸಿದರು.]

**ವಿಚಿತ್ರತ ವಿಚಿತ್ರತ** (ವಿಂ) ನಾನಾಬಣ್ಣವಾಗಿ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟು.

**ವಿಚಿಂತನ ವಿಚಿಂತನ** (ನಂ) 1. ಯೋಚಿಸುವುದು, ಚಿಂತಿಸು  
ವುದು. 2. ಧ್ಯಾನಿಸುವುದು. ವಿ + ಚಿ (ಸ್ಮೃತ್ಯಾಮ್)  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) ।

**ವಿಚಿಂತನೀಯ ವಿಚಿಂತನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಯೋಚಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. 2. ಧ್ಯಾನಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಚಿಂತಿಸಬೇಕಾದ.  
4. ಧ್ಯಾನಿಸಬೇಕಾದ. 5. ಚಿಂತಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ.  
6. ಧ್ಯಾನಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ವಿ + ಚಿ (ಸ್ಮೃತ್ಯಾಮ್)  
“ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬) ।  
-ಚಿಂತಿತವ್ಯಃ -ಚಿಂತಿತವ್ಯಃ. 7. ವಿಮರ್ಶಿಸಲ್ಪಡುವ,  
ಪರ್ಯಾಲೋಚಿಸಲ್ಪಡುವ. 8. ವಿಮರ್ಶಿಸಬೇಕಾದ.

**ವಿಚಿಂತಯತ್ ವಿಚಿಂತಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಚಿಂತಿಸುತ್ತಿರುವ.  
2. ಧ್ಯಾನಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಚಿ (ಸ್ಮೃತ್ಯಾಮ್) + ಣಿच्



“ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)।  
-ಚಿಂತಯಂತಿ - ಚಿಂತಯಂತೀ. “ವಿಚಿಂತಯಂತಿ ಯಮನ್ಯ-  
ಮಾನಸಾ ತಪೋವನಂ ವೇತ್ತಿ ನ ಮಾಮುಪಸ್ಥಿತಮ್” ಶಾಕುಂ  
೪-೧।

ವಿಚಿಂತಿತ ವಿಚಿಂತಿತ (ವಿಂ) ಯೋಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ವಿಮರ್ಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ + ಚಿತಿ (ಸ್ಮೃತ್ಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತಃ”।

ವಿಚಿಂತ್ಯ ವಿಚಿಂತ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಯೋಚಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಧ್ಯಾನಿಸಲ್ಪಡುವ. ವಿ + ಚಿತಿ (ಸ್ಮೃತ್ಯಾಮ್) “ಯತ್” (೩-೧-೯೭)। 3. ವಿಮರ್ಶಿಸಲ್ಪಡುವ. (ಅವ್ಯಂ) 4. ಯೋಚಿಸಿ, ಚಿಂತಿಸಿ. “ಅಸ್ಮಾನ್ ಸಾಧು ವಿಚಿಂತ್ಯ ಸಂಯಮನಾನುಚ್ಛೇ: ಕುಲಂ ಚಾತ್ಮನಃ” ಶಾಕುಂ ೪-೧೬। 5. ಚಿಂತಿಸಿ. 6. ಧ್ಯಾನಮಾಡಿ.

ವಿಚಿಂತವತ್ ವಿಚಿಂತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಹುಡುಕುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಚಿವ್ (ಚಯನೇ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। 2. ಪರಿಶೀಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ವಿಮರ್ಶಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಪರೀಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಪರೀಕ್ಷಿಸಿ ವ್ಯತ್ಯಾಸ ತಿಳಿಯುತ್ತಿರುವ. “ಶಾನವ್” (೩-೨-೧೨೪)। -ಚಿಂತವಾನ್: -ಚಿಂತವಾನ್. ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)। -ಚಿಂತವಂತಿ -ಚಿಂತವಂತೀ. “ವಿಚಿಂತವಂತಿ: ಪಾನ್ಯಪತೃಹಿಸನೇರಪುನ್ಯಕರ್ಮಣ್ಯಲಿಕಜ್ಜಲಚ್ಛಲಾತ್” ನೆಪಂ ೧-೮೬।

ವಿಚೇತನ ವಿಚೇತನ (ವಿಂ) 1. ಬುದ್ಧಿಯಿಲ್ಲದವನು, ವಿವೇಕವಿಲ್ಲದವನು. 2. ಪ್ರಜ್ಞೆ ತಪ್ಪಿದವನು, ಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದವನು. ವಿಗತಾ ಚೇತನಾ ಯಸ್ಯ। “ಪ್ರಮದಾ: ಪತಿವತ್ಸಂಗಾ ಇತಿ ಪ್ರತಿಪನ್ನಂ ಹಿ ವಿಚೇತನೇರಪಿ” ಕುಮಾರಂ ೪-೩೩।

ವಿಚೇತವ್ಯ ವಿಚೇತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹುಡುಕಲ್ಪಡುವ. 2. ಪರೀಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. ವಿ + ಚಿವ್ (ಚಯನೇ) “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬)। “ಅನೀಯರ್”। -ಚಯನೀಯಃ -ಚಯನೀಯಃ. 3. ಹುಡುಕಬೇಕಾದ. 4. ಪರೀಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ, ವಿಮರ್ಶಿಸಬೇಕಾದ.

ವಿಚೇತಸ್ ವಿಚೇತಸ್ (ವಿಂ) 1. ದುಃಖದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು. 2. ಕೆಟ್ಟ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು. ವಿಗತಂ ವಿರುದ್ಧಂ ವಾ ಚೇತೋ ಯಸ್ಯ। 3. ಪ್ರಜ್ಞೆ ತಪ್ಪಿದವನು. “ಎವಂ ಸುರಗಣಾನ್ ಕ್ರುದ್ಧೋ ಭೀಷಯನ್ ವಪುಷಾ ರಿಪುನ್। ವ್ಯನದತ್ ಸುಮಹಾಪ್ರಾಣೋ ಯೇನ ಲೋಕಾ ವಿಚೇತಸಃ” ಭಾಗಂ ೬-೧೧-೬।

ವಿಚೇಯ ವಿಚೇಯ (ವಿಂ) 1. ಹುಡುಕಲ್ಪಡುವ. 2. ಹುಡುಕಬೇಕಾದ. 3. ಹುಡುಕಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ವಿ + ಚಿವ್ (ಚಯನೇ) “ಯತ್” (೩-೧-೯೭)। “ತನುಪ್ರಕಾಶೇನ ವಿಚೇಯ-ತಾರಕಾ ಪ್ರಭಾತಕಲ್ಪಾ ಶಶಿನೇವ ಶರೀರೀ” ರಘುಂ ೩-೨।

ವಿಚೇಷ ವಿಚೇಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಯತ್ನವಿಲ್ಲದವನು, ವ್ಯಾಪಾರವಿಲ್ಲದವನು. ವಿಗತಾ ಚೇಷಾ ಯಸ್ಮಾತ್। 2. ಕೆಲಸವಿಲ್ಲದವನು.

ವಿಚೇಷನ ವಿಚೇಷ್ಯನ (ನಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಕೆಲಸಮಾಡುವುದು. 2. ಕಾಲಿನಿಂದ ಒದೆಯುವುದು. 3. ವಿರುದ್ಧವಾದ ಕಾರ್ಯಮಾಡುವುದು. ವಿ + ಚೇಷ (ಚೇಷಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

ವಿಚೇಷನೀಯ ವಿಚೇಷ್ಯನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಕೆಲಸ ಮಾಡಬೇಕಾದ. 2. ಹೆಚ್ಚು ಕೆಲಸಮಾಡಲು ಶಕ್ಯನಾದ. 3. ಹೆಚ್ಚು ಕೆಲಸಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. ವಿ + ಚೇಷ (ಚೇಷಾಯಾಮ್) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬)। “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬)। -ವಿಚೇಷಿತವ್ಯಮ್ -ವಿಚೇಷಿತವ್ಯಮ್. ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಯತ್ನಪಡಬೇಕಾದ.

ವಿಚೇಷಮಾನ ವಿಚೇಷ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಕೆಲಸ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಯತ್ನಪಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಹೆಚ್ಚು ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಚೇಷ (ಚೇಷಾಯಾಮ್) “ಶಾನವ್” (೩-೨-೧೨೪)।

ವಿಚೇಷಾ ವಿಚೇಷ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಯತ್ನ, ಉದ್ಯಮ. ವಿಶಿಷ್ಟಾ ಚೇಷಾ। 2. ನಡೆತೆ, ವರ್ತನೆ.

ವಿಚೇಷಿತ ವಿಚೇಷ್ಯಿತ (ನಂ) 1. ಕಾರ್ಯ, ಕೆಲಸ. ವಿ + ಚೇಷ (ಚೇಷಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪)। “ಉಕ್ರಮಸ್ಯಾಖಿಲಬನ್ಧಮುಕ್ತಯೇ ಸಮಾಧಿನಾನುಸ್ಮರ ತದ್ವಿಚೇಷಿತಮ್” ಭಾಗಂ ೧-೪-೧೩। 2. ಚೇಷ್ಠ, ವ್ಯಾಪಾರ. “ಅಸುಲಭಾ ಸಕಲೇಂದ್ರಮುಖೀ ಚ ಸಾ ಕಿಮಪಿ ಚೇದಮನುಜ್ಞ-ವಿಚೇಷಿತಮ್” ವಿಕ್ರಂ ೨-೯। 3. ಪ್ರಯತ್ನ, ಪ್ರಯಾಸ. 4. ಭಾವಾಭಿನಯ. 5. ಹೆಚ್ಚು ಸಂಚಾರ, ಅಧಿಕವಾದ ನಡೆಗೆ. (ವಿಂ) 6. ಪ್ರಯತ್ನವಿಲ್ಲದವನು. 7. ಹೆಚ್ಚು ಕೆಲಸಮಾಡಿದವನು. 8. ವಿರುದ್ಧವಾದ ಕಾರ್ಯಮಾಡಿದವನು. ವಿರುದ್ಧಂ ವಿಚೇಷಿತಂ ಯಸ್ಯ।

ವಿಚ್ಛಂದಕ ವಿಚ್ಛಂದಕ (ಪುಂ) ಉಪ್ಪರಿಗೆ ಮನೆ, ಅನೇಕ ಮಹಡಿಗಳ ಮನೆ, ಧನಿಕರ ಗೃಹ. ವಿಶಿಷ್ಟಚ್ಛಂದೋತ್ತರ। “ಉಪಯುಪರಿ ಯದ್ಗೃಹಂ ತದ್ವಿಚ್ಛಂದಕಸಂಜ್ಞಕಮ್”।

ವಿಚ್ಛಂದಕ ವಿಚ್ಛಂದಕ (ಪುಂ) “ವಿಚ್ಛಂದಕ” ಪದದ ಅರ್ಥ.

ವಿಚ್ಛಂದನ ವಿಚ್ಛಂದನ (ನಂ) ವಾಂತಿಮಾಡುವುದು. ವಿ + ಛಂದ (ವಮನೇ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

ವಿಚ್ಛದಿತ ವಿಚ್ಛದಿತ (ವಿಂ) 1. ವಾಂತಿಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ + ಛಂದ (ವಮನೇ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)।



2. ತೃಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಮದಯಂತಿಕಾಮಾತ್ರ-  
ವಿಚ್ಛದಿತಜೀವಿತ:" ಮಾಲತಿಂ ೭. 3. ದುರ್ಬಲವಾಗಿ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಶಕ್ತಿಕುಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ವಿಚ್ಛಾಯ ವಿಚ್ಛಾಯ (ವಿಂ) 1. ಕಾಂತಿರಹಿತವಾದ,  
ಪ್ರಕಾಶವಿಲ್ಲದ, ತೇಜಸ್ವಿಲ್ಲದ. ವಿಗತಾ ಛಾಯಾ ಕಾಂತಿರಯಸ್ಯ |  
"ವಿಲೋಕಯೋದ್ವಿಗ್ನಹೃದಯೋ ವಿಚ್ಛಾಯಮನುಜಂ ನೃಪ: | ಪೃಚ್ಛತಿ  
ಸ್ಮ ಸುಹೃನ್ಮಧ್ಯೆ ಸಂಸ್ಮರನ್ನಾರದೇರಿತಮ್" ಭಾಗಂ ೧-೧೪-೨೪ |  
2. ನೆರಳಿಲ್ಲದ. ವಿಗತಾ ಛಾಯಾ ಯತ್ರ | (ನಂ) 3. ಪಕ್ಷಿಗಳ  
ನೆರಳು. ವಿನಾಂ ಪಕ್ಷಿಣಾಂ ಛಾಯಾ—ಕಲೀವತ್ವಮ್ (೨-೪-೨೨) |  
(ಪುಂ) 4. ಮಣಿ, ರತ್ನ. ವಿಶಿಷ್ಟಾ ಛಾಯಾ ಕಾಂತಿರಯಸ್ಯ |

ವಿಚ್ಛಿತ್ತಿ ವಿಚ್ಛಿತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿಚ್ಛೇದ, ನಿಲುಕಡೆ,  
ನಿಲ್ಲುವುದು. ವಿ + ಚ್ಛಿದ್ (ವೈಧಿಕರಣ) "ಕ್ತಿನ್"  
(೩-೩-೯೪) | 2. ಮೈಗೆ ಗಂಧ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು  
ಪೂಸಿ ಅಲಂಕರಿಸುವುದು, ದೇಹಕ್ಕೆ ಬಣ್ಣವನ್ನು ಹಾಕಿ  
ಶೃಂಗರಿಸುವುದು. "ವಿಚ್ಛಿತ್ತಿರ್ನವಚಂದನೇನ ವಪುಷೋ ಭಿತ್ತೋ-  
ಧರೋಲಕ್ತಕೇ:" ಮಾಘಂ ೧೬-೮೪ | 3. ಒಂದು ವಿಧ  
ಹಾರ. 4. ಕತ್ತರಿಸುವುದು. 5. ವಿನಾಶ. 6. ವಿಭಾಗ,  
ಭಾಗಮಾಡುವುದು, ಪ್ರತ್ಯೇಕಿಸುವುದು. "ವಿಚ್ಛಿತ್ತಿರಙ್ಗ-  
ರಾಗೇ ವಿಚ್ಛೇದೇ ಹಾರಭೇದೇ ಸ್ತ್ರೀ" ಮೇದಿಂ | 7. ಅಭಿಪ್ರಾಯ,  
ಆಶಯ. "ವಿಚ್ಛಿತ್ತಿ ಭಾವಲೇಪನೇ" ನಾನಾರ್ಥಂ | "ಭೇದ  
ವಿನಾಶೇ ವಿಚ್ಛಿತ್ತಿ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 8. ಮನೆಯ ಎಲ್ಲ.  
ಮನೆಯ ಸರಹದ್ದು, —ಮೇರೆ. 9. ಪದ್ಯಗಳಲ್ಲಿರಬೇಕಾದ  
ಯತಿ. 10. ನರ್ತನಮಾಡುವಾಗ ಮೈ ಕುಲುಕುವುದು.  
11. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಕಾಂತಿಯನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವ ವೇಷರಚನೆ.  
12. ಎರಹ.

ವಿಚ್ಛಿನ್ನ ವಿಚ್ಛಿನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಚ್ಛಿದ್  
(ವೈಧಿಕರಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಪ್ರತ್ಯೇಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಯದರ್ಥೇ ವಿಚ್ಛಿನ್ನಂ ಭವತಿ  
ಕೃತಸಂವಾದಮಿವ ತತ್" ಶಾಕುಂ ೧-೯ | 3. ಬಣ್ಣ ಬಳಿದು  
ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಲ್ಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಕೊನೆಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಅಡಿಯುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ತಡೆಯೊಡ್ಡಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಕುಟಲವಾದ, ವಕ್ರವಾದ,  
ಡೊಂಕಾಗಿರುವ. 7. ಶೃಂಗರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
"ವಿಚ್ಛಿನ್ನಂ ತು ಕುಟಲೇ ಸ್ವಾತ್ ಸಮಾಲಂಭವಿಭಕ್ತಯೋ:"  
ಹೇಮಂ |

ವಿಚ್ಛುರಿತ ವಿಚ್ಛುರಿತ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮ  
ವಾಗಿರುವಂತೆ ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನೊಳಗೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ  
(ಇನ್ನೊಂದು ವಸ್ತು). 2. ಲೇಪನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ.  
ವಿ + ಛುರ (ಛೇದನ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |

"ಮನ:ಶಿಲಾವಿಚ್ಛುರಿತಾ ನಿಷೇದು: ಶಿಲೇಯನದ್ವೇಷು ಶಿಲಾತಲೇಷು"  
ಕುಮಾಂ ೧-೫೫ |

ವಿಚ್ಛೇದ ವಿಚ್ಛೇದ (ಪುಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸುವುದು. ವಿ + ಚ್ಛಿದ್  
(ವೈಧಿಕರಣ) "ಚ್ಛ" (೩-೩-೧೮) | 2. ತುಂಡಾಗುವುದು,  
ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗುವುದು. "ಅಕ್ಷಾಯ ಸ್ತನಕಲಶ-  
ದ್ವಯಾದುಪೇಯೇ ವಿಚ್ಛೇದ: ಸಹೃದಯೇವ ಹಾರಯಶ್ಚಾ" ಮಾಘಂ ೮-೫೧ |  
3. ನಾಶ, ಅಳಿವು. "ಪ್ರಮದಮದನಮಾಕ್ಷಯವಿನೋದಾಮರಾಮಾ-  
ರಮಣರಮಸಖೇದಸ್ವೇದವಿಚ್ಛೇದದಕ್ಷ:" ಮಾಘಂ ೧೧-೨೨ | 4.  
ನಿಲ್ಲುವುದು, ನಿಲುಕಡೆ, ಬಿಡುವು. ಶ್ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ಶ್ರುತಿ  
ಸೌಖ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಪದಗಳು ಅಕ್ಷರಗಳ ಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಸರಿಯಾಗಿ  
ನಿಲ್ಲುವಂತೆ ರಚಿಸುವುದು ಯತಿ. "ಯತಿವಿಚ್ಛೇದಸಂಜ್ಞಿಕಾ"  
ವೃಂ ೨೦ | 5. ವಿವೇಚನೆ, ವಿರಹ. 6. ಲೋಪ, ನಿಂತು  
ಹೋಗುವುದು. "ನೂನಂ ಮತ್ತ: ಪರಂ ವಶ್ಯಾ: ಪಿಂಡವಿಚ್ಛೇದ-  
ದರ್ಶಿನ:" ರಘುಂ ೧-೬೬ | 7. ಬೇರೆಯಾಗುವುದು, ಪ್ರತ್ಯೇಕ  
ವಾಗುವುದು. 8. ತಡೆ, ಅಡ್ಡಿ.

ವಿಚ್ಯವನ ವಿಚ್ಯವನ (ನಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುವುದು.  
ವಿ + ಚ್ಯುತ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |  
2. ದಾರಿಬಿಟ್ಟು ಹೋಗುವುದು, ದಿಫೀರನೆ ಮಾರ್ಗಬಿಟ್ಟು  
ಬೇರೆ ಮಾರ್ಗಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು. 3. ತಪ್ಪುಮಾಡುವುದು,  
ತಪ್ಪುದಾರಿ ಹಿಡಿಯುವುದು.

ವಿಚ್ಯವನೀಯ ವಿಚ್ಯವನೀಯ (ವಿಂ) ಕೆಳಗೆ ಬೀಳಬಹುದಾದ.  
ವಿ + ಚ್ಯುತ್ (ಗತೌ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) |  
"ತವ್ಯ:" ವಿಚ್ಯೋತಯಮ್ ವಿಚ್ಯೋತಯಮ್. ದಾರಿಬಿಟ್ಟು  
ಹೋಗಬೇಕಾದ.

ವಿಚ್ಯವಮಾನ ವಿಚ್ಯವಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುತ್ತಿರುವ.  
2. ದಾರಿತಪ್ಪಿ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ತಪ್ಪುದಾರಿ ಹಿಡಿಯುತ್ತಿರುವ.  
ವಿ + ಚ್ಯುತ್ (ಗತೌ) "ಶಾನಿನ್" (೩-೨-೧೨೪) |

ವಿಚ್ಯುತ ವಿಚ್ಯುತ (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಬಿದ್ದಿರುವ, ಕೆಳಗೆ ಜಾರಿ  
ಬಿದ್ದಿರುವ, ವಿ + ಚ್ಯುತ್ (ಗತೌ) ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) |  
2. ತಪ್ಪುದಾರಿ ಹಿಡಿದಿರುವ, ದಾರಿತಪ್ಪಿ ನಡೆದಿರುವ.

ವಿಚ್ಯುತಿ ವಿಚ್ಯುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುವುದು, ಮೇಲೆ  
ನಿಂದ ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುವುದು. 2. ಬೇರೆಯಾಗುವುದು,  
ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗುವುದು. 3. ದಾರಿತಪ್ಪಿ ನಡೆಯುವುದು,  
ನೀತಿಭ್ರಷ್ಟನಾಗುವುದು. 4. ಅವನತಿ ಹೊಂದುವುದು,  
ಕ್ಷಯಿಸುವುದು. ವಿ + ಚ್ಯುತ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) |

ವಿಜನ ವಿಜನ (ವಿಂ) ರಹಸ್ಯವಾದ, ಜನರಿಲ್ಲದ, ಜನರಹಿತ  
ವಾದ, ಜನರ ಸಂಚಾರವಿಲ್ಲದ (ಪ್ರದೇಶ). ವಿಗತೋ ಜನೋ



ಯಸ್ಮಾತ್. "ವಿಜನಮಿತಿ ಬಲಾದಮ್ ಗೃಹೀತ್ವಾ ಕ್ಷಣಮಥ  
ವೀಕ್ಷ್ಯ ವಿಪಕ್ಷಮನ್ತಿಕೇನ್ಯಾ" ಮಾಘಂ ೭-೫೧.

**ವಿಜನನ ವಿಜನನ** (ನಂ) ಜನನ, ಪ್ರಸವ, ಹುಟ್ಟು.  
ವಿ + ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

**ವಿಜನಮನ್ ವಿಜನಮ್** (ನಂ) 1. ಹುಟ್ಟು. ಉತ್ಪತ್ತಿ.  
(ಪುಂ) 2. ಜಾರನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದವನು, ವ್ಯಭಿಚಾರದಿಂದ  
ಹುಟ್ಟಿದವನು, ಅಕ್ರಮಸಂಬಂಧದಿಂದ ಜನಿಸಿದವನು.  
ವಿರಹಂ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ । 3. ವರ್ಣಸಾಂಕರ್ಯದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿ-  
ದವನು. "ವೇಶ್ಯಾತ್ ಜಾಯತೇ ವ್ರಾತಾತ್ಸುಧನ್ವಾಚಾರ್ಯ ಏವ ಚ ।  
ಕಾರುಣ್ಯವಿಜನ್ಮಾ ಚ ಮೇವ: ಸಾತ್ವತ ಏವ ಚ" ಮನ್ವಂ  
೧೦-೨೩ ।

**ವಿಜಯ ವಿಜಯ** (ಪುಂ) 1. ಜಯ, ಗೆಲುವು. ವಿ + ಜಿ  
(ಜಯೇ) ಮಾವೆ "ಅವ್" (೩-೩-೫೬) । "ಅಜಿತಸ್ಯ  
ಜಿಗಿಷತೋ ಮಯಾಸ್ತೌ ವಿಜಯಾರಂಭಮಹೋತ್ಸವೋ ವಿಧೇಯ: " ಯಾದಂ  
೧೫-೯ । 2. ಅರ್ಜುನ, ಕುಂತಿಯ ಪುತ್ರ. ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ  
ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಎದುರಿಸಿಹೋಗಿ ಅವರನ್ನು ಜಯಿಸದೆ  
ಹಿಂತಿರುಗುವುದಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ವಿಜಯನೆಂದು ಹೆಸರು.  
"ಅಭಿಪ್ರಯಾಮಿ ಸಂಗ್ರಾಮೇ ಯದಹಂ ಯುಧ್ಧದುರ್ಮದಾನ್ । ನಾಜಿತ್ವಾ  
ವಿನಿವರ್ತಾಮಿ ತೇನ ಮಾಂ ವಿಜಯಂ ವಿಧು: " ಭಾಂ ವಿರಾಂ ೪೦-೧೪ ।  
3. ಪೋಮಯಾನ, ವಿಮಾನ. "ವಿಜಯೋ ಜಯೇ । ಪಾರ್ಥ  
ವಿಮಾನೇ" ಹೇಮಂ । 4. ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. 5. ಪ್ರಭವ  
ವೊದಲಾದ ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳನೆಯ  
ಸಂವತ್ಸರ. 6. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಒಬ್ಬ ದ್ವಾರಪಾಲಕ.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜಯಾ-ಜಯಾ 7. ಪಕ್ಷದ 3, 8 ಮತ್ತು  
13ನೆಯ ತಿಥಿಗಳು, ತದಿಗೆ ಅಷ್ಟಮಿ ಮತ್ತು  
ತ್ರಯೋದಶೀ ತಿಥಿಗಳು.

**ವಿಜಯಕುಂಜರ ವಿಜಯಕುಂಜರ** (ಪುಂ) ರಾಜನು  
ವಿಜಯಕ್ಕಾಗಿ ಹತ್ತಿ ಹೊರಡುವ ಆನೆ. ವಿಜಯಾ  
ಕುಂಜರ: ।

**ವಿಜಯಚಂದ್ರ ವಿಜಯಚಂದ್ರ** (ಪುಂ) ಐನೂರು ಎಳೆಗಳುಳ್ಳ  
ಒಂದು ವಿಧ ಹಾರ. "ಸುರಭೂಷಣಂ ಲತಾನಾಂ ಸಹಸ್ರಮಣ್ಯೋತ್ತರಂ  
ಚತುರ್ಹಸ್ತಮ್ । ಇಂದ್ರಚಂದ್ರೋ ನಾಮ್ನಾ ವಿಜಯಚಂದ್ರಸ್ತದರ್ಶನೇ"  
ಬೃಹತ್ಸಂ ೮೧-೩೧ ।

**ವಿಜಯಡಿಂಡಿಮ ವಿಜಯಡಿಂಡಿಮ**, -ಮರ್ದಲ -ಮರ್ದಲ  
(ಪುಂ) ವಿಜಯಕ್ಕಾಗಿ ಬಾರಿಸುವ ಡಿಮಕಿ ಮತ್ತು ಡಕ್ಕಿ  
ಯೆಂಬ ವಾದ್ಯ. ವಿಜಯಾರ್ಥಿ ಡಿಂಡಿಮ: ಮರ್ದಲೋ ವಾ । ಇವು  
ನಗಾರಿಯೆಂಬ ವಾದ್ಯದ ಭೇದಗಳು. "ಢಕ್ಕಾ ವಿಜಯ-  
ಮರ್ದಲ: " ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ವಿಜಯದಶಮಿ ವಿಜಯದಶಮಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾಜನು ಶತ್ರು  
ಗಳನ್ನು ಜಯಿಸಲು ಯಾತ್ರೆಯನ್ನು ಕೈಗೊಳ್ಳುವ ದಿವಸ,  
ಅಶ್ವಯುಜ ಶುದ್ಧ ದಶಮಿ. ವಿಜಯಾ ದಶಮಿ ।

**ವಿಜಯನ ವಿಜಯನ** (ನಂ) ಜಯಿಸುವುದು, ಗೆಲ್ಲುವುದು.  
ವಿ + ಜಿ (ಜಯೇ) ಮಾವೆ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

**ವಿಜಯನಗರ ವಿಜಯನಗರ** (ನಂ) ಆಂಧ್ರಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ  
ರುವ ಒಂದು ಪಟ್ಟಣ.

**ವಿಜಯಸಿದ್ಧಿ ವಿಜಯಸಿದ್ಧಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಯದಗಳಿಕೆ, ಗೆಲ್ಲು-  
ವುದು. ವಿಜಯಸ್ಯ ಸಿದ್ಧಿ: ।

**ವಿಜಯಾ ವಿಜಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಕ್ಷದ 3, 8 ಮತ್ತು  
13ನೆಯ ತಿಥಿಗಳು, ತದಿಗೆ ಅಷ್ಟಮಿ ಮತ್ತು  
ತ್ರಯೋದಶೀ ತಿಥಿಗಳು. ["ಜಯಾ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]  
2. ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ. 3. ಪಾರ್ವತಿಯ ಒಬ್ಬ  
ಅನುಚರ. 4. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಮಹರ್ಷಿಯು ತಮ್ಮ  
ತಪೋವನದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀರಾಮನಿಗೆ ಉಪದೇಶಿಸಿದ ಒಂದು  
ವಿದ್ಯೆ. "ವಿದ್ಯಾಮಯೇನ ವಿಜಯಾಂ ಜಯಾಂ ಚ ರಕ್ಷೋಗಣಂ ಕ್ಷಿಪ್ತು-  
ಮವಿಕ್ಷತಾತ್ಮಾ" ಮೃದ್ವಿಂ ೨-೨೧ । "ವಿಜಯೋಮಾತತ್ಸಸ್ಯೋ-  
ಸ್ತಿಥಾವಪಿ" ಹೇಮಂ । 5. ಹಳದಿ ಮಲ್ಲಿಗೆ. 6. ಬಜೆ.  
7. ಮಂಜಿಷ್ಠಿ. 8. ತಕ್ಕಿಲೆ ಗಿಡ. 9. ಒಂದು ವಿಧ ನಲ್ಲಿ  
ಗಿಡ. 10. ಯಮಧರ್ಮರಾಯನ ಪತ್ನಿ. 11. ರವಿ  
ವಾರದ ದಿನ ಬರುವ ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷದ ಸಪ್ತಮಿ.

**ವಿಜಯಿನ್ ವಿಜಯಿನ್** (ವಿಂ) ವಿಜಯವನ್ನು ಪಡೆದವನು,  
ಜಯಶಾಲಿಯಾದವನು. ವಿಶೇಷಣ ಜೇತುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ - ವಿ  
+ ಜಿ (ಜಯೇ) "ಇನಿ:" (೩-೨-೧೫೭) । "ವಿಜಯಿನ್-  
ಮುಪಯಾಂತಂ ವೀಕ್ಷ್ಯ ಸತ್ಯಾಸಹಾಯಂ ವ್ಯತನುತ ಮುದಿತೇವ ದ್ವಾರಕಾ  
ವಂದಿಕೃತ್ಯಮ್" ಯಾದಂ ೧೮-೧೩೩ ।

**ವಿಜಯೋತ್ಸವ ವಿಜಯೋತ್ಸವ** (ಪುಂ) 1. ಜಯ ಲಭಿಸಿದುದ  
ಕ್ಕಾಗಿ ನಡೆಯುವ ಸಂತೋಷ ಸಮಾರಂಭ. 2. ವಿಜಯ  
ದಶಮಿಯ ದಿನ ನಡೆಯುವ ದೇವರ ಉತ್ಸವ. ವಿಜಯ  
ಪ್ರಾಪ್ತಿಗಾಗಿ ಶಮೀವೃಕ್ಷದ ಕೆಳಗೆ ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು ಪೂಜಿಸಿ  
ಶಮೀವೃಕ್ಷದ ಪೂಜೆಯನ್ನು ನಡೆಸಬೇಕು. "ರಾಜೋಪಚಾರೇ:  
ಶ್ರೀರಾಮಂ ಶಮೀವೃಕ್ಷತಲಂ ನಯತ್ । ಸೀತಾಕಾಂತಂ ಶಮೀಯುಕ್ತಂ  
ಭಕ್ತಾನಾಮಭಯಚ್ಛರಮ್ । ಅರ್ಚಯಿತ್ವಾ ಶಮೀವೃಕ್ಷಮರ್ಚಯೇ-  
ದ್ವಿಜಯಾಪ್ತಯೇ" ।

**ವಿಜರ ವಿಜರ** (ವಿಂ) ಮುಪ್ಪಿಲ್ಲದವನು. ವಿಗತಾ ಜರಾ  
ಯಸ್ಯ । "ಯ: ಸರ್ವೋಪಧಿಯುಕ್ತಿಜ: ಚಕ್ರೇ ಸಿದ್ಧರಸಾಯನ: ।  
ಆತ್ಮಾನಂ ತಂ ಚ ರಾಜಾನಂ ವಿಜರಂ ಚಿರಜೀವಿತಮ್"  
ಕಥಾಸಂ ।



**ವಿಜಲ ವಿಜಲ** (ವಿಂ) ಜಲರಹಿತವಾದ, ನೀರಿಲ್ಲದ. ವಿಗತಂ ಜಲಂ ಯस्माತ್. "ನಷ್ಟಾರ್ಕಚಂದ್ರಕಿರಣಾತಿರಜೋಜ್ವನದ್ವಾ ತೋ-ಶಯಾಶ್ಚ ವಿಜಲಾಃ ಸರಿತೋಽಪಿ ತನ್ವಯಃ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೯-೨೦ |

**ವಿಜಲ್ಪ ವಿಜಲ್ಪ** (ವುಂ) 1. ಮೂರ್ಖನ ಮಾತು. 2. ದ್ವೇಷದ ಮಾತು.

**ವಿಜಾತ ವಿಜಾತ** (ವಿಂ) ವಿರುದ್ಧವಾದ ಜನ್ಮವುಳ್ಳವನು, ಅಕ್ರಮ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಜನಿಸಿದವನು, ಜಾರಜ. ವಿರುದ್ಧಂ ಜಾತಂ ಯಸ್ಯ |

**ವಿಜಾತಾ ವಿಜಾತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಹೆತ್ತವಳು. ವಿಶೇಷಣ ಜಾತೋ ಯಸ್ಯಾಃ | "ವಿಜಾತೋ ವಿಕೃತೇ ಜಾತೇ ವಿಜಾತಾ ತು ಪ್ರಸೂತಿಕಾ" ಹೇಮಂ |

**ವಿಜಾತಿ ವಿಜಾತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭಿನ್ನಜಾತಿ, ಬೇರೆ ಜಾತಿ.

**ವಿಜಾತೀಯ ವಿಜಾತೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಬೇರೆ ಜಾತಿಯ, ಬೇರೆ ಕುಲದ, ಭಿನ್ನಜಾತಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ವಿಜಾತಿ "ಛಃ" (೪-೨-೧೧೪) | 2. ಭಿನ್ನವಸ್ತುವಿನ ಗುಂಪಿಗೆ ಸೇರಿದ. ಗೋವಿಜಾತೀಯೋ ವೃತಃ-ಗೋವಿನಲ್ಲಿ ಗೋತ್ವವೂ ಘಟದಲ್ಲಿ ಘಟತ್ವವೂ ಇರುವುದರಿಂದ ಇವು ಭಿನ್ನಜಾತಿಗೆ (ಗುಂಪಿಗೆ) ಸೇರಿದವು. ಅದುದರಿಂದ ಇವು ವಿಜಾತೀಯ ವಾದುವು.

**ವಿಜಾನತ್ ವಿಜಾನತ್** (ವಿಂ) ತಿಳಿದಿರುವ, ಅರಿತಿರುವ. ವಿ + ಜಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ವಿಜಾನತಾ ಭಾವಿ ಶಿರೋನಿಕ್ಶುಂತನಂ ಪ್ರಜ್ಞೇನ ಶೋಕಾದಿವ ತಸ್ಯ ಮೌಲಿನಾ" ಕುಮಾಂ ೧೫-೨೮ | ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) | -ಜಾನತೀ-ಜಾನತೀ. "ಶಾನಕ್" | -ಜಾನಾತಃ-ಜಾನಾತಃ.

**ವಿಜಿಗಿಷತ್ ವಿಜಿಗಿಷತ್** (ವಿಂ) ಜಯಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಜಿ (ಜಯೆ) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |

**ವಿಜಿಗಿಷಾ ವಿಜಿಗಿಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಯಿಸಲು ಆಸೆ, ಜಯ ಗಳಿಸಲು ಇಚ್ಛೆ. ವಿಜೇತುಮಿಚ್ಛಾ-ವಿ + ಜಿ (ಜಯೆ) + ಸನ್ "ಞಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

**ವಿಜಿಗಿಷು ವಿಜಿಗಿಷು** (ವಿಂ) ಜಯಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು, ಜಯಿಸಲು ಆಸೆಪಡುವವನು. ವಿಜೇತುಮಿಚ್ಛಃ-ವಿ + ಜಿ (ಜಯೆ) + ಸನ್ "ಞಃ" (೩-೨-೧೬೮) | "ವಿಜಿಗಿಷೋರ್ನೃಪತಯಃ ಪ್ರಯಾಂತಿ ಪರಿವಾರತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೯೦ |

**ವಿಜಿತ ವಿಜಿತ** (ವಿಂ) ಜಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಜಿ (ಜಯೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ನಾರೀಭಿರ್ಗುಣಜನಸ್ಥಲಾಹುತಾನಾ-ಮಾಸ್ಯಶ್ರೀವಿಜಿತವಿಕಾಸಿವಾರಿಜಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೮-೪೭ |

**ವಿಜಿತ ವಿಜಿತ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಜಯ, ಗೆಲುವು. ವಿ + ಜಿ (ಜಯೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೪) | "ಕ್ಷಿತವಿಜಿತವಿಜಿತ-ವಿಹಿತವಿಜಿತರತಯಃ ಪರಗತಯಃ" ಕಾವ್ಯಾಂ ೩-೮೫ |

**ವಿಜಿಲ ವಿಜಿಲ** (ವಿಂ) 1. ಜಿಡ್ಡಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಜಿಡ್ಡಾಗಿರುವ. 2. ಕೆನೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಅನ್ನ. 3. ರಸವಾಗಿರುವ ವ್ಯಂಜನ, ದ್ರವವಾಗಿರುವ ವ್ಯಂಜನ, ಸಾಂಬಾರ ಸಹಿತವಾದ ಗಂಜಿ. "ಸ್ಯಾತಿಚ್ಛಿಲಂ ತು ವಿಜಿಲಮ್" ಅಮಂ |

**ವಿಜಿಹ್ಯ ವಿಜಿಹ್ಯ** (ವಿಂ) ವಕ್ರವಾದ, ಕುಟಿಲವಾದ. ವಿಶೇಷಣ ಜಿಹ್ಯಃ | "ನ ತೇನ ಸಜ್ಯಂ ಕ್ವಚಿದ್ವೃತ್ತಂ ಧನುಃ ಕೃತಂ ನ ವಾ ಕೋಪವಿಜಿಹ್ಯಮಾನನಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೨೧ |

**ವಿಜುಲ ವಿಜುಲ** (ವುಂ) ಶಾಲ್ಮಲಿವೃಕ್ಷ, ಬೂರುಗದ ಮರ.

**ವಿಜೃಂಭಣ ವಿಜೃಂಭಣ** (ನಂ) 1. ವಿಕಾಸಹೊಂದುವುದು, ಅರಳುವುದು. ವಿ + ಜೃಂಭಿ (ಗಾತ್ರವಿನ್ಯಾಸ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | "ವನೇಷು ಸಾಯಂತನಮಲ್ಲಿಕಾನಾಂ ವಿಜೃಂಭಣೋ-ದ್ಗಾಂಧಿಷು ಕ್ರುತ್ಮಮಲೇಷು" ರಘುಂ ೧೬-೪೭ | 2. ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವುದು, ಬೆಳೆಯುವುದು, ದೊಡ್ಡದಾಗುವುದು. 3. ಅಕಳಿಸುವುದು. 4. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗುವುದು, ಮೈದೋರುವುದು, ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

**ವಿಜೃಂಭಣ ವಿಜೃಂಭಣ** (ವಿಂ) 1. ವಿಕಾಸಹೊಂದುತ್ತಿರುವ, ಅರಳುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಜೃಂಭಿ (ಗಾತ್ರವಿನ್ಯಾಸ) ಭಾವೇ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) | 2. ಅಕಳಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಸ್ವನಾಭಿತಸ್ಸಪ್ತಮಜನ್ಮಭಾಗಿನೋ ವಿಜೃಂಭಣಸ್ಯ ವಿಧೇ-ರ್ಯದೃಚ್ಛಯಾ" ಯಾದಂ ೧೪-೨೯ | 3. ಬೆಳೆಯುತ್ತಿರುವ, ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುತ್ತಿರುವ, ದೊಡ್ಡದಾಗುತ್ತಿರುವ. 4. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗುತ್ತಿರುವ, ಮೈದೋರುತ್ತಿರುವ, ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ.

**ವಿಜೃಂಭಿತ ವಿಜೃಂಭಿತ** (ನಂ) 1. ಅಕಳಿಕೆ. ವಿ + ಜೃಂಭಿ (ಗಾತ್ರವಿನ್ಯಾಸ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ದೊಡ್ಡದಾಗಿ ಬೆಳೆಯುವುದು. 3. ಕಾರ್ಯದ ರೀತಿ. "ಯಸ್ಯಾಃ ಪುರಾ ಪರಿಚಯಪ್ರತಿಬದ್ಧಬೀಜಮುದ್ಭೂತಭೂರೀಫಲಶಾಲಿ ವಿಜೃಂಭಿ-ತೇನ" ಮಾಲತೀಂ ೧೦-೨೧ | 4. ವಿಕಾಸಹೊಂದುವುದು, ಅರಳುವುದು. 5. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗುವುದು, ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. (ವಿಂ) 6. ಅಕಳಿಸಿದ. "ಜಲಧರವಿವೃದ್ಧಹನುನಾ ವಿಜೃಂಭಿತಮಿವಾಂತರಿಕ್ಷೇಣ" ಮೃಚ್ಛಂ ೫-೫೧ | 7. ವಿಕಾಸಹೊಂದಿದ, ಅರಳಿದ. 8. ದೊಡ್ಡದಾಗಿ ಬೆಳೆದ. 9. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿರುವ, ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ. 10. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ, ಹರಡಿರುವ. "ಆವೃಂಭತೋ ಲೋಚನಮಾರ್ಗಮಾಜೌ"



ರಜೋನ್ವಕಾರಸ್ಯ ವಿಜೃಂಭಿತಸ್ಯ" ರಘುಂ ೭-೪೨ |  
 "ವಿಜೃಂಭಿತಂ ತು ಚೇಷ್ಠಾಢಾಂ ಕಲಿಬಂ ತ್ರಿಘೃ ವಿಕಸ್ವರೇ" ಮೇದಿಂ |  
 ವಿಜ್ಞಲ ನಿಜ್ಞಲ (ನಂ) ಬಾಣ. "ತೀರಂ ವಿಜ್ಞಲಸಾಯಕೇ"  
 ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ವಿಜ್ಞಲ ನಿಜ್ಞಲ (ನಂ) ಲಮಂಗಪಟ್ಟಿ, ದಾಲ್ಪಿನ್ನಿ.

ವಿಜ್ಞಲಿಕಾ ನಿಜ್ಞಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಪಟದ ಹಕ್ಕಿ.

ವಿಜ್ಞ ನಿಜ್ಞ (ಪುಂ) 1. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. (ವಿಂ)

2. ಅಭಿಜ್ಞ, ನಿಪುಣ. ವಿಶೇಷಣ ಜಾನಾತಿ — ವಿ + ಜ್ಞಾ  
 (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೬) | "ಎವಂ ವಿಪರ್ಯಯಂ  
 ಬುದ್ಧವಾ ನೃಣಾಂ ವಿಜ್ಞಾಭಿಮಾನಿನಾಮ್" ಭಾಗಂ ೬-೧೬-೬೧ |

3. ಬುದ್ಧಿಮಂತ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದವನು. "ವಿಜ್ಞೇನ ವಿಜ್ಞಾಪ್ಯ-  
 ಮಿದಂ ನರೇಂದ್ರೇ ತಸ್ಮಾತ್ ತ್ವಯಾಸ್ಮಿನ್ ಸಮಯಂ ಸಮೀಕ್ಷ್ಯ" ನೆಪಂ  
 ೩-೧೬ |

ವಿಜ್ಞಪನ ನಿಜ್ಞಪನ (ನಂ) 1. ಸಂತೋಷಗೊಳಿಸುವುದು.

2. ತೋರಿಸುವುದು. 3. ಕೊಲ್ಲಿಸುವುದು. ವಿ + ಜ್ಞಾ  
 (ಮಾರಣತೋಷಣನಿಶಾಮನೇಘು) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |

ವಿಜ್ಞಪನೀಯ ನಿಜ್ಞಪನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಗೊಳಿಸ

ಲ್ಪಡುವ. 2. ಸಂತೋಷಗೊಳಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಸಂತೋಷ  
 ಗೊಳಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. 4. ಸಂತೋಷಗೊಳಿಸಬಹು  
 ದಾದ. 5. ತೋರಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ತೋರಿಸಬೇಕಾದ.  
 7. ತೋರಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 8. ತೋರಿಸಲು ಶಕ್ಯ  
 ವಾದ. 9. ಕೊಲ್ಲಿಸಲ್ಪಡುವ. 10. ಕೊಲ್ಲಿಸಬೇಕಾದ.  
 11. ಕೊಲ್ಲಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. 12. ಕೊಲ್ಲಿಸಬಹುದಾದ.

ವಿ + ಜ್ಞಾ (ಮಾರಣತೋಷಣನಿಶಾಮನೇಘು) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್"  
 (೩-೧-೧೬) | "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೬) | -ಜ್ಞಪಯಿತವ್ಯ:  
 -ಜ್ಞಪಯಿತವ್ಯಃ.

ವಿಜ್ಞಪಿತ ನಿಜ್ಞಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

2. ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಕೊಲ್ಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಜ್ಞಾ  
 (ಮಾರಣತೋಷಣನಿಶಾಮನೇಘು) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |

ವಿಜ್ಞಪಯತ್ ನಿಜ್ಞಪಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡಿಸು

ತ್ತಿರುವ. 2. ತೋರಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಕೊಲ್ಲಿಸುತ್ತಿರುವ.  
 ವಿ + ಜ್ಞಾ (ಮಾರಣತೋಷಣನಿಶಾಮನೇಘು) + ಣಿಚ್ "ಶತ್"  
 (೩-೧-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ -ಜ್ಞಪಯಂತಿ -ಜ್ಞಪಯಂತೀ.

ವಿಜ್ಞಪ್ತ ನಿಜ್ಞಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2.

ಸಂತೋಷಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಕೊಲ್ಲಿಸ  
 ಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಜ್ಞಾ (ಮಾರಣತೋಷಣನಿಶಾಮನೇಘು) + ಣಿಚ್  
 "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | ಮಿತ್ವಾತ್ ಹ್ರಸ್ವಃ | ಇಡಾಗಮಾಭಾವೋ  
 ಣಿಲೋಪಶ್ಚ ವಾ ನಿಪಾತ್ಯತೇ (೭-೨-೨೭) | ಪಕ್ಷೇ ವಿಜ್ಞಪಿತಃ |

ವಿಜ್ಞಪ್ತಿ ನಿಜ್ಞಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿಜ್ಞಾಪನೆ, ತಿಳಿಯಪಡಿಸು  
 ವುದು. ವಿ + ಜ್ಞಪ (ಜ್ಞಾನೇ ಜ್ಞಾಪನೇ ಚ) "ಕ್ತಿನ್"  
 (೩-೩-೧೪) | "ವಿಜ್ಞಪ್ತಿಮಂತಃಸಮಯಃ ಸ ಮೇಮ್ಯಾ ಮಧ್ಯೇಸಮಂ  
 ವಾಸವಸಮಭಲೀಯಾಮ್" ನೆಪಂ ೬-೭೬ | 2. ಜ್ಞಾಪಿಸು  
 ವುದು.

ವಿಜ್ಞಾತ ನಿಜ್ಞಾತ (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಜ್ಞಾ  
 (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ವಿಜ್ಞಾತೋಸಿ  
 ಮಯಾ ಚಿಹ್ನೇವಿನಾ ಚಕ್ರಂ ಜನಾರ್ದನಃ" ಹರಿವಂ | 2. ಪ್ರಸಿದ್ಧ  
 ನಾದ, ಎಲ್ಲರಿಗೂ ತಿಳಿದವನಾದ. ವಿ + ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ)  
 "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೮೮) |

ವಿಜ್ಞಾತವ್ಯ ನಿಜ್ಞಾತವ್ಯ (ವಿಂ) "ವಿಜ್ಞಾನೀಯ" ನೋಡಿ.

ವಿಜ್ಞಾನ ನಿಜ್ಞಾನ (ನಂ) 1. ಲೌಕಿಕವಾದ ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನ.

ವಿ + ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |

2. ಶಿಲ್ಪಜ್ಞಾನ. "ಮೋಕ್ಷೇ ಧೀರ್ಜ್ಞಾನಮನ್ಯತ್ರ ವಿಜ್ಞಾನಂ ಶಿಲ್ಪ-  
 ಶಾಸ್ತ್ರಯೋಃ" ಅಮಂ | 3. ನಾನಾವಿಧವಾದ ಜ್ಞಾನ.  
 ವಿವಿಧಂ ಜ್ಞಾನಮ್ | "ಚತುರ್ವಿಧಾನಾಂ ವಿಜ್ಞಾನಾಂ ವಾರಣಂ ಹಿ  
 ಯಥಾರ್ಥತಃ | ವಿಜ್ಞಾನಮಿತರದ್ವಿವಿಧಾಣೇನ ಧರ್ಮೋ ವಿವರ್ಧತೇ"  
 ಕರ್ಮಪುಂ | 4. ಜೀವಾತ್ಮ. 5. ಇಂದ್ರಿಯ. 6. ಪ್ರಾವೀಣ್ಯ.  
 ನಿಪುಣತೆ. "ಆಪರಿಸಿತೋಷಾದ್ವಿಧುಷಾಂ ನ ಸಾಧು ಮನ್ಯೇ ಪ್ರಯೋಗ-  
 ವಿಜ್ಞಾನಮ್" ಶಾಕುಂ ೧-೨ | 7. ಪರತತ್ತ್ವಗತವಾದ  
 ಅಸಾಧಾರಣ ವಿಶೇಷ ವಿಷಯಕ ಜ್ಞಾನ. 8. ವಿವೇಚನಾ  
 ಪೂರ್ವಕ ಜ್ಞಾನ.

ವಿಜ್ಞಾನಮಯಕೋಶ ನಿಜ್ಞಾನಮಯಕೋಶ (ಪುಂ) ಜೀವ

ನಿಗೆ ಅವರಣವಾಗಿರುವ ಪಂಚಕೋಶಗಳಲ್ಲಿೊಂದು, ಜ್ಞಾನ  
 ಮತ್ತು ಇಂದ್ರಿಯಗಳೊಡಗೂಡಿದ ಬುದ್ಧಿ. ಪಂಚ  
 ಕೋಶಗಳು: (1) ಅನ್ನಮಯ ಕೋಶ (2) ಪ್ರಾಣ  
 ಮಯ ಕೋಶ (3) ಮನೋಮಯ ಕೋಶ (4) ವಿಜ್ಞಾನ  
 ಮಯ ಕೋಶ ಮತ್ತು (5) ಅನಂದಮಯ ಕೋಶ.

ವಿಜ್ಞಾನಿಕ ನಿಜ್ಞಾನಿಕ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರವೀಣ, ನಿಪುಣ.

ಬಾಣ. ವಿಜ್ಞಾನಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಠನ್" (೫-೨-೧೧೬) |  
 2. ಪಂಡಿತ, ಸಕಲವಿಧ ಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು.

ವಿಜ್ಞಾನೀಯ ನಿಜ್ಞಾನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯ

ಲ್ಪಡುವ. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯಬೇಕಾದ. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ  
 ತಿಳಿಯಬಹುದಾದ. 4. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯಲು ಅರ್ಹವಾದ.  
 ವಿ + ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) |  
 "ತವ್ಯ:" | -ಜ್ಞಾತವ್ಯಮ್ -ಜ್ಞಾತವ್ಯಮ್.

ವಿಜ್ಞಾಪಕ ನಿಜ್ಞಾಪಕ (ವಿಂ) 1. ವಿಜ್ಞಾಪನೆ ಮಾಡು

ವವನು, ಗೌರವದಿಂದ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುವವನು.



ವಿ + ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) + ಗಿಂ "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।  
2. ಬೋಧಿಸುವವನು, ಉಪದೇಶಮಾಡುವವನು, ಶಿಕ್ಷಕ.

**ವಿಜ್ಞಾಪನ ವಿಜ್ಞಾಪನ** (ನಂ) 1. ಗೌರವದಿಂದ ಅರೂಪು  
ವುದು, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ತಿಳಿಸುವುದು. ವಿ + ಜ್ಞಾ  
(ಅವಬೋಧನೆ) + ಗಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ತಿಳಿಯು  
ಪಡಿಸುವುದು. "ತಯಾ ವಿಜ್ಞಾಪನಾಯಾಹಂ ಪ್ರೇಷಿತಃ ಸ್ವೀಕುರಣ್ವ  
ತಾಮ್" ಕಥಾಸಂ | ವಿ + ಜ್ಞಾ + ಗಿಂ "ಯುಕ್" (೩-೩-೧೦೭)।  
-ಜ್ಞಾಪನಾ - ಜ್ಞಾಪನಾ. "ಕಾಲಪ್ರಯುಕ್ತಾ ಸ್ವಲ್ಪ ಕಾರ್ಯವಿಜ್ಞಾ-  
ವಿಜ್ಞಾಪನಾ ಭರ್ತೃಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಯೇ" ಕುಮಾಂ ೭-೨೩ |

**ವಿಜ್ಞಾಪನೀಯ ವಿಜ್ಞಾಪನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. 2. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸಬೇಕಾದ. 3. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸಲು  
ಅರ್ಹವಾದ. ವಿ + ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) + ಗಿಂ "ಅನೀಯರ್"  
(೩-೧-೧೬)। "ತವ್ಯಃ"। -ಜ್ಞಾಪಯಿತವ್ಯಃ - ಜ್ಞಾಪಯಿತವ್ಯಃ।  
"ಆರ್ಯಪುತ್ರ ಚಿತ್ರದರ್ಶನೇನ ಪ್ರತ್ಯುತ್ಪನ್ನದೋಹದಾಯಾ ಮಮ ವಿಜ್ಞಾಪನೀಯ-  
ಮಸ್ತಿ" ತಂ ರಾಂ ೧ |

**ವಿಜ್ಞಾಪಿತ ವಿಜ್ಞಾಪಿತ** (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಗೌರವ  
ದಿಂದ ಅರೂಪಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) + ಗಿಂ  
"ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಸಮಾಪ್ತವಿಜ್ಞಾನೇನ ಮಯಾ ಮಹರ್ಷಿ-  
ವಿಜ್ಞಾಪಿತೋಽಮೃದಗುರುದಕ್ಷಿಣಾಯೇ" ರಘುಂ ೫-೨೦ | 3. ಉಪ  
ದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಿಜ್ಞಾಪ್ಯ ವಿಜ್ಞಾಪ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಡುವ, ಗೌರವ  
ದಿಂದ ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. ವಿ + ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) + ಗಿಂ  
"ಯತ್" (೩-೧-೧೭)। 2. ತಿಳಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಉಪ  
ದೇಶಿಸಲ್ಪಡುವ.

**ವಿಜ್ಞೇಯ ವಿಜ್ಞೇಯ** (ವಿಂ) ತಿಳಿಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.  
ವಿಜ್ಞಾತುಂ ಯೋಗ್ಯಮ್ - ವಿ + ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಯತ್"  
(೩-೧-೧೭) |

**ವಿಜ್ವರ ವಿಜ್ವರ** (ವಿಂ) ಜ್ವರವಿಲ್ಲದ, ಜ್ವರದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ  
ಹೊಂದಿದ. ವಿಗತೋ ಜ್ವರೋ ಯಸ್ಮಾತ್ |

**ವಿಜ್ಜಾಲಿ ವಿಂಜ್ಜಾಲೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಂಕ್ತಿ, ಶ್ರೇಣಿ, ಸಾಲು.  
"ವಿಜ್ಜಾಲಿ ಪಙ್ಕ್ತಿರಾವಲಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ವಿಡ ವಿಡ** (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ವೆಡತಿ - ವಿಡ  
(ಶಬ್ದ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫)। 2. ಉಪಪತ್ತಿ, ಜಾರ.  
"ತ್ವದ್ವಲ್ಲಭಃ ಕವ ನು ತಪಸ್ವಿಜನಸ್ಯ ಹಂತಾ ಕನ್ಯಾವಿಡಃ  
ಪತಿರಸೌ ಪರಿರಕ್ಷತು ತ್ವಾಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೮-೮ | 3. ವಿಷಯಾ  
ಸಕ್ತ, ವಿಷಯಾಲಂಪಟ, ಭೋಗದಲ್ಲಿ ಆಸೆಯುಳ್ಳವನು.  
4. ಲವಣ. 5. ಮೂಷಿಕ, ಇಲಿ. 6. ಖದಿರ ವೃಕ್ಷ.  
7. ನಾಗರಂಗ ವೃಕ್ಷ. "ವಿಡೋದ್ರಿ ಲವಣಂ ಪಿಡ್ಧಂ ಮೃಷಿಕೇ  
ಖದಿರೇಷು ಚ" ಮೇದಿಂ |

**ವಿಡ್ವಿ ವಿಟಂಕ** (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿಗಳ ಗೂಡು, ಹಕ್ಕಿಗಳ  
ವಾಸಸ್ಥಾನ. "ವಿತದಿನಿರ್ಯುಹವಿಡ್ವಿಟಿ" ಮಾಘಂ ೩-೫೫ |  
2. ಶಿಖರ, ಬಹಳ ಎತ್ತರ ಪ್ರದೇಶ. ವಿಶೇಷಣ ಟ್ವಿಡ್ವಿಟಿ  
-ಟಕಿ (ಬನ್ಧನೆ) "ವಿ" (೩-೩-೧೨೧)। "ಅಯಮೇವ  
ಮಧುಮತೀಸೋತಃ ಸಂದಾನಿತಪವಿತ್ರಮೇಖಲೋ ಮಹೀಧರವಿಡ್ವಿಟಿಃ"  
ಮಾಲತೀಂ ೧೦ | ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" | ವಿಡ್ವಿಟಿಃ ವಿಟಂಕಕಃ |

**ವಿಡಪ ವಿಟಪ** (ಪುಂ) 1. ಲತೆ (ಬಳ್ಳಿ) ಮರ ಮೊದ  
ಲಾದುವುಗಳ ಶಾಖೆ, ರೆಂಬೆ ಮತ್ತು ಕುಡಿಗಳ ಗುಂಪು.  
ವಿಡಾನ್ ಪಾತಿ - ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) |  
"ಮಧುಕರವಿಡಪಾನಮಿತಾಸ್ತರಪಿಡ್ವಿಟಿವಿಭ್ರತೋಽಸ್ಯ ವಿಡಪಾನ-  
ಮಿತಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೪೮ | 2. ಪಲ್ಲವ, ಚಿಗುರು. "ವ್ರಜ  
ವಿಡಪಮಮಂ ದದಸ್ವ ತಸ್ಯ ಭವತು ಯತಃ ಸದೃಶೋಽಶ್ವಿರಾಃ ಯೋಗಃ"  
ಮಾಘಂ ೭-೫೩ | 3. ಪೊದೆ, ಪೊದರು. (ಪುಂ) 4. ವಿಟರ  
ಯಜಮಾನ, ಜಾರಪುರುಷರನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವವನು. "ವಿಡಪೋ  
ನ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಸ್ತಮ್ಬಶಾಖಾವಿಸ್ತಾರಪಲ್ಲವೇ | ವಿಡಾಧಿಪೇ ನಾ"  
ಮೇದಿಂ |

**ವಿಡಪಿನ್ ವಿಟಪಿನ್** (ಪುಂ) ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ವಿಡಪೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ  
"ಇನಿ" (೫-೨-೧೧೫) |

**ವಿಡಪಿಮಗ ವಿಟಪಿಮಗ** (ಪುಂ) ಶಾಖಾಮೃಗ, ಮರ್ಕಟ,  
ವಾನರ, ಕಪಿ. ವಿಡಪಿಸಂಚಾರಿ ಮೃಗಃ |

**ವಿಡಮಾಕ್ಷಿಕ ವಿಟಮಾಕ್ಷಿಕ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಗೈರಿಕ ಧಾತು.  
ವಿಡಿ ವಿಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಳದಿ ಚಂದನ.

**ವಿಡ್ವಿಲ ವಿಡ್ವಿಲ** (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಪರಮಾತ್ಮನ ಒಂದು ರೂಪ.  
**ವಿಡ್ವಿಲದಿರ ವಿಟ್ವಿಲದಿರ** (ಪುಂ) ದುರ್ಗಂಧದ ಕಗ್ಗಲಿ ಮರ.  
ವಿಡ್ವಿತ್ ದುರ್ಗಂಧಃ ಸದಿರಃ |

**ವಿಡ್ವಿಲ ವಿಟ್ವಿಲ** (ಪುಂ) ವರಾಹ, ಗ್ರಾಮಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿ  
ಸುವ ಹಂದಿ. ವಿಷಿ ವರತಿ - ವರ (ಗತೌ) "ಟಃ"  
(೩-೨-೧೬) | "ವಿಡ್ವಿಲಃ ಸುಕರೋ ಗ್ರಾಮ್ಯಃ" ಅಮಂ |

**ವಿಡ್ವಿಲ ವಿಟ್ವಿಲ** (ಪುಂ) ಮಗಳ ಗಂಡ, ಕನ್ಯೆಯ ಪತಿ,  
ಅಳಿಯ. ವಿಷಃ ಕನ್ಯಾಃ ಪತಿಃ |

**ವಿಡ ವಿಡ** (ನಂ) ಉಪ್ಪುಮಾಣ್ಡಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ  
ಉಪ್ಪು. ವಿಡ (ಭೇದನೆ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫) |  
"ಪಾಕಯಂ ವಿಡಂ ಚ ಕೃತಕೇ ದ್ವಯಮ್" ಅಮಂ |

**ವಿಡ್ವಿಲ ವಿಡಂಕ** (ಪುಂ) 1. ವಾಯುವಿಳಂಕ. ವಿಡತಿ - ವಿಡ  
(ಭೇದನೆ) "ಅಜ್ಞಿ" (ತಂ ೧-೧೨೧) | (ವಿಂ) 2.  
ಬುದ್ಧಿವಂತ, ಜಾಣ, ತಿಳಿದವನು. "ವಿಡ್ವಿಲಸ್ತ್ರಿಷ್ವಭಿಜ್ಞಃ  
ಸ್ಯಾತ್ ಕುಮಿಷ್ಠೇ ಪುನಃಪುನಃಕಮ್" ಮೇದಿಂ |



**ವಿಡಂಬ ವಿಡಂಬ** (ಪುಂ) 1. ಅನುಕರಿಸುವುದು, ಅಣಕಿಸುವುದು, ಒಬ್ಬ ಮಾಡಿದಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ವಿಡಂಬ (ಅನುಕರಣ) "ಘ" (೩-೩-೧೮)। 2. ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ಖೇಡಿಸುವುದು.

**ವಿಡಂಬನ ವಿಡಂಬನ** (ನಂ) 1. ಅಣಕಿಸುವುದು, ಅನುಕರಿಸುವುದು. ವಿಡಂಬ (ಅನುಕರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ನೋಯಿಸುವುದು.

**ವಿಡಂಬನಾ ವಿಡಂಬನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನುಕರಣ, ಹೋಲುವುದು. ವಿಡಂಬ + ಣಿಚ್ "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭)। "ಕುಟಜಪುಷ್ಪಪರಾಗಕಣಾಃ ಸ್ಕುಟಂ ವಿಧಿಧಿರೇ ದಧಿರೇಣುವಿಡಂಬನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೬-೩೫। 2. ಪರಿಹಾಸ್ಯ. "ಇಯಂ ಚ ತೇಽನ್ಯಾ ಪುರತೋ ವಿಡಂಬನಾ ಯದ್ವಯಾ ವಾರಣರಾಜಹಾರ್ಯಯಾ" ಕುಮಾರಂ ೫-೭೦। 3. ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ನೋಯಿಸುವುದು.

**ವಿಡಂಬಯತ್ ವಿಡಂಬಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಅನುಕರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೋಲುತ್ತಿರುವ. ವಿಡಂಬ (ಅನುಕರಣ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಉತ್ಕಿಪ್ತಗಾತ್ರಃ ಸಮ ವಿಡಂಬಯನ್ಮಃ ಸಮುತ್ಪತ್ತಿವ್ಯಂತಮಗ್ನೇದ್ರಮುಚ್ಚಕೈಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೫। 2. ಹಾಸ್ಯಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಖೇಡಿಸುತ್ತಿರುವ.

**ವಿಡಂಬಿತ ವಿಡಂಬಿತ** (ವಿಂ) 1. ಹಾಸ್ಯಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿಡಂಬ (ಅನುಕರಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಅನುಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಿಡಂಬಿತಾನ್ ಗೋಪುರಧಾರಿವಿಮ್ಬೈಃ ದೇವಾನ್ ವಿಭೋರೈಕ್ಷತ ದಿವ್ಯದೇಹೇ" ಯಾದಂ ೨೩-೩೪।

**ವಿಡೀನ ವಿಡೀನ** (ನಂ) ಪಕ್ಷಿಗಳ ಒಂದು ವಿಧ ಹಾರಾಟ. ಪ್ರಡೀನಮ್ ಉಡೀನಮ್ ಸಂಜೀನಮ್ ವಿಡೀನಮ್ ಅವಜೀನಮ್ ಡೀನಮ್ ನಿಡೀನಮ್ ತಿರ್ಯಗಜೀನಮ್ ಪರಿಜೀನಮ್ ಇವೇ ಮೊದಲಾಗಿ ಹಕ್ಕಿಗಳ ಹಾರಾಟದಲ್ಲಿ ನೂರ ಒಂದು ಭೇದಗಳಿರುವುವು.

**ವಿಡ್ಲವಣ ವಿಡ್ಲವಣ** (ನಂ) ಉಪ್ಪುಮಣ್ಣಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಲವಣ. ವಿಡ್ವತ್ ದುರ್ಗಂಧ ಲವಣಮ್।

**ವಿಡ್ವರಾಹ ವಿಡ್ವರಾಹ** (ಪುಂ) ಊರೊಳಗೆ ಸಂಚರಿಸುವ ವರಾಹ, -ಹಂದಿ. ವಿಡ್ವಪ್ರಿಯೋ ವರಾಹಃ। "ಛತ್ರಾಕಂ ವಿಡ್ವರಾಹಂ ಚ ಲಗುನಂ ಗ್ರಾಮಕುಕ್ಕುಟಮ್। ಪಲಾಣ್ಡುಂ ಗೃಜ್ಜನಂ ಚೈವ ಮತ್ಯಾ ಜಗದ್ವಾ ಪತೇದ್ವಿಜಃ" ಮನುಂ ೫-೨೯।

**ವಿತಂಸ ವಿತಂಸ** (ಪುಂ) ಮೃಗ ಮತ್ನು ಪಕ್ಷಿಗಳನ್ನು ಹಿಡಿಯುವ ಸಾಧನ. ವಿತಂಸ್ಯತೇ—ವಿ+ತಸಿ (ಅಲಕ್ಷಾರೇ) "ಘ" (೩-೩-೧೯)। "ವಿತಂಸಸ್ತುಪಕರಣಂ ಬಂಧನೇ ಮೃಗಪಕ್ಷಿಣಾಮ್" ಅಮಂ।

**ವಿತಂಡ ವಿತಂಡ** (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ.

**ವಿತಂಡಾ ವಿತಂಡಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಿರುಳಿಲ್ಲದ ವಾದ, ಹೊರಗೆ ಸರಿಯಾಗಿ ತೋರಿದರೂ ಅವಿವೇಕದಿಂದ ಮಾಡುವ ವಾದ, ತಿಳಿಗೇಡಿತನದ ವಾದ. ವಿತಂಡಯತೇ—ವಿ+ತಡಿ (ತಾಡನೆ) "ಋಃ" (೩-೩-೧೦೩)। 2. ಸೌಟು. 3. ಕುತರ್ಕದ ಚರ್ಚೆ. 4. ಗಣಿಗಿಲೆ ಗಿಡ.

**ವಿತತ ವಿತತ** (ವಿಂ) 1. ವಿಸ್ತಾರವಾದ, ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿ ಹರಡಿರುವ. ವಿ+ತನು (ವಿಸ್ತಾರೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ವಿತತಶೀಕರರಾಶಿಭಿರುಚ್ಚಿತ್ತೈರಪಲರೋಧವಿವರ್ತಿಭಿರಮ್ಬುಭಿಃ" ಕಿರಾಂ ೫-೧೫। 2. ವಿಸ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಸರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ತನು ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಹಿತ್ವಾ ಕ್ಷಣಂ ವಿತತಪಕ್ಷತಿರಂತರಿಕ್ಷೇ" ಮಾಘಂ ೫-೩೮। 3. ಮುಚ್ಚಿರುವ. (ನಂ) 4. ವೀಣೆ ಮೊದಲಾದ ತಂತಿ ವಾದ್ಯ.

**ವಿತತಿ ವಿತತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಕ್ಕಾ, ಸಾಲು. ವಿ+ತನು (ವಿಸ್ತಾರೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। "ಸುಕೃತಂ ತದಸ್ತು ಕತಮಸ್ತ್ವಯಂ ವಿಧಿಯದಕಾಲಮೇಧವಿತತಿವ್ಯಯುಜತ್" ಮಾಲತೀಂ ೯-೪೯। 2. ವಿಸ್ತಾರ, ಹರಡುವುದು, ಪ್ರಸರಿಸುವುದು. "ವಚ್ನಿಹಿ ಸೇತುಮಿಹ ತೇ ಯಶಸೋ ವಿತತೈ ಗಾಯಂತಿ ದಿಗ್ವಿಜಯಿನೋ ಯಮುಪೇತ್ಯ ಭೂಪಾಃ" ಭಾಗಂ ೯-೧೦-೧೫। 3. ಸಮೂಹ. "ವ್ರತತಿವಿತತಿಮಿಷ್ಟಿರೋಹಿತಾಯಾಂ ಪ್ರತಿಯುತೋ ವದನಂ ಪ್ರಿಯಃ ಪ್ರಿಯಾಯಾಃ" ಮಾಘಂ ೭-೪೫।

**ವಿತಥ ವಿತಥ** (ವಿಂ) 1. ಮಿಥ್ಯೆಯಾದ, ಸುಳ್ಳಾದ (ಮಾತು). ವಿಗತಂ ತಥಾತ್ವಮಸತ್ಯಂ ಯಸ್ಮಾತ್। "ಆಜನ್ಮನೋ ನ ವಿತಥಂ ಭವತಾ ಕಿಲೋಕ್ತಮ್" ವೇಣೀಂ ೩-೧೫। 2. ವ್ಯರ್ಥವಾದ, ವಿಫಲವಾದ. "ಪ್ರತ್ಯಗ್ರವೀಚ್ಛೇನಮಿಷುಪ್ರಯೋಗೇ ತತ್ಪೂರ್ವಭಜ್ಞೇ ವಿತಥಪ್ರಯತ್ನಃ" ರಘುಂ ೨-೪೨।

**ವಿತದ್ರು ವಿತದ್ರು** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ನದಿ. ಈ ನದಿಯು ಪಂಜಾಬ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಪ್ರವಹಿಸುವುದು.

**ವಿತನ್ತು ವಿತಂತು** (ಪುಂ) 1. ಉತ್ತಮವಾದ ಅಶ್ವ, (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ವಿಶ್ವಸ್ತೆ, ವಿಧವೆ, ಪತಿಯಿಲ್ಲದವಳು. (ವಿಂ) 3. ದಾರವಿಲ್ಲದ.

**ವಿತನ್ತ್ರಿ ವಿತನ್ತ್ರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವ್ಯತ್ಯಾಸವಾಗಿ ಕಟ್ಟಿದ ತಂತಿ ಯುಳ್ಳ ವೀಣೆ. ವಿ ವಿಷಮಬದ್ಧಾ ತನ್ತ್ರಿ—ತನ್ರಿ (ಕುಡುಂಬ-ಧಾರಣೆ) "ಃ" (೩-೩-೧೫೮)। "ಅಪ್ಯನ್ಯಪುಷ್ಪಾ ಪ್ರತಿಕೂಲಶಬ್ದಾ ಶ್ರೋತುರ್ವಿತನ್ತ್ರಿರೀವ ತಾಡಯಮಾನಾ" ಕುಮಾರಂ ೧-೪೫।

**ವಿತನ್ಯಮಾನ ವಿತನ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) "ವಿತಾಯಮಾನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.



**ವಿತನ್ವತ್ ವಿತನ್ವತ್** (ವಿಂ) 1. ವಿಸ್ತರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹರಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ತನ್ (ವಿಸ್ತಾರೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಸ್ವಂ ರಾಗಾದುಪರಿ ವಿತನ್ವತೋತ್ತರೀಯಂ ಕಾಂತೇನ ಪ್ರತಿಪದವಾರಿತಾತಪಾಃ" ಮಾಘಂ ೮-೫। 2. ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತಿರುವ. "ವಿಲಾಸಿನಸ್ತಸ್ಯ ವಿತನ್ವತಾರ್ತಿ ನ ನರ್ಮಸಾವಿವ್ಯಮಕಾರಿ ನೇಂದುನಾ" ಮಾಘಂ ೧-೫೯। 3. ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ನಿರ್ಮಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಶ್ರೇಣಿ ಬನ್ಧಾವಿತನ್ವದ್ವಿರಸ್ತಮ್ಭಾಂ ತೋರಣಸಜಮ್" ರಘುಂ ೧-೪೧। 4. ರಚಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸೃಷ್ಟಿಸುತ್ತಿರುವ, ಗ್ರಂಥನಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 5. ಉಂಟುಮಾಡುತ್ತಿರುವ. "ವಿತನ್ವತೀ ಕ್ಷೇಮಮದೇವಮಾತೃಕಾಶ್ವಿರಾಯ ತಸ್ಮಿನ್ ಕುರವಶ್ಚಕಾಸತಿ" ಕಿರಾಂ ೧-೧೭। "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)। -ತನ್ವಾನಃ -ತನ್ವಾನಃ.

**ವಿತಮಸ್ ವಿತಮಸ್** (ವಿಂ) ತಮಸ್ಸಿಲ್ಲದ, ಅಂಧಕಾರವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ. ವಿಗತಂ ತಮೋ ಯಸ್ಮಾತ್। "ವಿತಮಸಿ ವಿಷಯೇ ಸ್ಥಿತಾ ಇವಾಸನ್ ವಿರತಿವಿಹೀನವಿಹಾರಜಾಗರೇಣ" ಯಾದಂ ೨೪-೭೦।

**ವಿತರಣ ವಿತರಣ** (ನಂ) 1. ದಾನಮಾಡುವುದು, ಕೊಡುವುದು. ವಿ+ತೃ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಅನುವಿಹಿತಮಹೋತ್ಸವೋ ಯಥಾಹ ವಿತರಣತೋಷಿತವಂದಿಬನ್ಧುರ್ವಗಃ" ಯಾದಂ ೨೪-೩೦। 2. ದಾಟುವುದು.

**ವಿತರ್ಕ ವಿತರ್ಕ** (ಪುಂ) 1. ಉಹ, ಭಾವಿಸುವುದು. ವಿ+ತರ್ಕ (ಭಾಷಾರ್ಥ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ಶಿರೀಷಪುಷ್ಪಾಧಿಕಸೌಕುಮಾರ್ಯಿ ಬಾಹು ತದೀಯಾವಿತಿ ಮೇ ವಿತರ್ಕಃ" ಕುಮಾರಂ ೧-೪೧। 2. ಸಂಭಾವನಾತ್ಮಕಜ್ಞಾನ, ಸಂಶಯಜ್ಞಾನ. ಕಿಂ ಪಶ್ಯಮ್ ಕಿಮಿಂದುಃ ಕಿಂ ಮುಕ್ತಮ್ ಮುಂತಾದ ಕಡೆಗಳಲ್ಲಿ ಕಿಂ ಪದದ ಅರ್ಥ. "ನುನೋದ ತಸ್ಯ ಸ್ಥಲಪದ್ಧಿನೀಗತಂ ವಿತರ್ಕಮಾವಿಷ್ಟತಫೇನಸಂತತಿ" ಕಿರಾಂ ೪-೫।

**ವಿತರ್ಕಣ ವಿತರ್ಕಣ** (ನಂ) 1. ಉಹಿಸುವುದು. 2. ಸಂಶಯಪಡುವುದು. ವಿ+ತರ್ಕ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ವಿತರ್ಧಿ ವಿತರ್ಧಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇದಿಕೆ, ಜಗುಲಿ. ವಿಗತಾ ತರ್ಧಿಃ ಹಿಸಾಜ್ಞಾಃ-ತರ್ಧಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಇನ್" (೩-೪-೧೧೮)। "ರತಾಂತರೇ ಯತ್ರ ಗೃಹಾಂತರೇಷು ವಿತರ್ಧಿನಿರ್ಮಿತವಿಡ್ವಜ್ಞಾನಿಃ" ಮಾಘಂ ೩-೫೫। ವಾ "ಙೀಷ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫)। -ರ್ಧಿ -ರ್ಧೀ.

**ವಿತರ್ಧಿಕಾ ವಿತರ್ಧಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇದಿಕೆ, ಜಗುಲಿ. ವಿತರ್ಧಿ ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಕನ್"।

**ವಿತಲ ವಿತಲ** (ನಂ) ಸಪ್ತ ಪಾತಾಳಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡನೆಯದು.

**ವಿತಸ್ತಾ ವಿತಸ್ತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಂಜಾಬಿನಲ್ಲಿ ಹರಿಯುವ ಒಂದು ನದಿ. ಈ ನದಿಯು ಪಂಜಾಬಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ಪಾಕಿಸ್ತಾನದ ಮೂಲಕ ಪ್ರವಹಿಸಿ ಸಿಂಧು ನದಿಯೊಡನೆ ಕಲೆತು ಅರಬ್ಬಿಸಮುದ್ರವನ್ನು ಸೇರುವುದು.

**ವಿತಸ್ತಿ ವಿತಸ್ತಿ** (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) ಹನ್ನೆರಡು ಅಂಗುಲಗಳ ಅಳತೆ, ನೀಡಿದ ಅಂಗುಷ್ಠ (ಹೆಬ್ಬೆರಳು) ದಿಂದ ಕನಿಷ್ಠಿಕೆ (ಕಿರು ಬೆರಳು) ವರೆಗಿನ ಅಳತೆ. "ವಿತಸ್ತಿರ್ವಾದಿಶಾಙ್ಗುಲಃ" ಅಮಂ 1.

**ವಿತಾನ ವಿತಾನ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಲ್ಕಟ್ಟು, ಚಪ್ಪರದ ಮೇಲುಭಾಗದಲ್ಲಿ ವಸ್ತ್ರದಿಂದ ಮಾಡಿದ ಛಾವಣಿ. ವಿತನ್ಯತೇ-ವಿ+ತನ್ (ವಿಸ್ತಾರೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೯)। "ಬೃಹತ್ಕುಲೇ-ರಪ್ಯತುಲೇವಿತಾನಮಾಲಾಪಿನದ್ವೇರಪಿ ಚಾವಿತಾನಃ" ಮಾಘಂ ೩-೫೦। 2. ಎಸಾರ, ಹರಡುವುದು. "ವಿಲುಲಿತಕಮಲೌಘಃ ಕೀರ್ಣವಲ್ಲಿವಿತಾನಃ" ಮಾಘಂ ೧೧-೨೮। 3. ಸಮೂಹ. "ನವಕನಕಪಿಶಾಙ್ಗಂ ವಾಸರಾಣಾಂ ವಿಧಾತುಃ ಕಕುಭಿ ಕುಲಿಶಪಾಣೇರ್ಭಾತಿ ಭಾಸಾಂ ವಿತಾನಮ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೪೩। 4. ಯಾಗ, ಯಜ್ಞ. "ಸೋಮಪಾಥಿನಿ ಸವಿಷ್ಯತೇ ಮಯಾ ವಾಚ್ಛಿತೋತ್ತಮವಿತಾನಯಾಜಿನಾ" ಮಾಘಂ ೧೪-೧೦। (ನಂ) 5. ಎಂಟನೇ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. 6. ಅವಸರ, ಸಮಯ. (ವಿಂ) 7. ತುಚ್ಛವಾದ, ನೀಚವಾದ. 8. ಶೂನ್ಯವಾದ, ಬರಿದಾದ, ಉತ್ಸಾಹವಿಲ್ಲದ. "ಪ್ರಮುದಿತವರಪಕ್ಷ-ಮೇಕತಸ್ತತ್ಕೃತಿಪತಿಮಣ್ಡಲಮನ್ಯತೋ ವಿತಾನಮ್" ರಘುಂ ೬-೮೬। 9. ಮಂಕಾಗಿರುವ, ಜಡ, ದಡ್ಡ, ಗುಗ್ಗು. "ವಿತಾನೋ ಯಜ್ಞವಿಸ್ತಾರೋಲ್ಲೋಚೇಷು ಕ್ರುತುಕರ್ಮಣಿ। ವೃತ್ತಭೇದಾವಸರಯೋಃ ವಿತಾನಂ ತುಚ್ಛಮಂದಯೋಃ" ವಿಶ್ವಂ 1.

**ವಿತಾನಕ ವಿತಾನಕ** (ಪುಂ) 1. ಪುಂಜ, ಸಮೂಹ. ವಿತಾನ ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಕನ್"। "ಬಂಹೀಯಸಾ ದೀಪ್ತಿವಿತಾನಕೇನ ಚಕಾಸಯಾಮಾಸತುರಲ್ಲಸಂತಿ" ಮಾಘಂ ೩-೬। 2. ಉಲ್ಲೋಚ, ಮೇಲ್ಕಟ್ಟು. 3. ಎಸಾರ.

**ವಿತಾಯಮಾನ ವಿತಾಯಮಾನ** (ವಿಂ) ವಿಸ್ತರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ತನ್ (ವಿಸ್ತಾರೇ) +ಯಕ್ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)। ವಾ ಆತ್ವಮ್ (೬-೪-೪೪)। "ಸಂಪದ್ಯತಾಮಿತಿ ಶಿವೇನ ವಿತಾಯಮನಂ ಲಕ್ಷ್ಮೀವತಃ ಕ್ಷಿತಿಪತೇಸ್ತನಯಸ್ಯ ವೀಯಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೫-೫೩। ಆತ್ವಾಭಾವೇ ವಿತನ್ಯಮಾನಃ ವಿತನ್ಯಮಾನಃ.

**ವಿತಾರಯमाण ವಿತಾರಯमाण** (ವಿಂ) 1. ದಾಟಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ತೃ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) +ಣಿಚ್ "ಶಾನಚ್"



(೩-೨-೧೨೪) 1. ದಾನಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಕೊಡಿಸುತ್ತಿರುವ.

**ವಿತಾರ್ಯಮಾಣ ವಿಶಾರ್ಯಮಾಣ** (ವಿಂ) 1. ದಾಟಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ದಾನಮಾಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) + ಣಿಚ್ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) 1.

**ವಿತಿರ್ಣ ವಿಶೀರ್ಣ** (ವಿಂ) 1. ದಾಟಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ದಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) 1. "ವಿತಿರ್ಣಂ ಸರ್ವಸ್ವೇ ತರಣಕರಣಾಪೂರ್ಣಹೃದಯಾಃ ಸ್ಮರಂತಃ ಸಂಸಾರಂ ವಿಗುಣಪರಿಣಾಮಾಂ ವಿಧಿಗತಿಮ್" ಭರ್ತೃಂ ೩-೮೬. 3. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಿಹಿತದಶನವಾಸಸಾ ಕಪೋಲೇ ವಿಷಮವಿತಿರ್ಣಪದಂ ಬಲಾದಿವಾನ್ಯಾ" ಮಾಘಂ ೭-೨೧. 4. ಕೆಳಗೆ ಇಳಿದಿರುವ. "ಆರೂಢಮದ್ರಿ ನುದಧೀನ್ ವಿತಿರ್ಣಮ್" ರಘುಂ ೬-೭೭.

**ವಿತೀರ್ಯಮಾಣ ವಿಶೀರ್ಯಮಾಣ** (ವಿಂ) 1. ದಾಟಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ದಾನಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ತ್ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) ಕಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) 1.

**ವಿತುನ್ನ ವಿತುನ್ನ** (ನಂ) 1. ಸುನವಲು ಗಿಡ. 2. ಶೈವಾಲ, ಪಾಟಿ. "ವಿತುನ್ನಂ ಸುನಿಷಣ್ಣಂ ಚ ಶೈವಾಲೇ ಚ ನಪುಂಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ.

**ವಿತುನ್ನಕ ವಿತುನ್ನಕ** (ನಂ) 1. ಧನಿಯ, ಕೊತ್ತುಂಬರಿ ಬೀಜ. 2. ಮೈಲುತುತ್ತ. 3. ನೆಲನೆಲ್ಲಿಗಿಡ. "ವಿತುನ್ನಕಂ ತು ಧಾನ್ಯಾಕೇ ಕ್ಷಾಟಾಮಲಮಯುರಕೇ" ಮೇದಿಂ.

**ವಿತುಣ್ಣ ವಿತುಣ್ಣ** (ವಿಂ) ಅಸೆಯಿಲ್ಲದವನು. ವಿಗತಾ ತುಣ್ಣಾ ಯಸ್ಮಾತ್.

**ವಿತ್ತ ವಿತ್ತ** (ನಂ) 1. ಧನ, ಐಶ್ವರ್ಯ. ವಿದ್ಲ್ (ಲಾಭೇ) "ಕ್ತಃ" (೮-೨-೪೮) 1. ನಿಪಾಂ. "ವಿತ್ತಂ ಯದಾ ಯಸ್ಯ ಸಮಂ ವಿಭಕ್ತಂ ಗುಡಾಶ್ವರಃ ಸನಿಮೃತಶ್ಚ ಮನ್ತ್ರಃ" ಹಿತೋಂ ೪-೪೦. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಖ್ಯಾತನಾದ, ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾದ. ವಿತ್ತಃ ಪುರುಷಃ ಸಿಂ ಕೌಂ. 3. ವಿಚಾರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪರೀಕ್ಷೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿದ (ವಿಚಾರಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) 1. ವಾ ನತ್ವಮ್ (೮-೨-೪೪) 1. ವಿತ್ತಃ ವಿನ್ಯ. 4. ಸಂಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಿತ್ತದ ವಿತ್ತದ** (ವಿಂ) 1. ಧನವನ್ನು ಕೊಡುವವನು, ಐಶ್ವರ್ಯವನ್ನು ಕೊಡುವವನು. 2. ದಾನಮಾಡುವವನು. ವಿತ್ತಂ ದದಾತಿ - ಡು ದಾಙ್ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) 1.

**ವಿತ್ತವತ್ ವಿತ್ತವತ್** (ವಿಂ) ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ, ಧನಿಕ. ವಿತ್ತಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ - "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪) 1. ಮಸ್ಯ ವಃ (೮-೨-೯) 1.

**ವಿತ್ತಿ ವಿತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) 1. 2. ಲಾಭ, ಗಳಿಕೆ, ಸಂಪಾದನೆ. ವಿದ್ಲ್ (ಲಾಭೇ) "ಕ್ತಿನ್" 1. 3. ವಿಚಾರಣೆ, ವಿಮರ್ಶೆ. ವಿದ (ವಿಚಾರಣೆ) "ಕ್ತಿನ್" 1. 4. ಸ್ಥಿತಿ, ಇರುವಿಕೆ. ವಿದ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಿನ್" 1.

**ವಿತ್ತೇಶ ವಿತ್ತೇಶ**, -**ದೇಶ** -**ಕೃಷ್ಣ** (ಪುಂ) ಧನಪತಿ, ಕುಬೇರ. ವಿತ್ತಸ್ಯೇಶಃ ದೇಶೋ ವಾ. "ಕುರಾಣಾಂ ಕುರಾಣಾಃ ವಿತ್ತೇಶೋ ಯಕ್ಷರಕ್ಷಸಾಮ್" ಗೀತಾ ೧೦-೨೩.

**ವಿತ್ತಸ್ತ ವಿತ್ತಸ್ತ** (ವಿಂ) ಹೆದರಿದವನು. ವಿ + ತ್ಸೀ (ಉದ್ವೇಗೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) 1. "ಕುರ್ವಂತಿ ಯಸ್ಯ ನ ಮನೋ ವಿವಶಂ ತರಣ್ಯೋ ವಿತ್ತಸ್ತಮುಗ್ಧಹರಿಣೀಸದೃಶಃ ಕಟಾಕ್ಷಃ" ಭರ್ತೃಂ ೨-೮.

**ವಿತ್ತಾಸ ವಿತ್ತಾಸ** (ಪುಂ) ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ. ವಿ + ತ್ಸೀ (ಉದ್ವೇಗೇ) "ವಜ್" (೩-೩-೧೮) 1. "ತತೋಽಭೂತ್ ಪರಸೇನ್ಯಾನಾಂ ಹೃದಿ ವಿತ್ತಾಸವೇಪಥುಃ" ಭಾಗಂ.

**ವಿತ್ತಾಸಯತ್ ವಿತ್ತಾಸಯತ್** (ವಿಂ) ಬಹಳ ಹೆದರಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ತ್ಸೀ (ಉದ್ವೇಗೇ) + ಣಿಚ್ "ಶತೃ" (೩-೨-೧೨೪) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) 1. -ಯಂತಿ -ಯಾನ್ತೀ.

**ವಿತ್ತಾಸಿತ ವಿತ್ತಾಸಿತ** (ವಿಂ) ಹೆದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಭಯಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ತ್ಸೀ (ಉದ್ವೇಗೇ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) 1. "ವಿತ್ತಾಸಿತವಿಹೃಜ್ಜಮಾಮ್" 1. "ವಿತ್ತಾಸಿತೇವ ತ್ರಿದಶಾರಿ-ಲಕ್ಷ್ಮಿಃ ಐಯೇಷ ಗಂತುಂ ಯದುದೀರದುರ್ಗಮ್" ಯಾದಂ ೨೦-೯.

**ವಿದ - ಜ್ಞಾನೇ** (ಅದಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಸೇಂ) 1.

|      |          |          |         |
|------|----------|----------|---------|
| ಲಡ್— | ವೇತ್ತಿ   | ವಿತ್ತಃ   | ವಿದಂತಿ. |
|      | ವೇತ್ತಿಸಿ | ವಿತ್ಥಃ   | ವಿತ್ಥ.  |
|      | ವೇದಿ     | ವಿದ್ಧಃ   | ವಿದ್ಧಃ. |
|      | ವೇದ      | ವಿದದತುಃ  | ವಿದುಃ.  |
|      | ವೇತ್ಯ    | ವಿದದ್ಯುಃ | ವಿದ.    |
|      | ವೇದ      | ವಿದ್ಧ    | ವಿದ್ಧ.  |

|       |                              |            |           |
|-------|------------------------------|------------|-----------|
| ಲಿಡ್— | ವಿವೇದ                        | ವಿವಿದತುಃ   | ವಿವಿದುಃ.  |
|       | ವಿವೇದಿ                       | ವಿವಿದದ್ಯುಃ | ವಿವಿದ.    |
|       | ವಿವೇದ                        | ವಿವಿದಿದಿ   | ವಿವಿದಿದಿ. |
|       | ಆಮ್ಪಕ್ಷೇ ವಿವಿಧಾಂಕಾರ ಇತ್ಯಾದಿ. |            |           |

|       |           |           |             |
|-------|-----------|-----------|-------------|
| ಲೂಡ್— | ವೇದಿತಾ    | ವೇದಿತಾರೀ  | ವೇದಿತಾರಃ.   |
| ಲೂಡ್— | ವೇದಿಷ್ಯತಿ | ವೇದಿಷ್ಯತಃ | ವೇದಿಷ್ಯಂತಿ. |



ಲೋ— {ವೇತ್  
ವಿದಾಂಕರೋತು } ವಿದಾಂಕುರತಾಮ್ ವಿದಾಂಕುರಂತು |  
ವಿದಾಂಕುರತಾತ್ }

ವಿದಾಂಕುರ } ವಿದಾಂಕುರತಮ್ ವಿದಾಂಕುರತ |  
ವಿದಾಂಕುರತಾತ್ }

ವಿದಾಂಕರವಾಣಿ ವಿದಾಂಕರವಾವ ವಿದಾಂಕರವಾಮ |

ಲಙ್— ಅವೇತ್ ಅವಿತ್ತಾಮ್ ಅವಿದುಃ |  
ವಿದ್ಯಾತ್ ಅವೇದೀತ್ ಇತ್ಯಾದಿ.

1. ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳು, ಅರಿತುಕೊಳ್ಳು. “ವೇತ್ಯ ಮಾನೇಽಪಿ ಮತ್ಯಾಗ್ನುನಾ  
ಸ್ವಂ ಮಾಂ ಚ ಯನ್ಮಿಥಃ” ನೈಷಂ ೨೦-೭೭ | “ವಿದಾಂಕಾರ  
ವೇದೇಹಿ ರಾಮಾದನ್ಯನಿರುತುಕಾಮ್” ಭಟ್ಟಂ ೬-೧ | “ವಿದಾಂ-  
ಕುರಂತು ರಾಮಸ್ಯ ವೃತ್ತಮಿತ್ಯವದತ್ ಸ್ವಕಾನ್” ಭಟ್ಟಂ ೬-೪ |

2. ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳು, ಅನುಭವಿಸು ಕಂಡುಕೊಳ್ಳು. “ಪರಾಯತಃ  
ಪ್ರೀತಃ ಕಥಮಿವ ರಸಂ ವೇತ್ ಪುರುಷಃ” ಮುದ್ರಾಂ ೩-೪ | 3. ತಿಳಿ,  
ಭಾವಿಸು, ಎಣಿಸು. “ತೇನ ಯೋಜಿತಸಂಬಂಧಂ ವಿದ್ವತ್ ಮಾಮಪ್ಯ-  
ವಶ್ಚಿತಮ್” ಕುಮಾರಂ ೬-೩೦ |

ಕರ್ಮಣಿಃ—ವೇದ್ಯತೇ | ವಿವಿಧೇ | ವೇದಿತಾ | ವೇದಿಷ್ಯತೇ |  
ವೇದಿತಾಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸುಃ—ವೇತ್ತವ್ಯಮ್ | ವೇದನೀಯಮ್ | ವೇದ್ಯಮ್ | ವಿದಿತಃ |  
ವಿದನ್, ವಿದಂತಿ | ವಿದಿತಮ್ | ವೇದನಮ್ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ವಿದ್ಯಾ ವಿದ್ಯಂ (ಪುಂ) ಪಾಯಾರಿಕೆಯುಂಟುಮಾಡುವ  
ಆಹಾರ. ಉಪ್ಪಿನಕಾಯಿ ಹುರಿಗಾಳು ಮುಂತಾದುವು.  
“ಸ್ವಾದಿತಃ ಸಕೃದಿವಾಸವ ಏವ ಪ್ರತ್ಯುತ ಕ್ಷಣವಿದ್ಯಾಪದೇಃಭೂತ್”  
ಮಾಘಂ ೧೦-೧೦ |

ವಿದ್ಯಾ ವಿದ್ಯಂ (ಪುಂ) 1. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. ವಿ + ದಹ  
(ಭಸ್ಮೀಕರಣಂ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) | “ತಾಮ್ಬೂಲಮಿವ  
ಗೃಹೀತ್ವಾ ವಿದ್ಯಾಘಮುಖಮಂಡನಂ ವಿಶತ” ವಿದಂ ಮುಂ ಸಂ ೧-೮ |  
2. ನಿಪುಣ, ಪ್ರವೀಣ, ನಿಷ್ಣಾತ. “ವಿದ್ಯಾಘೇನಿಗ್ರಾಹ್ಯೋ ನ  
ಪುನರವಿದ್ಯಾಘೇನಿಗ್ರಾಹ್ಯಃ” ತಂ ರಾಂ ೪-೨೧ | (ವಿಂ) 3.  
ದಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ವಿದ್ಯಾ ವಿದ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಾಂಡಿತ್ಯ. 2. ನೈಪುಣ್ಯ.  
ವಿದ್ಯಾಘಸ್ಯ ಭಾವಃ “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯) |

ವಿದ್ಯಾ ವಿದ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಿಪುಣನಾದ ಹೆಂಗಸು, ಬುದ್ಧಿ  
ಶಾಲಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು.

ವಿದತ್ ವಿದತ್ (ವಿಂ) ತಿಳಿಯುತ್ತಿರುವ, ಅರಿಯು  
ತ್ತಿರುವ. ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೦೨) |

ವಿದತ್ ವಿದತ್ (ಪುಂ) 1. ಯೋಗಿ, ಸಂನ್ಯಾಸಿ. 2. ಪಂಡಿತ,  
ವಿದ್ವಾಂಸ. ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) “ಅಥಃ” (ತಂ ೩-೧೧೫) |  
“ವಿದತ್ಯೋ ಯೋಗಿಕ್ರತಿನೋಃ” ಮೇದಿಂ |

ವಿದತ್ ವಿದತ್ (ವಿಂ) 1. ಉಂಟುಮಾಡುತ್ತಿರುವ.

ವಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) |

“ಕೃಣೋತ್ತರಾಸಂಜ್ಞಾಂ ವಿದಧನ್ವತೀಪಲ್ಲವೀಮ್” ಮಾಘಂ

೨-೧೯ | “ಶಾನವ್” (೩-೨-೧೨೪) | 2. ಮಾಡುತ್ತಿರುವ.

“ಜಗದೇಕಪತೇರಮುಖ್ಯ ಪೂಜಾಂ ವಿದಧಾನೇನ ಯುಧಿಷ್ಟಿರೇಣ ಪುತ್ರೀ”

ಯಾದಂ ೧೫-೯೨ |

ವಿದರ ವಿದರ (ಪುಂ) 1. ಒಡೆದುಹೋಗುವುದು, ಸೀಳಾಗು  
ವುದು, ಹೋಳಾಗುವುದು. ವಿ + ದ್ (ವಿದಾರಣಂ) “ಅಪ್”  
(೩-೩-೫೭) | (ನಂ) 2. ಪಾಪಾಸುಕಳ್ಳಿ ಹಣ್ಣು.

ವಿದರ್ಮ ವಿದರ್ಮ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ವಿದರ್ಮದೇಶ. ವಿಶಿಷ್ಟಾ  
ದರ್ಮಃ ಕುಶಾ ಯತ್ರ | “एको ययौ चैत्ररथप्रदेशान् सौराज्य-

रम्यानपरो विदर्मान्” ರಘುಂ ೫-೬೦ | 2. ವಿದರ್ಮದೇಶದ  
ಜನರು, ವಿದರ್ಮದೇಶದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವ ಜನರು.

(ಪುಂ) 3. ವಿದರ್ಮದೇಶದ ದೊರೆ. “ವಿದರ್ಮಪುತ್ರೀಶ್ವರಣಾವತಂ  
ಸಿಕಾಮಣಿಮಹಃ ಕಿಶುಕಕಾರ್ಮುಕೋದರೇ” ನೈಷಂ ೧೫-೪೦ |

4. ಮಂತ್ರಭೂಮಿ. ವಿಗತಾ ದರ್ಮಃ ಯತ್ರ |

ವಿದರ್ಮಕನ್ಯಾ ವಿದರ್ಮಕನ್ಯಾ, -ತನಯಾ -ತನಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
ದಮಯಂತಿ, ವಿದರ್ಮರಾಜನ ಪುತ್ರಿ.

ವಿದರ್ಮಜಾ ವಿದರ್ಮಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿದರ್ಮರಾಜನ ಪುತ್ರಿ,  
ದಮಯಂತಿ. “ವಿದರ್ಮಜಾಯಾ ಮದನಸ್ತಥಾ ಮನೋ ನಲಾವರಹಂ  
ವಯಸೇವ ವೇಶಿತಃ” ನೈಷಂ ೧-೩೨ | 2. ಅಗಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿಯ  
ಪತ್ನಿ, ಲೋಪಾಮುದ್ರೆ. 3. ರುಕ್ಮಿಣಿ.

ವಿದರ್ಮರಾಜ ವಿದರ್ಮರಾಜ (ಪುಂ) ವಿದರ್ಮದೇಶದ  
ದೊರೆ—1. ಭೀಮನೃಪತಿ. “ವಿದರ್ಮರಾಜಃ ಕ್ಷಿತಿಪಾನನುಕ್ಷಣಂ  
ಶುಭಕ್ಷಣಾಸನ್ನತರತ್ವಸತ್ವರಃ” ನೈಷಂ ೧೬-೫ | 2. ಭೀಷ್ಮಕ,  
ರುಕ್ಮಿಣಿಯ ತಂದೆ. ವಿದರ್ಮನಾಂ ರಾಜಾ — “ಠತ್”  
(೫-೪-೯೧) | “ವಿದರ್ಮರಾಜೋ ಭರ್ಮತಮಾ ಭೀಷ್ಮಕೋ ನಾಮ  
ಧಾರ್ಮಿಕಃ” | “ವಿದರ್ಮರಾಜೇನ ವಿದೇಹಮುಖತಾ ಸಮಕ್ರಮಂ ದುಃಖ-  
ಪಯೋಧಿನಾ ಚ ಸಃ” ಯಾದಂ ೧೪-೬೦ |

ವಿದರ್ಮಸುಭ್ರ ವಿದರ್ಮಸುಭ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಮಯಂತಿ.  
“ವಿದರ್ಮಸುಭ್ರಸ್ತನತುಕ್ಲತಾಪ್ತಯೇ ಷಟಾನಿವಾಪಶ್ಯದಲಂ ತಪಸ್ಯತಃ”  
ನೈಷಂ ೧-೮೨ |

ವಿದರ್ಮಾಧಿಪತಿ ವಿದರ್ಮಾಧಿಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಭೀಷ್ಮರಾಜ,  
ರುಕ್ಮಿಣಿಯ ತಂದೆ. 2. ಭೀಮರಾಜ, ದಮಯಂತಿಯ  
ತಂದೆ. ವಿದರ್ಮನಾಮಾಧಿಪತಿಃ |

ವಿದಲ ವಿದಲ (ನಂ) 1. ಬಿದಿರಿನಿಂದ ಮಾಡಿದ ಪಾತ್ರೆ,  
ಮಕ್ಕರಿ, ಬುಟ್ಟಿ ಮುಂತಾದುವು. 2. ದಾಳಿಂಬೆಯ  
ತೊಗಟೆ. 3. ಮರದ ರೆಂಬೆ. 4. ದ್ವಿದಳ ಧಾನ್ಯದ ಬೇಳೆ.



(ವಿಂ) 5. ವಿಕಸಿತವಾದ, ಅರಳಿರುವ. 6. ಸೀಳುವ, ಒಡೆಯುವ.

**ವಿದಲತ್ ವಿದಲತ್** (ವಿಂ) 1. ಒಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಸೀಳುತ್ತಿರುವ, ಭೇದಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ದಲ (ವಿಶರಣೆ) "ಶತ್" (3-2-124)। "ವಿದಲತ್ಪುಷ್ಕರಾಕೀರ್ಣಾಃ ಪತಂಜಲಕುಲಾಃ" ಮಾಘಂ 19-77। 2. ಅರಳುತ್ತಿರುವ.

**ವಿದಲನ ವಿದಲನ** (ನಂ) ಒಡೆಯುವುದು, ಭೇದಿಸುವುದು, ಸೀಳುವುದು. ವಿ + ದಲ (ವಿಶರಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

**ವಿದಲಿತ ವಿದಲಿತ** (ವಿಂ) ಭೇದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೀಳಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ದಲ (ವಿಶರಣೆ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "ವಿದಲಿತಮಹಾಕೂಲಾಮುಕ್ತಾಂ ವಿಷಾಣವಿಘಟನೈಃ" ಮಾಘಂ 12-77।

**ವಿದಾ ವಿದಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜ್ಞಾನ. 2. ಬುದ್ಧಿ. ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಅಙ್" (3-3-104)। "ವಿದಾ ಜ್ಞಾನೇ ಚ ನಿರ್ದಿಷ್ಟಾ ಮನೀಷಾಯಾಂ ಚ ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ।

**ವಿದಾಯ ವಿದಾಯ** (ಪುಂ) ಹೊರಡಲು ಅನುಮತಿಕೊಡುವುದು. ವಿಗತೋ ದಾಯಃ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಣರೂಪಂ ಕೃಣಂ ಯೇನ। "ವಿದಾಯಂ ದೇಹಿ ಸಂಪ್ರೀತ್ಯಾ ಕ್ಷಣಂ ಮೇ ಪ್ರಾಣವಲ್ಲಭೇ" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ।

**ವಿದಾರ ವಿದಾರ** (ಪುಂ) 1. ಸೀಳುವುದು, ಒಡೆಯುವುದು, ಭೇದಿಸುವುದು. ವಿ+ದ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಘನ್" (3-3-116)। 2. ಯುದ್ಧ, ಸಮರ, ಕಾಳಗ. 3. ಜಲೋಚ್ಛ್ವಾಸ, ಕೆರೆಯಿಂದ ಹೆಚ್ಚಾದ ನೀರು ಹೊರಗೆ ಹೋಗುವುದು. "ವಿದಾರೋ ಜಲೋಚ್ಛ್ವಾಸಾಜಿದಾರಣೆ" ಮೇದಿಂ।

**ವಿದಾರಕ ವಿದಾರಕ** (ಪುಂ) 1. ನೀರಿನ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಶಿಲೆ ಮರ ಮುಂತಾದುವು. 2. ನೀರಿಲ್ಲದೆ ಬತ್ತಿಹೋಗಿರುವ ನದಿಯಲ್ಲಿ ನೀರಿಗಾಗಿ ತೋಡುವ ಹಳ್ಳ, ಚಿಲುಮೆ. ವಿದೃಣಾತಿ ಜಲಮಾಗ್ನಾನಾನಿ—ದ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಫ್ಲುಲ್" (3-1-133)। (ನಂ) 3. ಕ್ಷಾರಭೂಮಿ. (ವಿಂ) 4. ಕತ್ತರಿಸುವ, ಸೀಳುವ, ಒಡೆಯುವ.

**ವಿದಾರಣ ವಿದಾರಣ** (ನಂ) 1. ಸೀಳುವುದು, ಒಡೆಯುವುದು, ಭೇದಿಸುವುದು. ವಿ + ದ್ (ವಿದಾರಣೆ) ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ಪೀಡಿಸುವುದು, ಹಿಂಸಿಸುವುದು. (ಪುಂ) 3. ರಣ, ಯುದ್ಧ. 4. ನೀರಿನ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಮರ ಬಂಡೆ ಮುಂತಾದುವು. "ವಿದಾರಣಂ ವಿಙ್ಮವೇ ಚ ಭೇದೇ ಕಲಿಬಂ ರಣೇ ದ್ವಯೋಃ" ಮೇದಿಂ। (ಪುಂ) 5. ಬಿಟ್ಟುಗಣಿಗಿಳಿ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 6. ಭೇದಿಸುವ, ಒಡೆಯುವ. ವಿ + ದ್ + ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (3-1-134)।

"ಶ್ರುತಂ ಸಖೇ ಶ್ರವಣವಿದಾರಣಂ ವಚಃ" ಮುद्रಾಂ 4। 7. ಹಿಂಸಿಸುವ, ಪೀಡಿಸುವ.

**ವಿದಾರಿಕಾ ವಿದಾರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಾಲಪರ್ಣ, ಮೂರಲೆ ಹೊನ್ನೆ.

**ವಿದಾರಿಗನ್ಥಾ ವಿದಾರಿಗನ್ಥಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂರಲೆ ಹೊನ್ನೆ.

**ವಿದಾರಿಣಿ ವಿದಾರಿಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶೀವನೆಯ ಮರ.

**ವಿದಾರಿನ್ ವಿದಾರಿನ್** (ವಿಂ) ಸೀಳುವವನು, ಒಡೆಯುವವನು, ಭೇದಿಸುವವನು. ವಿ+ದ್ (ವಿದಾರಣೆ) + ಣಿच् "ಣಿನಿಃ" (3-1-134)।

**ವಿದಾರೀ ವಿದಾರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಿಳಿಯ ನೆಲಗುಂಬಳ. 2. ಮೂರಲೆ ಹೊನ್ನೆ. 3. ತೋಡೆಯ ಸಂದಿನಲ್ಲಿ ಉದಿ ಕೊಳ್ಳುವ ಒಂದು ರೋಗ. ವಿದಾರಯತಿ — ವಿ + ದ್ (ವಿದಾರಣೆ) + ಣಿच् "ಅಙ್" (3-1-134)। ಗೌರಾಂ "ಕೌಘ್" (4-1-41)।

**ವಿದಾರ ವಿದಾರು** (ಪುಂ) ಕೃಕಲಾಸ, ಓತಿಕೇತ, ಹೆಂಟೆಗೊದ್ದ.

**ವಿದಾಹ ವಿದಾಹ** (ಪುಂ) 1. ಸುಡುವುದು. 2. ಮೈಉರಿಯುವುದು, ಉರಿತ.

**ವಿದಾಹಿನ್ ವಿದಾಹಿನ್** (ವಿಂ) 1. ದೇಹದಲ್ಲಿ ಉರಿತವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ (ವಸ್ತು). ವಿದಹತಿ — ವಿ + ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣೆ) "ಣಿನಿಃ" (3-1-134)। 2. ಉರಿಯುಂಟುಮಾಡುವ. 3. ಸುಡುವ.

**ವಿದಿತ ವಿದಿತ** (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। "ನನು ಜನವಿದಿತೈರ್ಭವದ್ವಚಲಿಕೈಶ್ವರಪರಿಪೂರಿತಮೇವ ಕರ್ಣಯುಗಮ್" ಮಾಘಂ 9-44। 2. ಅರಿತವನು, ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. ವಿದಿತಂ ವೇದನಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ — "ಅಙ್" (4-2-129)। "ಸ ವರ್ಣಿಲಿಕ್ಷಿ ವಿದಿತಃ ಸಮಾಯಯಿ ಯುಧಿಷ್ಟಿರಂ ದ್ವೇತವನೇ ವನೇಚರಃ" ಕಿರಾಂ 1-1। 3. ಪ್ರಖ್ಯಾತ, ಪ್ರಸಿದ್ಧ. "ಜಾತಂ ವಂಶೇ ಭುವನವಿದಿತೇ ಪುಷ್ಕರಾವತಕಾನಾಂ ಜಾನಾಮಿ ತ್ವಾಂ ಪ್ರಕೃತಿಪುರುಷಂ ಕಾಮರೂಪಂ ಮಥೋನಃ" ಮೇಘಂ 1-6। (ಪುಂ) 4. ಪಂಡಿತ, ಜ್ಞಾನಿ. (ನಂ) 5. ಜ್ಞಾನ, ಅರಿವು, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ವಿದ ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-3-114)।

**ವಿದಿಶ್ ವಿದಿಶ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಎರಡು ದಿಕ್ಕುಗಳ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯ ದಿಕ್ಕು, ಮೂಲೆಯ ದಿಕ್ಕು. ದಿಗ್ಮ್ಯಾಂ ವಿಗತಾ। ಅಗ್ನೇಯ (ಪೂರ್ವ-ದಕ್ಷಿಣ ಮಧ್ಯ) ನಿರ್ಮುತಿ (ದಕ್ಷಿಣ-ಪಶ್ಚಿಮ ಮಧ್ಯ) ವಾಯು (ಉತ್ತರ-ಪಶ್ಚಿಮ ಮಧ್ಯ) ಈಶಾನ್ಯ (ಉತ್ತರ-ಪೂರ್ವ ಮಧ್ಯ). "ಕಲಿಬಾಹ್ಯಯಂ ತ್ವಪದಿಶಂ ದಿಶೋಮಂಧ್ಯೇ ವಿದಿಕ್ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಅಮಂ।



**ವಿದೀರ್ಣ ವಿದೀರ್ಣ** (ವಿಂ) ಭೇದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೀಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿ+ದ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।  
 "ಕರ್ಣಾಮ್ಯರ್ಣವಿದೀರ್ಣಸೃಕವಿಕಟವ್ಯಾಧಾನದೀಪ್ತಾಗ್ನಿಭಿಃ" ಮಾಲತೀಂ ೫-೧೩।

**ವಿದಿಶಾ ವಿದಿಶಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದರ್ಶನದೇಶದ ಒಂದು ಪಟ್ಟಣ, ದರ್ಶನದೇಶದ ರಾಜಧಾನಿ. "ತೇಷಾಂ ದಿಕ್ಷು ಪ್ರಥಿತವಿದಿಶಾಲಕ್ಷಣಾಂ ರಾಜಧಾನೀಂ ಗತ್ವಾ ಸಃಃ ಫಲಮವಿಕಲಂ ಕಾಮುಕತ್ವಸ್ಯ ಲಾಭಾ" ಮೇಘಂ ೧-೨೪। 2. ಮೂಲದ ದೇಶದ ಒಂದು ನದಿ.

**ವಿದು ವಿದು** (ಪುಂ) 1. ಅನೆಯ ಕುಂಭಸ್ಥಳದ ಮಧ್ಯಭಾಗ. ವೇತ್ತಿ ಸಂಜ್ಞಾಮತ್ರ ಚಾತೇನ —ವಿದ (ಜ್ಞಾನೆ) "ಕ್ತಃ" ಬಾಹುಂ।  
 "ಕ್ರೂಢೌ ತು ಶಿರಸಃ ಪಿಂಡೌ ತಯೋರ್ಮಧ್ಯೆ ವಿದುಃ ಪುಮಾನ್" ಅಮಂ। 2. ಕುದುರೆಯ ಕಿವಿಯ ಕೆಳಭಾಗ. "ವಿದುರ್ಮಮ-ವಿದುಃಕೇವ ಕರ್ಣಸ್ಯಾಧಃ ಪಡ್ಠಗುಲೇ"।

**ವಿದುರ ವಿದುರ** (ಪುಂ) 1. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. ವೇತ್ತಿ ವೇದನಶೀಲಃ —ವಿದ (ಜ್ಞಾನೆ) "ಕ್ತುರಚ್" (೩-೨-೧೬೨)। 2. ಕೌರವರ ಒಬ್ಬ ಮಂತ್ರಿ, ಪಾಂಡುಮಹಾರಾಜನ ತಮ್ಮ. ವಿದುರನು ಅಣಮಾಂಡವ್ಯಋಷಿಯ ಶಾಪದಿಂದ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಅವತರಿಸಿ ಅಂಬಿಕೆಯ ದಾಸಿಯಲ್ಲಿ ಕೃಷ್ಣ ದ್ವೈಪಾಯನ ಋಷಿಯಿಂದ ಜನಿಸಿದನು. ಧರ್ಮಾತ್ಮನಾದ ವಿದುರನು ಯಾವಾಗಲೂ ಪಾಂಡವರ ಪಕ್ಷಪಾತಿ ಯಾಗಿದ್ದನು. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಸೂಚನೆಯಂತೆ ಪಾಂಡವರು ಹಸ್ತಿನಾವತಿಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ವಾರಣಾವತಕ್ಕೆ ಹೊರಟಾಗ ಇವರ ವಿನಾಶಕ್ಕಾಗಿ ದುರ್ಯೋಧನನಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಅರಗಿನ ಮನೆಯ ವಿಷಯವನ್ನು ಪಾಂಡವರಿಗೆ ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ತಿಳಿಸಿ ಅವರನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಿದನು. ಪಾಂಡವರೊಡನೆ ಸಂಧಿಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವಂತೆ ವಿದುರನು ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನಿಗೆ ನೀತಿ ಬೋಧೆ ಮಾಡಿದನು. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ದುರ್ಯೋಧನನಲ್ಲಿಗೆ ಸಂಧಿಗಾಗಿ ದೌತ್ಯವನ್ನು ವಹಿಸಿ ಹೋದಾಗ ವಿದುರನ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಆತಿಥ್ಯವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದನು. ಕೌರವ ಮತ್ತು ಪಾಂಡವರ ಯುದ್ಧದ ವಿಷಯವನ್ನು ಕೇಳಿ ವಿದುರನು ಅಲ್ಲಿರಲಾರದೆ ತೀರ್ಥಯಾತ್ರೆಯನ್ನು ಕೈಗೊಂಡನು. ವಿದುರನು ಪ್ರಭಾಸಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಪರಮಾತ್ಮನ ಧ್ಯಾನದಿಂದ ದೇಹತ್ಯಾಗಮಾಡಿದನು. ಆಗ ಅವನ ತೇಜಸ್ಸು ಧರ್ಮ ರಾಜನ ಶರೀರವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿತು. (ವಿಂ) 3. ಕಪಟ, ತಂತ್ರಿ. 4. ಬುದ್ಧಿವಂತ, ಜಾಣ, ಜ್ಞಾನಿ. "ಜಾತಾ ತು ವಿದುರೋ ವಿದುಃ" ಅಮಂ।

**ವಿದುಲ ವಿದುಲ** (ಪುಂ) 1. ವೇತಸವೃಕ್ಷ, ಹಬ್ಬೆಗಿಡ. 2. ನೀರುಹಬ್ಬೆ. "ವಿದುಲಸ್ತು ಪುಮಾನ್ಮವೇತಸೇ ವೇತಸೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ। 3. ಗಂಧರಸ, ಬಾಣಂತಿ ಬೋಳೆ.

**ವಿದುಷಿ ವಿದುಷೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. ವೇತ್ತಿ—ವಿದ (ಜ್ಞಾನೆ) "ಶತೃ" (೩-೨-೧೨೪)। ಶತುರ್ವಸುಃ (೭-೧-೩೬)। "ಚಿಕ್ರೂಪಕರಾ ಜಯಂತಿ ತೇ ವಿದುಷಿ ಮುಖೇನಿ ಸಾ ಬಿಮರ್ಶಿ ಯಾನ್" ನೇಪಂ ೨-೨೦। (ವಿಂ) 2. ತಿಳಿಯುವ, ಅರಿಯುವ. "ವಿದುಷಿವ ದರ್ಶನಮಮುಷ್ಯ ಯುವತಿರತಿದುರ್ಲಭಂ ಪುನಃ" ಮಾಘಂ ೧೫-೯೪।

**ವಿದುರ್ಮತೀ ವಿದುರ್ಮತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಂಡಿತರೊಡನಿರುವವಳು. ವಿದ್ವಾನ್ಯಾಮಸ್ತಿ ವಿದುಸ್ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪)। "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬)।

**ವಿದೂನ ವಿದೂನ** (ವಿಂ) ತೊಂದರೆಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಷ್ಟ ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನೋವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ದ್ವಿ (ಪರಿತಾಪೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। ನಿಷ್ಠಾತಕಾರಸ್ಯ ನತ್ವಮ್ (೮-೨-೪೫)।

**ವಿದೂರ ವಿದೂರ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಪರ್ವತ. "ವಿದೂರ-ಭೂಮಿರ್ನವಮೇಶಶಬ್ದಾದುದ್ವಿಜಯಾ ರತ್ನಶಲಾಕಯೇವ" ಕುಮಾಂ ೧-೨೪। (ವಿಂ) 2. ಬಹಳ ದೂರದಲ್ಲಿರುವ. ವಿಶಿಷ್ಟ ದೂರಂ ಯಸ್ಯ। "ಏಷಾ ಪ್ರಸನ್ನಸ್ತಿಮಿತಪ್ರವಾಹಾ ಸರಿವಿದೂರಾ-ನ್ತರಭಾವತನ್ವೀ" ರಘುಂ ೧೩-೪೮।

**ವಿದೂರಾದ್ರಿ ವಿದೂರಾದ್ರಿ** (ಪುಂ) ವಿದೂರ ಪರ್ವತ.

**ವಿದೂಷಕ ವಿದೂಷಕ** (ಪುಂ) 1. ಹಾಸ್ಯಗಾರ, ನಕಲಿ, ನಗೆ ಯುಂಟುಮಾಡುವವನು. 2. ರಾಜನಿಗೆ ವಿನೋದವುಂಟು ಮಾಡುವ ಒಬ್ಬ ಮಿತ್ರ. ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ಇವನಿಗೆ ಕುಸುಮ, ವಸಂತ ಮೊದಲಾದ ಹೆಸರುಗಳುಂಟು. ತನ್ನ ವೇಷ ಭಾಷೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ನಗಿಸುವ ಸ್ವಭಾವ ದವನು. ರಾಜನಿಗೆ ಬಹಳ ಪ್ರಿಯನಾದವನು ಮತ್ತು ಕಲಹಪ್ರಿಯ. "ಕ್ರುಸುಮವಸಂತಾಘ್ರಭಿಃ ಕರ್ಮವಪುರ್ವೇಭಾಷಾಘೈಃ। ಹಾಸ್ಯಕರಃ ಕಲಹರತಿಃ ವಿದೂಷಕಃ ಸ್ಯಾತ್ಸರ್ವಕರ್ಮಜಃ" ಸಾಂ ೬೦ ೩-೪೨। 3. ಕಾಮುಕ, ವಿಟ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ. ವಿದೂಷಯ-ತ್ಯಾತ್ಮಾನಮ್ —ವಿ + ದುಷ (ವೈಕಲ್ಯ) + ಣಿಚ್ "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। (ವಿಂ) 4. ಕೆಡಿಸುವವನು, ನಾಶಪಡಿಸು ವವನು. ವಿಶೇಷಣ ದೂಷಯತಿ।

**ವಿದೂಷಣ ವಿದೂಷಣ** (ನಂ) 1. ಕೆಡಿಸುವುದು, ನಾಶಪಡಿಸು ವುದು. 2. ಅಗೌರವಪಡಿಸುವುದು, ಅಪಮಾನಪಡಿಸು ವುದು. ವಿ + ದುಷ (ವೈಕಲ್ಯ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ವಿದೇಶ ವಿದೇಶ** (ಪುಂ) ಬೇರೆ ದೇಶ, ಹೊರದೇಶ. ವಿಪ್ರಕೃಷ್ಣೋ ದೇಶಃ। "ಭಜತೇ ವಿದೇಶಮಧಿಕೇನ ಜಿತಸ್ತದನುಪ್ರವೇಶಮಥವಾ ಕುಶಲಃ" ಮಾಘಂ ೯-೪೮। "ಕೋಽತಿಭಾರಃ ಸಮರ್ಥಾನಾಂ ಕಿ ದೂರಂ ವ್ಯವಸಾಯಿನಾಮ್। ಕೋ ವಿದೇಶಃ ಸವಿದ್ವಾನ್ಯಾಂ ಕಃ ಪರಃ ಪ್ರಿಯವಾದಿನಾಮ್" ಚಾಣಕ್ಯಃ।



**ವಿವೇಹ ವಿವೇಹ** (ಪುಂ. ಬಂ. ವಂ.) 1. ವಿವೇಹದೇಶ. 2. ವಿವೇಹದೇಶದ ಜನರು. (ಪುಂ.) 3. ಜನಕರಾಜನ ಮಂಡದ ಮೂಲಪುರುಷ. 4. ಜನಕ ರಾಜ. (ವಿಂ.) 5. ಶರೀರವಿಲ್ಲದ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಜನಕ" ಮತ್ತು "ನಿಮಿ" ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] -**ವೇಹಾ** -ದೇಹಾ. ಮಿಥಿಲಾನಗರ. ವಿವೇಹದೇಶದ ರಾಜಧಾನಿ. "ಬರ್ಮಿ ತಮನುಗಚ್ಛಂತಿ ವಿವೇಹಾಧಿಪತೇ: ಸುತಾ" ರಘುಂ ೧೨-೨೬.

**ವಿವಿಧ ವಿದ್ಯಾ** (ವಿಂ.) 1. ಹೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಭೇದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗಾಯಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವ್ಯವ(ತಾಡನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). "ಭೃಗುಶ್ರೇಣೀಶ್ಯಾಮಭಾಸಾಂ ಸಮುಹೈ: ನಾರಾಚಾನಾಂ ವಿವಿಧನೀರ್ದ-  
ದೇಹ:" ಮಾಘಂ ೧೮-೪೧. 2. ರಂಧ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತೂತು ಕೊರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಸದೃಶವಾದ, ಸಮಾನವಾದ. 5. ಎದುರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. (ನಂ.) 7. ಗಾಯ. "ವಿವಿಧಂ ಸ್ಯಾದೇವಿತೇ ಕ್ಷಿಪ್ತೇ ಸದೃಶೇ ಬಾಧಿತೇ ತ್ರಿಷು" ಮೇದಿಂ.

**ವಿವಿಧಕರ್ಣ ವಿದ್ಯಾ ಕರ್ಣ** (ವಿಂ.) 1. ಚುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ ಕಿವಿ ಯುಳ್ಳ, ಚುಚ್ಚಿದ ಕಿವಿಯುಳ್ಳ. ವಿವಿಧ ಕರ್ಣಿ ಯಸ್ಯ. (ಪುಂ.) 2. ಅಗುರು ಶುಂಠಿ.

**ವಿವಿಧಕರ್ಣಿ ವಿದ್ಯಾ ಕರ್ಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗುರು ಶುಂಠಿ. ವಿವಿಧ: ಕರ್ಣ ಇವ ಪತ್ರಮಸ್ಯಾ:.

**ವಿಜ್ಞಾನ ವಿದ್ಯಾ ಮಾನ** (ವಿಂ.) 1. ಈಗ ಇರುವ. 2. ಉಪಸ್ಥಿತನಾಗಿರುವ. 3. ವಾಸ್ತವವಾಗಿ ಇರುವ. ವಿಜ್ಞತೇ - ವಿಜ್ಞ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಜ್ಞಾನತ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಕೌ ವಿಜ್ಞಾನಗತೀರಾಸಿತುಮುತ್ಸಹೇತ" ಮಾಘಂ ೪-೩೭.

**ವಿಜ್ಞಾನ ವಿದ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ವಿಜ್ಞಾನಯಾ - ವಿಜ್ಞ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಜ್ಞಾನ್" (೩-೩-೯೯). ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನ ರೂಪವಾದ ವಿದ್ಯೆಯು ಪರಮಪುರುಷಾರ್ಥವಾದ ಮೋಕ್ಷಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದುದರಿಂದ ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನವು ವಿದ್ಯೆಯೆನಿಸುವುದು. ಶ್ರುತ್ಯುಕ್ತವಾದ ವಿದ್ಯೆಯು ಪರಾ ಮತ್ತು ಅಪರಾ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಮೋಕ್ಷಸಾಧನವಾದ ವಿದ್ಯೆಯು ಪರಾ ಎನಿಸುವುದು. "ಯಥಾಕ್ಷರಮವಿಗಮ್ಯತೇ ಸಾ ಪರಾ" ನಾಲ್ಕು ವೇದಗಳು ಮತ್ತು ಆರು ವೇದಾಂಗ ಗಳು ಅಪರಾ ವಿದ್ಯೆ. "ಛೇ ವಿಜ್ಞೇ ವೇದಿತವ್ಯೇ ಇತಿ ಹಸ್ಮ ಬ್ರಹ್ಮವಿದೋ ವದಂತಿ ಪರಾಚೈವಾಪರಾ ಚ. ತತ್ರಾಪರಾ ಋಗ್ವೇದೋ ಯಜುರ್ವೇದ: ಸಾಮವೇದೋಽಥರ್ವವೇದ: ಶಿಕ್ಷಾ ಕಲ್ಪೋ ವ್ಯಾಕರಣಂ ನಿರುಕ್ತಂ ಛಂದೋ ಉಯೋತಿಷಮಿತಿ" ಶ್ರುತಿ: 2. ಶಾಸ್ತ್ರ. (ಕ) (ನ್ಯಾಯಮತದಲ್ಲಿ) ವಿದ್ಯೆಗಳು ನಾಲ್ಕು (4). (1) ಆನ್ವೀಕ್ಷಿಕೀ (2) ತ್ರಯೀ (3) ವಾರ್ತಾ ಮತ್ತು (4) ದೃಷ್ಟಾಂತೀತಿ: ನ್ಯಾಯವಿದ್ಯೆಯು ಅನ್ವೀಕ್ಷಿಕೆ. ವೇದವಿದ್ಯೆಯು

ತ್ರಯೀ. ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರವು ವಾರ್ತೆ. ಅರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರವು ದಂಡ ನೀತಿ. (ಖ) (ಪೌರಾಣಿಕ ಮತದಲ್ಲಿ) ವಿದ್ಯೆಗಳು ಹದಿನಾಲ್ಕು (14). (1) ಪುರಾಣಗಳು (2) ನ್ಯಾಯ (3) ಮೀಮಾಂಸಾ (4) ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ (5) ನಾಲ್ಕು (4) ವೇದಗಳು. (6) ಆರು (6) ವೇದಾಂಗಗಳು. ಇವು ಹದಿನಾಲ್ಕು ವಿದ್ಯೆಗಳು. (ಗ) (ವಿಷ್ಣುಪುರಾಣ ರೀತ್ಯಾ) ವಿದ್ಯೆಗಳು ಹದಿನೆಂಟು. ಮೇಲಿನ ಹದಿನಾಲ್ಕು (14) ವಿದ್ಯೆಗಳು. (ಘ) ಆಯುರ್ವೇದ (2) ಧನುರ್ವೇದ (3) ಗಾಂಧರ್ವವೇದ ಮತ್ತು (4) ಅರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರ ಇವು ಸೇರಿ ವಿದ್ಯೆಗಳು ಹದಿನೆಂಟು. "ಅಜ್ಞಾನಿ ವೇದಾಶ್ಚತ್ವಾರೋ ಮೀಮಾಂಸಾ ನ್ಯಾಯವಿಸ್ತರ: | ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರಂ ಪುರಾಣಂ ಚ ವಿಜ್ಞಾನೇತಾಶ್ಚತುರ್ವಿಂಶ | ಆಯುರ್ವೇದೋ ಧನುರ್ವೇದೋ ಗಾಂಧರ್ವಶ್ಚೇತಿ ತೇ ತ್ರಯ: || ಅರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರಂ ಚತುರ್ಥಂ ಚ ವಿಜ್ಞಾನೇತಾಶ್ಚತುರ್ವಿಂಶ ತಾ:" ವಿಷ್ಣುಪುಂ. 1. **ವಿದ್ಯಾ ಪ್ರತಿಷೇಧ**. ಕುಂಡಲ ಹಾರ ನೂಪುರ ಮೊದಲಾದ ಭೂಷಣ ಗಳಿಂದ ಭೂಷಿತನಾಗದಿದ್ದರೂ ವಿದ್ಯೆಯು ಲೋಕರಂಜಕ ವಾಗುವುದರಿಂದ ಮನುಷ್ಯನನ್ನು ಅಧಿಕವಾಗಿ ಪ್ರಕಾಶ ಗೊಳಿಸುವುದು. ನಶ್ವರವಾದ ಮತ್ತು ಚೋರಹಾರ್ಯ ವಾದ ಧನಕ್ಕಿಂತಲೂ ವಿದ್ಯಾಧನವು ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಸುರಕ್ಷಿತ ವಾಗಿರುವುದು. ವಿದ್ಯೆಯು ಯಾವಾಗಲೂ ಸಕಲ ಭೋಗ ವಸ್ತುಗಳನ್ನೂ ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಡುವುದು. ವಿದ್ಯೆಯು ಯಶಸ್ಸನ್ನಂಟುಮಾಡುವುದು. ಸೌಖ್ಯವನ್ನು ಕೊಡು ವುದು. ಸಕಲ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನೂ ಉಪದೇಶಿಸುವ ಗುರುವಿಗೂ ವಿದ್ಯೆಯು ಪರಮಾರ್ಥಬೋಧಕವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಗುರು ವಾಗಿರುವುದು. ವಿದೇಶಪರ್ಯಟನಕಾಲದಲ್ಲಿ ವಿದ್ಯೆಯು ಬಂಧುವಿನಂತೆ ಪರಮೋಪಕಾರಕವಾಗಿರುವುದು. ಸರ್ವಾ ಭೀಷ್ಮಫಲಪ್ರದವಾದುದರಿಂದ ವಿದ್ಯೆಯೇ ಪರದೇವತೆ. ರಾಜನ ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ವಿದ್ಯಾವಂತನಿಗೆ ಬಹಳ ಗೌರವವುಂಟು. ಆದುದರಿಂದ ವಿದ್ಯಾವಿಹೀನನಾದವನು ಪಶುಸಮಾನನು. "ವಿಜ್ಞಾನಾ ನಾಮ ನರಸ್ಯ ರೂಪಮಧಿಕಂ ಪ್ರಚ್ಛನ್ನಗುಪ್ತಂ ಧನಂ ವಿಜ್ಞಾನಾ ಮೋಗಕರೀ ಯಶ:ಸುಖಕರೀ ವಿಜ್ಞಾನಾ ಗುರುಣಾ ಗುರು: | ವಿಜ್ಞಾನಾ ಬಂಧುಜನೋ ವಿದೇಶಗಮನೇ ವಿಜ್ಞಾನಾ ಪರಾ ದೇವತಾ ವಿಜ್ಞಾನಾ ರಾಜಸು ಪೂಜ್ಯತೇ ನ ಹಿ ಧನಂ ವಿಜ್ಞಾನಾವಿಹೀನ: ಪಶು:" ಭರ್ತೃಂ ೧-೧೬. ಎಲ್ಲಾ ವೃದ್ಧರಲ್ಲಿಯೂ ವಿದ್ಯಾವೃದ್ಧನಿಗೆ ಗೌರವ. ತುರೀಯ ವರ್ಣದವರಲ್ಲಿ ವಯೋವೃದ್ಧನಿಗೆ ಗೌರವ. ವೈಶ್ಯರಲ್ಲಿ ದೊಡ್ಡ ಧನಿಕನಿಗೆ ಗೌರವ. ಕ್ಷತ್ರಿಯರಲ್ಲಿ ವೀರಪುರುಷನಿಗೆ ಮಾನ್ಯತೆ. ಎಪ್ರರಲ್ಲಿ ಅಧಿಕ ವಿದ್ಯಾವಂತನಿಗೆ (ಸಕಲಶಾಸ್ತ್ರ ಪಾರಂಗತನಿಗೆ) ಮಾನ್ಯತೆ. "ಸರ್ವೇಭಾಮೇವ ವೃದ್ಧಾನಾಂ ವಿಜ್ಞಾನಾ ವೃದ್ಧೇ ಹಿ ಮಾನ್ಯತಾ | ವಯೋವೃದ್ಧೋ ಹಿ ಶೂದ್ರಾಣಾಂ ವಿಜ್ಞಾನಾಂ ಧನವಾನ್ ಯತ: | ಕ್ಷತ್ರಿಯಾಣಾಂ ತು ವೀರ್ಯಂ ವಿಪ್ರಾಣಾಂ ಶಾಸ್ತ್ರಪಾರಗ:" ||



ಬಾಲ್ಯದಕಾರಣದಿಂದ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸಮಾಡದೆ ಅವಿದ್ಯಾ ವಂತನಾಗುವುದರಿಂದ ಯೌವನದಲ್ಲಿ ಧನಯೋಗವೂ ಇಲ್ಲದೆ ವಿವಾಹ ಮೊದಲಾದ ಸಾಂಸಾರಿಕ ಸೌಖ್ಯ ವಿಹೀನ ನಾಗುವುದರಿಂದ ಕೇವಲ ಪಶುಜೀವನದಲ್ಲೇ ಕಾಲಕಳೆಯ ಬೇಕಾಗುವುದು. “ಯೇ ಬಾಲಭಾವಾನ್ ಪಠಂತಿ ವಿद्याಂ ಯೇ ಯೌವನಸ್ಥಾ ಅಥನಾ ಅದಾರಾಃ । ತೇ ಶೌಚನೀಯಾ ಇಹ ಜೀವಲೋಕೇ ಮನುಷ್ಯರೂಪೇಣ ಮೃಗಾಶ್ವರಂತಿ” । ವಿದ್ಯಾದಾನವು ಬಹಳ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದದ್ದು. ಶಾಸ್ತ್ರದಾನ ಗೋದಾನ ಮತ್ತು ಭೂದಾನಗಳು ಸಮಾನವಾದವು. ಅವು ಮೂರೂ ಸಮಾನ ಫಲಗಳನ್ನು ನೀಡುವುವು. “ತೃಣಿ ತುಲ್ಯಪ್ರದಾನಾನಿ ತೃಣಿ ತುಲ್ಯಫಲಾನಿ ಚ । ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಕಾಮದ್ರುಘಾ ಧೇನುಃ ಪೃಥಿವೀ ಚೈವ ಶಾಶ್ವತೀ ॥ ವಿಜ್ಞಾದಾನಾತ್ ಪರಂ ದಾನಂ ನ ಭೂತಂ ನ ಭವಿಷ್ಯತಿ । ಯೇನ ದಾನೇನ ಚಾಪ್ನೋತಿ ಶಿವಂ ಪರಮಕಾರಣಮ್ । ವಿಜ್ಞಾ ಚ ಶ್ರೂಯತೇ ಲೋಕೇ ಸರ್ವಧರ್ಮಪ್ರದಾಯಿಕಾ । ತಸ್ಮಾದ್ವಿಜ್ಞಾ ಸದಾ ದೇಯಾ ಪಣ್ಡಿತೈರ್ದರ್ಮಕಾಂಕ್ಷಿಭಿಃ” ॥ 3. ದರ್ಗಾದೇವಿ.

**ವಿಜ್ಞಾಚುಕ್ತು ವಿದ್ಯಾಚುಂಚು, -ಚಣ -ಚಣ (ವಿಂ)** ವಿದ್ಯೆಯಿಂದ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಪಡೆದವನು, ವಿದ್ಯೆಯಿಂದ ಖ್ಯಾತಿ ಸಂಪಾದಿಸಿದವನು. ವಿಜ್ಞಯಾ ವಿದ್ವಾನ್: “ಚುಕ್ತುಪ್ಚಣಪೌ” (೪-೨-೨೬) ।

**ವಿಜ್ಞಾದಾತ್ ವಿದ್ಯಾದಾತ್ಯ (ವಿಂ)** ವಿದ್ಯಾದಾನ ಮಾಡುವವನು, ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿಸುವವನು. ವಿಜ್ಞಾ ದದಾತಿ—ಹೃದಾನ್ (ದಾನೇ) “ತತ್” (೩-೧-೧೩೩) । ವಿದ್ಯಾದಾನ ಮಾಡುವ ಗುರುವು ತಂದೆಗೆ ಸಮಾನನು. “ಅನ್ನದಾತಾ ಭಯತ್ರಾತಾ ಪತ್ನೀತಾತಸ್ತಥೈವ ಚ । ವಿಜ್ಞಾದಾತಾ ಜನ್ಮದಾತಾ ಪೃಚ್ಛತೇ ಪಿತರೋ ನೃಣಾಮ್” ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ ।

**ವಿಜ್ಞಾವಾನ್ ವಿದ್ಯಾವಾನ್ (ನಂ)** ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ದಾನಮಾಡುವುದು, ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿಸುವುದು. ಅಧ್ಯಾಪನ. ವಿಜ್ಞಯಾ ದಾನಮ್ । ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸವಿಲ್ಲದವನು ಧರ್ಮ ಮತ್ತು ಅಧರ್ಮಗಳ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಅರಿಯಲಾರನಾದುದರಿಂದ ವಿದ್ಯಾವಂತನಾದವನು ತಾನು ಕಲಿತ ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ ಮೂಲಕ ಜನತೆಯನ್ನು ಪ್ರಬುದ್ಧರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕು. “ಧರ್ಮಧರ್ಮಂ ನ ಜಾನಂತಿ ಲೋಕೋಽಯಂ ವಿಜ್ಞಯಾ ವಿನ್ಯಾ । ತಸ್ಮಾತ್ ಸದೇವ ಧರ್ಮತಿಮನ್ ವಿಜ್ಞಾದಾನಪರೋ ಭವ” ಅಗ್ನಿಪುಂ ।

**ವಿಜ್ಞಾದೇವಿ ವಿದ್ಯಾದೇವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸರಸ್ವತೀ ದೇವಿ.

**ವಿಜ್ಞಾಧನ ವಿದ್ಯಾಧನ (ನಂ)** 1. ವಿದ್ಯಾರೂಪವಾದ ಧನ. ವಿಜ್ಞಾರೂಪ ಧನಮ್ । 2. ವಿದ್ಯೆಯಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಿದ ಧನ. ವಿಜ್ಞಯಾ ಪ್ರಾಪ್ತ ಧನಮ್ ।

**ವಿಜ್ಞಾಧರ ವಿದ್ಯಾಧರ (ಪುಂ)** ದೇವತೆಗಳಿಂದ ಜನ್ಮಪಡೆದ ಒಂದು ವರ್ಗದವನು. ವಿಜ್ಞಾ ಧರತಿ — ಧೃನ್ (ಧಾರಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ಅವಾಹ್ಮುಖಸ್ಯೋಪರಿ ಪುಷ್ಪವೃಷ್ಟಿಃ ಪಪಾತ ವಿಜ್ಞಾಧರಹಸ್ತಮುಕ್ತಾ” ರಘುಂ ೨-೬೦ । ಸ್ತ್ರಿಯಾ -ಧರೀ-ಧರೀ.

**ವಿಜ್ಞಾಮ್ಯಾಸ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ (ಪುಂ)** ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿಯುವುದು. ವಿಜ್ಞಯಾ ಅಮ್ಯಾಸಃ । -ಅಮ್ಯಸನಮ್ -ಅಭ್ಯಾಸನಮ್.

**ವಿಜ್ಞಾರಂಭ ವಿದ್ಯಾರಂಭ (ಪುಂ)** ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸವನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸುವುದು.

**ವಿಜ್ಞಾರ್ಜನ ವಿದ್ಯಾರ್ಜನ (ನಂ)** ವಿದ್ಯೆಯ ಸಂಪಾದನೆ, ವಿದ್ಯೆಯ ಕಲಿಕೆ. ವಿಜ್ಞಯಾ ಆರ್ಜನಮ್ ।

**ವಿಜ್ಞಾರ್ಥಿನ್ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿನ್ (ಪುಂ)** ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. ವಿಜ್ಞಾರ್ಥಯತೇ—ಅರ್ಥ (ಉಪಯೋಗಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ “ಣಿತಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) ।

**ವಿಜ್ಞಾಲಯ ವಿದ್ಯಾಲಯ, (ಪುಂ)** -ಶಾಲಾ -ಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿಯುವ ಶಾಲೆ, ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ ಶಾಲೆ.

**ವಿಜ್ಞಾವತ್ ವಿದ್ಯಾವತ್ (ಪುಂ)** ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ಯಾವಂತ, ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿತವನು. ವಿಜ್ಞಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ — “ಮತುಪ್” (೪-೨-೨೬) । “ವಿಜ್ಞಾವತಾಂ ವೃಜಿನರಾಶಿಮಿವಾನ್ತರಾತ್ಮಾ” ಯಾದಂ ೧೧-೪೭ । “ವಿಜ್ಞಾವತಾಂ ಮಹೇಶ್ವರಾಣಾಂ ಶಿಲ್ಪವಿಕ್ರಮ-ಶಾಲಿನಾಮ್ । ಸೇವಾವೃತ್ತಿವಿದಾಂ ಚೈವ ನಾಶ್ರಯಃ ಪಾರ್ಥಿವಂ ವಿನ್ಯಾ” ಪಂಚತಂ ೧-೩೮ । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಜೀಪ್” (೪-೧-೬) ।

**ವಿಜ್ಞಾವಿಹೀನ ವಿದ್ಯಾವಿಹೀನ (ವಿಂ)** ವಿದ್ಯೆಯಿಲ್ಲದವನು, ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿಯದವನು, ಅವಿದ್ಯಾವಂತ. ವಿಜ್ಞಯಾ ವಿಹೀನಃ । “ಆಸನ್ನಮೇವ ನೃಪತಿರ್ಭಜತೇ ಮನುಷ್ಯಂ ವಿಜ್ಞಾವಿಹೀನ-ಮಕುಲೀನಮಸಂಸ್ಕೃತಂ ವಾ” ಪಂಚತಂ ೧-೩೬ ।

**ವಿಜ್ಞಾವೃದ್ಧ ವಿದ್ಯಾವೃದ್ಧ (ವಿಂ)** ಹೆಚ್ಚು ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿತವನು, ದೊಡ್ಡ ವಿದ್ಯಾವಂತ. ವಿಜ್ಞಯಾ ವೃದ್ಧಃ । ವಯಸ್ಸಿನಿಂದ ಕಿರಿಯನಾದರೂ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮತ್ತು ಶಾಸ್ತ್ರಾಧ್ಯಯನಸಂಪನ್ನನಾದವನು ವಿದ್ಯಾವೃದ್ಧನಾಗುತ್ತಾನೆ.

**ವಿಜ್ಞಾಸಖ ವಿದ್ಯಾಸಖ (ಪುಂ)** ತ್ರಯೀಸಹಿತನಾದ ಪರಮಾತ್ಮ. ವಿಜ್ಞಯಾಃ ಸಖಾ “ಟಚ್” (೪-೪-೯೧) । “ಆತ್ಮಾನಮೇವಾರ್ಯಮಣ್ಡಲಸ್ಯ ವಿಜ್ಞಾಸಖಂ ವ್ಯಂಜಯತಿ ಸ್ಮ ದೇವಃ” ಯಾದಂ ೧೩-೩೨ ।

**ವಿಜ್ಞಾಸ್ನಾತಕ ವಿದ್ಯಾಸ್ನಾತಕ (ಪುಂ)** ಸಮಗ್ರ ವೇದಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಅಧ್ಯಯನಮಾಡಿದ ಸ್ನಾತಕ, ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಯು



ವ್ರತವನ್ನು ನಡೆಸಿ ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಲು ಸಿದ್ಧನಾಗಿರುವವನು.

**ವಿಜ್ಞಾನಿ** (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. ವಿಜ್ಞಾನಿವ ತರಲಾ ಜಿಹ್ವಾಸ್ಯ. "ವಿಜ್ಞಾನಿಹೋ ದ್ವಿಜಿಹ್ವಾ ಸೂರ್ಯಶತ್ರುಷ ರಾಕ್ಷಸಃ" ರಾಮಾಂ.

**ವಿಜ್ಞಾನಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಿಂಚಿನ ಪ್ರಭೆ. ವಿಜ್ಞಾನಿ ಜ್ವಾಲಾ.

**ವಿಜ್ಞಾನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಿಂಚು. ವಿಶೇಷಣ ದ್ವಿತೀಯ — ದ್ವಿತೀಯ (ದೀಪ್ತ) "ವಿಜ್ಞಾನಿ" (೩-೨-೧೭೭). "ವಿಜ್ಞಾನಿವ ಪರಿಷ್ಕೃತಂ ವಾಸರಾಂತಶರದ್ವನಮ್" ಯಾದಂ ೧೬-೧೭. (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಭೆಯಿಲ್ಲದ, ಕಾಂತಿಯಿಲ್ಲದ. ವಿಗತಾ ದ್ವಿತೀಯ ಪ್ರಭಾ ಯಸ್ಯ. 3. ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಭೆಯುಳ್ಳ, ಹೆಚ್ಚು ಕಾಂತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ವಿಶಿಷ್ಟಾ ದ್ವಿತೀಯ ದೀಪ್ತಿ: ಯಸ್ಯ.

**ವಿಜ್ಞಾನಿಪ್ರಿಯ** (ನಂ) ಕಾಂಕ್ಷಾಶೀಲ, ಕಂಚು. ವಿಜ್ಞಾನಿ: ಪ್ರಿಯಮ್.

**ವಿಜ್ಞಾನಿತ್ವ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. "ಸೋಹಂ ತುಣಾತುರೇವೈಷಿ ವಿಜ್ಞಾನಿವ ಚಾತಕೇ:" ಕುಮಾಂ ೬-೨೭. (ವಿಂ) 2. ಮಿಂಚಿನೊಡನೆಕೂಡಿದ, ವಿಜ್ಞಾನಿ ಸಹಿತವಾದ. ವಿಜ್ಞಾನಿವಸ್ಥಿತಿ— "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪). "ವಿಜ್ಞಾನಿವಸ್ಥಿತಿ ಲಲಿತವನಿತಾ: ಸೇಂದ್ರಾಪಂ ಸಚಿತ್ರಾ:" ಮೇಘಂ ೨-೧.

**ವಿಜ್ಞಾನಾಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೃತ್ತ ರತ್ನಾಕರೋಕ್ತವಾದ ಎಂಟನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: "ಮೋ ಮೋ ಗೋ ಗೋ ವಿಜ್ಞಾನಾಲಾ" ವೃಂ ೨೦. ಮಂಗಳಾದ್ವಯ ಗುರುದ್ವಯಗಳುಳ್ಳ ವೃತ್ತವು ವಿಜ್ಞಾನಾಲಾವೃತ್ತವಾಗುವುದು. ಇದರ ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ಮ ಮ ಗುಗು  
೦೦೦ ೦೦೦ ೦೦

"ಸಾ ಲೋಲಾಕ್ಷಿ ದೂರೇ ಸೀತಾ ಕಾಲೋ ಧೀರ: ಪ್ರಾಪ್ತೋ ವಾಞ: | ನೋ ಮೇ ದೀಪ್ತಾ ಮಹಾಂ ಪಿಙ್ಗಾ ದತ್ತೇ ವಿಜ್ಞಾನಾಲಾ" | 2. ಮಿಂಚುಗಳ ಸಾಲು, ಮಿಂಚುಗಳ ಶ್ರೇಣಿ.

**ವಿಜ್ಞಾನಾಲಿನ್** (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. "ಧರ್ಮಸ್ಯ ಪುತ್ರೋ ಬಲವಾನ್ ಸುಪೇಣ ಇತಿ ವಿಶ್ರುತ: | ಸ ವಿಜ್ಞಾನಾಲಿನಾ ಸಾರ್ಥಂ ಅಯುಷ್ಯತ ಮಹಾಕಪಿ:" ರಾಮಾಂ.

**ವಿಜ್ಞಾನಿನ** (ನಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುವುದು. ವಿ+ಜ್ಞಾನ (ದೀಪ್ತ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪). (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸುವ. ವಿ + ಜ್ಞಾನ + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪).

**ವಿಜ್ಞಾನಿ** (ನಂ) ರಂಧ್ರ, ತೂತು.

**ವಿಜ್ಞಾನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಳಕುರು. ದೇಹದೊಳಗೆ ಕೀವು ತುಂಬಿ ಆಗಿರುವ ಕುರು. ವಿಜ್ಞಾನಿ ಭಾನಮ್ | ವಿಜ್ಞಾನಿ ಧೀಯತೇಷ್ಯಾಮ್ — ಡು ಖಾನ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋ:) "ಕಿ:" (೩-೩-೯೩).

**ವಿಜ್ಞಾನಿನಾಶನ** (ಪುಂ) ನುಗ್ಗಿ ಮರ. ವಿಜ್ಞಾನಿ ನಾಶಯತಿ — ವಿಜ್ಞಾನಿ + ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪).

**ವಿಜ್ಞಾನಿ** (ಪುಂ) 1. ಪಲಾಯನ, ಓಟ, ಓಡಿಹೋಗುವುದು. ವಿ + ಡ್ವ (ಗತೌ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭). 2. ವಿನಾಶ, ಅಳಿವು. "ಭೋಮೇ ಕುಮಾರಬಲಪತಿಸೇನ್ಯಾನಾಂ ವಿಜ್ಞಾನಿಗ್ನಿಶಸ್ತ್ರಮಯಮ್" ಬೃಹತ್ಸಂ. 3. ಬುದ್ಧಿ. "ವಿಜ್ಞಾನಿ ಧೀ: ಪಲಾಯನಮ್" ಹೇಮಂ.

**ವಿಜ್ಞಾನಿ** (ನಂ) 1. ಲೋಹ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಕರಗಿಸುವುದು. ವಿ+ಡ್ವ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪). 2. ಓಡಿಸುವುದು, ಅಟ್ಟುವುದು.

**ವಿಜ್ಞಾನಿ** (ವಿಂ) 1. ಕರಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಡ್ವ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).

**ವಿಜ್ಞಾನಿ** (ವಿಂ) 1. ಓಡಿಹೋದ. ವಿ+ಡ್ವ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). "ವಿಜ್ಞಾನಿಕ್ರಮಗುಣಾನುಸಾರಿಣಂ ಯೇನ ಬಾಣಮಸೃಜತ್ ವೃಷಭವಜ:" ರಘುಂ ೧೧-೪೪. 2. ಕರಗಿದ, ದ್ರವವಾಗಿರುವ.

**ವಿಜ್ಞಾನಿ** (ಪುಂ) 1. ಪವಳದ ವೃಕ್ಷ, ಹವಳದ ಗಿಡ. ವಿಶಿಷ್ಟೋ ದ್ರುಮ: | 2. ಪವಳ, ಹವಳ. "ವಿಜ್ಞಾನಿ ರತ್ನವೃಕ್ಷೇಽಪಿ ಪ್ರವಾಲೇಽಪಿ ಪುಮಾನಯಮ್" ಮೇದಿಂ. "ಪುಷ್ಪಂ ಪ್ರವಾಲೋಪಹಿತಂ ಯದಿ ಸ್ಯನ್ಮುಕ್ತಾಫಲಂ ವಾ ಸ್ಫುಟವಿಜ್ಞಾನಿಮಸ್ಯಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೪೪. 3. ಚಿಗುರು.

**ವಿಜ್ಞಾನಿ** (ವಿಂ) -ದೇಶೀಯ -ದೇಶೀಯ, -ದೇಶೀಯ -ದೇಶೀಯ (ವಿಂ) ಸಾಮಾನ್ಯಪಂಡಿತ, ಅಲ್ಪವಿದ್ಯಾವಂತ, ಸ್ವಲ್ಪಕಡಿಮೆ ಪಂಡಿತವುಳ್ಳ ವಿದ್ವಾಂಸ. ಇಷ್ಟದ್ವಿನೋ ವಿಜ್ಞಾನಿ — "ಕಲ್ಪಪ್" "ದೇಶೀಯರ್" "ದೇಶೀಯ:" (೪-೩-೬೭).

**ವಿಜ್ಞಾನಿ** (ವಿಂ) ಈ ಅನೇಕ ಪಂಡಿತರಲ್ಲಿ ಇವನು ಒಬ್ಬ ದೊಡ್ಡ ಪಂಡಿತ, -ದೊಡ್ಡವಿದ್ವಾಂಸ. ಅಯಮೇಷಾಮತಿಶಯೇನ ವಿಜ್ಞಾನಿ — ವಿಜ್ಞಾನಿ "ತಮಪ್" (೪-೩-೪೪).

**ವಿಜ್ಞಾನಿ** (ವಿಂ) ಈ ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಇವನು ಒಬ್ಬ ದೊಡ್ಡ ಪಂಡಿತ, -ದೊಡ್ಡವಿದ್ವಾಂಸ. ಅಯಮನಯೋರತಿಶಯೇನ ವಿಜ್ಞಾನಿ — ವಿಜ್ಞಾನಿ "ತರಪ್" (೪-೩-೪೭).



**ವಿಧ್ವಸ್ ವಿದ್ವಸ್** (ವಿಂ) 1. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. ವೇತ್ತಿ—  
ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। “ವಸು:”  
(೭-೧-೩೬)। 2. ಅಭಿಜ್ಞ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದವನು.  
“ಶಬ್ದಾರ್ಥೌ ಸತ್ಕವಿರಿವ ದ್ವಯಂ ವಿಧ್ವಾನಪೇಷತೇ” ಮಾಘಂ  
೨-೮೬। 3. ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು.

**ವಿಧ್ವಿಷ್ ವಿದ್ವಿಷ್** (ಪುಂ) ವೈರಿ, ಹಗೆ, ಶತ್ರು. ವಿಶೇಷಣ  
ದ್ವೇಷಿ—ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೬೧)।  
“ಅಕೃತ್ವಾ ಹೇಲಯಾ ಪಾದಮುಚ್ಚೇರ್ಮುಧಸು ವಿಧ್ವಿಷಾಮ್। ಕಥಂಕಾರ-  
ಮನಾಲಮ್ಬಾ ಕೀರ್ತಿರ್ದಾಮಧಿರೋಹತಿ” ಮಾಘಂ ೨-೪೨।

**ವಿಧ್ವಿಷತ್ ವಿದ್ವಿಷತ್** (ಪುಂ) ವೈರಿ, ಹಗೆ, ಶತ್ರು. ವಿ+ದ್ವಿಷ  
(ಅಪ್ರೀತೌ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। (ವಿಂ) ದ್ವೇಷಿಸು  
ವವನು. “ವಿದಾಂಕುರ್ವಂತು ಮಹತಸ್ತಲಂ ವಿಧ್ವಿಷದಮಸ:”  
ಮಾಘಂ ೨-೧೧೧।

**ವಿಧ್ವಿಷ್ಠ ವಿದ್ವಿಷ್ಠ** (ವಿಂ) ದ್ವೇಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ದ್ವಿಷ  
(ಅಪ್ರೀತೌ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)।

**ವಿಧ್ವೇಷ ವಿದ್ವೇಷ** (ಪುಂ) ವೈರಿ, ದ್ವೇಷ, ಹಗೆತನ. ವಿ+ದ್ವಿಷ  
(ಅಪ್ರೀತೌ) “ವಲ್” (೩-೩-೧೮)।

**ವಿಧ್ವೇಷಕ ವಿದ್ವೇಷಕ** (ವಿಂ) ದ್ವೇಷಿಸುವವನು. ವಿ+ದ್ವಿಷ  
(ಅಪ್ರೀತೌ) “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩)। “ನ ಮಿತ್ರಘ್ನಃ-  
ನೈಕೃತಿಕ: ಕೃತಃನ: ಸತೋನೃಜು: ಧರ್ಮವಿಧ್ವೇಷಕಃ” ಭಾಂ।

**ವಿಧ್ವೇಷಣ ವಿದ್ವೇಷಣ** (ನಂ) 1. ದ್ವೇಷಿಸುವುದು. ವಿ+ದ್ವಿಷ  
(ಅಪ್ರೀತೌ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। (ವಿಂ) 2. ದ್ವೇಷಿಸು  
ವವನು, ಹಗೆ, ವೈರಿ. ವಿ+ದ್ವಿಷ “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪)।

**ವಿಧ್ವೇಷಿನ್ ವಿದ್ವೇಷಿನ್** (ವಿಂ) ದ್ವೇಷಿಸುವವನು, ಹಗೆ,  
ವೈರಿ. ವಿ+ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) “ಣಿನಿ:” (೩-೧-೧೩೪)।  
“ಅಪರೇ ಸ್ವಲ್ಪವಿಜ್ಞಾನಾ ಧರ್ಮವಿಧ್ವೇಷಿಣಿ ನರಾ:” ಭಾಂ।  
“ತೃಚ್” (೩-೧-೧೩೩)। -ದ್ವೇಷಾ-ದ್ವೇಷ್ಯಾ.

**ವಿಧಾ ವಿಧಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನೆಯ ಆಹಾರ. 2. ಕುದುರೆಯ  
ಆಹಾರ. 3. ವೇತನ, ಕೂಲಿ. 4. ಕಾರ್ಯ, ಕೆಲಸ.  
5. ಶುಭ, ಸುಯೋಗ. 6. ವಿಧ, ಬಗೆ. 7. ಸಮೃದ್ಧಿ.  
“ವಿಧಾ ಗಜಾನ್ತೇ ಋದ್ಧೌ ಚ ಪ್ರಕಾರೇ ವೇತನೇ ವಿಧೌ” ಮೇದಿಂ।

**ವಿಧಾತೃ ವಿಧಾತೃ** (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ.  
ವಿದಧಾತಿ—ವಿ+ಡುಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) “ತೃಚ್”  
(೩-೧-೧೩೩)। “ಯುವಾಂ ಸೌಜ್ಯಂ ಪ್ರೇಯಾನಿಹ ಸುವದನೇ ಮುಚ್ಚ  
ಜಡತಾಂ ವಿಧಾತುರ್ವೇದಗ್ಧ್ಯಂ ವಿಸಲತು ಸಕಾಮೋಸ್ತು ಮದನ:”  
ಮಾಲತೀಂ ೬-೧೫। 2. ವಿಷ್ಣು. “ಅವಿಜ್ಞಾತಾ ಸಹಸ್ರಾಂಶು-  
ವಿಧಾತಾ ಕೃತಲಕ್ಷಣ:” ವಿಂ ಸಂ। 3. ಪರಮೇಶ್ವರ.  
4. ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ. “ವಿಧಾತಾ ತು ವೇದಸಿ।

ಸ್ಮರೇ ನಾ” ಮೇದಿಂ। 5. ಮದ್ಯ. 6. ಅದೃಷ್ಟ, ಭಾಗ್ಯ.  
“ತಸ್ಮಾಚ್ಚ ತೇನ ಚ ತಥಾ ಚ ತದಾ ಚ ತನ್ವ ತಾವಚ್ಚ ತತ್ರ  
ಚ ವಿಧಾತೃವಶಾದುಪೇತಿ” ಹಿತೋಂ। (ವಿಂ) 7. ನೀಡು  
ವವನು, ಕೊಡುವವನು. “ಸ್ವಯಂ ವಿಧಾತಾ ತಪಸ: ಫಲಾನಾಂ  
ಕೇನಾಪಿ ಕಾಮೇನ ತಪಶ್ಚಕಾರ” ಕುಮಾಂ ೭-೩೬। 8. ಸೃಷ್ಟಿಸು  
ವವನು, ನಿರ್ಮಿಸುವವನು. “ಇತ್ಯದ್ಭುತೈಕಪ್ರಭವ: ಪ್ರಭಾವಾ-  
ತ್ಪ್ರಸಿದ್ಧನೇಪತ್ಯವಿಧೇವಿಧಾತಾ” ಕುಮಾಂ ೭-೩೬। 9. ಸೃಷ್ಟಿಸು  
ವವನು, ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡುವವನು. “ತಯಾ ಹೀನಂ ವಿಧಾತರ್ಮಾ  
ಕಥಂ ಪದ್ಯತ ದ್ವಯಸೇ” ರಘುಂ ೧-೭೦। 10. ಮಾಡುವವನು.

**ವಿಧಾತೃಭೂ ವಿಧಾತೃಭೂ** (ಪುಂ) ನಾರದಮಹರ್ಷಿ.

**ವಿಧಾತ್ರಾಯುಸ್ ವಿಧಾತ್ರಾಯುಸ್** (ನಂ) ಬ್ರಹ್ಮನ  
ಆಯುಸ್ಸು. [“ಅಂದ” ಮತ್ತು “ಕಲ್ಪ” ಪದಗಳಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.]

**ವಿಧಾತ್ರಿ ವಿಧಾತ್ರಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಪ್ಪಲಿ.

**ವಿಧಾನ ವಿಧಾನ** (ನಂ) 1. ವಿಧಿ, ನಿಯಮ, ಕಟ್ಟಳೆ.  
ವಿ+ಡುಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।  
“ಏತದ್ವಿಧಾನಂ ವಿಜ್ಞೇಯಂ ವಿಭಾಗಸ್ಯೈಕಯೋನಿಷು। ಬಹ್ವಿಭು ಚೈಕ-  
ಜಾತಾನಾಂ ನಾನಾಸ್ತ್ರೀಭು ನಿಬೋಧತ” ಮನುಂ ೯-೧೪೮।  
2. ಸೃಷ್ಟಿಸುವುದು, ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡುವುದು, ನಿರ್ಮಾಣ  
ಮಾಡುವುದು. “ಅಸ್ಮಿನ್ ದ್ವಯೇ ರೂಪವಿಧಾನಯತನ: ಪತ್ಯು:  
ಪ್ರಜಾನ್ ವಿತಥೋಽಮವಿಷ್ಯತ್” ರಘುಂ ೭-೧೪। 3. ಮಾಡು  
ವುದು, ರಚನೆ, ನಿರ್ಮಿಸುವುದು. “ಆಯೇ ಯದಿ ನೇಪತ್ಯ-  
ವಿಧಾನಮವಸಿತಮ್ ಇತಸ್ತಾವದಾಗಮ್ಯತಾಮ್” ಶಾಕುಂ ೧।  
4. ಗಜಾಗ್ರಸ, ಅನೆಯ ಆಹಾರದ ಕಬಳ. “ಉತ್ಕಿಪ್ತ-  
ಹಸ್ತತಲದತ್ತವಿಧಾನಪಿಂಡಸ್ತೇಹಸುತಿಸ್ತನಪಿತಬಾಹುರಿಸಾಧಿರಾ-  
ಜಮ್” ಮಾಘಂ ೫-೫೧। 5. ನೋವು, ಯಾತನೆ. 6. ಕಾರ್ಯ,  
ಕೆಲಸ. “ವಿಧಿವಿಧಾನಂ ಕರ್ಮಸ್ತ್ರೀ ಕ್ರಿಯಾ ಕೃತ್ಯಾ ವಿಧಾ  
ಕೃತಿ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 7. (ನಾಟಕದಲ್ಲಿ) ನಿರ್ವಹಣ  
ಸಂಧಿಯ ಒಂದು ಅಂಗ. ಸುಖ ಮತ್ತು ದುಃಖಗಳಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಕಾರ್ಯ. “ಸುಖದುಃಖಕೃತೌ ಯೋರ್ಯಸ್ತದ್ವಿಧಾನ-  
ಮಿತಿ ಸ್ಮೃತಮ್” ಸಾಂ ದಂ ೬-೮೫। 8. ಐಶ್ವರ್ಯ,  
ಸಂಪತ್ತು. 9. ಅತಿಥಿಪೂಜೆ, ಅತಿಥ್ಯ. 10. ಉಪಾಯ.  
11. ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ, ವಿಹಿತಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನ. 12.  
ಪ್ರಕಾರ, ರೀತಿ. 13. ವೈರಣೆ. “ವಿಧಾನಂ ಹಸ್ತಿಕವಲೇ  
ಪ್ರೇರಣೇಽಮ್ಯರ್ಚನೇ ಧನೇ। ಚೇತನೋಪಾಯವಿಧಿಭು ಪ್ರಕಾರೇ ವೈರಕರ್ಮಣಿ”  
ಹೇಮಂ। 14. ವೇದ, ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರಾದಿಕರ್ಮಗಳನ್ನು  
ವಿಧಿಸುವ ಶ್ರುತಿ. “ತ್ವಮೇಕೋಹಸ್ಯ ಸರ್ವಸ್ಯ ವಿಧಾನಸ್ಯ  
ಸ್ವಯಂಭುವ:” ಮನುಂ ೧-೩। 15. ದ್ವೇಷ.



**ವಿಧಾನಕ ವಿಧಾನಕ** (ನಂ) 1. ನೋವು, ಯಾತನೆ. 2. ವಿಧಿ, ನಿಯಮ. (ವಿಂ) 3. ನಿಯಮವನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ಕಟ್ಟಳೆಯನ್ನು ಅರಿತವನು.

**ವಿಧಾಯಕ ವಿಧಾಯಕ** (ವಿಂ) 1. ವಿಧಿಸುವ, ನಿಯಮವನ್ನು ರೂಪಿಸುವ. ವಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಫುಲ್" (3-1-133) 2. ನಿಯಮವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ.

**ವಿಧಾಯಿನ್ ವಿಧಾಯಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಉಂಟುಮಾಡುವ. ವಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಗಿತಿ:" (3-1-134) 2. "ಆಯಾವಿಧಾಯಿಭಿರನುಜ್ಜಿತಭೂತಿಶೋಭೇಚ್ಚಾಯಿಭಿರ್ಬಹಲಪಾಟಲಧಾತುರಾಗೈ:" ಮಾಘಂ 4-21. 3. ನಿಯಮವನ್ನು ವಿಧಿಸುವ, ಕಟ್ಟಳೆಯನ್ನು ನಿರೂಪಿಸುವ. 4. ಕಾರ್ಯದ ವಿಧಾನವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ. 5. ಆಚರಿಸುವ, ಮಾಡುವ.

**ವಿಧಿ ವಿಧಿ** (ವುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ವಿಧಿ — ವಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಕಿ:" (3-3-92) 2. "ತದೇನಮುಲ್ಲಂಘಿತಶಾಸನಂ ವಿಧೇವಿಧೇಹಿ ಕಿಂನಾಶನಿಕೇತನಾತಿಥಿಮ್" ಮಾಘಂ 1-63. 3. ನಿಯತಿ, ಅದೃಷ್ಟ, ಭಾಗ್ಯ. ವಿಧಿಯೇತೇನ — ವಿ + ಧಾನ್ "ಕಿ:" (3-3-92) 4. "ಮತಿಮತಾಂ ಚ ನಿರೀಕ್ಷ್ಯ ದರಿದ್ರತಾಂ ವಿಧಿರಹೋ ಬಲವಾನಿತಿ ಮೇ ಮತಿ:" ಭರ್ತೃಂ 1-45. 5. ವಿಷ್ಣು. 6. ಕಾಲ, ಸಮಯ, ವೇಳೆ. 7. ವಿನಯ, ನಮ್ರತೆ. 8. ಸೃಷ್ಟಿಸುವುದು, ಕಲ್ಪಿಸುವುದು. "ಪ್ರಾಣೇಣ ಸಾಮಗ್ರ್ಯವಿಧೌ ಗುಣಾನಾಂ ಪರಾಙ್ಮುಖೀ ವಿಶ್ವಸೃಜ: ಪ್ರವೃತ್ತಿ:" ಕುಮಾರಂ 3-24. 9. ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ, ಕರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನ. "ಸ ಚೇತ್ ಸ್ವಯಂ ಕರ್ಮಸು ಧರ್ಮಚಾರಿಣಾಂ ತ್ವಮಂತರಾಯೋ ಭವಸಿ ಚ್ಯುತೋ ವಿಧಿ:" ರಘುಂ 3-45. 10. ಗಜಗ್ರಾಸ, ಅನೇಯ ಅಹಾರದ ಕವಳ. 11. ಆಜ್ಞೆ, ಅಪ್ಪಣೆ. "ಯ: ಶಾಸ್ತ್ರವಿಧಿಮುತ್ಸೃಜ್ಯ ವರ್ತತೇ ಕಾಮಕಾರತ: | ನ ಸ ಸಿದ್ಧಿಮವಾಪ್ನೋತಿ ನ ಸುಖಂ ನ ಪರಾಂ ಗತಿಮ್" ಗೀತಾ 16-23. 12. ಕಾರ್ಯ, ಕೆಲಸ. "ಅಸ್ಯಾ: ಸರ್ಗವಿಧೌ ಪ್ರಜಾಪತಿರಭೂಚ್ಚಂದ್ರೋ ನು ಕಾಂತಿಪ್ರದ: ಶೃಂಗಾರೇಕರಸ: ಸ್ವಯಂ ನು ಮದನೋ ಮಾಸೋ ನು ಪುಷ್ಪಾಕರ:" ವಿಕ್ರಂ 1-4. 13. ವಿಧಿ, ನಿಯಮ, ಕಟ್ಟಳೆ. "ಯಾ ಸೃಷ್ಟಿ: ಸೃಷ್ಟುರಾಶ್ವಾ ವಹತಿ ವಿಧಿಹುತಂ ಯಾ ಹವಿರ್ಯಾ ಚ ಹೋತ್ರಿ" ಶಾಕುಂ 1-1. 14. ವಿಧಾಯಕ ವಾಕ್ಯ, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರವರ್ತಿಸುವಂತೆ ಪ್ರೇರಿಸುವ ವಾಕ್ಯ. "ಜ್ಯೋತಿಷ್ಠೋಮೇನ ಸ್ವರ್ಗಕಾಮೋ ಯಜೇತ" 15. "ಆದಿನಕಾಮಸ್ತಪ್ತುಲಂ ಪವೇತ" ಇತ್ಯಾದಿ. 16. ಅಜ್ಞಾತವಾದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಆಚರಿಸಲು ಬೋಧಿಸುವ ವಾಕ್ಯ. 17. ಆರು ವಿಧ ಸೂತ್ರಲಕ್ಷಣಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. "ಸಂಜ್ಞಾ ಚ ಪರಿಭಾಷಾ ಚ ವಿಧಿನಿಯಮ ಏವ ಚ |

ಅತಿदेशोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रलक्षणम्" 1. ಯಾವ ಸೂತ್ರದಿಂದಲೂ ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗದಿರುವ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಹೇಳುವುದು ಸಾಮಾನ್ಯ ವಿಧಿ. 2. ಸಾಮಾನ್ಯ ವಿಧಿವಾಕ್ಯದಿಂದ ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ ಕಾರ್ಯಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ವಿಶೇಷವಾಗಿ ವಿಧಿಸುವುದು ನಿಯಮ ವಿಧಿ. "ಕಿವಿ" (3-2-96) ಎಂಬ ಸೂತ್ರದಿಂದ ಸರ್ವಧಾತುಗಳಿಗೂ ವಿಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ "ಕಿವಿ" ಪ್ರತ್ಯಯಕ್ಕೆ "ಬ್ರಹ್ಮಭೂಣವೃತ್ತೇ ಕಿವಿ" (3-2-97) ಸೂತ್ರದಿಂದ ಬ್ರಹ್ಮಾದಿವೇವ ಹಂತೇವ ಭೂತ ಏವ ಎಂದು ನಿಯಮವು ವಿಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. 15. ಕ್ರಮ. 16. ಪ್ರಕಾರ, ರೀತಿ. "ವಿಧಿಬ್ರಹ್ಮವಿಧಾನಯೋ: | ವಿಧಿವಾಕ್ಯೇ ಚ ದೇವ ಚ ಪ್ರಕಾರೇ ಕಾಲಕಲ್ಪಯೋ:" ಹೇಮಂ. 17. ಸೃಷ್ಟಿಕಾರ್ಯ, ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡುವುದು. "ಕಲ್ಯಾಣಿ ವಿಧಿಷು ವಿಚಿತ್ರತಾ ವಿಧಾತು:" ಕಿರಾಂ 9-9.

**ವಿಧಿಜ್ಞ ವಿಧಿಜ್ಞ** (ವುಂ) ಯಜ್ಞಯಾಗಾದಿಕಾರ್ಯಗಳ ವಿಧಾನವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದ ಋತ್ವಿಜ್ಞ. ವಿಧಿ ಕಾರ್ಯ-ವಿಧಾನಂ ಜಾನಾತಿ—ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ:" (3-2-3).

**ವಿಧಿತ್ಸಾ ವಿಧಿತ್ಸಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಾಡಲು ಅಸೆ, ಆಚರಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ವಿಧಾತುಮಿಚ್ಛಾ | ವಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣ-ಪೋಷಣಯೋ:) + ಸನ್ "ಅ:" (3-3-103) 2. ನಿರ್ಮಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. "ವಿದಾಘಲಿಲೋಚಿತದಂತಪತ್ರಿಕಾವಿಧಿತ್ಸಯಾ ನೂನಮೇನ ಮಾನಿನಾ" ಮಾಘಂ 1-60.

**ವಿಧಿತ್ಸು ವಿಧಿತ್ಸು** (ವಿಂ) ಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ವಿಧಾತುಮಿಚ್ಛು:—ವಿ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ: + ಸನ್ "ಅ:" (3-2-166) 3. "ಅಥ ಕೃತಕವಿಲೋಭನಂ ವಿಧಿತ್ಸೌ ಯುವತಿಜನೇ ಹರಿಸುನುದರ್ಶನೇನ" ಕಿರಾಂ 10-17.

**ವಿಧಿರ್ದಶಿನ್ ವಿಧಿರ್ದಶಿನ್** (ವುಂ) ಯಾಗಾದಿಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ನ್ಯೂನಾತಿರೇಕಗಳನ್ನು ತಿಳಿದು ಹೇಳುವ ಋತ್ವಿಜ್ಞ. ವಿಧಿ ದೃಷ್ಟು ಶೀಲಮಸ್ಯ—ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) "ಗಿತಿ:" (3-2-96) 4. "ಸದಸ್ಯಾ ವಿಧಿರ್ದಶಿನ:" ಅಮಂ.

**ವಿಧಿಪೂರ್ವಕ ವಿಧಿಪೂರ್ವಕ** (ಅವ್ಯಂ) ಶಾಸ್ತ್ರಪೂರ್ವಕವಾಗಿ. **ವಿಧಿವತ್ ವಿಧಿವತ್** (ಅವ್ಯಂ) ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ, ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ವಿಧಿಸಿರುವಂತೆ. ವಿಧಿಮಹತಿ—ವಿಧಿ "ವತಿ:" (4-1-117) 5. "ವಿಧಿವದನು ವಿಧಾಯ ದೇವಯಾತ್ರಾಂ ಪ್ರತಿಪುರ-ವಿಧಿಪರಿಕ್ರಮೇಣ ದೃಶ್ಯಮ್" ಧಾದಂ 24-19.

**ವಿಧು ವಿಧು** (ವುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ವಿಶೇಷಣ ಧನಂತೇನ ಸುರಾ:—ವಿ + ಧೆಡ್ (ಪಾನೆ) "ಕು:" (3-1-23) 2. ವಿಧ್ಯತಿ ವಿರಹಿಣಮ್—ವ್ಯಥ (ತಾಡನೆ) "ಕು:" 3. ವಿಧ್ಯತೇ ರಾಹುಣಾ—ವ್ಯಥ "ಕು:" ವಾ | "ವಿರಹಪಾಂಡುಕಪಾಲತಲೇ ವಿಧುರ್ವ್ಯಥಿತ



ಭೂಮಿಭವಃ ಪ್ರತಿವಿಂಬಿತಃ" ನೆಪಂ ೪-೨೬ | 2. ಕರ್ಪೂರಂ. 3. ವಿಷ್ಣು. 4. ಬ್ರಹ್ಮ. 5. ಕಾಲ, ಸಮಯ. 6. ವಾಯು. 7. ರಾಕ್ಷಸ. 8. ಅಗ್ನಿ. "ವಿಧುರ್ನಾ ಕರ್ಪುರೇಂದು-ವಿಷ್ಣು" ಮೇದಿಂ | "ವಿಧುಃ ಸುಧಾಕರೇ ಕಾಲೇ ವಿಷ್ಣು ವಾತೇಽಗ್ನಿರಕ್ಷಸೋಃ" ನಾನಾರ್ಥಂ |

**ವಿಧುತ ವಿಧುತ (ನಂ)** 1. ಅಲುಗಾಡುವುದು, ಅಳುಡುವುದು. 2. ನಡುಗುವುದು. ವಿ + ಧು (ಕಂಪನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) | (ವಿಂ) 3. ಅಲುಗಾಡಿದ. 4. ನಡುಗಿದ. ವಿ + ಧು ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | 5. ತೃಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಧು ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಸ ತತ್ರ ನಿರ್ಮುಕ್ತಸಮಸ್ತಸಜ್ಜ ಆತ್ಮಾನು-ಭೂತ್ಯಾ ವಿಧುತತರಿಲಿಂಗಃ" ಭಾಗಂ ೯-೧೯-೨೫ | 6. ನಡುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಿಧುತಿ ವಿಧುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಅಲುಗಾಡುವುದು, ಅಳುಡುವುದು. ವಿ + ಧು (ಕಂಪನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | "ವೇನಾಯಕಯಶ್ಚಿರಂ ವೋ ವದನವಿಧುತಯಃ ಪಾಂತು ಚಿಲಾರವತಯಃ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೨ | 2. ನಡುಗುವುದು.

**ವಿಧುನನ ವಿಧುನನ (ನಂ)** 1. ಅಲುಗಾಡುವುದು. 2. ನಡುಗುವುದು. ವಿ + ಧು (ವಿಧುನನೆ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | ಪೃಷೋಂ ಹ್ರಸ್ವಃ |

**ವಿಧುಂತುದ ವಿಧುಂತುದ (ಪುಂ)** ರಾಹು. ವಿಧು ತುದತಿ—ತುದ (ವ್ಯಥನೆ) "ಖಶ್" (೩-೨-೩೫) | ಮುಮಾಗಮಃ (೬-೩-೬೭) | "ಅಯಿ ವಿಧುಂತುದಮಾಲಿ ಮದೀರಿತಃ ತ್ಯಜಸಿ ಕಿ ದ್ವಿಜರಾಜ-ಧಿಯಾ ರಿಪುಮ್" ನೆಪಂ ೪-೭೦ |

**ವಿಧುನ್ವತ್ ವಿಧುನ್ವತ್ (ವಿಂ)** ಅಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅಳುಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಧು (ಕಂಪನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಮೂರ್ಧನಿ ನಿಹಿತಶಿತಾಙ್ಕುಶಂ ವಿಧುನ್ವನ್ ಯನ್ತಾರಂ ನ ವಿಗಣಯಾಂ ಚಕಾರ ನಾಗಃ" ಕಿರಾಂ ೭-೩೩ | "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) | -ಧುನ್ವಾನಃ -ಧುನ್ವಾನಃ.

**ವಿಧುರ ವಿಧುರ (ನಂ)** 1. ವಿಶ್ಲೇಷ, ಅಗಲುವಿಕೆ. ವಿಗತಾ ಭೂಮಿರೋ ಯಸ್ಮಾತ್ "ಅಃ" (೫-೪-೭೪) | 2. ಭಯದ ಸೂಚನೆ "ವಿನಾ ವಿಧುರದರ್ಶನಂ ಸ್ವಾಮಿನೋ ಮಂದಾದರಾ ಭವಂತಿ" ಹಿತೋಂ ೨ | 3. ಪ್ರತ್ಯವಾಯ, ದೋಷ. 4. ಕಷ್ಟ, ದುಃಖ. "ವಿಧುರಂ ಕಿಮತಃ ಪರಂ ಪರೇವಗೀತಾಂ ಗಮಿತೇ ದಶಾಮಿಮಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೭ | 5. ಹೀನವಾಗಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 6. ವಿಕಲವಾಗಿರುವ, ಹೀನವಾಗಿರುವ. "ವೇಕಲ್ಯೇಽಪಿ ಚ ವಿಶ್ಲೇಷೇ ವಿಧುರಂ ವಿಕಲೇ ತ್ರಿಪು" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 7. ಪತಿಯ ಅಥವಾ ಪತ್ನಿಯ ವಿಶ್ಲೇಷವುಳ್ಳ. "ಮಯಿ ಚ

ವಿಧುರೇ ಭಾವಃ ಕೋಷ್ಯ ಕಾಂತಾಪ್ರವೃತ್ತಿಪರಾಙ್ಮುಖಃ" ವಿಕ್ರಂ ೪-೩೯ | 8. ಆಶ್ಚರ್ಯದಿಂದಕೂಡಿದ, ಅಚ್ಚುಕೆ ಘಟನೆ ಯಿಂದ ವಿಸ್ಮಯಗೊಂಡ. "ರಹಸ್ವಪಾವಿಧುರವಧೂರತಾಶಿನಾಂ ನಮಃಸದಾಮುಪಕರಣೀಯತಾಂ ಯಯಃ" ಮಾಧಂ ೧೭-೬೬ | 9. ಅಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಾತೇನ ತೇನ ವಿಧುರಾಃ ಸುರಸೇನ್ಯಮಧ್ಯೆ" ಕುಮಾಂ ೧೭-೩೧ |

**ವಿಧುರಾ ವಿಧುರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಲವಂಗ ಜಾಯಿಪತ್ರ ಮೊದಲಾದ ಸುಗಂಧದ ಸಂಬಾರದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮೊಸರು.

**ವಿಧುರಿತ ವಿಧುರಿತ (ವಿಂ)** ಅಶಾಂತಿಯುಳ್ಳ, ಕಲಕದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ವಿಧುರಮಸ್ಯ ಸಂಜಾತಮ್ "ಇತಕ್" (೫-೨-೩೬) | "ಸತಿ ಮಧಾವಭವನ್ ಮದನವ್ಯಥಾವಿಧುರಿತಾ ಧುರಿ ತಾಃ ಕುರರ-ಸ್ತ್ರೀಯಃ" ಮಾಧಂ ೬-೧೫ |

**ವಿಧುವನ ವಿಧುವನ (ನಂ)** ಅಲುಗಾಡುವುದು, ನಡುಗುವುದು. ವಿ + ಧು (ವಿಧುನನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | "ವಿಧುನನಂ ವಿಧುವನಮ್" ಅಮಂ |

**ವಿಧುತ ವಿಧುತ (ವಿಂ)** 1. ಅಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಳುಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಧು (ಕಂಪನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಪ್ರಾಣೇಶಾನಮಿ ವಿಧುತವಿಧುತಹಸ್ತಾಃ ಸೀತಕಾರಂ ಸಮುಚಿತಮುತ್ತರಂ ತರಣಯಃ" ಮಾಧಂ ೮-೧೩ | 2. ತೃಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಕೆದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಿಧುತಕೇಶಃ ಪರಿಲೋಲಿತಸ್ರಜಃ ಸುರಾಜ್ಞಾನಾಂ ಪ್ರವಿಲುಪ್ತಚಂದನಾಃ" ಕಿರಾಂ ೮-೩೩ |

**ವಿಧುತಿ ವಿಧುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಅಡುವುದು, ಅಳುಡುವುದು, ಅಲುಗಾಡುವುದು. ವಿ + ಧು (ಕಂಪನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | 2. ನಡುಗುವುದು.

**ವಿಧುನನ ವಿಧುನನ (ನಂ)** 1. ನಡುಗಿಸುವುದು. 2. ಅಳುಡಿಸುವುದು, ಅಲುಗಾಡಿಸುವುದು. ವಿ + ಧು (ಕಂಪನೆ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |

**ವಿಧುನಯತ್ ವಿಧುನಯತ್ (ವಿಂ)** 1. ನಡುಗಿಸುತ್ತಿರುವ, 2. ಅಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅಳುಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಧು (ಕಂಪನೆ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) | -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ. "ವಿಧುನಯಂತಿ ಗಹನಾನಿ ಭೂಹಾಂ ತಿರೋಹಿತೋಪಾಂತನಮೋದಿಗಂತರಾ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೪೭ |

**ವಿಧುನಿತ ವಿಧುನಿತ (ವಿಂ)** 1. ಅಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಳುಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಧು (ಕಂಪನೆ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಕೆದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಹೆದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಿಧುಯಮಾನ ವಿಧುಯಮಾನ (ವಿಂ)** ಅಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ನಡುಗಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಧು (ಕಂಪನೆ)



ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಮುಹುರನುಪತತಾ ವಿಧ್ಯಮಾನಂ ವಿರಚಿತಸಂಹತಿ ದಕ್ಷಿಣಾನಿಲೇನ" ಕಿರಾಂ ೧೦-೩೩ ।

**ವಿವೃತ ವಿಧೃತ** (ವಿಂ) 1. ಎತ್ತಿಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟು, ವಿಶೇಷಣ ಭೂತಮ್ । "ವಿವೃತೇ ದಿವಾ ಸವಯಸಾ ಚ ಪುರ: ಪರಿಪೂರ್ಣಮಂಡಲ-ವಿಕಾಸಭೃತಿ" ಮಾಘಂ ೯-೫೩ । 2. ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಕೈಗೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು. "ವಿವೃತನಿಶಿತಸಸ್ತ್ರೈಃ" ಭದ್ರಂ ೧೧-೪೬ ।

**ವಿಧೇಯ ವಿಧೇಯ** (ವಿಂ) 1. ಹೇಳಿದಂತೆ ಕೇಳುವವನು, ಹೇಳಿದಮಾತಿನಂತೆ ನಡೆಯುವವನು. "ಅಜ್ಞಾನಿ ಪ್ರಸಮಂ ತ್ಯಜಂತಿ ಪಠುತಾಮಾಜ್ಞಾವಿಧೇಯಾನಿ ಮೇ" ಮುद्रಾಂ ೩-೧ । ವಿ + ಡುಘಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಅಕ್" (೩-೧-೯೭) । 2. ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. "ಅತಃ ಪ್ರಕರ್ಷಾಯ ವಿಧಿವಿಧೇಯಃ ಪ್ರಕರ್ಷಂತನ್ತ್ರಾ ಹಿ ರಣೇ ಜಯಶ್ರೀಃ" ಕಿರಾಂ ೩-೧೭ । 3. ವಿಧಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಮಾಡಬೇಕಾದ. "ಯನ್ಮಾಂ ವಿಧೇಯವಿಷಯೇ ಸ ಭವಾನ್ ನಿಯುಕ್ತೇ ಸ್ನೇಹಸ್ಯ ತತ್ಫಲಮಸೌ ಪ್ರಣಯಸ್ಯ ಸಾರಃ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೨ । 5. ವಿಧಿಸಬೇಕಾದ. "ಅನುವಾಚ-ಮನುಷ್ಯೇವ ನ ವಿಧೇಯಮುದೀಯತ" ।

**ವಿಧೇಯತಾ ವಿಧೇಯತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿಧೇಯನಾಗಿರುವಿಕೆ, ಹೇಳಿದಮಾತಿನಂತೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ವಿಧೇಯಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೫-೧-೧೧೯) । 2. ಅಧೀನನಾಗಿರುವಿಕೆ.

**ವಿಧೌತ ವಿಧೌತ** (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ತೊಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಶುದ್ಧಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿಶೇಷಣ ಭೂತಮ್ । "ಸ್ವಚ್ಛಾಮ್ಭಃ-ಸ್ತನಪನವಿಧೌತಮಜ್ಜಮೋಃ" ಮಾಘಂ ೮-೭೦ ।

**ವಿಧ್ವಂಸ ವಿಧ್ವಂಸ** (ಪುಂ) 1. ನಾಶ, ಅಳಿವು. ವಿ + ಧ್ವಂಸು (ಅವಸ್ರಂಸನೆ) "ಧವ್" (೩-೩-೧೮) । "ಅಧೌಘವಿಧ್ವಂಸ-ವಿಧೌ ಪಟಿಯಸೀನತೇನ ಮೂರ್ಘಾ ಹರೀರಗ್ರಹೀದಪಃ" ಮಾಘಂ ೧-೧೮ । 2. ಅಪಹರ. "ವಿಧಾಯ ವಿಧ್ವಂಸಮನಾತ್ಮನೀನಂ ಶಮೈಕವೃತ್ತಿರ್ಮವತಶ್ಚಲೇನ" ಕಿರಾಂ ೩-೧೬ । "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । -ಧ್ವಂಸನಮ್ -ಧ್ವಂಸನಮ್.

**ವಿಧ್ವಂಸಿನ್ ವಿಧ್ವಂಸಿನ್** (ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸುವ, ಅಳಿದು ಹಾಕುವ. ವಿಧ್ವಂಸಯತಿ - ಧ್ವಂಸು (ಅವಸ್ರಂಸನೆ) + ಣಿಕ್ "ಣಿತಿಃ" (೩-೨-೭೮) ।

**ವಿಧ್ವಂಸತ ವಿಧ್ವಂಸತ** (ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ + ಧ್ವಂಸು (ಅವಸ್ರಂಸನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।

**ವಿನತ ವಿನತ** (ವಿಂ) 1. ನಮಸ್ಕರಿಸಿದ. 2. ತಲೆ ಬಗ್ಗಿಸಿರುವ. 3. ವಕ್ರವಾದ, ಡೊಂಕಾದ. 4. ವಿನಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ವಿ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) । 5. ಸಭ್ಯ ನಡವಳಿಕೆಯ ಶಿಕ್ಷಣಪಡೆದವನು.

**ವಿನತಾ ವಿನತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿನತಾದೇವಿ, ಗರುಡ್ಮಂತನ ತಾಯಿ, ಕಶ್ಯಪನ ಒಬ್ಬ ಪತ್ನಿ. ವಿನತೆಯ ಪುತ್ರರು—ಗರುಡ ಮತ್ತು ಅರುಣ. "ವಿನತಾಪಿ ಸುಸಿದ್ಧಾರ್ಥಾ ಬಭೂವ ಮುದಿತಾ ತದಾ । ಜನಯಾಮಾಸ ಪುತ್ರೌ ದ್ವಾವರಣಂ ಗರುಡಂ ತಥಾ" ಭಾಂ ಆದಿಂ । 2. ಬುಟ್ಟಿ.

**ವಿನತಾತನಯ ವಿನತಾತನಯ**, -ನಂದನ -ನಂದನ, -ಸುತ -ಸುತ, -ಸುನು -ಸುನು (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. 2. ಅರುಣ. ವಿನತಾಯಾಃ ತನಯಃ ನಂದನಃ ಸುತಃ ಸುನುರ್ವಾ ।

**ವಿನತಿ ವಿನತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಣಾಮ, ನಮಸ್ಕಾರ. 2. ಬಗ್ಗುವುದು. 3. ವಕ್ರವಾಗುವುದು, ಡೊಂಕಾಗುವುದು. ವಿ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) ।

**ವಿನಮತ್ ವಿನಮತ್** (ವಿಂ) 1. ನಮಸ್ಕರಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಬಗ್ಗುತ್ತಿರುವ, ತಲೆತಗ್ಗಿಸುತ್ತಿರುವ. "ವಿನಮದ್ವಿರಘಃಸ್ಥಿತಃ ಕ್ಷಗಃ" ನೈಷಂ ೨-೭೦ ।

**ವಿನಮ್ರ ವಿನಮ್ರ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬಗ್ಗಿರುವ. ವಿಶೇಷಣ ನಾಮಃ । "ವಿನಮ್ರಶಾಲಿಪ್ರಸವೌಘಶಾಲಿನೀರಪೇತಪಕ್ಷಾಃ ಸಸರೋ-ರಹಾಮಸಃ" ಕಿರಾಂ ೪-೨ । 2. ವಿನೀತನಾದ, ಬಗ್ಗಿ ನಡೆಯುವ, ಗರ್ವವಿಲ್ಲದ. 3. ನಮಸ್ಕರಿಸಿದ. "ವಿನಮ್ರ-ದೇವಾಸುರಪುಂಜಾಭ್ಯಾಮಾದಾಯ ತಂ ಪಾಣಿಸರೋರಹಾಮ್ಯಾಂ" ಕುಮಾಂ ೧೧-೨೧ ।

**ವಿನಯ ವಿನಯ** (ಪುಂ) 1. ಸನ್ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವಂತೆ ನೀಡುವ ಶಿಕ್ಷಣ. ವಿಶೇಷಣ ನಯತಿ—ವಿ + ಣಿಕ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ಪ್ರಜಾನಾಂ ವಿನಯಾಧಾನಾದ್ರಕ್ಷಣಾ-ದ್ವರಣಾದಪಿ" ರಘುಂ ೧-೨೪ । 2. ಸಭ್ಯತೆ, ಮರ್ಯಾದೆ, ಯೋಗ್ಯವಾದ ನಡೆವಳಿಕೆ. "ವಪುಃಪ್ರಕರ್ಷಾದಿಜಯದ್ಗುಹಂ ರಘು-ಸ್ತಥಾಪಿ ನಿಕೇವಿನಯಾದದೃಶ್ಯತ" ರಘುಂ ೩-೩೪ । 3. ಇಂದ್ರಿಯವನ್ನು ಜಯಿಸಿರುವುದು. "ಅನುಯಾಸ್ಯನ್ ಮುನಿ-ತನಯಾಂ ಸಹಸಾ ವಿನಯೇನ ವಾರಿತಪ್ರಸರಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೨೫ । 4. ಪ್ರಣಾಮ, ನಮಸ್ಕಾರ. 5. ಇಂದ್ರಿಯಜಯ. "ಸಮ್ಯಗಾರಾಧಿತಾ ವಿಧ್ಯಾ ಪ್ರಬೋಧವಿನಯಾವಿವ" ರಘುಂ ೧೦-೭೧ । 6. ವರ್ತಕ. 7. ಆಕರ್ಷಣ, ಎಳೆಯುವುದು. "ಉತ್ತರೀಯ-ವಿನಯಾತ್ಪಮಾಣಾ ಋಷಿಶಿಲೆ ಕಿಲ ತದೀಕ್ಷಣಮಾರ್ಗಮ್" ಮಾಘಂ ೧೦-೪೨ । 8. ದಂಡ. 9. ಶೀಲ, ಸ್ವಭಾವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಯಾ -ಯಾ. 10. ಕಳ್ಳಂಗಡಲೆ. "ವಿನಯಾ ತು ಬಲಾಯಾಂ ಸ್ತ್ರೀ ಶಿಕ್ಷಾಯಾಂ ಪ್ರಣತೌ ಗುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ ।

**ವಿನಯತ್ ವಿನಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಶಿಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಮರ್ಯಾದೆಯ ರೀತಿಯನ್ನು ಬೋಧಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಣಿಕ್



(ಪ್ರಾಪ್ತೆ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। “ಪರಿದೃಷ್ಟಪರಾವರ-  
ಸ್ತಮಿಷದ್ವಿನಯನ್ ವಿಣ್ಣುಪದಿಸುತೋ ಬರಾಘೇ” ಯಾದಂ ೧೫-೫೫।

2. ಎಳೆಯುತ್ತಿರುವ, ತೆಗೆದುಹಾಕುತ್ತಿರುವ. “ಅಮ್ಬರಂ  
ವಿನಯತ: ಪ್ರಿಯಪಾಣಯೋಷಿತಶ್ಚ ಕರಯೋ: ಕಲಹಸ್ಯ” ಮಾಧಂ  
೧೦-೬೨। 3. ಒಯ್ಯುತ್ತಿರುವ.

**ವಿನಯನ ವಿನಯನ** (ನಂ) 1. ಪರಿಹರಿಸುವುದು, ಹೋಗ  
ಲಾಡಿಸುವುದು. ವಿ + ಣಿನ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೆ) “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೫)। “ವಕ್ಷ್ಯಸ್ಯಧ್ವಶ್ರಮವಿನಯನೇ ತಸ್ಯ ಶೃಂಗೇ  
ನಿಷಣ್ಣ: ಶೋಭಾಂ ಶುಭ್ರವಿನಯನವೃಷೋತ್ಪಾತಪಕ್ಷೋಪಮೇಯಾಂ”  
ಮೇವಂ ೧-೫೨। 2. ಒಯ್ಯುವುದು. 3. ಶಿಕ್ಷಣ, ತರಬೇತಿ.

**ವಿನಶನ ವಿನಶನ** (ನಂ) 1. ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರ, ಗಂಗಾ ಮತ್ತು  
ಯಮುನಾ ನದಿಗಳ ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶ, ಗಂಗಾ ಯಮುನೆ  
ಗಳ ಸಂಗಮಸ್ಥಳ. ಈ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಸರಸ್ವತೀನದಿಯು  
ಅಂತರ್ವಾಹಿನಿಯಾಗಿ ಪ್ರವಹಿಸುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ  
“ವಿನಶನ” ಎಂದು ಹೆಸರು. ವಿನಶ್ಯತಿ ಅಂತರ್ದೇಶಾತಿ  
ಸರಸ್ವತೀ—ವಿ + ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) ಅಧಿಂ “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೭)। “ಗಜ್ಜಾಯಮುನಯೋರ್ಮಧ್ಯೇ ಯತ್ರ ಗುಪ್ತಾ  
ಸರಸ್ವತೀ”। 2. ವಿನಾಶ.

**ವಿನಶ್ವ ವಿನಶ್ವ** (ವಿಂ) 1. ನಾಶವಾದ. ವಿ + ಣಶ  
(ಅದರ್ಶನೆ) “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨)। 2. ಕೆಟ್ಟುಹೋದ,  
ಹಾಳಾದ.

**ವಿನಶ್ವಿ ವಿನಶ್ವಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿನಾಶ, ಕೇಡು. 2. ಕೆಡು  
ವುದು, ಹಾಳಾಗುವುದು. ವಿ + ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) “ಕ್ತಿನ್”  
(೩-೩-೯೪)।

**ವಿನಸ ವಿನಸ** (ವಿಂ) ಮೂಗಿಲ್ಲದವನು. ವಿಗತಾ ನಾಸಿಕಾ  
ಯಸ್ಯ—ನಾಸಿಕಾಶಬ್ದಸ್ಯ “ಅಚ್” ನಸಾದೇಶಶ್ಚ (೫-೪-೧೧೯)।  
“ಯದ್ವಹಂ ನಾಥ ನಾಸ್ಯಾಸ್ಯ ವಿನಸಾ ಹತಬಾಂಧವಾ” ಭದ್ರಂ ೫-೮।

**ವಿನಾ ವಿನಾ** (ಅವ್ಯಂ) ಹೊರತು, ಬಿಟ್ಟು, ಉಳಿದು.  
ನಿಷೇಧಾರ್ಥಾತ್ ವಿಶಬ್ದಾತ್ “ನಾ” (೫-೨-೨೭)। ವಿನಾ ಪದದ  
ಯೋಗವಿದ್ದಲ್ಲಿ ತೃತೀಯಾ ಪಂಚಮೀ ಮತ್ತು ದ್ವಿತೀಯಾ  
ವಿಭಕ್ತಿಗಳು ವಿಶಲ್ಪವಾಗಿ ಬರುವುವು. (೨-೩-೩೨)।

**ತೃತೀಯಾ:** “ತ್ವಯಾ ವಿನಾ ಸೋಽಪಿ ಸಮುತ್ಸುಕೋ  
ಭವೇತ್ಸಖೀಜನಸ್ತೇ ಕಿಮುತಾರ್ಸಸೌಹೃದ:” ವಿಕಂ ೧-೧೧।

**ಪಂಚಮೀ:** “ಪ್ರಿಯೇಷು ಯೈ: ಪಾಠ್ಯ ವಿನೋಪಪತ್ತೇ:  
ವಿಚಿಂತ್ಯಮಾನೈ: ಕಲಮೇತಿ ಚೇತ:” ಕಿರಾಂ ೩-೫೨।

**ದ್ವಿತೀಯಾ:** “ವಿದ್ಯಾ ಹೃದ್ಯಾಪಿ ಸಾವಧ್ಯಾ ವಿನಾ ವಿನಯ-  
ಸಂಪದಮ್”। “ಸ್ಯಾದಸ್ಯಾ ನಲದಂ ವಿನಾ ನ ದಲನೇ ತಾಪಸ್ಯ  
ಕೋಽಪಿ ಕ್ಷಮ:” ನೈವಂ ೪-೧೧೬।

**ವಿನಾಕೃತ ವಿನಾಕೃತ** (ವಿಂ) ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೇರ್ಪಡಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿನಾ ಅಂತರೇಣ ಕೃತಮ್।

**ವಿನಾಯಕ ವಿನಾಯಕ** (ಪುಂ) 1. ಗಣಪತಿ. ವಿಶಿಷ್ಟೋ  
ನಾಯಕ: ವಿಗತೋ ನಾಯಕೋ ನಿಯಂತಾ ಅಸ್ಯ ಇತಿ ವಾ।  
[“ಗಜಾನನ” ಮತ್ತು “ಗಣಪತಿ” ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]  
2. ಗರುಡ. ವಿನಾ ಪಕ್ಷಿಣಾಂ ನಾಯಕ:। 3. ಬುದ್ಧ.  
4. ವಿಷ್ಣು. 5. ಗುರು, ಆಚಾರ್ಯ. “ವಿನಾಯಕಸ್ತು  
ಹೇರಂಬೇ ತಾಕ್ಷ್ಯೇ ವಿಘ್ನೇ ಜಿನೇ ಗುರೌ” ಮೇದಿಂ।

**ವಿನಾಯಿಕಾ ವಿನಾಯಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರುಡಂತನ ಪತ್ನಿ.

**ವಿನಾಶ ವಿನಾಶ** (ಪುಂ) 1. ನಾಶ, ಅಳಿವು. ವಿ + ಣಶ  
(ಅದರ್ಶನೆ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮)। “ವಿನಾಶಮವ್ಯ-  
ಯಸ್ಯಾಸ್ಯ ನ ಕಶ್ಚಿತ್ತಕ್ತುಮಹಂತಿ” ಗೀತಾ ೨-೧೭। 2. ತಿರೋ  
ಧಾನ, ಮರೆಯಾಗುವುದು, ಅದರ್ಶನ.

**ವಿನಾಶಕ ವಿನಾಶಕ** (ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸುವವನು. ವಿ +  
ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) “ಘ್” (೩-೩-೧೩೩)। “ರಾಜೈವ ಕರ್ತಾ  
ಭೂತಾನಾಂ ರಾಜೈವ ಚ ವಿನಾಶಕ:। ಧರ್ಮಾತ್ಮಾ ಯ: ಸ ಕರ್ತಾ  
ಸ್ಯಾದಧರ್ಮಾತ್ಮಾ ವಿನಾಶಕ:” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೯೧-೯।

**ವಿನಾಶನ ವಿನಾಶನ** (ನಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು, ಹಾಳು  
ಮಾಡುವುದು. ವಿ + ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೫)। (ವಿಂ) 2. ನಾಶಪಡಿಸುವವನು. ವಿ +  
ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯು:” (೩-೩-೧೩೪)।

**ವಿನಾಶಯತ್ ವಿನಾಶಯತ್** (ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ.  
ವಿ + ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) + ಣಿಚ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

**ವಿನಾಶಿನ್ ವಿನಾಶಿನ್** (ವಿಂ) ನಾಶಹೊಂದುವ ಸ್ವಭಾವದ.  
ವಿ + ಣಶ (ಅದರ್ಶನೆ) “ಣಿನಿ:” (೩-೨-೭೮)।

**ವಿನಿಕ್ಷಿಪತ್ ವಿನಿಕ್ಷಿಪತ್** (ವಿಂ) 1. ಇಡುತ್ತಿರುವ,  
ಇರಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ನಿ + ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) “ಶತ್”  
(೩-೨-೧೨೪)। 2. ಎಸೆಯುತ್ತಿರುವ, ಬಿಸಾಡುತ್ತಿರುವ.

**ವಿನಿಕ್ಷಿಪ್ತ ವಿನಿಕ್ಷಿಪ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಇರಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ನಿ + ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)।  
2. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಸಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಿನಿಗಮನಾ ವಿನಿಗಮನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯುಕ್ತಿ, ಉಪಾಯ.  
“ಅಯಮೇವ ಪಕ್ಷೋ ಗ್ರಾಹ್ಯ: ಪಕ್ಷಾಂತರಂ ನ ಗ್ರಾಹ್ಯಮಿತ್ಯತ್ರ  
ವಿನಿಗಮನಾವಿರಹ:”।

**ವಿನಿಗ್ರಹ ವಿನಿಗ್ರಹ** (ಪುಂ) 1. ತಡೆಯುವುದು, ಹತೋಟಿ  
ಯಲ್ಲಿ ಇಡುವುದು. ವಿ + ನಿ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) “ಅಪ್”



(೩-೩-೪೮)। “ಆಚಾರ್ಯೋಪಾಸನಂ ಶೌಚಂ ಸ್ವಯಂ ಮಾತಮವಿನಿಷ್ಠಃ”  
ಗೀತಾ ೧೩-೭। 2. ಪರಸ್ಪರ ವಿರುದ್ಧವಾದ ಹೋರಾಟ.

**ವಿನಿಷ್ಠ** (ವಿಂ) ಹೊಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಬಡಿಯುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ನಿ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। “ವಿನಿಷ್ಠತೋ ದೈತ್ಯಬಲೋಽಧಮಗ್ರೇ ಚಾಪಾಭಿಯೋಗೋ ಯುಧಿ ಶಮ್ಬರಾರೇ” ಯಾದಂ ೨೦-೪೦।

**ವಿನಿಷ್ಠ** (ವಿಂ) 1. ವಿಕಾಸಹೊಂದಿದ, ಅರಳಿರುವ. ವಿಗತಾ ನಿಷ್ಠಾ ಯಸ್ಯ। “ಕರೋತಿ ಪಾದಾವುಪಗಮ್ಯ ಮೌಲಿನಾ ವಿನಿಷ್ಠಮಂದಾರರಜೋರುಣಾಙ್ಗುಲಿ” ಕುಮಾಂ ೪-೮೦। 2. ನಿದ್ರೆಯಲ್ಲಿರುವ, ಎಚ್ಚರಗೊಂಡಿರುವ. “ತಾಮೇಕತಸ್ತವ ವಿಮರ್ಶಿ ಗುರ್ವಿನಿಷ್ಠಸ್ತಸ್ಯಾ ಭವಾನಪರಧುಯಂಪದಾವಲಂಬಿ” ರಘುಂ ೪-೬೬।

**ವಿನಿಷ್ಠಾಣ** (ವಿಂ) ನಿದ್ರಿಸುವ, ನಿದ್ರೆಮಾಡುವ, ನಿದ್ರೆಬಂದಿರುವ. ವಿ+ನಿ+ದ್ರಾ (ಕ್ರುತ್ಸಾಂ ಗತೌ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨)। ನ: (೮-೨-೪೩)।

**ವಿನಿಷ್ಠತ** (ವಿಂ) ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ನಿ+ಪಲ್ (ಗತೌ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)।

**ವಿನಿಷ್ಠತನ** (ನಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುವುದು. ವಿ+ನಿ+ಪಲ್ (ಗತೌ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೨-೧೧೪)। 2. ಅಧೋಗತಿ ಹೊಂದುವುದು, ನಾಶಹೊಂದುವುದು.

**ವಿನಿಷ್ಠಾತ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುವುದು. ವಿ+ನಿ+ಪಲ್ (ಗತೌ) “ಛ” (೩-೩-೧೮)। 2. ವಿಪತ್ತು, ಅನರ್ಥ, ನಾಶ. “ವಿವೇಕಪ್ರಜ್ಞಾತಾಂ ಭವತಿ ವಿನಿಷ್ಠಾತಃ ಶತಮುಖಃ” ಭರ್ತುಂ ೧-೧೦। 3. ಮರಣ. “ಮವತೋ ಭಜತಾಮನನ್ಯಸಾಙ್ಗ್ಯಂ ವಿನಿಷ್ಠಾತಂ ಪ್ರಣಿಷ್ಠಾತವೃತ್ಯನರ್ಹಃ” ಯಾದಂ ೧೪-೧೭। 4. ಅವಮಾನ. “ಮಜ್ಜಲಾಚಾರಯುಕ್ತಾನಾಂ ನಿಯಮಂ ಚ ಪ್ರಯತಾತ್ಮನಾಮ್। ಜಪತಾಂ ಜುಹ್ವತಾಂ ಚೈವ ವಿನಿಷ್ಠಾತೋ ನ ವಿಜೃಂಭತೇ” ಮನುಂ ೪-೧೪೬।

**ವಿನಿಷ್ಠಾತ** (ಪುಂ) 1. ಪರಸ್ಪರ ಬದಲಾಯಿಸಿ ಕೊಳ್ಳುವುದು, ಒಂದನ್ನೊಂದು ಮತ್ತೊಂದನ್ನು ಪಡೆಯುವುದು, ಅದಲುಬದಲು ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ವಿ+ನಿ+ಮಿ (ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೩-೪೬)। “ದುದೋಹ ಗಾಂ ಸ ಯಜ್ಞಾಯ ಸಸ್ಯಾಯ ಮಥವಾ ದಿವಮ್। ಸಂಪದ್ವಿನಿಷ್ಠಾತೋ ಭಿ ದಧತುರ್ಭುವನದ್ವಯಮ್” ರಘುಂ ೧-೨೬। 2. ಅಡವು, ಗಿರವಿ ಇರುವುದು.

**ವಿನಿಷ್ಠಾತ** (ವಿಂ) ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿರುವ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರುವ, ನಿರ್ಬಂಧದಲ್ಲಿರುವ. ವಿ+ನಿ+ಯಮ (ಉಪರಮೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨)।

**ವಿನಿಷ್ಠಾತ** (ಪುಂ) ಹತ್ತಿರ, ಹತ್ತಿರ, ನಿರೀಕ್ಷೆ, ಅಂಕೆ. ವಿ+ನಿ+ಯಮ (ಉಪರಮೇ) “ಅಪ್” (೩-೩-೬೩)।

**ವಿನಿಷ್ಠಾತ** (ವಿಂ) 1. ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, 2. ಹಂಚಲ್ಪಟ್ಟು, ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟು. “ಪ್ರತ್ಯೇಕಂ ವಿನಿಷ್ಠಾತಾತ್ಮಾ ಕಥಂ ನ ಜ್ಞಾಸ್ಯಸಿ ಪ್ರಭೋ” ಕುಮಾಂ ೨-೩೧। ವಿ+ನಿ+ಯಜಿರ್ (ಯೋ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। 3. ನಿಯಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. “ವಯಂ ಭವಂತೋ ಯೇ ಚಾನ್ಯೋ ಮಹಾಂತಃ ಸರ್ವೇ ಏವ ತೇ। ವಿಷ್ವಗುಪ್ತೌ ಜಗತ್ಕರ್ತೃ ವಿನಿಷ್ಠಾತಾ ವಿಭೂತಯಃ” ಯಾದಂ ೨೨-೪। 4. ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

**ವಿನಿಷ್ಠಾತ** (ಪುಂ) 1. ಕೊಡುವುದು, 2. ಹಂಚುವುದು, 3. ನಿಯಮಿಸುವುದು, ಒಂದು ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವಂತೆ ನೇಮಿಸುವುದು. ವಿ+ನಿ+ಯಜಿರ್ (ಯೋ) “ಛ” (೩-೩-೧೮)। “ವಿನಿಷ್ಠಾತಪ್ರಸಾದಾ ಹಿ ಕ್ಷಿಕರಾಃ ಪ್ರಭವಿಷ್ಣುಃ” ಕುಮಾಂ ೬-೬೨। 4. ಉಪಯೋಗಿಸುವುದು. “ಬಭೂವ ವಿನಿಷ್ಠಾತಃ ಸಾಧನೀಯೇಷು ವಸ್ತುಃ” ರಘುಂ ೧೭-೬೭। 5. ಬೇರ್ಪಡಿಸುವುದು.

**ವಿನಿಷ್ಠಾತ** (ವಿಂ) ಹೊರಟುಹೋದ. ವಿ+ನಿರ್+ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨)।

**ವಿನಿಷ್ಠಾತ** (ಪುಂ) 1. ಹೊರಡುವುದು. ವಿ+ನಿರ್+ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಅಪ್” (೩-೩-೪೮)। 2. ಹೊರಟುಹೋಗುವುದು. ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪)। -ಗಮನಮ್ -ಗಮನಮ್.

**ವಿನಿಷ್ಠಾತ** (ಪುಂ) ಸಂಪೂರ್ಣ ಜಯ. ವಿ+ನಿರ್+ಜಿ (ಜಯೇ) “ಅಚ್” (೩-೩-೪೬)।

**ವಿನಿಷ್ಠಾತ** (ವಿಂ) ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಜಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ+ನಿರ್+ಜಿ (ಜಯೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)।

**ವಿನಿಷ್ಠಾತ** (ಪುಂ) 1. ಪೂರ್ತಿ ತೀರ್ಮಾನ. 2. ಸುಶಯವಿಲ್ಲದ ನಂಬಿಕೆ. ವಿ+ನಿರ್+ಣಿ (ಪ್ರಾಪಣೇ) “ಅಚ್” (೩-೩-೪೬)।

**ವಿನಿಷ್ಠಾತ** (ವಿಂ) ಪ್ರದರ್ಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ತೋರಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ನಿರ್+ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೇ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)। “ವಿನಿಷ್ಠಾತಂ ಮಾರ್ಗಭವಾನ್ ವಿಶೇಷಾನ್ ವಿಶ್ವಾಸಯಾಮಾಸ ವಿವರ್ಮಕನ್ಯಾಮ್” ಯಾದಂ ೧೩-೩೮। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬)। -ತೀ-ತೀ, -ತೀ-ತೀ.

**ವಿನಿಷ್ಠಾತ** (ವಿಂ) ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ+ನಿರ್+ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)।

**ವಿನಿಷ್ಠಾತ** (ಪುಂ) ಪ್ರದರ್ಶಿಸುವುದು, ತೋರಿಸುವುದು. ವಿ+ನಿರ್+ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೇ) “ಛ” (೩-೩-೧೮)।



ವಿನಿಮುಕ್ತ ವಿನಿಮುಕ್ತ (ವಿಂ) ಬಿಡುಗಡೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು.  
ವಿ + ನಿರ್ + ಮುಕ್ತ (ಮೋಕ್ಷಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ವಿನಿಮುಕ್ತಿ ವಿನಿಮುಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ  
ಬಿಡುಗಡೆ.

ವಿನಿರ್ಯತ್ ವಿನಿರ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಹೊರಗೆ ಹೊರಡುತ್ತಿರುವ.  
ವಿ + ನಿರ್ + ಇನ್ (ಗತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ನಿರ್ಯತಿ -ನಿರ್ಯತೀ.  
"ವಿನಿರ್ಯತೀನಾಂ ಗುಣೇದಮನ್ಯರಂ ಸುರಾಜ್ಞನಾನಾಮನುಸಾನು ವರ್ತಮನಃ"  
ಕಿರಾಂ ೮-೨೬।

ವಿನಿರ್ವರ್ತತ ವಿನಿರ್ವರ್ತತ (ವಿಂ) ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ  
ನೆರವೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ + ನಿರ್ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತ:"  
(೩-೩-೧೦೨)।

ವಿನಿರ್ವೃತ್ತ ವಿನಿರ್ವೃತ್ತ (ವಿಂ) 1. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ  
ನೆರವೇರಿದ. ವಿ + ನಿರ್ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತ:"  
(೩-೪-೭೨)। 2. ಸಿದ್ಧವಾದ.

ವಿನಿವರ್ತನ ವಿನಿವರ್ತನ (ನಂ) ಹಿಂತಿರುಗುವುದು,  
ಹೊರಟುಹೋಗುವುದು. ವಿ + ನಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ)  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ವಿನಿವರ್ತತ ವಿನಿವರ್ತತ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂತಿರುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.  
2. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ + ನಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಣಿच्  
"ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ವಿನಿವಾರಿತ ವಿನಿವಾರಿತ (ವಿಂ) ಪರಿಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಹೋಗ  
ಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ + ನಿ + ವೃನ್ (ಆವರಣ) + ಣಿच्  
"ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ವಿನಿವಾರಿತಭಾನುತಾಪಮೇಕಂ  
ಸಕಲಸ್ಯಾಪಿ ಮುರದ್ವಿಷೋ ಬಲಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೨೦-೧೬।

ವಿನಿವೃತ್ತ ವಿನಿವೃತ್ತ (ವಿಂ) 1. ನಿವೃತ್ತಿಹೊಂದಿದ.  
2. ಬಿಟ್ಟುಹೋದ. ವಿ + ನಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತ:"  
(೩-೪-೭೨)। "ನಿರ್ಮಾನಮೋಹಾ ಜಿತಸಂಕ್ಷೋಭಾ ಅಧ್ಯಾತ್ಮ-  
ನಿತ್ಯಾ ವಿನಿವೃತ್ತಕಾಮಾಃ" ಗೀತಾ ೧೫-೫।

ವಿನಿವೃತ್ತಿ ವಿನಿವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತೆಗೆದುಹಾಕುವುದು,  
ತ್ಯಜಿಸುವುದು, ಪರಿಹರಿಸುವುದು. ವಿ + ನಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ)  
"ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ಅತಿಠಡೇಕೋನಶತಕ್ರತುತ್ವೇ  
ಶಕ್ರಾಭ್ಯಸುಯಾವಿನಿವೃತ್ತಯೇ ಯಃ" ರಘುಂ ೬-೭೪। 2.  
ಮುಕ್ತಾಯ, ಸಮಾಪ್ತ.

ವಿನಿವೇದನ ವಿನಿವೇದನ (ನಂ) ಅರುಹುವುದು, ವಿಜ್ಞಾಪಿಸು  
ವುದು, ತಿಳಿಸುವುದು. ವಿ + ನಿ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೫)।

ವಿನಿವೇದನೀಯ ವಿನಿವೇದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ, ಅರುಹಲ್ಪಡುವ, ತಿಳಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ವಿಜ್ಞಾಪಿಸ  
ಬೇಕಾದ, ತಿಳಿಸಬೇಕಾದ. 3. ತಿಳಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ.  
ವಿ + ನಿ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬)।  
"ತವ್ಯಃ"। -ವೇದಯಿತವ್ಯಮ್ -ವೇದಯಿತವ್ಯಮ್.

ವಿನಿವೇದಯತ್ ವಿನಿವೇದಯತ್ (ವಿಂ) ವಿಜ್ಞಾಪಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ತಿಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ನಿ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) +  
ಣಿच् "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ವಿನಿವೇದಯತಾ ರಿಪೋ  
ಹದಂತಂ ದಿವಿಷದೈರಭವದಾವಚಿತ್ರಭಾನುಮ್" ಯಾದಂ ೧೫-೯।

ವಿನಿವೇದಯಿತ್ ವಿನಿವೇದಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) ತಿಳಿಸುವವನು.  
ವಿ + ನಿ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) + ಣಿच् "ತೃತ್" (೩-೧-೧೩೩)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (೪-೨-೫)। -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

ವಿನಿವೇದಿತ ವಿನಿವೇದಿತ (ವಿಂ) ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ವಿಜ್ಞಾಪಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ + ನಿ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।  
"ವಿನಿವೇದಿತವಿಶ್ವಕಾರ್ಯ ಇತ್ಯಂ ಕೃತಿತಾ ತೇನ ಕೃತಾಹಂಘೋ  
ಯಾಹಂ" ಯಾದಂ ೧೫-೨೯।

ವಿನಿವೇದ್ಯ ವಿನಿವೇದ್ಯ (ವಿಂ) 1. ನಿವೇದಿಸಲ್ಪಡುವ, ತಿಳಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. ವಿ + ನಿ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) "ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)।  
(ಅವ್ಯಂ) 2. ತಿಳಿಸಿ, ನಿವೇದಿಸಿ, ವಿಜ್ಞಾಪಿಸಿ. ವಿ + ನಿ +  
ವಿದ "ಕ್ವಾ"। "ಲ್ಯಪ್" (೭-೧-೩೭)।

ವಿನಿವೇಶ ವಿನಿವೇಶ (ಪುಂ) ಇಡುವುದು, ಇರಿಸುವುದು.  
ವಿ + ನಿ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ವಜ್" (೩-೩-೧೮)।  
"ಕಥಮಪಿ ಚರಣೋತ್ಪಲೇಶ್ವಲಕ್ಷ್ಮಿಭೃಶವಿನಿವೇಶವಶಾತ್ಪರ-  
ಸ್ಪರಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೭-೬೭।

ವಿನಿವೇಶಿತ ವಿನಿವೇಶಿತ (ವಿಂ) ಇಡಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ + ನಿ +  
ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ವಕ್ತ್ರಾ-  
ರವಿಂದವಿನಿವೇಶಿತಪಾಶ್ಚಜನ್ಯಃ" ಗೋಪಾಲವಿಂ।

ವಿನಿಶ್ಚಯ ವಿನಿಶ್ಚಯ (ಪುಂ) 1. ನಿರ್ಣಯ. 2. ತೀರ್ಮಾನ.  
ವಿ + ನಿ + ಚಿನ್ (ಚಯನೆ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೮)।

ವಿನಿಃಶ್ವಸತ್ ವಿನಿಃಶ್ವಸತ್ (ವಿಂ) ನಿಟ್ಟುಸಿರುಬಿಡು  
ತ್ತಿರುವ. ವಿ + ನಿ + ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ಶತ್"  
(೩-೨-೧೨೪)।

ವಿನಿಃಶ್ವಸನ ವಿನಿಃಶ್ವಸನ (ನಂ) ನಿಟ್ಟುಸಿರುಬಿಡುವುದು.  
ವಿ + ನಿ + ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ವಿನಿಃಶ್ವಸಿತ ವಿನಿಃಶ್ವಸಿತ (ನಂ) ನಿಟ್ಟುಸಿರು. ವಿ +  
ನಿ + ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)।

ವಿನಿಃಶ್ವಾಸ ವಿನಿಃಶ್ವಾಸ (ಪುಂ) ನಿಟ್ಟುಸಿರು. ವಿ + ನಿ +  
ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ವಜ್" (೩-೩-೧೮)।



**ವಿನಿಷೇಷ ವಿನಿಷೇಷ** (ಪುಂ) ಅರಿಯುವುದು, ಪುಡಿಮಾಡುವುದು. ವಿ + ನಿ + ಪಿಷ (ಸಂಚೂರ್ಣನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) | ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | -ವೇಷಣಮ್ -ಸೇಷಣಮ್.

**ವಿನಿಹತ ವಿನಿಹತ** (ವಿಂ) ವಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ನಿ + ಹತ (ಹಿಸಾಗತೃಯೋಃ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |

**ವಿನಿಹಿತ ವಿನಿಹಿತ** (ವಿಂ) ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ನಿ + ತು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ವಿನಿಹಿತಂ ಪರಿತಾಪಿನಿ ಚಂದನಂ ಹೃದಿ ತಯಾ ಧೃತಬುದ್ಧಮಾಬಭೌ" ನೆಪಂ ೪-೨೮ |

**ವಿನೀತ ವಿನೀತ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಶಿಕ್ಷಣ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಶಿಸ್ತಿನಲ್ಲಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿದ್ದಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಣಿನ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ನಮ್ರನಾಗಿರುವವನು, ವಿಧೇಯನಾಗಿರುವವನು, ಹೇಳಿದಂತೆ ನಡೆಯುವವನು. 3. ಗೌರವದಿಂದಿರುವವನು, ತಗ್ಗಿ ನಡೆಯುವವನು. "ತತ್ಪ್ರಾಜ್ಞೇನ ವಿನೀತೇನ ಜ್ಞಾನವಿಜ್ಞಾನವೇದಿನಾ" ಮನುಂ ೧-೪೧ | 4. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪಳಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಶಾಂತ ಸ್ವಭಾವದ. "ತಪಸ್ವಿಸಂಸರ್ಗವಿನೀತಸತ್ತೇ ತಪೋವನೇ ವೀತಮಯಾ ವಸಾಸ್ಮಿನ್" ರಘುಂ ೧೪-೭೫ | 5. ಜಿತೇಂದ್ರಿಯನಾದ, ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ಜಯಿಸಿದ. "ಶಾಂತೋ ದಾಂತ: ಕುಲೀನಶ್ಚ ವಿನೀತ: ಶುದ್ಧವೇಶವಾನ್" | 6. ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊರದೂಡಲ್ಪಟ್ಟ. 7. ಒಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟ. 8. ದಂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 9. ಶುದ್ಧಾತ್ಮನಾದ. (ಪುಂ) 10. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪಳಗಿದ ಕುದುರೆ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿದ್ದಲ್ಪಟ್ಟ ಕುದುರೆ. 11. ವರ್ತಕ. "ವಿನೀತ: ಸುವಹಾಶ್ವೇ ಸ್ಯಾತ್ ವಣಿಜ್ಯಪಿ ಪುಮಾಸ್ತ್ರಿಪ್" | ಜಿತೇಂದ್ರಿಯೇಷ್ಠನೀತೇ ಚ ನಿಭೃತೇ ವಿನಯಾನ್ವಿತೇ" ಮೇಡಿಂ |

**ವಿನೀತಿ ವಿನೀತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪಳಗಿಸುವುದು. 2. ದಂಡಿಸುವುದು. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಗೌರವಿಸುವುದು.

**ವಿನೀಯ ವಿನೀಯ** (ಪುಂ) 1. ಕಲ್ಪ, ಗಸಿ, ಗಂಪು. 2. ಪಾಪ. ವಿ + ಣಿನ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಕ್ಯಪ್" (೩-೧-೧೧೭) | ನಿಪಾಂ |

**ವಿನೇತ್ ವಿನೇತ್** (ಪುಂ) 1. ಗುರು, ಆಚಾರ್ಯ. 2. ರಾಜ, ದೊರೆ. "ಸ ತಥೇತಿ ವಿನೇತುರ್ದಾರಮತೇ: ಪ್ರತಿಗೃಹ್ಯ ವಚೋ ವಿಸಸಜ್ಜಂ ಮುನಿಮ್" ರಘುಂ ೮-೧೧ | (ವಿಂ) 3. ನಿರ್ದೇಶನ ಮಾಡುವವನು, ಸನ್ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವಂತೆ ಬೋಧಿಸುವವನು. ವಿ + ಣಿನ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ತೃಕ್" (೩-೧-೧೩೩) | 4. ದಂಡಿಸುವವನು, ಶಿಕ್ಷಿಸುವವನು. "ಅಯಂ ವಿನೇತಾ ದೃಷ್ಟಾನಾಮೇಕವೀರೋ ಜಗತ್ಪತಿ: | ವಯಂ ವಸಿಷ್ಠಧೀರಯಾ: ಸರ್ವೇ

ಪ್ರತಿಭುವಾಃ ತ್ರ ವ:" ಮಂ ವೀಂ ೩-೪೬ | 5. ಶಿಕ್ಷಕ, ಬೋಧಕ, ಉಪಾಧ್ಯಾಯ. "ವಿನೇತುರ್ದ್ರವ್ಯಪರಿಗ್ರಹೋಽಪಿ ಬುದ್ಧಿಲಾಭವಂ ಪ್ರಕಾಶಯತಿ" ಮಾಲಂ ೧ | 6. ನಿಯಾಮಕ, ಅಜ್ಞೆ ಮಾಡುವವನು, ಆಳುವವನು. "ತೇನಾಸ ಲೋಕ: ಪಿತುಮಾನ್ ವಿನೇಶಾ" ರಘುಂ ೧೪-೨೩ |

**ವಿನೇಯ ವಿನೇಯ** (ವಿಂ) ದಂಡಿಸಲ್ಪಡುವ, ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. ವಿ + ಣಿನ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೭) | "ಜ್ಯೋತಿರ್ಜ್ಞಾನಿಂ ತಥೋತ್ಪಾತಮವಿದಿತ್ವಾ ತು ಯೇ ನೃಣಾಮ್ | ಶ್ರಾವಯತ್ಯರ್ಥಲೋಭೇನ ವಿನೇಯಾಸ್ತೇಽಪಿ ಯತ್ನತ:" |

**ವಿನೇಷ್ಯತ್ ವಿನೇಷ್ಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಶಿಕ್ಷಿಸುವ. ವಿ + ಣಿನ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) + ಸ್ಯ: "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ವನ್ಯಾನ್ ವಿನೇಷ್ಯಶ್ಚಿವ ದುಷ್ಟಸತ್ತವಾನ್" ರಘುಂ ೨-೮ | 2. ಪರಿಹರಿಸುವ. "ವಿನೇಷ್ಯನ್ ವರ್ಣವಿಕ್ರಿಯಾಮ್" ರಘುಂ ೧೫-೪೮ |

**ವಿನೋದ ವಿನೋದ** (ಪುಂ) 1. ಆನಂದ, ಪ್ರಮೋದ, ಸಂತೋಷ. ವಿ + ಣುಡ (ಪ್ರೇರಣೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) | "ಜನಯತು ರಸಿಕಜನೇಷು ಮನೋರಮರತಿರಸಭಾವವಿನೋದಮ್" ಗೀತಗೋಂ | 2. ಎರಹ ಕಷ್ಟ, ಮೊದಲಾದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕಾಲವನ್ನು ಕಳೆಯುವ ಉಪಾಯ; ಆಟ ಪಾಟ ಮೊದಲಾದುವು. "ಮತ್ಸಂಜ್ಞಂ ವಾ ಹೃದಯನಿಹಿತಾರಂಭಮಾಸ್ವಾದಯಂತಿ ಪ್ರಾಯೇಣೇತೇ ರಮಣವಿರಹೇಷ್ವಜ್ಞಾನಾನಾಂ ವಿನೋದಾ:" ಮೇಘಂ ೨-೨೪ | 3. ದಬ್ಬುವುದು, ಅಟ್ಟುವುದು, ನೂಕುವುದು. 4. ಪರಿಹರಿಸಿ ಕೊಳ್ಳುವುದು. "ವಿನೋದಮಿಚ್ಛತ್ರಥ ದರ್ಪಜನ್ಮನೋ ರಣೇನ ಕಂಢಾಸ್ತ್ರಿದಶಾ: ಸಮಂ ಪುನ:" ಮಾಘಂ ೧-೪೮ | 5. ಅಶ್ಚರ್ಯದ ವಿಷಯವನ್ನು ನೋಡುವ ಆಸೆ, ಕುತೂಹಲ. "ಮಿಥ್ಯೈವ ವ್ಯಸನಂ ವದಂತಿ ಮೃಗಯಾಮೀದೃಗ್ವಿನೋದ: ಕುತ:" ಶಾಕುಂ ೨-೫ | 6. ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ. 7. ಒಂದು ವಿಧ ರಾಜಗೃಹ. 8. ನಾಯಿಕಾ ನಾಯಕರ ಒಂದು ವಿಧ ಆಲಿಂಗನ.

**ವಿನೋದನ ವಿನೋದನ** (ನಂ) 1. ಆನಂದಗೊಳಿಸುವುದು, ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವುದು. ವಿ + ಣುಡ (ಪ್ರೇರಣೇ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಮನಸ್ಸನ್ನು ಬೇರೆ ವಿಷಯದ ಕಡೆಗೆ ತಿರುಗಿಸುವುದು. 3. ಪರಿಹರಿಸುವುದು, ನಿವಾರಣೆ ಮಾಡುವುದು. 4. ಕ್ರೀಡಿಸುವುದು, ಆಟವಾಡುವುದು. (ವಿಂ) 5. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವ. 6. ಪರಿಹರಿಸುವ, ನಿವಾರಣೆಮಾಡುವ. ವಿ + ಣುಡ + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) |

**ವಿನೋದನೀಯ ವಿನೋದನೀಯ** (ವಿಂ) ಸಂತೋಷಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ವಿ + ಣುಡ (ಪ್ರೇರಣೇ) + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) | "ತವ್ಯ:" | ವಿನೋದಯಿತವ್ಯ: ವಿನೋದಯಿತವ್ಯ:



ವಿನೋದಯತ್ ವಿನೋದಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷ ಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಪರಿಹರಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಉಪಾಯ ದಿಂದ ಕಾಲಯಾಪನೆ ಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ಣುದ (ಪ್ರೇರಣೆ) + ಣಿच् "ಶತ್" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-6)। -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

ವಿನೋದಿತ ವಿನೋದಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಣುದ (ಪ್ರೇರಣೆ)+ ಣಿच् "ಕ್ತ:" (3-2-102)। 2. ಪರಿಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿವಾರಣೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಿನೋದಿತ-ದಿನಕಲಮಾ: ಕೃತಕುಚಾ ಕಾದಂಬರಮ್" ಮಾಘಂ 4-66।

ವಿನ್ಯಾಸ ವಿನ್ಯಾಸ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಪರ್ವತ. ವಿರುದ್ಧ ವ್ಯಾಯತಿ—ಘೈ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ಕ:" (3-1-136)। ಪೃಷ್ಠಂ। ವಿನ್ಯಾಸಪರ್ವತವು ಸೂರ್ಯನ ಸಂಚಾರವನ್ನೂ ತಡೆಗಟ್ಟುವ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯುತ್ತಿರಲು ಸೂರ್ಯನು ಅಗಸ್ತ್ಯಮುನಿಯ ಬಳಿ ಹೋಗಿ ತನ್ನ ಕಷ್ಟವನ್ನು ನಿವೇದಿಸಿ ಕೊಂಡನು. ಅಗಸ್ತ್ಯಮುನಿಯು ವಿನ್ಯಾಸಪರ್ವತವು ಇನ್ನೂ ಮುಂದೆ ಬೆಳೆಯಕೂಡದೆಂದೂ ತನ್ನ ಶಿಖರವನ್ನು ತಗ್ಗಿಸಿ ಕೊಳ್ಳಬೇಕೆಂದೂ ಹೇಳಲಾಗಿ ಪರ್ವತವು ಮುಂದೆ ಬೆಳೆಯದೆ ತನ್ನ ಶಿಖರವನ್ನು ಕೆಳಗೆ ಇಳಿಸಿಕೊಂಡಿತು. "ಪುರಾ ಹಿ ವಿನ್ಯಾಸೇನ ದಿವಾಕರಸ್ಯ ಗತಿರ್ನಿರುದ್ಧಾ ಗಗನೇಶರಸ್ಯ। ರವಿಸ್ತತಃ ಕುಂಭಮವಂ ಸಮೇತ್ಯ ಹೋಮಾಸಾನೇ ವಚನಂ ಬಭಾಷೇ॥ ಸಮಾಗತೋಽಹಂ ಚ ದ್ವಿಜರ್ಷಮ ತ್ವಾಂ ಕುರುಷ್ವ ಮಯ್ಯುದ್ಧರಣಂ ಮುನೀಂದ್ರ। ದದಸ್ವ ದಾನಂ ಮಮ ಯನ್ಮನೀಷಿತಂ ಚರಾಮಿ ಯೇನ ತ್ರಿದಿವೇ ಸುನಿವೃತಃ॥ .....ಗತ್ವಾ ವಚಃ ಪ್ರಾಹ ಮುನಿರ್ಮಹೀಧ್ರಂ ಯಾಸ್ಯೇ ಮಾತೃಶಿಖರಂ ಸುಪುಣ್ಯಮ್। ವೃದ್ಧೋಽಪ್ಯಶಕ್ತಃ ತವಾಧಿ-ರೋಹಂ ತಸ್ಮಾಡ್ಭವಾನ್ ನೇತರೋಽಸ್ತು ಸದ್ವಃ॥ ಇತ್ಯೇವಮುಕ್ತೋ ಮುನಿಸತ್ತಮೇನ ಸ ನೇತಶ್ಚಕ್ಷುಸ್ತ್ವಭವನ್ಮಹೀಧ್ರಃ॥ ಸಮಾಕ್ರಮ-ಚ್ಚಾಪಿ ಮಹರ್ಷಿಮುಖ್ಯಃ ಪ್ರೋಲ್ಲಕ್ಷ್ಯ ವಿನ್ಯಾಸಂ ದ್ವಿಜ ಆಹ ಶೇಲಮ್। ಯಾವನ್ನ ಭೂಯೋ ನಿಜಮಾತ್ರಜಾಮಿ ಮಾಶ್ರಮಂ ಧೀತವಪುಃಸುತೀರ್ಥಾತ್। ತ್ವಯಾ ನ ತಾವತ್ವಿಹ ವರ್ಷಿತವ್ಯಂ ನ ಚೇತ್ ಶಪಿಷ್ಯೇಽಹಮವಜ್ರಯಾ ತೇ॥ ವಿನ್ಯಾಸೋಽಪಿ ದೃಷ್ಟಾ ಗಗನೇ ಮಾಶ್ರಮಂ ವೃದ್ಧಿಂ ನ ಯಾತ್ಯೇವ ಭಯಾನ್ಮಹರ್ಷಿಃ" ವಾಮನಪುಂ। ಈ ಪರ್ವತದಿಂದ ತಪತೀ ಪರ್ಯೋಷ್ಟೀ ನಿರ್ವಿಂಧ್ಯಾ ಕ್ಷಿಪ್ರಾ ಯುಷ್ಠಾ ವೈತರಣೀ ಕುಮುದ್ವತೀ ಮುಂತಾದ ನದಿಗಳು ಹರಿಯುತ್ತವೆ. "ಅಂತರಂ ಪೂರಯಾಮಾಸ ವಿನ್ಯಾಸನಿಹಾರಭೂತೋಃ" ಯಾದಂ 22-226। 2. ವ್ಯಾಧ, ಬೇಟೆಗಾರ.

ವಿನ್ಯಾಸಕೂಟ ವಿನ್ಯಾಸಕೂಟ (ಪುಂ) ಅಗಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿಃ. ವಿನ್ಯಾಸ ಕೂಟ ಮಾಯಾ ಯಸ್ಯ।

ವಿನ್ಯಾಸವಾಸಿನಿ ವಿನ್ಯಾಸವಾಸಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

ವಿನ್ಯಾಸ ವಿನ್ಯಾಸ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲವಲೀ ಗಿಡ. 2. ಸಣ್ಣ ಯಾಲಕ್ಕಿ. "ವಿನ್ಯಾಸ ತೃಟಿ ಲವಲೀ ಚ" ಹೇಮಂ।

ವಿನ್ಯಾಸವಲಿ ವಿನ್ಯಾಸವಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಲಿಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಪತ್ನಿ, ಬಾಣಾಸುರನ ತಾಯಿ.

ವಿನ್ಯಾಸ ವಿನ್ಯಾಸ (ವಿಂ) 1. ವಿಚಾರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿನ್ಯಾಸೇ ಸ್ವ-ವಿದ (ವಿಚಾರಣೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। ವಾ ನತ್ವಮ್ (4-2-44)। ಪಕ್ಷೇ ವಿನ್ಯಾಸ ವಿನ್ಯಾಸ. 2. ಪಡೆಯ ಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿದಲ್ (ಲಾಭ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। 3. ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) "ಕ್ತ:"। 4. ಇರುವ. ವಿದ—(ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:"।

ವಿನ್ಯಾಸನ ವಿನ್ಯಾಸನ (ನಂ) ಕೆಳಗೆ ಇರುವುದು, ಕೆಳಗೆ ಇರಿಸುವುದು. ವಿ+ನಿ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ವಿನ್ಯಾಸನ ವಿನ್ಯಾಸನ (ವಿಂ) 1. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ನಿ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। "ಸಂತಪ್ತಚಾಮೀಕರವಲ್ಗುಪ್ತಂ ವಿಭಾಗವಿನ್ಯಾಸನಮಹಾರ್ಷರತ್ನಮ್" ಭಟ್ಟಂ 3-3। 2. ಹುದುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ನೋಳಿಗೆ ಸಮವಾಗಿ ಕೂರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಿನ್ಯಾಸನವೈದ್ಯ-ಶಿಲಾತಲೇಽಸ್ಮಿನ್ನಾಬದ್ಧಮುಕ್ತಾಫಲಭಕ್ತಿಚಿತ್ತೇ" ಕುಮಾಂ 9-10। 3. ರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿದ್ದಿ ಬರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಿನ್ಯಾಸನಶುಕ್ಲಾಗುಹ ಚಕ್ರರಜ್ಜಂ ಗೋರೋಚನಾಪತ್ರವಿಭಕ್ತಮಸ್ಯಾಃ" ಕುಮಾಂ 9-14। 4. ನೆಲೆಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಂದುಕಡೆಗೆ ತಿರುಗಿಸಿದ ಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಂದುಕಡೆ ನೆಲೆಯಾಗಿ ನಿಯಂತ್ರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಒಪ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸುತವಿನ್ಯಾಸನಪತ್ನೀಕಸ್ತಯಾ ವಾನುಗತೋ ವನಮ್" ಯಾಜಂ 3-44।

ವಿನ್ಯಾಸನ ವಿನ್ಯಾಸನ (ವಿಂ) ಇಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ನಿ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಶತ್" (3-2-124)।

ವಿನ್ಯಾಸನ ವಿನ್ಯಾಸನ (ಪುಂ) 1. ನಿಕ್ಷೇಪ, ಭದ್ರವಾಗಿರಲು ಒಪ್ಪಿನಲ್ಲಿ ಇಟ್ಟಿರುವ ವಸ್ತು. ವಿನ್ಯಾಸನೇ—ವಿ+ನಿ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) ಕರ್ಮಂ "ವಜ್" (3-3-11)। 2. ನ್ಯಾಸ, ಇಡುವುದು. 3. ರಚನೆ, ರಚನಾಕ್ರಮ, ಜೋಡಣೆ. "ತಯಾ ಕವಿತಯಾ ಕಿವಾ ತಯಾ ವನಿತಯಾ ಚ ಕಿಮ್। ಪದವಿನ್ಯಾಸಮಾತ್ರೇಣ ಯಯಾ ನಾಪಹತಂ ಮನಃ"। 4. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನೊಳಗೆ ಸಮತಲವಾಗಿ ಕೂಡಿಸುವುದು.

ವಿಪಕ್ಷ ವಿಪಕ್ಷ (ವಿಂ) 1. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಹಣ್ಣಾಗಿರುವ. ವಿಶೇಷಣ ಪಕ್ಷಮ್। 2. ಫಲಿಸಿದ, ಸಿದ್ಧಿಸಿದ. "ಯಚ್ಚ ತಪ್ತಂ ತಪಸ್ತಸ್ಯ ವಿಪಕ್ಷಂ ಫಲಮನ್ಯ ನಃ" ಕುಮಾಂ 6-16।

ವಿಪಕ್ಷ ವಿಪಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಶತ್ರು, ವೈರಿ. ವಿರುದ್ಧ: ಪಕ್ಷೋ ಯಸ್ಯ। "ವಿಪಕ್ಷಮಖಿಲೀಕೃತ್ಯ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ಖಲು ದುರ್ಲಭಾ"



ಮಾಘಂ ೨-೩೪ । 2. ವಿರುದ್ಧವಾದ ಪಕ್ಷ, ಸವತಿ ಮೊದಲಾದವರು. “ವಿಜನಮಿತಿ ಬಲಾದಮುಂ ಗೃಹೀತ್ವಾ ಕ್ಷಣಮಥ ವೀಕ್ಷ್ಯ ವಿಪಕ್ಷಮಂತಿಕೇಜ್ಯಾ” ಮಾಘಂ ೮-೫೧ । 3. ಸಾಧ್ಯ ಎಲ್ಲದ ಪಕ್ಷ. ನಿಶ್ಚಿತಸಾಧ್ಯಾಭಾವವಾನ್ ವಿಪಕ್ಷಃ । ಪರ್ವತೋ ವಹ್ನಿಮಾನ್ ಭೂಮಾತ್ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಸಾಧ್ಯವಾದ ವಹ್ನಿಯು ಪರ್ವತದಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ಪರ್ವತವು ಸಪಕ್ಷ. ಹೃದೋ ವಹ್ನಿಮಾನ್ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಸಾಧ್ಯವಾದ ವಹ್ನಿಯು ಹೃದದಲ್ಲಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಹೃದವು ವಿಪಕ್ಷ. (ವಿಂ) 4. ಯಾವುದೊಂದು ಪಕ್ಷವೂ ಇಲ್ಲದಿರುವ. ವಿಗತಃ ಪಕ್ಷೋ यस್ಯ । 5. ಪ್ರತಿವಾದಿ, ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಕ್ಕೆ ಸೇರಿದವನು. “ಹೃತೋತ್ತರಂ ತತ್ವವಿಚಾರಮಥೈವ ವಕ್ತೇವ ದೋಷಗುಣಭಿವಿಪಕ್ಷಮ್” ಕಿರಾಂ ೧೭-೪೩ ।

**ವಿಪಕ್ಷಭಾವ ವಿಪಕ್ಷಭಾವ** (ಪುಂ) ಶತ್ರುತ್ವ, ವೈರ, ದ್ವೇಷ. ವಿಪಕ್ಷಸ್ಯ ಭಾವಃ । “ತಥಾಪಿ ಶತ್ರುವ್ಯವಹಾರನಿಷ್ಠುರೇ ವಿಪಕ್ಷಭಾವೇ ಚಿರಮಸ್ಯ ತಸ್ಯುಃ” ರಘುಂ ೩-೬೨ ।

**ವಿಪಶ್ಚಿಕಾ ವಿಪಂಚಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಣೆ, ಒಂದು ತಂತೀವಾದ್ಯ. ವಿ+ಪಚಿ (ವಿಸ್ತಾರೇ) “ಞ್” (೩-೧-೧೩೩) ।

**ವಿಪಶ್ಚಿ ವಿಪಂಚಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿಣೆ, ಒಂದು ತಂತೀವಾದ್ಯ. ವಿಪಶ್ಚಯತಿ ವಿಸ್ತಾರಯತಿ ಶಬ್ದಮ್ ವಿ+ಪಚಿ (ವಿಸ್ತಾರೇ) + ಣಿच् “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । ಗೌರಾಂ “ಜಿಃ” (೪-೧-೪೧) । 2. ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ. “ವಿಪಶ್ಚಿ-ಕೇಲಿವೀಣಯೋಃ” ಮೇದಿಂ ।

**ವಿಪಣ ವಿಪಣ** (ಪುಂ) 1. ವಿಕ್ರಯ, ಮಾರಾಟ. ವಿ+ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರೇ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮) । “ವಿಪಣೇನ ಚ ಜೀವಂತೋ ವರ್ಜ್ಯಃ ಸ್ಯುರ್ಹವ್ಯಕವ್ಯಯೋಃ” ಮನುಂ ೩-೧೫೨ । 2. ಅಂಗಡಿಯ ಬೀದಿ. “ಪ್ರಪಾಶ್ರ ವಿಪಣಾಃಚೈವ ಯಥೋದ್ದೇಶಂ ಸಮಾದಿಶೇತ್” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ।

**ವಿಪಣಿ ವಿಪಣಿ** (ಪುಂ ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಂಗಡಿ ಬೀದಿ. ವಿಪಣ್ಯಂತೇಷು —ವಿ+ಪಣ (ವ್ಯವಹಾರೇ) “ಃ” (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮) । “ಪರ್ಯಾಪತತ್ಕ್ರಯಿಕಲೋಕಮಗ್ನಪಣ್ಯಪೂರ್ಣಾಪಣಾ ವಿಪಣಿನೋ ವಿಪಣಿವಿಭೇಜುಃ” ಮಾಘಂ ೫-೨೪ । 2 ಅಂಗಡಿಯಲ್ಲಿ ಮಾರಾಟಕ್ಕಾಗಿ ಇಟ್ಟಿರುವ ವಸ್ತು. 3. ಅಂಗಡಿ. “ವಿಪಣಿಃ ಪಣ್ಯವೀಡ್ಯಾಂ ಚ ಭವೇದಾಪಣಪಣ್ಯಯೋಃ” ಮೇದಿಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಪಣಿ ವಿಪಣೀ.

**ವಿಪಣಿನ್ ವಿಪಣಿನ್** (ಪುಂ) ವರ್ತಕ, ಅಂಗಡಿಯಲ್ಲಿ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ವಿಕ್ರಯಿಸುವವನು. ವಿಪಣಃ ವಿಕ್ರಯೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ — “ಃ” (೫-೨-೧೧೫) । “ಪರ್ಯಾಪತತ್ಕ್ರಯಿಕಲೋಕಮಗ್ನಪಣ್ಯಪೂರ್ಣಾಪಣಾ ವಿಪಣಿನೋ ವಿಪಣಿವಿಭೇಜುಃ” ಮಾಘಂ ೫-೨೪ ।

**ವಿಪತ್ತಿ ವಿಪತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಷ್ಟ, ತೊಂದರೆ. ವಿ+ಪದ (ಗತೌ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) । 2. ಪದಾತಿ, ಕಾಲಾಳು. “ಸ್ಯಂದನಾ ನೋ ಚ ತುರಗಾಃ ಸುರೇಭಾ ವಾ ವಿಪತ್ತಯಃ” ಕಿರಾಂ ೧೫-೧೬ । 3. ನಾಶ, ಮರಣ, ನಿಧನ. “ಅಸ್ಯಾಸ್ತು ವತ್ಸ ತವ ಹೇತುರಹಂ ವಿಪತ್ತೇರ್ತಕಾರಿತೋಽಸ್ಯವಿನಯಂ ನ ಚ ರಕ್ಷಿತೋಽಸಿ” ವೇಣೀಂ ೪-೬ । 4. ಯಾತನೆ, ನೋವು. “ವಿಪತ್ತಿರಪಿ ಯಾತನಾಪದೋರ್ಯೋಷಿತಿ” ಮೇದಿಂ ।

**ವಿಪಥ ವಿಪಥ** (ಪುಂ) 1. ತಪ್ಪುದಾರಿ, ಕೆಟ್ಟಮಾರ್ಗ. ವಿರುದ್ಧಃ ಪಂಥಾಃ । 2. ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದ ದಾರಿ. “ಸತ್ಪಥಂ ಕಥಮುತ್ಸೃಜ್ಯ ಯಾಸ್ಯಾಮಿ ವಿಪಥಂ ವದ” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ । “ವಿಪಥೇನ ಸದೇಶ ವಿಪ್ರಧಾವನ್” ಯಾದಂ ೧೫-೧೭ ।

**ವಿಪದ್ ವಿಪದ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಷ್ಟ, ತೊಂದರೆ. ವಿ+ಪದ (ಗತೌ) “ಕ್ತಿನ್” (ವಾಂ ೩-೩-೯೪) । “ಋತುಗುಣೇನ ನಿಷೇವಿತುಮಾದಧೇ ಭುವಿ ಪದಂ ವಿಪದಂತಕೃತಂ ಸತಾಮ್” ಮಾಘಂ ೬-೧ । 2. ವಿನಾಶ, ಮರಣ. “ವಾಮೇ ವಿವಿಧಿ ವದ ಕಥಂ ವಿಪದಾಂ ನಿವೃತ್ತಿಃ” । “ಸಿಂಹಾದವಾಪದ್ವಿಪದಂ ನೃಸಿಂಹಃ” ರಘುಂ ೧೮-೩೫ । “ಛಾಪ್” । ವಿಪದಾ ವಿಪದಾಃ. ಭಾಗುರಿಃ ।

**ವಿಪನ್ನ ವಿಪನ್ನ** (ವಿಂ) 1. ನಾಶವಾದ, ಅಳಿದುಹೋದ. ವಿ+ಪದ (ಗತೌ) “ಕ್ತಿಃ” (೩-೪-೭೨) । 2. ತೊಂದರೆಗೆ ಸಿಲುಕಿದ, ಕಷ್ಟವನ್ನು ಅನುಭವಿಸಿದ. (ಪುಂ) 3. ಸರ್ಪ. “ವಿಪನ್ನೋ ಭುಜಗೇ ನಷ್ಟೇ” ಹೇಮಂ ।

**ವಿಪರಿಣಮನ ವಿಪರಿಣಮನ** (ನಂ) ವಿಕಾರಹೊಂದುವುದು, ಬದಲಾವಣೆಹೊಂದುವುದು, ವ್ಯತ್ಯಾಸವಾಗುವುದು. ವಿ+ಪರಿ+ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) । “ಘ್” (೩-೩-೧೮) । -ಪರಿಣಾಮಃ-ಪರಿಣಾಮಃ.

**ವಿಪರೀತ ವಿಪರೀತ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದ, ವಿರುದ್ಧವಾದ, ವ್ಯತ್ಯಾಸವಾದ. ವಿ+ಪರಿ+ಙ್ (ಗತೌ) “ಕ್ತಿಃ” (೩-೪-೭೨) । “ರಾಜ್ಯೇನ ಕಿಂ ತದ್ವಿಪರೀತವೃತ್ತೇಃ ಪ್ರಾಣೇಶ್ವಕೋಶ ಮಲಿಮಸೇವಾ” ರಘುಂ ೨-೫೩ । 2. ಹಿಂದು ಮುಂದಾದ. “ವಿಪರೀತಗತಿ ಸೂರ್ಯಮುದೀಚ್ಯಾಸ್ತಮಜಾನತ” ಯಾದಂ ೨೨-೧೦೨ ।

**ವಿಪರೀತಾ ವಿಪರೀತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಮುಕಹೆಂಗಸು, ವೈಭವಾಂಶ.

**ವಿಪರ್ಯಯ ವಿಪರ್ಯಯ** (ಪುಂ) ವ್ಯತ್ಯಾಸ. ವಿ+ಪರಿ+ಙ್ (ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೩-೫೬) । “ವಿಪರ್ಯಯೋ ವಾ ಕಿಂ ನ ಸ್ಯಾದ್ಗತಿರ್ವಾತುರ್ದುರತ್ಯಯಾ” ಭಾಗಂ ೧೦-೧-೫೦ ।

**ವಿಪರ್ಯಸ್ತ ವಿಪರ್ಯಸ್ತ** (ವಿಂ) ವ್ಯತ್ಯಾಸಹೊಂದಿದ, ಬದಲಾವಣೆಹೊಂದಿದ. ವಿ+ಪರಿ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೇ) “ಕ್ತಿಃ” (೩-೪-೭೨) । “ವಿಪರ್ಯಸ್ತಮನಶ್ಚೇಷ್ಠಃ ಶಿಕ್ಷಾ-ಶಕಲವರ್ಷಮಿಃ” ಮೃಚ್ಛಂ ೮-೬ ।



**ವಿಪರ್ಯಾಸ ವಿಪರ್ಯಾಸ** (ಪುಂ) 1. ಮೃತ್ಯು, ಬದಲಾವಣೆ.

ವಿ + ಪರಿ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) ।

"ಪುರಾ ಯತ್ರ ಸ್ನೋತಃ ಪುಲಿನಮಧುನಾ ತತ್ರ ಸರಿತಾಂ ವಿಪರ್ಯಾಸಿಂ  
ಯಾತೋ ಧನವಿರಲಭಾವಃ ಕ್ಷಿತಿರಹಾಮ್" ಉಂ ರಾಂ ೨-೨೭ ।

2. ಪ್ರತಿಕೂಲವಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ಅಪರಾಧ, ತಪ್ಪು, ದೋಷ.

**ವಿಪಶ್ಚಿತ್ ವಿಪಶ್ಚಿತ್** (ಪುಂ) ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. ವಿಪ್ರಕೃಷ್ಣಂ  
ನಿಶ್ಚಿನೋತಿ ಚಿಂತಯತಿ ವಾ ಪೃಷೋಂ । "ಭವಂತಿ ತೇ ಸಮ್ಯತಮಾ  
ವಿಪಶ್ಚಿತಾಂ ಮನೋಗತಂ ವಾಚಿ ನಿವೇಶಯಂತಿ ಯೇ" ಕಿರಾಂ  
೧೪-೪ ।

**ವಿಪಾಕ ವಿಪಾಕ** (ಪುಂ) 1. ಫಲೋನ್ಮುಖವಾದ ಸ್ಥಿತಿ, ಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವ ಅವಸ್ಥೆ. ವಿ+ಙುಪಚಃ (ಪಾಕೇ)  
ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮) । "ಕೌರವೇರನುಕೂಲಾಂ  
ವಿಪಾಕೇರಿವ ಕರ್ಮಣಾಮ್" ಯಾದಂ ೨೨-೧೭ । 2. ಪರಿಣಾಮ  
ಕಾಲ, ಫಲಕೊಡುವ ಕಾಲ. "ಧೀರಾಸ್ತ್ರಿಲೋಕೀಸುಹೃದಃ  
ಪ್ರಸಾದಾತ್ ವಿಪಾಕರಮ್ಯಾ ವಿಪದಃ ಪ್ರಸೇಹುಃ" ಯಾದಂ ೨೩-೪ ।  
3. ಜೀರ್ಣವಾಗುವುದು, ಅಹಾರವು ಪಚನವಾಗುವುದು.  
"ಜಾಠರೇಣಾಗ್ನಿನಾ ಯೋಗಾತ್ ಯದುದೇತಿ ರಸಾಂತರಮ್ । ರಸಾಂ  
ಪರಿಣಾಮಾಂತೇ ಸ ವಿಪಾಕ ಇತಿ ಸ್ಮೃತಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ।  
4. ಬಲಿಯುವುದು, ಹೆಣ್ಣಾಗುವುದು. "ಪಿಶಂಗತಾಂ ಗತಾ  
ವಿಪಾಕೇನ ಫಲಸ್ಯ ಶಾಲಯಃ" ಕಿರಾಂ ೪-೨೬ । 5. ಕರ್ಮ  
ಫಲ, ಜನ್ಮಾಂತರದ ಪುಣ್ಯದ ಅಥವಾ ಪಾಪದ ಫಲ.  
"ಅತಿರಹಸಕ್ರತಾಂ ಕರ್ಮಣಾಮಾವಿಪತ್ತಿಃ ಭವತಿ ಹೃದಯದಾಹಿ  
ಶಲ್ಯತುಲ್ಯೋ ವಿಪಾಕಃ" ಮೃತಂ ೧-೧೫ । 6. ದಶೆ, ಅವಸ್ಥೆ,  
ಅನಿರೀಕ್ಷಿತ ಪರಿಸ್ಥಿತಿ. "ಇದೃಶಾಂ ವಿಪಾಕೋಽಪಿ ಜಾಯತೇ  
ಪರಮಾಧುತಃ" ಉಂ ರಾಂ ೩-೩ ।

**ವಿಪಾಡ್ (ಶ್) ವಿಪಾಟ (ಶ್)** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಂಜಾಬಿನಲ್ಲಿ  
ಹರಿಯುವ ಒಂದು ನದಿ.

**ವಿಪಾಠ ವಿಪಾಠ** (ಪುಂ) ಬಾಣ.

**ವಿಪಾಂಡು ವಿಪಾಂಡು** (ವಿಂ) ಶುಭ್ರವಾದ, ಬೆಳ್ಳಗಿರುವ.  
ವಿಶೇಷಣ ಪಾಂಡುಃ । "ವಿಪಾಂಡುಮಿಲ್ಲನಿತಯಾ ಪಯೋರೇಃ  
ಚ್ಯುತಾಚಿರಾಗುಣಹೇಮದಾಮಿಃ" ಕಿರಾಂ ೪-೨೪ ।

**ವಿಪಾಂಡುರ ವಿಪಾಂಡುರ** (ವಿಂ) ಶುಭ್ರವಾದ, ಬಿಳುಪಾದ.  
ವಿಶೇಷಣ ಪಾಂಡುರಃ । "ಕ್ಷುಮಿತಸೈನ್ಯಪರಾಗವಿಪಾಂಡುರಶ್ಚುತಿರಯಂ  
ತಿರಯಶ್ಚುದಭೂದಿಶಃ" ಮಾಘಂ ೬-೬೪ ।

**ವಿಪಾದಿಕಾ ವಿಪಾದಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಲು ಒಡೆಯುವುದು,  
ವಾತ ಮತ್ತು ಶ್ಲೇಷ್ಮದಿಂದ ಕಾಲು ಬಿರಿಯುವುದು.  
ಇದೊಂದು ರೋಗ. "ಕಂಡುಮತಿ ದಾಹಃಪಪನ್ನಾ ವಿಪಾದಿಕಾ  
ಪಾದಗತೇಯಮೇವ" ಸುಶ್ರುತಂ ।

**ವಿಪಾಶಾ ವಿಪಾಶಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಂಜಾಬಿನಲ್ಲಿ ಹರಿಯುವ  
ಒಂದು ನದಿ.

**ವಿಪಿನ ವಿಪಿನ** (ನಂ) ಅರಣ್ಯ, ಕಡು. ವೇಪಂತೇಽತ್ರ—ಠ್ ವೇಪ್  
(ಕಂಪನೆ) "ಇನ್" ಧಾತೋಃ ಹ್ರಸ್ವಶ್ಚ (ಉಂ ೨-೫೨) ।  
"ಗೋಗಿಣಿಪ್ರಿಯನವೋಪಲಮಾಲಭಾರಿಸೇವ್ಯೋಪಕಂಠವಿಪಿನಾ-  
ವಲಯೋ ವಿಭಾಂತಿ" ಮಾಲತೀಂ ೯-೨ ।

**ವಿಪುಲ ವಿಪುಲ** (ಪುಂ) 1. ಮೇರುವಿನ ಪಶ್ಚಿಮಭಾಗದ  
ಪರ್ವತ. "ವಿಪುಲಃ ಪಶ್ಚಿಮೇ ಪಾರ್ಶ್ವೇ ಸುಪಾರ್ಶ್ವೇಽಶ್ವೋತ್ತರೇ ಸ್ಮೃತಃ"  
ಮೇದಿಂ । 2. ಹಿಮಾಚಲ. (ವಿಂ) 3. ಅಗಲವಾದ,  
ವಿಸ್ತಾರವಾದ. "ವಿಪುಲಂ ನಿತಂಬದೇಶೇ ಮಧ್ಯೇ ಕ್ಷಾಮಂ ಸಮುಪ್ಪತ್ತಂ  
ಕುಚಯೋಃ" ಮಾಲಂ ೩-೭ । 4. ಅಗಾಧವಾದ, ಅಳವಾದ.  
ಗಾಢವಾದ. "ಪ್ರಸನ್ನಕರ್ಕಶಾ ಯತ್ರ ವಿಪುಲಾರ್ಥಾ ಚ ಭಾರತೀ"  
ಮಂ ವೀಂ ೧-೨ । 5. ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅತಿಶಯ  
ವಾದ. "ತಪಸಾ ತಥಾ ನ ಮುದಮಸ್ಯ ಯಯಿ ಭಗವಾನ್ ಯಥಾ  
ವಿಪುಲಸತ್ವತಯಾ" ಕಿರಾಂ ೧೮-೧೪ । 6. ಉದ್ದವಾದ,  
ಪುಲಕ, ನೀಳವಾದ ರೋಮಾಂಚ. "ವಿಪುಲೇನ ನಿಪಿಡಯ  
ನಿರ್ದಯಂ ಮುದಮಾಯಾತು ನಿತಾಂತಮುನ್ಮನಾಃ" ಮಾಘಂ ೧೬-೩ ।  
7. ಬೃಹತ್ತಾದ, ದೊಡ್ಡದಾದ. "ವಿಪುಲೇನ ಸಾಗರಸ್ಯಸ್ಯ  
ಕುಕ್ಷಿಣಾ ಭುವನಾನಿ ಯಸ್ಯ ಪಪಿರೇ ಯುಗಕ್ಷಯೇ" ಮಾಘಂ ೧೩-೪೦ ।

**ವಿಪುಲರಸ ವಿಪುಲರಸ** (ಪುಂ) ಕಬ್ಬು.

**ವಿಪುಲಾ ವಿಪುಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ. ವಿ+ಪುಲ  
(ಮಹತ್ವೇ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫) । 2. ಆರ್ಯಾವೃತ್ತದ  
ಒಂದು ಭೇದ. ಪೂರ್ವಾರ್ಧ ಮತ್ತು ಉತ್ತರಾರ್ಧಗಳಲ್ಲಿ  
ಮೊದಲನೆಯ ಮೂರು ಗಣಗಳಿಗೆ ಒಂದು ಪಾದವಾಗು  
ವಲ್ಲಿ ವಿಪುಲಾರ್ಯ ವೃತ್ತವಾಗುವುದು. "ಉಲ್ಲಂಘಯ ಗಣತ್ರಯ-  
ಮಾದಿಮಂ ಶಕಲಯೋರ್ಧ್ವಯೋರ್ಭವತಿ ಪಾದಃ । ಯಸ್ಯಾಸ್ತಾಂ ಪಿಙ್ಗಲ-  
ನಾಗೋ ವಿಪುಲಾಮಭಿಸಮಾಖ್ಯಾತಿ" ವೃಂ ೨೦ ।

**ವಿಪುಯ ವಿಪುಯ** (ಪುಂ) ಮುಂಜತ್ಯಣ, ಮಂಜಯಹುಲ್ಲು.  
ವಿ + ಪುಙ್ (ಪವನೇ) "ಕೃಪ್" (೩-೧-೧೧೭) । ನಿಪಾಂ ।  
"ವಾಸಾಂ ವಲಕಲೇ ಶುಡ್ಧೇ ವಿಪುಯಃ ಕೃತಮೇಖಲಾಮ್" ಭಟಿಂ  
೬-೬೦ ।

**ವಿಪ್ರ ವಿಪ್ರ** (ಪುಂ) 1. ದ್ವಿಜ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಠ್ ವಪ್ (ವಿಜ-  
ಸಂತಾನೇ) "ನ್" (ಉಂ ೨-೨೯) । ವಿಶೇಷಣ ಪ್ರಾತಿ ಪೂರಯತಿ  
ಷಡ್ಕರ್ಮಾಣಿ—ವಿ + ಪ್ರಾ (ಪೂರಣೆ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೬) ।  
"ಜನ್ಮನಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ಜೇಯಃ ಸಂಸ್ಕಾರೇಽದ್ವಿಜ ಉಚ್ಯತೇ । ವಿಧಯಾ  
ಯಾತಿ ವಿಪ್ರತ್ವಂ ತ್ರಿಮಿಶ್ರೋತ್ರಿಯಲಕ್ಷಣಮ್" । 2. ಅಶ್ವತ್ಥ  
ವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿಮರ.

**ವಿಪ್ರಕರ್ಷ ವಿಪ್ರಕರ್ಷ** (ಪುಂ) ಬಹಳ ದೂರ.



**ವಿಪ್ರಕಾರ ವಿಪ್ರಕಾರ** (ಪುಂ) ಅವಕಾರ, ಅವಮಾನ, ವಿ + ಪ್ರ + ಡುಕ್ವ (ಕರಣ) "ಭಾವೇ" ಧ್ವ (೩-೩-೧೮) ।  
"ನವೀಕೃತೋದ್ಗ್ರಾಹಿತವಿಪ್ರಕಾರಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೫೫ ।

**ವಿಪ್ರಕೃತ ವಿಪ್ರಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ಅವಕಾರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ + ಪ್ರ + ಕೃ (ಕರಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।  
2. ಕೆಣಕಲ್ಪಟ್ಟು, ಕೆರಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ಜ್ವಲತಿ ಚಲಿತೇನ್ಧನೋಽ-  
ಗ್ನಿವಿಪ್ರಕೃತಃ ಪತ್ರಗಃ ಫಣಾ ಕುರುತೇ" ಶಾಕುಂ ೬-೩೧ ।  
3. ಹೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ಮುಯ್ಯಿ ತೀರಿಸಿ  
ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು, ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ಅವಕಾರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. 5.  
ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ತ್ವಯಾ  
ವಿಪ್ರಕೃತಶ್ಚೇವ" ಮಾಘಂ ೨-೩೮ ।

**ವಿಪ್ರಕೃತಿ ವಿಪ್ರಕೃತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅವಕಾರ, ಅವಮಾನ. ವಿ + ಪ್ರ + ಕೃ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪) ।

**ವಿಪ್ರಕೃಷ್ಣ ವಿಪ್ರಕೃಷ್ಣ** (ವಿಂ) ಬಹಳ ದೂರದಲ್ಲಿರುವ. ವಿ + ಪ್ರ + ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।  
"ಇದಮಸ್ತು ಸಂನಿಕ್ವೃಷ್ಣಂ ಸಮೀಪತರವತಿ ಚೇತದೋ ರೂಪಮ್ । ಅದಸಸ್ತು  
ವಿಪ್ರಕೃಷ್ಣಂ ತದಿತಿ ಪರೋಕ್ಷೇ ವಿಜಾನೀಯಾತ್" । "ವಿಪ್ರಕೃಷ್ಣಂ  
ಮಹೇಂದ್ರಸ್ಯ ನ ದೂರಂ ವಿನ್ಧ್ಯಪರ್ವತಾತ್" ಭಟ್ಟಿಂ ೮-೧೧೧ ।  
ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ್ನ್" । ವಿಪ್ರಕೃಷ್ಣಕಮ್ ವಿಪ್ರಕೃಷ್ಣಕಮ್ ।  
"ಸ್ಯಾದ್ದೂರಂ ವಿಪ್ರಕೃಷ್ಣಕಮ್" ಅಮಂ ।

**ವಿಪ್ರಚಿತ್ತಿ ವಿಪ್ರಚಿತ್ತಿ** (ಪುಂ) ದನುವಿನ ಮಗ. ದನುವಿನ ನಲವತ್ತು ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ವಿಪ್ರಚಿತ್ತಿಯು ಜ್ಯೇಷ್ಠನು.

**ವಿಪ್ರತಿಪತ್ತಿ ವಿಪ್ರತಿಪತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಶಯ, ವಿರುದ್ಧಾರ್ಥಗಳನ್ನು ಪ್ರದಿಪಾದಿಸುವ ಎರಡು ವಾಕ್ಯಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಸಂದೇಹ. "ಪರ್ವತೋ ವಹ್ನಿಮಾನ್" ಮತ್ತು "ಪರ್ವತೋ ನ ವಹ್ನಿಮಾನ್" ಎಂಬ ಎರಡು ವಾಕ್ಯಗಳಿಂದ "ಪರ್ವತೋ ವಹ್ನಿಮಾನ್ ನ ವಾ" ಎಂಬ ಸಂಶಯ ಉಂಟಾಗುವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ ವಿಪ್ರತಿಪತ್ತಿ. 2. ವಿರೋಧ. 3. ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧ.

**ವಿಪ್ರತಿಪನ್ನ ವಿಪ್ರತಿಪನ್ನ** (ವಿಂ) 1. ಪರಸ್ಪರ ವಿರೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ + ಪ್ರತಿ + ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।  
2. ಸಂಶಯವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ.

**ವಿಪ್ರತಿಷೇಧ ವಿಪ್ರತಿಷೇಧ** (ಪುಂ) 1. ವಿರೋಧ. ಅನೇಕ ಕಾರ್ಯಗಳು ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸಂಭವಿಸಿದಾಗ ಯಾವುದನ್ನು ಕೈಗೊಳ್ಳಬೇಕೆಂಬ ನಿರ್ಣಯಕ್ಕೆ ಬಾರದಿರುವುದು ವಿಪ್ರತಿಷೇಧ. ವಿ + ಪ್ರತಿ + ಪಿಷ (ಗತ್ಯಾಮ್) "ಧ್ವ" (೩-೩-೧೮) ।  
"ಗುರುದ್ರಾಯ ಗುರುಗೌರಮಯೋರಥ ಕಾರ್ಯಯೋಃ । ಹರಿವಿಪ್ರತಿಷೇಧ ತ

ಮಾಚವಕ್ಷೇ ವಿವಕ್ಷಣಃ" ಮಾಘಂ ೨-೬ । 2. ಅಂಕ, ನಿರ್ಬಂಧ, ಹತೋಟಿ. "ಕಲ್ಯಾಣೈಶ್ಚ ಇವ ಭೂತಾನಾಮದಾಂತೇಭ್ಯಃ ಸದಾ  
ಭಯಮ್ । ತेषಾಂ ವಿಪ್ರತಿಷೇಧಾರ್ಯ ರಾಜಾ ಸೃಷ್ಟಃ ಸ್ವಯಂಭುವಾ" ಮಾಂ । 3. (ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ) ಸಮಾನ ಬಲವುಳ್ಳ ಎರಡು ಶಾಸ್ತ್ರಗಳು ಒಂದು ಕಡೆ ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗುವಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ವಿರೋಧ. ಇಂತಹ ತುಲ್ಯಬಲ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳಿಗೆ ಪರಸ್ಪರ ವಿರೋಧವುಂಟಾದಾಗ ಪರಶಾಸ್ತ್ರದಿಂದ ಕಾರ್ಯವು ವಿಧಿಸಲ್ಪಡುವುದು. "ವಿಪ್ರತಿಷೇಧೇ ಪರಂ ಕಾರ್ಯಮ್" ಪಾಂ ಸುಂ ೧-೪-೨ । 4. ಪ್ರತಿಷೇಧ, ನಿಷೇಧ.

**ವಿಪ್ರತಿಸಾರ ವಿಪ್ರತಿಸಾರ** (ಪುಂ) 1. ಅನುಶಯ, ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪ. ವಿ + ಪ್ರತಿ + ಸೃ (ಗತೌ) "ಧ್ವ" (೩-೩-೧೮) ।  
ವಾ ದೀರ್ಘಃ (೬-೩-೧೨೨) । -ಪ್ರತಿಸಾರಃ -ಪ್ರತಿಷಾರಃ. "ಪ್ರಾಪಿ ಚೇತಸಿ ಸವಿಪ್ರತಿಸಾರೆ ಸುಭ್ರುವಾಮವಸರಃ ಸರಕೇಣ" ಮಾಘಂ ೧೦-೨೦ । 2. ರೋಷ, ಕೋಪ. 3. ಅಕೃತ್ಯ, ಅಕಾರ್ಯ.

**ವಿಪ್ರಪ್ರಿಯ ವಿಪ್ರಪ್ರಿಯ** (ಪುಂ) ಪಲಾಶವೃಕ್ಷ, ಮುತ್ತಗದ ಮರ. ವಿಪ್ರಾಣಾಂ ಪ್ರಿಯಃ ।

**ವಿಪ್ರಸ್ವ ವಿಪ್ರಸ್ವ** (ನಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಆಸ್ತಿ, ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಧನ, -ವಿಶ್ವರ್ಯ.

**ವಿಪ್ರಯುಕ್ತ ವಿಪ್ರಯುಕ್ತ** (ವಿಂ) ದೇರಬೇರೆಯಾದ, ವಿಶ್ಲೇಷ ಹೊಂದಿದ. ವಿ + ಪ್ರ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) ।

**ವಿಪ್ರಯೋಗ ವಿಪ್ರಯೋಗ** (ಪುಂ) 1. ನಾಯಿಕಾನಾಯಕರ ವಿರಹ, ಪತಿಪತ್ನಿಯರು ಅಗಲುವುದು. ವಿ + ಪ್ರ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) "ಧ್ವ" (೩-೩-೧೮) । "ಸದ್ಯಃಪಾತಿ ಪ್ರಣಯಿ ಹೃದಯಂ ವಿಪ್ರಯೋಗೇ ಕ್ಷಣಾಢ್ವಿ" ಮೇಘಂ ೧-೧೦ । 2. ಸಂಯೋಗದ ಅಭಾವ, ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. "ಅಶಾಸ್ತ್ರವಕ್ತೋ ಹರಿಃ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ವಿಷ್ಣುವಿಗೆ ಕದಾಚಿತ್ ಶಂಖಚಕ್ರಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದಿರುವುದೂ ಉಂಟು. ಅದರೂ ಇಲ್ಲಿ ವಿಷ್ಣುವೆಂಬ ಅರ್ಥ ವನ್ನೇ ಕೊಡುವುದು.

**ವಿಪ್ರಲಮ್ಬ ವಿಪ್ರಲಮ್ಬ** (ವಿಂ) ಮಂಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಮೋಸ ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ + ಪ್ರ + ಡು ಲಮಃ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲ್ಬಾ -ಲ್ಬಾ. ನಾಯಕನು ಸಂಕೇತಸಮಯಕ್ಕೆ ಬರದೆ ಮಂಚಿತಳಾದ ನಾಯಿಕೆ.

**ವಿಪ್ರಲಮ್ಬ ವಿಪ್ರಲಮ್ಬ** (ಪುಂ) 1. ಮಂಚನೆ, ಮೋಸ. ವಿ + ಪ್ರ + ಡು ಲಮಃ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಧ್ವ" (೩-೩-೧೮) ।  
"ವಿಪ್ರಲಮ್ಬೋಽಪಿ ಲಾಭಾಯ ಸತಿ ಪ್ರಿಯಸಮಾಗಮೇ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೨೭ । 2. ವ್ಯತ್ಯಾಸವಾಗಿ ಹೇಳುವುದು, ವಿರುದ್ಧ



ವಾಗಿ ಹೇಳುವುದು, ಪ್ರತಿಯಾಗಿ ನುಡಿಯುವುದು. 3. ವಿರಹ, ವಿಶ್ಲೇಷ, ಆಗಲುವುದು. 4. ಶೃಂಗಾರರಸದ ಒಂದು ಭೇದ, ನಾಯಿಕಾ ನಾಯಕರ ವಿರಹಕಾಲದಲ್ಲಿ ಅವರು ಅನುಭವಿಸುವ ವೇದನೆ. ನಾಯಿಕಾ ನಾಯಕರಲ್ಲಿ ಪ್ರೇಮವು ಬೆಳೆದು ಅವರಿಗೆ ಪರಸ್ಪರ ಸಂಗಮವೇರ್ಪಡ ದಿರುವಲ್ಲಿ ವಿಪ್ರಲಂಬಶೃಂಗಾರ. ವಿಪ್ರಲಂಬಶೃಂಗಾರವು (1) ಪೂರ್ವರಾಗ (2) ಮಾನ (3) ಪ್ರವಾಸ ಮತ್ತು (4) ಕರುಣಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ಭೇದ. "ಸ ಚ ಪೂರ್ವರಾಗಮಾನ ಪ್ರವಾಸಕರಣಾತ್ಮಕಶ್ಚತುರ್ಥಿ ಸ್ಯಾತ್" ಸಾಂ ೧೦ ೩-೧೮೭. (1) ನಾಯಿಕಾನಾಯಕರ ಗುಣಕಥನ ಶ್ರವಣದಿಂದ ಅಥವಾ ಪರಸ್ಪರ ದರ್ಶನದಿಂದ ಪ್ರೇಮವು ಬೆಳೆದು ಅವರ ಸಂಗಮವು ಏರ್ಪಡದಿರುವ ಅವಸ್ಥೆ ಪೂರ್ವರಾಗ. (2) ನಾಯಿಕಾನಾಯಕರಲ್ಲಿ ಪ್ರಣಯ ಅಥವಾ ಈರ್ಷ್ಯೆಯಿಂದ ಉದ್ಭವಿಸುವ ಕೋಪವು ಮಾನನಿಪ್ರಲಂಬ. (3) ಯಾವುದಾದರೊಂದು ಕಾರ್ಯನಿಮಿತ್ತ ಅಥವಾ ಶಾಪದಕಾರಣ ನಾಯಕನು ದೇಶಾಂತರದಲ್ಲಿದ್ದರೆ ಪ್ರವಾಸ ನಿಪ್ರಲಂಬ. (4) ನಾಯಿಕಾನಾಯಕರಲ್ಲಿ ಯಾರಾದ ರೊಬ್ಬರು ಲೋಕಾಂತರವನ್ನು ಸೇರಿ ಮತ್ತೆ ಸಮಾಗಮ ವೇರ್ಪಡುವುದಿಲ್ಲವೆಂದು ತಿಳಿದಾಗ ದುಃಖದಿಂದ ಪ್ರಲಪ್ತ ಸುವುದು ಕರುಣನಿಪ್ರಲಂಬ. ಆದರೆ ಅಶರೀರ ವಾಣಿಯ ಮೂಲಕ ಪುನಃ ಪ್ರಾಪ್ತಿಯುಂಟಾಗುವ ಪ್ರತ್ಯಾಶೆಯಿಂದ ರತಿಯು ಉದ್ಭವಿಸುವುದರಿಂದ ಇಂತಹ ಪ್ರಕರಣಗಳಲ್ಲಿ ಕರುಣನಿಪ್ರಲಂಬಶೃಂಗಾರರಸವೆಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕು.

**ವಿಪ್ರಲಂಬನ ನಿಪ್ರಲಂಬನ (ನಂ)** ವಂಚನೆ, ಮೋಸ.

**ವಿಪ್ರಲಯ ನಿಪ್ರಲಯ (ಫಂ)** ನಿವೃತ್ತಿ, ನಾಶ, ಲಯ.

ವಿ + ಪ್ರ + ಲಿಙ್ (ಶ್ಲೇಷಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೩-೪೬) ।

"ವಿದ್ಯಾಕಲ್ಪೇನ ಮರುತಾ ಮೇಧಾನಾಂ ಭಯಸಾಮಪಿ । ಬ್ರಹ್ಮಣಿವಿವಿವರ್ತನಾಂ ಕವಾಪಿ ವಿಪ್ರಲಯಃ ಕೃತಃ" ಛಂ ರಾಂ ೬-೬ ।

**ವಿಪ್ರಲಾಪ ನಿಪ್ರಲಾಪ (ಫಂ)** 1. ವಿರೋಧವಾದ ಮಾತು, ವಿರೋಧವಾಗಿ ನುಡಿಯುವುದು. "ವಿ + ಪ್ರ + ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಢಾಂ ವಾಚಿ) "ಛನ್" (೩-೩-೧೮) । "ವಿಪ್ರಲಾಪಿ ವಿರೋಧಿವಿಕ್ತಃ" ಅಮಂ । 2. ಅಪ್ರಯೋಜಕವಾದ ಮಾತು, ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ ಮಾತು. 3. ಮಾತಿಗೆ ತಪ್ಪು ನಡೆಯುವುದು, ಹೇಳಿದ ಮಾತಿನಂತೆ ನಡೆಯದಿರುವುದು. "ವಿಪ್ರಲಾಪಿ ವಿರೋಧಿವಿಕ್ತಾವನಯಕವಚಸ್ಯಪಿ" ಹೇಮಂ ।

**ವಿಪ್ರವಾಸ ನಿಪ್ರವಾಸ (ಫಂ)** ದೇಶಾಂತರದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವುದು, ಸ್ವದೇಶವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ವಿದೇಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವುದು.

**ವಿಪ್ರಶ್ನಿಕಾ ನಿಪ್ರಶ್ನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮನುಷ್ಯರ ಲಕ್ಷಣವನ್ನು ನೋಡಿ ಶುಭಾಶುಭಗಳನ್ನು ಹೇಳುವವಳು. ವಿವಿಧಃ ಪ್ರಶ್ನೋಸ್ತಯಸ್ಯಾಃ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೪) । "ವಿಪ್ರಶ್ನಿಕಾ-ತ್ವೀಕ್ಷಣಿಕಾ ದೇವಜ್ಞಾ" ಅಮಂ ।

**ವಿಪ್ರಿಯ ನಿಪ್ರಿಯ (ಫಂ)** 1. ಅಪರಾಧ, ತಪ್ಪು. ವಿರುದ್ಧ ಪ್ರೀಣಾತಿ । "ಆನಯೇನಮನುನೀಯ ಕಥಂ ವಾ ವಿಪ್ರಿಯಾಣಿ ಜನಯಜ್ಞನುನೇಯಃ" ಕಿರಾಂ ೯-೩೯ । (ವಿಂ) 2. ಪ್ರಿಯವಲ್ಲದ, ಸಂಮತವಲ್ಲದ.

**ವಿಪ್ರುಷ್ ನಿಪ್ರುಷ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಬಿಂದು, ನೀರಿನ ಹನಿ. "ಸಂತಾಪಂ ನವಜಲವಿಪ್ರುಷಿ ಗೃಹೀತ್ವಾ" ಮಾಘಂ ೮-೪೦ । 2. ವೇದಪಾಠದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಬಾಯಿಂದ ಬೀಳುವ ನೀರಿನ ತುಂತುರು. ವಿಶೇಷಣ ಪ್ರೋಷತಿ—ಪ್ರುಷ (ದಾಹೇ) "ಕಿವಿಪ್" (೩-೨-೬೧) । "ವಿಪ್ರುಷಿ ಬ್ರಹ್ಮಾಬಿನ್ದವಃ" ಅಮಂ ।

**ವಿಪ್ರೋಷಿತ ನಿಪ್ರೋಷಿತ (ವಿಂ)** ದೇಶಾಂತರದಲ್ಲಿರುವ, ವಿದೇಶದ ಪ್ರವಾಸದಲ್ಲಿರುವ. ವಿ+ಪ್ರ+ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) ।

**ವಿಪ್ಲವ ನಿಪ್ಲವ (ಫಂ)** 1. ಕೊಳ್ಳೆ, ಹೊಡೆಯುವುದು, ಲೂಟಿ ಮಾಡುವುದು. ವಿ+ಘ್ಞ (ಗತೌ) "ಅಘ್" (೩-೩-೪೭) । 2. ಹರಿಯುವುದು, ಪ್ರವಹಿಸುವುದು. 3. ತೇಲಾಡುವುದು. 4. ಗೊಂದಲ, ಗಾಬರಿ, ಗಲಿಬಿಲಿ. 5. ಪರಾಕ್ರಮದಿಂದ ಸಂಭವಿಸುವ ಭಯ, ಶತ್ರುವಿನಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅಪಾಯದ ಭಯ. 6. ನಾಶ, ಅಳಿವು. 7. ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ ಸುಲಿಗೆ ಮಾಡುವುದು. 8. ಕೊಲೆ, ಮಾಲಿನ್ಯ. 9. ಪ್ರಮಾಣದ ಬಾಧೆ. "ಅಪವರ್ಜಿತವಿಪ್ಲವೇ ಶುಚಿ ಹೃದಯಗ್ರಾಹಿಣಿ ಮಜ್ಜಲಾಸ್ಪದೇ । ವಿಮಲಾ ತವ ವಿವಿರೇ ಗಿರಾಂ ಮತಿರಾದರ್ಶಿ ಇವಾಸಿದೃಶ್ಯತೇ" ಕಿರಾಂ ೨-೨೬ । 10. ಅತಿಕ್ರಮ, ಮೀರಿ ನಡೆಯುವುದು, ಉಲ್ಲಂಘಿಸುವುದು. "ಗುರುಪದಿಷ್ಟೇನ ರಿಪಿ ಸುತೇಽಪಿ ವಾ ನಿಹಿಂತಿ ದಣ್ಡೇನ ಸ ಖಮವಿಪ್ಲವಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೧೩ । 11. ಪಾಪ, ದೋಷ. 12. ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸುವುದು, ಹೊರಗೆಡುಹುವುದು, ರಹಸ್ಯವನ್ನು ರಟ್ಟುಮಾಡುವುದು. 13. ಜಲಪ್ರಳಯ, ಜಲಪ್ರವಾಹದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅನಾಹುತ.

**ವಿಪ್ಲವನ ನಿಪ್ಲವನ (ನಂ)** 1. ಕುದುರೆಯ ಒಂದು ವಿಧ ನಡೆಗೆ. 2. ತೇಲಾಡುವುದು. 3. ಪ್ರವಹಿಸುವುದು.

**ವಿಪ್ಲಾವ ನಿಪ್ಲಾವ (ಫಂ)** 1. ಅಶ್ವದ ಒಂದು ವಿಧ ಗತಿ, ಕುದುರೆಯ ನಾಗಾಲೋಟ. ವಿ + ಘ್ಞ (ಗತೌ) "ಅಘ್" (೩-೩-೧೮) । 2. ಜಲಪ್ರಳಯ, ನೆರೆಯಿಂದಾಗುವ ಅನಾಹುತ.



**ವಿಪ್ಲವ ವಿಶ್ಲೇಷ** (ವಿಂ) 1. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಬಾಧೆಪಟ್ಟಿರುವ, ದುಃಖದಿಂದ ಕೂಡಿತನಾಗಿರುವ. (ವಿ + ಫ್ಲ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೨೨) 2. ಗಾಬರಿಗೊಂಡ, ಕಳವಳಿಗೊಂಡ. 3. ತೇಲಿಹೋದ. 4. ನಾಶಹೊಂದಿದ. 5. ಮುಚ್ಚಿಹೋದ. "ವಿಪ್ಲವಾಮ್ಬುಜಃ ರಜ:ಕಣ:" ಯಾದಂ ೧೭-೨೯ |

**ವಿಫಲ ವಿಫಲ** (ವಿಂ) ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ, ಸಾರ್ಥಕವಿಲ್ಲದ. ವಿಫಲಂ ಫಲಂ ಯಸ್ಯ | "ವಿಫಲವಿನಯತನಾ: ಕಾಮಿನೀನಾಂ ವಯಸ್ಯಾ:" ಮಾಧಂ ೧೧-೩೬ |

**ವಿಫಲಾ ವಿಫಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೇತಕೀವೃಕ್ಷ, ತಾಳೆಹೊವಿನ ಮರ.

**ವಿವಿಧ ವಿವಿಧ** (ಪುಂ) ಮಲಮೂತ್ರ ಬಂಧ, ಹೊಟ್ಟೆಯುಬ್ಬರ. ವಿ + ವ್ಯ (ವ್ಯವಹರಣೆ) "ವ್ಯ" (೩-೩-೧೮) | "ಆನಾಹಸ್ತು ವಿವಿಧ:ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ |

**ವಿವಿಧ ವಿವಿಧ** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ, ಸುರ. ವಿವಿಧ್ಯಂತೇ — ವಿ+ವ್ಯ (ವ್ಯವಹರಣೆ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೪) | "ಅವದಂವ ತಮೇತಮಗ್ರಗಣ್ಯಂ ವಿವಿಧಾನಾಂ ಪಿತರಂ ಪತಿ ಗುರಂ ಚ" ಯಾದಂ ೧೪-೩೭ | 2. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. 3. ಚಂದ್ರ.

**ವಿವಿಧಾನ ವಿವಿಧಾನ** (ಪುಂ) 1. ಆಚಾರ್ಯ, ಗುರು, ಉಪಾಧ್ಯಾಯ. ವಿ + ವ್ಯ (ವ್ಯವಹರಣೆ) "ಶಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪) | 2. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ.

**ವಿವಿಧಾನ ವಿವಿಧಾನ** (ಪುಂ) 1. ನಿದ್ರೆಯಿಂದ ಎಚ್ಚರಗೊಳ್ಳುವುದು, ನಿದ್ರೆಯು ಕಳೆದ ಮೇಲೆ ಆಗುವ ಎಚ್ಚರ. ವಿ+ವ್ಯ (ವ್ಯವಹರಣೆ) "ವ್ಯ" (೩-೩-೧೮) | ಇದೊಂದು ವೈಭಿಚಾರಿ ಭಾವ. "ನಿರ್ದ್ರಾಪಗಮಹೇತುರ್ವಿವಿಧಾನೇತನಾಗಮ:" ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೪೧ | 2. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. "ಸ ಏವಮಾರಾಧಿತಪಾದತೀರ್ಥಾರ್ಥಿತತತ್ವಾತ್ಮವಿವಿಧಮಾರ್ಗ:" ಭಾಗಂ ೩-೪-೨೦ | 3. ಎಚ್ಚರಿಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಲಕ್ಷ್ಯ ಕೊಡದಿರುವಿಕೆ, ಗಮನಕೊಡದಿರುವಿಕೆ.

**ವಿವಿಧಾನ ವಿವಿಧಾನ** (ನಂ) 1. ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸುವುದು, ನಿದ್ರೆಯಿಂದ ಎಬ್ಬಿಸುವುದು. ವಿ + ವ್ಯ (ವ್ಯವಹರಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | 2. ಜಾಗರಣೆ, ನಿದ್ರೆಯಿಲ್ಲದೆ ಎಚ್ಚರದಿಂದಿರುವುದು.

**ವಿಭಕ್ತ ವಿಭಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಭಾಗಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಾಲು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ಭ್ರಾತೃಣಾಂ ಜೀವತೋ: ಪಿತ್ರೋ: ಸಹವಾಸೋ ವಿಧೀಯತೇ | ತದಭಾವೇ ವಿಭಕ್ತಾನಾಂ ಧರ್ಮಸ್ತೇಷಾಂ ವಿವರ್ಧತೇ" | 2. ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿ

ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಿಭುರ್ವಿಭಕ್ತಾವಯವಂ ಪುಮಾನಿತಿ ಕ್ರಮಾದಮ್ ನಾರದ ಇತ್ಯಬೋಧಿ ಸ:" ಮಾಧಂ ೧-೩ | 3. ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾದ, ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿರುವ. 4. ವಿಭಾಂತದಲ್ಲಿರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ವಿವೇಚನೆಯಿಂದ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಮರ್ಶೆಯಿಂದ ಹೇಳಿ ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಿಭಕ್ತಸಾಮಾನ್ಯವಿಶೇಷಮ್" ಯಾದಂ ೨೩-೩೧ |

**ವಿಭಕ್ತಜ ವಿಭಕ್ತಜ** (ಪುಂ) ಆಸ್ತಿಯನ್ನು ಭಾಗಮಾಡಿ ಕೊಂಡ ನಂತರ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ವಿಭಕ್ತೇ ಸತಿ ಜಾಯತೇ | "ಪಿತ್ರಾ ಸಹ ವಿಭಕ್ತಾ ಯೇ ಸಾಪತ್ನಾ ವಾ ಸಹೋದರಾ: | ಜಘನ್ಯಜಾಶ್ಚ ಯೇ ತೇಷಾಂ ಪಿತೃಭಾಗಹರಾಸ್ತು ತೇ" |

**ವಿಭಕ್ತಿ ವಿಭಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿಭಾಗ, ಪಾಲು. ವಿ+ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪) | 2. (ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ) ಸುಪ್ ಮತ್ತು ತಿಡ್ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳ ಸಂಜ್ಞೆ.

ಸುಪ್

ತಿಡ್

ಸು ಔ ಜಸ್

ತಿಪ್ ತಸ್ ಹಿ

ಅಮ್ ಔಡ್ ಶಸ್

ಸಿಪ್ ಥಸ್ ಥ

ಠಾ ಮ್ಯಾಮ್ ಮಿಸ್

ಮಿಪ್ ವಸ್ ಮಸ್

ಠೆ ಮ್ಯಾಮ್ ಮ್ಯಸ್

ತ ಆತಾಮ್ ಷ

ಠಸಿ ಮ್ಯಾಮ್ ಮ್ಯಸ್

ಠಸ್ ಔಸ್ ಆಮ್

ಠಾಸ್ ಆಥಾಮ್ ಧವಮ್

ಠಿ ಔಸ್ ಸುಪ್

ಠಿಡ್ ವಹಿ ಮಹಿಡ್

ಈ ಎಲ್ಲಾ ವಚನಗಳನ್ನೂ ಒಳಗೊಂಡ ಸಪ್ತಕೋಷ ಪುರುಷತ್ರಯಕ್ಕೂ "ವಿಭಕ್ತಿ" ಎಂದು ಸಂಜ್ಞೆ. "ಸು ಔ ಜಸ್ ಇತ್ಯಾದಿನಾಂ ಸಪ್ತಾನಾಂ ತ್ರಿಕಾಣಾಂ ಪ್ರಥಮಾದಯ: ಸಪ್ತಮ್ಯಂತಾ: ಪ್ರಾಚಾಂ ಸಂಜ್ಞಾ:" ಸಿಂ ಕೌಂ | "ವಿಭಕ್ತಿಶ್ಚ" (೧-೪-೧೦೪) "ನ ವಿಭಕ್ತೌ ತುಸ್ತಾ:" (೧-೩-೪) | ಸಿಂ ಕೌಂ | "ಸಂಖ್ಯಾತ್ವವ್ಯಾಪ್ಯಸಾಮಾನ್ಯ: ಶಕ್ತಿಮಾನ್ ಪ್ರತ್ಯಯಸ್ತು ಯ: | ಸಾ ವಿಭಕ್ತಿರ್ವಿಧಾ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಸುಪ್ತಿಡ್ ಚೇತಿ ಪ್ರಭೇದತ:" | "ಕ್ರಿಯೇತ ಚೇತ್ ಸಾಧು ವಿಭಕ್ತಿಚಿಂತಾ ವ್ಯಕ್ತಿ-ಸ್ತದಾ ಸಾ ಪ್ರಥಮಾಭಿಧೇಯಾ | ಯಾ ಸ್ವೀಜಸಾಂ ಸಾಧಯಿತುಂ ವಿಲಾಸೇ: ತಾವತ್ ಕ್ಷಮಾ ನಾಮ ಪದಂ ಬಹು ಸ್ಥಾತ್" ನೈಷಂ ೩-೨೩ | 3. ಬೇರೆಯಾಗುವುದು, ಬೇರ್ಪಡುವುದು. 4. ತಂದೆಯ ಆಸ್ತಿಯನ್ನು ಭಾಗಮಾಡುವುದು.

**ವಿಭಜ್ಞ ವಿಭಂಜ** (ಪುಂ) 1. ಒಡೆಯುವುದು, ಮುರಿಯುವುದು. ವಿ+ಭಜ್ಞ (ಆಮರ್ದನೆ) "ವ್ಯ" (೩-೩-೧೮) | 2. ಅಡ್ಡಿ, ತಡೆ, ಅಡಚಣೆ. 3. ಸಂಕೋಚ, ಚಿಕ್ಕದಾಗಿವಾಡಿ ಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಅಙ್ಗುಲೀಕಿಸಲಯಾಘ್ರತರ್ಜನಂ ಭೂವಿಭಜ್ಞ-ಕುಟಿಲಂ ಚ ವೀಕ್ಷಿತಮ್" ರಘುಂ ೧೯-೧೭ | 4. ಸೋಪಾನ



**ವಿಭಾವ ವಿಭಾವ (ಪುಂ.) 1.** ಕಾವ್ಯನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ನಾಯಿಕಾ  
 ನಾಯಕನಿಷ್ಠವಾದ ರತಿಯನ್ನು ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವ ಕಾರಣ  
 ಗಳು. ರಾವಣಾದಿಗತವಾದ ರತಿಯನ್ನು ಉದ್ಬೋಧಗೊಳಿ  
 ಸಲು ಸೀತೆ ಮೊದಲಾದವರು ಕಾರಣರು. ವಿಭಾವ್ಯಂತೆ  
 ಆಸ್ವಾದಾಡ್ಕುರಪ್ರಾಡುರ್ಭವಿಯಾಗ್ಯಾಃ ಕ್ರಿಯಂತೆ ಸಾಮಾಜಿಕರತ್ಯಾದಿ-  
 ಭಾವಾಃ ಏಮಿಃ। “ರತ್ಯಾಶ್ಚುಬ್ಧೋಷಕಾ ಲೋಕೇ ವಿಭಾವಾಃ ಕಾವ್ಯ-  
 ನಾಟಕಯೋಃ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೨೮। ವಿಭಾವವು (1) ಆಲಂಬನ  
 ವಿಭಾವ (2) ಉದ್ಬೋಧನ ವಿಭಾವಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ.  
 “ಅಲಂಬನೋದ್ದೀಪನಾಖ್ಯೌ ತಸ್ಯ ಭೇದಾವುಮೌ ಸ್ಮೃತೌ” ಸಾಂ ದಂ  
 ೩-೨೯। ಈ ವಿಭಾವಗಳು ರಸೋತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣವಾಗು  
 ವುವು. ನಾಯಿಕಾ ನಾಯಕರು, ನಾಯಕ-ಪ್ರತಿನಾಯಕರು  
 ಆಲಂಬನ ವಿಭಾವ. ಇವರಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗಿರುವ ರತ್ಯಾದಿ  
 ಸ್ಥಾಯಿಭಾವಗಳನ್ನು ಉದ್ಬೋಧಗೊಳಿಸಿ ರಸೋತ್ಪತ್ತಿಗೆ  
 ಕಾರಣವಾದ ವಸ್ತು ಸನ್ನಿವೇಶಗಳು ಉದ್ಬೋಧನ ವಿಭಾವ



ಗಳು. [ಎವರಕ್ಕೆ "ಆಲಮ್ಬನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

"ವಿಭಾವನಾನುಭಾವೇನ ವ್ಯಕ್ತಃ ಸಂಚಾರಿಣಾ ತಥಾ | ರಸತಾಮೇತಿ  
ರತ್ಯಾದಿಃ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವಃ ಸಚೇತಸಾಮ್" ಸಾಂ ದಂ ೩-೧ |

2. ಪರಿಚಯ, ಹಿಂದೆ ನೋಡಿದ ಗುರುತು. "ವಿಭಾವಃ  
ಸ್ವಾತ್ಪರಿಚಯೇ ರಸಸ್ಯೋದ್ವಿಪನಾದಿಷು" ಮೇದಿಂ |

**ವಿಭಾವನ ವಿಭಾವನ** (ನಂ) ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಭಾವಿಸುವುದು,  
ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಕಲ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ವಿ+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) +  
ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | "ಯುಚ್" (೩-೩-೧೦೭) |  
-ನಾ-ನಾ.

**ವಿಭಾವನಾ ವಿಭಾವನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು  
ಭೇದ. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದೆ ಕಾರ್ಯೋತ್ಪತ್ತಿ ವರ್ಣನೆಯಿರುವಲ್ಲಿ  
ವಿಭಾವನಾಲಂಕಾರ. "ವಿಭಾವನಾ ವಿನಾಪಿ ಸ್ಯಾತ್ ಕಾರಣಂ  
ಕಾರ್ಯಜನ್ಮ ಚೇತ್" | ಉದಾಂ "ಅಪ್ಯಲಾಕ್ಷಾರಸಾಸಿಕ್ತಂ ರಕ್ತಂ  
ತ್ವಚ್ಚರಣದ್ವಯಮ್" ಚಂದ್ರಾಂ |

**ವಿಭಾವರೀ ವಿಭಾವರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಾತ್ರಿ. ವಿಭಾತಿ  
ನಕ್ಷತ್ರಾದಿभिಃ—ವಿ+ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕವನಿಪ್" (೩-೨-೭೪) |  
ರಾದೇಶಃ "ಙೀಪ್" ಚ (೪-೧-೭) | "ಅಪರ್ವಣಿ ಗ್ರಹಕಲ್ಪುಷೇಂದ್ರ-  
ಮಂಡಲಾ ವಿಭಾವರೀ ಕಥಯ ಕಥಂ ಭವಿಷ್ಯತಿ" ಮಾಲಂ ೪-೧೬ |  
2. ಹರಿದ್ರೆ, ಅರಿಶಿನ. 3. ಕುಟ್ಟಿನಿ, ತಲೆಹಿಡುಕಿ. 4.  
ಹೆರಟುವ ಹೆಂಗಸು, ಅತಿಯಾಗಿ ಮಾತಾಡುವ ಹೆಂಗಸು.  
5. ವಿವಾದ. 6. ವಸ್ತ್ರಗೃಹ, ಡೇರೆ. 7. ವಕ್ರವಾಗಿ  
ವ್ಯತಿರಿಕ್ತವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವ ಹೆಂಗಸು. "ವಿಭಾವರೀ  
ಹರಿದ್ರಾಂ ರಜನ್ಯಾಂ ಚ ವಿಭಾವರೀ | ವಿವಾದೇ ವಸ್ತ್ರಕುಟಾಂ ಚ  
ಕುಟನ್ಯಾಂ ವಕ್ರಯೋಷಿತಿ" ವಿಶ್ವಂ |

**ವಿಭಾವಸು ವಿಭಾವಸು** (ಪುಂ) 1. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. ವಿಭವ  
ವಸು ಸಮೃದ್ಧಿಯಸ್ಯ | 2. ವಹ್ನಿ, ಅಗ್ನಿ. ವಿಭಾ ಪ್ರಭಾ ವಸು  
ಧನಂ ಯಸ್ಯ | "ವಿಭಾವಸುಃ ಸಾರಥಿವೇವ ವಾಯುನಾ ಧನವ್ಯಪಾಯೇನ  
ಗಮಸ್ತಿಮಾನಿವ" ರಘುಂ ೩-೩೭ | 3. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ  
ಗಿಡ. 4. ಒಂದು ವಿಧ ಹಾರ. ವಿಭಾವಸುಃ ಪುಮಾನ್ ಸೂರ್ಯ  
ಹಾರಭೇದೇ ಚ ಪಾವಕೇ" ಮೇದಿಂ | 5. ಚಂದ್ರ. "ವಿಭಾವಸುಸ್ತು  
ಭಾಸ್ಕರೇ | ಹುತಾಶನೇ ಹಾರಭೇದೇ ಚಂದ್ರೇ" ಹೇಮಂ | 6. ಚಿತ್ರ  
ಮೂಲದ ಗಿಡ.

**ವಿಭಾವಿತ ವಿಭಾವಿತ** (ವಿಂ) 1. ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಪಾದಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್  
"ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ವಿಭಾವಿತಂ ಶಿಕ್ಷಿತನಾಟಕವೇದೇ  
ಕುಹಿಸಂಗೀತಮುದಾರಕಲ್ಪತಮ್" ಯಾದಂ ೧೩-೮೧ | 2. ಉಹಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ನೋಡಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ತತಃ ಶರೀರೀತಿ  
ವಿಭಾವಿತಾಕೃತಿಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೩ | 4. ಉತ್ಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

5. ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಿಭಾವಿತೈಕದೇಶೇನ ದೇಯಂ ಯದಭಿಯುಜ್ಯತೇ"  
ವಿಕ್ರಂ ೪-೩೩ |

**ವಿಭಾವಿನ್ ವಿಭಾವಿನ್** (ವಿಂ) ಪ್ರಭಾವಶಾಲಿಯಾದ.  
ವಿಭಾವೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ—"ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫) | "ವಿಭಾವೀ  
ವಿಭವೀ ಭಾಸ್ಸಮೋ ವಿಭಾವಾವೀ ವಿವೋ ವಿಭಿಃ" ಮಾಘಂ  
೧೯-೮೬ |

**ವಿಭಾವ್ಯ ವಿಭಾವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡಲು ಶಕ್ತ  
ವಾದ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಕಾಣಬಹುದಾದ. ವಿ+ಭೂ (ಸತ್ತಾ-  
ಯಾಮ್) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) | "ವಿತತವಲಿವಿಭಾವ್ಯ-  
ಪಾಂಡುರೇಖಾಕೃತಪರಭಾಗವಿಲಿನರೋಮರಾಜಿಃ" ಮಾಘಂ ೭-೩೩ |  
2. ವಿವೇಚಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ವಿವೇಚಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ.

**ವಿಭಾಷಾ ವಿಭಾಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಕಲ್ಪ, ಸಂದರ್ಭಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ  
ಇಚ್ಛೆಗೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ ಮಾರ್ಪಡಿಸುವುದು, ಎರಡು  
ವಿಧಿಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವುದಾದರೊಂದನ್ನು ಆಯ್ದು ವಿಧಿಸು  
ವುದು. ವಿಕಲ್ಪತ್ವೇನ ಭಾಷ್ಯತೇ—ಭಾಷ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ)  
"ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩) | "ವಿಭಾಷಾ ಗ್ರಹಃ" (೩-೧-೧೪೩) |  
ಈ ಸೂತ್ರದಿಂದ ಗ್ರಹ ಧಾತುವಿಗೆ "ಣ" ಪ್ರತ್ಯಯವು  
ವಿಕಲ್ಪವಾಗಿ ವಿಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. ಜಲಚರೇ ಗ್ರಾಹಃ | ಪಕ್ಷೇ  
"ಅಚ್" | ಜ್ಯೋತಿಷಿ ಗ್ರಹಃ |

**ವಿಭಿನ್ದತ್ ವಿಭಿನ್ದತ್** (ವಿಂ) ಕೊರೆಯುತ್ತಿರುವ, ಚುಚ್ಚು  
ತ್ತಿರುವ, ಪೀಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ಭಿದಿರ್ (ವಿಧಾರಣೆ)  
"ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ವಿಭಿನ್ದತಾ ದುಷ್ಕೃತಿಣಿ ಮಮ  
ಶ್ರುತಿ ದಿಗಿನ್ದ್ರದ್ವಾರ್ಚಿಕಸುಚಿಸಂಚಯಃ" ನೈಷಂ ೯-೬೨ |  
"ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) | -ಭಿನ್ದಾನಃ -ಭಿನ್ದಾನಃ.

**ವಿಭಿನ್ನ ವಿಭಿನ್ನ** (ವಿಂ) 1. ಬೆದರಿಹೋದ, ಗುಂಪನ್ನು  
ಬಿಟ್ಟು ಹಿಡಿದುಹೋದ. ವಿ+ಭಿದಿರ್ (ವಿಧಾರಣೆ) "ಕ್ತಃ"  
(೩-೪-೭೨) | "ವಿಭಿನ್ನಪರ್ಯಂತಗಮಿನಪಙ್ಕ್ತಯಃ ಪುರೋ ವಿಗಾಢಾಃ  
ಸಖಿಮಿರ್ಮುತ್ವತಃ" ಕಿರಾಂ ೮-೩೦ | 2. ಸೀಳಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಗಾಯಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಿಭಿನ್ನಪಾತಿತಾಶ್ವೀಯನಿರ್ದರಯ-  
ವರ್ಮನೇ" ಕಿರಾಂ ೧೫-೨೪ | 3. ಭೇದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಡೆಯ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಿಭಿನ್ನಂ ಧನ್ವಿನಾಂ ಬಾಣಂವ್ಯಥಾರ್ತಮಿವ ವಿಹ್ವಲಮ್"  
ಕುಮಾಂ ೧೬-೧೨ | 4. ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾದ, ನಾನಾವಿಧ  
ವಾದ, ಮಿಶ್ರವಾದ. "ವಿಭಿನ್ನವರ್ಣಾ ಗರುಡಾಗ್ರಜೇನ ಸೂರ್ಯಸ್ಯ  
ರತ್ಯಾಃ ಪರಿತಃ ಸ್ಫುರಂತ್ಯಾ" ಮಾಘಂ ೪-೧೪ | 5. ಭಿನ್ನ  
ವಾದ, ನಾನಾರೀತಿಯ, ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾದ, ವ್ಯತ್ಯಾಸ  
ವಾದ. "ವಿಭಿನ್ನಮತಯಃ" | 6. ಹೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ.  
"ವಿಭಿನ್ನಶಙ್ಖಃ ಕಲುಷಿಭವನ್ ಮುಹುಃ" ಮಾಘಂ ೧-೫೫ |

**ವಿಭಿ ವಿಭಿ** (ವಿಂ) ಭಯವಿಲ್ಲದ, ಹೆದರಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. ವಿಗತಾ  
ಭೀರಸ್ಯ | "ವಿಭಾವಾವೀ ವಿವೋ ವಿಭಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೯-೮೬ |



**ವಿಭಿಷಿತಕ ವಿಭಿಷಿತಕ (ವಿಂ)** ತಾರಂಗಿಡ. ವಿಗತಂ ಭಿತಂ ರೋಗ-  
ಭಯಮಸ್ಮಾತ್ | ವಿಶಿಷ್ಟಂ ಭಿತಮಸ್ಮಾತ್ | ಭೂತ ಮತ್ತು  
ಕಲಿಗೆ ಅಶ್ರಯವಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ವಿಭಿಷಣ ವಿಭಿಷಣ (ವುಂ)** 1. ವಿಶ್ರವಸ್ವಿನಿಂದ ಕೈಕಸಿ  
ಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಪುತ್ರ. ರಾವಣ ಕುಂಭಕರ್ಣ  
ಇವರು ಇವನ ಅಣ್ಣಂದಿರು. ಶೂರ್ಪಣಖೆಯು ಇವನ  
ಸೋದರಿ. [ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕೈಕಸಿಯು ವಿಶ್ರವಸ್ವಿ  
ನಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಕ್ರೂರವಾದ ರಾವಣ  
ಕುಂಭಕರ್ಣರು ಹುಟ್ಟಿದರು. ಇದರಿಂದ ಖಿನ್ನಳಾಗಿ ಮತ್ತೆ  
ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲಾಗಿ ಧರ್ಮಾತ್ಮನೂ ಭಗವದ್ಭಕ್ತನೂ ಆದ  
ವಿಭೀಷಣನು ಜನಿಸಿದನು. ನಿರಂತರವೂ ಧರ್ಮಬುದ್ಧಿ  
ಯಿರುವಂತೆಯೂ ಚಿರಂಜೀವಿಯಾಗಿರುವಂತೆಯೂ ಬ್ರಹ್ಮ  
ನಿಂದ ವರವನ್ನು ಪಡೆದನು. ಲಂಕಾದಹನ ಮಾಡಿದ  
ಅಂಜನೇಯನನ್ನು ವಧಿಸಲು ಆಜ್ಞೆ ಮಾಡಿದ ರಾವಣನಿಗೆ  
ಉಪದೇಶಮಾಡಿ ದೂತವರ್ಧಿಯು ನಿಷಿದ್ಧವೆಂದು ಹೇಳಿ  
ರಾವಣನನ್ನು ತಡೆದನು. ಅಣ್ಣ ರಾವಣನಿಗೆ ಎಷ್ಟೇ ನೀತಿ  
ಬೋಧಿಸಿದರೂ ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಅವನು ತಿರಸ್ಕರಿಸಲು ಎಲ್ಲ  
ರನ್ನೂ ತ್ಯಜಿಸಿ ಶ್ರೀರಾಮನಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದು ಶರಣಾಗತ  
ನಾದನು. ಶ್ರೀರಾಮನು ವಿಭೀಷಣನಿಗೆ ಅಭಯಪ್ರದಾನ  
ಮಾಡಿದನು. ಇಂದ್ರಜಿತ್ತು ಮಾಯಾಸೀತೆಯನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ  
ದಾಗ ಅದನ್ನು ನೋಡಿ ಪ್ರಲಪಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಶ್ರೀರಾಮ  
ನನ್ನು ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣನಿಗೆ ಇಂದ್ರಜಿತ್ತಿನ  
ರಹಸ್ಯವನ್ನು ತಿಳಿಸಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣನಿಂದ ಇಂದ್ರಜಿತ್ತಿನ ಸಂಹಾರ  
ಮಾಡಿಸಿದನು. ರಾವಣನ ಸಂಹಾರಾನಂತರ ದುಃಖಿಸು  
ತ್ತಿದ್ದ ವಿಭೀಷಣನನ್ನು ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸಿ ಶ್ರೀರಾಮನು  
ವಿಭೀಷಣನಿಗೆ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕಮಾಡಿಸಿದನು. ಶ್ರೀರಾಮನು  
ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಹೊರಡಲು ವಿಭೀಷಣನು ಪುಷ್ಪಕವಿಮಾನ  
ವನ್ನು ತಂದೊಪ್ಪಿಸಿದನು. ಶ್ರೀರಾಮನ ಅನುಮತಿ  
ಪಡೆದು ಅಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ನಡೆದ ಶ್ರೀರಾಮಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ  
ಮಹೋತ್ಸವಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ತಾನೂ ಅದರಲ್ಲಿ ಭಾಗವಹಿಸಿ  
ಬಂದನು.] (ವಿಂ) 2. ಭಯವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ.  
ವಿಶೇಷಣ ಭಿಷಯತೆ—ವಿ+ವಿಭಿ (ಭಯ) + ಣಿಕ್ “ಲ್ಯು.”  
(3-1-134) |

**ವಿಭಿಷಿಕಾ ವಿಭಿಷಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹೆದರಿಸುವುದು, ಭಯ  
ಪಡಿಸುವುದು. “ಯದಿ ನೋ ಸಂತಿ ಸನ್ಯೇವ ಕೇಯಮವ  
ವಿಭಿಷಿಕಾ | ಕಿಮುಕ್ತೇರಿರಿದುನಾ ತಾಂ ಪತಾಕಾಂ ಹರಾಮಿ ವಃ”  
ಉಂ ರಾಂ 4-26 |

**ವಿಭು ವಿಭು (ವಿಂ)** 1. ಸರ್ವಗತ, ಸರ್ವವ್ಯಾಪಿ, ದೇಶಕಾಲ  
ಪರಿಚ್ಛೇದವಿಲ್ಲದ, ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿ ಸಂರಕ್ಷಣ ಪ್ರಳಯ

ರೂಪವಾದ ವಿವಿಧ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಥನಾದುದರಿಂದ  
ನಿರತಿಶಯವಾದ ಮಹಿಮೆಯುಳ್ಳ. ವಿ+ಮ್ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್)  
“ಛು.” (3-2-160) | “ವಿಭುವಿಭಕ್ತಾವಯವಂ ಪುಮಾನಿತಿ  
ಕ್ರಮಾದಮ್ ನಾರದ ಇತ್ಯಬೋಧಿ ಸಃ” ಮಾಘಂ 1-3 | “ಸ ತ್ವ  
ಕಥಂ ಸಮ ವಿಮೋಕ್ಷಿಷ್ಯಃ ಪರಾತ್ಮಾ ಯೋಗೇಶ್ವರಃ ಶ್ರುತಿರ್ದಶಾಮಲ-  
ಹೃದಿಭಾವ್ಯಃ” ಭಾಗಂ 10-64-26 | 2. ನಿತ್ಯ, ಶಾಶ್ವತ.  
3. ಸ್ವತಂತ್ರ, ಇಂದ್ರಿಯಾದಿಗಳಿಗೆ ವಶನಾಗದಿರುವ.  
“ಕಮಪರಮವಶಂ ನ ವಿಪ್ರಕುರ್ಯುವಿಭುಮಪಿ ತಂ ಯದಮಿ ಸ್ಪೃಶಂತಿ  
ಭಾವಾಃ” ಕುಮಾಂ 6-95 | 4. ಸರ್ವಾಂತರ್ಯಾಮಿ.  
5. ಪ್ರಭು, ಸ್ವಾಮಿ. “ಅಪ್ಯನಾರಮಣಸ್ಯ ವಿಭೂತ್ಯಾದಿತಾಃ  
ಪರಃ” ಮಾಘಂ 2-91 | (ವುಂ) 6. ವಿಷ್ಣು. 7. ಶಂಕರ,  
ಮಹಾದೇವ. 8. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. 9. ಜೀವಾತ್ಮ.  
“ನ ಶಕ್ಯಶ್ಚಕ್ಷುಷಾ ದ್ರಷ್ಟುಂ ದೇಹೇ ಸೂಕ್ಷ್ಮತಮೋ ವಿಭುಃ | ದೃಶ್ಯತೇ  
ಜ್ಞಾನಚಕ್ಷುಃಸ್ತಪಶ್ಚಕ್ಷುಃಸ್ತಪಶ್ಚಕ್ಷುಃಸ್ತಪಶ್ಚಕ್ಷುಃಸ್ತಪಶ್ಚಕ್ಷುಃ  
ಶಾಸ್ತ್ರತಂ ಶಾರೀರಂ |  
“ವಿಭುಃ ಪ್ರಭುಃ ಸರ್ವಗತಃ ಶಕ್ತುರೇ ದ್ರಹಿಣಿ ಪುಮಾನ್” ಮೇದಿಂ |  
“ಅನವಚ್ಛಿತ್ತಸದ್ಭಾವಂ ವಸ್ತು ಯದೇಶಕಾಲತಃ | ತನ್ನಿತ್ಯಂ ವಿಭು  
ವೇಚ್ಛಂತೀತ್ಯಾತ್ಮತೋ ವಿಭುನಿತ್ಯತಾ” ಸಂ ದಂ ಸಂ |

**ವಿಭುತ್ವ ವಿಭುತ್ವ (ನಂ)** 1. ಸರ್ವಗತತ್ವ, ಸರ್ವತ್ರ ವ್ಯಾಪಕ  
ವಾಗಿರುವಿಕೆ. 2. ಸರ್ವವಿಧದಲ್ಲೂ ಇರುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ.  
3. ನಿತ್ಯತ್ವ, ದೇಶಕಾಲಪರಿಚ್ಛೇದವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 4.  
ನಿರತಿಶಯವಾದ ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ. ವಿಭೂರ್ಭವಿಃ “ತ್ವಃ”  
(4-1-119) | “ತಲ್” | -ತಾ -ತಾ.

**ವಿಭುಗ್ನ ವಿಭುಗ್ನ (ವಿಂ)** ಬಗ್ಗಿರುವ, ಮಡುಚಿಕೊಂಡಿರುವ  
ವಿ+ಭುಜಿ (ಕೌಟಿಲ್ಯೇ) “ಕ್ತಃ” (3-4-92) | “ಕಾಮಿನಾಮ-  
ಸಕಲಾನಿ ವಿಭುಗ್ನಃ ಸ್ವೇದವಾರಿಮೃದುಃ ಕರಜಾಗ್ರಃ” ಮಾಘಂ  
10-49 |

**ವಿಭೂತಿ ವಿಭೂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಐಶ್ವರ್ಯ, ಸಂಪತ್ತು.  
ವಿ+ಮ್ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “ಕ್ತಿನ್” (3-3-94) | “ಚತು-  
ದಿಗಾವಜಿತಸಂಭೃತಾಂ ಯೋ ಮೃತ್ಯುಶೋಷಾಮಕರೋದ್ವಿಭೂತಿಮ್” ರಘುಂ  
6-96 | 2. ಸಮೃದ್ಧಿ, ಹೇರಳ. “ಸರಜಸಮಕರಂದ-  
ನಿರ್ಭರಾಸು ಪ್ರಸವವಿಭೂತಿಃ ಭೂಹಾಂ ವಿರಕ್ತಃ” ಮಾಘಂ 9-42 |  
3. ಅಮಾನುಷವಾದ ಶಕ್ತಿ, ಮನುಷ್ಯನ ಶಕ್ತಿಗೆ ಮೀರಿದ  
ಶಕ್ತಿ, ದಿವ್ಯಶಕ್ತಿ. ಅಣೆಮಾಡಿ ಅಷ್ಟೈಶ್ವರ್ಯ. (1) ಅಗ್ನಿಮಾ  
(2) ಮಹಿಮಾ (3) ಗರಿಮಾ (4) ಲಭಿಮಾ (5) ಪ್ರಾಪ್ತಿಃ  
(6) ಪ್ರಾಕಾಮ್ಯಮ್ (7) ಇಶಿತ್ವಮ್ ಮತ್ತು (8) ವಶಿತ್ವಮ್  
ಇವು ಎಂಟು ವಿಧ ಐಶ್ವರ್ಯಗಳು. “ವ್ಯಕ್ತೋ ವ್ಯಕ್ತೇತರ-  
ಶ್ರಾಸಿ ಪ್ರಾಕಾಮ್ಯಂ ತೇ ವಿಭೂತಿಃ” ಕುಮಾಂ 2-11 |  
4. ಭಕ್ತಿ, ಪರಶಿವನು ಧರಿಸಿದ ಗೋಮಯದ ಭಕ್ತಿ.  
5. ಪರಮಾತ್ಮನ ಮಹಿಮೆ, ಪರಮಾತ್ಮನ ನಿರಂಕುಶ



ಐಶ್ವರ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಅನನ್ಯ ಕಲ್ಯಾಣ ಗುಣಗಣಗಳು.

“ಸಾ ವಿಭೂತಿರನುಭಾವಸಂಪದಾಂ ಭೂಯಸಿ ತವ ಯದಾಯತಾಯತಿ”  
 ಮಾಘಂ ೧೪-೫। ಪರಮಾತ್ಮನ ಮಹಿಮೆಯು ಅನನ್ಯ  
 ವಾದುದು. ಅವನ ಮಹಿಮೆಯು ಇಷ್ಟೇ ಎಂದು ಹೇಳಲು  
 ಯಾರಿಗೂ ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ. ಸರ್ವಜ್ಞನಾದ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೂ  
 ತನ್ನ ಮಹಿಮೆಯನ್ನು ಲೆಕ್ಕಹಾಕಿ ಎಣಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ.  
 “ಯತೋ ವಾಚೋ ನಿವರ್ತಂತೇ। ಅಪ್ರಾಪ್ಯ ಮನಸಾ ಸಹ” ಶ್ರುತಿಃ।  
 “ಸಂಖ್ಯಾನಂ ಪರಮಾಣುನಾಂ ಕಾಲೇನ ಕ್ರಿಯತೇ ಮಯಾ। ನ ತಥಾ ಮೇ  
 ವಿಭೂತೀನಾಂ ಸೃಜತೋಽಽನಿ ಕೋಟಿಶಃ” ಭಾಗಂ ೧೧-೧೬-೩೯।  
 ಪರಮದಯಾಳುವಾದ ಈಶ್ವರನು ಸಕಲಮನುಷ್ಯರಿಗೂ  
 ಸಮಾಶ್ರಯಣ ಸುಲಭವಾದ ಮನುಷ್ಯಾವತಾರ ಮಾಡಿರು  
 ವುದನ್ನು ನೋಡಿ ತಮ್ಮ ಪಾಪಕರ್ಮಗಳಿಂದ ಮೂಢ  
 ರಾದವರು ಅವನ ಪರತ್ವವನ್ನರಿಯದೆ ಅವನನ್ನು ಸಾಮಾನ್ಯ  
 ಮನುಷ್ಯನೆಂದು ತಿಳಿದು ತಿರಸ್ಕಾರಭಾವದಿಂದ ನೋಡು  
 ತಾರೆ. “ಅವಜಾನಂತಿ ಮಾಂ ಮೂಢಾ ಮಾನುಷಿಂ ತನುಮಾಶ್ರಿತಮ್।  
 ಪರಂ ಭಾವಮಜಾನಂತೋ ಮಮ ಭೂತಮಹೇಶ್ವರಮ್” ಗೀತಾ ೯-೧೧।  
 “ಪರಾತ್ಪರತರಂ ತತ್ತ್ವಂ ಪರಂ ಬ್ರಹ್ಮೈಕಮವ್ಯಯಮ್। ನಿತ್ಯಾನಂದಂ  
 ಸ್ವಯಂ ಜ್ಯೋತಿರದ್ವಯಂ ತಮಸಃ ಪರಮ್। ಐಶ್ವರ್ಯಂ ತಸ್ಯ ಯನ್ನಿತ್ಯಂ  
 ವಿಭೂತಿರೀತಿ ಗೀಯತೇ”।

**ವಿಭೂಷಣ ವಿಭೂಷಣ** (ನಂ) ಒಡವೆ, ಅಭರಣ.  
 ವಿಭೂಷಣೇನ — ವಿ + ಭೂಷ (ಅಲಂಕಾರೇ) “ಲ್ಯುಟ್”  
 (೩-೩-೧೧೭)। “ಉದ್ಬೋಧಂ ಕನಕವಿಭೂಷಣಾನ್ಯಶಕ್ತಃ ಸಂಧೀಚಾ  
 ವಲಯಿತಪದ್ಮನಾಲಸೂತ್ರಃ” ಮಾಘಂ ೮-೪೪।

**ವಿಭೂಷಣೀಯ ವಿಭೂಷಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಅಲಂಕರಿಸ  
 ಲ್ಪಡುವ. 2. ಅಲಂಕರಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಅಲಂಕರಿಸಲು  
 ಅರ್ಹವಾದ. ವಿ + ಭೂಷ (ಅಲಂಕಾರೇ) “ಅನೀಯರ್”  
 (೩-೧-೯೬)। “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬)। -ಭೂಷಿತವ್ಯಮ್  
 -ಭೂಷಿತವ್ಯಮ್.

**ವಿಭೂಷಯತ್ ವಿಭೂಷಯತ್** (ವಿಂ) ಅಲಂಕರಿಸುತ್ತಿರುವ,  
 ಶೃಂಗರಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಭೂಷ (ಅಲಂಕಾರೇ) + ಣಿच्  
 “ಶಾತ್” (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬)।  
 -ಭೂಷಯಂತಿ -ಭೂಷಯಂತೀ.

**ವಿಭೂಷಾ ವಿಭೂಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಲಂಕಾರ, ಶೃಂಗಾರ.  
 2. ಒಡವೆ, ಅಭರಣ. ವಿ + ಭೂಷ (ಅಲಂಕಾರೇ) “ಅಃ”  
 (೩-೩-೧೦೩)। “ಸಂಪೇದೇ ಶ್ರಮಸಾಲಿಲೋದ್ಗಮೋ ವಿಭೂಷಾಂ  
 ರಮ್ಯಾಣಾಂ ವಿಕೃತಿರಪಿ ಶ್ರಿಯಂ ತನೋತಿ” ಕಿರಾಂ ೭-೫।

**ವಿಭೂಷಿತ ವಿಭೂಷಿತ** (ವಿಂ) ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಡವೆ  
 ಗಳಿಂದ ಶೃಂಗರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಭೂಷ (ಅಲಂಕಾರೇ) “ಕ್ತಃ”  
 (೩-೨-೧೦೨)।

**ವಿಭೂತ ವಿಭೂತ** (ವಿಂ) 1. ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಾಕಲ್ಪಟ್ಟ.  
 ವಿ + ಭೂ (ವಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)।  
 2. ಧರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಿಭೇದ ವಿಭೇದ** (ಪುಂ) 1. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. ವಿ + ಭಿಧಿರ್  
 (ವಿದಾರಣೇ) “ಭಕ್” (೩-೩-೧೮)। 2. ಭಂಗ, ಗಂಟು  
 ಬಿಚ್ಚುವುದು. “ಭ್ರೂಯೋನ ಸಪದಿ ಪ್ರತಿಪೇದೇ ರೋಮಭಿಶ್ಚ ಸಮಮೇವ  
 ವಿಭೇದಃ” ಮಾಘಂ ೧೦-೬೩। 3. ಒಡೆಯುವುದು, ವಿಶ್ಲೇಷ  
 ವುಂಟುಮಾಡುವುದು. “ವಿಭೇದಮಂತಃ ಪದವೀನಿರೋಧಮ್”  
 ಕಿರಾಂ ೧೭-೨೭।

**ವಿಭ್ರಮ ವಿಭ್ರಮ** (ಪುಂ) 1. ಭ್ರಾಂತಿ, ಭ್ರಮೆ. ವಿ + ಭ್ರಮ್  
 (ಚಲನೇ) “ಭಕ್” (೩-೩-೧೮)। 2. ವಿಲಾಸ, ಸ್ತ್ರೀಯರ  
 ಶೃಂಗಾರಭಾವದ ಕಾರ್ಯ. 3. ಹೆಂಗಸರ ಸ್ವಭಾವಸಿದ್ಧ  
 ವಾದ ಒಂದು ಅಲಂಕಾರ, ಸ್ತ್ರೀಯರು ಆತುರ ಮತ್ತು  
 ಸಂಭ್ರಮದಿಂದ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ. “ತವಯಾ ಹರ್ಷ-  
 ರಾಗಾದೇದಯಿತಾಗಮನಾದಿಭುಃ। ಅಸ್ಥಾನೇ ವಿಭ್ರಮಾದೀನಾಂ ವಿನ್ಯಾಸೋ  
 ವಿಭ್ರಮೋ ಮತಃ” ಸಾಂ ೬೦ ೩-೧೦೪। “ವಿಭ್ರಮಂ ಮಧುಮದಃ  
 ಪ್ರಮದಾನಾಂ ವಾತುಲೀನಮುಪಸರ್ಗಂ ಇವಾರ್ಥಮ್” ಮಾಘಂ ೧೦-೧೫।  
 4. ವಿಕಾರ, ಅಕಸ್ಮಿಕವಾದ ವಿಚಿತ್ರಭಾವನೆ, ವಿಪರೀತ  
 ಕಲ್ಪನೆ. “ಗಂತುಮುತ್ಥಿತಮಕಾರಣತಃ ಸ್ಮ ದ್ವಿತಯಂತಿ ಮದವಿಭ್ರಮ-  
 ಗಾಸಾಮ್” ಮಾಘಂ ೧೦-೧೬। 5. ಸೌಂದರ್ಯ, ಸೊಬಗು,  
 ಶೋಭೆ. “ವಿಕಚಬಾಣದಲಾವಲಯೋಽಧಿಕಂ ರುಚಿರೇ ರುಚಿ-  
 ರೇಷಣವಿಭ್ರಮಾಃ” ಮಾಘಂ ೬-೪೬। 6. ಸಂಶಯ, ಸಂದೇಹ.  
 “ಕುರ್ವನ್ನಕಾಂಡನಿರ್ಮೇಧವಾಸಮಯವಿಭ್ರಮಮ್” ಕಥಾಸಂ।  
 7. ಭ್ರಮಣ, ಸುತ್ತಾಡುವುದು. ವಿ + ಭ್ರಮ್ (ಅನವಸ್ಥಾನೇ)  
 “ಭಕ್”।

**ವಿಭ್ರಾಜ್ ವಿಭ್ರಾಜ್** (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಶೋಭಿಸುವ.  
 ವಿ + ಭ್ರಾಜ್ (ದೀಪ್ತೌ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೧೭೭)।

**ವಿಭ್ರಾಂತ ವಿಭ್ರಾಂತ** (ವಿಂ) 1. ಭ್ರಾಂತಿಗೊಂಡ, ಭ್ರಮೆ  
 ಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಸಂಶಯಹೊಂದಿದ. ವಿ + ಭ್ರಮ್ (ಚಲನೇ)  
 ಕರ್ತಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨)। 2. ಮಿಥ್ಯಾಜ್ಞಾನವುಳ್ಳ  
 ವನು, ಅದಲ್ಲದ ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಅದು ಎಂಬ ಜ್ಞಾನವುಳ್ಳ  
 ವನು, ವಿಪರೀತ ಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು. “ಅನೇಕವಿತ್ತವಿಭ್ರಾಂತಾ  
 ಮೋಹಜಾಲಸಮಾವೃತಾಃ” ಗೀತಾ ೧೬-೧೬। 3. ಸುತ್ತಾಡಿದ,  
 ತಿರುಗಾಡಿದ. ಭ್ರಮ್ (ಅನವಸ್ಥಾನೇ) ಕರ್ತಂ “ಕ್ತಃ”।  
 4. ಚಕ್ರದಂತೆ ತಿರುಗಿದ. (ನಂ) 5. ಭ್ರಮಣ. ಚಕ್ರ  
 ದಂತೆ ತಿರುಗುವುದು. 6. ಸುತ್ತಾಟ, ತಿರುಗಾಡುವುದು.  
 ಭ್ರಮ್ (ಅನವಸ್ಥಾನೇ) ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ”।

**ವಿಭ್ರಾಂತಿ ವಿಭ್ರಾಂತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭ್ರಮೆ, ಮಿಥ್ಯಾಜ್ಞಾನ.  
 ವಿ + ಭ್ರಮ್ (ಚಲನೇ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪)। “ಸ್ಫುರದ್ಭ್ರಂತಿ-



ವಿಶ್ರಾಂತಿಸಂತಾನಸಂತವಂದಾಹಸಂಸಾರನಿರಾಪಹಾರೇಕದಕ್ಷ" ಪ್ರಬಂಧಂ ೪। 2. ಸಂಶಯ. 3. ಗಾಬರಿ, ಕಳವಳ, ತಬ್ಬಿಬ್ಬ.

**ವಿಮತ ವಿಮತ** (ವಿಂ) 1. ವಿರುದ್ಧವಾದ ಅಭಿಪ್ರಾಯ ವುಳ್ಳವನು. ವಿ+ಮನ (ಜ್ಞಾನ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। 2. ತುಚ್ಛವಾಗಿ ಕಾಣಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಡೆಗಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. (ಪುಂ) 3. ಶತ್ರು, ವೈರಿ. ವಿರುದ್ಧ ಮತಂ ಯಸ್ಯ। "ವಿಹಾರಾಸ್ತಸ್ಯ ಜನ್ಯೇಷು ವಿಮತಾನೇವ ನಿಷ್ಪತ್ತ:" ಯಾದಂ ೨೨-೮೦।

**ವಿಮತಿ ವಿಮತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭಿನ್ನಾಭಿಪ್ರಾಯ, ವಿರುದ್ಧ ವಾದ ಬುದ್ಧಿ. ವಿರುದ್ಧಾ ಮತಿ:। "ವಿಮತಿ ಭಜತ- ಸ್ತದರ್ಹಣಾಯಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೫-೬೯। 2. ಮೂರ್ಖತನ. (ವಿಂ) 3. ಮೂರ್ಖ. ವಿರುದ್ಧಾ ಮತಿಯಸ್ಯ।

**ವಿಮಥನ ವಿಮಥನ** (ನಂ) 1. ಕಡೆಯುವುದು. 2. ಕಲಕು ವುದು. ವಿ+ಮಥ (ವಿಲೋಡನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 3. ಹಿಂಸಿಸುವುದು. 4. ಕೊಲ್ಲುವುದು.

**ವಿಮಥನೀಯ ವಿಮಥನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಕಡೆಯಲ್ಪಡುವ, 2. ಕಲಕಲ್ಪಡುವ. ವಿ+ಮಥ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। 3. ಕಡೆಯಬೇಕಾದ. 4. ಕಲಕಬೇಕಾದ. 5. ಹಿಂಸಿಸಬೇಕಾದ. 6. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಡುವ. "ತವ್ಯ:"। -ಮಥಿತವ್ಯಮ್ -ಮಥಿತವ್ಯಮ್.

**ವಿಮಥಿತ ವಿಮಥಿತ** (ವಿಂ) 1. ಕಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಕಲಕ ಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಮಥ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

**ವಿಮಥನತ್ ವಿಮಥನತ್** (ವಿಂ) 1. ಕಡೆಯುತ್ತಿರುವ. 2. ಕಲಕುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ಮಥ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಲಕ್ಷ್ಮೀಸುಧಾಸಂಜನನಾಯ ತುರ್ಣ ವಿಮಥನತಾ ವೇಗಮನೇನ ದತ್ತಮ್" ಯಾದಂ ೧೮-೩೧। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ತೀ -ತೀ.

**ವಿಮಥ್ಯಮಾನ ವಿಮಥ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಕಡೆಯಲ್ಪಡು ತ್ತಿರುವ. 2. ಕಲಕಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ಮಥ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಶಾನ್ತ್" (೩-೨-೧೨೪)। 3. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 4. ಲೂಟಿಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. "ವಿಮಥ್ಯಮಾನಾತ್ಸವ- ಪುರಾಣದ್ವನಾಂ ಮನ್ಯಾಚಲೇನೇವ ಮಹಾಬಲೇನ" ಯಾದಂ ೨೦-೨೦। 5. ಹಿಂಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಹಿಂಸುಕಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. "ವನಿಕಸಾಂ ಪತ್ಯುರಹೀಂದ್ರಶೋಮಿನಾ ವಿಮಥ್ಯಮಾನಾದಚಲೇನ ಬಾಹುನಾ" ಯಾದಂ ೧೪-೫೬।

**ವಿಮತ್ತರ ವಿಮತ್ತರ** (ವಿಂ) ಮಾರ್ತ್ಯಯ್ಯವಿಲ್ಲದವನು, ಇತರರ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಯನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸದಿರುವವನು. ವಿಗತೋ

ಮತ್ತರೋ ಯಸ್ಯ। "ಯದ್ವಿಚ್ಛಾಲಾಭಸಂತುಷ್ಟೋ ದ್ವಂದ್ವಾತೀತೋ ವಿಮತ್ತರ:" ಗೀತಾ ೪-೨೨।

**ವಿಮನಸ್ ವಿಮನಸ್** (ವಿಂ) 1. ದುಃಖದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು. ವಿಗತಂ ಮನೋ ಯಸ್ಯ। "ದೇವ್ಯಾಸ್ತತೋ ವಿಮನಸ: ಪರಿಸಾನ್ವನಾಯ ಧರ್ಮಸಿನಾಧಿಶತಿ ವಾಸಗೃಹಂ ನರೇಂದ್ರ:" ತಂ ರಾಂ ೧-೭। 2. ಬುದ್ಧಿ ಸರಿಯಾಗಿಲ್ಲದವನು, ಚಿತ್ತ ವಿಕ್ಷೋಭವುಳ್ಳವನು. 3. ತಿರಸ್ಕಾರಹೊಂದಿದವನು. 4. ದಿಗ್ಭ್ರಮೆಹಿಡಿದವನು. "ಕಪ್"। -ಮನಸ್ಕ: -ಮನಸ್ಕುಃ.

**ವಿಮರ್ದ ವಿಮರ್ದ** (ಪುಂ) 1. ಸಂಘರ್ಷ, ತಿಕ್ಕಾಟ, ಉಜ್ಜಾಟ. ವಿ+ಮರ್ದ (ಕ್ಷೋಧೆ) "ಘ" (೩-೩-೧೮)। "ಕಸ್ತೂರಿಕಾ- ಮಂಗವಿಮರ್ದಸುಗಂಧಿವೇತಿ ರಾಗೀವ ಸಕ್ತಿಮಧಿಕಾಂ ವಿಷಯೇಷು ವಾಯು:" ಮಾಘಂ ೪-೬೧। 2. ಸ್ಪರ್ಶ, ಸಂಪರ್ಕ. "ಅಸೌ ಮಹೇಂದ್ರದ್ವಿಪದಾನಗಂಧಿವೇತಿ ರಾಗೀವ ಸಕ್ತಿಮಧಿಕಾಂ ವಿಷಯೇಷು ವಾಯು:" ಮಾಘಂ ೪-೬೧। 3. ಅರಿಯುವುದು, ಪುಡಿಮಾಡುವುದು. 4. ಯುದ್ಧ, ಸಮರ, ಕಾಳಗ. "ಉಪಾಯಾನಾಂ ಭಾವಾದವಿರತ- ವಿನೋದವ್ಯತಿಕರೇವಿಮರ್ದವೀರಾಣಾಂ ಜನಿತಜಗದತ್ಯದ್ಭುತರಸ:" ತಂ ರಾಂ ೩-೪೪। 5. ನಾಶ, ಅಳಿವು. "ಪುರಾ ಜನಸ್ಥಾನ- ವಿಮರ್ದಶಕ್ತೀ ಸಂಧಾಯ ಲಕ್ಷ್ಮಾಧಿಪತಿ: ಪ್ರತಸ್ಥೇ" ರಘುಂ ೬-೬೨। 6. ಕಲಹ, ಜಗಳ. "ಕಾರ್ಯಾಥಿನಾಂ ವಿಮರ್ದೋ ಹಿ ರಾಜಾಂ ದೋಷಾಯ ಕಲ್ಪತೇ" ರಾಮಾಂ 1. 7. ಕಡಿಸುವುದು, ಹಾಳುಮಾಡು ವುದು, ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. 8. ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರ ಸಮಾ ಗಮ, ಸೂರ್ಯ ಮತ್ತು ಚಂದ್ರ ಇವರು ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರು ವುದು. 9. ಗ್ರಹಣ.

**ವಿಮರ್ದಕ ವಿಮರ್ದಕ** (ವಿಂ) 1. ಉಜ್ಜುವವನು, ತಿಕ್ಕು ವವನು. ವಿ+ಮರ್ದ (ಕ್ಷೋಧೆ) "ಘ" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಅರಿಯುವವನು, ಪುಡಿಮಾಡುವವನು, 3. ನಾಶ ಪಡಿಸುವವನು. 4. ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯಗಳನ್ನು ಕುಟ್ಟಿ ಪುಡಿ ಮಾಡುವವನು.

**ವಿಮರ್ದನ ವಿಮರ್ದನ** (ನಂ) 1. ಅರಿಯುವುದು, ಪುಡಿ ಮಾಡುವುದು. ವಿ+ಮರ್ದ (ಕ್ಷೋಧೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಉಜ್ಜುವುದು, ತಿಕ್ಕುವುದು. 3. ನಾಶ ಪಡಿಸುವುದು.

**ವಿಮರ್ದನೀಯ ವಿಮರ್ದನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಉಜ್ಜಲ್ಪಡುವ. 2. ಉಜ್ಜಬೇಕಾದ. 3. ಉಜ್ಜಬಹುದಾದ. ವಿ+ಮರ್ದ (ಕ್ಷೋಧೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। 4. ಅರಿಯಲ್ಪಡುವ. 5. ಅರಿಯಬೇಕಾದ. 6. ಅರಿಯಬಹುದಾದ. 7. ನಾಶ ಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 8. ನಾಶಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 9. ನಾಶಪಡಿಸ ಬಹುದಾದ. "ತವ್ಯ:"। -ಮಥಿತವ್ಯಮ್ -ಮಥಿತವ್ಯಮ್.



ಣಿವಿ "ಅನೀಯರ್"। -ಮರ್ವನೀಯಮ್ -ಮರ್ವನೀಯಮ್.  
"ತವ್ಯ:"। -ಮರ್ವನೀಯಮ್ -ಮರ್ವನೀಯಮ್.

ವಿಮರ್ಶಯತ್ ವಿಮರ್ಶಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಉಜ್ಜಿಸುತ್ತಿರುವ.  
2. ಪುಡಿಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ನಾಶಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ.  
ವಿ+ಮೃದ (ಕ್ಷೋದೇ) + ಣಿವಿ "ಶತ್" (3-2-124)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಕೀಪ್" (4-1-6)। -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

ವಿಮರ್ಶಿತ ವಿಮರ್ಶಿತ (ವಿಂ) 1. ಅರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಉಜ್ಜಿ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿಕ್ಕಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಮೃದ  
(ಕ್ಷೋದೇ) + ಣಿವಿ "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

ವಿಮರ್ಶ ವಿಮರ್ಶ (ಪುಂ) 1. ವಿವೇಚನೆ, ವಿಚಾರ. ವಿ+ಮೃಶ  
(ಆಮರ್ಶನೆ) "ವಿ" (3-3-14)। ಸಾಧ್ಯತೆ-ಅಸಾಧ್ಯತೆ,  
ಲಾಭ-ನಷ್ಟ, ಕಷ್ಟ-ಸುಖ ಇವುಗಳ ಪರ್ಯಾಯೋಚ್ಚ  
ನೆಯು ವಿಮರ್ಶೆ. ಸರಿಯಾಗಿ ವಿವೇಚಿಸಿ (ವಿಮರ್ಶಮಾಡಿ)  
ಕೆಲಸಮಾಡಬೇಕು. "ಪ್ರತಯಃ ಸ್ತ್ರೀಭು ಮುಣಾತಿ ವಿಮರ್ಶ  
ವಿದುಷಾಮಪಿ" ಕಥಾಸಂ. "ವೃಣತೇ ಹಿ ವಿಮರ್ಶಕಾರಿಣಿ  
ಗುಣಲಂಛಾಃ ಸ್ವಯಮೇವ ಸಂಪದಃ" ಕಿರಾಂ 2-30. ಭಾವೆ  
"ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। -ಮರ್ಶನಮ್ -ಮರ್ಶನಮ್.  
2. ಸಂಶಯ, ವಿಚಾರ.

ವಿಮರ್ಶನ ವಿಮರ್ಶನ (ನಂ) 1. ಜ್ಞಾನ. ವಿಮರ್ಶಯತೇಜನ-  
ವಿ + ಮೃಶ (ಆಮರ್ಶನೆ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।  
"ಕರ್ಮಣಾ ಕರ್ಮನಿರ್ಹಾರೋ ನ ಹ್ಯಾತ್ಯಂತಿಕ ಇಪ್ಯತೇ। ಅವಿದ್ವದಧಿ  
ಕಾರಿತ್ವಾತ್ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತಂ ವಿಮರ್ಶನಮ್" ಭಾಗಂ. 2. ವಿಮರ್ಶೆ,  
ಪರ್ಯಾಯೋಚ್ಚನೆ, ವಿಚಾರಮಾಡುವುದು.

ವಿಮರ್ಶನೀಯ ವಿಮರ್ಶನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಆಲೋಚಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ, ವಿಚಾರಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ವಿವೇಚಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ವಿವೇಚಿಸಬೇಕಾದ, ಆಲೋಚಿಸಬೇಕಾದ. 3. ವಿವೇಚಿ  
ಸಲು ಅರ್ಹವಾದ, ಆಲೋಚಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.  
ವಿ + ಮೃಶ (ಆಮರ್ಶನೆ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)।  
"ತವ್ಯ:" (3-1-96)। -ಮರ್ವನೀಯಮ್ -ಮರ್ವನೀಯಮ್,  
-ಮರ್ವನೀಯಮ್ -ಮರ್ವನೀಯಮ್.

ವಿಮಲ ವಿಮಲ (ನಂ) 1. ಚಿನ್ನದ ಮುಲಾಮು ಹಾಕಿದ  
ಬೆಳ್ಳಿ, ಬೆಳ್ಳಿಯ ರೇಶಿನ ಮೇಲೆ ಹಾಕಿದ ಚಿನ್ನದ  
ಮುಲಾಮು. ವಿಗತಂ ಮಲಂ ಯಸ್ಮಾತ್. (ವಿಂ) 2. ನಿರ್ಮಲ  
ವಾದ, ಸ್ವಚ್ಛವಾದ. "ದಂತೋಜ್ವಲಾಸು ವಿಮಲೋಪಲ ಮೇಖಲಾಸು  
ಸದ್ರಲಚಿತ್ರಕಟಕಾಸು ಬೃಹನ್ನಿತಮ್ಬಾಃ" ಮಾಘಂ 4-40. 3. ಸ್ವಚ್ಛವಾದ,  
ತಿಳಿಯಾದ (ನೀರು ಮುಂತಾದುದು), 4. ಶುದ್ಧವಾದ, ದೋಷವಿಲ್ಲದ. "ಠಿರಿದಿಧಾಮಿ ಮರ್ತರಿ  
ಮೃಶ ವಿಮಲಾಃ ಪರಲೋಕಮಭ್ಯುಪಗತೇ ವಿವಿಶುಃ ಜ್ವಲನಮ್"  
ಮಾಘಂ 9-13. (ಪುಂ) 5. ಅರ್ಹಂತ, ಬೌದ್ಧಸಂನ್ಯಾಸಿ.

ವಿಮಲಮಣಿ ವಿಮಲಮಣಿ (ಪುಂ) ಸ್ವಚ್ಛ. ವಿಮಲಃ ಸ್ವಚ್ಛೋ  
ಮಣಿಃ।

ವಿಮಲಾ ವಿಮಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮುಂಡ  
ಕಳ್ಳಿ. "ವಿಮಲಾ ಸಾತಲಾ ಭೂರಿಕೇನಾ ಚರ್ಮಕಪೇತ್ಯಪಿ"  
ಅಮಂ.

ವಿಮಲಾದ್ರಿ ವಿಮಲಾದ್ರಿ (ಪುಂ) ಶತ್ರುಂಜಯಪರ್ವತ.

ವಿಮಾತೃ ವಿಮಾತೃ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಲತಾಯಿ, ಅಕ್ಕರೆಯಿಲ್ಲದ  
ತಾಯಿ. ವಿರುದ್ಧಾ ಮಾತಾ। "ಮಾತುಃ ಪಿತುಃ ಕನೀಯಾಸಂ ನ  
ನಮೇದ್ರಯಸಾಧಿಕಃ। ನಮಸ್ಕುರ್ಯಾದ್ಗುರೋಃ ಪತ್ನೀಂ ಭ್ರಾತೃಜಾಢ್ಯಾಂ  
ವಿಮಾತರಮ್" ಸ್ಮೃತಿಃ।

ವಿಮಾತೃಜ ವಿಮಾತೃಜ (ಪುಂ) ಮಲತಾಯಿಯ ಮಗ.  
ವಿಮಾತೃಜಯತೇ - ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಮಿವಿ) "ಛ:" (3-2-94)।

ವಿಮಾನ ವಿಮಾನ (ಪುಂ) 1. ವಿಮಾನ, ವಾಯುಮಾರ್ಗ  
ದಲ್ಲಿ ಹಾರುವ ಯಂತ್ರ, ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸಲು ನಿರ್ಮಿತ  
ವಾದ ಒಂದು ಸಾಧನ. ವಿಗತಂ ಮಾನಮುಪಮಾಸ್ಯ। "ಖಿಲಿ-  
ಭೂತೇ ವಿಮಾನಾನಾಂ ತದಾಪಾತಭಯಾತ್ಪಥಿ" ಕುಮಾಂ 2-44. 2. ವಾಹನ,  
ಸಂಚಾರಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದ ರಥ ಒಂಡಿ  
ಮೊದಲಾದವು. 3. ಆಶ್ವ, ಕುದುರೆ. 4. ಚಿಕ್ಕ ಹಡಗು.  
5. ಏಳು ಮಹಡಿಗಳುಳ್ಳ ಸಾಧನ, ಸಿರಿವಂತರ ಉಪ್ಪರಿ  
ಗೆಯ ಮನೆ. "ನೆತ್ರಾ ನೇತಾಃ ಸತತಗತಿನಾ ಯದ್ವಿಮಾನಾಗ್ರ-  
ಭೂಮಿರಾಲೇಖ್ಯಾನಾಂ ನವಜಲಕಣೈರ್ದೋಷಮುತ್ಪಾದ್ಯ ಸದ್ಭಃ" ಮೇಘಂ  
2-6. "ವಿಮಾನೋ ವ್ಯೋಮಯಾನೇ ಚ ಸಾರ್ವಭೌಮಗೃಹೇಷು ಚ।  
ಛೋಡಕೇ ಯಾನಪಾತ್ರೇ ಚ ಪುನಃಪುನಃಕಯೋರ್ಮತಃ" ಮೇದಿಂ.

ವಿಮಾನನಾ ವಿಮಾನನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅವಮಾನ, ತಿರಸ್ಕಾರ.  
ವಿ+ಮಾನ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) + ಣಿವಿ "ಯುಕ್" (3-3-106)।  
"ಅಲಮ್ಯಶೋಕಾಭಿಭವೇಯಮಾಕೃತಿವಿಮಾನನಾ ಸುಭ್ರು ಕುತಃ  
ಪಿತುಗೃಹೇ" ಕುಮಾಂ 4-43.

ವಿಮಾನಿತ ವಿಮಾನಿತ (ವಿಂ) ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಮಾನ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ"  
(3-2-102)।

ವಿಮಾರ್ಗ ವಿಮಾರ್ಗ (ಪುಂ) 1. ಕೆಟ್ಟಮಾರ್ಗ, ಕೆಟ್ಟ ರಸ್ತೆ.  
ವಿರುದ್ಧೋ ಮಾರ್ಗಃ। 2. ದುರ್ಮಾರ್ಗ, ತಪ್ಪುದಾರಿ. "ನಿಯಮ-  
ಯಸಿ ವಿಮಾರ್ಗಪ್ರಸ್ಥಿತಾನಾತ್ತದಣಃ ಪ್ರಶಮಯಸಿ ವಿವಾದಂ ಕಲ್ಪಸೇ  
ರಕ್ಷಣಾಯ" ಶಾಕುಂ 4-6. 3. ಸಂಮಾರ್ಜನಿ. ವಿ+ಮೃಜ್ಞ  
(ಶುದ್ಧಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ವಿಮಾರ್ಗಗಾ ವಿಮಾರ್ಗಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ನಡೆ  
ಯುವ ಹೆಂಗಸು, ಸ್ವೇರಿಣಿ, ಅಸಭ್ಯ ಹೆಂಗಸು. ವಿಮಾರ್ಗ  
ಗಚ್ಛತಿ-ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಛ:" (ವಾಂ 3-2-101)।



**ವಿಮರ್ಶಣ ವಿಮರ್ಶಣ** (ನಂ) ಅನ್ವೇಷಣ, ಹುಡುಕು  
ವುದು. ವಿ+ಮಾರ್ಗ (ಅನ್ವೇಷಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ವಿಮರ್ಶಿತ ವಿಮರ್ಶಿತ** (ವಿಂ) ಹುಡುಕಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಮಾರ್ಗ  
(ಅನ್ವೇಷಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

**ವಿಮರ್ಶನಾ ವಿಮರ್ಶನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೈತೊಳೆದು  
ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು. ವಿ+ಮೃಜ (ಶೌಚಾಲಂಕಾರಯೋ:) + ಣಿच्  
"ಯುच्" (೩-೩-೧೦೭)। 2. ಅಲಂಕರಿಸುವುದು, ಒಡವೆ  
ಗಳಿಂದ ಶೃಂಗರಿಸುವುದು.

**ವಿಮರ್ಶಯತ್ ವಿಮರ್ಶಯತ್** (ವಿಂ) 1. ತೊಳೆದು ಶುದ್ಧ  
ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ಮೃಜ (ಶೌಚಾಲಂಕಾರಯೋ:) + ಣಿच्  
"ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। 2. ಅಲಂಕರಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಶೃಂಗರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಯಂತಿ  
-ಯಂತೀ. "ವಿಮರ್ಶಯಂತಿ ವೃಜಿನಾತ್ ಪುನೀತೇ ವಿಷ್ಣೋರಿಯಂ  
ವಿಕರ್ಮವೇಜಯಂತಿ" ಯಾದಂ ೧೮-೪೩।

**ವಿಮಿಶ್ರ ವಿಮಿಶ್ರ** (ವಿಂ) ಬೆರೆತಿರುವ, ಕಲೆತಿರುವ.  
ವಿಶೇಷಣ ಮಿಶ್ರ:।

**ವಿಮಿಶ್ರಿತ ವಿಮಿಶ್ರಿತ** (ವಿಂ) ಬೆರೆತಿರುವ, ಕಲೆತಿರುವ.  
ವಿ+ಮಿಶ್ರ (ಸಂಪರ್ಕ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)।

**ವಿಮುಕ್ತ ವಿಮುಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಮುಕ್ಚ  
(ಮೋಕ್ಷಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ವಾಜಿನ: ಸ್ಯಂದನೇ  
ಭಾನೋವಿಮುಕ್ತಪ್ರಪಹಾ ಇವ" ಭट्टಿಂ ೭-೫೦। 2. ತ್ಯಜಿಸ್  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರಸಾಧಿತದಿಶೋ ಯುಷ್ಮಾನ್  
ವಿಮುಕ್ತಾನ್ಯಮಹಿಮತ:। ಸಂಪದ: ಪ್ರತಿಪತ್ಸ್ಯಂತೇ ಸರಿತ:  
ಸಾಗರಾನಿವ" ಯಾದಂ ೨೨-೪೫। 3. ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಂಡ, ದೂರ  
ಸರಿದಿರುವ. "ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ ಭೀತಿವೃತಾಸ್ತತ್ರ ವಿಮುಕ್ತಾನ್  
ಜೀವಿತಾಶಯಾ" ಯಾದಂ ೧೬-೯೪। 4. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಿಮುಕ್ತಮಾಂಸಿತಶತ್ರುನಿರ್ಜಯೇರನೇಕ-  
ಮೇಕಾವಸರಂ ವನೇವರೇ:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೫೧। "ಸನ್ಯಾಸಯೋಗ-  
ಯುಕ್ತಾತ್ಮಾ ವಿಮುಕ್ತೋ ಸಾಮುಪೇಷ್ಯಸಿ" ಗೀತಾ ೮-೨೮।  
5. ಸಂಸಾರ ಬಂಧನದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆಹೊಂದಿದ.

**ವಿಮುಕ್ತಿ ವಿಮುಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಿಡುಗಡೆ. ವಿ+ಮುಕ್ಚ  
(ಮೋಕ್ಷಣ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। 2. ಮೋಕ್ಷ,  
ಸಂಸಾರಪಾಶದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ. "ಪಿತೃಣಮಸ್ಯೇ ದಿವಿ  
ಯೇ ಚ ಮूर्ತಾ: ಸ್ವಭಾಮುಜ: ಕಾಮ್ಯಫಲಾಭಿಸಂಧೌ। ಪ್ರದಾನ-  
ಶಕ್ತಾ: ಸಕಲೇಪ್ಸಿತಾನಾಂ ವಿಮುಕ್ತಿದಾ ಯೇನಮಿಸಂಹಿತೇಷು"।  
3. ಬಾಣಪ್ರಯೋಗ. 4. ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಅಪಾಯ  
ದಿಂದ ದೂರಸರಿಯುವುದು.

**ವಿಮುಖ ವಿಮುಖ** (ವಿಂ) 1. ಮುಖವನ್ನು ತಿರುಗಿಸಿಕೊಂಡಿ  
ರುವ, ಹಿಮ್ಮುಖವಾದ. ವಿನಿವೃತ್ತಿತಂ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ।  
"ಶ್ವಾಸಾವಿಲಾಕುಲಮುಖಾ ವಿಮುಖಾ ರಣಸ್ಯ" ಕುಮಾಂ ೧೭-೬।  
2. ಅನುಕೂಲವಲ್ಲದ, ವಿರುದ್ಧವಾಗಿರುವ. 3. ಒಲ  
ವಿಲ್ಲದ, ಇಷ್ಟವಿಲ್ಲದ, ಮನಸ್ಸಿಲ್ಲದ. "ನ ಕ್ಷುರೋಪಿ  
ಪ್ರಥಮಸುಕೃತಾಪೇಕ್ಷಯಾ ಸಂಶ್ರಯಾಯ ಪ್ರಾಪ್ತೇ ಮಿತ್ರೇ ಭವತಿ ವಿಮುಖ:  
ಕಿಂ ಪುನರ್ಯಸ್ತಥೋಚ್ಚೇ:" ಮೇಘಂ ೧-೧೭। 4. ವಿಫಲನಾದ,  
ನಿರಾಶನಾದ. "ಯಸ್ಯಾರ್ಥಿನೋ ವಾ ಶರಣಾಗತಾ ವಾ ನಾಶಾಭಿ-  
ಮಂಜಾಢಿಮುಖಾ: ಪ್ರಯಾಂತಿ" ಹಿತಂ ೧-೧೯೪। 5. ವಿವಿಧ  
ಮುಖಗಳುಳ್ಳ, ಅನೇಕ ಮುಖಗಳುಳ್ಳ. "ಘವ್ನಿನ-  
ಸ್ತುರಗೋಪೇತಾನ್ ವಿಮುಖಾನ್ ಭುಜಗಾನಿವ" ಯಾದಂ ೨೨-೯।  
6. ತಿರಸ್ಕೃತನಾದ, ಅವಮಾನಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಿಮುಖಾನ್  
ದ್ರಷ್ಟುಮಪ್ಯನಂ ಜನಂಗಮ ಇವ ದ್ವಿಜಾನ್" ನೃಪಂ ೧೭-೧೨೧।

**ವಿಮುಚ್ಯಮಾನ ವಿಮುಚ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಬಿಡಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ, ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ಮುಕ್ಚ (ಮೋಕ್ಷಣ)  
"ವಿಮುಚ್ಯಮಾನೇರಪಿ ತಸ್ಯ ಮನ್ಯರಂ ಗವಾಂ ಹಿಮಾನಿವಿಶದೇ:  
ಕದಮ್ಬಕೇ:" ಕಿರಾಂ ೪-೧೨। 2. ಬಿಡುಗಡೆಮಾಡಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ.

**ವಿಮುಚ್ಚತ್ ವಿಮುಚ್ಚತ್** (ವಿಂ) 1. ಬಿಡುತ್ತಿರುವ,  
2. ತ್ಯಜಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ಮುಕ್ಚ (ಮೋಕ್ಷಣ) "ಶತ್"  
(೩-೨-೧೨೪)। 3. (ಬಾಣವನ್ನು) ಪ್ರಯೋಗಿಸುತ್ತಿರುವ.  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ತೀ-ತೀ, -ಂತಿ-ಂತೀ.

**ವಿಮುಢ ವಿಮುಢ** (ವಿಂ) 1. ಮುದ್ರೆಯಿಲ್ಲದಿರುವ,  
ಮೊಹರುಹಾಕದಿರುವ. 2. ವಿಕಸಿತವಾದ, ಆರಳಿರುವ.  
ವಿಗತಾ ಮುದ್ರಾ ಯಸ್ಯ।

**ವಿಮೂಢ ವಿಮೂಢ** (ವಿಂ) 1. ದಿಗ್ಭ್ರಮೆಗೊಂಡ, ದಾಬರಿ  
ಗೊಂಡಿರುವ, ತಬ್ಬಿಬ್ಬಾಗಿರುವ. 2. ಜ್ಞಾನತಪ್ಪಿಸಿ ಮೋಘ  
ಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಂಕುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಿಮೃದಿತ ವಿಮೃದಿತ** (ವಿಂ) 1. ಕುಟ್ಟಿಪುಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
2. ಉಜ್ಜಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿಕ್ಕಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಮೃದ (ಕ್ಷೋಧೆ) "ಕ್ತ:"  
(೩-೨-೧೦೨)। 3. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಿಮೃದನತ್ ವಿಮೃದನತ್** (ವಿಂ) 1. ಪುಡಿಮಾಡುತ್ತಿರುವ,  
ಅರೆಯುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ಮೃದ (ಕ್ಷೋಧೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
2. ಉಜ್ಜುತ್ತಿರುವ, ತಿಕ್ಕುತ್ತಿರುವ. 3. ನಾಶಪಡಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ತೀ-ತೀ.

**ವಿಮೃಢ ವಿಮೃಢ** (ವಿಂ) 1. ಪುಡಿಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2.  
ಉಜ್ಜಲ್ಪಡುವ. 3. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ವಿ+ಮೃದ  
(ಕ್ಷೋಧೆ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)।



**ವಿಮೃಶತ್ ವಿನ್ಯುಕತ್** (ವಿಂ) 1. ವಿಮರ್ಶಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ವಿಚಾರಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಪರ್ಯಾಲೋಚಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಮೃಶ (ಆಮರ್ಶನೆ) "ಶತ್" (3-2-124)। 2. ಹುಡುಕಿ ನೋಡುತ್ತಿರುವ, ಮುಟ್ಟಿ ಹುಡುಕುತ್ತಿರುವ. "ರಾಗಿನಾಮಿತ ಇತೋ ವಿಮೃಶದ್ವಿಃ ಪಾಣಿಭಿರ್ಜಗೃಹೀರೇ ಹೃದಯಾನಿ" ಮಾಘಂ 10-46।

**ವಿಮೃಶ್ಯ ವಿನ್ಯುಶ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ವಿಮರ್ಶಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ವಿವೇಚನೆಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ವಿಚಾರಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ವಿ + ಮೃಶ (ಆಮರ್ಶನೆ) "ಶ್ಯತ್" (3-2-124)। 2. ಹುಡುಕಲ್ಪಡುವ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ವಿಮರ್ಶಿಸಿ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅಲೋಚಿಸಿ. "ಇದಮತ್ರೋತ್ತರಂ ನ್ಯಾಯಮಿತಿ ಬುದ್ಧಯಾ ವಿಮೃಶ್ಯ ಯಃ" ಕುಮಾರಂ 6-69।

**ವಿಮೃಷ್ಠ ವಿನ್ಯುಷ್ಠ** (ವಿಂ) 1. ಅಲೋಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಮರ್ಶಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಮೃಶ (ಆಮರ್ಶನೆ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। 2. ಶುದ್ಧಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಮೃಜ (ಶುದ್ಧಿ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

**ವಿಮೋಕ್ಷ ವಿಮೋಕ್ಷ್ಯ** (ವುಂ) 1. ಮೋಕ್ಷ, ಅಪವರ್ಗ. ಸಂಸಾರದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ, ಮುಕ್ತಿ. ವಿ + ಮೋಕ್ಷ (ಅವಸಾನೆ) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" (3-3-46)। ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। -ಮೋಕ್ಷಣಮ್ -ಮೋಕ್ಷ್ಯಮ್. 2. ತ್ಯಜಿಸುವುದು, ತೊರೆದು ಬಿಡುವುದು.

**ವಿಮೋಚನ ವಿಮೋಚನ** (ನಂ) 1. ಬಿಡುಗಡೆ, ದಾಸ್ಯದಿಂದ ಬಿಡಿಸುವುದು. ವಿ + ಮುಚ್ಚ (ಮೋಕ್ಷಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ಮುಕ್ತಿ, ಸಂಸಾರಬಂಧನದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ. 3. ತ್ಯಜಿಸುವುದು.

**ವಿಮೋಚನೀಯ ವಿಮೋಚನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಬಿಡುಗಡೆಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ಬಿಡುಗಡೆಮಾಡಲು ಅರ್ಹನಾದ. ವಿ + ಮುಚ್ಚ (ಮೋಕ್ಷಣ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। "ತವ್ಯಃ"। -ಮೋಕ್ಷವ್ಯಃ -ಮೋಕ್ಷ್ಯಃ.

**ವಿಮೋಚ್ಯ ವಿಮೋಚ್ಯ** (ವಿಂ) ಬಿಡಲ್ಪಡುವ, ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ವಿ + ಮುಚ್ಚ (ಮೋಕ್ಷಣ) "ಶ್ಯತ್" (3-1-124)।

**ವಿಮೋಹ ವಿಮೋಹ** (ವುಂ) ಮಂಕುಜಾಡ್ಯ, ಭ್ರಮೆ. ವಿ + ಮುಹ (ವೆಚ್ಚಿತ್ಯ) "ಘ್" (3-3-114)। "ಹಿವಿಮೋಹಮಹರದ್ವಿತಾನಾಮನ್ತಿಕಂ ರತಿಸುಖಾಯ ನಿನಾಯ" ಮಾಘಂ 10-22।

**ವಿಮೋಹಕ ವಿಮೋಹಕ** (ವಿಂ) ಪ್ರಲೋಭನದಿಂದ ಮರುಳುಮಾಡುವವನು. ವಿ + ಮುಹ (ವೆಚ್ಚಿತ್ಯ) "ಘ್" (3-1-133)।

**ವಿಮೋಹನ ವಿಮೋಹನ** (ನಂ) 1. ಆಸೆತೋರಿಸಿ ಮರುಳುಗೊಳಿಸುವುದು, ಉಪಾಯದಿಂದ ಮೋಸಗೊಳಿಸುವುದು. ವಿ + ಮುಹ (ವೆಚ್ಚಿತ್ಯ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। (ವಿಂ) 2. ಮೋಹಗೊಳಿಸುವವನು, ಆಸೆತೋರಿಸಿ ವಂಚಿಸುವವನು. ವಿ + ಮುಹ (ವೆಚ್ಚಿತ್ಯ) "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134)।

**ವಿಮೋಹನೀಯ ವಿಮೋಹನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಮರುಳು ಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಆಸೆತೋರಿಸಿ ವಂಚಿಸಲ್ಪಡುವ. ವಿ + ಮುಹ (ವೆಚ್ಚಿತ್ಯ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। "ತವ್ಯಃ"। -ಮೋಹವ್ಯಮ್ -ಮೋಹ್ಯಮ್, -ಮೋಹ್ಯವ್ಯಮ್ -ಮೋಹ್ಯವ್ಯಮ್. 2. ಮರುಳುಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ಮರುಳು ಮಾಡಲು ಶಕ್ತನಾದ.

**ವಿಮೋಹ್ಯ ವಿಮೋಹ್ಯ** (ವಿಂ) ಮೋಹಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ, ಮರುಳುಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಮೋಹಗೊಳಿಸಿ ವಂಚಿಸಲ್ಪಡುವ. ವಿ + ಮುಹ (ವೆಚ್ಚಿತ್ಯ) "ಶ್ಯತ್" (3-1-124)।

**ವಿಮೋಹಿತ ವಿಮೋಹಿತ** (ವಿಂ) 1. ವಂಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಆಸೆತೋರಿಸಿ ಮರುಳುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಮುಹ (ವೆಚ್ಚಿತ್ಯ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। 2. ಅವಿವೇಕಿಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೂರ್ಖನಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಯಥಾ ದಾಸ್ಯಾಮಿ ಮೋದಿಷ್ಯ ಇತ್ಯಜ್ಞಾನವಿಮೋಹಿತಾಃ" ಗೀತಾ 16-14। 3. ಭ್ರಮೆಯಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೆಡಗುಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಮದ-ವಿಮೋಹಿತಚಿತ್ತಾ" ಮಾಘಂ 10-21।

**ವಿಯತ್ ವಿಯತ್** (ನಂ) ಆಕಾಶ, ಅಂತರಿಕ್ಷ. ವಿಯಚ್ಚತಿ—ವಿ + ಯಮ (ಅಪರಮೆ) "ವಿವಪ್" (3-2-114)। "ವಿಯ-ತಯೋಧಿ ತರತಾಂ ವಿಶಾಲಂ ವಿಮಾನದೀಪ್ತೇನ ಗರುತ್ಮತಾ ನಃ" ಯಾದಂ 16-16। "ವಿಯತಿ ಬಹುತರಂ ಸ್ತೋಕಮುರ್ವಾ ಪ್ರಯಾತಿ" ಶಾಕುಂ 1-9।

**ವಿಯದ್ಗಜ್ಞಾ ವಿಯದ್ಗಂಗಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಕಾಶಗಂಗೆ. ವಿಯತೋ ಗಜ್ಞಾ।

**ವಿಯತ್ನುತಿ ವಿಯದ್ಭೂತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಂಧಕಾರ, ಕತ್ತಲೆ, ತಮಸ್ಸು. ವಿಯತೋ ಭೂತಿರिव।

**ವಿಯನ್ಮಣಿ ವಿಯನ್ಮಣಿ** (ವುಂ) ಸೂರ್ಯ. ವಿಯತೋ ಮಣಿಃ।

**ವಿಯಮ ವಿಯಮ** (ವುಂ) 1. ನಿರೋಧ, ಹತೋಟಿ, ಸಂಯಮ. ವಿ + ಯಮ (ಅಪರಮೆ) "ಅಪ್" (3-3-63)। 2. ಕಷ್ಟ, ಪೀಡೆ, ಯಾತನೆ. 3. ವಿರಾಮ, ನಿಲುಗಡೆ, ಬಿಡುವು. "ಘ್" (3-3-114)। -ವಿಯಾಮಃ -ವಿಯಾಮಃ.

**ವಿಯಾತ ವಿಯಾತ** (ವಿಂ) 1. ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದವನು, ನಾಚಿಕೆಯನ್ನು ತೊರೆದವನು. ವಿರುದ್ಧ ಯಾತಃ। 2. ಭಾಗ್ಯರಹಿತ, ಅದೃಷ್ಟಹೀನ.



**ವಿಯಾಮ ವಿಯಾಮ** (ಪುಂ) "ವಿಯಮ" ನೋಡಿ.

**ವಿಯುಕ್ತ ವಿಯುಕ್ತ** (ವಿಂ) ಬೇರೆಯಾದ, ಅಗಲಿದ. ವಿ+ಯುಜಿರ್ (ಯೋ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). "ಪರಸ್ಪರಾ-ಕ್ರಂದಿನಿ ಚಕ್ರವಾಕಯೋ: ಪುರೋವಿಯುಕ್ತೇ ಮಿಥುನೇ ಕೃಪಾವತೀ" ಕುಮಾಂ ೪-೨೬.

**ವಿಯೋಗ ವಿಯೋಗ** (ಪುಂ) 1. ಅಗಲುವಿಕೆ, ಬೇರೆಯಾಗುವುದು, ದೂರದಲ್ಲಿರುವುದು. ವಿ+ಯುಜಿರ್ (ಯೋ) "ಧ್ವ" (೩-೩-೧೮). "ಸೋತ್ಕಂಠಂ ಕಿಮಪಿ ಪೃಥಾಸುತ: ಪ್ರದಧ್ಯೌ ಸಂಧತೇ ಮೃಶಮರತಿ ಹಿ ಸದ್ವಿಯೋಗ:" ಕಿರಾಂ ೪-೪೧. 2. ಕಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ನಿರಂತರವಾಗಿ ಅಗಲುವುದು. "ಯಸ್ಯ ಯೋಗಂ ನ ವಾಚ್ಯಂತಿ ವಿಯೋಗಭಯಕಾತರಾ: | ಭಜಂತಿ ಚರಣಾಂಭೋಜಂ ಮುನಯೋ ಹರಿಮೇಖಸ:" ಭಾಗಂ ೯-೧೩-೯.

**ವಿಯೋಗಭಾಜ್ ವಿಯೋಗಭಾಜ್** (ವಿಂ) ವಿಯೋಗವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ, ಪರಸ್ಪರ ಅಗಲಿರುವ. ವಿಯೋಗಂ ವಿಶ್ಲೇಷಂ ಭಜತಿ—ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಫಿವ:" (೩-೨-೬೨). "ವಿಯೋಗಭಾಜಾಂ ಹೃದಿ ಕಂಠಕೈ: ಕಡುನಿಧೀಯಸೇ ಕರ್ಣಿಶರ: ಸ್ಮರೇಣ ಯತ್" ನೈಷಂ ೧-೭೯.

**ವಿಯೋಗಿನ್ ವಿಯೋಗಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಅಗಲಿಕೆಯುಳ್ಳ, ವಿಯೋಗಹೊಂದಿರುವ. ವಿಯೋಗೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫). "ವಿಯೋಗಿದಾಹಾಯ ಕಡುಭವತ್ವಿಷಸ್ತುಪಾರ-ಭಾನೋರಿವ ಖಂಡಮಾಹುತಮ್" ನೈಷಂ ೧೬-೭೪. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪). -ನೀ-ಫೀ. 2. ವಿರಹಹೊಂದಿರುವ ಹೆಂಗಸು.

**ವಿಯೋಗಿನಿ ವಿಯೋಗಿನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿರಹಹೊಂದಿರುವ ಹೆಂಗಸು. 2. ಪಕ್ಷಿಗಳ ಸಂಬಂಧಹೊಂದಿರುವ ವೃಕ್ಷ, ಲತೆ. ವಿಯೋಗೋಽಸ್ಯಾ ಅಸ್ತಿ, ವಿನಾಂ ಪಕ್ಷಿಣಾಂ ಯೋಗ: ಸಂಬಂಧೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ ವಾ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫). "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪). "ವಿಯೋಗಿನಿಮೇಷತ ದಾಡಿಮೀಮಸೌ ಪ್ರಿಯಸ್ಮೃತೇ: ಸ್ಪಷ್ಟಮುದಿತಕಂಠಕಾಮ್" ನೈಷಂ ೧-೮೩.

**ವಿಯೋಜಿತ ವಿಯೋಜಿತ** (ವಿಂ) ಅಗಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಯುಜಿರ್ (ಯೋ) + ಣಿच् "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨).

**ವಿರಕ್ತ ವಿರಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ವೈರಾಗ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಎಲ್ಲಾ ಲೌಕಿಕ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲೂ ಪ್ರೀತಿಯನ್ನು ತೊರೆದಿರುವ. ವಿ+ರಜ್ಜ (ರಾಗೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). "ಹಾನಾದಾನ-ವಿರಕ್ತಮಾರ್ಗನಿರತ: ಕಶ್ಚಿತ್ತಪಸ್ವೀ ಸ್ಥಿತ:" ಭರ್ತುಂ ೩-೯೫. 2. ಬಹಳ ಕೆಂಪಾದ. "ವಿರಕ್ತಸನ್ವಯಾಕಪಿಶಂ ಪುರಸ್ತಾತ್ ಯತೋ ರಜ: ಪಾರ್ಥಿವಮುಜ್ಜಿಹೀತೇ" ರಘುಂ ೧೩-೬೪. 3. ಯಾವ

ಬಣ್ಣವೂ ಇಲ್ಲದ, ವರ್ಣರಹಿತವಾದ. 4. ಕಾಮ ಕ್ರೋಧಾದಿಗಳನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿರುವ.

**ವಿರಕ್ತಾ ವಿರಕ್ತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರೀತಿಯಿಲ್ಲದ-ಇಷ್ಟವಿಲ್ಲದ-ಹೆಂಗಸು, ಅನುಕೂಲವಾಗಿಲ್ಲದ ಹೆಂಗಸು. "ಯಾಂ ಚಿಂತಯಾಮಿ ಸತತಂ ಮಯಿ ಸಾ ವಿರಕ್ತಾ ಸಾ ಚಾನ್ಯಮಿಚ್ಛತಿ ಜನಂ ಸ ಜನೋಽನ್ಯರಕ್ತ: | ಅಸ್ಮತ್ಕೃತೇಽಪಿ ಪರಿತುಷ್ಯತಿ ಕಾಚಿದನ್ಯಾ ಧಿಕ್ ತಾಂ ಚ ತಂ ಚ ಮದನಂ ಚ ಇಮಾಂ ಚ ಮಾಂ ಚ" ನೀತಿಶತಕಮ್.

**ವಿರಕ್ತಿ ವಿರಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೈರಾಗ್ಯ, ಲೌಕಿಕ ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲೂ ಪ್ರೀತಿಯನ್ನು ತೊರೆಯುವಿಕೆ. ವಿ+ರಜ್ಜ (ರಾಗೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪). "ದೇಹೋ ಗುಹಮಮ ವಿರಕ್ತಿ-ವಿವೇಕಹೇತು:" ಭಾಗಂ ೧೧-೯-೨೫. 2. ಅತ್ಯಪ್ಪಿ, ಅಸಮಾಧಾನ, ಸಂತೋಷವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ವಿಶ್ವಾಸವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 4. ಇಷ್ಟವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

**ವಿರಚನ ವಿರಚನ** (ನಂ) 1. ಏರ್ಪಾಡು, ವ್ಯವಸ್ಥೆ, ಕ್ರಮ ದಲ್ಲಿಡುವುದು, ಅಣಿಮಾಡುವುದು. ವಿ+ರಚ (ಪ್ರತಿಯತ್ನೆ) + ಣಿच् ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). "ದೃಷ್ಟೀರಿವ ಕ್ಷಿತಿಭೃತಾಂ ದ್ವಿರದೇರುದಾರತಾರಾವಲಿವಿರಚನೇರ್ವ್ಯಸುಚಿವಾಸಾ:" ಮಾಧಂ ೪-೨೧. 2. ರಚಿಸುವುದು, ನಿರ್ಮಿಸುವುದು. 3. ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡುವುದು, ಸೃಷ್ಟಿಸುವುದು, ಉಂಟು ಮಾಡುವುದು. 4. ರಚನೆ, ಗ್ರಂಥನ, ಜೋಡಣೆ. "ಯುಕ್" (೩-೩-೧೦೭). -ರಚನಾ-ರಚನಾ.

**ವಿರಚಯತ್ ವಿರಚಯತ್** (ವಿಂ) 1. ರಚಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ನಿರ್ಮಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಸೃಷ್ಟಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಏರ್ಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ರಚ (ಪ್ರತಿಯತ್ನೆ) + ಣಿच् "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬). -ಯಂತೀ-ಯಂತೀ.

**ವಿರಚಿತ ವಿರಚಿತ** (ವಿಂ) 1. ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಗ್ರಂಥ). ವಿ+ರಚ (ಪ್ರತಿಯತ್ನೆ) + ಣಿच् "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). "ಇತಿ ವಿರಚಿತವಾಗ್ಭಿರ್ವಂದಿಪುತ್ರೇ: ಕುಮಾರ:" ರಘುಂ ೪-೭೫. 3. ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಏರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಿರಜಸ್ ವಿರಜಸ್** (ವಿಂ) 1. ಧೂಳಿಲ್ಲದ. ವಿಗತಂ ರಜೋ ಭೂಲಿಖ್ಯತ. "ಏಷ ನೋ ವಿರಜಾ: ಪನ್ಥಾ: ದೃಶ್ಯತೇ ದೇವಸಂಧನ:" ಮಾಂ. 2. ಸ್ವಚ್ಛವಾದ, ಕೊಳೆಯಿಲ್ಲದ, ಮಾಲಿನ್ಯವಿಲ್ಲದ. 3. ದೋಷವಿಲ್ಲದ, ಶುದ್ಧವಾದ. 4. ರಜೋಗುಣವಿಲ್ಲದ. "ಅಸಕ್ತದೃಷ್ಟಿವಿರಜಾ: ಸದೇವ ದೇವೋಽಪರ: ಸುಪ್ರಭದೇವನಾಮಾ" ಮಾಧಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 5. ಮುಟ್ಟುನಿಂತುಹೊಂದ ಹೆಂಗಸು. ವಿನಿವೃತ್ತಂ ರಜ: ಶೋಣಿತಂ ಯಸ್ಯಾ: | "ಕಪ್". -ರಜಸ್ಕಾ-ರಜಸ್ಕಾ.



**ವಿರಜಸ್ತಮಸ್ ವಿರಜಸ್ತಮಸ್** (ವಿಂ) ರಜೋಗುಣ ಮತ್ತು ತಮೋಗುಣಗಳನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡಿರುವ, ರಜೋಗುಣ ಮತ್ತು ತಮೋಗುಣಗಳ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟಿರುವ. ವಿಗತೇ ರಜಸ್ತಮಸಿ ಯಸ್ಮಾತ್ |

**ವಿರಜಾ ವಿರಜಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗರಿಕೆಹುಲ್ಲು, 2 ನಹುಷನ ಪತ್ನಿ, ಯಯಾತಿಯ ತಾಯಿ. 3. ಒಂದು ನದಿ.

**ವಿರತ ವಿರತ** (ವಿಂ) 1. ನಿವೃತ್ತಿಹೊಂದಿದ, ವಿಶ್ರಾಂತಿ ಹೊಂದಿದ. ವಿ+ರಮ್ (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (3-4-92) | 2. ವಿರಾಮಹೊಂದಿದ, ನಿಂತುಹೋದ.

**ವಿರತಿ ವಿರತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಿವೃತ್ತಿ, ವಿಶ್ರಾಂತಿ. 2. ವಿರಾಮ, ನಿಲ್ಲುವುದು, ನಿಲುಕಡೆ. ವಿ+ರಮ್ (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-98) | "ವಿತಮಸಿ ವಿಷಯೇ ಸ್ಥಿತಾ ಇವಾಸನ್ ವಿರತಿವಿಹೀನವಿಹಾರಜಾಗರೇಣ" ಧಾತಂ 24-90 |

**ವಿರಲ ವಿರಲ** (ವಿಂ) 1. ಅವಕಾಶವುಳ್ಳ, ಮಧ್ಯೆ ಮಧ್ಯೆ ವ್ಯವಧಾನವುಳ್ಳ, ಮಧ್ಯೆ ಅಂತರವುಳ್ಳ. ವಿ ರಾತಿ—ರಾ (ದಾನೇ) "ಕಲ್" ಬಾಹುಂ | "ಪುರಾ ಯತ್ರ ಸ್ನೋತ: ಪುಲಿನಮಧುನಾ ತತ್ರ ಸರಿತಾಂ ವಿಪರ್ಯಾಸಿಂ ಯಾತೌ ಧನವಿರಲಭಾವ: ಕ್ಷಿತಿ-ಹಹಾಮ್" ಉಂ ರಾಂ 2-29 | 2. ಅಲ್ಪವಾದ, ಸ್ವಲ್ಪವಾದ. "ವಿರಲಾತಪಚ್ಚವಿರನುಷ್ಣವಪು ಪರಿತೌ ವಿಪಾಂಡು ದಧದಭ್ರಶಿರ:" ಮಾಧಂ 9-3 | 3. ತೆಳುವಾದ, ಒತ್ತಾಗಿಲ್ಲದ. 4. ಅಪೂರ್ವವಾದ, ದುರ್ಲಭವಾದ, ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಕಾಣ ಬರದ. "ಸ್ತಿಮಿತೋತ್ತಮಸಂಚಾರಾ ಜನಸಂತಾಪಹಾರಿಣ: | ಜಾಯಂತೇ ವಿರಲಾ ಲೋಕೇ ಜಲದಾ ಇವ ಸಜ್ಜನಾ:" ಪಂಚತಂ 1-30 | (ಅವ್ಯಂ) 5. ಅಪೂರ್ವವಾಗಿ, ದುರ್ಲಭವಾಗಿ, (ನಂ) 6. ಮೊಸರು.

**ವಿರಸ ವಿರಸ** (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷವಿಲ್ಲದ, ಯಾತನೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ವಿಗತೌ ರಸೌ ಯಸ್ಮಾತ್ | "ಸರಲೇ ಸಾಹಸರಾಗಂ ಪರಿಹರ ರಮೋಽ ಮುಚ್ಚ ಸಂರಮಮ್ | ವಿರಸಂ ವಿರಹಾಯಾಸಂ ಸೌಹೃದ ತವ ಚಿತ್ತಮಸಹಂ ಮೇ" ಮಾಲತೀಂ 6-10 | 2. ರಸವಿಲ್ಲದ, ರುಚಿಯಿಲ್ಲದ, ಮಧುರ ಮೊದಲಾದ ಭೋಜ್ಯ ರಸವಿಲ್ಲದ. 3. ಪ್ರೇಮವಿಲ್ಲದ, ಪ್ರೀತಿಯಿಲ್ಲದ, 4. ದ್ರವವಿಲ್ಲದ, ಸಾರವಿಲ್ಲದ. 5. ಶೃಂಗಾರಾದಿ ರಸತೂನ್ಯವಾದ.

**ವಿರಹ ವಿರಹ** (ಪುಂ) 1. ಆಗಲಿಕೆ, ಬೇರೆಯಾಗಿರುವುದು, ನಾಯಿಕಾನಾಯಕರ ಪ್ರತ್ಯೇಕ ವಾಸ. ವಿ+ರಹ (ತ್ಯಾಗೇ) "ಘ:" (3-3-114) | "ಅಮೃತಸ್ಮೃತೌಪಿ ವಿರಹಾಢ್ವತೌ ಯದಮ್ ದಹಂತಿ ಹಿಮರಶ್ಮಿರಹ:" ಮಾಧಂ 9-68 | 2. ವಿಚ್ಛೇದ, ಪತಿಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಪತ್ನಿಯು ಪ್ರತ್ಯೇಕ ವಾಸವೊಡುವುದು. ಇದು ಸ್ತ್ರೀಯರಿಗೆ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವ

ಆರು ವಿಧ ದೋಷಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಪಾನಂ ದುರ್ಜನಸಂಸರ್ಗ: ಪತ್ಯಾ ಚ ವಿರಹೋಽನಮ್ | ಸ್ವಪ್ನೋಽನ್ಯಗೇಹೇ ವಾಸತ್ರ ನಾರೀಣಾಂ ದೂಷಣಾನಿ ಷಡ್" ಮನುಂ 9-13 | 3. ಪರಿತ್ಯಾಗ, ತೊರೆದು ಬಿಡುವುದು, ಬಿಟ್ಟುಹೋಗುವುದು. 4. ಏಕಾಂತದಲ್ಲಿರುವುದು, ಒಂಟಿಯಾಗಿರುವುದು, ಏಕಾಂಗಿಯಾಗಿರುವುದು.

**ವಿರಹಿಣಿ ವಿರಹಿಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪತಿಯಿಂದ ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿರುವ ಹೆಂಗಸು. 2. ಪತಿಯ ಪ್ರವಾಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ಒಂಟಿಯಾಗಿ ವೇದನೆಯನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿರುವ ಹೆಂಗಸು. ವಿರಹೋಽಸ್ಯಾ ಅಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114) | "ತೀಪ್" (4-1-4) |

**ವಿರಹಿತ ವಿರಹಿತ** (ವಿಂ) 1. ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ರಹ (ತ್ಯಾಗೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) | "ಕರಣದ್ವನಿವಿದಯಿತೋಪಗತೌ ಗಲಿತಂ ತ್ವರಾವಿರಹಿತಾಸನಯಾ" ಮಾಧಂ 9-94 | 2. ಒಂಟಿಯಾಗಿರುವ. 3. ದೂರದಲ್ಲಿರುವ ಪತ್ನಿಯ ವಿರಹವುಳ್ಳ.

**ವಿರಹಿನ್ ವಿರಹಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಬೇರೆಯಾಗಿರುವ, ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿರುವ. 2. ದೂರದಲ್ಲಿದ್ದು ಆಗಲಿರುವ. ವಿರಹೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ—ವಿರಹ "ಇನಿ:" (4-2-114) | "ವಿರಹಿಣಿ: ಪ್ರಹಿಣಸ್ತಿ ಶರೀರಿಣ:" ಭರ್ತುಂ 2-61 | 3. ಒಂಟಿಯಾಗಿರುವ. ಏಕಾಂತದಲ್ಲಿರುವ.

**ವಿರಾಗ ವಿರಾಗ** (ಪುಂ) 1. ಅಪರಾಗ, ಅವಿಶ್ವಾಸ, ಪ್ರೀತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ವಿ+ರಜ್ಜ (ರಾಗೇ) "ಘ" (3-3-114) | "ಆರ್ಯೇಣ ತೇಷು ತೇಷು ವಿರಾಗಕಾರಣೇಷು ಪರಿಹೃತೇಷು ಸುಗೃಹಿತನಾಮಧೇಯೇ ದೇವೇ ಚಂದ್ರಗುಪ್ತೇ ದೃಢಮನುರಕ್ತಾ: ಪ್ರಭು:ತಯ:" ಮುದ್ರಾಂ 1 | 2. ಒಲವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಮನಸ್ಸಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ಪ್ರಾಪಂಚಿಕ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಅನಾದರ, —ತಾತ್ಪಾರ. (ವಿಂ) 4. ನಾನಾ ವಿಧ ಬಣ್ಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. 5. ಲೌಕಿಕ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ.

**ವಿರಾಗಿನ್ ವಿರಾಗಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೀತಿಯಿಲ್ಲದ, ವಿಶ್ವಾಸವಿಲ್ಲದ. "ಇದಮಪಾಸ್ಯ ವಿರಾಗಿ ಪರಾಗಿಣಿ:" ಮಾಧಂ 6-11 | 2. ಒಲವಿಲ್ಲದ. 3. ಸೌಖ್ಯದಲ್ಲಿ ಆದರವಿಲ್ಲದ.

**ವಿರಾಜ್ ವಿರಾಜ್** (ಪುಂ) 1. ಕ್ಷತ್ರಿಯ. ವಿಶೇಷಣ ರಾಜತೇ—ರಾಜ್ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕ್ವಿಪ್" (3-2-96) | 2. ವಿರಾಟ್ಪುರುಷ, ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಕರ್ತನಾದ ಪರಮಾತ್ಮ. ಚತುರ್ಮುಖನ ದೇಹದಲ್ಲಿ ಅನುಪ್ರವೇಶವೊಡೆದ ಪರಮಾತ್ಮನು ತನ್ನ ದೇಹವನ್ನು ಎರಡು ಭಾಗವಾಗಿ ಮಾಡಲು ಒಂದು ಅರ್ಧದಿಂದ ಪುರುಷನ ಉತ್ಪತ್ತಿಯಾಯಿತು. ಇನ್ನೊಂದು ಅರ್ಧವು ಸ್ತ್ರೀಯಾಗಿ ಆಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ವಿರಾಟ್ಪುರುಷನು



ಅವಿಭವಿಸಿದನು. ವಿರಾಟ್ ಪುರುಷನು ತಪಸ್ಸುಮಾಡಿ ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಮನುವನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದನು. "ದ್ವಿಧಾ ಕೃತ್ವಾತ್ಮನೋ ದೇಹಮರ್ಚನ ಪುರುಷೋಽಭವತ್ | ಅರ್ಚನೇ ನಾರೀ ತಸ್ಯಾಂ ಸ ವಿರಾಜಮಸೃಜತ್ಪ್ರಭುಃ || ತಪಸ್ತಪ್ತ್ವಾಸ್ಸೃಜತ್ ತು ಸ ಸ್ವಯಂ ಪುರುಷೋ ವಿರಾಡ್ | ತಂ ಮಾಂ ವित्तास्य सर्वस्य सष्टारं द्विजसत्तमाः" ಮನುಂ ೧-೩೨, ೩೩ | ಈ ವಿರಾಟ್ ಪುರುಷನ ದೇಹದಲ್ಲಿ ಚತುರ್ದಶಭುವನಗಳೂ ಸೇರಿ ಕೊಂಡಿವೆ. ["ಚತುರ್ದಶಭುವನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].

**ವಿರಾಜಮಾನ ವಿರಾಜಮಾನ** (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ರಾಜ (ದೀಪ್ತೌ) "ಶಾನಿ" (೩-೨-೧೨೪) | "ಗಂಧೋಜ್ವಲಾಮುಜ್ಜಲನಾಮಿಚಕ್ರಯಾ ವಿರಾಜಮಾನಾಂ ನವಯೋದರಶ್ರಿಯಾ" ಮಾಘಂ ೧೨-೮ |

**ವಿರಾಜಿತ ವಿರಾಜಿತ** (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಶೋಭಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ರಾಜ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

**ವಿರಾಟ ವಿರಾಟ** (ಪುಂ) ವಿರಾಟರಾಜ, ಮತ್ಸ್ಯದೇಶದ ಅಧಿಪತಿ. ಸುರಥ ಮತ್ತು ಸುದೇಷ್ಟ ಇವನ ಪತ್ನಿಯರು. ಶ್ವೇತ ಮತ್ತು ಶಂಖರಂಭುವರು ಸುರಥೆಯ ಪುತ್ರರು. ಉತ್ತರಕುಮಾರನೂ ಉತ್ತರೆಯೂ ಸುದೇಷ್ಟೆಯ ಮಕ್ಕಳು. [ಪಾಂಡವರು 12 ವರ್ಷ ವನವಾಸಮಾಡಿ ಒಂದು ವರ್ಷದ ಅಜ್ಞಾತವಾಸಕ್ಕಾಗಿ ವಿರಾಟನಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದು ಸೇರಿದರು. ಎಲ್ಲರೂ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಹೆಸರುಗಳಿಂದ ವ್ಯವಹರಿಸುತ್ತ ರಾಜನಲ್ಲಿ ಆಶ್ರಯಪಡೆದರು. ಉತ್ತರಗೋಗ್ರಹಣ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಉತ್ತರಕುಮಾರನಿಗೆ ಸಾರಥಿಯಾಗಿದ್ದು ಕೌರವಸೇನೆಯನ್ನು ನೋಡಿ ಹೆದರಿಹೋದ ಉತ್ತರನ ಪರವಾಗಿ ಕೌರವರನ್ನು ಜಯಿಸಿ ಓಡಿಸಿದವನು ಅರ್ಜುನ ನೆಂದು ಕಂಕ (ಧರ್ಮರಾಜ)ನು ಹೇಳಲು ವಿರಾಟನು ಪಗಡೆಯ ದಾಳದಿಂದ ಧರ್ಮರಾಜನನ್ನು ಹೊಡೆದನು. ವಿರಾಟನು ಪಾಂಡವರ ನಿಜಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ತಿಳಿದನಂತರ ಭಯದಿಂದ ಕ್ಷಮೆಯನ್ನು ಬೇಡಿ ತನ್ನ ಪುತ್ರಿ ಉತ್ತರೆಯನ್ನು ಅರ್ಜುನನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು ಮದುವೆಮಾಡುವುದಾಗಿ ತಿಳಿಸಿದನು. ಭಾರತ ಮಹಾಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ವಿರಾಟನು ಪಾಂಡವರ ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿದ್ದು ಬಹಳ ಹೋರಾಡಿದನು. ಉತ್ತರೆಯು ಅರ್ಜುನನ ಮಗನಾದ ಅಭಿಮನ್ಯುವನ್ನು ಮದುವೆಯಾದಳು.]

**ವಿರಾಡ್ ವಿರಾಡ್** (ವಿಂ) ಅಪಕಾರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ರಾಘ (ಸंसिद्धौ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ವಿರಾಡ್ ಎವಂ ಭವತಾ ವಿರಾಡ್ ಬಹುಘಾ ಚ ನಃ" ಮಾಘಂ ೨-೪೧ |

**ವಿರಾಡ್ ವಿರಾಡ್** (ವಿಂ) ಅಪಕಾರಮಾಡುವ, ತೊಂದರೆ ಪಡಿಸುವ, ಖೇಡಿಸುವ. ವಿ+ರಾಘ (ಸंसिद्धौ) "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩) | "ವಿರಾಡ್ ಎವಂ ಭವತಾ ವಿರಾಡ್ ಬಹುಘಾ ಚ ನಃ" ಮಾಘಂ ೨-೪೧ |

**ವಿರಾಘ ವಿರಾಘ** (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. ಈ ರಾಕ್ಷಸನು ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ತುಂಬುರು ಎಂಬ ಒಬ್ಬ ಗಂಧರ್ವ. [ಒಮ್ಮೆ ರಂಭೆಯನ್ನು ಅಡ್ಡಗಟ್ಟಿ ರಾಕ್ಷಸನಾಗಿ ಜನಿಸುವಂತೆ ಶಾಪ ಪಡೆದು ವಿರಾಧನೆಂಬ ಹೆಸರಿನಿಂದ ಲೋಕವನ್ನು ಪೀಡಿಸುತ್ತ ದಂಡಕಾರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರೊಡನೆ ಬರುತ್ತಿದ್ದ ಸೀತೆಯನ್ನು ಅಪಹರಿಸಲು ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರು ಇವನ ಭುಜಗಳನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿಹಾಕಿದರು. ಆಗ ಇವನು ಗಂಧರ್ವಶರೀರವನ್ನು ಪಡೆದು ಹೊರಟುಹೋದನು.]

**ವಿರಾಘನ ವಿರಾಘನ** (ನಂ) ಪೀಡಿಸುವುದು, ಹಿಂಸಿಸುವುದು. ವಿ+ರಾಘ (ಸंसिद्धौ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |

**ವಿರಾಮ ವಿರಾಮ** (ಪುಂ) 1. ವಿಶ್ರಾಂತಿ, ಬಿಡುವು, ನಿಲುಕಡೆ. ವಿ + ರಮ (ಕ्रीडायाम्) "ಘನ್" (೩-೩-೧೮) | "ಸುಘಾಂ ವಿನಾ ನ ಪ್ರಯರ್ಥ್ಯವಿರಾಮಮ್" ಭರ್ತೃಂ ೧-೭೧ | 2. ಸಮಾಪ್ತಿ, ಕೊನೆ. "ಸೇಕಃ ಶೀಕರಿಣಾ ಕರಣ ವಿಹಿತಃ ಕಾಮಂ ವಿರಾಮೇ ಪುನಃ ನ ಸ್ನೇಹಾದನರಾಲನಾಲನಲಿನಿಪತ್ರಾತಪತ್ರಂ ಧೃತಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೯-೩೪ | 3. ಕಾರ್ಯದ ಮಧ್ಯೆ ಕೊಡುವ ನಿಲುಕಡೆ, ಕೆಲಸದ ಮಧ್ಯದ ಅವಕಾಶ, ಕಾರ್ಯ ಮಾಡದೆ ಮಧ್ಯೆ ಸುಮ್ಮನಿರುವ ಕಾಲ. 4. ಸಂಗೀತದ ಮಧ್ಯೆ ಕೊಡುವ ಕಾಲಾವಕಾಶ. "ವರ್ಣಾನಾಮಪಿ ಮುಕ್ತಾಂತರಗತಂ ತಾರಂ ವಿರಾಮೇ ದೃತಮ್" ಮೃಚ್ಛಂ ೩-೫ | 5. ವಿಷ್ಣು. ವರಪ್ರದಃ ಬ್ರಹ್ಮಾದಿभिಃ ಅವಧ್ಯತ್ವಾದಿभिಃ ವರಃ ವಿರಮ್ಯತೇ-ಸ್ಮಿನ್—ವಿ + ರಮ್ ಅಧಿಂ "ಘನ್" (೩-೩-೧೨೧) | "ವರಪ್ರದೇಶ್ಚಾಮುಖ್ಯೇರವಧ್ಯತ್ವಾದಿಭಿರ್ವರಃ | ಯಸ್ಮಿನ್ವಿರಮ್ಯತ ಇತಿ ಸ ವಿರಾಮಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | "ರಾಮೋ ವಿರಾಮೋ ವಿರತಃ" ವಿಂ ಸಂ |

**ವಿರಾವ ವಿರಾವ** (ಪುಂ) ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು. ವಿ + ಹ (शब्दे) "ಘನ್" (೩-೩-೨೨) | "ಅನುಪತತಿ ವಿರಾವಃ ಪತ್ರಿಣಾಂ ವ್ಯಾಹರಂತಿ ರಜನಿಮಚಿರಜಾತಾ ಪೂರ್ವಸಂಖ್ಯಾ ಸುತೇವ" ಮಾಘಂ ೧೧-೪೦ |

**ವಿರಾವಿನ್ ವಿರಾವಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದದಿಂದ ತೊಡಿದ, ಸದ್ದುಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಕೂಗಿಕೊಳ್ಳುವ, ಕಿರಿಚುವ. ವಿರಾವೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫) |

**ವಿರಿಕ್ತ ವಿರಿಕ್ತ** (ವಿಂ) ವಿರೇಚನಮಾಡಿದ, ಹೊಟ್ಟೆಯನ್ನು ಬಿಡುವುದಾದ.



**ವಿರಿಂಚಿ ವಿರಿಂಚಿ** (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ವಿರಚಯತಿ — ರಚ (ಪ್ರತಿಯಲೆ) + ಣಿಚ್ “ಃ” (ಉಂ ೪-೧೩೯). ಪೃಷೋಂ ಅಕಾರಸ್ಯ ಇತ್ವಮ್ ನುಮ್ ಚ | ಇತ್ವಾಭಾವೇ ವಿರಿಂಚಿ: ಇತ್ಯಪಿ ರೂಪಮ್ | “ವಿರಿಂಚಿಪೂರ್ವೇರಪಿ ದುನಿರೀಕ್ಷಂ ವಿಶ್ವಾಶ್ರಯಂ ರೂಪಮಶೇಷಮೂರ್ತೆ:” ಯಾದಂ ೨೩-೩೩ | 2. ವಿಷ್ಣು. 3. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.

**ವಿರಿಂಚಿ ವಿರಿಂಚಿ** (ಪುಂ) ಉದಾತ್ತಾದಿ ಸ್ವರ. ವಿ + ರೇಮ್ (ಶಬ್ದೇ) “ಕ್ತ:” (೭-೨-೧೮) | ಇಡಭಾವೋ ನಿಪಾಂ | ಉಪಧಾಯಾ ಇತ್ವಮಪಿ | “ವಿಧಿವಿಹಿತವಿರಿಂಚಿ: ಸಾಮಧೇನೀ-ರಧೀತ್ಯ” ಮಾಘಂ ೧೧-೪೧ |

**ವಿರುಣ ವಿರುಗ್ಣ** (ವಿಂ) 1. ಮುರಿದುಹೋದ ಧಾರೆ (ಅಲುಗು)ಯುಳ್ಳ, ಬಗ್ಗಿರುವ, ಮಡಿಚಿಕೊಂಡಿರುವ. ವಿ + ರಜೋ (ಭಜ್ಜೇ) “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨) | “ವಿರುಣೋದಧಿ-ಧಾರಾಗ್ರ: ಕುಲಿಶೋ ಮಮ ವಕ್ಷಸಿ” ಮಹಿಂ ೪-೨೪ | 2. ಭಿನ್ನವಾದ, ಒಡೆದುಹೋದ, ಭಗ್ನವಾದ. “ವಿರುಣಸಂಕೀರ್ಣ-ವಿಪನ್ನಮಿತ್ರ:” ಮಹಿಂ ೧೨-೭೪ | 3. ಕುಟಿಲವಾದ, ವಕ್ರವಾಗಿರುವ, ಬಗ್ಗಿರುವ. 4. ರೋಗದಿಂದ ಕೂಡಿದ: “ತ್ವಯಾ ವಿಹೀನಸ್ತವ ಶೋಕರುಣ:” ರಾಮಾಂ |

**ವಿರುತ ವಿರುತ** (ನಂ) ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ. ವಿಶೇಷ ರುತಮ್ | “ಸಂಹರ್ಷಾದಿವಿರುತೇರಿತಿವ ಗಾಯಲ್ಲೋಲೋಮೌ” ಪಯಸಿ ಮಹೋತ್ಪಲಂ ನನರ್ತ” ಮಾಘಂ ೮-೨೩ |

**ವಿರುದ ವಿರುದ** (ಪುಂ) 1. ರಾಜಸ್ತುತಿ, ರಾಜನನ್ನು ಹೊಗಳುವ ಗದ್ಯಪದ್ಯಮಯ ಕಾವ್ಯ. “ಗದ್ಯಪದ್ಯಮಯಿ ರಾಜಸ್ತುತಿವಿರುದಮುಚ್ಯತೇ” ಸಾಂ ದಂ ೬-೩೩೭ | ವಖಯೋ-ಭೇದ: | 2. ಕೂಡಾಟ, ಕಿರಂಚಾಟ.

**ವಿರುದ್ಧ ವಿರುದ್ಧ** (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡಚಣೆ ಯುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ರುಧಿರ್ (ಆವರಣೇ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) | 2. ವಿಪರೀತವಾದ, ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದ, ವ್ಯತಿರಿಕ್ತವಾದ. “ಸುಹೃದರ್ಥಮಿಹಿತಮಜಿಹ್ವಾಧಿಯಾಂ ಪ್ರಕೃತೇ-ವಿರಾಜತಿ ವಿರುದ್ಧಮಪಿ” ಮಾಘಂ ೯-೬೨ | 3. ಶತ್ರುತ್ವ ವುಳ್ಳ, ದ್ವೇಷವುಳ್ಳ. 4. ಭಿನ್ನವಾದ, ಬೇರೆಯಾದ, ಅಸಂಗತವಾದ, ಸಮಂಜಸವಲ್ಲದ. 5. ನಿಷಿದ್ಧವಾದ, ನಿರೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಿರುದ್ಧ ವಿರುದ್ಧ** (ವಿಂ) 1. ಮೊಳಕೆಹೊರಟು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಬೆಳೆದಿರುವ. ವಿ + ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨) | “ತಾಸ್ವೇವ ಸಂಪ್ರತಿ ವಿರುದ್ಧತೃಣಾಙ್ಕುರಾಸು ಬೀಜಾಂಜಲಿ: ಪತತಿ” ಮೃಚ್ಛಂ ೧-೯ | 2. ಹುಟ್ಟಿರುವ. “ಗಜ್ಜಾಪ್ರಪಾತಾಂತವಿರುದ್ಧಶಂಭಂ ಗೌರೀಗುರೋಗ್ಹರಮಾವಿವೇಶ”

ರಘುಂ ೨-೨೬ | 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಿರುವ. 4. ಬೆಳೆದಿರುವ, ಹುಟ್ಟಿಕೊಂಡಿರುವ. “ಲೀಲಾ-ಲೂನಪುನರ್ವಿರುದ್ಧಶಿರಸೋ ವೀರಸ್ಯ ಲಿಪ್ತೋರ್ವರಮ್” ಅನರ್ಥಂ |

**ವಿರುಪ ವಿರುಪ** (ನಂ) 1. ವಿಹಾರವಾದ ರೂಪ. ಅಂದ ವಲ್ಲದ ರೂಪ. ವಿಕೃತ ರೂಪಮ್ | (ವಿಂ) 2. ವಿಹಾರವಾದ ರೂಪವುಳ್ಳ, ಕೆಟ್ಟ ಆಕಾರವುಳ್ಳ. “ಸುರೂಪಂ ವಾ ವಿರುಪಂ ವಾ ಪುಮಾನಿತ್ಯೇವ ಭುಜ್ಜತೇ” ಮನುಂ ೯-೧೪ | ವಿಕೃತ ರೂಪಂ ಯಸ್ಯ | 3. ವಿರುದ್ಧವಾದ, ಅನುರೂಪವಲ್ಲದ, ಸದೃಶವಲ್ಲದ. “ವಿರುಪಯೋ: ಸಂಘಟನಾ ಯಾ ಚ ತದ್ವಿಷಮಂ ಮತಮ್” ಸಾಂ ದಂ | “ಸದ್ವ: ಕರಸ್ಪರ್ಶಮವಾಪ್ಯ ಚಿತ್ರಂ ರಣೇ ರಣೇ ಯಸ್ಯ ಕೃಪಾಣಲೇಖಾ | ತಮಾಲನೀಲಾ ಶರದಿಂದುಪಾಣ್ಡು ಯಶಸ್ವಿಲೋಕಾಭರಣಂ ಪ್ರಸೂತೇ” | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -೪೧-೨೨. 4. ತೀಟಕಸಂಧಿ. 5. ಅತಿಬಜೆ.

**ವಿರುಪಾಕ್ಷ ವಿರುಪಾಕ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಈಶ್ವರ, ಪರಶಿವ. ವಿರುಪೇ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯ | “ಯಾ ನ: ಪ್ರೀತಿವಿರುಪಾಕ್ಷ ತ್ವದನು-ವ್ಯಾನಸಂಭವಾ” ಕುಮಾಂ ೬-೨೧ | 2. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. “ವಿರುಪಾಕ್ಷಸ್ತತೋಸ್ತೀಡತ್ ಸಂಗ್ರಾಮೇ ಮತ್ತಹಸ್ತಿನಾ” ಮಹಿಂ ೧೭-೭೮ | (ವಿಂ) 3. ವಿಹಾರವಾದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ. ವಿರುಪಾಣ್ಯಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯ | “ವಪುರ್ವಿರುಪಾಕ್ಷಮಲಕ್ಷ್ಯಜನ್ಮತಾ ದಿಗಮ್ಬರತ್ವೇನ ನಿವೇದಿತಂ ವಸು” ಕುಮಾಂ ೪-೭೨ |

**ವಿರೇಕ ವಿರೇಕ** (ಪುಂ) ವಿರೇಚನ, ಭೇದಿಯಾಗುವುದು. ವಿ + ರಿಚಿರ್ (ವಿರೇಚನೇ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮) |

**ವಿರೇಚನ ವಿರೇಚನ** (ನಂ) 1. ಮಲವಿಮೋಚನ, ಭೇದಿ. ವಿ + ರಿಚಿರ್ (ವಿರೇಚನೇ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೮) | “ಹರೀತಕೀ ಸಮಗುಡಾ ಮಧುನಾ ಸಹ ಪೇಷಿತಾ | ವಿರೇಚನಕರೀ ಕ್ವದ್ ಭವತೀತಿ ನ ಸಂಶಯ:” | (ವಿಂ) 2. ಭೇದಿಮಾಡಿಸುವ (ಚಿಪ್ಪದ). ವಿಶೇಷಣ ರೇಚಯತಿ — ರಿಚಿರ್ (ವಿರೇಚನೇ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪) |

**ವಿರೇಚಿತ ವಿರೇಚಿತ** (ವಿಂ) ಭೇದಿಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಟ್ಟೆ ಬರಿದುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ರಿಚಿರ್ (ವಿರೇಚನೇ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) |

**ವಿರೋಕ ವಿರೋಕ** (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯನ ಕಿರಣ. (ನಂ) 2. ರಂಧ್ರ, ಛಿದ್ರ, ವಿವರ. ವಿ + ರುಕ (ದೀಪ್ತೌ) “ಘ್” (೩-೩-೧೨೧) | “ನಾಸಾವಿರೋಕಪವನೋಲ್ಲಸಿತಂ ತನೀಯೋ ರೋಮಾಂಚತಾಮಿವ ಜಗಾಮ ರಜ:ಪೃಥಿವ್ಯಾ:” ಮಾಘಂ ೪-೪೪ |

**ವಿರೋಚನ ವಿರೋಚನ** (ಪುಂ) 1. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. ವಿರೋಚತೇ—ವಿ + ರುಕ (ದೀಪ್ತೌ) “ಯುಚ್” (೩-೨-೧೪೯) | “ದೀಪ್ತಿನಿಜಿತವಿರೋಚನಾದಯಂ ಗಾಂ ವಿರೋಚನಸುತಾದಭಿಪ್ಸತ:” ಮಾಘಂ ೧೪-೭೪ | 2. ಚಂದ್ರ. “ತಾಸಾಂ ತದ್ವಚನಂ ಶ್ರುತ್ವಾ



ದಕ್ಷ: ಸೋಮಶಾಖವೀತ್ | ಸಮಂ ವರ್ತಸ್ವ ಭಾರ್ಯಾಸು ಮಾ ತ್ವಾಂ ಶಪ್ತೇ  
ವಿರೋಚನ" ಮಾಂ | 3. ಅಗ್ನಿ. 4. ಪುಷ್ಕಾದನ ಪುತ್ರ.  
"ವಿರೋಚನ: ಪ್ರಹ್ಲಾದಸ್ಯ ತನೇಯೇಷ್ಠೋಽಗ್ನಿಚಂದ್ರಯೋ:" ಮೇದಿಂ |  
5. ಅರ್ಹವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

**ವಿರೋಚನಸುತ ವಿರೋಚನ ಸುತ** (ಪುಂ) ವಿರೋಚನನ  
ಪುತ್ರನಾದ ಬಲಿಚಕ್ರವರ್ತಿ. ವಿರೋಚನಸುತ: | "ಗಾಂ  
ವಿರೋಚನಸುತಾದಭಿಪ್ಸತ:" ಮಾಘಂ ೧೪-೭೪ |

**ವಿರೋಚಿಣ್ಣು ವಿರೋಚಿಷ್ಣು** (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶವೊನವಾದ,  
ಹೊಳೆಯುವ. ವಿ + ರುಚ (ದೀಪ್ತೌ) "ಇಣ್ಣುಚ್"  
(೩-೨-೧೩೬) | "ವಾಯೋರಪಿ ವಿಕುರ್ವಾಣಾತ್ ವಿರೋಚಿಣ್ಣು  
ತಮೋನುದಮ್" ಮನುಂ ೧-೭೭ |

**ವಿರೋಧವ್ಯ ವಿರೋಧ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ವಿರೋಧಕಟ್ಟಿಕೊಳ್ಳು  
ಲ್ಪಡುವ, ದ್ವೇಷಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ದ್ವೇಷಿಸಬೇಕಾದ.  
3. ದ್ವೇಷಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. ವಿ + ರುಧಿರ್ (ಆವರಣಂ)  
"ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) | 4. ತಡೆಯಲ್ಪಡುವ. 5. ಅಡ್ಡಿ  
ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 6. ತಡೆಯಬೇಕಾದ. 7. ಅಡ್ಡಿಮಾಡ  
ಬೇಕಾದ. "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | -ರೋಧನೀಯ:  
-ರೋಧನೀಯಃ.

**ವಿರೋಧ್ಯ ವಿರೋಧ್ಯ** (ವಿಂ) ದ್ವೇಷಿಸುವವನು. ವಿ + ರುಧಿರ್  
(ಆವರಣಂ) "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩) |

**ವಿರೋಧ ವಿರೋಧ** (ಪುಂ) 1. ವೈರ, ದ್ವೇಷ, ಹಗೆತನ.  
ವಿ + ರುಧಿರ್ (ಆವರಣಂ) "ಛಬ್" (೩-೩-೧೮) | "ವಿರೋಧೋ  
ವಿಶ್ರಾಂತ: ಪ್ರಸರತಿ ರಸೋ ನಿವೃತ್ತಿಛನಸ್ತದೌದ್ವಯಂ ಕ್ವಾಪಿ  
ವ್ರಜತಿ ವಿನಯ: ಪ್ರಹ್ಲಯತಿ ಮಾಮ್" ತಂ ರಾಂ ೬-೧೧ |  
2. ತಡೆ, ಅಡ್ಡಿ, ನಿರ್ಬಂಧ. 3. ತಡೆಯುವುದು, ಅಡ್ಡಗಟ್ಟು  
ವುದು, ಅಡಚಣೆಯುಂಟುಮಾಡುವುದು. 4. ಅಸಂಗತ  
ವಾದ ವರ್ತನೆ, ಅಸಂಬದ್ಧ ನಡವಳಿಕೆ. 5. ಕಲಹ, ಜಗಳ.  
"ವಿದಧೇ ವಿರೋಧಮಥ ತೇನ ಸಹ" ಮಾಘಂ ೯-೪೯ |  
"ಸಂಜಹಾರ ಸಹಸಾ ಪರಿರಂಭಪ್ರೇಯಸೀಷು ವಿರಹ್ಯ ವಿರೋಧಮ್"  
ಮಾಘಂ ೧೦-೪೪ | 6. ವಿಪರೀತವಾದ ಅರ್ಥ. "ಶ್ರುತಿ-  
ಸ್ಮೃತಿವಿರೋಧೇ ತು ಶ್ರುತಿರೇವ ಗರೀಯಸೀ" ಸ್ಮೃತಿ: | 7. ನಾಶ,  
ಅಳಿವು. "ಯಸ್ತ್ವಂ ಪ್ರಾಣವಿರೋಧೇನ ಕೀರ್ತಿಮಿಚ್ಛಸಿ ಶಾಶ್ವತೀಮ್"  
ಮಾಂ | 8. ಒಂದು ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರ, ಅಪಾತತಃ (ಮೇಲು  
ನೋಟಕ್ಕೆ) ವಿರೋಧವು ಕಂಡುಬಂದು ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಅದಕ್ಕೆ  
ಪರಿಹಾರವಿರುವಲ್ಲಿ ವಿರೋಧಾಲಂಕಾರವಾಗುವುದು.  
ಇದನ್ನೇ "ವಿರೋಧಾಭಾಸ" ಎಂದು ಹೇಳುವರು.  
"ಆಭಾಸತ್ವೇ ವಿರೋಧಸ್ಯ ವಿರೋಧಾಭಾಸ ಉಚ್ಯತೇ" | ತದಾ:  
"ವಿನಾಪಿ ತನ್ವಿ ಹಾರೆಣ ವಕ್ಷೋಜೌ ತವ ಹಾರಿಣೌ" |  
9. ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ ಒಂದೇ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಛಟ ಮತು,

ಛಟಾಭಾವ ಇವೆರಡೂ ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ ಏಕತ್ರ ಇರುವುದಿಲ್ಲ  
ವಾದುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ ವಿರೋಧ. 10. ಅಡುವ ಮೂತಿನಲ್ಲಿ  
ಉಂಟಾಗಬಹುದಾದ ಬಾಧೆ. "ಸ್ವವಾಗ್ವಿರೋಧೋ ಯತ್ರ ಸ್ವಾತ್  
ವಿರೋಧ: ಸ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತ:" | ತದಾ: "ವನ್ಯಾ ಮೇ ಜನನೀತ್ಯೇಷ  
ವಿರೋಧ: ಸ್ವೋಕ್ತಿಬಾಧತ:" | ನನ್ನ ತಾಯಿ ಬಂಜೆ ಎಂದು  
ತಾಯಿಯ ಉದರದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು ಹೇಳುವ ಮೂತಿನಲ್ಲಿ  
ಕಂಡುಬರುವ ಬಾಧೆವೇ ವಿರೋಧ.

**ವಿರೋಧನ ವಿರೋಧನ** (ನಂ) 1. ದ್ವೇಷಿಸುವುದು. ವಿ +  
ರುಧಿರ್ (ಆವರಣಂ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | "ಇದ್ಕ-  
ಪಾಪಫಲಂ ಪುತ್ರ ಮಾತಾಪಿತ್ರೋವಿರೋಧನಮ್" | 2. ನಾಶ, ಅಳಿವು.  
"ಅದೃಷ್ಟಸ್ಯ ಹಿ ಸಂತ್ಯಾಗ: ಸತ್ಪಥೇ ನಿರತಸ್ಯ ಚ | ನಿರ್ದೇಹದಪಿ  
ಶಕ್ತಸ್ಯ ಧೃತಿ ಧರ್ಮವಿರೋಧನಾತ್" ರಾಮಾಂ | 3. (ನಾಟಕ  
ದಲ್ಲಿ) ವಿಮರ್ಶಸಂಧಿಯ ಒಂದು ಅಂಗ. ಕಾರ್ಯನಾಶದ  
ಜ್ಞಾನವು ವಿರೋಧನ. "ಕಾರ್ಯಾತ್ಯಯೋಗಮನಂ ವಿರೋಧನಮಿತಿ  
ಸ್ಮೃತಮ್" ಸಾಂ ೬೦ | "ಭೀಮೇನ ಪ್ರಿಯಸಾಹಸೇನ ರಮಸಾದಲ್ಪಾವ-  
ಶೇಷೇ ಜಯೇ ಸರ್ವೇ ಜೀವಿತಸಂಶಯಂ ವಯಮಮಿ ವಾಚಾ ಸಮಾರೋಪಿತಾ:"  
ವೇಣೀಂ ೬-೧ |

**ವಿರೋಧಿಕ್ರತ್ ವಿರೋಧಿಕ್ರತ್** (ಪುಂ) ಪ್ರಭವಾದಿ ಅರವತ್ತು  
ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲೊಂದು. ವಿರೋಧಿನಂ ಕರೋತಿ - ಡು ಕೃನ್  
(ಕರಣಂ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧) |

**ವಿರೋಧಿನ್ ವಿರೋಧಿನ್** (ಪುಂ) 1. ವೈರಿ, ಶತ್ರು, ಹಗೆ.  
ವಿರೋಧೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ - "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) | ವಿರುಣದಿ  
-ವಿ + ರುಧಿರ್ (ಆವರಣಂ) "ಣಿನಿ:" (೩-೨-೭೮) |  
"ವಿರೋಧಿನಾಂ ವಿಗ್ರಹಭೇದದಕ್ಷಾ ಮೂರ್ತೇವ ಶಕ್ತಿ: ಕ್ವಚಿದ-  
ಸ್ವಲಂತೀ" ಮಾಘಂ ೩-೧೮ | 2. ಪ್ರಭವಾದಿ ಸಂವತ್ಸರಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು ಸಂವತ್ಸರ. (ವಿಂ) 3. ಪರಸ್ಪರ ವೈರವುಳ್ಳ,  
ದ್ವೇಷವುಳ್ಳ. "ವಿರೋಧಿಸತ್ತ್ವೋಜ್ಜಿತಪೂರ್ವಮತ್ಸರಂ ದ್ರುಮೇರಮಿಷ್ಟ-  
ಪ್ರಸವಾಚಿತಾತಿಥಿ" ಕುಮಾಂ ೪-೧೭ | 4. ಅಡ್ಡಗಟ್ಟುವ,  
ತಡೆಯುವ. 5. ಅಡ್ಡಿಯುಂಟುಮಾಡುವ. 6. ಸಾಮಂಜಸ್ಯ  
ವಿಲ್ಲದ, ಪರಸ್ಪರ ಹೊಂದಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. 7. ಅಸಂಗತವಾದ  
ವರ್ತನೆಯುಳ್ಳ. 8. ಕಲಹಪ್ರಿಯನಾದ, ಜಗಳಗಂಟಿ  
ಯಾದ. 9. ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದ, ಅನುಕೂಲವಲ್ಲದ.

**ವಿರೋಪಣ ವಿರೋಪಣ** (ನಂ) 1. ಗಿಡವನ್ನು ನೆಟ್ಟು ಬೆಳೆಸು  
ವುದು. ವಿ + ರು (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೪) | 2. (ಗಾಯವನ್ನು) ವಾಸಿಮಾಡುವುದು,  
-ಒಣಗಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 3. (ಗಾಯವನ್ನು) ವಾಸಿ  
ಮಾಡುವ, -ಒಣಗಿಸುವ. ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) |  
"ಯಸ್ಯ ತ್ವಯಾ ವ್ರಣವಿರೋಪಣಮಿಡ್ಗುದಿನಾಂ ತೈಲಂ ನ್ಯಾಪಿಚ್ಯತ  
ಮುಖೇ ಕುಶಸುಚಿವಿಧೇ" ಶಾಕುಂ ೪-೧೩ |



ವಿರೋಹ ವಿರೋಹ (ಪುಂ) ಬೆಳೆಯುವುದು. (ಸಸ್ಯಗಳು) ಬೆಳೆದು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳುವುದು. ವಿ + ರಹ (ವಿಜಯಮಾದೌ) "ಘ" (೩-೩-೧೮) ।

ವಿಲಕ್ಷ ವಿಲಕ್ಷ (ವಿಂ) 1. ಎಸೆಯಗೊಂಡ, ಅಶ್ಚರ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದೆ. ವಿಶೇಷಣ ಲಕ್ಷಯತೇ—ಲಕ್ಷ (ಆಲೋಚನೆ) + ಣಿಕ್ "ಅ" (೩-೧-೧೩೪) । "ಇತಿ ವಿಜಾಪ್ಯ ಸಾ ದೇವಿ ವಿಷಾದಾಭಾವಮಾತ್ಮನಃ । ವಿರರಾಮ ತತಸ್ತಸ್ಮೈ ವಿಲಕ್ಷಾ ವಿಶ್ವ-ವಾರಿಣಿ" ಯಾದಂ ೧೬-೧೨೯ । 2. ಲಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, ಅಪರಾಧದಿಂದ ನಾಚಿಕೆಪಡುವ. "ವಿಲೂನಮೂಲದ್ರುಮಸನ್ನಿಭಂ ಸ ತಂ ವಿಲಕ್ಷಮುತ್ಥಾಪ್ಯ ವಿಹಾರಯಾದವಃ" ಯಾದಂ ೧೪-೫೪ । "ಆತ್ಮನಃ ಸ್ವಲಿತೇ ಸಮ್ಯಕ್ ಜಾತೇಜ್ಯಯಸ್ಯ ಜಾಯತೇ । ಅಪತ್ರಪಾಙ್ಗತಿಮಹತೀ ಸ ವಿಲಕ್ಷ ಇತಿ ಸ್ಮೃತಃ" ।

ವಿಲಕ್ಷಣ ವಿಲಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ ಪರಿಸ್ಥಿತಿ. ವಿಗತಂ ಲಕ್ಷಣಂ ಆಲೋಚನಂ ಯತ್ರ — ವಿ + ಲಕ್ಷ (ಆಲೋಚನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಆಲೋಚಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 3. ಎಲ್ಲಕ್ಕಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನವಾದ, ಅಸಾಧಾರಣವಾದ. "ಅಥೈವಮಖಿಲಲೋಕಪಾಲಸಮೋ ವಿಲಕ್ಷಣೇಜಂಬ-ವದಭೂತವೇಶಮಾಚಾರಿತೈರವಿಲಕ್ಷಿತಭಗವತ್ಪ್ರಭಾವಃ" ಭಾಗಂ ೫-೬-೬ । 4. ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಲಕ್ಷಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದೆ. ವಿಶಿಷ್ಟಂ ಲಕ್ಷಣಂ ಯಸ್ಯ । 5. ಎರಡು ಲಕ್ಷಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದೆ.

ವಿಲಕ್ಷಿತ ವಿಲಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಆಲೋಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಪರಿಗಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ತಬ್ಬಿಬ್ಬು ಉಂಟು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಕಿರಿಕಿರಿಯುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ದಿಗ್ಭ್ರಮೆಯುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ವಿಲಗನ ವಿಲಗ್ನ (ಪುಂ) 1. ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶ, ಕಟಿಭಾಗ, ಸೊಂಟ, ನಡು. ವಿಶೇಷಣ ಲಗನಮ್ । 2. ಜನ್ಮಲಗ್ನ, ಹುಟ್ಟಿದ ಲಗ್ನ. "ಗೋವರೇ ವಾ ವಿಲಗ್ನೇ ವಾ ಯೇ ಗ್ರಹಾ ರಿಷ್ಠ-ಸೂಚಕಾಃ । ಪೂಜಯೇತ್ತಾನ್ ಪ್ರಯತ್ನೇನ ಪೂಜಿತಾಃ ಸ್ಯುಃ ಶುಭಾವಹಾಃ" । 3. ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ ಲಗ್ನ. (ವಿಂ) 4. ತೆಳುವಾದ, ಸ್ಥೂಲವಾದ. "ಮಧ್ಯೇನ ಸಾ ವೇದಿವಿಲಗನಮಥ್ಯಾ ವಲಿತ್ರಯಂ ಚಾರು ಬಮಾರ ಬಾಲಾ" ಕುಮಾಂ ೧-೩೯ । 5. ಇಟ್ಟಿರುವ, ಸಂಕ್ರಾಂತವಾದ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. "ಸ ಪ್ರಾಪದಪ್ರಾಪ್ತ-ಪರಾಮಿಯೋಗಂ ನರೇಂದ್ರಗುಪ್ತಂ ನಗರಂ ಮುಹೂರ್ತತಿ । ಪುರೋವಿಲಗನೇ-ಹುರದೃಷ್ಟಿಪಾತೈಃ ಸುವರ್ಣಸುತೈರಿವ ಕೃಷ್ಯಮಾಣಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೫೦ । 6. ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವ, ಕೂಡಿಕೊಂಡಿರುವ, ಒಂದಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. "ಕಿಮಲಮ್ಬತಾಮ್ಬರವಿಲಗನಮಘಃ ಕಿಮ-ವರ್ಧತೋರ್ವಮವನೀತಲತಃ" ಮಾಘಂ ೯-೨೦ । "ವಿಲಗನಂ ನ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಮಧ್ಯೇ ತ್ರಿಭು ಸ್ಯಾಲ್ಲಗನಮಾತ್ರಕೇ" ಮೇದಿಂ ।

ವಿಲಕ್ಷನ ವಿಲಂಘನ (ನಂ) 1. (ಅಜ್ಞೆಯನ್ನು) ಮೀರುವುದು, —ಉಲ್ಲಂಘಿಸುವುದು. ವಿ + ಲಘಿ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಮೀರುವುದು, ಮೇಲಾಗಿರುವುದು, ಅತಿಶಯವಾಗಿರುವುದು.

ವಿಲಕ್ಷನೀಯ ವಿಲಂಘನೀಯ (ವಿಂ) 1. ದಾಟಲ್ಪಡುವ. 2. ದಾಟಬೇಕಾದ. 3. ದಾಟಬಹುದಾದ. 4. ದಾಟಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. 5. ಮೀರಲ್ಪಡುವ. 6. ಮೀರಬೇಕಾದ. 7. ಮೀರಬಹುದಾದ. 8. ಮೀರಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ವಿ+ಲಘಿ (ಗತೌ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । "ತವ್ಯಃ" । -ಲಕ್ಷಿತಃ -ಲಂಘಿತಃ ।

ವಿಲಕ್ಷಮಾನ ವಿಲಂಘಮಾನ (ವಿಂ) 1. ದಾಟುತ್ತಿರುವ. 2. ಮೀರುತ್ತಿರುವ, ಉಲ್ಲಂಘಿಸುತ್ತಿರುವ, ವಿ + ಲಘಿ (ಗತೌ) "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

ವಿಲಕ್ಷಯತ್ ವಿಲಂಘಯತ್ (ವಿಂ) 1. ದಾಟಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಲಘಿ (ಮಾಘಾಥೆ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ವಿಲಕ್ಷಯನ್ ವ್ಯೋಮಪಥೇನ ಸಿಂಹುಂ ತ್ವದೃಶೇನ ದೀಪ್ತಕುತುಹಲಾ-ನಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೮-೧೧೩ । 2. ಮೀರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅತಿಶಯವಾಗುತ್ತಿರುವ. "ವಿಲಕ್ಷಯಂತಃ ಸುದೃಶಾಂ ಕಡಾಕ್ಷಾ ವಿಲಿಖ್ಯಿರೇ ಕೃಷ್ಣಮವಾಪ್ಯ ಲಕ್ಷಯಮ್" ಯಾದಂ ೧೩-೭೦ ।

ವಿಲಕ್ಷಿತ ವಿಲಂಘಿತ (ವಿಂ) 1. ದಾಟಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಲಘಿ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । "ನಿವೇಶಯಾಮಾಸ ವಿಲಕ್ಷಿತಾಽವಾ ಕಲಾಂತಂ ರಜೋಘೋರಕೇತು ಸೇನಯಮ್" ರಘುಂ ೫-೪೨ । 2. ಮೀರಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಲ್ಲಂಘಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಿಲಕ್ಷಿತ-ಸ್ಥಿತಮಿವಿವಿಧ್ಯಾ ರೂಪಯಾ ರಿಪೋಗಿರಾ ಗುರುಮಪಿ ಗಾಂದಿನೀ-ಸುತಮ್" ಮಾಘಂ ೧೭-೧೨ । 3. ಜಯಿಸಿರುವ, ಮೇಲುಗೈಯಾಗಿರುವ, ಅತಿಶಯವಾಗಿರುವ.

ವಿಲಜ್ಜ ವಿಲಜ್ಜ (ವಿಂ) ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದ, ನಾಚಿಕೆಯನ್ನು ತೊರೆದಿರುವ. ವಿಗತಾ ಲಜ್ಜಾ ಯಸ್ಯ । "ತನಯಗತದಿನೇಶೇ ಶಂಶವೇ ಸೌಖ್ಯಭಾಗೀ ನ ಭವತಿ ಫಲಭಾಗೀ ಯೌವನೇ ವ್ಯಾಧಿ-ಯುಕ್ತಃ । ಜನಯತಿ ಸುತಮೇಕಂ ನಿರ್ಣಯಂ ನಾಶಯಿತ್ವಾ ಚಪಲಮತಿ-ವಿಲಜ್ಜಃ ಕೂರಕರ್ಮಾ ಕುಚೇಲಃ" ।

ವಿಲಪತ್ ವಿಲಪತ್ (ವಿಂ) 1. ಅಳುತ್ತಿರುವ, ರೋದನ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ದುಃಖದಿಂದ ಮಾತಾಡುತ್ತಿರುವ, ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಲಿಪ್" (೪-೧-೬) । -ಲಪಂತಿ -ಲಪಂತೀ ।

ವಿಲಪನ ವಿಲಪನ (ನಂ) 1. ಅಳುವುದು, ರೋದನ. ವಿ+ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ದುಃಖದಿಂದ ಅಡುವುದು.



**ವಿಲಂಬ ವಿಲಂಬ** (ಪುಂ) 1. ಸಾವಕಾಶ, ತಡ, ತಾಮಸ, ವಿ + ಲಬಿ (ಅವಸಂಸನೆ) "ಘ್" (3-3-18)। 2. ತೂಗಾಡುವುದು, ತೂಗುವುದು. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। -ಲಂಬನಮ್-ಲಂಬನಮ್. "ತನ್ಮುಖೇ ವಿಫಲಂ ವಿಲಂಬನಮಸೌ ರಮ್ಯೋಽಭಿಸಾರಕ್ಷಣಃ" ಗೀತಗೋಂ।

**ವಿಲಂಬಮಾನ ವಿಲಂಬಮಾನ** (ವಿಂ) ಜೋತಾಡುತ್ತಿರುವ, ತೂಗಾಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಲಬಿ (ಅವಸಂಸನೆ) "ಶಾನ್" (3-2-124)। "ವಿಲಂಬಮಾನಾಕುಲಕೇಶಪಾಶಯಾ ಕಯಾಚಿ-ದಾವಿಷ್ಕೃತಬಾಹುಮೂಲಯಾ" ಕಿರಾಂ 6-18।

**ವಿಲಂಬಿತ ವಿಲಂಬಿತ** (ನಂ) 1. ವಿಲಂಬಿತಾಲದ ನೃತ್ಯ, ಕರಚರಣ ಮೊದಲಾದವುಗಳಿಂದ ನಿಧಾನವಾಗಿ ಅಭಿನಯಿಸುವ ನೃತ್ಯ (ಕುಣಿತ). ವಿಲಂಬ್ಯಂತೇ ಕರಚರಣಾದಯೋಽತ್ರ - ವಿ + ಲಬಿ (ಅವಸಂಸನೆ) "ಕ್ತಃ" (3-4-66)। (ವಿಂ) 2. ತೂಗುಹಾಕಿರುವ, ತೂಗಾಡುವ. 3. ಸಾವಕಾಶ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ನಿಧಾನವಾಗಿರುವ, ತಡವಾಗಿರುವ. "ವಿಲಂಬಿತಫಲಃ ಕಾಲಂ ಸ ನಿನಾಯ ಮನೋರಥಃ" ರಘುಂ 1-33।

**ವಿಲಂಬಿನ್ ವಿಲಂಬಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಭವಾದಿ ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಮೂವತ್ತೆರಡನೆಯ ಸಂವತ್ಸರ. (ವಿಂ) 2. ಜೋತಾಡುತ್ತಿರುವ, ತೂಗುತ್ತಿರುವ, ವಿಲಂಬತೇ - ವಿ + ಲಬಿ (ಅವಸಂಸನೆ) "ಞಿನಿಃ" (3-1-134)। "ವಿಲಂಬಿನಿಲೋತ್ಪಲಕರ್ಣಪೂರಾಃ ಕಪಾಲಭಿತ್ತಿರಿವ ಲೋಧ-ಗೀರಿಃ" ಮಾಘಂ 4-6। 3. ತಡಮಾಡುವ, ತಾಮಸ ಮಾಡುವ. "ಭವತಿ ವಿಲಂಬಿನಿ ವಿಗಲಿತಲಜ್ಜಾ ವಿಲಪತಿ ರೋದತಿ ವಾಸಕಸಜ್ಜಾ" ಗೀತಗೋಂ।

**ವಿಲಂಬ ವಿಲಂಬ** (ಪುಂ) ದಾಸ. ಕೊಡುಗೆ. ವಿ + ಡುಲಮಃ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಘ್" (3-3-18)।

**ವಿಲಯ ವಿಲಯ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಳಯ, ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶ, ಪ್ರಪಂಚದ ಅಳಿವು. ವಿಶೇಷಣ ಲಯಃ ನಾಶಃ। ವಿಶೇಷಣ ಲೀಯಂತೇ ಪದಾರ್ಥಾಃ ಅಸ್ಮಿನ್ - ವಿ + ಲೀಡ್ (ಶ್ಲೇಷಣ) "ಅಘ್" (3-3-46)। ಇತಿ ವಾ। 2. ವಿನಾಶ, ಅಳಿವು. "ದಿವಸೋಽನ್ಯಮಿತ್ರಮಗಮದಿಲಯಮ್" ಮಾಘಂ 9-17। 3. ಅವಸಾನ, ಕೊನೆ.

**ವಿಲಯನ ವಿಲಯನ** (ನಂ) ಕರಗಿಸುವುದು, ದ್ರವವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ವಿ + ಲೀ (ದ್ರವೀಕರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

**ವಿಲಸತ್ ವಿಲಸತ್** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ. ವಿ + ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣಕೃಡನಯಃ) "ಶತ್" (3-2-124)।

"ಸ್ಫುರದ್ಬಜ್ಜಲಾಧರದಲೈವಿಲಸದ್ಭನಾಂಶುಕೇಸರಭರೈಃ ಪರಿತಃ" ಮಾಘಂ 9-47। 2. ಶ್ರೇಡಿಸುವ, ಆಟವಾಡುವ. 3. ಥಟ್ಟನೆ ಹೊಳೆಯುವ, ಥಟ್ಟನೆ ಸ್ಮರಿಸುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-6)। -ಲಸಂತಿ -ಲಸಂತಿ. "ಬಹಿರಪಿ ವಿಲಸಂತಿಃ ಕಾಮಮಾನಿನಿರೇ ಯದಿವಸಕರಕುಚೋಽಂತಂ ಧ್ವಾನಂತಮಂತಗೃಹೇಷು" ಮಾಘಂ 11-49।

**ವಿಲಸನ ವಿಲಸನ** (ನಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವುದು, ಹೊಳೆಯುವುದು. 2. ಆಟವಾಡುವುದು. ವಿ + ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣ-ಕೃಡನಯಃ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

**ವಿಲಸಿತ ವಿಲಸಿತ** (ನಂ) 1. ವ್ಯಾಪಾರ, ವರ್ತನೆ. ಚೇಷ್ಟೆ. ವಿ + ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣಕೃಡನಯಃ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-4-62)। "ವಿಲಸಿತಮನುಕುರ್ವತಿ ಪುರಸ್ತಾದ್ವರಣಿರೂಹಾಧಿರೂಹೋ ವಘ್-ಲಂತಾಯಾಃ" ಮಾಘಂ 9-46। 2. ಮಿನುಗು, ನುಣ್ಣುಳು, ಮಿಂಚಿನ ಬೆಳಕು. "ರೋಧೋಭುವಾಂ ಮುಹುರಮುತ್ರ ಹಿರಣ್ಮಯಿನಾಂ ಭಾಸಸ್ತದಿವಿಲಸಿತಾನಿ ವಿಡಂಬಯಂತಿ" ಕಿರಾಂ 5-46। 3. ಲೀಲೆ, ವಿನೋದ, ಆಟ. "ಅತಿಪಿಶುನಾನಿ ಚೆಕಾಂತ-ನಿಷ್ಕುರಾಣಿ ದೇವಹತಕಸ್ಯ ವಿಲಸಿತಾನಿ" ಕಾದಂ। 4. ಫಲ, ಪರಿಣಾಮ. "ಸುಕೃತವಿಲಸಿತಾನಾಂ ಸ್ಥಾನಮೂರ್ಜಸ್ವಲಾನಾಮ್" ಮಾಲತೀಂ 2-9। (ವಿಂ) 5. ಹೊಳೆಯುವ, ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, 6. ಶ್ರೇಡಿಸುವ, ಆಟವಾಡುವ.

**ವಿಲಾಪ ವಿಲಾಪ** (ಪುಂ) 1. ರೋದನ, ಅಳುವುದು. ವಿ + ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಘ್" (3-3-18)। 2. ದುಃಖದಿಂದ ಆಡುವ ಮಾತು.

**ವಿಲಾಪನ ವಿಲಾಪನ** (ನಂ) 1. ಅಳುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ವಿ + ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। (ವಿಂ) 2. ಅಳುವಂತೆ ಮಾಡುವವನು. ವಿ + ಲಪ + ಣಿಕ್ ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134)। 3. ಕರಗಿಸುವುದು. ವಿ + ಲೀಡ್ (ಶ್ಲೇಷಣ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

**ವಿಲಾಸ ವಿಲಾಸ** (ಪುಂ) 1. ವಿನೋದಕ್ಕಾಗಿ ಏರ್ಪಟ್ಟ ಶ್ರೇಡೆ, ವಿಶ್ರಾಂತಿಗಾಗಿ ಆಡುವ ಆಟ. ವಿ + ಲಸ (ಕೃಡನ) ಭಾವೇ "ಘ್" (3-3-18)। 2. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಶೃಂಗಾರ ಭಾವದ ಕಾರ್ಯ, ಸ್ತ್ರೀಯರ ಸ್ವಭಾವಸಿದ್ಧವಾದ ಲೀಲೆ, ಇಷ್ಟವಸ್ತುವಿನ ದರ್ಶನದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಶೃಂಗಾರ ಚೇಷ್ಟೆ. "ಯಾನಿತ್ಯಾನಾಸನಾದಿನಾಂ ಮುಖನೇತ್ರಾದಿಕರ್ಮಣಾಮ್। ವಿಶೇಷಸ್ತು ವಿಲಾಸಃ ಸ್ಯಾತ್ ಇಷ್ಟಸಂಧರ್ಶನಾದಿನಾ" ಸಾಂ 60। "ಸ್ತಿಗ್ಧಂ ವೀಕ್ಷಿತಮನ್ಯತೋಽಪಿ ನಯನೇ ಯತ್ಪ್ರೇಷಯಂತೀ ತಯಾ ಯತಂ ಯಚ್ಚ ನಿತಮ್ಬಯೋಗುಸ್ತಯಾ ಮಂದಂ ವಿಲಾಸಾದಿವ" ಶಾಕುಂ



೨-೨. 3. ಸೌಂದರ್ಯ, ಸೊಬಗು, ಚೆಲುವು. "ಇದಮಿಹ  
ಮದನಸ್ಯ ಜೈತ್ರಮಸ್ತ್ರಂ ಸಹಜವಿಲಾಸನಿಬಂಧನಂ ಶರೀರಮ್"  
ಮಾಲತೀಂ ೨-೬. 4. ಲೀಲೆ, ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ. 5. ಭೋಗ,  
ಸೌಖ್ಯ, ವಿಷಯಾನುಭವ.

**ವಿಲಾಸಮಂದಿರ ವಿಲಾಸಮಂದಿರ** (ನಂ) ಕ್ರೀಡಾಗೃಹ,  
ಆಟದ ಮನೆ, ವಿನೋದಕ್ಕಾಗಿ ಆಟವಾಡುವ ಗೃಹ.  
ವಿಲಾಸಸ್ಯ ಮಂದಿರಮ್.

**ವಿಲಾಸವತೀ ವಿಲಾಸವತೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಾವಭಾವಗಳಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ಅನುರಕ್ತಳಾದ ಹೆಂಗಸು.

**ವಿಲಾಸಿನ್ ವಿಲಾಸಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಕ್ರೀಡಾಸ್ಥಾನಾದ,  
ಆಟದ ಸ್ಥಳಾವುಳ್ಳ. ವಿ + ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣಕೃತನಯೋಃ)  
"ಫಿನ್ಯು" (೩-೨-೧೪೩). "ಕುರ್ವದ್ವಿಮುಖಃ ಕಿಮುಜ್ಜ್ವಲಾ-  
ಮಜ್ಜಂ ಯೇಸ್ತೋಯೇರಸಿತ್ತ ವಲ್ಲಭಾಂ ವಿಲಾಸಿ" ಮಾಘಂ ೮-೩೮. 2. ಭೋಗಿ, ವಿಷಯಾಸಕ್ತ, ಸ್ತ್ರೀಲಂಪಟ "ಪರಮೃತಾ-  
ವಿಹಿತೇಶ್ವರ ವಿಲಾಸಿನಃ ಸ್ಮರಬಲೇರಬಲೇಕರಸಾಃ ಕೃತಾಃ" ರಘುಂ  
೯-೪೩. (ಪುಂ) 3. ಕೃಷ್ಣ, ವಿಷ್ಣು. 4 ಚಂದ್ರ. 5 ಅಗ್ನಿ.  
6. ಸರ್ಪ. 7. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 8. ಕಾಮದೇವ,  
ಮನ್ಮಥ.

**ವಿಲಾಸಿನಿ ವಿಲಾಸಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಾವಭಾವಾದಿ  
ವಿಲಾಸವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ವಿಲಾಸೋಽಸ್ಯಾ ಅಸ್ತಿ "ಇನಿಃ"  
(೪-೨-೧೧೫). "ಕೀಪ್" (೪-೧-೫). "ವಿಲಾಸಿನಿ-  
ಬಾಹುಲತಾ ವನಾಲಯೋ ವಿಲೇಪನಾಮೋದಹತಾಃ ಸಿಫೇವಿರೇ"  
ಕಿರಾಂ ೮-೫. 2. ಮಹಿಳೆ, ಹೆಂಗಸು. "ಇತ್ಯೋಷಧಿಪ್ರಸ್ಥ-  
ವಿಲಾಸಿನಿನಾಂ ಶೃಣ್ವನ್ ಕಥಾಃ ಶ್ರೋತ್ರಸುಖಾಸ್ತ್ರೀನೇತ್ರಃ" ಕುಮಾರಂ  
೭-೬೯. 3. ವೇಶ್ಯೆ, ಸೂಳೆ. "ಸಿದ್ಧಚಾರಣಗಂಧರ್ವಃ ಸಾಧ್ಯ-  
ಯಾತಿ ವಿಲಾಸಿನಿ" ಮಾಂ ವನಂ ೪೪-೨೯.

**ವಿಲಿಖತ್ ವಿಲಿಖತ್** (ವಿಂ) 1. ಬರೆಯುತ್ತಿರುವ.  
ವಿ + ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). 2. ಕೆರೆದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. 3. ಚಿತ್ರಬರೆಯುತ್ತಿರುವ.  
4. ಒಳಗಡೆ ಸೇರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಒಳಭಾಗದಲ್ಲಿ ಇಡುತ್ತಿರುವ.  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೬). -ಲಿಖಂತಿ -ಲಿಖಂತೀ.

**ವಿಲಿಖನ ವಿಲಿಖನ** (ನಂ) 1. ಬರವಣಿಗೆ. 2. ಕೆರೆಯು  
ವುದು. 3. ಬಣ್ಣ ಹಾಕುವುದು.

**ವಿಲಿಖಿತ ವಿಲಿಖಿತ** (ನಂ) 1. ಬರವಣಿಗೆ, ಬರೆಯು  
ವುದು. ವಿ + ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ"  
(೩-೩-೧೧೪). 2 ಕೆರೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು 3. ಚಿತ್ರ  
ಬರೆಯುವುದು. 4. ಒಳಗಡೆ ಸೇರಿಸುವುದು. 5. ಗೀರು  
ವುದು, ಗೆರೆ ಹಾಕುವುದು. (ವಿಂ) 6. ಬರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ.

7. ಕೆರೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. 8. ಚಿತ್ರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಣ್ಣ ಹಾಕ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 9. ಒಳಗಡೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 10. ಗೆರೆಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಗೀರಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಿಲಿಖ್ಯಮಾನ ವಿಲಿಖ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಬರೆಯಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ. 2. ಕೆರೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರ-  
ವಿನ್ಯಾಸೇ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪). 3. ಗೆರೆ  
ಹಾಕಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 4. ಚಿತ್ರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

**ವಿಲಿಪ್ತ ವಿಲಿಪ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಲೇಪನ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಲಿಪ (ಅಪದೇಹೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨).  
2. ಮಲಿನವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಿಲಿಪ್ಯಮಾನ ವಿಲಿಪ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) ಬಳಿಯಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ, ಬಣ್ಣ ಹಾಕಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಲಿಪ (ಅಪದೇಹೇ)  
ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪).

**ವಿಲಿಪ್ತವಿಲಿಪ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಬಣ್ಣ ಹಾಕುತ್ತಿರುವ,  
ಬಣ್ಣ ಬಳಿಯುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಲಿಪ (ಅಪದೇಹೇ) "ಶತ್"  
(೩-೨-೧೨೪). 2. ಮುಲಾಮು ಹಾಕುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ  
"ಕೀಪ್" (೪-೧-೬). -ತೀ -ತೀ. -ಂತೀ -ಂತೀ. "ಶಾನಕ್"  
(೩-೨-೧೨೪). -ಲಿಪ್ಯಮಾನಃ -ಲಿಪ್ಯಮಾನಃ.

**ವಿಲೀನ ವಿಲೀನ** (ವಿಂ) 1. ಕರಗಿರುವ, ದ್ರವವಾಗಿರುವ.  
ವಿ + ಲೀಙ್ (ಶ್ಲೇಷಣೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨). 2. ಒಂದ  
ಕೊಂಡು ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವ, ಬಿಡಿಸಲಾಗದಂತೆ ಸೇರಿ  
ಕೊಂಡಿರುವ. 3. ಒಂದೊಂದಿಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಬೇರೆ  
ಬೇರೆ ಗುರುತಿಸಲಾಗದಂತೆ ಸೇರಿಹೋಗಿರುವ. "ವಿತ್ತತವಿಲಿ-  
ವಿಭಾವ್ಯಪಾಂಡುರೇಖಾಕೃತಪರಭಾಗವಿಲೀನರೋಮರಾಜಿಃ" ಮಾಘಂ  
೭-೩೩. 4. ಒಳಗೆ ಅಡಗಿಕೊಂಡಿರುವ, ಒಳಗೆ ಸೇರಿರುವ.

**ವಿಲೀಯಮಾನ ವಿಲೀಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಕರಗಿಸಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ, ದ್ರವವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಲೀಙ್  
(ಶ್ಲೇಷಣೇ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪). 2. ಗುರುತು  
ಸಿಕ್ಕದಂತೆ ಒಂದೊಂದಿಗೊಂದು ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.  
3. ಅದೃಶ್ಯವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಕಾಣದಂತೆ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

**ವಿಲುಚ್ಚತ್ ವಿಲುಚ್ಚತ್** (ವಿಂ) 1. ತೆಗೆದುಹಾಕುತ್ತಿರುವ.  
ಸಿಪ್ಪೆ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಎಡೆಯುತ್ತಿರುವ, -ಸುಲಿಯು  
ತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಲುಚ್ (ಅಪನಯನೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪).  
2. ಕಿತ್ತುಹಾಕುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೬).  
-ಂತೀ -ಂತೀ.

**ವಿಲುಚ್ಚನ ವಿಲುಚ್ಚನ** (ನಂ) 1. ತೆಗೆದುಹಾಕುವುದು,  
ಸಿಪ್ಪೆ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಎಡೆಯುವುದು, -ಸುಲಿಯು



ವುಡು. ವಿ + ಲುಪ್ (ಅಪನಯನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । 2. ಕೆತ್ತುಹಾಕುವುದು.

ವಿಲುಪನೀಯ ವಿಲುಂಚನೀಯ (ವಿಂ) 1. ತೆಗೆದುಹಾಕಲ್ಪಡುವ, ಸುಲಿಯಲ್ಪಡುವ. 2. ಸುಲಿಯಬೇಕಾದ. 3. ಸುಲಿಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ವಿ + ಲುಪ್ (ಅಪನಯನೆ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) । -ಛೇದಕತವ್ಯ: -ಉಂಚಿತವ್ಯಃ. ವಿಲುಪಿತ ವಿಲುಂಚಿತ (ವಿಂ) ಸುಲಿಯಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ, ಎಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ. ವಿ + ಲುಪ್ (ಅಪನಯನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) ।

ವಿಲುಪ್ಯ ವಿಲುಂಚ್ಯ (ವಿಂ) ಸುಲಿಯಲ್ಪಡುವ, ಎಡೆಯಲ್ಪಡುವ. ವಿ + ಲುಪ್ (ಅಪನಯನೆ) "ಞ್" (3-1-124) । ವಿಲುಪನ ವಿಲುಪನ (ನಂ) ಹೊರಳಾಡುವುದು, ಉರುಳಾಡುವುದು. ವಿ + ಲುಪ್ (ಸಂಕ್ಷೇಪಣ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) ।

ವಿಲುಪಿತ ವಿಲುಪಿತ (ವಿಂ) ಕೆರಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ರೇಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉದ್ರೇಕಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಲುಪ್ (ಸಂಕ್ಷೇಪಣ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) ।

ವಿಲುಪತ್ ವಿಲುಂಚತ್ (ವಿಂ) ಕದಿಯುತ್ತಿರುವ, ಅಪಹರಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಲುಪ್ (ಸ್ತೇಯ) "ಶತ್" (3-2-124) ।

ವಿಲುಪನ ವಿಲುಂಚನ (ನಂ) ಕದಿಯುವುದು, ಅಪಹರಿಸುವುದು. ವಿ + ಲುಪ್ (ಸ್ತೇಯ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) ।

ವಿಲುಪನೀಯ ವಿಲುಂಚನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಕದಿಯಲ್ಪಡುವ, ಅಪಹರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಕದಿಯಬೇಕಾದ. 3. ಕದಿಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ವಿ + ಲುಪ್ (ಸ್ತೇಯ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) । "ತವ್ಯ:" । -ಛೇದಕತವ್ಯ: -ಉಂಚಿತವ್ಯಃ.

ವಿಲುಪಿತ ವಿಲುಂಚಿತ (ವಿಂ) ಕದಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಪಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಲುಪ್ (ಸ್ತೇಯ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) ।

ವಿಲುಪ್ಯ ವಿಲುಂಚ್ಯ (ವಿಂ) ಅಪಹರಿಸಲ್ಪಡುವ. ವಿ + ಲುಪ್ (ಸ್ತೇಯ) "ಞ್" (3-1-124) ।

ವಿಲುಪ್ತ ವಿಲುಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಡೆದುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಲುಪ್ (ಛೇದನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) । "ವಿಲುಪ್ತಮುಖ್ಯಲಿಪಿಕ್ರಮಾಣಾಂ ಸುರೇಂದ್ರಚೂಪದಲಾಲಿತಾನಾಮ್" ಹೃಯಗ್ರೀಂ । 2. ಕೆತ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ತುಂಡುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ವಿಲುಪ್ಯಕ ವಿಲುಂಚ್ಯಕ (ಪುಂ) 1. ಕೆಳ್ಳ, ಚೋರ. (ವಿಂ) 2. ಕೆತ್ತಿಸುವವನು, ತುಂಡುಮಾಡುವವನು. ವಿ + ಲುಪ್ (ಛೇದನೆ) "ಞ್" (3-1-124) ।

ವಿಲುಪಿತ ವಿಲುಪಿತ (ವಿಂ) ಅಲಂಕಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಲಂಕಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಲುಪ್ (ವಿಮರ್ಶನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) ।

"ವಿಲುಪಿತಕಮಲೋಃ ಕೀರ್ಣವಲ್ಲಿವಿತಾನ:" ಮಾಘಂ 11-28 ।

ವಿಲುಪ್ತ ವಿಲುಪ್ತ (ವಿಂ) ಕೆತ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತುಂಡುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಲುಪ್ (ಛೇದನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) । ತಕಾರಸ್ಯ ನ: (2-2-88) । "ವಿಲುಪ್ತಮೂಲಮಸನ್ನಿಮಿತಂ ತಂ ವಿಲಕ್ಷಮುತ್ಥಾಪ್ಯ ವಿಹಾರಯಾದವ:" ಯಾದಂ 18-48 ।

ವಿಲೇಪನ ವಿಲೇಪನ (ನಂ) 1. ಬರೆಯುವುದು. 2. ಗೆರೆ ಹಾಕುವುದು, ಗೀರುವುದು. 3. ಕೆರೆಯುವುದು. 4. ಬೇರ್ಪಡಿಸುವುದು, ಒಡೆಯುವುದು. 5. ಸಿಗಿದು ಗಾಯಗೊಳಿಸುವುದು. ವಿ + ಲಿಪ್ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) ।

ವಿಲೇಪ ವಿಲೇಪ (ಪುಂ) 1. ದೇಹಕ್ಕೆ ಪೂಸುವ ಗಂಧ ಮೊದಲಾದ ಸುವಾಸನೆಯ ವಸ್ತು. ವಿ + ಲಿಪ್ (ಉಪದೇಹ) "ಘ್" (3-3-114) । "ಅಥ ವ್ರಜನ್ ರಾಜಪಥೇನ ಮಾಘವ: ಸ್ತ್ರೀಯಂ ಗೃಹೀತಾಂ ವಿಲೇಪಭಾಜನಾಮ್" ಭಾಗಂ 10-42-1 । 2. ಮನೆಗೆ ಬಳಿಯುವ ಸುಣ್ಣ ಅಥವಾ ಬಣ್ಣ. 3. ಗಾಯ ವಾಸಿಯಾಗಲು ಹಾಕುವ ಮುಲಾಮು. 4. ದೇಹದ ಸೌಂದರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಪೂಸಿಕೊಳ್ಳುವ ವಾಸನೆಯ ಮುಲಾಮು.

ವಿಲೇಪನ ವಿಲೇಪನ (ನಂ) 1. ದೇಹಕ್ಕೆ ಗಂಧ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಪೂಸುವುದು. ವಿ + ಲಿಪ್ (ಉಪದೇಹ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । 2. ಮನೆಗೆ ಸುಣ್ಣ ಮತ್ತು ಬಣ್ಣ ಬಳಿಯುವುದು. 3. ಗಾಯಕ್ಕೆ ಮುಲಾಮು ಹಾಕುವುದು. 4. ದೇಹದ ಸೌಂದರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯವನ್ನು ಬಳಿಯುವುದು. (ವಿಂ) 5. ದೇಹಕ್ಕೆ ಪೂಸುವ ಗಂಧ ಮೊದಲಾದುದು. ವಿಲಿಪ್ಯಂತಃಕ್ಷಾನ್ಯನೇನ — ವಿ + ಲಿಪ್ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । "ನ ಸ್ನಾನಂ ನ ವಿಲೇಪನಂ ನ ಕುಸುಮಂ ನಾಲಂಕೃತಾ ಮುಖಜಾ:" ಭರ್ತುಂ 1-14 । 6. ಮನೆಗೆ ಬಳಿಯುವ ಸುಣ್ಣ ಮತ್ತು ಬಣ್ಣ. 7. ಗಾಯಕ್ಕೆ ಹಾಕುವ ಮುಲಾಮು. 8. ದೇಹದ ಸೌಂದರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಪೂಸುವ ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯ.

ವಿಲೇಪನಿ ವಿಲೇಪನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯಗಳಿಂದ ಪೂಸಲ್ಪಟ್ಟ ಹೆಂಗಸು. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಹೆಂಗಸು. ವಿಲಿಪ್ಯಂತಃ — ವಿ + ಲಿಪ್ (ಉಪದೇಹ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । 3. ಅಕ್ಕಿಯ ಗಂಜಿ. "ವಿಲೇಪನಿ ಸುವೇಷಸ್ತ್ರೀಯವಾಗ್ವೋರಪಿ ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ ।

ವಿಲೇಪಿನ್ ವಿಲೇಪಿನ್ (ವಿಂ) ಲೇಪನಮಾಡುವವನು, ಬಣ್ಣ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಬಳಿಯುವವನು. ವಿ + ಲಿಪ್ (ಉಪದೇಹ) "ಞಿ:" (3-1-124) ।



ವಿಲೇಪಿ ವಿಲೇಪಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಂಬಲಿ, ಗಂಜಿ.

ವಿಲೇಪ್ಯ ವಿಲೇಪ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಲೇಪನಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಪುಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಬಳಿಯಲ್ಪಡುವ. ವಿ+ಲಿಪ (उपदेहे) "प्यत्" (३-१-१२४) ।

ವಿಲೋಕ ವಿಲೋಕ (ಪುಂ) ನೋಟ, ದೃಷ್ಟಿಬೀಳಿಸುವುದು, ಕಣ್ಣೋಡಿಸುವುದು. ವಿ+ಲೋಕ್ (दर्शने) "घञ्" (३-३-१८) ।

ವಿಲೋಕನ ವಿಲೋಕನ (ನಂ) ದರ್ಶನ, ನೋಡುವುದು, ದೃಷ್ಟಿಹಾಯಿಸುವುದು. ವಿ+ಲೋಕ್ (दर्शने) ಭಾವೇ "ल्युट्" (३-३-११५) । "विलोकनेनैव तवामुना मुने कृतः कृतार्थोऽस्मि निर्वाहिताहसा" भाष० १-२९ ।

ವಿಲೋಕನೀಯ ವಿಲೋಕನೀಯ (ವಿಂ) 1. ನೋಡಲ್ಪಡುವ. 2. ನೋಡಬೇಕಾದ. 3. ನೋಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ನೋಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ವಿ+ಲೋಕ್ (दर्शने) "अनीयर्" (३-१-९६) । "तव्यः" । -लोकितव्यम् -ಲೋಕಿತವ್ಯಮ್.

ವಿಲೋಕಮಾನ ವಿಲೋಕಮಾನ (ವಿಂ) ನೋಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ಲೋಕ್ (दर्शने) "शानच्" (३-२-१२४) ।

ವಿಲೋಕಯತ್ ವಿಲೋಕಯತ್ (ವಿಂ) ನೋಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ಲೋಕ್ (भाषार्थे) + 'णिच्' "शतृ" (३-२-१२४) । "विकसितकुसुमाधरं हसन्तीं कुरवकराजिवधूं विलोकयन्तम्" किरा० १०-३२ । स्त्रियां "ङीप्" (४-१-६) । -यन्ती -ಯನ್ತಿ. "विलोकयन्त्यो वपुरापुरक्षणां प्रकाम-विस्तारफलं हरिण्यः" रघु० २-११ ।

ವಿಲೋಕಿತ ವಿಲೋಕಿತ (ವಿಂ) ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಲೋಕ್ (दर्शने) "क्तः" (३-२-१०२) । "विलोकितानामिह न व्यवस्था नेदियसां देवि दवीयसां वा" याद० १८-७१ ।

ವಿಲೋಕ್ಯ ವಿಲೋಕ್ಯ (ವಿಂ) 1. ನೋಡಲ್ಪಡುವ. ವಿ+ಲೋಕ್ (दर्शने) "प्यत्" (३-१-१२४) । (अव्य०) 2. ನೋಡಿ, ಅವಲೋಕಿಸಿ. ವಿ+ಲೋಕ್ "क्त्वा" । क्त्वो "ल्यप्" (७-१-३७) ।

ವಿಲೋಚನ ವಿಲೋಚನ (ನಂ) 1. ನೇತ್ರ, ಕಣ್ಣು. ವಿಲೋಚ್ಯತೆ ದೃಶ್ಯತೇಜನ-ವಿ+ಲೋಚ್ (दर्शने) "ल्युट्" (३-३-११७) । "हरेरभिख्यामनुपाधिरस्यां विलोचनं वीतनिमेषविघ्नैः" याद० १३-६९ । 2. ದರ್ಶನ, ನೋಡುವುದು. ಭಾವೇ "ल्युट्" (३-३-११५) ।

ವಿಲೋಡನ ವಿಲೋಡನ (ನಂ) ಕಡೆಯುವುದು, ಮಥನ ಮಾಡುವುದು. ವಿ+ಲೂಡ (विलोडने) "ल्युट्"

(३-३-११५) । "तात नोदधिविलोडनं प्रति त्वद्विनाय वयमुत्सहामहे" भाष० १४-८३ ।

ವಿಲೋಡಿತ ವಿಲೋಡಿತ (ವಿಂ) 1. ಮಥನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಲೂಡ (विलोडने) "क्तः" (३-२-१०२) । (न०) 2. ತಕ್ಕ, ಮಜ್ಜಿಗೆ. ಭಾವೇ "क्तः" (३-३-११४) ।

ವಿಲೋಪ ವಿಲೋಪ (ಪುಂ) 1. ವಿಶೇಷವಾದ ಲೋಪ, -ಚ್ಯುತಿ, -ನಾಶ. ವಿ+ಲೂಪ್ (छेदने) "घञ्" (३-३-१८) । 2. ಕತ್ತರಿಸುವುದು. 3. ಅಪಹರಿಸುವುದು, ಲೂಟಿಮಾಡುವುದು, ಕೊಳ್ಳೆಹೊಡೆಯುವುದು. ಭಾವೇ "ल्युट्" (३-३-११५) । -लोपनम् -ಲೋಪನಮ್.

ವಿಲೋಭ ವಿಲೋಭ (ಪುಂ) ಆಸೆತೋರಿಸಿ ಮೋಸಪಡಿಸುವುದು, ಮರುಳುಮಾಡುವುದು. ವಿ+ಲೂಪ (विमोहने) "घञ्" (३-३-१८) । ಭಾವೇ "ल्युट्" (३-३-११५) । -लोभनम् -ಲೋಭನಮ್. "प्रयुज्य सामाचरितं विलोभनं भयं विभेदाय धियः प्रदर्शितम्" किरा० १४-७ ।

ವಿಲೋಭನೀಯ ವಿಲೋಭನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಮೋಸಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಮೋಸಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಮೋಸಪಡಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ವಿ+ಲೂಪ (विमोहने) "अनीयर्" (३-१-९६) । "तव्यः" । -लोभितव्यः -ಲೋಭಿತವ್ಯಃ.

ವಿಲೋಭಿತ ವಿಲೋಭಿತ (ವಿಂ) ಆಸೆತೋರಿಸಿ ಮೋಸಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಲೂಪ (विमोहने) + 'णिच्' "क्तः" (३-२-१०२) ।

ವಿಲೋಮ್ಯಮಾನ ವಿಲೋಮ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ಆಕರ್ಷಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಮರುಳುಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ಲೂಪ (विमोहने) + 'णिच्' "शानच्" (३-२-१२४) ।

ವಿಲೋಮ ವಿಲೋಮ (ಪುಂ) 1. ವರುಣ. 2. ಸರ್ಪ. 3. ನಾಯಿ. (न०) 4. ಎತ, ಬಾವಿಯಿಂದ ನೀರು ಎತ್ತಲು ಹಾಕಿರುವ ಚಕ್ಕ. (ವಿಂ) 5. ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದ, ವಿಪರೀತವಾದ. "विलोमस्तु प्रतीपे स्याद्भुजङ्गे वरणे शुनि । आमलक्यां विलोमी च विलोमं चारघट्टके" मेदि० । स्वार्थे "कन्" । -लोमकः -ಲೋಮಕಃ.

ವಿಲೋಮಕ್ರಿಯಾ ವಿಲೋಮಕ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿರುದ್ಧವಾದ ಕೆಲಸ, ವ್ಯತಿರಿಕ್ತವಾದ ಕಾರ್ಯ.

ವಿಲೋಮಜಿಹ್ವ ವಿಲೋಮಜಿಹ್ವ (ಪುಂ) ಗಂಜಿ, ಅನೇ. ವಿಲೋಮಾ ಜಿಹ್ವಾ यस्य ।

ವಿಲೋಮಿತ ವಿಲೋಮಿತ (ವಿಂ) ಹಿಮ್ಮುಖವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಂತಿರುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "विलोमिता क्लोत्किरणा-द्गुरुदृगादिता दृश्यविलोचनादि" नैष० २२-४६ ।



**ವಿಲೋಮಿ ವಿಲೋಮೀ** (ವಿಂ) ನೆಲ್ಲಿಗಡ.

**ವಿಲೋಲ ವಿಲೋಲ** (ವಿಂ) 1. ಕದಲಿದ, ಜಾರಿದ. विशेषण  
ಲೋಲ:। “यावच्चलासनविलोलनितम्बबिम्बविस्रस्तवस्त्र-  
मवरोधवधूः पपात” माघ० ५-७। 2. ಚಂಚಲವಾದ,  
ಅಲಗಾಡಿದ. “विमुच्य सा हारमहार्यनिश्चया विलोल-  
यष्टिप्रविलुप्तचन्दनम्” कुमा० ५-८। 3. ಕೆದರಿದ,  
ಬಿಚ್ಚಿದ, ಬಿಡಿಯಾದ, ಕಟ್ಟಿದ ಸಡಿಲವಾದ. “परिपाण्डु-  
दुर्बलकपोलसुन्दरं दधती विलोलकबरीकमाननम्” उ०  
रा० ३-४। 4. ಉರುಳಾಡುವ, ಹೊರಳಾಡುವ.

**ವಿಲೋಲನ ವಿಲೋಲನ** (ನಂ) 1. ಹೊರಳಾಡುವುದು,  
ಉರುಳಾಡುವುದು. वि + लुड (विलोडने) “ल्युट्”  
(३-३-११५)। 2. ಅಡುವುದು, ಅಳಾಡುವುದು.  
3. ಚಲಿಸುವುದು, ಕದಲುವುದು. 4. ಕೆದಕುವುದು, ಕೆದಕು-  
ವುದು. 5. ಕೆರಳಿಸುವುದು, ಉದ್ರೇಕಗೊಳಿಸುವುದು.  
लङ्योरभेदः।

**ವಿಲೋಲಿತ ವಿಲೋಲಿತ** (ವಿಂ) 1. ಅಲಗಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಅಳಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಕೆರಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉದ್ರೇಕಗೊಳಿಸ-  
ಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಕದಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಕೆದಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಲಕಲ್ಪಟ್ಟ.  
वि + लुड (विलोडने) “क्तः” (३-२-१०२)।

**ವಿಲೋಲುಪ ವಿಲೋಲುಪ** (ವಿಂ) ಅಸೆಯಿಲ್ಲದ, ಅಸೆಯನ್ನು  
ತೊರೆದಿರುವ. वि + लुप्ल (छेदने) + यङ् “अच्”  
(३-१-१३४)।

**ವಿಲೋಹಿತ ವಿಲೋಹಿತ** (ಪುಂ) 1. ಮೂಗಿನಲ್ಲಿ ರಕ್ತಸೂರಿ  
ಯುವ ಒಂದು ರೋಗ. (ವಿಂ) 2. ಬಹಳ ಕೆಂಪಾದ.  
विशेषण लोहितः। “ततः स कृत्वा धनुरायतज्यं धनुर्धरः  
कोपविलोहिताक्षः” रघु० १६-७७।

**ವಿಲೋಹಿತಾ ವಿಲೋಹಿತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಯ ಸಪ್ತ  
ಜಿಹ್ವೆಗಳಲ್ಲಿಂದ.

**ವಿಲಲ ವಿಲ್ಲ** (ನಂ) ಅಲವಾಲ, ಗಿಡಗಳ ಕೆಳಗೆ ನೀರು  
ನಿಲ್ಲಲು ಮಾಡಿರುವ ಪಾತಿ. “तलं विललं तलं च तत्।  
द्विजप्रपालवालम्” त्रिकाण्ड०।

**ವಿವಕ್ಷತ್ ವಿವಕ್ಷತ್** (ವಿಂ) ಹೇಳಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ, ಮಾತ  
ನಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. वक्तुमिच्छन् — वच (परि-  
भाषणे) + सन् “शतृ” (३-२-१२४)। “विवक्षता  
दोषमपि च्युतात्मना त्वयैकमीषां प्रति साधु भाषितम्”  
कुमा० ५-८१।

**ವಿವಕ್ಷಾ ವಿವಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಾತನಾಡಲು ಇಚ್ಛೆ,  
ಹೇಳಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. वक्तुमिच्छा — वच (परिभाषणे) +

सन् “अः” (३-३-१०२)। 2. ಅರ್ಥ, ಭಾವ, ಅಭಿ  
ಪ್ರಾಯ, ತಾತ್ಪರ್ಯ.

**ವಿವಕ್ಷಿತ ವಿವಕ್ಷಿತ** (ವಿಂ) ಹೇಳಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಹೇಳಲು ಇಚ್ಛಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. वक्तुमिच्छितम्। वच (परि-  
भाषणे) + सन् “क्तः” (३-२-१०२)। “विवक्षिता-  
मर्थविदस्तत्क्षणप्रतिसंहताम्” माघ० २-१५।

**ವಿವಕ್ಷು ವಿವಕ್ಷು** (ವಿಂ) ಮಾತಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ,  
ಹೇಳಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ. वक्तुमिच्छुः — वच (परिभाषणे) +  
सन् “उः” (३-२-१६८)। “निवार्यतामालि किमप्ययं  
वदुः पुनर्विवक्षुः स्फुरितोत्तराधरः” कुमा० ५-८३।

**ವಿವತ್ಸಾ ವಿವತ್ಸಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಕ್ಕಳಿಲ್ಲದ ಹೆಂಗಸು.  
2. ಕರುವಿಲ್ಲದ ಹಸು.

**ವಿವದನ ವಿವದನ** (ನಂ) ವಿವಾದ, ವಾಗ್ವಾದ, ಚರ್ಚೆ.  
वि + वद (व्यक्तायां वाचि) “ल्युट्” (३-३-११५)।

**ವಿವದಮಾನ ವಿವದಮಾನ** (ವಿಂ) ವಿವಾದಮಾಡುತ್ತಿರುವ,  
ಚರ್ಚಿಸುತ್ತಿರುವ, ವಾಗ್ವಾದಮಾಡುತ್ತಿರುವ. वि + वद  
(व्यक्तायां वाचि) “शानच्” (३-२-१२४)।

**ವಿವದಿತವ್ಯ ವಿವದಿತವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ವಾಗ್ವಾದ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಡುವ. 2. ವಾಗ್ವಾದ ಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ವಾಗ್ವಾದ  
ಮಾಡಬಹುದಾದ. वि + वद (व्यक्तायां वाचि)  
“तव्यः” (३-१-९६)। “अनीयर्” (३-१-९६)।  
—वदनीयः —वदनीयः.

**ವಿವದಿಷತ್ ವಿವದಿಷತ್** (ವಿಂ) ಮಾತಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. वद (व्यक्तायां वाचि) + सन् “शतृ”  
(३-२-१२४)।

**ವಿವದಿಷಾ ವಿವದಿಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾತಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ.  
वद (व्यक्तायां वाचि) + सन् “अः” (३-३-१०२)।

**ವಿವದಿಷು ವಿವದಿಷು** (ವಿಂ) ಮಾತಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ  
ವನು. वद (व्यक्तायां वाचि) + सन् “उः” (३-२-१६८)।

**ವಿವಧ ವಿವಧ** (ಪುಂ) 1. ಸಾಮಾನುಗಳನ್ನು ಹೊರಲು  
ಹೆಗಲ ಮೇಲೆ ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವ ಅಡ್ಡೆ, ಕಾವಡಿ. विविधो  
वधो हननं गमनं वा यत्र। वा दीर्घः (६-३-१३७)।  
वीवधः विलेखः। 2. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. 3. ಭಾರ, ಹೊರೆ.  
“विवधो वीवधश्चापि पयहिरेऽवभारयोः” मेदि०।

**ವಿವಧಿಕ ವಿವಧಿಕ** (ಪುಂ) ಕಾವಡಿ ಹೊರುವವನು, ಕಾವಡಿ  
ಯಲ್ಲಿ ಸಾಮಾನನ್ನು ಸಾಗಿಸುವವನು. विवधेन हरति —  
विवध “छत्” (४-४-१७)। वा दीर्घः (६-३-१३७)।  
वीवधिकः विलेखः.



**ವಿವರಣೆ** (ವಿಂ) 1. ನಮಸ್ಕರಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. 2. ಸ್ತುತಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ವದಿ (ಅಭಿವಾದನ-ಸ್ತುತಿಯು:) + ಸನ್ "ಅ:" (3-3-102) ।

**ವಿವರಣೆ** (ವಿಂ) 1. ನಮಸ್ಕರಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ ಸುವ. 2. ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ವದಿ (ಅಭಿವಾದನಸ್ತುತಿಯು:) + ಸನ್ "ಅ:" (3-3-102) ।

**ವಿವರಣೆ** (ನಂ) 1. ರಂಧ್ರ, ತೂತು. ವಿವರಣಿತಿ—ವೃನ್ (ವರಣಿ) "ಅನ್" (3-1-134) । "ಯಲ್ವಕಾರ ವಿವರಂ ಶಿಲಾಶನೇ ತಾಡಕೋರಸಿ ಸ ರಾಮಸಾಯಕ: ರಘುಂ 11-14 । 2. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. "ವಿವರಂ ದೂಷಣಿ ಗತೆ" ಮೇದಿಂ । 3. ದೋಷ, ತಪ್ಪು, ಅಪರಾಧ. 4. ಅವಕಾಶ, ನಡುವೆ ಬಿಟ್ಟಿರುವ ಸ್ಥಳ, ಕಂಡಿ, ಸುತ್ತು.

**ವಿವರಣೆ** (ನಂ) 1. ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ, ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳುವುದು. ವಿ + ವೃನ್ (ವರಣಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । 2. ಮುಚ್ಚದೆ ಇಡುವುದು, ತೆರೆದಿಡುವುದು. 3. ನಿರೂಪಿಸುವುದು, ವರ್ಣಿಸುವುದು.

**ವಿವರಣೆ** (ವಿಂ) ತೃಪ್ತಿಸುವುದು, ತೊರೆದುಬಿಡುವುದು. ವಿ + ವೃಜಿ (ವರ್ಜನೆ) ಭಾವ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) ।

**ವಿವರಣೆಯ ವಿವರಣೆ** (ವಿಂ) 1. ತೃಪ್ತಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ತೃಪ್ತಿಸಬೇಕಾದ. 3. ತೃಪ್ತಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ವಿ + ವೃಜಿ (ವರ್ಜನೆ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) । "ತವ್ಯ:" । -ವರ್ಜಿತವ್ಯ: -ನರ್ಜಿತವ್ಯ: ।

**ವಿವರಣೆ** (ವಿಂ) ತೃಪ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ + ವೃಜಿ (ವರ್ಜನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) ।

**ವಿವರಣೆ** (ಪುಂ) 1. ನಿಮ್ಮ ವರ್ಗದವನು. ವಿರುದ್ಧ ವರ್ಗ: । "ಭೇಷಚರ್ಯಾ ವಿವರಣಿಷು ಜಘನ್ಯಾ ವೃತ್ತಿರಿಷ್ಯತೇ" ಮಾರ್ಕಂ । (ವಿಂ) 2. ಕಳೆಗುಂದಿದ, ಕಾಂತಿಯಿಲ್ಲದ. "ನರೇಂದ್ರಮಾರ್ಗಾಡ್ವಿ ಇವ ಪ್ರಪೇದೇ ವಿವರಣಿಭಾವಂ ಸ ಸ ಮೂರ್ತಿಪಾಲ:" ರಘುಂ 6-69 । 3. ಬಣ್ಣವಿಲ್ಲದ, ವರ್ಣಹೀನವಾದ. "ಇದಮಶಿಶಿರೇರಂತಸ್ತಾಪಾದಿವರ್ಣಮಣಿಕ್ರಮಮ್" ಶಾಕುಂ 3-10 ।

**ವಿವರಣೆ** (ಪುಂ) 1. ಬದಲಾವಣೆ, ಪರಿಣಾಮ. ವಿ + ವೃತ್ (ವರ್ತನೆ) "ಘನ್" (3-3-114) । "एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्भिन्नः पृथक् पृथगिव श्रयते विवर्तन्" ತಂ ರಾಂ 3-49 । ತಾತ್ಪರ್ಯವಲ್ಲದ ಅನ್ಯಥಾ ಭಾವ, ನಿಜವಲ್ಲದ ಬೇರೆ ರೂಪ, ಭ್ರಾಂತಿಯಿಂದ ತೋರುವ ರೂಪ, ಅವಿದ್ಯೆಯಿಂದ ತೋರುವ ರೂಪ. ಸರ್ವವಲ್ಲದ ರಜ್ಜುವಿನಲ್ಲಿ ಸರ್ಪದ ಭ್ರಾಂತಿಯಂತೆ ಶುಕ್ತಿ (ಕಪ್ಪೆಚಿಪ್ಪು) ಯಲ್ಲಿ ರಜತದ ಭ್ರಾಂತಿಯಂತೆ ಜಗತ್ತಿನ ಸ್ವರೂಪವಲ್ಲದ

ಬ್ರಹ್ಮದಲ್ಲಿ ಅವಿದ್ಯೆಯಿಂದ ಜಗತ್ತಿನ ಅಧ್ಯಾಸವು ವಿವರಣೆ ವಾಗುವುದು. ಈ ವಿವರಣೆವಾದವು ಸತ್ಕಾರ್ಯವಾದದ ಒಂದು ಭೇದ. ಪರಿಣಾಮವಾದವು ಇನ್ನೊಂದು ಭೇದ. ಪರಿಣಾಮವಾದವು ಶ್ರೀ ರಾಮಾನುಜಾಚಾರ್ಯರ ಮತ. ವಿವರಣೆವಾದವು ಶ್ರೀ ಶಂಕರಾಚಾರ್ಯರ ಮತ. ಕಾರಣವೇ ಕಾರ್ಯರೂಪದಿಂದ ತೋರುವುದರಿಂದ ಕಾರ್ಯವು ಬೇರೊಂದಿಲ್ಲ. ಆದುದರಿಂದ ಕಾರಣವು ವಾಸ್ತವ ಸತ್ಯ. ಕಾರ್ಯವು ಸತ್ಯವಲ್ಲವೆಂದು ಇವರ ಮತ. ಇವರ ಮತ ದಂತೆ ಬ್ರಹ್ಮದಲ್ಲಿ ಅವಿದ್ಯೆಯಿಂದ ಜಗದಾದಿಗಳ ಅಧ್ಯಾಸವು ಉಂಟಾಗಿ ರಜತಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ಶುಕ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಶುಕ್ತಿಜ್ಞಾನವುಂಟಾಗಿ ರಜತದ ಭ್ರಾಂತಿಯು ನಿವೃತ್ತಿ ಹೊಂದುವಂತೆ ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನದಿಂದ ಜಗದಾದಿಭೇದ ಜ್ಞಾನವು (ಭ್ರಾಂತಿಯು) ನಿವೃತ್ತಿಹೊಂದುವುದು. ಬ್ರಹ್ಮವೊಂದೇ ಸತ್ಯ. ಜಗತ್ತು ಮಿಥ್ಯೆ. "सर्वाजीवे सर्वसंस्थे बृहते अस्मिन् हंसो भ्राम्यते ब्रह्मचक्रे । पृथगात्मानं प्रेरितारं च 'मत्वा जुष्टस्ततस्तेनामृतत्वमेति" श्वेताಂ उपಂ 1-6 । "एक एव हि भूतात्मा भूते भूते व्यवस्थितः । एकधा बहुधा चैव दृश्यते जलचन्द्रवत्" । 2. ಸಮುದಾಯ, ಗಣ, ಸಮೂಹ. 3. ನೃತ್ಯ. 4. ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವುದು, ಮುಂದೆ ಸಾಗುವುದು. "संवर्तप्रकटविवर्तसप्तपाथोनाथोमिव्यतिकरविभ्रम-प्रचण्डः" ಮಂ ವೀಂ 6-26 । 5. ಪರಾಙ್ಮುಖವಾಗುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ದೋಗುವುದು. "विवर्तः समुदाये स्यादपवर्तननृत्ययोः" ಮೇದಿಂ । 6. ಸುತ್ತಲೂ ಚಕ್ರದಂತೆ ತಿರುಗುವುದು.

**ವಿವರಣೆ** (ನಂ) 1. ಹೊರಳಾಡುವುದು, ಉರುಳಾಡುವುದು. ವಿ + ವೃತ್ (ವರ್ತನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । "शय्याप्रान्तविवर्तनैविगमयत्युन्निद्र एव क्षपाः" ಶಾಕುಂ 6-4 । 2. ಹಿಂತಿರುಗುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು. 3. ಪ್ರತಿಕ್ರೋಧವಾದ ಬದಲಾವಣೆ, ವಿರುದ್ಧವಾದ ಪರ್ತನೆ. "पुनरकाण्डविवर्तनदारुणः प्रविशिनष्टि विविर्मनसो रुजम्" ಮಾಲತೀಂ 4-9 । 4. ಪ್ರದಕ್ಷಿಣೆಯಕಾರ್ಯ, ಪರಿಭ್ರಮಣ. "कथयति शिवयोः शरीरयोगं विषमपदा पदवी विवर्तनेषु" ಕಿರಾಂ 4-40 । 5. ಅಲೆದಾಡುವುದು. "तमिस्रादिषु चोश्रेषु तरकेषु विवर्तनम्" ಮನ್ವಂ 12-94 । 6. ಪ್ರಸರಿಸುವುದು, ಹರಡುವುದು. "धर्मात्मोविसरविवर्तनैरिदानीम्" ಮಾಲತೀಂ 1-40 ।

**ವಿವರಣೆ** (ವಿಂ) ಕಷ್ಟದಲ್ಲಿ ಇರುವ, ತೊಂದರೆಯನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ವೃತ್



(ವರ್ತನೆ) “ಶಾನಕ್” (೩-೨-೧೨೪) । “ಭವಂತಮೇತಹಿ  
ಮನಸ್ವಿಗಾಹಿತೇ ವಿವರ್ಮಾನಂ ನರದೇವ ವರ್ಮನಿ” ಕಿರಾಂ ೧-೩೨ ।

**ವಿವರ್ಮಾವ ವಿವರ್ಮಾವ** (ಪುಂ) “ವಿವರ್ಮ” ಪದದ  
೨ನೇ ಅರ್ಥ ನೋಡಿ.

**ವಿವರ್ಮಯತ್ ವಿವರ್ಮಯತ್** (ವಿಂ) ತಿರುಗಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಹೊರಳಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) + ಣಿಕ್  
“ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । “ವಿವರ್ಮಯನ್ ಮದಕಲುಷೀಕೃತೇ  
ದೃಶೌ ಕರಾಹತಕ್ಷಿತಿಕೃತಮೇವಾರವಃ” ಮಾಘಂ ೧೭-೧೩ ।

**ವಿವರ್ಮಿತ ವಿವರ್ಮಿತ** (ವಿಂ) 1. ಮಂಡಲಾಕಾರವಾಗಿ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ವರ್ತುಲವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ)  
“ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । “ವಾಲ್ಮೀಕಿವಿವರ್ಮಿತ ವಿವರ್ಮಿತಃ  
ಸಮಂತಾತ್ ಆಧತ್ತ ಕನಕಮಯಾತಪತ್ರಲಕ್ಷ್ಮೀಮ್” ಕಿರಾಂ ೫-೩೯ ।  
2. ಹಿಮ್ಮುಖವಾಗಿ ತಿರುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮತ್ತೊಂದು ಕಡೆಗೆ  
ತಿರುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಅಯೋ ವಯಸ್ಯಾಂ ಪರಿಪಾಶ್ವವರ್ತಿನಿ  
ವಿವರ್ಮಿತಾನಃ ಜನನೇತ್ರಮೇಷತಃ” ಕುಮಾರಂ ೫-೫೧ । 3. ಹೊಡೆದು  
ಕೊಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಒರಟೊರಟಾಗಿ ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಸಂಸಕ್ತ-  
ಶ್ರುತಿವಿವರ್ಮಿತಾನಾಂ ಜಾಲವ್ಯಾಕೀರ್ಣಸ್ಕುರದಪವೃತ್ತರಂಜಣಃ”  
ಮಾಲತೀಂ ೩-೧೭ । 4. ಒಂದು ಸ್ಥಳದಿಂದ ಕದಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಒಂದು ಜಾಗದಿಂದ ನೂಕಲ್ಪಟ್ಟ. “ಜನೇಸ್ತದಾ ಯುಗಪರಿವರ್ಮ-  
ವಾಯುಭಿವಿವರ್ಮಿತಾ ಗಿರಿಪತಯಃ ಪ್ರತಿಯಿರೆ” ಮಾಘಂ ೧೭-೧೨ ।

**ವಿವರ್ಮಿನ್ ವಿವರ್ಮಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಹಿಂತಿರುಗುವ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ  
ಹೋಗುವ. ವಿವರ್ಮತೇ — ವಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) “ಣಿನಿಃ”  
(೩-೧-೧೩೪) । 2. ಸುತ್ತಲೂ ತಿರುಗುತ್ತಿರುವ, ಚಕ್ರ  
ದಂತೆ ಸುತ್ತುತ್ತಿರುವ. 3. ಹಿಮ್ಮುಖವಾಗಿ ತಿರುಗುವ,  
ಮುಖವನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತಿರುಗಿಸುವ.

**ವಿವರ್ಮನ ವಿವರ್ಮನ** (ನಂ) 1. ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು, ಅಧಿಕ  
ಗೊಳಿಸುವುದು. ವಿ + ವೃತು (ವೃದ್ಧಿ) + ಣಿಕ್ “ಲ್ಯುಡ್”  
(೩-೩-೧೧೫) । 2. ಬೆಳೆಸುವುದು. 3. ಹೆಚ್ಚುವುದು,  
ಅಧಿಕವಾಗುವುದು. ವಿ + ವೃತು “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) ।  
4. ಬೆಳೆಯುವುದು, ಬೆಳೆತ. 5. ಕತ್ತರಿಸುವುದು, ತುಂಡು  
ಮಾಡುವುದು. ವಿ + ವರ್ಷ (ಛೇದನೆ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) ।  
6. ತುಂಬುವುದು.

**ವಿವರ್ಮನೀಯ ವಿವರ್ಮನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಅಧಿಕಗೊಳಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. 2. ಅಧಿಕಗೊಳಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಅಧಿಕಗೊಳಿ  
ಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ಅಧಿಕಗೊಳಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ.  
5. ಬೆಳೆಸಲ್ಪಡುವ. 6. ಬೆಳೆಸಬೇಕಾದ. 7. ಬೆಳೆಸಲು  
ಅರ್ಹವಾದ. 8. ಬೆಳೆಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ವಿ + ವೃತು  
(ವೃದ್ಧಿ) + ಣಿಕ್ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । “ತವ್ಯಃ” ।  
—ವಿವರ್ಮನೀಯಃ —ವರ್ಧಿತವ್ಯಃ.

**ವಿವರ್ಮಮಾನ ವಿವರ್ಮಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಬೆಳೆಯುತ್ತಿರುವ.  
2. ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ, ಅಧಿಕವಾಗುತ್ತಿರುವ.  
ವಿ + ವೃತು (ವೃದ್ಧಿ) “ಶಾನಕ್” (೩-೨-೧೨೪) । ಣಿಕ್  
“ಶಾನಕ್” (೩-೨-೧೨೪) । —ವರ್ಮಮಾನಃ —ವರ್ಧಯ  
ಮಾನಃ. 3. ಬೆಳೆಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಅಧಿಕಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ.

**ವಿವರ್ಮಿತ ವಿವರ್ಮಿತ** (ವಿಂ) 1. ಬೆಳೆಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಅಧಿಕ  
ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ವೃತು (ವೃದ್ಧಿ) + ಣಿಕ್ “ಕ್ತಃ”  
(೩-೨-೧೦೨) । “ವೇಶ್ಯಾಸೀ ಮದನಜ್ವಾಲಾರೂಪೇಷವನ ವಿವರ್ಮಿತಾ”  
ಭರ್ತುಂ ೨-೫೯ । 3. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತುಂಡುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
4. ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ವರ್ಷ (ಛೇದನಪೂರಣಯೋಃ) “ಕ್ತಃ”  
(೩-೨-೧೦೨) । (ನಂ) 5. ಬೆಳೆವಣಿಗೆ. 6. ಅಧಿಕವಾಗು  
ವುದು. ವಿ + ವೃತು (ವೃದ್ಧಿ) “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೫) ।

**ವಿವರ್ಮ ವಿವರ್ಮ** (ವಿಂ) 1. ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಗೆ ಅಧೀನನಲ್ಲದವನು,  
ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಗೆ ವಶನಾಗದವನು, ಯಾರಿಗೂ ಅಡಗದಿರು  
ವವನು. ವಿವರ್ಮ ವಶಿ — ವಿ + ವಶ (ಕಾಂತೌ) “ಅಕ್”  
(೩-೧-೧೩೪) । 2. ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಗೆ ವಶನಾಗಿರುವವನು,  
ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಗೆ ಅಧೀನನಾಗಿರುವವನು. “ಭಯವಿಹ್ವಲಮಾಶು  
ದಂದಶೂಕೈವಿವರ್ಮೇರಾವಿವರ್ಮೇ ಸ್ವಮೇವ ಧಾಮ” ಮಾಘಂ ೨೦-೫೮ ।  
“ಮಿತ್ರಸ್ತೇಹಾದ್ವಿವರ್ಮಮಧುನಾ ಸಾಹಸೇ ಮಾ ನಿಯುಕ್ತೇ” ಮುಡ್ರಾಂ  
೬-೧೯ । 3. ಪ್ರಜ್ಞಾಶೂನ್ಯ, ಜ್ಞಾನತಪ್ಪಿದವನು.  
“ವಿವರ್ಮಾ ಕಾಮವರ್ಷವಿವರ್ಮಿತಾ” ಕುಮಾರಂ ೪-೧ । 4. ಅಶುಭ  
ದಿಂದ ಹೆದರಿದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. 5. ಗತಿಸಿದ, ಪಂಚತ್ವ  
ವನ್ನು ಹೊಂದಿದ. “ಉಪಲಂಘವತೀ ದಿವಶ್ರಯುತಂ ವಿವರ್ಮಾ  
ಶಾಪನಿವೃತ್ತಿಕಾರಣಮ್” ರಘುಂ ೮-೮೨ ।

**ವಿವರ್ಮನ ವಿವರ್ಮನ** (ವಿಂ) ದಿಗಂಬರ, ವಸ್ತ್ರವನ್ನು ಧರಿಸ  
ದಿರುವವನು. ವಿಗತಂ ವರ್ಮನಂ ಯಸ್ಯ ।

**ವಿವರ್ಮವತ್ ವಿವರ್ಮವತ್** (ಪುಂ) 1. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ, ವಿವಿಧ  
ವಸ್ತು ಆಚ್ಛಾದಯತಿ — ವಸ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) “ವಿವರ್”  
(೩-೨-೭೬) । ವಿವರ್ಮ ರಶ್ಮಿಃ । ವಿವರ್ಮಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್”  
(೫-೨-೯೪) । “ವಿವರ್ಮತಾನಾಂ ಯಿಷತೇವ ಮಿಶ್ರಾಃ ಸ್ವಗೋ-  
ಸಹಸ್ರೇಣ ಸಮಂ ಜನಾನಾಂ । ಗಾವೋಽಪಿ ನೇತ್ರಾಪರನಾಮಧೇಯಾಸ್ತೇನೇದ-  
ಮಾನ್ಯಂ ಕ್ಷಲು ನಾನ್ವಕಾರೇಃ” ನೆಪಂ ೨೨-೩೪ । 2. ದೇವತೆ.  
3. ಅರುಣ. 4. ವೈವಸ್ವತಮನು. 5. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ,  
ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ತೀ —ತೀ. 6. ಸೂರ್ಯನ ನಗರ.  
“ವಿವರ್ಮಾನ್ ವಿವರ್ಮೇ ಸೂರ್ಯ ತನ್ನಗಯಾ ವಿವರ್ಮತೀ” ಮೇದಿಂ ।

**ವಿವರ್ಮ ವಿವರ್ಮ** (ಪುಂ) ಸಪ್ತವಾಯುಗಳಲ್ಲೊಂದು. ವಿವರ್ಮತಿ  
—ವಿ + ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಅಕ್” (೩-೧-೧೩೪) ।



“ಆವಹೋ ವಿವಹಸ್ಯೇವ ಪ್ರವಹಸ್ಯ ಸಮೀರಣಃ। ಪರಾವಹಃ  
ಸಂವಹಸ್ಯ ಉದ್ವಹಸ್ಯ ಮಹಾಬಲಃ। ತಥಾ ಪರಿವಹಃ ಶ್ರೀಮಾನ್”  
ಇವು ಸಪ್ತವಾಯುಗಳು.

**ವಿವಾದ ವಿನಾದ** (ಪುಂ) 1. ವ್ಯವಹಾರ, ವ್ಯಾಜ್ಯ, ಹೋರಾಟ.  
ವಿರುದ್ಧೋ ವಾದಃ। ಅಸ್ತಿಯ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ನಡೆಸುವ ಮತ್ತು  
ಬೇರೆ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ ಮೊಕದ್ದಮೆ. “ವಿವಾದೇ-  
ನ್ವಿವ್ಯತೇ ಪತ್ರಂ ತದಭಾವೇಽಪಿ ಸಾಕ್ಷಿಣಃ” ಪञ्ಚತಂ ೧-೪೩೬।  
2. ವಾಗ್ವಾದ, ವಾಗ್ವಾದ್ಯ, ಕಲಹ. “ಅಲಂ ವಿವಾದೇನ  
ಯಥಾಶ್ರುತಸ್ತ್ವಯಾ ತಥಾವಿಧಸ್ತಾವದಶೇಷಮಸ್ತು ಸಃ” ಕುಮಾಂ  
೪-೮೨। 3. ಚರ್ಚೆ, ವಾಗ್ವಾದದಿಂದ ವಿಚಾರಮಾಡು  
ವುದು. 4. ಅಜ್ಞಾಪಚನ, ರಾಜನ ಅಜ್ಞೆ. “ತಸ್ಯಾ-  
ನನಾದುಚ್ಚರಿತೋ ವಿವಾದಶ್ಚಸ್ವಾಲ ವೇಲಾಸ್ವಪಿ ನಾರ್ಣವಾನಾಮ್”  
ರಘುಂ ೧೮-೪೩। ವಿವಾದಕ್ಕೆ ಹದಿನೆಯು ವಿಧ ಅವಕಾಶ  
ಗಳಿರುವವು. [“ಅಷ್ಟಾದಶವಿವಾದಪದ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ವಿವಾದಿನ್ ವಿನಾದಿನ್** (ಪುಂ) 1. ನ್ಯಾಯಾಲಯದಲ್ಲಿ  
ವ್ಯಾಜ್ಯವನ್ನು ಹೊಡಿರುವ ವಾದಿ, ಕಕ್ಷಿಗಾರ, ವ್ಯವಹಾರ  
ದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿರುವವನು. ವಿವಾದೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ — ವಿವಾದ  
“ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪)। (ವಿಂ) 2. ಚರ್ಚೆಮಾಡು  
ವವನು. 3. ಜಗಳಮಾಡುವವನು.

**ವಿವಾರ ವಿನಾರ** (ಪುಂ) ವಿಕಾಸಹೊಂದುವುದು, ಅಗಲವಾಗು  
ವುದು. ಇದು ವರ್ಣೋತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಕಂಠದಲ್ಲಿ  
ನಡೆಯುವ ಪ್ರಯತ್ನಗಳಲ್ಲೊಂದು. (1) ವಿವಾರಃ  
(2) ಸಂವಾರಃ (3) ಇವಾಸಃ (4) ನಾದಃ (5) ಘೋಷಃ (6) ಅಘೋಷಃ  
(7) ಅಲ್ಪಪ್ರಾಣಃ (8) ಮಹಾಪ್ರಾಣಃ (9) ಉದಾತ್ತಃ (10) ಅನುದಾತ್ತಃ  
ಮತ್ತು (11) ಸ್ವರಿತಃ ಇವು ವರ್ಣೋಚ್ಚಾರಣೆಗೆ ಪೂರ್ವ  
ದಲ್ಲಿ ಬಾಯೊಳಗೆ ಕಂಠದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ ಪ್ರಯತ್ನಗಳು.

**ವಿವಾಹ ವಿನಾಹ** (ಪುಂ) ಪರಿಣಯ, ಮದುವೆ. ವಿಶಿಷ್ಟ  
ವಹನಮ್ — ವಿ + वह (ಪ್ರಾಪಣೆ) “वह्” (೩-೩-೧೮)।  
“वधूं द्विजः प्राह तवैष वत्से वह्निर्विवाहं प्रति  
कर्मसाक्षी” ಕುಮಾಂ ೭-೮೩। ವಿವಾಹವು (1) ಬ್ರಾಹ್ಮಃ  
(2) ದೈವಃ (3) ಆರ್ಷಃ (4) ಪ್ರಾಜಾಪತ್ಯಃ (5) ಆಸುರಃ  
(6) ಗಾಂಧರ್ವಃ (7) ರಾಕ್ಷಸಃ ಮತ್ತು (8) ಪೆಶಾಚಃ ಎಂದು  
ಎಂಟು ವಿಧ. [ವಿವರಕ್ಕೆ ಆಯಾಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ವಿವಾಹಿತ ವಿನಾಹಿತ** (ವಿಂ) ವಿವಾಹಮಾಡಿಕೊಂಡವನು,  
ಮದುವೆಯಾದವನು. ವಿವಾಹೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ “ಇತಚ್”  
(೪-೨-೩೬)।

**ವಿವಾಹ್ಯ ವಿನಾಹ್ಯ** (ವಿಂ) ವಿವಾಹವಾಗಲು ಯೋಗ್ಯ—  
(1) ವಧೂ (2) ವರ. ವಿ + वह (ಪ್ರಾಪಣೆ) “व्यत्”  
(೩-೧-೧೨೪)।

**ವಿವಿಕ್ತ ವಿವಿಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ನಿರ್ಜನವಾದ, ಜನಗಳ ಸಂಚಾರ  
ವಿಲ್ಲದ. ವಿವಿಚ್ಛಂತಿ ಜನಾ ಅತ್ರ—ವಿ+विचिर् (ಪ್ರಥಮಾವೇ)  
“क्तः” (೩-೪-೭೬)। “ವಿವಿಕ್ತದೇಶಸೇವಿತ್ವಮರತಿರ್ಜನ-  
ಸಂಸದಿ” ಗೀತಾ ೧೩-೧೦। 2. ಸ್ವಚ್ಛವಾದ, ನಿರ್ಮಲ  
ವಾದ. “प्रत्यग्रमज्जनविशेषविविक्तकान्तिः कौसुम-  
रागरुचिरस्फुरदंशुकान्ता” ರತ್ನಾಂ ೧-೨೧। 3. ತೇವ  
ವಿಲ್ಲದ, ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಅಂಟಿಕೊಳ್ಳದೆ ಧೂಳಾಗಿರುವ.  
“पुनरुषसि विविक्तैर्मतिरिश्वाञ्चूर्णं ज्वलयति मदनाग्नि  
मालतीनां रजोभिः” ಮಾಧಂ ೧೧-೧೭। 4. ರಹಿತವಾದ,  
ತೊನ್ನವಾದ. “प्रसन्नदिक्पांसुविविक्तवातं शङ्खस्वना-  
नन्तरपुष्पवृष्टि” ಕುಮಾಂ ೧-೨೩। 5. ಒಂಟಿಯಾಗಿರುವ,  
ಏಕಾಕಿಯಾಗಿರುವ. 6. ಪರಿಶುದ್ಧವಾದ. 7. ವಿವೇಕಿ  
ಯಾದವನು. “विविक्तं त्रिवसंपृक्ते रहःपूतविवेकिषु”  
ಮೇದಿಂ। 8. ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿರುವ, ಒಂದಕ್ಕೊಂದು  
ಸೇರದಿರುವ, ಸ್ಪೃಟವಾದ ಉಚ್ಚಾರಣೆಯುಳ್ಳ. “विविक्त-  
वर्णाभिरणा सुखश्रुतिः” ಕಿರಾಂ ೧೪-೩। 9. ದೋಷ  
ವಿಲ್ಲದ, ಕಳಂಕವಿಲ್ಲದ. “स तर्कयामास विविक्ततर्कः”  
ಕಿರಾಂ ೧೬-೧। (ನಂ) 10. ಏಕಾಂತ, ರಹಸ್ಯ.  
“विविक्तं स्यादसंपृक्ते विवेकान्वितपूतयोः। वाच्य-  
वर्द्देशतो धीरैर्विविक्तं रहसि स्मृतम्” ವಿಶ್ವಂ।  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) —क्ता —क्ता. 11. ದುರದೃಷ್ಟ ಹೆಂಗಸು,  
ಪತಿಯನ್ನು ಪ್ರೀತಿಸದ ಹೆಂಗಸು.

**ವಿವಿಕ್ತತ್ ವಿವಿಕ್ತತ್** (ವಿಂ) ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ಒಳಗೆ ಹೋಗಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿಶ  
(ಪ್ರವೇಶನೆ) + ಸನ್ “शतृ” (೩-೨-೧೨೪)।

**ವಿವಿಕ್ಷಾ ವಿವಿಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಒಳಗೆ  
ಹೋಗಲು ಆಸೆ. ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) + ಸನ್ “अः”  
(೩-೩-೧೦೨)।

**ವಿವಿಕ್ಷು ವಿವಿಕ್ಷು** (ವಿಂ) ಒಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ  
ಸುವ. ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) + ಸನ್ “उः” (೩-೨-೧೬೮)।  
“कामस्तु बाणावसरं प्रलीक्ष्य पतङ्गवद्वह्निमुखं विविक्षुः”  
ಕುಮಾಂ ೩-೬೪।

**ವಿವಿಗ್ನ ವಿವಿಗ್ನ** (ವಿಂ) ಹೆದರಿದ, ಭಯಗೊಂಡ. ವಿ+वि  
विजी (ಭಯಚಲನಯೋಃ) “क्तः” (೩-೪-೭೨)। “दृष्टः  
कथंचिद्गवयैर्विविग्नैरसोढांसिहव्वनिरुन्ननाद” ಕುಮಾಂ  
೧-೪೬।

**ವಿವಿತ್ಸಾ ವಿವಿತ್ಸಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊಂದಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಪಡೆ  
ಯಲು ಆಸೆ. ವೇತ್ತುಮಿಚ್ಛಾ — विद् (ಲಾಭೆ) + ಸನ್



ವಿವೇಕಿನ್ ವಿವೇಕಿನ್ (ವಿಂ) 1. ವಿವೇಕವುಳ್ಳವನು,  
ವಿವೇಚನೆಯುಳ್ಳವನು, ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿ ಪರಿಶೀಲಿಸುವವನು.  
ವಿವೇಕೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪) । “ದಕ್ಷಿಣಿ  
ಭವತಿ ವಿವೇಕೀ ಪ್ರಿಯವಕ್ತಾ ಭವತಿ ಧೂತಂಜನ:” ಪಂಚತಂ  
೧-೪೪೧ । 2. ವಸ್ತುಸ್ವರೂಪವನ್ನರಿತವನು, ತಾರತಮ್ಯ  
ಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು, ವಿವೇಕಶಾಲಿ.



**ವಿವೇಕತ್ ವಿವೇಕ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ವಿವೇಚನೆಮಾಡುವವನು, ವಿಮರ್ಶಮಾಡುವವನು, ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿ ಪರಿಶೀಲಿಸುವವನು. ವಿ+ವಿಚಿರ್ (ಪೃಥಗ್ಭಾವೇ) "ತೃಚ್" (3-1-133)।

2. ಪೃಥಕ್ಕರಿಸುವವನು, ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಮಾಡುವವನು.

**ವಿವೇಚಕ ವಿವೇಚಕ** (ಪುಂ) "ವಿವೇಕತ್" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ವಿ + ವಿಚಿರ್ (ಪೃಥಗ್ಭಾವೇ) "ಫ್ವಲ್" (3-1-133)।

**ವಿವೇಚನ ವಿವೇಚನ** (ನಂ) 1. ವಿಚಾರಮಾಡುವುದು, ವಿಮರ್ಶಿಸುವುದು, ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿ ಪರಿಶೀಲಿಸುವುದು.

ವಿ + ವಿಚಿರ್ (ಪೃಥಗ್ಭಾವೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

2. ನಿರ್ಣಯ, ತೀರ್ಮಾನ. "ಯಸ್ಯ ಶೂದ್ರಸ್ತು ಕುಸ್ತೇ ರಾಜೋ ಭರ್ಮವಿವೇಚನಮ್ | ತಸ್ಯ ಸಿದತಿ ತದ್ರಾಷ್ಟ್ ಪಕ್ಷೇ ಗೌರಿವ ಪश्यತಃ" ಮನುಂ ೮-೨೧।

**ವಿವೇಚನೀಯ ವಿವೇಚನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ವಿಮರ್ಶಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ವಿವೇಚನೆಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ವಿವೇಚನೆ ಮಾಡಬಹುದಾದ. 4. ನಿರ್ಣಯಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ನಿರ್ಣಯಿಸಬೇಕಾದ. 6. ನಿರ್ಣಯಿಸಬಹುದಾದ. ವಿ+ವಿಚಿರ್ (ಪೃಥಗ್ಭಾವೇ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। "ತವ್ಯಃ"। -ವೇಕ್ಷಣ್ಯಮ್ -ವೇಕ್ಷಣ್ಯಮ್.

**ವಿವೋದ್ ವಿವೋದ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ವರ, ಗಂಡ, ಮದುವೆಯಾದವನು. ವಿ + ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ತೃಚ್" (3-1-133)। "आवरिष्ट विकटेन विवोदुर्वक्षसेव कुचमण्डलमन्या" ಮಾಘಂ 10-42। 2. ಅಳಿಯ, ಪುತ್ರಿಯ ಪತಿ.

**ವಿಶ್ ವಿಶ್** (ಪುಂ) 1. ವೈಶ್ಯ, ತೃತೀಯ ವರ್ಣದವನು. ವಿಶತಿ — ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (3-2-134)। "केशान्तिको ब्राह्मणस्य दण्डः कार्यः प्रमाणतः | ललाट संमितो राज्ञः स्यात् नृणां न्तिको विशः" ಮನುಂ ೨-೪೬। 2. ಮಾನವ, ಮನುಷ್ಯ. "विट् पुंसि मनुजे वैश्ये" ಮೇದಿಂ। "अय प्रदोषे दोषज्ञः संवेशाय विशापतिम् | सूनुः सूनृतवाक् सष्टुर्विससर्जोर्जितश्रियम्" ರಘುಂ 1-೯೩। 3. ಪ್ರವೇಶ. "विट् स्मृतो वैश्यमनुजप्रवेशो तु मनीषिभिः" ವಿಶ್ವಂ।

**ವಿಶ ವಿಶ** (ನಂ) ಮೃಣಾಳ, ತಾವರೆಯ ದಂಟು. ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೇ) "ಕಃ" (3-1-134)। "पयनालं मृणालं स्यात्तथा विशमिति स्मृतम्" ಭಾವಪ್ರಂ।

**ವಿಶಕಲಿತ ವಿಶಕಲಿತ** (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ವಿವೇಚನೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಯೋಚಿಸಿ ವಿಮರ್ಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "इति विश-कलितार्थमौद्धवीं वाचमेनाम्" ಮಾಘಂ ೨-೧೧೮।

**ವಿಶಕ್ತ ವಿಶಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಭಯವಿಲ್ಲದ, ಹೆದರಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. ವಿಗತಾ ಶಕ್ತಾ ಯಸ್ಯ। "अनुभूतोऽप्यस्य दयार्द्रभाव-

माख्यातमन्तःकरणैर्विशक्तेः" ರಘುಂ ೨-೧೧। 2. ಸಂಶಯವಿಲ್ಲದ. (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3. ಭಯವಿಲ್ಲದೆ, ಹೆದರಿಕೆಯಿಲ್ಲದೆ. 4. ಸಂಶಯವಿಲ್ಲದೆ. "वारुणीमदविशङ्कमथाविश्रक्षुषोऽभवदसाविव रागः" ಮಾಘಂ 10-19।

**ವಿಶಕ್ತ ವಿಶಂಕಟ** (ವಿಂ) 1. ದೊಡ್ಡದಾದ, ಬೃಹತ್ತಾದ. ವಿ "ಶಕ್ತತ್" (4-2-24)। 2. ವಿಶಾಲವಾದ, ವಿಸ್ತಾರವಾದ, ಅಗಲವಾದ. "विशङ्कटो वक्षसि वाणपाणिः संपन्नतालद्वयसः पुरस्तात्" ಭಟ್ಟಿಂ ೨-೪೦। 3. ಭಯಂಕರವಾದ, ಕರಾಳವಾದ, ರೌದ್ರ. 4. ಬಲಶಾಲಿ, ಪ್ರಚಂಡ. (ಅವ್ಯಂ) 5. ವಿಶಾಲವಾಗಿ. 6. ದೊಡ್ಡದಾಗಿ. 7. ಭಯಂಕರವಾಗಿ.

**ವಿಶಕ್ತನೀಯ ವಿಶಂಕನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಊಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಊಹಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಊಹಿಸಬಹುದಾದ. 4. ಊಹಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ವಿ + ಶಕಿ (ಶಕ್ತಾಯಾಮ್) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। "तव्यः"। -ಶಕ್ತಿಯವ್ಯಃ -ಶಂಕಿತವ್ಯಃ। 5. ಹೆದರಬೇಕಾದ, ಭಯಪಡಬೇಕಾದ.

**ವಿಶಕ್ತಮಾನ ವಿಶಂಕಮಾನ** (ಪುಂ) 1. ಊಹಿಸುವ, ಸಂದೇಹಪಡುವ. ವಿಶಕ್ತೇ — ವಿ + ಶಕಿ (ಶಕ್ತಾಯಾಮ್) "ಶಾನಚ್" (3-2-124)। "विशङ्कमानो भवतः पराभवं नृपासनस्थोऽपि वनाधिवासिनः" ಕಿರಾಂ 1-೭। 2. ಹೆದರುವ, ಭಯಪಡುವ.

**ವಿಶಕ್ತಾ ವಿಶಂಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ. 2. ಶಂಕೆ, ಸಂದೇಹ, ಊಹೆ. ವಿ+ಶಕಿ (ಶಕ್ತಾಯಾಮ್)

**ವಿಶಕ್ತ ವಿಶಂಕಿತ** (ವಿಂ) ಊಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂದೇಹಪಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಶಕಿ (ಶಕ್ತಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

**ವಿಶಕ್ತಿನ್ ವಿಶಂಕಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಊಹಿಸುವ, ಸಂದೇಹಪಡುತ್ತಿರುವ. ವಿಶಕ್ತಾಸ್ತಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (4-2-114)। "पश्यन् प्रतिद्विरदकुम्भविशङ्किचेताः" ಮಾಘಂ 4-34। 2. ಹೆದರುವ, ಭಯಪಡುವ.

**ವಿಶಕ್ತ ವಿಶಂಕ್ಯ** (ವಿಂ) ಊಹಿಸಲ್ಪಡುವ. ವಿ+ಶಕಿ (ಶಕ್ತಾಯಾಮ್) "ಞತ್" (3-1-124)।

**ವಿಶತ್ ವಿಶತ್** (ವಿಂ) ಪ್ರವೇಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ಒಳಗೆ ಹೋಗುತ್ತಿರುವ. ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೇ) "ಶತ್" (3-2-124)। "विशन्तो वाहिनीं तस्य त्रिस्रोतसमिवापराम्" ಯಾದಂ ೨೨-೧೪೫। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (4-1-6)। -ತೀ -ತೀ, -ಂತೀ -ಂತೀ.

**ವಿಶದ ವಿಶದ** (ವಿಂ) 1. ಶುಭ್ರವಾದ, ಸ್ವಚ್ಛವಾದ, ನಿರ್ಮಲವಾದ. ವಿ + ಶದ್ (ಶಾತನೇ) "ಅಚ್"



(೩-೧-೧೩೪) 1. "ವಿಶದಪ್ರಭಾಪರಿಗತಂ ವಿಶದವ್ಯಾಚಲ-  
ವ್ಯವಹಿತೇಂದ್ರವು:" ಮಾಘಂ ೧-೨೬ 2. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ,  
ಹೊಳೆಯುವ. "ಔಷಸ್ತಾಂಬೂಲಧೃತಿವಿಶದೋ ವಿಲಾಸಿನಿ-  
ನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೮-೨೦ 3. ನಿರ್ಮಲವಾದ, ಕೊಳೆ  
ಯಿಲ್ಲದ. "ಸ್ಪರ್ಶಭಾಜಿ ವಿಶದದೃತಿಚಾರೌ ಕಲ್ಪಿತೇ ಮೃಗದೃಶಾ  
ಸುರತಾಯ" ಮಾಘಂ ೧೦-೩೯ 4. ಸ್ವಚ್ಛವಾದ, ಸಂಶಯ  
ವಿಲ್ಲದ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ. 5. ಬಿಳಿಯ, ಶ್ವೇತವರ್ಣದ. "ತತೋ-  
ನುಕುರ್ಯಾದಿಶದಸ್ಯ ತಸ್ಯಾಸ್ತಾಂಘ್ರಿಷ್ಠಪರ್ಯಸ್ತರಚಃ ಸ್ಮಿತಸ್ಯ"  
ಕುಮಾರಂ ೧-೪೪ 6. ಸ್ಪುಟವಾದ, ವ್ಯಕ್ತವಾದ. "ವಿಶದೋ-  
ಚ್ಛಸಿತೇನ ಮೇದಿನಿ ಕಥಯಾಮಾಸ ಕೃತಾರ್ಥತಾಮಿವ" ರಘುಂ  
೮-೩ 7. ನೆಮ್ಮದಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಚಿಂತೆಯಿಲ್ಲದ.  
"ಜಾತೋ ಮಮಾಯಂ ವಿಶದಃ ಪ್ರಕಾಮಮ್" ಶಾಕುಂ ೪-೨೧  
(ಅವ್ಯಂ) 8. ಸ್ವಚ್ಛವಾಗಿ, ವ್ಯಕ್ತವಾಗಿ, ಸ್ಪುಟವಾಗಿ.  
"ಮಧುಮರ್ದನಗೀತಗರ್ಭಯಾ ತದ್ವಿಶದಂ ನಾರದವೀಣಯಾನ್ವವಾದಿ"  
ಯಾದಂ ೧೫-೮೬ 9. ನಿರ್ಮಲವಾಗಿ. 10. ಸಂಶಯ  
ವಿಲ್ಲದೆ. (ಫುಂ) 11. ಶ್ವೇತವರ್ಣ, ಬಿಳಿಯಬಣ್ಣ.

**ವಿಶದನ ವಿಶದನ** (ನಂ) 1. ವಿಶದಪಡಿಸುವುದು, ಸ್ಪಷ್ಟ  
ಪಡಿಸುವುದು, ಸ್ಪುಟವಾಗಿ ತಿಳಿಸುವುದು. ವಿ + ಶದಲ್  
(ಶಾತನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) 2. ಸ್ವಚ್ಛವಾಗಿ  
ಮಾಡುವುದು, ತಿಳಿಯಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. 3. ಕೊಳೆಯಿಲ್ಲ  
ದಂತೆ ಮಾಡುವುದು.

**ವಿಶದನೀಯ ವಿಶದನೀಯ** (ವಿಂ) ವಿಶದಪಡಿಸಬೇಕಾದ,  
ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸಬೇಕಾದ. ವಿ + ಶದಲ್ (ಶಾತನೆ) "ಅನೀಯರ್"  
(೩-೧-೧೬) 1

**ವಿಶದೀಕರಣ ವಿಶದೀಕರಣ** (ನಂ) ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸುವುದು,  
ಸ್ಪುಟವಾಗಿ ತಿಳಿಸುವುದು. ವಿ + ಶದಲ್ (ಶಾತನೆ)  
+ ಕೃ (ಕರಣ) "ಚ್ವಿ:" (೫-೪-೫೦) 1 "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೫) 1

**ವಿಶದ್ವನ ವಿಶದ್ವನ** (ನಂ) ಶಬ್ದದಿಂದ ಅಭಿಪ್ರಾಯ  
ಪ್ರಕಾಶನ, ಶಬ್ದದಿಂದ ಅಭಿಪ್ರಾಯ ತಿಳಿಸುವುದು. "ಶಬ್ದೇನ  
ಅಭಿಪ್ರಾಯಪ್ರಕಾಶನಂ ವಿಶದ್ವನಮ್" ಬಾಲಮನೋರಮಾ 1 "ಛುರ್-  
ವಿಶದ್ವನೇ" ಪಾಂ ಸುಂ ೭-೨-೨೩ 1

**ವಿಶಯ ವಿಶಯ** (ಫುಂ) 1. ಸಂಶಯ, ಸಂದೇಹ. ವಿ + ಶಿಙ್  
(ಸ್ವಪ್ನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) 1 ಇದು ಮೀಮಾಂಸಾ  
ಶಾಸ್ತ್ರದ ಅಧಿಕರಣಾಂಗಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಅಧಿಕರಣ"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ. 2. ಆಶ್ರಯ, ರಕ್ಷಣಾಲಯ.

**ವಿಶಯಿನ್ ವಿಶಯಿನ್** (ವಿಂ) ಸಂಶಯವುಳ್ಳ, ಸಂದೇಹ  
ವುಳ್ಳ. ವಿಶಯೋಽಸ್ಮಿ— "ಇನಿ:" (೫-೨-೧೧೫) 1

**ವಿಶರ ವಿಶರ** (ಫುಂ) 1. ವಧೆ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. ವಿ + ಶು  
(ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭) 1 2. ತುಂಡು  
ಮಾಡುವುದು, ಹರಿದುಹಾಕುವುದು.

**ವಿಶರಣ ವಿಶರಣ** (ನಂ) ವರಾಣ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. ವಿ + ಶು  
(ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) 1

**ವಿಶರಾರ ವಿಶರಾರು** (ವಿಂ) ಚೂರುಚೂರಾಗಿ ಬಿದ್ದಿರುವ,  
ಚೆಲ್ಲಾಪಿಲ್ಲಿಯಾಗಿ ಬಿದ್ದಿರುವ. ವಿ + ಶು (ಹಿಸಾಯಾಮ್)  
"ಆಹ:" (೩-೨-೧೭೨) 1 "ತನುತರವಿಶಿಖರಿತಾಙ್ಗನ-  
ವಿಘಟಿತವಿಶರಾರುತಾಟಕಾತಾಟಕೇ" ರಘುಂ ೧೦ 1

**ವಿಶಲ್ಯ ವಿಶಲ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಶಲ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಗೂಟವಿಲ್ಲದ,  
ಮೊನಚಾದ ಸಲಾಕೆಯಿಲ್ಲದ. ವಿಗತಂ ಶಲ್ಯಂ ಯಸ್ಮಾತ್ 1  
2. ಆತಂಕವಿಲ್ಲದ, ಕಳವಳವಿಲ್ಲದ. 3. ನೋವಿಲ್ಲದ.  
4. ಚೂಪಾದ ಬಾಣವಿಲ್ಲದ. "ವಿಶಲ್ಯೋ ವಿಶ್ವಃ ಶೋಘ-  
ಮುರ್ದಿತಾಙ್ಗಮಹಿತಲಾತ್" ರಾಮಾಂ 1

**ವಿಶಲ್ಯಕರಣಿ ವಿಶಲ್ಯಕರಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇಹದಲ್ಲಿನ  
ಸಮಸ್ತ ನೋವು ಮತ್ತು ವ್ಯಾಧಿಗಳನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವ  
ಒಂದು ಔಷಧ. ವಿಶಲ್ಯಂ ಕ್ರಿಯತೇನಯಾ 1 ವಿಶಲ್ಯ + ಕೃ  
(ಕರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) 1

**ವಿಶಲ್ಯಾ ವಿಶಲ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. 2.  
ಜಾಪಾಳದ ಗಿಡ. 3. ಬೆಣ್ಣೆಬಿದಿರು. 4. ಅಜಪಾನ.  
5. ಸಣ್ಣಯಾಲಕ್ಕಿ.

**ವಿಶಸನ ವಿಶಸನ** (ಫುಂ) 1. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. ವಿಶಸತಿ—  
ವಿ + ಶಸು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) 1 ಖಡ್ಗದ  
ಎಂಟು ಹೆಸರುಗಳು: (1) ಅಸಿ: (2) ವಿಶಸನ:  
(3) ಖಜ್ಜ: (4) ತೀಕ್ಷ್ಣಧಾರ: (5) ದುರಾಸದ: (6) ಶ್ರೀಗರ್ಭ:  
(7) ವಿಜಯ: ಮತ್ತು (8) ಧರ್ಮಪಾಲ: 1 (ನಂ) 2. ವರಾಣ,  
ಕೊಲ್ಲುವುದು. ವಿ + ಶಸು "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) 1  
"ತಸ್ಯಾಸ್ತ್ವದ್ಧುಹಿತುಸ್ತಥಾ ವಿಶಸನಂ ಕಿ ದಾರುಣೇ ಮೃತ್ಯುಯಾ:"  
ತಂ ರಾಂ ೪-೫ 1

**ವಿಶಸಿತ ವಿಶಸಿತ** (ವಿಂ) ವಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ.  
ವಿ + ಶಸು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) 1

**ವಿಶಸ್ತ ವಿಶಸ್ತ** (ವಿಂ) ಅವಿನೀತ, ದಿಟ್ಟತನವುಳ್ಳವನು.  
ವಿ + ಶಸು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) 1 ಅವಿನಯೇ  
ಇಡಾಗಮಾಭಾವ: (೭-೨-೧೯) 1

**ವಿಶಸ್ತು ವಿಶಸ್ತು** (ಫುಂ) ವಧಿಸುವವನು, ಕೊಲ್ಲುವವನು,  
ಕೊಚ್ಚ. ವಿ + ಶಸು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩) 1  
"ಆಹರ್ತಾ ಚಾನುಮಂತಾ ಚ ವಿಶಸ್ತಾ ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಿ 1 ಸಂಸ್ಕರ್ತಾ  
ಚೋಪಭೋಕ್ತಾ ಚ ಖಾದಕ: ಸರ್ವ ಏವ ತೇ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ 1



**ವಿಶಾಖ ವಿಶಿಷ್ಟ** (ವಿಂ) ಆಯುಧವಿಲ್ಲದವನು, ಆಯುಧವನು ಧರಿಸದಿರುವವನು.

**ವಿಶಾಖ ವಿಶಾಖ** (ಪುಂ) 1. ಷಣ್ಮುಖ, ಸ್ಕಂದ, ಕುಮಾರ ಸ್ವಾಮಿ. ವಿಶಾಖಾಂ ಜಾತ: "ಅಣ್" (೪-೩-೧೬) | ಅಣೋ ಲುಕ್ (೪-೩-೩೪) | ಸ್ತ್ರೀಪ್ರತ್ಯಯಸ್ಯ ಲುಕ್ (೧-೨-೪೯) | 2. ಯಾಚಕ, ಭಿಕ್ಷುಕ. "ವಿಶಾಖೋ ಯಾಚಕೇ ಸ್ಕಂದೇ ವಿಶಾಖಾ ಭೇ ಕಠಿಲ್ಲಕೇ" ಹೇಮಂ | (ವಿಂ) 3. ಶಾಖೆಯಿಲ್ಲದ, ರಂಜೆಯಿಲ್ಲದ. ವಿಗತಾ ಶಾಖಾ ಯಸ್ಯ |

**ವಿಶಾಖಾ ವಿಶಾಖಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿಶಾಖಾನಕ್ಷತ್ರ, ಅಶ್ವಿನೀ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಹದಿನಾರನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ. ವಿಶಾಖತಿ - ಶಾಖ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೀ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | ಇದು ಇಂದ್ರಾಗ್ನಿದೇವತಾಕವಾದ ನಕ್ಷತ್ರ. ವ್ಯಾಘ್ರಯೋಗಿಗೆ ಸೇರಿದುದು. ರಾಕ್ಷಸಗಣ. ಈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವರಿಗೆ ಜನ್ಮಕಾಲದಲ್ಲಿ ಗುರುದಶೆಯು ಪ್ರಾರಂಭವಾಗುವುದು. ಈ ದಶೆಯ ಪ್ರಮಾಣ ಹದಿನಾರು ವರ್ಷಗಳು. ವಿಶಾಖಾನಕ್ಷತ್ರದ ಮೊದಲ ಮೂರು ಪಾದಗಳು ತುಲಾರಾಶಿಗೂ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಪಾದವು ವೃಶ್ಚಿಕ ರಾಶಿಗೂ ಸೇರಿದುದು. 2. ಹಾಗಲಗಿಡ. "ವಿಶಾಖಾ ಭೇ ಕಠಿಲ್ಲಕೇ" ಹೇಮಂ |

**ವಿಶಾತನ ವಿಶಾತನ** (ನಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಬೀಳಿಸುವುದು, ಕೆಳಗೆ ತಳ್ಳುವುದು. ವಿ + ಶದ್ (ಶಾತನೆ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | "ಯತಮಾನಾಃ ಪ್ರಯತ್ನೇನ ದ್ರೋಣಾನಿಕವಿಶಾತನೇ" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೧೩-೨೦ | 2. ಕತ್ತರಿಸುವುದು, ಸೀಳುವುದು. 3. ಚೂಪುಮಾಡುವುದು, ಹರಿತವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. (ವಿಂ) 4. ಬಿಡುಗಡೆಮಾಡಿಸುವವನು, ಬಂಧನದಿಂದ ಬಿಡಿಸುವವನು. ವಿ+ಶದ್+ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) | "ನಮಸ್ತೇ ದೇವದೇವೇಶ ಸನಾತನ ವಿಶಾತನ" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೮೩-೧೮ |

**ವಿಶಾಯ ವಿಶಾಯ** (ಪುಂ) ಕಾವಲುಗಾರನು ಸರದಿಯಂತೆ ಮಲಗುವುದು. ವಿ + ಶಿಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಛನ್" (೩-೩-೩೯) | "ಅಪಶಾಯೋ ವಿಶಾಯಶ್ಚ ಪರ್ಯಾಯಶಯನಾರ್ಥಕೌ" ಅಮಂ |

**ವಿಶಾರಣ ವಿಶಾರಣ** (ನಂ) 1. ಸಂಹರಿಸುವುದು, ಕೊಲ್ಲುವುದು. ವಿ+ಶ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) + ಸ್ವಾರ್ಥೇ ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಹರಿದುಹಾಕುವುದು, ಚೂರುಮಾಡುವುದು.

**ವಿಶಾರದ ವಿಶಾರದ** (ಪುಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ವಿದ್ಯಾವಂತ, ಪಂಡಿತ. 2. ಬುದ್ಧಿವಂತ, ಜಾಣ, ಕುಶಲ. ವಿಶಿಷ್ಟ:

ಶಾರದ: | "ವಿಶಾರದೋ ಬುಧೇ ಷುಷ್ಠೇ" ಹೇಮಂ | "ಅಜಿತಾ-ಧಿಗಮಾಯ ಮನ್ತ್ರಿಭಿರ್ಯುಜೇ ನೌತಿವಿಶಾರದೇರಜ:" ರಘುಂ ೮-೧೭ |

**ವಿಶಾಲ ವಿಶಾಲ** (ವಿಂ) 1. ದೊಡ್ಡದಾದ, ವಿಸ್ತಾರವಾದ, ಅಗಲವಾದ. ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಕಾಲನ್" (೩ಂ ೧-೧೧೫) | "ವಸನಮಪಿ ನಿಶಾಂತೇ ನೇಷ್ಯತೇ ತತ್ಪ್ರದಾತುಂ ರಥಚರಣವಿಶಾಲ-ಶ್ರೋಣಿಲೋಕ್ಷಣೇನ" ಮಾಘಂ ೧೧-೨೩ | 2. ಸಂಪತ್ತಮೃದ್ಧವಾದ. "ಪೂರ್ವೋದ್ವಿಷಾಮನುಸರ ಪುರೀಂ ಶ್ರೀವಿಶಾಲಾಂ ವಿಶಾಲಾಮ್" ಮೇಘಂ ೩೦ | 3. ಉನ್ನತದರ್ಜೆಯ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಘನವಾದ. (ಪುಂ) 4. ವಿಸ್ತಾರವಾದ ಮನೆಯ ಏಕದೇಶ, ಗೃಹದ ಒಂದು ಭಾಗ. "ಗೃಹೇವಿಶಾಲೇರಪಿ ಭೂರಶಾಲೇ:" ಮಾಘಂ ೩-೫೦ | 5. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. 6. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಪಕ್ಷಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ-ಲಾ. 7. ಉಜ್ಜಯಿನೀ ನಗರ. 8. ಹಾವುಮೆಕ್ಕಗಿಡ. "ವಿಶಾಲಾತ್ವಿನ್ದ್ರವಾರುಣ್ಯಾ-ಮುಜ್ಜಯಿನ್ಯಾನ್ತು ಯೋಷಿತಿ | ಮೃಗಪಕ್ಷಿಭಿದೋ: ಪುಂಸಿ ಪೃಥುಲೇತ್ವಮಿ-ಧೇಯವತ್" ಮೇದಿಂ | -ಲೀ-ಲೀ. 9. ಅಜವಾನ.

**ವಿಶಾಲಾಕ್ಷ ವಿಶಾಲಾಕ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ಮಹೇಶ್ವರ. 3. ಗರುಡ. ವಿಶಾಲೇ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯ "ಛನ್" (೫-೪-೧೧೩) | (ವಿಂ) 4. ವಿಸ್ತಾರವಾದ ನೇತ್ರಗಳುಳ್ಳ. "ವಿಶಾಲಾಕ್ಷೋ ಮಹೇಶ್ವರೇ | ತಾಕ್ಷ್ಯೇ ವಿಶಾಲನೇತ್ರೇ ಚ" ಹೇಮಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಅಕ್ಷಿ-ಅಕ್ಷಿ. 5. ಪಾರ್ವತಿ. 6. ಉತ್ತಮಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು.

**ವಿಶಿಖ ವಿಶಿಖ** (ಪುಂ) 1. ಶರ, ಬಾಣ. ವಿಶಿಷ್ಟಾ ಶಿಖಾ ಅಗ್ರಮಸ್ಯ | "ಅನಿಶಂ ನಿಜೇರಕರಣ: ಕರುಣಂ ಕುಸುಮೇಶ್ವರಪತಿ ಯದ್ವಿಶಿಖೇ:" ಮಾಘಂ ೯-೬೭ | 2. ಈಟಿ, ಭಲ್ಲೆ. (ವಿಂ) 3. ಶಿಖೆಯಿಲ್ಲದವನು, ಜುಟ್ಟಿಲ್ಲದವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಶಿಖಾ-ಶಿಖಾ. 4. ಮಾರ್ಗ, ರಸ್ತೆ. "ವಿಶಿಖಾಂತರಾಪ್ಯತಿಪಪಾತ ಸಪದಿ ಜವನೇ: ಸ ವಾಜಿಭಿ:" ಮಾಘಂ ೧೫-೭೦ | 5. ನೆಲ ಆಗಿಯುವುದು ಹುಲ್ಲು ಕೆತ್ತುವುದು ಮುಂತಾದ ಕಾರ್ಯಗಳಿಗಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಗುದ್ದಲಿ, ಸನಿಕೆ. 6. ಕದಿರು, ದಾರಸುತ್ತುವ ಆಸರೆ ಕಂಬಿ.

**ವಿಶಿಪ ವಿಶಿಪ** (ನಂ) 1. ಗೃಹ, ಮನೆ. ವಿಶಾನ್ಯತ್ರ-ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಕಪನ್" (೩ಂ ೩-೧೮೫) | 2. ದೇವಾಲಯ. 3. ರಾಜಭವನ. "ವಿಶಿಪಂ ಮಂದಿರಮ್" ಸಿಂ ಕೌಂ |

**ವಿಶಿಷ್ಟ ವಿಶಿಷ್ಟ** (ವಿಂ) 1. ಕೂಡಿರುವ, ಸೇರಿರುವ. ವಿ + ಶಿಪ್ಲ್ (ವಿಶೇಷಣೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | 2. ವಿಲಕ್ಷಣವಾದ, ವಿಶೇಷವಾದ, ಅಸಾಧಾರಣವಾದ. 3. ಹೊಂದಿರುವ, ಪಡೆದಿರುವ, 4. ಜ್ಞಾನದಿಂದ ಹಿರಿಯ ನಾದವನು. (ಪುಂ) 5. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ವಿಶಿಷ್ಯತೇ



ಸ್ವತಃ ಏವ ತದನುಪೇಕ್ಷಾಬಲಕೃತ್ಯತಯಾ—ವಿ+ಶಿಷ್ಠ “ಕ್ತಃ” ।  
 “ವಿಲಕ್ಷಣೋ ವಿಶಿಷ್ಟೋ ಯಃ ಸರ್ವಸ್ತಾನು ಅನುಪೇಕ್ಷಯ ಸಃ” ಇತಿ  
 ನಿರೂಪಿತಃ । “ಅಸಂಖ್ಯೇಯೋಽಪ್ರಮೇಯಾತ್ಮಾ ವಿಶಿಷ್ಟಃ ಶಿಷ್ಟಕೃತ್  
 ಶುಚಿಃ” ವಿಂ ಸಂ ।

ವಿಶಿಷ್ಟಾದೈತವರ್ಣನ ನಿಶಿಷ್ಟಾದೈತದರ್ಶನ (೧೦) ಅಸ್ತಿತ್ವ  
 ದರ್ಶನಗಳಲ್ಲಿಂದಾದ ವೇದಾನ್ತದರ್ಶನದ ಒಂದು ಭೇದ.  
 ಜೀವಾತ್ಮ ಪರಮಾತ್ಮ ಇವರಿಗಿರುವ ಭೇದ ಮತ್ತು  
 ಚಿದಚಿದ್ವಿಶಿಷ್ಟನಾದ ಪರಮಾತ್ಮ ಎಂಬ ಒಂದೇ ತತ್ತ್ವ  
 ಇವುಗಳನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ಶ್ರೀ ಭಗವದ್ರಾಮಾನುಜಾ  
 ಚಾರ್ಯರ ಒಂದು ದರ್ಶನ.

ಏಕತತ್ತ್ವನಾದ. ಈ ಸಿದ್ಧಾಂತದಲ್ಲಿ ಸೂಕ್ಷ್ಮಚಿದ್  
 ಚಿದಾತ್ಮಕ ಶರೀರವಿಶಿಷ್ಟನಾದ ಕಾರಣರೂಪ ಪರಮಾತ್ಮ  
 ನಿಗೂ ಸ್ಥೂಲಚಿದಚಿದಾತ್ಮಕಶರೀರವಿಶಿಷ್ಟನಾದ  
 ಕಾರ್ಯರೂಪಪರಮಾತ್ಮನಿಗೂ ಏಕ ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ  
 ವಿಶಿಷ್ಟಯೋರೈತಮ್ ಎಂದು ಪಶ್ಚಿತ್ತತ್ವವನ್ನು ಹೇಳಿ  
 ಬೇಕು. ಇದೇ ರಾಮಾನುಜದರ್ಶನದ ತತ್ತ್ವ. ಹೀಗೆ  
 ಈಶ್ವರನೊಬ್ಬನೇ ತತ್ತ್ವವೆಂದು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಿರುವುದರಿಂದ  
 ಇದಕ್ಕೆ “ನಿಶಿಷ್ಟಾದೈತ” ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು.  
 ಸಕಲತತ್ತ್ವಗಳೂ ಈಶ್ವರನಲ್ಲಿ ಸೇರಿರುವುದರಿಂದ ಏಕತತ್ತ್ವ  
 ವಾದವು ಸ್ಥಿರಪಡುವುದು.

ಪದಾರ್ಥಗಳು ಮೂರು. ಈಶ್ವರ ಚಿತ್ ಮತ್ತು  
 ಅಚಿತ್ ಭೇದದಿಂದ ಪದಾರ್ಥಗಳು ಮೂರು. ಈಶ್ವರ  
 ಚಿತ್ ಜೀವ ಮತ್ತು ಅಚಿತ್ ಜಡ. ಜೀವನು ಭೋಕ್ತಾ,  
 ಜಡವಸ್ತುವು ಭೋಗ್ಯ. ಈಶ್ವರನು ನಿಯಾಮಕ. “ಈಶ್ವರಃ  
 ಚಿದಚಿತ್ತೇತಿ ಪದಾರ್ಥತ್ರಯಂ ಹರಿಃ । ಈಶ್ವರಃ ಚಿದಿತಿ ಪ್ರೋಕ್ತೋ  
 ಜೀವಃ ದೃಶ್ಯಮಚಿತ್ಪುನಃ” । ಈ ರೀತಿ ಭೋಕ್ತಾ ಭೋಗ್ಯ  
 ನಿಯಾಮಕಭೇದದಿಂದ ಪದಾರ್ಥಗಳು ಮೂರಂದು  
 ವ್ಯವಸ್ಥಿತವಾಯಿತು.

ಆತ್ಮ. “ಅತಃ (ಸಾತ್ವಿಕಗಮನೇ) ಧಾತುಮಿನಿಂದ ನಿಷ್ಪನ್ನ  
 ವಾದ ಸತತಗಮನವುಳ್ಳ ಆತ್ಮನ್ ಶಬ್ದವಾಚ್ಯನಾದ  
 ಪರಮಾತ್ಮನು ಶರೀರದೊಳಗೆ ಅಂತರ್ಯಾಮಿಯಾಗಿದ್ದು  
 ಎಲ್ಲಕ್ಕೂ ಪ್ರೇರಕನಾಗಿರುವನು. “ತದೇವ ವಾಸುದೇವಾಖ್ಯಂ ಪರಂ  
 ಬ್ರಹ್ಮ ನಿಗದಿತಂ । ಅಂತರ್ಯಾಮಿ ಜೀವಸಂಸ್ಥೋ ಜೀವಪ್ರೇರಕ ಓರಿತಃ” ।  
 ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಸಕಲವಸ್ತುಗಳೂ ಶರೀರ. “ಚರಾಚರಾಣಿ  
 ಭೂತಾನಿ ಸರ್ವಾಣಿ ಭಗವದ್ವಪುಃ” । ಪರಮಾತ್ಮನು ಶರೀರ.  
 ಮನುಷ್ಯ ಮೃಗ ಪಕ್ಷಿ ಪಟ ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರ ಮೊದಲಾದ  
 ಸಕಲವೂ ಪರಮಾತ್ಮನ ಶರೀರವಾಗಿರುವಕಾರಣ ಸಕಲ  
 ವಸ್ತುಗಳೂ ಜೀವಾತ್ಮಪರ್ಯಂತವಾಗಿ ಪರಮಾತ್ಮ  
 ಪರ್ಯಂತವಾಗುವುವು. ದೇವದತ್ತ ಶಬ್ದವು ದೇವದತ್ತ

ನೊಳಗಿರುವ ಜೀವಾತ್ಮನೊಳಗಿರುವ ಪರಮಾತ್ಮನೆಂಬ  
 ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುದು. ಶಬ್ದಗಳು ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ  
 ಪರ್ಯವಸಾನವಾಗದೆ ಜೀವಾತ್ಮಪರ್ಯಂತ ಹೋಗಿ  
 ಅಲ್ಲೂ ಪರ್ಯವಸಾನಹೊಂದದೆ ಪರಮಾತ್ಮಪರ್ಯಂತ  
 ಹೋಗಿ ನಿಲ್ಲುವುವು. ಇದೇ ಅಪರ್ಯವಸಾನವೃತ್ತಿ.  
 ಇದರಿಂದ ಸಕಲ ವಸ್ತುಗಳೂ ಬ್ರಹ್ಮಾತ್ಮಕವಾದುವೆಂದು  
 ತಿಳಿಯಬೇಕು. “ದೇವೋ ಮನುಷ್ಯೋ ಯಕ್ಷೋ ವಾ ಪಿಶಾಚೋ-  
 ರಗರಾಕ್ಷಸಾಃ । ಪಕ್ಷಿ ವೃಕ್ಷೋ ಲತಾ ಕಾಠಂ ಶಿಲಾ ತೃಣಂ ವೃ-  
 ಪಃ । ಇತ್ಯಾದಯಃ ಸರ್ವೇ ಶಬ್ದಾಃ ಪರಮಾತ್ಮಪರ್ಯಂತಸಂಭಾತ-  
 ವಾಚಕಾಃ” ಸಂ ೧೦ ಸಂ ।

ಜೀವಾತ್ಮಸ್ವರೂಪ. ಜೀವಾತ್ಮನು ಅಣುಪರಿಮಾಣ  
 ವುಳ್ಳವನು. “ವಾಲಾಗ್ರಶತಭಾಗಸ್ಯ ಶತಘಾ ಕಲ್ಪಿತಸ್ಯ ಚ ।  
 ಭಾಗೋ ಜೀವಃ ಸ ವಿಜ್ಞೇಯಃ ಸ ಚಾನನ್ಯಾಯ ಕಲ್ಪತೇ” ಇವೇತಾಂ  
 ೩೫ ೫-೯ । ಈ ಜೀವನು ಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲ. ಪುರುಷನಲ್ಲ,  
 ನಪುಂಸಕನೂ ಅಲ್ಲ. ಕರ್ಮಾಧೀನನಾಗಿ ತಾನು ಪಡೆಯುವ  
 ಶರೀರದಿಂದ ಇವನ ರಕ್ಷಣೆಯಾಗುವುದು. “ನೈವ ಸ್ತ್ರೀ ನ  
 ಪುಮಾನೇಶಃ ನ ಚೈವಾನ್ಯಂ ನ ಪುಂಸಕಃ । ಯದ್ವಿಚ್ಛರೀರಮಾದತ್ತೇ ತೇನ ತೇನ  
 ಸ ರಕ್ಷಯತೇ” ಇವೇತಾಂ ೩೫ ೫-೧೦ । ಜೀವನು ಉತ್ಪತ್ತಿಯಿಲ್ಲ  
 ದಿರುವುದರಿಂದ ಅಜನು. ನಾಶರಹಿತನಾಗಿರುವುದರಿಂದ  
 ನಿತ್ಯನು. ಸದಾ ಏಕರೂಪದಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ಶಾಶ್ವತನು.  
 ಯಾವಾಗಲೂ ಹೊಸಬನಾಗಿ ತೋರುವುದರಿಂದ  
 ಪುರಾಣನು. ನಾಶಪಡಿಸಲಶಕ್ತನಾದುದರಿಂದ ಅಚ್ಚಿದ್ವ್ಯ.  
 ಅದಾಹ್ಯ ಅಕ್ಷೇದ್ಯ ಮತ್ತು ಅಶೋಷ್ಯ. ಅಣುಪರಿಮಾಣ  
 ವುಳ್ಳವನು. ಪ್ರತಿಯೊಂದು ದೇಹದಲ್ಲಿಯೂ ಇರುವುದ  
 ರಿಂದ ಅಸಂಖ್ಯಾತನು. ಜ್ಞಾನಸ್ವರೂಪನು ಮತ್ತು ಸುಖ  
 ಸ್ವರೂಪನು. “ಅಚ್ಛೇದ್ಯೋಽಮದಾಹ್ಯೋಽಮಕಲೇಶೋಽಶೋಷ್ಯ ಏವ  
 ಚ । ನಿಯಃ ಸರ್ವಗತಃ ಸ್ಥಾನುರಚಲೋಽಯಂ ಸನಾತನಃ” ಗೀತಾ  
 ೧-೨೪ । “ನ ಜಾಯತೇ ಮ್ರಿಯತೇ ವಾ ವಿಪಶ್ಚಿನ್ನಾಯಾಂ ಭೂತಾ  
 ಭವಿತಾ ವಾ ನ ಭಯಃ । ಅಜೋ ನಿಯಃ ಶಾಶ್ವತೋಽಯಂ ಪುರಾಣೋ  
 ನ ಹನ್ಯತೇ ಹನ್ಯಮಾನೇ ಶರೀರೇ” ಕಠಂ ।

ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ಮಾಡಿದ ಕರ್ಮದ ಫಲವನ್ನು ಅನು  
 ಭವಿಸುತ್ತ ಕರ್ಮಾಧೀನವಾದ ನಾನಾರೂಪಗಳನ್ನು  
 ಪಡೆದು ಜೀವನು ತನ್ನ ಕರ್ಮಫಲಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ ಸಂಸರಿಸು  
 ವನು. “ಗುಣಾನ್ವಯೋ ಯಃ ಫಲಕರ್ಮಕರ್ತಾ ಕೃತಸ್ಯ ತಸ್ಯೈವ ಸ  
 ಚೋಪಭೋಕ್ತಾ । ಸ ವಿಶ್ವರೂಪಸ್ತ್ರಿಗುಣಸ್ತ್ರಿವತ್ಸರ್ವಾ ಪ್ರಾಣಾಧಿಪಃ  
 ಸಂಚರತಿ ಸ್ವಕರ್ಮಭಿಃ” ಇವೇತಾಂ ೩೫ ೫-೧೧ ।

ಈ ಜೀವಾತ್ಮತತ್ತ್ವವು ನಿತ್ಯ ಮುಕ್ತ ಮತ್ತು ಬದ್ಧ  
 ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ.



ಸಂಸಾರವೆಂಬ ಪ್ರಕೃತಿಸಂಬಂಧವೇ ಇಲ್ಲದ ಆನನ್ದ ಗರುಡ ವಿಷ್ವಕ್ಸೇನಾದಿ ಪರಮಾತ್ಮನ ಪರಿಜನರು ನಿತ್ಯರು. ಇವರೇ ನಿತ್ಯಸೂರಿಗಳು. ಶುಕ ವಾಮದೇವ ಪರಾಶರ ವ್ಯಾಸ ಆಚಾರ್ಯರುಗಳು ಆಚಾರ್ಯರು ಮೊದಲಾದವರು ಮುಕ್ತರು. ಇವರು ಪ್ರಕೃತಿಸಂಬಂಧದಿಂದ ಮುಕ್ತರಾದವರು. ಈಗ ಪ್ರಕೃತಿಸಂಬಂಧಹೊಂದಿದ ಸಂಸಾರಿಗಳು ಬದ್ಧರು.

ಈ ಮತದಲ್ಲಿ ಸಕಲಜೀವಾತ್ಮವಸ್ತುಗಳಿಗೂ ಆವರಣ ವಾಗಿರುವ ಶರೀರಭೇದವೇಹೊರತು ಸ್ವರೂಪದಲ್ಲಿ ಯಾವುದೊಂದು ಭೇದವೂ ಇಲ್ಲ. ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯ ಗಳಲ್ಲೂ ಎಲ್ಲಾ ಆತ್ಮವಸ್ತುಗಳೂ ಸಮಾನವಾದುವು. ಆದೇಯತ್ವ ವಿಧೇಯತ್ವ ಶೇಷತ್ವ ಪರತಂತ್ರತ್ವ ಮೊದಲಾದ ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಜೀವಾತ್ಮನು ಸರ್ವಾಧಾರ ನಾಗಿಯೂ ಸರ್ವನಿಯಾಮಕನಾಗಿಯೂ ಸರ್ವೇಶ್ವರ ನಾಗಿಯೂ ಇರುವ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನನು. ಈ ಜೀವಾತ್ಮರಿಗೂ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೂ ಈ ಕೆಲವು ವಿಷಯ ಗಳು ಹೊರತು ಉಳಿದ ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲೂ ಅತ್ಯಂತ ಸಾಮ್ಯವಿರುವುದು. ಇದರಿಂದ ಪ್ರತಿ ಜೀವಾತ್ಮನಿಗೂ ಪರಮಾತ್ಮಸಾಮ್ಯವೆಂಬ ಪರಮಪುರುಷಾರ್ಥವನ್ನು ಹೊಂದಲು ಅವಕಾಶವುಂಟು. ಈ ಪರಮಪುರುಷಾರ್ಥ ಪ್ರಾಪ್ತಿಗೆ ಪರಮಾತ್ಮನ ಪರಿಪೂರ್ಣಾನುಗ್ರಹವು ಮುಖ್ಯ ಕಾರಣ. ಈ ಅನುಗ್ರಹ ಸಂಪಾದನೆಗೆ ಅನೇಕ ರೀತಿಯಾದ ಸಾಧನಗಳುಂಟು. ಈ ಸಾಧನಗಳಿಂದ ಪ್ರತಿ ಜೀವಾತ್ಮನೂ ಯಾವ ವಿಧವಾದ ಜಾತಿ ಕುಲ ಪಶು ಪಕ್ಷಿ ಮೊದಲಾದ ಯಾವ ರೂಪದಲ್ಲಿದ್ದರೂ ಪರಮಪುರುಷಾರ್ಥ (ಮೋಕ್ಷ) ವನ್ನು ಪಡೆಯಬಹುದು. ಈ ಸಿದ್ಧಾಂತವು ಸರ್ವವಿಧ ದಿಂದಲೂ ಸಕಲ ಜೀವಾತ್ಮರೂ ಮೋಕ್ಷಸಾಮ್ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಹೊಂದಬಹುದೆಂಬ ಔದಾರ್ಯ ತೋರಿಸಿರುವುದರಿಂದ ಶ್ರೀ ರಾಮಾನುಜಾಚಾರ್ಯರು ಪರಮಪದಕ್ಕೆ ಮಾರ್ಗ ದರ್ಶಕರೆಂದು ಖ್ಯಾತಿಪಡೆದಿರುವರು.

**ಪರಮಾತ್ಮ.** ಶ್ರೀಲಕ್ಷ್ಮೀನಾರಾಯಣನೇ ಪರಮಾತ್ಮ. ಈ ಪರಮಾತ್ಮನು ಸಕಲ ತತ್ತ್ವಗಳಿಗೂ ಧಾರಕನು, ನಿಯಾಮಕನು, ಶರೀರಿ. ಚರಾಚರ ಸಕಲ ಜಗತ್ತಿಗೂ ಕಾರಣನು. ದೋಷರಹಿತನು, ಸರ್ವಜ್ಞ, ಸರ್ವಶಕ್ತ, ಪರಮಕಾರುಣಿಕ. ಸಕಲ ಕಲ್ಯಾಣಗುಣಪರಿಪೂರ್ಣನು. ಸರ್ವಶಬ್ದವಾಚ್ಯನು. ಸರ್ವಕರ್ಮಸಮಾರಾಧ್ಯನು. ಸರ್ವ ಸಮಾಶ್ರಯಣೀಯನು. ಸರ್ವಾಭೀಷ್ಟಫಲಪ್ರದನು. ಪರಮಾನಂದಸ್ವರೂಪನು. ಪರಮಪ್ರಾಪ್ಯ ಮತ್ತು

ಪ್ರಾಪಕನು. ಪರಮಾತ್ಮನ ದೇಹವು ಶುದ್ಧಸತ್ತ್ವಮಯ. ಅಪ್ರಾಕೃತ ದಿವ್ಯ ಮಂಗಳ ವಿಗ್ರಹ. ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿಗೂ ಇವೆಲ್ಲಾ ಸ್ವರೂಪಗಳಿದ್ದು ಸ್ವರೂಪದಲ್ಲಿ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಸರ್ವಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ. ಲಕ್ಷ್ಮಿಗೆ ತದಧೀನ ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ. ಉಳಿ ದೆಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಸರ್ವಸಾಮ್ಯವುಂಟು. ಬ್ರಹ್ಮಾದಿ ಸ್ತಂಬಪರ್ಯಂತವಾದ ಈ ಜಗತ್ತು ಯಾರಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನ ವಾಯಿತೋ ಯಾರಿಂದ ಜೀವಿಸಿರುವುದೋ ಮತ್ತು ಯಾರಿಂದ ಪ್ರಲಯಹೊಂದುವುದೋ ಅದೇ ಪರಬ್ರಹ್ಮ. "ಯತೋ ವಾ ಇಮಾನಿ ಭೂತಾನಿ ಜಾಯಂತೇ | ಯೇನ ಜಾತಾನಿ ಜೀವಂತಿ | ಯತ್ರಯನ್ಯಭಿಸಂವಿಶಂತಿ" ತೇಂ ೩೪ಂ | ಪರಮಾತ್ಮನು ಸಕಲಜಗತ್ತಿಗೂ ಸೃಷ್ಟಿಕರ್ತನಾಗಿಯೂ ಉಪಾದಾನಕಾರಣನಾಗಿಯೂ ಇರುವನು. ಪರಮಾತ್ಮ ಪರಬ್ರಹ್ಮ ಪರಮೇಶ್ವರ ಪರವಾಸುದೇವ ಲಕ್ಷ್ಮೀ ನಾರಾಯಣ ಇತ್ಯಾದಿ ಪದಗಳು ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು ಬೋಧಿಸುವುವು. "ವಾಸುದೇವಃ ಪರಂ ಬ್ರಹ್ಮ ಕಲ್ಯಾಣಗುಣಸಂಯುತಃ | ಭುವನಾನಾಮುಪಾದಾನಂ ಕರ್ತೃ ಜೀವನಿಯಾಮಕಃ" |

**ಜೀವಾತ್ಮ-ಪರಮಾತ್ಮ ಸಂಬಂಧ.** ಚರಾಚರಾತ್ಮಕ ಸಕಲ ಪ್ರಪಂಚವೂ ಪರಮಾತ್ಮನ ಶರೀರವಾದುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೂ ಪ್ರಪಂಚಕ್ಕೂ ಶರೀರಾತ್ಮಭಾವ ಸಂಬಂಧವಿರುವುದೆಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕು. ಶರೀರವೆಂದರೆ ಶರೀರಿಯಾದ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಆದೇಯ ವಿಧೇಯ ಮತ್ತು ಶೇಷವಾಗಿ ಇರುವುದು. ಇದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮ ನಿಗೂ ಜೀವಾತ್ಮನಿಗೂ ಶೇಷ ಶೇಷಿಭಾವವು ಸಿದ್ಧ ವಾಯಿತು. ಈ ಶೇಷ ಶೇಷಿಭಾವವು ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತದರ್ಶನ ದಲ್ಲಿರುವ ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಧಾನವಾದುದು.

**ತತ್ತ್ವ.** ಸಮಸ್ತ ಚಿದಚಿದ್ವಿಶಿಷ್ಟನಾದ ಶ್ರೀಮ ನ್ನಾರಾಯಣನೇ ಪರಮತತ್ತ್ವವೆಂದು ಇವರ ಸಿದ್ಧಾಂತ. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾದಿ ಪ್ರಮಾಣಗಳಿಂದಲೂ ಇತರ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳಿಂದಲೂ ತತ್ತ್ವವು ಅನೇಕವೆಂದು ಸ್ಪಷ್ಟವಡುವುದಾದರೂ ಸಕಲ ತತ್ತ್ವಗಳೂ ವಸ್ತುಗಳೂ ಈಶ್ವರನಲ್ಲಿ ಅಡಗಿರುವುದರಿಂದ ಏಕತತ್ತ್ವವಾದಕ್ಕೂ ಅನೇಕ ತತ್ತ್ವವಾದಕ್ಕೂ ಪ್ರಾಮಾಣ್ಯ ವನ್ನು ಕೊಟ್ಟಂತಾಯಿತು. ಅನೇಕ ತತ್ತ್ವವಾದಿಗಳ ಮತ ದಂತೆ ತತ್ತ್ವಗಳು ("ತತ್ತ್ವ" ಪದದಲ್ಲಿ ನಿರೂಪಿಸಿರು ವಂತೆ) ಇಪ್ಪತ್ತಾರು (26).

**ಮೋಕ್ಷೋಪಾಯ.** ಈ ಸಿದ್ಧಾಂತದಪ್ರಕಾರ ಇರುವ ವಿಷಯವು ತತ್ತ್ವ ಹಿತ ಪುರುಷಾರ್ಥ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ತತ್ತ್ವನಿರೂಪಣೆಯನಂತರ ಹಿತನಿರೂಪಣೆ. ಕರ್ತವ್ಯವಾದ ಅಂಶವೇ ಹಿತ. ಈ ಕರ್ತವ್ಯದ ಅನುಷ್ಠಾನ



ದಿಂದ ಲಭಿಸುವ ಪ್ರಯೋಜನವೇ ಪುರುಷಾರ್ಥ. ಹಿತವು ಭಕ್ತಿಪ್ರಪತ್ತಿಗಳೆಂಬ ಕರ್ತವ್ಯದ ಅನುಷ್ಠಾನದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಪರಮಾತ್ಮನ ಅನುಗ್ರಹ. ಭಕ್ತಿಯಿಂದರೆ ಜೀವಾತ್ಮಪರಮಾತ್ಮಯಾಥಾತ್ಮಜ್ಞಾನಪೂರ್ವಕ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ ಪರಮಾತ್ಮನ ಪಾದಾರವಿಂದಗಳ ಧ್ಯಾನ ಅರ್ಚನೆ ಪ್ರಣಾಮ ಮೊದಲಾದುವು. ಇವೇ ಮೋಕ್ಷಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದ ಉಪಾಯ. ಕರ್ಮಯೋಗದಿಂದ ಚಿತ್ತ ನೈರ್ಮಲ್ಯಹೊಂದಿ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ತಾನು ಶೇಷಭೂತ ನೆಂದು ಮಾಡುವ ಆತ್ಮಚಿಂತನೆಯಿಂದ ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನವು ಉಂಟಾಗುವುದು. ಈ ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನವು ಭಕ್ತಿಗೆ ಉಪಾಯ. ಭಕ್ತಿಯು ಮೋಕ್ಷಕ್ಕೆ ಉಪಾಯವಾದ ಸಾಧನಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. ಮೋಕ್ಷಕ್ಕೆ ಉಪಾಯವಾದ ಮತ್ತೊಂದು ಸಾಧನ ಪ್ರಪತ್ತಿ. [ಪ್ರಪತ್ತಿಯ ವಿವರಕ್ಕೆ "ಪ್ರಪತ್ತಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಮೋಕ್ಷ.** ಜೀವನು ಭಕ್ತಿ ಅಥವಾ ಪ್ರಪತ್ತಿಯಿಂದ ಪ್ರಸನ್ನನಾದ ಪರಮಾತ್ಮನ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ಅವಸಾನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸಕಲವಿಧ ಶ್ರಮಗಳನ್ನೂ ಪರಿಹರಿಸಿಕೊಂಡು ಸುಷುಮ್ನಾನಾಡೀಮೂಲಕ ಸುಖವಾಗಿ ಪ್ರಯಾಣಮಾಡಿ ಅರ್ಚಾರಾದಿಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಲೋಕ ವಾಯುಲೋಕ ಸೂರ್ಯಲೋಕ ಚಂದ್ರಲೋಕ ವರುಣಲೋಕ ಬ್ರಹ್ಮ ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ಮುಕ್ತರ ಉಪಚಾರಕ್ಕಾಗಿ ಪರಮಾತ್ಮನಿಂದ ನಿಯಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ನಿತ್ಯಸೂರಿಗಳಿಂದ ಗೌರವಪೂರ್ವಕ ಸತ್ಕೃತನಾಗಿ ವಿರಜಾನದಿಯ ತೀರದಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಕೃತಸೂಕ್ಷ್ಮ ಭೂತಗಳ ಸಂಬಂಧವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿ ಅಪ್ರಾಕೃತ ದಿವ್ಯದೇಹ ವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವನು. ಇವನನ್ನು ಎದುರುಗೊಳ್ಳಲು ಬಂದಿರುವ ನಿತ್ಯಸೂರಿಗಳಿಂದ ಅನೇಕ ದಿವ್ಯಾಲಂಕಾರ ಗಳನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿ ಅನನ್ತರತ್ನಸ್ತಂಭಸಮಲಂಕೃತವಾದ ಆನಂದಮಯ ದಿವ್ಯಮಂಟಪದಲ್ಲಿ ವೈಭವದೊಡನೆ ಕೋಟಿ ಸೂರ್ಯಸಮಾನನಾಗಿ ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ ಗಾಂಭೀರ್ಯ ಔದಾರ್ಯ ಸೌಲಭ್ಯಾದಿ ಕಲ್ಯಾಣಗುಣಗಣಪರಿಪೂರ್ಣ ನಾದ ಶ್ರೀಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮೀಸಮೇತನಾದ ಪರವಾಸುದೇವನ ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಪರಮಕರುಣಾನಿಧಿಯಾದ ಪರಮಾತ್ಮ ನಿಂದ ಆಲಿಂಗಿಸಲ್ಪಡುವನು. ಆ ಕೊಡಲೆ ಸೌಖ್ಯಹೃತಪಾಮಾ ವಿರಜ: ವಿಮೃತ್ಯು: विशोक: विजिघत्स: अपिपास: सत्यकाम: सत्यसंकल्प: ಎಂಬ ಶ್ರುತೈಕ್ಯವಾದ ಎಂಟುಗುಣಗಳೂ ಇವನಲ್ಲಿ ಅವಿಭವಿಸುವುವು. ಸರ್ವಜ್ಞನಾಗಿ ಯಾವತ್ತಾ ಲವೂ ನಿತ್ಯಸೂರಿಗಳೊಡನೆ ಪರಮಾತ್ಮಾನುಭವವೆಂಬ ಆನಂದವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿರುವನು. ಇದೇ ಮುಕ್ತಿ, ಅಪುನರಾವೃತ್ತಿರೂಪ ಮೋಕ್ಷ. ಇದೇ ಪರಮ

ಪುರುಷಾರ್ಥ. "ನಾಯಮಾತ್ಮಾ ಪ್ರವಚನೇನ ಲಭ್ಯೋ ನ ಮೇಧಯಾ ನ ಬಹುನಾ ಶ್ರುತೇನ | ಯಮೇವೈವ ಬುಣುತೇ ತೇನ ಲಭ್ಯ: ತಸ್ಯೈವ ಆತ್ಮಾ ವಿವೃಣುತೇ ತನ್ ಸ್ವಾಮ್" ಕಠಂ | "ತೇಷಾಂ ಸತತ-ಯುಕ್ತಾನಾಂ ಭಜತಾಂ ಪ್ರೀತಿಪೂರ್ವಕಮ್ | ದದಾಮಿ ಬುದ್ಧಿಯೋಗಂ ತಂ ಯೇನ ಮಾಮುಪಯಾಂತಿ ತೇ" ಗೀತಾ ೧೦-೧೦ | "ಮಾಮುಪೇತ್ಯ ಪುನರ್ಜನ್ಮ ದು:ಖಾಲಯಮಶಾಶ್ವತಮ್ | ನಾನ್ವುವಂತಿ ಮಹಾತ್ಮಾನ: ಸಂಸಿದ್ಧಿ ಪರಮಾಂ ಗತಾ:" ಗೀತಾ ೮-೧೫ |

**ವಿಶೀರ್ಣ ವಿಶೀರ್ಣ (ವಿಂ)** 1. ಶುಷ್ಕವಾದ, ಒಣಗಿಹೋಗಿ ರುವ. ವಿ + ಶ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೨೨) | "ಸ್ವಯಂ ವಿಶೀರ್ಣದ್ರೂಮಪರ್ಣವೃತ್ತಿತಾ ಪರಾ ಹಿ ಕಾಠಾ ತಪಸಸ್ತಯಾ ಪುನ:" ಕುಮಾಂ ೪-೨೮ | 2. ಒಡೆದುಹೋಗಿರುವ, ಎರಡಾಗಿ ಹೋಲಾಗಿರುವ.

**ವಿಶೀರ್ಯಮಾಣ ವಿಶೀರ್ಯಮಾಣ (ವಿಂ)** ಒಡೆಯಲ್ಪಡು ತಿರುವ. ವಿ + ಶ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ವಿಶೀರ್ಯಮಾಣಾಶ್ಮನಿನಾದವೀರಂ ಏವನಿ ವಿತವ್ರಜಕೃಶ: ಕೃಶಾನ್ತು:" ಕಿರಾಂ ೧೬-೪೧ |

**ವಿಶುದ್ಧ ವಿಶುದ್ಧ (ವಿಂ)** 1. ಪರಿಶುದ್ಧವಾದ, ದೋಷ ವಿಲ್ಲದ. ವಿಶೇಷಣ ಶುದ್ಧ: | "ವಾಚ್ಯಸ್ತ್ವಯಾ ಮದ್ವಚನಾತ್ ಸ ರಾಜಾ ವಹ್ನಿ ವಿಶುದ್ಧಾಮಪಿ ಯತ್ಸಮಕ್ಷಮ್" ರಘುಂ ೧೪-೬೧ | 2. ದೋಷವಿಲ್ಲದ, ಕಳಂಕರಹಿತವಾದ. "ಕದಂಬಗೋಲಾ-ಕೃತಿಮಾಶ್ರಿತ: ಕಥಂ ವಿಶುದ್ಧಮುಘ: ಸಲಿ ಕನ್ಯಕಾಜನ:" ಮಾಲತೀಂ ೭-೧ | 3. ಸರಿಯಾದ, ಯಥಾರ್ಥವಾದ, ತಪ್ಪಿಲ್ಲದ. 4. ಸರಳಸ್ವಭಾವದ, ಕಪಟವಿಲ್ಲದ. 5. ಪಾಪ ರಹಿತವಾದ. 6. ನಿರ್ಮಲವಾದ, ತಿಳಿಯಾದ, ಸ್ವಚ್ಛ ವಾದ. 7. ಶುದ್ಧವಾದ, ಮಿಶ್ರವಿಲ್ಲದ. 8. ಕಂಠದಲ್ಲಿ ರುವ ಮೋಡಶ (16) ಸ್ವರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮೋಡಶ (16) ದಳಪದ್ಮ.

**ವಿಶುದ್ಧಿ ವಿಶುದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ದೋಷವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಪರಿಶುದ್ಧವಾಗಿರುವಿಕೆ. ವಿ + ಶ್ರು (ಶೀಚೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | "ತದ್ಭಸ್ಮಸಂಸರ್ಗಮವಾಪ್ಯ ಕಲ್ಪತೇ ಧ್ರುವಂ ಚಿತ್ತಾ-ಭಸ್ಮರಜೋ ವಿಶುದ್ಧಯೇ" ಕುಮಾಂ ೪-೨೯ | 2. ಸ್ವಚ್ಛವಾಗಿರು ವಿಕೆ, ಶುದ್ಧವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಮಿಶ್ರವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. "ಹಿಮ್ನ: ಸಂಲಕ್ಷ್ಯತೇ ಹ್ಯಗ್ನಿ ವಿಶುದ್ಧಿ: ಶ್ಯಾಮಿಕಾಪಿ ವಾ" ರಘುಂ ೧-೧೦ | 3. ನಿರ್ಮಲವಾಗಿರುವಿಕೆ, ತಿಳಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ. 4. ತಪ್ಪಿಲ್ಲ ದಿರುವುದು, ದೋಷವಿಲ್ಲದಿರುವುದು. "ವಿಶುದ್ಧಿಮುಕ್ತೇರಪರೇ ವಿಪಶ್ಚಿತ:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೪ | 5. ಕಪಟವಿಲ್ಲದಿರುವುದು

**ವಿಶೂಲ ವಿಶೂಲ (ವಿಂ)** 1. ಶೂಲಾಯುಧವಿಲ್ಲದ. ವಿಗತಂ. ಶೂಲಂ ಯಸ್ಯ | "ದ್ವರ್ಜಯೋ ರವಣ: ಶೂಲಿ ವಿಶೂಲ: ಪ್ರಾರ್ಥಿತಾ-ಮಿತಿ" ರಘುಂ ೧೪-೪ | 2. ರೋಗವಿಲ್ಲದ.



**ವಿಶ್ವಕೋಶ ವಿಶ್ವಕೋಶ (ವಿಂ)** 1. ಅಪ್ರತಿಹತವಾದ, ತಡೆಯಿಲ್ಲದ. ವಿಗತಾ ಶೃಂಗಲಾ ಯಸ್ಯ । “ಮುದಿತಮಧುಭುಜೋ ಭುಜೇನ ಶಾಖಾಶ್ರಲಿತವಿಶ್ವಕೋಶಶೃಂಗಂ ಧುವತ್ಯಾಃ” ಮಾಘಂ ೭-೩೦ । (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 2. ತಡೆಯಿಲ್ಲದೆ, ನಿರ್ಬಂಧವಿಲ್ಲದೆ. “ತೀವ್ರೋತ್ಥಿತಾಸ್ತಾವದಸಹರಹಸೋ ವಿಶ್ವಕೋಶಶೃಂಗಲಕಾಃ ಪ್ರತಸ್ಥಿರೇ” ಮಾಘಂ ೧೨-೭ ।

**ವಿಶೇಷ ವಿಶೇಷ (ಪುಂ)** 1. ಭೇದ, ವ್ಯತ್ಯಾಸ, ತಾರತಮ್ಯ. ವಿ + ಶಿಷ (ಅಸರ್ವೋಪಯೋಗ) “ಘ” (೩-೩-೧೮) । “ಪ್ರಜನಾರ್ಥ ಮಹಾಭಾಗಾಃ ಪೂಜಾರ್ಹಾ ಗೃಹದೀಪ್ತಯಃ । ಸ್ತ್ರೀಯಃ ಶ್ರಿಯಶ್ಚ ಗೃಹೇಷು ನ ವಿಶೇಷೋಽಸ್ತಿ ಕಶ್ಚನ” ಮನುಂ ೯-೨೬ । 2. ಅತಿಶಯ, ಹೆಚ್ಚಿಗೆ, ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ. “ಅನುಭಾವವಿಶೇಷಾತ್ ಸೇನಾಪರಿವೃತಾವಿವ” ರಘುಂ ೧-೩೭ । 3. ಬದಲಾವಣೆ, ವ್ಯತ್ಯಾಸ, ಮೇಲು, ಲೇಸು. “ಅಸ್ತಿ ಮೇ ವಿಶೇಷಃ” ಶಾಕುಂ ೩ । 4. ಭೇದ, ಪ್ರಭೇದ, ಬಗೆ. “ನಾಗೇಂದ್ರ-ಹಸ್ತಾಸ್ತ್ವಚಿ ಕರ್ಕಶತ್ವಾದೇಕಾಂತಶತ್ಯಾತ್ಕದಲಿವಿಶೇಷಾಃ” ಕುಮಾರಂ ೧-೩೬ । 5. ವಿವಿಧವಾದ ವಿಷಯಗಳು, ಅನೇಕ ವಿಧ ಗುಣಗಳು. “ಅಂತಸ್ತೋಯ ಮಣಿಮಯಭುವಸ್ತುಜ್ಜಮಜ್ಜ-ಲಿಹಾಗ್ರಾಃ ಪ್ರಾಸಾದಾಸ್ತ್ವಾಂ ತುಲಯಿತುಮಲಂ ಯತ್ರ ತೇಸ್ತೇವಿಶೇಷಃ” ಮೇಘಂ ೨-೧ । 6. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ವಿಶೇಷಾಲಂಕಾರವು ಮೂರು ವಿಧ.

(1) ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ ಆಧಾರವಿಲ್ಲದೆ ಅಧೇಯ ವರ್ಣನೆ. “ವಿಶೇಷಃ ಲ್ಯಾತಮಾಧಾರಂ ವಿನಾಪ್ಯಾಧೇಯವರ್ಣನಮ್ । ಗತೇಽಪಿ ಸೂರ್ಯೇ ದೀಪಸ್ಥಾಸ್ತಮಶಿಞ್ಞದಂತಿ ತತ್ಕರಾಃ” ।

(2) ಒಂದೇ ವಸ್ತುವು ಅನೇಕ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿರುವಂತೆ ವರ್ಣಿಸುವುದು. “ವಿಶೇಷಃ ಸೋಽಪಿ ಯದ್ವೇಕಂ ವಸ್ತವೇನೇವ ವರ್ಣಯತೇ । ಅಂತರ್ಬಹಿಃ ಪುರಃ ಪಶ್ಚಾತ್ ಸರ್ವದಿಕ್ವಪಿ ಸೇವ ಮೇ” ।

(3) ಅಲ್ಪಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಪ್ರಯಾಸಸಾಧ್ಯವಾದ ಮಹಾ ಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿವರ್ಣನೆ. “ಕಿಂಚಿದಾರಂಭತೋಽಸಕ್ಯವಸ್ತವಂತರ-ಕೃತಿಶ್ಚ ಸಃ । ತ್ವಾಂ ಪಶ್ಯತಾ ಮಯಾ ಲಬ್ಧಂ ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷ-ನಿರೀಕ್ಷಣಮ್” । (ವಿಂ) 7. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಉತ್ಕೃಷ್ಟವಾದ. 8. ಅತಿಶಯವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ, ಹೇರಳವಾದ. “ಶಶಾಮ ವೃಷ್ಟಯಾಪಿ ವಿನಾ ದವಾಗ್ನಿರಾಸೀದ್ವಿಶೇಷಾ ಫಲಪುಂಪ-ವೃದ್ಧಿಃ” ರಘುಂ ೨-೧೪ ।

**ವಿಶೇಷಕ ವಿಶೇಷಕ (ಪುಂ)** 1. ಹಣೆಯ ಮೇಲೆ ಇಟ್ಟು ಕೊಳ್ಳುವ ತಿಲಕ, ನೆತ್ತಿಯ ಬೊಟ್ಟು. ವಿಶಿನಿಷ್ಠಿ — ವಿ + ಶಿಷ್ಲ್ (ವಿಶೇಷಣ) “ಘ” (೩-೧-೧೩೩) । “ವಿಶೇಷಕೋ ವಾ ವಿಶಿಷೇಷ ಯಸ್ಯಾಃ ಶ್ರಿಯಂ ತ್ರಿಲೋಕೀತಿಲಕಃ ಸ ಏವ” ಮಾಘಂ ೩-೬೩ । 2. ಸ್ತ್ರೀಯರ ದೇಹದ ಮೇಲೆ

ಬಣ್ಣಗಳಿಂದ ಬರೆಯುವ ಚಿತ್ರ. “ಪ್ರತ್ಯಾಘಾತವಿಶೇಷಕಂ ಕುರವಕಂ ಶ್ಯಾಮಾವದಾತಾರುಣಮ್” ಮಾಲಂ ೩-೫ । 3. ವಸ್ತುಗಳ ಪರಸ್ಪರ ಭೇದ (ವ್ಯತ್ಯಾಸ) ವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಗುಣ. (ಪುಂ) 4. ಏಕಾನ್ವಯವುಳ್ಳ ಮೂರು ಶ್ಲೋಕಗಳ ಸಮುದಾಯ. “ದ್ವಾಮ್ಯಾಂ ಯುಗ್ಮಮಿತಿ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ತ್ರಿभिಃ ಶ್ಲೋಕೈ-ವಿಶೇಷಕಮ್ । ಕಾಲಾಪಕಂ ಚತುರಿಃ ಸ್ಯಾತ್ಪದ್ಧರ್ವ ಕುಲಕಂ ಮತಮ್” । (ವಿಂ) 5. ಅತಿಶಯವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ.

**ವಿಶೇಷಕಚ್ಛೇದ ವಿಶೇಷಕಚ್ಛೇದ್ಯ (ನಂ)** ಹಣೆಯಲ್ಲಿ ಬರೆಯುವ ತಿಲಕವನ್ನು ಅನೇಕ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ತಿದ್ದಿ ಕೊರೆಯುವುದು. ಇದು 64 ಕಲೆಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಕಲೆ.

**ವಿಶೇಷಗುಣ ವಿಶೇಷಗುಣ (ಪುಂ)** ವಸ್ತುಗಳ ಪರಸ್ಪರ ಭೇದವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಧರ್ಮ. ವಿಶೇಷ ಗುಣಃ ।

**ವಿಶೇಷಜ ವಿಶೇಷಜ್ಞ (ವಿಂ)** ಹೆಚ್ಚು ವಿಷಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿದಿರುವ, ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳನ್ನೂ ಅರಿತಿರುವ. ವಿಶೇಷ ಜಾನಾತಿ — ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) “ಕಃ” (೩-೨-೩) । “ಅಜಃ ಸುಖಮಾರಾಧ್ಯಃ ಸುಖತರಮಾರಾಧ್ಯತೇ ವಿಶೇಷಜಃ । ಜ್ಞಾನಲವದ್ವಿವಿಧಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಪಿ ನರಂ ನ ರಂಜಯತಿ” ಭರ್ತುಂ ೧-೩ ।

**ವಿಶೇಷಣ ವಿಶೇಷಣ (ನಂ)** 1. ವಿಶೇಷಪದದ ಧರ್ಮ, ವಿಶೇಷಪದದ ವಿಷಯವನ್ನು ವಿವರಿಸುವ ಗುಣ. ವಿಶಿಷ್ಟತೇಜೇನ — ವಿ + ಶಿಷ್ಲ್ (ವಿಶೇಷಣ) ಕರಂ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭) । 2. ವಿಶೇಷಪದದ ಧರ್ಮವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಪದ. ವಿಶೇಷಣವು ವ್ಯಾವರ್ತಕ ವಿಧೇಯ ಮತ್ತು ಹೇತು ಗರ್ಭಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. “ನಿಲೋ ಷಡಃ” ಎಂಬಲ್ಲಿ ನೀಲವರ್ಣವು ಇತರ ವ್ಯಾವರ್ತಕ. “ಪರ್ವತೋ ವಹ್ನಿಮಾನ್” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ವಹ್ನಿಯು ವಿಧೇಯ. “ಸ ಕೋಚಕೇ-ಮಸಿತಪೂರ್ಣರಂಧ್ರಃ ಕೂಜದ್ವಿರಾಪಾದಿತವಂಶಕೃತ್ಯಮ್” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಮಾರುತಪೂರ್ಣರಂಧ್ರತ್ವವು ಹೇತುಗರ್ಭವಿಶೇಷಣ. ವ್ಯಾವರ್ತಕವು ವಿಶೇಷಣ. ವ್ಯಾವರ್ತಕವು ವಿಶೇಷ. ಇದಕ್ಕೆ ಭೇದಕ ಮತ್ತು ಭೇದ್ಯಗಳೆಂದು ಅರ್ಥ.

**ವಿಶೇಷತಸ್ ವಿಶೇಷತಸ್ (ಅವ್ಯಂ)** ಮುಖ್ಯವಾಗಿ, ಎಲ್ಲಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ. ವಿಶೇಷ “ತಸಿಃ” (ವಾಂ ೫-೪-೪೪) । “ವಿಶೇಷತಸ್ತು ಬಾಲತ್ವಾತ್ಪ್ರಯೋಗವಿವೃತಭಾವಯೋಃ । ತೇನ ಮಾಧವ-ಮಾಲಯೋಃ ಕಾರ್ಯಃ ಸ್ವಮತಿ ನಿಹ್ನವಃ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೫ ।

**ವಿಶೇಷವಿಧಿ ವಿಶೇಷವಿಧಿ (ಪುಂ)** ಕೆಲವು ಕಡೆ ಮಾತ್ರ ಪ್ರವರ್ತಿಸುವ ವಿಧಿ (ಕಾರ್ಯ). ವಿಶೇಷ ವಿಧಿಃ । ಸಾಮಾನ್ಯ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಹೇಳಿ ಕೆಲವು ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ವಿಧಿಸುವ ಕಾರ್ಯವು ವಿಶೇಷ ವಿಧಿ. ಸಾಮಾನ್ಯ ಕಾರ್ಯಕ್ಕಿಂತಲೂ ವಿಶೇಷ ವಿಧಿಯು ಪ್ರಬಲವಾದುದು.



ಸಾಮಾನ್ಯಕಾರ್ಯವು ಪ್ರವರ್ತಿಸುವ ವಿಷಯಗಳು ಹೆಚ್ಚು. ವಿಶೇಷಕಾರ್ಯವು ಕೆಲವು ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ವಿಹಿತವಾಗುವುದು. ಇವಕ್ಕೆ ಸಾಮಾನ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ ಮತ್ತು ವಿಶೇಷಶಾಸ್ತ್ರಗಳೆಂದು ಹೆಸರು. “ತಥಾ ಸಾಮಾನ್ಯಶಾಸ್ತ್ರೇಭ್ಯೋ ವಿಶೇಷಕವಿಧಿಬಲಿ. ಬಹವೋ ವಿಷಯಾ ಯಸ್ಯ ಸ ಸಾಮಾನ್ಯ-ವಿಧಿರ್ಮೇವ. ಅಲ್ಪಃ ಸ್ಯಾದ್ವಿಷಯೋ ಯಸ್ಯ ಸ ವಿಶೇಷವಿಧಿ-ರ್ಮತಃ.” “ಬ್ರಾಹ್ಮಣೇಭ್ಯೋ ದಧಿ ದೀಯತಾಮ್ ತಕ್ರಂ ಕೌಣ್ಡಿನ್ಯಾಯ” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಕೌಂಡಿನನು ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ವಿಶೇಷವಾದುದರಿಂದ ಇದು ವಿಶೇಷವಿಧಿ.

**ವಿಶೇಷಿತ ವಿಶೇಷಿತ (ವಿಂ)** 1. ವ್ಯತ್ಯಾಸತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಭೇದತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಶಿಷ್ಲ್ (ವಿಶೇಷಣ) + ಣಿಕ್ “ಕ್ತಃ” (3-2-102). 2. ವ್ಯಾವೃತ್ತಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರತ್ಯೇಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಿಶೇಷೋಕ್ತಿ ವಿಶೇಷೋಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಸಮಗ್ರ ಕಾರಣವಿದ್ದರೂ ಕಾರ್ಯೋತ್ಪತ್ತಿ ಯಾಗದಿರುವ ವರ್ಣನೆಯು “ವಿಶೇಷೋಕ್ತಿ” ಅಲಂಕಾರ. “ಕಾರ್ಯಜನಿವಿಶೇಷೋಕ್ತಿಃ ಸತಿ ಪುಷ್ಕಲಕಾರಣಂ” ತವಾ: “ಹೃದಿ ಸ್ನೇಹಕೃಷ್ಣಯೋ ನಾಭೂತ್ ಸ್ಮರದೀಪೇ ಜ್ವಲತ್ಯಪಿ” ಸ್ಮರನಂಬ ದೀಪವು ಜ್ವಲಿಸುತ್ತಿದ್ದರೂ ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ಸ್ನೇಹಕ್ಷಯವಾಗಲಿಲ್ಲವೆಂದು ವರ್ಣಿತವಾಗಿದೆ.

**ವಿಶೇಷ್ಯ ವಿಶೇಷ್ಯ (ವಿಂ)** ವಿಶೇಷಣಪದದಿಂದ ವಿವರಿಸಲ್ಪಡುವ ಗುಣದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ವಿಷಯವು ಗುಣಾದಿಭಿಃ — ವಿ + ಶಿಷ್ಲ್ (ವಿಶೇಷಣ) “ಘತ್” (3-1-124). “ವಿಶೇಷಣಂ ವಿಶೇಷ್ಯಣ ಬಹುಲಮ್” (ಪಾಂ ಸೂಂ 2-1-49). ನೋಲಮ್ ತಪಲಮ್ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಇತರ ವರ್ಣವ್ಯಾಪರ್ತಕವಾದ ನೀಲಪದವು ನೀಲಗುಣವಿಶೇಷ್ಯವಾದ ಉತ್ಪಲವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವುದಾದುದರಿಂದ ತಪಲ ಪದವು ವಿಶೇಷ್ಯ.

**ವಿಶೋಕ ವಿಶೋಕ (ಪುಂ)** 1. ದುಃಖವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ವಿಗತಃ ಶೋಕಃ. “ಸುಹೃದಾಂ ಚ ವಿಶೋಕಾಯ ಸ್ವಸುಖ ಪ್ರಿಯಕಾಮ್ಯಯಾ” ಭಾಗಂ 1-10-9. (ವಿಂ) 2. ದುಃಖವಿಲ್ಲದ, ದುಃಖರಹಿತವಾದ. ವಿಗತಃ ಶೋಕೋ ಯಸ್ಯ.

**ವಿಶೋಕಾ ವಿಶೋಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸಂಪ್ರಜ್ಞಾತ ಸಮಾಧಿ (ಸವಿಕಲ್ಪಕ ಸಮಾಧಿ)ಗೆ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿರುವ ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿ. “ವಿಶೋಕಾ ವಾ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತೀ” ಪಾಂ ಯೋ ಸೂಂ.

**ವಿಶೋಧನ ವಿಶೋಧನ (ನಂ)** 1. ಶೋಧಿಸುವುದು, ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು. ವಿ + ಶುಢ (ಶೋಧ) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114). 2. ಚೊಕ್ಕಟಮಾಡುವುದು, ನಿರ್ಮಲವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು.

**ವಿಶೋಷಣ ವಿಶೋಷಣ (ನಂ)** ಒಣಗಿಸುವುದು. ವಿ + ಶುಷ (ಶೋಷಣ) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114).

**ವಿಶನ ವಿಶ್ವ (ಪುಂ)** ದೀಪ್ತಿ, ಕಾಂತಿ. ವಿಚ್ಛ (ಗತೌ) “ನಡ್” (3-3-90).

**ವಿಶ್ರಾಣನ ವಿಶ್ರಾಣನ (ನಂ)** ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. ವಿ + ಶ್ರಾಣ (ದಾನೇ) ಭಾಂ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114). 2. ಶ್ರಾಂ ಶ್ರಾಣ (ದಾನೇ) + ಣಿಕ್ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114). -ಶ್ರಾಣನಮ್ -ಶ್ರಾಣನಮ್. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. “ಕಥಂ ನು ಶಕ್ಯೋಽನುನಯೋ ಮಹರ್ಷೇವಿಶ್ರಾಣನಾದನ್ಯಪಯಸ್ವಿನೀನಾಮ್” ರಘುಂ 2-44.

**ವಿಶ್ರಾಣಿತ ವಿಶ್ರಾಣಿತ (ವಿಂ)** ದಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಶ್ರಾಣ (ದಾನೇ) + ಣಿಕ್ “ಕ್ತಃ” (3-2-102). “ತಮಃವರೇ ವಿಶ್ರಾಜಿತಿ ಜಿತೀಶಂ ನಿಶೇಷವಿಶ್ರಾಣಿತಕೋಶ-ಜಾತಮ್” ರಘುಂ 4-1.

**ವಿಶ್ರವ್ಯ ವಿಶ್ರವ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ವಿಶ್ವಾಸವುಳ್ಳ, ಭಯವಿಲ್ಲದ, ನಂಬಿಕೆಯುಳ್ಳ. ವಿ + ಶ್ರಮ್ಭು (ಪ್ರಮಾದೇ) “ಕ್ತಃ” (3-4-92). “ಸುವಿಶ್ರವ್ಯರತ್ನೈಃ ಪಥಿಷ್ಠ ವಿಷಮೇಷವ್ಯ-ಚಲತಾ” ಮುದ್ರಾಂ 3-3. 2. ನೆಮ್ಮದಿಯುಳ್ಳ, ಚಿತ್ತಶಾಂತಿಯುಳ್ಳ. 3. ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ, ಪ್ರೇಮವುಳ್ಳ. (ಅವ್ಯಂ) 4. ನೆಮ್ಮದಿಯಿಂದ, ವಿಶ್ವಾಸದಿಂದ, ಭಯವಿಲ್ಲದೆ. “ವಿಶ್ರವ್ಯಂ ಕ್ರಿಯತಾಂ ವರಾಹತತಿಮಿಮ್ಸ್ತಾಕ್ಷತಿಃ ಪಲ್ವಲೇ” ಶಾಕುಂ 2-6. 5. ಧೈರ್ಯದಿಂದ, ಭಯವಿಲ್ಲದೆ. “ವೃಷಲ ವಿಶ್ರವ್ಯಂ ಪೃಚ್ಛ ಮಮಾಪಿ ಬಹ್ವಾಖ್ಯಯಮತ್ರ” ಮುದ್ರಾಂ 3.

**ವಿಶ್ರಮ ವಿಶ್ರಮ (ಪುಂ)** ವಿಶ್ರಾಂತಿ, ಶ್ರಮಪರಿಹಾರ. “ವಿಶ್ರಮಾರ್ಥಮುಪಗೃಹಮಜಸ್ರಮ್” ಮಾಘಂ 10-66.

**ವಿಶ್ರಮ್ಯ ವಿಶ್ರಮ್ಯ (ಪುಂ)** 1. ವಿಶ್ವಾಸ, ನಂಬಿಕೆ. ವಿ + ಶ್ರಮ್ಭು (ಪ್ರಮಾದೇ) “ಘನ್” (3-3-114). 2. ರಹಸ್ಯ, ಗುಟ್ಟು. 3. ಪ್ರಣಯಕಲಹ. 4. ವಧೆ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. 5. ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಪ್ರಶ್ನೆಮಾಡುವುದು, ವಿಶ್ವಾಸದಿಂದ ಕೇಳುವುದು. “ವಿಶ್ರಮ್ಯಃ ಕೇಲಿಕಲಹೇ ವಿಶ್ವಾಸೇ ಪ್ರಣಯೇ ವಧೇ” ವಿಶ್ವಂ.

**ವಿಶ್ರಮ್ಯಣ ವಿಶ್ರಮ್ಯಣ (ನಂ)** 1. ವಿಶ್ವಾಸ ಸಂಪಾದಿಸುವುದು. 2. ನಂಬುವುದು. 3. ಪ್ರೀತಿಸುವುದು.

**ವಿಶ್ರವಸ್ ವಿಶ್ರವಸ್ (ಪುಂ)** ಪುಲಸ್ತ್ಯಮುನಿಯ ಪುತ್ರ. ವಿಶ್ರವಸ್ಸು ದೇವವರ್ಣ (ಇಲಬಿಲಿ) ಯಲ್ಲಿ ಕುಬೇರನನ್ನೂ ಕೇಕಸಿಯಲ್ಲಿ ರಾವಣ ಕುಂಭಕರ್ಣ ವಿಭೀಷಣ ಮತ್ತು ಶೂರ್ಪಣಖೆಯನ್ನೂ ಪಡೆದನು. “ವಿಶ್ರವಃಪಿತೃಕಯಾನ್ತು-ಮನಹಮ್” ನೈಷಂ 21-99.

**ವಿಶ್ರಾಂತ ವಿಶ್ರಾಂತ (ವಿಂ)** 1. ವಿರಾಮಹೊಂದಿದವನು, ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸಿದವನು. ವಿ + ಶ್ರಮ್ (ತಪಾಸ ಖೇದೇ ಚ) “ಕ್ತಃ” (3-4-92). 2. ವಿಶ್ರಾಂತಿ ಪಡೆದವನು, ಆಯಾಸ ಪರಿಹರಿಸಿಕೊಂಡವನು.



**ವಿಶ್ವಾನ್ತಿ ವಿಶ್ವಾಂತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು, ವಿರಾಮಕೊಡುವುದು. 2. ಆಯಾಸ ಪರಿಹರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ವಿ+ಶ್ರುಮ್ (ತಪಸಿ ಖೇದೇ ಚ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪)। "ಜೀರ್ಣಸ್ಯಾಸ್ಯ ಶರೀರಸ್ಯ ವಿಶ್ವಾನ್ತಿಮಭಿ-ರೋಚಯೇ" ರಾಮಾಂ ।

**ವಿಶ್ವಾಮ ವಿಶ್ವಾಮ** (ಪುಂ) 1. ವಿಶ್ವಾಂತಿ, ಶ್ರಮಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಬಿಡುವು. ವಿ+ಶ್ರುಮ್ (ತಪಸಿ ಖೇದೇ ಚ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ಅದ್ವೈತಂ ಸುಖದುಃಖಯೋರನುಗತಂ ಸರ್ವಾಸ್ವವಸ್ಥಾಸು ಯದ್ವಿಶ್ವಾಮೋ ಹೃದಯಸ್ಯ ಯತ್ರ ಜರಸಾ ಯಸ್ಮಿನ್ನಹಾರ್ಯೋ ರಸಃ" ತಂ ರಾಂ ೧-೩೯ । 2. ವಿರಾಮ, ಬಿಡುವು. "ವಿಶ್ವಾಮ ಲಭತಾಮಿದಂ ಚ ಶಿಥಿಲಜ್ಯಾಬಂಧಮಸ್ಮದ್ಧನುಃ" ಶಾಕುಂ ೨-೬ ।

**ವಿಶ್ವಾವ ವಿಶ್ವಾವ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಖ್ಯಾತಿ, ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ. ವಿ+ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೇ) "ಘ್" (೩-೩-೨೫)। "ವಿಶ್ವಾವಸ್ತು ಪ್ರವಿಶ್ಯಾತಿಃ" ಅಮಂ । 2. ಧೈರ್ಯ, ಶಬ್ದ, ಸದ್ಭಾವ. "ವಿಶ್ವಾವೇ-ಸ್ತೋಯವಿಶ್ವಾವಂ ತರ್ಜಯಂತೋ ಮಹೋದಧೇಃ" ಭಟಿಂ ೭-೩೬ ।

**ವಿಶ್ವತ ವಿಶ್ವತ** (ವಿಂ) ಪ್ರಖ್ಯಾತನಾದವನು, ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಯನ್ನು ಪಡೆದವನು. ವಿ+ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೇ) "ಕ್ತಿಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।

**ವಿಶ್ವತಿ ವಿಶ್ವತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ, ಪ್ರಖ್ಯಾತಿ. ವಿ+ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪) ।

**ವಿಶ್ಲಥ ವಿಶ್ಲಥ** (ವಿಂ) 1. ಶಿಥಿಲವಾದ, ಸಡಿಲವಾದ, ಬಿಗಿಯಾಗಿಲ್ಲದ. ವಿ+ಶ್ಲಥ (ದೌರ್ಬಲ್ಯೇ)+ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಛೇರಾವತಾಸ್ಫಾಲನವಿಶ್ಲಥಂ ಯಃ ಸಂಘಟಯ-ನ್ನಜ್ಞದಮಜ್ಞದೇನ" ರಘುಂ ೬-೭೩ । 2. ಜೋಲಾಬಿದ್ದಿರುವ, ವೀರ್ಯವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡಿರುವ, ಚಟುವಟಿಕೆಯಿಲ್ಲದ. "ವಿಶ್ಲಥೇರವಯವೇನಿಮಿಲಯಾ ಲೋಮಭಿಧ್ರುತಮಿತೆ-ವಿನಿಧ್ರತಾಮ್" ನೈಷಂ ೧೮-೧೧೭ ।

**ವಿಶ್ಲಿಷ್ಠ ವಿಶ್ಲಿಷ್ಠ** (ವಿಂ) ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿಲ್ಲದ, ಒಕ್ಕಟ್ಟಿಲ್ಲದ, ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿರುವ. ವಿ + ಶ್ಲಿಷ (ಆಲಿಂಜನೇ) "ಕ್ತಿಃ" (೩-೪-೭೨) ।

**ವಿಶ್ಲೇಷ ವಿಶ್ಲೇಷ** (ಪುಂ) 1. ಬೇರೆಯಾಗುವುದು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರದಿರುವುದು, ಒಕ್ಕಟ್ಟಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ವಿ + ಶ್ಲಿಷ (ಆಲಿಂಜನೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) । 2. ಅಗಲಿಕೆ, ಇಷ್ಟವಾದ ವಸ್ತುವು ದೂರದಲ್ಲಿರುವುದು, ಪತಿಪತ್ನಿಯರ ವಿರಹ, ಇಷ್ಟ ಬಂಧುವಿನ ವಿರಹ. "ಅಜ್ಞೇಮ್ಯಃ ಕಥಮಪಿ ವಾಮಲೋಚನಾನಾಂ ವಿಶ್ಲೇಷೋ ಬಹು ನವರಕ್ತಕಃ ಪ್ರಪೇದೇ" ಮಾಘಂ ೮-೬೭ । "ಪಿಡಚಂತೇ ಗೃಹಿಣಃ ಕಥಂ ನು ತನಯಾವಿಶ್ಲೇಷ-ದುಃಖೇನವಃ" ಶಾಕುಂ ೪-೫ ।

**ವಿಶ್ಲೇಷಿತ ವಿಶ್ಲೇಷಿತ** (ವಿಂ) ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರತ್ಯೇಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಶ್ಲಿಷ (ಶ್ಲೇಷಣೇ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಿಃ" (೩-೨-೧೦೨) । "ಸಂದೇಶಂ ಮೇ ಹರ ಧನಪತಿಕೋಪವಿಶ್ಲೇಷಿ-ತಸ್ಯ" ಮೇಘಂ ೧-೭ ।

**ವಿಶ್ವ ವಿಶ್ವ** (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 1. ಗಣದೇವತೆಗಳ ಒಂದು ವರ್ಗ, ವಿಶ್ವದೇವತೆಗಳು. ವಿಶ್ವಾನ್ತಿ ಕರ್ಮಸು — ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೇ) "ಕ್ವನ್" (ತಂ ೧-೧೪೯) । ಇವರು ಧರ್ಮ ಪುರುಷನಿಂದ ದಕ್ಷಪುತ್ರಿಯಾದ ವಿಶ್ವಯಂಬ ಪತ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವರು. ವಿಶ್ವದೇವತೆಗಳು: (1) ವಸು: (2) ಸತ್ಯ: (3) ಕ್ರುತು: (4) ದಕ್ಷ: (5) ಕಾಲ: (6) ಕಾಮ: (7) ಧೃತಿ: (8) ಕುರು: (9) ಪುರುರವಸ್ ಮತ್ತೂ (10) ಮಾದ್ರವ: ಎಂದು ಹತ್ತುಮಂದಿ. "ಇತಿಶ್ವಾದ್ವೇ ಕ್ರುತುರ್ದಕ್ಷಃ ಸತ್ಯೋ ನಾಂದೀಮುಖೇ ವಸುಃ । ನೈಮಿತ್ತಿಕೇ ಕಾಲಕಾಮೌ ಕಾಮ್ಯೇ ಕುರುಧೃತೀ ಮತೇ । ಪುರುರವಾ ಮಾದ್ರವಶ್ಚ ಪಾರ್ವಣೇ ಸಮುದಾಹೃತೌ" ಸ್ಮೃತಿಃ । 2. ಜೀವ, ಜೀವಾತ್ಮ. (ನಂ) 3. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ವಿಶತ್ಯವಯವಾನ್—ವಿಶ "ಕ್ವನ್" (ತಂ ೧-೧೪೯) । ಅನಂತ-ಮಾಜ್ಞಲ್ಯೈಕತಾನಸ್ವರೂಪಗುಣವಿಭವಃ ಪರಿಪೂರ್ಣೋ ಭವತಿ । "ವಿಶ್ವಂ ಸರ್ವತ್ರ ಪೂರ್ಣತ್ವಾತ್ ಸ್ವರೂಪಗುಣವೈಭವಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿಃ । "ವಿಶ್ವಂ ವಿಷ್ಣುರ್ವಿಷ್ಣುಕಾರೋ ಭೂತಭವ್ಯಭವತ್ಪ್ರಭುಃ" ವಿಂ ಸಂ । 4. ಜಗತ್ತು, ಲೋಕ, ಪ್ರಪಂಚ. ವಿಶತಿ ಸ್ವಕಾರಣಮ್—ವಿಶ "ಕ್ವನ್" । "ಇದಂ ವಿಶ್ವಂ ಪಾಲಯ ವಿಧಿವದಮಿಭುಕ್ತೇನ ಮನಸಾ" ತಂ ರಾಂ ೩-೩೦ । "ಉಪ್ಪ್ಲುತಂ ಪಾತುಮದೋ ಮದೋದ್ಧತ-ಸ್ವಮೇವ ವಿಶ್ವಮ್ಭರ ವಿಶ್ವಮಿಶಿಷೇ" ಮಾಘಂ ೧-೩೮ । (ಸ್ತ್ರೀನಂ) 5. ಶುಂಠಿ. (ವಿಂ) 6. ಸಕಲ, ಸಮಸ್ತ. "ಅವಿಕ್ರಿಯಶ್ಚೇಷ್ಠಯಸಿ ತ್ವಮೇಕೋ ವಿಶ್ವಾನಿ ಭೂತಾನಿ ವಿಹಾರ-ಶಕ್ತ್ಯಾ" ಯಾದಂ ೨೦-೮೨ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ವಿಶ್ವಾ—ವಿಶ್ವಾ. 7. ಅತಿಬಹು. 8. ವಿಶ್ವದೇವತೆಗಳ ತಾಯಿ, ದಕ್ಷನ ಪುತ್ರಿ, ಧರ್ಮನ ಪತ್ನಿ.

**ವಿಶ್ವಕರ್ಮ ವಿಶ್ವಕರ್ಮ** (ಪುಂ) 1. ಬೇಟೆಯ ನಾಯಿ, ಬೇಟೆಯಲ್ಲಿ ಶಿಕ್ಷಣ ಪಡೆದ ನಾಯಿ. ವಿಶ್ವಕಂ ಸರ್ವ ದ್ರವತಿ — ದ್ರು (ಗತೌ) "ಡುಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೧೮) । 2. ಧೈರ್ಯ, ಶಬ್ದ. (ವಿಂ) 3. ಖಿಲ, ನೀಚ, ಅಸಭ್ಯ. "ವಿಶ್ವಕರ್ಮಸ್ತ್ರಿಣು ಖಲೇ ಧ್ವಾನಾಽಪೇಕ್ಷುನೋಃ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ ।

**ವಿಶ್ವಕರ್ಮ ವಿಶ್ವಕರ್ಮ** (ಪುಂ) ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಕರ್ತನಾದ ಪರಮಾತ್ಮ. "ವಿಶ್ವಕರ್ಮರವತಾರ ಇತಿ ಸ್ವಂ ಬಹ್ಮಮಸ್ತು ಬಧಿರೋ ನಿಗಮೇಶು" ಯಾದಂ ೨೧-೫ ।

**ವಿಶ್ವಕರ್ಮನ್ ವಿಶ್ವಕರ್ಮನ್** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆಯಾದ ವಿಶ್ವಕರ್ಮ. ವಿಶ್ವೇಷು ಕರ್ಮ ಯಸ್ಯ । "ದೃಷ್ಟಾ ಚ ವಿಶ್ವಕರ್ಮಾಣಿ"



ವ್ಯಾಧಿದೇಶ ಪಿತಾಮಹಃ" ಮಾಂ. 2. ಒಬ್ಬ ಮುನಿ.  
3. ಸೂರ್ಯ. "ವಿಶ್ವಕರ್ಮಾ ಸಹಸ್ರಾಂಶೌ ಮುನಿಭಿಃ  
ಶಿಲ್ಪಿನೋಃ" ಮೇದಿಂ. 4. ವಿಷ್ಣು. ಬ್ರಹ್ಮಸೃಷ್ಟಿಃ ಪ್ರಾಗುರ್ವ  
ಚ ವಿಶ್ವಮಾನಂ ವಿಶ್ವಂ ಕರ್ಮ ಜಗದ್ವ್ಯಾಪಾರೋಽಸ್ಯ. "ವಿಶ್ವಕರ್ಮಾ  
ಮನುಸ್ತ್ವಂಛಾ" ವಿಂ ಸಂ.

**ವಿಶ್ವಕರ್ಮಸುತಾ ವಿಶ್ವಕರ್ಮಸುತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಶ್ವಕರ್ಮನ  
ಮಗನಾದ ಸುಹೃದೇವಿ, ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ.

**ವಿಶ್ವಕೃತ್ ವಿಶ್ವಕೃತ್** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. 2. ಬ್ರಹ್ಮ,  
ಚತುರ್ಮುಖ. 3. ವಿಶ್ವಕರ್ಮ. ವಿಶ್ವಂ ಕರೋತಿ—ಛತ್ವ  
(ಕರಣ) "ವಿವಪ್" (3-2-96).

**ವಿಶ್ವಕೇತು ವಿಶ್ವಕೇತು** (ಪುಂ) ಅನಿರುದ್ಧ. ವಿಶ್ವಸ್ತಿಮನ್  
ಕೇತುರಸ್ಯ.

**ವಿಶ್ವಗುಪ್ತಿ ವಿಶ್ವಗುಪ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಗತ್ತಿನ ರಕ್ಷಣೆ. ವಿಶ್ವಸ್ಯ  
ಗುಪ್ತಿಃ. "ವಿಶ್ವಗುಪ್ತೌ ಜಗತ್ಕರ್ತೃ ವಿನಿಯುಕ್ತಾ ವಿಮೃತಯಃ"  
ಯಾದಂ 22-8.

**ವಿಶ್ವಗೋಪ್ತ ವಿಶ್ವಗೋಪ್ತ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ  
ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣ. ವಿಶ್ವಸ್ಯ ಜಗತಃ ಗೋಪ್ತಾ. (ವಿಂ)  
2. ಜಗತ್ತನ್ನು ಸಂರಕ್ಷಿಸುವ.

**ವಿಶ್ವಜನೀನ ವಿಶ್ವಜನೀನ** (ವಿಂ) ಎಲ್ಲಾ ಜನರಿಗೂ ಹಿತ  
ವಾದ. ವಿಶ್ವಸ್ಮೈ ಜನಾಯ ಹಿತಮ್—ವಿಶ್ವಜನ "ಖಃ"  
(4-1-9). "ತದಿನ್ದ್ರಸನ್ದಿಷ್ಟಮುಪೇಂದ್ರ ಯದ್ವಚಃ ಕ್ಷಣಂ ಮಯಾ  
ವಿಶ್ವಜನೀನಮುಚ್ಯತೇ" ಮಾಘಂ 1-81.

**ವಿಶ್ವಜಿತ್ ವಿಶ್ವಜಿತ್** (ಪುಂ) 1. ವಿಶ್ವಜಿತ್ಯಂಬ ಒಂದು  
ಯೋಗ. ವಿಶ್ವಂ ಜಯತಿ—ಜಿ(ಜಯ) "ವಿವಪ್" (3-2-61).  
"ತಮವ್ವರೇ ವಿಶ್ವಜಿತಿ ಕ್ಷಿತಿಶಿಂ ನಿಶಿಷವಿಶ್ರಾಣಿತಕೋಶ-  
ಜಾತಮ್" ರಘುಂ 4-1. 2. ಒಂದು ಅಗ್ನಿ. "ಯಸ್ತು  
ವಿಶ್ವಸ್ಯ ಜಗತೌ ಬುದ್ಧಿಮಾಕ್ರಮ್ಯ ತಿಷ್ಠತಿ. ತಂ ಪ್ರಾಹುರವ್ಯಾತ್ಮ-  
ವಿದೌ ವಿಶ್ವಜಿತ್ತಾಮಪಾವಕಮ್" ಮಾಂ. (ವಿಂ) 3. ಜಗ-  
ತ್ತನ್ನು ಜಯಿಸಿದವನು.

**ವಿಶ್ವತಸ್ ವಿಶ್ವತಸ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಿಂದಲೂ.  
2. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ. ವಿಶ್ವ "ತಸಿಲ್" (4-3-9).

**ವಿಶ್ವ(ಃ)ದೇವ ವಿಶ್ವ(ಃ)ದೇವ** (ಪುಂ.ಬಂ.ವಂ) "ವಿಶ್ವ"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ವಿಶ್ವಧಾರಿಣಿ ವಿಶ್ವಧಾರಿಣೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ.  
ವಿಶ್ವಂ ಸಕಲಂ ಧಾರಯತಿ—ಧೃ (ಧಾರಣ) + ಣಿವ್ "ಣಿತಿಃ"  
(3-1-134).

**ವಿಶ್ವನಾಥ ವಿಶ್ವನಾಥ** (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ, ಜಗತ್ತಿನ  
ಒಡೆಯ. ವಿಶ್ವಸ್ಯ ನಾಥಃ.

**ವಿಶ್ವಪಾ ವಿಶ್ವಪಾ** (ಪುಂ) 1. ಸಮಸ್ತ ಜಗತ್ತನ್ನೂ ರಕ್ಷಿಸುವ  
ಪರಮಾತ್ಮ. ವಿಶ್ವಂ ಪಾತಿ—ಪಾ (ರಕ್ಷಣ) "ವಿವ್"  
(3-3-94). 2. ಸೂರ್ಯ. 3. ಚಂದ್ರ. 4. ಅಗ್ನಿ.

**ವಿಶ್ವಪ್ರಕಾಶ ವಿಶ್ವಪ್ರಕಾಶ** (ಪುಂ) ಶ್ರೀ ಮಹೇಶ್ವರಕವಿ  
ವಿರಚಿತ ಒಂದು ಶಬ್ದಕೋಶ, -ನಿಘಂಟು.

**ವಿಶ್ವಬಂಧು ವಿಶ್ವಬಂಧು** (ಪುಂ) ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲರಿಗೂ  
ಸುಹೃತ್ತಾಗಿರುವ ಮಹಾತ್ಮ.

**ವಿಶ್ವಭೇಷಜ ವಿಶ್ವಭೇಷಜ** (ನಂ) ಒಣಶುಂಠಿ. ವಿಶ್ವಸ್ಯಾಪಿ  
ದೌಷಸ್ಯ ಭೇಷಜಮ್. "ಅಥ ಶುಂಠಿ ಮಹೌಷಧಮ್. ಸ್ತ್ರೀ-  
ನಪುಸಕಯೋವಿಶ್ವಂ ನಾಗರ ವಿಶ್ವಭೇಷಜಮ್" ಅಮಂ.

**ವಿಶ್ವಭೋಕ್ತ ವಿಶ್ವಭೋಕ್ತ** (ಪುಂ) ಜಗತ್ತೆಲ್ಲವನ್ನೂ  
ಅನುಭವಿಸುವವನು. ವಿಶ್ವಂ ಭುಂಕ್ತೇ—ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾ-  
ಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) "ತೃವ್" (3-1-133). "ವಿಶ್ವ-  
ಭೋಕ್ತುರಧಿಗಮ್ಯ ತಿತಿಕಾಮ್" ಯಾದಂ 21-10. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
"ಜಿವ್" (4-1-4). -ಭೋಕ್ತೃ.

**ವಿಶ್ವಮದಾ ವಿಶ್ವಮದಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಯ ಸಪ್ತಜಿಹ್ವಗಳ-  
ಲ್ಲೊಂದು.

**ವಿಶ್ವಮೂರ್ತಿ ವಿಶ್ವಮೂರ್ತಿ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರ,  
ಪರಶಿವ. (ವಿಂ) 2. ಸಕಲ ಪ್ರಪಂಚವೂ ತರೀರವಾಗಿ  
ರುವ (ಈಶ್ವರ). ವಿಶ್ವಂ ಮೂರ್ತಿಯಸ್ಯ. "ಕಲ್ಯಾಣಾನಾಂ ತ್ವಮಸಿ  
ಮಹಸಾಂ ಭಾಜನಂ ವಿಶ್ವಮೂರ್ತೆ" ಮಾಲತೀಂ 1-4.

**ವಿಶ್ವಮ್ಮರ ವಿಶ್ವಂಭರ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ವಿಶ್ವಂ ವಿಭರ್ತಿ—  
ಛು ಭುಜ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) "ವಿವ್" (3-2-86). ಮುಮಾ-  
ಗಮಃ (6-3-67). "ವಿಶ್ವಮ್ಮರ ಭರಾಸ್ಮಾಕಂ ವಿಶ್ವಸ್ಮಾಹಾ  
ಬಹಿಃ ಕುರು. ಅಥ ಪಕ್ಷದ್ವಯಾಭಾವೇ ತ್ಯಜ ವಿಶ್ವಮ್ಮರತ್ವ-  
ಕಮ್". 2. ಇಂದ್ರ. "ವಿಶ್ವಮ್ಮರೋಚ್ಯುತೇ ಶಕ್ರೇ ಪುಸಿ  
ವಿಶ್ವಮ್ಮರಾ ಭುವಿ" ಮೇದಿಂ. (ವಿಂ) 3. ಜಗತ್ತೆಲ್ಲವನ್ನೂ  
ಧರಿಸಿರುವವನು. "ಉಪ್ಪ್ಲುತಂ ಪಾತುಮದೌ ಮದೊದ್ಧತೇತ್ವಮೇವ  
ವಿಶ್ವಮ್ಮರ ವಿಶ್ವಮೌಶಿಷೇ" ಮಾಘಂ 1-36. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಭರಾ-ಭರಾ. 4. ಭೂಮಿ. "ಆಸನ್ನಭಾರಾತ್ಯಯಜಾತ-  
ಹರ್ಷಾ ವಿಶ್ವಮ್ಮರಾ ಸೇನ್ಯಭರಂ ವಿಷೇಹೇ" ಯಾದಂ 20-6.

**ವಿಶ್ವಯೋನಿ ವಿಶ್ವಯೋನಿ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ಬ್ರಹ್ಮ.  
ಚತುರ್ಮುಖ. ವಿಶ್ವಸ್ಯ ಯೋನಿಃ ಕಾರಣಮ್. 3. ಶಿವ.

**ವಿಶ್ವರೂಪ ವಿಶ್ವರೂಪ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ವಿಶ್ವಮೇವ ರೂಪಂ  
ಯಸ್ಯ. 2. ಪರಮೇಶ್ವರ. (ವಿಂ) 3. ನಾನಾರೂಪ  
ದಿಂದ ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಇರುವ. "ಸೃಷ್ಟಿಸಂಹರಣರಕ್ಷಣೇಷು  
ತೇ ವಿಶ್ವರೂಪ ನನು ಕರ್ಮಕರ್ತೃತಾ" ಯಾದಂ 19-106.

**ವಿಶ್ವರೇತಸ್ ವಿಶ್ವರೇತಸ್** (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ. ವಿಶ್ವೇ ರೇತಃ  
ಯಸ್ಯ. 2. ವಿಷ್ಣು. ವಿಶ್ವಂ ರೇತಃ ವೀರ್ಯಂ ಕಾರ್ಯಮಸ್ಯ.



“ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯಾದಿಕಂ ವಿಶ್ವಂ ಪರಿಚಯಾರ್ಥಮೇವ ಹಿ । ಯಃ ಪ್ರಜಾನಾಂ ಕರೋತಿತಿ ವಿಶ್ವೇತಾಶ್ಚ ಸ ಸ್ಮೃತಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ ।

“ವಿಶ್ವೇತಾಃ ಪ್ರಜಾಭವಃ” ವಿಂ ಸಂ ।

**ವಿಶ್ವವೇದಸ್ ವಿಶ್ವವೇದಸ್** (ವಿಂ) ಸಕಲವನ್ನೂ ತಿಳಿದಿರುವವನು, ಸರ್ವಜ್ಞ. ವಿಶ್ವಂ ವೇದಿ—ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) “ಅಸುನ್” (ತಂ ೩-೧೮೮) ।

**ವಿಶ್ವಸನೀಯ ವಿಶ್ವಸನೀಯ** (ವಿಂ) ವಿಶ್ವಾಸವಿಡಲ್ಪಡುವ. ನಂಬುಗೆಯಿಡಲ್ಪಡುವ. ವಿ+ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । “ತವ್ಯಃ” । -ಶ್ವಸಿತವ್ಯಮ್ -ಶ್ವಸಿತವ್ಯಮ್.

**ವಿಶ್ವಸಿತ ವಿಶ್ವಸಿತ** (ವಿಂ) ವಿಶ್ವಾಸಹೊಂದಿದ, ನಂಬಿದ. ವಿ+ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) । “ತವದೀಕ್ಷಣಾ-ದ್ವಿಶ್ವಸಿತಾಂತರಾತ್ಮನಃ” ನೆಪಂ ೧-೧೩೧ ।

**ವಿಶ್ವಸೃಜ್ ವಿಶ್ವಸೃಜ್** (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ವಿಶ್ವಂ ಸೃಜತಿ—ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) “ಕಿವಪ್” (೩-೨-೭೬) । “ಪ್ರಾಯೇಣ ಸಾಮಗ್ರ್ಯವಿಧೌ ಗುಣಾನಾಂ ಪರಾತ್ಮಮುಖೀ ವಿಶ್ವಸೃಜಃ ಪ್ರವೃತ್ತಿಃ” ಕುಮಾಂ ೩-೨೮ । 2. ವಿಷ್ಣು. “ವಿಶ್ವಂ ಜಗತ್ ಸೃಜತಿ ಯಃ ವಿಶ್ವಸೃಕ್ ಸ ಪ್ರಕೀರ್ತತಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । “ಸುಪ್ರಸಾದಃ ಪ್ರಸನ್ನಾತ್ಮಾ ವಿಶ್ವಸೃದ್ವಿಶ್ವಭುಗ್ವಿಭುಃ” ವಿಂ ಸಂ ।

**ವಿಶ್ವಸ್ತ ವಿಶ್ವಸ್ತ** (ವಿಂ) 1. ನಂಬುಗೆಯಿಟ್ಟಿರುವ. ವಿ+ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) । “ನ ವಿಶ್ವಸೇದ-ವಿಶ್ವಸ್ತೇ ವಿಶ್ವಸ್ತೇ ನಾತಿವಿಶ್ವಸೇತ್ । ವಿಶ್ವಾಸಾಽದ್ವಯಮುತ್ಪನ್ನ ಮೂಲಾದಪಿ ನಿಷ್ಕ್ರಾಂತತಿ” । 2. ಧೈರ್ಯದಿಂದಿರುವ, ಹೆದರದಿರುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಶ್ವಸ್ತಾ-ಶ್ವಸ್ತಾ. ಪತಿಯಿಲ್ಲದವಳು, ವಿಧವೆ.

**ವಿಶ್ವಾ ವಿಶ್ವಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅತಿಬಹು. ವಿಶ್ವ (ಪ್ರವೇಶನೆ) “ಕವನ್” (ತಂ ೧-೧೪೯) । 2. ಶತಾವರಿ.

**ವಿಶ್ವಾಚೀ ವಿಶ್ವಾಚೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಬ್ಬ ಅಪ್ಸರಸ್ಸು.

**ವಿಶ್ವಾತ್ಮನ್ ವಿಶ್ವಾತ್ಮನ್** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. “ವಿಶ್ವಮೇವ ಆತ್ಮಾಽಸ್ಯ । “ಜನ್ಮ ಕರ್ಮ ಚ ವಿಶ್ವಾತ್ಮಜನ್ಯಸ್ಯಾಕರ್ತುಮಾತ್ಮನಃ” ಭಾಗಂ ೧-೮-೩೦ । 2. ಮಹಾದೇವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. “ಅಥ ವಿಶ್ವಾತ್ಮನೇ ಗೌರೀ ಸಂದಿದೇಶ ಮಿಥಃ ಸಖೀಮ್” ಕುಮಾಂ ೬-೧ ।

**ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ** (ಪುಂ) ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಮಹರ್ಷಿ, ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿ. ವಿಶ್ವಮೇವ ಮಿತ್ರಮಸ್ಯ । ದೀರ್ಘಃ (೬-೩-೧೩೦) । [ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಮುಷಿಯು ಕುಶಿಕರಾಜನ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಗಾಧಿರಾಜನ ಪುತ್ರನಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ಕ್ಷತ್ರಿಯ. ಒಮ್ಮೆ ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಸತ್ಯತನಾಗಿ ನಂದಿನೀದೇವತೆಯನ್ನು ಮಹಿಮೆಯನ್ನು ಕಂಡು ಅದನ್ನು ತನಗೆ ಕೊಡಬೇಕೆಂದು ಬೇಡಲು ವಸಿಷ್ಠರು ಅದಕ್ಕೆ ಸುಮತಿಸಲ್ಲಿಲ್ಲ. ಅದಕ್ಕಾಗಿ

ಬಹಳವಾಗಿ ಹೋರಾಡಿ ಪರಿಭವ ಹೊಂದಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ್ಯವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಲು ಅನೇಕಸಹಸ್ರವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ತಪಸ್ಸನ್ನಾಚರಿಸಿ ಕೊನೆಗೆ ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿಯೆನಿಸಿಕೊಂಡನು. ತಪಸ್ಸಿನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ತಪೋಭಂಗಕ್ಕಾಗಿಬಂದ ಮೇನಕೆಯೊಡನೆ ಕೆಲಕಾಲ ಸಂಸಾರಿಯಾಗಿ ದ್ವಾಗ ಶಕುಂತಲೆಯು ಹುಟ್ಟಿದಳು. ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿಯಾಗಿ ತನ್ನ ತಪೋಮಹಿಮೆಯಿಂದ ತ್ರಿಶಂಕುವನ್ನು ಸಶರೀರನಾಗಿ ಸ್ವರ್ಗಕ್ಕೇರಿಸಲು ಯತ್ನಿಸಿದಾಗ ಇಂದ್ರನು ಗುರು ಶಾಪದಿಂದ ಪತಿತನಾದ ಇವನನ್ನು ಸ್ವರ್ಗಕ್ಕೆ ಸೇರಿಸಲು ತಿರಸ್ಕರಿಸಲು ಕುಪಿತನಾದ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನು ತನ್ನ ತಪಶ್ಚಕ್ತಿಯಿಂದ ಸ್ವರ್ಗದ ಮಾರ್ಗದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲೇ ಒಂದು ಸ್ವರ್ಗವನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ಅಲ್ಲೇ ತ್ರಿಶಂಕುವನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸಿದನು. ಅದಕ್ಕೆ ತ್ರಿಶಂಕುಸ್ವರ್ಗವೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಋಚೀಕಮುನಿಯ ಮಧ್ಯಮ ಪುತ್ರನಾದ ಶುನಃಶೇಫನು ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರರಾಜನ ಯಜ್ಞದಲ್ಲಿ ಯಜ್ಞಪಶುವಾಗಿ ಆಗಬೇಕಾದ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನು ತನ್ನ ಮಂತ್ರಬಲದಿಂದ ಅವನನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಿದನು. ಅಂದಿನಿಂದ ಶುನಃಶೇಫನು ಈ ಋಷಿಯ ಅಭಿಮಾನಪುತ್ರನಾದನು. ಈ ಮಹರ್ಷಿಯು ತನ್ನ ಯಾಗ ರಕ್ಷಣೆಯ ವ್ಯಾಜದಿಂದ ಶ್ರೀರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರನ್ನು ಕರೆದು ಕೊಂಡು ಹೋಗಿ ತಾಟಕಾಸಂಹಾರಮಾಡಿಸಿ ಮುಂದೆ ಜನಕರಾಜನ ಪಟ್ಟಣವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಶ್ರೀರಾಮನಿಂದ ಶಿವಧನುರ್ಭಂಗಮಾಡಿಸಿ ಸೀತಾಸ್ವಯಂವರವನ್ನು ನೆರವೇರಿಸಿದನು. ಇತ್ಯಾದಿ.]

**ವಿಶ್ವಾರಾಜ್ ವಿಶ್ವಾರಾಜ್** (ಪುಂ) ಜಗತ್ತಿನ ಅಧಿಪತಿ. ವಿಶ್ವೇಷು ರಾಜತೇ—ವಿಶ್ವೇಷಾ ಸತ್ ರಾಜಾ ವಾ । ದೀರ್ಘಃ (೬-೩-೧೨೮) ।

**ವಿಶ್ವಾವಸು ವಿಶ್ವಾವಸು** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಗಂಧರ್ವ. ವಿಶ್ವಂ ವಸು ಯಸ್ಯ—ದೀರ್ಘ. (೬-೩-೧೨೮) । “ವಿಶ್ವಾವಸುಪ್ರಾಗ್ರಹರಃ ಪ್ರವೀಣಃ ಸಂಗೀಯಮಾನವಿಪುರಾವದಾನಃ” ಕುಮಾಂ ೭-೪೮ । 2. ಪ್ರಭವಾದಿ ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಮೂವತ್ತೊಂಬತ್ತನೆಯ ಸಂವತ್ಸರ. 3. ವಿಷ್ಣು. “ವಿಶ್ವಾವಸು-ವಿಶ್ವಮೂರ್ತಿಹಿ ವಿಶ್ವೇ ವಿಷ್ವಕ್ಸೇನೋ ವಿಶ್ವಕರ್ಮಾ ವಶೀ ಚ” ಭಾಂ. ಭೀಷ್ಮಂ ೬೪-೪೭ ।

**ವಿಶ್ವಾಸ ವಿಶ್ವಾಸ** (ಪುಂ) 1. ನಂಬುಗೆ ನಂಬಿಕೆ. ವಿ+ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) “ವಶ್” (೩-೩-೧೮) । “ನದೀನಾಂ ಶಸ್ತ್ರಪಾಣಿನಾಂ ನಖಿನಾಂ ಶ್ರುಂಗಿಣಾಂ ತಥಾ । ವಿಶ್ವಾಸೋ ನೈವ ಕರ್ತವ್ಯಃ ಸ್ತ್ರೀಷು ರಾಜಕುಲೇಷು ಚ” । (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಅರ್ಧರಾತ್ರಿ, ನಡುರಾತ್ರಿ. “ವಿಶ್ವಾವಸು ಪುನಃ । ನಿಶಿ ಗಂಧರ್ವಭೇದೇ ಚ” ಹೇಮಂ । 3. ಪ್ರೀತಿ.



ವಿಶ್ವಾಸಘಾತ ವಿಶ್ವಾಸಘಾತ (ಪುಂ) 1. ವಿಶ್ವಾಸವನ್ನು ಒಡೆಯುವುದು, ವಿಶ್ವಾಸವನ್ನು ಕಡೆಸುವುದು. ವಿಶ್ವಾಸಸ್ಯ ಘಾತಃ। 2. ನಂಬುಗೆಯನ್ನು ಕಡೆಸುವುದು.

ವಿಶ್ವಾಸಘಾತಕ ವಿಶ್ವಾಸಘಾತಕ (ವಿಂ) ನಂಬಿಕೆಯನ್ನು ಕಳೆಯುವವನು, ನಂಬಿಕೆಯನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವವನು.

ವಿಶ್ವಾಸಂ ಹಂತಿ-ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) "ಘ್ನುಲ್" (3-1-133)।

"ನ ಭಾರಾಃ ಪರ್ವತಾ ಭಾರಾಃ ನ ಭಾರಾಃ ಸಪ್ತ ಸಾಗರಾಃ। ನಿಂದಕಾ ಹಿ ಮಹಾಭಾರಾ ಭಾರಾ ವಿಶ್ವಾಸಘಾತಕಾಃ"।

ವಿಶ್ವಾಸಪಾತ್ರ ವಿಶ್ವಾಸಪಾತ್ರ (ನಂ) ನಂಬಿಕೆಗೆ ಯೋಗ್ಯ ನಾದವನು, ನಂಬಿಕೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದವನು. ವಿಶ್ವಾಸಸ್ಯ ಪಾತ್ರಮ್। -ಭೂಮಿಃ -ಭೂಮಿಃ, -ಸ್ಥಾನಮ್ -ಸ್ಥಾನಮ್.

ವಿಶ್ವಾಸಭಜ್ಜ ವಿಶ್ವಾಸಭಂಗೆ (ಪುಂ) ನಂಬಿಕೆ ನಾಶವಾಗುವುದು, ನಂಬಿಕೆಯು ಕಳೆದುಹೋಗುವುದು. ವಿಶ್ವಾಸಸ್ಯ ಭಜ್ಜಃ।

ವಿಶ್ವೇದೇವ ವಿಶ್ವೇದೇವ (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) "ವಿಶ್ವ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ವಿಶ್ವೇಶ ವಿಶ್ವೇಶ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ವಿಶ್ವಸ್ಯ ಜಗತಃ ಇಶಃ। "ಅಥ ವಿಶ್ವೇಶ ವಿಶ್ವಾತ್ಮನ್ ವಿಶ್ವಮೂರ್ತೇ ಸ್ವಕೇಷು ಮೇ। ಸ್ನೇಹಪಾಶಮಿಮಂ ಕ್ಷಿನ್ವಿ ದೃಢಂ ಪಾಂಡುಷು ವೃಣಿಷು" ಭಾಗಂ 1-೮-೪೧। 2. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. -ಈಶ್ವರಃ -ಈಶ್ವರಃ. ಕಾಶಿಯಲ್ಲಿ ನೆಲೆಸಿರುವ ಮಹಾದೇವ, ಪರಶಿವ.

ವಿಶ್ವೌಷಠ ವಿಶ್ವೌಷಠ (ನಂ) ಶುಂಠಿ. ವಿಶ್ವೇಷಾಮೌಷಠಮ್।

ವಿಷ ವಿಷ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ, ನಂಜು. ವಿಷಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಕಃ" (3-1-135)। "ತೀವ್ರಾಣಿ ತೇನೋಜ್ಜತಿ ಕೋಪಿತೋಽಸೌ ಸದಾನತೋಯೇನ ವಿಷಾಣಿ ನಾಗಃ" ಮಾಘಂ ೪-೬೩। ವಿಷವು ಸ್ಥಾವರಜಂಗಮಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ.

ಸ್ಥಾವರವಿಷಃ ಕೆಲವು ಗಿಡ ಮರಗಳ ಬೇರು ಎಲೆ ಹೂವು ಹಣ್ಣು ತೋಗಟೆ ಹಾಲು ರಸಗಳೂ ಅರಿದಳ ಮೊದಲಾದ ಧಾತುಗಳೂ ಸ್ಥಾವರವಿಷ.

ಕೆಲವು ಪ್ರಾಣಿಗಳ ದೃಷ್ಟಿ ಉಸಿರು ಹಲ್ಲು ನಖ ಮೂತ್ರ ಮಲ ರೇತಸ್ಸು ಜೊಲ್ಲು ಮುಖ ಸ್ಪರ್ಶ ಕಡಿತ ಗುದ ಅಸ್ಥಿ ಮುಳ್ಳುಗಳಲ್ಲಿ ವಿಷವಿರುವುದು. ಇದು ಜಂಗಮವಿಷ. (ನಂ) 2. ಜಲ, ನೀರು. "ವಿಷಂ ಜಲಧರಃ ಪೀತಂ ಮುಚ್ಛಿತಾಃ ಪಥಿಕಾಙ್ಗನಾಃ"। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವಾ -ವಾ. 3. ಅತಿಬಿಡು. "ವಿಷಂ ಜಲೇತಿವಿಷಾಯಾಂ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಕ್ವೇಡೇ ತು ನ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ।

ವಿಷಕಂಠ ವಿಷಕಂಠ (ಪುಂ) ವಿಷಪಾನಮಾಡಿದ ಪರಮೇಶ್ವರ.

ವಿಷಕ್ತ ವಿಷಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ, ಸೇರಿ ಹೊಂದಿರುವ. ವಿ+ಷಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೇ) "ಕ್ತಃ" (3-೪-೭೨)।

"ತುರಗಕುರಹತಸ್ತಥಾ ಹಿ ರೇಣುವಿಟಪವಿಷಕ್ತಜಲಾಂವಲಕಲೇಷು" ಶಾಕುಂ 1-೨೮। 2. ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವ. "ಪ್ರಸ್ವೇದವಾರಿಸವಿಶೇಷವಿಷಕ್ತಮಜ್ಜೇ ಕೂಪಸಿಕಂ ಕ್ಷತನಖಕ್ಷತಮುತ್ಕಿಪಂತಿ" ಮಾಘಂ ೪-೨೩। 3. ಹುಟ್ಟಿದ, ಉಂಟಾದ. "ಅಪತ್ಯೇ ಯತ್ತಾದ್ಕು ದುರಿತಮಭವತ್ತೇನ ಮಹತಾ ವಿಷಕ್ತಸ್ತೀವ್ರೇಣ ಕ್ಷಣಿತ-ಹೃದಯೇನ ವ್ಯಥಯತಾ" ತಂ ರಾಂ ೪-೩।

ವಿಷಕ್ರಮಿ ವಿಷಕ್ರಮಿ (ಪುಂ) ಎಷ್ಟದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿಬೆಳೆದ ಹುಳ. ವಿಷೇ ಜಾತಃ ಕ್ರಮಿಃ।

ವಿಷಜ್ಞ ವಿಷಜ್ಞ (ಪುಂ) ಸಂಬಂಧ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ. ವಿ+ಷಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೇ) "ಜ್ಞ" (3-3-1೮)।

ವಿಷಜ್ಞಿನ್ ವಿಷಜ್ಞಿನ್ (ವಿಂ) ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ, ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. ವಿಷಜ್ಞೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-11೪)। "ವಿಷಜ್ಞಿಭಿರ್ಮೃಗಮಿತರೆತರಂ ಕ್ವಚಿತ್ತುರಜ್ಞಮೇರಪರಿ ನಿರ್ದದ್ಧನಿರ್ಗಮಾಃ" ಮಾಘಂ 1೭-೪೩।

ವಿಷಙ್ಗ ವಿಷಙ್ಗ (ಪುಂ) 1. ಶಿರೀಷವೃಕ್ಷ, ಬಾಗೆಮರ. ವಿಷಂ ಹಂತಿ-ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) "ಠಕ್" (3-೨-೪೩)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಙ್ಗಾ -ಙ್ಗಾ. 2. ಅಮೃತಬಳ್ಳಿ. 3. ಕೆಂಪು ತಿಗಡೆ. "ವಿಷಙ್ಗಃ ಶಿರೀಷತರೌ ವಿಷಙ್ಗಾ ತ್ರಿವೃತಾಽಮೃತಾ" ಹೇಮಂ। -ಙ್ಗಿ -ಙ್ಗಿ. 4. ಹಾವುಮೆಕ್ಕು. 5. ಕೊಮ್ಮೆ ಗಿಡ. 6. ಹಂದಿ, ಅರಿಸಿನ.

ವಿಷಜ್ವರ ವಿಷಜ್ವರ (ಪುಂ) 1. ಮಹಿಷ, ಎಮ್ಮೆ. ವಿಷವತ್ ಮಾರಕೋ ಜ್ವರೋಽಸ್ಯ। 2. ವಿಷಮಶೀತಜ್ವರ.

ವಿಷಣ್ಣ ವಿಷಣ್ಣ (ವಿಂ) ದುಃಖಿತನಾದವನು, ದುಃಖಿ ಗೊಂಡವನು. ವಿ+ಷದ್ಲ್ (ವಿಶರಣಾದಿ) "ಕ್ತಃ" (3-೪-೭೨)। "ಇತಿ ವಿಪ್ರಿಯಮಾಕರ್ಷ್ಯಂ ಗೋಪ್ಯೋ ಗೋವಿಂದ-ಭಾಷಿತಮ್। ವಿಷಣ್ಣಾ ಭಗ್ನಸಂಕಲ್ಪಾಃ ಚಿಂತಾಮಾಪ್ತುರ್ದುಃಖಯಾಮ್" ಭಾಗಂ 10-೨೯-೨೮।

ವಿಷಣ್ಣತಾ ವಿಷಣ್ಣತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುಃಖಿಗೊಂಡಿರುವಿಕೆ. ವಿಷಣ್ಣಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-1-11೯)।

ವಿಷದ ವಿಷದ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ವಿಷಂ ಜಲಂ ದದಾತಿ-ಡುಡಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (3-೨-೩)। (ವಿಂ) 2. ವಿಷವನ್ನು ಕೊಡುವವನು. 3. ನೀರನ್ನು ಕೊಡುವವನು. ವಿಷಂ ಕ್ವೇಡಂ ಜಲಂ ವಾ ದದಾತಿ-ದಾ "ಕಃ" (3-೨-೩)।

ವಿಷದಂತಕ ವಿಷದಂತಕ (ಪುಂ) ಸರ್ಪ. ವಿಷಂ ದಂತೇ ಯಸ್ಯ।

ವಿಷದರ್ಶನಮೃತ್ಯುಕ ವಿಷದರ್ಶನಮೃತ್ಯುಕ (ಪುಂ) ಚಕೋರ ಪಕ್ಷಿ. ವಿಷದರ್ಶನೇ ಮೃತ್ಯುರಸ್ಯ। "ಕಪ್" (೪-೪-1೪೪)।



**ವಿವಿಧ ವಿಷದಿಗ್ಧ** (ವಿಂ) ವಿಷದಿಂದ ಬಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ  
ಬಾಣ ಮೊದಲಾದುದು. ವಿವಿಧ ದಿಘಃ |

**ವಿಷದ್ರೂಪ ವಿಷದ್ರೂಪ** (ಪುಂ) ವಿಷವೃಕ್ಷ.

**ವಿಷಧರ ವಿಷಧರ** (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಧರತಿ-ಭ  
(ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | ವಿಷಸ್ಯ ಧರಃ |  
(ವಿಂ) 2. ವಿಷವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ.

**ವಿಷನಾಡೀ ವಿಷನಾಡೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಷದ ಸಮಯ, ಅನೇಕ  
ವಿಧ ತೊಂದರೆಗಳೇರ್ಪಡುವ ಕಾಲ. ವಿಷತುಲ್ಯಾ ನಾಡೀ |

**ವಿಷನಾಶಕ ವಿಷನಾಶಕ** (ವಿಂ) ವಿಷದ ದೋಷವನ್ನು  
ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. ವಿಷಂ ವಿಷಜಾತಂ ದೋಷಂ ನಾಶಯತಿ-ಗಣ  
(ಅದರ್ಶನೆ) + ಗಿನ್ "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | "ಲ್ಯುಃ"  
(೩-೧-೧೩೪) | -ನಾಶನಃ -ನಾಶನಃ. "ಗಿನಿಃ"  
(೩-೧-೧೩೪) | -ನಾಶಿನ್ -ನಾಶಿನ್. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಕೀಪ್"  
(೪-೧-೪) | -ನಾಶಿನಿ -ನಾಶಿನೀ.

**ವಿಷಪುಂಜ ವಿಷಪುಂಜ** (ವಿಂ) ಬಾಲದಲ್ಲಿ ವಿಷವಿರುವ.  
ಬಾಲದಲ್ಲಿ ವಿಷವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. ವಿಷಂ ಪುಂಜೇ ಯಸ್ಯ |

**ವಿಷಪುಂಜಕ ವಿಷಪುಂಜಕ** (ಪುಂ) ಮದನವೃಕ್ಷ, ಮಂಗಾರಿ  
ಗಿಡ. ವಿಷಯುಕ್ತಂ ಪುಂಜಮಸ್ಯ | "ಕಪ್" |

**ವಿಷಭಿಷಜ್ ವಿಷಭಿಷಜ್** (ಪುಂ) ವಿಷವೈದ್ಯ.

**ವಿಷಮ ವಿಷಮ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಸುಹೃದಯರಲ್ಲಿ  
ಕ್ಷೇಮಂಕರನಾಗಿಯೂ ಕುಟಿಲಹೃದಯರಲ್ಲಿ ಭಯಂಕರ  
ನಾಗಿಯೂ ಇರುವುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ವಿಷಮ  
ನಾದನು. "ಭೀತಿಕೇಮಕರತ್ವಾದಿ ಕುಟಿಲಾಕುಟಿಲಾತ್ಮಸು |  
ವಿಷಮಃ ಸ ತು ವಿಕೃತಾಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | 2. ಬೆಸರಾಶಿ,  
ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಆಯುಗ್ಮರಾಶಿ. 1 3  
5 7 9 ಮತ್ತು 11 ನೆಯ ರಾಶಿಗಳು. (ಮೇಷ ಮಿಥುನ  
ಸಿಂಹ ತುಲಾ ಧನುಸ್ಸು ಮತ್ತು ಕುಂಭ ರಾಶಿಗಳು).  
3. ಒಂದು ಜಾತರಾಗ್ನಿ. ಜಾತರಾಗ್ನಿಯು (1) ಮಂದಃ  
(2) ತೀಕ್ಷ್ಣಃ (3) ವಿಷಮಃ ಮತ್ತು (4) ಸಮಃ ಎಂದು  
ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ವಿಷಮಜಾತರಾಗ್ನಿಯು ವಾತದಿಂದ  
ಉಂಟಾದ ರೋಗಗಳನ್ನೂ ತೀಕ್ಷ್ಣವು ಪಿತ್ತದಿಂದ ಸಂಭವಿ  
ಸಿದ ರೋಗಗಳನ್ನೂ ಪರಿಹರಿಸುವುದು. 4. ಅರ್ಥಾ  
ಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಇದು ಮೂರು ವಿಧ.  
(1) ಅನುರೂಪವಲ್ಲದ ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಒಂದು ಕಡೆ  
ಸೇರಿಸಿ ವರ್ಣಿಸುವುದು ವಿಷಮಾಲಂಕಾರ. "ವಿಷಮಂ  
ವರ್ಣಯತೀತಃ ಧೃತನಾನುರೂಪಯೋಃ" | ತದಾಂ "ಕವಯಿಂ ಶಿರೀಷ-  
ಮೃದ್ವಾ ಕವ ತಾದ್ವೈದನಜವರಃ" | (2) ವಿರುದ್ಧವಾದ  
ಕಾರ್ಯೋತ್ಕೃತಿ ವರ್ಣನೆ. "ವಿರುಪಕಾರ್ಯಸ್ಯೋಪತಿರಪರಂ

ವಿಷಮಂ ಮತಮ್" | ತದಾಂ "ಕೀರ್ತಿ ಪ್ರಸುತೇ ಧವಲಾಂ ಶ್ಯಾಮಾ  
ತವ ಕೃಪಾಣಿಕಾ" | (3) ಅನಿಷ್ಟಪ್ರಾಪ್ತಿಯ ವರ್ಣನೆ.  
"ಅನಿಷ್ಟಸ್ಯಾಪ್ಯವಾಪ್ತಿಶ್ಚ ತದಿಷ್ಟಾರ್ಥಸಮುಚ್ಚಮಾತ್" | ತದಾಂ  
"ಮಧ್ಯಾಶಯಾಹಿಮಜ್ಜುಷಾಂ ದೃಷ್ಟಾಸ್ತುತೇನ ಭಕ್ಷಿತಃ" ಚಂದ್ರಾ-  
ಲೋಕಃ | (ನಂ) 5. ಭಂದಃಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾದ ವೃತ್ತಗಳಲ್ಲಿ  
ಒಂದು ಭೇದ, ವಿಷಮವೃತ್ತ. ಶ್ಲೋಕದ ನಾಲ್ಕು ಪಾದ  
ಗಳಲ್ಲೂ ಭಿನ್ನಭಿನ್ನ ವೃತ್ತಲಕ್ಷಣಗಳಿರುವಲ್ಲಿ ವಿಷಮ  
ವೃತ್ತವಾಗುವುದು. "ಯಸ್ಯ ಪಾದಚತುರ್ಲೋಕೇಽಪಿ ಲಕ್ಷಮ ಮಿಶ್ರಂ  
ಪರಸ್ಪರಮ್ | ತದಾಹುರ್ವಿಷಮಂ ವೃತ್ತಂ ಚಂದ್ರಶಾಸ್ತ್ರವಿಶಾರದಾಃ"  
ವೃಂ ೨೦ | 6. ಕಷ್ಟದ ಪರಿಸ್ಥಿತಿ, ಅಪಾಯದ ಸ್ಥಿತಿ.  
"ಕುತಸ್ತ್ವಾ ಕಶಮಲಮಿದಂ ವಿಷಮೇ ಸಮುಪಸ್ಥಿತಮ್" ಗೀತಾ  
೨-೨ | 7. ಸಮವಾಗಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಒಂದೇ ಮಟ್ಟವಾಗಿಲ್ಲ  
ದಿರುವಿಕೆ. 8. ಕಡಿದಾಗಿರುವಿಕೆ. 9. ಸಮವಾಗಿರದ ಜಾಗ,  
ಹಳ್ಳತಿಟ್ಟುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಸ್ಥಳ. (ವಿಂ) 10. ಹಳ್ಳ  
ತಿಟ್ಟಾಗಿರುವ, ಸಮವಾಗಿಲ್ಲದ. "ರೇವಾಂ ದ್ರವ್ಯಸ್ಯುಪಲವಿಷಮೇ  
ವಿನ್ಯಾಪಾದೇ ವಿಶೀರ್ಣಾಮ್" ಮೇಘಂ ೧-೧೯ | 11. ಗೂಢ  
ವಾದ, ರಹಸ್ಯವಾದ, ದುರಮಾಹವಾದ, ಕಷ್ಟದಿಂದ  
ತಿಳಿಯಬಹುದಾದ. "ವಿಷಮೋಽಪಿ ವಿಗಾಹ್ಯತೇ ನಯಃ ಕೃತತೀರ್ಥಃ  
ಪಯಸಾಮಿವಾಶಯಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೩ | 12. ಬಹಳ ತೀವ್ರ  
ವಾದ, ಸಹಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ. "ವ್ಯನಕ್ತಯಂತಸ್ತಾಪ್ತಂ ತದಯಮತಿ-  
ಧೀರೋಽಪಿ ವಿಷಮಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೩-೯ | 13. ಭಯಂಕರ  
ವಾದ. "ಶ್ರುತ್ವಾ ಸ್ವಾಮ್ಯುಪರೋಧರೋದ್ರವಿಷಮಾನಾಧ್ಮಾತುರ್ಯ-  
ಸ್ವರಾನ್" ಮುದ್ರಾಂ ೨-೨೧ | 14. ಪ್ರತಿಕೂಲವಾದ.  
"ಆಪದಿ ಯೇನಾಪಕೃತಂ ಯೇನ ಚ ಹಸಿತಂ ದಶಾಸು ವಿಷಮಾಸು"  
ಪಂಚತಂ ೪-೧೭ | 15. ಓರೆಯಾಗಿರುವ, ವಕ್ರವಾಗಿರುವ.  
"ಇಷ್ಟತೀರ್ಥಗ್ವಲನವಿಷಮಂ ಕೃಣಿತಪ್ರಾಂತಮೇತತ್" ಮಾಲತೀಂ ೪-೨ |  
16. ಸಮವಾಗಿಲ್ಲದ, ಹೆಚ್ಚು ಕಡಮೆಯಾದ. "ಭ್ರಾತೃಣಾ-  
ಮವಿಮಕ್ತಾನಾಂ ಯದ್ವತ್ಯಾನಂ ಭವೇತ್ಸಹ | ನ ಪುತ್ರಭಾಗಂ ವಿಷಮ  
ಪಿತಾ ದದಾತ್ಕಥಂಚನ" ಮನುಂ ೯-೨೧೫ | 17. ಕಷ್ಟವಾದ,  
ತೊಂದರೆಯ. "ಕಾಂತಾವಿಶ್ಲೇಷದ್ವಃಖಯತಿಕರವಿಷಮೋ ಯಾವನೇ  
ಚೋಪಭೋಗಃ" ಭರ್ತುಂ ೩-೩೭ | 18. ಇಕ್ಕಟ್ಟಾಗಿರುವ,  
ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ. "ವಿಷಮೋಽಪಿ ವಿಗಾಹ್ಯತೇ ನಯಃ  
ಕೃತತೀರ್ಥಃ ಪಯಸಾಮಿವಾಶಯಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೩ | 19. ಪದೇ  
ಪದೇ ಬರುವ, ನಿಂತು ನಿಂತು ಬರುವ (ಜ್ವರ). (ಅವ್ಯಂ)  
20. ಎಲ್ಲಾಭಾಗದಲ್ಲೂ ಏಕರೀತಿಯಾಗಿಲ್ಲದೆ, ಒಂದೊಂದು  
ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಒಂದೊಂದು ರೀತಿಯಾಗಿ. "ತೇವಾಂ ತತಾನ  
ವಿಷಮಗ್ರಾಶಿತೋ ವಿಭಾಗಃ" ಮಾಲತೀಂ ೯-೪೫ | 21.  
ಭಯಂಕರವಾಗಿ. 22. ಹಳ್ಳತಿಟ್ಟಾಗಿ. 23. ಬೆಸನಾಗಿ,  
ಅಸಮವಾಗಿ. 24. ಅಸಮಾನವಾಗಿ, ಹೆಚ್ಚು ಕಡಮೆಯಾಗಿ.



25. ಬಹಳ ಗೂಢವಾಗಿ, ರಹಸ್ಯವಾಗಿ. 26. ಪ್ರತಿಕೂಲವಾಗಿ. 27. ಪಕ್ರವಾಗಿ ಇತ್ಯಾದಿ.

ವಿಷಮಂತ್ರದ ವಿಷಮಂತ್ರದ (ಪುಂ) ಎಳೆಲೆ ಬಾಳೆಗಿಡ.

ವಿಷಮಂತ್ರದ ವಿಷಮಂತ್ರದ (ಪುಂ) ಮಧ್ಯೆ ಮಧ್ಯೆ ಕಡಮೆಯಾಗಿ ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಬರುವ ಜ್ವರ.

ವಿಷಮಂತ್ರದ ವಿಷಮಂತ್ರದ (ವಿಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಶಿವ.

ವಿಷಮಂತ್ರದ ವಿಷಮಂತ್ರದ (ವಿಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಶಿವ.

ವಿಷಮಂತ್ರದ ವಿಷಮಂತ್ರದ (ಪುಂ) ಹೆಚ್ಚು ಕಡಮೆಯಾದ ಭಾಗ.

ವಿಷಮಂತ್ರದ ವಿಷಮಂತ್ರದ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಕಷ್ಟದ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರುವ. ವಿಷಮಂತ್ರದ ವಿಷಮಂತ್ರದ (ವಿಂ) ಗತಿಗಿರುವ. "ಕ:" (3-2-4).

ವಿಷಮಂತ್ರದ ವಿಷಮಂತ್ರದ (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಶಿವ.

ವಿಷಮಂತ್ರದ ವಿಷಮಂತ್ರದ (ವಿಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಶಿವ.

ವಿಷಮಂತ್ರದ ವಿಷಮಂತ್ರದ (ಪುಂ) ಮಂತ್ರದ. ವಿಷಮಂತ್ರದ ವಿಷಮಂತ್ರದ (ವಿಂ) ಮಂತ್ರದ.

ವಿಷಮಂತ್ರದ ವಿಷಮಂತ್ರದ (ಪುಂ) ಮಂತ್ರದ. ವಿಷಮಂತ್ರದ ವಿಷಮಂತ್ರದ (ವಿಂ) ಮಂತ್ರದ.

ಚಕ್ರಾಂತ್ರಿಯಿಂದ ರೂಪ

ಶ್ರೋತ್ರಾಂತ್ರಿಯಿಂದ ಶಬ್ದ

ಘ್ರಾಣಾಂತ್ರಿಯಿಂದ ಗಂಧ

ಜಿಹ್ವಾಂತ್ರಿಯಿಂದ ರಸ

ತೃಗಾಂತ್ರಿಯಿಂದ ಸ್ಪರ್ಶ.

ಇವು ಇಂದ್ರಿಯಾರ್ಥ (ವಿಷಯ) ಗಳು. "ರೂಪಂ ಶಬ್ದೋ ಗಂಧರಸಸ್ಪರ್ಶಾಃ ವಿಷಯಾ ಅಮಿ" ಅಮಂ. 1. ವಿಸಿಂವಂತಿ

ಇಂದ್ರಿಯಾರ್ಥಾನ್ ನಿಬಂಧಂತಿ-ವಿ + ಷಿ (ಬಂಧನೆ) "ಅಚ್"

(3-1-134). 1. ಪದವಿ (2-3-130). 2. ದೇಶ, ಜನಪದ.

"ವಿಜಿಗ್ರಹೇ ವಿಷಯಾಸ್ತತ್ರ ವಿಷಯಾನ್ ಸತ್ವಮಾಸ್ಥಿತಃ"

ಯಾದಂ 22-214. 3. ಭೋಗ, ಇಂದ್ರಿಯಗಳ ಸುಖಾನುಭವ.

"ಶೇಷವೇಷ್ಯಸ್ತವಿಜ್ಞಾನಾ ಯೋಗೇ ವಿಷಯೇಷಿಣಾಮ್" ಷ್ಠಂ 1-6. 4. ಆಶ್ರಯ, ಆಸರೆ. ಅವಲಂಬನೆ.

5. ಉದ್ದೇಶ, ಗುರಿ. "ಕಾಮಂ ನ ತಿಷ್ಠತಿ ಮದಾನ್ತನಸಮುಖಿನಾ

ಭೂಷಣಮನ್ಯವಿಷಯಾ ನ ತು ದೃಷ್ಟಿರಸ್ಯಾ." ಶ್ಲೋಕಂ 1-20. 6. ವಿಷಯ, ವಸ್ತು. ಗ್ರಂಥದ ವಿಷಯ, ಭಾಷಣದ ವಿಷಯ, ನಿರೂಪಿಸಬೇಕಾದ ವಿಷಯ ಇತ್ಯಾದಿ. 7. ಸ್ಥಳ, ಜಾಗ, ಪ್ರದೇಶ.

"ಪರಿಸರವಿಷಯೇಷು ಲೋಕಮುಕ್ತಾ: ಹರಿತ-ತೃಣಾದ್ಗಮಶಾಙ್ಕಯಾ ಮೃಗೈಃ" ಕಿರಾಂ 4-36. 8. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಅಥವಾ ಒಂದು ವ್ಯಕ್ತಿಯ ಸಂಬಂಧ.

-ಕುರಿತಾದ. "ಯಾ ತತ್ರ ಸ್ವಾಧಿವೃತ್ತಿವಿಷಯೇ ಸೃಷ್ಟಿರಾಶ್ವೇವ ಧಾತು:" ಮೇಘಂ 2-14. 9. ಗೋಚರವಾಗುವುದು, ಅರಿವಾಗುವುದು. "ಮನೋರಥಸ್ಯಾವಿಷಯಂ ಅನಾವಿಷಯಮಾತ್ಮನಃ"

ಕುಮಾರಂ 6-10. 10. ಲಕ್ಷ್ಯ, ಗುರಿ. "ಸಸ್ತ್ರೇಣಾಪಿ ಹಿ

ತೇನ ಕಿಂ ನ ವಿಷಯೋ ಜಾಯೇತ ಯಸ್ಯೇದೃಶಃ" ತಂ ರಾಂ 4-19. 11. ಕಾರ್ಯ, ವ್ಯವಹಾರ. "ಸರ್ವತ್ರಾದರಿಕಸ್ಯಾಭ್ಯವಹಾರ್ಯಮೇವ

ವಿಷಯಃ" ವಿಕರಂ 3. 12. ಆರೋಪಕ್ಕೆ ಆಶ್ರಯವಾದ ವ್ಯಕ್ತಿ ಅಥವಾ ವಸ್ತು. "ಗೌವಿಹೀಕ:" ಎಂಬಲ್ಲಿ ವಾಹೀಕ

ನಲ್ಲಿ ಗೋತ್ವವನ್ನು ಆರೋಪಿಸಿರುವುದರಿಂದ ವಾಹೀಕನು ಆರೋಪಕ್ಕೆ ಆಶ್ರಯನು. 13. (ಮೀಮಾಂಸಾಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಮೇಲನೋಟಕ್ಕೆ ತೋರುವ ಸಂದಿಗ್ಧವಾದ ಅರ್ಥ.

"ಆಪಾತತಃ ಪ್ರತಿತಃ ಸಂದಿಗ್ಧೋಽರ್ಥೋ ವಿಷಯಃ" ಜಮಿಂ ನ್ಯಾಯಂ. ಇದು ಐದು ಅಧಿಕರಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ವಿಷಯೋ ವಿಷಯಶ್ಚೇವ ಪೂರ್ವಪಕ್ಷಸ್ತುತೀತರಮ್. ನಿರ್ಣಯಶ್ಚೇತಿ ಶಾಸ್ತ್ರೇಽಸ್ಮಿನ್

ಪಶ್ಚಾಧಿಕರಣಂ ಸ್ಮೃತಮ್"

ವಿಷಯಿನ್ ವಿಷಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ವಿಷಯಿನ್-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114). 2. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ.

3. ಪ್ರಪಂಚದ ವ್ಯಕ್ತಿ, ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಖ್ಯಾತಿಪಡೆದ ವ್ಯಕ್ತಿ. 4. ಇಂದ್ರಿಯ. (ವಿಂ) 5. ವಿಷಯಾಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು.

ವಿಷಯಲಂಪಟ, ಭೋಗದಲ್ಲಿ ಆಸೆಯುಳ್ಳವನು. "ವಿಷಯೋ ಸ್ಯಾತ್ ಪುಮಾನ್ ರಾಜಿಂ ವೈಷಯಿಕಜನೇಽಪಿ ಚ. ಇಂದ್ರಿಯೇ ಕಾಮದೇವೇ ಚ ವಿಷಯಾಸಕ್ತಪೂರ್ಣಃ" ಮೇದಿಂ. 6. ರೂಪಕಾಲಂಕಾರದಲ್ಲಿ ವಿಷಯ (ಉಪಮೇಯ) ದಲ್ಲಿ ಆರೋಪಿಸಲ್ಪಡುವ ಉಪಮಾನ (ವಿಷಯ).

ವಿಷಯಿನ್ ವಿಷಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ವಿಷಯಿನ್-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114). 2. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ.

3. ಪ್ರಪಂಚದ ವ್ಯಕ್ತಿ, ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಖ್ಯಾತಿಪಡೆದ ವ್ಯಕ್ತಿ. 4. ಇಂದ್ರಿಯ. (ವಿಂ) 5. ವಿಷಯಾಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು.

ವಿಷಯಲಂಪಟ, ಭೋಗದಲ್ಲಿ ಆಸೆಯುಳ್ಳವನು. "ವಿಷಯೋ ಸ್ಯಾತ್ ಪುಮಾನ್ ರಾಜಿಂ ವೈಷಯಿಕಜನೇಽಪಿ ಚ. ಇಂದ್ರಿಯೇ ಕಾಮದೇವೇ ಚ ವಿಷಯಾಸಕ್ತಪೂರ್ಣಃ" ಮೇದಿಂ. 6. ರೂಪಕಾಲಂಕಾರದಲ್ಲಿ ವಿಷಯ (ಉಪಮೇಯ) ದಲ್ಲಿ ಆರೋಪಿಸಲ್ಪಡುವ ಉಪಮಾನ (ವಿಷಯ).

ವಿಷಯಿನ್ ವಿಷಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ವಿಷಯಿನ್-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114). 2. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ.

3. ಪ್ರಪಂಚದ ವ್ಯಕ್ತಿ, ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಖ್ಯಾತಿಪಡೆದ ವ್ಯಕ್ತಿ. 4. ಇಂದ್ರಿಯ. (ವಿಂ) 5. ವಿಷಯಾಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು.

ವಿಷಯಲಂಪಟ, ಭೋಗದಲ್ಲಿ ಆಸೆಯುಳ್ಳವನು. "ವಿಷಯೋ ಸ್ಯಾತ್ ಪುಮಾನ್ ರಾಜಿಂ ವೈಷಯಿಕಜನೇಽಪಿ ಚ. ಇಂದ್ರಿಯೇ ಕಾಮದೇವೇ ಚ ವಿಷಯಾಸಕ್ತಪೂರ್ಣಃ" ಮೇದಿಂ. 6. ರೂಪಕಾಲಂಕಾರದಲ್ಲಿ ವಿಷಯ (ಉಪಮೇಯ) ದಲ್ಲಿ ಆರೋಪಿಸಲ್ಪಡುವ ಉಪಮಾನ (ವಿಷಯ).

ವಿಷಯಿನ್ ವಿಷಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ವಿಷಯಿನ್-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114). 2. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ.

3. ಪ್ರಪಂಚದ ವ್ಯಕ್ತಿ, ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಖ್ಯಾತಿಪಡೆದ ವ್ಯಕ್ತಿ. 4. ಇಂದ್ರಿಯ. (ವಿಂ) 5. ವಿಷಯಾಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು.

ವಿಷಯಲಂಪಟ, ಭೋಗದಲ್ಲಿ ಆಸೆಯುಳ್ಳವನು. "ವಿಷಯೋ ಸ್ಯಾತ್ ಪುಮಾನ್ ರಾಜಿಂ ವೈಷಯಿಕಜನೇಽಪಿ ಚ. ಇಂದ್ರಿಯೇ ಕಾಮದೇವೇ ಚ ವಿಷಯಾಸಕ್ತಪೂರ್ಣಃ" ಮೇದಿಂ. 6. ರೂಪಕಾಲಂಕಾರದಲ್ಲಿ ವಿಷಯ (ಉಪಮೇಯ) ದಲ್ಲಿ ಆರೋಪಿಸಲ್ಪಡುವ ಉಪಮಾನ (ವಿಷಯ).

ವಿಷಯಿನ್ ವಿಷಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ವಿಷಯಿನ್-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114). 2. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ.

3. ಪ್ರಪಂಚದ ವ್ಯಕ್ತಿ, ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಖ್ಯಾತಿಪಡೆದ ವ್ಯಕ್ತಿ. 4. ಇಂದ್ರಿಯ. (ವಿಂ) 5. ವಿಷಯಾಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು.

ವಿಷಯಲಂಪಟ, ಭೋಗದಲ್ಲಿ ಆಸೆಯುಳ್ಳವನು. "ವಿಷಯೋ ಸ್ಯಾತ್ ಪುಮಾನ್ ರಾಜಿಂ ವೈಷಯಿಕಜನೇಽಪಿ ಚ. ಇಂದ್ರಿಯೇ ಕಾಮದೇವೇ ಚ ವಿಷಯಾಸಕ್ತಪೂರ್ಣಃ" ಮೇದಿಂ. 6. ರೂಪಕಾಲಂಕಾರದಲ್ಲಿ ವಿಷಯ (ಉಪಮೇಯ) ದಲ್ಲಿ ಆರೋಪಿಸಲ್ಪಡುವ ಉಪಮಾನ (ವಿಷಯ).

ವಿಷಯಿನ್ ವಿಷಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ವಿಷಯಿನ್-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114). 2. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ.

3. ಪ್ರಪಂಚದ ವ್ಯಕ್ತಿ, ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಖ್ಯಾತಿಪಡೆದ ವ್ಯಕ್ತಿ. 4. ಇಂದ್ರಿಯ. (ವಿಂ) 5. ವಿಷಯಾಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು.

ವಿಷಯಲಂಪಟ, ಭೋಗದಲ್ಲಿ ಆಸೆಯುಳ್ಳವನು. "ವಿಷಯೋ ಸ್ಯಾತ್ ಪುಮಾನ್ ರಾಜಿಂ ವೈಷಯಿಕಜನೇಽಪಿ ಚ. ಇಂದ್ರಿಯೇ ಕಾಮದೇವೇ ಚ ವಿಷಯಾಸಕ್ತಪೂರ್ಣಃ" ಮೇದಿಂ. 6. ರೂಪಕಾಲಂಕಾರದಲ್ಲಿ ವಿಷಯ (ಉಪಮೇಯ) ದಲ್ಲಿ ಆರೋಪಿಸಲ್ಪಡುವ ಉಪಮಾನ (ವಿಷಯ).

ವಿಷಯಿನ್ ವಿಷಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ವಿಷಯಿನ್-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114). 2. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ.

3. ಪ್ರಪಂಚದ ವ್ಯಕ್ತಿ, ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಖ್ಯಾತಿಪಡೆದ ವ್ಯಕ್ತಿ. 4. ಇಂದ್ರಿಯ. (ವಿಂ) 5. ವಿಷಯಾಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು.

ವಿಷಯಲಂಪಟ, ಭೋಗದಲ್ಲಿ ಆಸೆಯುಳ್ಳವನು. "ವಿಷಯೋ ಸ್ಯಾತ್ ಪುಮಾನ್ ರಾಜಿಂ ವೈಷಯಿಕಜನೇಽಪಿ ಚ. ಇಂದ್ರಿಯೇ ಕಾಮದೇವೇ ಚ ವಿಷಯಾಸಕ್ತಪೂರ್ಣಃ" ಮೇದಿಂ. 6. ರೂಪಕಾಲಂಕಾರದಲ್ಲಿ ವಿಷಯ (ಉಪಮೇಯ) ದಲ್ಲಿ ಆರೋಪಿಸಲ್ಪಡುವ ಉಪಮಾನ (ವಿಷಯ).

ವಿಷಯಿನ್ ವಿಷಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ವಿಷಯಿನ್-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114). 2. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ.

3. ಪ್ರಪಂಚದ ವ್ಯಕ್ತಿ, ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಖ್ಯಾತಿಪಡೆದ ವ್ಯಕ್ತಿ. 4. ಇಂದ್ರಿಯ. (ವಿಂ) 5. ವಿಷಯಾಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು.

ವಿಷಯಲಂಪಟ, ಭೋಗದಲ್ಲಿ ಆಸೆಯುಳ್ಳವನು. "ವಿಷಯೋ ಸ್ಯಾತ್ ಪುಮಾನ್ ರಾಜಿಂ ವೈಷಯಿಕಜನೇಽಪಿ ಚ. ಇಂದ್ರಿಯೇ ಕಾಮದೇವೇ ಚ ವಿಷಯಾಸಕ್ತಪೂರ್ಣಃ" ಮೇದಿಂ. 6. ರೂಪಕಾಲಂಕಾರದಲ್ಲಿ ವಿಷಯ (ಉಪಮೇಯ) ದಲ್ಲಿ ಆರೋಪಿಸಲ್ಪಡುವ ಉಪಮಾನ (ವಿಷಯ).

ವಿಷಯಿನ್ ವಿಷಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. ವಿಷಯಿನ್-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114). 2. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ.

3. ಪ್ರಪಂಚದ ವ್ಯಕ್ತಿ, ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಖ್ಯಾತಿಪಡೆದ ವ್ಯಕ್ತಿ. 4. ಇಂದ್ರಿಯ. (ವಿಂ) 5. ವಿಷಯಾಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು.

ವಿಷಯಲಂಪಟ, ಭೋಗದಲ್ಲಿ ಆಸೆಯುಳ್ಳವನು. "ವಿಷಯೋ ಸ್ಯಾತ್ ಪುಮಾನ್ ರಾಜಿಂ ವೈಷಯಿಕಜನೇಽಪಿ ಚ. ಇಂದ್ರಿಯೇ ಕಾಮದೇವೇ ಚ ವಿಷಯಾಸಕ್ತಪೂರ್ಣಃ" ಮೇದಿಂ. 6. ರೂಪಕಾಲಂಕಾರದಲ್ಲಿ ವಿಷಯ (ಉಪಮೇಯ) ದಲ್ಲಿ ಆರೋಪಿಸಲ್ಪಡುವ ಉಪಮಾನ (ವಿಷಯ).



ವಿಷಾ ವಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅತಿಬಜ್ಜೆ.

ವಿಷಾಣ ವಿಷಾಣ (ವಿಂ) 1. ಪಶುವಿನ ಕೊಂಬು. ವಿ+ಅಸ

(ಭುವಿ) "ಚಾನಶ್" (3-2-129)। ಅಲ್ಲೋಪ್: (6-8-111)।

"ನಸ್ಯಾಗೃಹಿತೋಪಿ ಧುವನ್ ವಿಷಾಣಯೋಗಂ ಸಸೃತಾರ-  
ವಿವರ್ತಿತವಿಕ:" ಮಾಘಂ 12-10. 2. ಆನೆಯ ದಂತ.

"ನ ಜಾತು ವನಾಯಕಮೇಕಮುದೃತಂ ವಿಷಾಣಮದ್ಯಾಪಿ ಪುನಃ ಪ್ರರೋಹತಿ"  
ಮಾಘಂ 1-60. 3. ವರಾಹದ ಹಲ್ಲು.

ವಿಷಾಣಿನ್ ವಿಷಾಣಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಕೊಂಬುಗಳಿರುವ ಹಸು

ಎಮ್ಮೆ ಹೋತ ಮುಂತಾದ ಪ್ರಾಣಿ. ವಿಷಾಣ "ಇನಿ:"

(4-2-114)। 2. ಗಜ, ಆನೆ. "ಭಗನಿ ನಿವಾಸೋಽ-

ಮಿಹಾಸ್ಯ ಪುಷೈಃ ಸದಾ ನತೋ ಯೇನ ವಿಷಾಣಿನಾಗ:" ಮಾಘಂ

8-63. (ವಿಂ) 3. ಕೊಂಬುಗಳಿರುವ, ಕೊಂಬುಗಳಿಂದ

ಕೂಡಿರುವ.

ವಿಷಾದ ವಿಷಾದ (ಪುಂ) 1. ಬಲ ಕಡಮೆಯಾಗುವುದು,

ಶಕ್ತಿಯಾಗುವುದು. ವಿ+ಷದ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) "ಘಜ್"

(3-3-118)। "ನಿವಿಬಂಧೋಚ್ಚಸನಮಧರಸ್ಪಂದನಂ ದೋಷಾದ:"

ಮಾಲತೀಂ 2-5. 2. ದುಃಖ. "ಏಷಾಪಿ ಪ್ರಿಯೇಣ

ವಿನಾ ಗಮಯತಿ ರಜನೀಂ ವಿಷಾದದೀರ್ಘತರಾಮ್" ಶಾಕುಂ 4-14. 3. ಉತ್ಸಾಹಭಂಗ, ನಿರಾಶೆ.

"ವಿಷಾದಲುಪ್ತಪ್ರತಿಪತ್ತಿ

ವಿಷ್ಮಿತಂ ಕುಮಾರಸೇನೈಃ ಸಪದಿ ಸ್ಥಿತಂ ಚ ತತ್" ರಘುಂ 3-40. 4. ಮುಂಕು.

ವಿಷಾದಿನ್ ವಿಷಾದಿನ್ (ವಿಂ) 1. ನಿರಾಶನಾದ, ಎದೆ

ಗುಂದಿದ. 2. ದುಃಖದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ವಿಷಾದೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ

"ಇನಿ:" (4-2-114)। 3. ಶಕ್ತಿಯಾಗಿದ.

ವಿಷು ವಿಷು (ಅವ್ಯಂ) ಸಾಮ್ಯ, ಸಮಾನತೆ, ಹೆಚ್ಚುಕಡಮೆ

ಯಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ವಿಷು ಸಾಮ್ಯೇ ಅವ್ಯಯಮ್।

ವಿಷುಣ ವಿಷುಣ (ಪುಂ) 1. ಸಮವಾದ ರಾತ್ರಿ ಹಗಲುಗಳುಳ್ಳ

ಕಾಲ. ವಿಷು ಸಾಮ್ಯಮಸ್ಮಿನ್ನಸ್ತಿ—"ನ:" (4-2-100)।

2. ನಾನಾರೂಪ. ವಿಷು ಅಶ್ವತಿ—ವಿಷ್ವಙ್ ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ—

ವಿಷು+ಅಶ್ವ ಮತ್ವತ್ "ನ:" उत्तरपदलोपश्च (ವಾಂ

4-2-100)।

ವಿಷುವ ವಿಷುವ (ನಂ) ರಾತ್ರಿ ಹಗಲು ಸಮವಾಗಿರುವ

ಕಾಲ. ವಿಷು ಸಾಮ್ಯಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ವ:" (ವಾಂ 4-2-109)।

ಮೇಷ ಮತ್ತು ತುಲಾ ಸಂಕ್ರಮಣಗಳಲ್ಲಿ ರಾತ್ರಿ ಹಗಲು

ಸಮವಾಗಿರುವುದು.

ವಿಷುವತ್ ವಿಷುವತ್ (ನಂ) ರಾತ್ರಿ ಹಗಲು ಸಮವಾಗಿರುವ

ಕಾಲ, ಮೇಷ ಮತ್ತು ತುಲಾ ಸಂಕ್ರಮಣಗಳಲ್ಲಿ ರಾತ್ರಿ

ಮತ್ತು ಹಗಲು ಸಮವಾಗಿರುವುದು.

ವಿಷುಚಿಕಾ ವಿಷುಚಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಲರಾವ್ಯಾಧಿ, ವಾಂತಿ  
ಭೇದಿ ರೋಗ.

ವಿಷ್ಕಮ್ಭ ವಿಷ್ಕಂಭ (ಪುಂ) 1. ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ಯೋಗಗಳ

ಲ್ಲೊಂದು. ಇದು ಮೊದಲನೆಯ ಯೋಗ. ಶುಭಕಾರ್ಯ

ಗಳಲ್ಲಿ ಈ ವಿಷ್ಕಂಭ ಯೋಗದ ಮೊದಲ ಐದು ಘಳಿಗೆ

ಶ್ಯಾಙ್ಕ. 2. ಪ್ರತಿಬಂಧ, ಅಡ್ಡಿ, ತಡೆ, ಅಡಚಣೆ.

3. ಬಾಗಿಲಿನ ಅಗುಳಿ, ಅಡ್ಡಪಟ್ಟಿ. 4. ವಿಸ್ತಾರ.

5. ನಾಟಕಾದಿ ರೂಪಕಗಳ ಒಂದು ಅಂಗ. ವೃತ್ತ (ಹಿಂದೆ

ನಡೆದ) ಮತ್ತು ವರ್ತಿಷ್ಯಮಾಣ (ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವ)

ಕಥೆಯನ್ನು ಸಂಕ್ಷೇಪವಾಗಿ ತಿಳಿಸುವುದು ವಿಷ್ಕಂಭ. ಅಂಕದ

ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿರಬೇಕು. ಮಧ್ಯಮ ಪಾತ್ರದಿಂದ ಸೂಚಿಸು

ವುದು ಶುದ್ಧ ವಿಷ್ಕಂಭ. ಮಧ್ಯಮ ಮತ್ತು ನೀಚ ಪಾತ್ರ

ಗಳಿಂದ ಸೂಚಿಸುವುದು ಸಂಕೀರ್ಣ (ಮಿಶ್ರ) ವಿಷ್ಕಂಭ.

"वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः। संक्षिप्ता-

र्थस्तु विष्कम्भः आदावङ्कस्य दर्शितः" साಂ 10-6-44।

"विष्कम्भी योगभेदे स्याद्विस्तारप्रतिबन्धयोः। रूपकाङ्ग-

प्रभेदे च बन्धभेदे च योगिनाम्" मेदिಂ। 6. ಯೋಗಾ

ಭ್ಯಾಸದ ಒಂದು ಬಂಧ.

ವಿಷ್ಕಮ್ಭಿತ ವಿಷ್ಕಂಭಿತ (ವಿಂ) ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ.

ವಿಷ್ಕಮ್ಭಿನ್ ವಿಷ್ಕಂಭಿನ್ (ಪುಂ) ಅಗುಳಿ, ಬಾಗಿಲಿನ ಅಡ್ಡ

ಪಟ್ಟಿ. ವಿಷ್ಕಮ್ಭಾತಿ—ವಿ+ಸ್ಕಂಭು (ರೋಧನೆ) "ಗಿರಿನಿ:"

(3-1-134)। ಷತ್ವಮ್ (1-3-99)।

ವಿಷ್ಕಿರ ವಿಷ್ಕಿರ (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ವಿಕಿರತಿ—

ವಿ+ಕ್ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಕ:" (3-1-134)। ಸುಡಾಗಮ:

(6-1-140)। ಷತ್ವಮ್ (1-3-99)। "छायापस्किरमाण

विष्किरमुखव्याकृष्टकीटत्वचः" उ० रा० 2-9. 2.

ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ.

ವಿಷ್ಠ ವಿಷ್ಠ (ವಿಂ) ಪ್ರವೇಶಿಸಿದ, ಒಳಕ್ಕೆ ಹೋದ. ವಿಶ

(ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಕ್ತ:" (3-4-92)।

ವಿಷ್ಠಪ ವಿಷ್ಠಪ (ನಂ) ಭುವನ, ಲೋಕ, ಜಗತ್ತು.

ವಿಶಂತ್ಯತ್ರ—ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಕಪನ್" (3-3-144)।

ನಿಪಾಂ। "सुराः समभ्यर्थयितार एते कार्यं त्रयाणामपि

विष्टपानाम्" कुमा० 3-20।

ವಿಷ್ಠಠ ವಿಷ್ಠಠ (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡಚಣೆ

ಯುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಸ್ತಂಭು (ರೋಧನೆ) "ಕ್ತ:"

(3-2-102)। 2. ಅಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸ

ಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಲಿಸದಿರುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ವಿಷ್ಠಮ್ಭ ವಿಷ್ಠಂಭ (ಪುಂ) 1. ಅಕ್ರಮಣ | ವಿ+ಸ್ತಂಭು

(ರೋಧನೆ) "ಘಜ್" (3-3-118)। "प्रविकर्षनिनाद-



ಭಿನ್ನರನ್ನ: ಪದವಿಷ್ಣುಮನಿಪಿಡಿತಸ್ತದಾನೀಮ್” ಕಿರಾಂ ೧೩-೧೬ | 2. ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು. 3. ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವುದು, ಪ್ರತಿಬಂಧಿಸುವುದು.

**ವಿಷ್ಣುರ ವಿಷ್ಣು (ಪುಂ)** 1. ಅಸನ, ಪೀಠ. ವಿಸ್ತೀರ್ಯತೆ—  
ವಿ + ಸ್ತು (ಆಚ್ಛಾದನೆ) “ಸ್ತು:” ಷತ್ವಂ ಚ ನಿಪಾಂ (೮-೩-೧೩) | “ಮಹಾಮಹಾನಿಲಶಿಲಾರುಚಿ: ಪುರೋ ನಿಪೇದಿ-  
ವಾನ್ ಕಂಸಕೃಷ: ಸ ವಿಷ್ಣುರೇ” ಮಾಘಂ ೧-೧೬ | 2. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. 3. ದರ್ಭೆಯ ಮುಷ್ಟಿ. “ವಿಷ್ಣುರ: ಕುಶಮುಷ್ಠೌ ಸ್ಯಾದಾಸನೇ ಚ ಮಹೀರಹೇ” ಮೇದಿಂ |

**ವಿಷ್ಣುಶ್ರವಸ್ ವಿಷ್ಣುಶ್ರವಸ್ (ಪುಂ)** ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ, ಮಹಾ ವಿಷ್ಣು. ವಿಷ್ಣುರೇ ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷೇ ಶ್ರೂಯತೇ—ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೆ) “ಅಸುನ್” (೩ಂ ೪-೧೮೯) | “ಇಷ್ಟನಿರ್ವಹಣನಿರ್ವತಚಿತ್ತಂ ವಿಷ್ಣುಶ್ರವಸಮಾಮ್ಯುಪಪೇದೇ” ಯಾದಂ ೨೧-೪೫ |

**ವಿಷ್ಣಿ ವಿಷ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಕೂಲಿಯಿಲ್ಲದೆ ನಿರ್ಬಂಧದಿಂದ ಮಾಡುವ ಕೆಲಸ. ವಿಶತಿ ಕಲೇಶಮ್—ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) “ಕ್ತಿತ್” (೩-೩-೧೭೪) | 2. ಕಾರ್ಯ, ಕೆಲಸ. 3. ವೇತನ, ಕೂಲಿ. 4. ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು, ಹರಡುವುದು. 5. ಪ್ರೇಷಣ, ಕಳುಹಿಸುವುದು. 6. ಹನ್ನೊಂದು ವಿಧ ಕರಣಗಳಿಲ್ಲದುದು. 7. ನರಕವಾಸ. (ವಿಂ) 8. ಕೂಲಿ ಗಾಗಿ ಕೆಲಸಮಾಡುವವನು.

**ವಿಠಲ ವಿಷ್ಣು (ನಂ)** ದೂರದ ಪ್ರದೇಶ. ವಿಠುರಂ ಸ್ಥಲಮ್ |  
ವಿ + ಸ್ಥಲಮ್ ಸಸ್ಯ ಷ: (೮-೩-೧೬) |

**ವಿಠಾ ವಿಷ್ಣು (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಪುರೀಷ, ಮಲ. ವಿಸ್ತಿಷ್ಠತೇ  
ಉದರೇ—ವಿ+ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೬) |  
“ಗುರೋಹಿತಂ ಪ್ರಕರ್ತವ್ಯಂ ವಾಡ್ಮನ:ಕಾಯಕರ್ಮಭಿ: | ಅಹಿತಾ-  
ಚರಣಾದೇವ ವಿಠಾಃ ಜಾಯತೇ ಕ್ರಿಮಿ:” ತನ್ನಸಾಂ |  
2. ಉದರ, ಹೊಟ್ಟೆ.

**ವಿಷ್ಣು ವಿಷ್ಣು (ಪುಂ)** 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣು, ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣ. ವೇವೇಷಿ—ವಿಷ್ಣು (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) “ನು:” (೩ಂ ೩-೩೯) |  
“ವಿಮಾರ್ಜಯಂತಿ ವೃಜಿನಾತ್ಪುನೀತೇ ವಿಷ್ಣೋರಿಯಂ ವಿಕರ್ಮ-  
ವೈಜಯಂತಿ” ಯಾದಂ ೧೮-೪೩ | ವಿಶತಿ ಸರ್ವಭೂತಾನಿ ವಿಶಂತಿ  
ಸರ್ವಭೂತಾನ್ಯಸ್ಮಿನ್ ಇತಿ ವಾ | “ಯಸ್ಮಾದ್ವಿಶ್ವಮಿದಂ ಸರ್ವಂ ತಸ್ಯ  
ಶಕ್ತಯಾ ಮಹಾತ್ಮನ: | ತಸ್ಮಾದೇವೋಚ್ಯತೇ ವಿಷ್ಣು: ವಿಶಧಾತೌ:  
ಪ್ರವೇಶನಾತ್” ವಿಷ್ಣುಪುಂ |

ಪರಮಾತ್ಮನೊಬ್ಬನೇ ಬ್ರಹ್ಮ ವಿಷ್ಣು ಮಹೇಶ್ವರರೆಂಬ  
ನಾಮರೂಪಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿ ಸೃಷ್ಟಿ ಸ್ಥಿತಿ ಮತ್ತು ಲಯ  
ರೂಪಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ನಡೆಸುವನು. “ಸೃಷ್ಟಿಸ್ಥಿತಿಸಂ-  
ಹರಣಿಂ ಬ್ರಹ್ಮವಿಷ್ಣುಶಿವಾತ್ಮಿಕಾಮ್ | ಸ ಸಂಜ್ಞಾಂ ಯಾತಿ  
ಭಗವಾನೇಕ-ಏವ ಜನಾರ್ದನ:” ವಿಷ್ಣುಪುಂ ೧-೨-೬೬ |

“ರಜೋಗುಣಮಯಂ ಚಾನೈವ ಧೀಮತ: | ಚತುರ್ಮುಖ:  
ಸ ಭಗವಾನ್ ಜಗತ್ಸೃಷ್ಟೌ ಪ್ರವರ್ತತೇ || ಸೃಷ್ಟಂ ಚ ಪಾತಿ ಸಕಲಂ  
ವಿಶ್ವಾತ್ಮಾ ವಿಶ್ವತೋಮುಖ: | ಸತ್ತ್ವಂ ಗುಣಮುಪಾಶ್ರಿತ್ಯ ವಿಷ್ಣು-  
ವಿಶ್ವೇಶ್ವರ: ಸ್ವಯಮ್ || ಅಂತಕಾಲೇ ಸ್ವಯಂ ದೇವ: ಸರ್ವಾತ್ಮಾ  
ಪರಮೇಶ್ವರ: | ತಮೋಗುಣಂ ಸಮಾಶ್ರಿತ್ಯ ರುದ್ರ: ಸಂಹರತೇ ಜಗತ್”  
ಕೂರ್ಮಪುಂ |

ಮಾಯೆಯನ್ನು ದೂರಮಾಡಿ ಭಕ್ತರನ್ನು ಸಂಸಾರ  
ದಿಂದ ಬಿಡಿಸುವುದರಿಂದ ವಿಷ್ಣು. [ಇನ್ನೂ ವಿವರಕ್ಕೆ  
“ನಾರಾಯಣ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. 2. ದ್ವಾದಶಾದಿತ್ಯ  
ರಲ್ಲೊಬ್ಬ ಆದಿತ್ಯ. “एकादशस्तಥಾ ತ್ವಷ್ಟಾ ದ್ವಾದಶೋ ವಿಷ್ಣು-  
ರುಚ್ಯತೇ” ಮಾಂ ಆದಿಂ ೬೫-೧೬ | 3. ಅಗ್ನಿ. 4. ಒಬ್ಬ  
ಸ್ಮೃತಿಕಾರರು. 5. ಶ್ರವಣಕ್ಷತ್ರ.

**ವಿಷ್ಣುಶ್ರುಕ್ಷ ವಿಷ್ಣುಶ್ರುಕ್ಷ (ನಂ)** ವಿಷ್ಣುದೇವತಾಕವಾದ  
ಶ್ರವಣಕ್ಷತ್ರ. ವಿಷ್ಣುವಧಿವೇತಾಕಂ ಶ್ರುಕ್ಷಮ್ | “ಉಪೋಷ್ಯ  
ದ್ವಾದಶೀಂ ಪುಷ್ಯಾಂ ವಿಷ್ಣುಶ್ರುಕ್ಷೇಣ ಸಂಯುತಾಮ್ | ಏಕಾದಶ್ಯುಕ್ಷಂ  
ಪುಷ್ಯಂ ನರ: ಪ್ರಾಪ್ನೋತ್ಯಸಂಶಯ:” |

**ವಿಷ್ಣುಕ್ರಾಂತಾ ವಿಷ್ಣುಕ್ರಾಂತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ವಿಷ್ಣುಕ್ರಾಂತಿಗಿಡ.  
“ವಿಷ್ಣುಕ್ರಾಂತಾಽಪರಾಜಿತಾ” ಅಮಂ |

**ವಿಷ್ಣುಗುಪ್ತ ವಿಷ್ಣುಗುಪ್ತ (ಪುಂ)** ಬಾಣಕ್ಕೆ. “ವಿಷ್ಣುಗುಪ್ತಸ್ತು  
ಕೌಂಡಿನ್ಯಶ್ಚಾಣಕಯೋ ದ್ರೋಮಿಣೋಽಙ್ಗುಲ: | ವಾತ್ಸಯಾನೋ ಮಂದ-  
ನಾಗ: ಪಕ್ಷಿಲಸ್ವಾಮಿನಾವಪಿ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ವಿಷ್ಣುಗೃಹ ವಿಷ್ಣುಗೃಹ (ನಂ)** ವಿಷ್ಣುದೇವಾಲಯ. ವಿಷ್ಣುವೇ  
ನಿರ್ಮಿತಂ ಗೃಹಮ್ | ವಿಷ್ಣುದೇವಾಲಯನಿರ್ಮಾಣದ  
ಫಲ: “ಅಹನ್ಯಹನಿ ಯೋಗೇನ ಯಜತೋ ಯನ್ಮಹಾಫಲಮ್ |  
ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ ತತ್ಫಲಂ ವಿಷ್ಣೋರೈ: ಕಾರಯತಿ ಮಂದಿರಮ್ || ಪ್ರಶಸ್ತ-  
ದೇಶೇ ಭೂಭಾಗೇ ಪ್ರಶಸ್ತಂ ಭವನಂ ಹರೇ: | ಕಾರಯತ್ಯಖಿಲಾನ್  
ಲೋಕಾನ್ ಸ ನರ: ಪ್ರತಿಪದತೇ” ||

**ವಿಷ್ಣುಚಕ್ರ ವಿಷ್ಣುಚಕ್ರ (ನಂ)** ಹಸ್ತದಲ್ಲಿ ರೇಖಾರೂಪ  
ವಾದ ಚಕ್ರ. ವಿಷ್ಣು: ಚಕ್ರಮಿವ | “ವಿಷ್ಣುಚಕ್ರಂ ಕರೇ ಚಿಹ್ನಂ  
ಸರ್ವೇಷಾಂ ಚಕ್ರವರ್ತಿನಾಮ್ | ಭವತ್ಯವ್ಯಾಹತೋ ಯಸ್ಯ ಪ್ರಭಾವಸ್ತ್ರಿದ-  
ಶರಪಿ” ವಿಷ್ಣುಪುಂ |

**ವಿಷ್ಣುದೇವತ ವಿಷ್ಣುದೇವತ (ನಂ)** 1. ಶ್ರವಣಕ್ಷತ್ರ.  
ವಿಷ್ಣುದೇವತಂ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ವಿಷ್ಣುದೇವತಾಕವಾದ.  
—ದೇವತಮ್—ದೈವತ್ಯಮ್.

**ವಿಷ್ಣುದೇವತಾ ವಿಷ್ಣುದೇವತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಏಕಾದಶೀ  
ತಿಥಿ. ವಿಷ್ಣುದೇವತಮಸ್ಯಾ: | 2. ದ್ವಾದಶೀತಿಥಿ. “एकादशी  
ದ್ವಾದಶೀ ಚ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಶ್ರೀಚಕ್ರಾಣಿ: | ತ್ರयोदशीत्वनङ्गस्य  
शिवस्योक्ता चतुर्दशी” स्मृति: |



**ವಿಷ್ಣುಮೊತ್ತರ ವಿಷ್ಣು ಧರ್ಮೋತ್ತರ (ನಂ) ವಿಷ್ಣು**  
ಪ್ರಧಾನವಾದ ಧರ್ಮಗಳನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ಒಂದು  
ಗ್ರಂಥ.

**ವಿಷ್ಣುಪಂಜರ ವಿಷ್ಣು ಪಂಜರ (ನಂ) ವಿಷ್ಣು ಕವಚ, ಪಂಜರ**  
ದಂತಿರುವ ವಿಷ್ಣುವಿನ ನಾಮ ಮತ್ತು ಆಯುಧಗಳು.  
ಇವುಗಳ ರಕ್ಷಣೆಯಲ್ಲಿರುವವನಿಗೆ ಯಾವರೀತಿಯ ಭಯವೂ  
ಇರುವುದಿಲ್ಲ. ವಿಷ್ಣುರೇವ ಪಂಜರಮಿವ. "ಪ್ರವಕ್ಷ್ಯಾಮ್ಯ-  
ಘುನಾತ್ವೇತದ್ವಿಷ್ಣವಂ ಪಂಜರಂ ಶುಭಮ್ | ತಮೋ ನಮಸ್ತೇ ಗೋವಿಂದ  
ಚಕ್ರಂ ಗೃಹ್ಯ ಸುದರ್ಶನಮ್ | ಪ್ರಾಚ್ಯಾ ರಕ್ಷಸ್ವ ಮಾಂ ವಿಷ್ಣೋ ತ್ವಾಮಹಂ  
ಶರಣಂ ಗತಃ || ಗದಾಂ ಕೌಮೋದಕಾಂ ಗೃಹ್ಯ ಪದ್ಮನಾಭಾಮಿತದ್ಭುತೇ |  
ಯಾಮ್ಯಾ ರಕ್ಷಸ್ವ ಮಾಂ ವಿಷ್ಣೋ ತ್ವಾಮಹಂ ಶರಣಂ ಗತಃ ||  
ಇತ್ಯಾದಿ. ವಾಮನಪುಂ |

**ವಿಷ್ಣುಪದ ವಿಷ್ಣು ಪದ (ನಂ) 1. ಅಂತರಿಕ್ಷ, ಅಕಾಶ.**  
2. ವಿಷ್ಣುವಿನ ಪಾದ. ವಿಷ್ಣೋಃ ಪದಮ್ | "ವಸುಧೇವಾ ವಿಷ್ಣುಪದಂ  
ದ್ವಿತೀಯಮಭ್ಯಾಸೋಹೇವ ರಜಶ್ಚಲೇನ" ರಘುಂ ೧೬-೨೮ |  
3. ವಿಷ್ಣುವಿನ ಸ್ಥಾನ—(1) ಶ್ರೀ ವೈಕುಂಠ. (2) ಕ್ಷೀರ  
ಸಮುದ್ರ. "ಅಪುಷ್ಯಪುಷ್ಯೋಪರಮೇ ಕ್ಷೀಣಾಶೇಷಾಸ್ತಿಹೇತವಃ |  
ಯತ್ರ ಗತ್ವಾ ನ ಶೋಚಂತಿ ತದ್ವಿಷ್ಣೋಃ ಪರಮಂ ಪದಮ್ || ಧರ್ಮ-  
ಧ್ರುವಾಽಸ್ತಿಷ್ಠಂತಿ ಯತ್ರ ತೇ ಲೋಕಸಾಕ್ಷಿಣಃ | ತತ್ಸಾಷ್ಟ್ಯಂ-  
ತ್ಪನ್ನಯೋಗೇಹಾಸ್ತದ್ವಿಷ್ಣೋಃ ಪರಮಂ ಪದಮ್ || ಯತ್ರೇತದೋತಂ ಪ್ರೋತಂ ಚ  
ಯದ್ಭೂತಂ ಸಚರಾಚರಮ್ | ಭಾವ್ಯಂ ಚ ವಿಶ್ವಂ ಮೇತ್ರೇಯ ತದ್ವಿಷ್ಣೋಃ  
ಪರಮಂ ಪದಮ್" ವಿಷ್ಣುಪುಂ ೨-೮ | 4. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ.  
5. ಒಂದು ಪುಣ್ಯತೀರ್ಥ. 6. ಭೂಮಧ್ಯಸ್ಥಾನ, ಹುಬ್ಬುಗಳ ಮಧ್ಯದ ಸ್ಥಾನ. "ಅರುಣ್ವತೀಂ ಧ್ರುವಂ ಚೈವ  
ವಿಷ್ಣೋಸ್ತೀರ್ಣಿಣಿ ಪದಾನಿ ಚ | ಆಸನ್ನಮೃತ್ಯುನಾಂ ಪಶ್ಯೇಚ್ಚತುರ್ಥ  
ಮಾತುಮಂಡಲಮ್ || ಅರುಣ್ವತೀ ಭವೇಜ್ಜಿಹ್ವಾ ಧ್ರುವೋ ನಾಸಾಘ್ರ-  
ಮುಚ್ಯತೇ | ವಿಷ್ಣೋಃ ಪದಾನಿ ಭೂಮಿವೇ ನೇತ್ರಯೋಮತಿಮಂಡಲಮ್"  
ಕಾಶೀಖಂ |

**ವಿಷ್ಣುಪದೀ ವಿಷ್ಣು ಪದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಂಗಾನದಿ. ವಿಷ್ಣೋಃ**  
ಪದಂ ಸ್ಥಾನಂ ಯಸ್ಯಾಃ | "ಗಜ್ಞಾ ವಿಷ್ಣುಪದೀ ಜಹ್ನುತನಯಾ  
ಸುರನಿಮ್ನಗಾ" ಅಮಂ | 2. ವೃಷಭ ಸಿಂಹ ವೃಶ್ಚಿಕ ಮತ್ತು  
ಕುಂಭ ಸಂಕ್ರಾಂತಿಗಳು. "ಧನುರ್ಮಿಥುನಕನ್ಯಾಸು ಮೀನೇ ಚ  
ಪಡಶೀತಯಃ | ವೃಷವೃಶ್ಚಿಕಕುಂಭೇಷು ಸಿಂಹೇ ವಿಷ್ಣುಪದೀ ಸ್ಮೃತಾ" |  
ವಿಷ್ಣು ಪದೀ ಸಂಕ್ರಾಂತಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಕ್ರಮಣಕ್ಕೆ ಮುಂಚೆಯೂ  
ಅನಂತರವೂ ಹದಿನಾರು ಘಳಿಗೆಗಳ ಕಾಲ ಪುಣ್ಯಕಾಲ.  
"ಪುಣ್ಯಾಃ ವಿಷ್ಣುಪದಾಂ ಚ ಪ್ರಾಕ್ಪಶ್ಚಾದಪಿ ಷೋಡಶ" |

**ವಿಷ್ಣುಪಾದ ವಿಷ್ಣು ಪಾದ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣುವಿನ ಪಾದ, ಗಂಗಾ**  
ನದಿಯ ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನವಾದ ಪರಮಾತ್ಮನ ಪಾದ.  
"ವಿಷ್ಣುಪಾದೋದಕೋದ್ಭೂತಾ ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕಾದುಪಾಗತಾ" |

**ವಿಷ್ಣುಪುರಾಣ ವಿಷ್ಣು ಪುರಾಣ (ನಂ) ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ**  
ವಿರಚಿತ ಅಷ್ಟಾದಶ ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಈ ಪುರಾಣವು  
ಪರಾಶರಮುನಿಯಿಂದ ಮೈತ್ರೇಯಮುನಿಗೆ ಉಪದೇಶಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟು ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಪ್ರಚಾರಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿತು.  
[ಇದರಲ್ಲಿ ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತವಾದ ಜಗತ್ಸೃಷ್ಟಿಕ್ರಮ ಕಾಲನಿರ್ಣಯ  
ಪರಾಹವತಾರ ದೇವಾದಿಸೃಷ್ಟಿ ಮನುಷ್ಯಸೃಷ್ಟಿ  
ಲಕ್ಷ್ಮಿಯು ಭೃಗುಮಹರ್ಷಿಯ ಪುತ್ರಿಯಾಗಿ ಅವತರಿಸಿ  
ದುದು ಪ್ರಹ್ಲಾದಚರಿತ್ರೆ ಸೂರ್ಯರಥಸ್ಥಿತಿವರ್ಣನೆ  
ಮನ್ವಂತರಾನುವರ್ಣನೆ ವ್ಯಾಸಕೃತವೇದವಿಭಾಗಕ್ರಮ  
ಯಯಾತಿ ಚರಿತ್ರೆ ಸ್ಯಮಂತಕೋಪಾಖ್ಯಾನ ಶಿಶುಪಾಲ  
ವಧ ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ ಜನಿಸುವ ರಾಜರ ವಂಶವರ್ಣನೆ  
ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಾವತಾರ ರುಕ್ಮಿಣೀವಿವಾಹ ಷೋಡಶಸ್ತ್ರೀ  
ಪರಿಗ್ರಹ ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಸಾಂಕರ್ಯ  
ಪ್ರಳಯಗಳು ಮುಂತಾದ ವಸ್ತುಗಳು ಪ್ರತಿಪಾದಿತ  
ವಾಗಿವೆ.] "ತತ್ತ್ವೇನ ಯಶ್ಚಿದ್ವಿದೀಶ್ವರತತ್ತ್ವಭಾವಭೋಗಾಪವಗ್-  
ತದುಪಾಯಗತೀರದಾರಃ | ಸಂದರ್ಶಯನ್ನಿರಮಮೀತ ಪುರಾಣರತ್ನಂ ತಸ್ಮೈ  
ತಮೋ ಮುನಿವರಾಯ ಪರಾಕರಾಯ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ | ಈ ವಿಷ್ಣು  
ಪುರಾಣದಲ್ಲಿ 23,000 ಗ್ರಂಥ (ಶ್ಲೋಕ) ಗಳಿವೆ.

**ವಿಷ್ಣುಭಕ್ತಿ ವಿಷ್ಣು ಭಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲಿ**  
ಡುವ ನಿರತಿಶಯಪ್ರೀತಿ, ಯಾಥಾರ್ಥ್ಯಜ್ಞಾನದಿಂದ  
ಮಾಡುವ ಪರಮಾತ್ಮನ ಧ್ಯಾನ. 2. ಪರಮಾತ್ಮನ ಸೇವೆ.  
ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕಿಂತ್ನ" | ವಿಷ್ಣು ಭಕ್ತಿಃ |  
ಅನವರತವೂ ಮಾಡುವ ಪರಮಾತ್ಮನ ಸೇವೆಯೇ ಭಕ್ತಿ.  
ಈ ಭಕ್ತಿಯೇ ಪರಮಾತ್ಮನ ಕೃಪೆಗೆ ಕಾರಣವಾಗುವುದು.  
ಪರಮಾತ್ಮನ ಕೃಪೆಯೊಂದು ಒದಗಿದರೆ ಸಕಲ ಇಷ್ಟಾರ್ಥ  
ಗಳೂ ಸಿದ್ಧಿಸುವುವು. "ವಿಷ್ಣುಭಕ್ತಿ ಪ್ರವಕ್ಷ್ಯಾಮಿ ಯಯಾ  
ಸರ್ವಮವಾಪ್ಯತೇ | ಯಥಾ ಭಕ್ತ್ಯಾ ಹರಿಸ್ತುಷ್ಯೇತಥಾ ನಾನ್ಯೇನ  
ಕೇನಚಿತ್ || ಭಜ ಇತ್ಯೇಷ ವೈ ಧಾತುಃ ಸೇವಾಯಾಂ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ |  
ತಸ್ಮಾತ್ಸೇವಾ ಬುಧೈಃ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಭಕ್ತಿಸಾಧನಭೂಯಸೀ || ತೇ ಭಕ್ತಾ  
ಲೋಕನಾಥಸ್ಯ ನಾಮಕರ್ಮಾದಿಕೀರ್ತನೇ | ಮುಚ್ಯಂತ್ಯಶ್ನುಣಿ ಸಂಹೃಷಾತ್  
ಯೇ ಚ ಹೃಷ್ಯತನುರೂಪಾಃ || ವೇದಗಳೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಮೈಗೂಡಿಸಿ  
ಕೊಂಡಿದ್ದರೂ ಸಕಲಶಾಸ್ತ್ರಪಾರಂಗತನಾಗಿದ್ದರೂ  
ಸರ್ವೇಶ್ವರನಾದ ವಿಷ್ಣುವಿನ ಭಕ್ತನಾಗದಿದ್ದರೆ ಅಂತಹವನು  
ಅಧರ್ಮಾಧರ್ಮನಾಗುವನು. "ಅಂತರ್ಗತೋಽಪಿ ವೇದಾನಾಂ ಸರ್ವ-  
ಶಾಸ್ತ್ರಾರ್ಥವೇದಾಪಿ | ಯೋ ನ ಸರ್ವೇಶ್ವರೇ ಭಕ್ತಃ ತಂ ವಿಧ್ಯಾತ್ಪುರುಷಾ-  
ಧಮಮ್ || ಎಂತಹ ದುರಾಚಾರನಿರತನಾಗಿದ್ದರೂ ಅನನ್ಯ  
ಮನಸ್ಸಿನಾಗಿ ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು ಸೇವಿಸುವವನು ಪರಮ  
ಸಾಧುವೆಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕು. "ಅಪಿ ಚೇತ್ಸುಕುರಾಚಾರೋ ಭಜತೇ  
ಮಾಮನನ್ಯಭಾಕ್ | ಸಾಧುರೇವ ಸ ಮನ್ತವ್ಯಃ ಸಮ್ಯಗ್ಯವಸಿತೋ



ಹಿ ಸಃ" ಗೀತಾ ೯-೩೦ | ೧. ಎಷ್ಟೇ ದಾನಧರ್ಮಾದಿಗಳನ್ನು ಮಾಡಿದರೂ ಗಂಧವುಷ್ಟಾದಿಗಳಿಂದ ಆರಾಧಿಸಿದರೂ ಭಕ್ತಿಯೊಂದಿಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಸಂತೋಷವಾಗಲಾರದು. "ನ ದಾನೇವಿವಿಧದತ್ತೇನ ಪುಣ್ಯನಿಶುಲೇಪನಃ | ತೋಷಮೇತಿ ಮಹಾತ್ಮಾಸೌ ಯಥಾ ಭಕ್ತ್ಯಾ ಜನಾರ್ದನಃ" ||

**ವಿಷ್ಣುಮಾಯಾ ವಿಷ್ಣುಮಾಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 2. ಭಗವದಿಷ್ಟಿ, ಪರಮಾತ್ಮನ ಸಂಕಲ್ಪ. ವಿಷ್ಣೋರ್ಮಾಯಾ | ಈ ಮಾಯೆಯು ಸತ್ತ್ವರಜಸ್ತಮೋಮಯವಾದುದು. ಇದು ಪರಮಾತ್ಮನಿಂದಲೇ ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟುದು. ಇದು ಪರಮಾತ್ಮನ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಮರೆಸುವುದು. ಪರಮಾತ್ಮನ ಪರತ್ವವೂ ಇದರಿಂದ ತಿಳಿಯದಂತಾಗುವುದು. ತ್ರಿಗುಣಾತ್ಮಕವಾದ ಈ ಮಾಯೆಯನ್ನು ದಾಟಲು ಯಾರಿಗೂ ಸಾಧ್ಯವಾಗಲಾರದು. ಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಯಾರು ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು ಅಶ್ರಯಿಸುವರೋ ಅವರಿಗೆ ಮಾತ್ರ ಈ ಮಾಯೆಯಿಂದ ವಿಮುಕ್ತಿಯುಂಟು. "ತ್ರಿಭಿರ್ಗುಣಮಯೈರ್ಭವಿರೇಭಿಃ ಸರ್ವಮಿದಂ ಜಗತ್ | ಮೋಹಿತಂ ನಾಭಿಜಾನಾತಿ ಮಾಮೇಶ್ವರಃ | ಪರಮವ್ಯಯಮ್ || ದೇವಿ! ಹೃಷೀ ಗುಣಮಯಿ ಮಮ ಮಾಯಾ ದುರತಯಾ | ಮಾಮೇವ ಯೇ ಪ್ರಪದಂತೇ ಮಾಯಾಮತಾಂ ತರಂತಿ ತೇ" ಗೀತಾ ೭-೧೩, ೧೪ | ಪರಮಾತ್ಮನಾದ ವಿಷ್ಣುವಿನಿಂದ ಸೃಷ್ಟಿಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಮಾಯೆಯಿಂದ ಜಗತ್ತೆಲ್ಲವೂ ಮೋಹಪರವಶವಾಯಿತು. "ಸೃಷ್ಟಾ ಮಾಯಾ ಪುನಃ ಸೃಷ್ಟಾ ವಿಷ್ಣುನಾ ಪರಮಾತ್ಮನಾ | ಮೋಹಿತಂ ಮಾಯಾ ವಿಶ್ವಂ ವಿಷ್ಣು-ಮಾಯಾ ಚ ಕೀರ್ತಿತಾ" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ |

**ವಿಷ್ಣುಯಶಸ್ ವಿಷ್ಣುಯಶಸ್ (ಪುಂ)** ಕಲ್ಯಾಣತಾರವನ್ನು ತಾಳಿದ ಪರಮಾತ್ಮನ ತಂದೆ. ವಿಷ್ಣುನಾ ಯಶೋ ಯಸ್ಯ | ಈತನು ಬ್ರಹ್ಮಯಶಸ್ಸಿನ ಪುತ್ರ.

**ವಿಷ್ಣುರಥ ವಿಷ್ಣುರಥ (ಪುಂ)** ಗರುಡ. ವಿಷ್ಣೋಃ ರಥಃ | -ವಾಹನಮ್ -ವಾಹನಮ್, -ವಾಹ್ಯಃ -ವಾಹ್ಯಃ |

**ವಿಷ್ಣುರಾತ ವಿಷ್ಣುರಾತ (ಪುಂ)** ಪರೀಕ್ಷಿದ್ರಾಜ.

**ವಿಷ್ಣುಲೋಕ ವಿಷ್ಣುಲೋಕ (ಪುಂ)** ವೈಕುಂಠಲೋಕ. ವಿಷ್ಣುಲೋಕಃ |

**ವಿಷ್ಣುಲಲಭಾ ವಿಷ್ಣುಲಲಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ತುಲಸಿ. ವಿಷ್ಣೋರ್ಲಲಭಾ | 2. ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿ.

**ವಿಷ್ಣುಶಿಲಾ ವಿಷ್ಣುಶಿಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸಾಲಗ್ರಾಮ ಶಿಲೆ. ಈ ಸಾಲಗ್ರಾಮಶಿಲೆಯಲ್ಲಿರುವ ಪರಮಾತ್ಮನು ಕಲಿಯುಗದ ಹತ್ತುಸಹಸ್ರ ವರ್ಷಗಳನಂತರ ಭೂಮಿಯನ್ನು ತ್ಯಜಿಸುವನು. "ಅಯುತಾಬ್ದೇ ಕಲೇಯತಿ ತ್ಯಜೇದ್ವಿಷ್ಣು-ಶಿಲಾ ಮಹಿಮ್" |

**ವಿಷ್ಣುಶೃಂಗಲಕ ವಿಷ್ಣುಶೃಂಗಲಕ (ಪುಂ)** ಏಕಾದಶೀ ಮತ್ತು ದ್ವಾದಶೀ ಎರಡು ತಿಥಿಗಳ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ ಶ್ರವಣನಕ್ಷತ್ರದ ಒಂದು ಯೋಗ, ಶ್ರವಣದ್ವಾದಶೀ ಯೋಗ. "ದ್ವಾದಶೀ ಶ್ರವಣಸ್ಪೃಷ್ಟಾ ಸ್ಪೃಶೇದೇಕಾದಶೀಂ ಯದಾ | ಸ ಏವ ವೇಣವೋ ಯೋಗೋ ವಿಷ್ಣುಶೃಂಗಲಸಂಜಿತಃ" |

**ವಿಷ್ಣುರ ವಿಷ್ಣುರ (ಪುಂ)** ಧನುಸ್ಸಿನ ಟಂಕಾರ ಶಬ್ದ. ವಿ + ಸ್ಫುರ (ಸ್ಫುರಣಂ) "ಘ" (೩-೩-೧೮) | ಆತ್ವಮ್ (೬-೧-೪೭) | ಷತ್ವಮ್ (೮-೩-೭೬) |

**ವಿಷ್ಯ ವಿಷ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ವಿಷಪ್ರಯೋಗದಿಂದ ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಡುವವನು. ವಿಷೇಣ ವಚ್ಯಃ "ಯತ್" (೪-೪-೯೧) | "ವಿಷ್ಯೋ ವಿಷೇಣ ಯೋ ವಚ್ಯಃ" ಅಮಂ | 2. ವಿಷದಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿಷೇಣ ಕ್ರೀತಮ್ "ಯತ್" (೪-೧-೨) | 3. ವಿಷಕ್ಕೆ ಹಿತವಾದ. ವಿಷಾಯ ಹಿತಮ್ "ಯತ್" (೪-೧-೨) |

**ವಿಷ್ಯಂದ ವಿಷ್ಯಂದ (ಪುಂ)** ಸ್ರವಿಸುವುದು, ಸೋರುವುದು. ವಿ + ಸ್ಯಂದ್ (ಪ್ರಸ್ರವಣಂ) "ಘ" (೩-೩-೧೮) |

**ವಿಷ್ವ ವಿಷ್ವ (ವಿಂ)** ಹಿಂಸಿಸುವ, ಓಡಿಸುವ.

**ವಿಷ್ವಕ್ ವಿಷ್ವಕ್, ವಿಷ್ವತ್ ವಿಷ್ವತ್ (ಅವ್ಯಂ)** 1. ಸುತೃಲ್ಲೂ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ. "ಮುನಃ ಶರೀರೇಣ ತದ್ಗ್ರ-ರಂಹತಾ ಬಲಂ ಪ್ರಕೋಪಾದಿವ ವಿಷ್ವಗಾಯತಾ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೫೯ | (ವಿಂ) 2. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಹರಡಿರುವ. ವಿಷ್ವತ್-ಮೋಹಃ ಸ್ಥಗಯತಿ ಕಥಂ ಮಂದಭಾಗ್ಯಃ ಕರೋತಿ" ಉಂ ರಾಂ ೩-೩೮ |

**ವಿಷ್ವಕ್ಸೇನ ವಿಷ್ವಕ್ಸೇನ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. ಇನೇನ ಸ್ವಾಮಿನಾ ಸಹ ವರ್ತತ ಇತಿ ಸೇನಾ ಸೇಶ್ವರಾ ಚಮುಃ, ತದ್ಗು-ಲಕ್ಷಿತಾಃ ರಕ್ಷಕವಂತೋ ಜಂತವೋಽಸ್ಯ | "ಇನೇನ ಸ್ವಾಮಿನಾ ಸಾಕಂ ವರ್ತತೇ ಸೇನ ಇತ್ಯತಃ | ವಿಷ್ವಗ್ರಕ್ಸಯೋ ಜನೋ ಯಸ್ಯ ವಿಷ್ವಕ್ಸೇನ ಇತಿರೀತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | "ವಿಷ್ವಕ್ಸೇನೋ ಜನಾರ್ದನಃ" ವಿಂ ಸಂ | "ಸಾಮ್ಯಮಾಪ ಕಮಲಾಸಖವಿಷ್ವಕ್-ಸೇನಸೇವಿತಯುಗಾಂತಪಯೋಧಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೦-೫೫ | 2. ವಿಷ್ಣುವಿನ ಮುಖ್ಯ ಪರಿಚಾರಕ, ವಿಷ್ಣುವಿನ ನಿರ್ಮಾಲ್ಯವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು.

**ವಿಷ್ವಕ್ಸೇನಪ್ರಿಯಾ ವಿಷ್ವಕ್ಸೇನಪ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿ. 2. ವಾರಾಹೀಗಿಡ. ಹಂದಿಗಡ್ಡೆ. "ವಿಷ್ವಕ್ಸೇನಪ್ರಿಯಾ ಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾ ವಾರಾಹಾಮಪಿ ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ |

**ವಿಷ್ವಕ್ಸೇನಾ ವಿಷ್ವಕ್ಸೇನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪ್ರೇಂಕಣ ಗಿಡ. "ವಿಷ್ವಕ್ಸೇನಾ ಫಲಿನ್ಯಾಂ ತು ವಿಷ್ವಕ್ಸೇನೋ ಜನಾರ್ದನಃ" ಮೇದಿಂ |

**ವಿಷ್ವನ ವಿಷ್ವನ (ವಿಂ)** ಭೋಜನ, ಊಟ.



**ವಿವರಣೆ** (ವಿಂ) ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗೂ ಹೋಗುವ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಹರಡುವ. ವಿವರಣೆ—  
—ವಿವಕ್ + ಅಚ್ (ಗತೌ) “ವಿವನ್” ಅದ್ರಾಚೇಶ್ವರಃ  
(೬-೩-೯೨)। ಸ್ವಿಯಾಂ “ಜಿಪ್” (೪-೧-೬)। ವಿವರಣೆ  
ವಿವರಣೆ. “ವಿವರಣೆವಿವರಣೆ ಸೇನವೀವೀರಾಜಾವಂತಃ  
ಕವಾಪಿ ದೂರಂ ಪ್ರಯಾತಮ್” ಮಾಘಂ ೧೮-೨೫।

**ವಿವರಣೆ** (ವಿಂ) ಉಪಮಾಡುವುದು, ತಿನ್ನು  
ವುದು.

**ವಿಸ** (ನಂ) ಮೃಣಾಳ, ತಾವರೆಯ ದಂಟು. ವಿಸ್ಪತಿ—  
ವಿಸ (ಪ್ರೇರಣೆ) “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೫)।

**ವಿಸಂಯುಕ್ತ** (ವಿಂ) ಬೇರೆಯಾದ, ಪ್ರತ್ಯೇಕ  
ವಾಗಿರುವ. ವಿ + ಸಮ್ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) “ಕ್ತಃ”  
(೩-೪-೭೨)।

**ವಿಸಂಯೋಗ** (ವಿಂ) ಬೇರೆಯಾಗುವುದು,  
ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗುವುದು. ವಿ + ಸಮ್ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ)  
“ವ್ಯ” (೩-೩-೧೮)।

**ವಿಸಂವಾದ** (ವಿಂ) 1. ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಮಾತಾಡು  
ವುದು, ವ್ಯತ್ಯಾಸವಾಗಿ ಹೇಳುವುದು. ವಿವಾದೋ ವಾದಃ।  
ಹೇಳಿದ ಮಾತಿಗೆ ವ್ಯತ್ಯಾಸವಾಗಿ ಹೇಳಿ ಮಾತಿಗೆ ತಪ್ಪು  
ವುದು ವಿಸಂವಾದ. 2. ಅಸಂಗತವಾಗಿ, ಅಸಂಬಂಧ  
ವಾಗಿ, ಹೊಂದಿಕೆಯಿಲ್ಲದೆ ಮಾತಾಡುವುದು. 3. ಎದುರು  
ಮಾತಾಡುವುದು, ನಿಷೇಧಿಸಿ ಮಾತಾಡುವುದು.

**ವಿಸಂವಾದಿತ** (ವಿಂ) 1. ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ  
ಮಾತಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಅಸಂಗತವಾಗಿ ಮಾತಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
3. ನುಡಿದಂತೆ ನಡೆಯದೆ ಇರುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
ವಿ + ಸಮ್ + ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಕ್ “ಕ್ತಃ”  
(೩-೨-೧೦೨) “ರಮಣೀಯಃ ಕ್ಷಲು ಅವಧಿಃ ವಿಧಿನಾ ವಿಸಂ-  
ವಾದಿತಃ” ಶಾಕುಂ ೬।

**ವಿಸಂವಾದಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಹೇಳಿದ ಮಾತಿಗೆ  
ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಆಡುವವನು. 2. ಅಸಂಗತವಾಗಿ, ಸಂಬಂಧ  
ವಿಲ್ಲದೆ ಮಾತಾಡುವವನು. 3. ತಪ್ಪೆಂದು ಹೇಳಿ ಎದುರಿಸಿ  
ಮಾತಾಡುವವನು. ವಿಸಂವದತಿ — ವಿ + ಸಮ್ + ವದ  
(ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಣಿತಿಃ” (೩-೨-೭೮)।  
4. ವ್ಯತ್ಯಾಸವಾಗಿರುವ, ಭಿನ್ನವಾಗಿರುವ, ಅಂಗೀಕರಿಸ  
ಬಾರದ, ಒಪ್ಪಲಾರದ, ಹೊಂದಿಕೆಯಿಲ್ಲದೆ, ಹೋಲ  
ದಿರುವ. “ವಯೋವಿವರಣೆ ರಾಮಸ್ಯ ಚ ತಯೋಸ್ತದಾ।  
ಜನತಾ ಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯ ಸಾದೃಶ್ಯಂ ನಾಶಿಕಮ್ಪಂ ವ್ಯತಿಷ್ಠತ” ರಘುಂ  
೧೫-೬೭।

**ವಿಸಂಠುಲ** (ವಿಂ) 1. ಅಸ್ಥಿರವಾದ, ಅಲು  
ಗಾಡುವ, ಕಂಪಿಸುವ, ಕ್ಷೋಭೆಪಡಿಸುವ. “ಪ್ರತಿಕೂಲಬುದ್ಧ-  
ರಕ್ಷಿತಾವಚನವಿವರಣೆವಿವರಣೆವಿವರಣೆವಿಸಂಠುಲಾ” ಮಾಲತೀಂ  
೭। 2. ಸಮವಾಗಿಲ್ಲದ, ಹಳ್ಳತಿಟ್ಟಾದ. “ವಿಸಂಠುಲ-  
ದ್ವೀಪತಯೋಪಲಕ್ಷ್ಯವೀರೀಕ್ಷಣೀರೇಷ ವಿಭಾತಿ ಕುಡಃ” ಭಾದಂ ೧೮-೯೦।

**ವಿಸರ** (ವಿಂ) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. ವಿಸರತಿ—  
ವಿ + ಸ್ಮ (ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೫)। “ವರ್ಮಿಭೋ-  
ವಿಸರವಿವರಣೆನೇರಿದಾನಿ ಸುಧಾಕರ್ಷಾಃ ಪರಿಜನವಾರಸುಂದರೀಣಾಮ್”  
ಮಾಲತೀಂ ೧-೪೦। 2. ಹರಡುವುದು, ಪ್ರಸರಿಸುವುದು.  
“ವಿಸರಃ ಪ್ರಸರೇ ವ್ರಜೇ” ಮೇದಿಂ।

**ವಿಸರ್ಗ** (ವಿಂ) 1. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. ವಿ + ಸ್ಮ (ಗತೌ)  
“ವಿಸರ್ಗ” (೩-೩-೧೮)। “ಆದಾನಂ ಹಿ ವಿಸರ್ಗೀಯ  
ಸತಾಂ ವಾರಿಸುಚಾಮಿವ” ರಘುಂ ೪-೮೬। 2. ತ್ಯಜಿಸುವುದು,  
ಬಿಡುವುದು. 3. ಚಿಮುಕಿಸುವುದು, ಸುರಿಯುವುದು,  
ಚೆಲ್ಲುವುದು. “ಪುರಂ ನವೀಚಕ್ರಸ್ಥಾ ವಿಸರ್ಗಾನಿವಾ ನಿವಾಚ-  
ಗಲಪಿತಾಮಿವೀವಿಮ್” ರಘುಂ ೧೬-೩೮। 4. ಕಳುಹಿಸು  
ವುದು. 5. ಸೃಷ್ಟಿಸುವುದು. 6. ಕಾಂತಿ, ಪ್ರಭೆ. 7. ಮಲ  
ವಿಸರ್ಜನೆ. 8. ವಿಸರ್ಜನೀಯ, ಕಂಠದಲ್ಲಿ ವಾಯುವಿನ  
ಎಳೆತದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಮಹಾಪ್ರಾಣಸೂಚಕವಾಗಿ  
ಗುರುತಿಸಲ್ಪಡುವ ಎರಡು ಬಿಂದುಗಳು (ಃ). “ವಿಸರ್ಗೋ  
ವಿಸರ್ಜನೀಯೇ ವರ್ವಸಿ ತ್ಯಾಗದಾನಯೋಃ” ಹೇಮಂ। 9. ಮೋಕ್ಷ,  
ಮುಕ್ತಿ, ಸಂಸಾರಪಾಶದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ. 10. ದಕ್ಷಿಣದಿಕ್ಕು  
ನಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನ ಸಂಚಾರ. “ವಿಸರ್ಗಸ್ತು ಪುಮಾನ್ ದಾನೇ ತ್ಯಾಗೋ  
ಚ ಮಲನಿರ್ಗಮೇ। ವಿಸರ್ಜನೀಯೇಽಪ್ಯಯನಭೇದೇಽಪಿ ಚ ವಿಭಾವಸೋಃ”  
ಮೇದಿಂ।

**ವಿಸರ್ಜನ** (ನಂ) 1. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. ವಿ + ಸ್ಮ (ಗತೌ)  
“ವಿಸರ್ಗ” (೩-೩-೧೮)। 2. ಪರಿತ್ಯಾಗ, ತ್ಯಜಿಸುವುದು.  
“ಶ್ರುತದೇಹವಿಸರ್ಜನಂ ಪಿತುಃ ಪರಮಶ್ರೇಣಿ ವಿಮುಚ್ಯ  
ರಾಘವಃ” ರಘುಂ ೮-೨೭। 3. ಕಳುಹಿಸಿಕೊಡುವುದು,  
ಬಿಟ್ಟುಕೊಡುವುದು. 4. ವರ್ಜಿಸುವುದು, ಸುರಿಯು  
ವುದು. “ಸಮತಯಾ ವಸುಷ್ಠಿವಿಸರ್ಜನೇನಿನಿಯಮನಾದಸತಾಂ ಚ  
ನರಾಧಿಪಃ” ರಘುಂ ೧-೬। 5. ಆವಾಹನಮಾಡಿದ ದೇವತೆ  
ಗಳನ್ನು ಕಳುಹಿಸಿಕೊಡುವುದು. 6. ಮಲಮೂತ್ರಗಳನ್ನು  
ಹೊರಗೆ ಬಿಡುವುದು. “ನ ಕದಾಚನ ಕುರ್ವತಿ ವಿಷ್ಮತ್ಸ್ಯ-  
ವಿಸರ್ಜನಮ್” ಮನುಂ ೪-೪೮। (ವಿಂ) 7. ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
“ತವಯಾ ಸೃಷ್ಟಿಮಿದಂ ವಿಶ್ವಂ ವಾತುಗುಣವಿಸರ್ಜನಮ್” ಭಾಗಂ  
೧೦-೧೬-೫೭।

**ವಿಸರ್ಜನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ವಿಸರ್ಗ, ಕಂಠದಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟುವ ಮಹಾಪ್ರಾಣಸೂಚಕವಾದ ಎರಡು (ಃ)



ಬಿಂದುಗಳು. (ವಿಂ) 2. ಬಿಡಲ್ಪಡುವ, ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಕಳುಹಿಸಬೇಕಾದ. 5. ಕೊಡಲ್ಪಡುವ, ದಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 6. ತ್ಯಜಿಸಬೇಕಾದ. ವಿ + ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। "ತವ್ಯ:" (3-1-96)। -ಅಪ್ರವೃತ್ತಮ್ -ಸೃಷ್ಟ್ಯಮ್.

**ವಿಸರ್ಜಯತ್ ವಿಸರ್ಜಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಬಿಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ತ್ಯಜಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) + ಣಿच् "ಶತ್" (3-2-124)। 2. ರವಾನೆಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ದಾನಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಕಳುಹಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಕೀಪ್" (4-1-6)। -ಯಂತಿ -ಯಸ್ತು.

**ವಿಸರ್ಜಿತ ವಿಸರ್ಜಿತ** (ವಿಂ) 1. ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊರಗೆ ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) + ಣಿच् "ಕ್ತ:" (3-2-102)। "ಅಥ ವಿಸರ್ಜಿತರಾಜಲೋಕ:" "ವಿಶ್ರಮ್ಯತಾಮ್" ಇತಿ ಸ್ವಯಮೇವಾಭಿಧಾಯ ಕತಿಪಯಾಪ್ತರಾಜಪುತ್ರ-ಪರಿವೃತೋ ನರಪತಿರಮ್ಯಂತರಂ ಪ್ರಾವಿಶತ್" ಕಾದಂ। 2. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ದಾನವಾಗಿ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಬೀಳ್ಕೊಟ್ಟು ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಸಾಗ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ರವಾನೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಿಸರ್ಪ ವಿಸರ್ಪ** (ಪುಂ) 1. ಮೆಲ್ಲಗೆ ಸರಿದುಹೋಗುವುದು. ವಿ + ಸೃಪ್ (ಗತೌ) "ಘಬ್" (3-3-18)। 2. ವೇಗದಿಂದ ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡುವುದು, ಬೇಗಬೇಗನೆ ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯೂ ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು. "ಪ್ರಮೋಹೋ ನಿद्रಾ ವಾ ಕಿಮು ವಿಷವಿಸರ್ಪ: ಕಿಮು ಮದ:" ತಂ ರಾಂ 1-35। 3. ತುರಿ, ಕಜ್ಜಿ, ಕಡಿತ, ನವೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ರೋಗ. ಇದು ಅಂಟುರೋಗವಾದುದರಿಂದ ಶರೀರದಲ್ಲೆಲ್ಲಾ ಹರಡುವುದು. **ಅತಿಯಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಉಪ್ಪು ಹುಳಿ ಕಹಿ ಉಪ್ಪು ವಸ್ತುಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಈ ರೋಗವು ಏಳು ವಿಧ.** "ಲವಣಾಮ್ಲಕಡ್ಡುಣಾದಿಸೇವನಾಛೇಷಕೋಪತ:। ವಿಸರ್ಪ: ಸಪ್ತಥಾ ಜ್ಞೇಯ: ಸರ್ವತ: ಪರಿಸರ್ಪಣಾತ್"।

**ವಿಸರ್ಪಣ ವಿಸರ್ಪಣ** (ನಂ) 1. ಮೆಲ್ಲಗೆ ಸರಿದುಹೋಗುವುದು. ವಿ+ಸೃಪ್ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। "ಶೋಷಣಂ ಸಾಗರಸ್ಯೇವ ಮೇರೋರೀವ ವಿಸರ್ಪಣಮ್। ಪತನಂ ಭಾಸ್ಕರಸ್ಯೇವ ನ ಮೃಷ್ಯೇ ದ್ರೋಣಪಾತನಮ್" ಭಾಂ। 2. ಹರಡುವುದು, ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು. "ಪ್ರಸರಸ್ತು ವಿಸರ್ಪಣಮ್" ಅಮಂ।

**ವಿಸರ್ಪಿ ವಿಸರ್ಪಿ** (ಪುಂ) ಕಜ್ಜಿ, ತುರಿ, ಕಡಿತ, ನವೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ರೋಗ.

**ವಿಸರ್ಪಿನ್ ವಿಸರ್ಪಿನ್** (ವಿಂ) ಎಲ್ಲಾಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಹರಡುವ. "ಪರಿತೋ ವಿಸರ್ಪಿ ಪರಿತಾಪಿ ಭೃಶಮ್" ಮಾಘಂ 9-36। **ವಿಸಲ ವಿಸಲ** (ನಂ) ಬಿಗುರು. "ವಿಸಲಂ ಕಿಸಲಂ ಚಾಥೋ-ತ್ಕಲಿಕಾಙ್ಗಾರಿತೇ ಸಮೇ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ವಿಸಾರ ವಿಸಾರ** (ಪುಂ) 1. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. ವಿಶೇಷಣ ಸರತಿ-ಸೃ (ಗತೌ) "ಘಬ್" (ವಾಂ 3-3-18)। 2. ಮೆಲ್ಲಗೆ ಸರಿದುಹೋಗುವುದು. 3. ಹರಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು. "ಘಬ್" (3-3-28)।

**ವಿಸಾರಿನ್ ವಿಸಾರಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಹರಡುವ, ಸರ್ವತ್ರ ವ್ಯಾಪಿಸುವ. ವಿಸಾರೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114)। "ವಿಸಾರಿಕಾಞ್ಚೀಮಣಿರಶ್ಮಿಲಬ್ಧಯಾ ಮನೋಹರೋಚ್ಚಾಯನಿತಮ್ಬ-ಶೋಭಯಾ" ಕಿರಾಂ 6-23। 2. ಮೆಲ್ಲಗೆ ಸರಿದುಹೋಗುವ. (ಪುಂ) 3. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು.

**ವಿಸುಚಿ ವಿಸುಚೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಜೀರ್ಣರೋಗ. ವಿಶೇಷಣ ಸೂಚಯತಿ-ಸೂಚ (ಪೇಶುನ್ಯ) + ಣಿच् "ಅಚ್" (3-1-134)। ಅಜೀರ್ಣದಿಂದ ವಾಯುವು ದೇಹದಲ್ಲಿ ಸೂಚಿಯಂತೆ ಚುಚ್ಚುತ್ತಾ ಪೀಡಿಸುವುದು. "ಸೂಚಿಭಿರೀವ ಗಾತ್ರಾಣಿ ತುದನ್ ಸಂತಿಷ್ಠತೇಽನಲ:"। ಯಸ್ಯಾಜೀರ್ಣಂ ನಾ ವೇದ್ಯವಿಸುಚೀತಿ ನಿಗದ್ಯತೇ"। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"। -ಸೂಚಿಕಾ -ಸೂಚಿಕಾ. ವಿವೇಚನೆಯಿಲ್ಲದೆ ಅಧಿಕವಾಗಿ ಆಹಾರ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವರಿಗೆ ಈ ರೋಗ (ಕಾಲರಾ) ವು ಬರುವುದು. ಮಿತಾ ಹಾರಿಗಳಿಗೆ ಈ ವ್ಯಾಧಿಯು ಬರುವುದಿಲ್ಲ. "ನ ತಾಂ ಪರಿಮಿತಾಹಾರಾ ಲಬಂತೇ ವಿವಿಧಾಗಮಾ:। ಮೂಢಾಸ್ತಾಮಜಿತಾ-ತ್ಮಾನೋ ಲಬಂತೇಽನಲೋಲುಪಾ:"।

**ವಿಸೃಜತ್ ವಿಸೃಜತ್** (ವಿಂ) 1. ಬಿಡುತ್ತಿರುವ, (ಬಾಣ) ಪ್ರಯೋಗಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) "ಶತ್" (3-2-124)। 2. ಹೊರಗೆ ಹೊರಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಹೊರಗೆ ಬಿಡುತ್ತಿರುವ. "ವಿಸೃಜಂತೋ ಸುಖೇರ್ಜಾಲಾ ಭೀಮಾ ಇವ ಭುಜಙ್ಗಮಾ:" ಕುಮಾಂ 16-6।

**ವಿಸೃತ ವಿಸೃತ** (ವಿಂ) ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವ, ಹರಡಿರುವ. ವಿ+ಸೃ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (3-4-92)। "ತದಭಿಮುಖಮನಙ್ಗಚಾಪ-ಯಷ್ಟಿವಿಸೃತಗುಣೇವ ಸಮುಪ್ಪನಾಮ ಕಾಚಿತ್" ಕಿರಾಂ 10-43।

**ವಿಸೃತವರ ವಿಸೃತವರ** (ವಿಂ) 1. ಹರಡುವ ಸ್ವಭಾವದ. ವಿ+ಸೃ (ಗತೌ) "ಕ್ವರಪ್" (3-2-163)। "ವಿಸೃತವರೇ-ರಮ್ಬುರೂಹಾಂ ರಜೋಭಿ: ಯಮಸ್ವಸುಷ್ಪಿತ್ರ ಇವೋದಭಾರ:" ಮಾಘಂ 3-11। 2. ಮೆಲ್ಲಗೆ ಸರಿದುಹೋಗುವ.

**ವಿಸ್ಮರ ವಿಸ್ಮರ** (ವಿಂ) ಮೆಲ್ಲಗೆ ಸರಿದುಹೋಗುವ. ವಿ + ಸೃ (ಗತೌ) "ಕ್ಮರಚ್" (3-2-160)।



**ವಿಸೃಷ್ಟ ವಿಸ್ತೃಷ್ಠ** (ವಿಂ) 1. ತೃಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102) । "ವಿಸೃಷ್ಟರಾಗಾದೃಶಾನ್ವಿತತ: ಸ್ತನಾಙ್ಗರಾಗಾಣಿತಾಚ್ಚ ಕಂದುಕಾತ್" ಕುಮಾಂ 4-11 । 2. ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಆಪ್ತ: ಕುಮಾರಾನಯನೋತ್ಸುಕೇನ ಭೋಜೇನ ದೂತೋ ರಥೇ ವಿಸೃಷ್ಟ:" ರಘುಂ 4-39 । 3. ದಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಗ್ರಾಮೇಷ್ವಾ-ತ್ಮವಿಸೃಷ್ಟೇಷು ಯುಪವಿಹ್ಲೇಷು ಯಜ್ವನಾಮ್" ರಘುಂ 1-44 । 4. ಪರಿತೃಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊರೆದುಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಹೊರಗೆ ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊರದೂಡಲ್ಪಟ್ಟ. 7. ವಿಸರ್ಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಟ್ಟು ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಿಸೃಷ್ಟಪಾರ್ಶ್ವಾನುಚರಸ್ಯ ತಸ್ಯ ಪಾರ್ಶ್ವದ್ಭುಮಾ: ಪಾಶಭೃತಾ ಸಮಸ್ಯ" ರಘುಂ 2-9 । 8. (ದೃಷ್ಟಿ) ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, (ನೋಟ) ಬೀರಲ್ಪಟ್ಟ. "ಉದ್ವಿಗ್ನಚ್ಚಲಕಟಾಕ್ಷವಿಸೃಷ್ಟ-ದೃಷ್ಟಿ:" ಮೃಚ್ಛಂ 1-19 । 9. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಬಾಣ). "ವಿಸೃಷ್ಟಾ: ಸುಭಟೈಃ ರುಪೈ: ವ್ಯೋಮ ವ್ಯಾನಶಿರೇ ಶರಾ:" ಕುಮಾಂ 16-6 ।

**ವಿಸ್ತರ ವಿಸ್ತರ** (ಪುಂ) 1. ಪದಗಳ ಬಾಹುಳ್ಯ, ಶಬ್ದದ ವಿಸ್ತರಣೆ, ಗ್ರಂಥದ ವಿಸ್ತರಣೆ. ವಿ+ಸ್ತೃ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) "ಅಪ್" (3-3-49) । "ಸುವಿಸ್ತರತರಾ ವಾಚೋ ಭಾಷ್ಯ-ಭೃತಾ ಭವಂತು ಮೇ" ಮಾಘಂ 2-24 । 2. ವೇದಾಂಗ. "ಸಾಂದೀಪನೇ: ಸಕೃತ್ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಧೀತ್ಯ ಸವಿಸ್ತರಮ್" ಭಾಗಂ 3-3-2 । 3. ಪ್ರಣಯ, ಪ್ರೇಮ. 4. ವಿಸ್ತಾರ, ವಿಸ್ತರಿಸುವುದು, ದೊಡ್ಡದುಮಾಡುವುದು. "ವಿಸ್ತರೇಣಾ-ತ್ಮನೋ ಯೋಗಂ ವಿಭೂತಿಂ ಚ ಜನಾರ್ದನ । ಭೂಯ: ಕಥಯ ತೃಪ್ತಿಹಿ ಶೃಣ್ವತೋ ನಾಸ್ತಿ ಮೇಷ್ಮತಮ್" ಗೀತಾ 10-16 । "ವಿಸ್ತರೋ ವಾಕ್ಪ್ರಪಂಚೇ ಸ್ಯಾದ್ವಿಸ್ತಾರೇ ಪ್ರಣಯೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ) 5. ಬಹಳ ಹೆಚ್ಚಾದ, ಬಹಳ ದೊಡ್ಡದಾದ. "ಅಪೇಕ್ಷಿತಂ ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ ನೀರಸಂ ವಸ್ತು ವಿಸ್ತರಮ್ । ಯದಾ ಸಂದರ್ಶಯೇಚ್ಛೇಷ-ಮಾಮುಖಾನಂತರಂ ತದಾ" ಸಾಂ 10-6 ।

**ವಿಸ್ತಾರ ವಿಸ್ತಾರ** (ಪುಂ) 1. ವಿಟಪ, ಮರಗಿಡಗಳ ಶಾಖೆ, ರೆಂಬೆ. ವಿ+ಸ್ತೃ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) "ಛ" (3-3-33) । 2. ಹಿರಿದಾಗುವುದು, ದೊಡ್ಡದಾಗುವುದು, ಪ್ರಸರಿಸುವುದು, ವಿಸ್ತಾರಣ, ಹರಡುವುದು. "ಮಸೃಣಮುಕ್ತುಲಿತಾನಾಂ ಪ್ರಾಂತವಿಸ್ತಾರಭಾಜಾಮ್" ಮಾಲತೀಂ 1-30 । 3. ವೈಶಾಲ್ಯ, ಅಗಲ. "ವಿಲೋಕಯಂತ್ಯೋ ವಪುರಾಪುರಕ್ಷಣಾಂ ಪ್ರಕಾಮವಿಸ್ತಾರ-ಫಲಂ ಹರಿಷ್ಯ:" ರಘುಂ 2-11 । 4. ವಿವರ, ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳ ವಿವರಣೆ. "ಅನಯಾ ದುಹಿತಮನೋರಥಸಂಪತ್ಯಾ ಕರ್ಣೋಽಪಿ ತಾವತ್ ಶ್ರುತವಿಸ್ತಾರ: ಕ್ರಿಯತಾಮ್" ಶಾಕುಂ 7 । 5. ಗಾತ್ರದ ಹೊರಭಾಗ, ಸುತ್ತಳತೆಯ ಪ್ರಮಾಣ,

ಹೊರಮೈಯ ಎಲ್ಲಾತಡೆಯ ಭಾಗ. "ಮಧ್ಯೇ ಸ್ಯಾಮ: ಸ್ತನ ಇವ ಭುವ: ಶೇಷವಿಸ್ತಾರಪಾಂಡು:" ಮೇಘಂ 1-16 ।

**ವಿಸ್ತಾರಿತ ವಿಸ್ತಾರಿತ** (ವಿಂ) ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಚ್ಚಿಹಾಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಸ್ತೃ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) + ಣಿच् "ಕ್ತ:" (3-2-102) । "ವಿಸ್ತಾರಿತಂ ಮಕರಕೇತನಧೀವರೇಣ ಸ್ತ್ರೀ-ಸಂಜಿತಂ ಬಡಿಸಮತ್ರ ಭವಾಮ್ಬುರಾಶೌ" ಮೃತಂ 1-43 ।

**ವಿಸ್ತೀರ್ಣ ವಿಸ್ತೀರ್ಣ** (ವಿಂ) 1. ಅಗಲವಾದ, ವಿಶಾಲವಾದ. ವಿ+ಸ್ತೃ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) । "ಪರ್ಣಾನಿ ಸ್ವರ್ಣವರ್ಣಾನಿ ವಿಸ್ತೀರ್ಣಕಿರ್ಣಲೋಚನೇ" ಉದ್ಭಟ: । 2. ದೊಡ್ಡದಾದ. "ವಿಸ್ತೀರ್ಣಮಾಯಾಮವತೀಲೋಲಲೋಕ-ನಿರಂತರಾ" ಮಾಘಂ 11-43 । 3. ವಿಸ್ತಾರಹೊಂದಿದ, ಹರಡಿದ, ಪ್ರಸರಿಸಿದ.

**ವಿಸ್ತೃತ ವಿಸ್ತೃತ** (ವಿಂ) 1. ವಿಸ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಸ್ತೃ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) । "ತತ್ವಂ ಬ್ರಹ್ಮಪರಂ ಜ್ಯೋತಿರಾಕಾಶಮಿವ ವಿಸ್ತೃತಮ್" ಭಾಗಂ । 2. ದೊಡ್ಡದಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಅಗಲವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಶಾಲವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಿಸ್ತೃತಿ ವಿಸ್ತೃತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿಸ್ತಾರ, ಅಗಲ. 2. ದೊಡ್ಡದಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ಹರಡುವಿಕೆ. ವಿ + ಸ್ತೃ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94) ।

**ವಿಸ್ಪಷ್ಟ ವಿಸ್ಪಷ್ಟ** (ವಿಂ) ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ. ವಿ + ಸ್ಪಶ (ಬಾಧನಸ್ಪರ್ಶನಯೋ:) "ಕ್ತ:" (3-2-102) ।

**ವಿಸ್ಫಾರ ವಿಸ್ಫಾರ** (ಪುಂ) ಧನುಸ್ಸಿನ ಟಂಕಾರ, ಬಿಲ್ಲಿನ ಶಬ್ದ. ವಿ + ಸ್ಫುರ (ಸ್ಫುರಣೆ) "ಛ" (3-3-16) । ಘಾತೋರಾತ್ವಮ್ (6-1-46) । ವಾ ಷತ್ವಮ್ (6-3-96) । **ವಿಸ್ಫಾರ: ವಿಸ್ಫಾರ:** "ವಿಸ್ಫಾರೋ ಧನುಷ: ಸ್ವಾನ:" ಅಮಂ । 2. ಕಂಪನ, ನಡುಕ.

**ವಿಸ್ಫಾರಿತ ವಿಸ್ಫಾರಿತ** (ವಿಂ) 1. ನಡುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಸ್ಫುರ (ಸ್ಫುರಣೆ) + ಣಿच् "ಕ್ತ:" (3-2-102) । 2. ಶಬ್ದಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಟಂಕಾರವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ವಿಕೃಷ್ಟವಿಸ್ಫಾರಿತವಾಪಮಂಡಲ:" ಕಿರಾಂ 14-31 । 3. ವಿವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಸ್ತರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಿಸ್ಕಾರ್ಯಮಾಣ ವಿಸ್ಕಾರ್ಯಮಾಣ** (ವಿಂ) ಅಕೃಷ್ಯವಾದ, ಕಿವಿಯವರೆಗೂ ಎಳೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಬಾಣವನ್ನು ಹೊಡಿ ಹೆದೆಯೇರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ಸ್ಫುರ (ಸ್ಫುರಣೆ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (3-2-102) । "ವಿಸ್ಕಾರ್ಯಮಾಣಸ್ಯ ತತೋ ಭುಜಾಭ್ಯಾಂ ಭೂತಾನಿ ಭರ್ತ್ವಾ ಧನುರಂತಕಸ್ಯ" ಕಿರಾಂ 19-24 ।



**ವಿಕ್ರೂರಿತ ವಿಸ್ಕೂರಿತ** (ವಿಂ) 1. ಅಲಗುಗಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಕದಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಚಂಚಲವಾದ, ತಿರುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ರಕ್ತವಿಕ್ರೂರಿತೇಕ್ಷಣಮ್" |

**ವಿಕ್ರೂರಿತ ವಿಸ್ಕೂರಿತ** (ಪುಂ) 1. ಬೆಂಕಿಯು ಕಿಡಿ. "ನಿರ್ದದಾಹ ನಗರೀಮಥ ಕಾಶೀ ವಿಕ್ರೂರಿತ ಇವ ಮಾಧವದೀಪ್ತೇ:" ಯಾದಂ ೨೧-೪೧ | 2. ವಿಷದ ಒಂದು ಭೇದ. ಸ್ಫುರ್ತಾ ಅನುಕರಣಶಬ್ದೇನ ಫುತ್ಕಾರೇಣ ಲಿಂಗ್ವತಿ-ವಿ+ಲಿಗಿ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | ವಿಶಿಷ್ಟ: ಸ್ಫುಲಿಂಗ್ವ: |

**ವಿಕ್ರೂರಿತ ವಿಸ್ಕೂರಿತ** (ಪುಂ) 1. ಸಿಡಿಲಿನ ಶಬ್ದ. 2. ಘರ್ಜನೆ, ಅರ್ಭಟ. ವಿ+ಠುಔ ಸ್ಫೂರ್ಜಿ (ವಜ್ರನಿರ್ವೋ) "ಅಥುಚ್" (೩-೩-೮೯) | 3. ಸಿಡಿಲಿನಂತೆ ಉಂಟಾಗುವ ಅಕಸ್ಮಿಕ ಅಪಾಯ. "ಮಮೇವ ಜನ್ಮಾಂತರಪಾತಕಾನಾಂ ವಿಪಾಕ ವಿಕ್ರೂರಿತುರಪ್ರಸಹ್ಯ:" ರಘುಂ ೧೪-೬೨ | 4. ಉಕ್ಕಿ ಬರುವುದು, ಹೊಮ್ಮಿ ಬರುವುದು. "ವೇಲಾನಿಲಾಯ ಪ್ರಸೃತಾ ಭುಜಗ್ಗಾ ಮಹೋಮಿವಿಕ್ರೂರಿತುರ್ನಿವಿಶೇಷಾ:" ರಘುಂ ೧೩-೧೨ |

**ವಿಕ್ರೂರಿತ ವಿಸ್ಕೂರಿತ** (ನಂ) 1. ಫಲ, ಪರಿಣಾಮ. ವಿ + ಸ್ಫೂರ್ಜಿ (ವಜ್ರನಿರ್ವೋ) "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) | 2. ಸಿಡಿಲಿನ ಶಬ್ದ. 3. ಘರ್ಜನೆ.

**ವಿಕ್ರೂರಿತ ವಿಸ್ಕೂರಿತ** (ಪುಂ) 1. ಹೊಪ್ಪೆ, ಕುರು. ವಿ + ಸ್ಫುರ್ತಿರ್ (ವಿಶರಣ) ಕರಂ "ಘಮ್" (೩-೩-೧೧೯) | 2. ಸಿಡುಬು, ಅಮ್ಮೆ. 3. ಮೈಮೇಲಿನ ಸಣ್ಣ ಗುಳ್ಳೆ, ಮೊಡವೆ.

**ವಿಕ್ರೂರಿತ ವಿಸ್ಕೂರಿತ** (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ಚರ್ಯ, ಸೋಜಿಗ, ಕಾತುಕ. ವಿ + ಷ್ಠಿಙ್ (ಔಷಧಸನೆ) "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬) | "ವಿಕ್ರೂರಿತ: ಕ ಇವ ವಾ ಜಯಶ್ರಿಯಾ ನೇವ ಮುಕ್ತಿರಪಿ ತೇ ದವೀಯಸಿ" ಕಿರಾಂ ೧೩-೪೦ | 2. ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ, ದರ್ಪ. "ಯಜ್ಞೋನ್ಮತೇನ ಕ್ಷರತಿ ತಪ: ಕ್ಷರತಿ ವಿಸ್ಕೂರಿತ:" ಮನುಂ ೪-೨೩೭ | ಅಶ್ಚರ್ಯಾರ್ಥಕ ವಿಸ್ಕೂರಿತವು ಅದ್ಭುತ ರಸದ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ. ಲೋಕೋತ್ತರ (ಶ್ರೇಷ್ಠ) ವಾದ ವಸ್ತುಗಳ ದರ್ಶನದಿಂದ ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ವಿಕಾಸವು ವಿಸ್ಕೂರಿತ. ಇದೇ ಅದ್ಭುತರಸದ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ. "ವಿವಿಧೇಷು ಪದಾರ್ಥೇಷು ಲೋಕಸಿಮಾತಿವತಿಷು | ವಿಸ್ಕೂರಿತ-ಇಚೇತಸೋ ಯಸ್ತು ಸ ವಿಸ್ಕೂರಿತ ಉದಾಹೃತ:" ಸಾಂ ದಂ | (ವಿಂ) 3. ಗರ್ವವಿಲ್ಲದವನು, ಗರ್ವವನ್ನು ಬಿಟ್ಟಿರುವವನು. ವಿಗತ: ಸಮಯೋ ಗರ್ವೋ ಯಸ್ಯ |

**ವಿಕ್ರೂರಿತ ವಿಸ್ಕೂರಿತ** (ನಂ) ಅಶ್ಚರ್ಯಪಡುವುದು. ವಿ+ಷ್ಠಿಙ್ (ಔಷಧಸನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |

**ವಿಕ್ರೂರಿತ ವಿಸ್ಕೂರಿತ** (ವಿಂ) 1. ಅಶ್ಚರ್ಯಪಡ ಬೇಕಾದ. 2. ಅಶ್ಚರ್ಯಪಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. ವಿ+ಷ್ಠಿಙ್ (ಔಷಧಸನೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) |

**ವಿಕ್ರೂರಿತ ವಿಸ್ಕೂರಿತ** (ವಿಂ) ಅಶ್ಚರ್ಯಪಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಷ್ಠಿಙ್ (ಔಷಧಸನೆ) "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) |

**ವಿಕ್ರೂರಿತ ವಿಸ್ಕೂರಿತ** (ವಿಂ) ಅಶ್ಚರ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು, ಅಶ್ಚರ್ಯಪಟ್ಟವನು. ವಿಸ್ಕೂರಿತವನು. "ವಿಲಕ್ಷೋ ವಿಸ್ಕೂರಿತ:" | -ಆಕುಲ: -ಅಕುಲ:, -ಆವಿಷ್ಟ: -ಅವಿಷ್ಟ: |

**ವಿಕ್ರೂರಿತ ವಿಸ್ಕೂರಿತ** (ನಂ) ಮರವು, ವಿಸ್ಕೂರಿತ. ವಿ+ಸ್ಮ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | "ಮಯೇವ ವಿಸ್ಕೂರಿತದಾರುಣಚಿತ್ತವೃತ್ತೌ ವೃತ್ತಂ ರಹ: ಪ್ರಣಯಮಪ್ರತಿಪದ್ಯಮಾನೇ" ಶಾಕುಂ ೫-೨೩ |

**ವಿಕ್ರೂರಿತ ವಿಸ್ಕೂರಿತ** (ವಿಂ) 1. ಮರೆಯಲ್ಪಡುವ. 2. ಮರೆಯಬೇಕಾದ. 3. ಮರೆಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ಮರೆಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ವಿ+ಸ್ಮ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | "ತವ್ಯ:" | -ಸ್ಮರತವ್ಯ: -ಸ್ಮರತವ್ಯ: |

**ವಿಕ್ರೂರಿತ ವಿಸ್ಕೂರಿತ** (ವಿಂ) ಮರೆಯುವ, ವಿಸ್ಕೂರಿತ ಹೊಂದುವ. ವಿ + ಸ್ಮ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ಶತೃ" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಂತಿ -ಂತಿ.

**ವಿಕ್ರೂರಿತ ವಿಸ್ಕೂರಿತ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. 2. ಗಂಧರ್ವನಗರ. (ನಂ) 3. ಅಶ್ಚರ್ಯಪಡಿಸುವುದು. ವಿ+ಷ್ಠಿಙ್ (ಔಷಧಸನೆ)+ಞಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | (ವಿಂ) 4. ಅಶ್ಚರ್ಯಪಡಿಸುವವನು. 5. ಮಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. "ವಿಸ್ಕೂರಿತ: ಸ್ವಾತ್ಕುಹಕೇ ಗಂಧರ್ವನಗರೇ ಸ್ಮರೇ" ಮೇದಿಂ | ಪುಗಾಗಮಾಭಾವೇ ವಿಸ್ಕೂರಿತ: ವಿಸ್ಕೂರಿತ:

**ವಿಕ್ರೂರಿತ ವಿಸ್ಕೂರಿತ** (ವಿಂ) 1. ಅಶ್ಚರ್ಯಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಅಶ್ಚರ್ಯಪಡಿಸಬೇಕಾದ. ವಿ + ಷ್ಠಿಙ್ (ಔಷಧಸನೆ) + ಞಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) |

**ವಿಕ್ರೂರಿತ ವಿಸ್ಕೂರಿತ** (ವಿಂ) ಅಶ್ಚರ್ಯಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಷ್ಠಿಙ್ (ಔಷಧಸನೆ) + ಞಿಚ್ "ಶತೃ" (೩-೨-೧೨೪) | "ವಿಸ್ಕೂರಿತವನ್ ವಿಸ್ಕೂರಿತಮಾತ್ಮವೃತ್ತೌ ಸಿಹೋರ-ಸತ್ವಂ ನಿಜಗಾದ ಸಿಹ:" ರಘುಂ ೨-೩೩ |

**ವಿಕ್ರೂರಿತ ವಿಸ್ಕೂರಿತ** (ನಂ) ಮರೆಯುವುದು, ಮರೆಯುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ವಿ+ಸ್ಮ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) + ಞಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |



ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ ವಿಷ್ಣುಗೀತೆಯ (ವಿಂ) 1. ಮರೆಯುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ವಿ + ಸ್ಮ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। "ತವ್ಯ:"। -ಸ್ಮಾರಯಿತವ್ಯ: -ಸ್ಮಾರಯಿತವ್ಯ: 2. ಮರೆಯುವಂತೆ ಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ಮರೆಯುವಂತೆ ಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ.

ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ ವಿಷ್ಣುಗೀತೆಯ (ವಿಂ) ಮರೆಯುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಸ್ಮ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (4-1-6)। -ಂತಿ -೨೯.

ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ ವಿಷ್ಣುಗೀತೆಯ (ವಿಂ) ಮರೆಯುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಮರೆಯಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ + ಸ್ಮ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102)। "ಶಿಲೀಮುಖೇಶ್ವರೀಧನುರ್ವಿಮುಕ್ತೇ: ವಿಷ್ಣುಗೀತಾನ್ ಪೂರ್ವವಿಕಲ್ಪನಾನಿ" ಯಾದಂ 20-30।

ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ ವಿಷ್ಣುಗೀತೆಯ (ವಿಂ) ನೆನಪಿಲ್ಲದಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಮರೆಯುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ವಿ + ಸ್ಮ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಞತ್" (3-1-124)।

ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ ವಿಷ್ಣುಗೀತೆಯ (ವಿಂ) 1. ಆಶ್ಚರ್ಯಪಟ್ಟಿರುವವನು. ವಿ + ಷಿಙ್ (ಔಷಧಸನೆ) "ಕ್ತ:" (3-4-92)। "ತಂ ವಿಷ್ಣುಗೀತಂ ಧನುರ್ವಾಚ ಸಾಧೋ ಮಾಯಾ ಮಯೋದ್ಭಾವ್ಯ ಪರೀಕ್ಷಿತೋಜಸಿ" ರಘುಂ 2-62। 2. ಅಹಂಕಾರದಿಂದ ಕೂಡಿರುವವನು, ಗರ್ವವುಳ್ಳವನು.

ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ ವಿಷ್ಣುಗೀತೆಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಶ್ಚರ್ಯ. ವಿ + ಷಿಙ್ (ಔಷಧಸನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)। 2. ಗರ್ವ. ಅಹಂಕಾರ.

ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ ವಿಷ್ಣುಗೀತೆಯ (ವಿಂ) ಮರೆಯಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ + ಸ್ಮ (ಆಧ್ಯಾನೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ ವಿಷ್ಣುಗೀತೆಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರೆಯು. ವಿ + ಸ್ಮ (ಆಧ್ಯಾನೇ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)।

ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ ವಿಷ್ಣುಗೀತೆಯ (ವಿಂ) 1. ಆಶ್ಚರ್ಯಪಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. 2. ಆಶ್ಚರ್ಯಪಡಬೇಕಾದ. ವಿ + ಷಿಙ್ (ಔಷಧಸನೆ) "ಯತ್" (3-1-96)। "ವಿಷ್ಣುಗೀತಮತಿರಸ್ಮಾಸು ಸಾಧುವೈಲಕ್ಷ್ಯ-ಮೀಕ್ಷಸೇ" ನೃಪಂ 19-141।

ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ ವಿಷ್ಣುಗೀತೆಯ (ವಿಂ) ಆಶ್ಚರ್ಯಪಟ್ಟಿರುವ. ವಿ + ಷಿಙ್ (ಔಷಧಸನೆ) "ರ:" (3-2-169)।

ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ ವಿಷ್ಣುಗೀತೆಯ (ನಂ) 1. ಅಪಕ್ಕದ ವಾಸನೆ. ವಿಸ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ರ:" (3-2-169)। ಬಹುಂ। (ವಿಂ) 2. ಅಪಕ್ಕದ ವಾಸನೆಯುಳ್ಳ. "ವಿಷ್ಣುಗೀತ ಸ್ಯಾದಾಮಗ್ನಿಃ ಯತ್" ಅಮಂ।

ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ ವಿಷ್ಣುಗೀತೆಯ (ನಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಜಾರಿಬೀಳುವುದು, ಕೆಳಚಿಬೀಳುವುದು. ವಿ + ಸ್ಸು (ಅವಸಂಸನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ಸಡಿಲಿಸುವುದು, ಗಂಟುಬಿಚ್ಚಿ ಸಡಿಲವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. (ವಿಂ) 3. ಕೆಳಗೆ ಬೀಳಿಸುವ. "ಮೌಲಿವೃಣ್ಣನವಲನ್ಮಂದಾರವಿಷ್ಣುಗೀತನ:" ಗೀತಗೋಂ। 4. ಸಡಿಲಿಸುವ, ಗಂಟುಬಿಚ್ಚಿ ಸಡಿಲವಾಗಿ ಮಾಡುವ. ವಿ + ಸ್ಸು "ಲ್ಯು:" (3-1-134)। "ಅಯಂ ಸ ರಸನೋತ್ಕರ್ಷಿ ನೇವೀವಿಷ್ಣುಗೀತನ: ಕರ:" ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ।

ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ ವಿಷ್ಣುಗೀತೆಯ (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಜಾರಿಬೀಳುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಸ್ಸು (ಅವಸಂಸನೆ) "ಶಾನಕ್" (3-2-124)। 2. ಶಿಥಿಲವಾಗುತ್ತಿರುವ, ಸಡಿಲವಾಗುತ್ತಿರುವ.

ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ ವಿಷ್ಣುಗೀತೆಯ (ವಿಂ) ಕೆಳಗೆ ಜಾರಿಬೀಳುವ, ಕೆಳಚಿಬೀಳುವ. ವಿ + ಸ್ಸು (ಅವಸಂಸನೆ) "ಗಿಣಿ:" (3-1-134)। "ವಿಷ್ಣುಗೀತಾನ್ಯಾಜ್ಜಲಿತಾ ಕರೇಣ ವ್ಯಾಧಾ-ತ್ಮಜಾ ವಿಷ್ಣುಗೀತ: ಸಿಘೇ" ಯಾದಂ 4-30।

ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ ವಿಷ್ಣುಗೀತೆಯ (ವಿಂ) 1. ವಿಶ್ವಾಸದಿಂದ ಕೂಡಿದೆ. ವಿ + ಸ್ಸು (ವಿಶ್ವಾಸೇ) "ಕ್ತ:" (3-4-92)। (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 2. ವಿಶ್ವಾಸದೊಡನೆ, ಧೈರ್ಯದಿಂದ, ಭಯವಿಲ್ಲದೆ. "ವಿಷ್ಣುಗೀತ ಕ್ರಿಯತಾ ವರಾಹತತಿಭಿ: ಮುಸ್ತಾಕತಿ: ಪಲ್ವಲೇ" ಶಾಕುಂ 2-6। 3. ಧೈರ್ಯವಾಗಿ, ವಿಶ್ವಾಸದಿಂದ, ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ. "ವಿಷ್ಣುಗೀತ ಪರಿಚುಮ್ಯ ಜಾತಪುಲಕಾ-ಮಾಲೋಕ್ಯ ಗಂಧಸ್ಥಲೀಮ್" ಸಾಂ ದಂ।

ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ ವಿಷ್ಣುಗೀತೆಯ (ಪುಂ) 1. ವಿಶ್ವಾಸ, ಪ್ರೀತಿ. ವಿ + ಸ್ಸು (ವಿಶ್ವಾಸೇ) "ಘ್" (3-3-114)। "ವಿಷ್ಣುಗೀತಾದುರಸಿ ನಿಪತ್ಯ ಜಾತನಿद्रಾಮುಮ್ಯ ಪ್ರಿಯಗೃಹಿಣಿ ಗೃಹಸ್ಯ ಲಕ್ಷ್ಮೀಮ್" ತಂ ರಾಂ 1-49। 2. ಪ್ರಣಯ, ಪ್ರೀತಿ, ಪ್ರೇಮ.

ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ ವಿಷ್ಣುಗೀತೆಯ (ವಿಂ) 1. ವಿಶ್ವಾಸವುಳ್ಳ. ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ — ವಿ + ಸ್ಸು (ವಿಶ್ವಾಸೇ) "ಘಿಣು" (3-2-143)। "ಕಥಂ ತದನುರೂಪಾಯ ಗುಣವಿಷ್ಣುಗೀತಮುಪಕ್ರಮೇತ್" ಭಾಗಂ 6-4-20। 2. ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ, ಪ್ರೇಮವುಳ್ಳ. ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ "ಙಿಣಿ:" (4-2-114)।

ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ ವಿಷ್ಣುಗೀತೆಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜರೆ, ಮುಪ್ಪು. ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ-ನಯಾ—ವಿ + ಸ್ಸು (ಅವಸಂಸನೆ) "ಅಙ್" (3-3-104)।

ವಿಷ್ಣುಗೀತೆ ವಿಷ್ಣುಗೀತೆಯ (ವಿಂ) 1. ಜಾರಿಬಿದ್ದಿರುವ, ಕೆಳಚಿಬಿದ್ದಿರುವ. ವಿ + ಸ್ಸು (ಅವಸಂಸನೆ) "ಕ್ತ:" (3-4-92)। "ವಿಷ್ಣುಗೀತಸಾರಥಿಕುಲಪ್ರವರಾ: ಸಮಂತಾತ್" ಕುಮಾಂ 19-30। 2. ಸಡಿಲವಾದ, ಶಿಥಿಲವಾದ.



**ವಿಲಾಸ ವಿಸ್ತವ** (ಪುಂ) 1. ಸ್ತವಿಸುವುದು, ಸೋರುವುದು. ವಿ + ಸ್ತು (ಗತೌ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭) । 2. ಹರಿಯುವುದು, ಪ್ರವಹಿಸುವುದು.

**ವಿಲಾಸಣ ವಿಸ್ತವಣ** (ನಂ) 1. ಹರಿಯುವುದು, ಪ್ರವಹಿಸುವುದು. ವಿ + ಸ್ತು (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಸೋರುವುದು, ಜಿನುಗುವುದು. ವಿ + ಸ್ತು ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । -ಲಾಸಣಮ್ -ಸ್ರಾವಣಮ್. 1. ಸೋರುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. 2. ಹರಿಯುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು.

**ವಿಲಾಸಿತ ವಿಸ್ತುತ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರವಹಿಸಿದ. ವಿ + ಸ್ತು (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) । 2. ಸ್ತವಿಸಿದ, ಸೋರಿದ.

**ವಿಹಗ ವಿಹಗ** (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ವಿಹಾಯಸಿ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಙ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) । ವಿಹಾಯಸಿ: ವಿಹಾದೇಶ: (ವಾಂ ೩-೨-೪೮) । "ವಿಹಗಾ: ಕದಂಬಸುರಮಾ-ವಿಹ ಗಾ:" ಮಾಘಂ ೪-೩೬ । 2. ಶರ, ಬಾಣ. "ಅಯೋಮುಖೇಷ್ವ ವಿಹಗೈ: ದ್ರಾವಯಿಷ್ಯೆ ಮಹಾರಥಾನ್" ಭಾಂ । 3. ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹ. 4. ಸೂರ್ಯ. 5. ಚಂದ್ರ. 6. ಮೇಘ, ಮೋಡ.

**ವಿಹಜ್ಜ ವಿಹಂಜ** (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ವಿಹಾಯಸಾ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಖಚ್" (೩-೨-೪೭) । ಮುಗಾಗಮ: (೬-೩-೬೭) । ಡಿತ್ವಾತ್ ಟೇ: ಲೋಪ: । "ಕೃತಚಪಲ-ವಿಹಜ್ಜಾಲಾಪಕೋಲಾಹಲಾಭಿ:" ಮಾಘಂ ೧೧-೪೪ । 2. ಬಾಣ. 3. ಮೋಡ. 4. ಸೂರ್ಯ. 5. ಚಂದ್ರ. 6. ಗ್ರಹ. ಖಚಿ ಡಿತ್ವಸ್ಯ ವೈಕಲ್ಪಿಕತ್ವಾತ್ ಟೇ: ಲೋಪಾಭಾವೇ । ವಿಹಜ್ಜಮ: ವಿಹಂಜಮಃ. "ವಿಹಜ್ಜಮಾನಾಂ ಜಲಜಾತಪತ್ರೈ:" ಮಾಘಂ ೪-೬ ।

**ವಿಹಗ(ಜ್ಞ)ರಾಜ ವಿಹಗ(ಜ್ಞ)ರಾಜ** (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿಗಳ ರಾಜ, ಗರುಡ. ವಿಹಗಾ(ಜ್ಞ)ನಾಂ ರಾಜಾ "ಠಚ್" (೫-೪-೧೧) । "ವಿಹಜ್ಜರಾಜಾಙ್ಗರಹೈರಿವಾಯತೇಹಿರಣ್ಮಯೋ-ವೀರಹವಲ್ಲಿತಂತುಮಿ:" ಮಾಘಂ ೧-೭ ।

**ವಿಹಜ್ಜಿಕಾ ವಿಹಂಜಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾವಡಿಯ ಕೋಲು, ಅಡ್ಡೆಯನ್ನು ತೂಗುಹಾಕುವ ಕೋಲು. ವಿಹಜ್ಜಸ್ಯ ಪ್ರತಿ-ಕೃತಿ: "ಕನ್" (೫-೩-೯೬) ।

**ವಿಹತ ವಿಹತ** (ವಿಂ) 1. ವಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಹೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವಿಹತಿ ವಿಹತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಧಿಸುವುದು, ಕೊಲ್ಲುವುದು. 2. ಹೊಡೆಯುವುದು.

**ವಿಹನನ ವಿಹನನ** (ನಂ) 1. ಕೊಲ್ಲುವುದು. ವಿ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ವಿಘ್ನ, ತಡೆ, ಅಡ್ಡಿ, ಅಡಚಣೆ. 3. ಹತ್ತಿಯನ್ನು ಹೊಡೆದು ಶುದ್ಧ ಮಾಡುವ ಬಿಲ್ಲಿನ ಆಕಾರದ ಒಂದು ಸಾಧನ (ಯಂತ್ರ). ವಿ + ಹನ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । "ಭವೇವಿಹನನಂ ವಿಹನಹಿಸಯೋಸ್ತುಲಪಿಚ್ಛಲೇ" ಮೇದಿಂ ।

**ವಿಹರ ವಿಹರ** (ಪುಂ) ವಿಯೋಗ, ಅಗಲಿಕೆ. ವಿಶೇಷಣ ಹ್ರಿಯತೇಽಸ್ಮಿನ್—ಹ್ರಿ (ಹರಣೇ) "ಘ:" (೩-೩-೧೧೮) ।

**ವಿಹರಣ ವಿಹರಣ** (ನಂ) 1. ವಿಹಾರ, ವಿನೋದಕ್ಕಾಗಿ ಸಂಚಾರ, ವಾಯುಸೇವನೆಗಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವುದು. ವಿ + ಹ್ರಿ (ಹರಣೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ತರುವುದು. 3. ವಿನೋದ, ಕ್ರೀಡೆ, ವಿಶ್ರಾಂತಿಕಾಲದ ಆಟಪಾಟ.

**ವಿಹರತ್ ವಿಹರತ್** (ವಿಂ) 1. ವಿಹರಿಸುತ್ತಿರುವ, ವಿನೋದ ಕ್ಕಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಹ್ರಿ (ಹರಣೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಆಟವಾಡುತ್ತಿರುವ, ಕ್ರೀಡಿಸುತ್ತಿರುವ. "ವಿಹರನ್ ವಾಣಿಭಾಜಾ ಸ ವೀರೋ ವಿಜಯಪ್ರಿಯಾ" ಯಾದಂ ೨೨-೯೯ । 3. ತರುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಂತಿ-೨೬.

**ವಿಹತ್ ವಿಹತ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಆಟವಾಡುವವನು. 2. ವಿನೋದಕ್ಕಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವವನು. 3. ಕದಿಯುವವನು, ಚೋರ. ವಿ + ಹ್ರಿ (ಹರಣೇ) "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

**ವಿಹಸನ ವಿಹಸನ** (ನಂ) ನಗು. ವಿ + ಹಸೆ (ಹಸನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) । -ಹಸಿತಮ್ -ಹಸಿತಮ್. ಭಾವೇ "ಘಚ್" (೩-೩-೧೮) । -ಹಾಸ: -ಹಾಸಃ.

**ವಿಹಸ್ತ ವಿಹಸ್ತ** (ವಿಂ) 1. ವ್ಯಾಕುಲನಾದವನು, ದುಃಖಿತ ನಾದವನು. ವಿಹಿಸ್ತೋ ಹಸ್ತೋಽಸ್ಯ । "ರಾಮಾಪರಿವ್ರಾಣ-ವಿಹಸ್ತಯೋಃ ಸೇನಾನಿವೇಶಂ ತುಮುಲಂ ಚಕಾರ" ರಘುಂ ೫-೪೯ । 2. ಹಸ್ತವಿಲ್ಲದವನು, ಕೈಯಿಲ್ಲದವನು. ವಿಗತೋ ಹಸ್ತೋ ಯಸ್ಯ । 3. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. "ವಿಹಸ್ತ: ಪೃಥಿವೀ ವ್ಯಾಕುಲೇ ತ್ರಿಪು" ಮೇದಿಂ ।

**ವಿಹಾ ವಿಹಾ** (ಅವ್ಯಂ) ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ. ವಿ + ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) "ಆ" (ತಂ ೪-೩೬) । ನಿಪಾಂ ।

**ವಿಹಾಪಿತ ವಿಹಾಪಿತ** (ನಂ) 1. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. ವಿ + ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) । "ತ್ಯಾಗೋ ವಿಹಾಪಿತಂ ದಾನಮ್" ಅಮಂ । (ವಿಂ) 2. ತ್ಯಜಿಸು ಮಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊರೆದುಬಿಡುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ ಸುಲಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಲಾತ್ಕಾರಪಡಿಸಿ ಕಿತ್ತುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ.



**ವಿಹಾಯಸ್ ವಿಹಾಯಸ್** (ನಪುಂ) 1. ಗಗನ, ಅಂತರಿಕ್ಷ, ಆಕಾಶ. ವಿಶೇಷಣ ಹಾಯಯತಿ ಗಮಯತಿ ವಿಮಾನಾದಿನ್—ವಿ+ಹಯ (ಗತೌ) + ಣಿच् “ಅಸುನ್” (ಉಂ ೪-೧೮೮) । “ಗಹ್ಮತಾಂ ಸಹತಿರ್ವಿಹಾಯಃ ಕ್ಷಣಪ್ರಕಾಶಾಭಿರವಾತೇನ” ಕಿರಾಂ ೧೬-೪೩ । (ಪುಂ) 2. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ವಿಜಹಾತಿ ಭುವಮ್—ವಿ+ಆಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) “ಅಸುನ್” (ಉಂ ೪-೧೮೮) । “ಅಮೌಚಿ ಚಕ್ಷುಪುಟಮೌನಮುಧ್ರಾ ವಿಹಾಯಸಾ ತೇನ ವಿಹಸ್ಯ ಭುಯಃ” ನೈಷಂ ೩-೯೯ ।

**ವಿಹಾಯಸ ವಿಹಾಯಸ** (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ.

**ವಿಹಾಯಸಾ ವಿಹಾಯಸಾ** (ಅವ್ಯಂ) ಅಂತರಿಕ್ಷ, ಆಕಾಶ. “ಸ್ವರಾದಿನಿಪಾತಮವ್ಯಯಮ್” (೧-೧-೩೭) । ನಿಪಾಂ ।

**ವಿಹಾರ ವಿಹಾರ** (ಪುಂ) 1. ವಿನೋದಕ್ಕಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವುದು. ವಿ+ಹ್ರ (ಹರಣೇ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮) । “ಯಚ್ಚಾವಹಾಸಾರ್ಥಮಸತ್ಕುತೋಽಸಿ ವಿಹಾರಶಯ್ಯಾಸನಭೋಜನೇಷು” ಗೀತಾ ೧೧-೪೩ । 2. ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ, ಲೀಲೆ. “ಅಸ್ತ್ರಾಣಿ ತೇನ ಪ್ರಹಿತಾನಿ ತೂರ್ಣಂ ವಿಹಾರಭೂಮ್ನಾ ವಿತಥಾನಿ ಕೃತ್ವಾ” ಯಾದಂ ೨೦-೭೧ । 3. ಕೈಕಾಲುಗಳ ಚಲನೆ, ಕೈಕಾಲುಗಳ ವಿನಾಸ. “ವ್ಯಪೋಢಪಾಶ್ವರಪವರ್ತಿತತ್ರಿಕಾ ವಿಕರ್ಷಣಿಃ ಪಾಣಿ-ವಿಹಾರಹಾರಿಭಿಃ” ಕಿರಾಂ ೪-೧೫ । 4. ಭ್ರಮಣ, ಸುತ್ತಾಡುವುದು. 5. ಸ್ಕಂಧ, ಹೆಗಲು. 6. ಜೈನ ದೇವಾಲಯ. 7. ಬುದ್ಧನ ದೇವಾಲಯ. 8. ತೆಗೆದು ಹಾಕುವುದು, ಸ್ಥಳಾಂತರಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುವುದು. “ವಿಹಾರೋ ಭ್ರಮಣೇ ಸ್ಕಂಧೇ ಲೀಲಾಂ ಸುಗತಾಲಯೇ” ಮೇದಿಂ ।

**ವಿಹಾರಿನ್ ವಿಹಾರಿನ್** (ವಿಂ) 1. ವಿನೋದಕ್ಕಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವವನು. ವಿಹೃತ್ ಶೀಲಮಸ್ಯ—ವಿ+ಹ್ರ (ಹರಣೇ) ತಾಂಚೀಲ್ಯೇ “ಣಿನ್” (೩-೨-೭೮) । 2. ಸುತ್ತಾಡುವವನು, ತಿರುಗಾಡುವವನು, ಸಂಚರಿಸುವವನು. “ಧಾರ್ಯಃ ಕಥಂ ಕಾರಮಹಂ ಭವತ್ಯಾ ವಿಯದ್ವಿಹಾರಿ ವಸುಧೈಕಗತ್ಯಾ” ನೈಷಂ ೩-೧೫ ।

**ವಿಹಿತ ವಿಹಿತ** (ವಿಂ) 1. ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಹು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । “ವಿಹಿತಂ ಮಯಾಽಽದಸೀದಮಪಮೃಷಿತಮಚ್ಯುತಾರ್ಚನಮ್” ಮಾಘಂ ೧೫-೪೬ । 2. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. “ವಿಹಿತಾಂ ಪ್ರಿಯಯಾ ಮನಃಪ್ರಿಯಾಮಥ ನಿಶ್ಚಿತ್ರಯ ಗಿರಂ ಗರೀಯಸೀಮ್” ಕಿರಾಂ ೨-೧ । 3. ವಿಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಾಸ್ತದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ. “ವಿಹಿತಸ್ಯಾನನುಷ್ಠಾನಾತ್ ನಿಂದಿತಸ್ಯ ಚ ಸೇವನಾತ್ । ಅನಿಪ್ರಹಾಂಚೇಂದ್ರಿಯಾಣಾಂ ನರಃ ಪತನಮುಚ್ಛತಿ” । 4. ವಿವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಗದಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. (ನಂ) 6. ನಿಯಮನ, ಆಜ್ಞೆ, ವಿಧಿ. “ಕ್ಷಿತಿವಿಜಿತಿವಿಜಿತಿವಿಹಿತವಿವರತಯಃ ಪರಗತಯಃ” ಕಾವ್ಯಾಂ ೩-೮೫ ।

**ವಿಹೀನ ವಿಹೀನ** (ವಿಂ) ಇಲ್ಲದ, ಶೂನ್ಯ, ರಹಿತ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಆಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । “ಸಂಗೀತಸಾಹಿತ್ಯಕಲಾವಿಹೀನಃ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಪಶುಃ ಪುಚ್ಛವಿಷಾಣ-ಹೀನಃ” ।

**ವಿಹಿತ ವಿಹಿತ** (ನಂ) ಸ್ತ್ರೀಯರ ಸ್ವಭಾವಸಿದ್ಧವಾದ ಹತ್ತು ವಿಧ ಅಲಂಕಾರಗಳಲ್ಲೊಂದು. ವಿ+ಹ್ರ (ಹರಣೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪) । “ಲೀಲಾ ವಿಲಾಸೋ ವಿಚ್ಛಿತ್ತಿವಿಬ್ಬೋಕಃ ಕಿಲಕಿಂಚಿತಮ್ । ಮೌಢ್ಯಾಪಿತಂ ಕುಡ್ಮಿತಂ ಲಲಿತಂ ವಿಹಿತಂ ತಥಾ । ವಿಭ್ರಮಶ್ಚೇತಲಕ್ಷಾರಾಃ ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಸ್ವಾಭಾವಿಕಾ ದಶಃ” ।

**ವಿಹಿತ ವಿಹಿತ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿಹಾರ, ವಿನೋದಕ್ಕಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವುದು. ವಿ+ಹ್ರ (ಹರಣೇ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೧೪) । 2. ಲೀಲೆ, ಕ್ರೀಡೆ, ಆಟ.

**ವಿಹ್ವಲ ವಿಹ್ವಲ** (ವಿಂ) 1. ಭಯ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಕಳೆವಳಗೊಂಡವನು, -ಆತಂಕವುಳ್ಳವನು. 2. ಭಯದಿಂದ ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡವನು. ವಿ+ಹ್ವಲ (ಚಲನೇ) “ಅಚ್” (೩-೧-೩೪) । “ವೃಣಿವೀರಶರಣಿಹಿತಾಯುಧೇ-ವಿಹ್ವಲೇರಜನಿ ವೀತಶಕ್ತಿಭಿಃ” ಯಾದಂ ೧೭-೬೯ । 3. ಕಷ್ಟಕ್ಕೆ ಒಳಗಾದವನು. 4. ತನ್ನ ದೇಹವನ್ನೂ ಎತ್ತಿಕೊಂಡು ತಿರುಗಾಡಲಾಗದವನು. 5. ವಿಲೀನವಾದ, ಕರಗಿದ, ದ್ರವವಾದ.

**ವೀಕ ವೀಕ** (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 2. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಅಜ (ಗತಿಕೋಪಣಯೋಃ) “ಕನ್” (ಉಂ ೩-೪೭) । ಧಾತೋಃ ವೀಭಾವಃ (೨-೪-೫೬) । “ವೀಕಃ ಸ್ಯಾದ್ವಾತಪಕ್ಷಿಣೋಃ” ಸಿ. ಕೌಂ । 3. ಮನಸ್ಸು.

**ವೀಕಾಶ ವೀಕಾಶ** (ಪುಂ) 1. ರಹಸ್ಯಪ್ರದೇಶ, ಏಕಾಂತವಾದ ಸ್ಥಳ. ವಿಕಾಶತೇಜಃ—ವಿ+ಕಾಶ (ದೀಪ್ತೌ) ಅಧಿಂ “ಘ್” (೩-೩-೧೨೧) । ದೀರ್ಘಃ (೬-೩-೧೨೩) । 2. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. “ರಹಃಪ್ರಕಾಶೌ ವೀಕಾಶೌ” ಅಮಂ ।

**ವೀಕ್ಷ ವೀಕ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ದೃಷ್ಟಿ, ನೋಟ. 2. ಆಶ್ಚರ್ಯ.

**ವೀಕ್ಷಣ ವೀಕ್ಷಣ** (ನಂ) 1. ದರ್ಶನ, ನೋಟ. ವಿ+ಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । 2. ನೇತ್ರ, ಕಣ್ಣು.

**ವೀಕ್ಷಾ ವೀಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದರ್ಶನ, ನೋಟ. ವಿ+ಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) “ಅಃ” (೩-೩-೧೦೨) । “ಅಸ್ತು ಮಾಸ್ಮ ಭವದಿತ್ಯನನ್ಯಯಾ ವೀಕ್ಷಯಾ ಜಗದಿದಂ ನಿಯಚ್ಛತಾ” ಯಾದಂ ೧೭-೯೨ ।

**ವೀಕ್ಷಿತ ವೀಕ್ಷಿತ** (ವಿಂ) 1. ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । “ಸ್ನಿಗ್ಧಂ ವೀಕ್ಷಿತ-ಮನ್ಯತೋಽಪಿ ನಯನೇ ಯತ್ಪ್ರೇಷಯನ್ತ್ಯಾ ತಯಾ” ಶಾಕುಂ ೨-೨ ।



(ನಂ) 2. ನೋಟ, ದರ್ಶನ. ವಿ+ಕ್ಷಿ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (3-3-114) ।

**ವೀಕ್ಷ್ಯ ವೀಕ್ಷ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ನರ್ತಕ, ನಟ. 2. ಆಶ್ಚ, ಕುದುರೆ. ವಿ+ಕ್ಷಿ (ದರ್ಶನ) "ಯತ್" (3-1-124) । (ನಂ) 3. ವಿಸ್ಮಯ, ಆಶ್ಚರ್ಯ. (ವಿಂ) 4. ನೋಡಲ್ಪಡುವ. 5. ನೋಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 6. ನೋಡಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. "ವೀಕ್ಷ್ಯ ತು ವಿಷ್ಮಯೇ ದೃಶ್ಯೇ ಪುನಿ ಲಾಸಕವಾಜಿನೋ:" ಮೇದಿಂ । (ಅವ್ಯಂ) 7. ನೋಡಿ, ವೀಕ್ಷಿಸಿ.

**ವೀಕ್ಷಾ ವೀಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಶ್ಚದ ಒಂದು ವಿಧ ನಡೆಗೆ. 2. ನರ್ತನ, ಕುಣಿತ. 3. ನಸುಗುನ್ನಿ ಗಿಡ. 4. ನಡೆಗೆಯ ಒಂದು ರೀತಿ. 5. ಸಂಧಿ, ಸೇರುವುದು, ಕೂಡುವುದು. "ವೀಕ್ಷಾ ತು ಶ್ರುಕಶಿಮ್ಬಾಢಾ ಗತಿಭೇದೇ ಚ ನರ್ತನೇ" ಹೇಮಂ ।

**ವೀಚಿ ವೀಚಿ** (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತರಂಗ, ಅಲೆ, ಉರ್ಮಿ. ವಯತಿ ಜಲಂ ತಟೇ—ವೇ (ತನ್ತುಸ್ತಾನೇ) "ಇಚಿ:" (3-4-92) । "ಸರಸೀಶ್ವರವಿಂದಾನಾಂ ವೀಚಿವಿಕ್ಷೋಭಶೀತಲಮ್" ರಘುಂ 1-43 । ವಾ "ಕೀಞ್" (ಗಂ 4-1-44) । ವೀಚಿ ವೀಚೀ. "ಕರ್ಣಮ್ಯ: ಚ್ಯುತಮಸಿತೋತ್ಪಲಂ ವಧುನಾಂ ವೀಚಿಮಿಸ್ತತಮನು ಯನ್ನಿರಾಸುರಾಪ:" ಮಾಘಂ 6-44 । 2. ಸುಖ. 3. ಅಲ್ಪ, ಸ್ವಲ್ಪ. 4. ಕಿರಣ. 5. ಅವಕಾಶ, ಬಿಡುವು, ವಿಶ್ರಾಂತಿ. 6. ಪಜ್ಞೆ, ಶ್ರೇಣಿ, ಸಾಲು. "ವೀಚ್ಯಾ-ಲ್ಯಮ್ಯೋರವಕಾಶೋ ಸುಖಾಲ್ಪಯೋ:" ಹೇಮಂ । 7. ಹೆಂಗಸರ ತಲೆಕೂದಲು ವಕ್ರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ತಲೆಯ ಕೂದಲು ಗುಂಗುರಾಗಿರುವಿಕೆ. "ವೀಚಿ: ಕುಂತಲವಕ್ರತ್ವೇ ಸ್ವಲ್ಪೇ ಪಙ್ಕ್ತಿ-ತರಙ್ಗಯೋ:" ನಾನಾರ್ಥಂ ।

**ವೀಚೀತರಙ್ಗ ವೀಚೀತರಂಗ** (ಪುಂ) ಇದೊಂದು ನ್ಯಾಯ. ಶ್ರೋತ್ರೇಂದ್ರಿಯದಲ್ಲಿ ಶಬ್ದವು ಹುಟ್ಟುವುದಕ್ಕೆ ಕಾರಣ ರೂಪವಾದುದು ಈ ನ್ಯಾಯ. ನಾನಾದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಹೊರಗಿನ ಶಬ್ದವು ಕಿವಿಯೊಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸುವಾಗ ಅದರ ಹಿಂದೆ ಮತ್ತೊಂದು ಶಬ್ದವು ಹುಟ್ಟುವುದು. ಅದರಿಂದ ಇನ್ನೊಂದು ಶಬ್ದವು ಹುಟ್ಟಿ ಅದು ಮತ್ತೊಂದು ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗುವುದು. ಹೀಗೆ ಶಬ್ದವು ಅಲೆಗಳಂತೆ ಒಂದರ ಹಿಂದೆ ಒಂದು ಹುಟ್ಟಿ ಕಿವಿಯೊಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು. ಇದು "ವೀಚೀತರಂಗನ್ಯಾಯ" .

**ವೀಜ ವೀಜ** (ನಂ) 1. ಕಾರಣ. ವಿಶೇಷಣ ಕಾರಣರೂಪಣ ಅಪತ್ಯತಯಾ ಚ ಜಾಯತೇ—ವಿ+ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಜ:" (3-2-99) । ದೀರ್ಘ: (6-3-137) । ವಿಶೇಷಣ ಇಜತೇ ಕುಕ್ಷಿ ಗಚ್ಛತಿ ಶರೀರಂ ವಾ—ಇಜ (ಗತೀಕ್ಷೇಪಣಯೋ:) "ಅಚ್" (3-1-134) ವಾ । ವಚನೋರಭೇದ: । "ವೀಜಂ ಮಾಂ ಸರ್ವಭೂತಾನಾಂ

ವಿದ್ವಿ ಪಾಠ್ಯ ಸನಾತನಮ್" ಗೀತಾ 9-10 । 2. ಮಹಾ ಮಂತ್ರಗಳಲ್ಲಿರುವ ಬೀಜಾಕ್ಷರ. 3. ಅಂಕುರ, ಮೊಳಕೆ. "ನ ತಸ್ಯ ಬೀಜಂ ರೋಹಿತಿ ಬೀಜಕಾಲೇ ನ ಚಾಸ್ಯ ವರ್ಷ ವರ್ಷತಿ ವರ್ಷಕಾಲೇ" ಭಾಂ ।

**ವೀಜಕ ವೀಜಕ** (ಪುಂ) ಮಾದಳದ ಗಿಡ.

**ವೀಜ್ಯ ವೀಜ್ಯ** (ವಿಂ) ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಪೂಜಿಸಲು ಅರ್ಹ ನಾದವನು. ವಿಶೇಷಣ ಇಜ್ಯ: ।

**ವೀಡಿ ವೀಡಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಾಂಬೂಲದ ಬಳ್ಳಿ, ವೀಳ್ಯದೆಲೆಯ ಹೆಣ್ಣು. ವಿಶೇಷಣ ಎದತಿ ಯಷ್ಟಾದಿಕಮ್ —ಇಟ (ಗತೀ) "ಇನ್" (3-4-112) । ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" । ವೀಡಿಕಾ ವೀಡಿಕಾ. ವಾ "ಕೀಞ್" (ಗಂ 4-1-44) । -ಟಿ -ಟೀ.

**ವೀಣಾ ವೀಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೀಣಾವಾದ್ಯ, ಒಂದು ತಂತೀ ವಾದ್ಯ. ವೇತಿ ಜಾಯತೇ ಸ್ವರೋಽಸ್ಯಾಮ್ —ವೀ (ಗತಿವ್ಯಾಪ್ತಿ-ಪ್ರಜನಾದಿಭು) "ನ:" (3-3-14) । ಣತ್ವಂ ಗುಣಾಭಾವಶ್ಚ ನಿಪಾಂ । "ಉತ್ಸಜ್ಞೇ ವಾ ಮಲಿನವಸನೇ ಸೌಮ್ಯ ನಿಕ್ಷಿಪ್ಯ ವೀಣಾಂ ಮದಗೋತ್ರಾಕ್ಷಂ ವಿರಚಿತಪದಂ ಗೇಯಮದ್ಗಾತುಕಾಮಾ" ಮೇಘಂ 2-23 । 2. ಎದ್ದುತ್ತು, ಮಿಂಚು. "ವೀಣಾ ವಿಚ್ಛುತಿ ವಲ್ಲಭ್ಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ ।

**ವೀಣಾದಂಡ ವೀಣಾದಂಡ** (ಪುಂ) ವೀಣೆಯ ದಂಡಿಗೆ, ವೀಣೆಯ ಸೋರೆಬುರುಡೆಯ ಮೇಲೆ ಉದ್ದಕ್ಕೆ ಇರುವ ದಂಡ. ವೀಣಾಯಾ ದಂಡ: ।

**ವೀಣಾನುಬಂಧ ವೀಣಾನುಬಂಧ** (ಪುಂ) ವೀಣೆಯ ತಂತಿ ಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಬಿರಡೆ. ವೀಣಾಯಾ ಅನುಬಂಧ: । "ವೀಣಾನು-ಬಂಧೋ ಧೀಮದ್ವಿರೂಪನಾಹೋಽಭಿಧೀಯತೇ" ಹಾರಾಂ ।

**ವೀಣಾವಾದ ವೀಣಾವಾದ** (ಪುಂ) ವೀಣೆಯನ್ನು ನುಡಿಸುವವನು. ವೀಣಾಂ ವಾದಯತಿ —ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಚ್ "ಅನ್" (3-2-1) । "ಫುಲ್" । -ವಾದಕ: -ವಾದಕೀ: ।

**ವೀಣಾಸ್ಯ ವೀಣಾಸ್ಯ** (ಪುಂ) ನಾರದಮುಷಿ.

**ವೀತ ವೀತ** (ನಂ) 1. ಯುದ್ಧಾದಿಗಳಿಗೆ ಅಸಮರ್ಥವಾದ ಆನೆ ಕುದುರೆಗಳ ಸಮೂಹ, ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ ಆನೆ ಕುದುರೆಗಳ ಗುಂಪು. ವೇತಿ ಸ್ಮ ಯುಧಾದಿಕಾರ್ಯಸ್ಯ —ವೀ (ಗತಿವ್ಯಾಪ್ತಿ-ಪ್ರಜನಾದಿಭು) "ಕ್ತ:" (3-4-92) । 2. ಅಂಕುಶದಿಂದ ಆನೆಯನ್ನು ಚುಚ್ಚುವುದು ಮತ್ತು ಕಾಲಿನಿಂದ ಒದೆಯುವುದು. "ನಿಘೃತವೀತಮಪಿ ಬಾಲಕಮುಲ್ಲಲಂತಂ ಯಂತಾ ಕ್ರಮೇಣ ಪರಿಸಾಂತವನತರ್ಜನಾದಿಭಿ:" ಮಾಘಂ 4-46 । (ವಿಂ) 3. ಶಾಂತವಾದ, ಸಾಧುವಾದ, ಪಳಗಿದ. 4. ಇಲ್ಲದೆ ಹೋದ, ಮರೆಯಾದ, ಕಾಣದೇ ಹೋಗಿರುವ, ಮಾಯವಾದ. "ಜ್ವರೇ ನಿರಸ್ತೇ ಗಿರಿಶಪ್ರಯುಕ್ತೇ ವೀತಜ್ವರಂ ವಿಶ್ವಮಿದಂ



ಬಮ್‌ವ" ಯಾದಂ ೨-೩೨ । 5. ತೆರಳಿದ, ಹೊರಟುಹೋದ. ವಿ+ಇನ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೩) । 6. ಕಳೆದು ಹೋದ, ನಿವೃತ್ತವಾದ. "ವೀತಜನ್ಮಜರಸಂ ಪರಂ ಶುಚಿ ಬ್ರಹ್ಮಣ: ಪದಮುಪೈತುಮಿಚ್ಛತಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೪-೨೨ । 7. ಕೆಳಗೆ ಬಿದ್ದುಹೋಗಿರುವ. "ವೀತಮಾಲ್ಯಕಚಹಸ್ತಸಂಯಮವ್ಯಸ್ತ-ಹಸ್ತಯುಗಯಾ ಸ್ಫುಟೀಕೃತಮ್" ನೈಷಂ ೧೮-೧೨೪ । 8. ಕಳೆದು ಹೋಗಿರುವ. "ಸ ಮೃಷ್ಯಮೇ ವೀತಹಿರಣ್ಮಯತ್ವಾತ್" ರಘುಂ ೪-೨ ।

**ವೀತಸ ವೀತಂಸ (ಪುಂ)** 1. ಮೃಗಗಳ ಮತ್ತು ಪಕ್ಷಿಗಳ ಬಂಧನದ ಉಪಾಯ, ಅರಣ್ಯದ ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನೂ ಹಕ್ಕಿಗಳನ್ನೂ ಹಿಡಿಯುವ ಉಪಾಯ (ಸಾಧನ). ವೀತಸ್ಯತೇ—ವಿ+ತಸಿ (ಅಲಕ್ಷ್ಯಾಃ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) । ದೀರ್ಘ: (೬-೩-೧೨೨) । "ವೀತಸಸ್ತುಪಕರಣಂ ಬಂಧನೇ ಮೃಗಪಕ್ಷಿಣಾಮ್" ಅಮಂ । 2. ಪಕ್ಷಿಗಳ ಗೃಹ, ಹಕ್ಕಿಗಳನ್ನು ಕೂಡಿಸುವ ಗೂಡು. "ವೀತಸೋ ಬಂಧನೋಪಾಯೇ ಮೃಗಾಣಾಮಪಿ ಪಕ್ಷಿಣಾಮ್ । ತೇಷಾಮೇವ ಚ ವಿಶ್ವಾಸಹೇತೋ: ಪ್ರಾವರಣೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ ।

**ವೀತನ ವೀತನ (ಪುಂ ದ್ವಿವಂ)** ಕುತ್ತಿಗೆಯ ಎರಡು ಪಾರ್ಶ್ವಗಳು, ಕಂಠದ ಎರಡೂಕಡೆಯ ಭಾಗಗಳು. "ಕೃಕಸ್ತು ಕನ್ಧರಾಮಧ್ಯ ಕೃಕಪಾಶ್ವೌ ತು ವೀತನೌ" ಅಮಿಂ ಚಿಂ ।

**ವೀತಭಯ ವೀತಭಯ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ವೀತಂ ಭಯಂ ಯಸ್ಮಾತ್ । "ವೀತಂ ಭಯಂ ಗಜೇಂದ್ರಸ್ಯ ಯಸ್ಮಾದ್ವೀತಭಯ: ಸ್ಮೃತ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । "ವಿದ್ವತ್ತಮೋ ವೀತಭಯ: ಪುಣ್ಯ-ಶ್ರವಣಕೀರ್ತನ:" ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ) 2. ಭಯವಿಲ್ಲದ, ಭಯವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡ.

**ವೀತರಾಗ ವೀತರಾಗ (ವಿಂ)** 1. ಆಸೆಯನ್ನು ತೊರೆದವನು. ವೀತೋ ರಾಗೋ ವಿಷಯಾಪೇಕ್ಷಾ ಯಸ್ಯ । "ವೀತರಾಗಭಯಕ್ರೋಧ: ಸ್ಥಿತಶ್ರೀರ್ಮುನಿರೂಪಿತೇ" ಗೀತಾ ೨-೪೬ । "ವೀತರಾಗಧೃತರಾಗ-ಹೃದಯತಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೭-೩೩ । 2. ಕೋಪವನ್ನು ತೊರೆದವನು, ಕ್ರೋಧವನ್ನು ಜಯಿಸಿದವನು, ಶಾಂತಚಿತ್ತನಾದವನು. 3. ಯಾವುದೂ ಬಣ್ಣವಿಲ್ಲದ. (ಪುಂ) 4. ಕೋಪವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದ ಸುನ್ಯಾಸಿ.

**ವೀತಸ್ಪೃಹ ವೀತಸ್ಪೃಹ (ವಿಂ)** ಆಸೆಯನ್ನು ತೊರೆದವನು.

**ವೀತಿ ವೀತಿ (ಪುಂ)** 1. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. ವೀತಿ—ವಿ (ಗತ್ಯಾದಿಷು) "ವೀತಚ್" (೩-೩-೧೭೪) । "ಉದಗ್ರವೇಗಾ-ನುದಧೇರನುಪೇ ವೀತಿನ್ ಕ್ಷಣಂ ವಿಶ್ರಮಯಾಂಬಮ್‌ವ" ಯಾದಂ ೧೩-೩೯ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ದೀಪ್ತಿ, ಪ್ರಕಾಶ. 3. ಗತಿ, ಗಮನ, ನಡೆಯುವುದು. 4. ಭೋಜನ, ಊಟ, ಆಹಾರ. 5. ಉತ್ಪತ್ತಿ. "ವೀತಿರಶ್ವೇಶಾನೇ ಗತೌ । ಪ್ರಜನೇ ಧಾವನೇ ದೀಪ್ತೌ" ಹೇಮಂ ।

**ವೀತಿಹೋತ್ರ ವೀತಿಹೋತ್ರ (ಪುಂ)** 1. ವಹಿ, ಅಗ್ನಿ. ವೀತಿ: ಪುರೋಡಾಶಾದಿ: ಹೃತೇಽತ್ರ—ಹ (ದಾನಾದನಯೋ:) "ವ:" (೩ಂ ೪-೧೬೮) । 2. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. "ವೀತಿಹೋತ್ರೋ-ನಲೇಽಕಂ ಚ" ಮೇದಿಂ ।

**ವೀಥಿ ವೀಥಿ, ವೀಥಿ ವೀಥಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಪಯಸ್ಸು, ಸಾಲು. ವಿಥ್ಯತೇ—ವಿಥ್ (ಯಾಚನೇ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೯) । ವಾ "ಙೀಘ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫) । 2. ಮಾರ್ಗ, ರಸ್ತೆ, ದಾರಿ. ವಿಥ್ಯತೇಽನ್ಯಥಾ—ವಿಥ್ (ಯಾಚನೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೯) । ಪೃಷೋಂ । "ಆಲಾಪೆ: ಪಿಪತಿಪತಾಂ ವೀಲಜ್ಜಯ ವೀಥಿಮ್" ಕಿರಾಂ ೭-೧೭ । 3. ಮಾರುಕಟ್ಟೆ, ಅಂಗಡಿ ಬೀದಿ. "ಘನವೀಥಿವೀಥಿಮವತೀರ್ಣವತೋ ನಿಧಿರಮ್ಭಸಾಮುಪ-ಚಯಾ ಕಲಾ:" ಮಾಘಂ ೯-೩೨ । 4. ಗೃಹದ ಒಂದು ಭಾಗ, ಮನೆಯ ಮುಂಭಾಗದ ತಾರಸಿ, ಸಮತಲವಾಗಿ ನಿರ್ಮಿಸಿದ ಮುಂಭಾಗದ ಮಾಳಿಗೆ. 5. ಹತ್ತು ವಿಧ ರೂಪಕಗಳಲ್ಲೊಂದು ವಿಧ. "ವೀಥಿ ಪಙ್ಕ್ತೌ ಗೃಹಾಣ್ಣೇ ಚ ರೂಪಕಾಂತರವತ್ಮನೋ:" ಮೇದಿಂ ।

**ವೀಥಿಕಾ ವೀಥಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. "ವೀಥಿ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ವೀಥಿ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" । 2. ಚಿತ್ರಗಳನ್ನು ಪ್ರದರ್ಶಿಸುವ ಗೋಡೆ ಅಥವಾ ಬಟ್ಟೆಯ ತೆರೆ.

**ವೀಥಿ ವೀಥಿ (ನಂ)** 1. ಅಂತರಿಕ್ಷ, ಆಕಾಶ, ಗಗನ. ವಿಶೇಷಣ ಇನ್ಧೇ—ವಿ+ವಿ ಇನ್ಧಿ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕ್ರನ್" (೩ಂ ೨-೨೬) । 2. ವಾಯು. 3. ಅಗ್ನಿ. (ವಿಂ) 4. ವಿಮಲವಾದ, ಸ್ವಚ್ಛವಾದ. "ವೀಥಿ ತು ವಿಮಲಾರ್ಥಕಮ್" ಅಮಂ ।

**ವೀನಾಹ ವೀನಾಹ (ಪುಂ)** ಬಾವಿಯಕಟ್ಟೆ, ಬಾವಿಯ ಮೇಲೆ ಕಟ್ಟುವ ಸುತ್ತುಗೋಡೆ. ವಿನಹೃತೇಽನ್ಯೇನ—ವಿ+ಗಹ (ಬಂಧನೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧) । "ವೀನಾಹೋ ಮುಖಬಂಧನ-ಮಸ್ಯ ಯತ್" ಅಮಂ ।

**ವೀಪಾ ವೀಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಹೊಂದಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಅಧಿಕವಾಗಿ ಪಡೆಯಲು ಆಸೆ. ವಿಶೇಷಣ ಆಪ್ತುಮಿಚ್ಛಾ—ವಿ+ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ)+ಸನ್ "ವ:" (೩-೩-೧೦೨) । ಧಾತೋ: ಇತ್ (೭-೪-೫೫) । 2. ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ ಕಾರ್ಯವು ಇನ್ನೂ ಮುಂದುವರಿದು ನಡೆಯುವುದೆಂಬುದನ್ನು ತಿಳಿಸುವಿಕೆ. ಈ ವೀಪೆಯಿಂದ ಅದನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಪದಕ್ಕೆ ದ್ವಿಭಾವ ಬರುವುದು. ವೃಕ್ಷಂ ವೃಕ್ಷಂ ಸಿಂಚತಿ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಒಂದು ಗಿಡಕ್ಕೆ ಮಾತ್ರವಲ್ಲದೆ ತೋಟದ ಎಲ್ಲಾ ಗಿಡಗಳಿಗೂ ನೀರನ್ನು ಎರೆಯುವನು ಎಂಬ ಅರ್ಥವನ್ನು ಈ ದ್ವಿರುಕ್ತಿಯು ತಿಳಿಸುವುದು. ಈ ದ್ವಿರುಕ್ತಿಯು ವೀಪೆಯಿಂದ ಬರುವುದು. (೮-೧-೪) ।



**ವೀರ ವೀರ (ಪುಂ)** 1. ಪರಾಕ್ರಮಿ, ಶೂರ, ಮಹಾಬಲಶಾಲಿ. ವೀರಯತಿ — ವೀರ (ವಿಕ್ರಾಂತಿ) + ಣಿच् “ಅच्” (3-1-134) । “ಅಮಿತೋಽಮ್ಯಾಗತಾನ್ ಯೋಧು ವೀರಾನ್ ರಣಮದೋಽತಾನ್” ಕುಮಾಂ 16-21 । 2. ಜಿನ. 3. ವಿಷ್ಣು. ಅಜ (ಗತಿಕೋಪಣಯೋಃ) “ರಕ್” (3-2-23) ವೀರಾವ: (2-4-46) । “ವೀರ: ಕಂಪನಹೇತುತ್ವಾದ್ರಕ್ಷಸಾಮತಿಭೀಮತ:” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । “ವೀರ: ಶಕ್ತಿಮತಾಂ ಶ್ರೇಷ್ಠ:” ವಿಂ ಸಂ । 4. ನಟ, ನರ್ತಕ. 5. ಅಗ್ನಿ. 6. ಶೃಂಗಾರಾದಿ ನವರಸ ಗಳಲ್ಲಿೊಂದು, ವೀರರಸ. ವೀರರಸವು ದಾನವೀರ ದಯಾ ವೀರ ಧರ್ಮವೀರ ಮತ್ತು ಯುದ್ಧ ವೀರ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. “ಸ ಚ ದಾನಧರ್ಮಯುಕ್ತೇಂದ್ರಿಯಾ ಚ ಸಮನ್ವಿತಶ್ಚತುರ್ಥಾ” ಸಾಂ 4-2-234 । ವೀರರಸದಲ್ಲಿ ಒಳ್ಳೆಯ ಉದಾತ್ತ ಗುಣವುಳ್ಳ ಉತ್ತಮನಾದ ನಾಯಕನಿರಬೇಕು. ಉತ್ಸಾಹವು ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ. ಜಯಿಸಲ್ಪಡುವ ಶತ್ರುವು ಅಲಂಬನ ವಿಭಾವ. ಪ್ರತಿನಾಯಕನ ವ್ಯಾಪಾರಗಳು ಉದ್ದೀಪನ ವಿಭಾವ. ಸಹಾಯಾನ್ವೇಷಣಾದಿಗಳು ಅನುಭಾವಗಳು. [ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ವೀರರಸಗಳ ವಿವರಕ್ಕೆ ಆಯಾ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 7. ಚಿಲುಕೀರ. 8. ಗನ್ನೇರಳೆ. 9. ಅರ್ಜುನ ವೃಕ್ಷ, ಮತ್ತಿಮರ. 10. ಯಜ್ಞದ ಅಗ್ನಿ. (ನಂ) 11. ಲಾಳದ ಗಿಡ, ಜುಂಬು ಹುಲ್ಲು. 12. ಅಕ್ಕಿಯ ಗಂಜಿ. 13. ಹರಿಗೆ ಹಾಲೆ. 14. ಅತಿಬಜೆ. 15. ಲಾಮಂಚದ ಬೇರು. 16. ಮಣಸು. (ವಿಂ) 17. ಶ್ರೇಷ್ಠ. 18. ಧೈರ್ಯಶಾಲಿ, ಕೆಚ್ಚಿದೆಯುಳ್ಳವನು.

**ವೀರಕ ವೀರಕ (ಪುಂ)** 1. ಗನ್ನೇರಳೆ. 2. ವೀರಪುರುಷ, ಶೂರ. ವೀರ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” । 3. ಸಮರ್ಥ, ನಿಪುಣ.

**ವೀರಣ ವೀರಣ (ನಂ)** ಲಾಮಂಚ. ವಿ ಪಕ್ಷಿಣಮೀರಯತಿ— ಇರ (ಗತೌ) + ಣಿच् “ಲ್ಯು:” (3-1-134) ।

**ವೀರತರ ವೀರತರ (ಪುಂ)** 1. ಹೆಚ್ಚು ಬಲಶಾಲಿಯಾದ ಯೋಧ. 2. ಬಾಣ. “ವೀರತರೋ ವೀರಶ್ರೇಷ್ಠೇ ಶರೇ । ವೀರತರಂ ಪುನ: ವೀರಣಂ” ಹೇಮಂ । (ನಂ) 3. ಲಾಮಂಚ. ಅತಿಶಯೇನ ವೀರಮ್ “ತರಪ್” (4-3-46) ।

**ವೀರತರ ವೀರತರಂ (ಪುಂ)** 1. ಬಿಲ್ಲುವೃಕ್ಷ. 2. ಅರ್ಜುನ ವೃಕ್ಷ, ಮತ್ತಿಮರ. ವೀರಸ್ತಶ್ಚಾಮ್ನಾ ಪ್ರಸಿದ್ಧ: ತರ: । 3. ಗೇರುಮರ.

**ವೀರಪತ್ನಿ ವೀರಪತ್ನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ವೀರಯೋಧನ ಪತ್ನಿ. ವೀರ: ಪತಿ: ಯಸ್ಯಾ:—“ತುಕ್” (4-1-34) । “ತೀಪ್” (4-1-4) ।

**ವೀರಪಾನ(ಣ) ವೀರಪಾನ(ಣ) (ನಂ)** ಯುದ್ಧವಾದ ನಂತರ ಮತ್ತು ಯುದ್ಧ ನಡೆಯಬೇಕಾದಾಗ ವೀರರು

ಮಾಡುವ ಪಾನ. ವೀರಾಣಾಂ ಶ್ರಮಾಪನೋದನಾಯ ಪಾನಮ್ । “ವೀರಪಾನಂ ತು ಯತ್ಪಾನಂ ವೃತ್ತೇ ಭಾವಿನಿ ವಾ ರಣೇ” ಅಮಂ । ವಿಕಲ್ಪೇನ ಣತ್ವಮ್ (6-4-10) ।

**ವೀರಬಾಹು ವೀರಬಾಹು (ಪುಂ)** ಬಲಶಾಲಿಯಾದ ಬಾಹು, ಶಕ್ತಿಯುತವಾದ ತೋಳು.

**ವೀರಭದ್ರ ವೀರಭದ್ರ (ಪುಂ)** 1. ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗದ ಕುದುರೆ. ವೀರಾಣಾಂ ಭದ್ರಂ ಯೇನ । 2. ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ವೀರ. 3. ಲಾಮಂಚ. “ವೀರಮದ್ರೋಽಶ್ವಮೇಧಾಶ್ವೇ ವೀರಶ್ರೇಷ್ಠೇ ಚ ವೀರಣಂ” ಮೇದಿಂ । 4. ಪರಮೇಶ್ವರನ ಪ್ರಮಥಗಣದಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ. [ಹಿಂದೆ ಒಮ್ಮೆ ದೇವಲೋಕದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುತ್ತಿದ್ದ ಒಂದು ಯಾಗಕ್ಕೆ ಸಕಲ ದೇವತೆಗಳೂ ಮುಷಿಗಳೂ ಬಂದಿದ್ದರು. ಆಗ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದ ದಕ್ಷನನ್ನು ಎಲ್ಲರೂ ಎದ್ದುನಿಂತು ಗೌರವಿಸಿದರು. ಚತುರ್ಮುಖನೂ ಪರಶಿವನೂ ತಾವು ಕುಳಿತಿದ್ದ ಪೀಠದಿಂದ ಎಳದಿರಲು ದಕ್ಷನು ಕ್ರುದ್ಧನಾಗಿ ಈಶ್ವರನಿಗೆ ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಹವಿರ್ಭಾಗವಿಲ್ಲದಿರಲೆಂದು ಹೇಳಿದನು. ಇದರಿಂದ ಕೋಪಗೊಂಡ ನಂದಿಯೂ ದಕ್ಷನು ಪಶುವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಕುರಿಮುಖವುಳ್ಳವನಾಗಿ ಸಂಸಾರದಲ್ಲೇ ನವೆಯುತ್ತಿರಲಿ ಎಂದು ದಕ್ಷನನ್ನು ಶಪಿಸಿದನು. ದಕ್ಷನು ವಾಜಪೇಯ ಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡಿ ಬೃಹಸ್ಪತಿಯಜ್ಞವನ್ನೂ ಮಾಡಲು ಆರಂಭಿಸಿದಾಗ ದಾಕ್ಷಾಯಿಣಿಯೂ ತನ್ನ ತಂದೆಯ ಯಾಗಕ್ಕೆ ಹೋಗಬೇಕೆಂದು ಪರಮೇಶ್ವರನನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದಳು. ಪರಮೇಶ್ವರನು ಸಂತುಷ್ಟರಾಗಿದ್ದರೂ ಬಹಳ ಆಸೆಯಿಂದ ತಂದೆಯ ಮನೆಗೆ ಹೋದಾಗ ದಕ್ಷನು ಬಹಳ ತಿರಸ್ಕಾರದಿಂದ ಕಾಣಲು ಯೋಗಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಸಮಾಧಿಜನ್ಯವಾದ ಯೋಗಾಗ್ನಿಯಿಂದ ಅಸು ವನ್ನು ನೀಗಿದಳು. ಈ ವಿಷಯವನ್ನು ಕೇಳಿದ ಪರಶಿವನು ಬಹಳ ಕ್ರುದ್ಧನಾಗಿ ತನ್ನ ಜಟಾಕಲಾಪದಿಂದ ಒಂದು ಹಿಡಿ ಕೂದಲನ್ನು ಕಿತ್ತು ಎಸೆಯಲಾಗಿ ಭಯಂಕರಸ್ವರೂಪದ ಒಬ್ಬ ಪುರುಷನು ಅವಿರ್ಭವಿಸಿದನು. ಇವನೇ ವೀರಭದ್ರ. ಪರಮೇಶ್ವರನ ಆಜ್ಞೆಯಂತೆ ಈ ವೀರಭದ್ರನು ಸಕಲ ಪರಿವಾರದೊಡನೆ ಹೊರಟು ದಕ್ಷನ ಯಾಗಶಾಲೆಗೆ ಬಂದು ಯಜ್ಞಕ್ಕೆ ಬಂದಿದ್ದವರನ್ನೆಲ್ಲಾ ಹೆದರಿಸಿ ಯಾಗಶಾಲೆಯನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸಿ ದಕ್ಷನ ಶಿರಸ್ಸನ್ನು ಉರುಳಿಸಿ ಯಾಗದ ಅಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಸುಟ್ಟು ಈಶ್ವರನಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗಿ ಸೇರಿದನು.]

**ವೀರಮಾತೃ ವೀರಮಾತೃ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ವೀರಪುರುಷರನ್ನು ಪಡೆದ ತಾಯಿ. ವೀರಾಣಾಂ ಮಾತಾ ।

**ವೀರವಿಪ್ಲಾವಕ ವೀರವಿಪ್ಲಾವಕ (ಪುಂ)** ಅವರ ವರ್ಗದವರಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಿದ ದ್ರವ್ಯದಿಂದ ಯಾಗಮಾಡುವವನು.



**ವೀರವೃಕ್ಷ ವೀರವೃಕ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಗೇರುಮರ. ವೀರ ಇವ  
ವೃಕ್ಷ: ದುಃಸ್ಪರ್ಶತ್ವಾತ್ | 2. ಮತ್ತಿಮರ.

**ವೀರಸು ವೀರಸೂ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೀರರನ್ನು ಹೆತ್ತ ತಾಯಿ.  
ವೀರಾನ್ ಸುತೇ—ವೀರ+ಘೃಙ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭವಿಮೋಚನೆ) “ಕ್ವಿಪ್”  
(3-2-61) |

**ವೀರಸೇನ ವೀರಸೇನ** (ಪುಂ) ನಳಮಹಾರಾಜನ ತಂದೆ.

**ವೀರಹನ್ ವೀರಹನ್** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಸ್ವಧ್ಯಾನಭಜ್ಜಕಾನ್  
ವೀರಾನ್ ಹನ್ತಿ—ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) “ಕ್ವಿಪ್” (3-2-69) |  
“ಸ್ವಧ್ಯಾನಭಜ್ಜಕಾನ್ ವೀರಾನ್ ಹನ್ತಿ ಯಃ ಸ ತು ವೀರಹಾ”  
ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | “ವೀರಹಾ ಮಾಧವೋ ಮಧುಃ” ವಿಂ ಸಂ |

**ವೀರಾ ವೀರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೆಲನೆಲ್ಲಿಗಿಡ. 2. ಸುರುಸುರುಕೆ  
ಗಿಡ. 3. ಬಾಳೆಗಿಡ. 4. ಶೀವನೆಯ ಮರ. 5. ಮದ್ಯ.  
6. ಕರಿಯ ನೆಲಗುಂಬಳ. 7. ಹಾಲುತೊಟ್ಟಿನ ಗಿಡ.  
8. ಮಹಾಶತಾವರೀ ಗಿಡ. 9. ಕಲ್ಪತ್ತಿಗಿಡ. 10. ಹೊನ್ನೆ.  
11. ಅತಿಬಜೆ. 12. ಅಗುರು ಗಿಡ. “ಸ್ತ್ರೀ  
ಸುರಾಕ್ಷೀರಕಾಕೋಲಿತಾಮಲಕಯಲವಾಲುಕೇ | ಪತಿಪುತ್ರವತೀರಮಾ-  
ಗಮ್ಭಾರೀದುಗ್ಧಿಕಾಸು ಚ | ಮಲಪೂಕ್ಷೀರವಿದಾರ್ಯಾಃ ಕಲಿಬಂ  
ಶೃಂಗಾ ನಲೇಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ | 13. ಪತಿ ಮತ್ತೂ  
ಪುತ್ರ ಸಂಪತ್ತುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು.

**ವೀರಾಶಂಸನ ವೀರಾಶಂಸನ** (ನಂ) 1. ಬಹಳ ಭಯಂಕರ  
ವಾದ ಯುದ್ಧಭೂಮಿ. ವೀರಾಃ ಆಶಂಸಂತೇ ಅತ್ರ — ಆ +  
ಶಸಿ (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) “ಲ್ಯುಡ್” (3-3-114) | ವೀರಾನ್  
ಆಶಂಸಂತಿ ಅಥ ಸ್ಥಾಸ್ಯಾಮಿ ವಾ ನವೇತಿ ಚಿಂತಾಂ ಜನಯತಿ—  
ಆ + ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) + ಣಿಕ್ “ಲ್ಯುಃ” ವಾ (3-1-134) |  
“ಸಾ ವೀರಾಶಂಸನಂ ಯುಧಭೂಮಿಯಾತಿಮಯಪ್ರದಾ” ಅಮಂ |  
2. ಜೀವದ ಹಂಗಿಲ್ಲದೆ ಕೈಗೊಳ್ಳುವ ಸಾಹಸ ಕಾರ್ಯ.

**ವೀರಾಸನ ವೀರಾಸನ** (ನಂ) ಯೋಗಾಸನಗಳಲ್ಲೊಂದು  
ವಿಧ. ದಕ್ಷಿಣ (ಬಲ) ಪಾದವನ್ನು ಎಡತೊಡೆಯ ಮೇಲೆ  
ರಿಸಿ ವಾಮ (ಎಡ) ಪಾದದ ಮೇಲೆ ಬಲತೊಡೆಯನ್ನಿಟ್ಟು  
ಕೂಡುವುದು ವೀರಾಸನವೆನಿಸುವುದು. “ಏಕಂ ಪಾದಂ  
ತಥೈಕಸ್ಥಿಮನ್ವಿನ್ಯಸೇದ್ವರಣಿ ಸ್ಥಿತಮ್ | ಇತರಸ್ಥಿಮಸ್ತಥಾಚೋರಂ  
ವೀರಾಸನಮಿತಿರೀತಮ್” ಹಠಂ 1-29 | ಈ ವೀರಾಸನವು  
ಜಪಕ್ಕೆ (ತಪಸ್ಸಿಗೆ) ಸಾಧನವಾದುದು. “ವೀರಾಸನೇರ್ಧ್ಯನಿ-  
ಜುಷಾಮೃಷಿಣಾಮಮಿ ಸಮರ್ಥಾಸಿತವೇದಿಮರ್ಥಾಃ” ರಘುಂ 13-42 |

**ವೀರಘ್ ವೀರಘ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಬ್ಬಿರುವ ಲತೆ, ಹರಡಿ  
ಕೊಂಡು ಬೆಳೆದಿರುವ ಬಳ್ಳಿ. ವಿ + ಳ್ವಿರ್ (ಆವರಣಂ)  
“ಕ್ವಿಪ್” (3-2-196) | ದೀರ್ಘಃ (6-3-139) |  
“ಅಪಿ ತ್ವದಾವಜಿತವಾರಿಸಂಭೂತಂ ಪ್ರವಾಲಮಾಸಾಮನುವನ್ವಿ ವೀರ-

ಘಮ್” ಕುಮಾಂ 4-34 | 2. ಲತೆ, ಕಾಬೆಗಳಿಲ್ಲದೆ ಬೆಳೆ  
ಯುವ ಬಳ್ಳಿ. “ಸಪುಷ್ಪಹಾಸಾಃ ಸ ನಿವೇಶವೀರಘಃ” ಕಿರಾಂ  
4-19 | “ಠಾಪ್” ಆಪಂ ಚೈವ ಹಲಂತಾನಾಮ್ ಮಾಗುರಿಃ |  
ವೀರಘಾ ವೀರಘಾ.

**ವೀರೇಶ ವೀರೇಶ**, -**ವೀರೇಶ** -**ವೀರೇಶ** (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ,  
ಪರಮೇಶ್ವರ. 2. ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ಬಬ್ಬ ಯೋಧ.

**ವೀರೋಜಾ ವೀರೋಜಾ** (ವಿಂ) ಹೋಮ (ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯಂ)  
ಮಾಡದಿರುವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ.

**ವೀರ್ಯ ವೀರ್ಯ** (ನಂ) 1. ಶಕ್ತಿ, ಪರಾಕ್ರಮ. ವೀರೇ ಸಾಘು  
“ಯತ್” (4-4-96) | ವೀರ್ಯತೇಜಃನ ವೀರ (ವಿಕ್ರಾಂತಿ) +  
ಣಿಕ್ “ಯತ್” (3-1-99) ವಾ | “ಪರೇರರ್ಪಯಿಸಿತ-  
ವೀರ್ಯಸಂಪದಾಂ ಪರಾಭವೋಽಪ್ಯುತ್ಸವ ಏವ ಮಾನಿನಾಮ್” ಕಿರಾಂ  
1-41 | 2. ಶುಕ್ರಧಾತು, ರೇತಸ್ಸು. “ಅಮಿ ಹಿ ವೀರ್ಯ-  
ಪ್ರಭವಂ ಭವಸ್ಯ ಜಯಾಯ ಸೇನಾನ್ಯಮುಶಂತಿ ದೇವಾಃ” ಕುಮಾಂ  
3-14 | 3. ಶಕ್ತಿ, ಬಲ, ಶರೀರ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ತ್ರಾಣ.  
4. ತೇಜಸ್ಸು, ಕಾಂತಿ. 5. ಪ್ರಭಾವ, ಗುಣ, ಪರಿಣಾಮ  
ಕಾರಿತ್ವ, ಕಾರ್ಯಕಾರಿತ್ವ. “ಅತಿವೀರ್ಯವತೀವ ಭೇಷಜೇ ಬಹು-  
ರಲ್ಪೀಯಸಿ ದೃಶ್ಯತೇ ಗುಣಃ” ಕಿರಾಂ 2-4 | 6. ಸತ್ತ್ವ,  
ಬಲ, ಶಕ್ತಿ, ಪ್ರಭಾವ. “ಜಾನೇ ತಪಸೋ ವೀರ್ಯಂ ಸಾ ಬಾಲಾ  
ಪರವತೀತಿ ಮೇ ವಿದಿತಮ್” ಶಾಕುಂ 3-2 | “ವೀರ್ಯಂ ಶುಕ್ರೇ  
ಪ್ರಭಾವೇ ಚ ತೇಜಃಸಾಮರ್ಥ್ಯಯೋರಪಿ” ಮೇದಿಂ |

**ವೀರ್ಯಜ ವೀರ್ಯಜ** (ಪುಂ) ಪುತ್ರ, ಮಗ. ವೀರ್ಯಜ್ಜಾಯತೇ—  
ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) “ಙಃ” (3-2-96) |

**ವೀರ್ಯವತ್ ವೀರ್ಯವತ್** (ವಿಂ) 1. ಶಕ್ತಿಯುತವಾದ.  
ವೀರ್ಯಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್” (4-2-94) | “ಅತಿವೀರ್ಯವತೀವ  
ಭೇಷಜೇ ಬಹುರಲ್ಪೀಯಸಿ ದೃಶ್ಯತೇ ಗುಣಃ” ಕಿರಾಂ 2-4 |  
2. ಪರಾಕ್ರಮಶಾಲಿ. 3. ಪ್ರಭಾವಶಾಲಿ. 4. ಬಲಶಾಲಿ.

**ವಿವಿಧ ವೀವಧ** (ಪುಂ) 1. ಅಡ್ಡ, ಕಾವಡಿ. ವಿವಿಧೋ ಬಧೋ  
ಹನನಂ ಗಮನಂ ವಾ ಅನೇನ ವಾ | “ಉತ್ತರಪದಲೋಪಃ (ವಾಂ  
2-2-24) | ದೀರ್ಘಃ (6-3-139) | 2. ಹೊರಪ್ರದೇಶ  
ದಿಂದ ಉರೋಳಿಗೆ ಧಾನ್ಯ ಮೊದಲಾದುವು ಬರುವಿಕೆ.  
3. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. 4. ಹೊರೆ, ಭಾರ. “ನಿರೂದ್ಧ-  
ವಿವಿಧಾಸಾರಪ್ರಸಾರಾ ಗಾ ಇವ ವ್ರಜಮ್” ಮಾಧಂ 2-64 |  
“ಪರ್ಯಾಹಾರಾಶ್ಚ ಮಾರ್ಗಾಶ್ಚ ವಿವಿಧೌ ವಿವಿಧೌ ಚ ತೌ” ಅಮಂ |

**ವಿವಿಧಿಕ ವೀವಧಿಕ** (ಪುಂ) ಅಡ್ಡಯಲ್ಲಿ ಸಾಮಾನು ಸಾಗಿಸು  
ವವನು, ಕಾವಡಿಯಲ್ಲಿ ಸಾಮಾನು ಹೊರುವವನು. ವಿವಿಧೇನ  
ಹರತಿ—ವಿವಿಧ ವಾ “ಠನ್ಯು” (4-4-19) | ಪಕ್ಷಂ “ಠಕ್”  
(4-4-14) | ವಿವಿಧಿಕಃ ವೀವಧಿಕಃ.



ವೃಕ ವೃಕ (ಪುಂ) 1. ತೋಳ. ವಕತೆ — ವೃಕ (ಆದಾನೆ) “ಕಕ್” (ಉಂ ೩-೪೧)। “ಪಾಪಾರಮ್ಭವತೋರ್ಮಗೀವ ವೃಕಯೋ-  
ರ್ಮಿರಗತಾ ಗೋಚರಮ್” ಮಾಲತೀಂ ೫-೨೪। 2. ವಾಯುಸ, ಕಾಗೆ. 3. ಸೃಗಾಲ, ನರಿ. 4. ರಾಕ್ಷಸ. 5. ಜಾತರಾಗ್ನಿ. 6. ನೇಗಿಲು. 7. ಚೋರ. 8. ಕ್ಷತ್ರಿಯ. 9. ಬಕವೃಕ್ಷ. 10. ವಜ್ರಾಯುಧ. ವಕತೆ ಶತ್ರುಪ್ರಾಣಾನಾದತೆ—ವೃಕ “ಕ.” (೩-೧-೧೩೫)।

ವೃಕದಶ ವೃಕದಂಶ (ಪುಂ) ನಾಯಿ. ವೃಕಾನ್ ದಶತಿ — ದಶ (ದಶನೆ) “ಅನ್” (೩-೨-೧)।

ವೃಕಧೂಪ ವೃಕಧೂಪ (ಪುಂ) 1. ಅನೇಕ ಸುಗಂಧ ವಸ್ತುಗಳಿಂದ ಮಾಡಿದ ಧೂಪ. ವೃಕ ಇವ ಧೂಪಃ। 2. ಸರಲ ವೃಕ್ಷದ ರಸ, ಸರಳ ದೇವದಾರುವಿನ ರಸ. “ವೃಕಧೂಪಸ್ತು ಸರಲದ್ರವಕೃತ್ರಿಮಧೂಪಯೋಃ” ಮೇದಿಂ।

ವೃಕಧೂತ ವೃಕಧೂತ (ಪುಂ) ಜಂಬುಕ, ನರಿ. ಧೂತೋ ವೃಕಃ। ಪರಿನಿಪಾತಃ (೨-೨-೩೧)।

ವೃಕಾರಾತಿ ವೃಕಾರಾತಿ (ಪುಂ) ನಾಯಿ. ವೃಕಸ್ಯಾರಾತಿಃ। —ಅರಿಃ —ಅರಿಃ.

ವೃಕೋದರ ವೃಕೋದರ (ಪುಂ) ಭೀಮಸೇನ. ವೃಕಸ್ಯೇವೋದರಂ ಯಸ್ಯ। “ಉಪಪತ್ತಿಮದ್ವಿಜಿತಾಶ್ರಯಂ ನೃಪಮುಚೇ ವಚನಂ ವೃಕೋದರಃ” ಕಿರಾಂ ೨-೧। [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಮಿಮ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ವೃಕಣ ವೃಕ (ವಿಂ) ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೀಳಲ್ಪಟ್ಟ, ತುಂಡು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ ವ್ರಶ್ಚು (ಛೇದನೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)।

ವೃಕ ವೃಕ್ಷ (ಪುಂ) ಮರ. ವೃಶ್ಯತೆ — ಆ ವ್ರಶ್ಚು (ಛೇದನೆ) “ಸಃ” (ಉಂ ೩-೬೬)।

ವೃಕಕ ವೃಕ್ಷಕ (ಪುಂ) ಸಣ್ಣಮರ, ಗಿಡ. ಹ್ರಸ್ವೋ ವೃಕಃ—ಅಲ್ಪಾರ್ಥ “ಕನ್” (೫-೩-೮೩)। “ಅತಂದ್ರಿತಾ ಸಾ ಸ್ವಯಮೇವ ವೃಕಕಾನ್ ಘಟಸ್ತನಪ್ರಸವಣೈರ್ವ್ಯವರ್ಧಯತ್” ಕುಮಾಂ ೫-೧೪।

ವೃಕಚರ ವೃಕ್ಷಚರ (ಪುಂ) ವಾನರ, ಕಪಿ. ವೃಕ್ಷೋ ಚರತಿ—ಚರ (ಗತೀ) “ಠಃ” (೩-೨-೧೬)।

ವೃಕಚ್ಚಾಯ ವೃಕ್ಷಚ್ಚಾಯ (ನಂ) ಮರಗಳನೆರಳು. ವೃಕ್ಷಸ್ಯ ವೃಕ್ಷಾಣಾಂ ವಾ ಚಾಯಾ—ವಾ ಕ್ಲಿಬತ್ವಮ್ (೨-೪-೨೫)। ಪಕ್ಷಿ —ಚಾಯಾ —ಛಾಯಾ.

ವೃಕಧೂಪ ವೃಕ್ಷಧೂಪ (ಪುಂ) ಸರಳವೃಕ್ಷದ ಹಾಲುಮಡ್ಡಿ.

ವೃಕ್ಷನಾಥ ವೃಕ್ಷನಾಥ (ಪುಂ) ಪಟವೃಕ್ಷ, ಅಲಿದಮರ.

ವೃಕ್ಷನಿರ್ಯಾಸ ವೃಕ್ಷನಿರ್ಯಾಸ (ಪುಂ) ಗೋಂದು, ಅಂಟು.

ವೃಕ್ಷಭಿದ್ ವೃಕ್ಷಭಿದ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುತಾರ, ಕೊಡಲಿ. ವೃಕ್ಷ-ಭಿನತ್ತಿ—ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) “ವಿವ್” (೩-೨-೭೬)।

ವೃಕ್ಷಭೇದಿನ್ ವೃಕ್ಷಭೇದಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಕೈಕೊಡಲಿ, ತುಂಡು ಕಾಡಿನ ಕೊಡಲಿ. 2. ಮರವನ್ನು ಕಡಿಯುವ ಉಳಿ.

ವೃಕ್ಷಮರ್ಕಟಿಕಾ ವೃಕ್ಷಮರ್ಕಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಳಿಲು. ವೃಕ್ಷಸ್ಯ ಮರ್ಕಟಿಕಾ।

ವೃಕ್ಷರಹಾ ವೃಕ್ಷರುಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬದನಿಕೆಗಿಡ. ವೃಕ್ಷೋ ರೋಹತಿ—ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೫)।

ವೃಕ್ಷವಾಟಿಕಾ ವೃಕ್ಷವಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂತ್ರಿಗಳ ಮತ್ತು ವೇಶ್ಯೆಯರ ಉಪವನ, —ಕೈತೋಟ. ವೃಕ್ಷಾಣಾಂ ವಾಟಿಕಾ।

ವೃಕ್ಷಾದನ ವೃಕ್ಷಾದನ (ಪುಂ) ಮರವನ್ನು ಕಡಿಯುವ ಉಳಿ. ವೃಕ್ಷಮತಿ—ಅದ (ಭಕ್ಷಣೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೩)। “ವೃಕ್ಷಾದನೋ ವೃಕ್ಷಭೇದಿ” ಅಮಂ।

ವೃಕ್ಷಾದನಿ ವೃಕ್ಷಾದನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬದನಿಕೆಗಿಡ. ವೃಕ್ಷಮತಿ—ಅದ (ಭಕ್ಷಣೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೩)। “ವಂದಾ-ವೃಕ್ಷಾದನಿ ವೃಕ್ಷರಹಾ ಜೀವಂತಿಕೇತ್ಯಪಿ” ಅಮಂ।

ವೃಕ್ಷಾಮ್ಲ ವೃಕ್ಷಾಮ್ಲ (ಪುಂ) 1. ಅಮಟಿ ಮರ. ವೃಕ್ಷೋ ಅಮ್ಲೋ ಯಸ್ಯ। (ನಂ) 2. ಹುಣಿಸೆಹಣ್ಣು. ವೃಕ್ಷಸ್ಯಾಮ್ಲಮ್।

ವೃಕ್ಷಾಯುರ್ವೇದ ವೃಕ್ಷಾಯುರ್ವೇದ (ಪುಂ) ಮರಗಿಡಗಳಿಗೆ ಹೆಚ್ಚೆಯನ್ನು ಹೇಳುವ ಆಯುರ್ವೇದ ಶಾಸ್ತ್ರ.

ವೃಕ್ಷಾಲಯ ವೃಕ್ಷಾಲಯ (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ವೃಕ್ಷಃ ಆಲಯೋ ಯಸ್ಯ।

ವೃಜನ ವೃಜನ (ನಂ) ಅನ್ತರಿಕ್ಷ, ಆಕಾಶ. ವೃಜಿ (ವರ್ಜನೆ) “ವ್ಯುಃ” (ಉಂ ೨-೮೧)।

ವೃಜಿನ ವೃಜಿನ (ನಂ) 1. ಪಾಪ. ವೃಜಿ (ವರ್ಜನೆ) “ಇನಕ್” (ಉಂ ೨-೪೭)। (ಪುಂ) 2. ಕೇಶ, ಕೂದಲು. (ವಿಂ) 3. ಕುಟಿಲವಾದ, ವಕ್ರವಾದ. “ವೃಜಿನಂ ಕಲ್ಮಷೇ ಕ್ಲಿಬಂ ಕೇಶೋ ನಾ ಕುಟಿಲೇ ತ್ರಿಘ್ನ” ಮೇದಿಂ। 4. ಕೆಂಪುಚರ್ಮ.

ವೃತ ವೃತ (ವಿಂ) 1. ಪರಿಸ್ಪಲ್ಪಟ್ಟ, ಆಯ್ಕೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವೃತ್ (ವರಣೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। “ಸ್ಥಾನೇ ವೃತಾ ಭೂಪತಿಭಿಃ ಪರೋಕ್ಷಃ ಸ್ವಯಂವರಂ ಸಾಧುಮಮಸ್ತ ಭೋಜ್ಯಾ” ರಘುಂ ೭-೧೩। 2. ಸುತ್ತುವರಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಆವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವೃತ್ (ಆವರಣೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। “ವೃತಸ್ತ್ವಂ ಪಾತ್ರೇಸಮಿತೈಃ ಕ್ಷಡ್ಗಾಃ ಪ್ರಮಾದವಾನ್” ಭट्टಿಂ ೫-೧೦। 3. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. “ಸನ್ಯಾಸಃ ಕುಲದೂಷಣೈರಿವ ಜನಮೈವೈವೃತಶ್ಚಂದ್ರಮಾಃ ವಿಶ್ವುಗ್ನಿಚ್ಛುಲೋದ್ಗತೇವ ಯುವತಿನೈಕತ್ರ ಸಂತಿಷ್ಠತೇ” ಮೃಚ್ಛಂ ೫-೧೪। 4. ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೇಡಲ್ಪಟ್ಟ. “ವೃತಂ ತೇನೇದಮೇವ ಪ್ರಾಕ್ ಮಯಾ ಚಾಸ್ಮೈ ಪ್ರತಿಶ್ರುತಮ್” ಕುಮಾಂ ೨-೫೬।



ವೃತ್ತಿ ವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸುತ್ತುಗಟ್ಟುವುದು, ಆವರಿಸುವುದು. ವೃನ್ (ಆವರಣ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)। 2. ವರಣ, ಆರಿಸುವುದು, ಆಯ್ಕೆಮಾಡುವುದು. ವೃನ್ (ವರಣ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)। 3. ಬೇಲಿ. "ಪ್ರತ್ಯಾಸನ್ನೌ ಕುರವಕವೃತ್ತೇರ್ಮಾಧಿವಿಮಂಡಪಸ್ಯ" ಮೇಘಂ 2-15।

ವೃತ್ತ ವೃತ್ತ (ವಿಂ) 1. ನಡೆದುಹೋದ, ಕಳೆದುಹೋದ. ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತ:" (3-4-92)। "ವೃತ್ತವರ್ತಿಷ್ಯಮಾಣಾನಾಂ ಕಥಾಂಶಾನಾಂ ನಿರ್ದೇಶಕ:" ಸಾಂ ದಂ 6-44। 2. ವರ್ತುಲವಾದ, ಗುಂಡಾಗಿರುವ. "ವೃತ್ತಾನುಪುರ್ವೇ ಚ ನ ಚಾತಿರ್ದೀರ್ಘೇ ಜಹ್ವೇ ಶುಭೇ ಸೃಷ್ಟವತಸ್ತದೀಯೇ" ಕುಮಾರಂ 1-35। 3. ಉಂಟಾದ, ಉತ್ಪನ್ನವಾದ. "ಸಮ್ಬಂಧಮಾಭಾಷಣಪೂರ್ವಮಾಹು: ವೃತ್ತ: ಸ ನೌ ಸಂಗತಯೋರ್ವನಾಂತೇ" ರಘುಂ 2-46। 4. ದೃಢವಾದ, ಸ್ಥಿರವಾದ. 5. ಓದಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಧ್ಯಯನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವೃತು ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:"। "ವೃತ್ತಶಾಸ್ತ್ರಾನ್ ಮಹಾರಮ್ಭಾನ್" ಭಟ್ಟಂ 9-19। 6. ಆಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅನುಷ್ಠಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸ ವೃತ್ತಚ್ಛೇದನಲಕಾಕಪಕ್ಷಕೇರ್ಮಾತ್ಯಪುತ್ರೈ: ಸವಯೋಭಿರನ್ವಿತ:" ರಘುಂ 3-28। 7. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 8. ಗತಿಸಿದ, ಪ್ರಾಣವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದ. "ವೃತ್ತಂ ಯುಧೇ ಶೂರಮಾಶಿಲಯ ಕಾಚಿತ್" ಮಾಘಂ 1-60। 9. ತಿರುಗಿದ, ಸುತ್ತುದ, ಸುತ್ತುತ್ತಿರುಗಿದ. 10. ಆವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುತ್ತುಗಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. 11. ನಿಷ್ಪನ್ನವಾದ, ಸಿದ್ಧವಾದ. (ಪುಂ) 12. ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ. (ನಂ) 13. ನಡೆತೆ, ವರ್ತನೆ. "ಆಪದ್ಯಪಿ ಸತೀವೃತ್ತಂ ಕಿಂ ಮುಚ್ಚಂತಿ ಕುಲಸ್ತ್ರಿಯ:" ಕಥಾಸಂ। 14. ಪದ್ಯ, ಛಂದಃಶಾಸ್ತ್ರಲಕ್ಷಣದಿಂದ ಕೂಡಿದ ನಾಲ್ಕು ಪಾದಗಳುಳ್ಳ ಶ್ಲೋಕ. "ಪದ್ಯಂ ಚತುಷ್ಪದೀ ತಚ್ಚ ವೃತ್ತಂ ಜಾತಿರೀತಿ ದ್ವಿಧಾ। ವೃತ್ತಮಕ್ಷರಸಂಖ್ಯಾತಂ ಜಾತಿರ್ಮಾತ್ರಾಕೃತಾ ಭವೇತ್" ಛಂದೋಮಂ। 15. ಚರಿತ್ರೆ, ಇತಿಹಾಸ, ಕಥೆ. "ವೃತ್ತಂ ರಾಮಸ್ಯ ವಾಲ್ಮೀಕೀ: ಕೃತಿಸ್ತೌ ಕಿನರಸ್ವರೌ" ರಘುಂ 14-64। 16. ಸಮಾಚಾರ, ವೃತ್ತಾಂತ, ವಾರ್ತೆ. 17. ಆಚಾರ, ಅನುಷ್ಠಾನ, ಜೀವನದ ರೀತಿ. "ಧರ್ಮೇಷ್ವಸ್ತು ಧರ್ಮಜಾ: ಸತಾಂ ವೃತ್ತಮನುಷ್ಠಿತಾ:" ಮನುಂ 10-129। 18. ನಿಯಮಾನುಸಾರದ ವರ್ತನೆ, ಕರ್ತವ್ಯದ ಪಾಲನೆ, ಧರ್ಮದ ಗೆರೆಯನ್ನು ದಾಟದೆ ಧರ್ಮವನ್ನು ಪಾಲಿಸುವುದು. "ಕಿಮತ್ರ ಚಿತ್ರಂ ಯದಿ ಕಾಮಸುಖವೃತ್ತೇ ಸ್ಥಿತಸ್ಯಾಭಿಪತೇ: ಪ್ರಜಾನ್ಯಾಮ್" ರಘುಂ 4-33। 19. ಸದಾಚಾರ. 20. ವಲಯ, ಮಂಡಲ.

ವೃತ್ತಗಂಧಿ ವೃತ್ತಗಂಧಿ (ನಂ) ಗದ್ಯಕಾವ್ಯದ ಒಂದು ಭೇದ. ವೃತ್ತಸ್ಯ ಪದಸ್ಯ ಗಂಧೋ ಲೇಶೋ ಯಸ್ಯ। "ವೃತ್ತಗಂಧೋಜ್ಜಿತಂ ಗದ್ಯಂ ಮುಕ್ತಕಂ ವೃತ್ತಗಂಧಿ ಚ" ಸಾಂ ದಂ 6-330।

ವೃತ್ತತಸ್ ವೃತ್ತತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ವೃತ್ತದಿಂದ, ನಡತೆಯಿಂದ, ವರ್ತನೆಯಿಂದ. ವೃತ್ತ "ತಸಿ:" (4-4-46)। ವೃತ್ತೇನ ನ ವ್ಯಥತೇ ನ ಚಲತಿ ಇತ್ಯರ್ಥ:।

ವೃತ್ತಫಲ ವೃತ್ತಫಲ (ಪುಂ) 1. ಬದರಿಗಿಡ, ಎಲಚಿಮರ. ವೃತ್ತಂ ಫಲಂ ಯಸ್ಯ। 2. ದಾಳಿಂಬಿಗಿಡ. (ನಂ) 3. ಎಲಚಿ ಹಣ್ಣು. 4. ದಾಳಿಂಬಿ ಹಣ್ಣು. 5. ಮೆಣಸು.

ವೃತ್ತಶಾಸ್ತ್ರ ವೃತ್ತಶಾಸ್ತ್ರ (ವಿಂ) ಶಸ್ತ್ರವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿತ ವನು, ಶಸ್ತ್ರವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿದವನು. ವೃತ್ತಮಘೀತಂ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಶಾಸ್ತ್ರಶಾಸ್ತ್ರಂ ಯೇನ। "ವೃತ್ತಶಾಸ್ತ್ರಾನ್ ಮಹಾರಮ್ಭಾನ್ ಅದಾಂತಾಸ್ತ್ರಿದಶೈರಪಿ" ಭಟ್ಟಂ 9-19।

ವೃತ್ತಾಧ್ಯಯನಾರ್ಥಿ ವೃತ್ತಾಧ್ಯಯನಾರ್ಥಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇದ ವಿಹಿತವಾದ ಆಚಾರ ಮತ್ತು ನಿಯಮಪೂರ್ವಕ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಇವುಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಬ್ರಹ್ಮವರ್ಚಸ್ಸಿನ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, -ವೃದ್ಧಿ.

ವೃತ್ತಾಂತ ವೃತ್ತಾಂತ (ಪುಂ) 1. ಸಮಾಚಾರ, ವಾರ್ತೆ. ವೃತ್ತಸ್ಯ ಅಂತ: ಸಮಾಪ್ತಿ: ಯತ್ರ। "ಮಾತಲೇ ನ ಸ್ವಲ್ಪವಿದಿತೋಷಮಾಖಂಡಲೇನ ವೃತ್ತಾಂತ: ಸ್ಯಾತ್?" ಶಾಕುಂ 3। 2. ಘಟನೆ, ಸಂಗತಿ, ಪ್ರಸಂಗ. "ಅನೇನ ಆರಣ್ಯಕವೃತ್ತಾಂತೇನ ಪರ್ಯಾಕುಲಾ: ಸಮ:" ಶಾಕುಂ 1। 3. ಪ್ರಕ್ರಿಯೆ, ಅಧಿಕಾರ. 4. ಕಾರ್ತವ್ಯ, ಸಂಪೂರ್ಣತೆ. "ವೃತ್ತಾಂತ: ಪ್ರಕ್ರಿಯಾಂ ಸ್ಯಾತ್ ಕಾರ್ತವ್ಯವಾತಾಪ್ರಭೇದಯೋ:। ಪ್ರಸ್ತಾವೇ" ಮೇದಿಂ।

ವೃತ್ತಿ ವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜೀವನೋಪಾಯ. ವರ್ತನೆ ಜೀವನ್ಯನಯಾ—ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)। "ಪ್ರಾಣಾನಾಮನಿಲೇನ ವೃತ್ತಿರಚಿತಾ ಸತ್ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷೇ ವನೇ" ಶಾಕುಂ 3-12। 2. ಸೂತ್ರಗಳ ವಿವರಣೆ, ಸೂತ್ರಗಳ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ವಿವರಿಸುವುದು. "ಸೂತ್ರಸಾರ್ಥವಿವರಣಂ ವೃತ್ತಿ:"। "ಸದೃಶಿ: ಸನ್ನಿವಂಧನಾ" ಮಾಘಂ 2-112। 3. ವ್ಯಾಪಾರ, ಕೆಲಸ, ಕ್ರಿಯೆ. "ಸತೇಸ್ತಮಕ್ಷಾಮನಿಮೇಷವೃತ್ತಿಭಿರ್ಹರಿವಿದತ್ವಾ ಹರಿಭಿಷ್ಚ ವಾಜಿಭಿ:" ರಘುಂ 3-43। 4. ನಡೆಗೆಯ ರೀತಿ, ನಡೆಯುವ ಕ್ರಮ. "ವಿನಯವಾರಿತವೃತ್ತಿರತಸ್ತಥಾ ನ ವಿವೃತೋ ಮದನೋ ನ ಚ ಸಂವೃತ:" ಶಾಕುಂ 2-11। 5. ವರ್ತನೆ, ನಡವಳಿಕೆ, ವ್ಯವಹಾರ. "ಶುಶ್ರುಷಸ್ವ ಗುರುನ್ ಕುರು ಪ್ರಿಯಸಖೀವೃತ್ತಿ ಸಪತ್ನೀಜನೇ" ಶಾಕುಂ 4-19। 6. ಉದ್ಯೋಗ, ಜೀವನದ ಮುಖ್ಯ ಕರ್ತವ್ಯ, ಧರ್ಮ. "ಕಿಲಿಷ್ಣಾತಿ ಲಕ್ಷಪರಿಪಾಲನವೃತ್ತಿರೇನಮ್" ಶಾಕುಂ 4-6। 7. ಇರುವಿಕೆ. 8. ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ರಸಗಳನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ಕೈಶಿಕೀ ಮೊದಲಾದ ವೃತ್ತಿ, ರಸೋತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣವಾಗುವ ವರ್ಣಗಳ ಜೋಡಣೆ, ಶೈಲಿ. (1) ಶೃಂಗಾರ



ರಸವನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ವೃತ್ತಿ ಕೈಶೀವೃತ್ತಿ. (2) ವೀರ ರಸದಲ್ಲಿ ಸಾತ್ವತೀವೃತ್ತಿ. (3) ರೌದ್ರರಸದಲ್ಲಿ ಅರಭಟೀ ವೃತ್ತಿ. (4) ಎಲ್ಲಾ ರಸಗಳಲ್ಲೂ ಭಾರತೀವೃತ್ತಿ. "ಶೃಂಗಾರೇ ಕೇಶಿಕೀ ವೀರೇ ಸಾತ್ವತೀಯಾರಮಣೀ ಪುನಃ | ರಸೇ ರೌದ್ರೇ ಚ ಬಿಭತ್ಸೇ ವೃತ್ತಿಃ ಸರ್ವತ್ರ ಭಾರತೀ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೨೨ | 9. ವೇತನ, ಕೂಲಿ. 10. ಶಬ್ದದ ಅರ್ಥಬೋಧೆಗೆ ಕಾರಣವಾದ ಅಭಿಧಾದಿ ಮೂರು ಶಕ್ತಿಗಳು. (1) ಅಭಿಧಾ (2) ಲಕ್ಷಣಾ ಮತ್ತು (3) ವ್ಯಾಜನಾ ಇವು ಮೂರು ಶಕ್ತಿಗಳು. "ವಾಚ್ಯೋರ್ಯೋಽಭಿಧಯಾ ಬೋಧ್ಯೋ ಲಕ್ಷ್ಯೋ ಲಕ್ಷಣಯಾ ಮತಃ | ವ್ಯಾಜ್ಯೋ ವ್ಯಾಜನಯಾ ತಾಃ ಸ್ಯುಃ ತಿಸ್ರಃ ಶಬ್ದಸ್ಯ ಶಕ್ತಯಃ" ಸಾಂ ದಂ ೨-೩ | 11. ಚಿತ್ತದ ಒಂದು ಅವಸ್ಥೆ. "ಯೋಗಶ್ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿನಿರೋಧಃ" | 12. ಸುಶ್ರೀತಿರುಗುವುದು. 13. ಜೀವನಕ್ರಮ, ಜೀವನದ ಪದ್ಧತಿ. "ವಾರ್ಷಿಕೇ ಮುನಿ-ವೃತ್ತಿನಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೮ | 14. ಗೌರವದಿಂದ ವರ್ತಿಸುವುದು. "ಗುರೋರ್ಗುರೋ ಸನ್ನಿಹಿತೇ ಗುರುವೃತ್ತಿಃ ಚಾಚರೇತ್" ಮನುಂ ೨-೨೦೪ |

**ವೃತ್ತಿಕರ್ಪಿತ ವೃತ್ತಿ ಕರ್ಪಿತ** (ವಿಂ) ಜೀವನೋಪಾಯ ವಿಲ್ಲದೆ ಕಷ್ಟದಲ್ಲಿರುವವನು.

**ವೃತ್ತಿस्थ ವೃತ್ತಿ ಸ್ಥ** (ವಿಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆಯುಳ್ಳ ವನು. 2. ಸರಿಯಾದ ಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರುವವನು. 3. ಒಳ್ಳೆಯ ವಿಧೇಯನಾಗಿರುವವನು. ವೃತ್ತಿ ತಿಷ್ಠತಿ - ಷಾ (ಗತಿ-ನಿವೃತ್ತಿ) "ಕಃ" (೩-೨-೪) |

**ವೃತ್ಯ ವೃತ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ವರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಆಯ್ಕೆ ಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. 2. ವರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಆಯ್ಕೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ವೃತ್ (ವರಣ) "ಕಯಪ್" (೩-೧-೧೧೦) |

**ವೃತ್ರ ವೃತ್ರ** (ಪುಂ) 1. ವೃತ್ರಾಸುರ, ಒಬ್ಬ ದಾನವ. ಇವನು ತೃಷ್ಣಾವಿನಿಂದ ಇಂದ್ರನ ಸಂಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಒಬ್ಬ ಅಸುರ. ತೃಷ್ಣನು ಇಂದ್ರನಿಗೆ ಶತ್ರುವಾದ ಮಗ ನನ್ನು ಪಡೆಯುವ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ಮಾಡಿದ ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಮಂತ್ರದ ಸ್ವರವ್ಯತ್ಯಾಸದಿಂದ ಇಂದ್ರನೇ ಶತ್ರುವಾಗಿರುವ ಮಗನು (ವೃತ್ರನು) ಜನಿಸಿ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಇಂದ್ರನಿಂದ ಹೆತನಾದನು. 2. ರಿಪು, ಶತ್ರು. 3. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 4. ಅಂಧಕಾರ. 5. ಒಂದು ಪರ್ವತ. "ವೃತ್ರೋ ರಿಪೌ ಧನೇ ಖಾಂತೇ ಶೈಲಭೇದೇ ಚ ದಾನವೇ" ಮೇದಿಂ | 6. ಇಂದ್ರ. 7. ಶಬ್ದ. "ವೃತ್ರೋ ಮೇಘೇ ರಿಪೌ ಖಾಂತೇ ದಾನವೇ ವಾಸವೇ ಗಿರೌ" ಹೇಮಂ |

**ವೃತ್ರಶತ್ರು ವೃತ್ರ ಶತ್ರು** (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ವೃತ್ರಸ್ಯ ಶತ್ರುಃ | -ಅರಿಃ - ಅರಿಃ.

**ವೃತ್ರಹನ್ ವೃತ್ರಹನ್** (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ವೃತ್ರಂ ಹತವಾನ್ ವೃತ್ರ + ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೮೭) |

**ವೃಥಾ ವೃಥಾ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ವ್ಯರ್ಥವಾಗಿ, ನಿರ್ವರ್ಥವಾಗಿ. ವೃಣೋತಿ-ವೃತ್ (ವರಣ) "ಶಾಕ್" ಬಾಹುಂ | 2. ವ್ಯರ್ಥ, ನಿಷ್ಪ್ರಯೋಜನ. "ವೃಥಾ ವೃಷ್ಟಿಃ ಸಮುದ್ರಸ್ಯ ತೃಪ್ತಸ್ಯ ಭೋಜನಂ ವೃಥಾ | ವೃಥಾ ದಾನಂ ಸಮುದ್ರಸ್ಯ ನೀಚಸ್ಯ ಸುಕೃತಂ ವೃಥಾ" |

**ವೃಥಾಜನ್ಮನ್ ವೃಥಾಜನ್ಮನ್** (ನಂ) ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ ಜನ್ಮ, ನಿರ್ವರ್ಥವಾದ ಜನ್ಮ. ವೃಥಾ ನಿರರ್ಥಕಂ ಜನ್ಮ | (1) ಪುತ್ರಸಂತಾನವಿಲ್ಲದವನ ಜನ್ಮ. (2) ಯಾವಾಗಲೂ ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸದವನ ಜನ್ಮ. (3) ಯಾವಾಗಲೂ ಪರಾನ್ನವನ್ನು ಭುಜಿಸುವವನ ಜನ್ಮ ಮತ್ತು (4) ಇತರರಿಗೆ ಯಾವಾಗಲೂ ತೊಂದರೆಯುಂಟುಮಾಡುವವನ ಜನ್ಮ. ಈ ನಾಲ್ಕೂ ವೃಥಾ ಜನ್ಮಗಳು. "ಅಪುತ್ರಸ್ಯ ವೃಥಾ ಜನ್ಮ ಧರ್ಮಬಾಹ್ಯಾ ನರಾಃ ಸದಾ | ಪರಪಾಕಂ ಸದಾಶನಂತಿ ಪರತಾಪರತಾಶ್ಚ ಯೇ" |

**ವೃಥಾದಾನ ವೃಥಾದಾನ** (ನಂ) ವ್ಯರ್ಥವಾದ ದಾನ. ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲೂ ಒಳ್ಳೆಯ ಸೌಕರ್ಯಸಮ್ಮದ್ಧಿಯಿರುವವನಿಗೆ ಮಾಡುವ ದಾನವು ವ್ಯರ್ಥ. "ವೃಥಾ ವೃಷ್ಟಿಃ ಸಮುದ್ರಸ್ಯ ತೃಪ್ತಸ್ಯ ಭೋಜನಂ ವೃಥಾ | ವೃಥಾ ದಾನಂ ಸಮುದ್ರಸ್ಯ ನೀಚಸ್ಯ ಸುಕೃತಂ ವೃಥಾ" ಗರುಡಪುಂ |

**ವೃದ್ಧ ವೃದ್ಧ** (ಪುಂ) 1. ಮುದುಕ, ಪ್ರಾಯ ಕಳೆದು ಹೆಚ್ಚು ವಯಸ್ಸಾದವನು. ವೃದ್ಧ (ವೃದ್ಧಿ) "ವತಃ" (೩-೪-೭೨) | "ವೃದ್ಧಾಸ್ತೇ ನ ವಿಚಾರಣೀಯಚರಿತಾಃ ತಿಷ್ಠಂತು ಹಂ ವರತೇ" ತಂ ರಾಂ ೪-೩೪ | ವಯಸ್ಸಾದ ಮಾತ್ರದಿಂದ ಮುದುಕ ನಲ್ಲ. ಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿದವನು ವೃದ್ಧನು. "ನ ತೇನ ವೃದ್ಧೋ ಭವತಿ ಯೇನಾಸ್ಯ ಪಲಿತಂ ಶಿರಃ | ಯೋ ವೈ ಪುತ್ರಾಪ್ಯಪಿ ಯಾನಃ ತಂ ದೇವಾಃ ಸ್ಥವಿರಂ ವಿಧುಃ" ಮನುಂ ೨-೧೪೬ | 2. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. (ವಿಂ) 3. ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವ, ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿರುವ. 4. ದೊಡ್ಡದಾಗಿರುವ. 5. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವ. 6. ಪೂಜ್ಯ, ಗೌರವಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದವನು. "ವೃದ್ಧೋ ಜೀರ್ಣೇ ಪ್ರವೃದ್ಧೇ ಜ್ಞೇ ತ್ರಿಷು ಕಲಿಬಂ ತು ಶೈಲಜೇ" ಮೇದಿಂ | (ನಂ) 7. ಒಂದು ಸುವಾಸನೆಯ ಧೂಪ.

**ವೃದ್ಧಕಾಕ ವೃದ್ಧಕಾಕ** (ಪುಂ) ದೊಡ್ಡಜಾತಿಯ ಕಾಗೆ, ಹೊಲೆ ಕಾಗೆ. ವೃದ್ಧಃ ಕಾಕಃ |

**ವೃದ್ಧತ್ವ ವೃದ್ಧತ್ವ** (ನಂ) ಮುಪ್ಪು, ಮುದಿತನ. ವೃದ್ಧಸ್ಯ ಶಾಖಃ "ತ್ವಃ" (೪-೧-೧೧೯) | "ತಸ್ಯ ಧರ್ಮರತೇರಾಸೀ-ದೃಢತ್ವಂ ಜರಸಾ ವಿನಾ" ರಘುಂ ೧-೨೩ |

**ವೃದ್ಧವಾರಕ ವೃದ್ಧವಾರಕ** (ಪುಂ) ಅನಂತನ ಗೊಂಡೆ ಸೊಪ್ಪು. ವೃದ್ಧೋ ವಾರಕೋಽಸ್ಮಾತ್ |



ವೃದ್ಧವಾಚ ವೃದ್ಧವಾರು (ನಂ) ವೃದ್ಧವಾರಕಗಿಡ, ಅನಂತನ  
ಗೊಂಡೆಸೊಪ್ಪು. ವೃದ್ಧವನಾಶಕಂ ದಾರ ಯಸ್ಯ ।

ವೃದ್ಧನಾಭಿ ವೃದ್ಧನಾಭಿ (ವಿಂ) ಬುಡ್ಡೆಯಾಗಿ ಬೆಳೆದ  
ಹೊಕ್ಕುಳುಳ್ಳವನು, ಉಬ್ಬಿರುವ ಹೊಕ್ಕುಳುಳ್ಳವನು.  
ವೃದ್ಧ: ಪ್ರವೃದ್ಧೋ ನಾಭಿಯಸ್ಯ ।

ವೃದ್ಧಶವಸ್ ವೃದ್ಧಶ್ರವಸ್ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ವೃದ್ಧೇಶ್ವರ:  
ಶೃಣೋತಿ — ಶ್ರು (ಶ್ರವಣಂ) "ಅಸುನ್" (ತಂ ೪-೧೮೯) ।  
ವೃದ್ಧೇ ಶ್ರವಸೀ ಯಸ್ಯ ಇತಿ ವಾ ।

ವೃದ್ಧಾ ವೃದ್ಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುದುಕಿ, ಯೌವನ ಕಳೆದು ಐವತ್ತು  
ವಯಸ್ಸಿನ ಮೇಲೆ ಇರುವ ಹೆಂಗಸು. "ಬಾಲೇತಿ ಗೀಯತೆ  
ನಾರೀ ಯಾವದ್ವರ್ಷಾಣಿ ಷೋಡಶ । ತತಸ್ತು ತರುಣಿ ಜೇಯಾ ದ್ವಾತ್ರಿಶ-  
ತ್ವತ್ಸರಾವಧಿ । ತದ್ವರ್ಷಮಧಿರೂಢಾ ಸ್ಯಾತ್ ಪಂಚಾಶತ್ವತ್ಸರಾವಧಿ ।  
ವೃದ್ಧಾ ತತ್ಪರತೋ ಜೇಯಾ ಸುರತೋತ್ಸವವಜಿತಾ" ಭಾವಪ್ರಂ ।

ವೃದ್ಧಾಂಗುಲಿ ವೃದ್ಧಾಂಗುಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೈಕಾಲುಗಳ  
ಹೆಚ್ಚಿರಲುಗಳು.

ವೃದ್ಧಿ ವೃದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಚ್ಚುವುದು, ಅಧಿಕವಾಗುವುದು.  
ವೃಥು (ವೃದ್ಧಿ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) । "ವೃದ್ಧಿಸಂಕ್ಷೋ-  
ವಿಷಮಾ ಗತಾಗತಸಹಾಯಿನಿ । ನಿಯತಿ: ಕೇನ ಲಕ್ಷ್ಯತೇ  
ನಿಜಕ್ಷಾಯಾನುಕಾರಿಣಿ" ಯಾದಂ ೧೬-೧೨೨ । 2. ಬೆಳೆಯು-  
ವುದು. "ಜನ್ಮವೃದ್ಧಿಕ್ಷಯೇನಿತ್ಯಂ ಸಂಸಾರಯತಿ ಚಕ್ರವತ್"  
ಮನುಂ ೧೨-೧೨೪ । 3. ಸಮೃದ್ಧಿ, ಅಭ್ಯುದಯ, ಅಭಿ-  
ವೃದ್ಧಿ. "ಅಥ ತತ್ರ ಪಾಂಡುತನಯೇನ ಸದಸಿ ವಿಹಿತಂ ಮವುದ್ಧಿಷ: ।  
ಮಾನಮಸಹತ ನ ಚೇದಿಪತಿ: ಪರವೃದ್ಧಿಮತ್ಸರಿ ಮನೋ ಹಿ ಮಾನಿ-  
ನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೧ । 4. ವಿಷ್ಕಂಭ ಮೊದಲಾದ  
ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ ಹನ್ನೊಂದನೆಯ ಯೋಗ.  
5. ಬಡ್ಡಿ, ಸಾಲದ ಹಣದ ಮೇಲಿನ ಅಧಿಕಾಂಶ.  
["ಚಕ್ರವೃದ್ಧಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 6. (ಚಂದ್ರನ)  
ಕಲೆಯೇರುವುದು, ದಿನದಿನಕ್ಕೆ ಕಲೆಯು ಹೆಚ್ಚುವುದು.  
ಕಲೆಯು ಏರುತ್ತಿರುವಾಗ (ಚಂದ್ರನು) ವೃದ್ಧಿಚಂದ್ರ-  
ನಾಗುವನು. ಕ್ಷಯಹೊಂದುತ್ತಿರುವಾಗ ಕ್ಷೀಣಚಂದ್ರನಾಗು-  
ವನು. 7. ಬೆಳವಣಿಗೆ, ಹೆಚ್ಚುವುದು, ಅಧಿಕವಾಗುವುದು,  
ದೊಡ್ಡದಾಗುವುದು. 8. (ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಆ ಏ  
ಮತ್ತು ಔ ವರ್ಣಗಳಿಗೆ ಉಕ್ತವಾದ ಒಂದು ಸಂಜ್ಞೆ.  
"ವೃದ್ಧಿರಾದೇಚ್" ಪಾಂ ಸುಂ ೧-೧-೧ । 9. ಒಂದು ಔಷಧ.  
10. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. 11. ರಾಶಿ, ಗುಪ್ತೆ, ಸಮೂಹ.  
12. ಐಶ್ವರ್ಯ, ಸಂಪತ್ತು. "ಆಪತ್ಕಾಲೇ ತು ಸಂಪ್ರಾಪ್ತೇ  
ಯನ್ಮಿತ್ರಂ ಮಿತ್ರಮೇವ ತತ್ । ವೃದ್ಧಿಕಾಲೇ ತು ಸಂಪ್ರಾಪ್ತೇ ದುರ್ಜನೋಽಪಿ  
ಸುಹೃದ್ಭವೇತ್" ಪಞ್ಚತಂ ೨-೧೧೮ । 13. ಜನನಾಶಂಚಿ.

ಜ್ಞಾತಿಗಳಿಗೆ ಸಂತಾನೋತ್ಪತ್ತಿಯಾದಾಗ ವಿಹಿತವಾದ  
ಅಶುಚಿ. ಸಂತತಿಯು ವೃದ್ಧಿಯಾಗುವುದರಿಂದ ಅದಕ್ಕೆ  
"ವೃದ್ಧಿ" ಎಂದು ಹೆಸರು. 14. ಕಲ್ಲುಹೂವು.

ವೃದ್ಧಿಜೀವಿಕಾ ವೃದ್ಧಿಜೀವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಡ್ಡಿಯ ಹಣ  
ದಿಂದ ಜೀವಿಸುವುದು. ವೃದ್ಧಚಾ ಜೀವಿಕಾ ।

ವೃದ್ಧಿವ ವೃದ್ಧಿವ (ವಿಂ) ಬಡ್ಡಿಯನ್ನು ಕೊಡುವವನು.  
ವೃದ್ಧಿ ದದಾತಿ — ದಾನ್ (ದಾನಂ) "ಕ:" (೩-೨-೩) ।

ವೃದ್ಧಿಮತ್ ವೃದ್ಧಿಮತ್ (ವಿಂ) 1. ಸಮೃದ್ಧಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ,  
ಅಭಿವೃದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. ವೃದ್ಧಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪) ।  
2. ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ, ಧನಿಕ. 3. ಏಳಿಗೆ ಹೊಂದಿರುವ,  
ಉಜ್ವಾಲಯಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ.

ವೃದ್ಧಿಶ್ರಾದ್ಧ ವೃದ್ಧಿಶ್ರಾದ್ಧ (ನಂ) ಅಭ್ಯುದಯ ಶ್ರಾದ್ಧ,  
ಶುಭಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಪಿತೃಗಳ ಸಂತೃಪ್ತಿಗಾಗಿ ಮಾಡುವ  
ಒಂದು ಕಾರ್ಯ.

ವೃದ್ಧೋಕ್ತ ವೃದ್ಧೋಕ್ತ (ಪುಂ) ಮುದಿ ಎತ್ತು, ವಯಸ್ಸಾದ  
ವೃಷಭ. ತಕ್ಷಾ ವೃದ್ಧ: "ಅಚ್" (೪-೪-೭೭) । ನಿಪಾಂ ।

ವೃದ್ಧಚಾಜೀವ ವೃದ್ಧಚಾಜೀವ (ವಿಂ) ಬಡ್ಡಿಯ ಹಣದಿಂದ  
ಜೀವಿಸುವವನು, ಬಡ್ಡಿಯೇ ಜೀವನೋಪಾಯವಾಗಿರು-  
ವವನು. ವೃದ್ಧಚಾ ಆಜೀವತಿ — ಆ + ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣಂ)  
"ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । ವೃದ್ಧಿರಾಜೀವೋ ಜೀವಿಕಾ ಯಸ್ಯ ।

ವೃದ್ಧಸಾನ ವೃದ್ಧಸಾನ (ಪುಂ) ಮನುಷ್ಯ. ವೃಥು (ವೃದ್ಧಿ)  
"ಅಸಾನಚ್" (ತಂ ೨-೮೭) ।

ವೃದ್ಧಸಾನು ವೃದ್ಧಸಾನು (ಪುಂ) 1. ಮನುಷ್ಯ. 2. ಪತ್ರ,  
ಎಲೆ. 3. ಕೃತಿ, ಕಾರ್ಯ.

ವೃದ್ಧ್ಯ ವೃದ್ಧ್ಯ (ವಿಂ) ಅಭಿವೃದ್ಧಿಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ವೃಥು (ವೃದ್ಧಿ)  
"ಕೃಪ್" (೩-೧-೧೧೦) ।

ವೃದ್ಧ್ಯಂತ ವೃದ್ಧ್ಯಂತ (ಪುಂ) 1. ಹಣ್ಣು ಕಾಯಿ ಎಲೆ ಮೊದಲಾದುವು  
ಗಳ ತೊಟ್ಟು. —ಕಾವು. ವೃಣೋತಿ — ವೃನ್ (ವರಣಂ)  
"ಕ್ತ:" (ತಂ ೩-೮೯) ನುಮ್ಚ । ಬಾಹುಂ । "ವೃದ್ಧಾತ್  
ಶಲಥಂ ಹರತಿ ಪುಷ್ಪಮನೋಹಾನಾಮ್" ರಘುಂ ೪-೬೯ ।  
2. ಸ್ತನದ ಅಗ್ರಭಾಗ, ಕುಚದ ತುದಿ. "ವೃದ್ಧಾತ್ ಸ್ತನಮುಖೇ  
ಪುಷ್ಪವನ್ಧೇ" ಹೇಮಂ ।

ವೃದ್ಧಾಕ ವೃದ್ಧಾಕ (ಪುಂ) ಬದನೆ ಗಿಡ.

ವೃದ್ಧಾಕೀ ವೃದ್ಧಾಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬದನೆ ಗಿಡ.

ವೃದ್ಧಿಕಾ ವೃದ್ಧಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣ್ಣ ತೊಟ್ಟು, ಸಣ್ಣ ಕಾವು.

ವೃದ್ಧ ವೃದ್ಧ (ನಂ) 1. ಸಮೂಹ; ಗುಂಪು. ವೃನ್ (ವರಣಂ)  
"ದನ್" (ತಂ ೪-೯೮) । ನುಮಾಗಮ: ಗುಣಾಭಾವಶ್ಚ ನಿಪಾಂ ।  
"ಮಂದಾರಪ್ರಮುಖಸ್ಯ ವೃದ್ಧಾರಕತವೃದ್ಧಸ್ಯ" ಚಂ ರಾಂ ।



(ಪುಂ) 2. ಶತಕೋಟಿ ಸಂಖ್ಯೆ, ನೂರುಕೋಟಿ, ಮಹಾ ಬುಧ, 1000000000.

**ವೃಂದಾ ವೃಂದಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಲನೇಮಿಯೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನ ಮಗಳು, ಜಲಂಧರರಾಕ್ಷಸನ ಹೆಂಡತಿ. 2. ಪರಮ ಭಾಗವತನಾದ ಕೇದಾರರಾಜನ ಮಗಳು. ಇವಳು ಲಕ್ಷ್ಮಿಯ ಅಂಶದಿಂದ ಜನಿಸಿ ದುರ್ವಾಸಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ವಿಷ್ಣು ಮಂತ್ರವನ್ನು ಪಡೆದು ಬಹಳ ವಿರಕ್ತಳಾಗಿ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಅರವತ್ತುಸಹಸ್ರ ವರ್ಷಗಳಕಾಲ ತಪಸ್ಸನ್ನಾಚರಿಸಿ ಪ್ರಸನ್ನನಾದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನೇ ತನಗೆ ಪತಿಯಾಗಬೇಕೆಂಬ ವರವನ್ನು ಕೇಳಿದಳು. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಅವಳ ಅಪೇಕ್ಷೆಯಂತೆ ಬಹಳಕಾಲ ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಅವಳೊಡನೆ ಸುಖವಾಗಿದ್ದನು. ಅವಳಿದ್ದ ವನಕ್ಕೆ "ವೃಂದಾವನ" ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು.

**ವೃಂದಾರ ವೃಂದಾರ** (ವಿಂ) 1. ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋಹರ ವಾದ. 2. ಉತ್ತಮವಾದ. 3. ದೊಡ್ಡದಾದ, ಉದ್ದ ವಾದ.

**ವೃಂದಾರಕ ವೃಂದಾರಕ** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. ವೃಂದ "ಆರಕನ್" (ವಾಂ ೪-೨-೧೨೨)। "ಮಂದಾರಪ್ರಮುಖಸ್ಯ ವೃಂದಾರಕತರ- ವೃಂದಸ್ಯ" ಚಂ ರಾಂ। 2. ಗುಂಪಿನ ಯಜಮಾನ. (ವಿಂ) 3. ಮನೋಹರವಾದ. 4. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. 5. ದೊಡ್ಡ ದಾದ. "ವೃಂದಾರಕೋ ಮನೋರಮೇ। ಸುರೇ ಶ್ರೇಷ್ಠೇ" ಹೇಮಂ।

**ವೃಂದಾವನ ವೃಂದಾವನ** (ನಂ) 1. ನಂದಗೋಕುಲದ ಸಮೀಪದ ಒಂದು ದೊಡ್ಡ ವನ. ಪೂತನಾ ಶಕಟಾಸುರ ತೃಣಾವರ್ತಾದಿ ರಾಕ್ಷಸರಿಂದ ಉಂಟಾದ ಭಯೋತ್ಪಾದಕ ಕೃತ್ಯಗಳಿಂದ ದೊಡ್ಡ ಉತ್ಪಾತವನ್ನು ಶಂಕಿಸಿದ ಸಕಲ ಯಾದವರೊಡನೆ ಗೋಕುಲವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ನಂದಗೋಪನು ಶ್ರೀರಾಮಕೃಷ್ಣರೊಡಗೂಡಿ ಒಂದು ವಾಸಮಾಡಿದ ವನವಿದು. "ಯಾವದೌತ್ಪಾತಿಕೋಽರಿಷ್ಟೋ ವ್ರಜಂ ನಾಭಿಮವೇದಿತಃ। ತಾವದ್ವಾಲಾನುಪಾದಾಯ ಯಾಸ್ಯಾಮೋಽನ್ಯತ್ರ ಸಾನುಗಾಃ। ವನಂ ವೃಂದಾವನಂ ನಾಮ ಪಶಯ್ಯಂ ನವಕಾನನಮ್। ಗೋಪಗೋಪಿಗವಾಂ ಸೇವ್ಯಂ ಪುಷ್ಪಾದ್ರಿತೃಣವೀರಧಮ್। ತತತ್ರಾಶ್ವೇವ ಯಾಸ್ಯಾಮಃ ಶಕಟಾನ್ ಯುಕ್ತಾನ್ ಮಾಚಿರಮ್। ತಚ್ಚಕ್ಷುತ್ವೈಕಧಿಯೋ ಗೋಪಾ ಸಾಧು ಸಾಧಿವತಿ ವಾದಿನಃ। ವ್ರಜಾನ್ ಸ್ವಾನ್ ಸ್ವಾನ್ ಸಮಾಯುಜ್ಯ ಯಯ್ ರೂಪರಿಚ್ಛದಾಃ। . . . . . ಗೋಪ್ಯೋ ರೂಪರಥಾ ನೂತ್ನ ಕುಚಕುಡ್ಕುಮಕಾಂತಯಃ। ಕೃಷ್ಣಾಲೀಲಾ ಜಗುಃ ಪ್ರೀತಾ ನಿಷ್ಕಕಂಠಯಃ ಸುವಾಸಸಃ। ತಥಾ ಯಶೋದಾರೋಹಿಷ್ಯಾವೇಕಂ ಶಕಟಮಾಸ್ಥಿತೇ। ರೇಜತುಃ ರಾಮಕೃಷ್ಣಾಭ್ಯಾಂ ತತ್ಕಥಾಶ್ರವಣೋ- ತ್ಸುಕೇ। ವೃಂದಾವನಂ ಸಂಪ್ರವಿಶ್ವ ಸರ್ವಕಾಲಸುಖಾವಹಮ್। ತತ್ರ ಚಕ್ರವರ್ತಿಜಾಸಂ ಶಕಟೇರ್ದರ್ಶನವತ್" ಭಾಗಂ ೧೦-೧೧।

2. ತುಲಸೀಸಸ್ಯವನ್ನು ನೆಟ್ಟು ಬೆಳೆಸಲು ಸುತ್ತಲೂ ಕಟ್ಟಿ ಕಟ್ಟಿದ ಒಂದು ಮಣ್ಣಿನ ದಿಣ್ಣೆ.

**ವೃಂದಾವನಾಂತಸಂಚಾರಿನ್ ವೃಂದಾವನಾಂತಸಂಚಾರಿನ್** (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. "ವೃಂದಾವನಾಂತಸಂಚಾರಿ ತುಲಸೀದಾಮ- ಭೂಷಣಃ"।

**ವೃಂದಾವನೇಶ್ವರ ವೃಂದಾವನೇಶ್ವರ** (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ.

**ವೃಂದಾವನೇಶ್ವರೀ ವೃಂದಾವನೇಶ್ವರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾಧಾದೇವಿ.

**ವೃಂದಿಠ ವೃಂದಿಷ್ಠ** (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ದೊಡ್ಡದಾದ, ಬಹಳ ಹಿರಿದಾದ. 2. ಬಹಳ ಸುಂದರವಾದ. 3. ಬಹಳ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಬಹಳ ಮಂದಿಯಲ್ಲಿ ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ಒಬ್ಬ. ಅಯಮೇಷಾಮತಿಶಯೇನ ವೃಂದಾರಕಃ "ಛಂ" (೬-೪-೧೫೭)। ವೃಂದಾರಕಸ್ಯ ವೃಂದಾದೇಶಶ್ಚ ನಿಪಾತ್ಯತೇ। "ವೃಂದಿಠಮಾರ್ಚಿ- ಛಮುಧಾಧಿಪಾನಾಂ ತಂ ಪ್ರೇಷಮೇತಂ ಗುರುವದ್ಗರಿಠಮ್" ಭಟ್ಟಿಂ ೨-೪೫।

**ವೃಂದೀಯಸ್ ವೃಂದೀಯಸ್** (ವಿಂ) 1. ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ಅತಿಶಯವಾಗಿ ಶ್ರೇಷ್ಠನು. ಅಯಮನಯೋರತಿಶಯೇನ ವೃಂದಾರಕಃ —"ಇಯಸುನ್" (೫-೩-೫೭)। ವೃಂದಾದೇಶಶ್ಚ ನಿಪಾಂ। 2. ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಬಹಳ ಸುಂದರನಾದವನೊಬ್ಬ.

**ವೃಣ ವೃಣ** (ಪುಂ) 1. ಅದ್ವೈತ, ಹಸಿರುಂಟಿ. ವೃನ್ (ವರಣ) "ಶಕ್" (೩ಂ ೪-೧೦೪)। 2. ಮೂಲಂಗಿ. "ವೃಣ ಆದ್ರಕಂ ಮೂಲಕಂ ಚ" ಸಿಂ ಕೌಂ।

**ವೃಶ್ಚಿಕ ವೃಶ್ಚಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಚೀಳು. ವ್ರಶ್ಚ (ಛೇದನೆ) "ಕಿಕನ್" (೩ಂ ೨-೪೦)। "ಕಪಿರಪಿ ಚ ಕಾಪಿ- ಶಾಯನಮದಮತಃ ವೃಶ್ಚಿಕೇನ ಸಂದೃಷ್ಟಃ। ಅಪಿ ಚ ಪಿಶಾಚಗ್ರಸ್ತಃ ಕಿಂ ಬ್ರೂಮೋ ವೈಕೃತಂ ತಸ್ಯ"। 2. ಏಡಿ, ನಳ್ಳಿ. 3. ಜರಿ, ಸಾವಿರಕಾಲು. 4. ಕಂಬಳಿಹುಳ. 5. ವೃಶ್ಚಿಕಮಾಸ. 6. ವೃಶ್ಚಿಕರಾಶಿ, ಮೇಷಾದಿ ಎಂಟನೆಯ ರಾಶಿ ಮತ್ತು ಲಗ್ನ. ವಿಶಾಖಾನಕ್ಷತ್ರದ 4ನೇ ಪಾದ ಅನೂರಾಧಾ ಮತ್ತು ಜ್ಯೇಷ್ಠಾನಕ್ಷತ್ರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದುದು ವೃಶ್ಚಿಕರಾಶಿ.

**ವೃಷ ವೃಷ** (ಪುಂ) 1. ವೃಷಭ. ಎತ್ತು. ವರ್ಷತಿ — ವೃಷ (ಸೇವನೆ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೬)। "ಕೇಲಾಸಗೌರಂ ವೃಷಮಾ- ರುಹೋಃ ಪಾದಾರ್ಪಣಾನುಗ್ರಹಪೂತಪೃಷ್ಠಮ್" ರಘುಂ ೨-೩೫। **ಒಳ್ಳೆಯ ಜಾತಿಯ ವೃಷಭದ ಲಕ್ಷಣ** : ಎದೆ ಬೆನ್ನು ತಲೆ ಹೊಟ್ಟೆ ಪಿರೆಗಳು ಇವು ಆರೂ ಪುಷ್ಪವಾಗಿ ಉಬ್ಬಿ ರುವ ವೃಷಭವು ಶ್ರೇಷ್ಠಜಾತಿಯದು. "ತರಃ ಪೃಷ್ಠಂ ಶಿರಃ ಕುಕ್ಷಿಃ ಶ್ರೋಣಿ ಚ ವಸುಧಾಧಿಪಃ। ಪಶುಘನತಾನಿ ಧೇನುನಾಂ ಪೂಜಯಂತಿ ವಿಚಕ್ಷಣಾಃ" ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ। 2. ಪತಿ, ಗಂಡ. "ಸ್ವವೃಷಂ ಯಾ ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ ಪರವೃಷೇ ವೃಷಾಯತೇ" ಕಾಶೀಖಂ।



3. ಧರ್ಮ. 4. ವೃಷಭರಾಶಿ ಮತ್ತು ವೃಷಭಲಗ್ನ. 5. ಮೂಷಿಕ, ಇಲಿ. 6. ಮನ್ಮಥ. 7. ಕಾಮಾಸಕ್ತ. ಪುರುಷ. 8. ಅಡುಸೋಗ. 9. ಒಂದು ವಾಸ್ತು. ಸ್ಥಾನ. 10. ಶತ್ರು. (ವಿಂ) 11. (ಸಮಸ್ತ ಪದಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ) ಶ್ರೇಷ್ಠ. 12. ಬಲಶಾಲಿ. 13. ವೀರ್ಯದ, ಜೀವಾಂಕುರದ. "ವೃಷೋ ಗವ್ಯಾಸ್ತುಧರ್ಮಯೋಃ | ಪುರಾಶಿಮೇದಯೋಃ | ಸ್ತುತ್ಯಾಂ ವಾಸಕೇ ಶುಕ್ರಲೇಪಿ ಚ | ಶ್ರೇಷ್ಠೇ ಸ್ಯಾದುತ್ತರಸ್ಥಶ್ಚ" ಹೇಮಂ |

**ವೃಷಕರ್ಮನ್ ವೃಷಕರ್ಮನ್** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ವೃಷ ತಾಪತ್ರಯನಿರ್ವಾಪಣಸುಧಾಸೇಕಶೀತಲ ಕರ್ಮ ಯಸ್ಯ | "ಶ್ರೇಯಸ್ಕರಂ ಧರ್ಮರೂಪಂ ಕರ್ಮ ಯಸ್ಯ ಪ್ರಚಕ್ಷತೇ | ವೃಷಕರ್ಮೇತಿ ವಿಖ್ಯಾತಃ | ಶುಭಕರ್ಮಪ್ರದೋ ಮನುಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | "ವೃಷಕರ್ಮಿ ವೃಷಾಕೃತಿಃ" ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡುವವನು.

**ವೃಷಣ ವೃಷಣ** (ಪುಂ) 1. ಅಂಡಕೋಶ, ಬೀಜ. ವರ್ಷತಿ—ವೃಷ (ಸೇವನೆ) "ಕೃತುಃ" ಬಾಹುಂ | "ಕೃತ್" (ಉಂ ೨-೪೮) ವಾ | (ವಿಂ) 2. ಚಿಮುಕಿಸುವ, ಸಿಂಪಡಿಸುವ.

**ವೃಷಣಶ್ಚ ವೃಷಣಶ್ಚ** (ಪುಂ) ಇಂದ್ರನ ಕುದುರೆ.

**ವೃಷದಂಶಕ ವೃಷದಂಶಕ** (ಪುಂ) ಬಿಡಾಲ, ಬೆಕ್ಕು.

**ವೃಷಧ್ವಜ ವೃಷಧ್ವಜ** (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ವೃಷೋ ಧ್ವಜೋ ಯಸ್ಯ | "ಜಟಾಭಿಃ ಸ್ನಿಗ್ಧತಾ ಸ್ತ್ರಾಭಿರಾವಿರಾಸೀ-ದೃಷಧ್ವಜಃ" ಕಾವ್ಯಾಂ ೨-೧೨ | 2. ಗಣಪತಿ.

**ವೃಷನ್ ವೃಷನ್** (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ, ದೇವೇಂದ್ರ. ವರ್ಷತಿ—ವೃಷ (ಸೇವನೆ) "ಕನಿನ್" (ಉಂ ೧-೧೪೪) | "ಪ್ರಾಜಾ-ಪತ್ಯೋಪನೀತಂ ತದತ್ರಂ ಪ್ರತ್ಯಗ್ರಹೀತ್ವಾಃ | ವೃಷೇವ ಪಯಸಾಂ ಸಾರ-ಮಾವಿಷ್ಕೃತಮುದನ್ವತಾ" ರಘುಂ ೧೦-೪೨ | 2. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. 3. ಕರ್ಣ. 4. ವೇದನೆಯು ತಿಳಿಯದಿರುವಿಕೆ. 5. ನೋವು. 6. ಅಗ್ನಿ. 7. ತುರಗ, ಕುದುರೆ. "ವೃಷಾ ತು ವಾಸವೇ | ವೃಷಭೇ ತುರಗೇ ಪುಸಿ" ಹೇಮಂ | "ವೃಷಾ ಕರ್ಣ-ಮಹೇಂದ್ರಯೋಃ" ವಿಶ್ವಂ | 8. ಮನುಷ್ಯ. (ವಿಂ) 9. ಮುಖ್ಯ, ಯಜಮಾನ, ಪ್ರಧಾನ. "ಪ್ರಾಚೇತಸೋ ಮುನಿವೃಷಾ ಪ್ರಥಮಃ ಕವೀನಾಮ್" ಮಂ ವೀಂ ೧-೭ |

**ವೃಷಪರ್ವನ್ ವೃಷಪರ್ವನ್** (ಪುಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. 2. ಒಬ್ಬ ದೈತ್ಯ. ಇವನು ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರ ಬಲದಿಂದ ದೇವತೆಗಳೊಡನೆ ಬಹಳಕಾಲ ಯುದ್ಧಮಾಡಿದನು. ಇವನ ಮಗಳಾದ ಶರ್ಮಿಷ್ಠೆಯನ್ನು ಯಯಾತಿ ರಾಜನು ಮದುವೆಯಾಗಿದ್ದನು. 3. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ವೃಷಾಃ ವರ್ಣಾಶ್ರಮಧರ್ಮಾಃ ಪರ್ವಾಣಿ ಆರೋಹಣಸೋಪಾನಪರ್ವಾಣಿ

ಅಸ್ಯ | "ವೃಷಾ ವರ್ಣಾಶ್ರಮಾ ಧರ್ಮಾಃ ಪರ್ವಾಣಿರೋಹಣೇ ತು ತೇ | ಯಸ್ಯ ಸಂತಿ ಸದಾ ಸೌಖ್ಯಂ ವೃಷಪರ್ವಾ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | "ವೃಷಾಹಿ ವೃಷಭೋ ವಿಷ್ಣುಃ | ವೃಷಪರ್ವಾ ವೃಷೋದರಃ" ವಿಂ ಸಂ |

**ವೃಷಭ ವೃಷಭ** (ಪುಂ) 1. ಎತ್ತು. ವೃಷ (ಸೇವನೆ) "ಅಭಚ್" (ಉಂ ೩-೧೨೪) | 2. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ವೃಷ (ಸೇವನೆ) "ಅಭಚ್" (ಉಂ ೩-೧೨೪) | ಅಭಿಗಚ್ಛತೋ ಭವದಗ್ಧಾನ್ ಸಿಂಚತಿ ಇತ್ಯರ್ಥಃ | "ಅಭಿಗಚ್ಛದ್ಭಕ್ತಜನಾನ್ ಸುಧಾವರ್ಷಣತೋಽನ್ವಹಮ್ | ವೃಷಭಶ್ಚ ಸಮಾಖ್ಯಾತಃ | ಸಿಂಚನ್ ಭಯಹರೋ ಮನುಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | "ವೃಷಾಹಿ ವೃಷಭೋ ವಿಷ್ಣುಃ" ವಿಂ ಸಂ | 3. ಹೆರಿಗೆಹಾಲೆಯೆಂಬ ಒಂದು ಮೂಲಿಕೆ. 4. ವೃಷಭರಾಶಿ ಮತ್ತು ಲಗ್ನ. 5. ನಾಲ್ಕು ಜಾತಿಯ ಪುರುಷರಲ್ಲೊಬ್ಬ. ನಾಲ್ಕು ಜಾತಿಯ ಪುರುಷರುಃ (1) ಶಶಕಃ (2) ಮೃಗಃ (3) ವೃಷಭಃ ಮತ್ತು (4) ಹಯಃ | ಪದ್ಮಿನೀ ಚಿತ್ರೀಣೀ ಶಂಖಿನೀ ಮತ್ತು ಹಸ್ತಿನೀ ಎಂಬ ನಾಲ್ಕು ಜಾತಿಯ ಸ್ತ್ರೀಯರು ಕ್ರಮವಾಗಿ ಈ ನಾಲ್ಕು ಜಾತಿಯ ಪುರುಷರಿಂದ ತೃಪ್ತಿ ಹೊಂದುವರು. "ಶಶಕೇ ಪದ್ಮಿನೀ ತುಷ್ಟಾ ಚಿತ್ರೀಣಿ ರಮತೇ ಮೃಗಮ್ | ವೃಷಭೇ ಶಕ್ಷಿನೀ ತುಷ್ಟಾ ಹಸ್ತಿನೀ ರಮತೇ ಹಯಮ್" ರತಿಮಂಜರೀ | (ವಿಂ) 6. ಶ್ರೇಷ್ಠ. "ಜಿತಮುಡುಪತಿನಾ ನಮಃ | ಸುರೇಮ್ಯೋ ದ್ವಿಜವೃಷಭಾ ನಿರೂಪದ್ರವಾ ಭವಂತು" ರತ್ನಾಂ ೧-೪ |

**ವೃಷಭಗತಿ ವೃಷಭಗತಿ** (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ. ವೃಷಭೇಣ ಗತಿಯಸ್ಯ |

**ವೃಷಭಧ್ವಜ ವೃಷಭಧ್ವಜ** (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಶಿವ. ವೃಷಭಃ ಧ್ವಜಃ ವಿಹ್ನುಃ ಯಸ್ಯ | "ಅಮಂ ಪುರಃ ಪಶ್ಯಸಿ ದೇವದಾರಂ ಪಾತ್ರಿಕೃತೋಽಸೌ ವೃಷಭಧ್ವಜೇನ" ರಘುಂ ೨-೩೬ |

**ವೃಷಭಾಸಾ ವೃಷಭಾಸಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಮರಾವತಿ, ಇಂದ್ರನ ನಗರ. ವೃಷೇಣ ಧರ್ಮೇಣ ಭಾಸತೇ | "ವೃಷಭಾಸಾ ಸುರಪುರಿ ವನಮೇಂದ್ರಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ವೃಷಯ ವೃಷಯ** (ಪುಂ) ಆಶ್ರಯ, ಅವಲಂಬನ. ವೃಷ (ವರಣ) "ಕಯನ್" (ಉಂ ೩-೧೦೦) | ವಿಷಯಃ ಆಶ್ರಯಃ ಸಿಂ ಕೌಂ |

**ವೃಷಲ ವೃಷಲ** (ಪುಂ) 1. ಲಠಿನ, ಬೆಕ್ಕುಳ್ಳಿ. ವೃಷ (ಸೇವನೆ) "ಕಲಚ್" (ಉಂ ೧-೧೦೬) | 2. ನಾಲ್ಕನೆಯ ವರ್ಣದವನು. ವೃಷ ಧರ್ಮ ಲಾತಿ — ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | 3. ಚಂದ್ರಗುಪ್ತರಾಜ. "ಭವದ್ವಿರೇವ ಮದಂತರೇಣ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹ್ಯ ರೋಷಿತೋ ವೃಷಲಃ" ಮುದ್ರಾಂ ೩ | 4. ಕರ್ತವ್ಯ ಭ್ರಷ್ಟನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. 5. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. "ವೃಷಲಸ್ತುರಗೇ ಶೂದ್ರೇ" ಹೇಮಂ |



ವೃಷಲಿ ವೃಷಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶೂದ್ರಸ್ತ್ರೀ, ಶೂದ್ರನ ಪತ್ನಿ. ವೃಷಲಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ — “ಛೀಪ್” (೪-೧-೪೮) । 2. ವಿವಾಹವಾಗದೆ ಋತುಮತಿಯಾಗಿ ತಂದೆಯ ಮನೆ ಯಲ್ಲಿರುವ ಕನ್ಯೆ. “ಪಿತುರ್ಗೃಹೇ ಚ ಯಾ ಕನ್ಯಾ ರಜಃ ಪಶ್ಯ-  
ತ್ಯಸಂಸ್ಕೃತಾ । ಭ್ರೂಣಹತ್ಯಾ ಪಿತುಸ್ತಸ್ಯಾಃ ಸಾ ಕನ್ಯಾ ವೃಷಲಿ ಸ್ಮೃತಾ” । 3. ತನ್ನ ಪತಿಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಪರಪುರುಷನನ್ನು ಸೇರಿರುವ ಹೆಂಗಸು. “ಸ್ವವೃಷಂ ಯಾ ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ ಪರವೃಷೇ ವೃಷಾಯತೇ । ವೃಷಲಿ ಸಾ ಹಿ ವಿಜ್ಞೇಯಾ ನ ಶೂದ್ರೀ ವೃಷಲಿ ಭವೇತ್” ಕಾಶೀಖಂ । 4. ರಜಸ್ವಲೆಯಾದ ಹೆಂಗಸು.

ವೃಷಲಿಪತಿ ವೃಷಲೀಪತಿ (ಪುಂ) ಶೂದ್ರಸ್ತ್ರೀಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. “ಯಸ್ತು ತಾಂ ವರಯೇತ್ಕನ್ಯಾಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ಜ್ಞಾನದುರ್ಬಲಃ । ಅಶ್ರಾದ್ಧೇಯಮಪಾಙ್ಕತೇಯಂ ತಂ ವಿಚ್ಛಾ-  
ದ್ವೃಷಲಿಪತಿಮ್” ।

ವೃಷಲೋಚನ ವೃಷಲೋಚನ (ಪುಂ) ಮೂಷಿಕ, ಇಲಿ. ವೃಷಸ್ಯ ಲೋಚನ ಇವ ಲೋಚನೇ यस್ಯ ।

ವೃಷವಾಹನ ವೃಷವಾಹನ (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ. ವೃಷೋ ವಾಹನಮಸ್ಯ ।

ವೃಷಸ್ಕಂಧ ವೃಷಸ್ಕಂಧ (ವಿಂ) ವೃಷಭದಂತೆ ಉಬ್ಬಿದ ಹೆಗಲುಳ್ಳವನು. ವೃಷಸ್ಯ ವೃಷಭಸ್ಯ ಸ್ಕಂಧ ಇವ ಸ್ಕಂಧೋ ಯಸ್ಯ । “ವ್ಯೂಹೋರಸ್ಕೋ ವೃಷಸ್ಕಂಧಃ ಸಾಲಪ್ರಾಂಶುಮಹಾಭುಜಃ” ರಘುಂ ೧-೧೩ ।

ವೃಷಸ್ಯಂತಿ ವೃಷಸ್ಯಂತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಮೇಶ್ವರಿಯುಳ್ಳವಳು, ರತಿಗಾಗಿ ಪುರುಷನನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವಳು. ವೃಷಮಾತ್ಮನಃ ಇಚ್ಛತಿ — “ಕೃಚ್” (೩-೧-೮) । ಅಸುಗಾಗಮಃ (೭-೧-೫೧) । ಲಡಿ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । “ಛೀಪ್” (೪-೧-೬) । “ಲಕ್ಷ್ಮಣಂ ಸಾ ವೃಷಸ್ಯಂತೀ ಮಹೋಕ್ಷಂ ಗೌರಿವಾಽ-  
ಗಮತ್” ಮಡಿಂ ೪-೩೦ ।

ವೃಷಾ ವೃಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಲಿಯಾಲದ ಗಿಡ. ವರ್ಷತಿ — ವೃಷು (ಸೆವನೆ) “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೫) ।

ವೃಷಾಕಪಾಯಿ ವೃಷಾಕಪಾಯೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. 2. ಗೌರಿ, ಪಾರ್ವತಿ. ವೃಷಾಕಪೇಸ್ತ್ರೀ — ಏಕಾರಾಧೇಶಃ “ಛೀಪ್” ಚ (೪-೧-೩೭) । “ವೃಷಾಕಪಾಯಿ ಶ್ರೀಗೌರಿಯೋಃ” ಅಮಂ । 3. ಸ್ವಾಹಾದೇವಿ. 4. ಶರಾದೇವಿ. 5. ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ ಸಂಜ್ಞಾದೇವಿ. 6. ಶತಾವರಿಗಿಡ. 7. ಸೀಹಾಲಿಗಿಡ. “ವೃಷಾಕಪಾಯಿ ಶ್ರೀಗೌರಿವರೀಜಿವಂತಿಕಾಸು ಚ” ಮೆದಿಂ ।

ವೃಷಾಕಪಿ ವೃಷಾಕಪಿ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ವೃಷಂ ಧರ್ಮಂ ನ ಕಂಪಯತಿ — ಕಪಿ (ಕಿಂಚಿವ್ವಚಲನೆ) + ಣಿಚ್ “ಛೀ” (೩-೧-೪೩) । ವೃಷೋ ಧರ್ಮಃ ತದ್ಭಾಷಾಸೌ ಕಪಿಶ್ಚ

ಶ್ರೇಷ್ಠವರಾಹಃ ಇತಿ ವಾ । “ಕಪಿರ್ವರಾಹಶ್ರೇಷ್ಠಶ್ಚ ಧರ್ಮಶ್ಚ ವೃಷ ಉಚ್ಯತೇ । ತಸ್ಮಾದ್ ವೃಷಾಕಪಿಃ ಪ್ರೋಕ್ತೋ ವಸ್ವರ್ಣೋಽಭೀಷ್ಟದೋ ಮನುಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । “ವೃಷಾಕಪಿರಮೇಯಾತ್ಮಾ” ವಿಂ ಸಂ । 2. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ವೃಷೋ ಧರ್ಮಃ ವೃಷಾ ಇಂದ್ರೋ ವಾ ಕಪಿರಿವ ವಶೇ ಯಸ್ಯ ಇತಿ ವಾ । ವೃಷಣಃ ಇಂದ್ರಸ್ಯ ಅಕಂ ವೃಷಾಕಂ ಪಿಪಯತಿ — ಪಿ (ಗತೌ) ಅಂತರ್ಮಾವಿವಿಶ್ಯಯೋ ವಾ । ಇಂದ್ರದುಃಖಂ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ ಪ್ರಾಪಯತಿ ವಾ ದೈತ್ಯಾನ್ ರಕ್ಷಕತ್ವಾತ್ ಇತಿ ವಾ । ವರ್ಷತಿ ಕಾಮಾನ್ — ವೃಷು “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೫) । ಆಕಂಪಯತಿ ಪಾಪಾನ್ — ಕಪಿ “ಛೀ” । ವೃಷಾಶಾಸಾವಾ-  
ಕಪಿಶ್ಚ ಇತಿ ವಾ । 3. ಅಗ್ನಿ. 4. ಇಂದ್ರ. 5. ಸೂರ್ಯ. “ವೃಷಾಕಪಿಃ ಪುಮಾನ್ ಕೃಷ್ಣೋ ಶಕ್ವರೇ ಜಾತವೇದಸಿ” ಮೆದಿಂ ।

ವೃಷಾಕೃತಿ ವೃಷಾಕೃತಿ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ವೃಷಾ ಧರ್ಮರೂಪಾ ಆಕೃತಿಃ ಆಕಾರೋಽಸ್ಯ । “ಧರ್ಮರೂಪಾಕೃತೀರಸ್ಯ ಸ ವೃಷಾಕೃತಿರೂಚ್ಯತೇ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । “ವೃಷಕರ್ಮಾ ವೃಷಾಕೃತಿಃ” ವಿಂ ಸಂ ।

ವೃಷಾಕ್ಷ ವೃಷಾಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರ. ವೃಷೋಽಕ್ಷೋಽಸ್ಯ । “ಪೀತೇ ಗರೇ ವೃಷಾಕ್ಷೇಣ ಪ್ರೀತಾಸ್ತೇಽಮರದಾನವಾಃ” ಭಾಗಂ ೮-೮-೧ । 2. ಸಾಧು, ಸತ್ಪುರುಷ. 3. ಗೇರುಮರ. 4. ಪಂಡ, ನಪುಂಸಕ. “ವೃಷಾಕ್ಷೋ ಶಿವಸಜ್ಜನೋ” ನಾನಾರ್ಥಂ । “ವೃಷಾಕ್ಷೋ ಶಿವಮಲ್ಲಾತೌ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 5. ದೊಡ್ಡ ಎತ್ತು, ದೊಡ್ಡ ವೃಷಭ. “ವೃಷಾಕ್ಷಃ ಶಕ್ವರೇ ಸಾಧೌ ಮಲ್ಲಾತಕಮಹೋಕ್ಷಯೋಃ” ವಿಷ್ವಂ ।

ವೃಷಾಕ್ಷಜ ವೃಷಾಕ್ಷಜ (ಪುಂ) ಡಮರು ವಾದ್ಯ.

ವೃಷಾಕ್ಷನ ವೃಷಾಕ್ಷನ (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ. ವೃಷೇಣ ಅಚ್ಛತಿ ಗಚ್ಛತಿ — ಅಚ್ಛು (ಗತೌ) “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪) ।

ವೃಷಾಂತಕ ವೃಷಾಂತಕ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ವೃಷಸ್ಯ ವೃಷಭಾ-  
ಸುರಸ್ಯ ಅಂತಕಃ ।

ವೃಷಾಯಣ ವೃಷಾಯಣ (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. ವೃಷೇಣ ಅಯನಂ ಗಮನಮಸ್ಯ । 2. ಗುಬ್ಬಚ್ಚಿ.

ವೃಷಾಹಾರ ವೃಷಾಹಾರ (ಪುಂ) ಬಿಡಾಲ, ಬೆಕ್ಕು. ವೃಷಃ ಮೃಷಿಕಃ ಆಹಾರೋಽಸ್ಯ ।

ವೃಷಿ ವೃಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಳೆ, ಮೋಡದಿಂದ ನೀರು ಸುರಿಯುವುದು. ವೃಷು (ಸೆವನೆ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) । ಸೂರ್ಯನು ತನ್ನ ಕಿರಣಗಳಿಂದ ಸಮುದ್ರದ ನೀರನ್ನು ಆಕರ್ಷಿಸಿ ಮೇಘಗಳೊಡನೆ ಸೇರಿಸುವನು. ವಾಯು ಪ್ರೇರಿತವಾದ ಮೇಘವು ಪರಮಾತ್ಮನ ಇಚ್ಛೆಯಂತೆ ಯಥೋಚಿತವಾದ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿ ಆಯಾಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಮಳೆ ಯನ್ನು ಸುರಿಸುವುದು. “ಹಸ್ತೀ ಸಮುದ್ರಾದಾದಾಯ ಕರೇಣ



ಜಲಮೀಪ್ಸಿತಮ್ | ದಬಾಧನಾಯ ತದ್ವಾದಾತೇನ ಪ್ರೇರಿತೋ  
ವನಃ | ಸ್ಥಾನೇ ಸ್ಥಾನೇ ಪೃಥಿವ್ಯಾಂ ಚ ಕಾಲೇ ಕಾಲೇ ಯಥೋಚಿತಮ್ |  
ಇಶ್ವರೇಚ್ಛಯಾವಿಭೂತಂ ತೂರ್ಣಂ ಭೂತಂ ಪ್ರತಿಬಂಧಕಮ್ | ಭೂತಂ ಭವ್ಯಂ  
ಭವಿಷ್ಯಂ ಚ ಮಹತ್ ಕ್ಷುದ್ರಂ ಚ ಮಧ್ಯಮಮ್ | ವಾತ್ರಾ ನಿರ್ಹುಪಿತಂ  
ಕರ್ಮ ಕೇನ ತಾತ ನಿವಾರಯತೇ || ಮಳೆಬೀಳುವ ಸೂಚನೆ  
ಗಳು : ಮಯೂರಗಳು ಮೇಘಗರ್ಜನೆಯನ್ನು ಕೇಳಿ  
ಸಂತೋಷದಿಂದ ಕೇಕೆಹಾಕುತ್ತ ನರ್ತನಮಾಡುತ್ತಿದ್ದರೆ  
ಮಳೆಯು ಸನ್ನಿಹಿತಕಾಲದಲ್ಲೇ ಬೀಳುವುದೆಂದು ತಿಳಿಯ  
ಬಹುದು. “ಮಯೂರಾಃ ಸ್ತನಯಿತ್ಯುನಾಂ ಶಬ್ದೇನ ಹೃಷಿತಾ ಮೃಗಃ |  
ಕೇಕಾಯಂತಿ ಪ್ರತಿವನಂ ಸತತಂ ವೃಷ್ಟಿಸೂಚಕಾಃ” | ಈ ಮಳೆ  
ಯಿಂದ ಸಸ್ಯಗಳು, ಸಸ್ಯಗಳಿಂದ ಅನ್ನ, ಅನ್ನದಿಂದ ಪ್ರಜೆ  
ಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿ. “ಅನ್ನಾದೈ ಪ್ರಜಾಃ ಪ್ರಜಾಯಂತೇ” ತೇಂ ತಂ |

**ವೃಷ್ಟಿಜೀವನ ವೃಷ್ಟಿಜೀವನ (ಪುಂ)** ಮಳೆಯಿಂದ ಸಸ್ಯ  
ಗಳು ಬೆಳೆಯುವ ಭೂಮಿ. ವೃಷ್ಟಿಜೀವನಂ ಯಸ್ಮಿನ್ |

**ವೃಷ್ಟಿಭೂ ವೃಷ್ಟಿಭೂ (ಪುಂ)** ಭೇಕ, ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ.  
ವೃಷ್ಟಿ ವರ್ಷಕಾಲೇ ಭೂತಪ್ರಾಪ್ತಿಯಸ್ಯ | ವರ್ಷಕಾಲೇ ಭವತಿ—ಭೂ  
(ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೧೭೯) ವಾ |

**ವೃಷ್ಟಿ ವೃಷ್ಟಿ (ಪುಂ)** 1. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. 2. ಯಾದವ. ವೃಷ  
(ಸೇವನೆ) “ನಿಃ” (ತಂ ೪-೮೯) | “ವೃಷ್ಯನ್ವಕಾ  
ವೈರಿಪುರೀಮವೃಷನ್” ಯಾದಂ ೨೦-೧೪ | 3. ಟಗರು, ಮೇಷ.  
(ವಿಂ) 4. ಪಾಷಾಂಡ, ವೇದಬಾಹ್ಯ. (ನಾಸ್ತಿಕರಾದ  
ಕಾಪಾಲಿಕ ಮಲ್ಲೇಚ್ಛ ಜೈನ ಬೌದ್ಧ ಮೊದಲಾದವರು).  
5. ಕುಪಿತ, ಕೋಪಗೊಂಡವನು.

**ವೃಷ್ಟಿಗರ್ಭ ವೃಷ್ಟಿಗರ್ಭ (ಪುಂ)** ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ.

**ವೃಷ್ಯ ವೃಷ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಧರ್ಮಕ್ಕೆ ಹಿತವಾದ. ವೃಷಾ  
ಧರ್ಮಯ (ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಾಚರಣಾಯ) ಹಿತಃ—ವೃಷ “ಯತ್”  
(೬-೧-೪) | 2. ಕಾಮುಕನಿಗೆ ಹಿತವಾದ (ಕಾಮುಕನ  
ವೀರ್ಯವೃದ್ಧಿಗೆ ಹಿತವಾದ). ವೃಷ “ಯತ್” | (ಪುಂ)  
3. ಮಾಷ, ಉದ್ದು. (ನಂ) 4. ವಾಜೀಕರಣ, ಶಕ್ತಿ  
ಯನ್ನು ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವುದು. ವೃಷ (ಸೇವನೆ) ವಾ “ಕೃಪ್”  
(೩-೧-೧೨೦) | ಪಕ್ಷೇ ವರ್ಷಮ್ |

**ವೃಷ್ಯಾ ವೃಷ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮುದ್ದಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಔಷಧ.  
2. ಶತಾವರಿ. 3. ನೆಲ್ಲಿಗಿಡ.

**ವೇಕಟ ವೇಕಟ (ಪುಂ)** 1. ತರುಣ, ಪ್ರಾಯದವನು.  
2. ಅಕ್ಕಸಾಲೆ, ಚಿನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿ ಆಭರಣವನ್ನು ತಯಾರಿಸು  
ವವನು. 3. ಹಾಸ್ಯಗಾರ, ವಿದೂಷಕ.

**ವೇಗ ವೇಗ (ಪುಂ)** 1. ರಭಸ, ಜೋರು, ಬಿರುಪ್ಪ. ಓ ವಿಜಿ  
(ಭಯಚಲನಯೋಃ) “ವಗ್” (೩-೩-೧೮) | “ಖೇದಾಯತ-

ಖಸಿತವೇಗನಿರಸ್ತಮುಖಮುಖ್ಯರತ್ನನಿಕರೇರಿವ ಹಾಸಿತಕಾನಿ”  
ಮಾಘಂ ೪-೩೦ | 2. ಪ್ರವಾಹ. 3. ಬಲ, ಶಕ್ತಿ. “ಮದನ-  
ಜ್ವರಸ್ಯ ವೇಗಾತ್” ಕಾದಂ | 4. ವಿಷ ಮೊದಲಾದವುಗಳ  
ತೀವ್ರಗತಿ, —ಬೇಗ ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು, —ತೀವ್ರವಾಗಿ  
ಹರಡುವುದು. “ಚಿರಾದ್ವೇಗಾರಮ್ಭಿ ಪ್ರಸೃತ ಇವ ತೀವ್ರೋ  
ವಿಘರಸಃ” ತಂ ರಾಂ ೨-೨೬ | 5. ವಿಚಾರಮಾಡದೆ  
ಮುಂದೆ ತಳ್ಳುವುದು, ಧಟ್ಟನೆ ನೂಕುವುದು. “ಕೃತ್ಯಂ ನ  
ಕುಸ್ತೇ ವೇಗಾತ್ ನ ಸ ಸಂತಾಪಮಾನ್ಯುಯಾತ್” ಪಞ್ಚತಂ ೧-೧೧೮ |  
6. ವೀರ್ಯ, ರೇತಸ್ಸು. 7. ಒಬ್ಬನ ಉಟಕ್ಕಾಗಿ  
ಮಾಡುವ ಅಡಿಗೆ. “ವೇಗೋ ರಯಪ್ರವಾಹಯೋಃ | ರೇತಃಕಿಂಪಾಕ-  
ಯೋಷ್ವಾಪಿ” ಹೇಮಂ | 8. ಮಲಮೂತ್ರಗಳು ಬಿರುಸಿನಿಂದ  
ಹೊರಡುವುದು. “ಸ್ವಭಾವತಃ ಪ್ರವೃತ್ತಾನಾಂ ಮಲಾದಿನಾಂ  
ಜಿಜಿವಿಷುಃ | ನ ವೇಗಾನ್ವಾರಯೇದ್ವೀರಃ ಕಾಮಾದಿನಾಂ ಚ  
ಧಾರಯತ್” | 9. ಪ್ರೇಮ, ಪ್ರೀತಿ. 10. ಸಂತೋಷ.

**ವೇಗನಾಶನ ವೇಗನಾಶನ (ಪುಂ)** ಶ್ಲೇಷ್ಮ, ಕಫ.

**ವೇಗವಿಚಾರಣ ವೇಗವಿಚಾರಣ (ನಂ)** ವೇಗವನ್ನು ತಡೆಯು  
ವುದು. ವೇಗಸ್ಯ ವಿಚಾರಣಮ್ |

**ವೇಗಸರ ವೇಗಸರ (ಪುಂ)** ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆಯುವ ಅಶ್ವ,  
ಕುದುರೆ. ವೇಗೇನ ಸರತಿ—ಸೃ (ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) |

**ವೇಗಿತ ವೇಗಿತ (ವಿಂ)** ವೇಗವುಂಟಾಗಿರುವ, ಬಿರುಸಾಗಿ  
ರುವ. ವೇಗೋಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ “ಇತಚ್” (೪-೨-೩೬) |

**ವೇಗಿನ್ ವೇಗಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ವೇಗವುಳ್ಳ, ಜೋರಾಗಿರುವ,  
ಬಿರುಸಾಗಿರುವ. ವೇಗೋಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪) |  
“ಅಶ್ವಾಶ್ಚ ವೇಗಿನಃ ಸಂತಿ ರಥಾ ವಾಯುಜವಾ ಮಮ” ಹರಿವಂ |  
(ಪುಂ) 2. ಗಿಡುಗ ಹಕ್ಕಿ.

**ವೇಗಿನಿ ವೇಗಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ನದಿ, ಹೊಳೆ.

**ವೇಣ ವೇಣ (ಪುಂ)** ವೈದೇಹಕನಿಂದ ಅಂಬಷ್ಠೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ  
ಒಬ್ಬ ಸಂಕರಜಾತಿಯವನು. “ವೈದೇಹಕೇನ ತ್ವಮ್ಮಂಶಚಾಮುತ್ಪನ್ನೋ  
ವೇಣ ಉಚ್ಯತೇ” ಮನುಂ ೧೦-೧೯ |

**ವೇಣಿ ವೇಣಿ, —ಣಿ —ಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಹೆಣೆಯಲ್ಪಟ್ಟ  
ತಲೆಯ ಕೂದಲು, —ಹೆಂಗಸಿನ ತಲೆಯ ತುರುಬು.  
ವೇಣತಿ—ವೇಣಿ (ನಿಶಾಮನಾದಿಭು) “ಇನ್” (ತಂ ೪-೧೧೮) |  
ವಿ (ಗತಿವ್ಯಾಪ್ಯಾದೌ) “ನಿಃ” (ತಂ ೪-೪೮) ವಾ |  
“ಸಿನ್ದೂರಿತಾನೇಕಪಕ್ಷಣಾಙ್ಗಿತಃ ತರಂಗಿಣಿ ವೇಣಿರಿವಾಯತಾ  
ಭುವಃ” ಮಾಘಂ ೧೨-೭೪ | 2. ಪತಿಯ ವಿರಹಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ಪತ್ನಿಯು ಕೇಶಸಂಸ್ಕಾರವಿಲ್ಲದೆ ಗಂಟುಹಾಕಿದ ಕೇಶಪಾತ.

“ಗುಪ್ತಾಃ ಶಿರಸಿ ವೇಣಯೋಽಭವತ್ ಪ್ರಫುಲ್ಲಸುರಪಾದಪತ್ರಜಃ”  
ಮಾಘಂ ೧೪-೩೦ | 3. ಜಲಪ್ರವಾಹ. “ತ್ವಯ್ಯಾರುಹೇ



ಶಿಖರಮವಲ: ಸ್ನಿಗ್ಧವೇಣೀಸವಣಂ" ಮೇಘಂ ೧-೧೮ | 4. ನದಿ ಗಳ ಸಂಗಮ, ಎರಡು ಮೂರು ನದಿಗಳು ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು. ಗಂಗಾ ಯಮುನಾ ಮತ್ತು ಸರಸ್ವತೀ ನದಿಗಳು ಪ್ರಯಾಗದಲ್ಲಿ ಸೇರುವುದು ತ್ರಿವೇಣೀ ಸಂಗಮ.

ವೆಣಿಕಾ ವೇಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಡೆ, ಹೆಣೆದ ಕೇಶಪಾಶ.

ವೆಣಿ ವೇಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವತಾಳ ವೃಕ್ಷ.

ವೆಣಿಬಂಧ ವೇಣೀಬಂಧ (ಪುಂ) ತಿರುಚಿ ಗಂಟುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು ಕೇಶಪಾಶ. ವೆಣ್ಯಾ ಬಂಧ: | "ಮೋಕ್ಷಯ್ವೇ ಸುರಬಂದಿನಾಂ ವೆಣಿ ಬಂಧಾನದೃಷಿತಾನ್" ರಘುಂ ೧೦-೪೭ |

ವೆಣಿಸಂಹಾರ ವೇಣೀಸಂಹಾರ (ಪುಂ) 1. ಬಿಚ್ಚಿದ್ದ ಕೇಶಪಾಶ ವನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಗಂಟುಹಾಕುವುದು. ವೆಣ್ಯಾ: ಸಂಹಾರ: | "ಏಷ ಖಲು ಪೂರಿತಪ್ರತಿಜ್ಞಾಭಾರೋ ನಾಥಸ್ತೇ ವೆಣಿಸಂಹಾರಂ ಕರ್ತೃ ತ್ವಾಮೇವಾನಿವಿಷ್ಯತಿ" ವೆಣಿಂ ೬ | (ನಂ) 2. ವೇಣೀ ಸಂಹಾರ ನಾಟಕ. ವೆಣ್ಯಾ: ಸಂಹಾರೋ ಮೋಕ್ಷಣಂ ಯತ್ರ |

ವೆಣು ವೇಣು (ಪುಂ) 1. ವಂಶ, ಬಿದಿರು. ಅಜ (ಗತಿ-ಕ್ಷೇಪಣಯೋ:) "ಗು:" (೩ಂ ೩-೩೮) | ವೀ ಇತ್ಯಾದೇಶ: (೨-೪-೫೬) | "ವೆಣುಮಸ್ಕರತೇಜನಾ:" ಅಮಂ | "ಸಾ ವಕ್ರನಖವಾರಿಣ್ಯಾ ವೆಣುಕಕಂಕಶಪರ್ವಯಾ" ರಘುಂ ೧೨-೬೪ | 2. ವೇಣುವಾದ್ಯ, ಕೊಳಲು. "ಅವ್ಯಾಜಮಂಜುಲಮುಖಾಮ್ಬುಜ-ಮುಖಭಾವೇರಾಸ್ವಾಹಮಾನನಿಜವೆಣುವಿನೋದನಾದಮ್" ಕೃಷ್ಣಕಂ |

ವೆಣುಕ ವೇಣುಕ (ಪುಂ) 1. ಸಣ್ಣ ಕೊಳಲುವಾದ್ಯ, ಚಿಕ್ಕ ವೇಣುವಾದ್ಯ. ಹ್ರಸ್ವೋ ವೆಣು: "ಕನ್" (೪-೩-೮೭) | 2. ಕಿರು ಬಿದಿರು.

ವೆಣುಕರ್ಕರ ವೇಣುಕರ್ಕರ (ಪುಂ) ಗನ್ನೇರಳೆ ಗಿಡ.

ವೆಣುಜ ವೇಣುಜ (ಪುಂ) 1. ಬಿದಿರಿನ ಅಕ್ಕಿ, ಬಿದಿರಿನ ಕಾಳು (ಬೀಜ). ವೆಣೋಜಯಿತೇ ಜನೀ (ಪ್ರಾದುರಭವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೧೮) | (ವಿಂ) 2. ಬಿದಿರಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ.

ವೆಣುಧಮ ವೇಣುಧ್ಮ (ಪುಂ) ವೇಣುವಾದ್ಯವನ್ನು ನುಡಿಸುವವನು, ಪಿಳ್ಳಂಗೋವಿಯನ್ನು ಉದುವವನು. ವೆಣು ಧಮತಿ — ಣ್ಮಾ (ಶಬ್ದಾದೌ) "ಕ:" (೩-೨-೩) |

ವೆಣುಯವ ವೇಣುಯವ (ಪುಂ) ಬಿದಿರಿನ ಅಕ್ಕಿ, ಬಿದಿರಿನ ಬೀಜ.

ವೆಣುವಾದ ವೇಣುವಾದ (ಪುಂ) ವೇಣುವಾದನ ಮಾಡುವವನು, ಪಿಳ್ಳಂಗೋವಿಯನ್ನು ಉದುವವನು. ವೆಣು ವಾದಯತಿ — ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) + ಣಿಕ್ "ಅನ್" (೩-೨-೧) | ವದ + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) |

—ವಾದನ: —ವಾದನ:

ವೆತ ವೇತ (ಪುಂ) ಬೆತ್ತ.

ವೆತಂಡ ವೇತಂಡ (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. "ಪ್ರಲ್ನ ವೆತಂಡರನ್ ಸತತಪರಿಚಲತ್ಕರ್ಣತಾಲಪ್ರರೋಹದಾತಾತ್ಕೂರಾಜಿಹೀರ್ಷಾದಿರವಿವೃತ-ಫಣಾಶ್ಚಙ್ಗಮುಷಾಭುಜಙ್ಗಮ್" ಚಂ ಭಾಂ | ಇದು ಗಜಮುಖ (ವಿನಾಯಕ) ನ ಸ್ತುತಿ (ಪ್ರಾರ್ಥನೆ).

ವೆತನ ವೇತನ (ನಂ) 1. ಸಂಬಳ. 2. ಕೂಲಿ. ವೀ (ಗತಿ-ವ್ಯಾಪ್ತಿಪ್ರಜನಾದೌ) "ತನನ್" (೩ಂ ೩-೧೮೦) | "ಖನಿಭಿ: ಸುಪುಲೇ ರನ್ ಕ್ಷೇತ್ರ: ಸಸ್ಯಂ ವನೇಗಂಜಾನ್ | ದಿದೇಶ ವೆತನಂ ತಸ್ಮೈ ರಕ್ಷಾಸದೃಶಮೇವ ಭೂ:" ರಘುಂ ೧೭-೬೬ | 3. ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ.

ವೆತನಜೀವನ ವೇತನಜೀವನ (ನಂ) ಕೂಲಿಯಿಂದ ಜೀವನ ಮಾಡುವುದು.

ವೆತನಜೀವಿನ್ ವೇತನಜೀವಿನ್ (ವಿಂ) ಕೂಲಿಕೆಲಸಮಾಡಿ ಜೀವನ ನಡೆಸುವವನು.

ವೆತನಿನ್ ವೇತನಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಕೆಲಸಮಾಡಿ ಸಂಬಳ ಪಡೆಯುವವನು. 2. ಕೆಲಸಮಾಡಿ ಕೂಲಿ ಪಡೆಯುವವನು. ವೆತನ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) |

ವೆತಸ ವೇತಸ (ಪುಂ) 1. ಜೊಂಡು. 2. ಹಬ್ಬೆಗಿಡ. ಋಯತೇ — ವೇಕ್ (ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) "ಅಸಕ್" ತುಡ್ ಚ (೩ಂ ೩-೧೧೮) | "ಅವಿಲಂಬಿತಮೇಧಿ ವೆತಸಸ್ತರವನ್ಮಾಧವ ಮಾ ಸ್ಮ ಭಜ್ಯತಾ:" ಮಾಘಂ ೧೬-೫೩ |

ವೆತಸಾಮ್ಲ ವೇತಸಾಮ್ಲ (ಪುಂ) ಹುಳಿಹಬ್ಬೆ ಗಿಡ.

ವೆತಸೀ ವೇತಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಬ್ಬೆಗಿಡ.

ವೆತಸ್ವತ್ ವೇತಸ್ವತ್ (ಪುಂ) ಬಹಳ ಜೊಂಡು ಬೆಳೆದಿರುವ ಪ್ರದೇಶ. ವೆತಸಾ: ಸಂತ್ಯತ್ರ — ವೆತಸ "ಇಮತುಪ್" (೪-೨-೮೭) |

ವೆತಾಲ ವೇತಾಲ (ಪುಂ) 1. ದ್ವಾರಪಾಲಕ, ಬಾಗಿಲು ಕಾಯುವವನು, ದ್ವಾರರಕ್ಷಕ. 2. ಪಿಶಾಚ, ವಾಯು ರೂಪದಿಂದ ಸಂಚರಿಸುವ ಆತ್ಮ, ಮೃತಶರೀರವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿದ ಜೀವ, ಭೂತ. "ಪ್ರಮುದಿತಕಟಪೂತನೋತ್ತಾಲ-ವೆತಾಲತಾಲಸ್ಕುಟಕರ್ಣಸಂಭ್ರಾಂತಗೌರೀಧನಾಶ್ಲೇಷಹೃದ್ಯಮನಸ್ಥ-ಮ್ಬಕಾನಂದಿ" ಮಾಲತೀಂ ೫-೨೩ |

ವೆತಾಲಭದ್ರ ವೇತಾಲಭಟ್ಟ (ಪುಂ) ವಿಕ್ರಮಾದಿತ್ಯರಾಜನ ಆಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿದ್ದ ನವರತ್ನಗಳಲ್ಲೊಂದು ರತ್ನ, ಒಂಬತ್ತು ಮಂದಿ ಉದ್ಧಾಮ ಪಂಡಿತರಲ್ಲೊಬ್ಬ ಪಂಡಿತ. "ಧನ್ವಂತರಿ: ಕಪಣಕಾಮರಸಿಹಶತ್ಕು ವೆತಾಲಭದ್ರಕರ್ಪರಕಾಲಿದಾಸಾ: | ಖ್ಯಾತೋ ವರಾಹಮಿಹಿರೋ ನೃಪತೇ: ಸಭಾಘಾಂ ರತ್ನಾನಿ ವೈ ವರ-ಕುಚಿನ್ವ ವಿಕ್ರಮಸ್ಯ" |

ವೆತ್ತ ವೇತ್ತ (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿದವನು. ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "ತುಕ್" (೩-೧-೧೩೩) | "ಯಥಾ ಖರಶ್ಚಂದನಭಾರವಾಹಿ



ಭಾರಸ್ಯ ವೇತ್ತಾ ನ ತು ವಂದನಸ್ಯ" 1. ಮದುವೆಯಾದ ಪತಿ. 3. ಋಷಿ.

**ವೇತ್ರ ವೇತ್ರ (ನಂ) 1.** ಬೆತ್ತ. ವೀ (ಗತಿಪ್ರಜನಾದಿ) "ವ:" (ತಂ ೪-೧೬೬) 1. "ಆಚಾರ ಇತ್ಯವಹಿತೇನ ಮಯಾ ಗೃಹೀತಾ ಯಾ ವೇತ್ರಯಶ್ವಿರವರೋಧಗೃಹೇಷು ರಾಜ್ಞ:" ಶಾಕುಂ ೪-೩ 2. ದಂಡ. ಕೋಲು. "ವಾಮಪ್ರಕೋಷಾಪಿತಹೇಮವೇತ್ರ:" ಕುಮಾಂ ೩-೪೧ 3. ಬಿದಿರು, ಮಂಶ. "ವೇತ್ರಶಾಕಕುಜೇ ಶೇಲೆ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೧೮ 1.

**ವೇತ್ರಕೀಯ ವೇತ್ರಕೀಯ (ವಿಂ)** ಗುಂಪುಗುಂಪಾಗಿ ಬೆತ್ತದ ಗಿಡಗಳು ಬೆಳೆದಿರುವ ಪ್ರದೇಶ. ವೇತ್ರ "ಛ:" ಕುಕ್ ವ (೪-೨-೧೧) 1.

**ವೇತ್ರಧರ ವೇತ್ರಧರ (ಪುಂ)** 1. ದ್ವಾರಪಾಲಕ, ಬಾಗಿಲು ಕಾಯುವವನು, ದ್ವಾರರಕ್ಷಕ. ವೇತ್ರಸ್ಯ ಧರ: 1 (ವಿಂ) 2. ಬೆತ್ತವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವವನು.

**ವೇತ್ರಯಶ್ವಿ ವೇತ್ರಯಶ್ವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಬೆತ್ತದ ಕೋಲು.

**ವೇತ್ರವತೀ ವೇತ್ರವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಒಂದು ನದಿ, ಒಂದು ಹೊಳೆ. ವೇತ್ರಮಸ್ಯಾಮಸ್ತಿ—ವೇತ್ರ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪) 1. "ಸಭೂಮಜ್ಞಂ ಮುಖಮಿವ ಪಯೋ ವೇತ್ರವತ್ಯಾಶ್ಚಲೋಮಿ" ಮೇಘಂ ೧-೨೪ 2. ದ್ವಾರಪಾಲಕಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು,

**ವೇತ್ರಿನ್ ವೇತ್ರಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಬೆತ್ತವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವವನು. (ಪುಂ) 2. ದ್ವಾರವನ್ನು ಕಾಯುವವನು. ವೇತ್ರಮಸ್ಯಾಮಸ್ತಿ—ವೇತ್ರ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) 1.

**ವೇತ್ರಾಸನ ವೇತ್ರಾಸನ (ನಂ)** ಬೆತ್ತದ ಆಸನ, ಬೆತ್ತದ ಕುರ್ಚಿ ಮೊದಲಾದವು. ವೇತ್ರಸ್ಯಾಸನಮ್ 1.

**ವೇದ ವೇದ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಶಾಸ್ತ್ರಾಣಿ ವಿಂದಂತಿ ಪ್ರಾಪ್ನುವಂತಿ ಅಸ್ಮಿನ್—ವಿದ್ಲ (ಲಾಭೇ) "ವಿ" (೩-೩-೧೨೧) 1. "ಸಂಕರ್ಷಣತ್ವೇ ಶಾಸ್ತ್ರಾರ್ಥಪ್ರದತ್ವಾತ್ ವೇದ ಇರಿತ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: 1. "ವೇದೋ ವೇದವಿದವ್ಯಜ್ಞೋ ವೇದಾಜ್ಞೋ ವೇದವಿತ್ ಕವಿ:" ವಿಂ ಸಂ 1 2. ಶ್ರುತಿ, ಧರ್ಮ ಮತ್ತು ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನಬೋಧಕವಾದ ಅಪೌರುಷೇಯವಾಕ್ಯ ರಾಶಿ. ವಿದಂತ್ಯನೇನ ಧರ್ಮಮ್—ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "ವಿ" (೩-೩-೧೨೧) 1. ಯುಗಾಂತದಲ್ಲಿ ಯಾರಿಗೂ ಗೋಚರ ವಾಗದೆ ಮರೆಯಾಗಿದ್ದ ಇತಿಹಾಸ ಮತ್ತು ವೇದಗಳನ್ನು ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಚತುರ್ಮುಖನ ಅನುಜ್ಞೆ ಪಡೆದು ತಮ್ಮ ತಪಶ್ಚಕ್ರಿಯಿಂದ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರಿಸಿದರು. "ಯುಗಾಂತೋನ್ತಹಿತಾನ್ ವೇದಾನ್ ಸೇತಿಹಾಸಾನ್ ಮಹರ್ಷಯ: 1. ಲೇಖಿರೇ ತಪಸಾ ಪೂರ್ವಮನುಜಾತಾ: ಸ್ವಯಮ್ಭವಾ" 1. ಇದರಿಂದ ವೇದಗಳಿಗೆ ಅಪೌರುಷೇಯತ್ವ ಸಿದ್ಧವಾಯಿತು. ಮುಂದಿನ ಯುಗಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಜೆಗಳೆಲ್ಲರೂ

ಅಲ್ಪಾಯುಗಳಾಗಿ ಸಂಪೂರ್ಣಾಧ್ಯಯನಮಾಡಲು ಆಶಕ್ತ ರಾಗುವರೆಂದು ತಿಳಿದು ಮಹರ್ಷಿಗಳು ವೇದಗಳನ್ನು ವಿಭಾಗಮಾಡಿದರು. ಇದೇ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಧರ್ಮಸಂರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಬ್ರಹ್ಮಾದಿಗಳಿಂದ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಪರಮಾತ್ಮನು ಪರಾಶರಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಸತ್ಯವತಿಯಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಅಂಶದಿಂದ ವೇದವ್ಯಾಸರಾಗಿ ಅವತರಿಸಿ ವೇದ ಗಳನ್ನು ಋಗ್ವೇದಃಸಾಮಾಧರ್ವ್ಯಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧವಾಗಿ ವಿಂಗಡಿಸಿ ತನ್ನ ಶಿಷ್ಯರಾದ (1) ಪೈಲನಿಗೆ ಋಗ್ವೇದವನ್ನೂ (2) ವೈಶಂಪಾಯನನಿಗೆ ಯಜುರ್ವೇದ ವನ್ನೂ (3) ಜೈಮಿನಿಗೆ ಸಾಮವೇದವನ್ನೂ (4) ಸುಮಂತುವಿಗೆ ಅಧರ್ವವೇದವನ್ನೂ ಉಪದೇಶಿಸಿದನು. ಮುಂದೆ ಅವರವರ ಶಿಷ್ಯರಿಗೆ ಅವರಿಂದ ಅವರ ಶಿಷ್ಯರಿಗೆ ಉಪದಿಷ್ಟವಾಗಿ ಪರಂಪರೆಯಾಗಿ ವೇದಗಳು ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಶಾಶ್ವತವಾಗಿ ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವಂತಾದುವು. ಪರಂಪರೆಯಾಗಿ ಉಪದೇಶದಿಂದ ಮಾತ್ರ ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ ವೇದವು ಶ್ರೋತ್ರಕ್ಕೆ ಮಾತ್ರ ವಿಷಯವಾದುದರಿಂದ ವೇದವು ಶ್ರುತಿಯೆಂದು ವ್ಯವಹರಿಸಲ್ಪಡುವುದು. "ಕ್ಷೀಣಾಯುಷ: ಕ್ಷೀಣಸತ್ವಾನ್ ದುರ್ಮೇಧಾನ್ ವೀಕ್ಷ್ಯ ಕಾಲತ: 1. ವೇದಾನ್ ಬ್ರಹ್ಮಾರ್ಷಯೋ ವ್ಯಸ್ಯನ್ ಹೃದಿಸ್ಥಾಚ್ಯುತಚೋದಿತಾ: 1. ಅಸ್ಮಿನ್ಮುಖ್ಯವಸರೇ ಬ್ರಹ್ಮಾನ್, ಭಗವಾನ್ಲೋಕಭಾವನ: 1. ಬ್ರಹ್ಮಾಶಾಶ್ವಲೋಕಪಾಲೇರ್ಯಾಚಿತೋ ಧರ್ಮ-ಗುಪ್ತಯೇ 1. ಪರಾಶರಾತ್ ಸತ್ಯವತ್ಯಾಮಂಶಾಂಶಕಲಯಾ ವಿಭು: 1. ಅವತೀರ್ಣೋ ಮಹಾಭಾಗ ವೇದಂ ಚಕ್ರೇ ಚತುರ್ವಿಧಮ್" ಭಾಗಂ ೧೨-೬ 1. "ಬ್ರಹ್ಮಣಾ ಚೋದಿತೋ ವ್ಯಾಸ: ವೇದಾನ್ ವ್ಯಸ್ತುಂ ಪ್ರಚಕ್ರಮೇ 1. ಅಥ ಶಿಷ್ಯಾನ್ ಸ ಜಗ್ರಾಹ ಚತುರೋ ವೇದಪಾರಗಾನ್ 1. ಋಗ್ವೇದಗ್ರಾಹಕಂ ಪೈಲಂ ಜಗ್ರಾಹ ಸುಮಹಾಮತಿ: 1. ವೈಶಂಪಾಯನನಾಮಾನಂ ಯಜುರ್ವೇದಸ್ಯ ಚಾಪ್ರಹೀತ್ 1. ಜೈಮಿನಿ ಸಾಮವೇದಸ್ಯ ತಥೈವಾಽವರವೇದವಿತ್ 1. ಸುಸುಮಂತು: ತಸ್ಯ ಶಿಷ್ಯೋಽಭೂತ್ ವೇದವ್ಯಾಸಸ್ಯ ಧೀಮತ:" ವಿಷ್ಣುಪುಂ 1. ಎಲ್ಲಾ ವೇದಗಳೂ ಒಂದೇ ಆಗಿ ಒಂದೇ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುವು. ಆದರೂ ಶಾಖಾಭೇದದಿಂದ ಅವು ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿವೆ. "ಏಕ ಏವ ದ್ವಿಜಾ ವೇದೋ ವೇದಾರ್ಥೇವೈಕ ಏವ ತು 1. ತಥಾಪಿ ಮುನಿಶಾದ್ಲಾ: ಶಾಖಾಭೇದೇನ ಭೇದಿತಾ:" 11

**ಋಗ್ವೇದವು** ಸಂಹಿತೆ ಮತ್ತು ಬ್ರಾಹ್ಮಣಗಳೆಂದು ಎರಡು ಭಾಗಗಳನ್ನೊಳಗೊಂಡಿರುವುದು. ಮಂತ್ರಾತ್ಮಕ ಭಾಗವು ಸಂಹಿತೆ. ಉಳಿದ ಭಾಗವು ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಋಗ್ವೇದವು ಹತ್ತು ಮಂಡಲಗಳಾಗಿ ಅಥವಾ ಎಂಟು ಅಷ್ಟಕಗಳಾಗಿ ಭಾಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಋಗ್ವೇದ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]



ಯಜುರ್ವೇದವು ಕೃಷ್ಣ ಮತ್ತು ಶುಕ್ಲ ಎಂದು ಎರಡು ಭೇದ. ಯಜುರ್ವೇದವು ಎಂಬತ್ತಾರು ಭೇದ ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ್ದರೂ ದಕ್ಷಿಣದೇಶದಲ್ಲಿ ತೈತ್ತಿರೀಯ ಶಾಖೆಯು ಮಾತ್ರ ವ್ಯಾಪಕವಾಗಿದೆ. ಈ ಶಾಖೆಯಲ್ಲಿ ಸಂಹಿತೆ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಆರಣ್ಯಕ ಮತ್ತು ಉಪನಿಷತ್ತು ಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ಭಾಗಗಳಿರುವುವು. ಸಂಹಿತೆಯಲ್ಲಿ ಯಜ್ಞಮಂತ್ರಗಳೂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣದಲ್ಲಿ ವಿಧಿವಾಕ್ಯಗಳೂ ಆರಣ್ಯಕದಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮಮೇಧ ಪಿತೃಮೇಧ ಮುಂತಾದುವೂ ಉಪನಿಷತ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ತತ್ತ್ವವಿಚಾರವೂ ಉಕ್ತವಾಗಿವೆ. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಘನಾಶ್ವತ್ಥವೇದ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಶುಕ್ಲ ಯಜುರ್ವೇದವು ಸೂರ್ಯನ ಅನುಗ್ರಹ ನಿಂದ ಯಜ್ಞವಲ್ಕರಿಂದ ಸಂಪಾದಿತ. ಈ ವೇದವು 17 ಶಾಖೆಗಳಲ್ಲಿರುವುದಾದರೂ ಕಾಣ್ವ ಮತ್ತು ಮಾಧ್ಯಂದಿನ ಶಾಖೆಗಳೆರಡು ಮಾತ್ರ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿವೆ. ಕಾಣ್ವ ಶಾಖೆಯು ದಕ್ಷಿಣ ಭಾರತದಲ್ಲಿಯೂ ಮಾಧ್ಯಂದಿನ ಶಾಖೆಯು ಉತ್ತರ ಭಾರತದಲ್ಲಿಯೂ ಪ್ರಚಾರದಲ್ಲಿವೆ.

ಸಾಮವೇದವು ಸಹಸ್ರಶಾಖೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದಾದರೂ ಕೆಲವು ಶಾಖೆಗಳು ಮಾತ್ರ ಪ್ರಚಾರದಲ್ಲಿವೆ. ಅರ್ಚಿಕಾ ಮತ್ತು ಉತ್ತರಾರ್ಚಿಕಾ ಎಂದು ಸಾಮವೇದ ದಲ್ಲಿ ಎರಡು ಭಾಗಗಳಿವೆ.

ಅಥರ್ವವೇದವು ಈ ಮೂರು ವೇದಗಳಂತೆ ಯಾಗಾದಿಕಾರ್ಯಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಪಡದೆ ಕೇವಲ ಲೌಕಿಕ ವಾದ ಸ್ತಂಭನ, ಮೋಹನ, ಉಚ್ಚಾಟನ, ಮಾರಣ, ಆಭಿಚಾರಿಕ ಕ್ರಿಯೆಗಳ ವಿಚಾರಗಳ ಮತ್ತು ಆಗ್ನೇಯ ವಾಯುವ್ಯಾದಿ ಅಸ್ತ್ರಪ್ರಯೋಗಗಳ ವಿಷಯಗಳು ಉಕ್ತ ವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಇದು ವೇದತ್ರಯದೊಡನೆ ಸೇರಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಈ ಕಾರಣದಿಂದಲೇ ವೇದತ್ರಯಕ್ಕೆ "ತ್ರಯೀ" ಎಂಬ ವ್ಯವಹಾರವಿರುವುದು.

**ಬ್ರಾಹ್ಮಣಗಳು:**

|                |  |
|----------------|--|
| ಋಗ್ವೇದ         | ಐತರೇಯ ಮತ್ತು ಕೌಷೀಢಕೀ.   |
| ಕೃಷ್ಣ ಯಜುರ್ವೇದ | ತೈತ್ತಿರೀಯ.   |
| ಶುಕ್ಲ ಯಜುರ್ವೇದ | ಶತಪಥ.  |
| ಸಾಮವೇದ         | ತಾಂಡ್ಯ, ತಲವಕಾರ, ಪಡ್ವಿಂಶ, ಛಾಂದೋಗ್ಯ, ಸಾಮವಿಧಾನ, ದೇವತಾಧ್ಯಾಯ, ಮಂಶ, ಸಂಹಿತೋಪನಿಷತ್, ಆರ್ಷೇಯ, ಮತ್ತು ಮಂತ್ರ. |
| ಅಥರ್ವವೇದ       | ಗೋಪಥ.  |

**ಆರಣ್ಯಕಗಳು:**

|                |                      |
|----------------|----------------------|
| ಋಗ್ವೇದ         | ಐತರೇಯ ಮತ್ತು ಕೌಷೀಢಕೀ. |
| ಕೃಷ್ಣ ಯಜುರ್ವೇದ | ತೈತ್ತಿರೀಯ.           |
| ಶುಕ್ಲ ಯಜುರ್ವೇದ | ಬೃಹದಾರಣ್ಯಕ.          |
| ಸಾಮವೇದ         | ಛಾಂದೋಗ್ಯ.            |

**ಉಪನಿಷತ್ತುಗಳು:**

|                |  |
|----------------|--|
| ಋಗ್ವೇದ         | ಐತರೇಯ ಮತ್ತು ಕೌಷೀಢಕೀ.                                 |
| ಕೃಷ್ಣ ಯಜುರ್ವೇದ | ಕಠ, ಶ್ವೇತಾಶ್ವತರ, ಮೈತ್ರಾಯಣೀಯ, ಮಹಾನಾಡಾಯಣೀಯ, ತೈತ್ತಿರೀಯ. |
| ಶುಕ್ಲ ಯಜುರ್ವೇದ | ಬೃಹದಾರಣ್ಯಕ, ಈಶಾವಾಸ್ಯ.                                |
| ಸಾಮವೇದ         | ಛಾಂದೋಗ್ಯ, ಕೇನ.                                       |
| ಅಥರ್ವವೇದ       | ಮುಂಡಕ, ಪಶ್ವ, ಮಾಂಡೂಕ್ಯ.                               |

**ವೇದಗರ್ಭ ವೇದಗರ್ಭ (೪ಂ) 1.** ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ವೇದ: ಗರ್ಭೋ ಯಸ್ಯ | "ಏತದೇವಾತ್ಮಭೂ ರಾಜಾನ್ ನಾರದಾಯ ವಿಪುಚ್ಛತೇ | ವೇದಗರ್ಭೋಽಸ್ಯಾತ್ ಸಾಕ್ಷಾತ್ ಯದಾಹ ಹರೀರಾ-ತ್ಮನ:" ಭಾಗಂ ೨-೪-೨೫ | 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ವೇದಾ ಧ್ಯಯನಸಂಪನ್ನ.

**ವೇದಗುಣಿ ವೇದಗುಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇದಗಳ ಸಂರಕ್ಷಣೆ.** ವೇದಾಧ್ಯಯನಮಾಡದಿದ್ದರೆ ವೇದವು ಪ್ರಚಾರವಿಲ್ಲದೆ ಕ್ಷೀಣವಾಗುವುದು. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನು ಅನವರತ ವೇದಾ ಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವುದರಿಂದ ವೇದಗಳ ಸಂರಕ್ಷಣೆಯಾಗು ವುದು. ವೇದಾನಾಂ ಗುಣಿ: |

**ವೇದಜ್ಞ ವೇದಜ್ಞ (೪ಂ) ವೇದಾಧ್ಯಯನಸಂಪನ್ನನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ.** ವೇದಾನ್ ಜಾನಾತಿ-ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩) |

**ವೇದತ್ರಯ ವೇದತ್ರಯ (ನಂ) ಋಗ್ವೇದ, ಸಾಮಗಳೆಂಬ ಮೂರು ವೇದಗಳು.** ಕರ್ಮಕಾಂಡಕ್ಕೆ ಈ ಮೂರು ವೇದಗಳು ಮಾತ್ರ ಸೇರಿರುವುದರಿಂದ "ತ್ರಯೀ" ಎಂದು ವೇದಕ್ಕೆ ಹೆಸರಾಯಿತು. "ಯದೇವ ಹೌತಮ್ ಕ್ರಿಯತೇ ಯಜುಷಾವ್ಯಯಂ ಸಾಮೋದ್ಗೀತಂ ವ್ಯಾರಥಾ ತ್ರಯೀ ವಿಶ್ವಾ ಭವತಿ" ಏತಂ ಬ್ರಾಂ |

**ವೇದನ ವೇದನ (ನಂ) 1.** ತಿಳಿಯುವುದು, ಅರಿತುಕೊಳ್ಳು ವುದು. ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). 2. ದೇಹದ ಮತ್ತು ಇಂದ್ರಿಯಾನುಭವಗಳ ಅರಿವು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಾ-ನಾ. ವಿದ್ಲ್ಯ (ಲಾಭ) "ಯುಕ್" (ಬಾಂ ೩-೩-೧೦೭). 3. ದುಃಖ, ಕಷ್ಟ. "ಪ್ರಬಲಾತ್ಮಾತ್ಮಕೃತೇನ



ವೇದನಾಮ್" ಣ್ಕಂ ೮-೫೦. 4. ವಿವಾಹ, ಮದುವೆ.

"ವಸನಸ್ಯ ದಶಾ ಗ್ರಾಹ್ಯಾ ಶ್ರುತಯೋಕ್ತಾಃ" ಮನುಂ ೩-೪೪.

**ವೇದನಿವೃತ್ತಿ ವೇದನಿವೃತ್ತಿ (ಪುಂ)** ವೇದವನ್ನು ದೂಷಿಸುವ ನಾಸ್ತಿಕ. ವೇದ ನಿಂದತಿ—ಗಿಡಿ (ಕುತ್ಸಾಯಾಮ್) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩). ಇವನು ವೇದೋಕ್ತಕರ್ಮಗಳನ್ನು ನಂಬುವುದಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ದೂಷಿಸುವನು. -ರೂಪಕ: -ದೂಷಕ.

**ವೇದನೀಯ ವೇದನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ. 2. ತಿಳಿಯಬೇಕಾದ. 3. ತಿಳಿಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ತಿಳಿಯಲು ಶಕ್ತವಾದ. ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) "ಜನೀಯ್" (೩-೧-೯೬). "ತಥ್ಯ:" ವೇದಿತವ್ಯ.

**ವೇದಪಾರಗ ವೇದಪಾರಗ (ಪುಂ)** ಸಂಪೂರ್ಣವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು. ವೇದಸ್ಯ ಪಾರಂ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಫ:" (೩-೨-೪೮).

**ವೇದಮಾತೃ ವೇದಮಾತೃ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಗಾಯತ್ರಿ. ವೇದಾನಾ ಮಾತಾ. "ಯೋಷೀತೀಹ್ಯಹ್ಯೇತಾ ಸಾವಿತ್ರಿ ವೇದಮಾತರಮ್. ವಿಜ್ಞಾಯಾಥಿ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ ಸ ಯಾತಿ ಪರಮಾಂ ಗತಿಮ್". 2. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

**ವೇದವತೀ ವೇದವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕುಶಲ್ವಜನ ಪುತ್ರಿ. [ಕುಶಲ್ವಜನು ಪ್ರತಿದಿನ ಪಾರಾಯಣಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ವೇದ ವಾಕ್ಯಗಳೇ ಒಂದು ಸ್ತೀರೂಪದಿಂದ ಬಂದುವು. ವೇದ ಸ್ವರೂಪಳಾದುದರಿಂದ ವೇದವತಿಯೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಬಹಳ ರೂಪವತಿಯಾದ ಇವಳನ್ನು ಶಂಖನೆಂಬ ದೈತ್ಯ ನೊಬ್ಬನು ತನಗೆ ಕೊಡಬೇಕೆಂದನು. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿಗಲ್ಲದೆ ಯಾರೊಬ್ಬರಿಗೂ ಇವಳನ್ನು ಕೊಡುವುದಿಲ್ಲವೆಂದು ತಿಳಿಸಿದನು. ವೇದವತಿಯು ಶ್ರೀಮನ್ನಾಟಾಯಣನನ್ನೇ ಮದುವೆಯಾಗಬೇಕೆಂದು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ರಾವಣನು ಬಂದು ಬಲಾತ್ಕರಿಸಲು ಇವಳು ಸಂಮತಿಸದ ಕಾರಣ ಇವಳ ತಲೆಯ ಕೂದಲನ್ನು ಹಿಡಿದಳೆಂದನು. ಕುಪಿತಳಾದ ವೇದವತಿಯು ಮುಂದಿನ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಅಯೋನಿಜೆಯಾಗಿ ಜನಿಸಿ ಅವನ ಮರಣಕ್ಕೆ ಕಾರಣಳಾಗುವುದಾಗಿ ಶಾಪವಿತ್ತು ಅಗ್ನಿಪ್ರವೇಶಮಾಡಿದಳು. ಬಳಿಕ ಲಂಕೆಯಲ್ಲಿ ಒಂದು ಸರೋವರದ ಕೆರೆಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದಳು. ಇದನ್ನು ಕಂಡು ಎಲ್ಲರೂ ಇದೊಂದು ಉತ್ಪಾತಕ ಸೂಚನೆ ಯೆಂದು ಹೇಳಲು ರಾವಣನು ಒಂದು ಪೆಟ್ಟಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಈ ಶಿಶುವನ್ನು ಇಟ್ಟು ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಬಿಡಲಾಗಿ ಅದು ತೇಲುತ್ತಾ ಬಂದು ಜನಕನ ಪಟ್ಟಣ ಸೇರಿತು. ಜನಕನು ಯಾಗಕ್ಕಾಗಿ ಭೂಶೋಧನೆ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಈ ಶಿಶುವು

ಅವನ ಕೈಸೇರಿತು. ನೇಗಿಲಿನಿಂದ ಹೊರಬಂದಕಾರಣ ಜನಕನು ಸೀತೆಯೆಂದು ನಾಮಕರಣಮಾಡಿದನು. ಶ್ರೀರಾಮನು ಶಿವಧನುರ್ಭಂಗಮಾಡಿ ಸೀತೆಯ ಪಾಣಿ ಗ್ರಹಣಮಾಡಿದನು. ಈ ಸೀತೆಯೇ ಕೊನೆಗೆ ರಾವಣನ ವಿನಾಶಕ್ಕೆ ಕಾರಣಳಾದಳು.]

**ವೇದವದನ ವೇದವದನ (ನಂ)** 1. ವೇದಕ್ಕೆ ವದನದಂತಿರುವ ವ್ಯಾಕರಣ. ಇದೊಂದು ವೇದಾಂಗ. ವ್ಯಾಕರಣವು ಯಾಗ ಗಳಲ್ಲಿ ಶುದ್ಧವಾದ ಪದಪ್ರಯೋಗ ಮಾಡಲು ಸಹಾಯಕ ವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ವೇದಕ್ಕೆ ವದನಪ್ರಾಯವಾಯಿತು. "ಯೋ ವೇದ ವೇದವದನಂ ಸದನಂ ಹಿ ಸಮ್ಯಕ್ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಃ ಸ ವೇದಮಪಿ ವೇದ ಕಿಮನ್ಯಶಾಸ್ತ್ರಮ್". 2. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ವೇದಾ: ವದನೇ ಯಸ್ಯ. "ಗಾಯತ್ರಿ ವೇದವದನೇ ಪಾರ್ವತೀ ಶಿವ-ಸನ್ನಿಧೌ".

**ವೇದವಾಸ ವೇದವಾಸ (ಪುಂ)** ವೇದಾಧ್ಯಯನಮಾಡಿದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ವೇದಾನಾಂ ವಾಸ: ಯಸ್ಮಿನ್.

**ವೇದವಿತ್ ವೇದವಿತ್ (ಪುಂ)** 1. ವೇದವನ್ನು ಬಲ್ಲ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ಸಾಂಗವೇದಾಧ್ಯಯನಮಾಡಿದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ವೇದಾನ್ ವೇದಿ—ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) "ವಿವಿ" (೩-೨-೬೨). 2. ವಿಷ್ಣು. "ವೇದೋ ವೇದವಿದವ್ಯಜ್ಞೋ ವೇದಾಜ್ಞೋ ವೇದವಿ-ತ್ಕವಿ:" ವಿಂ ಸಂ.

**ವೇದವ್ಯಾಸ ವೇದವ್ಯಾಸ (ಪುಂ)** ಪರಾಶರಮುನಿಯ ಪುತ್ರ, ಬಾದರಾಯಣ, ಕೃಷ್ಣದ್ವೈಪಾಯನ ಋಷಿ. ವೇದಂ ವ್ಯಸ್ಯತಿ ಪೃಥಕ್ ಕರೋತಿ—ವಿ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಅನ್" (೩-೨-೧). ಅಖಂಡವೇದರಾಶಿಯನ್ನು ನಾಲ್ಕು ಭಾಗಮಾಡಿ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಶಾಖೆಗಳಾಗಿ ಮಾಡಿದುದರಿಂದ ಈ ಋಷಿಗೆ "ವೇದವ್ಯಾಸ" ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ವೇದಮೇಕಂ ಚತುರ್ಭಾಗಂ ಕೃತ್ವಾ ಶಾಖಾಶತೇವಿಮುಃ. ಕರೋತಿ ಬಹುಲಂ ಮುಖ: ವೇದವ್ಯಾಸಸ್ವರೂಪವತ್" ವಿಷ್ಣುಪುಂ. ಬ್ರಹ್ಮಾದಿ ದೇವತೆಗಳ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಂತೆ ಪರಮಾತ್ಮನು ವೇದಗಳ ವಿಭಾಗಕ್ಕಾಗಿ ವೇದವ್ಯಾಸನಾಗಿ ಅವತರಿಸಿದನು.

**ವೇದಾಂಗ ವೇದಾಂಗ (ನಂ)** ವೇದಕ್ಕೆ ಅಂಗಭೂತವಾದ ಆರು ಶಾಸ್ತ್ರಗಳು. ಇವು (1) ಶಿಕ್ಷಾ (2) ವ್ಯಾಕರಣಮ್ (3) ಛಂದಸ್ (4) ನಿರುಕ್ತಮ್ (5) ಜ್ಯೋತಿಷಮ್ ಮತ್ತು (6) ಕಲ್ಪ ಗಳೆಂದು ಆರು ವೇದಾಂಗಗಳು. "ಶಿಕ್ಷಾ ವ್ಯಾಕರಣಂ ಛಂದೋ ನಿರುಕ್ತಂ ಜ್ಯೋತಿಷಂ ತಥಾ. ಕಲ್ಪಃ ತೇತಿ ಷಡ್ಭಾಗಾನಿ ವೇದಸ್ಯಾಹುರ್ಮನೀಷಿಣಃ" ಅಮಂ.

ಈ ಆರು ವೇದಾಂಗಗಳೂ ವೇದಗಳ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಯಲು ಸಹಕಾರಿಯಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಇವುಗಳನ್ನು ಅಭ್ಯಸಿಸಬೇಕು.



**ಶಿಕ್ಷಣ :** ಇದು ಸ್ವರವರ್ಣಗಳ ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯ ಪ್ರಭೇದ ಅವುಗಳ ಪ್ರಯೋಜನ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು. ಸ್ವರವರ್ಣ ವ್ಯತ್ಯಾಸವಾದರೆ ಯಜಮಾನನಿಗೆ ಬಹಳ ಅನರ್ಥವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದು.

**ನ್ಯಾಕರಣಿ :** ಇದು ಯಜ್ಞದಲ್ಲಿ ಶುದ್ಧವಾದ ಶಬ್ದಗಳ ಪ್ರಯೋಗ ಮತ್ತು ಶುದ್ಧವಾದ ವಿಭಕ್ತಿಗಳ ಜ್ಞಾನವುಂಟುಮಾಡುವುದು.

**ಛಂದಸ್ಸು :** ಮಂತ್ರಗಳ ಛಂದಸ್ಸು ಋಷಿ ದೇವತೆಗಳ ಪರಿಜ್ಞಾನವು ಅವಶ್ಯವಾದುದರಿಂದ ಛಂದೋಜ್ಞಾನವು ಮುಖ್ಯವಾದುದು.

**ನಿರುಕ್ತ :** ವೇದದ ಅರ್ಥಪರಿಚ್ಛಾನವಿಲ್ಲದೆ ಪುರುಷಾರ್ಥ ಸಾಧನೆಯಾಗುವುದಿಲ್ಲ. ಪುರುಷಾರ್ಥ ಸಾಧಕವಾದ ವೇದಗಳ ಅರ್ಥಪರಿಚ್ಛಾನವನ್ನಂಟುವಿಡುವುದರಿಂದ ನಿರುಕ್ತವು ಮುಖ್ಯವಾದ ವೇದಾಂಗವಾಯಿತು. ನಿರೂಪಣೇನ ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ ।

**ಜ್ಯೋತಿಷ :** ವೇದವಿಹಿತವಾದ ಯಜ್ಞಯಾಗಾದಿ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ ಕಾಲವನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದ ರಿಂದ ಇದೂ ವೇದಾಂಗವಾಯಿತು.

**ಕಲ್ಪ :** ವೇದವಿಹಿತ ಕರ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಮಂತ್ರಗಳ ವಿನಿ ಯೋಗ ಕ್ರಮವನ್ನು ತಿಳಿಸಿ ಪ್ರಯೋಗಕ್ಕೆ ಸಹಕಾರಿ ಯಾದುದರಿಂದ ಕಲ್ಪವೂ ಒಂದು ವೇದದ ಅಂಗ.

ಈ ಕಾರಣದಿಂದ ವೇದಕ್ಕೆ ಶಿಕ್ಷೆಯು ಪ್ರಾಣ. ವ್ಯಾಕರಣವು ಮುಖ. ಛಂದಸ್ಸು ಪಾದಗಳು. ನಿರುಕ್ತವು ಶ್ಲೋಕ. ಜ್ಯೋತಿಷವು ಚಕ್ಷುಸ್ಸು. ಕಲ್ಪವು ಹಸ್ತಗಳು. ಹೀಗೆ ವೇದಾಂಗಗಳಾದವು. “ಛಂದಃ ಪಾದೌ ತು ವೇದಸ್ಯ ಹಸ್ತೌ ಕಲ್ಪೌಽಥ ಪಠ್ಯತೇ | ಜ್ಯೋತಿಷಾಮಯನಂ ಚಕ್ಷುಃ ನಿರುಕ್ತಂ ಶ್ರೋತ್ರಮುಚ್ಯತೇ | ಶಿಕ್ಷಾ ಗ್ರಾಣಂ ತು ವೇದಸ್ಯ ಮುಖಂ ವ್ಯಾಕರಣಂ ಸ್ಮೃತಮ್ | ತಸ್ಮಾತ್ಸಾಙ್ಗಮಧೀತ್ಯೈವ ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕೇ ಮಹೀಯತೇ” ಪಾಂ ಶಿಂ |

वेदादि नैदानी (पुं०) १. वेदद प्रारंभ. (न०)

2. ವೇದದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಹೇಳಲ್ಪಡುವ ಪ್ರಣವ, ಓಂಕಾರ. ವೇದಾಂತಮಾದಿ ।

वेदाधिप नैदाधिक, —अधिपति —अधिकृति (पुं०)  
 वेदगर्भ अधिकृति.

ಮಗ್ಗೇದಾಧಿಪತಿ                      ಬೃಹಸ್ಪತಿ

ಯಜುರ್ವೇದಾಧಿಪತಿ ಶುಕ್ರ

ಸಾಮವೇದಾಧಿಪತಿ ಕುಜ

ಅಧರ್ವವೇದಾಧಿಪತಿ ಚುಢ.

ವೇದಾಂತ ವೇದಾನ್ತ (೪ಂ) ವೇದಗಳ ಕೊನೆಯ ಭಾಗವಾದ ಉಪನಿಷತ್ತು. ವೇದಾನಾಮಂತಃ। ಕರ್ಮಕಾಂಡವಾದನಂತರ ಬ್ರಹ್ಮಪ್ರತಿಪಾದಕ ವಿಷಯ ವಿಚಾರಮಾಡುವುದರಿಂದ ಉಪನಿಷತ್ತು ವೇದಾನ್ತವಾಯಿತು. ವೇದಾನಾಂ ಶ್ರುತಿಗಾತ್ಮಿಕಾಂ ಅಂತಃ ಉಪನಿಷತ್ತುಗಳ ಅರ್ಥನಿರ್ಣಾಯಕ ವಾದುದರಿಂದ ಬ್ರಹ್ಮಸೂತ್ರಗಳೂ ವೇದಾನ್ತ. ವೇದಗಳ ಪೂರ್ವಭಾಗ (ಕರ್ಮಕಾಂಡ) ವಾದ ಸಂಹಿತೆ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಮೊದಲಾದುವು ಕರ್ಮವಿಧಾನವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವುದರಿಂದ ಕರ್ಮಪ್ರತಿಪಾದಕವಾದ ವೇದವನ್ನು ಮೊದಲು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿ ಕರ್ಮವಿಚಾರಮಾಡಿ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸ ಬೇಕು. “ಅಥಾತೋ ಧರ್ಮಜಿಜ್ಞಾಸಾ” ಜೈಮಿನಿಸೂಂ. ಇದಕ್ಕೆ ಕರ್ಮಮೀಮಾಂಸಾ ಅಥವಾ ಪೂರ್ವಮೀಮಾಂಸಾ ಎಂದು ವ್ಯವಹಾರ.

ತೃಗುಣ್ಯವಿಷಯವಾದ ವೇದವಿಹಿತಕರ್ಮಗಳ ಫಲವು ಕೇವಲ ಅಲ್ಪ ಮತ್ತು ಅಸ್ಥಿರ ಎಂದು ತಿಳಿದು ಮುಮುಕ್ಷುವು ಅನನ್ತಸ್ಥಿರಫಲವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದಾಗ ಬ್ರಹ್ಮಜಿಜ್ಞಾಸೆಯುಂಟಾಗುವುದು. “ವೃತ್ತಾತ್ಕರ್ಮಾಧಿಗಮಾದನಂತರಂ ಬ್ರಹ್ಮಾವಿವಿಧಿಷಾ” । “ಅಥಾತೌ ಬ್ರಹ್ಮಜಿಜ್ಞಾಸಾ” ಖಂ ಸೂಂ । ಇದು “ಉತ್ತರಮಿಮಾಂಸಾ” ಅಥವಾ “ಬ್ರಹ್ಮಮಿಮಾಂಸಾ” । ಆರು ಅಸ್ತಿತ್ವದರ್ಶನಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ಈ ವೇದಾನ್ತದರ್ಶನವು ದ್ವೈತಮ್ ಅದ್ವೈತಮ್ ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತಮ್ ಶಕ್ತಿವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತಮ್ ಎಂಬ ಭೇದಗಳನ್ನೊಳಗೊಂಡಿರುವುದು. [ವಿವರಕ್ಕೆ ಆಯಾ ದರ್ಶನಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. ವೇದಾಂತಾರ್ಥ ವಿಚಾರ ಮಾಡುವ ನ್ಯಾಯನಿಬಂಧನರೂಪವಾದ ಶಾಸ್ತ್ರವೇ ಬ್ರಹ್ಮಮೀಮಾಂಸೆ. ವೇದಾಂತರೂಪವಾದ ಈ ಉಪನಿಷತ್ತು ಬ್ರಹ್ಮಕಾಂಡ. ವೈದಿಕಕರ್ಮಾಚರಣೆಯಿಂದ ಜ್ಞಾನೋತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಪ್ರತಿಬಂಧಕವಾದ ಪ್ರಾಚೀನ ಕರ್ಮಗಳು ನಿವೃತ್ತಿಯಾದರೆ ಅನನ್ತರ ಜ್ಞಾನದಿಂದ ಬ್ರಹ್ಮಪ್ರಾಪ್ತಿಯಾಗುವುದು. “ಕಥಾಂ ಕರ್ಮಭಿಃ ಪಕ್ವೇ ತತಃ ಜ್ಞಾನಂ ಪ್ರವರ್ತತೆ” “ಧರ್ಮೇಣ ಪಾಪಮಪನುದತಿ” ಇತ್ಯಾದಿ ಪ್ರಮಾಣ ವಾಕ್ಯಗಳಿಂದ ಇದು ಸಿದ್ಧವಾಗುವುದು. ಉಪನಿಷತ್ತುಗಳ ಅರ್ಥ ನಿರ್ಣಾಯಕವಾಗಿ ಶ್ರೀಚಾದರಾಯಣ ಮುನಿಗಳು ರಚಿಸಿದ ಬ್ರಹ್ಮಸೂತ್ರಗಳಿಗೆ ಪೂರ್ವಾಚಾರ್ಯರುಗಳಾದ ಶ್ರೀಶಂಕರಭಗವತ್ಪಾದಾಚಾರ್ಯರು ಅದ್ವೈತ ಪರವಾಗಿಯೂ ಶ್ರೀಭಗವದ್ರಾಮಾನುಜಾಚಾರ್ಯರು ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತ ಪರವಾಗಿಯೂ ಶ್ರೀಪೂರ್ಣಪ್ರಜ್ಞಾಚಾರ್ಯರು ದ್ವೈತ ಪರವಾಗಿಯೂ ಭಾಷ್ಯಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುತ್ತಾರೆ.



श्रीः

# शब्दार्थकौस्तुभः

(प्रायौगिक संस्कृत-कर्णाटक शब्दकोशः)

ಸಂಸ್ಕೃತ - ಕನ್ನಡ ಶಬ್ದಕೋಶ

ಸಂಪುಟ ೬

ಪದಗಳು : ವೇದಾಂತಿನ್-ಹೈಯ

ಸಾಹಿತ್ಯ ವಿದ್ವಾನ್

ಚಕ್ರವರ್ತಿ ಶ್ರೀನಿವಾಸ ಗೋಪಾಲಾಚಾರ್ಯ

ಬಾಪ್ಪೊ ಪ್ರಕಾಶನ

ಬೆಂಗಳೂರು ಪ್ರೆಸ್, ಬೆಂಗಳೂರು







ಅಥವಾ ಮರಳನೆ ಗುಡ್ಡೆ. "ಮಂದಾಕಿನೀಸೇತವೇದಿಕಾಃ  
ಸಾ ಕನ್ದುಕಃ ಕೃತ್ರಿಮಪುತ್ರಕೇಶ್ವ" ಕುಮಾಂ ೧-೩೯. 4. ಶುಭ  
ಕಾರ್ಯಗಗಣಾಗಿ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಹಸೆ.

**ವೇದಿಜಾ ವೇದಿಜಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದ್ರಾವಿಡಿ, ಯಾಜ್ಞಸೇನಿ.  
ವೇದಾಂ ಜಾಯತೇ- ಜನಾಃ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಙ:" (೩-೨-೯೭) ।  
ದ್ರಾವಿಡರಾಜನ ಯಜ್ಞವೇದಿಕೆಯಿಂದ ಅವಿರ್ಭವಿಸಿದುದು  
ರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

**ವೇದಿತ ವೇದಿತ** (ವಿಂ) ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) + ಣಿಕ್  
"ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) ।

**ವೇದಿತ ವೇದಿತ** (ವಿಂ) ತಿಳಿದವನು, ಅರಿತವನು. ವಿದ  
(ಜ್ಞಾನ) "ತುಕ್" (೩-೧-೧೩೩) । "ನ ವೇದಾನಾಂ ವೇದಿತಾ  
ಕಶ್ಚಿದಸ್ತಿ ವೇದೇನ ವೇದಂ ನ ವಿದುಃ ವೇದಮ್" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ  
೪೩-೫೨ । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫) । -ತ್ರಿ -೩೨.

**ವೇದೀಶ ವೇದೀಶ** (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ. 2. ಬ್ರಹ್ಮ, ಪಂಡಿತರ  
ಅಧಿಪತಿ. ವೇದಿನಾಮೀಶ: । "ಕಜ್ಜ: ಪ್ರಾಣಶ್ಚ ವೇದೀಶ-  
ವೇದಗರ್ಭಪುರಾಣಗಾ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ವೇದೋಕ್ತ ವೇದೋಕ್ತ** (ವಿಂ) ವೇದಗಳಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ,  
ವೇದಗಳಲ್ಲಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ವೇದೇಷು ಉಕ್ತಮ್ । "ವೇದೋಕ್ತಮೇವ  
ಕುರ್ವಾಣಿ ನಿ:ಸಂಕ್ಷೋಪಿತುಮಿಶ್ವರೇ । ನೇಷ್ಕಮ್ಯಾ ಲಭತೇ ಸಿದ್ಧಿ  
ರೋಚನಾರ್ಥಾ ಫಲಶ್ರುತಿ:" । -ಉದಿತ: ಉದಿತಃ. "ವೇದೋ-  
ದಿತಾನಾಂ ನಿಯಾತಾಂ ಕರ್ಮಣಾಂ ಸಮತೀಕರ್ಮೇ । ಸ್ನಾತಕವ್ರತಲೋಪೇ  
ಚ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತಮಭಿಜನಮ್" ।

**ವೇದೋದಯ ವೇದೋದಯ** (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ವೇದ: ಜ್ಞಾನ  
ಉದಯೇ ಯಸ್ಯ । "ವೇದೋದಯ: ಪ್ರತಿದಿವಾ ಭಾನು: ಪಿತುಸ್ತಮೋ-  
ಪಹ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ವೇದ ವೇದ** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. ಸರ್ವೇರಪಿ ವೇದಿತುಂ ಶಕ್ಯ:  
ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) "ಣ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) । "ಸರ್ವೇಶ್ವ ವೇದಿತುಂ  
ಶಕ್ಯ: ಸೌಲಮ್ಯಾತ್ ವೇದಃ ಇರಿತ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । "ವೇದೋ  
ವೇದಃ ಸದಾಯೋಗಿ" ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ) 2. ತಿಳಿಯ  
ಲ್ಪಡುವ. "ವೇದಂ ವಾಸ್ತವಮತ್ರ ವಸ್ತು ಶಿವಂ ತಾಪತ್ರಯೋ-  
ನ್ಮೂಲಮ್" ಭಾಗಂ ೧-೧-೨. 3. ಮದುವೆಯಾಗಲು  
ಅರ್ಹನಾದವನು. 4. ಹೊಂದಲ್ಪಡುವ, ಪಡೆಯಲ್ಪಡುವ.  
5. ವೇದಕ್ಕೆ ಹಿತವಾದ. 6. ವೇದಪ್ರತಿಪಾದ್ಯವಾದ,  
ವೇದಗಳಲ್ಲಿ ವರ್ಣಿಸಲ್ಪಡುವ. "ವೇದಂ ಚ ತತ್ ವೇದಯತೇ  
ಚ ವೇದಂ ವಿಧಿಶ್ಚ ಯಶ್ಚ ಷಯತೇ ವಿಧೇಯಮ್" ಭಾಂ ಅನುಂ  
೧೫೮-೩೬ ।

**ವೇದ ವೇದ** (ಪುಂ) ತೂತು ಕೊರೆಯುವುದು, ವೆಜ್ಜುಮಾಡು  
ವುದು. ವಿಧ (ವಿಧಾನ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) ।

"ವಾಣವೇಶೇ ಪರಂ ಯತ್ನಮಕರೋಚೈವ ಗೌತಮ:" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ  
೧೬೮-೩೬ ।

**ವೇದಕ ವೇದಕ** (ವಿಂ) 1. ತೂತು ಕೊರೆಯುವವನು, ವೆಜ್ಜು  
ಕೊರೆಯುವವನು. ವಿಧ (ವಿಧಾನ) "ಘ್" (೩-೧-೧೩೩) ।  
(ಪುಂ) 2. ಕರ್ಪೂರ. "ರೇಣುಸಾರಸ್ತು ಕರ್ಪೂರಾನ್ದ್ರಮಸ್ಮ-  
ಹಿಮಾಹ್ವಯ: । ವೇದಕ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । (ನಂ) 3. ಧನಿಯ,  
ಕೊತ್ತುಂಬರಿ.

**ವೇದತ್ ವೇದತ್** (ವಿಂ) ತೂತು ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ವೆಜ್ಜು  
ಕೊರೆಯುತ್ತಿರುವ. ವಿಧ (ವಿಧಾನ) "ಘ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

**ವೇದನ ವೇದನ** (ನಂ) ತೂತು ಕೊರೆಯುವುದು. ವಿಧ  
(ವಿಧಾನ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

**ವೇದನಿಕಾ ವೇದನಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಣಿ ಮುತ್ತುಗಳನ್ನು  
ಕೊರೆದು ವೆಜ್ಜುಮಾಡುವ ಸಾಧನ, -ಬೈರಿಗೆ. ವಿಧ್ಯತೇಜಯಾ  
-ವಿಧ (ವಿಧಾನ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಕನ್" (೫-೪-೫) ।

**ವೇದನೀ ವೇದನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆನೆಯ ಕಿವಿಯನ್ನು ಚುಚ್ಚುವ  
ಒಂದು ಆಯುಧ. 2. ಮುತ್ತು ಮತ್ತು ಅಭರಣಗಳಿಗೆ  
ತೂತು ಕೊರೆಯುವ ಮೊನಚಾದ ಒಂದು ಆಯುಧ,  
ಬೈರಿಗೆ. ವಿಧ್ಯತೇಜಯಾ -ವಿಧ (ವಿಧಾನ) "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೫) ।

**ವೇದನೀಯ ವೇದನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ವೆಜ್ಜು ಕೊರೆಯಲ್ಪಡುವ.  
2. ವೆಜ್ಜು ಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ವೆಜ್ಜು ಕೊರೆಯಲು ಸಾಧ್ಯ  
ವಾದ. ವಿಧ (ವಿಧಾನ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) ।  
"ತವ್ಯ:" । ವೇದಿತವ್ಯಮ್ ವೇದಿತವ್ಯಮ್.

**ವೇದಮುಖ್ಯ (ಕ) ವೇದಮುಖ್ಯ (ಕ)** (ಪುಂ) ಕಚೋರ.  
ವೇದೇ ವೇದನೇ ಮುಖ್ಯ: । ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" । "ಕರ್ಕುರಕೋ  
ದ್ರಾವಿಡಕ: ಕಾಲ್ಪಕೋ ವೇದಮುಖ್ಯಕ:" ಅಮಂ ।

**ವೇದಸ್ ವೇದಸ್** (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖಿ.  
ವಿದಧಾತಿ-ವಿ + ಡ್ ಧಾತ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋ:) "ಅಸಿ:"  
ವೇದಾदेशಶ್ಚ (ಉಂ ೪-೨೨೪) । "ವೇದಸಾ ಸಹ ಸನಂದನಾ-  
ದಯಸ್ತುಕ್ತಸಂಯಮಧಿಯೋವತಸ್ಥಿರೇ" ಯಾದಂ ೧೭-೫೨ । 2.  
ವಿಷ್ಣು. ಪರಮಾತ್ಮ. ಅನಂತಮಜ್ಜಲಂ ಮಹಾವಿಭವಂ ವಿದಧಾತಿ ।  
"ಮಹಾವಿಭವಕಲ್ಯಾಣಂ ಸತತಂ ವಿದಧಾತಿ ಯ: । ಭಕ್ತೇಭ್ಯ:  
ಪರಮಂ ವೇದಾ: ಪಠಣಂ ಮಜ್ಜಲಪ್ರದ:" । 3. ಸೂರ್ಯ.  
4. ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 5. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. "ವೇದಾ: ಪುಸಿ  
ಹೃಷೀಕೇಶೋ ಬುಧೇ ಚ ಪರಮೇಷ್ಠಿನಿ" ಮೇದಿಂ । 6. ಶಿವ,  
ಪರಮೇಶ್ವರ. 7. ದಕ್ಷ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಜಾಪತಿಗಳು.  
"ಪರತೋಽಪಿ ಪರಶ್ಚಾಸಿ ವಿದಾತಾ ವೇದಸಾಮಪಿ" ಕುಮಾಂ  
೨-೧೪ । 8. ಕವಿ.



ವೆಪಸ ವೇಧಸ (ನಂ) ಅಂಗುಷ್ಠದ ಮೂಲ, ಹೆಬ್ಬರಳಿನ ಬುಡ.

ವೆಪಿತ ವೇಧಿತ (ವಿಂ) ರಂಧ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತೂತು ಕೊರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿಪ (ವಿಧಾನ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ವೆಪಿತ್ ವೇಧಿತ್ಯ (ವಿಂ) ರಂಧ್ರ ಮಾಡುವವನು, ತೂತು ಕೊರೆಯುವವನು. ವಿಪ (ವಿಧಾನ) "ತೃತ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ವೆಪಿನ್ ವೇಧಿನ್ (ವಿಂ) ತೂತು ಮಾಡುವವನು, ವೆಜ್ಜ ಕೊರೆಯುವವನು. ವಿಪತಿ-ವಿಪ (ವಿಧಾನ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। "ತೇಷಾಮಕ್ಷಿಣಿ ಕರ್ಣಾಶ್ಚ ನಾಸಿಕಾಶ್ಚೈವ ಮಾಯಾ | ನಿಮಿತ್ತವೇಧಿ ಸ ಮುನಿರೀಷಿಕಾಃ ಸಮರ್ಥಯತ್" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೬-೩೦।

ವೇಪ್ಯ ವೇಧ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಲಕ್ಷ್ಯವಿಡಲ್ಪಡುವ, ಗುರಿಯಿಡಲ್ಪಡುವ. ವ್ಯಪ (ವಾಡನೆ) + "ಪ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)। 2. ಕೊರೆಯಲ್ಪಡುವ, ತೂತು ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. (ನಂ) 3. ಲಕ್ಷ್ಯ, ಗುರಿ.

ವೇನ ವೇನ (ಪುಂ) ಅಂಗದೇಶದ ಒಬ್ಬ ರಾಜ, ಅಂಗರಾಜನ ಪುತ್ರ. ಪೃಥುಮಹಾರಾಜನ ತಂದೆ. ವೇನನು ಬಹಳ ನಾಸ್ತಿಕನಾಗಿದ್ದುದರಿಂದ ಪ್ರಜೆಗಳು ಇವನ ಶರೀರವನ್ನು ಮಥನಮಾಡಿ ಪೃಥುಮಹಾರಾಜನನ್ನು ಪಡೆದರು.

ವೇಶಾ ವೇಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ನದಿ. "ವೇಶಾ ಭೀಮರಥಿ ಚೋಮೇ ನದಿ ಪಾಪಮಯಾಪಹೇ" ಭಾಂ 1.

ವೇಪ್ಯು ವೇಪ್ಯು (ಪುಂ) ಕಂಪನ, ನಡುಕ. ಟು ವೇಪು (ಕಂಪನೆ) "ಅಪ್ಯು" (೩-೩-೮೯)। "ವೇಪ್ಯುಃ ಶರೀರೇ ಮೇ ರೋಮಹರ್ಷಃ ಜಾಯತೇ" ಗೀತಾ ೧-೨೯।

ವೇಪನ ವೇಪನ (ನಂ) ಕಂಪನ, ನಡುಕ. ಟು ವೇಪು (ಕಂಪನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ವೇಮ ವೇಮ (ಪುಂ) ನೂಲನ್ನು ನೇಯುವ ಕೊಳವೆ, ತಾಕು ಹಲಗೆ.

ವೇಮನ್ ವೇಮನ್ (ಪುಂ) ನೂಲನ್ನು ನೇಯುವ ಕೊಳವೆ, ತಾಕು ಹಲಗೆ. ವಯಲನೆನ ವೇಮ್ (ತನ್ತುಸಂತಾನ) "ಮನಿನ್" (೩ಂ ೪-೧)। "ಸಿತಾಂಶುರ್ವಣೇಂದ್ರಯತಿ ಸ್ಮ ತದ್ಗುಣೈರ್ಮಹಾಸಿ-ವೇಮನಃ ಸಹಕೃತ್ವರೀ ಬಹುಮ್" ನೈಷಂ ೧-೧೨।

ವೇರ ವೇರ (ನಂ) 1. ಶರೀರ, ದೇಹ, ಮೈ. 2. ಬದನೆ ಗಿಡ. 3. ಕುಂಕುಮ ಕೇಸರಿ. "ವೇರಂ ಕಲೇವರೇ ಕಲೀಬಂ ವಾರ್ತಿಕೀ ಕುಡ್ಕುಮೇಷಿ ಚ" ಮೇದಿಂ 1.

ವೇರಕ ವೇರಕ (ಪುಂ) ಕಪ್ಪುಕರ

ವೇರಟ ವೇರಟ (ಪುಂ) 1. ನಿಮ್ಮವರ್ಗದವನು. 2. ಸಂಕರ ಜಾತಿಯವನು. (ನಂ) 3. ಬದರೀಫಲ, ಬೋರಹಣ್ಣು.

ವೇಲ ವೇಲ (ನಂ) ಉಪವನ, ಕೈತೋಟ.

ವೇಲಾ ವೇಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೇಳೆ, ಸಮಯ. ವೇಲ (ಕಾಲೋಪ-ದೇಶ) "ಅ:" (೩-೩-೧೦೪)। "ವೇಲೋಪಲಕ್ಷಣಾರ್ಥ ಪ್ರವಾಸಾದುಪಾವೃತ್ತೇನ ತತ್ರಭವತಾ ಕಾಶ್ಯಪೇನಾದಿಷ್ಟೋಸ್ಮಿ" ಶಾಕುಂ ೪। 2. ಒಂದು ಗಂಟೆಯ ಕಾಲ. "ಚತುರ್ವಿಂಶತಿವೇಲಾಃ-ರಹೋರಾತ್ರಂ ಪ್ರಚಕ್ಷತೇ" ಅಮ್ನಿಪುಂ 1. 3. ಸಮುದ್ರದ ತೀರ ಪ್ರದೇಶ, ಕಡಲ ದಡ. "ಸ ವೇಲಾವಪ್ರವಲಯಾಂ ಪರಿಕ್ಷೀಕೃತ-ಸಾಗರಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೩೦। 4. ಸೀಮೆ, ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ. 5. ಈಶ್ವರನ ಭೋಜನ. ಧನಿಕನ ಸುಖಭೋಜನ. 6. ರಾಗ. 7. ಸುಖವಾದ ಮರಣ. 8. ರೋಗ. 9. ನೀರಿನ ಪ್ರವಾಹ. "ವೇಲಾ ಕಾಲೇ ಚ ಸೀಮಾಯಾಮಬ್ಧಃ ಕೂಲವಿಕಾರಯೋಃ | ಅಕ್ಲಿಷ್ಟಮರಣೇ ರೋಗೇ ಇಶ್ವರಸ್ಯ ಚ ಭೋಜನೇ" ಮೇದಿಂ 1. "ಅಮ್ನೋಪೇಕ್ಷೀರನೀರವಿಕಾರಯೋಃ" ಹೇಮಂ 1. 10. ಮಾತು. 11. ಬುಧನ ಪತ್ನಿ. "ವೇಲಾ ಕಾಲೇ ಚ ರಾಗೇ ಚ ಸೀಮಿನ್ ವಾಚಿ ಬೃಷಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ವಿಶ್ವಂ 1. 12. ದಂತಮೂಲ.

ವೇಲಾಕೂಲ ವೇಲಾಕೂಲ (ನಂ) 1. ತಾಮ್ರಲಿಪ್ತ ದೇಶ. 2. ಸಮುದ್ರದ ತೀರ. "ವೇಲಾಕೂಲಂ ತಾಮ್ರಲಿಪ್ತಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1. "ದೇಶಾನ್ ನಾಗಾಯುತಪ್ರಾಣೋ ವೇಲಾಕೂಲೇ ನ್ಯಮಜ್ಜ-ಯತ್" ಭಾಗಂ 1.

ವೇಲ ವೇಲ (ಪುಂ) 1. ಗಮನ, ಸಂಚಾರ. ವೇಲ (ಚಲನೆ) "ವಲ್" (೩-೩-೧೮)। (ನಂ) 2. ವಾಯುವಿಳಂಗ. ವೇಲ (ಚಲನೆ) "ಅವ್" (೩-೧-೧೩೪)। (ವಿಂ) 3. ನಡೆಯುವ, ಸಂಚರಿಸುವ. "ಅಥೋ ವೇಲಮಮೋಘಾ ಚಿತ್ರತಢ್ಢುಲಾ" ಅಮಂ 1. 4. ಹೊರಳಾಡುವ.

ವೇಲಜ ವೇಲಜ (ನಂ) ಮೇಣಸು. ವೇಲಂ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೧೦೧)। "ಅಥ ವೇಲಜಮ್ | ಮರೀಚಂ ಕೋಲಕಂ ಕೃಷ್ಣಮೂಷಣಂ ಧರ್ಮಪತ್ತನಮ್" ಅಮಂ 1.

ವೇಲನ ವೇಲನ (ನಂ) 1. ನಡೆಯುವುದು, ಸಂಚರಿಸುವುದು. 2. ನಡುಗುವುದು, ಕಂಪನ. ವೇಲ (ಚಲನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 3. ಹೊರಳಾಡುವುದು.

ವೇಲಿ ವೇಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲತೆ, ಬಳ್ಳಿ.

ವೇಲಿತ ವೇಲಿತ (ನಂ) 1. ನಡೆಯುವುದು, ಗಮನ. 2. ನಡುಗುವುದು, ಕಂಪಿಸುವುದು. ವೇಲ (ಚಲನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 3. ಕುಟಲವಾದ, ವಕ್ರವಾದ. 4. ಅಲುಗಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕದಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವೇಲ (ಚಲನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ವೇಲಿತಂ ಗಮನೇ ಕಲೀಬಂ ಕುಡಿಕೇ ವಿಧುತೇ ತ್ರಿಪು" ಮೇದಿಂ 1. "ವ್ಯವೃಣುತ ವೇಲಿತಬಾಹುವಲ್ಲರೀಕಾ" ಮಾಘಂ ೭-೭೨।



ವೇಶ ವೇಶ (ಪುಂ) 1. ವೇಷಹಾಕುವುದು, ಅಲಂಕರಿಸುವುದು, ಶೃಂಗರಿಸುವುದು. ವಿಶಂತಿ ನಯನಾನ್ಯತ್ರ—ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) “ಘ್” (೩-೩-೧೨೧)। 2. ಗೃಹ, ಮನೆ. 3. ವೇಶ್ಯಯ ಗೃಹ, ಸೂಳೆಯ ಮನೆ. ವಿಶಂತಿ — ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) “ಘ್” (೩-೩-೧೨೧)। “ವೇಶೋ ವೇಶ್ಯಾಗೃಹೇ ಗೇಹೇ ನೇಪಥ್ಯೇ ಚ” ಹೇಮಂ। 4. ಕೂಲಿ. “ಸುನಾಚಕ್ರವಜವತಾಂ ವೇಶೇನೈವ ಚ ಜೀವತಾಮ್” ಮನುಂ ೪-೮೪। 5. ಪ್ರವೇಶ, ಒಳಗೆ ಹೋಗುವುದು. 6. ವಸ್ತ್ರಗೃಹ, ಡೇರೆ. “ಶಕಟಾಪಣವೇಶಾಶ್ಚ ಯಾನಯುಗಂ ಚ ಸರ್ವಶಃ” ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೫೧-೫೮।

ವೇಶಕ ವೇಶಕ (ಪುಂ) 1. ಗೃಹ, ಮನೆ. ವೇಶ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್”। (ವಿಂ) 2. ವೇಷಹಾಕುವವನು, ಅಲಂಕರಿಸುವವನು.

ವೇಶ (ಷ) ಧಾರಿನ್ ವೇಶ (ಷ) ಧಾರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಅಪಾಧ ಭೂತಿ, ಕಪಟಿ. ಇತರರನ್ನು ಮಂಚಿಸಲು ಕಪಟಿ ವೇಷವನ್ನು ತಾಳಿರುವವನು. ವೇಶಂ ತಾಪಸಾದಿವೇಶಂ (ಲಿಙ್) ಧಾರಯತಿ — ಧ (ಧಾರಣೆ) + ಗಿಣಿ “ಗಿಣಿ:” (೩-೧-೧೩೪)। (ವಿಂ) 2. ವೇಷವನ್ನು ಧರಿಸಿ ಅಭಿನಯಿಸುವವನು.

ವೇಶನ ವೇಶನ (ನಂ) 1. ಗೃಹ, ಮನೆ. 2. ಪ್ರವೇಶ, ಒಳಗೆ ಹೋಗುವುದು. ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

ವೇಶನಾರಿ ವೇಶನಾರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇಶ್ಯ, ಸೂಳೆ.

ವೇಶಂತ ವೇಶಂತ (ಪುಂ) 1. ಕೊಳ, ಚಿಕ್ಕದಾದ ಸರೋವರ. ವಿಶಂತಿ ನಯನಾನ್ಯತ್ರ — ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) “ಘ್” (೩-೩-೧೨೧)। “ವೇಶಂತಃ ಪಲ್ವಲಂ ಚಾಲ್ಪಸರಃ” ಅಮಂ। 2. ಅಗ್ನಿ.

ವೇಶರ ವೇಶರ (ಪುಂ) ಹೇಸರಗತ್ತೆ.

ವೇಶವಾರ ವೇಶವಾರ (ಪುಂ) ಸಂಬಾರ, ಮಸಾಲೆ, ಚಟ್ನಿ. (ಅನ್ನವು ರುಚಿಸುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವ ವ್ಯಂಜನ.)

ವೇಶಮನ್ ವೇಶ್ಮನ್ (ನಂ) ಗೃಹ, ಮನೆ. ವಿಶಂತಿ ನಯನಾನ್ಯತ್ರ — ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) “ಮಿನ್” (೩-೩-೧೪೪)। “ಅರುಣಿತ-ಮಕಠೋರೈವೇಶಮ ಕಾಶ್ಮೀರಜಾಘ್ರಃ ಸ್ನಪಿತಮಿವ ತದೇತಕ್ಷಾನುಭಿ-ಭೀತಿ ಭಾನೋಃ” ಮಾಘಂ ೧೧-೫೩।

ವೇಶಮನಕುಲ ವೇಶ್ಮನಕುಲ (ಪುಂ) ಗಂಧಮೂಷಿಕ, ಕಸ್ತೂರಿ ಇಲಿ, ಮೂಗಿಲಿ.

ವೇಶಮನ್ ವೇಶ್ಮಭೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೃಹನಿರ್ಮಾಣಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ಭೂಮಿ, ಮನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟಲು ಸೂಕ್ತವಾದ ನಿವೇಶನ, ವಾಸ್ತು. ವೇಶಮನೋ ಭೂಃ। “ವೇಶಮನ್ವಾಸ್ತುರ-ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” ಅಮಂ।

ವೇಶ್ಯ ವೇಶ್ಯ (ನಂ) 1. ವೇಶ್ಯಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ಮನೆ, ಸೂಳೆಗೆ ಹಿತವಾದ ಮನೆ. ವೇಶ್ಯಾಯೇ ಹಿತಮ್ “ಯತ್” (೫-೧-೫)। (ವಿಂ) 2. ಪ್ರವೇಶಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ. ವೇಶಮಹಂತಿ — “ಯತ್” (೫-೧-೬೩)।

ವೇಶ್ಯಾ ವೇಶ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೂಳೆ, ಮಾರಾಂಗನೆ. ವೇಶೇನ ನೇಪಥ್ಯೇನ ಶೋಭತೇ “ಯತ್” (೫-೧-೧೦೦)। “ತ್ವಂ ವಾಪಿವ ಲತೇವ ನೋರಿವ ಜನಂ ವೇಶ್ಯಾಸಿ ಸರ್ವಂ ಭಜ” ಮೃಚ್ಛಂ ೧-೩೨।

ವೇಶ್ಯಾಚಾರ್ಯ ವೇಶ್ಯಾಚಾರ್ಯ (ಪುಂ) ವೇಶ್ಯೆಯರಿಗೆ ಆಶ್ರಯಕೊಟ್ಟು ರಕ್ಷಿಸುವವನು, ತಲೆಹಿಡುಕ. ವೇಶ್ಯಾ-ನಾಮಾಚಾರ್ಯಃ।

ವೇಶ್ಯಾಜನಸಮಾಶ್ರಯಃ ವೇಶ್ಯಾಜನಸಮಾಶ್ರಯಃ (ಪುಂ) ವೇಶ್ಯೆಯರ ವಾಸಸ್ಥಾನ, ಸೂಳೆಯರ ಕೇರಿ.

ವೇಶ ವೇಷ (ಪುಂ) 1. ವಸ್ತ್ರ ಅಭರಣ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಸೌಂದರ್ಯವನ್ನು ಅಧಿಕಗೊಳಿಸುವ ಕಾರ್ಯ, ಒಡವೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಅಲಂಕರಿಸುವುದು. ವಿಶ್ಲ (ವ್ಯಾಪ್ತೆ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮)। 2. ರೂಪವನ್ನು ಬದಲಾಯಿಸುವುದು. “ವಿನಿತಿತವೇಶಃ ಕೃಪಣಃ ಪ್ರಣಿಪತ್ಯೋಪ-ಸೃತ್ಯ ಚ” ರಾಮಾಂ।

ವೇಶಣಾ ವೇಷಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೂಮ್ಯಾಮಲಕ, ನೆಲನಲ್ಲಿ ಗಿಡ.

ವೇಶವಾರ ವೇಷವಾರ (ಪುಂ) “ವೇಶವಾರ” ಪದದ ಅರ್ಥ.

ವೇಶ ವೇಷ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಸುತ್ತುಗಟ್ಟುವುದು. ವೇಶ (ವೇಶನೆ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮)। 2. ಬೇಲಿ, ಸುತ್ತುಗೋಡೆ, ಆವರಣ. 3. ರುಮಾಲು, ಶಿರೋವೇಷ್ಮನ. 4. ಮರದ ರಸ, ಗೋಂದು.

ವೇಶಕ ವೇಷ್ಯಕ (ಪುಂ) 1. ಬೇಲಿ, ಸುತ್ತುಗೋಡೆ, ಆವರಣ. ವೇಶ (ವೇಶನೆ) “ಘ್” (೩-೩-೧೩೩)। 2. ಕೂಶ್ಮಾಂಡ, ಕುಂಬಳಕಾಯಿ ಗಿಡ. (ನಂ) 3. ಶಿರೋವೇಷ್ಮನ, ರುಮಾಲು. 4. ಆವರಣ, ಹೊದಿಕೆ. (ವಿಂ) 5. ಸುತ್ತುವ, ಹೊದಿಸುವ. 6. ಸುತ್ತುಗಟ್ಟುವ.

ವೇಶನ ವೇಷ್ಯನ (ನಂ) 1. ಉಪ್ಪೇಷ, ರುಮಾಲು. ವೇಶನೆ — ವೇಶ (ವೇಶನೆ) “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಕಣ್ಣ ದೊಳಗಿನ ರಂಧ್ರ, ಕಿವಿಯೊಳಗಿನ ವಿವರ. 3. ಆವರಣ, ಬೇಲಿ, ಸುತ್ತುಗೋಡೆ. “ಶ್ರೀಡಾಶಿಲಃ ಕನಕಕದಲಿವೇಶನ-ಪ್ರೇಕ್ಷಣೀಯಃ” ಮೇಘಂ ೨-೧೪। 4. ಸುತ್ತುವರೆಯುವುದು, ಸುತ್ತಿಕೊಳ್ಳುವುದು. “ಭೌಗಿವೇಶನಮಾರ್ಗೈಃ ಚಂದನಾನಾಂ ಸಮರ್ಪಿತಮ್। ನಾಸಸತ್ಕರಣಾಂ ಗ್ರೇವಂ ತ್ರಿಪದೀಚ್ಛೇದಿನಾಮಪಿ” ರಘುಂ ೪-೪೮। 5. ಮುಚ್ಚಳ, ಹೊದಿಕೆ. 6. ಕಿರೀಟ, ಉಪ್ಪೇಷ, ರುಮಾಲು. “ರಜೋಮಿಸ್ತುರಗೋರ್ತೀರ್ಣಿಸ್ಪಷ್ಟಾ-



ಲಕವೆಂಟನೊ" ರಘುಂ ೧-೪೨ | 7. ಸುತ್ತುವರೆಯುವುದು, ಮುತ್ತಿಗೆಹಾಕುವುದು, ಸುತ್ತುಗಟ್ಟುವುದು. 8. ತಡೆಯುವುದು.

ವೆಂಟನಕ ವೇಷ್ಯನಕ (ಪುಂ) ರತಿಬಂಧದ ಒಂದು ಭೇದ.

"ऊर्ध्वगं पादमेकञ्च भुजान्तर्वेष्टयेद्यदि । कान्तकक्षा-  
श्रितां नारीं बन्धो वेष्टनकः स्मृतः" ರತಿಮಂ |

ವೆಂಟವೆಂಟನಕ ವೇಷ್ಯವೇಷ್ಯನಕ (ಪುಂ) ರತಿಬಂಧದ ಒಂದು ಭೇದ. ವೆಂಟನೆನ ವೆಂಟನೆ — ವೆಂಟ (ವೆಂಟನೆ) "ಪ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |

ವೆಂಟಿತ ವೇಷ್ಯಿತ (ವಿಂ) 1. ಸುತ್ತುಗಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟು, ಸುತ್ತುವರೆಯಲ್ಪಟ್ಟು. ವೆಂಟ (ವೆಂಟನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಹೊದಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟು. (ನಂ) 4. ಸುತ್ತುಗಟ್ಟುವುದು, ಮುತ್ತಿಗೆಹಾಕುವುದು. 5. ಹೊದಿಸುವುದು, ಮುಚ್ಚುವುದು. ವೆಂಟ ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) | 6. ತಡೆಯುವುದು, ಅಡ್ಡಿಯುಂಟು ಮಾಡುವುದು. 7. ನರ್ತನದ ಒಂದು ಅವಸ್ಥೆ.

ವೆಂಷ ವೇಷ್ಯ (ಪುಂ) ನೀರು, ಜಲ. ವಿಷ್ಣು (ವ್ಯಾಪ್ತಿಯ) "ಪಃ" (೩ಂ ೩-೨೩) | ವೆಂಷ: ಪಾನೀಯಮ್ ಸಿಂ ಕೌಂ |

ವೆಸನ ವೇಸನ (ನಂ) ದ್ವಿದಳ ಧಾನ್ಯದ ಹಿಟ್ಟು, ಕಡಲೆ ಉಮ್ಮ ಹೆಸರು ಮುಂತಾದ ಧಾನ್ಯಗಳ ಬೇಳೆಯ ಜೋರ್. ವೆಸ್ (ಗತಿಯ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೯) | "ದಾಲಯಶ್ರಣ-  
ಕಾನಾಂತು ನಿಸ್ತುಷಾ ಯನ್ತ್ರಪೇಷಿತಾಃ | ತಚ್ಚೂರ್ಣಂ ವೆಸನಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ  
ಪಾಕಶಾಸ್ತ್ರವಿಶಾರದೈಃ" |

ವೆಸರ ವೇಸರ (ಪುಂ) ಹೇಸರಗತ್ತೆ. ವೆಸ್ (ಗತಿಯ) "ಅರಃ" ಬಾಹುಂ | "ತೂರ್ಣಂ ಪ್ರಣೇತ್ರಾ ಕೃತನಾದಮುಚ್ಚಕೈಃ ಪ್ರಣೋದಿತಂ  
ವೆಸರಯುಗ್ಮಮಘನಿ" ಮಾಘಂ ೧೨-೧೯ |

ವೆಸವಾರ ವೇಸವಾರ (ಪುಂ) "ವೆಶವಾರ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ವೆಹತ್ ವೇಹತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರ್ಭಪಾತವಾಗುವ ಹಸು, ಗರ್ಭ ಧರಿಸಿರುವಾಗ ವೃಷಭದ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಗರ್ಭದ ಪತನವಾಗುವ ಹಸು. ವಿಹಂತಿ ಗರ್ಭ ನಿಪಾಂ (೩ಂ ೨-೮೪) |

ವೆಹಾರ ವೇಹಾರ (ಪುಂ) (ಬಿ)ವಿಹಾರ. (ಬಿ)ಹಾರ ದೇಶ.

ವೈ ವೈ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಇದೊಂದು ಪಾದಪೂರಣಕ್ಕಾಗಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ಅವ್ಯಯ. ವಾ (ಗತಿಗನ್ವನಯಃ) "ಛೇಃ" (೩ಂ ಬಾಹುಂ) | "ತು ಹಿ ಚ ಸ್ಮ ಹ ವೈ ಪಾದಪೂರಣೇ" ಅಮಂ | "ಸತ್ಸಂಕ್ಷಲ್ಪಸ್ಯ ತೇ ಬ್ರಹ್ಮಾನ್ ಯದ್ವೈ ವ್ಯಾಯತಿ ತೇ ವಯಮ್" ಭಾಗಂ ೪-೧-೩೦ | 2. ಅನುನಯ. 3. ಅವಧಾರಣ, ನಿಶ್ಚಯ. "ಸರ್ವೆ ವೈ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋಹಿತಿ" ಮನ್ | 4. ಸಂಬೋಧನೆ. "ವೈ ಸ್ಯಾತ್ಸಂಬೋಧನೇ ಪಾದಪೂರಣಽ-  
ನುನಯೇಷಿ ಚ" ಮೇದಿಂ |

ವೈಶತಿಕ ವೈಶತಿಕ (ವಿಂ) ಇಷ್ಟತ್ತರಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿಶತಯಾ ಕ್ರೀತಃ "ಠಜ್" (೪-೧-೩೭) |

ವೈಕಕ್ಷ ವೈಕಕ್ಷ (ನಂ) ಕಂಠದಿಂದ ವಕ್ಷಸ್ಥಲದಲ್ಲಿ ಅಡ್ಡಲಾಗಿ ಹಾಕಿರುವ ಹಾರ. ವಿಶಿಷ್ಟಃ ಕಕ್ಷೋಽಸ್ಮಾತ್ ವಿಕಕ್ಷ-  
ಮುರಃಸ್ಥಲಮ್ — ತತ್ರ ಭವಮ್ "ಅಙ್" (೪-೩-೪೩) |

ವೈಕಕ್ಷಕ ವೈಕಕ್ಷಕ (ನಂ) ಯಜ್ಞೋಪವೀತದಂತೆ ಅಡ್ಡಲಾಗಿ ಹಾಕಿಕೊಳ್ಳುವ ಪುಷ್ಪದ ಹಾರ. ವಿಕಕ್ಷ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೪-೪-೪) | "ವೈಕಕ್ಷಕಂ ತು ತತ್ | ಯತ್ತಿಯಕ್  
ಕ್ಷಿಪ್ತಮುರಸಿ" ಅಮಂ |

ವೈಕಕ್ಷತ ವೈಕಕ್ಷತ (ಪುಂ) 1. ಹುಳಿಬೇಲದ ಮರ. ವಿಕಕ್ಷತ ಏವ — ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೪-೪-೪) | (ವಿಂ) 2. ಹುಳಿಬೇಲದ ಮರದಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಯಾಗದ ಪಾತ್ರೆ. ವಿಕಕ್ಷತಸ್ಯ ವಿಕಾರಃ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೪೧) |

ವೈಕಲ್ಪಿಕ ವೈಕಲ್ಪಿಕ (ವಿಂ) ವಿಕಲ್ಪವಾಗಿ ಉಂಟಾದ. ವಿಕಲ್ಪೇನ ಭವಮ್ | ಏವಂ ಚ "ಇವೇನ ಸಮಾಸಃ" ಇತ್ಯಾದಿ  
ವೈಕಲ್ಪಿಕಮಿತಿ ಸಿದ್ಧಮ್ |

ವೈಕಲ್ಯ ವೈಕಲ್ಯ (ನಂ) 1. ನೋವನವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಯಾವುದಾದರೊಂದು ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಕೊರತೆಯಿರುವಿಕೆ. ವಿಕಲ್ಯಸ್ಯ  
ಭಾವಃ "ಛಜ್" (೪-೧-೧೨೪) | 2. ದೋಷ, ಕಳಂಕ. 3. ಅಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಅಶಕ್ತತೆ. 4. ಅಂಗಹೀನವಾಗಿರುವಿಕೆ.

ವೈಕುಠ ವೈಕುಠ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠ, ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ವಿಗತಾ ಕುಠಾ ನಾಶೋಽಸ್ಯ ವಿಕುಠಂ ಜ್ಞಾನಂ ಸ್ಥಾನಂ ಚಾಸ್ತಿ  
ಸ್ವರೂಪತ್ವೇನಾಶ್ರಯತ್ವೇನ ವಾಸ್ಯ "ಅಙ್" (ವಾಂ ೪-೨-೧೦೩) | ವಿಕುಠಾನಾಂ ಜೀವಾನಾಮಯಂ ನಿಯಂತಾ ಜ್ಞಾನದೋ ವಾ "ಅಙ್" (೪-೩-೧೨೦) | ಇತಿ ವಾ | ವಿಕುಠಾಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಅಙ್" (೪-೧-೧೧೨) ಇತಿ ವಾ | "ಚಾಕ್ಷುಷಸ್ಯಾಂತರೇ ದೇವೋ ವೈಕುಠಃ  
ಪುರುಷೋತ್ತಮಃ | ವಿಕುಠಾಯಾಮಯಂ ಜಜ್ಞೇ ವೈಕುಠೇ ದೇವತೈಃ ಸಹ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ | "ವಿಲಿಖ್ಯದೇಶ್ಯೇಶ್ವರಶೋಣಿತಾನಾಂ ವೈಕುಠಕೇಯೂರಜುಷಾಂ  
ಮಣೀನಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೮-೩೦ | ಕುಠಿ (ಪ್ರತಿಧಾತೇ) ಸ ಚಾತ್ರ ಸಂಶ್ಲೇಷಣವಿಧಾತಃ, ಸ ಚ ವಿಗತೋ ಯೇಷಾಂ ತೇ ವಿಕುಠಾಃ,  
ತೇಷಾಮಯಮ್ ವೈಕುಠಃ ಇತಿ ವಾ | "ಮಯಾ ಸಂಶ್ಲೇಷಿತಾ ಭೂಮಿ-  
ರದ್ವಿವ್ಯೋಮಿ ಚ ವಾಯುನಾ | ವಾಯುಶ್ಚ ತೇಜಸಾ ಸಾರ್ಥಂ ವೈಕುಠತ್ವಂ  
ತತೋ ಮಮ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ |

ವೈಕುಂಠನ ನಾಮಮಹಿಮೆ : ರಾಮ ನಾರಾಯಣ ಅನಂತ ಮುಕುಂದ ಮಧುಸೂದನ ಕೃಷ್ಣ ಕೇಶವ ಕಂಸಾರಿ ಹರಿ ವೈಕುಂಠ ಮಾಮನ ಈ ಏಕಾದಶ ನಾಮಗಳನ್ನು ಪಠಿಸುವವನು ಕೋಟಿ ಜನ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ ಪಾಪಗಳನ್ನು ಕಳೆದು ಕೊಳ್ಳುವನು. "ರಾಮ ನಾರಾಯಣಾನಂತ ಮುಕ್ತುಂದ ಮಧುಸೂದನ |



ಕೃಷ್ಣ ಕೇವಲ ಕಂಸಾರೇ ಹರೇ ವೈಕುಂಠ ವಾಮನ | ಇತ್ಯೇಕಾದಶ  
ನಾಮಾನಿ ಪಠೇದಾ ಪಾಠಯೇದಿ | ಜನ್ಮಕೋಟಿಸಹಸ್ರಾಣಾಂ  
ಪಾತಕಾದವಮುಚ್ಯತೇ" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ | ವೈಕುಂಠನ (ಪರಮಾತ್ಮನ)  
ಮಹಿಮೆಯು ಅನಂತವಾದುದು. ["ವಿಮೂರ್ತಿ" ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ] 2. ಇಂದ್ರ. "ವೈಕುಂಠಃ ಕೃಷ್ಣಾಶಕ್ಯೋಃ"  
ಮೇದಿಂ | (ನಂ) 3. ವೈಕುಂಠಲೋಕ, ವಿಷ್ಣುಲೋಕ,  
ಪರಮಪದ. ಭೂಮಿಯಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಂಟು ಕೋಟಿ  
ಯೋಜನಗಳ ದೂರದಲ್ಲಿ ಸತ್ಯಲೋಕವಿರುವುದು. ಸತ್ಯ  
ಲೋಕದಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಅನೇಕ ಯೋಜನಗಳ ದೂರ  
ದಲ್ಲಿಯೂ ಭೂಲೋಕದಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹದಿನೆಂಟು (18)  
ಕೋಟಿ ಯೋಜನಗಳ ದೂರದಲ್ಲಿಯೂ ವೈಕುಂಠಲೋಕ  
ವಿರುವುದು. ಈ ವೈಕುಂಠಲೋಕದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀ ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮೀ  
ಸೇವಿತನಾದ ಶ್ರೀ ಮಹಾವಿಷ್ಣುವು ಸಮಸ್ತ ಭಾಗವತರ  
ಸೇವೆಯನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುತ್ತ ಸಕಲರಿಗೂ ಅಭಯಪ್ರದಾನ  
ಮಾಡುತ್ತ ವಿರಾಜಿಸುತ್ತಿರುವನು. ವೈಕುಂಠಲೋಕಕ್ಕೆ  
ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ 16 ಕೋಟಿ ಯೋಜನಗಳ ದೂರದಲ್ಲಿ  
ಶಿವಲೋಕವಿರುವುದು. ಈ ಶಿವಲೋಕದಲ್ಲಿರುವ ಕೈಲಾಸ  
ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಪರಶಿವನು ಪಾರ್ವತೀದೇವಿಯೊಡಗೂಡಿ  
ಸಮಸ್ತ ಪ್ರಮಥಗಣಗಳಿಂದ ಪರಿವೃತನಾಗಿ ಅವರಿಂದ  
ಸೇವೆಯನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುತ್ತಿರುವನು. "ತಪರಿಣಿರಾತ್ ಕ್ಷಿತೀರಣಿ  
ಕೋಟಯಃ ಸತ್ಯಮೀರಿತಮ್ | ಸತ್ಯಾದುಪರಿ ವೈಕುಂಠೋ ಯೋಜನಾಂ  
ಪ್ರಮಾಣತಃ | ಭೂಲೋಕಾನ್ ಪರಿಸಂಖ್ಯಾತಃ ಕೋಟಿರಷ್ಟಾದಶ ಪ್ರಭೋ |  
ಯತ್ರಾಸ್ತೇ ಶ್ರೀಪತಿಃ ಸಾಕ್ಷಾತ್ ಸರ್ವೇಷಾಮಭಯಪ್ರದಃ | ವೈಕುಂಠಾದುತ್ತರೇ  
ಶೈವೋ ಲೋಕಃ ಷೋಡಶಕೋಟಯಃ | ತಿರ್ಯಗೇವ ಮಹಾರಾಜ ಕಿಲಾಸಾ-  
ಖ್ಯಸ್ತು ಪರ್ವತಃ | ಪಾರ್ವತೀ ಸಹಿತಃ ಶಮ್ಭುಃ ಯತ್ರಾಸ್ತೇ  
ಸ್ವರ್ಗಣೈವೈತಃ" ಪಾಞಂ ಸ್ವರ್ಗಖಂಂ ೬ | ವೈಕುಂಠಲೋಕ  
ಪರಮಪದ ಪರಮಪ್ರೋಮ ಇತ್ಯಾದಿ ನಾಮಧೇಯ  
ಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಶ್ರೀ ವೈಕುಂಠಲೋಕವು ಸನಕ  
ಸನಂದನ ಚತುರ್ಮುಖ ವಾಮದೇವಾದಿಗಳಿಗೂ ಅಚಿಂತ್ಯ  
ಸ್ವಭಾವದ ಮತ್ತು ಅಮೃತ ಮಹಾಮಹಿಮರಾದ ನಿತ್ಯ  
ಸಿದ್ಧರಿಂದಲೂ ಭಗವದಾನುಕೂಲ್ಯವೇ ಪರಮಪುರುಷಾರ್ಥ  
ವೆಂದು ತಿಳಿದು ಅನವರತವೂ ಪರಮಪುರುಷನ ಕೈಂಕರ್ಯ  
ದಲ್ಲಿ ನಿರತರಾದ ಮಹಾತ್ಮರಾದ ಭಾಗವತರಿಂದಲೂ  
ತುಂಬಿ ಶೋಭಾಯಮಾನವಾಗಿರುವುದು. ಶ್ರೀ ವೈಕುಂಠ  
ಲೋಕದ ಪರಿಮಾಣ ಇದರ ಐಶ್ವರ್ಯ ಮತ್ತು ಸ್ವಭಾವ  
ಗಳು ಎಷ್ಟು ಎಂತಹುದು ಎಂದು ಈ ದಿವ್ಯಪುರುಷರಿಗೂ  
ಅಳಿಯಲೂ ತಿಳಿಯಲೂ ಸಾಧ್ಯವಾಗಲಾರದು. ಶ್ರೀ  
ವೈಕುಂಠಲೋಕದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಶತಸಹಸ್ರದಿವ್ಯಾವರಣ  
ಗಳಿಂದ ಆವೃತವಾಗಿಯೂ ಶತಸಹಸ್ರಕೋಟಿ ದಿವ್ಯೋ

ದ್ಯಾನಗಳಿಂದ ಪರಿವೃತವಾಗಿಯೂ ಇರುವ ಒಂದು  
ದಿವ್ಯಾಯತನವೂ ಅದರ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ದಿವ್ಯರತ್ನಸ್ತಂಭ  
ಗಳಿಂದ ಪರಿಶೋಭಿತವಾದ ದಿವ್ಯ ರತ್ನಾಸ್ಥಾನಮಂಡಪವೂ  
ಇರುವುದು. ಅದರಲ್ಲಿರುವ ದಿವ್ಯ ಯೋಗಪರ್ಯಂಕದಲ್ಲಿ  
ತನ್ನ ದಿವ್ಯಕಾಂತಿಯಿಂದ ಸಮಸ್ತ ವೈಕುಂಠಲೋಕವನ್ನೂ  
ಆಪ್ತಾಯನಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ ಮತ್ತು ಅನಂತ ಗರುಡ  
ವಿಷ್ಣುಕೋನಾದಿಗಳನ್ನು ಪರಮಾತ್ಮನ ಆಯಾ ಅವಸ್ಥೋ  
ಚಿತವಾದ ಸೇವಾಕೈಂಕರ್ಯದಲ್ಲಿ ಆಜ್ಞಾಪಿಸುತ್ತಿರುವ  
ಶ್ರೀ ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿಯೊಡನೆ ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣನು  
ವಿರಾಜಿಸುತ್ತಿರುವನು. ಅಲ್ಲಿ ಸಂಸಾರಧರ್ಮವೆಲ್ಲವನ್ನೂ  
ತ್ಯಜಿಸಿ ಭಗವತ್ಪರಿಚರ್ಯೆಯೇ ಪರಮಭೋಗ್ಯವೆಂದು  
ತಿಳಿದಿರುವ ನಿತ್ಯಸಿದ್ಧರಿಂದ ಅನವರತವೂ ಸೇವಿಸಲ್ಪಡುತ್ತ  
ದಿವ್ಯ ಗಾಂಭೀರ್ಯ ಚಿದಾಯ ಸೌಂದರ್ಯ ಮಾಧು  
ರ್ಯಾದಿ ಅನವಧಿಕ ಗುಣಗಣಾಲಂಕೃತವಾದ ತನ್ನ ಲೀಲಾ  
ಲಾಪಾಮೃತರಸದಿಂದ ಭಕ್ತವೃಂದದ ಹೃದಯಾಂತರಾಳ  
ವನ್ನು ತುಂಬುತ್ತಿರುವನು. "ವೈಕುಂಠೇ ತು ಪರೇ ಲೋಕೇ ಶ್ರಿಯಾ  
ಸಾರ್ಥಿ ಜಗತ್ಪತಿಃ | ಆಸ್ತೇ ವಿಷ್ಣುರಚಿಂತಿತಾತ್ಮಾ ಭಕ್ತ-  
ಭಾಗವತಃ ಸಹ" || ಇಂತಹ ಸಕಲಗುಣಗಣವಿಭೂಷಿತ  
ವಾದ ಶ್ರೀ ವೈಕುಂಠವನ್ನು ಸೇರಿದವರಿಗೆ ಅಪುನರಾವೃತ್ತಿ  
ರೂಪವಾದ ಮೋಕ್ಷವು ಸಿದ್ಧ. "ಅಮೃತಂ ಶಾಶ್ವತಂ ನಿತ್ಯ-  
ಮನಂತಂ ಪರಮಂ ಪದಮ್ | ಹಿರಣ್ಯಮಂ ಮೋಕ್ಷಪ್ರದಂ ಬ್ರಹ್ಮಾನಂದ-  
ಸುಖಾಹ್ವಯಮ್ | ಏವಮಾದಿಗುಣೋಪೇತಂ ತದ್ವಿಷ್ಣುಃ ಪರಮಂ ಪದಮ್ |  
ಯದ್ಗತವಾ ನ ನಿವರ್ತಂತೇ ತದ್ವಾಮ ಪರಮಂ ಹರೇಃ | ನ ಹಿ ವರ್ಣಯಿತುಂ  
ಶಕ್ಯಂ ಕಲ್ಪಕೋಟಿಶತೇರಪಿ" ||

ವೈಕೃತ ವೈಕೃತ (ನಂ) 1. ವಿಹಾರ, ರೂಪಬದಲಾವಣೆ.  
ವಿಕ್ರತಮೇವ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮) | "ದೃಶ್ಯಮಾನೇಷು ವಕ್ತೃಷು  
ಪರಂ ಭವತಿ ವೈಕೃತಮ್" ರಾಮಾಂ | 2. ವೈಕೃತ, ಬದಲಾವಣೆ.  
3. ವಿಭಿನ್ನ ರಸ. 4. ದುರ್ನಿಮಿತ್ತ, ದುಃಶಕುನ.  
"ತತ್ಪ್ರತಿಪಪವನಾದಿವೈಕೃತಂ ಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯ ಶಾಂತಿಮಧಿಕೃತ್ಯ ಕೃತ್ಯವಿತ್"  
ರಘುಂ ೧೧-೬೨ | (ವಿಂ) 5. ವಿಹಾರದಿಂದ ಉಂಟಾದ.  
"ವಿಧಿಃ ಸಾಧಾರಣೋ ಯತ್ರ ಸರ್ಗಿಃ ಪ್ರಾಕೃತವೈಕೃತಃ" ಭಾಗಂ |  
ವೈಕೃತವಿವರಣೆ ವೈಕೃತವಿವರಣೆ (೪ಂ) ಬದಲಾವಣೆಯ  
ಪರಿಣಾಮ. ಬದಲಾವಣೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ ಕಷ್ಟದ  
ಪರಿಸ್ಥಿತಿ. ವೈಕೃತಸ್ಯ ವಿವರಣೆಃ | "ಅವಿರೇಣ ವೈಕೃತವಿವರಣೆ-  
ದಾರಣಃ ಕಲಮಂ ಕಠೋರ ಇವ ಕೂಟಾಕಲಃ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೪೨ |  
ವೈಕೃತ ವೈಕೃತ (ನಂ) ವೈಕೃತ, ಬದಲಾವಣೆ. ವೈಕೃತ  
ಸ್ವಾರ್ಥ "ಏನ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪) |  
ವೈಕೃತ ವೈಕೃತ (ನಂ) ವೈಕೃತದಂತಿರುವ ಮತ್ತು  
ವೈಕೃತತಲೂ ಕಡಿಮೆ ಗುಣವುಳ್ಳ ಒಂದು ಮಾಣ.



ವಿಕ್ರಾಂತಾ ದೀವ್ಯತಿ—“ಅನ್” (೪-೪-೨)। “ವಿಕ್ರಾಂತಂ  
ವಜ್ರಸಾದೃಶ್ಯಂ ವಜ್ರವದ್ರಸವೀರ್ಯಕಮ್। ತಥಾಪ್ಯಭಾವೇ ವಜ್ರಸ್ಯ  
ಗ್ರಾಹ್ಯಂ ವೆಕ್ರಾಂತಮುತ್ತಮಮ್” ರಾಜನಿಂ।

ವೆಕ್ಲವ್ಯ ವೈಕ್ಲವ್ಯ (ನಂ) 1. ವ್ಯಥೆ, ನೋವು, ಸಂಕಟ.  
ವಿಕ್ಲವಸ್ಯ ಭಾವ: “ಽಪ್ಯ” (೪-೧-೧೨೪)। “ವೆಕ್ಲವ್ಯಂ ಮಮ  
ತಾವದೀದೃಶಮಿದಂ ಸ್ನೇಹಾದರಣ್ಯೈಕಸಃ ಪಿಡಘಂತೇ ಗೃಹಿಣಃ ಕಥಂ  
ನು ತನಯಾವಿಶ್ಲೇಷದ್ಃಖನೇವ:” ಶಾಕುಂ ೪-೫। 2. ಗಾಬರಿ,  
ದಿಗ್ಭ್ರಮೆ, ತಬ್ಬಿಬ್ಬು. 3. ಕ್ಷೋಭೆ, ದಂಗೆ, ವಿಪ್ಲವ.

ವೆಕ್ಲರೀ ವೈಖರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂಲಾಧಾರದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ  
ನಾದರೂಪವರ್ಣಕ್ಕೆ ಅರ್ಥಬೋಧಕಶಬ್ದನಿಷ್ಪತ್ತಿಯವರೆಗೆ  
ಉಂಟಾಗುವ ನಾಲ್ಕು ಅವಸ್ಥೆಗಳಲ್ಲೊಂದು. [ವಿವರಕ್ಕೆ  
“ಪಶ್ಯಂತಿ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಇದು ಶಬ್ದನಿಷ್ಪತ್ತಿ  
ಯುಂಟಾಗುವ ಕೊನೆಯ (ನಾಲ್ಕನೆಯ) ಅವಸ್ಥೆ.

ವೆಕ್ಲಾನಸ ವೈಖಾನಸ (ಪುಂ) 1. ವಾನಪ್ರಸ್ಥ, ಮೂರನೇ  
ಆಶ್ರಮ ಸ್ವೀಕರಿಸುವನು. ವಿಕ್ಲಾನಸಂ ವೇತ್ತಿ “ಅನ್”  
(೪-೨-೫೯)। “ವೆಕ್ಲಾನಸೇಭ್ಯಃ ಶ್ರುತರಾಮವಾರ್ತಾಸ್ತಿತೋ ವಿಶಿ-  
ಷ್ಟಜಾನಪತತ್ವಿಸಕ್ತಮ್” ಭಟ್ಟಿಂ ೩-೪೬। (ವಿಂ) 2.  
ವೈಖಾನಸಸಂಬಂಧವಾದ. ವೆಕ್ಲಾನಸಸ್ಯೇದಮ್ “ಅನ್”  
(೪-೩-೧೨೦)। “ವೆಕ್ಲಾನಸಂ ಕಿಮನಯಾ ವ್ರತಮಾಪ್ರದಾನಾತ್  
ವ್ಯಾಪಾರರೋಧಿ ಜನನಸ್ಯ ನಿಷೇವಿತವ್ಯಮ್” ಶಾಕುಂ ೧-೨೩।

ವೆಗುಣ್ಯ ವೈಗುಣ್ಯ (ನಂ) 1. ಸಾಮರ್ಥ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಗುಣ  
ವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ವಿಗುಣಸ್ಯ ಭಾವ: “ಽಪ್ಯ” (೪-೧-೧೨೪)।  
“ಯತ್ರಾಪವರ್ತತೇ ಯುಯಂ ವೆಗುಣ್ಯಾತ್ಪ್ರಾಜಕಸ್ಯ ತು” ಮನುಂ ೮-೨೯೩।  
2. ತಪ್ಪು, ದೋಷ. 3. ಗುಣವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ದೋಷ  
ದಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ.

ವೆಚಕ್ಷಣ್ಯ ವೈಚಕ್ಷಣ್ಯ (ನಂ) ಜಾಣತನ, ಬುದ್ಧಿವಂತಿಕೆ,  
ನಿಪುಣತೆ. ವಿಚಕ್ಷಣಸ್ಯ ಭಾವ: “ಽಪ್ಯ” (೪-೧-೧೨೪)।  
“ಧರ್ಮಾರ್ಥಿಕಾಮಮೋಕ್ಷೇಷು ವೆಚಕ್ಷಣ್ಯಂ ಕಲಾಸು ಚ” ಸಾಂದಂ।

ವೆಚಿತ್ರ ವೈಚಿತ್ರ (ನಂ) ಚಿತ್ರಭ್ರಮಣೆ, ಕಳವಳ, ಮನಸ್ಸು  
ಸ್ಥಿರವಾಗಿಲ್ಲದಿರುವುದು. ವಿಚಿತ್ರಸ್ಯ ಭಾವ: “ಽಪ್ಯ”  
(೪-೧-೧೨೪)। “ವ್ರಜತಿ ವಿರಹೇ ವೆಚಿತ್ರಯಂ ನಃ ಪ್ರಸಾದತಿ  
ಸನ್ನಿಧಿ” ಮಾಲತೀಂ ೩-೧।

ವೆಚಿತ್ರ ವೈಚಿತ್ರ (ನಂ) 1. ಅನೇಕ ವಿಧವಾಗಿರುವುದು,  
ನಾನಾ ಬಗೆಯಾಗಿರುವುದು. ವಿಚಿತ್ರಸ್ಯ ಭಾವ: “ಽಪ್ಯ”  
(೪-೧-೧೨೪)। 2. ಅಶ್ಚರ್ಯ, ವಿಸ್ಮಯ. “ವೆಚಿತ್ರಂ  
ವಿತನೋತಿ ವಾಚಕವಿಧಿ ವಾಚಸ್ಪತೇರಂತಿಕೇ”।

ವೆಜನನ ವೈಜನನ (ಪುಂ) ಪ್ರಸವದ ತಿಂಗಳು, ಹೆರಿಗೆಯ  
ತಿಂಗಳು. ವಿಜಾಯತೇಽಸ್ಮಿನ್ — ವಿ + ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತಭಾವೇ)

ಅವಿಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)। ವಿಜನನಸ್ಯ ಜನ್ಮನಃ  
ಅಯಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦)। ಇತಿ ವಾ।

ವೆಜಯನ್ತ ವೈಜಯನ್ತ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರನ ಅರಮನೆ.  
ವೆಜಯನ್ತಃ ಪತಾಕಾಃ ಸನ್ಯಸ್ಯ “ಅಚ್” (೪-೨-೧೨೭)।  
2. ಇಂದ್ರನ ಧ್ವಜ. “ವೆಜಯಂತೋ ಮಹೇಂದ್ರಸ್ಯ ಛವಜಪ್ರಾಸಾದಯೋಃ  
ಪುಮಾನ್” ಮೇದಿಂ। “ಏಷ ಹೈಂದ್ರೋ ವೆಜಯಂತೋ ಗುಣೈರನಿತೈಃ  
ಸಮಾಹಿತಃ” ಭಾಂ। 3. ಗುಹೆ. “ವೆಜಯಂತೋ ಗುಹೇ ಛವಜೇ।  
ಇಂದ್ರಾಲಯೇ” ಹೇಮಂ।

ವೆಜಯಂತಿಕ ವೈಜಯಂತಿಕ (ವಿಂ) ಧ್ವಜವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ  
ವವನು. ವೆಜಯಂತೀ ಅಸ್ಯಸ್ಯ “ಠನ್” (೪-೨-೧೧೬)।  
ವೆಜಯಂತಿಕಾ ವೈಜಯಂತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಕ್ಕಿಲೆ ಗಿಡ.  
ವೆಜಯಂತೀ ಪತಾಕೇವ “ಕನ್” (೪-೩-೧೬)। “ಜಯಾ  
ಜಯಂತೀ ತರ್ಕಾರೀ ನಾಡೇಯಿ ವೆಜಯಂತಿಕಾ” ಅಮಂ।  
2. ನರುವಲು ಗಿಡ.

ವೆಜಯಂತಿ ವೈಜಯಂತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪತಾಕೆ, ಧ್ವಜ,  
ಬಾವುಟ. ವಿಜಯತೇ — ವಿ + ಜಿ (ಅಭಿಮವೇ) “ಛಚ್”  
(೩ಂ ೩-೧೨೮)। ವಿಜಯಂತಸ್ಯೇಯಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦)।  
“ಸಂಚಾರಿತೇ ಚಾಗುಸ್ಸಾರಯೋನೌ ಧುಪೇ ಸಮುತ್ಸರ್ಪಂತಿ ವೆಜಯಂತೀಃ”  
ರಘುಂ ೬-೮। 2. ನರುವಲು ಗಿಡ. “ವೆಜಯಂತೀ ಪತಾಕಾया  
ಜಯಂತೀಪಾದಪೇ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” ಮೇದಿಂ। 3. ಶ್ರೀ ಮಹಾವಿಷ್ಣು  
ವಿನ ವನಮಾಲೆ, ಮಹಾವಿಷ್ಣುವು ಧರಿಸಿರುವ ಮಾಲೆ.  
“ಜಯಂತೀಸಂಭವಂ ಧಾಮ ವೆಜಯಂತೀವಿಭೂಷಣಮ್” ಧಾದಂ ೧-೧।

ವೆಜಯಿಕ ವೈಜಯಿಕ (ವಿಂ) 1. ವಿಜಯ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
2. ವಿಜಯಕ್ಕೆ ನಿಮಿತ್ತವಾದ, ವಿಜಯಕ್ಕೆ ಸೂಚಕವಾದ.  
ವಿಜಯಸ್ಯ ಸಂಯೋಗಃ ನಿಮಿತ್ತಂ ವಾ “ಠನ್” (೪-೧-೩೮)।  
“ರಣೇ ಪ್ರವೇಶಸದೃಶಂ ಕರ್ಮ ವೆಜಯಿಕಂ ಕೃತಮ್” ಹರಿವಂಂ।

ವೆಜಾತ್ಯ ವೈಜಾತ್ಯ (ನಂ) 1. ಬೇರೆ ಜಾತಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ.  
2. ವಸ್ತುಗಳಿಗಿರುವ ಪರಸ್ಪರ ಭೇದ. 3. ವಿಷಯ  
ಗಳಿಗಿರುವ ಪರಸ್ಪರ ಭೇದ, ವಿಷಯಗಳು ಭಿನ್ನವಾಗಿರುವಿಕೆ.  
ವಿಜಾತೇರ್ಭಾವಿ: “ಽಪ್ಯ” (೪-೧-೧೨೪)।

ವೆಜಿಕ ವೈಜಿಕ (ಪುಂ) 1. ಅಂಕುರ. ಮೊಳಕೆ. (ನಂ) 2.  
ಕಾರಣ. 3. ಮಗ್ಗು ಎಣ್ಣೆ. “ವೆಜಿಕಂ ಕಾರಣೇ ಶಿಶ್ನುತೆಲೇ  
ಚ” ಹೇಮಂ।

ವೆಜಾನಿಕ ವೈಜಾನಿಕ (ವಿಂ) ನಿಪುಣ, ಬುದ್ಧಿವಂತ, ಜಾಣ.  
ವಿಜ್ಞಾನೇ ನಿಯುಕ್ತಃ “ಠಕ್” (೪-೪-೬೯)। “ವೆಜಾನಿಕಃ  
ಕೃತಮುಖಃ ಕೃತೀ ಕುಶಲ ಇತ್ಯಪಿ” ಅಮಂ।

ವೆಜ್ಯ ವೈಜ್ಯ (ನಂ) ವೈಜ್ಯಮಾಣ, ನವರತ್ನ  
ಗಳಲ್ಲೊಂದು.



ವೆಣ ವೈಣ (ಪುಂ) ಬಿದಿರಿನ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು.

ವೆಣವ ವೈಣವ (ಪುಂ) 1. ವೇಣುವಿನ ಅವಯವ ಅಥವಾ ಅದರ ವಿಕಾರ, ಬಿದಿರಿನ ಒಂದು ಭಾಗ ಅಥವಾ ಅದರಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ವಸ್ತು. ವೆಣೋ: ಅವಯವೋ ವಿಕಾರೋ ವಾ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೩೬) । 2. ಕೊಳಲು. "ಭೇರೀಮೃದ್ಭ-ನಿನದೇ: ಶಹ್ಲವೇಣವನಿವನೇ:" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೯೦-೧೫ । (ನಂ) 3. ಬಿದಿರಿನ ಅಕ್ಕಿ. (ವಿಂ) 4. ಬಿದಿರಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ವೆಣೋರಿದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) ।

ವೆಣವಿಕ ವೈಣವಿಕ (ವಿಂ) ವೇಣುವಾದನ ಮಾಡುವವನು, ಕೊಳಲನ್ನು ನುಡಿಸುವವನು. ವೆಣವಂ ಶಿಲ್ಪಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೫೫) ।

ವೆಣಿಕ ವೈಣಿಕ (ವಿಂ) ವೇಣುವಾದನ ಮಾಡುವವನು, ವೇಣಿಯನ್ನು ನುಡಿಸುವವನು. ವೆಣಾ ಶಿಲ್ಪಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೫೫) । "ರಕ್ತವೆಣಿಕಹತಾಧರತನ್ತ್ರೀಮಂಡಲವಣಿತ-ಚಾರು ಚುಕುಜೆ" ಮಾಘಂ ೧೦-೬೪ ।

ವೆಣುಕ ವೈಣುಕ (ವಿಂ) 1. ವೇಣುವಾದನ ಮಾಡುವವನು, ಕೊಳಲು ನುಡಿಸುವವನು. ವೆಣುನಾ ಕಾಯತಿ ಶಬ್ದಂ ಕರೋತಿ—ಕಂ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩) । ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಞ್" । (ನಂ) 2. ಆನೆಯನ್ನು ತಿವಿಯುವ ಕೋಲು. ವೆಣುನಾ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೯) । "ತೋತ್ರಂ ವೆಣುಕಮ್" ಅಮಂ ।

ವೆಣುಕೋಯ ವೈಣುಕೋಯ (ವಿಂ) ವೇಣುವಾದ್ಯಸಂಬಂಧವಾದ. ವೆಣುಕಸ್ಯಾಯಮ್—ವೆಣುಕ "ಠಞ್" (ವಾಂ ೪-೨-೧೩೮) ।

ವೆತಸಿಕ ವೈತಸಿಕ (ವಿಂ) ದೂಸವನ್ನು ಮಾರುವವನು. ವೆತಸೇನ ಚರತಿ—ವೆತಸ "ಠಕ್" (೪-೪-೮) । "ಇಮಾನ್ ಶಾಕುನಿಕಾನ್ ರಾಜನ್ ಹಂತಿ ವೆತಸಿಕೋ ಯಥಾ" ಭಾಂ ವನಂ ೩೩-೩೩ ।

ವೆತಥ್ಯ ವೈತಥ್ಯ (ನಂ) ಸುಳ್ಳು, ಮಿಥ್ಯೆ. ವಿತಥ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: ।

ವೆತನಿಕ ವೈತನಿಕ (ವಿಂ) ಕೂಲಿಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ವೆತನೇನ ಜೀವತಿ—"ಠಕ್" (೪-೪-೧೨) ।

ವೆತರಣಿ ವೈತರಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನರಕದ ನದಿ. ವಿತರಣೇನ ತೀರ್ಯತೇ—ವಿತರಣ "ಅಞ್" (೪-೨-೯೨) । ಈ ನದಿಯು ಯಮಲೋಕದ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿರುವುದು. ಇದು ಅಸ್ಥಿ ಕೇಶ ರಕ್ತಗಳಿಂದ ತುಂಬಿ ಬಹಳ ಭಯಂಕರವಾಗಿ ಹರಿಯುತ್ತಿರುವುದು. "ನದೀ ವೆತರಣಿ ನಾಮ ದುಃಸ್ವಾ ರುಧಿರಾವಹಾ । ಉಣತಯಾ ಮಹಾವೇಗಾ ಅಸ್ಥಿಕೇಶತರಂಗಿಣಿ" । 2. ಓಡ್ಡ ದೇಶದ ಒಂದು ನದಿ.

ವೆತಸ ವೈತಸ (ಪುಂ) 1. ಹುಳಿ ಹಬ್ಬ. ವೆತಸ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಞ್" (೫-೪-೩೮) । (ವಿಂ) 2. ವೇತಸ ಸಂಬಂಧವಾದ.

ವೆತಸಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫) । -ಸೌ-೩೯. "ಆತ್ಮಾ ಸಂರಕ್ಷಿತ: ಸುಹೃದ್ವಿತ್ತಿ-ಮಾಶ್ರಿತ್ಯ ವೆತಸೀಮ್" ರಘುಂ ೪-೩೫ ।

ವೆತಾನ ವೈತಾನ (ವಿಂ) 1. ಯಜ್ಞ ಸಂಬಂಧವಾದ. ವಿತಾನಸ್ಯ ಯಜ್ಞಸ್ಯೇಮೇ—ವಿತಾನ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) । "ಅಮೀ ವೇದಿ ಪರಿತ: ಕಲ್ಪತಾಘಿಣ್ಯಾ: ಸಮಿಧಂತ: ಪ್ರಾಂತ-ಸಂಸ್ತೀರ್ಣದರ್ಭಾ: । ಅಪಘನಂತೋ ದುರಿತಂ ಹವ್ಯಗಂಧೈ: ವೆತಾನಾಸ್ತ್ವಾಂ ವಹ್ನಯ: ಪಾಲಯಂತು" ಶಾಕುಂ ೪-೭ । (ನಂ) 2. ಯಜ್ಞದ ಹವಿಸ್ಸು.

ವೆತಾನಿಕ ವೈತಾನಿಕ (ಪುಂ) 1. ಯಜ್ಞದ ಅಗ್ನಿ. ವಿತಾನ: ಯಜ್ಞ: ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೫-೧-೧೦೯) । "ವೆತಾನಿಕಾನ್ ವಿಧಿವಶೇನ ವಿಹೃತ್ಯ ವಹ್ನೀನ್ ಪುण्याಶಯಾ: ಪರಿಚರಂತಿ ಪುರೋಧಸಸ್ತೇ" ಯಾದಂ ೧೯-೫ । (ವಿಂ) 2. ಯಾಗಮಾಡುವವನು. "ತ್ರಯಾ ಚ ವಿಧಯಾ ಕೇचित್ ತ್ವಾಂ ವೈ ವೆತಾನಿಕಾ ದ್ವಿಜಾ:" ಭಾಗಂ ೧೦-೪೦-೫ ।

ವೆತಾಲಿಕ ವೈತಾಲಿಕ (ಪುಂ) ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿ ರಾಜನನ್ನು ಮಂಗಳವಾದ್ಯ ಗಾನಗಳಿಂದ ಎಬ್ಬಿಸುವವನು. ವಿವಿಧೇನ ತಾಲೇನ ಚರತಿ—"ಠಕ್" (೪-೪-೮) । "ವೆತಾಲಿಕಾ: ಸ್ಫುಟಪದಪ್ರಕಟಾರ್ಥಮುಚ್ಚೈ: ಭೋಗಾವಲಿ: ಕಲಗಿರೋವಸರೇಷು ಪೆಠು:" ಮಾಘಂ ೫-೬೭ ।

ವೆದಗ್ಧಿ ವೈದಗ್ಧೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೋಭೆ, ರಮ್ಯತೆ, ಸೌಂದರ್ಯ. ವಿದಗ್ಧಸ್ಯ ಭಾವ: "ಫ್ಯಬ್" (೫-೧-೧೨೪) । ಗೌರಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೪೧) । "ಕಾಲಿಂದೀಜಲಜನಿತಶ್ರಿಯ:-ಶ್ರಯಂತೇ ವೆದಗ್ಧೀಮಿಹ ಸರಿತ: ಸುರಾಪಗಾಯಾ:" ಮಾಘಂ ೪-೨೬ ।

ವೆದಗ್ಧ್ಯ ವೈದಗ್ಧ್ಯ (ನಂ) 1. ಪಾಂಡಿತ್ಯ. ವಿದಗ್ಧಸ್ಯ ಭಾವ: "ಫ್ಯಬ್" (೫-೧-೧೨೪) । "ವೆದಗ್ಧ್ಯಾತಾಲೋಭಾಯ ಮಮ ನೈವಾಯಮುದ್ಯಮ:" ಕಥಾಸಂ । 2. ನೈಪುಣ್ಯ, ಜಾಣತನ, ಕೌಶಲ್ಯ. 3. ಶಕ್ತಿ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. "ತಚ್ಚೇದಸ್ತಿ ತತಸ್ತದೇವ ಗಮಕಂ ಪಾಂಡಿತ್ಯವೆದಗ್ಧ್ಯಯೋ:" ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೦ । 4. ರಚನಾಜಾತಂರ್ಯ. "ವೆದಗ್ಧ್ಯಂ ಜಹತಿ ಕಪೋಲಕುಡ್ಕುಮಾನಿ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೪೦ ।

ವೆದರ್ಭ ವೈದರ್ಭ (ಪುಂ) 1. ವಿದರ್ಭದೇಶದ ದೊರೆ. ವಿದರ್ಭ ನಿವಾಸೋಜ್ಯ "ಅಞ್" (೪-೩-೮೯) । 2. ಭೀಮನೃಪತಿ, ದಮಯಂತಿಯ ತಂದೆ. "ವೆದರ್ಭದ್ವತಾನುನಯೋಪಹೃತ: ಸೃಜ್ಜಾರ-ಭರ್ಜ್ಜಾರನುಭಾವಯದ್ವಿ:" ನೈಷಂ ೧೦-೩೭ । 3. ಭೋಜರಾಜ, ಇಂದುಮತಿಯ ತಂದೆ. "ವೆದರ್ಭನಿರ್ದಿಷ್ಟಮಸೌ ಕುಮಾರ: ಕಲ್ಪತೇನ ಸೋಧಾನಪಥೇನ ಮನ್ವಮ್" ರಘುಂ ೬-೩ । 4. ರುಕ್ಮಿಣಿಯ ತಂದೆಯಾದ ಭೀಷ್ಮಕರಾಜ. 5. ಮಾತಿನಲ್ಲಿ ವಕ್ರತೆ,



ಮಾತಿನಲ್ಲಿರುವ ಕಾರಿನ್ಯ. -ಕಾಪಟ್ಟ. 6. ಅಗಸ್ತ್ಯ, ಮಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿ ಲೋಪಾಮುದ್ರೆಯ ತಂದೆ. (ವಿಂ) 7. ಎದರ್ಭ ಸಂಬಂಧವಾದ.

**ವೇದರ್ಮಿ ವೈದರ್ಭೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭೀಮರಾಜನ ಪುತ್ರಿ ದಮಯಂತಿ. ವೇದರ್ಮಸ್ಯಾಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ "ಅನ್" (೪-೧-೯೨). "ವೇದರ್ಮಿ ದತ್ತಸ್ತವ ತಾವದೇಶ ವರೋ ದುರಾಪ: ಪೃಥಿವೀಶ ಎವ" ನೆಪಂ ೧೪-೭೨. 2. ಭೀಷ್ಮಕರಾಜನ ಪುತ್ರಿ ರುಕ್ಮಿಣಿ. "ಭಗವಾನಪಿ ಗೋವಿಂದ ಉಪಯೇ ಕುರುಹು. ವೇದರ್ಮಿ ಭೀಷ್ಮಕ-ಸುತಾಂ ಶ್ರಿಯೋ ಮಾತ್ರಾಂ ಸ್ವಯಂವರೇ" ಭಾಗಂ ೧೦-೫೨-೧೬. 3. ಕಾವ್ಯಕ್ಕೆ ಅತ್ಯುನ್ನತ ರಸಗಳಿಗೆ ಅನುಗುಣವಾದ ಪದಗಳ ರಚನೆಯ ಒಂದು ಭೇದ. ಇದು ವೇದರ್ಮಿ ಗೌಡಿಯಾ ಮತ್ತು ಪಾಂಚಾಲಿ ಎಂಬ ಮೂರು ವಿಧ ರೀತಿಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. "ರೀತಿರಾತ್ಮಾ ಕಾವ್ಯಸ್ಯ. ವಿಶಿಷ್ಟಪದರಚನಾ ರೀತಿ: | ಸಾ ತ್ರೇಷಾ ವೇದರ್ಮಿ ಗೌಡಿಯಾ ಪಾಂಚಾಲಿ: ತೇತಿ" ಕಾವ್ಯಾಂ ಸೂಂ. | ಎದರ್ಭದೇಶದ ಕವಿಗಳು ಈ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸಿರುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ದೇಶದ ಹೆಸರಾಯಿತು. "ವಿದರ್ಮಾದಿಭು ದೃಷ್ಟವಾತ್ತತ್ಸಮಾಖ್ಯಾ" ಕಾವ್ಯಾಂ ಸೂಂ. | ಓಜಸ್ಸು ಪ್ರಸಾದ ಮೊದಲಾದ ಸಕಲ ಗುಣಗಳಿಂದಲೂ ಕೂಡಿದ ಪದರಚನೆಯು ವೈದರ್ಭೀ ರೀತಿ. "ಸಮಗ್ರಗುಣೋಪೇತಾ ವೇದರ್ಮಿ" ಕಾವ್ಯಾಂ ಸೂಂ. |

**ವೇದಲ ವೈದಲ** (ಪುಂ) 1. ರೊಟ್ಟಿ, ದ್ವಿದಳ ಧಾನ್ಯದ ಹಿಟ್ಟಿನಿಂದ ಮಾಡಿದ ಅಪೂಪ. "ಪೂಪೋಷ್ಣು: ಪಿಷ್ಠಕ: ಸ್ವಾತ್ ವೇಲಲೋ ವಿದಲೋಷಿ ಚ" | (ನಂ) 2. ಭಿಕ್ಷುಕನ ಪಾತ್ರೆ, ಸಂನ್ಯಾಸಿಯು ಭಿಕ್ಷೆಗಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಮೃಣ್ಮಯ ಅಥವಾ ಮರದ ಪಾತ್ರೆ.

**ವೇದಿಕ ವೈದಿಕ** (ಪುಂ) 1. ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದ ವಿಪ್ರ. ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಸಂಪನ್ನನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ವೇದ ವೇತ್ತಿ - "ಠಕ್" (೪-೨-೫೯). (ವಿಂ) 2. ವೇದವಿಹಿತವಾದ, ವೇದೋಕ್ತವಾದ. "ವೇದಿಕೇ ಕರ್ಮಯೋಗೇ ತು ಸರ್ವಾಣ್ಯೇತಾನ್ಯ-ಶೇಷತ:" ಮನ್ವಂ ೧೨-೮೭.

**ವೈದುಷ್ಯ ವೈದುಷ್ಯ** (ನಂ) ಪಾಂಡಿತ್ಯ, ಜ್ಞಾನ, ವಿದ್ವತ್ತು. ವಿದುಷಿ ಭಾವ: "ಏನ್" (೫-೧-೧೨೪).

**ವೈದ್ಯ ವೈದ್ಯಾರ್ಯ** (ನಂ) ನವರತ್ನಗಳಲ್ಲೊಂದು. ವಿದ್ವಾನ್ ಪ್ರಭವತಿ-ವಿದ್ವಾನ್ "ವ್ಯ:" (೪-೩-೮೪). "ವಿಮ್ಯುಬಿಡಾಲೇ-ಕ್ಷಣಭಿಷಣಾಮ್ಯೋ ವೈದ್ಯಕೃತೃಣ್ಯು ಶಶಿಶ್ರುತಿಮ್ಯ:" ಮಾಘಂ ೩-೪೫. ನವರತ್ನಗಳು: (1) ಮಾಣಿಕ್ಯ (2) ಮುತ್ತು (3) ಹವಳ (4) ಪಚ್ಚಿ (5) ಪುಷ್ಪರಾಗ (6) ವಜ್ರ (7) ನೀಲ (8) ಗೋಮೇದಕ ಮತ್ತು (9) ವೈದ್ಯಾರ್ಯ.

**ವೇದೇಶಿಕ ವೈದೇಶಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಬೇರೆ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ವಿದೇಶೇ ದೇಶಾಂತರೇ ಭವ: "ಠನ್" (ವಾಂ ೪-೩-೬೦). 2. ಅಪರಿಚಿತ, ಪರಿಚಯವಿಲ್ಲದವನು. "ವೇದೇಶಿಕೋಽಸ್ಮೀತಿ ಪೃಚ್ಛಾಮಿ | ಕ: ಪುನರ್ಜಾಮಿತಾ" ತಂ ರಾಂ ೧.

**ವೇದೇಹ ವೈದೇಹ** (ಪುಂ) 1. ವಿದೇಹದೇಶದ ರಾಜ. ವಿದೇಹಾನ್ ರಾಜಾ-ವಿದೇಹ "ಅನ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೬೬). "ವೇದೇಹಸ್ಯ ವಯಂ ಚ ತೇ ಚ ಕಿಮಹೋ ಸಂವತ್ಸಿನೋ ನ ಪ್ರಿಯಾ:" ಮಂ. ವೀಂ ೨-೮. 2. ವಿದೇಹದೇಶದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವವನು. 3. ವರ್ತಕ. 4. ವೈಶ್ಯನಿಗೆ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು. (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 5. ವಿದೇಹದೇಶದ ಜನರು.

**ವೇದೇಹಕ ವೈದೇಹಕ** (ಪುಂ) 1. ವರ್ತಕ, ಕ್ರಯ ವಿಕ್ರಯ ಮಾಡುವವನು. ವಿದೇಹೇಷು ಭವ: "ವುನ್" (೪-೨-೧೨೭). 2. ಶೂದ್ರನಿಂದ ವೈಶ್ಯಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ವಿದೇಹಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೬೮). ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೫-೪-೫).

**ವೇದೇಹಿ ವೈದೇಹೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೀತೆ, ಜಾನಕಿ. ವಿದೇಹಸ್ಯಾ-ಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ "ಅನ್" (೪-೧-೯೨). "ತೀಪ್" (೪-೧-೧೫). "ವೇದೇಹಿಪರೀರಮ್ ಏಷ ಚ ಮಹುಶ್ವೇತನ್ಯಮಾಮೀಲಯನ್" ಮಂ. ವೀಂ ೨-೨೨. 2. ವರ್ತಕನ ಪತ್ನಿ. 3. ಹಿಪ್ಪಲಿ ಗಿಡ. 4. ಗೋರೋಚನ. "ವೇದೇಹಿ ಪಿಪ್ಪಲೀಸೀತಾರೋಚನಾಸು ವಣಿಕ್ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಹೇಮಂ.

**ವೈದ್ಯ ವೈದ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. "ವೈದ್ಯೋ ವೈದ್ಯ:ಸದಾಯೋಗಿ" ವಿಂ ಸಂ. | 2. ಪಂಡಿತ, ರೋಗಗಳಿಗೆ ಚಿಕಿತ್ಸೆ ಮಾಡುವವನು. ವಿದ್ಯಾಮವಿತ್ತೇ ವೇತ್ತಿ ವಾ "ಅನ್" (೪-೨-೫೯). **ವೈದ್ಯನ ಲಕ್ಷಣ:** ರೋಗಗಳಿಗೆ ಚಿಕಿತ್ಸೆಮಾಡುವ ವೈದ್ಯನು ವೈದ್ಯಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅಧ್ಯಯನಮಾಡಿ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಮೈಗೂಡಿಸಿಕೊಂಡಿರಬೇಕು. ಶಾಸ್ತ್ರಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಚಿಕಿತ್ಸೆ ನಡೆಸಬೇಕು. ಶುಚಿಯಾಗಿಯೂ ಕೈ ಚುರುಕುಳ್ಳವನಾಗಿಯೂ ರೋಗಿಯ ಕಣ್ಣಿಗೆ ಆನಂದವುಂಟು ಮಾಡುವ ಔಷಧ ಮತ್ತು ಸಲಕರಣೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದವನಾಗಿಯೂ ರೋಗಿಯನ್ನು ಮೃದುವಾಕ್ಯಗಳಿಂದ ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದವನಾಗಿಯೂ ಸತ್ಯ ಮತ್ತು ಧರ್ಮರತನಾಗಿಯೂ ಇತರರು ನಡೆಸಿದ ಚಿಕಿತ್ಸೆಯನ್ನು ನೋಡಿ ಅದರಿಂದ ಪರಿಣತಿಯೊಂದಿದವನಾಗಿಯೂ ಇರಬೇಕು. "ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ಕುರುತೇ ಯಸ್ತು ಸ ಚಿಕಿತ್ಸಕಃ ಉಚ್ಯತೇ | ಸ ಚ ಯಾದೃಕ್ ಸಮೀचीनಸ್ತಾದೃಶೋಽಪಿ ನಿಗದ್ಯತೇ || ತತ್ತ್ವಾಧಿಗತಶಾಸ್ತ್ರಾರ್ಯ: ದೃಢಕರ್ಮ ಸ್ವಯಂ ಕೃತೀ | ಲಘುಹಸ್ತ: ಶುಚಿ: ಶೂರ: ಸ್ವಚ್ಛೋಪಸ್ಕರಭೇಷಜ: | ಪ್ರತ್ಯುತ್ಪನ್ನಗತಿರ್ಧಿಮಾನ್"



ವ್ಯವಸಾಯಿ ಪ್ರಿಯವದಃ । ಸತ್ಯಧರ್ಮಪರೋ ಯಶ್ಚ ವೇದ ಇದ್ಕು  
ಪ್ರಶಸ್ಯತೇ" । ರೋಗಿಯಾಗಲಿ ಅವನ ಕಡೆಯವನಾಗಲಿ  
ರಿಕ್ಕಹಸ್ತನಾಗಿ ಹೋಗಿ ವೈದ್ಯನನ್ನು ಕಾಣಕೂಡದು.  
"ರಿಕ್ತಹಸ್ತೋ ನ ಪ್ರಶ್ಯೇತ್ ರಾಜಾನಂ ಭಿಷಜಂ ಗುಹಮ್" ॥  
ವೈದ್ಯನು ರೋಗಿಯನ್ನು ಎಂಟು ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಪರೀಕ್ಷಿಸಿ  
ಚಿಕಿತ್ಸೆಯನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಬೇಕು. (1) ನಾಡಿ (2) ಮೂತ್ರ  
(3) ಮಲ (4) ನಾಲಗೆ (5) ಮಾತಿನ ಧ್ವನಿ (6) ಸ್ಪರ್ಶ  
(7) ನೇತ್ರಗಳು ಮತ್ತು (8) ಆಹಾರ. ಇವು ಪರೀಕ್ಷೆಯ  
ವಿಷಯಗಳು. "ರೋಗಾಕ್ರಾಂತಶರೀರಸ್ಯ ಸ್ಥಾನಾನ್ಯಛೇದಿ  
ನಿರೀಕ್ಷಯೇತ್ । ನಾಡೀ ಮೂತ್ರಂ ಮಲಂ ಜಿಹ್ವಾಂ ಶಬ್ದಸ್ಪರ್ಶದ್ವಿಗಾಕೃತೀಃ"  
ವೇದಾಂ । ನಾಡೀ ಮೂತ್ರ ಮತ್ತು ನಾಲಗೆ ಇವುಗಳನ್ನು  
ಪರೀಕ್ಷಿಸದೆ ಚಿಕಿತ್ಸೆ ನಡೆಸುವ ವೈದ್ಯನು ಚಿಕಿತ್ಸೆಯಲ್ಲಿ  
ಯಶಸ್ಸನ್ನು ಪಡೆಯುವುದಿಲ್ಲ. "ನಾಡ್ಯಾ ಮೂತ್ರಸ್ಯ ಜಿಹ್ವಾಂ  
ಲಕ್ಷಣಂ ಯೋ ನ ವಿಂದತಿ । ಮಾರಯತ್ಯಾಶು ಜನ್ತುನ್ ಸ ವೇದೋ  
ನ ಯಶೋ ಲಭೇತ್" ವೇದಾಂ ಅಷ್ಟಸ್ಥಾನಪಂ । ನಾಡೀ  
ಪರೀಕ್ಷಾಕ್ರಮಃ : ಬಲಗೈ ಅಂಗುಷ್ಠದ (ಹೆಬ್ಬರಳಿನ)  
ಅಧೋಭಾಗದಲ್ಲಿ (ಮಣಕಟ್ಟಿನ ಬಲಭಾಗದಲ್ಲಿ) ವೈದ್ಯನು  
ತನ್ನ ಬಲಗೈಯಿಂದ ರೋಗಿಯ ನಾಡಿಯನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸ  
ಬೇಕು. "ನಾಡೀಮಙ್ಗುಲಮೂಲಾಧಃ ಸ್ಪೃಶೇದಕ್ಷಿಣಗೇ ಕರೇ ।  
ಜ್ಞಾನಾರ್ಥಂ ರೋಗಿಣೋ ವೇದೋ ನಿಜದಕ್ಷಿಣಪಾಣಿನಾ" ವೇದಾಂ ।  
ವೈದ್ಯನು ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿ (ಆಹಾರ ಸೇವನೆಗೆ ಮುಂಚೆ)  
ರೋಗಿಯ ನಾಡಿಯನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸಿ ರೋಗಸ್ವರೂಪವನ್ನು  
ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಬೇಕು. "ಅಙ್ಗುಲಮೂಲಪರಿಪಿಶ್ರಮಭಾಗಮವ್ಯ  
ನಾಡೀ ಪ್ರಭಾತಸಮಯೇ ಪ್ರಥಮಂ ಪರೀಕ್ಷೇತ್ । ವಾರತ್ರಯಂ ಪರೀಕ್ಷೇತ  
ಘೃತಾ ಘೃತಾ ವಿಮುಚ್ಚಯೇತ್ । ವಿಮುಚ್ಚಯ ಬಹುಧಾ ಬುದ್ಧಯಾ  
ರೋಗವ್ಯಕ್ತಿ ವಿನಿರ್ದಿಶೇತ್" ವೇದಾಂ । ವಾತ ಪಿತ್ತ ಮತ್ತು  
ಕಫಗಳ ವಾತಪಿತ್ತ ಪಿತ್ತಕಫ ವಾತಕಫಗಳ ಮತ್ತು  
ವಾತಪಿತ್ತಕಫಗಳ ಸ್ಥಿತಿಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸಿ ಸಾಧ್ಯ ಅಥವಾ  
ಅಸಾಧ್ಯ—ಎಂಬುದನ್ನು ನಾಡಿಯು ತಿಳಿಸುವುದು. "ವಾತಂ  
ಪಿತ್ತಂ ಕಫಂ ದ್ವಂದ್ವಂ ತ್ರಿತಯಂ ಸಾನ್ನಿಪಾತಕಮ್ । ಸಾಧ್ಯಾಸಾಧ್ಯ  
ವಿವೇಕಂ ಚ ಸರ್ವಂ ನಾಡ್ಯಾ ಪ್ರಕಾಶ್ಯತೇ" ವೇದಾಂ । ವೈದ್ಯನು  
ಹೆಂಗಸರ ಎಡಗೈ ಮತ್ತು ಎಡಗಾಲುಗಳಲ್ಲಿ ಶಾಸ್ತ್ರ  
ಸಂಪ್ರದಾಯ ಮತ್ತು ಸ್ವಾನುಭವ ಬಲದಿಂದ ಉಂಟಾದ  
ಅಭ್ಯಾಸದಿಂದ ನಾಡಿಯನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸಬೇಕು. "ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ  
ಭಿಷಗ್ವಾಮಹಸ್ತೇ ವಾಮೇ ಪಾದೇ ಚ ಯತ್ನತಃ । ಶಾಸ್ತ್ರೇಣ ಸಂಪ್ರದಾಯೇನ  
ತಥಾ ಸ್ವಾನುಭವೇನ ವೇ । ಪರೀಕ್ಷೇದ್ರೂಪವಚ್ಚಾಸಾವಮ್ಯಾಸಾದೇವ  
ಜಾಯತೇ" ವೇದಾಂ । ವಾತನಾಡಿಯ ಅಧಿದೇವತೆಯು  
ಬ್ರಹ್ಮ. ಪಿತ್ತನಾಡಿಗೆ ಶಂಕರನು ಅಧಿದೇವತೆ. ವಿಷ್ಣುವು  
ಶ್ಲೇಷ್ಮ (ಕಫ) ನಾಡಿಯ ದೇವತೆ. "ವಾತನಾಡೀ ಭವೇದ್ಬ್ರಹ್ಮ

ಪಿತ್ತನಾಡೀ ಚ ಶಂಕರಃ । ಶ್ಲೇಷ್ಮನಾಡೀ ಭವೇದ್ವಿಷ್ಣುಃ ಸ್ತ್ರೀದೇವಾ  
ನಾಡಿದೇವತಾಃ" ವೇದಾಂ । 3. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ, ಜ್ಞಾನಿ.  
4. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ವೈಶ್ಯ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಸುಕರ  
ಜಾತಿಯವನು. (ವಿಂ) 5. ವೇದ ಸಂಬಂಧವಾದ.

ವೇದಕ ವೈದ್ಯಕ (೪ಂ) 1. ವೈದ್ಯ, ಚಿಕಿತ್ಸಕ. (ನಂ) 2.  
ವೈದ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ, ಚಿಕಿತ್ಸಾಶಾಸ್ತ್ರ, ಆಯುರ್ವೇದಶಾಸ್ತ್ರ.  
ಚತುರ್ಮುಖನು ಯುಗ್ಯಜುಃಸಾಮ ಮತ್ತು ಅಥರ್ವವೇದ  
ಗಳನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪರ್ಯಾಲೋಚಿಸಿ ಅವುಗಳ ಅರ್ಥ  
ವನ್ನೂ ಆಯುರ್ವೇದವನ್ನೂ ರಚಿಸಿದನು. ಪಂಚಮ  
ವೇದವಾದ ಆಯುರ್ವೇದವನ್ನು ಸೂರ್ಯದೇವನಿಗೆ  
ಉಪದೇಶಿಸಿದನು. ಸೂರ್ಯನು ತನ್ನ ಶಿಷ್ಯರಿಗೆಲ್ಲಾ ಈ  
ಸಂಹಿತಾರೂಪವಾದ ಆಯುರ್ವೇದವನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸಿ  
ದನು. ಸೂರ್ಯನಿಂದ ಆಯುರ್ವೇದದ ಉಪ  
ದೇಶವನ್ನು ಪಡೆದು ಮುಂದೆ ಪ್ರಚಾರಮಾಡಿದವರ  
ಹೆಸರು : ಧನ್ವಂತರಿ, ದಿವೋದಾಸ, ಕಾಶೀರಾಜ, ಅಶ್ವಿನಿ  
ದೇವತೆಗಳು, ನಕುಲ, ಸಹದೇವ, ಅರ್ಕಿ, ಚ್ಯವನ, ಜನಕ,  
ಬುಧ, ಜಾಬಾಲ, ಜಾಜಲಿ, ವೈಲ, ಕವಫ, ಆಗಸ್ತ್ಯ ಇವರು  
ವೇದ ಮತ್ತು ವೇದಾಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಅಭಿಜ್ಞರಾದವರು ಮತ್ತು  
ಆಯುರ್ವೇದಶಾಸ್ತ್ರ ಪ್ರವರ್ತಕರು. "ಋಗ್ಯಜುಃಸಾಮಾ-  
ಯ-ವೇದಾನ್ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ವೇದಾನ್ ಪ್ರಜಾಪತಿಃ । ವಿಚಿಂತ್ಯ ತೇಷಾಮರ್ಥ  
ಚೈವಾಯುರ್ವೇದಂ ಚಕಾರ ಸಃ ॥ ಕೃತ್ವಾ ತು ಪಞ್ಚಮಂ ವೇದಂ ಭಾಸ್ಕರಾಯ  
ದದೌ ವಿಮುಃ । ಸ್ವತನ್ತ್ರಸಂಹಿತಾಂ ತಸ್ಮಾತ್ಪ್ರಾಸ್ಕರಶ್ಚ ಚಕಾರ  
ಸಃ ॥ ಭಾಸ್ಕರಶ್ಚ ಸ್ವಶಿಷ್ಯಮ್ಯಃ ಆಯುರ್ವೇದಂ ಸ್ವಸಂಹಿತಾಮ್ ।  
ಪ್ರದದೌ ಪಾಠಯಾಮಾಸ ತೇ ಚಕ್ರುಃ ಸಂಹಿತಾಸ್ತತಃ ॥ ತೇಷಾಂ ನಾಮಾನಿ  
ವಿದುಷಾಂ ತನ್ತ್ರಾಣಿ ತತ್ಕೃತಾನಿ ಚ । ವ್ಯಾಧಿಪ್ರಣಾಶವಿಜ್ಞಾನಿ  
ಸಾಂಘಿ ಮತ್ತೋ ನಿಶಾಮಯ ॥ ಧನ್ವಂತರಿರ್ದಿವೋದಾಸಃ ಕಾಶೀರಾಜ-  
ಸ್ತಯಾಶ್ವಿನೌ । ನಕುಲಃ ಸಹದೇವೋರ್ಕಿಶ್ಚಯವನೋ ಜನಕೋ ಬುಧಃ ॥  
ಜಾಬಾಲೋ ಜಾಜಲಿಃ ವೈಲಃ ಕವಫೋಽಗಸ್ತ್ಯಃ ಏವ ಚ । ಏತೇ  
ವೇದಾಙ್ಗವೇದಜ್ಞಾಃ ಷೋಡಶ ವ್ಯಾಧಿನಾಶನಾಃ" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ ।

ವೇದಕ ವೈದ್ಯಕ (ವಿಂ) ವಿದ್ಯುತಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
ವಿದ್ಯುತಃ ಇದಮ್ । "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) । "ವ್ಯತಿಕರ  
ಇವ ಭೀಮಸ್ತಾಮಸೋ ವೇದಕಶ್ಚ ಪ್ರಣಿಹಿತಮಪಿ ಚಕ್ಷುರ್ಯಸ್ತಮುಕ್ತಂ  
ಹಿನಸ್ತಿ" ೩೦ ರಾಂ ೪-೧೨ ।

ವೇದ ವೈದ್ಯ (ವಿಂ) 1. ವಿಧಿ ಸಂಬಂಧವಾದ, ವಿಧಿಯಿಂದ  
ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಧ್ಯುಕ್ತವಾದ. ವಿಧೇರಿದಮ್ "ಅನ್"  
(೪-೩-೧೨೦) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೪) ।  
"ಪ್ರಿಯಾಕ್ಷರಾಲೀ ರಸಧಾರಯಾಪಿ ವೇದೋ ವಿಧೇಯಾ ಮಧುಪರ್ಕ-  
ತೃಪ್ತಿಃ" ನೆಫಂ ೮-೨೦ । 2. ಶಾಸನಬದ್ಧವಾದ, ಕಾನೂನಿ  
ಗೊಳಪಡುವ.



ವೈಯಕ್ತಿಕ ವೈಯಕ್ತಿಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೈರಿಗೆ, ಕಂಡಿ ಕೊಡೆಯುವ  
ಮೊಳೆ.

ವೈಯಕ್ತಿಕ ವೈಯಕ್ತಿಕ (ನಂ) 1. ವೈಯಕ್ತಿಕವಾಗಿರುವಿಕೆ,  
ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ವಿರುದ್ಧ ಭವಃ, ತಸ್ಯ ಭಾವಃ  
“ಏವ” (೪-೧-೧೨೪) 2. ನ್ಯಾಯಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧ  
ವಾಗಿರುವಿಕೆ.

ವೈಯಕ್ತಿಕ ವೈಯಕ್ತಿಕ (ಪುಂ) ವಿಧವೆಯ ಮಗ. ವಿಧವಾ  
ಅಪತ್ಯಮ್ ಪುಮಾನ್ “ಠಕ್” (೪-೧-೧೨೩) 1.

ವೈಯಕ್ತಿಕ ವೈಯಕ್ತಿಕ (ಪುಂ) ಬುಧ. ವಿಧಿ: ಚಂದ್ರಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ 1.

ವೈಯಕ್ತಿಕ ವೈಯಕ್ತಿಕ (ನಂ) ಪತಿಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ವಿಧವಾ  
ಭಾವಃ “ಏವ” (೪-೧-೧೨೪) 1.

ವೈಯಕ್ತಿಕ ವೈಯಕ್ತಿಕ (ಪುಂ) 1. ಸುತುಮಾರ, ಚತುರ್ಮುಖಿನ  
ಪುತ್ರ. ವಿಧಾತುರಪತ್ಯಮ್ “ಅನ್” (೪-೨-೯೨) 1 (ವಿಂ)  
2. ಬ್ರಹ್ಮನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ವಿಧಾತುರಪತ್ಯಮ್ “ಅನ್”  
(೪-೩-೧೨೦) 1.

ವೈಯಕ್ತಿಕ ವೈಯಕ್ತಿಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮೀಲತೆ, ಹೊನ್ನಗೊನ್ನೆ  
ಸೊಪ್ಪು. ವಿಧಾತುರಪತ್ಯಮ್—ವಿಧಾತು “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) 1.  
“ಛೀಪ್” (೪-೧-೧೫) 1.

ವೈಯಕ್ತಿಕ ವೈಯಕ್ತಿಕ (ನಂ) ಅಗಲಿರುವಿಕೆ, ವಿಯೋಗ. ಪತಿ  
ಅಥವಾ ಪತಿಯ ಮೃತಿಯಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅವಸ್ಥೆ.  
ವಿಧುರಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಏವ” (೪-೧-೧೨೪) 1.

ವೈಯಕ್ತಿಕ ವೈಯಕ್ತಿಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಷ್ಣುಂಭ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು  
ಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ ಕೊನೆಯ ಒಂದು ಯೋಗ. ವೈಯಕ್ತಿಕ  
ಯೋಗದಲ್ಲಿ ಯಾವ ಶುಭಕಾರ್ಯವನ್ನೂ ಮಾಡಕೂಡದು.  
“ಪರಿಧಸ್ಯ ತ್ಯಜೇದ್ಧಂ ಸಪ್ತ ಶೂಲೇ ಚ ನಾಡಿಕಾಃ 1 ಗಂಢ-  
ವ್ಯಾಧಾತಯೋಃ ಷಟ್ ಚ ನವ ಹರ್ಷಣವಜ್ರಯೋಃ 1 ವೈಯಕ್ತಿಕವ್ಯತಿಪಾತೋ  
ಚ ಸಮಸ್ತೋ ಪರಿವರ್ಜಯೇತ್” 1.

ವೈಯಕ್ತಿಕ ವೈಯಕ್ತಿಕ (ವಿಂ) ಮೂರ್ಖ, ಅಜ್ಞ, ತಿಳಿಗೇಡಿ,  
ಏನನ್ನೂ ತಿಳಿಯದವನು, ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದೆ ಸಂಪ್ರ-  
ದಾಯದಂತೆ ಕಾರ್ಯಮಾಡುವವನು. ವಿಧೇಯ ವಿಧಾನಮ್—  
ತಸ್ಯಾಯಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) 1 “ಅಜ್ಞ ಮೂಢಯಥಾಜಾತ-  
ಮುಖವೈಯಕ್ತಿಕವಾಲಿಶಾಃ” ಅಮಂ 1 “ಪ್ರಲಪ್ತವೇಷ ವೈಯಕ್ತಿಕಃ”  
ಶಾಕ್ತುಂ ೨ 1.

ವೈಯಕ್ತಿಕ ವೈಯಕ್ತಿಕ (ಪುಂ) 1. ವಿನತೆಯ ಪುತ್ರ, ಗರುಡ.  
ವಿನತಾಪತ್ಯಮ್ ಪುಮಾನ್ “ಠಕ್” (೪-೧-೧೨೦) 1 “ಇತಿ  
ವಿಜ್ಞಾಪಿತೋದಂತಂ ದತ್ತಹಸ್ತಂ ಬಲದ್ವಿಷಮ್ 1 ವಿನಿವರ್ತಯ ಜಗನ್ನಾಥೋ  
ವಿನತೇಯಮಥಾಸ್ಮರತ್” ಯಾದಂ ೧೬-೫೦ 1 2. ವಿನತೆಯ  
ಪುತ್ರ ಅರಣ್ಯ.

ವೈಯಕ್ತಿಕ ವೈಯಕ್ತಿಕ (ಪುಂ) 1. ಶಸ್ತ್ರಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡುವ  
ರಥ, ಯುದ್ಧದ ತರಬೇತಿಯ ರಥ. 2. ವಿನಯ. ವಿನಯ  
ಸ್ವಾರ್ಥ “ಠಕ್” (೪-೪-೩೪) 1 (ವಿಂ) 3. ವಿನಯಕ್ಕೆ  
ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.

ವೈಯಕ್ತಿಕ ವೈಯಕ್ತಿಕ (ವಿಂ) 1. ವಿನಾಯಕನ ಸಂಬಂಧ  
ವಾದ. ವಿನಾಯಕಸ್ಯಾಯಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) 1  
“ನ ಜಾತು ವಿನಾಯಕಮೇಕಮುದ್ಧೃತಂ ವಿಷಾಣಮಥಾಪಿ ಪುನಃ  
ಪ್ರರೋಹತಿ” ಮಾಘಂ ೧-೬೦ 1 ಸ್ತ್ರೀಯಾ “ಛೀಪ್” (೪-೧-೧೫) 1  
—ಯಕೋ—ಯಕೇ. “ವಿನಾಯಕಪಿಷ್ಠಿರಂ ವೋ ವದನವಿಧುತಯಃ ಪಾಂತು  
ಚಿತ್ತಕಾರವತಯಃ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೧ 1 2. ಬುದ್ಧನ ಸಂಬಂಧ  
ವಾದ (ದರ್ಶನ), ಬೌದ್ಧದರ್ಶನ.

ವೈಯಕ್ತಿಕ ವೈಯಕ್ತಿಕ (ನಂ) 1. ಜನ್ಮನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ  
ಇಪ್ಪತ್ತಮೂರನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ. ವಿನಾಶಃ ಪ್ರಯೋಜನ ಕಾರಣ-  
ಮಸ್ಯ “ಠಕ್” (೪-೧-೧೦೯) 1 “ವಿನಾಶಿಕೇ ವಿನಾಶಃ  
ಸ್ಯಾತ್ ದೇಹದ್ವಿವಿಣಸಂಪದಾಮ್” 1 2. ಬೌದ್ಧದರ್ಶನ, ಕ್ಷಣಿಕ  
ವಾದಗಳ ತತ್ತ್ವ. (ಪುಂ) 3. ಜೇಡರ ಹುಳ. (ವಿಂ)  
4. ಪರರ ಅಧೀನದಲ್ಲಿರುವವನು. “ವಿನಾಶಿಕಃ ಸ್ಯಾತ್-  
ಕ್ಷಣಿಕೇ ಪರತನ್ಮೋರ್ಣನಾಭಯೋಃ” ಮೇದಿಂ 1 5. ಕ್ಷಣಿಕ, ಕ್ಷಣ  
ಕಾಲ ಮಾತ್ರವಿರುವ.

ವೈಯಕ್ತಿಕ ವೈಯಕ್ತಿಕ (ಪುಂ) 1. ವಾಹನಗಳ ಪರಂಪರೆ,  
ವಾಹನಗಳ ಸಾಲು. ವಿನಿಯತೇ ಸಮ—ವಿ+ಣಿಃ (ಪ್ರಾಪಣೆ)  
“ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) 1 “ಪರಂಪರಾವಾಹನಂ ಯತ್ ತದ್ವಿನಿಯತ-  
ಮಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” ಅಮಂ 1 (ವಿಂ) 2. ವಿನಿಯತನ ಸಂಬಂಧ  
ವಾದ.

ವೈಯಕ್ತಿಕ ವೈಯಕ್ತಿಕ (ಪುಂ) ವೇನರಾಜನ ಮಗ. ವೇನಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್  
“ಏವ” (೪-೧-೧೫೧) 1 ಇವನಿಗೆ ಪ ಥು ಮಹಾರಾಜ  
ನೆಂದು ಹೆಸರು. “ವೇನೋ ನಾಮ ಮಹೀಪಾಲೋ ಯಃ ಪೃಥುಃ  
ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ 1 ಯೇನ ದುಃಖಾ ಮಹೀ ಪೂರ್ವ ಪ್ರಜಾನಾಂ ಹಿತ-  
ಕಾರಣಾತ್” 1 ವಿವರಕ್ಕೆ “ಪೃಥು” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ವೈಯಕ್ತಿಕ ವೈಯಕ್ತಿಕ (ನಂ) ವಿಪರೀತವಾಗಿರುವಿಕೆ, ವಿರುದ್ಧ  
ವಾಗಿರುವಿಕೆ, ವಿಪರ್ಯಯ. ವಿಪರೀತಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಏವ”  
(೪-೧-೧೨೪) 1.

ವೈಯಕ್ತಿಕ ವೈಯಕ್ತಿಕ (ನಂ) 1. ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಅಗಲ  
ವಾಗಿರುವಿಕೆ. ವಿಪುಲಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಏವ” (೪-೧-೧೨೪) 1  
2. ಸಮೃದ್ಧಿ, ಹೇರಳ, ಪುಷ್ಕಳ.

ವೈಯಕ್ತಿಕ ವೈಯಕ್ತಿಕ (ನಂ) ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ,  
ಫಲ ಲಭಿಸದಿರುವಿಕೆ. ವಿಕಲ್ಪಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಏವ”  
(೪-೧-೧೨೪) 1.



**ವೈವಿಧ್ಯ ವೈವಿಧ್ಯ (ಪುಂ)** 1. ವೈವಿಧ್ಯ, ನಿರ್ದಯಿಂದ ಎಚ್ಚರಗೊಳಿಸುವವನು, ಸ್ತುತಿ ಮತ್ತು ಸಂಗೀತಗಳಿಂದ ರಾಜನನ್ನು ಎಚ್ಚರಿಸುವವನು. ವಿವಿಧ: ಪ್ರಬಂಧನ ಶಿಲಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೬೧)। "ವೈವಿಧ್ಯಧ್ವನಿವಿಭಾವಿತ-ಪಶ್ಚಿಮಾರ್ಥ" ಕಿರಾಂ ೧-೭೪। 2. ಕಾವಲುಗಾರ.

**ವೈವಿಧ್ಯ ವೈವಿಧ್ಯ (ನಂ)** 1. ಐಶ್ವರ್ಯ, ಸಂಪತ್ತು. ವಿವಿಧ: "ಅನ್"। 2. ಮಹಿಮೆ, ಘನತೆ, ಉತ್ಕರ್ಷ. 3. ಶಕ್ತಿ, ಪ್ರಭಾವ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. "ವ್ಯಾಪ ನಗಪತಿರಿವ ಸ್ಥಿರತಾಂ ಮಹತಾಂ ಹಿ ವೈವಿಧ್ಯವಿಮಾನ್ಯವೈವಿಧ್ಯಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೨-೩। 4. ಅತಿಶಯ, ಅಧಿಕ. "ಯತ್ಸಂಪದಂ ನಿಜವೈವಿಧ್ಯವೈವಿಧ್ಯ ತೇ ಮಹಿಮಾ: ಸಂಪದತಾಂ ಹಿ ಮಾನಸಮ್" ಭಾಗಂ ೪-೧೮-೧೧।

**ವೈವಿಧ್ಯ ವೈವಿಧ್ಯ (ನಂ)** ದೇವತೆಗಳ ಉದ್ಯಾನವನ.

**ವೈವಿಧ್ಯ ವೈವಿಧ್ಯ (ನಂ)** 1. ಭಿನ್ನಾಭಿಪ್ರಾಯ, ಅಭಿಪ್ರಾಯ ಭೇದ, ಮನಸ್ತಾಪ. ವಿರುದ್ಧಾ ಮತಿ: ವಿಮತಿ:— ವಿಮತಿ: ಭಾವ: "ಅನ್" (೪-೧-೧೨೪)। 2. ಇಷ್ಟವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

**ವೈವಿಧ್ಯ ವೈವಿಧ್ಯ (ನಂ)** 1. ದ್ವೇಷ, ಹಿತವಾದ ಮನಸ್ಸಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 2. ಮನಸ್ಸಿಗೆ ನಮ್ಮದಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಚಿತ್ತಕ್ಷೀಣಭೆ. ವಿಮನಸೋ ಭಾವ: "ಅಸ್ಮಾತ್ಪ್ರಭವತೋ ವೈವಿಧ್ಯಾತ್ಪ್ರವ: ಪ್ರತ್ಯಾಖ್ಯಾತ:" ಶಾಕುಂ ೬।

**ವೈವಿಧ್ಯ ವೈವಿಧ್ಯ (ಪುಂ)** ಮಲತಾಯಿಯ ಮಗ. ವಿರುದ್ಧಾ ಮಾತಾ—ವಿಮಾತುರಪತ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೩)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಯಿ-ಯಿ: "ಛಿಪ್" (೪-೧-೧೫)।

**ವೈವಿಧ್ಯ ವೈವಿಧ್ಯ (ಪುಂ)** ವಿಮಾನದಿಂದ ಸಂಚರಿಸುವವನು. ವಿಮಾನೇನ ಚರತಿ—ವಿಮಾನ "ಠಕ್" (೪-೪-೮)। "ತ್ರಿವಿಷ್ಟಪಾನೋಕಹಪುಷ್ಪವೃಷ್ಟಿ ವೈವಿಧ್ಯಕೇರವಭವನ್ ವಿಮುಕ್ತಾಮ್" ಯಾದಂ ೨೦-೫೯।

**ವೈವಿಧ್ಯ ವೈವಿಧ್ಯ (ನಂ)** 1. ಮುಖವನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತಿರುಗಿಸುವುದು, ಎದುರಿಗೆ ನಿಂತು ಗೌರವಿಸದಿರುವುದು, ಮುಖ ಕೊಟ್ಟು ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ಮಾತಾಡಿಸದಿರುವುದು. ವಿಮುಖಸ್ಯ ಭಾವ: "ಅನ್" (೪-೧-೧೨೪)। 2. ಇಷ್ಟವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ವಿರೋಧವಾಗಿರುವಿಕೆ.

**ವೈವಿಧ್ಯ ವೈವಿಧ್ಯ (ನಂ)** ವೈವಿಧ್ಯ, ಅಸಕ್ತನಾಗಿರುವಿಕೆ, ಶ್ರದ್ಧೆಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ, ಒಂದೇ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಮಗ್ನನಾಗಿರುವಿಕೆ. ವ್ಯಗ್ರಸ್ಯ ಭಾವ: "ಅನ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ಯತ್ಸ್ವಾಂತೇ ಸಂವಿಮೃಷ್ಣಂತೇ ತದನುಗುಣವಿಧಿ ಯಚ್ಚ ವೈವಿಧ್ಯಮಾಸೀತ್" ಮಂ ವೀಂ ೭-೩೮।

**ವೈವಿಧ್ಯ ವೈವಿಧ್ಯ (ನಂ)** ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಫಲವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ವ್ಯರ್ಥಸ್ಯ ಭಾವ: "ಅನ್" (೪-೧-೧೨೪)।

**ವೈವಿಧ್ಯ ವೈವಿಧ್ಯ (ನಂ)** ದೇರೆ ಬೇರೆ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿರುವಿಕೆ, ವಿಭಿನ್ನ ದೇಶಗಳಲ್ಲಿರುವಿಕೆ. ವ್ಯವಿಕರಣಸ್ಯ ಭಾವ: "ಅನ್" (೪-೧-೧೨೪)।

**ವೈವಿಧ್ಯ ವೈವಿಧ್ಯ (ಪುಂ)** 1. ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು, ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಕಲಿಯುವವನು. 2. ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. ವ್ಯಾಕರಣಮರ್ಥೇ ವೇತ್ತಿ ವಾ—ವ್ಯಾಕರಣ "ಅನ್" (೪-೨-೫೯)। "ವೈವಿಧ್ಯವ್ಯಾಕರಣಾತ್ಪದಶಬ್ದಮಗಾ: ಕ್ವ ಯಾನ್ತು ಸಂವ್ರತಾ:" (ವಿಂ) 3. ವ್ಯಾಕರಣ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ ವೈವಿಧ್ಯವ್ಯಾಕರಣೇ.

**ವೈವಿಧ್ಯ ವೈವಿಧ್ಯ (ಪುಂ)** ವೈವಿಧ್ಯವ್ಯಾಕರಣ ನೆಂದು ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳುವವನು, ವ್ಯಾಕರಣಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಇದೆಯೆಂದು ಗರ್ವ ಹೊಂದಿರುವವನು.

**ವೈವಿಧ್ಯ ವೈವಿಧ್ಯ (ಪುಂ)** ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನಮಾಡಿದ ಪತ್ನಿಯುಳ್ಳವನು. ವೈವಿಧ್ಯವ್ಯಾಕರಣೇ ಭಾರ್ಯಾ ಯಸ್ಯ।

**ವೈವಿಧ್ಯ ವೈವಿಧ್ಯ (ಪುಂ)** 1. ಹುಲಿಯ ಚರ್ಮ ಹೊದಿಸಿದ ರಥ. ವ್ಯಾಧ್ರಸ್ಯ ಅವಯವೋ ವಿಕಾರೋ ವಾ "ಅನ್" (೪-೩-೧೫೪)। ವೈವಿಧ್ಯವ್ಯಾಧ್ರೇಣ ಚರ್ಮಣಾ ಪರಿವೃತೋ ರಥ: "ಅನ್" (೪-೨-೧೨)। (ವಿಂ) 2. ಹುಲಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ವ್ಯಾಧ್ರಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ವೈವಿಧ್ಯವ್ಯಾಧ್ರೇಣ ಚರ್ಮವಸನಾ ಸೋಧ್ವಮೂರ್ಧನಿನಾ ಸತೀ"। 3. ಹುಲಿಯ ಚರ್ಮದಿಂದ ಹೊದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವೈವಿಧ್ಯ ವೈವಿಧ್ಯ (ನಂ)** ಧಾಷ್ಟ್ಯ, ದಿಟ್ಟತನ, ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ವೈವಿಧ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ಅನ್" (೪-೧-೧೨೩)। "ಅನ್ಯದಾ ಭೂಷಣಂ ಪುನ: ಕ್ಷಮಾ ಲಜ್ಜೇವ ಯೋಷಿತ:। ಪರಾಕ್ರಮ: ಪರಿಮವೇ ವೈವಿಧ್ಯಸ್ಯ ಸುರತೇಶ್ವಿವ" ಮಾಧಂ ೨-೪೪।

**ವೈವಿಧ್ಯ ವೈವಿಧ್ಯ (ಪುಂ)** ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯ ಪುತ್ರ, ಶುಕಮಹರ್ಷಿ. ವ್ಯಾಸಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್—"ಇನ್" "ಅಕನ್" ಚ (ವಾಂ ೪-೧-೯೭)। ಏಜಾಗಮ: (೭-೩-೩)। "ಎವಂ ನಿಶಮ್ಯ ಭಗುನಂದನ ಸಾಧುವಾದ ವೈವಿಧ್ಯಸ್ಯ: ಸ ಭಗವಾನಥ ವಿಷ್ಣುರಾತಮ್" ಭಾಗಂ ೧೦-೧-೧೪।

**ವೈವಿಧ್ಯ ವೈವಿಧ್ಯ (ವಿಂ)** ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕೊಡಲ್ಪಡುವ ಮತ್ತು ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ವ್ಯುಷ್ಠೇ ದೀಯತೇ ಕಾರ್ಯ ವಾ "ಅನ್" (೪-೧-೯೭)। ಏಜಾಗಮ: (೭-೩-೩)।

**ವೈವಿಧ್ಯ ವೈವಿಧ್ಯ (ನಂ)** ದ್ವೇಷ, ಶತ್ರುತ್ವ, ಹಗೆತನ. ವೈವಿಧ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ಅನ್" (೪-೧-೧೩೦)। "ವಿಧಾಯ ವೈವಿಧ್ಯಂ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ನರೋರೋ ಯ ಉದಾಸತೇ। ಪ್ರಕ್ಷಿಪ್ಯೋದರ್ಶಿಷಂ ಕಕ್ಷೇ ಶೇರತೇ ತೇಷುಭಿಮಾರುತಮ್" ಮಾಧಂ ೨-೪೨।



ವೆರಜ್ಞಿಕ ವೈರಂಗಿಕ (ವಿಂ) ಅನಾದರಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ. ವಿರಾಗ ನಿಯಮಹಂತಿ—“ಠಕ್” ವಿರಜ್ಞಾದೇಶಶ್ಚ (ಗಂ ೪-೧-೬೪) ।

ವೆರನಿರ್ಯಾತನ ವೈರನಿರ್ಯಾತನ (ನಂ) ದ್ವೇಷವನ್ನು ತೀರಿಸಿ ಕೊಳ್ಳುವುದು, ಅಪಕಾರಕ್ಕೆ ತಕ್ಕ ಪ್ರತಿಕಾರ ಮಾಡುವುದು. ವೆರಸ್ಯ ನಿರ್ಯಾತನಮ್ । ವೆರಶ್ಚುಃ ವೈರಶ್ಚುಃ ।

ವೆರಲ್ಯ ವೈರಲ್ಯ (ನಂ) 1. ವಿರಳವಾಗಿರುವಿಕೆ, ದಟ್ಟವಾಗಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಒತ್ತಾಗಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ವಿರಲ್ಯ ಭಾವ: “ಽಽ” (೪-೧-೧೨೪) । 2. ಅಪೂರ್ವವಾಗಿರುವಿಕೆ, ದುರ್ಲಭವಾಗಿರುವಿಕೆ.

ವೆರಾಗ್ಯ ವೈರಾಗ್ಯ (ನಂ) 1. ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನದಿಂದ ದೋಷವನ್ನು ಕಂಡು ಪ್ರಪಂಚದ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಆಸೆಯನ್ನು ತೊರೆದಿರುವಿಕೆ, ಯಾವ ವಿಷಯದಲ್ಲಿಯೂ ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ವಿರಾಗಸ್ಯ ಭಾವ: “ಽಽ” (೪-೧-೧೨೪) । “ಅಮ್ಯಾಸೇನ ತು ಕೌಂತೇಯ ವೆರಾಗ್ಯೇಣ ಚ ಗೃಹ್ಯತೇ” ಗೀತಾ ೬-೩೫ । 2. ಅಪರಾಗ, ಅಸಮಾಧಾನ, ಆತ್ಮಪ್ರ. “ಕಾಮಂ ಪ್ರಕೃತಿವೆರಾಗ್ಯಂ ಸದ್ಯ: ಶಮಯಿತುಂ ಕ್ಷಮ:” ರಘುಂ ೧೭-೫೫ ।

ವೆರಾಜ ವೈರಾಜ (ವಿಂ) 1. ವಿರಾಟಪುರುಷನ (ಬ್ರಹ್ಮನ) ಸಂಬಂಧವಾದ. ವಿರಾಜ: ಇದಮ್ “ಅಞ್” (೪-೩-೧೨೦) । “ವೆರಾಜಾ ನಾಮ ತೇ ಲೋಕಾಸ್ತೇಜಸಾ: ಸಂತು ತೇ ಶಿವಾ:” ಉಂ ರಾಂ ೨-೧೨ । (ಪುಂ) 2. ವಿರಾಟಪುರುಷನ ಅಂಶದಿಂದ ಅವಿರ್ಭವಿಸಿದ ಪುರುಷ. ವಿರಾಟ್ ಅನಿರೂಪ: ತದಂಶ-ಸಂಭೂತ: ಪುರುಷ: ವೆರಾಜ: ।

ವೆರಾಜ್ಯ ವೈರಾಜ್ಯ (ನಂ) ವಿರಾಟಪುರುಷನ ಭಾವ, ಅಣಿಮಾದಿ ಸಿದ್ಧಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವಿಕೆ. ವಿರಾಜೋ ಭಾವ: “ಽಽ” (೪-೧-೧೨೪) ।

ವೆರಾಟ ವೈರಾಟ (ಪುಂ) 1. ವಿರಾಟರಾಜನ ಪುತ್ರ, ಉತ್ತರಕುಮಾರ. ವಿರಾಟಸ್ಯಾಯಮ್ “ಅಞ್” (೪-೩-೧೨೦) । (ನಂ) 2. ಮಹಾಭಾರತದ ವಿರಾಟಪರ್ವ. (ವಿಂ) 3. ವಿರಾಟರಾಜನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ವಿರಾಟಸ್ಯೇವಮ್ “ಅಞ್” । (ಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ವೆರಾಟಿ ವೈರಾಟೀ. ವಿರಾಟರಾಜನ ಪುತ್ರಿ, ಉತ್ತರ. “ಅಭಿಮನ್ಯೋರ್ವರಾ ಭಾರ್ಯಾ ವೆರಾಟೀ ಚಾತಿಸುಂದರೀ” ।

ವೆರಾತ್ರಿಕ ವೈರಾತ್ರಿಕ (ವಿಂ) ಅಪರರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ, ರಾತ್ರಿಯ ಕೊನೆಯ ಜಾವದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ. ವಿಗತಾ ರಾತ್ರಿ: ವಿರಾತ್ರಿ: “ಅಞ್” (೪-೪-೮೭) । ರಾತ್ರಿ ಶಬ್ದಸ್ಯ ಪುಂಸ್ತ್ವಮ್ (೨-೪-೨೯) । ವಿರಾತ್ರಿ ಭವಮ್ “ಠಕ್” । “ಆವರ್ತಯಂತ್ಯತನುಹೇಷಿತವೀಚಿಭೇದ: ವೆರಾತ್ರಿಕಂ ವಟುಭಿರಧ್ಯಯನಂ ಪ್ರವೃತ್ತಮ್” ಯಾದಂ ೧೯-೫೯ ।

ವೆರಿನ್ ವೈರಿನ್ (ಪುಂ) ಶತ್ರು, ಹೆಗೆ. ವೆರಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ—“ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೫) । “ಜ್ವಲತಸ್ತವ ಜಾತವೇದಸ: ಸತತಂ ವೆರಿಕೃತಸ್ಯ ಚೇತಸಿ” ಕಿರಾಂ ೨-೨೪ ।

ವೆರೂಪ್ಯ ವೈರೂಪ್ಯ (ನಂ) 1. ವಿಕಾರ ರೂಪವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಕುರೂಪ. ವಿರೂಪಸ್ಯ ಭಾವ: “ಽಽ” (೪-೧-೧೨೪) । “ವೆರೂಪ್ಯಮಜ್ಞೇಷು ಕಶಾಭಿಘಾತ: ಮೌಞ್ಯಂ ತಥಾ ಲಕ್ಷಣಂ ಸಂನಿಘಾತ:” ರಾಮಾಂ । “ವೆರೂಪ್ಯಪೌನಃಕರ್ತೃಣಾಂ ಭಿಷಣಾಂ ತಾಮಯೋಜಯತ್” ರಘುಂ ೧೨-೪೦ । 2. ಸಮಾನವಾಗಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಏಕರೀತಿಯಲ್ಲಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. “ಏತಚ್ಚಾನ್ಯೋನ್ಯ-ವೆರೂಪ್ಯಮ್” ಭಾಂ ।

ವೆರೋಚನ ವೈರೋಚನ (ಪುಂ) 1. ವಿರೋಚನನ ಪುತ್ರನಾದ ಬಲಿಚಕ್ರವರ್ತಿ. ವಿರೋಚನಸ್ಯಾಯಮ್ “ಅಞ್” (೪-೩-೧೨೦) । 2. ಸೂರ್ಯನ ಪುತ್ರ.

ವೆರೋಚನಿ ವೈರೋಚನಿ (ಪುಂ) 1. ಬಲಿಚಕ್ರವರ್ತಿ. ವಿರೋಚನಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ “ಇಞ್” (೪-೧-೯೫) । “ವೆರೋಚನೇ ಕಿಮಾಶ್ರಿತ್ಯ ಶೋಚಿತವ್ಯೇ ನ ಶೋಚಸಿ” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೨೨೭-೧೫ । 2. ಬುದ್ಧದೇವ. 3. ಸೂರ್ಯನ ಪುತ್ರ. “ವೆರೋಚನಿಸ್ತು ಸುಗತೇ ಬಲಿದೇವಾರ್ಕಪುತ್ರಯೋ:” ಮೇದಿಂ ।

ವೆರೋಚಿ ವೈರೋಚಿ (ಪುಂ) ಬಲಿಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಮಗ, ಬಾಣಾಸುರ. “ವೆರೋಚಿರ್ಬಲಿನಂದನ:” ।

ವೆರೋದ್ಧಾರ ವೈರೋದ್ಧಾರ (ಪುಂ) ವೈರಪ್ರತಿಕಾರ, ದ್ವೇಷವನ್ನು ತೀರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಅಪಕಾರಕ್ಕೆ ಮಾಡುವ ಪ್ರತಿಕಾರ. ವೆರಸ್ಯೋದ್ಧಾರ: ।

ವೆಲಕ್ಷಣ್ಯ ವೈಲಕ್ಷಣ್ಯ (ನಂ) 1. ವ್ಯತ್ಯಾಸ, ಭೇದ. ವಿಲಕ್ಷಣಸ್ಯ ಭಾವ: “ಽಽ” (೪-೧-೧೨೪) । “ತೇತಾದಿಷ್ವಪಿ ಯುಗಾಪಚಾರರೂಪೇಣ ಧರ್ಮವೆಲಕ್ಷಣ್ಯಮ್” । 2. ಸಾಮ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

ವೆಲಕ್ಷಯ ವೈಲಕ್ಷಯ (ನಂ) 1. ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಸಂಕೋಚ, ಕಿರಿಕಿರಿ, ಪೇಚಾಟ. ವಿಲಕ್ಷಸ್ಯ ಭಾವ: “ಽಽ” (೪-೧-೧೨೪) । “ಪಾಪಾಣಸ್ತಲನವಿಲೋಲಮಾಶು ನೂನಂ ವೆಲಕ್ಷಯಾಘ್ಯುರವರೋಧನಾನಿ ಸಿಂಧೋ:” ಮಾಧಂ ೮-೮ । 2. ನಟನೆ, ಸೋಗು, ಅಸ್ವಾಭಾವಿಕತೆ. 3. ಲಜ್ಜೆ, ನಾಚಿಕೆ.

ವೆವಧಿಕ ವೈವಧಿಕ (ಪುಂ) 1. ಕಾವಡಿಯನ್ನು ಹೊತ್ತು ವ್ಯಾಪಾರ ಮಾಡುವವನು. ವಿವಧಂ ವಹತಿ “ಠಕ್” (೪-೪-೧೭) । 2. ತಿರುಗಾಡುತ್ತ ವ್ಯಾಪಾರಮಾಡುವವನು, ತಿರುಗುವ್ಯಾಪಾರಿ. ವಿವಧೇನ ಹರತಿ “ಠಕ್” ।

ವೆವರ್ಣ್ಯ ವೈವರ್ಣ್ಯ (ನಂ) 1. ಬಣ್ಣದ ಬದಲಾವಣೆ, ಛಾಯೆ ಬದಲಾಯಿಸುವುದು, ವಿಷಾದ ಮದ ಕೋಪ ಮೊದಲಾದ



ಕಾರಣಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ದೇಹಸೌಂದರ್ಯದ ಬದಲಾವಣೆ. ವಿವರ್ಣಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಯ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ವಿವಾದಮದರೋಪಾಧೈರ್ವರ್ಣನೀತ್ವಂ ವಿವರ್ಣತಾ (ವೈವರ್ಣ್ಯಮ್)" ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೩೯। ಇದು ಎಂಟು ವಿಧ ಸಾತ್ವಿಕ ಗುಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. 2. ಬೇರೆ ವರ್ಣಕ್ಕೆ ಸೇರುವುದು, ಒಂದು ಜಾತಿಯಿಂದ ಮತ್ತೊಂದು ಜಾತಿಗೆ ಬದಲಾವಣೆ ಹೊಂದುವುದು.

**ವೈವಸ್ವತ ವೈವಸ್ವತ (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯನ ಪುತ್ರ— (1) ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. (2) ಶನಿಮಹಾರಾಜ. (3) ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಮನುಗಳಲ್ಲಿ ಏಳನೆಯ ಮನು. ವಿವಸ್ವತ: ಅಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೨೨)। "ವೈವಸ್ವತೋ ಮನುನಾಮ ಮಾನನೀಯೋ ಮನೀಷಿಣಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೧೧। ಈಗ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ ಮನ್ವಂತರದ ಅಧಿಪತಿ. ಈ ವೈವಸ್ವತಮನ್ವಂತರದಲ್ಲಿ ಪುರಂದರನೆಂಬ ಇಂದ್ರನು ಸ್ವರ್ಗಾಧಿಪತಿ (1) ಕಶ್ಯಪ: (2) ಅತ್ರಿ: (3) ವಸಿಷ್ಠ: (4) ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ: (5) ಗೌತಮ: (6) ಜಮದಗ್ನಿ: ಮತ್ತು (7) ಭರದ್ವಾಜ: ಇವರು ಸಪ್ತರ್ಷಿಗಳು. (1) ಇಕ್ಷ್ವಾಕು: (2) ನೃಗ: (3) ಶರ್ಯಾತಿ: (4) ದಿಷ್ಠ: (5) ಕೃಷ್ಣ: (6) ಕರ್ಮಕ: (7) ನರೀಷ್ಯಂತ: (8) ಪುಷ್ಪ: (9) ನಾಭಾಗ: ಮತ್ತು (10) ಕವಿ: ಈ ಹತ್ತು ಮಂದಿ ವೈವಸ್ವತ ಮನುವಿನ ಪುತ್ರರು. 2. ಏಕಾದಶ ರುದ್ರರಲ್ಲೊಬ್ಬ ರುದ್ರ.

**ವೈವಸ್ವತೀ ವೈವಸ್ವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸೂರ್ಯನ ಪುತ್ರಿಯಾದ ಯಮುನಾ ನದಿ, ಕಾಳಿಂದೀ ನದಿ. ವಿವಸ್ವತೋಪತ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ — "ಅನ್" (೪-೧-೧೨೨)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೨೫)। 2. ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕು. ವಿವಸ್ವತ: ಇಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೨೫)।

**ವೈವಾಹಿಕ ವೈವಾಹಿಕ (ವಿಂ)** 1. ವಿವಾಹ ಸಂಬಂಧವಾದ. ವಿವಾಹಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಪಂಚಮೇ ಸಪ್ತಮೇ ಚೈವ ಯೇಷಾಂ ವೈವಾಹಿಕೀ ಕ್ರಿಯಾ। ತೇ ಚ ಸಾನ್ತಾನಿನ: ಸರ್ವ ಪತಿತಾ: ಶೂದ್ರತಾ ಗತಾ:"। 2. ವಿವಾಹ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ವಸ್ತು. ವಿವಾಹ: ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯)। "ವೈವಾಹಿಕೇ: ಕೌತುಕಸಂವಿಧಾನೇಗೃಹೇ ವ್ಯಗ್ರಪುರಸ್ಥಿವರ್ಗಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೨। (ಪುಂ) 3. ಸಂಬಂಧಿ, ಮಗಳ ಮತ್ತು ಮಗನ ಮಾವ (ಶ್ವಶುರ), ಅಳಿಯನ ಅಥವಾ ಸೊಸೆಯ ತಂದೆ.

**ವೈಶಾಖ ವೈಶಾಖ (ನಂ)** 1. ಸ್ವಚ್ಛತೆ, ನಿರ್ಮಲವಾಗಿರುವಿಕೆ. ವಿಶದಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಯ್" (೪-೧-೧೨೪)। 2. ತೀಕ್ಷ್ಣ ವಾಗಿರುವುದು, ಚುರುಕಾಗಿರುವುದು. ಶಿಷ್ಯಬುದ್ಧಿವೈಶಾಖಾ।

3. ಬೆಳ್ಳಗಿರುವಿಕೆ, ಶುಭ್ರವಾಗಿರುವಿಕೆ. 4. ಚಿತ್ತಶಾಂತಿ, ಮನಸ್ಸಿನ ನೆಮ್ಮದಿ, ಚಿತ್ತಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯ. 5. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿರುವಿಕೆ. "ವೈಶಾಖವೈಶಾಖದಿಮಾಭಿರಾಮೇ:" ನೆಪಂ ೧೪-೬।

**ವೈಶಾಖ್ಯಾಯನ ವೈಶಾಖ್ಯಾಯನ (ಪುಂ)** 1. ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯ ಒಬ್ಬ ಶಿಷ್ಯ, ವೇದವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯು ಯಜುರ್ವೇದ ವನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸಿದ ಶಿಷ್ಯ. ವಿಶಾಖ್ಯಸ್ಯ ಗೌತ್ರಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಫಲ್" (೪-೧-೧೧೦)। "ವೈಶಾಖ್ಯಾಯನನಾಮಾನಂ ಯಜುರ್ವೇದಸ್ಯ ಚಾಗ್ರಹೀತ್" ವಿಷ್ಣುಪುಂ। ["ವೇದ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ವೈವಸ್ವತ ಮನ್ವಂತರದ ಒಂದನೇ ಮಹಾಯುಗದಲ್ಲಿ ಜನಮೇಜಯನಿಗೆ ಮಹಾಭಾರತವನ್ನು ಹೇಳಿದ ಋಷಿ.

**ವೈಶಾಖ ವೈಶಾಖ (ನಂ)** 1. ವ್ಯಾಸನ, ದುಃಖ. "ಧಿಗುಚ್ಛ- ಸಿತವೈಶಾಖಂ ಮಮ ಯದಿತ್ಯಮೇಕಾಕಿನೋ ಧಿಗೇವ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೩೫। 2. ಹತ್ಯೆ, ಕೊಲೆ, ವಧೆ. ವಿಶಾಖತಿ ಹಿನಸ್ತಿ ವಿಶಾಖೋ ಧಾತುಕ:। ವಿಶಾಖಸ್ಯ ಕರ್ಮ "ಅನ್" (೪-೧-೧೩೦)। ವೈಶಾಖಮ್। "ಎತದೈಶಾಖವಜ್ರಧೋರಪತನಂ ಶಶ್ವತ್ಸಮೋತ್ಪಸ್ಯತ:" ತಂ ರಾಂ ೪-೨೪।

**ವೈಶಾಖ ವೈಶಾಖ (ಪುಂ)** 1. ಹನ್ನೆರಡು ಮಾಸ (ತಿಂಗಳು) ಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಮಾಸ, ವೈಶಾಖ ಮಾಸ. ವಿಶಾಖಾನಕ್ಷತ್ರ- ಯುಕ್ತಚಂದ್ರಮಸಾ ಯುಕ್ತಾ ವೈಶಾಖೀ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಸ್ಮಿನ್ ವೈಶಾಖೋ ಮಾಸ:। "ವಿಶಾಖಾತಾರಕಾಯುಕ್ತಾ ವೈಶಾಖೀ ಪುರ್ಣಿಮಾ ಭವೇತ್। ಸಾ ವೈಶಾಖೀ ಯತ್ರ ಮಾಸೇ ಸ ವೈಶಾಖ: ಪ್ರಕೀರ್ತಿತ:"। 2. ಮುತ್ತು, ಕಡೆಗೋಲು. "ದ್ರುತತರಕರದಕ್ಷಾ: ಕ್ಷಿಪ್ತ- ವೈಶಾಖಶಲೇ" ಮಾಧಂ ೧೧-೮।

**ವೈಶಾಖೀ ವೈಶಾಖೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ವೈಶಾಖ ಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ, ವಿಶಾಖಾ ನಕ್ಷತ್ರದೊಡನೆ ಕೂಡಿದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ವಿಶಾಖಾನಕ್ಷತ್ರೇಣ ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ ವೈಶಾಖೀ "ಅನ್" (೪-೨-೩)। "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೨೫)। 2. ಕೆಂಪು ಕೊಮ್ಮೆ ಗಿಡ.

**ವೈಶಿಕ ವೈಶಿಕ (ಪುಂ)** 1. ಅನೇಕ ವೇಶ್ಯೆಯರ ಸಹವಾಸ ದಲ್ಲಿರುವ ಒಬ್ಬ ನಾಯಕ. ವೇಶನ ಜೀವಿತಿ — ವೇಶ "ಠಕ್" (೪-೪-೧೨)। (1) ಪತಿ: (2) ಉಪಪತಿ: ಮತ್ತು (3) ವೈಶಿಕ: ಎಂದು ಶೃಂಗಾರ ನಾಯಕನು ಮೂರು ವಿಧ. (ನಂ) 2. ವೇಶ್ಯೆಯ ಕಲೆ, ವಾರಾಂಗನೆಯ ಚಾತುರ್ಯ. ವೇಶೆ ಭವಮ್ "ಠಕ್" (ವಾಂ ೪-೩-೬೦)। (ವಿಂ) 3. ವೇಶ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಇರುವ, ವಾರಾಂಗನೆಯಲ್ಲಿ ಸಹಜವಾಗಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೨೫)। —ಕೀ-ಕೀ. "ಋಗ್ವೇದಂ ಸಾಮವೇದಂ ಗಣಿತಮಥ ಕಲಾಂ ವೈಶಿಕೀಂ ಹಸ್ತಿಶಿಕ್ಷಾಮ್" ಮೃಚ್ಛಂ ೧-೪।



**ವೆಂಶಿಟಿ ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯ (ನಂ) 1.** ಅಸಾಧಾರಣವಾಗಿರುವಿಕೆ. ತನ್ನದೇ ಆಗಿರುವಿಕೆ, ಹೆಚ್ಚುಗಾರಿಕೆ, ವಿಶೇಷ ಲಕ್ಷಣ. ವಿಶಿಷ್ಟಸ್ಯ ಭಾವ: "ಏನ್" (೪-೧-೧೨೪). "ವೆಂಶಿಟಿ-ದನ್ಯಮಥೆ ವಾ ಬೋಧಯೇತ್ಸಾರ್ಥಸಂಭವಾ" ಸಾಂ ೧೦ ೨-೧೭. 2. ಸಂಬಂಧ, ಸಂಬಂಧಿ. ಮೂಲಕ ಘಟವಿಶಿಷ್ಟಮ್ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಘಟ ಮತ್ತು ಭೂತಲಗಳಿಗಿರುವ ಸಂಬಂಧವು ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯ. 3. ವೈಲಕ್ಷಣ್ಯ, ಭೇದ, ವ್ಯತ್ಯಾಸ. 4. ಉತ್ತಮವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾಗಿರುವಿಕೆ.

**ವೈಶೇಷಿಕ ವೈಶೇಷಿಕ (ಪುಂ) 1.** ಕಣಾದಮುನಿ ರಚಿತವಾದ ವೈಶೇಷಿಕ ದರ್ಶನವನ್ನು ತಿಳಿದವನು. (ನಂ) 2. ವೈಶೇಷಿಕ ದರ್ಶನ, ಆರು ವಿಧ ಆಸ್ತಿಕದರ್ಶನಗಳಲ್ಲೊಂದು ವಿಧ. ವಿಶೇಷ ಪದಾರ್ಥಭೇದಮಧಿಕೃತ ಕೃತೋ ಗ್ರಂಥ: "ಠಕ್" (೪-೩-೮೭). ಇದು ಕಣಾದಮುನಿ ಪ್ರಚಲಿತವಾದ ಸೂತ್ರಾತ್ಮಕ ಹತ್ತು ಅಧ್ಯಾಯಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ತರ್ಕಶಾಸ್ತ್ರ. (ವಿಂ) 3. ಅಸಾಧಾರಣವಾದ. ವಿಶೇಷ ಏವ "ಠಕ್" (೪-೪-೩೪). 4. ಇತರ ವ್ಯವಚ್ಛೇದಕ. ವಿಶೇಷಾಯ ಇತರೇಮ್ಯೋ ವ್ಯವಚ್ಛೇದಾಯ ಪ್ರಭವತಿ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೧).

**ವೈಶ್ಯ ವೈಶ್ಯ (ಪುಂ) 1.** ತೃತೀಯ ವರ್ಣದವನು. ವಿಶಿಷ್ಟಿ-ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ವಿವ್" (೩-೨-೧೭೮). ಸ್ವಾರ್ಥ "ಏನ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪). ಇವನು ಪರಮಾತ್ಮನ ಊರು ಪ್ರದೇಶದಿಂದ ಜನಿಸಿದವನು. "ಠಕ್ ತದಸ್ಯ ಯಥೇಶ್ಯ:" | ವೈಶ್ಯನಿಗೆ ಕೃಷಿ ಗೋಸಂರಕ್ಷಣ ವಾಣಿಜ್ಯ ಇವು ಮೂರು ಸ್ವಭಾವಸಿದ್ಧವಾದ ಕರ್ಮಗಳು. "ಕೃಷಿಗೋರಕ್ಷವಾಣಿಜ್ಯಂ ವೈಶ್ಯಸ್ಯಾಪಿ ಸ್ವಭಾವಜಮ್" ಗೀತಾ ೧೮-೪೪. (ವಿಂ) 2. ವೈಶ್ಯನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ವೈಶ್ಯಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦). "ಕ್ಷಾತ್ರಾಣಿ ವೈಶ್ಯಾಣಿ ಚ ಸೇವಮಾನ: ಶೌದ್ರಾಣಿ ಕರ್ಮಾಣಿ ಚ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ: ಸನ್ | ಅಸ್ಮಿನ್ಲೋಕೇ ನಿಂದಿತೋ ಮಂದವೇತಾ: ಪರೇ ಚ ಲೋಕೇ ನಿರಯಂ ಪ್ರಯಾತಿ" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೬೧-೪. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಇಯಾ-ಶ್ಯಾ. ವೈಶ್ಯ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು. "ವೈಶ್ಯೇಚೇತ್ ಕ್ಷತ್ರಿಯಾ ಗುಪ್ತಾ ವೈಶ್ಯಾ ವಾ ಕ್ಷತ್ರಿಯೋ ಬ್ರಜೇತ್ | ಯೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ್ಯಾಮಗುಪ್ತಾಯಾ ತಾವುಭೌ ದಂಡಮಹತ:" ಮನುಂ ೮-೩೮೨.

**ವೈಶ್ಯಕರ್ಮನ್ ವೈಶ್ಯಕರ್ಮನ್ (ನಂ) ವೈಶ್ಯನ ಕಾರ್ಯ.** ವೈಶ್ಯನ ವೃತ್ತಿ. (1) ವಾಣಿಜ್ಯ, ವರ್ತಕತನ. (2) ಕೃಷಿ, ವ್ಯವಸಾಯ. "ಕೃಷಿಗೋರಕ್ಷವಾಣಿಜ್ಯಂ ವೈಶ್ಯಂ ಕರ್ಮ ಸ್ವಭಾವ-ಜಮ್" ೧೮-೪೪.

**ವೈಶ್ಯವಣ ವೈಶ್ಯವಣ (ಪುಂ) ಕುಬೇರ, ಧನಾಧಿಪ.** ವಿಶ್ವವಸೋ-ಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಅನ್" ವಿಶ್ವವ: ಶಬ್ದಸ್ಯ ವಿಶ್ವವಣಾದೇಶಾನ್ ನಿಪಾಂ (೪-೧-೧೧೨).

**ವೈಶ್ಯವಣಾಲಯ ವೈಶ್ಯವಣಾಲಯ, -ಆವಾಸ -ಅವಾಸ (ಪುಂ) ವಟವೃಕ್ಷ, ಅಲದ ಮರ.**

**ವೈಶ್ಯದೇವ ವೈಶ್ಯದೇವ (ಪುಂ) 1.** ಜಾತುರ್ಮಾಸ್ಯ ಯಾಗದ ನಾಲ್ಕು ಪರ್ವಗಳಲ್ಲೊಂದು. 2. ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞ ಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ಭೂತಯಜ್ಞ. 3. ವಿಶ್ವದೇವ ಸಂಬಂಧ ವಾದ ಹೋಮ. ವಿಶ್ವದೇವಸ್ಯಾಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೩೨೦).

**ವೈಶ್ವಾನರ ವೈಶ್ವಾನರ (ಪುಂ) 1.** ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ವಿಶ್ವೇ ನರೋ ಅಸ್ಯ ವಿಶ್ವಾನರ:, ದೀರ್ಘ: (೬-೩-೧೨೯). ವಿಶ್ವಾನರಸ್ಯಾ-ಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೧೪). 2. ಜಾರೆರಾಗ್ನಿ, ದೇಹ ದೊಳಗೆ ಆಹಾರವನ್ನು ಜೀರ್ಣಮಾಡುವ ಒಂದು ಅಗ್ನಿ. ಈ ಅಗ್ನಿಯು ಖಾದ್ಯ ಜೂಷ್ಯ ಲೇಹ್ಯ ಮತ್ತು ಪೇಯ ರೂಪವಾದ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಅನ್ನಗಳನ್ನು ಪಚನಮಾಡುವುದು. "ಅಹಂ ವೈಶ್ವಾನರೋ ಭೂತ್ವಾ ಪ್ರಾಣಿನಾಂ ದೇಹಮಾಶ್ರಿತ: | ಪ್ರಾಣಾಪಾನಸಮಾಯುಕ್ತ: ಪಚಾಮ್ಯನ್ನಂ ಚತುರ್ವಿಧಮ್" ಗೀತಾ ೧೪-೧೪. 3. ಚಿತ್ರಕ ವೃಕ್ಷ, ಚಿತ್ರಮೂಲದ ಗಿಡ.

**ವೈಷಮ್ಯ ವೈಷಮ್ಯ (ನಂ) 1.** ಭೂಮಿಯು ಸಮನಾಗಿಲ್ಲ ದಿರುವಿಕೆ, ನೆಲವು ಹಳ್ಳತಿಟ್ಟಾಗಿರುವಿಕೆ. ವಿಷಮಸ್ಯ ಭಾವ: "ಏನ್" (೪-೧-೧೨೪). "ಸಮತಾಂ ವಸುಧಾಯಾಶ್ಚ ಸ ಸಮ್ಯ-ಗುದಪಾದಯತ್ | ವೈಷಮ್ಯಂ ಹಿ ಪರಂ ಭೂಮೇರಿತಿನ: ಪರಮಾ ಶ್ರುತಿ:" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೪೯-೧೨೩. 2. ತಾರತಮ್ಯ, ಅಸಮತೆ, ಹೆಚ್ಚುಕಡಿಮೆ ಇರುವುದು. "ಮಹಚ್ಛ ಫಲವೈಷಮ್ಯಂ ದೃಶ್ಯತೇ ಕರ್ಮಸಂವಿಧು" ಭಾಂ. 3. ದುಃಖ, ಕಷ್ಟ. "ವೈಷಮ್ಯಂ ಪರಮಂ ಪ್ರಾಪ್ತೋ ದ್ರು:ಸ್ಥಿತೋ ಗತಚೇತನ: | ಭರ್ತಾ ತೇಷಾಂ ನಿಬೋಧೇದ್ ವಚನಂ ಹಿತಮಾತ್ಮನ:" ಭಾಂ ವನಂ ೬೧-೨೦. 4. ಕಠಿನತೆ, ಒರಟಾಗಿರುವಿಕೆ.

**ವೈಷಯಿಕ ವೈಷಯಿಕ (ವಿಂ) 1.** ವಿಷಯಸಂಬಂಧವಾದ. (ಆಧಾರ). ಆಧಾರವು (1) ಆಂಶಲೇಪಿಕ: (2) ವೈಷಯಿಕ: ಮತ್ತು (3) ಅಭಿವ್ಯಾಪಕ: ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ಮೋಕ್ಷ ಇಚ್ಛಾಸ್ಥಿತಿ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಮೋಕ್ಷವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಇಚ್ಛೆಯಿರುವುದು ಎಂದು ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ ವೈಷಯಿಕ ಆಧಾರ. ವಿಷಯೇಣ ನಿವೃತ್ತ: "ಠಕ್". 2. ವಿಷಯಾಸಕ್ತ, ಭೋಗದಲ್ಲಿ ಆಸೆಯುಳ್ಳವನು.

**ವೈಷ್ಣವ ವೈಷ್ಣವ (ನಂ) ಹೋಮದ ಭಸ್ಮ.**

**ವೈಷ್ಣವ ವೈಷ್ಣವ (ಪುಂ) 1.** ಆಕಾಶ. 2. ವಾಯು. 3. ಭೂವನ, ಲೋಕ, ಜಗತ್ತು. ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಛ:" (೩ಂ ೪-೧೧೯).

**ವೈಷ್ಣವ ವೈಷ್ಣವ (ಪುಂ) 1.** ವಿಷ್ಣು ಭಕ್ತ, ವಿಷ್ಣುವಿನ ಉಪಾಸಕ. ವಿಷ್ಣೋರಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦). ಕಂಠ



ದಲ್ಲಿ ತುಲಸೀ ಮಾಲೆಯನ್ನೂ ಬಾಹುಮೂಲಗಳಲ್ಲಿ ಶಂಖ ಚಕ್ರ ಚಿಹ್ನೆಗಳನ್ನೂ ಲಲಾಟದಲ್ಲಿ ಊರ್ಧ್ವಪುಂಡ್ರವನ್ನೂ ಧರಿಸಿರುವವನು ವೈಷ್ಣವನು. “ಯೇ ಕಂಠಲಗ್ನತುಲಸೀ-ನಲಿನಾಕ್ಷಮಾಲಾಃ ಯೇ ಬಾಹುಮೂಲಪರಿಚಿಹ್ನಿತಶಿಖ್ವಚಕ್ರಾಃ | ಯೇ ವಾ ಲಲಾಟಫಲಕೇ ಲಸದ್ಭವಪುಂಡ್ರಾಃ ತೇ ವೈಷ್ಣವಾ ಭುವನಮಾಶು ಪವಿತ್ರಯಂತಿ” || “ಗುರುವಕ್ತ್ರಾದಿವಿಷ್ಣುಮನ್ತ್ರೋ ಯಸ್ಯ ಕರ್ಣಂ ಪ್ರವೇಶಯತಿ | ತಂ ವೈಷ್ಣವಂ ಮಹಾಪುತಂ ಪ್ರವದಂತಿ ಮನೀಷಿಣಃ” || “ಸಂಸಾರೋ ವೈಷ್ಣವಾಘ್ನಿಶೋ ದೇವಾ ವೈಷ್ಣವಪಾಲಿತಾಃ | ಅಹಂ ಚ ವೈಷ್ಣವಾಘ್ನಿನಸ್ತಸ್ಮಾತ್ ಶ್ರೇಷ್ಠಾಶ್ಚ ವೈಷ್ಣವಾಃ” || “ದೇವಸ್ವಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣದ್ರವ್ಯಂ ಪರಸ್ವಂ ಚ ಚತುರ್ಮುಖ | ಪಶ್ಯಂತಿ ವಿಷವಕ್ಷ್ಯಂ ಚ ಜ್ಞೇಯಾಸ್ತೇ ವೈಷ್ಣವಾ ಜನಾಃ” || (ನಂ) 2. ಹೋಮದ ಭಸ್ಮ. 3. ಶ್ರವಣ ನಕ್ಷತ್ರ. 4. ಶ್ರೀವೈಕುಂಠ. (ವಿಂ) 5. ವಿಷ್ಣು ಸಂಬಂಧವಾದ. “ಗಾಂ ಗತಸ್ಯ ತವ ಧಾಮ ವೈಷ್ಣವಂ ಕೌಪಿತೋಹಸಿ ಮಯಾ ದಿವ್ಯಕ್ಷುಣಾ” ರಘುಂ ೧೧-೮೫ |

ವೈಷ್ಣವಪುರಾಣ ವೈಷ್ಣವಪುರಾಣ (ನಂ) ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ ವಿರಚಿತ ಅಷ್ಟಾದಶ ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. ವಿವರಕ್ಕೆ “ವಿಷ್ಣುಪುರಾಣ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ವೈಷ್ಣವಾಚಾರ ವೈಷ್ಣವಾಚಾರ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣುಭಕ್ತನ ನಡವಳಿಕೆ, ವಿಷ್ಣು ವಿನ ಉಪಾಸಕನು ನಡೆದುಕೊಳ್ಳಬೇಕಾದ ಸಂಪ್ರದಾಯ, ವಿಷ್ಣುಭಕ್ತನ ಕರ್ತವ್ಯ. ವೈಷ್ಣವಸ್ಯ ಆಚಾರಃ | ದೇವರು ಗೋವುಗಳು ಬ್ರಾಹ್ಮಣರು ಜ್ಞಾನ ವಯೋವೃದ್ಧರಾದ ಆಚಾರ್ಯರು ಇವರನ್ನು ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಆರಾಧಿಸಬೇಕು. ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಕರ್ತವ್ಯಲೋಪ ವಿಲ್ಲದೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯವನ್ನು ತಪ್ಪದೆ ಮಾಡಬೇಕು. ಇತ್ಯಾದಿ.

ವೈಷ್ಣವೀ ವೈಷ್ಣವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿಷ್ಣುಶಕ್ತಿ. ವಿಷ್ಣೋರಿಯಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) | “ಜಿಪ್” (೪-೧-೧೫) | “ಯಾ ವಿಷ್ಣೋ ರಾಜಸೀ ಶಕ್ತಿಃ ಪಾಲಿನೀ ಚೈವ ವೈಷ್ಣವೀ” ವರಾಹಪುಂ | 2 ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 3. ಗಂಗೆ.

ವೈಸಾರಿಣ ವೈಸಾರಿಣ (ಪುಂ) ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. ವಿವಿಧ ಸರತಿ—ಸೃ (ಗತೌ) “ಗಿತಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) | ವಿಸಾರಿ “ಅನ್” (೫-೪-೧೬) | “ಮತ್ಸ್ಯೋ ವೈಸಾರಿಣೋಽಙ್ಗಜಃ” ಅಮಂ |

ವೈಸುಚನ ವೈಸುಚನ (ನಂ) ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಪುರುಷನು ಸ್ತ್ರೀ ಪಾತ್ರವನ್ನು (ವೇಷವನ್ನು) ಹೊಂದುವುದು.

ವೈಹಾರ್ಯ ವೈಹಾರ್ಯ (ವಿಂ) ವಿನೋದಕ್ಕಾಗಿ ಆಟವಾಡ ಲ್ಪಡುವ, ಪರಿಹಾಸ್ಯಪೂರ್ವಕ ಪ್ರೀತಿಸಲ್ಪಡುವ, ಪತ್ನಿಯ ಸಂಬಂಧಿ ಸ್ಕಾಲ ಮತ್ತು ಪತ್ನಿಯ ಬಂಧು.

ವೈಹಾಸಿಕ ವೈಹಾಸಿಕ (ಪುಂ) ನಕಲಿ, ಹಾಸ್ಯಗಾರ. ವಿಹಾಸ “ಠಕ್” (೫-೧-೧೦೯) | “ಭಾನುಸ್ತಾಮ್ಯದ್ವನರುಹವನೀಕೇಲಿವೈ-ಹಾಸಿಕೋಽಯಮ್” ನೈಷಂ ೧೯-೬೪ |

ವೋಡ್ ವೋಡ್ (ಪುಂ) 1. ಗೋನಸಮೆಂಬ ದೊಡ್ಡ ಸರ್ಪ, ಮಂಡಲದ ಹಾವು 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಜಿ-೨೨೯. 3. ಒಂದು ಪಣದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. “ವೋಡ್ ಸ್ತ್ರೀ ಪಣಪಾದೇ ನಾ ಗೋನಸಾಹೌ ಜಘಾಂತರೆ” ಮೇದಿಂ |

ವೋಡವ್ಯ ವೋಡವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ವಹಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 2. ವಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ವಹಿಸಬೇಕಾದ. 4. ವಹಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬) | “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) | ವಹನೀಯಃ. 5. ವಿವಾಹವಾಗಲು ಅರ್ಹನಾದ. 6. ವಿವಾಹವಾಗ ಬೇಕಾದ. 7. ಮದುವೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಡುವ. “ನ ಚೇತೇಮ್ಯಃ ಪ್ರದಾತವ್ಯಾ ನ ವೋಡವ್ಯಾ ತಥಾವಿಧಾ” ಭಾಂ |

ವೋಡ್ ವೋಡ್ (ಪುಂ) 1. ವಹಿಸುವವನು, ಹೊರುವವನು. ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ತವ್” (೩-೧-೧೩೩) | ಅತ್ವಮ್ (೬-೩-೧೧೨) | “ಹೇ ವೋಡಾರಃ ಸಾಘವತಿಕಾಮತ” ಭಾಗಂ | 2. ಮದುವೆಯಾದವನು, ಪತಿ, ಗಂಡ. “ಅಶಿಲಕ್ಷ-ದ್ವಯಚಕಿತೇಕ್ಷಣಂ ನವೋಡಾ ವೋಡಾರಂ ವಿಪದಿ ನ ದ್ವಿಪಿತಾತಿಭೂಮಿಃ” ಮಾಘಂ ೮-೨೦ | 3. ಎತ್ತು, ವೃಷಭ. 4. ಸಾರಥಿ. (ವಿಂ) 5. ಒಯ್ಯುವವನು, ಸಾಗಿಸುವವನು. “ಭಾಗೀರಥಿ ನಿರ್ಜೇರಣೀಕರಾಣಾಂ ವೋಡಾ ಮುಹುಃ ಕಮ್ಪಿನೋದದಾಹಃ” ಕುಮಂ ೧-೧೫ |

ವೋಡ ವೋಡ (ವಿಂ) ಒದ್ದೆಯಾಗಿರುವ, ಒಡ್ಡೆಯಾಗಿರುವ. “ವೋಡ ಆದ್ರಃ ಸ್ಯಾತ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ವೋಡಾಲ ವೋಡಾಲ (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. ವೋಡಃ ಆದ್ರಃ ಅಲತಿ — ಅಲ “ಅವ್” (೩-೧-೧೩೪) |

ವೋರಕ ವೋರಕ (ಪುಂ) ಲೇಖಕ, ಬರವಣಿಗೆಯವನು.

ವೋಷಟ್ ವೋಷಟ್ (ಅವ್ಯಂ) ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಹವಿಸ್ಸನ್ನು ಅರ್ಪಿಸುವ ಮಂತ್ರದ ಘೋಷಣೆ. ಉಹತೇನೇನ ಹವಿಃ — ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ವೋಷಟ್” ಬಾಹುಂ |

ವ್ಯಂಶಕ ವ್ಯಂಶಕ (ಪುಂ) ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ.

ವ್ಯಂಶಕ ವ್ಯಂಶಕ (ವಿಂ) ವಸ್ತ್ರವನ್ನು ತೆಗೆದುಹಾಕಿರುವ, ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ಬಿಚ್ಚಿರುವ. ವಿಗತಮಂಶುಕಂ ಯಸ್ಯ | “ವ್ಯಂಶಕ-ಸ್ಕುಟಮುಖೀಮತಿಜಿಹ್ವಾಂ ಕ್ರಿಡಯಾ ನವವಭೂಮಿವ ಲೋಕಃ” ಕಿರಾಂ ೯-೨೪ |



**ವ್ಯಂಸಕ ವ್ಯಂಸಕ** (ವಿಂ) ಧೂರ್ತ, ವಂಚಕ. ಮಯ್ಯಂಸಕ:  
— ವ್ಯಂಸಕೋ ಭೂತ: — ಸಿಂ ಕೌಂ ।  
**ವ್ಯಂಸಿತ ವ್ಯಂಸಿತ** (ವಿಂ) ವಂಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೋಸಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಪ್ರತಾರಿತೋ ವ್ಯಂಸಿತ: ಸ್ಯಾತ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।  
**ವ್ಯಂಸನ ವ್ಯಂಸನ** (ನಂ) ಮೋಸಪಡಿಸುವುದು, ವಂಚಿಸುವುದು. ವಿ+ಅಂಸ (ಸಮಾಧಾತೇ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।  
**ವ್ಯಕ್ತ ವ್ಯಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ. ವ್ಯಜ್ಯತೇ—ವಿ+ಅಜ್ಜ (ವ್ಯಕ್ತಾದೌ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) । “ವ್ಯಕ್ತದ್ವಿರೇಕಾನಿನದಾ ವಿಹಿತಾಭಿಮುಖ್ಯಾ” ಯಾದಂ ೧೯-೬೮ । 2. ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ, ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗುವ, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯಬಹುದಾದ. “ವ್ಯಕ್ತನೃತ್ಹದಯಂ ಬಲದ್ವಿಪಂ ವೀಕ್ಷ್ಯ ವಿಶ್ವಮಖಿಲಂ ವ್ಯಲಂಜತ” ಯಾದಂ ೧೭-೭೯ । (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 3. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯುವಂತೆ, ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣಿಸುವಂತೆ. “ವ್ಯಕ್ತೇದಿತಸ್ಮಿತ-ಮಯ್ಯವಿಮಾಸಿತೋಃ” ಕಿರಾಂ ೨-೫೯ । (ಪುಂ) 4. ಪ್ರಾಜ್ಞ, ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ.  
**ವ್ಯಕ್ತರೂಪ ವ್ಯಕ್ತರೂಪ** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ವ್ಯಕ್ತಂ ರೂಪಂ ಯಸ್ಯ । “ಅದ್ವಯೋ ವ್ಯಕ್ತರೂಪಶ್ಚ ಸಹಸ್ರಜಿದನಂತಜಿತ್” ವಿಂ ಸಂ ।  
**ವ್ಯಕ್ತಿ ವ್ಯಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿವೇಚನೆಯಿಂದ ತೋರುವ ಭೇದ, ವಿಮರ್ಶೆಯಿಂದ ಕಂಡುಬರುವ ವ್ಯತ್ಯಾಸ. ವಿ+ಅಜ್ಜ (ವ್ಯಕ್ತಾದೌ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) । “ತಂ ಸಂತ: ಶ್ರುತುಮಹಂತಿ ಸದಸದ್ವಚ್ಛಿಹೇತವ:” ರಘುಂ ೧-೧೦ । 2. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತೋರುವಿಕೆ, ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗುವಿಕೆ. “ಸಂತಾನೇ-ಸ್ತನುಭಾವನೃತ್ಸಲಿಲಾ ವ್ಯಕ್ತಿ ಭಜಂತ್ಯಾಪಗಾ:” ಶಾಕುಂ ೭-೮ । 3. ಸ್ಪಷ್ಟತೆ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿರುವಿಕೆ. 4. ನಿಜಸ್ವರೂಪ, ಯಥಾರ್ಥವಾದ ರೂಪ, ವಾಸ್ತವವಾದ ರೂಪ. “ನ ಹಿ ತೇ ಭಗವನ್ ವ್ಯಕ್ತಿ ವಿಧುರ್ದೇವಾ ನ ದಾನವಾ:” ಗೀತಾ ೧೦-೧೪ । 5. ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾದ ಒಬ್ಬ ಮನುಷ್ಯ, ಪ್ರತ್ಯೇಕ ವಸ್ತು, ಚರಾಚರಭೂತಗಳು. “ಅವ್ಯಕ್ತಾದ್ವಯತಯ: ಸರ್ವಾ: ಪ್ರಭವಂತ್ಯಹರಾಗಮೇ । ರಾತ್ರಾಗಮೇ ಪ್ರಲೀಯಂತೇ ತತ್ರೈವಾವ್ಯಕ್ತ-ಸಂಜ್ಞಕೇ” ಗೀತಾ ೮-೧೮ । 6. ಶಬ್ದಗಳಿಗಿರುವ ಪುಂಲಿಂಗ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗ ನಪುಂಸಕಲಿಂಗ ಇವುಗಳ ಚಿಹ್ನೆ. “ಭಾತಿ ರಥಾಕ್ಷಮ್” ಎಂಬಲ್ಲಿ ರಥಾಂಗಪದವು ನಪುಂಸಕಲಿಂಗವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಚಕ್ರವೆಂಬ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವುದು.  
**ವ್ಯಗ್ರ ವ್ಯಗ್ರ** (ವಿಂ) 1. ವ್ಯಾಕುಲನಾದ, ಉತ್ಸಾಹದಿಂದ ಕಾರ್ಯನಿರತನಾದ. ವಿವಿಧೇ ಅಗ್ರಂ ಯಸ್ಯ । “ವೈವಾಹಿಕ: ಕೌತುಕಸಂವಿಧಾನಗೃಹೇ ಗೃಹೇ ವ್ಯಗ್ರಪುರಂದ್ರಿವರ್ಗಮ್” ಕುಮಾಂ ೭-೨ । 2. ಅಸಕ್ತನಾದ, ಕಾರ್ಯನಿಷ್ಠನಾದ, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಶ್ರದ್ಧೆ

ಯುಳ್ಳ. 3. ಸಂಭ್ರಮದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಸಡಗರದಿಂದ ಕೂಡಿದ. “ತಂ ವ್ಯಗ್ರಚಕ್ರಂ ದಿತೀಜಾಧಮೇನ ಸ್ವಪಾರ್ಥದಮುಖ್ಯೇನ ವಿಷಜ್ಜಮಾನಮ್” ಭಾಗಂ ೩-೧೯-೬ । (ಪುಂ) 4. ವಿಷ್ಣು. “ಪ್ರಗ್ರಹೋ ನಿಗ್ರಹೋ ವ್ಯಗ್ರೋ ನೈಕಶೃಂಗೋ ಗದಾಗ್ರಜ:” ವಿಂ ಸಂ ।  
**ವ್ಯಜ್ಞ ವ್ಯಂಗೆ** (ಪುಂ) 1. ಹೆಳವ, ಕುಟ. ವಿಗತಮಜ್ಞಂ ಯಸ್ಯ । 2. ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. 3. ಮುಖದಲ್ಲಿ ಎಳವ ಮಚ್ಚೆ, ಮುತ್ತಿ. “ಕ್ರೋಧಾಸಾಪ್ರಕುಪಿತೋ ವಾಯು: ಪಿತ್ತೇನ ಸಂಯುತ: । ಮುಖಮಾಗತ್ಯ ಸಹಸಾ ಮಂಡಲಂ ವಿಸೃಜತ್ಯತ: । ನೇರುಜಂ ತನುಕಂ ಕ್ಷಯಾಂ ಮುಖೇ ವ್ಯಜ್ಞಂ ತಮಾದಿಶತ್” । (ವಿಂ) 4. ಅಂಗಹೀನನಾದವನು, ಕುರೂಪವುಳ್ಳವನು.  
**ವ್ಯಜ್ಜಿತ ವ್ಯಂಗೆತ** (ವಿಂ) ಅಂಗಹೀನನಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಅಗಿ (ಗತೌ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) । “ಸಿತಕರ-ವಪುಷಾಸೌ ಲಕ್ಷ್ಯತೇ ಸಂಪ್ರತಿ ಶೌವಿಗಲಿತಕಿರಣೇನ ವ್ಯಜ್ಜಿತೇ-ಕ್ಷಣೇವ” ಮಾಘಂ ೧೧-೬೩ ।  
**ವ್ಯಜ್ಞಗುಲ ವ್ಯಂಗೆಗುಲ** (ನಂ) ಒಂದು ಅಂಗುಲದ 16 ನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ.  
**ವ್ಯಜ್ಞಚ ವ್ಯಂಗೆ** (ವಿಂ) ವ್ಯಂಜನಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಬೋಧ್ಯವಾಗುವ (ಅರ್ಥ). ವಿ+ಅಜ್ಜ (ವ್ಯಕ್ತಾದೌ) “ಞ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪) । ಅರ್ಥವು (1) ವಾಚ್ಯ: (2) ಲಕ್ಷ್ಯ: ಮತ್ತು (3) ವ್ಯಜ್ಞಚ: ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. “ಅಥೌ ವಾಚ್ಯಶ್ಚ ಲಕ್ಷ್ಯಶ್ಚ ವ್ಯಜ್ಞಚಃವೇತಿ ತ್ರಿಧಾ ಮತ:” ಸಾಂ ದಂ ೨-೨ । ಅಭಿಧಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ತಿಳಿಯುವ ಅರ್ಥವು ವಾಚ್ಯ. ಲಕ್ಷಣಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಬೋಧ್ಯವಾಗುವ ಅರ್ಥವು ಲಕ್ಷ್ಯ. ವ್ಯಂಜನಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಬೋಧ್ಯವಾಗುವ ಅರ್ಥವು ವ್ಯಂಗೆ. “ವಾಚ್ಯೋಽರ್ಥೋಽಭಿಧಯಾ ಬೋಧ್ಯೋ ಲಕ್ಷ್ಯೋ ಲಕ್ಷಣಯಾ ಮತ: । ವ್ಯಜ್ಞಚೋ ವ್ಯಜ್ಜನಯಾ ತಾ: ಸ್ಯು: ತಿಸ್ರ: ಶಬ್ದಸ್ಯ ಶಕ್ತಯ:” ಸಾಂ ದಂ ೨-೩ ।  
**ವ್ಯಜ ವ್ಯಜ** (ಪುಂ) ವ್ಯಜನ, ಬೀಸಣಿಗೆ. ವ್ಯಜತೀಯೇನ—ವಿ+ಅಜ (ಗತೀಕ್ಷೇಪಣಯೋ:) “ಜ:” (೩-೩-೧೧೯) । ನಿಪಾಂ ।  
**ವ್ಯಜನ ವ್ಯಜನ** (ನಂ) ತಾಲವೃಂತ, ಬೀಸಣಿಗೆ. ವ್ಯಜತೀಯೇನ—ವಿ+ಅಜ (ಗತೀಕ್ಷೇಪಣಯೋ:) ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭) । “ವ್ಯಜನಂ ತಾಲವೃಂತಕಮ್” ಅಮಂ । “ಪರ್ಯುಪಾಸ್ಯಂತ ಲಕ್ಷ್ಮಯಾ ಚ ಪದವ್ಯಜನಹಸ್ತಯಾ” ರಘುಂ ೧೦-೬೨ ।  
**ವ್ಯಜ್ಜಕ ವ್ಯಂಜಕ** (ವಿಂ) 1. ವ್ಯಂಜನಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವ. ವಿ+ಅಜ್ಜ (ವ್ಯಕ್ತಾದೌ) “ಞ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) । ಶಬ್ದವು ಅಭಿಧಾ ಲಕ್ಷಣಾ ಮತ್ತು



ವ್ಯಂಜನಾರೂಪ ಮೂರುವಿಧವ್ಯಾಪಾರಗಳಿಂದ ಮೂರು ವಿಧವಾಗುವುದು. ವ್ಯಂಜನಾರೂಪವಾದ ಉಪಾಧಿ (ವ್ಯಾಪಾರ) ಯಿಂದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ ಶಬ್ದವು ವ್ಯಂಜಕ. “ಅಭಿಧಾದಿತ್ರಯೋಪಾಧಿವೈಶಿಷ್ಟ್ಯಾತ್ರಿವಿಧೋ ಮತಃ | ಶಬ್ದೋಪಿ ವಾಚಕಸ್ತದ್ವಲಕ್ಷಕೋ ವ್ಯಂಜಕಸ್ತಥಾ” ಸಾಂ ದಂ ೨-೧೯ | 2. ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವ, ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವ. “उत्पत्तिव्यञ्जकः पुण्यः कर्मयोगं निबोधत” ಮನ್ವಂ ೨-೬೮ |

ವ್ಯಂಜನ ವ್ಯಂಜನ (ನಂ) 1. ಅನ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಆಹಾರವು ರುಚಿಸಲು ಬೇಕಾದ ಮಜ್ಜೆಗೆಪಳಿದು ಪಲ್ಯ ಗೊಜ್ಜು ಮೊದಲಾದುವು. ವ್ಯಜ್ಯತೇ ಅನೇನ—ವಿ+ಅಜ್ಜ (ವ್ಯಕ್ತ್ಯಾದೌ) “ल्युट्” (೩-೩-೧೧೭) | “अशकनुवद्भिर्बहुभुक्तवत्तया यदुज्जिता व्यञ्जनपुञ्जराशयः” ನೆಪಂ ೧೬-೧೦೪ | 2. ಶುಶ್ರು, ಮೀಸೆ, ಗಡ್ಡ. “बालमप्राप्तवयसमजात-व्यञ्जनादिकम्” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೭೧-೪೩ | 3. ಚಿಹ್ನೆ, ಲಿಂಗ, ಗುರುತು. 4. ವೇಷ, ಉಡುಪು, ಉಡಿಗೆ. “अमात्य-व्यञ्जना राज्ञां दूष्यास्ते शत्रुसंज्ञिताः” ಭಾಷಂ ೨-೪೬ | 5. ಅಂಗ, ಅವಯವ. 6. ದಿವಸ, ಹಗಲು. 7. ಸ್ತ್ರೀ ಪುರುಷರ ಗುಹ್ಯಪ್ರದೇಶ. 8. ವ್ಯಂಜನ ವರ್ಣ, ವರ್ಣ ಮಾಲೆಯಲ್ಲಿ “ಕ” ಕಾರದಿಂದ “ಹ” ಕಾರದ ಪರಿಗಿನ ವರ್ಣಗಳು, ಅರ್ಥಮಾತ್ರೆಯುಳ್ಳ “ಹಲ್” ವರ್ಣಗಳು. “एकमात्रो मधेऋक्षस्वः द्विमात्रो दीर्घ उच्यते | त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयः व्यञ्जनं त्वर्धमात्रकम्” | “व्यञ्जनं तेमने चिह्नो श्मश्रुयवयवेऽहनि” ಮೇದಿಂ |

ವ್ಯಂಜನಾ ವ್ಯಂಜನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಬ್ದದ ಮೂರು ವಿಧ ಉಪಾಧಿ (ವ್ಯಾಪಾರ) ಗಳಲ್ಲಿೊಂದು ವಿಧ, ವ್ಯಂಜನಾ ವೃತ್ತಿ. ಅಭಿಧಾ ಮತ್ತು ಲಕ್ಷಣಾವೃತ್ತಿಗಳಿಂದ ಬೋಧ್ಯ ವಾಗುವ ಅರ್ಥಕ್ಕಿಂತಲೂ ಅತಿಶಯವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ ವೃತ್ತಿಯು ವ್ಯಂಜನಾವೃತ್ತಿ. ಮುಖ್ಯಾರ್ಥ ಮತ್ತು ಲಕ್ಷ್ಯಾರ್ಥಗಳಿಗಿಂತ ಭಿನ್ನವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಒಂದು ವೃತ್ತಿ. “विरतास्वभिधाद्यासु यथाथो बोध्यते परः | सा वृत्तिव्यञ्जना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च” ಸಾಂ ದಂ ೨-೧೨ | ವ್ಯಂಗ್ಯಾರ್ಥವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ ಈ ವ್ಯಂಜನಾವೃತ್ತಿಯು ಶಾಬ್ದಿ (ಶಬ್ದನಿಷ್ಠಾ), ಆರ್ಥಿ (ಅರ್ಥನಿಷ್ಠಾ) ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಶಾಬ್ದಿಯು ಅಭಿಧಾ-ಮೂಲ ಮತ್ತು ಲಕ್ಷಣಾಮೂಲ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಅನೇಕಾರ್ಥವುಳ್ಳ ಶಬ್ದದ ಒಂದು ಅರ್ಥವು ಸಂಯೋಗ ಪ್ರಯೋಗ ಸಾಹಚರ್ಯಾದಿಗಳಿಂದ ನಿಯಂತ್ರಿತ

ವಾಗಲು ಅತಿರಿಕ್ತವಾದ ಬೇರೊಂದು ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ವ್ಯಂಜನಾವೃತ್ತಿಯು ಅಭಿಧಾಮೂಲಾ | “अनेका-र्थस्य शब्दस्य संयोगार्थनियन्त्रिते | एकार्थस्यधीहेतुः व्यञ्जना साऽभिधाश्रया” ಸಾಂ ದಂ ೨-೧೪ | ಈ ವ್ಯಂಜನಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಬೋಧ್ಯವಾಗುವ ವ್ಯಂಗ್ಯಾರ್ಥವು ನಿಯತವಾದುದಲ್ಲ. ಒಂದೇ ಶಬ್ದವು ಪ್ರಕರಣಾದಿಗಳಿಂದ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಕೊಡುವುದು. “गतोऽस्तमर्कः” ಇಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯಾಸ್ತವಾಯಿತೆಂದು ವಾಚ್ಯಾರ್ಥವು ಬೋಧ್ಯ ವಾಗುವುದು. ಆದರೆ ವಕ್ತ್ವ ಪ್ರಕರಣ ಭೇದದಿಂದ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಅರ್ಥಗಳು ವ್ಯಂಜನಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಬೋಧ್ಯವಾಗು ವುದರಿಂದ ಈ ಅರ್ಥಗಳು ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಅನಿಯತವಾದುವು. ಇದನ್ನು ರಾಜನು ಹೇಳುವುದಾದರೆ ಸೂರ್ಯಾಸ್ತ ವಾಯಿತು, ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಎಳೆದುಕೊಂಡು ಬನ್ನಿರಿ ಎಂದೂ ದೂತಿಯರು ಅಭಿಸರಣಕಾರ್ಯ ನಡೆಯಲಿ ಎಂದೂ ಕೂಲಿಕಾರರು ಮನೆಗೆ ಹೊರಡುವ ವೇಳೆಯಾಯಿತೆಂದೂ ಗೋವುಗಳು ಮನೆಗೆ ಬಂದು ಸೇರಲಿ ಎಂದೂ ಹೇಳುವುದ ರಿಂದ ಒಂದೇ ವಾಕ್ಯಕ್ಕೆ ವಕ್ತ್ವಪ್ರಕರಣಭೇದದಿಂದ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಅರ್ಥಗಳು ಅಭಿಧಾಮೂಲ ವ್ಯಂಜನಾವೃತ್ತಿ ಯಿಂದ ಬೋಧ್ಯವಾಗುವುವು. ಒಂದು ವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ಶಬ್ದಕ್ಕಿರುವ ಮುಖ್ಯಾರ್ಥ (ವಾಚ್ಯಾರ್ಥ) ವು ಬಾಧಿತ ವಾಗಿ ಆ ಮುಖ್ಯಾರ್ಥದ ಶಕ್ತಿ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಬೇರೊಂದು ಅರ್ಥವು ಲಕ್ಷಣೆಯಿಂದ ಬೋಧ್ಯವಾಗಿ ಈ ಎರಡೂ ಅರ್ಥಕ್ಕಿಂತಲೂ ಅತಿಶಯವಾದ ಲಕ್ಷಣಾಪ್ರಯೋಜನ ರೂಪವಾದ ಮತ್ತೊಂದು ಅರ್ಥವು ಪ್ರತೀತವಾಗುವಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷಣಾಮೂಲಾ ವ್ಯಂಜನಾ | “लक्षणोपास्यते यस्य कृते तत् प्रयोजनम् | यथा प्रत्याय्यते सा स्यात् व्यञ्जना लक्षणाश्रया” ಸಾಂ ದಂ ೨-೧೪ | “गङ्गायां घोषः” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಜಲಮಯ ರೂಪವಾದ ವಾಚ್ಯಾರ್ಥವೂ ತೀರ ರೂಪವಾದ ಲಕ್ಷಣಾರ್ಥವೂ ಬೋಧ್ಯವಾಗಿ ಈ ಲಕ್ಷಣೆಯ ಪ್ರಯೋಜನರೂಪವಾದ ಮತ್ತೊಂದು ಅರ್ಥಕ್ಕೆ ಪ್ರಯೋಜನವಾದ ಶೈತ್ಯಪಾವನತ್ವರೂಪವಾದ ಮತ್ತೊಂದು ಅರ್ಥವು ಲಕ್ಷಣಾಮೂಲ ವ್ಯಂಜನಾವೃತ್ತಿ ಯಿಂದ ಬೋಧ್ಯವಾಗುವುದು. ಅರ್ಥವ್ಯಂಜನೆಗೆ ಸಾಹಿತ್ಯ ದರ್ಪಣ ನೋಡಿ.

ವ್ಯಂಜಿತ ವ್ಯಂಜಿತ (ವಿಂ) ವ್ಯಕ್ತವಾಗಿ ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಅಜ್ಜ (ವ್ಯಕ್ತ್ಯಾದೌ)+ ಣಿच् “क्तः” (೩-೨-೧೦೨) | “ती सन्निधु व्यञ्जित-वृत्तिभेदं रसान्तरेषु प्रतिबद्धरागम्” ಕುಮಾಂ ೭-೯೧ |

ವ್ಯಡ ವ್ಯಡ (ನಂ) ಮಲ, ಪುರೀಷ



**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ** (ಪುಂ) ಏಕಾಂಶವು, ಹರಳು ಗಿಡ. ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ ಮಲಮ್ ಅಮ್ಬಯತಿ—ಅವಿ (ಸಂಸನೆ) + ಣಿಕ್ "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । "ಚಕ್ರು: ಪಂಚಾಂಗುಲೋ ಮಂಡವರ್ಧಮಾನ-ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕಾ:" ಅಮಂ ।

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ** (ಪುಂ) 1. ಸಂಬಂಧ, ಸಂಪರ್ಕ. ವಿ + ಅತಿ + ಕ್ (ವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೭) । "ಸಿತಮಣಿವಿಹಿತಾನ್ ಸ ಯನ್ತ್ರಧಾರಾವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕಶೀತಲಿತಾ-ನಮುಕ್ತಸೋಧಾನ್" ಯಾದಂ ೨೪-೩೫ । 2. ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ. 3. ಬದಲಾವಣೆ. 4. ಮಿಶ್ರಣ, ಬೆರಕೆ. "ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ ಇವ ಭೂಮಿಸ್ತಾಮಸೋ ವೈದ್ಯುತಶ್ಚ" ಮಾಲತೀಂ ೯-೪೨ ।

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ** (ವಿಂ) ಸಂಪೂರ್ಣ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಸಿರುವ. ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕೋಷ್ಠ ಸಂಜ್ಞಾತ: "ಇತ್" (೪-೨-೩೬) । "ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕರಿದಿಗಂತಾ: ಸ್ವೇತಮಾನೇಯಂಶೋಭಿ: ಸುಕೃತವಿಲಸಿತಾನಾಂ ಸ್ಥಾನಮೂರ್ಜಸ್ವಲಾನಾಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೨-೯ ।

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ** (ಪುಂ) 1. ಕ್ರಮವು ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಸಿರುವ. ವಿ + ಅತಿ + ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) । "ಸರ್ವತ್ರ ಪ್ರಾಡ್ಘಮಿಕೋ ದಾತಾ ಗ್ರಹಿತಾ ಚ ತದ್ಭೂತ: । ಏಷ ಏವ ವಿಧಿದಾನಿ ವಿವಾಹೇ ಚ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ:" । 2. ಅತಿಕ್ರಮಣ, ಉಲ್ಲಂಘನೆ, ನಿಯಮವನ್ನು ಮೀರಿ ನಡೆಯುವುದು. "ಪ್ರತಿಬಂಧನಾತಿ ಹಿ ಶ್ರೇಯ: ಪೂಜ್ಯಪೂಜಾವ್ಯಾಖ್ಯಾನ-ಕ್ರಮ:" ರಘುಂ ೧-೭೯ । 3. ದಾರಿ ತಪ್ಪಿ ನಡೆಯುವುದು, ಅಡ್ಡಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವುದು, ಅಜ್ಞೆ ಮೀರಿ ನಡೆಯುವುದು.

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ** (ವಿಂ) 1. ಭಿನ್ನವಾದ, ಬೇರೆಯಾದ. ವಿ + ಅತಿ + ರಿಚಿರ್ (ವಿರೇಚನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । "ಕಾಮಸ್ಯ ಪುಷ್ಪವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕರಿದಿಗಂತಾ: ಬಾಲಾತ್ಪರಂ ಸಾಥ ವಯ: ಪ್ರಪೇದೇ" ಕುಮಾರಂ ೧-೩೧ । 2. ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. ವಿಶೇಷಣ ಅತಿರಿಕ್ತ: ಅಧಿಕ:

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ** (ಪುಂ) 1. ಅಭಾವ. ವಿ + ಅತಿ + ರಿಚಿರ್ (ವಿರೇಚನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) । ಸಾಧ್ಯಾಭಾವ ಮತ್ತು ಹೇತುಭಾವಗಳ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ (ಸಾಹಚರ್ಯ). "ಯತ್ರ ವಹ್ನಯ-ಭಾವ: ತತ್ರ ಭೂಮಾಭಾವ:" ಇಲ್ಲಿ ಸಾಧ್ಯಾಭಾವವು ವಹ್ನು ಭಾವ. ಧೂಮಾಭಾವವು ಹೇತುಭಾವ. ಇವೆರಡರ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಹೃದದಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ (ಅಭಾವ) ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಸುವುದು. 2. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದಿರುವಲ್ಲಿ ಕಾರ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಕಾರಣಾಭಾವಾಧಿಕರಣದಲ್ಲಿ ಕಾರ್ಯವಿಲ್ಲದಿರುವುದು, ಚಕ್ರವಿವರಾದಿಸಹಿತಸ್ಯ ದಂಡಸ್ಯಾಭಾವೇ ವಟಸ್ಯಾ-

ಸತ್ವಮ್ । ಯದಭಾವೇ ಯದಭಾವ: । 3. ವಿನಾ, ಹೊರತು, ಬಿಟ್ಟು. "ನ ಪತಿವ್ಯತಿರೇಕೇಣ ಸುಸ್ತ್ರೀಣಾಮಪರಾ ಗತಿ:" । 4. ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿರುವ ಸಂಜ್ಞಾತೀಯ ಅಧಿಕ. "ವೈಶೇಷ್ಯ: ಕ್ರಿಯಾ: ಶೂರಾ:" । ವೈಶೇಷ್ಯ ಶರ್ಯಾಂಶ್ಯಂತಲೂ ಕ್ಷತ್ರಿಯರ ಶರ್ಯಾಂಶ್ಯ ಅಧಿಕವಾದುದು ಎಂದು ಸಂಜ್ಞಾತೀಯವಾದ ಶರ್ಯಾಂಶ್ಯ ಅಧಿಕವು ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. 5. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಉಪಮಾನ ಮತ್ತು ಉಪಮೇಯಗಳಲ್ಲಿ ವೈಲಕ್ಷಣ್ಯವರ್ಣನೆಯು "ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ" ಅಲಂಕಾರ. "ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕೋ ವಿಶೇಷಶ್ಚೇದುಪಮಾನೋಪಮೇಯಯೋ:" । ತದಾ: "ಪಲ್ಲವತ: ಕಲ್ಪತರೋರೇಷ ವಿಶೇಷ: ಕರಸ್ಯ ತೇ ವೀರ । ಭೂಷಯತಿ ಕರ್ಣಮೇಕ: ಪರಸ್ತು ಕರ್ಣಂ ತಿರಸ್ಕುರುತೇ" । ಇಲ್ಲಿ ದಾನಾಂತರಿಯ ದಿಂದ ಕರದಲ್ಲಿ ಪಲ್ಲವಕ್ಕಿಂತಲೂ ವೈಲಕ್ಷಣ್ಯವು ವರ್ಣಿತವಾಗಿದೆ. 6. ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ, ತಾರತಮ್ಯ.

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ** (ನಂ) ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಸುವ ಹೇತು.

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ** (ವಿಂ) 1. ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ, -ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. 2. ಬೆರಕೆಯಾಗಿರುವ, ಮಿಶ್ರವಾಗಿರುವ. ವಿ + ಅತಿ + ಪಂಜ (ಸಂಜ್ಞೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) ।

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ** (ಪುಂ) 1. ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧ. ವಿ + ಅತಿ + ಪಂಜ (ಸಂಜ್ಞೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) । "ಸೇನಯೋವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕಪಂಜೇಣ ಜಯ: ಸಾಧಾರಣೋಽಭವತ್" ಭಾಂಶಾಂತಿಂ ೧೦೩-೪ । 2. ವಿನಿಮಯ, ಬದಲಾವಣೆ. "ಅನ್ಯೋನ್ಯವಿಸ್ತವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕಪಂಜವೇರಾನುಬಂಧೋ ವಿಹರನ್ ಮಿಥಶ್ಚ" ಭಾಗಂ ೪-೧೩-೧೩ । 3. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು, ಪರಸ್ಪರ ಸಮಾಗಮ.

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ** (ಪುಂ) ವಿನಿಮಯ, ಬದಲಾವಣೆ, ಅದಲುಬದಲು. ವಿ + ಅತಿ + ಹ್ (ಹರಣೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) । "ಪರಿಧಾನಂ ವಿನಿಮಯೋ ನಮೇಷ: ಪರಿವರ್ತನಮ್ । ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ: ಪರಾವರ್ತೋ ವೈಮಯೋ ವಿಮಯೋಽಪಿ ಚ" ಹೇಮಂ । "ವಿಕ್ರಮವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕಹರೇಣ ಸಾಮಾನ್ಯಾಭೂತ್ ದ್ವಯೋಽಪಿ । ಜಯಶ್ರೀ-ರಂತರಾ ವೇದಿಮಂತವಾರಣಯೋರಿವ" ರಘುಂ ೧೨-೯೩ । "ಕರ್ಮ-ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕಹರೇ ಸರ್ವನಾಮ್ನೋ ದ್ವೇ ವಾಚ್ಯೇ" ವಾಂ ೮-೧-೧೨ ।

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ** (ವಿಂ) 1. ಕಳೆದಿರುವ, ಅತಿಕ್ರಾಂತವಾದ, ಕಳೆದುಹೋಗಿರುವ. ವಿ + ಅತಿ + ಇನ್ (ಗತೀ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) । "ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕಕಾಲಸ್ತ್ವಹಮಭ್ಯುಪೇತಸ್ತ್ವಾಮಥಿ-



ವ್ಯಪಗತ ವ್ಯಸಗತ (ವಿಂ) 1. ಹೊರಟುಹೋದ, ಅದೃಶ್ಯ  
ನಾದ. ವಿ+ಅಪ+ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) 1



“ನಾಥಾಸ್ಯಂತಿ ವ್ಯವಹಾರಶುಚಿಃ ತ್ವಾಮಪಿ ಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯ ಹಂಸಾಃ” ಮೇಘಂ ೨-೧೩. 2. ಕಳೆದುಹೋದ, ನಾಶವಾದ. “ವ್ಯವಹಾರ-ಮದಯಾಽಹ್ನಿ ವ್ರೀಡಿತಂ ಮುಖವಾ” ಮಾಘಂ ೧೧-೩೯. 3. ತೆರಳಿದ, ಹೊರಟುಹೋದ.

**ವ್ಯವಹಾರ ವ್ಯವಹಾರ** (ಪುಂ) 1. ಹೊರಟುಹೋಗುವುದು. 2. ತೆರಳುವುದು. 3. ನಾಶವಾಗುವುದು, ಅದೃಶ್ಯವಾಗುವುದು, ಕಳೆದುಹೋಗುವುದು. ವಿ+ಅಪ+ಗಮ್ (ಗತೌ) “ಅಪ್” (೩-೩-೪೮)।

**ವ್ಯವಹಾರ ವ್ಯವಹಾರ** (ವಿಂ) ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದವನು, ಧೂರ್ತ, ಮಾನಹೀನ. ವ್ಯವಹಾರಾ ನಪಾ ಯಸ್ಯ।

**ವ್ಯವಹಾರ ವ್ಯವಹಾರ** (ವಿಂ) 1. ವ್ಯವಹರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೆಸರು ಹೇಳುತ್ತಿರುವ. 2. ಗುರುತಿಸುತ್ತಿರುವ.

**ವ್ಯವಹಾರ ವ್ಯವಹಾರ** (ವಿಂ) 1. ಹೆಸರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವ್ಯವಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಅಪ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಗುರುತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೋರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವ್ಯವಹಾರ ವ್ಯವಹಾರ** (ಪುಂ) 1. ವಂಶ, ಕುಲ. ವಿ+ಅಪ+ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) “ವಂ” (೩-೩-೧೨೧)। “ವ್ಯವಹಾರ-ಮಾವಿಲಯಿತು ಕಿಮಿಹಸೇ ಜನಮಿಮಂ ಚ ಪಾತಯಿತುಮ್” ಶಾಕುಂ ೪-೨೧. 2. ವ್ಯಾಜ, ಕಪಟ, ನಟನೆ. “ಯಥೇಷ ಮಂಜೀರ-ಶಬ್ದಸ್ತಯಾ ಜಾನಾಮಿ ತೇನ ವ್ಯವಹಾರೋನಾಂತಾ ಬುದ್ಧರಕ್ಷಿತಯಾ ಮದಯಂತಿಕೇತಿ” ಮಾಲತೀಂ ೭. 3. ಅಭಿಧಾನ, ಹೆಸರು, ಸಂಜ್ಞೆ. “ಚತ್ವಾರಃ ಕಿಲ ಭವಂತ್ಯೇವ ವ್ಯವಹಾರಭಾಗಿನಸ್ತತ್ರ-ಭವಂತೋ ರಾಮಾಯಣಕಥಾಪುರುಷಾಃ” ತಂ ರಾಂ ೬. 4. ಕೀರ್ತಿ, ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ. 5. ವ್ಯಾಜ, ನೆಪ. 6. ಮುಖ್ಯ.

**ವ್ಯವಹಾರ ವ್ಯವಹಾರ** (ನಂ) ಕತ್ತರಿಸಿ ಕೆಳಗೆ ಹಾಕುವುದು. ವಿ+ಅಪ+ಠ (ಬಿಜಜನ್ಮಾದೌ)+ಣಿಕ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪)। “ಚುಕೋಪ ತಸ್ಮೈ ಸ ಭೃಶಂ ಸುರಸ್ತ್ರಿಯಃ ಪ್ರಸಹ್ಯ ಕೇಶವ್ಯವಹಾರಾದಿವ” ರಘುಂ ೩-೪೬. 1.

**ವ್ಯವಹಾರ ವ್ಯವಹಾರ** (ಪುಂ) ಪರಿಸಮಾಪ್ತಿ.

**ವ್ಯವಹಾರ ವ್ಯವಹಾರ** (ನಂ) ಹಿಂತಿರುಗುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಬರುವುದು.

**ವ್ಯವಹಾರ ವ್ಯವಹಾರ** (ನಂ) ಅಟ್ಟುವುದು, ದೂರಕ್ಕೆ ಓಡಿಸುವುದು. ವಿ+ಅಪ+ಆಡ್+ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪)।

**ವ್ಯವಹಾರ ವ್ಯವಹಾರ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಟ್ಟುವುದು, ದೂರಕ್ಕೆ ಓಡಿಸುವುದು. ವಿ+ಅಪ+ಆಡ್+ಡು ಕೃತ್ (ಕರಣಂ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪)।

**ವ್ಯವಹಾರ ವ್ಯವಹಾರ** (ಪುಂ) ಅಂತ್ಯ, ಕೊನೆ, ಹೊರಟು ಹೋಗುವ ಕಾಲ. “ಹಿಮವ್ಯವಹಾರಾದಿಶದಾಧರಾಣಾಮಾಪಾಂಡರೀ-ಭೂತಮುಖಚ್ಚವೀನಾಮ್” ಕುಮಾರಂ ೩-೩೩. 1.

**ವ್ಯವಹಾರ ವ್ಯವಹಾರ** (ಪುಂ) 1. ಪರ್ಯಾಯ, ಅನುಕ್ರಮ, ಒಂದಾದಮೇಲೆ ಒಂದರಂತೆ ಅನೇಕ ಆಶ್ರಯಗಳನ್ನು ಪಡೆಯುವುದು. 2. ಆಶ್ರಯಿಸುವುದು, ಪ್ರಯೋಜನವನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಒಂದು ವಿಷಯವನ್ನು ಅಂಗೀಕರಿಸುವುದು, ಅರ್ಥಸಾಧನೆಗಾಗಿ ಒಂದರ ಆಶ್ರಯ ಪಡೆಯುವುದು. “ನೇವ ತಸ್ಯ ಕೃತೇನಾರ್ಯೋ ನಾಕೃತೇನೇಹ ಕಷ್ಠನಃ। ನ ಚಾಸ್ಯ ಸರ್ವಭೂತೇಷು ಕಶ್ಚಿದರ್ಥವ್ಯವಹಾರಃ” ಗೀತಾ ೩-೧೮. 3. ಆಶ್ರಯ, ಆಸರೆ, ಅವಲಂಬನೆ. “ಧರ್ಮೋ ರಾಮವ್ಯವಹಾರಃ” ರಾಮಾಂ 1.

**ವ್ಯವಹಾರ ವ್ಯವಹಾರ** (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು, ಆಸೆ ಪಡುವವನು. 2. ಗಮನಿಸುವವನು, ಆಸಕ್ತಿಯಿಂದ ನೋಡುವವನು.

**ವ್ಯವಹಾರ ವ್ಯವಹಾರ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಸೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಇಚ್ಛೆ. 2. ಆಶಯ, ಅಭಿಪ್ರಾಯ. “ಅಥ ಕಾಶ್ಚಿದಜವ್ಯವಹಾರಯಾ ಗಮಯಿತ್ವಾ ಸಮದರ್ಶನಃ ಸಮಾಃ” ರಘುಂ ೮-೨೪. 3. (ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಪದಗಳಿಗೆ ಸಮಾಸಕಾರ್ಯ ವಿಧಿಸುವಾಗ ಇರಬೇಕಾದ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. ಈ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವು (1) ವ್ಯವಹಾರ ಮತ್ತು (2) ಏಕಾರ್ಥಿಭಾವಲಕ್ಷಣಂ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಸ್ವಾರ್ಥವನ್ನು ಹೇಳಿ ಪರ್ಯವಸಾನ ಹೊಂದಿದ ಪದಗಳಿಗೆ ಅಕಾಂಕ್ಷಾದಿಗಳಿಂದ ಪರಸ್ಪರ ಅನ್ವಯವಿರುವಲ್ಲಿ ವ್ಯವಹಾರ ರೂಪವಾದ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. “ಸ್ವಾರ್ಥದರ್ಶನವತಾಪಿನಾಂ ಪದಾನಾಮಾಕಾಂಕ್ಷಾದಿವಶಾತ್ ಯಃ ಪರಸ್ಪರಮನ್ವಯಃ ತತ್ ವ್ಯವಹಾರಾಭಿಧಂ ಸಾಮರ್ಥ್ಯಮ್”।

**ವ್ಯವಹಾರ ವ್ಯವಹಾರ** (ವಿಂ) 1. ರಹಿತವಾದ, ಶೂನ್ಯವಾದ. ವಿ+ಅಪ+ಙ್ (ಗತೌ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨)। “ಸ್ಮೃತ್ಯಾಚಾರವ್ಯವಹಾರೇನ ಮಾರ್ಗೇಣಾಧಿಷಿತಃ ಪರಃ” ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೪. 2. ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ನಾಶವಾದ, ಕಳೆದುಹೋದ. “ವ್ಯವಹಾರಹರ್ಮಾ ಪರಿಧೀನ-ಮಾನಸಾಮ್। ಶುಭಾಂ ನಿಮಿತ್ತಾನಿ ಶುಭಾನಿ ಭೇಜಿರೆ ನರಂ ಶ್ರಿಯಾ ಜುಷ್ಠಮಿವೋಪಜೀವಿತಃ ರಾಮಾಂ”।

**ವ್ಯವಹಾರ ವ್ಯವಹಾರ** (ವಿಂ) 1. ಎದುರಾಯಿದುರಾಗಿರುವ, ಪರಸ್ಪರ ಅಭಿಮುಖವಾಗಿರುವ. ವಿ+ಅಪ+ಬಹ (ಪ್ರಾಪಣಂ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨)। “ವ್ಯವಹಾರಾಶ್ವರೇಪವತ್ತಿತತ್ರಿಕಾ ವಿಕರ್ಷಣಃ ಪಾಣಿವಿಹಾರಹಾರಿಮಿಃ” ಕಿರಾಂ ೪-೧೪. 2. ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ದೂರಕ್ಕೆ ಅಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ.



**ವ್ಯಪೋಹ ವ್ಯಪೋಹ** (ಪುಂ) 1. ಪರಿತ್ಯಜಿಸುವುದು, ವರ್ಜಿಸುವುದು, ಬಿಟ್ಟುಬಿಡುವುದು. ವಿ + ಅಪ + ಊಹ (ವಿತರ್ಕ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) 2. ಪರಿಹರಿಸುವುದು, ನಿವಾರಿಸುವುದು.

**ವ್ಯಭಿಚಾರ ವ್ಯಭಿಚಾರ** (ಪುಂ) 1. ಮರಾಚಾರ, ತಪ್ಪು ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವುದು, ಕೀಳುಮಟ್ಟದ ವರ್ತನೆ. ವಿ + ಅಭಿ + ಚರ (ಗತೌ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) 1. "ಮನ್ತ್ರಜಮವ್ಯಸನಿನಂ ವ್ಯಭಿಚಾರವಿವರ್ಜಿತಮ್" ಹಿತೌಂ ೩-೧೬ 1. 2. ಸ್ತ್ರೀ ಪುರುಷರ ದುರಾಚಾರ, ಜಾರತ್ಯ. "ವ್ಯಭಿಚಾರೆಣ ವರ್ಣನಾಮವೇದಾಪದೇನ ಚ | ಸ್ವಕರ್ಮಣಾಂ ಚ ತ್ಯಾಗೇನ ಜಾಯಂತೇ ವರ್ಣಸಂಕರಾಃ" ಮನುಂ ೧೦-೨೪ 1. "ವ್ಯಭಿಚಾರಾತ್ ಭರ್ತುಃ ಸ್ತ್ರೀ ಲೋಕೇ ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ ನಿನ್ಯತಾಮ್" ಮನುಂ ೫-೧೬೪ 1. 3. ಕಾರ್ಯಕಾರಣಭಾವವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಈ ವ್ಯಭಿಚಾರವು (1) ಅನ್ವಯವ್ಯಭಿಚಾರ: ಮತ್ತು (2) ವ್ಯತಿರೇಕವ್ಯಭಿಚಾರ: ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದ ಕಾರ್ಯಾ ನುತ್ಪತ್ತಿಯು ಅನ್ವಯವ್ಯಭಿಚಾರ. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದಿರುವ ಕಡೆ ಕಾರ್ಯೋತ್ಪತ್ತಿಯಾಗುವುದು ವ್ಯತಿರೇಕವ್ಯಭಿಚಾರ. 4. ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲದ ಕಡೆ ಹೇತುವಿರುವ ಒಂದು ದೋಷ. "ಸಾಧ್ಯಾಭಾವದ್ವೃತ್ತಿತ್ವಂ ವ್ಯಭಿಚಾರಃ" 1.

**ವ್ಯಭಿಚಾರಿನ್ ವ್ಯಭಿಚಾರಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಪರಸ್ತ್ರೀ ಸಂಭೋಗ ಮಾಡುವ ಪುರುಷ, ಜಾರ. ವ್ಯಭಿಚರತಿ—ವಿ+ಅಭಿ+ಚರ (ಗತೌ) "ಞಿ" (೩-೨-೭೮) 1. 2. ನಿರ್ವೇದ ಮೊದಲಾದ ಮೂವತ್ತಮೂರು ಶೃಂಗಾರಭಾವಗಳು. ಈ ಭಾವಗಳು ರತ್ನಾದಿ ಸ್ಥಾಯಿ ಭಾವಗಳಲ್ಲಿ ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಪ್ರಾದುರ್ಭಾವ ತಿರೋಭಾವಗಳಿಂದ ಅಭಿಮುಖ್ಯದಿಂದ ಚರಿಸುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ ವ್ಯಭಿಚಾರಿ ಭಾವಗಳೆಂದು ಹೆಸರು. ಸ್ಥಿರತಯಾ ವರ್ತಮಾನೇ ರತ್ನಾದೌ ಪ್ರಾದುರ್ಭಾವತಿರೋಭಾವ್ಯಾಮಾಭಿ-ಮುಖ್ಯೇನ ಚರಂತೀತಿ ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಃ 1. "ವಿಶೇಷಾದಾಭಿಮುಖ್ಯೇನ ಚರಣಾಽಪ್ಯಭಿಚಾರಿಣಃ 1. ಸ್ಥಾಯಿನ್ಯುನ್ಮಗನನಿರ್ಮಗನಾಸ್ತ್ರಯ-ಸ್ಥಿಶಶ್ಚ ತದ್ವಿಧಾಃ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೪೦ 1. (1) ನಿವೇದ: (2) ಆವೇಗ: (3) ದೈನ್ಯಮ್ (4) ಶ್ರಮ: (5) ಮದ: (6) ಜಡತಾ (7) ಉಗ್ರತಾ (8) ಮೋಹ: (9) ವಿಬೋಧ: (10) ಸ್ವಪ್ನ: (11) ಅಪಸ್ಮಾರ: (12) ಗರ್ವ: (13) ಮರಣಮ್ (14) ಅಲಸ್ಯಮ್ (15) ಅಮರ್ಷ: (16) ನಿद्रಾ (17) ಅವಹಿತಾ (18) ಅಂತಸ್ತುಕಯಮ್ (19) ಉನ್ಮಾದ: (20) ಶಾಙ್ಕಾ (21) ಸ್ಮೃತಿ: (22) ಮತಿ: (23) ವ್ಯಾಧಿ: (24) ತ್ರಾಸ: (25) ಲಜ್ಜಾ (26) ಹರ್ಷ: (27) ಅಸೂಯಾ (28) ವಿಷಾದ: (29) ಭೃತಿ: (30) ಚಪಲತಾ (31) ಗ್ಲಾನಿ: (32) ಚಿಂತಾ ಮತ್ತು (33) ವಿತರ್ಕ: ಇವು 33 ವ್ಯಭಿಚಾರಿಭಾವಗಳು. (ವಿಂ) 3. ವ್ಯಭಿಚಾರ

ರೂಪದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 4. ದುರಾಚಾರಸೂತ. ದುರ್ಮಾರ್ಗದ ನಡತೆಯುಳ್ಳವನು. 5. ಅನಿತ್ಯ, ಶಾಶ್ವತ ವಲ್ಲದ. "ನಾತ್ಮಾ ಅಜ್ಞಾನ ನ ಮರಿಯತಿ ನೇಧತೇಸ್ತೌ ನ ಕ್ಷೀಯತೇ ಸವನವಿವೃಥಭಿಚಾರಿಣಾಂ ಹಿ" ಭಾಗಂ ೧೧-೩-೩೮ 1.

**ವ್ಯಯ ವ್ಯಯ** (ಪುಂ) 1. ಖರ್ಚು, ವೆಚ್ಚ, ಸಂಪಾದಿಸಿದ ಧನವನ್ನು ಬಳಸುವುದು. ವ್ಯಯ (ವಿತ್ತಸಮುತ್ಸರ್ಗಂ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) 1. ಧನ ಧಾನ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸುವುದು ವ್ಯಯ. ಧನಧಾನ್ಯಗಳನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸುವುದು ಆಯ. ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ಧನವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸುವುದೂ ಕ್ಲೇಶ. ಸಂಪಾದಿಸಿದ ಧನವನ್ನು ಖರ್ಚು ಮಾಡುವಾಗಲೂ ದುಃಖ. "ಆಯೇ ದುಃಖಂ ವ್ಯಯೇ ದುಃಖಂ ಧಿಗರ್ಥಾಃ ಕಷ್ಟಸಂಶ್ರಯಾಃ" ಪೃಚ್ಛತಂ 1. ಆದರೆ ಉದಾರಹೃದಯರಾದ ಮಹಾತ್ಮರಿಗೆ ಸಂಪಾದಿಸಿದ ದ್ರವ್ಯವನ್ನು ಸದ್ವಿನಿಯೋಗ ಮಾಡುವುದರಿಂದ ಸಂತೋಷ ತೃಪ್ತಿ ಮತ್ತು ಸಮಾಧಾನಗಳುಂಟಾಗುವುವು. "ಇತ್ಯರ್ಥ-ಪಾತ್ರಾನ್ತುಮಿತ್ಯವ್ಯಯಸ್ಯ ರಘೋದಾರಾಮಪಿ ಗಾಂ ನಿಶಮ್ಯ" ರಘುಂ ೫-೧೨ 1. 2. ನಾಶ, ಕಳೆಯುವುದು. "ಭಾರವ್ಯಯಾ ಚ ಭುವಃ ಕೃಣ್ಣಿ ಯದ್ವಕ್ರುದ್ಧಹಿ" ಭಾಗಂ ೪-೧-೪೯ 1. 3. ಪರಿತ್ಯಾಗ, ಬಿಟ್ಟುಬಿಡುವುದು, ಕಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಅಜ್ಞವ್ಯಯ-ಪ್ರಾಥಿತಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿಃ ಸ್ಥಾಪನಾಶ್ರಮಂ ಹೈಮವತಂ ಜಗಾಮ" ಕುಮಾಂ ೩-೨೩ 1. 4. ವಿಘ್ನ, ತಡೆ, ಅಡ್ಡಿ. "ಭೂಸ್ತಪೋವ್ಯಯೋ ಮಾಭೂಲಮೀಕೀರತಿ ಸೌಜ್ಯಗಾತ್" ರಘುಂ ೧೫-೩೭ 1. 5. ಪ್ರಭವ ಮೊದಲಾದ ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಇಪ್ಪತ್ತ ನೆಯ ಸಂವತ್ಸರ. (ನಂ) 6. ಜಾತಕದಲ್ಲಿ ಲಗ್ನದಿಂದ 12 ನೆಯ ಸ್ಥಾನ, ಲಗ್ನದಿಂದ ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ರಾಶಿ. "ಲಗ್ನಂ ಧನಂ ಭ್ರಾತೃವನ್ಧುಪುತ್ರಶತ್ರುಕಲತ್ರಕಾಃ 1 ಮರಣಂ ಧರ್ಮಕರ್ಮವ್ಯಯಾ ದ್ವಾದಶರಾಶಯಃ" 1.

**ವ್ಯಯನ ವ್ಯಯನ** (ನಂ) ಖರ್ಚುಮಾಡುವುದು.

**ವ್ಯಯಿತ ವ್ಯಯಿತ** (ವಿಂ) ಖರ್ಚುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವ್ಯಯ (ವಿತ್ತಸಮುತ್ಸರ್ಗಂ) "ಕ್" (೩-೨-೧೦೨) 1.

**ವ್ಯಯಿನ್ ವ್ಯಯಿನ್** (ವಿಂ) ವ್ಯಯಮಾಡುವವನು, ಖರ್ಚು ಮಾಡುವವನು. ವ್ಯಯೋಸ್ತಾಸ್ತಿ "ಞಿ" (೫-೨-೧೧೫) 1. "ದ್ರವಿಣಂ ಪರಿಮಿತಮಧಿಕವ್ಯಯಿನಂ ಜನಮಾಕುಲೀಕುರತೇ 1 ಕ್ಷಿಣಾ-ಚಲಮಿವ ಪೀನಸ್ತನಜಘನಾಃ ಕುಲೀನಾಃ" 1.

**ವ್ಯರ್ಥ ವ್ಯರ್ಥ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ, ಫಲವಿಲ್ಲದ. ವಿಗತಾರ್ಥ: ಯಸ್ಯ 1. "ಶೈಲಾತ್ಮಜಾಪಿ ಪಿತುಃಪುತ್ರಸೋಮಿಲಾಽಽ ವ್ಯರ್ಥಂ ಸಮರ್ಥಂ ಲಲಿತಂ ವಪುರಾತ್ಮನಶ್ಚ" ಕುಮಾಂ ೩-೭೫ 1. 2. ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ (ಶಬ್ದಜಾಲ).

**ವ್ಯರ್ಥೋಕ್ತ ವ್ಯರ್ಥೋಕ್ತ** (ವಿಂ) ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅವ್ಯರ್ಥ: ವ್ಯರ್ಥ: ಸಂಪದಮಾನ: ಕೃತ:—ವ್ಯರ್ಥ+



ಕೃತ್ "ಚಿವ:" (೪-೪-೪೦) | "ಇತ್" (೭-೪-೩೨) |  
"ವ್ಯರ್ಥಿಭವತ್ ಪತ್ರರಥೇನ ತೇನ ತಥಾಜ್ವತಾಯ ವ್ಯವಸಾಯಮಸ್ಯಾ:"  
ನಿಷಂ ೩-೬ |

ವ್ಯರ್ಥಿಭವತ್ ವ್ಯರ್ಥಿಭವತ್ (ವಿಂ) ವ್ಯರ್ಥಿಭವಾಗಿ ಆಗು  
ತ್ತಿರುವ. ವ್ಯರ್ಥಿ + ಭೂ "ಚಿವ:" (೪-೪-೪೦) | "ಇತ್"  
(೭-೪-೩೨) | "ವ್ಯರ್ಥಿಭವತ್ಪ್ರಾಧಾನಯತಾ ಸ್ವರೇಣ ಸಾಥ  
ಇಲಯಗದ್ಗದೇನ" ನಿಷಂ ೮-೧೯ |

ವ್ಯಲಿಕ ವ್ಯಲಿಕ (ವಿಂ) 1. ವಿಷಯಾಸಕ್ತ, ವಿಷಯ  
ಲಂಪಟ, ಭೋಗದಲ್ಲಿ ಆಸೆಯುಳ್ಳವನು. "ವ್ಯಲಿಕಂ ತ್ರಿಘ  
ನಾಗರೆ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 2. ಪ್ರಿಯವಲ್ಲದ, ಇಷ್ಟವಲ್ಲದ.  
3. ಅಕಾರ್ಯ, ಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಲ್ಲದ. 4. ಅನೃತ  
ವಲ್ಲದ, ಸುಳ್ಳಲ್ಲದ. "ಶುಭ್ರಾವ ಸೂತನಯಸ್ಯ ತದಾ ವ್ಯಲಿಕಾ:"  
ಮಾಘಂ ೪-೧ | (ನಂ) 5. ದುಃಖ, ಕಷ್ಟ. "ಸುತನು  
ಹೃದಯಾತ್ಪ್ರತ್ಯಾದೇಶವ್ಯಲಿಕಮಪೇತು ತೇ ಕಿಮಪಿ ಮನಸಃ ಸಂಮೋಹೋ ಮೇ  
ಮಹಾನಮುತ್" ಶಾಕುಂ ೭-೨೪ | 6. ಅಪರಾಧ, ತಪ್ಪು.  
"ಸುಧೃಷಃ ಸರಸವ್ಯಲಿಕತಪ್ತಸ್ತರಸಾಕ್ಷಿಷ್ವತಃ ಸಯೌವನೋಷ್ಮಾ"  
ಮಾಘಂ ೯-೮೪ | 7. ವಂಚನೆ, ಮೋಸ. "ಸರ್ವದೇವಮಯೋ  
ರಾಜಾ ಮನುನಾ ಸಂಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ | ತಸ್ಮಾತ್ ದೇವತ್ವಸ್ಯೇತ್ ನ  
ವ್ಯಲಿಕೇನ ಕಹಿಂಚಿತ್" ಪಂಚತಂ | 8. ಅನೃತ, ಸುಳ್ಳು.  
9. ಅಸಾಂಗತ್ಯ, ಅಸಂಬಂಧತೆ. 10. ವೈಲಕ್ಷ್ಯ, ಮನಸ್ಸು  
ನಲ್ಲಾಗುವ ಸಂಕೋಚ, ಕಿರಿಕಿರಿ, ಪೇಚಾಟ. "ಯಸ್ಮಿನ್ನನೇ-  
ಶ್ವಯಂಕೃತವ್ಯಲಿಕಃ ಪರಾಭವಂ ಪ್ರಾಪ್ತ ಇವಾಂತಕೋಪಿ" ಕಿರಾಂ  
೩-೧೯ |

ವ್ಯವಕಲನ ವ್ಯವಕಲನ (ನಂ) ಕಳೆಯುವುದು, ತೆಗೆದು  
ಹಾಕುವುದು. ವಿ + ಅವ + ಕಲ (ಸಂಖ್ಯಾನೇ) "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೪) |

ವ್ಯವಕಲಿತ ವ್ಯವಕಲಿತ (ವಿಂ) ಕಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟು, ತೆಗೆದು  
ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ + ಅವ + ಕಲ (ಸಂಖ್ಯಾನೇ) "ಕ್ತಾಃ"  
(೩-೨-೧೦೨) |

ವ್ಯವಚ್ಛಿನ್ನ ವ್ಯವಚ್ಛಿನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಭೂಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು,  
ಅತಿಶಯವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಚಮತ್ಕಾರಜನಕವಾದ.  
"ತಃ ಶರೀರಂ ಚ ಕಾವ್ಯಾನಾಮಲಕ್ಷಾರಾಶ್ರ ದರ್ಶಿತಾಃ | ಶರೀರಂ  
ತಾವದಿಷ್ಟಾರ್ಥವ್ಯವಚ್ಛಿನ್ನಾ ಪದಾವಲಿ" ಕಾವ್ಯಾಂ ೧-೧೦ |  
2. ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.  
3. ನಿರ್ದೇಶಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ನಮೂದಿಸಿ  
ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು. "ಮಿಶ್ರಂ ವ್ಯವಚ್ಛಿನ್ನಂ ವಿಶೇಷಿತಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ವ್ಯವಚ್ಛೇದ ವ್ಯವಚ್ಛೇದ (ಪುಂ) 1. ಬೇರೆಯಾಗಿರುವಿಕೆ,  
ಭಿನ್ನವಾಗಿರುವಿಕೆ. ವಿ + ಅವ + ಚಿದಿರ್ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ಛತ್"

(೩-೩-೧೮) | 2. ನಿವೃತ್ತಿ, ವಿರಾಮ. "ಜೀವಸ್ಯ ನ  
ವ್ಯವಚ್ಛೇದಃ ಸ್ಯಾಚ್ಚೇತತ್ತತ್ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಾ" ಭಾಗಂ ೪-೨೯-೩೨ |  
3. ಬಾಣದ ಪ್ರಯೋಗ, ಬಾಣವನ್ನು ಬಿಡುವುದು.  
4. ತುಂಡುಮಾಡುವುದು, ಕತ್ತರಿಸುವುದು. 5. ಬೇರ್ಪಡಿಸಿ  
ಸುವಿಕೆ, ಪ್ರತ್ಯೇಕಗೊಳಿಸುವುದು. 6. ನಿರ್ದೇಶಿಸಿ ಹೇಳು  
ವುದು.

ವ್ಯವಚ್ಛೇದಕ ವ್ಯವಚ್ಛೇದಕ (ವಿಂ) 1. ಇತರ ವಿಷಯ  
ಗಳಿಂದ ಬೇರ್ಪಡಿಸುವ. ವಿ + ಅವ + ಚಿದಿರ್ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ)  
"ಛತ್" (೩-೩-೧೩೩) | 2. ಕತ್ತರಿಸುವ, ತುಂಡು  
ಮಾಡುವ. 3. ವಿರಾಮವನ್ನು ಕೊಡುವ. 4. ನಿರ್ದೇಶಿಸಿ  
ಹೇಳುವ.

ವ್ಯವಚ್ಛೇದ ವ್ಯವಚ್ಛೇದ (ವಿಂ) 1. ಇತರ ವಿಷಯಗಳಿಂದ  
ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಸ್ಪಷ್ಟ  
ವಾಗಿ ನಮೂದಿಸಲ್ಪಡುವ. ವಿ + ಅವ + ಚಿದಿರ್ (ದ್ವಿಧೀ-  
ಕರಣ) "ಛತ್" (೩-೩-೧೨೪) |

ವ್ಯವಥಾ ವ್ಯವಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮರೆಯಾಗುವುದು. ವಿ +  
ಅವ + ಡು ಧಾಕ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಅಡ್" (೩-೩-೧೦೬) |  
2. ಮುಚ್ಚಿ, ಮರೆ.

ವ್ಯವಧಾನ ವ್ಯವಧಾನ (ನಂ) 1. ಮರೆಯಾಗಿರುವುದು,  
ಮರೆತು ಇರುವುದು, ಅವಕಾಶ. ಇದು ದೈಶಿಕ ಮತ್ತು  
ಕಾಲಿಕ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಎರಡು ಪ್ರದೇಶಗಳಿಗೆ  
ಮರೆತು ಇರುವುದು ದೈಶಿಕವ್ಯವಧಾನ. ಎರಡು ಕಾಲಗಳಿಗೆ  
ಮರೆತು ಇರುವ ಅವಕಾಶವು ಕಾಲಿಕವ್ಯವಧಾನ. ವಿ +  
ಅವ + ಡು ಧಾಕ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |  
ಹೀಗೆಯೇ ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳ ಮರೆತು ಇರುವುದೂ  
ವ್ಯವಧಾನವಾಗುವುದು. ಅಂದರೆ ಮರೆತು ಇರುವುದು ಈ  
ಎರಡು ಪ್ರದೇಶಗಳಿಗೆ ಎರಡು ಕಾಲಗಳಿಗೆ ಮತ್ತು ಎರಡು  
ವಸ್ತುಗಳಿಗೆ ಮರೆಯಾಗಿರುವುದು ಎಂದರ್ಥ. "ದೃಷ್ಟಿ  
ವಿಮಾನವ್ಯವಧಾನಮುಕ್ತಾಂ ಪುನಃ ಸಹಸ್ರಾಂಚಿಪಿ ಸನ್ನಿವರ್ತತೇ" ರಘುಂ  
೧೩-೪೪ | 2. ಎಚ್ಚರ, ನಿಲುವು, ಬಿಡುವು, ತಡೆ.  
"ವಪುರ್ನ್ವಲಿಪ್ತ ಪರಿರಂಭಸುಖವ್ಯವಧಾನಭೀಕೃತಯಾ ನ ವಘ್ನಃ"  
ಮಾಘಂ ೯-೪೧ | 3. ಸಮಾಪ್ತಿ, ಕೊನೆ. "ಯಾವದನ್ಯಂ ನ  
ವಿನ್ದೇತ ವ್ಯವಧಾನೇನ ಕರ್ಮಣಾಮ್" ಭಾಗಂ ೪-೨೯-೭೭ |  
4. ಭೇದ, ವ್ಯತ್ಯಾಸ. "ಪರಾತ್ಮನೋಯದ್ವಯವಧಾನಕಂ ಪುರಸ್ತಾತ್"  
ಭಾಗಂ ೪-೨೨-೨೭ | 5. ಅಚ್ಚಾದನ, ಹೊದಿಕೆ. "ಶಾರ್ದೂಲ-  
ಚರ್ಮವ್ಯವಧಾನವತ್ಯಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೪೪ |

ವ್ಯವಥಿ ವ್ಯವಥಿ (ಪುಂ) 1. ವ್ಯವಧಾನ, ಮರೆತು ಬಂದು  
ಸೇರುವುದು, ಮರೆತು ಬಂದು ಮರೆಮಾಡುವುದು. ವಿ +  
ಅವ + ಡು ಧಾಕ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕ್ತಿಃ" (೩-೩-೯೨) |



“ವ್ಯವಧಾವಪಿ ವಾ ವಿಧಿಃ ಕಲಾಂ ಮೃತಚೂಡಾನಿಲಯಾ ನ ವೇದ  
ಕಃ” ನೆಪಂ ೨-೧೯। ೨. ಮುಚ್ಚುವುದು. ೩. ಸಮಾಪ್ತಿ,  
ಕೊನೆ. ೪. ಅಚ್ಚಾದನ, ಹೊದಿಕೆ. ೫. ಮುಚ್ಚುಳ.  
೬. ವ್ಯವಧಾನ, ಕಾಲಾವಕಾಶ. “ಅವನತವದನೆಂದುರಿಚ್ಚಿತವ  
ವ್ಯವಧಿಮಧೀರತಯಾ ಯದಸ್ಥಿತಾಸ್ಮಿ” ಮಾಘಂ ೭-೩೮।

**ವ್ಯವಸಾಯ ವ್ಯವಸಾಯಂ** (ಪುಂ) ೧. ಉದ್ಯೋಗ, ಪ್ರಯತ್ನ.  
ವಿ + ಅವ + ಷಿ (ಅಂತಕರ್ಮಣಿ) “ಘ್” (೩-೩-೧೯)।  
“ತದಲಂ ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಮುತ್ರೇವಲಮ್ಬ್ಯ ವ್ಯವಸಾಯವನ್ಯತಾಮ್”  
ಕಿರಾಂ ೨-೧೫। ೨. ನಿಶ್ಚಯ. “ಜಯೋಽಸ್ಮಿ ವ್ಯವಸಾಯೋಽಸ್ಮಿ  
ಸತ್ವಂ ಸತ್ವವತಾಮಹಮ್” ಗೀತಾ ೧೦-೩೬। ೩. ಅನುಷ್ಠಾನ,  
ಅಚರಣೆ. ೪. ವಿಷ್ಣು. ವಿ + ಅವ + ಷಿ (ಬನ್ಯನೇ)  
“ಘ್” (೩-೩-೧೯)। “ಜ್ಯೋತಿಶ್ಚಕ್ರಂ ಧ್ರುವೇ ನಿಯತಂ ಸೀಯತೇ  
ಬध्यತೇ ಯತಃ। ವ್ಯವಸಾಯಸ್ತತೋ ಜೇಯೋ ಭಗವಾಧಾರಮುತಿಮಾನ್”  
ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ। “ವ್ಯವಸಾಯೋ ವ್ಯವಸ್ಥಾನಃ ಸಂಸ್ಥಾನಃ  
ಸ್ಥಾನದೋ ಧ್ರುವಃ” ವಿಂ ಸಂ। ೫. ವಿಧೇಯತೆ.

**ವ್ಯವಸಾಯಿನ್ ವ್ಯವಸಾಯಿನ್** (ವಿಂ) ೧. ಉದ್ಯೋಗಶೀಲ,  
ಪ್ರಯತ್ನವುಳ್ಳವನು. ವ್ಯವಸಾಯೋಽಸ್ಥಾಸ್ತಿ “ಇನಿಃ”  
(೫-೨-೧೧೫)। “ಕೋಽತಿಭಾರಃ ಸಮರ್ಥಾನಾಂ ಕಿಂ ದೂರಂ  
ವ್ಯವಸಾಯಿನಾಮ್” ಚಾಣಕ್ಯಂ। ೨. ಅಚರಿಸುವವನು.  
ಅನುಷ್ಠಿಸುವವನು. ೩. ವ್ಯಾಪಾರಮಾಡುವವನು, ವಾಣಿಜ್ಯ  
ವೃತ್ತಿಯುಳ್ಳವನು. ೪. ಹಠದಿಂದ ಕಾರ್ಯ ಸಾಧಿಸು  
ವವನು. “ತುಲಯಾಂ ತುಲಯಸಾಮರ್ಥ್ಯಂ ಮಮಂಜಂ ವ್ಯವಸಾಯಿನಮ್।  
ಅರ್ಧರಾಜ್ಯಹರಂ ಭೂತಂ ಯೋ ನ ಹನ್ಯಾತ್ ಸ ಹನ್ಯತೇ” ಪञ್ಚತಂ।

**ವ್ಯವಸಿತ ವ್ಯವಸಿತ** (ನಂ) ೧. ವಿವೇಚನೆ, ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿ  
ಪರಿಶೀಲಿಸುವುದು. ವಿ + ಅವ + ಷಿ (ಅಂತಕರ್ಮಣಿ) “ಕ್ತಃ”  
(೩-೩-೧೧೪)। ೨. ನಿಶ್ಚಯ, ನಿರ್ಧಾರ. (ವಿಂ)  
೩. ನಿಶ್ಚಯಿಸಿದ, ನಿರ್ಧಾರಮಾಡಿದ. ಕತಂ “ಕ್ತಃ”।  
“ತಂ ಸಮೀಕ್ಷ್ಯ ವ್ಯವಸಿತಂ ಪಿತುರ್ನಿರ್ದೇಶಪಾಲನೇ” ರಾಮಾಂ।  
೪. ಅನುಷ್ಠಿಸಿದ, ಅಚರಿಸಿದ. ೫. ಪ್ರಯತ್ನಮಾಡಿದ,  
ಯತ್ನಿಸಿದ. “ಇತಃ ಪ್ರತ್ಯಾದೇಶಾತ್ಸವಜನಮನುಗಂತುಂ ವ್ಯವಸಿತಾಂ  
ಮುಹುಸ್ತಿಷ್ಠೇತುಚ್ಚೇವಂದತಿ ಗುರುಶಿಷ್ಯೇ ಗುರುಸಮೇ” ಶಾಕುಂ ೬-೯।  
೬. ಪರಿಶೀಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪರೀಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವ್ಯವಸ್ಥಾ ವ್ಯವಸ್ಥಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ೧. ಪರಿಹರಿಸುವುದು, ಬಗೆ  
ಹರಿಸುವುದು. ವಿ + ಅವ + ಷಾ (ಗತಿनिवृत्तौ) “ಅಙ್”  
(೩-೩-೧೦೬)। ೨. ಶಾಸ್ತ್ರ, ವಿಧಿ, ಕಟ್ಟಳೆ. “ದೀರ್ಘಕಾಲಂ  
ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಂ ಭಾರಣಂ ಚ ಕಮಂಡಲೋಃ। ದೇವೇಣ ಸುತೋತ್ಪತ್ತಿರ್ದತ್ತ-  
ಕನ್ಯಾ ಪ್ರದೀಯತೇ। ಏತಾನಿ ಲೋಕಗುಪ್ತಯಶ್ಚ ಕಲೇರಾದೌ  
ಮಹಾತ್ಮಭಿಃ। ನಿವೃತ್ತಿಗತಾನಿ ಕರ್ಮಣಿ ವ್ಯವಸ್ಥಾಪೂರ್ವಕಂ ಬುದ್ಧಿಃ”।  
೩. ನಿಯತ, ನಿಶ್ಚಿತ. “ಭಜ್ಜಂ ಜಯಂ ಚಾಪತುರವ್ಯವಸ್ಥಮ್”

ರಘುಂ ೭-೫೪। ೪. ವ್ಯವಸ್ಥೆ, ವಿವಾಡ, ಅಳವಡಿಸು  
ವುದು. ೫. ನಿಯಮ.

**ವ್ಯವಸ್ಥಾನ ವ್ಯವಸ್ಥಾನಂ** (ಪುಂ) ೧. ವಿಷ್ಣು. ಕಲಾಮುಹೂರ್ತ-  
ವಾತಮಕಃ ಕಾಲೋ ವ್ಯವಸ್ಥಾನೇಽಸ್ಮಿನ್—ವಿ + ಅವ + ಷಾ  
(ಗತಿनिवृत्तौ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)। “ಕಲಾಮುಹೂರ್ತಾದಿ-  
ಮಯಃ ಧ್ರುವೇ ಕಾಲೋಽವಸ್ಥಾನೇಽಸ್ಮಿನ್। ಯಸ್ಮಾತ್ಸಮಾತ್ ವ್ಯವಸ್ಥಾನೋ  
ಹ್ಯಾಪ್ತಾರ್ಣಃ ಸ್ಥಾನದೋ ಮನುಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ। “ವ್ಯವಸಾಯೋ  
ವ್ಯವಸ್ಥಾನಃ” ವಿಂ ಸಂ। ೨. ವ್ಯವಸ್ಥೆ, ವಿವಾಡ.  
೩. ನಿರ್ಣಯ, ತೀರ್ಮಾನ. ೪. ಕಾನೂನು, ಕಟ್ಟಳೆ,  
ವಿಧಿ. “ಚಾತುರ್ವರ್ಣ್ಯವ್ಯವಸ್ಥಾನಂ ಯಸ್ಮಿನ್ ದೇಶೇ ನ ವಿಧತೇ।  
ತಂ ಮ್ಲೇಚ್ಛದೇಶಂ ಜಾನೀಯಾದಾರ್ಯಾವರ್ತಃ ತತಃ ಪರಮ್”।

**ವ್ಯವಸ್ಥಾಪಕ ವ್ಯವಸ್ಥಾಪಕ** (ವಿಂ) ೧. ವಿವಾಡ ಮಾಡು  
ವವನು, ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವವನು, ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಮಾಡುವವನು.  
ವಿ + ಅವ + ಷಾ (ಗತಿनिवृत्तौ) + ಷಿ “ಫಲ್”  
(೩-೧-೧೩೩)। ೨. ಶಾಸ್ತ್ರಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ನಿರ್ಣಯಿಸುವವನು.  
೩. ಕಾನೂನು ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವವನು.

**ವ್ಯವಸ್ಥಾಪನ ವ್ಯವಸ್ಥಾಪನ** (ನಂ) ೧. ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವುದು.  
ವಿವರಿಸುವುದು. ೨. ನಿರ್ಣಯಿಸುವುದು.

**ವ್ಯವಸ್ಥಾಪಿತ ವ್ಯವಸ್ಥಾಪಿತ** (ವಿಂ) ೧. ಸರಿಯಾದ ರೀತಿ  
ಯಲ್ಲಿ ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಅವ + ಷಾ (ಗತಿनिवृत्ತौ) +  
ಷಿ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೦೨)। ೨. ಕಾನೂನುಕ್ರಮದಲ್ಲಿ  
ಸಜ್ಜುಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ೩. ಶಾಸ್ತ್ರರೀತಿಯಲ್ಲಿ ನಿರ್ಣಯಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ.

**ವ್ಯವಸ್ಥಿತ ವ್ಯವಸ್ಥಿತ** (ವಿಂ) ೧. ಸರಿಯಾದ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ  
ಸಿದ್ಧವಾಗಿರುವ. ವಿ + ಅವ + ಷಾ (ಗತಿनिवृत्ತौ) “ಕ್ತಃ”  
(೩-೪-೭೨)। “ಅಥ ವ್ಯವಸ್ಥಿತಾನು ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಭಾರತರಾಷ್ಟ್ರಾನು  
ಕಪಿಷ್ಠಜಃ” ಗೀತಾ ೧-೨೦। ೨. ಕಾನೂನುಕ್ರಮದಲ್ಲಿ  
ಸಿದ್ಧವಾದ. ೩. ಶಾಸ್ತ್ರಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ನಿರ್ಣಯವಾದ.

**ವ್ಯವಹರಣ ವ್ಯವಹರಣ** (ನಂ) ೧. ವ್ಯವಹರಿಸುವುದು,  
ಸಂಭೃತಿಯಿಂದ ವಿವೇಚನೆಯಿಂದ ವಿಧೇಯತೆಯಿಂದ ನಡೆದು  
ಕೊಳ್ಳುವುದು. ವಿ + ಅವ + ಹ್ (ಹರಣೇ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೫)। ೨. ಕೋಟು ಕಛೇರಿಗಳಲ್ಲಿ ಕಾರ್ಯ  
ಕಲಾಪಗಳನ್ನು ನಡೆಸುವುದು. “ಸಹ ಮುನಿಭಿರುಪಾಸ್ತು ಧರ್ಮ-  
ಮಾಣಂ ವ್ಯವಹರಣಾನಿ ದದಶಂ ವೇದವಿದ್ಭಿಃ” ಧಾತಂ ೨೪-೭।

**ವ್ಯವಹರತ್ ವ್ಯವಹರತ್** (ವಿಂ) ೧. ವ್ಯವಹರಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಸರಿಯಾದ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ವ್ಯವಹರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸಂಭೃತಿಯಿಂದ  
ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಅವ + ಹ್ (ಹರಣೇ) “ಶತ್”  
(೩-೨-೧೨೪)। “ಬಹಿಃ ಸರ್ವಕಾರಪ್ರವಣರಮಣೀಯಂ ವ್ಯವಹರನ್



ಪರಾಂಪ್ರಸಾಧನಾನ್ಯಪಿ ತನುತರಾಣಿ ಸ್ಯಗಯತಿ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೭ | 2. ಕೋಟು ಕಛೇರಿಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಕಾರ್ಯ ಕಲಾಪ ನಡೆಸುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಕೇಪ್" (೪-೧-೬) |

-ಹರಂತಿ -ಹರಂತಿ.

**ವ್ಯವಹಾರ ವ್ಯವಹಾರ** (ವಿಂ) 1. ವ್ಯವಹರಿಸಬೇಕಾದ. 2. ವ್ಯವಹರಿಸಲ್ಪಡುವ. ವಿ + ಅವ + ಹ್ (ಹರಣಿ) "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೬) | ವಿಚಾರಮಾಡುವುದು ವ್ಯಾಪಾರ ಮಾಡುವುದು ಮಾತಾಡುವುದು ಮೊದಲಾದ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಸರಿಯಾದ ರೀತಿಯಿಂದ ಸಭ್ಯತೆಯಿಂದ ನಡೆದು ಕೊಳ್ಳುವುದು ಹೆಚ್ಚು ಸಂಪರ್ಕಹೊಂದುವುದು ವ್ಯವಹಾರ ವೆನಿಸುವುದು. "ಅನೀಯ್" (೩-೧-೧೬) | -ಹರಣೀಯಮ್. -ಹರಣೀಯಮ್.

**ವ್ಯವಹಾರ ವ್ಯವಹಾರ** (ವಿಂ) 1. ವ್ಯಾಪಾರವಿಚಾರ ಮೊದಲಾದ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಮಾತುಕತೆ ನಡೆಸುವವನು. ವಿ + ಅವ + ಹ್ (ಹರಣಿ) "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೬) | 2. ನ್ಯಾಯಾಲಯದಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಜ್ಯ ಹೂಡುವವನು. 3. ಮೊಕದ್ದಮೆಗಳನ್ನು ಪರಿಶೀಲಿಸಿ ತೀರ್ಪು ಕೊಡುವವನು, ನ್ಯಾಯಾಧೀಶ. 4. ಸಾಲ ಕೊಡುವವನು ಮತ್ತು ಪಡೆಯುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಕೇಪ್" (೪-೧-೫) | -ಹರಣೀಯಮ್. -ಹರಣೀಯಮ್.

**ವ್ಯವಹಾರ ವ್ಯವಹಾರ** (ವಿಂ) 1. ಮಾತುಕತೆಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಪರ್ಕ ಹೊಂದುವುದು. 2. ವ್ಯಾಪಾರಮಾಡುವುದು. 3. ವಿವಾದ. 4. ನ್ಯಾಯಾಲಯದಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಜ್ಯ ಹೂಡುವುದು. 5. ಮೊಕದ್ದಮೆ ನಡೆಸುವುದು, ವಾದಿಪ್ರತಿವಾದಿಗಳ ಪರವಾದ ವಾದಗಳನ್ನು ಪರಿಶೀಲಿಸುವುದು. ವಾದಿಪ್ರತಿವಾದಿಗಳ ಪರಸ್ಪರ ವಿರುದ್ಧವಾದ ವಾದಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಭವಿಸುವ ಸಂದೇಹಗಳನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವುದು (ವ್ಯವಹಾರ). "ನಾನಾಸಂದೇಹ-ಹರಣಾಢ್ಯವಹಾರ ಇತಿ ಸ್ಮೃತ:" ಕಾತ್ಯಾಯನ: | "ಪರಸ್ಪರಂ ಮನುಷ್ಯಾಣಾಂ ಸ್ವಾರ್ಥವಿಪ್ರತಿಪತ್ತಿಷು | ವಾಕ್ಯಾನ್ಯಾಯಾಢ್ಯವಸ್ಥಾನ್ ವ್ಯವಹಾರ ಉದಾಹೃತ:" | 6. ಸಾಲ ಕೊಡುವುದು ಮತ್ತು ಪಡೆಯುವುದು. "ದದಶ ಸಂಶಯಚ್ಛೇದಾನ್ ವ್ಯವಹಾರ-ನತಂದ್ರಿತ:" ರಘುಂ ೧೭-೩೯ | 7. ಬಡ್ಡಿಗಾಗಿ ಹಣವನ್ನು (ಸಾಲವನ್ನು) ಕೊಡುವ ನಡವಳಿಕೆ. 8. ವಾಣಿಜ್ಯ, ವರ್ತಕತನ. ಕ್ರಯ ವಿಕ್ರಯ ವ್ಯಾಪಾರ. 9. ನಡವಳಿಕೆ, ಪರಸ್ಪರ ಒಡಂಬಡಿಕೆಯಿಂದ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. "ನ ವಿನಾ ಪಾಶಿವೋ ಭೃತ್ಯೇನ ಭೃತ್ಯಾ: ಪಾಶಿವಂ ವಿನಾ | ತೇಷಾಂ ಚ ವ್ಯವಹಾರೋಽಯಂ ಪರಸ್ಪರನಿಬಂಧನ:" ಪञ्ಚತಂ ೧-೮೭ | 10. ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ, ಕ್ರಯ, ನಡೆಸುವ ಕೆಲಸದ ರೀತಿ. "ನ ಕಶ್ಚಿತ್ ಕಸ್ಯಚಿನ್ಮಿತ್ರಂ ನ ಕಶ್ಚಿತ್ ಕಸ್ಯಚಿದ್ರಿಪು: | ವ್ಯವಹಾರೆಣ ಜಾಯಂತೆ ಮಿತ್ರಾಣಿ ರಿಪವಸ್ತಥಾ" | 11. ಶಬ್ದ

ಪ್ರಯೋಗ. 12. ಸಹಭೋಜನ ಮತ್ತು ಸಹಾಸನ ಮುಂತಾದುವು. 13. ಲೋಕಯಾತ್ರೆ, ಲೋಕದಲ್ಲಿ ನಡೆಸುವ ಜೀವನ.

**ವ್ಯವಹಾರ ವ್ಯವಹಾರ** (ವಿಂ) 1. ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲ ರೊಡನೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವ ರೀತಿಯನ್ನು ಅರಿತವನು, ಜನ ರೊಡನೆ ಹೊಂದಿಕೊಳ್ಳುವ ಕ್ರಮವನ್ನು ಬಲ್ಲವನು. ವ್ಯವಹಾರ ಜಾನಾನ್-ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫) | 2. ವಾದವಿವಾದಗಳನ್ನು ಪರಿಶೀಲಿಸುವ ಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು. 3. ಕ್ರಯ ವಿಕ್ರಯಾದಿ ವ್ಯಾಪಾರವನ್ನು ಮಾಡಬಲ್ಲವನು. 4. ಮುಣಿದಾನಾದಾನಗಳ ವಿಷಯವನ್ನು ಬಲ್ಲವನು. 5. ಜನರ ಸಂಪರ್ಕ ಪಡೆದು ಸಮಂಜಸವಾಗಿ ಮಾತುಕತೆಗಳನ್ನು ನಡೆಸಬಲ್ಲವನು, ಪ್ರಾಪ್ತವಯಸ್ಕನಾದ ಬಾಲಕ. "ಬಾಲ ಆಘಾತಶಾಢ್ಯಾತ್ ಪೌಗಂಡೋಽಪಿ ನಿಗದತೇ | ಪರತೋ ವ್ಯವಹಾರಜ್ಞ: ಸ್ವತನ್ತ್ರ: ಪಿತರಾವೃತೇ" |

**ವ್ಯವಹಾರತನ್ತ್ರ ವ್ಯವಹಾರತನ್ತ್ರ** (ನಂ) ಕುಟುಂಬ ಭರಣದ ಪರಿಜ್ಞಾನ, ಗೃಹಕೃತ್ಯವನ್ನು ನಡೆಸಬಲ್ಲ ಜಾಣ್ಮೆ. "ತದ್ವತ್ಸ ವಾಕ್ಯಪ್ರತಿಷ್ಠಾನ್ತಿ ದೇಹಿನಾಂ ವ್ಯವಹಾರತನ್ತ್ರಾಣಿ" ಮಾಲತೀಂ ೪ |

**ವ್ಯವಹಾರದರ್ಶನ ವ್ಯವಹಾರದರ್ಶನ** (ನಂ) ನ್ಯಾಯಾಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ ವಾದವಿವಾದಾತ್ಮಕ ನಡವಳಿಕೆಗಳ ಪರಿಶೀಲನೆ.

**ವ್ಯವಹಾರಪದ ವ್ಯವಹಾರಪದ** (ನಂ) ವ್ಯವಹಾರದ ವಿಷಯ. ಮನುಷ್ಯರಲ್ಲಿ ಉದ್ಭವಿಸಬಹುದಾದ ವ್ಯವಹಾರಗಳಿಗೆ ಅವಕಾಶವಿರುವ ವಿಷಯಗಳು ಹದಿನೆಂಟು. ["ಅಷ್ಟಾದಶ-ವಿವಾದಪದ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ಸ್ಮೃತ್ಯಾಚಾರವ್ಯಪೇತೇನ ಮಾರ್ಗೋಽಧಿಷಿತ: ಪರ: | ಆವೇದಯತಿ ಚೇದ್ರಾಜಿ ವ್ಯವಹಾರಪದಂ ಹಿ ತತ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೫ |

**ವ್ಯವಹಾರಪಾದ ವ್ಯವಹಾರಪಾದ** (ವಿಂ) ವ್ಯವಹಾರದ ನಾಲ್ಕು ಪಾದಗಳಲ್ಲಿಂದ. ವ್ಯವಹಾರಸ್ಯ ಪಾದ: | (1) ಪೂರ್ವಪಕ್ಷ: (2) ಉತ್ತರಪಕ್ಷ: (3) ಕ್ರಿಯಾಪಾದ: ಮತ್ತು (4) ನಿರ್ಣಯಪಾದ: ಎಂದು ವ್ಯವಹಾರದ ಪಾದಗಳು ನಾಲ್ಕು.

**ವ್ಯವಹಾರಮಾರ್ಗ ವ್ಯವಹಾರಮಾರ್ಗ** (ವಿಂ) ವ್ಯವಹಾರದ ವಿಷಯ.

**ವ್ಯವಹಾರವಿಷಯ ವ್ಯವಹಾರವಿಷಯ** (ವಿಂ) ಮನುಷ್ಯರಲ್ಲಿ ಉದ್ಭವಿಸಬಹುದಾದ ವ್ಯವಹಾರಗಳ ಅವಕಾಶ. ["ಅಷ್ಟಾದಶವಿವಾದಪದ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ವ್ಯವಹಾರಿಕಾ ವ್ಯವಹಾರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲೋಕಯಾತ್ರೆ. 2. ಸಾಮಾನ್ಯನಿ, ಪೊರಕೆ. 3. ಇಂಗುದೀವ್ಯಕ್ಷ.

**ವ್ಯವಹಾರಿನ್ ವ್ಯವಹಾರಿನ್** (ವಿಂ) 1. ವ್ಯವಹಾರವನ್ನು ಕೈಗೊಂಡಿರುವ, ವ್ಯವಹಾರದ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿರುವ,



ವ್ಯವಹಾರೋಪಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) 2. ಪ್ರಯೋಗಿಸುವವನು.

ವ್ಯವಹಾರ್ಯ ವ್ಯವಹಾರ್ಯ (ವಿಂ) 1. ವ್ಯವಹರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ವ್ಯವಹರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ವಿ + ಅವ + ಹ್ (ಹರಣಿ) "ಘ್" (೩-೧-೧೨೪) 3. ವ್ಯವಹರಿಸ ಬೇಕಾದ. 4. ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವ, ಪ್ರಯೋಗಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ.

ವ್ಯವಹಿತ ವ್ಯವಹಿತ (ವಿಂ) ಇನ್ನೊಂದರಿಂದ ಮಧ್ಯೆ ವ್ಯವ ಧಾನ ಹೊಂದಿರುವ, ವಸ್ತು ಅಥವಾ ಕಾಲ ಇವುಗಳಿಂದ ವ್ಯವಧಾನ ಹೊಂದಿರುವ, ಮರೆಯಾಗಿರುವ. "ವ್ಯವಹಿತ-ಮವಿಜಾನತೀ ಕಿಲಾಂತರ್ವಣಭುವಿ ವಲ್ಲಭಮಾಭಿಮುಖ್ಯಭಾಷಮ್" ಮಾಘಂ ೭-೩೫.

ವ್ಯವಹಿತ ವ್ಯವಹಿತ (ವಿಂ) 1. ವ್ಯವಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ವಿವೇಚನೆಯಿಂದ ಪರಿಶೀಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಅವ + ಹ್ (ಹರಣಿ) "ಕ್" (೩-೨-೧೦೨) 3. ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ವ್ಯವಹಿತ ವ್ಯವಹಿತ (ವಿಂ) 1. ವ್ಯವ ಹರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ವಾದವಿವಾದ ಮಾಡಲ್ಪಡು ತ್ತಿರುವ. 3. ವಾದವಿವಾದಗಳನ್ನು ಕೇಳಿದ ನ್ಯಾಯಾಧೀಶ ರಿಂದ ಪರಿಶೀಲಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 4. ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಡು ತ್ತಿರುವ, ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಅವ + ಹ್ (ಹರಣಿ) ಕರ್ಮಂ "ಕಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) 1.

ವ್ಯವಹಿತ ವ್ಯವಹಿತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವ್ಯವಹಾರ. "ವ್ಯವಹಾರ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ವಿ + ಅವ + ಹ್ (ಹರಣಿ) "ಕಿನ್" (೩-೩-೧೪) 1.

ವ್ಯವಾಯ ವ್ಯವಾಯ (ಪುಂ) 1. ಮೈಥುನ, ಗ್ರಾಮ್ಯಧರ್ಮ, ಸಂಭೋಗ. ವಿ + ಅವ + ಅಯ (ಗತೌ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) 1. "ವ್ಯಾಯಾಮಂ ಚ ವ್ಯವಾಯಜ್ಞ ಸ್ನಾನಂ ಚಕ್ರಮಣಂ ತಥಾ | ಜ್ವರಮುಕ್ತೌ ನ ಸೇವತ ಯಾವನ್ನ ಬಲವಾನ್ ಭವೇತ್" 2. ವ್ಯವ ಧಾನ, ಅಂತರ್ಧಾನ, ಮರೆ. "ಅಡ್ಕುಪ್ಪಾಡ್ನುಮ್ಯವಾಯೇರ್ಪಿ" ಪಾಂ ಸುಂ ೮-೪-೨. (ನಂ) 3. ತೇಜಸ್ಸು, ಬೆಳಕು. "ವ್ಯವಾಯ: ಸುರತೇಂತರ್ಥಿ ಪುಸಿ ಕಲಿವ್ ತು ತೇಜಸಿ" ಮೇದಿಂ 1.

ವ್ಯವಾಯಿನ್ ವ್ಯವಾಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಕಾಮುಕ, ಸ್ತ್ರೀ ಸಂಭೋಗದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದವನು. ವ್ಯವೇತ್ ಶಿಲಂ ಯಸ್ಯ "ಞಿನಿ:" (೩-೨-೭೮) 1. (ವಿಂ) 2. ವ್ಯವಧಾನ ವನ್ನಂಟುಮಾಡುವ, ಮರೆಮಾಡುವ. ಮಧ್ಯೆ ಅಂತರ ವನ್ನಂಟುಮಾಡುವ. "ವ್ಯವಾಯಿನೋಂತರಮ್" ಪಾಂ ಸುಂ ೬-೨-೧೬೬ 1.

ವ್ಯವಹಿತ ವ್ಯವಹಿತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಪ್ರತ್ಯೇಕ ವಾದ ಅಸ್ತಿತ್ವ. 2. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗಳಲ್ಲೂ ಹರಡುವಿಕೆ, ಸುತ್ತಲೂ ವ್ಯಾಪಿಸುವಿಕೆ. 3. ಅಂದಾಡಿಸ್ಪಷ್ಟ. 4. ಮಹ ದಾದಿ ತತ್ತ್ವೋತ್ಪತ್ತಿಸಮಯದಲ್ಲೇ ಎಲ್ಲಾ ಇಂದ್ರಿಯ ಗಳೂ ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿರುವುದು. 5. ಜೀವಾತ್ಮರಿಗೆ ಇಂದ್ರಿಯ ಮತ್ತು ಕಳೇಬರಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸುವುದು.

ವ್ಯವಹಿತ ವ್ಯವಹಿತ ವ್ಯವಹಿತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಂದಸ್ಪಷ್ಟಿಗೆ ಮೊದಲು ನಡೆಯುವ ಮಹದಾದಿ ತತ್ತ್ವಸ್ಪಷ್ಟಿ.

ವ್ಯಸನ ವ್ಯಸನ (ನಂ) 1. ಇಷ್ಟವಾದ ವಸ್ತುವು ಲಭಿಸದ ಕಾರಣ ಉಂಟಾಗುವ ದುಃಖ. 2. ಕಾಮಕ್ರೋಧಾದಿ ಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಮನೋವ್ಯಥೆ. 3. ವಿಪತ್ತು, ಕಷ್ಟ. "ವ್ಯಸನಾಸಾರವೇಗಾನಾಂ ವಾರಣಂ ನ ಪ್ರಕಲ್ಪತೇ" ಯಾದಂ ೨೨-೧೪ 1. ಕಷ್ಟ ಪ್ರಾಪ್ತವಾದಾಗ ಅದರ ಪರಿಹಾರೋಪಾಯವನ್ನು ಹುಡುಕದೆ ದುಃಖದಿಂದ ಅಳುತ್ತ ಕುಳಿತರೆ ಆ ಕಷ್ಟವು ಹೆಚ್ಚುವುದಲ್ಲದೆ ಅದರಿಂದ ಪಾರಾಗುವುದಿಲ್ಲ. "ವ್ಯಸನಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ಯೋ ಮೋಹಾತ್ ಕೇವಲಂ ಪರಿವೇಶಯೇತ್ | ಕಂದನಂ ವರ್ಧಯತ್ಯೇವ ತಸ್ಯಾಂತಂ ನಾಧಿಗಚ್ಛತಿ" ಪञ्ಚತಂ ೨-೧೯೪ 1. ಕಷ್ಟ ಬಂದಾಗ ಅದನ್ನು ಜಾಣ್ಮೆಯಿಂದ ಎದುರಿಸುವವನು ಆ ಕಷ್ಟಗಳನ್ನು ಪರಿಹರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವನು. "ವ್ಯಸನೇವೇವ ಸರ್ವೇಷು ಯಸ್ಯ ಬುದ್ಧಿರ್ನ ಹೀಯತೇ | ಸ ತೇಷಾಂ ಪಾರಮರ್ಯೇತಿ ತತ್ಪ್ರಭಾ-ವಾದಸಂಶಯಮ್" ಪञ್ಚತಂ ೨-೬ 1. 4. ಅಶುಭ, ಅಮಂಗಳ. 5. ಮದ್ಯಪಾನ ಬೇಟೆ ಸ್ತ್ರೀಸಂಗ ಮುಂತಾದವುಗಳಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿ. 6. ಪಾಪ. 7. ವ್ಯರ್ಥವಾದ ಪ್ರಯತ್ನ. ಪ್ರಯೋಜನ (ಫಲ) ವಿಲ್ಲದ ಪ್ರಯತ್ನ. 8. ಭ್ರಂಶ, ಪತನ, ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುವುದು. 9. ಎಸೆಯುವುದು. 10. ಅವಗುಣ, ದೋಷ, ದುರ್ಗುಣ. "ಮಿಥ್ಯೇವ ವ್ಯಸನಂ ವದಂತಿ ಮೃಗಯಾಮಿ-ದ್ವಿವಿನೋದ: ಕುತ:?" ಶಾಕುಂ ೨-೫ 1. 11. ಆಸಕ್ತಿ, ತತ್ಪರತೆ, ಉತ್ಸಾಹ, ಉತ್ಸುಕತೆ. "ವಿದ್ಯಾಯಾಂ ವ್ಯಸನಂ ಸ್ವಯೋಪಿತಿ ರತಿಲೋಕಾಪವಾದಾಢ್ಯಮ್" ಭರ್ತುಂ ೧-೫೧ 1. 12. ಕಷ್ಟಕಾಲ. ಕಷ್ಟವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವ ಸಮಯ. "ಸ ಸುಹೃತ್ ವ್ಯಸನೇ ಯ: ಸ್ಯಾತ್ ಅನ್ಯಜಾತ್ಯುಢ್ಯವೋರ್ಪಿ ಸನ್ | ವೃದ್ಧಿ ಸರ್ವೋರ್ಪಿ ಮಿತ್ರಂ ಸ್ಯಾತ್ ಸರ್ವೇಷಾಮೇವ ದೇಹಿನಾಮ್" ಪञ್ಚತಂ ೧-೩೬೭ 1. 13. ದೌರ್ಬಲ್ಯ, ಅಶಕ್ತತೆ, ಅನರ್ಹತೆ, ಅಸಾಮರ್ಥ್ಯ. 14. ಹ್ರಾಸ, ಕೊರತೆ. "ಸ್ವಬಲವ್ಯಸನೇರ್ಪಿ ಪಿಡಿತಮಾನಂ ಗುಣವನ್ಮಿತ್ರಮಿವಾನತಿ ಪ್ರಪೇದೇ" ಕಿರಾಂ ೧೩-೧೫ 1.

ವ್ಯಸನಾರ್ತ ವ್ಯಸನಾರ್ತ (ವಿಂ) ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ದುಃಖದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ವ್ಯಸನೇನಾರ್ತ: ಪಿಡಿತ: 1.

ವ್ಯಸನಿನ್ ವ್ಯಸನಿನ್ (ವಿಂ) 1. ದುಃಖದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಕಷ್ಟವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವ. ವ್ಯಸನಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:"



(೪-೨-೧೧೪) 2. ಭ್ರಂಶವುಳ್ಳವನು, ಪತನವುಳ್ಳವನು, ನಾಶವುಳ್ಳವನು. "ಚಿರಸ್ಯ ಮಿತ್ರವ್ಯಸನಿ ಸುದಮೋ ದಮಘೋಷಃ" ಮಾಘಂ ೨-೬೦ |

**ವ್ಯಸ್ತ ವ್ಯಸ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಂದೆ ಹಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವೇಗವಾಗಿ ಮುಂದೆ ಚಾಚಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ವಿಷಜ್ಯೋತಿ-ಋಜ್ಞಮಣೋಡ್ಧಾಮರವ್ಯಸ್ತವಿಸ್ತಾರಿದೋಃಖಂಡಪರ್ಯಾಸಿತಕ್ಷಮಾಧರಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೪-೨೩ | 2. ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿರುವ, ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿರುವ, ಭಾಗವಾಗಿರುವ. "ಹಿಮವತಿ ಜಲಧೌ ಚ ವ್ಯಸ್ತತೋವೇವ ಗಜ್ಞಾ" ವಿಕ್ರಂ ೪-೨೨ | 3. ಕೆದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೆದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕಲ್ಪಾಕ್ಷೇಪಕಠೋರಭಿರವಮರ್ದಯಸ್ತೇ-ರಭಿಸ್ತೀಯತೇ" ತಂ ರಾಂ ೪-೧೪ | 4. ಕಿಂಚಿತ್ತು, ಸ್ವಲ್ಪ. "ವರೇಷು ಯದಾಲಮಗಾಕ್ಷಿ ಮೃಗತೇ ತದಸ್ತಿ ಕಿ ವ್ಯಸ್ತಮಪಿ ತ್ರಿಲೋಚನೇ" ಕುಮಾಂ ೪-೭೨ | 5. ಬಿಡಿ ಬಿಡಿಯಾದ, ಸಮಸ್ತವಲ್ಲದ (ಪದ), 6. ವಿಪರೀತವಾದ, ವ್ಯತ್ಯಾಸ ಹೊಂದಿದ. "ಪ್ರತಿಪದಾಪ್ಯಮಾಪಾಸ್ಯಾತಿತ್ಯಯೋಗಮ್ ಮಹಾಕಲಮ್ | ಏತದ್ವಯಸ್ತಂ ಮಹಾಧೋರಂ ಹಂತಿ ಪುಷ್ಯಂ ಪುರಾಕೃತಮ್" || 7. ಕೆದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊರದೂಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಕ್ರುನೃಪತಿಮವನದ್ವಾರಸೇವಾಕಲಕ್ಷ್ಯಾಸತ್ಯವ್ಯಸ್ತಧೇಯಮ್" ಭರ್ತುಂ ೨-೩೧ | 8. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ, ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡಿರುವ. 9. ವಿಪರ್ಯಯವಾದ, ಹಿಂದುಮುಂದಾದ, ತಲೆಕೆಳಗಾದ. | (ಅವ್ಯಂ) 10. ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿ, ಪೃಥಕ್ಯಾಗಿ, ಒಂಟಿಯಾಗಿ.

**ವ್ಯಸ್ತಪದ ವ್ಯಸ್ತಪದ** (ನಂ) 1. (ವ್ಯವಹಾರದಲ್ಲಿ) ಗೊಂದಲವುಂಟುಮಾಡುವ ಹೇಳಿಕೆ, ತೊಡಕುಂಟುಮಾಡುವ ಹೇಳಿಕೆ. ವ್ಯಸ್ತಂ ಪದಂ ಯಸ್ಮಿನ್ | 2. ಸಮಾಸವಿಲ್ಲದ ಪದ, ಒಂಟಿಯಾದ ಪದ.

**ವ್ಯಾಕರಣ ವ್ಯಾಕರಣ** (ನಂ) 1. ಶಬ್ದಶಾಸ್ತ್ರ, ಶಬ್ದನಿಷ್ಪತ್ತಿಯನ್ನು ಹೇಳುವ ಶಾಸ್ತ್ರ, ಶಬ್ದದ ಉತ್ಪತ್ತಿಯನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ. ವ್ಯಾಕ್ರಿಯಂತೇ ಅರ್ಥಾ ಯೇನ—ವಿ + ಆ + ಕೃ (ಕರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | ಪ್ರಕೃತಿಪ್ರತ್ಯಯಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಶಬ್ದಸಾಧುತ್ವವನ್ನೂ ಅರ್ಥವತ್ತಾದ ಶಬ್ದಗಳನ್ನೂ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವುದರಿಂದ ಇದು ವ್ಯಾಕರಣವಾಯಿತು. ವ್ಯಾಕ್ರಿಯಂತೇ ವ್ಯುತ್ಪಾದಂತೇ ಅರ್ಥವತ್ತಯಾ ಪ್ರತಿಪಾದಂತೇ ಶಬ್ದಾಃ ಯೇನ ಇತಿ ವಾ | "ಏಕಃ ಶಬ್ದಃ ಸಮ್ಯಗ್ಜ್ಞಾತಃ ಸುಷ್ರು ಪ್ರಯುಕ್ತಃ ಸ್ವರ್ಗೇ ಲೋಕೇ ಕಾಮಧುಗಭವತಿ" | ಶಬ್ದಜ್ಞಾನವನ್ನು ಹೊಂದಿ ಸುಶಬ್ದಪ್ರಯೋಗಮಾಡುವುದು ಶ್ರೇಯಸ್ಕರವಾದುದರಿಂದ ಇದೇ ವ್ಯಾಕರಣಕ್ಕೆ ಮುಖ್ಯವಾದ ಫಲ. ಯಜ್ಞದಲ್ಲಿ ಶುದ್ಧವಾದ ಶಬ್ದಗಳ ಪ್ರಯೋಗ ಮತ್ತು

ಶುದ್ಧವಾದ ವಿಭಕ್ತಿಜ್ಞಾನವುಂಟುಮಾಡುವುದರಿಂದ ವ್ಯಾಕರಣವು ಒಂದು ವೇದಾಂಗವಾಯಿತು. "ಅಥ ವ್ಯಾಕರಣಂ ವಕ್ಷ್ಯೇ ಕಾತ್ಯಾಯನ ಸಮಾಸತಃ | ಸಿದ್ಧಶಬ್ದವಿವೇಕಾಯ ಬಾಲ-ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಹೇತವೇ" | ಸುಬಂಶಪದಗಳ ರೂಪನಿಷ್ಪತ್ತಿ ಅವುಗಳ ಸಪ್ತವಿಭಕ್ತಿ ಮತ್ತು ವಚನಗಳು ಸಪ್ತಕಾರಕಗಳು ಅವ್ಯಯೀಭಾವ ತತ್ಪುರುಷ ಬಹುವ್ರೀಹಿ ಮುಂತಾದ ಸಮಾಸಗಳು ಕೃತ್ ಮತ್ತು ತದ್ವಿತ ಪ್ರತ್ಯಯಾಂತ ರೂಪಗಳು ತಿಜನ್ತರೂಪಗಳು ಅವುಗಳ ಪುರುಷ ಮತ್ತು ವಚನಗಳು ಇತ್ಯಾದಿ ಸಂಸ್ಕೃತಭಾಷಾವ್ಯವಹಾರೋಪಯೋಗಿ ಮತ್ತು ಅರ್ಥವತ್ತಾದ ಸುಬನ್ತ ತಿಜನ್ತ ರೂಪಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸಿ ಶಬ್ದಜ್ಞಾನ ಮತ್ತು ಭಾಷಾಜ್ಞಾನವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದು ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರದ ಮುಖ್ಯ ಫಲ. ಮಾಹೇಶವ್ಯಾಕರಣಮ್ ಪಾಣಿನೀಯವ್ಯಾಕರಣಮ್ ಕಲಾಪವ್ಯಾಕರಣಮ್ ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತಸಾರವ್ಯಾಕರಣಮ್ ಸುಪದವ್ಯಾಕರಣಮ್ ಹರಿನಾಮಾಮೃತ-ವ್ಯಾಕರಣಮ್ ಭದ್ರೋಜಿದೀಕ್ಷಿತಕೃತಸಿದ್ಧಾಂತಕೌಮುದಿ ಮುಂತಾದ ಅನೇಕ ವ್ಯಾಕರಣಗಳು ರಚಿತವಾಗಿವೆ. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಈಗ ಪಾಣಿನಿಮಹರ್ಷಿಪ್ರಣೀತವ್ಯಾಕರಣವು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದ್ದು ಇದಕ್ಕೆ ಭಟ್ಟೋಜಿದೀಕ್ಷಿತಪ್ರಣೀತಸಿದ್ಧಾಂತಕೌಮುದೀ ವ್ಯಾಕರಣವು (ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ) ವ್ಯವಹಾರದಲ್ಲಿರುವುದು. 2. ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳುವುದು, ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿ ತಿಳಿಸುವುದು.

**ವ್ಯಾಕಾರ ವ್ಯಾಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ರೂಪ ಬದಲಾವಣೆ, 2. ವಿರೂಪ, ವಿಕಾರರೂಪ.

**ವ್ಯಾಕೀರ್ಣ ವ್ಯಾಕೀರ್ಣ** (ವಿಂ) 1. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ, ಹರಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಎರಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಆ + ಕೃ (ವಿಕ್ಷೇಪ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | 3. ಕೆದರಿಸುವ, ಸುತ್ತಲೂ ಚೆದರಿಕೊಂಡಿರುವ. "ವ್ಯಾಕೀರ್ಣಕೇಸರಕರಾಲ-ಮುಖಾ ಮೃಗೇಂದ್ರಾಃ" ಪञ्चತಂ ೧-೨೦೪ |

**ವ್ಯಾಕರಣಪ್ರಕ್ರಿಯಾ ವ್ಯಾಕರಣಪ್ರಕ್ರಿಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಕೃತಿ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಶಬ್ದಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿಯ ಕ್ರಮವನ್ನು ನಿರೂಪಿಸುವುದು, ಶಬ್ದಗಳ ಹುಟ್ಟನ್ನು ವಿವರಿಸಿ ತಿಳಿಸುವುದು.

**ವ್ಯಾಕುಲ ವ್ಯಾಕುಲ** (ವಿಂ) 1. ಕಷ್ಟ ದುಃಖ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಕರ್ತವ್ಯಜ್ಞಾನಶೂನ್ಯನಾದ. ವಿ + ಆ + ಕುಲ (ಸಂಸ್ಥಾನಂ ಬಂಧುಪು ಚ) "ಕ್ತಃ" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರವೃತ್ತನಾದ, ಒಂದು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿರುವ. "ಆಲೋಕೇ ತೇ ನಿಪತತಿ ಪುರಾ ಸಾ ಬಲಿವ್ಯಾಕುಲಾ ವಾ" ಮೇಘಂ ೨-೨೨ | 3. ತೊಂದರೆಗೊಳಗಾಗಿರುವ, ಗಾಬರಿಯಿಂದ ಭಯಗೊಂಡಿರುವ.

**ವ್ಯಾಕೃತಿ ವ್ಯಾಕೃತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಂಚನೆ, ಮೋಸ.



**ವ್ಯಾಕೃತ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ** (ವಿಂ) 1. ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು, ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿ ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ+ಆ+ಠ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಬಿಡಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು, ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿ ಪರಿಶೀಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ವಿಚಾರಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ವಿರೂಪವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು.

**ವ್ಯಾಕೃತಿ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿ ಪರಿಶೀಲಿಸಿ ಹೇಳುವುದು, ಬಿಡಿಸಿ ಹೇಳುವುದು, 2. ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳುವುದು, ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿ ಹೇಳುವುದು. 3. ವಿರೂಪಗೊಳಿಸುವುದು, ವಿಚಾರವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ವಿ+ಆ+ಠ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। 4. ವ್ಯಾಕರಣ, ಶಬ್ದ ನಿಷ್ಪತ್ತಿ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು.

**ವ್ಯಾಕೋಶ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರವೃತ್ತಿವಾದ, ವಿಕಸಿತವಾದ, ಅರಳಿರುವ. ವ್ಯಾಕೃತಃ ಕೋಶಃ ಸಂಕೋಚೋಽಸ್ಮಾತ್। "ದೋಷಾಪಿ ನೂನಮಹಿಮಾಂಶುರಸೌ ಕಿಲೇತಿ ವ್ಯಾಕೋಶಕೋನದತಾ ದಧತೇ ನಲಿನ್ಯಃ" ಮಾಘಂ ೪-೪೬। 2. ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿದ, ಬೆಳೆವಣಿಗೆ ಹೊಂದಿದ.

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ** (ವಿಂ) 1. ಬೇರೆಕಡೆಗೆ ತಿರುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಬೇರೆಕಡೆಗೆ ಗಮನ ಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ+ಆ+ಕ್ಷಿಪ್ತ (ನಿರಸನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಮುಂದೂಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 5. ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ** (ಪುಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಸೆಯುವುದು. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿಸುವುದು. 3. ಮುಂದೂಡುವುದು. 4. ಅಡ್ಡಿ, ತಡೆ, ವಿಲಂಬ. ವಿ+ಆ+ಕ್ಷಿಪ್ತ (ನಿರಸನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೯೪)। "ಅವ್ಯಾಖ್ಯಾನೋ ಭವಿಷ್ಯಂತ್ಯಾಃ ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿರ್ಹಿ ಲಕ್ಷಣಮ್" ರಘುಂ ೧೦-೬।

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ, ವಿವರಣೆ, ವಿವರಿಸಿ ಸಂಬಂಧಿಸಿ ಹೇಳುವುದು. ವಿ+ಆ+ಠ್ ಕೃತ್ (ಪ್ರಕೃತ) "ಅತ್" (೩-೩-೧೦೬)। "ನ ಶಿಷ್ಯಾನನುಬಂಧಿತಃ ಗ್ರಂಥಾನಿವಾಸ್ಯಸೇದಹನ್। ನ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಮುಪಯುಜ್ಜಿತ ನಾರಮ್ಭಾನಾರಮೇತ್ ಕ್ವಚಿತ್" ಭಾಗಂ ೭-೧೩-೮। 2. ಬೋಧನೆ, ಉಪದೇಶ. "ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಮುಕ್ತಾಂ ಕರಣರಸಿಜಃ ಪುಸ್ತಕಂ ಶಾಸ್ತ್ರವಕ್ತೃ" ಹೃಯಗ್ರಂಥಂ।

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ** (ವಿಂ) 1. ವಿವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಸಂಬಂಧಿಸಿ ವಿವರವಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ+ಆ+ಠ್ ಕೃತ್ (ಪ್ರಕೃತ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ನಿಗಮಾಂತೇಶು ನಿಗದವ್ಯಾಖ್ಯಾನ-ನಿಜವೈಭವಃ" ಯಾದಂ ೧೬-೪। 2. ಬೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ** (ವಿಂ) 1. ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. 2. ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳಬೇಕಾದ. ವಿ+ಆ+ಠ್ ಕೃತ್ (ಪ್ರಕೃತ) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬)। 3. ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳಬಹುದಾದ. 4. ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಉಪದೇಶಿಸಬೇಕಾದ. 6. ಉಪದೇಶಿಸಬಹುದಾದ.

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ** (ವಿಂ) 1. ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಮಾಡುವವನು, ವಿಷಯವನ್ನು ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳುವವನು, ಸಂಬಂಧಿಸಿ ವಿವರಿಸುವವನು. ವಿ+ಆ+ಠ್ ಕೃತ್ (ಪ್ರಕೃತ) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬)। 2. ಬೋಧಿಸುವವನು, ಉಪದೇಶಿಸುವವನು.

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ** (ನಂ) 1. ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳುವುದು, ಸಂಬಂಧಿಸಿ ವಿವರಿಸುವುದು. 2. ಉಪದೇಶಿಸುವುದು, ಬೋಧಿಸುವುದು. ವಿ+ಆ+ಠ್ ಕೃತ್ (ಪ್ರಕೃತ) "ತವ್ಯಃ" (೩-೩-೯೪)।

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ** (ವಿಂ) 1. ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. 2. ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳಬೇಕಾದ. 3. ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳಬಹುದಾದ. ವಿ+ಆ+ಠ್ ಕೃತ್ (ಪ್ರಕೃತ) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬)। 4. ಬೋಧಿಸಬೇಕಾದ, ಉಪದೇಶಿಸಬೇಕಾದ. 5. ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ಉಪದೇಶಿಸಬಹುದಾದ.

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ** (ನಂ) ಉಜ್ಜುವುದು, ತಿಕ್ಕುವುದು, ಘರ್ಷಣೆ.

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ** (ಪುಂ) 1. ವಿಘ್ನ, ಅಡ್ಡಿ, ತಡೆ. ವಿ+ಆ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯಾಃ) "ಘನ್" (೩-೩-೯೮)। 2. ಭಂಗಪಡಿಸುವುದು, ಮೀರಿ ನಡೆಯುವುದು, ಮುರಿಯುವುದು. "ವೃಷಲ, ಮಮಾಪಿ ಖಲು ತ್ವದಾಜ್ಞಾವ್ಯಾಘಾತಃ ಏವ ಕೌಮುದಿ-ಮಹೋತ್ತರವಪ್ರತಿವೇಷಸ್ಯ ಪ್ರಥಮಂ ಪ್ರಯೋಜನಮಿತಿ" ಮುದ್ರಾಂ ೩। 3. ಎಟು, ಹೊಡೆತ, ಪೆಟ್ಟು. 4. ವಿಷ್ಕಂಭ ಮೊದಲಾದ 27 ಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ 13 ನೆಯ ಒಂದು ಯೋಗ. 5. ಆರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಈ ಅಲಂಕಾರವು (1) ಒಂದು ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದ ಲೋಕಸಿದ್ಧವಾದ ಒಂದು ವಸ್ತುವು ಅದಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಾದ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾಗಿ ವರ್ತಿಸುವಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಾಲಂಕಾರ. (2) ಒಂದು ಕಾರ್ಯದ ಸೌಕರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ನಿಯತವಾದ ಕ್ರಿಯೆಯು ಆ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ವರ್ತಿಸುವಾಗುವಲ್ಲಿಯೂ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಾಲಂಕಾರ ಈ ರೀತಿ ಎರಡು ವಿಧ. ಕ್ರಮವಾಗಿ ಉದಾ: (1) "ಯೇರ್ಜಗತ್ಪ್ರಿಯತೇ ಹಂತಿ ತೇವ ಕುಸುಮಾಯುಧಃ"। (2) "ದಯಾ ಚಿದ್ರಾಜ ಇತಿ ಮಯ್ಯಪರಿತ್ಯಾಜ್ಯ ಏವ ತೇ"। "ದೃಶಾ ದಾಘಂ ಮನಸಿಜಂ ಜೀವ್ಯಂತಿ ದೃಶೇವ ಯಾಃ। ವಿರೂಪಾಕ್ಷಸ್ಯ



ಜಯಿನೀಸ್ತಾ: ಸ್ತುವೇ ವಾಮಲೋಚನಾ:” 6. ಅಸಂಬದ್ಧವಾದ ಮಾತು. “ಯಾವಜ್ಜೀವಮಹಂ ಮಾತೌ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ ಚ ಮೇ ಪಿತಾ | ಮಾತಾ ತು ಮಮ ಬಂಧ್ಯಾಸೀತ್ ಅಪುತ್ರಶ್ಚ ಪಿತಾಮಹ:” ||

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಂತ್ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಂ** (ವಿಂ) ವೇಗವಾಗಿ ಸುತ್ತಿ ತಿರುವ, ತಿರುಗುತ್ತಿರುವ, ಭ್ರಮಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಆ + ಖ್ಯಾ (ಭ್ರಮಣೆ) ತುಡಾಂ “ಶತ್” (3-2-124) | “ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಂತ್ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಂ” ಮೇಘಗಂಧೀರವೋಷ:” | ಸ್ವಾಂ “ಶಾನತ್” (3-2-124) | -ಖ್ಯಾ: -ಖ್ಯಾ: ಮಾನ:.

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಂ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಂ** (ನಂ) ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಸುತ್ತಿ ವುಡು, ವೇಗವಾಗಿ ತಿರುಗುವುದು. ವಿ + ಆ + ಖ್ಯಾ (ಭ್ರಮಣೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114) |

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಯತ್ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಯತ್** (ವಿಂ) ಸುತ್ತಿಸು ತಿರುವ, ತಿರುಗಿಸುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಆ + ಖ್ಯಾ (ಭ್ರಮಣೆ) + ಣಿಕ್ “ಶತ್” (3-2-124) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಕೀಪ್” (4-1-6) | -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿತ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿತ** (ವಿಂ) 1. ವೇಗವಾಗಿ ಸುತ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವೇಗವಾಗಿ ತಿರುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಆ + ಖ್ಯಾ (ಭ್ರಮಣೆ) + ಣಿಕ್ “ಕ್ತ:” (3-2-102) | 2. ವೇಗ ವಾಗಿ ತಿರುಗಿದ. ವಿ + ಆ + ಖ್ಯಾ ಕರ್ತಂ “ಕ್ತ:” (3-4-92) |

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ** (ಪುಂ) 1. ಶಾರ್ದೂಲ, ಹುಲಿ. ವ್ಯಾಜಿ ಘಟಿ —ವಿ + ಆ + ಖ್ಯಾ (ಗಂಧೋಪಾದಾನೇ) “ಕ್ತ:” (3-1-136) | “ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಾತಮಗೀಕೃತಾಕುಲಮಗನ್ಯಾಯೇನ ಹಿಸಾರುಚೇ:” ಮಾಲತೀಂ 4-29 | 2. ರಕ್ತವಿರಂಧವೃಕ್ಷ, ಕೆಂಪು ಹರಳು ಗಿಡ. (ವಿಂ) 3. (ಸಮಾಸದಲ್ಲಿ ನರ ಪುರುಷ ಮೊದಲಾದ ಪದಗಳಿಗೆ ಉತ್ತರಪದವಾದಾಗ) ಶ್ರೇಷ್ಠ, ಉತ್ತಮ. “ಕಿಂ ನು ದು:ಖತರಂ ಶಕ್ಯಂ ಮಯಾ ದ್ರಷ್ಟುಮತ: ಪರಮ್ | ಯೋಹಮಶ್ವ ನರವ್ಯಾಖ್ಯಾನಂ ಸುಪ್ತಾನ್ ಪ್ರಶ್ಯಾಮಿ ಭೂತಲೇ” ಭಾಂ |

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನದಲ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನದಲ** (ಪುಂ) ವಿರಂಧವೃಕ್ಷ, ಹರಳುಗಿಡ. **ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಲ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಲ** (ನಂ) 1. ಹುಲಿಯುಗುರು ಗಿಡ. ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ನಲಮಿವ | 2. ಸೂರಣದಗಡ್ಡೆ. 3. ನವಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯ. 4. ನವಿಕ್ಷತ, ಉಗುರಿನ ಗಾಯ. “ಭವೇದ್ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಲಂ ಕಂದಗಂಧದ್ರವ್ಯವಿಶೇಷಯೋ: | ನಲಕ್ಷತಾಂತರೇ ಕಲಿಬಮ್” ಮೇದಿಂ | (ಪುಂ) 5. ಹುಲಿಯ ಕಾಲಿನ ಪಂಜ. 6. ಕಳ್ಳಮರ.

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಾದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಾದ** (ಪುಂ) 1. ಹುಲಿ ಬೇಲದ ಮರ. ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಪಾದಾ ಇವ ಪಾದಾ: ಮೂಲಾನ್ಯಸ್ಯ, ಪಾದಾಶಬ್ದಸ್ಯ

ಅಕಾರಲೋಪ: (4-4-136) | “ವಿಕೃತ: ಸುವಾವೃಷ: ಪ್ರಸ್ಥಿಲೋ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಾದಪಿ” ಅಮಂ | (ವಿಂ) 2. ಹುಲಿಯ ಕಾಲುಗಳಂತೆ ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳವನು. ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಾದವಿವ ಪಾದೌ ಯಸ್ಯ — ಅಕಾರಲೋಪ: (4-4-136) |

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಪುಚ್ಚ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಪುಚ್ಚ** (ಪುಂ) 1. ವಿರಂಧವೃಕ್ಷ, ಹರಳುಗಿಡ. ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಪುಚ್ಚಮಿವ ಪುಚ್ಚಮಸ್ಯ | (ಪುಂ) 2. ಹುಲಿಯ ಬಾಲ.

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಾ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಾ** (ಪುಂ) ಭರದ್ವಾಜ ಹಕ್ಕಿ. ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಇವ ಅಡತಿ — ಅಡ (ಗತೌ) “ಅಕ್” (3-1-134) | “ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಾ: ಸ್ಯಾ ಪುರಾಣಾ:” ಅಮಂ |

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಾಸ್ಯ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಾಸ್ಯ** (ಪುಂ) ಬಿಡುಲ, ಮಾರ್ಜಾರ, ಬೆಕ್ಕು. ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಾಸ್ಯೇವ ಆಸ್ಯಮಸ್ಯ |

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಹುಲಿ. ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿ “ಕೀಪ್” (4-1-63) | 2. ಹೆಣ್ಣುಳ್ಳದ ಗಿಡ. ವ್ಯಾಜಿ ಘಟಿ —ವಿ + ಆ + ಖ್ಯಾ (ಗಂಧೋಪಾದಾನೇ) “ಕ್ತ:” (3-1-136) | “ಕೀಪ್” (4-1-41) |

**ವ್ಯಾಜ ವ್ಯಾಜ** (ಪುಂ) 1. ಕಪಟ, ಕೆಕ್ಕು, ಬೂಟಾಟಿಕೆ. ವ್ಯಾಜಂತಿ ಕ್ಷಿಪಂತ್ಯನೇನ —ವಿ + ಅಜ (ಗತಿಕೋಪಣಯೋ: ) “ಜಕ್” (3-3-121) | 2. ಅಪದೇಶ, ನೆಪ. ಒಂದು ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಹೊರಟು ಮತ್ತೊಂದು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರವರ್ತಿಸುವುದು ವ್ಯಾಜ (ನೆಪ). ಶಾಲೆಗೆ ಹೋಗುವ ಕಾರಣವನ್ನು ಹೇಳಿ ಕ್ರೀಡಾಂಗಣಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು. ಕ್ರೀಡಾಂಗಣ, ಚಲನ ಚಿತ್ರಮಂದಿರ ಮೊದಲಾದವುಗಳಿಗೆ ಹೋಗಲು ಶಾಲಾಗಮನದ ಹೇಳಿಕೆಯು ವ್ಯಾಜವಾಗುವುದು. “ಶೂನ್ಯಂ ವಾಸಗೃಹಂ ವಿಲೋಕ್ಯ ಶಯನಾದುತ್ಥಾಯ ಕಿಂಚಿ-ಚ್ಚನೇ: ನಿद्रಾವ್ಯಾಜಮುಪಾಗತಸ್ಯ ಸುಚಿರಂ ನಿವೃಣ್ಯ ಪತ್ಯುರ್ಮುಖಮ್” ಅಮರಂ | 3. ತಂತ್ರ, ಉಪಾಯ, ಯುಕ್ತಿ. “ಅಮ್ ಸಹಸ್ರಪ್ರಹಿತೇಕ್ಷಣಾನಿ ವ್ಯಾಜಾಃ ಸಂದರ್ಶಿತಮೇಖಲಾನಿ” ರಘುಂ 13-42 | 4. ಕೃತ್ರಿಮ. “ಇದಂ, ಕಿಲಾವ್ಯಾಜಮನೋಹರಂ ವಪು:” ಶಾಕುಂ 1-16 | 5. ಶಾಠ್ಯ, ಮೂರ್ಖತನ, ದೌಷ್ಟ್ಯ. “ವ್ಯಾಜ: ಶಾಠ್ಯೇ” ಮೇದಿಂ |

**ವ್ಯಾಜಿನಿನ್ದಾ ವ್ಯಾಜಿನಿನ್ದಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಬ್ಬನ ನಿಂದೆ (ದೂಷಣೆ) ಯಿಂದ ತೋರುವ ಮತ್ತೊಬ್ಬನ ನಿಂದೆ. ವ್ಯಾಜೇನ ಏಕಸ್ಯ ನಿಂದಾಪದೇಶೇನ ಅನ್ಯಸ್ಯ ನಿಂದಾ ದೂಷಣಮ್ | ಇದು ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. “ನಿಂದಾ ಯಾ ನಿಂದಯಾ ವ್ಯಾಜಿನಿನ್ದೇತಿ ಗೀಯತೇ” | ತದಾ: “ವಿಧೇ ಸ ನಿಂದಯಾ ಯಸ್ತೇ ಪ್ರಾಣೇಕಮೇವಾಹರಚ್ಛಿರ:” | ಇಲ್ಲಿ ಹರನ ನಿಂದೆ ಯಿಂದ ಚತುರ್ಮುಖನ ನಿಂದೆಗೆ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿಯುಂಟಾಗು



व्याधुन्वत् वा० धुन्वत् (वि०) ऊदरुत्तिरुव, ऊदरु  
 उत्तिरुव. वि + आ + धुम् (कम्पने) "शतृ"  
 (३-२-१२४)। स्त्रियां "ङोप्" (४-१-६)। -धुन्वती  
 -धुन्वतीः. "करो व्याधुन्वत्याः पिबसि रतिसर्वस्व-  
 मधरम्" शाकु० १-२०। "शानच्" (३-२-१२४)।  
 -धुन्वानः -धुन्वन्तः।



**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ** (ವಿಂ) ಕೊಡವಲ್ಪಟ್ಟು, ಒದರಲ್ಪಟ್ಟು.  
ವಿ + ಆ + ಖ್ಯ (ಕಮ್ಯ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) ।  
"ಏತस्मिन् ಮದಕಲಮಲ್ಲಿಕಾಕ್ಷಪಕ್ಷವ್ಯಾಖ್ಯಾನತಸ್ಕುರದ್ವಂದ್ವ-  
ಪುಂಡರೀಕಾ:" ತಂ ರಾಂ ೧-೩೧ ।

**ವ್ಯಾನ ವ್ಯಾನ** (ಪುಂ) ಪಂಚ ಪ್ರಾಣವಾಯುಗಳಲ್ಲಿಂದೂ  
ವಾಯು. ವ್ಯಾನಿತಿ ಸರ್ವಶರೀರಂ ವ್ಯಾನೋತಿ-ವಿ+ಆ+  
ಅನ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ಅನ್" (೩-೧-೧೩೪) । ವ್ಯಾನವಾಯುವು  
ಶರೀರದ ಎಲ್ಲಾ ಭಾಗಗಳಲ್ಲೂ ಇರುವುದು. ["ಪ್ರಾಣ"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ] "ವ್ಯಾನ: ಸರ್ವಶರೀರಗ:" ಅಮಂ ।

**ವ್ಯಾಪಕ ವ್ಯಾಪಕ** (ವಿಂ) 1. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ವ್ಯಾಪಿ  
ಸುವ, ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡುವ, ವಿ + ಆಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ)  
"ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । "ತಿಯಗ್ವಿಮಧಸ್ತಾಚ್ಚ ವ್ಯಾಪಕೋ  
ಮಹಿಮಾ ಹರೇ: । ತ್ರಿವಿಕ್ರಮೋದತಸ್ಯಾಸೀತ್ಸ ತು ಸ್ವಾಭಾವಿಕಸ್ತವ"  
ಕುಮಾಂ ೬-೭೧ । 2. ಎಲ್ಲಾ ಭಾಗಗಳ ಸಂಬಂಧವನ್ನೂ  
ಹೊಂದಿರುವ. 3. ಯಾವಾಗಲೂ ತಪ್ಪದೆ ಒಟ್ಟಿಗಿರುವ,  
ಯಾವಾಗಲೂ ಒಂದೇ ಕಡೆ ಇರುವ. 4. ಅಚ್ಚಾದಕ.  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ವ್ಯಾಪಿಕಾ ವ್ಯಾಪಿಕಾ.

**ವ್ಯಾಪ್ತಿ ವ್ಯಾಪ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಷ್ಟ, ತೊಂದರೆ. ವಿ+  
ಆ + ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) । "ಔದಾಸೀನ್ಯಂ  
ನ ಯುಕ್ತಂ ಪ್ರಿಯಸುಹೃದಿ ಗತೇ ಮತ್ಕೃತೇ ಚಾತಿಥೋರಾಂ ವ್ಯಾಪ್ತಿ  
ಜಾತಮಸ್ಯ ಸ್ವತನುಮಹಿಮಾಂ ನಿಷ್ಕಯಂ ಕಲ್ಪಯಾಮಿ" ಮುದ್ರಾಂ  
೬-೨೧ । 2. ನಿಧನ, ಮರಣ. "ತಯೋಸ್ತಸ್ಮಿನ್ನವಿಮೃತ-  
ಪಿತೃವ್ಯಾಪ್ತಿಸೋಕಯೋ:" ರಘುಂ ೧೨-೪೬ । 3. ವ್ಯಾಧಿ,  
ರೋಗ.

**ವ್ಯಾಪದ್ ವ್ಯಾಪದ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಪತ್ತು, ವಿಪತ್ತು, ಕೇಡು.  
ವಿ + ಆಡ್ + ಪದ (ಗತೌ) "ವಿಪ್" (ವಾಂ ೩-೩-೯೪) ।  
"ಪಥ್ಯ ಸ್ವಶ್ರುತಾ ವ್ಯಾಪದಿಹಾಪಿ ಫಲಿತಾ ಮಮ" ಕಥಾಸಂ ।  
2. ವ್ಯಾಧಿ, ರೋಗ. 3. ನಿಧನ.

**ವ್ಯಾಪನ ವ್ಯಾಪನ** (ನಂ) 1. ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡುವುದು,  
ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು. 2. ಎಲ್ಲಾ ಭಾಗಗಳ  
ಸಂಬಂಧವನ್ನೂ ಹೊಂದುವುದು. 3. ಯಾವಾಗಲೂ  
ಒಟ್ಟಿಗೆ ಒಂದೇ ಕಡೆ ಇರುವುದು. ವಿ+ಆಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ)  
"ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) । 4. ಅಚ್ಚಾದನ, ಮುಚ್ಚುವುದು.

**ವ್ಯಾಪನ ವ್ಯಾಪನ** (ವಿಂ) 1. ಕಷ್ಟಕ್ಕೆ ಒಳಗಾದ, ತೊಂದರೆಗೆ  
ಸಿಲುಕಿರುವ. ವಿ+ಆ+ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) ।  
2. ಮೃತನಾದ, ಅವಸಾನ ಹೊಂದಿದ.

**ವ್ಯಾಪಾದ ವ್ಯಾಪಾದ** (ಪುಂ) 1. ದೋಷವನ್ನು ಚಿಂತಿಸು  
ವುದು, ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಗೆ ಕೇಡನ್ನು ಬಯಸುವುದು ವಿ +

ಆ + ಪದ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ವತ್" (೩-೩-೧೮) ।  
2. ಕೊಲ್ಲುವುದು. "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) । ವ್ಯಾಪಾದನಮ್  
ವ್ಯಾಪಾದನಮ್.

**ವ್ಯಾಪಾದಿತ ವ್ಯಾಪಾದಿತ** (ವಿಂ) 1. ಕೊಲ್ಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ+  
ಆ + ಪದ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) ।  
2. ಕಷ್ಟಕ್ಕೆ ಸಿಲುಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ತೊಂದರೆಗೆ ಈಡುಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟು.

**ವ್ಯಾಪಾರ ವ್ಯಾಪಾರ** (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ಯ, ಕೆಲಸ. ವಿ +  
ಆ+ಪಙ್ (ವ್ಯಾಪಾಸೇ) "ವತ್" (೩-೩-೧೮) । "ವೇಲಾನಸಂ  
ಕಿಮನಯಾ ವ್ರತಮಾಪದಾನಾದ್ವ್ಯಾಪಾರರೋಧಿ ಮದನಸ್ಯ ನಿಷೇವಿ-  
ತವ್ಯಮ್" ಷಾಕುಂ ೧-೨೩ । 2. ಸಾಹಾಯ್ಯ, ಒತ್ತಾಸೆ,  
ಉಪಕಾರ, 3. ಪ್ರಯತ್ನ. "ಆರ್ಯಾಪ್ಯಹುನ್ವತೀ ತತ್ರ ವ್ಯಾಪಾರಂ  
ಕರ್ತುಮಹಂತಿ" ಕುಮಾಂ ೬-೩೨ । 4. ಪ್ರಯೋಗಿಸುವುದು,  
ಉಪಯೋಗಿಸುವುದು. "ವೃಣ್ಣೀನಾಮಿವ ನೇತಿವಿಕ್ರಮಗುಣ-  
ವ್ಯಾಪಾರಶಾಂತಿವಿಷಾಮ್" ಮುದ್ರಾಂ ೨-೪ । 5. ಉದ್ಯೋಗ,  
ಉದ್ಯಮ. 6. ವೃತ್ತಿ, ಕಸಬು.

**ವ್ಯಾಪಾರಿತ ವ್ಯಾಪಾರಿತ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು,  
ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ವ್ಯಾಪಾರಿತಂ ಶಿರಸಿ ಶಸ್ತ್ರಮಶಸ್ತ್ರ-  
ಪಾಣೇ:" ವೇಣೀಂ ೩-೨೧ । 2. ಕೆಲಸ ಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.  
3. ಕ್ರಯ ವಿಕ್ರಯ ಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

**ವ್ಯಾಪಾರಿನ್ ವ್ಯಾಪಾರಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಕೆಲಸವುಳ್ಳವನು.  
2. ಪ್ರಯತ್ನವುಳ್ಳವನು. ವ್ಯಾಪಾರೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:"  
(೪-೨-೧೧೫) । 3. ಕ್ರಯ ವಿಕ್ರಯವುಳ್ಳವನು, ಕೊಳ್ಳು  
ವವನು ಮತ್ತು ಮಾರುವವನು.

**ವ್ಯಾಪಿನ್ ವ್ಯಾಪಿನ್** (ವಿಂ) 1. (ಸಮಾಸದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ)  
ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಹರಡುವ, ಸುತ್ತಲೂ ವ್ಯಾಪಿಸುವ.  
ವಿ + ಆಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಣಿನಿ:" (೩-೨-೭೮) ।  
2. ಬಹಳ ದೂರ ವಿಸ್ತರಿಸುವ. "ವ್ಯಾಪಿ ಪ್ರಾಸಕ್ತಿಕಂ  
ವೃತ್ತಂ ಪತಾಕೇತಮಿಥೀಯತೇ" ಸಾಂ ೬-೬೭ । 3. ಯಾವಾ  
ಗಲೂ ಒಟ್ಟಿಗಿರುವ, ಸರ್ವದಾ ಒಡನಿರುವ. 4. ಅಚ್ಚಾದಿ  
ಸುವ, ಮುಚ್ಚುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ತೀಪ್" (೪-೧-೫) ।  
ವ್ಯಾಪಿನಿ ವ್ಯಾಪಿನಿ.

**ವ್ಯಾಪ್ತ ವ್ಯಾಪ್ತ** (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಮಸಚಿವ, ರಾಜನ  
ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ನಡೆಸುವ ಮಂತ್ರಿ, ರಾಜನ ಆದೇಶದಂತೆ  
ರಾಜ್ಯದ ವ್ಯವಹಾರಗಳನ್ನು ನಡೆಸುವ ಸಚಿವ. ವಿ+ಆ+ಪ್  
(ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । "ನಿಯೋಗಿ ಕರ್ಮಸಚಿವ  
ಆಯುಕ್ತೋ ವ್ಯಾಪ್ತಃ" ಹೇಮಂ । (ವಿಂ) 2. ಒಂದು  
ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದವನು. "ಅಭಿಜಯಮಿದಮನ್ಯಸ್ಮಿನ್"



ಕರ್ಮಣಿ ವ್ಯಾಪ್ತಂ ಧನುಃ" ಶಾಕುಂ ೬-೩೨। "ಅಶಿಖಿಲ-  
ಪರಿಸಂಭವ್ಯಾಪ್ತಕೈಕದೋಷೋರವಿದಿತಗತಯಾಮಾ ರಾತ್ರಿವ  
ವ್ಯರಸೀತ್" ತಂ ರಾಂ ೧-೨೭। 3. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ, ಅವೃತ್ತ  
ವಾದ.

**ವ್ಯಾಪ್ತಿ ವ್ಯಾಪ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವ್ಯಾಪಾರ, ಕಾರ್ಯ.  
ವಿ + ಆ + ಪ (ಪ್ರತಿ) "ಕ್ರಿನ್" (೩-೩-೯೪)।  
"ಕಾಂದಿಶಿಕಜಿತಕಾಶಿನೋರಿಮಾಂ ವ್ಯಾಪ್ತಿ ವಿಬುಧವೃಷ್ಟಿ-  
ವೀರಯೋಃ" ಯಾದಂ ೧೭-೭೮। 2. ಒಂದು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ  
ನಿರತನಾಗಿರುವುದು. 3. ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು. 4. ಪ್ರಯೋ-  
ಗಿಸುವುದು, ಉಪಯೋಗಿಸುವುದು.

**ವ್ಯಾಪ್ತ ವ್ಯಾಪ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಪೂರ್ಣ  
ವಾಗಿ ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ+ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತಿ)  
"ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಶಾಕಾಪೃಥಿವ್ಯೋರಿದಮನ್ತರಂ  
ಹಿ ವ್ಯಾಪ್ತಂ ತ್ವಯೇಕೇನ ದಿಶಶ್ಚ ಸರ್ವಾಃ" ಗೀತಾ ೧೧-೨೦।  
2. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಹರಡಿಕೊಂಡಿರುವ,  
ಸುತ್ತಲೂ ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವ. 4. ಪ್ರಸಿದ್ಧ, ಪ್ರಖ್ಯಾತ.

**ವ್ಯಾಪ್ತಿ ವ್ಯಾಪ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು, ಸುತ್ತಲೂ  
ಹರಡುವುದು. ವಿ + ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತಿ) "ಕ್ರಿನ್"  
(೩-೩-೯೪)। 2. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರು-  
ವುದು, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಇರುವುದು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3.  
ವ್ಯಾಪಿಸುವಿಕೆ, ಹರಡುವಿಕೆ. ವಿ + ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತಿ)  
"ಕ್ರಿನ್" (೩-೩-೯೪)। "ಸತ್ಯಂ ವಿಧಾತುಂ ನಿಜಭೂತಮಾಪ್ತಂ  
ವ್ಯಾಪ್ತಿ ಚ ಭೂತೇಷ್ವಪಿಲೇಷು ಚಾತ್ಮನಃ" ಭಾಗಂ ೭-೮-೧೮।  
4. ಹೇತುಸಾಧ್ಯಗಳ ಸಾಹಚರ್ಯನಿಯಮ, ಸಾಧ್ಯ  
ಮತ್ತು ಸಾಧನಗಳ ಸಂಬಂಧ, ಸಾಧ್ಯನಿಷ್ಕಹೇತು  
ಸಾಮಾನಾಧಿಕರಣ್ಯ, ಹೇತುವಿಗೆ ಸಾಧ್ಯಸಾಮಾನಾಧಿ-  
ಕರಣ್ಯ. "ಯತ್ರ ಧೂಮಃ ತತ್ರಾಗ್ನಿರೀತಿ ಸಾಹಚರ್ಯನಿಯಮೋ  
ವ್ಯಾಪ್ತಿಃ" ತಂ ಸಂ. ಸಾಧ್ಯ ಸಾಧನಗಳಿಗೆ ನಿಯತವಾದ  
ಸಾಹಚರ್ಯವಿರುವಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಪ್ತಿ. "ಪವಂತೋ ವಹ್ನಿಮಾನ್  
ಭೂಮಾತ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಧೂಮವ್ಯಾಪ್ತ ವಹ್ನಿಸಾಮಾನಾಧಿ-  
ಕರಣ್ಯ (ನಿಯತಸಾಹಚರ್ಯ) ವು ಧೂಮದಲ್ಲಿರುವುದ  
ರಿಂದ ಲಕ್ಷಣಸಮನ್ವಯ. "ಪವಂತೋ ವಹ್ನಿಮಾನ್ ಭೂಮಾತ್"  
ಇತ್ಯಾದೌ ಧೂಮಸ್ಯ ವ್ಯಾಪ್ತೋ ವಹ್ನಿಃ, ತತ್ಸಾಮಾನಾಧಿಕರಣ್ಯಂ  
ಭೂಮೇ ವರ್ತತ ಇತಿ ಲಕ್ಷಣಸಮನ್ವಯಃ। ವ್ಯಾಪ್ತಿಯು ಅನ್ವಯ  
ವ್ಯಾಪ್ತಿ ಮತ್ತು ವ್ಯತಿರೇಕವ್ಯಾಪ್ತಿಯೆಂದು ಎರಡು  
ವಿಧ. "ಯತ್ರ ಧೂಮಃ ತತ್ರಾಗ್ನಿಃ ಯಥಾ ಮಹಾನಸಃ" ಇಲ್ಲಿ  
ಧೂಮವು ಹೇತು. ಅಗ್ನಿಯು ಸಾಧ್ಯ. ಇವೆರಡರ  
ಸಾಹಚರ್ಯವು ಮಹಾನಸದಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ  
ಅನ್ವಯವ್ಯಾಪ್ತಿ. "ಯತ್ರ ವಹ್ನಿಃ ಭೂಮಾತ್" ತತ್ರ ಭೂಮಾತ್

ಯಥಾ ಮಹಾನಸಃ" ಇಲ್ಲಿ ಸಾಧ್ಯಭಾವವು ವಹ್ನಿಭಾವ.  
ಹೇತುಭಾವವು ಧೂಮಭಾವ. ಇವೆರಡರ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯು  
ಹೃದದಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ವ್ಯತಿರೇಕವ್ಯಾಪ್ತಿ.

**ವ್ಯಾಪ್ಯ ವ್ಯಾಪ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ವ್ಯಾಪ್ತಿವಿಶಿಷ್ಟವಾದ. ವಿ +  
ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತಿ) "ಪ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)। "ವಹ್ನಿ-  
ವ್ಯಾಪ್ಯಧೂಮವಾನಯಂ ಪವಂತಃ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ವಹ್ನಿವ್ಯಾಪ್ಯೋ ವಹ್ನಿ-  
ನಿರೂಪಿತವ್ಯಾಪ್ತಿವಿಶಿಷ್ಟೋ ಯೋ ಧೂಮಃ ತದ್ವಾನಯಂ ಪವಂತಃ ಎಂದು  
ಧೂಮಕ್ಕೆ ವ್ಯಾಪ್ತಿವಿಶಿಷ್ಟತ್ವವನ್ನು ಹೇಳಬೇಕು. ವ್ಯಾಪ್ತಿ  
ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಧೂಮವು ವ್ಯಾಪ್ಯ. 2. ಹರಡಲು ಯೋಗ್ಯ  
ವಾದ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗೂ ವ್ಯಾಪಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. (ನಂ)  
3. ಸಾಧನ. 4. ಹೇತು.

**ವ್ಯಾಮ ವ್ಯಾಮ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಮಾರು ಅಳತೆ, ಎರಡು  
ಹಸ್ತಗಳೊಡನೆ ಪಾರ್ಶ್ವಗಳಿಗೆ ನೀಡಿದ ಎರಡು ತೋಳುಗಳ  
ಮಧ್ಯದ ಅಳತೆ. ವಿಶೇಷಣ ಅಮ್ಯತೇ ಅನೇನ — ಅಮ (ಗತೌ)  
"ವ್ಯಮ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ತತೋ ಭೀಮೋ ಮಹಾಬಾಹುರಾಜ್ಯ  
ತರಸಾ ದ್ರುಮಃ। ದಶವ್ಯಾಮಮಯೋವಿದ್ವಿಧಂ ನಿಷ್ಪತ್ರಮಕರೋತ್ತದಾ"  
ಭಾಂ ವನಂ ೧೧-೩೯।

**ವ್ಯಾಮನ ವ್ಯಾಮನ** (ನಂ) ವ್ಯಾಮ, ನೀಡಿದ ಎರಡು ತೋಳು  
ಗಳ ಮಧ್ಯದ ಅಳತೆ.

**ವ್ಯಾಮಿಶ್ರ ವ್ಯಾಮಿಶ್ರ** (ವಿಂ) ಕಲೆತಿರುವ, ಬೆರೆತಿರುವ,  
ಮಿಶ್ರವಾದ. ವಿ+ಆ+ಮಿಶ್ರ (ಸಂಪರ್ಕ)+ಣಿಕ್ "ಮಿಶ್ರ"  
(೩-೧-೧೩೪)। ಬೇರೆ ಬೇರೆ ವಿಷಯಗಳ ಅಥವಾ ವಸ್ತು-  
ಗಳ ಬೆರೆಕೆಯು ವ್ಯಾಮಿಶ್ರವಾಗುವುದು. "ವ್ಯಾಮಿಶ್ರೇವ  
ವಾಕ್ಯೇನ ಬುದ್ಧಿ ಮೋಹಯಸೀವ ಮೇ" ಗೀತಾ ೩-೨।

**ವ್ಯಾಮೋಹ ವ್ಯಾಮೋಹ** (ಪುಂ) 1. ಅಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿಗೇಡಿತನ.  
ವಿ + ಆ + ಮುಹ (ವೈಚಿತ್ಯ) "ಮುಹ" (೩-೩-೧೮)।  
"ಯಶಃಪ್ರಾಣಹರಾನ್ ಘೋರಾನ್ ವ್ಯಾಮೋಹವಿಷಪಾದಪಾನ್। ಸಮೀಕ್ಷಾ-  
ಶಾಣವೃಷ್ಣೇನ ದೃತ ಶಾಸ್ತ್ರೇಣ ಶಾಸ್ತ್ರೀಣಃ" ಯಾದಂ ೨೨-೩೬।  
2. ಅಭಿಮಾನ, ಪ್ರೀತಿ, ವಿಶ್ವಾಸ. 3. ತಬ್ಬಿಬ್ಬು,  
ದಿಗ್ಭ್ರಮೆ. "ಸಂಖ್ಯಾತಾ ನಾಮ ಸಂಖ್ಯಾನ್ ಯತ್ರ ವ್ಯಾಮೋಹಕಾರಣಮ್।  
ಅನ್ಯಥಾ ಭಾಸತೇ ಯತ್ರ ವಾಕ್ಯಾರ್ಥಃ ಸಾ ಪ್ರಹೇಲಿಕಾ" ಕಾವ್ಯಾಂ  
೩-೧೦೧।

**ವ್ಯಾಯತ ವ್ಯಾಯತ** (ವಿಂ) 1. ಉದ್ದವಾದ, ದೀರ್ಘವಾದ,  
ನೀಳವಾದ. ವಿ + ಆ + ಯಮ (ಉಪರಮೆ) "ಕ್ತಃ"  
(೩-೪-೭೨)। "ಯುವಾ ಯುಗವ್ಯಾಯತಬಾಹುರಸಲಃ ಕಫಾಟವಕ್ಷಾಃ  
ಪರಿಣಡಕನ್ಧರಃ" ರಘುಂ ೩-೩೪। 2. ದೃಢವಾದ, ಬಲ-  
ವಾದ. 3. ಅತಿಶಯವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ. 4. ವ್ಯಾಪ್ತ  
ನಾದ, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದ. "ವ್ಯಾಯತಂ ವ್ಯಾಪ್ತೇ ದೌರ್ವೇ



ದೃಢೇ ಚಾತಿಶಯೇನ್ಯವತ್" ಮೇದಿಂ 1. ಬಹಳ ಅಳವಾದ, ಅಗಾಧವಾದ, ಗಾಢವಾದ. "ಇಮಾಂ ಹೃದಿ ವ್ಯಾಯತಪಾತ-ಮಕ್ಷಿಣೋದ್ದಿಶೋಽಮೂರ್ತೇರಪಿ ಪುಷ್ಪಧನ್ವನಃ" ಕುಮಾಂ ೪-೪೪ 1.

**ವ್ಯಾಯಾಮ ವ್ಯಾಯಾಮಂ** (ಪುಂ) 1. ಶಕ್ತಿಗೆ ಅನುಗುಣವಾದ ಶ್ರಮದ ಕಾರ್ಯ, ಪೌರಾಣ, ಆಯಾಸದ ಕೆಲಸ. ವಿ + ಆ + ಯಮ (ಉಪರಮೆ) "ಘಙ್" (೩-೩-೧೮) 1. "ಸ್ಥಾನೇ ಶಮವತಾಂ ಶಕ್ತ್ಯಾ ವ್ಯಾಯಾಮೇ ವೃದ್ಧಿರಜ್ಞನಾಮ್ 1. ಅಯಥಾಬಲ-ಮಾರ್ಮಭೋನಿಧಾನಂ ಕ್ಷಯಸಂಪದಃ" ಮಾಘಂ ೨-೧೪ 1. 2. ಶ್ರಮ, ಆಯಾಸ, ದಣಿವು, ಬಳಲಿಕೆ. 3. ಅಂಗಸಾಧನೆ, ಗರುಡಿ, ಕೆಸರತು. "ವ್ಯಾಯಾಮೋ ಹಿ ಸದಾ ಪಥ್ಯಃ ಬಲಿನಾಂ ಸ್ನಿಗ್ಧ-ಭೋಜಿನಾಮ್ 1. ಸ ಚ ಶೀತೇ ವಸಂತೇ ಚ ತೇಷಾಂ ಪಥ್ಯತಮಃ ಸ್ಮೃತಃ 1. ಸರ್ವೇಷ್ವತುಷು ಸರ್ವೇಹಿ ಶುರೇರಾತ್ಮಹಿತಾರ್ಥಿಭಿಃ 1. ಶಕ್ತ್ಯರ್ಥೇನ ತು ಕರ್ತವ್ಯಃ ವ್ಯಾಯಾಮೋ ಹನ್ಯತೋ ವ್ಯಥಾಮ್" 11 4. ಕಷ್ಟ, ತೊಂದರೆ, ಯಾತನೆ. 5. ಉದ್ಯಮ, ಕಸಬು. "ವ್ಯಾಯಾಮಃ ಪೌರಣೇ ಶ್ರಮೇ 1. ವಿಯಾಮೇ ದುರ್ಗಸಂಚಾರೇ" ಹೇಮಂ 1. 6. ದುರ್ಗ ಸಂಚಾರ. 7. ನೀಡಿದ ಎರಡು ತೋಳುಗಳ ಮಧ್ಯದ ಅಳತೆ, ಮಾರು. 8. ಕಾದಾಡುವುದು, ಹೋರಾಡುವುದು.

**ವ್ಯಾಯೋಗ ವ್ಯಾಯೋಗಂ** (ಪುಂ) ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯದ ಹತ್ತು ವಿಧ ರೂಪಕಗಳಲ್ಲೊಂದು ವಿಧ. ವಿ + ಆ + ಯುಜ (ಸಮಾಧೌ) "ಘಙ್" (೩-೩-೧೨೧) 1. ವ್ಯಾಯುಜ್ಯಂತೇಽಸ್ಮಿನ್ ಬಹವಃಪುರುಷಾಃ ಇತಿ ವ್ಯಾಯೋಗಃ 1. ವ್ಯಾಯೋಗದಲ್ಲಿ ಇತಿವೃತ್ತವು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದುದಾಗಿರಬೇಕು. ಸ್ತ್ರೀ ಪಾತ್ರಗಳು ಕಡಮೆ. ಪಂಚ ಸಂಧಿಗಳಲ್ಲಿ ಗರ್ಭ ಮತ್ತು ವಿಮರ್ಶ ಸಂಧಿಗಳಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಬಹುಮಂದಿ ಪುರುಷ ಪಾತ್ರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರಬೇಕು. ಇದು ಏಕಾಂಕರೂಪಕ. ಇದರಲ್ಲಿ ನಾಯಕನು ಪ್ರಖ್ಯಾತ. "ಸ್ಯಾತೇತಿವೃತ್ತೋ ವ್ಯಾಯೋಗಃ ಸ್ವಲ್ಪಸ್ತ್ರೀಜನಸಂಯುತಃ 1. ಹೀನೋ ಗರ್ಭವಿಮರ್ಶಾಭಿರಾಶ್ರಿತಃ 1. ಏಕಾಂಕಶ್ಚ ಭವೇದಸ್ತ್ರೀ ನಿಮಿತ್ತಸಮರೋದಯಃ 1. ಕೇಶಿಕೀವೃತ್ತಿರಹಿತಃ ಪ್ರಖ್ಯಾತಸ್ತತ್ರ ನಾಯಕಃ" ಸಾಂ ೬೦ ೬ 1.

**ವ್ಯಾಲ ವ್ಯಾಲಂ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ವ್ಯಾಲಾತಿ ಅಭಯಪ್ರದಾನೇನ ತಾನ್ ಆದತ್ತೇ ಆತ್ಮಸಾತ್ಕರೋತಿ—ವಿ+ಆ+ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೬) 1. "ತಾನಾತ್ಮಸಾತ್ ವ್ಯಾಲ ಉಕ್ತಃ ಕರೋತಿ ಯಃ" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ 1. "ಅಹಃ ಸಂವತ್ಸರೋ ವ್ಯಾಲಃ" ವಿಂ ಸಂ 1. 2. ದುಷ್ಟಗಜ, ಮದಿಸಿದ ಆನೆ. ವಿರುದ್ಧ-ಮಾಸಮಂತಾದಲತಿ—ವಿ+ಆ+ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) 1. "ವ್ಯಾಲಂ ಬಾಲಮೃಣಾಲತನ್ತುಭಿರಸೌ ರೋದ್ಧು ಸಮುಜ್ಜಮ್ಭತೇ ಭೇತುಂ ವಜ್ರಮಣಿಂ ಶಿರೀಷಕುಸುಮಪ್ರಾಂತೇನ ಸಂನಹ್ಯತಿ" ಭರ್ತುಂ ನೋತಿಂ ೬ 1. 3. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. "ವ್ಯಾಲಗ್ರಾಹೋ ಯಥಾ ವ್ಯಾಲಂ ಬಲಾದ್ಬದ್ಧರತೇ ಬಿಲಾತ್ 1. ತದ್ಬದ್ಧತಾರಿಮಾದಾಯ ತೇನೈವ

ಸಹ ಮೋದತೇ" ಹಿತೋಂ ೩-೨೯ 1. 4. ವ್ಯಾಘ್ರ, ಹುಲಿ. 5. ಕ್ರೂರಪ್ರಾಣಿ, ಹಿಂಸಿಸುವ ಕಾಡುಪ್ರಾಣಿ. (ವಿಂ) 6. ಕ್ರೂರ, ಉಗ್ರ, ಘೋರವಾದ, ದುಷ್ಟ. "ವ್ಯಾಲೋ ದುಷ್ಟಗಜೇ ಸರ್ಪೇ ಶ್ವಾಪದೇ ನಾನ್ಯವತ್ಸಲೇ" ಮೇದಿಂ 1. "ವ್ಯಾಲದ್ವಿಪಾ ಯನ್ತುಭಿರನ್ಮದಿಷ್ಣವಃ ಕಥಾಶ್ವಿದಾರಾದಪಥೇನ ನಿನ್ವಿರೇ" ಮಾಘಂ ೧೨-೨೮ 1.

**ವ್ಯಾಲಕ ವ್ಯಾಲಕಂ** (ಪುಂ) ದುಷ್ಟಗಜ. ವ್ಯಾಲ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" 1.

**ವ್ಯಾಲಗ್ರಾಹ ವ್ಯಾಲಗ್ರಾಹಂ** (ಪುಂ) ಹಾವಾಡಿಗೆ, ಸರ್ಪವನ್ನು ಹಿಡಿಯುವವನು. ವ್ಯಾಲಂ ಗೃಹ್ಣಾತಿ—ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಅಙ್" (೩-೨-೧) 1. "ವ್ಯಾಲಗ್ರಾಹಾನುಷ್ಠವೃತ್ತಿನನ್ಯಾಶ್ಚ ವನಚಾರಿಣಃ" ಮನುಂ ೮-೨೬೦ 1.

**ವ್ಯಾಲಗ್ರಾಹಿನ್ ವ್ಯಾಲಗ್ರಾಹಿನ್** (ಪುಂ) ಹಾವಾಡಿಗೆ, ಹಾವನ್ನು ಹಿಡಿಯುವವನು. ವ್ಯಾಲಂ ಗೃಹ್ಣಾತಿ—ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಙಿಃ" (೩-೨-೨೮) 1.

**ವ್ಯಾಲಮ್ಬ ವ್ಯಾಲಮ್ಬಂ** (ಪುಂ) 1. ಕೆಂಪು ಹರಳುಗಿಡ. (ವಿಂ) 2. ಜೋಲಾಡುವ.

**ವ್ಯಾಲೋಲ ವ್ಯಾಲೋಲಂ** (ವಿಂ) 1. ಅಲುಗಾಡುವ, ಚಂಚಲವಾದ. 2. ಕೆದರಿರುವ, ಚೆದರಿರುವ.

**ವ್ಯಾವರ್ತ ವ್ಯಾವರ್ತಂ** (ಪುಂ) 1. ಸುತ್ತುವರಿಯುವುದು, ಸುತ್ತುಗಟ್ಟುವುದು. ವಿ + ಆ + ವೃತ (ವರ್ತನೆ) ಭಾವೇ "ಘಙ್" (೩-೩-೧೮) 1. 2. ಪರಿಭ್ರಮಣ, ಸುತ್ತುಲೂ ತಿರುಗುವುದು. 3. ನಾಭಿಯ ಸುಳಿ, ಹೊಕ್ಕುಳಿಲ್ಲಿರುವ ರೋಮದ ಸುಳಿ.

**ವ್ಯಾವರ್ತಕ ವ್ಯಾವರ್ತಕಂ** (ವಿಂ) ಪರಸ್ಪರ ಭೇದ ತೋರಿ ಸುವ, ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಭೇದವನ್ನು ತೋರಿಸಿ ಬೇರ್ಪಡಿಸುವ. ವಿ + ಆ + ವೃತ (ವರ್ತನೆ) + ಣಿच् "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) 1. ಸಾಸ್ತಾದಿಮತ್ವಂ ಮಹಿಷಾದಿವ್ಯಾವರ್ತಕಮ್ 1. ಗೋವಿಗೂ ಮಹಿಷಕ್ಕೂ ವ್ಯತ್ಯಾಸವನ್ನು ತೋರಿಸುವ ಸಾಸ್ತಾದಿ (ಗಂಗೆದೊಗಲು ಮೊದಲಾದುವು) ಗಳು ಗೋವಿನಿಂದ ಮಹಿಷವನ್ನು ಬೇರ್ಪಡಿಸುವುದು. ಅದುದರಿಂದ ಸಾಸ್ತಾದಿಗಳು ವ್ಯಾವರ್ತಕ.

**ವ್ಯಾವರ್ತನ ವ್ಯಾವರ್ತನಂ** (ನಂ) 1. ಸುತ್ತುವರಿಯುವುದು, ಸುತ್ತುಗಟ್ಟುವುದು. ವಿ + ಆ + ವೃತ (ವರ್ತನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) 1. 2. ಸುತ್ತುಲೂ ತಿರುಗುವುದು, ಪರಿಭ್ರಮಣ. "ವ್ಯಾವರ್ತನೇರಹಿಪತೇರಯಮಾಹಿತಾಃ ಸಂ ವ್ಯಾಲಿಖನ್ನಿವ ವಿಭಾತಿ ಸ ಮಂದರಾದ್ರಿಃ" ಕಿರಾಂ ೪-೩೦ 1. 3. ಪರಸ್ಪರ ಭೇದ ತೋರಿಸಿ ಬೇರ್ಪಡಿಸುವುದು.



**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕ** (ವಿಂ) ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕದಲ್ಲಿರುವ, ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕವೇ ಪ್ರಯೋಜನವಾಗಿರುವ. ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ: ಪ್ರಯೋಜನ ಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯)। "ಕಾಲತ್ರಯೇ ಜಾತುಕಾಲೇ ಪ್ರತಿಗತಿಸಮಯೇ ತಥಾ। ಬಾಧಾಭಾವಾತ್ಯಾರ್ಥಾನಾಂ ಸತ್ವತ್ರೇವಿವಿಧ್ಯ-ಮಿಷ್ಯತೇ। ತಾತ್ವಿಕಂ ಬ್ರಹ್ಮಣಃ ಸತ್ವಂ ವ್ಯೋಮಾದೇವ್ಯಾವಿಹಾರಿಕಮ್। ಕ್ಷಯಾದೇರರ್ಥಜಾತಸ್ಯ ಪ್ರಾತಿಭಾಸಿಕಮಿಷ್ಯತೇ"। ಪ್ರಾತಿಭಾಸಿಕ-ಸತ್ಯತ್ವೇಽಪಿ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕಸತ್ಯತ್ವಾಭಾವೇನ ಪ್ರತಿಪನ್ನೋಪಾಧೌ ಪ್ರತಿ-ಯೋಗಿತ್ವಸಂಭವಾತ್" ಸಂ ೬೦ ಸಂ ೧।

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಹಿಂತಿರುಗಿದ, ಹಿಮ್ಮುಖ ವಾದ, ಉತ್ಸಾಹವಿಲ್ಲದೆ ತ್ಯಜಿಸಬಂದ. ವಿ + ಆ + ವೃತ್ (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ವೇದಾಮ್ಯಾಸಜಃ: ಕಥಂ ನು ವಿಷಯವ್ಯಾವೃತ್ತಕೌತೂಹಲ: ನಿರ್ಮಿತುಂ ಪ್ರಭವೇನ್ಮನೋಹರಮಿದಂ ರೂಪಂ ಪುರಾಣಂ ಮುನಿ:" ವಿಕ್ರಂ ೧-೧೦। 2. ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೇರೆತೋರಿಸಿ ಇನ್ನೊಂದರಿಂದ ಪ್ರತ್ಯೇಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಇಲ್ಲದಿರುವ, ನಿವೃತ್ತಿಹೊಂದಿದ, ಇನ್ನೊಂದರಿಲ್ಲದ. "ಸಾಧ್ಯೇ ನಿಶ್ಚಿತಮನ್ವಯೇನ ಘಟಿತಂ ವಿಭ್ರತ್ ಸೃಷ್ಟೇ ಸ್ಥಿತಂ ವ್ಯಾವೃತ್ತಂ ಚ ವಿಪಕ್ಷತೋ ಭವತಿ ಯತ್ ತತ್ ಸಾಧನಂ ಸಿದ್ಧಯೇ" ಮುಕ್ತಾಂ ೪-೧೦। 4. ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ವ್ಯಾವೃತ್ತ-ಗತಿರಿದಾನೇ ಕುಸುಮಸ್ತೇಯಸಾಧವಸಾತ್" ಕುಮಾಂ ೨-೩೪।

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊಂದಿದವು, ಇನ್ನೊಂದರಿಂದ ಪ್ರತ್ಯೇಕಿಸುವುದು. ವಿ + ಆ + ವೃತ್ (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತುನ್" (೩-೩-೧೪)। "ವ್ಯಾವೃತ್ತಕಸ್ಯೇವ ಲಕ್ಷಣತ್ವೇ ವ್ಯಾವೃತ್ತಾವಿಭೇದತ್ವಾದೌ ಚಾತಿವ್ಯಾಪ್ತಿ:"। 2. ಸುತ್ತುಗಟ್ಟುವುದು, ಸುತ್ತುವರಿಯುವುದು. 3. ಸುತ್ತುಲೂ ತಿರುಗುವುದು, ಪರಿಭ್ರಮಣ. 4. ತ್ಯಜಿಸುವುದು, ಕಳುಹಿಸಿಬಿಡುವುದು. 5. ಪ್ರಯೋಜನ.

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕ** (ಪುಂ) 1. ವೇದವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ, ಬಾದರಾಯಣ ಮುನಿ, ಕೃಷ್ಣದ್ವೈಪಾಯನಮುನಿ. ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕ ಪೃಥಕ್ ಕರೋತಿ (ವೇದಾನ್)—ವಿ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಅನ್" (೩-೨-೧)। ಅಖಂಡ ವೇದರಾಶಿಯನ್ನು ನಾಲ್ಕು ಭಾಗಗಳಾಗಿ ಮಾಡಿ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಶಾಖೆಗಳಾಗಿ ಮಾಡಿದುದರಿಂದ "ವ್ಯಾಸ" ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಬ್ರಹ್ಮಾದಿ ದೇವತೆಗಳ ಪ್ರಾರ್ಥನೆ ಯಂತೆ ಪರಮಾತ್ಮನು ವೇದಗಳ ವಿಭಾಗಕ್ಕಾಗಿ ವ್ಯಾಸನಾಗಿ ಅವತರಿಸಿದನು. "ಯೋ ವ್ಯಾಸ ವೇದಾಶ್ವತುರ: ತಪಸಾ ಮಗವಾನೃಪಿ:। ಲೋಕೇ ವ್ಯಾಸತ್ವಮಾಪೇದೇ ಕಾಣ್ಯತಿ ಕೃಣ್ಯತ್ವಮೇವ ಚ" ಭಾಂ ೧। ಅಷ್ಟಾದಶ ಪುರಾಣಗಳೂ ವೇದವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿವಿರಚಿತ ವಾದುವು. ["ಪುರಾಣ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ವ್ಯಾಸ ಎನ್ನುವುದು ಪಟ್ಟದ ಹೆಸರು. ಪ್ರತಿಯೊಂದು ದ್ವಾಪರ ಯುಗದ ಕೊನೆಯಲ್ಲೂ ಒಬ್ಬೊಬ್ಬ ವ್ಯಾಸನು ಅವತರಿಸುತ್ತಾನೆ.

ಸ್ವಯಂಭು, ಪ್ರಜಾಪತಿ, ಉಶನ, ಬೃಹಸ್ಪತಿ ಮುಂತಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ಮಂದಿ ವ್ಯಾಸರು ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ಕಲ್ಪಗಳಲ್ಲಿ ಅವತರಿಸಿದರು. ಈಗ ಕೃಷ್ಣದ್ವೈಪಾಯನಮುನಿಯ ವ್ಯಾಸ ಪಟ್ಟ. ಈ ವ್ಯಾಸರು ಪರಾಶರಮುನಿಯಿಂದ ಸತ್ಯವತಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದರು. ಇದು ವಿಷ್ಣುವಿನ ಹದಿನೇಳನೆಯ ಅವತಾರ. "ತತಃ ಸಪ್ತದಶೇ ಜಾತಃ ಸತ್ಯವತ್ಯಾಂ ಪರಾಶರಾತ್। ಚಕ್ರೇ ವೇದತರೇ: ಶಾಸ್ತ್ರಾ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಪುನೋಽಲ್ಪಮೇಧಸ:" ಭಾಗಂ ೧-೩-೨೧। 2. ವಿಸ್ತರಿಸುವುದು, ಅಗಲವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು, ಹರಡುವುದು. 3. ವಿಷ್ಣು. ಯುಗಾನುಸಾರ ಜನರಿಗೆ ಸುಖ ಬೋಧಾರ್ಥ ವೇದಗಳನ್ನು ವಿಭಜಿಸಿದುದರಿಂದ ವಿಷ್ಣುವು ವ್ಯಾಸ. ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕ ವಿಭಜ್ಯಂತೇ ವೇದಾಃ ಅನೇನ—ವಿ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) ಕರಣ "ಘನ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ತ್ರಯಾಶ್ವತುರ್ಥಾ ಕರಣಾತ್ ವ್ಯಾಸ ಇತ್ಯುಚ್ಯತೇ ಕುಃ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ। "ದಿವಿಸ್ಪಕ್ ಸರ್ವದ್ ವ್ಯಾಸ:" ವಿಂ ಸಂ ೧। 4. ಒಂದು ಗೋಳದ ಮಧ್ಯರೇಖೆ, ಒಂದು ವೃತ್ತದ ಅಗಲದ ಅಳತೆ, ಅಡ್ಡಳತೆ. 5. ಸಮಾಸದಲ್ಲಿ ಪದಗಳ ವಿಭಜನೆ, ಪದಗಳನ್ನು ಬಿಡಿಸಿ ಹೇಳುವುದು, ವಿಗ್ರಹವಾಕ್ಯ. ರಾಜಪುರುಷ: ಎಂಬಲ್ಲಿ ರಾಜ: ಪುರುಷ: ಎಂದು ವಿಗ್ರಹ ತೋರಿಸುವುದು ವ್ಯಾಸವಾಕ್ಯ. 6. ಪೌರಾಣಿಕ, ಪುರಾಣ ವನ್ನು ಪರಿಸಂವಹನ. "ಯ एवं ವಾಚಯೇದ್ವಿಪ್ರ: ಸ ಬ್ರಹ್ಮಾನ್ ವ್ಯಾಸ ಉಚ್ಯತೇ"।

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದ ವನು, ಒಂದು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಅನುರಕ್ತನಾದವನು, ಕಾರ್ಯ ನಿರ್ವಹಣೆಯಲ್ಲಿ ಶ್ರದ್ಧೆಯುಳ್ಳವನು. ವಿ + ಆ + ಷಜ (ಸಜ್ಜೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸೇರಿ ಕೂಂಡಿರುವ. ವಿಶೇಷಣ ಆಸಕ್ತಃ। 3. ಬಿಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವ, ಸಂಬಂಧವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿರುವ.

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಸಮೀಪ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವುದು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವುದು, ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವುದು. ವಿ + ಆ + ಷಜ (ಸಜ್ಜೆ) "ಘನ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಕಾರ್ಯಶ್ರದ್ಧೆ, ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಒಂದು ವಿಧ ಅಭಿಮಾನ ದಿಂದ ದೃಢ ಪ್ರಯತ್ನ. 3. ವಿಶೇಷ ಆಸಕ್ತಿಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಚಿಂತನೆ, ಹೆಚ್ಚು ಶ್ರದ್ಧೆಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಆಭ್ಯಾಸ. 4. ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿರಿಸುವಿಕೆ, ಅಗಲಿಸುವುದು, ಬೇರ್ಪಡಿಸುವುದು.

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕ** (ವಿಂ) ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಷೇಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಆ + ಷಿವ (ಗತ್ಯಾನ್) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

**ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಕ** (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡ್ಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ವಿ + ಆ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯಾಂ) "ಕ್ತ:"



(೩-೨-೧೦೨) 1. ಹಿಮೈಟ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ವ್ಯರ್ಥಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಫಲಿಸದಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. "ಮಹೋಮಿಮಿವ್ಯಹಿತವಾಚ್ಛಿತಾರ್ಥೇವಿಂಶದಿವಾಮ್ಯಾಶ-ಗತೆವಿಲಿಲಿ" ಮಾಘಂ ೩೫೦.

ವ್ಯಾಹೃತಿ ನ್ಯಾಹತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವುದು, ತಡೆಯುವುದು. ವಿ + ಆ + ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತಿಯು:) "ಕ್ವಿನ್" (೩-೩-೯೪) 2. ವ್ಯರ್ಥಪಡಿಸುವುದು. 3. ಹಿಮೈಟ್ಟಿಸುವುದು, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಓಡಿಸುವುದು.

ವ್ಯಾಹರಣ ನ್ಯಾಹರಣ (ನಂ) 1. ಮಾತಾಡುವುದು. 2. ಹಾಸ್ಯಮಾಡುವುದು.

ವ್ಯಾಹರತ್ ನ್ಯಾಹರತ್ (ವಿಂ) ಹೇಳುತ್ತಿರುವ, ಮಾತಾಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ+ಆ+ಹ್ (ಹರಣ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) 1. -ಂತಿ-೨೯. "ಸುಮುಖಿ ಮಮ ಸುಮಿತ್ರಾ ಸತ್ಯಮಮ್ಬಾ ಯದಾಸೀ: ತದಭಜಮವಿತಕ್ ಮಾತು-ಸಂಪರ್ಕಸೌಖ್ಯಮ್ | ಅಹಹ ವಿಧಿವಿಪಾಕಾಹ್ವಾಹರಂತಿ ದುರ್ವಿಕ್ವಿ ತ್ವಮಸಿ ವಿಪಿನಮಚ್ಯ ಮವ್ಯಮಾಮ್ಬಾ ಹಿ ಜಾತಾ" ಚಂ ರಾಂ |

ವ್ಯಾಹಾರ ನ್ಯಾಹಾರ (ಪುಂ) 1. ಉಕ್ತಿ, ಮಾತು. ವಿ+ಆ+ಹ್ (ಹರಣ) "ಘ" (೩-೩-೧೮) 1. "ತದಪಿ ಕ್ವಲು ಮೇ ಸ ವ್ಯಾಹಾರಸ್ತುರಕ್ಷಮರಕ್ಷಿಣಾಮ್" ತಂ ರಾಂ ೪-೨೮ 2. ಪರಿಹಾಸ್ಯ, ಕುಟೋದ್ಯ, ಲೇವಡಿ.

ವ್ಯಾಹೃತ ನ್ಯಾಹೃತ (ವಿಂ) 1. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ+ಆ+ಹ್ (ಹರಣ) "ಕ್ವ:" (೩-೨-೧೦೨) 1. "ತಯಾ ವ್ಯಾಹೃತ-ಸಂದೇಶಾ ಸಾ ಬಭೌ ನಿಭೃತಾ ಪ್ರಿಯೇ" ಕುಮಾಂ ೬-೨ 2. ಮಾತಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ವ್ಯಾಹೃತಾ ಪ್ರತಿವಚೋ ನ ಸಂದಧೇ ಗನ್ತುಮೇಚ್ಛದವಲಮ್ಬಿತಾಂಶುಕಾ" ಕುಮಾಂ ೮-೨ 1.

ವ್ಯಾಹೃತಿ ನ್ಯಾಹೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಾತು, ಉಕ್ತಿ. ವಿ + ಆ + ಹ್ (ಹರಣ) "ಕ್ವಿನ್" (೩-೩-೯೪) 1. "ನ ಹಿಶ್ವರವ್ಯಾಹೃತಯ: ಕದಾಚಿತ್ಪುಣ್ಯಾಂತಿ ಲೋಕೇ ವಿಪರೀತಮರ್ಯಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೬೩ 2. ಹೇಳಿಕೆ, ನಿರೂಪಣೆ. "ಭೂತಾರ್ಥ-ವ್ಯಾಹೃತಿ: ಸಾ ಹಿ ನ ಸ್ತುತಿ: ಪರಮೇಷ್ಠಿನ:" ರಘುಂ ೧೦-೩೩ 3. ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಸಂಧ್ಯಾವಂದನ ಮಾಡುವಾಗ ಪ್ರಣವ ಪೂರ್ವಕ ಜಪಿಸುವ ಮಂತ್ರ. ಇದು ಭೂ: ಭುವ: ಮತ್ತು ಸುವ: ಅಥವಾ ಸ್ವರ್ ಎಂದು ಮೂರೂ ವ್ಯಾಹೃತಿಗಳು. ಹೀಗೆಯೇ ಪಂಚವ್ಯಾಹೃತಿಗಳೂ ಮತ್ತು ಸಪ್ತವ್ಯಾಹೃತಿಗಳೂ ಇರುವುವು.

ವ್ಯುತ್ಕ್ರಮ ವ್ಯುತ್ಕ್ರಮ (ಪುಂ) ಕ್ರಮ ತಪ್ಪುವುದು, ದಾರಿ ಬಿಟ್ಟು ನಡೆಯುವುದು, ಉಲ್ಲಂಘಿಸುವುದು, ಮೀರಿ ನಡೆಯುವುದು. ವಿ+ಉತ್+ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ) "ಘ" (೩-೩-೧೮) 1.

ವ್ಯುತ್ಥಾನ ವ್ಯುತ್ಥಾನ (ನಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆವುದು. 2. ಎರಡುಪಾದ ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ. ವಿ + ಉತ್ + ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) 1. 3. ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ ದಿಂದ ಕಾರ್ಯ ನಡೆಸುವುದು. "ವ್ಯುತ್ಥಾನಂ ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ ಕೃತ್ಯೇ ವಿರೋಧಾಚರಣೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ | 4. ವಿರೋಧಿಸುವುದು, ಪ್ರತಿಭಟಿಸುವುದು, ನಿಷೇಧಿಸುವುದು, ತಡೆಯುವುದು. 5. ಗಜವನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಬ್ಬಿಸುವುದು. "ಯಾವ-ಚಕ್ರೇ ನಾಜ್ಜನಂ ಬೋಧನಾಯ ವ್ಯುತ್ಥಾನಜ್ಞೋ ಹಸ್ತಿಚಾರಿ ಮದಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೧೮-೨೬ | "ವ್ಯುತ್ಥಾನಂ ಪ್ರತಿರೋಧನೇ | ವಿರೋಧಾಚರಣೇ ಸ್ವೀಕೃತೌ" ಹೇಮಂ |

ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿ ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶಬ್ದಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಶಬ್ದಗಳ ನಿಷ್ಪತ್ತಿ, ಶಬ್ದಗಳ ಹುಟ್ಟು. ಧಾತು ಮತ್ತು ಪ್ರಾತಿಪದಿಕಗಳಿಗೆ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಹೇಳುವುದು. ವಿ + ಉತ್ + ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ವಿನ್" (೩-೩-೯೪) 1. 2. ಶಬ್ದಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನ, ಶಬ್ದಗಳ ಅರ್ಥಬೋಧನೆ ಶಕ್ತಿ. 3. ಪಾಂಡಿತ್ಯ, ವಿದ್ವತ್ತು, ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನ. "ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿರಾವಿಜಿತಕೋವಿದಾಪಿ ನ ರಜ್ಜನಾಯ ಕ್ರಮತೇ ಜಡಾನಾಮ್" 4. ವಿಗ್ರಹವಾಕ್ಯ. ರಾಜ: ಪುರುಷ: ಪದಸ್ಯ ಅರ್ಥ: ಇತ್ಯಾದಿ. 5. ವ್ಯವಹಾರ. ಲೋಕವ್ಯವಹಾರ: |

ವ್ಯುತ್ಪನ್ನ ವ್ಯುತ್ಪನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನ ಪಡೆದವನು. ವಿ + ಉತ್ + ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ವ:" (೩-೪-೭೨) 1. 2. ಪ್ರಕೃತಿ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳ ಜೋಡಣೆಯಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಶಬ್ದ. ವ್ಯಾಕರಣವ್ಯುತ್ಪನ್ನಶಬ್ದಜ್ಞಾನಾಧೀನಂ ಶಾಸ್ತ್ರಾಂತರಜ್ಞಾನಮ್ |

ವ್ಯುತ್ಪಾದಕ ವ್ಯುತ್ಪಾದಕ (ವಿಂ) 1. ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಯನ್ನು ಹೇಳುವ, ಪ್ರಕೃತಿಪ್ರತ್ಯಯಗಳ ಜೋಡಣೆಯಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ. ವಿ + ಉತ್ + ಪದ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) 1. 2. ಜ್ಞಾನ ವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ, ಜ್ಞಾನೋಪದೇಶ ಮಾಡುವ. ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಸಾ ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಬ್ದಜ್ಞಾನ ಸಂಪಾದಿಸುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ. ವಿ + ಉತ್ + ಪದ (ಗತೌ) + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨) 1.

ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಸು ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಸು (ವಿಂ) ಶಬ್ದಜ್ಞಾನ ಸಂಪಾದಿಸಲು ಆಸೆಯುಳ್ಳವನು. ವಿ+ಉತ್+ಪದ (ಗತೌ)+ಸನ್ "ತ:" (೩-೨-೧೬೮) 1.

ವ್ಯುದಸ್ತ ವ್ಯುದಸ್ತ (ವಿಂ) 1. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಬಿಸಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ+ಉತ್+ಅಸ್ತ (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಕ್ವ:" (೩-೨-೧೦೨) 1. 3. ತಿರಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ತಳ್ಳಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು.



**ವ್ಯಾಸ ವ್ಯಾಸ (ಪುಂ)** 1. ತಳ್ಳುಹಾಕುವುದು. ತಿರಸ್ಕರಿಸುವುದು. ವಿ+ಉತ್+ಅಸು (ಪ್ರಾಪಣ) "ಘ" (3-2-102)। 2. ಪರಿತ್ಯಾಗ, ಬಿಟ್ಟುಬಿಡುವುದು, ತೊರೆದುಬಿಡುವುದು.

**ವ್ಯುಷ್ಠ ವ್ಯುಷ್ಠ (ನಂ)** 1. ಪ್ರಭಾತ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲ. ವಿ+ವಸ (ನಿವಾಸ) "ಕ್" (3-2-102)। "ವ್ಯುಷ್ಠಂ ಪ್ರಯಾಣಂ ಚ ವಿಯೋಗವೇದನಾವಿದ್ವನ್ನಾರೀಕಮಭೂತ್ಸಮಂ ತದಾ" ಮಾಘಂ 12-4। 2. ದಿವಸ, ಹಗಲು. 3. ಫಲ, ಪರಿಣಾಮ, ಫಲಿತಾಂಶ. (ವಿಂ) 4. ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ+ಉಷ (ದಾಹ) "ಕ್" (3-2-102)। 5. ವಾಸಮಾಡಿದ. "ಸಾ ವ್ಯುಷ್ಠಾ ರಜನೀ ತತ್ರ ಪಿತುರ್ವೇಶಮನಿ ಭಾಮಿನೀ" ಭಾಂ ವನಂ 66-28। "ವ್ಯುಷ್ಠಂ ಕಲ್ಯಾಣಂ ತ್ರಿವಿಧಮಿತಿ" ಮೇಧಿಂ 1. 6. ಹಳೆಯದಾದ, ನಿಯತಕಾಲವನ್ನು ಮೀರಿದ. "ಯಾತಯಾಮಂ ಗತರಸಂ ಪುತಿ-ಪರ್ಯುಷಿತಂ ಚ ತತ್" ಗೀತಾ 19-10। "ವ್ಯುಷ್ಠಂ ಕಲೇ ದಿನೇ ಪರ್ಯುಷಿತೇ ಪ್ರಭಾತೇ ಚ" ಹೇಮಂ 1.

**ವ್ಯುಷ್ಠಿ ವ್ಯುಷ್ಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಫಲ. ವಿ+ವಸ (ನಿವಾಸ) "ಕ್" (3-2-102)। "ಮಹತಸ್ತಪಸೋ ವ್ಯುಷ್ಠಾ ಪಶ್ಯ-ಶ್ಚೋಕೋ ಪರಾವರೋ" ಭಾಂ 1. 2. ಸಮೃದ್ಧಿ. 3. ಪ್ರಭಾತ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲ. 4. ಸ್ತುತಿ, ಹೊಗಳಿಕೆ. "ವ್ಯುಷ್ಠಿಃ ಸ್ತುತಿ-ಕಲ್ಪದ್ವಿಷು" ಹೇಮಂ 1.

**ವ್ಯೂಹ ವ್ಯೂಹ (ವಿಂ)** 1. ವಿಸ್ತಾರವಾದ, ಅಗಲವಾದ. ವಿಶೇಷಣ ಉಚ್ಯತೇ—ವಿ+ವಹ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಕ್" (3-2-102)। "ವ್ಯೂಹೋರಸ್ಕೋ ವೃಷಸ್ಕಂಧಃ ಸಾಲಪ್ರಾಶುಃ ಮಾಭುಜಃ" ರಘುಂ 1-13। 2. ಕ್ರಮವಾಗಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಕ್ರಮವಾಗಿ ನಿಲ್ಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ವ್ಯೂಹಾಕಾರವಾಗಿ ರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ದೃಷ್ಟ್ವಾ ತು ಪಾಂಡವಾನೀಕಂ ವ್ಯೂಹಂ ದುರ್ಯೋಧನಸ್ತದಾ | ಆಚಾರ್ಯಮುಪಸಂಗಮ್ಯ ರಾಜಾ ವಚನಮಬ್ರವೀತ್" ಗೀತಾ 1-2। 4. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಂತಿರುವ, ದೃಢವಾಗಿ ಕೂಡಿಸಿದ, ಅಡಕವಾಗಿರುವ. 5. ದೊಡ್ಡದಾದ. "ವ್ಯೂಹಾ ವ್ಯಸ್ತೋರಸಂಹತಾಃ" ಹೇಮಂ 1. 6. ಮದುವೆಯಾದ. "ವ್ಯೂಹಾಂ ತೇನ ಜಯಶ್ರಿಯಮ್" ಯಾದಂ 22-144। 7. ಧರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

**ವ್ಯೂಹಕಚ್ಚುಟ ವ್ಯೂಹಕಚ್ಚುಟ (ವಿಂ)** ಕವಚ ತೊಟ್ಟಿರುವವನು. ವ್ಯೂಹಃ ಧೃತಃ ಕಚ್ಚುಟೋ ಯೇನ | "ದಂಶಿತೋ ವ್ಯೂಹ-ಕಚ್ಚುಟಃ" ಅಮಂ 1.

**ವ್ಯೂಹಿ ವ್ಯೂಹಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಕ್ರಮವಾಗಿ ಇಡುವುದು. 2. ಕ್ರಮವಾಗಿ ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು. 3. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲಿಸುವಿಕೆ, ದೃಢವಾಗಿ ಅಳವಡಿಸುವಿಕೆ. ವಿ+ವಹ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಕ್" (3-2-102)। 4. ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಅಗಲವಾಗಿರುವುದು.

**ವ್ಯೂತ ವ್ಯೂತ (ವಿಂ)** 1. ನೇಯಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಹೆಣೆಯಲ್ಪಟ್ಟು. ವಿ+ಉಯಿ (ತನ್ತುಸಂತಾನ) "ಕ್" (3-2-102)। 3. ಹೊಲಿಯಲ್ಪಟ್ಟು.

**ವ್ಯೂತಿ ವ್ಯೂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ನೇಯಿಗೆ, ನೇಯುವುದು. 2. ಹೊಲಿಯುವುದು. 3. ಹೆಣೆಯುವುದು. ವಿ+ಉಯಿ (ತನ್ತುಸಂತಾನ) "ಕ್" (3-2-102)।

**ವ್ಯೂಹ ವ್ಯೂಹ (ಪುಂ)** 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. ವಿ+ಉಹ (ವಿತರ್ಕ) "ಘ" (3-2-102)। 2. ರಚನೆ, ನಿರ್ಮಾಣ, ಸೃಷ್ಟಿ. "ದುರ್ದೇಶಮಂತ್ರಾಂ ದ್ವಿರದೇಂದ್ರಯಾತಾಂ ವ್ಯೂಹಕ್ರಮವ್ಯಕ್ತವಿಚಿತ್ರ-ಗಾತ್ರೀಮ್" ಯಾದಂ 13-18। 3. ತರ್ಕ, ಊಹೆ. 4. ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಸೇನೆಯನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸುವ ಕ್ರಮ. "ವ್ಯೂಹಸ್ತು ಬಲವಿನ್ಯಾಸಃ" ಅಮಂ 1. ದ್ರೋಣಾಚಾರ್ಯರು ಸೇನೆಯನ್ನು ಚಕ್ರಾಕಾರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲಿಸಿ ರಚಿಸಿದ ಪದ್ಧತ್ಯೂಹದೊಳಗೆ ಸಿಲುಕಿಕೊಂಡು ಅಭಿಮಾನುವು ಹತನಾದನು. "ಪಶ್ಯವ್ಯೂಹೋ ಮಹಾರಾಜ ಆಚಾರ್ಯಣಾಭಿಕಲ್ಪಿತಃ | ತತ್ರ ಪಶ್ಯೋಪಮಾಃ ಸರ್ವೇ ರಾಜಾನೋ ವಿನಿವೇಶಿತಾಃ" ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ 34-20। ಈ ವ್ಯೂಹರಚನೆಯು (1) ದಂಡಃ (2) ಭೋಗಃ (3) ಅಸ್ತ್ರಮಂಡಲಮ್ ಮತ್ಯು (4) ಅಸಂಹತಃ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. "ಸಮಗ್ರಸ್ಯ ತು ಸೈನ್ಯಸ್ಯ ವಿನ್ಯಾಸಃ ಸ್ಥಾನಭೇದತಃ | ಸ ವ್ಯೂಹ ಇತಿ ವಿಖ್ಯಾತೋ ಯುದ್ಧೇಷು ಪೃಥಿವೀಭುಜಾಮ್ || ವ್ಯೂಹಭೇದಾಸ್ತು ಚತ್ವಾರಃ ದಂಡೋ ಭೋಗೋಽಸ್ತ್ರಮಂಡಲಮ್ | ಅಸಂಹತಶ್ಚ ನಿರ್ಣಿತಾಃ ನೇತಿಸಾರಾದಿಸಮ್ಮತಾಃ || ಅನ್ಯೇಽಪಿ ಪ್ರಕೃತಿವ್ಯೂಹಾಃ ಕೌಶ್ಚಿಕಾದಯಃ ಕ್ವಚಿತ್" || 5. ದೇಹ, ಶರೀರ. 6. ವಾಸುದೇವ ಸಂಕರ್ಷಣ ಪ್ರದ್ಯುಮ್ನ ಮತ್ಯು ಅನಿರುದ್ಧಭೇದದಿಂದ ನಾಲ್ಕು ವಿಧವಾಗಿರುವ ಪರಮಾತ್ಮ. ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿ ಮೊದಲಾದ ಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣನು ಈ ನಾಲ್ಕು ರೂಪ ದಿಂದಿರುವನು.

**ವ್ಯೂಹನ ವ್ಯೂಹನ (ನಂ)** 1. ಸೇನೆಯ ವಿನಾಸ, ಸೇನೆಯನ್ನು ವ್ಯೂಹಗಳಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು. ವಿ+ಉಹ (ವಿತರ್ಕ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-2-102)। 2. ದೇಹದ ಅವಯವಗಳ ರಚನೆ, ನಿರ್ಮಾಣ.

**ವ್ಯೂಹಪಾಣಿ ವ್ಯೂಹಪಾಣಿ (ಪುಂ)** ವ್ಯೂಹದ ಹಿಂಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ ಸೇನೆ, ವ್ಯೂಹದ ಸೇನೆಗೆ ಸಹಾಯವಾಗಿರುವ ಸೇನೆ. ವ್ಯೂಹಸ್ಯ ಪಾಣಿಃ ಪೃಷ್ಠಭಾಗಃ |

**ವ್ಯೂಹಾರ ವ್ಯೂಹಾರ (ಪುಂ)** ಕಮ್ಮಾರ, ಕಬ್ಬಿಣದ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು. ವ್ಯೂಹಾರೋತಿ—ಛಕ್ರಾ (ಕರಣ) "ಅಘ್" (3-2-1)। "ವ್ಯೂಹಾರೋ ಲೋಹಾರಕಃ" ಅಮಂ 1.



ವ್ಯೋಮಕೇಶ ವ್ಯೋಮಕೇಶ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.  
ವ್ಯೋಮಿನಿ ಆಕಾಶ ಕೇಶಾ ಯಸ್ಯ । “ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರಮಸೋಲೋಕೇ  
ಪ್ರಕಾಶಂತೇ ರುಚಿಶ್ಚ ಯಾಃ । ತಾಃ ಕೇಶಸಂಜಿತಾಸ್ಯಕ್ಷೋ ವ್ಯೋಮಕೇಶ-  
ಸ್ತತಃ ಸ್ಮೃತಃ” ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ ೨೦೩-೧೩೪ ।

ವ್ಯೋಮಕೇಶಿನ್ ವ್ಯೋಮಕೇಶಿನ್ (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ,  
ಪರಶಿವ ವ್ಯೋಮಿನಿ ಕೇಶಾ ಯಸ್ಯ ಸಂತಿ “ಇನಿಃ”  
(೪-೨-೧೧೫) । ಗಂಗಾವತಾರಕಾಲದಲ್ಲಿ ಶಿರಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ  
ಗಂಗೆಯನ್ನು ಧರಿಸುವಾಗ ಪರಮೇಶ್ವರನ ಕೇಶಗಳೆಲ್ಲವೂ  
ಗಗನದಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಪಿಸಿದ್ದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ವ್ಯೋಮಗಜ್ಞಾ ವ್ಯೋಮಗಂಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಕಾಶಗಂಗೆ.

ವ್ಯೋಮಚಾರಿನ್ ವ್ಯೋಮಚಾರಿನ್ (ಪುಂ) ಅಂತರಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ  
ಸಂಚರಿಸುವ—1. ದೇವತೆಗಳು. 2. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ವ್ಯೋಮಿನಿ  
ಚರತಿ—ಚರ (ಗತೌ) “ಣಿನಿಃ” (೩-೨-೭೮) ।  
“ವ್ಯೋಮಚಾರಿ ತು ನಿರ್ದಿಷ್ಟೋ ದೇವತಾಃ ವಿಹಂಜತೇ” ಮೇದಿಂ ।  
3. ವಾಯುಸ, ಕಾಣೆ. 4. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. “ವ್ಯೋಮಚಾರಿಃ  
ಸ್ವಗೇ ದೇವೇ ಚಿರಜೀವಿವಿದ್ವಿಜಾತಯೋಃ” ವಿಶ್ವಂ ।

ವ್ಯೋಮಧೂಮ ವ್ಯೋಮಧೂಮ (ಪುಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ.  
ವ್ಯೋಮ್ನೋ ಧೂಮಃ ।

ವ್ಯೋಮನ್ ವ್ಯೋಮನ್ (ನಂ) 1. ಆಕಾಶ, ಅಂತರಿಕ್ಷ.  
ವ್ಯಯತಿ—ವ್ಯವ (ಸಂವರಣ) “ಮನಿನ್” (೩ಂ ೪-೧೫೧) ।  
ನಿಪಾಂ । ವ್ಯವತಿ—ವಿ + ಅವ (ರಕ್ಷಣ) “ಮನಿನ್”  
(೩-೨-೭೫) । ಯದ್ವಾ ವ್ಯವತಿ ವ್ಯಾಪ್ನೋತಿ ಸರ್ವಂ ಜಗತ್ “ಮನ್” ।  
ಯದ್ವಾ ವಿಶೇಷಣಾವತಿ—ವಿ + ಅವ “ಮನಿನ್” । “ವ್ಯೋಮಾಽ-  
ಮ್ಯಲಕ್ಷಯತ ಕುಲೈಸ್ತದಿತಿ ತಾಮಿವೋಚ್ಚಃ” ಕುಮಾಂ ೧೭-೩೮ ।  
2. ಜಲ, ನೀರು. 3. ಅಭ್ರಕ, ಕಾಗೆಬಂಗಾರ. 4. ಸೂರ್ಯನ  
ಪೂಜಾಗೃಹ. “ವ್ಯೋಮ ವಾರಿಣಿ ಚಾಕಾಶೋ ಭಾಸ್ಕರಸ್ಯಾಚನಾ-  
ಶ್ರಯೇ” ಮೇದಿಂ ।

ವ್ಯೋಮಮಂಡಲ ವ್ಯೋಮಮಂಡಲ (ನಂ) 1. ಪತಾಕೆ,  
ಧ್ವಜ, ಬಾವುಟ. 2. ಆಕಾಶ. ವ್ಯೋಮ್ನೋ ಮಂಡಲಮ್ ।

ವ್ಯೋಮಯಾನ ವ್ಯೋಮಯಾನ (ನಂ) ವಿಮಾನ, ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ  
ಸಂಚರಿಸುವ ವಾಹನ. ವ್ಯೋಮಿನಿ ಯಾನ್ತಯನೇನ—ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣ)  
“ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭) । ವ್ಯೋಮಿನಿ ಯಾತಿ—ಯಾ ಕರ್ತಂ  
“ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೩) । ಇತಿ ವಾ ।

ವ್ಯೋಮಸದ್ ವ್ಯೋಮಸದ್ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. 2. ಗಂಧರ್ವ.  
ವ್ಯೋಮಿನಿ ಸಿದತಿ—ಷಡ್ (ವಿಶರಣಾದಿ) “ಕ್ವಿಪ್”  
(೩-೨-೬೧) ।

ವ್ಯೋಮಸ್ಥಳಿ ವ್ಯೋಮಸ್ಥಳಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಗನತಲ,  
ಆಕಾಶ. ವ್ಯೋಮಿನಿಃ ಸ್ಥಳಿ । 2. ಭೂಮಿ, ನೆಲ.

ವ್ಯೋಮಸ್ಪೃಶ್ ವ್ಯೋಮಸ್ಪೃಶ್ (ವಿಂ) ಒಹಳಲುನ್ನು ತವಡ,  
ಗಗನಚುಂಬಿಯಾದ, ಆಕಾಶವನ್ನು ಮುಟ್ಟುವ. ವ್ಯೋಮ  
ಸ್ಪೃಶತಿ—ಸ್ಪೃಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೆ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೬೧) ।  
“ವ್ಯೋಮಸ್ಪೃಶಃ ಪ್ರಥಯತಾ ಕಲಧೌತಮಿತ್ತಿಃ” ಮಾಧಂ  
೪-೩೧ ।

ವ್ಯೋಷ ವ್ಯೋಷ (ನಂ) ತ್ರಿಕಟು, ಮೆಣಸು ಹಿಪ್ಪಲಿ ಮತ್ತು  
ಶುಂಠಿ. ವಿಶೇಷಣ ಔಷತಿ—ಔಷ (ದಾಹೇ) “ಅಚ್”  
(೩-೧-೧೩೪) । “ತ್ರಿಕಟು ತ್ರ್ಯುಷಣಂ ವ್ಯೋಷಮ್” ಅಮಂ ।

ವ್ರಜ ವ್ರಜ (ಪುಂ) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. ವ್ರಜ (ಗತೌ)  
“ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ಪಙ್ಕ್ತಿಪಾವನಮಥ ದ್ವಿಜವ್ರಜಮ್”  
ಮಾಧಂ ೧೪-೩೩ । 2. ದನಗಳ ಕೊಟ್ಟಿಗೆ. “ವ್ರಜಾಜಿರೇ-  
ಷ್ವಮ್ಬುದನಾದಶಕ್ಷಿಣಿಃ ಶಿಖಣ್ಡಿನಾಮುನ್ಮದಯತ್ಸು ಯೋಷಿತಃ”  
ಕಿರಾಂ ೪-೧೬ । “ನಿರ್ದವಿವಧಾಸಾರಪ್ರಸಾರಾ ಗಾ ಇವ  
ವ್ರಜಮ್” ಮಾಧಂ ೨-೬೪ । 3. ಗೋಕುಲ, ನಂದಗೋಪನ  
ರಾಜಧಾನಿ. “ಅಥ ಕೃಷ್ಣಃ ಪರಿವೃತೋ ಜಾತಿಭಿರ್ಮುಂದಿತಾತ್ಮಭಿಃ ।  
ಅನುನೀಯಮಾನೋ ನ್ಯವಿಷತ್ ವ್ರಜಂ ಗೋಕುಲಮಣ್ಡಿತಮ್” ಭಾಗಂ  
೧೦-೧೮-೧ । “ವ್ರಜೋಪಕಂಠೇ ವಿಬುಧಾನುಭಾವ್ಯಃ” ಯಾದಂ  
೪-೧೦೨ । 4. ರಸ್ತೆ, ಮಾರ್ಗ. “ವ್ರಜೋ ಗೋಷಾಘವೃಂದೇಷು”  
ಮೇದಿಂ ।

ವ್ರಜಕ ವ್ರಜಕ (ಪುಂ) ತಪಸ್ವಿ, ಮುನಿ.

ವ್ರಜತ್ ವ್ರಜತ್ (ವಿಂ) ಹೋಗುತ್ತಿರುವ. ವ್ರಜ (ಗತೌ)  
“ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । “ವ್ರಜತೋರಪಿ ಪ್ರಣಯಪೂರ್ವಮೇಕತಾ-  
ಮಸುರಾರಿಪಾಂಡುಸುತಸೈನ್ಯಯೋಸ್ತದಾ” ಮಾಧಂ ೧೩-೬ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
“ಜಿಪ್” (೪-೧-೬) । -ಂತಿ-೨೭. “ಅವಿರಲಪುಲಕಃ  
ಸಹ ವ್ರಜನ್ಯಾಃ” ಮಾಧಂ ೭-೧೫ ।

ವ್ರಜನ ವ್ರಜನ (ನಂ) 1. ಸಂಚರಿಸುವುದು, ಹೋಗುವುದು.  
2. ದೇಶಭ್ರಷ್ಟನಾಗಿರುವುದು, ದೇಶ ಬಿಟ್ಟು ಪರದೇಶ  
ದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವುದು.

ವ್ರಜನಾಥ ವ್ರಜನಾಥ, -ಮೋಹನ -ಮೋಹನ, -ವಲ್ಲಭ  
-ವಲ್ಲಭ (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ.

ವ್ರಜಾಙ್ಗನಾ ವ್ರಜಾಙ್ಗನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋಷಿ, ಗೋಪಸ್ತ್ರೀ.  
ವ್ರಜಸ್ಯ ಅಙ್ಗನಾ । “ಅಮಿಲಾಷಪದಂ ವ್ರಜಾಙ್ಗನಾನಾಮಿಲಾಪ-  
ಕ್ರಮದ್ವರಮಾಭಿರೂಪಮ್” ಗೋಪಾಲವಿಂ ।

ವ್ರಜ್ಯಾ ವ್ರಜ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪರ್ಯಟನ, ತಿರುಗಾಡು  
ವುದು, ಸುತ್ತಾಡುವುದು. ವ್ರಜ (ಗತೌ) “ಕ್ವಿಪ್”  
(೩-೨-೬೮) । 2. ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಪ್ರಯಾಣ.  
3. ಸಮೂಹ. “ವ್ರಜ್ಯಾ ಪ್ರಸ್ಯಾನೇ ವರ್ಗಂ ಪರ್ಯಟನೇಷಿ ಚ”  
ಮೇದಿಂ । 4. ರಂಗಸ್ಥಳ.



ವ್ರಣ ವ್ರಣ (ಪುಂ.) 1. ಗಾಯ. 2. ಹುಣ್ಣು. ವ್ರಣತಿ—  
ವ್ರಣ (ಶಬ್ದ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ಸ ರಾವಣಹುತಾ  
ತಾಭ್ಯಾಂ ವಚಸಾಚ್ಛೇದ ಮೇಥಿಲೀಮ್। ಆತ್ಮನಃ ಸುಮಹತ್ಕರ್ಮ  
ವ್ರಣೇರಾವೇಶ ಸಂಸ್ಥಿತಃ” ರಘುಂ ೧೪-೪೪। 3. ಕುಂಠೆ,  
ಹುಣ್ಣು. “ವ್ರಣೋ ರೂಢಗ್ರನ್ಥಿಃ ಸ್ಫುಟಿತ ಇವ ಹೃನ್ಮರ್ಮಣಿ  
ಪುನಃ” ತಂ ರಾಂ ೨-೨೬।

ವ್ರಣಕೃತ್ ವ್ರಣಕೃತ್ (ಪುಂ.) 1. ಗೇರುಮರ. (ವಿಂ)  
2. ವ್ರಣವನ್ನಂಟುಮಾಡುವ.

ವ್ರಣವಿರೋಪಣ ವ್ರಣವಿರೋಪಣ (ನಂ) 1. ವ್ರಣವನ್ನು  
ವಾಸಿಮಾಡುವುದು. ವ್ರಣಸ್ಯ ವಿರೋಪಣಮ್। 2. ವ್ರಣವನ್ನು  
ವಾಸಿಮಾಡುವ. “ಯಸ್ಯ ತ್ವಯಾ ವ್ರಣವಿರೋಪಣಮಿಡ್ಗುದಿನಾಂ  
ತೇಲಂ ನ್ಯವಿಚ್ಯತ ಮುಖೇ ಕುಶಮುಚಿವಿದ್ವೇ” ಶಾಕುಂ ೪-೧೩।

ವ್ರಣಿತ ವ್ರಣಿತ (ವಿಂ) 1. ಗಾಯವಾಗಿರುವ. 2. ಹುಣ್ಣು  
ಗಿರುವ. ವ್ರಣೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ “ಇತಚ್” (೪-೨-೩೬)।  
“ವಿಷಕ್ತಸ್ತೋತ್ರೇಣ ವ್ರಣಿತಹೃದಯೇನ ವ್ಯಥಯತಾ” ತಂ ರಾಂ ೪-೩।

ವ್ರತ ವ್ರತ (ಪುಂ.) 1. ನಿಯಮ, ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ,  
ನಿಯಮದಲ್ಲಿರುವ ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತಕಾರ್ಯಾನುಷ್ಠಾನ. ವ್ರಿಯತೇ  
—ವ್ರತ್ (ವರಣ) “ಅತಚ್” (ತಂ ೩-೧-೧೧೧)। ಉಪವಾಸ,  
ಸತ್ಯನಾರಾಯಣಪೂಜೆ (ವ್ರತ) ವರಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮೀ ವ್ರತ  
ಮಾರ್ಗಶಿರಲಕ್ಷ್ಮೀ ವ್ರತ ಸ್ವರ್ಣಗೌರೀವ್ರತ ಸಿದ್ಧಿ  
ವಿನಾಯಕ ವ್ರತ ಇತ್ಯಾದಿ. 2. ಕಟ್ಟುಪಾಡು, ನಿಯಮ.  
3. ಹರಕೆ, ಪ್ರಾರ್ಥನೆ. “ವೇಕ್ಷಾನಸಂ ಕಿಮನಯಾ ವ್ರತಮಾಪ್ರದಾ-  
ನಾತ್ ವ್ಯಾಪಾರರೋಧಿ ಮದನಸ್ಯ ನಿಷೇವಿತವ್ಯಮ್” ಶಾಕುಂ  
೧-೨೩। 4. ಶೀಲ, ವರ್ತನೆ, ನಡವಳಿಕೆ. “ಅಥ ತು  
ವೇತ್ಸಿ ಶುಚಿ ವ್ರತಮಾತ್ಮನಃ ಪತಿಕುಲೇ ತವ ದಾಸ್ಯಮಪಿ ಕ್ಷಮಮ್”  
ಶಾಕುಂ ೪-೨೭। 5. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. “ಸೋಽಭೂತ್ ಭಗವತಃ  
ಶತ್ರುನುಹೃತ್ಯ ಪ್ರತಿರೋಪಯನ್” ರಘುಂ ೧೭-೪೨। 6. ಭಕ್ತಿ,  
ಶ್ರದ್ಧೆ, ಆಸಕ್ತಿ. “ಯಾನ್ತಿ ದೇವವ್ರತಾ ದೇವಾನ್ ಪಿತೃನ್ ಯಾನ್ತಿ  
ಪಿತೃವ್ರತಾಃ” ಗೀತಾ ೯-೨೪।

ವ್ರತತಿ ವ್ರತತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲತೆ, ಬಳ್ಳಿ. ವ್ರತನೋತಿ—ವ್ರ+ತನು  
(ವಿಸ್ತಾರೇ) “ಕ್ವಿಚ್” (೩-೩-೧೭೪)। ಪೃಷಂ। “ಪಾದಾ-  
ಕೃಷ್ಣವ್ರತತಿವಲಯಾ ಸಂಜ್ಞಾತಪಾಶಃ” ಶಾಕುಂ ೧-೨೯।  
2. ವಿಸ್ತಾರ, ವಿಸ್ತರಣೆ. “ವ್ರತತಿಸ್ತು ಪ್ರತಾನಿನ್ಯಾಂ ವಿಸ್ತಾರೇ”  
ಹೇಮಂ। ವಾ “ಙೀಷ್” (ಗಂ ೪-೧-೪೪)। —ತೀ—೩೯.

ವ್ರತಭಿಕ್ಷಾ ವ್ರತಭಿಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಪನಯನಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ಮಾಡುವ ಭಿಕ್ಷೆ. ವ್ರತೇ ಉಪನಯನಕಾಲೇ ಭಿಕ್ಷಾ। ತಾಯಿ  
ಚಿಕ್ಕತಾಯಿ ಸಹೋದರ ಇವರಲ್ಲಿ ಮೊದಲು ವ್ರತಭಿಕ್ಷೆ  
ಯನ್ನು ಬೇಡಬೇಕು. “ಭವತ್ಪೂರ್ವಂ ಚರೇದ್ಭಿಕ್ಷುಮುಪನೀತೋ

ದ್ವಿಜೋತ್ತಮಃ। ಭವನ್ಮಧ್ಯಂತು ಗಾಜನ್ಯೋ ವೇಶ್ಯಸ್ತು ಭವದುತ್ತರಮ್”।  
“ಮಾತರಂ ವಾ ಸ್ವಸಾರಂ ವಾ ಮಾತುರ್ವಾ ಭಗಿನೀಂ ನಿಜಾಮ್। ಭಿಕ್ಷೇನ  
ಭಿಕ್ಷಾಂ ಪ್ರಥಮಾಂ ಯಾ ಚೇನ ನಾವಮಾನಯೇತ್” ಮನುಂ ೨-೪೯, ೪೦।  
“ಆದಿಮಧ್ಯಾವಸಾನೇಷು ಭವಚ್ಛಬ್ದೋಪಲಕ್ಷಿತಾ। ಬ್ರಾಹ್ಮಣ-  
ಕ್ಷತ್ರಿಯವಿಷಾಂ ಭೇಷ್ಯಚರ್ಯಾ ಯಾಕ್ರಮಮ್” ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೩೦।

ವ್ರತಿನ ವ್ರತಿನ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿ. ವ್ರತಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ—ವ್ರತ  
“ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪)। “ಭೇಷ್ಯೇಣ ವರ್ತಯೇನ್ನಿತ್ಯಂ ನೇಕಾಬ್ರಾಹ್ಮೀ-  
ಭವೇದ್ವರತೀ। ಭೇಷ್ಯೇಣ ವ್ರತಿನೋ ವೃತ್ತಿರಪವಾಸಸಮಾ ಸ್ಮೃತಾ”॥  
2. ಯಜಮಾನ. (ವಿಂ) 3. ನಿಯಮದಲ್ಲಿರುವ, ವ್ರತ  
ವನ್ನು ಆಚರಿಸುವ. 4. ತಪಸ್ಸನ್ನಾಚರಿಸುವ, ತಪಸ್ಸು  
ಉಪವಾಸ ಮೊದಲಾದ ವ್ರತಗಳ ಅನುಷ್ಠಾನದಲ್ಲಿರುವ.  
“ಕಿಂ ತಾವದ್ವ್ರತಿನಾಮುಪೊಡತಪಸಾಮ್” ಶಾಕುಂ ೪-೯।

ವ್ರಶ್ವನ ವ್ರಶ್ವನ (ನಂ) 1. ಛೇದಿಸುವುದು, ಕತ್ತರಿಸುವುದು.  
ಅಥ ವ್ರಶ್ಚ (ಛೇದನ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ)  
2. ಕತ್ತರಿಸುವ, ತುಡುಮಾಡುವ (ಸಾಧನ). ವ್ರಶ್ವತ್ಯನೇನ  
—ವ್ರಶ್ಚ ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)। 3. ಮರದ  
ಹಾಲು, —ರಸ, ಗೋಂದ.

ವ್ರಜಿ ವ್ರಜಿ (ಪುಂ) ವಾಯು, ಚಂಡಮಾರುತ, ಬಿರುಗಾಳಿ.  
ವ್ರಜತಿ—ವ್ರಜ (ಗತೌ) “ಇಙ್” (ತಂ ೪-೧-೨೪)।

ವ್ರಾತ ವ್ರಾತ (ಪುಂ) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು, ರಾಶಿ. ವ್ರತಯತಿ  
—ವ್ರತ + ಣಿಚ್ (೩-೧-೨೧)। “ಘಙ್” (೩-೩-೧೧೯)।  
“ಪುಣ್ಯೇಷಣೇಲೆಮ್ಮಿತಲೋಕಕೇವಾ ಮಧುವ್ರತವ್ರಾತವೃತೇಂತಯಃ” ಮಾಘಂ  
೪-೩೪। (ನಂ) 2. ಆಯಾಸದಿಂದ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ.  
3. ವಿವಾಹಾದಿ ಶುಭಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಸೇರುವ ಮಿತ್ರರ  
ಗುಂಪು. (ವಿಂ) 4. ಶರೀರಾಯಾಸದಿಂದ ಜೀವಿಸುವ.

ವ್ರಾತ ವ್ರಾತ (ಪುಂ) ಉಪನಯನ ಮೊದಲಾದ ಸಂಸ್ಕಾರ  
ವಿಲ್ಲದವನು. ವ್ರಾತೌ ಶರೀರಾಯಾಸಜೀವಿ ವ್ಯಾಧಾದಿಃ—ಸ  
ಇವ—ವ್ರಾತ—“ಯಃ” (೪-೩-೧೦೩)। “ವ್ರಾತಃ ಸಂಸ್ಕಾರ-  
ಹೀನಃ ಸ್ಯಾತ್” ಅಮಂ। “ದಶ ವರ್ಷಾಣಿ ಪಠ್ಯವೇವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ-  
ಇಚೊಪನೀಯತೇ। ಏಕವಿಂಶತಿವರ್ಷಾಣಿ ಯಾವದ್ವಿಷಮುಪಾವಿಶೇತ್॥  
ಅತಃ ಕುರ್ವೇ ಪತನ್ತೇವ ಸರ್ವಧರ್ಮಬಹಿಷ್ಕೃತಃ”।

ವ್ರಿಡ ವ್ರಿಡ (ಪುಂ) ಲಜ್ಜೆ, ನಾಚಿಕೆ, ಅವಮಾನ. ವ್ರಿಡ  
(ಚೋದನೇ ಲಜ್ಜಾಂ ಚ) “ಘಙ್” (೩-೩-೧೧೮)। “ವ್ರಿಡಾದಮುಂ  
ದೇವಮುದೀಕ್ಷ್ಯ ಮನ್ಯೇ ಸನ್ಯಸ್ತದೇಹಃ ಸ್ವಯಮೇವ ಕಾಮಃ” ಕುಮಾಂ  
೭-೬೭।

ವ್ರಿಡನ ವ್ರಿಡನ (ನಂ) ಲಜ್ಜೆ, ನಾಚಿಕೆ. ವ್ರಿಡ (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್)  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪)। “ವ್ರಿಡೋ ವ್ರಿಡಾ ವ್ರಿಡನಂ ಚ  
ಲಜ್ಜಾಪರ್ಯಾಯಿ ದೀರಿತಃ” ಶಬ್ದರತ್ನಾವಲಿ।



ಶ್ರೀಡಾ ವ್ರೀಡಾ (ಸ್ತಂ) ಲಜ್ಜೆ, ನಾಚಿಕೆ. ಶ್ರೀಡ (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್)  
"ಅ:" (೩-೩-೧೦೩). "ಯೋದ್ಧಾ ಸಾರ್ಥಂ ಶ್ರೀಡಯಾ ಮುಚ್ಛತೇಽನ್"  
ಮಾಘಂ ೧೮-೩೯.

ಶ್ರೀಹಿ ವ್ರೀಹಿ (ಪುಂ) 1. ಧಾನ್ಯ. ವಹಂತಿ ಉಪಚಯಂ ಗಂಚತಿ—  
ಬಹ (ಬೃಹಿ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೨೦). ೨. ಕೆಂಪುಬತ್ತ. ವ್ರೀಹಿಯು ಶೂಕಧಾನ್ಯ ಶಿಂಜೀಧಾನ್ಯ  
ಮತ್ತು ತೃಣಧಾನ್ಯ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. "ಖಾನ್ಯ  
ಭೋಗ್ಯಂ ಚ ಭೋಗಾರ್ಹಮನ್ಯಾಚಂ ಜೀವಸಾಧನಮ್ | ತನ್ವ ತಾವತ್ರಿವಿಧಾ  
ಜಯಂ ಶೂಕಶಿಮ್ಮೀತೃಣಾಹ್ವಯಮ್" |

ಶ್ರೀಹಿಕ ವ್ರೀಹಿಕ (ವಿಂ) ಧಾನ್ಯವೃಕ್ಷವನು, ಧಾನ್ಯವನ್ನು  
ಹೊಂದಿರುವವನು. ಶ್ರೀಹಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ — ಶ್ರೀಹಿ "ಠನ್"  
(೪-೨-೧೧೬).

ಶ್ರೀಹಿಕಾಚನ ವ್ರೀಹಿಕಾಂಚನ (ಪುಂ) ಕಾಡುಕಡಲೆ. ಶ್ರೀಹಿ:  
ಕಾಚನಮಿವ |

ಶ್ರೀಹಿಮಯ ವ್ರೀಹಿಮಯ (ಪುಂ) ಧಾನ್ಯದಿಂದ ಮಾಡಿದ  
ಪುರೋಡಾಶ. ಶ್ರೀಹಿ "ಮಯಟ್" (೪-೩-೧೪೮) |

ಶ್ರೀಹಿರಾಜಕ ವ್ರೀಹಿರಾಜಕ (ಪುಂ) ನವಣೆ. ಶ್ರೀಹಿಣಾ ರಾಜಾ  
"ಠಕ್" (೪-೪-೯೧) | "ಕ:" |

ಶ್ರೀಹಿಶ್ವೇಷ ವ್ರೀಹಿಶ್ವೇಷ (ಪುಂ) ಬತ್ತ. ಶ್ರೀಹಿಷ್ವೇಷಃ |

ಶ್ರೀಹಿನ್ ವ್ರೀಹಿನ್ (ವಿಂ) ಧಾನ್ಯವೃಕ್ಷವನು, ಧಾನ್ಯವನ್ನು  
ಹೊಂದಿರುವವನು. ಶ್ರೀಹಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ — ಶ್ರೀಹಿ "ಛಿನಿ:"  
(೪-೨-೧೧೬) |

ಶ್ರೀಹಿ ವ್ರೀಹಿ (ವಿಂ) 1. ಧಾನ್ಯದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಧಾನ್ಯ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. 2. ಧಾನ್ಯದ ಅವಯವ ಅಥವಾ ವಿಕಾರ.  
ಶ್ರೀಹಿರವಯವೋ ವಿಕಾರೋ ವಾ "ಅನ್" (೪-೩-೧೩೬) |

ಶ್ರೀಹಿ ವ್ರೀಹೀಯ (ವಿಂ) 1. ವ್ರೀಹಿಯನ್ನು ಬೆಳೆಯಲು  
ಯೋಗ್ಯವಾದ ಭೂಮಿ. ಶ್ರೀಹಿಣಾ ಮವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ — ಶ್ರೀಹಿ  
"ಠಕ್" (೪-೨-೨) | 2. ಬತ್ತಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ.

ಇತಿ "ವ" ಕಾರಾವಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್ |

## ಶ

ಶ ಶ ಇದು ವರ್ಣಮಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಮೂವತ್ತನೆಯ ವ್ಯಂಜನಾ  
ಕ್ಷರ. ಅವರ್ಗೀಯ ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ ಐದನೆಯ ಹಲ  
ವರ್ಣ. ಈ ವರ್ಣ (ಅಕ್ಷರ) ವೃ ತಾಲು (ದವಡೆ) ಪ್ರದೇಶ  
ದಲ್ಲಿ ವಿವೃತ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಒಂದು ಉಷ್ಮ  
ವರ್ಣ. "ಶಾಪಸಹಾ ಕುಮಾಣ:" ಸಿಂ ಕೌಂ |

ಶ ಶ (ಪುಂ) 1. ರಾಜ, ದೊರೆ. 2. ಕೂರ್ಮ, ಆಮೆ.  
3. ಶಿವ. ಪರಮೇಶ್ವರ. 4. ಶಿಷ್ಯ. 5. ವಲ್ಮೀಕಿ, ಹುತ್. 6. ತನೂಕರಣ,  
ಚೂಪಾಗಿ ಮಾಡುವುದು, ಹರಿತವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. "ಶೋ ವಲ್ಮೀಕೀ  
ಶಿವೇ ಕೂರ್ಮ ಭೀಷ್ಮ ಶಿಷ್ಯ ತನುಕೃತೌ" ನಾನಾರ್ಥರಂ | (ನಂ) 7. ಸುಖ. 8. ಶಾಸ್ತ್ರ.  
9. ಶ್ರೇಯಸ್ಸು. 10. ಮಂಗಳ, ಶುಭ. 11. ಕೀರ್ತಿ. 12. ಇಂದ್ರನ ಧನುಸ್ಸು.  
13. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ. (ವಿಂ) 14. ಪರೋಕ್ಷ. ಶಮ್ (ಅವ್ಯಂ) 15. ಸೌಖ್ಯ.  
"ಶಂ ಸುಖೇ ಕಲೀಬೇ ಶಾಸ್ತ್ರೇ ಶ್ರೇಯಸಿ ಮಜ್ಜಲೇ | ಕೀರ್ತೌ ಶಕ್ರಾಯುಧೇ  
ಸ್ವರ್ಗೋ ಪರೋಕ್ಷೇ ತು ತ್ರಿಲಿಂಗಕಃ | ಶಮವ್ಯಯಂ ಚ ಸೌಖ್ಯಾರ್ಥಂ"  
ನಾನಾರ್ಥರಂ |

ಶಂತ ಶಂತಿ ಶಂತು ಶಂಭ ಶಂಭ ಶಂತ ಶಂತಿ ಶಂತು ಶಂಭ  
ಶಂಭ (ಪುಂ) ಸುಖವುಳ್ಳ. ಶಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ—ಶಮ್ "ತ:"  
"ತಿ:" "ತು:" "ಭ:" "ಯ:" (೪-೨-೧೩೮) |

ಶಂಭ ಶಂಭ (ವಿಂ) ಸೌಖ್ಯವುಳ್ಳ, ಸುಖವಾಗಿರುವ.  
ಶಂ ಸುಖಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಯುಸ್" (೪-೨-೧೩೮) | "ಕುರ್ವಾಣಾ  
ಪಶ್ಯತಃ ಶಂಭುನ್ ಸತ್ವಿಣಿಃ ಸುಹೃತಾಃ ಸನತಾ" ಭೃಗುಂ  
೪-೧೮ |

ಶಂಭ ಶಂಭ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧ. 2. ಒನಕೆಯ  
ತುದಿಯಲ್ಲಿರುವ ಕಬ್ಬಿಣದ ಮೂತಿ. ಶಮ್ "ವ:"  
(೪-೨-೧೩೮) | (ವಿಂ) 3. ಸೌಖ್ಯವುಳ್ಳ.

ಶಂಸತ್ ಶಂಸತ್ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಮೃತಿಸ್ಮೃತಿರುವ, ಸ್ಮೃತ  
ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |  
2. ಹೊಗಳುತ್ತಿರುವ, ಕೊಂಡಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಹೇಳು  
ತ್ತಿರುವ. "ನೀಲೋರ್ವರೇಖಾಶಬಲೇನ ಶಂಸನ್" ರಘುಂ ೪-೪೪ |  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಶಿಪ್" (೪-೧-೬) | —ಶ್ರೀ-ಶ್ರೀ.



ಸಂಸನ ಶಂಸನ (ನಂ) 1. ಸ್ತುತಿಸುವುದು, ಹೊಗಳುವುದು.

ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

2. ಹೊಗಳುವುದು, ಕೊಂಡಾಡುವುದು. 3. ಹೇಳುವುದು.

ಸಂಸನೀಯ ಶಂಸನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸ್ತುತಿಸಬೇಕಾದ.

2. ಸ್ತುತಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. 3. ಸ್ತುತಿಸಲ್ಪಡುವ.

ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) ಕರ್ಮದಿ "ಅನೌಯರ್" (೩-೧-೧೬) ।

4. ಕೊಂಡಾಡಬೇಕಾದ. 5. ಹೊಗಳಲು ಅರ್ಹನಾದ.

6. ಹೊಗಳಲ್ಪಡುವ. 7. ಹೇಳಬೇಕಾದ. 8. ಹೇಳಲು

ಅರ್ಹನಾದ. 9. ಹೇಳಲ್ಪಡುವ. "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೧೬) ।

-ಸಿತವ್ಯ: -ಸಿತವ್ಯ: ।

ಸಂಸಯತ್ ಶಂಸಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಿಸು

ತ್ತಿರುವ. ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

2. ಹೊಗಳಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಹೇಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ

"ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ. "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

-ಯಮಾನ: -ಯಮಾನ: ।

ಸಂಸಾ ಶಂಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ತುತಿ. 2. ಹೊಗಳಿಕೆ. 3. ಇಚ್ಛೆ.

ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) "ಅ:" (೩-೩-೧೦೩) । 4. ಮಾತು.

ಸಂಸಿತ ಶಂಸಿತ (ವಿಂ) 1. ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಶಂಸು

(ಸ್ತುತೌ) + ಣಿಕ್ "ಕ:" (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಹೊಗಳಿಸ

ಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಹೇಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸಂಸಿತು ಶಂಸಿತು (ವಿಂ) 1. ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡುವವನು.

ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) "ತುಕ್" (೩-೧-೧೩೩) । 2. ಹೊಗಳು

ವವನು, ಕೊಂಡಾಡುವವನು. 3. ಹೇಳುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾ

"ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) । -ತ್ರಿ -ತ್ರಿ.

ಸಂಸಿನ್ ಶಂಸಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡುವ. 2.

ಕೊಂಡಾಡುವ, ಹೊಗಳುವ. 3. ಹೇಳುವ, ಸೂಚಿಸುವ.

ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) "ಣಿನಿ:" (೩-೨-೭೮) । "ಅಭಿಮತ-

ಫಲಶಂಸಿ ಚಾರು ಪುಸ್ಕೋರ ಬಾಹು:" ಭೃಂ ೧-೨೭ । (ಸಾಮಾನ್ಯ

ವಾಗಿ ಇದು ಸಮಾಸಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ ಬರುವುದು). 4. ಮೊದಲೇ

ಸೂಚಿಸುವ, ಮುನ್ಸೂಚನೆ ಕೊಡುವ, ಭವಿಷ್ಯವನ್ನು

ಹೇಳುವ. "ಬಭೂವ ಸರ್ವೆ ಶುಭಶಂಸಿ ತತ್ಕ್ಷಣಂ ಭವೋ ಹಿ

ಲೋಕಾಽಪ್ಯುದಯಾ ತಾದೃಶಾಮ್" ರಘುಂ ೩-೧೪ । ಸ್ತ್ರಿಯಾ

"ಡೀಪ್" (೪-೧-೫) । ಸಂಸಿನಿ ಶಂಸಿನೀ. "ಪ್ರಜಾವತೀ

ದೋಹದಶಂಸಿನೀ ತೇ ತಪೋವನೇಷು ಸ್ಪೃಹಯಾಲ್ಪುರೇವ" ರಘುಂ ೧೪-೪೫ ।

ಸಂಸ್ತು ಶಂಸ್ತು (ವಿಂ) 1. ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡುವವನು,

ಸ್ತುತಿಸುವವನು. ಶಂಸು (ಸ್ತುತೌ) "ತುನ್" (೩ಂ ೨-೧೩) ।

2. ಮಂತ್ರವನ್ನು ಪಠಿಸುವವನು, ಮಂತ್ರವನ್ನು ಜಪಿಸು

ವವನು, ಸಾಮಗಾನ ಮಾಡುವವನು.

ಸಂಸ್ಯ ಶಂಸ್ಥ (ವಿಂ) 1. ಸುಖದಲ್ಲಿರುವವನು, ಸುಖವನ್ನು

ಅನುಭವಿಸುವವನು. 2. ಶುಭವುಳ್ಳವನು, ಮಂಗಳಕಾರ್ಯ

ಮಾಡುವವನು. ಶಮ್ + ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ:"

(೩-೨-೭೭) । "ಕಿವಪ್" ಚ (೩-೨-೭೭) । ಸಂಸ್ಯಾ:

ಶಂಸ್ಥಾ ।

ಶಕ ಶಕ್ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. 2. ಒಂದು ನಿರ್ದಿಷ್ಟ

ವಾದ ಕಾಲದಿಂದ ಪ್ರಾರಂಭವಾಗುವ ಕಾಲದ ಮಾನ.

ಶಾಲಿವಾಹನಶಕೆ. ಕ್ರಿಸ್ತಶಕೆ ಇತ್ಯಾದಿ. (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 3.

ಒಂದು ದೇಶ. 4. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜನರು. -ಜನಾಂಗ.

"ಪೌಂಡ್ರಕಾಶ್ವೀದ್ರವಿಡಾ: ಕಾಮ್ಬೋಜಾ ಯವನಾ: ಶಕಾ:" ಮನುಂ

೧೦-೪೪ ।

ಶಕಟ ಶಕ್ಟಿ (ಪುಂ) 1. ಗಾಡಿ. ಶಕ್ನೋತಿ ಭಾರಂ ಬೋಧುಮ್-

ಶಕ್ಲ (ಶಕ್ತೌ) "ಅಟನ್" (೩ಂ ೪-೮೧) । "ತಥಾ

ಯಶೋದಾರೋಹಿण्याವೇಕಂ ಶಕಟಮಾಸ್ಥಿತೇ । ರೇಜತು: ಕೃಷ್ಣರಾಮಾಭ್ಯಾಂ

ತತ್ಕಥಾಶ್ರವಣೋತ್ಸುಕೇ" ಭಾಗಂ ೧೦-೧೧-೩೪ । (ಪುಂ) 2

ಶಕಟಾಸುರ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಿಂದ ಹತನಾದ ಒಬ್ಬ ಅಸುರ.

ಇವನು ಕಂಸನಿಂದ ಪ್ರೇರಿತನಾಗಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲು

ಗಾಡಿಯ ರೂಪದಲ್ಲಿ ಹೋಗಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಪಾದದ ಪ್ರಹಾರ

ದಿಂದ ಮುರಿದುಬಿದ್ದು ನಿಜರೂಪವನ್ನು ತಳೆದು ಅಲ್ಲೇ

ಮೃತನಾದನು. "ಶಕಟವ್ಯುದಾಸತರೂಪಾಕ್ಷರಣಿಧರಣಾರಣಾ-

ದಿಕಮ್" ಮಾಘಂ ೧೫-೩೭ । 3. ಎರಡು ಸಾವಿರ ಪಲಗಳಿಗೆ

ಸಮಾನವಾದ ಒಂದು ಅಳತೆ, ಒಂದು ಗಾಡಿಯಲ್ಲಿ ತುಂಬು

ವಷ್ಟು ಭಾರ (ಹೊರೆ). 4. ತಿನಿಶವೃಕ್ಷ, ನೆಮ್ಮಿಗಿಡ.

5. ಸೇನೆಯ ಒಂದು ವಿಧ ವ್ಯೂಹ. "ದೃಷ್ಟ್ಯಾಹೇನ ತನ್ಮಾರ್ಗ

ಯಾಯಾತು ಶಕಟೇನ ವಾ" ಮನುಂ ೭-೧೮೭ । 6. ರೋಹಿಣೀ

ನಕ್ಷತ್ರ. ಇದು ಶಕಟದ ಆಕಾರದಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ಈ

ಹೆಸರು. "ರೋಹಿಣಿ: ಶಕಟಮಾಸ್ಥಿತೇ ಚಂದ್ರಮಸ್ಯ ಶರಣೀಕೃತಾ

ಜನಾ: । ಕ್ವಾಪಿ ಯಾಂತಿ ಶಿಶುಯಾಚಿತಾಶನಾ: ಸೂರ್ಯತಪ್ತ-

ಪಿಠರಾಂಬುಪಾಯಿನ:" ಬೃಹತ್ಸಂ ೨೪-೩೦ ।

ಶಕಟಹನ್ ಶಕ್ಟಿಹನ್ (ಪುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ.

ಶಕಟಾಕ್ಷ ಶಕ್ಟಾಕ್ಷ (ಪುಂ) ಗಾಡಿಯ ಅಚ್ಚು, ಚಕ್ರ

ಸುತ್ತುವ ಅಚ್ಚು.

ಶಕಟಾಹ್ನಾ ಶಕ್ಟಾಹ್ನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರೋಹಿಣೀನಕ್ಷತ್ರ.

ಶಕಟಮಿತಿ ಆಹ್ನಾ ಯಸ್ಯಾ: ।

ಶಕಟಿಕಾ ಶಕ್ಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣ್ಣ ಗಾಡಿ, ಚಕ್ರ ಬಂಡಿ.

"ರದನಿಕೇ ಕಿ ಮಮೇತಯಾ ಮೃತ್ತಿಕಾಶಕಟಿಕಯಾ ? ತಾಮೇವ

ಸೌವರ್ಣಶಕಟಿಕಾಂ ದೇಹಿ" ಮೃಚ್ಛಂ ೬ ।

ಶಕಲ ಶಕ್ಲ (ಪುಂ) 1. ಖಂಡ, ತುಂಡು, ಚೂರು. ಶಕ್ಲ

(ಶಕ್ತೌ) "ಕಲ:" (೩ಂ ೧-೧೦೯) । "ವಕ್ತ್ರೋಷ್ಮಣಾ



ಮಲಿನಯಸ್ತಿ ಪುರೋಗತಾನಿ ಲೇಹಾನಿ ಸೈವಶಿಲಾಶಕಲಾನಿ  
ವಾಹಾ: "ರಘುಂ ೪-೭೩. (ನಂ) 2. ತೋಗಟೆ, ಸುಲಿದ  
ಸಿವ್ವ. 3. ಚರ್ವ. 4. ರಾಗವಸ್ತು. "ಶಕಲಂ ತ್ವಚಿ  
ಖಣ್ಡೇ ಸ್ಯಾದ್ರಾಗವಸ್ತುನಿ ವಲ್ಕಲೇ" ವಿಶ್ವಂ.

ಶಕಲಿತ ಶಕಲಿತ (ವಿಂ) ಚೂರಾಗಿರುವ, ತುಂಡಾಗಿರುವ,  
ಖಂಡ ಖಂಡವಾಗಿರುವ. ಶಕಲೋಪ್ಯ ಸಂಜಾತ:- "ಇತತ್"  
(೪-೨-೩೬) 1. "ನಿ:ಶೇಷ ಶಕಲಿತವಲ್ಕಲಾಙ್ಗಸಾರೇ:"  
ಕಿರಾಂ ೧೭-೬೨.

ಶಕಲಿನ್ ಶಕಲಿನ್ (ಪುಂ) ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. ಶಕಲ-  
ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇತಿ:" (೪-೨-೧೧೪).

ಶಕಲೀಕೃತ ಶಕಲೀಕೃತ (ವಿಂ) ತುಂಡುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಚೂರಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಶಕಾಂತಕ ಶಕಾಂತಕ (ಪುಂ) ವಿಕ್ರಮಾದಿತ್ಯ ದೊರೆ.

ಶಕಾರ ಶಕಾರ (ಪುಂ) ರಾಜನ ಆವಿವಾಹಿತ ಪತ್ನಿಯ  
ಸಹೋದರ. ಇವನು ಮದ ವರ್ಷಿ ಮತ್ಸ್ಯ ಅಹಂಕಾರ  
ಗಳುಳ್ಳವನಾಗಿಯೂ ಹೀನಕುಲದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿ ಐಶ್ವರ್ಯ  
ಸಂಪನ್ನನಾಗಿಯೂ ಇರುವುದರಿಂದಲೂ ರಾಜನಿಗೆ ಶತ್ರು  
ನಾಗಿರುವುದರಿಂದಲೂ ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ದರ್ಪದಿಂದಲೂ  
ದೌಷ್ಟ್ಯದಿಂದಲೂ ವರ್ತಿಸುವನು. ರಾಜನ ಸಂಬಂಧವಿದೆ  
ಯೆಂಬ ದುರಹಂಕಾರವೂ ವಿದ್ಯೆಯ ಗಂಧವಿಲ್ಲದಿರುವುದೂ  
ಇವನ ಈ ವರ್ತನೆಗೆ ಕಾರಣ. ಇವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಮೃಚ್ಛಕಟಿಕ  
ದಲ್ಲಿ ಕಾಣಬಹುದು. "ಮದಮುಖಂತಾಭಿಮಾನಿ ದುಕ್ತುಲತೇಶ್ವರ-  
ಸಂಯುಕ್ತ: 1. ಸೌಖ್ಯಮನುಷ್ಯಾಭಾತಾ ರಾಜ: ಕ್ಷಾಲ: ಶಕಾರ-  
ಇತ್ಯುಕ್ತ:" ಸಾಂ ೧೦ ೩-೪೪. ವಿದ್ಯಾವಿಹೀನನಾಗಿರುವುದ  
ರಿಂದಲೂ ರಾಜನ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ದುರಭಿಮಾನಿಯಾಗಿರು  
ವುದರಿಂದಲೂ ಇವನು ಅಸಂಬದ್ಧ ಪ್ರಲಾಪಿಯಾಗಿರುವನು.  
"ಕಿ ಸ ಶಕ್ರೋ ವಾಲಿಪುತ್ರೋ ಮಹೇಂದ್ರೋ ರಘುಪುತ್ರ: ಕಾಲನೇಮಿ:  
ಸುಬಂಧು: 1. ರೂರೋ ರಾಜಾ ದ್ರೋಣಪುತ್ರೋ ಜಟಾಯು: ಚಾಣಕ್ಯೋ ವಾ  
ದುನ್ಧುಮಾರಸ್ತ್ರಿಶಕ್ತು:" 11. "ಚಾಣಕ್ಯೇನ ಯಥಾ ಸೀತಾ ಮಾರಿತಾ  
ಭಾರತೇ ಯುಗೇ. ಏವಂ ತ್ವಾಂ ಮೋದಯಿಷ್ಯಾಮಿ ಜಟಾಯುರಿವ ದ್ರೌಪದೀಮ್"  
ಇತ್ಯಾದಿ ಮೃಚ್ಛಂ.

ಶಕಾರಿ ಶಕಾರಿ (ಪುಂ) ವಿಕ್ರಮಾದಿತ್ಯ. ಶಕಸ್ಯ ಶಕಜಾತಿ-  
ವಿಶೇಷಸ್ಯ ಅರಿ: 1.

ಶಕುನ ಶಕುನ (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಶಕನೋತಿ — ಶಕಲ್  
(ಶಕ್ತೌ) "ಉನ:" (೩ಂ ೩-೪೯) 1. "ವಿಹರಸ್ಯಾರಮ-  
ಸುಖಸ್ಯ: ಶಕುನೇರಿವ ಜನ್ತುಭಿ:" ಯಾದಂ ೧೬-೧೧೭.  
2. ರಣಹದ್ದು. (ನಂ) 3. ಶುಭಾಶುಭಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ  
ಘಟನೆ, -ವಸ್ತು. ಭವಿಷ್ಯವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ನಿಮಿತ್ತ.

"ಕಲಯತ್ರಪಿ ಸವ್ಯಯೋವತಸ್ಯೇಷಾಕುನೇನ ಸ್ವಲಿತ: ಕಿಲೇತ-  
ರೋಪಿ" ಮಾಘಂ ೯-೮೩. 4. ಶುಭಸೂಚಕವಾದ ಚಿಹ್ನೆ,  
-ಲಕ್ಷಣ.

ಶಕುನಶ ಶಕುನಶ್ಚ (ವಿಂ) 1. ನಿಮಿತ್ತಗಳನ್ನು ಬಲ್ಲವನು,  
ಶುಭಾಶುಭಫಲಗಳ ಸೂಚನೆಯನ್ನು ತಿಳಿದವನು. ಶಕುನ  
ಜಾನಾತಿ — ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩) 1.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜ್ಞಾ -ಜ್ಞು. 2. ಗೌಳಿ, ಹಲ್ಲಿ.

ಶಕುನಿ ಶಕುನಿ (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಶಕನೋತಿ—ಶಕಲ್  
(ಶಕ್ತೌ) "ಉನ:" (೩ಂ ೩-೪೯) 1. "ಕರಕಮಲ-  
ವಿತಿರ್ಗಂಭುನಿವಾರಾಶಂಪರತಶಕುನಿಕುರಜ್ಞಾನ್ ಮೆಥಿಲಿ ಯಾನ-  
ಗುಣ್ಯತ್" ೩ಂ ರಾಂ ೩-೨೪. 2. ಮುಂಡುಮುಳಕನ ಹಕ್ಕಿ.  
3. ಗಾಂಧಾರದೇಶದ ರಾಜನಾದ ಸುಬಲನ ಮಗ,  
ಗಾಂಧಾರಿಯ ಸಹೋದರ, ದುರ್ಯೋಧನನ ಸೋದರ  
ಮಾವ. ಇವನು ಕಪಟದಿಂದ ಜೂಜಿನಲ್ಲಿ ಪಾಂಡವರನ್ನು  
ಸೋಲಿಸಿ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಅಟ್ಟಿಸಿದನು. ದುರ್ಯೋಧನನನ್ನು  
ದುರ್ಮಾರ್ಗಕ್ಕೆ ಎಳೆದು ಅವನ ಮತ್ತು ಅವನ ಸಹೋದರ  
ರೇಲ್ಲರ ವಿನಾಶಕ್ಕೆ ಕಾರಣನಾದನು. ಪಾಂಡವ-ಕೌರವರ  
ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಸಹದೇವನಿಂದ ಹತನಾದನು. 4. ಬವ  
ಮೊದಲಾದ ಹನ್ನೊಂದು ಕರಣಗಳಲ್ಲಿ ಎಂಟನೆಯ ಕರಣ.

ಶಕುನಿಪ್ರಪಾ ಶಕುನಿಪ್ರಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಕ್ಷಿಗಳು ನೀರು  
ಕುಡಿಯಲು ಮಾಡಿಟ್ಟಿರುವ ಮರದ ಅಥವಾ ಕಲ್ಲಿನ  
ದೋಣ, -ತೊಟ್ಟಿ. ಶಕುನೀನಾಂ ಪ್ರಪಾ ಪಾನಾರ್ಥಂ ಪಾನೀಯಪಾತ್ರಮ್ 1.

ಶಕುನಿ ಶಕುನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ಗುಬ್ಬಿಚ್ಚಿ.

ಶಕುಂತ ಶಕುಂತ (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಶಕನೋತಿ —  
ಶಕಲ್ (ಶಕ್ತೌ) "ಉನ:" (೩ಂ ೩-೪೯) 1. "ಅಂಸ-  
ವ್ಯಾಪಿಶಕುಂತನೀತನಿಚಿತಂ ಬಿಭ್ರಜ್ಜಟಾಮಂಡಲಮ್" ಶಾಕುಂ  
೭-೧೧. 2. ಭಾಸಪಕ್ಷಿ, ಹದ್ದು. 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ  
ಕಿಮ್ಮಿ, ಹುಳ.

ಶಕುಂತಲಾ ಶಕುಂತಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೇನಕಾ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನುಷಿ  
ಇವರ ಪುತ್ರಿ, ಕಣ್ವಮಹರ್ಷಿಯ ಸಾಕುಮಗಳು, ದುಷ್ಯಂತ  
ಮಹಾರಾಜನ ಮಹಿಷಿ. [ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಮಹರ್ಷಿಯ  
ತಪಸ್ಸಿಗೆ ವಿಘ್ನವುಂಟುಮಾಡಲು ಮಹೇಂದ್ರನು ಮೇನಕೆ  
ಯನ್ನು ಕಳುಹಿಸಿದನು. ಮೇನಕೆಯ ಹಾವಭಾವಗಳಿಂದ  
ಸ್ವೈರ್ಯವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನು ಮೇನಕೆ  
ಯೊಡನೆ ಕೆಲಕಾಲ ಸಂಸಾರಿಯಾಗಿದ್ದಾಗ ಜನಿಸಿದ ಶಿಶು  
ವನ್ನು ಅರಣ್ಯದಲ್ಲೇ ಬಿಟ್ಟು ಮೇನಕೆಯು ಸ್ವಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ  
ತೆರಳಿದಳು. ಬಳಿಕ ಯಾದೃಚ್ಛಿಕವಾಗಿ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದ  
ಕಣ್ವಮಹರ್ಷಿಯು ಶಕುಂತ (ಪಕ್ಷಿ) ಗಳ ರಕ್ಷಣೆಯಲ್ಲಿದ್ದ



ಆ ಶಿಶುವನ್ನು ತಮ್ಮ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಒಯ್ದು ಶಕುಂತಲೆಯೆಂದು ಹೆಸರಿಟ್ಟು ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಸಾಕುತ್ತಿದ್ದರು. ಒಂದು ದಿನ ಬೇಟೆಗಾಗಿ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದ ದುಷ್ಯಂತನು ಪ್ರಾಪ್ತವಯಸ್ಸುಳ್ಳಾದ ಶಕುಂತಲೆಯನ್ನು ಕಂಡು ಮೋಹಗೊಂಡು ಗಾಂಧರ್ವವಿಧಿಯಿಂದ ಮದುವೆಯಾದನು. ತಪಸ್ಸಿನಲ್ಲಿದ್ದ ಕಣ್ವರು ಜ್ಞಾನದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ಇವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ತಿಳಿದು ಕೊಂಡು ಶಕುಂತಲೆಯನ್ನು ಪತಿಯ ಗೃಹಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಿ ಕೊಟ್ಟರು. ಶಕುಂತಲೆಯ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಭರತಕುಮಾರನು ಜನಿಸಿದನು. ಈ ಭರತಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಹೆಸರಿನಿಂದಲೇ ನಮ್ಮ ಈ ರಾಷ್ಟ್ರಕ್ಕೆ ಭಾರತವೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು.]

**ಶಕ್ತುಂತಿ ಶಕುಂತಿ** (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ಶಕ್ನೋತಿ — ಶಕ್ಲ್ (ಶಕ್ತೌ) “ಂತಿ:” (ತಂ ೩-೪೯). “ಶಕ್ತುಂತಯ: ಸೌಗಮ್ಯಾ ಭಜಂತೆ ಸಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ ಸಹ ತೀಕ್ಷ್ಣಭೀಮಿ:” ಧಾಂ ೧೮-೬೧.

**ಶಕ್ತುಂತಿಕಾ ಶಕುಂತಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. “ಸೌನಿಕಾ ಗೃಹಶಕ್ತುಂತಿಕಾಮಿವ” ತಂ ರಾಂ ೧-೪೫.

**ಶಕ್ತುಲ ಶಕುಲ** (ಪುಂ) ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು, ಬಹಳ ವೇಗವಾಗಿ ಚಲಿಸುವ ಮೀನು. ಶಕ್ನೋತಿ ವೇಗೇನ ಗಂತುಮ್ — ಶಕ್ಲ್ (ಶಕ್ತೌ) “ಲಚ್” ಬಾಹುಂ.

**ಶಕ್ತುಲಾದನೀ ಶಕುಲಾದನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಟುಕರೋಹಿಣಿ. ಶಕ್ತುಲೇ: ಮತ್ಸ್ಯೇರಯತೇ — ಅದ (ಭಕ್ಷಣ) ಕರ್ಮಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೩). 2. ಜಲಪಿಪ್ಪಲಿ, ನೀರುಹಿಪ್ಪಲಿ. 3. ಕಕ್ಕಿಗಿಡ. 4. ಜಟಾಮಾಂಸಿ. “ಅಥ ಸ್ಯಾಚ್ಚಕ್ತುಲಾದನೀ | ಕಡ್ವಾ ಮಾಂಸಾಪಿವುಲಿಕಾಜಲಪಿಪ್ಪಲಿಕಾಸು ಚ” ಹೇಮಂ.

**ಶಕ್ತುಲಾರ್ಭಕ ಶಕುಲಾರ್ಭಕ** (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮತ್ಸ್ಯ. ಶಕ್ತುಲಾರ್ಭಕ: | ಮೀನಿನ ಮರಿ.

**ಶಕ್ತುಲೀ ಶಕುಲೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮತ್ಸ್ಯ.

**ಶಕ್ತುತ್ ಶಕ್ತುತ್** (ನಂ) ಮಲ, ಅಮೇಧ್ಯ, ಪುರೀಷ. ಶಕ್ನೋತಿ ನಿ:ಸರ್ತುಮ್ — ಶಕ್ಲ್ (ಶಕ್ತೌ) “ಕ್ತುತಿನ್” (ತಂ ೪-೫೮). ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಪಶುಗಳ ಮಲದ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈ ಪದ ಪ್ರಯೋಗ. “ಶೃಣ್ವಾಪ್ಯತಿ ಪ್ರಕಿರತಿ ಶಕ್ತುತಿಙ್ತಕಾನಾತ್ರ-ಮಾತ್ರಾನ್” ತಂ ರಾಂ ೪-೨೬.

**ಶಕ್ತುತ್ಕಾರಿ ಶಕ್ತುತ್ಕಾರಿ** (ಪುಂ) ಕರು, ಒಂದು ವರ್ಷದೊಳಗಿನ ಹೆಸುವಿನ ಕರು. ಶಕ್ತುತ್ ಕರೋತಿ — ತು ಕೃತ್ (ಕರಣ) “ಇನ್” (೩-೨-೨೪). “ಶಕ್ತುತ್ಕಾರಿಸ್ತು ವತ್ಸ: ಸ್ಯಾತ್” ಅಮಂ.

**ಶಕ್ತುತ್ಕಾರ ಶಕ್ತುತ್ಕಾರ** (ನಂ) ಮಲದ್ವಾರ, ಅಪಾನ, ಗಂಡ, ಶಕ್ತುತಾ ದ್ವಾರಮ್.

**ಶಕ್ತುರ ಶಕ್ತುರ** (ಪುಂ) ವೈಷಭ, ಎತ್ತು.

**ಶಕ್ತುರೀ ಶಕ್ತುರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರೋಕ್ತವಾದ ಸಮವೃತ್ತದ ಹೆಸುಲ್ಕನೆಯ ಛಂದಸ್ಸು. “ಶಕ್ತುರೀ ಸಾತಿಪೂರ್ವಾ ಸ್ಯಾತ್” ವೃಂ ರಂ 1. 2. ಒಂದು ನದಿ. 3. ಡಾಬು, ವಡ್ಡಾಣ. “ಶಕ್ತುರೀ ಕ್ಷುದ್ರಸೌ ಭೇದೇ ನದೀ-ಮೇಖಲಯೋರಪಿ” ಮೌಡಂ.

**ಶಕ್ತು ಶಕ್ತು** (ವಿಂ) 1. ದಕ್ಷ, ಸಮರ್ಥ, ಅರ್ಹ, ಯೋಗ್ಯ. ಶಕ್ನೋತಿ — ಶಕ್ಲ್ (ಶಕ್ತೌ) “ಕ್ತು:” (೩-೪-೨೨). “ಶಕ್ತು: ಸುಹೃದ್ಭಿ: ಪರಿದೃಷ್ಟಕಾರ್ಯರಾಘ್ನಾತಿಭಿರ್ನೀತಿಷು ಬುದ್ಧಿ-ಮದ್ಭಿ:” ಮೃದ್ವಿಂ ೧೨-೧೪. 2. ಬಲಿಷ್ಠ, ಶಕ್ತಿಶಾಲಿ. 3. ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ, ಧನಿಕ. “ಶಕ್ತು: ಪರಜನೇ ದಾತಾ ಸ್ವಜನೇ ದು:ಖಜ್ಞಿವಿನ್” ಮನುಂ ೧೧-೯. 4. ಶಬ್ದಕ್ಕಿರುವ ಅರ್ಥವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಅಭಿಧಾಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ (ಪದ). ಘಟ ಪಟ ಮೊದಲಾದ ಪದಗಳು ಕಂಬುಗ್ರೀವಾದಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ವಸ್ತುಗಳ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಕೊಡುವ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವುವು. 5. ಮೃದುವಾಗಿ ನುಡಿಯುವ, ಹಿತವಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವ.

**ಶಕ್ತಿ ಶಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಕ್ಷತೆ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಅರ್ಹತೆ. ಶಕ್ಲ್ (ಶಕ್ತೌ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೧೪). “ಶಾಕ್ತಿರರ್ಥಪತಿಷು ಸ್ವಯಂಪ್ರಹಂ ಪ್ರೇಮ ಕಾರಯತಿ ವಾ ನಿರತಯಮ್” ಕಿರಾಂ ೧೩-೬೧. 2. ಪರಾಕ್ರಮ, ಬಲ, ವೀರ್ಯ, ಸತ್ತ್ವ. “ಜ್ಞಾನೇ ಮೌನಂ ಕ್ಷಮಾ ಶಕ್ತೌ ತ್ಯಾಗೇ ಕ್ಷಾಂತಿವಿಪರ್ಯಯ:” ರಘುಂ ೧-೨೨. 3. ಗೌರಿ. ಶಕ್ತಿಯು ಗೌರೀಬ್ರಾಹ್ಮೀ ಮತ್ತೂ ವೈಷ್ಣವೀ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. “ಇಚ್ಛಾ ಕ್ರಿಯಾ ತಥಾ ಜ್ಞಾನಂ ಗೌರೀಬ್ರಾಹ್ಮೀ ತು ವೈಷ್ಣವೀ | ತ್ರಿಧಾ ಶಕ್ತಿ: ಸ್ಥಿತಾ ಯತ್ರ ತತ್ಪರಂ ಜ್ಯೋತಿರೋಮಿತಿ” | “ಸ ಜಯತಿ ಪರಿಣತ: ಶಕ್ತಿಭಿ: ಶಕ್ತಿ-ನಾಥ:” ಮಾಲತೀಂ ೫-೧. 4. ರಾಜನಿರಬೇಕಾದ ಪ್ರಭಾವ ಉತ್ಪಾದ ಮತ್ತು ಮಂತ್ರ ಇವುಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದ ಮೂರು ವಿಧ ಶಕ್ತಿಗಳು. ಕೋಶ ಮತ್ತು ದಂಡಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದು ಪ್ರಭಾವ (ಪ್ರಭುಶಕ್ತಿ). ವಿಕ್ರಮ (ಬಲ) ದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದು ಉತ್ಸಾಹಶಕ್ತಿ. ಸಂಧಿ, ವಿಗ್ರಹ, ಯಾನ ಮೊದಲಾದ ಪದ್ಧತಿಗಳನ್ನು ಮತ್ತು ಸಾಮಾನ್ಯ ಉಪಾಯಗಳನ್ನು ಯಥಾವಸ್ಥಿತವಾಗಿ ರಕ್ಷಿಸಿ ಕೊಡುಬರುವುದು ಮಂತ್ರಶಕ್ತಿ. “ಕೌಶದೃಢಬಲಂ ಪ್ರಮು-ಶಕ್ತಿ:” | “ವಿಕ್ರಮಬಲಮುತ್ಸಾಹಶಕ್ತಿ:” | “ಸಂಖ್ಯಾದೀನಾಂ ಸಾಮಾದೀನಾಂ ಚ ಯಥಾವಸ್ಥಾಪನಮ್ ಮನ್ತ್ರಬಲಮ್” | 5. ಕಾರಣದಲ್ಲಿರುವ ಕಾರ್ಯೋತ್ಪಾದನೆಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ಒಂದು ಧರ್ಮ. ಇದು ಕಾರ್ಯೋತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಪ್ರತಿಬಂಧಕಭಾವ ರೂಪವಾದುದು. ವಹ್ನಿಯಲ್ಲಿ ದಾಹಾನುಕೂಲವಾದ ಒಂದು ಶಕ್ತಿ ಇರುವುದು. ಆದರೆ ದಾಹೋತ್ಪೇಷಕಭಾವ



ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಮನೆಯು ಪ್ರತಿಬಂಧಕ. ಅಂತಹ ಪ್ರತಿಬಂಧಕಾಭಾವವು ದಾಹಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗುವುದು. ಇದೇ ಕಾರಣನಿಷ್ಠವಾದ ಧರ್ಮವು. 6. ಒಂದು ವಿಧ ವೃತ್ತಿ. ಇದು ಪದಗಳ ಅರ್ಥಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಅನುಕೂಲವಾದ ಅರ್ಥ ಸ್ಮರಣೆಗೆ ಸಾಧಕವಾದ ಪದ ಪದಾರ್ಥಗಳ ಸಂಬಂಧ. ಇದಕ್ಕೆ "ಅಭಿಧಾವೃತ್ತಿ:" ಎಂದು ಹೆಸರು. ಈ ಶಕ್ತಿಯು ಅನೇಕಾರ್ಥಶಬ್ದಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಯೋಗ ವಿಪ್ರಯೋಗ ಸಾಹಚರ್ಯ ಮೊದಲಾದವುಗಳಿಂದ ನಿಯಂತ್ರಿತವಾಗುವುದು. ಈ ಸಂಯೋಗಾದಿಗಳು ವಿಶೇಷವಾದ ಅರ್ಥಗಳ ಸ್ಮೃತಿಗೆ ಕಾರಣವಾಗುವವು. "ಸಂಯೋಗೋ ವಿಪ್ರಯೋಗಸಾಹಚರ್ಯವಿರೋಧಿತಾ। ಅರ್ಥ: ಪ್ರಕರಣಂ ಲಿಙ್ಗಂ ಶಬ್ದಸ್ಯಾನ್ಯಸ್ಯ ಸನ್ನಿಧಿ:॥ ಸಾಮರ್ಥ್ಯಮೌಚಿತೀ ದೇಶ: ಕಾಲೋ ವ್ಯಕ್ತಿ: ಸ್ವರಾದಯ:। ಶಬ್ದಾರ್ಥಸ್ಯಾನವಚ್ಛೇದೇ ವಿಶೇಷಸ್ಮೃತಿಹೇತವ:" । ಈ ಶಕ್ತಿಯು ಅಭಿಧಾ, ಲಕ್ಷಣಾ ಮತ್ತು ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಾ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ವಾಚ್ಯ, ಲಕ್ಷ್ಯ ಮತ್ತು ವ್ಯಂಗ್ಯರೂಪವಾದ ಮೂರು ವಿಧ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಈ ಮೂರು ಶಕ್ತಿಗಳು ತಿಳಿಸುವವು. "ವಾಚ್ಯೋಽಭಿಧಯಾ ಬೋಧ್ಯೋ ಲಕ್ಷ್ಯೋ ಲಕ್ಷಣಯಾ ಮತ: । ವ್ಯಾಖ್ಯಾಯಿ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಯಾ ತಾ: ಸ್ಯು: ತಿಸ್ತ: ಶಬ್ದಸ್ಯ ಶಕ್ತಯ:" ಸಾಂ ದಂ। 7. ಈ ಪದಕ್ಕೆ ಇದೇ ಅರ್ಥ ಎಂಬ ಈಶ್ವರೇಚ್ಛೆ. ಈಶ್ವರೇಚ್ಛೆಯೆಂದರೆ ಈಶ್ವರನು ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಪದಕ್ಕೂ ಇಟ್ಟಿರುವ ಸಂಕೇತ. 8. (ನ್ಯಾಯಮತದಲ್ಲಿ) ಯೋಗ, ರೂಢಿ ಮತ್ತು ಯೋಗ ರೂಢಿ ಎಂಬ ಮೂರು ಶಕ್ತಿಗಳು. ಪಾಟಕಾದಿ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ಯೋಗ. ಘಟ ಪಟ ಮೊದಲಾದ ಶಬ್ದಗಳಲ್ಲಿ ರೂಢಿ. ಪಂಕಜಾದಿ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ಯೋಗರೂಢಿ. 9. ಒಂದು ವಿಧ ಆಯುಧ. "ಶಕ್ತಿರ್ಮಮಾಸಾವಹತಪ್ರಚಾರಾ ಪ್ರಭಾವಸಾರಾ ಸುಮಹ:ಪ್ರಸಾರಾ" ಕುಮಾಂ ೧೩-೧೬। 10. ಶಾಕ್ತರಿಂದ ಆರಾಧಿಸಲ್ಪಡುವ ಒಂದು ದೇವತೆ. (೪೦) 11. ವಸಿಷ್ಠ ಮಹರ್ಷಿಯ ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಪುತ್ರ. ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ಆರುಂಧತಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಮುಷಿ. ಈತನ ಪತ್ನಿ ಅದೃಶ್ಯಂತಿ. ವಸಿಷ್ಠರ ಶಾಪದಿಂದ ರಾಕ್ಷಸನಾಗಿದ್ದ ಕಲ್ಮಾಷ ಪಾದನ ಶರೀರದೊಳಗೆ ವಿಶ್ವಾಂತನು ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸನನ್ನು ಆವೇಶಗೊಳಿಸಿ ಶಕ್ತಿಮುನಿಯನ್ನು ಕೊಲ್ಲಿಸಿದನು. ಆ ವೇಳೆಗೇ ಗರ್ಭಿಣಿಯಾಗಿದ್ದ ಅದೃಶ್ಯಂತಿಯ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಪರಾಶರಮುನಿಯು ಜನಿಸಿದರು.

**ಶಕ್ತಿಗ್ರಹ ಶಕ್ತಿಗ್ರಹ (೪೦) 1.** ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಂದಾಗಲಿ ಬುದ್ಧಿಯಿಂದಾಗಲಿ ಗ್ರಹಿಸುವುದು, -ತಿಳಿಯುವುದು. 2. ಶಬ್ದಶಕ್ತಿಜ್ಞಾನ, ಈ ಪದಕ್ಕೆ ಈ ಅರ್ಥದಲ್ಲೇ ಶಕ್ತಿ (ಈಶ್ವರೇಚ್ಛೆ) ಎಂದು ತಿಳಿಯುವುದು. ಈ ಶಕ್ತಿಗ್ರಹವು

ವ್ಯಾಕರಣ ಉಪಮಾನ ಕೋಶಗಳು ಮುಂತಾದವುಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದು. "ಶಕ್ತಿಗ್ರಹಂ ವ್ಯಾಕರಣೋಪಮಾನಕೋಶಾಂತವಾಕ್ಯಾಡ್ಯವಹಾರತಶ್ಚ। ವಾಕ್ಯಸ್ಯ ಶೇಷಾದಿವೃತ್ತೇವದಂತಿ ಸಾನ್ನಿವ್ಯತ: ಸಿದ್ಧಪದಸ್ಯ ವೃದ್ಧಾ:" ।

**ವ್ಯಾಕರಣದಿಂದ:** "ಕರ್ಮಿಣಿ ದ್ವಿತೀಯಾ" ಈ ಅನುಶಾಸನದಿಂದ ದ್ವಿತೀಯೆಗೆ ಶಕ್ತಿಗ್ರಹ. ಮತ್ತು ಧಾತು ಪ್ರಕೃತಿಪ್ರತ್ಯಯಾದಿಗಳ ಶಕ್ತಿಗ್ರಹವೂ ವ್ಯಾಕರಣದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದು.

**ಉಪಮಾನದಿಂದ:** "ಗೋಸದೃಶೋ ಗವಯ:" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಸಾದೃಶ್ಯಜ್ಞಾನದಿಂದ ಗವಯಪದಕ್ಕೆ ಗವಯದಲ್ಲಿ ಶಕ್ತಿಗ್ರಹವು ಉಪಮಾನದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದು.

**ಕೋಶದಿಂದ:** "ಸ್ವರವ್ಯಯಂ ಸ್ವರ್ಗನಾಕತ್ರಿದಿವತ್ರಿದಶಾಲಯಾ:" ಇತ್ಯಾದಿ ಕೋಶವಾಕ್ಯದಿಂದ ನಾಕ ಮೊದಲಾದ ಪದಗಳಿಗೆ ಸ್ವರ್ಗರೂಪವಾದ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಶಕ್ತಿಗ್ರಹ.

**ಅಪ್ತವಾಕ್ಯದಿಂದ:** "ಕೌಕಿಲ: ಪಿಕೃದವಾಚ್ಯ:" ಇತ್ಯಾದಿ ಅಪ್ತವಾಕ್ಯದಿಂದ ಕೋಕಿಲಪದಕ್ಕೆ ಪಿಕಪದದಲ್ಲಿ ಶಕ್ತಿಗ್ರಹ.

**ವ್ಯವಹಾರದಿಂದ:** "ಘಟಂ ನಯ, ಗಾಮಾನಯ" ಇತ್ಯಾದಿ ವ್ಯವಹಾರದಿಂದ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಬಾಲಕರಿಗೆ ಘಟಪದಕ್ಕೆ ಘಟದಲ್ಲಿಯೂ ಗೋಪದಕ್ಕೆ ಗೋವಶಾತ್ರದಲ್ಲಿಯೂ ಶಕ್ತಿಗ್ರಹವುಂಟಾಗುವುದು.

**ವಾಕ್ಯಶೇಷದಿಂದ:** "ಸ್ವಾರಾಜ್ಯಕಾಮೋಽಗ್ನಿಷ್ಠೋಮೇನ ಯಜೇತ" ಇಲ್ಲಿ ವಿಧಿಶೇಷೀಭೂತವಾದ "ಯಜ್ಞ ದು:ಖೇನ ಸಂಭಿಷ್ಠಂ ನ ಚ ಯಸ್ತಮನಂತರಮ್। ಅಭಿಲಾಷೋಽನೀತಂ ಚ ತತ್ಸುಖಂ ಸ್ವ: ಪದಾಸ್ಪದಮ್" ಮೊದಲಾದ ವಾಕ್ಯಗಳಿಂದ ಸ್ವರಾದಿಪದಕ್ಕೆ ಸ್ವರ್ಗಸುಖಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ಶಕ್ತಿಗ್ರಹ.

**ನಿವರಣೆಯಿಂದ:** ಇತಿ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಇಕಂ ಕರೋತಿ ಎಂಬ ಅರ್ಥನಿವರಣೆಯಿಂದ ಆಖ್ಯಾತಕ್ಕೆ ಯತ್ಪಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ಶಕ್ತಿಗ್ರಹ. ಇಲ್ಲಿ ಆಖ್ಯಾತವು ಯತ್ನವಿಶಿಷ್ಟ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಶಕ್ತಿ.

**ಪ್ರಸಿದ್ಧಪದಸಾಂನಿಧ್ಯದಿಂದ:** "ಸಹಕಾರತರೋ ಮಧುರಂ ಪಿಕೃ ಕೃಜತಿ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಮಧುರಪದದ ಸಾಂನಿಧ್ಯದಿಂದ ಪಿಕಪದಕ್ಕೆ ಕೋಕಿಲದಲ್ಲಿ ಶಕ್ತಿಗ್ರಹ. 3. ಒಬ್ಬನ ಶಕ್ತಿ ಸಾಮರ್ಥ್ಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವುದು. 4. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಷಣ್ಮುಖ. 5. ಪರಮೇಶ್ವರ.

**ಶಕ್ತಿಗ್ರಾಹಕ ಶಕ್ತಿಗ್ರಾಹಕ (ವಿಂ) 1.** ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ತಿಳಿದು ಕೊಳ್ಳುವವನು, ಒಬ್ಬನ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವನ್ನು ಅರಿತುಕೊಳ್ಳುವವನು. ಶಕ್ತಿ ಗೃಹ್ಣತಿ-ಗ್ರಹ (ಆಧಾದಾನೇ) "ಶ್ಕುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। 2. ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವವನು,



ತನ್ನ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವನ್ನು ಅರಿತುಕೊಳ್ಳುವಂತೆ ಮಾಡುವವನು. ಶಕ್ತಿಗ್ರಾಹ್ಯತಿ - ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) + ಗಿಚ್ "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ಶಕ್ತಿತ್ರಯ ಶಕ್ತಿತ್ರಯ (ನಂ)** ರಾಜನಿರಬೇಕಾದ ಮೂರು ಶಕ್ತಿಗಳು. (1) ಪ್ರಭುಶಕ್ತಿ: (2) ಮನ್ವಶಕ್ತಿ: ಮಂತ್ರ (3) ಉತ್ಸಾಹಶಕ್ತಿ: "ಪಙ್ಗುಣಾ: ಶಕ್ತಯಸ್ತಿಸ್ತ: ಸಿದ್ಧಯ-ಶ್ವೋದಯಾಸ್ತ್ರಯ:" ಮಾಘಂ ೨-೨೬। "ಶಙ್ಕುಗುಣಾ: ಶಕ್ತಯ-ಸ್ತಿಸ್ತ: ಪ್ರಭಾವೋತ್ಸಾಹಮನ್ವಜಾ:" ಅಮಂ।

**ಶಕ್ತಿಧರ ಶಕ್ತಿಧರ (ಪುಂ)** 1. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಕುಮಾರ ಸ್ವಾಮಿ, ಪಣ್ಣುಖ. ಧರತಿ-ಧರ್ಮ (ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಶಕ್ತೀಧರ: "ತತ: ಸುರಾ: ಶಕ್ತಿಧರಸ್ಯ ತಸ್ಯಾವಷ್ಟಮಭತ: ಸಾಧವಸಮುತ್ಸೃಜಂತ:" ಕುಮಾಂ ೧೩-೨೨। (ವಿಂ) 2. ಶಕ್ತಿಯುಧವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ.

**ಶಕ್ತಿಪಾಣಿ ಶಕ್ತಿಪಾಣಿ (ಪುಂ)** 1. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಕುಮಾರ ಸ್ವಾಮಿ, ಪಣ್ಣುಖ. ಶಕ್ತಿ: ಶಕ್ತಿಯುಧಂ ಪಾಣಿ ಯಸ್ಯ। (ವಿಂ) 2. ಶಕ್ತಿಯುಧವನ್ನು ಕೈಯಲ್ಲಿ ಹಿಡಿದಿರುವ. -ಭೂತ್ -ಭೃತ್.

**ಶಕ್ತಿಮತ್ ಶಕ್ತಿಮತ್ (ವಿಂ)** ಶಕ್ತಿಮಂತ, ಪರಾಕ್ರಮವುಳ್ಳವನು, ವೀರ. ಶಕ್ತಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ - "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪)। "ನ ದ್ವಿಪಿತ: ಶಕ್ತಿಮತಾಂ ಸ್ವಯಂಗ್ರಹ:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೨೦।

**ಶಕ್ತಿಹೇತಿಕ ಶಕ್ತಿಹೇತಿಕ (ವಿಂ)** ಶಕ್ತಿಯೇ ಆಯುಧವಾಗಿ ಉಳ್ಳವನು.

**ಶಕ್ತು ಶಕ್ತು (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ)** ಹುರಿಹಟ್ಟು, ಅಕ್ಕಿ ರಾಗಿ ಮೊದಲಾದ ಧಾನ್ಯಗಳನ್ನು ಹುರಿದು ಮಾಡುವ ಹಟ್ಟು. "ಧಾನ್ಯಾನಿ ಭಾಷ್ಪಭೃಷ್ಠಾನಿ ಯನ್ತ್ರಪಿಷ್ಠಾನಿ ಶಕ್ತವ:" ಭಾವಪ್ರಂ।

**ಶಕ್ತುಫಲಾ ಶಕ್ತುಫಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಬನ್ನಿಮರ.

**ಶಕ್ತರ್ಥ ಶಕ್ತರ್ಥ (ಪುಂ)** ಶ್ರಮದಿಂದ ಹೊಟ್ಟೆ ಹಣೆ ಮತ್ತು ಕುತ್ತಿಗೆಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಬೆವರು ಮತ್ತು ನಿಟ್ಟುಸಿರು. ಶಕ್ತೀರ್ಥ: "ಕುಕ್ಷಿ ಲಲಾಟೇ ಗ್ರೀವಾಯಾಂ ಯದಾ ಧರ್ಮ: ಪ್ರವರ್ತತೇ। ಶಕ್ತರ್ಥಂ ತಂ ವಿಜಾನೀಯಾದಾಯತೋಚ್ಛಾಸಮೇವ ಚ" ಇತಿ ರಾಜವಲ್ಲಭ:।

**ಶಕ್ನು ಶಕ್ನು (ವಿಂ)** ಹಿತವಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವವನು, ಮೃದುವಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವವನು. ಶಕ್ನು (ಶಕ್ತೌ) "ನು:" ಬಾಹುಂ।

**ಶಕ್ನುವತ್ ಶಕ್ನುವತ್ (ವಿಂ)** 1. ಶಕ್ತನಾಗಿರುವ, ಸಮರ್ಥನಾಗಿರುವ. ಶಕ್ನು (ಶಕ್ತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಅಶಕ್ನುವನ್ ಸೌತುಮಧೀರಲೋಚನ: ಸಹಸ್ರರಶ್ಮೀರಿವ ಯಸ್ಯ

ದರ್ಶನಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೪೪। 2. ಸಹಿಸುವ, ತಾಳ್ಮೆಯಿಂದಿರುವ, ಸಹನೆಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ವತೀ -ವತಿಃ. "ಅದರ್ಶಯನ್ ವಕ್ತುಮಶಕ್ನು-ವತ್ಯ: ಶಾಖಾಭಿರಾವಜಿತಪಲ್ಲವಾಭಿ:" ರಘುಂ ೧೩-೪೪। ಶಕ್ನು "ಚಾನಶ್" (೩-೨-೧೨೯)। -ವಾನಾ -ವಾನ್ಮಾ. "ತತ್ಕೇಕಯಿ ಸೌತುಮಶಕ್ನುವಾನಾ ವವಾರ ರಾಮಸ್ಯ ವನಪ್ರಯಾಣಮ್" ಭಟಿಂ ೩-೬।

**ಶಕ್ಮನ್ ಶಕ್ಮನ್ (ಪುಂ)** 1. ಶಕ್ತ. 2. ಇಂದ್ರ. ಶಕ್ನು (ಶಕ್ತೌ) "ಮನಿನ್" (೩ಂ ೪-೧೪೬)। (ನಂ) 3. ಕರ್ಮ. ಶಕ್ನೋತಿ ಇಷ್ಟಂ ಸಾಧಯಿತುಮ್ - ಶಕ್ನು "ಮನಿನ್"।

**ಶಕ್ಯ ಶಕ್ಯ (ಪುಂ)** 1. ಶಕ್ಯಾರ್ಥ, ವಾಚ್ಯಾರ್ಥ, ಅಭಿಧಾ ವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಬೋಧ್ಯವಾಗುವ ಅರ್ಥ. ಶಕ್ನು (ಶಕ್ತೌ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೯)। "ಶಕ್ಯೋಽರ್ಯೋಽಭಿಧಯಾ ಜೇಯ: ಲಕ್ಷ್ಯೋ ಲಕ್ಷಣಯಾ ಮತ:। ವ್ಯಜ್ಞಯೋ ವ್ಯಜ್ಞನಯಾ ಜೇಯಸ್ತಿಸ್ತ: ಶಬ್ದಸ್ಯ ವೃತ್ತಯ:"। (ವಿಂ) 2. ಸಾಧ್ಯವಾಗಬಹುದಾದ, ಮಾಡಬಹುದಾದ. "ಕಥಂ ನು ಶಕ್ಯೋಽನುನಯೋ ಮಹರ್ಷೇವಿಶ್ರಾಣನಾ-ಚ್ಚಾನ್ಯಪಯಸ್ವಿನೀನಾಮ್" ರಘುಂ ೨-೪೪। 3. ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಸಾಧಿಸಬಹುದಾದ. "ಶಕ್ಯಾನ್ಯದೋಷಾಣಿ ಮಹಾಫಲಾನಿ ಸಮಾರಂಭತೋಪನಯನ್ಸಮಾಪ್ತಿಮ್" ಭಟಿಂ ೧೨-೪೫। 4. ಕಾರ್ಯರೂಪಕ್ಕೆ ಬರುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವುಳ್ಳ, ಅಸ್ತಿತ್ವಕ್ಕೆ ಬರಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗುವ. "ನ ಹಿ ದೇಹಮೃತಾ ಶಕ್ಯಂ ತ್ಯಕ್ತುಂ ಕರ್ಮಣ್ಯ-ಶೇಷತ:" ಗೀತಾ ೧೮-೧೧।

**ಶಕ್ರ ಶಕ್ರ (ಪುಂ)** 1. ಮಹೇಂದ್ರ, ದೇವರಾಜ. ಸುರಪತಿ. ಶಕ್ನೋತಿ ನಾಶಯಿತುಂ ದೇವಾನ್ - ಶಕ್ನು (ಶಕ್ತೌ) "ರಕ್" (೩ಂ ೨-೧೩)। "ಶಕ್ರ ಏವ ಶರಣಂ ಪ್ರಪದತೇ ಭಕ್ತಜೀವಿತ-ಭವಂತಮಿಶ್ವರಮ್" ಯಾದಂ ೧೭-೮೯। 2. ಕೆಂಪುಮತ್ತಿ ಮರ. 3. ಬೆಟ್ಟಮಲ್ಲಿಗೆ. "ಶಕ್ರ: ಪುಮಾನ್ ದೇವರಾಜೇ ಕುಡ್ಜಾರ್ಜುನಮೂಹೋ:" ಮೇದಿಂ। 4. ಇಂದ್ರದೇವತಾಕವಾದ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾನಕ್ಷತ್ರ. 5. ಘೂಕ. ಗೂಬೆ.

**ಶಕ್ರಜ ಶಕ್ರಜ (ಪುಂ)** ಕಾಕ, ಕಾಗೆ. ಶಕ್ರಾಜ್ಜಾಯತೇ ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರಭವಿ) "ಹ:" (೩-೨-೧೮)। "ಶಕ್ರಜ: ಸತ್ಯ-ವಾಕ್ಯಾಣೋಽಪಕೃಷ್ಠೋ ನಗರೀಬಕ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

**ಶಕ್ರಜಿತ್ ಶಕ್ರಜಿತ್ (ಪುಂ)** 1. ಇಂದ್ರನನ್ನು ಜಯಿಸಿದ ಇಂದ್ರಜಿತ್, ರಾವಣನ ಮಗ. ಶಕ್ರಂ ಜಿತವಾನ್ - ಜಿ (ಜಯ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧)। "ಅಪಿ ಪ್ರಭು: ಸಾನುಶಯೋಽ-ಧುನಾ ಸ್ಯಾತ್ ಕಿಮುತ್ಸುಕ: ಶಕ್ರಜಿತೋಽಪಿ ಹಂತಾ" ರಘುಂ ೧೪-೮೩। (ವಿಂ) 2. ಇಂದ್ರನನ್ನು ಜಯಿಸಿದವನು.

**ಶಕ್ರದ್ರೂಮ ಶಕ್ರದ್ರೂಮ (ಪುಂ)** 1. ದೇವದಾರುವೃಕ್ಷ. ಶಕ್ರಸ್ಯ ದ್ರೂಮ:। -ಪಾದಪ:-ಪಾದಪಃ. 2. ಬೆಟ್ಟಮಲ್ಲಿಗೆ.



ಶಕ್ತಧನುಸ್ ಶಕ್ತಧನುಸ್ (ನಂ) ಇಂದ್ರನ ಧನುಸ್ಸು, ಇಂದ್ರನ ಆಯುಧ. ಇಂದ್ರಸ್ಯ ಧನುಃ | "ಇಂದ್ರಾಯುಧಂ ಶಕ್ತಧನುಃ" ಅಮಂ | -ಶರಾಸನಮ್ -ಶರಾಸನಮ್.

ಶಕ್ತವಜ ಶಕ್ತವಜ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರ, -ಪತಾಕೆ. ಶಕ್ತಸ್ಯ ವಜಃ | ಇಂದ್ರನ ಪೂಜೆಗಾಗಿ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಿಸಲ್ಪಡುವ ಬಾವುಟ.

ಶಕ್ತನಂದನ ಶಕ್ತನಂದನ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರನ ಪುತ್ರನಾದ ಅರ್ಜುನ. 2. ಜಯಂತ. ಶಕ್ತಸ್ಯ ನಂದನಃ | (ವಿಂ) 3. ಇಂದ್ರನಿಗೆ ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವವನು. ಇಂದ್ರ ನಂದಯತಿ - ಟು ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) |

ಶಕ್ತಪುಷ್ಪಿ ಶಕ್ತಪುಷ್ಪಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆಣ್ಣೆಬಿದಿರುಸೊಪ್ಪು.

ಶಕ್ತಭವನ ಶಕ್ತಭವನ (ನಂ) ಇಂದ್ರಲೋಕ, ಸ್ವರ್ಗ ಲೋಕ, ದೇವಲೋಕ.

ಶಕ್ತಮಾತೃಕಾ ಶಕ್ತಮಾತೃಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಂದ್ರನ ಧ್ವಜಕ್ಕೆ ಅಸರೆಯಾಗಿರುವ ಕಂಬ, ಇಂದ್ರಧ್ವಜವನ್ನು ಏರಿಸುವ ಕಂಬ.

ಶಕ್ತಮೂರ್ಧನ್ ಶಕ್ತಮೂರ್ಧನ್ (ಪುಂ) ವಲ್ಮೀಕಿ, ಹುತ್ತ. ಶಕ್ತಸ್ಯೇವ ಮೂರ್ಧಾನ್ಯ | "ಕ್ರಿಸ್ತಮೂರ್ಧನ್ ವಲ್ಮೀಕಿಃ ಶಕ್ತಮೂರ್ಧನ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಶಕ್ತಲೋಕ ಶಕ್ತಲೋಕ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರಲೋಕ, ಸ್ವರ್ಗ ಲೋಕ.

ಶಕ್ತವಲ್ಲಿ ಶಕ್ತವಲ್ಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಂದ್ರವಾರುಣಿ, ಹಾವು-ಮೆಕ್ಕೆ.

ಶಕ್ತವಾಹನ ಶಕ್ತವಾಹನ (ನಂ) ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಶಕ್ತ ವಾಹಯತಿ-ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) |

ಶಕ್ತಶಿರಸ್ ಶಕ್ತಶಿರಸ್ (ನಂ) ವಲ್ಮೀಕಿ, ಹುತ್ತ.

ಶಕ್ತಸಾರಥಿ ಶಕ್ತಸಾರಥಿ (ಪುಂ) ಮಾತಲಿ, ಇಂದ್ರನ ಸಾರಥಿ.

ಶಕ್ತಸುತ ಶಕ್ತಸುತ, -ಸುತು -ಸೂನು (ಪುಂ) ಇಂದ್ರನ ಮಗ - (1) ವಾಲಿ. (2) ಅರ್ಜುನ. (3) ಜಯಂತ.

ಶಕ್ತಸೃಷ್ಟಾ ಶಕ್ತಸೃಷ್ಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಳಲಿಗಿಡೆ. ಶಕ್ತಸ್ಯ ಸೃಷ್ಟಾ | "ರಸಾಯನಫಲಾ ಪಯಾ ಶಕ್ತಸೃಷ್ಟಾ ಸುಧೋದ್ಭವಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಶಕ್ತಾಖ್ಯ ಶಕ್ತಾಖ್ಯ (ಪುಂ) ಘಾಕ, ಗಾಬೆ, ಉಲೂಕ. ಶಕ್ತಸ್ಯ ಆಖ್ಯಾ ಯಸ್ಯ | "ಶಕ್ತಾಖ್ಯೋ ದಿವಾಂಧೋ ವಕ್ರನಾಸಿಕಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಶಕ್ತಾಣಿ ಶಕ್ತಾಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಂದ್ರನ ಪತ್ನಿ, ಶಬೀದೇವಿ. ಶಕ್ತಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ - "ಡೀಪ್" ಅನುಗಾಗಮಶ್ಚ (೪-೧-೪೯) |

"ಬೃಹಸ್ಪತಿರಯೋವಾಚ ಶಕ್ತಾಣಿ ಭಯಮೋಹಿತಾಂ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೧-೨೨ |

ಶಕ್ತಾತ್ಮಜ ಶಕ್ತಾತ್ಮಜ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರನ ಮಗ - (1) ವಾಲಿ. (2) ಅರ್ಜುನ. (3) ಜಯಂತ.

ಶಕ್ತಾಶನ ಶಕ್ತಾಶನ (ಪುಂ) 1. ಬೆಟ್ಟಮಲ್ಲಿಗೆ. ಶಕ್ತ ಇತಿ ನಾಮ ಅನುತೆ - ಅಶ್ವ (ವ್ಯಾಪ್ತೆ) "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) (ನಂ) 2. ಸಣಬಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಒಂದು ಮದ್ಯ. ಶಕ್ತೇಣ ಅಶ್ಯತೇ |

ಶಕ್ತಿ ಶಕ್ತಿ (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ. 2. ಗಜ, ಆನೆ. 3. ವಜ್ರಾಯುಧ. 4. ಮೇಘ, ಮೋಡ.

ಶಕ್ತೋತ್ಥಾನ ಶಕ್ತೋತ್ಥಾನ (ನಂ) ಇಂದ್ರನ ಸಂತೋಷಾರ್ಥ ನಡೆಸುವ ಒಂದು ಉತ್ಸವ, ಭಾದ್ರಪದ ಶುಕ್ಲ ದ್ವಾದಶಿಯ ದಿನ ನಡೆಸುವ ಇಂದ್ರಧ್ವಜದ ಪೂಜೆ. ಶಕ್ತಸ್ಯ ಶಕ್ತವಜಸ್ಯ ಉತ್ಥಾನಮ್ | ರಾಜನು ತನಗೆ ಸಂಭವಿಸಬಹುದಾದ ಅನೇಕ ವಿಧ ಅಡ್ಡಿ ಆತಂಕಗಳ ನಿವಾರಣೆಗಾಗಿ ಮತ್ತು ಸುವೃಷ್ಟಿ ಮತ್ತು ಸಸ್ಯಸಮೃದ್ಧಿಗಾಗಿ ಇಂದ್ರಧ್ವಜದ ಪೂಜೆಯನ್ನು ಆಚರಿಸುವನು. "ಅಥಾತಃ ಶೃಣು ರಾಜೇಂದ್ರ ಶಕ್ತೋತ್ಥಾನ-ವಜೋತ್ಸವಮ್ | ಯತ್ಕೃತ್ವಾ ನೃಪತೀರ್ಯಾತಿ ನೌ ಕದಾಚಿತ್ ಪರಾ-ಭವಮ್ || ರವಿ ಹರಿಸ್ಥಿ ದ್ವಾದಶ್ಯಾಂ ಶ್ರವಣೇ ಸಿತಪಕ್ಷಿಕೇ | ಆರಾಧಯೇನ್ನೃಪಃ ಸಮ್ಯಕ್ ಸರ್ವವಿಘ್ನೋಪಶಾಂತಯೇ" ಕಾಲಿಕಾಪುಂ | [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಇಂದ್ರವಜ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಶಕ್ತೋತ್ಸವ ಶಕ್ತೋತ್ಸವ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರನ ಸಂತೋಷಾರ್ಥ ನಡೆಸುವ ಒಂದು ಉತ್ಸವ. ["ಶಕ್ತೋತ್ಥಾನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಶಕ್ಲ ಶಕ್ಲ (ವಿಂ) ಪ್ರಿಯವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವವನು, ಹಿತ ವಾಗಿ ಮಾತಾಡುವವನು, ದಯೆಯಿಂದ ಮಾತಾಡುವವನು. ಶಕ್ಲ (ಶಕ್ತೆ) "ಕ್ಲಃ" (೩ಂ ೪-೧೦೮) |

ಶಕ್ವನ್ ಶಕ್ವನ್ (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. ಶಕ್ಲ (ಶಕ್ತೆ) "ವನಿಪ್" (೩ಂ ೪-೧೧೨) |

ಶಕ್ವರ ಶಕ್ವರ (ಪುಂ) ವೃಷಭ, ಎತ್ತು.

ಶಕ್ವರೀ ಶಕ್ವರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಂಗುಳಿ, ಬೆರಳು. ಶಕ್ಲ (ಶಕ್ತೆ) "ವನಿಪ್" (೩ಂ ೪-೧೧೨) | "ಡೀಪ್" ರಶ್ಮಿ (೪-೧-೭) | 2. ಅಂಗುಳಿಯಕ, ಉಂಗುರ. 3. ಡಾಬು, ವಡ್ಡಾಣ, ಸ್ತ್ರೀಯರ ನಡುಕಟ್ಟು. 4. ಒಂದು ನದಿ. 5. ಸಮವೃತ್ತದ ಒಂದು ಭಂದಸ್ಸು. "ಶಕ್ವರೀ ಛಂದಸೋ ಭೇದೇ ನದೀಮೇಖಲಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ | 6. ಅಕ್ಕಳು, ಹೆಸು. ಶಕ್ನೋತಿ ಪಾಪಮಪನೇತುಮ್ | "ವನಿಪ್" "ಡೀಪ್" ರಶ್ಮಿ |



ಶಕ್ತು ಶಂಕ (ಪುಂ) ಗಾಡಿಯನ್ನು ಎಳೆಯುವ ಎತ್ತು, ವೃಷಭ. "ಸ್ಕನ್ವವಾಹಸ್ತು ಶಕ್ತುಶ್ಚ ಶೃಂಗೀ ಗೋಕ್ಷಯಿತಲಃ" ಹಾರಾಂ.

ಶಕ್ತುನೀಯ ಶಂಕನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸಂದೇಹಪಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಸಂಶಯಪಡಬಹುದಾದ. ಶಕಿ (ಶಕ್ತಾಯಾಮ್) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). "ಕಾವೇರೀ ಸರಿತಾಂ ಪತ್ಯುಃ ಶಕ್ತುನೀಯಾಮಿವಾಕರೋತ್" ರಘುಂ ೪-೪೫. 2. ಶಂಕಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಸಂದೇಹಪಡಬೇಕಾದ. "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬).  
ಶಕ್ತುತವ್ಯಃ ಶಂಕಿತವ್ಯಃ. 4. ಊಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಊಹಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 6. ಊಹಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ.

ಶಕ್ತುಮಾನ ಶಂಕಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಸಂದೇಹಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಊಹಿಸುತ್ತಿರುವ. ಶಕಿ (ಶಕ್ತಾಯಾಮ್) "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಕರಜದಶನಚಿಹ್ನಂ ನೈಶಮಜ್ಞೇಜ್ಯನಾರೋಜನಿತಮಿತಿ ಸರೋಪಾಮೀರ್ಯಯಾ ಶಕ್ತುಮಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೩೭.

ಶಕ್ತುರ ಶಂಕರ (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಶಂಕಲ್ಯಾಣಂ ಸುಖಂ ವಾ ಕರೋತಿ—ಛಕ್ರಂ (ಕರಣಂ) "ಅಚ್" (೩-೨-೧೪). "ನಾಭಿದೇಶನಿಹಿತಃ ಸಕಮ್ಯಯಾ ಶಕ್ತುರಸ್ಯ ರುಧೇ ತಯಾ ಕರಃ" ಕುಮಾರಂ ೮-೪. (ವಿಂ) 2. ಮಂಗಳವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. 3. ಸಂಖ್ಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಶಮ್ + ಕೃನ್ "ಕೃಃ" (೩-೨-೨೦). "ಭೀತಾಃ ಸಿತಶರಾಭೀತಾಃ ಶಕ್ತುರಂ ತತ್ರ ಶಕ್ತುರಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೫-೩೧.

ಶಕ್ತುರೀ ಶಂಕರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಾರ್ವತಿ, ಪರಮೇಶ್ವರನ ಪತ್ನಿ. ಶಕ್ತುರಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ— "ಕೃಷ್" (೪-೧-೪೫). 2. ಶಮೀವೃಕ್ಷ. 3. ಮಂಜಿಷ್ಠ.

ಶಕ್ತುಯ ಶಂಕವ್ಯ (ವಿಂ) ಗೂಟಕ್ಕೆ ಅನುಕೂಲವಾದ ಮರ. ಶಕ್ತುಯೇ ಹಿತಮ್—ಶಕ್ತು "ಯತ್" (೫-೨-೨).

ಶಕ್ತು ಶಂಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತ್ರಾಸ, ಭಯ. ಶಕಿ (ಶಕ್ತಾಯಾಮ್) "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩). "ಶಕ್ತಾಸ್ಪೃಷ್ಠಾ ಇವ ಜಲಮುಚಸ್ವಾದೃಶಾ ಜಾಲಮಾರ್ಗಃ" ಮೇಘಂ ೨-೬. 2. ವಿರಕ್ತ, ಸಂಶಯ, ಸಂದೇಹ. "ಶಕ್ತಾಲತಾತತಿಮನೇಕನಲಾವಲಮ್ಬಾ ವಾಣಿ ನ ವರ್ಧಯತು ತಾವದಭೇದಿಕೇಯಮ್" ನೈಷಂ ೧೩-೨೬. 3. ಭ್ರಾಂತಿ, ಭ್ರಮೆ, ತಪ್ಪುತಿಳಿವಳಿಕೆ. "ಕುರ್ವನ್ ವಧೂಜನಮನಸ್ತು ಶಶಾಕ್ಷಶಕ್ತಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೫-೪೨. 4. ಅನುಮಾನ, ಅಳುಕು, ಗುಮಾನಿ.

ಶಕ್ತುತ ಶಂಕಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಂಶಯಗೊಂಡ, ಸಂದೇಹವುಂಟಾದ. ಶಕ್ತುತಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ "ಇತಚ್" (೫-೨-೩೬). 2. ಸಂದಿಗ್ಧವಾದ. "ಶಕ್ತುತಪ್ರಚಯಃ ಶೇಷಃ ಶತ್ರುಣಾಂ ಶುಷ್ಮಣಾಮಿವ" ಯಾದಂ ೨೨-೮. 3. ಭಯಗೊಂಡ,

ಹೆದರಿದ. 4. ಅನುಮಾನವುಂಟಾದ. (ನಂ) 5. ಭಯ, 6. ಸಂಶಯ. 7. ಗುಮಾನಿ. ಶಕಿ (ಶಕ್ತಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಕಃ"।

ಶಕ್ತುತವರ್ಣಕ ಶಂಕಿತವರ್ಣಕ (ಪುಂ) ಚೋರ, ತಪ್ಪುರ, ಕಳ್ಳ. ಶಕ್ತುತಂ ವರ್ಣಯತಿ ತರ್ಕಯತಿ—ವರ್ಣ (ವರ್ಣಕ್ರಿಯಾ-ವಿಸ್ತಾರಗುಣವಚನೇಷು) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩).

ಶಕ್ತುನ್ ಶಂಕನ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂದೇಹಪಡುವ. 2. ಹೆದರುತ್ತವೆ. ಶಕ್ತುತೇ—ಶಕಿ (ಶಕ್ತಾಯಾಮ್) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪). "ಸ್ನೇಹಃ ಪಾಪಶಕ್ತುಃ" ಶಾಕುಂ ೪. "ತ್ಯಜತಿ ಕಷ್ಟಮಸಾವಚಿರಾದಸುನ್ ವಿರಹವೇದನಯೇತ್ಯವ-ಶಕ್ತುಮಿಃ" ಮಾಘಂ ೬-೧೮.

ಶಕ್ತು ಶಂಕು (ಪುಂ) 1. ಚೋರಮೀನು, ಒಂದು ಜಲಜಂತು ಶಕ್ತುತೇಷ್ಮಾತ್—ಶಕಿ (ಶಕ್ತಾಯಾಮ್) "ಕುಃ" ನಿಪಾಂ (೩ಂ ೧-೩೬). 2. ಮೋಟುಮರ, ರೆಂಬೆಗಳಿಲ್ಲದ ಮರ. 3. ಬಾಕು, ಜೊಪಾಗಿರುವ ಸಣ್ಣ ಅಲಗಿನ ಇರಿಯುವ ಒಂದು ಆಯುಧ, ಭಲೆ. "ಮಾನಸ್ಯೋಚ್ಚೇವಹಂ-ಭಾರೇಣ ಶಕ್ತುರಾವರಾತೇ ವೀಕ್ಷಣೇ ಚ ಕ್ಷಣೇನ" ಮಾಘಂ ೧೮-೩೦. 4. ಲೋಹದ ಮೊಳೆ, ಆಣ. "ಅಯಃ ಶಕ್ತುಚಿತಾಂ ರಕ್ಷಾಃ ಶತಧ್ವನಿಮಥ ಶತ್ರುವೇ" ರಘುಂ ೧೨-೯೫. 5. ದನಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಗೂಟ. 6. ಲೋಹದ ಸರಳು, ಕಬ್ಬಿಣದ ಸಲಾಕೆ. "ನಿಷೇಪ್ಯೋಷ್ಯೋಮಯಃ ಶಕ್ತುಕುರ್ವಲನಾಸ್ಯೇ ದಶಾಙ್ಗುಲಃ" ಮನುಂ ೮-೨೭೧. 7. ಪಾಪ, ದುಷ್ಕೃತ್ಯ. 8. ಶಲ್ಯವೆಂಬ ಒಂದು ಅಸ್ತ್ರ. 9. ಒಂದು ಸಂಖ್ಯೆ, ಹತ್ತು ಲಕ್ಷ ಕೋಟಿ. 10. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 11. 12 ಅಂಗುಲ ಉದ್ದದ ಒಂದು ಅಳತೆ. 12. ಮೇಡ್ರ, ಪುರುಷನ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ. 13. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. 14. ಎಲೆಯ ಸಣ್ಣ ಎಳೆಗಳು, ಸಣ್ಣ ನಾರುಗಳು. 15. ವಲ್ಮೀಕಿ, ಹುತ್ತ್.

ಶಕ್ತುಕರ್ಣ ಶಂಕುಕರ್ಣ (ಪುಂ) 1. ಗದಭ, ಕತ್ತೆ, ರಾಸಭ. ಶಕ್ತುಃ ಇವ ಕರ್ಣವಿಷಯ. (ವಿಂ) 2. ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಮೊನೆ ಯಾಗಿರುವ ಕಿವಿಗಳುಳ್ಳವನು.

ಶಕ್ತುತರು ಶಂಕುತರು (ಪುಂ) ಸಾಲವೃಕ್ಷ, ಮತ್ತಿಮರ.

ಶಕ್ತುರ ಶಂಕುರ (ವಿಂ) ಭಯವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವವನು. ಶಕ್ತುತೇಷ್ಮಾತ್—ಶಕಿ (ಶಕ್ತಾಯಾಮ್) "ತರಚ್" ವಾಹುಂ.

ಶಕ್ತು ಶಂಖ (ಪುನಂ) 1. ಕಂಬು, ಶಂಖ, ಒಂದು ಪ್ರಾಣಿಯ ಹೊರಹೊದಿಕೆ, ಚಿಪ್ಪು. ಶಾಮ್ಯತ್ಯಲಕ್ಷಮಿಮ್—ಅಂತರ್ಮುಖಿತ-ಪ್ರಯಃ. ಶಮು (ಉಪಶಮೇ) "ಃ" (೩ಂ ೧-೧೦೨). 2. ಸಂಖ್ಯೆ, ಲನತಿ ಜನಯತಿ—ಲನು (ಅವದಾರಣೆ) "ಃ"



(ಬಾಂ ೩-೧-೧೦೧)। ಇತಿ ವಾ । “ದಮತು: ಪುರುಷವ್ಯ ಶ್ರೀ ದಿವ್ಯೋ ಶಾಸ್ತ್ರೋ ರಥೇ ಸ್ಥಿತೌ” ಭಾಂ ಭೀಷಂ ೧-೧೭ । “ಮಾಧವ: ಪಾಂಡವಶ್ಚೈವ ದಿವ್ಯೋ ಶಾಸ್ತ್ರೋ ಪ್ರದಮತು:” ಗೀತಾ ೧-೧೪ । ಶ್ರಿಯು:ಪತಿಯು ಶಂಖ ಪಾಂಚಜನ್ಯ ಅರ್ಜುನನ ಶಂಖ ದೇವದತ್ತ ಭೀಮಸೇನನ ಶಂಖ ಪೌಂದ್ರ ಧರ್ಮರಾಜನ ಶಂಖ ಅನಂತವಿಜಯ ನಕುಲನ ಶಂಖ ಸುಖೋಷ ಸಹದೇವನ ಶಂಖ ಮಣಿ ಪುಷ್ಪಕ. (ಪುಂ) 2. ಲಲಾಟದ ಅಸ್ತಿ ಹಣೆಯ ಮೂಳೆ. “ಶಾಸ್ತ್ರಾಂತರಯೋತಿ ವಲೋಚನಂ ಯದಂತನಿವಿಷ್ಟಾಮಲಪಿಕ್ವ-ತಾರಮ್” ಕುಮಾಂ ೭-೩೩ । 3. ಕುಬೇರನ ನವನಿಧಿಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. “ಮಹಾಪದ್ಮಾ ಪದ್ಮಾ ಶಾಸ್ತ್ರೋ ಮಕರಕಂಠಯಾ । ಮುಕ್ತಾ: ಕುಂದನಿಲೌ ಚ ವರಶ್ಚ ನಿಧಯೌ ನವ” ಅಮಂ । 4. ನಖ ಎಂಬ ಒಂದು ಗಂಧದ್ರವ್ಯ. “ಶಾಸ್ತ್ರ: ಕಮ್ಮೌ ನ ಯೋಷ್ಣಾ ಭಾಲಾಸ್ಥಿನಿಧಿಭಿಃ ಸೇವಿತಃ” ಮೇದಿಂ । 5. ಅನೆಯ ದಂತಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ. “ಶಾಸ್ತ್ರಕಟಯೌ ದಂತಮಧ್ಯೌ ಪ್ರವೇಷ್ತ: ಪೃಷ್ಠತಲ್ಪನೇ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 6. ಒಬ್ಬ ದೈತ್ಯ. 7. ಒಬ್ಬ ಸ್ತುತಿಕಾರರು. 8. ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ಸಂಖ್ಯೆ ಹತ್ತು ನಿಖರ್ವ ಗಳು. “ಏಕಂ ದಶಶತಂ ಚೈವ ಸಹಸ್ರಮಯುತಂ ತಥಾ । ಲಕ್ಷಂ ಚ ನಿಯುತಂ ಚೈವ ಕೋಟಿರಬುದಮೇವ ಚ । ವೃಂದ: ಸರ್ವೌ ನಿಖರ್ವಶ್ಚ ಶಾಸ್ತ್ರಪಯೌ ಚ ಸಾಗರ: । ಅನ್ಯಂ ಮಧ್ಯಂ ಪರಾರ್ಧಂ ಚ ದಶವೃಂದಾ ಯಥಾಕ್ರಮಮ್” ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡಪುಂ ।

ಶಾಸ್ತ್ರಕ ಶಂಖಕ (ಪುಂ) 1. ಕಂಬು, ಶಂಖ. ಶಾಸ್ತ್ರ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” । (ಪುಂ) 2. ತಲೆಯ ನೋವು. (ನಂ) 3. ವಲಯ, ಬಳೆ. “ಶಾಸ್ತ್ರಕಂ ವಲಯೇ ಕಮ್ಮಾವಸ್ತ್ರೀ ಪುಸಿ ಶಿರೋಽಜಿ” ಮೇದಿಂ ।

ಶಾಸ್ತ್ರಚರೀ ಶಂಖಚರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಂಗಸರು ಧರಿಸುವ ಬೈತಲೆಯ ಬೊಟ್ಟು ಹಣೆಯ ಮೇಲೆ ಇಳಿದು ನಿಲ್ಲುವ (ಇಳಿಬಿಟ್ಟಿರುವ) ಸ್ತ್ರೀಯರ ಒಂದು ಆಭರಣ. ಶಾಸ್ತ್ರ ಲಲಾಟಾಸ್ಥಿನಿ ಚರತಿ—ಚರ (ಗತೌ) “ಛ:” (೩-೨-೧೬) । “ಜಿಪ್” (೪-೧-೧೫) ।

ಶಾಸ್ತ್ರಜ ಶಂಖಜ (ಪುಂ)ಯ ದೊಡ್ಡಜಾತಿ ಮುತ್ತು.

ಶಾಸ್ತ್ರಜ ಶಂಖಜ (ಪುಂ) ಶಂಖವನ್ನು ಉದುವವನು. ಶಾಸ್ತ್ರ ಜಮತಿ—ಜಮಾ (ಶಬ್ದಾನಿಸಂಯೋಗಯೋ:) “ಕ:” (೩-೨-೩) । “ಕಿವಪ್” । ಶಾಸ್ತ್ರಜಾ ಶಂಖಜಾ.

ಶಾಸ್ತ್ರನಖ ಶಂಖನಖ (ಪುಂ) ಸಣ್ಣ ಶಂಖ, ಚಿಕ್ಕ ಶಂಖ, ಗುಳ್ಳೆ ಶಂಖ.

ಶಾಸ್ತ್ರಭುತ್ ಶಂಖಭುತ್ (ಪುಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಶಾಸ್ತ್ರ ವಿಭತಿ—ಭುಮ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) “ಕಿವಪ್” (೩-೨-೬೧) ।

“ಶಾಸ್ತ್ರಭುತ್ ಪರಮೇಶ್ವರಲಕ್ಷಣಾಯುಧಧಾರಣಾತ್” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: ।

“ಶಾಸ್ತ್ರಭುಜಾಂತರೀ ಚಕ್ರೋ ಶಾಸ್ತ್ರಭುಜಾಂತರೀ ಗದಾಧರ:” ವಿಂ ಸಂ ।

ಶಾಸ್ತ್ರಮುಖ ಶಂಖಮುಖ (ಪುಂ) ಮೊಸಳೆ. ಶಾಸ್ತ್ರಸ್ಯೇವ ಮುಖಮಸ್ಯ ।

ಶಾಸ್ತ್ರಮೂಲ ಶಂಖಮೂಲ (ನಂ) ಮೂಲಂಗಿ.

ಶಾಸ್ತ್ರೀನ್ ಶಂಖೀನ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ಸಮುದ್ರ. 3. ಶಂಖದಿಂದ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು.

ಶಾಸ್ತ್ರೀನಿ ಶಂಖೀನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಡಿಯಾಲದ ಗಿಡ. ಶಾಸ್ತ್ರೀಯತ್ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯಾ: । 2. ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಉತ್ತಮಜಾತಿಯ ಸ್ತ್ರೀಯರಲ್ಲೊಂದು ವಿಧ ಹೆಂಗಸು. (1) ಶಾಸ್ತ್ರೀನಿ (2) ಚಿತ್ರೀನಿ (3) ಹಸ್ತಿನಿ ಮತ್ತು (4) ಪದ್ಮಿನಿ ಎಂದು ಸ್ತ್ರೀಯರು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. “ದೀರ್ಘಾ ಸುದೀರ್ಘನಯನಾ ವರಸುಂದರೀ ಯಾ ಕಾಮೋಪಭೋಗಸಿಕಾ ಗುಣಶಾಲಯುಕ್ತಾ । ರೇಖಾತ್ರಯೇಣ ಚ ವಿಭೂಷಿತಕಂಠದೇಶಾ ಸಂಭೋಗಕೇಲಿಸಿಕಾ ಕಿಲ ಶಾಸ್ತ್ರೀನಿ ಸಾ” ರತಿಮಂ । [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಚಿತ್ರೀನಿ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 3. ಶಂಖವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವವಳು.

ಶಾಸ್ತ್ರೀನೀಫಲ ಶಂಖೀನೀಫಲ (ಪುಂ) ಶಿರೀಷವೃಕ್ಷ, ಬಾಗೆ ಮರ.

ಶಾಸ್ತ್ರೀ ಶಚಿ, -ಶೀ -ಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶಚೀದೇವಿ, ಇಂದ್ರನ ಪತ್ನಿ. ಶಾಸ್ತ್ರ (ವ್ಯಕ್ತಿಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಇನ್” (೩ಂ ೪-೧೧೮) । ವಾ “ಜಿಪ್” (೫ಂ ೪-೧-೪೫) । “ಶಮಾವೃಷಾಕ್ಷೌ ಶರಜನ್ಮನಾ ಯಥಾ ಯಥಾ ಜಯಂತೇನ ಶಾಸ್ತ್ರೀಪುರಂದರೀ । ತಥಾ ನೃಪ: ಸಾ ಚ ಸುತೇನ ಮಾಗಧಿ ನನಂದತುಸ್ತತ್ಸದೃಶೇನ ತತ್ಸಮೌ” ರಘುಂ ೩-೨೩ । 2. ಶತಾವರಿ.

ಶಾಸ್ತ್ರೀಪತಿ ಶಚೀಪತಿ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ಶಾಸ್ತ್ರೀ: ಪತಿ: । “ವಾಸೀಕೃತಾಶೇಷಜಗತ್ಪತೃ ನ ಮಾಂ ಜಿಗಾಯ ಯುಧೇ ಕತಿಶ: ಶಾಸ್ತ್ರೀಪತಿ:” ಕುಮಾಂ ೧೫-೪ ।

ಶಾಸ್ತ್ರ ಶಚಿ (ವಿಂ) ಹುಳಿಯಾಗಿರುವ, ಅಮೃಗುಣದ.

ಶಾಸ್ತ್ರೀ ಶಚೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಚೋರ.

ಶಾಸ್ತ್ರಕ ಶಚಿಕ (ನಂ) ತುಪ್ಪ ಮತ್ತು ನೀರು ಬೆರೆಸಿದ ಅಕ್ಕಿಯ ಹಿಟ್ಟು. “ಶಾಲಿಶ್ಚೂಣಂ ಪುತಂ ತೋಯಂ ಮಿಶ್ರಿತಂ ಶಾಸ್ತ್ರಕಂ ಭವೇತ್” ಭಾವಪ್ರಂ ।

ಶಾಸ್ತ್ರ ಶಚ (ಪುಂ) 1. ಧೂರ್ತ, ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. ಶಾಸ್ತ್ರ (ಕೆತವೇ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । 2. ಎದುರಿಗೆ ಪ್ರಿಯ ವಾದ ಮಾತನ್ನಾಡಿ ಪರೋಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಅಪ್ರಿಯವಾದ ಕಾರ್ಯ ವನ್ನು ಮಾಡುವವನು. “ಪ್ರಿಯಂ ವಕ್ತಿ ಪುರೋಜ್ಯತ್ರ ವಿಪ್ರಿಯಂ ಕುರುತೇ ಭೃಗುಮ್ । ವ್ಯಕ್ತಾಪರಾಧವೇಷ್ಠಾ ಶಾಸ್ತ್ರೀಯಂ ಕಥಿತೌ ಬುಧೇ:” ವಿಷ್ಣುಪುಂ । “ಶಾಸ್ತ್ರ ಇತಿ ಮಯಿ ತಾವದಸ್ತು ತೇ



ಪರಿಚಯವ್ಯವಧೀರಣಾ ಪ್ರಿಯೆ" ಮಾಲಂ ೩-೨೦ | 3. ದ್ವೇಷದಿಂದ ಅನರ್ಥದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುವವನು, ಅಭಿಚಾರ (ಮಾಟ, ಶೂನ್ಯ ಮೊದಲಾದ) ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವವನು. "ಅಯುಕ್ತ: ಪ್ರಾಕೃತ: ಸ್ತಬ್ಧ: ಶಠೋ ನೈಕೃತಿಕೋಽಲಸ:" ಗೀತಾ ೧೮-೨೮ | 4. ವೇದದಲ್ಲಿ ನಂಬಿಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವವನು. "ಪಾಪಿಣ್ಡಿನೋ ವಿಕರ್ಮಸ್ಥಾನ ಬೆಡಾಲವ್ರತಿಕಾನ್ ಶಠಾನ್" ಮನುಂ ೪-೩೦ | 5. ದತ್ತೂರಿ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 6. ಮಧ್ಯವರ್ತಿ, ವಿರೋಧಿಗಳಾದ ಇಬ್ಬರಿಗೆ ಹಿತವನ್ನು ಹೇಳಿ ಮೈತ್ರಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವವನು. "ಶಠೋ ಮಹ್ಯಸ್ಥಪುರುಷೇ ಭೂತಧುಸ್ತುರಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ | 7. ಚೆತುರ, ಬುದ್ಧಿವಂತ, ನಿಪುಣ. (ನಂ) 8. ಲೋಹ, ಕಬ್ಬಿಣ. 9. ತವರ. 10. ಕುಂಕುಮ ಕೇಸರಿ.

ಶಾಠಾ ಶಠತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಂಚನೆ, ಮೋಸ. ಶಠಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) |

ಶಣ ಶಣ (ನಂ) ಸಣಬು. ಶಣತಿ—ಶಣ (ದಾನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |

ಶಣಪುಷ್ಪಿಕಾ ಶಣಪುಷ್ಪಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣಬಿನ ಗಿಡ.

ಶಣಸೂತ್ರ ಶಣಸೂತ್ರ (ನಂ) ಸಣಬು ದಾರ, ಮತ್ಸ್ಯದ ಬಲೆಯನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ ದಾರ. ಶಣ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | ಶಣಸ್ಯ ಸೂತ್ರಮ್ | "ಶಣಸೂತ್ರಂ ಪವಿತ್ರಕಮ್" ಅಮಂ |

ಶಣೀರ ಶಣೀರ (ನಂ) ಪ್ರವಾಹದಲ್ಲಿ ಒಂದು ಬಿದ್ದ ಶೋಣ ನದದ ಮರಳು ಅಥವಾ ಮೆಕ್ಕಲುಮಣ್ಣು.

ಶಠ ಶಠ (ಪುಂ) 1. ನಪುಂಸಕ. ಶಾಮ್ಯತಿ ಮೈಥುನ್ಯಾತ್—ಶಮು (ಉಪಶಮೇ) "ಠ:" (೩ಂ ೧-೯೯) | 2. ವ್ಯಷಭ, ಗೋಳ.

ಶತ ಶತ (ನಂ) ಒಂದು ನೂರು, ಹತ್ತರಿಂದ ಗುಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಹತ್ತು ಸಂಖ್ಯೆ. ದಶ ದಶತ: ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ "ತ" ಪ್ರತ್ಯಯ: ಪ್ರಕೃತೇ: ಶಾದೇಶಾನ್ ನಿಪಾಂ (೪-೧-೪೯) | "ಪುರಮಥ ಗಮಯಿತ್ವಾ ಭೂಷಿತಂ ಯಾದವಾಗ್ರಚೈ: ಶತಸಮಧಿಕಸಂಖ್ಯಂ ಷೋಡಶ-ಸ್ತ್ರೀಸಹಸ್ರಮ್" ಯಾದಂ ೧೬-೧೪೪ | "ನಿ:ಸ್ವೋ ವೃಷ್ಟಿ ಶತಂ ಶತೀ ದಶಶತಮ್" ಶಾಂತಿಶತಕಮ್ | ನೂರು ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಶತ ಶಬ್ದವು ಯಾವಾಗಲೂ ಏಕವಚನದಲ್ಲೇ ಇರುವುದು. "ವಿಶತ್ಯಾಘಾ: ಸದೇಕತ್ವೇ" ಅಮಂ | ಆದರೆ ಅನೇಕ ಶತ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ದ್ವಿವಚನ ಮತ್ತು ಬಹುವಚನಗಳಲ್ಲೂ ಪ್ರಯೋಗವುಂಟು. "ದಾಸೀನಾಂ ಸುಕುಮಾರೀಣಾಂ ದ್ವೇ ಶತೇ ಸಮಲಂಕೃತೇ | ದುಹಿತೇ ದೇವಕ: ಪ್ರಾದಾತ್ ಯಾನೇ ದುಹಿತು-ವತ್ಸಲ:" ಭಾಗಂ ೧೦-೧-೩೨ |

ಶತಕ ಶತಕ (ನಂ) 1. ನೂರು ಸಂಖ್ಯೆ. ಶತ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:" (ವಾಂ ೪-೧-೪೮) | 2. ನೂರು ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ, ಶತಂ ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ "ಕನ್" (೪-೧-೪೮) | ನೂರು ಪದ್ಯಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ. ಅಮರಶತಕಮ್, ನೀತಿಶತಕಮ್, ದೃಶ್ಯಾಂತಶತಕಮ್, ಚಾಣಕ್ಯಶತಕಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ. ನೂರು ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ ಒಂದು ಗುಂಪು. 3. ನೂರರಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಶತೇನ ಕೃತಮ್ "ಕನ್" (೪-೧-೨೨) |

ಶತಕುಸ್ಥ ಶತಕುಂಭ (ಪುಂ) ಒಂದು ಪರ್ವತ.

ಶತಕೋಟಿ ಶತಕೋಟಿ (ಪುಂ) 1. ವಜ್ರಾಯುಧ. ಶತಂ ಕೋಟಿಯು ಧಾರಾ ಅಗ್ರಭಾಗಾ ಅಸ್ಯ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ನೂರು ಕೋಟಿ ಸಂಖ್ಯೆ. (ವಿಂ) 3. ನೂರು ಧಾರೆ (ಅಗ್ರಭಾಗ) ಗಳುಳ್ಳ.

ಶತಕ್ರು ಶತಕ್ರುತು (ಪುಂ) ಮಹೇಂದ್ರ, ಶಕ್ರ, ದೇವರಾಜ. ಶತಂ ಕೃತವೋ ಯಸ್ಯ | "ಶತಕ್ರುತುರಾಶಾಠ್ಯಾ ವಿಸ್ತಾರಿ-ನಾಸ್ತಿಕಾ: ಕಥಮ್" ನೆಪಂ ೧೭-೧೦೪ |

ಶತಖಂಡ ಶತಖಂಡ (ನಂ) ಸುಮರ್ಣ, ಚಿನ್ನ, ಬಂಗಾರ. "ಸೋಮೇಕಂ ಮಹಾಭಾತು: ಶತಖಂಡಂ ಮೃದುಲಕಮ್" |

ಶತಗ್ರಂಥಿ ಶತಗ್ರಂಥಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರಿಕೆಹುಲ್ಲು. ಶತಂ ಗ್ರಂಥಯೋ-ಸ್ಯಾ: |

ಶತಗ್ನಿ ಶತಗ್ನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಬ್ಬಿಣದ ಕಂಟಕ (ಮುಳ್ಳು) ಗಳಿಂದ ಆವೃತವಾದ ಶಿಲೆಯ ಒಂದು ಆಯುಧ. ಶತಂ ಹಂತಿ—ಹನ (ಹಿಸಾಗತೃಯೋ:) "ಠಕ್" (೩-೨-೪೩) | "ಅಯ:ಶತ್ಕುಚಿತಾಂ ರಕ್ಷ: ಶತಗ್ನಿಮಥ ಶತ್ವೇ" ರಘುಂ ೧೨-೯೪ | 2. ಕರಂಜಕವೃಕ್ಷ, ಹೊಂಗಮರ. 3. ಚೀಳು. 4. ಒಂದು ವಿಧ ಕಂಠವ್ಯಾಧಿ.

ಶತಚ್ಛದ ಶತಚ್ಛದ (ಪುಂ) 1. ಮರಗುಟ್ಟು ಹಕ್ಕಿ. ಶತಂ ಛದಾ ಅಸ್ಯ | 2. ನೂರು ದಳಗಳುಳ್ಳ ಕಮಲ.

ಶತತಮ ಶತತಮ (ವಿಂ) ನೂರನೆಯ. ಶತಸ್ಯ ಪೂರಣ: "ಠಕ್" (೪-೨-೪೮) | ಠತ: ತಮಙಾಗಮ: (೪-೨-೪೭) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಠೀಪ್" (೪-೧-೧೪) | -ತಮಿ-ತಮೀ.

ಶತತಾರಾ ಶತತಾರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶತಭಿಷಾನ್ವಿತ. ಶತಂ ತಾರಾ ಯಸ್ಯಾಮ್ |

ಶತದ್ರು ಶತದ್ರು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಂಜಾಬಿನಲ್ಲಿ ಹರಿಯುವ ಒಂದು ನದಿ. ಶತವಾ ದ್ರವತಿ—ದ್ರು (ಗತೌ) "ಕ್ರು:" ಸ ಚ ಛಿತ್ (೩ಂ ೧-೩೪) | ಈ ನದಿಯು ಹಿಮಾಲಯದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ಪಂಜಾಬಿನ ಮೂಲಕ ಹರಿದು ಸಿಂಧು ನದಿಯೊಡನೆ ಕಲೆತು ಅರಬ್ಬಿಸಮುದ್ರ ಸೇರುವುದು. "ಶತವಾ ವಿಧ್ರುತಾ ಯಸ್ಮಾತ್ ಶತದ್ರುರिति ವಿಶ್ರುತಾ" ಭಾಂ |



**ಶತಪಾ ಶತಧಾ** (ಅಖ್ಯಂ) 1. ನೂರು ವಿಧವಾಗಿ. 2. ನೂರು ಭಾಗವಾಗಿ. ಶತ "ಪಾ" (೪-೩-೪೨) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಗರಿಕೆಹುಲ್ಲು.

**ಶತಧಾರ ಶತಧಾರ** (ನಂ) 1. ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧ. ಶತಂ ಧಾರಾ: ಅಸ್ಯ । "ಶತಧಾರಂ ಶತಾರಂ ಚಾಶ್ರೋತುಂ ಭಿದಿರ-ಮಮ್ಬುಜಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । (ವಿಂ) 2. ನೂರು ಧಾರೆ (ಅಲಾಗು) ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ.

**ಶತಧೃತಿ ಶತಧೃತಿ** (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. 2. ಇಂದ್ರ, ಸುರಪತಿ. "ಶತಧೃತಿರ್ಧಾರೀಂದ್ರೇ" ವಿಶ್ವಂ । 3. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ.

**ಶತಪತ್ರ ಶತಪತ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಸಾರಸ ಪಕ್ಷಿ, ನೀರು ಹಕ್ಕಿ, ತಾವರೆ ಹಕ್ಕಿ. 2. ಮರಕುಟಕ ಹಕ್ಕಿ. 3. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. 4. ಶುಕ, ಗಿಳಿ. (ನಂ) 5. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ, ತಾವರೆ. ಶತಂ ಪತ್ರಾಪ್ಯಸ್ಯ । "ಯಾನ್ತಯಾ ಮೃಗೈರಲಿತಕನ್ಧರಮಾನನಂ ತದಾವೃತ್ತವೃತ್ತಶತಪತ್ರನಿಮಂ ವಹನ್ತಯಾ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೩೨ ।

**ಶತಪತ್ರಕ ಶತಪತ್ರಕ** (ಪುಂ) ಮರಕುಟಕ ಹಕ್ಕಿ.

**ಶತಪಥ ಶತಪಥ** (ಪುಂ) ಶುಕ್ಲಯಜುರ್ವೇದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ.

**ಶತಪಥಿಕ ಶತಪಥಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಶತ್ರುಪಥಬ್ರಾಹ್ಮಣವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು ಅಥವಾ ತಿಳಿದವನು. ಶತಪಥ-ಮಥೀತೇ ವೇದ ವಾ "ಠಿಕನ್" (ವಾಂ ೪-೨-೬೦) । 2. ನಾನಾ ಮತಗಳನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿರುವವನು. 3. ನೂರಾರು ಮಾರ್ಗಗಳನ್ನು ಹಿಡಿದು ನಡೆಯುವವನು. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಠೀಪ್" (೪-೧-೧೪) । -ಪಥಿಕೀ -ಪಥಿಕೀ.

**ಶತಪದ ಶತಪದ** (ನಂ) 1. ನಕ್ಷತ್ರದ ಪಾದಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ನಾಮಕರಣಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ ಮೊದಲನೆಯ ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಒಂದು ಚಕ್ರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪದೀ -ಪದೀ. 2. ಲಕ್ಷ್ಮೀಚೇಳು. 3. ಪಿಲ್ಲಪಿಚ್ಚರ.

**ಶತಪಥ ಶತಪದ್ಮ** (ನಂ) ಪದ್ಮ, ಕಮಲ, ತಾವರೆ.

**ಶತಪರ್ವನ್ ಶತಪರ್ವನ್** (ಪುಂ) 1. ಬಿದಿರು. 2. ಗೋಧಿ. ಶತಂ ಪರ್ವಾಪ್ಯಸ್ಯ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಗರಿಕೆಹುಲ್ಲು. 4. ಬಜೆ. 5. ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರ ಪತ್ನಿ. "ಶತಪರ್ವಾ ತು ದ್ವಾರ್ವಿಯಾಂ ವಚಾ-ಭಾಗ್ಯಯೋಷಿತೋ:" ಮೇದಿಂ । (ನಂ) 6. ತಾವರೆದಂಟಿ ನೋಳಗಿನ ಸಣ್ಣ ತಂತು (ಎಳೆ). 7. ಬಿಲ, ರಂಧ್ರ. "ವೇಣಿ ನಾ ದ್ವಾರ್ವಿಚಯೋ: ಸ್ತ್ರೀ ಬಿಲೇ ಶತಪರ್ವಂ ಪನ್" ವೇಜಂ ।

**ಶತಪರ್ವಿಕಾ ಶತಪರ್ವಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗರಿಕೆಹುಲ್ಲು. 2. ಬಜೆ. ಶತಂ ಪರ್ವಾಪ್ಯಸ್ಯಾ: "ಕಪ್" (೪-೪-೧೪೪) । "ಶತಪರ್ವಿಕಾ ದ್ವಾರ್ವಿಯಾಂ ವಚಾಯಾಮಪಿ ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ ।

**ಶತಪಾದ್ ಶತಪಾದ್** (ಪುಂ) ಲಕ್ಷ್ಮೀಚೇಳು, ಜರಿ. ಶತಂ ಪಾದಾ ಯಸ್ಯ । ಪಾದಸ್ಯ ಅನ್ತಯಲೋಪ: (೪-೪-೧೪೦) ।

**ಶತಪಾದಿಕಾ ಶತಪಾದಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲಕ್ಷ್ಮೀಚೇಳು, ಜರಿ. ಶತಂ ಪಾದಾ ಯಸ್ಯಾ: "ಕಪ್" (೪-೪-೧೪೪) ।

**ಶತಪುಷ್ಪ ಶತಪುಷ್ಪ** (ಪುಂ) ಕಿರಾತಜ್ಜನೀಯ ಕಾವ್ಯವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಭಾರವಿ ಕವಿ. "ಭಾರವಿ: ಶತಪುಷ್ಪ: ಸ್ಯಾತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಶತಪುಷ್ಪಾ ಶತಪುಷ್ಪಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡುಸುಬ್ಬಸಿಗಿ. ಶತಂ ಪುಷ್ಪಾಣಿ ಯಸ್ಯಾ: । "ಶತಪುಷ್ಪಾ ಸಿತಚ್ಚತ್ರಾಸ್ತಿಕಚ್ಚತ್ರಾ ಮಧುರಾ ಮಿಸಿ:" ಅಮಂ । ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಕನ್" । -ಪುಷ್ಪಿಕಾ -ಪುಷ್ಪಿಕಾ.

**ಶತಪ್ರಾಸ ಶತಪ್ರಾಸ** (ಪುಂ) ಗನ್ನೇರಳೆ ಗಿಡ.

**ಶತಭಿಷಜ್ ಶತಭಿಷಜ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶತಭಿಷಾ ನಕ್ಷತ್ರ. ಶತಂ ಭಿಷಜ ಇವ ತಾರಾ ಯತ್ರ । "ಶತಭಿಷಜಿ ಶೌಞ್ಞಿಕಾನಾ-ಮಜೇಕಮೇ ಬೃಹತ್ಸಂ ೧-೩೪" (ವಿಂ) 2. ಶತಭಿಷಾನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಶತಭಿಷಜಿ ಜಾತ: "ಅಞ್" (೪-೩-೨೪) । ಅಞೋ ವಾ ಲುಕ್ (೪-೩-೩೬) । ಅಞ್ ವಾ ಠಿತ್ (ವಾಂ ೪-೩-೩೬) । ಲುಗಭಾವೇ ಶಾತಭಿಷಜ: । ಠಿತ್ವಪಕ್ಷೇ ಶಾತಭಿಷ: ।

**ಶತಭಿಷಾ ಶತಭಿಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶತಭಿಷಾ ನಕ್ಷತ್ರ. ಶತಭಿಷಾ ನಕ್ಷತ್ರಕ್ಕೆ ವರುಣನು ಅಧಿಪತಿ. (ಅಧಿಷ್ಠಾತ್ಯ ದೇವತೆ). ಈ ನಕ್ಷತ್ರ ಅಘೋಮುಖವುಳ್ಳದ್ದು. ಇದರಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವ ನಿಗೆ ರಾಹುದಶೆಯು ಪ್ರಾರಂಭವಾಗುವುದು. ರಾಹು ದಶೆಯ ಪ್ರಮಾಣ ಹದಿನೆಂಟು ವರ್ಷಗಳು. ಈ ನಕ್ಷತ್ರವು ರಾಕ್ಷಸಗಣಕ್ಕೂ ಅಶ್ವಯೋನಿಗೂ ಸೇರಿದುದು. ಕುಂಭ ರಾಶಿಗೆ ಸೇರಿದ ನಕ್ಷತ್ರವಿದು.

**ಶತಭೀಶ್ ಶತಭೀಶ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಲ್ಲಿಗೆ ಗಿಡ.

**ಶತಮಲ ಶತಮಲ** (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ, ದೇವರಾಜ. ಶತಂ ಮಲಾ ಯಾಗಾ ಅಸ್ಯ । "ಸ್ವಯಂ ಸಂರಾಘ್ಯವಂ ಶತಮಲಮಲಕ್ಷಣೇನ ತಪಸಾ" ಕಿರಾಂ ೧೦-೬೨ । (ವಿಂ) 2. ನೂರು ಯಾಗ ಗಳನ್ನು ಮಾಡಿದವನು.

**ಶತಮನ್ಯು ಶತಮನ್ಯು** (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ, ಸುರಪತಿ. ಶತಂ ಮನ್ಯವೋ ಯಜ್ಞಾ: ಅಸ್ಯ । "ಪ್ರಸಹೇತ ತವಾನುಜಾನ್ ರಣೇ ದ್ವಿಪತಾಂ ಕ: ಶತಮನ್ಯುತೇಜಸ:" ಕಿರಾಂ ೨-೨೩ । 2. ಘೋಕ, ಗೂಬೆ. (ವಿಂ) 3. ನೂರು ಯಾಗಗಳನ್ನು ಮಾಡಿದವನು.

**ಶತಮಾನ ಶತಮಾನ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಪಲದ ತೊಕದ ಬೆಳ್ಳಿ. "ಧರಣಾನಿ ದಶ ಜಯ: ಶತಮಾನಸ್ತು ರಾಜತ:" ಮನುಂ ೮-೧೩೭ । 2. ಅನೇಕರಿಂದ ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವವನು, ನೂರಾರುಜನರ ಗೌರವಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರನಾದವನು. ಶತಾನಾಮನೆ-ಕೇಶಾಂ ಮಾನಂ ಪೂಜಾ ಯಸ್ಮಿನ್ । "ಶತಮಾನಂ ಭವತಿ ಶತಾಯು: ಪುರುಷ:" ।



**ಶತಮುಖ ಶತಮುಖಿ** (ವಿಂ) 1. ನೂರು ಮಾರ್ಗವುಳ್ಳ. 2. ನೂರಾರು ಬಾಯಿ (ರಂಧ್ರ) ಗಳುಳ್ಳ. ಶತಂ ಮುಖಾನಿ ಯಸ್ಯ | 3. ನೂರಾರು ಅವಕಾಶವುಳ್ಳ, ಅನೇಕ ವಿಧವಾದ. "ವಿವೇಕಭ್ರಷ್ಟಾಃ ಸರ್ವಾಃ ವಿವಿಧಾಃ ಶತಮುಖಾಃ" ಭರ್ತೃಂ ೧-೧೦ |

**ಶತಮುಖಿ ಶತಮುಖೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಮಾರ್ಜನಿ, ಕಸಪುರಕೆ. ಶತಂ ಮುಖಾನಿ ಯಸ್ಯಾಃ | 2. ಕೂರ್ಚ, ಕುಂಚ.

**ಶತಮೂಲಿ ಶತಮೂಲೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಂಗೆಹುಲ್ಲು. ಶತಂ ಮೂಲಾನಿ ಯಸ್ಯಾಃ | 2. ಶತಾವರೀ ಗಿಡ, ಪಿಲ್ಲಪಿಚ್ಚರ. "ಶಿಷ್" (೪-೧-೬೪) |

**ಶತಯಜ್ವನ್ ಶತಯಜ್ವನ್** (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ಶತೇನ ಮಖಾನಾಂ ಯಜ್ವಾ | "ಉಪತಸ್ಯುರಾಸ್ಥಿತವಿಷಾದಧಿಃ ಶತಯಜ್ವನೋ ವನಚರಾ ವಸತಿಮ್" ಕಿರಾಂ ೭-೨೯ |

**ಶತಯಜ್ಞಿಕ ಶತಯಜ್ಞಿಕ** (ಪುಂ) ನೂರು ಎಳೆಗಳುಳ್ಳ ಹಾರ. ಇದಕ್ಕೆ "ದೇವಚ್ಛಂದ" ಎಂದು ಹೆಸರು. "ದೇವ-ಚ್ಛಂದೋಽಸ್ಮಿ ಶತಯಜ್ಞಿಕಃ" ಅಮಂ | ಅದರ ಬೃಹತ್ಸಂಹಿತೆಯಲ್ಲಿ 81 ಎಳೆಗಳ ಹಾರವು "ದೇವಚ್ಛಂದ" ಎಂದು ಹೇಳಿದೆ. "ಶತಮಜ್ಞಯುತ ಹಾರೋ ದೇವಚ್ಛಂದೋಽಪ್ಯಶೀತಿರೆಕಯುತಾ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೮೧-೩೨ |

**ಶತರೂಪಾ ಶತರೂಪಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚತುರ್ಮುಖಿ ಬ್ರಹ್ಮನ ಕನ್ಯೆ. 2. ಚತುರ್ಮುಖಿ ಬ್ರಹ್ಮನ ಪತ್ನಿ. ಶತಂ ರೂಪಾಣಿ ಯಸ್ಯಾಃ | "ತತಃ ಸಂಜಪತಸ್ತಸ್ಯ ಭಿತ್ತ್ವಾ ದೇಹಮಕಲ್ಮಷಮ್ | ಸ್ತ್ರೀರೂಪಮರ್ವಮಕರೋತ್ ಅರ್ಥ ಪುರುಷರೂಪವತ್ | ಶತರೂಪಾ ಚ ಸಾ ಖ್ಯಾತಾ ಸಾವಿತ್ರಿ ಚ ನಿಗದಿತಾ | ಸರಸ್ವತೀಯಾ ಗಾಯತ್ರಿ ಬ್ರಹ್ಮಾಣಿ ಚ ಪರಂತಪ | ದೃಷ್ಟಾ ತಾಂ ವ್ಯಥಿತಸ್ತಾಬತ್ಕಾಮ-ಬಾಣಾದಿತೋ ವಿಭುಃ | ಉಪಯೇಮೇ ಚ ವಿಶ್ವಾತ್ಮಾ ಶತರೂಪಾ-ಮನಿನದಿತಾ | ತತಃ ಕಾಲೇನ ಮಹತಾ ತತಃ ಪುತ್ರೋಽಭವನ್ಮನುಃ | ಸ್ವಾಯಂಬುವ ಇತಿ ಖ್ಯಾತಃ ಸ ವಿರಾಜಿತಿ ನಃ ಶ್ರುತಮ್" |

**ಶತವೀರ್ಯಾ ಶತವೀರ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಿಳಿಯ ಗಂಗೆಹುಲ್ಲು. ಶತಂ ವೀರ್ಯಾಣಿ ಯಸ್ಯಾಃ | 2. ಶತಾವರಿ.

**ಶತವೇದಿನ್ ಶತವೇದಿನ್** (ಪುಂ) ಹುಳಹಟ್ಟಿ. ಶತಂ ವೇದಿತುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ "ಜಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮) | "ಸಹಸ್ರವೇದಿ ಚುಕ್ರೋಽಲ್ಲ-ವೇತಸಃ ಶತವೇದಿಃ" ಅಮಂ |

**ಶತಶಸ್ ಶತಶಸ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ನೂರು ಸಲ, ನೂರಾವೃತ್ತಿ. ಶತ "ಶಸ್" (೪-೪-೪೨) | "ಬುದ್ಧೇಮ್ಯಃ ಶತಶಃ ಶಪೇ ಯದಿ ಪುನಃ ಕುತ್ರಾಪಿ ಕ.ಪಾಲಿನಿಪಿನೋತ್ತುಕ್ತಕುಚಾವಗೂಹನಭವಃ ಪ್ರಾಪ್ತಃ ಪ್ರಮೋದಯಃ" ಪ್ರಬೋಧಂ ೩-೧೮ | 2. ನೂರು ನೂರಾಗಿ. ಶತಂ ಶತಮ್ | 3. ನೂರಾರು ವಿಧವಾಗಿ.

ಅನೇಕ ವಿಧವಾಗಿ. "ಪಶ್ಯ ಮೇ ಪಾರ್ಥ ರೂಪಾಣಿ ಶತಶೋಽಪಿ ಸಹಸ್ರಶಃ" ಗೀತಾ ೧೧-೪ | 4. ಅನೇಕಾವೃತ್ತಿ, ಅನೇಕ ಸಲ. "ಶತಶಃಶ್ರುತಿಮಾಗತೇವ ಸಾ ತ್ರಿಜಗನ್ಮೋಹಮಹೋಪಧಿ-ಮಮ" ನೆಪಂ ೨-೪೪ |

**ಶತಸಹಸ್ರ ಶತಸಹಸ್ರ** (ನಂ) ನೂರು ಸಾವಿರ, ಒಂದು ಲಕ್ಷ. ಶತಗುಣಿತಂ ಸಹಸ್ರಮ್ |

**ಶತಸಾಹಸ್ರ ಶತಸಾಹಸ್ರ** (ವಿಂ) ನೂರು ಸಹಸ್ರ ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ. ಸಹಸ್ರಾಣಾಂ ಸಮೂಹಃ "ಅಘ್" (೪-೨-೩೮) | ಶತಂ ಸಾಹಸ್ರಂ ಯತ್ರ |

**ಶತಹವಾ ಶತಹವಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು. ಶತಂ ಹವಾಃ ಶಬ್ದಾಃ ಯಸ್ಯಾಃ | ಪೃಷಂ ಹ್ರಸ್ವಃ | "ಬಲಾಕಿನಿ ನೇಲಪಯೋದರಾಜಿ ದೂರಂ ಪೂರಃಕ್ಷಿಪ್ರಶತಹವೇ" ಕುಮಾಂ ೭-೩೯ | 2. ವಜ್ರಾಯುಧ. "ಶತಹವಾ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ವಜ್ರೇ ಸೌದಾಮಿನ್ಯಾಂ ಚ ಕೀರ್ತಿತಾ" ಮೇದಿಂ | 3. ದಕ್ಷಬ್ರಹ್ಮನ ಒಬ್ಬ ಮಗಳು. **ಶತಾಕ್ಷಿ ಶತಾಕ್ಷಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಾತ್ರಿ. 2. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 3. ಕಾಡುಸಬ್ಬಸಿಗ.

**ಶತಾಙ್ಗ ಶತಾಙ್ಗ** (ಪುಂ) 1. ರಥ, ಗಾಡಿ. ಶತಮಾಂಸಾನ್ಯವಯವಾ ಯಸ್ಯ | 2. ತಿನಿಶವೃಕ್ಷ, ನೆಮ್ಮಿಗಿಡ. 3. ಒಬ್ಬ ದಾನವ.

**ಶತಾನಂದ ಶತಾನಂದ** (ಪುಂ) 1. ಗೌತಮಮಹರ್ಷಿಯ ಪುತ್ರ, ಜನಕಮಹಾರಾಜನ ಪುರೋಹಿತ. 2. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಶತಂ ಅಮಿತಃ ಆನಂದೋಽಸ್ಯ | ಪರಸ್ಪರಪ್ರಣಯಪ್ರವಹದಾನಂದತಯಾ ಅಪರಿಮಿತಾನಂದ ಇತ್ಯರ್ಥಃ | "ಅನ್ಯೋನ್ಯಪ್ರಣಯಾನಂದಸಿಂಧೋಃ ಸಮುದಿತೋ ಹಿ ಯಃ | ಶತಾನಂದಃ ಸ ವಿಜ್ಞೇಯಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | "ಸ್ವಕ್ಷಃ ಸ್ವಜ್ಞಃ ಶತಾನಂದಃ" ವಿಂ ಸಂ | 3. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ರಥ. "ಸ್ಯಂದನಸ್ತು ಶತಾನಂದಃ ಸಾರಥಿಶ್ಚಾಸ್ಯ ದಾರುಕಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 4. ಗೌತಮ ಮಹರ್ಷಿ. "ಗೌತಮಸ್ತು ಶತಾನಂದಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | "ಶತಾನಂದೋ ಮುನೇರ್ದೇ ದೇವಕೀನಂದನೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ |

**ಶತಾನಿಕ ಶತಾನಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಸುದಾಸರಾಜನ ಮಗ. 2. ಒಬ್ಬ ಮುಷಿ. 3. ವೃದ್ಧ, ಮುದುಕ. 4. ನಕುಲನ ಪುತ್ರ. "ಪುತ್ರಸ್ತೇ ಪ್ರತಿವಿನ್ದ್ಯಶ್ಚ ಸುತಸೋಮಸ್ತಥಾ ವಿಭುಃ | ಶ್ರುತಕರ್ಮಜಿನಿಶ್ಚೇವ ಶತಾನಿಕಶ್ಚ ನಾಕುಲಃ | ಸಹದೇವಾನ್ವ ಯೋ ಜಾತಃ ಶ್ರುತಸೇನಸ್ತವಾತ್ಮಜಃ | ಸರ್ವೇ ಕುಶಲಿನೋ ವೀರಾಃ ಕೃತಾಸ್ತ್ರಾಶ್ಚ ಸುತಾಸ್ತವ" ಭಾಂ | "ಶತಾನಿಕಸ್ತು ವೃದ್ಧೇ ಸ್ಯಾನ್ಮುನಿರಾಜಪ್ರಭೇದಯೋಃ" ಮೇದಿಂ |

**ಶತಾಯುಸ್ ಶತಾಯುಸ್** (ನಂ) 1. ನೂರು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಆಯುಸ್ಸು (ಜೀವಿತಕಾಲ). ಶತಮಾಯುಃವರ್ಷಕಾಲಃ (ಜೀವಿತ-ಕಾಲಃ) | (ವಿಂ) 2. ನೂರು ವರ್ಷ ಆಯುಸ್ಸುಳ್ಳವನು.



ಶತಮಾಯುರ್ಜೀವಿತ (ವರ್ಷ) ಕಾಲೋಽಸ್ಯ । “ಶತಮಾನಂ ಭವತಿ  
ಶತಾಯುಃ ಪುರುಷಃ” ।

ಶತಾರ ಶತಾರ (ನಂ) ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧ. ಶತಮ  
ಅರಾಣಿ ಯಸ್ಯ ।

ಶತಾರುಸ್ ಶತಾರುಸ್ (ನಂ) ಕುಷ್ಮರೋಗ. ಶತಮ್ ಅಕುಂಠಿ  
ವ್ರಣಾನಿ ಯತ್ರ । “ರಕ್ತಂ ಕ್ಷಯಂ ಸದಾಹಾರ್ತಿ ಶತಾರುಃ ಸ್ಯಾದ್  
ಬಹುವ್ರಣಮ್” ಭಾವಪ್ರಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಅಕುಂಠಿ -ಅರುಷೀ.

ಶತಾವರೀ ಶತಾವರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶತಮೂಲಿ ಗಿಡ,  
ಅಪಾರ್ಥೀಯೇರು. ಶತೇನಾವೃಣೋತಿ — ಆ + ವೃ (ವರಣೆ)  
“ಅವ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ಙೀಷ್” (೪-೧-೪೧) ।  
2. ಶತೀದೇವಿ, ಇಂದ್ರನ ಪತ್ನಿ. “ಪುತನಾಷಾಡ್ ಪ್ರಿಯಾತ್ವಸ್ಯ  
ಚಾರುಧಾರಾ ಶತಾವರೀ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 3. ಕಚೋರ.  
4. ಶುಂಠಿ.

ಶತಾವರ್ತ ಶತಾವರ್ತ (ಪುಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಶತಮಾವರ್ತಾಃ  
ಅಸ್ಯ — ಆವರ್ತಾಃ ಔಷ್ಣ್ಯವಿಜೃಂಭಿತಾನಿ ಇತಿ ಲಕ್ಷಣಯಾ  
ಪ್ರತೀಯತೇ । “ಔಷ್ಣ್ಯವಿಜೃಂಭಿತಾಭಿಷ್ಯಾಃ ಆವರ್ತಾ ಯಸ್ಯ  
ನಿತ್ಯಶಃ । ಶತಂ ಸಂತಿ ಶತಾವರ್ತಃ” ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿಃ ।  
“ಅನುಕೂಲಃ ಶತಾವರ್ತಃ ಪಶು ಪಶುನಿಭೇಕ್ಷಣಃ” ವಿಂ ಸಂ ।  
ಶತಮಾವರ್ತತೇ—ಆ+ವೃತು (ವರ್ತನೆ) “ಗಿಣಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) ।  
—ಆವರ್ತನ್ —ಅವರ್ತನ್.

ಶತಿಕ ಶತಿಕ (ವಿಂ) 1. ನೂರರಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಶತೇನ  
ಕ್ರೀತಮ್—ಶತ “ಠನ್” (೪-೧-೨೧) । ಠಸ್ಯೇಕಃ (೭-೩-೪೦) ।  
2. ನೂರರ ಸಂಬಂಧವಾದ. 3. ನೂರರಿಂದ ಕೂಡಿರುವ,  
ನೂರು ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ. ಶತಸ್ಯ ವಿಕಾರಃ “ಠನ್” ।  
“ಯತ್” (೪-೧-೨೧) । ಶತಃ ಶತಃ [“ಶತ” ನೋಡಿ].  
“ಶತಸ್ತದಧಿಕಃ ಪಾದನಾಸಾಕರ್ಣಕರಾದಿಭು” ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೨೦೮ ।

ಶತಿನ ಶತಿನ (ವಿಂ) 1. ನೂರನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು.  
ಶತಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೫) । “ನಿಃಸ್ವೋ  
ವಿಷ್ಠಿ ಶತಂ ಶತೀ ದಶಶತಂ ಲಕ್ಷಂ ಸಹಸ್ರಾಧಿಪಃ” ಶಾಂತಿಶಂ ೬ ।  
2. ನೂರರಷ್ಟಾಗಿರುವ, ನೂರರಡಿಯಾದ.

ಶತಪೋನ ಶತಪೋನ (ಪುಂ) ಜಲ್ಲಡಿ, ಒಂದರಿ.

ಶತಪೋನಕ ಶತಪೋನಕ (ಪುಂ) ಗುದದ್ವಾರದ ಸುತ್ತಲೂ  
ರಂಧ್ರಗಳಾಗಿ ರಕ್ತಸೋರುವ ಒಂದು ವ್ಯಾಧಿ (Fistula).

ಶತ್ ಶತ್ ಪರಸ್ಮೈಪದಿ ಧಾತುಗಳಿಗೆ ಸೇರಿಸುವ ವರ್ತಮಾ  
ನಾರ್ಥಕ ಒಂದು ಕೃತ್ ಪ್ರತ್ಯಯ.

ಶತೇರ ಶತೇರ (ಪುಂ) 1. ಅರಿ, ಶತ್ರು, ವೈರಿ. ಶದ್ಲ್  
(ಶಾತನೆ) “ಆರಕ್” ತಕಾರಾದೇಶಶ್ಚ (೩ಂ ೧-೬೦) ।  
2. ಹಿಂಸೆ, ಪೀಡೆ, ತೊಂದರೆ.

ಶತ್ಯ ಶತ್ಯ (ಪುಂ) ಒಂದು ನಿರ್ದಿಷ್ಟಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕೊಡಲ್ಪಡುವ  
1. ನೂರು ರೂಪಾಯಿಗಳ ಬಡ್ಡಿ. 2. ನೂರು ರೂಪಾಯಿ  
ಗಳ ಆದಾಯ. 3. ನೂರು ರೂಪಾಯಿಗಳ ಲಾಭ. 4. ನೂರು ರೂಪಾಯಿಗಳ ಸುಂಕ. 5. ನೂರು ರೂಪಾಯಿ  
ಗಳ ಲಂಚ. ಶತಮಸ್ಮಿನ್ ದೀಯತೇ ವೃದ್ಧಿಃ ಆಯಃ ಕ್ಷಾಮಃ  
ಶುಲ್ಕಮ್ ಉಪದಾ ವಾ—ಶತ “ಯತ್” (೪-೧-೨೧) । “ಠನ್” ।  
ಶತಿಕಃ ಶತಿಕಃ. 6. ನೂರರ ಸಂಬಂಧ. ಯಜ್ಞನ  
ಶುಶ್ರೂಷೆ ಮೊದಲಾದ ಧನಪತಿಸಂಬಂಧ (ಸಂಪರ್ಕ).  
ಶತಿಕಃ ಶತಿಕಃ ವಾ ಧನಪತಿಸಂಬಂಧಃ । 7. ನೂರರ ಆದಾಯ  
ಬರುವ ನಿಮಿತ್ತ (ಸೂಚನೆ). ಶತ್ಯಂ ಶತಿಕಂ ವಾ ದಕ್ಷಿಣಾಕ್ಷಿ-  
ಸ್ಪಂದನಮ್ । ಶತಸ್ಯ ನಿಮಿತ್ತಮಿತ್ಯರ್ಥಃ । ಸಿಂ ಕೌಂ ।  
8. ನೂರರಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಶತೇನ ಕ್ರೀತಃ “ಯತ್”  
(೪-೧-೨೧) ।

ಶತ್ರ ಶತ್ರ (ನಂ) 1. ಕೈತವ, ಕಪಟ. 2. ಬಲ, ಶಕ್ತಿ.  
“ಶತ್ರಂ ಸ್ಯಾತ್ಕೃತವೇ ಬಲೇ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಶತ್ರಿ ಶತ್ರಿ (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. ಶದ್ಲ್ (ಶಾತನೆ) “ತ್ರಿಪ್”  
(೩ಂ ೪-೬೭) ।

ಶತ್ರು ಶತ್ರು (ಪುಂ) 1. ಹಗೆ, ವೈರಿ. ಶಾತಯತಿ—ಶದ್ಲ್  
(ಶಾತನೆ) + ಣಿಕ್ “ಕ್ರುನ್” (೩ಂ ೪-೧೦೩) । “ಶತ್ರುನ್  
ಭೋಷಯಮಾಣಂ ತಂ ರಾಮಂ ವಿಷ್ಣುಪಯೇತ ಕಃ” ಋಗ್ವಿಂ ೪-೪೮ ।  
“ಕ್ಷಮಾ ಶತ್ರುಂ ಚ ಮಿತ್ರಂ ಚ ಯತಿನಾಮಿಹ ಭೂಷಣಮ್” ।  
“ಕೃಣಕರ್ತಾ ಪಿತಾ ಶತ್ರುಃ ಮಾತಾ ಚ ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ । ಭಾರ್ಯಾ  
ರೂಪವತೀ ಶತ್ರುಃ ಪುತ್ರಃ ಶತ್ರುರಪಣ್ಣಿತಃ” । 2. (ರಾಜನಿಗೆ)  
ತನ್ನ ರಾಜ್ಯಕ್ಕೆ (ಸೇರಿದಂತೆ) ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿರುವ ರಾಜ್ಯದ  
ರಾಜ. “ವಿಷಯಾನಂತರೋ ರಾಜಾ ಶತ್ರುಮಿತ್ರಮತಃ ಪರಮ್”  
ಅಮಂ ।

ಶತ್ರುಣ ಶತ್ರುಣ್ (ಪುಂ) 1. ದಶರಥನ ಪುತ್ರ, ಲಕ್ಷ್ಮಣನ  
ತಮ್ಮ. ಶತ್ರುನ್ ಹಂತಿ—ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) “ಕಃ”  
(ವಾಂ ೩-೨-೪) । ಶತ್ರುಣ್ಶನು ದಶರಥನ ಪತ್ನಿಯಾದ  
ಸುಮಿತ್ರೆಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಅವಳ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ಕಿರಿಯವನು.  
ಕುಶಧ್ವಜನ ಪುತ್ರಿಯಾದ ಶ್ರುತಕೀರ್ತಿಯು ಇವನ ಪತ್ನಿ.  
“ತತೋ ಭರತಶತ್ರುಣೋ ಕುಶಃ ಪುತ್ರೋ ಜನಿಯೋಗತಃ । ಮಾಂಡವೀಶ್ರುತ-  
ಕೀರ್ತಿಯಾಮಭೃತಾ ಗೃಹಮೇಧಿನೌ” ಚಂ ರಾಂ । ಸುಬಾಹು  
ಮತ್ತು ಬಹುಶ್ರುತರು ಇವನ ಪುತ್ರರು. “ಶತ್ರುಘಾತಿನಿ  
ಶತ್ರುಣಃ ಸುಬಾಹೌ ಚ ಬಹುಶ್ರುತೇ । ಮಧುರಾವಿದಿಶೋ ಸುನೋನಿದಧೇ  
ಪೂರ್ವಜೋತ್ಸುಕಃ” ರಘುಂ ೧೪-೩೬ । (ವಿಂ) 2. ಶತ್ರು  
ಗಳನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವವನು. “ಶತ್ರುಣಾನ್ ಯುಧಿ ಹಸ್ತಿಣಃ”  
ಋಗ್ವಿಂ ೬-೧೧೩ ।



ಶತ್ರುಂಜಯ ಶತ್ರುಂಜಯ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಆನೆ. "ನಾಗ: ಶತ್ರುಂಜಯೋ ನಾಮ ಮಾತುಲೋಽಯಂ ದದೌ ಮಮ" ರಾಮಾಂ | 2. ಒಂದು ಪರ್ವತ, ಚಿಟ್ಟ. (ವಿಂ) 3. ಶತ್ರುವನ್ನು ಜಯಿಸುವ.

ಶತ್ರುಂಜಯ ಶತ್ರುಂಜಯ (ವಿಂ) ವೈರಿಗಳಿಗೆ ಸಂತಾಪವುಂಟು ಮಾಡುವವನು, ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಬಡಿದು ಓಡಿಸುವವನು. ಶತ್ರುನ್ ತಪತಿ — ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) "ಅಚ್" (೩-೨-೪೬) | ಮುಗಾಗಮ: (೬-೩-೬೭) |

ಶತ್ರುಂಜಯ ಶತ್ರುಂಜಯ (ಪುಂ) ಶತ್ರುಗಳ ಪಂಗಡ.

ಶತ್ರುಂಜಯ ಶತ್ರುಂಜಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾತ್ರಿ. "ರಾತ್ರಿ ರಕ್ಷಾಜನನಿ: ಶತ್ರುಂಜಯ ಚಕ್ರಮೇದಿನಿ ಧೀರಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಶತ್ರುಂಜಯ ಶತ್ರುಂಜಯ (ಪುಂ) ಶಿನ್ಬಹುದಾದ ಕಂದಮೂಲ ಫಲ ಮೊದಲಾದವು, ಶಿನ್ಬಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಗೆಡ್ಡೆ ಗಣಿಸು ಹಣ್ಣು ಮುಂತಾದವು.

ಶತ್ರುಂಜಯ ಶತ್ರುಂಜಯ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಶತ್ರುಂಜಯ (ಶಾತನೇ) "ಕ್ರಿನ್" (೩ಂ ೪-೬೪) | 2. ಅರ್ಜುನ. "ಶತ್ರುಂಜಯ-ಮೋಧರೇ ಜಿಣ್ಣಿ" ಮೇದಿಂ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಕಲ್ಲುಸಕ್ಕರೆ. 4. ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು. "ಶತ್ರುಂಜಯ ತಡಿತೃಪಿ" ಹೇಮಂ | "ಶತ್ರುಂಜಯ: ಶಕ್ರೇರಾ" ಣಾಡಿ: |

ಶತ್ರುಂಜಯ ಶತ್ರುಂಜಯ (ವಿಂ) 1. ಹೋಗುವ, ನಡೆಯುವ, ಚಲಿಸುವ. ಶತ್ರುಂಜಯ (ಶಾತನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೧೪೯) | 2. ಕೆಳಗೆ ತಳ್ಳುವ, ಕೆಳಗೆ ಬೀಳಿಸುವ.

ಶನಕೇಶ್ ಶನಕೇಶ್ (ಅವ್ಯಂ) ಮೆಲ್ಲಗೆ, ನಿಧಾನವಾಗಿ. ಶನೇಶ್ವರ ಶನಕೇ: — ಶನೇ: "ಅಕಚ್" (೪-೩-೭೧) | "ಶನಕೇಶಾಸ್ಯ ತನುಜಾಲಕಾಂತರಸ್ತುರಿತಕ್ಷಪಾಕರಕರೋತ್ಕರಾ-ಕೃತಿ" ಮಾಘಂ ೧೩-೨೦ |

ಶನಿ ಶನಿ (ಪುಂ) ಶನಿದೇವ, ಶನಿಗ್ರಹ. ರವಿ ಮೊದಲಾದ ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಗ್ರಹ. ಇವನು ಸೂರ್ಯನ ಪುತ್ರ. ಛಾಯಾದೇವಿಯ ಮಗ.

ಶನಿದೇವನ ಉತ್ಪತ್ತಿ: ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿಯಾದ ಸುಜ್ಞಾದೇವಿಯು ಸೂರ್ಯನ ತಾಪವನ್ನು ತಡೆಯಲಾರದೆ ಮಾಯೆಯಿಂದ ತನಗೆ ಸಮಾನಕಾದ ಛಾಯೆಯನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ತಾನು ತಂದೆಯಾದ ತೃಷ್ಣಪ್ರಜಾಪತಿಯ ಮನೆಯನ್ನು ಸೇರಿದಳು. ಈ ಛಾಯಾದೇವಿಯಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನಿಗೆ ಸಾವರ್ಣಮನುವೂ ಶನಿದೇವನೂ ಜನಿಸಿದರು. ಶನಿ ಗ್ರಹಕ್ಕೆ ಯಮನು ಅಧಿಷ್ಠಾತ್ಯದೇವತೆ. ಶನಿಯ ವರ್ಣ ನೀಲ. ಕೃಷ್ಣವರ್ಣದ ವಸ್ತ್ರ. ದಾನದ ಧಾನ್ಯ ಎಳ್ಳು, ಪುಷ್ಪವು ಮೆಲ್ಲಗೆ. ವಾಹನವು ಗೃಧ್ರ. ಮಂಕರ ಮತ್ತು

ಕುಂಭರಾಶಿಗಳು ಶನಿಗ್ರಹದ ಕ್ಷೇತ್ರಗಳು. ತುಲಾರಾಶಿಯು ಉಚ್ಚಸ್ಥಾನ, ಮೇಷರಾಶಿಯು ನೀಚಸ್ಥಾನ. ಶನಿಗ್ರಹದ ದಶಕಾಲ ಹತ್ತೊಂಬತ್ತು (19) ವರ್ಷಗಳು. ಈ ಗ್ರಹವು ಒಂದೊಂದು ರಾಶಿಯಲ್ಲಿಯೂ ಸಂಚರಿಸುವ ಕಾಲ ಎರಡು ವರ್ಷಗಳು ಆರು ತಿಂಗಳು (30 ತಿಂಗಳು).

ಶನಿದೇವನಲ್ಲಿ ತನ್ನ (ಸ್ವ) ಮತ್ತು ಇತರ ಗ್ರಹಗಳ ಅಂತರ್ದರ್ಶನ (ಭುಕ್ತಿ) ಮಾನ:

| ಭುಕ್ತಿ      | ವರ್ಷ | ಮಾಸಗಳು | ದಿನಗಳು |
|-------------|------|--------|--------|
| ಸ್ವಭುಕ್ತಿ   | 3    | 0      | 3      |
| ಬುಧಭುಕ್ತಿ   | 2    | 8      | 9      |
| ಕೇತುಭುಕ್ತಿ  | 1    | 1      | 9      |
| ಶುಕ್ರಭುಕ್ತಿ | 3    | 2      | 0      |
| ರವಿಭುಕ್ತಿ   | 0    | 11     | 12     |
| ಚಂದ್ರಭುಕ್ತಿ | 1    | 7      | 0      |
| ಕುಜಭುಕ್ತಿ   | 1    | 1      | 9      |
| ರಾಹುಭುಕ್ತಿ  | 2    | 10     | 6      |
| ಗುರುಭುಕ್ತಿ  | 2    | 6      | 12     |

ಇತರ ಗ್ರಹಗಳ ದಶೆಗಳಲ್ಲಿ ಶನಿಗ್ರಹದ ಅಂತರ್ದರ್ಶನ (ಭುಕ್ತಿ) ಮಾನ:

| ದಶೆ      | ವರ್ಷ | ಮಾಸಗಳು | ದಿನಗಳು |
|----------|------|--------|--------|
| ರವಿದಶೆ   | 0    | 11     | 12     |
| ಚಂದ್ರದಶೆ | 1    | 7      | 0      |
| ಕುಜದಶೆ   | 1    | 1      | 9      |
| ರಾಹುದಶೆ  | 2    | 10     | 6      |
| ಗುರುದಶೆ  | 2    | 6      | 12     |
| ಶನಿದಶೆ   | 3    | 0      | 3      |
| ಬುಧದಶೆ   | 2    | 8      | 9      |
| ಕೇತುದಶೆ  | 1    | 1      | 9      |
| ಶುಕ್ರದಶೆ | 3    | 2      | 0      |

ಶನಿದೇವನು ಆಯುಷ್ಯ ಜೀವನೋಪಾಯ ಮರಣ ಇವುಗಳಿಗೆ ಕಾರಕನು. ಮೂರು ಆರು ಮತ್ತು ಹನ್ನೊಂದನೆಯ ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿರುವಾಗ ಶುಭಫಲಪ್ರದನು.

ಶನಿಪ್ರಸು ಶನಿಪ್ರಸೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿಯಾದ ಛಾಯಾದೇವಿ, ಶನಿದೇವನ ತಾಯಿ. ಶನೇ: ಪ್ರಸು: |

ಶನಿವಾರ ಶನಿನಾರ (ಪುಂ) ಶನಿಯು ಅಧಿಪತಿಯಾಗಿರುವ ದಿವಸ. ಶನೇವಾರ: |

ಶನೇಶ್ವರ ಶನೈಶ್ವರ (ಪುಂ) 1. ಶನಿದೇವ, ಶನಿಗ್ರಹ. ಶನೇ: ಚರತಿ — ಚರ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |



[ಶನಿಗ್ರಹವು ಪಂಗುವಾದುದರಿಂದಲೂ ಎಲ್ಲಾ ಗ್ರಹಗಳ ಮೇಲುಭಾಗದಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದಲೂ ಒಂದು ರಾಶಿಯಿಂದ ಮತ್ತೊಂದು ರಾಶಿಗೆ ಬರಲು ಹೆಚ್ಚು ಕಾಲ ಬೇಕಾಗುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.] "ನಿಲಾಂಜನವಯಪ್ರಖ್ಯಂ ರವಿಸುನು ಮಹಾಗ್ರಹಮ್ | ಛಾಯಾ ಗರ್ಭಸಂಭೂತಂ ವಂದೇ ಭಕ್ತಯಾ ಶನೇಶ್ವರಮ್ || ವ್ಯಾಸೇನೋಕ್ತಮಿದಂ ಸ್ತೋತ್ರಂ ಯಃ ಪಠೇತ್ ಪ್ರಯತೋ ನರಃ | ದಿವಾ ವಾ ಯದಿ ವಾ ರಾತ್ರೌ ಶಾಂತಿಃ ಸ್ತಸ್ಯ ನ ಸಂಶಯಃ" || (ವಿಂ) 2. ಮೆಲ್ಲಗೆ ಸಂಚರಿಸುವವನು, ನಿಧಾನವಾಗಿ ನಡೆಯುವವನು. ಶನೇ: ಚರತಿ—ಚರ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |

ಶನೇಸ್ ಶನೈಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಮೆಲ್ಲಗೆ, ನಿಧಾನವಾಗಿ, ಸಾವಕಾಶವಾಗಿ. ಶನ (ದಾನೇ) "ಏಸ್" ಪೃಷಿಂ | "ರಸಸ್ಯ ತಸ್ಯಾಂ ಪುರಿ ದತ್ತವಕ್ಷುರ್ವಿದ್ವಾನ್ ವಿದಾಮಾಸ ಶನೇನ ಯಾತಮ್" ಮಾಘಂ ೩-೩೨ | 2. ಸ್ವಲ್ಪ ಸ್ವಲ್ಪವಾಗಿ, ಕ್ರಮವಾಗಿ. "ಶನೇ: ಕೃತಪ್ರಾಣವಿಮುಕ್ತಿರೀಶ: ಪರ್ಯಂಕುಬಂಧಂ ನಿಬಿಡಂ ವಿಭೇದ" ಕುಮಾರಂ ೩-೪೯ | 3. ಒಂದಾದಮೇಲೊಂದಾಗಿ, ಕ್ರಮವಾಗಿ. "ವಿಷಯಾಣಾಂ ಗ್ರಹೀತೃಣಿ ಶನೇ: ಪಂಚೇಂದ್ರಿಯಾಣಿ ಚ" ಮನುಂ ೧-೧೫ | ಶನೇ: ಶನೇ: ಮೆಲ್ಲ ಮೆಲ್ಲಗೆ, ಒಹಳ ನಿಧಾನವಾಗಿ. "ಸ್ವಗೃಹಾನ್ ಪ್ರತಿ ಪ್ರತಿಯಯು: ಶನೇ: ಶನೇ:" ಮಾಘಂ ೧೩-೪೮ |

ಶಂತನು ಶಂತನು (ಪುಂ) ಚಂದ್ರವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ, ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯರ ತಂದೆ. [ಶಂತನುಮಹಾರಾಜನು ಗಂಗೆಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ಭೀಷ್ಮನೆಂಬ ಪುತ್ರನನ್ನು ಪಡೆದನು. ಒಮ್ಮೆ ಈತನು ಗಂಗಾತೀರದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ದಾಶರಾಜನ ಮಗಳಾದ ಸತ್ಯವತಿಯನ್ನು ಕಂಡು ಮೋಹಗೊಂಡು ಅವಳ ತಂದೆಯ ಅಪೇಕ್ಷೆಯನ್ನು ಈಡೇರಿಸಲು ಅಸಮರ್ಥನಾಗಿ ಚಿಂತಾಕ್ರಾಂತನಾದನು. ಅವಳಲ್ಲಿ ಜನಿಸುವ ಮಗನಿಗೇ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಕೊಡಬೇಕೆಂಬ ದಾಶರಾಜನ ಅಪೇಕ್ಷೆಯಂತೆ ಭೀಷ್ಮನು ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಯಾಗಿಯೇ ಇರಲು ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡಿದುದರಿಂದ ರಾಜನು ಸತ್ಯವತಿಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ಅವಳಲ್ಲಿ ಚಿತ್ರಾಂಗದ ಮತ್ತು ವಿಜಿತ್ರವೀರ್ಯರೆಂಬ ಪುತ್ರರನ್ನು ಪಡೆದನು.]

ಶಪ್ ಶಪ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಸ್ವೀಕಾರ, ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. 2. ಒಂದು ವಿಕರಣಪ್ರತ್ಯಯ. ಇದು ಸಾರ್ವಧಾತುಕ ಪರವಾದಾಗ ಧಾತುಗಳ ಮುಂದೆ ಕರ್ತೃರ್ಥದಲ್ಲಿ ವಿಧಿಸಲ್ಪಡುವ ಪ್ರತ್ಯಯ. "ಕರ್ತರಿ ಶಪ್" (೩-೧-೬೮) |

ಶಪ - ಆಕ್ರೋಶ (ಫ್ರಾಂ ಉಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) | ಶಪತಿ, -ತೇ | ಶಪಾಪ, ಶಪೇ | ಶಪ್ತಾ | ಶಪ್ಯತಿ, -ತೇ | ಶಪತು, -ತಾಮ್ | ಅಶಪತ್, -ತ | ಶಪೇತ್, -ತ | ಶಪ್ಯಾತ್ |

ಶಪ್ತೀಷ್ಠ | ಇತ್ಯಾದಿ. 1. ಶಪಿಸು, ಒಬ್ಬನಿಗೆ ಕೇಡನ್ನು ಬಯಸು, ಶಾಪಹಾಕು. "ಮತ್ಪ್ರಸೂತಿಮನಾರಾಢ್ಯ ಪ್ರಜೇತಿ ತ್ವಾಂ ಶಪಾಪ ಸಾ" ರಘುಂ ೧-೭೭ | 2. ಶಪಥಮಾಡು, ಆಣೆ ಇಡು. "ಕೃಣಾಯ ಶಪತೇ ಗೋಪಿ" | "ಭರತೇನಾತ್ಮನಾ ಚಾಹಂ ಶಪೇ ತೇ ಮನುಜಾಧಿಪ | ಯಥಾ ನಾನ್ಯೇನ ತುಲ್ಯೇಯಮೃತೇ ರಾಮವಿವಾಸನಾತ್" ರಾಮಾಂ | 3. ಹೆದರಿಸು.

ಕರ್ಮಣಿ:—ಶಪ್ಯತೇ | ಶಪ್ಯತಾಮ್ | ಅಶಪ್ಯತ | ಶಪ್ಯೇತ | ಶೇಷ ಆತ್ಮನೇಪದರೂಪವತ್ |

ಕೃತ್ಸು:—ಶಪ್ತವ್ಯಮ್ | ಶಪನೀಯಮ್ | ಶಪ್ಯಮ್ | ಶಪ್ತ: | ಶಪ್ತವಾನ್ | ಶಪನ್ -ಂತಿ | ಶಪಮಾನ್ | ಶಪ್ತಮ್ | ಶಪನಮ್ | "ಶಪತೋ ಯತ್ಕೃತಂ ಪುಣ್ಯಂ ಶಪ್ಯಮಾನ್ ತು ಗಚ್ಛತಿ | ಶಪ್ಯಮಾನಸ್ಯ ಯತ್ಪಾಪಂ ಶಪಂತಮನುಗಚ್ಛತಿ" ಭಾಂ | "ನ ಚ ತಂ ತದೇತಿ ಶಪಮಾನಮಪಿ ಯದನುಪಾ: ಪ್ರಚುಕ್ತು:" ಮಾಘಂ ೧೫-೪೧ |

ಶಪ - ಆಕ್ರೋಶ (ದಿವಾಂ ಉಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) | ಶಪ್ಯತಿ, -ತೇ | ಶಪ್ಯತು, -ತಾಮ್ | ಅಶಪ್ಯತ್, -ತ | ಶಪ್ಯೇತ್, -ತ | ಉಳಿದ ರೂಪಗಳು ಭ್ವಾದಿ "ಶಪ" ಧಾತುವಿನ ರೂಪಗಳಂತಾಗುವುವು.

ಕೃತ್ಸು:—ಶಪ್ಯನ್, -ಂತಿ | ಶಪ್ಯಮಾನ್ | ಉಳಿದುವು ಭ್ವಾದಿ ಧಾತುವಿನ ರೂಪಗಳಂತಾಗುವುವು. ಕರ್ಮಣಿ— "ಶಪ್ಯಮಾನಸ್ಯ ಯತ್ಪಾಪಂ ಶಪಂತಮನುಗಚ್ಛತಿ" ಭಾಂ |

ಶಪತ್ ಶಪತ್ (ವಿಂ) 1. ಶಾಪಹಾಕುತ್ತಿರುವ, ಬಯ್ಯುತ್ತಿರುವ. ಶಪ (ಆಕ್ರೋಶ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಶಪತೋ ಯತ್ಕೃತಂ ಪುಣ್ಯಂ ಶಪ್ಯಮಾನ್ ತು ಗಚ್ಛತಿ | ಶಪ್ಯಮಾನಸ್ಯ ಯತ್ ಪಾಪಂ ಶಪಂತಮನುಗಚ್ಛತಿ" ಭಾಂ | 2. ಹೆದರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಭಯಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಆಣೆಹಾಕಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ಶಪ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) | -ಮಾನ್: -ಮಾನ: | "ನ ಚ ತಂ ತದೇತಿ ಶಪಮಾನಮಪಿ ಯದನುಪಾ: ಪ್ರಚುಕ್ತು:" ಮಾಘಂ ೧೫-೪೧ |

ಶಪಥ ಶಪಥ (ಪುಂ) 1. ಶಪಥಮಾಡುವುದು, ಆಣೆ ಇಟ್ಟು ಕೊಳ್ಳುವುದು. ಶಪ (ಆಕ್ರೋಶ) "ಅಥ:" (ಉಂ ೩-೧೧೩) | "ನೇತಮತಂ ಮತಮಿತಿ ಬ್ರವಾಣ: ಸಹಸ್ರಶಾಸ್ತೌ ಶಪಥಾನ-ಶಪ್ಯತ್" ಮಹಿಂ ೩-೩೨ | 2. ಪ್ರಮಾಣಮಾಡುವುದು, ತನ್ನಲ್ಲಿ ಅವರಾಧವಿಲ್ಲವೆಂಬುದನ್ನು ತೋರಿಸಲು ಮಾಡುವ ಅಗ್ನಿಪರೀಕ್ಷೆ ಮುಂತಾದುದು. 3. ಹೆದರಿಸುವುದು. 4. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡುವುದು.

ಶಪನ ಶಪನ (ನಂ) 1. ಆಕ್ರೋಶದಿಂದ ಮಾತಾಡುವುದು, ಬೈಯುವುದು, ಶಾಪಹಾಕುವುದು. ಶಪ (ಆಕ್ರೋಶ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಆಣೆ ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವುದು. 3. ಹೆದರಿಸುವುದು.



ಶಪ್ತ ಶಬ್ದ (ವಿಂ) ಶಬ್ದಸಂಖ್ಯೆ, ಕೇಡು ಬಯಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಶಪ (ಆಕ್ರೋಶ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಕುಡ್ವೇನೋ-ಶನಸಾ ಶಪ್ತೋ ಯಾತಿರ್ನಾಹುಸ್ತದಾ। ಪೂರ್ವ ವಯಃಪರित್ಯಜ್ಯ ಜರಾಂ ಸದ್ವಿಜ್ವಪದತ" ಮಾಂ ಆದಿಂ ೭೭-೪೯।

ಶಪ್ಯತ್ ಶಬ್ದ (ವಿಂ) "ಶಪತ್" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಶಪ (ಆಕ್ರೋಶ) ದಿವಾಂ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।

ಶಪ್ಯಮಾನ ಶಬ್ದಮಾನ (ವಿಂ) 1. "ಶಪಮಾನ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಶಪ (ಆಕ್ರೋಶ) ದಿವಾಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪)। 2. ಶಬ್ದಸಂಖ್ಯೆಯಿರುವ. ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್"। "ಶಪ್ಯ-ಮಾನಸ್ಯ ಯತ್ಪಾಪಂ ಶಪಂತಮನುಗಚ್ಛತಿ" ಭಾಂ।

ಶಪ ಶಬ್ದ (ನಂ) 1. ವೃಕ್ಷದ ಮೂಲ, ಮರದ ಬುಡ. ಶಂ ಫಣತಿ-ಫಣ (ಗತೌ) "ಡ:" (ವಾಂ ೩-೨-೧೦೧)। 2. ಹಸು ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಕಾಲಿನ ಗೊರಸು. "ಶಪ್ ಮೂಲೇ ತರುಣಾಂ ಸ್ಯಾತ್ ಗವಾದೀನಾಂ ಕುರೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ।

ಶಪರ ಶಬ್ದ (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. ಶಪ್ ರಾತಿ-ರಾ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩)। "ಶಪರಃ ಶ್ವೇತಕೋಲಃ ಸ್ಯಾತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। "ಮೋಕೀಕರ್ತುಂ ಚತುಲಶಪರೋ-ದ್ವರ್ತನಪ್ರೇಕ್ಷಿತಾನಿ" ಮೇಘಂ ೧-೪೦। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಜಾತಿಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೬೩)। -ರೀ-ರೀ. "ಹೃತಪ್ರಿಯಾದೃಷ್ಟಿವಿಲಾಸವಿಭ್ರಮಾ ಮನೋಸ್ಯ ಜಹ್ನುಃ ಶಪರೀವಿವೃತ್ತಯಃ" ಕಿರಾಂ ೪-೩।

ಶಪರಾಧಿಪ ಶಬ್ದರಾಧಿಪ (ಪುಂ) ಇಲ್ಲಿಶವೆಯ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. "ಇಲ್ಲಿಶವಾರಿಕಪೂರಗಾಂಜೇಶಪರಾ-ಧಿಪಾಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಶಬರ ಶಬ್ದ (ಪುಂ) 1. ಕಿರಾತ, ಬೇಡರವನು, ಬೆಟ್ಟಗುಡ್ಡಗಳಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವವನು. ಶಬರವರ್ಣಮ್-ಶಬ (ಗತೌ) "ಅರಃ" ಬಾಹುಂ। "ರಾಜನ್ ಗುಜ್ಜಾಫಲಾನಾಂ ಸಜ ಇತಿ ಶಬರಾ ನೇವ ಹಾರಂ ಹರಂತಿ"। 2. ಈಶ್ವರ, ಶಂಕರ. 3. ಜಲ. "ಶಬರೋ ಮೇಘಮೇದೇ ಚ ಪಾನೀಯೇ ಶಂಕರೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ। 4. ಮೀಮಾಂಸಾಗ್ರಂಥದ ಒಬ್ಬ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ವ್ಯಾಖ್ಯಾಕಾರರು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರೀ-ರೀ. 5. ಬೇಡರ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು. 6. ಶ್ರೀರಾಮನ ಸಂದರ್ಶನಕ್ಕಾಗಿ ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರತೀಕ್ಷಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಒಬ್ಬ ಬೇಡಿತೆ. "ಅವ್ಯ-ಮಹಿಮಮುನಿಜನಮಜನಮುಷಿತಹೃದಯಕಲ್ಪಶಬರೀಮೋಕ್ಷಸಾಕ್ಷಿ-ಭೂತ" ರಘುಂ ಗಂ।

ಶಬರಾಲಯ ಶಬರಾಲಯ (ಪುಂ) ಬೇಡರ ಮನೆ, ಕಿರಾತರ ವಾಸಸ್ಥಾನ. ಶಬರಾಣಾಮಾಲಯಃ।

ಶಬರಾವಾಸ ಶಬರಾವಾಸ (ಪುಂ) ಬೇಡರ ಮನೆ.

ಶಬಲ ಶಬ್ದ (ಪುಂ) 1. ನಾನಾವರ್ಣ, ಚಿತ್ರವರ್ಣ. ಶಪ (ಆಕ್ರೋಶ) "ಕಲಃ" ಬಲಂ ಚ (ತಂ ೧-೧೦೪)। (ವಿಂ) 2. ಚಿತ್ರವರ್ಣದ, ನಾನಾಬಣ್ಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ನೀಲೋರ್ವರೇಖಾಶಬಲೇನ ಶಂಸನ್ ದಂತದ್ವಯೇನಾಶಮವಿಕುಣ್ಠಿತೇನ" ರಘುಂ ೪-೪೪। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲೀ-ಲೀ. ಶಬಲವರ್ಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಆಕಳು, -ಹಸು. ಶಬಲ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೪೦)। "ವರ್ಣಾದಿಭೇದಾತ್ಸಂಜ್ಞಾಃ ಸ್ಯುಃ ಶಬಲೀಭವಲಾ-ದಯಃ" ಅಮಂ।

ಶಬ್ದ ಶಬ್ದ (ಪುಂ) 1. ಧ್ವನಿ, ಸದ್ದು, ಆಕಾಶದ ಒಂದು ಗುಣ. ಶಬ್ದ (ಆವಿಷ್ಕಾರೇ) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" (೩-೩-೪೬)। "ಅಥಾತ್ಮನಃ ಶಬ್ದಗುಣಂ ಗುಣಜಃ ಪದಂ ವಿಮಾನೇನ ವಿಗಾಹಮಾನಃ" ರಘುಂ ೧೩-೧। "ಅವ್ಯನ್ಯಪುಷ್ಪಾಃ ಪ್ರತಿಕೂಲಶಬ್ದಾಃ" ಕುಮಾಂ ೧-೪೪। ಶಬ್ದವು ರೂಪ ರಸ ಗಂಧ ಸ್ಪರ್ಶ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು ಗುಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಶಬ್ದವು ಶ್ರವಣೇಂದ್ರಿಯದಿಂದ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ ಒಂದು ಗುಣ. "ಶ್ರೋತ್ರಗ್ರಾಹ್ಯೋ ಗುಣಃ ಶಬ್ದಃ" ತಂ ಸಂ। ಈ ಗುಣವು ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರವಿರುವುದು. "ಆಕಾಶಮಾತ್ರವೃತ್ತಿಃ" ತಂ ಸಂ। ಶಬ್ದವು ಧ್ವನಾತ್ಮಕ ಮತ್ತು ವರ್ಣಾತ್ಮಕ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಭೇರಿ ಮೃದಂಗ ಮೊದಲಾದವುಗಳ ಶಬ್ದವು ಧ್ವನಾತ್ಮಕ. ಭಾಷಾರೂಪವಾದ ಶಬ್ದವು ವರ್ಣಾತ್ಮಕ. ಶಬ್ದವು ಆಕಾಶದ ವಿಶೇಷ ಗುಣ. "ಶಬ್ದ-ಗುಣಕಮಾಕಾಶಮ್" ತಂ ಸಂ। 2. ಒಂದು ಪದ, ಒಂದು ಶಬ್ದ. "ಶಬ್ದಾರ್ಥೌ ಸತ್ಕವಿರಿವ ದ್ವಯಂ ವಿಧಾನಪೇಕ್ಷತೇ" ಮಾಘಂ ೨-೮೬। ವರ್ಣಾತ್ಮಕವಾದ ಈ ಶಬ್ದವು ಕಾವ್ಯಕ್ಕೆ ಶರೀರಪ್ರಾಯವಾದುದು. [ಶಬ್ದದ ಉತ್ಪತ್ತಿ ವಿಷಯಕ್ಕೆ "ಪಶ್ಯಂತಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. ಶಬ್ದವು ಸಾರ್ಥಕ ಮತ್ತು ನಿರರ್ಥಕಗಳೆಂದು ಮತ್ತೆ ಎರಡು ವಿಧ. ಸಾರ್ಥಕ ಶಬ್ದವು ಪ್ರಕೃತಿ ಪ್ರತ್ಯಯ ಮತ್ತು ನಿಪಾತಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ಕ ಚ ಟ ತ ಪ ಇತ್ಯಾದಿ ಶಬ್ದಗಳು ನಿರರ್ಥಕ. 3. ಪ್ರಯೋಗಕ್ಕೆ ಅರ್ಥವಾದ ಅರ್ಥಜ್ಞಾನ ಜನ್ಯವಾದ ಪದ. ಇದು ಲೌಕಿಕ ಮತ್ತು ವೈದಿಕಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಲೌಕಿಕಶಬ್ದವು ವಿಧಿ ನಿಷೇಧ ಮತ್ತು ಅರ್ಥವಾದಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. (1) "ಪಾಕಂ ಕುರ್ಯಾತ್" ಇದು ವಿಧಿ. (2) "ಇದಮನಿಷ್ಠಂ ನ ಕುರ್ಯಾತ್" ಇದು ನಿಷೇಧ. (3) "ಅಯಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಃ ಸ್ವಮಹಿಮ್ನಾ ಸರ್ವಂ ಜಗತ್ ಪವಿತ್ರಂ ಕರೋತಿ" ಇದು ಅರ್ಥವಾದ. ವೈದಿಕಶಬ್ದವು (1) ವಿಧಿ (2) ಮಂತ್ರ (3) ನಾಮಧೇಯ (4) ನಿಷೇಧ ಮತ್ತು (5) ಅರ್ಥವಾದಗಳೆಂದು ಐದು ವಿಧ. ಆಪ್ತರಿಂದ ಉಕ್ತವಾದ ಲೌಕಿಕಶಬ್ದವು ಮಾತ್ರ ಪ್ರಮಾಣ



ವಾದುದು. ವೈದಿಕಶಬ್ದವಾದರೆ ಪರಮಾತ್ಮಪ್ರಣೀತ ವಾದುದರಿಂದ ಎಲ್ಲವೂ ಪ್ರಮಾಣಭೂತವಾದುವು. ನೈಯಾಯಿಕಮತದಲ್ಲಿ ಶಬ್ದವು ಅನಿತ್ಯವಾದುದು. ಪ್ರಾಚೀನಕರಮತದಲ್ಲಿ ಶಬ್ದವು ನಿತ್ಯವಾದುದು. ಧ್ವನಾತ್ಮಕ ಶಬ್ದವು ವೀಚೀತರಂಗನ್ಯಾಯದಂತೆ ಹುಟ್ಟುವುದೆಂದು ನೈಯಾಯಿಕರ ಮತ. ಇನ್ನು ಕೆಲವರು ಕದಂಬಕೋಶ ನ್ಯಾಯದಂತೆ ಶಬ್ದವು ಉತ್ಪನ್ನವಾಗುವುದೆಂದು ಹೇಳು ವರು. ಪ್ರಥಮವಾಗಿ ಉಂಟಾದ ವೀಚಿಯಿಂದ ಇನ್ನೊಂದು ವೀಚಿ (ತರಂಗ) ಯು ಹುಟ್ಟುವುದು. ಆ ತರಂಗದಿಂದ ಇನ್ನೊಂದು ತರಂಗ. ಅದರಿಂದ ಮತ್ತೊಂದು ದೊಡ್ಡ ತರಂಗವು ಉತ್ಪನ್ನವಾಗುವುದು. ಅದರಿಂದ ಮೊದಲು ಹುಟ್ಟಿದ ಶಬ್ದದಿಂದ ಎಲ್ಲಾ ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲೂ ಶಬ್ದವು ಹುಟ್ಟುವುದು. ಅದರಿಂದ ಇನ್ನೊಂದು ಶಬ್ದ. ಅದರಿಂದ ಮತ್ತೊಂದು ಶಬ್ದ. ಹೀಗೆ ಉತ್ಪನ್ನವಾದ ಶಬ್ದವು ಶ್ರೋತೃಂದ್ರಿಯದ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದುವುದು. ಇದು ನೈಯಾಯಿಕರ ಮತ.

ಕದಂಬವೃಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲಾ ಭಾಗಗಳಲ್ಲೂ ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕೋರಕ (ಮೊಗ್ಗು) ಗಳು ಹುಟ್ಟುವುವು. ಅದರಿಂದ ಭೇರಿಯ ಶಬ್ದವು ಮೊದಲು ಹುಟ್ಟಿ ಅದರಿಂದ ಎಲ್ಲಾ ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲೂ ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ ಶಬ್ದಗಳು ಉತ್ಪನ್ನವಾಗು ವುವು. ಆ ಶಬ್ದಗಳಿಂದ ಪುನಃ ಹತ್ತಾರು ಶಬ್ದಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿ ಹೀಗೆ ಮೊದಲು ಹುಟ್ಟಿದ ಶಬ್ದದಿಂದ ಎಲ್ಲಾ ದಿಕ್ಕು ಗಳಲ್ಲೂ ಅನೇಕ ಶಬ್ದಗಳು ಹುಟ್ಟಿ ಶ್ರವಣೇಂದ್ರಿಯ ಗೋಚರವಾಗುವುದೆಂದು ಕೆಲವರ ಮತ.

ಒಂದೊಂದರಿಂದ ಹೊರಡುವ ಶಬ್ದಗಳಿಗೂ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಹೆಸರುಗಳಿರುವುವು.

|                       |         |
|-----------------------|---------|
| ಉದರದಿಂದ ಹೊರಡುವ ಶಬ್ದವು | ಕರ್ದನ   |
| ಗುದದ್ವಾರದಿಂದ ..       | ಪರ್ದನ   |
| ಸಿಂಹದ ಗರ್ಜನೆಯು        | ಕ್ಷೇಪಾ  |
| ವಸ್ತ್ರ ತರಗಲೆಗಳ ಶಬ್ದವು | ಮರ್ಮರ   |
| ಅಶ್ವದ ..              | ಹೇಪಾ    |
| ಧನುಸ್ಸಿನ ..           | ವಿಷ್ಕಾರ |
| ಮೇಘದ ..               | ಸ್ತನಿತ  |
| ತೀರ್ಯಕಪ್ರಾಣಿಗಳ ..     | ವಾಶಿತ   |
| ನಾಯಿಯ ..              | ಭಷಣ     |
| ಪಕ್ಷಿಗಳ ..            | ಕೂಚಿತ   |
| ಭೂಷಣಗಳ ..             | ಶಿಂಜಿತ  |
| ರತಿಕಾಲದ ..            | ಮಣಿತ    |

ಇತ್ಯಾದಿ.

ಶಬ್ದಗಳ ಲಿಂಗ ನಿರ್ದೇಶನ:-

ಪುಂಲಿಂಗ ಶಬ್ದಗಳು:

ಸ್ವರ್ಗ ಯಾಗ ಪರ್ವತ ಮೇಘ ಸಮುದ್ರ ವೃಕ್ಷ ಕಾಲ ಖಡ್ಗ ಬಾಣ ಶತ್ರು ಹಸ್ತ ಕಪೋಲ ಓಷ್ಣ ಬಾಹು ದಂತ ಕಂಠ ಕೇಶ ಸ್ತನ ಇವುಗಳ ಹೆಸರುಗಳು ಪುಂಲಿಂಗಗಳು. ಅಹಾಂತಗಳಾದ ಶಬ್ದಗಳೂ (ಪೂರ್ವಾಹ್ನಿ: ಅಪರಾಹ್ನಿ:) ಅಹಾಂತ ಶಬ್ದಗಳೂ (ಋತು: ಶ್ರವಣ:) ಪುಂಲಿಂಗಗಳು.

ಕಶೇಶ ಜತು ಮತ್ತು ವಸ್ತು ಶಬ್ದಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಉಳಿದ ತು ಮತ್ತು ರು ಅಂತವಾಗಿರುವ ಶಬ್ದಗಳು ಪುಂಲಿಂಗ ಗಳು. ಹೇತು: ಸೇತು: ಚರು: ಗುರು: ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕ ಷ ಣ ಭ ಮ ರ ಪ ಥ ನ ಯ ಸ ಟ ಈ ವರ್ಣ ಉಪಾಂತವಾಗಿರುವ ಅಕಾರಾಂತ ಶಬ್ದಗಳು ಪುಂಲಿಂಗ ಗಳು.

ತಟಾ: ಅಕ: ಸ್ಫಟಿಕ: ವೃಷ: ನಿಕಟ: ಗಣ: ಗುಣ: ಕುಮ್ಮ: ಕಲಮ: ವ್ಯಾಮ: ಗ್ರಾಮ: ಹಾರ: ಸಾರ: ಧೂಪ: ಸುಪ: ಅರ್ಥ: ಶಾಪಯ: ಸ್ತೇನ: ಜನ: ಕುಲಾಯ: ತನ್ತುಬಾಯ: ರಸ: ದಾಸ: ಷಟ: ಪಟ: ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸಂಜ್ಞೆ ಕರ್ತೃವ್ಯತಿರಿಕ್ತಕಾರಕ ಮತ್ತು ಭಾವಾರ್ಥ ಗಳಲ್ಲಿ ವಿಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಧ್ವಂ ಅಚ್ ಅಪ್ ನಡ್ ಣ ಷ ಅಥುಕ್ ಈ ಪ್ರತ್ಯಯಾಂತ ಶಬ್ದಗಳು ಪುಂಲಿಂಗಗಳು.

ತಟಾ: ಕ್ರಮವಾಗಿ ವಾಕ: ರಾಗ:, ನಯ: ಜಯ: ಚಯ:, ಕರ: ಗರ:, ಯಜ: ಯತನ:, ನಾದ:, ದಂತಚ್ಛದ:, ಕ್ಷವಶ್ರು: ವೇಶ್ರು: ಇತ್ಯಾದಿ.

ಭಾವಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ವಿಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ "ಕ" ಪ್ರತ್ಯಯಾಂತ ಶಬ್ದ ಗಳೂ ಭಾವಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ವಿಹಿತವಾದ "ಕ" ಪ್ರತ್ಯಯಾಂತ ಶಬ್ದಗಳೂ "ಕು" ಸಂಜ್ಞಾಕಥಾತುವಿನ ಮುಂದೆ ವಿಹಿತ ವಾದ "ಕಿ" ಪ್ರತ್ಯಯಾಂತ ಶಬ್ದಗಳೂ ಪುಂಲಿಂಗಗಳು. ಆಸ್ತುತ್ಯ: ಪ್ರಸ್ಯ: ನಿಧಿ: ತದಧಿ: ಜಲಧಿ: ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕರ್ತೃರ್ಥದಲ್ಲಿ ವಿಹಿತವಾದ "ಲ್ಯು" ಪ್ರತ್ಯಯಾಂತ ಶಬ್ದಗಳೂ ಭಾವಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ವಿಹಿತವಾದ "ಇಮನಿಕ್" ಪ್ರತ್ಯಯಾಂತ ಶಬ್ದಗಳೂ ಪುಂಲಿಂಗಗಳು.

ತಟಾ: ಕ್ರಮವಾಗಿ ನಂದನ: ರಮಣ: ಗರಿಮಾ ಪ್ರಥಿಮಾ ಲಘಿಮಾ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸೂರ್ಯ, ಚಂದ್ರ ಪರ್ಯಾಯಶಬ್ದಗಳೂ ಅಯಸ್ ಶಬ್ದವೂ ಪೂರ್ವಪದವಾಗಿರುವ ಕಾಂತ ಶಬ್ದಾಂತಪದ ಗಳೂ ಪುಂಲಿಂಗಗಳು. ಸೂರ್ಯಕಾಂತ: ಚಂದ್ರಕಾಂತ: ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗ ಶಬ್ದಗಳು:

ಏಕಾಚ್ಯವಾದ ಈಕಾರಾಂತ ಮತ್ತು ಉಕಾರಾಂತ ಶಬ್ದಗಳು. ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗಗಳು. ಖಿ: ಘ್ನ: ಭ್ನ: ಇತ್ಯಾದಿ.



“ಸ್ತ್ರಿಯಾಮಿಡ್ವಿರಾಮೆಕಾಚ್” ಅಮಂ । ಮಾತೃ ಯೋಷಿತ್ ಸುರಭಿ ಕರಣ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಸಯೋನಿ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಶಬ್ದಗಳು ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗಗಳು.

ವಿದ್ಯುತ್ ನಿಶಾ ವಲಿ ವೀಣಾ ದಿಕ್ ಭೂ ನದಿ ಹ್ನಿ ವಾಚಕ ಶಬ್ದಗಳು ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗಗಳು.

ಅಕಾರಾಂತೋತ್ತರಪದವುಳ್ಳ ಸಮಾಹಾರದ್ವಿಗು ಸಮಾಸವು ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗ. ಪञ्चमूली पञ्चवटी ಇತ್ಯಾದಿ.

“अदन्तद्विगुरेकार्थः” अमं । पात्र युग ಮುಂತಾದ ಉತ್ತರ ಪದಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದ್ವಿಗುಸಮಾಸವು ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗ ವಲ್ಲ. पञ्चपात्रम् चतुर्युगम् ಇತ್ಯಾದಿ. “पात्राद्यन्तस्य न” (वा० २-४-१७) । “तल्” ಪ್ರತ್ಯಯಾಂತ ಶಬ್ದಗಳೂ ಯಃ ಇನಿಃ ಕಡಚ್ ತಾ ಈ ಪ್ರತ್ಯಯಾಂತ ಶಬ್ದಗಳೂ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗಗಳು. ग्रामता जनता बन्धुता, पाश्या, खलिनी, रथकट्या, गोत्रा ಇತ್ಯಾದಿ.

“स्त्रियां क्तिन्” ಈ ಅಧಿಕಾರದಲ್ಲಿ ಭಾವಾರ್ಥ ಕರ್ತೃವ್ಯತಿರಿಕ್ತಕಾರಕದಲ್ಲಿ ವಿಹಿತವಾದ ಅನಿಃ ಕ್ತಿನ್ ಷ್ವಲ್ ಷ್ವುಕ್ ಕ್ಯಪ್ ಯುಡ್ ಅಡ್ ಅಃ ನಿಃ ಶಃ ಈ ಪ್ರತ್ಯಯಾಂತ ಶಬ್ದಗಳು ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗಗಳು.

उदा : ಕ್ರಮವಾಗಿ ಅಜನನಿಃ, ಕೃತಿಃ ಭೂತಿಃ, ಆಸಿಕಾ ಶಾಯಿಕಾ, ಇಕ್ಷುಭಕ್ಷಿಕಾ, ವ್ರಜ್ಯಾ ಇಜ್ಯಾ, ಆಸನಾ ಮಂಡನಾ, ಭಿಡಾ ಮೃಜಾ, ಚಿಕಿರ್ಮಾ, ಇಹಾ ಊಹಾ, ಘ್ಲಾನಿಃ ಘ್ಲಾನಿಃ, ಕ್ರಿಯಾ ಇಚ್ಛಾ ।

ಉಣಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ವಿಹಿತವಾದ ನಿರ್ ಊರ್ ಮತ್ತು ಔರ್ ಪ್ರತ್ಯಯಾಂತ ಶಬ್ದಗಳು ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗಗಳು.

उदा : निर्-श्रेणिः श्रोणिः । ऊर्-खर्जूः कण्डूः चमूः । ईर्-लक्ष्मीः तन्त्रीः ।

ಜಿಫ್ ಜಿಫ್ ಮತ್ತು ಜಿನ್ ಮತ್ತು ಚಾಪ್ ಟಾಪ್ ಮತ್ತು ಡಾಪ್ ಮತ್ತು ಊಡ್ ಈ ಪ್ರತ್ಯಯಾಂತಶಬ್ದಗಳು ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗ ಗಳು. ಇವು ವಿಶೇಷ್ಯನಿಷ್ಕಗಳೂ ಮತ್ತು ನಿಯತಲಿಂಗ ಗಳು. ವಿಶೇಷ್ಯನಿಷ್ಕಗಳು. ಪೌಸ್ನಿ ಆಪಗವಿ । ನಿಯತ ಲಿಂಗಗಳು ಕರಿಣಿ ಕರ್ತೃ ಇವು ಜಿಫ್ ಪ್ರತ್ಯಯಾಂತಗಳು. दाक्षायणी गौरी ಇಲ್ಲಿ “ಜಿಫ್” । अजा एडका ಇಲ್ಲಿ “ಟಾಪ್” । सुराजा ಇಲ್ಲಿ “ಡಾಪ್” । रम्भोरु: ಇಲ್ಲಿ “ಊಡ್” ಇತ್ಯಾದಿ.

ನಪುಂಸಕ ಲಿಂಗ ಶಬ್ದಗಳು:

ಆಕಾಶ ಅರಣ್ಯ ಎಲೆ ಗರ್ಜ (ಹಳ್ಳಿ ಗುಳಿ) ಹಿಮ ಜಲ ಶೀತ ಉಷ್ಣ ಮಾಂಸ ರಕ್ತ ಮುಖ ಕಣ್ಣು ಧನ ಬಲ (ಶಕ್ತಿ) ಫಲ ಸ್ವರ್ಣ ತಾಮ್ರ ಲೋಹ ಸುಖ ದುಃಖ

ಶುಭ ಅಶುಭ ಜಲಪುಷ್ಪಗಳು ಲವಣ ವ್ಯಂಜನ ಈ ವಸ್ತು ವಾಚಕ ಶಬ್ದಗಳು ನಪುಂಸಕಲಿಂಗಗಳು.

त्र ಎಂಬ ಅಕ್ಷರಾಂತವಾದ ಶಬ್ದಗಳೂ ಸಕಾರ ಮತ್ತು ಲಕಾರೋಪಧವಾಗಿರುವ ಮತ್ತು ವಿಶೇಷ ಶಾಸ್ತ್ರದಿಂದ ಬಾಧಿತವಲ್ಲದ ಶಬ್ದಗಳೂ ನಪುಂಸಕಲಿಂಗಗಳು. पत्रम् गात्रम् कलत्रम् । विसम् यवसम् कुलम् फलम् जलम् ಇತ್ಯಾದಿ ಶಬ್ದಗಳು ನಪುಂಸಕ ಲಿಂಗಗಳು. ಸಂಖ್ಯಾವಾಚಕ ಪದವು ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿರುವ ರಾತ್ರಶಬ್ದವು ನಪುಂಸಕ. त्रिरात्रम् गणरात्रम् ।

ಸಮಾಹಾರದ್ವಂದ್ವಸಮಾಸವೂ ಅವ್ಯಯೀಭಾವ ಸಮಾಸವೂ ನಪುಂಸಕ ಲಿಂಗಗಳು. पाणिपादम् उपकुम्भम् । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸಂಖ್ಯಾಪೂರ್ವ ಮತ್ತು ಅವ್ಯಯಪೂರ್ವ ಸಮಾಸಾಂತ ಏಕ ಶಬ್ದವು ನಪುಂಸಕ.

उदा : त्रिपथम् चतुष्पथम् । विपथम् दुष्पथम् ಇತ್ಯಾದಿ.

ಅನೇಕ ವಸ್ತುಗಳ ಸಂಬಂಧವಾದ ಛಾಯಾ ಶಬ್ದಾಂತ ವಾದ ತತ್ಪುರುಷ ಸಮಾಸದ ಶಬ್ದವು ನಪುಂಸಕಲಿಂಗ.

वीनां छाया विच्छायम्, वृक्षच्छायम् ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸಮಾಹಾರ್ಥಕ ಸಭಾಶಬ್ದಾಂತ ತತ್ಪುರುಷಸಮಾಸವು ನಪುಂಸಕಲಿಂಗ. दासीसभम् । ರಾಜ ಪರ್ಯಾಯವಾಚಕ ಮತ್ತು ರಕ್ಷುಪಿಶಾಚಾದಿವಾಚಕ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿರುವ ಶಾಲಾರ್ಥಕ ಸಭಾಶಬ್ದವು (ತತ್ಪುರುಷ ಸಮಾಸ) ನಪುಂಸಕ ಲಿಂಗ.

नृपसभम् रक्षःसभम् ಇತ್ಯಾದಿ. ಈ ರೀತಿ ದಿಬ್ಯಾತ್ರ ಪ್ರದರ್ಶನ. 4. ಪದವಿ, ಬಿರುದು. “यस्यार्थयुक्तं गिरिराजशब्दं कुर्वन्ति बालव्यजनेश्वरमयः” ಕುಮಾಂ १-१३ । 5. ನಾಮಧೇಯ, ಹೆಸರು. 6. (ನೈಯಾಯಿಕರ ಮತ ದಲ್ಲಿ) ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಪ್ರಮಾಣಗಳಿಲ್ಲೊಂದು.

ಶಬ್ದಕಾರ ಶಬ್ದಕಾರ (ವಿಂ) ಶಬ್ದವನ್ನು ಮಾಡುವವನು. शब्दं करोति — डु कृञ् (करणे) “अण्” (३-२-१) । “हन्तुं कलहकारोऽसौ शब्दकारः पपात खम्” भट्टि० ५-१०० ।

ಶಬ್ದಕೋಶ ಶಬ್ದಕೋಶ (ಪುಂ) ನಿಘಂಟು, ಶಬ್ದಗಳ ಅರ್ಥ ವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಪುಸ್ತಕ. ಅಕಾರಾದಿ ಪದಗಳನ್ನು ವಿಂಗಡಿಸಿ ಅವುಗಳ ಅರ್ಥವನ್ನು ಸೋದಾಹರಣ ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳುವ ನಿಘಂಟು.

ಶಬ್ದಗತ ಶಬ್ದಗತ (ವಿಂ) ಶಬ್ದದೊಳಗೆ ಇರುವ, ಶಬ್ದ ದೊಳಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ.



**ಶಬ್ದಗುಣ ಶಬ್ದಗುಣ** (ವಿಂ) ಶಬ್ದವೇ ಗುಣವಾಗಿರುವ. ಶಬ್ದೋ ಗುಣೋ यस್ಯ | "ಅಥಾತ್ಮನಃ ಶಬ್ದಗುಣಂ ಗುಣಜಃ ಪದಂ ವಿಮಾನೇನ ವಿಗಾಹ್ಮಾನಃ" ರಘುಂ ೧೩-೧ |

**ಶಬ್ದಗ್ರಹ ಶಬ್ದಗ್ರಹ** (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೋತ್ರೇಂದ್ರಿಯ, ಕರ್ಣ, ಕಿವಿ. ಶಬ್ದೋ ಗೃಹ್ಯತೇಜೇನ—ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಅಪ್" (೩-೩-೪೮) | 2. ಶಬ್ದವನ್ನು ಗ್ರಹಿಸುವುದು, ಶಬ್ದವನ್ನು ಕಂಡುಹಿಡಿಯುವುದು. ಶಬ್ದಸ್ಯ ಗ್ರಹಃ ಗ್ರಹಣಮ್ |

**ಶಬ್ದಚಾತುರ್ಯ ಶಬ್ದಚಾತುರ್ಯ** (ನಂ) ವಾಗ್ವೈಖಿರಿ, ವಾಕ್ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಮಾತಿನಲ್ಲಿ ಜಾಣತನ.

**ಶಬ್ದಚಿತ್ರ ಶಬ್ದಚಿತ್ರ** (ನಂ) ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. ಕಾವ್ಯವು ಶಬ್ದಚಿತ್ರ ಮತ್ತು ಅರ್ಥಚಿತ್ರಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಶ್ರೋತ್ರಕ್ಕೆ ಮಾತ್ರ ಆಪ್ಯಾಯಮಾನವಾಗಿರುವ ಶಬ್ದರಾಶಿಗಳಿಂದ ಗ್ರಥಿತವಾದ ಕಾವ್ಯವು ಶಬ್ದಚಿತ್ರಕಾವ್ಯ. ಇಂತಹ ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯವೇ ಹೊರತು ಅರ್ಥ ಮತ್ತು ಅಲಂಕಾರಗಳಿಗೆ ಸ್ಥಾನವಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಇಂತಹ ಕಾವ್ಯವು ಅಧಮಕಾವ್ಯವೆಂದು ಪರಿಗಣಿತವಾಗಿದೆ. "ಶಬ್ದಚಿತ್ರಂ ವಾಚ್ಯ (ಅರ್ಥ) ಚಿತ್ರಮವ್ಯಯಂ ತವರಂ ಸ್ಮೃತಮ್" ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ | "ಮಿತ್ರಾತ್ರಿಪುತ್ರನೇತ್ರಾಯ ತ್ರಯಿಶಾತ್ರವಶಾತ್ರವೇ | ಗೋತ್ರಾರಿಗೋತ್ರಜತ್ರಾಯ ಗೋತ್ರಾತ್ರೇ ತೇ ನಮೋ ನಮಃ" | ಇಲ್ಲಿ ಅರ್ಥಚಮತ್ಕೃತಿಯಿಂದ ಪ್ರೋಕ್ಷಿತವಾದ ಶಬ್ದ ಚಮತ್ಕೃತಿಗೇ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯವಿರುವುದರಿಂದ ಇದು ಅವರ ಕಾವ್ಯ.

**ಶಬ್ದಚೋರ ಶಬ್ದಚೋರ** (ಪುಂ) ಶಬ್ದವನ್ನು ಕದಿಯುವವನು, ಇತರರ ಗ್ರಂಥಗಳಿಂದ ಪದಗಳನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸುವವನು, ಇತರರು ಪ್ರಯೋಗಿಸಿದ ಪದಗಳನ್ನು ತನ್ನ ಗ್ರಂಥದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗಿಸುವವನು.

**ಶಬ್ದತನ್ಮಾತ್ರ ಶಬ್ದತನ್ಮಾತ್ರ** (ನಂ) ತಾಮಸಾಹಂಕಾರ ಮತ್ತು ಆಕಾಶ ಇವೆರಡರ ಮಧ್ಯಮಾವಸ್ಥೆಯೊಡನೆ ಕೂಡಿರುವ ದ್ರವ್ಯ, ಉತ್ಕಟಾವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹೊಂದದ ಶಬ್ದಗುಣವುಳ್ಳ ಸ್ಪರ್ಶಶೂನ್ಯವಾದ ದ್ರವ್ಯ, ಆಕಾಶಕ್ಕೆ ಉಪಾದಾನಕಾರಣವಾದ ದ್ರವ್ಯ. ದಧಿರೂಪವಾಗಿ ಪರಿಣಮಿಸಲು ಆರಂಭಿಸಿರುವ ಕ್ಷೀರಕ್ಕೆ ಕ್ಷೀರತ್ವಾವಸ್ಥೆ ಮತ್ತು ದಧಿತ್ವಾವಸ್ಥೆ ಈ ಎರಡರ ಮಧ್ಯಕಾಲದ ಅವಸ್ಥೆಯಂತೆ ತಾಮಸಾಹಂಕಾರ ಮತ್ತು ಆಕಾಶಗಳ ಮಧ್ಯಮಾವಸ್ಥೆಯೊಡನೆ ಕೂಡಿದ ದ್ರವ್ಯವು "ಶಬ್ದತನ್ಮಾತ್ರ" ವೆನಿಸುವುದು. ಇದರಿಂದ ಆಕಾಶದ ಉತ್ಪತ್ತಿಯಾಗುವುದು. ["ತನ್ಮಾತ್ರ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಶಬ್ದನ ಶಬ್ದನ** (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದಮಾಡುವವನು, ಕೂಗುವವನು, ಕೂಗುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಶಬ್ದ (ಶಬ್ದ-

ಕ್ರಿಯಾಯಾಮ್)+ಣಿಕ್ "ಋಕ್" (೩-೨-೧೪೮) | (ನಂ) 2. ಕೂಗುವುದು, ಶಬ್ದಮಾಡುವುದು. ಶಬ್ದ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |

**ಶಬ್ದಪ್ರಮಾಣ ಶಬ್ದಪ್ರಮಾಣ** (ನಂ) ಶಬ್ದದ ಆಧಾರ, ವಸ್ತುವನ್ನು ಯಥಾರ್ಥವಾಗಿ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಒಂದು ಉಪಾಯ, ಯಥಾರ್ಥಾನುಭವಕ್ಕೆ ಇರಬೇಕಾದ ಒಂದು ಕಾರಣ. ಯಥಾರ್ಥಾನುಭವವು (1) ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಮ್ (2) ಅನುಮಿತಿಃ (3) ಉಪಮಿತಿಃ ಮತ್ತು (4) ಶಾಬ್ದಮ್ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ಈ ಯಥಾರ್ಥಾನುಭವಗಳಿಗೆ (1) ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ-ಪ್ರಮಾಣಮ್ (2) ಅನುಮಾನಪ್ರಮಾಣಮ್ (3) ಉಪಮಾನಪ್ರಮಾಣಮ್ ಮತ್ತು (4) ಶಬ್ದಪ್ರಮಾಣಮ್ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಅಸಾಧಾರಣ ಕಾರಣರೂಪಕರಣಗಳಿರುವುವು. "ಯಥಾರ್ಥಾನುಭವ-ಶ್ರುತವಿಧಃ | ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾನುಮಿತುಪಮಿತಿಶಾಬ್ದಭೇದಾತ್ | ತತ್ಕರಣಮಪಿ ಚತುರ್ವಿಧಮ್ | ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾನುಮಾನೋಪಮಾನಶಬ್ದಭೇದಾತ್ | ಅಸಾಧಾರಣಕಾರಣಂ ಕರಣಮ್" ತಂ ಸಂ |

**ಶಬ್ದಬ್ರಹ್ಮನ್ ಶಬ್ದಬ್ರಹ್ಮನ್** (ನಂ) 1. ವಾಕ್ರೂಪವಾದ ಬ್ರಹ್ಮ, ಪರಬ್ರಹ್ಮ. ಶಬ್ದ ಏವ ಬ್ರಹ್ಮ | "ಭಗವಾನ್ ಪ್ರಾಚೇತಸಃ ಪ್ರಥಮಂ ಮನುಷ್ಯೇಶು ಶಬ್ದಬ್ರಹ್ಮಣಸ್ತಾದೃಶಂ ವಿವರ್ತಮಿತಿ-ಹಾಸಂ ರಾಮಾಯಣಂ ಪ್ರಣಿನಾಯ" ೩೦ ರಾಂ ೨ | "ಶಬ್ದಬ್ರಹ್ಮವಿದಃ ಕವೇಃ ಪರಿಣತಾಂ ಪ್ರಾಜ್ಞಸ್ಯ ವಾಣೀಮಿಮಾಮ್" ೩೦ ರಾಂ ೭-೨೧ | 2. ವೇದ.

**ಶಬ್ದಭೇದಿನ್ ಶಬ್ದಭೇದಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಅರ್ಜುನ. ಶಬ್ದ-ಮನುಸ್ಮತ್ಯು ಮೇತುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ—ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಣಿನಿಃ" (೩-೨-೭೮) | "ಸವ್ಯಸಾಚಿ ಸುಮದ್ರೇಶಃ ಶಬ್ದಭೇದಿ ಕಪಿಶ್ವಜಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 2. ಆಸನದ್ವಾರ, ಗುದ. 3. ಬಾಣದ ಒಂದು ಭೇದ. (ವಿಂ) 4. ಶಬ್ದವನ್ನು ಕೇಳಿ ಆಕಡೆಗೆ ಗುರಿಯಿಟ್ಟು ಹೊಡೆಯುವವನು.

**ಶಬ್ದಯತ್ ಶಬ್ದಯತ್** (ವಿಂ) ಕೂಗುತ್ತಿರುವ, ಶಬ್ದ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಮಾತನಾಡುತ್ತಿರುವ. ಶಬ್ದಂ ಕರೋತಿ+ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) | —ಯಂತಿ —ಯಂತೀ. "ವಿತತಮದುಕರಾಗ್ರಃ ಶಬ್ದಯಂತ್ಯಾ ವಯಿಮಿಃ ಪರಿಪತತಿ ದಿವೋಽಕ್ಷೇ ಹೇಲಯಾ ಬಾಲಸೂರ್ಯಃ" ಮಾಘಂ ೧೧-೪೭ |

**ಶಬ್ದಯೋನಿ ಶಬ್ದಯೋನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಬ್ದೋತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಮೂಲವಾದ ಧಾತು. ಶಬ್ದಸ್ಯ ಯೋನಿಃ |

**ಶಬ್ದವಿಜ್ಞಾ ಶಬ್ದವಿಜ್ಞಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಬ್ದಶಾಸ್ತ್ರ, ವ್ಯಾಕರಣ ವಿಜ್ಞೆ, ಶಬ್ದನಿಷ್ಪತ್ತಿಯನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ. —ಶಾಸ್ತ್ರಮ್ ಶಾಸ್ತ್ರಮ್. "ಶಬ್ದವಿಜ್ಞೇವ ನೋ ಭಾತಿ ರಾಜನೀತಿರಪಸ್ತಶಾ" ಮಾಘಂ ೨-೧೧೨ |



ಶಬ್ದವೇಧಿನ್ ಶಬ್ದವೇಧಿನ್ (ವಿಂ) 1. ದೃಷ್ಟಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗದಿದ್ದರೂ ಶಬ್ದವು ಬಂದ ಕಡೆಗೆ ಗುರಿಯಿಟ್ಟು ಹೊಡೆಯುವವನು. ಶಬ್ದಮನುಸ್ಮೃತ ವೇದ್ಯ ಶಿಲೆ ಯಸ್ಯ | ವ್ಯವ (ತಾಡನೆ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮) | (ಪುಂ) 2. ದಶರಥ. 3. ಅರ್ಜುನ. 4. ಧಾನುಷ್ಯ, ಬಿಲ್ಲುಗಾರ. 5. ಒಂದು ವಿಧ ಬಾಣ.

ಶಬ್ದಶಕ್ತಿ ಶಬ್ದಶಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಅಭಿಧಾವೃತ್ತಿಯಿಂದ ಅರ್ಥ ಕೊಡುವ ಒಂದು ಶಕ್ತಿ, ಪದಗಳ ಅರ್ಥಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಅನುಕೂಲವಾದ ಅರ್ಥಸ್ವರಣೆಗೆ ಸಾಧಕವಾದ ಪದಪದಾರ್ಥಗಳ ಸಂಬಂಧರೂಪವಾದ ಶಕ್ತಿ. ಶಬ್ದಸ್ಯ ಶಕ್ತಿ:— ಅಭಿಧಾವೃತ್ತಿರೂಪಾ |

ಶಬ್ದಶಾಸನ ಶಬ್ದಶಾಸನ (ನಂ) 1. ಶಬ್ದಶಾಸ್ತ್ರ, ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರ. ಶಾಸ್ತ್ರ (ಅನುಗಾಷ್ಟಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | 2. ವ್ಯಾಕರಣದ ನಿಯಮ, ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರದ ನಿಬಂಧನೆ. "ಶಬ್ದಶಾಸನವಿದ: ಸಮಾಸಯೋ: ವಿಗ್ರಹಂ ವ್ಯವಸಯು: ಸ್ವರೇಣ ತೇ" ಮಾಘಂ ೧೪-೨೪ |

ಶಬ್ದಶುದ್ಧಿ ಶಬ್ದಶುದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಬ್ದಗಳ ಶುದ್ಧತೆ, ವ್ಯಾಕರಣದ ನಿಯಮಾನುಸಾರ ಶಬ್ದಗಳಲ್ಲಿ ದೋಷವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಶಬ್ದಸ್ಯ ಶುದ್ಧಿ: |

ಶಬ್ದಶ್ಲೇಷ ಶಬ್ದಶ್ಲೇಷ (ಪುಂ) ಒಂದೇ ಅನುಪೂರ್ವಿಯ ಶಬ್ದದಲ್ಲಿ ಜತುಕಾಷ್ಠಗಳಂತೆ ಅನೇಕಾರ್ಥಗಳು ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ. ಶಬ್ದಸ್ಯ ಶ್ಲೇಷ: | "ಶಬ್ದವಿಧೇವ ನೋ ಭಾತಿ ರಾಜನೀತಿರಪಸ್ಪಶಾ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಅಪಗತ: ಸ್ಪಶ: ಚಾರ: ಯಸ್ಯಾ: ಎಂದೂ ಅವಿಧಮಾನ: ಪಸ್ಪಶ: ಕಞ್ಚನ ಉಪೋದಾತ ಗ್ರಂಥ: ಯಸ್ಯಾ: ಎಂದೂ ಒಂದೇ ಪದದಲ್ಲಿ ಎರಡು ಅರ್ಥಗಳು ಸೇರಿಕೊಂಡು ಶಬ್ದವು ಶ್ಲಿಷ್ಟವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಶಬ್ದಶ್ಲೇಷ.

ಶಬ್ದಸೌಠವ ಶಬ್ದಸೌಷ್ಠವ (ನಂ) ಶಬ್ದದ ಸೊಬಗು, ಸುಂದರವಾದ ಶೈಲಿ. ಸುಷ್ಠು ಭಾವ: "ಅವ್" (೪-೧-೧೨೯) | ಶಬ್ದಸ್ಯ ಸೌಠವಮ್ |

ಶಬ್ದಾಧಿಷ್ಠಾನ ಶಬ್ದಾಧಿಷ್ಠಾನ (ನಂ) ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಆಶ್ರಯವಾದ ಕರ್ತೃ, -ಕವಿ. -ಶ್ರೋತೃಂದ್ರಿಯ. ಶಬ್ದಸ್ಯಾಧಿಷ್ಠಾನಮ್ ಆಶ್ರಯಸ್ಥಾನಮ್ |

ಶಬ್ದಾಧ್ಯಾಹಾರ ಶಬ್ದಾಧ್ಯಾಹಾರ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಾಕ್ಯದ ಅರ್ಥವು ಪೂರ್ಣವಾಗಲು ಅದಕ್ಕೆ ಬೇಕಾಗಿರುವ ಪದವನ್ನು ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, -ಬಿಟ್ಟುಹೋಗಿರುವ ಪದವನ್ನು ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಶಬ್ದಾನುಶಾಸನ ಶಬ್ದಾನುಶಾಸನ (ನಂ) ಶಬ್ದಶಾಸ್ತ್ರ, ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರ, ಸಂಸ್ಕೃತವಾದ ಶಬ್ದಗಳ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು

ತಿಳಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ. ಶಬ್ದಾ: ವೇದಿಕಾ ಲೌಕಿಕಾಶ್ಚ ಅನು-ಶಿಷ್ಯಂತೇ ವ್ಯುತ್ಪಾದ್ಯ ಸಂಸ್ಕೃಯಂತೇ ಪ್ರಕೃತಿಪ್ರತ್ಯಯವಿಭಾಗವತ್ತಯಾ ಬೋಧಂತೇ |

ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರ ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರ (ಪುಂ) ಅಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ, ಶಬ್ದಜಮತ್ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಕಾವ್ಯಕ್ಕೆ ಶೋಭೆಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ ಅಲಂಕಾರ. ಅನುಪ್ರಾಸ ಯಮಕಗಳು ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರಗಳು. ಈ ಅಲಂಕಾರಗಳಲ್ಲಿ ಶಬ್ದಜಮತ್ಯಾರಕ್ಕೆ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯವಿರುವುದರಿಂದ ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರಗಳಾಗುವುವು.

ಶಬ್ದಾಲ್ಯೇಯ ಶಬ್ದಾಲ್ಯೇಯ (ನಂ) 1. ಬಾಯಿಮಾತು, ಸುಂದೇಶದ ಮಾತು. ಶಬ್ದೇನ ಆಲ್ಯೇಯಮ್ | (ವಿಂ) 2. ಶಬ್ದಗಳಿಂದ ಹೇಳಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಮಾತುಗಳಿಂದ ಹೇಳಬಹುದಾದ. "ಶಬ್ದಾಲ್ಯೇಯಂ ಯದಪಿ ಕಿಲ ತೇ ಯ: ಸಖಿನಾಂ ಪುರಸ್ತಾತ್ ಕರ್ಣೇ ಲೋಲ: ಕಥಯಿತುಮಭೂತ್ ಆನನಸ್ಪರ್ಶ-ಲೋಭಾತ್" ಮೇಘಂ ೨-೪೦ |

ಶಬ್ದಾಯಮಾನ ಶಬ್ದಾಯಮಾನ (ವಿಂ) ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಕೂಗಾಡುತ್ತಿರುವ. ಶಬ್ದ+ಕೃತ್ (೩-೧-೧೭) | "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) | ದೊಳ: (೭-೪-೨೪) | "ಶಬ್ದಾಯಮಾನಮವ್ಯಾತ್ಸೀದ್ವಯದಂ ಕ್ಷಣದಾಚರಮ್" ಭट्टಿಂ ೪-೪೨ |

ಶಬ್ದಿತ ಶಬ್ದಿತ (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಉಚ್ಚಸ್ವರದಿಂದ ಕರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಚ್ಚಸ್ವರದಿಂದ ಹೇಳಿ ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಶಬ್ದ (ಸಂಶಬ್ದನೆ) + ಣಿಕ್ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ಶಬ್ದಿತಾಮನಪಶಬ್ದಮುಚ್ಚಕ: ವಾಕ್ಯ-ಲಕ್ಷಣವಿದೋನುವಾಕ್ಯಯಾ" ಮಾಘಂ ೧೪-೨೦ |

ಶಮ ಶಮ (ಪುಂ) 1. ಶಾಂತಿ, ಅಂತರಿಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹ. ಶಮ (ಉಪಶಮೇ) "ಘಕ್" (೩-೩-೧೮) | "ಶಮಪ್ರಧಾನೇಷು ತಪೋವನೇಷು ಗೃಹಂ ಹಿ ದಾಹಾತ್ಮಕಮಸ್ತಿ ತೇಜ:" ಶಾಕುಂ ೨-೭ | 2. ಚಿತ್ತಶಾಂತಿ, ಮನಸ್ಸಿನ ನೆಮ್ಮದಿ. 3. ಕ್ಷಮೆ, ಸಹನೆ, ತಾಳ್ಮೆ. "ಅನುಪಮಶಮದೀಪಿತಾಗರೀಯಾನ್ ಕೃತಪದಪಙ್ಕ್ತಿ-ರಥವರ್ಣೇವ ವೇದ:" ಕಿರಾಂ ೧೦-೧೦ | 4. ಶಾಂತವಾಗುವುದು, ಕಡಮೆಯಾಗುವುದು. "ಶಮೇಷ್ಯತಿ ಮಮ ಶೋಕ: ಕಥಂ ನು ವತ್ಸೇ ತ್ವಯಾ ರಚಿತಪೂರ್ವಮ್" ಶಾಕುಂ ೪-೨೦ | 5. ಬಾಹ್ಯೇಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹ. "ಸತ್ಯಂ ಶೌಚಂ ದಯಾ ಮೀನಂ ಬುದ್ಧಿ: ಹಿ: ಶ್ರೀಯಶ: ಕ್ಷಮಾ | ಶಮೋ ದಮೋ ಭಗವಂತಿ ಯತ್ಸಂಜ್ಞಾ-ದಾತಿ ಸಂಕ್ಷಯಮ್" ಭಾಗಂ ೩-೩೨-೩೩ | 6. ನಿವೃತ್ತಿ, ನಾಶ. "ಅಭವನ್ನಿರ್ಮಲಂ ವ್ಯೋಮ ದೇವೀಕೃತ್ಯ:ಸಹ ಕ್ಷಮಾತ್ | ಸಾಕಂ ಭೂಪಾಲಶೋಕೇನ ದುಃಖಿಣಂ ಚ ಶಮಂ ಯಯಿ" ರಾಜತಂ | 7. ಮೋಕ್ಷ.



ಶಮಕ ಶಮಕ (ವಿಂ) 1. ಶಾಂತಿಗೊಳಿಸುವ, ಕಡಮೆ ಮಾಡುವ. 2. ಸಹನೆಯುಂಟುಮಾಡುವ. 3. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ನಿವಾರಿಸುವ. ಶಮು (उपशमे) + ಣಿच् "ಫ್ಲುಲ್" (3-1-133) । ಉಪಾಯಾ ನ ದೀರ್ಘ: (9-3-34) ।

ಶಮಥ ಶಮಥ (ಪುಂ) 1. ಶಾಂತಿ. 2. ಕ್ಷಮೆ, ಸಹನೆ. 3. ಮಂತ್ರಿ, ಸಚಿವ. ಶಮು (उपशमे) "ಅಥ:" ಬಾಹುಂ ।

ಶಮಶ್ಶ ಶಮಶ್ಶ (ಪುಂ) 1. ಅಜಗರ, ಹೆಚ್ಚಾವು. 2. ನಿದ್ರೆ ಮಾಡುವವನು. 3. ಮರಣ.

ಶಮನ ಶಮನ (ನಂ) 1. ಶಾಂತಗೊಳಿಸುವುದು. "ಜ್ವಲತ: ಶಮನಾಯ ಚಿತ್ರಭಾನೋ: ಪ್ರಲಯಾಪ್ಲಾವಮಿವಾಭಿದರ್ಶಯಂತ:" ಮಾಘಂ 20-90 । 2. ಕಡಮೆಮಾಡುವುದು. 3. ನಾಶಗೊಳಿಸುವುದು. ಶಮು (उपशमे) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । 4. ಯಾಗಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಪಶುವಧೆ. 5. ಪ್ರತಿಸಂಹಾರ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. 6. ಪಿತೃಪತಿ, ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. ಶಮಯತಿ — ಶಮು (उपशमे) + ಣಿच् "ಲ್ಯು:" (3-1-134) । ಶಾಮಯತೆ — ಶಮ (आलोचने) + ಣಿच् "ಲ್ಯು:" (3-1-134) ವಾ । "ಶಮನಂ ಶಾಂತಿವಧಯೋ: ಶಮನ: ಶ್ರಾದ್ಧದೇವತೆ" ಮೇದಿಂ । "ದದೃಶೋ ತದಸುನ್ ಪ್ರಸಹ್ಯ ಪಾತುಂ ಶಮನೇನೇವ ನಿವೇಶಿತಾ ಭುಜ್ಜಿ" ಯಾದಂ 14-101 । 7. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. 8. ನೆಲಗಡಲೆ. (ವಿಂ) 9. ಶಾಂತಿಯುಂಟುಮಾಡುವ. ಶಮು ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" ।

ಶಮನಸ್ವಸು ಶಮನಸ್ವಸು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಮಧರ್ಮರಾಯನ ತಂಗಿ, ಕಾಳಂದೀನದಿ, ಯಮುನಾನದಿ. ಶಮನಸ್ಯ ಸ್ವಸಾ ।

ಶಮನೀ ಶಮನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾತ್ರಿ. ಶಮು (उपशमे) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । "ಜಿಪ್" (4-1-14) ।

ಶಮನೀಯ ಶಮನೀಯ (ವಿಂ) 1. ನಿಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಅಡಗಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ನಿವಾರಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಕಡಮೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಶಮು (उपशमे) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) । 5. ನಿಗ್ರಹಿಸಬೇಕಾದ. 6. ಅಡಗಿಸಬೇಕಾದ. 7. ನಿವಾರಿಸಬೇಕಾದ. 8. ಕಡಮೆಮಾಡಬೇಕಾದ.

ಶಮನೀಷದ ಶಮನೀಷದ (ಪುಂ) ರಾಕ್ಷಸ. ಶಮನ್ಯಾ ಸಿದತಿ — ಷದ್ಲ್ಯ (विशरणादौ) "ಅಚ್" (3-1-134) । ಸಸ್ಯ ಷತ್ವಮ್ (4-3-36) ।

ಶಮಯತ್ ಶಮಯತ್ (ವಿಂ) 1. ನಿಗ್ರಹಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅಡಗಿಸುತ್ತಿರುವ. ಶಮು (उपशमे) + ಣಿच् "ಶತ್" (3-2-124) । "ಗದಯಾ ಸಹ ಭೀಮಮುಜ್ಜಿಹಾನಂ ಶಮಯನ್ತೀತ್ಯಮವೋಚದಾಪಣೇ:" ಯಾದಂ 14-99 । 2. ನಿವಾರಿಸು

ತ್ತಿರುವ, ಹೋಗಲಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಶಮಯನ್ ಧೃತೇಂದ್ರಿಯ-ಶಮೇಕಸುಖ: ಶುಚಿಮಿಗುಣೇರಥಮಯಂ ಸ ತಮ:" ಕಿರಾಂ 6-20 । 3. ಕಡಮೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಸಂಕ್ಷೇಪಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ.

ಶಮಲ ಶಮಲ (ನಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಅವೇಧ್ಯ, ಮಲ. ಶಮು (उपशमे) "ಕಲ:" (30 1-109) । "ಶಮಲಂ ಶಕ್ತುತ್" ಅಮಂ । 2. ಅಶುದ್ಧಿ, ಅಪವಿತ್ರತೆ. 3. ಪಾಪ, ದೋಷ.

ಶಮಪ್ರಧಾನ ಶಮಪ್ರಧಾನ (ವಿಂ) ಶಾಂತಿಯೇ ಪ್ರಧಾನವಾಗಿರುವ. ಶಮ: ಪ್ರಧಾನಂ ಯಸ್ಯ । "ಶಮಪ್ರಧಾನೇಷು ತಪೋಧನೇಷು ಗುಹಂ ಹಿ ದಾಹಾತ್ಮಕಮಸ್ತಿ ತೇಜ:" ಶಾಕುಂ 2-9 ।

ಶಮಾಂತಕ ಶಮಾಂತಕ (ಪುಂ) ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ.

ಶಮಿತ ಶಮಿತ (ವಿಂ) 1. ಶಾಂತವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಶ್ಚಬ್ಧವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಶಮು (उपशमे) + ಣಿच् "ಕ್ತ:" (3-2-102) । 2. ನಿವಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪರಿಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಶಮಿತನಿಗಮಖೇದೇ: ಸಾಧುಮಿ:ಶಲಾಘನೀಯಮ್" ಯಾದಂ 14-20 । 3. ತಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಗುರ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರಹ್ಲಾದಂ ಶಮಿತಪರಿಶ್ರಮಾ ದಿಶಂತ:" ಕಿರಾಂ 9-14 । 4. ಅಡಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಕಡಮೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಿಕ್ಕದಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಶಮಿತಾಯಾಮ ಇವಾತಿ-ರಹಸಾ" ಕಿರಾಂ 13-29 । 6. ಕುಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಶಕ್ತಿ ಕಡಮೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಗಜಾನ್ ಜನ: ಶಮಿತರಜಶ್ರಯಾನಥ:" ಮಾಘಂ 19-68 । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (4-1-6) । -ಯಂತೀ -ಯಂತೀ.

ಶಮಿನ್ ಶಮಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಶಾಂತ, ಶಮಗುಣವುಳ್ಳವನು, ಕೋಪತಾಪವಿಲ್ಲದವನು. 2. ಕ್ಷಮೆಯುಳ್ಳವನು, ಸಹನೆ ಶೀಲ. ಶಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ — "ಇನಿ:" (4-2-114) । "ಶಮಿನೋಽಪಿ ತಸ್ಯ ನವಸಂಗಮನೇ ವಿಭುತಾನುಷಜ್ಞಿ ಭಯಮೇತಿ ಜನ:" ಕಿರಾಂ 6-34 । 3. ಅಂತರಿದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹವುಳ್ಳವನು. "ಭ್ರಮೀ ಕದಂಬಸಂಪನ್ನ: ಪವನ: ಶಮಿನಾಮಪಿ" ಭट्टಿಂ 9-4 ।

ಶಮೀ ಶಮೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶಮೀವೃಕ್ಷ, ಬನ್ನಿಮರ. ಶಮಯತಿ ರೋಗಾನ್ — ಶಮು (उपशमे) + ಣಿच् "ಅಚ್" (3-1-134) । ಗೌರಾಂ "ಜಿಪ್" (4-1-41) । "ಅವೇಹಿ ತನಯಾಂ ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನಿಗಮಾಂ ಶಮೀಮಿವ" ಶಾಕುಂ 4-3 । 2. ಧಾನ್ಯಗಳ ಸಿಪ್ಪೆ. 3. ಬಾಹುಜಿಗ ಗಿಡ.

ಶಮೀಕ ಶಮೀಕ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಮಹರ್ಷಿ. ಪರೀಕ್ಷಿತ ರಾಜನು ಒಂದು ದಿನ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಬೇಟೆಗಾಗಿ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಬಹಳ ಬಾಯಾರಿಕೆಯಿಂದ ಪೀಡಿತನಾಗಿ ಈ ಮುನಿಯ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಹೋದನು. ಅಲ್ಲಿ ಸಮಾಧಿಸ್ಥನಾಗಿದ್ದ



ಮುನಿಯು ತನ್ನನ್ನು ಕಂಡು ಗೌರವಿಸಲಿಲ್ಲವೆಂಬ ಅಗ್ರಹ ದಿಂದ ಅಲ್ಲಿ ಸತ್ತುಬಿದ್ದಿದ್ದ ಒಂದು ಹಾವನ್ನು ಮುನಿಯು ಕೊರಳಿಗೆ ಹಾಕಿ ಹೊರಟುಹೋದನು. ಈ ವಿಷಯ ವನ್ನು ತಿಳಿದು ಕ್ರುದ್ಧನಾದ ಮುನಿಕುಮಾರನು "ಈ ನೀಚಕೃತ್ಯವನ್ನೆಸಗಿದವನು ಏಳುದಿನಗಳೊಳಗಾಗಿ ಸರ್ಪ ದಂಶನದಿಂದ ಮರಣಹೊಂದಲಿ" ಎಂದು ಶಪಿಸಿದನು. ["ಪರಿಕ್ಷಿತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].

ಶಮೀಗರ್ಭ ಶಮೀಗರ್ಭ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ. ಶಮ್ಯಾ ಗರ್ಭಃ. 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ.

ಶಮೀಧಾನ್ಯ ಶಮೀಧಾನ್ಯ (ನಂ) ಉದ್ದು ಮೊದಲಾದ ದ್ವಿದಳ ಧಾನ್ಯ. "ಮಾಘೋ ಮುದಗೋ ರಾಜಮಾಘಃ ಕುಲತ್ಯಶ್ರಣಕ- ಸ್ತೀಲಃ. ಕಾಕಾಣ್ಡಕೀವರ ಇತಿ ಶಮೀಧಾನ್ಯಗಣಃ ಸ್ಮೃತಃ" ರತ್ನಂ.

ಶಮೀರ ಶಮೀರ (ಪುಂ) ಸಣ್ಣ ಬನ್ನಿಮರ. ಅಲ್ಪಾ ಶಮೀ- "ರಃ" (೪-೩-೮೮). "ಅಲ್ಪಾ ಶಮೀ ಶಮೀರಃ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ.

ಶಮ್ಪಾ ಶಂಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು. ಶಂ ಸುಖಂ ಪಿಬತಿ—ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩). ಟಾಪ್ (೪-೧-೪).

ಶಮ್ಬ ಶಂಬ (ಪುಂ) 1. ವಜ್ರಾಯುಧ. 2. ಮುಸಲದ ಅಗ್ರಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ ಲೋಹದ ವಲಯ, ಒನಕೆಯ ತುದಿಯಲ್ಲಿರುವ ಕಬ್ಬಿಣದ ಒಳೆ. "ಶಮ್ಬಃ ಪವೀ ಲೋಹ- ಕಾಶ್ಚಾಮ್" ಹೇಮಂ. 3. ದರಿದ್ರ, ಬಡವ. 4. ಟೀಂಕದ ಸುತ್ತಲೂ ಕಟ್ಟಿರುವ ಲೋಹದ ಸರಪಳಿ. 5. ನೆಲವನ್ನು ಎರಡನೆಯ ಸಲ ಉಳುವುದು, ಅನುಲೋಮವಾಗಿ ಉತ್ಪನ್ನ ನೆಲವನ್ನು ಪ್ರತಿಲೋಮವಾಗಿ ಉಳುವುದು. (ವಿಂ) 6. ಭಾಗ್ಯಮಂತ, ಅದೃಷ್ಟಶಾಲಿ. "ಶಮ್ಬಃ ಸ್ಯಾನ್ಮುಸಲಾಗ್ರಸ್ಯ ಲೋಹಮಂಡಲಕೇ ಪವೀ. ಶುಭಾನ್ವಿತೇ ತ್ರಿಷು" ಮೇದಿಂ.

ಶಮ್ಬರ ಶಂಬರ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. 3. ಒಬ್ಬ ಜಿನ. 4. ಚಿತ್ರಕ ವೃಕ್ಷ. 5. ಅರ್ಜುನ ವೃಕ್ಷ, ಕೆಂಪು ಮತ್ತಿ ಮರ. 6. ಲೋಧ್ರ ವೃಕ್ಷ. 7. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮತ್ಸ್ಯ. 8. ಶೈಲ, ಬೆಟ್ಟ. (ನಂ) 9. ಜಲ, ನೀರು. ಶಂ ವೃಣೋತಿ—ವೃನ್ (ವರಣೆ) "ಅವ್" (೩-೧-೩೪). 10. ವಿತ್ತ, ಧನ. 11. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 12. ವ್ರತ, ನಿಯಮ. "ಶಮ್ಬರೋ ದಾನವಾಂತರೇ. ಮತ್ಸ್ಯರಾಗಿರಿಮೇಧೇಷು" ಹೇಮಂ. "ಶಮ್ಬರಂ ಸಲಿಲೇ ಪುಂಸಿ ಮೃಗದೇವತಾವಿಶೇಷಯಃ". "ಶಮ್ಬರೋ ದೇವತಾಹರಿಣಮತ್ಸ್ಯಶಂ- ಜಿನಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ.

ಶಮ್ಬರಕನ್ದ ಶಂಬರಕಂದ (ಪುಂ) ವಾರಾಹೀ ಗಡ್ಡೆ, ಹಂದಿ ಗಡ್ಡೆ.

ಶಮ್ಬರಸೂದನ ಶಂಬರಸೂದನ (ಪುಂ) ಕಾಮದೇವ, ಪ್ರದ್ಯುಮ್ನ.

ಶಮ್ಬರಾರಿ ಶಂಬರಾರಿ (ಪುಂ) ಕಾಮದೇವ, ಪ್ರದ್ಯುಮ್ನ. ಶಮ್ಬರಸ್ಯ ಅರಿಃ.

ಶಮ್ಬರೀ ಶಂಬರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಮಿಷರ್ಷಿ, ಇಲಿ ಕಿವಿಯ ಗಿಡ. "ಶಮ್ಬರೀ ಚಾಕ್ಷುಷ್ಯಾ ಸ್ಯಾತ್" ಮೇದಿಂ. 2. ಮಾಯೆ.

ಶಮ್ಬಲ ಶಂಬಲ (ಪುಂ) 1. ತಟ, ದಡ, ತೀರ. 2. ಪಾಥೇಯ, ಬುತ್ತಿ. ಪರಸ್ಥಳದ ಪ್ರಯಾಣಕಾಲದಲ್ಲಿ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ ಆಹಾರ ವಸ್ತು. 3. ಮತ್ಸರ, ಇತರರ ಶುಭವನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸುವುದು, ಇತರರಿಗೆ ಒಳ್ಳೆಯದಾಗುವುದನ್ನು ಕಂಡು ಅಸೂಯೆ ಪಡುವುದು. "ಶಮ್ಬಲೋಸ್ತ್ರೀ ಸಮ್ಬಲವತ್ ಕೂಲಪಾಥೇಯಮತ್ಸರೇ" ಮೇದಿಂ.

ಶಮ್ಬಾಕೃತ ಶಂಬಾಕೃತ (ವಿಂ) ಅನುಲೋಮವಾಗಿ ಉತ್ಪನ್ನ ಮತ್ತೆ ಪ್ರತಿಲೋಮವಾಗಿ ಉಳಲ್ಪಟ್ಟ (ನೆಲ). ಶಮ್ಬ + ಕೃತ್ (ಕರಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨). "ಡಾಕ್" (೪-೪-೪೮). ಅನುಲೋಮಂ ಕೃಷ್ಣಂ ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಪುನಃ ಪ್ರತೀಲೋಮಂ ಕರ್ಷತಿ ಶಮ್ಬಾಕರೋತಿ ಸಿಂ ಕೌಂ. "ದ್ವಿಗುಣಾಕೃತೇ ತು ಸರ್ವಂ ಪೂರ್ವಂ ಶಮ್ಬಾಕೃತಮಪಿಹ" ಅಮಂ.

ಶಮ್ಬಕ ಶಂಬಕ (ಪುಂ) 1. ಕಪ್ಪೆಚಿಪ್ಪು. ಶಾಮ್ಯತಿ—ಶಮು (ಉಪಶಮೇ) "ಅಕಃ" (೩ಂ ೪-೪೧). ನಿಪಾಂ. ಬುಕ್ ಚ (ಗಂ ೨೦೦). "ಶಮ್ಬಕಾ ಜಲಶುಕ್ತಯಃ" ಅಮಂ. (ಪುಂ) 2. ಅನೆಯ ಕುಂಭಸ್ಥಳದ ತುದಿಯ ಭಾಗ. 3. ಬಸವನ ಹುಳ. 4. ಶಂಬ. 5. ಒಬ್ಬ ಶೂದ್ರತಪಸ್ವಿ. ಈತನು ತನಗೆ ವಿಹಿತವಲ್ಲದ ತಪಸ್ಸನ್ನಾಚರಿಸುತ್ತಿದ್ದುದರಿಂದ ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನಿಂದ ಹತನಾದನು. "ದತ್ತಾತ್ರೇಯ ತ್ವಯಿ ಯಮಾದಪಿ ದಂಡಧಾರೆ ಸತ್ತ್ವಜೀವಿತಃ ಶಿಶುರಯಂ ಮಮ ಚೇಯಮೃದ್ಧಿಃ. ಶಮ್ಬಕ ಏಷ ಶಿರಸಾ ಚರಣೌ ನತಸ್ತೇ ಸತ್ಸತ್ತ್ವಜಾನಿ ನಿವನಾ- ನ್ಯಪಿ ತಾರಯಂತಿ" ೩ಂ ರಾಂ ೨-೧೧.

ಶಮ್ಬಲ ಶಂಭಲ (ಪುಂ) ಕಲಿಪುರುಷನ ಪ್ರಭಾವದಿಂದ ಅಧರ್ಮಭೂಯಿಷ್ಯವಾದ ಈ ಲೋಕದಲ್ಲಿ ದುಷ್ಕರಾಜ ರನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸಿ ಧರ್ಮಸ್ಥಾಪನೆಗಾಗಿ ಪರಮಾತ್ಮನು ಕಲ್ಕಿರೂಪದಿಂದ ಅವತರಿಸುವ ಒಂದು ಗ್ರಾಮ. "ಶಮ್ಬಲ- ಗ್ರಾಮಮುಖ್ಯಸ್ಯ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ಮಹಾತ್ಮನಃ. ಭವನೇ ವಿಷ್ಣುಶಸಃ ಕಲ್ಕಿಃ ಪ್ರಾದುರ್ಮವಿಷ್ಯತಿ" ಭಾಗಂ ೧೨-೨-೧೮.

ಶಮ್ಬಲಿ ಶಂಭಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಟ್ಟಿನಿ, ತಲೆಹಿಡಕಿ. "ಕುಟ್ಟಿನಿ ಶಮ್ಬಲಿ ಸಮೇ" ಅಮಂ.



ಶಮ್ಭು ಶಂಭು (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಶಂ ಭವತಿ  
—ಶು (ಸತಾಯಾಮ್) ಅಂತರ್ಮಾವಿತೃಷ್ಯಂತಾತ್ “ಙು:”  
(೩-೨-೧೮೦)। “ಕಲ್ಪದ್ರೂಮಪ್ರಸವವೃಷ್ಟಿರಭೂತಮಸ್ತ: ಶಮ್ಭೋ:  
ಸುತಸ್ಯ ಶಿರಸಿ ತ್ರಿದಶಾರಿಶತೋ:” ಕುಮಾಂ ೧೭-೪೩।  
2. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. “ತಾಮುವಾಚ ಮಹಾರಾಜ ಭೂಮಿ  
ಭೂಮಿಪತಿ: ಪ್ರಭು:। ಪ್ರಮವ: ಸರ್ವಭೂತಾನಾಮೀಶ: ಶಮ್ಭು:  
ಪ್ರಜಾಪತಿ:” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೬೪-೪೫। 3. ಏಕಾದಶ  
ರುದ್ರರಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ. 4. ವಿಷ್ಣು. 5. ಸಿದ್ಧಪುರುಷ. “ಶಮ್ಭು-  
ಬ್ರಹ್ಮಾಹಂತೋ: ಶಿವೇ” ಹೇಮಂ। 6. ಬುದ್ಧದೇವ.

ಶಮ್ಭುತನಯ ಶಂಭುತನಯ, -ಪುತ್ರ -ಪುತ್ರ, -ಸುತ -ಸುತ  
(ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರನ ಪುತ್ರ (1) ವಿನಾಯಕ. (2) ಸ್ಕಂದ,  
ಷಣ್ಮುಖ.

ಶಮ್ಭುಪ್ರಿಯಾ ಶಂಭುಪ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಾರ್ವತಿ.  
2. ಆಮಲಕ, ನೆಲ್ಲಿಗಿಡ.

ಶಮ್ಭುವಲ್ಲಭ ಶಂಭುವಲ್ಲಭ (ನಂ) 1. ಪದ್ಮ, ಬಿಳಿತಾವರೆ.  
(ವಿಂ) 2. ಈಶ್ವರನಿಗೆ ಪ್ರಿಯವಾದ.

ಶಮ್ಯಾ ಶಮ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೋಗದ ಕಣ್ಣಿಗೆ ಹಾಕುವ ಅಣ.  
ಶಮ್ಯತೇನಯಾ—ಶಮು (ಽಫಶಮೇ) “ಯಕ್” (ಽಽ ೪-೧೧೨)।  
2. ದಂಡ, ಯಕ್ಷಿ, ಕೋಲು. “ಶಮ್ಯಾಪಾತಾಸ್ತ್ರಯೋ ವಾಪಿ  
ತ್ರಿಗುಣೋ ನಗರಸ್ಯ ತು” ಮನುಂ ೮-೨೩೭। 3. ಯೋಗದ  
ಒಂದು ಪಾತ್ರೆ.

ಶಮ್ಯಾಕ್ಷೇಪ ಶಮ್ಯಾಕ್ಷೇಪ (ಪುಂ) ವೇಗವಾಗಿ ಬೀಸಿ ಎಸೆದ  
ಕೋಲು ಬೀಳುವ ಪ್ರದೇಶ. ಶಮ್ಯಾ: ಕ್ಷೇಪೋ ಯತ್ರ।

ಶಯ ಶಯ (ಪುಂ) 1. ಹಸ್ತ, ಕೈ. ಶೇತೇತ್ರ ಸರ್ವಮ್—ಶೀಙ್  
(ಸ್ವಪ್ನೆ) “ಘ:” (೩-೩-೧೧೮)। “ಪಂಚಶಾಖ: ಶಯ:  
ಪಾಣಿ:” ಅಮಂ। 2. ಮಲಗುವುದು, ಮಲಗಿ ನಿದ್ರಿಸು  
ವುದು. ಶೀಙ್ ಭಾವೇ “ಘಕ್” (೩-೩-೧೮)। 3. ಸರ್ಪ,  
ಹಾವು. 4. ನಂದನೆ, ದೂಷಣೆ. 5. ನಿದ್ರೆ.  
6. ಹಾಸಿಗೆ. 7. ಕಂಬ, ಗೂಟ, ದಸಿ. (ವಿಂ) 8. ಮಲಗು  
ವವನು, ನಿದ್ರಿಸುವವನು. (ಪ್ರಾಯ: ಸಮಾಸಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ)  
“ರಾತ್ರಿಜಾಗರಣಪರೋ ದಿವಾಶಯ:” ರಘುಂ ೧೯-೩೪।

ಶಯಶಯಥ (ಪುಂ) 1. ಅಜಗರ, ಹೆಬ್ಬಾವು. ಶೀಙ್  
(ಸ್ವಪ್ನೆ) “ಅಘ:” (ಽಽ ೩-೧೧೩)। 2. ಮೃತ್ಯು.  
3. ಮತ್ಸ್ಯ. 4. ನಿದ್ರೆಮಾಡುವವನು. 5. ವರಾಹ,  
ಹಂದಿ.

ಶಯನ ಶಯನ (ನಂ) 1. ಮಲಗುವುದು, ನಿದ್ರಿಸುವುದು.  
ಶೀಙ್ (ಸ್ವಪ್ನೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪)।  
2. ಮಂಚ. “ಸೇವತೇ ಸ್ಮ ಶಯನಂ ಪರಾಡ್‌ಮುಖಿ ಸಾ ತಥಾಪಿ

ರತಯೇ ಪಿನಾಕಿನ:” ಕುಮಾಂ ೮-೨। 3. ಹಾಸಿಗೆ. “ಸಂನಿತಿ  
ದಧತಿ ಪೇತುರಜಸ್ರಂ ದೃಷ್ಟಯ: ಪ್ರಿಯತಮೇ ಶಯನೇ ಚ” ಮಾಘಂ  
೧೦-೩೯। 4. ಸುರತ, ರತಿ, ನಾಯಿಕಾನಾಯಕರು ಒಟ್ಟಿಗೆ  
ಸೇರುವಿಕೆ, ಸಂಭೋಗ. 5. ನಿದ್ರೆ. “ಶಯನಂ ಸುರತೇ  
ನಿವ್ರಾಶಯ್ಯಯೋಶ್ಚ ತಪುಸಕಮ್” ಮೇದಿಂ।

ಶಯನದ್ವಾದಶಿ ಶಯನದ್ವಾದಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶ್ರೀ ಮಹಾ  
ವಿಷ್ಣುವು ಚಾತುರ್ಮುಖಸ್ಕದ ಯೋಗನಿದ್ರೆಯನ್ನು  
ಕೈಗೊಳ್ಳಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸುವ ಆಷಾಢ ಶುಕ್ಲ ದ್ವಾದಶಿ.

ಶಯನೀಯ ಶಯನೀಯ (ನಂ) 1. ತಲ್ಪ, ಹಾಸಿಗೆ. ಶೇತೇ-  
ಸ್ಮಿನ್—ಶೀಙ್ (ಸ್ವಪ್ನೆ) ಅಭಿಂ “ಅನೀಯರ್” (೩-೩-೧೧೩)।  
“ದೀಯತೇ ಸ್ಮ ಶಯಿತುಂ ಶಯನೀಯೇ ನ ಕ್ಷಣ: ಕ್ಷಣದಯಾಪಿ ವಘ್ಮಯ:”  
ಮಾಘಂ ೧೦-೮೯। (ವಿಂ) 2. ಮಲಗಬಹುದಾದ,  
ಮಲಗಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. ಶೀಙ್ “ಅನೀಯರ್” (೩-೩-೧೬)।  
3. ಮಲಗಬೇಕಾದ. “ಶೂನ್ಯೋಜ್ಯಂ ಶಯನೀಯಸ್ತೇ ಪರ್ಯಕ್ಷೋ  
ಹೇಮಭೂಷಿತ:” ರಾಮಾಂ। ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್”। ಶಯನೀಯಕಮ್  
ಶಯನೀಯಕಮ್. “ತವ್ಯ:” (೩-೩-೧೬)। ಶಯಿತವ್ಯಮ್  
ಶಯಿತವ್ಯಮ್.

ಶಯನೇಕಾದಶಿ ಶಯನೇಕಾದಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಷಾಢ ಶುದ್ಧ  
ಏಕಾದಶಿ. (ವಿಷ್ಣೋ:) ಶಯನಾಯ ಏಕಾದಶಿ। “ಮಿಥುನಾ-  
ಮಿಗತೇ ಸೂರ್ಯೇ ಶುಕ್ರಲಕ್ಷಣೇ ತಪೋಧನ। ಏಕಾದಶ್ಯಾಂ ಜಗತ್ಸ್ವಾಮಿ-  
ಶಯನಂ ಪರಿಕಲ್ಪಯೇತ್”।

ಶಯಾನ ಶಯಾನ (ವಿಂ) ಮಲಗಿರುವ, ನಿದ್ರೆಮಾಡು  
ತಿರುವ. ಶೀಙ್ (ಸ್ವಪ್ನೆ) “ಶಾನವ್” (೩-೨-೧೨೪)।

ಶಯಾನಕ ಶಯಾನಕ (ಪುಂ) 1. ಓತಿಕೇತ, ಹೆಂಟೆಗೊದ್ದ.  
2. ಅಜಗರ, ದೊಡ್ಡ ಸರ್ಪ. ಶೀಙ್ (ಸ್ವಪ್ನೆ) “ಆನಕ:”  
(ಽಽ ೩-೮೨)।

ಶಯಾಲು ಶಯಾಲು (ಪುಂ) 1. ಅಜಗರ, ದೊಡ್ಡ ಹಾವು,  
ಹೆಬ್ಬಾವು. ಶೀಙ್ (ಸ್ವಪ್ನೆ) “ಆಲುಕ್” (ವಾಂ ೩-೨-೧೪೮)।  
2. ಕುಕ್ಕುರ, ನಾಯಿ. (ವಿಂ) 3. ನಿದ್ರಾಶೀಲ, ನಿದ್ರೆಯ  
ಸ್ವಭಾವದವನು, ತೂಗಡಿಸುವವನು. “ಹಂತಿ ನೋಪ-  
ಶಯಸ್ಥೋಽಪಿ ಶಯಾಲುಮೈಗಯುಮೈಗಾನ್” ಮಾಘಂ ೨-೮೦।

ಶಯಿತ ಶಯಿತ (ನಂ) 1. ಶಯನ, ಮಲಗುವುದು, ನಿದ್ರೆ  
ಮಾಡುವುದು. ಶೀಙ್ (ಸ್ವಪ್ನೆ) “ಕು:” (೩-೩-೧೧೪)।  
(ವಿಂ) 2. ಮಲಗಿರುವ, ನಿದ್ರೆಮಾಡುವ. ಶೀಙ್ ಕರ್ತಂ  
“ಕು:” (೩-೪-೭೨)। “ಕೇತವೇನ ಶಯಿತೇ ಕುತುಹಲಾತ್  
ಪಾರ್ವತೀ ಪ್ರತಿ ಮುಖಂ ನಿಪಾತಿಸಮ್” ಕುಮಾಂ ೮-೩।

ಶಯಿತವತ್ ಶಯಿತವತ್ (ವಿಂ) ಮಲಗಿರುವವನು,  
ನಿದ್ರೆಮಾಡುವವನು. ಶೀಙ್ (ಸ್ವಪ್ನೆ) “ಕವತು:”



(೩-೨-೧೦೨) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ವತೀ  
-ವತೀ.

ಶಯ ಶಯಾ (ಪುಂ) ಹೆಚ್ಚುವು, ದಾಸರ ಹಾವು. ಶೇತೆ-ಶೀಡ್  
(ಸ್ವಪ್ನ) "ಃ" (೩-೧-೭) । "ಶಯವಾಹಸ ಇತ್ಯುಮೌ"  
ಅಮಂ ।

ಶಯಾ ಶಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಾಸಿ. ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನ)  
"ಕಪ್" (೩-೩-೯೯) । "ಮಹಾಶಯಾಪರಿವರ್ತನಚ್ಯುತಃ  
ಸ್ವಕೇಶಪುಷ್ಪೇರಪಿ ಯಾ ಸಮ ದೃಶತೇ" ಕುಮಾಂ ೪-೧೨ । 2. ಶಬ್ದ  
ಗಳ ಗುಂಪೆನ, ಪದಗಳ ಜೋಡಣೆ. "ಶಯಾ ತಲ್ಪ  
ಶಬ್ದಗುಂಪೆ" ಹೇಮಂ ।

ಶರ ಶರ (ಪುಂ) 1. ಬಾಣ. ಶೃಣಾತಿ — ಶೃ (ಹಿಸಾಯಾಮ್)  
"ಅಪ್" (೩-೩-೪೭) । "ಲಘು ಸಾಧಯಿತುಂ ಶರಃ ಪ್ರಸೇಹೇ  
ವಿಧಿನೇವಾರ್ಯಮುದೀರಿತಂ ಪ್ರಯತ್ನಃ" ಕಿರಾಂ ೧೩-೨೮ ।  
2. ಜುಬುಹುಲ್ಲು. "ಪರಿಣತಶರಕಾಂಡಾಪಾಣಭುಗಿಂಘ್ರ-  
ಭಾಗೆ:" ಮಾಘಂ ೧೧-೩೦ । 3. ಮೊಸರಿನ ಮೇಲಿನ ಕೆನೆ.  
4. ಐದು ಸಂಖ್ಯೆ. (ನಂ) 5. ಜಲ, ನೀರು. "ಶರಸ್ತೇಜನಕೇ  
ಬಾಣೇ ದೃಶ್ಯೇ ನಾ ಶರಂ ಜಲೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಶರಜ ಶರಜ (ನಂ) 1. ಮೊಸರಿನ ಕೆನೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ  
ನವನೀಡ, ಬೆಣ್ಣೆ. ಶರಾತ್ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ)  
"ಙ:" (೩-೨-೯೮) । (ಪುಂ) 2. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪೆಣ್ಣುಬಿ.

ಶರಜನ್ಮನ್ ಶರಜನ್ಮನ್ (ಪುಂ) ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪೆಣ್ಣುಬಿ.  
ಶರೇ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ । "ಉಮಾಬಾಹುಶ್ಚ ಶರಜನ್ಮನಾ ಯಥಾ ಯಥಾ  
ಜಯಂತೇನ ಶಾಕೀಪುರಂದರೇ" ರಘುಂ ೩-೨೩ । "ಶರಜನ್ಮಾ  
ಪಡಾನತಃ" ಅಮಂ ।

ಶರಣ ಶರಣ (ನಂ) 1. ಗೃಹ, ಮನೆ. ಶೃಣಾತಿ — ಶೃ  
(ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೩) । "ಸಂದೃಶ್ಯ  
ಶರಣಂ ಶೂನ್ಯಂ ಭಿಕ್ಷುಮಾಣೋ ವನಂ ಪ್ರಿಯಾಮ್" ಭಟ್ಟಿಂ ೬-೯ ।  
2. ಆಶ್ರಯಸ್ಥಾನ, ಕಷ್ಟಕಾಲದಲ್ಲಿ ರಕ್ಷಣೆಕೊಡುವ ಸ್ಥಾನ.  
"ಪ್ರವಾಳಶಯಾಶರಣಂ ಶರೀರಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೮ । 3. ಪವಿತ್ರ  
ಸ್ಥಳ, ಶುದ್ಧವಾಗಿ ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಸ್ಥಳ. "ವೇತ್ರವತಿ, ಅಗ್ನಿ-  
ಶರಣಮಾಗಮಾದೇಶಯ" ಶಾಕುಂ ೪ । 4. ವಿಶ್ರಾಂತಿಗೃಹ,  
ಪ್ರಯಾಣಕಾಲದಲ್ಲಿ ತಂಗುವ ಸ್ಥಳ. (ವಿಂ) 5. ರಕ್ಷಿಸು  
ವವನು, ಕಾಪಾಡುವವನು, "ಜಿತಮೃತ್ಯವೋಜಿತ ಭವಂತಿ  
ಭಯೇ ಸಸುರಾಸುರಸ್ಯ ಜಗತಃ ಶರಣಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೮-೨೨ ।  
6. ರಕ್ಷಣೆ. 7. ಪಥ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. "ಶರಣಂ ಗೃಹ-  
ರಕ್ಷಿತ್ರೋವಂಶರಕ್ಷಣಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ ।

ಶರಣಾಗತ ಶರಣಾಗತ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಬಂದಿರುವವನು,  
ರಕ್ಷಿಸಬೇಕೆಂದು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿ ಬಂದಿರುವವನು. ಶರಣಾರ್ಥ-

ಮಾಗತಃ ಶರಣಮಾಗತೋ ವಾ । "ಶರಣಾಗತರಕ್ಷಾಂ ಯಃ ಪ್ರಾಣೈರಪಿ  
ಧನೈರಪಿ । ಕುರುತೇ ಮಾನವೋ ಜಾನೀ ತಸ್ಯ ಪುಣ್ಯಂ ನಿಶಾಮಯ ॥  
ಸರ್ವಪಾಪವಿನಿಮುಕ್ತೋ ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯಾಮುಖೈರಪಿ । ಆಯುಷೋಽಂತೇ  
ವ್ರಜನ್ಮೋಕ್ಷಂ ಯೋಗಿನಾಮಪಿ ದುರ್ಲಭಮ್" ಪಾದಪುಂ । ಶರಣಾಗತ  
ನನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವವನಿಗೆ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತವೇ ಇಲ್ಲ. "ಶಾಸ್ತ್ರೇಷು  
ನಿಷ್ಕೃತಿರ್ದೃಷ್ಟಾ ಮಹಾಪಾತಕಿನಾಮಪಿ । ಶರಣಾಗತಹಾತುಸ್ತು  
ನ ದೃಷ್ಟಾ ನಿಷ್ಕೃತಿಃ ಕ್ವಚಿತ್" ವಹ್ನಿಪುಂ । "ತರಣಾನಪಿ  
ರಕ್ಷತಿ ಕ್ಷಮೀ ಸ ಶರಣ್ಯಃ ಶರಣಾಗತಾನ್ ದ್ವಿಷಃ" ಮಾಘಂ  
೧೬-೪೪ ।

ಶರಣಾರ್ಥಿನ್ ಶರಣಾರ್ಥಿನ್ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಣೆಯನ್ನು ಆಪ್ತ  
ಪಡಿಸುವವನು, ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಬೇಡುವವನು. ಶರಣಮರ್ಥಯತೇ —  
ಅರ್ಥ (ಉಪಯಾಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಣಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) ।  
"ಆಗತಸ್ಯ ಗೃಹಂ ತ್ಯಾಗಸ್ತಥೈವ ಶರಣಾರ್ಥಿನಃ । ಯಾಚಮಾನಸ್ಯ  
ಚ ವಧೋ ನೃಶಂಸೋ ಗೃಹಿತೋ ಬುಧಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ।

ಶರಣಾರ್ಥಕ ಶರಣಾರ್ಥಕ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ತನ್ನನ್ನು  
ಆರ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವನು. ಶರಣಾರ್ಥಮರ್ಪಯತ್ಯಾತ್ಮಾನಮ್ — ಶರಣ  
+ ಕೃ (ಗತೌ) + ಣಿವ್ "ಪ್ಪುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।  
ಪುಣಾಗಮಃ (೭-೩-೩೬) ।

ಶರಣೋನ್ಮುಖ ಶರಣೋನ್ಮುಖ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಣೆಯನ್ನು  
ಯಾಚಿಸಿ ಬಂದಿರುವವನು. ಶರಣಾರ್ಥಮ್ ಉನ್ಮುಖಃ । "ಅಸೌ  
ಶರಣ್ಯಃ ಶರಣೋನ್ಮುಖಾನಾಮಗಾಢಸತ್ತ್ವೋ ಮಗಧಪ್ರತಿಠಃ" ರಘುಂ  
೬-೨೧ ।

ಶರಣ್ ಶರಣ್ (ಪುಂ) 1. ಧೂರ್ತ, ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ.  
2. ಕೃಕಲಾಸ, ಹೆಚ್ಚಿಗೊದ್ದ, ಓತಿಕೇತ. 3. ಒಂದು ವಿಧ  
ಆಭರಣ. "ಶರಣ್ವಸ್ತು ಪುಮಾನ್ ಭೂತೇ ಸರಡೇ ಭೂಷಣಾಂತರೇ"  
ಮೇದಿಂ ।

ಶರಣ್ಯ ಶರಣ್ಯ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಕ, ರಕ್ಷಣೆಯನ್ನು ಕೊಡುವವನು,  
ಕಷ್ಟಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕಾಪಾಡುವವನು. ಶರಣೇ ಸಾಧುಃ "ಯತ್"  
(೪-೪-೯೮) । "ಅಕಿಂಚನೋಽನನ್ಯಗತಿಃ ಶರಣ್ಯ ತ್ವತ್ಪಾದಮೂಲಂ  
ಶರಣಂ ಪ್ರಪದ್ಯೇ" ಸ್ತೋಂ ೨೦ । "ಅಸೌ ಶರಣ್ಯಃ ಶರಣೋನ್ಮುಖಾ-  
ನಾಮ್" ರಘುಂ ೬-೨೧ ।

ಶರಣ್ಯ ಶರಣ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಮೋಢ, ಮೋಡ. 2. ಪಾತ,  
ಗಾಳಿ. "ಶರಣ್ಯವಾರಿರಿದೇ ವಾತೇ" ವಿಶ್ವಂ ।

ಶರತ್ ಶರತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂವತ್ಸರ, ವರ್ಷ. ಶೃಣಾತಿ — ಶೃ  
(ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಅದಿಃ" (೩-೧-೧೩೦) । "ಬ್ರಹ್ಮಾದಯೋ  
ಬ್ರಹ್ಮಹಿತಾಯ ತಪ್ತ್ವಾ ಪರಃ ಸಹಸ್ರಂ ಶರದಾಂ ತಪಾಸಿ" ಉಂ ರಾಂ  
೧-೧೪ । 2. ಶರದೃತು, ಆಶ್ವಯುಜ-ಕಾರ್ತಿಕ ಮಾಸ  
ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಋತು. "ಶರದಮಚ್ಛಗಲದ್ವಸನೋಪಮಾ-



ಕಾಮವನಾಮವನಾಶನಕೀರ್ತನ: " ಮಾಘಂ ೬-೪೨ । "ಯಾತ್ರಾಯೆ  
ಚೋದಯಾಮಾಸ ತಂ ಶಕ್ತೇ: ಪ್ರಥಮಂ ಶರತ್" ರಘುಂ ೪-೨೪ ।

ಶರತ್ಕಾಮಿನ್ ಶರತ್ಕಾಮಿನ್ (ಪುಂ) ನಾಯಿ. ಶರದಿ  
ಶರತ್ಕಾಲೇ ಕಾಮಯತೇ — ಕಮ್ (ಕಾಂತೌ) + ಣಿಙ್ " ಣಿನಿ: "  
(೩-೨-೭೮) ।

ಶರತ್ಕಾಲ ಶರತ್ಕಾಲ (ಪುಂ) ಆಶ್ವಯುಜ ಮತ್ತು ಕಾರ್ತಿಕ  
ಮಾಸಗಳ ಕಾಲ, ಶರದೃತು.

ಶರತ್ಪವನ್ ಶರತ್ಪವನ್ (ನಂ) ಕೋಜಾಗರ ಹುಣ್ಣಿಮೆ,  
ಆಶ್ವಯುಜ ಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ.

ಶರದಿಜ ಶರದಿಜ (ವಿಂ) ಶರದೃತುವಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.  
ಶರದಿ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ "ಜ:" (೩-೨-೯೭) । ಸಪ್ತಮ್ಯಾ  
ಅಲುಕ್ (೬-೩-೧೪) ।

ಶರದುದಾಶಯ ಶರದುದಾಶಯ (ಪುಂ) ಶರತ್ಕಾಲದ  
ಸರೋವರ. "ಶರದುದಾಶಯೇ ಸಾಧುಜಾತಸತ್ಸರಸಿಜೋದರ-  
ಶ್ರೀಮುಷಾ ದೃಶಾ" ಗೀತಗೋಂ ।

ಶರಥಿ ಶರಥಿ (ಪುಂ) ಒತ್ತಳಕೆ, ಬಾಣಗಳ ಕೋಶ. ಶರಾ  
ಧೀಯಂತೇಶ್ವರ — ಶರ + ಡು ಧಾಙ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಕಿ:"  
(೩-೩-೯೩) ।

ಶರಭ ಶರಭ (ಪುಂ) 1. ಕಡವೆ, ಎಂಟು ಕಾಲುಗಳು ಮತ್ತು  
ಎರಡು ತಲೆಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಮೃಗ, ಸಿಂಹವನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವ  
ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ ಒಂದು ಮೃಗ. ಶ್ವ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಅಮಚ್"  
(೩ಂ ೩-೧೨೨) । 2. ಒಂಟೆಯ ಮರಿ. 3. ಒಂದು  
ಜಾತಿಯ ವಾನರ. "ಶರಮಸ್ತು ಪಶೋಮಿದಿ । ಕರಮೇ  
ವಾನರಮಿದಿ" ಮೇದಿಂ ।

ಶರಭಙ್ಗ ಶರಭಙ್ಗ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಮುಷಿ. ಈ ಮುಷಿಯು  
ದಂಡಕಾರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ತಪಸ್ಸನ್ನು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದು ವನವಾಸ  
ದಲ್ಲಿದ್ದ ಶ್ರೀ ಸೀತಾರಾಮ ಲಕ್ಷ್ಮಣರನ್ನು ಸೆಕ್ಕರಿಸಿ ದೇಹ  
ವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿ ಸದ್ಗತಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿದನು.

ಶರಭ ಶರಭ (ಪುಂ) ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಷಣ್ಮುಖ. ಶರೇ  
ಶರವಣೇ ಮು: ಉತ್ಪತ್ತಿರಸ್ಯ । ಜಂಬುಹುಲ್ಲಿನ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ  
ಜನಿಸಿದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ಶರವಣ ಶರವಣ (ನಂ) ಜಂಬುಹುಲ್ಲಿನ ಪೊದೆ. ಶರಾಣಾಂ  
ವನಮ್ — ನಕಾರಸ್ಯ ಣತ್ವಮ್ (೮-೪-೪) । "ತತ: ಶರವಣೇ  
ಸಾರ್ಥಂ ಭಯೇನ ವ್ರಿಡಯಾ ಚ ತಾ: । ತದ್ಗರ್ಭಜಾತಮುತ್ಸೃಜ್ಯ ಸ್ವಾನ್  
ಗೃಹಾನಭಿನಿರಯು: " ಕುಮಾಂ ೧೦-೪೯ ।

ಶರವಣಭವ ಶರವಣಭವ (ಪುಂ) ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಷಣ್ಮುಖ.  
ಶರವಣೇ ಭವೋ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ । "ಆರಾಧ್ಯನಂ ಶರವಣಭವಂ  
ದೇವಮಲ್ಲಜ್ಞಿತಾಽವಾ" ಮೇಘಂ ೧-೪೪ ।

ಶರವರ್ಷ ಶರವರ್ಷ (ಪುಂ) ಬಾಣಗಳ ಸುರಿಮಳೆ.

ಶರವಾಣಿ ಶರವಾಣಿ (ಪುಂ) 1. ಬಾಣದ ತುದಿಯ ಭಾಗ.  
2. ಪದಾತಿ, ಕಾಲಾಳು. (ವಿಂ) 3. ಬಾಣದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು,  
ಬಾಣಗಳನ್ನು ಮಾಡಿ ಜೀವಿಸುವವನು. "ಶರ-  
ವಾಣಿ: ಶರಮುಖೇ ಪದಾತೌ ಶರಜೀವಿನಿ" ಹೇಮಂ ।

ಶರವ್ಯ ಶರವ್ಯ (ನಂ) ಬಾಣದ ಗುರಿ. ಶರವೇ ಹಿತಮ್ "ಯತ್"  
(೪-೧-೨) । "ವಿದಧತಿ ಜನತಾಮನ:ಶರವ್ಯವ್ಯಪಡುಮನ್ಮಥ-  
ಚಾಪನಾದಶಕ್ತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೭-೨೪ ।

ಶರಾಡಿ ಶರಾಡಿ (ಪುಂ) ಸರಕುಟ ಹಕ್ಕಿ. "ಶರಂ ನೋರಮದತಿ  
— ಅಡ (ಗತೌ) "ಇ:" (೩ಂ ೪-೧೩೯) । ಶರಾಡಿ:  
ಶರಾಡಿ, ಶರಾರಿ: ಶರಾರಿ, ಶರಾಲಿ: ಶರಾಲಿ:

ಶರಾಮ್ಯಾಸ ಶರಾಮ್ಯಾಸ (ಪುಂ) ಬಾಣಗಳ ಪ್ರಯೋಗ  
ಮತ್ತು ಉಪಸಂಹಾರಗಳ ಕಲಿಕೆ.

ಶರಾರ ಶರಾರ (ವಿಂ) ಹಿಂಸಿಸುವವನು, ಕೊಲ್ಲುವವನು.  
ಶ್ವ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಆಹ:" (೩-೨-೧೭೩) । "ಶರಾರು-  
ರ್ಧಾತುಕೋಹಿಸ್ತ:" ಅಮಂ । "ಶರಾರ: ಶ್ರೀಶರೀರೇಶ: ಶುಶೂರೇಶಿ-  
ಶಿರ: ಶರೇ:" ಮಾಘಂ ೧೯-೧೦೮ ।

ಶರಾವ ಶರಾವ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರಾವ, ಮುಳ್ಳಿನ ಪಾತ್ರೆ. ಶರಂ  
ನೋರಮದತಿ — ಅವ (ರಕ್ಷಣೇ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) । "ವೃತ್ತೇ  
ಶರಾವಸಂಪಾತೇ ಮಿಕ್ಷಾಂ ನಿಯಂ ಯತಿಶ್ಚರೇತ್" ಮನುಂ ೬-೪೬ ।  
2. ಎರಡು ಕುಡವ ಪ್ರಮಾಣ, ಒಂದು ನೇರಂ ಅಳತೆ.

ಶರಾವತಿ ಶರಾವತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ನದಿ. ಶರಾ:  
ತೃಣವಿಶೇಷಾ: ಸಂತ್ಯಕ್ — "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪) । "ಶರಾವತೀಂ  
ಪಯೋಣಿಂ ಚ ವೇಣಾಂ ಭೀಮರಥೀಮಪಿ" ಮಾಂ ಭೀಷ್ಮಂ ೯-೨೦ ।  
2. ಶ್ರೀರಾಮನ ಪುತ್ರನಾದ ಲವನ ರಾಜಧಾನಿ. "ಸ  
ನಿವೇಶ್ಯ ಕುಶಾವತ್ಯಾಂ ರಿಪುನಾಗಾಙ್ಕುಶಂ ಕುಶಮ್ । ಶರಾವತ್ಯಾಂ  
ಸತಾಂ ಸುಕತೇ: ಜನಿತಾಶ್ಚಲವಂ ಲವಮ್" ರಘುಂ ೧೪-೯೭ ।

ಶರಾಭಯ ಶರಾಭಯ (ಪುಂ) ಒತ್ತಳಕೆ, ಬಾಣಗಳನ್ನು  
ಇಡುವ ಕೋಶ. ಶರಾಣಾಮಾಶ್ರಯ: ।

ಶರಾಸನ ಶರಾಸನ (ನಂ) 1. ಧನುಸ್ಸು, ಬಿಲ್ಲು. ಶರಾ:  
ಅಸ್ಯಂತೇಜೇನ — ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭) ।  
"ಅವವೀತಯೇ ನ ಹಿ ತಥಾ ಸ ವಿಧಿ: ಕವ ಶರಾಸನಂ ಕವ ಚ  
ವಿಮುಕ್ತಿಪಥ:" ಕಿರಾಂ ೬-೪೪ । 2. ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರನ ಒಬ್ಬ  
ಮಂತ್ರಿ.

ಶರಾಸ್ಯ ಶರಾಸ್ಯ (ನಂ) ಧನುಸ್ಸು, ಬಿಲ್ಲು. ಶರಾ: ಅಸ್ಯಂತೇ-  
ಜೇನ — ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣೇ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) ।

ಶರೀರಮ್ ಶರೀರಮ್ (ಪುಂ) ದೃಶ್ಯವ, ಹೆರಿಗೆ. ಶೃಣಾತಿ  
ಯೇವನಮ್ — ಶ್ವ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಇಮನಿಚ್" (೩ಂ ೪-೧೪೭) ।



ಶರೀರ ಶರೀರ (ನಂ) 1. ದೇಹ, ಮೃ. ಸೀಯತೆ ರೋಗಾದಿನಾ—ಶು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಶರೀನ್” (ತಂ ೪-೩೦)। “ಸಕೃದ್ವಿಕ್ರಾಡಯ ಕಾರ್ಮುಕಾನ್ಮುನೇ: ಶರಾ: ಶರೀರಾದಿತಿ ತೇಜಮಿನೀ” ಕಿರಾಂ ೧೪-೫೩। “ಶರೀರಮಾಣ್ ಖಲು ಧರ್ಮಸಾಧನಮ್” ಕುಮಾಂ ೫-೩೮। ಶರೀರ ಧರ್ಮಗಳು: ಸದುಕ್ತಿ (ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತು), ಕಟೂಕ್ತಿ (ಕಠಿಣವಾದ ಮಾತು), ಕೋಪ, ಸಂತೋಷ, ಲೋಭ, ಮೋಹ, ಕಾಮ, ಕ್ಷುತ್ತು (ಹಸಿವು), ಓಪಾಸೆ (ಬಾಯಾರಿಕೆ), ಸ್ಥೂಲ್ಯ (ದಪ್ಪಿರುವುದು), ಕಾರ್ಶ್ಯ (ತೆಳ್ಳಿರುವಿಕೆ), ನಾಶ ಮುಂತಾದುವು ಶರೀರದ ಧರ್ಮಗಳು. ಈ ಶರೀರವು ಸತ್ತ್ವ ರಜಸ್ಸು ಮತ್ತು ತಮಸ್ಸು ಎಂಬ ತ್ರಿಗುಣಾತ್ಮಕವಾದುದು. ಸತ್ತ್ವಗುಣದಿಂದ ದಯೆಯುಂಟಾಗುವುದು. ರಜೋಗುಣದಿಂದ ಕರ್ಮಾಪೇಕ್ಷೆ. ತಮೋಗುಣದಿಂದ ಕೋಪ, ಅಹಂಕಾರ, ಹಿಂಸಾಕಾರ್ಯ ಇವುಗಳುಂಟಾಗುವವು. 2. ಲಕ್ಷಣ, ಸ್ವರೂಪ. “ತೇ: ಶರೀರಂ ಚ ಕಾವ್ಯಾನಾಮಲಕ್ಷಣಾಶ್ಚ ದರ್ಶಿತಾ:। ಶರೀರಂ ತಾವದಿಷ್ಟಾರ್ಥವ್ಯವಚ್ಚಿತ್ತಾ ಪದಾವಲಿ” ಕಾವ್ಯಾಂ ೧-೧೦।

ಶರೀರಕ ಶರೀರಕ (ನಂ) 1. ಕೋಮಲವಾದ ಶರೀರ, ಸುಕುಮಾರವಾದ ಶರೀರ. ಶರೀರ—ಅನುಕರ್ಮಾಪಾ “ಕನ್” (೫-೩-೭೬)। “ಅತನುಕುಚಮರಾನತೇನ ಭುಯಶ್ರಮಜನಿತಾನ-ತಿನಾ ಶರೀರಕೇಣ” ಮಾಧಂ ೭-೬೬। 2. ಚಿಕ್ಕ ದೇಹ, ಚಿಕ್ಕ ಶರೀರ. ಅಲ್ಪ “ಕನ್” (೫-೩-೮೫)। “ಅಲಸಮೇದೇನ ಸುದೃಶ: ಶರೀರಕೇ:” ಮಾಧಂ ೧೩-೪೮।

ಶರೀರಜ ಶರೀರಜ (ಪುಂ) 1. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. 2. ಕಾಮದೇವ, ಮನ್ಮಥ. ಶರೀರಾಜ್ಜಾಯತೆ — ಜನಿ “ಜ:” (೩-೨-೯೮)। “ಶರೀರಜೇನ ತೋಷಣ ದಹಮಾನೋಽಪಿ ಭಾರತ” ಮಾಂ ಆದಿಂ ೧೦೦-೫೭। 3. ಪುತ್ರ, ಮಗ, ವತ್ಸ, ಕರು. “ವಿಹಾರಭೂಮೇರಮಿಘೋಷಮುತಸುಕಾ: ಶರೀರಜೇಮ್ಯಶ್ಚುತ-ಯುಪಪ್ಪುಷ್ಯ:” ಕಿರಾಂ ೪-೩೧। (ವಿಂ) 4. ದೇಹದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. “ಅಮೋಚಿ ಶಕ್ತಿ: ಶಾಕ್ತಿಕೇ: ಲೋಹಜಾ ನ ಶರೀರಜಾ” ಮಾಧಂ ೧೯-೫೯।

ಶರೀರಬದ್ಧ ಶರೀರಬದ್ಧ (ವಿಂ) ಮೂರ್ತಿಮತ್ತಾದ, ಶರೀರ ವನ್ನು ತಾಳಿರುವ. ಶರೀರೇಣ ಬದ್ಧ:। “ವಿವೇಶ ಕಶ್ಚಿ-ಜ್ಜಟಿಲಸ್ತಪೋವನಂ ಶರೀರಬದ್ಧ: ಪ್ರಥಮಾಶ್ರಮೋ ಯಥಾ” ಕುಮಾಂ ೫-೩೦।

ಶರೀರಬಂಧ ಶರೀರಬಂಧ (ಪುಂ) ಶರೀರದ ಸಂಬಂಧ. ಶರೀರಸ್ಯ ಬಂಧ:। “ಪೂರ್ವಭಿವ್ಯಕ್ತಮುಖಪ್ರಸಾದಾ ಶರೀರ-ಬಂಧೇನ ತಿರೋಬಭೂವ” ರಘುಂ ೧೬-೨೩।

ಶರೀರಿನ್ ಶರೀರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಶರೀರವನ್ನು ಪಡೆದಿರುವ ಪ್ರಾಣಿ, ಶರೀರವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ವ್ಯಕ್ತಿ. ಶರೀರ-ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಶಿನಿ:” (೫-೨-೧೧೫)। “ಚಯಸ್ವಿವಾಮಿತಯ-ವಾರಿತಂ ಪುರಾ ತತ: ಶರೀರೀತಿ ವಿಭಾವಿತಾಕೃತಿಮ್” ಮಾಧಂ ೧-೩। 2. ದೇಹವನ್ನು ತಾಳಿರುವ ಜೀವ, —ಜೀತನ, ಅಂಗೋಪಾಂಗಗಳನ್ನು ಪಡೆದ ಜೀವಾತ್ಮ. “ಗರ್ಭಾಶಯಗತಂ ಶುಕ್ರಮಾರ್ತವಂ ಜೀವಸಂಜಕ:। ಪ್ರಕೃತಿ: ಸವಿಕಾರಾ ಚ ತತ್ಸರ್ವಂ ಗರ್ಭಸಂಜಕಮ್॥ ಕಾಲೇನ ವರ್ಧಿತೋ ಗರ್ಭೋ ಯದ್ವಜ್ಞೋಪಾಜ್ಞಸಂಯುತ:। ಮವೇತ್ತದಾ ಸ ಮುನಿಮಿ: ಶರೀರೀತಿ ನಿಗದತೇ” ವರಕಂ। (ವಿಂ) 3. ಹಸ್ತ ಪಾದ ಮೊದಲಾದ ಅಂಗಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ ರುವ ಮನುಷ್ಯ ಅಥವಾ ತೀರ್ಯಕ್ ಪ್ರಾಣಿ. “ದಿಗ್ವಿಜ್ಞಾನಾ: ಕ್ಷಣಮವಿಲೋಕನಕ್ಷಮಾ: ಶರೀರಿಣಾಂ ಪರಿಹರಣೀಯತಾಂ ಯಯು:” ಮಾಧಂ ೧೭-೬೧।

ಶರ ಶರು (ಪುಂ) 1. ಕ್ರೋಧ, ಕೋಪ. ಶು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಶ:” (ತಂ ೧-೧೦)। 2. ವಜ್ರಾಯುಧ. 3. ಬಾಣ. “ಶರ: ಕೋಪೇ ಶರೇ ವಜ್ರೇ” ಹೇಮಂ। 4. ಆಯುಧ. “ಶರಾಯುಧಕೋಪಯೋ:” ಸಿಂ ಕೌಂ।

ಶರೀರ ಶರೀರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಕ್ಕರೆ. ಶುಣಾತಿ ಪಿತ್ತಮ್—ಶು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಕರನ್” (ತಂ ೪-೩)। “ಖಂಡಂ ತು ಸಿಕ್ತಾರೂಪಂ ಸುಶ್ವೇತಂ ಶರೀರಾ ಸಿತಾ” ಭಾವಪ್ರಂ। 2. ಸಣ್ಣ ಬೆಣಚು ಕಲ್ಲು, ಚೂರು ಬೆಣಚು ಕಲ್ಲು. “ಗಣಿಕಾ ನಾಮ ಪಾದುಕಾಂತರಪ್ರವಿಷ್ಟೇವ ಶರೀರಾ ದು:ಖೇನ ಪುನರ್ನಿರಾಕ್ರಿಯತೇ” ಮೃಚಂ ೫। 3. ಸಣ್ಣ ಚೂರುಕಲ್ಲು ಬೆರೆತ ಮಣ್ಣು. 4. ಮಡಕೆಯ ಒಂದು ಚೂರು. 5. ಮೂತ್ರರೋಗ, ಸಕ್ಕರೆಯ ರೋಗ. 6. ಶರಲ, ಚೂರು. “ಶರೀರಾ ಖಂಡ-ವಿಕ್ರತಾವುಪಲಾಕರಪರಾಂಶಯೋ:। ಶರೀರಾನ್ವಿತದೇಶೋಽಪಿ ಕುಭೇದೇ ಶಕಲೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ।

ಶರೀರಾವತ್ ಶರೀರಾವತ್ (ವಿಂ) ಬೆಣಚು ಕಲ್ಲುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪ್ರದೇಶ. ಶರೀರಾಸ್ತಯತ್ರ “ಮತುಪ್” (೫-೨-೧೦೫)।

ಶರೀರಾಸಪ್ತಮಿ ಶರೀರಾಸಪ್ತಮೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೈಶಾಖ ಶುಕ್ಲ ಸಪ್ತಮಿ. ಶರೀರಾಸಾ ದಾನವಿಧಾಯಿಕಾ ಸಪ್ತಮಿ।

ಶರೀರಕ ಶರೀರಕ (ವಿಂ) ಬೆಣಚು ಕಲ್ಲುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪ್ರದೇಶ. ಶರೀರಾಸ್ತಯತ್ರ —“ಶಕ್” (೪-೨-೮೦)।

ಶರೀರಲ ಶರೀರಲ (ವಿಂ) ಬೆಣಚು ಕಲ್ಲುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪ್ರದೇಶ. ಶರೀರಾ ವಿಕ್ರತೇಽತ್ರ —“ಶಲ್” (೫-೨-೧೦೫)। “ಕಥಂ ವ್ರಜೇತ್ ಶರೀರಲಾನ್ ಪ್ರದೇಶಾನ್ ಪದ್ಮಚಾಮಸೋ ಪಲ್ಲವ-ಕೋಮಲಾಮ್ಯಾ” ಯಾದಂ ೪-೬೬।

ಶರೀರಿ ಶರೀರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನದಿ. 2. ಮೇಖಲೆ, ಡಾಬಾ, ಒಡ್ಡಾಣ. 3. ಲೇಖನಿ.



ಶರ್ಮ ಶರ್ಮ (ಪುಂ) 1. ಅಪಾನ ವಾಯುವಿನ ಶಬ್ದ. ಶುಭ (ಪ್ರಹಸನೇ) "ಘ" (೩-೩-೧೮) 2. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. 3. ಶಕ್ತಿ, ಬಲ.

ಶರ್ಮಜಹ ಶರ್ಮಜಹ (ಪುಂ) 1. ಮಾಷ, ಉದ್ದು. ಶರ್ಮ ಜಹಾತಿ—ಔ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ) "ಘ" (ವಾಂ ೬-೩-೬೭) 1. ಮು (೬-೩-೬೭) 1. ಅತ್ರ ಜಹಾತಿರಂತರ್ಮಾವಿತಪ್ಯಂತಃ (ವಿಂ) 2. ಅಪಾನ ವಾಯುವನ್ನು ಹೊರಡಿಸುವ, ಅಪಾನ ವಾಯುವು ಹೊರಡಲು ಕಾರಣವಾದ.

ಶರ್ಮನ ಶರ್ಮನ (ನಂ) ಅಪಾನ ವಾಯುವನ್ನು ಬಿಡುವುದು, ಅಧೋವಾಯುವು ಶಬ್ದಮಾಡುವುದು. ಶುಭ (ಪ್ರಹಸನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೫) 1.

ಶರ್ಮದ ಶರ್ಮದ (ವಿಂ) ಸೌಖ್ಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ಸುಖ ವನ್ನು ಕೊಡುವ, ಮಂಗಳವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ. ಶರ್ಮ ಕಲ್ಯಾಣಂ ದದಾತಿ—ಔ ದಾಕ್ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) 1. "ಶರ್ಮದ ಮಾರುತಿ ದ್ವತಂ ವಿಷಮಸ್ಯಃ ಕಪಿಪಿಪಿಮ್" ಭದ್ರಿಂ ೬-೮೮ 1.

ಶರ್ಮನ್ ಶರ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ಸುಖ, ಸಂತೋಷ, ಆನಂದ. ಶುಣಾತ್ಯಶುಮ್—ಔ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಮನಿನ್" (೩ಂ ೪-೧೪೫) 1. "ಸಂತತಿಃ ಶುಭವ್ಯಾ ಹಿ ಪರಶ್ವೇಹ ಚ ಶರ್ಮಣೇ" ರಘುಂ ೧-೬೯ 1. (ಪುಂ) 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಹೆಸರಿನ ಮುಂದೆ ಸೇರಿಸುವ ಒಂದು ಪದ. ವಿಷ್ಣುಶರ್ಮ ನಾರಾಯಣಶರ್ಮ ಶಂಕರಶರ್ಮ ಸೋಮಶರ್ಮ ಇತ್ಯಾದಿ. "ಸಕಲಾರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರಸಾರಂ ಜಗತಿ ಸಮಾಲೋಕ್ಯ ವಿಷ್ಣುಶರ್ಮದಮ್ 1. ತನ್ವೈಃ ಪಂಚಭಿರೇತಚ್ಚಕಾರ ಸುಮನೋಹರಂ ಶಾಸ್ತ್ರಮ್" ಪಂಚತಂ ೩ 1. "ಶರ್ಮೇತಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ-ಸ್ಯೋಕ್ತಂ ವರ್ಮೇತಿ ಕ್ಷತ್ರಸಂಶ್ರಯಮ್ 1. ಗುಪ್ತದಾಸಾತ್ಮಕಂ ನಾಮ ಪ್ರಶಸ್ತಂ ವೈಶ್ಯಶೂದ್ರಯೋಃ" 1.

ಶರ್ಮಿಷ್ಠಾ ಶರ್ಮಿಷ್ಠಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಯಾತಿ ರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಪತ್ನಿ, ವೃಷಪರ್ವರಾಜನ ಪುತ್ರಿ. ["ಯಾತಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].

ಶರ್ಮಾ ಶರ್ಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಾತ್ರಿ. 2. ಅಂಗುಲಿ, ಬೆರಳು.

ಶರ್ಮಾತಿ ಶರ್ಮಾತಿ (ಪುಂ) ವೈವಸ್ವತ ಮನುವಿನ ಪುತ್ರ.

ಶರ್ಮ ಶರ್ಮ (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಶೃಣಾತಿ ಸಂಹರತಿ ಸರ್ವಾಃ ಪ್ರಜಾಃ ಪ್ರಲಯಕಾಲೇ—ಔ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ವಃ" (೩ಂ ೧-೧೫೩) 1. "ವರ್ಮಣಾಪಿ ಪದಂ ಶರ್ಮ ಕಾರಿತೇ ಪಾರ್ವತೀ ಪ್ರತಿ 1. ಪೂರ್ವಿರಾಶಿಮಿತಸ್ಯ ಕಾಮಸ್ಯೋಚ್ಛ್ರಿಸಿತಂ ಮನಃ" ಕುಮಾಂ ೬-೧೪ 1. 2. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಶೃಣಾತಿ ಸ್ವಶರೀರಭೂತಾನಾಮಶುಭಂ ಹಿನಸ್ತಿ—ಔ "ವಃ" 1. "ಸ್ವಶರೀರಜಗದ್ದುಃಖಂ ಶರ್ಮಃ ಸಃ ಸ್ಯಾಚ್ಛೃಣಾತಿ ಯಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ 1. "ಸರ್ವಃ ಶರ್ಮಃ ಶಿವಃ ಸ್ಥಾಣುಃ" ತ್ರಿಂ ಸಂ 1.

ಶರ್ಮರ ಶರ್ಮರ (ಪುಂ) 1. ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ. (ನಂ) 2. ರಾತ್ರಿ.

ಶರ್ಮರೀ ಶರ್ಮರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಾತ್ರಿ. ಶೃಣಾತಿ ಚೇಷ್ಟಾಃ—ಔ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಫರಚ್" (೩ಂ ೨-೧೨೧) 1. "ಗಮಯತಿ ಶಯನೀಯೇ ಶರ್ಮರೀ ಕಿಂ ಕರೋತು" ಮಾಘಂ ೧೧-೫ 1. 2. ಹೆಂಡ್ತಿ, ಅರಿಶಿನ. 3. ಹೆಂಗಸು. "ಶರ್ಮರೀ ಯಾಮಿನೀಸ್ತ್ರಿಯೋಃ" ಮೇದಿಂ 1. "ಶರ್ಮರೀ ರಾತ್ರಿಯೋಪಿತೋಃ 1. ಹರಿದ್ರಾಪಾಂ ಚ" ವಿಶ್ವಂ 1.

ಶರ್ಮರೀಶ ಶರ್ಮರೀಶ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ.

ಶರ್ಮಲಾ ಶರ್ಮಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೋಮರ, ಈಟಿ, ತುದಿಯಲ್ಲಿ ಮೊನಚಾಗಿರುವ ಒಂದು ಆಯುಧ. ಶರ್ಮತಿ—ಶರ್ಮ (ಗತೌ) "ಕಲಚ್" (೩ಂ ೧-೧೦೬) 1. "ಶರ್ಮಲಾ ತೋಮರೋ-ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಅಮಂ 1.

ಶರ್ಮಾಣಿ ಶರ್ಮಾಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾರ್ವತಿ. ಶರ್ಮಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ "ಙೀಃ" ಆನುಗಾಗಮಶ್ಚ (೪-೧-೪೯) 1. "ಶಾಪಾಂತಂ ಪ್ರತಿ ಶರ್ಮಾಣಿ ಶನೈವಂಚನಮಬ್ರವೀತ್" ಕಥಾಸಂ 1.

ಶರ್ಮರೀಕ ಶರ್ಮರೀಕ (ಪುಂ) 1. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ. ಶು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಙೀನ್" ಧಾತೌದ್ವಿತ್ವಂ ಅಭ್ಯಾಸಸ್ಯ ರಾಗಾಗಮಶ್ಚ (೩ಂ ೪-೧೯) 1. (ವಿಂ) 2. ಮೆಚಕ, ಮೋಸಾರ.

ಶಲ ಶಲ (ಪುಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ. 2. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. 3. ಒಂದು ಕ್ಷೇತ್ರ. 4. ಕುಂತ ಮೆಂಬ ಒಂದು ಆಯುಧ. "ದೀರ್ಘಾಯುಃ ಶಲಃ ಕುಂತಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1. 5. ಉಷ್ಣ, ಒಂಟಿ. 6. ಗರ್ಭ, ಕಡ್ಡೆ. (ನಂ) 7. ಮುಳ್ಳುಹಂದಿಯ ಕೂದಲು. ಶಲತಿ—ಶಲ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) 1. "ಶಲಂ ತು ಶಲಲೇ ಪುಸಿ ಭೃಗ್ವಿಷ್ಣುಶರ್ಮದೋವಿಷಿ" ಮೇದಿಂ 1. "ಭೃಗ್ವಿಷ್ಣುಶರ್ಮದೋವಿಷಿ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1. "ರೂಪಸ್ವರೋ ಭೂತಕರ್ಣಃ ನೇಮಿಭಾರಿಸಹಃ ಶಲಃ" ವೈಜಂ 1.

ಶಲಕ ಶಲಕ (ಪುಂ) ಜೇಡರಹುಳು. "ಸ್ಯಾನ್ಮರ್ಮಕಂಶ್ಚ ಶಲಕಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1.

ಶಲಜ್ಞ ಶಲಜ್ಞ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ.

ಶಲಭ ಶಲಭ (ಪುಂ) ಪತಂಗದ ಹುಳು. ಶಲ (ಗತೌ) "ಅಮಚ್" (೩ಂ ೩-೧೨೨) 1. "ಕುಂತೇ ನ ಶಲಃ ಸ್ವಯೇಚ್ಛಯಾ ಶಲಭಾನಿವೃತ್ತಮಿದದೀವಿತಿ" ಮಾಘಂ ೧೬-೩೫ 1. ಪತಂಗದ ಹುಳುವು ಅರು ವಿಧ ಈಟಿಬಾಧೆಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಅತಿ-ವೃಷ್ಟಿರನಾವೃಷ್ಟಿಃ ಮೂಷಕಾಃ ಶಲಭಾಃ ಖಗಾಃ 1. ಅತ್ಯಾಸನ್ನಾಶ್ಚ ರಾಜಾಃ ಪಡೇತಾ ಇತಯಃ ಸ್ಮೃತಾಃ" 1.

ಶಲಲ ಶಲಲ (ನಂ) ಹಂದಿಯ ಮುಳ್ಳು, ಮುಳ್ಳುಹಂದಿಯ ಕೂದಲು. ಶಲ (ಗತೌ) "ಕಲಚ್" (೩ಂ ೧-೧೦೬) 1.



ಶಾಲಿ ಶಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಂದಿಯ ಮುಳ್ಳು, ಮುಳ್ಳು ಹಂದಿಯ ಕೂದಲು. ಶಲ (ಗತೌ) "ಕಲ್" (ಉಂ ೧-೧೦೬)। ಸ್ತ್ರೀತ್ವವಿವಕ್ಷಾयां "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧)। ಶಲಾಕಾ ಶಲಾಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಲಾಕೆ, ಸರಳು, ಸಣ್ಣ ಕಬ್ಬಿಣದ ತುಂಡು ಮರದ ಕೋಲು ಮುಂತಾದುವು. ಶಲ (ಗತೌ) "ಆಕ:" (ಉಂ ೪-೧೪)। "ಅಮೃತ-ವರ್ತಿರिव चक्षुषो निरतिशयमानन्दमुत्पादयन्ती अयस्कान्त-मणिशलाकेव लोहधातुमन्तःकरणमुपसंहृतवती" मालती० १। 2. ಕಣ್ಣಿಗೆ ಮುಲಾಮು ಹಾಕುವ ಸಣ್ಣ ಕುಂಚೆ. "अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया। चक्षु-रुमीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः"। "तस्याः शलाका-ञ्जननिमित्तेव कान्तिर्ध्रुवोरायतलेखयोर्था" कुमा० १-४७। 3. ಹಸ್ತಗಳು ಮತ್ತು ಪಾದಗಳ ಮೂಲಸ್ಥಾನ ಗಳಲ್ಲಿರುವ ಎಲುಬು. "स्थालेः सह चतुःषष्टिदन्ता वै विशतिर्नखाः। पाणिपादशलाकाश्च तेषां स्थानचतुष्ट-यम्" याज्ञ० ३-೮೪। 4. ಬಣ್ಣ ಹಾಕುವ ಕುಂಚೆ. 5. ಭತ್ತಿಯ ಕೋಲು. 6. ಗೂಟೆ. 7. ಮದನವೃಕ್ಷ. ಮಂಗಾರೆ ಗಿಡ. 8. ಶಾರಿಕಾಪಕ್ಷಿ. 9. ಸಲ್ಲೀವೃಕ್ಷ. ತುಡುಕಿನ ಗಿಡ. "शलाका शल्यमदनशारिकाशल्लकीषु च" मेदि०। 10. ಶರ, ಬಾಣ. "छत्रादिकाष्ठी-शरयोः" मेदि०। 11. ಮೊಳಕೆ, ಬೆಗುರು. 12. ಭರ್ಜಿ, ಈಟಿ, ಭಲ್ಲು.

ಶಲಾಕಾಪರಿ ಶಲಾಕಾಪರಿ (ಅವ್ಯಂ) ಶಲಾಕೆಯು ದೂತ ದಲ್ಲಿ ಎಪರೀತವಾಗಿ ಬೀಳುವುದು. ಶಲಾಕಾ ವಿಪರೀತ ವೃತ್ತಮ್। ಜೂಜಿನಲ್ಲಿ ಪರಾಜಯವಾದರೆ ಈ ಪ್ರಯೋಗ.

ಶಲಾಡ ಶಲಾಟ (ಪುಂ) ಒಂದು ಗಾಡಿಯ ಆಳತೆ.

ಶಲಾಡು ಶಲಾಟು (ಪುಂ) ಎಳೆಯಕಾಯಿ, ಪಕ್ಕವಾಗಿಲ್ಲದ ಕಾಯಿ. ಶಲತಿ — ಶಲ (ಚಲಸಂವರಣಯೋಃ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "मदनशलाटुचूर्णान्येवं वा वकुल-रम्यकोपयुक्तानि मधुलवणयुक्तान्यभिप्रतप्तानि" सुश्रुत० सूत्र० ४३-३।

ಶಲಾಬೋಲಿ ಶಲಾಭೋಲಿ (ಪುಂ) ಉಪ್ಪು, ಒಂಟೆ.

ಶಲಾಲ ಶಲಾಲ (ಪುಂ) ಒಂದು ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯ.

ಶಲಾಲಕ ಶಲಾಲಕ (ವಿಂ) ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯವೇ ಪಣ್ಯ ವಾಗಿ ಉಳ್ಳವನು. ಶಲಾಲಃ ಪಣ್ಯಮಸ್ಯ — ವಾ "ಠನ್" (೪-೪-೪೪)। ಪಕ್ಷೆ "ಠಕ್" (೪-೪-೪೧)। ಶಲಾಲಕಃ ಶಾಲಾಲಕಃ.

ಶಲಕ ಶಲ್ಯ (ನಂ) 1. ಶಕಲ, ತುಂಡು, ಚೂರು, ಒಂದು ಭಾಗ, ಒಂದು ಅಂಶ. ಶಲ (ಗತೌ) "ಕನ್" (ಉಂ ೩-೪೩)।

2. ನಾರುಬಟ್ಟೆ, ವಲ್ಕಲ. 3. ಮರದ ತೊಗಟೆ. 4. ಮೀನಿನ ಚರ್ಮ, ಮೀನಿನ ಮೈಮೇಲಿನ ಪೊರೆ. "राजीवान् सिंहतुण्डांश्च सशल्काश्चैव सर्वशः" मनु० ५-१६। "शल्कं तु शकले वल्के" मेदि०।

ಶಲಕಲ ಶಲ್ಕಲ (ನಂ) 1. ಮತ್ಸ್ಯದ ಚರ್ಮ, ಮೀನಿನ ಮೈಮೇಲಿನ ಪೊರೆ. 2. ಮರದ ತೊಗಟೆ. ಶಲ (ಗತೌ) "ಕಲ್" ಬಾಹುಂ।

ಶಲಕಲಿನ್ ಶಲ್ಕಲಿನ್ (ಪುಂ) ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. ಶಲಕಲ-ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪)।

ಶಲಿಕಿನ್ ಶಲ್ಕಿನ್ (ಪುಂ) ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. ಶಲಕಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪)।

ಶಲಮಲಿ ಶಲ್ಮಲಿ (ಪುಂ ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಾಲ್ಮಲಿ ವೃಕ್ಷ, ಬೂರುಗದ ಮರ. ಶಲತಿ—ಶಲ (ಗತೌ) "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೧೦೮)। ಶಲ್ ಚಾಸಿ ಮಲಿಷ್ಠ। "अमोघा पाटलिं क्ली पूरण्यां शलमलिनं षण्" वैज०।

ಶಲ್ಯ ಶಲ್ಯ (ನಂ) 1. ಭರ್ಜಿ, ಈಟಿ, ಭಲ್ಲು. ಶಲತಿ—ಶಲ (ಗತೌ) "ಯಃ" (ಉಂ ೪-೧೦೭)। 2. ಶರ, ಬಾಣ. "शल्यप्रोतं प्रेक्ष्य सकुम्भं मुनिपुत्रं तापादन्तःशल्य इवासीत्क्षितिपोऽपि" रघु० ९-७५। 3. ವಿಷ, ವಂಜು. 4. ತೋಮರವೆಂಬ ಒಂದು ಆಯುಧ. 5. ಬಿದಿರಿನ ಮೊಳಕೆ. "शल्यं शङ्कौ शरे वंशकम्बिकायां च तोमरे" विश्व०। 6. ಎಲುಬು, ಮೂಳೆ. 7. ಪಾಪ. (ಪುಂ) 8. ಮುಳ್ಳುಹಂದಿ. 9. ಮದನವೃಕ್ಷ, ಮಂಗಾರೆ ಗಿಡ. 10. ವಾದ್ರಿಯ ಸಹೋದರ, ಮದ್ರ ದೇಶದ ದೊರೆ. 11. ಶತ್ರು, ಹಗೆ, ವೈರಿ. "त्रिभुवनवरशल्ये प्रोद्धते दानवेन्द्रे" कुमा० १७-५५। 12. ಸೀಮೆ, ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ. 13. ಬಿಲ್ಲವೃಕ್ಷ. (ಪುಂ) 14. ಗೂಟೆ, ಕಂಬ. "शल्यं तु न स्त्रियां शङ्कौ क्लीबं क्ष्वेदेषु तोमरे। मदनद्रुश्रा-विघोर्ना" मेदि०। 15. ಸಲಾಕೆ. 16. ಮುಳ್ಳು. "शल्यं वंशशलाकायां शङ्कुतोमरयोरपि। शल्यः कश्चि-न्महीपालःश्राविन्मदनपादपः" नानार्ध०। ಒಂದೊಂದು ಕೋಶಕ್ಕೂ ಲಿಂಗಭೇದವು ಕಂಡುಬರುವುದು.

ಶಲ್ಯಕ ಶಲ್ಯಕ (ಪುಂ) 1. ಭಲ್ಲು, ಈಟಿ, ಭರ್ಜಿ. 2. ಸಲಾಕೆ. ಶಲ್ಯ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"। 3. ಮುಳ್ಳು. 4. ಮುಳ್ಳು ಹಂದಿ. "अथ शल्ये शल्लशल्यकी" अग्नि० चि०।

ಶಲ್ಯಲೋಮನ್ ಶಲ್ಯಲೋಮನ್ (ನಂ) ಹಂದಿಯ ಮುಳ್ಳು, ಮುಳ್ಳುಹಂದಿಯ ಕೂದಲು.

ಶಲ್ಯಾರಿ ಶಲ್ಯಾರಿ (ಪುಂ) ಶಲ್ಯರಾಜನ ಶತ್ರುವಾದ ಯುಧಿಷ್ಠಿರ, ಧರ್ಮರಾಜ. ಶಲ್ಯಸ್ಯಾರಿಃ।



ಶಲ್ಕ ಶಲ್ಕ (ಪುಂ) 1. ಭೇಕ, ಕಪ್ಪೆ. (ನಂ) 2. ತೋಟಿ, ಸಿಪ್ಪೆ.

ಶಲ್ಕ ಶಲ್ಕ (ಪುಂ) 1. ಸಲ್ಲಕೆವ್ವಕ್ಕ, ಆನೆಬೇಲ. 2. ಮರದ ತೋಟಿ. 3. ಮುಳ್ಳುಹಂದಿ. "ಸೇವಾನೋಪಾ-  
ಕಂಠಶಲ್ಕಾ:" ಯಾತ್ರಂ ೧-೧೭೭.

ಶಲ್ಕ ಶಲ್ಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುಳ್ಳುಹಂದಿ. 2. ಆನೆ  
ಬೇಲ. "ಶಿಶಿರಕಡಕಾಯ: ಸ್ತಾಯತೇ ಶಲ್ಕಕೀನಾಮ್"  
ಮಾಲತೀಂ ೧-೬. "ಶಲ್ಕಕೀ ಆವಿಧಿ ದ್ವೇ" ಹೇಮಂ 1.

ಶಲ್ಕ ಶಲ್ಕ (ಪುಂ) 1. ಜಲ, ನೀರು. 2. ಮೃತದೇಹ.

ಶಲ್ಕ ಶಲ್ಕ (ಪುಂ) 1. ಮೊಲ. ಶಶತಿ - ಶಶ (ಪ್ಲುತಗತೌ)  
"ಶಶ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಉತ್ತಮದ್ರುತಮನೋಹಜಾಲ-  
ಮಧ್ಯಾದನ್ಯ: ಸಶಂ ಗುಣಮನಲ್ಪಮವಸ್ಥವಾಪ" ಮಾಘಂ ೪-೨೫.  
2. ದಾಣಂತಿ ಬೋಳ. 3. ರೋಧ್ರವೃಕ್ಷ. 4. ನಾಲ್ಕು  
ವಿಧ ಮನುಷ್ಯರಲ್ಲಿ ಒಂದು ಭೇದ. "ಶಶೋ ಬೋಲೆ ಲೋಧ್ರ  
ನೃಶುಮೇದಯೋ:" ಮೇದಿಂ 1.

ಶಶಕ ಶಶಕ (ಪುಂ) ಮೊಲ. ಶಶ ಸ್ವಾಣೆ "ಕನ್".  
"ಶಶಕ: ಶಲ್ಕಕೀ ಗೋಷಾ ಸಜ್ಜಿ ಕುರ್ಮಶ್ಚ ಪಶ್ಚಮ: | ಮಧ್ಯಾ:  
ಪಶ್ಚನಶೇಷೇತೇ ನ ಮಧ್ಯಾಶ್ಚಾನ್ಯಜಾತಯ:" ಸ್ಮೃತಿ: 1.

ಶಶತ್ ಶಶತ್ (ವಿಂ) ಹಾರುಹೆಚ್ಚ ಹಾಕುತ್ತಿರುವ, ನೆಗೆ  
ಯುತ್ತ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ. ಶಶ (ಪ್ಲುತಗತೌ) "ಶತ್"  
(೩-೨-೧೨೪). "ಲಲಿ ಲಿಲಾಂ ಲಲೋಲ್ಲೋಲ: ಶಶೀಶ  
ಶಿಷುಮಿ: ಶಶನ್" ಕಿರಾಂ ೧೪-೪.

ಶಶಶರ ಶಶಶರ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಧರತಿ-ಭೂ (ಧಾರಣೆ)  
"ಶಶ್" (೩-೧-೧೩೪). ಶಶಸ್ಯ ಧರ: 1. "ಪ್ರೇರಿತ:  
ಶಶಶರೇಣ ಕರೋಷ: ಸಂಹತಾನ್ಯಪಿ ನುನೋದ ತಮಾಸಿ" ಕಿರಾಂ  
೧-೨೮. 2. ಕರ್ಪೂರ.

ಶಶಶತ್ ಶಶಶತ್ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಸಶಂ ವಿಮತಿ-ತುಮ್ಬ  
(ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೭೬). "ಮಂದ-  
ರಾಂತರಿತಮೃತಿತಾ ನಿಶಾ ಲಕ್ಷತೇ ಶಶಶತಾ ಸತಾರಕಾ"  
ಕುಮಾಂ ೮-೪೯.

ಶಶಲಕ್ಷಮನ್ ಶಶಲಕ್ಷಮನ್, -ಲಾಂಛನ -ಲಾಂಛನ  
(ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಶಶ: ಲಕ್ಷಮ ಲಾಂಛನಂ ವಾಸ್ಯ.  
"ಶ್ವಾಕಾರ್ಯ ಶಶಲಕ್ಷಮಣ: ಕ್ವ ಚ ಕುಲಂ ಭೂಯೋಪಿ ದೃಶ್ಯತ ಸಾ"  
ಕುಪಂ 1. "ಭೃತಾ ವಿಕಾರಾಸ್ತೃಜತಾ ಮುಖೇನ ಪ್ರಸಾದಲಕ್ಷ್ಮಿ:  
ಶಶಲಾಂಛನಸ್ಯ" ಕಿರಾಂ ೧೬-೨೧. 2. ಕರ್ಪೂರ.

ಶಶವಿಷಾಣ ಶಶವಿಷಾಣ, -ಶೃಂಗ -ಶೃಂಗ (ನಂ)  
ಮೊಲದ ಕೊಂಬು. ಮೊಲದ ಕೊಂಬು ಅಸಂಭವವಾಗಿರು  
ವಂತೆ ಯಾವುದಾದರೊಂದು ಕಾರ್ಯವು ಅತ್ಯಂತ ಅಸಾಧ್ಯ  
ಅಸಂಭವ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಇದರ ಪ್ರಯೋಗ.

ಶಶಸ್ಯಲಿ ಶಶಸ್ಯಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗೆ ಮತ್ತು ಯಮುನೆಯ  
ಮಧ್ಯಭಾಗ, ಈ ಎರಡು ನದಿಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ದೇಶ.

ಶಶಾಕ್ಷ ಶಶಾಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಶಶ: ಅಕ್ಷೋ ಅಕ್ಷೇ  
ವಾ ಯಸ್ಯ 1. "ಶೃಂಗಾಪ್ಯಮುಷ್ಯ ಭಜತೇ ಗಣಭರ್ತುರಕ್ಷಾ ಕುರ್ವನ್  
ವಭೂಜನಮನ:ಸು ಶಶಾಕ್ಷಶಾಕ್ಷಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೪-೪೨. 2.  
ಕರ್ಪೂರ.

ಶಶಾದ ಶಶಾದ (ಪುಂ) ಇಕ್ಷ್ವಾಕುಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಮಗ.

ಶಶಾದನ ಶಶಾದನ (ಪುಂ) ಗಿಡುಗವೆಂಬ ಹಕ್ಕಿ. ಶಶಾಮತಿ-  
ಬದ (ಮಣಿ) "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪).

ಶಶಿಕಲಾ ಶಶಿಕಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಂದ್ರನ ಕಲೆ, ಚಂದ್ರನ  
ಒಂದು ಭಾಗ, ಚಂದ್ರನ ಒಂದು ಅವಯವ. ಶಶಿನ:  
ಕಲಾ. "ಶನ್ಯಾ ಕೇಯಂ ಸ್ಥಿತಾ ತೇ ಶಿರಸಿ ಶಶಿಕಲಾ"  
ಮುಕ್ತಾಂ ೧-೧. 2. ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರೋಕ್ತವಾದ ಹದಿನೈದ  
ನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಪ್ರತಿ ಪಾದದಲ್ಲಿಯೂ  
ಹದಿನಾಲ್ಕು (14) ಲಘು ಮತ್ತು ಒಂದು ಗುರುವರ್ಣ  
ಗಣರುವ ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: "ದ್ವಿಹತಹ್ಯ-  
ಲಘುರಗತಿ ಶಶಿಕಲಾ" ವೃಂ ೨೦.

ಶಶಿಕಾಂತ ಶಶಿಕಾಂತ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರಕಾಂತ ಮಂಟಪ.  
ಶಶೀ ಕಾಂತೋ ಯಸ್ಯ 1. (ನಂ) 2. ಕುವಲಯ, ಕನ್ನೆದಿರೆ.

ಶಶಿಜ ಶಶಿಜ (ಪುಂ) ಬುಧಗ್ರಹ, ಚಂದ್ರನ ಮಗ.  
ಶಶಿನೋ ಜಾಯತೇ-ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಮವಿ) "ಜ:" (೩-೨-೯೮).

ಶಶಿತನಯ ಶಶಿತನಯ, -ಸುತ -ಸುತ, -ಸುನ್ -ಸುನು  
(ಪುಂ) ಚಂದ್ರನ ಮಗ ಬುಧಗ್ರಹ.

ಶಶಿನ್ ಶಶಿನ್ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಶಶೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ-"ಇನಿ:"  
(೪-೨-೧೧೫). "ಯುಗಪದ್ವಿಕಾಸಮುದಯಾದ್ಗಮಿತೇ ಶಶಿನ:  
ಶಿಲೀಮುಖಗಣೋಲ್ಲಮತ" ಮಾಘಂ ೯-೪೧.

ಶಶಿಪ್ರಭ ಶಶಿಪ್ರಭ (ನಂ) 1. ಕುವಲಯ, ಕನ್ನೆದಿರೆ,  
ನೀಲಕಮಲ. ಶಶಿನಾ ಪ್ರಭಾಸ್ಯ 1. (ವಿಂ) 2. ಚಂದ್ರ  
ನಂತೆ ಕಾಂತಿಯುಳ್ಳ. ಶಶಿನ ಇವ ಪ್ರಭಾ ಯಸ್ಯ 1. "ಅದೇಯ-  
ಮಾಸೀತ್ ತ್ರಯಮೇವ ಭೂತೇ: ಶಶಿಪ್ರಭಂ ಛತ್ರಮುಖೇ ಚ ಚಾಮರೇ"  
ರಘುಂ ೩-೧೬. -ಪ್ರಭಾ-ಪ್ರಭಾ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಚಂದ್ರಿಕೆ,  
ಬೆಳದಿಂಗಳು, ಚಂದ್ರನ ಪ್ರಕಾಶ. ಶಶಿನ: ಪ್ರಭಾ 1.

ಶಶಿಭೂಷಣ ಶಶಿಭೂಷಣ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರನೇ ಅಲಂಕಾರ  
ವಾಗಿರುವ ಪರಮೇಶ್ವರ.

ಶಶಿಮಾಲಿ ಶಶಿಮಾಲಿ (ಪುಂ) ಶಿರಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರನನ್ನು  
ಧರಿಸಿರುವ ಪರಮೇಶ್ವರ. ಶಶೋ ಮಾಲಿ ಯಸ್ಯ 1. "ಮನೋ-  
ರಯೋಽಸ್ಯಾ: ಶಶಿಮಾಲಿಸಂಶ್ರಯ:" ಕುಮಾಂ ೪-೬೦.



ಶಶಿಲೇಖಾ ಶಶಿಲೇಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚಂದ್ರನ ಕಲೆ, ಚಂದ್ರನ ಒಂದು ಅಂಶ, ಚಂದ್ರನ ಹದಿನಾರನೇ ಒಂದು ಭಾಗ.

2. ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರೋಕ್ತವಾದ ಹದಿನಾರನೇ ಭಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: "ಅಮೃತಾ ಯಾತೃಯಾ ಭವೇತಾಂ ಸಪ್ತಾಂಶಭಿಃ ಸ್ವರೇಷಾಂ" ವೃಂ ೨೦. 3. ಅಮೃತ ಬಳ್ಳಿ.

ಶಶಿಶೇಖರ ಶಶಿಶೇಖರ (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಶಿವ. ಶಶಾಂ ಶೇಖರೇ ಯಸ್ಯ.

ಶಶೋಣಿ ಶಶೋಣಿ (ನಂ) ಮೊಲದ ಕೂದಲು. ಅನುಶಾಸನಾತ್ ನಪುಂಸಕತ್ವಮ್.

ಶಶ್ವತ್ ಶಶ್ವತ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪುನಃ ಪುನಃ, ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ, ಬಾರಿಬಾರಿಗೆ, ಅನೇಕ ಸಲ. ಶಶ (ಪ್ಲುತಗತೌ) ಬಾಹುಂ ವತಿಃ. "ಮುಹುಃ ಪುನಃಪುನಃ ಶಶ್ವದಮೀಕ್ಷಣಮತಕೃತ್ಸಮಾಃ" ಅಮಂ. "ಉಪದಾ ವಿವಿಶುಃ ಶಶ್ವತ್ ನೋತ್ಸೇಕಾಃ ಕೋಸಲೇಶ್ವರಮ್" ರಘುಂ ೪-೭೦. 2. ಯಾವಾಗಲೂ, ಎಂದೆಂದಿಗೂ, ಸರಂತರವಾಗಿ, ಶಾಶ್ವತವಾಗಿ. "ಜೀವನ್ ಪುನಃ ಶಶ್ವದುಪ-ಪ್ಲವೇಮ್ಯಃ ಪ್ರಜಾಃ ಪ್ರಜಾನಾಥ ಪಿತೇವ ಪಾಸಿ" ರಘುಂ ೨-೪೮. "ಕ್ಷಿಪ್ರಂ ಭವತಿ ಧರ್ಮಾತ್ಮಾ ಶಶ್ವಚ್ಛಾಂತಿ ನಿಗಚ್ಛತಿ" ಗೀತಾ ೯-೩೧. 3. ಕೂಡ, ಒಡನೆ, ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ. "ಶಶ್ವತ್ ಸಹ ಪುನರ್ನಿತ್ಯೇ" ಹೇಮಂ.

ಶಶ್ವಕುಲಿ ಶಶ್ವಕುಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಿವಿಯ ರಂಧ್ರ, ಕಿವಿ ಯೊಳಗಿನ ವಿವರ. "ಅವಲಂಬಿತಕರ್ಣಶಶ್ವಕುಲಿಕಲಸೀಕಂ ರಚಯನ್ ಪ್ರವೋಚತ" ನೆಪಂ ೨-೮. 2. ಬೆಕ್ಕುಲಿ. "ವೃಥಾಕೃಷ್ಣ-ಸಂಭಾವಪಾಯಸಾಽಪುಷಶ್ವಕುಲಿಃ" ಪಾಶ್ವಂ ೧-೧೭೩. 3. ಒಂದು ವಿಧ ಗಂಜಿ. 4. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು.

ಶಷ್ಪ ಶಷ್ಪ (ನಂ) 1. ಎಳೆಯ ಹುಲ್ಲು. ಶಸು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಪಃ" (ಉಂ ೩-೨೮) ನಿಪಾಂ. "ಗಜ್ಞಾಪ್ರಪಾತಾಂತ-ವಿರುದ್ಧಶಷ್ಪಂ ಗೀರಿಗುರೋಗ್ಗೃಹರಮಾವಿವೇಶ" ರಘುಂ ೨-೨೬. 2. ಬುಧ್ಧಿಯು ಕಡಮೆಯಾಗುವಿಕೆ, ಪ್ರತಿಭೆಯ ನಾಶ. "ಶಷ್ಪಂ ತು ಪ್ರತಿಮಾಹಿನಿತಾಯಾಂ ಬಾಲತೃಣೇಽಪಿ ಚ" ಹೇಮಂ.

ಶಸ್ತ ಶಸ್ತ (ನಂ) 1. ಕಲ್ಯಾಣ, ಮಂಗಳ. ಶಸ್ಯತೇ ಸ್ಮ—ಶಸು (ಸ್ತುತೌ) "ಕಃ" (೩-೨-೧೦೨). 2. ದೇಹ, ಶರೀರ. (ವಿಂ) 3. ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. "ಕ್ರಿಯಾಯೋಗೇನ ಶಸ್ತೇನ ನಾತಿಹಿಸೇನ ನಿಯತಃ" ಭಾಗಂ ೩-೨೯-೧೫. 4. ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರಸಹ್ಯ ದಾನವಾಃ ಶಸ್ತಾಃ ತ್ವಯಾ ಕೃಷ್ಣೇನ ಚ ಪ್ರಮೋ" ಭಾಂ ವನಂ ೪೦-೩. 7. ಸಂತೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 8. ಮಂಗಳಕರವಾದ,

ಶುಭಕರವಾದ. "ಶಸ್ತಾ ನ ಹಂಸಾಭಿಮುಖೀ ಪುನಸ್ತೇ ಯಾತ್ರೇತಿ ತಾಭಿಃ ಕಲಹಸ್ಯಮಾನಾ" ನೆಪಂ ೩-೯.

ಶಸ್ತಕ ಶಸ್ತಕ (ನಂ) 1. ಬೆರಳನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವ ಒಂದು ಸಾಧನ, ಬೆರಳಿನ ಮುಸುಕು. "ಅಭ್ಯಾಸಿಲಿಪ್ತಂ ಶಸ್ತಕಂ ಚ ತಥಾ ಚಾಭ್ಯಾಸಕರಕಮ್" 2. ಕಬ್ಬಿಣ. "ಕಾಲಾಯಸಮ-ಸ್ತೀಕ್ಷಣಂ ಗಿರಿಸಾರಂ ಚ ಶಸ್ತಕಮ್" ಹಾರಾಂ.

ಶಸ್ತ್ರ ಶಸ್ತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. ಶಸ್ಯತೇಜೇನ—ಶಸು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಷ್ಠನ್" (೩-೨-೧೮೨). "ಷ್ಠಿಃ: ಕ್ಷಿಪ್ರಃ ನರವಾರಿಃ ಶಸ್ತ್ರೋ ಮದ್ರಾತ್ಮಜಶ್ಚ ಸಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. (ನಂ) 2. ಅಸ್ತ್ರ, ಆಯುಧ. "ಪೃಥಗ್ವಿಧಾನ್ಯಸ್ತ್ರವಿರಾಮ-ಬುದ್ಧಾ ಶಸ್ತ್ರಾಣಿ ಭೂಯಃ ಪ್ರತಿಪೇದಿರೇ ತೇ" ಕಿರಾಂ ೧೬-೩೪. "ಕ್ಷಮಾಶಸ್ತ್ರಂ ಕರೇ ಯಸ್ಯ ದುರ್ಜನಃ ಕಿಂ ಕರಿಷ್ಯತಿ" 3. ಕಬ್ಬಿಣ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)—ಸ್ತ್ರೀ-ಸ್ತ್ರೀ. 4. ಚಾಕು, ಚೂರಿ. "ಶಸ್ತ್ರಂ ಲೋಹಾಸ್ತ್ರಯೋಃ ಕಲೆಬ್ ಕುರಿಕಾಯಾಂ ತು ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ.

ಶಸ್ತ್ರಕ ಶಸ್ತ್ರಕ (ನಂ) 1. ಕಬ್ಬಿಣ. 2. ಉಕ್ಕು. 3. ಆಯುಧ.

ಶಸ್ತ್ರಕಾರ ಶಸ್ತ್ರಕಾರ (ವಿಂ) ಆಯುಧಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. ಶಸ್ತ್ರಂ ಕರೋತಿ—ಛ ಕೃತ್ (ಕರಣೆ) "ಅನ್" (೩-೨-೧).

ಶಸ್ತ್ರಗ್ರಾಹಿನ್ ಶಸ್ತ್ರಗ್ರಾಹಿನ್ (ವಿಂ) ಆಯುಧಗಳನ್ನು ಹಿಡಿಯುವವನು.

ಶಸ್ತ್ರಜೀವಿನ್ ಶಸ್ತ್ರಜೀವಿನ್ (ವಿಂ) ಶಸ್ತ್ರಗಳ ಪ್ರಯೋಗ ದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು, ಯೋಧ, ಶಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಹಿಡಿದು ಯುದ್ಧದಿಂದ ಜೀವನ ನಡೆಸುವವನು. ಶಸ್ತ್ರೇಣ ಜೀವತಿ—ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) "ಜಿವಿಃ" (೩-೨-೭೮).

ಶಸ್ತ್ರಪಾಣಿ ಶಸ್ತ್ರಪಾಣಿ (ಪುಂ) 1. ಆಯುಧವನ್ನು ಕೈಯಲ್ಲಿ ಹಿಡಿದಿರುವ ಯೋಧ, ಭಟ. ಶಸ್ತ್ರಂ ಪಾಣೌ ಯಸ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಆಯುಧವನ್ನು ಕೈಯಲ್ಲಿ ಹಿಡಿದಿರುವವನು. 3. ಆರು ವಿಧ ಆತತಾಯಿಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. "ಅಗ್ನಿದೋ ಗರದಶ್ಚೈವ ಶಸ್ತ್ರ-ಪಾಣಿರ್ಧನಾಪಹಃ. ಕ್ಷೇತ್ರದಾರಾಪಹಶ್ಚೈವ ಪಡೇತೇ ಹ್ಯಾತತಾಯಿನಃ".

ಶಸ್ತ್ರಪುತ ಶಸ್ತ್ರಪುತ (ವಿಂ) ಆಯುಧಸ್ಪರ್ಶದಿಂದ ಪರಿ ಶುದ್ಧವಾದ, ಆಯುಧ ಪ್ರಹಾರದಿಂದ ಹತವಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಮಾಂಸ. ಶಸ್ತ್ರೇಣ ಪುತಮ್. ಶಸ್ತ್ರಗಳಿಂದ ಹತವಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಮಾಂಸವು ಪ್ರಶಸ್ತವಾದುದು. ಇದು ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಆಹಾರ. ಪಿಶಾಚಗಳಿಗೆ ಇಂತಹ ಪರಿಶುದ್ಧವಾದ ಆಹಾರವು ಆಗದು. "ಅಶಸ್ತ್ರಪುತಮವ್ಯಾಜಂ ಪುರುಷಾಙ್ಗೋಪಕಲ್ಪಿತಮ್. ವಿಕ್ರಿಯತೇ ಮಹಾಮಾಸಂ ಮುಹುತಾಂ ಗೃಹ್ಯತಾಮಿತಿ" ಮಾಲತೀಂ ೫-೧೨.



ಶಸ್ತ್ರಭೃತ್ ಶಸ್ತ್ರಭೃತ್ (ಪುಂ) 1. ಯೋಧ, ಭಟ. ಶಸ್ತ್ರ  
ವಿಭಾತಿ—ಓ ಭೃತ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ವಿವ್”  
(3-2-61)। (ವಿಂ) 2. ಆಯುಧಗಳನ್ನು ಧರಿಸಿರು  
ವವನು, ಶಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಹಿಡಿದು ಯುದ್ಧಮಾಡುವವನು.  
“ಶಸ್ತ್ರೇಣ ರಕ್ಷ್ಯಂ ಯದಶಕಿರಕ್ಷ್ಯಂ ನ ತದ್ವಶಃಶಸ್ತ್ರಭೃತಾಂ ಕ್ಷಿಣೋತಿ”  
ರಘುಂ 2-40।

ಶಸ್ತ್ರಮಾರ್ಜ ಶಸ್ತ್ರಮಾರ್ಜ (ಪುಂ) ಆಯುಧಗಳಿಗೆ ಸಾಣೆ  
ಹಿಡಿಯುವವನು, ಶಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಉಜ್ಜಿ ಹರಿತಮಾಡು  
ವವನು. ಶಸ್ತ್ರಾಣಿ ಮಾರ್ಜಿ—ಮೃಜು (ಶುದ್ಧಿ) “ಅನ್”  
(3-2-1)।

ಶಸ್ತ್ರವಿದ್ಯಾ ಶಸ್ತ್ರವಿದ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಯುಧಗಳ ಪ್ರಯೋಗ  
ಕ್ರಮವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ.

ಶಸ್ತ್ರಹತ ಶಸ್ತ್ರಹತ (ವಿಂ) ಶಸ್ತ್ರಗಳ ಪ್ರಹಾರದಿಂದ ಹತ  
ನಾದವನು, ಆಯುಧಗಳ ಏಟಿನಿಂದ ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟವನು.  
ಶಸ್ತ್ರೇಣ ಹತಃ।

ಶಸ್ತ್ರಹತಚತುರ್ವಿಂಶತಿ ಶಸ್ತ್ರಹತಚತುರ್ವಿಂಶತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಸ್ತ್ರ  
ದಿಂದ ಹತರಾದವರಿಗೆ ಶಾಸ್ತ್ರಮಾಡುವ ಚತುರ್ವಿಂಶತಿ,  
ಶಸ್ತ್ರಗಳ ಏಟಿನಿಂದ ಮಡಿದವರಿಗೆ ಭಾದ್ರಪದ ಕೃಷ್ಣ  
ಚತುರ್ವಿಂಶತಿಯ ದಿನ ಮಹಾಲಯ ಶಾಸ್ತ್ರ ಮಾಡುವುದ  
ರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. “ಪ್ರಾಯೋಜನಶಸ್ತ್ರಾಗ್ನಿವಿಷಾಧುಧ್ವಿನಾಂ  
ತಥಾ। ಚತುರ್ವಿಂಶತಿ ತು ಕರ್ತವ್ಯಂ ತೃಪ್ತಾರ್ಥಮಿತಿ ನಿಶ್ಚಯಃ”  
ಬ್ರಹ್ಮಪುಂ.।

ಶಸ್ತ್ರಾಜೀವ ಶಸ್ತ್ರಾಜೀವ (ವಿಂ) ಶಸ್ತ್ರಗಳಿಂದ ಬದುಕು  
ವವನು, ಆಯುಧಗಳಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. ಶಸ್ತ್ರಮಾ-  
ಜೀವತಿ—ಆ+ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣ) “ಅನ್” (3-2-1)।  
ಶಸ್ತ್ರೇಣ ಆಜೀವೋ ಜೀವಿಕಾ ಯಸ್ಯ ಇತಿ ವಾ।

ಶಸ್ತ್ರಾಮ್ಯಾಸ ಶಸ್ತ್ರಾಮ್ಯಾಸ (ಪುಂ) ಶಸ್ತ್ರಗಳ ಪ್ರಯೋಗ  
ಮತ್ತು ಉಪಸಂಹಾರಗಳ ಅಭ್ಯಾಸ, ಶಸ್ತ್ರಗಳ ಕಲಿಕೆ.  
ಶಸ್ತ್ರಾಣಾಮ್ಯಾಸಃ।

ಶಸ್ತ್ರಿಕಾ ಶಸ್ತ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಾಕು, ಚೂರಿ.

ಶಸ್ತ್ರಿನ್ ಶಸ್ತ್ರಿನ್ (ವಿಂ) ಶಸ್ತ್ರಧಾರಿ, ಆಯುಧವನ್ನು  
ಹಿಡಿದಿರುವವನು. ಶಸ್ತ್ರಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇತಿಃ” (4-2-114)।

ಶಸ್ತ್ರೀ ಶಸ್ತ್ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಾಕು, ಚೂರಿ. ಶಸ್ತ್ರ “ಜಿವ್”।  
“ಶಸ್ತ್ರೀಶ್ಯಾಮೇರಂಶುಭಿರಾಶು ದ್ರುತಮಮ್” ಮಾಘಂ 4-44।

“ಶಸ್ತ್ರಾ ಯುಧತುಃ ಕೌಚಿತ್” ಕುಮಾಂ 16-45।

ಶಸ್ಯ ಶಸ್ಯ (ನಂ) 1. ಗಿಡ ಮರ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಫಲ.

ಶಸ್ಯತೇ—ಶಸು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಯತ್” (ವಾಂ 6-4-65)।

“ವೃಕ್ಷಾದಿನಾಂ ಫಲಂ ಶಸ್ಯಮ್” ಅಮಂ. 2. ಕಣದಲ್ಲಿರುವ

ಧಾನ್ಯ, ಕಾಳು. “ಶಸ್ಯಂ ಕ್ಷೇತ್ರಗತಂ ಪ್ರಾಹುಃ ಸತುಃ ಧಾನ್ಯ-  
ಮುಚ್ಯತೇ”। (ವಿಂ) 3. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಶ್ಲಾಘ್ಯವಾದ,  
ಉತ್ತಮವಾದ.

ಶಸ್ಯಮಂಜರೀ ಶಸ್ಯಮಂಜರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧಾನ್ಯದ ತೆನೆಗಳ  
ಗೊಂಚಲು, ಬತ್ತ ರಾಗಿ ಜೋಳ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ  
ತೆನೆ. “ಕಣಿಶಂ ಶಸ್ಯಮಂಜರೀ” ಅಮಂ.।

ಶಸ್ಯಶೂಕ ಶಸ್ಯಶೂಕ (ನಂ) ಧಾನ್ಯದ ಮುಳ್ಳು.

ಶಾಕ ಶಾಕ (ಪುಂ) 1. ಸಪ್ತದ್ವೀಪಗಳಲ್ಲೊಂದು ದ್ವೀಪ.

2. ಶಕ್ತಿ, ಬಲ. ಶಕ್ಲ (ಶಕ್ತೌ) “ಘನ್” (3-2-16)।

3. ಶಕಪ್ರವರ್ತಕನಾದ ರಾಜ. 4. ತೇಗದ ಮರ. (ನಂ)

5. ತರಕಾರಿ, ಕಾಯಿಪಲ್ಯ ಮುಂತಾದುವು. “ಶಾಕೋ  
ದ್ವೀಪಾಂತರೇ ಶಕ್ತೌ ನೃಪದ್ರೂಮವಿಶೇಷಯೋಃ। ಶಾಕಂ ಹರಿತಕೇ  
ಚಾಪಿ” ವಿಶ್ವಂ.।

ಶಾಕಟ ಶಾಕಟ (ಪುಂ) 1. ಗಾಡಿಯನ್ನು ಎಳೆಯುವ ಎತ್ತು,  
ಗಾಡಿಯ ಭಾರವನ್ನು ಹೊರುವ ಎತ್ತು. ಶಾಕಟಂ ವಹತಿ—  
ಶಾಕಟ “ಅನ್” (4-4-60)। 2. ಒಂದು ಗಾಡಿಯು  
ಹೊರತಕ್ಕ ಭಾರ (ಹೊರೆ). ಶಾಕಟೇನ ಉಚ್ಯತೇ—ಶಾಕಟ  
“ಅನ್” (4-2-92)। (ವಿಂ) 3. ಗಾಡಿಯ ಸುಬಂಧ  
ವಾದ. ಶಾಕಟಸ್ಯೇದಮ್ “ಅನ್” (4-3-120)।

ಶಾಕಟಾಯನ ಶಾಕಟಾಯನ (ಪುಂ) ವ್ಯಾಕರಣಗಳನ್ನು  
ರಚಿಸಿದ ಎಂಟು ಮಂದಿ ಮಹಾ ವೈಯಾಕರಣರಲ್ಲೊಬ್ಬ  
ಪಂಡಿತ. “ಇಂದ್ರಾಕ್ಷಂದ್ರಃ ಕಾಶಕೃತ್ಸನಾಪಿಶಾಲಿಃ ಶಾಕಟಾಯನಃ।  
ಪಾಣಿನ್ಯಮರಜೇನೆಂದ್ರಾಃ ಜಯಂತ್ಯಷ್ಟಾಕ್ಷಶಾಬ್ದಿಕಾಃ”।

ಶಾಕಟಿಕ ಶಾಕಟಿಕ (ವಿಂ) ಗಾಡಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವವನು.  
ಶಾಕಟೇನ ಚರತಿ—“ಠಕ್” (4-4-6)।

ಶಾಕತರು ಶಾಕತರು (ಪುಂ) ತೇಗದ ಮರ. ಶಾಕಾಕೃಯಃ  
ತರುಃ।

ಶಾಕಪತ್ರ ಶಾಕಪತ್ರ (ಪುಂ) ನಾಗ್ಗಿಮರ, ಶಿಗ್ಗುವೃಕ್ಷ.  
ಶಾಕಸ್ಯೇವ ಪತ್ರಾಪ್ಯಸ್ಯ।

ಶಾಕಮ್ಭರೀ ಶಾಕಮ್ಭರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ.  
ಶಾಕಮ್ಭಿರ್ಮತಿ—ಓ ಭೃತ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಽವ್”  
(3-2-46)। “ಭರಿಷ್ಯಾಮಿ ಸುರಾಃ ಶಾಕಮ್ಭರೀವೃಷಃ ಪ್ರಾಣ-  
ಧಾರಕಃ। ಶಾಕಮ್ಭರೀತಿ ವಿಹೃಯಾತಿ ತದಾ ಯಾಸ್ಯಾಮ್ಯಹಂ  
ಭುವಿ” ದೇವೀಮಾಂ.।

ಶಾಕಯೋಗ್ಯ ಶಾಕಯೋಗ್ಯ (ಪುಂ) ಧನಿಯ, ಕೊತ್ತುಂಬರಿ.  
ಶಾಕೇ ಶಾಕಮಕ್ಷಣೇ ಯೋಗ್ಯಾ।

ಶಾಕರಾಜ ಶಾಕರಾಜ (ಪುಂ) ಚೆಕ್ಕೋಡದ ಸೊಪ್ಪು.  
ಶಾಕಾನಾಂ ರಾಜಾ।



ಶಾಕಲ ಶಾಕಲ (ಪುಂ.ಬಂ.ವಂ) 1. ಶಕಲಯುಷ್ಪ್ರೀತ್ಯವಾದ ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವರು. ಶಾಕಲೇನ ಶ್ವಪಿಣಾ ಪ್ರೋಕ್ತಮಧೀಯತೆ "ಅನ್" (೪-೨-೪೯) । (ಪುಂ) 2. ಶಾಕಲಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವರ ಸಮೂಹ, ಅವರ ಪರಂಪರಾಸಂಬಂಧ. ಶಾಕಲಾನಾಂ ಸಮೂಹಃ ವಾ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೮) । ಪಕ್ಷೆ "ವುನ್" (೪-೩-೧೨೬) । ಶಾಕಲಕಃ ಶಾಕಲಕಃ ।

ಶಾಕಲ್ಯ ಶಾಕಲ್ಯ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ವೈಯಾಕರಣ.

ಶಾಕಶಾಕಟ ಶಾಕಶಾಕಟ (ನಂ) ತರಕಾರಿಯ ತೋಟ, ಕಾಯಿಪಲ್ಯಗಳನ್ನು ಬೆಳೆಯುವ ಭೂಮಿ. ಶಾಕಸ್ಯ ಭವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ "ಶಾಕಟಃ" (ವಾಂ ೪-೨-೨೯) ।

ಶಾಕಶಾಕಿನ ಶಾಕಶಾಕಿನ (ನಂ) ತರಕಾರಿಯ ತೋಟ, ಕಾಯಿಪಲ್ಯ ಬೆಳೆಯುವ ಭೂಮಿ. ಶಾಕಸ್ಯ ಭವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ "ಶಾಕಿನಃ" (ವಾಂ ೪-೨-೨೯) ।

ಶಾಕಾಙ್ಗ ಶಾಕಾಂಗ (ನಂ) ಮೆಣಸು. ಶಾಕಸ್ಯ ಅಕ್ಷಮಿವ ।

ಶಾಕಾಪ್ಯ ಶಾಕಾಪ್ಯ (ಪುಂ) ತೇಗದ ಮರ.

ಶಾಕಾಪ್ಲ ಶಾಕಾಪ್ಲ (ನಂ) ಹುಣಿಸೆ ಹಣ್ಣು. ಶಾಕೇ ಅಪ್ಲೋ ಯಸ್ಯ ।

ಶಾಕಿನಿ ಶಾಕಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತರಕಾರಿಯಿಂದ ತುಂಬಿರುವ ಭೂಮಿ, -ಕ್ಷೇತ್ರ. ಶಾಕ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) । ದುರ್ಭಿಕ್ಷಕಾಲದಲ್ಲಿ ಅವಲಂಬಿಸಬೇಕಾದ ಒಬ್ಬತ್ತು ವಿಧ ವೃತ್ತಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. (1) ಶಕಟಃ-ಧಾನ್ಯ ಮೊದಲಾದುವುಗಳನ್ನು ಸಾಗಿಸಿ ಜೀವನ ಮಾಡುವ ಸಾಧನ (ಗಾಡಿ). (2) ಶಾಕಿನಿ-ಕಾಯಿಪಲ್ಯಗಳನ್ನು ಬೆಳೆದು ವಿಕ್ರಯಿಸಿ ಜೀವಿಸುವ ಒಂದು ವೃತ್ತಿ. (3) ಗಾವಃ-ಹಸುಗಳನ್ನು ಸಾಕಿ ಅವುಗಳ ಹಾಲಿನ ವ್ಯಾಪಾರ. (4) ಜಾಲಮ್-ಮತ್ಸ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನು ಹಿಡಿದು ಅದರಿಂದ ಮಾಡುವ ಜೀವನ. (5) ಅಸ್ಯಂದನಮ್-ವಾಸಿಸುವ ಸ್ಥಾನವನ್ನು ಬಿಡದೆ ಇರುವುದು. (6) ವನಮ್-ಅರಣ್ಯದಿಂದ ಫಲಪುಷ್ಪ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ತಂದು ಮಾರಿ ಜೀವನ ನಡೆಸುವುದು. (7) ಅನುಪಮ್-ಸಮೃದ್ಧವಾದ ಜಲದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪ್ರದೇಶ ದಿಂದ ತಾವರೆದಂಟು ಗೆಡ್ಡೆ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಅದರಿಂದ ಮಾಡುವ ಜೀವನ. (8) ಪವಂತಃ-ಗೈರಿಕಾದಿ ಧಾತುಗಳನ್ನು ತಂದು ಅದರ ವಿಕ್ರಯದಿಂದ ಮಾಡುವ ಜೀವನ. ಮತ್ತು (9) ರಾಜಾ-ಭಿಕ್ಷೆ ಬೇಡಿ ಜೀವಿಸಲು ರಾಜನ ಆಶ್ರಯ ಪಡೆಯುವುದು. ಈ ಒಬ್ಬತ್ತೂ ದುರ್ಭಿಕ್ಷಕಾಲದ ಜೀವನೋಪಾಯಗಳು. 2. ದುರ್ಗಾ ದೇವಿಯ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರಿ. ಶಾಕಿನಿ ಶಾಕಿನಿ ಕ್ಷೇಚರಿ ಯೋಗಿನಿ ಇವರು ದುರ್ಗಾದೇವಿಯ ಅನುಚರಿಯರು.

ಶಾಕುನ ಶಾಕುನ (ಪುಂ) 1. ಪಶು ಪಕ್ಷಿ ಮೊದಲಾದವುಗಳ ಗಮನಾಗಮನ ಹಾರಾಟ ಇವುಗಳ ಶಕುನದಿಂದ ಶುಭಾ ಶುಭ ಫಲಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಗ್ರಂಥ. ಶಕುನಮಘಿಕೃತ್ಯ ಕೃತೋ ಗ್ರಂಥಃ "ಅನ್" (೪-೩-೮೭) । "ಶುಭಾಶುಭಜ್ಞಾನವಿನಿರ್ಣಯಾರ್ಥೋ ಹೇತುರ್ನೃಣಾಂ ಯಃ ಶಕುನಃ ಸ ಉತ್ತಮಃ । ಗತಿಃ ಸ್ವರಾಜಲೋಕನಿವಾಸೇಷ್ಠಾಂ ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತಾಯಾಮೋ ದ್ವಿಪದಾದಿಕಾನಾಮ್ । ಲೋಕೇಷುನಾ ಶಾಕುನಸಂಜ್ಞಕೇನ ಜ್ಞಾನೇನ ವಿಜ್ಞಾತಸಮಸ್ತಕರ್ಮಾ । ನಾಪಾಯಕೃಪೇ ಪತತಿ ಪ್ರಸರ್ಪನ್ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಹಿ ದಿವ್ಯಾ ದೃಗತಿಂದ್ರಿಯೇಷು" । (ವಿಂ) 2. ಪಕ್ಷಿ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಶಕುನಸ್ಯಾಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) । "ದ್ವಿ ಮಾಸೌ ಮತ್ಸ್ಯಮಾಸೇನ ತ್ರಿನ್ ಮಾಸಾನ್ ಹಾರಿಷೇನ ತು । ಅರೇಣಾಪ ಚತುರಃ ಶಾಕುನೇನಾಪ ಪಶು ವೈ" ಮನುಂ ೩-೨೬೮ ।

ಶಾಕುನಿಕ ಶಾಕುನಿಕ (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿಗಳನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವವನು. ಶಕುನಾನ್ ಹಂತಿ-ಶಕುನ "ಠಕ್" (೪-೪-೩೪) । "ವ್ಯಾಜಾನ್ ಶಾಕುನಿಕಾನ್ ಗೋಪಾನ್ ಕವರ್ತಾನ್ ಮೂಲಖಾನ್ಕಾನ್" ಮನುಂ ೮-೨೬೦ ।

ಶಾಕುನೇಯ ಶಾಕುನೇಯ (ಪುಂ) 1. ವೃಕಾಸುರ, ಶಕುನೇಯ ಮಗ. ಶಕುನೇಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೩) । "ಶಾಕುನೇಯ ಭವಾನ್ ವ್ಯಕ್ತಂ ಶ್ರಾಂತಃ ಕಿ ದೂರಮಾಗತಃ । ಕ್ಷಣಂ ವಿಶ್ರಾಮ್ಯತಾಂ ಪುನ ಆತ್ಮಾಯ ವಿಶ್ವಕಾಮಪುಕ್" ಮಾಗಂ ೧೦-೮೮-೨೯ । 2. ಹಕ್ಕಿಯ ಮರಿ.

ಶಾಕುಂತಲ ಶಾಕುಂತಲ (ನಂ) ಮಹಾಕವಿ ಕಾಳಿದಾಸ ವಿರಚಿತ ಒಂದು ನಾಟಕ, ಅಭಿಜ್ಞಾನಶಾಕುಂತಲ.

ಶಾಕುಂತಲೇಯ ಶಾಕುಂತಲೇಯ (ಪುಂ) ಶಕುಂತಲೆಯ ಪುತ್ರ, ಭರತಚಕ್ರವರ್ತಿ. ಶಕುಂತಲಾಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೦) ।

ಶಾಕುಲಿಕ ಶಾಕುಲಿಕ (ಪುಂ) ಬೆಸ್ಮರವನು, ಮತ್ಸ್ಯಗಳನ್ನು ಹಿಡಿದು ಕೊಲ್ಲುವವನು. ಶಕುಲಾನ್ ಹಂತಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೩೪) ।

ಶಾಕವರ ಶಾಕವರ (ಪುಂ) ವ್ಯಾಪಕ, ಎತ್ತು. ಶಾಕವರ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮) ।

ಶಾಕ್ತ ಶಾಕ್ತ (ವಿಂ) ಶಕ್ತಿದೇವತೆಯ ಉಪಾಸಕ. ಶಾಕ್ತಿ-ದೇವತಾ ಅಸ್ಯ "ಅನ್" (೪-೨-೨೪) । "ಸ್ವರ್ಗೋ ಮರ್ತ್ಯೋ ವ ಪಾತಾಲೋ ನಾಸ್ತಿ ಶಾಕ್ತಾತ್ ಪರಃ ಪ್ರಿಯಃ । ಸೌರಾಷ್ಟ್ರಾ ಗಾಣ-ಪತ್ಯಾನಾಂ ವಂಶವಾನಾಂ ತಥೈವ ಚ । ತದಂತೇ ಚೈವ ಶಾಕ್ತಾಃ ಸ್ಯುಃ ಕ್ರಮಶಃ ಕ್ರಮಶಃ ಪ್ರಿಯೇ । ಶೃಣು ದೇವಿ ವರಾರೋಹೇ ನಾಸ್ತಿ ಶಾಕ್ತಾತ್ ಪರೋ ಜನಃ" ।

ಶಾಕತೀಕ ಶಾಕತೀಕ (ವಿಂ) ಶಕ್ತಿಯೇ ಆಯುಧವಾಗಿ ಉಳ್ಳವನು. ಶಾಕ್ತಿಃ ಪ್ರಹರಣಮಸ್ಯ "ಈಕ್" (೪-೪-೪೯) ।



“ಅಮೌಚಿ ಶಾಖಿ: ಶಾಕ್ತೀಕ: ಲೋಹಜಾ ನ ಶರೀರಜಾ”  
ಮಾಘಂ ೧೯-೫೯।

ಶಾಖ್ಯ ಶಾಕ್ಯ (ಪುಂ) ಒದ್ದದೇವ. ಶಕೋಽಭಿಜನೋಽಸ್ಯ  
“ಖ್ಯ:” (೪-೩-೯೨)।

ಶಾಖ್ಯಮುನಿ ಶಾಕ್ಯಮುನಿ (ಪುಂ) ಶಾಕ್ಯಮಂಡಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ  
ಒಬ್ಬ ಮುನಿ. ಶಾಖ್ಯಾಸಿ ಮುನಿಃ।

ಶಾಖ್ಯಾಸಿಹ ಶಾಕ್ಯಸಿಂಹ (ಪುಂ) ಶಾಕ್ಯಮುನಿ, ಒದ್ದ.  
ಶಾಖ್ಯ: ಸಿಹ ಇವ।

ಶಾಖೀ ಶಾಕ್ಯೇ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 2. ಇಂದ್ರನ  
ಪತ್ನಿ.

ಶಾಖ ಶಾಖ (ಪುಂ) ಕೃತ್ತಿಕಾಸುತ, ಕಾರ್ತಿಕೇಯ. “ಅಗ್ನಿ-  
ಪುತ್ರ: ಕುಮಾರಸ್ತು ಶರಸ್ತಮ್ಬೇ ವ್ಯಜಾಯತ। ತಸ್ಯ ಶಾಖೋ  
ವಿಶಾಖಃ ನೈಮೇಯಃ ಪುಷ್ತಜ:। ಅಪತ್ಯಂ ಕೃತ್ತಿಕಾಣಾಂ ಚ  
ಕಾರ್ತಿಕೇಯಸ್ತತ: ಸ್ಮೃತ:”।

ಶಾಖಾ ಶಾಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮರದರಂಬೆ. ಶಾಖತಿ—ಶಾಖ್  
(ವ್ಯಾಪ್ತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ಮುರ್ದಿತಮಘಮುಜೋ  
ಮುಜೇನ ಶಾಖಾಶ್ಚಲಿತವಿಷ್ಣುಶ್ಚಲಶ್ಚಕ್ಷುಕಂ ಭುವತ್ಯಾ:” ಮಾಘಂ  
೭-೩೦। 2. ವೇದದ ಭಾಗ. ಋಕ್‌ಶಾಖಾ ಯಜು:ಶಾಖಾ  
ಸಾಮಶಾಖಾ ಇತ್ಯಾದಿ. “ಯತ್ನೇನ ಭೋಜಯೇಚ್ಛಾಡೇ ಬಹ್ವಾಂ  
ವೇದಪಾರಗಮ್। ಶಾಖಾಂತಗಮಯಾಧ್ಯಯಂ ಛಂದೋಗಂ ತು ಸಮಾಪ್ತಿಕಮ್”  
ಮನುಂ ೩-೧೪೫। 3. ಪ್ರಕಾರ, ವಿಧ, ಬಗೆ. “ಬಹುಶಾಖಾ-  
ಹನಂತಾಃ ಬುದ್ಧಯೋಽಪ್ಯವಸಾಯಿನಾಮ್” ಗೀತಾ ೨-೪೧।  
4. ಬಾಹು, ತೋಳು. 5. ಒಂದು ಪಕ್ಷಿ, ಒಂದು ಕಕ್ಷಿ,  
ಒಂದು ಪಂಗಡ. 6. ಅಂತಿಕ, ಸಮೀಪ. “ಶಾಖಾ ದ್ರುಮಾಂಶೋ  
ವೇದಾಂಶೋ ಮುಜೇ ಪಕ್ಷಾಂತರೇಂತಿಕೇ” ಹೇಮಂ। “ಶಾಖಾ ಪಕ್ಷಾಂತರೇ  
ಬಾಹೋ ವೇದಭಾಗದ್ರುಮಾಕ್ಷಯೋ:” ಮೇದಿಂ।

ಶಾಖಾಚಕ್ರಮಣ ಶಾಖಾಚಕ್ರಮಣ (ನಂ) ರೆಂಬೆಯಿಂದ  
ರೆಂಬೆಗೆ ಹಾರುವುದು. ಶಾಖಾಃ ಚಕ್ರಮಣಮ್।

ಶಾಖಾನಗರ ಶಾಖಾನಗರ (ನಂ) ಉಪನಗರ, ಬಡಾವಣೆ,  
ಪ್ರಧಾನನಗರದ ಸಮೀಪದ ನಗರ. ಶಾಖೇವ ನಗರಮ್।  
ಪ್ರಧಾನನಗರದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸಲು ಸ್ಥಳಾವಕಾಶವಿಲ್ಲದ ಜನರಿ-  
ಗಾಗಿ ನಗರದ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಒಂದು ಉಪ-  
ನಗರ. ಇದು ಮೂಲನಗರದ ಶಾಖೆಯಂತಿರುವುದರಿಂದ  
ಶಾಖಾನಗರ. “ಆರಮ್ಯ ಮೂಲನಗರಾದಪರಂ ನಗರಂ ಹಿ  
ಯತ್। ತದಮಿಥ್ಯಂದಿರಮಣಂ ಶಾಖಾನಗರಮಿತ್ಯಪಿ”। -ಪುರಸ್-  
-ಪುರಮ್.

ಶಾಖಾಪಿತ ಶಾಖಾಪಿತ (ಪುಂ) ಹಸ, ಮತ್ತು ಪಾದಗಳ  
ತುದಿಯ ಭಾಗಗಳ ಉರಿ. ಕೈ ಮತ್ತು ಕಾಲುಗಳ ಬೆರಳು-  
ಗಳ ಉರಿ.

ಶಾಖಾಮೃಗ ಶಾಖಾಮೃಗ (ಪುಂ) 1. ಮನರಂ, ಕಟಿ. ಶಾಖಾ-  
ಚಾರಿ ಮೃಗ:। ಶಾಕಪಾಂ। “ಮಾಯಾಮೃಗೇಣ ತವ ಮೆಥಿಲಿ  
ವಶಿತ್ರಾಃ ಶಾಖಾಮೃಗೇಣ ಪುನರಾಗತಿರಿದ್ರಿಯುಕ್ತಮ್” ಅಂ-  
ರಾಂ। 2. ಅಳಿಲು.

ಶಾಖಾರಂಥ ಶಾಖಾರಂಥ (ಪುಂ) ತನ್ನ ಶಾಖೆಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು  
ಬೇರೆ ಶಾಖೆ (ವೇದಶಾಖೆ) ಯನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದ  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. “ಶಾಖಾರಂಥೋಽಪ್ಯಶಾಖಕ:” ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ಶಾಖಾರಥ್ಯಾ ಶಾಖಾರಥ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕವಲು ರಸ್ತೆ, ಮುಖ್ಯ  
ರಸ್ತೆಯಿಂದ ಕವಲೊಡೆದ ರಸ್ತೆ, ನಾಲ್ಕು ಧನು:ಪ್ರಮಾಣದ ರಸ್ತೆ. “ಅನುಹಂತೋ, ಅನುಹಂತೋ, ಅನುಹಂತೋ  
ಯುಗಮ್” ವೇಜಂ। “ಏನುಷಿ ಚೈವ ಚತ್ವಾರಿ ಶಾಖಾರಥ್ಯಾಸ್ತು  
ನಿರ್ಮಿತಾ:” ದೇವೀಪುಂ।

ಶಾಖಾಲ ಶಾಖಾಲ (ಪುಂ) ಹಬ್ಬಿಗಿಡ.

ಶಾಖಾಶಿಫಾ ಶಾಖಾಶಿಫಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮರದ ರೆಂಬೆಗಳಿಂದ  
ಬೆಳೆದು ಜೋಲಾಡುವ ಬೇರು, ಅಲದ ಮರದ ರೆಂಬೆಗಳಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟಿ ಜೋಲಾಡುವ ಬೀಜ, ಅವರೋಹ.

ಶಾಖಿನ್ ಶಾಖಿನ್ (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಶಾಖಾ:  
ಸಂತಯಸ್ಯ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೫)। “ಶಕ್ಯಮಙ್ಗುಲಿಮಿ-  
ಹತೀತರಃ ಶಾಖಿನಾಂ ಪತಿತಪುಷ್ಪಪೇಶಲ:” ಕೃಷ್ಣಾಂ ೮-೭೨।  
2. ವೇದ. 3. ವೇದಶಾಖೆಯನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿ-  
ದವನು. 4. ತುರುಷ್ಕ. (ವಿಂ) 5. ವೇದದ ಯಾವ  
ದಾದರೊಂದು ಶಾಖೆಗೆ ಸೇರಿದವನು. 6. ರೆಂಬೆಗಳುಳ್ಳ.  
“ಶಾಖೀ ಸ್ಯಾತ್ ಪಾದಪೇ ವೇದೇ ತುರ್ವಕಾಽಪ್ಯಜನೇ ಪುಮಾನ್”  
ಮೇದಿಂ।

ಶಾಖೋಟ(ಕ) ಶಾಖೋಟ(ಕ) (ಪುಂ) ಕಾರೆಗಿಡ, ಒಂದು  
ಜಾತಿಯ ಮುಳ್ಳುಗಿಡ. “ಕಸ್ತುರಂ ಭೋಕಯಾಮಿ ದೇವಹತಕಂ  
ಮಾಂ ವಿಧಿ ಶಾಖೋಟಕಂ ವೇರಾಗ್ಯಾದಿವ ವಕ್ಷಿ ಸಾಧು ವಿಧಿತಂ  
ಕಸ್ಮಾದಿದಂ ಕಥ್ಯತೇ। ವಾಮೇನಾತ್ರ ವಟಸ್ತಮಭ್ಯಗಜನ: ಸರ್ವಾತ್ಮನಾ  
ಸೇವತೇ ನ ಚ್ಛಾಯಾಪಿ ಪರೋಪಕಾರಕರಿಣಿ ಮಾರ್ಗಸ್ಥಿತಸ್ಯಾಪಿ  
ಮೇ” ಕುವಂ।

ಶಾಖೂರ ಶಾಖೂರ (ಪುಂ) 1. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. ಶಾಖೂರಸ್ಯಾಯಮ್  
“ಅಘ್” (೪-೩-೧೨೦)। “ರಕ್ಷಾಜಙ್ವಾನ್ ಕಕುಶಾನ್  
ಗೌವಲಿವರ್ದಶ್ಚ ಶಾಖೂರ:” ಅಭಿಂ ಚಿಂ। (ವಿಂ) 2.  
ಶಂಕರನ ಸಂಬಂಧವಾದ.

ಶಾಖೂರಿ ಶಾಖೂರಿ (ಪುಂ) 1. ಗಣಪತಿ, ವಿನಾಯಕ.  
2. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಸ್ಕಂದ, ಪರಮೇಶ್ವರಿ. ಶಾಖೂರಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್  
“ಇನ್” (೪-೧-೯೫)। “ಶಾಖೂರಿವಿಘ್ನಪೇ ಸ್ಕಂದೇ” ವಿಷ್ಣುಂ।

ಶಾಖ್ ಶಾಖ (ವಿಂ) ಶಂಖದ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಶಾಖ್‌ಸ್ಯೇದಮ್  
“ಅಘ್” (೪-೩-೧೨೦)।



ಶಾಸ್ತ್ರೀಯ ಶಾಂಖ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಶಂಖದ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು, ಶಂಖದಿಂದ ಒಡವೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. 2. ಶಂಖವನ್ನು ಉದುವವನು. ಶಾಸ್ತ್ರೀಯ ಶಿಲ್ಪಮಸ್ಯ "ಶಕ್" (೪-೪-೫೫) । "ತವರಮಾಣ-ಶಾಸ್ತ್ರೀಯಸವೇಗವದನಪವನಾಭಿಪೂರಿತಃ" ಮಾಘಂ ೧೫-೭೨ ।

ಶಾಟ್ ಶಾಟಿ (ಪುಂ) ವಸ್ತ್ರ. ಉಡುಗೆ. "ದೂರತಃ ಶೋಭತೇ ಮೂಲಃ ಲಂಬಶಾಟ್ಪಟಾವತಃ । ತಾವಚ್ಚ ಶೋಭತೇ ಮೂಲಃ ಯಾವತ್ ಕಿಂಚಿನ್ನ ಭಾಷತೇ" ಚಾಣಕ್ಯಃ ।

ಶಾಟಕ ಶಾಟಕ (ಪುಂ) ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ.

ಶಾಟಿಕಾ ಶಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ.

ಶಾಟಿ ಶಾಟೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. ಶಾಟಯತಿ - ಶಾಟ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ಡೀಪ್" (೪-೧-೪೧) ।

ಶಾಟಾಯನ ಶಾಟಾಯನ (ನಂ) ಕರ್ವಾಚರಣೆಯಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಲೋಪದೋಷ ಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ ಹೋಮ.

ಶಾಠ್ಯ ಶಾಠ್ಯ (ನಂ) 1. ಧೂರ್ತನ, ವಂಚನೆ, ಕುತಂತ್ರ, ಮೋಸ. ಶಾಠ್ಯ ಭಾವಃ "ಽಪ್ಯಜ್" (೫-೧-೧೨೪) । "ಆಜನ್ಮನಃ ಶಾಠ್ಯಮಶಿಕ್ಷಿತೌ ಯಸ್ತಸ್ಯಾಪ್ರಮಾಣಂ ವಚನಂ ಜನಸ್ಯ" ಶಾಕುಂ ೫-೨೫ । "ದಾಕ್ಷಿಣ್ಯಂ ಸ್ವಜನೇ ದಯಾ ಪರಜನೇ ಶಾಠ್ಯಂ ಸದಾ ದುರ್ಜನೇ" ಭರ್ತುಂ ೨-೯೩ । 2. ಚಾತುರ್ಯ, ನಿಪುಣತೆ, ಬುದ್ಧಿವಂತಿಕೆ. "ದೇವ್ಯಾ ನಿಹೋತುಮಿಚ್ಛೋರಿತಃ ಸುರಸರಿತಂ ಶಾಠ್ಯಮವ್ಯಾಧಿಭೋವಃ" ಮುದ್ರಾಂ ೧-೧ ।

ಶಾಣ ಶಾಣ (ಪುಂ) 1. ಸಾಣೆಕಲ್ಲು, ಕತ್ತಿಯನ್ನು ಮಸೆಯುವ ಕಲ್ಲು. 2. ಒರೆಗಲ್ಲು. "ಮಣಿಃ ಶಾಣೋಲ್ಲೇಹಃ ಸಮರ-ವಿಜಯಿ ಹೇತಿವಲಿತಃ ಮದಕೋಣಿ ನಾಗಃ ಶರದಿ ಸರಿತಃ ಶ್ಯಾನಪುಲಿನಾಃ" ಕುವಂ । 3. ನಾಲ್ಕು ಮಾಷಗಳ ತೂಕ. "ಮಾಷಃ ಚತುರ್ಭಿಃ ಶಾಣಃ ಸ್ಯಾತ್ ವರಣಃ ಸ ನಿಗದ್ಯತೇ" ಭಾವಪ್ರಂ । "ಶಾಣೋ ಮಾಷಚತುಷ್ಟಯೇ ಲೋಹಾದೀನಾಂ ಚ ವಿಕಥೇ" ಮೇದಿಂ । (ನಂ) 4. ಸಣಬಿನ ದಾರದ ಬಟ್ಟೆ. ಸಣಬಿನ ದಾರದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ವಸ್ತ್ರ. ಶಣಸ್ಯ ವಿಕಾರಃ "ಅಞ್" (೪-೧-೧೩೪) । "ವಸೀರನ್ನಾನುಪೂರ್ವ್ಯಣ ಶಾಣ-ಕ್ಷೌಮಾವಿಕಾನಿ ಚ" ಮನುಂ ೨-೪೧ ।

ಶಾಣಾಜೀವ ಶಾಣಾಜೀವ (ಪುಂ) ಆಯುಧಗಳಿಗೆ ಸಾಣೆ ಹಿಡಿದು ಜೀವಿಸುವವನು. "ಶಾಣಾಜೀವಃ ಶಸ್ತ್ರಮಾಜಿಂ ಭ್ರಮಾಸಕ್ತೌಽಸಿಧಾವಕಃ" ಹೇಮಂ ।

ಶಾಣಿ ಶಾಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಣಬಿನ ಬಟ್ಟೆ. ಶಣಸ್ಯ ವಿಕಾರಃ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೩೪) । "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) ।

2. ಗೋಣೀಚೀಲ. "ಶಾಣಿ ಗೋಣಿ ಚಿದ್ರವಸ್ತ್ರೇಶ್ವೀರಂ ಖಂಡಲಮಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ವೇಜಂ । 3. ವಸ್ತ್ರಗೃಹ, ಡೇರೆ. "ಶಾಣಿ ಪ್ರಾವರಣಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ । 4. ಒರಟು ಬಟ್ಟೆ. 5. ಹಸ್ತಕಣ್ಣು ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ಸಂಜ್ಜೆ. 6. ಛಿಂದಿಬಟ್ಟೆ.

ಶಾಣಿಡಲ್ಯ ಶಾಂಡಿಲ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಬಿಲ್ವವೃಕ್ಷ, ಬಿಲ್ವಪತ್ರ ಮರ. ಶಾಡಿ (ಋಜಾಯಾಮ್) "ಇಲ್ಯ" (೩ಂ ೧-೫೪) । "ಬಿಲ್ವೇ ಶಾಣಿಡಲ್ಯಶೇಲ್ಮಣಿ" ಅಮಂ । 2. ಶಾಂಡಿಲ್ಯ ಮುನಿ. 3. ಒಂದು ಅಗ್ನಿ, ಅಗ್ನಿಯು ಒಂದು ರೂಪ. "ಶಾಣಿಡಲ್ಯಃ ಪಾವಕಾಂತರೇ । ಮುನಿಭೇದೇ ಚ ಮಾಲೂರೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಶಾತ ಶಾತ (ನಂ) 1. ಸುಖ, ಸಂತೋಷ. ಶ್ಯತಿ ಕ್ಷಮ್ - ಶೌ (ತನುಕರಣೇ) "ತನ್" ಬಾಹುಂ । 2. ನಾಶ, ಅನಿವೃತ್ತಿ, ಧ್ವಂಸ. (ವಿಂ) 3. ಸುಖವುಳ್ಳ, ಸಂತೋಷವುಳ್ಳ. 4. ಹರಿತವಾದ, ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ. "ಸಂದಾನಾಂತಾದಸ್ತ್ರೀಮಿಃ ಶಿಕ್ಷಿತಾಸ್ತ್ರೇರಾವಿಷ್ಯಾಃ ಶಾತಶಸ್ತ್ರಾವಲೂನಾಃ" ಮಾಘಂ ೧೮-೭೧ । 5. ಕೃಶವಾದ, ತಳುವಾದ. 6. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಶೌ (ತನುಕರಣೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । 7. ದುರ್ಬಲ, ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದವನು.

ಶಾತಕುಂಭ ಶಾತಕುಂಭ (ನಂ) 1. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ಶಾತಕುಂಭೇ ಪವಂತೇ ಭವಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೫೩) । "ದ್ರುತಶಾತ-ಕುಂಭನಿಭಮಂಶುಮತೌ ವಪುರರ್ಧಮಗ್ನವಪುಃ ಪಯಸಿ" ಮಾಘಂ ೯-೯ । (ಪುಂ) 2. ದತ್ತೂರಿ ಗಡ. 3. ಗನ್ನೇರಳೆ ಗಡ. "ಶಾತಕುಂಭಂ ಸುವರ್ಣಂ ಸ್ಯಾತ್ ಶಾತಕುಂಭೋಽಶ್ವಮಾರಕೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಶಾತಕೌಂಭ ಶಾತಕೌಂಭ (ವಿಂ) ಸುವರ್ಣದಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ, ಚಿನ್ನದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಶತಂ ಚ ಶಾತ-ಕೌಂಭಾನಾಂ ಕುಂಭಾನಾಮಗ್ನಿವಚ್ಛಸಾಮ್" ರಾಮಾಂ ।

ಶಾತನ ಶಾತನ (ನಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸುವುದು. 2. ನಾಶ ಮಾಡುವುದು. ಶಾಡಲ್ (ಶಾತನೇ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । "ವಸಂತೇ ಸರ್ವಶಸ್ಯಾನಾಂ ಜಾಯತೇ ಪತ್ರ-ಶಾತನಮ್" । 3. ಹರಿತಮಾಡುವುದು. (ವಿಂ) 4. ಕತ್ತರಿಸುವ. 5. ನಾಶಪಡಿಸುವ. ಶಾಡಲ್ + ಣಿಚ್ ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) । "ಸ ಪೂರ್ವತಃ ಪವಂತಪಕ್ಷಶಾತನಂ ದದಶ ದೇವಂ ನರದೇವಸಂಭವಃ" ರಘುಂ ೩-೪೨ । 6. ಹರಿತ ಮಾಡುವ.

ಶಾತನೀಯ ಶಾತನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಹರಿತವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಹರಿತವಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ, ಚೂಪಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ಹರಿತವಾಗಿ ಮಾಡಲು ಶಕ್ತವಾದ. ಶಾಡಲ್ (ಶಾತನೇ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) ।



4. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ನಾಶಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 6. ನಾಶಪಡಿಸಲು ಶಕ್ತವಾದ. "ತವ್ಯ:" (3-1-96)।  
-ಯಿತವ್ಯ: -ಯಿತವ್ಯ:.

ಶಾತಪತ್ರಕ ಶಾತಪತ್ರಕ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಬೆಳದಿಂಗಳು.  
ಶಾತಮಾನ ಶಾತಮಾನ (ವಿಂ) ನೂರರಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಶತಮಾನೇನ ಕ್ರೀತಮ್ "ಅನ್" (4-1-29)।

ಶಾತಯತ್ ಶಾತಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಹರಿತಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಮೊನಚು ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಶಾಲ್ (ಶಾತನೆ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (3-2-124)। 2. ನಾಶಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (4-1-6)। -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.  
"ಶಾನಕ್" (3-2-124)। -ಯಾನ: -ಯಮಾನ:.

ಶಾತಿಸ ಶಾತಿಸ (ವಿಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಶಾಲ್ (ಶಾತನೆ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102)।  
"ಮೃಚುಕುಂದತಲ್ಪಶರಣಸ್ಯ ಮಗಧಪತಿಸಾತಿಸತೌಜಸ:" ಮಾಘಂ 14-24। 2. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತುಂಡುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
"ಶಾತಿಸಪ್ರಚುರಪತ್ರಸಂಹತಿ" ಮಾಘಂ 14-60।

ಶಾತಿಸವತ್ ಶಾತಿಸವತ್ (ವಿಂ) 1. ಕತ್ತರಿಸಿದವನು, ತುಂಡುಮಾಡಿದವನು, ಚೂರುಚೂರುಗಿ ಮಾಡಿದವನು. ಶಾಲ್ (ಶಾತನೆ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ವತು:" (3-2-102)।  
2. ನಾಶಪಡಿಸಿದವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡೀಪ್" (4-1-6)।  
-ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

ಶಾತೋದರೀ ಶಾತೋದರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಳುವಾದ ಹೊಟ್ಟೆ, ಯುಳ್ಳ ಹೆಗ್ಗಸು. ಶಾತಮುದರಂ ಯಸ್ಯಾ: "ಡೀಪ್" (4-1-44)। "ಆವಿರ್ಮವದನಪಯೋಧರಬಾಹುಮೂಲಾ ಶಾತೋದರೀ ಯುವದೃಶಾಂ ಕ್ಷಣಮುತ್ಸವೋಭೂತ್" ಮಾಘಂ 4-23।

ಶಾತ್ರವ ಶಾತ್ರವ (ನಂ) 1. ಶತ್ರುತ್ವ, ವೈರ, ಹಗೆತನ, ದ್ವೇಷ. ಶತ್ರುರ್ಮಾವಿ: "ಅನ್" (4-1-131)। 2. ಶತ್ರುಗಳ ಸಮೂಹ. ಶತ್ರುಣಾಂ ಸಮೂಹ: "ಅನ್" (4-2-37)।  
"ಶಾತ್ರವಂ ಭಾವಸಂಹತೌ: ಶತ್ರುಣಾಂ ಶಾತ್ರವೋ ದ್ವಿಪಿ" ಮೇದಿಂ।  
3. ಶತ್ರುಸಂಬಂಧವಾದ. ಶತ್ರುರಿದಮ್ "ಅನ್" (4-3-120)। "ತಾಮ್ಬೂಲಿನಾಂ ದಲೇಸ್ತತ್ರ ರಚಿತಾಪಾನ-ಭೂಮಯ:। ನಾರಿಕೇಲಾಸವಂ ಯೋಧಾ: ಶಾತ್ರವಂ ಚ ಪಪುರ್ಯಶ:" ರಘುಂ 4-42। (ಪುಂ) 4. ಶತ್ರು, ಹಗೆ, ವೈರಿ. ಶತ್ರುರೇವ -ಶತ್ರು "ಅನ್" (4-4-36)। "ನೀತೇ ಭೇದಂ ಭೀತಧಾರಾ-ಭಿಘಾತಾತ್ ಅಮೋದಾಭೇ ಶಾತ್ರವೇನಾಪರಸ್ಯ" ಮಾಘಂ 16-20।

ಶಾತ್ರವೀಯ ಶಾತ್ರವೀಯ (ವಿಂ) ಶತ್ರುಸಂಬಂಧವಾದ. ಶಾತ್ರವಸ್ಯೇದಮ್ "ಕ್ತ:" (4-2-114)। "ಉತ್ಕಿಷ್ಠಯೋಚ್ಚೇ: ಪ್ರಸ್ಕುರಂತಂ ರದಾಮ್ಯಾಮಿಷಾದಂತ: ಕುಂಜರಂ ಶಾತ್ರವೀಯಮ್" ಮಾಘಂ 16-36।

ಶಾದ ಶಾದ (ಪುಂ) 1. ಹಸುರು ಹುಲ್ಲು, ಗರಿಕೆಹುಲ್ಲು. ಶಾಲ್ (ಶಾತನೆ) "ಧನ್" (3-3-16)। 2. ಕೆಸರು. ಷ್ಯತಿ-ಶೋ (ತನುಕರಣ) "ದ:" (3-4-97)। "ಶಾದ: ಸ್ಯಾತ್ ಕರ್ಮೇ ಶಾಘೇ" ಮೇದಿಂ।

ಶಾದಹರಿತ ಶಾದಹರಿತ (ವಿಂ) ಎಳೆಯ (ಹಸುರು) ಹುಲ್ಲಿನಿಂದ ಹಸುರಾದ (ಭೂಮಿ). ಶಾದಹರಿತ:।

ಶಾದ್ವಲ ಶಾದ್ವಲ (ವಿಂ) ಎಳೆಯ (ಹಸುರು) ಹುಲ್ಲಿನಿಂದ ಕೂಡಿರುವ (ಭೂಮಿ). ಶಾದೋ ಬಾಲತೃಣಮಸ್ತತ್ರ - "ಛ್ವಲಕ್" (4-2-66)। "ಮುಕ್ತುಲಿತಮತಿಶಯ್ಯ ಬನ್ವುಜೀವ ಧೃತಜಲವಿಂದುಷು ಶಾದ್ವಲಸ್ಥಳೀಷು" ಕಿರಾಂ 10-29।

ಶಾನ ಶಾನ (ಪುಂ) 1. ಸಾಣೆಕಲ್ಲು, ಕತ್ತಿಯನ್ನು ಮಸೆಯುವ ಕಲ್ಲು. ಶೋ (ತನುಕರಣ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-116)।  
2. ಒರೆಗಲ್ಲು.

ಶಾನಪಾದ ಶಾನಪಾದ (ಪುಂ) 1. ಗಂಧದ ಕಲ್ಲು. 2. ಪಾರಿ ಯಾತ್ರವೆಂಬ ಒಂದು ಪರ್ವತ.

ಶಾಂತ ಶಾಂತ (ಪುಂ) 1. ಶಾಂತರಸ, ಶೃಂಗಾರ ಮೊದಲಾದ ಒಂಬತ್ತು ರಸಗಳಲ್ಲೊಂದು ರಸ. "ಶೃಂಗಾರಹಾಸ್ಯಕರಣ-ರೋದ್ರವೀರಮಾನಕಾ:। ಬಿಮತ್ಸೋಽದ್ಭುತ ಇತ್ಯಣ್ಣಿ ರಸಾ: ಶಾಂತಸ್ತಥಾ ಮತ:" ಸಾಂ ದಂ। ಶಾಂತರಸಕ್ಕೆ ಶಮವು ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ. ಶುಕ್ಲವರ್ಣ. ಇದು ನಾರಾಯಣ ದೇವ ತಾಕವಾದುದು. ಸಕಲವಸ್ತುಗಳೂ ಅನಿತ್ಯವಾದುದರಿಂದ ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ವಿಸಾರತ್ವಬುದ್ಧಿ ಅಥವಾ ಪರಮಾತ್ಮ ಸ್ವರೂಪವು ಆಲಂಬನವಿಭಾವ. ಪುಣ್ಯಾಶ್ರಮಗಳು ಪುಣ್ಯ ತೀರ್ಥಗಳು ಸುಂದರವಾದ ಅರಣ್ಯಸನ್ನಿವೇಶಗಳು ಮಹಾತ್ಮರ ಸಹವಾಸ ಇತ್ಯಾದಿ ಉದ್ದೀಪನ ವಿಭಾವಗಳು. ರೋಮಾಂಚ ಕನಿಕರ ಇತ್ಯಾದಿಗಳು ಅನುಭಾವಗಳು. ಭೂತದಯೆ ನಿರ್ವೇದ ಹರ್ಷ ಸ್ಮರಣೆ ಇತ್ಯಾದಿಗಳು ವ್ಯಭಿಚಾರಿಭಾವಗಳು. ಈ ವಿಭಾವಾನುಭಾವ ವ್ಯಭಿಚಾರಿ ಭಾವಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ (ಶಮ)ವು ಶಾಂತ ರಸತ್ವ ಹೊಂದುವುದು. "ಶಾಂತ: ಶಮಸ್ಥಾಯಿಭಾವ: उत्तम-प्रकृतिर्मत:। कुन्देन्दुमुन्दरच्छाय: श्रीनारायणदेवत:॥ अनित्यत्वादिनाशेषवस्तुनि:सारता तु या। परमात्म-स्वरूपं वा तस्यालम्बनमिष्यते॥ पुण्याश्रमहरिक्षेत्र-तीर्थरम्यवनादय:। महापुरुषसङ्गाद्यास्तस्योद्दीपन-रूपिण:॥ रोमाञ्चाद्याश्ಚಾನುभावा: तथा स्युर्व्यभिचारिण:। निर्वेदहर्षस्मरणमतिभूतदयादय:" ಸಾಂ ದಂ 3-244-49।  
ಛದಾ:—"ಕದಾ ವಾರಾಣಸ್ಯಾಮರತಟಿನಿರೋಧಸಿ ವಸನ್ ವಸಾನ: ಕೌಪೀನಂ ಶಿರಸಿ ನಿಧಾನೋಽಜ್ಜಲಿಪುಟಮ್। ಅಯೇ



ಗೌರಿನಾಥ ತ್ರಿಪುರಹರ ಶಮ್ಮಿ ತ್ರಿನಯನ ಪ್ರಸಾದೇಶಾ-  
 ಕ್ಷಿಮಿವಮಿವ ನೇಷ್ಯಾಮಿ ದಿವಸಾನ್" ಮತುಂ ೩-೮೭. (ವಿಂ.)  
 2. ಶಮಪ್ರಧಾನವಾದ, ಸ್ತಬ್ಧವಾದ, ನಿಶಬ್ಧವಾದ,  
 ಪ್ರಶಾಂತವಾದ. "ಶಾಂತಮಿದಮಾಶ್ರಮಪದಂ ಸ್ಫುರತಿ ಚ ಬಾಹುಃ  
 ಕುತಃ ಕಲಮಿಹಾಸ್ಯ" ಶಾಕುಂ ೧-೧೪. 3. ಕಡಮೆಯಾದ,  
 ಇಳಿಮುಖವಾದ. "ಕೃತೋಮಿರೇಖಂ ಶಿಥಿಲತವಮಾಯತಾ ಶನಃ  
 ಶನಃ ಶಾಂತರೇಣ ವಾರಿಣಾ" ಕಿರಾಂ ೪-೬. 4. ತಾಳ್ಮೆ  
 ಯುಳ್ಳವನು, ಸಹನೆಯುಳ್ಳವನು. 5. ಇಂದ್ರಿಯ  
 ನಿಗ್ರಹವುಳ್ಳವನು, ಯೋಗಿ. "ಉಚ್ಛೇದಂ ಜನ್ಮನಃ ಕರ್ತುಮೇಷಿ  
 ಶಾಂತಸ್ತಪೋಧನ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೩೧. 6. ಸೌಮ್ಯವಾದ,  
 ಕೋಪತಾಪಗಳಿಲ್ಲದ. "ಔದಾರ್ಯಾದಿರ್ಯಸಂಪತ್ತಃ ಶಾಂತಂ ಚಿತ್ತ-  
 ಮುಪೇರಿವ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೪೦. 7. ಸಾಶವಾದ, ಅಳಿದು  
 ಹೋದ. "ಪಾಶಾತ್ಯಮಾಗಮಿಹ ಸಾನುಷು ಸಂನಿಷಣ್ಣಾಃ ಪಶ್ಯಂತಿ  
 ಶಾಂತಮಲಸಾನ್ವತರಾಂಶುಜಾಲಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೨೨. 8. ಆರಿ  
 ಹೋದ, ನಂದಿಹೋದ. "ಶಾಂತಾಚಿವ ದೀಪಮಿವ ಪ್ರಕಾಶಃ"  
 ಕಿರಾಂ ೧೭-೧೬. 9. ನಿಂತುಹೋಗಿರುವ, ಬಿಡುವು  
 ಹೊಂದಿದ, ವಿರಾಮಹೊಂದಿದ. "ನಿಷ್ಕಮ್ಯವೃಷಂ ನಿಮೃತ-  
 ದ್ವಿರೇಕಂ ಮುಕಾಂಡಜಂ ಶಾಂತಮಗ್ರಪ್ರಚಾರಮ್" ಕುಮಾರಂ ೩-೪೨. 10.  
 ಮೃದುವಾದ, ಬಿರುಸಿಲ್ಲದ. "ಶಾಂತಾನುಕೂಲಪವನಶ್ಚ  
 ಶಿವಶ್ಚ ಪನ್ಥಾಃ" ಶಾಕುಂ ೪-೧೦. 11. ಪಳಗಿದ, ಸಾಧು  
 ವಾದ. "ಸಾಯಂ ಮೃಗಾಭ್ಯಾಸಿತವೇದಿಪಾರ್ಶ್ವಂ ಸ್ವಮಾಶ್ರಮಂ ಶಾಂತಮಗ್ರಂ  
 ನಿನಾಯ" ರಘುಂ ೧೪-೭೯. 12. ಗುಣಹೊಂದಿದ, ವಾಸಿ  
 ಯಾದ (ರೋಗಿ). (ಅವ್ಯಂ) 13. ನಿವಾರಣೆ, ತಡೆ,  
 ಸಾಕು ಇನ್ನುಮುಂದೆ ಹೇಳಿಕೊಡದೆಂದು ನಿಷೇಧಿಸುವುದು.  
 ಶಾಂತಂ ಪಾಪಮ್ ಶಾಂತಂ ಪಾಪಮ್. "ಶಾಂತಂ ಪಾಪಮನಿರ್ದೇಶ್ಯಂ".  
 "ಶಾಂತೋಽಭಿಮುಕ್ತರಸಯೋಃ ಪುಂಸಿ ತ್ರಿಭು ಶಮಾನ್ವಿತೇ. ಅವ್ಯಯಂ  
 ವಾರಣೇ ಶಾಂತಮ್" ಮೇದಿಂ.

**ಶಾಂತನವ ಶಾಂತನವ** (ಪುಂ) ಶಂತನುಪುತ್ರನಾದ ಭೀಷ್ಮಾ-  
 ಚಾರ್ಯ. ಶಾಂತನೋಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಅನ್" (೪-೧-೯೨).  
 "ಯದಾ ತದಾ ದೇವಗಣೇನ ಯೇನ ಶಾಂತಂ ಬಲಂ ಶಾಂತನವಪ್ರಧಾನಮ್"  
 ಯಾದಂ ೨೩-೨೪. "ಸ ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರಕುಶಲಂ ಭೀಷ್ಮಂ ಶಾಂತನವಂ  
 ನೃಪಃ. ಪೂಜಯಾಮಾಸ ಧರ್ಮೇಣ ಸ ಚೇನಂ ಪ್ರತ್ಯಪಾಲಯತ್" ಭಾಂ  
 ಆದಿಂ ೧೦೮-೧೮.

**ಶಾಂತನು ಶಾಂತನು** (ಪುಂ) ಚಂದ್ರವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ.  
 ಈತನಿಗೆ ಶಂತನು ಎಂದೂ ಹೆಸರು.

[ಸ್ವರ್ಗಸ್ಥನಾಗಿದ್ದ ಇಕ್ಷ್ವಾಕುವಂಶದ ದೊರೆ ಮಹಾ  
 ಭೀಷ್ಮನು ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ಶಾಪಹೊಂದಿ ಭೂಲೋಕಕ್ಕೆ  
 ಇಳಿದುಬಂದು ಪ್ರತೀಪ ರಾಜನ ಮಗನಾಗಿ ಶಾಂತನುವೆಂಬ  
 ಹೆಸರಿನಿಂದ ಜನಿಸಿದನು. ಶಾಂತನುವು ಒಮ್ಮೆ ಗಂಗಾ

ತೀರದಲ್ಲಿ ಸುಚರಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ಶಪ್ತಳಾಗಿ  
 ಭೂಲೋಕಕ್ಕೆ ಇಳಿದು ಬಂದಿದ್ದ ರೂಪವತಿಯಾದ ಗಂಗೆ  
 ಯನ್ನು ಕಂಡು ಮೋಹಗೊಂಡನು. ಅವಳು ಯಾವ  
 ಕಾರ್ಯವೂಡಿದರೂ ಅಡ್ಡಬರಬಾರದೆಂಬ ಕರಾರಿಗೆ  
 ಒಳಪಟ್ಟು ಶಾಂತನುವು ಗಂಗೆಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾದನು.  
 ಗಂಗೆಯು ಶಾಂತನುವಿನಿಂದ ಪಡೆದ ಏಳುಮಂದಿ ಪುತ್ರ  
 ರನ್ನೂ ಗಂಗೆಯಲ್ಲಿ ಬಿಸಾಡುತ್ತಿದ್ದಳು. ಅಲ್ಲಿಯವರೆಗೂ  
 ತಾಳ್ಮೆಯಿಂದಿದ್ದ ರಾಜನು ಎಂಟನೆಯ ಮಗುವನ್ನು ಎಸೆ  
 ಯಲು ಯತ್ನಿಸಿದ ಅವಳನ್ನು ತಡೆಯಲು ಹೋದಾಗ  
 ಗಂಗೆಯು ತನ್ನ ಒಪ್ಪಂದಕ್ಕೆ ಭಂಗಬಂದಿತೆಂದು ಹೇಳಿ  
 ಅಷ್ಟವಸುಗಳ ಶಾಪದ ವಿವರವನ್ನು ತಿಳಿಸಿ ಎಂಟನೆಯ  
 ಮಗನೊಡನೆ ಅಂತರ್ಧಾನ ಹೊಂದಿದಳು. ಈ ಎಂಟನೇ  
 ಮಗನೇ ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯ. ಶಾಂತನುವು ದಾಶರಾಜನ  
 ಪುತ್ರಿ ಸತ್ಯವತಿಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ಚಿತ್ರಾಂಗದ  
 ಮತ್ತು ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯರೆಂಬ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪಡೆದನು.]  
 [ವಿವರಕ್ಕೆ "ಶಾಂತನು" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].

**ಶಾಂತಮ್ ಶಾಂತಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ನಿವಾರಣೆ, ತಡೆ, ನಿಷೇಧ.

**ಶಾಂತಾ ಶಾಂತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಶರಥಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಪುತ್ರಿ,  
 ರೋಮಪಾದರಾಜನ ಸಾಕುಮಗಳು. "ಕನ್ಯಾ ದಶರಥೋ  
 ರಾಜಾ ಶಾಂತಾ ನಾಮ ವ್ಯಜ್ಜಿಜನತ್. ಅಪತ್ಯಕೃತಿಕಾ ರಾಜ್ಞಿ  
 ರೋಮಪಾದಾಯ ತಾಂ ದದೌ" ತಂ ರಾಂ ೧-೪. ರೋಮಪಾದ  
 ರಾಜನು ತನ್ನ ಮಗಳಾದ ಶಾಂತಾದೇವಿಯನ್ನು ವಿಭಾಂಡಕ  
 ಮುಷಿಯ ಪುತ್ರನಾದ ಋಷ್ಯಶೃಂಗನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು ಮದುವೆ  
 ಮಾಡಿದನು. ["ಋಷ್ಯಶೃಂಗ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].

**ಶಾಂತಿ ಶಾಂತಿ** (ಪುಂ) 1. ಇಷ್ಟತುನಾಲ್ಕು ಮಂದಿಗಳ  
 ಲ್ಲೊಬ್ಬ ಜೈನತೀರ್ಥಂಕರರು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಕಾಮ  
 ಕ್ರೋಧಾದಿಗಳಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಶಮ (ಉಪಶಮೇ) "ಕ್ಲಿನ್"  
 (೩-೩-೯೪). "ವಿಹಾಯ ಶಾಂತಿ ನೃಪ ಧಾಮ ತತ್ಪುನಃ ಪ್ರಸಾದ  
 ಸ್ವೇಹಿ ವಚಾಯ ವಿಧಿಷಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೪೨. 3. ಉಪದ್ರವ  
 ಎಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ತೊಂದರೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. "ಜಾಜ್ವಲ್ಯಮಾನಾ  
 ಜಗತಃ ಶಾಂತಯೇ ಸಮುಪೇಯುಷಿ" ಮಾಘಂ ೨-೩. 4. ನಿವಾರಣೆ,  
 ತಡೆ. "ಕೌಶಿಕೇನ ಸ ಕಿಲ ಕ್ಷಿತಿಶ್ವರೋ ರಾಮಮಧ್ವರ-  
 ವಿಧಾತಶಾಂತಯೇ" ರಘುಂ ೧೧-೧. 5. ಶಾಂತತೆ, ನೆಮ್ಮದಿ,  
 ಸೌಖ್ಯ. "ಶಾಂತಿಃ ಕುತಸ್ತಸ್ಯ ಭುಜಙ್ಗಶತ್ರುಯಂಸ್ಮಿನ್  
 ನಿಬದ್ಧಾನುಶಯಾ ಸದೇವ" ಮಾಲತೀಂ ೬-೧. 6. ಮೋಕ್ಷ,  
 ಮುಕ್ತಿ, ಪ್ರಪಂಚವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ. "ತದ್ವಿಹಿತ-  
 ಕ್ರುತ್ವಾಃ ಶಾಂತಿಮಾಗತೃಕೋಽಭೂತ್" ರಘುಂ ೭-೭೧. 7.  
 ಸಮಾಧಾನ, ವಿಶ್ರಾಂತಿ, ಮನಸ್ಸಿನ ನೆಮ್ಮದಿ. 8. ಶುಭ,  
 ಮಂಗಳ. "ಶಾಂತಿಃ ಕಲ್ಯಾಣಶಮಯೋಃ" ನಾನಾಧರಂ.



9. ಮನೋವಿಕಾರವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ವಿಷಯಗಳಿಂದ ಮನಸ್ಸು ಹಿಂತಿರುಗುವಿಕೆ. 10. ಸಂತೋಷ, ಇಷ್ಟವಾದ ವಸ್ತುವಿನ ಲಾಭದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ತೃಪ್ತಿ. "ಯತ್ಕಿಂಚಿದ್ವಸ್ತು ಸಂಪ್ರಾಪ್ಯ ಸ್ವಲ್ಪಂ ವಾ यदि वा बहु । या तुष्टिर्जायते चित्ते सा शान्तिः कथ्यते बुधैः" ११. ಪೂಜೆ ಜಪ ಹೋಮ ಮುಂತಾದುವುಗಳಿಂದ ಆಗುವ ಅನಿಷ್ಟ ನಿವೃತ್ತಿ, ಗ್ರಹಗಳು ಕ್ರೂರವಾಗಿದ್ದು ಅದರಿಂದಾಗುವ ಅಶುಭಗಳನ್ನು ಜಪ ಹೋಮಾದಿಗಳಿಂದ ಹೋಗಲಾಡಿಸುವಿಕೆ.

"यथा शस्त्रप्रहाराणां कवचं विनिवारणम् । तथा दोषोपघातानां शान्तिर्भवति वारणम्" । ಮನುಷ್ಯನ ಜೀವಮಾನದಲ್ಲಿ ಅವಿವೇಕದಿಂದ ಅನೇಕ ದುರ್ವರ್ತನೆಗಳೂ ಅದರಿಂದ ದೋಷಗಳೂ ಸಂಭವಿಸಿ ಕೆಟ್ಟ ಫಲಗಳನ್ನು ಆನುಭವಿಸಬೇಕಾಗುವುದು. ಇಂತಹ ಅಪತ್ತುಗಳನ್ನು ಪ್ರಕೃತಿವಿರುದ್ಧವಾದ ಕೆಲವು ಸನ್ನಿವೇಶಗಳು (ಉತ್ಪತ್ತಾದಿಗಳು) ಮುಂಚಿತವಾಗಿಯೇ ಸೂಚಿಸುವುವು. ಈ ಅಪತ್ತುಗಳನ್ನು ಜಪ ಹೋಮ ದಾನ ಮುಂತಾದುವುಗಳಿಂದ ಪರಿಹರಿಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕಾಗುವುದು. ಇದೇ ಶಾಂತಿಯು. ["उत्पात" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. 12. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

ಶಾಂತಿಗೃಹ ಶಾಂತಿಗೃಹ (ನಂ) 1. ವಿಶ್ರಾಂತಿ ಗೃಹ, ಶ್ರಮ ಪರಿಹರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ವಿಶ್ರಾಂತಿ ಪಡೆಯುವ ಗೃಹ. 2. ಯಾಗವಾದ ನಂತರ ಶಾಂತಿಯ ಕಲಶಾರ್ಪಣದಿಂದ ಸ್ನಾನಮಾಡುವ ಗೃಹ.

ಶಾಪ ಶಾಪ (ಪುಂ) 1. ಕೆಡಕನ್ನು ಬಯಸಿ ಆಡುವ ಆಕ್ರೋಶದ ಮಾತು. ಶಾಪ (ಆಕ್ರೋಶ) "घप्" (३-३-१८) । "कश्चित्कान्ताविरहगुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः शापेना-स्तंगमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः" ಮೇಘಂ १-१ । 2. ಬೈಗಳು. 3. ಶಪಥ, ಆಣೆ, ಸತ್ಯ, ಪ್ರಮಾಣ. "शापः शपथ आक्रोशे" ಹೇಮಂ । 4. ಆಕ್ಷೇಪಣೆ. "आक्रोशा-भीषङ्गाक्षेपाः" ಅಮಿಂಚಿಂ । 5. ಉಪದ್ರವ, ತೊಂದರೆ, ಹೀಡೆ. "उवास रजनीं तत्र ताटकाया वने सुखम् । मुक्तशपं वनं तच्च तस्मिन्नेव तदाहनि" ರಾಮಾಂ ।

ಶಾಪಯಸ್ತ ಶಾಪಯಸ್ತ (ವಿಂ) ಶಾಪದಿಂದ ಕಷ್ಟಕ್ಕೊಳಗಾಗಿರುವ, ಕೆಡಕಾಗಲೆಂಬ ಕೋಪದ ಮಾತಿಗೆ ಸಿಲುಕಿದ, ಕೋಪದ ಮಾತಿನ ಫಲವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವ. ಶಾಪೇನ ಯಸ್ತಃ ।

ಶಾಪಮುಕ್ತ ಶಾಪಮುಕ್ತ (ವಿಂ) ಕೋಪದ ಮಾತಿನ ಫಲದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆಹೊಂದಿದ. ಶಾಪಾಮುಕ್ತಃ ।

ಶಾಪಮುಕ್ತಿ ಶಾಪಮುಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನಿಷ್ಟದ ಮಾತಿನ ಫಲದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ. ಶಾಪಾಮುಕ್ತಿಃ । -ಸೂಕ್ತಃ -ಮೋಕ್ಷಃ ।

ಶಾಪಯನ್ವಿತ ಶಾಪಯನ್ವಿತ (ವಿಂ) ಶಾಪದ ಫಲದಿಂದ ನಿಯಂತ್ರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಶಾಪೇನ ಯನ್ವಿತಃ ।

ಶಾಪಾಸ್ತ್ರ ಶಾಪಾಸ್ತ್ರ (ಪುಂ) ಮುನಿ, ಮುಷಿ, ತಪಸ್ವಿ. ಶಾಪ ಎವಾಸ್ತ್ರಂ ಯಸ್ಯ । "ऋषयः शापास्त्राः सत्यवचसः" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । "अवेक्ष्य रामं ते तस्मिन् प्रजह्नुः स्वतेजसा । त्राणाभावे हि शापास्त्राः कुर्वन्ति तपसो व्ययम्" ರಘುಂ १५-३ ।

ಶಾಫರಿಕ ಶಾಫರಿಕ (ಪುಂ) ಮತ್ಸ್ಯಗಳನ್ನು ಹಿಡಿದು ಕೊಲ್ಲುವವನು. ಶಫರಾನ್ ಮತ್ಸ್ಯಾನ್ ಹಂತಿ—"ठक्" (४-४-३५) ।

ಶಾಬರ ಶಾಬರ (ಪುಂ) 1. ಲೋಧ್ರವೃಕ್ಷ. ಶಾಬರಸ್ಯಾಯಮ್ "अण्" (४-३-१२०) । 2. ಪಾಪ. 3. ಅಪರಾಧ, ತಪ್ಪು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರೀ -ಠೀ. 4. ವಸುಗುನ್ನಿ ಗಿಡ. "शाबरी शूकशिख्यां स्यात् पुंसि पापापराधयोः । लोध्रे च" ಮೇದಿಂ ।

ಶಾಬ್ದ ಶಾಬ್ದ (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಶಬ್ದದಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಶಾಬ್ದಸ್ಯಾಯಮ್ "अण्" (४-३-१२०) । 2. ಶಬ್ದಮಯವಾದ, ಶಬ್ದಸ್ವರೂಪದ. "शाब्दस्य हि ब्रह्मण एष पन्थाः यन्नामभिधायिति धीरपार्थः" भाग० २-२-२ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಠೀ -ಠೀ. 3. ಸರಸ್ವತಿ, ವಾಗ್ಧೇವಿ.

ಶಾಬ್ದಬೋಧ ಶಾಬ್ದಬೋಧ (ಪುಂ) ಶಬ್ದ ಮತ್ತು ಅರ್ಥಗಳ ಜ್ಞಾನ, ಶಬ್ದಜ್ಞಾನದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಜ್ಞಾನ. ಶಾಬ್ದಾಜ್ಞಾಯಮಾನಃ ಬೋಧಃ । ಶಾಬ್ದಜ್ಞಾನಕರಣಕಂ ಜ್ಞಾನಂ ವಾ । ಅರ್ಥಜ್ಞಾನವುಂಟಾಗಲು ಪದಜ್ಞಾನವು ಸಾಧನ. ಪದಾರ್ಥಗಳ ಉಪಸ್ಥಿತಿಯು ವ್ಯಾಪಾರ. ಶಾಬ್ದಬೋಧವು ಫಲ. ಶಾಬ್ದಬೋಧ ಲಕ್ಷಣಃ "शकिलक्षणान्यतरसंबन्धेन पदजन्यपदार्थस्मृतित्वावच्छिन्नकारणतानिरूपितकारण-त्वम्" । "गामानय" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಮೊದಲು ಗೋಪದ ದಿಂದ "एकसम्बन्धिज्ञानमपरं स्मारयति" ಎಂಬ ನ್ಯಾಯದಿಂದ ಹಿಂದೆ ನೋಡಿದ್ದ ಹಸುವಿನ ಸ್ಮರಣೆ ಬಂದಂ ಒಂದು ಗೋ (ಹಸು) ವಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ ಜ್ಞಾನವುಂಟಾಗುವುದು. ಅನಂತರ ಗೌರ್ಮಕಾನಯನಾನುಕೂಲವ್ಯಾಪಾರವಾನ್ ತ್ವಮ್ ಎಂದು ಶಾಬ್ದಬೋಧವುಂಟಾಗುವುದು.

ಶಾಖಿಕ ಶಾಖಿಕ (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ತಿಳಿದವನು (ವೈಯಾಕರಣ). ಶಾಖಿಕಶಾಸ್ತ್ರಂ ಶಾಖಿಕಶಾಖಿಕ-ಜ್ಞಾಪಕಂ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ವೇತ್ಯಧೀತೇ ವಾ "ठक्" (४-२-५९) । 2. ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ರಚಿಸುವವನು. ಶಾಖಿಕಂ ಕರೋತಿ ಶಾಖಿಕವಿಷಯೇ ಪ್ರಕೃತಿಪ್ರತ್ಯಯವಿಭಾಗಪೂರ್ವಕಜ್ಞಾನಂ ಕರೋತಿ ಶಾಖಿಕ



“ಠಕ್” (೪-೪-೩೪) । ಅದಿಶಾಬ್ದಿಕರು : (1) ಇಂದ್ರ : (2) ಚಂದ್ರ : (3) ಕಾಶಕೃತ್ಸ್ನ : (4) ಆಪಿಶಲಿ : (5) ಶಾಕಟಾಯನ : (6) ಪಾಣಿನಿ : (7) ಅಮರ : ಮತ್ತು (8) ಜೇನೆಂದ್ರ : ಇವರು ಎಂಟು ಮಂದಿ ಶಾಬ್ದಿಕರು.

ಶಾಮಿತ್ರ ಶಾಬ್ದಿಕ (ನಂ) 1. ಪಶುಬಂಧನ, ಯಜ್ಞ ಪಶು ವನ್ನು ಕಟ್ಟುವುದು. 2. ಪಶುಹಿಂಸನ, ಯಜ್ಞ ಪಶುವಿನ ವಧೆ. “ಇಹೋಪಹೃತೋ ಭಗವಾನ್ ಮೃತ್ಯುಃ ಶಾಮಿತ್ರಕರ್ಮಣಿ । ನ ಕಶ್ಚಿನ್ಮಿತ್ರಯತೇ ತಾವದಾವದಾಸ್ತ ಇಹಾಂತಕಃ” ಭಾಗಂ ೧-೧೬-೮ ।

ಶಾಮಿಲ ಶಾಬ್ದಿಕ (ನಂ) 1. ಭಸ್ಮ, ಬೂದಿ. ಶಮ್ಯಾ ವಿಕಾರಃ ಅವಯವೋ ವಾ “ಫಲಕ್” (೪-೩-೧೪೨) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲೀ -ಲೀ. 2. ಸುಶ್ಯು, ಅಜ್ಞಪಾತ್ರ.

ಶಾಮ್ಬರೀ ಶಾಬ್ದಿಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಂಬರನೆಂಬ ದೈತನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದ ಮಾಯೆ, ಇಂದ್ರಜಾಲ, ಠಕ್ಯು, ಯಕ್ಷಿಣಿ ವಿದ್ಯೆ. ಶಾಮ್ಬರೇಣ ನಿವೃತ್ತಾ । ಶಾಮ್ಬರಸ್ಯಾಯ ವಾ “ಅಞ್” (೪-೩-೧೨೦) । “ಛೀಪ್” (೪-೧-೧೫) ।

ಶಾಮ್ಭವ ಶಾಬ್ದಿಕ (ಪುಂ) 1. ಈಶ್ವರನ ಪುತ್ರ. ಶಾಮೋರಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ “ಅಞ್” (೪-೧-೯೨) । 2. ಕಪೂರ. 3. ಗುಗ್ಗುಳ. 4. ವಿಷ. (ನಂ) 5. ದೇವದಾರು ಮರ. (ವಿಂ) 6. ಈಶ್ವರನ ಭಕ್ತ. ಈಶ್ವರನನ್ನು ಪೂಜಿಸುವವನು. 7. ಈಶ್ವರನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಶಾಮೋರಿದಮ್ “ಅಞ್” (೪-೩-೧೨೦) । “ಅಮೋಘಂ ಶಾಮ್ಭವಂ ಬೀಜಂ ಸದ್ಯೋ ನದ್ಯೋಜ್ಜಿತಂ ಮಹತ್” ಕುಮಾಂ ೧೦-೫೭ ।

ಶಾಮ್ಭವೀ ಶಾಬ್ದಿಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಸುರು ಗರಿಕೆ. 2. ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ.

ಶಾರ ಶಾಬ್ದಿಕ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಶೀಯಂತೇ ಪರ್ಣ-ಫಲಾದಿನಿ ಅನೇನ ಶೃಣಾತಿ ವಾ—ಶ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಘಕ್” (ವಾಂ ೩-೩-೨೧) । 2. ಕರ್ಪೂರವರ್ಣ, ಚಿತ್ರವರ್ಣ. ಶೀಯಂತೇ ಚಿತ್ರೀಕ್ರಿಯಂತೇ ಪಟಾದಯಃ ಅನೇನ—ಕರಂ “ಘಕ್” (ವಾಂ ೩-೩-೨೧) । 3. ಪಗಡೆಕಾಯಿ. “ಕಾಲಃ ಕಲ್ಯೋ ಭುವನಫಲಕೇ ಕ್ರೋಡತಿ ಪ್ರಾಣಿಶಾರೇ” ಭರ್ತುಂ ೩-೪೨ । (ವಿಂ) 4. ಚಿತ್ರವರ್ಣದ, ನಾನಾಬಣ್ಣದ. “ಶಾರಃ ಸ್ಯಾತ್ ಶಬಲೇ ವಾಚ್ಯಲಿಂಗಃ ಪುನಿ ಸಮೀರಣೇ । ಅಕ್ಷೋಪಕರಣೇ” ಮೇದಿಂ । 5. ಹಿಂಸಿಸುವ, ಪೀಡಿಸುವ.

ಶಾರಙ್ಗ ಶಾಬ್ದಿಕ (ಪುಂ) 1. ಹರಿಣ, ಜಿಂಕೆ. ಶಾಯಂತೇ ಆತಪಾದಿನಾ—ಶ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ “ಅಙ್ಗಚ್” (ಉಂ ೧-೧೨೦) । ಶಾರಂ ಕರ್ತುರಮಙ್ಗಂ ಯಸ್ಯ ವಾ ಪೃಥಂ । 2. ಜಾತಕ ಪಕ್ಷಿ, ಮಳೆಗುಟ್ಟುಕಿನ ಹಕ್ಕಿ. 3. ಗಜ, ಆನೆ.

4. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. 5. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಛೀಪ್” (೪-೧-೬೩) । -ಙ್ಗೀ -ಙ್ಗೀ.

ಶಾರದ ಶಾಬ್ದಿಕ (ಪುಂ) 1. ಸಂವತ್ಸರ, ವರ್ಷ. 2. ಏಳೆಲೆ ಬಾಳೆಗಿಡ. ಶಾರದಿ ಪುಷ್ಯತಿ—“ಅಞ್” (೪-೩-೪೩) । “ಸಪ್ತಪರ್ಣಿ ವಿಶಾಲತ್ವಕ್ ಶಾರದೋ ವಿಷಮಚ್ಛದಃ” ಅಮಂ । (ನಂ) 3. ಧಾನ್ಯ, ಪೈರುಗಳ ಫಲ. (ವಿಂ) 4. ನೂತನ ವಾದ, ಹೊಸವಾದ. 5. ಶರದೃತುವಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಶಾರದಃ ಇದಮ್ “ಅಞ್” (೪-೩-೧೨೦) । “ದಿವಸಂ ಶಾರದಮಿವ ಪ್ರಾರಂಭಸುಖದರ್ಶನಮ್” ರಘುಂ ೧೦-೯ । 6. ಧೈರ್ಯವಿಲ್ಲದ. 7. ಶರದೃತುವಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. “ವಾಸಂತಶಾರದೇರ್ದೇವೈರ್ಮುನೈಃ ಸ್ವಯಮಾಹುತಃ” ಮನುಂ ೬-೧೧ । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಛೀಪ್” (೪-೧-೧೫) । 8. ಲಜ್ಜೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ನಾಚುವ ಸ್ವಭಾವದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ದೀ -ದೀ. 9. ನೀರುಹಿಪ್ಪಲಿ. 10. ಏಳೆಲೆ ಬಾಳೆಗಿಡ. “ಶಾರದೋಽಂದೇ ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ತೋಪಿಪ್ಪಲಿ-ಸಪ್ತಪರ್ಣಯೋಃ । ಶಸ್ಯೇ ಕಲಿಬಂ ಶರಜ್ಜಾತೇ ನೂತನಾಪ್ರತಿಭೇ ತ್ರಿಪು” ಮೇದಿಂ । -ದಾ -ದಾ. 11. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 12. ಸರಸ್ವತಿ. 13. ಒಂದು ವಿಧ ವೀಣೆ.

ಶಾರದಕ ಶಾಬ್ದಿಕ (ಪುಂ) ಕುಶ, ದರ್ಭೆ. ಶಾರದ್ “ಕು” (೪-೩-೨೭) ।

ಶಾರಿ(ರೀ) ಶಾಬ್ದಿಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶಾರಿಕಾ ಪಕ್ಷಿ. ಶ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಇಕ್” (ಉಂ ೪-೧೨೭) । “ಶಾರೀಂ ಚರಂತಿ ಸಖಿ ಮಾರಯೇತಾಮ್” ನೆಪಂ ೬-೭೧ । 2. ಯುದ್ಧ ಕ್ಯಾಗಿ ಹೊರಡುವ ಆನೆಯ ಹೆಗಲಿನ ಮೇಲೆ ಹಾಸುವ ಚಿತ್ರಗಂಬಳಿ. “ಶಾರಿಮಶಕದಧಿರೋಪಯಿತು ದ್ವಿರದೇ ಮದಚ್ಯುತಿ ಜನಃ ಕಥಂಚನ” ಮಾಘಂ ೧೫-೭೭ । (ಪುಂ) 3. ಪಗಡೆ ದಾಳಿ. “ಶಾರಿಃ ಕುಂಜರಪರ್ಯಾಣಿ ಶಕುನೀ ಧೃತಸಾಧನೇ” ಹೇಮಂ । 4. ಚದುರಂಗದ ಕಾಯಿ. “ಶಾರಿನಾಕ್ಷೋಪಕರಣೇ ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಶಕುನಿಕಾಂತರೇ । ಯುದ್ಧಾರ್ಥಗಜಪರ್ಯಾಣಿ ವ್ಯವಹಾರಾಂತರೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ ।

ಶಾರಿಕಾ ಶಾಬ್ದಿಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶಾರಿಕಾ ಪಕ್ಷಿ. “ಶಾರಿಕೇವ ಮಣಿಪಂಜರಸ್ಥಿತಾ” ಯಾದಂ ೧೭-೨೮ । 2. ವೀಣೆ ಮೊದಲಾದ ತಂತಿವಾದ್ಯಗಳನ್ನು ನುಡಿಸುವ ಸಾಧನ. 3. ಚದುರಂಗದ ಕಾಯಿ. ಶಾರಿ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” ।

ಶಾರಿತ ಶಾಬ್ದಿಕ (ವಿಂ) ನಾನಾಬಣ್ಣಗಳುಂಟಾಗಿರುವ, ಚಿತ್ರವರ್ಣವಾಗಿರುವ. ಶಾರೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ “ಇತಚ್” (೫-೨-೩೬) । “ಸ್ಥಿರದ್ವಿರೇಫಾಂಜನಶಾರಿತೋದರೇವಿಸಾರಿಭಿಃ ಪುಷ್ಪವಿಲೋಚನೇರ್ಮತಾಃ” ಕಿರಾಂ ೮-೧೧ ।

ಶಾರಿಫಲ ಶಾಬ್ದಿಕ (ನಂ) 1. ನೆತ್ತವಾಡುವ ಹಲಗೆ, ಪಗಡೆಯಾಟದ ಹಾಸು. ಶಾರೀಣಾಂ ಫಲಮ್ ಫಲಕಮ್ ।



2. ಪಗಡೆಯಕಾಯಿ. "ಅಷ್ಟಾಪದಂ ಶಾರಿಫಲಮ್" ಅಮಂ ।  
-ಫಲಕಮ್ -ಫಲಕಮ್.

ಶಾರಿವಾ ಶಾರಿವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೋಗದೆ ಗಿಡ. ಶಾರಿರಸ್ತಯಸ್ಯಾ:  
"ವ:" (ವಾಂ ೪-೨-೧೦೯) । "ಗೋಪಿ ಸ್ಯಾಮಾ ಶಾರಿವಾ  
ಸ್ಯಾತ್ ಅನಂತೋತ್ಪಲಶಾರಿವಾ" ಅಮಂ । "ಏಕಂ ವೈ ಶಾರಿವಾ-  
ಮೂಲಂ ಸರ್ವವ್ರಣನಿವಾರಣಮ್" ।

ಶಾರೀರ ಶಾರೀರ (ವಿಂ) 1. ಶರೀರ ಸಂಬಂಧವಾದ, ದೇಹಕ್ಕೆ  
ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. ಶರೀರಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) ।  
ಶರೀರ ಸಂಬಂಧವಾದ ಅವಯವಗಳು: "ಮಸ್ತಕೋ-  
ದರಪೃಷ್ಠನಾಭಿಲಲಾಟನಾಸಾಚಿಬುಕಬಸ್ತಿಗ್ರೀವಾ ಇತ್ಯೇತಾ  
ಏಕೈಕಾಃ । ಕರ್ಣನೇತ್ರಭ್ರೂಷ್ಣಾಂಗುಲಕಕ್ಷಸ್ತನವಕ್ಷಣವೃಷಣಪಾಶ್ವ-  
ಸ್ಥಿಗ್ಜಾನುಕುರ್ಪರಬಾಹುಪ್ರಭೃತಯೋ ದ್ವೇ ದ್ವೇ ವಿಶತಿರಙ್ಗುಲಯ:  
ಸೋತಾಸಿ ಚ" ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೪-೪ । [ಶರೀರಕ್ಕೆ  
ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಕಷ್ಟದಾಃಖಗಣೆ "ಜೀವ" ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ. ಎಲುಬುಗಳ ಸಂಖ್ಯೆಗಳಿಗೆ "ಅಸ್ಥಿ" ಪದ  
ದಲ್ಲೂ ಸಂಧಿಗಳ ಸಂಖ್ಯೆಗಳಿಗೆ "ಮಂಡಲ" ಪದದಲ್ಲೂ  
ನೋಡಿ.] ಶರೀರದ ವಿಭಾಗ: ಸಪ್ತ ತ್ವಚ: ಸಪ್ತ  
ವಾತವ: ಸಪ್ತಾಶಯಾ: ಚತುರ್ವಿಶತಿವಿಮನಯ: । 2. ಶರೀರದಲ್ಲಿ  
ಹುಟ್ಟಿದ, ದೇಹದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. (ಪುಂ) 3. ಜೀವಾತ್ಮ.  
4. ವ್ಯವಸ್ಥೆ, ಎತ್ತು. "ಶಾರೀರಂ ದೇಹಜೇ ವೃಷೇ" ಹೇಮಂ ।  
(ನಂ) 5. ಶಾರೀರತಪಸ್ಸು. ["ತಪಸ್" ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ].

ಶಾರೀರಕ ಶಾರೀರಕ (ನಂ) 1. ಬಾದರಾಯಣಕೃತ  
ಬ್ರಹ್ಮಸೂತ್ರ. ಶರೀರಮೇವ ಶಾರೀರಮ್ ಕುತ್ಸಾಯಾಂ "ಕ:"  
(೪-೩-೭೪) । ಶರೀರಸ್ಯಾಯಂ ಶಾರೀರ: ಜೀವಾತ್ಮಾ-ಸ್ವಾತ್ಮ  
"ಕ:" ಇತಿ ವಾ । ಶಾರೀರಕಮಧಿವೃತ್ತಯ ಕೃತೋ ಗ್ರಂಥ:  
"ಅನ್" (೪-೩-೮೭) । "ಶಾರೀರ" ಪದಕ್ಕೆ ವೃದ್ಧ ಸಂಜ್ಞೆ  
ಯಿರುವುದರಿಂದ "ವೃದ್ಧಾಂಶ:" ಸೂತ್ರದಿಂದ "ಕ"  
ಪ್ರತ್ಯಯ ಬಂದು ಶಾರೀರಕೀಯ: ಎಂದು ರೂಪವಾಗುವುದು.  
ಆದರೆ ಅಭೇದೋಪಚಾರದಿಂದ "ಶಾರೀರಕ" ಎಂಬ  
ಪ್ರಯೋಗ. ಸಿಂ ಕೌಂ । ಜಗತ್ಪರೀರಕಪರಮಾತ್ಮ  
ಪ್ರತಿಪಾದಕಶಾಸ್ತ್ರ, ಬ್ರಹ್ಮವಿಷಯಪ್ರತಿಪಾದಕಶಾಸ್ತ್ರ,  
ವೇದಾಂತ, ಬ್ರಹ್ಮಮೀಮಾಂಸಾ, ಜಗತ್ಶರೀರಕಪರಮಾತ್ಮಾ  
ಶಾರೀರ:, ತದ್ವಿಷಯ ಶಾಸ್ತ್ರಮ್ । "ತಸ್ಯೇವ ಏವ ಶಾರೀರ  
ಆತ್ಮಾ" ಶ್ರುತಿ: । ಶಾರೀರಂ ಕಾಯತಿ-ಕೈ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ:"  
(೩-೨-೩) । ಇತಿ ವಾ । ವೇದವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿರಚಿತ  
ವಾದ ಬ್ರಹ್ಮಸೂತ್ರನಿಬಂಧಕ್ಕೆ ಶಾರೀರಕಸೂತ್ರವೆಂದು  
ಹೆಸರು. ಈ ಬಾದರಾಯಣಸೂತ್ರನಿಬಂಧಕ್ಕೆ ಎಲ್ಲಾ  
ಆಚಾರ್ಯರುಗಳೂ ತಮ್ಮ ತಮ್ಮ ಮತಾನುಸಾರ ಭಾಷ್ಯ

ಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. (ವಿಂ) 2. ಶರೀರದಲ್ಲಿ  
ಉಂಟಾದ. ಶರೀರಕೇ ಭವಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೪೩) ।

ಶಾರೀರಕೀಯ ಶಾರೀರಕೀಯ (ವಿಂ) ["ಶಾರೀರಕ"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].

ಶಾರೀರಕ ಶಾರೀರಕ (ವಿಂ) ಶರೀರದಿಂದ ಉಂಟಾದ.  
ಶರೀರೇಣ ನಿವೃತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೭೯) ।

ಶಾರಕ ಶಾರಕ (ವಿಂ) ಹಿಂಸಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದವನು,  
ಹೀಡಿಸುವವನು. ಶ್ರು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ತಕವ್" (೩-೨-೧೪೪) ।

ಶಾರ್ಕ ಶಾರ್ಕ (ಪುಂ) ಸಕ್ಕರೆ.

ಶಾರ್ಕಕ ಶಾರ್ಕಕ (ಪುಂ) 1. ಹಾಲಿನ ಮೇಲಿನ ನೊರೆ.  
2. ಸಕ್ಕರೆಯ ಮಿಠಾಯಿ, ಮುದ್ದೆಯಾಗಿ ಮಾಡಿದ ಸಕ್ಕರೆ,  
ಖಂಡಸಕ್ಕರೆ. "ಶಾರ್ಕಕ: ಸ್ಯಾದ್ದುಗ್ಧಫೇನಶರ್ಕರಾಪಿಂಡಯೋ:  
ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ) 3. ಸಕ್ಕರೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ,  
ಸಕ್ಕರೆ ಮಿಶ್ರವಾದ.

ಶಾರ್ಕರ ಶಾರ್ಕರ (ವಿಂ) 1. ನುರುಜುಕಲ್ಲುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ  
(ಭೂಮಿ), ಸಣ್ಣ ಬೆಣಚುಕಲ್ಲುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ (ನೆಲ).  
ಶರ್ಕರಾಸ್ತಯತ್ರ "ಅನ್" (೪-೨-೧೦೪) । 2. ಸಕ್ಕರೆಯ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. ಶರ್ಕರಾಯಾ ಇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) ।  
3. ಸಕ್ಕರೆಗೆ ಸಮಾನವಾದ. ಶರ್ಕರೇವ "ಅನ್" (೪-೩-೧೦೭) ।  
4. ಸಕ್ಕರೆ ಮಿಶ್ರವಾದ, ಸಕ್ಕರೆಯೊಡನೆ ಬೆರೆತಿರುವ.  
ಶರ್ಕರಾಸ್ತಯತ್ರ "ಅನ್" (೪-೨-೧೦೪) । (ಪುಂ) 5. ಹಾಲಿನ  
ಮೇಲಿನ ನೊರೆ. "ಶರ್ಕರ: ಸ್ಯಾದ್ದುಗ್ಧಫೇನಶರ್ಕರಾವಿವಿ-  
ದೇಶಯೋ:" ಮೇದಿಂ । 6. ಖಂಡಸಕ್ಕರೆ. 7. ಕಾಕಂಬಿ. 8. ಕೆನೆ.

ಶಾರ್ಕರಿಕ ಶಾರ್ಕರಿಕ (ವಿಂ) ನುರುಜುಕಲ್ಲುಗಳುಳ್ಳ.  
ಶರ್ಕರಾ ವಾ "ಠಕ್" (೪-೨-೮೪) । ಪಕ್ಷೆ "ಠಕ್" (೪-೨-೮೦) ।  
ಶಾರ್ಕರಿಕಮ್ ಶರ್ಕರಿಕಮ್. ಪಕ್ಷೆ "ಠ:" (೪-೨-೮೪) ।  
ಶಾರ್ಕರೀಯಮ್ ಶರ್ಕರೀಯಮ್. ವರಾಹಾದಿತ್ವಾತ್ "ಕಕ್"  
(೪-೨-೮೦) । ಶಾರ್ಕರಿಕಮ್ ಶಾರ್ಕರಿಕಮ್.

ಶಾಸ್ತ್ರ ಶಾಸ್ತ್ರ (ನಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಧನುಸ್ಸು.  
ಶ್ರುತ್ಯಸ್ಯ ವಿಕಾರ: "ಅನ್" (೪-೩-೧೩೪) । "ವಿವ್ಯಾಧ  
ವಾಣಾನುಚರಾನಯೋಃ ಶಾಸ್ತ್ರೋದಧೇರ್ಮಿನಿಮಿ: ಶರೋಃ" ಯಾದಂ  
೨೦-೪೫ । "ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಧನುಮಿವ ದ್ರವಿಣಿ:" ಮಾಘಂ ೩-೨೦ ।  
2. ಧನುಸ್ಸು, ಬಿಲ್ಲು. "ಶಾಸ್ತ್ರಂ ವಿಣುಧನುಃ" ಹೇಮಂ ।  
"ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಕೃಜಿತವಿಜ್ಞೇಯಪ್ರತಿಯೋಧೇ ರಜಸ್ಯಮುತ್" ರಘುಂ ೪-೬೨ ।  
3. ಹಸಿರುಂಟಿ. (ವಿಂ) 4. ಶೃಂಗಸಂಬಂಧವಾದ. ಶ್ರುತ್ಯ-  
ಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) ।

ಶಾಸ್ತ್ರವಿವರಣೆ ಶಾಸ್ತ್ರವಿವರಣೆ (ಪುಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣು  
ನಾರಾಯಣ. ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಧನುಸ್ಯ "ಅನಡ್" (೪-೪-೧೩೨) ।



“ಶಾಙ್ಗಿಣ್ಯಂ ಧನುರಸ್ಯೇತಿ ಶಾಙ್ಗಧನ್ವಾ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ” ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ। “ಶಕ್ತುಮುಪ್ಪಂದಕೀ ಚಕ್ರೀ ಶಾಙ್ಗಧನ್ವಾ ಗದಾಧರಃ” ವಿಂ ಸಂ। -ಪಾಣಿ:-ಪಾಣಿ:- “ಶಕಟಮಿವ ಮಹೀಯಃ ಶೇಷವೇ ಶಾಙ್ಗಪಾಣಿಃ” ಮಾಘಂ ೧೧-೩।

ಶಾಙ್ಗಿನ್ ಶಾಙ್ಗರ್ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣು, ಶ್ರೇಷ್ಠ, ನಾರಾಯಣ. ಶಾಙ್ಗಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪)। “ಸತ್ಯಾನುರಕ್ತಂ ನರಕಸ್ಯ ಜಿಷ್ಣುವೋ ಗುಣೈರ್ನೃಪಾಃ ಶಾಙ್ಗಿಣಮನ್ವ-ಯಾಸಿಷುಃ” ಮಾಘಂ ೧೨-೩। “ಧರ್ಮಸಂರಕ್ಷಣಾರ್ಥೇವ ಪ್ರವೃತ್ತಿ-ರ್ಮಿವ ಶಾಙ್ಗಿಣಃ” ರಘುಂ ೧೪-೪। (ವಿಂ) 2. ಧನುಸ್ಸನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ.

ಶಾರ್ದೂಲ ಶಾರ್ದೂಲ (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಾಘ್ರ, ಹುಲಿ. ಶೃಣಾತಿ — ಶ್ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಋಲ್” (೩ಂ ೪-೯೦)। ದುಗಾಗಮಃ ವೃದ್ಧಿಃ (ಗಂ ೨೦೩)। “ಸ ದೇವದಾರ್ಢ್ರಮವೇದಿಕಾಢ್ಯಾಂ ಶಾರ್ದೂಲ-ಚರ್ಮವ್ಯವಧಾನವತ್ಯಾಮ್” ಕುಮಾಂ ೩-೪೪। 2. ಶರಭಮೃಗ. 3. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. 4. (ಉತ್ತರ ಪದವಾದಾಗ) ಉತ್ತಮ, ಶ್ರೇಷ್ಠ. “ಉತ್ತಿಷ್ಠ ನರಶಾರ್ದೂಲ ಕರ್ತವ್ಯಂ ದೈವಮಾತ್ಮಿಕಮ್” ರಾಮಾಂ। “ಶಾರ್ದೂಲೋ ರಾಕ್ಷಸಾಂತರೇ। ವ್ಯಾಘ್ರೇ ಚ ಪಶುಭೇದೇ ಚ ಸತ್ತಮೇ ತುತರಸ್ಥಿತಃ” ಮೇದಿಂ। “ಸ್ಯುಹುತರಪದೇ ವ್ಯಾಘ್ರ-ಪುಂಗವರ್ಭಮಕುಂಜರಾಃ। ಸಿಂಹಶಾರ್ದೂಲನಾಗಾಢ್ಯಾಃ ಪುಂಸಿ ಶ್ರೇಷ್ಠಾರ್ಥ-ಗೋಚರಾಃ” ಅಮಂ।

ಶಾರ್ದೂಲವಿಕೀಡಿತ ಶಾರ್ದೂಲವಿಕೀಡಿತ (ನಂ) ವೃತ್ತ, ರತ್ನಾಕರೋಕ್ತವಾದ ಹತ್ತೊಂಬತ್ತನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ, ಪ್ರತಿ ಪಾದದಲ್ಲೂ ಹತ್ತೊಂಬತ್ತು ಅಕ್ಷರ ಗಳಿರುವ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣಃ ಪ್ರತಿ ಪಾದ ದಲ್ಲೂ ಮಸಜ ಸತತ ಗಣಗಳೂ ಒಂದು ಗುರುವರ್ಣವೂ ಇರುವಲ್ಲಿ ಶಾರ್ದೂಲವಿಕೀಡಿತ ವೃತ್ತ. “ಸೂರ್ಯಾಸ್ವಿ-ರ್ಮಸಜಾಸ್ತತಾಃ ಸ್ಫುರವಃ ಶಾರ್ದೂಲವಿಕೀಡಿತಮ್” ವೃಂ ೨೦। ಗಣವಿನ್ಯಾಸಃ:

ಮ ಸ ಜ ಸ ತ ತ ಗು  
೦೦೦ 110 101 110 001 001 0

“ಕಾಕುತ್ಸ್ಥೋಽಪ್ಯಥ ರಕ್ಷಸಾಮಧಿಪತೇರ್ವಾಗ್ವಾಗುರಾವೇಷ್ಟಿತೇ ಕೃತ್ವಾ ಹಾಡಕತಾಡಕೇಢ್ವಹರಿಣಿ ಶಾರ್ದೂಲವಿಕೀಡಿತಮ್” ಚಂ ರಾಂ।

ಶಾರ್ವರ ಶಾರ್ವರ (ವಿಂ) 1. ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿರುವ. ಶರವ್ಯಾ ಮವಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೪೩)। “ನುನಮುಪ್ಪಮತಿ ಯಜ್ವನಾಂ ಪತಿಃ ಶಾರ್ವರಸ್ಯ ತಮಸೋ ನಿಷಿದ್ಧಯೇ” ಕುಮಾಂ ೮-೪೮। 2. ರಾತ್ರಿಸಂಬಂಧವಾದ. ಶರವ್ಯಾ ಇದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦)। 3. ಘಾತುಕ, ಹಿಂಸಿಸುವವನು, ಕೊಲ್ಲುವವನು, ಕ್ರೂರ. (ನಂ) 4. ಅಂಧಕಾರ, ಕೆತ್ತಲೆ. “ಶಾರ್ವರಸ್ತ್ವನ್ಧತಮಸೇ ಧಾತುಕೇ ಮೇಢ್ವಾಲಿಜ್ಜಕಮ್” ಮೇದಿಂ।

ಶಾರ್ವರ ಶಾರ್ವರ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ರಾತ್ರಿ. 2. ಪ್ರಭವ ಮೊದಲಾದ ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಮೂವತ್ತನೆಯ ನೆಯ ಸಂವತ್ಸರ.

ಶಾಲ ಶಾಲ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾಕಾರ, ಸುತ್ತುಗೋಡೆ, ಕೋಟೆ. ಶಲ್ಯತೇ — ಶಲ (ಗತೌ) ಕರ್ಮಂ “ಷಲ್” (೩-೩-೧೯)। “ಪ್ರಾಕಾರೋ ವರಣಃ ಶಾಲಃ” ಅಮಂ। “ಬೃಹ್ಮಣಿಶಿಲಾ-ಶಾಲಂ ಗುಪ್ತಾವಪಿ ಮನೋಹರಮ್” ಕುಮಾಂ ೬-೩೮। 2. ಸಾಲ ವೃಕ್ಷ, ಮತ್ತಿಮರ. 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. 4. ಶಾಲಿವಾಹನ ರಾಜ. “ಶಾಲೋ ಹಾಲ್ಮನುಪೇ ಮತ್ಸ್ಯಪ್ರಭೇದೇ ಸರ್ಜಪಾದಯೇ” ವಿಶ್ವಂ। 5. ವೃಕ್ಷ, ಮರ.

ಶಾಲಗ್ರಾಮ ಶಾಲಗ್ರಾಮ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣುವಿನ ಒಂದು ಮೂರ್ತಿ. ಶಾಲಗ್ರಾಮವು ನೇಪಾಳದೇಶದಲ್ಲಿ ಗಂಡಕೀ ನದಿಯಲ್ಲಿ ಜಲಚರ ಕೀಟಗಳಿಂದ ಕೊರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ ಚಕ್ರ ದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಶಿಲೆ. 2. ಒಂದು ಕ್ಷೇತ್ರ, ಮೇಲೆ ಕಂಡ ಶಾಲಗ್ರಾಮಗಳು ಉತ್ಪತ್ತಿಯಾಗುವ ಸ್ಥಳ. ಇಲ್ಲಿ ಗಂಡಕೀ ನದಿಯು ಪ್ರವಹಿಸುವುದು. “ಶಾಲಗ್ರಾಮ ಇತಿ ಕ್ವಾತೋ ವಿಷ್ಣುರದ್ಭುತಕರ್ಮಕಃ” ಭಾಂ ವನಂ ೮೨-೧೨೪। ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಭೇದದಿಂದ ಶಾಲಗ್ರಾಮ ಮೂರ್ತಿಗಳ ಭೇದಜ್ಞಾನ ವುಂಟಾಗುವುದು. “ಏಕದ್ವಾರೆ ಚತುಷ್ಚಕ್ರಂ ವನಮಾಲಾ-ವಿಭೂಷಿತಮ್। ನವೀನನೀರದಾಕಾರಂ ಲಕ್ಷ್ಮೀನಾರಾಯಣಾಭಿಷಮ್॥ ಏಕದ್ವಾರೆ ಚತುಷ್ಚಕ್ರಂ ನವೀನನೀರದೋಪಮಮ್। ಲಕ್ಷ್ಮೀಜನಾದನಂ ಜ್ಞೇಯಂ ರಹಿತಂ ವನಮಾಲಯಾ”॥ ರಘುನಾಥಃ “ದ್ವಾರದ್ವಯೇ ಚತುಷ್ಚಕ್ರಂ ಗೋಷ್ಠದೇನ ಸಮನ್ವಿತಮ್। ರಘುನಾಥಾಭಿಷಂ ಜ್ಞೇಯಂ ವೇಷ್ಟಿತಂ ವನಮಾಲಯಾ”॥ ದಧಿವಾಮನ ಮೂರ್ತಿಃ “ಅತಿಸ್ತುಭ್ರಂ ದ್ವಿಚಕ್ರಂ ತು ನವೀನನೀರದಪ್ರಭಮ್। ದಧಿವಾಮನಂ ವಿಜ್ಞೇಯಂ ಗೃಹಿಣಾಂ ಚ ಸುಖಪ್ರದಮ್”॥ ಶ್ರೀಧರ ಮೂರ್ತಿಃ “ಅತಿಸ್ತುಭ್ರಂ ದ್ವಿಚಕ್ರಂ ಚ ವನಮಾಲಾವಿಭೂಷಿತಮ್। ಶ್ರೀಧರಂ ದೇವಿ ವಿಜ್ಞೇಯಂ ಶ್ರೀಪದಂ ಗೃಹಿಣಾಂ ಸದಾ”॥ ಶ್ರೀ ನೃಸಿಂಹ ಮೂರ್ತಿಃ “ಅತೀವ ವಿಸ್ತೃತಾಸ್ಯಂ ಚ ದ್ವಿಚಕ್ರಂ ವಿಕಟಂ ಸತಿ। ನರಸಿಂಹಾಭಿಷಂ ಜ್ಞೇಯಂ ಸದ್ವಿರಾಢ್ಯದಂ ನೃಣಾಮ್”॥ ಶ್ರೀ ಲಕ್ಷ್ಮೀನೃಸಿಂಹ ಮೂರ್ತಿಃ “ದ್ವಿಚಕ್ರಂ ವಿಸ್ತೃತಾಸ್ಯಂ ಚ ವನಮಾಲಾಸಮನ್ವಿತಮ್। ಲಕ್ಷ್ಮೀನೃಸಿಂಹಂ ವಿಜ್ಞೇಯಂ ಗೃಹಿಣಾಂ ಸುಖದಂ ಸದಾ”॥ “ಶಾಲಗ್ರಾಮಶಿಲಾ ಯತ್ರ ತತ್ರ ಸನ್ನಿಹಿತೋ ಹರಿಃ। ತತ್ರೇವ ಲಕ್ಷ್ಮೀರ್ವಸತಿ ಸರ್ವತೀರ್ಥಸಮನ್ವಿತಾ”॥ ಸ್ತ್ರೀಯರಿಗೆ ಶಾಲಗ್ರಾಮ ಪೂಜಾಧಿಕಾರವಿಲ್ಲ. “ಶಾಲಗ್ರಾಮಂ ಪೂಜಯಿತ್ವಾ ಗೃಹಸ್ಥೋ ಮೋಕ್ಷಮಾಪ್ನುಯಾತ್। ನ ಕದಾಚಿತ್ ಸ್ತ್ರಿಯಾ ಕಾರ್ಯಂ ಶಾಲಗ್ರಾಮಸ್ಯ ಪೂಜನಮ್” ಪಾಣ್ವಪುಂ।

ಶಾಲಜ್ಞಾನ ಶಾಲಜ್ಞಾನ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಮುಖ. ಶಾಲಜ್ಞಾನಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ “ಫಕ್” (೪-೧-೯೯)। 2. ನಂದಿ. “ಶಾಲಜ್ಞಾನಂ ಉದ್ವಿಷ್ಟೋ ಮುನಿಭೇದೇ ಚ ನಂದಿನಿ” ಮೇದಿಂ।



ಶಾಲನಿರ್ಯಾಸ ಶಾಲನಿರ್ಯಾಸ (ಪುಂ) ಮತ್ತಿಮರದ ಹಾಲು, ಸಾಲವೃಕ್ಷದ ರಸ. "ಸೇವ್ಯಮಾನೋ ಸುತಸ್ಪರ್ಶಿ: ಶಾಲನಿರ್ಯಾಸಗಂಧಿಭಿ:" ರಘುಂ ೧-೩೮.

ಶಾಲಪರ್ಣಿ ಶಾಲಪರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂರೆಲಿ ಹೊನ್ನೆಮರ.

"ವಿದಾರಿಗಂಧಾಶ್ರುಮತೀ ಶಾಲಪರ್ಣಿ ಸ್ಥಿರಾ ಧ್ರುವಾ" ಅಮಂ.

ಶಾಲಭಜ್ಜಿಕಾ ಶಾಲಭಂಜಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುತ್ರಕ್ಕ, ದಂತ ಮರ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಬೊಂಬೆ. ಶಾಲೇನ ಭಜ್ಯತೇ - ಮಂಜೋ (ಆಮರ್ದನೆ) "ವನು" (ತಂ ೨-೩೩). "ಬಹುರೂಪಕಶಾಲಭಜ್ಜಿಕಾಮುಖಚಂದ್ರೇ ಕಲಕ್ಕ-ರಕ್ಷುವ:" ನೆಪಂ ೨-೮೩.

ಶಾಲವೇಷ್ಠ ಶಾಲವೇಷ್ಠ (ಪುಂ) ಮತ್ತಿಮರದ ಹಾಲು, ಸಾಲವೃಕ್ಷದ ರಸ.

ಶಾಲಸಾರ ಶಾಲಸಾರ (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. 2. ಹಿಂಗು. "ಶಾಲಸಾರೋ ದ್ರುಮೇ ಹಿಜ್ಜಿ" ವಿಷಂ.

ಶಾಲಾ ಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೃಹ, ಮನೆ. ಶಾಲನ್ಯತ್ರ-ಶಾಲ (ಗತೌ) "ಘ" (೩-೩-೧೨೧). "ಸಾ ಮಂದುರಾಸಂಶ್ರಯಿಮಿ-ಸ್ತುರಜ್ಞ: ಶಾಲಾವಿಧಿಷ್ಟಮಗತಂಶ್ಚ ನಾಗ:" ರಘುಂ ೧೬-೪೧. 2. ಮನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ, ಮನೆಯ ಕೊಠಡಿ. "ಗೃಹೇ-ವಿಶಾಲೇರಪಿ ಭೂರಿಸಾಲ:" ಮಾಘಂ ೩-೫. 3. ಮರದ ಸ್ತಂಭದಿಂದ ಹೊರಡುವ ರೆಂಬೆ. "ಶಾಲಾ ದ್ರುಸ್ಕನ್ವ-ಶಾಖಾಂ ಗೃಹಗೃಹೇಕದೇಶಯೋ:" ಮೇದಿಂ.

ಶಾಲಾಕಿನ್ ಶಾಲಾಕಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಶಸ್ತ್ರವೈದ್ಯ. 2. ನಾಟಕ, ಕ್ಷೌರಿಕ.

ಶಾಲಾಜಿರ ಶಾಲಾಜಿರ (ಪುಂ) ಮಣ್ಣಿನ ಶ್ರಾವ. "ಸ್ಯಾಂಚ್ಚರಾ-ವಸ್ತು ಮಾತಿಕ: ಶಾಲಾಜಿರ: ಪಾಥಿವಶ್ಚ ಮೃತ್ಕಾಸ್ಯಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಶಾಲಾತುರೀಯ ಶಾಲಾತುರೀಯ (ಪುಂ) ಪಾಣಿನಿಮಹರ್ಷಿ.

ಶಾಲಾಮೃಗ ಶಾಲಾಮೃಗ (ಪುಂ) ನಾಯಿ. ಶಾಲಾಯಾ ಮೃಗ: "ಶಾಲಾಮೃಗೋಽಸ್ಥಿಮಕ್ಷೋ ಗ್ರಾಮಮೃಗೋ ಮಂಡಲ: ಕಪಿಲ:" ಹಾರಾಂ.

ಶಾಲಾರ ಶಾಲಾರ (ನಂ) 1. ಅನೆಯ ಕಾಲಿನ ಉಗುರು. 2. ಸೋಪಾನ, ಮೆಟ್ಟಿಲು. 3. ಪಕ್ಷಿಗಳ ಪಂಜರ, ಬೋಮ, ಗೂಡು. ಶಾಲಾಂ ಶ್ರುಚತಿ - ಶ್ರು (ಗತೌ) "ಅ" (೩-೨-೧). "ಶಾಲಾರಂ ಸ್ಯಾತ್ ಹಸ್ತಿನಕ್ಷೇ-ಸೋಪಾನೇ ಪಕ್ಷಿಪಂಜರೇ" ಮೇದಿಂ.

ಶಾಲಾವೃಕ ಶಾಲಾವೃಕ (ಪುಂ) 1. ನಾಯಿ. 2. ಜಂಬುಕ, ನರಿ. 3. ವಾಸರ, ಕಪಿ. "ಶಾಲಾವೃಕ: ಶ್ರುಗಾಲೇ ಸ್ಯಾತ್ಸಾರಮೇಯೇ-ವಲಿಮುಕ್ತೇ" ಮೇದಿಂ. 4. ಜಿಂಕೆ. 5. ಮಾರ್ಜಾರ, ಬೆಕ್ಕು.

ಶಾಲಿ ಶಾಲಿ (ಪುಂ) 1. ಬಡ್, ನೆಲ್ಲ. ಶಾಲ್ಯತೇ-ಶಾಲ (ಚಲನೆ) + ಣಿಕ್ "ಃ" (ತಂ ೪-೧೩೯). "ಅಮೋ ಪೃಥುಸ್ತಮ್ಬಮೃತ: ಪಿಶಜ್ಜತಾಂ ಗತಾ ವಿಪಾಕೇನ ಫಲಸ್ಯ ಶಾಲಯ:" ಕಿರಾಂ ೪-೨೬. 2. ಪುನಗುಬೆಕ್ಕು. "ಶಾಲಿಸ್ತು ಕಲಮಾದೌ ಚ ಗಂಧಮಾರ್ಜಾರಕೇ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ.

ಶಾಲಿಗೋಪಿ ಶಾಲಿಗೋಪಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಡ್, ಗದ್ದೆ ಕಾಯುವ ಹೆಂಗಸು. "ಆಕುಮಾರಕಥೋದ್ಭಾತಂ ಶಾಲಿಗೋಪ್ಯೋ-ಜಗುಯಶ:" ರಘುಂ ೪-೨೦.

ಶಾಲಿನ್ ಶಾಲಿನ್ (ವಿಂ) (ಸಮಾಸದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ) 1. ಪಡೆದಿರುವ, ಹೊಂದಿರುವ, ಕೂಡಿರುವ. ಶಾಲ (ಚಲನ-ಸಂವರಣಯೋ:) "ಣಿನ್:" (೩-೧-೧೩೪). "ಪ್ರಭವನ್ಯಮಿ-ಮಾನಶಾಲಿನಾಂ ಮದಮುತ್ಸಂಭವಿತುಂ ವಿಭೂತಯ:" ಕಿರಾಂ ೨-೪೮. 2. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ. "ಗಲದ್ಬುಕೂಲ-ಸ್ತನಶಾಲಿನೋರಸಾ" ಕಿರಾಂ ೮-೧೭. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫). ಶಾಲಿನಿ ಶಾಲಿನೀ. "ಸಂಪತ್ತಿ: ಕಿಸಲಯ-ಶಾಲಿನೀಲತಾನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೭-೨೮. "ಅಲಬ್ಬುಪಲಪ್ತಃ-ಶಾಲಿನಿ:" ಮಾಘಂ ೧೬-೭೬.

ಶಾಲಿನಿ ಶಾಲಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರೋಕ್ತ ಹನ್ನೊಂದ ನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ.

ಇದರ ಲಕ್ಷಣ:

"ಶಾಲಿನ್ಯುಕ್ತಾ ಸ್ತೌತಗೌ ಗೋವಿಲೋಕ: ವೃಂ ೨೦.

ಇದರ ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ಮ ತ ತ ಗು ಗು  
ಉ ಉ ಉ ಉ ಉ

ಶಾಲಿಪರ್ಣಿ ಶಾಲಿಪರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡು ಉದ್ದಿನ ಗಿಡ.

ಶಾಲಿಪಿಷ್ಠ ಶಾಲಿಪಿಷ್ಠ (ನಂ) ಸ್ಪಷ್ಟಕಿರಿ.

ಶಾಲಿವಾಹನ ಶಾಲಿವಾಹನ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ರಾಜ, ಒಬ್ಬ ಶಕಪುರುಷ.

ಶಾಲಿಹೋತ್ರ ಶಾಲಿಹೋತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಆಶ್ವ, ಕುದುರೆ. "ಅಶ್ವಕಿಲ್ಕಿ ಹರಿಕ್ರಾಂತ: ಶಾಲಿಹೋತ್ರಶ್ಚ ಮುದ್ಗಮುಕ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 2. ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿಯ ಪುತ್ರ. ಈ ಯುಗಿಯಿಂದ ಆಶ್ವಶಾಸ್ತ್ರವು ರಚಿತವಾಯಿತು.

ಶಾಲಿನ ಶಾಲಿನ (ವಿಂ) ದಿಟ್ಟತನವಿಲ್ಲದವನು, ಸಂಕೋಚ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಶಾಲಾಪ್ರವೇಶಮಹಂತಿ-ಶಾಲಾಪ್ರವೇಶ "ಲ" (೫-೨-೨೦). उत्तरपदलोप: निपा०. "लोकालोक-व्याहतं घर्मरश्मे: शालीनं वा धाम नालं प्रसर्तुम्" ಮಾಘಂ ೧೬-೮೩.



ಶಾಲಿನತಾ ಶಾಲೀನತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಕೋಚದ ಸ್ವಭಾವ, ದಿಟ್ಟತನವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಶಾಲಿನಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) ।

ಶಾಲೀಯ ಶಾಲೀಯ (ವಿಂ) 1. ಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಶಾಲಾಢಾ ಜಾತ: "ಛ:" (೪-೨-೧೧೪) । 2. ಶಾಲೆಯಲ್ಲಿರುವ. ಶಾಲಾಢಾ ಭವ: "ಛ:" । 3. ಶಾಲೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಶಾಲಾಢಾ ಇದಮ್ । "ಛ:" ।

ಶಾಲ್ಯ ಶಾಲ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಕಷಾಯ ದ್ರವ್ಯ. 2. ಭೇಕ, ಕಪ್ಪೆ. 3. ಒಂದು ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ. (ನಂ) 4. ತಾವರೆಯ ಗೆಡ್ಡೆ.

ಶಾಲೂಕ ಶಾಲೂಕ (ಪುಂ) 1. ಭೇಕ, ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. 2. ತಾವರೆಯ ಗೆಡ್ಡೆ. ಶಾಲ (ಗತೌ) "ಝಕಣ್" (ತಂ ೪-೪೨) । "ಶಾಲೂಕಮೇಷಾಂ ಕಂದ: ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ ।

ಶಾಲೂರ ಶಾಲೂರ (ಪುಂ) ಭೇಕ, ಮಂಡೂಕ, ಕಪ್ಪೆ. ಶಾಲ (ಗತೌ) "ಝರ:" (ತಂ ೪-೯೦) ।

ಶಾಲೇಯ ಶಾಲೇಯ (ನಂ) 1. ಬತ್ತವನ್ನು ಬೆಳೆಯುವ ಭೂಮಿ. ಶಾಲೀನಾಂ ಭವನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ "ಠಕ್" (೪-೨-೨) । (ಪುಂ) 2. ಸ್ವಪ್ನಸಿಗಿಸೂಪ್ತ. "ಕ್ಷೇತ್ರಂ ವ್ರೇಹ್ಯಶಾಲೇಯಮ್" ಅಮಂ । "ಶಾಲೇಯ: ಸ್ಯಾತ್ ಶೀತಶಿವಾ ಛತ್ರಾ ಮಧುರಿಕಾ ಮಿಸಿ:" ಅಮಂ ।

ಶಾಲೋತ್ತರೀಯ ಶಾಲೋತ್ತರೀಯ (ಪುಂ) ಪಾಣಿನಿ ಮಹರ್ಷಿ. ಶಾಲೋತ್ತರೇ ಗ್ರಾಮೇ ಭವ: "ಛ:" (೪-೨-೧೧೪) ।

ಶಾಲ್ಮಲಿ ಶಾಲ್ಮಲಿ (ಪುಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬೂರುಗದ ಮರ. ಶಾಲಯತಿ — ಶಾಲೆ (ಸಖಲನೆ) "ವಿವಪ್" ಮಲ (ಧಾರಣೆ) "ಇನ್" (ತಂ ೪-೧೧೮) । ಶಾಲ್ ಚಾಸೌ ಮಲಿಷ್ಠ । 2. ಸಪ್ತದ್ವೀಪಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ದ್ವೀಪ. ["ದ್ವೀಪ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. 3. ಒಂದು ನರಕ. "ಶಾಲ್ಮಲಿ: ತರಭೇದೇ ಸ್ಯಾತ್ ದ್ವೀಪಭೇದೇಽಪಿ ಚ ದ್ವಯೋ:" ಮೇದಿಂ ।

ಶಾಲ್ಮಲಿನ್ ಶಾಲ್ಮಲಿನ್ (ಪುಂ) ಗರುಡಪಕ್ಷಿ.

ಶಾಲ್ಮಲಿಸ್ಥ ಶಾಲ್ಮಲಿಸ್ಥ (ಪುಂ) ಗರುಡಪಕ್ಷಿ. "ಶಾಲ್ಮಲೌ ತಿಠತಿ — ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ:" (೩-೨-೪) ।

ಶಾಲ್ಮಲಿ ಶಾಲ್ಮಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬೂರುಗದ ಮರ. ಶಾಲ್ಮಲಿ—ವಾ "ಛೀಪ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೪) । 2. ಒಂದು ನರಕ.

ಶಾಲ್ಮಲಿವೇಷ್ಠ ಶಾಲ್ಮಲಿವೇಷ್ಠ (ಪುಂ) ಬೂರುಗದ ಮರದ ಅಂಚು.

ಶಾಲ್ವ ಶಾಲ್ವ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ದೇಶ. 2. ಶಾಲ್ವದೇಶದ ರಾಜ "ಯೇ ಚಾನ್ಯೇ ಕಾಲಯವನಶಾಲ್ವಹವಿಸ್ತುಮಾದಯ:" ಮಾಘಂ ೨-೯೮ ।

ಶಾವ ಶಾವ (ಪುಂ) 1. ಯಾವುದಾದರೂ ಪಶುಸಾಮಾನ್ಯದ ಮರಿ. ಶಾವ (ಗತೌ) "ಘಬ್" (೩-೩-೧೯) । "ಕವ ವಯಂ ಕವ ಪರೋಕ್ಷಮನ್ಮಯೋ ಮೃಗಶಾವೇ: ಸಮಮೇಧಿತೌ ಜನ:" ಶಾಕುಂ ೨-೧೮ । (ವಿಂ) 2. ಮೃತದೇಹಸಂಬಂಧವಾದ. ಶವಸ್ಯಾಯಮ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೨೦) । 3. ಮರಣನಿಮಿತ್ತವಾದ. "ದಶಾಹಂ ಶಾವಮಾಶೀವಂ ಸಪಿಂಡೇಷು ವಿಧೀಯತೇ" ಮನುಂ ೪-೪೯ ।

ಶಾವಕ ಶಾವಕ (ಪುಂ) ಶಿಶು, ಮರಿ. ಶಾವ ಏವ—ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" ।

ಶಾಶ್ವತ ಶಾಶ್ವತ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಶಾಶ್ವದೀತ್ಯವ್ಯುತ್ಪನ್ನಂ ಪ್ರಾತಿಪದಿಕಮ್—ತತ್ರ ಭವ: "ಅಣ್" (೪-೩-೪೩) । ಅನವರತಜಗದ್ವ್ಯಾಪಾರಪ್ರವಾಹತ್ವೇನ ಶಾಶ್ವದ್ಭವ: ನಿಯತ: । "ಅವ್ಯುಚ್ಛಿನ್ನಾಸ್ತತಸ್ತೇತೇ ಸರ್ಗಸ್ಥಿತೀಯಂತಸಂಯಮಾ: । ಅತ: ಸದಾ ಪ್ರವಾಹತ್ವಾತ್ ನಿಯತ: ಶಾಶ್ವತ ಉಚ್ಯತೇ" ಇತಿ ನಿರ್ಣಯ: । "ಅಗ್ರಾಹ್ಯ: ಶಾಶ್ವತ: ಕೃಷ್ಣ:" ವಿಂ ಸಂ । 2. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. "ಪ್ರವೃತ್ತಿಶ್ಚ ನಿವೃತ್ತಿಶ್ಚ ನಿಯತ: ಶಾಶ್ವತೌ ಧ್ರುವ:" ಮಾಂ । (ವಿಂ) 3. ನಿಶ್ಚಯ, ಸ್ಥಿರವಾದ, ಎಂದೆಂದಿಗೂ ಇರುವ. "ತ್ವಮೇವ ಹವ್ಯಂ ಹೌತಾ ಚ ಭೋಜ್ಯಂ ಭೋಕ್ತಾ ಚ ಶಾಶ್ವತ:" ಕುಮಾಂ ೨-೧೪ । "ಶಾಶ್ವತಸ್ತು ಧ್ರುವೌ ನಿಯತಸದಾತನಸನಾತನಾ:" ಅಮಂ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೧೪) । "ಮಾ ನಿಷಾದ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಂ ತ್ವಮಗಮ: ಶಾಶ್ವತೀ: ಸಮಾ:" ಚಂ ರಾಂ । (ಅವ್ಯಂ) 4. ಶಾಶ್ವತವಾಗಿ, ಎಂದೆಂದಿಗೂ, ಸ್ಥಿರವಾಗಿ.

ಶಾಕುಲಿಕ ಶಾಕುಲಿಕ (ನಂ) ಚಕ್ಕುಲಿಗಳ ಸಮೂಹ, ಚಕ್ಕುಲಿಗಳ ರಾಶಿ. ಶಾಕುಲೀನಾಂ ಸಮೂಹ: "ಠಕ್" (೪-೨-೪೭) ।

ಶಾಸಕ ಶಾಸಕ (ವಿಂ) 1. ಆಳುವವನು, ಪ್ರಭುತ್ವ ನಡೆಸುವವನು. ಶಾಸ್ತಿ—ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟೌ) "ಫಕ್" (೩-೧-೧೩೩) । "ಶಾಧಿ ಶಾಸಕ ಜಗತ್ರಯಸ್ಯ ಮಾ- ಮಾಶ್ರವೋಽಸ್ಮಿ ಭವತ: ಸಹಾನುಜ:" ಮಾಘಂ ೧೪-೧೧ । 2. ದಂಡಿಸುವವನು, ಶಿಕ್ಷಿಸುವವನು. 3. ಆಜ್ಞೆ ಮಾಡುವವನು. 4. ಸಲಹೆ ಕೊಡುವವನು.

ಶಾಸತ್ ಶಾಸತ್ (ವಿಂ) 1. ಆಳುತ್ತಿರುವ, ಪಾಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ರಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಪೃಥಿವೀ ಶಾಸತಸ್ತಸ್ಯ ವಾಕಶಾಸನ- ತೇಜಸ:" ರಘುಂ ೧೦-೧ । 2. ಆಜ್ಞೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. "ಇತಿ ಶಾಸತಿ ಸೇನಾನ್ಯಾಂ ಗಚ್ಛತಸ್ತಾನನೇಕಥಾ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೨೯ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬) । ಶಾಸತೌ ಶಾಸತೇ. 3. ದಂಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಶಿಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ.



**ಶಾಸನ ಶಾಸನ (ನಂ)** 1. ಅಜ್ಞೆ, ಅದೇಶ, ಅಪ್ಪಣೆ. ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟಿ) ಭಾವೆ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಮೇಧಾ: ಶಾಸನೇಽಪಿ ಗುಣಿಣಿ ವ್ಯವಸ್ಥಿತಂ ಕೃತ್ಯವಸ್ತುಷು ನಿಯುಕ್ತವ ಕಾಮತ:" ಮಾಧಂ ೨-೧೧೩। "ಶಾಸನೇಽಪಿ ಗುಣಿಣಿ ವ್ಯವಸ್ಥಿತಂ ಕೃತ್ಯವಸ್ತುಷು ನಿಯುಕ್ತವ ಕಾಮತ:" ಮಾಧಂ ೧೪-೧೫। 2. ಶಿಕ್ಷೆ, ದಂಡನೆ. "ತವ ಶಾಸನಮಾಶು ಭೂಪತಿ: ಪರವಾನಯ ಯತಸ್ತ್ವಯೇವ ಸ:" ಮಾಧಂ ೧೬-೪। 3. ಕಾನೂನು, ಕಟ್ಟಳೆ, ಕಾಯಿದೆ. 4. ರಾಜ ನಂದ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ ಸನ್ನದ, ಭೂಮಿ ಮೊದಲಾದುವು ಗಳ ವರ್ಗಪತ್ರ. 5. ಅಜ್ಞೆ, ಅಣತಿ, ವಿಧಿ. "ಇತಿ ಕ್ಷಿತಿಶೋ ನವತಿ ನವಾಧಿಕಾಂ ಮಹಾಕ್ರತುನಾಂ ಮಹನೀಯಶಾಸನ:" ರಘುಂ ೩-೬೯। 6. ಸೇವೆಯ ಅಜ್ಞೆ. "ಶಾಸನಂ ಪಶುಪತೇ: ಸ ಕುಮಾರ:" ಕುಮಾಂ ೧೨-೫೮। 7. ಅಧಿಕಾರ, ಪ್ರಭುತ್ವ. "ಅನನ್ಯಶಾಸನಾಮುರ್ವಿ ಶಶಾಸಕಪುರೀಮಿವ" ರಘುಂ ೧-೩೦। 8. ಸೂಚನೆ, ಸಲಹೆ. 9. ಕರಾರು, ಒಡಂಬಡಿಕೆ, ಒಪ್ಪಂದ. 10. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. 11. ಶಾಸ್ತ್ರ, ಅಧಾರಪೂರ್ವಕ ತಿಳಿವಳಿಕೆಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ ಗ್ರಂಥ. 12. ನಿಯಂತ್ರಣ, ಹತೋಟಿಯಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಶಾಸನಂ ರಾಜದತ್ತೋವ್ಯಾ ಲೇಖಾಜ್ಞಾಶಾಸ್ತ್ರಶಾಸ್ತಿಪು" ವಿಶ್ವಂ। 13. ಆಳುವುದು.

**ಶಾಸನೀಯ ಶಾಸನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ, ದಂಡಿಸ ಲ್ಪಡುವ. ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟಿ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। 2. ಆಳಲ್ಪಡುವವನು. 3. ಅಜ್ಞೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವವನು. 4. ಶಿಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ. 5. ಆಳಬೇಕಾದ. 6. ಅಜ್ಞಾಪಿಸ ಬೇಕಾದ. "ತಥಾ:" (೩-೧-೯೬)। -ಸಿತವ್ಯ:-ಅತವ್ಯ:।

**ಶಾಸಿತ ಶಾಸಿತ (ವಿಂ)** 1. ಅಜ್ಞೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟಿ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಆಳಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸುಶಾಸಿತಾ ಸ್ತ್ರೀ ನೃಪತಿ: ಸುಸೇವಿತ:"।

**ಶಾಸಿತು ಶಾಸಿತು (ವಿಂ)** 1. ಅಜ್ಞೆ ಮಾಡುವವನು, ಅಪ್ಪಣೆ ಮಾಡುವವನು. ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟಿ) "ತುನ್" (೩-೧-೧೩೩)। "ಆದೇಶಂ ದೇಶಕಾಲಜ್ಞ: ಶಿಷ್ಯ: ಶಾಸಿತುರಾ- ನತ:" ರಘುಂ ೧-೯೨। 2. ದಂಡಿಸುವವನು, ಶಿಕ್ಷಿಸು ವವನು. "ಕ: ಪೌರವೇ ವಸುಮತೀಂ ಶಾಸತಿ ಶಾಸಿತರಿ ದುರ್ವಿನೋತಾನಾಮ್" ಶಾಕುಂ ೧-೨೧। 3. ಸಲಹೆ ಕೊಡು ವವನು. 4. ಆಳುವವನು, ಪಾಲಿಸುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೫)। -ಶ್ರೀ-ಶ್ರೀ:.

**ಶಾಸ್ತಿ ಶಾಸ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಶಿಕ್ಷೆ, ದಂಡನೆ. ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟಿ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। 2. ಆಳುವುದು, ಪಾಲಿಸು ವುದು. 3. ಅಜ್ಞೆ ಮಾಡುವುದು.

**ಶಾಸ್ತು ಶಾಸ್ತು (ಪುಂ)** 1. ಬುದ್ಧಿದೇವ. ಶಾಸ್ತಿ - ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟಿ) "ತುನ್" (೩ಂ ೨-೯೪)। "ಮುನೀಂದ್ರ: ಶ್ರೀಧನ: ಶಾಸ್ತಾ" ಅಮಂ। 2. ಆಳುವವನು, ಪ್ರಭುತ್ವ ಸಡಸುವವನು, ರಾಜ, ದೊರೆ. 3. ಅಜ್ಞೆ ಮಾಡು ವವನು. "ಶಾಸ್ತಾ ಸಮಂತಭದ್ರೇ ನಾ ಶಾಸಕೇ ಪುನರನ್ಯ- ವತ್" ಮೇದಿಂ। 4. ದಂಡಿಸುವವನು, ಶಿಕ್ಷಿಸುವವನು. "ರಾಜಪೀಠಾಂ ಜನಯಿತಾ ಶಾಸ್ತಾ ಚೌತ್ಯಗಾಮಿನಾಮ್" ಭಾಗಂ ೧-೧೨-೨೬। 5. ಉಪದೇಶಕ, ಉಪಾಧ್ಯಾಯ. 6. ತಂದೆ. 7. ಜಿನದೇವ. "ಶಾಸ್ತಾ ಜಿನೇ ಶಾಸಕೇ ವ" ಹೇಮಂ। "ಶಾಸ್ತಾ ವ ಶಾಸಕೇ ಬುದ್ಧೇ" ವಿಶ್ವಂ।

**ಶಾಸ್ತ್ರ ಶಾಸ್ತ್ರ (ನಂ)** 1. ಅಜ್ಞೆ, ಅದೇಶ. ಶಿಷ್ಯತೇಜನೇನ - ಶಾಸು (ಅನುಶಿಷ್ಟಿ) "ಟ್ರುನ್" (೩ಂ ೪-೧೫೮)। ಶಾಸ್ತಿ ತ್ರಾಯತೇ ವೇತಿ ಶಾಸ್ತ್ರಮ್ ಇತಿ ವಾ। "ಕೃಗ್ಯಜು:ಸಾಮಾಖರ್ಷಿ ಚ ಭಾರತಂ ಪञ್ಚರಾತ್ರಕಮ್। ಮೂಲರಾಮಾಯಣಂ ಚೈವ ಶಾಸ್ತ್ರಮಿತ್ಯ- ಭಿಧೀಯತೇ" ಸ್ಕಾಂದಂ। 2. ಜ್ಞಾನವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಗ್ರಂಥ, ಉಪದೇಶಿಸುವ ಗ್ರಂಥ. 3. ಅಜ್ಞಾರೂಪವಾದ ಗ್ರಂಥ. 4. ಸಾಧು ಮತ್ತು ಅಸಾಧು ಕರ್ತವ್ಯ ಮತ್ತು ಅಕರ್ತವ್ಯ ವಿಹಿತ ಮತ್ತು ನಿಷಿದ್ಧ ಗ್ರಾಹ್ಯ ಮತ್ತು ಅಗ್ರಾಹ್ಯವಿಷಯಗಳನ್ನೂ ತತ್ತ್ವಗಳನ್ನೂ ವಸ್ತು ಸ್ವರೂಪವನ್ನೂ ಚರಾಚರಸಕಲವಸ್ತುಗಳ ಲಕ್ಷಣಗಳನ್ನೂ ಬೋಧಿಸುವ ಗ್ರಂಥ. ವೇದಗಳು ಪುರಾಣಗಳು ಅಧ್ಯಾತ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರ ರಾಜನೀತಿ ಶಾಸ್ತ್ರ ಅಶ್ವಶಾಸ್ತ್ರ ಗಜಶಾಸ್ತ್ರ ವೈದ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ ಜ್ಯೋತಿ: ಶಾಸ್ತ್ರ ಪಾಕಶಾಸ್ತ್ರ ತರ್ಕ ವ್ಯಾಕರಣ ಅಲಂಕಾರ ಪೂರ್ವೋತ್ತರ ಮೀಮಾಂಸಾಶಾಸ್ತ್ರಗಳು ಸಾಂಖ್ಯ ಯೋಗ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳು ಅರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರ ಗಣಿತಶಾಸ್ತ್ರ ಭೌತಶಾಸ್ತ್ರ ಸಸ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರ ರಸಾಯನಶಾಸ್ತ್ರ ಭೂವಿಜ್ಞಾನ ಗಾಂಧರ್ವ ನಾಟ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳು ಇತ್ಯಾದಿ. ಈ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಸದಾಚಾರ ಸಂಪನ್ನರೂ ಆಯಾ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಪರಿಣತರೂ ಆದ ಆಚಾರ್ಯರುಗಳಿಂದ ಉಪದೇಶ ಹೊಂದಿ ಆಯಾ ಶಾಸ್ತ್ರ ಗಳ ಜ್ಞಾನವನ್ನು ಪಡೆಯಬೇಕು. "ಇತಿ ಗೃಹ್ಯತಮಂ ಶಾಸ್ತ್ರ- ಮಿದಮುಕ್ತಂ ಮಯಾನಘ" ಗೀತಾ ೧೫-೨೦। "ಶುದ್ಧಮಶ್ರುತಿ- ವಿರೋಧಿ ಬಿಭ್ರತಂ ಶಾಸ್ತ್ರಮುಜ್ಜ್ವಲಮವರ್ಣಸಂಕರ:" ಮಾಧಂ ೧೪-೩೭। "ವಿಶೇಷವಿದುಷ: ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಯತ್ತವೋದ್ಗ್ರಾಹ್ಯತೇ ಪುರ:" ಮಾಧಂ ೨-೭೫। "ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಹಿ ನಿಶ್ಚಿತಧಿಯಾಂ ಕವ ನ ಸಿದ್ಧಿಮೇತಿ" ಮಾಧಂ ೫-೪೭। "ಸ ಕಿಲ ಸಕಲಂ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ವಿವೇದ ವಿಭುರ್ಯಾ" ಕುಮಾಂ ೧೧-೫೦। ಜಿತುರ್ಮುಖ ಬ್ರಹ್ಮನು ತಪಸ್ಸನ್ನಾಚರಿಸಿ ಮೊದಲು ಶತಕೋಟಿ ವಿಸ್ತರ ವಾದ ಸಕಲ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳ ಪುರಾಣವನ್ನು ಸ್ಮರಿಸಿದನು.



ಅನಂತರ ಅವನ ವದನಗಳಿಂದ ವೇದಗಳೆಲ್ಲವೂ ಹೊರಟು ಬಂದುವು: "ತಪಶ್ಚಾರ ಪ್ರಥಮಮರಾಣಾಂ ಪಿತಾಮಹ: | ಆವಿರ್ಭೂತಾಸ್ತತೋ ವೇದಾ: ಸಾಕ್ಷೋಪಾಕ್ಷಪದಕ್ರಮಾ: || ಪುರಾಣ ಸರ್ವಶಾಸ್ತ್ರಾಣಾಂ ಪ್ರಥಮಂ ಬ್ರಹ್ಮಣಾ ಸ್ಮೃತಮ್ | ನಿಯತಶಬ್ದಮಯಂ ಪುಣ್ಯಂ ಶತಕೋಟಿಪ್ರವಿಷ್ಟರಮ್ || ಅನಂತರಂ ಚ ವಕ್ತೃಣ್ಯೋ ವೇದಾಸ್ತಸ್ಯ ವಿನಿ:ಸೃತಾ: | ಮಿಮಾಂಸಾ ನ್ಯಾಯವಿಶ್ವಾಶ ಪ್ರಮಾಣಂ ತರ್ಕ-ಸಂಯುತಾ: || ವೇದಾಭ್ಯಾಸರತಸ್ಯಾಸ್ಯ ಪ್ರಜಾಕಾಮಸ್ಯ ಮಾನಸಾ: | ಮನಸ: ಪೂರ್ವಸೃಷ್ಟಾ ವೇದಾ ಜಾತಾ ಯೇ ತೇನ ಮಾನಸಾ: " ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ | ಪರಮಾತ್ಮನು ವೇದಸ್ವರೂಪನಾದುದರಿಂದ ವೇದವನ್ನು ತೃಪ್ತಿಸಿ ತದ್ವಿರುದ್ಧವಾದ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸುವವರಿಗೆ ಪರಮಾತ್ಮಸ್ವರೂಪಜ್ಞಾನವುಂಟಾಗುವುದಿಲ್ಲ. "ವೇದಮೂರ್ತಿರಹಂ ವಿಪ್ರಾ ನಾನ್ಯಶಾಸ್ತ್ರಾರ್ಥವಾದಿಮಿ: | ಜ್ಞಾಯತೇ ಮತ್ವರೂಪಂ ಚ ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ ವೇದಂ ಸನಾತನಮ್" ಕೂರ್ಮಪುಂ | "ಶಾಸ್ತ್ರೇ-ಷ್ವಯಾಹತಾ ಬುದ್ಧಿ: ಮೌರ್ಖಿ ಭನುಪಿ ಚಾತುರಾ " ಋಷಿಂ ೧-೧೯ |

**ಶಾಸ್ತ್ರಕೃತ್ ಶಾಸ್ತ್ರಕೃತ್** (ಪುಂ) 1. ಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ರಚಿಸುವ ಯುಕ್ತಿ. ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಕರೋತಿ - ಕೃತ್ (ಕರಣ) " ಕ್ವಿಪ್ " (೩-೨-೩೬) | (ವಿಂ) 2. ಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ರಚಿಸುವವನು.

**ಶಾಸ್ತ್ರಕೋವಿದ ಶಾಸ್ತ್ರಕೋವಿದ** (ಪುಂ) ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞ, ಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದವನು, ಪಂಡಿತ, ಶಾಸ್ತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಪರಿಶ್ರಮವುಳ್ಳವನು. ಶಾಸ್ತ್ರೇಷು ಕೋವಿದ: |

**ಶಾಸ್ತ್ರಚಕ್ಷುಸ್ ಶಾಸ್ತ್ರಚಕ್ಷುಸ್** (ವಿಂ) 1. ಶಾಸ್ತ್ರಗಳೇ ನೇತ್ರಗಳಾಗಿರುವವನು. ಶಾಸ್ತ್ರಮೇವ ಚಕ್ಷುರ್ಯಮ್ | ಶಾಸ್ತ್ರಗಳ ಮೂಲಕ ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳೂ ಗೋಚರವಾಗುವುದರಿಂದ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳು ನೇತ್ರಗಳಾಗಿರುವವು. (ನಂ) 2. ಶಾಸ್ತ್ರಗಳೇನು ನೇತ್ರ. ಶಾಸ್ತ್ರಮೇವ ಚಕ್ಷು: | 3. ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರ, ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನದಿಂದ ಎಲ್ಲಾ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳ ಅರ್ಥ ಜ್ಞಾನವುಂಟಾಗುವುದರಿಂದ ವ್ಯಾಕರಣವು ನೇತ್ರದಂತಾಯಿತು. ಶಾಸ್ತ್ರೇಷು ಚಕ್ಷುರಿವ |

**ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞ ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞ** (ವಿಂ) ಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಬಲ್ಲವನು, ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು. ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಜಾನಾತಿ - ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) " ಕ: " (೩-೨-೩) | -ವಿದ್ -ವಿದ್.

**ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನ ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನ** (ನಂ) ಶಾಸ್ತ್ರಗಳ ಪರಿಚಯ, ಶಾಸ್ತ್ರಗಳ ಅರಿವು.

**ಶಾಸ್ತ್ರತತ್ವಜ್ಞ ಶಾಸ್ತ್ರತತ್ವಜ್ಞ** (ಪುಂ) ಜ್ಯೋತಿಷ್ಯ, ಜ್ಯೋತಿಸ್ಸ. ಶಾಸ್ತ್ರಸ್ಯ ತತ್ವಂ ಜಾನಾತಿ - ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) " ಕ: " (೩-೨-೩) |

**ಶಾಸ್ತ್ರವೇದಶಿನ್ ಶಾಸ್ತ್ರವೇದಶಿನ್** (ವಿಂ) ಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು. ಶಾಸ್ತ್ರಂ ದೃಷ್ಟಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ - ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣ) " ಣಿನಿ: " (೩-೨-೭೮) |

**ಶಾಸ್ತ್ರಯೋನಿ ಶಾಸ್ತ್ರಯೋನಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶಾಸ್ತ್ರಗಳ ಮೂಲ ಸ್ಥಾನ, ಶಾಸ್ತ್ರಗಳ ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನ. (ವಿಂ) 2. ಶಾಸ್ತ್ರಗಳೇ ಮೂಲವಾಗಿರುವ, ಶಾಸ್ತ್ರಗಳೇ ಕಾರಣ (ಪ್ರಮಾಣ) ವಾಗಿರುವ, ಶಾಸ್ತ್ರಜನ್ಯವಾದ. ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಯೋನಿ: ಕಾರಣಂ ಯಸ್ಯ | " ಶಾಸ್ತ್ರಯೋನಿತ್ವಾತ್ " ಕಂ ಸುಂ ೧-೧-೩ |

**ಶಾಸ್ತ್ರವಿರೋಧ ಶಾಸ್ತ್ರವಿರೋಧ** (ಪುಂ) ಶಾಸ್ತ್ರವಚನಕ್ಕೆ ಪ್ರತಿವಾದ, ಶಾಸ್ತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ವಿಹಿತವಾದುದಕ್ಕೆ ಅಸಂಬದ್ಧವಾದ ಹೇಳಿಕೆ. ಶಾಸ್ತ್ರಸ್ಯ ವಿರೋಧ: |

**ಶಾಸ್ತ್ರವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿ ಶಾಸ್ತ್ರವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಾಸ್ತ್ರಗಳ ಯಥಾರ್ಥಜ್ಞಾನ, ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತ ವಿಷಯಗಳ ನಿಜವಾದ (ನಿಷ್ಕೃಷ್ಟವಾದ) ಜ್ಞಾನ, ಶಾಸ್ತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರವೀಣತೆ.

**ಶಾಸ್ತ್ರಸಿದ್ಧ ಶಾಸ್ತ್ರಸಿದ್ಧ** (ವಿಂ) ಶಾಸ್ತ್ರವಚನಗಳಿಂದ ಸ್ಥಿರ ಪಟ್ಟಿರುವ. ಶಾಸ್ತ್ರೇಣ ಶಾಸ್ತ್ರವಚನೇನ ಸಿದ್ಧ: |

**ಶಾಸ್ತ್ರೀನ್ ಶಾಸ್ತ್ರೀನ್** (ವಿಂ) ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು, ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ನಿಷ್ಕೃಷ್ಟವಾಗಿ ತಿಳಿದವನು. ಶಾಸ್ತ್ರಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ " ಣಿನಿ: " (೪-೨-೧೧೪) |

**ಶಾಸ್ತ್ರೀಯ ಶಾಸ್ತ್ರೀಯ** (ವಿಂ) ಶಾಸ್ತ್ರಸಂಬಂಧವಾದ, ಶಾಸ್ತ್ರವಿಹಿತವಾದ, ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ. ಶಾಸ್ತ್ರಸ್ಯೇದಮ್ " ಃ: " (೪-೨-೧೧೪) |

**ಶಾಸ್ತ್ರ ಶಾಸ್ತ್ರ** (ವಿಂ) 1. ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಡುವವನು. ಶಾಸ್ತ್ರ (ಅನುಶಿಷ್ಟಿ) " ಣ್ಯತ್ " (೩-೧-೧೨೪) | 2. ಆಳಲ್ಪಡುವವನು. 3. ಶಿಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವವನು, ದಂಡಿಸಲ್ಪಡುವವನು. 4. ಆಜ್ಞೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವವನು.

**ಶಾಸ್ತ್ರಮಾನ ಶಾಸ್ತ್ರಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಆಜ್ಞೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 3. ದಂಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 4. ಆಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಶಾಸ್ತ್ರ (ಅನು-ಶಿಷ್ಟಿ) ಕರ್ಮಂ " ಶಾನ್" (೩-೨-೧೨೪) | " ಶಾಸ್ತ್ರಮಾನಾ ಅಪಿ ಶಾಸ್ತ್ರಾಜ್ಞೇಜುರ್ಭೂತಾಃ ಕೃಷಾ ದಿಶ: " ಕುಮಾಂ ೧೬-೨೩ |

**ಶಿಶಿ ಶಿಶಿ** (ಪುಂ) 1. ಶುಭ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 2. ಮಂಗಳ. ಶುಭ. 3. ಶಾಂತಿ, ಚಿತ್ತಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯ, ಮನಸ್ಸಿನ ನೆಮ್ಮದಿ, 4. ಮೋಕ್ಷ. 5. ಹಿಂಸೆ. 6. ನಿದ್ರೆ. " ಶಿಶಿ: ಶಾಸ್ತ್ರೀ ಶಿವಶಾಂತಯೋ: | ನಿರ್ವಾಣಹಿಸಾಸ್ವಾಪೇಷು " ನಾನಾರ್ಥರಂ |

**ಶಿಶಿಪಾ ಶಿಶಿಪಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗುರು ಗಿಡ.

**ಶಿಕ್ಷು ಶಿಕ್ಷು** (ವಿಂ) ಸೋಮಾರಿ, ಅಲಸ, ಯಾವ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲೂ ಆಸಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದವನು. " ದೇಶಿಕ: ಶಾಸಿತಾ ಶಾಸ್ತಾ ಶಿಕ್ಷುರವ್ಯವಸಾಯವಾನ್ " ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಶಿಷ್ಯ ಶಿಷ್ಯ** (ನಂ) ಕಾವಡಿಯ ನಿಲುವು, ಕಾವಡಿಯ ಎರಡು ಕುದಿಗಳಲ್ಲಿ ಕಟ್ಟಿರುವ ದಾರದ ನಿಲುವು. ಸಂಸು (ಅಭ:ಪತನೇ)



ಪಾತೋ: ಶಿ: ಇತ್ಯಾದೇಶ: ಯತ್ ತಸ್ಯ ಕುಡಾಗಮಶ್ಚ (ಠಂ ೪-೧೬) ।  
“ಛಿದ್ರಂ ಹಂತಾನಿಹಿತವಯುನ: ಶಿಕ್ಯಮಾಣಢೇಶು ತದ್ವಿತ್” ಮಾಗಂ  
೧೦-೮-೩೦ ।

ಶಿಕ್ಷಿತ ಶಿಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) ಶಿಕ್ಷಿದಲ್ಲಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ ವಸ್ತು.  
ಶಿಕ್ಯ + ಣಿವ್ “ಕ:” (೩-೨-೧೦೨) ।

ಶಿಕ್ಷಕ ಶಿಕ್ಷಕ (ಪುಂ) ಉಪಾಧ್ಯಾಯ, ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿಸು  
ವವನು, ಬೋಧಕ. ಶಿಕ್ಷ (ವಿಶ್ವೋಪಾದಾನೇ) “ಫ್ವಲ್”  
(೩-೧-೧೩೩) । “ಶಿಷ್ಠಾ ಕ್ರಿಯಾ ಕಸ್ಯಚಿದಾತ್ಮಸಂಸ್ಥಾ  
ಸಂಕ್ರಾಂತಿರನ್ಯಸ್ಯ ವಿಶೇಷಯುಕ್ತಾ । ಏಸ್ಯೋಭಯಂ ಚಾಸ್ತಿ ಸ  
ಶಿಕ್ಷಕಾಣಾಂ ಖುರಿ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಯಿತವ್ಯ ಏವ” ಮಾಲಂ ೧-೧೬ ।

ಶಿಕ್ಷಣ ಶಿಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿಸುವುದು,  
ವಿದ್ಯಾದಾನ ಮಾಡುವುದು, ಬೋಧಿಸುವುದು. ಶಿಕ್ಷ  
(ವಿಶ್ವೋಪಾದಾನೇ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) । 2. ವಿದ್ಯೆ  
ಯನ್ನು ಕಲಿಯುವುದು, ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಗ್ರಹಿಸುವುದು.  
3. ಪಳಗಿಸುವುದು.

ಶಿಕ್ಷಮಾಣ ಶಿಕ್ಷಮಾಣ (ವಿಂ) 1. ಬೋಧಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಕಲಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಪಳಗಿಸುತ್ತಿರುವ. ಶಿಕ್ಷ “ಶಾನವ್”  
(೩-೨-೧೨೪) ।

ಶಿಕ್ಷಾ ಶಿಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉಪದೇಶ, ಶಿಕ್ಷಣ, ಕಲಿಸು  
ವುದು. ಶಿಕ್ಷ (ವಿಶ್ವೋಪಾದಾನೇ) “ಅ:” (೩-೩-೧೦೩) ।  
“ಅಮೃತ್ವ ನಮ್ರ: ಪ್ರಣಿಪಾತಶಿಕ್ಷಯಾ ಪಿತುರ್ಮದಂ ತೇನ ತತಾನ  
ಸೋಮಕ:” ರಘುಂ ೩-೨೪ । 2. ಕಲಿಯುವುದು, ಅಭ್ಯಾಸ  
ಮಾಡುವುದು. “ಪರಿಮೋಹ್ಯಮಾಣೇನ ಶಿಕ್ಷಾಲಾಘವಲೀಲಯಾ”  
ಕಿರಾಂ ೧೪-೩೬ । 3. ಬಲಶಾಲಿಯಾಗುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ,  
ಶಕ್ತಿಯುತನಾಗಿ ಆಗುವ ಆಸೆ. “ಪಾಂಡವ: ಪರಿಚಕ್ರಾಮ  
ಶಿಕ್ಷಯಾ ರಣಶಿಕ್ಷಯಾ” ಕಿರಾಂ ೧೪-೩೭ । 4. ಆರು  
ವೇದಾಂಗಗಳಲ್ಲಿಯೊಂದು. ಇದು ಸ್ವರ ಮತ್ತು ವರ್ಣಗಳ  
ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನ ಪ್ರಯತ್ನ ಮುಂತಾದುವನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದ  
ರಿಂದ ಒಂದು ವೇದಾಂಗ. ಶಿಕ್ಯತೇ ಅನೇನ ಸ್ಥಾನ-  
ಪ್ರಯತ್ನಾದಿಕಮ್—ಶಿಕ್ಷ “ಅ:” (೩-೩-೧೦೩) । “ಸಮೀಪ-  
ವಕ್ಷೇಷಿಹ ಬದನಿಡಾ: ಶಿಕ್ಷೋಪಪನ್ನಾಂ ಶ್ರುತಿಮದ್ಗುಣಂತ:” ಯಾದಂ  
೧೮-೬೧ । 5. ವಿದ್ಯೆ, ಕಲೆ, ಶಾಸ್ತ್ರ. 6. ಪಳಗಿಸುವುದು.

ಶಿಕ್ಷಾಕರ ಶಿಕ್ಷಾಕರ (ಪುಂ) ವೇದವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ.

ಶಿಕ್ಷಾಗುರು ಶಿಕ್ಷಾಗುರು (ಪುಂ) ವಿದ್ಯೋಪದೇಶ ಮಾಡಿದ  
ಗುರು, ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿಸಿದ ಉಪಾಧ್ಯಾಯ.

ಶಿಕ್ಷಿತ ಶಿಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) 1. ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿದವನು.  
ವಿದ್ಯೆ ಕಲಿತವನು. ಶಿಕ್ಷಾ ಅಸ್ಯ ಸಂಜಾತಾ — “ಇತ್ವ್”  
(೪-೨-೩೬) । “ಆಪರಿತೋಪಾಧಿವೃಷಾಂ ನ ಸಾವು ಮನ್ಯೇ

ಪ್ರಯೋಗವಿಜ್ಞಾನಮ್ । ಬಲವದಪಿ ಶಿಕ್ಷಿತಾನಾಮಾತ್ಮನ್ಯಪ್ರತ್ಯಯ  
ಚೇತ:” ಶಾಕುಂ ೧-೨ । 2. ಅಭಿಜ್ಞ, ಪ್ರವೀಣ, ಕುಶಲ.  
“ಪ್ರವೀಣೇ ನಿಪುಣಾಭಿಜ್ಞವಿಜ್ಞಾನಿಷ್ಠಾತಶಿಕ್ಷಿತಾ:” ಅಮಂ ।  
3. ಕಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಸ್ತ್ರೀಣಾಮಶಿಕ್ಷಿತ-  
ಪದ್ವಮಮಾನುಷೀಷು ಸನ್ವಹ್ಯತೇ ಕಿಮುತ ಯಾ: ಪ್ರತಿಬೋಧವತ್ಯ:”  
ಶಾಕುಂ ೪-೨೨ । “ಶಿಕ್ಷಿತಂ ಯುವತಿನೇಪುಣಂ ತಯಾ ಯತ್ತದೇವ  
ಗುರುದಕ್ಷಿಣೀಕೃತಮ್” ಕುಮಾಂ ೮-೧೭ । 4. ಪಳಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
“ಶ್ರುತಿಮಧುರಗಿರಾಂ ಸ್ವಶಿಕ್ಷಿತಾನಾಂ ಅತಿಶಯಸಿದ್ಧಿಮದರ್ಶಯ-  
ತಿಪ್ರಯಾಮ್ಯ:” ಯಾದಂ ೨೪-೩೧ । 5. ಅಭ್ಯಾಸಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
“ಸಂದಾನಾಂತಾದಸ್ತ್ರಿಭಿ: ಶಿಕ್ಷಿತಾಸ್ತೇರಾವಿಶ್ಯಾಘ: ಶಾತ-  
ಶಸ್ತ್ರಾವಲೂನಾ:” ಮಾಘಂ ೧೮-೭೧ ।

ಶಿಕ್ಷಣ ಶಿಕ್ಷಣ (ಪುಂ) 1. ನವಿಲಿನ ಪುಕ್ಕ. ಶಿಕ್ಷಿಣಾ  
ಅಮ್ಯತೇ — ಅಮ (ಗತ್ಯಾದಿಪು) “ಙ:” (ಠಂ ೧-೧೧೪) ।  
2. ಕೇಶಪಾಶ, ಜುಟ್ಟು. 3. ಜುಲ್ಮಿಕೂದಲು.

ಶಿಕ್ಷಣಕ ಶಿಕ್ಷಣಕ (ಪುಂ) 1. ಜುಲ್ಮಿಕೂದಲು, ಕ್ಷತ್ರಿ  
ಯರು ಜಾಲ್ಮದಲ್ಲಿ ಕಿವಿಗಳ ಮೇಲುಗಡೆ ಬಿಡುವ ಜುಟ್ಟು.  
ಶಿಕ್ಷಣಕ ಇವ “ಕನ್” (೬-೩-೧೭) । “ತೌ ಪಿತುರ್ಮನಜೇನ  
ವಾರಿಣಾ ಕಿಷ್ಕಿದುಕ್ಷಿತಶಿಕ್ಷಣಕಾವುಮೌ” ರಘುಂ ೧೧-೪ ।  
(ನಂ) 2. ನವಿಲಿನ ಪುಕ್ಕ.

ಶಿಕ್ಷಣಿನ್ ಶಿಕ್ಷಣಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಮಯೂರ, ನವಿಲು.  
ಶಿಕ್ಷಣಿನ್ಯಾಸ್ತಿ—“ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪) । “ಮೇಖಲಾ-  
ತರಘು ನಿವ್ರಿತಾನಮುನ್ ಬೋಧಯತುಸಮಯೇ ಶಿಕ್ಷಣಿನ್:” ಕುಮಾಂ  
೮-೬೭ । 2. ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ. 3. ನವಿಲಿನ ಪುಕ್ಕ.  
4. ಬಾಣ. 5. ವಿಷ್ಣು. ಶಿಕ್ಷಣ: ಅಪರಿಮಿತಾಪ್ರಭುತ್ವ-  
ಶ್ವಯಂಪರಮತೇಜ:ಕಲಾಪ: ಅತಿಶಯೇನ ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:”  
(೪-೨-೧೧೪) । “ಅತ್ಯಪ್ರಭುತ್ವಮೇಶ್ವರಂ ಪರಂ ಯತ್ತೇಜ  
ಆಸ್ಥಿತಮ್ । ತನ್ವಿಕ್ಷಣಿನ್ ತು ಯಸ್ಯಾಸ್ತಿ ತನ್ವಿಕ್ಷಣಿನ್ಯಾತಿ  
ಚಕ್ಷತೇ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । “ಶಿಕ್ಷಣಿನ್ ನಹುಷೋ ವೃಷ:”  
ವಿಂ ಸಂ । 6. ದ್ರುಪದರಾಜನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. [ಭೀಷ್ಮನು  
ಕಾಶಿರಾಜನ ಮಗಳಾದ ಅಂಬೆಯನ್ನು ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯನಿಗೆ  
ಮದುವೆಮಾಡಲು ಅಪಹರಿಸಿಕೊಂಡು ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದಾಗ  
ಅವಳನ್ನು ಸೌಭರಾಜನಿಗೆ ಕೊಡಲು ನಿಶ್ಚಯಿಸಿದ್ದ ವಿಷಯ  
ವನ್ನು ತಿಳಿದು ಸೌಭರಾಜನಲ್ಲಿಗೇ ಕಳುಹಿಸಿದನು. ಸೌಭರನೂ  
ಅಪಹೃತಳಾದ ಇವಳನ್ನು ತಿರಸ್ಕರಿಸಿದನು. ಮತ್ತೆ  
ಭೀಷ್ಮನಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದು ತನ್ನನ್ನು ಅಂಗೀಕರಿಸುವಂತೆ  
ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದಳು. ಭೀಷ್ಮನು ಆಜೀವ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯೆಯ  
ಕಾರಣ ಇವಳನ್ನು ತಿರಸ್ಕರಿಸಲು ಮುಂದಿನ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ  
ಈ ಸೇಡನ್ನು ತೀರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದಾಗಿ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡಿ  
ಈಶ್ವರನಿಂದ ವರ ಪಡೆದು ಶಿಖಂಡಿಯೆಂಬ ಹೆಸರಿನಿಂದ



ದ್ರುಪದರಾಜನ ಮಗಳಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿ ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯರ ಅವಸಾನಕ್ಕೆ ಕಾರಣಳಾದಳು. ಸ್ತ್ರೀಜನ್ಮ ಪಡೆದಿದ್ದ ಶಿಖಂಡಿಗೆ ಬಳಿಕ ಪುರುಷರೂಪ ಬರುವುದು.] 7. ಗುಲಗಂಜಿ. 8. ಪರಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. "ಜಟಿ ಚರ್ಮಿ ಶಿಖಣ್ಡಿ ಚ ಸರ್ವಾಂಗೈಃ ಸರ್ವಭಾವನಃ" ಭಾಂ. 1.

ಶಿಖಣ್ಡಿನಿ ಶಿಖಂಡಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕಾಡುಮಲ್ಲಿಗೆ. 2. ಗುಲಗಂಜಿ. "ಶಿಖಣ್ಡಿನಿ ಯುಧಿಕಾಯಾ ಗುಜ್ಜಾಯಾಮಪಿ ಯೋಪಿತಿ" ಮೇದಿಂ. 3. ಹೆಣ್ಣು ನವಿಲು. "ಆಯಾನ್ಯಾ ನಿಜಯುತೌ ವನಾತ್ಸಶಕ್ತ್ಯಾ ಬರ್ಹಣಾಮಫರ-ಶಿಖಣ್ಡಿನಿಂ ಭರೇಣ" ಮಾಧಂ ೮-೧೧.

ಶಿಖರ ಶಿಖರ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ರಭಾಗ, ತುದಿ. 2. ಉನ್ನತ ಪ್ರದೇಶ. ಪರ್ವತಾಗ್ರ, ವೃಕ್ಷಾಗ್ರ ಇತ್ಯಾದಿ. ಶಿಖಾ-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ-ಶಿಖಾ "ರಃ" ಶಿಖಾಯಾ ಹ್ರಸ್ವಶ್ಚ (೪-೨-೮೦). "ಅಥಾಸಾಮಾಸುಸ್ತುಜ್ಞಹೇಮಪೀಠಾನಿ ಯಾನ್ಯಮಾ. ತೇಹೇ ಕೇಸರಿ-ಕ್ರಾಂತಪ್ರಿಕೃತಶಿಖರೋಪಮಾ" ಮಾಧಂ ೨-೪. 3. ಕಡ್ಡೆ, ಕಂಕಳು. 4. ರೋಮಾಂಚ. 5. ಹಣ್ಣಾಗಿ ಕೆಂಪಾಗಿರುವ ದಾಳಿಂಬೆ ಬೀಜದಂತಿರುವ ಮಾವುಕದ ಚೂರು. "ಶಿಖರೋಜ್ಜ್ವಲಿ ದ್ರುಮಾಗ್ರೇದಿಶ್ಚೃಜ್ಞೇ ಪುಲಕಕಕ್ಷಯೋಃ ಪಕ್ವದಾಡಿಮಬೀಜಾಭ-ಮಾಣಿಕ್ಯಶಕಲಾಘಯೋಃ" ಮೇದಿಂ. 6. ಬಾಣದ ತುದಿ. 7. ಕತ್ತಿಯ ಅಲುಗು.

ಶಿಖರವಾಸಿನಿ ಶಿಖರವಾಸಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ. "ಅಥಾರ್ಯಾ ಹಿಂಧಾಃ ಶಿಖರವಾಸಿನೀ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 1.

ಶಿಖರಾ ಶಿಖರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುರುಟೆಗೆ ಗಿಡ.

ಶಿಖರೀಣಿ ಶಿಖರೀಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉತ್ತಮಳಾದ ಹೆಂಗಸು, ಸ್ತ್ರೀರತ್ನ. 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮಲ್ಲಿಗೆ ಗಿಡ. 3. ನಾಭಿಯ ಕೆಳಗಡೆಯ ರೋಮಪಟ್ಟು, -ರೋಮರಾಜಿ. 4. ವ್ಯೂಷ ಚತುರ್ಜಾತ ಗುಡ ಹಸಿಶುಂಠಿ ಮತ್ತು ಜೀರಿಗೆ ಇವುಗಳಿಂದ ಬೆರೆತ (ಹಸಿ) ಮೊಸರು. ["ಮಾಜಿತಾ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 5. ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರೋಕ್ತ ಹದಿನೇಳನೇ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣ: ಯಗಣ ಮಗಣ ನಗಣ ಸಗಣ ಭಗಣ ಒಂದು ಲಘು ಮತ್ತು ಒಂದು ಗುರುವರ್ಣ. "ರಸೇ ಕ್ಷರೇಶ್ಚಿತ್ತಾ ಯಮನಸಮಲಾಗಃ ಶಿಖರೀಣಿ" ವೃಂ ೨೦. ಇದರ ಗಣವಿನ್ಯಾಸ:

ಯ ಮ ನ ಸ ಮ ಲ ಗು.

100 000 111 110 011 1 0

6. ಕುರುಟೆಗೆ ಗಿಡ.

ಶಿಖರಿನ್ ಶಿಖರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಶಿಖರ-ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪). "ಉದಯಶಿಖರಿ-ಶ್ರಗ್ಧಪ್ರಾಜ್ಞೇವೇವ ರಿಜ್ಞನ್ ಸಕಮಲಮಖಹಾಸಂ ವೀಕ್ಷಿತಃ

ಪಶಿನಿಮಿಃ" ಮಾಧಂ ೧೧-೪೭. 2. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. 3. ದುರ್ಗ, ಕೋಟೆ. 4. ನೀರುನಡಗೆಯ ಉದ್ದದ ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳ ಬಿಳಿಯ ಕೊಕ್ಕರೆ. 5. ಅಪಾಮಾರ್ಗ, ಉತ್ತರೇಣ ಗಿಡ. "ಶಿಖರೀ ಕೊಡಕೋಪಚೋದ್ರಮೇಷಾಮಾರ್ಗ-ಶೈಲಯೋಃ" ಹೇಮಂ. (ವಿಂ) 6. ಮೊನಚಾದ ಅಗ್ರಭಾಗ ವುಳ್ಳ, ತುದಿಯಲ್ಲಿ ಮೊನೆಯಾಗಿರುವ. "ತನ್ವೀ ಶ್ಯಾಮಾ ಶಿಖರಿದಶನಾ ಪಕ್ವವಿಮ್ಬಾಧರೋಷಿ ಮಧ್ಯೇ ಕ್ಷಾಮಾ ಚಕಿತ-ಹರಿಣಿಪ್ರೇಕ್ಷಣಾ ನಿಮ್ನನಾಭಿಃ" ಮೇಧಂ ೨-೧೯. ಒಳ್ಳೆಯ ಮೊಳೆಬಿಡಿದ ಕೊಡಿ ತುದಿಯಲ್ಲಿ ಮೊನೆಯಾಗಿಯೂ ಸಮವಾಗಿಯೂ ಇರುವ ದಂತಗಳುಳ್ಳ ಸ್ತ್ರೀಯರ ಪತಿಗಳು ದೀರ್ಘಾಯುಷ್ಯಂತರಾಗಿ ಜೀವಿಸುವರು. "ತಾಮ್ಬೂಲಸ-ರಕ್ತೇಽಪಿ ಸ್ಫುಟಭಾಸಃ ಸಮೋದಯಾಃ ದಂತಾಃ ಶಿಖರೀಣಿ ಯಸ್ಯಾಃ ದೀರ್ಘಂ ಜೀವತಿ ತತ್ಪ್ರಿಯಃ" ಸಾಮುದ್ರಿಕಮ್.

ಶಿಖಾ ಶಿಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜುಟ್ಟು, ಕೇಶಪಾತ. ಶೇತೆ-ಶೆಡ್ಡೆ (ಸ್ವಂತೆ) "ಖಃ" ಹ್ರಸ್ವಶ್ಚ (೩ಂ ೪-೨೪). "ನಂದ-ಕುಲಕಾಲಭುಜಗ್ನಿ ಕೊಪಾನಲಬಹುಲಲೋಲಧೂಮಲತಾಮ್. ಅಥಾಪಿ ವಧ್ಯಮಾನಾಂ ವಧ್ಯಃ ಕೊ ನೇಚ್ಛತಿ ಶಿಖಾಂ ಮೇ" ಮುದ್ರಾಂ ೧-೯. 2. ಶಿಖರ, ಪರ್ವತದ ಅಗ್ರಭಾಗ, ಬೆಟ್ಟದ ಎತ್ತರವಾದ ಭಾಗ. 3. ವೃಕ್ಷದ ಅಗ್ರಭಾಗ, ಮರದ ತುದಿ. "ಅಧಿರಹ್ಯ ಪುಷ್ಪಭರಣಶಿಖೇಃ ಪರಿತಃ ಪರಿಷ್ಕೃತತಲಾಂ ತರಹಿಃ" ಕಿರಾಂ ೬-೧೩. 4. ಕೊನೆಯ ಭಾಗ, ತುದಿ. "ಶೃಂಗೈಃ ಶಿಖಾಗ್ರ-ಗತಲಕ್ಷಮಲಂ ಹಸದ್ವಿಃ" ಮಾಧಂ ೪-೬೩. "ಮುಖೇರಸೌ ವಿದ್ವಮಭಜ್ಞಲೋಹಿತಃ ಶಿಖಾಃ ಪಿಶಾಂಗೈಃ ಕಲಮಸ್ಯ ವಿಭ್ರತೀ" ಕಿರಾಂ ೪-೩೬. 5. ಅಗ್ನಿಯ ಜ್ವಾಲೆ, ಬೆಂಕಿಯ ಉರಿ. "ಮುಹುಷ್ವಲತ್ಪಲ್ಲವಲೋಹಿನಿಭಿರುಚೈಃ ಶಿಖಾಭಿಃ ಶಿಖಿನೋಽ-ವಲಿಡಾಃ" ಕಿರಾಂ ೧೬-೪೩. 6. ಬೆಳಕಿನ ರಶ್ಮಿ, -ಕಿರಣ. "ಜ್ವಲನ್ಮಣಿಶಿಖಾಶ್ಚೇನಂ ವಾಸುಕಿಪ್ರಮುಖಾ ನಿಶಿ" ಕುಮಾಂ ೨-೩೮. 7. ನವಿಲಿನ ಜುಟ್ಟು, ನವಿಲಿನ ತಲೆಯ ಮೇಲಿನ ಜುಟ್ಟು. 8. ಕಾಲಿನ ತುದಿ. 9. ಕೋಳಿಕುಟುಕನ ಗಿಡ. 10. ಶಾಖೆ, ರೆಂಬೆ. 11. ವಸ್ತ್ರದ ಅಂಚು, ಸೆರಗು. "ಶಿಖಾ ಶಾಖಾಬಹಿವೃಡಾಲಾಜ್ಞಲಿಖ್ಯಭಾತ್ರಕೇ. ಚೂಡಾಮಾತ್ರೇ ಶಿಖಾಯಾಂ ಚ ಜ್ವಾಲಾಯಾಂ ಪ್ರಪದೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ. 12. ಪ್ರಧಾನ, ಮುಖ್ಯ. "ಶಿಖಾಗ್ರಮಾತ್ರೇ ಚೂಡಾಯಾಂ ಕೇಕಿವೃಡಾ-ಪ್ರಧಾನಯೋಃ" ಹೇಮಂ. 13. ಕಾಮಜ್ವರ.

ಶಿಖಾಧರ ಶಿಖಾಧರ (ಪುಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು. "ನ ನಾನುಕಮ್ಯ ವಿಶಿಖಾಃ ಶಿಖಾಧರಜವಾಸತಃ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೪೨.

ಶಿಖಾಮೂಲ ಶಿಖಾಮೂಲ (ನಂ) ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳಿ. ಶಿಖಾಸಹಿತಂ ಮಲಮಸ್ಯ.



ಶಿಖಾವತ್ ಶಿಖಾವತ್ (ಪುಂ) 1. ವಹ್ನಿ, ಅಗ್ನಿ. ಶಿಖಾ: ಅಸ್ಯ ಸಂತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪)। "ಪರಾಹತಧ್ವಸ್ತ-ಶಿಖೇ ಶಿಖಾವತೌ ವಪುಷ್ಯವಿಕ್ಷಿಪ್ತಸಮಿಧತೇಜಸಿ" ಕಿರಾಂ ೧೬-೪೬। 2. ಕೇತುಗ್ರಹ. 3. ಹರಳುಗಿಡ. (ವಿಂ) 4. ಶಿಖೆಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವ.

ಶಿಖಾವಲ ಶಿಖಾವಲ (ಪುಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಶಿಖಾ-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ವಲಕ್" (೪-೨-೧೧೩)।

ಶಿಖಾವೃದ್ಧಿ ಶಿಖಾವೃದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂಲಧನದ ಮೇಲೆ ಬರುವ ವೃದ್ಧ್ಯಂಶ, ಮೂಲಧನದ ಬಡ್ಡಿ. ಶಿಖೇವ ವೃದ್ಧಿರಸ್ಯಾಃ।

ಶಿಖಿಗ್ರೀವ ಶಿಖಿಗ್ರೀವ (ನಂ) ಮೈಲುತುತ್ತ.

ಶಿಖಿಧ್ವಜ ಶಿಖಿಧ್ವಜ (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪಣ್ಣುಖ. ಶಿಖಿ: ಮಯೂರೋ ಧ್ವಜೋಽಸ್ಯ। 2. ಧೂಮ, ಹೊಗೆ. ಶಿಖಿನೋ ವಹ್ನೇರ್ಧ್ವಜ ಇವ।

ಶಿಖಿನ್ ಶಿಖಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಶಿಖಾ-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)। "ಶಿಖಿಪಿಂಚಕೃತ-ಧ್ವಜಾವಚ್ಚೂಡಣಸಾಶಿಕ್ಷವಿವರ್ಮಾನಮೋಗಾ:" ಮಾಘಂ ೨೦-೪೬। 2. ಅಗ್ನಿ. ಶಿಖಾ: ಜ್ವಾಲಾ: ಅಸ್ಯ ಸಂತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)। "ತಮನ್ವಗಂಧಗಿರಿಶ್ವಜ್ಜಸೋದರಂ ಮದೊದ್ರತಂ ಮೇಘಮಧಿಷ್ಠಿತ: ಶಿಖೀ" ಕುಮಾಂ ೧೪-೬। 3. ಬಲೀವರ್ಧ, ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. 4. ಶರ, ಬಾಣ. 5. ಕೇತುಗ್ರಹ. 6. ದ್ರುಮ, ವೃಕ್ಷ. 7. ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ. 8. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. "ಶಿಖೀ ತ್ವಗ್ನೀ ವೃಕ್ಷೇ ಕೇತುಗ್ರಹೇ ಶರೇ। ಚೂಡಾವತಿ ಬಲೀವರ್ಮೇ ಮಯೂರೇ ಕುಕ್ಕುಟೇ ಹಯೇ" ಹೇಮಂ। 9. ದೀಪ. 10. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. 11. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. 12. ಮೂರು ಸಂಖ್ಯೆ. (ವಿಂ) 13. ಶಿಖಿಯುಳ್ಳ.

ಶಿಖಿವರ್ಧಕ ಶಿಖಿವರ್ಧಕ (ಪುಂ) ಕುಂಬಳಕಾಯಿ. ಶಿಖಿನಂ ಜಾಠರಾಗ್ನಿ ವರ್ಧಯತಿ—ವೃಷ (ವೃದ್ಧಿ) + ಣಿಕ್ "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಶಿಖಿವಾಹನ ಶಿಖಿವಾಹನ (ಪುಂ) ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪಣ್ಣುಖ. ಶಿಖೀ ವಾಹನಮಸ್ಯ।

ಶಿಖಿ ಶಿಖಿ (ಪುಂ) 1. ನುಗ್ಗೆಮರ. ಶಿನೋತಿ—ಶಿಖಿ (ನಿಶಾನೆ) "ಃ" ನಿಪಾಂ (೨-೪-೧೦೨)। 2. ತರಕಾರಿ, ಕಾಯಿಪಲ್ಯ. "ಶಿಖಿರ್ನಾ ಶಾಕಮಾತ್ರೇ ವ ಶೋಭಾಜನ-ಮಹೀರುಹೇ" ಮೇದಿಂ।

ಶಿಖಿಜ ಶಿಖಿಜ (ನಂ) 1. ನುಗ್ಗೆಯ ಬೀಜ. ಶಿಖಿಜಯಿತಿ—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಮವಿ) "ಃ" (೩-೨-೯೮)। (ವಿಂ) 2. ನುಗ್ಗೆಮರದಲ್ಲಿರುವ.

ಶಿಕ್ಷಣ ಶಿಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಗಾಜಿನ ಪಾತ್ರೆ. ಶಿಕ್ಷಿ (ಆಮ್ರಾಣಿ) "ಆಣಕ:" (೩-೩-೮೩)। ಪೃಷಂ। 2. ಕಬ್ಬಿಣದ ಮಲ, ಕಬ್ಬಿಣದ ತುಕ್ಕು. 3. ನಾಸಾಮಲ, ಸಿಂಬಳ. "ಶಿಕ್ಷಣಂ ಕಾಚಪಾತ್ರೇ ವ ಲೋಹನಾಸಿಕಯೋರ್ಮಲಮ್" ಮೇದಿಂ। (ಪುಂ) 4. ಕಫ, ಶ್ಲೇಷ್ಮ. 5. ನೋರೆ.

ಶಿಕ್ಷಾ ಶಿಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಭರಣಗಳ ಅವ್ಯಕ್ತ ಶಬ್ದ. 2. ಮೌರ್ವಿ, ಧನುಸ್ಸಿನ ಹೆದೆ, ಧನುಸ್ಸಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ತೊಗಲಿನ ಹಗ್ಗ. ಶಿಕ್ಷಿ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಅ:" (೩-೩-೧೦೩)।

ಶಿಕ್ಷಾನ್ ಶಿಕ್ಷಾನ್ (ವಿಂ) ಅವ್ಯಕ್ತ ಶಬ್ದ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಧ್ವನಿಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಶಿಕ್ಷಿ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಶಾನ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಶಿಕ್ಷಾನ್ಮರ-ಕುಲಾಕುಲಾಪುಷ್ಪಾ: ಶೀತಾಮ್ಭ:ಪ್ರವಿಲಯಸಂಪಲವಾಭಿಲೀನಾ:" ಭट्टಿಂ ೨೨-೨೭।

ಶಿಕ್ಷಿತ ಶಿಕ್ಷಿತ (ನಂ) ಆಭರಣಗಳ ಅವ್ಯಕ್ತ ಶಬ್ದ. ಶಿಕ್ಷಿ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಕ:" (೩-೩-೧೧೪)। "ಽವನಿ-ರಗವಿವರೇಷು ನುಪುರಾಣಾಂ ಪೃಥುರಶನಾಗುಣಶಿಕ್ಷಿತಾನುಯಾತ:" ಕಿರಾಂ ೧೦-೪।

ಶಿಕ್ಷಿನಿ ಶಿಕ್ಷಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಿಲ್ಲಿನ ಹೆದೆ, ಬಿಲ್ಲಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಚರ್ಮದ ಹಗ್ಗ. ಶಿಕ್ಷಿತೇ—ಶಿಕ್ಷಿ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಗಿನ್ನಿ:" (೩-೩-೧೩೦)। "ತೇಷಾಂ ವಿಹರತಾಂ ತತ್ರ ಶಿಕ್ಷಿನಿವದರಾವಣಾಮ್" ಯಾದಂ ೨೨-೨೨೦। 2. ನೂಪುರ, ಕಾಲಿನ ಆಭರಣ.

ಶಿತ ಶಿತ (ವಿಂ) 1. ಹರಿತವಾದ, ತೇಕ್ಷ್ಣವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಶಿ (ತನುಕರಣ) "ಕ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಮಹಾಹವೇ ನಾಥ ತವಾಸ್ಯ ಸುನೋ: ಶಸ್ತ್ರೇ: ಶಿತೇ: ಕೃತ್ತಶಿರೋ-ಧರಾಣಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೧೨-೪೧। 2. ದುರ್ಬಲ, ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದವನು. 3. ತಳುವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಕೃಶವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಶಿತಶಾತೌ ಕೃಶೇ ತೀಕ್ಷ್ಣೇ" ಹೇಮಂ।

ಶಿತಶೂಕ ಶಿತಶೂಕ (ಪುಂ) 1. ಗೋಧೂಮ, ಗೋಧಿ. 2. ಜವೆಗೋಧಿ, ಯವಧಾನ್ಯ. ಶಿತಂ ನಿಶಿತಂ ಶೂಕಂ ಯಸ್ಯ।

ಶಿತಿ ಶಿತಿ (ಪುಂ) 1. ಭೂರ್ಜವೃಕ್ಷ, ಭುಜಪತ್ರೆ ಗಿಡ. ಶಿತಿ (ನಿಶಾನೆ) "ಕ್ಲಿನ್" (೩-೩-೯೪)। (ವಿಂ) 2. ಶುಕ ಪರ್ಣದ, ಬಿಳಿಯ ಬಣ್ಣದ. 3. ಕೃಷ್ಣಪರ್ಣದ, ಕಪ್ಪು ಬಣ್ಣದ, ನೀಲಪರ್ಣದ. "ಲಯನೇಷು ಲೋಹಿತಕನಿಮಿತಾ ಭುವ: ಶಿತೀರತನರಶ್ಮಿಹರಿತೀಕೃತಾಂತರಾ:" ಮಾಘಂ ೧೩-೪೨। "ಶಿತಿರ್ಮೇಷೇ ಸಿತೇಽಸಿತೇ" ಹೇಮಂ।



ಶಿಶಿಕಣ್ಠ ಶಿಶಿಕಂಠ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾದೇವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.

ಶಿತಿ: ಕಾಲ: ಕಣ್ಠೋಽಸ್ಯ । “ಅಗೋಚರೇ ವಾಗ್ವಿವ ಚೋಪರೇಶ  
ಶಕ್ತಿ: ಶರಾಣಾಂ ಶಿಶಿಕಣ್ಠಕಾಶೇ” ಕಿರಾಂ ೧೭-೧೧ ।

2. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. “ಅವನತಶಿಶಿಕಣ್ಠಕಣ್ಠ-  
ಲಕ್ಷ್ಮೀಮಿಹ ದಧತಿ ಸ್ಫುರಿತಾಣುರೇಣುಜಾಲಾ:” ಮಾಘಂ ೪-೫೬ ।

ಶಿತಿಚ್ಛದ ಶಿಶಿಚ್ಛದ (ಪುಂ) ಹಂಸಪಕ್ಷಿ. ಶಿತಿ ಚಿದೌ ಯಸ್ಯ ।

ಶಿತಿವಾಸಸ್ ಶಿಶಿವಾಸಸ್ (ಪುಂ) ಬಲರಾಮ. ಶಿತಿ  
ವಾಸೋಽಸ್ಯ । “ಸುರ್ವಣಸುತ್ರಾಕಲ್ಪಿತಾಧರಾಮ್ಬರಾಂ ವಿಡಂಬಯಂತಂ  
ಶಿತಿವಾಸಸಸ್ತನುಮ್” ಮಾಘಂ ೧-೬ ।

ಶಿಶಿಲ ಶಿಶಿಲ (ವಿಂ) 1. ಸಡಿಲವಾದ, ಬಿಗಿಯಾಗಿಲ್ಲದ.

ಅಥ (ಮೋಚನೆ) “ಕಿರಚ್” ಉಪಾಧಾಯಾ ಇತ್ವಮ್ ರೇಫಲೋಪ:  
ಪ್ರತ್ಯಯರೇಫಸ್ಯ ಲತ್ವಂ ಚ ನಿಪಾಂ (೩ಂ ೧-೫೩) । “ಘೃತೋ-  
ತ್ಪಲಾಪಿಡ ಇವ ಪ್ರಿಯಾಯಾ: ಶಿರೋರೂಪಾಂ ಶಿಶಿಲ: ಕಲಾಪ:”

ಕಿರಾಂ ೧೬-೧೫ । 2. ಸಡಿಲವಾದ, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಅಂಟಿ

ಕೊಂಡಿಲ್ಲದೆ ಬಿದ್ದಿರುವ. “ಅಕಸ್ಯೋಪರಿ ಶಿಶಿಲಂ ಚ್ಯುತಮಿವ

ನವಮಾಲಿಕಾಕುಸುಮಮ್” ಶಾಕುಂ ೨-೮ । 3. ದುರ್ಬಲವಾದ,

ಜೊರೆಯಿಲ್ಲದ, ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡಿರುವ. “ಅಮವದ್-  
ಗತ: ಪರಿಣತಿ ಶಿಶಿಲ: ಪರಿಮಂದಸೂರ್ಯನಯನೋ ದಿವಸ:”

ಮಾಘಂ ೯-೩ । 4. ಜೋತುಬಿದ್ದಿರುವ, ಜೋತಾಡುವ,

ಸಡಿಲವಾದ, ಗಂಭೀರವಾದ. 5. ದೃಢವಾಗಿಲ್ಲದ, ಭದ್ರ

ವಾಗಿಲ್ಲದ. “ಶಿಶಿಲಂ ಕೂಲಮಿವಾಪಗಾರಯ:” ಕಿರಾಂ ೨-೫೩ ।

6. ಸಡಿಲವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. (ಗಂಟು) ಬಿಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ.

“ವಿಶ್ರಾಮಂ ಲಬ್ಧತಾಮಿದಂ ಚ ಶಿಶಿಲಜ್ಯಾಬಂಧಮಸ್ಮದ್ನು:”

ಶಾಕುಂ ೨-೬ । 7. ಚಟುವಟಿಕೆಯಿಲ್ಲದ, ಜಡವಾದ.

(ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 8. ಮಂದವಾಗಿ, ಮಲ್ಲಗೆ, ನಿಧಾನವಾಗಿ.

“ಶಿಶಿಲಾಕೃಷ್ಣಶಿಲೀಮುಖೋವತಸ್ಥೇ” ಯಾದಂ ೧೫-೧೨೬ ।

ಶಿಶಿಲತಾ ಶಿಶಿಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶೃಂಗಿಲ, ಸಡಿಲವಾಗಿರು

ವಿಕೆ, ಗಂಟು ಬಿಚ್ಚಿರುವಿಕೆ. ಶಿಶಿಲಸ್ಯ ಭಾವ: “ತಲ್”

(೫-೧-೧೧೯) । “ವಾಸಸಾಂ ಶಿಶಿಲತಾಮುಪನಾಭಿ ಹ್ನಿನಿರಾಸ-

ಮಪದೇ ಕುಪಿತಾನಿ । ಯೋಷಿತಾಂ ವಿದಧತೀ ಗುಣಪಕ್ಷೇ ನಿರ್ಮಮಾಜಂ

ಮದಿರಾ ವಚನೀಯಮ್” ಕಿರಾಂ ೯-೬೫ । 2. ಭದ್ರವಾಗಿಲ್ಲ

ದಿರುವಿಕೆ, ದೃಢವಾಗಿಲ್ಲದಿರುವುದು.

ಶಿಶಿಲಯತ್ ಶಿಶಿಲಯತ್ (ವಿಂ) ಸಡಿಲವಾಗಿ ಮಾಡು

ತ್ತಿರುವ. ಶಿಶಿಲಂ ಕುರ್ವತ್ — ತತ್ಕರೋತಿಂ “ಣಿಚ್” ।

“ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬) ।

—ಯಂತಿ —ಯಸ್ತೀ.

ಶಿಶಿಲಿತ ಶಿಶಿಲಿತ (ವಿಂ) 1. ಗಂಟು ಬಿಚ್ಚಿ ಸಡಿಲವಾಗಿ

ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಶಿಶಿಲಂ ಕೃತಮ್ — ತತ್ಕರೋತಿಂ “ಣಿಚ್” ।

“ಕ:” (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಕಡಮೆಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ದುರ್ಬಲವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. “ಸ್ವಯಮಿತಿ ಹಿ ದಯೇ ತ್ವಂ  
ಸ್ವೀಕೃತಶ್ರೀನಿವಾಸಾ ಶಿಶಿಲಿತಭವಭೀತಿ: ಶ್ರೇಯಸೇ ಜಾಯಸೇ  
ನ:” ದಯಾಶಂ ।

ಶಿಶಿ ಶಿಶಿ (ಪುಂ) 1. ರಶ್ಮಿ, ಕಿರಣ. 2. ಪಶು.

ಶಿಶಿವಿಷ್ಟ ಶಿಶಿವಿಷ್ಟ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಟ. ಶಿಶಿಯೋ ರಹಮಯ:

— ತೈ: ಸರ್ವಮಾವಿಷ್ಟ: ವ್ಯಾಪ್ತವಾನ್ ಇತಿ ಶಿಶಿವಿಷ್ಟ: ।

“ಶಿಶಿಯೋ ರಹಮಯ: ಪ್ರೋಕ್ಷಾ: ವ್ಯಾಪ್ಯ ತೇಷ್ವಪಿ ವರ್ತನಾತ್ ।

ಶಿಶಿವಿಷ್ಟ: ಸಮಾಖ್ಯಾತ: ಸೂರ್ಯೇಂದ್ರಗನ್ಧಾದಿರೂಪವತ್” ಇತಿ

ನಿರೂಪಿತ: । “ನೈಕರೂಪೋ ವೃಹದ್ವಿಷ್ಟ: ಶಿಶಿವಿಷ್ಟ: ಪ್ರಕಾಶನ:”

ವಿಂ ಸಂ । 2. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. (ವಿಂ) 3. ಪಟ್ಟಿಪಟಲ

ಯುಳ್ಳವನು, ತಲೆಯಲ್ಲಿ ಕೂದಲಿಲ್ಲದವನು. 4. ಕುಷ್ಠ

ರೋಗವುಳ್ಳವನು. “ಶಿಶಿವಿಷ್ಟಸ್ತು ಕ್ಷಲತೌ ಶಿವೇ ದುಷ್ಕರ್ಮಣಿ

ಸ್ಮೃತ:” ಮೇದಿಂ ।

ಶಿಪ್ರ ಶಿಪ್ರ (ಪುಂ) ಒಂದು ಸರೋವರ.

ಶಿಪ್ರಾ ಶಿಪ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಿಪ್ರಸರೋವರದಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನ  
ವಾದ ಒಂದು ನದಿ.

ಶಿಫಾ ಶಿಫಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮರದ ರೆಂಬೆಯಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ

ಇಳಿದಿರುವ ಜಟೆಯಂತಿರುವ ಬೇರು, ಬೀಳು. ಶಿಫ್

(ಸ್ವಪ್ನೇ) ಫಕ್ ಹ್ರಸ್ವಶ್ಚ ಬಾಹುಂ । 2. ಮೂಲ, ಬೇರು.

3. ಹಂದ್ರ, ಅರಿಸಿನ. 4. ಜಟಾಮಾಂಸ. 5. ತಾಯಿ.

6. ನದಿ, ಹೊಳೆ. “ಶಿಫಾ ಮಾತರಿ ಮಾಂಸಾಂ ಚ ಜಡಾಂ ಚ

ಸರಿತ್ಯಪಿ” ಹೇಮಂ । 7. ತಾವರೆಗಿಡದ ಬೇರು.

ಶಿಫಾಕ ಶಿಫಾಕ (ಪುಂ) ತಾವರೆಯ ಬೇರು. ಶಿಫಾ ಇವ  
“ಕನ್” (೫-೩-೯೬) ।

ಶಿಫಾಕಂದ ಶಿಫಾಕಂದ (ಪುಂ) ತಾವರೆಗಿಡದ ಬೇರು.

ಶಿಫಾಯುಕ್ತ: ಕಂದೋ ಯಸ್ಯ ।

ಶಿಫಾಧರ ಶಿಫಾಧರ (ಪುಂ) ರೆಂಬೆ, ಕೊಂಬೆ. ಶಿಫಾಯಾ: ಧರ: ।

ಶಿಬಿ ಶಿಬಿ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಚಕ್ರವರ್ತಿ. ಈತನು ಶರಣಾಗತ

ರಕ್ಷಕನೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಪಡೆದಿದ್ದನು. ಇವನನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸಲು

ಇಂದ್ರ ಮತ್ತು ಅಗ್ನಿ ಇಬ್ಬರೂ ಗಿಡುಗ ಮತ್ತು ಪಾರಿವಾಳ

ಗಳ ವೇಷವನ್ನು ತಾಳಿ ಇವನಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದರು. ಗಿಡುಗನು

ಪಾರಿವಾಳವನ್ನು ಅಟ್ಟಿಸಿಕೊಂಡು ಬಂದಾಗ ಪಾರಿವಾಳವು

ಶಿಬಿಚಕ್ರವರ್ತಿಯನ್ನು ಮರೆಹೊಕ್ಕಿತು. ಅದನ್ನು ರಕ್ಷಿಸು

ವುದಕ್ಕಾಗಿ ಶಿಬಿಯು ಗಿಡುಗನಿಗೆ ತನ್ನ ಶರೀರದಿಂದ ಮಾಂಸ

ವನ್ನು ಕೊಡುವುದಾಗಿ ಹೇಳಿ ತನ್ನ ಶರೀರವನ್ನು ಕಡಿದು

ಪಾರಿವಾಳದ ತೊಕದ ಮಾಂಸವನ್ನು ತ್ರಾಸಿನಲ್ಲಿಟ್ಟಾಗ

ಇವನ ಶರಣಾಗತ ರಕ್ಷಣೆಯ ಪ್ರತೀಕವೆಚ್ಚದ ಇಂದ್ರನಿಗೆ



ಗಳು ಸ್ವಸ್ವರೂಪದಿಂದ ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡು ಇವನಿಗೆ ಅನೇಕ ವರಗಳನ್ನು ಕೊಟ್ಟರು. ಮಾಂ ಅನುಂ ೬೭।

ಶಿವಿಕಾ ಶಿವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಲ್ಲಕ್ಕಿ, ಮನುಷ್ಯರು ಹೊರುವ ಒಂದು ವಾಹನ, ಮನುಷ್ಯರಿಂದ ಹೊರಲ್ಪಡುವ ಒಂದು ವಾಹನ, ಮೇನಾ. ಶಿವಂ ಕರೋತಿ — ತತ್ಕರೋತಿ.....

“ನಿವ್” (ವಾಂ ೭-೪-೯೩)। “ಫಲ್” (೩-೧-೧೩೩)।

ಶಿವಿರ ಶಿವಿರ (ನಂ) 1. ಸೇನೆಯ ವಾಸಸ್ಥಾನ, ಸೇನೆಯ ತಂಗುವ ಸ್ಥಳ. ಸೇನೆಯು ಇಳಿದುಕೊಳ್ಳುವ ಸ್ಥಳ. ಶವಂತ್ಯತ್ರ — ಶವ (ಗತೌ) “ಕಿರವ್” ಬಾಹುಂ। “ಮೌಲಿ ಪಾಣಿ ಪಲಿತವಲೇ ನ್ಯಸ್ಯ ಕೃತ್ವಾ ನೃಶಂಸಂ ಧೃಷ್ಟವುಮ್ನ: ಸ್ವಶಿವಿರಮಯಂ ಯಾತಿ ಸರ್ವೇ ಸಹಧವಮ್” ವೇಣಿಂ ೩-೨೦। 2. ರಾಜನ ಬಿಡಾರ, ರಾಜನು ಪ್ರವಾಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ತಂಗುವ ಗೃಹ. “ಸನ್ಧ್ಯಾಂಶುಭಿವೃದ್ಧನಕರ್ತೃರಿತಾಂತರಿಸ್ಥಲಕಮಿವಿಡಮ್ಬಿ ಶಿವಿರಂ ಶಿವಕೀರ್ತನಸ್ಯ” ಮಾಘಂ ೪-೬೮। 3. ಸೇನೆಯ ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಕಂದಕಗಳನ್ನು ತೋಡುವುದು.

ಶಿಮ್ಬಾ ಶಿಂಬಾ, ಶಿಮ್ಬಿ ಶಿಂಬಿ, ಶಿಮ್ಬಿ ಶಿಂಬೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದ್ವಿದಳಧಾನ್ಯದ ಸಸ್ಯದ ಕಾಯಿ, ಬೀಜಕೋಶ, ಬೀಜ.

ಶಿರ ಶಿರ (ಪುಂ) 1. ಹಿಪ್ಪಲಿಯ ಬೇರು. 2. ಮಸ್ತಕ, ತಲೆ. -ರಾ-ರಾ. 3. ಧಮನಿ, ಸಿರೆ, ನರ. “ಶಿರೋ ನಾ ಪಿಪ್ಪಲಿಮೂಲೇ ಸ್ಯಾತ್ ಧಮನಾಂ ಚ ಯೋಷಿತಿ” ಮೇದಿಂ।

ಶಿರಸ್ ಶಿರಸ್ (ನಂ) 1. ಮಸ್ತಕ, ತಲೆ. ಶ್ರೀಯತೇ ಉಷ್ಣಾ-ಷಾದಿನಾ — ಶಿವ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) “ಅಸುನ್” ಘಾತೌ: ಶಿರ ಆದೇಶಶ್ಚ (ಉಂ ೪-೧೯೩)। “ನ ಲಕ್ಷ್ಮಯಾಮಾಸ ಮಹಾಜನಾನಾಂ ಶಿರಾಸಿ ನೆವೋದತಿಮಾಜಗಾಮ” ಮಾಘಂ ೩-೨೮। 2. ಶಿಖರ, ಪರ್ವತದ ಅತ್ಯಂತ ಎತ್ತರ ಪ್ರದೇಶ. “ಸಮೀರಶಿಶಿರ: ಶಿರ:ಸು ವಸತಾಂ ಸತಾಂ ಜವನಿಕಾ ನಿಕಾಮಸುಖಿನಾಮ್” ಮಾಘಂ ೪-೫೪। 3. ವೃಕ್ಷಗಳ ತುದಿಯ ಭಾಗ. 4. ಅಗ್ರಭಾಗ, ತುದಿಯ ಭಾಗ. 5. ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿರುವ ಸೈನ್ಯದ ಮುಂಭಾಗ. “ಪುತ್ರಸ್ಯ ತೇ ರಣಶಿರಸ್ಯಯಮಗ್ರಯಾಯಿ ದುಷ್ಯಂತ ಇತ್ಯಭಿಹಿತೌ ಭುವನಸ್ಯ ಭರ್ತಾ” ಶಾಕುಂ ೭-೨೬। 6. ಮುಖ್ಯ, ಪ್ರಧಾನ. “ಶಿರ: ಪ್ರಧಾನೇ ಸೇನಾಗ್ರೇ ಶಿಖರೇ ಮಸ್ತಕೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ।

ಶಿರ:ಕಪಾಲಿನ್ ಶಿರ:ಕಪಾಲಿನ್ (ಪುಂ) ನರಕಪಾಲ (ತಲೆ ಬಾರುಡೆ) ವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ ಸಂನ್ಯಾಸಿ. ಶಿರ:ಕಪಾಲೋ-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಛಿನಿ:” (೪-೨-೧೧೫)।

ಶಿರಶ್ಶಾಲ ಶಿರಶ್ಶಾಲ (ನಂ) ಶಿರೋವೇದನ, ತಲೆನೋವು.

ಶಿರಜ ಶಿರಜ (ಪುಂ) ತಲೆಯ ಕೂದಲು, ಕೇಶ. ಶಿರೇ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾದುಮವಿ) “ಛ:” (೩-೨-೯೭)।

ಶಿರಸಿಜ ಶಿರಸಿಜ (ಪುಂ) ತಲೆಯ ಕೂದಲು, ಕೇಶ. ಶಿರಸಿ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ: (ಪ್ರಾದುಮವಿ) “ಛ:” (೩-೨-೯೭)। ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಅಲುಕ್ (೬-೩-೧೪)। “ಶಿರಸಿಜಸಂಯಮನಾಕುಲಂಕ-ಪಾಣಿ:” ಕಿರಾಂ ೧೦-೫೨।

ಶಿರಸಿರಹ ಶಿರಸಿರಹ (ಪುಂ) ತಲೆಯ ಕೂದಲು, ಕೇಶ. ಶಿರಸಿ ರೋಹತಿ — ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೫)। ಸಪ್ತಮ್ಯಾ: ವಾ ಅಲುಕ್ (೬-೩-೧೪) ಪಕ್ಷೇ ಶಿರೋರಹ:।

ಶಿರಸ್ತ್ರ ಶಿರಸ್ತ್ರ (ನಂ) ರುಮಾಲು, ಪೇಟ. ಶಿರ: ತ್ರಾಯತೇ — ತ್ರೆಡ್ (ಪಾಲನೆ) “ಕ:” (೩-೨-೩)। ಶಿರಸ್ತ್ರನಿಷ್ಕರ್ಷಣ-ಭಿನ್ನಮೌಲಿ:” ರಘುಂ ೭-೬೬।

ಶಿರಸ್ತಸ್ ಶಿರಸ್ತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ತಲೆಯಿಂದ. “ಜ್ಯೋತಿ: ಪ್ರೋಹೇರದಿತೇ: ಶಿರಸ್ತ:” ಕುಮಾಂ ೩-೪೯।

ಶಿರಸ್ತ್ರಾಣ ಶಿರಸ್ತ್ರಾಣ (ನಂ) ರುಮಾಲು, ಪೇಟ. ಶಿರ: ತ್ರಾಯತೇಜೇನ — ತ್ರೆಡ್ (ಪಾಲನೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೭)। “ಅಪನೀತಶಿರಸ್ತ್ರಾಣಾ: ಶೇಷಾಸ್ತಂ ಶರಣಂ ಯಯು:” ರಘುಂ ೪-೬೪।

ಶಿರಸ್ಯ ಶಿರಸ್ಯ (ವಿಂ) 1. ತಲೆಯಲ್ಲಿರುವ, ತಲೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಶಿರಸಿ ಭವಮ್ “ಯತ್” (೪-೩-೫೫)। “ಯ:” (೪-೩-೧೦೩) ವಾ। 2. ತಲೆಗೆ ಹಿತವಾದ. ಶಿರಸೇ ಹಿತಮ್ — “ಯತ್” (೪-೧-೬)। (ಪುಂ) 3. ಒಂದ ಕೊಂದು ಸೇರದಂತೆ ಬಿಡಿಸಿದ ತಲೆಯ ಕೂದಲು.

ಶಿರಾ ಶಿರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನರ, ಶರೀರದೊಳಗಿರುವ ಸಿರೆ, ಧಮನಿ. ಶಿನೋತಿ — ಶಿಖ್ (ನಿಶಾನೇ) “ರಕ್” ಬಾಹುಂ। ಸಿರಾ ಇತ್ಯಪಿ ಪಾಠ:।

ಶಿರಾಲ ಶಿರಾಲ (ವಿಂ) ಸಿರೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಶಿರಾ: ಸಂತ್ಯಸ್ಯ “ಲಕ್” (೪-೨-೯೬)। “ಆಪಿಙ್ಗುರೂಕ್ಷೋರ್ವಶಿರಸ್ಯವಾಲೆ: ಶಿರಾಲಜಙ್ಗುಗಿರಿಕೂಡಧನೇ:” ಮೃದ್ವಿಂ ೨-೩೦।

ಶಿರಿ ಶಿರಿ (ಪುಂ) 1. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. ಶ್ರು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಛ:” (ಉಂ ೪-೧೪೨)। 2. ಬಾಣ. 3. ಶಲಭ, ಪತಂಗದ ಹುಳ. (ವಿಂ) 4. ಹಂಸಿಮವವನಂ.

ಶಿರೀಷ ಶಿರೀಷ (ಪುಂ) ಬಾಗೆಮರ. ಶ್ರು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಛಿಷನ್” (ಉಂ ೪-೨೭)। “ಪದಂ ಸಹೇತ ಅಮರಸ್ಯ ಪೇಲವಂ ಶಿರೀಷಪುಷ್ಪಂ ನ ಪುನ: ಪತತ್ರಿಣ:” ಕುಮಾಂ ೪-೪।

ಶಿರೋಗೃಹ ಶಿರೋಗೃಹ (ನಂ) ಮೇಲಿನ ಮಹಡಿ, ಉಪ್ಪರಿಗೆ: ಶಿರಸಿ ಗೃಹಮ್।

ಶಿರೋಧರ ಶಿರೋಧರ (ಪುಂ) ಕಂಠ, ಕುತ್ತಿಗೆ.

ಶಿರೋಧರಾ ಶಿರೋಧರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುತ್ತಿಗೆ, ಕೊರಳಂ. ಶಿರಸೋ ಧರಾ। “ಅಂತರಾವತಿಭಿಗೃಹಕಪೋತಶಿರೋಧರಾಭಿ:” ಮಾಘಂ ೪-೫೨।



ಶಿರೋಧಿ ಶಿರೋಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಂಠ, ಕುತ್ತಿಗೆ, ಕೊರಳು.

ಶಿರೋ ಧೀಯತೇಜಯಾ—ಝಘಾ(ಧಾರಣೆ) “ಕಿ:” (೩-೩-೧೩)।

ಶಿರೋಭೂಷಣ ಶಿರೋಭೂಷಣ (ನಂ) ತಲೆಯ ಆಭರಣ, ತಲೆಯನ್ನು ಅಲಂಕರಿಸುವ ಒಡವೆ. ಶಿರಸೋ ಭೂಷಣಮ್।

ಶಿರೋಮಣಿ ಶಿರೋಮಣಿ (ಪುಸ್ತಕೀಂ) 1. ತಲೆಯಲ್ಲಿ ಧರಿಸುವ ರತ್ನಾಭರಣ, ಜೊಡಾಮಣಿ.—ರತ್ನಮ್—ರತ್ನಮ್. 2. ಪಂಡಿತರಿಗೆ ಕೊಡುವ ಗೌರವದ ಪದವಿ.

ಶಿರೋಮಮ್ ಶಿರೋಮಮ್ (ನಂ) ಶಿರಸ್ಸೇ ಪ್ರಾಣಾಧಾರಸ್ಥಾನವಾಗಿರುವ ವರಾಹ, ಸೂಕರ, ಹಂದಿ. ಶಿರಃ ಏವ ಮಮ ಜೀವಾಧಾರಸ್ಥಾನಂ ಯಸ್ಯ।

ಶಿರೋರುಜಾ ಶಿರೋರುಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಲೆಯ ನೋವು. ಶಿರಸಿ ರುಜತಿ—ರುಜೋ (ಮಜ್ಜೆ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೫)। —ರೋಗ:—ರೋಗ:.

ಶಿರೋರುಹ ಶಿರೋರುಹ (ಪುಂ) ಕೇಶ, ತಲೆಯ ಕೂದಲು. ಶಿರಸಿ ರೋಹತಿ—ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) “ಕಿವಿಪ್” (೩-೨-೬೧)।

ಶಿರೋರುಹ ಶಿರೋರುಹ (ಪುಂ) ಕೇಶ, ತಲೆಯ ಕೂದಲು. ಶಿರಸಿ ರೋಹತಿ—ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೫)। “ಋತೋತ್ಪಲಾಪಿಡ ಇವ ಪ್ರಿಯಾಯಾ: ಶಿರೋರುಹಾಣಾಂ ಶಿಶಿಲ: ಕಲಾಪ:” ಕಿರಾಂ ೧೬-೧೫।

ಶಿರೋವೇಷ್ಠನ ಶಿರೋವೇಷ್ಠನ (ನಂ) ಉಷ್ಣೀಷ, ರುಮಾಲು. ಶಿರೋ ವೇಷ್ಠಯತೇಜನೇನ—ವೇಷ್ಠ (ವೇಷ್ಠನೆ) ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)।

ಶಿರೋಸ್ಥಿ ಶಿರೋಸ್ಥಿ (ನಂ) ತಲೆಯ ಎಲುಬು. ಶಿರಸ: ಅಸ್ಥಿ।

ಶಿಲ ಶಿಲ (ನಂ) ಜೀವನಕ್ಕಾಗಿ ಗದ್ದೆಗಳಲ್ಲಿ ಉದುರಿ ಬಿದ್ದಿರುವ ಧಾನ್ಯಗಳನ್ನು ಆರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಶಿಲ (ಉಚ್ಛೇ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮)।

ಶಿಲಾ ಶಿಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಾಷಾಣ, ಕಲ್ಲು, ಬಂಡೆ. ಶಿಲತಿ—ಶಿಲ (ಉಚ್ಛೇ) “ಕ:” (೩-೧-೧೩೫)। “ಉತ್ಪಾತ-ವಾತಪ್ರತಿಕೂಲಪಾತಿನೀಕುಪ್ತಕಾಮ್ಯೋ ಬೃಹತೀ: ಶಿಲಾ ಇವ” ಮಾಘಂ ೧೨-೫೦। 2. ವಾಸಕಾಲಿನ ಕೆಳಗಿನ ಮರ, ದೇಹಳ, ಹೊಸ್ತಿಲುಮರದ ಪಟ್ಟಿ, ಬಾಗಿಲಿನ ಕೆಳಗಿನ ಪಟ್ಟಿ. 3. ಮೆಣಶಿಲೆ. “ಶಿಲಾ ತು ಪ್ರಸ್ತರೇ ಮತಾ। ತಥಾ ಮನ:ಶಿಲಾಯಾಂ ಚ ದ್ವಾರಾಃ ಸ್ಥಿತದಾರುಣಿ” ಮೇದಿಂ। 4. ಕಂಬದ ತುದಿಯ ಭಾಗ. “ಸ್ತಂಭಶೀರ್ಷೆ ಶಿಲಾಶಿಲ್ಪಯಿ” ಮೇದಿಂ।

ಶಿಲಾಕರ್ಣಿ ಶಿಲಾಕರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಲ್ಲೇವೃಕ್ಷ, ಅನೇ ಬೇಲದ ಮರ.

ಶಿಲಾಕುಟುಕ ಶಿಲಾಕುಟುಕ (ಪುಂ) ಶಿಲೆಯನ್ನು ಒಡೆಯುವ ಉಳಿ, ಕಲ್ಲುಳಿ. ಶಿಲಾಂ ಕುಟುಯತಿ—ಕುಟು (ಛೇದನೆ) “ಫ್ಲುಲ್” (೩-೧-೧೩೩)।

ಶಿಲಾಜತು ಶಿಲಾಜತು (ನಂ) 1. ಒಂದು ಗೈರಿಕ ಧಾತು, ಕಪ್ಪು ಬಣ್ಣದ ಒಂದು ಖನಿಜ. 2. ಪರ್ವತದ ಬಂಡೆಗಳು ಹೊರಗಡೆಹುವ ಧಾತುಸಾರ. ಈ ಬಂಡೆಗಳು ಬೇಸಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಜೆನ್ನಾಗಿ ಕಾದುಹೋಗಿ ಅದರಿಂದ ರಸವು ಹೊರಬಂದು ಅದು ಘನೀಭೂತವಾಗುವುದು. ಇದು (1) ಸೌವರ್ಣ (2) ರಾಜತ (3) ತಾಮ್ರ ಮತ್ತು (4) ಆಯಸ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. “ನಿರ್ದಾಘೇ ಧರ್ಮಸಂತಪ್ತಾ ಧಾತುಸಾರಂ ವರಾಧರಾ:। ನಿರ್ಯಾಸವತ್ಪ್ರಮುಚ್ಛಂತಿ ತಚ್ಛಿಲಾಜತು ಕೀರ್ತಿಸಮ್। ಸೌವರ್ಣಂ ರಾಜತಂ ತಾಮ್ರಂ ಆಯಸಂ ತತ್ತ್ವತುರ್ವಿಧಮ್” ಭಾವಪ್ರಂ।

ಶಿಲಾಪಟ ಶಿಲಾಪಟ, —ಪುತ್ರ—ಪುತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಅರೆಯುವ ಕಲ್ಲು. 2. ಕೂಡಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಅಗಲವಾದ ಶಿಲೆ, —ಜಪ್ಪಡಿಕಲ್ಲು. ಶಿಲಾಯಾ: ಪುತ್ರ ಇವ।

ಶಿಲಾಪುಷ್ಪ ಶಿಲಾಪುಷ್ಪ (ನಂ) ಗೈರೇಯ. ಗೈರಿಕ ಧಾತು. ಶಿಲಾಯಾ: ಪುಷ್ಪಮಿವ।

ಶಿಲಾಭೇದ ಶಿಲಾಭೇದ (ಪುಂ) ಕಲ್ಲುಳಿ, ಕಲ್ಲನ್ನು ತುಂಡು ಮಾಡಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಕಲ್ಲುಕುಟ್ಟಿಗನ ಒಂದು ಆಯುಧ. ಶಿಲಾಂ ಭಿನತ್ತಿ—ಭಿದಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) “ಞವ್” (೩-೧-೧೩೪)।

ಶಿಲಾವೃಷ್ಠಿ ಶಿಲಾವೃಷ್ಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಲ್ಲುಗಳ ಮಳೆ.

ಶಿಲಾಸನ ಶಿಲಾಸನ (ನಂ) ಕಲ್ಲಿನ ಕಾಲುವೆ, ಕಲ್ಲಿನಿಂದ ತಯಾರಿಸಿದ ಒಂದು ಆಸನ, ಕಲ್ಲುಜಪ್ಪಡಿಯ ಆಸನ (ಕಲ್ಲುಬೆಂಚು).

ಶಿಲಾಸಾರ ಶಿಲಾಸಾರ (ನಂ) ಲೋಹ, ಕಬ್ಬಿಣ. ಶಿಲಾವತ್ ಸಾರೋಸ್ಯ।

ಶಿಲಾಹ್ವ ಶಿಲಾಹ್ವ (ನಂ) ಶಿಲಾಜತು.

ಶಿಲಿ ಶಿಲಿ (ಪುಂ) 1. ಭುಜಪತ್ರ ಗಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ದ್ವಾರದ ಕೆಳಗಿನ ಮರ.

ಶಿಲಿ ಶಿಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಂಬದ ಮೇಲಿನ ಭಾಗ, ಕಂಬದ ತುದಿಯ ಭಾಗ. 2. ಹೆಣ್ಣು ಎರುಬುಹುಳೆ. “ಗಣ್ಧಪದ್ಯಾಂ ಶಿಲಿ ಮತಾ। ಸ್ತಂಭಶೀರ್ಷೆ ಶಿಲಾಶಿಲ್ಪಯಿ” ಮೇದಿಂ। 3. ದ್ವಾರದ ಕೆಳಗಿನ ಮರ.

ಶಿಲಿಂಧ್ರ ಶಿಲಿಂಧ್ರ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. 2. ಒಂದು ವೃಕ್ಷ. (ನಂ) 3. ಬಾಳೆಯ ಹೂವು. “ನವ-ಕದಂಬರಜೋಹಿತಾಮ್ಬರೇರಧಿಪುರಂಧ್ರಿ ಶಿಲಿಂಧ್ರಸುಗಂಧಿಭಿ:” ಮಾಘಂ ೬-೩೨।



“ವೈಜಯಂತ ಇತಿ ಖ್ಯಾತಃ ಪವಂತಪ್ರವರೋ ನೃಪ । ತತ್ರಾಧ್ಯಾತ್ಮ-  
ಗತಿಂ ದೇವ ಏಕಾಕೀ ಪ್ರವಿಚಿಂತಯನ್ । ವೈರಾಜಸದನಾಸ್ಥಿತಂ  
ವೈಜಯಂತಂ ನಿಷೇವತೇ ॥ ಅಥ ತತ್ರಾಸತಸ್ತಸ್ಯ ಚತುರ್ವಕ್ತ್ರಸ್ಯ  
ಧೀಮತಃ । ಲಲಾಟಪ್ರಭವಃ ಪುತ್ರಃ ಶಿವ ಆಗच्छದ್ವಚ್ಛಯಾ ।  
ಆಕಾಶೇನ ಮಹಾಯೋಗಿ ಪುರಾ ತ್ರಿನಯನಃ ಪ್ರಭುಃ” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ  
೩೬೦ । ಪರಮೇಶ್ವರನು ಮುಷಿಗಳೊಡನೆ ಹಿಮವತ್ಪರ್ವತ  
ದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತಿದ್ದಾಗ ಪಾರ್ವತಿಯು ಹಿಂದಿನಿಂದ ಬಂದು  
ಕ್ರೀಡಾರ್ಥವಾಗಿ ಪರಮೇಶ್ವರನ ಎರಡು ಕಣ್ಣುಗಳನ್ನೂ  
ತನ್ನ ಕೈಗಳಿಂದ ಮುಚ್ಚಿಲಾಗಿ ಜಗತ್ತೆಲ್ಲವೂ ಕುರುಡಾ  
ಯಿತು. ಆಗ ಪರಶಿವನು ತನ್ನ ಲಲಾಟದಲ್ಲಿ ನೇತ್ರ  
ವೊಂದನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದನು. “ಆಗಮ್ಯ ತು ಗಿರೇಃ ಪುತ್ರೀ  
ದೇವದೇವಸ್ಯ ಚಾಂತಿಕಮ್ । ಮನಃಪ್ರಿಯಂ ಚಿಕೀರ್ಷಂತೀ ಕ್ರಿಡಾಥ  
ಶಂಕರಾಂತಿಕೇ ॥ ಮನೋಹರಾಭ್ಯಾಂ ಪಾಣಿಭ್ಯಾಂ ಹರನೇತ್ರೇ ಪಿಠಾಯ  
ತು । ಅವೇಕ್ಷ್ಯ ಹೃಷ್ಠಾ ಸ್ವಗಣಾನ್ ಸ್ಮಯಂತೀ ಪೃಠತಃ ಸ್ಥಿತಾ ॥  
ದೇವ್ಯಾ ಚಾನ್ವಿಕೃತೇ ದೇವೇ ಕಶ್ಮಲಂ ಸಮಪದತ । ನಿಮಿಲಿತೇ  
ಭೂತಪತೌ ನಷ್ಟಚಂದ್ರಾರ್ಕತಾರಕಮ್ ॥ ವಿಷಣ್ಣಂ ಭಯವಿತ್ರಸ್ತಂ  
ಜಗದಾಸೀದ್ಭಯಾಕುಲಮ್ । ತಮೋಽಭಿಮೃತೇ ಸಮ್ಭ್ರಾಂತೇ ಲೋಕೇ  
ಜೀವನಸಂಕ್ಷಯೇ ॥ ತೃತೀಯಂ ಚಾಸ್ಯ ಸಂಭೂತಂ ಲಲಾಟೇ ನೇತ್ರಮಾಯತಮ್”  
ಭಾಂ ಅನುಂ ೨೦೫ ।



**ಪಾರ್ವತೀವಿವಾಹ:** ಪರಶಿವನು ದಕ್ಷಬ್ರಹ್ಮನ ಪುತ್ರಿಯಾದ ದಾಕ್ಷಾಯಣಿಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿದ್ದನು. ಒಮ್ಮೆ ದೇವಲೋಕದಲ್ಲಿ ನಡೆದ ಯಾಗಕ್ಕಾಗಿ ದಕ್ಷನು ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಶಿವನು ಆತನನ್ನು ಗೌರವಿಸಲಿಲ್ಲವೆಂಬ ಕಾರಣದಿಂದ ದಕ್ಷನು ಕ್ರೂರನಾಗಿ ಶಿವನಿಗೆ ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಹವಿರ್ಭಾಗವನ್ನು ಕೊಡಕೂಡದೆಂದು ಹೇಳಿದನು. ದಕ್ಷನು ಮಾಡಿದ ವಾಜಪೇಯಿಯಾಗಕ್ಕೆ ಈಶ್ವರನಿಗೆ ಆಹ್ವಾನ ಕೊಡದಿದ್ದರೂ ಸತಿಯು ಈಶ್ವರನ ಮಾತನ್ನು ಲಕ್ಷಿಸದೆ ತಂದೆಯ ಯಾಗಕ್ಕೆ ಹೋದಾಗ ಯಾರೂ ಅವಳನ್ನು ಸತ್ಕರಿಸಲಿಲ್ಲವಾಗಿ ಕೋಪಗೊಂಡು ಈಶ್ವರನೇ ತನಗೆ ಮುಂದಿನ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿಯೂ ಪತಿಯಾಗಬೇಕೆಂದು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸುತ್ತ ಯೋಗದಿಂದ ಶರೀರತ್ಯಾಗ ಮಾಡಿದಳು. ಈ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿದ ಪರಮೇಶ್ವರನು ತನ್ನ ಜಟಾಜೂಟದಿಂದ ವೀರಭದ್ರನನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಲು ವೀರಭದ್ರನು ಎಲ್ಲಾ ಪ್ರಮಥಗಳೊಡನೆ ಹೋಗಿ ದಕ್ಷನ ಯಜ್ಞವನ್ನು ಧ್ವಂಸ ಮಾಡಿದನು. ಶರೀರತ್ಯಾಗ ಮಾಡಿದ ಸತೀದೇವಿಯು ಮೇನಕಾ-ಹಿಮವಂತರ ಪುತ್ರಿಯಾಗಿ (ಪಾರ್ವತಿಯಾಗಿ) ಜನಿಸಿ ಪರಮೇಶ್ವರನನ್ನು ಮದುವೆಯಾದಳು.

**ಶಿವನಿಂದ ಅರ್ಜುನನಿಗೆ ಪಾಶುಪತಾಸ್ತ್ರ ಪ್ರದಾನ:** ಕೌರವರಿಂದ ಪರಾಜಿತರಾದ ಪಾಂಡವರು ವನವಾಸವನ್ನು ನುಭವಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಆಗಮಿಸಿದ ವೇದವ್ಯಾಸರು ಉಪದೇಶಿಸಿದ ಮಂತ್ರದ ಪ್ರಭಾವದಿಂದ ಅರ್ಜುನನು ಇಂದ್ರಕೀಲಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಅವನನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸಲು ಪರಮೇಶ್ವರನು ಕಿರಾತ ವೇಷದಿಂದ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದು ಅರ್ಜುನನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಮಾಡಿ ಅವನ ಭಕ್ತಿಗೆ ಮೆಚ್ಚಿ ಶತ್ರುನಿಗ್ರಹಕ್ಕಾಗಿ ಪಾಶುಪತಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದನು. "ದದಾಮಿ ತೇಷ್ವಂ ದಯಿತಮಹಂ ಪಾಶುಪತಂ ವಿಮೋ. ಸಮರ್ಥೋ ಧಾರಣೆ ಮೋಕ್ಷೇ ಸಂಹಾರೇಽಪಿ ಚ ಪಾಂಡವ. ನ ತ್ವಯಾ ಸಹಸಾ ಪಾಠ್ಯ ಮೋಕ್ಷವ್ಯಂ ಪುರುಷೇ ಕ್ವಚಿತ್. ಜಗದ್ವಿನಿರ್ದೇಹ-ತ್ಸರ್ವಮಲ್ಪತೇಜಸಿ ಪಾತಿಸಿತಮ್. ತತ್ ಶ್ರುತ್ವಾ ತ್ವರಿತಃ ಪಾಠ್ಯಃ ಶುಚಿರ್ಮೃತ್ವಾ ಸಮಾಹಿತಃ. ತತಸ್ತ್ವಯಾಪಯಾಮಾಸ ಸರಹಸ್ಯ-ನಿವರ್ತನಮ್. ತದಸ್ತ್ರಂ ಪಾಂಡವಶ್ರೇಷ್ಠಂ ಮूर्ತಿಮಂತಮಿವಾಂತಿಕಮ್. ತಪತಸ್ಥೇ ಮಹಾತ್ಮಾನಂ ಯಥಾ ತ್ಯಕ್ತಮುಪಾಪಿತಮ್" ಭಾಂವನಂ ೪೦.

**ತ್ರಿಪುರಸಂಹಾರ:** ಚತುರ್ಮುಖನಿಂದ ವರವನ್ನು ಪಡೆದು ಮಯನು ನಿರ್ಮಿಸಿದ ಆಯಸ್ ರಾಜತ ಮತ್ತು ಸೌವರ್ಣಪುರಗಳಲ್ಲಿ ತಾರಕಾಸುರನ ಮಕ್ಕಳಾದ ವಿದ್ಯುನ್ಮಾಲಿ ಕಮಲಾಕ್ಷ ಮತ್ತು ತಾರಾಕ್ಷರು ಸಂತೋಷದಿಂದ ಸ್ವರ್ಗಸೌಖ್ಯವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿದ್ದರು. ಕಾಲಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಅವರು ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಬಹಳವಾಗಿ ಖೇಡಿಸಿ

ತೊಡಗಲಾಗಿ ದೇವತೆಗಳ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಂತೆ ತ್ರಿಪುರಾಸುರರನ್ನು ಸಂಹರಿಸಲು ಪರಮೇಶ್ವರನು ಭೂಮಿಯನ್ನೂ ರಥವನ್ನಾಗಿಯೂ ನಾಲ್ಕು ವೇದಗಳನ್ನೂ ಅಶ್ವಗಳನ್ನಾಗಿಯೂ ಬ್ರಹ್ಮನನ್ನು ಸಾರಥಿಯನ್ನಾಗಿಯೂ ಮಂದರಪರ್ವತವನ್ನು ಬಿಲ್ಲನ್ನಾಗಿಯೂ ಯಮನನ್ನು ಬತ್ತಳಿಕೆಯನ್ನಾಗಿಯೂ ಆದಿಶೇಷನನ್ನು ಬಿಲ್ಲಿನ ಹೆದೆಯನ್ನಾಗಿಯೂ ವಿಷ್ಣುವನ್ನು ಬಾಣವನ್ನಾಗಿಯೂ ಕಲ್ಪಿಸಿಕೊಂಡು ಆ ಮೂರು ಪುರುಷರೂ ಒಂದೇ ಕಡೆ ಸೇರಿದ್ದನ್ನು ಕಂಡು ಒಂದೇ ಬಾಣದಿಂದ ಅವರನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದನು. "ಅಸುರಾಣಾಂ ಪುರಾಣ್ಯಾಸನ್ ತ್ರಿಣಿ ವೀರ್ಯವತಾಂ ದಿವಿ. ಆಯಸಂ ರಾಜಸಂ ಚೈವ ಸೌವರ್ಣಮಪಿ ಚಾಪರಮ್. ನಾಶಕತ್ತಾನಿ ಮಥವಾ ಭೇತುಂ ಸರ್ವಾಯುಧೇರಪಿ. ಅಥ ಸರ್ವೇಽಮರಾ ರುದ್ರಂ ಜಗ್ಮುಃ ಶರಣಮದಿತಾಃ. ತತಃ ಉಚು-ರ್ಮಹಾತ್ಮಾನೋ ದೇವಾಃ ಸರ್ವೇ ಸಮಾಗತಾಃ. ರುದ್ರ ರೌದ್ರಾ ಭವಿಷ್ಯಂತಿ ಪಶವಃ ಸರ್ವಕರ್ಮಸು. ಜಹಿ ದೇತ್ಯಾನ್ ಸಹ ಪುರೈಃ ಲೋಕಾಂಸ್ತ್ರಾಯಸ್ವ ಮಾನದ. ಸ ತಥೋಕ್ತಸ್ತಥೇತ್ಯುಕ್ತ್ವಾ ಕೃತ್ವಾ ವಿಷ್ಣುಂ ಶರೋತ್ತಮಮ್. ಬ್ರಹ್ಮಾಣಂ ಸಾರಥಿಂ ಕೃತ್ವಾ ವಿನಿಯುಜ್ಯ ಚ ಸರ್ವಶಃ. ಶರೇಣಾ-ದಿತ್ಯವರ್ಣೇನ ಕಾಲಾಗ್ನಿಸಮತೇಜಸಾ. ತೇಽಸುರಾಃ ಸಪುರಾಸ್ತತ್ರ ದಧಾ ರುದ್ರೇಣ ಭಾರತ" ಭಾಂ ಅನುಂ ೨೬೪. ಪರಮಾತ್ಮನೊಬ್ಬನೇ ಬ್ರಹ್ಮ ವಿಷ್ಣು ಮಹೇಶ್ವರರೆಂಬ ನಾಮರೂಪಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿ ಸೃಷ್ಟಿ ಸ್ಥಿತಿ ಮತ್ತು ಲಯರೂಪ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ನಡೆಸುವನು. "ಸೃಷ್ಟಿಸ್ಥಿತಿಸ್ಥಿತಿ-ಬ್ರಹ್ಮವಿಷ್ಣುಶಿವಾತ್ಮಿಕಾಮ್. ಸ ಸಂಜ್ಞಾಂ ಯಾತಿ ಭಗವಾನೇಕ ಉಪನಾದನಃ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ. "ನ ಬ್ರಹ್ಮಾ ಭವತೋ ಭಿನ್ನೋ ನ ಶಮ್ಭುಬ್ರಹ್ಮಣಸ್ತಥಾ. ನ ಚಾಹಂ ಯುಯೋಭಿನ್ನೋ ಹ್ಯಭಿನ್ನತ್ವಂ ಸನಾತನಮ್" ಕಾಲಿಕಾಪುಂ. "ಸೃಷ್ಟಿಸ್ಥಿತಿಸ್ಥಿತಿ-ಕರಣಾದೇಕ ಉಪನಾದನಃ. ಬ್ರಹ್ಮಾ ವಿಷ್ಣುಃ ಶಿವಶ್ಚೇತಿ ಸಂಜ್ಞಾಮಾಪ ಪೃಥಕ್ ಪೃಥಕ್. ಅತಸ್ತ್ವಂ ಚ ವಿಧಾತಾ ಚ ತಥಾಹಮಪಿ ನ ಪೃಥಕ್. ಉಪನಾದನಃ ರೂಪಂ ಚ ಜ್ಞಾನಮಸ್ಮಾಕಮಂತರಮ್" ಕಾಲಿಕಾಪುಂ. ವಿಷ್ಣು ಮಹೇಶ್ವರರು ಅಭಿನ್ನರಾದುದರಿಂದ ವಿಷ್ಣುವನ್ನು ಭಜಿಸುವವರು ಈಶ್ವರನನ್ನೂ ಈಶ್ವರನನ್ನು ಭಜಿಸುವವರು ವಿಷ್ಣುವನ್ನೂ ಹೊಂದುವರು. "ತಂ ಯೇ ವಿಂದಂತಿ ತೇ ದೇವಿ ನೂನಂ ಮಾಮೇವ ವಿಂದಂತಿ. ಯೇ ಮಾಂ ವಿಂದಂತಿ ದೇವೇಶಿ ತೇ ವಿಂದಂತಿ ಪರಂ ಶಿವಮ್" ಕೂರ್ಮಪುಂ. "ಪರಾತ್ಪರತರಂ ಯಾಂತಿ ನಾರಾಯಣಪರಾ ಜನಾಃ. ನ ತೇ ತತ್ರ ಗಮಿಷ್ಯಂತಿ ಯೇ ದ್ವಿಷಂತಿ ಮಹೇಶ್ವರಮ್". "ಶಿವೇನ ಭರ್ತಾ ಸಹ ವಸಂಚರ್ಯಾ ಕಾರ್ಯಾ ತ್ವಯಾ ಮುಕ್ತವಿಚಾರಯೇತಿ" ಕುಮಾರಂ ೭-೮೩. 2. ಮೋಕ್ಷ. 3. ಹಸುಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಗೂಟ. 4. ಒಂದು ಶುಭಯೋಗ. 5. ಸುರುಸುರಕೆ ಗಿಡ. 6. ಗುಗ್ಗುಳ. 7. ವೇದ. 8. ಪಾದರಸ. 9. ಕಾಡು



ಸಬ್ಬರಿಗಿಡ. "ಶಿವೋ ಮೋಕ್ಷೋ ಮಹಾದೇವೋ ಕಾಲಕರಹಯೋಗಯೋಃ |  
ವಾಲ್ಮೀಕೀ ಗುಗುಲೋ ವೇದೇ ಪುಂಡರೀಕದ್ರುಮೇ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ |  
10. ಕರಿದತ್ತೂರಿ ಗಿಡ. [ಅಪಾರಮಹಿಮನಾದ  
ಪರಮೇಶ್ವರನ ವಿಭೂತಿಗಳನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವುದಾದರೆ  
ಅದಕ್ಕೇ ಒಂದು ಸಂಪುಟ ಬೇಕಾಗುವುದು. ವಿಸ್ತರ ಭಯ  
ದಿಂದ ಸಾಧ್ಯವಾಗಲಿಲ್ಲವಾಗಿ ಹೆಚ್ಚು ವಿವರಕ್ಕೆ ಶಿವಪುರಾಣ  
ಲಿಂಗಪುರಾಣಾದಿಗಳನ್ನು ನೋಡಿ.] 11. ಶುಭ, ಮಂಗಳ,  
ಕಲ್ಯಾಣ, ಕ್ಷೇಮ. "उपपन्नं ननु शिवं सप्तस्वङ्गेषु  
यस्य मे । देवीनां मानुषीणां च प्रतिहर्ता त्वमापदाम्"  
ರಘುಂ ೧-೬೦ | 12. ಸುಖ. 13. ಜಲ, ನೀರು. "सुख-  
क्षेमजले क्लीबम्" ಮೇದಿಂ | (ವಿಂ) 14. ಮಂಗಳಕರ  
ವಾದ. 15. ಸೌಖ್ಯವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ. "शिवास्ते  
पन्थानः सन्तु" | "महते फलाय तदवेक्ष्य शिवम्"  
ಕಿರಾಂ ೬-೨೮ | 16. ರಮ್ಯವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ.  
"शिवं नभोवर्त्म सरोजवायुभिः" ಕಿರಾಂ ೪-೨೯ |

ಶಿವಕ ಶಿವಕ (ಪುಂ) 1. ಹಸುಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಗೂಟ.  
2. ಹಸುಗಳು ಮೈ ಕೆರೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಕೊಟ್ಟಿಗೆಯಲ್ಲಿ  
ನೆಟ್ಟಿರುವ ಕಂಬ. 3. ಹಾಲು ಕರೆಯಲು ಹಸುಗಳನ್ನು  
ಕಟ್ಟುವ ಗೂಟ.

ಶಿವಕೀರ್ತನ ಶಿವಕೀರ್ತನ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ಶಿವ ಸುಖಕರ  
ಕೀರ್ತನ ಯಸ್ಯ | "सन्ध्यांशुभिर्भयनकर्बुरितान्तरिक्ष-  
लक्ष्मोविडम्बि शिविरं शिवकीर्तनस्य" ಮಾಘಂ ೫-೬೮ |  
2. ಪರಮೇಶ್ವರನ ಒಬ್ಬ ಅನುಚರ, ಸೇವಕ.

ಶಿವಚ್ಛರ ಶಿವಂಕರ (ವಿಂ) 1. ಕ್ಷೇಮವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.  
2. ಸೌಖ್ಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಕರೋತಿ—ಡುಕ್ಲಜ್ (ಕರಣ)  
"अव्" (೩-೧-೧೩೪) | ಶಿವಸ್ಯ ಕರಃ | "क्षेमक्षुरो-  
रिष्टतातिः शिवतातिः शिवच्छरः" ಅಮಂ |

ಶಿವತಾತಿ ಶಿವತಾತಿ (ವಿಂ) 1. ಸುಖಕರವಾದ. 2.  
ಮಂಗಳಕರವಾದ. "प्रयत्नः कृत्स्नोऽयं फलतु शिवतातिश्च  
भवतु" ಮಾಲತೀಂ ೬-೭ |

ಶಿವದಾರು ಶಿವದಾರು (ನಂ) ದೇವದಾರು ವೃಕ್ಷ.

ಶಿವದೂತ ಶಿವದೂತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 2.  
ಒಬ್ಬ ಯೋಗಿನಿ.

ಶಿವದ್ರುಮ ಶಿವದ್ರುಮ (ಪುಂ) ಬಿಲ್ಲುಪತ್ರ ಗಿಡ. ಶಿವಪ್ರಿಯ  
ದ್ರುಮಃ |

ಶಿವದ್ವಿಷಾ ಶಿವದ್ವಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೇತಕೀವೃಕ್ಷ. ತಾಳಿ  
ಮರ. ಶಿವೇನ ದ್ವಿಷಾ | ಕೇತಕೀವೃಕ್ಷವು ಈಶ್ವರನ ಪೂಜೆಗೆ  
ಅನರ್ಹವಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ಶಿವಧಾತು ಶಿವಧಾತು (ಪುಂ) ಪಾರದ, ಪಾದರಸ. ಪಾದ  
ರಸವು ಶಿವನ ವೀರ್ಯವಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ಶಿವಪುರಾಣ ಶಿವಪುರಾಣ (ನಂ) ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಪ್ರಣೀತ  
ಅಷ್ಟಾದಶ ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲೊಂದು.

ಶಿವಪುರೀ ಶಿವಪುರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಶೀಕ್ಷೇತ್ರ. ಕಾಶೀ  
ವಿಶ್ವನಾಥನ ಸಾನ್ನಿಧ್ಯವಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ಶಿವಪ್ರಿಯ ಶಿವಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) 1. ಸ್ವಟಿಕ. 2. ದತ್ತೂರಿ  
ಗಿಡ. 3. ಬಕವೃಕ್ಷ. (ನಂ) 4. ರುದ್ರಾಕ್ಷ. -ಯಾ-ಯಾ.  
5. ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ.

ಶಿವಮಲ್ಲಿ ಶಿವಮಲ್ಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಕಪುಷ್ಪ.

ಶಿವರಾತ್ರಿ ಶಿವರಾತ್ರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾಘ ಬಹುಳ ಚತುರ್ದಶಿ.

"माघमासस्य शेषे या प्रथमे फाल्गुनस्य च । कृष्णा  
चतुर्दशी सा तु शिवरात्रिः प्रकीर्तिता" | ಈ ಶಿವರಾತ್ರಿಯ  
ದಿನ ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಾ ಪೂಜೆ ನಡೆದರೂ ಆ ದಿನ ಉಪವಾಸವೇ  
ಪ್ರಧಾನವಾದುದು. "न स्नानेन न वस्त्रेण न धूपेन  
न चाचंया । तुष्यामि न तथा पुष्पैः यथा तत्रोप-  
वासतः" || ಶಿವರಾತ್ರಿಯ ಪೂಜೆಯನ್ನು ರಾತ್ರಿ ಪ್ರತಿ  
ಯಾಮ (ಜಾವ) ದಲ್ಲೂ ಆಚರಿಸಬೇಕು. "ततो रात्री  
प्रकर्तव्यं शिवप्रीणनतत्परैः । प्रहरे प्रहरे स्नानं पूजां  
चैव विशेषतः" || ಪ್ರಥಮ ಯಾಮ (ಜಾವ) ದಲ್ಲಿ  
ಕ್ಷೀರಸ್ನಾನ, ದ್ವಿತೀಯ ಯಾಮದಲ್ಲಿ ದಧಿಸ್ನಾನ. ತೃತೀಯ  
ಯಾಮದಲ್ಲಿ ಅಜ್ಞಸ್ನಾನ. ಚತುರ್ಥ ಯಾಮದಲ್ಲಿ ಮಧು  
ಸ್ನಾನ—ಈ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಪರಮೇಶ್ವರನಿಗೆ ಸ್ನಾನ ಪೂಜಾ  
ಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸಬೇಕು. "दुग्धेन प्रथमं स्नानं दध्ना चैव  
द्वितीयके । तृतीये च तथाज्येन चतुर्थे मधुना तथा" ||  
ಪ್ರತಿ ಜಾವದಲ್ಲೂ ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು ಪೂಜಿಸಿ ಅರ್ಘ್ಯ  
ಪ್ರದಾನ ಮಾಡಬೇಕು.

ಮೊದಲನೆಯ ಯಾಮದಲ್ಲಿ—ಕ್ಷೀರಸ್ನಾನಪೂರ್ವಕ  
"शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः । करोमि विधिवद्दत्तं  
गृहाणार्घ्यं महेश्वर" ||

ದ್ವಿತೀಯ ಯಾಮದಲ್ಲಿ --- ದಧಿಸ್ನಾನಪೂರ್ವಕ  
"नमः शिवाय शान्ताय सर्वपापहराय च । शिवरात्री  
ददाम्यर्घ्यं प्रसीद उमया सह" ||

ತೃತೀಯ ಯಾಮದಲ್ಲಿ — ಫೃತಸ್ನಾನಪೂರ್ವಕ  
"दुःखदारिद्र्यशोकेन दग्धोऽहं पार्वतीश्वर । शिवरात्री  
ददाम्यर्घ्यंमुमाकान्त गृहाण मे" ||

ಚತುರ್ಥ ಯಾಮದಲ್ಲಿ — ಮಧುಸ್ನಾನ ಪೂರ್ವಕ  
"मया कृतान्यनेकानि पापानि हर शङ्कर । शिवरात्री



ಈ ಸಾಶದಿಂದ ಮುಕ್ತನಾಗಲು ಸಾಧನ : ಶಿವ  
ಸ್ಮರಣೆ ಧ್ಯಾನ ಸ್ತೋತ್ರ ಪೂಜೆಗಳು ಬಹಳ ಮುಖ್ಯ  
ವಾದುವು. ಅದರ ಅಶಕ್ತಿಗೆ ಭಕ್ತಿಯೋಗವು ಸಹಕಾರಿ



ಯಾಗುವುದು. ನವವಿಧ ಭಕ್ತಿಗಳಲ್ಲಿ ಆತ್ಮಾರ್ಪಣ ಮತ್ತು ಆತ್ಮನಿವೇದನ ಇವು ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದುವು. ಮಾಡುವ ಎಲ್ಲ ಕಾರ್ಯಗಳೂ ಶಿವನ ಪ್ರೀತ್ಯರ್ಥವೇ ಮಾಡುವುದು ಮತ್ತು ಜಪತಪಾದಿಗಳನ್ನು ಶಿವಾರ್ಪಣ ಬುದ್ಧಿಯಿಂದಲೇ ಮಾಡುವುದು ಇವು ಸರ್ವಾರ್ಪಣವಾಗುವುವು. ಕರ್ಮವು ಸಕಾಮ ಮತ್ತು ನಿಷ್ಕಾಮ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ ಹೇಳಿ ನಿಷ್ಕಾಮಕರ್ಮದಿಂದಲೇ ಜ್ಞಾನಪ್ರಾಪ್ತವಾಗುವುದೆಂದು ಈ ದರ್ಶನಕಾರರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

**ಪರಮಾತ್ಮ :** ಪರಶಿವನೇ ಪರಮಾತ್ಮ. ಶಿವನು ನಿಷ್ಕಲ ಪರಾತ್ಪರ ಸೂಕ್ಷ್ಮ ನಿತ್ಯ ಅವ್ಯಯ ಸರ್ವಗತ ಕಾರಣ ಕಾರಣ ಸರ್ವಶಕ್ತ ಸಚ್ಚಿದಾನಂದಸ್ವರೂಪ. ನಿರ್ಗುಣ ನಿರುಪಾಧಿಕ ಪರಂಜ್ಯೋತಿ ಸನಾತನ ವೇದವೇದಾಂತ ಗೋಚರ. ಪರಶಿವನು ಚಿದ್ಭವಸ್ವರೂಪನು. ಶುದ್ಧವಾದ ಜ್ಞಾನಸ್ವರೂಪನು. ಶುದ್ಧಸೃಷ್ಟಿಯಲ್ಲಿ ಪರಶಿವನು ಸಾಕ್ಷಾತ್ ನಿಮಿತ್ತಕಾರಣನು. ಶಿವತತ್ತ್ವವು ಉಪಾದಾನ ಕಾರಣ.

**ನೋಕ್ಷೋಪಾಯ ಮತ್ತು ಮುಕ್ತಿ :** ಜೀವನು ಲಿಂಗಧಾರಣಾತ್ಮಕ ಶಿವದೀಕ್ಷೆಯಿಂದ ಭಕ್ತ ಮಹೇಶ ಪ್ರಸಾದಿ ಪ್ರಾಣಲಿಂಗಿ ಶರಣ ಮತ್ತು ಐಕ್ಯಗಳೆಂಬ ಪಟ್ ಸೋಪಾನಗಳ ಮೂಲಕ ಮಲತ್ರಯನಿವೃತ್ತಿಹೊಂದಿ ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನದ ಮೂಲಕ ಬ್ರಹ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವಾಗಿ ಮುಕ್ತಿ ಹೊಂದುವನು. ಈ ಪಾಶಗಳಿಂದ ಬದ್ಧನಾದರೆ ಜೀವನು. ಇವುಗಳಿಂದ ಮುಕ್ತನಾದರೆ ಸದಾಶಿವನಾಗುತ್ತಾನೆ. ಹೀಗೆ ಪಾಶಗಳಿಂದ ಮುಕ್ತನಾಗುವುದೇ ಮುಕ್ತಿ.

**ಶಿವಾರಾತಿ ಶಿನಾರಾತಿ (ಪುಂ) ಕುಕ್ಕುರ, ನಾಯಿ.**

**ಶಿವಾಲ್ಯ ಶಿನಾಲು (ಪುಂ) ಶೃಗಾಲ, ನರಿ.**

**ಶಿವಿ ಶಿವಿ (ಪುಂ) ಭುಜಪತ್ರ, ಗಿಡ.**

**ಶಿಶಿರ ಶಿಶಿರ (ಪುಂ) 1. ಶಿಶಿರ ಋತು, ಮಾಘ ಫಾಲ್ಗುಣ ಮಾಸಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ಋತು. ಶಶಂತಿ ಧಾವಂತಿ ಯಸ್ಮಿನ್ ಪಥಿಕಾ:—ಶಶ (ಪ್ಲುತಗತೌ) “ಕಿರಚ್” (ತಂ ೧-೪೩) । ನಿಪಾಂ । “ಕಂಠೇ ಸ್ಥಲಿತಂ ಗತೇಽಪಿ ಶಿಶಿರೇ ಪುಂಸ್ಕೋಕಿಲಾನಾಂ ಕೃತಮ್” ಶಾಕುಂ ೬-೪ । (ಪುಂ) 2. ಹಿಮ, ಮುಜು, ಇಬ್ಬನಿ. “ಜಾತಾಂ ಮನ್ಯೇ ಶಿಶಿರಮಥಿತಾಂ ಪಥಿನೀಂ ವಾನ್ಯರೂಪಾಂ” ಮೇಘಂ ೨-೨೦ । 3. ವಿಷ್ಣು. ಆರ್ದ್ರಶಬ್ದಶ್ರವಣಸಮನಂತರಮೇವ ಶಶತಿ ತ್ವರಯಾ ಗಚ್ಛತಿ—ಶಶ “ಕಿರಚ್” । “ಗಜೇಂದ್ರಪಾಲನಾರ್ಥ ಯ: ಶಿಶಿರ: ತ್ವರಯಾ ಗತ:” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । “ಶಬ್ದಾತಿಗ: ಶಬ್ದಸಹ: ಶಿಶಿರ: ಶಬ್ದೀಕರ:” ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ) 4. ಶೀತಲವಾಗಿರುವ,**

ತಣ್ಣಗಿರುವ. “ಶೀತಂ ಗುಣೇ ತದ್ವದರ್ಥ: ಸುಷೀಮ: ಶಿಶಿರೋ ಜಡ: । ತುಷಾರ: ಶೀತಲ: ಶೀತೋ ಹಿಮ: ಸಪ್ತಾನ್ಯಲಿಜ್ಜಕಾ:” ಅಮಂ । “ಶಮ್ಭೋ: ಶಿರೋಽಂತ:ಸರಿತಸ್ತರಜ್ಞಾನ್ ವಿಗಾಹ್ಯ ಗಾಢಂ ಶಿಶಿರಾನ್ ರಸೇನ” ಕುಮಾಂ ೧೧-೪೭ ।

**ಶಿಶಿರಕಿರಣ ಶಿಶಿರಕಿರಣ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ.**

**ಶಿಶಿರಾತ್ಯಯ ಶಿಶಿರಾತ್ಯಯ (ಪುಂ) ಶಿಶಿರಯತುವು ಕಳೆದುಹೋಗುವುದು, ವಸಂತಯತು. ಶಿಶಿರಸ್ಯ ಅತ್ಯಯ: ನಾಶ: । “ತಸ್ಯಾ: ಸಖೀಮ್ಯಾಂ ಪ್ರಣಿಪಾತಪೂರ್ವ ಸ್ವಹಸ್ತಲೂನ: ಶಿಶಿರಾತ್ಯಯಸ್ಯ । ವ್ಯಕೀರ್ಯತ ತ್ರ್ಯಮ್ಬಕಪಾದಮೂಲೇ ಪುಷ್ಪೋಚ್ಚಯ: ಪಲ್ಲವಭಜ್ಞಭಿನ್ನ:” ಕುಮಾಂ ೩-೬೧ । -ಅಪಗಮ: -ಅಪಗಮ:.**

**ಶಿಶು ಶಿಶು (ಪುಂ) 1. ಮಗು. ಕೃತಿ — ಶಿ (ತನುಕರಣೆ) “ತ:” ಧಾತೋ: ಇತ್ವಂ ದ್ವಿತ್ವಂ ಚ (ತಂ ೧-೨೦) । “ಧೈ-ಮನಿನದುದಿತಂ ಶಿಶುನಾ ಜನನಿನಿರ್ಭರಸನವಿವೃದ್ಧಮನ್ಯುನಾ” ಮಾಘಂ ೧೪-೮೭ । ಅನ್ನಪ್ರಾಶನಕ್ಕೆ ಮೊದಲಿನ ವಯಸ್ಸಿನ ವರೆವಿಗೂ ಶಿಶು. ಅನಂತರ ಬಾಲಕ. “ಪ್ರಾಕ್ ಚೂಡಾಕರಣಾ-ದ್ವಾಲ: ಪ್ರಾಗನ್ನಪ್ರಾಶನಾನ್ವಿಷ್ಟ: । ಕುಮಾರಸ್ತು ಸ ವಿಶೇಯ: ಯಾವತ್ ಮೌಞೀ ನ ಬಂಧನಮ್” । 2. ಚತುಷ್ಪಾತ್ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಮರಿ. “ಪ್ರಕೃತಿತುಂ ಸಿಹಶಿಶುಂ ಬಲಾತ್ಕಾರೇಣ ಕರ್ಷತಿ” ಶಾಕುಂ ೭-೧೪ ।**

**ಶಿಶುಕ ಶಿಶುಕ (ಪುಂ) 1. ಮಗು. 2. ಕಡಲ ಹಂದಿ. 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. 4. ನೀರುಬೆಕ್ಕು. “ಶಿಶುಕ: ಶಿಶುಮಾರೆ ಸ್ಯಾತ್ ಬಾಲಕೋಲ್ಪಿನೋರಪಿ” ಮೇದಿಂ ।**

**ಶಿಶುತಾ ಶಿಶುತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶೈಶವ, ಬಾಲ್ಯ, ಬಾಲ್ಯಾವಸ್ಥೆ. ಶಿಶೋರ್ಭಾವ: “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯) ।**

**ಶಿಶುತ್ವ ಶಿಶುತ್ವ (ನಂ) ಶೈಶವ, ಬಾಲ್ಯ, ಬಾಲ್ಯಾವಸ್ಥೆ. ಶಿಶೋರ್ಭಾವ: “ತ್ವ:” (೪-೧-೧೧೯) ।**

**ಶಿಶುಪಾಲ ಶಿಶುಪಾಲ (ಪುಂ) ಜೇದಿದೇಶದ ದೊರೆ, ವಸುದೇವನ ತಂಗಿಯಾದ ಶ್ರುತಶ್ರವೆ ಮತ್ತು ದಮಘೋಷ ಇವರ ಮಗ. ಶಿಶುನ್ ಪಾಲಯತಿ — ಪಾಲ (ರಕ್ಷಣೆ) + ಗಿಚ್ “ಅನ್” (೩-೨-೧) । “ಸಮರೇಷು ರಿಪುನ್ ವಿನಿಹಿತತಾ ಶಿಶುಪಾಲೇನ ಸಮೇತ್ಯ ಸಂಪ್ರತಿ” ಮಾಘಂ ೧೬-೧೪ । [ ಶಿಶುಪಾಲನು ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವಿನ ಅಂಶದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದನು. ಶಾಪಗ್ರಸ್ತರಾದ ಜಯ ವಿಜಯರು ಮೂರ ನೆಯ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಶಿಶುಪಾಲ ದಂತವಕ್ತೃರಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದರು. ಶಿಶುಪಾಲನು ಹುಟ್ಟಿದಾಗ ಇವನಿಗೆ ಮೂರು ಕಣ್ಣುಗಳೂ ನಾಲ್ಕು ತೋಳುಗಳೂ ಇದ್ದವು. ಈ ಭಯಂಕರ ರೂಪ ವನ್ನು ನೋಡಿದ ತಾಯಿ ತಂದೆಗಳು ಬಹಳ ಹೆದರಿದರು. ಒಬ್ಬ ಮಹಾತ್ಮನ ಶರೀರಸ್ಪರ್ಶದಿಂದ ಈ ವಿಕಾರರೂಪವು**



ಹೋಗುವುದೆಂದೂ ಅವನಿಂದಲೇ ಇವನಿಗೆ ಮೃತ್ಯುವೆಂದೂ ಆಕಾಶವಾಣಿಯಿಂದ ತಿಳಿಯಿತು. ಈತನು ಮಗುವಾಗಿದ್ದಾಗ ಎಲ್ಲರೂ ಬಂದು ಇವನನ್ನು ಮುದ್ದಾಡುತ್ತ ಹೋಗುತ್ತಿರಲು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನೂ ಬಂದು ಇವನನ್ನು ಎತ್ತಿಕೊಳ್ಳಲು ಇವನ ಮೂರನೇ ಕಣ್ಣು ಮತ್ತು ಎರಡು ತೋಳುಗಳೂ ತಾವಾಗಿಯೇ ಇಂಗಿಹೋದವು. ಆಗ ಶಿಶುಪಾಲನ ತಾಯಿಗೆ ಇದರಿಂದ ಸಂತೋಷವುಂಟಾದರೂ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನೇ ಇವನಿಗೆ ವೈರಿಯಾಗಬಹುದೆಂದು ಹೆದರಿ ಇವನು ಎಷ್ಟೇ ಅಪರಾಧ ಮಾಡಿದರೂ ಕ್ಷಮಿಸಬೇಕೆಂದು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನನ್ನು ಕೇಳಿಕೊಳ್ಳಲು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಒಂದು ನೂರು ಅಪರಾಧಗಳನ್ನು ಕ್ಷಮಿಸುವುದಾಗಿ ವಾತುಕೊಟ್ಟನು. ಧರ್ಮರಾಜನು ರಾಜಸೂಯಯಾಗ ಮಾಡಿದಾಗ ಭೀಷ್ಮನು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನಿಗೆ ಅಗ್ರಮಾರ್ಗದಾಯನನ್ನು ಮಾಡಿಸಲು ಇವನು ಭೀಷ್ಮನನ್ನೂ ಅಗ್ರಪೂಜೆಯನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನನ್ನೂ ಬಹಳ ನಂದಿಸುತ್ತಿರಲು ಸಭೆಯಲ್ಲಿದ್ದವರೆಲ್ಲರೂ ಶಿಶುಪಾಲನನ್ನು ಆಯುಧಗಳಿಂದ ಪ್ರಹರಿಸಲು ಹೋದಾಗ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಚಕ್ರಾಯುಧದಿಂದ ಶಿಶುಪಾಲನ ಶಿರಶ್ಚೇದ ಮಾಡಿದನು.

“इत्थं सभाजितं वीक्ष्य सर्वे प्राञ्जलयो जनाः । नमो जयेति नेमुस्तं निपेतुः पुष्पवृट्टयः ॥ इत्थं निशम्य दमघोषसुतः स्वपीठात् उत्थाय कृष्णगुणवर्णनजातमन्युः । उत्क्षिप्य बाहुमिदमाह सदस्यमर्षी संश्रावयन् भगवते परुषाण्यभीतः ॥ यूयं पात्रविदां श्रेष्ठा मा मन्ध्वं बालभाषितम् । सदसस्पतयः सर्वे कृष्णो यत्संमतोऽर्हणे ॥ तपोविद्याव्रतधरान् ज्ञानविध्वस्तकल्मषान् । परमर्षीन् ब्रह्मनिष्ठान् लोकपालैश्च पूजितान् ॥ सदसस्पतीनतिक्रम्य गोपालः कुलपांसनः । यथा काकः पुरोडाशं सपर्यां कथमर्हति ॥ एवमादीनभद्राणि बभाषे नष्टमङ्गलः । नोवाच किञ्चिद् भगवान् यथा सिंहः शिवारुतम् ॥ निन्दां भगवतः शृण्वन् तत्परस्य जनस्य च । ततः पाण्डुसुताः क्रुद्धाः मत्स्यकंकयसृञ्जयाः ॥ उदायुधाः समुत्तस्थुः शिशुपालजिघांसवः । तावदुत्थाय भगवान् स्वान् निवार्य स्वयं रुषा । शिरः क्षुरान्तचक्रेण जहारा-पततो रिपोः” भाग० १०-७४ ।

ಶಿಶುಮಾರ ಶಿಶುಮಾರ (ಪುಂ) ನೀರುಬೆಕ್ಕು.

ಶಿಶುಬಾಹುಕ ಶಿಶುಬಾಹುಕ (ಪುಂ) 1. ಕಾಡುಮೇಕೆ. ಶಿಶು ವಹತಿ—ವಹ (ಪ್ರಾಪಣ) “ಫುಲ್” (३-१-१३३) । (ವಿಂ) 2. ಶಿಶುವನ್ನು ಎತ್ತಿಕೊಳ್ಳುವವನು.

ಶಿಶನ ಶಿಶು (ಪುಂ) ಪುರುಷನ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ. ಶಶತಿ—ಶಶ (ಪ್ಲುತಗತೌ) “ನಕ್” ಬಾಹುಂ । ಪೃಷೋಂ ।

ಶಿಶಿವಿದಾನ ಶಿಶಿದಾನ (ವಿಂ) ಅರ್ಕಾಯ ಮೂಡುವವನು. ನೀಚಾರ್ಯ ಮೂಡುವವನು. ಶಿವಿತಾ (ವರ್ಣ) + ಸನ್ “ಆನಚ್” (३०-२-९२) । ಸನೋ ಲುಕ್ ತಸ್ಯ ದಃ । “ಶಿಶಿವಿದಾನಃ ಕೃಷ್ಣಕರ್ಮಿ” ಅಮಂ ।

ಶಿಷ್ಠ ಶಿಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಉಳಿದಿರುವ, ಕಳೆದು ಉಳಿದಿರುವ. ಶಿಷ (ಅಸರ್ವೋಪಯೋಗ) “ಕ್ವಃ” (३-४-७२) । 2. ಉಪಯೋಗಿಸಿ ಉಳಿದಿರುವ. “यज्ञशिष्टामृतमुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्” ಗೀತಾ ४-३० । 3. ತಿಳಿದವನು, ಅಭಿಜ್ಞ, ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು, ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರವಿಶಾರದ. “समो हि शिष्टैराम्नातौ वत्स्यन्तावामयः स च” ಮಾಘಂ २-१० । 4. ಸುಶಿಕ್ಷಿತ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪಳಗಿದವನು, ತರಬೇತಿ ಪಡೆದವನು. ಶಾಸ್ತು (ಅನುಶಿಷ್ಟೌ) “ಕ್ವಃ” (३-४-७२) । 5. ಶಾಂತಿಗುಣವುಳ್ಳ, ಉತ್ತಮ ಗುಣವುಳ್ಳ, ಧರ್ಮಶೀಲ, ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ. “द्वेष्ट्योऽपि संमतः शिष्टः तस्यातंस्य यथौषधम्” ರಘುಂ १-२८ । 6. ಅಜ್ಞೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟವನು. “न पाणिपादचपलः न नेत्रचपलो मुनिः । न च वागङ्गचपलः इति शिष्टस्य लक्षणम्” ಭಾಂ ।

ಶಿಷ್ಠಾಚಾರ ಶಿಷ್ಯಾಚಾರ (ಪುಂ) ಧರ್ಮಾತ್ಮರು ನಡೆಸಿದ ವ್ಯವಹಾರ, ಮಹಾತ್ಮರ ಅನುಷ್ಠಾನ, ಶ್ರೇಷ್ಠಜನರ ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ. ಶಿಷ್ಠಾನಾಮಾಚಾರಃ । “शिष्टैराचर्यते यस्मात् शिष्टाचारः स शाश्वतः” । “दानं सत्यं तपो लोभो विद्येज्या पूजनं दमः । अष्टौ तानि चरित्राणि शिष्टाचारस्य लक्षणम्” ॥

ಶಿಷ್ಠಿ ಶಿಷ್ಯಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಜ್ಞೆ, ಅಪ್ಪಣೆ. ಶಾಸ್ತು (ಅನು-ಶಿಷ್ಟೌ) “ಕ್ವಿನ್” (३-३-९४) । “अन्यत्र पुत्रात् शिष्याद्वा शिष्टचर्यं तादृयेत्तु तौ” ಮನುಂ ४-१६४ । 2. ಶಿಕ್ಷೆ, ದಂಡನೆ.

ಶಿಷ್ಯ ಶಿಷ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಕಲಿಯುವವನು, ಶಿಕ್ಷಣ ಪಡೆಯುವವನು. ಶಾಸ್ತು (ಅನುಶಿಷ್ಟೌ) “ಕ್ಯಪ್” (३-१-१०९) । “शिष्याः कलाविधिषु भीममुचो वयस्याः” ನೆಪಂ २१-१२४ । 2. ಉಪದೇಶ ಹೊಂದಲು ಯೋಗ್ಯನಾದವನು. “यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शशि मां त्वां प्रपन्नम्” ಗೀತಾ २-७ ।

ಶಿಶಿ ಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶಯನ, ಮಲಗುವುದು, ನಿದ್ರಿಸುವುದು. ಶಿಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೆ) “ವಿವಪ್” (३-२-१७८) । “शीश्च शयनमित्याहुः” ಮೇದಿಂ । 2. ನೆಮ್ಮದಿ, ಶಾಂತತೆ.



ಶಿರಕರ ಶೀತಕಂ (ಪುಂ) 1. ನೀರಿನ ತುಂತುರು. ಶಿಕ್ತ (ಸೇವನೆ) "ಅರ್ನ್" (ತಂ ೩-೧೩೧)। "ದಲಿತಮೌಢಿಕ-ವೃಣವಿಪಾಣವೇ: ಸ್ಫುರಿದನಿಶ್ಚರಶಿರಕರಾರವ:" ಮಾಘಂ ೬-೩೫। 2. ವಾತ, ವಾಯು, ಗಾಳಿ. (ನಂ) 3. ಸಂಕಲ್ಪವೃಕ್ಷದ ರಸ. "ಶಿರಕಂ ಸರಲೇ ವಾತಸೃತಾಮ್ಬುಕಣಯೋ: ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ।

ಶಿರಕರಿನ್ ಶೀತಕಂ (ವಿಂ) ಜಲಕಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ, ನೀರಿನ ತುಂತುರುಗಳಿಂದ ತುಂಬಿದ. ಶಿರಕ "ಛಿನಿ:" (೫-೨-೧೧೫)। "ಸೇಕ: ಶಿರಕರಿಣಾ ಕರಣ ವಿಹಿತ: ಕಾಮಂ ವಿರಾಮೇ ಪುನ:" ಮಾಲತೀಂ ೯-೩೪।

ಶಿರಕ ಶೀತಕಂ (ನಂ) 1. ಲಾಘಂಚ. 2. ಹಂಸ. ಶಿವಿ (ಆಧ್ರಾಣ) "ರಕ್" ಬಾಹುಂ। (ವಿಂ) 3. ವೇಗವಾದ, ವೇಗವಾದ ಗಮನವುಳ್ಳ. "ಶಿರಕಂ ನಲದೇ ಚಕ್ರಾಙ್ಗೇ ಕಲಿಬಂ ದ್ರುತಗತೌ ತ್ರಿಪು" ಮೇದಿಂ। "ಅಸೌ ಮುಖಾಲಂಬಿತಹೇಮಸೂತ್ರಂ ವಿಭ್ರನ್ಮಣಿಂ ಮಂಡಲಶಿರಕಾರ:" ವಿಕ್ರಂ ೫-೨। (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 4. ಶೀಘ್ರವಾಗಿ, ವೇಗವಾಗಿ, ಜಾಗೃತಿಯಾಗಿ.

ಶಿರಕಾರಿನ್ ಶೀತಕಂ (ವಿಂ) ಬೇಗ ಕೆಲಸ ಮಾಡು ವವನು. ಶಿರಕಂ ಕರೋತಿ — ಕೃತ್ವ (ಕರಣ) "ಞಿನಿ:" (೩-೨-೭೮)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಡಿಪ್" (೪-೧-೫)। —ಕಾರಿಣಿ —ಕಾರಿಣೀ.

ಶಿರಕಗ ಶೀತಕಂ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. (ವಿಂ) 2. ಬೇಗ ನಡೆಯುವ, ವೇಗವಾಗಿ ಹೋಗುವ. ಶಿರಕಂ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಛಿನಿ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)।

ಶಿರಕಗಾಮಿನ್ ಶೀತಕಂ (ವಿಂ) ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆ ಯುವ, ಬೇಗ ಹೋಗುವ. ಶಿರಕಂ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಞಿನಿ:" (೩-೨-೭೮)।

ಶಿರಕಚೇತನ ಶೀತಕಂ (ಪುಂ) ನಾಯಿ. ಶಿರಕಂ ಚೇತಯತಿ —ಚಿತಿ (ಸಂಜಾನಿ) + ಞಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)।

ಶಿರ ಶೀತಕಂ (ಪುಂ) 1. ಚಳಿಮರ. 2. ಹಬ್ಬಿಗಿಡ, ವೇತಸ ವೃಕ್ಷ. ಶಿರತಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ—"ಅಚ್" (೫-೨-೧೨೭)। ಕ್ಷಯತೇ ಸ್ಮ—ಕೃತ್ವ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) ಇತಿ ವಾ। ದೀರ್ಘ: (೬-೪-೨)। (ನಂ) 3. ಶೈತ್ಯ, ಕಂಠಿರು. "ಶಿರತಾತಿ ಬಲವದುಪೇಯುಷೇವ ನೀರೇರಾಸೇಕಾಚ್ಛಿಸರಸಮೀರಕಮ್ಪಿತೇನ" ಮಾಘಂ ೮-೬೨। 4. ಜಲ, ನೀರು. 5. ಹಿಮ, ಮಂಜು, ಇಬ್ಬನಿ. 6. ಒಂದು ಔಷಧ. (ವಿಂ) 7. ಶೀತಲವಾದ, ತಣ್ಣಗಿರುವ, "ತವ ಕುಸುಮಶರತ್ವಂ ಶಿರತರಹಿತವಮಿಂದೋ:" ಶಾಕುಂ ೩-೩। 8. ಅಲ್ಪ, ಚಟುವಟಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು. "ಶಿರತಂ ಹಿಮಗುಣೇ ಕಲಿಬಂ ಶಿರತಾಲಸಯೋಸ್ತ್ರಿಪು" ಮೇದಿಂ। "ತುಷಾರ: ಶಿರತಲ: ಶಿರತ:" ಅಮಂ।

ಶಿರಕ ಶೀತಕಂ (ಪುಂ) 1. ಶೀತಕಾಲ, ಚಳಿಗಾಲ. ಶಿರತ ಸ್ವಾಯೆ "ಕನ್"। 2. ಯಾವ ಆತಂಕವೂ ಇಲ್ಲದೆ ನೆಮ್ಮದಿ ಯಿಂದಿರುವವನು, ಸಂತೋಷದಿಂದಿರುವವನು. 3. ಮಂದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು, ಚಟುವಟಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು. "ಶಿರತಕ: ಶಿರತಕಾಲೇ ಚ ಸುಸ್ಥಿತೇ ದೀರ್ಘಸೂತ್ರಿಣಿ" ಮೇದಿಂ।

ಶಿರಕರ ಶೀತಕಂ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. 2. ಕರ್ಪೂರ.

ಶಿರಗು ಶೀತಕಂ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಶಿರತಾ ಗೌ: ಯಸ್ಯ। 2. ಕರ್ಪೂರ.

ಶಿರತಚ್ಛಪಕ ಶೀತಕಂ (ಪುಂ) 1. ದರ್ಪಣ, ಕನ್ನಡಿ. 2. ದೀಪ.

ಶಿರತದೀಪಿತಿ ಶೀತದೀಪಿತಿ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಶಿರತಾ ದೀಪಿತಯೋಸ್ಯ।

ಶಿರತಪುಷ್ಪ ಶೀತಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) ಶೀತವೃಕ್ಷ, ಬಾಗೆಮರ.

ಶಿರತಪುಷ್ಪಕ ಶೀತಪುಷ್ಪಕ (ಪುಂ) ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. ಶಿರತಂ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ।

ಶಿರತಭಾನ್ ಶೀತಭಾನ್ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಶಿರತಾ ಭಾನವೋಸ್ಯ।

ಶಿರತಮಯ ಶೀತಮಯೂಖ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಶಿರತಾ ಮಯೂಖಾ ಅಸ್ಯ। 2. ಕರ್ಪೂರ. "ಶಿರತಮಯೂಖಾನ್ದೇ ಧನಸಾರೆ ವಾಪಿ ಪುಲಿಂಗ್ಲ:" ಮೇದಿಂ।

ಶಿರತಮರೀಚಿ ಶೀತಮರೀಚಿ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಶಿರತಾ ಮರೀಚಿರಸ್ಯ। 2. ಕರ್ಪೂರ.

ಶಿರತರಶ್ಮಿ ಶೀತರಶ್ಮಿ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. 2. ಕರ್ಪೂರ. ಶಿರತೋ ರಶ್ಮಿರಸ್ಯ।

ಶಿರತಲ ಶೀತಲ (ಪುಂ) 1. ಸಿಡಿಲೆಲ್ಲದ ಗಿಡ. 2. ಚಂದ್ರ. 3. ಚಂಪಕ ವೃಕ್ಷ, ಸಂಪಿಗೆ ಮರ. 4. ಕರ್ಪೂರ. 5. ಸರ್ಪವೃಕ್ಷದ ರಸ. 6. ಶಿಶಿರಯುತ. 7. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. "ಶಿರತಲ: ಶಿಶಿರೇಽನಿಲೇ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। (ನಂ) 8. ಗಂಧಕಾಮ್ಲ. 9. ಶೈಲಜ, ಜಲಜನಕಾಂಗಾಲ ಮಿಶ್ರಣ. 10. ಚಂದನ, ಶ್ರೀಗಂಧ. 11. ಶೈತ್ಯ, ಕಂಠಿರು. 12. ಲಾಘಂಚದ ಬೇರು. (ವಿಂ) 13. ತಣ್ಣಗಿರುವ, ತಂಪಾಗಿರುವ. "ಯಾ ಧರ್ಮಭಾನೋಸ್ತನಯಾಪಿ ಶಿರತಲೈ: ಸ್ವಸಾ ಯಮಸ್ಯಾಪಿ ಜನಸ್ಯ ಜೀವನೈ:" ಮಾಘಂ ೧೮-೬೭। "ಶಿರತಲೇನ ನಿರವಾಪಯತ್ಕ್ಷಣಂ ಮೌಲಿವಂದ್ರಶಕಲೇನ ಶೂಲಿನ:" ಕುಮಾಂ ೮-೧೮। "ಶಿರತಲಂ ಪುಷ್ಪಕಾಸೀಸೇ ಶಿಲಜೇ ಮಲಯೋದ್ಭವೇ। ಪುಮಾನಸಪರ್ಣಿ ಸ್ಯಾತ್ ಶಿಶಿರೇ ವಾಚ್ಯಲಿಂಗ-ಕಮ್" ಮೇದಿಂ।

ಶಿರತಲಕ ಶೀತಲಕ (ನಂ) ಪೆದ್ದು, ಬಿಳಿದಾವರೆ.



ಶೀತಲಾ ಶೀತಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಿಡುಬು. 2. ಸಿಡುಬಿನ ದೇವತೆ.

ಶೀತಶಿವ ಶೀತಶಿವ (ನಂ) 1. ಕಲ್ಲುಹೂ, ಕಲ್ಲುಪ್ಪು. 2. ಸೈಂಧವಲವಣ. (ಪುಂ) 3. ಶಮೀವೃಕ್ಷ, ಬನ್ನಿಮರ. 4. ಸಬ್ಬಸಿಗೆ. "ಅಥ. ಶೀತಶಿವಂ ಕಲೆವಂ ಶೀಲೇಯಮಣಿ-ಮನ್ಯಯೋಃ। ಪುಸಿ ಶಕತುಫಲಾವೃಕ್ಷೇ ತಥಾ ಮಧುರಿಕೌಷಧೌ" ಮೇದಿಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಶಿವಾ -ಶಿವಾ. 1. ಸಬ್ಬಸಿಗೆ, 2. ಬನ್ನಿಮರ.

ಶೀತಾಂಶು ಶೀತಾಂಶು (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಶೀತಾ ಅಂಶವೋ ಯಸ್ಯ। "ಶೀತಾಂಶುರ್ಮುಖಮುತ್ಪಲೇ ತವ ದೃಶೌ ಪದ್ಮಾನುಕಾರಿ ಕರೌ" ರತ್ನಾಂ ೩-೧೧. 2. ಕರ್ಪೂರ.

ಶೀತಾಂಶುತೈಲ ಶೀತಾಂಶುತೈಲ (ನಂ) ಕರ್ಪೂರತೈಲ. ಶೀತಾಂಶೋಃ ಕರ್ಪೂರಸ್ಯ ತೈಲಮ್.

ಶೀತಾದ ಶೀತಾದ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ದಂತರೋಗ. ಶೀತಮಾದತೇ-ಆ+ಡುಡಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩). "ತೈಲಂ ಭೂತಂ ವಾ ವಾತಧ್ವನಿಂ ಶೀತಾದೇ ಸಂಪ್ರಶಸ್ಯತೇ" ಭಾವಪ್ರಂ.

ಶೀತಾದ್ರಿ ಶೀತಾದ್ರಿ (ಪುಂ) ಹಿಮವತ್ಪರ್ವತ.

ಶೀತಾಶಮನ್ ಶೀತಾಶಮನ್ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರಕಾಂತಶಿಲೆ.

ಶೀತಾಲು ಶೀತಾಲು (ವಿಂ) ಶೀತವನ್ನು ಸಹಿಸದವನು, ಚಳಿಗೆ ಹೆದರುವವನು, ಚಳಿಯನ್ನು ತಡೆಯಲಾರದವನು. ಶೀತ "ಆಲುಕ್" (ವಾಂ ೪-೨-೧೨೨). "ಛುತ್ವಾನಾ ಕರಯುಗಮೀಕ್ಷಿತುಂ ವಿಲಾಸಾನ್ ಶೀತಾಲುಃ ಸಲಿಲಗತೇನ ಸಿಂಹ-ತೇ ಸ್ಮ" ಮಾಘಂ ೮-೧೯.

ಶೀಘ್ರ ಶೀಘ್ರ (ಪುಂ) ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. ಶೀಘ್ರೇನೇನ-ಶೀಘ್ರ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಘುಕ್" (ಉಂ ೪-೩೮). "ಪೀತಶೀಘ್ರಮಧುರ-ಮಿಥುನಾನಾಮಾನನಃ ಪರಿಹೃತಂ ಚಪಕಾಂತಃ" ಮಾಘಂ ೧೦-೧೧.

ಶೀಘ್ರಪ ಶೀಘ್ರಪ (ವಿಂ) ಮದ್ಯಪಾನ ಮಾಡುವವನು, ಹೆಂಡಕುಡುಕ. ಶೀಘ್ರಂ ಪಿಬತಿ - ಪಾ (ಪಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩).

ಶೀನ ಶೀನ (ಪುಂ) 1. ಮೂರ್ಖ, ದಡ್ಡ, ಮಂದಬುದ್ಧಿ ಯುಳ್ಳವನು. ಶೈನ್ಯ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೨೨). ನಿಷ್ಠಾತಸ್ಯ "ನಃ" (೮-೨-೪೭). ಸಂಪ್ರಸಾರಣಮ್ (೬-೧-೨೪). 2. ಅಜಗರ, ಹೆಬ್ಬಾವು. (ವಿಂ) 3. ಫನೀಭೂತವಾದ, ಗಟ್ಟಿಯಾದ ತುಪ್ಪು ಮೊದಲಾದುದು. "ಶೀನೋ ಮೂರ್ಖ-ಜಗರಯೋಃ" ಹೇಮಂ.

ಶೀರ್ಣ ಶೀರ್ಣ (ವಿಂ) 1. ಕೃಶವಾದ, ತೆಳ್ಳಗಿರುವ. ಶ್ರು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೨೨). 2. ನಾಶವಾದ, ಜೀರ್ಣವಾದ, ಹಾಳಾದ, ಕ್ಷಯಿಸಿದ. "ಶೀರ್ಣಂ ತನು-

ವಿಶೀರ್ಣಯೋಃ" ಮೇದಿಂ. "ಕ್ರಮಶೀರ್ಣಕುಲಮೂಲಸಂತತಿಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೪೦. (ನಂ) 3. ಮಾಚಿಪತ್ರೆ.

ಶೀರ್ಣಪತ್ರ ಶೀರ್ಣಪತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಬೆಟ್ಟಕಣಿಗಿಲೆ ಗಡ. (ನಂ) 2. ಒಣಗಿದ ಎಲೆ, ಬಾಡಿದ ಎಲೆ.

ಶೀರ್ಣಪಾದ ಶೀರ್ಣಪಾದ (ಪುಂ) 1. ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. 2. ಶನಿಮಹಾರಾಜ. (ವಿಂ) 3. ಕೃಶವಾದ ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳವನು.

ಶೀರ್ವಿ ಶೀರ್ವಿ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂಸಿಸುವವನು, ಪೀಡಿಸುವವನು. ಶ್ರು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕ್ವಿನ್" (ಉಂ ೪-೪೪). 2. ಅನಾಗರಕ, ಕಾಡುಮನುಷ್ಯ, ಬುದ್ಧಿಗೆ ಸಂಸ್ಕಾರವಿಲ್ಲದವನು.

ಶೀರ್ಷ ಶೀರ್ಷ (ನಂ) 1. ಮಸ್ತಕ, ತಲೆ. ಶಿರಸ್ ಶೀರ್ಷದಿಶಃ ನಿಪಾಂ (೩-೨-೪೧). 2. ಕೃಷ್ಣಾಗುರು.

ಶೀರ್ಷಕ ಶೀರ್ಷಕ (ಪುಂ) 1. ರಾಹು. (ನಂ) 2. ತಲೆ. 3. ಟೋಪಿ, ತಲೆಕಾಪು. 4. ತಲೆಬುರುಡ.

ಶೀರ್ಷಾತಿನ್ ಶೀರ್ಷಾತಿನ್ (ವಿಂ) ತಲೆಯನ್ನು ಕಡಿಯುವವನು. ಶೀರ್ಷಂ ಹಂತಿ - ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) "ಘಿನಿಃ" (೩-೨-೪೧). "ಶೀರ್ಷಾತಿನ್ಮಾಯಾತಮರೀಣಾಂ ತ್ವಾಂ ವಿಲೋಕ-ಯನ್" ಭट्टಿಂ ೬-೧೧೨.

ಶೀರ್ಷಚ್ಛೇದ ಶೀರ್ಷಚ್ಛೇದ (ಪುಂ) ತಲೆಯನ್ನು ಕಡಿಯುವುದು, ತಲೆಯನ್ನು ಕತ್ತರಿಸುವುದು.

ಶೀರ್ಷಚ್ಛೇದಿಕ ಶೀರ್ಷಚ್ಛೇದಿಕ (ವಿಂ) ತಲೆಯನ್ನು ಕಡಿಯಲು ಅರ್ಹನಾದವನು, ಕೊಲ್ಲಲು ಯೋಗ್ಯನಾದವನು. ಶೀರ್ಷಚ್ಛೇದಂ ನಿಯಮಹಂತಿ - "ಠಕ್" (೪-೧-೬೪).

ಶೀರ್ಷಚ್ಛೇದ್ಯ ಶೀರ್ಷಚ್ಛೇದ್ಯ (ವಿಂ) ತಲೆಯನ್ನು ಕಡಿಯಲು ಅರ್ಹನಾದವನು. ಶೀರ್ಷಚ್ಛೇದಂ ನಿಯಮಹಂತಿ - "ಯತ್" (೪-೧-೬೪). "ಶೀರ್ಷಚ್ಛೇದಮತೋಽಹಂ ತ್ವಾಂ ಕರಾಮಿ ಕ್ಷಿತಿ-ವಧಂತಮ್" ಭट्टಿಂ ೪-೪೪. "ಶಾಂಬುಕೋ ನಾಮ ಬೃಷಲಃ ಪೃಥಿವ್ಯಾಂ ತಪ್ಯತೇ ತಪಃ। ಶೀರ್ಷಚ್ಛೇದಃ ಸ ತೇ ರಾಮ ತಂ ಹತ್ವಾ ಜೀವಯ ದ್ವಿಜಮ್" ಉಂ ರಾಂ ೨-೮.

ಶೀರ್ಷಣ್ಯ ಶೀರ್ಷಣ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಸೇರದಂತೆ ಬಿಡಿಸಿದ ತಲೆಯ ಕೂದಲು. ಶಿರಸಿ ಭವಮ್ "ಯತ್" (೪-೩-೪೪). ವಾ ಶಿರಸಃ ಶೀರ್ಷಣ್ಯಾದಿಶಃ (೬-೧-೬೧). ಪಕ್ಷೇ ಶಿರಸಃ. (ನಂ) 2. ಶಿರಸ್ಸು, ತಲೆ. 3. ತಲೆಕಾಪು, ಟೋಪಿ. "ಶೀರ್ಷಣ್ಯಂ ತು ಶೀರ್ಷಿಕೆ. ಸುಕೇಶೋ ಪುಸಿ" ಮೇದಿಂ. "ಶೀರ್ಷಣ್ಯಂ ಶೀರ್ಷರಕ್ಷಣಂ. ಶೀರ್ಷಣ್ಯೋ ವಿಶದಕವೇ" ಹೇಮಂ. (ವಿಂ) 4. ತಲೆಯಲ್ಲಿರುವ. ಶಿರಸಿ ಭವಮ್ "ಯತ್" (೪-೩-೪೪). 5. ತಲೆಗೆ ಹಿತವಾದ. ಶಿರಸೇ ಹಿತಮ್ ಉಭಯತ್ರ "ಶೀರ್ಷಣ್ಯಾದಿಶಃ" (೬-೧-೬೧). 6. ಶ್ರೇಷ್ಠ.



ಉತ್ತಮ. “ಯದ್ವಚ್ಛಿರ್ಮಾಚರತಃ ತದನುವರ್ತತೇ ಲೋಕಃ”  
ಭಾಗಂ ೪-೪-೧೫.

ಶಿರೋಧಯ ಶೀರ್ಷೋದಯ (ಪುಂ) ಶೀರ್ಷೋದಯವುಳ್ಳ  
ಲಗ್ನಗಳು. ಕೆಲವು ಲಗ್ನಗಳು ಪೃಷ್ಠೋದಯವುಳ್ಳವು.  
ಕೆಲವು ಶೀರ್ಷೋದಯಲಗ್ನಗಳು. ಮಿಥುನ ಸಿಂಹ  
ಕನ್ಯಾ ತುಲಾ ವೃಶ್ಚಿಕ ಕುಂಭ ಮತ್ತು ಮೀನ ಲಗ್ನಗಳು  
ಶೀರ್ಷೋದಯಲಗ್ನಗಳು. ಇವು ನಿಶಾಸಂಜ್ಞೆ ಹೊಂದಿರು  
ವುವು. ಮೇಷ ವೃಷಭ ಮಿಥುನ ಕರ್ಕಾಟಕ ಧನುಸ್ಸು  
ಮಕರ ಇವು ಪೃಷ್ಠೋದಯ ಲಗ್ನಗಳು. ಮಿಥುನ ಲಗ್ನವು  
ಉಭಯಾತ್ಮಕವಾದುದು. ಉಳಿದ ಆರು ಲಗ್ನಗಳು  
ದಿನಸಂಜ್ಞೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವುವು. “ಅಜಗೋಪತಿಯುಗಂ ಚ  
ಕರ್ಕಿವನ್ವಿಮುಗಾಸ್ತಥಾ | ನಿಶಾಸಂಜ್ಞಾ: ಸ್ಮೃತಾಃ ಕೇತೇ ಶೇಷಾಶ್ಚಾನ್ಯ  
ದಿನಾತ್ಮಕಾ: || ನಿಶಾಸಂಜ್ಞಾ ವಿಮಿಶುನಾ: ಸ್ಮೃತಾ: ಪುಣಿ-  
ದಯಾಸ್ತಥಾ | ಶೇಷಾ: ಶಿರೋಧಯಾಹೋತೇ ಮೀನಶ್ಚೋಮಯಸಂಜ್ಞಕ:”  
ಜ್ಯೋತಿಷ್ತತ್ವಮ್.

ಶೀಲ ಶೀಲ (ನಂ) 1. ಸ್ವಭಾವ, ಸತ್ತ್ವ, ನೀತಿಬಲ. ಶೀಲ  
(ಸಮಾಧಿ) “ಘ್ನ” (೩-೩-೧೮). 2. ಸದ್ವೃತ್ತಿ, ಒಳ್ಳೆಯ  
ನಡತೆ. “ತಥಾಹಿ ತೇ ಶೀಲಮುದಾರದರ್ಶನೇ ತಪಸ್ವಿನಾಮಪ್ಯುಪ-  
ದೇಶತಾಂ ಗತಮ್” ಕುಮಾಂ ೪-೩೬. 3. ರಾಗದ್ವೇಷಗಳನ್ನು  
ಪರಿತ್ಯಜಿಸುವುದು. ಇದು ಬ್ರಹ್ಮಾಣ್ಯತಾ (ವೇದಾಧ್ಯಯನ  
ಸಂಪತ್ತಿ) ದೇವಪಿತೃಭಕ್ತತಾ (ದೇವರು, ತಾಯಿ ತಂದೆಗಳು  
ಇವರಲ್ಲಿ ಭಕ್ತಿಯಿಟ್ಟಿರುವುದು) ಸೌಮ್ಯತಾ (ಶಾಂತತೆ)  
ಅಪರೋಪತಾಪಿತಾ (ಇತರರ ಮನಸ್ಸನ್ನು ನೋಯಿಸದಿರು  
ವುದು) ಅನಸೂಯತಾ (ಅಸೂಯೆ ಪಡೆದಿರುವುದು) ಮೃತುತಾ  
(ಮೃದುಸ್ವಭಾವ) ಅಪಾರುಢ್ಯಮ್ (ಕಠಿನವಾಗಿ ಮಾತನಾಡ  
ದಿರುವಿಕೆ) ಮೆಚ್ಚತಾ (ಸ್ನೇಹಪರನಾಗಿರುವಿಕೆ) ಪ್ರಿಯವಾದಿತ್ವಮ್  
(ಹಿತವಾಗಿ ಮತ್ತು ಸಂತೋಷಕರವಾಗಿ ಮಾತನಾಡು  
ವುದು) ಕೃತಜ್ಞತಾ (ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಂದ ಪಡೆದ ಉಪಕಾರ  
ವನ್ನು ನೆನೆಯುವುದು) ಕಾರುಣ್ಯತಾ (ರಕ್ಷಣೆ ಕೋರಿ ಬಂದವ  
ನನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವುದು) ಕಾರುಣ್ಯಮ್ (ದಯೆ, ಕನಿಕರ) ಪ್ರಶಾಂತಿ:  
(ಸಹನೆ, ತಾಳ್ಮೆ) ಎಂದು ಹದಿಮೂರು ವಿಧ. (ಪುಂ)  
4. ಅಜಗರ, ಹೆಬ್ಬಾವು.

ಶೀಲನ ಶೀಲನ (ನಂ) 1. ವಿಮರ್ಶಿಸಿ ನೋಡುವುದು,  
ವಿಚಾರಮಾಡಿ ನೋಡುವುದು. ಶೀಲ (ಸಮಾಧಿ) “ಲ್ಯುಡ್”  
(೩-೩-೧೫). 2. ಅಭ್ಯಾಸ, ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಮಾಡು  
ವುದು, ಪುನಃ ಪುನಃ ರೂಢಿಸುವುದು. 3. ಗೌರವಿಸು  
ವುದು, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ನೋಡುವುದು. 4. ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ,  
ಮೇಲ್ಮೆ.

ಶೀಲಯಸ್ ಶೀಲಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಸತ್ತ್ವಭಾವದಿಂದ ಕೂಡಿದ.  
ಶೀಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ — “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪). “ಪಥ್ಯಾಶಿನಾಂ  
ಶೀಲವತಾಂ ನರಾಣಾಂ ಸದ್ವೃತ್ತಿಭಾಜಾಂ ವಿಜಿತೇಂದ್ರಿಯಾಗಾಮ್”  
2. ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆಯುಳ್ಳವನು.

ಶೀಲಿತ ಶೀಲಿತ (ನಂ) 1. ಅಚರಣೆ. ಶೀಲ (ಸಮಾಧಿ)  
ಭಾವೆ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೫). (ವಿಂ) 2. ಅಭ್ಯಾಸ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಅಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಶೀಲ ಕರ್ಮಂ  
“ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨).

ಶೀವಲ ಶೀವಲ (ನಂ) 1. ಶೈವಾಲ, ಪಾಚಿ. ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನ)  
“ವಲಃ” ಬಾಹುಂ. 2. ಕಲ್ಲುಹೂವು. “ಶೀವಲಂ ಸ್ಯಾತ್ವ  
ಶೇವಾಲೇ ಶೇಲೇ ಚ ನಪುಂಸಕಮ್” ಮೇದಿಂ.

ಶೀವಾ ಶೀವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಜಗರ, ಹೆಬ್ಬಾವು. ಶೇತೆ—ಶೀಡ್  
(ಸ್ವಪ್ನ) “ಕವನಿಪ್” (೩ಂ ೪-೧೫೫).

ಶುಚ್ ಶುಚ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶೋಕ, ದುಃಖ. ಶುಚ (ಶೋಕ)  
“ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೬೧).

ಶುಕ ಶುಕ (ಪುಂ) 1. ಗಿಣಿ. ಶುಭ (ಭಾಷಣ) “ಕಕ್”  
ಭಕಾರಲೋಪಶ್ಚ ನಿಪಾಂ (೩ಂ ೩-೪೨). “ಸ ಕ್ರಿಹಿಣಾಂ  
ಯಾವದಪಾಸಿತುಂ ಗತಾಃ ಶುಕಾನ್ ಮೃಗೇಸ್ತಾವದುಪಹೃತಶ್ರಿಯಮ್”  
ಮಾಘಂ ೧೨-೪೨. 2. ಶುಕಮಹರ್ಷಿ, ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯ  
ಪುತ್ರ. ಶುಕೀರೂಪವನ್ನು ತಾಳಿ ಬಂದ ಭೈರವಾಚಾರ್ಯಂಬ  
ಅಪ್ಸರಸಿಯನ್ನು ನೋಡಿದ ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯ ಮನಸ್ಸು  
ಅವಳಲ್ಲಿ ಮೋಹಗೊಂಡಿತು. ಮನಸ್ಸನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸಿ  
ಲಾರದ ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯ ಶುಕ್ರವು ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದು  
ಅದರಿಂದ ಶುಕಮಹರ್ಷಿಯು ಜನಿಸಿದರು. “ನ ಶಶಾಕ  
ನಿಯಂತುಂ ಚ ಸ ವ್ಯಾಸಃ ಪ್ರಸೃತಂ ಮನಃ | ಬಹುಶೋ ಗೃಹ್ಯಮಾಣಶ್ಚ  
ಭೃತಾಶ್ಚಾ ಮೋಹಿತಂ ಮನಃ || ಮನ್ಯನಂ ಕುರ್ವತಸ್ತಸ್ಯ ಮುನೇರಗ್ನಿ-  
ಚಿಕಿರ್ದಯಾ | ಅರಣ್ಯಾಮೇವ ಸಹಸಾ ತಸ್ಯ ಶುಕ್ರಮಥಾಪತತ್ ||  
ತಸ್ಮಾಚ್ಚುಕಃ ಸಮುದ್ಭೂತಃ ವ್ಯಾಸಾಕೃತಿಮನೋಹರಃ” | ಶುಕ  
ಮಹರ್ಷಿಯು ವ್ಯಾಸರಿಂದ ಶ್ರೀಮದ್ಭಾಗವತದ ಉಪದೇಶ  
ಹೊಂದಿ ಪರೀಕ್ಷಿತ್ತಿಗೆ ಹೇಳಿದರು. “ಇದಂ ಭಾಗವತಂ ನಾಮ  
ಪುರಾಣಂ ವೇದಸಮ್ಮಿತಮ್ | ಅಧೀತವಾನ್ ದ್ವಾಪರೇಽಸ್ಮಿನ್ ಪಿತುರ್ದೇವಾಯ-  
ನಾದಹಮ್” ಭಾಗಂ ೨-೧-೮. 3. ರಾವಣನ ಒಬ್ಬ ಮಂತ್ರಿ.  
4. ಬಾಗೆಮರ. (ನಂ) 5. ಮಾಚಿಪತ್ತಿ. “ಗ್ರನ್ಥಿಪರ್ಣ  
ಶುಕಂ ಬಹಿಃಪುಷ್ಪಂ ಸ್ಥೋಣೇಯಕುಕ್ಕುರೇ” ಅಮಂ. “ಶುಕೋ ವ್ಯಾಸಸುತೇ  
ಕೀರೇ ರಾವಣಸ್ಯ ಚ ಮನ್ತ್ರಿಣಿ | ಶಿರೀಷಪಾದವೇ ಪುಂಸಿ ಗ್ರನ್ಥಿಪರ್ಣೇ  
ನಪುಂಸಕಮ್” ಮೇದಿಂ.

ಶುಕತಃ ಶುಕತರು (ಪುಂ) ಶೀಲವುಳ್ಳ, ಬಾಗೆಮರ. ಶುಕ  
ಇವ ತರು: | -ಶುಕ: -ದ್ರುಮಾ.



ಶುಕನಾಸ ಶುಕನಾಸ (ಪುಂ) 1. ಹೆಮ್ಮರ. ತಿರುಮರ.  
(ವಿಂ) 2. ಗಿಳಿಯಂತೆ ಮೂಗುಳ್ಳವನು.

ಶುಕಪುಷ್ಪ ಶುಕಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಬಾಗೆಮರ. (ನಂ) 2.  
ಮಾಚಿಪತ್ರೆ. ಶುಕಪ್ರಿಯಂ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ |

ಶುಕಪ್ರಿಯ ಶುಕಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) ಬಾಗೆಮರ, ಶಿರೀಷ ವೃಕ್ಷ.  
ಶುಕಪ್ರಿಯಂ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ |

ಶುಕವಲ್ಲಭ ಶುಕವಲ್ಲಭ (ಪುಂ) 1. ದಾಳಿಂಬೆ ಗಿಡ.  
(ವಿಂ) 2. ಗಿಣಿಗೆ ಪ್ರಿಯವಾದ.

ಶುಕಾದನ ಶುಕಾದನ (ಪುಂ) 1. ದಾಳಿಂಬೆ ಗಿಡ. ಶುಕೇರಥತೆ  
— ಅದ (ಮಕ್ಷಣ) "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-113) | (ವಿಂ)  
2. ಶುಕಗಳಿಂದ ತಿನ್ನಲ್ಪಡುವ. ಶುಕೇರಥತೆ — ಅದ ಕರ್ಮಂ  
"ಲ್ಯುಡ್" (3-3-113) |

ಶುಕಿ ಶುಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಗಿಳಿ. ಶುಕ "ಕೀಫ್"  
(4-1-41) | 2. ಕಶ್ಯಪಬ್ರಹ್ಮನ ಪತ್ನಿಯಾದ ತಾಮ್ರೆಯ  
ಮಗಳು. "ಕಾಕೀಂ ಶ್ಯೇನೀಂ ತಥಾ ಭಾಸೀಂ ವೃತರಾಡ್ವೀಂ ತಥಾ  
ಶುಕೀಮ್ | ತಾಮ್ರಾ ತು ಸುಷುಪ್ತೇ ದೇವಾಃ ಪೃಚ್ಛಂತಾ ಲೋಕವಿಶ್ರುತಾಃ"  
ಭಾಂ ಆದಿಂ 69-76 |

ಶುಕ್ತ ಶುಕ್ತ (ನಂ) 1. ಮಾಂಸ. 2. ಹುಳಿಗಂಜಿ. (ವಿಂ)  
3. ಹುಳಿಯಾದ. 4. ಶುದ್ಧವಾದ, ಪವಿತ್ರವಾದ.  
5. ಕರಿನವಾದ. "ಶುಕ್ತಮಲ್ಲೇ ಪೂತಿಭೂತೇ ಚ ಕರ್ಕಶೇ" ಹೇಮಂ |  
"ಶುಕ್ತಂ ಪೂತಾಮಲನಿಷ್ಕುರೇ" ಮೇದಿಂ |

ಶುಕ್ತಾ ಶುಕ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುಲ್ಲಂಪುರಿಚಿ.

ಶುಕ್ತಿ ಶುಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುಕ್ತಿನ ಚಿಪ್ಪು. ಶುಕ್ಯ  
(ಅಭಿಷವೇ) "ಕ್ತಿಚ್" (3-3-104) | "ಮುಕ್ತಾಭಿಃ  
ಸಲಿಲರಯಾಸ್ತಶುಕ್ತಿಯೇಶೀಮುಕ್ತಾಭಿಃ ಕೃತಕಚಿ ಸೇಕಿತಂ ನದೀನಾಮ್"  
ಮಾಘಂ 6-9 | 2. ಕಪಾಲದ ಒಂದು ಭಾಗ, ತಲೆ  
ಯೆಲುಬಿನ ಒಂದು ಭಾಗ. 3. ಶಂಖ. 4. ಸ್ತಂಭ ಜಾತಿಯ  
ಶಂಖ. 5. ನಖಿಯಂಬ ಒಂದು ಗಂಧ ದ್ರವ್ಯ. 6.  
ಕುದುರೆಯ ಸುಳಿ. "ಆವತಿನಃ ಶುಭಕಲಪ್ರದಶುಕ್ತಿಯುಕ್ತಾಃ"  
ಮಾಘಂ 4-8 | 7. ಅಶೋರೋಗ. ಮೂಲವ್ಯಾಧಿ.  
8. ಒಂದು ನೇತ್ರರೋಗ. "ಶುಕ್ತಿಃ ಶಸ್ತ್ರನಕೇ ಶಸ್ತ್ರೇ  
ಕಪಾಲಖಂಡದೃಜೋಃ" ಹೇಮಂ | 9. ಎರಡು ಕರ್ಷಗಳ  
ಪರಿಮಾಣ.

ಶುಕ್ತಿಕಾ ಶುಕ್ತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುಕ್ತಿನ ಚಿಪ್ಪು. 2.  
ಪುಲ್ಲಂಪುರಿಚಿ.

ಶುಕ್ತಿಜ ಶುಕ್ತಿಜ (ನಂ) ಮುತ್ತು. ಶುಕ್ತೇರ್ಜಯತೆ — ಜನಿ  
(ಪ್ರಾಕೃಭವಿ) "ಜಃ" (3-2-96) |

ಶುಕ್ತಿಬೀಜ ಶುಕ್ತಿಬೀಜ (ನಂ) ಮುತ್ತು.

ಶುಕ್ತಿಮತ್ ಶುಕ್ತಿಮತ್ (ಪುಂ) ಒಂದು ಪರ್ವತ. "ಮಹೇಂದ್ರೋ  
ಮಲಯಃ ಸಹ್ಯಃ ಶುಕ್ತಿಮಾನ್ ಗಂಧಮಾದನಃ | ವಿನ್ಯಾಸಃ  
ಪಾರಿಯಾತ್ರಾ ಸಪತೇ ಚ ಕುಲಾಚಲಾಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಶುಕ್ ಶುಕ್ (ಪುಂ) 1. ಶುಕ್ರಗ್ರಹ. ರವಿ ಮೊದಲಾದ ನವ  
ಗ್ರಹಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಗ್ರಹ. ಶುಕ್ (ಶೋಕ) "ಋನ್"  
ಚಸ್ಯ ಕಷ್ಠ ನಿಪಾಂ (30 2-29) | 2. ದೈತ್ಯರ ಗುರು,  
ಭೃಗುಮಹರ್ಷಿಯ ಪುತ್ರ. ಪುಲೋಮಯು ಶುಕ್ರಾ  
ಜಾರ್ಯನ ತಾಯಿ. ಶುಕ್ರಗ್ರಹವು ಬ್ರಾಹ್ಮಣಜಾತಿಗೆ  
ಸೇರಿದುದು. ಶುಕ್ರನು ಯಜುರ್ವೇದ ರಜೋಗುಣ  
ಅಮ್ಲರಸ ಇವುಗಳಿಗೆ ಅಧಿಪತಿ. ವೃಷಭ ಮತ್ತು ತುಲಾ  
ರಾಶಿಗಳು ಇವನ ಕ್ಷೇತ್ರಗಳು. ಶುಕ್ರಗ್ರಹದ ವರ್ಣ ಶುಕ್ಲ.  
ಶುಕ್ರನು ಶುಭಗ್ರಹ. ಅಪರಾಹ್ಣದಲ್ಲಿ ಅಧಿಕ ಬಲವುಳ್ಳ  
ವನು. ಈ ಗ್ರಹವು ಶುಕ್ರವಾರದ ಅಧಿಪತಿ. ಶುಕ್ರ  
ಗ್ರಹಕ್ಕೆ ಮೀನರಾಶಿಯು ಉಚ್ಚಸ್ಥಾನ. ಕನ್ಯಾರಾಶಿಯು  
ನೀಚಸ್ಥಾನ. ಶುಕ್ರನ ರಾಶಿಗಳಾದ ವೃಷಭ ಮತ್ತು ತುಲಾ  
ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು ಕಾವ್ಯ ಮತ್ತು ಕಲೆಗಳಲ್ಲಿ  
ಪರಿಣತನೂ ದಾನಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನೂ ವೇದಶಾಸ್ತ್ರ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರವೀಣನೂ ವಾತ ಮತ್ತು ಕಫ ದೋಷವುಳ್ಳ  
ವನೂ ಒಳ್ಳೆಯ ಮೇಧಾವಿಯಾಗಿಯೂ ಆಗುವನು.  
"ಶುಕ್ರಾಲಯೇ ಕಾವ್ಯಕಲಾವಿದಗಃ ದಾತಾತಿಥೇಯಃ ಶ್ರುತಿಶಾಸ್ತ್ರ-  
ದಕ್ಷಃ | ಕಲಿಪ್ರಿಯೋ ವಾತಕಫಾನವಿತಃ ಸ್ಯಾತ್ ಮೇಧಾನವಿತೋ  
ಹಾಸ್ಯಪದ್ಮಮದಾಕಃ" | ಭರಣಿ ಪೂರ್ವಫಲ್ಗುನಿ ಮತ್ತು  
ಪೂರ್ವಾಷಾಢಾ ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವರಿಗೆ ಮೊದಲು  
ಶುಕ್ರದಶೆಯು ಪ್ರಾರಂಭವಾಗುವುದು. ಶುಕ್ರದಶಾಕಾಲ  
ಇಪ್ಪತ್ತು (20) ವರ್ಷಗಳು.

ಶುಕ್ರದಶೆಯಲ್ಲಿ ತನ್ನ (ಸ್ವ) ಮತ್ತು ಇತರ  
ಗ್ರಹಗಳ ಅಂತರ್ದಶಾ (ಭುಕ್ತಿ) ಮಾನಃ:

| ಭುಕ್ತಿ       | ವರ್ಷ | ಮಾಸಗಳು | ದಿನಗಳು |
|--------------|------|--------|--------|
| ಸ್ವಭುಕ್ತಿ    | 3    | 4      | 0      |
| ರವಿ ಭುಕ್ತಿ   | 1    | 0      | 0      |
| ಚಂದ್ರ ಭುಕ್ತಿ | 1    | 8      | 0      |
| ಕುಜ ಭುಕ್ತಿ   | 1    | 2      | 0      |
| ರಾಹು ಭುಕ್ತಿ  | 3    | 0      | 0      |
| ಗುರು ಭುಕ್ತಿ  | 2    | 8      | 0      |
| ಶನಿ ಭುಕ್ತಿ   | 3    | 2      | 0      |
| ಬುಧ ಭುಕ್ತಿ   | 2    | 10     | 0      |
| ಕೇತು ಭುಕ್ತಿ  | 1    | 2      | 0      |



ಇತರ ಗ್ರಹಗಳ ದಶಗಳಲ್ಲಿ ಶುಕ್ರಗ್ರಹದ ಅಂತರ್ದರ್ಶಾ (ಭುಕ್ತಿ) ಮಾನ :

| ದಶೆ       | ವರ್ಷ | ಮಾಸಗಳು | ದಿನಗಳು |
|-----------|------|--------|--------|
| ರವಿ ದಶೆ   | 1    | 0      | 0      |
| ಚಂದ್ರ ದಶೆ | 1    | 8      | 0      |
| ಕುಜ ದಶೆ   | 1    | 2      | 0      |
| ರಾಹು ದಶೆ  | 3    | 0      | 0      |
| ಗುರು ದಶೆ  | 2    | 8      | 0      |
| ಶನಿ ದಶೆ   | 3    | 2      | 0      |
| ಬುಧ ದಶೆ   | 2    | 10     | 0      |
| ಕೇತು ದಶೆ  | 1    | 2      | 0      |
| ಶುಕ್ರ ದಶೆ | 3    | 4      | 0      |

3. ಜ್ಯೇಷ್ಠಮಾಸ. 4. ಚಿತ್ರಮೂಲದ ಗಿಡ. 5. ಅಗ್ನಿ. "ಶುಕ್ರ: ಸ್ಯಾದ್ಭಾಗ್ವೇ ಜ್ಯೇಷ್ಠಮಾಸೇ ವೈಶ್ವಾನರೇ ಪುಮಾನ್" ಮೇದಿಂ. (ನಂ) 6. ರೇತಸ್ಸು, ವೀರ್ಯ. 7. ಒಂದು ವಿಧ ನೇತ್ರರೋಗ. (ವಿಂ) 8. ಶುಕ್ಲವರ್ಣದ, ಶುಭ್ರವಾದ. 9. ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ. "ಶುಕ್ರಸ್ತು ಶುಕ್ಲೇ ಜ್ಯೇಷ್ಠಮಾಸೇಽಗ್ನಿಕಾವ್ಯಯೋಃ | ಶುಕ್ರಂ ತು ರೇತೋಽಕ್ಷಿರಜೋಃ" ಹೇಮಂ |

ಶುಕ್ರಕರ ಶುಕ್ರಕರ (ಪುಂ) 1. ಮಜ್ಜೆ, ದೇಹಸಾರ. ಕರೋತಿ — ಡುಕ್ರ (ಕರಣ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | ಶುಕ್ರಸ್ಯ ಕರಃ | (ವಿಂ) 2. ವೀರ್ಯವನ್ನು ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡುವ.

ಶುಕ್ರಭುಜ್ ಶುಕ್ರಭುಜ್ (ಪುಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಶುಕ್ರ ಭುಜ್ಕೇ |

ಶುಕ್ರವಾರ ಶುಕ್ರವಾರ, -ವಾಸರ-ವಾಸರ (ಪುಂ) ಶುಕ್ರನು ಅಧಿಪತಿಯಾಗಿರುವ ದಿವಸ. ಶುಕ್ರಸ್ಯ ವಾರಃ |

ಶುಕ್ರಶಿಷ್ಯ ಶುಕ್ರಶಿಷ್ಯ (ಪುಂ) ಅಸುರರು, ದಿತಿಯ ಮಕ್ಕಳು. "ಶುಕ್ರಶಿಷ್ಯಾ ದಿತಿಸುತಾಃ" ಅಮಂ |

ಶುಕ್ರಿಯ ಶುಕ್ರಿಯ (ವಿಂ) ಶುಕ್ರದೇವತಾಕ ಹವಿಸ್ಸು ಮೊದಲಾದುದು. ಶುಕ್ರೋ ದೇವತಾ ಅಸ್ಯ — ಶುಕ್ರ "ಘನ್" (೪-೨-೨೬) |

ಶುಕ್ಲ ಶುಕ್ಲ (ಪುಂ) 1. ಬಿಳಿಯ ಬಣ್ಣ. 2. ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷ, ಮಾಸದ ಮೊದಲನೆಯ ಅರ್ಧಭಾಗ. "ತತ್ರ ಪಕ್ಷಾವುಭೌ ಮಾಸೇ ಶುಕ್ಲಕೃಣೌ ಕ್ರಮೇಣ ಹಿ | ಚಂದ್ರವೃದ್ಧಿಕರಃ ಶುಕ್ಲಃ ಕೃಣಾಶ್ಚಂದ್ರಕ್ಷಯಾತ್ಮಕಃ" || (ನಂ) 3. ರಜತ, ಬಿಳ್ಳಿ. 4. ನವನೀತ, ಹೊಸದಾದ ಬೆಣ್ಣೆ. (ವಿಂ) 5. ಬಿಳುಪಾದ, ಶುಕ್ಲಗುಣವುಳ್ಳ. "ಶುಕ್ಲಮೈಖಾನಿಚಯಃ ಪರಿವೀತ-ಮೃತಿವೈಶ್ರಾಭಿಘಾತಪರಿಮಂಡಲಿತೋದೇಹಃ" ಕಿರಾಂ ೪-೪೨ | 6. ಪವಿತ್ರವಾದ, ಶುದ್ಧವಾದ.

ಶುಕ್ಲಕ ಶುಕ್ಲಕ (ಪುಂ) 1. ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷ, ಚಂದ್ರಮಾಸದ ಮೊದಲನೆಯ ಅರ್ಧ ಭಾಗ. 2. ಶುಕ್ಲವರ್ಣ. (ವಿಂ) 3 ಶುಕ್ಲವರ್ಣದ, ಬಿಳುಪಾದ.

ಶುಕ್ಲಕಂಠಕ ಶುಕ್ಲಕಂಠಕ (ಪುಂ) ನೀರುಕೋಳಿ.

ಶುಕ್ಲಕರ್ಮನ್ ಶುಕ್ಲಕರ್ಮನ್ (ವಿಂ) ಶುದ್ಧವಾದ ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವವನು, ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆಯುಳ್ಳವನು, ಸದಾಚಾರ ಸುಪನ್ನ. ಶುಕ್ಲಂ ಪವಿತ್ರಂ ಕರ್ಮ ಯಸ್ಯ |

ಶುಕ್ಲಕವ ಶುಕ್ಲಕವ (ನಂ) ಧಾವಳಿ, ಬಿಳುಪು. ಶುಕ್ಲಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತ್ವಃ" (೪-೧-೧೧೯) |

ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷ ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷ (ಪುಂ) ಮಾಸದ ಮೊದಲನೆಯ ಪಕ್ಷ, ಚಂದ್ರಮಾಸದ ಮೊದಲನೆಯ ಅರ್ಧಭಾಗ. ಚಂದ್ರನು ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವ ಪಕ್ಷವು ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷ. ಕ್ಷಯ ಹೊಂದುವ ಪಕ್ಷವು ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷ. "ತತ್ರ ಪಕ್ಷಾವುಭೌ ಮಾಸೇ ಶುಕ್ಲಕೃಣೌ ಕ್ರಮೇಣ ಹಿ | ಚಂದ್ರವೃದ್ಧಿಕರಃ ಶುಕ್ಲಃ ಕೃಣಾಶ್ಚಂದ್ರಕ್ಷಯಾತ್ಮಕಃ" |

ಶುಕ್ಲಪುಷ್ಪ ಶುಕ್ಲಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಮೊಲ್ಲೆಗಿಡ. 2. ಮಂಗಾರಿ ಗಿಡ. 3. ಮರುಗ.

ಶುಕ್ಲಮಂಡಲ ಶುಕ್ಲಮಂಡಲ (ನಂ) ಕಣ್ಣುಗುಡ್ಡೆಯ ಬಿಳಿಯ ಭಾಗ.

ಶುಕ್ಲವಾಯಸ ಶುಕ್ಲವಾಯಸ (ಪುಂ) 1. ಬಕಪಕ್ಷಿ. 2. ಬಿಳಿಯ ಕಾಗೆ.

ಶುಕ್ಲಾ ಶುಕ್ಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸರಸ್ವತಿ. ಶುಕ್ಲೋ ವರ್ಣೋಽಸ್ಯಸ್ಯಾಃ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) | "ವಾಗ್ಧೇವಿ ಶಾರದಾ ಶುಕ್ಲಾ ಮಹಾಶ್ವೇತಾ ಸರಸ್ವತೀ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಶುಕ್ಲಾಪಾಙ್ಗ ಶುಕ್ಲಾಪಾಙ್ಗ (ಪುಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಶುಕ್ಲೋ ಅಪಾಙ್ಗೋ ಯಸ್ಯ | "ಶುಕ್ಲಾಪಾಙ್ಗಃ ಸಜಲನಯನಃ ಸ್ವಾಗತೀಕೃತ್ಯ ಕೇಕಾಃ" ಮೇಘಂ ೧-೨೨ | "ಮಯೂರೋ ಬಹಿಣೋ ಬಹಿಣಿ ಶುಕ್ಲಾಪಾಙ್ಗಃ ಶಿಖಾವಲಃ" ಯಾದವಃ |

ಶುಕ್ಲಾಮನ್ ಶುಕ್ಲಾಮನ್ (ನಂ) ಒಂದು ನೇತ್ರರೋಗ. ಶುಕ್ಲೋಪಲಾ ಶುಕ್ಲೋಪಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಲ್ಲುಸಕ್ಕರೆ. ಶುಕ್ಲಃ ಉಪಲ ಇವಾಕೃತಿಯಸ್ಯಾಃ |

ಶುಕ್ಲಿ ಶುಕ್ಲಿ (ಪುಂ) ವಾತ, ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಶುಫ (ಶೌಷಣಿ) "ವಿಸಃ" (೩ಂ ೩-೧೪೪) | ಶುಕ್ಲಿವಾತಿಃ ಸಿಂ ಕೌಂ |

ಶುಕ್ಲ ಶುಕ್ಲ (ಪುಂ) 1. ಮಟವೃಕ್ಷ, ಅಲದ ಮರ. 2. ಅಮಟಿ ಮರ. (ಪುನಂ) 3. ಜುಲೀ ಗಿಡ. "ಶುಕ್ಲೋ ವಟಾಸ್ರಾತಕಯೋಃ ಪರ್ಕಟಯಾಮಪಿ ಚಾಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ |

ಶುಕ್ಲಾಕರ್ಮನ್ ಶುಕ್ಲಾಕರ್ಮನ್ (ನಂ) ಪುಂಸವನ ಸಂಸ್ಕಾರ. "ಅಗ್ನಿಸ್ತು ಮಾಸ್ತೋ ನಾಮ ಗರ್ಭಾಧಾನೇ ವಿಧೀಯತೇ | ಪುಂಸವನೇ ಚಂದ್ರನಾಮಾ ಶುಕ್ಲಾಕರ್ಮಣಿ ಶೋಭನಃ" |



ಶುಕ್ಲಿನ್ ಶುಂಕಿನ್ (ಪುಂ) 1. ವಟಿವೃಕ್ಷ. ಅಲದ ಮರ.  
2. ಅಮಟಿ ಮರ. 3. ಜುಲೀಗಿಡ. "ಶುಕ್ಲಿನ್ ಪಾತ್ರಾತೆ  
ವಟೆ ಪ್ಲಕ್ಷೆ" ಹೇಮಂ.

ಶುಕ್ ಶುಂಕಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶೋಕ, ದುಃಖ. ಶುಕ್ (ಶೋಕೆ)  
"ಕ್ವಿಪ್" (ವಾಂ 3-3-94). "ಇತಿ ದಯಿತಕಲತ್ರ-  
ಶ್ಚಿಂತಯನ್ನಿಮಿಂದುಃ ವಹತಿ ಕೃಷಮಶೇಷಂ ಭ್ರಷ್ಟಶೋಭಂ ಶುಚೇವ"  
ಮಾಘಂ 11-24. "ಕಾಮಂ ಜೀವತಿ ಮೇ ನಾಥಃ ಇತಿ ಸಾ  
ವಿಜಹೊ ಶುಕ್ಮ" ರಘುಂ 12-94.

ಶುಕ್ ಶುಂಕಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶೋಕ, ದುಃಖ. "ಟಾಪ್".  
"ಆಪಂ ಚೈವ ಹಲ್ಂತಾನಾಂ ಯಥಾ ವಾಚಾ ನಿಶಾ ದಿಶಾ".

ಶುಚಿ ಶುಚಿ (ಪುಂ) 1. ಗ್ರೀಷ್ಮಯುತು. ಶೋಚಂತಿ ವಿರಹಿಣೋಽ-  
ಸ್ಮಿನ್—ಶುಕ್ (ಶೋಕೆ) "ಇನ್" (ತಂ 4-119).  
"ಸ್ಪೃಶನ್ ಸಶಕ್ತಃ ಸಮಯೇ ಶುಚಾವಪಿ ಸ್ಥಿತಃ ಕರಾಂಗ್ರಸಮಗ್ರ-  
ಪಾತಿಭಿಃ" ಮಾಘಂ 1-44. 2. ಅಗ್ನಿ. "ಪಾವಕಃ  
ಪವಮಾನಶ್ಚ ಶುಚಿರೀತಯನಯಃ ಪುರಾ | ವಸಿಷ್ಠಶಾಪಾದುಪಮಾಃ  
ಪುನರ್ಯೋಗಗತಿ ಗತಾಃ" ಭಾಗಂ 4-24-4. 3. ಅಪಾಧ  
ಮಾಸ. 4. ಜ್ಯೇಷ್ಠಮಾಸ. 5. ಪರಿಶುದ್ಧತನಾದ  
ಮಂತ್ರಿ, ಉತ್ತಮ ಗುಣವುಳ್ಳ ಸಚಿವ. 6. ಶ್ವೇತವರ್ಣ.  
7. ಶೃಂಗಾರ ರಸ. 8. ಸೂರ್ಯ. 9. ಚಂದ್ರ. 10.  
ಶುಕ್ರಗ್ರಹ. 11. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 12. ಧಾವಳಿ,  
ಬಿಳುಪು. "ಶುಚಿರ್ನಾ ಶುಕ್ರಶೃಂಗಾರಚಂದ್ರಾಷಾಠಹರಾಽಗ್ನಿಭುಃ |  
ತಪಶಾಶುದ್ಧಸಚಿವೇ ಗ್ರಂಥೇ ಶ್ವೇತಗುಣೇ ರವಿ" ನಾನಾರ್ಥರಂ.  
(ವಿಂ) 13. ಶುದ್ಧವಾದ, ನಿರ್ಮಲವಾದ, ಶುಭ್ರವಾದ.  
14. ಸ್ವಚ್ಛವಾದ, ನಿರ್ಮಲವಾದ, ದೋಷವಿಲ್ಲದ.  
"ಅಪವರ್ಜಿತವಿಪ್ಲವೇ ಶುಚಿ ಹೃದಯಗ್ರಾಹಿಣಿ ಮಜ್ಜಲಾಸ್ಪದೇ"  
ಕಿರಾಂ 2-26. 15. ಶುದ್ಧವಾದ, ಸಂತಯಾದಿ  
ದೋಷರಹಿತವಾದ. "ಶುಚಿ ಭೂಷಯತಿ ಶ್ರುತಂ ವಪುಃ ಪ್ರಶಮ-  
ಸ್ತಸ್ಯ ಭವತ್ಯಲಂಕ್ರಿಯಾ" ಕಿರಾಂ 2-32. 16. ನಿರ್ಮಲ  
ವಾದ, ಶಿಶುಯಾದ. "ವಿಕಚವಾರಿರಹಂ ದಧತಂ ಸರಃ ಸಕಲ-  
ಹಂಸಗಣಂ ಶುಚಿ ಮಾನಸಮ್" ಕಿರಾಂ 4-13. "ಶುಚೀರಪಃ  
ಶೈವಲಿನೋದಧಾನಮ್" ಮಾಘಂ 4-6. 17. ಪವಿತ್ರವಾದ,  
ನಿಷ್ಕಲಂಕವಾದ, ಶುದ್ಧವಾದ. "ವೀತಜನ್ಮಜರಸಂ ಪರಂ ಶುಚಿ  
ಬ್ರಹ್ಮಣಃ ಪದಮುಪೇತುಮಿಚ್ಛತಾಮ್" ಕಿರಾಂ 4-22. 18.  
ದೋಷವಿಲ್ಲದ, ಅಪರಾಧವಿಲ್ಲದ. "ಅಹೋ ಧಿಕ್ ಭೃತರಾಷ್ಟ್ರಸ್ಯ  
ಬುದ್ಧಿರ್ನಾಸ್ತಿ ಸಮಜ್ಜಸಿ | ಯಃ ಶುಚೀನ್ ಪಾಂಡುಡಾಯಾದಾನ್  
ದಾಹಯಾಮಾಸ ಶತ್ರುವತ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ 146-15. 19.  
ಶುದ್ಧವಾದ ಹೃದಯವುಳ್ಳ, ರಾಗದ್ವೇಷಾದಿ ದೋಷರಹಿತ  
ವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. "ವೃದ್ಧಾಽಶ್ಚ ನಿಯಮೇನ ವಿಪ್ರಾನ್ ವೇದವಿದಃ

ಶುಚೀನ್" ಮನುಂ 6-38. 20. ಶುದ್ಧನಾದ, ಸ್ವಾನಾದಿ  
ಗಂಧ ಪರಿಶುದ್ಧನಾದ. "ಸುತಾಂ ತದೀಯಾಂ ಸುರಭೇಃ ಕೃತ್ವಾ  
ಪ್ರತಿನಿಧಿಂ ಶುಚಿಃ" ರಘುಂ 1-61. 21. ಸ್ಪಷ್ಟನಾದ,  
ವಿನಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಸಭಾಪಾಂ ವಕ್ತೃ ಸಾಮರ್ಥಃ ಸಾವರ್ಣ್ಯೋ  
ನರಃ ಶುಚಿಃ" ಪञ्ಚತಂ 1-213.

ಶುಚಿತಾ ಶುಚಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾರಿಶುದ್ಧ, ಪವಿತ್ರತೆ,  
ಶುದ್ಧವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಶುಚಿಮಾವಿ: "ತಲ್" (4-1-119).

ಶುಚಿದ್ರೂಮ ಶುಚಿದ್ರೂಮ (ಪುಂ) ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಣ್ಯಮರ.  
ಶುಚಿಃ ಪವಿತ್ರಃ ದ್ರೂಮೋ ವೃಕ್ಷಃ.

ಶುಚಿಪ್ರಣಿ ಶುಚಿಪ್ರಣಿ (ಪುಂ) ಆಚಮನ. ಶುಚಿ ಪ್ರಣಯತಿ  
— ಪ್ರ + ಗಾಂ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ್ವಿಪ್" (3-2-61).  
"ಆಚಾಮಃ ಸ್ಯಾದಾಚಮನಮುಪಸ್ಪರ್ಶಃ ಶುಚಿಪ್ರಣಿಃ".

ಶುಚಿರೋಚಿಸ್ ಶುಚಿರೋಚಿಸ್ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಶುಚಿಃ  
ರೋಚಿಃ ಮಯೂಕೋ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಬಿಳಿಯ ಕಿರಣಗಳುಳ್ಳ.  
ಶುರೀರತಾ ಶುರೀರತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೀರ್ಯ, ಪರಾಕ್ರಮ,  
ಬಲ. "ವೀರ್ಯ ಶುರೀರತಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಶುರೀಯ ಶುರೀಯ (ನಂ) ವೀರ್ಯ, ಪರಾಕ್ರಮ.

ಶುಠಿ ಶುಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಣಶುಂಠಿ. ಶುಠತಿ ಕಫಮ್—ಶುಠಿ  
(ಪ್ರತಿವಾತೆ) "ಇನ್" (ತಂ 4-118). ವಾ "ಕೀಪ್"  
(ಗಂ 4-1-44). ಶುಠಿ ಶುಠಿ. "ತಸ್ಮಿನ್ ಗತಾದ್ಭಾವೇ  
ವೀತರಸೇ ಶುಠಿಶಕಲ ಇವ ಪುರಃ" ಆರ್ಯಸಿಂಹಶತೀ.

ಶುಠಿ ಶುಠಿ (ನಂ) ಒಣಶುಂಠಿ.

ಶುಠಿ ಶುಠಿ (ಪುಂ) 1. ಮದಜಲ, ಮದಿಸಿದ ಆನೆಯ  
ಗಂಡಪ್ರದೇಶದಿಂದ ಸೋರುವ ಮದೋದಕ. 2. ಆನೆಯ  
ಸೊಂಡಿಲು.

ಶುಠಿ ಶುಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆನೆಯ ಸೊಂಡಿಲು. 2.  
ಮದಿರೆ, ಮದ್ಯ. 3. ಮದ್ಯದ ಅಂಗಡಿ. 4. ಮೇಶ್ಯ,  
ಸೂಳೆ. 5. ಕುಟ್ಟಿನಿ, ತಲೆಹಿಡುಕೆ. 6. ಕಮಲ ಲತೆ,  
ತಾವರೆಯ ಬಳ್ಳಿ. 7. ನೀರಾನೆ. "ಶುಠಿ ಪಾನಗೃಹೇ ಮತಾ |  
ಅಪ್ಯಮ್ಬುಹಸ್ತಿನೀವೇಶ್ಯಾಹಸ್ತಿಹಸ್ತಸುರಾಸು ಚ" ಮೇದಿಂ.

ಶುಠಿಪಾನ ಶುಠಿಪಾನ (ನಂ) ಮದ್ಯಗೃಹ, ಮದ್ಯಪಾನ  
ಮಾಡುವ ಗೃಹ. ಶುಠಿಪಾನಾಃ ಪಾನಮತ್ರ.

ಶುಠಾರ ಶುಠಾರ (ಪುಂ) 1. ಆನೆಮರಿಯ ಚಿಕ್ಕ  
ಸೊಂಡಿಲು. ಅಲ್ಪಾ ಶುಠಿ—ಶುಠಿ "ರಃ" (4-3-66).  
"ಶುಠಾರಃ ಕಲಭೇನ ಯದ್ದದಚಲೇ ವತ್ಸೇನ ದೋಷಕಃ" ಮಂ ವೀಂ  
1-43. 2. ಬಟ್ಟಿ ಇಳಿಸುವವನು, ಬಟ್ಟಿಕಾರ. ಶುಠಾ  
ರಾತಿ—ರಾ (ದಾನೆ) "ಕಃ" (3-2-3).



ಶುಭಾಶ ಶುಂಢಾಲ (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. ಶುಭೇನ ಅಲತಿ—  
ಅಲ (ಭೂಷಣಾದಿ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।

ಶುಭಿನ್ ಶುಂಡಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಗಜ, ಆನೆ. ಶುಭಾ ಅಸ್ಯಸ್ಯ  
"ಇತಿ:" (೪-೨-೧೧೪) । 2. ಮದ್ಯವನ್ನು ತಯಾರಿಸು  
ವವನು, ಬಟ್ಟೆ ಇಳಿಸುವವನು.

ಶುತುಶ್ಚ ಶುತುಮ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶತದು ನದಿ, ಪಂಜಾಬಿನಲ್ಲಿ  
ಹರಿಯುವ ಒಂದು ನದಿ.

ಶುಡ ಶುಡ್ಧ (ನಂ) 1. ಸೈಂಧವ ಲವಣ. 2. ಮಣಸು.  
(ವಿಂ) 3. ಪವಿತ್ರವಾದ. ಶುಭ (ಶೇವೆ) "ಕ:"  
(೩-೪-೭೨) । 4. ನಿರ್ಮಲವಾದ, ದೋಷವಿಲ್ಲದ,  
ಕಲ್ಮಷವಿಲ್ಲದ. "ಅಂತಃ ಶುಡಸ್ವಮಪಿ ಭವಿತಾ ವರ್ಣಮಾತ್ರೇಣ  
ಕೃಷ್ಣಾ:" ಮೇಘಂ ೧-೪೯ । 5. ಶುಭ್ರವಾದ, ಬಿಳುವಾದ.  
"ಪಶ್ಯ ಕಲ್ಪತಳುಮಿವ ಶುಡಯಾ ಜ್ಯೋತ್ಸನಯಾ ಜನಿತರೂಪ-  
ಸಂಶಯಮ್" ಕುಮಾಂ ೮-೭೧ । 6. ಉಜ್ಜ್ವಲವಾದ, ಪ್ರಕಾಶ  
ಮಾನವಾದ, ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ. "ಕಾಪ್ಯಮಿಖ್ಯಾ ತಯೋ-  
ರಾಸೀದ್ವಜತೋಃ ಶುಡವೇಷಯೋಃ" ರಘುಂ ೧-೪೬ । 7. ಇತರ  
ವಸ್ತುವಿನ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ, ಬೇರೆ ವಿಷಯಗಳ ಬೆರಕೆ  
ಯಿಲ್ಲದ. "ಪದೇ ಪರಸ್ಮಿನ್ನಿವ ನಿಯಮಸ್ಯಾಂ ಶುಡೇನ ಸತ್ವೇನ  
ವಿಭೂಷಿತಾಯಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೮-೧೧೮ । 8. ದೋಷರಹಿತ  
ವಾದ, ಕಳಂಕವಿಲ್ಲದ. "ರಾಜ ಶುಡೇತಿ. ಪುನಃ ಸ್ವಪ್ನಯೇ  
ಸಂದರ್ಶಿತಾ ವಹ್ನಿಗತೇವ ಭರ್ತಾ" ರಘುಂ ೧೪-೧೪ ।

ಶುಡಜಙ್ಗ ಶುಡ್ಧಜಂಘ (ಪುಂ) ಗರ್ಧಭ, ಕತ್ತೆ.

ಶುಡಮತಿ ಶುಡ್ಧಮತಿ (ವಿಂ) ರಾಗದ್ವೇಷಾದಿಗಳಿಂದ ರಹಿತ  
ವಾದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. ಶುಡಾ ಮತಿಃ ಯಸ್ಯ । "ಉಪ-  
ಕಾರಿಣಿ ವಿಶ್ರವೇ ಶುಡಮತೀ ಯಃ ಸಮಾಚರತಿ ಪಾಪಮ್ ।  
ತಂ ಜನಮಸತ್ಯತನ್ವಂ ಭಗವತಿ ವಸುಧೇ ಕಥಂ ವಹಸಿ" ಹಿತೋಂ  
೧-೮೦ ।

ಶುಡಾಂತ ಶುಡಾಂತ (ಪುಂ) 1. ಅಂತಃಪುರ, ರಾಜಪತ್ನಿ  
ಯರು ವಾಸಮಾಡುವ ಸಂರಕ್ಷಿತ ಕೋಡೆ, ಅರಮನೆಯ  
ಒಂದು ಭಾಗ. ಯೋಗ್ಯರಾದ ರಕ್ಷಕರಿಂದ ಸಂರಕ್ಷಿತವಾದ  
ಕೋಣೆ. ಶುಡಾಃ ಉಪಾಶುಡಾಃ ರಕ್ಷಕಾಃ ಅಂತಃ ಸಮೀಪೇಷ್ಯ ।  
"ಸ ತೇರಾಕ್ರಮಯಾಮಾಸ ಶುಡಾಂತಂ ಶುಡಕರ್ಮಿಭಿಃ" ಕುಮಾಂ ೬-೪೨ ।  
2. ರಾಜನ ಅಂತಃಪುರದ ಸ್ತ್ರೀಯರು. ಶುಡಾಂತದಲ್ಲಿರು  
ವುದರಿಂದ ಇವರಿಗೂ ಶುಡಾಂತ ಎಂದು ವ್ಯವಹಾರ.  
"ಶುಡಾಂತದುರ್ಲಭಮಿದಂ ವಪುರಾಶ್ರಮವಾಸಿನೋ ಯದಿ ಜನಸ್ಯ"  
ಶಾಕುಂ ೧-೧೪ ।

ಶುಡಾಂತಾ ಶುಡಾಂತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾಜನ ಪತ್ನಿ. ರಾಜನ  
ಮಹಿಷಿ. ಶುಡಾಂತಃ ಆಶ್ರಯತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯಾಃ "ಅಚ್"  
(೪-೨-೧೨೭) ।

ಶುಡಾಪಹ್ಲತಿ ಶುಡಾಪಹ್ಲತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ  
ಒಂದು ಭೇದ. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಮತ್ತೊಂದು  
ವಸ್ತುವಿನ ಆರೋಪಕ್ಕಾಗಿ ಅದರ ಧರ್ಮದ ನಿಷೇಧವು  
"ಶುಡಾಪಹ್ಲತಿ" ಅಲಂಕಾರ. "ಶುಡಾಪಹ್ಲತಿ-  
ರನ್ಯಸ್ಯಾರೋಪಾರ್ಥೋ ಭರ್ಮನಿಹ್ಲವಃ" । ತತಃ "ನಾಶಂ ಶುಭಾಂಶುಃ  
ಕಿಂ ತಹಿ ವ್ಯೋಮಗಜ್ಜಾಸರೋಹಮ್" । ಇಲ್ಲಿ ಸುಧಾಂಶುವಿನಲ್ಲಿ  
ವ್ಯೋಮಗಂಗಾ ಸರೋರುಹತ್ವದ ಆರೋಪಕ್ಕಾಗಿ ಸುಧಾಂ  
ಶುತ್ವ ಧರ್ಮದ ನಿಷೇಧವು ವರ್ಣಿತವಾಗಿದೆ.

ಶುಡಿ ಶುಡ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪವಿತ್ರತೆ, ಪಾರಿಶುದ್ಧತೆ. ಶುಭ  
(ಶೇವೆ) "ಕ್ರಿನ್" (೩-೩-೯೪) । "ಅವ್ಯವಸ್ಥಾತಿ ಮೃತಾನಾ-  
ಮಧಿಗಮ್ಯೋಽಸ್ಮಿ ಶುಡ್ಧಯೇ" ಕುಮಾಂ ೬-೪೬ । 2. ನೈರ್ಮಲ್ಯ,  
ಜೊಕ್ಕಟವಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ಸ್ವಚ್ಛತೆ, ಧಾರ್ವಣ್ಯ. "ತ ಏವ  
ಮುಕ್ತಾಗುಣಶುಡ್ಧಯೋಽಪಿ ಹಮ್ಯೇಷು ಮುಚ್ಛಂತಿ ನ ಚಂದ್ರಪಾದಾಃ"  
ರಘುಂ ೧೬-೧೯ । 4. ದೋಷವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. "ವಾರಿಪೂರ್ವ-  
ಮಖಿಲಾಸು ಸತ್ಕಿಯಾಲಂಕಾರಶುಡಿಷು ಧನಾನಿ ಬಿಜವತ್" ಮಾಘಂ  
೨೪-೩೪ । 5. ಪಾಪಪರಿಹಾರ ಕಾರ್ಯ, ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ.  
"ಶರೀರತ್ಯಾಗಮಾತ್ರೇಣ ಶುಡ್ಧಿಲಾಭಮನಯತ" ರಘುಂ ೧೨-೧೦ ।  
6. ಮುಣಶುದ್ಧಿ, ಸಾಲದ ತೀರ್ಪು. 7. ವೈರಶುದ್ಧಿ, ಸೇಡು  
ತೀರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಶುಡಿಪತ್ರ ಶುಡ್ಧಿಪತ್ರ (ನಂ) 1. ತಿದ್ದೋಲೆ, ತಪ್ಪುಗಳ  
ತಿದ್ದುಪಡಿಯ ಪಟ್ಟಿ. 2. ಶುದ್ಧಿಯ ಪ್ರಮಾಣ ಪತ್ರ,  
ಶುದ್ಧಿಯ ದೃಢೀಕರಣ ಪತ್ರ. ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ ಅಥವಾ  
ದಂಡನೆ ಮುಂತಾದವುಗಳಿಂದ ಶುದ್ಧಿಪಡೆದ ಬಗ್ಗೆ ನೀಡಿದ  
ಸಮರ್ಪಣ ಪತ್ರ.

ಶುಡೋದನ ಶುಡೋದನ (ಪುಂ) ಬುದ್ಧದೇವನ ತಂದೆ.

ಶುನ ಶುನ (ಪುಂ) 1. ನಾಯಿ. ಶುನತಿ — ಶುನ (ಗತೀ)  
"ಕ:" (೩-೧-೧೩೪) । "ಕುಕ್ಕುರಸ್ತು ಶುನಿಃ ಸ್ಥಾನಃ  
ಕಪಿಲೋ ಮಂಡಲಃ ಶುನಃ" ಇತಿ ವಾಚಸ್ಪತಿಃ । 2. ವಾಯು,  
ಗಾಳಿ. ಶುನತಿ ಕ್ಷಿಪ್ರಂ ಗಚ್ಛತಿ — ಶುನ (ಗತೀ) "ಕ:" ।

ಶುನಃಶೇಫ ಶುನಃಶೇಫ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಮುನಿಕುಮಾರ,  
ಮಂಜೀಷಮುನಿಯ ಪುತ್ರ. ಮಂಜೀಷಮುನಿಯು ಮಧ್ಯಮ  
ಪುತ್ರನಾದ ಇವನನ್ನು ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರಮಹಾರಾಜನ ಯಾಗ  
ಕ್ಕಾಗಿ ಯಜ್ಞಪಶುವನ್ನಾಗಿ ಮಾರಿದನು. ಇವನು ತನ್ನ  
ಪ್ರಾಣರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನುಷಿಯನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿ  
ಸೆಲುವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನು ತನ್ನ ಮಂತ್ರಬಲದಿಂದ ಇವನನ್ನು  
ರಕ್ಷಿಸಿದನು. ಅಂದಿನಿಂದ ಇವನು ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನ ಅಭಿಮಾನ  
ಪುತ್ರನಾದನು.

ಶುನಕ ಶುನಕ (ಪುಂ) 1. ನಾಯಿ. ಶುನತಿ — ಶುನ (ಗತೀ)  
"ಕುನ್" (೩ಂ ೨-೩೨) । 2. ಜೈವನ ಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ



ಘೃತಾಚಿಯೆಂಬ ಅಪ್ಪರಸಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಒಬ್ಬ ಬುಟ್ಟಿ.  
ಈ ಶುನಕಮುಷಿಯ ಪುತ್ರನೇ ಶುನಕ ಮಹರ್ಷಿ.

ಶುನಾಸೀರ ಶುನಾಸೀರ (ಪುಂ) ದೇವೇಂದ್ರ. ಶುನಾಸೀರ  
ಸೇನಾಮುಖಂ ಶುನಾಸೀರಾ ಅಗ್ರೇಸರಾ ವಾ ಯಸ್ಯ |

ಶುನಿ ಶುನಿ (ಪುಂ) ನಾಯಿ. ಶುನ (ಗತೌ) "ಇನ್" (ಉಂ  
೪-೧೧೭) | "ಕುಕ್ಕುರಸ್ತು ಶುನಿ: ಶ್ವಾನ:" ವಾಚಸ್ಪತಿ: |

ಶುನಿ ಶುನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣುನಾಯಿ.

ಶುನೀರ ಶುನೀರ (ಪುಂ) ಹೆಣ್ಣುನಾಯಿಗಳ ಸಮೂಹ.  
ಶುನೀನಾಂ ಸಮೂಹ: "ರ:" |

ಶುನ್ಯ ಶುನ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ. 2. ವಾಯು, ಗಾಳಿ.  
ಶುನ್ಯ (ಶುದ್ಧಿ) "ಯುಕ್" (ಉಂ ೩-೨೦) | (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
3. ಹೆಣ್ಣುಕುದುರೆ.

ಶುನ್ಯಾ ಶುನ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣುನಾಯಿಗಳ ಸಮೂಹ.  
ಶುನೀನಾಂ ಸಮೂಹ: | "ಶುನ್ಯಾ ಶುನ್ಯಂ ಶುನೀರಂ ಸ್ಯಾತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಶುಭ ಶುಭ (ನಂ) 1. ಮಂಗಳ, ಕಲ್ಯಾಣ, ಕ್ಷೇಮ. ಶುಭ  
(ಶೋಭಾಯಾಮ್) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೪) | "ಶುಭಾನಾಮಿವ  
ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯಂ ಶ್ವೇತದ್ವೀಪಮಿವಾಪರಮ್" ಯಾದಂ ೧೬-೨೨ | (ಪುಂ)  
2. ವಿಷ್ಣುಂಭ ಮೊದಲಾದ 27 ಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ 23 ನೆಯ  
ಒಂದು ಯೋಗ. "ಶುಭಪ್ರಸೂತ: ಶುಭಕೃತ್ತರಾಣಾಂ ಶುಭೋದಯೇಷ್ಠೋ  
ವಿದುಷಾಂ ಸಮಾಜೇ | ಕರೋತಿ ನಿಯಂ ಶುಭಕರ್ಮಂ ಧೀಮಾನ್ ಶುಭಾ-  
ಧಿಕ: ಶೋಭನವೇಶಧಾರಿ" | (ವಿಂ) 3. ಶುಭಕರವಾದ,  
ಮಂಗಳವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಕ್ಷೇಮವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.  
4. ಕ್ಷೇಮಶಾಲಿ, ಭಾಗ್ಯಶಾಲಿ. "ಶುಭೋ ಯೋಗೇ ಶುಭಂ ಲೋಕೇ  
ವಾಚ್ಯವತ್ ಲೋಕಶಾಲಿನಿ" ಮೇದಿಂ | 5. ರಮಣೀಯ  
ವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ. "ಶುಭ: ಶ್ರುತಿಶ್ರೇಣಿಶಿರೋ-  
ವಿಭೂಷಣ:" ಯಾದಂ ೧೪-೩೪ | 6. ಸುಂದರವಾದ, ಅದ  
ವಾದ. "ವೃತ್ತಾನುಪೂರ್ವಂ ಚ ನ ಚಾತಿರ್ದೀರ್ಘಂ ಜಹ್ನು ಶುಭೇ ಸೃಷ್ಟವತ್-  
ಸ್ತದೀಯೇ" ಕುಮಾಂ ೧-೩೪ |

ಶುಭಂ ಶುಭಂಯಃ (ವಿಂ) ಕ್ಷೇಮಶಾಲಿ, ಭಾಗ್ಯಶಾಲಿ.  
ಮಂಗಳವುಳ್ಳವನು. ಶುಭಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ — ಶುಭಮ್ "ಯುಕ್"  
(೪-೨-೧೪೦) | "ಶುಭಂಯ: ಸ್ವಾಮಿಮಹೋತ್ಸವೇನ ಸ್ವಾರಾಜ್ಯ-  
ಮಕ್ಷಯಮಿವಾಪ್ತವಂತ:" ಯಾದಂ ೧೩-೭೭ |

ಶುಭಗ್ರಹ ಶುಭಗ್ರಹ (ಪುಂ) ಸೌಮ್ಯವಾದ ಗ್ರಹಗಳು :—  
ಚಂದ್ರ, ಬುಧ, ಗುರು ಮತ್ತು ಶುಕ್ರ. ಅರ್ಧಕ್ಕಿಂತಲೂ  
ಅಧಿಕಭಾಗವುಳ್ಳ ಚಂದ್ರ ಮತ್ತು ಪಾಪಗ್ರಹಸಂಬಂಧ  
ವಿಲ್ಲದ ಬುಧ ಇವರು ಶುಭಗ್ರಹಗಳು. "ಅರ್ಥೋನ್ದು  
ಕುಜೋ ರಾಹು: ಶನಿಸ್ತೇಯಂತ ಇಂದ್ರಜ: | ರವಿ: ಪಾಪಾ ಭವಂತ್ಯೇತೇ  
ಶುಭಾಶ್ವಾನ್ಯೇ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ:" |

ಶುಭಿಷ್ಠ ಶುಭಿಷ್ಠ (ವಿಂ) ಕ್ಷೇಮವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.  
ಶುಭಂ ಕರೋತಿ — ಡುಕ್ತಾ (ಕರಣೇ) "ಲಕ್ಷ" ಮುಮಾಗಮ: |

ಶುಭದ ಶುಭದ (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ. ಅರಳಿಮರ.  
(ವಿಂ) 2. ಮಂಗಳವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.

ಶುಭದಂತಿ ಶುಭದಂತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುಂದರವಾದ ಹೆಣ್ಣು  
ಗಳುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಶುಭಾ ದಂತಾ ಯಸ್ಯಾ: — "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೪೪) |

ಶುಭಗ್ರಹ ಶುಭಗ್ರಹ (ನಂ) ಶುಭಗ್ರಹಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ  
ಮತ್ತು ಶುಭಗ್ರಹಗಳ ದೃಷ್ಟಿಯುಳ್ಳ ಲಗ್ನ.

ಶುಭಾ ಶುಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಂತಿ, ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. ಶುಭ  
(ದೀಪ್ತೌ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ಸೌಂದರ್ಯ.  
3. ಶಮೀವೃಕ್ಷ. 4. ಬಿಳಿ ಗರಿಕೆ. 5. ದೇವತೆಗಳ ಸಭೆ.

ಶುಭಾಂಗಿ ಶುಭಾಂಗೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೋಮಲದೇಹವುಳ್ಳ  
ಹೆಂಗಸು, ಸುಂದರವಾದ ಅವಯವಗಳುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು.  
ಶುಭಾನಿ ಅಂಗಾನಿ ಯಸ್ಯಾ: |

ಶುಭ್ರ ಶುಭ್ರ (ಪುಂ) 1. ಶುಕ್ಲವರ್ಣ. ಶುಭ (ದೀಪ್ತೌ)  
"ರಕ್" (ಉಂ ೨-೧೩) | (ವಿಂ) 2. ಬಿಳುಪಾದ,  
ಧವಳವಾದ. "೪೪೦ ವಸಿಷ್ಠೇನ ಕೃತಾಮೃತನುಜ: ಶುಭ್ರಂ ಯಶೋ-  
ಮುತಮಿವಾತಿಸೃಣು:" ರಘುಂ ೨-೬೯ | 3. ಸ್ವಚ್ಛವಾದ,  
ನಿರ್ಮಲವಾದ. "ಯೇಷಾಂ ಯಶಾಸಿ ಶುಭ್ರಾಣಿ ಹ್ರೇಪಯಂತೀನ್ದು-  
ಮೃಣ್ಮಲಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೧-೬೪ | 4. ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ,  
ಹೊಳೆಯುವ.

ಶುಭ್ರದಂತಿ ಶುಭ್ರದಂತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾಯುದಿಕ್ಕಿನ ದಿಗ್ಗಜದ  
(ಪುಷ್ಪದಂತದ) ಪತ್ನಿ. ಶುಭ್ರಾ ದಂತಾ ಯಸ್ಯಾ: "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೪೪) |

ಶುಭ್ರಾಂಶು ಶುಭ್ರಾಂಶು (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಶುಭ್ರಾ ಅಂಶವೋಽಸ್ಯ |  
"ಶುಭ್ರಾಂಶುರ್ವರ್ಣಂ ಜಟಿಲಾಗ್ರಪಾದಮಿತಸ್ತತೋ ಮೃಣ್ಮಲಕೇಶ್ವರಂತಮ್"  
ಕುಮಾಂ ೯-೩ | 2. ಕರ್ಪೂರ.

ಶುಭ್ರಿ ಶುಭ್ರಿ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಶುಭ  
(ಶೋಭಾಯಾಮ್) "ಕ್ರಿನ್" (ಉಂ ೪-೬೪) |

ಶುಭ್ರ ಶುಭ್ರ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. ["ನಿಶುಭ್ರ" ಪದ  
ದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಶುಭ್ರಾತಿಶಿ ಶುಭ್ರಾತಿಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ.  
—ಮದಿನಿ —ಮದಿನೀ.

ಶುಲ್ಕ ಶುಲ್ಕ (ಪುಂ) 1. ಸುಂಕ, ರಸ್ತೆ ವೇಟೆ ಮೊದಲಾದ  
ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿ ಕ್ರಯ ವಿಕ್ರಯ (ವ್ಯಾಪಾರ) ಮಾಡುವ ವಸ್ತು  
ಗಳ ಮೇಲಿನ ತೆರಿಗೆ. ಶುಲ್ಕ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಘ್ನ"  
(೩-೩-೧೯) | "ಘಟಾದಿದೇಯಂ ಶುಲ್ಕೋಽಸ್ತ್ರೀ" ಅಮಂ |



2. ಕನ್ಯೆಯ ತಂದೆಯು ವರನಿಂದ ಪಡೆಯುವ ಹಣ, ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ಪಡೆಯಲು ವರನು ಕನ್ಯೆಯ ತಂದೆಗೆ ಕೊಡುವ ಹಣ. ಇದರಿಂದ ತಂದೆಯಾದವನು ತನ್ನ ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ವಿಕ್ರಯಿಸಿದಂತಾಯಿತು. ಇದು ಶಾಸ್ತ್ರನಿಷಿದ್ಧ. "ನ ಕನ್ಯಾಯಾ: ಪಿತಾ ವಿಧಾನ್ ಗೃಹ್ಣೀಯಾತ್ ಶುಲ್ಕಮಪಿ | ಗೃಹ್ಣನ್ ಶುಲ್ಕಂ ಹಿ ಲೋಭೇನ ಸ್ವಾನ್ನರೋಽಪ್ಯವಿಕ್ರಯಿ" ಮನುಂ ೩-೪೧ | 3. ಪಣ, ಮೂಲ್ಯ, ಕೊಳ್ಳುವ ವಸ್ತುವು ತನ್ನದಾಗುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಮುಂಗಡವಾಗಿ ಕೊಡುವ ಮೊಬಲಗು.

ಶುಲ್ಕ ಶುಲ್ಕ (ನಂ) 1. ತಾಮ್ರಲೋಹ. ಶುಲ್ಕ (ಮಾನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ರಜ್ಜು, ಹಗ್ಗ. 3. ಯಜ್ಞ ಕಾರ್ಯ, ಯಾಗದ ಅನುಷ್ಠಾನ. 4. ನೀರಿನ ಸಾಮೀಪ್ಯ. 5. ಅಚಾರ. "ಶುಲ್ಕಂ ತಾಂತ್ರೇ ಯಜಕರ್ಮಪ್ರಾಚಾರೇ ಜಲಸನ್ನಿಧಿ" ಮೇದಿಂ |

ಶುಶ್ರುವಸ್ ಶುಶ್ರುವಸ್ (ವಿಂ) ಆರಿಸಿದವನು, ಕೇಳಿದವನು. ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೆ) "ವಸು:" (೩-೨-೧೦೮) | "ಸ ಶುಶ್ರುವಾ-ಸ್ತದ್ವಚನಂ ಮುಮೋಹ ರಾಜಾಽಸಹಿಷ್ಣು: ಸುತವಿಪ್ರಯೋಗಮ್" ಭೃಗುಂ ೧-೨೦ | "ಶುಶ್ರುವಾನ್ ಕ್ಷಣಮುದಂತಮೇಷತ" ಯಾದಂ ೧೭-೪೬ |

ಶುಶ್ರು ಶುಶ್ರು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಾಯಿ. "ಶಿಶೋ: ಶುಶ್ರುಷಾತ್ ಶುಶ್ರು:" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೨೭೨-೩೩ |

ಶುಶ್ರುಷಕ ಶುಶ್ರುಷಕ (ವಿಂ) ಸೇವಿಸುವವನು.

ಶುಶ್ರುಷಣ ಶುಶ್ರುಷಣ (ನಂ) ಸೇವೆ, ಉಪಚಾರ. ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೆ) + ಸನ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |

ಶುಶ್ರುಷಣೀಯ ಶುಶ್ರುಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸೇವಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಸೇವಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಸೇವಿಸಬಹುದಾದ. 4. ಸೇವಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೆ) + ಸನ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) | -ವಿತವ್ಯ: -ಷಿತವ್ಯ: |

ಶುಶ್ರುಷಮಾಣ ಶುಶ್ರುಷಮಾಣ (ವಿಂ) 1. ಸೇವಿಸುತ್ತಿರುವ, ಉಪಚರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೆ) + ಸನ್ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಪ್ರತ್ಯರ್ಥಿಭೂತಾಮಪಿ ತಾಂ ಸಮಾಧೇ: ಶುಶ್ರುಷಮಾಣಾಂ ಗಿರಿಸೋಽನುಮೇನೆ" ಕುಮಾಂ ೧-೪೯ | 2. ಕೇಳಲು ಇಚ್ಛಿಸುತ್ತಿರುವ.

ಶುಶ್ರುಷಾ ಶ. ಶ್ರುಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೇವೆ, ಪರಿಚರ್ಯೆ, ಉಪಚಾರ. ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೆ) + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨) | "ತಸ್ಮೈ ಶಶಂಸ ಪಣಿಪತ್ಯ ನಂದಿ ಶುಶ್ರುಷಯಾ ಶೈಲಸುತಾಮುಪೇತಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೬೦ | 2. ಕೇಳಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಶ್ರೋತುಮಿಚ್ಛಾ | ಇದು ಬುದ್ಧಿಯ ಗುಣಗಳಲ್ಲೊಂದು ವಿಧ. (1) ಶುಶ್ರುಷಾ (2) ಶ್ರವಣಮ್ (3) ಗ್ರಹಣಮ್ (4) ಧಾರಣಮ್ (5) ಊಹ:

(6) ಅಪೋಹ: (7) ಅರ್ಯವಿಜ್ಞಾನಮ್ ಮತ್ಸ್ಯ (8) ತತ್ವಜ್ಞಾನಮ್ ಈ ಎಂಟೂ ಬುದ್ಧಿಯ ಗುಣಗಳು. "ಶುಶ್ರುಷಾ ಶ್ರವಣಮ್ ಚೈವ ಗ್ರಹಣಂ ಧಾರಣಂ ತಥಾ | ಊಹೋಽಪೋಹೋಽರ್ಯವಿಜ್ಞಾನಂ ತತ್ವಜ್ಞಾನಂ ಚ ಧೀಗುಣಾ:" ಕಾಮಂ ನಿಯಂ | 3. ಕಥನ, ಹೇಳುವುದು.

"ಶುಶ್ರುಷಾ ಸ್ಯಾದುಪಾಸನೆ | ಕಥನೇ ಶ್ರೋತುಮಿಚ್ಛಾಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ |

ಶುಶ್ರುಷಿತ ಶ. ಶ್ರುಷಿತ (ವಿಂ) 1. ಸೇವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಉಪಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೆ) + ಸನ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |

2. ಕೇಳಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. (ನಂ) 3. ಸೇವಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಉಪಚಾರ ಮಾಡಲು ಅಭಿಲಾಷೆ. 4. ಕೇಳಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಶ್ರು + ಸನ್ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) |

ಶುಶ್ರುಷ್ಯ ಶುಶ್ರುಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸೇವಿಸಲ್ಪಡುವವನು. ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೆ) + ಸನ್ "ನ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) | 2. ಕೇಳಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ.

ಶುಶ್ರುಷ್ಯ ಶುಶ್ರುಷ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕೇಳಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ. 2. ಉಪಚರಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, ಸೇವಿಸಲು ಇಚ್ಛೆಯುಳ್ಳ. ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೆ) + ಸನ್ "ತ:" (೩-೨-೧೬೮) |

ಶುಷ ಶುಷ (ಪುಂ) 1. ಶೋಷಣ, ಒಣಗುವುದು. ಶುಷ (ಶೋಷಣೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ಹಳ್ಳ, ಗುಳ, ಗರ್ಜ.

ಶುಷಿ ಶುಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶೋಷಣ, ಒಣಗುವುದು. ಶುಷ (ಶೋಷಣೆ) "ಙ್" (೩ಂ ೪-೧೨೦) | 2. ಬಿಲ, ರಂಧ್ರ. "ಶುಷಿ: ಶೋಷೆ ಬಿಲೇ ಸ್ತ್ರೀ ಸ್ಯಾತ್" ಮೇದಿಂ |

ಶುಷಿರ ಶುಷಿರ (ನಂ) 1. ಕೊಳಲು (ಏಳ್ಕುಂಗೋವಿ) ಮೊದಲಾದ ಮುಖವಾದ್ಯ. 2. ಬಿಲ, ರಂಧ್ರ. (ವಿಂ) 3. ರಂಧ್ರವುಳ್ಳ, ತೂತುಳ್ಳ. "ಸರ್ವೇ ಸುಷಿರಂ ತ್ರಿಭು" ಅಮಂ | "ಸುಷಿರಂ ವಂಶಾದಿವಾಹೇ ವಿವರೇ ಚ ನಪುಂಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ | (ಪುಂ) 4. ಮೂಷಿಕ, ಇಲಿ. 5. ಅಗ್ನಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಾ-ರಾ. 6. ನಳಯಂಬ ಒಂದು ಮೂಲಿಕೆ. "ಮೃಷಿಕೇ ನಾ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ನಲ್ಯೋಷಧೌ ರ್ನಧಾನ್ವಿತೇ ತ್ರಿಭು" ಮೇದಿಂ |

ಶುಷ್ಕ ಶುಷ್ಕ (ವಿಂ) 1. ಒಣಗಿರುವ, ರಸವಿಲ್ಲದ. ಶುಷ (ಶೋಷಣೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | ನಸ್ಯ ಕ' (೮-೨-೪೧) | "ಶುಷ್ಕಾಽನಿರವಾಮರ್ಷಂ ಧೀರರಾತಿಭು ಪಾತ್ಯತೇ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೬೪ | 2. ಸ್ನೇಹವಿಲ್ಲದ. "ಶುಷ್ಕಂ ಪರ್ಯುಷಿತಂ ವಾಪಿ ನೇತಂ ವಾ ದ್ವರದೇಶತ: | ಕುಕ್ಕುರಸ್ಯ ಮುಖಾತ್ ಭ್ರಷ್ಟಂ ತದನ್ತಂ ಪಾವನಂ ಮಹತ್" | 3. ಕಠಿಣವಾದ, ಮನನೋಯಿಸುವ, ಅವಮಾನಕರವಾದ. "ವಿಷಾತಾ ಶಾಸಿತಾ ವಕ್ತಾ ಮಂತ್ರೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಉಚ್ಯತೇ | ತಸ್ಮೈ ನಾಕುಶಲಂ ಬ್ರೂಯಾತ್ ನ ಶುಷ್ಕಾಂ ಗಿರಮೀರಯೇತ್" ಮನುಂ ೧೧-೩೪ | 4. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದ, ಕೃತ್ರಿಮವಾದ. "ಕಾಮಿನ: ಸ್ಮ ಕುರುತೇ ಕರಮೋರ್ಹಾರಿ ಶುಷ್ಕಹದಿತಂ



ಚ ಸುಖೇಽಪಿ" ಮಾಘಂ ೧೦-೬೯. 5. ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ, ವೃಥಾವಾದ, ತಿರುಳಿಲ್ಲದ. "ಶುಕ್ಕಧನಗಜಿತೇಽಂತರಿಸ್ತೇ ಜಲಪಾನಮಿಚ್ಛಿತಮ್" ಮಾಲಂ ೨.

ಶುಕ್ಕಕಲಹ ಶುಷ್ಕಕಲಹ (ಪುಂ) 1. ಕಾರಣವಿಲ್ಲದ ಜಗಳ. 2. ಕೃತಕಕಲಹ, ಹುಸಿ ಜಗಳ. "ಅನೇನ ಶುಕ್ಕಕಲಹೇನ ಶಿರೋವೇದನಾ ಮಾಂ ಬಾಧತೇ" ಮುರ್ದಾ ೩.

ಶುಕ್ಕಮಾಸ ಶುಷ್ಕಮಾಸ (ನಂ) ಒಣಗಿದ ಮಾಂಸ. ಶುಕ್ಕಂ ಮಾಸಮ್. "ಉತ್ಪತ್ತಂ ಶುಕ್ಕಮಾಸಂ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ.

ಶುಷ್ಣ ಶುಷ್ಕ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಪಕ್ಕಿ, ಅಗ್ನಿ. ಶುಷ (ಶೋಷಣ) "ನ:" (ಉಂ ೩-೧೨).

ಶುಷ್ಮ ಶುಷ್ಕ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಶುಷ್ಮತ್ಯನೇನ — ಶುಷ (ಶೋಷಣ) "ಮನ್" (ಉಂ ೧-೧೪೧). 2. ಪಾಯು, ಗಾಳಿ. 3. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. 4. ಅಗ್ನಿ. (ನಂ) 5. ಶಕ್ತಿ, ಪರಾಕ್ರಮ. 6. ತೇಜಸ್ಸು, ಕಾಂತಿ. "ಶುಷ್ಮಂ ತೇಜಸಿ ಸೂರ್ಯೇ ನಾ" ಮೇದಿಂ.

ಶುಷ್ಮನ್ ಶುಷ್ಕನ್ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಪಕ್ಕಿ. ಶುಷ್ಮತ್ಯನೇನ — ಶುಷ (ಶೋಷಣ) "ಮನಿನ್" (೩-೨-೭೪). "ಶುಷ್ಮಣಿ ಪ್ರಣಯನಾದಿಸಂಸ್ಕೃತೇ ತೇಹವೀಷಿ ಜುಹವಾಂಬೂವಿರೇ" ಮಾಘಂ ೧೪-೨೨. 2. ಚಿತ್ರಮೂಲದ ಗಿಡ. (ನಂ) 3. ತೇಜಸ್ಸು, ಕಾಂತಿ.

ಶುಕ್ ಶುಕ (ಪುಂ) 1. ಬತ್ತ, ಗೋಧಿ ಮೊದಲಾದ ಧಾನ್ಯಗಳ ತುದಿಯಲ್ಲಿರುವ ಸಣ್ಣ ಮುಳ್ಳು. ಶೋ (ತನುಕರಣ) "ಊಕ:" (ಉಂ ೪-೪೧). 2. ದಯೆ, ಕನಿಕರ, ಅನುಕಂಪ. 3. ಮೊನಚಾದ ಅಗ್ರಭಾಗ. 4. ಶೋಕ. 5. ಧಾನ್ಯದ ಮೊನಚಾದ ತುದಿ, ಧಾನ್ಯದ ಮುಳ್ಳು. 6. ಪಟವೃಕ್ಷ, ಅಲದಮರ. 7. ಅಭಿಷವ, ಸ್ನಾನ. 8. ಮಲಮೂತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟುವ ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಕೃಮಿ. "ಶುಕೋಽನುಕ್ರೋಶಾಂಕಿಶಾವೋ: ಶೋಕೇಽಭಿಷವಶುಕ್ಲಯೋ:" ಹೇಮಂ. 9. ಕಾಡುಹಂದಿಯ ಮೈಮೇಲಿನ ಚೂಪಾದ ಕೂದಲು.

ಶುಕ್ಕ ಶುಕಕ (ಪುಂ) 1. ಯವಧಾನ್ಯ. 2. ಬತ್ತ. ಶುಕೇನ ಕಾಯತಿ — ಕೇ (ಶಬ್ದ) "ಕ:" (೩-೨-೩). 3. ರಸ. "ಶುಕ್ಕಕ: ಪ್ರಾವಟೇ ರಸೇ" ಮೇದಿಂ.

ಶುಕ್ಕಕೀಡ ಶುಕಕೀಟ (ಪುಂ) ಮೊನಚಾದ ಮುಳ್ಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕಣಜ ಮೊದಲಾದ ಹುಳಿ. ಶುಕ್ಕಯುಕ್ತ: ಕೀಟ: ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್". —ಕೀಟಕ: —ಕೀಟಕ:

ಶುಕ್ಕಧಾನ್ಯ ಶುಕಧಾನ್ಯ (ನಂ) ತುದಿಯಲ್ಲಿ ಮೊನಚಾದ ಮುಳ್ಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ಧಾನ್ಯ, ಬತ್ತ, ಗೋಧಿ ಮುಂತಾದವು. ಶುಕ್ಕಯುಕ್ತ ಧಾನ್ಯಮ್.

ಶುಕ್ಕಪಿಞ್ಚಿ ಶುಕಪಿಂಡಿ, —ಶಿಮ್ಬಿ —ಶಿಂಬಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಸುಗುನ್ನಿ ಗಿಡ.

ಶುಕ್ರ ಶುಕರ (ಪುಂ) ವರಾಹ, ಹಂದಿ. ಶುಕ್ರಂ ಶುಕ್ರವತ್ ಲೋಮ ರಾತಿ — ರಾ (ವಾನ) "ಕ:" (೩-೨-೩).

ಶುಕ್ರಕಂದ ಶುಕರಕಂಡ (ಪುಂ) ಹಂದಿಗಡ್ಡೆ. ಶುಕ್ರಪ್ರಿಯ: ಕಂದ:.

ಶುಕ್ಲ ಶುಕಲ (ಪುಂ) ತುಂಬಾಟದ ಕುದುರೆ, ತಂಟೆ ಮಾಡುವ ಕುದುರೆ, ಸ್ವಾಧೀನಕ್ಕೆ ಬಾರದ ಕುದುರೆ. ಶುಕ್ಲವತ್ ಕಲೇಶಂ ಲಾತಿ.

ಶುಕ್ಲವತಿ ಶುಕವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಸುಗುನ್ನಿ ಗಿಡ. ಶುಕ್ಲಾ: ಸಂತಯಸ್ಯಾ: "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪).

ಶುಕ್ಲಶಿಮ್ಬಿ ಶುಕಶಿಂಬಿ, —ಶಿಮ್ಬಿಕಾ —ಶಿಂಬಿಕಾ, —ಶಿಮ್ಬಿ —ಶಿಂಬೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಸುಗುನ್ನಿ ಗಿಡ.

ಶೂ ಶೂದ್ರ (ಪುಂ) ನಾಲ್ಕನೆಯ ವರ್ಣದವನು, ವರ್ಣ ಚತುಷ್ಟಯದಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕನೆಯವನು. ಶೋಚತಿ — ಶುಚ (ಶೋಕ) "ರಕ್" ದಕಾರಾದೇಶಶ್ಚ (ಉಂ ೨-೧೯). "ಶೂದ್ರಾಶ್ಚಾವರವರ್ಣಾಶ್ಚ ವೃಷಲಾಶ್ಚ ಜಘನ್ಯಜಾ:" ಅಮಂ. ಶೂದ್ರನು ಪದಮಾತೃನ ಪಾದಗಳಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದನು. "ಪಶ್ಚಾಂ ಶೂದ್ರೋಽಜಾಯತ" ಈ ವರ್ಣದವನಿಗೆ ಇತರ ವರ್ಣದವರ ಪರಿಚರ್ಯೆಯು ಧರ್ಮ. "ಪರಿಚರ್ಯಾತ್ಮಿಕಂ ಕರ್ಮ ಶೂದ್ರಸ್ಯಾಪಿ ಸ್ವಭಾವಜಮ್" ಗೀತಾ.

ಶೂರ್ಮ ಶೂದ್ರಧರ್ಮ (ಪುಂ) ಶೂದ್ರನಿಗೆ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ವಿಹಿತವಾದ ಆಚಾರ. ಶೂರ್ಮ ಧರ್ಮ:

ಶೂರ್ಮಪ್ರಿಯ ಶೂದ್ರಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) ಪಲಾಂಡು, ಈರುಳ್ಳಿ. ಶೂರ್ಮಪ್ರಿಯ:

ಶೂರ ಶೂದ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶೂದ್ರಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು. ಶೂರ್ಮ ಜಾತಿ: ಶೂರ್ಮ "ರಾಪ್" (ವಾಂ ೪-೧-೪). "ಶೂರಾ ಚಾಮಹತ್ಯುರ್ವಾ ಜಾತಿ:"

ಶೂರ ಶೂದ್ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶೂದ್ರನ ಪತ್ನಿ, ಶೂದ್ರನ ಹೆಂಡತಿ. ಶೂರ್ಮ ಸ್ತ್ರೀ — ಶೂರ್ಮ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೪೮). "ಶೂರೀ ಶೂರ್ಮ ಭಾರ್ಯಾ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ.

ಶೂನ ಶೂನ (ವಿಂ) 1. ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿದ, ಅಧಿಕವಾಗಿರುವ, ಹೆಚ್ಚಿರುವ. ಶು ಆ ಶಿವ (ಗತಿವೃದ್ಧಯೋ:) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). ನಿಷ್ಕಾತಸ್ಯ ನ: (೮-೨-೪೪). ಸಂಪ್ರಸಾರಣಮ್ (೬-೧-೧೪). 2. ಉಬ್ಬಿರುವ, ದೊಡ್ಡ ದಾಗಿರುವ. 3. ರೋಗದಿಂದ ಉದಿಕ್ಕೊಂಡಿರುವ.

ಶೂನವತ್ ಶೂನವತ್ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚಿರುವ, ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿರುವ. ಶು ಆ ಶಿವ (ಗತಿವೃದ್ಧಯೋ:) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨).



**ಶೂನ ಶೂನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಾಣಿಗಳ ವಧಸ್ಥಾನದಂತಿರುವ ಹಿಂಸಾಸ್ಥಾನ. ಗೃಹಸ್ಥನಿಗೆ ಈ ಹಿಂಸಾಸ್ಥಾನಗಳು ಐದು (5).

- (1) ಚುಲ್ಲಿ (ಒಲೆ) (2) ಪೆಣಿ (ಅರೆಯುವ ಕಲ್ಲು, ಬೀಸುವ ಕಲ್ಲು) (3) ಉಪಸ್ಕರ: (ಗೃಹವನ್ನು ಶುದ್ಧಮಾಡುವ ಪೊರಕೆ) (4) ಕಾಡನಿ (ಒನಕೆ ಹಾರೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಕುಟ್ಟುವ ಒರಳು) ಮತ್ತು (5) ಉದ್‌ಕ್ರಮ: (ನೀರು ತುಂಬಿರುವ ಬಿದಿರಿಗೆ). ಈ ಐದರಿಂದಲೂ ಸೂಕ್ಷ್ಮಪ್ರಾಣಿಗಳ ಹಿಂಸೆಯು ಸಂಭವಿಸಬಹುದಾದುದರಿಂದ ಗೃಹಸ್ಥನಿಗೆ ಪಾಪವು ಸಂಭವಿಸುವುದು. ಈ ಪಾಪ ಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಗೃಹಸ್ಥನು ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸಬೇಕು. (1) ಬ್ರಹ್ಮಯಜ್ಞ: (ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮತ್ತು ಅಧ್ಯಾಪನ) (2) ದೇವಯಜ್ಞ: (ಹೋಮ, ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯ) (3) ಪಿತೃಯಜ್ಞ: (ತರ್ಪಣ) (4) ಮೃತಯಜ್ಞ: (ಬಲಿಕಾರ್ಯ) ಮತ್ತು (5) ಮನುಷ್ಯಯಜ್ಞ: (ಅತಿಥಿಸತ್ಕಾರ) ಇವು ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞಗಳು.

**ಶೂನ್ಯ ಶೂನ್ಯ** (ನಂ) 1. ಅಕಾಶ, ಅಂತರಿಕ್ಷ. ಯಾವುದೊಂದು ವಸ್ತುವೂ ಇಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಅಕಾಶವು ಶೂನ್ಯ. "ಸ ವೈ ತ್ವಾಷ್ಟವಧೌ ಭೂನಾಪಿ ಪಾಪಚಯೋ ನೃಪ | ನೋತಸ್ತೇನೈವ ಶೂನ್ಯಾಯ ನೋಹಾರ ಇವ ಭಾನುನಾ" ಭಾಗಂ ೬-೧೩-೨೦ | 2. ಬಿಂದು, ಸೊನ್ನೆ. "ನ ರೋಮಕಪೌಷ್ಪಮಿಷಾಜ್ಜಗತ್ಕೃತಾ ಕೃತಾಶ್ಚ ಕಿ ದ್ವಿಷಣಶೂನ್ಯಬಿನ್ದವ:" ನೆಪಂ ೧-೨೧ | 3. ಬರಿದು, ತೆರಪ್ಪ. (ವಿಂ) 4. ನಿರ್ಜನವಾದ, ಯಾರೊಬ್ಬರೂ ಇಲ್ಲದ. "ಶೂನ್ಯಂ ವಾಸಗೃಹಂ ವಲೋಕಯ ಶಯನಾದುತ್ಥಾಯ ಕಿಂಚಿತ್ತೇನ: ನಿರ್ದ್ರಾವ್ಯಾಜಮುಪಾಗತಸ್ಯ ಸುಚಿರಂ ನಿವೃಣ್ಯ ಪತ್ಯಮುಕ್ತಮ್" ಅಮರಂ ೮೨ | 5. ಬರಿದಾಗಿರುವ, ಖಾಲಿಯಾಗಿರುವ. "ಆವಿಶಾ-ಜೀವನಂ ಶೂನ್ಯಂ ದಿಕ್ ಶೂನ್ಯಾ ಚಿದಬಾಂಧವಾ | ಪುತ್ರಹೀನಂ ಗೃಹಂ ಶೂನ್ಯಂ ಸರ್ವಶೂನ್ಯಾ ದರಿದ್ರತಾ" ಚಾಣಕ್ಯ: | 6. ಉತ್ಸಾಹವಿಲ್ಲದ, ದುಃಖವುಳ್ಳ, ಕುಗ್ಗಿದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. "ಸಸ್ಯೋ: ಸಮಸಾಮಿತಿ ಚಾಧಿಕಜಾತಲಜ್ಜಾಶೂನ್ಯಾ ಜಗಾಮ ಭವನಾಭಿ-ಮುಖೀ ಕಯಂಚಿತ್" ಕುಮಾರಂ ೩-೨೫ | 7. ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದ, ಯಾವ ಅರ್ಥವನ್ನೂ ಕೊಡದಿರುವ. "ಮುಹುರವಿಶದವಣಿ ನಿರ್ದ್ರಾ ಶೂನ್ಯಶೂನ್ಯಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೧-೪ |

**ಶೂನ್ಯವಾಕ್ ಶೂನ್ಯವಾದ** (ಪುಂ) ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲವೆಂಬ ವಾದ, ಸರ್ವಶೂನ್ಯವಾದ, ಬಾಹ್ಯ ಮತ್ತು ಅಂತರ ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲವೆಂಬ ಬೌದ್ಧರ ವಾದ.

**ಶೂನ್ಯವಾದಿನ್ ಶೂನ್ಯವಾದಿನ್** (ಪುಂ) ಸರ್ವವೂ ಶೂನ್ಯವೆಂದು ಹೇಳುವ ಬೌದ್ಧ ಮಾರ್ಗಮತ ಮತದವನು.

**ಶೂನ್ಯಾಲಯ ಶೂನ್ಯಾಲಯ** (ಪುಂ) ಖಾಲಿಮನೆ, ಯಾರೂ ವಾಸವಾಗಿಲ್ಲದ ಮನೆ. ಶೂನ್ಯ: ಆಲಯ: | ಯಾರೂ ವಾಸ

ಮಾಡದೆ ಶೂನ್ಯವಾಗಿರುವ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಮಲಗಕೂಡದು. "ಶೂನ್ಯಾಲಯೇ ಶಮಶಾನೇ ಚ ಏಕವೃಕ್ಷೋ ಚತುಷ್ಪಥಃ | ಮಹಾಶಿವಗೃಹೇ-ಚೈವ ಶಕ್ರರಾಜೋಪಾಂಶುಃ | ನ ಸ್ವಪೇತ್" |

**ಶೂರ ಶೂರ** (ಪುಂ) 1. ಪರಾಕ್ರಮಿ, ಬಲಶಾಲಿ. ಶೂರ (ವಿಕ್ರಾಂತಿ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ವೃತ್ತಂ ಯುಧೇ ಶೂರಮಾಶಿಷ್ಯ ಕಾಚಿದ್ರನ್ತು ತ್ವಣಿ ಮೇರುಕುಂಜಂ ಜಗಾಮ" ಮಾಘಂ ೧೮-೬೦ | 2. ಒಬ್ಬ ಯಾದವ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ತಂದೆಯ ತಂದೆ (ಪಿತಾಮಹ), ವಸುದೇವನ ತಂದೆ. 3. ಸೂರ್ಯ. "ಸಮಗಿರಣಶೂರಾವಂಶುಮಾನಂಶುಮಾಲಿ" ತ್ರಿಕಾಣ್ಕಂ | 4. ಸಿಂಹ. 5. ಚಿತ್ರಕವೃಕ್ಷ. 6. ಸಾಲವೃಕ್ಷ. 7. ಭಟ, ಯೋಧ. 8. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 9. ಭಲ್ಲೂಕ, ಕರಡಿ. 10. ಕುಕ್ಕುಟ, ಕೋಳಿ. "ಶೂರೋ ನಾ ಕುಕ್ಕುಟೇ ವೀರೇ" ನಾನಾಶರಂ | 11. ಜಾರ, ಬೇಹಿನವನು. 12. ಕಾಡುಕಡಲೆ. 13. ಲಕುಚವೃಕ್ಷ, ಗಜನಿಂಬೆ ಗಿಡ.

**ಶೂರಣ ಶೂರಣ** (ಪುಂ) ಚೂರಣದ ಗಿಡ. ಶೂರಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಕತಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩) |

**ಶೂರಸೇನ ಶೂರಸೇನ** (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. 2. ಕಾರ್ತವೀರ್ಯಾರ್ಜುನನ ಒಬ್ಬ ಮಗ. ಪರಶುರಾಮನು ಕಾರ್ತವೀರ್ಯನ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲು ಹೋದಾಗ ಇವನು ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಂಡು ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಬದುಕಿಕೊಂಡನು. (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 3. ಒಂದು ದೇಶ. 4. ಈ ದೇಶದ ಜನರು.

**ಶೂರ್ಪ ಶೂರ್ಪ** (ಪುಂ) 1. ಮೊರೆ, ಧಾನ್ಯಗಳನ್ನು ಕೇರಿ ಶುದ್ಧಮಾಡುವ ಒಂದು ಸಾಧನ. ಶೂರ್ಪಯತಿ—ಶೂರ್ಪ (ಮಾನೆ) + ಪಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ವಿಸೃಜ್ಯ ಶೂರ್ಪವಹೋಷಾನ್ ಗುಣಾನ್ ಗೃಹ್ಣಂತಿ ಸಾಧವ:" | 2. ಎರಡು ದ್ರೋಣಗಳ ಅಳತೆ, ನಾಲ್ಕು ಕೊಳೆಗಳ ಅಳತೆ.

**ಶೂರ್ಪಕರ್ಣ ಶೂರ್ಪಕರ್ಣ** (ಪುಂ) 1. ಗಜ, ಆನೆ. ಶೂರ್ಪಾವಿವ ಕರ್ಣಾವಿಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಮೊರೆದಂತೆ ಕಿವಿಗಳುಳ್ಳವನು.

**ಶೂರ್ಪಕಾರಾತಿ ಶೂರ್ಪಕಾರಾತಿ** (ಪುಂ) ಶೂರ್ಪಕನೆಂಬ ಅಸುರನಿಗೆ ಶತ್ರುವಾದ ಕಾಮದೇವ. ಶೂರ್ಪಕಸ್ಯಾರಾತಿ: | -ಅರಿ: -ಅರಿ:

**ಶೂರ್ಪಣಾ ಶೂರ್ಪಣಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾವಣನ ತಂಗಿ. ಶೂರ್ಪ ಇವ ನಳಾ ಅಪ್ಪಾ:— ಣತ್ವಮ್ (೮-೪-೩) | ಇವಳು ವಿಶ್ವವಸ್ತು ನಿಂದ ಕೈಕಸಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದಳು. ರಾವಣ ಕುಂಭಕರ್ಣ ವಿಭೀಷಣರು ಇವಳ ಸಹೋದರರು. ಶ್ರೀರಾಮನು ವನವಾಸದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಇವಳು ಸೀತೆಯನ್ನು ಪಿಡಿಸಿತೊಡಗಲು ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ಇವಳ ಕರ್ಣ ಮತ್ತು ನಾಸಿಕೆ



ಗಳನ್ನು ಕೊಯ್ದನು. ಇದರಿಂದ ಕುದ್ಡಳಾದ ಇವಳು  
ಖರದೊಪ್ಪಣಾದಿಗಳನ್ನು ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ಕಳುಹಿಸಲು  
ಅವರೂ ಶ್ರೀರಾಮನಿಂದ ಹತರಾದರು. ಇವರು ಮಾಡಿದ  
ವಿಷಯವನ್ನು ರಾವಣನಿಗೆ ತಿಳಿಸಲು ರಾವಣನು ಬಂದು  
ಸೀತಾಪಹಾರ ಮಾಡಿದನು.

ಶೃಂಗಿ ಶೂರ್ಪಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚಿಕ್ಕ ಮೊರ, ಸಣ್ಣ ಮೊರ. ಶೃಂಗಿ  
ಗೌರಾಂ "ಕಿಂ" (೪-೧-೪೧) ।

ಶೃಂಗಿ ಶೂರ್ಪಿ (ಪುಂ) ಲೋಹದ ಪ್ರತಿಮೆ, ಕಬ್ಬಿಣದ  
ವಿಗ್ರಹ.

ಶೃಂಗಿ ಶೂರ್ಪಿ, -ಮಿ -ಮಿರ್ಪಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲೋಹದ  
ಪ್ರತಿಮೆ, ಕಬ್ಬಿಣದ ವಿಗ್ರಹ.

ಶೃಂಗಿಕಾ ಶೂರ್ಪಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲೋಹದ ವಿಗ್ರಹ,  
ಕಬ್ಬಿಣದ ಪ್ರತಿಮೆ.

ಶೃಂಗಿ ಶೂಲ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಆಯುಧ, ಮೊನಚಾಗಿರುವ  
ಒಂದು ಕಬ್ಬಿಣದ ಆಸ್ತ್ರ. ಶೃಂಗಿ (ಕುಜಾಯಾಮ್) "ಕ:"  
(೩-೧-೧೩೪) । "ಶೃಂಗಿಪರಶುಶರಚಾಪಮೃತೆ:" ಕಿರಾಂ  
೧೨-೪೩ । 2. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. 3. ಯಾತನೆ, ನೋವು.  
4. ಪರಮೇಶ್ವರನ ಚೂಪಾದ ಮೂರು ಕವಲಿನ ಆಯುಧ,  
ತ್ರಿಶೂಲ. 5. ಮರಣದಂಡನೆಗೆ ಗುರಿಯಾಗಿರುವ  
ಅಪರಾಧಿಯನ್ನು ಏರಿಸುವ ದಸಿ, -ಮೊನಚಾದ ತುದಿ  
ಯುಳ್ಳ ಕಬ್ಬಿಣದ ಕಂಬ. "ಇಮಗಾನಶೂಲಸ್ಯ ನ ಯುಪಸ-  
ತ್ಕಿಯಾ" ಕುಮಾಂ ೪-೭೩ । 6. ದ್ವಜ, ಪತಾಕೆ,  
ಬಾವುಟ. 7. ವಿಷ್ಣುಂಭ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೈಳು  
ಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ ಒಂಬತ್ತನೆಯ ಯೋಗ. 8. ಮೃತ್ಯು,  
ಮರಣ. "ಶೂಲೋಸ್ತ್ರೀ ರೋಗ ಆಯುಧೇ । ಮೃತ್ಯುಕೇತನಯೋಗೇ"  
ಮೇದಿಂ ।

ಶೃಂಗಿಕ ಶೂಲಿಕ (ಪುಂ) ತುಂಬಾಟದ ಕುದುರೆ, ಸ್ವಾಧೀನಕ್ಕೆ  
ಬಾರದ ಕುದುರೆ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿದ್ದಲ್ಪಡದ ಕುದುರೆ. ಶೃಂಗಿ ಇವ  
"ಕನ್" (೪-೩-೧೭) । "ವಿನಿತಸ್ತು ಸಾಧುವಾಹೋ ದುರ್ವಿನಿತಸ್ತು  
ಶೃಂಗಿಕ:" ಹೇಮಂ ।

ಶೃಂಗಿಪ್ರಿಯ ಶೂಲಗ್ರಂಥಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉದ್ದವಾಗಿ ಬೆಳೆಯುವ  
ಗಂಗೆ.

ಶೃಂಗಿಪ್ರಿಯ ಶೂಲದ್ವಿಷ್ (ಪುಂ) ಹಿಂಗು. ಶೃಂಗಿಪ್ರಿಯ ದ್ವಿಷ್ ।

ಶೃಂಗಿಪ್ರಿಯ ಶೂಲಧನ್ವನ್, -ಧರ -ಧರ, -ಧಾರಿನ್  
-ಧಾರಿನ್ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಶೃಂಗಿ ಧನ್ವನ್ಯಸ್ಯ,  
ಶೃಂಗಿಪ್ರಿಯ ಧರ:, ಶೃಂಗಿ ಧರತಿ -ಧನ್ (ಧಾರಣೆ) ಣಿನಿರ್ವಾ ।

ಶೃಂಗಿಪ್ರಿಯ ಶೂಲಧಾರಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ,  
ಪಾರ್ವತಿ.

ಶೃಂಗಿಪ್ರಿಯ ಶೂಲಪಾಣಿ (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ. ಶೃಂಗಿ ಪಾಣಿ  
ಯಸ್ಯ । "ಅಧಿಗತವಲಿಮ್ನ: ಶೃಂಗಿಪಾಣೇರಭಿಖ್ಯಾಮ್" ಮಾಧಂ  
೪-೬೪ ।

ಶೃಂಗಿಪ್ರಿಯ ಶೂಲಭೃತ್ (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ. ಶೃಂಗಿ ಬಿಭರ್ತಿ  
-ಛುಭೃತ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋ:) "ಕಿವಿಪ್" (೩-೨-೭೬) ।  
"ತತೋ ಗಣೈ: ಶೃಂಗಿಪ್ರಿಯ: ಪುರೋಗೇರದೀರಿತೋ ಮಜ್ಜಲತುರ್ಯಧೋ:"  
ಕುಮಾಂ ೭-೪೦ ।

ಶೃಂಗಿಪ್ರಿಯ ಶೂಲಶತ್ರು (ಪುಂ) ಎರಡು ವೃಕ್ಷ, ಹರಳು ಗಿಡ.  
ಶೃಂಗಿಪ್ರಿಯ ಶೂಲಹೃತ್ (ಪುಂ) ಹಿಂಗು. ಶೃಂಗಿ ಹರತಿ-ಹೃತ್  
(ಹರಣೆ) "ಕಿವಿಪ್" (೩-೨-೭೬) ।

ಶೃಂಗಿಪ್ರಿಯ ಶೂಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೇಶ್ಯ, ಸೂಳೆ. 2. ಅಪರಾಧಿ  
ಯನ್ನು ವಧೆಗಾಗಿ ಏರಿಸುವ ಮೊನಚಾದ ತುದಿಯುಳ್ಳ  
ಕಬ್ಬಿಣದ ಕಂಬ. "ಶೂಲಾ ತು ಪನ್ಯಸ್ತ್ರೀ ವಧಹೇತುಶ್ಚ ಕೀಲಕ:"  
ಹೇಮಂ ।

ಶೃಂಗಿಪ್ರಿಯ ಶೂಲಾಕೃತ (ವಿಂ) ಸಲಾಕೆಗೆ ಚುಚ್ಚಿ ಬೇಯಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ ಮಾಂಸ ಮೊದಲಾದುದು. ಶೂಲಾ ಕರೋತಿ ಛು ಕೃತ್  
(ಕರಣೆ) "ಡಾಕ್" (೪-೪-೬೪) । "ಶೂಲಾಕೃತಂ ಭಟಿಶ್ಚ ಚ  
ಶೂಲಯಮ್" ಅಮಂ ।

ಶೃಂಗಿಪ್ರಿಯ ಶೂಲಿಕ (ಪುಂ) 1. ಮೊಲ. (ನಂ) 2. ಶೂಲ  
ದಲ್ಲಿ ಬೇಯಿಸಿದ ಮಾಂಸ. (ವಿಂ) 3. ಶೂಲವನ್ನು  
ಹೊಂದಿರುವ, ಶೂಲವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ.

ಶೃಂಗಿಪ್ರಿಯ ಶೂಲಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ.  
ಶೂಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) । "ತೇ ಹಿಮಾಲಯ-  
ಮಾಮನ್ಯ ಪುನ: ಪ್ರಾಪ್ಯ ಚ ಶೂಲಿನಮ್ । ಸಿದ್ಧಂ ಚಾಸ್ಮಿ ನಿವೇಶ್ಯಾಶ್ಚ  
ತದ್ವಿಸೃಷ್ಟಾ: ಸಮುತ್ಥಯು:" ಕುಮಾಂ ೬-೯೪ । 2. ಶಶ, ಮೊಲ.  
(ವಿಂ) 3. ಶೂಲವನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವವನು. "ದುರ್ಜಯೋ  
ಲವಣ: ಶೂಲೀ ವಿಶೂಲ: ಪ್ರಾರ್ಥಯಾಮಿತಿ" ರಘುಂ ೧೪-೪ ।  
4. ಶೂಲರೋಗದಿಂದ ನರಳುವವನು.

ಶೃಂಗಿಪ್ರಿಯ ಶೂಲೈ (ವಿಂ) ಕಬ್ಬಿಣದ ಸಲಾಕೆಗೆ ಚುಚ್ಚಿ ಬೇಯಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ ಮಾಂಸ ಮುಂತಾದುದು. ಶೂಲೈ ಸಂಸ್ಕೃತಮ್ - ಶೂಲ  
"ಯತ್" (೪-೨-೧೭) । "ಅನಿಶತವೇಲಂ ಶೂಲಯಾಮಸಮುಪಿಷ್ಠ  
ಆಹಾರೋ ಭುಜ್ಯತೇ" ಶಾಕುಂ ೨ ।

ಶೃಂಗಿಪ್ರಿಯ ಶೃಂಗಾಲ (ಪುಂ) 1. ಜಂಬುಕ, ನರಿ. ಸೃಜತಿ ಮಾಯಾಮ್  
-ಸೃಜ(ವಿಸರ್ಗ) "ಕಾಲನ್" ಬಾಹುಂ । ಪೃಷಂ । 2. ಮಂಚಕ,  
ಮೋಸಗಾರ. 3. ಒಬ್ಬ ದೈತ್ಯ. 4. ವಾಸುದೇವ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ.  
"ಶೃಂಗಾಲೋ ವಶ್ವಕೇ ದೇವಭೇದೇ ನಾ ಡಮರೇ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ ।

ಶೃಂಗಿಪ್ರಿಯ ಶೃಂಗಾಲಕೋಲಿ (ಪುಂ) ಬದರಿ ವೃಕ್ಷ, ಎಲಚಿ  
ಮರ. ಶೃಂಗಾಲಪ್ರಿಯ: ಕೋಲಿ: ಯಸ್ಯ ।



ಶೃಗಾಲಪದ್ಧಿ ಶೃಗಾಲಪಂಚೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೊಳವಳೆ ಗಿಡ.  
ಶೃಗಾಲಜಂಬು ಶೃಗಾಲಜಂಬೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೋಡಂಬಿ.  
2. ಅಡಕಾಯಿ.

ಶೃಗಾಲಿಕಾ ಶೃಗಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ನರಿ. 2. ಹೆದರಿ  
ಹಿಡುವುದು. "ಶೃಗಾಲಿಕಾ ಶಿವಾಯಾ ಸ್ಯಾತ್ ತ್ರಾಸಾದಪಿ  
ಪಲಾಯನೇ" ಮೇದಿಂ.

ಶೃಗಾಲಿ ಶೃಗಾಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆದರಿ ಹಿಡಿದುಹೋಗುವುದು.  
2. ಕೊಳವಳೆ ಗಿಡ. 3. ಹೆಣ್ಣು ನರಿ. 4. ನೆಲಗುಂಬಳ.  
"ಶೃಗಾಲೋ ದಾನವೇ ಕೇರೌ ಶೃಗಾಲಿ ಸ್ಯಾದುಪ್ಪಲವೇ" ಹೇಮಂ.

ಶೃಂಗಲ ಶೃಂಗಲ, -ಲಾ -ಲಾ (ತ್ರಿಂ) 1. ಸರಪಳೆ.  
ಶೃಂಗಂ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯಂ ಖಲತಿ - ಖಲ (ಸಂಚಯೇ) "ಅನ್"  
(೩-೧-೧೩೪). "ಅನ್ಯೇರಪಾಯತಂ ನೇಹುರ್ವರಾಶೃಂಗಲಾದಿಮಿ:"  
ಮೇದಿಂ ೧-೧೦. 2. ಅನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟಿಹಾಕುವ ಸರಪಳೆ.  
"ಶಯ್ಯಾಂ ಜಹತ್ಯುಭಯಪಕ್ಷವಿನೀತಿನಿಧ್ರಾ: ಸ್ತಮ್ಬೇರಮಾ ಮುಖರ-  
ಶೃಂಗಲಕರ್ಪಿಣಸ್ತೇ" ರಘುಂ ೫-೭೨. 3. ಪುರುಷರ  
ನಡುಕಟ್ಟು. "ಶೃಂಗಲಾ ಪುಂಕಟೀವಸ್ತ್ರಬಂಧೇ ಚ ನಿಗಡೇ  
ತ್ರಿಪು" ಮೇದಿಂ. 4. ಬಂಧಿಸುವ ಸರಪಳೆ, ಬೇಡಿಯ  
ಸರಪಳೆ. 5. ಬಂಧನ. ಬಿಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಕಷ್ಟವಾದ  
ಪರಿಸ್ಥಿತಿ.

ಶೃಂಗಲಕ ಶೃಂಗಲಕ (ಪುಂ) 1. ಮರದ ಕಾಲ್ಕಟ್ಟಿನಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ಬಂಟಿಯ ಮರಿ. ಶೃಂಗಲೇನ ಬಡ: - ಶೃಂಗಲ  
ಬನ್ವನಮಸ್ಯ ಇತಿ ವಾ ಶೃಂಗಲ "ಕನ್" (೫-೨-೭೯).  
"ತೀಗ್ರೋತ್ಥಿತಾಸ್ತಾವದಸಹರಂಹಸೌ ವಿಶೃಂಗಲಂ ಶೃಂಗಲಕಾ:  
ಪ್ರತಸ್ಥಿರೇ" ಮಾಧಂ ೧೨-೭. 2. ಉಪ್ಪು, ಬಂಟಿ. 3.  
ಸರಪಳೆ. ಶೃಂಗಲ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್".

ಶೃಂಗಲಿತ ಶೃಂಗಲಿತ (ವಿಂ) ಸರಪಳೆಯಿಂದ ಕಟ್ಟಿರುವ.  
ಶೃಂಗಲಾ ಅಸ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತಚ್" (೫-೨-೩೬).

ಶೃಂಗಲಿ ಶೃಂಗಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೊಳವಳೆ ಗಿಡ.

ಶೃಂಗ ಶೃಂಗ (ಪುಂ) 1. ಹಕ್ಕಿ ಸಿಕ್ಕಿ ಗಿಡ. ಶೃಂಗಾತಿ - ಶೃ  
(ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಗನ್" ನುಡ್ ಹಸ್ವಶ್ಚ (೩೦ ೧-೧೨೬).  
(ನಂ) 2. ಶಿಖರ, ಪರ್ವತದ ತುದಿ. "ಮುಡೇ ಮುರಾರೇರಮರ:  
ಮುಮೇರಾನೀಯ ಯಸ್ಯೋಪಚಿತಸ್ಯ ಶೃಂಗೈ:" ಮಾಧಂ ೪-೧೦.  
3. ವಿಷಾಣ, ಕೊಂಬು. "ಮೃತ್ಪಿಂಡಶೇಖರೀತಕೋಟಿಮಿರಧಂ-  
ಚಂದ್ರಂ ಶೃಂಗೈ: ಶಿಖ್ರಾಗ್ರಗತಲಕ್ಷಮಮಲಂ ಹಸದ್ವಿ:" ಮಾಧಂ  
೫-೬೩. 4. ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು. 5. ಪ್ರಭುತ್ವ, ಅಳಕೆ,  
ಬಡೆತನ. "ಶೃಂಗಂ ಸ ದೃಷ್ಟವಿನಯಾಧಿಹೃತ: ಪರೇಷಾಮತ್ಯುಚ್ಚಿತಂ  
ನ ಮಮೃಷೇ ನ ತು ದೀರ್ಘಮಾಯು:" ರಘುಂ ೧-೬೨. 6. ಸಾನು  
ಪ್ರದೇಶ, ಪರ್ವತದ ಸಮಭೂಮಿ. "ಗರ್ಜಾರವೇವಿಧದಯ-

ಶೃವನೇ.ಧರಾಣಾಂ ಶೃಂಗಾಣಿ ಮೇಧನಿವಹೌ ಧನಮುಜ್ಜಗಾಮ" ಕುಮಾಂ  
೧೭-೪೧. 7. ಉಪ್ಪರಿಗೆ ಮನೆಯ ತುದಿಯ ಭಾಗ,  
ಮನೆಯ ಮೇಲೆ ನಿರ್ಮಿಸುವ ಗೋಪುರ. 8. ಚಂದ್ರನ  
ಕೋಡು, ಚಂದ್ರನ ಮೊನೆಯಾದ ತುದಿ. (ಚಂದ್ರನ  
ಅರ್ಧ ಅಕ್ಷತಿಗಿಂತಲೂ ಕಡಮೆಯ ಅಕ್ಷತಿಯಲ್ಲಿ ಈ ಶೃಂಗ  
ಗಳನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು.) 9. ಪಿಚ್ಚಾರಿ, ಬೇರ್ಕೊಳವೆ.  
"ವರ್ಣೋದಕ: ಕಾಶ್ಚನಶೃಂಗಮುಕ್ತೇಸ್ತಮಾಯತಾಶ್ಚ: ಪ್ರಣಯಾ-  
ದಸಿವನ್" ರಘುಂ ೧೬-೭೦. 10. ಪ್ರಾಧಾನ್ಯ, ಉತ್ಕರ್ಷ.  
"ಶೃಂಗಂ ಪ್ರಭುತ್ವೇ ಶಿಖರೇ ಚಿಹ್ನೇ ಕ್ರಿಡಾಮ್ಬುಯನ್ತ್ರಕೇ. ವಿಷಾಣೋ-  
ತ್ಕರ್ಷಯೋಶ್ಚಾಶ್ಚ ಶೃಂಗ: ಸ್ಯಾತ್ ಕೂರ್ವಶೀರ್ಷಕೇ" ಮೇದಿಂ. 11.  
ನೀರಿನ ಬುಗ್ಗೆ, ಚಿಲುಮೆ. 12. ಉದ್ವೇಗಭಾಗ, ಮೇಲು  
ಭಾಗ. "ವಿಮಾನಶೃಂಗಾಪ್ಯವಗಾಹಮಾನ: ಶಶಂಸ ಸೇವಾವಸರಂ  
ಸುರೇಮ್ಯ:" ಕುಮಾಂ ೭-೪೦. 13. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ, ತಾವರೆ.  
14. ಅಗ್ರಭಾಗ, ತುದಿ. "ಅಥ ಸ ಲಲಿತಯೋಷಿಃಭೂಲತಾ-  
ಚಾಶೃಂಗಂ ರತಿವಲಯಪದಾಙ್ಕೇ ಚಾಪಮಾಸಜ್ಯ ಕಂಠೇ" ಕುಮಾಂ  
೨-೬೪. 15. ಸ್ತನ, ಪಯೋಧರ. "ಕಿಂ ಸಮೃತಂ ರುಚಿರಯೋ-  
ದ್ವಿಜಶೃಂಗಯೋಸ್ತೇ ಮಧ್ಯೇ ಕೃಶೌ ವಹಸಿ ತತ್ರ ದೃಶಿ:ಶ್ರಿತಾ  
ಮೇ" ಭಾಗಂ. 16. ಕಾಮೋದ್ರೇಕ, ಅತಿಶಯವಾದ  
ಪ್ರೇಮ. "ಶೃಂಗಂ ಹಿ ಮನ್ಮಥೋದ್ವೇದಸ್ತದಾಗಮನಹೇತುಕ:"  
ಸಾಂ ೬೦.

ಶೃಂಗಕ ಶೃಂಗಕ (ಪುಂ) 1. ಹಕ್ಕಿ ಸಿಕ್ಕಿ ಗಿಡ. 2. ಕೊಂಬು.  
3. ಅಂಬುಯಂತ್ರ, ಪಿಚ್ಚಾರಿ, ಬೇರ್ಕೊಳವೆ. "ಮಧುಮತ್ತ  
ಕಾಮಿನೀಜನಸವಯಂಗ್ರಾಹ ಗೃಹೋತಶೃಂಗಕಜಲಪ್ರಹಾರನೃತ್ಯಗ್ರಾಗರಜನ-  
ಜನಿತಕಾಂತುಹಲಸ್ಯ" ರತ್ನಾಂ ೧. 4. ಚಂದ್ರನ ಕೋಡು,  
ಎಳೆಯ ಚಂದ್ರನ ಮೊನೆಯಾದ ತುದಿ.

ಶೃಂಗಬೇರ ಶೃಂಗಬೇರ (ನಂ) 1. ಹಸಿಶುಂಠಿ. ಶೃಂಗಮಿವ  
ಬೇರಂ ಶರೀರಮಸ್ಯ. "ಆದ್ರಂಕಂ ಶೃಂಗಬೇರಂ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ.  
2. ಬಂದು ಪಟ್ಟಣ, ಶೃಂಗಬೇರಪುರ, ಗುಹನ ರಾಜಧಾನಿ.

ಶೃಂಗಬೇರಕ ಶೃಂಗಬೇರಕ (ನಂ) ಹಸಿಶುಂಠಿ. ಶೃಂಗಬೇರ  
ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್".

ಶೃಂಗವತ್ ಶೃಂಗವತ್ (ಪುಂ) 1. ಬಂದು ಪರ್ವತ. (ವಿಂ)  
2. ಶಿಖರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಶೃಂಗಾಪ್ಯಸ್ಯ ಸಂತಿ "ಮತುಪ್"  
(೫-೨-೯೪).

ಶೃಂಗಾಟ ಶೃಂಗಾಟಿ (ಪುಂ) 1. ಬಂದು ಪರ್ವತ. (ನಂ)  
2. ನಾಲ್ಕು ರಸ್ತೆಗಳು ಕೂಡುವ ಚೌಕ.

ಶೃಂಗಾಟಕ ಶೃಂಗಾಟಕ (ನಂ) 1. ನಾಲ್ಕು ರಸ್ತೆಗಳು  
ಕೂಡುವ ಸ್ಥಾನ (ಚೌಕ). 2. ಕುಬ್ಜಕ ವೃಕ್ಷ. (ಪುಂ)  
3. ಮೂರು ಶಿಖರಗಳುಳ್ಳ ಪರ್ವತ.



ಶೃಂಗಾರ ಶೃಂಗಾರ (ಪುಂ) 1. ಸವರಸಗಳಲ್ಲೊಂದು ರಸ. ಶೃಂಗ ಕಾಮೋದ್ರೇಕಮುಚ್ಛತಿ—ಶ್ರು (ಗತೌ) “ಅಞ್” (೩-೨-೧)। ಶೃಂಗ ಕಾಮೋದ್ರೇಕಮಿರ್ಯತಿ—ಶ್ರು (ಗತೌ) “ಅಞ್” (೩-೨-೧) ಇತಿ ವಾ। ಲಕ್ಷಣ: “ಪುಂ: ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಸ್ತ್ರೀಯಾ: ಪುಂಸಿ ಸಂಯೋಗಂ ಪ್ರತಿ ಯಾ ಸ್ಪೃಹಾ। ಸ ಶೃಂಗಾರ ಇತಿ ಕ್ವಾತೌ ರತಿಕ್ರೀಡಾದಿಕಾರಣಮ್”। “ಶೃಂಗಂ ಹಿ ಮನ್ಮಯೋದ್ರೇಕಸ್ತದಾಗಮನಹೇತುಕ:। ತತ್ಸಮಪ್ರಕೃತಿಪ್ರಾಯೋ ರಸ: ಶೃಂಗಾರ ಇವ್ಯತೇ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೮೩। ಶೃಂಗಾರರಸಕ್ಕೆ ದಕ್ಷಿಣಾದಿ ನಾಯಕರು ಮತ್ತು ಉತ್ತಮನಾಯಕಿಯರು ಅಲಂಕರವಿಭಾವ. ಚಂದ್ರ ಸ್ವರ್ಗ ಚಂದನಾದಿಗಳು ಉದ್ದೀಪನವಿಭಾವ. ಭ್ರೂವಿಕ್ಷೇಪ ಕಟಾಕ್ಷ ಚುಂಬನ ಮೊದಲಾದುವು ಅನುಭಾವ ಗಳು. ಲಜ್ಜೆ ಹಾಸ ಮೊದಲಾದುವು ವ್ಯಭಿಚಾರಿಭಾವ ಗಳು. ಈ ವಿಭಾವಾನುಭಾವವ್ಯಭಿಚಾರಿಭಾವಗಳಿಂದ ಪರಿಪುಷ್ಪವಾದ ರತಿ (ಸ್ಥಾಯಿ)ಯು ಶೃಂಗಾರರಸತ್ವ ವನ್ನು ಹೊಂದುವುದು. “ಆಲಂಬನಂ ನಾಯಿಕಾ: ಸ್ಯು: ದಕ್ಷಿಣಾಘ್ರಾಶ್ಚ ನಾಯಕಾ:। ಚಂದ್ರಚಂದನರೋಲಮ್ಬರತಾಘ್ರದೀಪನಂ ಮತಮ್। ಭ್ರೂವಿಕ್ಷೇಪಕಟಾಕ್ಷಾದಿರನುಭಾವ: ಪ್ರಕೀರ್ತಿತ:। ತ್ಯಕ್ತವೃ-  
ತ್ತಮರಣಾಲಸ್ಯಜುಗುಪ್ಸಾವ್ಯಭಿಚಾರಿಣ:। ಸ್ಥಾಯಿಭಾವೋ ರತಿ: ಕ್ಷಾಮವರ್ಣೋಪ್ಯ ವಿಷ್ಣುರೇವತ:” ಸಾಂ ದಂ ೩। ಶೃಂಗಾರ ರಸವು ಸಂಭೋಗ ಮತ್ತು ವಿಪ್ರಲಂಬ ಎಂದೂ ಎರಡು ವಿಧ. ಪರಸ್ಪರ ಅನುರಕ್ತವಿಲಾಸಿಗಳಾದ ನಾಯಕಾ ನಾಯಕರು ದರ್ಶನ ಸ್ಪರ್ಶ ಅನ್ಯೋನ್ಯ ಅಧರಚುಂಬನ ಅಧರಪಾನಾದಿಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸಿ ಭೋಗಪಡುವುದು ಸಂಭೋಗ ಶೃಂಗಾರ. “ದರ್ಶನಸ್ಪರ್ಶನಾದೀನಿ ನಿಷೇವೇತೆ ವಿಲಾಸಿನೌ। ಯತ್ರಾನುರಕ್ತಾವನ್ಯೋನ್ಯಂ ಸಂಭೋಗೋಪ್ಯಮುದಾಹತ:”। ಸಂಖ್ಯಾತುಮಶಕ್ಯತಯಾ ಚುಂಬನಪರೀರ್ಮಣಾದಿಬಹುಭೇದಾತ್। ಅಯಮೇಕ ಉವ ಧೀರ: ಕಥಿತ: ಸಂಭೋಗಶೃಂಗಾರ:” ಸಾಂ ದಂ ೩। [ವಿಪ್ರಲಂಬ ಶೃಂಗಾರಕ್ಕೆ “ವಿಪ್ರಲಂಬ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ಸುರತ, ಸಂಭೋಗ. 3. ಅನೆಯ ದೇಹ ವನ್ನು ಸಂದೂರದಿಂದ ಅಲಂಕರಿಸುವುದು. “ವರ್ಷಂತ: ಶಮಮಾನಯಗ್ನುಪಲಸಚ್ಚೃಂಗಾರಲೇಖಾಯುಧಾ:” ಮಾಘಂ ೧೮-೬೯। (ನಂ) 4. ಲವಂಗ. 5. ಸಂದೂರ. “ಶೃಂಗಾರ: ಸುರತೇ ನಾಟಕರಸೇ ಚ ಗಜಮಂಡನೇ। ನಪುಂಸಕಂ ಲವಣೈಷಿ ನಾಗಸಂಭವಚೂರ್ಣಯೋ:” ಮೇದಿಂ। 6. ವಾಸನೆಯ ಪುಡಿ. 7. ಹಸಿರುಂಟಿ.

ಶೃಂಗಾರಕ ಶೃಂಗಾರಕ (ಪುಂ) 1. ಶೃಂಗಾರ. ಶೃಂಗಾರ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕ:”। (ನಂ) 2. ಸಂದೂರ. (ವಿಂ) 3. ಶೃಂಗಯುಕ್ತವಾದ, ಕೊಂಬುಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. ಶೃಂಗ “ಆರಕನ್” (ವಾಂ ೪-೨-೧೨೧)।

ಶೃಂಗಾರಯೋನಿ ಶೃಂಗಾರಯೋನಿ (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮ ದೇವ. ಶೃಂಗಾರೋ ಯೋನಿರೂಪಿತೀಕಾರಣಂ ಯಸ್ಯ। “ಶೃಂಗಾರ-ಯೋನಿಶರಪತ್ರರೂಪೋ ಮಯೂರ:” ಯಾದಂ ೧೯-೧೦।

ಶೃಂಗಾರಿತ ಶೃಂಗಾರಿತ (ವಿಂ) 1. ಅಲಂಕೃತವಾದ, ಅಲಂಕಾರ ಮಾಡಿರುವ. ಶೃಂಗಾರೋಪ್ಯ ಸಂಜಾತ: “ಇತತ್” (೪-೨-೩೬)। “ಶೃಂಗಾರಿತಾಯತಮಹೇಮಕರಾಮಮಮ್” ಮಾಘಂ ೪-೪೯। 2. ಪ್ರೀತಿಯುಂಟಾಗಿರುವ. ಅನುರಾಗವುಂಟಾಗಿ ರುವ. 3. ಸಂದೂರ ಬಳಿದಿರುವ.

ಶೃಂಗಾರಿನ್ ಶೃಂಗಾರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಗಜ, ಆನೆ. ಶೃಂಗಾರೋ-ಸ್ಯಾಸ್ತಿ — “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪)। 2. ಅಡಕೆಮರ. 3. ಅಲಂಕಾರ, ಶೃಂಗರಿಸುವುದು. 4. ಉಡಿಗೆ, ಉಡುಪು. “ಶೃಂಗಾರೀ ಪುಗಗಜಯೋ: ಸಶೃಂಗಾರಮುಪೇಶಯೋ:” ಮೇದಿಂ। (ವಿಂ) 5. ಅನುರಕ್ತ, ಪ್ರಣಯವಳ್ಳ. 6. ಬಣ್ಣ ಬಳಿದಿರುವ, ಬಣ್ಣ ಕಟ್ಟಿರುವ.

ಶೃಂಗಿ ಶೃಂಗಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. “ಮದಗುರಸ್ಯ ಪ್ರಿಯಾ ಶೃಂಗೀ ಶೃಂಗೀರೀತೀಪಿ ಕುತ್ರಚಿತ್”।

ಶೃಂಗಿಕಾ ಶೃಂಗಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅತಿಬಿಜೆ.

ಶೃಂಗಿಣ ಶೃಂಗಿಣ (ಪುಂ) ಮೇಷ, ಕುರಿ. ಶೃಂಗಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇತತ್” (೪-೨-೧೧೪)।

ಶೃಂಗಿಣಿ ಶೃಂಗಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಕ್ಕಳು, ಹಸು. ಶೃಂಗೇ ಸ್ತೋತ್ರಯಾ:।

ಶೃಂಗಿನ್ ಶೃಂಗಿನ್ (ಪುಂ) 1. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. ಶೃಂಗ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪)। 2. ಗಜ, ಆನೆ. 3. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. 4. ಶಮೀಕಯುಕ್ತಿಯ ಪುತ್ರ. (ವಿಂ) 5. ಕೊಂಬು ಗಳುಳ್ಳ. “ನದೀನಾಂ ಶಸ್ತ್ರಪಾಣಿನಾಂ ನಖಿನಾಂ ಶೃಂಗಿಣಾಂ ತಥಾ। ವಿಶ್ವಾಸೋ ನೈವ ಕರ್ತವ್ಯ: ಸ್ತ್ರೀಷು ರಾಜಕುಲೇಷು ಚ”। “ಶೃಂಗೀ ಶೃಂಗೀಯುತೇ ನಾಗೇ ವೃಷಪರ್ವತಯೋರಪಿ” ಮೇದಿಂ।

ಶೃಂಗೀ ಶೃಂಗೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮದ್ದುರವೆಂಬ ಹೆಣ್ಣುಮೀನು. ಶೃಂಗಾತಿ—ಶ್ರು (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಗನ್” ಹ್ರಸ್ವಶ್ಚ (೩ಂ ೧-೧೨೬)। “ಮದಗುರಸ್ಯ ಪ್ರಿಯಾ ಶೃಂಗೀ” ಅಮಂ। 2. ಅಭರಣದ ಸ್ಪರ್ಶ, ಚಿನ್ನ. 3. ಅತಿಬಿಜೆ. 4. ಹೆಣ್ಣು ಹಾಲೆಯೆಂಬ ಒಂದು ಮೂಲಿಕೆ. “ಶೃಂಗಂ ಪ್ರಭುತ್ವೇ ಶಿಖರೇ ಚಿಹ್ನೇ ಕ್ರೀಡಾಮ್ಬಯನ್ತ್ರಕೇ। ವಿಷಾಣೋತ್ಕರ್ಷಯೋಽಪ್ಯ ಶೃಂಗ: ಸ್ಯಾತ್ ಕುಂಚಶಿರಕೇ। ಸ್ತ್ರೀ ವಿಷಾಯಾಂ ಸ್ವರ್ಣಮೀನಭೇದಯೋ ಋಷ-ಭೌಷಣೌ” ಮೇದಿಂ।

ಶೃಂಗೀಕನಕ ಶೃಂಗೀಕನಕ (ನಂ) ಅಭರಣದ ಸುಮರ್ಣ, ಒಡವೆಗಾಗಿ ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಿದ ಚಿನ್ನ. ಶೃಂಗೀ ಅಲಂಕಾರಸುವರ್ಣಮ್, ತದೇವ ಕನಕಮ್। “ಅಲಂಕಾರಸುವರ್ಣಂ ಯತ್ ಶೃಂಗೀಕನಕ-ಮಿತ್ಯದ:” ಅಮಂ।



ಶೃಂಗತ್ ಶೃಂಗತ್ (ವಿಂ) ಕೇಳುತ್ತಿರುವ, ಕಿವಿ ಕೊಟ್ಟು  
ಆಲಿಸುತ್ತಿರುವ. ಶ್ರು (ಶ್ರವಣ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।

"ಸ್ತಾನಿ ಶೃವನ್ ವಯಸಾಂ ಗಣೋಜ್ಜೇವಾಸಿತ್ವಮಾಪ ಸ್ಫುಟಮಜ್ಞನಾ-  
ನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೩-೫೫। "ಇತ್ಯೋಷಧಿಪ್ರಸ್ಥವಿಲಾಸಿನೀನಾಂ  
ಶೃವನ್ ಕಥಾ: ಶ್ರುತಸುಖಾಸ್ತಿನೇತ್ರ:" ಕುಮಾರಂ ೭-೬೯।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬)। -ತೀ-ಶೇ.

ಶೃತ ಶೃತ (ವಿಂ) ಹಾಲು ತುಂಬಿ, ಅನ್ನ ಇವುಗಳ ಪಾಕ.  
ಶ್ರಾಯತೇ—ಶ್ರಾ (ಪಾಕ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಪಾಕೇ  
ಕೀರಾಜ್ಯಹವಿಷಾಂ ಶೃತಮ್" ಅಮಂ।

ಶೃಡ ಶೃಡ್ (ವಿಂ) ಮೈಯಿಂದ ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಮಾಯು).

ಶೃಘ ಶೃಘ (ಪುಂ) 1. ಗುದಪ್ರದೇಶ. ಶೃಘ (ಶಬ್ದಕುತ್ಸಾ-  
ಯಾಮ್) "ಕ್ರು:" ಬಾಹುಂ। 2. ಬುದ್ಧಿ.

ಶೃಘ್ ಶೃಘ (ಪುಂ) 1. ಅಪಾನಮಾಯು. ಶೃಘ (ಹಿಸಾಯಾಮ್)  
"ಕ್ರು:" (ತಂ ೧-೧೯)। 2. ಕೇಳುಮಟ್ಟದವನು, ಕೆಳದರ್ಜೆ  
ಯವನು.

ಶೇಖರ ಶೇಖರ (ಪುಂ) 1. ತಲೆಗೆ ಮುಡಿಸಿರುವ ಪುಷ್ಪದ  
ಸರ, ಶಿಖೆಯ ಮೇಲೆ ಮುಡಿಸಿರುವ ಹೂವಿನ ಮಾಲೆ.  
ಶಿಖಿ (ಗತೌ) "ಅರ:" ಬಾಹುಂ। "ನವಕರನಿಕರಣ  
ಸ್ಪಷ್ಟಬನ್ಧುಕಸುನಸ್ತಬಕರಚಿತಮೇತೇ ಶೇಖರಂ ಬಿಭ್ರತೀವ" ಮಾಘಂ  
೧೧-೪೬। 2. ಶಿರೋಭೂಷಣ, ತಲೆಗೆ ಧರಿಸುವ ಒಡವೆ.  
"ಬಭೂವ ಭಸ್ಮೇವ ಸಿತಾಕ್ಷರಾಗ: ಕಪಾಲಮೇವಾಮಲಶೇಖರಶ್ರೀ:"  
ಕುಮಾರಂ ೭-೩೨। 3. ಶೃಂಗ, ಶಿಖರ, ಅಗ್ರಭಾಗ.  
"ತತೋಸ್ತಗಿರಿಶೇಖರಂ ವ್ರಜತಿ ವಾಸರೇಶೋ ಶನೇ:" ಕಥಾಸಂ।  
4. ಮುಕುಟ, ಕಿರೀಟ, ಮುಡಿ. (ನಂ) 5. ಲವಂಗ.  
6. ನುಗ್ಗೆಬೇರು.

ಶೇಖರಿತ ಶೇಖರಿತ (ವಿಂ) 1. ಭೂಷಣವಾಗಿರುವ,  
ಅಲಂಕಾರವುಂಟಾಗಿರುವ. ಶೇಖರೋಜ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತಚ್"  
(೫-೨-೩೬)। "ಮೃತ್ಪಿಂಡಶೇಖರಿತಕೋಟಿಭಿರವಚಂದ್ರಮ್"  
ಮಾಘಂ ೫-೬೩। 2. ಶಿಖರವಾಗಿ ಆಗಿರುವ.

ಶೇಷ ಶೇಷ, -ಫ -ಫ (ಪುಂ) 1 ಶಿಶು, ಪುರುಷನ  
ಜನನೇಂದ್ರಿಯ. ಶೇತೇ ರೇತ:ಪಾತೇ—ಶೇಡ್ (ಸ್ವಪ್ನ) ಪಫೌ  
ಬಾಹುಂ। "ಶೇಫಪುಷ್ಪಲಾಕ್ಷ್ಮಣೇಷು (ವಾಂ ೬-೩-೨೧) ಇತಿ  
ನಿರ್ದೇಶಾತ್। (ವಿಂ) 2. ನಿರ್ದಯ ಸ್ವಭಾವದ.

ಶೇಫಸ್ ಶೇಫಸ್ (ನಂ) ಶಿಶು, ಪುರುಷನ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ.  
ಶೇತೇ ರೇತ:ಪಾತೇ—ಶೇಡ್ (ಸ್ವಪ್ನ) "ಅಸುನ್" ಕುಡಾಗಮಶ್ರು  
(ತಂ ೪-೨೦೦)।

ಶೇಫಾಲಿಕಾ ಶೇಫಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರಿಯ ಲಕ್ಕಿಗಿಡ. ಶೇರತೇ  
ಇತಿ ಶೇಫಾ ನಿರ್ದೇಶಾಲಾ: ತಾದೃಶಾ ಅಲಯೋ ಯತ್ರ—ಸ್ವಾರ್ಥ

"ಕನ್" (೫-೩-೭೫)। "ಶೇಫಾಲಿಕಾ ತು ಸುವಹಾ ನಿಗುಂಢಿ  
ನೀಲಿಕಾ ಚ ಸಾ" ಅಮಂ।

ಶೇಫಾಲಿ ಶೇಫಾಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರಿಯ ಲಕ್ಕಿ ಗಿಡ.

ಶೇಮುಖಿ ಶೇಮುಖೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬುದ್ಧಿ. ಶೇತೇ—ಶೇಡ್ (ಸ್ವಪ್ನ)  
"ವಿಚ್" (೩-೨-೭೫)। ಶೇ: ಮೋಹ:—ಮೋಹಂ ಮುಷ್ಣಾತಿ—ಮುಷ  
(ಸ್ತೇಯ) "ಕ:" (ವಾಂ ೩-೨-೫)। ಗೌರಾಂ "ಜಿಪ್"  
(೪-೧-೪೧)। "ತಾಸಾಂ ತದೇಕೋತ್ಸುಕದರ್ಶನಾನಾಂ ಸಮಾಧಿ-  
ಭಾಜಾಮಿವ ಶೇಮುಖಿಣಾಮ್" ಯಾದಂ ೨೩-೬೧।

ಶೇಲು ಶೇಲು (ಪುಂ) ಚಳ್ಳೆಮರ. ಶಿಲತಿ—ಶಿಲ (ತುಚ್ಛ)  
"ತ:" ಬಾಹುಂ। "ಶೇಲು: ಶಲೇಷ್ಮಾತಕ: ಶೀತ:" ಅಮಂ।

ಶೇವ ಶೇವ (ಪುಂ) 1. ಪುರುಷನ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ, ಲಿಂಗ.  
ಶೇಡ್ (ಸ್ವಪ್ನ) "ವನ್" (ತಂ ೧-೧೫೦)। 2. ಸರ್ಪ.  
(ನಂ) 3. ಸುಖ.

ಶೇವಧಿ ಶೇವಧಿ (ಪುಂ) 1. ನಿಧಿ, ಐಶ್ವರ್ಯ, ಸಂಪತ್ತು.  
ಶತೇಜನೇನ ಶೇವಂ ಸುಖಮ್—ಶೇಡ್ (ಸ್ವಪ್ನ) "ವನ್" (ತಂ  
೧-೧೫೦)। ಶೇವಂ ಖೀಯತೇಽಸ್ಮಿನ್—ಓ ಧಾನ್ "ಕ್ರಿ:"  
(೩-೩-೯೩)। "ಪ್ರೇಯೋ ಮಿತ್ರಂ ಬನ್ಧುತಾ ವಾ ಸಮಗ್ರಾ ಸರ್ವೆ  
ಕಾಮಾ:ಶೇವಧಿರ್ಜೀವಿತಂ ವಾ" ಮಾಲತೀಂ ೬-೧೮। 2. ಕುಬೇರನ  
ನವನಿಧಿಗಳು. "ನಿವಿರ್ನಿ ಶೇವಧಿ:" ಅಮಂ।

ಶೇವಾಲ ಶೇವಾಲ (ನಂ) ಶೈವಾಲ, ಪಾಚಿ. ಶೇತೇ ಜಲೇ—  
ಶೇಡ್ (ಸ್ವಪ್ನ) "ಬಾಲನ್" (ತಂ ೪-೩೦)।

ಶೇಷ ಶೇಷ (ಪುಂ) 1. ಬಲರಾಮ, ಸಂಕರ್ಷಣ. ಶೇಷತಿ—  
ಶಿಷ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ನಿಶಮ್ಯ ತಾ:  
ಶೇಷಗವೀರಭಿಘಾತುಮಖೋಷಜ:" ಮಾಘಂ ೨-೬೮। ["ಬಲರಾಮ"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. 2. ನಾಗರಾಜ, ಸರ್ಪರಾಜ, ಅನಂತ  
ನೆಂಬ ಸರ್ಪಗಳ ಅಧಿಪತಿ, ಆದಿಶೇಷ. ಆದಿಶೇಷನು  
ಕಶ್ಯಪನ ಪತ್ನಿಯಾದ ಕದ್ಮುನಿನಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದನು. ಇವನನ್ನು  
ಕಂಡು ಅಸೂಯೆಪಡುತ್ತಿದ್ದ ಇವನ ಸಹೋದರರೊಡನೆ  
ಇರಲು ಇಷ್ಟಪಡದೆ ಬ್ರಹ್ಮನನ್ನು ತಪಸ್ಸಿನಿಂದ ಮೆಚ್ಚಿಸಿ  
ಧರ್ಮಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿರುವ ವರವನ್ನು ಪಡೆದನು. ಬ್ರಹ್ಮನ  
ಆದೇಶದಂತೆ ಆದಿಶೇಷನು ತನ್ನ ಸಹಸ್ರ ಭಣೆಗಳಿಂದ ಸಕಲ  
ಭೂಮಂಡಲದ ಭಾರವನ್ನೂ ಹೊತ್ತು ಭೂಮಿಯು  
ಅಚಲವಾಗಿ (ಸ್ಥಿರವಾಗಿ)ರುವಂತೆ ಮಾಡಿ ಪ್ರಜೆಗಳಿಗೆ  
ಉಪಕಾರ ಮಾಡಿದನು. ಆದಿಶೇಷನು ಮಹಾವಿಷ್ಣುವನ್ನು  
ಶಯ್ಯೆ ಮತ್ತು ಆಸನರೂಪದಿಂದ ಸೇವಿಸುತ್ತಿರುವನು.  
"एष एव वरो देव काङ्क्षितो मे पितामह। धर्मं च  
रमतां बुद्धिः शमे तपसि चेश्वर॥ प्रीतोऽस्म्यनेन ते शेष  
दमेन च शमेन च। त्वया त्विदं वचः कार्यं मन्त्रियोगा-



ತ್ಪ್ರಜಾಹಿತಮ್ ॥ ಇಮಾಂ ಮಹಿಂ ಶಿಲ್ಪನೋಪಪನ್ನಾಂ ಸಸಾಗರಗ್ರಾಮ-  
ವಿಹಾರಪತ್ತನಾಮ್ । ತ್ವಂ ಶಿಷ್ಯ ಸಮ್ಯಕ್ ಚಲಿತಾಂ ಯಥಾವತ್  
ಸಂಗೃಹ್ಯ ತಿಷ್ಠತ್ವ ಯಥಾಸ್ವಲಾ ಸ್ಯಾತ್ ” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೩೬ ।

“ಶಿಷ್ಯಃ ಸದೇವಾಹಿತಮುಮಿಮಾರಃ ಷಷ್ಠಾಂಶವೃತ್ತೇರಪಿ ಧರ್ಮಂ ಏಷಃ”  
ಶಾಕುಂ ೪-೪ । 3. ಗಜ, ಆನೆ. 4. ವಧೆ, ಕೊಲ್ಲುವುದು.  
ಶಿಷ್ಯ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) “ಘನ್” (೩-೩-೧೮) । 5. ಉಳಕೆ,  
ಸಿಲ್ಕು, ಉಳಿದದ್ದು. “ಋಣಶಿಷ್ಯೋಽಗ್ನಿಶಿಷ್ಯಶ್ಚ ವ್ಯಾಧಿಶಿಷ್ಯ-  
ಸ್ತಥೇವ ಚ । ಪುನಶ್ಚ ವರ್ಧತೇ ಯಸ್ಮಾತ್ ತಸ್ಮಾಚ್ಛೇಷಂ ನ ಕಾರಯತ್”  
ಚಾಣಕ್ಯಃ । 6. ಖರ್ಚಿಗಿಂತ ಅಧಿಕವಾಗಿರುವ ಲಾಭಾಂಶ,  
ಅವಶ್ಯವಾದ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದುದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚು  
ದಾದು. 7. ಉಪಯೋಗಿಸಿ ಉಳಿದುದು, ಉಪಯೋಗಿಸಿ  
ಲ್ಪಟ್ಟು ಮಿಕ್ಕಿದ್ದು. 8. ಅವಶ್ಯವಾಗಿರಬೇಕಾದ ಪದದ  
ಕೊರತೆ, ವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ಪೂರ್ಣವಾದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡಲು  
ಇರಬೇಕಾದ ಪದದ ಕೊರತೆ. “ವೃಷ್ಟಿಶಿಷ್ಯೋಽಖಿಲಲೋಕ-  
ಕಾಂತಾ ಸಾನನ್ಯಕಾಂತಾ ಹೃದ್ರಸೀತರಾ ತು” ಇಲ್ಲಿ “ವಸತಿ”  
ಪದವು ಅನುಕ್ತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ “ವಸತೀತಿ ಶಿಷ್ಯಃ”  
ಎಂದು ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕಾರರು ತೋರಿಸಿರುವರು. 9. ಉತ್ತಮ  
ರಾದ ಎಲ್ಲರಿಗಿಂತಲೂ ತಾನು ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲೂ  
ಚಿಕ್ಕವನೆಂದು ಭಾವಿಸುವವನು. 10. ದಾಸ, ಸೇವಕ,  
ಪರಮಾತ್ಮನ ಕೈಂಕರ್ಯ (ಸೇವೆ) ಕ್ಕಾಗಿಯೇ ತಾನು ಇರು-  
ವುದು ಎಂದು ತಿಳಿದಿರುವವನು, ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲಿ ಅತಿಶಯ  
(ಹಿರಿಮೆ) ವನ್ನು ತೋರುವ ಸ್ವರೂಪವುಳ್ಳವನು. 11.  
ಪ್ರಸಾದ. ಶಿಷ್ಯತೆ — ಶಿಷ್ಯ (ಅಸರ್ವೋಪಯೋಗಿ) “ಘನ್”  
(೩-೩-೧೯) । (ವಿಂ) 12. ಹಿಂದೆ ಹೇಳಿರುವುದ  
ಕ್ಕಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದ, ಹೇಳದೆ ಬಿಟ್ಟಿರುವ. उक्तादन्यः  
ಶಿಷ್ಯಃ । ಶಿಷ್ಯೋ ಬಹುವ್ರಿಹಿಃ । ಶಿಷ್ಯಾದಿಭಾಷಾ । 13. ಉಳಿದು  
ನಿಂತಿರುವ. “ಅಪನೀತಶಿರಸ್ತ್ರಾಣಾಃ ಶಿಷ್ಯಾಸ್ತಂ ಶರಣಂ ಯುಃ”  
ರಘುಂ ೪-೬೪ । “ಶಿಷ್ಯೋಽನಂತೇ ವಧೇ ಸೀರಿಣ್ಯುಪಯುಕ್ತೇತರೇಽಪಿ  
ಚ” ಹೇಮಂ ।

ಶಿಷ್ಯತ್ವ ಶೀಷತ್ವ (ನಂ) 1. ಕೈಂಕರ್ಯ, ಪರಮಾತ್ಮನ ಸೇವೆ.  
2. ತನ್ನಲ್ಲಿ ಅಪರತ್ವವನ್ನೂ ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲಿ ಅತಿಶಯ  
ವನ್ನೂ ಪ್ರದರ್ಶಿಸುವ ಸ್ವರೂಪದಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ.  
ಶಿಷ್ಯಸ್ಯ ಭಾವಃ “ತ್ವಃ” (೪-೧-೧೧೯) । 3. ಉಪಕಾರಿ  
ಯಾಗಿರುವಿಕೆ. 4. ಇತರರ ಕಾರ್ಯವೇ ಮುಖ್ಯ ಫಲ  
ವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಇತರರ ಪ್ರಯೋಜನವೇ ಮುಖ್ಯ ಉದ್ದೇಶ  
ವಾಗಿರುವಿಕೆ. 5. ಪಾರಾಧ್ಯ, ಪಾರತಂತ್ರ್ಯವೃತ್ತಿ.  
“ಶಿಷ್ಯತ್ವಮುಪಕಾರಿತ್ವಂ ದ್ರವ್ಯಾದಾವಾಹ ಬಾದರಿಃ । ಪಾರಾಧ್ಯ  
ಶಿಷ್ಯತಾ ತತ್ತ್ವ ಸರ್ವೇಷ್ವಸ್ತೀತಿ ಜಮಿನಿಃ” । “ಶಿಷ್ಯರೀಕೃತ-  
ಭೂಮಾರಃ ಶಿಷ್ಯತ್ವೇನ ವಿಭೋಃ ಸ್ಥಿತಃ” ಯಾದಂ ೨೨-೩ ।

ಶಿಷ್ಯಭೋಜನ ಶೀಷಭೋಜನ (ನಂ) ಹಿರಿಯರಿಗೆ ಊಟ  
ಮಾಡಿಸಿ ಮಿಕ್ಕ ಅನ್ನವನ್ನು ಭುಜಿಸುವುದು, ಉಳಿದ ಅನ್ನದ  
ಊಟ.

ಶಿಷ್ಯಶಾಯಿನ್ ಶೀಷಶಾಯಿನ್ (ಪುಂ) ಆದಿಶೀಷನ ಮೇಲೆ  
ಪವಡಿಸಿರುವ ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಶಿಷ್ಯ ಶೇತೆ — ಶಿಡ್ (ಸ್ವಪ್ನ)  
“ಗಿಣಿಃ” (೩-೨-೭೮) ।

ಶಿಷ್ಯ ಶೀಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಅರ್ಪಿಸಿದ ಪುಷ್ಪ  
ಹಾರ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಪ್ರದಾನ, ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ  
ಸಮರ್ಪಿಸಿದ ಹವಿಸ್ಸು ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ವಿನಿಯೋಗ.  
ಶಿಷ್ಯತೆ — ಶಿಷ್ಯ (ಅಸರ್ವೋಪಯೋಗಿ) “ಘನ್” (೩-೩-೧೯) ।  
“ತಥೇತಿ ಶಿಷ್ಯಾಮಿವ ಭರ್ತುರಾಜಾಮ್” ಕುಮಾಂ ೩-೨೨ ।  
“ಶಿಷ್ಯಾಪಟಿಂ ಚರಮಭೂದಸೌ ದಧಾತಿ” ಯಾದಂ ೧೯-೪೩ ।

ಶಿಕ್ಷ ಶಿಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ವೇದಾಂಗವಾದ ಪಾಣಿನಿಯ ಶಿಕ್ಷೆ  
ಯನ್ನು ಅಧ್ಯಯನಮಾಡುವವನು, ವೇದಾಧ್ಯಯನಕ್ಕೆ  
ಮೊದಲು ಸ್ವಪೋಷ್ಣಾರಣೆಯ ಅಭ್ಯಾಸಕ್ಕಾಗಿ ಶಿಕ್ಷೆ  
ಯನ್ನು ಕಲಿಯುವ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ, ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸವನ್ನು  
ಪ್ರಾರಂಭಿಸುವ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ. ಶಿಕ್ಷಾಮರ್ಶಿತೆ — “ಅನ್”  
(೪-೨-೪೯) । “ಶಿಕ್ಷಾಃ ಪ್ರಾಥಮಕಲ್ಪಿಕಾಃ” ಅಮಂ ।  
(ವಿಂ) 2. ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು.  
ಶಿಕ್ಷಾ ಶಿಲಮಸ್ಯ “ಗಃ” (೪-೪-೬೨) ।

ಶಿಕ್ಷಣಿಕ ಶಿಕ್ಷಣಿಕ (ವಿಂ) ಶಿಕ್ಷಣವೇ ಪ್ರಯೋಜನವಾಗಿ  
ರುವ. ಶಿಕ್ಷಣಂ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ — ಶಿಕ್ಷಣ “ಠಕ್”  
(೪-೧-೧೦೯) ।

ಶಿಕ್ಷಣಿಕ ಶಿಕ್ಷಣಿಕ (ಪುಂ) ಅಪಾಮಾರ್ಗ, ಉತ್ತರೇಣ ಗಿಡ.  
ಶಿಕ್ಷಣೇ ಪ್ರಾಯೇಣ ಭವತಿ — “ಠಕ್” (ವಾಂ ೪-೩-೬೦) ।

ಶಿಕ್ಷಣ ಶಿಕ್ಷಣ (ನಂ) ಶಿಕ್ಷಣ, ಚುರುಕು. ಶಿಕ್ಷಣಸ್ಯ  
ಭಾವಃ “ಘನ್” (೪-೧-೧೨೪) ।

ಶಿಕ್ಷಣ ಶಿಕ್ಷಣ (ನಂ) ಚಿಕ್ಕ, ಕುಳಿರು. ಶಿಕ್ಷಣಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಘನ್”  
(೪-೧-೧೨೩) । “ಶಿಕ್ಷಣಂ ಹಿ ಯತ್ಸಾ ಪ್ರಕೃತಿರ್ಜಲಸ್ಯ”  
ರಘುಂ ೪-೪೪ ।

ಶಿಕ್ಷಣ ಶಿಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಸಡಿಲವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಬಿಗಿಯಿಲ್ಲ  
ದಿರುವಿಕೆ. ಶಿಕ್ಷಣಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಘನ್” (೪-೧-೧೨೪) ।  
“ಶಿಕ್ಷಣಮೇತು ಮೇ ಕಾಯಃ ಕೃತಕೃತ್ಯೋಽಸ್ಮಿ ಮಾನಿನಿ” ।  
2. ದೌರ್ಬಲ್ಯ, ಕುಂದು, ನ್ಯೂನತೆ. “ಶಿಕ್ಷಣಮುಚ್ಛತಿ  
ತಮಾಲಕುಚಿಸ್ತ್ರಿಯಾಮಾ” ಯಾದಂ ೧೯-೪೨ । 3. ಅಲಸ್ಯ,  
ಸೋಮಾರಿತನ, ಪಾಲುಮಾರಿಕೆ. 4. ಕಡಮೆಯಾಗಿರುವಿಕೆ.

ಶಿಕ್ಷಣ ಶಿಕ್ಷಣ (ಪುಂ) 1. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಪ್ರಚುರಾಃ ಶಿಕ್ಷಾಃ  
ಸನ್ಯತಃ — “ಅನ್” (ವಾಂ ೪-೨-೧೦೩) । “ಅಧಿರೋಹತಿ



ಗಾಢವಂ ಮಹೇಷೈ ಸಕಲಃ ಸಂಶಯಮಾರೋಹ ಶಿಲಃ" ಕಿರಾಂ ೧೩-೧೬. 2. ಒಂಡೆ, ದೊಡ್ಡ ಶಿಲೆ. (ನಂ) 3. ಒಂದು ಖನಿಜ. 4. ರಸಾಂಜನ. "ಶಿಲೋ ಭೂಮಿತಿ, ಶಿಲಂ ತು ಶಿಲೇಯೇ ತಾತ್ಪರ್ಯಶಿಲಕೇ" ಹೇಮಂ.

ಶಿಲಕ ಶೈಲಕ (ನಂ) 1. ರಸಾಂಜನ. 2. ಒಂದು ಖನಿಜ. ಶಿಲಮೇವ "ಕನ್" ।

ಶಿಲಜ ಶೈಲಜ (ನಂ) 1. ಸಾಂಜ್ರಾಣಿ, ಸುವಾಸನೆಯ ಧೂಪ. ಶಿಲೇ ಪರ್ವತೇ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತಭವಿ) "ಙ:" (೩-೨-೯೭) । 2. ಇಂಗಾಲ.

ಶಿಲಜಾ ಶೈಲಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶೈಲರಾಜನ ಪುತ್ರಿ ಪಾರ್ವತಿ. ಶಿಲೇ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತಭವಿ) "ಙ:" (೩-೨-೯೭) ।

ಶಿಲತನಯಾ ಶೈಲತನಯಾ, -ಪುತ್ರಿ -ಪುತ್ರೀ, -ಸುತಾ -ಸುತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶೈಲಾಧಿಪತಿಯ ಪುತ್ರಿ ಪಾರ್ವತಿ. ಶಿಲಸ್ಯ ತನಯಾ ಪುತ್ರಿ ಸುತಾ ವಾ । "ವಿವೃಣ್ವತೀ ಶಿಲಸುತಾಪಿ ಭಾವಮಜ್ಞಃ ಸ್ಫುರಣಾಲಿಕದಮ್ಬಕಲ್ಪಃ" ಕುಮಾಂ ೩-೬೮ ।

ಶಿಲನಿರ್ಯಾಸ ಶೈಲನಿರ್ಯಾಸ (ಪುಂ) ಸಾಂಜ್ರಾಣಿ, ಸುವಾಸನೆಯ ಧೂಪ.

ಶಿಲರಾಜ ಶೈಲರಾಜ (ಪುಂ) ಹಿಮಾಚಲ. ಶಿಲಾನಾಂ ರಾಜಾ —"ಠಕ್" (೪-೪-೯೧) । "ಮೂರ್ಧನಮಾಲಿ ಕ್ಷಿತಿಧಾರಣೋಚ್ಚ-ಮುಚ್ಚೇಸ್ತರ ವಕ್ಷಯತಿ ಶಿಲರಾಜಃ" ಕುಮಾಂ ೭-೬೮ । -ತನಯಾ -ತನಯಾ, -ಸುತಾ -ಸುತಾ. ಪಾರ್ವತಿ.

ಶಿಲಶಿಬಿರ ಶೈಲಶಿಬಿರ (ನಂ) ಸಮುದ್ರ. ಸಮುದ್ರದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ಪರ್ವತಗಳು ಸೇರಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ಶಿಲಸಾರ ಶೈಲಸಾರ (ವಿಂ) ಪರ್ವತದಂತೆ ಬಲಶಾಲಿಯಾದ. ಶಿಲವತ್ ಸಾರೋ ಯಸ್ಯ । "ಚಿರನಿಯಮಕೃಶೋಽಪಿ ಶಿಲಸಾರಃ ಶಮನಿರತೋಽಪಿ ದುರಾಸದಃ ಪ್ರಕೃತ್ಯಾ" ಕಿರಾಂ ೧೦-೧೪ ।

ಶಿಲಾಪ್ರ ಶೈಲಾಪ್ರ (ನಂ) ಪರ್ವತದ ಶಿಖರ, ಬೆಟ್ಟದ ಉನ್ನತ ಪ್ರದೇಶ. ಶಿಲಸ್ಯಾಗ್ರಮ್ ।

ಶಿಲಾಟ ಶೈಲಾಟ (ಪುಂ) 1. ದೇವಲ, ಜೀವಿಕೆಗಾಗಿ ದೇವಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು, ದೇವಸ್ಥಾನದ ಪರಿಚಾರಕ. 2. ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ ಕಿರಾತ. 3. ಸಿಂಹ. 4. ಶುಭ್ರವಾದ ಗಾಜು. ಶಿಲೇ ಅಟತಿ—ಅಟ (ಗತೀ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ಶಿಲಾಟೋ ದೇವಲೇ ಸಿಂಹೇ ಶುಕ್ಲ-ಕಾಚಕಿರಾತಯೋಃ" ಮೇದಿಂ ।

ಶಿಲಾತ್ಮಜಾ ಶೈಲಾತ್ಮಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾರ್ವತಿ.

ಶಿಲಾವಿ ಶೈಲಾದಿ (ಪುಂ) ನಂದಿ, ಪರಮೇಶ್ವರನ ಅನುಚರ.

ಶಿಲಾಧಿಪ ಶೈಲಾಧಿಪ, -ಅಧಿರಾಜ -ಅಧಿರಾಜ (ಪುಂ) ಹಿಮಾಚಲ. ಶಿಲಾನಾಮಧಿಪಃ ಅಧಿರಾಜೋ ವಾ । -ತನಯಾ -ತನಯಾ. ಪಾರ್ವತಿ. "ಶಿಲಾಧಿರಾಜತನಯಾ ನ ಯಯಿ ನ ತಸ್ಯಾ" ಕುಮಾಂ ೪-೮೪ ।

ಶಿಲಾಲಿನ್ ಶೈಲಾಲಿನ್ (ಪುಂ) ನಟ, ನರ್ತಕ. ಶಿಲಾಲಿನಾ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ನಟಸೂತ್ರಮಧೀತೇ—ಶಿಲಾಲಿ "ಗಿಣಿಃ" (೪-೩-೧೧೦) । "ಶಿಲಾಲಿನಸ್ತು ಶಿಲೂಪಾ ಜಾಯಾಜಿವಾಃ ಕೃಶಾಶ್ವಿನಃ" ಅಮಂ ।

ಶಿಲೀ ಶೈಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಾಕ್ಸರಣಿ, ವಿಷಯವನ್ನು ವಿವರಿಸುವ ರೀತಿ, ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಮಾಡುವ ಕ್ರಮ. ಶಿಲಸ್ಯೇ-ಯಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) । "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೪) । "ಪ್ರಾಣೇಣಾಚಾರ್ಯಾಣಾಮಯಿಂ ಶಿಲೀ ಯತ್ಸಾಭಿಪ್ರಾಯಮಪಿ ಪರೋಪ-ದೇಶಮಿವ ವರ್ಣಯಂತಿ" ಇತಿ ಕುಲ್ಮಕಮಢಃ । 2. ಶಿಲೆಯ ವಿಗ್ರಹ. "ದಶವರ್ಷಸಹಸ್ರಾಣಿ ಶಿಲೀ ಸ್ಥಾಸ್ಯಸಿ ದುರ್ಭಗೇ" ರಾಮಾಂ । 3. ಶಿಲ, ನಡತೆ, ವರ್ತನೆ, ನಡವಳಿಕೆ. "ಸ್ಥಿರಾ ಶಿಲೀ ಗುಣವತಾಂ ಖಲವಾಚಾ ನ ಬಾಧ್ಯತೇ" ।

ಶಿಲೂಪ ಶೈಲೂಪ (ಪುಂ) 1. ನಟ, ನರ್ತಕ, ನರ್ತನಮಾಡುವವನು, ಅಭಿನಯಿಸುವವನು. ಶಿಲೂಪಸ್ಯ ಕೃಷೇರಪತ್ಯಮ್ "ಅಞ್" (೪-೧-೧೧೪) । "ಅಥೋಪಪತ್ತಿ ಛಲನಾಪರೋಽ-ಪರಾಮವಾಪ್ಯ ಶಿಲೂಪ ಇವೇಷ ಭೂಮಿಕಾಮ್" ಮಾಧಂ ೧-೬೯ । 2. ಬಿಲ್ವವೃಕ್ಷ, ಬಿಲ್ವಪತ್ರಮರ. "ವಿಲ್ವಶಾಙ್ಗಿಹೃತ್ಯಶಿಲೂಪಿ" ಅಮಂ । 3. ಧೂತ, ಕಪಟಿ. ವಂಚಕ. 4. ವಾದ್ಯಗಾರರ ಕೂಟದ ಮುಖಂಡ.

ಶಿಲೂಪಿಕ ಶೈಲೂಪಿಕ (ಪುಂ) ನಟನ ವೃತ್ತಿಯನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸುವವನು, ನರ್ತಕನ ಜೀವಿಕೆಯನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. "ವೃತ್ಯನ್ವೇಷಿಃ ನಟಾನಾನ್ತು ಸ ತು ಶಿಲೂಪಿಕಃ ಸ್ಮೃತಃ" ।

ಶಿಲೂಪಿಕೀ ಶೈಲೂಪಿಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನರ್ತಕಿ, ನರ್ತಕವೃತ್ತಿಯವನ ಹೆಂಡತಿ.

ಶಿಲೇನ್ದ್ರ ಶೈಲೇನ್ದ್ರ (ಪುಂ) ಹಿಮಾಚಲ. ಶಿಲಾನಾಮಿನ್ದ್ರಃ ।

ಶಿಲೇಯ ಶೈಲೇಯ (ಪುಂ) 1. ಸಿಂಹ. 2. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಶಿಲೇ ಭವಃ—ಶಿಲ "ಠಕ್" (೪-೨-೯೭) । (ನಂ) 3. ಕಲ್ಲುಹೂ. ಶಿಲಾಯಾಂ ಭವಮ್ "ಠಕ್" (೪-೨-೯೭) । 4. ಮುರೆಯೆಂಬ ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ. 5. ಸೈಂಧವಲವಣ. 6. ಶಿಲಾಜತು. 7. ಸಾಂಜ್ರಾಣಿ. "ಮನಃಶಿಲಾವಿಚ್ಛುರಿತಾ ನಿಷೇದುಃ ಶಿಲೇಯನದ್ವೇಷು ಶಿಲಾತಲೇಷು" ಕುಮಾಂ ೧-೪೪ । (ವಿಂ) 8. ಶೈಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. ಶಿಲೇ ಭವಮ್ "ಠಕ್" । "ಶಿಲೇಯಂ ತಾಲಪರ್ಯಾ ಚ ಸೇನ್ಧವೇ । ಶಿಲಜೇ ನಾ ತು ಮಧುಪೇ" ಮೇದಿಂ । 9. ಶಿಲಾಮಯವಾದ, ಪರ್ವತ ಪ್ರಚುರವಾದ. 10. ಶಿಲೆಯಂತಿರುವ, ಕಠಿಣವಾಗಿರುವ. ಶಿಲೇವ—ಶಿಲಾ "ಠಕ್" (೪-೩-೧೦೨) ।



ಶೋಲೆಯಿ ಶೈಲೀಯೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾರ್ವತಿ.

ಶೇವ ಶೈವ (ಪುಂ) 1. ದತ್ತೂರಿ ಗಡ. 2. ಎಕ್ಕದ ಗಡ. ಅರ್ಹವ್ಯಕ್ತ. 3. ಪರಮೇಶ್ವರನ ಉಪಾಸಕ, ಶೈವ ಮತಾವಲಂಬಿ. (ನಂ) 4. ಶಿವಪುರಾಣ, ಶಿವನ ವಿಷಯವನ್ನು ಕುರಿತು ರಚಿತವಾದ ಪುರಾಣ. ಶಿವಮಠಿಕೃತ್ಯ ಕೃತೌ ಗ್ರಂಥ: "ಅಣ್" (೪-೩-೮೭). (ವಿಂ) 5. ಶಿವಸಂಬಂಧವಾದ. ಶಿವಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೨೦)।

ಶೇವಲ ಶೈವಲ (ನಂ) 1. ಶೈವಾಲ, ಪಾಚಿ. ಶೋಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೆ) "ವಲನ್" (೩೦ ೪-೩೮)। "ಸರಸಿಜಮನುವಿದ್ವಂ ಶೇವಲೇನಾಪಿ ರಮ್ಯಮ್" ಶಾಕುಂ ೧-೧೭. ಅಮರಕೋಶದಲ್ಲಿ ನಪುಂಸಕ ಲಿಂಗ. ಮೇದಿನೀಕೋಶದಲ್ಲಿ ಪುಂಲಿಂಗ. "ಜಲನೀಲಿ ತು ಶೇವಾಲಶೇವಲೇಷ್ಯ ಕುಮುದತಿ" ಅಮಂ. "ಶೇವಲಂ ಪದ್ಮಕಾಷ್ಠೇ ಸ್ಯಾತ್ ಶೇವಾಲೇಪಿ ಪುಮಾನಯಮ್" ಮೇದಿಂ. 2. ಪದ್ಮಕಾಷ್ಠ.

ಶೇವಲಿನಿ ಶೈವಲಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನದಿ, ಹೊಳೆ. ಶೇವಲಮಸ್ಯಾಮಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)।

ಶೇವಾಲ ಶೈವಾಲ (ನಂ) ಪಾಚಿ. ಶೋಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೆ) "ವಾಲನ್" (೩೦ ೪-೩೮)।

ಶೇಶವ ಶೈಶವ (ನಂ) ಬಾಲ್ಯ, ಹುಟ್ಟಿದ ಮೊದಲುಗೊಂಡು ಪ್ರಾಯದವರೆಗಿನ ಕಾಲ. ಶಿಶೋರ್ಭಾವ: "ಅಣ್" (೪-೧-೧೩೧)। "ಶೇಶವೇಷ್ಯಸ್ತವಿದ್ಯಾನಾಂ ಯೌವನೇ ವಿಷಯೇಷಿಣಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೮. "ಶಕಟಮಿವ ಮಹೀಯ: ಶೇಶವೇ ಶಾಸ್ತ್ರಪಾಣಿ:" ಮಾಘಂ ೧೧-೩।

ಶೇಶಿರ ಶೈಶಿರ (ಪುಂ) 1. ಕಪ್ಪು ಗುಬ್ಬಿಟ್ಟ. (ವಿಂ) 2. ಶಿಶಿರಯುತುಸಂಬಂಧವಾದ. ಶಿಶಿರಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೨೦)।

ಶೇಷೋಪಾಧ್ಯಾಯಿಕಾ ಶೈಷ್ಯೋಪಾಧ್ಯಾಯಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಿಷ್ಯರಿಗೆ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿಸುವುದು, ಶಿಷ್ಯರಿಗೆ ವಿದ್ಯೆ ಕಲಿಸುವುದು. ಶಿಷ್ಯೋಪಾಧ್ಯಾಯಾನಾಂ ಭಾವ: ಕರ್ಮ ವಾ "ಕುಃ" (೪-೧-೧೩೩)। ಶಿಷ್ಯರು ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಕಲಿಯುವ ಮತ್ತೂ ಉಪಾಧ್ಯಾಯರು ಪಾಠಪ್ರವಚನ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ.

ಶೋಕ ಶೋಕ (ಪುಂ) 1. ದುಃಖ, ಸಂತಾಪ, ಕೊರಗು. ಶುಚ (ಶೋಕ) "ಕುಃ" (೩-೩-೧೮)। "ಶೋಕಪಿಹಿತಗಲ-ರೂಢಗಿರಸ್ತರಸಾಗತಾಶ್ರುಜಲಕೇವಲೋತ್ತರಾ:" ಮಾಘಂ ೧೪-೮೩. 2. ಇಷ್ಟಜನವಿರಹದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಖೇದ. "ವೀಯಂ ಚ ವಿಹೃತ್ಸು ಸುತೇ ಮಧೋನ: ಸ ತೇಷು ನ ಸ್ಥಾನಮವಾಪ ಶೋಕ:" ಕಿರಾಂ ೩-೩೪।

ಶೋಕಕಶಿತ ಶೋಕಕರ್ಷಿತ (ವಿಂ) ದುಃಖದಿಂದ ಕೃಶನಾದ. ಶೋಕೇನ ಕಶಿತ:।

ಶೋಚನ ಶೋಚನ (ನಂ) 1. ದುಃಖ. ಶುಚ (ಶೋಕ) ಭಾವ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ದುಃಖಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 3. ದುಃಖಪಡುವವನು, ಕೊರಗುವವನು.

ಶೋಚನೀಯ ಶೋಚನೀಯ (ವಿಂ) 1. ದುಃಖಪಡಬೇಕಾದ, ವ್ಯಥೆಪಡಬೇಕಾದ. ಶುಚ (ಶೋಕ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬)। 2. ದಯೆತೋರಲು ಅರ್ಹನಾದ. "ವಿಕಾರ್ಮುಕ: ಕರ್ಮಸು ಶೋಚನೀಯ: ಪರಿಚ್ಯುತೋದಾರ್ಯ ಇವೋಪಚಾರ:" ಕಿರಾಂ ೧೭-೪೩।

ಶೋಚಿಕೇಶ ಶೋಚಿಕೇಶ (ಪುಂ) ವಹ್ನಿ, ಅಗ್ನಿ. ಶೋಚಿಷಿ ಜ್ವಾಲಾ: ಕೇಶಾ ಇವಾಸ್ಯ। ಪತ್ವಮ್ (೮-೩-೪೫)।

ಶೋಚಿಸ್ ಶೋಚಿಸ್ (ನಂ) 1. ಪ್ರಭೆ, ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು. ಶುಚಿರ್ (ಪೂತಿಭಾವ) "ಇಸಿ:" (೩೦ ೨-೧೦೮)। 2. ಜ್ವಾಲೆ.

ಶೋಚ್ಯ ಶೋಚ್ಯ (ವಿಂ) 1. ದುಃಖಿಸಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಸಂತಾಪಪಡಲು ಅರ್ಹನಾದ. 2. ದುಃಖಪಡಬೇಕಾದ. ಶುಚ (ಶೋಕ) "ಘ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪)। 3. ದಯೆ ತೋರಲು ಅರ್ಹನಾದ. "ಶೋಚ್ಯಾ ಚ ಪ್ರಿಯದರ್ಶನಾ ಚ ಮದನಕಿಲಷ್ಠೇಷಮಾಲಯತೇ" ಶಾಕುಂ ೩-೭।

ಶೋಶ ಶೋಶ (ವಿಂ) 1. ಅಲಸ, ಸೋಮಾರಿ. ಶುಶ (ಆಲಸ್ಯ) "ಕುಃ" (೩-೩-೧೮)। 2. ಮೂರ್ಖ, ತಿಳಿಗೇಡಿ. "ಶೋಶೋಲಸೇ ಚ ಮೂಢೇ ಚ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 3. ಧೂರ್ತ, ಕಪಟ, ಮಂಚಕ. 4. ನೀಚ.

ಶೋಣ ಶೋಣ (ಪುಂ) 1. ಕೆಂಪುನೈದಿಯ ಬಣ್ಣ, ಕೆಂದಾವರೆಯ ಬಣ್ಣ. ಶೋಣಯತಿ — ಶೋಣ (ವರ್ಣಗತಯೋ:) + ಣಿಕ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 3. ಹೆಮ್ಮರ. 4. ಕಪಿಲವರ್ಣದ ಕುದುರೆ. 5. ಗಂಡು ಹೊಳೆ, ನದಿ. (ವಿಂ) 6. ಕಪಿಲವರ್ಣದ. 7. ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣದ. "ಕುಂಜರವಿಂದುಶೋಣಾ:" ಕುಮಾಂ ೧-೭. (ನಂ) 8. ರಕ್ತ. 9. ಸಿಂಧೂರ. "ಶೋಣೋ ನದೇ ರಕ್ತವರ್ಣೇ ಸ್ಯೋನಾಕೇಷನೋ ಹ್ಯಾನಂತರೇ" ಹೇಮಂ.।

ಶೋಣರತ್ನ ಶೋಣರತ್ನ (ನಂ) ಕೆಂಪು, ಮಾಣಿಕ್ಯ.

ಶೋಣಿತ ಶೋಣಿತ (ನಂ) 1. ರಕ್ತ, ರುಧಿರ. ಶೋಣ (ವರ್ಣಗತಯೋ:) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಸಾಂದ್ರಾಮೋದಸ್ಯಾಮಲೇ ಸಾಮಜಾನಾಂ ವೃಂದೇ ನೇತಾ: ಶೋಣಿತೈ: ಶೋಣಿಮಾನಮ್" ಮಾಘಂ ೧೮-೩೬. 2. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ.

ಶೋಣಿತಪುರ ಶೋಣಿತಪುರ (ನಂ) ಬಾಣಾಸುರನ ಪಟ್ಟಣ.

ಶೋಣಿಮನ್ ಶೋಣಿಮನ್ (ಪುಂ) ಅರುಣ, ಕೆಂಪು. ಶೋಣಸ್ಯ ಭಾವ: "ಇಮನಿಕ್" (೪-೧-೧೨೨)। "ಸಾಮಜಾನಾಂ ವೃಂದೇ ನೇತಾ: ಶೋಣಿತೈ: ಶೋಣಿಮಾನಮ್" ಮಾಘಂ ೧೮-೩೬।



ಶೋನೋಪಲ ಶೋನೋಪಲ (ಪುಂ) ಮಾಣಕ್ಯ, ಕಂಪು (ರತ್ನ).

ಶೋನ: ರಕ್ತವರ್ಣ: ತಪಲ: ।

ಶೋಯ ಶೋಯ (ಪುಂ) ಉತ, ಉದಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಶವ (ಗತೌ) "ಘ:" ಬಾಹುಂ । "ಊ" (೬-೪-೧೯) ।

ಶೋಯಿಣಿ ಶೋಯಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ಉತವನ್ನು ವಾಸಿ ಮಾಡುವ) ಕೊಮ್ಮೆ ಗಿಡ. ಶೋಯಿ ಹಂತಿ — ಹನ (ಹಿಸಾ-ಗತ್ಯೋ:) "ಟಕ್" (೩-೨-೪೩) । "ಪುನರ್ನವಾ ತು ಶೋಯಿಣಿ" ಅಮಂ ।

ಶೋಯಜಿತ್ ಶೋಯಜಿತ್ (ಪುಂ) ಗೇರುಮರ. ಶೋಯಿ ಜಯತಿ — ಜಿ (ಜಯೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧) ।

ಶೋಧನ ಶೋಧನ (ನಂ) 1. ಶೋಧಿಸುವುದು, ತಪ್ಪುಗಳನ್ನು ತಿದ್ದುವುದು. ಶುಭ (ಶೋಚೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) । 2. ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು, ದೋಷವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವುದು. 3. ತೋಳಿಯುವುದು, ಕಶ್ಮಲವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸಿ ಸ್ವಚ್ಛ ಮಾಡುವುದು. 4. ಋಣಶೋಧನೆ, ಸಾಲ ತೀರಿಸುವುದು. 5. ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಪಾಪ ಪರಿಹರಿಸಿ ಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಅಜ್ಞಾನಭುಕ್ತಂ ತುತಾಯಿ ಶೋಧಯಿ ವಾಪ್ಯಾಶು ಶೋಧನ:" ಮನುಂ ೧೧-೧೬೦ । 6. ಗುಣದೋಷಗಳನ್ನು ವಿಮರ್ಶಿಸಿ ತತ್ತ್ವವನ್ನು ಹುಡುಕುವುದು. "ಸೂರ್ಯಗ್ರಹಣ-ಕಾಲೇನ ಸಮಾನೋ ನಾಸ್ತಿ ಕಶ್ಚನ । ತತ್ರ ಯದ್ವತ್ ಕೃತಂ ಸರ್ವಮನಂತಫಲದಂ ಭವೇತ್ । ನ ಮಾಸತಿಥಿವಾರಾದಿಶೋಧನಂ ಸೂರ್ಯಪರ್ವಣಿ" । 7. ಕಸಗುಡಿಸಿ ಬೊಕ್ಕಟ ಮಾಡುವುದು. (ಪುಂ) 8. ನಿಂಬೆಗಿಡ. (ವಿಂ) 9. ಶುದ್ಧಮಾಡುವ, ದೋಷವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. ಶೋಧಯತಿ — ಶುಭ (ಶೋಚೇ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) । "ಶೋಧನ-ದ್ರವ್ಯನಿಷ್ಕವಾತ್ಯಾಸ್ತತ್ಕಲ್ಕಸ್ತೇಹಸಂಘವ:" ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೩೮-೮೧ । 10. ಶುದ್ಧಮಾಡುವ, ತೋಳಿಯನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ. 11. ಪ್ರಣವನ್ನು ಶುದ್ಧಮಾಡುವ. "ತೇಲಸೇಂಧವಯಃಪ್ರಾಹ್ಲಾನಿಮ್ಬಪತ್ರನಿಶಾಪುಗೈ: । ತ್ರಿವೃದ್ಧನಯುತೈ: ಪಿಷ್ಟೈ: ಪ್ರಲೇಪೌ ಬ್ರಣಶೋಧನ:" ಭಾವಪ್ರಂ । 12. ಪಾಪವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವ. 13. ತಪ್ಪುಗಳನ್ನು ತಿದ್ದುವ. 14. ಗುಣದೋಷಗಳನ್ನು ಹುಡುಕುವ.

ಶೋಧನಿ ಶೋಧನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂವಾರ್ಜನಿ, ಪೂರಕೆ. ಶೋಧನೇಜಯಾ — ಶುಭ (ಶೋಚೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) । "ಛೀಪ್" (೪-೧-೧೪) । "ಸಂವಾರ್ಜನಿ ಶೋಧನಿ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ ।

ಶೋಧನೀಯ ಶೋಧನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಶೋಧಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಶುದ್ಧಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ಶುದ್ಧಮಾಡಲು ಅರ್ಹ

ಹಾದ. ಶುಭ (ಶೋಚೇ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) । 4. ತಪ್ಪು ತಿದ್ದಬೇಕಾದ. 5. ತೋಳಿಯಲ್ಪಡುವ. 6. ತೋಳಿಯಬೇಕಾದ, ಸ್ವಚ್ಛವಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ.

ಶೋಧಯತ್ ಶೋಧಯತ್ (ವಿಂ) 1. ದೋಷವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಶುಭ (ಶೋಚೇ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಆಹ ಚೇನಮನವೇನ ಚಕ್ಷುಷಾ ಶೋಧಯನ್ನಮೃತಸಿಂಧುಶೋಭಿನಾ" ಯಾದಂ ೧೭-೧೨೩ । 2. ತೋಳಿಯುತ್ತಿರುವ, ಶುದ್ಧಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ತಪ್ಪು ತಿದ್ದುತ್ತಿರುವ. 4. ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ ದಿಂದ ಪಾಪವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುತ್ತಿರುವ. 5. ಋಣವನ್ನು ತೀರಿಸುತ್ತಿರುವ. 6. ಗುಣದೋಷಗಳನ್ನು ವಿಮರ್ಶಿಸಿ ಸತ್ಯವನ್ನು ಹುಡುಕುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ-

ಶೋಧಿತ ಶೋಧಿತ (ವಿಂ) 1. ತೋಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಶುದ್ಧ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಶುಭ (ಶೋಚೇ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) । 2. (ತಪ್ಪು) ತಿದ್ದಲ್ಪಟ್ಟ. 3. (ಋಣ) ತೀರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. (ದೋಷ) ಪರಿಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. (ಪಾಪ) ಪರಿಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 6. (ಕಸ) ಗುಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಶೋಧ್ಯ ಶೋಧ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಶುದ್ಧಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ತಿದ್ದಲ್ಪಡುವ (ತಪ್ಪು). 3. ತೋಳಿಯಲ್ಪಡುವ. 4. ತೀರಿಸಲ್ಪಡುವ (ಋಣ). 5. ಪರಿಹರಿಸಲ್ಪಡುವ (ಪಾಪ). 6. ವಿಮರ್ಶಿಸಲ್ಪಡುವ (ಗುಣದೋಷಗಳು). ಶುಭ (ಶೋಚೇ) ಕರ್ಮಂ "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) । 7. ತನ್ನ ಮೇಲಿನ ಆಪಾದನೆಯನ್ನು ಎದುರಿಸುವವನು.

ಶೋಫ ಶೋಫ (ಪುಂ) ಉತ, ಉದಲು ರೋಗ. ಶವ (ಗತೌ) "ಫ:" ಬಾಹುಂ । "ಊ" (೬-೪-೧೯) ।

ಶೋಫಿಣಿ ಶೋಫಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ಉತವನ್ನು ವಾಸಿ ಮಾಡುವ) ಕೊಮ್ಮೆಗಿಡ.

ಶೋಫನಾಶನ ಶೋಫನಾಶನ (ವಿಂ) ಉದಲು ವ್ಯಾಧಿಯನ್ನು ವಾಸಿಮಾಡುವ. ಶೋಫ ನಾಶಯತಿ — ಣಶ (ಅದರ್ಶನೇ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) । -ಹತ್ -ಹ್ಯತ್. ಶೋಫ ಹರತಿ ।

ಶೋಭನ ಶೋಭನ (ಪುಂ) 1. ಗ್ರಹ. 2. ವಿಷ್ಣುಂಭ ಮೊದಲಾದ 27 ಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ ಐದನೆಯ ಒಂದು ಯೋಗ. ಶುಭ (ದೀಪ್ತೌ) "ಯುಕ್" (೩-೨-೧೪೯) । "ಸ್ಯಾಚ್ಛೋಭನ: ಶೋಭನಯೋಗಜನ್ಮಾ ದಕ್ಷೌ ವಿಪಕ್ಷಪ್ರತೀಲಿಖವಿತ್ತ:" । (ನಂ) 3. ಶುಭ, ಮಂಗಳ. ಶುಭ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) । 4. ಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. (ವಿಂ) 5. ಸುಂದರವಾದ, ರಮಣೀಯವಾದ. ಶೋಭತೇ — ಶುಭ (ದೀಪ್ತೌ) "ಲ್ಯು:"



(೩-೧-೧೩೪)। “ಶೋಭನೋ ಯೋಗಭೇದೇ ಸ್ಯಾತ್ ಸುಂದರೇ  
ವಾಚ್ಯಲಿಂಗಕ:” ಮೇದಿಂ।

ಶೋಭನಾ ಶೋಭನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೋರೋಚನ. 2.  
ಅರಿಶನ.

ಶೋಭಮಾನ ಶೋಭಮಾನ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆ  
ಯುವ. ಶೋಭತೇ—ಶುಭ (ದೀಪ್ತೌ) “ಶಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪)।  
“ಆತ್ಮಾನಮಾಲೋಕ್ಯ ಚ ಶೋಭಮಾನಮಾದರ್ಶಬಿಂಬೇ ಸ್ತಿಮಿತಾ-  
ಯತಾಕ್ಷಿ” ಕುಮಾಂ ೭-೨೨।

ಶೋಭಾ ಶೋಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಂತಿ, ಪ್ರಕಾಶ. ಶುಭ  
(ಶೋಭಾಯಾಮ್) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ವದನಸೌರಭ-  
ಲೋಭಪರಿಭ್ರಮದ್ಭ್ರಮರಸಂಭ್ರಮಸಂಭೃತಶೋಭಯಾ” ಮಾಘಂ ೬-೧೪।  
2. ಭೂಷಣ, ಅಲಂಕಾರ. “ಶೋಭೇವ ಮಂದರಕ್ಷುಬ್ಧ-  
ಕ್ಷುಭಿತಾಮ್ಭೋಧಿವರ್ಣನಾ” ಮಾಘಂ ೨-೧೦೭। 3. ಬೆಳಕು.  
4. ಸೌಂದರ್ಯ, ಸೊಬಗು. “ಕಾಂತಾನಾಂ ಕುಲಯಮಪ್ಯಪಾಸ್ತ-  
ಮಕ್ಷಣೋ: ಶಾಭಾಭಿನಂ ಮುಖರೂಪಮೇಕಮೇವ” ಮಾಘಂ ೮-೨೩।  
5. ವೃದ್ಧಿ, ಉತ್ಕೃಷ್ಟ, ಘನತೆ. “ಆನಿನ್ಯು: ಶ್ರಿಯ-  
ಮಧಿತಯಮಜ್ಞನಾನಾಂ ಶೋಭಾಯೈ ವಿಪದಿ ಸದಾಶ್ರಿತಾ ಭವಂತಿ”  
ಮಾಘಂ ೮-೫೫। 6. ಅರಿಶನ. 7. ಗೋರೋಚನ.  
8. ಇಚ್ಛೆ, ಆಪೇಕ್ಷೆ. “ಶೋಭಾ ಕಾಂತೀಚ್ಛಯೋಮಂತಾ” ಮೇದಿಂ।

ಶೋಭಾಜನ ಶೋಭಾಂಜನ (ಪುಂ) ನುಗ್ಗಿಮಾರ. ಶೋಭಾ-  
ಮನುಷ್ಯ—ಅಜ್ಞ (ವ್ಯಕ್ತ್ಯಾದೌ) ಕರ್ತಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೩)।

ಶೋಭಿತ ಶೋಭಿತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು,  
ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಶುಭ (ದೀಪ್ತೌ + ಣಿಚ್ “ಕ್ತ:”  
(೩-೨-೧೦೨)। 2. ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ.  
ಶುಭ ಕರ್ತಂ “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨)।

ಶೋಭಿನ್ ಶೋಭಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಕಾಂತಿಯುಕ್ತ  
ವಾದ. ಶೋಭತೇ—ಶುಭ (ದೀಪ್ತೌ) “ಣಿನಿ:” (೩-೧-೧೩೪)।  
“ಕಿಮಿತ್ಯಪಾಸ್ಯಾಭರಣಾನಿ ಯೌವನೇ ಧೃತಂ ತ್ವಯಾ ವಾರ್ಧಕಶೋಭಿ  
ವತ್ಕಲಮ್” ಕುಮಾಂ ೫-೪೪। 2. ರಮಣೀಯವಾದ,  
ಸುಂದರವಾದ.

ಶೋಷ ಶೋಷ (ಪುಂ) 1. ಒಣಗುವುದು, ಆರುವುದು. ಶುಷ  
(ಶೋಷಣೆ) ಭಾವೇ “ಘ್” (೩-೩-೧೮)। 2. ಕ್ಷಯಿಸು  
ವುದು, ಬಡಕಲಾಗುವುದು. “ಶೋಷಂ ವ್ರಜತ್ಯಮೃತರಶಿಮಮೃತ್-  
ಪೂರೇ” ಯಾದಂ ೧೧-೧೪। 3. ಕ್ಷಯರೋಗ. ಶುಷ್ಕತಯೇನ—  
ಶುಷ ಕರಂ “ಘ್” (೩-೩-೧೨೧)। ಸಂಶೋಷಣಾದ್ರವ್ಯಾದೀನಾಂ  
ಶೋಷ ಇತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ” ಸುಶ್ರುತಂ ೪೧-೪। “ಶೋಷೋ  
ಯಕ್ಷಮಣಿ ಶೋಷಣೇ” ಮೇದಿಂ।

ಶೋಷಣ ಶೋಷಣ (ನಂ) 1. ಒಣಗಿಸುವುದು. ಶುಷ  
(ಶೋಷಣೆ) + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

2. ಕ್ಷಯಿಸುವುದು, ಕೃಶವಾಗುವುದು. 3. ಶುಂಠಿ.  
4. ರಸಭಾಗವನ್ನು ಇಂಗಿಸುವುದು, ಶರೀರವು ಕೃಶವಾಗು  
ವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. “ಶೋಷಣೇನ ಶರೀರಸ್ಯ ತಪಸಾಧ್ಯಯೇನ  
ಚ”। (ಪುಂ) 5. ಮನ್ಮಥನ ಬಾಣ. 6. ಶೋಷಣಾಕ  
ವೃಕ್ಷ. (ವಿಂ) 7. ಒಣಗಿಸುವ, ಆರಿಸುವ.

ಶೋಷಣೀಯ ಶೋಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಒಣಗಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ಒಣಗಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಒಣಗಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಶುಷ  
(ಶೋಷಣೆ) + ಣಿಚ್ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೧೬)। “ತವ್ಯ:”।  
—ಯಿತವ್ಯಮ್ —ಯಿತವ್ಯಮ್.

ಶೋಷಿತ ಶೋಷಿತ (ವಿಂ) ಒಣಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಶುಷ(ಶೋಷಣೆ) +  
ಣಿಚ್ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨)। “ಶೋಷಿತಪ್ರಾಚ್ಯಜಲಧಿ:  
ಶೌರ್ಯಬಾಡವಹ್ನಿನಾ” ಯಾದಂ ೨೨-೧೩೨। “ಸಮುದ್ರ: ಶೋಷಿತೋ  
ಯೇನ ಸ ಮೇಘಸ್ತಯ: ಪ್ರಸಿದ್ಧು”।

ಶೋಷಿನ್ ಶೋಷಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಒಣಗಿಸುವ. ಶುಷ(ಶೋಷಣೆ) +  
ಣಿಚ್ “ಣಿನಿ:” (೩-೧-೧೩೪)। “ಹೃದಯಕಮಲಶೋಷಿ  
ದಾರುಣೋ ದೀರ್ಘಶೋಕ:” ತಂ ರಾಂ ೩-೫। 2. ಕೃಶವಾಗಿ  
ಮಾಡುವ.

ಶೌಕ ಶೌಕ (ನಂ) ಶುಕಗಳ ಸಮೂಹ, ಗಿಣಿಗಳ ಗುಂಪು.  
ಶುಕಾನಾಂ ಸಮೂಹ. “ಅಜ್” (೪-೨-೪೫)।

ಶೌತಿಕೇಯ ಶೌತಿಕೇಯ (ನಂ) ಮುತ್ತು. ಶುಕ್ತಿಕಾಢಾ  
ಭವಮ್ “ಠಕ್” (೪-೩-೫೩)।

ಶೌತೇಯ ಶೌತೇಯ (ನಂ) ಮುತ್ತು.

ಶೌಕಲಯ ಶೌಕಲಯ (ನಂ) ಬಿಳುಪು, ಧಾವಳಿ. ಶುಕ್ಲಸ್ಯ  
ಭಾವ: “ಘ್” (೫-೧-೧೨೪)।

ಶೌಚ ಶೌಚ (ನಂ) 1. ಶುಚಿತ್ವ, ಶುಭ್ರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಶುದ್ಧ  
ವಾಗಿರುವಿಕೆ, ನಿರ್ಮಲವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಶುಚಿಭಾವ: “ಅಘ್”  
(೫-೧-೧೩೧)। 2. ಶುದ್ಧಿ. “ಸತ್ಯಶೌಚಂ ಮನ:ಶೌಚಂ  
ಶೌಚಮಿಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹ:। ಸರ್ವಭೂತದಯಾಶೌಚಂ ಜಲಶೌಚಂ ತು  
ಪಂಚಮಮ್” ಗರುಡಪುಂ।

ಶೌಚಾಚಾರ ಶೌಚಾಚಾರ (ಪುಂ) ಶುದ್ಧಿಕಾರ್ಯ, ಪ್ರಕ್ಷಾಳ  
ನಾದಿಕಾರ್ಯ. “ಉಪನೀಯ ಗುರು: ಶಿಷ್ಯಂ ಮಹಾಭ್ಯಾಹುತಿ-  
ಪೂರ್ವಕಮ್। ವೇದಮಧ್ಯಾಪಯೇದನಂ ಶೌಚಾಚಾರಾಂಶ್ಚ ಶಿಕ್ಷಯೇತ್”  
ಯಾಜ್ಞಂ।

ಶೌಚೇಯ ಶೌಚೇಯ (ಪುಂ) ರಜಕ, ಆಗಸ.

ಶೌಟೀರ ಶೌಟೀರ (ಪುಂ) 1. ಎಲೆ, ಶೂರ, ಪರಾಕ್ರಮಿ.  
ಶೌಟ್ (ಗವೇ) “ಔರ್ನ್” (ತಂ ೪-೩೦)। (ವಿಂ) 2.  
ಗರ್ವಪಡುವವನು, ದುರಹಂಕಾರವುಳ್ಳವನು. “ಸಂತುಷ್ಟ:  
ಸಮ್ಮತ: ಸತ್ಯ: ಶೌಟೀರೋ ದ್ವೇಷಪಾಪಕ:। ಮನ್ತ್ರವಿತ್ ಕಾಲವಿತ್  
ಶೂರ: ಸ ಮನ್ತ್ರಂ ಶ್ರೋತುಮರ್ಹತಿ” ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೮೩-೪೪।



ಶೌರೀಯ ಶೌರೀಯ (ನಂ) 1. ವೀರ್ಯ, ಪರಾಕ್ರಮ. ಶೌರೀಯ ಭಾವ: "ವ್ಯಾ" (೪-೧-೧೨೪). 2. ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ.

ಶೌಂಡ ಶೌಂಡ (ವಿಂ) 1. ಪಾನದಿಂದ ಮದಿಸಿದವನು. ಶುಂಡಾಭಿ ಭವ: "ಅನ್" (೪-೩-೫೩). "ಮತ್ತೆ ಶೌಂಡೋಕ್ತ-ಕೀರ್ತಿ:" ಅಮಂ. "ವೃಂಡಾಶ್ಚ ಶೌಂಡಾಶ್ಚ ಮಹಾಶನಾಶ್ಚ ಕೀರ್ತಿಶ್ಚ ದುಷ್ಟಾಶ್ಚ ಪಲಾಶ್ಚ ವರ್ಜ್ಯಾ:" ಭಾಂ ವನಂ ೨೩೩-೧೧. 2. ನಿಪುಣನಾದ.

ಶೌಂಡಿಕ ಶೌಂಡಿಕ (ಪುಂ) 1. ಮದ್ಯವೇ ಪಣ್ಯವಾಗಿ ಉಳ್ಳವನು, ಹೆಂಡದ ವ್ಯಾಪಾರ ಮಾಡುವವನು. ಶುಂಡಾ ಪಣ್ಯಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೫೧). (ವಿಂ) 2. ಆಯಸ್ಥನಿಂದ ಬಂದಿರುವ, ಸುಂಕದಕಟ್ಟೆಯಿಂದ ಬಂದ. ಶುಂಡಿಕಾದಾಗತ: "ಅನ್" (೪-೩-೭೬). ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಶೌಂಡಿಕೀ ಶೌಂಡಿಕೀ. ಮದ್ಯಮಾರುವ ಹೆಂಗಸು. "ಪಯೋಪಿ ಶೌಂಡಿಕೀಹಸ್ತೇ ವಾಣೀತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ" ಹಿತೋಂ ೩-೧೧.

ಶೌಂಡಿನ್ ಶೌಂಡಿನ್ (ಪುಂ) ಮದ್ಯದ ವ್ಯಾಪಾರಿ.

ಶೌಂಡೀ ಶೌಂಡೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಪಲಿ. ಶುಂಡಾಭಿ ಮದ್ಯಪಾನಗೃಹೇ ಭವಾ. "ಉಷಾ ಪಿಪ್ಪಲಿ ಶೌಂಡೀ ಕೋಲಾ" ಅಮಂ.

ಶೌಂಡೀರ ಶೌಂಡೀರ (ವಿಂ) ದುರಹಂಕಾರಿ, ಗರ್ವವುಳ್ಳವನು. ಶೌಡ್ "ಈರನ್" ಪೃಷೋಂ.

ಶೌಂಡೋದನಿ ಶೌಂಡೋದನಿ (ಪುಂ) ಶೌಂಡೋದನನ ಪುತ್ರ, ಬುದ್ಧ. ಶೌಂಡೋದನಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಐನ್" (೪-೧-೯೫).

ಶೌಡ್ರ ಶೌಡ್ರ (ಪುಂ) 1. ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಪುತ್ರರಲ್ಲೊಬ್ಬ, ವಿಷ್ಣುನು ಕಾಮತ್ಯಕ್ತಿಯಾಗಿ ಶೌಡ್ರಸ್ತ್ರೀ ಸಂಗಮ ಹೊಂದಿ ಅವಳಲ್ಲಿ ಪಡೆದ ಮಗ. "ಯಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ತು ಶೌಡ್ರಾಭಿ ಕಾಮಾದುತ್ಪಾದಯೇತ್ಯುತಮ್. ಸ ಪಾರಯನ್ನೇವ ಶವಸ್ತಸ್ಮಾತ್ಪಾರಶವ: ಸ್ಮೃತ:" ಮನುಂ ೯-೧೭೮. (ವಿಂ) 2. ಶೌಡ್ರಸಂಬಂಧವಾದ. ಶೌಡ್ರಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦).

ಶೌನಕ ಶೌನಕ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಮುಖ. ಶೌನಕಸ್ಯಾಪತ್ಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೦೪).

ಶೌನಿಕ ಶೌನಿಕ (ಪುಂ) 1. ಮಾಂಸದ ಮಾರಾಟಗಾರ. ಶೌನಾ ಪ್ರಾಣಿವ್ಯವಸ್ಥಾನಂ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯). 2. ಬೇಟೆ.

ಶೌಭ ಶೌಭ (ನಂ) 1. ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರನ ನಗರ. ಶೌಭಾಯಿ ಹಿತಮ್. (ಪುಂ) 2. ಅಡಕೆ ಮರ. ಶೌಭಾಯಿ ಹಿತ:

ಶೌಭಿಕ ಶೌಭಿಕ (ಪುಂ) 1. ಐಂದ್ರಜಾಲಿಕ. 2. ಬೇಟೆಗಾರ.

ಶೌರಸೇನಿ ಶೌರಸೇನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಾಕೃತ ಭಾಷೆಯ ಒಂದು ಭೇದ.

ಶೌರ ಶೌರ (ಪುಂ) 1. ಶೌರೈಯ. ಶೌರಸ್ಯ ಅಪತ್ಯಮ್ (ಶೌರವಶ-ಜತ್ವಾತ್) "ಐನ್" (೪-೧-೯೫). "ಶೌರೀನಾಮ್ನಾ ಸ್ಥಿತ: ಶೌರೀ: ಉಪಲಾಭತೇ ಶುಭೇ" ಇತಿ ನಿರ್ಣಯ: "ಕಾಲನೇಮಿ-ನಿಹಾ ಶೌರೀ: ಶೌರ: ಶೌರಜನೇಶ್ವರ:" ವಿಂ ಸಂ. "ಧ್ವಜಾಗ್ರ-ಧಾಮಾ ದದೃಶಂಶು ಶೌರೀ: ಸಂಕ್ರಾಂತಮೂರ್ತಿರ್ಮಣಿಮೇದಿನೀಭು" ಮಾಧಂ ೩-೨೩. 2. ಬಲರಾಮ. 3. ವಸುದೇವ. 4. ಶನಿಗ್ರಹ.

ಶೌರ್ಪ ಶೌರ್ಪ (ವಿಂ) ಒಂದು ಮೊರದ ಅಳತೆಯುಳ್ಳ. ಶೌರ್ಪ ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ—ವಾ "ಅನ್" (೪-೧-೨೬). ಪಕ್ಷೆ "ಠಕ್". ಶೌರ್ಪಿಕಮ್ ಶೌರ್ಪಿಕಮ್.

ಶೌರ್ಯ ಶೌರ್ಯ (ನಂ) 1. ವೀರ್ಯ, ಪರಾಕ್ರಮ, ಶಕ್ತಿ. ಶೌರ್ಯ ಭಾವ: ಕರ್ಮ ವಾ "ವ್ಯಾ" (೪-೧-೧೨೪). "ಶೌರ್ಯಾನುರಾಗನಿಕಷ: ಸಾ ಹಿ ವೇಲಾನುಜೀವಿನಾಮ್" ಮಾಧಂ ೧೯-೩೦. 2. ಅರಣ್ಯ, ಅದ್ಭುತವಾದ ಮತ್ತು ಭಯಂಕರವಾದ ಸಂದರ್ಭ. "ಮಾಧೇಂದ್ರಜಾಲಸಂಗ್ರಾಮಕ್ರೋಧೋದ್ಭ್ರಾ-ಂತಾದಿವೇಷಿತ: ಸಂಯುಕ್ತಾ ವಧವನ್ವಾಘೇರುದ್ಧತಾರಭಟಿ ಮಾ" ಸಾಂ ದಂ.

ಶೌಲ್ಕಿಕ ಶೌಲ್ಕಿಕ (ಪುಂ) ಶೌಲ್ಕದ ಅಧಿಕಾರಿ, ಸುಂಕವನ್ನು ವಸೂಲು ಮಾಡುವ ಅಧಿಕಾರಿ. ಶೌಲ್ಕೇ ನಿಯುಕ್ತ: "ಠಕ್" (೪-೪-೬೯). "ಶೌಲ್ಕಿಕ: ಸ್ಥಾನಪಾಲೇಶ್ಚ ನಷ್ಟಾಪಹೃತ-ಮಾಹೃತಮ್. ಅರ್ವಾಕ್ ಸಂವತ್ಸರಾತ್ಸಾಮೀ ಹರೇತ ಪರತೋ ನೃಪ:" ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೭೩.

ಶೌಲ್ಬಿಕ ಶೌಲ್ಬಿಕ (ಪುಂ) ಕಂಚುಗಾರ, ಹಿತ್ತಾಳೆ ತಾಮ್ರದ ಪಾತ್ರೆಗಳ ಕೆಲಸಗಾರ. ಶೌಲ್ಬಿಕವೃತ್ತಂ ಶಿಲ್ಪಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೫೫). "ಶೌಲ್ಬಿಕಸ್ತಾನ್ಮಕುಟಕ:" ಅಮಂ.

ಶೌವ ಶೌವ (ನಂ) ನಾಯಿಗಳ ಗುಂಪು.

ಶೌವನ ಶೌವನ (ನಂ) 1. ನಾಯಿಗಳ ಸಮೂಹ. ಶೌನಾ ಸಮೂಹ:—ಐನ್ "ಅನ್" (೪-೨-೪೫). 2. ನಾಯಿಯ ಸಂತಾನ, ನಾಯಿಯ ಸಂತತಿ. 3. ನಾಯಿಯ ಮಾಂಸ. (ವಿಂ) 4. ನಾಯಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಶೌನ: ಇದಮ್.

ಶೌವಸ್ತಿಕ ಶೌವಸ್ತಿಕ (ವಿಂ) 1. ನಾಳೆ ಉಂಟಾಗುವ. 2. ನಾಳೆಯವರೆಗೂ ಇರುವ. ಶ್ವಸ್ "ಠಕ್" (೪-೩-೧೫). ತುಡಾಗಮ: ಔಜಾಗಮಶ್ಚ. ಇವೋ ಭವಿತಾ. "ಶೌವಸ್ತಿಕತ್ವಂ ವಿಭವಾ ನ ಯೇಷಾಂ ವ್ರಜಂತಿ ತೇಷಾಂ ದಯಸೇ ನ ಕಸ್ಮಾತ್" ಭट्टಿಂ ೨-೩೩.

ಶೌವಾಪದ ಶೌವಾಪದ (ವಿಂ) ಶೌವದಸಂಬಂಧವಾದ. ಶೌವಾಪದಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೩೦). ಔಜಾಗಮ: (೭-೩-೯). ವ್ಯಾಪ್ತೌ ಚಿರತೆ ಮುಂತಾದ ಹಿಂಸ್ರಪಶುಗಳು ಶೌವದಗಳು. "ಕವಚಿತ್ ಕಾಂತಾರಭಾಜಾಂ ಭವತಿ ಪರಿಭವ: ಕೌಽಪಿ ಶೌವಾಪದೋ ವಾ" ಅನರ್ಥಂ ೧-೨೫.



ಶೌಕಲ ಶಾಪ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಮಾಂಸವನ್ನು ತಿನ್ನುವವನು. ಶುಕ್ಲಲಿಮಿತಿ — ಶುಕ್ಲಲಿ “ಅನ್” (೪-೨-೯೨) 2. ಒಣಗಿದ ಮಾಂಸವನ್ನು ತಿನ್ನುವವನು. “ಶುಕ್ಲಲಿ ಶುಕ್ಲ-ಮಾಂಸೇಪಿ ಮಾಂಸಮಾತ್ರೇಪಿ ಸಾ ಮಾ” 1. ಶುಕ್ಲಂ ಮಾಂಸಂ ಲಾತಿ ಇತಿ ಶುಕ್ಲಲಿ:—ಪ್ರಜಾಂ “ಅನ್” (೪-೪-೩೮) 1. ಶೌಕಲ: ಇತಿ ವಾ। (ವುಂ) 3. ಒಣಗಿದ ಮಾಂಸವನ್ನು ಮಾರುವವನು. ಶುಕ್ಲಲಿ ಪಞ್ಚಮಸ್ಯ “ಅನ್” 1. “ಶೌಕಲ: ಶುಕ್ಲಮಾಂಸಸ್ಯ ಪಣಕೇ ಪಿಶಿತಾಶಿನಿ” ಮೇದಿಂ 1. (ನಂ) 4. ಒಣಗಿದ ಮಾಂಸದ ಬೆಲೆ.

ಇಚ್ಯೋತ ಶ್ಲೋಕ (ವುಂ) ಸ್ತವಿಸುವುದು, ಜಿನುಗುವುದು. ಇಚ್ಯುತಿರ್ (ಕರಣ) “ಚ್” (೩-೩-೧೮) 1.

ಇಚ್ಯೋತತ್ ಶ್ಲೋಕತಃ (ವಿಂ) ಸ್ತವಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸೋರುತ್ತಿರುವ. ಇಚ್ಯುತಿರ್ (ಕರಣ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) 1. “ಇಚ್ಯೋತನ್ಮದಾಮ್ಭ:ಕಣಕೇನ ಕೇನಚಿಜ್ಜನಸ್ಯ ಜಿಮೂತಕದಂಬಕ-ಚುತಾ” ಮಾಘಂ ೧೨-೪೮ 1.

ಇನಮ್ ಶ್ಲಮ್ ರುಧಾದಿ ಧಾತುಗಳಿಗೆ ಸೇರಿಸುವ ಒಂದು ವಿಕರಣ ಪ್ರತ್ಯಯ. ರುಧಾದಿಮ್ಯ: ಕ್ಲಮ್ ೩-೧-೨೮ 1.

ಇಮನ್ ಶ್ಲಮ್ (ನಂ) 1. ಮುಖ. 2. ಶರೀರ, ದೇಹ.

ಇಮಶಾನ ಶ್ಲಶಾನ (ನಂ) ರುದ್ರಭೂಮಿ, ಪಿತೃವನ. ಮೃತರ ಅಂತ್ಯಸಂಸ್ಕಾರದ ಸ್ಥಳ. ಶವಾ: ಶೇರೇತೇ—ಪೃಥಿಂ 1. “ಕೋಷಮತಿಗಮ್ಭೀರಮಧುರಾಕೃತಿರೂತ್ತಿಮ್ಭಿತಕುಟಿಲಕುಂತಲಮಾರ: ಕೃಪಾಣಶಾಪಿ: ಇಮಶಾನಮವತರತಿ” ಮಾಲತೀಂ ೪ 1.

ಇಮಶಾನವಾಸಿನ್ ಶ್ಲಶಾನವಾಸಿನ್ (ವುಂ) 1. ಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. ಇಮಶಾನೇ ವಸತಿ—ವಸ (ನಿವಾಸೇ) “ಣಿನಿ:” (೩-೨-೨೮) 1. (ವಿಂ) 2. ಪಿತೃವನದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವವನು. —ವೇಶಮನ್—ವೇಶಮ್.

ಇಮಶ್ರು ಶ್ಲಶ್ರು (ನಂ) ಗಡ್ಡ, ದಾಡಿ. ಇಮನಿ ಮುಖೇ ಶ್ರೂಯತೇ—ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೇ) “ಡು:” (ವಾಂ ೩-೨-೧೮೦) 1. ಇದರ ಶುಭಾ ಶುಭಲಕ್ಷಣ. “ನಿಮ್ನಂ ವಕ್ರಮಪುತ್ರಾಣಾಂ ಕೃಪಣಾಣಾಂ ಚ ಹ್ರಸ್ವಕಮ್ 1. ಸಂಪೂರ್ಣ ಭೋಗಿನಾಂ ಕಾಂತಂ ಇಮಶ್ರು ಸ್ನಿಗ್ಧಂ ಶುಭಂ ಮೃದು 1. ಸಂಹತಂ ಚಾಸ್ಕುಟಿತಾಗ್ರಂ ರಕ್ತಇಮಶ್ರುಶ್ಚ ಚೋರಕ: 1. ರಕ್ತಾಲಪರೂಪಇಮಶ್ರು-ಕರ್ಣಾ: ಸ್ಯು: ಪಾಪಮೃತ್ಯವ:” 1.

ಇಮಶ್ರುಮುಖಿ ಶ್ಲಶ್ರುಮುಖೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶ್ಲಶ್ರುಬೆಳೆದಿರುವ ಹೆಂಗಸು, ಪುರುಷಲಕ್ಷಣವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು.

ಇಯಾನ್ ಶ್ಲಯಾನ್ (ವಿಂ) 1. ಹೊರಟುಹೋದ, ನಡೆದ, ಚಲಿಸಿದ, ತೆರಳಿದ. ಇಯಾನ್ (ಗತೌ) “ಕ್” (೩-೪-೨೨) 1. 2. ಒಣಗಿದ, ಶುಷ್ಕವಾದ. “ಮದಕೀಣೋ ನಾಗ: ಶರದಿ ಸರಿತ: ಇಯಾನ್ಪುಲಿನಾ:” ಭರ್ತುಂ ೨-೩೪ 1. 3. ಅಂಟುವ, ಜಿಗಟಾಗಿರುವ.

ಇಯಾನ್ ಶ್ಲಯಾನ್ (ವುಂ) 1. ಪ್ರಯಾಣಕ್ಷೇತ್ರದ ವಟುವು. —ಅಲದ ಮರ. ಇಯಾನ್ತೇ ಮನೋಽಸ್ಮಾತ್—ಇಯಾನ್ (ಗತೌ) “ಮಕ್” (ತಂ ೧-೧೪೨) 1. “ತವಯಾ ಪುರಸ್ತಾದುಪಯಾಚಿತೋ ಯ: ಸೌಖ್ಯಂ ವಟ: ಇಯಾನ್ ಇತಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧ:” ರಘುಂ ೧೩-೪೩ 1. 2. ಕೃಷ್ಣವರ್ಣ, ಕಪ್ಪುಬಣ್ಣ. 3. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 4. ಪಿಕ್ಕ, ಕೋಗಿಲೆ. 5. ದತ್ತಾಂರಿ ಗಿಡ. 6. ಅನಂತನ ಗೊಂಡೆಸೊಪ್ಪು. 7. ಹಸಿರು ಬಣ್ಣ. 8. ಗೋನು ಮರ. 9. ಸಾವೆ. (ನಂ) 10. ಮಂಣಸು. 11. ಸಮುದ್ರದ ಉಪ್ಪು. (ವಿಂ) 12. ಕೃಷ್ಣವರ್ಣದ, ಕಪ್ಪು ಬಣ್ಣದ. “ಮಧ್ಯೇ ಯಥಾ ಇಯಾಮುಖಸ್ಯ ತಸ್ಯ ಮೃಣಾಲಸೂತ್ರಾಂತರಮಪ್ಯ-ಲಭ್ಯಮ್” ಕುಮಾರಂ ೧-೪೦ 1. 13. ಹಸಿರು ಬಣ್ಣದ.

ಇಯಾಮಕ ಶ್ಲಯಾಮಕ (ವುಂ) ಒಂದು ತೃಣಧಾನ್ಯ. ಇಯಾಮ ತದ್ವರ್ಣ ಅಕತಿ—ಅಕ (ಗತೌ) “ಕ್” (ವಾಂ ೩-೨-೪) 1. ಶಕಂ 1.

ಇಯಾಮಕಶ್ಲ ಶ್ಲಯಾಮಕಶ್ಲ (ವುಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಇಯಾಮ: ಕಂಠೋ ಯಸ್ಯ 1.

ಇಯಾಮಲ ಶ್ಲಯಾಮಲ (ವುಂ) 1. ಕಪ್ಪುಬಣ್ಣ. ಇಯಾಮೋ ವರ್ಣೋ-ಸ್ತಸ್ಯ “ಲಚ್” (೪-೨-೯೨) 1. 2. ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿ ಮರ. “ಇಯಾಮಲ: ಪಿಪ್ಪಲೇ ಕೃಷ್ಣೇ” ಮೇದಿಂ 1. (ವಿಂ) 3. ಕೃಷ್ಣವರ್ಣದ, ಕಪ್ಪುಬಣ್ಣದ. “ಸಾಂದ್ರಾಮೋದಇಯಾಮಲೇ ಸಾಮಜಾತಾಂ ವೃಂದೇ ನೌತಾ: ಶೋಣಿತೇ: ಶೋಣಿಮಾನಮ್” ಮಾಘಂ ೧೮-೩೬ 1.

ಇಯಾಮಲಾ ಶ್ಲಯಾಮಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ.

ಇಯಾಮಲಿಕಾ ಶ್ಲಯಾಮಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀಲಿ ಗಿಡ.

ಇಯಾಮಲಿಮನ್ ಶ್ಲಯಾಮಲಿಮನ್ (ವುಂ) ಕಪ್ಪು. ಇಯಾಮಲಸ್ಯ ಭಾವ: “ಇಮನಿಚ್” (೪-೧-೧೨೨) 1. “ಉದನಸಿಪುರಭ್ರಮಭ್ರ-ಸಂಭಾ: ಸಭದಿ ಇಯಾಮಲಿಮಾನಮಾನಯಂತ:” ಮಾಘಂ ೨೦-೬೨ 1.

ಇಯಾಮಸುಂದರ ಶ್ಲಯಾಮಸುಂದರ (ವುಂ) ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. ಇಯಾಮ-ಶ್ರಾಪಿ ಸುಂದರಶ್ಚ 1. “ಇಯಾಮಸುಂದರ ತೇ ದಾಸ್ಯ: ಕರವಾಮ ತವೋದಿತಮ್ 1. ದೇಹಿ ವಾಸಾಂಸಿ ಭರ್ಮಜ ನೋ ಚೇದ್ರಾಜೇ ಬ್ರುವಾಮಹೇ” ಭಾಗಂ ೧೦-೨೨-೧೪ 1.

ಇಯಾಮಾ ಶ್ಲಯಾಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೋಮಲತೆ. 2. ಪ್ರೇಂಕಣ ಗಿಡ. ಇಯಾಮೋ ವರ್ಣೋಽಸ್ತಸ್ಯಾ: “ಅಚ್” (೪-೨-೧೨೨) 1. 3. ಸೊಗಡೆ ಗಿಡ. 4. ಯೌವನದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಹೆಂಗಸು, ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಪ್ರಸವಿಸಿದ ಹೆಂಗಸು. “ಆನಂದಂ ದಧತಿ ಮುಖೇ ಕರೋದಕೇನ ಇಯಾಮಾಯಾ ದಯಿತತಮೇನ ಸಿಚ್ಯಮಾನೇ” ಮಾಘಂ ೮-೩೬ 1. 5. ಬಾಹುಜಿಗೆ ಗಿಡ. 6. ಯಮುನಾ ನದಿ. 7. ರಾತ್ರಿ. 8. ಕರಿಯ ತಿಗಡೆ. 9. ನೀಲಿಗಿಡ.



10. ಉತ್ತಮ ಜಾತಿಯ ವಿಲಕ್ಷಣ ಹೆಂಗಸು. "ಶೀತೆ  
ಸುಖೋಪಸರ್ವಾಂಗಿ ಗ್ರೀಷ್ಮೇ ಚ ಸುಖಶೀತಲಾ । ತಪ್ತಕಾಶ್ವನ-  
ವರ್ಣಾಃ ಸಾ ಸ್ತ್ರೀ ಶ್ಯಾಮೇತಿ ಕಥ್ಯತೇ" । 11. ಛಾಯೆ,  
ನೆರಳು. 12. ಅಮೃತ ಬಳ್ಳಿ. 13. &ಪ್ಪಲಿ. 14.  
ಅರಿವಿನ. 15. ತುಲಸಿ. 16. ಪದ್ಮಬೀಜ. 17. ಗೋವು,  
ಅಕ್ಕಳು. 18. ಬದನಿಗೆ ಗಿಡ. 19. ಭದ್ರಮುಸೈ. "ಶ್ಯಾಮಾ  
ಸೋಮಲತಾನಿಶೋಃ । ಶಾರಿವಾವಲ್ಗುನಿಗುಂದ್ರಾತ್ರಿವೃಕ್ಷಾ-  
ಪ್ರಿಯಂಜಲೈಃ । ಅಪ್ರಸೂತಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ನೇಲ್ಯಾಮ್" ಹೇಮಂ ।

ಶ್ಯಾಮಾಕ ಶ್ಯಾಮಾಕ (ಪುಂ) ಒಂದು ತೃಣಧಾನ್ಯ, ಸಾವೆ.  
ಶ್ಯಾಮಂ ಶ್ಯಾಮವರ್ಣಮಕೃತಿ — ಅಕ (ಗತೌ) "ಅಙ್"  
(೩-೨-೧) । "ಶ್ಯಾಮಾಕಮುಷ್ಠಿಪರಿವರ್ಧಿತಕೋ ಜಹಾತಿ ಸೌಖ್ಯಂ  
ನ ಪುತ್ರಕೃತಃ ಪದವೀ ಮೃಗಸ್ತೇ" ಶಾಕುಂ ೪-೧೩ ।

ಶ್ಯಾಮಾಜ್ಞ ಶ್ಯಾಮಾಂಗ (ವಿಂ) ಕೃಷ್ಣವರ್ಣದ ದೇಹವುಳ್ಳ.  
ಶ್ಯಾಮಾನಿ ಅಜ್ಞಾನಿ ಯಸ್ಯ ।

ಶ್ಯಾಮಿತ ಶ್ಯಾಮಿತ (ವಿಂ) ನೀಲವಾಗಿರುವ, ಕಪ್ಪಾಗಿರುವ.  
ಶ್ಯಾಮೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ "ಇತಚ್" (೪-೨-೩೬) । "ತಮತನುವನ  
ರಾಜಿಶ್ಯಾಮಿತೋಪತ್ಯಕಾಂತಮ್" ಕಿರಾಂ ೪-೩೬ ।

ಶ್ಯಾಲ ಶ್ಯಾಲ (ಪುಂ) ಭಾವಮೈದುನ, ಪತ್ನಿಯ ಸಹೋದರ.  
ಶ್ಯಾಯತೇ — ಶ್ಯೆಡ್ (ಗತೌ) "ಕಾಲನ್" ಬಾಹುಂ । "ಆಚಾರ್ಯಾಃ  
ಪಿತರಃ ಪುತ್ರಾಸ್ತಥೈವ ಚ ಪಿತಾಮಹಾಃ । ಮಾತುಲಾಃ ಶ್ವಶುರಾಃ  
ಪೌತ್ರಾಃ ಶ್ಯಾಲಾಃ ಸಂಬಂಧಿನಸ್ತಥಾ । ಏತಾಃ ಹಂತುಮಿಚ್ಛಾಮಿ  
ಘನತೋಽಪಿ ಮವುಸುದನ" ಗೀತಾ ೧-೩೪ ।

ಶ್ಯಾಲಕ ಶ್ಯಾಲಕ (ಪುಂ) ಭಾವಮೈದುನ, ಪತ್ನಿಯ  
ಸಹೋದರ. ಶ್ಯಾಲ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ" ।

ಶ್ಯಾಲಿಕಾ ಶ್ಯಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪತ್ನಿಯ ಒಡಹುಟ್ಟಿದವಳು,  
ನಾಡಿನಿ. "ಪತ್ನೀಭ್ರಾತಾ ಶ್ಯಾಲಕಶ್ಚ ಪತ್ನೀಭಗ್ನಿ ಚ  
ಶ್ಯಾಲಿಕಾ" ಬ್ರಹ್ಮವಂ ।

ಶ್ಯಾವ ಶ್ಯಾವ (ಪುಂ) 1. ಕಪಿಶರ್ವಣ, ಕಪ್ಪು ಬೆರೆತ ಹಳದಿಯ  
ಬಣ್ಣ, ಕಂದು ಹಳದಿಯ ಬಣ್ಣ. ಶ್ಯೆಡ್ (ಗತೌ) "ವಃ"  
ಬಾಹುಂ । (ವಿಂ) 2. ಕಪಿಶರ್ವಣದ, ಕಂದುಹಳದಿಯ  
ಬಣ್ಣದ.

ಶ್ಯಾವವತ್ ಶ್ಯಾವದತ್ (ವಿಂ) ಕಪಿಶರ್ವಣದ ಹಲ್ಲುಗಳುಳ್ಳ  
ವನು ಶ್ಯಾವಾ ದಂತಾ ಯಸ್ಯ—ವಾ ದಂತಸ್ಯ ದತ್ ಆದೇಶಃ  
(೪-೪-೧೪೪) । ಪಕ್ಷಿ ಶ್ಯಾವದಂತಃ ಶ್ಯಾವದನ್ತಃ । ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಕನ್" । —ದಂತಕಃ —ದನ್ತಕಃ ।

ಶ್ಯೇತ ಶ್ಯೇತ (ಪುಂ) 1. ಬಿಳುಪು ಬಣ್ಣ. ಶ್ಯೆಡ್ (ಗತೌ)  
"ಇತನ್" (೩ಂ ೩-೯೩) । (ವಿಂ) 2. ಬಿಳಿಯ  
ಬಣ್ಣದ.

ಶ್ಯೇನ ಶ್ಯೇನ (ಪುಂ) 1. ಬಿಳಿಯ ಬಣ್ಣ, ಶ್ಯೇತವರ್ಣ. ಶ್ಯೆಡ್  
(ಗತೌ) "ಇತಚ್" (೩ಂ ೨-೪೭) । 2. ಗಿಡುಗ.  
"ಶ್ಯೇನಾವಪಾತಚಕಿತಾನನವರ್ತಿಕೇವ ಕಿ ನೇಕ್ಷಸೇ ನನ್ ಮಯಾ  
ಕವಲೀಕೃತಾಸಿ" ಮಾಲತೀಂ ೮-೮ । "ಶ್ಯೇನಃ ಪಕ್ಷಿಣಿ  
ಪಾಂಡುರೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಶ್ಯೇನಿ ಶ್ಯೇನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ಗಿಡುಗ, ಕಶ್ಯಪನ ಪತ್ನಿ  
ಯಾದ ತಾಮ್ರಯ ಮಗಳು. "ತಾಮ್ರಾ ಚ ಸುಖವೇ  
ಶ್ಯೇನೀಪ್ರಮುಖಾಃ ಕನ್ಯಕಾ ದ್ವಿಜಾಃ । ಯಾಸಾಂ ಪ್ರಸೂತಾಃ ಸಗಮಾಃ  
ಶ್ಯೇನಮಾಸಶುಕಾದಯಃ" ಮಾರ್ಕಂ ।

ಶ್ಯೇನಪಾತಾ ಶ್ಯೇನಪಾತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೇಟೆ. ಶ್ಯೇನಸ್ಯ  
ಪಾತಃ —ಶ್ಯೇನಪಾತೋಽಸ್ಯಾಂ ವರ್ತತೇ "ಜಃ" (೪-೨-೪೮) ।  
ಮುಮಾಗಮಃ (೬-೩-೭೧) । "ನಭಸಿ ಮಹಸಾಂ ಧ್ವಾಂತಧ್ವಾಡ್ಕ್ಷ-  
ಪ್ರಮಾಪಣಪ್ರಿಣಾಮಿಹ ವಿಹರಣಃ ಶ್ಯೇನಪಾತಾಂ ರವೇರವಧಾರಯನ್"  
ನೃಪಂ ೧೯-೧೨ । "ಶ್ಯೇನಪಾತಾ ಚ ಮೃಗಯಾ" ಅಮಂ ।

ಶ್ಯೋನಾಕ ಶ್ಯೋನಾಕ (ಪುಂ) ಹೆಮ್ಮರ, ತಿಗಡುಮರ.  
ಶ್ಯಾಯತೇ — ಶ್ಯೆಡ್ (ಗತೌ) "ಆಕಃ" (೩ಂ ೪-೧೪) ।

ಶ್ರುತ್ ಶ್ರುತ್ (ಅವ್ಯಂ) ಇದೊಂದು ಅವ್ಯಯ. ಇದರ ಮುಂದೆ  
ಬರುವ ಛಾನ್ ಧಾತುವಿಗೆ "ಅಙ್" ಪ್ರತ್ಯಯ ವಿಧಿಸುವಾಗ  
ಇದಕ್ಕೆ ಉಪಸರ್ಗತ್ವ ಬರುವುದು.

ಶ್ರುತನ ಶ್ರುತನ (ನಂ) 1. ಯತ್ನ. ಶ್ರುತ (ಪ್ರಯತ್ನೇ) "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೪) । 2. ವಧೆ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. 3. ಮೋಕ್ಷಣ,  
ಬಿಡುಗಡೆ. ಶ್ರುತ (ಹಿಸಾಯಾಮ್ ಮೋಕ್ಷಣೇ ಚ) "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೪) । 4. ಬಂಧನ, ಕಟ್ಟಿಹಾಕುವುದು. 5. ಶಿಥಿಲ  
ಗೊಳಿಸುವುದು, ಸಡಿಲಮಾಡುವುದು. ಶ್ರುತ (ಶೇಖಿಲ್ಯೇ)  
"ಲ್ಯುಟ್" ।

ಶ್ರುದ್ಧಾ ಶ್ರುದ್ಧಾ (ವಿಂ) ಶ್ರದ್ಧೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದವನು,  
ಸಂಬಂಧವನು. ಶ್ರುತ್ + ಡ್ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಶಾನಚ್"  
(೩-೨-೧೨೪) । "ತच्छ್ರದ್ಧಾನಾ ಮುನಯಃ ಜ್ಞಾನವೈರಾಗ್ಯಯುಕ್ತಯಾ ।  
ಪಶ್ಯಂತ್ಯಾತ್ಮನಿ ಚಾತ್ಮಾನಂ ಭಕ್ತ್ಯಾ ಶ್ರುತಗೃಹೀತಯಾ" ಭಾಗಂ  
೧-೨-೧೨ ।

ಶ್ರುದ್ಧಾ ಶ್ರುದ್ಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಸ್ತಿತ್ವ, ಶ್ರದ್ಧೆ, ನಂಬಿಕೆ,  
ವಿಶ್ವಾಸ. ಶ್ರುತ್ + ಡ್ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಅಙ್"  
(೩-೩-೧೦೪) । "ಶ್ರುದ್ಧಾ ವಿದಿತಂ ವಿಧಿಶ್ಚೇತಿ ತ್ರಿತಯಂ  
ತತ್ಸಮಾಗತಮ್" ಶಾಕುಂ ೭-೨೯ । 2. ಆಸೆ, ಆಪೇಕ್ಷೆ. "ಯುಧ  
ಶ್ರುದ್ಧಾಪುಲಕಿತ ಇವ ಪ್ರಾಪ್ತಸಖ್ಯಃ ಕರೇಣ" ಮುದ್ರಾಂ ೬-೧೯ ।  
3. ಆದರ, ವಿಶ್ವಾಸ. "ಶ್ರುದ್ಧಾದರೇ ಚ ಕಾಡ್ಕ್ಷಾಯಾಮ್"  
ಮೇದಿಂ । "ಶ್ರುದ್ಧಾ ತ್ವಾಸ್ತಿಕ್ಯಕಾಡ್ಕ್ಷಯೋಃ" ನಾನಾರ್ಥರಂ ।  
4. ಶಾಂತವಾದ ಚಿತ್ತ, ಸಮಾಧಾನದ ಮನಸ್ಸು. 5.  
ಗರ್ಭಿಣಿಯ ಬಯಕೆ.



ಅಡ್ಡಾಲ್ ಶ್ರದ್ಧಾಳು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗರ್ಭಿಣಿಯಾಗಿ ಬಯಸು ವವಳು. ಅಡ್ಡಾಲ್ ಯಕ್ಷಿಣಿ—ಅತ್ + ಧಾನ್ “ಆಲ್ಪ” (3-2-148). 2. ಶ್ರದ್ಧೆಯುಳ್ಳ, ಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಆಸ್ತಿಕತೆಯುಳ್ಳ. “ಉದಾಮದೇವೇಶವಿಪತ್ತಿಹೇತುಃ ಅಡ್ಡಾಲ್ವೇತಾಃ ಸಮರೋತ್ಸವಸ್ಯ” ಕುಮಾಂ 13-5. 3. ನಂಬಿಕೆಯುಳ್ಳ, ನಂಬುವ ಸ್ವಭಾವದ. 4. ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ. “ಯಸ್ಯಾ ಅಕಾಲಕುಸುಮಸಮುದ್ಗಮಃ ಅಡ್ಡಾಲ್ವನಾ ಮಗ್ನಾನಿ ದಿನಮಾ- ಸ್ಯತ ಆತ್ಮಾ” ರತಾಂ 1.

ಅಡ್ಡಾವತ್ ಶ್ರದ್ಧಾವತ್ (ವಿಂ) 1. ನಂಬಿಕೆಯುಳ್ಳ. ಅಡ್ಡಾ- ಸ್ಯಾಸ್ತಿ—“ಮನುಷ್ಯ” (4-2-94). 2. ಆಸ್ತಿಕತೆಯುಳ್ಳ, ಭಕ್ತಿಯುಳ್ಳ, ಅಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು. “ಅಡ್ಡಾವಾನ್ ಲಭತೇ ಜ್ಞಾನಂ ತತ್ಪರಃ ಸಂಯತೇಂದ್ರಿಯಃ” ಗೀತಾ 4-39. 3. ಆದರ ವುಳ್ಳ, ವಿಶ್ವಾಸವುಳ್ಳ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ “ಕೀಪ್” (4-1-6). -ವಂತಿ -ವಂತಿ.

ಅಡ್ಡೇಯ ಶ್ರದ್ಧೇಯ (ವಿಂ) ನಂಬಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಅತ್ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) “ಯತ್” (3-1-99). “ಅಡ್ಡೇಯನಿರ್ಜರಜಲ್ಪಪದೇಶಮಸ್ಯ ವಿಷ್ವಕ್ತವೇಷು ಪತತಿ ಸ್ಫುಟ- ಮಂತರೀಕ್ಷಮ್” ಮಾಘಂ 4-25.

ಅನ್ಯ ಶ್ರಂಥಿ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಅನ್ಯಾತಿ ಮೋಚಯತಿ ಮಕ್ತಾನ್ —ಅನ್ಯ (ವಿಮೋಚನಹರ್ಷಸಂದರ್ಭೇ) “ಅನ್” (3-1-134). 2. ಸಂತೋಷಗೊಳಿಸುವುದು. 3. ಸಡಲಗೊಳಿಸುವುದು. ಅಥಿ (ಶೈಥಿಲ್ಯೇ) ಭಾವೇ “ಧನ್” (3-3-14). 4. ಬಂಧಿಸು ವುದು, ಕಟ್ಟುವುದು.

ಅನ್ಯನ ಶ್ರಂಥನ (ನಂ) 1. ಬಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟುವುದು. ಅನ್ಯ (ಸಂದರ್ಭೇ) “ಲ್ಯುಡ್” (3-3-114). “ಸಂದರ್ಭೋ ರಚನಾ ಗುಹ್ಯಃ ಅನ್ಯನಂ ಗ್ರಹಣಂ ಸಮಾಃ” ಹೇಮಂ. 2. ಸಡಲ ಗೊಳಿಸುವುದು. ಅಥಿ (ಶೈಥಿಲ್ಯೇ) “ಲ್ಯುಡ್”.

ಅನ್ಯಿತ ಶ್ರಂಥಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಡಲಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಬಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನ್ಯ (ಸಂದರ್ಭೇ) “ಕ್ತಃ”.

ಅಪಣ ಶ್ರಪಣ (ನಂ) ಬೇಯಿಸುವುದು, ಪಕ್ವಮಾಡುವುದು. ಅಪಿ (ಪಾಕೇ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಡ್” (3-3-114). ಷಡಾದಿತ್ವಾತ್ ಮಿತ್ವಮ್.

ಅಪಣೀಯ ಶ್ರಪಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಬೇಯಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಬೇಯಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಬೇಯಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 4. ಬೇಯಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಅಪಿ (ಪಾಕೇ) + ಣಿಚ್ “ಅನೀಯರ್” (3-1-96). “ತವ್ಯಃ” (3-1-96). -ಯಿತವ್ಯಮ್ -ಯಿತವ್ಯಮ್.

ಅಪಯತ್ ಶ್ರಪಯತ್ (ವಿಂ) ಬೇಯಿಸುತ್ತಿರುವ. ಅಪಿ (ಪಾಕೇ) + ಣಿಚ್ “ಶತ್” (3-2-124). ಸ್ತ್ರೀಯಾ “ಕೀಪ್” (4-1-6). -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

ಅಪಿತ ಶ್ರಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಕ್ವಮಾಡ ಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಪಿ (ಪಾಕೇ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತಃ” (3-2-102). (ನಂ) 2. ಬೇಯಿಸುವುದು. ಅಪಿ + ಣಿಚ್ ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (3-3-114).

ಅಪಿತಾ ಶ್ರಪಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಡಿ. ಅಪಿ (ಪಾಕೇ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತಃ” (3-2-102). ಟಾಪ್.

ಅಮ ಶ್ರಮ (ಪುಂ) 1. ಕಷ್ಟ, ದುಡಿತ. ಅಮು (ತಪಸಿ ಖೇದೇ ಚ) “ಘನ್” (3-3-14). “ಅಲಂ ಮಹೀಪಾಲ ತವ ಅಮೇಣ ಪ್ರಯುಕ್ತಮಪ್ಯಸ್ತ್ರಮಿತೋ ವೃಥಾ ಸ್ಯಾತ್” ರಘುಂ 2-34. 2. ಆಯಾಸ, ಬಳಲಿಕೆ. “ಅತನುಕುಚಮರಾನತೇನ ಭೂಯಃ ಅಮ- ಜನಿತಾನತಿತನಾ ಶರೀರಕೇಣ” ಮಾಘಂ 9-66. 3. ತಪಸ್ಸು. “ದಿವಂ ಯದಿ ಪ್ರಾರ್ಥಯಸೇ ವೃಥಾ ಅಮಃ ಪಿತುಃ ಪ್ರದೇಶಾಸ್ತವ ದೇವ- ಭೂಮಯಃ” ಕುಮಾಂ 4-44. 4. ಶ್ರಮಾಭ್ಯಾಸ, ಯುದ್ಧದ ತರಬೇತಿ.

ಅಮಣ ಶ್ರಮಣ (ಪುಂ) 1. ಬೌದ್ಧ ಸಂನ್ಯಾಸಿ, ಬೌದ್ಧ ಭಿಕ್ಷು. ಅಮ್ಯತಿ—ಅಮು (ತಪಸಿ ಖೇದೇ ಚ) “ಲ್ಯುಡ್” (3-1-134). “ತಾಪಸಾ ಮುಚ್ಛತೇ ಚಾಪಿ ಅಮಣಾಃ ಕ್ವಚಿ ಮುಚ್ಛತೇ” ರಾಮಾಂ. 2. ತಪಸ್ವಿ, ಧ್ಯಾನಪರನಾದ ಯೋಗಿ. 3. ಭಿಕ್ಷು, ಯಾಚಕ. (ವಿಂ) 4. ನೀಚ, ಅಧಮ.

ಅಮಣಾ ಶ್ರಮಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಪಸ್ವಿನಿ, ಪರಿವ್ರಾಜಿಕೆ. 2. ಸುಂದರಿ, ಚೆಲುವೆ. 3. ತಪಸ್ವಿನೀ ಗಿಡ, ಜಟಾಮಾಂಸಿ.

ಅಮಿನ್ ಶ್ರಮಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಶ್ರಮವುಳ್ಳವನು, ಆಯಾಸ ವುಳ್ಳವನು. ಅಮು (ತಪಸಿ ಖೇದೇ ಚ) “ಘಿನ್ಯು” (3-2-141). 2. ಕಷ್ಟಪಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು.

ಅಯ ಶ್ರಯ (ಪುಂ) ಆಶ್ರಯ, ರಕ್ಷಣೆಯ ಸ್ಥಾನ. ಅಯಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) “ಅನ್” (3-3-46).

ಅಯಣ ಶ್ರಯಣ (ನಂ) ಆಶ್ರಯಿಸುವುದು, ರಕ್ಷಣೆ ಪಡೆಯು ವುದು. ಅಯಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) “ಲ್ಯುಡ್” (3-3-114). “ತತ್ರಾಮೃತಂ ಸುರಗಣಾಃ ಫಲಮಂಜಸಾಪುರ್ಯತ್ಪಾದಪಕ್ಷಜರಜಃ- ಅಯಣಾನ್ ದೇವತಾಃ” ಭಾಗಂ 6-9-26.

ಅಯತ್ ಶ್ರಯತ್ (ವಿಂ) ಆಶ್ರಯಿಸುತ್ತಿರುವ, ರಕ್ಷಣೆಯ ಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಸೇರುತ್ತಿರುವ. ಅಯಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) “ಶತ್” (3-2-124). “ನಾಗಾಃ ಪರ್ವತಾನಿ ಅಯಂತಿ ಕುರ್ಗಾಣಿ ವಾಸಹೀನಾಸ್ತ್ರಸಂತಿ” ಮಾಘಂ 14-24.



ಅವ ಶ್ರವ (ಪುಂ) 1. ಕರ್ಣ, ಕಿವಿ. ಶ್ರವತೇಜೇನ—ಶ್ರ (ಅವಣಿ) “ಅಪ್” (೩-೩-೪೭) । 2. ಶ್ರವಣ. ಕೇಳುವುದು. ಶ್ರ ಭಾವೇ “ಅಪ್” (೩-೩-೪೭) । “ದುರ್ದಹಾಃ ಕ್ಷಣಮಪರೇಸ್ತದಂತರೇ ರಣಶ್ರವಾದುಪಚಯಮಾಶು ವಿಭ್ರತಿ” ಮಾಘಂ ೧೭-೨೨ । 3. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು. ಶ್ರವತೇ—ಶ್ರ ಕರ್ಮಂ “ಅಪ್” ।

ಅವಣ ಶ್ರವಣ (ನಂ) 1. ಕರ್ಣ, ಕಿವಿ. ಶ್ರವತೇಜೇನ—ಶ್ರ (ಅವಣಿ) ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭) । “ತವ ಸಾ ಕಥಾಸು ಪರಿಘಟಯತಿ ಅವಣಂ ಯದ್ಭಗುಲಿಮುಖೇನ ಮುಹುಃ” ಮಾಘಂ ೧-೬೪ । 2. ಕೇಳುವುದು, ಅಲಿಸುವುದು. “ಶುಶ್ರೂಷಾ ಅವಣಂ ತ್ರೇವ ಗ್ರಹಣಂ ಧಾರಣಂ ತಥಾ” ಕಾಮಂದಂ ೪-೨೨ । (ಪುಸ್ತಕಂ) —ಣಃ —ಣಃ, —ಣಾ —ಣಾ. 3. ಶ್ರವಣ ನಕ್ಷತ್ರ, ಅಶ್ವಿನಿ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಇಪ್ಪತ್ತೆರಡನೇ ನಕ್ಷತ್ರ. ಶ್ರವಣ ನಕ್ಷತ್ರವು ವಿಷ್ಣುದೇವತಾಕವಾದುದು. ಇದು ಉದ್ಭವಮುಖ ನಕ್ಷತ್ರ. ಇದರಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವರಿಗೆ ಚಂದ್ರದಶೆಯು ಪ್ರಾರಂಭವಾಗುವುದು. ಚಂದ್ರದಶೆಯು ಪ್ರಮಾಣ ಹತ್ತು ವರ್ಷಗಳು. ಈ ನಕ್ಷತ್ರವು ದೇವಗಣಕ್ಕೂ ಕಪಿಯ ಯೋನಿಗೂ ಸೇರಿದುದು. ಮಕರ ರಾಶಿಗೆ ಸೇರಿದ ನಕ್ಷತ್ರವಿದು. ಈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು ಶಾಸ್ತ್ರಾಧ್ಯಯನದಲ್ಲಿ ಅನುರಕ್ತನೂ ಅನೇಕಪುತ್ರ ಮತ್ತು ಮಿತ್ರಸಂಪತ್ತಿಯುಳ್ಳವನೂ ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಜಯಿಸುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವುಳ್ಳವನೂ ಪುರಾಣಶ್ರವಣದಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳವನೂ ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲೂ ಪ್ರವೀಣನೂ ಆಗುವನು. “ಶಾಸ್ತ್ರಾನುರಕ್ತೋ ಬಹುಪುತ್ರಮಿತ್ರಃ ಸತ್ಪುತ್ರಭಕ್ತಿ-ವಿಜಿತಾರಿವರ್ಗಃ । ಚೇಜ್ಜನ್ಮಕಾಲೇ ಅವಣಾ ಹಿ ಯಸ್ಯ ಪ್ರೇಮಾ ಪುರಾಣಶ್ರವಣೇ ಪ್ರವೀಣಃ” ॥

ಅವಣಗೋಚರ ಶ್ರವಣಗೋಚರ (ವಿಂ) 1. ಶ್ರೋತ್ರೇಂದ್ರಿಯಕ್ಕೆ ಗೋಚರವಾಗುವ, ಕಿವಿಗೆ ಕೇಳಿಸುವಷ್ಟು ದೂರದ. (ಪುಂ) 2. ಕಿವಿಗೆ ಕೇಳಿಸುವಷ್ಟು ದೂರ.

ಅವಣದ್ವಾದಶಿ ಶ್ರವಣದ್ವಾದಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶ್ರವಣ ನಕ್ಷತ್ರ ದೊಡನೆ ಸೇರಿದ ದ್ವಾದಶಿ. ಅವಣಯುಕ್ತಾ ದ್ವಾದಶಿಃ । ಶ್ರವಣ ದ್ವಾದಶಿಯ ದಿನ ಉಪವಾಸಮಾಡಿ ಶ್ರೀಹರಿ ಪೂಜೆಯನ್ನು ವಿಶೇಷರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಆಚರಿಸಬೇಕು. “ಮಾಸಿ ಭಾದ್ರಪದೇ ಶುಕ್ಲೇ ದ್ವಾದಶಿ ಅವಣಾನಿವಿತಾ । ಮಹತಿ ದ್ವಾದಶಿ ಜ್ಞೇಯಾ ಉಪವಾಸೇ ಮಹಾಫಲಾ” ॥

ಅವಣಪಥ ಶ್ರವಣಪಥ (ಪುಂ) ಶಬ್ದವು ಶ್ರೋತ್ರೇಂದ್ರಿಯಕ್ಕೆ ಬಂದು ಸೇರುವ ಮಾರ್ಗ. ಅವಣಸ್ಯ ಪಥಾಃ ಅವಣಪಥಃ “ಅಃ” (೪-೪-೭೪) ।

ಅವಣಪಾಲಿ ಶ್ರವಣಪಾಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಿವಿಯ ಅಂಚು, ಕರ್ಣದ ತುದಿಯ ಭಾಗ, ಕಿವಿಯ ಕೊನೆಯ ಭಾಗ.

ಅವಣಸುಭಗ ಶ್ರವಣಸುಭಗ (ವಿಂ) ಶ್ರೋತ್ರೇಂದ್ರಿಯಕ್ಕೆ ಸುಖವನ್ನಂಟುಮಾಡುವ, ಕಿವಿಗೆ (ಕೇಳಲು) ಇಂಪಾಗಿರುವ. ಅವಣಯೋಃ ಸುಭಗಃ । “ತच्छ್ರುತ್ವಾ ತೇ ಅವಣಸುಭಗಂ ಗಜಿತಂ ಮಾನಸೋತ್ಕಾಃ” ಮೇಘಂ ೧-೧೧ ।

ಅವಸ್ ಶ್ರವಸ್ (ನಂ) 1. ಶ್ರೋತ್ರ, ಕರ್ಣ, ಕಿವಿ. ಶ್ರ (ಅವಣಿ) “ಅಸುನ್” (೩ಂ ೪-೧೮೮) । “ಅವಃಪ್ರವಿಷ್ಟಾ ಇವ ತದ್ಗಿರಸ್ತಾ ವಿಧುಯ ವೈಮತ್ಯಧುತೇನ ಮೂರ್ಛಾ” ನೆಪಂ ೩-೭೪ । 2. ಸಂಪತ್ತು, ಐಶ್ವರ್ಯ. 3. ಯಶಸ್ಸು, ಕೀರ್ತಿ. “ಅವಃ ಸುಶ್ರವಸಃ ಪುಣ್ಯ ಸರ್ವದೇಹಕಥಾಶ್ರಯಮ್” ಭಾಗಂ ೪-೧೭-೬ । 4. ಶಬ್ದ. “ಗನ್ಧಾಕೃತಿ ಸ್ಪರ್ಶರಸಶ್ರವಾಸಿ” ಭಾಗಂ ೪-೧೧-೯ ।

ಅವಾಘ ಶ್ರವಾಯ್ಯ (ಪುಂ) ಯಜ್ಞಪಠ, ಯಾಗಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ ಪಠ.

ಅವಿಠ ಶ್ರವಿಷ್ಯ (ವಿಂ) ಧನಿಷ್ಠಾನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಅವಿಠಾಸು ಜಾತಃ “ಅನ್” (೪-೩-೧೬) । ಅಣಿ ಲುಕ್ (೪-೩-೩೪) ।

ಅವಿಠಾ ಶ್ರವಿಷ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧನಿಷ್ಠಾನಕ್ಷತ್ರ. ಅವಣಂ ಅವಃ —ಅವೋಸ್ತಸ್ಯಾಃ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪) । ಅತಿಶಯೇನ ಅವವತಿ “ಇಠನ್” (೪-೩-೪೪) । ಮತುಪಿ ಲುಕ್ (೪-೩-೬೪) । ಧನಿಷ್ಠಾನಕ್ಷತ್ರವು ವಸುದೇವತಾಕವಾದುದು. ಈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವರಿಗೆ ಕುಜದಶೆಯು ಪ್ರಾರಂಭವಾಗುವುದು. ಕುಜದಶೆಯು ಪ್ರಮಾಣ ಏಳು ವರ್ಷಗಳು. ಈ ನಕ್ಷತ್ರವು ರಾಕ್ಷಸಗಣಕ್ಕೂ ಸಿಂಹಯೋನಿಗೂ ಸೇರಿದುದು. ಧನಿಷ್ಠಾನಕ್ಷತ್ರದ ಮೊದಲನೇ ಎರಡು ಪಾದಗಳು ಮಕರ ರಾಶಿಗೂ ಉಳಿದ ಎರಡು ಪಾದಗಳು ಕುಂಭ ರಾಶಿಗೂ ಸೇರುವುವು. ಇದು ಉದ್ಭವಮುಖ ನಕ್ಷತ್ರ.

ಅವ್ಯ ಶ್ರವ್ಯ (ವಿಂ) ಕೇಳಲು ಅರ್ಹವಾದ, ಶ್ರವಣಯೋಗ್ಯವಾದ. ಶ್ರೋತೃಯೋಗ್ಯಮ್—ಶ್ರ (ಅವಣಿ) “ಯತ್” (೩-೧-೯೭) । ಕಾವ್ಯವು ದೃಶ್ಯಮ್ ಮತ್ತು ಶ್ರವ್ಯಮ್ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. “ದೃಶ್ಯಶ್ರವ್ಯತ್ವಭೇದೇನ ಪುನಃ ಕಾವ್ಯಂ ದ್ವಿಧಾ ಮತಮ್” ಸಾಂ ೬ಂ ೬ । ಶಾಕುಂತಲಮ್ ಅನರ್ವರಾಧವಮ್ ವೇಣೀಸಂಹಾರಮ್ ಮುಂತಾದುವು ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯಗಳು. ರघुवंಶಮ್ ಕುಮಾರಸಂಭವಮ್ ಕಿರಾತಾರ್ಜುನೀಯಮ್ ಮುಂತಾದುವು ಶ್ರವ್ಯಕಾವ್ಯಗಳು.

ಆಣ ಶ್ರಾಣ (ವಿಂ) 1. ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಾಕಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ (ಪಾಕಿ) ಕರ್ಮಂ “ಕ್” (೩-೨-೧೦೨) । (ನಂ) 2. ಬೇಯಿಸುವುದು. ಆ ಭಾವೇ “ಕ್” (೩-೩-೧೧೪) । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಣಾ —ಣಾ. 3. ಗಂಡಿ, ಅಂಬಲಿ. “ಆಣಾ ಯವಾಗ್ನಾ ಆಣಂ ತು ಪಕ್ವೇ” ಹೇಮಂ ।



ಆಣೀಯ ಶ್ರಾಪಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಬೇಯಿಸಬೇಕಾದ. 2. ಬೇಯಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಬೇಯಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ಬೇಯಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ಶ್ರೀ (ಪಾಕೇ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96). "ತವ್ಯ:" (3-1-96). ಆತವ್ಯ: ಶ್ರಾಪಣೀಯ.

ಆಯತ್ ಶ್ರಾಪಣೀಯ (ವಿಂ) ಬೇಯಿಸುತ್ತಿರುವ, ಪಾಕ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಶ್ರೀ (ಪಾಕೇ) "ಶತ್" (3-2-124). ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಡೀಪ್" (4-1-6). -ಯಂತಿ-ಯಸ್ತೀ.

ಶ್ರಾದ್ಧ ಶ್ರಾದ್ಧ (ನಂ) 1. ಪಿತೃಗಳ ತೃಪ್ತಿಗಾಗಿ ಪಿತೃಗಳನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಶ್ರಾದ್ಧಾರ್ಥವಾಗಿ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ, ಶ್ರಾದ್ಧ ಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಪಿತೃಕರ್ಮ. ಶ್ರಾದ್ಧ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಅನ್" (ವಾಂ 4-1-110). ಅತ್ರ ಪ್ರಯೋಜನಶಬ್ದ: ಕಾರಣವಾಗಿ. "ಶ್ರಾದ್ಧಾ ದೀಯತೇ ಯಸ್ಮಾತ್ತಸ್ಮಾಚ್ಚಾಡ್ಧ ನಿಗದತೇ" ಪುಲಸ್ತ್ಯ: (ವಿಂ) 2. ಶ್ರಾದ್ಧಯುಕ್ತವನು, ಅಸಕ್ತಿಯುಕ್ತವನು. ಶ್ರಾದ್ಧಾಸ್ತೀತಿ - ಶ್ರಾದ್ಧಾ "ಗ:" (4-2-101).

ಶ್ರಾದ್ಧದೇವ ಶ್ರಾದ್ಧದೇವ (ಪುಂ) ಪಿತೃಪತಿ, ಯಮಧರ್ಮ ರಾಯ. ಶ್ರಾದ್ಧಸ್ಯ ದೇವ: ಪಿತೃಪತಿಯಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಇವನು ಶ್ರಾದ್ಧದೇವ.

ಶ್ರಾದ್ಧಿಕ ಶ್ರಾದ್ಧಿಕ (ಪುಂ) ಶ್ರಾದ್ಧದಲ್ಲಿ ನಿಮಂತ್ರಿತನಾದ ವನು, ಶ್ರಾದ್ಧಾನ್ನವನ್ನು ಭುಜಿಸುವವನು. ಶ್ರಾದ್ಧಮನೇನ ಭುಕ್ತಮ್ - ಶ್ರಾದ್ಧ "ಠನ್" (4-2-64). "ಇನಿ:" (4-2-64). ಶ್ರಾದ್ಧಿನ್ ಶ್ರಾದ್ಧಿನ್. (ಶ್ರಾದ್ಧಿ ಶ್ರಾದ್ಧೀ).

ಶ್ರಾದ್ಧೀಯ ಶ್ರಾದ್ಧೀಯ (ವಿಂ) ಶ್ರಾದ್ಧಸಂಬಂಧವಾದ. ಶ್ರಾದ್ಧಸ್ಯೇದಮ್ "ಠ:" (4-2-114).

ಶ್ರಾಂತ ಶ್ರಾಂತ (ವಿಂ) 1. ಆಯಾಸಗೊಂಡವನು, ಬಳಲಿ ದವನು. ಶ್ರಮು (ತಪಸಿ ಕ್ಷೇದೇ ಚ) "ಕ್ತ:" (3-4-92). "ಶ್ರಾಂತಾನಾಮವಿಕಚಲೋಚನಾರವಿಹೈ:" ಮಾಘಂ 6-1. (ಪುಂ) 2. ತಪಸ್ವಿ.

ಶ್ರಾಂತಿ ಶ್ರಾಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಳಲಿಕೆ, ಆಯಾಸ, ದಣವು. ಶ್ರಮು (ತಪಸಿ ಕ್ಷೇದೇ ಚ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94).

ಶ್ರಾಮ ಶ್ರಾಮ (ಪುಂ) 1. ಮಾಸ. 2. ಕಾಲ, ಸಮಯ. 3. ಮಂಟಪ. ಶ್ರಾಮ (ಆಹ್ವಾನೇ) "ಘನ್" (3-3-19).

ಶ್ರಾಯ ಶ್ರಾಯ (ಪುಂ) 1. ಆಶ್ರಯ, ರಕ್ಷಣೆಯ ಸ್ಥಳ. ಶ್ರೀ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಘನ್" (3-3-24). "ಯಾತ ಯುಯಮಶ್ರಾಯಂ ದಿಶಂ ನಾಯೇನ ದಕ್ಷಿಣಾಮ್" ಭಟ್ಟಿಂ 9-36. (ವಿಂ) 2. ಶ್ರೀದೇವತಾಕವಾದ (ಹವಿಸ್ಸು). ಶ್ರೀದೇವತಾ ಅಸ್ಯ ಶ್ರಾಯಂ ಹವಿ: ಶ್ರೀ "ಅನ್" (4-2-24).

ಶ್ರಾಯಸ ಶ್ರಾಯಸ (ವಿಂ) ಶ್ರೀಯಸ್ಸಿನಲ್ಲಿರುವ. ಶ್ರೇಯಸಿ ಭವಮ್ - ಶ್ರೀ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಅನ್" (4-3-43). ಆತ್ (3-3-1).

ಶ್ರಾವ ಶ್ರಾವ (ಪುಂ) ಕೇಳುವುದು, ಅಲಿಸುವುದು. ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೇ) "ಘನ್" (3-3-24).

ಶ್ರಾವಕ ಶ್ರಾವಕ (ಪುಂ) 1. ಬೌದ್ಧಭಿಕ್ಷು, ಬುದ್ಧನ ಶಿಷ್ಯ. 2. ಕಾಗೆ, ವಾಯಸ. ಶ್ರವಣೋತಿ - ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೇ) "ಘಲ್" (3-1-133). "ಶ್ರಾವಕಾ: ಶಿಷ್ಯಸಂಜ್ಞಿತ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. "ಕಾಕೋ ರತಜ್ವರ: ಸ್ತುತೀ ಶ್ರಾವಕೋ ಗೃಹಮೇಶ್ವರ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 3. ದೂರದ ಶಬ್ದ. ಶ್ರಾವಯತಿ - ಶ್ರು + ಣಿಕ್ "ಘಲ್" (3-1-133). "ಪ್ರಣಿಜಗದ್ವರಕಾಕುಶಲಾಶ್ರಾವಕಸ್ತಿಸ್ತುತಾ:" ಮಾಘಂ 11-1. (ವಿಂ) 4. ಕೇಳುವವನು, ಅಲಿಸುವವನು.

ಶ್ರಾವಣ ಶ್ರಾವಣ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರಾವಣಮಾಸ, ಶ್ರಾವಣ ನಕ್ಷತ್ರ ಕೂಡಿದ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯುಕ್ತ ವರಾಸ. ಶ್ರವಣೇನ ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ ಶ್ರಾವಣೀ - ಸಾರ್ವಸ್ಮಿನ್ಶ್ರವಣೀ ಶ್ರಾವಣೀ "ಅನ್" (4-2-21). ಇಕಾರಲೋಪ: (4-4-142). 2. ಪಾಪಂ. ಶ್ರವಣೇನ ಆಚರತಿ ಶ್ರವಣ "ಅನ್" (4-2-21). 3. ಶಬ್ದ. ಶ್ರವಣೇನ ಗೃಹ್ಯತೇ "ಅನ್" (4-2-21). "ಶ್ರಾವಣೋ ಮಾಸಿ ಪಾಪಂ ಕ್ಷಮಾಪಯಾಂಶ್ರಾವಣಾ ಸ್ತ್ರೀಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ. (ನಂ) 4. ಕೇಳು ವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ಶ್ರು + ಣಿಕ್ ಮಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). (ವಿಂ) 5. ಶ್ರಾವಣಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಕಿವಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಶ್ರವಣಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (4-3-120).

ಶ್ರಾವಣಿಕ ಶ್ರಾವಣಿಕ (ಪುಂ) ಶ್ರಾವಣಮಾಸ. ಶ್ರಾವಣೀ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ ಅಸ್ಮಿನ್ - ವಾ "ಠಕ್" (4-2-23). ಪಕ್ಷೇ "ಅನ್" (4-2-21). ಶ್ರಾವಣೀ ಶ್ರಾವಣೀ. "ಶ್ರಾವಣೇ ತು ನಮಾ: ಶ್ರಾವಣಿಕಶ್ಚ ಸ:" ಅಮಂ.

ಶ್ರಾವಣಿ ಶ್ರಾವಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶ್ರಾವಣಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ, ಶ್ರಾವಣ ನಕ್ಷತ್ರ ಕೂಡಿದ ಹುಣ್ಣಿಮೆ. ಶ್ರವಣೇನ ಶ್ರವಣನಕ್ಷತ್ರೇನ ಯುಕ್ತಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ "ಅನ್" (4-2-23). "ಡೀಪ್" (4-1-14). ಶ್ರಾವಣೀ ಪೌರ್ಣಮಾಸೀ. 2. ಶ್ರಾವಣ ಮಾಸದ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ದಿನ ಆಚರಿಸಲ್ಪಡುವ ಉಪಾಕರ್ಮ.

ಶ್ರಾವಂತಿ ಶ್ರಾವಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧರ್ಮಪುರಿ, ಧರ್ಮಪಟ್ಟಣ. "ಶ್ರಾವಂತೀ ಧರ್ಮಪತ್ತನಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಶ್ರಾವಯತ್ ಶ್ರಾವಯತ್ (ವಿಂ) ಕೇಳುವಂತೆ ಮಾಡು ತ್ತಿರುವ, ಅಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಕಿವಿಗೊಡುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೇ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (3-2-124). "ತಂ ವದಂತಮಿತಿ ವಿಷ್ಠರಶ್ರವಾ: ಶ್ರಾವಯತ್ರಯ ಸಮಸ್ತಭೂತ:" ಮಾಘಂ 14-12. ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಡೀಪ್" (4-1-6). -ಯಂತಿ-ಯಸ್ತೀ.



**ಆವಸ್ತಿ ಶ್ರಾವಸ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗಾನದಿಗೆ ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ನಗರ. ಇದು ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಒಬ್ಬ ರಾಜನಾದ ಶ್ರಾವಸ್ತಿನಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದುದು. ಇದು ಕೋಸಲದೇಶದ ರಾಜಧಾನಿಯಾಗಿತ್ತು. ಶ್ರೀರಾಮನ ಪುತ್ರ ಲವನು ಇಲ್ಲಿ ರಾಜ್ಯಭಾರ ಮಾಡಿದನು.

**ಆವಿತ ಶ್ರಾವಿತ** (ವಿಂ) ಕೇಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೇಳುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಶ್ರು (ಶ್ರವಣ) + ಣಿच् "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಆವಿಷ್ಠಾಣೀಯ ಶ್ರಾವಿಷ್ಠೀಯ** (ವಿಂ) ಧನಿಷ್ಠಾನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಆವಿಷ್ಠಾಣಿ ಜಾತಃ—ಆವಿಷ್ಠಾ "ಣ್" (ವಾಂ ೪-೩-೩೪)।

**ಆವ್ಯ ಶ್ರಾವ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಕೇಳಲ್ಪಡುವ, ಅರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಕೇಳಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಕೇಳಬೇಕಾದ. 4. ಕೇಳಬಹುದಾದ. ಶ್ರು (ಶ್ರವಣ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೫)। 5. ಕೇಳುವಂತೆ ಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. 6. ಕೇಳುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 7. ಕೇಳುವಂತೆ ಮಾಡಬೇಕಾದ. 8. ಕೇಳುವಂತೆ ಮಾಡಬಹುದಾದ. ಶ್ರು + ಣಿच् ಆವಶ್ಯಕ "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೫)।

**ಆಶ್ರಿತ ಶ್ರಿತ** (ವಿಂ) 1. ಆಶ್ರಿತ, ಆಶ್ರಯ ಪಡೆದವನು. ಶ್ರಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ಭಾಸ್ಕರಶ್ಚ ದಿಶಮಽಪ್ಯುಪಾಸ ಯಾ ತಾಂ ಆಶ್ರಿತಾಃ ಪ್ರತಿಭಯಂ ವವಾಶಿರೇ" ರಘುಂ ೧೧-೬೧। 2. ಸೇವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಆಶ್ರಿತಪುಷ್ಪಸರಃಸರಿತ್ಕಥಂ ನ ಸಮಾಧಿಕ್ಷಪಿತಾಃ ಸ್ವಿಲಕ್ಷಪಮ್" ನೈಷಂ ೨-೩೯। 3. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ. "ಆಶ್ರಿತಂ ಶಿಲಾಶಯಾಮಲತಾಭಿರಾಮಂ ಲತಾಭಿರಾಮ-ನ್ವಿತಪದ್ಮದಾಭಿಃ" ಮಾಘಂ ೪-೩। 4. ಆಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ದ್ವಿಜೇಂದ್ರಕಾಂತಂ ಆಶ್ರಿತವಕ್ಷಸಂ ಆಶ್ರಯಾ" ಮಾಘಂ ೧೨-೩। 5. ಪಕ್ಕವಾದ, ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಾಕಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಲಕ್ಷ್ಮಣಃಪುರುಷವ್ಯಾಗ್ರಮಥ ರಾಘವಮಬ್ರವೀತ್। ಅಯಂ ಸರ್ವಃ ಸಮಸ್ತಾಙ್ಗಃ ಆಶ್ರಿತಃ ಕೃಷ್ಣಮೃಗೋ ಮಯಾ" ರಾಮಾಂ 1. 6. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. "ಆಶ್ರಿತಾಸ್ಯ ಕಂಠಂ ಗುರುವಿಪ್ರವಂದನಾದ್ವಿನಮ್ರ-ಮೌಲೇಶ್ವಿಬುಕಾಪ್ತಚುಮ್ಬಿನಿ" ನೈಷಂ ೧೫-೬೬।

**ಆಶ್ರಿತವತ್ ಶ್ರಿತವತ್** (ವಿಂ) 1. ಆಶ್ರಯ ಪಡೆದವನು. 2. ಸೇವಿಸುವವನು. 3. ಬೇಯಿಸಿದವನು, ಪಾಕಮಾಡಿದವನು. 4. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವವನು. 5. ಆಕ್ರಮಿಸಿದವನು. ಶ್ರಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ತೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ವತೀ -ವತೀ.

**ಆಶ್ರಿತಿ ಶ್ರಿತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಶ್ರಯ. 2. ಸೇವೆ. 3. ಪಾಕ. 4. ಸೇರಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಶ್ರಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।

**ಆಶ್ರಯಮನ್ಯಾ ಶ್ರಿಯಮನ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತನ್ನನ್ನು ಲಕ್ಷ್ಯೆಯೆಂದು ತಿಳಿದಿರುವವಳು. ಆಶ್ರಯಮಾತ್ಮನಾನ್ ಮನ್ಯತೇ—"ಸಶ್" (೩-೨-೮೩)। ಮುಗಮಃ (೬-೩-೬೭)। "ಮಿಥ್ಯೈವ ಶ್ರೀಃ ಆಶ್ರಯಮನ್ಯಾ ಶ್ರೀಮನ್ಮನ್ಯೋ ಮೃಘಾ ಹರಿಃ" ಭದ್ರಂ ೫-೭೧।

**ಶ್ರೀ ಶ್ರೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಕ್ಷ್ಮಿ, ಶ್ರೀಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಪತ್ನಿ. ಆಶ್ರಯಿ ಹರಿಮ್—ಆಶ್ರಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕ್ವಿಪ್" ದೀರ್ಘ (ವಾಂ ೩-೨-೧೭೮)। "ಆಶ್ರಯಃ ಪತಿಃ ಶ್ರೀಮತಿಃ ಶಾಸಿತುಂ ಜಗಜ್ಜಗನ್ನಿವಾಸೋ ವಸುದೇವತಾನಿ" ಮಾಘಂ ೧-೧। 2. ಕಂಠಿ, ಪ್ರಕಾಶ. "ತಸ್ಮಿನ್ಮುತ್ಪತ್ತಿತೇ ಪುರಃ ಸುರಮುನಾವಿಂದೋ ಆಶ್ರಯಂ ವಿಭ್ರತಿ" ಮಾಘಂ ೧-೭೫। 3. ಸಂಪತ್ತು, ಐಶ್ವರ್ಯ. "ಆಶ್ರಯಂ ವಿಕರ್ಷಯಪಹನ್ಯಥಾನಿ ಆಶ್ರಯಃ ಪರಿಸ್ತನೋತಿ ತನೋತಿ ಕೌತಿಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೭। 4. ರಾಜ್ಯಲಕ್ಷ್ಮಿ. "ಜಗತಿ ಆಶ್ರಯಾ ವಿರಹಿತೋಽಪಿ ಯದುದಾಹಿಸುತಾಮುಪಾಯಥಾಃ" ಮಾಘಂ ೧೫-೨೭। 5. ಶೋಭೆ, ಕಂಠಿ. "ತಥಾಪಿ ಪುಣ್ಯಾತಿ ನಮಃ ಆಶ್ರಯಂ ಪರಾಂ ನ ರಮ್ಯಮಾಹಾರ್ಯಮಪೇಕ್ಷತೇ ಗುಣಮ್" ಕಿರಾಂ ೪-೨೩। "ಛವನಯತಿ ದಯಿತೇ ವಿಹರಭೂಮಿಃ ಆಶ್ರಯಮಿವ ತಾಃ ಪುಲಕೋದ್ಗಮೇಽಪುಣ್ಯನ್" ಯಾದಂ ೨೪-೪೨। 6. ವೇಷರಚನೆ. 7. ಧರ್ಮ ಅರ್ಥ ಮತ್ತು ಕಾಮಗಳೆಂಬ ತ್ರಿವರ್ಗ. 8. ವಾಕ್ಯ, ಮಾತು. 9. ಸರಳವೃಕ್ಷ. 10. ಲವಂಗ. 11. ಉಪಕರಣ. 12. ವಿಭೂತಿ, ಅಮಾನುಷಶಕ್ತಿ, ಮನುಷ್ಯನ ಶಕ್ತಿಗೆ ಮೀರಿದ ಶಕ್ತಿ. 13. ಮತಿ, ಬುದ್ಧಿ. 14. ಸರಸ್ವತಿ, ವಾಗಧಿದೇವತೆ. 15. ಯಶಸ್ಸು, ಕೀರ್ತಿ. 16. ಕಮಲ, ಪದ್ಮ. 17. ಬುದ್ಧಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಗಂದಿಗರ ವಸ್ತು. 18. ಗುರು ದೇವತೆಗಳ ಹೆಸರಿಗೆ ಮೊದಲು ಸೇರಿಸುವ ಒಂದು ಪದ, ಒಂದು ಗೌರವದ ಪದ. ಶ್ರೀರಾಮಃ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಃ ಶ್ರೀಲಕ್ಷ್ಮೀಃ ಶ್ರೀಶ್ರೀಕಂಠೇಶ್ವರಃ ಶ್ರೀಶುಕ್ರಃ ಶ್ರೀಶಂಕರಾಚಾರ್ಯಃ ಶ್ರೀಮದ್ವಾಚಾರ್ಯಃ ಶ್ರೀರಾಮಾನುಜಾಚಾರ್ಯಃ ಶ್ರೀಬಸವೇಶ್ವರಃ ಇತ್ಯಾದಿ. "ದೇವಂ ಗುರುಂ ಗುರುಸ್ಥಾನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಕ್ಷೇತ್ರಾಧಿ-ದೇವತಾಮ್। ಸಿದ್ಧಂ ಸಿದ್ಧಾಧಿಕಾರಾಂಶ್ಚ ಶ್ರೀಪೂರ್ವಂ ಸಮುದೀಯೇತ್"। 19. ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರೋಕ್ತ ಉಕ್ತಾಂಧಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. "ಉಕ್ತಾಂಧಂದಸ್ಸಿನಃ" ವೃಂ ೨೦। (ಪುಂ) 20. ಸಂಗೀತದ ಒಂದು ರಾಗ. "ಶ್ರೀವೈಶರಚನಾಶೋಭಾಮಾರತೀ-ಸರಲದ್ವಯೇ। ಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾಂ ತ್ರಿವರ್ಗಸಂಪತ್ತಿವಿಧೋಪಕರಣೇಷು ಚ। ವಿಭೂತೌ ಚ ಮತೌ ಚ ಸ್ತ್ರೀ" ಮೇದಿಂ।

**ಶ್ರೀಕಂಠ ಶ್ರೀಕಂಠ** (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಶ್ರೀಃ ಶೋಭಾ ಕಂಠಸ್ಯ। "ಶ್ರೀಕಂಠಃ ಶಿತಿಕಂಠಃ ಕಪಾಲ-ಮುತ್" ಅಮಂ 1. 2. ಕುರುಚ್ಛಂಗಲ ದೇಶ. "ಶ್ರೀಕಂಠೋ-ದೇಶಮಿಚ್ಛುಃ" ಮೇದಿಂ। "ಶ್ರೀಕಂಠಃ ಕುರುಚ್ಛಲೇ। ಶಂಕರೇ ಚ" ಹೇಮಂ 1.



ಶೋಕರ ಶ್ರೀಕರ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. (ನಂ) 2. ಕೆಂಪು ನೈದಿಲೆ. (ವಿಂ) 3. ಕಾಂತಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. ಶ್ರಿಯ: ಕರ: |

ಶೋಕರಣ ಶ್ರೀಕರಣ (ನಂ) ಲೇಖನಿ. ಶ್ರೀ: ಕ್ರಿಯತೇಜೇನ — ಡುಕ್ತು (ಕರಣ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೭) |

ಶೋಕಾಂತ ಶ್ರೀಕಾಂತ (ಪುಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣು, ಲಕ್ಷ್ಮಿಯ ಪತಿ. ಶ್ರಿಯ: ಕಾಂತ: |

ಶೋಕಾರಿನ್ ಶ್ರೀಕಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. ಶ್ರಿಯಂ ಶೋಮಾ ಕರೋತಿ — ಡುಕ್ತು (ಕರಣ) "ಗಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) |

ಶೋಖಂಡ ಶ್ರೀಖಂಡ (ಪುಂ) ಗಂಧ, ಚಂದನ. ಶ್ರಿಯ: ಶೋಖಾ: ಖಂಡ ಇವ. "ಮಾಲಯಸ್ತು ಸ್ಯಾಚ್ಛೋಖಂಡೋ ರೋಹಿಣಿಶ್ಚ ಸ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಶೋಗದಿತ ಶ್ರೀಗದಿತ (ನಂ) ಹದಿನೆಂಟು ವಿಧ ಉಪರೂಪಕ ಗಳಲ್ಲೊಂದು ಉಪರೂಪಕ. ಶ್ರೀಗದಿತಉಪರೂಪಕದಲ್ಲಿ ವಸ್ತುವು ಪ್ರಖ್ಯಾತವಾಗಿರಬೇಕು. ಉದಾತ್ತ ನಾಯಕ. ಏಕಾಂಕ. ನಾಯಕಿಯು ಪ್ರಸಿದ್ಧಳಾಗಿರಬೇಕು. ಗರ್ಭ ಮತ್ತೂ ವಿಮರ್ಶ ಸಂಧಿಗಳಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಶ್ರೇಷ್ಠ ಭೂಯಿಷ್ಠ ವಾಗಿರಬೇಕು. "ಪ್ರಖ್ಯಾತವೃತ್ತಮೇಕಾಂಕಂ ಪ್ರಖ್ಯಾತೋದಾತ್ತನಾಯಕಮ್ | ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾಯಿಕಂ ಗರ್ಭವಿಮರ್ಶಮ್ಯಾಂ ವಿವರ್ಜಿತಮ್ | ಭಾರತಿ-ವೃತ್ತಿಬಹುಲಂ ಶ್ರೀತಿಶಬ್ದೇನ ಸಂಕುಲಮ್ | ಸತಂ ಶೋಗದಿತಂ ನಾಮ" ಸಾಂ ದಂ |

ಶೋಗಮ್ ಶ್ರೀಗಮ್ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಶ್ರೀ: ತ್ರಿಜಗದ್ವಿಭೂತಿ: — ಸಾ ಗಮೇಷ್ಯ | "ಶೋಗಮಸ್ತ್ರಿಜಗದ್ವಿಭೂತಿ-ಮುದರೇ ಬಹನ್" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: | "ತದ್ಭವ: ಕೋಮಣೋ ದೇವ: ಶೋಗಮ: ಪರಮೇಶ್ವರ:" ವಿಂ ಸಂ | 2. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ.

ಶೋಗ್ರಹ ಶ್ರೀಗ್ರಹ (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿಗಳು ನೀರು ಕುಡಿಯುವ ತೊಟ್ಟಿ, — ದೋಣಿ.

ಶೋಗನ ಶ್ರೀಗನ (ಪುಂ) 1. ಬುದ್ಧದೇವ. ಶ್ರಿಯಾ ಧನ: ಪೂರ್ಣ: | (ನಂ) 2. ದಧಿ, ಮೊಸರು.

ಶೋಚಕ್ರ ಶ್ರೀಚಕ್ರ (ನಂ) 1. ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿಯ ಪೂಜಾಚಕ್ರ. 2. ಭೂಮಂಡಲ. 3. ಇಂದ್ರನ ರಥದ ಚಕ್ರ.

ಶೋದ ಶ್ರೀದ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ಶ್ರಿಯಂ ದದಾತಿ — ದಾಮ್ (ದಾನ) "ಕ:" (೩-೨-೩) | ಮಹಾವಿಷ್ಣುವು ಲಕ್ಷ್ಮಿಗೆ ಜೀವನಪ್ರದನಾದುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. "ನ ಚ ಸೀತಾ ತ್ವಯಾ ಹೀನಾ ನ ಚಾಹಮಪಿ ರಾಘವ | ಮೂರ್ತಮಪಿ ಜೀವಾಂ ಜಲಾನ್ಮತ್ಸ್ಯಾವಿವೋದೃತೌ" ರಾಮಾಂ | "ರಾಘವತ್ವೇಭವತ್ಸೀತಾ ಸ್ಕಿಮಣಿ ಕೃಣ್ಣಜನ್ಮನಿ | ಅನ್ಯೇಷು ಧಾವತಾರೇಷು ವಿಷ್ಣೋ-

ರೋಪನಪಾಯಿನಿ" ವಿಂ ಪುಂ | "ಅನ್ಯಾ ರಾಘವೇಣಾಹಮ್" ರಾಮಾಂ | ಇತ್ಯಾದಿ ವಚನಗಳಿಂದ ಇವರಿಬ್ಬರಿಗೂ ಅವಿನಾ ಭೂತತ್ವವು ಸಿದ್ಧ. "ಶ್ರೀದ: ಶ್ರೀಶ: ಶ್ರೀನಿವಾಸ:" ವಿಂ ಸಂ | 2. ಕುಬೇರ. (ವಿಂ) 3. ಐಶ್ವರ್ಯವನ್ನು ಕೊಡುವವನು.

ಶೋಧರ ಶ್ರೀಧರ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ಶ್ರಿಯಾ: ಧರ: | ರತ್ನವು ಕಾಂತಿಯನ್ನೂ ಕುಸುಮವು ಸುವಾಸನೆಯನ್ನೂ ಚಂದ್ರನು ಚಂದ್ರಿಕೆಯನ್ನೂ ಹೊಂದಿರುವಂತೆ ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿಯನ್ನೂ ಡಿತ್ವತ್ವಿಕಸಂಬಂಧದಿಂದ ಧರಿಸಿರುವುದರಿಂದ ಎಷ್ಟುವು ಶ್ರೀಧರ. "ಕರ್ಯಾಚಿ: ಕೌಮುದಿಗಂಧಾನ್ ಸುಧಾರತ್ನೇಂದ್ರಪುಷ್ಪವತ್ | ಶ್ರಿಯಂ ಧರತಿ ನಿಯಂ ಯ: ಶೋಧರ: ಸ ತು ಕೀರ್ತಿತ:" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: | "ಶೋಧರ: ಶೋಕರ: ಶ್ರಯ:" ವಿಂ ಸಂ | (ನಂ) 2. ಸಾಲಗ್ರಾಮದ ಮೂರ್ತಿ. "ಅತಿಶ್ರುದ್ಧಂ ದ್ವಿಚಕ್ರಂ ತು ವನಮಾಲಾವಿಭೂಷಿತಮ್ | ಶೋಧರಂ ದೇವಿ ವಿಜ್ಞೇಯಂ ಶೋಧರಂ ಗೃಹಿಣಾಂ ಸದಾ" |

ಶೋನಂದನ ಶ್ರೀನಂದನ, — ಪುತ್ರ — ಪುತ್ರ (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮ.

ಶೋನಿಕೇತನ ಶ್ರೀನಿಕೇತನ (ಪುಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಶ್ರಿಯಂ ನಿಕೇತಯತಿ — ನಿ + ಕಿತ (ನಿವಾಸೇ ರೋಗಾಪನಯನೇ ಚ) + ಗಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) | "ಭಗವಾನಪಿ ವಿಶ್ವಾತ್ಮಾ ಪಾವನ: ಶೋನಿಕೇತನ:" ಭಾಗಂ ೯-೧೮-೧೩ |

ಶೋನಿಧಿ ಶ್ರೀನಿಧಿ (ಪುಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ರತ್ನಮಂಜರೀವ ಮಂಜುಷಾಪಾಂ ಶೋನಿಧೀಯತೇಽಸ್ಮಿನ್ — ನಿ + ಡು ಧಾಮ್ (ಧಾರಣ-ಪೋಷಣಯೋ:) ಅಧಿಂ "ಕಿ:" (೩-೩-೯೧) | "ಶೋನಿಧಿಃ ನಿಹಿತಾ ನಿಯಂ ಶೋನಿಧಿ: ಪರಿಕೀರ್ತಿತ:" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: | "ಶೋದ: ಶೋಶ: ಶೋನಿವಾಸ: ಶೋನಿಧಿ: ಶೋನಿವಾಸ:" ವಿಂ ಸಂ |

ಶೋನಿವಾಸ ಶ್ರೀನಿವಾಸ (ಪುಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಮಹಾ ಲಕ್ಷ್ಮಿಗೆ ಆಶ್ರಯಸ್ಥಾನ. ಶ್ರಿಯಾ: ನಿವಾಸ: | ದಿವ್ಯವಲ್ಯಾ ಇವ ಕಲ್ಪದ್ರುಮ: ಶ್ರಿಯೋ ನಿವಾಸ: ತಸ್ಯಾ: ನಿಯೋಪಧನ: | "ನಿಯೋಪಧನನಿವಾಸತ್ವಾತ್ ಶೋನಿವಾಸ: ಶ್ರಿಯ: ಸ್ಮೃತ:" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: | "ಶೋದ: ಶೋಶ: ಶೋನಿವಾಸ: ಶೋನಿಧಿ: ಶೋನಿವಾಸ:" ವಿಂ ಸಂ |

ಶೋಪಮಿ ಶ್ರೀಪಂಚಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂರು ಶುಕ್ಲ ಪಂಚಮಿ. "ಚತುರ್ಥಿ ವರದಾ ಶುಕ್ಲಾ ತತ್ರ ಗೌರಿ ಸುಪೂಜಿತಾ | ಸೌಭಾಗ್ಯ-ಮತುಲಂ ಕುರ್ಯಾತ್ಪಂಚಮ್ಯಾಂ ಶೋರಪಿ ಶ್ರಿಯಮ್" |

ಶೋಪತಿ ಶ್ರೀಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ, ಶ್ರೀಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಶ್ರಿಯ: ಪತಿ: | "ಉಪಾಲಂಬೇವೋಚ್ಚಗಿರಿಪತಿರೀತಿ ಶೋಪತಿ-ಮಸೌ" ಮಾಘಂ ೪-೬೯ | 2. ರಾಜ, ದೊರೆ.



ಶ್ರೀಪಥ ಶ್ರೀಪಥ (ಪುಂ) ರಾಜಬೀದಿ, ಮುಖ್ಯರಸ್ತೆ. ಶ್ರಿಯ: ಪತ್ನಾ: "ಪ:" (೪-೪-೭೪) ।

ಶ್ರೀಪರ್ಣ ಶ್ರೀಪರ್ಣ (ನಂ) 1. ಪದ್ಮ, ತಾವರೆ. ಶ್ರೀ: ಪರ್ಣಯಸ್ಯ । 2. ನರವಲು ಗಿಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರ್ಣಿ-ರ್ಣೀ. 3. ಶಾಲ್ಮಲಿವೃಕ್ಷ. ಬೂರುಗದ ಮರ. 4. ಶೀವನೆಯ ಮರ. -ಪರ್ಣಿಕಾ -ಪರ್ಣಿಕಾ. ತೇಗದ ಮರ.

ಶ್ರೀಪುತ್ರ ಶ್ರೀಪುತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮ. ಶ್ರಿಯ: ಪುತ್ರ: । "ಸೃಜ್ಞಾಯೋನಿ: ಶ್ರೀಪುತ್ರ:" ಅಮಂ । 2. ಚಂದ್ರ.

ಶ್ರೀಪುಷ್ಪ ಶ್ರೀಪುಷ್ಪ (ನಂ) ಲವಂಗ. ಶ್ರೀಯುಕ್ತಂ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ ।

ಶ್ರೀಫಲ ಶ್ರೀಫಲ (ಪುಂ) 1. ಬಿಲ್ವಪತ್ರ ಮರ. ಶ್ರೀಯುಕ್ತಂ ಫಲಮಸ್ಯ । (ನಂ) 2. ಬಿಲ್ವಪತ್ರಕಾಯಿ. -ಫಲಾ -ಫಲಾ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ನೀಲಿ ಗಿಡ. 4. ನೆಲ್ಲಿಗಿಡ. "ಶ್ರೀಫಲ: ಪುಸಿ ಮಾಲೂರೇ ಧಾತ್ರೀನೀಲಿಕಯೋ: ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ ।

ಶ್ರೀಫಲಿಕಾ ಶ್ರೀಫಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೆಲ್ಲಿ ಗಿಡ. 2. ನೀಲಿ ಗಿಡ.

ಶ್ರೀಭಾಗವತ ಶ್ರೀಭಾಗವತ (ನಂ) "ಭಾಗವತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಶ್ರೀಭ್ರಾತೃ ಶ್ರೀಭ್ರಾತೃ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. 2. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ.

ಶ್ರೀಮತ್ ಶ್ರೀಮತ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ವಿಕೃತರೂಪಪರಿಗ್ರಹೇಽಪಿ ದಿವ್ಯರೂಪತಯಾ ಶ್ರೀ: ಲಕ್ಷ್ಮೀ: ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪) । "ನಾರಸಿಂಹವಪು:ಶ್ರೀಮಾನ್ ಕೇಶವ: ಪುರುಷೋತ್ತಮ:" ವಿಂ ಸಂ । 2. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 3. ತಿಲಕ ವೃಕ್ಷ. 4. ಅಶ್ವತ್ಥ ವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿಮರ. (ವಿಂ) 5. ಲಕ್ಷ್ಮೀಯುಕ್ತವಾದ, ಸಂಪದ್ಯುಕ್ತವಾದ. "ಶ್ರಿಯ: ಪತಿ: ಶ್ರೀಮತಿ ಶಾಸಿತುಂ ಜಗಜ್ಜಗನ್ನಿವಾಸೋ ವಸುಧೇವಸಂಧಾನಿ" ಮಾಘಂ ೧-೧ । 6. ಮನೋಹರವಾದ. "ಶ್ರೀಮಾನ್ ತಿಲಕವೃಕ್ಷೋ ನಾ ಮನೋಜ್ಞ ಧನಿಕೇ ತ್ರಿಪು" ಮೇದಿಂ । 7. ಧನಿಕ, ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ. 8. ಕಾಂತಿಯುಕ್ತ. "ಶ್ರೀಮದ್ಭಿ: ಸರ್ವಗಜೈ: ಸುರಾಜ್ಞಾನಾನಾಂ ಗುಪ್ತಾನಾಮಥ ಸಚಿವೈಸ್ತ್ರಿಲೋಕಮರ್ತು:" ಕಿರಾಂ ೭-೧ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಮತೀ -ಮತೀ. "ಶ್ರೀಮಾನ್" ಪದವು ಪುರುಷರ ಹೆಸರಿನ ಹಿಂದೆ ಗೌರವಸೂಚಕವಾಗಿ ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವುದು.

ಶ್ರೀಮತೀ ಶ್ರೀಮತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಪದ್ಯುಕ್ತವಾದ ಹೆಂಗಸು. ಶ್ರೀ: ಅಸ್ಯಾ ಅಸ್ತಿ—"ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪) । ಸ್ತ್ರೀಯರ ಹೆಸರಿನ ಹಿಂದೆ ಸೇರಿಸುವ ಗೌರವಸೂಚಕವಾದ ಪದ. ಶ್ರೀಮತೀ ಲಕ್ಷ್ಮೀ: ಶ್ರೀಮತೀ ಶಾರದಾ ಶ್ರೀಮತೀ ಗೌರೀ ಶ್ರೀಮತೀ ಲಲಿತಾ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಶ್ರೀಮಸ್ತಕ ಶ್ರೀಮಸ್ತಕ (ಪುಂ) ಪಲಾಂಡು, ಈರುಳ್ಳಿ. ಶ್ರೀಯುಕ್ತಂ ಮಸ್ತಕಮಸ್ಯ ।

ಶ್ರೀಮುಖ ಶ್ರೀಮುಖ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಭವ ಮೊದಲಾದ ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಏಳನೇ ಸಂವತ್ಸರ. (ವಿಂ) 2. ಕಾಂತಿಯುಕ್ತವಾದ ಮುಖವುಳ್ಳವನು.

ಶ್ರೀಮೂರ್ತಿ ಶ್ರೀಮೂರ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೇವರ ವಿಗ್ರಹ. 2. ವಿಷ್ಣುವಿನ ವಿಗ್ರಹ. 3. ಲಕ್ಷ್ಮೀಯ ವಿಗ್ರಹ. 4. ಈಶ್ವರನ ವಿಗ್ರಹ. ಈ ವಿಗ್ರಹವು (ಪ್ರತಿಮೆ) ಶಿಲಾಮಯ ದಾರುಮಯ ಲೋಹಮಯ ಲೇಪ್ಯ (ಪರ್ಣಾಲಿಪ್ತಕ) ಲೇಖ್ಯ (ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ಬರೆಯಲ್ಪಟ್ಟುದು) ಸೈಕತ (ವಾಲುಕಾ ಮಯ) ಮನೋಮಯ ಮಣಿಮಯಗಳೆಂದು ಎಂಟು ವಿಧ. ವಿಷ್ಣು ಮೂರ್ತಿಗಳ ವಿವರಕ್ಕೆ "ಚತುರ್ವಿಂಶತಿಮೂರ್ತಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಶ್ರೀಯುತ ಶ್ರೀಯುತ (ವಿಂ) ಸಂಪದ್ಯುಕ್ತ, ಲಕ್ಷ್ಮೀಯ ಅನುಗ್ರಹಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರನಾದವನು. ಶ್ರಿಯಾ ಯುತ: । ಇದು ಗೌರವಾನ್ವಿತ ಪುರುಷರ ಹೆಸರಿನ ಹಿಂದೆ ಸೇರಿಸುವ ಪದ.

ಶ್ರೀರಙ್ಗ ಶ್ರೀರಙ್ಗ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಶ್ರೀರಂಗನಾಥ. (ನಂ) 2. ಶ್ರೀರಂಗ ಕ್ಷೇತ್ರ.

ಶ್ರೀರಸ ಶ್ರೀರಸ (ಪುಂ) ಸರಳವೃಕ್ಷದ ಹಾಲು.

ಶ್ರೀರಾಗ ಶ್ರೀರಾಗ (ಪುಂ) ಸಂಗೀತದ ರಾಗಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ರಾಗ.

ಶ್ರೀರಾಮ ಶ್ರೀರಾಮ (ಪುಂ) ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರ. "ರಾಮ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಶ್ರೀರಾಮನವಮಿ ಶ್ರೀರಾಮನವಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶ್ರೀರಾಮನು ಅವತರಿಸಿದ ಜೈತ್ರ ಶುಕ್ಲ ನವಮಿ.

ಶ್ರೀಲ ಶ್ರೀಲ (ವಿಂ) ಶ್ರೀಮಂತ, ಸಂಪದ್ಯುಕ್ತ, ಧನಿಕ, ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ. ಶ್ರೀ: ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಲಕ್" (೪-೨-೯೭) । "ಲಕ್ಷ್ಮೀವಾನ್ ಲಕ್ಷ್ಮಣ: ಶ್ರೀಲ:" ಅಮಂ ।

ಶ್ರೀವತ್ಸ ಶ್ರೀವತ್ಸ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಶ್ರೀಯುತಂ ವತ್ಸಮಸ್ಯ । 2. ವಿಷ್ಣುವಿನ ವಕ್ಷಸ್ಥಳದಲ್ಲಿರುವ ಶ್ವೇತರೋಮದ ಸುಳಿ. ವದತಿ ಮಹತ್ವಮ್ — ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಸ:" (೩ಂ ೩-೬೨) । ಶ್ರೀಯುಕ್ತೋ ವತ್ಸ: । ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮೀವಾಲ್ಮಯ-ಸೌಭಾಗ್ಯಸ್ಯ ಚಿಹ್ನಂ ಶ್ರೀವತ್ಸ: ।

ಶ್ರೀವತ್ಸಲಾಞ್ಛನ ಶ್ರೀವತ್ಸಲಾಞ್ಛನ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಶ್ರೀವತ್ಸೋ ಲಾಞ್ಛನಂ ಚಿಹ್ನಮಸ್ಯ । "ವಿಶ್ವಮ್ಭರ: ಕೆಂಟಮಜಿವಿಧು: ಶ್ರೀವತ್ಸಲಾಞ್ಛನ:" ಅಮಂ ।

ಶ್ರೀವತ್ಸವಕ್ಷಸ್ ಶ್ರೀವತ್ಸವಕ್ಷಸ್ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮೀ-ವಾಲ್ಮಯಸೌಭಾಗ್ಯಚಿಹ್ನಂ ಶ್ರೀವತ್ಸ: ಮಹಾಪುರುಷಲಕ್ಷಣಶ್ವೇತರೋಮ-



ವರ್ತೋ ವಕ್ಷಸಿ ಹೃದಯೇಷ್ಯ । “ಶ್ರೀವತ್ಸವಕ್ಷಾಃ ಶ್ರೀವಾಸಃ  
ಶ್ರೀಪತಿಃ ಶ್ರೀಮತಾಂ ವರಃ” ವಿಂ ಸಂ ।

ಶ್ರೀವತ್ಸಾಕ್ಷ ಶ್ರೀವತ್ಸಾಂಕ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಶ್ರೀವತ್ಸಃ  
ಅಕ್ಷುಶ್ಚಿಹ್ನಮಸ್ಯ ।

ಶ್ರೀವರಾಹ ಶ್ರೀವರಾಹ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು ವಿನ ಒಂದು ಅವತಾರ.  
“ವರಾಹ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಶ್ರೀವಾಸ ಶ್ರೀವಾಸ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಶ್ರೀಃ  
ವಸತೃಸ್ಮಿನ್ — ವಸ (ನಿವಾಸೇ) “ವಕ್” (೩-೩-೧೨೧) ।  
“ಶ್ರಿಯೋ ವಿಹಾರಸ್ಥಾನತ್ವಾಚ್ಛ್ರೀವಾಸ ಇತಿ ಚೋಚ್ಯತೇ” ಇತಿ  
ನಿರೂಪಿತಃ । “ಶ್ರೀವತ್ಸವಕ್ಷಾಃ ಶ್ರೀವಾಸಃ ಶ್ರೀಪತಿಃ ಶ್ರೀಮತಾಂ  
ವರಃ” ವಿಂ ಸಂ । 2. ಸರಳವೃಕ್ಷದ ರಸ. “ಶ್ರೀವಾಸೋ  
ವೃಕ್ಷಧೂಪೋಽಪಿ ಶ್ರೀವೇಷ್ಠಸರಲದ್ರವೌ” ಅಮಂ । 3. ಪದ್ಮ,  
ಕಮಲ, ತಾವರೆ. “ಶ್ರೀವಾಸೋ ವೃಕ್ಷಧೂಪೇ ಸ್ಯಾತ್ ಪಕ್ಷಜೇ  
ಮಧುಸೂದನೇ” ಮೇದಿಂ । 4. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.

ಶ್ರೀವಿಜ್ಞಾ ಶ್ರೀವಿಜ್ಞಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಮಹಾವಿದ್ಯೆ.

ಶ್ರೀವಿಭಾವನ ಶ್ರೀವಿಭಾವನ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ.  
ಶ್ರಿಯಾ ವಿಭಾವ್ಯತೇ ನಿರೂಪ್ಯತೇ — ವಿ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) +  
ಣಿವ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೩) । “ಶ್ರೀನಿಧಿಃ ಶ್ರೀವಿಭಾವನಃ”  
\* ವಿಂ ಸಂ ।

ಶ್ರೀವೃಕ್ಷ ಶ್ರೀವೃಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಬಿಲ್ವಪತ್ರಮರ. 2. ಅಶ್ವತ್ಥ  
ವೃಕ್ಷ, ಅರಳಮರ. 3. ಅಶ್ವದ ಎದೆಯಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು  
ಸುಳಿ.

ಶ್ರೀವೃಕ್ಷಕ ಶ್ರೀವೃಕ್ಷಕ (ಪುಂ) ಅಶ್ವದ ಎದೆಯಲ್ಲಿರುವ ಸುಳಿ.  
“ಶ್ರೀವೃಕ್ಷಕೋ ಹೃದಾವರ್ತಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಶ್ರೀವೇಷ್ಠ ಶ್ರೀವೇಷ್ಠ (ಪುಂ) ಸರಳವೃಕ್ಷದ ರಸ. “ಶ್ರೀವೇಷ್ಠ-  
ಸರಲದ್ರವೌ” ಅಮಂ ।

ಶ್ರೀಶ ಶ್ರೀಶ (ಪುಂ) ಲಕ್ಷ್ಮೀಪತಿ, ಶ್ರೀವಿಷ್ಣು. ಶ್ರಿಯಃ ಔಶಃ ।

ಶ್ರೀಸಂಜ್ಞ ಶ್ರೀಸಂಜ್ಞ (ನಂ) ಲವಂಗ. ಶ್ರಿಯಃ ಸಂಜ್ಞಾಸ್ಯ ।

ಶ್ರೀಹಸ್ತಿನಿ ಶ್ರೀಹಸ್ತಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡು ಮಲ್ಲಿಗೆ. ಶ್ರಿಯೋ  
ಹಸ್ತೋ ವಿಚ್ಛೇದ್ಯತಾಃ “ಛಿನ್” (೪-೨-೧೧೪) ।

ಶ್ರು — ಶ್ರವಣೇ (ಶ್ವಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) ।

ಶ್ರುಣೋತಿ ಶ್ರುಣುತಃ ಶ್ರುಣಂತಿ ।

ಶ್ರುಣೋಷಿ ಶ್ರುಣುಥಃ ಶ್ರುಣುಥ ।

ಶ್ರುಣೋಮಿ ಶ್ರುಣುವಃ ಶ್ರುಣುಮಃ

ಶ್ರುಣ್ವಃ ಶ್ರುಣ್ಯಃ ।

ಶ್ರುಶ್ರಾವ ಶ್ರುಶ್ರಾವತುಃ ಶ್ರುಶ್ರಾವುಃ ।

ಶ್ರುಶ್ರೋಥ ಶ್ರುಶ್ರೋಥುಃ ಶ್ರುಶ್ರೋವ ।

ಶ್ರುಶ್ರಾವ } ಶ್ರುಶ್ರಾವ ಶ್ರುಶ್ರೂಮ ।

ಶ್ರುಶ್ರವ }

ಶ್ರುತಾ । ಶ್ರುತಾಪ್ಯತಿ । ಶ್ರುಣೋತು । ಅಶ್ರುಣೋತ್ ।

ಶ್ರುಣುಯಾತ್ । ಶ್ರುಯಾತ್ । ಅಶ್ರುಣೋತು । ಅಶ್ರುಣೋತ್ ।

ಕೇಳು, ಕಿವಿಗೊಟ್ಟು ಆಲಿಸು. “ಶ್ರುಶ್ರಾವ ರಾಮಸ್ತತ್ಸರ್ವಂ  
ಪ್ರತಸ್ಥೇ ಚ ಸ ಸೈನಿಕಃ” ಭದ್ರಿಂ ೧೪-೧೭ । “ಶ್ರುಣು ತಾತ ಹಿತಂ  
ಸಮಾಹಿತಸ್ತವಮ್” ಯಾದಂ ೧೪-೪೬ । “ಅಶ್ರುಣೋಮಿನ್ದ್ರಾ-  
ದರಿಣೀಗಿರಸ್ತೇ ಸತೀವ್ರತಾತಿಪ್ರತೀಲೋಮತೀವ್ರಾಃ” ನೈಪಂ ೬-೯೪ ।

ಕರ್ಮಣಿಃ — ಶ್ರುಯತೇ । ಶ್ರುಶ್ರುವೇ । ಶ್ರುತಾ, ಶ್ರುತಾಪ್ಯತಿ ।  
ಶ್ರುಣೋತೇ, ಶ್ರುತಾಪ್ಯತೇ । ಶ್ರುಯತಾಂ । ಅಶ್ರುಯತ । ಶ್ರುಯತ ।  
ಶ್ರುತಾಪ್ಯತಿ । ಅಶ್ರುತಾಪ್ಯತಿ । ಅಶ್ರುತಾಪ್ಯತ, ಅಶ್ರುತಾಪ್ಯತ ।

ಣಿವಿಃ — ಶ್ರುತಾಪ್ಯತಿ, -ತೇ । ಶ್ರುತಾಪ್ಯಾಚಕಾರ, -ವಕ್ರೇ ।  
ವಶು, ಆಸ । ಶ್ರುತಾಪ್ಯತಿ । ಶ್ರುತಾಪ್ಯತ, -ತೇ ।  
ಶ್ರುತಾಪ್ಯತು, -ತಾಂ । ಅಶ್ರುತಾಪ್ಯತು, -ತು । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿಃ — ಶ್ರುತಾಪ್ಯತೇ । ಶ್ರುತಾಪ್ಯಾಂ ವಕ್ರೇ — ವಶು, -ಆಸ ।  
ಶ್ರುತಾಪ್ಯತಿ । ಶ್ರುತಾಪ್ಯತಾಂ । ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಸುಃ — ಶ್ರುತಾಪ್ಯತಃ । ಶ್ರುತಾಪ್ಯತಃ, ಶ್ರುತಾಪ್ಯತಃ ।  
ಶ್ರುತಃ । ಶ್ರುತಾಪ್ಯತಃ । ಶ್ರುತಾಪ್ಯತಃ, -ತಾಂ, ವ್ಯತಿಶ್ರುತಾಪ್ಯತಃ ।  
ಶ್ರುತಮ್ । ಶ್ರುತುಮ್ । ಶ್ರುತಾಪ್ಯತಃ । ಶ್ರುತಾಪ್ಯತಃ । ಪ್ರತಿಶ್ರುತಾಪ್ಯತಃ ।  
“ಶ್ರುತಾಪ್ಯತಃ ಪ್ರತಿಶ್ರುತಾಪ್ಯಂತಿ ಮಹ್ಯಮಾ ಭೀರು ನೋತ್ತಮಾಃ”  
ಭದ್ರಿಂ ೮-೭೭ ।

ಶ್ರುತ ಶ್ರುತ (ನಂ) 1. ಶಾಸ್ತ್ರ. ಶ್ರುತಃ — ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೇ)  
“ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । “ಶ್ರುತಮಪ್ಯಧಿಗಮ್ಯ ಯೇ ರಿಪುನ್  
ವಿನಯಂತೇ ನ ಶರೀರಜನ್ಮನಃ” ಕಿರಾಂ ೨-೪೧ । 2. ಶಾಸ್ತ್ರ  
ಶ್ರವಣ, ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಕೇಳುವುದು. “ಶ್ರುತಿ ಮುಷಯತಿ  
ಶ್ರುತಂ ವಪುಃ ಪ್ರಶಮಸ್ತಸ್ಯ ಭವತ್ಯಲಂಕ್ರಿಯಾ” ಕಿರಾಂ ೨-೩೨ ।  
3. ವೇದ, ಶ್ರವಣಗೋಚರವಾಗುವ ವಿಷಯ. (ವಿಂ)  
4. ಕೇಳಲ್ಪಟ್ಟು. ಶ್ರು ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಃ” । “ಶ್ರುತಾಪ್ಯತಃ-  
ಗೀತೀರಪಿ ಕ್ಷಣೇನ ಹರಃ ಪ್ರಸಂಖ್ಯಾನಪರೋ ವಶು” ಕುಮಾಂ  
೩-೪೦ । 5. ಕೇಳಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟು. 6. ಪ್ರಖ್ಯಾತವಾದ,  
ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ. “ಮಾಂ ಲೋಕವಾದಶ್ರವಣಾದಹಾಸೀಃ ಶ್ರುತಸ್ಯ  
ಕಿಂ ತತ್ಸದೃಶಂ ಕುಲಸ್ಯ” ರಘುಂ ೧೪-೬೧ ।

ಶ್ರುತಕೀರ್ತಿ ಶ್ರುತಕೀರ್ತಿ (ಪುಂ) 1. ದ್ರಾವಿಡಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ  
ಅರ್ಜುನನ ಪುತ್ರ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಶತ್ರುಘ್ನನ ಪತ್ನಿ.  
(ವಿಂ) 3. ಕೀರ್ತಿಶಾಲಿ, ಖ್ಯಾತಿಯನ್ನು ಪಡೆದವನು.

ಶ್ರುತಜ್ಞ ಶ್ರುತಜ್ಞ (ಪುಂ) ಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ತಿಳಿದ ಪಂಡಿತ.

ಶ್ರುತದೇವಿ ಶ್ರುತದೇವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸರಸ್ವತಿ, ಶಾರದಾದೇವಿ.  
ಶ್ರುತಸ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರಸ್ಯ ದೇವಿ ।

ಶ್ರುತಬೋಧ ಶ್ರುತಬೋಧ (ಪುಂ) ಕಾಳಿದಾಸವಿರಚಿತ ಒಂದು  
ಧಂದೋಗ್ರಂಥ. ಶ್ರುತಸ್ಯ ಬೋಧೋ ಯಸ್ಮಾತ್ ।



ಶ್ರುತವತ್ ಶ್ರುತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಕೇಳಿದವನು, ಕಿವಿಗೊಟ್ಟು ಅಲಿಸಿದವನು. ಶ್ರು (ಶ್ರವಣ) "ಕವತು:" (3-2-102)। 2. ವೇದವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು, ವೇದವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದವನು. 3. ಶಾಸ್ತ್ರಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು, ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನ ಪಡೆದವನು. ಶ್ರುತಂ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ವೇದೋ ವಾ ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಃ" (4-2-94)।

ಶ್ರುತಿ ಶ್ರುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೇದ. ಶ್ರುತೇ—ಶ್ರು (ಶ್ರವಣ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ರಿನ್" (3-3-94)। ಶ್ರುತೇ ವರ್ಮೋಜಯಾ—ಶ್ರು ಕರಂ "ಕ್ರಿನ್" ವಾ (3-3-94)। "ಶ್ರುತಿಶತಮಹಿತೇ ಪದೇ ಪರಸ್ಮಿನ್ ಸಿತಜಲಧೌ ರವಿಮಂಡಲೇ ಚ ಸಿದ್ಧಾಮ್" ಯಾದಂ 24-4। 2. ಕರ್ಣ, ಕಿವಿ. "ಶ್ರುತಿ:ಶ್ರಯತ್ಯುನ್ಮದಹಂಸನಿ:ಸ್ವನಂ ಗುಣಾ: ಪ್ರಿಯತ್ವೇಽಧಿಕೃತಾ ನ ಸಂಸ್ತವ:" ಕಿರಾಂ 4-25। 3. ಶ್ರವಣ, ಕೇಳುವುದು, ಕಿವಿಗೊಟ್ಟು ಅಲಿಸುವುದು. ಶ್ರು ಭಾವೇ "ಕ್ರಿನ್" (3-3-94)। "ಯಸ್ಯಾಶ್ರುತಿಮಾತ್ರೇಣ ಪುಮಾನ್ ಭವತಿ ನಿರ್ಮಲ:" ಭಾಗಂ 9-4-16। 4. ವಾರ್ತೆ, ಶಬ್ದ, ವಾಚಕಶಬ್ದ. "ವ್ಯಾವೃತ್ತಾ ಯತ್ಪರಸ್ವೇಮ್ಯ: ಶ್ರುತೌ ತಸ್ಕರತಾ ಸ್ಥಿತಾ" ರಘುಂ 1-27। 5. ಶ್ರವಣ ನಕ್ಷತ್ರ. 6. (ಸಂಗೀತದಲ್ಲಿ) ಸ್ವರಾರಂಭದ ಅವಯವವಾದ ಒಂದು ಶಬ್ದ. "ಶ್ರುತ್ಯಾರಂಭಮನುರಣನಂ ಸ್ವರ:" ಗಂಟಿಯ ಶಬ್ದದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ನಾದಸಂತಾನವು ಸ್ವರ. ಹಾಗೆಯೇ ಈ ಸ್ವರಾರಂಭದ ಅವಯವಭೂತವಾದ ಅನುರಣನವೇ ಸ್ವರ. "ಶ್ರುತ್ಯನಂತರಭಾವೋ ಯ: ಸ್ನಿಗ್ಧೋನುರಣನಾತ್ಮಕ:। ಸ್ವನೋ ರಂಜಯತಿ ಶ್ರುತುಶ್ಚಿತಂ ಸ ತ್ವರ ಉಚ್ಯತೇ" ರತ್ನಾಕರ:। "ರಣಕ್ಷಿರಾಧವನಯಾ ನಭಸ್ವತ: ಪೃಥಗ್ವಿಭಿನ್ನಶ್ರುತಿಮಂಡಲ: ಸ್ವರ:" ಮಾಘಂ 1-10। ಈ ಶ್ರುತಿಯು ಇಪ್ಪತ್ತೆರಡು (22) ವಿಧ. "ನಾಂದಿ ಚಾಲನಿಕಾ ರಸಾ ಚ ಸುಮುಖಿ ಚಿತ್ರಾ ವಿಚಿತ್ರಾ ಧನಾ ಮಾತೃಜ್ಞಿ: ಸರಸಾಮೃತಾ ಮಧುಕರೀ ಮೆತ್ರಿ ಶಿವಾ ಮಾಧವೀ। ವಾಲಾ ಶಾರ್ಙ್ಗರವಿ ಕಲಾ ಕಲರವಾ ಮಾಲಾ ವಿಶಾಲಾ ಜಯಾ ಮಾತೃತಿ ಶ್ರುತಯ: ಪುರಾಣಕವಿಭಿ: ಛಾವಿಶತಿ: ಕೀರ್ತಿತಾ:" ಸಂ ದಾಂ। "ಶ್ರುತಿರಾಮ್ನಾಯವಾರ್ತಯೋ:। ಷಡ್ಜಾಚಾರಮ್ನಿಕಾಯಾಂ ಚ ಕರ್ಣಾಕರ್ಣನಯೋರಪಿ" ಹೇಮಂ।

ಶ್ರುತಿಕಟ ಶ್ರುತಿಕಟಿ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ, ಪಾಪ ಪರಿಹಾರ ಕಾರ್ಯ. 2. ಸರ್ಪ, ಹಾವು.

ಶ್ರುತಿಕಡ ಶ್ರುತಿಕಟಿ (ಪುಂ) ಕಿವಿಗೆ ಕಡಿನವಾದ ಶಬ್ದ, ಕರ್ಣಶ ಶಬ್ದ, ಕೇಳಲು ಕಡೀರವಾದ ಶಬ್ದ. ಶ್ರುತೌ ಕಡು:। ಇದೊಂದು ಕಾವ್ಯದೋಷ.

ಶ್ರುತಿಕಥಿತ ಶ್ರುತಿಕಥಿತ (ವಿಂ) ವೇದದಲ್ಲಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಶ್ರುತೌ ಕಥಿತಮ್।

ಶ್ರುತಿಜೀವಿಕಾ ಶ್ರುತಿಜೀವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ. ಶ್ರುತಿರೇವ ಜೀವಿಕಾ ಯಸ್ಯಾ:। 2. ವೇದಾಧ್ಯಯನದಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಿದ ಜೀವನೋಪಾಯ.

ಶ್ರುತಿಧರ ಶ್ರುತಿಧರ (ವಿಂ) ಶ್ರವಣಮಾತ್ರದಿಂದ ಎಲ್ಲ ವನ್ನೂ ನೆನಪಿನಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವವನು, ಒಂದು ಸಲ ಕೇಳಿದ ಮಾತ್ರದಿಂದ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ಶ್ರುತ್ಯಾ ಶ್ರವಣಮಾತ್ರೇಣ ಧರತಿ—ಧೃ (ಧಾರಣ) "ಅಚ್" (3-1-134)। ಈ ಶಕ್ತಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಔಷಧ—"ಹಸ್ತಿಕರ್ಣಸ್ಯ ವಂ ಮೂಲಂ ಗೃಹೀತ್ವಾ ಚೂರ್ಣಯೇದ್ಧರ:। ಸರ್ವರೋಗವಿನಿರ್ಮುಕ್ತಂ ಚೂರ್ಣಂ ಪಲಶತಂ ಶಿವ:। ಸಕ್ಷೀರಂ ಭಕ್ಷಿತಂ ಕುರ್ಯಾತ್ ಸಪ್ತಾಹೇನ ವೃಷಭವಜ:। ನರಂ ಶ್ರುತಿಧರಂ ಶೂರಂ ಮೃಗೇಂದ್ರಗತಿವಿಕ್ರಮಮ್"। ಗರುಡಪುರಾಣಮ್ ಅಧ್ಯಾಯ: 191।

ಶ್ರುತಿಪಥ ಶ್ರುತಿಪಥ (ಪುಂ) ಶಬ್ದವು ಕಿವಿಯೊಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸುವ ಮಾರ್ಗ. ಶ್ರುತೇ: ಪಥಾ:—ಪಥಿನ್ "ಅ:" (4-4-64)। "ತಾಮಾಶ್ರಿತ್ಯ ಶ್ರುತಿಪಥಗತಾಮಾಶಯಾ ಬದ್ಧಮೂಲ: ಸಂಪ್ರಾಪ್ತಾಯಾಂ ನಯನವಿಷಯಂ ರೂಢರಾಗಪ್ರವಾಲ:" ಮಾಲಂ 4-1। ಶ್ರುತಿಮನೋಹರ ಶ್ರುತಿಮನೋಹರ (ವಿಂ) ಕೇಳಲು ಕಿವಿಗೆ ಇಂಪಾಗಿರುವ. ಶ್ರುತೇ: ಮನೋಹರ:। -ಸುಖಮ್ -ಸುಖಮ್. "ಶ್ರುತಿಸುಖಮುಪವೇಣಿತಂ ಸಹಾಯ:" ಕಿರಾಂ 10-38।

ಶ್ರುತಿಮೂಲ ಶ್ರುತಿಮೂಲ (ನಂ) 1. ವೇದವೇ ಆಧಾರವಾಗಿರುವ ಶಾಸ್ತ್ರ. 2. ಕಿವಿಯ ತಳಭಾಗ.

ಶ್ರುತಿವರ್ಜಿತ ಶ್ರುತಿವರ್ಜಿತ (ವಿಂ) 1. ಕರ್ಣವಿಲ್ಲದವನು, ಶ್ರೋತ್ರೇಂದ್ರಿಯವಿಲ್ಲದವನು, ಕಿವುಡ. ಶ್ರುತ್ಯಾ ವರ್ಜಿತ:। 2. ವೇದಾಭ್ಯಾಸವಿಲ್ಲದವನು. -ವಿಹೀನ: -ವಿಹೀನ:

ಶ್ರುತಿವಿಹಿತ ಶ್ರುತಿವಿಹಿತ (ವಿಂ) ವೇದದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ, ವೇದದಲ್ಲಿ ವಿಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಶ್ರುತೌ ವಿಹಿತಮ್।

ಶ್ರುತಿವೇಧ ಶ್ರುತಿವೇಧ (ಪುಂ) 1. ಕಿವಿಯನ್ನು ಚುಚ್ಚುವುದು. 2. ಕಿವಿಯನ್ನು ಚುಚ್ಚುವ ಸಮಾರಂಭ. ಶ್ರುತೇ: ವೇಧೋ ಯತ್ರ।

ಶ್ರುತಿಶಿರಸ್ ಶ್ರುತಿಶಿರಸ್ (ನಂ) ಉಪನಿಷತ್ತು, ವೇದಾನ್ತ. ಶ್ರುತೌನಾಂ ಶಿರ:। "ಶ್ರುತಿಶಿರಸಿ ವಿಶೇಷೇ ಬ್ರಹ್ಮಣಿ ಶ್ರೀನಿವಾಸೇ ಭವತು ಮಮ ಪರಸ್ಮಿನ್ ಶೇಮುಷಿ ಭಕ್ತಿರ್ದಾ" ಶ್ರೀಭಾಷ್ಯಮ್।

ಶ್ರೇಣಿ ಶ್ರೇಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಟ್ಟಿ, ಸಾಲು. ಶ್ರೇಯತೇ—ಶ್ರಿನ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ನಿ:" (30 4-43)। "ಶ್ರೇಯ: ಪರಿಪಣಂ ತಸ್ಯ ಶ್ರುತಿಶ್ರೇಣಿಶಿರೋಮೃತಮ್" ಯಾದಂ 16-92। ವಾ "ಜಿಷ್" (ಗಂ 4-1-44)। -ಣಿ -ಣೀ. "ಶ್ರೇಣಿಬನ್ಧಾ-ದ್ವಿತನ್ವದ್ವಿರಸ್ತಮ್ಭಾಂ ತೋರಣಸ್ರಜಮ್" ರಘುಂ 1-41।

ಶ್ರೇಯಸ್ ಶ್ರೇಯಸ್ (ನಂ) 1. ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ. ಅತಿಶಯೇನ ಪ್ರಶಸ್ಯಮ್—ಪ್ರಶಸ್ಯ "ದೈಯಸುನ್" (4-3-47)। ಪ್ರಶಸ್ಯಸ್ಯ



ಅ: (೪-೩-೬೦) ಇತಿ ಅ: "ಮುಕ್ತಿ: ಕೇವಲಾನಿವಾರಣ-  
ಶ್ರೇಯೋನಿ:ಶ್ರೇಯಸಾಮೃತಮ್" ಅಮಂ. 2. ಧರ್ಮ, ತ್ರಿವರ್ಗ,  
ಧರ್ಮ ಮತ್ತು ಅರ್ಥ, ಅರ್ಥ ಮತ್ತು ಕಾಮ, ಅರ್ಥ.  
"ವರ್ಮಾವಿಚ್ಯುತೇ ಶ್ರೇಯ: ಕಾಮಾಯೋ ವರ್ಮಂ ಏವ ವಾ | ಅರ್ಥ  
ಏವೇಹ ವಾ ಶ್ರೇಯ: ತ್ರಿವರ್ಗಂ ಇತಿ ತು ಸ್ಥಿತಿ:" ಮನುಂ ೨-೨೨೪ |  
3. ಅಭ್ಯುದಯ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಏಕಾಗ್ರ. "ಇತ್ಯುದೀರಿತಗಿರಂ  
ನೃಪಸ್ತ್ವಯಿ ಶ್ರೇಯಸಿ ಸ್ಥಿತವತಿ ಸ್ಥಿರಾ ಮಮ" ಮಾಘಂ  
೧೪-೧೭ | 4. ಶುಭ, ಕಲ್ಯಾಣ, ಮಂಗಲ. "ಪ್ರತಿಬಂಧನಾತಿ  
ಹಿ ಶ್ರೇಯ: ಪೂಜ್ಯಪೂಜಾವ್ಯತಿಕರ್ಮ:" ರಘುಂ ೧-೭೯ | (ವಿಂ)  
5. ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. "ಶ್ರೇಯೋ ಹ್ಯಸ್ಮಾಕಮೇವ  
ಹಿ ಪ್ರತಾಯೋ ರಾಜನಂದನೋ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೬ | 6. ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ  
ಉತ್ತಮನಾದ ಒಬ್ಬ, ಮೇಲಾದವನು. "ಶ್ರೇಯಾನ್ ಶ್ರೇಷ್ಠ:  
ಪುಷ್ಕಲ: ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ | ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೬) |  
-ಯಸಿ -ಯಸೀ. "ಶ್ರೇಯಸಿ ತವ ಸಂಪ್ರಾಪ್ತಾ ಗುಣಸಂಪದ-  
ಮಾಕೃತಿ:" ಕಿರಾಂ ೧೧-೧೧ |

ಶ್ರೇಯಸಿ ಶ್ರೇಯಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಳಲಿ ಗಿಡ. 2. ಗಡ  
ಹಿಬ್ಬಲಿ. 3. ಅಗುರು ಶುಂಠಿ. 4. ಪುಣ್ಯ, ಸುಕೃತ.  
ಇಯಮನಯೋರತಿಶಯೇನ ಪ್ರಶಸ್ಯಾ - ಪ್ರಶಸ್ಯ "ಇಯಸುನ್"  
(೪-೩-೪೭) | ಪ್ರಶಸ್ಯಸ್ಯ ಅ: (೪-೩-೬೦) | "ಜೀಪ್"  
(೪-೧-೬) | "ಶ್ರೇಯಸಿ ಸುಕೃತಂ ವೃಷ:" ಅಮಂ | "ಶ್ರೇಯಸಿ  
ಕರಿಪಿಪ್ಪಲ್ಯಾಮನಯಾಪಾಠಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ | 5. ಸಣ್ಣ  
ರಾಶಿ. "ಅಮಯಾರಾಸ್ತಯೋರಪಿ" ವಿಶ್ವಂ |

ಶ್ರೇಷ್ಠ ಶ್ರೇಷ್ಠ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಸೂರಿಮಿ:  
ಸದಾನ್ತುಭವಪ್ರೀತ್ಯಾ ಸ್ತೋತ್ರ: ಪರಿಚಯಮಾಣ: ಪ್ರಶಸ್ಯತಮ: -  
ಪ್ರಶಸ್ಯ "ಇಷ್ಠನ್" (೪-೩-೪೪) | ಪ್ರಶಸ್ಯಸ್ಯ "ಅ:"  
(೪-೩-೬೦) | "ಜ್ಯೇಷ್ಠ: ಶ್ರೇಷ್ಠ: ಪ್ರಜಾಪತಿ:" ವಿಂ ಸಂ |  
2. ಮಹಾದೇವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. "ವಿಶ್ವರೂಪ: ಸ್ವಯಂ ಶ್ರೇಷ್ಠೋ  
ಬಲವೀರೋ ಬಲೋ ಗಣ:" ಭಾಂ | 3. ಕುಬೇರ. 4. ರಾಜ,  
ದೊರೆ. 5. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. "ಶ್ರೇಷ್ಠೋ ವರೇ ಕುಬೇರೇ ಚ"  
ಮೇದಿಂ | (ನಂ) 6. ಹಸುವಿನ ಹಾಲು. "ಗವ್ಯಂ ಶ್ರೇಷ್ಠಂ  
ಪುಸವನಂ ಸ್ಯಾದ್ವಿಹಾರನಯ: ಪುಮಾನ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | (ವಿಂ)  
7. ಮೇಲಾದವನು, ಉತ್ತಮನಾದವನು. ಅತಿಶಯೇನ  
ಪ್ರಶಸ್ಯ: |

ಶ್ರೇಷ್ಠಾ ಶ್ರೇಷ್ಠಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉತ್ತಮ ಹೆಂಗಸು. 2.  
ನೇಲತಾವರೆ.

ಶ್ರೇಷ್ಠಿನ್ ಶ್ರೇಷ್ಠಿನ್ (ಪುಂ) ಉತ್ತಮನಾದ ವ್ಯಾಪಾರಿ,  
ವಾಣಿಜ್ಯೋದ್ಯಮ ಸಂಘದ ಅಧ್ಯಕ್ಷ.

ಶ್ರೇಷ್ಠ್ಯ ಶ್ರೇಷ್ಠ್ಯ (ನಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ, ಮೇಲ್ಮೆ, ಹಿರಿಮೆ.  
ಶ್ರೇಷ್ಠಸ್ಯ ಭಾವ: "ವ್ಯಮ್" (೪-೧-೧೨೪) |

ಶ್ರೋಣ ಶ್ರೋಣ (ಪುಂ) ವಂಗ, ಹೆಳವ, ಕುಂಟ, ಕಾಲಿಲ್ಲ  
ದವನು. ಶ್ರೋಣತಿ-ಶ್ರೋಣ (ಸಂಧಾತೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |  
"ಶ್ರೋಣ: ಪಕ್ಷಿ" ಅಮಂ |

ಶ್ರೋಣಾ ಶ್ರೋಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶ್ರವಣ ನಕ್ಷತ್ರ. ಶ್ರೋಣತಿ  
ಶ್ರೋಣ (ಸಂಧಾತೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಶ್ರೋಣಾಯಾಂ  
ಶ್ರವಣದ್ವಾದಶ್ಯಾಂ ಮೂರ್ತೇಭಿಜಿತಿ ಪ್ರಭು: | ಸರ್ವೇ ನಕ್ಷತ್ರತಾರಾಘಾ:  
ಚಕ್ರುಸ್ತಜ್ಜನ್ಮ ದಕ್ಷಿಣಮ್" ಭಾಗಂ ೮-೧೮-೪ | 2. ಗಂಜಿ,  
ಅಂಬಲಿ.

ಶ್ರೋಣಿ ಶ್ರೋಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಿತಂಬ, ಪಿರ, ಕಟ. ಶ್ರೋಣಿ  
(ಸಂಧಾತೆ) "ಇನ್" (೮ಂ ೪-೧೧೮) | "ಶ್ರೋಣಿಪು ಪ್ರಿಯಕರ:  
ಪೃಥುಲಾಸು ಸ್ಪರ್ಶಮಾಪ ಸಕಲೇನ ತಲೇನ" ಮಾಘಂ ೧೦-೬೪ |  
ವಾ "ಜೀಪ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೪) | -ಣಿ -ಣೀ. "ಶ್ರೋಣಿಮಿ-  
ಗುಣಿರತುರ್ಗುಣಮುತ್ಪತ್ತಿ: ತೋಯೇಷು ದ್ರುತತರಮಜ್ಜನಾ ನಿಪೇತು:"  
ಮಾಘಂ ೮-೩೧ |

ಶ್ರೋಣಿಫಲಕ ಶ್ರೋಣಿಫಲಕ (ನಂ) ವಿಶಾಲವಾದ ಸೊಂಟ,  
ಟೊಂಕೆ, ನಡು. ಶ್ರೋಣಿ: ಫಲಕಮಿವ |

ಶ್ರೋಣಿಸೂತ್ರ ಶ್ರೋಣಿಸೂತ್ರ (ನಂ) 1. ನಡುದಾರ,  
ಉಡುದಾರ, ಸೊಂಟದ ಸುತ್ತಲೂ ಕಟ್ಟುವ ದಾರ.  
2. ವಿಡ್ಗವನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ನಡುಪಟ್ಟಿ.

ಶ್ರೋತವ್ಯ ಶ್ರೋತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕೇಳಲ್ಪಡುವ. 2. ಕೇಳ  
ಬೇಕಾದ. 3. ಕೇಳಬಹುದಾದ. 4. ಕೇಳಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ.  
ಶ್ರು (ಶ್ರವಣ) "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) | "ಶ್ರೋತವ್ಯಂ  
ಕ್ಷತ್ರಿಯೇಂದ್ರಿಜಾತ್" ರಾಮಾಂ | "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) |  
ಅವಗಾಂಯಮ್ ಶ್ರವಣೇಯಮ್.

ಶ್ರೋತೃ ಶ್ರೋತೃ (ವಿಂ) ಕಿವಿಗೊಟ್ಟು ಕೇಳುವವನು, ಅಲಿಸು  
ವವನು. ಶ್ರು (ಶ್ರವಣ) "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩) | "ಅಪ್ಯನ್ಯ-  
ಪುಂಡಾ ಪ್ರತಿಕೂಲಶಬ್ದಾ ಶ್ರೋತೃವಿತನ್ವೀರಿವ ತಾಡ್ಯಮಾನಾ"  
ಕುಮಾಂ ೧-೪೪ | "ಪಠೇದರ್ಥಂ ಬುಧ್ಯಮಾನ: ಶ್ರಾವಯೇದ್ವಿ ನರೋತ್ತಮೇ |  
ಶ್ರೋತಾ ತು ಪ್ರಾಡ್ಘಮುಖೋ ಭೂತ್ವಾ ಶೃಣುಯಾತ್ ಭಕ್ತಿಸ್ತಪರ:"  
ಪಾಪಪುಂ |

ಶ್ರೋತ್ರಿಯ ಶ್ರೋತ್ರಿಯ (ಪುಂ) 1. ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡು  
ವವನು. ಅಂದ: ಅಧೀತೆ - ಅಂದಸ್ "ಘನ್" ವಾ ಪ್ರಕೃತೆ:  
ಶ್ರೋತ್ರಾದೇಶಶ್ಚ ನಿಪಾಂ (೪-೨-೮೪) | ಪಕ್ಷಿ "ಅನ್"  
(೪-೨-೪೯) | ಅಂದಸ: ಛಾಂದಸಾ. "ತೇ ಶ್ರೋತ್ರಿಯಾ-  
ಸ್ತತ್ವವಿನಿಶ್ಚಯಾಯ ಭೂಶ್ರುತಂ ಶಾಶ್ವತಮಾದ್ರಿಯಂತೇ" ಮಾಲತೀಂ  
೧-೩ | 2. ವೇದ ಮತ್ತು ಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ತಿಳಿದ  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. "ಜನ್ಮನಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ಜ್ಞೇಯ: ಸಂಸ್ಕಾರೇಂದ್ರಿಜ ಉಚ್ಯತೇ |  
ವಿದ್ಯಯಾ ಯಾತಿ ವಿಪ್ರತ್ವಂ ತ್ರಿಮಿ: ಶ್ರೋತ್ರಿಯ ಉಚ್ಯತೇ" ||



ಶ್ರೋತ್ರ ಶ್ಲೋಕ (ನಂ) 1. ಕರ್ಣ, ಕಿವಿ. ಶ್ರಯತೇಜೇನ—ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೇ) “ಘ್ನ” (ಽಽ ೪-೧೫೯) । “ಶ್ರೋತ್ರಂ ಶ್ರುತೇನೈವ ನ ಕುಂಡಲೇನ ದಾನೇನ ಪಾಣಿನಿ ತು ಕಕ್ಷಣೇನ” ಮತೃಂ ೧-೬೨ । (ಪುಂ) 2. ವೇದ. ಶ್ರಯತೇ ಧರ್ಮಧರ್ಮಿ ಅನೇನ—ಶ್ರು “ತ್ವ” (ಽಽ ೪-೧೬೭) ।

ಶ್ರೋತ್ರಪೇಯ ಶ್ಲೋಕಪೇಯ (ವಿಂ) ಕಿವಿಗಳಿಂದ ಪಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಕಿವಿಗಳಿಂದ ಕೇಳಲ್ಪಡುವ. ಶ್ರೋತ್ರಾಭ್ಯಾಂ ಪಾತುಂ ಯೋಗ್ಯಮ್—ಪಾ (ಪಾನೇ) “ಯತ್” (೩-೧-೯೭) । “ಸಂದೇಶಂ ಮೇ ತದನು ಜಲದ ಶ್ರೋತ್ರಪೇಯಸಿ ಶ್ರೋತ್ರಪೇಯಮ್” ಮೇಘಂ ೧-೧೩ ।

ಶ್ರೋತ್ರಸುಖ ಶ್ಲೋಕಸುಖ (ವಿಂ) ಶ್ಲೋತ್ರಗಳಿಗೆ ಸುಖವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ, ಕಿವಿಗಳಿಗೆ ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವ, ಕಿವಿಗಳಿಗೆ ಇಂಪಾಗಿರುವ. ಶ್ರೋತ್ರಯೋಃ ಸುಖಂ ಸುಖಕರಮ್ । “ಇತ್ಯೋಷಧಿಪ್ರಸ್ಥವಿಲಾಸಿನೋನಾಂ ಶೃಣ್ವನ್ ಕಥಾಃ ಶ್ರೋತ್ರಸುಖಾಃ ತ್ರಿವೇದಿಃ” ಕುಮಾರಂ ೭-೬೯ ।

ಶ್ರೋಷ್ಯತ್ ಶ್ಲೋಷ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಕೇಳುತ್ತಿರುವ, ಕಿವಿಗೊಟ್ಟು ಆಲಿಸುತ್ತಿರುವ. ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೇ)+ಸ್ಯ: “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । “ತ್ವಂ ಮಯಾ ಪ್ರಿಯಸಖಾಸಮಾಗತಾ ಶ್ರೋಷ್ಯತೇವ ವಚನಾನಿ ಪೃಠತಃ” ಕುಮಾರಂ ೮-೫೯ ।

ಶ್ರೋತ ಶ್ಲೋಕ (ನಂ) 1. ಗಾರ್ಹಪತ್ಯ ಆಹವನೀಯ ಮತ್ತೂ ದಕ್ಷಿಣಾ ಎಂಬ ಮೂರು ಅಗ್ನಿಗಳು. ಶ್ರೋತೌ ಭವಮ್—ಶ್ರತಿ “ಅನ್” (೪-೩-೫೩) । “ತ್ರಯೋ ಯೇ ಗಾರ್ಹಪತ್ಯಾಹವನೀಯ-ದಕ್ಷಿಣಾಗ್ನಯಃ । ಇದಮಗ್ನಿತ್ರಿಕಂ ಶ್ರೋತಂ ತ್ರೇತಾಗ್ನಿಹೋತ್ರಮಿತ್ಯಪಿ” । 2. ಶ್ರುತಕರ್ಮ, ವೇದವಿಹಿತವಾದ ಕಾರ್ಯ. (ವಿಂ) 3. ಶ್ರುತಕರ್ಮವಾದ, ವೇದದಲ್ಲಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ವೇದವಿಹಿತವಾದ ಕಾರ್ಯವು ಶ್ರೋತಮ್ ಮತ್ತು ಸ್ಮಾರ್ತಮ್ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. “ಧರ್ಮಜೈವಿಹಿತೋ ಧರ್ಮಃ ಶ್ರೋತಃ ಸ್ಮಾರ್ತೋ ದ್ವಿವಿಧಃ ॥ ದಾನಾಗ್ನಿಹೋತ್ರಸಂಬಂಧಮಿಜ್ಯಾ ಶ್ರೋತಸ್ಯ ಲಕ್ಷಣಮ್ ॥ ಸ್ಮಾರ್ತೋ ವರ್ಣಾಶ್ರಮಾಚಾರೋ ಯಮೇಶ್ವರನಿರ್ಮಯತುತಃ ॥ ಪೂರ್ವಮ್ನೋ ವೇದಯಿತ್ವೇಹ ಶ್ರೋತಂ ಸಪ್ತರ್ಷಯೋಽಬ್ರವನ್” ॥

ಶ್ರೋತಕರ್ಮನ್ ಶ್ಲೋಕಕರ್ಮನ್ (ನಂ) ವೇದವಿಹಿತವಾದ ಕರ್ಮ. ಶ್ರೋತಂ ಕರ್ಮ ।

ಶ್ರೋತ್ರ ಶ್ಲೋಕ (ನಂ) 1. ಕರ್ಣ, ಕಿವಿ. ಶ್ರೋತ್ರಮೇವ—“ಅನ್” (೫-೪-೩೮) । 2. ಶ್ಲೋತ್ರಿಯತ್ವ ಅಥವಾ ಶ್ಲೋತ್ರಿಯನ ಕರ್ಮ. ಶ್ರೋತ್ರಿಯಸ್ಯ ಭಾವಃ ಕರ್ಮ ವಾ—ಶ್ರೋತ್ರಿಯ “ಅನ್” (೫-೧-೧೩೦) । ಯಲೋಃ (ವಾಂ ೫-೧-೧೩೦) । “ಶ್ರೋತ್ರಾಹಂತೀಚರ್ಗುಣ್ಯಮಹರ್ಷಿಮಿರಹನಿಶಮ್ । ತೋಷ್ಠಯಮಾನೋಽಪ್ಯಗುಣೋ ವಿಭುವಿಜಯತೇತರಾಮ್” ।

ಶ್ರೋಷ್ಯತ್ ಶ್ಲೋಷ್ಯತ್ (ವಿಂ) ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಹವಿಸ್ಸನ್ನು ಕೊಡುವುದು, —ಹವಿಸ್ಸನ್ನು ಆರ್ಪಿಸುವುದು. ಶ್ರಯತೇಜೇನ—ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೇ) “ಘ್ನ” ಬಾಹುಂ ।

ಶ್ಲಕ್ಷಣ ಶ್ಲಕ್ಷಣ (ವಿಂ) 1. ಅಲ್ಪವಾದ, ಸ್ವಲ್ಪವಾದ, ಕೊಂಚ. ಶ್ಲಕ್ಷಣ (ಶ್ಲಕ್ಷಣೇ) “ಕಸನಃ” ಉಪಾಸಾ: ಅಕಾರಶ್ಚ (ಽಽ ೩-೧೯) । 2. ನಯವಾಗಿರುವ, ನುಣುಪಾಗಿರುವ, ಮೃದುವಾಗಿರುವ. “ಶ್ಲಕ್ಷಣಂ ಯತ್ಪರಿಹಿತ-ಮೇತಯೋಃ ಕಿಲಾಂತರ್ಧಾನಾರ್ಥಂ ತದುದಕಸೇಕಸಕ್ತಮೂರ್ವಿಃ” ಮಾಘಂ ೮-೬೫ । 3. ನಯವಾದ, ಮಧುರವಾದ, ಕಠಿನವಲ್ಲದ, ಸೌಮ್ಯವಾದ. “ಅಹಿಸಯೇವ ಭೂತಾನಾಂ ಕಾರ್ಯಂ ಶ್ರೇಯೋಽನ್ಯುಶಾಸನಮ್ । ವಾಕ್ಚೇವ ಮಧುರಾ ಶ್ಲಕ್ಷಣಾ ಪ್ರಯೋಜ್ಯಾ ಧರ್ಮಮಿಚ್ಛತಾ” ಮನುಂ ೨-೧೫೯ । 4. ಅಂದವಾದ, ಚಂದವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ.

ಶ್ಲಕ್ಷಣಕ ಶ್ಲಕ್ಷಣಕ (ನಂ) 1. ಅಡಕೆಯಿ. (ವಿಂ) 2. ನಯವಾದ, ನುಣುಪಾದ. 3. ಅಂದವಾದ, ಸುಂದರವಾದ.

ಶ್ಲಥ ಶ್ಲಥ (ವಿಂ) 1. ಸಡಿಲವಾದ, ಬಿಗಿಯಾಗಿಲ್ಲದ. ಶ್ಲಥ (ದೌರ್ಬಲ್ಯೇ) + ಣಿಚ್ “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ಶ್ಲಥ-ಶಿರಸಿಜಪಾಶಪಾತಭಾರಾದಿವ ನಿತರಾಂ ನತಿಮದ್ವಿರಸಭಾಗೈಃ” ಮಾಘಂ ೭-೬೨ । 2. ಬಿಚ್ಚಿರುವ, ಕೆದರಿರುವ. “ಉಪೇಕ್ಷತೇ ಯಃ ಶ್ಲಥಲಮ್ಬಿವೀರ್ಜಿತಾಃ ಕಪಾಲದೇಶೋ ಕಲಮಾಗ್ರಪಿಙ್ಗಲಾಃ” ಕುಮಾರಂ ೫-೪೭ । 3. ಸಡಿಲವಾದ, ದುರ್ಬಲವಾದ. “ವೃಂತಾಚ್ಚಕ್ಷುಃ ಹರತಿ ಪುಷ್ಪಮನೋಹಕಾನಾಮ್” ರघುಂ ೫-೬೯ ।

ಶ್ಲಾಘನ ಶ್ಲಾಘನ (ನಂ) ಶ್ಲಾಘಿಸುವುದು, ಹೊಗಳುವುದು. ಶ್ಲಾಘ (ಕತ್ಯನೇ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।

ಶ್ಲಾಘನೀಯ ಶ್ಲಾಘನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಹೊಗಳಲ್ಪಡುವ, ಪ್ರಶಂಸಿಸಲ್ಪಡುವ. ಶ್ಲಾಘ (ಕತ್ಯನೇ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । 2. ಹೊಗಳಬೇಕಾದ. 3. ಹೊಗಳಲು ಅರ್ಹನಾದ. “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬) । —ಧಿತವ್ಯಃ —ಭಿತವ್ಯಃ.

ಶ್ಲಾಘಮಾನ ಶ್ಲಾಘಮಾನ (ವಿಂ) ಹೊಗಳುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರಶಂಸೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಶ್ಲಾಘ (ಕತ್ಯನೇ) “ಶಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪) ।

ಶ್ಲಾಘಾ ಶ್ಲಾಘಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಶಂಸೆ, ಹೊಗಳಿಕೆ. ಶ್ಲಾಘ (ಕತ್ಯನೇ) “ಅಃ” (೩-೩-೧೦೩) । “ಜ್ಞಾನೇ ಮೌನಂ ಕ್ಷಮಾ ಶಕ್ತೌ ತ್ಯಾಗೋ ಶ್ಲಾಘಾವಿಪರ್ಯಯಃ” ರघುಂ ೧-೨೨ । 2. ಪರಿಚಯ, ಸೇವೆ, ಶುಶ್ರೂಷೆ. 3. ಅಭಿಲಾಷೆ, ಆವೇಕ್ಷೆ.



“ಶ್ಲಾಘಾ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಪ್ರಶಂಸಾಂ ಪರಿಚಯಾಭಿಲಾಷಯೋಃ”  
ಮೇದಿಂ ।

ಶ್ಲಾಘಿತ ಶ್ಲೋಕ (ವಿಂ) 1. ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಶಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಶ್ಲಾಘ (ಕತ್ಯನೇ) “ಕ್ತಃ” (3-2-102) ।  
“ಶಾಸ್ತ್ರವ್ಯಸುರಪಾದಪಾದಿಭಿಃ ಶ್ಲಾಘಿತಾಂ ತ್ರಿದಿವತೋ ಗುಣಾಧಿಕಾಂ” ಯಾದಂ 10-42 । (ನಂ) 2. ಹೊಗಳಿಕೆ, ಪ್ರಶಂಸೆ. ಶ್ಲಾಘ ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (3-2-114) ।

ಶ್ಲಾಘ್ಯ ಶ್ಲೋಕ (ವಿಂ) 1. ಹೊಗಳಲ್ಪಡುವ. 2. ಹೊಗಳಬೇಕಾದ. 3. ಹೊಗಳಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಶ್ಲಾಘ (ಕತ್ಯನೇ) “ಘ್ಯತ್” (3-1-124) ।

ಶಿಲಕು ಶ್ಲೋಕ (ಪುಂ) 1. ಭೃತ್, ಸೇವಕ, ಆಳು. ಶಿಲ (ಆಲಿಙ್ಗನೇ) “ಕ್ರುಃ” ಕಾದೇಶಶ್ಚ (3-1-33) ।  
2. ಎಷಯಲಂಪಟ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿ. (ನಂ) 3. ಜ್ಯೋತಿಃಶಾಸ್ತ್ರ.

ಶಿಲಾ ಶ್ಲೋಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಲಿಂಗನ, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಶಿಲ (ಆಲಿಙ್ಗನೇ) “ಅಃ” (3-2-103) ।

ಶಿಲಾ ಶ್ಲೋಕ (ವಿಂ) 1. ಆಲಿಂಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಶಿಲ (ಆಲಿಙ್ಗನೇ) “ಕ್ತಃ” (3-2-102) ।  
2. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ. “ಉರ್ವಿಹಃ ಶಿಲಾತನುನಹೀಂದ್ರಃ” ಮಾಘಂ 4-9 । 3. ಶ್ಲೇಷೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ನಾನಾರ್ಥಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ (ಶಬ್ದ).

ಶಿಲಾ ಶ್ಲೋಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಲಿಂಗನ. ಶಿಲ (ಆಲಿಙ್ಗನೇ) “ಕ್ತಿನ್” (3-2-94) ।

ಶಿಲಾ ಶ್ಲೋಕ (ವಿಂ) 1. ಆಲಿಂಗಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ಶಿಲ (ಆಲಿಙ್ಗನೇ) “ಶತ್” (3-2-124) । “ಶಿಲಾಪಂತಂ ಮುಹುರಿದಿರೋಪಿ ತಂ ನಿಜಸ್ತ್ರೀಮುತುಙ್ಗಸ್ತನುಭರಭಜ್ಜಭೀರುಮಾಪ್ಯಾಂ” ಮಾಘಂ 4-36 । 2. ಅಂಟಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಸೇರುತ್ತಿರುವ, ತಿಕ್ಕಾಡುತ್ತಿರುವ. “ಶಿಲಾಪಿಙ್ಗುರನೃಪಮುಖಾಪ್ರಸಂಗಸ್ವಲ್ಪತ್ವಲೀನಂ ಹರಿಮಿವಿಲೋಲೈಃ” ಮಾಘಂ 3-66 । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ತೀಪ್” (4-1-6) । -ಂತಿ -೨೯.

ಶ್ಲೋಪದ ಶ್ಲೋಕ (ನಂ) ಆನಕಾಲ, ಆನೆಯ ಕಾಲಿ ನಂತೆ ದಪ್ಪವಾಗಿ ಉದುವ ಒಂದು ರೋಗ. ಇದು ವಾತಿಕಂ ಪೈತ್ತಿಕಂ ಮತ್ತು ಶ್ಲೇಷ್ಮಿಕಂ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. “ವಾತಜಂ ಕೃಷ್ಣಾಂ ಪಿ ಹಿ ಸ್ಫುಟಿತಂ ತೀವ್ರವೇದನಮ್ । ಅನಿಮಿತ್ತರಜಂ ವಾಸ್ಯ ಬಹುಶೋ ಽವರ ಏವ ಚ” ॥ “ಪಿತ್ತಜಂ ಪೀತಸಂಕ್ರಾಂಶಂ ದಾಹಜ್ವರಯುತಂ ಭೃಶಮ್ । ಶ್ಲೇಷ್ಮಿಕಂ ತು ಭವೇತ್ ಸ್ನಿಗ್ಧಂ ತಥಾ ಪಾಂಡು ಗುರು ಸ್ಥಿರಮ್” ॥

ಶ್ಲೋಕ ಶ್ಲೋಕ (ವಿಂ) ಸಂಪದ್ಯುಕ್ತ, ಧನಿಕ, ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ.

ಶ್ರೀ: ಲಕ್ಷ್ಮೀ: ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಲಕ್” (4-2-99) । ಪೃಷಂ ।

ಶ್ಲೇಷ ಶ್ಲೋಕ (ಪುಂ) 1. ಆಲಿಂಗನ, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಶಿಲ (ಆಲಿಙ್ಗನೇ) “ಘಕ್” (3-2-114) । 2. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು, ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧ, ಒಬ್ಬರನ್ನೊಬ್ಬರು ಸಂಧಿಸುವುದು. 3. ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಅಂಟಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಬೇರ್ಪಡಿಸಲಾಗದಂತೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವುದು. 4. ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಶಿಲ “ಗಃ” (3-1-141) । ನಾನಾರ್ಥಗಳಳ್ಳು ಶಬ್ದಗಳ ಪ್ರಯೋಗವು ಶ್ಲೇಷಾ ಲಂಕಾರ “ನಾನಾರ್ಥಸಂಖ್ಯಾಃ ಶ್ಲೇಷಃ ವರ್ಣಾವರ್ಣ್ಯೋಮಯಾತ್ಮಕಃ” ಚಂದ್ರಾಂ । ಉದಾ: “ಸರ್ವದೋಮಾಧವಃ ಪಾತು ಸ ಯೋಗಾಕ್ಷಾ ಮದೀಧರತ್” ॥ ಇದು ಪ್ರಕೃತ, ಅಪ್ರಕೃತ ಮತ್ತು ಪ್ರಕೃತಾಪ್ರಕೃತ (ಉಭಯಾತ್ಮಕ) ಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ಸರ್ವದೋ ಮಾಧವಃ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪರಿ ಮತ್ತು ಹರ ಇಬ್ಬರ ಕೀರ್ತನವೂ ಪ್ರಕೃತ. ಸರ್ವದಃ ಮಾಧವಃ ಅಗಂ ಗಾಂ ಚ ಎಂದೂ ಸರ್ವದಾ ಉಮಾಧವಃ ಗಂಗಳಾಂ ಎಂದೂ ಪ್ರಕೃತಗಳಿಗೆ (ಎರಡು ಅರ್ಥಗಳಿಗೂ) ಶ್ಲೇಷವಿರುವುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿ ಪ್ರಕೃತಶ್ಲೇಷ. “ಅಜ್ಞೇನ ತ್ವಂಮುಖಂ ತುಲ್ಯಮ್” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರ ಮತ್ತು ಕಮಲಗಳೆರಡೂ ಅಪ್ರಕೃತವಾದುದರಿಂದ ಅಪ್ರಕೃತ ಶ್ಲೇಷ. “ಉಚ್ಚರತ್ನ ರಿಕೀಲಾಲಃ ಶುಶುಭೇ ವಾಹಿನೀಪತಿಃ” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಸೇನಾಪತಿಯು ಪ್ರಕೃತ. ಸಮುದ್ರವು ಅಪ್ರಕೃತ ವಾದುದರಿಂದ ಉಭಯಾತ್ಮಕ ಶ್ಲೇಷ. ಇತ್ಯಾದಿ 5. ದಾಹ, ಸುಡುವುದು.

ಶ್ಲೇಷ ಶ್ಲೋಕ (ಪುಂ) ಶ್ಲೇಷ್ಮ, ಕಫ.

ಶ್ಲೇಷಮಘನಾ ಶ್ಲೋಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಾಳೆಮರ. 2. ಮಲ್ಲಿಗೆ ಗಿಡ. “ಶ್ಲೇಷಮಘನಾ ತು ಕೇತವ್ಯಾಂ ಮಲ್ಯಾಮ್” ಹೇಮಂ ।

ಶ್ಲೇಷಮಘನಿ ಶ್ಲೋಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಲ್ಲಿಗೆ ಗಿಡ. 2. ಕೀತಕೇವೃಕ್ಷ, ತಾಳೆ ಮರ. ಶ್ಲೇಷಾಣಾಂ ಹಂತಿ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) “ಠಕ್” (3-2-43) ।

ಶ್ಲೇಷಮಣ ಶ್ಲೋಕ (ವಿಂ) ಶ್ಲೇಷ್ಮರೋಗವುಳ್ಳವನು. ಶ್ಲೇಷಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ನಃ” (4-2-100) ।

ಶ್ಲೇಷಮನ್ ಶ್ಲೋಕ (ಪುಂ) ಕಫ, ಶ್ಲೇಷ್ಮ. ಶಿಲ (ಆಲಿಙ್ಗನೇ) “ಮನಿನ್” (3-1-144) ।

ಶ್ಲೇಷಮಲ ಶ್ಲೋಕ (ವಿಂ) ಕಫವ್ಯಾಧಿಯುಳ್ಳವನು. ಶ್ಲೇಷಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ — ಶ್ಲೇಷಮನ್ “ಲಕ್” (4-2-99) ।

ಶ್ಲೇಷಾತಕ ಶ್ಲೋಕ (ಪುಂ) ಬೆಳ್ಳೆಮರ. ಶ್ಲೇಷಾಣಾಂ ಅತತಿ — ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೇ) “ಕ್ವುನ್” (3-2-32) ।



ಶ್ಲೋಕ ಶ್ಲೋಕ (ಪುಂ) 1. ಪದ್ಯ, ಛಂದೋಬದ್ಧವಾದ  
ನಾಲ್ಕು ಪಾದಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪದಗಳ ಸಮೂಹ.  
ಶ್ಲೋಕಯತೇ ಪದ್ಯತೇ ರೂಪೇಣ ಸಂಹನ್ಯತೇ ಕವಿಭಿಃ—ಶ್ಲೋಕ  
(ಸಂಧಾತೇ) “ಘಃ” (೩-೩-೧೧೮)। “ಮಾನಿಷಾದ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಂ  
ತ್ವಮಗಮಃ ಶಾಶ್ವತೀಃ ಸಮಾಃ। ಯತ್ ಕೌಶಮಿಥುನಾದೇಕಮವಧಿಃ  
ಕಾಮಮೋಹಿತಮ್।। ತಸ್ಯೇತ್ಯಂ ಭುವತಶ್ಚಿಂತಾ ವಭೂವ ಹೃದಿ  
ವೀಕ್ಷತಃ। ಶೋಕಾರ್ತನಾಸ್ಯ ಶಕುನೇಃ ಕಿಮಿದಂ ವ್ಯಾಹೃತಂ ಮಯಾ।  
ಚಿಂತಯನ್ ಸ ಮಹಾಪ್ರಾಜ್ಞಶ್ಚಕಾರ ಮತಿಮಾನ್ ಮತಿಮ್।। ಶಿಷ್ಯಂ  
ಚೈವಾಬ್ರವೀದ್ವಾಕ್ಯಮಿದಂ ಸ ಮುನಿಪುಂಜವಃ। ಪಾದಬಂಧೋಽಕ್ಷರ-  
ಸಮಸ್ತನ್ವೀಲಯತಮನ್ವಿತಃ।। ಶೋಕಾರ್ತಸ್ಯ ಪ್ರವೃತ್ತೋ ಮೇ ಶ್ಲೋಕೋ  
ಭವತು ನಾನ್ಯಥಾ” ರಾಮಾಂ। 2. ಯಶಸ್ಸು, ಕೀರ್ತಿ.  
ಶ್ಲೋಕ “ಘ” (೩-೩-೧೧೮)। “ಪದ್ಯೇ ಯಶಸಿ ಚ  
ಶ್ಲೋಕಃ” ಅಮಂ।

ಅಶ್ವೇಯಸ ಶ್ವೇತೇಯಸ (ನಂ) 1. ಕಲ್ಯಾಣ, ಶುಭ, ಮಂಗಳ.  
ಅಶ್ವಃ ಆಗಾಮಿ ಅಶ್ವೇಯಸ—ಅಶ್ವಃ + ಅಶ್ವೇಯಸ “ಅಶ್ವ” (೪-೪-೮೦)।  
“ಅಶ್ವೇಯಸಮವಾಪ್ತಾಸಿ ಭ್ರಾತೃಭ್ಯಾಂ ಪ್ರತ್ಯಭಾಣಿ ಸಾ” ಮೃತ್ರಿಂ  
೪-೩೮। 2. ಸುಖ, ಸಂತೋಷ. 3. ಪರಮಾತ್ಮ.  
“ಅಶ್ವೇಯಸಂತು ಕಲ್ಯಾಣೇ ಪರಮಾತ್ಮನಿ ಶರ್ಮಣಿ” ಮೇದಿಂ।  
(ವಿಂ) 4. ಶುಭವುಳ್ಳವನು. 5. ಸಂತೋಷವುಳ್ಳವನು.

ಅಗಣ ಶ್ವಗಣ (ಪುಂ) ನಾಯಿಗಳ ಸಮೂಹ. ಶುನಾಂ ಗಣಃ।

ಅಗಣಿಕ ಶ್ವಗಣಿಕ (ಪುಂ) 1. ಬೇಟೆಗಾರ. 2. ನಾಯಿ  
ಗಳನ್ನು ಸಾಕಿ ಜೀವಿಸುವವನು. ಅಗಣೇನ ಚರತಿ—ಅಗಣ  
ವಾ “ಠನ್” (೪-೪-೧೧)। ಪಕ್ಷೇ “ಠ” (೪-೪-೧೧)।  
ಅಗಣಿಕಃ ಶ್ವಗಣಿಕಃ।

ಅದಂಟಾ ಶ್ವದಂಷ್ಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೆಗ್ಗಿಲು ಗಡ. ಶುನೋ  
ದಂಷ್ಟೇವ। “ಪಲಂಕಾ ತಿವಕ್ಷುಗಂಧಾ ಅದಂಟಾ ಸ್ವಾಡುಕಂಠಕಃ”  
ಅಮಂ।

ಅಭೂತ ಶ್ವಭೂತ (ಪುಂ) ಶೃಗಾಲ, ಜಂಬುಕ, ನರಿ.

ಅನ್ ಶ್ವನ್ (ಪುಂ) ನಾಯಿ. ಅಭಯತಿ—ತು ಆಶಿ (ಗತಿ-  
ವೃದ್ಧಿಃ) “ಕನಿಃ” (೩ಂ ೧-೧೫೭)। “ಅ ಪಿಂಡಸ್ಯ  
ಕುಸ್ತೇ ಗಜಪುಂಜವಸ್ತು ಧೀರಂ ವಿಲೋಕಯತಿ ಚಾಡುಶತೇಶ್ಚ ಭುಜ್ವತೇ”  
ಭರ್ತುಂ ೧-೨೩। “ಅನಃ ಸ್ವರೇಣ ಅಭಯಾಂತಶಾಂತಿನಾ”  
ಕುಮಾಂ ೧೫-೨೪।

ಅನಿಶ ಶ್ವನಿಶ (ನಂ) ನಾಯಿಯ ರಾತ್ರಿ. ಶುನೋ ನಿಶಾ—  
ವಾ ಕಲಿಬಮ್ (೨-೪-೨೫)। ಪಕ್ಷೇ ಇವನಿಶಾ ಶ್ವನಿಶಾ.  
“ಶುನಃ ಚತುರ್ದಶಾಮುಪವಸತಃ ಪಶ್ಯಾಮಃ”। ಮೆದಿಸಿದ  
ನಾಯಿಯ ರಾತ್ರಿಯು ಶ್ವನಿಶ. “ಯಸ್ಯಾಂ ಮತ್ತಾ ನಿಶಿಶಿ ಅನಃ  
ಅನಿಶಾಂ ಅನಿಶಾ ಚ ಸಾ”।

ಅಪಚ್ ಶ್ವಪಚ್ (ಪುಂ) ಚಂಡಾಲ, ನಿಮ್ಮರ್ವದವನು.  
ಅನಂ ಪಚತಿ—ತು ಪಚ (ಪಾಕೇ) “ಕಿವಿ” (೩-೨-೬೧)।  
“ಶುನಾಂ ಚ ಪತಿಸ್ತಾನಾಂ ಚ ಅಪಚಾಂ ಪಾಪರೋಗಿಣಾಮ್। ವಾಯಸಾನಾಂ  
ಕ್ರಿಯಾಣಾಂ ಚ ಶನಕೈರ್ನಿವೇಪೇದ್ಭುವಿ” ಮನುಂ ೩-೯೨। “ಅಚ್”  
(೩-೧-೧೩೪)। —ಪಚಃ—ಪಚಃ।

ಅಪಾಕ ಶ್ವಪಾಕ (ಪುಂ) ಚಂಡಾಲ. ಶುನಾಂ ಪಾಕಃ ಕಾರ್ಯತ್ವೇ-  
ನಾಸ್ಯ। “ಅಪಚಾಂತಿಸ್ತಥೋಗ್ರಾಃ ಅಪಾಕಾ ಇತಿ ಕೀರ್ತಯತೇ”  
ಮನುಂ ೧೦-೧೯।

ಅಪಲ್ಕ ಶ್ವಪಲ್ಕ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಯಾದವ, ಅಕ್ಕೂರನ  
ತಂದೆ.

ಅಮೀಶ್ ಶ್ವಮೀಶ್ (ಪುಂ) ನರಿ, ಜಂಬುಕ. ಶುನಃ ಮೀಶಃ।

ಅಮ್ರ ಶ್ವಮ್ರ (ನಂ) ರಂಧ್ರ, ತೂತು. ಅಮ್ರ (ಗತೀ) ಕರ್ಮಂ  
“ಘ” (೩-೩-೧೧)। ಅಮ್ರಯತಿ—ಅಮ್ರ + ಣಿಚ್  
“ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) ವಾ। “ತಿರೋಹಿತ ಅಮ್ರನಿಕುಂಜ-  
ರೋಧಸಃ” ಕಿರಾಂ ೧೪-೩೩।

ಅಯಶ್ ಶ್ವಯಶ್ (ಪುಂ) ಶೋಭೆ, ಊತ, ಊದಲು  
ವ್ಯಾಧಿ. ತು ಆಶಿ (ಗತಿವೃದ್ಧಿಃ) “ಅಯಶ್”  
(೩-೩-೮೧)।

ಅಯಿಶ್ ಶ್ವಯಿಶ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವ್ಯಾಧಿ, ಪೀಡೆ, ಬಾಧೆ.  
ತು ಆಶಿ (ಗತಿವೃದ್ಧಿಃ) “ಇಶಿಃ” (೩ಂ ೪-೭೧)।

ಅಯಶ್ ಶ್ವಯಶ್ (ನಂ) ನಾಯಿಗಳ ಗುಂಪು.

ಅವೃತ್ತಿ ಶ್ವವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೇವೆ, ಜೀತ. ಶುನಃ ಕುಕ್ಕುರಸ್ಯೇವ  
ಪರಾಧೀನಾ ವೃತ್ತಿಃ ಜೀವನಮ್। ಯಜಮಾನನನ್ನು ದೀನ  
ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ನೋಡುವುದು, ಅವನ ತರ್ಜನ ಮತ್ತೂ  
ನೀಚವಾದ ಮಾತುಗಳಿಗೆ ಪಾತ್ರನಾಗುವುದು ಇವುಗಳಿಂದ  
ಅನವರತವೂ ಮಿನ್ನಮನಸ್ಕನಾಗುವುದರಿಂದ ಸೇವೆಯು  
ಶ್ವವೃತ್ತಿಗೆ ಸಮಾನವಾದುದು. “ಸೇವಾ ಅವೃತ್ತಿರಾಖ್ಯಾತಾ  
ತಸ್ಮಾತ್ತಾಂ ಪರಿವರ್ಜಯೇತ್” ಮನುಂ ೪-೬। “ಸೇವಾಂ ಲಾಘವ-  
ಕಾರಿಣಿಂ ಕೃತಧಿಃ ಸ್ಥಾನೇ ಅವೃತ್ತಿ ವಿಧುಃ” ಮುಡ್ರಾಂ ೩-೧೪।

ಅವ್ಯಾಘ್ರ ಶ್ವವ್ಯಾಘ್ರ (ಪುಂ) ದುಷ್ಟಪ್ರಾಣಿ, ಹಿಂಸಿಸುವ  
ಪ್ರಾಣಿ.

ಅಶ್ವಶ್ ಶ್ವಶ್ವ (ಪುಂ) ಮೂವ—(೧) ಪತ್ನಿಯ ತಂದೆ.

(೨) ಪತ್ನಿಯ ತಂದೆ. ಶು ಆಶು ಅಶ್ವನುತೇ ಅಶ್ಯತೇ ವಾ—ಅಶ್  
(ವ್ಯಾಪ್ತೀ) “ಅಶನ್” (೩ಂ ೧-೪೪)। “ಅಶ್ವಶ್ವಂ ಭೂತನಾಥಸ್ಯ  
ಸ್ಕಂದಮಾತಾಮಹಂ ಗಿರಿಮ್। ಪ್ರಸೂತಿ ಸರ್ವರತ್ನಾನಾಂ ಪೃಥಿವೀ-  
ಧೇನುತರ್ಣಕಮ್” ಯಾದಂ ೨೨-೧೧೬। (ದ್ವಿಂ ವಂ) —ಶ್ವ—ಶ್ವ.  
ಶ್ವಶ್ವ ಮತ್ತೂ ಶ್ವಶ್ವ, ಅಶ್ವ ಮತ್ತೂ ಮೂವ.  
ಅಶ್ವಶ್ವ ಅಶ್ವಶ್ವ ವಾ ಏಕಶೇಷಃ।



ಶ್ವಾಸ ಶ್ವಾಸ (ಪುಂ) 1. ಉಸಿರು. ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) —  
 ಶ್ವಸಿತುನೇನ—ಕರಂ “ಘಕ್” (೩-೩-೧೨೧)। ಶ್ವಸಿತಿ—  
 ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) “ಞ:” (೩-೧-೧೪೧) ವಾ। “ಅಥಾಪಿ  
 ಸ್ತನವೇಪಯುಂ ಜನಯತಿ ಶ್ವಾಸ: ಪ್ರಮಾಣಾಧಿಕ:” ಶಾಕುಂ ೧-೨೬।  
 2. ನಿಟ್ಟುಸಿರು. 3. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 4. ಉಬ್ಬಿಸು,  
 ದಮ್ಬು, ಗೂರಲುಪಾಧಿ. ವಿಗುಣವಾದ ಪ್ರಾಣ  
 ವಾಯುವು ಉದ್ವೇಗಮುಖವಾಗಿ ಕಫದೊಡನೆ ಸೇರಿದಾಗ  
 ಆಡುವ ಶ್ವಾಸವು ಶ್ವಾಸರೋಗ. “ವಿಹಾಯ ಪ್ರಕೃತಿ ವಾಯು:



ಪ್ರಾಣೋಽಯ ಕಫಸಂಯುತಃ । ಶಾಸಯತ್ಯುರ್ವಗೌ ಭೂತ್ವಾ ತಂ ಶಾಸಂ  
ಪರಿಚಕ್ಷತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ ೧೨-೪ । ಈ ವ್ಯಾಧಿಯು  
(1) ಕ್ಷುಧ್ರಕಃ (2) ತಮಕಃ (3) ಕ್ಷಿಣ್ಣಃ (4) ಮಹಾನ್  
ಮುತ್ತು (5) ಒಂವಃ ಎಂದು ಐದು ವಿಧ. "ಕ್ಷುಧ್ರಕಸ್ತಮಕ-  
ಕ್ಷಿಣ್ಣೋ ಮಹಾನ್ಯುರ್ವಶ್ಚ ಪಂಚಮಃ । ಭಿಷ್ಯತೇ ಸ ಮಹಾವ್ಯಾಧಿಃ  
ಶಾಸ ಏಕೋ ವಿಶೇಷತಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ೧೨-೫ ।

**ಶಾಸಕಾಸ ಶ್ವಾಸಕಾಸ** (ಪುಂ) ಉಬ್ಬಸವ್ಯಾಧಿಯಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ಕಾಸರೋಗ, ಗೂರಲುವ್ಯಾಧಿ. ಶಾಸಯುಕ್ತಃ  
ಕಾಸಃ ।

**ಶಾಸಕುಠಾರ ಶ್ವಾಸಕುಠಾರ** (ಪುಂ) ಶ್ವಾಸರೋಗಕ್ಕೆ ಕುಠಾರ  
ಪ್ರಾಯವಾದ ಔಷಧ, ಶ್ವಾಸವ್ಯಾಧಿಯನ್ನು ವಾಸಿ  
ಮಾಡುವ ಔಷಧ. ಶಾಸಸ್ಯ ಕುಠಾರ ಇವ ।

**ಶಾಸಧಾರಣ ಶ್ವಾಸಧಾರಣ** (ನಂ) ಉಸಿರನ್ನು ತಡೆಯು  
ವುದು, ಪ್ರಾಣಾಯಾಮ, ವಾಯುನಿರೋಧ. ಶಾಸಸ್ಯ  
ಧಾರಣಮ್ ಸ್ಥಿರೀಕರಣಮ್ । ಶ್ವಾಸವಾಯುವು ಚಲಿಸು  
ತ್ತಿದ್ದರೆ ಚಿತ್ತವೂ ಚಂಚಲವಾಗುವುದು. ನಿಶ್ಚಲವಾಗಿದ್ದರೆ  
ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವುದು. "ಚಲೇ ವಾತೇ ಚಲಂ ಚಿತ್ತಂ ನಿಶ್ಚಲೇ  
ನಿಶ್ಚಲಂ ಭವೇತ್ । ಯೋಗಿ ಸ್ಥಾಣುತ್ವಮಾಪ್ನೋತಿ ತತಃ ವಾಯುಂ  
ನಿರೋಧಯೇತ್" ಹೃಕಂ ೧-೨ । ವಾತವೂ ಚಿತ್ತವೂ ನಿಶ್ಚಲ  
ವಾಗಿದ್ದರೆ ಯೋಗಿಯು ದೀರ್ಘಜೀವಿಯಾಗುವನು.  
ಆದುದರಿಂದ ಪ್ರಾಣಾಯಾಮದಿಂದ ವಾಯುನಿರೋಧ  
ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು.

**ಶಾಸನಿರೋಧ ಶ್ವಾಸನಿರೋಧ, -ರೋಧ -ರೋಧ** (ಪುಂ)  
ಪ್ರಾಣವಾಯುವನ್ನು ತಡೆಯುವುದು, ಪ್ರಾಣಾಯಾಮ  
ಮಾಡುವುದು. ಪ್ರಾಣಸ್ಯ ವಾಯೋ ನಿರೋಧೋ ರೋಧೋ ವಾ ।

**ಶಾಸಹಿವಕಾ ಶ್ವಾಸಹಿವಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಕ್ಕಳಿಕೆ, ಶ್ವಾಸಾಂಗ  
ಗಳು ಹಠಾತ್ತಾಗಿ ಸಂಕೋಚವಾಗುವ ಶ್ವಾಸದ್ವಾರವು  
ಛೇದನ ಮುಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ವಿಲಕ್ಷಣ  
ಶಬ್ದ.

**ಶಾಸಹೇತಿ ಶ್ವಾಸಹೇತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ಶ್ವಾಸರೋಗವನ್ನು ಶಮನ  
ಮಾಡುವ) ನಿದ್ರೆ. ಶಾಸಸ್ಯ ಹೇತಿರಿವ ।

**ಶಾಸಾನಿಲ ಶ್ವಾಸಾನಿಲ** (ಪುಂ) ಉಸಿರಿನ ಗಾಳಿ. "ವಿನತಾ-  
ಸುತಸ್ಯ ಶಾಸಾನಿಲೇನ ಭುಜಗಃ ಸ್ಪೃಹ್ಯಾಲ್ಪತಾಲ್ಮಃ" ಚಂ ರಾಂ ।

**ಶಾಸಾರಿ ಶ್ವಾಸಾರಿ** (ಪುಂ) ಪುಷ್ಕರಮೂಲ, ನೆಲತಾವರೆ  
ಗಡ್ಡೆ. ಶಾಸಸ್ಯ ಶಾಸರೋಗಸ್ಯ ಅರಿಃ ।

**ಶಾಸಿನ್ ಶ್ವಾಸಿನ್** (ವಿಂ) 1. ಶ್ವಾಸರೋಗವುಳ್ಳವನು.  
ಶಾಸೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೪) । (ಪುಂ) 2.  
ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಶಾಸಯತಿ - ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) + ಣಿಚ್

"ಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) । 3. ಉಸಿರಾಡುತ್ತಿರುವ  
ಪ್ರಾಣ, ಜೀವಸಹಿತವಾಗಿರುವ ಪ್ರಾಣ.

**ಶ್ವಿತ್ರ ಶ್ವಿತ್ರ** (ನಂ) ಬಿಳಿಯ ತೊನ್ನು, ಶ್ವೇತಕುಷ್ಠ.  
ಶ್ವೇತತೇ - ಶ್ವಿತಾ (ವರ್ಣ) "ರಕ್" (೩ಂ ೨-೧೩) ।

"ಸ್ಯಾದ್ವಪುಃ ಸುಂದರಮಪಿ ಶ್ವಿತ್ರೇಣೈಕೇನ ದುರ್ಭಗಮ್" ಕಾವ್ಯಾಂ ।

**ಶ್ವಿತ್ರಿನ್ ಶ್ವಿತ್ರಿನ್** (ವಿಂ) ಕುಷ್ಠರೋಗವುಳ್ಳವನು.

**ಶ್ವೇತ ಶ್ವೇತ** (ಪುಂ) 1. ಬಿಳಿಯ ಬಣ್ಣ, ಶುಕ್ಲವರ್ಣ. ಶ್ವಿತಾ  
(ವರ್ಣ) "ವಜ್" (೩-೩-೧೮) । 2. ಶ್ವೇತದ್ವೀಪ, ಒಂದು  
ಉಪದ್ವೀಪ. ಇದು ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ  
ಒಂದು ಆವಾಂತರ ದ್ವೀಪ. "ಶುದ್ಧವರ್ಮಪರಿಣ್ಕಾರಂ ಶ್ವೇತ-  
ದ್ವೀಪಮನುತ" ಯಾದಂ ೨೨-೧೬೨ । 3. ಒಂದು ಪರ್ವತ,  
ಶ್ವೇತಾದ್ರಿ, ಬಿಳಿಗಿರಿ. 4. ಶುಕ್ರಗ್ರಹ. 5. ಬಿಳಿಯ  
ಮೋಡ. 6. ಬಿಳಿಯ ಜೀರಿಗೆ. (ನಂ) 7. ರಜತ,  
ಬೆಳ್ಳಿ. (ವಿಂ) 8. ಬಿಳಿಯ ಬಣ್ಣದ. ಶ್ವೇತೋ ವರ್ಣೋಽ-  
ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" ೪-೨-೧೨೭) ।

**ಶ್ವೇತಕ ಶ್ವೇತಕ** (ನಂ) ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ. ಶ್ವೇತ ಸ್ವಾಥೆ  
"ಕನ್" ।

**ಶ್ವೇತಕುಂಜರ ಶ್ವೇತಕುಂಜರ** (ಪುಂ) 1. ಐರಾವತ, ಇಂದ್ರನ  
ಆನೆ. 2. ಬಿಳಿಯ ಆನೆ.

**ಶ್ವೇತಕೇತು ಶ್ವೇತಕೇತು** (ಪುಂ) 1. ಬೌದ್ಧ ಭಿಕ್ಷು. 2. ಒಬ್ಬ  
ಯಕ್ಷಿ.

**ಶ್ವೇತಕೇಶ ಶ್ವೇತಕೇಶ** (ಪುಂ) 1. ಬಿಳಿಯ ಕೇಶಪಾಶ.  
2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ನುಗ್ಗೆ ಮರ.

**ಶ್ವೇತಕೋಲ ಶ್ವೇತಕೋಲ** (ಪುಂ) ಶಫರವೆಂಬ ಒಂದು ಜಾತಿಯ  
ಮೀನು. ಶ್ವೇತಃ ಶುಕ್ಲಃ ಕೋಲಃ ಕ್ರೋಡೋಽಸ್ಯ ।

**ಶ್ವೇತಖದಿರ ಶ್ವೇತಖದಿರ** (ಪುಂ) ಬಿಳಿಯ ಕಗ್ಗಲಿ ಮರ.

**ಶ್ವೇತಗರುತ್ ಶ್ವೇತಗರುತ್** (ಪುಂ) ಹಂಸಪಕ್ಷಿ. ಶ್ವೇತಾ  
ಗರುತೋಽಸ್ಯ ।

**ಶ್ವೇತದ್ವೀಪ ಶ್ವೇತದ್ವೀಪ** (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ  
ರುವ ಒಂದು ಆವಾಂತರ (ಉಪ) ದ್ವೀಪ. ಒಂದು ದಿನ  
ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕದಿಂದ ಬರುತ್ತಿದ್ದ ನಾರದಮುನಿಯನ್ನು  
ಕಂಡ ರಾವಣನು ತನ್ನೊಡನೆ ಯುದ್ಧ ಮಾಡಬಲ್ಲ ವೀರ  
ರೆಲ್ಲಿರುವರೆಂದು ಕೇಳಲು ನಾರದಮಹರ್ಷಿಯು ಶ್ವೇತ  
ದ್ವೀಪವನ್ನು ತೋರಿಸಿ ಅಲ್ಲಿ ಮಹಾ ಪರಾಕ್ರಮಿಗಳಾದ  
ವಿಷ್ಣುಭಕ್ತರಿರುವರೆಂದು ಹೇಳಲು ರಾವಣನು ತ್ವರಿತ  
ಗತಿಯಿಂದ ವಿಮಾನವೇರಿ ಹೊರಟು ಈ ದ್ವೀಪವನ್ನು  
ಸೇರಿದಾಗ ಅಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ಸ್ತ್ರೀಯರು ಇವನ ಕೈಯನ್ನು  
ಹಿಡಿದು ತಡೆದರು. ಬಹಳ ಪ್ರಯಾಸದಿಂದ ಅವರಿಂದ



ತನ್ನ ಕೈಗಳನ್ನು ಬಿಡಿಸಿಕೊಂಡು ಹೇಗಾದರೂ ವಿಷ್ಣುವನ್ನು ಕಣಕಿ ಹತನಾಗಬೇಕೆಂಬ ಅಭಿಲಾಷೆಯಿಂದ ವಿಷ್ಣುವಿನೊಡನೆ ದ್ವೇಷ ಸಂಪಾದಿಸಲು ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಸೀತಾವಹಾರ ಮಾಡಿದನು.

ಶ್ವೇತಧಾಮನ್ ಶ್ವೇತಧಾಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. 2. ಕರ್ಪೂರ. 3. ಸಮುದ್ರದ ನೊರೆ. "ಶ್ವೇತಧಾಮಾ ಧನಸಾರೆ ಕಲಾನಾಥಾವಿಘ್ನೇನಯೋಃ" ಹೇಮಂ.

ಶ್ವೇತಪತ್ರ ಶ್ವೇತಪತ್ರ (ಪುಂ) ಹಂಸ. ಶ್ವೇತಂ ಪತ್ರಂ ಯಸ್ಯ | ಶ್ವೇತಪತ್ರರಥ ಶ್ವೇತಪತ್ರರಥ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಶ್ವೇತಪತ್ರೋ ಹಂಸೋ ರಥೋ ವಾಹನಮಸ್ಯ |

ಶ್ವೇತಪರ್ಣಾಸಿ ಶ್ವೇತಪರ್ಣಾಸಿ (ಪುಂ) ಬಿಳಿಯ ತುಲಸಿ.

ಶ್ವೇತಪಿಙ್ಗ ಶ್ವೇತಪಿಂಗ, -ಪಿಙ್ಗಲ -ಪಿಂಗಲ (ಪುಂ) ಸಿಂಹ.

ಶ್ವೇತಮರಿಚಿ ಶ್ವೇತಮರಿಚಿ (ನಂ) 1. ಬಿಳಿಯ ಮೆಣಸು. 2. ನುಗ್ಗೆಯ ಬೀಜ.

ಶ್ವೇತಮಾಲ ಶ್ವೇತಮಾಲ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 2. ಧೂಮ, ಹೊಗೆ.

ಶ್ವೇತರಕ್ತ ಶ್ವೇತರಕ್ತ (ಪುಂ) ಬಿಳುಪು ಮತ್ತು ಕೆಂಪು ಬೆರೆತ ವರ್ಣ, ಪಾಟಲ ವರ್ಣ. ಶ್ವೇತೋ ರಕ್ತಶ್ಚ |

ಶ್ವೇತರಥ ಶ್ವೇತರಥ (ಪುಂ) ಶುಕ್ರಗ್ರಹ. ಶ್ವೇತೋ ರಥೋಽಸ್ಯ |

ಶ್ವೇತವಾಹ ಶ್ವೇತವಾಹ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. 2. ಅರ್ಜುನ.

ಶ್ವೇತವಾಹನ ಶ್ವೇತವಾಹನ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. 2. ಅರ್ಜುನ. ಶ್ವೇತಂ ವಾಹನಂ ಯಸ್ಯ | "ಶ್ವೇತವಾಹನ ಇತ್ಯೇಷ ಸುಧಾಧಾಮಿನಿ ಧನಂಜಯೇ" ಮೇದಿಂ |

ಶ್ವೇತಶಿಖ ಶ್ವೇತಶಿಖ (ಪುಂ) ಬಿಳಿಯ ನುಗ್ಗೆಮರ.

ಶ್ವೇತಶಿಖಾ ಶ್ವೇತಶಿಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಳಿಯ ಅಗುರು ಗಿಡ.

ಶ್ವೇತಸಾರ ಶ್ವೇತಸಾರ (ಪುಂ) ಕಗ್ಗಲಿ ಮರ.

ಶ್ವೇತಾ ಶ್ವೇತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಡಿಯಾಲದ ಗಿಡ. 2. ಅತಿಬಿಜ. 3. ಬಿಳಿಯ ಬದನೆ. 4. ಬಿಳಿಯ ಗರಿಕೆ. 5. ಕಲ್ಲುಸಕ್ಕರೆ. 6. ಕಪಿಲೆಹಿಟ್ಟು.

ಶ್ವೇತಾರ್ಕ ಶ್ವೇತಾರ್ಕ (ಪುಂ) ಬಿಳಿಯ ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

ಶ್ವೇತಶ್ಚ ಶ್ವೇತಶ್ಚ (ನಂ) ಶುಕ್ಲವರ್ಣ, ಬಿಳುಪು. ಶ್ವೇತಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಷಟ್" (೪-೧-೧೨೪) | "ನಯನ್ ಮಧುಲಿಹಃ ಶ್ವೇತಮುದಗ್ರದಶನಾಂಶುಭಿಃ" ಮಾಘಂ ೨-೨೧ |

ಶ್ವೇತವಸೀಯ(ಸ) ಶ್ವೇತವಸೀಯ(ಸ) (ನಂ) 1. ಕಲ್ಯಾಣ. ಮಂಗಳ, ಶುಭ. ಅತಿಶಯೇನ ವಸುಃ - ವಸು "ಇಯಸುನ್" (೪-೩-೪೭) | ಶ್ವಃ ಪ್ರಶಸ್ತಃ ವಸೀಯಃ (೪-೪-೮೦) | (ವಿಂ) 2. ಮಂಗಳಕರವಾದ, ಸಂತೋಷವನ್ನು ಉಂಟು ಮಾಡುವ.

ಇತಿ "ಶ" ಕಾರಾವಿವರ್ಧನೀನಿರೂಪಣಮ್ |

ಷ

ಷ ಷ ಇದು ವರ್ಣಸಮಾಮ್ನಾಯದ ಅವರ್ಗೀಯ ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ ಆರನೆಯ ವರ್ಣ. ಈ ವರ್ಣ (ಅಕ್ಷರ) ವು ಮೂರ್ಧಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ವಿವೃತಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಒಂದು ಉಷ್ಣವರ್ಣ. "ಶಪಸಹಾ ಕುಷ್ಮಾಣಃ, ವಿವೃತಮೂಷ್ಮಣಾಂ ಸ್ವರಾಣಾಂ ಚ" ಸಿಂ ಕೌಂ |

ಷ ಷ (ಪುಂ) 1. ಕಚೆ, ಕೇಶ, ತಲೆಯ ಕೂದಲು. 2. ಸ್ವರ್ಗ. 3. ದೇಶ. (ನಂ) 4. ಗರ್ಭ. 5. ಮೋಕ್ಷ. 6. ಅವಸಾನ, ಕೊನೆ. 7. ಪ್ರಳಯ. (ವಿಂ) 8. ಶ್ರೇಷ್ಠ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಷಾ -ಷಾ. 9. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. "ಷಃ ಕವೇ ಪುಂಸಿ ವಿಜ್ಞೇಯಃ ಶ್ರೇಷ್ಠೇ ಸ್ಯಾದಭಿಧೇಯವತ್" ಮೇದಿಂ | "ಷಃ ಸ್ವರ್ಗೇ ವಿಷಯೇ ಚ ನಾ |

ಷಾ ಸ್ತ್ರೀ ರಮಾयां ಷ ಕಲೀಬ ಗರ್ಭೆ ಮೋಕ್ಷಾವಸಾನಯೋಃ" ನಾನಾರ್ಥರಂ |

ಷಟ್(ಷ) ಷಟ್(ಷ್) ಆರು ಸಂಖ್ಯೆ. ಷಟ್ ಸಂಖ್ಯೆಯ ವಾಚಕ ಪದಗಳು: ವೇದಾಂಗಗಳು, ಭೋಜ್ಯ ರಸಗಳು, ಅವರ್ಗ (ಕಾಮಕ್ರೋಧಾದಿ), ರಾಜನ ಗುಣಗಳು, ವಸಂತಾದಿ ಯತುಗಳು, ಪಣ್ಮುಖಿನ ವದನಗಳು, ಇತ್ಯಾದಿ.

ಷಟ್ಕರ್ಣ ಷಟ್ಕರ್ಣ (ವಿಂ) ಆರು ಕಿವಿಗಳಿಂದ ಕೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಆರು ಕಿವಿಗಳಿಗೆ ಹೋಗಿ ಸೇರಿದ, ಮೂರನೇ ಮನುಷ್ಯನಿಂದ ಕೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಷಟ್ಕರ್ಣಾ ಯಸ್ಯ ಭಾಷಿತಸ್ಯ ಶ್ರೋತೃತ್ವೇನ ಸ್ಥಿತಾಃ ಸಃ ಷಟ್ಕರ್ಣಃ | "ಷಟ್ಕರ್ಣೋ ಭಿವತೇ



ಮನ್ವಃ ಚತುರ್ವಿಂಶತಿಃ ಸ್ಥಿರೋ ಭವತ್" ಪಂಚತಂ ೧-೧೦೮ |  
ರಹಸ್ಯವಾದ ಮಂತ್ರಾಲೋಚನೆಯು ಇಬ್ಬರಿಂದ ಮಾತ್ರ  
ನಡೆಯಬೇಕು. ಇದು ಚತುಷ್ಪದವಾಗಿದ್ದರೆ ರಹಸ್ಯ  
ವಾಗಿಯೇ ಉಳಿಯುವುದು. ಮೂರನೆಯವನ ಕಿವಿಗೆ  
ಈ ವಿಷಯ ಬಿದ್ದರೆ ಆ ರಹಸ್ಯವು ಬಹಿರಂಗವಾಗುವುದು.  
ಆದುದರಿಂದ ರಹಸ್ಯವಾದ ವಿಷಯವು ಮೂರನೆಯವನ  
ಕಿವಿಗೆ ಗೋಚರ (ಪರ್ವಕರ್ಣ) ವಾಗಕೂಡದು.

ಛಂದಃಶಾಸ್ತ್ರ ಪದ್ಯಕರ್ಮಣಿ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ವಿಪ್ರ.  
ಛಂದಃ ಕರ್ಮಣ್ಯಸ್ಯ | ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಆರು ಕರ್ಮಗಳು :  
(1) ಯಜನಮ್ (2) ಯಾಜನಮ್ (3) ಅಧ್ಯಯನಮ್ (4) ಅಧ್ಯಾಪನಮ್  
(5) ದಾನಮ್ ಮತ್ತು (6) ಪ್ರತಿಗ್ರಹಃ | "ಛಂದಃಕರ್ಮಾ ಯಾಗಾದಿಮಿ-  
ರ್ಯುತಃ" ಅಮಂ | "ಇತ್ಯಾಧ್ಯಯನದಾನಾನಿ ಯಾಜನಾಧ್ಯಾಪನೇ  
ತಥಾ | ಪ್ರತಿಗ್ರಹಶ್ಚ ತೈರ್ಯುಕ್ತಃ ಛಂದಃಕರ್ಮಾ ವಿಪ್ರ ಉಚ್ಯತೇ" |  
2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣನು ಜೀವನಕ್ಕಾಗಿ ಅಂಗೀಕರಿಸಬಹುದಾದ  
ಆರು ವೃತ್ತಿಗಳು : (1) ತೃಣವೃತ್ತಿಃ (ಗದ್ದೆಗಳಲ್ಲಿ ಉದುರಿದ  
ಕಾಳುಗಳನ್ನು ಅಯ್ದು ಸಂಗ್ರಹಿಸುವುದು) (2) ಪ್ರತಿಗ್ರಹಃ  
(3) ಮಿಕ್ಷಾ (4) ವ್ಯಾಪಾರಃ (5) ಗೋರಕ್ಷಣಮ್ ಮತ್ತು  
(6) ಕೃಷಿಃ ಈ ಆರು ವೃತ್ತಿಗಳಿಂದಲೂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನು  
ಜೀವಿಸಲು ಅನುಮತಿಯುಂಟು. ಯೋಗಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತ  
ವಾದ ಪದ್ಯಕರ್ಮಗಳು : (1) ಧೌತಿಃ (2) ವಸ್ತಿಃ  
(3) ನೇತಿಃ (4) ತ್ರಾಟಕಮ್ (5) ನೈಲಿಕಮ್ ಮತ್ತು  
(6) ಕಪಾಲಭಾತಿಃ ಇವು ಆರು ಕರ್ಮಗಳು. "ಧೌತಿವಸ್ತಿ-  
ಸ್ತಥಾ ನೇತಿತ್ಸ್ರಾಟಕಂ ನೈಲಿಕಂ ತಥಾ | ಕಪಾಲಭಾತಿಶ್ಚೇತಾನಿ  
ಛಂದಃಕರ್ಮಾಣಿ ಪ್ರಚಕ್ಷತೇ" ಹಠಂ ೨-೨೨ |

ಛಂದಃ ಪದ್ಯ (ನಂ) ಆರು ಸಂಖ್ಯೆ. ಛಂದಃ ಪದ್ಯಕಮ್ ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಕನ್" (೪-೧-೫೭) |

ಛಂದಃಕೋಣ ಪದ್ಯಕೋಣ (ನಂ) 1. ಜಾತಕದಲ್ಲಿ ಲಗ್ನದಿಂದ  
ಅರನೆಯ ಸ್ಥಾನ. 2. ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧ.

ಛಂದಃಚಕ್ರ ಪದ್ಯಚಕ್ರ (ನಂ) ಶರೀರದೊಳಗಿರುವ ಪದ್ಮಾ  
ಕಾರದ ಆರು ವಿಧ ಚಕ್ರ. ಷಣ್ಮಾಂ ಚಕ್ರಾಣಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ |

ಛಂದಃಚತವಾರಿಶ ಪದ್ಯಚತವಾರಿಶ (ವಿಂ) ನಲವತ್ತಾರನೆಯ.  
ಛಂದಃಚತವಾರಿಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ "ಛಂದಃ" (೪-೨-೪೮) | -ಚತವಾ-  
ರಿಶತ್ -ಚತವಾರಿಶತಃ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಲವತ್ತಾರು.

ಛಂದಃಚರಣ ಪದ್ಯಚರಣ (ಪುಂ) 1. ಆರು ಕಾಲಗಳುಳ್ಳ  
ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಛಂದಃ ಚರಣಾ ಅಸ್ಯ | 2. ಹೇನು,  
ಕೂರೆ.

ಛಂದಃತ್ರಿಶ ಪದ್ಯತ್ರಿಶ (ವಿಂ) ಮೂವತ್ತಾರನೆಯ. ಛಂದಃ  
ತ್ರಿಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ "ಛಂದಃ" (೪-೨-೪೮) |

ಛಂದಃತ್ರಿಶತ್ ಪದ್ಯತ್ರಿಶತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂವತ್ತಾರು.  
ಛಂದಃತ್ರಿಶತ್ |

ಛಂದಃತ್ರಿಶತ್ತಮ ಪದ್ಯತ್ರಿಶತ್ತಮ (ವಿಂ) ಮೂವತ್ತಾರ  
ನೆಯ. ಛಂದಃತ್ರಿಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ "ಛಂದಃ" (೪-೨-೪೮) | ಛಂದಃ  
ವಾ "ತಮತ್" (೪-೨-೫೬) | ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಛಂದಃ" (೪-೧-೧೫) |  
-ತಮಿ -ತಮಿ.

ಛಂದಃತ್ರಿಶತ್ತಮತ ಪದ್ಯತ್ರಿಶತ್ತಮತ (ನಂ) ಮನು ಮೊದಲಾದ  
ಮೂವತ್ತಾರು ಸ್ಮೃತಿಕಾರರ ಮತ.

ಮೂವತ್ತಾರು ಮಂದಿ ಸ್ಮೃತಿಕಾರರು : (1) ಮನುಃ  
(2) ವಿಷ್ಣುಃ (3) ಯಮಃ (4) ದಕ್ಷಃ (5) ಅಜ್ಞಿಸ್(ರಾಃ)  
(6) ಅತ್ರಿಃ (7) ಬೃಹಸ್ಪತಿಃ (8) ಆಪಸ್ತಂಬಃ (9) ಉಶನಾಃ  
(10) ಕಾತ್ಯಾಯನಃ (11) ಪರಾಶರಃ (12) ವಸಿಷ್ಠಃ (13)  
ವ್ಯಾಸಃ (14) ಸಂವತ್ಃ (15) ಹಾರೀತಃ (16) ಗೌತಮಃ  
(17) ಪ್ರವೇತಾಃ (18) ಶಾಹ್ನಃ (19) ಲಿಖಿತಃ (20) ಯಾಜ್ಞವಲ್ಕಯಃ  
(21) ಕಾಶ್ಯಪಃ (22) ಶಾತಾತಪಃ (23) ಲೋಮಶಃ (24)  
ಜಮದಗ್ನಿಃ (25) ಪ್ರಜಾಪತಿಃ (26) ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಃ (27)  
ಪೇಥಿನಸಿಃ (28) ಬೋಧಾಯನಃ (29) ಪಿತಾಮಹಃ (30) ವಾಗಲೇಯಃ  
(31) ಜಾಬಾಲಃ (32) ಮರೀಚಿಃ (33) ಚ್ಯವನಃ (34) ಮೃಗುಃ  
(35) ಋಷ್ಯಶೃಂಗಃ ಮತ್ತು (36) ನಾರದಃ ಇವರ ಮತವು  
ಪದ್ಯತ್ರಿಶತ್ತಮತ.

ಛಂದಃಪಂಚಾಶ ಪದ್ಯಪಂಚಾಶ (ವಿಂ) ಐವತ್ತಾರನೆಯ.  
ಛಂದಃಪಂಚಾಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ "ಛಂದಃ" (೪-೨-೪೮) | ಛಂದಃ  
ವಾ "ತಮತ್" (೪-೨-೫೬) | -ಪಂಚಾಶತ್ತಮಃ -ಪಂಚಾಶತ್ತಮಃ.  
ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಛಂದಃ" (೪-೧-೧೫) | -ಪಂಚಾಶಿ -ಪಂಚಾಶಿ,  
-ಪಂಚಾಶತ್ತಮಿ -ಪಂಚಾಶತ್ತಮಿ.

ಛಂದಃಪಂಚಾಶತ್ ಪದ್ಯಪಂಚಾಶತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಐವತ್ತಾರು  
ಛಂದಃಪಂಚಾಶತ್ |

ಛಂದಃಪಂಚಾಶಿಕಾ ಪದ್ಯಪಂಚಾಶಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವರಾಹ  
ಮಿಹಿರಾಚಾರ್ಯರ ಪುತ್ರ ಪೃಥುಯಶಸ್ಸಿನಿಂದ ವಿರಚಿತ  
ಒಂದು ಪ್ರಶ್ನಗ್ರಂಥ.

ಛಂದಃಪದ ಪದ್ಯಪದ (ಪುಂ) 1. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. ಛಂದಃಪದಾನಿ  
ಅಸ್ಯ | "ನ ಛಂದಃಪದಶ್ರೇಣಿಭಿರೇವ ಪಕ್ಷುಜಂ ಸಶೇವಲಾಸಕ್ತಮಪಿ  
ಪ್ರಕಾಶತೇ" ಕುಮಾಂ ೪-೯ | 2. ಹೇನು, ಕೂರೆ. (ವಿಂ)  
3. ಆರು ಕಾಲಗಳುಳ್ಳ. -ಪದಿ -ಪದಿ. 4. ಹೇನು,  
ಕೂರೆ.

ಛಂದಃಷಡಂಗ ಪದ್ಯಷಡಂಗ (ಪುಂ) ಆರು ಅಂಗಗಳುಳ್ಳ ವೇದ. ಛಂದಃ  
ಷಡಂಗಾನ್ಯಸ್ಯ | (1) ಶಿಕ್ಷಾ (2) ವ್ಯಾಕರಣಮ್ (3) ಛಂದಃ  
(4) ನಿರೂಪಮ್ (5) ಜ್ಯೋತಿಷಮ್ ಮತ್ತು (6) ಕಲ್ಪಃ ಇವು



ಅರು ವೇದಾಂಗಗಳು. [ಇವುಗಳ ವಿವರಕ್ಕೆ ಆಯಾ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಪಡಭಿಜ್ಞ ಪದಧಿಜ್ಞ** (ಪುಂ) ಬುದ್ಧದೇವ. ಪಡ್ ಅಭಿಜ್ಞಾ ಅಭಿತೋ ಜಾಯಮಾನಾನಿ (ದಿವ್ಯಂ ಚಶ್ರು:ಶ್ರೋತ್ರಮ್, ಪರಿಚಿತ್ತ-ಜ್ಞಾನಮ್, ಪೂರ್ವನಿವಾಸಾನುಸ್ಮೃತಿಃ, ಆತ್ಮಜ್ಞಾನಂ, ವಿದ್ಯದ್ಗಮನಮ್ ಕಾಯವ್ಯೂಹಶ್ಚ ಇತಿ ಪಡ್) ಯಸ್ಯ. "ಪಡಭಿಜ್ಞೋ ದಶಬಲೋಽ-ದ್ವಯವಾದೀ ವಿನಾಯಕಃ" ಅಮಂ. 1.

**ಪಡಶೀತಿ ಪದಶೀತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎಂಬತ್ತಾರು. ಪಡಶಿಕಾ ಅಶೀತಿಃ. 2. ರವಿಯು ಮಿಥುನ ಕನ್ಯಾ ಧನುಸ್ಸು ಮತ್ತು ಮೀನ ರಾಶಿಗಳಿಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸುವ ಕಾಲ. "ಛನುಮಿಠುನ-ಕನ್ಯಾಸು ಮೀನೇ ಚ ಪಡಶೀತಯಃ". ಈ ನಾಲ್ಕು ಸಂಕ್ರಮಣಗಳು ಪದಶೀತಿ.

**ಪಡಾನನ ಪಡಾನನ** (ಪುಂ) 1. ಪಣ್ಣುಖ, ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಸ್ಕಂದ. ಪಡ್ ಆನನಾನಿ ಅಸ್ಯ. "ಅಥೋ ಚುಚುಮ್ಬೇ ವಿಚಿರಾಘ-ವೃದ್ಧಃ ಪಡಾನನಂ ಪಡ್ಸು ಗಿರಸ್ಸು ಚಿತ್ರಮ್" ಕುಮಾಂ 13-19. (ನಂ) 2. ಅರು ಮುಖಗಳು. "ಪಡಾನನಾಪೀತಪಯೋಧರಾಸು ನೇತಾ ಚಮುನಾಮಿವ ಕೃತ್ತಿಕಾಸು" ರಘುಂ 18-22.

**ಪಡ್ಭಿಮ ಪಡೂರ್ಭಿಮ** (ಪುಂ) ಹಸಿವು ಬಾಯಾರಿಕೆ ಮೊದಲಾದ ಅರು ಧರ್ಮಗಳುಳ್ಳ ಜೀವ. "ಬುಭುಕ್ಷಾ ಚ ಪಿಪಾಸಾ ಚ ಪ್ರಾಣಸ್ಯ ಮನಸಃಸ್ಮೃತೌ. ಶೋಕಮೋಹೌ ಶರೀರಸ್ಯ ಜರಾಮೃತ್ಯು ಪಡ್ಭಿಮಯಃ". ಹಸಿವು ಬಾಯಾರಿಕೆ ಪ್ರಾಣಧರ್ಮ, ಶೋಕ ಮೋಹಗಳು ಮನೋಧರ್ಮ, ಜರಾಮೃತ್ಯುಗಳು ಶರೀರ ಧರ್ಮ.

**ಪಡ್ಭೂಷಣ ಪಡೂಷಣ** (ನಂ) ಅರು ವಿಧ ಖಾರದ ವಸ್ತುಗಳು. ಷಣ್ಣಾಮುಷಣಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ. (1) ಹಿಪ್ಪಲಿ (2) ಚಿವ್ಯ (3) ಚಿತ್ರಮೂಲ (4) ಮೋಡಿ (5) ಶುಂಠಿ ಈ ಪಂಚ ಮೂಲಿಕೆಗಳು ಮತ್ತು (6) ಮೆಣಸು. ಇವು ಪಡೂಷಣ. "ಪೃಷ್ಠಕೋಲಂ ಸಮರಿಚಂ ಪಡ್ಭೂಷಣಮುದಾಹೃತಮ್" ಭಾವಪ್ರಂ. 1.

**ಪಡ್ಭಗವ ಪಡ್ಭವ** (ನಂ) 1. ಅರು ಎತ್ತುಗಳ ಒಂದು ತಂಡ, -ಗುಂಪು. ಪಡ್ ಭಗವೋ ಯತ್ರ. 2. ಅರು ಎತ್ತುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ನೇಗಿಲು. 3. ಒಂದು ಪ್ರತ್ಯಯ. "ಪಡ್ಭವೇ ಪಡ್ಭಗವಚ್" (ವಾಂ 4-2-29).

**ಪಡ್ಭಗುಣ ಪಡ್ಭಗುಣ** (ಪುಂ) ರಾಜನಲ್ಲಿ ಅವಶ್ಯವಾಗಿರಬೇಕಾದ ಅರು ಗುಣಗಳು. ಪಡ್ಭಿಗುಣಿಗತಾ ಗುಣಾಃ. (1) ಸನ್ವಿ: (2) ವಿಗ್ರಹಃ (3) ಯಾನಮ್ (4) ಆಸನಮ್ (5) ದ್ವೇಷಮ್ (ದ್ವೇಷಿಭಾವಃ) ಮತ್ತು (6) ಆಶ್ರಯಃ ಇವು ಅರು ರಾಜನ ಗುಣಗಳು. [ಇವುಗಳ ವಿವರಕ್ಕೆ ಆಯಾ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಪಡ್ಭಗ್ನ ಪಡ್ಭಗ್ನಂಥ** (ಪುಂ) ಅರು ಗಂಟುಗಳುಳ್ಳ ಹುಲಗಲಿ ಗಿಡ.

**ಪಡ್ಭಗ್ನಾ ಪಡ್ಭಗ್ನಂಥಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಜೆ. ಪಡ್ ಭಗ್ನಾ ಭಗ್ನಯೋ ಯಸ್ಯಾಃ. "ವಚೋಗ್ರಗಾಢಾ ಪಡ್ಭಗ್ನಾ" ಅಮಂ. 2. ಕಚೋರ.

**ಪಡ್ಭಗ್ನಿ ಪಡ್ಭಗ್ನಂಥಿ** (ನಂ) 1. ಹಿಪ್ಪಲಿ ಬೇರು. 2. ಬಜೆ. 3. ಕಚೋರ.

**ಪಡ್ಭಜ ಪಡ್ಭಜ** (ಪುಂ) ಸಂಗೀತದ ಒಂದು ಸ್ವರ, ನಿಷಾದ ಮೊದಲಾದ ಸಪ್ತ ಸ್ವರಗಳಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಸ್ವರ. ಪಡ್ಭಜೋ ನಾಸಾದಿस्थಾನೇಭ್ಯೋ ಜಾಯತೇ - ಜನಿ "ಛ:" (3-2-96). "ನಾಸಾಂ ಕಂಠಮುರಸ್ತಾಲೌ ಜಿಹ್ವಾಂ ದಂತಾಂಶ್ಚ ಸಂಸ್ಪೃಶನ್. ಪಡ್ಭಜಃ ಸಂಜಾಯತೇ ಯಸ್ಮಾತ್ತಸ್ಮಾತ್ ಪಡ್ಭಜ ಇತಿ ಸ್ಮೃತಃ". "ಪಡ್ಭಜ-ಸಂವಾದಿನಿಃ ಕೇಕಾ ದ್ವಿಧಾ ಭಿನ್ನಾಃ ಶಿಷ್ಯಪಿಂಡಿಭಿಃ" ರಘುಂ 1-39. ಪಡ್ಭಜಸ್ವರವು ನವಿಲಿನ ಕೇಕಾವಾಣಿಯನ್ನು ಹೋಲುವುದು.

**ಪಡ್ಭದ್ಗು ಪಡ್ಭದ್ಗುರ್ಗ** (ನಂ) ಅರು ವಿಧ ದುರ್ಗ (ಕೋಟೆ). (1) ಛನ್ವದುರ್ಗಮ್ (2) ಮಹೀದುರ್ಗಮ್ (3) ಗಿರಿದುರ್ಗಮ್ (4) ಮನುಷ್ಯದುರ್ಗಮ್ (5) ಮೃದ್ವುರ್ಗಮ್ ಮತ್ತು (6) ವನದುರ್ಗಮ್ ಇವು ಅರು ಬಗೆಯ ದುರ್ಗಗಳು. "ಛನ್ವದುರ್ಗಂ ಮಹೀದುರ್ಗಂ ಗಿರಿದುರ್ಗಂ ತಥೈವ ಚ. ಮನುಷ್ಯದುರ್ಗಂ ಮೃದ್ವುರ್ಗಂ ವನದುರ್ಗಂ ಚ ತಾನಿ ಪಡ್" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ 66-4.

**ಪಡ್ಭದರ್ಶನ ಪಡ್ಭದರ್ಶನ** (ನಂ) ಅರು ಅಸ್ಥಿಕ ದರ್ಶನಗಳು. (1) ಪೂರ್ವಮೀಮಾಂಸಾ (2) ಉತ್ತರಮೀಮಾಂಸಾ (ವೇದಾಂತ) (3) ನ್ಯಾಯಃ (4) ಸಾಂಖ್ಯಮ್ (5) ಯೋಗಃ ಮತ್ತು (6) ವೈಶೇಷಿಕಮ್ ಎಂಬ ಅರು ದರ್ಶನಗಳು ಅಸ್ಥಿಕ ದರ್ಶನಗಳು. "ಕಾಣಾದಸ್ಯಾಕ್ಷಪಾದಸ್ಯ ವ್ಯಾಸಸ್ಯ ಕಪಿಲಸ್ಯ ಚ. ಪತಂಜಲೇಃ ಜೈಮಿನೇಶ್ಚ ದರ್ಶನಾನಿ ಪಡೇವ ಹಿ".

**ಪಡ್ಭಜ ಪಡ್ಭಜ್ಞ** (ವಿಂ) ಅರು ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪರಿಚಯ ಹೊಂದಿರುವವನು, ಅರು ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಜ್ಞಾನ ಸಂಪಾದಿಸಿರುವವನು. ಪಡ್ಭಜು ಪ್ರಜ್ಞಾ ಯಸ್ಯ. ಧರ್ಮ ಅರ್ಥ ಕಾಮ ಮತ್ತು ಮೋಕ್ಷ ಈ ಪುರುಷಾರ್ಥಚತುಷ್ಟಯ ಮತ್ತು ಲೋಕತತ್ತ್ವಾರ್ಥಗಳು ಈ ಅರು ವಿಷಯಗಳ ಪರಿಜ್ಞಾನವುಳ್ಳವನು ಪಡ್ಭಜ್ಞ. "ಧರ್ಮಾರ್ಥಕಾಮಮೋಕ್ಷೇಷು ಲೋಕತತ್ತ್ವಾರ್ಥಯೋರಪಿ. ಪಡ್ಭಜು ಪ್ರಜ್ಞಾ ತು ಯಸ್ಯಾಸೌ ಪಡ್ಭಜಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ".

**ಪಡ್ಭುಜಾ ಪಡ್ಭುಜಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ. ಪಡ್ ಭುಜಾ ಯಸ್ಯಾಃ.



**ಪಟರಸ ಪಡ್‌ರಸ** (ಪುಂ) ಆರು ಭೋಜ್ಯ ರಸಗಳು. ಪಡ್‌ರಸಾ: ಮಧುರಾದಯ:। (1) ಮಧುರ: (ಸಿಹಿ) (2) ಲವಣ: (ಉಪ್ಪು) (3) ತಿಕ್ತ: (ಕಹಿ) (4) ಕಷಾಯ: (ಬಗರು) (5) ಅಮಲ: (ಹುಳಿ) ಮತ್ತು (6) ಕटु: (ಖಾರ) ಇವು ಆರು ರಸಗಳು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ರಸ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಪಡ್‌ವರ್ಗ ಪಡ್‌ವರ್ಗ** (ಪುಂ) 1. ಆರು ಶತೃಗಳ ಗುಂಪು. ಪಣ್ಣಾಂ ವರ್ಗ:। (1) ಕಾಮ: (2) ಕ್ರೋಧ: (3) ಲೋಭ: (4) ಮೋಹ: (5) ಮದ: ಮತ್ತು (6) ಮಾತ್ಸರ್ಯಮ್ ಈ ಆರು ಅರಿವರ್ಗಕ್ಕೆ ಸೇರಿದುವು. 2. (ಜ್ಯೋತಿಷಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) (1) ಕ್ಷೇತ್ರಮ್ (2) ಹೊರಾ (3) ದ್ರೇಕಾಣ: (4) ನವಾಂಶ: (5) ದ್ವಾದಶಾಂಶ: ಮತ್ತು (6) ತ್ರಿಶಾಂಶ: ಈ ಆರು ಗುಂಪು.

**ಪಡ್‌ವಿಂಶ ಪಡ್‌ವಿಂಶ** (ವಿಂ) ಇಪ್ಪತ್ತಾರನೆಯ. ಪಡ್‌ವಿಂಶತೆ: ಪೂರ್ಣ: "ಛತ್" (4-2-48)। ಛಟಿ ವಾ "ತಮಟ್" (4-2-46)। -ವಿಂಶತಿಸಮ: -ವಿಂಶತಿಶತಮಾಃ.

**ಪಡ್‌ವಿಂಶತಿ ಪಡ್‌ವಿಂಶತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಪ್ಪತ್ತಾರು ಸಂಖ್ಯೆ. ಪಡ್‌ವಿಂಶತಿ ವಿಂಶತಿ:।

**ಪಡ್‌ವಿಧ ಪಡ್‌ವಿಧ** (ವಿಂ) ಆರು ಬಗೆಯಾದ, ಆರು ಪ್ರಕಾರವಾದ. ಪಡ್‌ವಿಧಾ: ಪ್ರಕಾರಾ ಯಸ್ಯ। "ಸಂಜ್ಞಾ ಚ ಪರಿಭಾಷಾ ಚ ವಿಧಿನಿಯಮ ಏವ ಚ। ಅತಿदेशीयधिकारश्च पडविधं सूत्रलक्षणम्"। "पडगुणाः शक्तयस्तिष्ठः सिद्धयश्चोदयास्त्रयः" भाष० २-२६।

**ಪಡ್‌ಪಂಡ** (ಪುಂ) 1. ಗೂಳಿ. ವೃಷಭ. ಪಣು (ದಾನೆ) "ಛ:" (उ० १-१११)। "पण्डो गोपतिरिदृचरः" अम०। 2. ನಪುಂಸಕ. 3. ರಾಜನ ಅಂತಃಪುರದ ಕೆಲಸದವನು. (ಪುಂ) 4. ಪದ್ಮ ಮೊದಲಾದವುಗಳ ಸಮೂಹ. "कलरवमुपगति पटपदीधेन घतः कुमुदकमलपण्डे तुल्यरूपामवस्थाम्" भाष० ११-१५।

**ಪಂಡಾಲಿ ಪಂಡಾಲಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಮುಕಹೆಂಗಸು. ಪಂಡೇನ ಅಲತಿ-ಅಲ (ಮುಷಣಾದೌ) "अच्" (३-१-१३४)। "ङीष्" (४-१-४१)। 2. ಸರೋವರ, ಕೊಳ. 3. ತೈಲ ಮಾನ. "पण्डाली तैलमाने च सरसीकामुकस्त्रियोः" मेदि०।

**ಪಂಡ ಪಂಡ** (ಪುಂ) ನಪುಂಸಕ. ಶಾಮ್ಯತಿ-ಶಮು (उपशमे) "ಛ:" (उ० १-१०१)।

**ಪಟಿ ಪಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರವತ್ತು ಸಂಖ್ಯೆ. ಪಡ್‌ದಶತ: ಪರಿमाणमस्य "तिः" प्रकृते: षष् (५-१-५९)। "असमञ्जं सुतं लेभे वैदर्भी केशिनी तयोः। पटि पुत्रसहस्राणां सुमतिश्च यवीयसी" च० रा०।

**ಪಟಿಕ ಪಟಿಕ** (ಪುಂ) ಅರವತ್ತು ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯುವ ಧಾನ್ಯ, ಬಿತ್ತನೆಯಾದ ಎರಡು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಫಲ ಕೊಡುವ ಧಾನ್ಯ. ಪಟಿಕಾತ್ರೇಣ पच्यन्ते "कन्" रात्रिश्चलोपश्च (५-१-९०) निपा०।

**ಪಟಿಕಯ ಪಟಿಕಯ** (ನಂ) ಅರವತ್ತು ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಫಲ ಕೊಡುವ ಧಾನ್ಯ ಬೆಳೆಯುವ ಭೂಮಿ. ಪಟಿಕಾನಾಂ भवनं क्षेत्रम् "यत्" (५-२-३)।

**ಪಟಿತಮ ಪಟಿತಮ** (ವಿಂ) ಅರವತ್ತನೆಯ. ಪಟಿ: ಪೂರ್ಣ: "ಛತ್" (५-२-५८)। ಛಟ: "तमट्" (५-२-५८)। स्त्रियां "ङीष्" (४-१-१५)। -ತಮಿ -ತಮೀ.

**ಪಟಿಧಾ ಪಟಿಧಾ** (ಅವ್ಯಂ) ಅರವತ್ತು ಬಗೆಯಾಗಿ, ಅರವತ್ತು ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ.

**ಪಟಿಮತ್ತ ಪಟಿಮತ್ತ** (ಪುಂ) ಅರವತ್ತು ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಮದಿಸುವ ಆನೆ. ಪಟಿಮತ್ತಾ वर्षः मत्तः।

**ಪಟಿಹಾಯನ ಪಟಿಹಾಯನ** (ಪುಂ) 1. ಅರವತ್ತು ವರ್ಷ ಆಯುಃಪ್ರಮಾಣವುಳ್ಳ ಗಜ. 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಧಾನ್ಯ. ಪಟಿಹಾಯನಾ आयुःकालो यस्य। (वि०) 3. ಅರವತ್ತು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಆಯುಃಪ್ರಮಾಣವುಳ್ಳ.

**ಪಠ ಪಠ** (ವಿಂ) ಅರನೆಯ. ಪಠ "ಛತ್" (५-२-४८)। युगागमः (५-२-५१)। "पञ्चमं लोकपालानामूचुः साधर्म्ययोगतः। भूतानां महती पठमण्डमं कुलमूभूताम्" रघु० १७-७८।

**ಪಠಕ ಪಠಕ** (ವಿಂ) 1. ಅರನೆಯ. ಪಠ ಸ್ವಾರ್ಥ "कन्"। 2. ಅಳತೆಯ ಅರನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. ಪಠ "कन्" (५-३-५१)। ಪಠಕೋ भागो मानं चेद्भवति।

**ಪಠಾಂಶ ಪಠಾಂಶ** (ಪುಂ) ಅರನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. ಪಠಾಂಶಾ:।

**ಪಠಾಂಶವೃತ್ತಿ ಪಠಾಂಶವೃತ್ತಿ** (ಪುಂ) ಉತ್ಪನ್ನದ ಅರನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ ಹೊಂದುವ ಅಧಿಕಾರವುಳ್ಳ ರಾಜ. ಪಠಾಂಶ: वृत्तिवर्तनं यस्य। "शेषः सदैवाहितभूमिभारः पठांशवृत्तेरपि धर्म एषः" शाकु० ५-४।

**ಪಠಿ ಪಠಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾತ್ಯಾಯನಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಹದಿನಾರು ಮಾತೃಕೆಯರಲ್ಲೊಬ್ಬ ಮಾತೃಕೆ, ಪಣ್ಮುಖಿನ ಪತ್ನಿ ದೇವಸೇನೆ. "प्रधानांशस्वरूपा या देवसेना च नारद। मातृकासु पूज्यतमा सा च पठी प्रकीर्तिता" स्कान्द०। 2. ಶುಕ್ಲ ಮತ್ತು ಕೃಷ್ಣ ಪಕ್ಷಗಳ ಅರನೆಯ ತಿಥಿ. 3. (ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ) ಅರನೆಯ ವಿಭಕ್ತಿ.



ಪಾಠಪೂರ್ವಿಕ ಪಾಠಪೂರ್ವಿಕ (ವಿಂ) ಅರು ಪುರುಷಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಅರು ತಲೆಮೇಲೆಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.

ಪಾಠವ ಪಾಠವ (ವುಂ) 1. ರಸ, ತೀವ್ರವಾದ ಮನೋವಿಕಾರ, ಭಾವೋದ್ರೇಕ. 2. ರಾಗ, ಸಪ್ತಸ್ವರಗಳಲ್ಲಿ ಅರು ಸ್ವರಗಳನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಒಂದು ರಾಗ. "ಔಡವ: ಪಂಚಮಿ: ಪ್ರೋಕ್ತ: ಸ್ವರೇ: ಷಡ್ಭಿस्तು ಪಾಠವ:" ಸಜ್ಜಿತದರ್ಪಣಮ್.

ಪಾಠಗುಣ್ಯ ಪಾಠಗುಣ್ಯ (ನಂ) ಸಂಧಿವಿಗ್ರಹಾದಿ ರಾಜನ ಅರು ಗುಣಗಳು. ಪಾಠಗುಣ್ಯ ಎವ — ಸ್ವಾರ್ಥ "ಪ್ಯಾನ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪). (1) ಸನ್ನಿಹ: (2) ವಿಗ್ರಹ: (3) ಯಾನಮ್ (4) ಆಸನಮ್ (5) ದ್ವೈಭಾವ: ಮತ್ತು (6) ಸಮಾಶ್ರಯ: ಇವು ರಾಜನ ಅರು ಗುಣಗಳು. [ಇವುಗಳ ವಿವರಕ್ಕೆ ಅಯಾ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. "ಪಾಠಗುಣ್ಯಮುಪಯುಜ್ಜಿತ ಶಕ್ತಿಯೇಕೋ ರಸಾಯನಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೯೩. ಇವು ಅರೂ ರಾಜ್ಯದ ರಕ್ಷಣೋಪಾಯಗಳು.

ಪಾಠಮಾತುರ ಪಾಠಮಾತುರ (ವುಂ) ಸ್ಕಂದ, ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪಿಣ್ಣುಖ. ಪಾಠಮಾತುರ ಮಾತುರಾಮಪತ್ಯ ಪುಮಾನ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೧೫). ಉದಾಹರಣೆ.

ಪಾಠವಣತ್ವಿಕ ಪಾಠವಣತ್ವಿಕ (ವಿಂ) 1. ಪತ್ನಿ ಮತ್ತು ಣತ್ವಗಳನ್ನು ವಿಧಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ. ಪಾಠವಣತ್ವಯೋ-ವಿಧಾಯಕಂ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಪಾಠವಣತ್ವಮ್ — ತಸ್ಯ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ: "ಠನ್" (೪-೩-೬೭). 2. ಈ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನದಲ್ಲಿರುವ. ತಸ್ಯ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನೇ ಭವ: "ಠನ್".

ಪಾಠ ಪಾಠ (ವಿಂ) 1. ಅರನೆಯ. ಪಾಠ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮). (ವುಂ) 2. ಅರನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. ಪಾಠ "ಃ" (೪-೩-೫೦). "ಅನ್" (೪-೩-೫೦). ಪಾಠ: ಪಾಠ.

ಪಿಙ್ಗ ಪಿಙ್ಗ (ವುಂ) ವಿಷ, ಕಾಮುಕ. ಪಿಙ್ಗ (ಅನಾದರೇ) "ಗನ್" ದಾಹುಂ. "ಸ್ತಮ್ಬೇರಮ: ಪರಿಣಿನಸುಸರಾವುಪೇತಿ ಪಿಙ್ಗರಗದತ ಸಸಂಭ್ರಮಮೇವ ಕಾಚಿತ್" ಮಾಘಂ ೫-೩೪.

ಪು ಪು (ವುಂ) ಪ್ರಸವ, ಹರಿಗೆ.

ಪಾಠನ್ ಪಾಠನ್ (ವುಂ) ಅರು ಹಲ್ಲುಗಳುಳ್ಳ ಎತ್ತು, -ವೃಷಭ. ಪಾಠ ದಂತಾ ಯಸ್ಯ. ಪೃಷಂ. (ವಾಂ ೬-೩-೭೬).

ಪಾಠಶ ಪಾಠಶ (ವಿಂ) ಹದಿನಾರನೆಯ. ಪಾಠಶಾನಾಂ ಪೂರಣ: "ಛಟ್" (೪-೨-೪೮). "ಸ್ಪರ್ಶೇಷು ಯತ್ ಪಾಠಶ-ಮೇಕವಿಂಶಂ ನಿಷ್ಕಿಂಶನಾಂ ನೃಪ ಯದ್ವನಂ ವಿದು:" ಭಾಗಂ ೨-೯-೬.

ಪಾಠಶಕಲಾ ಪಾಠಶಕಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹದಿನಾರು ಕಲೆಗಳು, ಚಂದ್ರನ ಹದಿನಾರು ಭಾಗಗಳು.

ಪಾಠಶದಾನ ಪಾಠಶದಾನ (ನಂ) ಹದಿನಾರು ವಿಧ ದಾನಗಳು. (1) ಭೂಮಿ: (2) ಆಸನಮ್ (3) ಜಲಮ್ (4) ವಸ್ತ್ರಮ್ (5) ಪ್ರದೀಪ: (6) ಅನ್ನಮ್ (7) ತಾಮ್ಬೂಲಮ್ (8) ಛತ್ರಮ್ (9) ಗಂಧ: (10) ಪುಷ್ಪಮ್ (11) ಫಲಮ್ (12) ಶಯ್ಯಾ (13) ಪಾದುಕಾ (14) ಗೌ: (15) ಕಾಂಚನಮ್ ಮತ್ತು (16) ರಜತಮ್.

ಪಾಠಶನ್ ಪಾಠಶನ್ (ವಿಂ) ಹದಿನಾರು ಸಂಖ್ಯೆ. ಪಾಠ ಶ ದಶ ಚ. ಪೃಷಂ.

ಪಾಠಶಭುಜಾ ಪಾಠಶಭುಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹದಿನಾರು ಭುಜಗಳುಳ್ಳ ದುರ್ಗಾದೇವಿ. ಪಾಠಶ ಭುಜಾ: ಯಸ್ಯಾ:.

ಪಾಠಶಮಾತೃಕಾ ಪಾಠಶಮಾತೃಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹದಿನಾರು ಮಂದಿ ಮಾತೃಕೆಯರು. (1) ಗೌರಿ (2) ಪದ್ಮಾ (3) ಶಕ್ತಿ (4) ಮೇಧಾ (5) ಸಾವಿತ್ರಿ (6) ವಿಜಯಾ (7) ದೇವಸೇನಾ (8) ಸ್ವಧಾ (9) ಸ್ವಾಹಾ (10) ಮಾತರ: (11) ಲೋಕಮಾತರ: (12) ಶಾಂತಿ: (13) ಪುಷ್ಪಿ: (14) ಭೃತಿ: (15) ತುಷ್ಪಿ: ಮತ್ತು (16) ಆತ್ಮದೇವತಾ ಇವರು ಹದಿನಾರು ಮಂದಿ ಮಾತೃಕೆಯರು.

ಪಾಠಶಾಂಶು ಪಾಠಶಾಂಶು (ವುಂ) ಶುಕ್ರಗ್ರಹ. ಪಾಠಶಾಂಶವೋ ಯಸ್ಯ.

ಪಾಠಶಾಙ್ಗ ಪಾಠಶಾಙ್ಗ (ವುಂ) ಹದಿನಾರು ಅಂಗ (ವಸ್ತು) ಗಳುಳ್ಳ ಧೂಪ. ಪಾಠಶಾ ಧೂಪಾಣಿ ಅಙ್ಗಾನಿ ಯಸ್ಯ.

ಪಾಠಶಾಙ್ಗಿ ಪಾಠಶಾಙ್ಗಿ (ವುಂ) ಹದಿನಾರು ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳ ಎಡೆ, ಸಕ್ಕಿ. ಪಾಠಶಾ ಅಙ್ಗಯೋ ಯಸ್ಯ.

ಪಾಠಶಾರ ಪಾಠಶಾರ (ನಂ) ಹದಿನಾರು ದಳಗಳುಳ್ಳ ಪದ್ಮ, -ಶಾವರೆ ಹೂವು. ಪಾಠಶಾ ಅರಾಣಿ ಯಸ್ಯ.

ಪಾಠಶಾರ್ಚಿಸ್ ಪಾಠಶಾರ್ಚಿಸ್ (ವುಂ) ಶುಕ್ರಗ್ರಹ. ಪಾಠಶಾ ಅರ್ಚಿಷಿ ಯಸ್ಯ.

ಪಾಠಶಾವರ್ತ ಪಾಠಶಾವರ್ತ (ವುಂ) ಶಂಖ.

ಪಾಠಶಾ ಪಾಠಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹನ್ನೆರಡು ಮಹಾವಿದ್ಯೆಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಮಹಾವಿದ್ಯೆ. "ಕಾಲಿ ತಾರಾ ಮಹಾವಿದ್ಯಾ ಪಾಠಶಾ ಭುವನೇಶ್ವರೀ. ಭರವೀ ಛಿನ್ನಮಸ್ತಾ ಚ ವಿद्या ಭೂಮಾವತೀ ತಥಾ. ಬಗಲಾ ಸಿದ್ಧವಿದ್ಯಾ ಚ ಮಾತುಜ್ಞಿ ಕಮಲಾ-ಮಿಕಾ." ಇತ್ಯಾದಿ.

ಪಾಠಶೋಪಚಾರ ಪಾಠಶೋಪಚಾರ (ವುಂ) ಹದಿನಾರು ವಿಧ ಪೂಜೋಪಕರಣಗಳು. ಪಾಠಶೋಪಚಾರ: ಉಪಚಾರ: (1) ಆಸನಮ್ (2) ಸ್ವಾಗತಮ್ (3) ಅರ್ಘ್ಯಮ್ (4) ಪಾತ್ರಮ್



(5) ಆಚಮನೀಯಮ್ (6) ಮಧುಪಕಂ: (7) ಆಚಮನಮ್ (8) ಸ್ನಾನಮ್ (9) ವಸ್ತ್ರಮ್ (10) ಆಭರಣಮ್ (11) ಗಂಧ: (12) ಪುಷ್ಪಮ್ (13) ಧೂಪ: (14) ದೀಪ: (15) ನೈವೇದ್ಯಮ್ ಮತ್ತು (16) ವಂದನಮ್ ಇವು ಹದಿನಾರು ವಿಧ ಉಪಚಾರಗಳು.

ಬೊಡಾ ಪೋಷಾ (ಅವ್ಯಂ) ಆರು ವಿಧವಾಗಿ, ಆರು ಬಗೆಯಾಗಿ. ಪಠ್ "ಧಾ" (೪-೩-೪೨) | ಪೃಷೋಂ |

ಠಾ - ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ (ಭ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ) |

|                      |          |          |
|----------------------|----------|----------|
| ತಿಷ್ಠತಿ              | ತಿಷ್ಠತ:  | ತಿಷ್ಠಂತಿ |
| ತಿಷ್ಠಸಿ              | ತಿಷ್ಠಥ:  | ತಿಷ್ಠಥ   |
| ತಿಷ್ಠಾಮಿ             | ತಿಷ್ಠಾವ: | ತಿಷ್ಠಾಮ: |
| ತಸ್ಯಾ                | ತಸ್ಯತು:  | ತಸ್ಯು:   |
| ತಸ್ಯಿಥ }<br>ತಸ್ಯಾಥ } | ತಸ್ಯಥು:  | ತಸ್ಯ     |
| ತಸ್ಯಾ                | ತಸ್ಯಿವ   | ತಸ್ಯಿಮ   |

ಸ್ಥಾತಾ | ಸ್ಥಾಸ್ಯತಿ | ತಿಷ್ಠತು | ಅತಿಷ್ಠತ್ | ತಿಷ್ಠೆತ್ | ಸ್ಥೇಯಾತ್ | ಅಸ್ಥಾತ್ | ಅಸ್ಥಾಸ್ಯತ್ | 1. ನಿಲ್ಲು, ಮುಂದೆ ಹೋಗದೆ ನಿಂತುಕೊ. "ಮಾರ್ಗಾಚಲವ್ಯತಿಕರಾಕುಲಿತೇವ ಸಿಂಧು: ಶೈಲಾಧಿರಾಜತನಯಾ ನ ಯಯಿ ನ ತಸ್ಯಾ" ಕುಮಾಂ ೪-೮೫ | 2. ಕದಲದೆ ನಿಲ್ಲು. "ತಿಷ್ಠತೀಕೇನ ಪಾದೇನ ಚಲತೀಕೇನ ಬುದ್ಧಿಮಾನ್" | 3. ಸುಮ್ಮನಿರು, ಯಾವುದನ್ನೂ ಮಾಡದೆ ಇರು, ಸಾಕುಮಾಡು. "ತಿಷ್ಠ ಭೋಸ್ತಿಷ್ಠ ಕಂಠಾಂ ಕುಂಠಯಾಮಿ ಹಠಾದಯಮ್" ನೈಷಂ ೧೭-೧೬ | 4. ನಿಂತಿರು, ಚಲಿಸದೆ ಒಂದೇ ಕಡೆ ಇರು. "ತಿಷ್ಠತೀಕೋಪ-ವಶಾತ್ಪ್ರಭಾವಪಿಹಿತಾ ದೀರ್ಘ ನ ಸಾ ಕುಪ್ಯತಿ" ವಿಕ್ರಂ ೪-೯ | 5. ಇರು, ತಂಗು, ಉಳಿ, ಇಳಿದುಕೊಂಡಿರು. "ತಿಷ್ಠತೀಕ: ಕ್ಷಣಮಧಿಪತಿಜ್ಯೋತಿಷಾಂ ವ್ಯೋಮಮವ್ಯೇ" ವಿಕ್ರಂ ೨-೧ | 6. ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿರು, ಅಧೀನದಲ್ಲಿರು, ಹತೋಟಿಯಲ್ಲಿರು. "ಯದಿ ತೇ ತು ನ ತಿಷ್ಠೇಯುಷಾಯೈ: ಪ್ರಥಮೇಸ್ತ್ರಿಭಿ:" ಮನುಂ ೭-೧೦೮ | ಈ ಧಾತುವಿಗೆ ಸಮ್ ಅವ ಪ್ರ ಮತ್ತು ವಿ ಉಪಸರ್ಗಗಳು ಸೇರಿದರೆ ಇದು ಆತ್ಮನೇಪದಿಯಾಗುವುದು. ಸಂತಿಷ್ಠತೇ | ಅವತಿಷ್ಠತೇ | ಪ್ರತಿಷ್ಠತೇ | ವितिಷ್ಠತೇ |

(1) ತನ್ನ ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವುದು (2) ವಿವಾದವನ್ನು ನಿರ್ಣಯಿಸುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಆಶ್ರಯಿಸುವುದು ಈ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಠಾ ಧಾತುವು ಆತ್ಮನೇಪದಿಯಾಗುವುದು.

(1) "ಗೋಪಿ ಕೃಣಾಯ ತಿಷ್ಠತೇ" (2) "ಸಂಶಯ ಕರ್ಣಾದಿಭು ತಿಷ್ಠತೇ ಯ:" | ಠಾ ಧಾತುವು ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ಆತ್ಮನೇಪದಿಯಾಗುವುದು. "ಉತ್" ಉಪಸರ್ಗಪೂರ್ವಕ— ಉದ್ವೇಗಕರ್ಮಭಿನ್ನಾ ಧದಲ್ಲಿ — "ಮುಕ್ತಾವುತಿಷ್ಠತೇ" | ಮುಕ್ತಿಗಾಗಿ ಪ್ರಯತ್ನಿಸುವನು ಎಂದು ಅರ್ಥ. "ಉಪ" ಉಪಸರ್ಗ ಪೂರ್ವಕ—(1) ಮಂತ್ರಪೂರ್ವಕ ಹೋಗಿನಿಲ್ಲು ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ — "ಆಗ್ನೇಯಾ ಆಗ್ನಿಧರ್ಮುಪತಿಷ್ಠತೇ" | (2) 1. ದೇವಪೂಜೆ. 2. ಸಂಗತಿಕರಣ (ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದು). 3. ಸ್ನೇಹ ಸಂಪಾದಿಸು. 4. ತಲುವು, ಸೇರು ಈ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ—1. ಆದಿತ್ಯಮುಪತಿಷ್ಠತೇ | ಸ್ತುತ್ಯಾದಿभि: ಪೂಜಯತಿ ಇತ್ಯರ್ಥ: | 2. ಗಜಾ ಯಮುನಾಮುಪತಿಷ್ಠತೇ | 3. ರಥಿಕಾನುಪತಿಷ್ಠತೇ—ಮಿಶ್ರೀಕರೋತಿ | 4. ಪಂಥಾ: ಸ್ತುಧನಮುಪ-ತಿಷ್ಠತೇ — ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ ಇತ್ಯರ್ಥ: | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಭಾವೇ:—ಸ್ಥೀಯತೇ | ತಸ್ಯೇ | ಸ್ಥಾಯಿತಾ, ಸ್ಥಾತಾ | ಸ್ಥಾಯಿಷ್ಯತೇ, ಸ್ಥಾಸ್ಯತೇ | ಸ್ಥೀಯತಾಮ್ | ಅಸ್ಥೀಯತ | ಸ್ಥೋಯತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಗಿಚಿ:—ಸ್ಥಾಪಯತಿ, -ತೇ | ಸ್ಥಾಪಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರ, -ಬಭೂವ, -ಆಸ | ಸ್ಥಾಪಯಿತಾ | ಸ್ಥಾಪಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ಸ್ಥಾಪಯತು, -ತಾಮ್ | ಅಸ್ಥಾಪಯತ್, -ತ | ಸ್ಥಾಪಯೇತ್, -ತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಯು:—ಸ್ಥಾತವ್ಯಮ್ | ಸ್ಥಾನೀಯಮ್ | ಸ್ಥೇಯಮ್ | ಸ್ಥಿತ: | ಸ್ಥಿತವಾನ್ | ತಿಷ್ಠನ್, -ಂತಿ | ಉಪತಿಷ್ಠಮಾನ್ | ಉತ್ತಿಷ್ಠ-ಮಾನ್ | ಸ್ಥಾತುಮ್ | ಸ್ಥಿತಮ್ | ಸ್ಥಾನಮ್ | ಉತ್ಥಿತಮ್ | ಉತ್ಥಾನಮ್ | ಸ್ಥಿತವಾ | ಉತ್ಥಾಯ |

ಠೀವನ ಪೋಷನ (ನಂ) 1. ಉಗುಳುವುದು. 2. ಜೊಲ್ಲು, ಲಾಲಾರಸ, ಬಾಯಿನೀರು.

ಕಚ್ಚು ಪೋಷತ (ವಿಂ) ಉಗುಳಲ್ಪಟ್ಟು. ಠಿವು (ನಿರಸನೆ) "ಫ:" (೩-೨-೧೦೨) |

इति "ब" कारादिपदार्थनिरूपणम् ।



## ಸ

ಸ ಸ ಇದು ವರ್ಣಸಮಾಮಾಯದಲ್ಲಿ ಅವರ್ಗೀಯ ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ ಏಕನೆಯ ವರ್ಣ. ಈ ವರ್ಣವು ದನ್ತಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ವಿವೃತ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಒಂದು ಉಷ್ಣವರ್ಣ. "ಶಬಸಹಾ ಕುಷಾಣಃ"। "ವಿವೃತಮೂಷಣಾಂ ಸ್ವರಾಣಾಂ ಚ" ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ಸ ಸ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ಹರ, ಈಶ್ವರ. 3. ಪಕ್ಷಿ. 4. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 5. ಸರ್ಪ. 6. ಚಂದ್ರ (ಸಮಾಸದಲ್ಲಿ ಪೂರ್ವಪದವಾದಾಗ). 7. ಸಹ, ಒಡನೆ, ಕೂಡ, ಒಂದಿಗೆ, ಸಂಗಡ. "ಸಬಂಧುಸೇನ: ಸವಿಶೇಷದೃಶ್ಯಾಂ ಪ್ರತ್ಯಾಯಯಿ ವಿಶ್ವಪತಿ: ಪುರಿಂ ಸ್ವಾಮ್" ಯಾದಂ ೨೦-೧೬। 8. ಛಂದಃ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಅಂತ್ಯಗುರುವರ್ಣವುಳ್ಳ ಒಂದು (ಸ) ಗಣ. 9. ಸ್ಕಂದ, ಪಣ್ಣುಖ. 10. ಕೋಪ. 11. ಪ್ರಾಕಾರ. (ನಂ) 12. ರಥದ ಮಾರ್ಗ. 13. ಜ್ಞಾನ. 14. ಧ್ಯಾನ. 15. ನಿವಾರಣೆ, ತಡೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಸಾ -ಸಾ. 16. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. 17. ದೇಹಕಾಂತಿ. "ಸ: ಪುಂಸ್ಯುಮಾಸುತೇ ವಾಯಿ ದೇಹಕಾಂತೌ ತು ಸಾ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್। ಸಂ ಕಲಿಬೇ ಸ್ಯಂದನಪಥೇ ಧ್ಯಾನೇ ಜ್ಞಾನೇ ನಿವಾರಣೇ" ನಾನಾರ್ಥಂ । 18. ಗೌರಿ, ಪಾರ್ವತಿ. "ಸ: ಕೋಪೇ ವರಣೇ ಸ: ಸ್ಯಾತ್ತಥಾ ಶಾಲಿನಿ ಕೀರ್ತಿತ:। ಸಾ ಚ ಲಕ್ಷ್ಮೀಬುಧೇ: ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಗೌರಿ ಸಾ ಚ ಸ ಇಶ್ವರ:" ಏಕಾಂ ।

ಸಂಯತ್ ಸಂಯುತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯುಕ್ತ. ಸಮ್+ಯಮ (ಉಪರಮೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (ವಾಂ ೩-೩-೧೪)। ಮಲೋಪ: (ವಾಂ ೬-೪-೪೦)। "ಮಹೀಜಸೋ ಮಾನಧನಾ ಧನಾಚಿತಾ ಧನುರ್ಮತ: ಸಂಯತಿ ಲಬ್ಧ-ಕೀರ್ತಿಯ:" ಕಿರಾಂ ೧-೧೯।

ಸಂಯತ ಸಂಯುತ (ವಿಂ) 1. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಗಂಟುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್+ಯಮ (ಉಪರಮೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹತೋಟಿಯಲ್ಲಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಬಂಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೆರೆಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ನ ಸಂಯತಸ್ತಸ್ಯ ಬಭೂವ ರಕ್ಷಿತು: ವಿಸರ್ಜಯೇಽಂ ಸುತಜನ್ಮಹರ್ಷಿತ:" ರಘುಂ ೩-೨೦।

ಸಂಯದ್ವರ ಸಂಯುದ್ಧರ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಸಮ್+ಯಮ (ಉಪರಮೇ) "ಛರಚ್" ದಶ (೩ಂ ೩-೧)। ಸಂಯದ್ವರೋ ನೃಪ: ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ಸಂಯನ್ತ ಸಂಯುಂತ್ಯ (ವಿಂ) ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡುವವನು, ನಿರ್ಬಂಧದಲ್ಲಿಡುವವನು. ಸಮ್+ಯಮ (ಉಪರಮೇ) "ತೃಚ್" (೩-೧-೧೩೩)।

ಸಂಯಮ ಸಂಯಮ (ಪುಂ) 1. ಅಂಕೆ, ನಿರ್ಬಂಧ, ಹತೋಟಿ. ಸಮ್+ಯಮ (ಉಪರಮೇ) ವಾ "ಅಪ್" (೩-೩-೬೩)। ಪಕ್ಷೇ

"ಛಕ್"। ಸಂಯಮ: ಸಂಯಮಃ। 2. ಚಿತ್ರಸ್ಥೈರ್ಯ, ಚಿತ್ರಕಾಗ್ರತೆ. "ತುಮಾರುಪೇಣ ತೇ ಯುಯಂ ಸಂಯಮಸ್ತಿಮಿತಂ ಮನ:" ಕುಮಾಂ ೨-೪೯। 3. ಕಟ್ಟುವುದು, ಗಂಟುಹಾಕುವುದು. 4. ಸಂಕೋಚ, ಕಿರಿದಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. "ಮಯಿ ದೃಷ್ಟೇ ಸದಾ ಯಸ್ಮಾತ್ ಕುರುಪೇ ನೇತ್ರಸಂಯಮಮ್। ತಸ್ಮಾಜ್ಜನಿಪ್ಯಸೇ ಮುಢೇ ಪ್ರಜಾಸಂಯಮನಂ ಯಮಮ್" ಮಾರ್ಕಂ । 5. ತಪಸ್ಸು. "ಅಸ್ಮಾನ್ ಸಾಘು ವಿಚಿಂತ್ಯ ಸಂಯಮಧನಾನುಚ್ಛೇ: ಕುಲಂ ಚಾತ್ಮನ:" ಶಾಕುಂ ೪-೧೬।

ಸಂಯಮನ ಸಂಯಮನ (ನಂ) 1. ಗಂಟುಹಾಕುವುದು, ಕಟ್ಟಿಹಾಕುವುದು. ಸಮ್+ಯಮ (ಉಪರಮೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ಶಿರಸಿಜಸಂಯಮನಾಕುಲೈಕಪಾಣಿ:" ಕಿರಾಂ ೧೦-೪೨। 2. ಅಳುವುದು. 3. ಅಡಗಿಸುವುದು, ದಮನ ಮಾಡುವುದು. "ತಂ ಚಂಡವೇಗವಿಷವೀರ್ಯಮವೇಕ್ಷ್ಯ ತೇನ ದುಃಖಾ ನದೀಶ್ಚ ಖಲಸಂಯಮನಾವತಾರ:" ಮಾಗಂ ೧೦-೧೬-೬। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಯಮನಿ -ಯಮನೀ. ಯಮಧರ್ಮರಾಯನ ಮನೆ, -ರಾಜಧಾನಿ.

ಸಂಯಮಿತ ಸಂಯಮಿತ (ವಿಂ) 1. ಕಟ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್+ಯಮ (ಉಪರಮೇ)+ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಮಾ ತ್ವಂ ಗುಲ್ಮಸ್ಥಾನಾಧಿಪೈ: ಸಂಯಮಿತಕರಚರಣೋ ರಾಜಕುಲಂ ಪ್ರವೇಶ್ಯಸೇ" ಮುದ್ರಾಂ ೪। 2. ಅಳವಡಿಸಿ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರತಿಪದ-ಸಂಯಮಿತಾಂಶುಕಾವೃತಾಕ್ಷಿ" ಮಾಘಂ ೭-೩೬।

ಸಂಯಮಿನ್ ಸಂಯಮಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸಿದ ತಪಸ್ವಿ. 2. ಸಮಾಧಿಯಲ್ಲಿರುವ, ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸಂಯಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)। "ಆಸೀನಮಾಸನ್ನಶರೀರಪಾತ: ತ್ರಿಯಮ್ಬಕಂ ಸಂಯಮಿನಂ ದದರ್ಶ" ಕುಮಾಂ ೩-೪೪।

ಸಂಯಾತ್ರಾ ಸಂಯಾತ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಮುದ್ರಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಪ್ರಯಾಣ, ದ್ವೀಪಾಂತರಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು.

ಸಂಯಾನ ಸಂಯಾನ (ನಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ನಡೆಯುವುದು. ಸಮ್+ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ಸ ತ್ವಂ ಸಾತ್ವತಮುಲ್ಯಾಘ ಲಬ್ಧಸಂಜ್ಞೋ ಯದ್ವಿಚ್ಛಯಾ। ಪಶ್ಯ ಮೇ ಹ್ಯಸಂಯಾನೇ ಶಿಕ್ಷಾಂ ಕೇಶವನಂದನ" ಭಾಂ ವನಂ ೧೯-೪।

ಸಂಯಾಮ ಸಂಯಾಮ (ಪುಂ) ಸಂಯಮ, ಅಂಕೆ, ನಿರ್ಬಂಧ ಮೊದಲಾದ "ಸಂಯಮ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಸಮ್+ಯಮ (ಉಪರಮೇ) "ಛಕ್" (೩-೩-೧೮)।

ಸಂಯಾವ ಸಂಯಾವ (ಪುಂ) ಹಾಲು ಸಕ್ಕರೆ ಅಥವಾ ಬೆಲ್ಲ ಕಲಸಿ ತುಪ್ಪದಲ್ಲಿ ಕರಿದ ಗೋಧಿಹಿಟ್ಟಿನ ಭಕ್ಷ್ಯ. ಸಂಯುತೇ



ಮಿಶ್ರೀಕೃತೇ ಗುಡಾದಿभिः—सम्+यु (मिश्रणे) “घञ्”  
(३-३-२३) । “संयावस्तु घृतक्षीरगुडगोधूमपाकजः” ।

ಸಂಯುಕ್ತ ಸಂಯುಕ್ತ (ವಿಂ) ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿರುವ, ಒಟ್ಟು  
ಗೂಡಿರುವ, ಒಂದುಗೂಡಿರುವ. ಸಮ್ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ)  
“ಕ್ತಃ” (३-४-७२) ।

ಸಂಯುಗ ಸಂಯುಗ (ಪುಂ) 1. ಯುದ್ಧ, ಸಮರ, ಕಾಳಗ.  
ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) “ಘ್” (३-३-१८) । “ಸಂಯುಗೇ  
ರಜಸೋದ್ರಿಕ್ತೇ ತಸ್ಮಿನ್ ಸತ್ವತಮಸ್ತ್ವಿಘೋಃ” ಯಾದಂ १६-८० ।  
“ಸಂಯುಗೇ ಸಾಂಯುಗೀನಂ ತಮುಘತಂ ಪ್ರಸಹೇತ ಕಃ” ಕುಮಾಂ २-५७ ।  
2. ಸಂಯೋಗ, ಸಂಬಂಧ, ಸೇರುವುದು.

ಸಂಯುಜ್ ಸಂಯುಜ್ (ವಿಂ) 1. ಸುಬಂಧವುಳ್ಳ, ನೆಟತನ  
ವುಳ್ಳ. ಸಮ್+ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) “ಕ್ವಿಪ್” (३-२-६१) ।  
“ಸ್ನಾತಕಂ ಗುರುಮುಖಮಿವ ಸಂಯುಜಾ ಚ ಸಹ ಮೇದಿನೀಪತಿಮ್”  
ಮಾಘಂ १४-५५ । 2. ವಿಷಯಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಸಂಯುತ ಸಂಯುತ (ವಿಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿರುವ, ಒಟ್ಟು  
ಗೂಡಿರುವ. ಸಮ್+ಯು (ಮಿಶ್ರಣೇ) “ಕ್ತಃ” (३-४-७२) ।  
2. ಒಳ್ಳೆಯ ವಿಷಯಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವ. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ  
ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. “ಕಿಮತ್ರಭವತೀಪ್ರತ್ಯಯಾದೇವ ಅಸ್ಮಾನ್ ಸಂಯುತ-  
ದೋಷಾಕ್ಷರೈಃ ಕ್ಷಿಣುಃ?” ಶಾಕುಂ ५ ।

ಸಂಯೋಗ ಸಂಯೋಗ (ಪುಂ) 1. ಅಸಾಧಾರಣ ಸಂಬಂಧ.  
ಸಮ್ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) “ಘ್” (३-३-१८) ।  
ಈ ಸಂಬಂಧವು ಅನೇಕಾರ್ಥವುಳ್ಳ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಸ್ವತಂತ್ರವಾಗಿ  
ಬೇರೊಂದು ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಅಭಿಧಾವೃತ್ತಿಯ  
ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ನಿಯಂತ್ರಿಸುವುದು. “ಸಶಸ್ತ್ರಚಕ್ರೋ ಹರಿಃ”  
ಎಂಬಲ್ಲಿ ಶಂಖಚಕ್ರ ಸಂಯೋಗ (ಸಂಬಂಧ) ದಿಂದ ವಿಷ್ಣು  
ಎಂಬ ಅರ್ಥವನ್ನು ಮಾತ್ರ ಕೊಡುವುದರಿಂದ ಈ  
ಸಂಯೋಗವು ಬೇರೆ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಶಕ್ತಿಯನ್ನು  
ನಿಯಂತ್ರಿಸುವುದು. “अनेकार्थस्य शब्दस्य संयोगाद्य-  
नियन्त्रिते । एकत्रार्थेऽन्यधीहेतुव्यञ्जना साभिधाश्रया”  
ಸಾಂ ६० २-१४ । 2. ಒಂದು ತಂಡ, ಒಂದೇ ಜಾತಿಯ  
ವಸ್ತುಗಳ ಜೋಡಿ. ಸಂಯುಜ್ಯಂತೇ ಸ್ಥಾಪ್ಯಂತೇ ಏಕತ್ರ—ಸಮ್ +  
ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) “ಘ್” (३-३-१२१) । “इमे च  
सर्वाङ्गिका आभरणसंयोगाः” ಮಾಲತೀಂ ६ । 3. ಕೂಡಿರು  
ವುದು, ಸೇರಿರುವುದು. 4. (ನ್ಯಾಯಮತದಲ್ಲಿ) ರೂಪ  
ರಸಾದಿ ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು ಗುಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಇದು  
ಅಪ್ರಾಪ್ತವಾಗಿದ್ದ ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳ ಪ್ರಾಪ್ತಿ. ಸಂಯೋ  
ಗವು ಕರ್ಮಜ ಮತ್ತು ಸಂಯೋಗಜಗಳೆಂದು ಎರಡು  
ವಿಧ. ಕರ್ಮಜಸಂಯೋಗವು (1) ಅನ್ಯತರಕರ್ಮಜ  
ಮತ್ತು (2) ಉಭಯಕರ್ಮಜ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ.

ಏಕೈ ವರ್ವತಗಳ ಸಂಯೋಗವು ಅನ್ಯತರಕರ್ಮಜ. ಎರಡು  
ಮೇಘಗಳ ಸನ್ನಿವೇಶವು ಉಭಯಕರ್ಮಜ. “अप्राप्तयोस्तु  
या प्राप्तिः सैव संयोग ईरितः । कीर्तितस्त्रिविधस्त्वेषः  
आद्योऽन्यतरकर्मजः ॥ तत्रोभयोः कर्मजनयो भवेत्सं-  
योगजोऽपरः” ಭಾಷಾಪಂ । 5. ಉದಯಕ್ಕೆ ಮುಂಚೆ  
ಇರುವ ದಶಮೀತಿಥಿಯ ಶೇಷ. “उदयात्प्राक् दशम्यास्तु  
शेषः संयोग इष्यते” ।

ಸಂಯೋಗಿನ್ ಸಂಯೋಗಿನ್ (ವಿಂ) ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ.  
ಸಂಯೋಗೋಽಸ್ಮಿತಿ “ಇತಿಃ” (५-२-११६) ।

ಸಂಯೋಜನ ಸಂಯೋಜನ (ನಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸುವುದು.  
2. ಬೆರಸುವುದು. ಸಮ್ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) “ಲ್ಯುಟ್”  
(३-३-११५) । 3. ಮೈಥುನ, ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ಸಂಬಂಧ.  
ಸಂಯೋಜನೀಯ ಸಂಯೋಜನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸ  
ಬೇಕಾದ. 3. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಬಹುದಾದ. 4. ಒಟ್ಟು  
ಗೂಡಿಸಲು ಶಕ್ತವಾದ. ಸಮ್+ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) “ಅನೀಯರ್”  
(३-१-९६) । “ತವ್ಯಃ” (३-१-९६) । -ಯೋಕ್ತವ್ಯಃ  
-ಯೋಕ್ತವ್ಯಃ ।

ಸಂಯೋಜಿತ ಸಂಯೋಜಿತ (ವಿಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
2. ಬೆರಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್+ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) + ಣಿಕ್ “ಕ್ತಃ”  
(३-२-१०२) ।

ಸಂರಕ್ಷಕ ಸಂರಕ್ಷಕ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಿಸುವವನು, ಕಾಪಾಡು  
ವವನು. ಸಮ್+ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) “ಫ್ವಲ್” (३-१-१३३) ।  
ಸಂರಕ್ಷಣ ಸಂರಕ್ಷಣ (ನಂ) ರಕ್ಷಿಸುವುದು, ಕಾಪಾಡುವುದು.  
ಸಮ್+ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (३-३-११५) । “स्वशील-  
संरक्षणतत्परा सती” ರಾಮಾಂ ।

ಸಂರಕ್ಷಣೀಯ ಸಂರಕ್ಷಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ರಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ. 3. ರಕ್ಷಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. 4.  
ರಕ್ಷಿಸಲು ಶಕ್ತವಾದ. ಸಮ್+ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) “ಅನೀಯರ್”  
(३-१-९६) । “ತವ್ಯಃ” (३-१-९६) । -ರಕ್ಷಿತವ್ಯಃ  
-ರಕ್ಷಿತವ್ಯಃ ।

ಸಂರಕ್ಷಿತ ಸಂರಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಾಪಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಸಮ್+ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) “ಕ್ತಃ” (३-२-१०२) । “आहार-  
भेदेऽचितैर्भवत्या संरक्षितानां तनयामिमामात्” ಯಾದಂ  
१८-१२६ ।

ಸಂರಕ್ಷಿತ ಸಂರಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಿಸುವವನು, ಕಾಪಾಡು  
ವವನು. ಸಮ್+ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) “ತುಕ್” (३-१-१३३) ।  
ಸ್ತ್ರೀಯಾ “ಜಿಪ್” (४-१-६) । -ಶ್ರೀ-ಶ್ರೀ.



ಸಂರಕ್ಷಿನ್ ಸಂರಕ್ಷಿನ್ (ವಿಂ) ಪಾಲಿಸುವವನು, ಕಾಪಾಡುವವನು. ಸಮ್ + ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೧-೧೩೪)।

ಸಂರಬ್ಧ ಸಂರಬ್ಧ (ವಿಂ) ಉದ್ರೇಕಗೊಂಡ, ರೇಗಿದ, ಕೆರಳಿದ. ಸಮ್ + ರಭ (ರಾಭಸ್ಯ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಸಂರಮ್ಭ ಸಂರಂಭ (ಪುಂ) 1. ವೇಗ, ಬಿರುಸು. ಸಮ್ + ರಮ (ರಾಭಸ್ಯ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ಸರಮಸಪರಿ-ರಮ್ಭಾರಮ್ಭಸಂರಮ್ಭಮಾಜಾ ಯದಧಿನಿಶಮಪಾಸ್ತಂ ವಲ್ಲಮೇನಾಜ್ಞ-ನಾಯಾ:" ಮಾಘಂ ೧೧-೨೩। 2. ಕೋಪ, ಕೋಪ. "ಸಪದಿ ಮುಕುಲಿತಾಕ್ಷಿಂ ರುದ್ರಸಂರಮ್ಭಮಿತ್ಯಾ" ಕುಮಾರಂ ೩-೭೬। 3. ಉತ್ಸಾಹ. "ಅನ್ಯೋನ್ಯಜಯಸಂರಮ್ಭೋ ವವೃಥೇ ವಾದಿನೋರಿವ" ರಘುಂ ೧೨-೯೨। 4. ಸಂಭ್ರಮ, ಸಡಗರ. "ಸಂರಮ್ಭ-ವೇಗೋಜ್ಜಿತವೇದನೇಷು" ಕಿರಾಂ ೧೭-೪೯। 5. ಅಹಂಕಾರ, ಗರ್ವ, ಜಂಬ. "ಹಸ್ತ ವರ್ಧತೇ ತವ ಸಂರಮ್ಭ:" ಶಾಕುಂ ೭।

ಸಂರಮ್ಭಿನ್ ಸಂರಂಭಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಉದ್ರೇಕಗೊಂಡ, ರೇಗಿದ, ಕೋಪಗೊಂಡ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ. ಸಂರಮ್ಭೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। "ಇತಿ ಸಂರಮ್ಭಿಣೋ ವಾಣಿಬಲಸ್ಯಾಲೇಖ-ದೇವತಾ:" ಮಾಘಂ ೨-೬೭। 2. ಕ್ರುದ್ಧನಾದ, ಕೋಪಗೊಂಡ. 3. ಗರ್ವವುಳ್ಳ, ಜಂಬವುಳ್ಳ, ಅಹಂಕಾರವುಳ್ಳ. 4. ಸಡಗರವುಳ್ಳ. 5. ಉತ್ಸಾಹವುಳ್ಳ.

ಸಂರಾವ ಸಂರಾವ (ಪುಂ) 1. ಶಬ್ದ, ಸದ್ದು. ಸಮ್ + ರ (ಶಬ್ದ) "ಘ್" (೩-೩-೨೨)। 2. ಗಲಭೆ, ಗೊಂದಲ, ಗಲಾಟೆ.

ಸಂರಾವಿನ್ ಸಂರಾವಿನ್ (ವಿಂ) ಶಬ್ದಮಾಡುವ, ಸದ್ದು ಮಾಡುವ. ಸಂರಾವೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ—"ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)।

ಸಂರಿಹಾಣಮ್ ಸಂರಿಹಾಣಮ್ (ನಂ) ಹಸುವು ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ತನ್ನ ಕರುವನ್ನು ನೆಕ್ಕುವಂತೆ ನೆಕ್ಕುವುದು.

ಸಂರುಡ ಸಂರುಡ (ವಿಂ) ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡ್ಡಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ರುಢಿರ್ (ಆವರಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಸಂರುಡೇಷ್ಠಸ್ಯ ಮೃಗೇಂದ್ರ ಕಾಮಂ ಹಾಸ್ಯಂ ವಚಸ್ತದ್ವಹಂ ವಿವಕ್ಷು:" ರಘುಂ ೨-೪೩।

ಸಂರುಡ ಸಂರುಡ (ವಿಂ) 1. ಬೆಗುರಿದು, ಸಮ್ + ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। 2. ಬೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವ. ಸಂರುಡೋಽಙ್ಕುರಿತಂ ಪ್ರಾಡೇ" ಹೇಮಂ। "ಹಮ್ಯಗ್ರಿ-ಸಂರುಡತೃಣಾಙ್ಕುರೇಷು" ರಘುಂ ೬-೪೭।

ಸಂರೋಧ ಸಂರೋಧ (ಪುಂ) 1. ತಡೆಯುವುದು, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ರುಢಿರ್ (ಆವರಣ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು, ಅಡ್ಡುಗಟ್ಟುವುದು. "ಕ್ಷುತ್ಕಾಸಾ: ಶುಕ್ಲವದನಾ: ಸಂರೋಧಪರಿಕೃಷಿತಾ:। ದದೃಶುಸ್ತೇ ವನಶ್ಯಾಮಂ ಪೀತಕೌಶೇಯವಾಸಸಮ್" ಭಾಗಂ ೧೦-೭೩-೨। 3. ಎಸೆಯುವುದು. "ಸಂರೋಧ: ಕ್ಷೇಪರೋಧಯೋ:" ಹೇಮಂ।

ಸಂರೋಧ ಸಂರೋಧನ (ನಂ) ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು, ಅಡ್ಡುಗಟ್ಟುವುದು. ಸಮ್ + ರುಢಿರ್ (ಆವರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

ಸಂಲಕ್ಷ್ಯ ಸಂಲಕ್ಷ್ಯ (ವಿಂ) ಬೆನ್ನಾಗಿ ಸ್ಥಿತಿವಾಗಿ ತೋರುವ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತೋರಿಸುವ. ಸಮ್ಯಕ್ ಲಕ್ಷಯತೇ—ಸಮ್ + ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನಾಂಕನಯೋ:) "ಘ್" (೩-೧-೧೨೪)। "ದರ್ಪೋದಯೋ-ಲ್ಲಸಿತಫೇನಜಲಾನುಸಾರಸಂಲಕ್ಷ್ಯಪಲ್ಯಯನವಧ್ವಂಪದಾಸ್ತುರಜ್ಞಾ:" ಮಾಘಂ ೪-೪೩।

ಸಂಲಗನ ಸಂಲಗ್ನ (ವಿಂ) ಬೆನ್ನಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕೂಡಿಕೊಂಡಿರುವ. ಸಮ್ + ಲಗ (ಸಜ್ಜೆ) "ಕ್ತ:" (೭-೨-೧೮)। ನಿಪಾಂ।

ಸಂಲಪತ್ ಸಂಲಪತ್ (ವಿಂ) 1. ಪರಸ್ಪರ ಮಾತನಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ತತ್ರ ತತ್ರ ಸಂಲಪತೋ ಜನಸಮಾಜಾತ್" ದಶಕುಂ। 2. ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಮಾತನಾಡುತ್ತಿರುವ.

ಸಂಲಪನ ಸಂಲಪನ (ನಂ) 1. ಪರಸ್ಪರ ಮಾತನಾಡುವುದು. ಸಮ್ + ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವುದು.

ಸಂಲಪಿತ ಸಂಲಪಿತ (ನಂ) 1. ಪರಸ್ಪರ ಮಾತನಾಡುವುದು. 2. ರಹಸ್ಯದ ಮಾತು. ಸಮ್ + ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)।

ಸಂಲಾಪ ಸಂಲಾಪ (ಪುಂ) 1. ಪರಸ್ಪರ ಮಾತನಾಡುವುದು. ಸಮ್ + ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ರಹಸ್ಯದ ಮಾತು. "ಅಕ್ಷಿಪ್ರತ್ಯುಕ್ತಮಿಹಾಕೃತಂ ಸಂಲಾಪ ಇತಿ ಕುಖ್ಯತೇ"।

ಸಂವತ್ ಸಂವತ್ (ಅವ್ಯಂ) ವರ್ಷ, ವತ್ಸರ. ಸಂವಯತೇ—ವಯ (ಗತೌ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬)। ಯಲೋಪ: (೬-೧-೬೬)। ತುಗಾಗಮ:। "ಸಂವತ್ಸರೇ" ಅಮಂ।

ಸಂವತ್ಸರ ಸಂವತ್ಸರ (ಪುಂ) ಒಂದು ವರ್ಷ, ಹನ್ನೆರಡು ತಿಂಗಳ ಕಾಲ, ಅರು ಮುತ್ತುಗಳ ಕಾಲ. ಸಂವಸಂತಿ ಋತವ: ಅತ್ರ—ಸನ್ + ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ಸರ:" (೭ಂ ೩-೭೨)। ತಕಾರ: (೭-೪-೪೯)।

ಸಂವದನ ಸಂವದನ (ನಂ) 1. ಸಂವಾದ, ಚರ್ಚೆ, ವಿಚಾರ ಮಾಡುವುದು. ಸಮ್ + ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 3. ಸಮಾಲೋಚನೆ. "ಸಂವದನಂ ಚ ಸಂವಾದೇ ಸಮಾಲೋಚಿ ವಶೀಕೃತೌ" ಹೇಮಂ।

ಸಂವನನ ಸಂವನನ (ನಂ) ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಶಕ್ತಿ ಕೊಡಿಸುವುದು ಮುಂತಾದ "ಸಂವದನ" ಪದದ ಅರ್ಥ.



ಸಂಖ್ಯೆ ಸಂಖ್ಯೆ (ಪುಂ) 1. ಮುಚ್ಚುವುದು, ಮರೆಮಾಡುವುದು. 2. ಸಂಕೋಚ, ಅಡಕಮಾಡುವುದು. 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮತ್ಸ್ಯ. 4. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. (ನಂ) 5. ಜಲ, ನೀರು. 6. ಬೌದ್ಧರ ಮತಸಂಬಂಧವಾದ ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ. ಸಮ್ + ವೃಕ್ (ವರಣ) ಅಪ್ (3-3-48) 1. 7. ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡುವುದು.

ಸಂಖ್ಯೆ ಸಂಖ್ಯೆ (ನಂ) 1. ಮುಚ್ಚುವುದು, ಮರೆಮಾಡುವುದು. 2. ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡುವುದು. 3. ರಹಸ್ಯ, ಗುಟ್ಟು. 4. ಮರೆಮಾಡುವುದು, ಮುಚ್ಚುವುದು. ಸಮ್ + ವೃಕ್ (ವರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) 1.

ಸಂಖ್ಯೆ ಸಂಖ್ಯೆ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಳಯ, ಜಾತಿಯ ನಾಶ. ಸಂಖ್ಯೆ ಜಗದ್ವ — ಸಮ್ + ವೃತ್ (ವರ್ತನೆ) "ಘಕ್" (3-3-122) 1. "ಸಂಖ್ಯೆ ಇವ ನಾಗಾನಾಂ ಸಂಖ್ಯಾತ ಇವ ರಹಸ್ಯಾಂ" ಯಾದಂ 16-63. 2. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 3. ಪ್ರಳಯಕಾಲದ ಮೇಘ, ಪುಷ್ಕರ ಮೊದಲಾದ ಏಳು ಮೇಘಗಳಲ್ಲೊಂದು ಮೇಘ. 4. ವಿಭೀತಕ ವ್ಯಕ್ತಿ, ತಾರೆ ಗಿಡ. "ಸಂಖ್ಯೆ: ಪ್ರಲಯೇ ಪ್ರೋಕ್ತೋ ವಿಭೀತಕತರಾವಪಿ" ವಿಶ್ವಂ 1. "ಸಂಖ್ಯೆ: ಪ್ರಲಯೇ ಮೇಘೇ ವಿಭೀತಕತರಾವಪಿ" ನಾನಾರ್ಥಂ 1.

ಸಂಖ್ಯೆ ಸಂಖ್ಯೆ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಳಯಕಾಲದ ಮೇಘಗಳು, ಪುಷ್ಕರ ಅವರ್ತಕ ಮೊದಲಾದ ಮೇಘಗಳು. ಸಂಖ್ಯೆ — ಸಮ್ + ವೃತ್ (ವರ್ತನೆ) + ಣಿಕ್ "ಘಲ್" (3-1-133) 1. "ಇತೋಽಪಿ ಬಡಬಾನಲ: ಸಹ ಸಮಸ್ತ-ಸಂಖ್ಯೆಕೇರಹೋ ವಿತತಮೂಜಿತಂ ಭರಸಹಂ ಚ ಸಿಂಧೋರ್ವಪು:" ಭರ್ತಂ 1-69. 2. ಬಡಬಾಗಿ. 3. ಬಲರಾಮ. (ನಂ) 4. ಬಲರಾಮನ ನೇಗಿಲು.

ಸಂಖ್ಯೆ ಸಂಖ್ಯೆ (ಪುಂ) ಬಲರಾಮ. ಸಂಖ್ಯೆಕೋ-ಸ್ಥಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114) 1.

ಸಂಖ್ಯೆ ಸಂಖ್ಯೆ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಾವರೆಯ ಎಳೆಯ ರೇಕು.

ಸಂಖ್ಯೆ ಸಂಖ್ಯೆ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಾವರೆಯ ಕಿಂಜಲ್ಕದ (ಕುಸುರಿನ) ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಎಳೆಯ ರೇಕು (ದಳ). ಸಂಖ್ಯೆ — ಸಮ್ + ವೃತ್ (ವರ್ತನೆ) "ಇನ್" (3-1-119) 1. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (4-3-94) 1. "ಸಂಖ್ಯೆ ನವದಲಮ್" ಅಮಂ 1.

ಸಂಖ್ಯೆ ಸಂಖ್ಯೆ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆಸುವವನು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆಯುವಂತೆ ಮಾಡುವವನು. ಸಂಖ್ಯೆ — ಸಮ್ + ವೃತ್ (ವೃದ್ಧಿ) + ಣಿಕ್ "ಘಲ್" (3-1-133) 1. 2. ಹೆಚ್ಚಿಸುವವನು, ವೃದ್ಧಿ ಪಡಿಸುವವನು, ಅಧಿಕಗೊಳಿಸುವವನು.

ಸಂಖ್ಯೆ ಸಂಖ್ಯೆ (ನಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆಯುವುದು. ಸಮ್ + ವೃತ್ (ವೃದ್ಧಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) 1. 2. ವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುವುದು, ಅಧಿಕವಾಗುವುದು. "ಧರ್ಮಸಂಖ್ಯೆನಾರ್ಥಯಿ ಪ್ರಜ್ಞೇಽಪಕವೃಣಿಷು" ಭಾಂ ಆದಿಂ 63-103. 3. ಕ್ರೇಡಿಸುವುದು, ಅಟವಾಡುವುದು.

ಸಂಖ್ಯೆ ಸಂಖ್ಯೆ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆಸಬೇಕಾದ. ಸಮ್ + ವೃತ್ (ವೃದ್ಧಿ) + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) 1. 3. ಅಧಿಕ ಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಅಧಿಕಪಡಿಸಬೇಕಾದ.

ಸಂಖ್ಯೆ ಸಂಖ್ಯೆ (ವಿಂ) 1. ಬೆಳೆಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸಂಖ್ಯಿತಾನಾಂ ಸುತನಿವಿಶೇಷಮ್" ರಘುಂ 4-6. 2. ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ವೃತ್ (ವೃದ್ಧಿ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102) 1. "ಸಂಖ್ಯಿತೋರ: ಸ್ಥಲತಾರಹಾರ:" ರಘುಂ 4-42.

ಸಂಖ್ಯೆ ಸಂಖ್ಯೆ (ನಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕೂಡುವುದು. ಸಮ್ + ವಲ್ (ಸಂಖ್ಯೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) 1. 2. ಮಿಶ್ರವಾಗುವುದು, ಬೆರೆತಿರುವುದು. "ಅಥ ವಿಧಿರಶನಿಶಶಬರಮಯುಕ್ತಸಂಖ್ಯೆನಮನುಕ್ರುತೇ" ಮಾಲತೀಂ 10-11.

ಸಂಖ್ಯೆ ಸಂಖ್ಯೆ (ವಿಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಕೂಡಿಕೊಂಡಿರುವ. ಸಮ್ + ವಲ್ (ಸಂಖ್ಯೆ) "ಕ್ತ:" (3-4-92) 1. "ದಾಸೇರಕ: ಸಪದಿ ಸಂಖ್ಯಿತಂ ನಿಷಾದೇ: ವಿಪ್ರಂ ಪುರಾ ಪತಗರಾಡಿವ ನಿಜಂಗಾರ" ಮಾಧಂ 4-66. 2. ಬೆರೆತಿರುವ, ಮಿಶ್ರವಾಗಿರುವ. "ಅನುಯಯಿ ವಿವಿಧೋ-ಪಲಕೃಷ್ಣಲಕ್ಷುತಿವಿತಾನಕಸಂಖ್ಯಿತಾಂಶುಕ್ಮ" ಮಾಧಂ 6-29. 3. ಒಡೆದಿರುವ, ಜೊರು ಜೊರಾಗಿರುವ, ಪುಡಿ ಪುಡಿಯಾಗಿರುವ. "ಉದಿತೋಪಲಸ್ಥಲನಸಂಖ್ಯಿತಾ: ಸ್ಫುಟ-ಹಂಸಾರಸವಿರಾವಯುಜ:" ಕಿರಾಂ 6-4. 4. ಸುತ್ತು ಗಟ್ಟಿಪಟ್ಟ.

ಸಂಖ್ಯೆ ಸಂಖ್ಯೆ (ಪುಂ) ಗ್ರಾಮ, ಊರು, ಹಳ್ಳಿ. ಸಂಖ್ಯೆ ಜನಾ ಅತ್ರ — ಸಮ್ + ವಸ (ನಿವಾಸ) "ಅಥಕ್" (3-3-116) 1.

ಸಂಖ್ಯೆ ಸಂಖ್ಯೆ (ಪುಂ) ಅವಹ ಮೊದಲಾದ ಸಪ್ತವಾಯುಗಳಲ್ಲೊಂದು ವಾಯು. ಸಂಖ್ಯೆ — ಸಮ್ + ವಹ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಅಕ್" (3-1-134) 1. "ಆವಹ: ಪ್ರವಹಸ್ವೇವ ವಿವಹಸ್ತ ಸಮೀರಣ: 1. ಪರಾವರ: ಸಂಖ್ಯೆಶ್ಚ ಉಹಸ್ತ ಮಹಾಬಲ: 1. ತಥಾ ಪರಿವಹ: ಶ್ರೀಮಾನ್" ಹರಿವಂ 1. ಸಂಖ್ಯೆವಾಯುವು ಉದ್ವಹ ವಾಯುವಿಗೆ ಮೇಲುಭಾಗ ದಲ್ಲಿರುವುದು.



**ಸಂವಾದ ಸಂವಾದ (ಪುಂ)** 1. ಪರಸ್ಪರ ಸಂಭಾಷಣೆ, ಪರಸ್ಪರ ಮಾತನಾಡುವುದು. ಸಮ್ + ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ವತ್" (೩-೩-೧೮)। "ಸಕ್ತಸಂವಾದೇಽಪಿ ಪ್ರಯತ ಇಹ ಚಾಮುತ್ರ ಚ ಶುಭಮ್" ಮಂ ವೀಂ ೧-೧೨। 2. ಚರ್ಚೆ, ವಿಚಾರಮಾಡುವುದು, ಅಲೋಚಿಸುವುದು. 3. ಮಾತಿನಲ್ಲಿ ಸಮಾಚಾರ ತಿಳಿಸುವುದು, ಸಂದೇಶ ಕಳುಹಿಸುವುದು. 4. ಸಾಮ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ.

**ಸಂವಾದಿನ್ ಸಂವಾದಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಪರಸ್ಪರ ಮಾತನಾಡುವ. ಸಮ್ + ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಗಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಸಮಾನವಾಗಿರುವ, ಹೋಲುವ. ಸಂವಾದ: ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫)। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ತೀಪ್" (೪-೧-೫)। -ವಾದಿನಿ -ವಾದಿನೀ. "ಷಡ್ಜಸಂವಾದಿನಿ: ಕೇಕಾ ದ್ವಿವಾ ಮಿತ್ರಾ: ಶಿಷ್ಯಾಃ" ರಘುಂ ೧-೩೯।

**ಸಂವಾರ ಸಂವಾರ (ಪುಂ)** ಅಕ್ಷರಗಳ ಉಚ್ಚಾರಣೆಗಾಗಿ ಕಂಠ ಮೊದಲಾದ ಉಚ್ಚಾರಣೆಯ ಸ್ಥಾನಗಳನ್ನು ಸಂಕೋಚ ಮಾಡುವುದು, ವರ್ಣೋಚ್ಚಾರಣೆಯ ಹನ್ನೊಂದು ವಿಧ ಬಾಹ್ಯ ಪ್ರಯತ್ನಗಳಿಲ್ಲದುದು. ವಿವಾರ: ಸಂವಾರ: ಶ್ವಾಸ: ನಾದ: ಧೋಷ: ಅಧೋಷ: ಅಲ್ಪಪ್ರಾಣ: ಮಹಾಪ್ರಾಣ: ಉದಾತ್ತ: ಅನುದಾತ್ತ: ಮಂತ್ರ: ಸ್ವರಿತ: ಇವು 11 ವಿಧ ಬಾಹ್ಯ ಪ್ರಯತ್ನಗಳು.

**ಸಂವಾಸ ಸಂವಾಸ (ಪುಂ)** 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕಲಿತು ವಾಸಮಾಡುವುದು. ಸಮ್ + ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ವತ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಜನರ ವಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ವಿರ್ಪಡಿಸಿರುವ ಒಂದು ಬಯಲು ಪ್ರದೇಶ. 3. ಗೃಹ, ಮನೆ. 4. ಸಹವಾಸ, ಸಂಗ, ಸಾಹಚರ್ಯ.

**ಸಂವಾಹ ಸಂವಾಹ (ಪುಂ)** 1. ಮೈ ಕೈ ಕಾಲುಗಳನ್ನು ಒತ್ತು ವವನು, -ತೀಡುವವನು. ಸಮ್ + वह (ಪ್ರಾಪಣೇ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಮೈಯನ್ನು ಉಜ್ಜುವುದು, -ತೀಡುವುದು.

**ಸಂವಾಹಕ ಸಂವಾಹಕ (ವಿಂ)** ಮೈ ಕೈ ಕಾಲುಗಳನ್ನು ಉಜ್ಜುವವನು. ಸಮ್ + वह (ಪ್ರಾಪಣೇ) + ಣಿಚ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ಸಂವಾಹನ ಸಂವಾಹನ (ನಂ) -ನಾ -ನಾ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮೈ ಕೈ ಕಾಲುಗಳನ್ನು ತೀಡುವುದು, -ಉಜ್ಜುವುದು. ಸಮ್ + वह (ಪ್ರಾಪಣೇ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) ಯುಚ್ ವಾ। "ಪೌರಸ್ತ್ಯೋ ವಾ ಸುಖಯತಿ ಮಹತ್ಸಾಧು ಸಂವಾಹನಾಃ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೫। "ಅಶಿಥಿಲಪರೀರಮ್ಬದಂತಸಂವಾಹನಾನಿ" ಉಂ ರಾಂ ೧-೨೪।

**ಸಂವಾಹನ ಸಂವಾಹನ (ವಿಂ)** 1. ಒತ್ತಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, 2. ತೀಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + वह (ಪ್ರಾಪಣೇ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)।

**ಸಂವಿಗ್ನ ಸಂವಿಗ್ನ (ವಿಂ)** 1. ರೇಗಿದ, ಕ್ಷೋಭೆಗೊಂಡ, ಉದ್ರಿಕ್ತ. ಸಮ್ + ವಿಗ್ನಿ (ಭಯಚಲನಯೋ:) "ಕ್ವ:" (೩-೪-೭೨)। 2. ಭಯಗೊಂಡ, ಹೆದರಿದ.

**ಸಂವಿತ್ತಿ ಸಂವಿತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಜ್ಞಾನ. ಸಮ್ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಕ್ವಿನ್" (೩-೩-೯೪)। "ಛಾಯಾಂ ವಿನಿರ್ಭಯ ತಮೋಯಿ ತಾಂ ತತ್ತ್ವಸ್ಯ ಸಂವಿತ್ತಿರಿವಾಪವಿಷ್ಯಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೬-೩೨। 2. ವಿವಾದ. 3. ಅನುಭವ, ಅರಿವು. "ಶ್ವಸ್ತವಯಾ ಸುಖ-ಸಂವಿತ್ತಿ: ಸ್ಮರಣೀಯಾಧುನಾತನೀ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೩೪। 4. ಜ್ಞಾಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಸ್ಮರಿಸುವುದು.

**ಸಂವಿದ್ ಸಂವಿದ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ಸಮ್ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧)। "ಅಸಂವಿದಾನಸ್ಯ ಮಮೇಶ ಸಂವಿದಾಂ ತಿತ್ತಿಕ್ಷಿತುಂ ದುಶ್ಚರಿತಂ ತ್ವಮಹಂಸಿ" ಕಿರಾಂ ೧೮-೪೨। 2. ಪ್ರಜ್ಞೆ, ಅರಿವು. "ತ್ವತ್ಸನ್ನೇಹಸಂವಿದ-ವಲಮ್ಬಿತಜೀವಿತಾನಿ" ಮಾಲತೀಂ ೬-೧೩। 3. ಸಂಕೇತ, ವಾಗ್ದಾನ, ಕೊಟ್ಟ ಮಾತು. "ಸ ರಾಜಲೋಕ: ಕೃತಪೂರ್ವ-ಸಂವಿದಾರಮ್ಭಸಿದ್ಧೌ ಸಮಯೋಪಲಬ್ಧಮ್" ರಘುಂ ೭-೩೧। 4. ಹೆಸರು, ನಾಮಧೇಯ. 5. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವುದು.

"ಅಬುಧ್: ಕೃತಮಾನಸಂವಿದಸ್ತವ ಪಾರ್ಥ: ಕುತ ಏವ ಯೋಗ್ಯತಾ" ಮಾಘಂ ೧೬-೪೭। 6. ಯುದ್ಧ, ಸಮರ. 7. ಆಚಾರ, ಸಂಪ್ರದಾಯ, ಪದ್ಧತಿ, ವಾಡಿಕೆ. "ಆಜಸ್ವಿವರ್ಣೋಜ್ಜ್ವಲ-ವೃತ್ತಶಾಲಿನ: ಪ್ರಸಾದಿನಂ ಜುಜ್ಜಿತಗೋತ್ರಸಂವಿದ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೩೫। 8. ಸಂಭಾಷಣೆ, ಉಕ್ತಿ, ಪ್ರತುಕ್ತಿ. 9. ಸಮಾಧಿ. 10. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಮ್ಮತಿ. 11. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. 12. ರಣಗರ್ಜನೆ. 13. ಕಾರ್ಯಸ್ಪರ್ಶಪ. "ಸಂವಿತ್ತಸಂಭಾಷಣೇ ಜ್ಞಾನೇ ಸಂಗ್ರಾಮೇ ನಾಮ್ನಿ ತೋಷಣೇ। ಕ್ರಿಯಾಕಾರೇ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾಂ ಸಂಜ್ಞೇತಾಚಾರಯೋರಪಿ" ಹೇಮಂ।

**ಸಂವಿದಿತ ಸಂವಿದಿತ (ವಿಂ)** 1. ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮ್ಮತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಪಡೆದ.

**ಸಂವಿಧಾ ಸಂವಿಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಜೀವನೋಪಯೋಗಿ ಸಾಧನ, ಬದುಕಿಗೆ ಬೇಕಾಗುವ ವಸ್ತು. ಸಂವಿಧೀಯತೇನಯಾ— ಸಮ್ + ವಿ + ಧಾನ್ "ಕ:" (೩-೧-೧೩೬)। "ಕಲ್ಪವಿತ್ ಕಲ್ಪಯಾಮಾಸ ವನ್ಯಾಮೇವಾಸ್ಯ ಸಂವಿಧಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೯೪। 2. ವಿವಾಹ, ಸಿದ್ಧಿ. "ಉದ್ಭಾಸಿತಂ ಮಂಜಲಸಂವಿಧಾಃ" ರಘುಂ ೭-೧೬।

**ಸಂವಿಧಾನ ಸಂವಿಧಾನ (ನಂ)** 1. ಉಪಕರಣ, ಸಾಮಗ್ರಿ, ಸಾಧನ. ಸಂವಿಧೀಯತೇನೇನ — ಸಮ್ + ವಿ + ಧಾನ್ "ಲ್ಯುಡ್"



(೩-೩-೧೧೭) 1. "ಸಂಪ್ರೀಣನೇಹಸವಸಂವಿಧಾನೇ:" ಯಾದಂ ೧೩-೭೩. 2. ಏರ್ಪಾಡು, ಕಾರ್ಯಸಾಧನೆಯ ಸನ್ನಾಹ. "ಅಹೋ ಸರಸರಮಣೀಯತಾ ಸಂವಿಧಾನಸ್ಯ" ಮಾಲತೀಂ ೬.

ಸಂವಿಧಾನಕ ಸಂವಿಧಾನಕ (ನಂ) 1. ಅಪೂರ್ವ ಘಟನೆ.

2. ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ಅಪೂರ್ವ ಕಥಾವಸ್ತುನಿರ್ಮಾಣ. "ಅಹೋ ಸಂವಿಧಾನಕಮ್" ಉಂ ರಾಂ ೩.

ಸಂವಿಭಕ್ತ ಸಂವಿಭಕ್ತ (ವಿಂ) ಭಾಗಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಂಚಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ವಿ + ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). "ಸ್ನಿಗ್ಧಜನಸಂವಿಭಕ್ತಂ ಹಿ ದುಃಖಂ ಸಹ್ಯ-ವೇದನಂ ಭವತಿ" ಶಾಕುಂ ೪.

ಸಂವಿಭಾಗ ಸಂವಿಭಾಗ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಭಾಗ, ಪಾಲು.

2. ಭಾಗಮಾಡುವುದು, ಹಂಚುವುದು. "ಸಡ್‌ಕ್ರಂದನೇನ

- ವಿಹಿತಾಸನಸಂವಿಭಾಗ:" ಚಂ ರಾಂ 1.

ಸಂವಿಭಾಗಿನ್ ಸಂವಿಭಾಗಿನ್ (ವಿಂ) ಪಾಲುದಾರ.

ಸಂವಿಶತ್ ಸಂವಿಶತ್ (ವಿಂ) 1. ಮಲಗುತ್ತಿರುವ, ನಿದ್ರೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). 2. ಪ್ರವೇಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ಒಳಗೆ ಹೋಗುತ್ತಿರುವ. 3. ಸುಖವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿರುವ.

ಸಂವಿಷ್ಠ ಸಂವಿಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಮಲಗಿರುವ, ನಿದ್ರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). "ತಚ್ಚಿಕ್ಷಯಾವ್ಯಯನಿವೇದಿತಾವಸಾನಾಂ ಸಂವಿಷ್ಠ: ಕುಶಲಯನೇ ನಿಶಾಂ ನಿಶಾಯ" ರಘುಂ ೧-೯೫. 2. ಒಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿರುವ, ಒಳಗೆ ಹೋಗಿರುವ.

ಸಂವೀಕ್ಷಣ ಸಂವೀಕ್ಷಣ (ನಂ) ಅನ್ವೇಷಣ, ಹುಡುಕುವುದು. ಸಮ್ + ವಿ + ಇಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

ಸಂವೀತ ಸಂವೀತ (ವಿಂ) 1. ಉಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸಂವೀತಪೀತ-ವಸನೇನ ತುಲಾಂ ತ್ವಯೇವ" ಯಾದಂ ೧೯-೨೮. 2. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಆವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುತ್ತುವರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ವ್ಯೇ (ಸಂವರಣೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). 5. ಸುತ್ತುಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸಂವೀತಂ ರೂಪಮಾವೃತಮ್" ಅಮಂ. "ಸಂವೀತನಾಗೇಂದ್ರನಿರ್ದೇಶನೀಯಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೩-೮೪.

ಸಂವೃತ ಸಂವೃತ (ವಿಂ) 1. ಗುಪ್ತವಾದ, ರಹಸ್ಯವಾದ. ಸಮ್ + ವೃ (ವರಣೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). "ಮನ್ತ್ರೋ ಯೋಽ ಇವಾಧೀರ: ಸರ್ವಾಂಜ್ಞ: ಸಂವೃತೇರಪಿ" ಮಾಘಂ ೨-೨೯. 2. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಮುಹುರತ್ಕಾಲಿ-ಸಂವೃತಾಧರೋಠಂ ಪ್ರತಿಷೇಧಾಕ್ಷರವಿವಲವಾಭಿರಾಮಮ್" ಶಾಕುಂ ೩-೨೨. 3. ಮರೆಮಾಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಚ್ಚಿಡಲ್ಪಟ್ಟ.

4. ಆವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸಂವೃತಾ ತ್ರಿದಶಪಾದಪರಿಸೌ ಶಾರಿಕೇವ ಮಣಿಪಂಜರಸ್ಥಿತಾ" ಯಾದಂ ೧೭-೨೮. (ನಂ) 5. ಅಕ್ಷರದ ಉಚ್ಚಾರಣೆಯ ಹನ್ನೊಂದು ವಿಧ ಪ್ರಯತ್ನಗಳಲ್ಲೊಂದು. 6. ರಹಸ್ಯ.

ಸಂವೃತಿ ಸಂವೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುಚ್ಚುವುದು, ಮರೆಮಾಡುವುದು ಸಮ್ + ವೃ (ಆವರಣೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪). "ಸ್ಫುಟಮಭಿಲಷಿತಂ ವಭೂವ ವಚ್ಚಾ ವದತಿ ಹಿ ಸಂವೃತಿರೇವ ಕಾಮಿತಾನಿ" ಕಿರಾಂ ೧೦-೪೪. 2. ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡುವುದು. "ಬುದ್ಧಿಶಸ್ತ್ರ: ಪ್ರಕೃತ್ಯಜ್ಞೋ ಧನಸಂವೃತಿಕಚ್ಚುಕ:" ಮಾಘಂ ೨-೮೨. 3. ಮರೆಮಾಚುವುದು, ನಿಜವನ್ನು ಮರೆಸುವುದು.

ಸಂವೃತ್ತ ಸಂವೃತ್ತ (ಪುಂ) 1. ವರುಣ. (ವಿಂ) 2. ಆಗಿರುವ, ಉಂಟಾಗಿರುವ. ಸಮ್ + ವೃತು (ವರ್ತನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). "ತೇನ ಹಿ ಯುವರಾಜೋಽಸ್ಮಿ ಸಂವೃತ್ತ:" ಶಾಕುಂ ೨. 3. ನೆರವೇರಿದ, ಈಡೇರಿದ. 4. ನಡೆದು ಹೋದ.

ಸಂವೃತ್ತಿ ಸಂವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಗುವುದು, ಸಂಭವಿಸುವುದು. 2. ನೆರವೇರುವುದು, ಈಡೇರುವುದು.

ಸಂವೃದ್ಧ ಸಂವೃದ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಬೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವ. 2. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿದ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವ. ಸಮ್ + ವೃ (ವೃದ್ಧಿ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨). 3. ದೊಡ್ಡದಾಗಿರುವ.

ಸಂವೃದ್ಧಿ ಸಂವೃದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಏಳಿಗೆ. ಸಮ್ + ವೃ (ವೃದ್ಧಿ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪). "ಯ ಇಹಾತ್ಮವಿದೋ ವಿಪಕ್ಷಮಧ್ಯೇ ಸಹಸಂವೃದ್ಧಿಯುಜೋಽಪಿ ಮುಖಜ: ಸ್ಯು:" ಮಾಘಂ ೨-೧೧೬. 2. ದೊಡ್ಡದಾಗುವುದು.

ಸಂವೇಗ ಸಂವೇಗ (ಪುಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ವೇಗ, ರಭಸ, ಜೋರು. ಸಮ್ + ಆ ವಿಜಿ (ಭಯಚಲನಯೋ:) "ಭವ್" (೩-೩-೧೮). 2. ತ್ವರೆ, ಉದ್ರೇಕದಿಂದ ಕೂಡಿದ ವೇಗ. "ಅಥ ಸಮ್ಯಾ: ಸಮಾಮಯೇ ಸಮುಚ್ಚಿತಕರಾಸ್ತದಾ. ಋಚುರ್ದಿಗ್ನಮನಸ: ಸಂವೇಗಾತ್ ಸರ್ವಂ ಏವ ಹಿ" ಭಾಂ. "ಕುತಶ್ಚಿತ್ ಸಂವೇಗಾತ್ ಪ್ರವಲ ಇವ ಶಲ್ಯಸ್ಯ ಶಕಲ:" ಉಂ ರಾಂ ೨-೨೬. 3. ಸಂಭ್ರಮ, ಸಡಗರ. "ಹೃನ್ಮರ್ಮಭೇದಿಪತದ್ವುಕ್ತಕಢ್ಕಪತ್ರ-ಸಂವೇಗತಕ್ಷಣಕೃತಸ್ಫುಟದ್ವಜಮಜ್ಜಾ" ಉಂ ರಾಂ ೨-೩೯.

ಸಂವೇದ ಸಂವೇದ (ಪುಂ) ಅರಿವು, ಅನುಭವ. ಸಮ್ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಭವ್" (೩-೩-೧೮).

ಸಂವೇದನ ಸಂವೇದನ (ನಂ) ಅರಿವು, ಅನುಭವ. ಸಮ್ + ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫). ಸಮ್ + ವಿದ "ಯುಕ್" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೭). -ನಾ -ನಾ. "ದುಃಖ-ಸಂವೇದನಾಯೇವ ರಾಮೇ ಚೈತನ್ಯಮಾಗತಮ್" ಉಂ ರಾಂ ೧-೪೭.



**ಸಂವೇದಿನ್ ಸಂವೇದಿನ್** (ವಿಂ) ಅರಿತಿರುವವನು, ತಿಳಿದಿರುವವನು. ಸಂವೇದೋಽಸ್ತಿ "ಇತಿ:" (೪-೨-೧೧೫)।  
 "ಅಕೃತ್ಸನಸಂವೇದಿನಿ ಜೀವಲೋಕೇ ಸಂಗ್ರಾಹಯನ್ ವರ್ಮಮಯಾತ್ಮವೃತ್ತಯಾ"  
 ಯಾದಂ ೧೩-೭೫।

**ಸಂವೇಶ ಸಂವೇಶ** (ಪುಂ) 1. ನಿದ್ರೆ, ಮಲಗುವುದು. ಸಮ್ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ಅಥ ಪ್ರದೋಷೋ ದೋಷಃ ಸಂವೇಶಾಯ ಮಹೀಪತಿಮ್। ಸುನು: ಸುನುತವಾಕ್ಸಪ್ತು: ವಿಸಸರ್ಜೋಜಿತಶ್ರಿಯಮ್" ರಘುಂ ೧-೯೩। 2. ಒಂದು ವಿಧ ಸುರತ ಬಂಧ. 3. ಓಣ, ಅಸನ. 4. ಉಪಭೋಗ ಸ್ಥಳ. "ವಿಹಾರಸ್ಥಾನವಿಶ್ರಾಮಸಂವೇಶಪ್ರಾಜ್ಞಾಜಿರೇ:। ಯಥೋಪಜೌಘಂ ರಚಿತೇವಿಸ್ತಾಪನಮಿವಾತ್ಮನ:" ಭಾಗಂ ೩-೨೩-೨೧। "ಸಂವೇಶ: ಶಯನೇ ಚಾಸನೇಽಪಿ ಚ" ವಿಶ್ವಂ।

**ಸಂವೇಶನ ಸಂವೇಶನ** (ನಂ) 1. ಸುರತ, ರತಿಕ್ರೀಡೆ. 2. ಕೂಡುವುದು, ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಸಮ್ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 3. ಮಲಗುವುದು.

**ಸಂವ್ಯವಹಾರ ಸಂವ್ಯವಹಾರ** (ಪುಂ) ವಾಣಿಜ್ಯವ್ಯವಹಾರ, ವ್ಯಾಪಾರದ ವ್ಯವಹಾರ. "ಚಂದನದಾಸ, ಅಪಿ ಪ್ರವೀಯಂತೇ ಸಂವ್ಯವಹಾರಾಣಾಂ ಲಾಭಾ ವ:?" ನುಡ್ರಾಂ ೧।

**ಸಂವ್ಯಾನ ಸಂವ್ಯಾನ** (ನಂ) 1. ಉತ್ತರೀಯ, ಹೊದೆಯುವ ವಸ್ತ್ರ. ಸಂವೀಯತೇಜನೇ-ಸಮ್ + ವ್ಯಾಜ (ಸಂವರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಸಂವ್ಯಾನಾನಾಮಂತಕಾಂತ:ಪುರಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೧೮-೬೯। 2. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. "ಸಂವ್ಯಾನಂ ಛಾದನೇಽಶ್ವಕೇ" ಮೇದಿಂ। "ವಿಪಾಣ್ಡುಸಂವ್ಯಾನಮಿವಾನಿಲೋದ್ಭವಂ ನಿರೂಪಯತಿ: ಸಪ್ತಪಲಾಶಜಂ ರಜ:" ಕಿರಾಂ ೪-೨೮।

**ಸಂಶಪ್ತಕ ಸಂಶಪ್ತಕ** (ಪುಂ) 1. ಶಪಥದಂತೆ ಯುದ್ಧರಂಗದಿಂದ ಹಿಂತಿರುಗದವನು, ಯುದ್ಧ ಬಿಟ್ಟು ಹಿಂತಿರುಗುವುದಿಲ್ಲವೆಂದು ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡಿದವನು. ಸಮ್ಯಕ್ ಶಪ್ತಂ ಸತ್ಯಂ ಯಸ್ಯ ಸ:। "ಸಂಶಪ್ತಕಾಸ್ತು ಸಮಯಾತ್ಸಂಗ್ರಾಮಾದಿನಿರ್ವತಿನ:" ಅಮಂ। "ಯದಾಶ್ರೀಃ ಚಾಸ್ಮದೀಯಾನ್ ಮಹಾರಥಾನ್ ವ್ಯವಸ್ಥಿತಾನರ್ಜುನಸ್ಯಾಂತಕಾಯ। ಸಂಶಪ್ತಕಾನ್ ನಿಹತಾನರ್ಜುನೇನ ತದಾ ನಾಶಂಸೇ ವಿಜಯಾಯ ಸಂಜಯ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧-೧೮೭। 2. ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಜಯಿಸುವುದಾಗಿ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡಿದವನು.

**ಸಂಶಯ ಸಂಶಯ** (ಪುಂ) 1. ಸಂದೇಹ, ನಿಶ್ಚಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಸಮ್ + ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನ) "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬)। "ನಿವೇದಿತಂ ನಿಶ್ವಸಿತೇನ ಸೋಮಣಾ ಮನಸ್ತು ಮೇ ಸಂಶಯಮೇವ ಗಾಹತೇ" ಕುಮಾಂ ೫-೪೬। 2. ಗುಮಾನಿ, ಅನುಮಾನ, ಅಳುಕು. 3. ಅಪತ್ತು, ಅಪಾಯ, ಗಂಡಾಂತರ. "ಅಧಿರೋಹತಿ ಗಾಣಿಡವಂ ಮಹೇಶೌ ಸಕಲ: ಸಂಶಯಮಾರೋಹ ಶೈಲ:" ಕಿರಾಂ ೧೩-೧೬।

**ಸಂಶಯಾನ ಸಂಶಯಾನ** (ವಿಂ) ಸಂದೇಹಪಡುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನ) "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪)।

**ಸಂಶಯಾಲ್ಯ ಸಂಶಯಾಲ್ಯ** (ವಿಂ) ಸಂದೇಹಪಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಸಮ್ + ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನ) "ಆಲ್ಯುಚ್" (ವಾಂ ೩-೨-೧೫೮)।

**ಸಂಶಯಿತ ಸಂಶಯಿತ** (ವಿಂ) ಅಪಾಯದಲ್ಲಿರುವ, ಅಪಾಯಕ್ಕೆ ಸಿಕ್ಕಿರುವ. ಸಂಶಯೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತಚ್"।

**ಸಂಶಯಿತ್ ಸಂಶಯಿತ್** (ವಿಂ) ಸಂಶಯಪಡುವವನು. ಸಮ್ + ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನ) "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ಸಂಶಿತ ಸಂಶಿತ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹರಿತಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಹಳ ಚೂಪಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತೀಕ್ಷ್ಣವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಶಿ (ತನುಕರಣ) "ಕ್ತ:" (೭-೪-೪೧)। 2. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ನೇರವೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಆಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ವ್ರತ). ಸಂಶಿತಂ ವ್ರತಮ್। 3. ವ್ರತದ ಪ್ರಯತ್ನವುಳ್ಳ (ಬ್ರಾಹ್ಮಣ). ಸಂಶಿತೌ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ: ವ್ರತವಿಷಯಕಯತ್ನವಾನ್ ಇತ್ಯರ್ಥ:।

**ಸಂಶೀತಿ ಸಂಶೀತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಶಯ, ಸಂದೇಹ. ಸಮ್ + ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)।

**ಸಂಶುಡ್ಧ ಸಂಶುಡ್ಧ** (ವಿಂ) 1. ಪರಿಶುದ್ಧವಾದ, ಪವಿತ್ರವಾದ. ಸಮ್ + ಶುಢ (ಶೌಚ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। 2. ನಿರ್ಮಲವಾದ, ಸ್ವಚ್ಛವಾದ. 3. ದೋಷವಿಲ್ಲದ, ಕಳಂಕವಿಲ್ಲದ. 4. ಪಾಪವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸಿಕೊಂಡ.

**ಸಂಶುಡ್ಧಿ ಸಂಶುಡ್ಧಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತೊಳೆಯುವುದು. 2. ದೋಷವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವುದು. 3. ಪಾಪವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವುದು. 4. ಋಣವನ್ನು ತೀರಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಶುಢ (ಶೌಚ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪)। 5. ತಿಳಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ, ಕಲುಷವಾಗದಿರುವಿಕೆ. "ಭಾವಸಂಶುಡ್ಧಿರೀತೀ-ತತ್ತಪೌ ಮಾನಸಮುಚ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೧೭-೧೬।

**ಸಂಶೋಧನ ಸಂಶೋಧನ** (ನಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತೊಳೆಯುವುದು. 3. ಋಣ ತೀರಿಸುವುದು. 4. ಪಾಪಪರಿಹಾರ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 5. ಸ್ವಚ್ಛಗೊಳಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಶುಢ (ಶೌಚ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 6. ತಪ್ಪು ತಿದ್ದುವುದು. 7. ಅನ್ವೇಷಣೆ, ಹೊಸ ಹೊಸ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಕಂಡುಹಿಡಿಯುವುದು.

**ಸಂಶಯಾನ ಸಂಶಯಾನ** (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಒಣಗಿ ಸಂಕೋಚ ಹೊಂದಿರುವ, ಕುಗ್ಗಿರುವ, ಚಿಕ್ಕದಾಗಿರುವ. ಸಮ್ + ಶ್ಯೇಡ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)।



**ಸಂಖ್ಯ ಸಂಶ್ರುಯ (ಪುಂ)** 1. ಅಶ್ರಯ, ಆಸರೆ, ವಾಸಸ್ಥಾನ. ಸಮ್ + ಶ್ರಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಅಕ್" (3-3-56)। "ಯೇನ ಶ್ರಿಯಃ ಸಂಖ್ಯದೋಷಕಂ ಸ್ವಭಾವಲೋಲೇತ್ಯಯಶಃ ಪ್ರಮೃಷ್ಟಮ್" ರಘುಂ 6-41। 2. ವಿಶ್ರಾಂತಿಸ್ಥಾನ. 3. ರಕ್ಷಣೆ ಪಡೆಯುವ ಸ್ಥಳ. "ನ ಖುರೋಽಪಿ ಪ್ರಥಮಸುಕೃತಾಪೇಕ್ಷಯಾ ಸಂಖ್ಯಾಯಾ" ಮೇಘಂ 1-19।

**ಸಂಖ್ಯ ಸಂಶ್ರುವ (ಪುಂ)** 1. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಮ್ಮತಿ. 2. ಗಮನವಿಟ್ಟು ಕೇಳುವುದು, ಲಕ್ಷ್ಯವಿಟ್ಟು ಆಲಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೇ) "ಅಪ್" (3-3-59)। "ಅಥ ಭೀಮಃ ಸುಹೃನ್ಮಧ್ಯೆ ಬಾಹುಶಬ್ದಂ ತದಾಕರೋತ್ | ಸಂಖ್ಯವೇ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರಸ್ಯ ಗಾಂಧಾರ್ಯಾಶ್ರಾಪ್ಯಮರ್ವಣಃ" ಭಾಂ ಆಶ್ರಮಂ 14-6।

**ಸಂಖ್ಯ ಸಂಶ್ರುತ (ವಿಂ)** 1. ಅಶ್ರಯ ಪಡೆದವನು. ಸಮ್ + ಶ್ರಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕ್" (3-3-62)। "ಶರತ್ಯಯೋ ದೋರಸಂಖ್ಯತಾನಾಂ ಖಣಬೃತಿನಾಂ ದೃತಿಮನ್ವವಿನ್ದನ್" ಯಾದಂ 13-69। 2. ರಕ್ಷಣೆ ಪಡೆದವನು. 3. ಕೂಡಿಕೊಂಡಿರುವ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ.

**ಸಂಖ್ಯ ಸಂಶ್ರುತ (ವಿಂ)** 1. ವಾಗ್ದಾನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಪ್ಪಿಗೆ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮ್ಮತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಶ್ರು (ಶ್ರವಣೇ) "ಕ್" (3-2-102)। 3. ಜಿನ್ನಾಗಿ ಆಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಕಿವಿಗೊಟ್ಟು ಕೇಳಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಸಂಖ್ಯ ಸಂಶ್ಲಿಷ್ಠ (ವಿಂ)** 1. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕೂಡಿಕೊಂಡಿರುವ. ಸಮ್ + ಶಿಲಿಷ (ಆಲಿಜ್ಞೇ) "ಕ್" (3-3-62)। "ಯಥಾ ಛಾಯಾತಪೌ ನಿಯಂ ಸುಸಮ್ಬದ್ಧಿ ಪರಸ್ಪರಮ್ | ಏವಂ ಕರ್ಮ ಚ ಕರ್ತಾ ಚ ಸಂಖ್ಯಲಿಷ್ಠಾವಿತರೆತರಮ್" ಪಂಚತಂ 2-134। 2. ಆಲಿಂಗಿಸಿರುವ, ಅಪ್ಪಿಕೊಂಡಿರುವ. 3. ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿರುವ, ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ, ನೆರೆಯಲ್ಲಿರುವ. 4. ಕೂಡಿರುವ, ಸಹಿತವಾದ.

**ಸಂಖ್ಯ ಸಂಶ್ಲೇಷ (ಪುಂ)** 1. ಸಂಬಂಧ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿ ಕೊಂಡಿರುವುದು. 2. ಸಮೀಪಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವುದು. 3. ಆಲಿಂಗನ, ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಸಮ್ + ಶಿಲಿಷ (ಆಲಿಜ್ಞೇ) "ವಕ್" (3-3-100)। "ಸಂಖ್ಯೇಷವ ಪರಸ್ತ್ರೀಭಿಃ ದಸ್ಯುರೇತಾನಿ ವರ್ಜಯೇತ್" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ 1. 4. ಸಂಪರ್ಕ, ಸಂಬಂಧ. "ವಶಿನಾಂ ಹಿ ಪರಪರಿಗ್ರಹಸಂಖ್ಯೇಷ-ಪರಾಡ್ಘಮುಖಿ ವೃತ್ತಿಃ" ಶಾಕುಂ 4-20।

**ಸಂಖ್ಯ ಸಂಶ್ಲೇಷಣ (ನಂ)** 1. ಸಂಪರ್ಕ, ಸಂಬಂಧ. 2. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿರುವುದು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕೂಡಿಕೊಂಡಿರುವುದು. ಸಮ್ + ಶಿಲಿಷ (ಆಲಿಜ್ಞೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-115)।

**ಸಂಸಕ್ತ ಸಂಸಕ್ತ (ವಿಂ)** 1. ಸಮೀಪ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. ಸಮ್ + ಪಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೇ) "ಕ್" (3-3-62)। "ಪ್ರಾಂತೇಷು ಸಂಸಕ್ತನಮೇಕಶಾಖಂ ಧ್ಯಾನಾಸ್ಪದ ಭೂತಪತೇವಿವೇಶ" ಕುಮಾಂ 3-43। 2. ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ, ಜೋಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ. ಸಮ್ + ಪಜ್ಜ ಕರ್ಮಂ "ಕ್" (3-2-102)। "ಸಯತ್ನಸೂತಾಯತರಶಿಮುನಗ್ರಿವಾಗ್ರಸಂಸಕ್ತ-ಯುಗೇಸ್ತುರಜ್ಞಃ" ಮಾಘಂ 3-60। 3. ಬೆರೆತಿರುವ, ಮಿಶ್ರವಾಗಿರುವ. "ಕಲಿನ್ದಕನ್ಯಾ ಮಧುರಾ ಗತಾಪಿ ಗಜ್ಞೋಮಿ-ಸಂಸಕ್ತಜಲೇವ ಭಾತಿ" ರಘುಂ 6-40। 4. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿ ಕೊಂಡಿರುವ, ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವ. "ಸಂಸಕ್ತೇವಿಪುಲತಯಾ ಮಿಥೋ ನಿತಮ್ಬೈಃ ಸಂವಾಘಂ ಬೃಹದಪಿ ತದ್ಭೂವ ವರ್ಮ" ಮಾಘಂ 6-2।

**ಸಂಸಕ್ತಿ ಸಂಸಕ್ತ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಜೊತೆಯಲ್ಲಿರುವುದು, ಸಮೀಪ ಸಂಬಂಧ. ಸಮ್ + ಪಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೇ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)। "ಸಂಸಕ್ತೌ ಕಿಮಸುಲಭಂ ಮಹೋದಯಾನಾಮುಚ್ಚ್ರಾಯ ನಯತಿ ಯದ್ವಚ್ಛಯಾಪಿ ಯೋಗಃ" ಕಿರಾಂ 9-29। 2. ಹೆಚ್ಚು ಬಳಕೆ, ಅಧಿಕ ಪರಿಚಯ. "ಆದ್ರೆತ್ವಾದತಿಶಯಿನಿಮುಪೇಯವದ್ಧಿಃ ಸಂಸಕ್ತಿ ಭೂಮಪಿ ಭೂರಿಸೋವಭೂತಃ" ಮಾಘಂ 6-69। 3. ಆಸಕ್ತಿ, ಶ್ರದ್ಧೆ. 4. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಿ ಕಟ್ಟುವುದು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕೂಡಿಸುವುದು.

**ಸಂಸದ್ ಸಂಸದ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸಭೆ, ಕಾರ್ಯಕಲಾಪಗಳ ಪರಿಶೀಲನೆಗಾಗಿ ಜನರು ಒಟ್ಟುಗೂಡುವುದು. ಸಮ್ಯಕ್ ಸಿದ್ಧಾಂತಸ್ಥಾಮ್ — ಸಮ್ + ಪದ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) "ವಿವಪ್" (ವಾಂ 3-3-100)। "ತದ್ಭೂತಂ ಸಂಸದಿ ರಾತ್ರಿವೃತ್ತಂ ಪ್ರಾತಃಪ್ರಜೇಮ್ಯೋ ನೃಪತಿಃ ಶಶಂಸ" ರಘುಂ 16-24। 2. ನ್ಯಾಯಾಲಯ, ನ್ಯಾಯಾಧೀಶರ ಸಭೆ. "ಅಪಹ್ಲವೇಷಮರ್ಣಸ್ಯ ದೇಹೀತ್ಯುಕ್ತಸ್ಯ ಸಂಸದಿ" ಮನುಂ 6-52।

**ಸಂಸರಣ ಸಂಸರಣ (ನಂ)** 1. ರಾಜಧಾನಿಗೆ ಹೋಗುವ ವಿಶಾಲವಾದ (ಮುಖ್ಯ) ರಸ್ತೆ. ಸಂಖ್ಯ ಸರತ್ಯನೇನ — ಸಮ್ + ಸ (ಗತೌ) "ಲ್ಯು+ಠ್" (3-3-119)। "ಪಂಟಾಪಃ ಸಂಸರಣಮ್" ಅಮಂ 1. 2. ಅಡ್ಡಿ ಆತಂಕಗಳಿಲ್ಲದೆ ಸೈನ್ಯದ ಗಮನ, ತಡೆಯಿಲ್ಲದೆ ಸೈನ್ಯವು ಹೋಗುವುದು. 3. ಪ್ರಾಣಿಗಳು ಪದೇ ಪದೇ ಜನ್ಮತಾಳುವುದು, ಪುನರ್ಜನ್ಮ ಪಡೆಯುವುದು. 4. ಯುದ್ಧದ ಪ್ರಾರಂಭ. 5. ಸಂಸಾರ. "ಪುಂಸೋ ಭವೇದ್ವಹಿ ಸಂಸರಣಾಪವಗಸ್ತ್ವಯಜನಾಭ ಸದೃಪಾಸನಯಾ ಮತಿಃ ಸ್ಯಾತ್" ಭಾಗಂ 10-40-20। 6. ಗಮನ, ಚಲಿಸುವುದು, ಹೋಗುವುದು. 7. ನಗರದ ಮಹಾದ್ವಾರದ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಯಾತ್ರಾರ್ಥಿಗಳಿಗಾಗಿ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ವಸತಿ.



ಸಂಸರತ್ ಸಂಸರತ್ (ವಿಂ) ಸರಿಯಾಗಿ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ.

ಸಂಸರ್ಗ ಸಂಸರ್ಗ (ಪುಂ) 1. ಸಂಬಂಧ, ಸಂಪರ್ಕ. ಸಮ್ + ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) "ಛ" (3-3-19). "ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರೇಣ ಸಂಸರ್ಗಿನ್ ವ್ಯಾನೇನಾನಿಶ್ವರಾನ್ ಗುಣಾನ್" ಮನುಂ 6-92. 2. ಸಹವಾಸ, ಬಡನಾಟ, ಜೊತೆ. "ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯಾ ಸುರಾಪಾನಂ ಸ್ತೇಯಂ ಗುರ್ವಜ್ಞನಾಗಮಃ | ಮಹಾಂತಿ ಪಾತಕಾನ್ಯಾಹುಃ ಸಂಸರ್ಗಶ್ಚಾಪಿ ತೈಃ ಸಹ" ಮನುಂ 11-44. 3. ಹೆಚ್ಚು ಪರಿಚಯ, ಹೆಚ್ಚು ಬಳಕೆ. 4. ಸಾಮೀಪ್ಯ. 5. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು, ಸಮಾಗಮ (ಪರಸ್ಪರ).

ಸಂಸರ್ಗಿನ್ ಸಂಸರ್ಗಿನ್ (ವಿಂ) ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ. ಸಂಸರ್ಗೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ—"ಇನಿಃ" (4-2-114). "ಸುಮಗ-ಸಲಿಲಾವಗಾಹಾಃ ಪಾಟಲಿಸಂಸರ್ಗಿಸುರಭಿವನವಾತಾಃ" ಶಾಕುಂ 1-31.

ಸಂಸರ್ಪ ಸಂಸರ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನಡೆಯುವುದು, ಸರಿಯಾಗಿ ನಡೆಯುವುದು. ಸಮ್ + ಸೃಲ್ (ಗತೌ) "ಅ" (3-1-134). 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು.

ಸಂಸರ್ಪಣ ಸಂಸರ್ಪಣ (ನಂ) 1. ಸರಿಯಾಗಿ ಮುಂದೆ ಹೋಗುವುದು. 2. ಸರಿಯಾಗಿ ಮುಂದೆ ಹರಡುವುದು, -ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಸೃಲ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

ಸಂಸರ್ಪಣೀಯ ಸಂಸರ್ಪಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನಡೆಯುವ. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನಡೆಯಬೇಕಾದ. ಸಮ್ + ಸೃಲ್ (ಗತೌ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-114). "ತವ್ಯಃ" | -ಸರ್ಪವ್ಯಃ.

ಸಂಸರ್ಪಿನ್ ಸಂಸರ್ಪಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಹರಡಿಕೊಂಡು ಹೋಗುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರಸರವಾಗುತ್ತಿರುವ, ಮುಂದಕ್ಕೆ ವ್ಯಾಪಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಸೃಲ್ (ಗತೌ) "ಞಿಃ" (3-1-134). "ಸಂಸರ್ಪಿಭಿಃ ಪೃಥಿವೀ ಗೌರಿಕರೇಣುರಾಗೈಃ" ಮಾಘಂ 4-39. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನಡೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದ. 3. ಮುಂದೆ ಸರಿಯುವ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಹೋಗುತ್ತಿರುವ. "ಕಪಿಲಸಂಸರ್ಪಿಶಿಖಃ ಸ ತಸ್ಯಾ ಮುಹೂರ್ತಕರ್ಣೋತ್ಪಲತಾಂ ಪ್ರಪೇದೆ" ಕುರ್ಮಾಂ 6-61.

ಸಂಸಾರ ಸಂಸಾರ (ಪುಂ) (ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತ ಮತದಲ್ಲಿ) 1. ಮನುಷ್ಯನ ಪುಣ್ಯ ಪಾಪಕೃತ್ಯಗಳ ಫಲವಾಗಿ ಪೂರ್ವ ಪೂರ್ವ ದೇಹಗಳ ನಾಶವಾಗಿ ಮುಂದು ಮುಂದಿನ ದೇಹಗಳನ್ನು ಪಡೆದು ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ ಜನ್ಮತಾಳುವ ಅವಸ್ಥೆಯ ಪ್ರವಾಹ, ಜನ್ಮಾದಿ ಚಕ್ರಪರಿಭ್ರಮಣೆಯಲ್ಲಿ ಸಿಲುಕಿ ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ ಪುನಃ ಪುನಃ ಜನ್ಮತಾಳುವುದು.

ಸಂಸರತಿ ಪುರುಷೋಽಸ್ಮಿನ್ — ಸಮ್ + ಸೃ (ಗತೌ) "ಛ" (3-3-121). ಅನೇಕ ವಿಧ ಕ್ಲೇಶ ಪರಂಪರೆಗಳಿಗೆ ಆಕರವಾದ ಈ ಸಂಸಾರಸಾಗರದಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿ ನಿರಂತರ ಕ್ಲೇಶಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತ ಪರಿತಪಿಸುತ್ತಿರುವವನು ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲಿ ಅಚಲವಾದ ಭಕ್ತಿ ಮತ್ತು ಶರಣಾಗತಿಗಳಿಂದ ಅವನ ಕೃಪೆಯನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿ ಈ ಕ್ಲೇಶಗಳಿಂದ ಮುಕ್ತಿಪಡೆಯುವನು. "ಸಂಸಾರಸಾಗರಂ ಧೋರಮನಂತಕಲಶಭಾಜನಮ್ | ತ್ವಾಮೇವ ಶರಣಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ನಿಶ್ಚರಂತಿ ಮನಃಪಿಞಃ" || "ತೃಣಾತೋ ಮದನಪವನೋಽದ್ಭುತಮಾಹೋಮಿಮಾಲೇ ದಾರಾವತೇ ತನಯಸಹಜಗ್ರಾಹಸಂಭಾಕುಲೇ ಚ | ಸಂಸಾರಾಖ್ಯೇ ಮಹತಿ ಜಲಧೌ ಮಜ್ಜತಾಂ ನಸ್ತಿಧಾಮನ್ ಪಾದಾಮ್ಭೋಜೇ ವರದ ಭವತೋ ಭಕ್ತಿರ್ನಾವಂ ಪ್ರಯಚ್ಛ" ಮುಕ್ತಂ 1. "ಸಂಸಾರಸಾಗರನಿಮಜ್ಜನಮುಹ್ಯಮಾನಂ ದೀನಂ ವಿಲೋಕಯ ವಿಭೋ ಕಣ್ಣಾನಿವೇ ಮಾಮ್" | 2. ಸ್ಥೂಲಸೂಕ್ಷ್ಮ ರೂಪದಿಂದ ಅನಾದಿಕಾಲದಿಂದ ಅನುಸರಿಸಬಂದಿರುವ ವಿಪರೀತ ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ಪ್ರಕೃತಿ ಸಂಬಂಧ. 3. ಕರ್ಮ ಲಬ್ಧವಾದ ಅಚಿತ್ಸಂಬಂಧ. 4. ಪ್ರಪಂಚ, ಜಗತ್ತು, ಕೃಮಿಕೇಟಾದಿ ಬ್ರಹ್ಮಪರ್ಯಂತ ದೇವ ತೀರ್ಥ ಮನುಷ್ಯ ಮೊದಲಾದ ನಾನಾವಿಧ ಪ್ರಾಣಿವರ್ಗದ ಉತ್ಪತ್ತಿ ಜೀವನ ನಿಧನ ಆಯಾ ದೇಶಕಾಲೋಚಿತವಾದ ಶರೀರ ಪ್ರಾಪ್ತಿ ಮತ್ತು ಆಯಾ ಶರೀರಾನುಗುಣವಾದ ಸುಖ ದುಃಖಗಳ ಸಂವೇದನ ಮೊದಲಾದ ವ್ಯಾಪಾರ ಪ್ರವಾಹ. "ಅಸಾರಂ ಸಂಸಾರಂ ಪರಿಮುಚಿತರತನಂ ತ್ರಿಭುವನಮ್" ಮಾಲತೀಂ 4-30. "ಸಂಸಾರಸಿಂಧಾವನುಬಿಂಬಮತ್ರ ಜಾಗತಿ ಜಾನೇ ತವ ವೀರಸೇನಿಃ" ನೆವಂ 6-46. "ಪರಿವರ್ತಿತಿನಿ ಸಂಸಾರೇ ಮೃತಃ ಕೋ ವಾ ನ ಜಾಯತೇ" ಭರ್ತಂ 1-24. 5. (ಅದ್ವೈತಿಗಳ ಮತದಲ್ಲಿ) ಮಿಥ್ಯಾಜ್ಞಾನದಿಂದ ಉಂಟಾದ ಸಂಸಾರ ರೂಪವಾದ ವಾಸನೆ, ತಮ್ಮ ತಮ್ಮ ಅದೃಷ್ಟದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಪುನರ್ಜನ್ಮ. ಈ ಕ್ಲೇಶಕರವಾದ ಸಂಸಾರವೇ ಅಜ್ಞಾನ ಅವಿದ್ಯೆ. "ಪುರುಷಃ ಸ್ವರ್ಗನರಕಮಾರ್ಗಯೋಃ ಯೇನ ಸರತಿ ಸ ಸಂಸಾರಃ" ಸಂ ದಂ ಸಂ. ಈ ಅವಿದ್ಯೆಯಿಂದ ಅಹಂ ಕರ್ತಾ ಅಹಂ ಭೋಕ್ತಾ ಅಹಂ ಸುಖಿ ಅಹಂ ದುಃಖಿ ಅಹಂ ಜಾನಾಮಿ ಇವೇ ಮೊದಲಾದ ಅಹಂಕಾರ ಮಮಕಾರಗಳಿಂದ ಜೀವಾತ್ಮನು ಕರ್ತೃತ್ವ ಭೋಕ್ತೃತ್ವಾದಿ ಧರ್ಮಗಳುಳ್ಳವನೆಂದು ತಿಳಿಯುತ್ತಾನೆ. "ಅಹಂ ಕರ್ತಾ ಸುಖಿ ದುಃಖಿ ಕೃಶಃ ಸ್ಥೂಲೇತಿ ಯಾ ಮತಿಃ | ಸಾ ಚಾಹಂಕಾರಕರ್ತೃತ್ವಾತ್ ಆತ್ಮನ್ಯಾರೋಪ್ಯತೇ ಜನಃ | ತಾಯಿ ತಂದೆ ಸುಹೃತ್ತು ಸಹೋದರರು ಪತ್ನಿ ಇವರೆಲ್ಲರ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಸಂತೋಷಪಡುತ್ತ ಉತ್ತರಕ್ಷಣದಲ್ಲೇ ಈ ಸಂಸಾರಸಾಗರದಿಂದ ಉತ್ತೀರ್ಣನಾಗಲು ಸಾಧ್ಯ



ಎಲ್ಲದೆ ಮರುಗುತ್ತ, ಅಪಾರ ಕಷ್ಟಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸಿ ಈ ಭವಸಾಗರ ಚಕ್ರಕ್ಕೆ ಸಿಲುಕಿ ಸಂಕಟಪಡುತ್ತಿದ್ದ ಜೀವನು ಮೋಕ್ಷಸಾಧನವಾದ ಜ್ಞಾನವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿ ಇದರಿಂದ ಮುಕ್ತನಾಗುವನು. "ಪಿತೃಮಾತೃಸುಹೃದ್ಭ್ರಾತೃಕಲತ್ರಾದಿಕ್ರತೇನ ಚ | ಹೃಟೋಽಸಕ್ತತಥಾ ದೈನ್ಯಮಶ್ರುಪೂರ್ಣಾನನೋ ಗತಃ | एवं ಸಂಸಾರಚಕ್ರೋಽಸ್ಮಿನ್ ಭ್ರಮತಾ ತಾತ ಸಂಕಟಃ | ಜ್ಞಾನಮೇತನ್ಮಯಾ ಪ್ರಾಪ್ತಂ ಮೋಕ್ಷಸಂಪ್ರಾಪ್ತಿಕಾರಣಮ್" ಮಾರ್ಕಂ | "ಅಸ್ಮಾದ್ವಿಜಾಯತೇ ವಿಶ್ವಮತ್ರೈವ ಪರಿಲೀಯತೇ | ಅಮಾಯಿ ಮಾಯಯಾ ಬದ್ಧಃ ಕರೋತಿ ವಿವಿಧಾಸ್ತನುಃ" ಕೂರ್ಮಪುಂ | 6. (ದ್ವೈತಮತದಲ್ಲಿ) ಭೂತ ಸಂಬಂಧವೇ ಸಂಸಾರ. "ಭೂತಂವಸ್ತು ಸಂಸಾರೋ ಮುಕ್ತಿರ್ನಿರ್ಮಲೋ ವಿಮೋಚನಮ್" ವರಾಹಪುಂ |

**ಸಂಸಾರಗುರು ಸಂಸಾರಗುರು** (ಪುಂ) ಕಾಮದೇವ, ಮನ್ಮಥ. ಸಂಸಾರಸ್ಯ ಗುರುಃ |

**ಸಂಸಾರಚಕ್ರ ಸಂಸಾರಚಕ್ರ** (ನಂ) ಪುನರ್ಜನ್ಮ, ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಹುಟ್ಟುವುದು ಮತ್ತು ಮೃತಿ ಹೊಂದುವುದು.

**ಸಂಸಾರಮಾರ್ಗ ಸಂಸಾರಮಾರ್ಗ** (ಪುಂ) ಯೋಗಿ, ಜೀವನು ಈ ಜಗತ್ತಿಗೆ ಬಂದು ಸೇರುವ ಮಾರ್ಗ. ಸಂಸಾರಸ್ಯ ಮಾರ್ಗಃ |

**ಸಂಸಾರಮೋಕ್ಷಣ ಸಂಸಾರಮೋಕ್ಷಣ** (ನಂ) 1. ಸಂಸಾರ ದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ. ಸಂಸಾರಸ್ಯ ಮೋಕ್ಷಣಮ್ | (ವಿಂ) 2. ಸಂಸಾರದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿಸುವ. ಸಂಸಾರಸ್ಯ ಮೋಕ್ಷಣಂ ಯಸ್ಮಾತ್ |

**ಸಂಸಾರಿನ್ ಸಂಸಾರಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮನ ಸೃಷ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿದ ಮನುಷ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳು, ಹಸ್ತ, ಪಾದಾದಿ ಅವಯವಗಳುಳ್ಳ ಪ್ರಾಣಿಗಳು, ಇಂದ್ರಿಯ ವ್ಯಾಪಾರವುಳ್ಳ ಪ್ರಾಣಿಗಳು. 2. ಜನನ ಮರಣಾದಿ ವ್ಯಾಪಾರವುಳ್ಳ ಪುತ್ರಕಳತ್ರಾದಿ ಸಹಿತನಾದ ಮನುಷ್ಯ, -ಪ್ರಾಣಿ. ಸಂಸಾರೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಛನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) | 3. ಪುಣ್ಯ ಪಾಪಕೃತ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡುವ ದೇಹವನ್ನು ಪಡೆದಿರುವವನು. 4. ಜೀವಾತ್ಮ.

**ಸಂಸಿದ್ಧ ಸಂಸಿದ್ಧ** (ವಿಂ) 1. ಮೋಕ್ಷ ಹೊಂದಿದವನು, ಮುಕ್ತಿ ಪಡೆದವನು. 2. ಸಂಪೂರ್ಣ ಫಲವನ್ನು ಹೊಂದಿದ ವನು. ಸಮ್ + ಪಿಠು (ಸಂರಾಡೌ) "ಕ್ವಃ" (೩-೪-೭೨) |

**ಸಂಸಿದ್ಧಿ ಸಂಸಿದ್ಧಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಕೃತಿ, ಸ್ವಭಾವ. ಸಮ್ + ಪಿಠು (ಸಂರಾಡೌ) "ಕ್ವಿನ್" (೩-೩-೧೪) | 2. ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ, ಪರಮಸಿದ್ಧಿ. "ಮಾಮೃತೇ ಪುನರ್ಜನ್ಮ ದುಃಖಾಲಯಮಶಾಶ್ವತಮ್ | ನಾನ್ಯುವಂತಿ ಮಹಾತ್ಮಾನಃ ಸಂಸಿದ್ಧಿ ಪರಮಾಂ ಗತಾಃ" ಗೀತಾ ೮-೧೫ | 3. ಪ್ರಯೋಜನ, ಫಲ. "ಸ್ವಾನುಚಿತಸ್ಯ

ಧರ್ಮಸ್ಯ ಸಂಸಿದ್ಧಿರ್ಹರಿತೋಪಣಮ್" ಭಾಗಂ ೧-೨-೧೩ | 4. ಉದ್ಭವಾದ ಹೆಂಗಸು, ಕೋಪಸ್ವಭಾವದ ಹೆಂಗಸು. "ಸಂಸಿದ್ಧಿಃ ಪ್ರಕೃತೌ ಸಿದ್ಧೌ ಮದೋಗ್ರಾಯಾಮಪಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ |

**ಸಂಸೂಚನ ಸಂಸೂಚನ** (ನಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸೂಚಿಸುವುದು, ತಿಳಿಸುವುದು. 2. ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿ ತಿಳಿಸುವುದು, ಸುಳಿವು ಕೊಡುವುದು. ಸಮ್ + ಸೂಚ (ಪೇಶುನ್ಯ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |

**ಸಂಸೂಚಯತ್ ಸಂಸೂಚಯತ್** (ವಿಂ) ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿ ತಿಳಿಸು ತ್ತಿರುವ, ಸುಳಿವು ಕೊಡುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಸೂಚ (ಪೇಶುನ್ಯ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |

**ಸಂಸೂಚ್ಯಮಾನ ಸಂಸೂಚ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿ ತಿಳಿಯಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿ ಸುಳಿವು ಕೊಡು ತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಸೂಚ (ಪೇಶುನ್ಯ) + ಣಿಕ್ ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) |

**ಸಂಸೃತಿ ಸಂಸೃತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಸಾರ, ಜನ್ಮ ಮರಣ ರೂಪ ವಾದ ಪ್ರವಾಹ, ಪುಣ್ಯಪಾಪಕೃತ್ಯಗಳ ಫಲವಾದ ಪುನರ್ಜನ್ಮ. ಸಮ್ + ಸೃ (ಗತೌ) "ಕ್ವಿನ್" (೩-೩-೧೪) | ಮುಂತಾದ "ಸಂಸಾರ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

**ಸಂಸೃಷ್ಟ ಸಂಸೃಷ್ಟ** (ವಿಂ) 1. ಆಸ್ತಿಯ ಪಾಲನ್ನು ಪಡೆದು ಮತ್ತೆ ತಂದೆ ಸಹೋದರ ಪಿತೃವ್ಯ (ತಂದೆಯ ಸಹೋದರ) ಇವರೊಡನೆ ಒಂದೇ ಕಡೆ ವಿಶ್ವಾಸದಿಂದ ಇರುವವನು. "ವಿಮಕ್ತೋ ಯಃ ಪುನಃ ಪಿತ್ರಾ ಭ್ರಾತ್ರಾ ಚೈಕತ್ರ ಸಂಸ್ಥಿತಃ | ಪಿತೃವ್ಯೇಣಾಥವಾ ಪ್ರೀತ್ಯಾ ಸ ತು ಸಂಸೃಷ್ಟಃ ಉಚ್ಯತೇ" | 2. ಸೃಷ್ಟಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟವನು. 3. ವಾಂತಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಶುದ್ಧ ನಾದವನು. ಸಮ್ + ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) "ಕ್ವಃ" (೩-೨-೧೦೨) | (ವಿಂ) 4. ಸಂಸರ್ಗ. 5. ಬೆರೆತಿರುವ, ಅನೇಕ ವಿಷಯ ಗಳು ಅಥವಾ ವಸ್ತುಗಳೊಡನೆ ಮಿಶ್ರವಾಗಿರುವ. "ಇಮಶ್ಚಯಮಾಣೋ ಮಧುಜಾಲಕೋ ತರೋಗಜೇನ ಗಂಧಂ ಕಠತಾ ವಿಧುನೀತೇ | ಕ್ಷುಧ್ರಾಭಿರಕ್ಷುಧ್ರತರಾಭಿರಾಕುಲಂ ವಿದಶ್ಯಮಾನೇನ ಜನೇನ ದುಃಖೇ" ಇಲ್ಲಿ ಸ್ವಭಾವೋಕ್ತೃಲಂಕಾರವು ಉಪಮಾಲಂಕಾರದೊಡನೆ ಸಂಸೃಷ್ಟ.

**ಸಂಸೃಷ್ಟಿ ಸಂಸೃಷ್ಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಿಶ್ರಣ, ಬೆರೆಕೆ. ಸಮ್ + ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) "ಕ್ವಿನ್" (೩-೩-೧೪) | ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾದ ಎರಡು ವಿಷಯಗಳ ಬೆರೆಕೆ, ಮಿಶ್ರಣ. "ವಿಪುಲಕಮಪಿ ಯೋವನೋ- ದ್ವತಾನಾಂ ವನಪುಲಕೋದಯಕೋಮಲಂ ಚಕಾಶೇ | ಪರಿಮಲಿತಮಪಿ ಪ್ರಿಯೆಃ ಪ್ರಕಾಶಂ ಕುಚಯುಗಮುಜ್ಜವಲಮೇವ ಕಾಮಿನೀನಾಮ್" ಇಲ್ಲಿ ಎರಡು ವಿರೋಧಾಭಾಸಾಲಂಕಾರಗಳು ಸೃಷ್ಟವಾಗಿ ಕಾಣು ವುದರಿಂದ ಸಂಸೃಷ್ಟಿ.



ಸಂಸ್ಕೃತಿ ಸಂಸ್ಕೃತಿ (ವಿಂ) 1. ಮತ್ತೆ ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿ ಕೊಂಡಿರುವವನು, ಅಸ್ತಿಯ ಭಾಗಾನಂತರ ಎಲ್ಲರೊಡನೆ ಮತ್ತೆ ಒಂದೇ ಕುಟುಂಬಕ್ಕೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವವನು. 2. ಪಾಲುದಾರ, ಹಿನ್ನೆದಾರ.

ಸಂಸ್ಕೃತ ಸಂಸ್ಕೃತ (ವಿಂ) ಉಪನಯನಾದಿ ಸಂಸ್ಕಾರಗಳನ್ನು ಮಾಡುವವನು. ಸಂಸ್ಕರೋತಿ — ಸಂ + ಡ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ತೃತ್" (3-1-133). "ಏಷಾ ವಸಿಷ್ಠಶಿಷ್ಯಾಣಾಂ ರಘುಣಾಂ ವಂಶನಂದಿನಿ | ಕಷ್ಠಂ ಸೀತಾಪಿ ಸುತಯೋಃ ಸಂಸ್ಕರ್ತಾರಿ ನ ವಿನಂದತಿ" ಉಂ ರಾಂ 9-13.

ಸಂಸ್ಕಾರ ಸಂಸ್ಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಪರಿಶುದ್ಧವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು, ದೋಷವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸಿ ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು. ಸಂ + ಡ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ವತ್" (3-3-14). 2. ಮನುಷ್ಯನಾಗಿ ಜನಿಸಿದ ಜೀವಾತ್ಮನಿಗೆ ಮಾಡುವ ಜಾತಕರ್ಮ ನಾಮಕರಣ ಮೊದಲಾದ ಶುದ್ಧಿ. "ದಿಲಿಪ-ಸುನುರ್ಮಣಿರಾಕರೋದ್ಭವಃ ಪ್ರಯುಕ್ತಸಂಸ್ಕಾರ ಇವಾಧಿಕಂ ಬಭೌ" ರಘುಂ 3-14. ಈ ಸಂಸ್ಕಾರಗಳು 16 ವಿಧ. (1) ಗರ್ಭಾಧಾನಮ್ (2) ಪುಸವನಮ್ (3) ಸೋಮಂತೋನ್ನಯನಮ್ (4) ಜಾತಕರ್ಮ (5) ನಾಮಕರಣಮ್ (6) ಉಪನಿಷ್ಕರಣಮ್ (7) ಅನ್ನಪ್ರಾಶನಮ್ (8) ಚೌಲಮ್ (9) ಉಪನಯನಮ್ (10)-(13) ವ್ರತಚತುಷ್ಟಯಮ್ (14) ಸಮಾವರ್ತನಮ್ (15) ವಿವಾಹಃ ಮತ್ತು (15) ಅನ್ಯೇಷಿಃ | ಇವು ಮೋಡಶಕರ್ಮ (ಸಂಸ್ಕಾರ) ಗಳು. ಗರ್ಭೋಪ ಘಾತದಿಂದ ಉಂಟಾದ ದೋಷವನ್ನು ಈ ಸಮಾವರ್ತನಾಂತಸಂಸ್ಕಾರಗಳು ಪರಿಹರಿಸಿ ಶುದ್ಧಮಾಡುವುವು. 3. (ಬೌದ್ಧಮತದಲ್ಲಿ) ರಾಗ ದ್ವೇಷ ಮೋಹ ಧರ್ಮಾಧರ್ಮಗಳು. 4. (ವೈಶೇಷಿಕ ಮತದಲ್ಲಿ) ವೇಗ ಭಾವನಾ ಮತ್ತು ಸ್ಥಿತಿ ಸ್ಥಾಪಕ ಎಂಬ ಮೂರು ವಿಧ ಸಂಸ್ಕಾರಗಳು, 24 ಗುಣಗಳಲ್ಲಿವೆ. 5. (ವೈಯಾಕರಣ ಮತದಲ್ಲಿ) ವ್ಯಾಕರಣದಿಂದ ಉಂಟಾದ ಶುದ್ಧಿ. "ಸಂಸ್ಕಾರವತ್ಯೇವ ಗಿರಾ ಮನೀಷಿ ತಯಾ ಸ ಪೂತಶ್ಚ ವಿಭೂಷಿತಶ್ಚ" ಕುಮಾಂ 1-24. 6. ವಸ್ತುಗಳಿಗೆ ಅತಿಶಯಾಧಾನ, ಹೆಚ್ಚು ಗುಣವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುದು. ಅಭರಣಗಳಿಗೆ ಮೆರುಗು ಕೊಡುವುದು ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಒಗೆದು ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು ಕನ್ನಡಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಕೊಳೆ ತೆಗೆಯುವುದು ಧಾನ್ಯಗಳನ್ನು ಯಾಗಾದಿಗಳಿಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾಗುವಂತೆ ವೈದಿಕ ಮಂತ್ರದಿಂದ ಪ್ರೋಕ್ಷಿಸುವುದು—ಇವು ಗುಣಾಧಾಯಕ ಸಂಸ್ಕಾರಗಳು. 7. (ಅಲಂಕಾರಿಕರು) ಶಾಸ್ತ್ರಾಭ್ಯಾಸದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯ. 8. ಕರ್ಮದ ವಾಸನೆ, ಜನ್ಮಾಂತರ ಸ್ಮೃತಿಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ ವಾಸನೆ. "ಕಲಾನ್ತುಮೇಯಾಃ

ಪ್ರಾರಮ್ಭಾಃ ಸಂಸ್ಕಾರಾಃ ಪ್ರಾಕ್ಷನಾ ಇವ" ರಘುಂ 1-20. 9. ಸ್ಮೃತಿಶಕ್ತಿ. 10. ನೈರ್ಮಲ್ಯ, ಶುದ್ಧತೆ. 11. ತಾಪ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ಶರೀರಾತ್ಮ ಶುದ್ಧಿ.

ಸಂಸ್ಕಾರಜ ಸಂಸ್ಕಾರಜ (ವಿಂ) ಸಂಸ್ಕಾರದಿಂದ ಉಂಟಾದ.

ಸಂಸ್ಕಾರಪೂತ ಸಂಸ್ಕಾರಪೂತ (ವಿಂ) ಗರ್ಭಾಧಾನ ಪುಂಸುವನ ಮೊದಲಾದ ಕರ್ಮಗಳಿಂದ ಪರಿಶುದ್ಧನಾದವನು. ಸಂಸ್ಕಾರೇಣ ಪೂತಃ |

ಸಂಸ್ಕಾರಹೀನ ಸಂಸ್ಕಾರಹೀನ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಾತ್ಯ, ಗರ್ಭಾಧಾನಾದಿ ಯಾವ ಸಂಸ್ಕಾರವೂ ಇಲ್ಲದವನು. 2. ವ್ಯಾಕರಣ ಶುದ್ಧಿಯಿಲ್ಲದ. ಸಂಸ್ಕಾರೇಣ ಹೀನಃ ರಹಿತಃ | "ಸಂಸ್ಕಾರೇಣ ಯಥಾ ಹೀನಾಂ ವಾಚಮರ್ಯಂತಿರಂ ಗತಾಮ್" |

ಸಂಸ್ಕೃತ ಸಂಸ್ಕೃತ (ನಂ) 1. ದೇವವಾಣಿ, ದೇವಭಾಷೆ, ವ್ಯಾಕರಣ ಶಾಸ್ತ್ರದಿಂದ ಶುದ್ಧವಾದ ಭಾಷೆ. ವ್ಯಾಕರಣಾನು-ಶಾಸನೇನ ಸಮ್ಯಕ್ ಕೃತಮ್—ಸಂ + ಡ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102). ಸಂಸ್ಕೃತ ಭಾಷೆಯು ವ್ಯಾಕರಣ ಲಕ್ಷಣದಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದರಿಂದ ಇದು ಸಂಸ್ಕೃತವಾಯಿತು. "ಸಂಸ್ಕೃತಂ ನಾಮ ದೇವೀ ವಾಗ್ವಾಲ್ಯಾತಾ ಮಹರ್ಷಿಭಿಃ" ಕಾವ್ಯಾಂ 1-33. (ವಿಂ) 2. ಮಂತ್ರದಿಂದ ಶುದ್ಧವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಶುಕ್ಲಮಣಿ ಪ್ರಣಯನಾದಿಸಂಸ್ಕೃತೇ" ಮಾಘಂ 14-22. 3. ಪಾಕಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಾಕಾದಿಗಳಿಂದ ಗುಣಾಧಿಕ್ಯವುಂಟು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಂಸ್ಕೃತಂ ಭಕ್ಷಾಃ (4-2-16). 4. ಕೃತ್ರಿಮವಾದ, ಯಾವುದಾದರೂ ವಸ್ತುಗಳಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ. 6. ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 7. ವಿವಾಹ ಮೊದಲಾದ ಸಂಸ್ಕಾರ ಹೊಂದಿದವನು, ಸಂಸ್ಕಾರ ಧರ್ಮವನ್ನು ಕೈಗೊಂಡವನು. 8. ಶುದ್ಧನಾದ ವಿದ್ಯಾವಂತ, ಅಜ್ಞಾನಾದಿ ಸಮಸ್ತ ದೋಷಗಳನ್ನೂ ತೊಳೆದು ಶುದ್ಧನಾದವನು. "ಸಂಸ್ಕೃತಃ ಕೃತ್ರಿಮೇ ಶಸ್ತೇ ಭೂಷಿತೋಽನ್ಯಲಿಂಗಕಃ | ಕಲಿಬೇ ತು ಲಕ್ಷಣೋಪೇತೇ" ಮೇದಿಂ | "ಸಂಸ್ಕೃತಂ ತು ವಿಭೂಷಿತೇ | ಕೃತ್ರಿಮೇ ಲಕ್ಷಣೋಪೇತೇ ಪ್ರಶಸ್ತೇ ನಿರ್ಮಲೀಕೃತೇ" ನಾನಾರ್ಯಂ |

ಸಂಸ್ಕೃತಿ ಸಂಸ್ಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. "ಸಂಸ್ಕಾರ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಸಂ + ಡ್ ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94). 2. ಸಂಪ್ರದಾಯ, ಪದ್ಧತಿ, ಅವರವರಿಗೆ ಸೇರಿದ ಆಚಾರ, ವ್ಯವಹಾರ, ಆಹಾರ ಆಚಾರ ವೇಷ ವ್ಯವಹಾರ ನಡತೆ ಮುಂತಾದ ಸಂಪ್ರದಾಯ. ಇವು ದೇಶ ದೇಶಕ್ಕೂ ಒಂದೊಂದು ಸಮಾಜಕ್ಕೂ ಭಿನ್ನ ಭಿನ್ನವಾಗಿವೆ. ಸಂಸ್ಕೃತಿ ದೇಶ ದೇಶಕ್ಕೂ ಒಂದೊಂದು ಸಮಾಜಕ್ಕೂ ಭಿನ್ನ ಭಿನ್ನವಾಗಿದ್ದರೂ ಎಲ್ಲ ದೇಶಗಳ ಏಕತೆಗೂ ಸಮಾಜದ ಜೀವನವಿಕಾಸಕ್ಕೂ ಧರ್ಮ ಶ್ರದ್ಧೆ ನೀತಿ ನಿಷ್ಠೆ ಸತ್ಯ



ಭೂತದಯೆ ದೈವಭಕ್ತಿ, ಗುರುಭಕ್ತಿ, ಮಾತಾಪಿತೃಭಕ್ತಿ, ವಿನಯ ಇವು ಸಮಾನವಾದುವು. ಸಂಸ್ಕೃತಿಯು ಸಾತ್ವಿಕ ಜೀವನದ ಒಂದು ವಿಧಾನ. ಇದು ನಮ್ಮ ಭಾರತೀಯ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯ. ನಮ್ಮ ದೇಹದ ಬೆಳವಣಿಗೆಗೆ ಅಹಾರವು ಆಧಾರವಾಗಿರುವಂತೆ ನಮ್ಮ ಅಂತರಂಗದ ವಿಕಾಸಕ್ಕೆ ಇವು ಜೀವಾತುಗಳಾಗಿರುವುವು. ಈ ಅಂತರಂಗ ಶುದ್ಧಿಯು ಇಂದು ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಸರ್ವಶೂನ್ಯವಾಗಿದೆ. ಅದುದರಿಂದ ನಮ್ಮ ಪ್ರಾಚೀನ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ಬೆಳವಣಿಗೆಯು ಇಂದು ಅತ್ಯವಶ್ಯವಾಗಿದೆ.

**ಸಂಸ್ತರ ಸಂಸ್ಕರ** (ಪುಂ) 1. ಶಯ್ಯ, ಹಾಸಿಗೆ. 2. ಯಾಗ, ಯಜ್ಞ.

**ಸಂಸ್ತವ ಸಂಸ್ತವ** (ಪುಂ) 1. ಪರಿಚಯ, ಅನೇಕ ಸಲ ನೋಡಿದ ಗುರುತು. ಸಮ್ + ಷ್ಟು (ಸ್ತುತೌ) "ಅಪ್" (3-3-49). "ಶ್ರುತಿ: ಶ್ರವತ್ಯುನ್ಮದಹಂಸಿನಿ: ಸ್ವನಂ ಗುಣಾ: ಪ್ರಿಯತ್ವೇಽಧಿಕೃತಾ ನ ಸಂಸ್ತವ:" ಕಿರಾಂ 4-24. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೊಗಳುವುದು, ಸರಿಯಾದ ಹೊಗಳಿಕೆ. "ಸಮಾಜಯಿತ್ವಾ ಪರಯಾ ಭಕ್ತಯಾ ಗೃಣತ ಸಂಸ್ತವ:" ಭಾಗಂ 11-13-41.

**ಸಂಸ್ತವಾನ ಸಂಸ್ತವಾನ** (ಪುಂ) 1. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಸಾಮಗಾನ ಮಾಡುವ ಉದ್ಗಾತೃ. ಸಮ್ + ಷ್ಟು (ಸ್ತುತೌ) "ಆನಚ್" (3-2-69). 2. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ. (ವಿಂ) 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೊಗಳುವವನು. 4. ವಾಗ್ವಿ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವವನು.

**ಸಂಸ್ತಾವ ಸಂಸ್ತಾವ** (ಪುಂ) 1. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಸಾಮವೇದಿಗಳು ಗಾನಮಾಡುವ ಸ್ಥಳ. ಸಮೇತ್ಯ ಸ್ತುತವ್ಯತ್ರ ದೇಶೇ ಛಂದೋಗಾ: — ಸಮ್ + ಷ್ಟು (ಸ್ತುತೌ) "ಛನ್" (3-3-31). 2. ಸ್ತುತಿ, ಸ್ತೋತ್ರ, ಹೊಗಳಿಕೆ. "ಸಂಸ್ತಾವಮಿವ ಶೃಣಂತ: ಛಂದೋಗಾನಾಂ ಮಹಾಛವರೇ" ಭट्टಿಂ 9-39.

**ಸಂಸ್ತುತ ಸಂಸ್ತುತ** (ವಿಂ) 1. ಪರಿಚಿತವಾದ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದಿರುವ. ಸಮ್ + ಷ್ಟು (ಸ್ತುತೌ) "ಕ್" (3-2-102). "ಅನೇಕಶ: ಸಂಸ್ತುತಮಪ್ಯನಲ್ಪಾ: ನವಂ ನವಂ ಪ್ರೀತಿರಹೋ ಕರೋತಿ" ಮಾಘಂ 3-31. 2. ಸ್ತುತಿಸಲ್ಲಟ್ಟು. "ಮುನಿಭಿ: ಸಂಸ್ತುತಾ ಭೂಮಿ ಸಂಭವಿಷ್ಯಾಮ್ಯಯೋನಿಜಾ" |

**ಸಂಸ್ತುತಮಾನ ಸಂಸ್ತುತಮಾನ** (ವಿಂ) ಸ್ತುತಿಸಲ್ಲಟ್ಟು ತಿರುವ, ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ. ಸಮ್ + ಷ್ಟು (ಸ್ತುತೌ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (3-2-124).

**ಸಂಸ್ತಾಯ ಸಂಸ್ತಾಯ** (ನಂ) 1. ಗೃಹ, ಮನೆ. ಸಮ್ + ಸ್ತಯ (ಶಬ್ದಸಂಘಾತಯೋ:) "ಛನ್" (3-3-121). "ಸಂಸ್ತುತ-ಪ್ರದೇಶದರ್ಶನಾಸಹಿಷ್ಣೋ: ಮಾಧವಸ್ಯ ಸಂಸ್ತಾಯಂ ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ ಸಹ

ಸುಹೃದ್ಗಣಂ" ಮಾಲತೀಂ 9. (ಪುಂ) 2. ಹರಡುವುದು, ಪ್ರಸರಿಸುವುದು. 3. ಸನ್ನಿವೇಶ, ನೆರೆಹೊರೆಯ ಪ್ರದೇಶ, ಸುತ್ತಮುತ್ತ ಪ್ರದೇಶ. 4. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. "ಸಂಘಾತೇ ಸನ್ನಿವೇಶೇ ಚ ಸಂಸ್ತಾಯ:" ಅಮಂ | "ಸಂಸ್ತಾಯ: ಸನ್ನಿವೇಶೇ ಚ ಸಂಘಾತೇ ವಿಸ್ತೃತಾವಪಿ" ಮೇದಿಂ |

**ಸಂಸ್ಥ ಸಂಸ್ಥ** (ಪುಂ) 1. ಗೂಢಚಾರ. ಸಂತಿಷ್ಠತೇ ಸ್ವಪರ-ರಾಷ್ಟ್ರೇ-ಸಮ್ + ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಕ:" (3-3-31). "ಸಂಸ್ಥಾ: ಸ್ಯು: ಚಾರಸಂಸ್ಥಿತೈ ದತ್ತದಾया: ಶುಭಾಶಾया:" ಕಾಮಂ ನೇಂ | 2. ಒಂದೇ ಕಡೆ ನಿಂತಿರುವವನು, ಎಲ್ಲೂ ಹೋಗದೆ ಒಂದೇ ಕಡೆ ಇರುವವನು.

**ಸಂಸ್ಥಾ ಸಂಸ್ಥಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮರ್ಯಾದೆ, ಗೌರವ, ನ್ಯಾಯ ವಾದ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ. ಸಂತಿಷ್ಠತೇನಯಾ — ಸಮ್ + ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಅಙ್" (3-3-106). "ಸಂಸ್ಥಾ ತು ಮರ್ಯಾದಾ ಧಾರಣಾ ಸ್ಥಿತಿ:" ಅಮಂ | 2. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. "ಸ್ವಂ ವಿಚಿಂತಯ ಚ ಧನುರ್ಧರಾನಮಂ ಪಿಡಿತೋ ದುಹಿತಶುಲ್ಕಸಂಸ್ಥಯಾ" ರಘುಂ 11-36. 3. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಸಾಮ್ಯ. 4. ವ್ಯವಸ್ಥೆ, ಜೀವನ ವ್ಯವಸ್ಥೆ, ಉದ್ಯೋಗ, ಹವ್ಯಾಸ, ಕೆಲಸ, ವೃತ್ತಿ. "ಸರ್ವೇಷಾಂ ಸ ತು ನಾಮಾನಿ ಕರ್ಮಾಣಿ ಚ ಪೃಥಕ್ ಪೃಥಕ್ | ವೇದಶಬ್ದೇಭ್ಯ ಎವಾದೌ ಪೃಥಕ್ಸಂಸ್ಥಾಶ್ಚ ನಿರ್ಮಮೇ" ಮನುಂ 1-21. 5. ಸಮಾಪ್ತಿ, ಕೊನೆ, ಅಂತ್ಯ. 6. ಚತುರ್ವಿಧ ಪ್ರಳಯಗಳು. "ನೈಮಿತ್ತಿಕ: ಪ್ರಾಕೃತಿಕೋ ನಿಯತ ಆತ್ಮನಿಯತಿಕೋ ಲಯ: | ಸಂಸ್ಥೇತಿ ಕವಿಮಿ: ಪ್ರೋಕ್ತಶ್ಚತುರ್ಥಸ್ಯ ಸ್ವಭಾವತ:" | 7. ಒಂದು ಯಾಗ. 8. ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶ, ಪ್ರಳಯ. 9. ಮೃತ್ಯು, ನಿಧನ. 10. ನಾಶ. 11. ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ. 12. ಸ್ಥಿತಿ, ಇರುವಿಕೆ, ಪರಿಸ್ಥಿತಿ. 13. ಆಕಾರ. "ಸಂಸ್ಥಶ್ಚರೇಽವಸ್ಥಿತೇ ಸ್ತ್ರೀ ಸ್ಥಿತೌ ಸಾದೃಶ್ಯನಾಶಯೋ:" ಮೇದಿಂ | "ಸಂಸ್ಥಾ ಸ್ಥಿತೌ ವ್ಯವಸ್ಥಾಯಾಂ ಸಮಾಧ್ಯಾಕಾರ-ಮೃತ್ಯುಬು" ನಾನಾರ್ಥರಂ |

**ಸಂಸ್ಥಾನ ಸಂಸ್ಥಾನ** (ನಂ) 1. ಆಕಾರ, ರೂಪ. ಸಮ್ + ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). "ಸ್ತ್ರೀಸಂಸ್ಥಾನಂ ಚಾಪ್ಸರಸ್ತೀರ್ಥಮಾರಾಧುಕ್ಷಿಪ್ಯೇನಾಂ ಜ್ಯೋತಿರೇಕಂ ಜಗಾಮ" ಶಾಕುಂ 4-30. 2. ಸನ್ನಿವೇಶ, ಸುತ್ತಮುತ್ತ ಇರುವ ಪ್ರದೇಶ. "ಭರ್ತಾರಂ ಲಕ್ಷ್ಮಯೇಶಾ ತು ಸ್ತ್ರೀ ಜಾತಿಗುಣದರ್ಪಿತಾ | ತಾಂ ಶ್ವಮಿ: ಖಾದಯೇದ್ರಾಜಾ ಸಂಸ್ಥಾನೇ ಬಹುಸಂಸ್ಥಿತೇ" ಮನುಂ 6-39. 3. ಚತುರ್ವಿಧ, ನಾಲ್ಕು ರಸ್ತೆಗಳು ಕೊಡುವ ಚೌಕ. 4. ವ್ಯವಸ್ಥೆ. 5. ಮೃತ್ಯು, ಮರಣ. 6. ಚಿಹ್ನೆ, ಗುರುತು. 7. ಒಳ್ಳೆಯ ಪರಿಸ್ಥಿತಿ. 8. ರಾಶಿ, ಗುಂಪು, ಸಮೂಹ.



ಸಂಸ್ಥಾಪಕ ಸಂಸ್ಥಾಪಕ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಇಡುವವನು. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ವ್ಯವಸ್ಥೆಗೊಳಿಸುವವನು. 3. ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವಂತೆ ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವವನು, ಶಾಶ್ವತವಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಡೆಸುವವನು. ಸಮ್ + ಣಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಣಿಚ್ "ಫಲ್" (3-1-133) ।

ಸಂಸ್ಥಾಪನ ಸಂಸ್ಥಾಪನ (ನಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಇಡುವುದು, ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ಸಮ್ + ಣಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । "ಪರಿತ್ರಾಣಾಯ ಸಾಧುನಾಂ ವಿನಾಶಾಯ ಚ ದುಷ್ಕೃತಾಂ" ಧರ್ಮಸಂಸ್ಥಾಪನಾರ್ಥಯಿ ಸಂಭವಾಮಿ ಯುಗೇ ಯುಗೇ" ಗೀತಾ 4-2 । 2. ನಿಯಮಕ್ಕೆ ಒಳಪಡಿಸುವುದು, ವಿಧಿಬದ್ಧವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. "ಪಶ್ಚರಾತ್ರೇ ಪಶ್ಚರಾತ್ರೇ ಪಕ್ಷೇ ಪಕ್ಷೇಷ್ಯವಾ ಗತೇ । ಕುರ್ವೀತ ಚೈವಾಂ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಮಧ್ಯಸಂಸ್ಥಾಪನಂ ನೃಪಃ" ಮನುಂ 6-402 । 3. ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಿ ಇಡುವುದು. -ಸ್ಥಾಪನಾ -ಸ್ಥಾಪನಾ. ಸಮ್ + ಣಾ + ಣಿಚ್ "ಯುಚ್" (3-3-109) । ಚಿತ್ತಶಾಂತಿಯ ಉಪಾಯ, ಮನಸ್ಸಿನ ಸಮಾಧಾನಕ್ಕೆ ಸಾಧನ. "ಸಂಸ್ಥಾಪನಾ ಪ್ರಿಯತಮಾ ವಿರಹಾತುರಾಣಾಮ್" ಮೃಚ್ಛಂ 3-3 ।

ಸಂಸ್ಥಾಪನೀಯ ಸಂಸ್ಥಾಪನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವಂತೆ ಇಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವಂತೆ ಇಡಬೇಕಾದ. 3. ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವಂತೆ ಇಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಸಮ್ + ಣಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) । "ತವ್ಯಃ" । -ಸ್ಥಾಪಯಿತವ್ಯಃ -ಸ್ಥಾಪಯಿತವ್ಯಃ ।

ಸಂಸ್ಥಾಪಯತ್ ಸಂಸ್ಥಾಪಯತ್ (ವಿಂ) ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಣಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-1-133) । "ಸಂಸ್ಥಾಪಯಂತಂ ನಿಯಮೇನ ಧರ್ಮಂ ಪರಂ ವೇದವಿದಾ ವಿದುಸ್ತವಾಮ್" ಯಾದಂ 20-24 ।

ಸಂಸ್ಥಾಪಿತ ಸಂಸ್ಥಾಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಸರಿಯಾಗಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸೇರಿಸಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಣಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102) । 3. ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸಂಸ್ಥಿತ ಸಂಸ್ಥಿತ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಂತಿರುವ. 2. ಸರಿಯಾಗಿ ನಿಂತಿರುವ. ಸಮ್ + ಣಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ್ತಃ" (3-4-92) । "ಆಚ್ಛಾದಿತಾಯ ತ ದಿಗಂಬರಮುಚ್ಚಕೇರ್ಗಾಮಾಕ್ರಮ್ಯ ಸಂಸ್ಥಿತಮುದ್ರವಿಶಾಲಶೃಂಗಮ್" ಮಾಘಂ 4-19 । 3. ಮೃತನಾದ, ನಿಧನಹೊಂದಿದ. "ಸಂಸ್ಥಿತಸ್ಥಾನಪತ್ಯಸ್ಯ ಸಗೋತ್ರಾತ್ಪುತ್ರಮಾಹರೇತ್ । ತತ್ರ ಯದ್ವಿಕ್ಯ-ಜಾತಂ ಸ್ಯಾತ್ ತತ್ತಸ್ಮಿನ್ ಪ್ರತಿಪಾದಯೇತ್" ಮಣುಂ 9-190 ।

4. ಸಮಾಪ್ತಿ ಹೊಂದಿದ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿರುವ. "ಕವಿ ನು ಖಲು ಸಂಸ್ಥಿತೇ ಕರ್ಮಣಿ ಸದಸ್ಯೇರನುಜಾತಃ ಶ್ರಮಕ್ಲಾಂತಮಾತ್ಮನಂ ವಿನೋದಯಾಮಿ" ಶಾಕುಂ 3 ।

ಸಂಸ್ಥಿತ ಸಂಸ್ಥಿತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೃಹ, ಮನೆ, ವಾಸಸ್ಥಾನ. ಸಮ್ಯಕ್ ತಿಷ್ಠತೀತಿ - ಸಮ್ + ಣಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94) । 2. ಸ್ಥಿತಿ, ಇರುವಿಕೆ. "ಯಥಾ ನದೀನದಾಃ ಸರ್ವೇ ಸಾಗರೇ ಯಾಂತಿ ಸಂಸ್ಥಿತೀತಿ" ತಥೈವಾಶ್ರಮಿಣಃ ಸರ್ವೇ ಗೃಹಸ್ಯ ಯಾಂತಿ ಸಂಸ್ಥಿತೀತಿ" ಮನುಂ 6-90 । 3. ಮೃತ್ಯು, ಮರಣ. 4. ಜಗತ್ತಿನ ಪ್ರಳಯ. 5. ಜೀವನದ ಪರಿಸ್ಥಿತಿ. 6. ಸನ್ನಿವೇಶ, ಸುತ್ತಮುತ್ತ ಪ್ರದೇಶ. 7. ಒಟ್ಟುಗೂಡಿ ವಾಸಮಾಡುವುದು. 8. ರಾಶಿ, ಗುಂಪು. 9. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವುದು, ನಿರಂತರವಾಗಿರುವುದು. "ಧರ್ಮಾರ್ಥಿಕಾಮ-ಮೋಕ್ಷಾಣಾಂ ಪ್ರಾಣಾಃ ಸಂಸ್ಥಿತೀತಿಹೇತವಃ । ತಾನಿಷ್ಠತಾ ಕಿಂ ನ ಹತಂ ರಕ್ಷತಾ ಕಿಂ ನ ರಕ್ಷಿತಮ್" ಹಿತೋಂ 1-43 ।

ಸಂಸ್ಪರ್ಶ ಸಂಸ್ಪರ್ಶ (ಪುಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮುಟ್ಟುವುದು, ಸ್ಪರ್ಶ ಮಾಡುವುದು. ಸಮ್ + ಸ್ಪೃಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೆ) "ಘ್" (3-3-16) । "ಸಂಸ್ಪರ್ಶಪ್ರಭವಸುಖೋಪಚೀಯಮಾನೇ ಸರ್ವಾಂಜ್ಞೇ ಕರತಲಲಗನವಲ್ಲಭಾಃ" ಮಾಘಂ 6-6 ।

ಸಂಸ್ಪರ್ಶ ಸಂಸ್ಪರ್ಶ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಾರಣೆ ಗಿಡ, ಮುಳ್ಳುಗಸೆ ಗಿಡ. ಸಮ್ಯಕ್ ಸ್ಪೃಶತಿ - ಸ್ಪೃಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೆ) "ಘ್" (3-3-16) ।

ಸಂಸ್ಪೃಶತ್ ಸಂಸ್ಪೃಶತ್ (ವಿಂ) ಸ್ಪರ್ಶಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಮುಟ್ಟುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಸ್ಪೃಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೆ) "ಶತ್" (3-2-124) ।

ಸಂಸ್ಪೃಷ್ಠ ಸಂಸ್ಪೃಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಪರ್ಶಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ. ಸಮ್ + ಸ್ಪೃಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೆ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102) । "ಯಾಸ್ಯತ್ಯಥ ಶಕುಂತಲೇತಿ ಹೃದಯಂ ಸಂಸ್ಪೃಷ್ಠಮುಕ್ತಕಂಠಯಾ" ಶಾಕುಂ 4-5 । 2. ಮಿಶ್ರವಾದ, ಬೆರಕೆಯಾದ.

ಸಂಸ್ಫೋಟ ಸಂಸ್ಫೋಟ (ಪುಂ) ಯುದ್ಧ, ಕಾಳಗ. ಸಮ್ + ಸ್ಫುಟಿರ್ (ವಿಶರಣೆ) "ಘ್" (3-3-16) ।

ಸಂಸ್ಕರಣ ಸಂಸ್ಕರಣ (ನಂ) ನೆನೆಯುವುದು, ಜ್ಞಾಪಿಸಿ ಕೊಳ್ಳುವುದು. ಸಮ್ + ಸ್ಮ (ಆಧ್ಯಾನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) ।

ಸಂಸ್ಕರಣೀಯ ಸಂಸ್ಕರಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ನೆನೆಯಲ್ಪಡುವ, ಸಮ್ + ಸ್ಮ (ಆಧ್ಯಾನೆ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) । 2. ನೆನೆಯಬೇಕಾದ. 3. ನೆನೆಯಲು ಅರ್ಹವಾದ. "ತವ್ಯಃ" । -ಸಂಸ್ಕರಣೀಯಃ -ಸಂಸ್ಕರಣೀಯಃ ।



ಸಂಸ್ಕರತ ಸಂಸ್ಕರತ (ವಿಂ) ನೆನಪುಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಜ್ಞಾಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್+ಸ್ಮ (ಆಧ್ಯಾನೇ) "ಶತ್" (3-2-124) ।

ಸಂಸ್ಕರಣ ಸಂಸ್ಕರಣ (ನಂ) ನೆನಪುಮಾಡಿಕೊಡುವುದು, ಜ್ಞಾಪಿಸುವುದು. ಸಮ್+ಸ್ಮ (ಆಧ್ಯಾನೇ) +ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) ।

ಸಂಸ್ಕೃತಿ ಸಂಸ್ಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೆನಪು, ಜ್ಞಾಪಣೆ, ಸ್ಮರಣೆ. ಸಮ್+ಸ್ಮ (ಆಧ್ಯಾನೇ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94) । "ರಾಗಿನಾಪಿ ವಿಹಿತಾ ತವ ಭಕ್ತ್ಯಾ ಸಂಸ್ಕೃತಿರ್ಭವ ಭವತ್ಯಭವಾಯ" ಕಿರಾಂ 18-29 ।

ಸಂಹತ ಸಂಹತ (ವಿಂ) 1. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಭದ್ರವಾಗಿ ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವ, ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ಕೂಡಿಕೊಂಡಿರುವ. ಸಂಹನ್ಯತೇ ಸಮ್—ಸಮ್+ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಕ್ತಃ" (3-2-102) । "ಸಂಹತಸ್ತನತಿರಸ್ಕೃತದೃಷ್ಟಿಭ್ರಂಶಮೇವ ನ ದುಕೂಲಮಪಶ್ಯತ್" ಮಾಘಂ 10-93 । 2. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕಲೆತಿರುವ, ಜೊತೆಗೂಡಿರುವ, ಒಡಗೂಡಿರುವ. "ಸಂಹತಾಸ್ತು ಹರನ್ಯತೇ ಮಮ ಜಾಲಂ ವಿಹೃಜ್ಞಮಾಃ" ಹಿತೋಂ 1-36 । 3. ಪರಸ್ಪರ ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿರುವ, ಐಕಮತ್ಯದಿಂದಿರುವ. "ನಸಂಹತಾಸ್ತಸ್ಯ ನಭಿನ್ನವೃತ್ತಯಃ ಪ್ರಿಯಾಣಿ ವಾಚ್ಛಂತ್ಯಸುಭಿಃ ಸಮೀಹಿತುಮ್" ಕಿರಾಂ 1-19 । 4. ದಡವಾಗಿರುವ, ಭದ್ರವಾಗಿರುವ, ಬಲವಾಗಿರುವ, ಅಭೇದ್ಯವಾದ. "ಬಹಿರಭಿಹತಮದ್ರಃ ಸಂಹತಂ ಕಂದರಾಂತರ್ಗತಮಪಿ ತಿಮಿರೀಘಂ ಭರ್ಮಾಭಾನುಭಿನತ್ತಿ" ಮಾಘಂ 11-48 । 5. ಸ್ಥಿರವಾದ, ಗಟ್ಟಿಯಾದ. 6. ಚೆನ್ನಾಗಿ (ಬಲವಾಗಿ) ಹೊಡೆದು ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟು.

ಸಂಹತಜಾನುಕ ಸಂಹತಜಾನುಕ (ವಿಂ) ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ತಗುಲುವ ಮೊಣಕಾಲುಗಳುಳ್ಳವನು. ಸಂಹತೇ ಜಾನುನಿ ಯಸ್ಯ । ಸ್ವಾಯೇ "ಕನ್" ।

ಸಂಹತಲ ಸಂಹತಲ (ಪುಂ) ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿರುವ ಎರಡು ಅಂಗುಳು. ಸಂಹತಂ ಸಂಘಟ್ಟಂ ಪರಸ್ಪರಮೇಲನಂ ಲಾತಿ—ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕಃ" (3-2-3) ।

ಸಂಹತಿ ಸಂಹತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. ಸಮ್+ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94) । "ವಂಶವಜೈರ್ಜಲದ-ಸಂಹತಿಮುಲ್ಲಿಖಂತ್ಯಃ" ಮಾಘಂ 4-20 । 2. ರಾಶಿ. "ವಿಕಚಕಿಶುಕಸಂಹತಿ ರುಚ್ಚಕೈರದವಹದವಹವ್ಯವಹಶ್ರಿಯಮ್" ಮಾಘಂ 6-21 । "ಸೃಜಂತಮಾಜಾವಿಷುಸಂಹತಿವಃ" ಕಿರಾಂ 3-20 । 3. ಸಾಂದ್ರತೆ, ದಟ್ಟವಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ. "ವಶವ ಬಾಲಾಘವಶ್ಚು ವಲ್ಕಲಂ ಪಯೋಧರೋತೇವಿಶೀರ್ಣ-

ಸಂಹತಿ" ಕುಮಾಂ 4-6 । 4. ಒಗ್ಗಟ್ಟು, ಐಕಮತ್ಯದಿಂದಿರುವ ಜನರ ಗುಂಪು. "ಅಲ್ಪಾನಾಮಪಿ ವಸ್ತುನಾಂ ಸಂಹತಿಃ ಕಾರ್ಯಸಾಧಿಕಾ" ಹಿತೋಂ 1-35 । 5. ದೊಡ್ಡ ಗುಂಪು, ದೊಡ್ಡ ಗಾತ್ರದ ಸಮೂಹ. "ಗುಹ್ಯಾಂ ನಯಂತಿ ಹಿ ಗುಣಾ ನ ಸಂಹತಿಃ" ಕಿರಾಂ 12-10 ।

ಸಂಹನನ ಸಂಹನನ (ನಂ) 1. ದೇಹ, ಶರೀರ. ಸಂಹನ್ಯಂತೇ-ಸ್ಥಿನ್ ಭೂತಾನಿ — ಸಮ್+ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । "ಅಮೃತಾಹಮಾತಜಿಮೃತಸ್ಥಿಗ್ಧಸಂಹನನಸ್ಯ ತೇ" ಮಂ ವೀಂ 2-46 । (ವಿಂ) 2. ಕಡೆಸುವುದು. "ಶೀತೋಷ್ಣ-ವಾತವರ್ಷೇಷು ವೃಷ ಇವಾನಾವೃತಾಙ್ಗಃ ಪೀನಃ ಸಂಹನನಾಙ್ಗಃ" ಭಾಗಂ 4-9-10 ।

ಸಂಹರತ ಸಂಹರತ (ವಿಂ) ನಾಶಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್+ಹ್ರ (ಹರಣೇ) "ಶತ್" (3-2-124) । "ಸಂಹರನ್ ಹರ ಇತಿ ಶ್ರಿತಸ್ತಮಸ್ತ್ರೇಘಮೇವ ಭಜತಿ ತ್ರಿಭಿರ್ಗುಣೈಃ" ಮಾಘಂ 14-61 ।

ಸಂಹರ್ತ ಸಂಹರ್ತ (ವಿಂ) ಸಂಹಾರಮಾಡುವವನು, ಕೊಲ್ಲುವವನು. ಸಮ್+ಹ್ರ (ಹರಣೇ) "ತೃच्" (3-1-133) ।

ಸಂಹರ್ಷ ಸಂಹರ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಅತಿಶಯವಾದ ಸಂತೋಷ. ಸಮ್+ಹ್ರ (ಹೃಷ್ಠೀ) "ಘ್ರ" (3-3-18) । "ಸಂಹರ್ಷಾದಿಲ-ವಿಹೃತೇರಿತೀವ ಗಾಯಲ್ಲೋಲೋಮಿ" ಪಯಸಿ ಮಹೋತ್ಪಲಂ ನನತಂ" ಮಾಘಂ 6-23 । 2. ಸ್ಪರ್ಧೆ, ಮೇಲಾಟ. 3. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 4. ರೋಮಾಂಚ, ಭಯ ಅಥವಾ ಭಳಿಯಿಂದ ಮೈಮೇಲೆ ಮುಳ್ಳೇಳುವುದು. "ಸಂಹರ್ಷಸ್ತು ಪ್ರಮೋದೇಪಿ ಸ್ಪರ್ಧಾಪಿ ಚ ಪ್ರಭಂಜನೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಸಂಹಾತ ಸಂಹಾತ (ಪುಂ) 21 ವಿಧ ನರಕಗಳಲ್ಲೊಂದು. "ಸಂಹಾತಂ ಚ ಸಕಾಕೋಲಂ ಕುಡ್ಮಲಂ ಪ್ರತಿಮೂರ್ತಕಮ್" ಮನುಂ 4-69 ।

ಸಂಹಾರ ಸಂಹಾರ (ಪುಂ) 1. ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸುವುದು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸುವುದು. ಸಮ್+ಹ್ರ (ಹರಣೇ) "ಘ್ರ" (3-3-122) । "ದೇವಿ ಏಷ ತೇ ಮೂರ್ಘಜಾನಾಂ ಸಂಹಾರೋಭಿನಂದಿತೋ ನಮಸ್ತಲ-ಚಾರಿಣಾ ಸಿದ್ಧಜನೇನ" ವೇಣೀಂ 6 । 2. ಸಂಕ್ಷೇಪಮಾಡುವುದು, ಸಂಗ್ರಹಮಾಡುವುದು. 3. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಎಳೆದು ಕೊಳ್ಳುವುದು, ಪ್ರಯೋಗಿಸಿದ್ದನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಬರಮಾಡಿ ಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಸಮೋಹನಂ ನಾಮ ಸಖೇ ಮಮಾಸ್ತ್ರಂ ಪ್ರಯೋಗಸಂಹಾರ-ವಿಮಕ್ತಮನ್ತ್ರಮ್" ರಘುಂ 4-49 । 4. ಪ್ರಳಯ, ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶ. 5. ಒಂದು ನರಕ. 6. ಮುಗಿಸುವುದು, ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸುವುದು.

ಸಂಹಾರಕ ಸಂಹಾರಕ (ವಿಂ) 1. ಸಂಗ್ರಹಮಾಡುವವನು, ಸಂಕ್ಷೇಪಮಾಡುವವನು. 2. ನಾಶಪಡಿಸುವವನು.



ಸಹಿತ ಸಂಹಿತ (ವಿಂ) 1. ಸೇರಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, (ಧನಸ್ಸಿಗೆ) ಏರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಡುಘಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಸಂಜಹಾರ ಸಹಸಾ ಪರಿರಂಧಪ್ರೇಯಸೀಷು ವಿರಹ್ಯ ವಿರೋಧಮ್ | ಸಹಿತಂ ರತಿಪತಿಃ ಸ್ಮಿತಭಿನ್ನಕ್ರೋಧಮಾಶ್ರುತರಣೇಷು ಮಹೇಷುಮ್" ಮಾಘಂ ೧೦-೪೪ | 2. ಯುಕ್ತ, ಸಂಪನ್ನ, ಒಡಗೂಡಿರುವ, ಜೊತೆಯಲ್ಲಿರುವ. 3. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಜೋಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸಹಿತಾ ಸಂಹಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವರ್ಣಗಳಿಗೆ ಅತಿಶಯವಾದ ಸಾಮೀಪ್ಯ, ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ನಿರಂತರವಾಗಿ ಉಚ್ಚರಿಸುವುದು, ಮಧ್ಯೆ ವ್ಯವಧಾನವಿಲ್ಲದೆ ಅರ್ಥವತ್ತಾದ ಪದಗಳ ಉಚ್ಚಾರಣೆ. "ಪರಃ ಸನಿಕರ್ಷಃ ಸಹಿತಾ" ಪಾಂ ಸೂಂ ೧-೪-೧೦೯ | ವರ್ಣಾನಾಮತಿಶಯಿತಃ ಸನಿಧಿಃ ಸಹಿತಾ ಸಿಂ ಕೌಂ | 2. ಮನು ಮೊದಲಾದವರಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಸ್ಮೃತಿ (ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ), ಮನುಸಂಹಿತೆ ಮೊದಲಾದವು. ಮನುಧರ್ಮಸಹಿತಾ |

ಸಹಿತ ಸಂಹೃತ (ವಿಂ) ಅನೇಕರಿಂದ ಕರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಹ್ವೇ (ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

ಸಹಿತ ಸಂಹೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನೇಕರು ಸೇರಿ ಕರೆಯುವುದು. ಸಮ್ + ಹ್ವೇ (ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) |

ಸಹಿತ ಸಂಹೃತ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಹ್ವೇ (ಹರಣೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಅಭಿಮುಖೇ ಮಯಿ ಸಹಿತಮೀಕ್ಷಣಮ್" ಶಾಕುಂ ೨-೧೧ | 2. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಬರಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಪಸಂಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಬಾಣ). 3. ಸಂಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಡಮೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಕ್ಷೇಪಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಸುಹಾರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಮುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ದಮನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸಹಿತ ಸಂಹೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಗ್ರಹಮಾಡುವುದು, ಸಂಕ್ಷೇಪಮಾಡುವುದು. ಸಮ್ + ಹ್ವೇ (ಹರಣೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | 2. ದಮನಮಾಡುವುದು, ಹತೋಟಿ ಯಲ್ಲಿಡುವುದು. 3. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು, ಸಂಹರಿಸುವುದು. 4. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಸಹೃಷ್ಠ ಸಂಹೃಷ್ಯ (ವಿಂ) ಸಂತೋಷಪಟ್ಟವನು. ಸಮ್ + ಹೃಷ (ಹೃಷ್ಠಿ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) |

ಸಹೃದ ಸಂಹೃದ (ಪುಂ) ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ, ಸದ್ದು. ಸಮ್ + ಹೃದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) |

ಸಕರ ಸಕರ (ವಿಂ) 1. ಕಿರಣದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಕಿರಣಸಹಿತ ವಾದ. ಕರಣ ಸಹ ವರ್ತತೆ | 2. ಹಸ್ತಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. 3. ಸೊಂಡಲಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಸಕರಣ ಸಕರಣ (ವಿಂ) ದಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕರಣಯಾ ಸಹ ವರ್ತತೆ |

ಸಕರ್ಮಕ ಸಕರ್ಮಕ (ಪುಂ) ಕರ್ಮಸಹಿತವಾದ ಧಾತು, ಕರ್ಮಪದದ ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ ಧಾತು, ಕರ್ಮದಲ್ಲಿ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದುವ ಧಾತು, ಕರ್ಮಪದದ ವಿವಕ್ಷೆಯಿರುವ ಧಾತು. ಕರ್ಮಣಾ ಸಹ ವರ್ತತೆ | ಧಾತುಗಳಲ್ಲಿ ಕೆಲವಕ್ಕೆ ಕರ್ಮಪದವಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಕೆಲವಕ್ಕೆ ಕರ್ಮಪದವಿವಕ್ಷೆಯಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಅವು ಅಕರ್ಮಕ ಧಾತುಗಳು. ಆಸ್ತೇ ಶತೇ ಇತ್ಯಾದಿ. ಕರ್ಮಪದದ ಸಂಬಂಧವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ ಧಾತುಗಳು ಸಕರ್ಮಕ. ಪಶ್ಯತಿ ಪಿಬತಿ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸಕಲ ಸಕಲ (ವಿಂ) 1. ಕಲೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಕಲಾಭಿಃ ಸಹ ವರ್ತತೆ | 2. ಸಮಸ್ತ, ಎಲ್ಲ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ. "ಸಕಲೇವಪುಃ ಸಕಲದೋಷಸಮುದಿತಮಿದಂ ಗುಣೇಶ್ವರ" ಮಾಘಂ ೧೫-೩೨ | "ಸ್ಪರ್ಶಮಾಪ ಸಕಲೇನ ತಲೇನ" ಮಾಘಂ ೧೦-೬೫ | 3. ಚತುಃಷಷ್ಟಿ (64) ಕಲೆ (ವಿದ್ಯೆ) ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. 4. ಅಸ್ಪಷ್ಟ ಮಧುರ ಶಬ್ದದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಸಕಾಮ ಸಕಾಮ (ವಿಂ) 1. ಎಲ್ಲಾ ಇಷ್ಟಾರ್ಥಗಳನ್ನೂ ಪಡೆದಿರುವವನು. ಕಾಮೇನ ಸಹ ವರ್ತತೆ | "ಕಾಮ ಇದಾನಿ ಸಕಾಮೋ ಭವತು, ಯೇನಾಸತ್ಯಸಂಧೇ ಜನೇ ಶೂನ್ಯಹೃದಯಾ ಸಖಿ ಪದಂ ಕಾರಿತಾ" ಶಾಕುಂ ೪ | 2. ವಿಷಯಾಭಿಲಾಷೆಯುಳ್ಳವನು, ಕಾಮಾಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು, ಕಾಮತೃಪ್ತಿಯುಳ್ಳವನು. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಸಂತುಷ್ಟನಾಗಿ, ತೃಪ್ತಿಹೊಂದಿ ದವನಾಗಿ.

ಸಕಾಶ ಸಕಾಶ (ಪುಂ) 1. ಸಮೀಪ, ಹತ್ತಿರ. ಕಾಶೇನ ಪ್ರಕಾಶನ ಸಹ ವರ್ತತೆ | (ವಿಂ) 2. ಸದೃಶ, ಸಮಾನ. "ಸಕಾಶಃ ಸದೃಶೋನ್ತಿಕೇ" ವಿಷ್ವಂ |

ಸಕುಲ ಸಕುಲ (ಪುಂ) 1. ಬಂಧು, ನೆಂಟ. (ವಿಂ) 2. ಒಂದೇ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು, ಒಂದೇ ವಂಶಕ್ಕೆ ಸೇರಿದವನು. ಸಮಾನಂ ಕುಲಂ ಯಸ್ಯ |

ಸಕುಲ ಸಕುಲ (ವಿಂ) 1. ಸಮಾನ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಸಮಾನೇ ಕುಲೇ ಭವಃ "ಯತ್" (೫-೩-೫೪) | 2. ಒಂದೇ ಕುಟುಂಬಕ್ಕೆ ಸೇರಿದವನು.

ಸಕೃತ್ ಸಕೃತ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಒಂದು ಸಲ, ಒಮ್ಮೆ. ಏಕ "ಸುಕ್" (೫-೪-೧೯) | ಸಕೃತ್ ಆದೇಶಶ್ಚ | "ಸಕೃದಂಶೋ ನಿಪತತಿ ಸಕೃತ್-ಕನ್ಯಾ ಪ್ರದೀಯತೆ | ಸಕೃದಾಹ ದದಾನೀತಿ



ಶ್ರೀಷ್ಯತಾನಿ ಸತಾಂ ಸಕೃತ್" ಮನುಂ ೧-೪೭। "ಭಾನುಃ ಸಕೃದ್ಭುಕ್ತುರಙ್ಗ ಏವ" ಶಾಕುಂ ೫-೪। 2. ಒಂದು ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ. 3. ಸಂಗಡ, ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ. "ಸಕೃತ್ಸಹೈಕವಾರೆ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ।

ಸಕೃತ್ಪ್ರಜ ಸಕೃತ್ಪ್ರಜ (ಪುಂ) ಕಾಗೆ, ವಾಯಸ. ಸಕೃತ್ ಪ್ರಜಾಸ್ಯ।

ಸಕೃತ್ಫಲಾ ಸಕೃತ್ಫಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕದಳಿ ವೃಕ್ಷ, ಬಾಳೆ ಗಿಡ. ಸಕೃದೇವ ಫಲಾನಿ ಅಸ್ಯಾಃ।

ಸಕೃದ್ಗರ್ಭ ಸಕೃದ್ಗರ್ಭ (ಪುಂ) 1. ಹೇಸರಗತ್ತೆ, ಅಶ್ವದಿಂದ ಗರ್ಭಭಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಬೆರಕೆಜಾತಿಯ ಪ್ರಾಣಿ. ಸಕೃತ್ ಗರ್ಭೋ यस್ಯ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. -ಗರ್ಭ -ಗರ್ಭಾ. ಒಂದು ಸಲ ಮಾತ್ರ ಗರ್ಭ ಧರಿಸಿದ ಹೆಂಗಸು.

ಸಕ್ತ ಸಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವ. ಷಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। "ಶ್ಲಕ್ಷಣಂ ಯತ್ಪರಿಹಿತಮೇತಯೋಃ ಕಿಲಾಂತರ್ಧಾನಾರ್ಥಂ ತದುದಕಸೇಕಸಕ್ತಮೂರ್ವಿಃ" ಮಾಘಂ ೮-೬೫। "ಸಕ್ತಾಙ್ಗುಲಿಃ ಸಾಯಕಪುಷ್ಪ ಏವ" ರಘುಂ ೨-೩೧। 2. ಆಸಕ್ತ ನಾದ, ಶ್ರದ್ಧೆಯುಳ್ಳ, ತದೇಕಧ್ಯಾನವುಳ್ಳ. 3. ನಾಟ ರುವ, ನೆಟ್ಟಿರುವ (ನೋಟ). "ರಶ್ಮಿಪ್ವಿವಾದಾಯ ನಗೇಂದ್ರ-ಸಕ್ತಾಂ ನಿವರ್ತಯಾಮಾಸ ನೃಪಸ್ಯ ದೃಷ್ಟಿಮ್" ರಘುಂ ೨-೨೮।

ಸಕ್ತಿ ಸಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಸಕ್ತಿ, ಶ್ರದ್ಧೆ. ಸಮ್ + ಷಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪)। 2. ಅನುರಾಗ, ಪ್ರೀತಿ, ಬಲವು. "ರಾಗೀವ ಸಕ್ತಿಮಧಿಕಾಂ ವಿಷಯೇಷು ವಾಯುಃ" ಮಾಘಂ ೪-೬೧। 3. ಸಂಬಂಧ, ಸಂಯೋಗ, ಸೇರಿಕೆ. "ಸಕ್ತಿ ಜವಾದಪನಯತಿನಿಲೇ ಲತಾನಾಂ ವೇರೋಚನೈದ್ವಿಗುಣಿತಾಃ ಸಹಸಾ ಮಯುಕ್ತಃ" ಕಿರಾಂ ೫-೪೬।

ಸಕ್ತು ಸಕ್ತು (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ಪುರಿಹಿಟ್ಟು. ಸಚ್ಯತೇ — ಷವ (ಸಮವಾಢೆ) "ತುನ್" (೩ಂ ೧-೬೯)। "ಅಷ್ಟಾ ಯವಾಃ ಪುನರ್ಧಾನಾ ಧಾನಾಚೂರ್ಣಂ ತು ಸಕ್ತವಃ" ಹೇಮಂ।

ಸಕ್ತುಫಲಾ ಸಕ್ತುಫಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಮೀವೃಕ್ಷ, ಬನ್ನಿಮರ. ಸಕ್ತುವತ್ ಫಲಮಸ್ಯಾಃ। "ಶಮೀ ಸಕ್ತುಫಲಾ ಶಿವಾ" ಅಮಂ।

ಸಕ್ವಿ ಸಕ್ವಿ (ನಂ) 1. ತೊಡೆ. ಸಜ್ಯತೇ — ಷಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೆ) "ಕ್ವಿನ್" (೩ಂ ೩-೧೪)। "ನೃಣಾಂ ಪದೇ ಸ್ಥಿತಾ ಲಕ್ಷ್ಮೀಃ ನಿಲಯಂ ಸಂಪ್ರಯಚ್ಛತಿ। ಸಕ್ವಿನೋಶ್ಚ ಸಂಸ್ಥಿತಾ ವಸ್ತ್ರಂ ತಥಾ ನಾನಾವಿಧಂ ವಸು" ಮಾರ್ಕಂ। 2. ರಥದ ಮೂಕಿ ಮರ.

ಸಖಿ ಸಖಿ (ಪುಂ) ಮಿತ್ರ, ಗೆಳೆಯ. ಸಮಾನಃ ಕ್ವಾಯತೇ — ಕ್ವಾ (ಪ್ರಕಥನೆ) "ಇನ್" ಯಲೋಪಶ್ಚ। ಸ ಇತ್ಯಾದೇಶಶ್ಚ (೩ಂ

೪-೧೩೬)। ಸಖಾ ಸಖಾಯಿ ಸಖಾಯಃ। "ಸಖಾ ಯದಸ್ಮೈ ಕಿಲ ಭೀಮಸಂಜಯಾ ಸ ಯಕ್ಷಸಖ್ಯಾಧಿಗತಂ ದದೌ ಭವಃ" ನೆಪಂ ೧೬-೧೬। ಸಖಿ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಸಮಾಸಾಂತದಲ್ಲಿ "ಟ್" ಪ್ರತ್ಯಯ ಒಂದು ಅಕಾರಾಂತವಾಗುವುದು. ವಾಯುಸಖಃ ವನಿತಾಸಖಃ ತ್ರ್ಯಂಬಕಸಖಃ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸಖಿ ಸಖೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೆಳತಿ. ಸಖಿ "ಜಿಷ್" (೪-೧-೬೨)। "ಇತಿ ಸಂಪ್ರಧಾರ್ಯ ರಮಣಾಯ ವರ್ಷಾವಿಹಿತಾಗಸೇಽಪಿ ವಿಸಸರ್ಜ ಸಖೀಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೬೦।

ಸಖ್ಯ ಸಖ್ಯ (ನಂ) ಸ್ನೇಹ, ಮಿತ್ರತ್ವ, ಸೌಹಾರ್ದ. ಸಖ್ಯು-ಭಾವಃ ಕರ್ಮ ವಾ — ಸಖಿ "ಯಃ" (೫-೧-೧೨೬)। "ಗುಣಾನು-ರಾಗಾದಿವ ಸಖ್ಯಮೀಯಿವಾನ್ ಬಾಧತೇಸ್ಯ ತ್ರಿಗುಣಃ ಪರಸ್ಪರಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೧೧। "ಸ್ಥಾನೇ ವಿಘೋರ್ವಾ ಮದನಸ್ಯ ಸಖ್ಯಮ್" ನೆಪಂ ೨೨-೮೭।

ಸಗಂಧ ಸಗಂಧ (ಪುಂ) 1. ಬಂಧು, ಜ್ಞಾತಿ, ನೆಂಟ. (ವಿಂ) 2. ಸಮಾನ ಗಂಧವುಳ್ಳ, ಸಮಾನವಾದ ಗುಣವುಳ್ಳ. ಸಮಾನೋ ಗಂಧೋ ಯಸ್ಯ। "ತದಾ ತ್ವಮಿತ್ಯಂ ಪ್ರಹಸಿತೋಸಿ — ಸರ್ವಃ ಸಗಂಧೇಷು ವಿಶ್ವಸಿಸಿತಿ। ದ್ವಾವಪ್ಯತ್ರಾರಣ್ಯಕೌ" ಇತಿ ಶಾಕುಂ ೫। 3. ವಾಸನೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಸಗರ ಸಗರ (ಪುಂ) ಸಗರಚಕ್ರವರ್ತಿ, ಸೂರ್ಯವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. ಸಗರಚಕ್ರವರ್ತಿಯು ಬಾಹುಕರಾಜನ ಪುತ್ರ. [ಇವನ ತಾಯಿಯಾದ ಯಾದವಿಗೆ ಅವಳ ಸವತಿಯು ವಿಷವನ್ನು ಕೊಟ್ಟಿದ್ದಳು. ಇವನು ಆ ವಿಷದೊಡನೆ ಹುಟ್ಟಿದ್ದರಿಂದ (ಸ+ಗರ) ಸಗರನೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಸಗರಚಕ್ರವರ್ತಿಯು ಭಾರ್ಗವಮುನಿಯಿಂದ ಸಕಲ ವೇದ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನೂ ಕಲಿತು ಅವರಿಂದ ಆಗ್ನೇಯಾಸ್ತ್ರವನ್ನೂ ಪಡೆದನು. ಸಗರನಿಗೆ ಕೇಶಿನಿ ಮತ್ತು ಸುಮತಿಯೆಂಬ ಇಬ್ಬರು ಪತ್ನಿಯಿದ್ದರು. ಕೇಶಿನಿಗೆ ಅಸಮಂಜಸೆಂಬ ಮಗನೂ ಸುಮತಿಗೆ 60000 ಮಕ್ಕಳೂ ಹುಟ್ಟಿದರು. ಸಗರಚಕ್ರವರ್ತಿಯು 99 ಯಾಗಗಳನ್ನು ಮಾಡಿ ನೂರನೇ ಯಾಗ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದಾಗ ಇಂದ್ರನು ಆ ಯಾಗಾಶ್ವ ವನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿ ಪಾತಾಳಲೋಕದಲ್ಲಿ ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿಯ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿಟ್ಟನು. ಸಗರನ ಮಕ್ಕಳಾದ 60000 ಮಂದಿ ಪುತ್ರರೂ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗಳಲ್ಲೂ ಹುಡುಕಿ ಅಶ್ವವು ದೊರಕದಿದ್ದಾಗ ಭೂಮಿಯನ್ನು ಅಗೆದು ಪಾತಾಳ ಲೋಕಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿಯ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿದ್ದ ಅಶ್ವವನ್ನು ನೋಡಿ ಅದನ್ನು ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿಯೇ ಅಪಹರಿಸಿರುವನೆಂದು ತಿಳಿದು ಯುಜಿಯನ್ನು ಬಹಳ ನಿಂದಿಸಿದಾಗ ಎಲ್ಲರೂ ಅಲ್ಲೇ ಭಸ್ಮವಾದರು. ಬಹಳ



ಕಾಲದ ನಂತರ ಈ ವಂಶದ ರಾಜನಾದ ಭಗೀರಥನು ಬಹಳ ಕಾಲ ತಪಸ್ಸುಮಾಡಿ ದೇವಲೋಕದಿಂದ ಗಂಗೆಯನ್ನು ಭೂಮಿಗೆ ಕರೆತಂದು ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಸದ್ಗತಿಯನ್ನು ದೊರೆತಿಸಿಕೊಟ್ಟನು.]

**ಸಗರ್ಭ ಸಗರ್ಭ** (ಪುಂ) ಸಮಾನ (ಒಂದೇ) ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು, ಸಹೋದರ, ಸಮಾನೋ ಗರ್ಭೋ ಯಸ್ಯ । “ಸಹ ತನುಜಸಗರ್ಭಪ್ರೇಷ್ಯರಕ್ಷ:ಸಹಸ್ರ:” ಮಂ ವೀಂ ೬-೨೭ ।

**ಸಗರ್ಭ ಸಗರ್ಭ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರ್ಭಧರಿಸಿದ ಹೆಂಗಸು, ಗರ್ಭಿಣಿ, ಬಸಿರಾಗಿರುವ ಹೆಂಗಸು. ಗರ್ಭೇಣ ಸಹ ವರ್ತತೆ ।

**ಸಗರ್ಭ ಸಗರ್ಭ** (ಪುಂ) ಸಮಾನ (ಒಂದೇ) ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು, ಸಹೋದರ. ಸಮಾನೋ ಗರ್ಭೋ ಭವ: “ಯನ್” (೪-೪-೧೧೪) ।

**ಸಗೋತ್ರ ಸಗೋತ್ರ** (ಪುಂ) 1. ಜ್ಞಾತಿ, ಒಂದೇ ಗೋತ್ರ (ಕುಲ) ದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಸಮಾನಂ ಗೋತ್ರಂ ಯಸ್ಯ — ಸಮಾನಸ್ಯ ಸ: (೬-೩-೮೫) । “ಬನ್ಧುಭಿರಾನೀತಾಮಿಮಾಂ ಸ್ಮೃತಿಸಂಯಿತ್ಯಾತ್ ಪ್ರತ್ಯಾದಿಶನ್ ಅಪರಾಧೋಽಸ್ಮಿ ಯುಷ್ಮತ್ಸಗೋತ್ರಸ್ಯ ಕರ್ವಸ್ಯ” ಶಾಕುಂ ೭ । (ನಂ) 2. ಸಮಾನವಾದ ವಂಶ, ಒಂದೇ ಕುಲ. ಸಮಾನಂ ಗೋತ್ರಮ್ ।

**ಸಗ್ಧಿ ಸಗ್ಧಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಹಭೋಜನ, ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ಊಟಮಾಡುವುದು. ಸಮಾನಾ ಗ್ಧಿ: । ಅದ (ಮಕ್ಷಣೇ) “ಕ್ಲಿನ್” (೩-೩-೯೪) । “ಘಸ್” (೨-೪-೩೯) । ಉಪಶಾಲೋಪ: (೬-೪-೧೦೦) । ಸಲೋಪ: (೮-೨-೨೬) । ಘಸ್ಯ “ಸ:” (೮-೪-೫೩) ।

**ಸಂಕಟ ಸಂಕಟ** (ನಂ) 1. ಇಕ್ಕಟ್ಟಾಗಿರುವ ಮಾರ್ಗ, ಕಿರಿದಾದ ದಾರಿ. ಸಮ್ “ಕಟಕ್” (೫-೨-೯೨) । 2. ಕಷ್ಟ, ಅಪಾಯದ ಪರಿಸ್ಥಿತಿ. (ವಿಂ) 3. ಸಂಕುಚಿತವಾದ, ಕಿರಿದಾದ, ಬಿಗಿಯಾದ, ಗುತ್ತನಾದ. 4. ಬಹಳ ಕಷ್ಟವಾದ, ದೋಷಗಳಿಂದ ತುಂಬಿರುವ, ದುಃಸಾಧ್ಯವಾದ. “ಸಂಕಟಾ ಹ್ಯಾಹಿತಾಗ್ನಿನಾಂ ಪ್ರತ್ಯವಾಯಿಗೃಹಸ್ಥತಾ” ಮಂ ವೀಂ ೪-೩೩ ।

**ಸಂಕಥನ ಸಂಕಥನ** (ನಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವುದು. ಸಮ್ಯಕ್ ಕಥನಮ್ । “ಉಪವಾಸಫಲಂ ನಶ್ಯೇತ್ ದಿವಾಸ್ವಪ್ನಾಕ್ಷಮೇಶುನಾತ್ । ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಸಂಪ್ರೇಕ್ಷಣಾತ್ ಸ್ಪರ್ಶಾತ್ ತಾಭಿ: ಸಂಕಥನಾದಪಿ” ।

**ಸಂಕಥಾ ಸಂಕಥಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಭಾಷಣ, ಪರಸ್ಪರ ಮಾತನಾಡುವುದು. ಸಮ್ಯಕ್ ಕಥಾ “ಸಂಕಥೇಚ್ಛುರಭಿಧಾತುಮನಿಶಾ ಸಂಕಥಾ ನ ಚ ಬಭೂವ ದಿದೃಕ್ಷು:” ಮಾಘಂ ೧೦-೪೧ । 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವುದು.

**ಸಂಕರ ಸಂಕರ** (ಪುಂ) 1. ಕಸ, ಪೊರಕೆಯಿಂದ ಗುಡಿಸಿದ ಕಸದ ರಾಶಿ. ಸಂಕೀರ್ಯತೆ — ಸಮ್ + ಕ (ವಿಕೋಪೇ) “ಅಪ್” (೩-೩-೫೭) । 2. ಮಿಶ್ರಣ, ಬೆರಕೆ. “ಸಂಕರೋ ನರಕಾಯೇವ ಕುಲಧನಾಂ ಕುಲಸ್ಯ ಚ” ಗೀತಾ ೧-೪೧ । 3. (ಅಲಂಕಾರ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಒಂದು ಕಡೆ ಎರಡು ಅಲಂಕಾರಗಳು ಸೇರಿದಾಗ ಅವುಗಳಿಗೆ ಇರುವ ಅಂಗಾಂಗಿಭಾವ (ಸಂಕರ). ಈ ಸಂಕರವು ಅಂಗಾಂಗಿ ಭಾವ, ಏಕಾಶ್ರಯ ಸ್ಥಿತಿ ಮತ್ತು ಸಂದಿಗ್ಧತ್ವ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. “ಅನುರಾಗವತೀ ಸಂಖ್ಯಾ ದಿವಸಸ್ತುತಪುರ:ಸರ: । ಅಹೋ ದೇವಗತಿಶ್ಚಿತ್ರಾ ತಥಾಪಿ ನ ಸಮಾಗಮ:” ಇಲ್ಲಿ ಸಮಾಸೋಕ್ತಿಯು ವಿಶೇಷೋಕ್ತಿ, ಅಲಂಕಾರಕ್ಕೆ ಅಂಗವಾಗಿರುವುದು. “ಇದಮಾಭಾತಿ ಗಗನೇ ಭಿಂದಾನಂ ಸತತಂ ತಮ: । ಅಮಂದನಯನಾನಂದಕರಂ ಮಂಡಲಮಂದವಮ್” ಇಲ್ಲಿ ಅತಿಶಯೋಕ್ತಿ, ತುಲ್ಯ ಯೋಗಿತಾ ದೀಪಕ ಸಮಾಸೋಕ್ತಿ, ಅಲಂಕಾರ ಅಪ್ರಸ್ತುತ ಪ್ರಶಂಸಾ ಪರ್ಯಾಯೋಕ್ತಿ ಈ ಎಲ್ಲಾ ಅಲಂಕಾರಗಳೂ ಸಂದಿಗ್ಧವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಸಂದೇಹ ಸಂಕರ.

**ಸಂಕರ್ಷಣ ಸಂಕರ್ಷಣ** (ಪುಂ) 1. ಬಲರಾಮ. ಸಮ್ಯಕ್ ಕರ್ಷತಿ — ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೇ) “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪) । “ಗರ್ಭಸಂಕರ್ಷಣಾತ್ ವೈ ಪ್ರಾಹು: ಸಂಕರ್ಷಣಂ ಭುವಿ” ಭಾಗಂ ೧೦-೨-೧೩ । (ನಂ) 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಎಳೆಯುವುದು. ಸಮ್ಯಕ್ ಕರ್ಷಣಮ್ । 3. ಭೂಮಿಯನ್ನು ಉಳುವುದು. 4. ಮನಸ್ಸನ್ನು ಸೆಳೆಯುವುದು.

**ಸಂಕಲ ಸಂಕಲ** (ಪುಂ) 1. ಕೂಡುವುದು. 2. ಕೂಡಹಾಕುವುದು, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಕಲ (ಸಂಖ್ಯಾನೇ) “ವ:” (೩-೩-೧೨೫) । 3. ಸೇರಿಸುವುದು, ಸೇರಿಸಿ ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು. 4. ಸಂಗ್ರಹಿಸುವುದು.

**ಸಂಕಲನ ಸಂಕಲನ** (ನಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸುವುದು, ರಾಶಿ ಹಾಕುವುದು. ಸಮ್ + ಕಲ (ಸಂಖ್ಯಾನೇ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಕೂಡುವುದು, ಒಟ್ಟಾಗಿ ಸೇರಿಸುವುದು. 3. ಸಂಗ್ರಹಿಸುವುದು, ಕೂಡಹಾಕುವುದು. 4. ಹೆಚ್ಚಿಗೆ ಸೇರಿಸುವುದು, ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವುದು. 5. ಮಿಶ್ರಣ, ಬೆರಕೆ. “ಪರಿಮಲೋತ್ಪೀಡಸಂಕಲನಮಸೃಣಮಾಸಲಮಲಯಮಾರುತ . . . .” ಮಾಲತೀಂ ೩ ।

**ಸಕ್ಕಲಿತ ಸಂಕಲಿತ** (ವಿಂ) 1. ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ರಾಶಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಕಲ (ಸಂಖ್ಯಾನೇ) “ಕ್ಲ:” (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೂಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸಂಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೂಡಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಹೆಚ್ಚಿಗೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಸಂಗೃಹ: ಸ್ಯಾತ್ಸಂಕಲಿತ:” ಅಮಂ ।



ಸತ್ಕುಲ ಸಂಕುಲ (ವಿಂ) 1. ತುಂಬಿರುವ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ  
ನೆರೆದಿರುವ. ಸಮ್ಯಕ್ ಕೋಲತಿ — ಸಮ್ + ಕುಲ (ಸಂಸ್ಥಾನೇ



ಬಂಧು ಚ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೪)। "ನಕ್ಷತ್ರತಾರಾಗ್ರಹ-  
ಸಜ್ಜಿತಾಪಿ ಜ್ಯೋತಿಷಮತಿ ಚಂದ್ರಮಸೇವ ರಾತ್ರಿ:" ರಘುಂ ೬-೨೨।

2. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ. "ತತಃ ಸೇನಾಮುಪಾಧಾಯ ಪಾಂಡುನಾ-  
ವಿಧವಜಾಮ್। ಪ್ರಭೂತಹಸ್ತಶ್ಚಯುತಾಂ ಪದಾತಿರಥಸಜ್ಜಿತಾಮ್"

ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೨೨-೨೬। (ನಂ) 3. ಯುದ್ಧ, ಕಾಳಗ.

4. ಪರಸ್ಪರ ವಿರುದ್ಧವಾದ ಮಾತು. 5. ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾದ

ಮಾತು. "ಸಜ್ಜಿತಂ ತ್ರಿಪು ವಿಪ್ರವಾಚಿ ವ್ಯಾಪ್ತೇ" ಮೇದಿಂ।

**ಸಜ್ಜಿತ ಸಂಕೇತ (ಪುಂ)** 1. ಹಸ್ತ ನೇತ್ರಾದಿ ವ್ಯಾಪಾರ  
ಗಳಿಂದ ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವುದು, ಹಸ್ತ ನೇತ್ರ  
ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ಸಂಜ್ಞೆ. ಸಂಕಲ್ಪತೇಜಃ  
— ಸಮ್ + ಕಿತ (ನಿವಾಸೇ ರೋಗಾಪನಯನೇ ಚ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ಸಜ್ಜಿತಕಾಲಮನಸಂ ವಿಠಂ ಜಾತ್ವಾ  
ವಿದಿಧಯಾ। ಹಸನ್ಮೇತ್ರಾಪಿತಾಕೂಲಂ ಲೀಲಾಪದಂ ನಿರ್ಮಲಿತಮ್"  
ಸಾಂ ೬೦। 2. ಈ ಪದವನ್ನು ಈ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ  
ಉಪಯೋಗಿಸಬೇಕೆಂಬ ಈಶ್ವರನ ಇಚ್ಛೆ. ಈ ಪದಕ್ಕೆ ಇದೇ  
ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗವೆಂಬ ಈಶ್ವರೇಚ್ಛೆ. ಈಶ್ವರನು  
ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಪದಕ್ಕೂ ಒಂದೆಷ್ಟು ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯೋಗ  
ಮೆಂದು ನಿಯಮ ಮಾಡಿರುವುದು ಸಂಕೇತ. ಈ ಸಂಕೇತ  
ವನ್ನು ವೃದ್ಧರ (ಹಿರಿಯರ) ವ್ಯವಹಾರಗಳಿಂದ ತಿಳಿಯ  
ಬೇಕು. [ಈ ಈಶ್ವರ ಸಂಕೇತಕ್ಕೆ ಶಕ್ತಿಯೆಂಬ ಸಂಜ್ಞೆ.  
"ಶಕ್ತಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 3. ಪ್ರಣಯಿಗಳು  
(ನಾಯಿಕಾ ನಾಯಕರು) ಗೊತ್ತಾದ ಒಂದು ಕಡೆ ಸೇರುವ  
ಸ್ಥಳ. "ಕಾಂತಾರ್ಥಿನಿ ತು ಯಾ ಯಾತಿ ಸಜ್ಜಿತಂ ಸಾಭಿಸಾರಿಕಾ"  
ಅಮಂ। 4. ಒಂದು ಕಡೆ ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಲು ಮಾಡಿ  
ಕೊಳ್ಳುವ ಒಪ್ಪಂದ, ಒಟ್ಟು ಸೇರಲು ಏರ್ಪಾಡು, ಗೊತ್ತು  
ಪಾಡು.

**ಸಜ್ಜೋಚ ಸಂಕೋಚ (ಪುಂ)** 1. ಕಿರಿದಾಗುವುದು, ಚಿಕ್ಕ  
ದಾಗುವುದು. ಸಮ್ + ಕುಚ (ಸಜ್ಜೋಚನೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ಸಜ್ಜೋವಮ್ಚನ್ನಿವ ಚಕ್ರಶಾಲ:" ಯಾದಂ  
೧೮-೧೨೨। 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. 3. ಮುಚ್ಚಿ  
ಕೊಳ್ಳುವುದು. 4. ಕಡಮೆಯಾಗುವುದು. 5. ಕುಗ್ಗು  
ವುದು, ಮುದುರಿಕೊಳ್ಳುವುದು. (ನಂ) 6. ಕುಂಕುಮ  
ಕೇಸರಿ. "ಸಜ್ಜೋವೋ ಮೀನಮೇದೇ ಸ್ಯಾತ್ ಬಂಧೇ ಕಲಿಬಂ ತು  
ಕುಡ್ಕುಮೇ" ಮೇದಿಂ।

**ಸಜ್ಜಕ್ರಂದನ ಸಂಕ್ರಂದನ (ಪುಂ)** 1. ಇಂದ್ರ, ಸುರನಾಯಕ.  
ಸಜ್ಜಕ್ರಂದಯತಿ ಅಸುರಾನ್—ಸಮ್ + ಕ್ರದಿ (ಆಹ್ವಾನೇ ರೋದನೇ ಚ) +  
ಗಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। "ತಾಮಾವಸದ್ವಿಶಯಃ  
ಸುರವಂದಿತೇನ ಸಜ್ಜಕ್ರಂದನೇನ ವಿಹಿತಾಸನಸಂವಿಭಾಗಃ" ಚಂ ರಾಂ।  
(ನಂ) 2. ರೋದನ, ಅಳುವುದು. ಸಮ್ + ಕ್ರದಿ ಭಾವೇ

"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। (ವಿಂ) 3. ಶತ್ರುಗಳನ್ನು  
ಸದೆಬಡಿದು ಅಳುವಂತೆ ಮಾಡುವವನು, ಶತ್ರುಗಳಿಗೆ  
ಸಂತಾಪವುಂಟುಮಾಡುವವನು. "ತಸ್ಯ ಮೌರ್ವಿಮಪಾಕರ್ಷನ್  
ಶೂರಃ ಸಂಕ್ರಂದನೋ ಯುಧಿ" ಭಾಂ ವಿರಾಟಂ ೪-೨೬।

**ಸಜ್ಜಕ್ರಮ ಸಂಕ್ರಮ (ಪುಂ)** 1. ನದಿ ಕಂದಕ ಕೋಟೆ  
ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ದಾಟಲು ಸಾಧನವಾದ ಕಟ್ಟಿ  
ಸೇತುವೆ ಮುಂತಾದುವು. ಸಜ್ಜಕ್ರಮತಯನೇನ — ಸಮ್ + ಕ್ರಮ  
(ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) ಕರಂ "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧)। "ಸಜ್ಜಕ್ರಮ-  
ವಜಯಣಿಣಾಂ ಪ್ರತಿಮಾಂ ಚ ಭೇದಕಃ। ಪ್ರತಿಕುರ್ಯಾಚ್ಚ ತತ್ಸರ್ವಂ  
ಪಚ್ಚ ದद्याತ್ ಶತಾನಿ ಚ" ಮನುಂ ೧-೨೮೪। 2. ಗ್ರಹಗಳು  
ರಾಶಿಯಿಂದ ರಾಶಿಗೆ ಹೋಗಿ ಸೇರುವುದು, ಗ್ರಹಗಳ  
ಸಂಚಾರ. 3. ಕೋಟೆಯೊಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು. ಸಮ್ +  
ಕ್ರಮ ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। (ಪುಂ) 4. ಸಂಚರಿಸು  
ವುದು. "ಸಜ್ಜಕ್ರಮಃ ಕ್ರಮಣೇ ಪುನಿ ನ ಸ್ತ್ರೀ ಸ್ಯಾದ್‌ದುರ್ಗಸಂಚರೇ"  
ಮೇದಿಂ। 5. ಒಂದು ವಿಷಯವನ್ನು ಸಾಧಿಸಲು ಬೇಕಾದ  
ಉಪಾಯ. "ವೇದವೇದಾಂತಮಾಪನ್ನಃ ಸೌತತಿಯಃ ಸ್ವರ್ಗ-  
ಸಜ್ಜಕ್ರಮಃ" ಪಚ್ಚತಂ ೪-೨। 6. ಸೋಪಾನ.

**ಸಜ್ಜಕ್ರಮಣ ಸಂಕ್ರಮಣ (ನಂ)** 1. ಗ್ರಹಗಳು ರಾಶಿಯಿಂದ  
ರಾಶಿಗೆ ಹೋಗಿ ಸೇರುವುದು. ಸಮ್ಯಕ್ ಕ್ರಮಣಮ್। ಸಮ್ +  
ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಗಮನ,  
ಸಂಚಾರ. 3. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಹೋಗುವುದು, ಏಕಾಭಿಮುಖ  
ವಾಗಿ ಹೋಗುವುದು. 4. ದಕ್ಷಿಣ ಅಯನ ಸಂಕ್ರಾಂತಿ,  
ಕರ್ಕಾಟಕ ಸಂಕ್ರಾಂತಿ. 5. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು.

**ಸಜ್ಜಕ್ರಾಂತ ಸಂಕ್ರಾಂತ (ವಿಂ)** 1. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ,  
ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ. ಸಮ್ + ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ)  
"ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। "ಪುತ್ರಸಜ್ಜಕ್ರಾಂತಲಕ್ಷ್ಮೀಕೇಯದ್ವೈ-  
ಕ್ಷವಾಕ್ರಮಿರ್ಭುತಮ್" ತಂ ರಾಂ ೧-೨೨। 2. ಸಂಕ್ರಾಂತಿ  
ಯಿಂದ ಕೊಡಿದ, ಸಂಕ್ರಮಣವಿರುವ (ಮಾಸ). ಸಂಕ್ರಮಣ  
ವಿಲ್ಲದ ಮಾಸವು ಅಧಿಕಮಾಸ (ಮಲಮಾಸ). 3. ವಶ  
ಪಡಿಸಿಕೊಂಡ, ಸ್ವಾಧೀನಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಂಡ. 4. ಪ್ರತಿ  
ಬಿಂಬಿತವಾದ, ಪ್ರತಿಫಲಿಸಿದ. "ರತಸ್ತಮ್ಭೇಷು ಸಂಕ್ರಾಂತಪ್ರತಿ-  
ಮಾಸ್ತೇ ಚಕಾಶಿರೇ" ಮಾಘಂ ೨-೪। 5. ಒಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿದ.  
(ನಂ) 6. ಸ್ತೋಧನ, ಹೆಂಗಸಿಗೆ ಅವಳ ಪತಿಯಿಂದ  
ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ ಧನ.

**ಸಜ್ಜಕ್ರಾಂತಿ ಸಂಕ್ರಾಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀ)** 1. ಗ್ರಹಗಳು ರಾಶಿಯಿಂದ  
ರಾಶಿಗೆ ಹೋಗಿ ಸೇರುವುದು. ಸಮ್ + ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ)  
"ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೧೪)। ರವಿಯು ಮೇಷಾದಿ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ  
ಸಂಚರಿಸುವ ಕಾಲ ಹನ್ನೆರಡು ತಿಂಗಳು. ಈ 12 ತಿಂಗಳ



ಸಂಕ್ರಾಂತಿಗಳ ವಿವರ: ಮೇಷ ಮತ್ತು ತುಲಾರಾಶಿ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವಾಗ ಅವುಗಳಿಗೆ ವಿಷುವತ್ ಎಂದೂ  
ಕರ್ಕಾಟಕ ಮತ್ತು ಮಕರರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವಾಗ  
ದಕ್ಷಿಣಾಯನ ಮತ್ತು ಉತ್ತರಾಯಣಗಳೆಂದೂ ಮಿಥುನ  
ಕನ್ಯಾ ಧನುಸ್ಸು ಮತ್ತು ಮೀನ ಸಂಕ್ರಾಂತಿಗಳಿಗೆ ಪಡಶೀತಿ  
ಯೆಂದೂ ವೃಷಭ ವೃಶ್ಚಿಕ ಸಿಂಹ ಮತ್ತು ಕುಂಭರಾಶಿ  
ಗಳಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಈ ಸಂಕ್ರಾಂತಿಗಳಿಗೆ ವಿಷ್ಣುಪದಿಯೆಂದೂ  
ಹೆಸರು. "ಮೃಗಕರ್ಕಟಸಂಕ್ರಾಂತಿ ದ್ವೇ ತುಲಾದಕ್ಷಿಣಾಯನೇ |  
ವಿಶ್ವವತೀ ತುಲಾಮೇಷೇ ಗೋಲಮಯೇ ತಥಾಪರಾ: || ಧನುರ್ಮಿಥುನ-  
ಕನ್ಯಾಸು ಮೀನೇ ಚ ಷಡಶೀತಿ: | ವೃಷಭವೃಶ್ಚಿಕಸಿಂಹೇಷು ಕುಂಭೇ  
ವಿಷ್ಣುಪದೀ ಸ್ಮೃತಾ" || 2. ಇನ್ನೊಂದು ಕಡೆ ಸಂಬಂಧ  
ಹೊಂದುವುದು, ಇನ್ನೊಂದು ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಹೋಗಿ  
ಸೇರುವುದು. "ಶಶಿಸ್ತ ಯ: ಪಾತ್ರಗುಣಾದ್ಗುಣಾನಾಂ ಸಂಕ್ರಾಂತಿ-  
ಮಾಕ್ರಾಂತಗುಣಾತಿರೇಕಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೧೬ | 3. ಇನ್ನೊಂದು  
ಕಡೆ ಸೇರಿಸುವುದು, ಇನ್ನೊಂದರಲ್ಲಿ ಸಂಬಂಧಪಡಿಸು  
ವುದು. ಸಮ್ + ಕ್ರಮು + ಣಿಚ್ "ಕ್ರಿನ್" (೩-೩-೯೪) |  
"ಶಿಷ್ಠಾ ಕ್ರಿಯಾ ಕಸ್ಯಚಿದಾತ್ಮಸಂಸ್ಥಾ ಸತ್ಯಕ್ರಾಂತಿರನ್ಯಸ್ಯ  
ವಿಶೇಷಯುಕ್ತಾ" ಮಾಲಂ ೧-೧೬ |

ಸತ್ಯಕಾಮ ಸಂಕ್ರಾಮ (ಪುಂ) 1. ದುರ್ಗಸಂಚರ, ಹೊಳೆ  
ಕೋಟೆ ಕಂದಕ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ದಾಟಲು ಸಾಧನ  
ವಾದ ಸೇತುವೆ ಕಟ್ಟಿ ಮೊದಲಾದುವು. ಸಮ್ + ಕ್ರಮು  
(ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧) | 2. ಸಂಚರಿಸು  
ವುದು. ಭಾವೇ "ಘ್" (೩-೩-೧೮) | 3. ಸ್ವಾಧೀನ  
ಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಸತ್ಯಕಾಮತ್ ಸಂಕ್ರಾಮತ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವ.  
2. ದಾಟುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಕ್ರಮು (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | 3. ಸೇರಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಸಂಬಂಧ  
ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ. 4. ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿಸುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರತಿ  
ಫಲಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಕಾಮಂತೀ  
-ಕ್ರಾಮಂತೀ.

ಸತ್ಯಕಾಮಿತ ಸಂಕ್ರಮಿತ (ವಿಂ) ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಬಂಧ  
ಕಲ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಕ್ರಮು (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪೇ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ರ:"  
(೩-೨-೧೦೨) |

ಸತ್ಯಕ್ರೀಡತ್ ಸಂಕ್ರೀಡತ್ (ವಿಂ) 1. ಕಲಿತು ಆಡುತ್ತಿರುವ.  
ಸಮ್ + ಕ್ರೀಡ (ವಿಹಾರೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | 2. ಶಬ್ದ  
ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಸದ್ದುಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್"  
(೪-೧-೬) | -ಕ್ರೀಡಂತೀ -ಕ್ರೀಡಂತೀ. "ಸತ್ಯಕ್ರೀಡಂತೀ  
ತೇಜಿತಾಶ್ವಸ್ಯ ರಾಗಾದ್ವಯ್ಯಾರಾಮಗ್ರಕಾಯೋತ್ಥಿತಸ್ಯ" ಮಾಘಂ  
೧೮-೭ |

ಸತ್ಯಕ್ರೀಡನ ಸಂಕ್ರೀಡನ (ನಂ) ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕಲಿತು ಆಟವಾಡು  
ವುದು. ಸಮ್ + ಕ್ರೀಡ (ವಿಹಾರೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) |  
ಸತ್ಯಕ್ರೀಡಿತ ಸಂಕ್ರೀಡಿತ (ನಂ) ರಥದ ಶಬ್ದ, ರಥ ಓಡು  
ವಾಗ ಆಗುವ ರಟರಟ ಶಬ್ದ. ಸಮ್ಯಕ್ ಕ್ರೀಡಿತಮ್ |  
"ರಥಾಙ್ಗಸತ್ಯಕ್ರೀಡಿತಮಶ್ವಹೇಷಾ ಬೃಹಂತಿ ಮತದ್ವಿಪಬೃಹಿತಾನಿ"  
ಕಿರಾಂ ೧೬-೮ |

ಸತ್ಯಕ್ಲೇದ ಸಂಕ್ಲೇದ (ಪುಂ) ತೇವ, ಒದ್ದೆ, ಅದ್ವರ್ತವಾಗಿರು  
ವಿಕೆ. ಸಮ್ + ಕ್ಲೇದ (ಆದ್ರಿಭಾವೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) |

ಸತ್ಯಕ್ಷಯ ಸಂಕ್ಷಯ (ಪುಂ) ಪ್ರಳಯ, ಜಗತ್ತಿನ ನಾಶ.  
ಸಮ್ + ಕ್ಷಿ (ಕ್ಷಯೇ) "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬) |

ಸತ್ಯಕ್ಷಿಪತ್ ಸಂಕ್ಷಿಪತ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂಗ್ರಹಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಸಂಕ್ಷೇಪಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಕಡಮೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ +  
ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | 2. ಎಸೆಯು  
ತ್ತಿರುವ.

ಸತ್ಯಕ್ಷಿಪ್ತ ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಸಂಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಕ್ಷೇಪ  
ವಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಕ್ರ:"  
(೩-೨-೧೦೨) | "ಸತ್ಯಕ್ಷಿಪ್ತಸ್ಯಾಪ್ಯತೋಽಪ್ಯವ ವಾಕ್ಯಸ್ಯಾರ್ಥ-  
ಗರೀಯಸ: | ಸುವಿಸ್ತರತರಾ ವಾಚೋ ಭಾಷ್ಯಭೂತಾ ಭವಂತು ಮೇ"  
ಮಾಘಂ ೨-೨೪ | 2. ಕೂಡಿಕಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ರಾಶಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ.  
"ಆತಪಾತ್ಯಯಸತ್ಯಕ್ಷಿಪ್ತನಿವಾರಾಸು ನಿಷಾದಿಭಿ:" ರಘುಂ  
೧-೫೨ | 3. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಕ್ಷಿಪ "ಕ್ರ:" |  
4. ಕಡಮೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಕ್ಷೇಪ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಕುಗ್ಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸತ್ಯಕ್ಷಿಪ್ತಿ ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಡಮೆ ಮಾಡುವುದು,  
ಕುಗ್ಗಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಕ್ರಿನ್" (೩-೩-೯೪) |  
2. ಎಸೆಯುವುದು, ಪ್ರಯೋಗಿಸುವುದು. 3. ಸಂಗ್ರಹ  
ಮಾಡುವುದು, ಸಂಕ್ಷೇಪಮಾಡುವುದು. 4. ಕೂಡಿಕಾಕು  
ವುದು, ರಾಶಿಹಾಕುವುದು.

ಸತ್ಯಕ್ಷೇಪ ಸಂಕ್ಷೇಪ (ಪುಂ) 1. ಕಡಮೆಮಾಡುವುದು, ಸಂಗ್ರಹ  
ಮಾಡುವುದು. ಸಮ್ + ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) |  
2. ಸಂಗ್ರಹವಾದ ವಿವರಣೆ, ಸಂಗ್ರಹವಾಗಿ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸು  
ವುದು. "ಸತ್ಯಕ್ಷೇಪಾತ್ ಕಥ್ಯತೇ ಧರ್ಮೋ ಜನಾ: ಕಿ ವಿಸ್ತರೇಣ ವ:"  
ಪञ್ಚತಂ ೩-೧೦೧ | 3. ಎಸೆಯುವುದು, ಬಿಡುವುದು.  
4. ಕೂಡಿಕಾಕುವುದು, ರಾಶಿಹಾಕುವುದು. "ಲ್ಯುಡ್"  
(೩-೩-೧೧೫) | -ಕ್ಷೇಪಣಮ್ -ಕ್ಷೇಪಣಮ್.

ಸತ್ಯಕ್ಷುಭಿತ ಸಂಕ್ಷುಭಿತ (ವಿಂ) 1. ಕೋಳಿಗೊಂಡ,  
ರೇಗಿದ. ಸಮ್ + ಕ್ಷುಭ (ಸಂಚಲನೆ) "ಕ್ರ:" (೩-೪-೭೨) |  
2. ಚಲಿಸಿದ, ಅಲುಗಾಡಿದ. 3. ಚಿತ್ತವಿಕಾರ ಹೊಂದಿದ,  
ಕಳವಳಗೊಂಡ. 4. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ.



ಸತ್ಯೋಭ ಸಂಖ್ಯೋಭ (ಪುಂ) 1. ಚಲನೆ, ಅಲುಗಾಡುವುದು. 2. ಚಿತ್ತವಿಕಾರ, ಮನಸ್ಸು ಕೆರಳುವುದು. ಸಮ್ + ಧುಮ (ಸञ्चलने) "घञ्" (३-३-१८) । "गाम्भीर्यं दधदपि रन्तुमङ्गनाभिः सत्त्योभं जघनविघट्टनेन नीतः" माघ० ८-२६ । 3. ಔದ್ಭುತ, ಗರ್ವ, ದರ್ವ. "एतस्मिन्नाधिकपयःश्रियं वहन्त्यः सत्त्योभं पवनभुवा जवेन नीताः" माघ० ४-५९ । 4. ಪಲ್ಲಟಗೊಳ್ಳುವುದು, ತಲೆಕೆಳಗಾಗುವುದು. "सत्त्योभं पयसि मुहुर्महेभकुम्भ श्रीभाजा कुचयुगलेन नीयमाना" माघ० ८-१८ ।

ಸತ್ಯಕ್ಷಣತ ಸಂಕ್ಷುತ (ವಿಂ) ಉತ್ತೇಜನಗೊಂಡ, ಹುರಿದುಂಬಿದ, ಪ್ರೋತ್ಸಾಹ ಹೊಂದಿದ. ಸಮ್ + ಕ್ಷು (तेजने) "क्तः" (३-४-७२) ।

ಸತ್ಯಕ್ಷಣವಾನ ಸಂಕ್ಷುತವಾನ (ವಿಂ) ಉತ್ತೇಜನಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹುರಿದುಂಬಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಕ್ಷು (तेजने) "शानच्" (३-२-१२४) । ಆತ್ಮನೇಪದಮ್ (१-३-६५) । "सत्त्यक्षणावत इवोत्कण्ठामुपाभुङ्क्त सुरामलम्" भट्टि० ८-४० ।

ಸತ್ಯಸಂಖ್ಯ (ನಂ) ಸಮರ, ಯುದ್ಧ, ಕಾಳಗ. ಸಮ್ಯಕ್ ಸ್ಥಾಯತೇಽಸ್ಮಿನ್—ಸಮ್ + ಸ್ಥಾ (प्रकथने) "कः" बाहु० । "रक्ताम्भोभिः तत्क्षणादेव तस्मिन् सत्त्यसंख्याः प्रावहन् द्वीपवत्यः" माघ० १८-७० ।

ಸತ್ಯಸಂಖ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬುದ್ಧಿ. ಸಂಖ್ಯಾಯತೇಜನಯಾ—ಸಮ್ + ಸ್ಥಾ (प्रकथने) (३-३-१०६) । 2. ಅಂಕ, ಅಂಕಿ. ಒಂದು ಎರಡು ಮುಂತಾದ ಅಂಕಿ. 3. ಪ್ರಮಾಣಗಳಿಂದ ಚರ್ಚಿಸುವುದು, ಪ್ರಮಾಣವಚನಗಳಿಂದ ವಿಚಾರಮಾಡುವುದು. "चर्चा सत्त्यस्या विचारणा" अम० । 4. ಎಣಿಕೆ, ಎಣಿಸುವುದು. "प्रत्येकनिक्षिप्तपदः सशब्दं संख्यामिवैषां भ्रमरश्चकार" रघु० १६-४७ । "सत्त्यं समिति सत्त्यस्या स्यादेकाद्यादिविचारयोः" मेदि० ।

ಸತ್ಯಸಂಖ್ಯಾತ ಸಂಖ್ಯಾತ (ವಿಂ) 1. ಎಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸತ್ಯಸಂಖ್ಯಾಯತೇ ಸಮ್—ಸಮ್ + ಸ್ಥಾ (प्रकथने) "क्तः" (३-२-१०२) । 2. ಎಣಿಸಿ ಕಂಡುಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೊತ್ತ. "रजोभिः समसत्त्ययाताः पार्थिवैरिह जन्तवः । तेषां ये केचनेहन्ते श्रेयो वै मनुजादयः" भाग० ६-१४-३ ।

ಸತ್ಯಸಂಖ್ಯಾನ ಸಂಖ್ಯಾನ (ನಂ) 1. ಸಂಖ್ಯೆ, ಅಂಕಿ. ಸಮ್ + ಸ್ಥಾ (प्रकथने) "ल्युट्" (३-३-११५) । "मिथ्यावादी च सत्त्ययाने दाप्योष्टगुणमत्ययम्" मनु० ८-४०० । 2. ಪ್ರಕಾಶ.

ಸತ್ಯಸಂಖ್ಯಾವತ್ ಸಂಖ್ಯಾವತ್ (ಪುಂ) 1. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. ಸತ್ಯಸಂಖ್ಯಾವತ್: विचारणा वास्त्यस्य "मनुप्" (५-२-१४) । (वि०) 2. ಸಂಖ್ಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಸತ್ಯಸಂಖ್ಯಾವಾಚಕ ಸಂಖ್ಯಾವಾಚಕ (ವಿಂ) ಸಂಖ್ಯೆಯನ್ನು ಹೇಳುವ (ತಬ್ಬ). ಸತ್ಯಸಂಖ್ಯಾವಾಚಕ: वक्ति बोधयति अभिधावृत्त्या—वच (परिभाषणे) "ण्वल्" (३-१-१३३) । "साक्षात् सङ्केतितं योऽर्थमभिधत्ते स वाचकः" काव्यप्र० । एकः द्वौ त्रयः चत्वारः पञ्च षट् ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸತ್ಯಸಂಖ್ಯೇಯ ಸಂಖ್ಯೇಯ (ವಿಂ) ಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಎಣಿಕೆಗೆ ಅರ್ಹವಾದ. ಸತ್ಯಸಂಖ್ಯೇಯ: योग्यम्—सम् + ख्या (प्रकथने) "यत्" (३-१-१७) । ಆತ: ईत् (६-४-६५) । ಒಂದರಿಂದ ಹತ್ತರವರೆಗಿನ (1-10) ಸಂಖ್ಯೆಗಳು ಸಂಖ್ಯೇಯವಾದಾಗ ತ್ರಿಲಿಂಗವಾಗುವವು. एकः पटः एकं वस्त्रम् एका शाटी दश स्त्रियः दश पटाः दश वस्त्राणि । "सत्त्यस्याः सत्त्येये ह्यादश त्रिषु" अम० । ವಿಶತಿ ಮೊದಲುಗೊಂಡ ಎಲ್ಲಾ ಸಂಖ್ಯೆಗಳೂ ಏಕವಚನ ದಲ್ಲೇ ಇರುವವು. विशतिः पटाः विशतिः पटानाम् शतं गावः शतं गवाम् ಇತ್ಯಾದಿ. ವಿಶತಿ ಮೊದಲಾದುವು ಸಂಖ್ಯೆಯನ್ನು ಮಾತ್ರ ಹೇಳುವಾಗ ದ್ವಿವಚನ ಬಹುವಚನ ಗಳಾಗಿಯೂ ಆಗುವವು. द्वे विशती तिस्रो विशतयः गवां विशती गवां विशतयः ಇತ್ಯಾದಿ. "विशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः सत्त्येयसत्त्ययोः । सत्त्यार्थे द्विबहुत्वे स्तः" अम० । ವಿಶತಿ ಮೊದಲುಗೊಂಡು ನವತಿ ವರೆಗಿನ (20-90) ಸಂಖ್ಯೆಗಳು ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗವಾಗಿರುವವು. "तासु चानवतेः स्त्रियः" अम० ।

ಸತ್ಯಸಂಗ (ಪುಂ) 1. ಸಂಬಂಧ, ಸ್ಪರ್ಶ. ಪञ्ज (सङ्गे) "घञ्" (३-३-१८) । "विलप्यद्विरन्योन्यमुखाग्र-सङ्गस्खलत्खलीनं हरिर्भिविलोलः" माघ० ३-६६ । 2. ಸಹವಾಸ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕಲೆತಿರುವುದು, ಸಂಗಡ ವಾಸ ಮಾಡುವುದು. "सङ्गः सर्वात्मना त्याज्यः स चेत्यक्तुं न शक्यते । स सङ्गिः सह कर्तव्यः सन्तः सर्वस्य भेषजम्" । 3. ಅಸಕ್ತಿ, ಪ್ರೀತಿ. "व्यायतो विषयान् पुंसस्सङ्गस्तेषूपजायते । सङ्गात् सञ्जायते कामः कामा-त्क्रोधोऽभिजायते" गीता २-६२ । 4. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಂ ವುದು, ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದುವುದು, ಒಬ್ಬರನ್ನೊಬ್ಬರು ಸಂಧಿಸುವುದು. 5. ಸಂಪರ್ಕ, ವ್ಯವಹಾರರೂಪ ಸಂಬಂಧ. "वर्जयन्त्या जनैः सङ्गमेकान्ततः तर्कयन्त्या सुखं सङ्गमे कान्ततः" माघ० ४-४२ । "सङ्गेन वो गर्भतपस्विनः शिशुःवराक एषोऽन्तमवाप्स्यति ध्रुवम्"



ಕುಮಾಂ ೧೪-೪೨ | 6. ಸಂಸಾರ್. "ದೊಮ್ನಾತ್ ನೃಪತಿ-  
ವಿನಶ್ಯತಿ ಯತಿಃ ಸಜ್ಜಾತ್ ಸುತೋ ಲಾಲನಾತ್" ಭರ್ತಂ ೧-೩೩ |  
ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ಸಂತ್ಸಂಗದಿಂದ ಸತ್ಪಲ, ದುಃಸಂಗದಿಂದ  
ದುಷ್ಪಲ. "ಸತ್ಸಜ್ಜಃ ಕೇಶವೇ ಭಕ್ತಿಃ ಗಜ್ಜಾಮ್ಭಸಿ ನಿಮಜ್ಜ-  
ನಮ್ | ಅಸಾರೆ ಖಲು ಸಂಸಾರೆ ತ್ರಿಣಿ ಸಾರಾಣಿ ಭಾವಯೇತ್" |  
ದುರ್ಜನರ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಮನುಷ್ಯನ ಸದ್ಗುಣಗಳೆಲ್ಲವೂ  
ತಿರೋಹಿತವಾಗುವುವು. "ಅಣುರಪ್ಯಸತಾಂ ಸಜ್ಜಃ ಸದ್ಗುಣಂ  
ಹಂತಿ ವಿಸ್ತೃತಮ್" ||

**ಸಜ್ಜತ ಸಂಗತ (ನಂ)** 1. ಸಮಂಜಸವಾದ ಮಾತು, ಯುಕ್ತಿ,  
ಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮಾತು. ಸಮ್ + ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ"  
(೩-೪-೭೨) | "ಹಲಾ, ಶೃಣುತಮಿದಾನಿಂ ಸಜ್ಜತಾರ್ಥಂ ನ ವೇತಿ"  
ಶಾಕುಂ ೩ | 2. ಸೌಹಾರ್ದ, ಸ್ನೇಹ. "ಯತಃ ಸತಾಂ  
ಸಜ್ಜತಗಾಂ ಸಜ್ಜತಂ ಮನೋಭಿಃ ಸಾಪ್ತಪದಿನಮುಚ್ಯತೇ" ಕುಮಾಂ  
೫-೩೯ | (ವಿಂ) 3. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಕೂಡಿಕೊಂಡಿ-  
ರುವ. "ಸಜ್ಜತಾಭಿರುತ್ತಿತಶ್ಚಲಿತಾಪಿ ಪ್ರಾಗಮುಚ್ಯತ ಚಿರೇಣ  
ಸಖಿವಿ" ಮಾಘಂ ೧೦-೮೧ | 4. ಪರಸ್ಪರ ಒಟ್ಟುಗೂಡಿದ,  
ಜೊತೆಗೂಡಿದ. 5. ಸುರತಕ್ಕಾಗಿ ಒಟ್ಟುಗೂಡಿದ. "ಅತಃ  
ಪರೀಕ್ಷ್ಯ ಕರ್ತವ್ಯಂ ವಿಶೇಷಾತ್ಸಜ್ಜತಂ ರಹಃ" ಶಾಕುಂ ೫-೨೪ |

**ಸಜ್ಜತಿ ಸಂಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸಂಬಂಧ. ಸಮ್ + ಗಮ್ಲ  
(ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | "ಮನೋ ಹಿ ಜನ್ಮಾಂತರ-  
ಸಜ್ಜತಿಜಮ್" ರಘುಂ ೭-೧೫ | 2. ಸಹವಾಸ, ಜೊತೆ  
ಯಲ್ಲಿರುವುದು. "ವಾಙ್ಮಾ ಸಜ್ಜನಸಜ್ಜತೌ ಪರಗುಣೇ ಪ್ರೀತಿ-  
ಗುರೌ ನಮ್ರತಾ ವಿವಾಹಾಂ ವ್ಯಸನಂ ಸ್ವಯಂಭಿತಿ ರತಿಲೋಕಾ-  
ಪವಾದಾಙ್ಮಯಮ್" ಭರ್ತಂ ೧-೫೧ | 3. ಸುರತ, ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ  
ಸಂಗಮ. 4. ಪರಸ್ಪರ ಸಮಾಗಮ, ಪರಸ್ಪರ ಸಂಧಿಸು-  
ವುದು. "ಕ್ಷಣಮಿಹ ಸಜ್ಜನಸಜ್ಜತಿರೇಕಾ ಭವತಿ ಮವಾಣವ-  
ತರಣೇ ನೌಕಾ" | 5. ಉಪಾಯ, ಯುಕ್ತಿ. "ತ್ವಮಥ  
ಭವ ನೌ ರಾಜಾ ರಾಜಪುತ್ರ ಮಹಾಯಶಃ | ಸಜ್ಜತಯಾ ನಾಪರಾಧನೌತಿ  
ರಾಜ್ಯಮೇತದನಾಯಕಮ್" ರಾಮಾಂ | 6. ಏಕವಾಕ್ಯಗತವಾದ  
ಅನೇಕ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಮುಂದು ಮುಂದಿನ ವಿಷಯಗಳ  
ಜಿಜ್ಞಾಸೆ. ಈ ಸಂಗತಿಯು (1) ಪ್ರಸಜ್ಜಃ (2) ಉಪೋದ್ಧಾತಃ  
(3) ಹೇತುತ್ವಮ್ (4) ಅವಸರಃ (5) ನಿರ್ವಾಹಕತ್ವಮ್ ಮತ್ತು  
(6) ಕಾರ್ಯಕೃತ್ಯಮ್ ಎಂದು ಆರು ವಿಧ. ಏಕವಾಕ್ಯತಾಪನ್ನತ್ವೇ  
ಸತಿ ಅನಂತರಾಭಿಧಾನಪ್ರಯೋಜಕಜಿಜ್ಞಾಸಾಜನಕಜ್ಞಾನವಿಷಯಃ |  
ಯಥಾ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷನಿರೂಪಣಕಾರ್ಯತ್ವಮ್ ಅನುಮಾನನಿರೂಪಣೇ ಸಜ್ಜತಿಃ |  
7. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. 8. ಸಮಂಜಸವಾಗಿರುವಿಕೆ,  
ಯುಕ್ತಿಯುಕ್ತವಾಗಿರುವಿಕೆ.

**ಸಜ್ಜಮ ಸಂಗಮ (ಪುಂ)** 1. ಸಂಧಿಸುವುದು, ಸೇರುವುದು,  
ಭೇಟಿಯಾಗುವುದು. ಸಮ್ + ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಅಪ್"

(೩-೩-೫೮) | "ಭೂಮಿವನರವೇವಸಜ್ಜಮೇ ಪೂರ್ವದೇವರಿಪುರಹಂ  
ಹರಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೪-೫೮ | 2. ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರು ಒಟ್ಟು  
ಗೊಂಡು, ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರು ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವಿಕೆ. "ವರ್ಜ-  
ಯಂತ್ಯಾ ಜನಃ ಸಜ್ಜಮೇಕಾಂತತಸ್ತಕಯಂತ್ಯಾ ಸುಖಂ ಸಜ್ಜಮೇ  
ಕಾಂತತಃ" ಮಾಘಂ ೪-೪೨ | "ಅಯಂ ಸ ತೇ ತಿಷ್ಠತಿ  
ಸಜ್ಜಮೋತ್ಸುಕಃ" ಶಾಕುಂ ೩-೧೪ | 3. ನದಿ ಮೊದಲಾದುವು  
ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಸೇರುವುದು. ಗಂಗಾ ಯಮುನಾ ಸರಸ್ವತೀ  
ಸಂಗಮ, ತ್ರಿವೇಣೀ ಸಂಗಮ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಸಜ್ಜರ ಸಂಗರ (ಪುಂ)** 1. ಯುದ್ಧ, ಕಾಳಗ. ಸಂಗೃಹ್ಣಂತಿ  
ಶಬ್ದಾಯಂತೇ ವೀರಾ ಅತ್ರ — ಸಮ್ + ಗ್ (ಶಬ್ದೇ) "ಅಪ್"  
(೩-೩-೫೭) | "ಅತರತ್ ಸ್ವಭುಜೋಜಸಾ ಮುಹುರ್ಮಹತಃ ಸಜ್ಜರ-  
ಸಾಗರಾನಸೌ" ಮಾಘಂ ೧೬-೬೭ | 2. ವಾಗ್ವಾದನ, ಭಾಷೆ,  
ಭರವಸೆ, ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. "ತಥೇತಿ ತಸ್ಯಾಽವಿತಥಂ ಪ್ರತೀತಃ  
ಪ್ರತ್ಯಗ್ರಹೇತ್ಸಜ್ಜರಮಗ್ರಜನ್ಮಾ" ರಘುಂ ೫-೨೬ | 3. ಅಂಗೀ-  
ಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಮ್ಮತಿ. 4. ವ್ಯಾಪಾರ, ವಾಣಿಜ್ಯ. 5. ಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆ. 6. ಆಪತ್ತು. 7. ಕ್ರಿಯಾಕಾರ. 8. ವಿಷ. (ನಂ) 9. ಶಮೀಫಲ. "ಸಜ್ಜರೋ ಯುಧಿ  
ಚಾಪದಿ | ಕ್ರಿಯಾಕಾರೇ ವಿಷೇ ಚಾಜ್ಞೀಕಾರೇ ಕಲಿಬಂ ಶಮೀಫಲೇ"  
ಮೇದಿಂ |

**ಸಜ್ಜವ ಸಂಗವ (ಪುಂ)** ಹಗಲಿನ ಐದನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ,  
ಹಗಲಿನ ಐದು ಭಾಗಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡನೆಯ ಭಾಗ, ಪ್ರಾತಃ  
ಕಾಲದ ನಂತರ ಮೂರು ಮುಹೂರ್ತಗಳ ಕಾಲ. ಸಜ್ಜತಾ-  
ಗಾವೋ ದೋಹನಾರ್ಥಂ ಯತ್ರ | "ಪ್ರಾತಃಕಾಲೋ ಮುಹೂರ್ತಾನ್ ತ್ರಿನ್  
ಸಜ್ಜವಸ್ತಾವದೇವ ಹಿ | ಮಧ್ಯಾಹ್ನಃ ತ್ರಿಮುಹೂರ್ತಃ ಸ್ಯಾತ್ ಅಪರಾಹ್ನ-  
ಸ್ತತಃ ಪರಮ್ | ಸಾಯಾಹ್ನಸ್ತ್ರಿಮುಹೂರ್ತಃ ಸ್ಯಾತ್ ಶ್ರಾದ್ಧಂ ತತ್ರ ನ  
ಕಾರಯೇತ್" |

**ಸಜ್ಜಿನ್ ಸಂಗಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ.  
ಸಜ್ಜೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ—ಸಜ್ಜ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫) | "ಸಂಪೂರ್ಣ-  
ಲಬ್ಧಲಲನಾಲಪನೋಪಮಾನಮುತ್ಸಜ್ಜಸಜ್ಜಿಹರಿಣಸ್ಯ ಮೃಗಾಙ್ಕ-  
ಮೂತಃ" ಮಾಘಂ ೪-೨೨ | 2. ಅಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳ, ಪ್ರೀತಿ  
ಯುಳ್ಳ. "ನವಪಯಃಕಣಕೋಮಲಮಾಲತೀಕುಸುಮಸಂತತಿಸಂತತ-  
ಸಜ್ಜಿಮಿಃ" ಮಾಘಂ ೬-೩೬ | 3. ಕಾಮಾಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳ. 4. ಅನುಸ್ಮೃತವಾದ,  
ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾದ, ಎಡೆಬಿಡದ.  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೫) | —ನಿ —೩೯. "ವಿಧೂನಿತಂ  
ಭ್ರಾಂತಿಮಿವಾಪ ಸಜ್ಜಿಣಿಂ ಮಹಾನಿಲೇನೇವ ನಿರ್ದಾಪಜಂ ರಜಃ"  
ಕಿರಾಂ ೧೪-೫೯ |

**ಸಜ್ಜಿತ ಸಂಗೀತ (ನಂ)** 1. ಅನೇಕ ಮಂದಿ ಒಟ್ಟಿಗೆ ಹಾಡು  
ಮಂತೆ ಮಾಡಿರುವ ಗೀತ, ಗಾನ, ಹಾಡು. ಸಮ್ + ಗೆ  
(ಶಬ್ದೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೩) | "ಮತ್ತಮಧುಕರಮುಕ್ತ-



ಸಜ್ಜಾರಮಿಲಿತಕೋಕಿಲಾಲಾಪಸಜ್ಜಿತಸುಖಾವಹಂ ಮಕರಂದೋ-  
ದಾನಮ್" ರತ್ನಾಂ ೧. 2. ತೌರ್ಯತ್ರಿಕ, ಪ್ರೇಕ್ಷಕರ  
ಸಂತೋಷಾರ್ಥವಾಗಿ ಏರ್ಪಡುವ ನೃತ್ಯ ಗೀತ ಮತ್ತು  
ವಾದ್ಯ. "ಗೀತವಾಚನನೃತ್ಯತ್ರಯಂ ನಾಟಕಂ ತೌರ್ಯತ್ರಿಕಂ ಚ ತತ್ |  
ಸಜ್ಜೀತಂ ಪ್ರೇಕ್ಷಣಾರ್ಥೇಷ್ಮಿನ್ ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತೇ ನಾಟಕಧರ್ಮಿಕಾ" |  
"ಆನ್ದ್ರೇಶ್ವರಪುರಾಣಿಣಾಂ ಸಜ್ಜೀತಃ ಪ್ರತಿನಂದತ" ಯಾದಂ  
೨೨-೧೬೦. 3. ನೃತ್ಯ ಗೀತ ಮತ್ತು ವಾದ್ಯಗಳ ಶಾಸ್ತ್ರ.  
ಸಜ್ಜೀತಿ ಸಂಗೀತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಾಡುವುದು, ಗಾನಮಾಡು-  
ವುದು. ಸಮ್ + ಗೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) |  
2. ಸಂಗೀತ.

ಸಜ್ಜೀರ್ಣ ಸಂಗೀರ್ಣ (ವಿಂ) ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಪ್ಪ-  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮ್ಮತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಗ್ (ನಿಗರಣೇ) "ಕ್ತಃ"  
(೩-೨-೧೦೨) |

ಸಜ್ಜಗುಪ್ತ ಸಂಗುಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಸಮ್ + ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ರಹಸ್ಯ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಗುಪ (ಗೋಪನೇ) "ಕ್ತಃ" |

ಸಜ್ಜಗೃಹ ಸಂಗೃಹ (ವಿಂ) 1. ಇನ್ನೊಂದು ಅಂಕಿಯೊಡನೆ  
ಸೇರಿಸಿ ಕೂಡಲ್ಪಟ್ಟ (ಅಂಕಿ). 2. ರಾಶಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ  
(ದಾನ್ಯ). ಸಮ್ + ಗುಹ (ಸಂವರಣೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) |  
"ಸಜ್ಜಗೃಹಃ ಸ್ವಾತ್ಸಕ್ತಲಿತಃ" ಅಮಂ |

ಸಜ್ಜೋಪನ ಸಂಗೋಪನ (ನಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ರಕ್ಷಿಸುವುದು.  
2. ರಹಸ್ಯಮಾಡುವುದು. ಸಮ್ + ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೇ), ಗುಪ  
(ಗೋಪನೇ) ವಾ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |

ಸಜ್ಜೋಪನೀಯ ಸಂಗೋಪನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ  
ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ರಕ್ಷಿಸಬೇಕಾದ. 3. ರಕ್ಷಿಸಲು  
ಅರ್ಹವಾದ. ಸಮ್ + ಗುಪ್ (ರಕ್ಷಣೇ) "ಅನೀಯರ್"  
(೩-೧-೯೬) | 4. ರಹಸ್ಯಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 5. ರಹಸ್ಯ  
ಮಾಡಬೇಕಾದ. 6. ರಹಸ್ಯಮಾಡಬಹುದಾದ.

ಸಜ್ಜಗ್ರಹ ಸಂಗ್ರಹ (ಪುಂ) 1. ಕೂಡುವುದು, ಸಂಗ್ರಹಣೆ.  
ಶೇಖರಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) "ಅಪ್"  
(೩-೩-೪೮) | "ಕೋಶೇನಾಶ್ರಯಣೀಯತ್ವಮಿತಿ ತಸ್ಯಾರ್ಥ-  
ಸಜ್ಜಗ್ರಹಃ | ಅಮ್ಬುಗರ್ಭೋ ಹಿ ಜಿಮೃತಶ್ಚಾತಕೇರಮಿನಂದತೇ"  
ರಘುಂ ೧೭-೬೦ | 2. ಸಂಕ್ಷೇಪ, ವಿಸ್ತರವಾಗಿ ಉಕ್ತವಾದ  
ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಕಡಮೆಮಾಡಿ ಹೇಳುವ ಗ್ರಂಥ. ಸಜ್ಜಕ್ಷೇಪೇಣ  
ಗೃಹ್ಯಂತೇ ಅರ್ಥಾಃ ಬುದ್ಧ್ಯಂತೇನ — ಸಮ್ + ಗ್ರಹ "ಅಪ್" |  
"ವಿಸ್ತರೇಣೋಪದಿಷ್ಟಾನಾಮರ್ಥಾನಾಂ ಸೂತ್ರಭಾಷಯೋಃ | ನಿಬಂಧೋ  
ಯಃ ಸಮಾಸೇನ ಸಜ್ಜಗ್ರಹಂ ತಂ ವಿದುರ್ಬುದ್ಧಾಃ" | ಅರ್ಥಸಜ್ಜಗ್ರಹಃ  
ತರ್ಕಸಜ್ಜಗ್ರಹಃ ಇತ್ಯಾದಿ. 3. ಕೂಡುವುದು, ದಾಸ್ಯಾನು-

ಮಾಡುವುದು. 4. ಆದರಿಸುವುದು, ಸತ್ಕರಿಸುವುದು.  
"ನಿಗ್ರಹೇಣ ಚ ಪಾಪಾನಾಂ ಸಾಧುನಾಂ ಸಜ್ಜಗ್ರಹೇಣ ಚ | ದ್ವಿಜಾತಯ  
ಐವೇಜ್ಯಾಭಿಃ ಪೂಯಂತೇ ಸತತಂ ನೃಪಾಃ" ಮನುಂ ೮-೩೧೧ |  
5. ಅನೇಕ ಗ್ರಂಥಗಳಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ವಿಷಯಗಳನ್ನು  
ಒಂದು ಕಡೆ ಸಂಕ್ಷೇಪವಾಗಿ ಹೇಳುವ ಗ್ರಂಥ. ಸ್ಮೃತಿಸಜ್ಜಗ್ರಹಃ  
ದ್ರವ್ಯಸಜ್ಜಗ್ರಹಃ ಇತ್ಯಾದಿ. 6. ಸಾರಾಂಶ, ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತ, ವಿವರಣೆ.  
"ಯದಿಚ್ಛಂತೋ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಂ ಚರಂತಿ ತತ್ತೇ ಪದಂ ಸಜ್ಜಗ್ರಹೇಣ ಪ್ರವಕ್ಷ್ಯೇ"  
ಗೀತಾ ೮-೧೧ | 7. ರಕ್ಷಣೆ, ಪಾಲನೆ. "ರಾಷ್ಟ್ರಸ್ಯ ಸಜ್ಜಗ್ರಹೇ  
ನಿತ್ಯಂ ವಿಧಾನಮಿದಮಾಚರೇತ್ | ಸುಸಜ್ಜಗ್ರಹೀತರಾಷ್ಟ್ರೋ ಹಿ  
ಪಾಥಿವಃ ಸುಖಮೇಧತೇ" ಮನುಂ ೭-೧೧೩ | 8. ಒಟ್ಟು,  
ಮೊತ್ತ. "ಕರಣಂ ಕರ್ಮ ಕರ್ತೇತಿ ತ್ರಿವಿಧಃ ಕರ್ಮಸಜ್ಜಗ್ರಹಃ"  
ಗೀತಾ ೧೮-೧೮ | 9. ರಾಶಿಗೂಡುವುದು, ಮುದ್ದೆಯಾಗು-  
ವುದು. 10. ಬಿಗಿಮುಟ್ಟು, ದೃಢಮುಟ್ಟು. 11. ಅಂಗೀ-  
ಕಾರ, ಸ್ವೀಕಾರ. 12. ಉಚ್ಚಾರಣೆ, ಔನ್ನತ್ಯ, ಎತ್ತರ.  
13. ಮಹಾಪ್ರಯತ್ನ. "ಸ್ವೀಕಾರೋಚ್ಚಾಯಸಜ್ಜಕ್ಷೇಪಮಹೋದ್ಯೋಗೇಷು  
ಸಜ್ಜಗ್ರಹಃ" ನಾನಾರ್ಥರಂ | 14. ಉಲ್ಲೇಖ. 15. ವಶಪಡಿಸಿ  
ಕೊಳ್ಳುವುದು. 16. ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ತನ್ನದನ್ನಾಗಿ  
ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. "ತೈಃ ಕೃತಪ್ರಕೃತಿಮುಖ್ಯಸಜ್ಜಗ್ರಹೈರಾಶು  
ತಸ್ಯ ಸಹಧರ್ಮಚಾರಿಣಿ" ರಘುಂ ೧೯-೪೪ |

ಸಜ್ಜಗ್ರಹಣ ಸಂಗ್ರಹಣ (ನಂ) 1. ಸ್ವಾಧೀನಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳು-  
ವುದು. 2. ಶೇಖರಿಸುವುದು, ಕೂಡುವುದು. 3. ಚೆನ್ನ  
ಬೆಳ್ಳಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಲ್ಲಿ ಹುದುಗಿಸುವುದು, -ಕೆತ್ತು-  
ವುದು. ಸಮ್ + ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೪) | "ಕನಕಮೂಷಣಸಜ್ಜಗ್ರಹಣೋಚಿತೋ ಯದಿ  
ಮಣಿಸ್ತೃಪುಣಿ ಪ್ರತಿಬದ್ಧತೇ | ನ ಸ ವಿರೋತಿ ನ ಚಾಪಿ  
ನ ಶೋಮತೇ ಭವತಿ ಯೋಜಯಿತುರ್ವಚನೀಯತಾ" ಪञ्ಚತಂ ೧-೮೧ |  
4. ಸ್ತೋತ್ರಗಮ, ಸಂಭೋಗ, ವ್ಯಭಿಚಾರ. "ಸೀಮಾವಿವಾದ  
ಧರ್ಮಶ್ಚ ಪಾರುಷ್ಯೇ ದೃಢವಾಚಿಕೇ | ಸ್ತೇಯಂ ಚ ಸಾಹಸಂ ಚೈವ  
ಸ್ತ್ರೀಸಜ್ಜಗ್ರಹಣಮೇವ ಚ" ಮನುಂ ೮-೬ | 5. ಅಂಗೀಕಾರ,  
ಸ್ವೀಕಾರ.

ಸಜ್ಜಗ್ರಹಣಿ ಸಂಗ್ರಹಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗ್ರಹಣೀ ರೋಗ. ಸಂವಿತ್ತಾ  
ಗ್ರಹಣಿ |

ಸಜ್ಜಗ್ರಹೀತು ಸಂಗ್ರಹೀತೃ (ವಿಂ) ಶೇಖರಿಸುವವನು, ಕೂಡಿಸು-  
ವವನು.

ಸಜ್ಜಗ್ರಾಮ ಸಂಗ್ರಾಮ (ಪುಂ) ಯುದ್ಧ, ಕದನ, ಕಾಳಗ.  
ಸಜ್ಜಗ್ರಾಮ (ಪುಡ್ಡೆ) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" (೩-೩-೪೬) |  
"ಸಜ್ಜಗ್ರಾಮಮೃಗಯಾಸ್ಥಾಯಿ ಜಗ್ರಾಹ ಚ ಜಧಾನ ಚ" ಯಾದಂ  
೨೨-೧೩೦ | "ಸಜ್ಜಗ್ರಾಮೇ ತಾನಧಿಷ್ಠಾಸ್ಯನ್ ನಿಷಘ ಪುರ-  
ತೋರಣಮ್" ಭट्टಿಂ ೯-೭೨ |



ಸಂಪ್ರಾಹ ಸಂಗ್ರಹ (ಪುಂ) 1. ಮುಖ್ಯಬಂಧ, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಸಮ್ + ಗ್ರಹ (उपादाने) "घञ्" (३-३-३६)। "मुष्टिबन्धस्तु संप्राहः" अम०। 2. ಗುರಾಣಿಯ ಹಿಡಿ. "संप्राहो मुष्टिरस्य यः" अम०।

ಸಂಪ್ರಾಹಕ ಸಂಗ್ರಹಕ (ವಿಂ) 1. ಸಂಗ್ರಹಿಸುವವನು, ಶೇಖರಿಸುವವನು, ಕೂಡಿಸುವವನು. ಸಮ್ + ಗ್ರಹ (उपादाने) "ण्वल्" (३-१-१३३)। 2. ಸಂಪಾದಿಸುವವನು. 3. ಸಂಕ್ಷೇಪಮಾಡುವವನು.

ಸಂಪ್ರಾಹಯತ್ ಸಂಗ್ರಹಯತ್ (ವಿಂ) ತಿಳಿಯಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ತಿಳಿಯುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಬೋಧಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಗ್ರಹ (उपादाने) + ಣಿच् "शतृ" (३-२-१२४)। "अकृत्स्नसंवेदिनि जीवलोके संप्राहयन् धर्ममथात्मवृत्त्या" याद० १३-७५। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ङीप्" (४-१-६)। -ಯಂತಿ -ಯಸ್ತುಃ.

ಸಂಪ್ರಾಹಿನ್ ಸಂಗ್ರಹಿನ್ (ಪುಂ) ಕುಟುಂಬವ್ಯಕ್ತ, ಗರಿಮಲ್ಲಿಗೆ ಗಡ, ಬೆಟ್ಟಮಲ್ಲಿಗೆ.

ಸಂಪ್ರಾಹ ಸಂಘ (ಪುಂ) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. ಸಂಹನನಮ್ — ಸಮ್ + ಹನ (हिसागत्योः) ಭಾವೇ "अप्" (३-३-८६)। ನಿಪಾಂ। ಸಜಾತೀಯ ಅಥವಾ ವಿಜಾತೀಯ ಜಂತುಗಳ ಸಮೂಹ. "सङ्घसाथी तु जन्तुभिः" अम०। 2. ಸಂಗಡಿಗರ ಕೂಟ, ಸಂಸ್ಥೆ. ಸಿದ್ಧಚಾರಣಸಂಘಃ, ವಿಚಾರಿ-ಸಂಘಃ, ಕಾರ್ಮಿಕಸಂಘಃ, ಉಪಾಧ್ಯಾಯಸಂಘಃ ಇತ್ಯಾದಿ. "सिद्ध-चारणसङ्घानां बभूव प्रियदर्शनः" भा० आदि०। 3. ಮನುಷ್ಯರ ಅಥವಾ ದೇವತೆಗಳ ಸಮೂಹ.

ಸಂಪ್ರಾಹಾರಿನ್ ಸಂಘಚಾರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು. ಸಂಘೇನ ಚರತಿ — ಚರ (गतौ) "णिनिः" (३-२-७८)। (ವಿಂ) 2. ಗುಂಪು ಗುಂಪಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುವ.

ಸಂಪ್ರಾಹಾರಿನ್ ಸಂಘಜೀವಿನ್ (ವಿಂ) ದಿನಗೂಲಿಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು, ಕೂಲಿಯಾಳು. ಸಂಘೇನ ಜೀವತಿ — ಜೀವ (प्राणधारणे) "णिनिः" (३-१-१३४)।

ಸಂಪ್ರಾಹನಾ ಸಂಘಟನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಟ್ಟುಗೂಡುವುದು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು, ಒಂದು ಸಂಸ್ಥೆಯನ್ನು ರಚಿಸುವುದು, ಜೊತೆಗೂಡುವುದು. 2. ಸಂಯೋಗ, ಸಂಬಂಧ. ಸಮ್ + ವಡ (सङ्घाते) + ಣಿच् "युच्" (३-३-१०७)। 3. ಪರಸ್ಪರ ಸೇರುವುದು, ಒಂದು ಕಡೆ ಸಂಧಿಸುವುದು. 4. ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸುವಿಕೆ. "सा देव्यन्यकलत्रसङ्घटनया दुःखं परं प्रापिता" रत्ना० ४-१९।

ಸಂಪ್ರಾಹ ಸಂಘಟ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಸಂಘರ್ಷ, ತಿಕ್ಕಾಟ, ತೀಡುವುದು. ಸಮ್ + ವಡ (चलने) "घञ्" (३-३-१२१)। "उद्धृतस्त्रिलोकपालकण्ठमालासङ्घट्टकवणितकराल-किङ्किणीकः" मालती० ५-३। 2. ತಾಗುವುದು, ಡಿಕ್ಕಿ ಹೊಡೆಯುವುದು, ಅಪಘಾತ. "वक्षस्यसङ्घट्टमुखं वसन्ती रेजे सपत्नीरहितेव लक्ष्मीः" रघु० १४-८६। "मात-ज्ञानां दन्तसंघट्टजन्मा हेमच्छेदच्छायचञ्चिच्छिखाग्रः" माघ० १८-३४। 3. ಹೋರಾಟ, ಬಡಿದಾಟ, ಯುದ್ಧ.

ಸಂಪ್ರಾಹನ ಸಂಘಟ್ಯನ (ನಂ) 1. ತಿಕ್ಕಾಟ, ಸಂಘರ್ಷ. ಸಮ್ + ವಡ (चलने) ಭಾವೇ "ल्युट्" (३-३-११५)। 2. ತಾಗುವುದು, ಡಿಕ್ಕಿ ಹೊಡೆಯುವುದು. 3. ಹೋರಾಟ, ಬಡಿದಾಟ.

ಸಂಪ್ರಾಹಯತ್ ಸಂಘಟ್ಯಯತ್ (ವಿಂ) ಉಜ್ಜುತಿರುವ, ಪರಸ್ಪರ ತಿಕ್ಕುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ವಡ (चलने) + ಣಿच् "शतृ" (३-२-१२४)। "ऐरावतास्फालनविह्वलयं यः सङ्घट्टयन्नङ्गदमङ्गदेन" रघु० ६-७३। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ङीप्" (४-१-६)। -ಯಂತಿ -ಯಸ್ತುಃ. "सङ्घट्टयन्त्यास्तरसात्म-भूषाहीराङ्कुरप्रोतदुकूलहारी" नैष० ६-२८।

ಸಂಪ್ರಾಹತಲ ಸಂಘಟಲ (ಪುಂ) ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ನೀಡಿ ಜೋಡಿಸಿದ ಎರಡು ಹಸ್ತಗಳು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕೂಡಿದ ಎರಡು ಅಂಗುಳುಗಳು. ಸಂಘೇ ತಲೇ ಯತ್ರ।

ಸಂಪ್ರಾಹಿತ ಸಂಘಟಿತ (ವಿಂ) ಗುಂಪುಗುಂಪಾಗಿ ನಿಂತಿರುವ. ಸಂಘಟಿತಾ ಪೂರ್ಣ: "डट्" (५-२-४८)। ಡಟ: ತಿಥುಗಾಗಮ: (५-२-५२)। "एकेषुणा सङ्घटितान् द्विषो भिन्दन् द्रुमानिव" माघ० १९-१०७।

ಸಂಪ್ರಾಹ ಸಂಘರ್ಷ (ಪುಂ) 1. ತಿಕ್ಕಾಡುವುದು, ಉಜ್ಜಾಟ. ಸಮ್ + ವಡ (सङ्घर्षे) "घञ्" (३-३-१८)। 2. ಹೋರಾಟ, ಬಡಿದಾಟ. 3. ಸ್ಪರ್ಧೆ. "सङ्घर्ष-योगिणः पादौ प्रणेमुस्त्रिदशद्विषः" भट्टि० ९-९७। "सङ्घर्षः स्यात् पुमान् घृष्टौ स्पर्धायामपि दृश्यते" मेदि०। ಭಾವೇ "ल्युट्" (३-३-११५)। -ಘರ್ಷಣಮ್ -ಘರ್ಷಣಮ್.

ಸಂಪ್ರಾಹಿಕಾ ಸಂಘಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯುಗ್ಮ, ಒಂದು ಜೊತೆ, ಒಂದು ಜೋಡಿ. ಸಮ್ + ವಡ (सङ्घाते) + ಣಿच् "ण्वल्" (३-१-१३३)। 2. ಕುಟ್ಟಿನಿ, ತಲೆಹಿಡುಕಿ, ಜಾರರನ್ನು ಒದಗಿಸುವವಳು. 3. ವಾಸನೆ ಕಂಡುಹಿಡಿಯುವ ಘ್ರಾಣೇಂದ್ರಿಯ, ಮೂಗು. "सङ्घाटिका तु युग्मे स्यात् कुट्टनीप्राणयोरपि" विश्व०।



ಸಜ್ಜಾತ ಸಂಘಾತ (ಪುಂ) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. ಸಮ್ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಘನ್" (೩-೩-೧೯)। ಹಸ್ಯ "ಘ:" (೭-೩-೪೪)। "ಸಂವರ್ತ ಇವ ನಾಗಾನಾಂ ಸಜ್ಜಾತ ಇವ ರಹಸಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೬-೬೩। 2. ಹೊಡೆಯುವುದು, ಹಿಂಸಿಸುವುದು. 3. ಕೊಲ್ಲುವುದು. 4. ಒಂದು ನರಕ. "ಸಜ್ಜಾತ: ಪುನಿ ಘಾತೇ ಚ ಸಂಹತೌ ನರಕಾಂತರೇ" ಮೇದಿಂ। 5. ದಟ್ಟವಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ, ನಿಬಿಡವಾಗಿ ಕೂಡಿ ಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ. "ದ್ರವ: ಸಜ್ಜಾತಕಠಿನ: ಸ್ಥೂಲ: ಸ್ಪಷ್ಟಮೋ ಲಘುಗುರು:" ಕುಮಾಂ ೨-೧೧।

ಸಜ್ಞಾಪಕ ಸಂಘಾಪಕ (ಪುಂ) 1. ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ, ಸದ್ದು. ಸಮ್ + ಧುಷಿರ್ (ಅವಿಶಬ್ದನೇ) "ಕ್ವ:" (೩-೩-೧೧೪)। "ಮಹಾಕೋಕಿಲಸಂದೋಹಸಜ್ಞಾಪಕವಿಪಿನಾಂತರೇ"। (ವಿಂ) 2. ಡಂಗೂರ ಹೊಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಪ್ರಸಿದ್ಧಪಡಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು, ಬಹಿರಂಗವಾಗಿ ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ವ:" (೩-೨-೧೦೨)।

ಸಚನ ಸಚನ (ನಂ) 1. ಗೌರವಿಸುವುದು, ಪುರಸ್ಕರಿಸುವುದು. ಷಚ (ಸೇವನೇ ಸೇವನೇ ಚ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ಸೇವಿಸುವುದು. 3. ಸೇವನೆಮಾಡುವುದು, ಸಿಂಪಡಿಸುವುದು.

ಸಚಿ ಸಚಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಚೀದೇವಿ, ಇಂದ್ರನ ಪತ್ನಿ. ಷಚ (ಸಮವಾಯೇ) "ಙ್" (೩-೪-೧೧೭)।

ಸಚಿಲಕ ಸಚಿಲಕ (ವಿಂ) ರೋಗದಿಂದ ನೀರು ಸೋರುತ್ತಿರುವ ಕಣ್ಣುಳ್ಳವನು.

ಸಚಿವ ಸಚಿವ (ಪುಂ) 1. ಮಂತ್ರಿ, ಅಮಾತ್ಯ. ಷಚ (ಸಮವಾಯೇ) "ಙ್" (೩-೪-೧೧೭)। ಸಚಿ ವಾತಿ—ವಾ (ಗತಿಗನ್ಧನಯೋ:) "ಕ್ವ:" (೩-೨-೩)। ಸಚಿವರಲ್ಲಿ ಧೀಸಚಿವ: ಕರ್ಮಸಚಿವ: ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಮಂತ್ರಾ ಲೋಚನೇಗೆ ಸಹಾಯಕನಾಗಿರುವವನಿಗೆ ಧೀಸಚಿವ: ಎಂದೂ ಕರ್ತವ್ಯಗಳನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸುವವನಿಗೆ ಕರ್ಮಸಚಿವ: ಎಂದೂ ಹೆಸರು. "ಮನ್ತ್ರಿ ಧೀಸಚಿವೋಽಸ್ಮಾತ್ಯೋನ್ಯೇ ಕರ್ಮಸಚಿವಾಸ್ತತ:" ಅಮಂ। ರಾಜನಿಗೆ ಆಯಾ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಸಹಾಯಕ ನಾಗಿರುವವನು ಸಚಿವ (ಮಂತ್ರಿ). "ಮನ್ತ್ರಿ ಸಹಾಯ: ಸಚಿವೌ" ಅಮಂ। "ಅಯಮಪರ: ಕಾರ್ಯಾಂತರಸಚಿವೋಽಸ್ಮಾನುಪಸ್ಥಿತ:" ಮಾಲಂ ೧। 2. ಸಹಾಯಕ. 3. ಮಿತ್ರ, ಸುಹೃತ್ತು. 4. ಕಪ್ಪು ದತ್ತಾಂರಿ ಗಿಡ.

ಸಚಿ ಸಚಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶಚೀದೇವಿ, ಇಂದ್ರನ ಪತ್ನಿ. ಸಚಿ "ಡೀಫ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೪)। 2. ಸ್ನೇಹ, ಮೈತ್ರಿ. ಸಚಿನಂದನ ಸಚಿನಂದನ, -ಪುತ್ರ-ಪುತ್ರ, -ಸುತ-ಸುತ, -ಸುನು-ಸುನು (ಪುಂ) ಶಚೀದೇವಿಯ ಪುತ್ರ ಜಯಂತ. ಸಚ್ಯಾ: ಪುತ್ರ: ಸುತ: ಸುನುರ್ವಾ।

ಸಚೇತನ ಸಚೇತನ (ವಿಂ) ಬದುಕಿರುವ, ಜೀವಸಹಿತವಾದ, ಇಂದ್ರಿಯ ವ್ಯಾಪಾರವುಳ್ಳ.

ಸಚೇತಸ್ ಸಚೇತಸ್ (ವಿಂ) ಬದುಕಿರುವ, ಜೀವಸಹಿತನಾದ, ಇಂದ್ರಿಯ ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ. ಚೇತಸಾ ಸಹ ವರ್ತತೇ। "ಶಶಾಂಕ-ಲೇಖಾಮಿವ ಪಶ್ಯತೋ ದಿವಾ ಸಚೇತಸ: ಕಸ್ಯ ಮನೋ ನ ದ್ಯತೇ" ಕುಮಾಂ ೪-೪೮।

ಸಚೇಷ್ಠ ಸಚೇಷ್ಠ (ಪುಂ) ಅಮೃತ್ವಕ್ಷ, ಮಾವಿನ ಮರ.

ಸಚಿವತ್ ಸಚಿವತ್ (ನಂ) ಪರಬ್ರಹ್ಮ, ಪರಮಾತ್ಮ.

ಸಚಿವದಾನಂದ ಸಚಿವದಾನಂದ (ಪುಂ) ಅಮಿಡಜ್ಞಾನ ಸುಖ ಸ್ವರೂಪನಾದ ಪರಮಾತ್ಮ.

ಸಚ್ಚಿದ್ರ ಸಚ್ಚಿದ್ರ (ವಿಂ) 1. ತೂತುಗಳುಳ್ಳ, ರಂಧ್ರ ಗಳಿರುವ. ಛಿದ್ರ: ಸಹ ವರ್ತತೇ। 2. ದೋಷಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಸಜಂಬಾಲ ಸಜಂಬಾಲ (ವಿಂ) ಕೆಸರಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಬಗ್ಗಡ ವಾಗಿರುವ. ಜಂಬಾಲೇನ ಸಹಿತ:। "ಸಜಂಬಾಲಸ್ತು ಪಕ್ಷಿಲ:" ಅಮಂ।

ಸಜಾತಿ ಸಜಾತಿ (ವಿಂ) 1. ಸಮಾನ ಜಾತಿಯವನು. 2. ಒಂದೇ ಜಾತಿಯ ತಾಯಿ ತಂದೆಗಳ ಮಗ. ಸಮಾನಾ ಜಾತೀರಸ್ಯ।

ಸಜಾತೀಯ ಸಜಾತೀಯ (ವಿಂ) ಒಂದೇ ಜಾತಿಗೆ ಸೇರಿದ, ಸಮಾನ ಜಾತಿಯ ಧರ್ಮವುಳ್ಳ. ಸಮಾನೋ ಜಾತೀಯ:।

ಸಜ್ಜ ಸಜ್ಜ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಪ್ರೀತಿ ಸುವ. ಜುಳಿ (ಪ್ರೀತಿ ಸೇವನಯೋ:) "ಕಿವಿಪ್" (೩-೨-೬೧)। 2. ಸೇವಿಸುವ. 3. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿರುವ, ಜೊತೆಗೂಡಿರುವ. (ಪುಂ) 4. ಸಂಗಡಿಗ, ಜೊತೆಗಾರ, ಸ್ನೇಹಿತ. (ಅವ್ಯಂ) 5. ಸಂಗಡ, ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ.

ಸಜ್ಜ ಸಜ್ಜ (ವಿಂ) 1. ಸಿದ್ಧವಾಗಿರುವ. ಷಜ (ಗತೌ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಕವಚ ತೊಟ್ಟಿರುವ, ಯುದ್ಧದ ಅಂಗಿಯನ್ನು ತೊಟ್ಟಿರುವ. "ಸನ್ನದೋ ವಮಿತ: ಸಜ್ಜೋ ದೃಶಿತೋ ವ್ಯುಹಕಚ್ಚುಟ:" ಅಮಂ। 3. ಉಡಿಗೆ ತೊಡಿಗೆ ಗಳಿಂದ ಸಜ್ಜಾಗಿರುವ. "ಸಜ್ಜ: ಸ್ಯಾತ್ ಸನ್ನದೋ ಸಮ್ಮತೇ ತ್ರಿಪು" ಮೇದಿಂ। 4. ಯುದ್ಧದ ಎಲ್ಲಾ ಉಪಕರಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. "ಸಾಡ್ಗ್ರಾಮಿಕಂ ತತ: ಸರ್ವಂ ಸಜ್ಜಂ ಚಕ್ರು: ಪರಂತಪಾ:" ಭಾಂ।

ಸಜ್ಜನ ಸಜ್ಜನ (ನಂ) 1. ಸಿದ್ಧಗೊಳಿಸುವುದು, ಸರಿಯಾದ ವಿರ್ಪಾಡುಮಾಡುವುದು. ಷಜ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। 2. ರಕ್ಷಣಾದಳ, ಕಾವಲು ಸೈನ್ಯ. 3. ಘಟ್ಟ, ನದಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ನೀರನ್ನು ದಾಟುವ



ಸ್ಮೃ. "ಸಜ್ಜನಂ ತು ಭವೇತ್ ಕಲೀಬಮುಪರಕ್ಷಣವತ್ಯಯೋಃ" ಮೇದಿಂ ।  
(ವಿಂ) 4. ಸಜ್ಜನ, ಸತ್ಪುರುಷ, ಸತ್ಪುಲದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿ  
ದವನು. "ಸಜ್ಜನೋಽಸಿ ವಿಜಹೀಹಿ ಚಾಪಲಂ ಸರ್ವದಾ ಕ ಇವ  
ವಾ ಸಹಿಷ್ಯತೇ" ಕಿರಾಂ ೧೩-೬೬ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಾ -ನಾ.  
5. ಅನೆಯನ್ನು ಅಲಂಕರಿಸುವುದು, ದೊರೆಯು ಅನೆಯನ್ನು ಹತ್ತುಲು ಅದನ್ನು ಸಿದ್ಧಗೊಳಿಸುವುದು. ಷಸ್ಜ +  
ಣಿಕ್ "ಯುಕ್" (೩-೩-೧೦೭) । "ವಾಚ್ಯಲಿಂಗ್ ಕುಲೀನೇ  
ಸ್ಯಾತ್ ಕಲ್ಪನಾಃ ತು ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ ।

ಸಜ್ಜಾ ಸಜ್ಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸನ್ನಾಹ, ಉಪಚರಣ, ಸಾಧನ.  
ಷಸ್ಜ (ಗತೌ) "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩) । 2. ಯುದ್ಧ  
ಕವಚ.

ಸಜ್ಜಿತ ಸಜ್ಜಿತ (ವಿಂ) 1. ಉಡುಪು ಧರಿಸಿರುವ, ಉಡಿಗೆ  
ತೊಟ್ಟಿರುವ. ಷಸ್ಜ (ಗತೌ) "ಃ" (೩-೪-೭೨) ।  
2. ಅಲಂಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಶೃಂಗರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸಜ್ಜಿತಾನಿ  
ಸುರಭೀಪ್ಯಥ ಯುನಾಮುಲಸತ್ರಯನವಾರಿಹಾಣಿ" ಮಾಘಂ ೧೦-೧ ।  
3. ಯುದ್ಧಕವಚ ತೊಟ್ಟಿರುವ. 4. ಸಿದ್ಧವಾಗಿರುವ.

ಸಜ್ಯ ಸಜ್ಯ (ವಿಂ) ಮರ್ವೀಸಹಿತವಾದ, ಹೆದೆಯೇರಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಜ್ಯಯಾ ಸಹಿತಮ್ । "ನ ತೇನ ಸಜ್ಯಂ ಕ್ವಚಿದುಚಿತಂ  
ವನುಃ ಕೃತಂ ನ ವಾ ಕೋಪವಿಜಿಹ್ಯಮಾನನಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೨೧ ।

ಸಂಚ ಸಂಚ (ಪುಂ) ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಬರೆಯುವ ಕಾಗದದ  
ಕಟ್ಟು. ಸಂಚಿನೋತಿ ಅಕ್ಷರಾಣಿ - ಸಮ್ + ಚಿಕ್ (ಚಯೇ)  
"ಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।

ಸಂಚಯ ಸಂಚಯ (ಪುಂ) 1. ಶೇಖರಣೆ, ಕೂಡಿಡುವುದು.  
ಸಮ್ + ಚಿಕ್ (ಚಯೇ) "ಅಕ್" (೩-೩-೫೬) । "ಗುಣಾಃ  
ಖಲು ಗುಣಾ ಎವ ನ ಗುಣಾ ಭೂತಿಹೇತವಃ । ಅರ್ಥಸಂಚಯಕರ್ತೃಣಾಂ  
ಭಾಗ್ಯಾನಿ ಪೃಥಗೇವ ಹಿ" । 2. ರಾಶಿಹಾಕುವುದು, ಒಟ್ಟು  
ಗೂಡಿಸುವುದು. 3. ಗುಂಪು, ಸಮೂಹ. 4. ಅಂಗಗಳ  
ಸಂಧಿ, ಕೀಲು, ಎಲುಬುಗಳ ಕೀಲು. "ದೋರ್ನಿಷೇವವಿಶಿರ್ಣಿ-  
ಸಂಚಯದಲಕ್ ಕ್ವಾಲಮುನ್ಮತ್ತತಃ" ಮಾಲತೀಂ ೮-೯ । ಭಾವೇ  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । -ಚಯನಮ್ -ಚಯನಮ್.

ಸಂಚಯಿನ್ ಸಂಚಯಿನ್ (ವಿಂ) ಶೇಖರಿಸಿಡುವವನು,  
ಕೂಡಿಡುವವನು. ಸಂಚಯೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫) ।

ಸಂಚರ ಸಂಚರ (ಪುಂ) 1. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ, ರಸ್ತೆ. 2. ನದಿ  
ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ದಾಟುವ ಸೇತುವೆ. ಸಂಚರನ್ಯನೇನ-  
ಸಮ್ + ಚರ (ಗತೌ) "ಃ" (೩-೩-೧೧೯) । ನಿಪಾಂ ।  
"ಯತ್ರೋಪಧಿಪ್ರಕಾಶೇನ ನಕ್ತಂ ದರ್ಶಿತಸಂಚರಾಃ । ಅನಭಿಜ್ಞಾ-  
ಸ್ತಮಿತ್ತಾಣಾಂ ದುರ್ದಿನೇಷ್ವಭಿಸಾರಿಕಾಃ" ಕುಮಾರಂ ೬-೪೩ ।  
3. ದೇಹ, ಶರೀರ. 4. ಪ್ರವೇಶದ್ವಾರ.

ಸಂಚರಣ ಸಂಚರಣ (ನಂ) ನಡೆಯುವುದು, ಸಂಚರಿಸು  
ವುದು. ಸಮ್ + ಚರ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।  
ಸಂಚರತ್ ಸಂಚರತ್ (ವಿಂ) ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವ, ನಡೆಯು  
ತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಚರ (ಗತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಚರಂತೀ -ಚರಂತೀ.

ಸಂಚಲ ಸಂಚಲ (ವಿಂ) 1. ಕಂಪಿಸುವ, ನಡುಗುವ. ಸಮ್ +  
ಚಲ (ಕಂಪನೇ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) । 2. ಚಲಿಸುವ.  
ಸಂಚಲನ ಸಂಚಲನ (ನಂ) ಕಂಪನ, ನಡುಗುವುದು. ಸಮ್ +  
ಚಲ (ಕಂಪನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

ಸಂಚಾಯ ಸಂಚಾಯ (ಪುಂ) ಒಂದು ಯಾಗ. ಸಂಚಯತೇಽಸೌ  
-ಸಮ್ + ಚಿಕ್ (ಚಯೇ) ಕರ್ಮಂ "ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೩೦) ।  
ನಿಪಾಂ ।

ಸಂಚಾರ ಸಂಚಾರ (ಪುಂ) 1. ನಡೆಯುವುದು, ಸಂಚರಿಸು  
ವುದು. ಸಮ್ + ಚರ (ಗತೌ) "ಛಲ್" (೩-೩-೧೧೮) ।  
"ಸಂಚಾರಪುತಾನಿ ದಿಗಂತರಾಣಿ ಕೃತ್ವಾ ದಿನಾಂತೇ ನಿಲಯಾಯ  
ಗಂತುಮ್ । ಪ್ರಚಕ್ರಮೇ ಪಲ್ಲವರಾಗತಾಮ್ರಾ ಪ್ರಭಾ ಪತಂಜಸ್ಯ ಮುನೇಶ್ವ  
ವೇನುಃ" ರಘುಂ ೨-೧೫ । 2. ಗ್ರಹಗಳು ರಾಶಿಯಿಂದ  
ರಾಶಿಗೆ ಹೋಗುವುದು. 3. ರಸ್ತೆ, ಮಾರ್ಗ. 4. ದೇಶ,  
ಪ್ರದೇಶ. "ವನಸ್ಯ ತಸ್ಯ ಸಂಚಾರಂ ರಾಕ್ಷಸಃ ಸಮಭಿಪ್ಲುತಮ್"  
ರಾಮಾಂ ।

ಸಂಚಾರಿಕಾ ಸಂಚಾರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೂತಿ. ಸಂಚರತಿ-  
ಸಮ್ + ಚರ (ಗತೌ) "ಞ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । "ದೂತಿ-  
ಸಂಚಾರಿಕೇ ಸಮೇ" ಅಮಂ । 2. ಒಂದು ಜೊತೆ, ಒಂದು  
ಜೋಡಿ. 3. ಕುಟ್ಟಿನಿ, ತಲೆಹಿಡುಕಿ, ಜಾರರನ್ನು ಒದಗಿಸು  
ವವಳು. 4. ಮೂಗು, ಫ್ರಾನ್ಕೋದ್ರಿಯ, ವಾಸನೆಯನ್ನು  
ಕೆಂಡುಹಿಡಿಯುವ ಇಂದ್ರಿಯ. "ಸಂಚಾರಿಕಾ ತು ಯುಗಲೇ  
ಕುಡುನೋಪಾಣಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ ।

ಸಂಚಾರಿನ್ ಸಂಚಾರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಭಿಚಾರಿಭಾವ. ರತ್ಯಾದೌ  
ರಸಾನುಗುಣ್ಯೇನ ಸಂಚರತಿ ಸಂಗಚ್ಛತೇ-ಸಮ್ + ಚರ "ಞಿನಿಃ" ।  
"ನಾನಾಭಿನಯಸಮ್ಬಂಧಾನ್ ಭಾವಯಂತಿ ರಸಾನ್ ಯತಃ । ತಸ್ಮಾ-  
ದ್ಭಾವಾ ಅಮಿ ಪ್ರೋಕ್ತಾಃ ಸ್ಥಾಯಿಸಂಚಾರಿಸಾತ್ವಿಕಾಃ" ಸಾಂ ೬೦  
೩-೧೮೧ । "ಸ್ಥಾಯಿನೋಽರ್ಥೇ ಪ್ರವರ್ತಂತೇ ಭಾವಾಃ ಸಂಚಾರಿಣೋ  
ಯಥಾ" ಮಾಘಂ ೨-೮೭ । 2. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 3. ಸುವಾಸನೆಯನ್ನು  
ಕೊಡುವ ಧೂಪ. (ವಿಂ) 4. ನಡೆಯುವ, ಹೋಗುವ, ಸಂಚರಿಸುವ, ಚಲಿಸುವ. ಸಂಚರತಿ-ಸಮ್ +  
ಚರ (ಗತೌ) "ಞಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) । "ಸಂಚಾರಿ-  
ಕೈಲಾಸನಿಭೇನ ತೇನ" ಯಾದಂ ೨೦-೪೨ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಡೀಪ್"  
(೪-೧-೫) । -ಚಾರಿಣಿ -ಚಾರಿಣೀ. "ಪರ್ಯಾಪ್ತಪುಷ್ಪ-



ಸ್ತಬಕಾವನಮ್ನಾ ಸಂಚಾರಿಣಿ ಪಲ್ಲವಿನಿ ಲತೇವ" ಕುಮಾಂ ೩-೪೪।

ಸಚ್ಚಾಲಿ ಸಂಚಾಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗುಲಗಂಜಿ.

ಸಂಜಿತ ಸಂಚಿತ (ವಿಂ) 1. ಶೇಖರಿಸಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೂಡಿಸಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್+ಚಿವ್ (ಚಯನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಪಿಪಿಲಿಕಾರ್ಜಿತಂ ಧಾನ್ಯಂ ಮಕ್ಷಿಕಾಸಂಜಿತಂ ಮಧು। ಲುಘೇನ ಸಂಜಿತಂ ದ್ರವ್ಯಂ ಸಮೂಲಂ ಚ ವಿನಶಯತಿ"। 2. ರಾಶಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಜನ್ಮಾಂತರಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ಹಿಂದಿನ ಜನ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ ಕರ್ಮ.

ಸಂಜ ಸಂಜ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. 2. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.

ಸಂಜವನ ಸಂಜವನ (ನಂ) ಪರಸ್ಪರ ಅಭಿಮುಖವಾಗಿರುವ ನಾಲ್ಕು ಸಭಾಮಂದಿರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಗೃಹ. ಸಂಜವಂತಿ ಸಂಮಿಲನತ್ರ — ಸಮ್ + ಜು (ಗತೌ) "ಸಂಜವನಂ ತ್ವಿದಮ್। ಚತುಃಶಾಲಮ್" ಅಮಂ।

ಸಂಜಾ ಸಂಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಡು.

ಸಂಜೀವನ ಸಂಜೀವನ (ನಂ) 1. ಪ್ರಾಣವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಧರಿಸುವುದು, ಜೀವನವನ್ನು ಪೂರ್ವಸ್ಥಿತಿಗೆ ತರುವುದು. ಸಮ್+ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ದೈತ್ಯೇಂದ್ರಾತಿಕರೌಷಧಂ ತ್ರಿಜಗತಾಂ ಸಂಜೀವನಕೌಷಧಮ್" ಮುಂ ಮಾಂ। 2. ಪರಸ್ಪರ ಅಭಿಮುಖವಾಗಿರುವ ನಾಲ್ಕು ಸಭಾಮಂದಿರಗಳಿರುವ ಗೃಹ. ಸಂಜೀವಯತೇಽಸ್ಮಿನ್—ಸಮ್+ಜೀವ ಅಧಿಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೬)। 3. ಒಂದು ನರಕ. "ನರಕಂ ಕಾಲಸೂತ್ರಂ ಚ ಮಹಾನರಕಮೇವ ಚ। ಸಂಜೀವನಂ ಮಹಾವೀಚಿ ತಪನಂ ಸಂಪ್ರತಾಪನಮ್" ಮನುಂ ೪-೮೯। (ವಿಂ) 4. ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆಗೆ ಕಾರಣವಾದ, ಗತಪ್ರಾಯವಾದ ಪ್ರಾಣವು ಮತ್ತೆ ಪೂರ್ವಸ್ಥಿತಿಗೆ ಬರಲು ಕಾರಣವಾದ. "ಸ್ಪರ್ಶಃ ಪುರಾ ಪರಿಚಿತೋ ನಿಯತಂ ಸ ಏವ ಸಂಜೀವನಶ್ಚ ಮನಸಃ ಪರಿತೋಷಣಶ್ಚ" ತಂ ರಾಂ ೩-೧೨। (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಜೀವಿನಿ —ಜೀವಿನೀ. 5. ಬದುಕಿಸುವ ವಿದ್ಯೆ, ಮೃತರು ಬದುಕುವಂತೆ ಮಾಡುವ ವಿದ್ಯೆ. ಸಂಜೀವಯತಿ—ಸಮ್+ಜೀವ + ಣಿವ್ "ಣಿವಿ:" (೩-೧-೧೨೪)। "ಅಯಮೇಹೀತಿ ಸಂಶಂಖ ಮೃತಂ ಸಂಜೀವಯಾಮ್ಯಹಮ್। ತತಃ ಸಂಜೀವಿನೀಂ ವಿಧ್ಯಾಂ ಪ್ರಯುಜ್ಯ ಕವಮಾಹ್ವಯತ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೭೬-೩೩।

ಸಂಜೀವಯತ್ ಸಂಜೀವಯತ್ (ವಿಂ) ಬದುಕಿಸುತ್ತಿರುವ, ನಷ್ಟಪ್ರಾಯವಾದ ಪ್ರಾಣವನ್ನು ಮತ್ತೆ ಪೂರ್ವಸ್ಥಿತಿಗೆ ತರುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್+ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ) + ಣಿವ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ವಿಪ್ಲೋಷಿತಂ ದ್ರೋಣಿಶರೇಣ ಬಾಲಂ ಸಂಜೀವಯನ್ ಪಾದರಜಃಪ್ರಭಾವಾತ್" ಯಾದಂ ೨೩-೪೪।

ಸಂಜುಘುಷಾ ಸಂಜುಘುಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಕ್ಷಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಸಮ್ + ಗುಹ (ಸಂವರಣೆ) + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨)।

ಸಂಜುಘುಷು ಸಂಜುಘುಷು (ವಿಂ) ರಕ್ಷಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ ಸುವ. ಸಮ್+ಗುಹ (ಸಂವರಣೆ) + ಸನ್ "ಃ:" (೩-೨-೧೬೮)। "ಸಂಜುಘುಷವ ಆಯುಷಿ ತತಃ ಪ್ರತಿರೂಢವಃ" ಮಡಿಂ ೯-೧೪।

ಸಂಜಪನ ಸಂಜಪನ (ನಂ) 1. ಮಾರಣ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. 2. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವುದು. 3. ನೋಡುವುದು. ಸಮ್+ಜಾ (ಅವಬೋಧನೆ) + ಣಿವ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। ಮಾರಣತೋಷಣನಿಶಾಮನೇಷು ಜಾ ಇತಿ ಮಿತ್ವಮ್। ಮಿತ್ವಾತ್ ಹ್ರಸ್ವಃ।

ಸಂಜಪಿತಿ ಸಂಜಪಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಿಳಿಸುವುದು, ವಿಜ್ಞಾಪಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಜಪ (ಜ್ಞಾನೆ ಜಾಪನೆ ಚ) + ಣಿವ್ "ಕ್ಷಿನ್" (೩-೩-೧೪)। 2. ಕೊಲ್ಲುವುದು. ಜಪ ಮಿಶ್ರ — ಜ್ಞಾನೆ ಜಾಪನೆ ಚ।

ಸಂಜಾ ಸಂಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಸರು. ಸಮ್+ಜಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಅಡ್" (೩-೩-೧೦೬)। "ಯದ್ವಚ್ಚಾಶಬ್ದವತ್ಪುಂಸಃ ಸಂಜಾಯೆ ಜನ್ಮ ಕೇವಲಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೪೭। 2. ಜ್ಞಾನ, ವಿವೇಕ, ಪ್ರಜ್ಞೆ, ವಿವೇಚನೆ. 3. ಹಸ್ತ ನೇತ್ರ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವುದು. "ಮುಖಾಪಿತೆ-ಕಾಡ್ಗುಲಿಸಂಜಯೇವ ಮಾ ಚಾಪಲಾಯೇತಿ ಗಣಾನ್ ವ್ಯನೇಷಿತ್" ಕುಮಾಂ ೩-೪೧। 4. ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ, ವಿಶ್ವಕರ್ಮನ ಮಗಳು. [ಸಂಜ್ಞಾದೇವಿಯು ಸೂರ್ಯನಿಂದ ವೈವಸ್ವತ ಯಮ ಎಂಬ ಪುತ್ರರನ್ನೂ ಯಮುನೆಯೆಂಬ ಪುತ್ರಿಯನ್ನೂ ಪಡೆದಳು. ಇವಳು ಸೂರ್ಯನ ತೇಜಸ್ಸನ್ನು ತಡೆಯಲಾರದೆ ತನ್ನ ಆಕಾರದಲ್ಲೇ ಒಬ್ಬ ಹೆಂಗಸನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ತಂದೆಯ ಮನೆಗೆ ಹೋದಳು. ಛಾಯಾವೇವಿಯು ಸೂರ್ಯನಿಂದ ಸಾವರ್ಣಿಮನು ಮತ್ತು ಶನೈಶ್ವರರೆಂಬ ಇಬ್ಬರು ಪುತ್ರರನ್ನು ಪಡೆದಳು. ಸಂಜ್ಞಾದೇವಿಯು ಈ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಜ್ಞಾನದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ತಿಳಿದ ಸೂರ್ಯನು ಹೆಣ್ಣು ಕುದುರೆಯ ರೂಪದಿಂದ ಸುಚರಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಸಂಜ್ಞೆಯ ಬಳಿಗೆ ತಾನೂ ಕುದುರೆಯ ರೂಪದಿಂದ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಅವಳಲ್ಲಿ ಅಶ್ವಿನೀದೇವತೆಗಳು ಜನಿಸಿದರು.] 5. ಜಾಗೃತಿ, ತನ್ನನ್ನು ತಿಳಿಪಡಿಸುವುದು, ಪ್ರಜ್ಞೆ, ಎಚ್ಚರ.

ಸಂಜಾನ ಸಂಜಾನ (ನಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ಜ್ಞಾನ, ಉತ್ತಮ ವಿಷಯದ ಜ್ಞಾನ, ಪರಮಾತ್ಮಜ್ಞಾನ, ಪರಬ್ರಹ್ಮದ ಸ್ವರೂಪದ ಜ್ಞಾನ.

ಸಂಜಿತ ಸಂಜಿತ (ವಿಂ) ಹೆಸರಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಂಜಾಸ್ಯ ಸಂಜಾತಾ "ಇತತ್"।



ಸಂಜ್ಞಿನ್ ಸಂಜ್ಞಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ, ಹೆಸರಿಸಿರುವ, ಹೆಸರು ಇಟ್ಟಿರುವ. ಸಂಜ್ಞಾಸ್ಥಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೬)।  
2. ಪ್ರಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ, ತನ್ನ ಅರಿವುಳ್ಳ, ಎಚ್ಚರವುಳ್ಳ.

ಸಂಜ್ಞು ಸಂಜ್ಞು (ವಿಂ) ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಸೇರಿದಂತಿರುವ ಮೊಣಕಾಲುಗಳುಳ್ಳವನು, ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಉಜ್ಜುಮತಿರುವ ಮೊಣಕಾಲುಗಳುಳ್ಳವನು. ಸಂಜ್ಞು ಜಾನುನಿ ಯಸ್ಯ ಜಾನುನಿ "ಜ್ಞು:" (೪-೪-೧೨೯)। "ಸಂಜ್ಞು: ಸಂಜ್ಞತಜಾನುಕ:" ಅಮಂ।

ಸಂಜ್ವರ ಸಂಜ್ವರ (ಪುಂ) 1. ಸಂತಾಪ, ಅಗ್ನಿಜ್ವಾಲೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ ತಾಪ. ಸಂಜ್ವರಯತಿ — ಸಮ್ + ಜ್ವರ (ರೋಗ) + ಣಿच् "ಅच्" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ತಾಪ, ಉಷ್ಣತೆ, ಜ್ವರ. "ಯತ್ಸೇಹಸಂಜ್ವರವತಾ ಹೃದಯೇನ ನಿಯಮಾಬದ್ಧವೇಷು ವಿನಾಪಿ ನಿಮಿತ್ತಯೋಗಾತ್" ಮಾಲತೀಂ ೧-೩೫।

ಸಂಜ್ವಾರಿನ್ ಸಂಜ್ವಾರಿನ್ (ವಿಂ) ರೋಗದ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ, ಯಾವಾಗಲೂ ವ್ಯಾಧಿಯಿಂದ ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಜ್ವರ (ರೋಗ) "ಛಿನ್" (೩-೨-೧೪೨)। "ಸಂಜ್ವಾರಿಣೇವ ಮನಸಾ ಧ್ವಾಂತಮಾಸಿತಾ ಮಯಾ" ಭಟಿಂ ೭-೬।

ಸಟಾ ಸಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಪಸ್ವಿಗಳ ಜಟಿ. ಸಟತಿ — ಷಟ್ (ಅವಯವ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಸಿಂಹದ ಕೇಸರ, ಸಿಂಹದ ಮುಖದ ಕೂದಲು. "ಸಟಾಚ್ಛಟಾಭಿನ್ನ-ಛನೆನ ವಿಭ್ರತಾ ನೃಸಿಹ ಸೇಹೀಮತನುಂ ತನುಂ ತ್ವಯಾ" ಮಾಘಂ ೨-೪೭। 3. ಕಾಡುಹಂದಿಯ ಮೈಮೇಲಿನ ಕೂದಲು. 4. ಶಿಖೆ, ತಲೆಯ ಕೂದಲು. "ಕೃದ್: ಸುಧೃಷ್ಟೌಠಪುಡ: ಸ ಖುರ್ಜತಿ: ಜಟಾಂ ತಡಿಹ್ನಿಸಟೋಪರೋಚಿಷಮ್" ಭಾಗಂ ೪-೫-೨।

ಸಟಿ(ಟಿ) ಸಟಿ(ಟಿ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಚೋರ.

ಸಡಕ ಸಡಕ (ನಂ) ಪ್ರಾಕೃತಭಾಷಾತ್ಮಕ ಒಂದು ಉಪರೂಪಕ, ಅಷ್ಟಾದಶ (18) ಉಪರೂಪಕಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಉಪರೂಪಕ. ಇದು ಪ್ರಾಕೃತ ಭಾಷಾಮಯವಾದುದು. ಇದರಲ್ಲಿ ಪ್ರವೇಶಕ ಮತ್ತು ವಿಷ್ಕಂಭಕಗಳಿರುವುದಿಲ್ಲ. ರಸವು ಅದ್ಭುತ. ಉಳಿದೆಲ್ಲವೂ ನಾಟಕಾಲಕ್ಷಣದಂತಿರುವವು. "ಸಡಕಂ ಪ್ರಾಕೃತಾಶೇಷಪಾಠ್ಯಂ ಸ್ವಾದಪ್ರವೇಶಕಮ್। ನ ಚ ವಿಷ್ಕಂಭಕೋಪ್ಯತ್ರ ಪ್ರಚುರಶ್ಚಾಡ್ಭುತೋ ರಸ:। ಅಕ್ಷಾ ಜವನಿಕಾಠ್ಯಾ: ಸ್ಯು: ಸ್ವಾದನ್ಯತ್ರಾಟಿಕಾಸಮಮ್" ಸಾಂ ೬೦ ೬।

ಸಡಿ ಸಡಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಚೋರ.

ಸಂಜ್ಞಿನ ಸಂಜ್ಞಿನ (ನಂ) ಪಕ್ಷಿಗಳ ಹಾರಾಟದ ಒಂದು ಭೇದ. ಸಂಜ್ಞಿತಂ ಡಯನಮ್ — ಸಮ್ + ಡಿಜ್ (ವಿಹಾಯಸಾ ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪)। "ಪ್ರಜ್ಞಿನೋಡ್ವಿನಸಂಜ್ಞಿನಾನ್ಯೇತಾ: ಸ್ವಗಗತಿಕ್ರಿಯಾ:" ಅಮಂ। ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಹಕ್ಕಿಗಳು

ಹಾರಾಡುವಾಗ ಮರಗಳ ಮೇಲೆ ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳಲು ಮೇಲಿನಿಂದ ಇಳಿಯುವುದು ಸಂಜ್ಞಿನ.

ಸತ್ ಸತ್ (ಪುಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ಮನುಷ್ಯ, ಒಳ್ಳೆ ಗುಣಶಾಲಿ ಯಾದ ಮನುಷ್ಯ. ಅಸ್ತಿ — ಅಸ (ಭುವಿ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಅಕಾರಲೋಪ: (೬-೪-೧೧೧)। "ಸಂತ: ಶ್ರೀರಙ್ಗಪೃಥ್ವೀಶಚರಣತ್ರಾಣಶೇಖರಾ:। ಜಯಂತಿ ಭುವನತ್ರಾಣ-ಪದಪಕ್ಷಜರೆಣವ:" ಪಾಡುಂ ಸಂ। "ಸಂತ: ಸ್ವಯಂ ಪರಹಿತೇ ವಿಹಿತಾಮಿಯೋಗಾ:" ಭರ್ತುಂ ೧-೬೩। (ವಿಂ) 2. ಒಳ್ಳೆಯ ದಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. "ಸದಸದ್ವಚಕ್ತಿ-ಹೇತವ:" ರಘುಂ ೧-೧೦। 3. ಪುಣ್ಯಶಾಲಿ, ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯ ಮಾಡಿದವನು. "ಸಮೀರಶಿಶಿರ: ಶಿರ:ಸು ವಸತಾಂ ಸತಾಂ ಜವನಿಕಾ ನಿಕಾಮಸುಖಿನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೫೪। 4. ವಿದ್ಯೆ ಮಾನ, ಈಗ ಇರುವ. "ಪ್ರಾಣಾನಾಮನಿಲೇನ ವೃತ್ತಿಠಿಚಿತಾ ಸತ್ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷೇ ವನೇ" ಶಾಕುಂ ೭-೧೨। 5. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. "ತಂ ಸಂತ: ಶ್ರೋತುಮರ್ಹಂತಿ ಸದಸದ್ವಚಕ್ತಿಹೇತವ:" ರಘುಂ ೧-೧೦। 6. ಸತ್ಯವಾದ, ಯಥಾರ್ಥವಾದ, ನಿಜವಾದ. 7. ಸುಂದರ ವಾದ, ಚೆಲುವಾಗಿರುವ. 8. ಪೂಜ್ಯ, ಗೌರವಾರ್ಹ. (ನಂ) 9. (1) ಪರಬ್ರಹ್ಮ. "ಓಂ ತತ್ಸದಿತಿ ನಿರ್ದೇಶೋ ಬ್ರಹ್ಮಣ: ತ್ರಿವಿಧ: ಸ್ಮೃತ:। ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಸ್ತೇನ ವೇದಾಶ್ಚ ಯಜ್ಞಾಶ್ಚ ವಿಹಿತಾ: ಪುರಾ" ಗೀತಾ ೧೭-೨೩। ಶ್ರೀಶಂಕರಾಚಾರ್ಯರ ಭಾಷ್ಯದಲ್ಲಿ ಓಂ ತತ್ ಸತ್ ಎವಂ ತ್ರಿವಿಧೋ ನಾಮನಿರ್ದೇಶ: ಬ್ರಹ್ಮಣ: ಸ್ಮೃತ: ಎಂದು ಬ್ರಹ್ಮಪರವಾಗಿ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. (2) ವೇದ. ಶ್ರೀರಾಮಾನುಜಾಚಾರ್ಯರ ಭಾಷ್ಯದಲ್ಲಿ ಸತ್ ಶಬ್ದವಾಚ್ಯಬ್ರಹ್ಮಶಬ್ದಕ್ಕೆ ವೇದವೆಂದೂ ವೇದಶಬ್ದ ದಿಂದ ವೈದಿಕ ಕರ್ಮವೆಂದೂ ಯಜ್ಞಾದಿ ಕರ್ಮವು ಆಂ ತತ್ ಸತ್ ಶಬ್ದಾನ್ವಿತವೆಂದೂ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. "ಬ್ರಹ್ಮ ಚ ವೇದ: ವೇದ(ಬ್ರಹ್ಮ)ಶಬ್ದೇನ ವೈದಿಕಂ ಕರ್ಮಂಚ್ಯತೇ — ವೈದಿಕಂ ಯಜ್ಞಾದಿಕಮ್ — ಯಜ್ಞಾದಿಕಂ ಕರ್ಮಂ ಆಂತಸ್ತದಿತಿ ಶಬ್ದಾನ್ವಿತಂ ಭವತಿ"। "ಸದ್ಭಾವೇ ಸಾಧುಭಾವೇ ಚ ಸದಿತೀತತ್ ಪ್ರಯುಜ್ಯತೇ। ಪ್ರಶಸ್ತೇ ಕರ್ಮಣಿ ತಥಾ ಸಚ್ಚಂದ: ಪಾರ್ಥ ಯುಜ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೧೭-೨೬।

ಸತತ ಸತತ (ವಿಂ) 1. ನಿತ್ಯವಾದ, ಶಾಶ್ವತವಾದ, ಎಂದೆಂದಿಗೂ ಇರುವ. ಸಂತನ್ಯತೇ ಸಮ್ — ಸಮ್ + ತನು (ವಿಸ್ತಾರೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨)। ನಲೋಪ: (೬-೪-೩೭)। ಸಮೋ ಮಕಾರಸ್ಯ ವಾ ಲೋಪ: (ವಾಂ ೬-೧-೧೪೪)। ಪಕ್ಷೇ ಸಂತತಮ್ ಸಂತತಮ್. "ತಿಸ್ತೋತಸ: ಸಂತತವಾರಮಮ್:" ಮಾಘಂ ೩-೧೦। 2. ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾದ, ಎಡೆಬಿಡದೆ. "ನೆತ್ರಾ ನೇತ್ರಾ: ಸತತಗತಿನಾ ಯದಿಮಾನಾಃ ಭೂಮಿ:" ಮೇಘಂ ೨-೬। (ಅಖ್ಯಂ) 3. ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ, ಎಡೆಬಿಡದೆ. 4. ಯಾವಾ



ಗಲೂ, ನಿರಂತರವಾಗಿ, ಎಂದೆಂದಿಗೂ. “ನಿಲಯ: ಶ್ರಿಃ:

ಸತತಮೇತದಿತಿ ಪ್ರಥಿತಂ ಯದೇವ ಜಲಜನ್ಮ ತಥಾ” ಮಾಘಂ ೧-೧೬ |

ಸತಿ ಸತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. ಷಣ್ಣು (ದಾನೇ)

“ಕ್ರಿವ” (೩-೩-೧೭೪) | ವಾ ನಲೋಪ: (೬-೪-೪೫) |

೪೫ ಸಂತಿ: ಸಂಶಿ: 2. ಅಂತ್ಯ, ಅವಸಾನ, ಪ್ರಳಯ.

ಸತೀ ಸತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ. (ಪೂರ್ವ

ಜನ್ಮದ ಹೆಸರು). 2. ಪತಿವ್ರತೆಯಾದ ಹೆಂಗಸು, ಸಾಧ್ವಿ.

[ದಕ್ಷನ ಯಾಗಕ್ಕಾಗಿ ಬಂದಿದ್ದ ಸತೀದೇವಿಯು (ದಕ್ಷನ

ಪುತ್ರಿ ಮತ್ತು ಪರಮೇಶ್ವರನ ಪತ್ನಿ) ತನ್ನನ್ನು ಪ್ರೀತಿ

ವಿಶ್ವಾಸಗಳಿಂದ ಕಾಣದೆ ತಿರಸ್ಕಾರಭಾವದಿಂದ ನೋಡಿದ

ತಂದೆಯ ಮೇಲಿನ ಆಗ್ರಹದಿಂದ ಶರೀರತ್ಯಾಗಮಾಡಿ

ಪರ್ವತರಾಜನ ಪುತ್ರಿಯಾಗಿ ಜನಿಸಿ ಮತ್ತೆ ಪರಮೇಶ್ವರ

ನನ್ನು ಮದುವೆಯಾದಳು.] “ಅಥಾವಮಾನೇನ ಪಿತು: ಪ್ರಯುಕ್ತಾ

ದಕ್ಷಸ್ಯ ಪುತ್ರಿ ಭವಪೂರ್ವಪತ್ನೀ | ಸತೀ ಸತೀ ಯೋಗವಿಸೃಷ್ಟದೇಹಾ

ತಾಂ ಜನ್ಮನೇ ಶೈಲವಧುಂ ಪ್ರಪೇದೆ” ಕುಮಾರಂ ೧-೨೧ |

ಸತೀನ(ಕ) ಸತೀನ(ಕ) (ಪುಂ) ನೆಲಗಡಲೆಕಾಯಿ. ಸತಿ

ಜೀವೇ ಇನ: ಪ್ರಭು: | ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” | “ಕಲಾಯಸ್ತು

ಸತೀನಕ: | ಹರೇಣುಖಂಡಿಕೌ ಚಾಸ್ಮಿನ್” ಅಮಂ |

ಸತೀರ್ಥ ಸತೀರ್ಥ (ಪುಂ) ಸಮಾನವಾದ ಗುರುವುಳ್ಳ

ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳು, ಸಹಾಧ್ಯಾಯಿ, ಒಬ್ಬ ಗುರುವಿನಲ್ಲೇ ವಿದ್ಯಾ

ಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿದ ಜೊತೆಯ (ಸಂಗಡಿಗ) ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳು.

ಸಮಾನ: ತೀರ್ಥೋ ಗುರೈಸ್ಯ |

ಸತೀರ್ಥ್ಯ ಸತೀರ್ಥ್ಯ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬನೇ ಉಪಾಧ್ಯಾಯನುಳ್ಳ

ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳು. ಒಬ್ಬ ಗುರುವಿನಲ್ಲೇ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ

ಮಾಡಿದ (ಸಂಗಡಿಗ) ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳು. ಸಮಾನೇ ತೀರ್ಥೇ ಗುರೌ

ವಸತಿ — ಸತೀರ್ಥ “ಯತ್” (೪-೪-೧೦೭) | “ಸತೀರ್ಥ್ಯಾ-

ಸ್ತವೇಕಗುರವ:” ಅಮಂ | “ಸ್ಯಾತ್ ಸತೀರ್ಥ: ಸತೀರ್ಥ್ಯಾಽಪಿ

ತಥೈಕಗುರೈತೀಪಿ” |

ಸತೀಲ(ಕ) ಸತೀಲ(ಕ) (ಪುಂ) ನೆಲಗಡಲೆಕಾಯಿ. ತೀಲನ

ತೀಲವತ್ ಕೃಷ್ಣವರ್ಣೇನ ಸಹ ವರ್ತತೇ — ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” |

ಸತೀರ ಸತೀರ (ಪುಂ) ತುಷ, ಧಾನ್ಯದ ಹೊಟ್ಟು, ಧಾನ್ಯದ

ಸಿಪ್ಪೆ.

ಸತ್ಕರ್ತೃ ಸತ್ಕರ್ತೃ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಸತ್ಕರೋತಿ ಸಜ್ಜನಾನ್

ಪೂಜಯತಿ—ಸಜ್ಜನಪ್ರತಿಪೂಜಕ: ಇತ್ಯರ್ಥ: | “ಸತ್ಕರ್ತೃ ಯ: ಸ

ವಿಜ್ಞೇಯ: ಸಜ್ಜನಪ್ರತಿಪೂಜಕ:” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: | “ಸತ್ಕರ್ತೃ

ಸತ್ಕೃತಿ: ಸಾಧು: ಜಹ್ನುರ್ನಾರಾಯಣೋ ನರ:” ವಿಂ ಸಂ |

ಸತ್ಕರ್ಮನ್ ಸತ್ಕರ್ಮನ್ (ನಂ) ಸತ್ಕಾರ್ಯ, ಶಾಸ್ತ್ರವಿಹಿತ

ವಾದ ಒಳ್ಳೆಯ ಕಾರ್ಯ. ಸತ್ ಪ್ರಶಸ್ತಂ ಕರ್ಮ | “ಸತ್ಕರ್ಮ-

ಯೋಗೋ ನ ಜನೋ ನೈವಾಪ: ಶೌಚಕಾರಣಮ್ | ಯಸ್ಮಿನ್ನನುದಿತೇ

ತಸ್ಮೈ ನಮೋ ದೇವಾಯ ಭಾಸ್ವತೇ” ವಿಷ್ಣುಪುಂ |

ಸತ್ಕಾಂಡ ಸತ್ಕಾಂಡ (ಪುಂ) ಗಿಡುಗ ಪಕ್ಷಿ, ಡೇಗೆ ಹಕ್ಕಿ.

ಸತ್ಕಾರ ಸತ್ಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಅದರಪೂರ್ವಕ ಮರ್ಯಾದೆ

. ಯಿಂದ ಕಾಣುವುದು, ಅತಿಥಿ ನೀಡುವುದು, ಅತಿಥಿಯನ್ನು

ಗೌರವಿಸಿ ಉಪಚರಿಸುವುದು. ಸತ್ + ಡುಕ್ರ (ಕರಣ)

“ಘ” (೩-೩-೧೮) | “ಸತ್ಕಾರಮಾನಪೂಜಾರ್ಥಂ ತಪೋ

ದಮ್ಭೇನ ಚೈವ ಯತ್ | ಕ್ರಿಯತೇ ತದಿಹ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ರಾಜಸಂ ಚಲಮ-

ಧ್ರುವಮ್” ಗೀತಾ ೧೭-೧೮ | “ವಿಧಿಪ್ರಯುಕ್ತಸತ್ಕಾರೇ: ಸ್ವಯಂ

ಮಾರ್ಗಸ್ಯ ದರ್ಶಕ:” ಕುಮಾರಂ ೬-೫೨ | 2. ಉತ್ಸವ, ಹಬ್ಬ.

ಸಂತೋಷಸಮಾರಂಭ. “ತಸ್ಮಾದೇತಾ: ಸದಾ ಪೂಜಾ

ಭೂಷಣಾಚ್ಛಾದನಾಶನೇ: | ಭೂತಿಕಾಮನೇರನಿತ್ಯಂ ಸತ್ಕಾರೇಷುತ್ಸವೇಷು

ಚ” ಮನುಂ ೩-೫೯ | 3. ಅದರ. “ಪುನರುದ್ಧಿಪಯಾಮಾಸ

ಸತ್ಕಾರೇಣ ಗರೀಯಸಾ” ಯಾದಂ ೨೨-೮೩ |

ಸತ್ಕುಲ ಸತ್ಕುಲ (ನಂ) ಸದ್ವಂಶ, ಒಳ್ಳೆಯ ವಂಶ,

ಸದಾಚಾರಸಂಪನ್ನರಾದವರ ವಂಶ. ಸತಾಂ ಕುಲಮ್ |

ಸತ್ಕುಲೀನ ಸತ್ಕುಲೀನ (ವಿಂ) ಸದ್ವಂಶದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು.

ಸತ್ಕುಲೇ ಜಾತ:—ಸತ್ಕುಲ “ಕ:” (೪-೧-೧೩೯) |

ಸತ್ಕೃತ ಸತ್ಕೃತ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಸತ್ + ಕೃ (ಕರಣ)

“ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) | “ಅರ್ಚಾದಿಮಿ: ಸಜ್ಜನೇಯ: ಪೂಜಿತ:

ಸತ್ಕೃತ: ಸ್ಮೃತ:” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: | “ಸತ್ಕರ್ತೃ ಸತ್ಕೃತ:

ಸಾಧು:” ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ಅದರದಿಂದ ಗೌರವಿಸ

ಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಗೌರವಿಸಿ ಉಪಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸತ್ + ಡುಕ್ರ (ಕರಣ)

“ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) | “ತ್ವಯಿ ಭಕ್ತಿಮತಾ

ನ ಸತ್ಕೃತ: ಕುರರಾಜಾ ಗುರೇವ ಚೇದಿಪ:” ಮಾಘಂ ೧೬-೪೫ |

4. ಸಂಮಾನಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಯಾವನ್ನ ಸತ್ಕೃತೇ-

ಭರ್ತು: ಸ್ನೇಹಸ್ಯಾನುಷ್ಠಮಿಚ್ಛುಮಿ:” ಮಾಘಂ ೧೯-೫೭ |

ಸತ್ಕರ್ಮ ಸತ್ಕರ್ಮ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೋಷಪರಿಹಾರ

ಪೂರ್ವಕ ಶುದ್ಧಿಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಪವಿತ್ರವಾದ ಕಾರ್ಯ.

ಸತೀ ಕರ್ಮ | “ವಾಕ್ಯಪೂರ್ವಮಖಿಲಾಸು ಸತ್ಕರ್ಮಾಲಂಕಾರಶುದ್ಧಿಷು

ಧನಾನಿ ಬಿಜವತ್ | ನಾವಿ ವಿಭ್ರತಿ ಫಲಂ ಮಹದ್ವಿಜಕ್ಷೇತ್ರಭೂಮಿಷು

ನರಾಧಿಪೋಽವಪತ್” ಮಾಘಂ ೧೪-೩೪ | 2. ಸಂಸ್ಕಾರ. “ತತೋ

ನೃಪೇ ತಕ್ಷಕತೇಜಸಾ ಹತೇ ಪ್ರಯುಜ್ಯ ಸರ್ವಾ: ಪರಲೋಕಸತ್ಕರ್ಮಾ:”

ಭಾಂ ಆದಿಂ | 3. ಸಂಮಾನ, ಗೌರವಿಸುವುದು.

4. ಪರಿಷ್ಕರಿಸುವುದು, ಶುದ್ಧಿ ಕಾರ್ಯ.

ಸತ್ತಮ ಸತ್ತಮ (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ, ಎಲ್ಲರಿಗಿಂತಲೂ

ಮಿಗಿಲಾದ, ಉತ್ತಮೋತ್ತಮನಾದ. ಅಯಮೇಷಾ-

ಮತಿಶಯೇನ ಸನ್—ಸತ್ “ತಮ” (೫-೩-೫೫) | “ನಾಯಂ



ಲೋಕೋಸ್ತಯಜನಸ್ಯ ಕುತೋನ್ಯ: ಕುರಸತ್ತಮ" ಗೀತಾ ೪-೩೧ |  
2. ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹೆಚ್ಚು ಗೌರವಕ್ಕೆ ಅರ್ಹ  
ನಾದ. 3. ಬಹಳ ಒಳ್ಳೆಯದಾದ. "ಸತ್ತಮ: ಸ್ವಾತ್ಮಜಯತಮೇ  
ಸಾಧೀಯಸ್ಯುತಮೇ ತ್ರಿಷು" ಮೇದಿಂ |

ಸತ್ತಾ ಸತ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ಥಿತಿ, ಇರುವಿಕೆ. ಸತೋ ಭಾವ: "ತಲ್"  
(೪-೧-೧೧೯) | ಘಟೋ ಭವತಿ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಭೂ ಧಾತುವಿನ  
ಅರ್ಥ. ಇಲ್ಲಿ ಕಾಲಸಂಬಂಧವಿರುವುದು. "ಸತ್ತಾಮನನ್ಯಾಮಿವ  
ಸದ್ಗಣಾನಾಂ ಯಥಾಶ್ರುತಂ ಪ್ರೇಕ್ಷತ ಯಾದೇಂದ್ರ:" ಯಾದಂ ೧೩-೨ |  
2. ಸಾಧುತ್ವ, ಒಳ್ಳೆಯದಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ನಿಜವಾಗಿರುವಿಕೆ,  
ಯಥಾರ್ಥವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಸತ್ಯವಾಗಿರುವಿಕೆ. 4. (ವಿಶಿಷ್ಟಾ  
ದ್ವೈತ ಮತದಲ್ಲಿ) ಆದ್ಯಕ್ಷಣ ಸಂಬಂಧ. 5. ಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ರುವ ಅಧಿಕರಣತ್ವ. 6. ಉತ್ಪತ್ತಿ. 7. (ಅದ್ವೈತ ಮತ  
ದಲ್ಲಿ (1) ಪಾರಮಾರ್ಥಿಕ (2) ವ್ಯಾವಹಾರಿಕ ಮತ್ತು  
(3) ಪ್ರಾತಿಭಾಸಿಕ (ಪ್ರಾತೀತಿಕ) ಗಳೆಂದು ಸತ್ತೆಯು  
ಮೂರು ವಿಧ. ಕಾಲತ್ರಯದಲ್ಲೂ ಅಬಾಧಿತವಾದ  
ಬ್ರಹ್ಮದ ಸತ್ತೆಯು ಪಾರಮಾರ್ಥಿಕ. ವ್ಯವಹಾರಕಾಲ  
ದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಅಬಾಧಿತವಾದ ಘಟಾದಿಗಳ ಸತ್ತೆಯು  
ವ್ಯಾವಹಾರಿಕ. ಪ್ರತಿಭಾಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರವಿರುವುದರಿಂದ  
ಶುಕ್ತಿಯಲ್ಲಿ ರಜತಾದಿಗಳ ಸತ್ತೆಯು ಪ್ರಾತಿಭಾಸಿಕ.  
8. (ಬೌದ್ಧ ಮತದಲ್ಲಿ) ಕ್ಷಣಿಕ. 9. (ವೈಶೇಷಿಕ ಮತದಲ್ಲಿ)  
ಸಾಮಾನ್ಯ. ಇದು ದ್ರವ್ಯಗುಣ ಕರ್ಮನಿಷ್ಠವಾದುದು.

ಸತ್ತತ್ವ ಸತ್ತತ್ವ (ನಂ) 1. ಯಜ್ಞ, ಯಾಗ. ಸತ: ಸತ್ಪುರುಷಾನ್  
ತ್ರಾಯತೇ—ತೈತ್ಯ (ಪಾಲನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩) | 2. ವಿಷ್ಣು.  
"ಕ್ರುತು: ಸತ್ತಂ ಸತಾಂಗತಿ:" ವಿಂ ಸಂ | 3. ಔದಾರ್ಯ,  
ಧಾರಾಳವಾಗಿ ದಾನಮಾಡುವುದು. 4. ಆಚ್ಛಾದನ,  
ಮುಚ್ಚುವುದು. 5. ಅರಣ್ಯ, ಕಾಡು. "ಅಯಮೇವ  
ಮೃಗವ್ಯಸತ್ತಕಾಮ: ಪ್ರಹರಿಷ್ಯನ್ ಮಯಿ ಮಾಯಾ ಶಮಸ್ಯೆ"  
ಕಿರಾಂ ೧೩-೯ | 6. ಕಪಟ, ಕ ತ್ರಿವೇಣೀಪಾಯ, ವ್ಯಾಜ.  
"ಸತ್ತೇಣ ನುನಂ ಛತ್ರಂ ಹಿ ಚರಂತಂ ಪಾರ್ಥಮರ್ಜುನಮ್ |  
ಉತ್ತರ: ಸಾರಥಿ ಕೃತ್ವಾ ನಿರ್ಯಾತೋ ನಗರಾದ್ವಹಿ:" ಭಾಂ ವಿರಾಂ  
೩೬-೩೮ | "ಸತ್ತಂ ಯಜ್ಞೇ ಸದಾದಾನಾಂ ಚಾದನಾರಣ್ಯಕೇತವೇ"  
ಮೇದಿಂ |

ಸತ್ತಿನ್ ಸತ್ತಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಗೃಹಸ್ಥ, ಗೃಹಪತಿ. ಸತ್ತ-  
ಮಸ್ತಯಸ್ಯ "ಇತಿ:" (೪-೨-೧೧೯) | (ವಿಂ) 2. ನಿತ್ಯವೂ  
ಅನ್ಯದಾನಾದಿಗಳನ್ನು ಮಾಡುವವನು. 3. ನಿತ್ಯವೂ  
ಯಾಗಮಾಡುವವನು. 4. ಋತ್ವಿಕ್ಕು, ಯಾಗನಿರ್ವಾಹಕ.  
ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗಬಹುದಾದ ಲೋಪದೋಷಗಳನ್ನು  
ಗಮನಿಸಿ ಯಾಗವನ್ನು ಸರಿಯಾಗಿ ನಡೆಯಿಸಿಕೊಡುವವನು  
ಋತ್ವಿಕ್ಕು. ಸತ್ತಂ ಯಜ್ಞತನ್ತ್ರಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇತಿ:" | "ಸತ್ತ-

ಮೇತದ್ಭವಾನಾಹ ಸ ಮಾಂ ಜಾನಾತಿ ಸತ್ತಿಣಮ್" ಭಾಂ |  
"ಅತ್ಯಶೇರತ ಪರಸ್ಪರಂ ಧಿಯ: ಸತ್ತಿಣಾಂ ನರಪತೇಶ್ಚ ಸಂಪದ:"  
ಮಾಧಂ ೧೪-೩೨ |

ಸತ್ತವ ಸತ್ತವ (ನಂ) 1. ದ್ರವ್ಯ, ವಸ್ತು. ಸತೋ ಭಾವ: "ತ್ವ:"  
(೪-೧-೧೧೯) | 2. ಬಲ, ವೀರ್ಯ, ಶಕ್ತಿ. "ಅನ್ಯದುಚ್ಚ-  
ಕ್ಷುಲಂ ಸತ್ತವಮನ್ಯಚ್ಚಾಸ್ತ್ರನಿಯನ್ವಿತಮ್" ಮಾಧಂ ೨-೬೨ |  
3. ಗುಣತ್ರಯದಲ್ಲೊಂದಾದ ಸತ್ತವಗುಣ. "ಸತ್ತವಂ  
ರಜಸ್ತಮ ಇತಿ ಪ್ರಕೃತೇರ್ಗುಣಾಸ್ತೈರ್ಯುಕ್ತ: ಪರ: ಪುರುಷ ಏಕ ಇಹಾಸ್ಯ  
ವತ್ತೆ" ಭಾಗಂ ೧-೨-೨೩ | "ಆಗತಾದ್ವಚವಸಿತೇನ ಚೇತಸಾ  
ಸತ್ತವಸಂಪದವಿಕಾರಿಮಾನಸ:" ಮಾಧಂ ೧೪-೪೪ | "ಸತ್ತವಾ-  
ತ್ಸಂಜಾಯತೇ ಜ್ಞಾನಂ ರಜಸೋ ಲೋಭ ಏವ ಚ | ಪ್ರಮಾದಮೋಹೌ  
ತಮಸ: ಭವತೋಜ್ಞಾನಮೇವ ಚ" ಗೀತಾ ೧೪-೧೭ | 4. ಪ್ರಾಣ,  
ಜೀವ. "ಚಿತ್ರೇ ನಿವೇಶ್ಯ ಪರಿಕಲ್ಪಿತಸತ್ತವಯೋಗಾ ರೂಪೋಚ್ಚಯೇನ  
ಮನಸಾ ವಿಧಿನಾ ಕೃತಾ ನು" ಶಾಕುಂ ೨-೯ | 5. ಪ್ರಕೃತಿ,  
ಸ್ವಭಾವ. "ಸತ್ತವಿಹಿತಮತುಲಂ ಭುಜಯೋರ್ಬಲಮಸ್ಯ ಪಶ್ಯತ  
ಮೃಧೇಷವಿಕುಪ್ಯತ:" ಕಿರಾಂ ೧೨-೩೯ | 6. ವ್ಯವಸಾಯ,  
ಉದ್ಯೋಗ. 7. ಪಿಶಾಚ. (ನಂ) 8. ಚಿತ್ತ, ಮನಸ್ಸು,  
ಅಂತಃಕರಣ. "ಆಹಾರಶುದ್ಧಿ ಸತ್ತವಶುದ್ಧಿ: ಸತ್ತವಶುದ್ಧಿ  
ಧ್ರುವಾ ಸ್ಮೃತಿ:" ಛಾಂದೋಗ್ಯಂ ೭-೨೬-೨ | 9. ಅಂತರ್ಗತ  
ವಾದ ಬಲ, ದೈರ್ಯ, ಮನೋಬಲ. "ಜನಸ್ಯ ಸಾಕೇತ-  
ನಿವಾಸಿನಸ್ತೌ ದ್ವಾವಪ್ಯಭೂತಾಮಭಿನಂದ್ಯಸತ್ತವೌ" ರಘುಂ ೪-೩೧ |  
"ಕ್ರಿಯಾಸಿದ್ಧಿ: ಸತ್ತವೇ ಭವತಿ ಮಹತಾಂ ನೋಪಕರಣೇ" | 10.  
ಜ್ಞಾನ. "ಆಯು:ಸತ್ತವಬಲಾ ರೋಗ್ಯಸುಖಪ್ರೀತಿವಿವರ್ಧನಾ: | ರಸ್ಯಾ:  
ಸ್ನಿಗ್ಧಾ ಸ್ಥಿರಾ ಹೃದ್ಯಾ ಆಹಾರಾ: ಸಾತ್ತವಿಕಪ್ರಿಯಾ:"  
ಗೀತಾ ೧೭-೮ | "ಸತ್ತವಮನ್ತ:ಕರಣಮ್, ಅನ್ತ:ಕರಣಕಾರ್ಯ  
ಜ್ಞಾನಮಿಹ ಸತ್ತವಶಬ್ದೇನೋಚ್ಯತೇ" ರಾಮಾನುಜಭಾಷ್ಯಮ್ | 11.  
ಪ್ರಜ್ಞೆ, ವಿವೇಕ. 12. ಆಯುಸ್ಸು. 13. ಆತ್ಮ.  
14. ಸತ್ತೆ, ಸ್ಥಿತಿ, ಇರುವಿಕೆ. ಇದು ಪಾರಮಾರ್ಥಿಕ  
ವ್ಯಾವಹಾರಿಕ ಮತ್ತು ಪ್ರಾತಿಭಾಸಿಕಗಳೆಂದು ಮೂರು  
ವಿಧ. (1) ಕಾಲತ್ರಯದಲ್ಲೂ ಅಬಾಧಿತವಾದ ಬ್ರಹ್ಮದ  
ಸತ್ತೆಯು ಪಾರಮಾರ್ಥಿಕಸತ್ತತ್ವ. (2) ವ್ಯವಹಾರದ  
ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಅಬಾಧಿತವಾದ ಸತ್ತೆಯು ವ್ಯಾವಹಾರಿಕ  
ಸತ್ತತ್ವ. (3) ಪ್ರತಿಭಾಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರವಿರುವುದರಿಂದ  
ಶುಕ್ತಿಯಲ್ಲಿ ರಜತಾದಿಗಳ ಸತ್ತೆಯು ಪ್ರಾತಿಭಾಸಿಕ ಸತ್ತತ್ವ.  
"ಕಾಲತ್ರಯೇ ಜ್ಞಾತೃಕಾಲೇ ಪ್ರತೀತಿಸಮಯೇ ತಥಾ | ಬಾಧಾಭಾವಾ-  
ತ್ಪದಾರ್ಥಾನಾಂ ಸತ್ತವತ್ರೈವಿಧ್ಯಮಿಷ್ಯತೇ || ತಾತ್ವಿಕಂ ಬ್ರಹ್ಮಣ:  
ಸತ್ತವಂ ವ್ಯೋಮಾದೇರ್ವ್ಯಾವಿಹಾರಿಕಮ್ | ಛಪ್ಯಾದೇರ್ಥಜಾತಸ್ಯ ಪ್ರಾತಿ-  
ಭಾಸಿಕಮಿಷ್ಯತೇ" ಸಂ ದಂ ಸಂ | 15. ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನ.  
"ಅಸ್ತಿ ಬ್ರಹ್ಮೇತಿ ಚೇದ್ವೇದ" | 16. ಶರೀರದ ಸಾರ.



17. ಧನ. 18. ಅತ್ಯುಭಾವ. "ಸತ್ವಂ ದ್ರವ್ಯೇ ಗುಣೇ ಚಿತ್ತೇ  
ವ್ಯವಸಾಯಸ್ವಭಾವಯೋಃ. ಪಿಶಾಚಾದಾತ್ಮಭಾವೇ ಬಲೇ ಪ್ರಾಣೇಷು  
ಜನ್ತುಷು" ಹೇಮಂ. "ಸತ್ವಂ ಗುಣೇ ಪಿಶಾಚಾದೌ ಬಲೇ ದ್ರವ್ಯ-  
ಸ್ವಭಾವಯೋಃ. ಆತ್ಮತ್ವೇ ವ್ಯವಸಾಯಾಸುಚಿತ್ತೇಶ್ವಸ್ತ್ರೀ ತು ಜನ್ತುಷು"  
ಮೇದಿಂ. (ಪುನಂ) 19. ಪ್ರಾಣ, ಚಿತ್ತಂ ಜ್ಞಾನಂ. "ರಕ್ಷಾಪದೇಶಾನ್ಮುನಿಹೋಮಧೇನೋರ್ವನ್ಯಾನ್ವಿನೇಪ್ಯಶ್ಚಿವ ದುಷ್ಟಸತ್ವಾನ್"  
ರವುಂ ೨-೮. (ನಂ) 20. ಕೌಶೀರ.

ಸತ್ವಲಕ್ಷಣ ಸತ್ತ್ವಲಕ್ಷಣ (ನಂ) ಗರ್ಭದ ಚಿಹ್ನೆ, ಗರ್ಭದ  
ಲಕ್ಷಣ. ಸತ್ವಸ್ಯ ಲಕ್ಷಣಮ್. "ತತ್ಕಥಮಿಮಾಮಭಿ-  
ವ್ಯಕ್ತಸತ್ವಲಕ್ಷಣಾಂ ಪ್ರತ್ಯಾತ್ಮಾನಂ ಕ್ಷೇತ್ರಣಮಾಶಂಕುಮಾನಃ ಪ್ರತಿ-  
ಪತ್ಸ್ಯೇ" ಶಾಕುಂ ೫.

ಸತ್ವವತ್ ಸತ್ತ್ವವತ್ (ವಿಂ) ವಿಷ್ಣು. ಸತ್ವಂ ಪರಮಪ್ರಕಾಶ-  
ಲಾಭವಸುಖಸಂಪದಾ ಮೋಕ್ಷಮೂಲಂ ಸಾಕ್ಷಾದಧಿಷ್ಠೇಯಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ —  
ಸತ್ವ "ಮನುಷ್" (೫-೨-೨೪). "ಪ್ರಕಾಶಲಾಭವಸುಖಸಂಪದಾ  
ಮೋಕ್ಷಸಾಧನಮ್. ಸತ್ವಂ ಸಾಕ್ಷಾದಧಿಷ್ಠೇಯಂ ಯಸ್ಯಾಸೌ ಸತ್ವವಾನ್  
ಶ್ರುತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ. "ಸತ್ವವಾನ್ ಸಾತ್ವಿಕಃ ಸತ್ಯಃ"  
ವಿಂ ಸಂ.

ಸತ್ವವಿಪ್ಲವ ಸತ್ತ್ವವಿಪ್ಲವ (ಪುಂ) ಸತ್ತ್ವಗುಣದ ನಾಶ,  
ಸತ್ತ್ವಗುಣವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ. ಸತ್ವಸ್ಯ ವಿಪ್ಲವಃ. |  
ಸತ್ವವಿಹಿತ ಸತ್ತ್ವವಿಹಿತ (ವಿಂ) ಸತ್ತ್ವಗುಣದಿಂದ  
ಉಂಟಾದ. ಸತ್ವೇನ ಸತ್ವಗುಣೇನ ವಿಹಿತಮ್.

ಸತ್ವವೃತ್ತಿ ಸತ್ತ್ವವೃತ್ತಿ (ವಿಂ) ಸತ್ತ್ವಗುಣದಲ್ಲೇ ಇರುವ,  
ಸತ್ತ್ವಗುಣದ ಕಾರ್ಯವನ್ನೇ ಮಾಡುವ. ಸತ್ವೇ ವೃತ್ತಿಃ  
ವರ್ತನಂ ಯಸ್ಯ. "ಸತ್ವವೃತ್ತಿರನುಭವಃ ಸ ಜಘಾನ" ಯಾದಂ  
೨೧-೩೨.

ಸತ್ವಸಂಪನ್ನ ಸತ್ತ್ವಸಂಪನ್ನ (ವಿಂ) ಗುಣಶಾಲಿ, ಸುಖೀ,  
ಧರ್ಮಾತ್ಮ. ಸತ್ವಂ ಸಂಪನ್ನಃ.

ಸತ್ವಸಂಪ್ಲವ ಸತ್ತ್ವಸಂಪ್ಲವ (ಪುಂ) ಶಕ್ತಿಯು ಕಳೆದು  
ಹೋಗುವುದು, ವೀರ್ಯದ ನಾಶ, ಚೈತನ್ಯದ ನಾಶ.  
ಸತ್ವಸ್ಯ ಸಂಪ್ಲವಃ.

ಸತ್ವಸ್ಥ ಸತ್ತ್ವಸ್ಥ (ವಿಂ) ಸತ್ತ್ವಗುಣವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ,  
ಸತ್ತ್ವಗುಣವೇ ಪ್ರಧಾನವಾಗಿರುವ. ಸತ್ವೇ ತಿಷ್ಠತಿ —  
ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕಃ" (೩-೨-೪). ಸತ್ತ್ವ  
ಗುಣವೇ ಪ್ರಧಾನವಾಗಿರುವವರು ಕ್ರಮವಾಗಿ ಸಂಸಾರ  
ಬಂಧನದಿಂದ ವಿಮುಕ್ತರಾಗಿ ಮೋಕ್ಷ ಹೊಂದುವರು.  
"ಋತ್ವಂ ಗಚ್ಛಂತಿ ಸತ್ವಸ್ಥಾಃ ಮಧ್ಯೇ ತಿಷ್ಠಂತಿ ರಾಜಸಾಃ |  
ಜಘನ್ಯಗುಣವೃತ್ತಿಃ ಸ್ಥಾ ಅಥೋ ಗಚ್ಛಂತಿ ತಾಮಸಾಃ" ಗೀತಾ  
೧೪-೧೮.

ಸತ್ಪಥ ಸತ್ತ್ವಪಥ (ಪುಂ) ಒಳ್ಳೆಯಮಾರ್ಗ. ಸಂಶ್ರಾಸೌ ಪನ್ಥಾಶ್ಚ  
"ಅಃ" (೫-೪-೭೪). "ಜ್ಞಾನಮಜ್ಞಾತತತ್ತ್ವಾಯ ಯೋ ದದಾತ್  
ಸತ್ಪಥೇಽಮೃತಮ್" | "ಪಂಡಿತಪ್ರಹೇತೇನೈವ ಸತ್ಪಥೇನ ಸದೋದಿತಾಃ"  
ಯಾದಂ ೨೨-೧೫.

ಸತ್ಪಥಾಚಾರ ಸತ್ತ್ವಪಥಾಚಾರ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಸತ್ಪಥೇ ಸನ್ಮಾರ್ಗೋ  
ಸ್ವಾಭಾವಿಕಸಾತ್ವಿಕದಾಸ್ಯಮಾರ್ಗೋ ಆಚಾರಃ ಆಚರಣಂ  
(ಪ್ರವೃತ್ತಿಃ) ಪ್ರವರ್ತನಮಸ್ಯ. "ಋತ್ವಂಗಃ ಸತ್ಪಥಾಚಾರಃ" ವಿಂ  
ಸಂ. "ಸತ್ಪಥಾಚಾರ ಇತ್ಯುಕ್ತಃ ಸನ್ಮಾರ್ಗೋ ತತ್ಪ್ರವರ್ತನಾತ್"  
ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ.

ಸತ್ಪರಾಯಣ ಸತ್ತ್ವಪರಾಯಣ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಸಂತಃ ಸ್ವಪ್ರಾಣ-  
ಭೂತತಯಾ ಸ್ವಾತ್ಮತಯಾ ಚ ಪರಾಯಣಮಸ್ಯ. ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ  
ಸತ್ತ್ವಪರಾಯಣರೂ ಪ್ರಾಣಸಮಾನರು. "ಮಮ ಪ್ರಾಣಾ ಹಿ  
ಪಾಂಡವಾಃ" | "ಪಾಂಡವಾಃ ಭವಾನ್ಮಾಯಃ ಭವಂತಃ ಶಾಶ್ವಿತಾ  
ವಯಮ್" ಭಾಂ ಸಭಾಂ. "ಜ್ಞಾನೀತ್ವಾತ್ಮಮೈವ ಮೇ ಮತಮ್"  
ಗೀತಾ ೭-೧೮. "ಸದ್ಗತಿಃ ಸತ್ಕೃತಿಃ ಸತ್ತಾ ಸದ್ಭೂತಿಃ  
ಸತ್ಪರಾಯಣಃ" ವಿಂ ಸಂ.

ಸತ್ಪುತ್ರ ಸತ್ತ್ವಪುತ್ರ (ಪುಂ) ಸುಪುತ್ರ, ವೇದೋಕ್ತವಾದ ಹಿತ,  
ಕಾರ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸುವ ಪುತ್ರ. ಸಂಶ್ರಾಸೌ ಪುತ್ರಶ್ಚ |  
"ಪುತ್" ಎಂಬ ನರಕದಿಂದ ರಕ್ಷಿಸುವವನಾದುದರಿಂದ ಪುತ್ರ  
ನಾದನು. "ಪುತ್ರಾನ್ಮನೋ ನರಕಾದಿಹಿ ಸ್ಮಾತ್ ತ್ರಾಯತೇ ಪಿತರಂ ಸುತಃ |  
ತಸ್ಮಾತ್ ಪುತ್ರ ಇತಿ ಪ್ರೋಕ್ತಃ ಸ್ವಯಮೇವ ಸ್ವಯಂಭುವಾ" ಮನುಂ  
೯-೧೩೮.

ಸತ್ಪುರುಷ ಸತ್ತ್ವಪುರುಷ (ಪುಂ) ಸಜ್ಜನ, ಗೌರವಾರ್ಹನಾದ  
ಮನುಷ್ಯ, ಪೂಜ್ಯನಾದ ಪುರುಷ, ಇತರರ ಕ್ಷೇಮವನ್ನು  
ಬಯಸುವ ಮನುಷ್ಯ. ಸಂಶ್ರಾಸೌ ಪುರುಷಶ್ಚ | "ಏಕಃ  
ಸತ್ಪುರುಷೋ ಲೋಕೇ ಲಕ್ಷ್ಮಣಃ ಸಹ ಸೀತಯಾ | ಯೋಽನುಗಚ್ಛತಿ  
ಕಾಕುತ್ಸ್ಥಂ ರಾಮಂ ಪರಿಚರನ್ ವನೇ" ರಾಮಾಂ. "ಏತೇ  
ಸತ್ಪುರುಷಾಃ ಪರಾರ್ಥವಿಹಿಂಸಾಃ ಸ್ವಾರ್ಥಾನ್ ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ ಯೇ"  
ಋತ್ವಂ ೧-೬೪.

ಸತ್ಪ್ರತಿಗ್ರಹ ಸತ್ತ್ವಪ್ರತಿಗ್ರಹ (ಪುಂ) ಸತ್ತ್ವಪುರುಷರಿಂದ ಸ್ವೀಕೃತಿ  
ಸುವ ದಾನ. ಸದ್ಭುಜಃ ಸತ್ಪುರುಷೇಭ್ಯಃ ಪ್ರತಿಗ್ರಹೋ ದಾನ-  
ಸ್ವೀಕಾರಃ.

ಸತ್ಪ್ರತಿಪಕ್ಷ ಸತ್ತ್ವಪ್ರತಿಪಕ್ಷ (ಪುಂ) ದುಷ್ಟಹೇತು, ಐದು  
ವಿಧ ಹೇತುಭಾಸಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಸಂಶ್ರಾಸೌ ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಶ್ಚ |  
ಬಾಧೋಪಸ್ಥಿತಿಸಮರ್ಥಪರಾಮರ್ಶಕಾಲಿನಸಾಧ್ಯಸಿದ್ಧಿಸಮರ್ಥಪರಾ-  
ಮರ್ಶವಿಷಯಃ | ಯಸ್ಯ ಸಾಧ್ಯಾಭಾವಸಾಧಕಂ ಹೇತುಂತರಂ ವಿಚಿಂತೇ  
ಸ ಸತ್ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಃ | "ಪರ್ವತೋ ಬಹ್ಲಿಮಾನ್ ಧೂಮಾತ್ ಮಹಾನಸವತ್"  
ಎಂಬಲ್ಲಿ ಸಾಧ್ಯಸಾಧಕವಾದ ಹೇತು ಧೂಮ. "ಪರ್ವತೋ



ವಹ್ಯಭಾವವಾನ್ ಪಾಪಾಣಮಯತ್ವಾತ್ ಕುಡಯತ್" ಇಲ್ಲಿ ಸಾಧ್ಯವಾದ ಸಾಧಕವಾದ ಪಾಪಾಣಮಯತ್ವ ದುಷ್ಟಹೇತು.

ಸತ್ಯ ಸತ್ಯ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. "ಯಥಾರ್ಥವೇವ: ಸತ್ಯ: ಸರ್ವಶಾಸ್ತ್ರೇಷು ವಿಶ್ರುತ:" ಇತಿ ನಿಹಕ್ಕಿ:। "ಸತ್ವವಾನ್ ಸಾತ್ವಿಕ: ಸತ್ಯ:" ವಿಂ ಸಂ। "ಔತ್ತರೇಷ್ಯಂತರೇ ವಿಷ್ಣು: ಸತ್ಯ: ಸಹ ಸ್ವಛೋತ್ತಮ:। ಸತ್ಯಾಯಾಮಭವತ್ಸತ್ಯ: ಸತ್ಯರೂಪೋ ಜನಾರ್ದನ:" ಕೂರ್ಮಪುಂ। ವಿಷ್ಣುವು ಸತ್ಯಸ್ವರೂಪನು, ಸತ್ಯ ಸಂಕಲ್ಪನು. ಸತ್ಯಸ್ವರೂಪವಾದ ಜಗತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣನು. ಸಮಸ್ತ ಜಗತ್ತಿಗಿಂತಲೂ ವಿಲಕ್ಷಣನು. ಸೃಷ್ಟಿ, ಸ್ಥಿತಿ ಮತ್ತು ಪ್ರಳಯ ಕಾಲತ್ರಯದಲ್ಲೂ ಏಕರೂಪದಿಂದಿರುವವನು. "ಸತ್ಯವ್ರತಂ ಸತ್ಯಪರಂ ತ್ರಿಸತ್ಯಂ ಸತ್ಯಸ್ಯ ಯೋನಿ ನಿಹಿತಂ ಚ ಸತ್ಯೇ। ಸತ್ಯಸ್ಯ ಸತ್ಯಮೃತಸತ್ಯನೇತ್ರಂ ಸತ್ಯಾತ್ಮಕಂ ತ್ವಾಂ ಶರಣಂ ಪ್ರಪದ್ಯೇ" ಭಾಗಂ ೧೦-೨-೨೬। 2. ಸತ್ಯಲೋಕ, ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕ. ಭೂಮಿಗೂ ಸತ್ಯಲೋಕಕ್ಕೂ ಇರುವ ಅಂತರ: ಭೂಮಿಯ ಮೇಲುಗಡೆ ಒಂದು ಲಕ್ಷ ಯೋಜನ ದೂರದಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯಮಂಡಲ. ಅದು ಭುವರ್ಲೋಕ. ಭುವರ್ಲೋಕಕ್ಕೆ ಮೇಲುಗಡೆ ಚಂದ್ರ ಮಂಡಲ. ಅದಕ್ಕೆ ಮೇಲುಗಡೆ ನಕ್ಷತ್ರಲೋಕ. ಅಲ್ಲಿ ಬುಧ ಶುಕ್ರ ಅಂಗಾರಕ ಬೃಹಸ್ಪತಿ ಶನಿ ಮತ್ತು ಸಪ್ತರ್ಷಿ ಮಂಡಲಗಳು. ಅದಕ್ಕೆ ಮೇಲುಭಾಗದಲ್ಲಿ ಧ್ರುವಲೋಕ. ಸೂರ್ಯಮಂಡಲ ಮೊದಲುಗೊಂಡು ಧ್ರುವಲೋಕದ ವರೆಗೆ ಸ್ವರ್ಗಲೋಕ (ಸ್ವರ್ಲೋಕ). ಇದಕ್ಕೆ ಮೇಲುಗಡೆ ನಾಲ್ಕು ಲಕ್ಷ ಯೋಜನಗಳ ದೂರದಲ್ಲಿ ಕೋಟಿಯೋಜನ ವಿಸ್ತಾರವಾದ ಮಹರ್ಲೋಕವಿರುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ಎರಡ ರಷ್ಟು ವಿಸ್ತಾರವುಳ್ಳದ್ದು ಜನಲೋಕ. ಇದಕ್ಕೆ ನಾಲ್ಕು ರಷ್ಟು ವಿಸ್ತಾರವುಳ್ಳದ್ದು ತಪೋಲೋಕ. ಆ ತಪೋ ಲೋಕಕ್ಕೂ ಮೇಲುಗಡೆ ಹನ್ನೆರಡು ಕೋಟಿ ಯೋಜನದ ವಿಸ್ತಾರವುಳ್ಳದ್ದು ಸತ್ಯಲೋಕ. "ಭೂಮಿರಪಿ ಲಕ್ಷಯೋಜನಾತ್ ಸೂರ್ಯಮಂಡಲಮ್। ತದೇವ ಭುವಲೋಕ:। ತದ್ವರೇ ಚಂದ್ರಮಂಡಲಮ್। ತಸ್ಮಾದ್ವರೇ ನಕ್ಷತ್ರಬುಧಶುಕ್ರಾಂಗಾರಕಬೃಹಸ್ಪತಿಶನಿಸಪ್ತರ್ಷಿ-ಮಂಡಲಾನಿ। ತದ್ವರೇ ಧ್ರುವ:। ಸೂರ್ಯಮಂಡಲಮಾರಮ್ಯ ಧ್ರುವಲೋಕ-ಪರ್ಯಂತಂ ಸ್ವಲೋಕ:। ಚತುರ್ಲಕ್ಷಾದ್ವರೇ ಕೋಟಿಯೋಜನೋಚ್ಚಾಯೋ ಮಹರ್ಲೋಕ:। ತಸ್ಮಾದ್ವಿಗುಣೋ ಜನಲೋಕ:। ತತಶ್ಚತುರ್ಗುಣ-ಸ್ತಪೋಲೋಕ:। ತಸ್ಮಾತ್ ದ್ವಾದಶ ಕೋಟಿಯುಚ್ಚಾಯ: ಸತ್ಯಲೋಕ:" ಯತೀಂದ್ರಮಂ ದೀಂ। 3. ಶ್ರೀರಾಮ. "ಕೌಸಲ್ಯಾನಂದನ: ಶ್ರೀಶ: ಸತ್ಯೋ ದಶಮುಖಾಂತಕ:"। 4. ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಣ್ಯ ಮರ. 5. ನಾಂದೀಮುಖಶ್ರಾದ್ಧ ದೇವತೆ. "ಸತ್ಯೋ ನಾಂದೀಮುಖೇ ವಸು:"। (ನಂ) 6. ನಿಜ, ಯಥಾರ್ಥ. ಸತೆ ಹಿತಮ್ "ಯತ್" (೪-೧-೪)। ಸತಿ ಸಾಧು

"ಯತ್" (೪-೪-೧೮) ವಾ। "ಸತ್ಯಂ ಬ್ರಹ್ಮನುಯಾಹಿ ಸಾಧುಪದವೀಂ ಸೇವಸ್ವ ವಿವಿಜ್ಜನಮ್" ಮತೆಂ ೧-೬೯। 7. ಕೃತಯುಗ, ಸತ್ಯಯುಗ. 8. ಶಪಥ, ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. (ವಿಂ) 9. ನಿಜವಾದ, ಯಥಾರ್ಥವಾದ. "ಸತ್ಯಾನುಭಾವಮುದೇವ-ಸುತಪ್ರಸತ್ಯಂ ಸಮ್ಭೂತದಿಕ್ಷತಿವಿಭೂತಿರಿವಾಬಭಾಸೇ" ಯಾದಂ ೨೨-೨೪೧।

ಸತ್ಯಕಾಮ ಸತ್ಯಕಾಮ (ವಿಂ) ಯಥಾರ್ಥವಾದುದನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. ಸತ್ಯಂ ಕಾಮಯತೇ — ಕಮ್ (ಕಾಂತಿ) + ಣಿಡ್ "ಅನ್" (೩-೨-೧)।

ಸತ್ಯಜ್ಞಾರ ಸತ್ಯಂಕಾರ (ವಿಂ) ಶಪಥಮಾಡುವವನು, ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಮಾಡುವವನು. ಸತ್ಯಸ್ಯ ಕಾರ: — ಕೃತ್ ಭಾವೇ "ವತ್" (೩-೩-೧೮)। ಮುಗಾಗಮ: (೬-೩-೭೦)।

ಸತ್ಯನಾರಾಯಣ ಸತ್ಯನಾರಾಯಣ (ಪುಂ) ಪರಮಾತ್ಮ, ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣ.

ಸತ್ಯನಾರಾಯಣವ್ರತ ಸತ್ಯನಾರಾಯಣವ್ರತ (ನಂ) ಭಕ್ತಿ ಶ್ರದ್ಧೆಗಳಿಂದ ಆಚರಿಸುವ ಪರಮಾತ್ಮನ ಪೂಜಾರೂಪ ವಾದ ಒಂದು ವ್ರತ. ಈ ಪೂಜಾರೂಪ ವ್ರತದ ಫಲ: ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ ಮನುಷ್ಯನು ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯವಿಮುಖನಾಗಿ ಪಾಪಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲೇ ನಿರತನಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ ಶಕ್ತಿಯು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ನಶಿಸಿಹೋಗಿ ಕೇವಲ ಅನ್ನಗತ ಪ್ರಾಣನಾಗಿಯೇ ಉಳಿಯುವನು. ಇದರಿಂದ ನಿರ್ಧನ ನಾಗಿಯೂ ಅಲ್ಪಾಯುಸ್ಸುಳ್ಳವನಾಗಿಯೂ ನಾನಾ ವ್ಯಾಧಿ ಗಳಿಂದ ಪೀಡಿತನಾಗಿಯೂ ಆಗಿ ನಾನಾ ವಿಧ ಸಂಕಷ್ಟ ಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸಬೇಕಾಗುವುದು. ಈ ಕಷ್ಟಪರಿಹಾರ ಕ್ಕಾಗಿ ಸತ್ಯನಾರಾಯಣವ್ರತವನ್ನು ಆಚರಿಸಬೇಕು. "ವ್ರತಮಸ್ತಿ ಮಹಾಪುಣ್ಯಂ ಸ್ವರ್ಗಂ ಚ ಭುವಿ ದುರ್ಲಭಮ್। ತವ ಸ್ನೇಹಾನ್ಮಯಾ ವಿಪ್ರ ಪ್ರಕಾಶೀಕೃತೇಷುನಾ। ಸತ್ಯನಾರಾಯಣ-ಸ್ಯೇತದ್ವ್ರತಂ ಸಮ್ಯಗ್ವಿಧಾನತ:। ಕೃತ್ವಾ ಸದ್ಯ: ಸುಖಂ ಮುಕ್ತವಾ ಪರತ್ರ ಮೋಕ್ಷಮಾಲಭೇತ್"। ಈ ವ್ರತದ ಫಲ: "ದು:ಖ-ಶೋಕಾದಿಶಮನಂ ಧನಧಾನ್ಯವಿವರ್ಧನಮ್। ಸೌಭಾಗ್ಯಸಂತತಿಕರಂ ಸರ್ವತ್ರ ವಿಜಯಪ್ರದಮ್॥ ಯಸ್ಮಿನ್ ಕಸ್ಮಿನ್ ದಿನೇ ಮರ್ತ್ಯ: ಭಕ್ತಿಶ್ರದ್ಧಾಸಮನ್ವಿತ:। ಸತ್ಯನಾರಾಯಣಂ ದೇವಂ ಯಜೇತ್ಪುಷ್ಪೋ ನಿಶಾಮುಖೇ। ಬಾಂಧವೈರ್ಬ್ರಾಹ್ಮಣೈಶ್ಚೈವ ಸಹಿತೋ ಧರ್ಮತತ್ಪರ:। ನೈವೇದ್ಯಂ ಭಕ್ತಿಯೋ ದद्याತ್ ಸಪಾದಂ ಭಕ್ತಿಯುತಮಮ್। ಸಪಾದ-ಸರ್ವಭಕ್ತಿಯಾಣಿ ಏಕೀಕೃತ್ಯ ನಿವೇದಯೇತ್" ಸ್ಕಾಂದಂ ರೇವಾಖಂಡ:।

ಸತ್ಯಪುರ ಸತ್ಯಪುರ (ನಂ) ವಿಷ್ಣುಲೋಕ, ವೈಕುಂಠ. "ದೀಪಿತಶ್ಚ ಫಲಂ ಮುಕ್ತವಾ ಚಾಂತೇ ಸತ್ಯಪುರಂ ವಸೇತ್। ಇತಿ ವ: ಕಥಿತಂ ವಿಪ್ರಾ: ಸತ್ಯನಾರಾಯಣವ್ರತಮ್" ಸ್ಕಾಂದಂ।



**ಸತ್ಯಪುತ ಸತ್ಯಪೂತ (ವಿಂ)** ಸತ್ಯದಿಂದ ಪರಿಶುದ್ಧವಾದ, ಸತ್ಯದಿಂದ ದೋಷರಹಿತವಾದ. ಸತ್ಯೇನ ಪುತಮ್ | “ದೃಷ್ಟಿಪುತಂ ನ್ಯಸೇತ್ಯಾದಂ ವಸ್ತ್ರಪುತಂ ಜಲಂ ಪಿಬೇತ್ | ಸತ್ಯಪುತಾಂ ವದೇಹಾಚಂ ಮನಃಪುತಂ ಸಮಾಚರೇತ್” ಮನುಂ ೬-೪೬ |

**ಸತ್ಯಪ್ರತಿಜ್ಞ ಸತ್ಯಪ್ರತಿಜ್ಞ (ವಿಂ)** ಮಾಡಿದ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯನ್ನು ಈಡೇರಿಸಿದವನು, ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯಂತೆ ನಡೆದವನು. ಸತ್ಯಾ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ ಯಸ್ಯ |

**ಸತ್ಯಫಲ ಸತ್ಯಫಲ (ಫಂ)** ಬಿಲ್ವಪತ್ರ ಮರ.

**ಸತ್ಯಭಾಮಾ ಸತ್ಯಭಾಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಅಪ್ಪ, ಮಹಿಷಿಯರಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬಳು. ಇವಳು ಸತ್ಯಾಜಿತನ ಪುತ್ರಿ.

**ಸತ್ಯಭಾರತ ಸತ್ಯಭಾರತ (ಫಂ)** ವೇದವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ.

**ಸತ್ಯಯುಗ ಸತ್ಯಯುಗ (ನಂ)** ಸ್ವರ್ಣಯುಗ, ನಾಲ್ಕು ಯುಗಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ (ಕೃತ) ಯುಗ. ಸತ್ಯಂ ಯುಗಮ್ | ಕೃತಯುಗದಲ್ಲಿ ಜನರೆಲ್ಲರೂ ಭಗವದ್ಧ್ಯಾನಪರರಾಗಿಯೂ ಧರ್ಮಾತ್ಮರಾಗಿಯೂ ವಿಪ್ರರೆಲ್ಲರೂ ಯಜ್ಞಯಾಗಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸುವವರಾಗಿಯೂ ವೇದಾಭ್ಯಾಸಪರಾಯಣರಾಗಿಯೂ ಅದರಂತೆಯೇ ದೇವತೆಗಳೂ ತಕ್ಕ ಫಲಗಳನ್ನು ಕೊಡುವವರಾಗಿಯೂ ಭೂಮಿಯು ಫಲಪುಷ್ಪಸಮೃದ್ಧವಾಗಿಯೂ ಇದರಿಂದ ಜನರೆಲ್ಲರೂ ನಿತ್ಯ ಹೃಷ್ಯಪುಷ್ಪರಾಗಿಯೂ ಚೌರ್ಯ ವಂಚನೆ ಕಪಟ ಸುಳ್ಳು ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲದೆ ಜನರೆಲ್ಲರೂ ಸುಖ ಸಂತೋಷಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದವರಾಗಿಯೂ ಇದ್ದುದರಿಂದ ಈ ಯುಗಕ್ಕೆ ಸ್ವರ್ಣಯುಗವೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಯುಂಟಾಯಿತು. ಧರ್ಮಪುರುಷನು ನಾಲ್ಕು ಪಾದಗಳನ್ನೂ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿಟ್ಟು ರಕ್ಷಿಸುತ್ತಿದ್ದನು. ಇದರಿಂದ ಸಕಲ ವಿಧವಾದ ಸುಖ ಸಂಪತ್ತುಗಳೂ ಜನರಿಗೆ ಲಭಿಸಿದ್ದುವು. “ಋಷಿಶ್ವರಪಾದ-ಭವತ್ ಕೃತೇ ಪೂರ್ಣಂ ಜಗತ್ತ್ವಯಮ್ | ದೇವಾ ಯಥೋಕ್ತಫಲದಾಶ್ವರಂತಿ ಭುವಿ ಸರ್ವದಾ | ಸರ್ವಶಸ್ಯಾ ವಸುಮತೀ ಹೃಷ್ಣಪುಷ್ಪಜನಾವೃತಾ | ವಿಪ್ರಾ ವೇದವಿದಃ ಸುಮಂಜಸ್ಯುತಾ ನಾರ್ಯಸ್ತು ಚರ್ಯಾತಃ ಪೂಜಾಹೋಮ-ಪರಾಃ ಪತಿವ್ರತಧರಾ ಯಾಗೋಚಿತಾಃ ಕ್ಷತ್ರಿಯಾಃ | ವೈಶ್ಯಾ ವಸ್ತುಫಲ-ವರ್ಮತೋ ವಿನಿಮಯಃ ಶ್ರೀವಿಷ್ಣುಪೂಜಾಪರಾಃ ಶೂದ್ರಾಸ್ತು ದ್ವಿಜಸೇವನಾ-ಪ್ರದರಿಕಥಾಲಾಪಾಃ ಸರ್ವಾಪರಾಃ” | [ಕೃತಯುಗದ ಕಾಲ ಪರಿಮಾಣಕ್ಕೆ “ಅಬ್ದ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಸತ್ಯಲೋಕ ಸತ್ಯಲೋಕ (ಫಂ)** ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕ. “ಸತ್ಯ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ಸತ್ಯವಚಸ್ ಸತ್ಯವಚಸ್ (ಫಂ)** 1. ಯಜ್ಞ. ಸತ್ಯಂ ವಚೋ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಸತ್ಯವಾದ ಮಾತನ್ನಾಡುವ, ನಿಜವನ್ನು ಹೇಳುವ.

**ಸತ್ಯವತ್ ಸತ್ಯವತ್ (ಫಂ)** 1. ಸಾಲ್ವದೇಶಾಧಿಪತಿಯಾದ ದ್ಯುಮತ್ಸೇನನ ಪುತ್ರ. ಸತ್ಯಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ — “ಮತುಃ” (೪-೨-೯೪) | ಮಸ್ಯ ವಃ (೮-೨-೯) | ಇವನ ತಾಯಿ ಮತ್ತು ತಂದೆ ಇಬ್ಬರೂ ಯಾವಾಗಲೂ ಸತ್ಯವನ್ನೇ ಹೇಳುತ್ತಿದ್ದುದರಿಂದ ವಿಪ್ರರು ಇವನಿಗೆ ಸತ್ಯವಾನ್ ಎಂದು ನಾಮಕರಣ ಮಾಡಿದರು. “ಸತ್ಯಂ ವದತ್ಯಸ್ಯ ಪಿತಾ ಮಾತಾ ಸತ್ಯಂ ಪ್ರಭಾಷತೇ | ತತೋಸ್ಯ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಶ್ಚಕ್ರುಃ ನಾಮತತ್ ಸತ್ಯವಾನಿತಿ” ಭಾಂ ವನಂ | ಮದ್ರದೇಶದ ದೊರೆಯಾದ ಅಶ್ವಪತಿಯ ಮಗಳು ಸಾವಿತ್ರಿಯು ಇವನ ಪತ್ನಿ. ಸತ್ಯವಂತನ ತಂದೆಯು (ದ್ಯುಮತ್ಸೇನನು) ಕುರುಡನಾಗಿ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡು ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿದ್ದನು. ಸತ್ಯವಂತನು ಒಂದು ದಿನ ಸಾವಿತ್ರಿಯೊಡನೆ ಸೌದೆ ತರಲು ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಅಲ್ಲಿ ಅವನು ಮೃತಿಹೊಂದಲು ಯಮನು ಅವನ ಪ್ರಾಣವನ್ನು ಕೊಂಡೊಯ್ಯುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಬಂದನು. ಸಾವಿತ್ರಿಯು ಯಮನೊಡನೆ ಬಹಳ ದೂರ ಹೋಗಿ ಪತಿಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಕೊಡಬೇಕೆಂದೂ ಇಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ತಾನೂ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಬರುವುದಾಗಿಯೂ ಹಠಹಿಡಿದಾಗ ಯಮನು ಸತ್ಯವಂತನನ್ನು ಬದುಕಿಸಿ ಕಳುಹಿಸಿಕೊಟ್ಟನು. ದ್ಯುಮತ್ಸೇನನಿಗೆ ಕಣ್ಣುಗಳು ಬಂದು ರಾಜ್ಯವೂ ಲಭಿಸುವಂತೆ ಯಮನಿಂದ ವರ ಪಡೆದಳು. ಸತ್ಯವಂತನು ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಪಡೆದನು. (ವಿಂ)

2. ಸತ್ಯವನ್ನು ನುಡಿಯುವವನು.

**ಸತ್ಯವತೀ ಸತ್ಯವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯ ತಾಯಿ. ಸತ್ಯಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ: “ಮತುಃ” (೪-೨-೯೪) | “ತೃಪ್” (೪-೧-೬) | [ಸತ್ಯವತಿಯು ಉಪರಿಚರ ವಸುವಿನ ಮಗಳು. ದಾಶರಾಜನ ಸಾಕುಮಗಳು. ಮತ್ಸ್ಯದ ಉದರದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದುದರಿಂದ ಇವಳಿಗೆ ಮತ್ಸ್ಯಗಂಧಿಯೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಒಂದು ದಿನ ಪರಾಶರಮುನಿಯು ನದಿಯನ್ನು ದಾಟಬೇಕಾಯಿತು. ದಾಶರಾಜನು ಭೋಜನಕ್ಕೆ ಕುಳಿತಿದ್ದ ಕಾರಣ ಸತ್ಯವತಿಯು ಅವನ ಅದೇಶದಂತೆ ಮುನಿಯನ್ನು ನದಿಯ ಆಚೆ ತೀರಕ್ಕೆ ಸೇರಿಸಿದಳು. ಇವಳ ಸೌಂದರ್ಯವನ್ನು ನೋಡಿ ಪರಾಶರರು ಮೋಹಗೊಂಡು ತಮ್ಮ ಮನೋಗತವನ್ನು ತಿಳಿಸಿದರು. ಸತ್ಯವತಿಯು ಅವಳೆಷ್ಟೆಯಂತೆ ಈ ವಿಷಯವು ಯಾರಿಗೂ ತಿಳಿಯಬಾರದಂತೆಯೂ ಅವಳ ಕನ್ಯಾಧರ್ಮಕ್ಕೆ ಲೋಪವುಂಟಾಗದಂತೆಯೂ ಅವಳ ದೇಹದಲ್ಲಿ ಯಾವಾಗಲೂ ಸೌಗಂಧ್ಯವೂ ಹೊಸ ಹೊಸ ತಾರುಣ್ಯವೂ ಚಿಮ್ಮುತ್ತಿರುವಂತೆಯೂ ಅವಳು ಉದರದಲ್ಲಿ ಅಮಾನುಷ ಶಕ್ತಿಸಂಪನ್ನನಾದ ಪುತ್ರನು ಜನಿಸುವಂತೆಯೂ ವರವನ್ನು ನೀಡಿದರು. ಆಗ ಅಪ್ರತಿಮ



ತೇಜಃಶಾಲಿಯಾದ ವ್ಯಾಸಮುನಿಯು ಜನಿಸಿದರು. ಅನಂತರ ಸತ್ಯವತಿಯು ಶಂತನುರಾಜನನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗಿ ಚಿತ್ರಾಂಗದ ಮತ್ತು ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯರೆಂಬ ಪುತ್ರರನ್ನು ಪಡೆದಳು. ಇವರಿಬ್ಬರೂ ಸಂತಾನಹೀನರಾಗಿ ಮೃತಿಹೊಂದಿದ್ದರಿಂದ ಸತ್ಯವತಿಯು ಸೂಚನೆಯಂತೆ ವಿಚಿತ್ರವೀರ್ಯನ ಪತ್ನಿಯರಾದ ಅಂಬಿಕೆ ಮತ್ತು ಅಂಬಾಲಿಕೆಯರಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಸರಿಂದ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರ ಮತ್ತು ಪಾಂಡು ಇವರಿಬ್ಬರೂ ಜನಿಸಿದರು.]

ಸತ್ಯವತೀಸುತ ಸತ್ಯವತೀಸುತ (ಪುಂ) ವೇದವ್ಯಾಸ ಮುನಿ.

ಸತ್ಯವಾಕ್ ಸತ್ಯವಾಚ್ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಮುಖ. ಸತ್ಯಾ ವಾಕ್ಯಸ್ಯ | 2. ಸಾವರ್ಣಮನುವಿನ ಪುತ್ರ. 3. ವಾಯುಸ, ಕಾಗೆ. (ವಿಂ) 4. ಸತ್ಯವನ್ನು ನುಡಿಯುವವನು.

ಸತ್ಯವಾದಿನ್ ಸತ್ಯವಾದಿನ್ (ವಿಂ) ನಿಜವನ್ನು ಹೇಳುವವನು. ವಾಸ್ತವವಾದ ವಿಷಯವನ್ನು ಹೇಳುವವನು. ಸತ್ಯಂ ವದತಿ — ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಣಿತಿ:” (3-2-96). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ತೋಪ್” (4-1-4). —ವಾಬಿನಿ —ವಾದಿನೀ.

ಸತ್ಯವ್ರತ ಸತ್ಯವ್ರತ (ವಿಂ) ಸತ್ಯವೇ ವ್ರತವಾಗಿ ಉಳ್ಳವನು, ಅಡಿದ ಮಾತಿನಂತೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ಸತ್ಯಮೇವ ವ್ರತಂ ಯಸ್ಯ |

ಸತ್ಯಸಂಘ ಸತ್ಯಸಂಘ (ಪುಂ) ಕುಬೇರ. “ಕುತನುಕುಹೇಚ್ಚಾವಸವ: ಪಿಶಾಚಕೀ ಸತ್ಯಸಂಘಸತ್ಯಶಿರಾ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಸತ್ಯಸಂಧ ಸತ್ಯಸಂಧ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಸತ್ಯಾ ಅಕೇತವಾ ಸಂಧಾ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ ಅಸ್ಯ | “ಸತ್ಯಾ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ ಯಸ್ಯೇತಿ ಸತ್ಯಸಂಧ: ಸ ಉಚ್ಯತೇ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: | “ವಿನಯೋ ಜಯ: ಸತ್ಯಸಂಧೋ ದಾಶಾಹ್ನ: ಸಾತ್ವತಾಂ ಪತಿ:” ವಿಂ ಸಂ | 2. ಜನಮೇಜಯ. 3. ಶ್ರೀರಾಮ. (ವಿಂ) 4. ಸತ್ಯವಾದ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯುಳ್ಳವನು, ಅಡಿದ ಮಾತಿನಂತೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಸಂಧಾ —ಸಂಧಾ. 5. ದ್ರೌಪದಿ.

ಸತ್ಯಾ ಸತ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೀತಾದೇವಿ. ಸತ್ಯಮಸ್ಯಾ ಅಸ್ತಿ “ಅಚ್” (4-2-129). 2. ಸತ್ಯವತಿ, ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯ ತಾಯಿ. 3. ಸತ್ಯಭಾಮಾ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಮಹಿಷಿಯರ ಲ್ಲೊಬ್ಬಳು. “ಆಹುತು ರಥಂ ಸತ್ಯಾಮಾಹ್ವಯಾಮಾಸ ಕೇಶವ:” |

ಸತ್ಯಾಕೃತಿ ಸತ್ಯಾಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾಣಿಜ್ಯದ ಒಪ್ಪಂದವನ್ನು ಸ್ಥಿರಪಡಿಸುವುದು. ಸತ್ಯ+ಕೃತ್ “ಕ್ರಿನ್” (3-3-94). “ತಾಚ್” (4-4-66). ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಇದನ್ನು ವಿಕ್ರಯಿಸುವೆನೆಂದು ಸತ್ಯಮಾಡುವುದು.

ಸತ್ಯಾನೃತ ಸತ್ಯಾನೃತ (ನಂ) ವಾಣಿಜ್ಯ. ವ್ಯಾಪಾರ. ವರ್ತಕತನ. ಸತ್ಯಸಹಿತಮನೃತಮ್—ಶಾಕಪಾಂ | ವ್ಯಾಪಾರದಲ್ಲಿ ಸತ್ಯ ಅಸತ್ಯ ಎರಡೂ ಇರುವುದರಿಂದ ಸತ್ಯಾನೃತ ವಾಯಿತು. “ಸತ್ಯಾನೃತಂ ಚ ವಾಣಿಜ್ಯಂ ತೇನ ಚೈವಾಪಿ ಜೀವ್ಯತೇ” ಮನುಂ 8-6 |

ಸತ್ಯಾಪನ ಸತ್ಯಾಪನ (ನಂ) 1. ವಾಣಿಜ್ಯದ ಒಪ್ಪಂದವನ್ನು ಸ್ಥಿರಪಡಿಸುವುದು. ಸತ್ಯಸ್ಯ ಕರಣಮ್ — ಸತ್ಯ + ಣಿಕ್ “ಲ್ಯುಟ್” (3-3-114). ಆಪುಕ್ ಆಗಮ: | 2. ಮಾತಿನಂತೆ ನಡೆಯುವುದು, ಅಡಿದ ಮಾತನ್ನು ಪಾಲಿಸುವುದು. “ಯುಕ್” | ಸತ್ಯಾಪನಾ ಸತ್ಯಾಪನಾ.

ಸತ್ಯೋಽ ಸತ್ಯೋಽ (ವಿಂ) ಸತ್ಯವಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಸತ್ಯ+ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಕೃಪ್” (3-1-114).

ಸತ್ರಾ ಸತ್ರಾ (ಅವ್ಯಂ) ಸಂಗಡ, ಜೊತೆ, ಕೂಡ. ಸಹ ತ್ರಾಯತೇ — ತ್ರೈ (ಪಾಲನೆ) “ಕ್ವಿಪ್” (3-2-96). “ಸಾಕಂ ಸತ್ರಾ ಸಮಂ ಸಹ” ಅಮಂ |

ಸತ್ರಾಜಿತ್ ಸತ್ರಾಜಿತ್ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ರಾಜ. ಸತ್ಯಭಾಮೆಯ ತಂದೆ. [ಸತ್ರಾಜಿತನು ಸೂರ್ಯನ ಭಕ್ತನಾಗಿದ್ದು ಅವನಿಂದ ಸ್ಯಮಂತಕರತ್ನವನ್ನು ಪಡೆದಿದ್ದನು. ಆ ರತ್ನವನ್ನು ಅಶುಚಿಯಾಗಿರುವಾಗ ಧರಿಸಿದರೆ ಅದು ಅವನನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವುದೆಂದು ಸೂರ್ಯನು ಹೇಳಿದ್ದನು. ಈ ರತ್ನವು ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಅಪಾರ ಸುವರ್ಣವನ್ನು ಕೊಡುವುದೆಂಬ ಅದರ ಮಹಿಮೆಯನ್ನು ತಿಳಿದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ತನಗಾಗಿ ಅದನ್ನು ಕೇಳಿದನು. ಆದರೆ ಸತ್ರಾಜಿತನು ಕೊಡಲಿಲ್ಲ. ಒಂದು ದಿನ ಅವನ ತಮ್ಮ ಪ್ರಸೇನನು ಅದನ್ನು ಧರಿಸಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನೊಡನೆ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಬೇಟೆಯಾಡಲು ಹೋದನು. ಒಂದು ಸಿಂಹವು ಬಂದು ಪ್ರಸೇನನನ್ನು ಕೊಂದಿತು. ಆ ರತ್ನಕ್ಕಾಗಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಪ್ರಸೇನನನ್ನು ಕೊಂದನೆಂದು ಕೃಷ್ಣನ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಅಪವಾದ ಬಂದಾಗ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಮೃತನಾಗಿದ್ದ ಪ್ರಸೇನನನ್ನು ಕಂಡುಹಿಡಿದು ಮುಂದೆ ಬಾಂಬವಂತನ ಕೈಸೇರಿದ್ದ ಆ ರತ್ನವನ್ನು ತಂದೆ ಸತ್ರಾಜಿತ್ತಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿದನು.]

ಸತ್ರಿ ಸತ್ರಿ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 2. ಗಜ, ಆನೆ.

ಸತ್ವರ ಸತ್ವರ (ವಿಂ) 1. ತ್ವರೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ವೇಗವುಳ್ಳ. ತ್ವರಯಾ ಸಹ ವರ್ತತೇ | “ತ್ರಿಶದ್ವರ್ಷೋಽಹೇತುಕನ್ಯಾ ಹೃದ್ಯಾ ದ್ವಾದಶ-ವಾರ್ಷಿಕೀಮ್ | ತ್ರ್ಯಷ್ಟವರ್ಷೋಽಷ್ಟವರ್ಷಿ ವಾ ಧರ್ಮೋ ಸೀದತಿ ಸತ್ವರ:” ಮನುಂ 9-94. (ಅವ್ಯಂ) 2. ವೇಗವಾಗಿ, ಶೀಘ್ರವಾಗಿ, ಜಾಗ್ರತೆಯಾಗಿ.



ಸದ್ಭಜನ ಸದಂಜನ (ನಂ) ಕುಸುಮಂಜನ. ಸತ್ ಅಂಜ-  
ನಮ್ । “ರೀತಿಪುಷ್ಪಂ ಪುಷ್ಪಕೇತುಃ ಪೌಷ್ಪಕಂ ಕುಸುಮಾಂಜನಮ್” ।

ಸದನ ಸದನ (ನಂ) 1. ಗೃಹ, ಮನೆ, ವಾಸಸ್ಥಾನ.  
ಸಿದ್ಧಂತತ್ರ — ಷಡ್ಲ (ವಿಶರಣಗತ್ಯವಸಾದನೇಷು) “ಲ್ಯುಡ್”  
(೩-೩-೧೧೭) । “ಸದನಾಗತಸದನಾಪವಾದೋ ಮಹತಾಂ ಸಂಪ್ರತಿ  
ಮಾ ಚ ಭೂದಯಂ ವಃ” ಯಾದಂ ೧೫-೮೧ । “ಗಗನಸ್ಪೃಶಾಂ  
ಮಣಿರೂಪಾಂ ಚಯೇನ ಯತ್ ಸದನಾನ್ಯುದಸ್ಮಯತ ನಾಕಿನಾಮಪಿ”  
ಮಾಘಂ ೧೩-೬೩ । 2. ಜಲ, ನೀರು. “ಸದನಂ ಜಲ-  
ಸಂಪನ್ನೋ” ಹೇಮಂ । 3. ಅಳಿವು, ನಾಶ. 4. ಕ್ಷಯಿಸುವುದು,  
ಕ್ಷೀಣವಾಗುವುದು. 5. ಆಯಾಸ, ದಣವು, ಬಳಲಿಕೆ.

ಸದಸ್ ಸದಸ್ (ನಂ) ಸಭೆ, ಜನರು ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು,  
ಕಾರ್ಯಕಲಾಪಗಳ ಸಮಾಲೋಚನೆಗಾಗಿ ಜನರು ಒಟ್ಟು  
ಗೂಡುವುದು. ಸಿದ್ಧಂತತ್ರ — ಷಡ್ಲ (ವಿಶರಣಾದೌ)  
“ಅಸುನ್” (೩ಂ ೪-೧೮೮) । “ಉಗಮ್ಯ ಹರಿ ಸದಸ್ಯದಃ  
ಸ್ಫುಟಿಮಿತ್ರಾರ್ಥಮುದಾಹರದ್ವಚಃ” ಮಾಘಂ ೧೬-೧ ।

ಸದಸ್ಯ ಸದಸ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸಭೆಯಲ್ಲಿರುವವನು, ಸಭೆಯ  
ಕಾರ್ಯಕಲಾಪಗಳಲ್ಲಿ ಭಾಗವಹಿಸುವವನು. ಸದಸಿ ಸಾಧುಃ  
“ಯತ್” (೪-೪-೧೮) । 2. ಯಾಗದಲ್ಲಿ ನ್ಯೂನಾತಿರೇಕ  
ಗಳನ್ನು ಸರಿಪಡಿಸಿ ವಿಧಿಪೂರ್ವಕ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸುವ  
ಯತ್ವಿಕು. “ಸದಸ್ಯಾ ವಿಧಿದರ್ಶಿನಃ” ಅಮಂ ।

ಸದಾ ಸದಾ (ಅವ್ಯಂ) ಯಾವಾಗಲೂ, ಎಲ್ಲಾ ಕಾಲದಲ್ಲೂ.  
ಸರ್ವ “ದಾ” (೫-೩-೧೫) । ಸರ್ವಸ್ಯ ವಾ ಸಃ (೫-೩-೬) ।  
ಪಕ್ಷೇ ಸರ್ವದಾ ಸರ್ವದಾ. “ಆದಿತಾಮಜನನಾಯ ದೇಹಿನಾಮಂತತಾಂ  
ಚ ದಧತೇಽನಪಾಯಿನೇ । ಬಿಭ್ರತೇ ಭುವಮಘಃ ಸದಾಥ ಚ  
ಬ್ರಹ್ಮಣೋಽಪ್ಯುಪರಿ ತಿಷ್ಠತೇ ನಮಃ” ಮಾಘಂ ೧೪-೬೫ ।

ಸದಾಗತಿ ಸದಾಗತಿ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಸದಾ  
ಸರ್ವಕಾಲಂ ಗತಿರಸ್ಯ । 2. ಸೂರ್ಯ. 3. ಸ್ವರ್ಗ. 4. ನಿರ್ವಾಣ,  
ಮೋಕ್ಷ. 5. ಸರ್ವವ್ಯಾಪಿಯಾದ ಪರಮಾತ್ಮ. “ಸದಾಗತಿರ್ನಿಕವಾತನಿರ್ವಾಣೇಷು ಸದೀಶ್ವರೇ”  
ಮೇದಿಂ ।

ಸದಾಚಾರ ಸದಾಚಾರ (ಪುಂ) ಸತ್ಪುರುಷರ ಆಚಾರ, ಶಿಷ್ಟರ  
ಸಂಪ್ರದಾಯ, —ನಡವಳಿಕೆ. ಸತಾಮಾಚಾರಃ ।

ಸತ್ಪುರುಷರ ಆಚಾರಃ “ಸಾಧವಃ ಕ್ಷೀಣದೋಷಾಶ್ಚ  
ಸಚ್ಚಂದ್ರಃ ಸಾಧುವಾಚಕಃ । ತೇಷಾಮಾಚರಣಂ ಯತ್ ಸದಾಚಾರಃ  
ಸ ಉಚ್ಯತೇ” ॥

ಸತ್ಪುರುಷರು : “ಆಗಮೇಷು ಪುರಾಣೇಷು ಸಂಹಿತಾಸು  
ಯಥೋದಿತಾನ್ । ಸಮುದಿಷ್ಟಸದಾಚಾರಾನ್ ತಾನ್ ಗೃಹ್ಣೀಯಾತ್  
ಗೃಹಸ್ಥವತ್” ॥

ಸದಾಚಾರಸಂಪನ್ನನಾದ ಗೃಹಸ್ಥನ ಕರ್ತವ್ಯ  
ಗಳು : ಗೃಹಸ್ಥನು ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮತ್ತು ಪ್ರವಚನ  
ಗಳಿಂದ ಮುಷಿಗಳನ್ನೂ ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರದಿಂದ ದೇವತೆಗಳನ್ನೂ  
ಶ್ರಾದ್ಧಕಾರ್ಯದಿಂದ ಪಿತೃಗಳನ್ನೂ ಬಲಿದಾನದಿಂದ ಭೂತ  
ಗಳನ್ನೂ ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸಬೇಕು. “ಋಷಿನ್ ಯಜೇದ್ವೇದಪಾಠಃ  
ದೇವಾನ್ ಹೋಮೇಸ್ತು ಪೂಜಯೇತ್ । ಶ್ರಾದ್ಧಃ ಪಿತೃನ್ ಯಜೇದನ್ನಃ ಭೂತಾನಿ  
ಬಲಿಭಿಃ ಸತಥಾ” ॥

ರಾಜನ ಕರ್ತವ್ಯ : “ಅಸಂಪೂಜ್ಯ ತಥಾ ವಿಷ್ಣುಂ  
ಶಿವಮಗ್ನಿಂ ಪುರಂದರಮ್ । ಅದತ್ವಾ ಚ ತಥಾ ದಾನಂ ನ  
ಭುಂಜೀಯಾನ್ನಪಃ ಕ್ವಚಿತ್” ॥

ಸತ್ಪುರುಷರಿಂದ ಸೇವಿಸಲ್ಪಡುವ ಸದಾಚಾರ  
ವೃಕ್ಷ : ಸದಾಚಾರವೃಕ್ಷಕ್ಕೆ ಧರ್ಮವೇ ಮೂಲ.  
ಧನವೇ ಶಾಖೆ. ಕಾಮವೇ ಪುಷ್ಪ. ಇದರ ಫಲವೇ ಮೋಕ್ಷ.  
ಇದರ ಸೇವನೆಯಿಂದ ಅನಂತ ಪುಣ್ಯಶಾಲಿಯಾಗುವನು.  
“ಧರ್ಮೋಽಸ್ಯ ಮೂಲಂ ಧನಮಸ್ಯ ಶಾಖಾ ಪುಷ್ಪಂ ಚ ಕಾಮಃ ಫಲಮಸ್ಯ  
ಮೋಕ್ಷಃ । ಅಸೌ ಸದಾಚಾರತಃ ಸುಕೇಶಿನ್ ಸಂಸೇವಿತೋ ಯೇನ ಸ  
ಪುಣ್ಯಭೋಕ್ತಾ” ॥

ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಬ್ರಾಹ್ಮಮೂಹೂರ್ತದಲ್ಲಿದ್ದು ಪರಮಾ  
ತ್ಮನ ಮತ್ತು ಮಹರ್ಷಿಗಳ ಧ್ಯಾನ ಮಾಡಬೇಕು. ಅನಂತರ  
ಸುಪ್ರಭಾತಪರನಪೂರ್ವಕ ಮಂಗಳಕರವಾದ ಮಾತನಾಡ  
ಬೇಕು. “ಬ್ರಾಹ್ಮೇ ಮುಹೂರ್ತೇ ಪ್ರಥಮೇ ವಿಬುಧ್ಯೇದನುಸ್ಮರೇದೇವವರಂ  
ಮಹರ್ಷಿನ್ । ಪ್ರಾಭಾತಿಕಂ ಮಂಜಲಮೇವ ವಾಕ್ಯಂ ಯದುಕ್ತವಾನ್  
ದೇವಪತಿಃ ಸ್ವಿತ್ತೇತಃ” ॥ ಇತ್ಯಾದಿ ಸತ್ಪುರುಷರ ಸಾಂಪ್ರ  
ದಾಯಿಕ ಅನುಷ್ಠಾನಗಳು. ಸದಾಚಾರಗಳು.

ಸದಾತನ ಸದಾತನ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. (ವಿಂ) 2. ಯಾವಾಗಲೂ  
ಇರುವ, ಶಾಶ್ವತವಾಗಿರುವ. ಸದಾ ಭವಃ—“ಠ್ಯುಃ”  
ತುಡ್ ಚ (೪-೩-೨೩) । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೧೫) ।  
—ತನಿ—ತನೀ. “ಕಾಂತಿ ಕಾಂತ್ಯಾ ಸದಾತನ್ಯಾ ಹೇಪಯಂತೀ  
ಶುಚಿಃ ಸ್ಮಿತಾ” ಭट्टಿಂ ೫-೬೫ ।

ಸದಾತಿಯಾ ಸದಾತೋಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರತೋಯಾ ನದಿ.  
ಸದಾ ತಿಯಂ ಯತ್ರ । ಪಾರ್ವತೀಪರಮೇಶ್ವರರ ವಿವಾಹ  
ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಧಾರೆಯೆರೆದ ನೀರು ಪರಮೇಶ್ವರನ  
ಕೈಯಿಂದ ಬಿದ್ದು ನದಿಯಾಗಿ ಪ್ರವಹಿಸಿತು. [“ಕರತಿಯಾ”  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಈ ನದಿಯಲ್ಲಿ ಯಾವಾಗಲೂ ನೀರು  
ಪ್ರವಹಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು.

ಸದಾಧಾನ ಸದಾಧಾನ (ಪುಂ) 1. ಐರಾವತ. 2. ಗಣಪತಿ,  
ಗಜಾನನ. 3. ಮದಿಸಿದ ಅನೆ. ಸದಾ ದಾನಂ ಸದಜಲಂ  
ಯಸ್ಯ । “ಸದಾಧಾನೋಽಭ್ರಮಾತಂಜ್ಞೇ ಹೇರಮ್ಬೇ ಗಂಧಹಸ್ತಿನಿ”



ಮೇದಿಂ. (ವಿಂ) 4. ಯಾವಾಗಲೂ ಮದೋದಕ ಸುರಿಯು ತಿರುಂವ.

ಸದಾನಂದ ಸದಾನಂದ (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ. ಸದಾ  
ಆನಂದೋಽಸ್ಯ | "ಸದಾಶಿವ: ಸದಾಕರ್ತಾ ಸದಾಹರ್ತಾ ಸದಾಗತಿ: |  
ಸದಾನಂದ: ಸದಾವರ್ತೀ ಸದಾಸಜ್ಜವಿವಜಿತ: " |

ಸದಾನರ್ತ ಸದಾನರ್ತ (ಪುಂ) ಕಾಡಿಗೆಸೊಗಸಿನ ಹಕ್ಕಿ, ದಾಸರಿ  
ಹಕ್ಕಿ. ಸದಾ ನೃತ್ಯತಿ — ನೃತೀ (ಗಾತ್ರವಿಕೇಪೇ) "ಅನ್"  
(೩-೧-೧೩೪) |

ಸದಾನೀರಾ ಸದಾನೀರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕರತೋಯಾ ನದಿ.  
["ಸದಾತೋಯಾ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಸದಾಪುಷ್ಪ ಸದಾಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) 1. ನಾರಿಕೇಳ ವೃಕ್ಷ, ತೆಂಗಿನ  
ಮರ. ಸದಾ ಸರ್ವಕಾಲೇಷು ಪುಷ್ಪಂ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2.  
ಯಾವಾಗಲೂ ಪುಷ್ಪಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವ.

ಸದಾಫಲ ಸದಾಫಲ (ಪುಂ) 1. ಬಿಲ್ವವೃಕ್ಷ. 2. ನಾರಿಕೇಳ  
ವೃಕ್ಷ, ತೆಂಗಿನ ಮರ. 3. ಉದುಂಬರ ವೃಕ್ಷ, ಅತ್ತಿಮರ.  
"ಸದಾಫಲ: ಸ್ಕನ್ಯಫಲೇ ನಾರಿಕೇಲೇಪ್ಯದುಂಬರೇ" ಮೇದಿಂ |

ಸದಾಯೋಗಿನ್ ಸದಾಯೋಗಿನ್ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಸತತ-  
ಜಾಗೃಕತ್ವಾತ್ ಸದಾ ಯೋಗೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇತಿ:" (೪-೨-೧೧೫) |  
"ಚಿಕಿತ್ಸಾयां ಜಾಗೃಕ: ಸದಾಯೋಗೀತಿ ಕथ्यते" ಇತಿ  
ನಿರುಕ್ತಿ: | "ವೇದೋ ವೇದ: ಸದಾಯೋಗೀ" ವಿಂ ಸಂ |

ಸದಾಶಿವ ಸದಾಶಿವ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.

ಸದೃಶ ಸದೃಶ (ವಿಂ) 1. ಸದೃಶವಾದ, ಸಮಾನವಾದ.  
ಸಮಾನ ಇವ ಪश्यति — ಸಮಾನ + ದೃಶಿರ್ "ಕಜ್" (ವಾಂ  
೩-೨-೬೦) | ಸಮಾನಸ್ಯ ಸಮಾಪ: ಕಸಶ್ಚ | "ಕಿವನ್" |  
ಸದೃಶ್ ಸದೃಶ್. "ಕಜ್" ಸದೃಶ: ಸದೃಶ: "ಆಕಾರ-  
ಸದೃಶಪ್ರಜ್ಞ: ಪ್ರಜ್ಞಯಾ ಸದೃಶಾಗಮ:" ರಘುಂ ೧-೧೫ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
ಸದೃಶೀ ಸದೃಶೀ, ಸದೃಶೀ ಸದೃಶೀ, ಸದೃಶಾ ಸದೃಶಾ.  
"ಸದೃಶೀ ತವ ಸಾ ಪರಂ ಜಲದುರ್ಗಸ್ಥಮೃಣಾಲಜಿಡ್‌ಮುಜಾ" ನೆಪಂ  
೨-೨೯ | 2. ಯೋಗ್ಯವಾದ, ತಕ್ಕುದಾದ. "ಪ್ರಸ್ತಾವ-  
ಸದೃಶಂ ವಾಕ್ಯಮ್" ಹಿತಂ | 3. ಅರ್ಹವಾದ. 4. ಒಪ್ಪುವ,  
ಹೊಂದುವ.

ಸದೇಶ ಸದೇಶ (ವಿಂ) 1. ಸಮೀಪದ, ಹತ್ತಿರದ. ಸಮಾನೋ  
ದೇಶೋಽಸ್ಯ | 2. ದೇಶಸಹಿತವಾದ, ದೇಶವನ್ನು ಹೊಂದಿ  
ರುವ. 3. ಸಮಾನ ದೇಶವುಳ್ಳ, ಒಂದೇ ದೇಶದ.

ಸದ್ವೇತು ಸದ್ವೇತು (ಪುಂ) (ನ್ಯಾಯಮತದಲ್ಲಿ) ಹೇತ್ವಾಭಾಸ  
ದೋಷರಹಿತವಾದ ಹೇತು. ಸಂಶ್ವಾಸೋ ಹೇತುಶ್ಚ | (1) ಪಕ್ಷ-  
ಸತ್ವಮ್ (2) ಸಪಕ್ಷಸತ್ವಮ್ (3) ವಿಪಕ್ಷಾಸತ್ವಮ್ (4)  
ಅಬಾಧಿತವಿಷಯತ್ವಮ್ ಮತ್ಯಂ (5) ಅಸತ್ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಿತತ್ವಮ್

ಈ ಐದು ರೂಪಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹೇತುವು ಸದ್ವೇತು.  
"ಪರ್ವತೋ ವಹ್ನಿಮಾನ್ ಭೂಮಾತ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಧೂಮೇವು ಸದ್ವೇತು.  
ಇಲ್ಲಿ (1) ಧೂಮವತ್ತ್ವವು ಪಕ್ಷವಾದ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿರು  
ವುದು. (2) ಸಪಕ್ಷವಾದ ಭೂಮನಲ್ಲಿಯೂ ಇರು  
ವುದು. (3) ವಿಪಕ್ಷವಾದ ಮಹಾಹೃದದಲ್ಲಿರುವುದಿಲ್ಲ.  
(4) ಹೇತುವಾದ ಧೂಮವತ್ತ್ವಕ್ಕೆ ವಿಷಯವಾದುದು  
ಆಗ್ನಿಮತ್ತ್ವರೂಪವಾದ ಸಾಧ್ಯಧರ್ಮ, ಅದಕ್ಕೆ ಯಾವುದ  
ರಿಂದಲೂ ಭಾಧೆಯಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಅಬಾಧಿತವಾಯಿತು.  
(5) ಸಾಧ್ಯಾಭಾವಸಾಧಕವಾದ ಹೇತ್ವಂತರರೂಪವಾದ  
ಪ್ರತಿಪಕ್ಷವು ಹೇತುವಾದ ಧೂಮವತ್ತ್ವದಲ್ಲಿ ಇಲ್ಲದಿರು  
ವುದರಿಂದ ಅಸತ್ಪ್ರತಿಪಕ್ಷವಾಯಿತು. ಆದುದರಿಂದ ಇದು  
ಸದ್ವೇತುವಾಯಿತು.

ಸದೃಶ್ ಸದೃಶ್ (ನಂ) 1. ಗೃಹ, ಮನೆ. ಸಿದ್ಧಂತ್ಯಸ್ಮಿನ್—  
ಷಡ್ (ವಿಶರಣಾದಿ) "ಮನಿನ್" (೩ಂ ೪-೧೪೫) |  
"ಸದೃಶಾಂ ವಿರಚನಾಹಿತಶೋಭರಾಗತಪ್ರಿಯಕರ್ತೃರಪಿ ದ್ವಯಮ್"  
ಕಿರಾಂ ೯-೩೪ | 2. ಜಲ, ನೀರು. 3. ಯುದ್ಧ, ಕಾಳಗ.  
ಸಾಧಂತೇವಸಾಧಂತೇ ಪ್ರಾಣಿನೋಽತ್ರ |

ಸದೃಶ್ ಸದೃಶ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅದೇ ದಿನದಲ್ಲಿ. ಸಮಾನೇಽಹನಿ  
— ನಿಪಾಂ (೪-೩-೨೨) | "ಸದೃಶ: ಪ್ರವಾಲೋದ್ಗಮಚಾರುಪತ್ರೇ  
ನೀತೇ ಸಮಾಪ್ತಿ ನವಚೂತಬಾಣೇ" ಕುಮಾಂ ೩-೨೭ | 2. ಕೂಡಲೆ,  
ತತ್ಕ್ಷಣದಲ್ಲಿ. "ದಾಕ್ಷ್ಯಂ ಹಿ ಸದೃಶ: ಫಲದಂ ಯದಗ್ರತ:"  
ಮಾಘಂ ೧೨-೩೨ | 3. ಜಾಗ್ರತೆಯಾಗಿ, ಶೀಘ್ರವಾಗಿ.  
4. ಆಗತಾನೆ, ಅದೇ ಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಇತ್ತೀಚೆಗೆ. "ವತ್ಸೇ ಸದೃಶೋ  
ಹುತಾಗ್ನಿನ್ ಪ್ರದಕ್ಷಿಣೀಕುರ್ವ" ಶಾಕ್ರುಂ ೪ | —ಪ್ರಾಣಕರ:  
—ಪ್ರಾಣಕರ: ಆ ಕೂಡಲೆ ದೇಹಕ್ಕೆ ಬಲವನ್ನು ಕೊಡುವ.  
ಸದೃಶ: ಪ್ರಾಣಸ್ಯ ಬಲಸ್ಯ ಕರ: | ಹೊಸ ಮೂಸ ಹೊಸ ಅನ್ನ  
ಬಾಲವನಿಂತೆ ಕ್ಷೀರಪಾನ ಉಪ್ಪೋದಕ ಇವು ಕೂಡಲೆ  
ದೇಹಕ್ಕೆ ಬಲವನ್ನು ಕೊಡುವುವು. "ಸದೃಶೋಮಾಸಂ ನವಾಶಂ  
ಚ ಬಾಲಾ ಸ್ತ್ರೀ ಕೀರಭೋಜನಮ್ | ಭೃತಮುಣೋದಕಂ ಚೈವ ಸದೃಶ:  
ಪ್ರಾಣಕರಾಣಿ ಷಡ್" | —ಪ್ರಾಣಹರ: —ಪ್ರಾಣಹರ: ಶುಷ್ಕ  
ಮೂಸ ವೃದ್ಧಸ್ತ್ರೀಯರು ಎಳೆಯ ಬಿಸಿಲು ಪೂರ್ತಿ  
ಹೆಪ್ಪಾಗದೆ ಇರುವ ಮೊಸರು ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸ್ತ್ರೀ  
ಸಂಭೋಗ ಮತ್ತು ನಿದ್ರೆ ಇವು ಜಾಗ್ರತೆಯಾಗಿ ದೇಹದ  
ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಕಡಿಮೆಮಾಡುವುವು. "ಶುಕ್ರಮಾಸಂ ಸ್ತ್ರೀಯೋ  
ವೃದ್ಧಾ: ಬಾಲಾಕಸ್ತರ್ಷಣಂ ದಧಿ | ಪ್ರಭಾತೇ ಮೇಥುನಂ ನಿद्रಾ ಸದೃಶ  
ಪ್ರಾಣಹರಾಣಿ ಷಡ್" |

ಸದೃಶ್ ಸದೃಶ್ (ವಿಂ) ನವೀನವಾದ, ನೂತನವಾದ.  
ಸದೃಶ: ಕಾಯತಿ—ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩) | "ನವನೀತಂ  
ಪುನ: ಸದೃಶ್ಕಂ ಲಘು ಸುಕುಮಾರಂ ಮಧುರಮಿತಿ" ಸುಶ್ರುತಂ |



ಸಜ್ಜಾತ ಸದ್ಯೋಜಾತ (ಪುಂ) 1. ಕರು. ಸವ: ತತ್ಕಾಲ-  
ಮೇವ ಜಾತ: 2. ಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. (ವಿಂ) 3. ಸದ್ಯಃ  
ಜನಿಸಿದ, ಆಗತಾನೆ ಹುಟ್ಟಿದ.

ಸದ್ವ ಸದ್ಯ (ವಿಂ) ನಡೆಯುವವನು, ಸಂಚರಿಸುವವನು.  
ಸಿದತಿ ಗಚ್ಛತಿ—ಏದ್ (ಗತೌ) “ಃ” (೩-೨-೧೫೯)।

ಸದ್ವಸಥ ಸದ್ಯಸಥ (ಪುಂ) ಗ್ರಾಮ, ಹಳ್ಳಿ. ಸತ್ + ವಸ  
(ನಿವಾಸೇ) “ಅಥಕ್” (ತಂ ೩-೧೧೬)।

ಸದ್ವತ್ ಸದ್ಯತ್ (ನಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆ, ಒಳ್ಳೆಯ  
ಶೀಲ, ಒಳ್ಳೆಯ ಸ್ವಭಾವ. ಸತ್ ವೃತ್ತಮ್ 2. ಸತ್ಪುರುಷರ  
ಶೀಲ, ಸಜ್ಜನರ ವರ್ತನೆ. ಸತಾ ವೃತ್ತಮ್ (ವಿಂ) 3.  
ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆಯುಳ್ಳವನು, ಒಳ್ಳೆಯ ಸ್ವಭಾವದವನು.  
“ನಾಸಮಂಜಸಶೀಲೇಸ್ತು ಸಹಾಸೀತ ಕದಾಚನ | ಸದ್ವತ್ಸನ್ನಿಕರ್ಷಿ  
ಹಿ ಕ್ಷಣಾರ್ಧಮಪಿ ಶಸ್ಯತೇ” 4. ವರ್ತುಲಾಕಾರವಾಗಿರುವ,  
ಗುಂಡಾಗಿರುವ.

ಸದ್ವತ್ಸಿ ಸದ್ಯತ್ಸಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆ. 2. ಒಳ್ಳೆಯ  
ಸ್ವಭಾವ. 3. ಒಳ್ಳೆಯ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ. (ವಿಂ) 4.  
ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆಯುಳ್ಳ. 5. ಒಳ್ಳೆಯ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನವುಳ್ಳ.  
6. ಒಳ್ಳೆಯ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ. ಸತೀ ವೃತ್ತಿ: यस್ಯ |  
“ಅನುತ್ಸುತ್ರಪದನ್ಯಾಸಾ ಸದ್ವತ್ಸಿ: ಸನ್ನಿಬಂಧನಾ | ಶಬ್ದವಿವೇಚ  
ನೋ ಭಾತಿ ರಾಜನೀತಿರಪಸ್ಪಶಾ” ಮಾಘಂ ೨-೧೧೨।

ಸಧರ್ಮನ್ ಸಧರ್ಮನ್ (ವಿಂ) 1. ಸಮಾನವಾದ ಧರ್ಮ  
ವುಳ್ಳ. 2. ಸದೃಶವಾದ, ಸಮಾನವಾದ. ಸಮಾನೋ ಧರ್ಮೋ  
ಯಸ್ಯ—ಧರ್ಮ “ಅನಿಕ್” (೪-೪-೧೨೪)। ಸಧರ್ಮ ಸಧರ್ಮಿಣಿ  
ಸಧರ್ಮಿಣಿ: | “ಸಾಧಾರಣಸಧರ್ಮಿಣಿ ಸರ್ವಣ: ಸನ್ನಿಭ:  
ಸದ್ಧಕ್” ಹೇಮಂ | -ಚಾರಿಣಿ -ಚಾರಿಣೀ, ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತ  
ವಾಗಿ ಮದುವೆಯಾದ ಪತ್ನಿ.

ಸಧರ್ಮಿನ್ ಸಧರ್ಮಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಸಮಾನವಾದ ಧರ್ಮ  
ಚರಣೆಯುಳ್ಳ. 2. ಸಮಾನ ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಯುಳ್ಳ.  
3. ಸಮಾನ ಧರ್ಮವುಳ್ಳ. ಸಹ ಧರ್ಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:”  
(೪-೨-೧೩೨)। ಸಹಸ್ಯ ಸ: (೬-೩-೮೨)।

ಸಧಿ ಸಧಿ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ. “ಶುಕ್ಲಮಧಾಸಿಸಧಯೋಽಚ್ಛತಿರ್ಜುಹ್ವಾಣ  
ಽಪಿರತುಷ್ಪಗ್ರಹಾಶಿರಾ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಸಧೀಚಿ ಸಧೀಚೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಖಿ, ಗೆಳತಿ. ಸಹ ಅಚ್ಛತಿ  
—ಅಚ್ಛ (ಗತೌ) “ಕ್ವಿನ್” (೩-೨-೫೯)। ಸಹಸ್ಯ  
ಸಧಿ: (೬-೩-೯೫)। “ಡೀಪ್” | “ಸೀತಾ ಸೌಮಿತ್ರಿಣಾ  
ತ್ಯಕ್ತಾ ಸಧೀಚಿ ತಸ್ತುಮೇಕಿಕಾಮ್ | ವಿಜ್ಞಾಯಾಮಸ್ತ ಕಾಕುತ್ಸ್ಥ:  
ಕ್ಷಯೇ ಕ್ಷಮಂ ಸುದುರ್ಲಭಮ್” ಭಟ್ಟಂ ೬-೭ |

ಸಧ್ಯಚ್ಛ ಸಧ್ಯಚ್ಛ (ವಿಂ) 1. ಸಹಚರ, ಗೆಳೆಯ, ಮಿತ್ರ.  
ಸಹ ಅಚ್ಛತಿ—ಅಚ್ಛ (ಗತೌ) “ಕ್ವಿನ್” (೩-೨-೫೯)।

ಸಹಸ್ಯ ಸಧಿ: (೬-೩-೯೫)। (ಪುಂ) 2. ಸಹಚರ, ಪತಿ,  
ಗಂಡ. “ರದ್ಧೋ ಕನಕವಿಭೂಷಣಾನ್ಯಶಕ್ತ: ಸಧೀಚಾ  
ವಲಯಿತಪದನಾಲಸೂತ್ರ:” ಮಾಘಂ ೮-೪೪ | ಸ್ತ್ರಿಯಾ ಸಧೀಚಿ  
ಸಧೀಚೀ. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ. “ಇತ್ಯಂ ಪುರಂಜನಂ ಸಧ್ಯಚ್ಛ-  
ವಶಮಾನೀಯ ವಿಭ್ರಮ:” ಭಾಗಂ ೪-೨೭-೧ |

ಸನ ಸನ (ಪುಂ) 1. ಆನೆಯ ಕಿವಿಯ ಹೊಡೆತ, -ಏಟು.  
(ಪುಂ) 2. ಬ್ರಹ್ಮನ ಪುತ್ರರಾದ ಸನತ್ಕುಮಾರ. ಸನಕ  
ಸನಂದನ ಮತ್ತು ಸನಾತನ.

ಸನಕ ಸನಕ (ಪುಂ) ಚತುರ್ಮುಖಬ್ರಹ್ಮನ ನಾಲ್ಕು  
ಮಂದಿ ಪುತ್ರರಲ್ಲೊಬ್ಬ ಮುನಿ. ಚತುರ್ಮುಖ ಬ್ರಹ್ಮನು  
ಪ್ರಜಾಸೃಷ್ಟಿಗಾಗಿ (1) ಸನಕ (2) ಸನಂದನ (3) ಸನಾತನ  
ಮತ್ತು (4) ಸನತ್ಕುಮಾರರೆಂಬ ನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಮಾನಸ  
ಪುತ್ರರನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದನು. ಅವರೆಲ್ಲರೂ ಮೋಕ್ಷಾಂಕ್ಷಿ  
ಗಳಾಗಿ ಸೃಷ್ಟಿಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಇಷ್ಟಪಡಲಿಲ್ಲ. ಆಗ ಅವರ  
ಮೇಲಿನ ಕೋಪವು ರುದ್ರರೂಪವನ್ನು ತಾಳಿತು. ಈ  
ರುದ್ರನಿಗೇ ಶಿವ ಮಹಾದೇವ ಭವ ಕಾಲ ಮುಂತಾದ  
ಹೆಸರುಗಳು.

ಸನತ್ ಸನತ್ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. (ಅವ್ಯಂ)  
2. ಯಾವಾಗಲೂ.

ಸನತ್ಕುಮಾರ ಸನತ್ಕುಮಾರ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮನ ನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ  
ಪುತ್ರರಲ್ಲೊಬ್ಬ ಮುನಿ. ಸನತ: ಕುಮಾರ: | ಈ ಮುನಿಯು  
ಹುಟ್ಟಿದಾಗಿನಿಂದ ಕುಮಾರನಾಗಿಯೇ ಇರುವುದರಿಂದ  
“ಸನತ್ಕುಮಾರ” ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. “ಯಥೋತ್ಪನ್ನ-  
ಸ್ತಥೇವಾಹಂ ಕುಮಾರ ಇತಿ ವಿದಿ ಮಾಮ್ | ತಸ್ಮಾತ್ಸನತ್ಕುಮಾರೆತಿ  
ನಾಮೇತನ್ಮೇ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಮ್” ಭಾಂ |

ಸನನ್ದ ಸನಂದ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮನ ನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಪುತ್ರರ  
ಲ್ಲೊಬ್ಬ ಮುನಿ.

ಸನಾ ಸನಾ (ಅವ್ಯಂ) ನಿತ್ಯ, ಶಾಶ್ವತ. ಷಣ (ಸಂಭಕ್ತೌ)  
“ನಾ” | “ಸನಾ ನಿಯೇ” ಅಮಂ |

ಸನಾತ್ ಸನಾತ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. “ಸನಾತ್ ಸನಾತನ-  
ತಮ:” ವಿಂ ಸಂ | 2. ಯಾವಾಗಲೂ, ಶಾಶ್ವತವಾಗಿ,  
ನಿತ್ಯವಾಗಿ.

ಸನಾತನ ಸನಾತನ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. 2. ಪರಮೇಶ್ವರ.  
3. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಸನಾ ಭವ: “ಠ್ಯು:” ತುಡ್  
ಚ (೪-೩-೨೩)। 4. ಪಿತೃಗಳ ಅತಿಥಿ. 5. ಬ್ರಹ್ಮನ  
ನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಪುತ್ರರಲ್ಲೊಬ್ಬ ಮುನಿ. (ವಿಂ) 6.  
ಶಾಶ್ವತವಾಗಿರುವ. 7. ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವ. “ಸನಾತನೋಽಚ್ಯುತೇ |  
ಪಿತೃಣಾಮತಿಥೌ ರದ್ರವೇಷಸೌ: | ಶಾಶ್ವತೇ ಸ್ಥಿರೇ” ಹೇಮಂ |



ಸನಾತನತಮ ಸಂಘಟನತಮ (ಪುಂ) ಎಷ್ಟು. ಅಯಮೇಷಾ-  
ಮತಿಶಯೇನ ಸನಾತನ: "ತಮಪ್" (೪-೩-೪೪) । "ಸನಾತ್  
ಸನಾತನತಮ:" ವಿಂ ಸಂ ।

ಸನಾತನಿ ಸಂಘಟನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. 2. ಸಂಸ್ಕೃತಿ.  
3. ಪಾರ್ವತಿ. ಸನಾತನ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೪) । "ಸರ್ವ-  
ಕಾಲೇ ಸನಾ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ವಿಧಮಾನೇ ತನೋತಿ ಚ । ಸರ್ವತ್ರ  
ಸರ್ವಕಾಲೇಷು ವಿಧಮಾನಾ ಸನಾತನಿ" ।

ಸನಾಥ ಸಂಘಟ (ವಿಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಯಜಮಾನನನ್ನು  
ಹೊಂದಿರುವವನು. 2. ಒಬ್ಬ ಸಂರಕ್ಷಕನುಳ್ಳವನು. ನಾಥೇನ  
ಸಹ ವರ್ತತೆ । "ಅಹೋ ಸನಾಥಾ ಭವತಾ ಸ್ಮ ಯದ್ವಯಂ ತ್ರಿಪಿಂಟ-  
ಪಾನಾಮಪಿ ದೂರದರ್ಶನಮ್" ಭಾಗಂ ೧-೧೧-೮ । -ನಾಥಾ  
-ಸಂಘಟ. ಪತಿಸಹಿತಳಾದವಳು, ಸುಮಂಗಲಿ. "ತ್ವಯಾ  
ನಾಥೇನ ವೇದೇಹಿ ಸನಾಥಾಹ್ಯವ ವರ್ತತೆ" ರಾಮಾಂ ।

ಸನಾಭಿ ಸಂಘಟಿ (ಪುಂ) 1. ಒಂದೇ ಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ  
ವನು, ಜ್ಞಾತಿ, ದಾಯಾದ. ಸಮಾನೋ ನಾಭಿಗೌತ್ರಂ ಯಸ್ಯ ।  
ಸಮಾನೋ ನಾಭಿಮೂಲಪುರುಷೋಽಸ್ಯ ವಾ । ಸಮಾನಸ್ಯ ಸಃ  
(೬-೩-೮೪) । "ಅವಲೋಹಸನಾಭಿರಶ್ವಸೇನ: ಪ್ರಸಭಂ ಸ್ವಾಂಢವ-  
ಜಾತವೇದಸಾ ವಾ" ಕಿರಾಂ ೧೩-೧೧ । (ವಿಂ) 2. ಸಮಾನ,  
ಸದೃಶ. "ಸನಾಭಿಜ್ಞಾತಿಸ್ತುಲಯಯೋ:" ಮೇದಿಂ ।

ಸನಾಮನ್ ಸಂಘಟಮ್ (ವಿಂ) ಸಮಾನವಾದ ಹೆಸರುಳ್ಳ  
ವನು, ಒಂದೇ ಹೆಸರುಳ್ಳವನು. ಸಮಾನಂ ನಾಮ ಯಸ್ಯ ।  
"ಚಂದ್ರಸ್ಯ ಗ್ರಹಣಮಿತಿ ಶ್ರುತೇ: ಸನಾಮನ:" ಮುಡ್ರಾಂ ೧-೭ ।

ಸನಿ ಸನಿ (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗುರುಹಿರಿಯರ ಸೇವೆ, -ಪೂಜೆ.  
ಷಣ್ಣು (ದಾನೇ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೮) । 2. ಗೌರವ  
ಪೂರ್ವಕ ಗುರುವಿನಲ್ಲಿ ಬೇಡಿಕೆ. 3. ದಿಕ್ಕು. "ಡೀಪ್"  
(ಗಂ ೪-೧-೪೪) । ಸನಿ ಸನಿ. 4. ಆನೆಯ ಕಿವಿಯ  
ಹೊಡೆತ.

ಸನಿತ ಸನಿತ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ.  
2. ಸಮ್ಮತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಪ್ಪಲ್ಪಟ್ಟ. ಷಣ್ಣು (ದಾನೇ) "ಕ್ವ:"  
(೩-೨-೧೦೨) ।

ಸನಿಷ್ಠಿವ ಸನಿಷ್ಠೀವ (ನಂ) ಎಜಲು ಜಲಕಣಗಳಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ಮಾತು. ನಿಷ್ಠಿವೇನ ಸಹ ವರ್ತತೆ । ಮಾತನಾಡು  
ವಾಗ ಬಾಯಿಂದ ಬೀಳುವ ಜಲಕಣವು ನಿಷ್ಠೀವ.

ಸನಿಡ ಸನೀಡ (ವಿಂ) 1. ಹತ್ತಿರದ, ಸಮೀಪದ. ಸಮಾನ  
ನಿಡಂ ಯಸ್ಯ । 2. ಗೂಡಿನೊಡನಿರುವ, ಗೂಡಿನಿಂದ  
ಕೂಡಿದ, ಗೂಡನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. ನೋಡೇನ ಸಹ ವರ್ತತೆ ।

ಸಂತತ ಸಂತತ (ನಂ) 1. ಯಾವಾಗಲೂ ಇರುವಿಕೆ, ಎಡೆ  
ಬಿಡದೆ ಇರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 2. ಎಡೆಬಿಡದ, ನಿರಂತರವಾದ.

(ಅವ್ಯಂ) 3. ನಿರಂತರವಾಗಿ, ಯಾವಾಗಲೂ. "ನವಪಯ:-  
ಕಣಕೋಮಲಮಾಲತೀಕುಸುಮಸಂತತಿಸಂತತಸಜ್ಜಿಮಿ:" ಮಾಘಂ  
೬-೩೬ ।

ಸಂತತಿ ಸಂತತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೋತ್ರ, ಕುಲ, ವಂಶ.  
ಸಂತನ್ಯತೇ-ಸಮ್+ತನು (ವಿಸ್ತಾರೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) ।  
2. ಸಂತಾನ, ಪ್ರಜೆ. (1) ಪುತ್ರ, ಮಗ. (2) ಕನ್ಯೆ,  
ಮಗಳು. "ಸಂತತಿ: ಶುದ್ಧವಂಶಾ ಹಿ ಪರತೇಹ ಚ ಶರ್ಮಣೇ"  
ರಘುಂ ೧-೬೯ । 3. ಅವಿಚ್ಛೇದ, ಎಡೆಬಿಡದ ನಡೆ,  
ನಿರಂತರತೆ, ಪರಂಪರೆ. "ನಿದಾನಮಿಕ್ಷವಾಕುಕುಲಸ್ಯ ಸಂತತೇ:  
ಸುದಕ್ಷಿಣಾ ದೌರ್ಹದಲಕ್ಷಣಂ ದಧೌ" ರಘುಂ ೩-೧ । ಸಂತತಿಯು  
ದೇಶಕೃತ ಮತ್ತು ಕಾಲಕೃತಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ತೈಲ  
ಮೊದಲಾದ ಮೂರ್ತ ದ್ರವ್ಯಗಳು ತಮಗೆ ಆಧಾರವಾಗಿ  
ರುವ ಪ್ರದೇಶದ ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ (ವ್ಯವಧಾನವಿಲ್ಲದೆ)  
ಹರಡಿರುವುದು ದೇಶಕೃತ ಸಂತತಿ. ಮಧ್ಯೆ ವ್ಯವಧಾನ  
ವಿಲ್ಲದೆ ನಿರಂತರವಾಗಿ ಅನುಭವಿಸುವ ಸುಖ ಮೊದಲಾ  
ದುದು ಕಾಲಕೃತ ಸಂತತಿ. 4. ಪಕ್ಕಾ, ಸಾಲ. "ನವಪಯ:  
ಕಣಕೋಮಲಮಾಲತೀಕುಸುಮಸಂತತಿಸಂತತಸಜ್ಜಿಮಿ:" ಮಾಘಂ  
೬-೩೬ । 5. ವಿಸ್ತಾರ. "ವ್ಯದಧಾತ್ ಯಜಸಂತತ್ಯೇ ವೇದಮೇಕಂ  
ಚತುರ್ವಿಧಮ್" ಭಾಗಂ ೧-೪-೧೯ । "ಸಂತತಿ: ಸ್ಯಾತ್ ಪಙ್ಕ್ತೌ  
ಗೋತ್ರೇ ಪಾರಂಪರ್ಯೇ ಚ ಪುತ್ರಯೋ:" ಮೇದಿಂ । "ಸಂತತಿಸ್ತು ತನಯೇ  
ದುಹಿತಯೇಪಿ । ಪರಂಪರಾಭಾವೇ ಪಙ್ಕ್ತೌ ಗೋತ್ರವಿಸ್ತಾರಯೋರಪಿ"  
ಹೇಮಂ ।

ಸಂತಪನ ಸಂತಪನ (ನಂ) ಕಾಯಿಸುವಿಕೆ, ಬಿಸಿಮಾಡು  
ವುದು. ಸಮ್+ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) ।

ಸಂತಪ್ತ ಸಂತಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ಕಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬೆನ್ನಾಗಿಬಿಸಿ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್+ತಪ (ದಾಹೇ) "ಕ್ವ:" (೩-೨-೧೦೨) ।  
"ಸಂತಪ್ತಾಯಸಿ ಸಂಸ್ಥಿತಸ್ಯ ಪಯಸೋ ನಾಮಾಪಿ ನ ಶ್ರುಯತೇ"  
ಭರ್ತುಂ ೧-೪೮ । 2. ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಬಿಸಿಲಿನಿಂದ  
ಬಳಲಿದ, ಆಯಾಸಗೊಂಡ. ಸಮ್+ತಪ (ಸಂತಾಪೇ)  
"ಕ್ವ:" (೩-೪-೭೨) । "ಸಂತಪ್ತಾನಾಂ ತ್ವಮಸಿ ಕ್ಷರಣಂ  
ತತ್ಪಯೋದ ಪ್ರಿಯಾಯಾ: ಸಂದೇಶಂ ಮೇ ಹರ ಧನಪತಿಕ್ರೋಧವಿಶ್ಲೇಷಿ-  
ತಸ್ಯ" ಮೇಘಂ ೧-೭ । 4. ದುಃಖಗೊಂಡವನು, ಸಂಕಟ  
ಕೊಳ್ಳಗಾದವನು.

ಸಂತಮಸ ಸಂತಮಸ (ನಂ) 1. ಗಾಢಾಂಧಕಾರ, ಕಗ್ಗತ್ತಲೆ,  
ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಹರಡಿರುವ ಕತ್ತಲೆ. ಸಮಂತಾತ್ ತಮ:  
"ಅಚ್" (೪-೪-೭೯) । "ಅವಧಾರ್ಯ ಕಾರ್ಯಗುರುತಾಮಭವಣ  
ಮಥಾಯ ಸಾಂದ್ರತಮಸಂತಮಸಮ್" ಮಾಘಂ ೯-೨೨ । 2. ಮಹಾ  
ಅಜ್ಞಾನ, ಮೋಹ, ಬುದ್ಧಿಯ ಅವರಣ. "ನಿಮಜ್ಜಯನ್"



ಸಂತಮಸೇ ಪರಾಶಯಂ ವಿಧಿಸ್ತು ವಾಚ್ಯೋ ಕವ ತವಾಗಸಃ ಕಥಾ”  
ನಿಷಂ ೯-೯೮ ।

ಸಂತರಣ ಸಂಕರಣ (ನಂ) ನದಿಯನ್ನು ದಾಟುವುದು.

ಸಮ್ + ತ (ಪ್ಲವನತರಣಯೋಃ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।

ಸಂತರ್ಜನ ಸಂಕರ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಬೆದರಿಸುವುದು, ಹೆದರಿಸುವುದು, ಭಯಪಡಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ತರ್ಜ (ತರ್ಜನೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಬಯ್ಯುವುದು, ದೂಷಿಸುವುದು. ತರ್ಜ (ಭರ್ತನೆ) + ಣಿಕ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।

ಸಂತರ್ಜಯತ್ ಸಂಕರ್ಷಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಹೆದರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಭಯಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ತರ್ಜ (ತರ್ಜನೆ) + ಣಿಕ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಬಯ್ಯುತ್ತಿರುವ, ದೂಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ತರ್ಜ (ಭರ್ತನೆ) + ಣಿಕ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ತರ್ಜಯಂತಿ -ಕರ್ಷಯಂತಿ ।

ಸಂತರ್ಪಣ ಸಂಕರ್ಷಣ (ನಂ) 1. ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸುವಿಕೆ. 2. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವಿಕೆ. ತೃಪ (ತೃಪ್ತೌ), ತೃಪ (ಪ್ರೀಣನೆ) ವಾ—ಸಮ್ + ತೃಪ + ಣಿಕ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । (ವಿಂ) 3. ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸುವ. 4. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವ. ಸಮ್ + ತೃಪ + ಣಿಕ್ ಕರ್ತಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೧-೧೧೩) । “ಪುಣ್ಯೋ ಮಹಾಬ್ರಹ್ಮಸಮೂಹಜುಷ್ಠಃ ಸಂತರ್ಪಣೋ ನಾಕಸದಾ ವರೇಷ್ಯಃ” ಮಡಿಂ ೧-೪ ।

ಸಂತಾನ ಸಂತಾನ (ಪುಂ) 1. ಪಂಚ, ಕುಲ, ಸಂತತಿ. ಸಮ್ + ತನು (ವಿಸ್ತಾರೇ) “ಘ್” (೩-೩-೧೧೯) । 2. ಪ್ರಜೆ— (1) ಪುತ್ರ. (2) ಪುತ್ರಿ. “ಸಂತಾನಾರ್ಥಾಯ ವಿಧಯೇ ಸ್ವಭುಜಾದವತಾರಿತಾ । ತೇನ ಭೂರ್ಜಗತೋ ಗುರ್ವೀ ಸಚಿವೇಷು ನಿಚಿಕ್ಷಿಪೇ” ರಘುಂ ೧-೩೪ । 3. ವಿಸ್ತಾರ, ವೃದ್ಧಿ. “ತಯೋರ್ಮುತಾದಯಾಪತ್ಯಂ ಸಂತಾನಾಯ ಕುಲಸ್ಯ ನಃ” ಭಾಂ ಆದಿಂ । “ಸಂತಾನೇ-ಸ್ತನುಭಾವನಷ್ಟಸಲಿಲಾ ವ್ಯಕ್ತಿ ಭಜಂತ್ಯಾಪಗಾಃ” ಶಾಕುಂ ೭-೮ । 4. ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಎಡೆಬಿಡದಿರುವಿಕೆ, ದೇಶ ಮತ್ತು ಕಾಲಕ್ಕಿಂತ ಪೂರ್ವಧಾನವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 5. ಪ್ರವಾಹ. “ಅಚ್ಛಿಜಾಮಲಸಂತಾನಾಃ ಸಮುದ್ರೋರ್ಮ್ಯನಿವಾರಿತಾಃ” ಕುಸುಂ ೬-೬೯ । 6. ಇಂದ್ರನು ಉದ್ಯಾನವನದಲ್ಲಿರುವ ಪಂಚ (ಐದು) ದೇವವೃಕ್ಷಗಳಲ್ಲೊಂದು. “ಪಂಚೈತೇ ದೇವತರವೋ ಮಂದಾರಃ ಪಾರಿಜಾತಕಃ । ಸಂತಾನಃ ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷಶ್ಚ ಪುಷ್ಪಿ ವಾ ಹರಿಶ್ಚಂದನಮ್” ಅಮಂ । “ಸಂತಾನಸೌಭಾಗ್ಯಧನೇನ ಯುನಾ ಸಿಂಹಾ ಸುಧಾಸಾರನಿರ್ಮಲಾಃ” ಯಾದಂ ೧೩-೧೧ ।

ಸಂತಾನಕ ಸಂತಾನಕ (ಪುಂ) ಐದು ದೇವವೃಕ್ಷಗಳಲ್ಲೊಂದು.

“ಅತಿಸುರಭಿರಭಾಜಿ ಪುಷ್ಪಶ್ರಿಯಾಮತನುತರತಯೇವ ಸಂತಾನಕಃ”  
ಮಾಘಂ ೬-೬೭ ।

ಸಂತಾನಿಕಾ ಸಂತಾನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೋರೆ. ಸಂತಾನೋ ವಿಸ್ತಾರೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಠನ್” (೫-೨-೧೧೫) । 2. ಹಾಲಿನ ಕೆನೆ. 3. ಕತ್ತಿಯ ಅಲುಗು. 4. ಜೇಡನ ಬಲೆ. “ಸಂತಾನಿಕಾ ಕೋರಸಾರೆ ಮರ್ಕಟಸ್ಯ ಚ ಜಾಲಕೇ” ಹೇಮಂ ।

ಸಂತಾಪ ಸಂತಾಪ (ಪುಂ) 1. ತಾಪತ್ರಯದಿಂದ ಉಂಟಾದ ವ್ಯಸನ, ದುಃಖ. ಸಮ್ಯಕ್ ತಾಪಃ । 2. ಬಿಸಿ, ಬಿಸಿಲು, ಬೆಂಕಿ ಮುಂತಾದವುಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದ ಕಾವು, ಮನ್ಮಥ ಜ್ವರ. ಸಂತಾಪಯತಿ—ಸಮ್ + ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) + ಣಿಕ್ “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ಸಂತಾಪಸಂತತಿಮಹಾವ್ಯಸನಾಯ ತಸ್ಯಾಮಾಸಕ್ತಮೇತದನಪೇಕ್ಷಿತಹೇತು ಚೇತಃ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೬ । “ಪ್ರೇಮೋರಃ ಪ್ರಣಯಿನಿ ಸಿಂಹಿತಿ ಪ್ರಿಯಾಯಾಃ ಸಂತಾಪಂ ನವಜಲ-ವಿಪ್ರುಷೋ ಗೃಹೀತ್ವಾ” ಮಾಘಂ ೮-೪೦ । 3. ತಪಸ್ಸಿನಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಕ್ಲೇಶ, ಆಯಾಸ. “ಸಂತಾಪೇ ದಿಶತು ಶಿವಃ ಶಿವಾಂ ಪ್ರಸಕ್ತಿಮ್” ಕಿರಾಂ ೫-೫೦ ।

ಸಂತಾಪಕರ ಸಂತಾಪಕರ (ವಿಂ) 1. ದುಃಖವುಂಟು ಮಾಡುವ. ಸಂತಾಪಸ್ಯ ಕರಃ । 2. ಕ್ಲೇಶವುಂಟುಮಾಡುವ, ಆಯಾಸವುಂಟುಮಾಡುವ. 3. ತಾಪವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.

ಸಂತಾಪಹನ ಸಂತಾಪಹನ (ವಿಂ) 1. ತಾಪತ್ರಯದಿಂದ ಸಂಭವಿಸುವ ವ್ಯಸನವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ. “ಸಂತಾಪಹನಂ ಸಕಲಜಗತಾಂ ಶಾಙ್ಗೇಚಾಪಾಭಿರಾಮಮ್” ಚಂ ರಾಂ । 2. ಬಿಸಿಲಿನಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ತಾಪವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವ. ಸಂತಾಪಂ ಹಂತಿ—ಸಂತಾಪ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) “ಕಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೫) । 3. ಕ್ಲೇಶವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವ.

ಸಂತಾಪನ ಸಂತಾಪನ (ಪುಂ) 1. ಮನ್ಮಥನ ಪಂಚ (5) ಬಾಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಮನ್ಮಥನ ಐದು ಬಾಣಗಳು : (1) ಮೋಹನಃ (2) ಉನ್ಮಾದನಃ (3) ಸಂತಾಪನಃ (4) ಶೋಷಣಃ ಮತ್ತು (5) ನಿಶ್ಚೇಷ್ಟಾಕರಣಃ । “ಅಸ್ಯ ಬಾಣಾ ಮೋಹನೋ-ನ್ಮಾದನೌ ತಥಾ । ಸಂತಾಪನಃ ಶೋಷಣಶ್ಚ ನಿಶ್ಚೇಷ್ಟಾಕರಣೋಽಪಿ ಚ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । (ನಂ) 2. ದುಃಖವುಂಟುಮಾಡುವುದು. 3. ಬಿಸಿಯುಂಟುಮಾಡುವುದು, ಕಾಯಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 4. ಸಂತಾಪವುಂಟುಮಾಡುವ, ದುಃಖವುಂಟು ಮಾಡುವ. 5. ಕಾಯಿಸುವ, ಬಿಸಿಯುಂಟುಮಾಡುವ. ಸಮ್ + ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) + ಣಿಕ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೧-೧೩೪) । ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ವಾ । “ದಿಷ್ಟಿತ್ವಾ ತೇ ನಿಹತಃ ಪಾಪೋ ಲೋಕಸಂತಾಪನೋಽಸುರಃ” ಭಾಗಂ ೭-೧೦-೨೬ ।

ಸಂತಾಪಹರ ಸಂತಾಪಹರ (ವಿಂ) 1. ಸಂತಾಪವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವ, ವ್ಯಸನವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ. ಸಂತಾಪಸ್ಯ ಹರಃ । 2. ಕ್ಲೇಶವನ್ನು ನಿವಾರಿಸುವ. 3. ತಾಪವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವ.



ಸಂತಾಪಿತ ಸಂಕಾಪಿತ (ವಿಂ) 1. ದುಃಖವುಂಟಾದವನು. ಸಮ್+ತಪ (ದಾಹೇ)+ಣಿವ್ "ಕ:" (3-2-102)।  
2. ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಕಾಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಬಳಲಿದ, ಆಯಾಸಗೊಂಡ.

ಸಂತಿ ಸಂತಿ (ಸ್ತರಿಂ) 1. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. ಪಣು (ದಾನೇ) "ಕ್ತಿವ್" (3-3-104)। 2. ಅವಸಾನ, ಕೊನೆ.

ಸಂತುಷ್ಟ ಸಂತುಷ್ಟ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಗೊಂಡವನು, ಸಂತೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು. ಸಮ್+ತುಷ (ತುಷ್ಟಿ) "ಕ್ತ:" (3-4-92)। 2. ತೃಪ್ತಿಹೊಂದಿದವನು.

ಸಂತುಷ್ಟಿ ಸಂತುಷ್ಟಿ (ಸ್ತರಿಂ) 1. ಸಂತೋಷ. 2. ತೃಪ್ತಿ.  
ಸಂತುಷ್ಯತ್ ಸಂತುಷ್ಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ತೃಪ್ತಿಹೊಂದುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್+ತುಷ (ತುಷ್ಟಿ) "ಶತ್" (3-2-124)।

ಸಂತೋಷ ಸಂತೋಷ (ಪುಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷಿತ ವಸ್ತುವಿನ ಪ್ರಾಪ್ತಿಯಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಆನಂದ, ಹರ್ಷ. "ಸಂತೋಷ ಏವ ಪುರುಷಸ್ಯ ಪರಂ ನಿವಾಹಮ್"। "ಯೇನ ಕೇನಾಪ್ಯುಪಾಯೇನ ಯಸ್ಯ ಕಸ್ಯಾಪಿ ದೇಹಿನಃ। ಸಂತೋಷಂ ಜನಯೇತ್ ಪ್ರಾಜ್ಞಃ ತದೇವೇಶ್ವರ-ಪೂಜನಮ್"। 2. ತೃಪ್ತಿ, ಸಮಾಧಾನ. ಸಮ್+ತುಷ (ತುಷ್ಟಿ) "ಘ್" (3-3-102)। "ಸಂತೋಷಮೃತತೃಪ್ತಾನಾಂ ಯತ್ ಸುಖಂ ಶಾಂತಚೇತಸಾಮ್। ಕೃತಸ್ತದ್ವನಲುಬ್ಧಾನಾಮಿತಶ್ಚೇತಶ್ಚ ಭಾವತಾಮ್" ಹಿತಂ। 3. ಯೋಗ್ಯವಾದ ಐದು ವಿಧ ನಿಯಮಗಳ ಲ್ಲೊಂದು, ದೊರೆತದಲ್ಲಿ ಸಮಾಧಾನ ಹೊಂದುವಿಕೆ. "ಶಿವಸಂತೋಷತಪಃಸ್ವಾಧ್ಯಾಯೇಶ್ವರಪ್ರಣಿವಾಹಾನಿ ನಿಯಮಾಃ" ಪಾಂ ಯಂ ಸುಂ 2-32। ಸಂತೋಷೋ ಯಥಾಭಿಪ್ರೀತುಷ್ಠಿಃ ಇತಿ ವೃತ್ತಿಃ। ಇದು ಚಿತ್ತನಿರೋಧಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗುವುದು. 4. ಧೃತಿ, ಧೈರ್ಯ. "ಧೃತಿಃ ಸಂತೋಷಃ ಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯಂ ಸ್ಯಾತ್" ಅಭಿಂ ಚಿಂ।

ಸಂತುಷ್ಟ ಸಂತುಷ್ಟ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷವಾಗಿ ತೃಪ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೈಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪರ್ಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್+ತುಜ (ಹಾನಿ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। "ಸಂತುಷ್ಟೋಽಪ್ಯೇಕಪಾಯೇ ರನುಚಿತವರೀತೇಷ್ವಶಾಂತಾಭಿಸಂವಿಃ"। 2. ತೃಪ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಇಲ್ಲದಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಅನುಭವಿಸದಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸಂತುಜತ್ ಸಂತುಜತ್ (ವಿಂ) ಸಂತೋಷವಾಗಿ ತೊರೆದು ಬಿಡುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್+ತುಜ (ಹಾನಿ) "ಶತ್" (3-2-124)।

ಸಂತುಜನ ಸಂತುಜನ (ನಂ) ಸಂತೋಷವಾಗಿ ತೊರೆದುಬಿಡುವುದು. ಸಮ್+ತುಜ (ಹಾನಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಸನ್ತಸ್ತ ಸಂತುಷ್ಟ (ವಿಂ) ಧಯಗೊಂಡ, ಹೆದರಿದ. ಸಮ್+ತಸಿ (ತಡೆಗೆ) "ಕ್ತ:" (3-4-92)। "ಸನ್ತಸ್ತಾಃ ಕರಭಾ ರೇತುಶ್ಚಕ್ರುಃ ಪತ್ತಿಪಡ್ಕಯಃ" ಭಟಿಂ 14-5।

ಸನ್ತಾಸ ಸಂತಾಸ (ಪುಂ) ಧಯ, ಹೆದರಿಕೆ. ಸಮ್+ತಸಿ (ತಡೆಗೆ) "ಘ್" (3-3-102)। "ಪ್ರಾತುಃಪಂತಿ ನ ಸನ್ತಾಸಾ ಯಸ್ಯ ರಕ್ಷಾಃಸಮಾಗಮೇ" ಭಟಿಂ 9-11।

ಸಂದಂಶ ಸಂದಂಶ (ಪುಂ) 1. ಕೆತ್ತರಿ. 2. ಇಕ್ಕಳ. ಸಂದಂಶೇನೇನ—ಸಮ್+ದಂಶ (ದಶನೆ) "ಘ್" (3-3-121)। "ಸಂದಂಶಃ ಸ್ಯಾತ್ ಕಡ್ಡಮುಖಃ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ 3. ಪೈದ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಆರು ವಿಧ ಯಂತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಯಂತ್ರ. ಈ ಯಂತ್ರವು (1) ಸ್ವಸ್ತಿಕಯಂತ್ರ (2) ಸಂದಂಶ-ಯಂತ್ರ (3) ತಾಲಯಂತ್ರ (4) ನಾಡಿಯಂತ್ರ (5) ಶಲಾಕಾ-ಯಂತ್ರ ಮತ್ತು (6) ತುಪಯಂತ್ರ ಎಂದು ಆರು ವಿಧ. ಸ್ವಸ್ತಿಕಯಂತ್ರವು ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ಸಂದಂಶ ಯಂತ್ರವು ಎರಡು ವಿಧ. ತಾಲಯಂತ್ರವು ಎರಡು ವಿಧ. ನಾಡಿಯಂತ್ರವು ಇಪ್ಪತ್ತು ವಿಧ. ಶಲಾಕಾಯಂತ್ರವು ಇಪ್ಪತ್ತೊಂದು ವಿಧ. ತುಪಯಂತ್ರವು ಇಪ್ಪತ್ತೈದು ವಿಧ. ಈ ಯಂತ್ರಗಳೆಲ್ಲವೂ ಮನಸ್ಸಿಗೂ ಶರೀರದೊಳಗೂ ಬಂಧೆಯುಂಟುಮಾಡುವ ಶಲ್ಯಗಳನ್ನು ಹೊರಕ್ಕೆ ತೆಗೆಯಲು ಸಾಧನವಾಗುವುವು. "ತತ್ರ ಮನಃಶರೀರಾಬಾಧಕರಾಣಿ ಶಲ್ಯಾನಿ, ತೇಷಾಮಾಹರಣೋಪಾಯೋ ಯಂತ್ರಾಣಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ 9-4। "ತತ್ರ ಚತುರ್ವಿಂಶತಿಃ ಸ್ವಸ್ತಿಕಯಂತ್ರಾಣಿ, ಛೇ ಸಂದಂಶ-ಯಂತ್ರೇ, ಛೇ ಏವ ತಾಲಯಂತ್ರೇ, ವಿಂಶತಿರ್ನಾಡೀಃ, ಅಷ್ಟಾವಿಂಶತಿಃ ಶಲಾಕಾಃ, ಪಂಚವಿಂಶತಿಃ ತುಪಯಂತ್ರಾಣಿ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ 9-6।

ಸಂದಂಶಿಕಾ ಸಂದಂಶಿಕಾ (ಸ್ತರಿಂ) ಕೆತ್ತರಿ. ಸಂದಂಶಿತಿ—ಸಮ್+ದಂಶ (ದಶನೆ) "ಘ್" (3-3-121)। "ದಾಪ್" (4-1-4)।

ಸಂದಂಶ ಸಂದಂಶ (ಪುಂ) 1. ಗ್ರಂಥ, ಪ್ರಬಂಧ. ಸಮ್+ದಂಶ (ಸಂದಂಶ) "ಘ್" (3-3-102)। "ಸಂದಂಶಸ್ತು ಪ್ರಬಂಧಃ ಸ್ಯಾತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। "ರಸಗಂಧಾಧರನಾಮಾ ಸಂದಂಶೋಽಪಿ ಚಿರಂ ಜಯತು" ರಸಗಂ। 2. ಜೋಡಿಸುವಿಕೆ, ಹೆಣೆಯುವಿಕೆ. 3. ಒಟ್ಟುಗೂಡುವಿಕೆ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವಿಕೆ. "ಅನ್ಯಥಾ ಗ್ರಂಥಃ ಸಂದಂಶೋ ರಚನಾ ನ ನಾ" ವೈಜಂ। "ವಿಸ್ಮಯಾನಂದ-ಸಂದಂಶಜಂಜರಾಃ ಕರಣೋರ್ಮಯಃ" ತಂ ರಾಂ 9-12। 4. ಎಡೆ ಬಿಡುವ ಸಂಬಂಧ, ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ ಮುಂದುವರೆಯುವಿಕೆ.

ಸಂದಂಶನ ಸಂದಂಶನ (ನಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡುವುದು, ವಿಶ್ಲಾಸ ಮತ್ತು ಗೌರವಪೂರ್ವಕ ನೋಡುವುದು. ಸಮ್-ದಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಸಂದಂಶನೀಯ ಸಂದಂಶನೀಯ (ವಿಂ) 1. ನೋಡಲ್ಪಡುವ. 2. ನೋಡಬೇಕಾದ. 3. ನೋಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಸಮ್+ದಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) ಕರ್ಮದೊ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)।



“ಸಂಯ್” (೩-೧-೧೬) । -ಸಂಯಯ್ -ದೃಷ್ಟ್ಯವ್ಯವಸ್ಥಾ.  
+ ಣಿವ್ “ಸಂಯ್” । -ಸಂಯಯಿತವ್ಯಃ -ದರ್ಶಯಿತವ್ಯಃ.  
ಸನ್ದರ್ಶಯತ್ ಸಂದರ್ಶಯತ್ (ವಿಂ) 1. ತೋರಿಸುತ್ತಿರುವ.  
2. ಪ್ರಕಟಿಸುತ್ತಿರುವ.

ಸನ್ದರ್ಶಿತ ಸಂದರ್ಶಿತ (ವಿಂ) 1. ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2.  
ಪ್ರಕಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್+ದರ್ಶಿ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ)+ಣಿವ್ “ಕ್ತಃ”  
(೩-೨-೧೦೨) । “ಸನ್ದರ್ಶಿತಸ್ವಪರನಿವಹಣಾ ಸಹೇತು ಮಂದಸ್ಯ  
ಸಾಹಸಮಿದಂ ತ್ವಯಿ ವಂದಿನೋ ಮೇ” ದಯಾಶಂ ।

ಸನ್ದರ್ಶತ ಸಂದರ್ಶತ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬಿಡುತ್ತಿಲ್ಲ. ಚೆನ್ನಾಗಿ  
ಅದುಮಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್+ದರ್ಶ (ದರ್ಶನೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) ।  
“ಸನ್ದರ್ಶತುಕುಸುಮಶಯನಾನ್ಯಾಶು ಕಲಾಂತಬಿಸಮಜ್ಜಸುರಭಿಣಿ ।  
(ಗಾತ್ರಾಣಿ)” ಶಾಕುಂ ೩-೧೫ । 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿ  
ರುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವ. “ವಲ್ಮೀಕೀಯನಿಮಗ್ನ-  
ಮೃತಿಹರಸಾ ಸನ್ದರ್ಶತಪತ್ವಚಾ” ಶಾಕುಂ ೭-೧೧ । “ಸನ್ದರ್ಶ-  
ವಸ್ತ್ರೇವವಲಾನಿತಮ್ಬೇವಿನ್ದುಪ್ರಕಾಶಾಂತರಿತೋಡುತುಲ್ಯಾಃ” ರಘುಂ  
೧೬-೬೫ । 3. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸನ್ದಾನ ಸಂದಾನ (ಪುಂ) 1. ಅನೆಯ ಮಂಡಿಗಳ ಕೆಳಭಾಗ.  
“ಆರಣ್ಯಃ ಕುಮ್ಮಸಂವಿಃ ಸ್ಯಾತ್ ಸಂದಾನೋಷ್ಠಿವತೋಽಧರಃ”  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 2. ಹಗ್ಗ, ರಜ್ಜು, ಬಂಧನ ಸಾಧನ. ಸಮ್+  
ದಾನ್ (ದಾನೆ) ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭) । 3. ಬಂಧನ.  
ಕಟ್ಟುವುದು. 4. ಕಟ್ಟಿಸುವುದು. 5. ದಾನಮಾಡುವಿಕೆ.  
ಸಮ್ + ದಾ (ಅವಲಂಕರಣೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭) ।  
ಸಮ್ + ದಾನ್ (ದಾನೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭) ।

ಸನ್ದಾನಿಕಾ ಸಂದಾನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಂಧವುಳ್ಳ ಕಗ್ಗಲಿ  
ಮರ.

ಸನ್ದಾನಿತ ಸಂದಾನಿತ (ವಿಂ) ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. ಸನ್ದಾನಂ  
ಸಂಜಾತಮಸ್ಯ “ಇತಚ್” (೪-೨-೩೬) । ಸನ್ದಾನಯತೇ ಸಮ್—  
ಸಮ್+ದಾನ (ಲಂಕನೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) ವಾ । “ವಡೆ  
ಸನ್ದಾನಿತಂ ಮೂತಮ್” ಅಮಂ । “ಇರಾವತೀ ರಶನಾಸನ್ದಾನಿತ-  
ಚರಣಾ ವ್ರಜತಿ” ಮಾಲಂ ೩ ।

ಸನ್ದಾನಿನಿ ಸಂದಾನಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋಶಾಲೆ, ಗೋವು  
ಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಕೊಟ್ಟಿಗೆ. ಸನ್ದಾನಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿಃ”  
(೪-೨-೧೧೭) ।

ಸನ್ದಾ(ದ್ರಾ)ವ ಸಂದಾ(ದ್ರಾ)ವ (ಪುಂ) ಪದಾಯನ, ಓಡಿ  
ಹೋಗುವುದು. ಸಮ್+ದ್ರಾ (ಗತೀ) “ವತ್” (೩-೩-೨೩೩) ।

ಸನ್ದಾಹ ಸಂದಾಹ (ಪುಂ) ಬೆಂಟೆಯಲ್ಲಿ ತಲೆ ಮುಖ ತುಟಿ  
ಇವುಗಳನ್ನು ಕಾಯಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ದಹ (ಭಸ್ಮೀಕರಣೆ)  
“ವತ್” (೩-೩-೧೮) ।

ಸನ್ದಿಗ್ಧ ಸಂದಿಗ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಸಂದೇಹದಿಂದ ಕೂಡಿದ.  
ಸಮ್ + ದಿಹ (ಅಪವೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೬) ।  
“ಪಾಂತು ತ್ವಾಮಕಠೋರಕೇತಕಶಿಖಾಸನ್ದಿಗ್ಧಮುಖೇಂದವಃ” (ಜಟಾಃ)  
ಮಾಲತೀಂ ೧-೧ । 2. ಲೇಖಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ.  
(ನಂ) 3. ಸಂದೇಹ, ಸಂಶಯ, ನಿಶ್ಚಯವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

ಸನ್ದಿತ ಸಂದಿತ (ವಿಂ) 1. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ದಾ  
(ಅವಲಂಕರಣೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಕಟ್ಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸನ್ದಿಷ್ಟ ಸಂದಿಷ್ಟ (ವಿಂ) 1. ಅಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ +  
ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । “ತದಿನ್ದ್ರ-  
ಸನ್ದಿಷ್ಟಮುಪೇಂದ್ರ ಯದ್ವಚಃ ಕ್ಷಣಂ ಮಥಾ ವಿಶ್ವಜನೀನಮುಚ್ಯತೇ”  
ಮಾಘಂ ೧೭ । 2. ಹೇಳಿಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಸನ್ದಿಷ್ಟಂ ಚ  
ತಸ್ಯ ಶಕ್ತುರಪುರಸಮ್ಬಂಧಿ ಕುಸುಮೋದಾನಂ ಗತ್ವಾ ಕುಂಜನಿಕುಂಜ-  
ಪರ್ಯಂತರಕ್ಷಾಶೋಕಗಹನೇ ತಿಷ್ಠಂತಿ” ಮಾಲತೀಂ ೩ । (ನಂ) 3.  
ವಾರ್ತೆ, ಬಾಯಿಮಾತು, ಹೇಳಿಕಳುಹಿಸಿದ ಮಾತು.

ಸನ್ದಿಹಾನ ಸಂದಿಹಾನ (ವಿಂ) ಸಂದೇಹಪಡುತ್ತಿರುವ,  
ಸಂಶಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಸಮ್+ದಿಹ (ಅಪವೇ) “ಶಾನ್”  
(೩-೨-೧೨೪) । “ಸನ್ದಿಹಾನಮನಸೇವ ತತ್ಕ್ಷಣಂ ಮಧ್ಯಸೀಮಿನಿ  
ವಿಜಯಪ್ರಿಯಾ ಸ್ಥಿತಮ್” ಯಾದಂ ೧೭-೭೬ । “ಶತು”  
(೩-೨-೧೨೪) । -ವಿಹತ್ -ದಿಶತ್.

ಸನ್ದೀ ಸಂದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾಚೆ. “ನಿವಧಾ ಖಡ್ಗಿಕಾ  
ಸನ್ದೀ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಸನ್ದೇಶ ಸಂದೇಶ (ಪುಂ) 1. ಬಾಯಿಮಾತಿನಲ್ಲಿ ಹೇಳಿಕಳುಹಿಸಿ  
ಸುವ ಸಮಾಚಾರ. ಸಮ್+ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) “ವತ್”  
(೩-೩-೧೮) । “ಲಂಕಾಶ್ವಾಸಃ ಕಥಮಪಿ ತದಾ ಲಕ್ಷ್ಮಣಸ್ಯಾ-  
ಪ್ರಜನ್ಮಾ ಸನ್ದೇಶೇನ ಪ್ರಣಯಮಹತಾ ಮೇಥಿಲೀ ಜೀವಯಿಷ್ಯನ್”  
ಹಂಸಂ ೧-೪ । 2. ಒಂದು ನಿರ್ದಿಷ್ಟವಾದ ಕಾರ್ಯ ನಡೆ  
ಸಲು ನಿಯೋಗ, -ಅಜ್ಞೆ. “ಅನುಷ್ಠಿತೋ ಗುರೋಃ ಸನ್ದೇಶಃ”  
ಶಾಕುಂ ೫ ।

ಸನ್ದೇಶವಾಕ್ ಸಂದೇಶವಾಕ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೇಳಿಕಳುಹಿಸುವ  
ಮಾತು. ಸನ್ದೇಶಸ್ಯ ವಾಕ್ । “ಸನ್ದೇಶವಾಕ್ ವಾಚಿಕಂ ಸ್ಯಾತ್”  
ಅಮಂ ।

ಸನ್ದೇಶಹರ ಸಂದೇಶಹರ (ಪುಂ) ಸಂದೇಶವನ್ನು ಒಯ್ಯುವ  
ದೊಡ್ಡ. ಸನ್ದೇಶಸ್ಯ ಹರಃ । “ತವೈವ ಸನ್ದೇಶಹರಾದ್ವಿಶಾಂಪತಿಃ  
ಸೃಣೋತಿ ಲೋಕೇಶ ತಥಾ ವಿವಿಧತಾಮ್” ರಘುಂ ೩-೬೬ । ಹಮ್  
(ಹರಣೆ) “ಫಲ್” (೩-೧-೧೩೩) । -ಹಾರಕಃ -ಹಾರಕಃ.

ಸನ್ದೇಹ ಸಂದೇಹ (ಪುಂ) 1. ಸಂಶಯ, ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ  
ಅದು ಅಹುದೋ ಅಲ್ಲವೋ ಎಂಬ ಜ್ಞಾನ, ನಿಶ್ಚಯವಿಲ್ಲದ  
ಜ್ಞಾನ. ಸಮ್ + ದಿಹ (ಅಪವೇ) “ವತ್” (೩-೩-೧೮) ।



एकस्मिन् धर्मिणि विरुद्धानाकोटिशानम् । “एता-  
दृशीमथ विलोक्य सरस्वती तां सन्देहचित्रमपचित्रित-  
चित्तवृत्तिम्” नैष० १३-१५। 2. ಅರ್ಥಲಂಕಾರದ  
ಒಂದು ಭೇದ.

सन्दीह संदीह (पुं०) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು, ರಾಶಿ.  
सम् + दृह (प्रपूरणे) कर्म० “घञ्” (३-३-१९) ।  
“दरदलितकुन्दमाकन्दमधुविन्दुसन्दोहवाहिना” मालती०  
३। 2. ಚಿತ್ತದ ಗಾಲು ಕರೆಯುವುದು. भावे “घञ्”  
(३-३-१८) । 3. ಕ್ಷೇರ, ಹಾಲು. कर्म० “घञ्”  
(३-३-१९) ।

सन्नाय संद्रुव (पुं०) ಪದಾಯನ, ಒಡಹೋಗುವುದು.  
सम् + द्रु (गती) “घञ्” (३-३-२३) ।

सन्धा संधा (स्त्री०) 1. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ. सम् + डु धाञ्  
(धारणपोषणयोः) “अङ्” (३-३-१०६) । 2. ಸ್ಥಿತಿ.  
“सन्धा स्थितिप्रतिज्ञयोः” मेदि०। “गङ्गां निषादा-  
हृतनीविशेषः तस्तार संधामिव सत्यसन्धः” रघु०  
१४-५२।

सन्धान संधान (न०) 1. ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸುವುದು, ಒಟ್ಟಿಗೆ  
ಸೇರಿಸುವುದು. सम् + डु धाञ् (धारणपोषणयोः) “ल्युट्”  
(३-३-११३) । “तुषारवृष्टिक्षतपद्मसम्पदां सरोज-  
सन्धानमिवाकरोदपाम्” कुमा० ५-२७। 2. ವಿಶ್ರಾಂತಿ  
ಮಾಡುವುದು, ಬೆರಸುವುದು, ಮದ್ಯದ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು  
ಜೊತೆಗೂಡಿಸಿ ಮದ್ಯ ತಯಾರಿಸುವುದು. 3. ಧನುಸ್ಸು  
ನಲ್ಲಿ ಬಾಣವನ್ನು ಏರಿಸುವುದು. “का कथा बाणसन्धाने  
ज्याशब्देनैव दूरतः। हुङ्कारेणैव धनुषः स हि विघ्ना-  
नपोहति” शाकु० ३-१। 4. ಸಂಧಿ, ಶಾಂತಿಯ ಕಾಲ, ಶಾಂತಿಯ ಒಪ್ಪಂದ. “एवं कृते तु सन्धाने वृत्रः  
प्रमुदितोभवत्” भा०। 5. ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಅಂಗಗಳ ಕೀಲು  
ಗಳು. 6. ಗಂಜಿ, ಅಂಬಲಿ. 7. ಮದ್ಯ, ಮದಿರೆ.  
8. ಉಪ್ಪಿನಕಾಯಿ ತಯಾರಿಸುವುದು, ಊರುಗಾಯಿ  
ತಯಾರಿಸುವುದು. 9. ಕಂಚು. “सन्धानं स्यादभिषवे  
तथा सङ्घटनेऽपि च” मेदि०।

सन्धानित संधानित (वि०) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಿರುವ.  
सन्धान “इतच्” (५-२-३६) । 2. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ.

सन्धानिन् संधानिन् (वि०) ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ  
ಮದ್ಯ ತಯಾರಿಸುವವನು.

सन्धानिनी संधानिनी (स्त्री०) ಗೋಶಾಲೆ, ಹಸುಗಳ  
ಕೊಟ್ಟಿಗೆ.

सन्धि संधि (पुं०) 1. ಸ್ನೇಹ ಬೆಳೆಸುವುದು, ಮೈತ್ರಿಯನ್ನು  
ಸಂಪಾದಿಸುವುದು. सम् + डु धाञ् (धारणपोषणयोः)  
“किः” (३-३-९२) । ಇದು ರಾಜನ ಅರು ಗುಣಗಳ  
ಫಲವು. “सन्धिर्ना विग्रहो यानमासनं वृधमाश्रयः ।  
बद् गुणः” अम०। ರಾಷ್ಟ್ರಕ್ಕೆ ದೈವಿಕವಾದ ತೊಂದರೆ  
ಗಳು ಒದಗಿದಾಗ ಮತ್ತು ಶತ್ರುಗಳು ತನಗಿಂತಲೂ  
ಉಚ್ಚಾಯ ಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರುವಾಗ ಅಶಕ್ತನಾದ ರಾಜನು  
ಅವರೊಡನೆ ಸಂಧಿಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು. “ये च दैवेनोप-  
हताः राष्ट्रं येषां च दुर्गतम्। बहवो रिपवो येषां  
तेषां सन्धिविधीयते” ॥ “बलीयसाभियुक्तस्तु नृपो  
नान्यप्रतिक्रियः। आपन्नः सन्धिमन्विच्छेत् कुर्वाणः  
कालयापनम्” ॥ “परस्मात् हीयमानः सन्दधीत”  
अर्थशा०। “ज्यायांश्चेन्न सन्धिमिच्छेत्” । “समश्चेन्न  
सन्धिमिच्छेत्” । “हीनश्चेत् संत्रातुप्रणतस्तिष्ठेत्”  
“— सन्धिमुपेयात्” अर्थशा०। 2. (ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರ  
ದಲ್ಲಿ) ವರ್ಣಗಳಿಗೆ ಲೋಪ ಆಗಮ ಆದೇಶಗಳಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ (ವರ್ಣ) ವಿಕಾರ. (1) ಪೂರ್ವಪವಾಂತ್ಯ  
ವರ್ಣ ಉತ್ತರಪದಾದಿವರ್ಣ ಇವುಗಳ ಮೇಳನದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ವರ್ಣವಿಕಾರವು ಸಂಧಿ. (2) ಅರ್ಧಮಾತ್ರೋ  
ಚ್ಚಾರಣಕಾಲದ ಎರಡು ವರ್ಣಗಳ ವ್ಯವಧಾನರಹಿತವಾದ  
ಉಚ್ಚಾರಣೆಯು ಸಂಧಿ. रमा + ईशः = रमेशः ಇಲ್ಲಿ  
ಗಂಜಿಸಂಧಿ. धातु + अंशः = धातुशः, सुधी + उपास्यः =  
सुधुपास्यः, गङ्गाधः (गङ्गा + अधः), देव + ऐश्वर्यम् =  
देवेश्वर्यम् ಇತ್ಯಾದಿ. वाक् + ईशः = वागीशः, सुगणीशः  
सन्नच्युतः ಇತ್ಯಾದಿ. 3. ದೇಹದ ಕೈ ಕಾಲು ಮೊದಲಾದ  
ಅಂಗಗಳ ಕೀಲು. “प्रत्यहं श्वापदसमुत्सारणैः संक्षोभित  
सन्धिबन्धानां मम गात्राणामनीशोऽस्मि संवृत्तः”  
शाकु० २। “सन्धीच्छरीरे सर्वास्तु चजानप्यचला-  
नपि। एतस्तु स्थापनोपायैः स्थापयेन्मतिमान् भिषक्”  
सुश्रुत० चिकित्सा० ३-१९। 4. ಒಕ್ಕೂಟದ  
ಸಂಯೋಗ, -ಸಂಬಂಧ. “गत्वा चोर्व्वं दशमुखभुजो-  
च्छासितप्रस्थसन्धेः” मेघ० १-५८। 5. ಜೋರರು  
ಕದಿಯಲು ಗೋಡೆಯಲ್ಲಿ ಕೊರೆಯುವ ಕನ್ನ. “कर्मगृहीते-  
नापि कुम्भीलकेन सन्धिच्छेदे शिक्षितोऽस्मीति वक्तव्यं  
भवति” माल० ३। 6. ನೆಲದಲ್ಲಿ ತೋಡುವ ಸುರಂಗ.  
7. ಸಂಘಟನೆ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕೂಡಿಸುವುದು. 8. ಭಗ, ಉಪಗ್ರಹ,  
ಯೋನಿ. 9. ಸಾವಕಾಶ, ವಿರಾಮ, ನಿಲುಗಡೆ, ಕಾರ್ಯ  
ಮೊಡದೆ ಸುಮ್ಮನಿರುವ ಕಾಲದ ಅಂತರ. 10. ನಾಟಕ  
ಮೊದಲಾದ ರೂಪಕಗಳಲ್ಲಿ ಬರುವ ಮುಖ ಮೊದಲಾದ



ಐದು ಸಂಧಿ (ಅಂಗ) ಗಳು. "ಸಂಧಿ: ಕುಮಾನ್ ಸುರಜ್ಞಾಃ  
ಭಗೇ ಸಂಧಿಃ ಸಂಧಿಃ ಚ | ರೂಪಕಾಣಾಂ ಮುಖಾಂತರೇ ಸಾವಕಾಶೇಷಿ  
ಕೀರ್ತಿತಃ" ಮೇದಿಂ | 11. ಕೃತ ವೇದಲಾದ ನಾಲ್ಕು  
ಯುಗಗಳಲ್ಲಿ ಕಳೆಯಬಹುದಾದ ಕಾಲ. ಪ್ರತಿಯೊಂದು  
ಯುಗದ ಅರನೇ ಒಂದು ಭಾಗ ಸಂಧಿ ಸಂಧ್ಯಂತಗಳು.  
12. ಬಟ್ಟಿಯಿಳಿಸುವುದು. 13. ಸೇರಿಸುವುದು. "ಸಂಧಿ:  
ಶ್ಲೇಷ" ಅಮಂ |

**ಸಂಧಿಕಾ ಸಂಧಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಮದ್ಯದ ಬಟ್ಟಿಯಿಳಿಸುವುದು.  
**ಸಂಧಿಚೀರ ಸಂಧಿಚೀರ (ಪುಂ)** ಸ್ನೇಹ, ಕಳೆ, ಕನ್ನ ಕೊರೆದು  
ಕಡಿಯುವವನು.

**ಸಂಧಿಚ್ಛೇದ ಸಂಧಿಚ್ಛೇದ (ಪುಂ)** 1. ಕನ್ನ ಕೊರೆಯುವುದು.  
2. ಸುರಂಗ ತೋಡುವುದು.

**ಸಂಧಿಜ ಸಂಧಿಜ (ನಂ)** (ಅನೇಕ ವಸ್ತುಗಳ) ಸಂಬಂಧ  
ದಿಂದ ಉಂಟಾದ ಮದ್ಯ. ಸಂಧಿಜಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಮವಿ)  
"ಕ:" (3-2-94) |

**ಸಂಧಿಜೀವಕ ಸಂಧಿಜೀವಕ (ವಿಂ)** ಕಪಟದಿಂದ ಜೀವಿಸು  
ವವನು, ಅಪ್ರಾಮಾಣಿಕ ಮಾರ್ಗದಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು.  
ಮೋಸದ ಸಂಪಾದನೆಯಿಂದ ಜೀವನ ನಡೆಸುವವನು.  
ಸಂಧಿನಾ ವೃತ್ತನಾಭಿಸಂಧಿನಾ ಜೀವತಿ—ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣೆ)  
"ಫುಲ್" (3-1-133) |

**ಸಂಧಿತ ಸಂಧಿತ (ವಿಂ)** 1. ಬೆರೆತಿರುವ, ಮಿಶ್ರವಾಗಿರುವ.  
ಸಂಧಾಸ್ಯ ಸಂಜಾತಾ "ಇತತ್" (4-2-36) | 2. ಕಟ್ಟಿ  
ಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಬಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಕಲಿಸಿ ಬಟ್ಟಿಯಿಳಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ಸಂಧಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವ, ಸ್ನೇಹ ಬೆಳೆಸಿ  
ಕೊಂಡಿರುವ. "ಶಪಥಃ ಸಂಧಿತಸ್ಯಾಪಿ ನ ವಿಶ್ವಾಸಂ  
ವ್ರಜೇದ್ರಿಪಿಃ" ಪಂಚತಂ 2-41 | (ನಂ) 5. ಉರುಗಾಯಿ,  
ಉಪ್ಪಿನಕಾಯಿ. 6. ಮದ್ಯ, ಸಾರಾಯಿ.

**ಸಂಧಿತ್ಸತ್ ಸಂಧಿತ್ಸತ್ (ವಿಂ)** ಸಂಧಿಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲು  
ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಸ್ನೇಹ (ಮೈತ್ರಿ) ಬೆಳೆಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ.  
ಸಮ್ + ಡುಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) + ಸನ್ "ಶತ್"  
(3-2-124) | "ಸ್ವವೇದಿತಂ ಸಂಸದಿ ಧಾರ್ತರಾಷ್ಟ್ರೇ ಸಂಧಿತ್ಸತೋ  
ವರ್ಮಸುತಸ್ಯ ವಾಕ್ಯಮ್" ಯಾದಂ 23-20 |

**ಸಂಧಿತ್ಸಾ ಸಂಧಿತ್ಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸಂಧಿಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ  
ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಸ್ನೇಹವನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಸಂಧಾತು-  
ಮಿಚ್ಛಾ—ಸಮ್ + ಡುಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) + ಸನ್ "ಅ:"  
(3-3-102) |

**ಸಂಧಿತ್ಸು ಸಂಧಿತ್ಸು (ವಿಂ)** ಸಂಧಿಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲು ಅಪೇಕ್ಷಿ  
ಸುವ. ಸಂಧಾತುಮಿಚ್ಛು:—ಸಮ್ + ಡುಧಾನ್ + ಸನ್ "ಃ:"  
(3-2-164) |

**ಸಂಧಿನಿ ಸಂಧಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಗರ್ಭಧಾರಣೆಗಾಗಿ ಗೋ  
ಮದ ಹಸು. ಸಂಧಾಸ್ಯಸ್ಯಾ: "ಇನಿ:" (4-2-116) |  
2. ಅಕಾಲದಲ್ಲಿ ಹಾಲು ಕರೆದ ಹಸು. 3. ಬೇರೆ ಕರುವನ್ನು  
ಉಣ್ಣಿಸಿ ಹಾಲು ಕರೆದ ಹಸು. "ಸಂಧಿನ್ಯನಿರ್ದೇಶಾವರಸಾ-  
ಗೋಪಯ: ಪರಿವರ್ಜಯೇತ್" ಯಾಜ್ಞಂ 1-190 | ಗೋಳಿ ಹಾರಿದ  
ಹಸುವಿನ ಹಾಲು ಕರು ಹಾಕಿದ ಹತ್ತು ದಿನಗಳೊಳಗೆ  
ಕರೆದ ಹಾಲು ಕರುವಿಲ್ಲದ ಹಸುವಿನ ಹಾಲು ಇವುಗಳನ್ನು  
ಉಪಯೋಗಿಸಿಕೊಡದು. "ಸಂಧಿನಿ ವೃಷಭಾಕ್ರಾಂತಾಕಾಲ-  
ದ್ವಿಗೋತ್ರಯೋಃ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ |

**ಸಂಧಿಬಂಧ ಸಂಧಿಬಂಧ (ಪುಂ)** ಕೀಲುಗಳ ಸತ್ತ್ವ, ನರ, ಸಿರೆ.  
"ಯತ್ಸತ್ಯಂ ಪ್ರತ್ಯಹಂ ಶ್ವಾಪದಸಮುತ್ಸಾರಣಿ: ಸಂಕೋಭಿತಸಂಧಿಬಂಧಾನಾಂ  
ಮಮ ಗಾತ್ರಾಣಾಮನೋಶೋಷಿಸ್ಮಿ ಸಂವೃತಃ" ಶಾಕುಂ 2 |

**ಸಂಧಿಭಜ್ಞ ಸಂಧಿಭಂಜ (ಪುಂ)** ಕೀಲುಗಳ ಮುರಿತ, ದೇಹದ  
ಕೀಲುಗಳ ಸ್ಥಾನವಲ್ಲ. ಸಂಧಿನಾಂ ಭಜ್ಞಃ |

**ಸಂಧಿರಂಧ್ರಕಾ ಸಂಧಿರಂಧ್ರಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಗೋಡೆಯಲ್ಲಿ  
ಕನ್ನ ಕೊರೆದ ತೂತು, —ವಿವರ. 2. ಸುರಂಗ.

**ಸಂಧಿಲಾ ಸಂಧಿಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮದಿರೆ, ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ.  
ಸಂಧಿ ಲಾತಿ—ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕ:" (3-2-3) |  
2. ಸುರಂಗ. 3. ನದಿ, ಹೊಳೆ. "ಸಂಧಿಲಾ ತು ಸುರಜ್ಞಾಃ  
ನದೀಮದಿರಯೋಃ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ | 4. ಕನ್ನ, ಮನೆ  
ಯೊಳಗೆ ನುಗ್ಗಲು ಗೋಡೆಯಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ವಿವರ  
(ರಂಧ್ರ).

**ಸಂಧಿವಾತ ಸಂಧಿವಾತ (ಪುಂ)** ದೇಹದ ಕೀಲುಗಳ ವಾಯು,  
ಕೀಲುಗಳಲ್ಲಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ ವಾಯು.

**ಸಂಧಿವೇಲಾ ಸಂಧಿವೇಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹಗಲು ಮತ್ತು ರಾತ್ರಿ  
ಗಳ ಸಂಧಿಕಾಲ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಮತ್ತು ಸಾಯಂಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ  
ಸೂರ್ಯನು ಕ್ಷಿತಿಜವ ಕೆಳಗಿರುವ ಕಾಲ. (ಭೂಮಿಯೂ  
ಅಕಾಶವೂ ಸೇರುವಂತಿರುವ ರೇಖೆಯು ಕ್ಷಿತಿಜ.) "ಉಪಾಸ್ತೇ  
ಸಂಧಿವೇಲಾಃ ನಿಶಾಃ ದಿವಸಸ್ಯ ಚ | ತಾಮೇವ ಸಂಧ್ಯಾಂ  
ತಸ್ಮಾತ್ ಪ್ರವದಂತಿ ಮನೀಷಿಣಃ" |

**ಸಂಧುಕ್ಷಣ ಸಂಧುಕ್ಷಣ (ನಂ)** 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುವುದು,  
ಹೆಚ್ಚುವುದು. ಸಮ್ + ಧುಕ್ (ಸಂದೀಪನಕಲೇಶನಜೀವನೇಶು)  
"ಽಯುಕ್" (3-3-114) | 2. ಪ್ರಜ್ವಲಿಸುವುದು, ಉರಿಯು  
ವುದು, ಉದ್ರೇಕಗೊಳ್ಳುವುದು. 3. ಕ್ಲೇಶಪಡುವುದು,  
ಕಷ್ಟಪಡುವುದು. 4. ಬದುಕುವುದು, ಚೈತನ್ಯ ಪಡೆಯು  
ವುದು.

**ಸಂಧುಕ್ಷಮಾಣ ಸಂಧುಕ್ಷಮಾಣ (ವಿಂ)** 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ  
ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ, ಹೆಚ್ಚುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಧುಕ್ (ಸಂದೀಪನ-



ಕಲೇಶನಜೀವನೇ) "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) 2. ಉದ್ರೇಕಗೊಳುತ್ತಿರುವ. 3. ಕ್ಲೇಶಪಡುತ್ತಿರುವ, ಕಷ್ಟ ಪಡುತ್ತಿರು. 4. ಚೈತನ್ಯ ಪಡೆಯುತ್ತಿರುವ.

ಸಂಖ್ಯಾಯತ್ ಸಂಧ್ಯಾಂಶ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಜ್ಞಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಧುಕ್ (ಸಂದೀಪನೆ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) 1. "ಸಂಖ್ಯಂತಯಾಮಿ ಪ್ರತಿಭಾದಶಾಸ್ತ್ರಾನ್ ಸಂಖ್ಯಯಂತಿ ಸಮಯಪ್ರದೀಪಾನ್" ಹೃಯಿಂ 1. 2. ಚೈತನ್ಯ ವೃಂಟುಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಮತ್ತೆ ಉಜ್ಜೀವನಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಕ್ಲೇಶಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಉದ್ರೇಕ ಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಧುಕ್ (ಕಲೇಶನಜೀವನಯೋ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೬) 1. -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ. "ನಿರ್ವಾಣಭೂಮಿಯಾಸ್ಯ ವೀಯ ಸಂಖ್ಯಯಂತಿ ವಪುರ್ಗುಣೇ" ಕುಮಾಂ ೩-೫೨.

ಸಂಖ್ಯುಕ್ತ ಸಂಧ್ಯಾಂಶ (ವಿಂ) 1. ಉದ್ರೇಕಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಪ್ರಜ್ಞಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಉರಿಯುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಧುಕ್ (ಸಂದೀಪನೆ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) 1. "ಸಂಖ್ಯುಕ್ತ ಮಂಡಲವಾತೇರಮವಂತೀಕ್ಷಾ ಕ್ಷಿತಿಪಾಲತೇಜ:" ಭೃಂ ೧೨-೪೧. 3. ಪುನರುಜ್ಜೀವಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಚೈತನ್ಯವೃಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಕ್ಲೇಶ ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ತೊಂದರೆಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಧುಕ್ (ಕಲೇಶನ-ಜೀವನಯೋ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) 1.

ಸಂಖ್ಯಾ ಸಂಧ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲ, ಸೂರ್ಯನ ಉದಯ ಮತ್ತು ಅಸ್ತಮನ ಕಾಲ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಮತ್ತು ಸಾಯಂಕಾಲ. ಸಮ್ ಸಮ್ಯಕ್ ಧ್ಯಾಯಂತ್ಯಸ್ಯಾಮ್—ಸಮ್ + ಧ್ಯ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ಅಙ್" (೩-೩-೧೦೬) 1. "ಪೂರ್ವ ಸಂಖ್ಯಾಂ ಜಪಸ್ತಿಷ್ಠೇತ್ ಸಾವಿತ್ರಿಮಾರ್ಕದರ್ಶನಮ್ | ಪಶ್ಚಿಮಾಂ ತು ಸಮಾಸೀನಃ ಸಮ್ಯಗ್ಭಾವಿಭಾವನಾತ್ || ಪೂರ್ವ ಸಂಖ್ಯಾಂ ಜಪಸ್ತಿಷ್ಠೇತ್ ನೈಶಮೇನೋ ಕ್ಯಪೋಹತಿ | ಪಶ್ಚಿಮಾಂ ತು ಸಮಾಸೀನೋ ಮಲಂ ಹಂತಿ ದಿವಾಕೃತಮ್" ಮನುಂ ೨-೧೦೧, ೧೦೨. ಸಂಧ್ಯೆಯು ಕಾಲದ ಪತ್ನಿ. "ಕಾಲಸ್ಯ ತಿಸ್ರೋ ಭಾರ್ಯಾಃ ಸಂಖ್ಯಾರಾತ್ರಿದಿನಾನಿ ಚ | ಯಾಮಿವಿನಾ ವಿಧಾತ್ರಾ ಚ ಸಂಖ್ಯಾಂ ಕರ್ತುಂ ನ ಶಕ್ಯತೇ" ಬ್ರಹ್ಮವೆಂ 1. 2. ಕೃತಮೋದಲಾದ ಯುಗಗಳ ಅಂತ್ಯ ಮತ್ತು ಪ್ರಾರಂಭ ಕಾಲ. ಕೃತಯುಗದ ಅಂತ್ಯ ಮತ್ತು ತ್ರೇತಾಯುಗದ ಅಧಿಭಾಗಗಳು ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲಗಳು. ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಯುಗದ ಅಂತ್ಯದ ಒಂದು ಭಾಗ ಸಂಧ್ಯಾ ಮತ್ತು ಸಂಧ್ಯಾಂಶ ಗಳು. "ಕೃತಾತ್ ಕೃತಯುಗಾದಿನಾಂ ಷಷ್ಠಾಂಶಃ ಸಂಖ್ಯಯೋಃ ಸ್ವಕಃ" ಸುಂ ಸಿಂ ೧-೧೭. ಸಂಧ್ಯಾಂಶ ಕಾಲಗಳಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ

ಮನುವಿನ ಕಾಲದ ನಂತರ ಇನ್ನೊಬ್ಬ ಮನುವು ಬರುವ ವರೆಗೂ ಸಕಲಭೂಮಂಡಲವೂ ಜಲಮಯವಾಗಿರುವುದು. "ಕೃತಾಂದಸಂಖ್ಯಾ ತಸ್ಯಾಂತೇ ಸಂಖಿಃ ಪ್ರೋಕ್ತೋ ಜಲಪ್ಲವಃ" ಸುಂ ಸಿಂ ೧-೧೮. ಇದೇ ಲೋಕಸಂಹಾರ (ಪ್ರಳಯ) ಕಾಲ. 3. ತ್ರಿಕಾಲ (ಪ್ರಾತಃ ಮಧ್ಯಾಹ್ನ ಮತ್ತು ಸಾಯಂಕಾಲ)ದಲ್ಲಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನು ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ ಕಾರ್ಯ. "ಉತ್ಥಾಪಾಯವ್ಯಕ್ತಂ ಕೃತ್ವಾ ಕೃತಶೌಚಃ ಸಮಾಹಿತಃ | ಪೂರ್ವ ಸಂಖ್ಯಾಂ ಜಪಸ್ತಿಷ್ಠೇತ್ ಸ್ವಕಾಲೇ ಚಾಪರಾಂ ಚಿರಮ್" ಮನುಂ ೪-೯೩. 4. ಒಂದು ನದಿ. 5. ಚಿಂತೆ. 6. ಸೀಮೆ, ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ. 7. ಸಂಧಾನ. 8. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಪುಷ್ಪ. 9. ಅಂಗೀಕಾರ, ಸಮ್ಮತಿ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. "ಸಂಖ್ಯಾ ಕಾಲ-ನದಿಭಿದೋಃ | ಚಿಂತಾಂ ಸಂಖ್ಯಾಂ ಸೋಮಿ ಸಂಖ್ಯಾಂ ಕುಸುಮಾಂತರೇ" ಹೇಮಂ 1. 10. ಯುಗಗಳ ಸಂಧಿಕಾಲ.

ಸಂಖ್ಯಾಂಶ ಸಂಧ್ಯಾಂಶ (ಪುಂ) ಯುಗಗಳ ಸಂಧಿಕಾಲ, ಒಂದು ಯುಗದ ಕೊನೆ, ಮುಂದಿನ ಯುಗದ ಪ್ರಾರಂಭಕಾಲ. ["ಅಙ್" ಮತ್ತು "ಸಂಖ್ಯಾ" ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಸಂಖ್ಯಾನಾಡಿನ್ ಸಂಧ್ಯಾನ್ಯಾಟಿನ್ (ಪುಂ) ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಸಂಖ್ಯಾಂ ನಡತಿ—ನಡ (ನೃತ್ಯ) "ಣಿಃ" (೩-೨-೭೮) 1. "ವಿರೂಪವಿಷಮತ್ಯಕ್ಷಃ ಸಂಖ್ಯಾನಾಡೀ ವೃಷಾಂಶನಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1.

ಸಂಖ್ಯಾಬಲ ಸಂಧ್ಯಾಬಲ (ಪುಂ) ರಾಕ್ಷಸ. ಸಂಖ್ಯಾಂ ಬಲ ಯಸ್ಯ 1.

ಸಂಖ್ಯಾವಂದನ ಸಂಧ್ಯಾವಂದನ (ನಂ) ತ್ರಿಕಾಲಗಳಲ್ಲೂ ಮಾಡಬೇಕಾದ ದೇವತೆಗಳ ಮಂದನ, ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲದಲ್ಲಿ ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ ದೇವತೆಗಳ ಉಪಾಸನೆ, ಧ್ಯಾನ.

ಸನ್ನ ಸನ್ನ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಿಯಾಲವೃಕ್ಷ, ಮೊರಟೆ ಮರ. ಪದ್ (ವಿಶರಣಗತ್ಯವಸಾದನೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) 1. (ವಿಂ) 2. ಕುಗ್ಗಿದ, ಕುಸಿದ, ಜೋಲುಬಿದ್ದ. "ನಾಲಕಯತ್ ಸಾವ್ಯಸಸನ್ನಹಸ್ತಃ ಸಸ್ತಂ ಶರಂ ಚಾಪಮಪಿ ಸ್ವಹಸ್ತಾತ್" ಕುಮಾಂ ೩-೫೧. 3. ಶಕ್ತಿ, ಕುಂದಿದವನು, ಸತ್ತ್ವಹೀನ ನಾದವನು, ಬಲಹೀನನಾದವನು. 4. ನಾಶಹೊಂದಿದ, ಅಳಿದುಹೋದ. 5. ಹೊರಟುಹೋದವನು. 6. ತಗ್ಗಿದ ಕಂಠವುಳ್ಳವನು.

ಸನ್ನಕ ಸನ್ನಕ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಿಯಾಲವೃಕ್ಷ, ಮೊರಟೆ ಮರ. 2. ವಾಮನ, ಕುಳ್ಳ. ಸಿದತಿ — ಪದ್ (ವಿಶರಣಾದಿ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) 1. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" 1.

ಸನ್ನಕದ್ವ ಸನ್ನಕದ್ವ (ಪುಂ) ಪ್ರಿಯಾಲವೃಕ್ಷ, ಮೊರಟೆ ಮರ. ಸನ್ನೋ ಲೀನಃ ಕದ್ವಗ್ನೋಽಸ್ಯ 1. "ರಾಜಾದನಂ ಪ್ರಿಯಾಲಃ ಸ್ಯಾತ್ಸನ್ನಕದ್ವಗ್ನುಷ್ಠಃ" ಅಮಂ 1.



ಸನ್ನತ ಸನ್ನತ (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬಗ್ಗಿರುವ. 2. ಬಗ್ಗಿ ನಮಿಸ್ಕರಿಸಿದ. ಸಮ್ + ಣಮ್ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಕ್ತಃ" (3-4-92) । 3. ಬಗ್ಗಿದ ತೆರೆಯುಳ್ಳವನು. "ಸನ್ನತಃ ಕ್ಷಣಮವೇಕ್ಷಿ ವಾಸವಃ ಸಾಪಹಾಸಮಿವ ಸತ್ಯಭಾಮಯಾ" ಯಾದಂ 19-60 । 4. ಕೆಳಮುಖವಾದ. "ಸೇವ್ಯತೇಜೇಕಯಾ ಸನ್ನತಾಪಾಙ್ಗಯಾ" ಮಾಘಂ 4-42 ।

ಸನ್ನತರ ಸನ್ನತರ (ವಿಂ) ಕುಗ್ಗಿದ ಕಂಠವುಳ್ಳವನು. ಅತಿ-ಶಯೇನ ಸನ್ನತಃ "ತರಪ್" (4-3-43) ।

ಸನ್ನತಿ ಸನ್ನತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಶ್ನಾಮು, ನಮಸ್ಕಾರ. ಸಮ್ + ಣಮ್ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94) । "ಯೇ ಚ ದಿಗ್ವಿಜಯೇ ತಸ್ಯ ಸನ್ನತಿ ನ ಯುನುಃ" । ಪ್ರಸಹ್ಯ ಕದಾಸ್ತೇನಾಸನ್ನಪುತೇ ದ್ವೇ ಗಿರಿವಜೇ" ಭಾಗಂ 10-30-24 । 2. ನೆಲ ಮುಟ್ಟುಮತೆ ಬಗ್ಗುವುದು. 3. ಅಭಿಮಾನವನ್ನು ತೋರಿದು ಅನುಕೂಲವಾಗಿರುವುದು, ಬಗ್ಗಿ ನಡೆದು ಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಸನ್ನತಿ ದಧತಿ ಪೇತುರಜಸ್ರಂ ದೃಷ್ಟಯಃ ಪ್ರಿಯತಮೇ ಶಯನೇ ಚ" ಮಾಘಂ 10-39 । 4. ವಿಸಯ, ನಮ್ರತೆ. "ಸನ್ನತಿಹಿ ತವಾಹುತಿ ಭವಿಷ್ಯಚ್ಛುಭಯೋಗ್ಯತಾಮ್" ರಾಮಾಂ । 5. ದ್ವೇಷ, ಶತ್ರು, ಸದ್ವೇಷ. "ಸನ್ನತಿಃ ಪ್ರಣತಿಃ ಪುನಃ" ಹೇಮಂ ।

ಸನ್ನದ ಸನ್ನದ (ವಿಂ) 1. ಯುದ್ಧಕವಚ ತೊಟ್ಟಿರುವ, 2. ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಸಿದ್ಧವಾಗಿರುವ. ಸನ್ನಹತೇ — ಸಮ್ + ಣಹ (ಬನ್ವನೇ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102) । "ಢಸ್ಕಾಘಟಾತುಮುಲಂ ಸನ್ನದಂ ಪರವಲಂ ರಣಾಯಾಸಸಹಮ್" ಭट्टಿಂ 13-44 । 3. ಎಲ್ಲಾಕಡೆಯಲ್ಲೂ ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವ. "ಕುಸುಮಮಿವ ಲೋಮ-ನೀಯಂ ಯೌವನಮಂಜೇಷು ಸನ್ನದಮ್" ಶಾಕುಂ 1-16 । 4. ಒಂದು ಆಕಾರವನ್ನು ಪಡೆದಿರುವ, ಒಂದು ರೂಪವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ. "ಪುರಾಣತ್ರಾಪಗಮಾದನಂತರಂ ಲತೇವ ಸನ್ನದಮನೋಜ-ಪಲ್ಲವಾ" ರಘುಂ 3-9 । 5. ಆಪತಾಯಿ, ವಧೆಗೆ ಯತ್ನಿಸಿದವನು.

ಸನ್ನಮತ್ ಸನ್ನಮತ್ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬಗ್ಗಿ ನಮಿಸ್ಕರಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬಗ್ಗುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಣಮ್ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಶತ್" (3-2-124) ।

ಸನ್ನಯ ಸನ್ನಯ (ಪುಂ) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. ಸನ್ನೀಯತೇ — ಸಮ್ + ಣೀಜ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಅಚ್" (3-3-46) । 2. ಸೈನ್ಯಕ್ಕೆ ಒಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿರುವ ಸೇನೆ. "ಪಶಾದವಸ್ಥಾಯಿ ಬಲಂ ಸಮವಾಯಶ್ಚ ಸನ್ನಯೋ" ಅಮಂ ।

ಸನ್ನಯನ ಸನ್ನಯನ (ನಂ) 1. ರಾಶಿಕಾಕವುದು, ಒಟ್ಟು ಗೂಡಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಣೀಜ್ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । 2. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುವುದು. (ವಿಂ)

3. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯುವ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಕರೆತರುವ. ಸಮ್ + ಣೀಜ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । "ಜಯಶ್ರಿಯಃ ಸನ್ನಯನಂ ಕುರುಸಹನ್" ಕುಮಾಂ 14-2 ।

ಸನ್ನಹನ ಸನ್ನಹನ (ನಂ) 1. ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವುದು, ಸಜ್ಜುಗೊಳಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಣಹ (ಬನ್ವನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । 2. ಭವ್ಯವಾಗಿ ಕಟ್ಟುವುದು. 3. ಪ್ರಯತ್ನ, ಸನ್ನಾಹ.

ಸನ್ನಾಹ ಸನ್ನಾಹ (ಪುಂ) 1. ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಸಿದ್ಧತೆ. ಸಮ್ + ಣಹ (ಬನ್ವನೇ) "ಘತ್" (3-3-10) । "ಸಮೀನ-ಯುಷಸ್ತನುತೇ ಸರಸ್ವಾನ್ ಸನ್ನಾಹಗನ್ಧಾನಿ ಗತಾಗತಾನಿ" ಯಾದಂ 16-92 । 2. ಅಂಗ, ಕವಚ. ಸನ್ನಾಹೋಷಿ — ಸಮ್ + ಣಹ (ಬನ್ವನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಘತ್" (3-3-19) । "ನಿವಾದಿಸನ್ನಾಹ-ಮಣಿರಭೋ ಪರೋಯಮಾಣೇ ಕರಿಸೋಕರೇಣ" ಕಿರಾಂ 16-12 । 3. ಉದ್ಯೋಗ, ಪ್ರಯತ್ನ. "ತತೋ ರಾಮಶರಾನ್ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ವಿಮಾನೇಶು ಗೃಹೇಶು ಚ । ಸನ್ನಾಹೋ ರಾಕ್ಷಸೇಂದ್ರಾಗಾಂ ತುಮುಲಃ ಸಮಸ್ಯತ" ರಾಮಾಂ ।

ಸನ್ನಾಹ್ಯ ಸನ್ನಾಹ್ಯ (ಪುಂ) ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಸಮರ್ಪವಾದ ಆನೆ. ಸಮ್ + ಣಮ್ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಘತ್" (3-3-124) । "ರಾಜಾಹಸ್ತನಾಹುಃ ಸನ್ನಾಹಯಃ ಸಮರೋಚಿತಃ" ಹೇಮಂ ।

ಸನ್ನಿಕರ್ಷ ಸನ್ನಿಕರ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಹತ್ತಿರ, ಸಾಮೀಪ್ಯ, ಸ್ನೇಹಾಂತ. ಸಮ್ + ನಿ + ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೇ) "ಘತ್" (3-3-10) । "ಸನ್ನಿಕರ್ಷಂ ಪರಿಹರ್ತುಮಿಚ್ಛನ್ ಅಂತರೇ ಭೂತಾತಿ ಸಮುತಃ" ಕುಮಾಂ 3-64 । 2. (ನ್ಯಾಯಮತದಲ್ಲಿ) ವಿಸಯ ಮತ್ತು ಇಂದ್ರಿಯಗಳ ಸಂಬಂಧ. ಇಂದ್ರಿಯಾಂ-ಸಂಯೋಗಃ ಸನ್ನಿಕರ್ಷಃ । ಚಕ್ಷುರಿಂದ್ರಿಯಕ್ಕೆ ವಸ್ತುವಿನ ಜ್ಞಾನವು ಉಂಟಾಗಲು (ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಲು) ಚಕ್ಷುರಿಂದ್ರಿಯ ಮತ್ತು ಘಟ ವಸ್ತುವಾದ ವಸ್ತುಗಳ ಸಂಬಂಧವು ಕಾರಣವಾಗುವುದು. ಇದೇ ಸನ್ನಿಕರ್ಷ.

ಸನ್ನಿಕರ್ಷಣ ಸನ್ನಿಕರ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಸನ್ನಿಧಿ, ಸಾಮೀಪ್ಯ, ಹತ್ತಿರ. ಸಮ್ + ನಿ + ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೇ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । 2. ಸಂಬಂಧ. "ಯಾವದೇಹೇಂದ್ರಿಯಪ್ರಾಣೇ-ರಾತ್ಮನಃ ಸನ್ನಿಕರ್ಷಣಮ್" । ಸಂತಾರಃ ಕಠವಾಂತಾವತ್ ಅಪಾರ್ಥೋ-ಪ್ಯವಿವೇಕಿತಃ" ಭಾಗಂ ।

ಸನ್ನಿಕೃಷ್ಠ ಸನ್ನಿಕೃಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಸಮೀಪದ, ಹತ್ತಿರದ. ಸಮ್ + ನಿ + ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೇ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102) । (ನಂ) 2. ಸಾಮೀಪ್ಯ, ಹತ್ತಿರ.

ಸನ್ನಿವಾತ್ ಸನ್ನಿವಾತ್ (ವಿಂ) 1. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ತರುವವನು. ಸಮ್ + ನಿ + ವಾಜ್ (ವಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ತುಚ್" (3-3-113) ।



2. ತುಂದು ಒಪ್ಪಿಸುವವನು, ತುಂದು ತಲುಪಿಸುವವನು.  
“ಸನ್ನಿಧಾತೃಂ ಮೋಷ್ಯ ಹನ್ಯಾಕೃರಮಿವೇಶ್ವರಃ” ಮನ್ವಂ  
೧-೨೭೮. 3. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಕರೆತರುವವನು, ಕರೆತಂದು  
ಎದುರಿಗೆ ನಿಲ್ಲಿಸುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಛೀಪ್” (೪-೧-೪).  
-ವಾತ್ಸೀ - ಧಾತೃ.

ಸನ್ನಿಧಾನ ಸನ್ನಿಧಾನ (ನಂ) 1. ಸಾಮೀಪ್ಯ, ಹತ್ತಿರ.  
ಸಮ್ + ನಿ + ಟ್ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಸ್ಯುತ್”  
(೩-೩-೧೧೫). “ಶ್ರೇಯೋ ಮುಹುತಂ ತವ ಸನ್ನಿಧಾನಂ ಮಮೇವ  
ಕುಸ್ತನಾದಪಿ ಜೀವಲೋಕಾತ್” ರಾಮಾಂ. 2. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿ  
ದಂತೆ ಇರುವುದು, ಒಂದರ ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿ ಒಂದರಂತೆ ಇಡುವುದು.  
3. ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ, ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗುವುದು. 4.  
ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗುವ ವಿಷಯ. 5. ಅವ  
ಸ್ಥಾನ, ಸಮೀಪ್ಯುತಿ. “ಮಾರ್ಗಿಕಂ ಪ್ರಿಯತಮಸನ್ನಿಧಾನ-  
ಮಾಸನ್ನಾರೀಣಾಮಿತಿ ಜಲಕೇಲಿಸಾಧನಾನಿ” ಮಾಘಂ ೮-೩೦.

ಸನ್ನಿಧಿ ಸನ್ನಿಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಾಮೀಪ್ಯ, ಹತ್ತಿರ. ಸಮ್ +  
ನಿ + ಟ್ ಧಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) “ಕಿಃ” (೩-೩-೧೨).  
“ಜಾತಮಕಲ್ಪಿತವೃತ್ತೇರಥ ರಾಜಃ ಸನ್ನಿಧೌ ಸಚಿವಪೀಠನಿವಿಷ್ಟಃ”  
ಯಾದಂ ೨೧-೬೮. 2. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವುದು. (ಪುಂ)  
3. ಒಳ್ಳೆಯ ನಿಧಿ. “ಛಿನಿನಾಮಿತರಃ ಸತ್ತಾಂ ಪುನರ್ಗುಣವತ್ಸ-  
ನ್ನಿಧಿರೇವ ಸನ್ನಿಧಿಃ” ನೆಪಂ ೨-೪೩. 4. ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಗೆ  
ಗೋಚರವಾಗುವ ವಿಷಯ. 5. ಅವಸ್ಥಾನ, ಸ್ಥಿತಿ.  
“ನಮಂದೇ ಸಿಂಧುಕಾವೇರಿ ಜಲೇಽಸ್ಮಿನ್ ಸನ್ನಿಧಿ ಕುಹ”  
“ಸನ್ನಿಧಿಃ ಸನ್ನಿಧಾನೇಽಪಿ ಪುಮಾನಿन्द्रಿಯಗೋಚರೇ” ಮೇದಿಂ.

ಸನ್ನಿಪತತ್ ಸನ್ನಿಪತತ್ (ವಿಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿ ಬರುವ  
ತಿರುವ. ಸಮ್ + ನಿ + ಪತ್ (ಗತೌ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪).  
2. ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುತ್ತಿರುವ. 3. ಮೇಲೆ ಬೀಳುತ್ತಿರುವ,  
ಒಂದು ಅಕ್ರಮಣ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 4. ಬರುತ್ತಿರುವ,  
ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ.

ಸನ್ನಿಪತ್ತಿ ಸನ್ನಿಪತ್ತಿ (ವಿಂ) 1. ಒಂದಾಗಿ ಸೇರಿ ಬಂದಿ  
ರುವ, ಒಟ್ಟಾಗಿ ಕಲೆತು ಬಂದಿರುವ. ಸಮ್ + ನಿ + ಪತ್  
(ಗತೌ) “ಶತ್” (೩-೪-೭೨). 2. ಕೆಳಗೆ ಬಿದ್ದಿರುವ.  
3. ಬಂದಿರುವ, ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ. 4. ಮೇಲೆ ಬಿದ್ದಿ  
ರುವ, ಅಕ್ರಮಣ ಮಾಡಿರುವ.

ಸನ್ನಿಪಾತ ಸನ್ನಿಪಾತ (ಪುಂ) 1. ಒಟ್ಟಾಗಿ ಸೇರಿ ಬರುವುದು,  
ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕಲೆತು ಬರುವುದು. ಸಮ್ + ನಿ + ಟ್ ಧಾನ್ (ಧಾರಣ-  
ಪೋಷಣಯೋಃ) “ಛತ್” (೩-೩-೧೮). 2. ಸಮೂಹ,  
ಗುಂಪು, ರಾಶಿ. “एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्ಜ-  
तीन्द्रो: किरणेष्विवाङ्कः” ಕುಮಾಂ ೧-೩. 3. ನಾನಾ

ವಸ್ತುಗಳ ಮಿಶ್ರಣ, ಬೆರಕೆ. “ಭೂಮ್ಯಾಂತಿಃ ಸಲಿಲಮಹತಾಂ  
ಸನ್ನಿಪಾತಃ ಕವ ಮೇಘಃ” ಮೇಘಂ ೧-೪. 4. ಸನ್ನಿಪಾತ ಜ್ವರ.  
ವಾತ ಪಿತ್ತ ಕಫಗಳ ದೋಷದಿಂದ ದೇಹದಲ್ಲಿ ನಾನಾವಿಧ  
ವಿಕಾರಗಳನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ ಒಂದು ಜ್ವರ. ಸಮ್ಯಕ್  
ನಿಪಾತೋ ಯಸ್ಮಾತ್. ಈ ಜ್ವರದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ  
ವಿಕಾರಗಳು : ನಿದ್ರಾನಾಶ, ಸುತ್ತುವ ಚಕ್ರದ ಮೇಲೆ  
ಕುಳಿತಂತೆ ಭ್ರಮಣ, ಶ್ವಾಸ ತಂದ್ರಾ (ಅಲಸ್ಯ, ಯಾವ  
ವಿಷಯದಲ್ಲೂ ಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ವಸ್ತುಸ್ವರೂಪವನ್ನು  
ಅರಿಯದಿರುವಿಕೆ). “इन्द्रियाण्येव संवित्तिः गौरवं भ्रमणं  
कलमः । निद्रातस्येव यस्येहा तस्य तन्द्रां विनिर्दिशेत्” ||  
ಸುಪ್ತಾಂಗತಾ (ಮೈಯನ್ನು ಮುಟ್ಟಿದರೂ ತಿಳಿಯದಿರು  
ವಿಕೆ) ಅರುಚಿ ತೃಷ್ಣಾ (ಬಾಯಾರಿಕೆ) ಮೋಹ (ಜ್ಞಾನ  
ತಪ್ಪುವುದು) ಮದ ಸ್ತಂಭ ಹೃದಯವೇದನೆ ನಾಲಿಗೆ  
ಮರದಂತೆ ಕಠಿಣವಾಗುವುದು ಮತ್ತು ಕಪ್ಪಾಗುವುದು  
ಮೈಕ್ಕೆ ಕಾಲುಗಳ ಸಂಧಿ (ಹಿಲು) ತಲೆ ಮತ್ತು ಎಲುಬು  
ಗಳಲ್ಲಿ ಯಾತನೆ ಇತ್ಯಾದಿ ಸನ್ನಿಪಾತ ಜ್ವರದಿಂದ ಉಂಟಾ  
ಗುವ ವಿಕಾರಗಳು. “निद्रानाशो भ्रमः श्वासः तन्द्रा  
सुप्ताङ्गताऽरुचिः । तृष्णा मोहो मदः स्तम्भो दाहः  
शीतं हृदि व्यथा । रसना पक्ष्वा कृष्णा सन्धि  
मूर्धास्थिजा रुजः” || ಇತ್ಯಾದಿ. ಸುಶ್ರುತಂ ೩೯. 5.  
ನದಿಗಳ ಸಂಗಮ. “समुद्रपत्न्योर्जलसन्निपाते पूतात्म-  
नामत्र किलाभिवेकात्” ರಘುಂ ೧೩-೪೮. 6. ಸಂಘರ್ಷ,  
ತಿಕ್ಕಾಟ. “आक्रम्राघ्रेः केतुभिः सन्निपातम्” ಮಾಘಂ  
೧೮-೩೭.

ಸನ್ನಿಬದ್ಧ ಸನ್ನಿಬದ್ಧ (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ +  
ನಿ + ಬಂಧ (ಬಂಧನೇ) “ಜಃ” (೩-೨-೧೦೨).

ಸನ್ನಿಬಂಧ ಸನ್ನಿಬಂಧ (ಪುಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕಟ್ಟುವುದು.  
ಸಮ್ + ನಿ + ಬಂಧ (ಬಂಧನೇ) “ಛತ್” (೩-೩-೧೮).  
2. ಒಳ್ಳೆಯ ಗ್ರಂಥ, ಉತ್ತಮ ದರ್ಜೆಯ ಗ್ರಂಥ.

ಸನ್ನಿಬಂಧನ ಸನ್ನಿಬಂಧನ (ನಂ) 1. ರಾಜನು ಅಶ್ವತರ  
ಕಾರ್ಯಸಾಧನೆಯಿಂದ ಸಂತುಷ್ಟನಾಗಿ ಅವರಿಗೆ ಮಾಡುವ  
ಶಾಶ್ವತವಾದ ಪಾರಿತೋಷಿಕದಾನ. ಸತ್ ನಿಬಂಧನಂ  
ಗೌಹಿರण्यादिशा भृतपारितोषिकदानम्. 2. ಸದ್ಗ್ರಂಥ,  
ಉತ್ತಮ ದರ್ಜೆಯ ಗ್ರಂಥ. “अनुसूत्रादन्यासा सङ्गतिः  
सन्निबन्धना । शब्दविद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा”  
ಮಾಘಂ ೨-೧೧೨. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕಟ್ಟುವುದು.

ಸನ್ನಿಬ ಸನ್ನಿಬ (ವಿಂ) ಸದೃಶವಾದ, ಸಮಾನವಾದ.  
(ಸಮಾನವಾಗಿ ಇದಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ



ಪ್ರಯೋಗ.) "ಭಗವಾನ್ ಯಜ್ಞಪುರುಷೋ ಜಗಜ್ಜಗೇಂದ್ರಸನ್ನಿವೇಶಃ"  
ಭಾಗಂ ೩-೧೩-೨೨ | ಸಂಪ್ರದಾಯ ನಿಯತಂ ಭಾವಿ-ಸಂ+ನಿ+ಭಾ  
(ದೀಪ್ತ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೬) |

ಸನ್ನಿವೇಶ ಸನ್ನಿವೇಶ (ಪುಂ) ಇನ್ನೊಂದರ ಸಂಬಂಧ  
ಹೊಂದಿರುವುದು, ಇನ್ನೊಂದರ ಜೊತೆಯಲ್ಲೇ ಇರು  
ವುದು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಇರುವುದು, ಇನ್ನೊಂದರ ಜೊತೆ ಸೇರಿ  
ಕೊಂಡಿರುವುದು. ಸಂ + ನಿ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) "ಘಃ"  
(೩-೩-೧೮) | "ಸನ್ನಿವೇಶಸನ್ನಿವೇಶಾಂ ಸಹ ವಾ ಪ್ರವೃತ್ತಿಃ  
ಸಹ ವಾ ನಿವೃತ್ತಿಃ" (ಪರಿಂ ೮೭) |

ಸನ್ನಿವೇಶ ಸನ್ನಿವೇಶ (ವಿಂ) ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡ್ಡಿಯಾದ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಂ + ನಿ + ಧಿರ್ (ಆವರಣ) "ಕಃ"  
(೩-೨-೧೦೨) |

ಸನ್ನಿವೇಶ ಸನ್ನಿವೇಶ (ಪುಂ) ತಡೆ, ಅಡ್ಡಿ, ಅಡ್ಡು.  
ಸಂ + ನಿ + ಧಿರ್ (ಆವರಣ) "ಘಃ" (೩-೩-೧೮) |

ಸನ್ನಿವೇಶ ಸನ್ನಿವೇಶ (ನಂ) ಹಿಂತಿರುಗಿ ಬರುವುದು.  
ಸಂ+ನಿ+ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |

ಸನ್ನಿವೇಶ ಸನ್ನಿವೇಶ (ವಿಂ) ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತಿರುಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಹಿಂದಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಂ + ನಿ + ವೃತು (ವರ್ತನೆ) +  
ಣಿಕ್ "ಕಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

ಸನ್ನಿವೇಶ ಸನ್ನಿವೇಶ (ವಿಂ) ಹಿಂತಿರುಗುವ, ಹಿಂದಕ್ಕೆ  
ಬರುವ. ಸಂ+ನಿ+ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಣಿನ್" (೩-೧-೧೩೪) |  
ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫) | -ವರ್ತಿನಿ-ವರ್ತನೀ.

ಸನ್ನಿವೇಶ ಸನ್ನಿವೇಶ (ವಿಂ) 1. ಒಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. ಸಂ + ನಿ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಶತ್"  
(೩-೨-೧೨೪) | 2. ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. 3. ಸಾಲಾಗಿ  
ನಿಲ್ಲುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ವಿಶಂತಿ  
-ವಿಶಂತೀ.

ಸನ್ನಿವೇಶ ಸನ್ನಿವೇಶ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರವೇಶಿಸಿರುವ, ಒಳಗೆ  
ಹೋಗಿರುವ. ಸಂ + ನಿ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಕಃ"  
(೩-೪-೭೨) | 2. ಸಾಲಾಗಿ ನಿಂತಿರುವ, ನಿರುತ್ತರವಾಗಿ  
ಬಿಡು ಬಿಟ್ಟಿರುವ. "ಭೂಮತುರಾಯತನಿರಂತರಸನ್ನಿವೇಶಾಃ  
ಪಾದಾ ಇವಾಭಿವ್ರಮುರಾವಲಯೋ ರಥಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೫-೨೦ |  
3. ಕುಳಿತಿರುವ. "ಋಷೇಃ ಸದಾ ಸವಿತುಮಂಡಲಮಭ್ಯವರ್ತಿ  
ನಾರಾಯಣಃ ಸರಸಿಜಾಸನಸನ್ನಿವೇಶಃ" |

ಸನ್ನಿವೇಶ ಸನ್ನಿವೇಶ (ವಿಂ) ಹಿಂತಿರುಗಿದ, ಹಿಂತಿರುಗಿ  
ಬಂದಿರುವ. ಸಂ+ನಿ+ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಕಃ" (೩-೪-೭೨) |

ಸನ್ನಿವೇಶ ಸನ್ನಿವೇಶ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಗೃಹದ ಅಥವಾ  
ನಗರದ ಸುತ್ತಮುತ್ತ ಪ್ರವೇಶ. ಸನ್ನಿವೇಶಂತೇಶ-

ಸಂ + ನಿ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಘಃ" (೩-೩-೧೨೧) |

2. ಉಚಿತವಾದ ಸ್ಥಾನ, ಯೋಗ್ಯವಾದ ಸ್ಥಳ. "ಗಜಾಂತರ-  
ಮಾತೋಽಪ್ಯಾನುರಾಗಮ್ಯ ಕ್ರಿಶ್ಣಾಂ ಸನಾಜತಸನ್ನಿವೇಶಃ" ತಂ ರಾಂ  
೭ | 3. ನಗರದ ಹೊರಭಾಗದಲ್ಲಿ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ವಿಹಾರ  
ಯೋಗ್ಯವಾದ ಪ್ರವೇಶ. 4. ರಚನೆ, ಜೋಡಣೆ. "ಮಹಾ-  
ಭಾಗ, ಸುಶಿಲಶೃಂಗಾಶಯಾ ರಮಣೀಯ ಏಷ ಸನ್ನಿವೇಶಃ"  
ಮಾಲತೀಂ ೧ | 5. ಆಕಾರ, ರೂಪ. "ವಿಷಮಡಾಮರೋದಾಮ-  
ಶರೀರಸನ್ನಿವೇಶಃ ಮಘದಪಕ್ವಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೩ | 6. ಮುನಿ  
ಗಳ ವಾಸ್ತವ್ಯ, ಪೂಜಾರ್ಥ. "ಅಶ್ವನೃತೀರಾಂ ಮುನಿಸನ್ನಿವೇಶ-  
ಸ್ತಮೋಪಹೃತೀ ತಮಸಾಂ ವಿಗಾಹ್ಯ" ರಘುಂ ೧೪-೭೬ | 7. ಇಡು  
ವುದು. "ಉತ್ತಾನಗುಣಿವೃತಸನ್ನಿವೇಶಾತ್ ಪ್ರಕುಲ್ಲರಾಜೀವ-  
ಮಿವಾಹ್ನಮಧ್ಯೆ" ಕುಮಾರಂ ೩-೪೫ | 8. ಉತ್ಪಾದದಿಂದ  
ಕೊಡಿದ ಉಪಹಾರ, ಶ್ರದ್ಧೆಯಿಂದ ಕೊಡಿದ ಪೂಜೆ.

ಸನ್ನಿವೇಶ ಸನ್ನಿವೇಶ (ವಿಂ) ಇರುವ, ಸರಿಯಾಗಿ ಕುಳಿತ  
ಿರುವ. ಸಂ + ನಿ + ಪದ್ಧ (ವಿಶರಣಾದಿ) "ಕಃ"  
(೩-೪-೭೨) | "ಪಾಶ್ಚಾತ್ಯಭಾಗಮಿಹ ಸ ನುಷ್ಠ ಸನ್ನಿವೇಶಾಃ  
ಪಶ್ಯಂತಿ ಶಾಂತಮಲಸಾಂದ್ರತರಾಶುಜಾಲಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೨೨ |

ಸನ್ನಿವೇಶ ಸನ್ನಿವೇಶ (ವಿಂ) 1. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಂ+ನಿ+ಛ ಛಾನ್ (ಧಾರಣ-  
ಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕಃ" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಸರಿಯಾಗಿ  
ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರುವ.  
"ನಿತ್ಯಂ ಹರೇಃ ಸನ್ನಿವೇಶಾ ನಿಕಾಮಂ ಕೌಮೋದಕೀ ಮೋದಯತಿ ಸಮ  
ಚೇತಃ" ಮಾಘಂ ೩-೧೮ | 4. ಎದುರಿಗಿರುವ, ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ  
ವಾಗಿರುವ, ವರ್ತಮಾನಕಾಲದಲ್ಲಿರುವ. "ಇದಮನನ್ಯ-  
ಪರಾಯಗಮನ್ಯಯಾ ಹೃದಯಸನ್ನಿವೇಶಾ ಹೃದಯಂ ಮಮ" ಶಾಕುಂ ೩-೧೬ |  
5. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ, ಸಿದ್ಧವಾಗಿರುವ. "ನನು ಇಯಂ ಸನ್ನಿವೇಶ-  
ವೇಶಾಸನೇವ ದ್ವಾರಪ್ರಕೋಶಶಾಲಾ" ಮೃದಾಂ ೧ | 6. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ  
ಬಂದಿರುವ, ಸಮೀಪಿಸುತ್ತಿರುವ, ಮುಂದೆ ಅಲ್ಪಕಾಲ  
ದಲ್ಲಿ ಬರಲಿರುವ. "ತದಪಿ ಸನ್ನಿವೇಶ ಸನ್ನಿವೇಶಾ ಮವಾ-  
ವವಿಗಮಂ ಧಿಗಮಜ್ಜಲಮಶ್ರುಣಃ" ಮಾಘಂ ೬-೧೭ |

ಸಂಪ್ರದಾಯ ಸಂಪ್ರದಾಯ (ನಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಸರಿಯಾಗಿ ಇಡು  
ವುದು. ಸಂ + ನಿ + ಅಸು (ಸೇವಣೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೫) | 2. ಪ್ರಪಂಚದ ವ್ಯವಹಾರಗಳನ್ನು  
ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಪರಿತ್ಯಜಿಸುವುದು, ಬಾಹ್ಯ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ  
ಆಸೆಯನ್ನು ತೊರೆಯುವುದು, ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸದಿರು  
ವುದು. "ನ ಕರ್ಮಣಾಮನಾರಮಾಶ್ರೇಷ್ಠಮ್ ಪುರುಷೋಽನುತೇ |  
ನ ಚ ಸಂಪ್ರದಾಯಾದೇವ ಸಿದ್ಧಿಃ ಸಮಧಿಗಚ್ಛತಿ" ಗೀತಾ ೩-೪ |  
3. ತೊರೆದುಬಿಡುವುದು, ಬಿಟ್ಟುಬಿಡುವುದು, ಪರಿತ್ಯಜಿಸು  
ವುದು.



ಸಂಯಮ ಸಂನ್ಯಾಸ (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟು ತೆಗೆದು ಇಡಲ್ಪಟ್ಟು ಸಮ + ನಿ + ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಕ:" (3-2-102). 2. ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ತೆಗೆದುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು "ಸಾ ಸಂಯಮಾಭರಣಮಬಲಾ ಪೇಶಲಂ ಧಾರಯಂತಿ ಶಯೋತ್ಸಂಜ್ಞೆ ನಿಹಿತಮಸಕ್ತದ್ವುಸ್ತು: ಸೇನ ಗಾತ್ರಮ್" ಮೇಘಂ 2-30. 3. ಸುಪೂರ್ಣವಾಗಿ ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ನಿಶೇಷವಾಗಿ ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟು "ಯೋಗಸಂಯಮಕರ್ಮಣಿ ಜ್ಞಾನಸಂಪತ್ತಿಸಂಶಯಮ್" ಗೀತಾ 4-41. 4. ತೊರೆದುಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟು ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟು "ಬ್ರಿಡಾದಮ್ ದೇವಮುದೀಕ್ಷ್ಯ ಮನ್ಯೇ ಸಂಯಮದೇಹ: ಸ್ವಯಮೇವ ಕಾಮ:" ಕುಮಾರಂ 9-69.

ಸಂನ್ಯಾಸ ಸಂನ್ಯಾಸ (ಪುಂ) 1. ಕಾಮ್ಯ ಕರ್ಮಗಳ ಪರಿತ್ಯಾಗ, ವಿಹಿತ ಕರ್ಮಗಳ ಪರಿತ್ಯಾಗ. ಸಮ+ನಿ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಘತ್" (3-3-14). "ಕಾಮ್ಯಾನಾಂ ಕರ್ಮಣಾಂ ನ್ಯಾಸಂ ಸಂನ್ಯಾಸಂ ಕವಯಿ ವಿಧು: ಸರ್ವಕರ್ಮಕರ್ಮಾಣಾಂ ಪ್ರಾಕೃತಪ್ರಾಣಾಂ ವಿವಕ್ಷಣಾ:" ಗೀತಾ 12-2. 2. ಪ್ರಥಮ ವರ್ಣದವರು ಸ್ವೀಕರಿಸುವ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಆಶ್ರಮ. ಆಶ್ರಮವು (1) ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ (2) ಗೃಹಸ್ಥ್ಯ (3) ವಾನಪ್ರಸ್ಥ ಮತ್ತು (4) ಸಂನ್ಯಾಸಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮದ ನಂತರ ಆಯುಸ್ಸಿನ ಮೂರನೆಯ ಭಾಗವನ್ನು ವಾನಪ್ರಸ್ಥಾಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಕಳೆದು ನಾಲ್ಕನೆಯ ಭಾಗವನ್ನು ಸಂನ್ಯಾಸಾಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಕಳೆಯಬೇಕು. "ಏವಂ ವನಾಶ್ರಮೇ ಸ್ಥಿತವಾ ತೃತೀಯಂ ಭಾಗಮಾತ್ಮನ: ಚತುರ್ಥಮಾಶ್ರಮಂ ಭಾಗಂ ಸಂನ್ಯಾಸೇನ ನಯೇತ್ ಕರ್ಮಾತ್" || ಸಂನ್ಯಾಸಾಶ್ರಮದ ಧರ್ಮಗಳು: ಸಕಲ ಬಾಹ್ಯ ವಿಷಯಗಳ ಸುಬಂಧವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಬೇಕು. ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿರಬೇಕು. ಜಿತೇಂದ್ರಿಯನಾಗಿರಬೇಕು. ಒಂದೇ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ನಿರಂತರವಾಗಿ ವಾಸಮಾಡುವ ಗ್ರಾಮೈಕರಾತ್ರವಾಸ ಮಾಡಬೇಕು. ಆಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ತಾನು ಯಾವ ಯಾವುದನ್ನೂ ಮಾಡದ ಯೋಗ್ಯವಾದ ಗೃಹಸ್ಥರ ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ಭಿಕ್ಷೆ ಯಾಚಿಸಿ ಜೀವಿಸಬೇಕು. ಆತ್ಮಜ್ಞಾನ ಸುಪಾದನೆಯಲ್ಲಿ ನಿರತನಾಗಿರಬೇಕು. "ಸರ್ವಸಂಸ್ಕಾರಿತ್ಯಾಗೋ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಸಮನ್ವಿತ: ಜಿತೇಂದ್ರಿಯವ-ಮಾತ್ಮನೇ ನೇಕಸ್ಮಿನ್ ವಸತಿಶ್ರೀರಮ್ || ಅನಾರಂಭಸ್ತಥಾಹಾರೇ ಮಿತ್ರಾ ವಿಪ್ರೇಹ್ಯಾನಿಂದಿತೇ | ಆತ್ಮಜ್ಞಾನವಿವೇಕಶ್ಚ ತಥಾಹ್ಯಾತ್ಮಾವಬೋಧನಮ್" || 3. ನ್ಯಾಸ, ನಿಕ್ಷೇಪ, ಇಡು, ಶೇಖರಿಸಿಟ್ಟು ಧನ ಅಥವಾ ವಸ್ತುವನ್ನು ಭದ್ರವಾಗಿ ಒಂದು ಕಡೆ ಇಡುವುದು.

ಸಂನ್ಯಾಸಿನ್ ಸಂನ್ಯಾಸಿನ್ (ಪುಂ) 1. ನಾಲ್ಕನೆಯ ಆಶ್ರಮವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದವನು. ಸಂನ್ಯಾಸೋಽಪ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114). 2. ಸರ್ವಸಂಗ ಪರಿತ್ಯಾಗ ಮಾಡಿದವನು,

ಈ ಲೋಕದ ವ್ಯವಹಾರಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟಿರುವವನು. ಸಮ+ನಿ+ಅಸು (ಕ್ಷೇಪಣ) "ಞಿನಿ:" (3-1-134). "ಜ್ಞೇ: ಸ ನಿಯಮಸಂನ್ಯಾಸಿ ಯೋ ನ ದ್ವೇಷಿ ನ ಕಾಂಕ್ಷತಿ | ನಿರ್ದಿಷ್ಟೋ ಹಿ ಮಹಾಬಾಹೋ ಸುಖಂ ಬಂಧಾತ್ರಮುಚ್ಯತೇ" ಗೀತಾ 4-3. ಸದತ್ತೇ ವಾ ಕದತ್ತೇ ವಾ ಲೋಕೇ ವಾ ಕಾಂಕ್ಷತೇ ತಥಾ | ಸಮಬುದ್ಧಿಯಸ್ಯ ಶಾಶ್ವತ್ ಸ ಸಂನ್ಯಾಸಿತಿ ಕೀರ್ತಿತ: || ಸಂನ್ಯಾಸಿಗಳು— (1) ಜ್ಞಾನಸಂನ್ಯಾಸಿ (2) ವೇದಸಂನ್ಯಾಸಿ ಮತ್ತು (3) ಕರ್ಮಸಂನ್ಯಾಸಿಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ. "ಜ್ಞಾನ-ಸಂನ್ಯಾಸಿನ: ಕೇಚಿದೇದಸಂನ್ಯಾಸಿನೋಽಪಿ | ಕರ್ಮಸಂನ್ಯಾಸಿನಸ್ತ್ವನ್ಯೇ ತ್ರಿವಿಧಾ: ಪರಿಕೀರ್ತಿತಾ:" || ಸರ್ವಸಂಗ ಪರಿತ್ಯಾಗಮಾಡಿ ಸುಖಮಾಖ್ಯಗಳನ್ನು ಸಮನಾಗಿ ಭಾವಿಸುವವನು ಜ್ಞಾನ ಸಂನ್ಯಾಸಿ. ಸರ್ವದಾ ವೇದಾಭ್ಯಾಸ ನಿರತನಾಗಿ ಪ್ರಾಕೃತ ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ಮಮತೆಯಿಲ್ಲದವನಾಗಿ ಜಿತೇಂದ್ರಿಯನಾಗಿರುವವನು ವೇದಸಂನ್ಯಾಸಿ. ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡುತ್ತ ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಬ್ರಹ್ಮಾರ್ಪಣೆ ಮಾಡುವವನು ಕರ್ಮಸಂನ್ಯಾಸಿ. ಎಲ್ಲರಿಗಿಂತಲೂ ಜ್ಞಾನ ಸಂನ್ಯಾಸಿಯು ಶ್ರೇಷ್ಠ. "ತ್ರಯಾಣಾಮಪಿ ಚೇತೇಷಾಂ ಜ್ಞಾನೀ ತ್ವಮ್ಯವಿಕೋ ಮತ:" || (ವಿಂ) 2. ಆಹಾರವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿ ಅನಶನವ್ರತ ಕೈಗೊಂಡಿರುವವನು. "ತವಾಚ ಮಾಹತಿವೃದ್ಧೇ ಸಂನ್ಯಾಸಿನ್ಯತ್ರ ವಾನರಾನ್" ಭದ್ರಂ 9-96.

ಸಪಕ್ಷ ಸಪಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ನಿಶ್ಚಿತ ಸಾಧ್ಯವುಳ್ಳ ಪಕ್ಷ, ಸದ್ವೇತುಗಳಿಂದ ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಧರ್ಮವುಳ್ಳ ಪಕ್ಷ. "ನಿಶ್ಚಿತ-ಸಾಕ್ಷವಾನ್ ಸಪಕ್ಷ:" ತಂ ಸಂ | ಧೂಮದಿಂದ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಮೃದೆಯನ್ನು ಸಾಧಿಸುವಾಗ ಮದಾನಸವು ಸಪಕ್ಷ. 2. ಸಮಾನವಾದ ಪಕ್ಷ. 3. ಒಂದೇ ಗುಂಪಿಗೆ ಸೇರಿದವನು, ಒಂದೇ ಪಂಗಡದವನು. "ಸಾಧು ರೇ ಪಿಙ್ಗಲವಾನರ, ಪರಿಶ್ರಾತಸ್ತ್ವಯಾ ಸಪಕ್ಷ:" ಮಾಲಂ 4.

ಸಪತ್ರಾಕರಣ ಸಪತ್ರಾಕರಣ (ನಂ) ಬಹಳವಾಗಿ ಪೀಡಿಸುವುದು, ಬಹಳ ನೋವುಂಟುಮಾಡುವುದು. ಸಪತ್ರ+ಙ್ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). ಡಾಕ್ (4-4-61). ಬಾಣದ ಮೂಲ (ಬುಡ) ಭಾಗವೂ ಲಕ್ಷ್ಯವಾದ ಮೃಗ ಪಕ್ಷಿ ಮೊದಲಾದವುಗಳ ಹೊಟ್ಟೆಯೊಳಗೆ ಸೇರುವಂತೆ ಬಾಣವನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸಿ ನೋವುಂಟುಮಾಡುವುದು ಸಪತ್ರಾಕರಣ. -ಕೃತ:-ಕೃತಃ. ಹಿಂಗೆ ಬಾಣಪ್ರಯೋಗದಿಂದ ಹೆಚ್ಚು ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. -ಕೃತಿ:-ಕೃತಿಃ. ಹೆಚ್ಚು ನೋವುಂಟುಮಾಡುವುದು.

ಸಪತ್ನ ಸಪತ್ನ (ಪುಂ) ಶತ್ರು, ವೈರಿ, ಹಗೆ. ಸಪತ್ನೀವ | ಸಮಾನಂ ಪತತಿ ಏಕಾರ್ಥಾಭಿನಿವೇಶಾತ್ | "ವ್ಯನ್ ಸಪತ್ನೇ"



ಹತಿ ನಿರ್ದೇಶಾತ್ ಸಾಧು: । "ತತ: ಸಪ್ತನಾಪನಯಸ್ಮರಣಾಮು-  
ಶಯಸ್ಕುರಾ" ಮಾಘಂ ೨-೧೪ ।

**ಸಪ್ತನಿ ಸಪ್ತಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸವತಿ, (ಇನ್ನೊಬ್ಬಳಿಗೂ)  
ಸಮಾನ ಪತಿಯುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು, ಒಬ್ಬನ ಅನೇಕ ಪತ್ನಿಯ  
ರಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬಳು. ಸಮಾನ: ಪತಿಯೇಷಾ; ನಕಾರಾದೇಶ: ಸಮಾನಸ್ಯ  
ಸಮಾವೋಷಿ ನಿಪಾಂ (೪-೧-೩೫) । "ವ್ರಜದಪಿ ಲಘುತಾಂ  
ಬಭೂವ ಭಾರ: ಸಪದಿ ಹಿರಣ್ಮಯಮೃದನಂ ಸಪತ್ನಾ: " ಮಾಘಂ  
೭-೫೯ ।

**ಸಪದಿ ಸಪದಿ (ಅವ್ಯಂ)** 1. ಆ ಕೂಡಲೆ, ಶೀಘ್ರವಾಗಿ,  
ತಡ್ಲಕ್ಷದಲ್ಲಿ. ಸಹ ಪದ್ಯತೇ — ಪದ (ಗತೌ) "ಇನ್"  
(೩ಂ ೪-೧೧೮) । "ವ್ರಜದಪಿ ಲಘುತಾಂ ಬಭೂವ ಭಾರ: ಸಪದಿ  
ಹಿರಣ್ಮಯಮೃದನಂ ಸಪತ್ನಾ: " ಮಾಘಂ ೭-೫೯ । 2. ತಡ್ಲಕ್ಷ  
ದಲ್ಲಿ, ಆ ಸಮಯದಲ್ಲಿ, ಸದ್ಯಃ. "ಸದ: ಸಪದಿ ತತ್ಕ್ಷಣೇ"  
ಅಮಂ ।

**ಸಪರ್ಯಾ ಸಪರ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪೂಜೆ, ಆರಾಧನೆ. ಸರ  
(ಪೂಜಾಯಾಮ್) ಕಣ್ವಾದಿ: "ಯಕ್" (೩-೧-೨೭) । "ಅ:"  
(೩-೩-೧೦೨) । "ತಮರ್ಥಮರ್ಥಾದಿಕಮಾದಿಪೂರ್ಣ: ಸಪರ್ಯಾ  
ಸಾಧು ಸ ಪರ್ಯಪೂಜತ್" ಮಾಘಂ ೧-೧೪ ।

**ಸಪಾದ ಸಪಾದ (ವಿಂ)** 1. ಒಂದು ಪಾದ (ಭಾಗ) ದಿಂದ  
ಕೂಡಿದ, ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗದಿಂದ ಕೂಡಿದ.  
ಪಾದೇನ ಚತುರ್ಥಾಂಶೇನ ಸಹಿತ: । "ತೇನ ಸಪಾದಸಪ್ತಾಧ್ಯಾಯಿ  
ಪ್ರತಿ ತ್ರಿಪಾದಿಸಿದ್ಧಾ । ತ್ರಿಪಾದಾಮಪಿ ಪೂರ್ವಂ ಪ್ರತಿ ಪರಂ ಶಾಸ್ತ್ರ-  
ಮಸಿದ್ಧಮ್ ಸ್ಯಾತ್" ಸಿಂ ಕೌಂ (೮-೨-೧) । 2. ಪಾದ  
ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದವನು, ಕಾಲುಗಳುಳ್ಳವನು. ಪಾದಾಭ್ಯಾಂ  
ಚರಣಾಭ್ಯಾಂ ಸಹ ವರ್ತತೇ ।

**ಸಪಿಂಡ ಸಪಿಂಡ (ವಿಂ)** ಜ್ಞಾತಿ, ದಾಯಾದ. ಸಮಾನ:  
ಪಿಂಡೋ ದೇಹೋ ಮೂಲಗುಣೋ ವಾ ಯಸ್ಯ । [ಒಂದು ಮಠದ  
ಏಳು ತಲೆಮಾರೆಯವರೆಗೂ ಸಪಿಂಡರು. ಅನಂತರ ಆ  
ಗೋತ್ರದಲ್ಲಿ ಹೆಸರು ತಿಳಿಯುವವರೆಗೂ ಸಮಾನೋದ  
ಕರು.] "ಸಪಿಂಡತಾ ತು ಪುರುಷೇ ಸಪ್ತಮೇ ವಿವಿವರ್ತತೇ ।  
ಸಮಾನೋದಕಭಾವಸ್ತು ಜನ್ಮನಾಮನೋರವೇದನೇ" ಮನುಂ ೫-೬೦ ।

**ಸಪೀತಿ ಸಪೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅನೇಕರೊಡನೆ ಕುಳಿತು ಪಾನ  
ಮಾಡುವುದು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿ ಕುಡಿಯುವುದು. ಸಮಾನಾ  
ಪೀತಿ: ಸಹ ಪೀತಿರ್ವಾ । "ಸಪೀತಿ: ಸ್ತ್ರೀ ತುಲ್ಯಪಾನಮ್"  
ಅಮಂ । "ಸಪೀತೇ: ಸಂಪ್ರೀತೇ ರಜನಿ ರಜನೀಶ: ಪರಿಷದಾ ಪರೀತ-  
ಸ್ತಾರಾಣಾಂ ದಿನಮಣಿಮಣಿಗ್ರಾವಮಣಿಕ:" ನೆಪಂ ೨೨-೧೪೪ ।

**ಸಪ್ತಕ ಸಪ್ತಕ (ನಂ)** 1. ಏಳು ಸಂಖ್ಯೆ. ಸಪ್ತನ್ ಸ್ವಾಯೆ  
"ಕ:" । (ವಿಂ) 2. ಏಳನೆಯ. 3. ಏಳು ಸಂಖ್ಯೆಗಳಿಂದ  
ಕೂಡಿದ.

**ಸಪ್ತಕ ಸಪ್ತಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪಡ್ಯಣ, ಪಾಡ್ಯ. ಸಪ್ತ ಸ್ವರಾನ್  
ಕಾಯತಿ—ಕಂ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩) । "ಸ್ತ್ರೀಕಟಪಾಂ  
ಮೇಖಲಾ ಕಾಂಚೀ ಸಪ್ತಕೀ ರಶನಾ ತಥಾ" ಅಮಂ ।

**ಸಪ್ತಚತ್ವಾರಿಂಶ ಸಪ್ತಚತ್ವಾರಿಂಶ (ವಿಂ)** ನಲವತ್ತೆಂಟೆ  
ನೆಯ. ಸಪ್ತಚತ್ವಾರಿಂಶತ: ಪೂರ್ಣ: "ಓಟ್" (೫-೨-೪೮) ।

**ಸಪ್ತಚತ್ವಾರಿಂಶತ್ ಸಪ್ತಚತ್ವಾರಿಂಶತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ನಲವ  
ತ್ತೆಂಟೆ. ಸಪ್ತಭಿರಧಿಕಾ ಚತ್ವಾರಿಂಶತ್ ।

**ಸಪ್ತಚತ್ವಾರಿಂಶತ್ತಮ ಸಪ್ತಚತ್ವಾರಿಂಶತ್ತಮ (ವಿಂ)**  
ನಲವತ್ತೆಂಟನೆಯ. ಸಪ್ತಚತ್ವಾರಿಂಶತ: ಪೂರ್ಣ: "ಓಟ್"  
(೫-೨-೪೮) । ಓಟೋ ವಾ "ತಮಟ್" (೫-೨-೫೬) । ಪಕ್ಷೇ  
—ಚತ್ವಾರಿಂಶ: —ಚತ್ವಾರಿಂಶ.

**ಸಪ್ತಚ್ಛದ ಸಪ್ತಚ್ಛದ (ಪುಂ)** ಏಳೆಲೆ ಬಾಳೆಗಡ. ಸಪ್ತ  
ಚ್ಛದಾ ಯಸ್ಯ । "ಪ್ರಕುಲಗಾಪಿಚ್ಛನಿರ್ಮೇರಭಿಷುಮಿ: ಶುಭಂ  
ಸಪ್ತಚ್ಛದಾಂಸುಗಾಂಧುಮಿ:" ಮಾಘಂ ೧-೨೨ ।

**ಸಪ್ತಜಿಹ್ವ ಸಪ್ತಜಿಹ್ವ (ಪುಂ)** 1. ಎಪ್ಪು. ಸಪ್ತ ಕಾಲಿ-  
ಕರಾಲಿನನೋಜವಾಪ್ರಭೃತಯ: ಜಿಹ್ವಾ ಅಸ್ಯ । "ಯಸ್ಮಾತ್  
ಕಾಲ್ಯಾದಿಜಿಹ್ವಾಶ್ಚ ಅಗ್ನೇರ್ಭವತಿ ಸಪ್ತ ಚ । ಸ ಸಪ್ತಜಿಹ್ವ  
ಆಖ್ಯಾತ: ಲೋಕಸಂತರ್ಪಣೇ ರತ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿ: ।  
"ಸಹಸ್ರಾಚಿ: ಸಪ್ತಜಿಹ್ವ: ಸಪ್ತೇಷಾ: ಸಪ್ತವಾಹನ:" ವಿಂ ಸಂ ।  
2. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಅಗ್ನಿಯ ಸಪ್ತ ಜಿಹ್ವೆಗಳು: (1) ಕಾಲಿ  
(2) ಕರಾಲಿ (3) ಮನೋಜವಾ (4) ಸುಗೋಹಿತಾ (5) ಸುಬ್ರೂವರ್ಣಾ  
(6) ತದ್ರಾ ಮಂತ್ರಾ (7) ಪ್ರದೋಷಾ ।

**ಸಪ್ತಜ್ವಾಲ ಸಪ್ತಜ್ವಾಲ (ಪುಂ)** ಅಗ್ನಿ. ಸಪ್ತ ಜ್ವಾಲಾ ಅಸ್ಯ ।  
**ಸಪ್ತತನ್ತು ಸಪ್ತತನ್ತು (ಪುಂ)** ಯಾಗ, ಯಜ್ಞ. ಸಪ್ತಮಿ:  
ಕ್ಷಂದೋಮಿ: ಅಗ್ನಿಜಿಹ್ವಾಭಿರ್ವಾ ತನ್ಯತೇ — ತನ್ತು (ವಿಸ್ತಾರೇ)  
"ತುನ್" (೩ಂ ೧-೬೯) । "ಸಪ್ತತನ್ತುಮಧಿಗನ್ತುಮಿಚ್ಛತ:  
ಕುರ್ವಂತು ಪ್ರಹಮನುಜಯಾ ಮಮ" ಮಾಘಂ ೧೪-೬ ।

**ಸಪ್ತತಿ ಸಪ್ತತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಎಪ್ಪತ್ತು ಸಂಖ್ಯೆ. ಸಪ್ತದಶತ:  
ಪರಿಮಾಣಮಸ್ಯ "ತಿ:" (೫-೧-೫೯) । ನಿಪಾಂ ।  
"ನವತಿಯೊಂಜನಾನಾಂ ಚ ಸಹಸ್ರಾಣಾಂ ಚ ಸಪ್ತತಿ: । ಯಾವದ್ಭಟಿಕ-  
ಮಾಶ್ರೇಣ ತಾವಚ್ಚಲತಿ ಭಾಸ್ಕರ:" ।

**ಸಪ್ತತಿಸತ ಸಪ್ತತಿಸತ (ವಿಂ)** ಎಪ್ಪತ್ತನೆಯ. ಸಪ್ತತೆ:  
ಪೂರ್ಣ: "ಓಟ್" (೫-೨-೪೮) । ಓಟೋ ವಾ "ತಮಟ್"  
(೫-೨-೫೬) । ಪಕ್ಷೇ ಸಪ್ತತ: ।

**ಸಪ್ತದಶ ಸಪ್ತದಶ (ವಿಂ)** ಹದಿನೇಳನೆಯ. ಸಪ್ತದಶಾನಾಂ  
ಪೂರ್ಣ: "ಓಟ್" (೫-೨-೪೮) । "ತತ: ಸಪ್ತದಶಂ ಜಾತ:  
ಸತ್ಯವತ್ಯಾಂ ಪರಾಶರಾತ್ । ಚಕ್ರೇ ವೇದತರೋ: ಶಾಸ್ತ್ರಾ ದೃಷ್ಟಾ  
ಪುಂಸೋಽಪ್ಯಮೇಷಸ:" ಶಾಂ ೧-೩-೨೧ ।



ಸಪ್ತದಶನ್ ಸಪ್ತದಶನ್ (ಪಂ. ೧೦೦) 1. ಹದಿನೇಳು ಸಂಖ್ಯೆ. ಸಪ್ತಭಿರಧಿಕಾ ದಶ | (ಪಂ.) 2. ಹದಿನೇಳು ಸಂಖ್ಯೆಯುಳ್ಳ.

ಸಪ್ತದೀಪತಿ ಸಪ್ತದೀಪತಿ (ಪಂ.) ಅಗ್ನಿ. ಸಪ್ತ ದೀಪಿತಯೋಷ್ಯ | "ಸ್ವರ್ಣತಪ್ತವೃತಮನ್ವದೀಪತಿ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | ಸಪ್ತದ್ವೀಪಾ ಸಪ್ತದ್ವೀಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೃಥ್ವಿ, ವಸುಮತಿ, ಭೂಮಿ. ಸಪ್ತ ದ್ವೀಪಾ ಯಸ್ಯಾಮ್ | [ಎವರಕ್ಯ "ಜಮ್ಬದ್ವೀಪ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಸಪ್ತಧಾ ಸಪ್ತಧಾ (ಅನ್ಯಂ) ಏಳು ವಿಧವಾಗಿ, ಏಳು ಪ್ರಕಾರವಾಗಿ. ಸಪ್ತನ್ "ಧಾ" (೪-೨-೪೨) | "ಸ ತಾನ್ ಗೈರಿಕ-ರಕ್ಷಾಜ್ಞಾನ್ ಸಪ್ತವಾ ಸ್ತುತಿಸಂರಾನ್" ಯಾದಂ ೨೨-೧೪೨ |

ಸಪ್ತಧಾತು ಸಪ್ತಧಾತು (ಪಂ. ೧೦೦) ದೇಹಮೊಳಗಿನ ರಸ ಮೊದಲಾದ ಏಳು ಧಾತುಗಳು. ಸಪ್ತಭುಣಿತಾ ಧಾತವಃ | ಸಪ್ತಧಾತುಗಳು: (1) ರಸ (2) ರಕ್ತ (3) ಮಾಸ (4) ಮೇದಸ್ಸು (5) ಅಪ್ಪಿ (6) ಮಜ್ಜೆ ಮತ್ತು (7) ವಿರಕ್ತ (ಶಕ್ರ). "ರಸಾಸ್ತನಾತಮೇದೋಸ್ಯಮಜ್ಜಾನಃ ಶುಕ್ರಸಂಯುತಾಃ | ಶರೀರಸ್ಯಾ ಇಮೇ ಜೇಯಾಃ ಪಿಂಡಿತಃ ಸಪ್ತ ಧಾತವಃ" |

ಸಪ್ತನ್ ಸಪ್ತನ್ (ಪಂ.) ಏಳು ಸಂಖ್ಯೆ. ಷಪ್ (ಸಮವಾಚ್ಯ) "ಕನಿನ್" ತುಡ್ ಚ (ತಂ ೧-೧೪೪) |

ಸಪ್ತಪದೀ ಸಪ್ತಪದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿವಾಹದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ ಸಪ್ತಪದೀಶಾಸ್ತ್ರ. ವಿವಾಹದಲ್ಲಿ ವಧುವು ಏಳು ಹೆಜ್ಜೆಗಳನ್ನು ಮಂತ್ರಪೂರ್ವಕ ಇಡುವ ಶಾಸ್ತ್ರ. ಸಪ್ತ ಮಂಡಲವಾಗಿ ನಿರ್ವಿಹಿತವಾದ ತುಡುಲದ ಮೇಲೆ ವರನು ವಧುವಿನ ಪಾಣೆಯನ್ನು ಹಿಡಿದು ಮಂತ್ರಪೂರ್ವಕ ಅಗ್ನಿಪ್ರವಕ್ಷಣಿ ಮಾಡಿ ಏಳು ಹೆಜ್ಜೆಗಳನ್ನು ಇಡಿಸುವುದು ಸಪ್ತಪದೀಶಾಸ್ತ್ರ. ಸಪ್ತಾನಾಂ ಪದಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರ: "ತೀಪ್" (೪-೧-೨೧) |

ಸಪ್ತಪರ್ಣ ಸಪ್ತಪರ್ಣ (ಪಂ.) ಏಳೆಲೆ ಬಾಳೆಗಡೆ. ಸಪ್ತ ಪರ್ಣಾನ್ಯಸ್ಯ | "ಪ್ರಸಕ್ತಃ ಸಪ್ತಪರ್ಣಾನಾಂ ಮದಗನ್ಧಿಭಿರಾಹುತಃ | ಅಸುಗ್ರೇವ ತನ್ನಾಣಾಃ ಸಪ್ತವೇವ ಪ್ರಸುತುತು:" ರವುಂ ೪-೨೩ |

ಸಪ್ತಪಾತಾಲ ಸಪ್ತಪಾತಾಲ (ನಂ) ಏಳು ಪಾತಾಲ ಲೋಕಗಳು, ಏಳು ಅಧೋಲೋಕಗಳು. ಸಪ್ತಾನಾಂ ಪಾತಾಲಾನಾಂ ಸಮಾಹಾರಃ | ಸಪ್ತ ಪಾತಾಲಗಳು: (1) ಅತಲಮ್ (2) ವಿತಲಮ್ (3) ಸುತಲಮ್ (4) ತಲಾತಲಮ್ (5) ರಸಾತಲಮ್ (6) ಮಾತಲಮ್ ಮತ್ತು (7) ಪಾತಾಲಮ್ |

ಸಪ್ತಪ್ರಕೃತಿ ಸಪ್ತಪ್ರಕೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ ೧೦೦) ರಾಜ್ಯದ ಏಳು ಅಂಗಗಳು. (1) ಸ್ವಾಮಿ (2) ಅಮಾತ್ಯ (3) ಸುಹೃತ್ತು (4) ಕೋಶ (ಬೊಕ್ಕಸ) (5) ರಾಷ್ಟ್ರ (6) ದುರ್ಗ ಮತ್ತು (7) ಬಲ (ಸೈನ್ಯ) ಇವು ಸಪ್ತ ಪ್ರಕೃತಿಗಳು. ಪಾರರೂ ಸೇರಿ ರಾಜ್ಯಾಂಗಗಳು ಎಂಬುವು.

ಸಪ್ತಭದ್ರ ಸಪ್ತಭದ್ರ (ಪಂ.) ಶಿರೀಷವೃಕ್ಷ. ಬಾಗಮರ. ಸಪ್ತಸು ಸ್ಥಾನೇಷು ಭದ್ರಮಸ್ಯ |

ಸಪ್ತಭೂಮಿಕ ಸಪ್ತಭೂಮಿಕ (ಪಂ.) ಏಳು ಮಹಡಿಗಳುಳ್ಳ ಮನೆ. ಸಪ್ತಭೂಮಿಕಾ ಯಸ್ಯ |

ಸಪ್ತಮ ಸಪ್ತಮ (ಪಂ.) ಏಳನೆಯ. ಸಪ್ತನ್ "ಡಟ್" (೪-೨-೪೮) | ಡಟೊ ಮಜಾಗಮ: (೪-೨-೪೯) | "ಅದ್ಭುತ-ಸ್ಥಿತೀರತಾಂತರಬಾಹ್ಯಃ ಸಪ್ತಮಸ್ತು ಸಮಯೋಷ್ಯಮಪೂರ್ವಃ" ಯಾದಂ ೨೧-೧೬ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ತೀಪ್" (೪-೧-೧೪) | ಸಪ್ತಮಿ ಸಪ್ತಮೀ |

ಸಪ್ತಮಿ ಸಪ್ತಮೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾಸದ ಶುಕ್ಲ ಮತ್ತು ಕೃಷ್ಣ ಪಕ್ಷಗಳ ಏಳನೇ ತಿಥಿ. ಸಪ್ತಮ "ತೀಪ್" (೪-೧-೧೪) | ಶಕ್ಲಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರನು ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಲು ಏಳನೇ ಕರೆಯು ತುಂಬುವುದು. ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಕ್ಷಯಹೊಂದಲು ಏಳನೆಯ ಕರೆಯ ಹ್ರಾಸವಾಗುವುದು.

ಸಪ್ತಾಂಶಿ ಸಪ್ತಾಂಶಿ (ಪಂ. ೧೦೦) ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಾನಸ ಪುತ್ರರಾದ ಏಳು ಮಂದಿ ಯಕ್ಷಿಗಳು. ಸಪ್ತಾಂಶಯಃ |

1. ಸ್ವಾಯಂಭುವಮನ್ವಂತರದ ಸಪ್ತಾಂಶಿಗಳು: (1) ಮರೇಚಿ: (2) ಅತ್ರಿ: (3) ಪುಲಹ: (4) ಪುಲಸ್ತ್ಯ: (5) ಕರು: (6) ಅಜ್ಞಿರಾ: ಮತ್ತು (7) ವಸಿಷ್ಠ: |

2. ಸ್ವಾರೋಚಿಷಮನ್ವಂತರ—“ಽಜಂಸ್ತಾಮಸ್ತಥಾ ಪ್ರಾಣೋ ದತ್ತೋಲಿಷ್ಠಭಸ್ತಥಾ | ನಿಶ್ವರಶ್ಚಾರ್ವಕೀರಾಶ್ಚ ತತ್ರ ಸಪ್ತರ್ಷಯೋಽಭವನ್” ||

3. ಉತ್ತಮಮನ್ವಂತರ—ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿಯ ಪುತ್ರರಾದ ಪ್ರವದ ಮೊದಲಾದವರು. “ಸ್ವತೇಜಸಾ ಹಿ ತಪಸೋ ವಸಿಷ್ಠಸ್ಯ ಮಹಾತ್ಮನಃ | ತನಯಾಶ್ಚಾಂತರೇ ತಸ್ಮಿನ್ ಸಪ್ತಸಪ್ತರ್ಷಯೋಽಭವನ್” ||

4. ತಾಮಸಮನ್ವಂತರ—“ಜ್ಯೋತಿರ್ವಿಮಾ ಪೃಥುಃ ಕಾವ್ಯಶ್ಚೇತೋಽಗ್ನಿರ್ಬಲಕಸ್ತಥಾ | ಪ್ರವೀರಶ್ಚ ತಥಾ ಬ್ರಹ್ಮಾನ್ ಸಪ್ತ ಸಪ್ತರ್ಷಯೋಽಭವನ್” ||

5. ರೈವತಮನ್ವಂತರ—“ಹಿರಣ್ಯರೆತಾ ವೇದಶ್ರೀಲಂಕ-ವಾಹುಸ್ತಥಾಪರಃ | ವೇದವಾಹುಃ ಸುಗ್ರಾಮಾ ಚ ಪರ್ಜನ್ಯಶ್ಚ ಮಹಾಮುನಿಃ | ವಸಿಷ್ಠಶ್ಚ ಮಹಾಭಾಗೋ ವೇದವೇದಾಂತಪಾರಗಃ | ಏತೇ ಸಪ್ತರ್ಷಯಾಶ್ಚಾನ್ ರೇವತಸ್ಯಾಂತರೇ ಮನೋಃ” ||

6. ಚಾಕ್ಷುಷಮನ್ವಂತರ—“ಸುಮೇಧಾ ವಿರಜಾಶ್ಚೇವ ಹವಿಷ್ಮಾನುಷ್ಣತೋ ಮಧುಃ | ಅತಿನಾಮಾ ಸಹಿಷ್ಣುಶ್ಚ ಸಪ್ತಾಸನ್ನಿತಿ ಚರ್ಷಯಃ” ||

7. ಈಗ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ ನೈವಸ್ವತಮನ್ವಂತರ—“ಅಶ್ವಿಶ್ಚೇವ ವಸಿಷ್ಠಶ್ಚ ಕಾಶ್ಯಪಶ್ಚ ಮಹಾನೃಪಿಃ | ಗೌತಮಶ್ಚ



ಖರದಾಜೋ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರೋಽಥ ಕೌಶಿಕಃ ॥ ತಥೈವ ಪುತ್ರೋ ಮಗವಾನ್  
ಶ್ರುತೋಕ್ತಸ್ಯ ಮಹಾತ್ಮನಃ । ಜಮದಗ್ನಿಸ್ತು ಸಪ್ತೇ ಮುನಯೋಽಪಿ  
ತಥಾಂತರೇ ॥

8. ಸಾವರ್ಣ್ಯಮನ್ವಂತರ—“ರಾಮೋ ವ್ಯಾಸೋ ಗಾಲವಶ್ಚ  
ದೀಪ್ತಿಮಾನ್ ಕೃಪ ಏವ ಚ । ಋಷ್ಯಶೃಂಗಸ್ತಥಾ ದ್ರೋಣಿಃ ತತ್ರ  
ಸಪ್ತರ್ಷಯೋಽಭವನ್ ॥

9. ದಕ್ಷಸಾವರ್ಣ್ಯಮನ್ವಂತರ—“ಮೇಧಾತಿಥಿರ್ವಸುಃ  
ಸತ್ಯೋ ಜ್ಯೋತಿಷ್ಮಾನ್ ದ್ಯುತಿಮಾಸ್ತಥಾ । ಸಪ್ತರ್ಷಯೋಽಪಿ ಸಬಲ-  
ಸ್ತಥಾನ್ಯೋ ಹವ್ಯವಾಹನಃ ॥

10. ಬೃಹಸ್ಪತಿಸಾವರ್ಣ್ಯಮನ್ವಂತರ—“ಆಪೋ ಭೂತಿ-  
ಹವಿಷ್ಮಾನ್ ಶ್ವಃ ಸುಕ್ರತೀ ಸತ್ಯ ಏವ ಚ । ನಾಭಾಗೋಽಪ್ರತಿಮಶ್ಚೈವ  
ವಾಸಿಷ್ಠಶ್ಚೈವ ಸಪ್ತಮಃ ॥

11. ಧರ್ಮಸಾವರ್ಣ್ಯಮನ್ವಂತರ—“ಹವಿಷ್ಮಾನ್ ಶ್ವಃ  
ವರಿಷ್ಠಶ್ಚ ಋಷಿರನ್ಯಸ್ತಥಾಣಿಃ । ನಿಶ್ವರಶ್ಚಾನಧಶ್ಚೈವ  
ವಿಷ್ಣಿಶ್ಚಾನ್ಯೋ ಮಹಾಮುನಿಃ । ಸಪ್ತರ್ಷಯೋಽಂತರೇ ತಸ್ಮಿನ್ ಅಗ್ನಿ-  
ದೇವಶ್ಚ ಸಪ್ತಮಃ ॥

12. ರುದ್ರಸಾವರ್ಣ್ಯಮನ್ವಂತರ—“ದ್ಯುತಿಸ್ತಪಸ್ವೀ  
ಸುತಪಾಸ್ತಗೋಮೃತಿಸ್ತಪೋನಿಧಿಃ । ತಪೋರತಿಸ್ತಥೈವಾನ್ಯಃ ಸಪ್ತ-  
ಮಸ್ತು ತಪೋಧೃತಿಃ ॥

13. ದೇವಸಾವರ್ಣ್ಯಮನ್ವಂತರ—“ಧೃತಿಮಾನ್ ವಯ-  
ಶ್ಚೈವ ತತ್ವದರ್ಶಿ ನಿಹತ್ಸುಕಃ । ನಿರ್ಮೋಹಃ ಸುತಗಾಶ್ಚಾನ್ಯೋ  
ನಿಷ್ಪ್ರಕಂಪಶ್ಚ ಸಪ್ತಮಃ ॥

14. ಇಂದ್ರಸಾವರ್ಣ್ಯಮನ್ವಂತರ—“ಅಗ್ನಿಃ ಪ್ರ-  
ಶ್ವಾನಿವಾಹುಶ್ಚ ಶುಚಿರ್ಮುಕ್ತೋಽಥ ಮಾಧವಃ । ಶುಕ್ರೋಽಜಿತಶ್ಚ  
ಸಪ್ತೇ ತದಾ ಸಪ್ತರ್ಷಯಃ ಸ್ಮೃತಾಃ ॥

ಸಪ್ತಲಾ ಸಪ್ತಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೀರಜಾಜಿ ಗಿಡ. 2.  
ಮುಂಡಕಳ್ಳಿ. 3. ಗುಲಗಂಜಿ. 4. ಹಸುರು ಪಾದು.  
ಸಪ್ತ ಲಾತಿ—ಲಾ (ಆದಾನೆ) “ಕಃ” (೩-೨-೩) ।  
“ಅಥ ಸಪ್ತಲಾ । ನವಮಾಲೀಚಮಂಕುಷಾಗುಜಾಸು ಪಾಡಲಿ  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” ಮೇದಿಂ ।

ಸಪ್ತಲೋಕ ಸಪ್ತಲೋಕ (ಪುಂ) ಏಳು ಲೋಕಗಳು.  
(1) ಭೂಲೋಕ (2) ಭುವಲೋಕ (3) ಸುವಲೋಕ  
(4) ಮಹಲೋಕ (5) ಜನಲೋಕ (6) ತಪೋಲೋಕ  
ಮತ್ತು (7) ಸತ್ಯಲೋಕ. “ಸಪ್ತಸಾಮೋಪಗೀತಂ ತ್ವಾಂ ಸಪ್ತಾಣ್ಯ-  
ಜಲೇಶಯಮ್ । ಸಪ್ತಾರ್ಚಿರ್ಮುನಿಮಾಚರ್ಯುಃ ಸಪ್ತಲೋಕೈಕಸಂಶ್ರಯಮ್”  
ರಘುಂ ೧೦-೨೧ ।

ಸಪ್ತವಿಂಶ ಸಪ್ತವಿಂಶ (ವಿಂ) ಇಪ್ಪತ್ತೇಳನೆಯ. ಸಪ್ತ-  
ವಿಂಶತಃ ಪೂರ್ಣಃ “ಛಡ್” (೪-೨-೪೮) ।

ಸಪ್ತವಿಂಶತಿ ಸಪ್ತವಿಂಶತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು. ಸಪ್ತ-  
ವಿಕಾ ವಿಂಶತಿಃ ।

ಸಪ್ತಸಪ್ತಿ ಸಪ್ತಸಪ್ತಿ (ಪುಂ) “ಸಪ್ತ” ಮೆಂಬ ಕುಮಾರೇ  
ಯುಳ್ಳ ಸೂರ್ಯ. ಸಪ್ತಮಿರ್ಮಿಮಿಹಲಕ್ಷಿತಃ ಸಪ್ತಿಸ್ಸವಿ  
ಯಸ್ಯ । “ಸಪ್ತ ಯುಜಂತಿ ರಥಮೇಕವಕ್ರಮೇಕೋಽಸವಿ ವಹತಿ  
ಸಪ್ತನಾಮ” ಶ್ರುತಿಃ । “ಹವಿರ್ಮುಜಾಮೇವತಾಂ ಚತುರ್ಣಿ ಮಥ್ಯ  
ಲಲಾಟಂ ತಪಸ್ತಸಪ್ತಿಃ” ರಘುಂ ೧೩-೪೧ ।

ಸಪ್ತಸಾಗರ ಸಪ್ತಸಾಗರ (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) ಏಳು ಸಮುದ್ರ  
ಗಳು. ಸಪ್ತಗುಣಿತಾಃ ಸಾಗರಾಃ । (1) ಲವಣ (2) ಇಕ್ಷು  
(3) ಸುರಾ (4) ಸರ್ಪಿಣಿ (5) ದಧಿ (6) ಕ್ಷೀರ ಮತ್ತು  
(7) ಜಲ. ಇವು ಸಪ್ತಸಮುದ್ರಗಳು.

ಸಪ್ತಾರ್ಚಿಸ್ ಸಪ್ತಾರ್ಚಿಸ್ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. ಸಪ್ತ  
ಅರ್ಚಿಷಿ ಯಸ್ಯ । “ಸಪ್ತಸಾಮೋಪಗೀತಂ ತ್ವಾಂ ಸಪ್ತಾಣ್ಯಜಲೇಶ-  
ಯಮ್ । ಸಪ್ತಾರ್ಚಿರ್ಮುನಿಮಾಚರ್ಯುಃ ಸಪ್ತಲೋಕೈಕಸಂಶ್ರಯಮ್” ರಘುಂ  
೧೦-೨೧ । 2. ಶರೀರ. (ವಿಂ) 3. ಕ್ರೂರದೃಷ್ಟಿ  
ಯುಳ್ಳವನು. “ಸಪ್ತಾರ್ಚಿಃ ಪಾವಕೇ ಪುನಿ ಕ್ಷೂರಚಕ್ಷುಷಿ ತು  
ತ್ರಿಭು” ಮೇದಿಂ । “ಛಾಯಾಸುತೋಽಸಿತಃ ಸೌರೀಃ ಸಪ್ತಾರ್ಚಿ  
ರೇವತೀಭವಃ” ಅಭಿಂ ಚಿಂ ।

ಸಪ್ತಾರ್ಣವ ಸಪ್ತಾರ್ಣವ (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) ಸಪ್ತ ಸಾಗರಗಳು,  
ಏಳು ಸಮುದ್ರಗಳು. ಸಪ್ತ ಅರ್ಣವಾಃ । “ಶಶಕ್ತು  
ವಿಸ್ಮಯಾದಿಹಃ ಸಪ್ತಾರ್ಣವಸಮಾಹುತಿಮ್” ಯಾದಂ ೨೨-೨೦೩ ।

ಸಪ್ತಾಶ್ವ ಸಪ್ತಾಶ್ವ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ, “ಸಪ್ತ” ಮೆಂಬ  
ಕುಮಾರೇಯುಳ್ಳ ಭಾಸ್ಕರ. ಸಪ್ತಮಿರ್ಮಿಮಿಹಲಕ್ಷಿತಃ  
ಅಸವಿ ಯಸ್ಯ । ಸೂರ್ಯನ ರಥಕ್ಕೆ ಏಳು ಕುಮಾರಿಗಳೆಂದು  
ಕೆಲವರು ಹೇಳುವರು. ಶ್ರುತಿಯ ಪ್ರಕಾರ ಒಂದೇ ಕುಮಾರಿಗೆ  
ಸಪ್ತವೆಂದು ಹೆಸರು. ಈ ಒಂದೇ ಕುಮಾರೇಯು ಸೂರ್ಯನ  
ರಥವನ್ನು ಎಳೆಯುವುದು. [“ಸಪ್ತಸಪ್ತಿ” ನೋಡಿ.]  
2. ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

ಸಪ್ತಿ ಸಪ್ತಿ (ಪುಂ) ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. ಷಪ (ಸಮವಾಢೆ)  
“ಕ್ವಿ” (೩-೩-೧೭೪) ।

ಸಫಲ ಸಫಲ (ವಿಂ) 1. ಫಲಸಹಿತವಾದ, ಪ್ರಯೋಜನ  
ಸಹಿತವಾದ, ಅಪೋಘವಾದ. ಫಲೇನ ಸಹ ವರ್ತತೆ ।  
“ಸಫಲೋ ರಾಘವೋದ್ಯೋಗಃ” । 2. ಫಲಸಹಿತವಾದ, ಹಣ್ಣು  
ಕಾಯಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. “ಅಶ್ವದಾಶ್ರಮಪದಂ ಸಫಲಸ್ತಿನಾಥ-  
ಪಾದಪಮ್” ಕಥಾಸಂ ।

ಸಬಲ ಸಬಲ (ವಿಂ) 1. ಸೈನ್ಯಸಹಿತವಾದ, ಸೇನಾಸಮೇತ  
ನಾದ. ಬಲೇನ ಸಹ ವರ್ತತೆ । 2. ಶಕ್ತಿಮತ, ಪರಾಕ್ರಮ  
ಶಾಲಿ. 3. ಸಾಮರ್ಥ್ಯಶಾಲಿ.



**ಸಮಾಜ ಸಭಾಸದ್ (ನಂ)** 1. ಸಮಾನ ಶಾಖೆಯಲ್ಲಿ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವುದು, ಪರಸ್ಪರ ಒಂದೇ ಶಾಖೆಯ ವ್ರತ (ವೇದಾಧ್ಯಯನ) ವನ್ನು ಆಚರಿಸುವುದು. **ಏಕಸ್ಮಿನ್ ಬ್ರಹ್ಮಣಿ ವ್ರತಾಚರಣಮ್** | ಸಮಾಜ ಸಮಾನವೇದ: ಲಕ್ಷಣಯಾ ಸಮಾನವೇದಾಧ್ಯಯನಮ್, ತಸ್ಯ ಚರ್ಮನುಷ್ಠಾನಮ್ | "ಶಕ್ತುಂತಯ:ಶೋಣಮುಖಾ ಭಜಂತೇ ಸಮಾಜವ್ಯಯಂ ಸಹ ತೇಷಾಂಭಿಃ" | **ಯಾದಂ ೧೮-೬೧** | 2. ಸಮಾಧ್ಯಾಯಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ, ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಸಂಗ ಮಾಡುವುದು.

**ಸಮಾಜಾಚಾರಿನ್ ಸಭಾಸದ್ (ಪುಂ)** 1. ಪರಸ್ಪರ ಸಮಾನ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ರೂಪವಾದ ವ್ರತವನ್ನು ಆಚರಿಸುವ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ, ಪರಸ್ಪರ ಒಂದೇ ಶಾಖೆಯ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ. ಸಮಾನ ಬ್ರಹ್ಮ ವೇದ: ಲಕ್ಷಣಯಾ ತದಧ್ಯಯನರೂಪಂ ವ್ರತಮ್, ತಚ್ಚರತಿ—ಚರ (ಗತೀ) | "ಗಿತಿ:" (೩-೨-೮೦) | ಒಬ್ಬ ಗುರುವಿನಲ್ಲಿ ಒಂದೇ ಶಾಖೆಯ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳು ಸಭಾಸದ್‌ಗಳು. "ಏಕಬ್ರಹ್ಮವ್ರತಾಚಾರಾ ಮಿಥ: ಸಮಾಜಾಚಾರಿಣ:" | **ಅಮಂ** | 2. ಸುಖ ದುಃಖಗಳಲ್ಲಿ ಸಮಾನ ಭಾಗವುಳ್ಳವನು. ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಜೀವ್" (೪-೧-೫) | —ಚಾರಿಣಿ —ಚಾರಿಣೀ. "ದುಃಖಸಮಾಜಾಚಾರಿಣಿ ತರಲಿಕಾ ಕ್ವ ಗತಾ" | **ಕಾದಂ** |

**ಸಮಾಜ ಸಭಾಸದ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪತಿಯುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು, ಪತಿಯೊಡನೆ ಇರುವ ಹೆಂಗಸು, ಸುಖಂಗಳಿ. ಭರ್ತಾ ಸಹ ವರ್ತತೇ | ಸಹಸ್ಯ ಸಮಾಜ: | "ಕಪ್" (೫-೪-೧೫೩) | "ಪತಿವತ್ನಿ ಸಮಾಜಾ" | **ಅಮಂ** |

**ಸಮಾ ಸಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಕಾರ್ಯಕಲಾಪ ಪರಿಶೀಲನೆಗಾಗಿ ಜನರು ಒಟ್ಟು ಸೇರುವುದು. ಸಹ ಭಾಷ್ಯವ್ರತ—ಭಾ (ದೀಪ್ತೀ) | "ಅಹ್" (೩-೩-೧೦೬) | "ವ್ಯವೃತ್ತಿಷ್ಠ ಸಮಾಜೇವಾಮಸೀ ನರಶಿಖಿತ್ರಯೀ" | **ಮಾಘಂ ೨-೩** | 2. ಜನರ ಗುಂಪು. ಸಮಾರಂಭಕ್ಕಾಗಿ ಸೇರುವ ಜನರ ಸಮೂಹ. 3. ಸಮಾ ಲೋಚನೆಗಾಗಿ ಸೇರುವ ಜನರ ಸಮೂಹ. ರಾಜನ ಆಸ್ಥಾನ ಪ್ರಜಾಪ್ರತಿನಿಧಿ ಸಭೆ ಮುಂತಾದುದು. "ನ ಸಾ ಸಮಾ ಯತ್ರ ನ ಸಂತಿ ವೃದ್ಧಾ:" | **ಹಿತಂ** | 4. ಸಾಮಾಜಿಕ, ಸಭಾಸದ. 5. ವಿದ್ವಾಂಸರ ಗೋಷ್ಠಿ, ಪಂಡಿತರ ಪರಿಷತ್ತು. 6. ಮಂದಿರ, ಗೃಹ. 7. ದ್ಯೂತ, ಜೂಜು. "ಸಮಾ ಧೃತಸಮೂಹಯೋ: | ಗೋಷ್ಠಯಾ ಸಮ್ಯಕ್ ಶಾಲಾಯಾಮ್" | **ಹೇಮಂ** | "ಸಮಾ ಸಾಮಾಜಿಕೇ ಗೋಷ್ಠಯಾ ಧೃತಮಂದಿರಯೋರಪಿ" | **ಮೇದಿಂ** |

**ಸಮಾಜನ ಸಭಾಸದ್ (ನಂ)** 1. ಗೌರವಿಸಿ ಸಂತೋಷ ಪಡಿಸುವುದು, ಮರ್ಯಾದೆ ಮಾಡಿ ಆನಂದಪಡಿಸುವುದು.

"ಸಮಾಜನಾರ್ಥಂ ತನುತೇ ಭವತ್ಯಾ: ಪ್ರಾಯ:ಪದನ್ಯಾಸಪಡೀಮುದನ್ವಾನ್" | **ಯಾದಂ ೧೮-೧೧೨** | 2. ಅಲಿಂಗನ ಕುಶಲಪ್ರತ್ಯಾಧಿ ಗಳಿಂದ ಪ್ರೀತಿ ತೋರಿಸುವುದು. ಸಮಾಜ (ಪ್ರೀತಿದರ್ಶನೇ) | "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | "ಅಯ ದ್ವೇ ಆನಂದನಸಮಾಜನೇ" | **ಅಮಂ** | "ಸಮಾಜನೇ ಮೇ ಭುಜಮೂರ್ವವಾಹು:ಸಂವೇತರಂ ಪ್ರಾಕೃಮಿತ: ಪ್ರಯುಕ್ತೇ" | **ರಘುಂ ೧೩-೪೩** | (ವಿಂ) 3. ಪ್ರೀತಿಯನ್ನು ತೋರಿಸುವ. "ಪ್ರಮೃತನಾಗಾಶ್ವರಥಂ ಸಮಾಜನಂ ಸಮೃದ್ಧಿಯುಕ್ತಂ ಬಹುಪಾನಭೋಜನಮ್" | **ಭಾಂ ವನಂ** |

**ಸಮಾಪತಿ ಸಭಾಸದ್ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ಸಭೆಯ ಅಧ್ಯಕ್ಷ, ಸಭೆಯ ಕಾರ್ಯಕಲಾಪಗಳನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸುವ ಯಜಮಾನ. ಸಮಾಪಾ: ಪತಿ: | 2. ಜೂಜಿನ ಮನೆಯ ಯಜಮಾನ.

**ಸಮಾಸದ್ ಸಭಾಸದ್ (ಪುಂ)** ಸಭೆ, ಸಭೆಯಲ್ಲಿರುವವನು, ಸಾಮಾಜಿಕ. ಸಮಾಪಾ ಸಿದ್ಧತಿ—ಪದ್ಧತಿ (ವಿಶರಣಾದಿ) | "ಕಿವ್" (೩-೨-೬೧) | "ಶ್ರುತಾಧ್ಯಯನಸಂಪನ್ನಾ: ಧರ್ಮಜ್ಞಾ: ಸತ್ಯವಾದಿನ: | ರಾಜಾ ಸಮಾಸದ: ಕಾರ್ಯಾ: ಶತ್ರು ಮಿತ್ರೇ ಚ ಯೇ ಸಮಾ:" | **ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೨** | "ಯಾಕ್ರಮಂ ಸಾತ್ಯಕಿರಹಸ್ತವಾದೀ ಸಮಾವಯಾಮಾಸ ಸಮಾಸದಸ್ತಾನ್" | **ಯಾದಂ ೧೩-೭೬** |

**ಸಮಾಸ್ತಾರ ಸಭಾಸದ್ (ಪುಂ)** ಸಭೆ, ಸಭೆಯಲ್ಲಿರುವವನು. ಸಮಾ ಸ್ತೃಣಾತಿ—ಸ್ತೃಣ್ (ಆಚ್ಛಾದನೇ) | "ಅನ್" (೩-೨-೧) |

**ಸಮಿ(ಮಿ)ಕ ಸಭಾ(ಭಿ)ಕ (ಪುಂ)** ಜೂಜನ್ನು ಆಡಿಸುವವನು, ಜೂಜಿನ ಮನೆಯ ಯಜಮಾನ. ಸಮಾ ಧೃತ-ಮ,ಶ್ವರವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಠನ್" (೫-೨-೧೧೬) | "ಗ್ಲಹೇ ಶತಿಕವೃದ್ಧೇಸ್ತು ಸಮಿಕಂ ಪಶ್ಚಕಂ ಶತಮ್" | **ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೯೯** |

**ಸಮ್ಯ ಸಭ್ಯ (ಪುಂ)** 1. ಸತ್ಕುರುಷ, ಸಾಧು. 2. ಸಭೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದವನು, ಸಭೆಯಲ್ಲಿರಲು ಅರ್ಹನಾದವನು. ಸಮಾಪಾ ಸಾಧು: "ಯ:" (೪-೪-೧೦೫) | "ತಸ್ಮೈ ಸಮ್ಯಾ: ಸಮಾಪಯಿ ಗೋಷ್ಠೇ ಗುಪ್ತತಮೇಂದ್ರಿಯಾ: | ಅಹಂಗಾಮಹಂತೇ ಚಕ್ರು: ಮುನಶ್ಚೇ ನಯಚಕ್ಷುಃ" | **ರಘುಂ ೧-೫೫** | 3. ಜೂಜಾಡಿಸುವವನು, ಜೂಜಿನ ಮನೆಯ ಯಜಮಾನ. (ವಿಂ) 4. ನಂಬಿಕೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದವನು, ವಿಶ್ವಾಸಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯನಾದವನು. 5. ಸಭೆಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದವನು.

**ಸಮ್ಯತಾ ಸಭ್ಯತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಒಳ್ಳೆಯತನ, ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆ. ಸಮ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೫-೧-೧೧೯) |

**ಸಮ್ ಸಮ್ (ಅವ್ಯಂ)** ಇದೊಂದು ಉಪಸರ್ಗವ್ಯಯ. ಈ ಉಪಸರ್ಗವು ಸುಬಂತ್ ಮತ್ತು ತಿಜನ್ತ್ ಪದಗಳೊಡನೆ ಸೇರಿದಾಗ ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ ದ್ಯೋತಕವಾಗುವುದು. 1. ತೋಭನ, ಕಲ್ಯಾಣ, ಮಂಗಳ. 2. ಸುಖ. "ಸಮ್ ಕಲ್ಯಾಣೇ ಸುಖೇ ಸಮ್ ತು ಶೋಭನಾರ್ಥಸಮಾರ್ಥಯೋ:"



ಮೇದಿಂ 1. ಸಮಾನ. ಸದೃಶ. 4. ಸಂಗತ. ಸಮಂಜಸ. 5. ಪ್ರಕೃತ್ಯು, ಉತ್ತಮ. ಸಮ ಸಜ್ಜಾರ್ಥ ಪ್ರಕೃಷ್ಟಾರ್ಥ ಸೌಮನಾಥ-ಸಮಾರ್ಥಯೋ: " ಹೇಮಂ 1. 6. ಸಮಚ್ಛಯ. 7. ಸಂಗ, ಸಂಬಂಧ. 8. ಸಮ್ಯಕ್, ಚೆನ್ನಾಗಿ. "ಸಮೇಧಿತಸ್ತಸ್ಯ ವಿವಾಹವಹ್ನಿ: ಪುರೋಧಸಾ ಪುಣ್ಯವದಗ್ರಿಮೇಣ" ಯಾದಂ 13-೮೫. "ಸಮೀಕ್ಷಿತಾ ಬ್ರಹ್ಮಸುತಸ್ಯ ಪತ್ನೀ ಸರ್ವೇಭೂತ್ ಸಾದರದರ್ಶನೀಯಾ" ಯಾದಂ 13-೯೬.

**ಸಮ ಸಮ (ಪುಂ)** 1. ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ ದ್ವಾದಶರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ 2 4 6 8 10 ಮತ್ತು 12ನೇ ರಾಶಿಗಳು, ವೃಷಭ ಕರ್ಕಾಟಕ ಕನ್ಯಾ ವೃಶ್ಚಿಕ ಮಕರ ಮತ್ತು ಮೀನ ರಾಶಿಗಳು. "ಕೂರೋಽಥ ಸೌಮ್ಯ: ಪುರೋಽಙ್ಗತಾ ಚ ಆಜೋಽಥ ಯುಗ್ಮಂ ವಿಧಮ: ಸಮಶ್ಚ 1. ಚರಸ್ಥಿರದ್ವಯಾತ್ಮಕನಾಮಧೇಯಾ ಮೇಷಾದಯೋಽಸ್ಮಿ ಕ್ರಮಶ: ಪ್ರದಿಷ್ಟಾ:" 2. ಶತ್ರುತ್ವ ಮತ್ತು ಮಿತ್ರತ್ವ ಎರಡೂ ಇಲ್ಲದ ಗ್ರಹ. 3. (ಸಂಗೀತದಲ್ಲಿ) ಸಮತಾಳ, ಹಾಡು ಮತ್ತು ವಾದ್ಯಗಳಿಗೆ ಸಮಾನವಾಗಿ ಹಾಡುವವನು ಹಾಕುವ ತಾಳ. (ನಂ) 4. ಸಮಸ್ಥಳ. "ಸಂತಿಪತ್ಯ ಶನಕೇರಥ ನಿಮ್ನಾದನ್ವಕಾರಮುದವಾಪ ಸಮಾನಿ" ಕಿರಾಂ ೯-೧೧. (ವಿಂ) 5. ಸಮಾನವಾಗಿರುವ, ಹೋಲುವ, ಸದೃಶವಾದ. "ಸ್ತ್ರಿಯಶ್ಚ ಪತ್ಯೌ ಸುಸುಂದರೇಭಿ: ಸಮಾ ನವಪ್ರೇಮಣಿ ಸಾನುರಾಗಾ:" ಮಾಂ 3-೨೭. 6. ಸರಿಸಮಾನವಾದ, ತಕ್ಕಂತಿರುವ. "ಅವೇಮಿ ತೇ ಸಾರಮತ: ಖಲು ತ್ವಾಂ ಕಾರ್ಯೇ ಗುಹ್ಯಾತ್ಮಸಮಂ ನಿಯೋಕ್ಯೇ" ಕುಮಾಂ 3-೧೩. 7. ಭೇದವಿಲ್ಲದ, ಒಂದೇ ರೀತಿಯಾಗಿರುವ. "ಸುಖದು:ಖೇ ಸಮೇ ಕೃತ್ವಾ ಲಾಭಾಲಾಭೌ ಜಯಾಜಯೌ | ತತೌ ಯುಧಾಯ ಯುಜ್ಯಸ್ವ ನೇವಂ ಪಾಪಮವಾಪ್ಯಸಿ" ಗೀತಾ 2-೩೮. 8. ಸಮವಾಗಿರುವ, ಹಕ್ಕುತಿಟ್ಟಾಗಿಲ್ಲದ. "ಸಮ್ಪ್ರತಿ ಸಮದೇಶವರ್ತಿನೌ ನ ತೇ ದುರಾಸದೌ ಭವಿಷ್ಯತಿ" ಶಾಕುಂ 1. (ಅವ್ಯಂ) 9. ಸಮಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ. "ನವಂ ಪಯೌ ಯತ್ರ ಧನೇರ್ಮಯಾ ಚ ತ್ವದ್ವಿಪ್ರಯೋಗಾಶ್ರು ಸಮಂ ವಿಸೃಷ್ಟಮ್" ರಘುಂ 13-೨೬. 10. ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ, ಕೂಡ, ಸಂಗಡ. "ಆಹೌ ನಿವತ್ಸಯಸಿ ಸಮಂ ಹರಿಣಾಙ್ಗನಾಭಿ:" ಶಾಕುಂ 1-೨೩. 11. ಸಮವಾಗಿ, ಸರಿಸಮವಾಗಿ. "ಯಥಾ ಸರ್ವಾಣಿ ಭೂತಾನಿ ಧರಾ ಧಾರಯತೇ ಸಮಮ್" ಮನುಂ ೯-೩೧೧.

**ಸಮಕಾಲ ಸಮಕಾಲ (ಪುಂ)** 1. ಅದೇ ಸಮಯ, ಏಕಕಾಲ. ಸಮ: ಕಾಲ: (ಅವ್ಯಂ) 2. ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಅದೇ ಸಮಯದಲ್ಲಿ.

**ಸಮಕಾಲಿಕ ಸಮಕಾಲಿಕ (ವಿಂ)** ಸಮಾನಕಾಲದಲ್ಲಿರುವ, ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿರುವ. ಸಮಕಾಲ "ಠ್" (೪-೩-೧೧) 1.

ಸಮಾನಕಾಲಿನ: ಪ್ರಾಕಕಾಲಿನ: ಇತ್ಯಪಭ್ರಂಶಾ ಎವ ಇತಿ ಸಿಂ ಕೌಂ 1.

**ಸಮಕೋಲ ಸಮಕೋಲ (ಪುಂ)** ಸರ್ಪ, ಹಾವು. "ದ್ವಿರಸನ: ಸಮಕೋಲಶ್ಚ ಭೇಕಮುಕ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1.

**ಸಮಕ್ಷ ಸಮಕ್ಷ (ಅವ್ಯಂ)** ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ, ಕಣ್ಣಿನ ಎದುರಿಗೆ. ಅಕ್ಷಣೋ: ಸಮಾಪೇ-ಅವ್ಯಯಿಂ (೨-೧-೬) 1. "ತಥಾ ಸಮಕ್ಷಂ ದಹತಾ ಮನೋಭವಂ ಪಿತಾಕಿನಾ ಭಗನಮನೋರಥಾ ಸತೌ" ಕುಮಾಂ ೫-೧.

**ಸಮಗ್ರ ಸಮಗ್ರ (ವಿಂ)** ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ. ಸತ್ಯತಮಗ್ರಮಸ್ಯ 1. "ಸರ್ವೇಶ್ವರ: ಸಮಗ್ರೇಶ್ವರಮಿವ ನೃಪಗುಣೈ: ದೀಪ್ಯತೇ ಸಪ್ತಸಪ್ತಿ:" ಮಾಲಂ ೨-೧೨.

**ಸಮಜ್ಞಾ ಸಮಂಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಮಂಜಿಷ್ಠ. 2. ಮುಟ್ಟಿದರೆ ಮುನಿವೆಗಿಡ. ಸಮಂತತೋಽಙ್ಗತಿ-ಅಗಿ (ಗತೌ) "ಅವ್" (3-೧-೧೩೪) 1. "ಮತ್ಪಿಪ್ಪಾ ವಿಕಸಾ ಜಿಹ್ವಾ ಸಮಜ್ಞಾ ಕಾಲಮೇಷಿಕಾ" ಅಮಂ 1. "ನಮಸ್ಕಾರೋ ಗಂಧಕಾಲಿ ಸಮಜ್ಞಾ ಖದಿರೇತ್ಯಪಿ" ಅಮಂ 1.

**ಸಮಚಿತ್ತ ಸಮಚಿತ್ತ (ನಂ)** 1. ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಇರುವ ಮನಸ್ಸು. ಸಮಂ ಚಿತ್ತಮ್ 1. (ವಿಂ) 2. ಒಂದೇ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ನೆಟ್ಟ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು. 3. ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲೂ ಒಂದೇ ವಿಧವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು, ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳನ್ನೂ ಒಂದೇ ರೀತಿ (ಸಮಾನಾಗಿ) ನೋಡುವವನು. ಸಮಂ ಸರ್ವೇಷು ವಿಷಯೇಷು ಸಮಾನಂ ಚಿತ್ತಂ ಯಸ್ಯ 1.

**ಸಮಜ ಸಮಜ (ಪುಂ)** 1. ಪಶುಗಳ ಗುಂಪು. ಸಮ್ + ಅಜ (ಗತೌ) "ಅಪ್" (3-೩-೬೯) 1. "ಗುಹ್ಯಾದ್ವಾರೇಣ ನಿಯಾತಿ: ಸಮಜೇನ ಪಶುನಿವ" ಭट्टಿಂ ೭-೫೯. (ನಂ) 2. ವನ, ಅರಣ್ಯ, ಕಾಡು. ಸಮಜಂತಿ ಪಶವೌ ಯತ್ರ - ಸಮ್ + ಅಜ "ಅಪ್" 1. "ಸಮಜ: ಪಶುವೃದ್ಧೇ ನಾ ವಿಪಿನೇ ತು ನಪುಂಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ 1.

**ಸಮಜ್ಞಾ ಸಮಜ್ಞಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಯಶಸ್ಸು, ಕೀರ್ತಿ. ಸಮೇ: ಸರ್ವಜ್ಞಯಿತೇ-ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ:" (ವಾಂ 3-೩-೫೮) 1. "ಯಶ: ಕೀರ್ತಿ: ಸಮಜ್ಞಾ ಚ" ಅಮಂ 1. ಈ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಸಮಜ್ಯಾ ಸಮಾಜ್ಞಾ ಸಮಾಖ್ಯಾ ಎಂದೂ ಪಾಠಗಳಿಂಟು.

**ಸಮಜ್ಯಾ ಸಮಜ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸಭೆ. ಪರಿಷತ್ತು, ಕಾರ್ಯ ಕಲಾಪಗಳ ಸಮಾಲೋಚನೆಗಾಗಿ ಜನರು ಒಟ್ಟುಗೂಡುವುದು. ಸಮಜನ್ಯಸ್ಯಾಮ್-ಸಮ್ + ಅಜ (ಗತೌ) "ಕಪ್" (3-೩-೯೯) 1. "ಸಮಜ್ಯಾ ಪರಿಷದ್ಗೋಷ್ಠಿ" ಅಮಂ 1. 2. ಯಶಸ್ಸು, ಕೀರ್ತಿ.

**ಸಮಜಜಸ ಸಮಂಜಸ (ವಿಂ)** ನ್ಯಾಯವಾದ, ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವ, ಯೋಗ್ಯವಾಗಿರುವ, ಹೊಂದಿಕೆಯುಳ್ಳ, ಸಮೃದ್ಧಿಸಮೃದ್ಧವಾದ. ಸಮ್ಯಗಜ್ಞೋಽತ್ರ-"ಅವ್"



(೪-೪-೭೫)। "ಅಭೇದನಿರ್ಯಾಕಲ್ಪಾಸ್ತು ದೇಶರೂಪಂ ಸಮಂಜಸಮ್" ಅಮಂ। "ಗುಣಾಪವಾದೇನ ತದನ್ಯರೂಪಗಾತ್ ಭೂತಾಧಿಪತ್ಯಸ್ಯ ಸಮಂಜಸಂ ಜನಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೪-೧೨।

**ಸಮತಾ ಸಮಂತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಸಮನಾಗಿರುವಿಕೆ, ಹೆಚ್ಚುಕಡಿಮೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಸಮಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। "ಸಮತಯಾ ವಸುಭೃಷ್ಠಿವಿಸರ್ಜನೇನಿಯಮ-ನಾಶತಾಂ ಚ ನರಾಧಿಪಃ" ರಘುಂ ೯-೬। 2. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಹೋಲಿಕೆ. "ಆಕರ್ಣಮುಲ್ಲಸಿತಮಮ್ಬು ವಿಕಾಸಿಕಾಶ-ನೀಕಾಶಮಾಪ ಸಮತಾಂ ಸಿತಚಾಮರಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೪-೩೫।

**ಸಮತಿರಿಕ್ತ ಸಮಂತರಿಕ್ತ** (ವಿಂ) ಬಹಳ ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವ. ಸಮ್ಯಕ್ ಅತಿರಿಕ್ತವೇ-ಸಮ್+ರಿಚಿರ್ (ವಿರೇಚನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಸಮದರ್ಶಿನ್ ಸಮದರ್ಶಿನ್** (ವಿಂ) ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಸಮಾನವಾಗಿ ನೋಡುವ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳವನು, ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ತುಂಬ ತಮ್ಮೆಲ್ಲವೆ ನೋಡುವವನು. ಸಮಂ ಪಶ್ಯತಿ-ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮)। "ವಿದ್ಯಾವಿನಯ-ಸಮ್ಯಗ್ರೇ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೇ ಗವಿ ಹಸ್ತಿನಿ। ಶುನಿ ಚೈವ ಶ್ವಪಾಕೇ ಚ ಪೃಥಿವೀ: ಸಮದರ್ಶಿನ:" ಗೀತಾ ೪-೧೮।

**ಸಮದೃಷ್ಟಿ ಸಮದೃಷ್ಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಮಾನವಾದ ದೃಷ್ಟಿ, ತುಂಬತಮ್ಮೆಲ್ಲವೆ ನೋಡುವುದು. ಸಮಾ ದೃಷ್ಟಿ:। "ಸುಖೇ ದುಃಖೇ ಚ ವಿಪ್ರೇಂದ್ರ ಯಾ ದೃಷ್ಟಿವಂತಂತೆ ಸದಾ। ತಥಾ ಶತ್ರುಂ ಚ ಮಿತ್ರೇ ಚ ಸಮದೃಷ್ಟಿಶ್ಚ ಸಾ ಸ್ಮೃತಾ" (ವಿಂ) 2. ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಸಮಾನವಾಗಿ ನೋಡುವವನು, ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಭೇದ ಭಾವವಿಲ್ಲದೆ ನೋಡುವವನು. ಸಮಾ ದೃಷ್ಟಿರಸ್ಯ।

**ಸಮಧಿಕ ಸಮಧಿಕ** (ವಿಂ) ಬಹಳ ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವ. ಸಮ್ಯಕ್ ಅಧಿಕ:। "ಪ್ರತಿಕೃತಿರವನಾಮ್ಯೋ ದೃತಿಸಂದರ್ಶಿತಾಮ್ಯ: ಸಮಧಿಕತರರೂಪಾ: ಶುಭ್ರಸಂತಾನಕಾಮ:" ರಘುಂ ೧೮-೫೩।

**ಸಮಧಿಗತ ಸಮಧಿಗತ** (ವಿಂ) 1. ಸರಿಯಾಗಿ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು, ಸರಿಯಾಗಿ ಅರ್ಥಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್+ಅಧಿ+ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟು, ಸುಪಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

**ಸಮಧಿಗಮ ಸಮಧಿಗಮ** (ಪುಂ) 1. ಸರಿಯಾಗಿ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅರ್ಥಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಸಮ್+ಅಧಿ+ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೮)। 2. ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಹೊಂದುವಿಕೆ. "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। -ಗಮನಮ್-ಗಮನಮ್.

**ಸಮನುಕೀರ್ತನ ಸಮನುಕೀರ್ತನ** (ನಂ) ಉನ್ನತಮಟ್ಟದ ಪ್ರಶಂಸೆ. ಸಮ್+ಅನು+ಕೃತ (ಸಂಶಬ್ದನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)।

**ಸಮನುಕೀರ್ತನ ಸಮನುಕೀರ್ತನ** (ವಿಂ) ಬಹಳವಾಗಿ ಕೊಂಡಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಶಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್+ಅನು+ಕೃತ (ಸಂಶಬ್ದನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಸಮನುಗತ ಸಮನುಗತ** (ವಿಂ) ಅನುಸರಿಸಿಹೋಗಿರುವವನು, ಅನಂತರ ಹೋದವನು. ಸಮ್+ಅನು+ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)।

**ಸಮನುಜ್ಞಾ ಸಮನುಜ್ಞಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನುಮತಿ, ಸಮ್ಮತಿ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. 2. ಅಜ್ಞೆ.

**ಸಮನುಜ್ಞಾತ ಸಮನುಜ್ಞಾತ** (ವಿಂ) 1. ಅನುಮತಿ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಒಪ್ಪಿಗೆ ನೀಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್+ಅನು+ಜ್ಞಾ (ನಿಯೋಗ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಅಜ್ಞೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು.

**ಸಮನುಜ್ಞಾನ ಸಮನುಜ್ಞಾನ** (ನಂ) 1. ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಮ್ಮತಿ. ಸಮ್+ಅನು+ಜ್ಞಾ (ನಿಯೋಗ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಅಜ್ಞೆ, ಅಪ್ಪಣೆ.

**ಸಮಂತ ಸಮಂತ** (ಪುಂ) 1. ಎಲ್ಲ, ಗಡಿ. (ವಿಂ) 2. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಇರುವ.

**ಸಮಂತತತ್ ಸಮಂತತತ್** (ಅವ್ಯಂ) ಸುತ್ತಲೂ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ. ಸಮಂತಾತ್ "ತಸಿ:" (ವಾಂ ೪-೪-೪೪)।

"ಸಾತೋಪಮುರ್ವಿಮನಿಶಂ ನದಂತೋ ಯಃ ಪ್ಲಾವಯಿಷ್ಯಂತಿ ಸಮಂತ-ತೋಮಿ" ಮಾಘಂ ೩-೭೪।

**ಸಮಂತದ್ವಾ ಸಮಂತದ್ವಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ನುಹೀವೃಕ್ಷ, ಕಳ್ಳಗಿಡ. ಸಮಂತಾತ್ ದ್ವಾಂ ಕ್ಷೀರಮಸ್ಯಾ:।

**ಸಮಂತಪಂಚಕ ಸಮಂತಪಂಚಕ** (ನಂ) ಸುತ್ತಲೂ ಐದು ಹೃದ (ಮಡು) ಗಳುಳ್ಳ ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರ. ಪರಶುರಾಮನು ಕ್ಷತ್ರಿಯರನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ಅವರ ರಕ್ತದಿಂದ ಐದು ಮಡು ಗಳನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿದನು. ಕಾಲಾಂತರದಲ್ಲಿ ಇಲ್ಲಿ ಕೌರವ ಪಾಂಡವರಿಗೆ ಯುದ್ಧ ನಡೆದು ಇದಕ್ಕೆ ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರವೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. "ತ್ರಿ:ಸಂತಕ್ತವ: ಪೃಥಿವೀ ಕೃತ್ವಾ ನಿ:ಶತ್ರಿಯಾಂ ಪ್ರಭು:। ಸಮಂತಪಂಚಕೇ ಪಂಚ ಕೃತವಾನ್ ರುಧಿರೇಹದಾನ್"। "ತೇತಾದ್ವಾಪರಯೋ: ಸನ್ಧೌ ರಾಮ: ಶಸ್ತ್ರಮೃತಾಂ ವರ:। ಅಸಹತ್ ಪಾರ್ಥಿವಂ ಕ್ಷತ್ರಂ ಜಘಾನಾಮರ್ವಚೋದಿತ:"। "ಸ ಸರ್ವಂ ಕ್ಷತ್ರಮುತ್ಸಾಹ ಸ್ವವೀರ್ಯೇಣಾನಲಯುತಿ:। ಸಮಂತಪಂಚಕೇ ಪಂಚ ಚಕಾರ ರುಧಿರ ಹೃದಾನ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨-೩, ೪।

**ಸಮಂತಭದ್ರ ಸಮಂತಭದ್ರ** (ಪುಂ) ಬುದ್ಧಿಮಾನ್. ಸಮಂತಾತ್ ಭದ್ರಮಸ್ಯ। "ಸಮಂತಭದ್ರೋ ಭಗವಾನ್ ಮಾರಜಿಲ್ಲೋಕ-ಜಿಜ್ಜಿತ:"।

**ಸಮಂತಭುಕ್ (ಜ್) ಸಮಂತಭುಕ್ (ಜ್)** (ಪುಂ) ಅನ್ನಿ.



ಸಮನ್ತಾತ್ ಸಮಾಂತಾತ್ (ಅವ್ಯಂ) ಸುತ್ತಲೂ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆ ಗಳಲ್ಲೂ. "ಹಾರಾಣಾಂ ಮಣಿಭಿರ್ನಾಶ್ರಿತೌ ಸಮನ್ತಾತ್ ತತ್ಸೂತ್ರ-  
ಗುಣವದ್ವುಪ್ಪನ್ನಕಾಮ್ಯಯೇವ" ಮಾಘಂ ೪-೪೩.

ಸಮನ್ವಯ ಸಮನ್ವಯಂ (ಪುಂ) 1. ಅರ್ಥದ ಸಂಬಂಧ, ಅರ್ಥದ ಹೊಂದಿಕೆ. ಸಮ್ + ಅನು + ಇನ್ (ಗತೌ) "ಅನ್" (೩-೩-೪೬).  
"ಯಥಾಸಂಖ್ಯಂ ಕ್ರಮೇಣೈವ ಕ್ರಮಿಕಾಣಾಂ ಸಮನ್ವಯಃ" ಚಂದ್ರಾಂ 1.  
2. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವುದು, ಹೊಂದಿಕೊಂಡಿರುವುದು.

ಸಮನ್ವಿತ ಸಮನ್ವಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ. ಸಮ್ + ಅನು + ಇನ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨).  
2. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಹೊಂದಿಕೊಂಡಿರುವ. 3. ಕೂಡಿ ಕೊಂಡಿರುವ. "ಇತಿ ಮತ್ವಾ ಭಜಂತೇ ಮಾಂ ಬುದ್ಧಾ ಭಾವ-  
ಸಮನ್ವಿತಾಃ" ಗೀತಾ ೧೦-೮.

ಸಮಪದ ಸಮಪದ (ನಂ) 1. ಬೇಟೆಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಧಾಕುಪ್ಪ (ಬಿಲ್ಲುಗಾರ)ನು ಎರಡು ಕಾಲುಗಳನ್ನೂ ಸಮವಾಗಿ ಇಟ್ಟು ಕೊಂಡು ನಿಲ್ಲುವುದು. (ಪುಂ) 2. ರತಿಬಂಧದ ಒಂದು ಭೇದ. "ಯೋಷಿತಾದೌ ಹೃದಿ ಸ್ಥಾಯ ಕರಾಮ್ಯಾಂ ಪಿಡಯೇತ್ ಸ್ತನೌ | ಯಥೇಷ್ಠಂ ತಾಡಯೇದ್ಯೋನಿ ಬನ್ಧಃ ಸಮಪದಃ ಸ್ಮೃತಃ" ರತಿಮಂ 1. -ಪಾವಮ್ -ಪಾದಮ್.

ಸಮಬುದ್ಧಿ ಸಮಬುದ್ಧಿ (ವಿಂ) ಒಂದೇ ವಿಧವಾದ ಬುದ್ಧಿ ಯುಳ್ಳವನು, ಮಿತ್ರ ಶತ್ರು ಬಂಧು ಸಾಧು ಪಾಪಾತ್ಮ ಎಲ್ಲರ ವಿಷಯದಲ್ಲಿಯೂ ಪಕ್ಷಪಾತವಿಲ್ಲದವನು, ಯಾರಲ್ಲೂ ತಾರತಮ್ಯಬುದ್ಧಿಯಿಲ್ಲದವನು. ಸಮಾ ಸಮಾನಾ ಪಕ್ಷಪಾತರಹಿತಾ ಬುದ್ಧಿಃ ಯಸ್ಯ | ಸುಹೃತ್ತಾ ಮಿತ್ರ ಬಂಧು ಇವರಿಂದ ಯಾವ ಪ್ರಯೋಜನವನ್ನೂ ಅಪೇಕ್ಷಿಸದಿರುವುದರಿಂದಲೂ ಶತ್ರು ಪಾಪಾತ್ಮ ಇತ್ಯಾದಿಗಳಿಂದ ಯಾವ ವಿಧವಾದ ವಿರೋಧವಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದಲೂ ಎಲ್ಲರಲ್ಲಿಯೂ ಸಮಬುದ್ಧಿಯಿರುವವನು ಯೋಗೀಶ್ವರಃ ಸಮಸಂವನು. "ಸುಹೃನ್ಮಿತ್ರಾರ್ಯದಾಸೀನಮಧ್ಯಸ್ಥದ್ವೇಷಬನ್ಧುಃ | ಸಾಧುಷ್ವಪಿ ಚ ಪಾಪೇಃ ಸಮಬುದ್ಧಿಃ ವಿಶಿಷ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೬-೯.

ಸಮಭಿವ್ಯಾಹಾರ ಸಮಭಿವ್ಯಾಹಾರ (ಪುಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಿ ಹೇಳುವುದು, ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸಿ ಉಚ್ಚರಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಅಭಿ + ವಿ + ಆಹ್ + ಹ್ರ (ಹರಣೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮). ಘಟಮಾನಯ ಎಂಬಲ್ಲಿ ದ್ವಿತೀಯಾಂತ ಘಟಪದ ಸಮಭಿವ್ಯಾಹಾರವು ಆನಯ ಎಂಬ ಕ್ರಿಯಾಪದಕ್ಕೆ ಇರುವುದು. 2. ಸಾಹಿತ್ಯ, ಜೊತೆಯಲ್ಲಿರುವುದು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವುದು.

ಸಮಭಿವ್ಯಾಹೃತ ಸಮಭಿವ್ಯಾಹೃತ (ವಿಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಿ (ವ್ಯವಧಾನವಿಲ್ಲದೆ) ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಅಭಿ +

ವಿ + ಆಹ್ + ಹ್ರ (ಹರಣೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨).  
2. ಕೂಡಿಕೊಂಡಿರುವ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ.

ಸಮಭಿಹಾರ ಸಮಭಿಹಾರ (ಪುಂ) 1. ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಮಾಡುವುದು, ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಹೇಳುವುದು. "ಕ್ರಿಯಾಸಮಭಿಹಾರೇ ದ್ವೇ ವಾಚ್ಯೇ" ವಾಂ 1. ಪೌನಃಪುನ್ಯ ಭೃಶಾರ್ಥಶ್ಚ ಸಮಭಿಹಾರಃ |  
2. ಹೆಚ್ಚಿಗೆ, ಅಧಿಕ, ಮಿತಿಮೀರಿರುವುದು. ಸಮ + ಅಭಿ + ಹ್ರ (ಹರಣೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮). "ಮೇವೈತ ಸಮಭಿಹಾರಸ್ತು ಪೌನಃಪುನ್ಯಭೃಶಾರ್ಥಯೋಃ" ಮೇದಿಂ 1.

ಸಮಮ್ ಸಮಮ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಸಂಗಡ, ಕೂಡ, ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ. "ಇತ್ಯಂ ವ್ರತಂ ಧಾರಯತಃ ಪ್ರಜಾಞ್ ಸಮಂ ಮಹಿಷ್ಯಾ ಮಹನೀಯಕೀರ್ತಿಃ" ರಘುಂ ೨-೨೪. 2. ಏಕರೂಪವಾಗಿ, ಒಂದೇ ರೀತಿಯಾಗಿ. "ಉದಗೀಯತ ಯತ್ತದಾ ವಿಧಿಜ್ಞಃ ಸಮನುದ್ಗಾತಗಿರೇಕತಾನ್ತಾದೇಃ" ಯಾದಂ ೧೪-೮೬. 3. ಏಕ ಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಒಂದೇ ಸಮಯದಲ್ಲಿ. "ಸಮಮೇತ್ಯ ತುಲ್ಯಮಹಸಃ ಶಿಲಾಘನಾನ್ ಧನಪಕ್ಷದಾಃ ಪಂತರಬಾಹುಶಾಲಿನಃ" ಮಾಘಂ ೧೩-೧೪. 4. ಸಮಾನವಾಗಿ. "ಸಮಂ ದದೃಶಿರೇ ದೇವಃ ತತಜ್ಜಾನಪದೇರಪಿ" ಯಾದಂ ೨೨-೮೦.

ಸಮಯ ಸಮಯ (ಪುಂ) 1. ಕಾಲ, ವೇಳೆ. ಸಮ್ಯಕ್ ಎತಿ-  
ಇನ್ (ಗತೌ) "ಅನ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಸಮಯ ಎವ ಕರೋತಿ ಬಲಾಬಲಂ ಪ್ರಣಿಗದಂತ ಇತಿವ ಶರೀರಿಣಾಮ್" ಮಾಘಂ ೬-೪೪. 2. ಕ್ಷುಪ್ತವಾದ ಕಾಲ, ಗೊತ್ತಾದ ಕಾಲ. "ಕುಬೇರಗುಪ್ತಾಂ ದಿಶಮುಣ್ಣರಶ್ಮೌ ಗನ್ತುಂ ಪ್ರವೃತ್ತೇ ಸಮಯಂ ವಿನಿಶ್ಚಯ" ಕುಮಾಂ ೩-೨೪. 3. ಗೊತ್ತುಪಾಡು, ಸಂಕೇತ. "ಜಲಧರಾ-  
ವಲಿರಪ್ರತಿಪಾಲಿತಸ್ವಸಮಯಾ ಸಮಯಾಜ್ಜಗತೀಧರಮ್" ಮಾಘಂ ೬-೨೪. 4. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ, ಶಪಥ. "ನ ಸಮಯಪರೀಕ್ಷಣಂ ಕ್ಷಮಂ ತೇ ನಿಕೃತಿಪರೇಷು ಪರೇಷು ಭೂರಿದಾಮ್ನಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೪೪. 5. ಸಮಯಾದ ಕಾಲ, ಯೋಗ್ಯವಾದ ಕಾಲ. "ಸಮಯೋದಯ-  
ಸಮ್ಭೂತಪ್ರಸಾದಸ್ತ್ರಿಗುಣಗ್ರಂಥಿಚಿಕಿತ್ಸಕಃ ಶ್ರಿತಾನಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೪-೧೨೭. 6. ಆಚಾರ, ಸಂಪ್ರದಾಯ, ನಡವಳಿಕೆ, ನಿಯಮ. "ವೀರಾಣಾಂ ಸಮಯೋ ಹಿ ದಾರುಣರಸಃ ಸ್ನೇಹಕ್ರಮಂ ಬಾಧತೇ" ತಂ ರಾಂ ೪-೧೯. 7. ನಿಯಮ, ಕಟ್ಟುಪಾಡು, ಕಟ್ಟಳೆ. "ತಥಾಪಿ ವಕ್ತುಂ ವ್ಯವಸಾಯಗಮ್ನಿ ಮಾಂ ನಿರಸ್ತನಾರೀ-  
ಸಮಯಾ ದುರಾಧಯಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೨೮. 8. ಸಿದ್ಧಾಂತ. 9. ಕವಿಗಳ ಸಂಪ್ರದಾಯ. 10. ಅವಕಾಶ, ಅನುಕೂಲವಾದ ಸಂದರ್ಭ. 11. ನಿರ್ದೇಶ, ಸಲಹೆ, ಉಪದೇಶ. 12. ಬುದ್ಧಿ. 13. ಕ್ರಿಯಾಕಾರ. 14. ಭಾಷೆ. 15. ವ್ಯವಹಾರ. "ನ ತೇ ಸಮಯಮನ್ವಿಚ್ಛೇತ್ ಪುರುಷೋ ಧರ್ಮಮಾಚರನ್" ಮನುಂ ೧೦-೪೩. 16. ಸಂಪತ್ತು. "ಸಮಯಃ ಶಪಥೇ ಭಾಷಾಸಂಪದೋಃ ಕಾಲಸಂವಿದೋಃ | ಸಿದ್ಧಾಂತಾಚಾರ-



ಸಂಕೇತನಿಯಮಾವಸರೇಷು ಚ | ಕ್ರಿಯಾಕಾರೇ ವ ನಿರ್ದೇಶಿ" ಹೇಮಂ | 17. ಈಶ್ವರಸಂಕೇತ, ಈ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಇದೇ ಅರ್ಥವೆಂಬ ಒಂದು ನಿಯಮ. ಅಭಿಧಾಶಕ್ತಿ, ಶಬ್ದಾರ್ಥಗಳಿಗೆ ಈಶ್ವರೇಚ್ಛಾರೂಪ ಸಂಬಂಧ.

ಸಮಯಾ ಸಮಯಾ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ. ಸಮ್ + ಇನ್ (ಗತೌ) "ಆ" (ತಂ ೪-೧೭೪) | "ಸೇನ್ಯಾನ್ಯ ಯಾತಃ ಸಮಯಾಪಿ ವಿವ್ಯಥೇ ಕಥಂ ಸುರಾಜಮ್ಭವಮನ್ಯಥಾಽಪಿ ವಾ" ಮಾಘಂ ೧೨-೪೨ | 2. ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ, ನಡುವೆ. "ಸಮಯಾಂತಿಕ-ಮಧ್ಯಯೋಃ" ಮೇದಿಂ |

ಸಮಯಾಚಾರ ಸಮಯಾಚಾರ (ಪುಂ) ಸಂಪ್ರದಾಯದಂತೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಸಮಯಾಘೃಷಿತ ಸಮಯಾಘೃಷಿತ (ನಂ) ಸೂರ್ಯ ಮತ್ತು ನಕ್ಷತ್ರಗಳು ಗೋಚರವಾಗದಿರುವ ಕಾಲ, ನಕ್ಷತ್ರವಾವುದೂ ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಾಣದಿರುವ ಮತ್ತು ಇನ್ನೂ ಸೂರ್ಯೋದಯವಾಗದಿರುವ ಕಾಲ. "ತಥಾ ಪ್ರಭಾತಸಮಯೇ ನೃಪೇ ನಕ್ಷತ್ರಮಂಡಲೇ | ರವಿರ್ಯಾವನ್ನ ದೃಶ್ಯತ ಸಮಯಾಘೃಷಿತಂ ಚ ತತ್" |

ಸಮಯಾನುವರ್ತನ ಸಮಯಾನುವರ್ತನ (ನಂ) 1. ಸಮಯವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಕಾಲಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಸಮಯಸ್ಯಾನುವರ್ತನಮ್ | 2. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯಂತೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. 3. ಹಿರಿಯರ ಸಂಪ್ರದಾಯದಂತೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಸಮಯಾನುವರ್ತಿನ ಸಮಯಾನುವರ್ತಿನ (ವಿಂ) 1. ಸಮಯವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು, ಕಾಲಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ಸಮಯಮನುವರ್ತಿನೇ—ಸಮ್ + ಅನು + ವರ್ತು (ವರ್ತನೆ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯಂತೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. 3. ಹಿರಿಯರ ಸಂಪ್ರದಾಯದಂತೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೪) | -ವರ್ತಿನಿ -ವರ್ತಿನೀ.

ಸಮಯೋಚಿತ ಸಮಯೋಚಿತ (ವಿಂ) 1. ಆಯಾ ಕಾಲಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಸಮಯಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತಿರುವ. 2. ಸಂಪ್ರದಾಯಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಗೆ ತಕ್ಕಂತಿರುವ. (ಅವ್ಯಂ) 4. ಕಾಲಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ. 5. ಸಂಪ್ರದಾಯಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ. 6. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಗೆ ತಕ್ಕಂತೆ.

ಸಮರ ಸಮರ (ಪುಂ) ಯುದ್ಧ, ಕಾಳಗ. ಸಮ್ + ಇ (ಗತೌ) "ಘಃ" (೩-೩-೧೧೮) | "ಸಮರಾಯ ನಿಕಾಮಕಂಕಶಂ ಕ್ಷಣಮಾಕೃಷ್ಣಮುಪೇತಿ ಯಸ್ಯ ಚ" ಮಾಘಂ ೧೬-೬೩ |

ಸಮರಭ ಸಮರಭ (ಪುಂ) ಸುರತ ಬಂಧದ ಒಂದು ಭೇದ. "ಸ್ವಜಜ್ಞಾಪ್ರಯಸಂಯುಕ್ತಂ ಕೃತ್ವಾ ಯೋಷಿತದ್ವಯಮ್ | ಸ್ತನೌ ಭೃತ್ವಾ ರಮೇತ್ ಕಾಮೀ ಬಂಧಃ ಸಮರಭಃ ಸ್ಮೃತಃ" ರತಿಮಂ |

ಸಮರಮುಖನ್ ಸಮರಮೂರ್ಧನ್ (ಪುಂ) ಯುದ್ಧದ ಮುಂಭೂಮಿ, ರಣಾಂಗಣದ ಮುಂಭಾಗ.

ಸಮರೇಖಾ ಸಮರೇಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೇರವಾದ ಗೆರೆ, ನೇರವಾದ ಮಾರ್ಗ.

ಸಮಚನ ಸಮರ್ಚನೆ (ನಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪೂಜಿಸುವುದು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಆರಾಧಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಅರ್ಚ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |

ಸಮರ್ಚನೀಯ ಸಮರ್ಚನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪೂಜಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪೂಜಿಸಬಹುದಾದ. ಸಮ್ + ಅರ್ಚ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) | "ತವ್ಯಃ" | -ಯಿತವ್ಯಃ—ಯಿತವ್ಯಃ.

ಸಮರ್ಚಿ ಸಮರ್ಚಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂಜೆ, ಆರಾಧನೆ. ಸಮ್ + ಅರ್ಚ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩) |

ಸಮರ್ಥ ಸಮರ್ಥ (ವಿಂ) 1. ಶಕ್ತಿ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯವುಳ್ಳವನು. ಸಮ್ + ಅರ್ಥ (उपयाच्यायाम्) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಹೃತವತ್ಯಪಿ ಭೋಷಕಾತ್ಮಜಾಂ ತವಯಿ ಚಕ್ಷಾಮ ಸಮರ್ಥಂ ಏವ ಯತ್" ಮಾಘಂ ೧೬-೪೮ | 2. ಅರ್ಹ, ಯೋಗ್ಯ. "ಪ್ರತಿಗ್ರಹ-ಸಮರ್ಥೋಽಪಿ ಪ್ರಸಜ್ಞಂ ತತ್ರ ವರ್ಜಯೇತ್ | ಪ್ರತಿಗ್ರಹೇಣ ಹೃತ್ಯಾಶು ಬ್ರಾಹ್ಮಣೇಃ ಪ್ರಶಾಮ್ಯತಿ" ಮನುಂ ೪-೧೮೬ | 3. ಸಮುಚಿತವಾದ, ಸಮಯಕ್ಕೆ ತಕ್ಕದಾದ. "ತದ್ವನುಗ್ರಹಣಮೇವ ರಾಘವಃ ಪ್ರತ್ಯಪದ್ಯತ ಸಮರ್ಥಮುತ್ತರಮ್" ರಘುಂ ೧೧-೭೯ | 4. ಸಮಾನವಾದ ಅರ್ಥವುಳ್ಳ. 5. (ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ) ಸಂಗತವಾದ ಅರ್ಥವುಳ್ಳ (ಪದ), ಪರಸ್ಪರ ಸಂಬಂಧವಾದ ಅರ್ಥವುಳ್ಳ (ಪದ), ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾದ ಅರ್ಥವುಳ್ಳ ಪದಗಳಿಗೆ ಸಮುದಾಯ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಒಂದು ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ (ಪದ). ["ಏಕಾರ್ಥಿಭಾವಸಾಮರ್ಥ್ಯ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ಸಮರ್ಥಃ ಪದವಿಧಿಃ" ಪಾಂ ಸುಂ ೨-೧-೧ | 6. ಹಿತವಾದ. "ನಾಹೇಸೇ ಮಾಂ ಸಹಸ್ರಾಕ್ಷ ದ್ರುಮಂ ತ್ವಾಜಯಿತುಂ ಚಿರಾತ್ | ಸಮರ್ಥಮುಪಜೀವ್ಯಮಂ ತ್ಯಜೇಯಂ ಕಥಮಪ್ಯವೇ" ಭಾಂ |

ಸಮರ್ಥಕ ಸಮರ್ಥಕ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಥಿರಪಡಿಸುವವನು. 2. ನಿಶ್ಚಯಿಸುವವನು. 3. ಯಾಚಿಸಿದುದನ್ನು ಕೊಡುವವನು.

ಸಮರ್ಥತಾ ಸಮರ್ಥತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೊಡಿರುವಿಕೆ. ಸಮರ್ಥಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) |

ಸಮರ್ಥನ ಸಮರ್ಥನ (ನಂ) 1. ದೃಢೀಕರಿಸುವುದು, ಸ್ಥಿರಪಡಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಅರ್ಥ (उपयाच्यायाम्) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | 2. ವಾದವೂಡಿ ನ್ಯಾಯವನ್ನು ತೋರಿಸು



ವುದು, ಋಜುತ್ವವನ್ನು ಸ್ಥಾಪಿಸುವುದು (ಪ್ರದರ್ಶಿಸುವುದು). 3. ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಶಕ್ತಿ. "ಸ ತು ಜ್ಞಾನಗರೀಯಸ್ತ್ವಾತ್ ತಪಸ್ತಃ ಸಮರ್ಥನಾತ್ | ಅವತಸ್ಥೇ ಮಹಾಪ್ರಾಜ್ಞೋ ಧೈರ್ಯೇಣ ಪರಮೇಣ ಹ" ಭಾಂ ಆದಿಂ | 4. ಇದೇ ಸರಿಯೆಂದು ನಿಶ್ಚಯಿಸುವುದು. "—ಯುಕ್" (3-3-109) | —ನಾ —ನಾ.

**ಸಮರ್ಥನೀಯ ಸಮರ್ಥನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಸಮರ್ಥಿಸಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಡುವ. 2. ಸಮರ್ಥಿಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕಾದ. 3. ಸಮರ್ಥಿಸಿಕೊಳ್ಳಬಹುದಾದ. 4. ಸಮರ್ಥಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಶಕ್ತವಾದ. ಸಮ್ + ಅರ್ಥ (ಉಪಯಾಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) | "ಸಮರ್ಥನೀಯಸ್ಯಾರ್ಥಸ್ಯ ಕಾವ್ಯಲಿಙ್ಗಂ ಸಮರ್ಥನಮ್" ಚಂದ್ರಾಂ |

**ಸಮರ್ಥಿತ ಸಮರ್ಥಿತ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ಥಿರಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ನಿರ್ಣಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ನ್ಯಾಯ ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಅರ್ಥ (ಉಪಯಾಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (3-2-102) |

**ಸಮರ್ಪಣ ಸಮರ್ಪಣ** (ನಂ) ಅರ್ಪಿಸುವುದು, ಒಪ್ಪಿಸುವುದು, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ಕೊಡುವುದು. ಸಮ್ + ಋ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) |

**ಸಮರ್ಪಣೀಯ ಸಮರ್ಪಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಅರ್ಪಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಅರ್ಪಿಸಬೇಕಾದ, ಗೌರವದಿಂದ ಕೊಡಬೇಕಾದ. 3. ಅರ್ಪಿಸಬಹುದಾದ. ಸಮ್ + ಋ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) | "ತವ್ಯಃ" | —ಅರ್ಪಯಿತವ್ಯಃ —ಅರ್ಪಯಿತವ್ಯಃ.

**ಸಮರ್ಪಯತ್ ಸಮರ್ಪಯತ್** (ವಿಂ) ಗೌರವಪೂರ್ವಕ ಅರ್ಪಿಸುತ್ತಿರುವ, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ಒಪ್ಪಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಋ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (3-2-124) | ಸ್ವಿಯಾಂ "ಕ್ಲಿಪ್" (4-1-6) | —ಯಂತಿ —ಯಂತಿ.

**ಸಮರ್ಪಿತ ಸಮರ್ಪಿತ** (ವಿಂ) ಗೌರವಪೂರ್ವಕ ಒಪ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ಅರ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಋ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (3-2-102) |

**ಸಮವಕಾರ ಸಮವಕಾರ** (ಪುಂ) ಹತ್ತು ವಿಧ ರೂಪಕಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ರೂಪಕ. (1) ನಾಟಕಮ್ (2) ಪ್ರಕರಣಮ್ (3) ಭಾಣಃ (4) ಪ್ರಹಸನಮ್ (5) ಡಿಮಃ (6) ವ್ಯಾಯೋಗಃ (7) ಸಮವಕಾರಃ (8) ವೀಥಿ (9) ಅಜ್ಞಃ ಮತ್ತು (10) ಕ್ಷೇಮಗಃ ಇವು ಹತ್ತು ರೂಪಕಗಳು. ಸಮವಕಾರದಲ್ಲಿ ಕಥಾವಸ್ತುವು ದೇವತೆಗಳ ಮತ್ತು ಅಸುರರ ವಿಷಯವಾಗಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿರಬೇಕು. ವಿಮರ್ಶಸಂಧಿಯಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಮೂರು ಅಂಕಗಳಿರಬೇಕು. ಮೊದಲನೆಯ ಅಂಕದಲ್ಲಿ ಮುಖ ಮತ್ತು ಪ್ರತಿಮುಖ ಸಂಧಿಗಳೂ ಎರಡು ಮತ್ತು ಮೂರನೆಯ ಅಂಕಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದೊಂದು ಸಂಧಿಗಳೂ ಇರಬೇಕು. ಪ್ರಖ್ಯಾತವಾದ ಹನ್ನೆರಡು ಮಂದಿ ಉದಾತ್ತ

ದಿವ್ಯಾದಿವ್ಯನಾಯಕರು ಇದ್ದು ಅವರೆಲ್ಲರಿಗೂ ಪ್ರತ್ಯೇಕ ಫಲಪ್ರಾಪ್ತಿ ವರ್ಣನೆಯಿರಬೇಕು. ಎರರರವು ಪ್ರಧಾನವಾಗಿರಬೇಕು ಇತ್ಯಾದಿ. "ವೃತ್ತಂ ಸಮವಕಾರೇ ತು ಖ್ಯಾತಂ ದೇವಾಸುರಾಶ್ರಯಮ್ | ಸಂಧಯೋ ನಿರ್ವಿಮರ್ಶಾಸ್ತು ತ್ರಯೋಽಕ್ಷಾಸ್ತತ್ರ ಚಾದಿಮೇ | ಸಂಖ್ಯಾ ದ್ವಾವಂತಯೋಸ್ತದ್ವದೇಕ ಏಕೋ ಭವೇತ್ಪುನಃ | ನಾಯಕಾ ದ್ವಾದಶೋದಾತ್ತಾಃ ಪ್ರಖ್ಯಾತಾ ದೇವಮಾನವಾಃ | ಫಲಂ ಪೃಥಕ್-ಪೃಥಕ್ತೇಷಾಂ ವೀರಮೂರ್ಯೋಽಸ್ಥಿಲೋ ರಸಃ" ಇತ್ಯಾದಿ ಸಾಂ ೬೦ ೬ |

**ಸಮವತಾರ ಸಮವತಾರ** (ಪುಂ) ನದಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ನಾನಾದಿಗಳಿಗೆ ಇಳಿಯುವ ಮಾರ್ಗ, —ಸ್ನಾನಫಟ್ಟದ ಸೋಪಾನ. ಸಮ್ + ಅವ + ತ (ಫಲವನತರಣಯೋಃ) "ವಜ್" (3-3-120) | "ದಧತಮಾಕರಿಭಿಃ ಕರಿಭಿಃ ಕ್ಷತಃ ಸಮವತಾರಸಮೇರಸಮೇಸ್ತಃ" ಕಿರಾಂ ೪-೭ |

**ಸಮವಧಾನ ಸಮವಧಾನ** (ನಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಗಮನಿಸುವುದು, ಹೆಚ್ಚು ಆಸಕ್ತಿಯಿಂದ ಲಕ್ಷ್ಯವಿಟ್ಟು ಕೇಳುವುದು. ಸಮ್ + ಅವ + ಛುಚಾನ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) |

**ಸಮವಧಾರಣ ಸಮವಧಾರಣ** (ನಂ) ದೃಢವಾದ ನಿರ್ಧಾರ, ಅಚಲವಾದ ನಿರ್ಧಾರ. ಸಮ್ + ಅವ + ಛುಚಾನ್ (ಧಾರಣೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) |

**ಸಮವರ್ತಿನ್ ಸಮವರ್ತಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. ಸಮಂ ವರ್ತಿಸು ಶಾಲಮಸ್ಯ — ವೃತು (ವರ್ತನೆ) "ಗಿಣಿಃ" (3-2-98) | "ಶಾಸಿತಾರಂ ಚ ಪಾಪಾನಾಂ ಪಿತೃಣಾಂ ಸಮವರ್ತಿನಮ್ | ಅಸೃಜತ್ ಸರ್ವಭೂತಾತ್ಮಾ ನಿಧಿಪಂ ಚ ಧನೇಶ್ವರಮ್" ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ ೨೦೬-೩೯ | (ವಿಂ) 2. ಎಲ್ಲರಲ್ಲೂ ಸಮನಾಗಿ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು.

**ಸಮವಸ್ಥಾ ಸಮವಸ್ಥಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಮಾನವಾದ ಅವಸ್ಥೆ, ಒಂದೇ ವಿಧವಾದ ಪರಿಸ್ಥಿತಿ. "ತ್ವಯೋಪಸ್ಥಿತವಿದ್ಯೋಗಸ್ಯ ತಪೋವನಸ್ಯಾಪಿ ತಾವತ್ಸಮವಸ್ಥಾ ದೃಶ್ಯತೇ" ಶಾಕುಂ ೪ | 2. ಸ್ಥಿರವಾದ ಪರಿಸ್ಥಿತಿ. "ವದನೇನ ಸುವದನಾಸ್ಯಾಸ್ತೇ ಸಮವಸ್ಥೇ ಕ್ಷಣಾದೃಢೇ" ಮಾಲಂ ೪-೭ |

**ಸಮವಸ್ಥಿತ ಸಮವಸ್ಥಿತ** (ವಿಂ) 1. ಒಂದೇ ಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರುವ. 2. ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವ, ದೃಢವಾಗಿರುವ. 3. ಒಂದೇ ರೀತಿಯಾಗಿರುವ. ಸಮ್ + ಅವ + ಷ್ಠಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಕ್ತಃ" (3-೪-೭೨) |

**ಸಮವಾಯ ಸಮವಾಯ** (ಪುಂ) 1. ಸಮೂಹ. ಸಮವಾಯತೇ — ಸಮ್ + ಅವ + ಅಯ (ಗತೌ) "ವಜ್" (3-3-119) | "ಅನುಷ್ಠಾಪೋ ರುಕ್ಮಮಾನೇ ಸಮವಾಯೇ ಜನಸ್ಯ ಚ" ಮನುಂ ೪-೧೦೮ | 2. ಸಂಬಂಧ, ಅಯುತಸಿದ್ಧವಾದವುಗಳ ಸಂಬಂಧ. ಅವಯವಾವಯವಿಗಳು ಗುಣ-ಗುಣಗಳು ಜಾತಿ-ವೃತ್ತಿ



ಗಳು ಇವುಗಳಿಗಿರುವ ನಿತ್ಯಸಂಬಂಧವು ಸಮವಾಯಿ ಸಂಬಂಧ. ಘಟ ಮತ್ತು ಕಪಾಲಗಳಿಗಿರುವ ತಂತು ಪಟಿ ಗಳಿಗಿರುವ ಸಂಬಂಧವು ಸಮವಾಯಿ ಸಂಬಂಧ. ಆಯುತ ಸಿದ್ಧವಾದ ಆಧಾರ್ಯ ಮತ್ತು ಆಧಾರಭೂತ ವಸ್ತುಗಳಿ ಗಿರುವ ಸಂಬಂಧವು ಸಮವಾಯಿ. "ಘಟಾದಿನಾಂ ಕಪಾಲಾದೌ ದ್ರವ್ಯೇಷು ಗುಣಕರ್ಮಣಿಃ | ತೇಷು ಜಾತೇಶ್ಚ ಸಮ್ಬಂಧಃ ಸಮವಾಯಿಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ" ಭಾಷ್ಯಂ ೧೧ | 3. ಒಟ್ಟುಗೂಡುವುದು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು, ಒಂದಾಗಿ ಸೇರುವುದು. "ಸರ್ವ-ವಿನಯಾನಾಮೇಕಕರ್ಮಪ್ರಣಾಮಾಯತನಂ ಕಿಮುತ ಸಮವಾಯಿಃ" ಕಾದಂ |

**ಸಮವಾಯಿನ್ ಸಮವಾಯಿನ್** (ವಿಂ) ನಿತ್ಯಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ, ಆಯುತಸಿದ್ಧವಾದ ಸಂಬಂಧವುಳ್ಳ.

**ಸಮವಾಯಿಕಾರಣ ಸಮವಾಯಿಕಾರಣ** (ನಂ) ಆಯುತ ಸಿದ್ಧಸಂಬಂಧದಿಂದ ಕಾರ್ಯವನ್ನಂಟುಮಾಡುವ ಕಾರಣ. ತಂತವಃ ಪಟಸ್ಯ ಸಮವಾಯಿಕಾರಣಮ್ | ತಂತುಗಳು ಸಮ ವಾಯಿ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಪಟರೂಪ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಕಾರಣ ವಾಗುವುದರಿಂದ ಸಮವಾಯಿಕಾರಣವಾಯಿತು. ಯಸ್ಮಿನ್ ಸಮವಾಯೇನ ಸಮ್ಬಂಧಃ ಸತ್ ಕಾರ್ಯಮುತ್ಪದ್ಯತೇ ತತ್ ಸಮವಾಯಿ-ಕಾರಣಮ್ | ಅತಃ ತಂತುಃ ಪಟಸ್ಯ ಸಮವಾಯಿಕಾರಣಮ್ ಭವತಿ |

**ಸಮವೃತ್ತ ಸಮವೃತ್ತ** (ನಂ) ಪದ್ಯ (ಶ್ಲೋಕ) ದ ನಾಲ್ಕು ಪಾದಗಳಲ್ಲೂ ಸಮವಾದ ಅಕ್ಷರಗಳುಳ್ಳ, ವೃತ್ತ. ನಾಲ್ಕು ಪಾದಗಳಲ್ಲೂ ಸಮಾನ ಲಕ್ಷಣವುಳ್ಳ ವೃತ್ತ. "ಅಙ್ಗಯೋ ಯಸ್ಯ ಚತವಾರಃ ತುಲ್ಯಲಕ್ಷಣಲಕ್ಷಿತಾಃ | ತಚ್ಚಂದ್ರಶಾಸ್ತ್ರ-ತತ್ವಜ್ಞಾಃ ಸಮಂ ವೃತ್ತಂ ಪ್ರಚಕ್ಷತೇ" ವೃಂ ರಂ |

**ಸಮವೃತ್ತಿ ಸಮವೃತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಕಡಿಮೆಯಿಲ್ಲದ ಸ್ಥಿತಿ, ಯಾವಾಗಲೂ ಒಂದೇ ರೀತಿಯಾದ ಸ್ಥಿತಿ. 2. ಸಮ ವಾದ ಜೀವನ, ಏರುಪೇರಿಲ್ಲದ ಜೀವನ. (ವಿಂ) 3. ಸಮಾನವಾದ ವರ್ತನೆಯುಳ್ಳವನು, ಹೆಚ್ಚು ಮಾದರ್ವವೂ ಹೆಚ್ಚು ತೀಕ್ಷ್ಣತೆಯೂ ಇಲ್ಲದ ವರ್ತನೆಯುಳ್ಳವನು. ಸಮಾ ನಾತಿಮೃದುಃ ನಾತಿತಿಗ್ಮಾ ಚ ವೃತ್ತಿಃ ಯಸ್ಯ | "ಸಮವೃತ್ತಿಃ ಪರಿತಿ ಮಾದೇವ ಸಮಯೇ ಯಶ್ಚ ತನೋತಿ ತಿಗ್ಮತಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೩೮ |

**ಸಮವೇತ ಸಮವೇತ** (ವಿಂ) 1. ಸಮವಾಯಿಸಂಬಂಧದಿಂದ ಇರುವ. ಸಮ್+ಅವ+ಇನ್ (ಗತೌ) "ಕಃ" (೩-೪-೭೨) | ಮೃದಾ ಸಮವಾಯೇನ ಉತ್ಪಾದ್ಯ ಘಟಾತ್ಮಕಂ ಕಾರ್ಯಂ ಕಪಾಲೇ ಸಮವೇತಂ ಭವತಿ | 2. ಮಿಶ್ರಿತವಾಗಿರುವ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿರುವ. "ಧರ್ಮಕ್ಷೇತ್ರೇ ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರೇ ಸಮವೇತಾ ಯುಯುತಸವಃ | ಮಾಮಕಾಃ ಪಾಂಡವಾ-ಇವೇವ ಕಿಮಕುರ್ವಂತ ಸಂಜಯ" ಗೀತಾ ೧-೧ | 3. ಗುಂಪು ಗುಂಪಾಗಿ ಸೇರಿರುವ, ಗುಂಪಿನೊಡನೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. "ಸೇನಾಯಾಂ ಸಮವೇತಾ ಯೇ ಸೇನಾಸ್ತೇ ಸೇನಿಕಾಶ್ಚ ತೇ" ಅಮಂ |

**ಸಮರ್ಥ ಸಮಸ್ಥಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವಿಕೆ, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿ ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಹರಡಿರು ವಿಕೆ. ಸಮ್+ಅಶ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | 2. (ಅವ್ಯಕ್ತಿಗಳ ಮತದಲ್ಲಿ) ಎಲ್ಲಾ ಒಟ್ಟುಗೂಡಿರುವ ವಸ್ತು. "ಸಮರ್ಥಿರೀಶಃ ಸರ್ವೇಷಾಂ ಸ್ವಾತ್ಮತಾತ್ಮವೇದನಾತ್ | ತದಭಾವಾತ್ತದ್ಯೇ ತು ಜ್ಞಾಯಂತೇ ವ್ಯರ್ಥಿಸಂಜಯಾ" ಪಂಚದಂ | 3. (ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತಿಗಳ ಮತದಲ್ಲಿ) ಇಂದ್ರಿಯಗಳು ಆಯಾ ಶರೀರಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿರುವಿಕೆ. 4. ಮಹದಾದಿ ಸೃಷ್ಟಿ. 5. ಪಂಚೀಕರಣವಾಗದಿರುವ ಭೂತಗಳು. 6. ಸಮೂಹ.

**ಸಮರ್ಥಿಲಾ ಸಮಸ್ಥಿಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂಗಳವಳ್ಳಿ.

**ಸಮಸನ ಸಮಸನ** (ನಂ) 1. ಸಂಗ್ರಹಿಸುವುದು, ಸಂಕ್ಷೇಪ ಮಾಡುವುದು. ಸಮ್+ಅಸು(ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | "ಸಂಕ್ಷೇಪಣಂ ಸಮಸನಮ್" ಅಮಂ | 2. ಸಮಾಸ, ಅನೇಕ ಪದಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಒಂದೇ ಪದವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವುದು.

**ಸಮಸ್ತುತಿ ಸಮಸ್ತುತಿ** (ವುಂ) ಕಲ್ಪದ ಕೊನೆ, ಮಹಾ ಪ್ರಳಯ. ಸಮೇಷಾಂ ಸುತಿಯಂತ್ರ |

**ಸಮಸ್ತ ಸಮಸ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಸಂಪೂರ್ಣ, ಸಕಲ, ಎಲ್ಲ, ನಿಃಶೇಷವಾದ. ಸಮ್+ಅಸು(ಕ್ಷೇಪಣೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಸಪದಿ ಕುಮುದಿನಿಮಿಮಿಲಿತಂ ಹಾ ಅಪಾಪಿ ಕ್ಷಯಮಗಮದಪೇತಾ-ಸ್ತಾರಕಾಸ್ತಾಃ ಸಮಸ್ತಾಃ" ಭಾಷ್ಯಂ ೧೧-೨೪ | 2. ಎಸೆಯ ಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಅನೇಕ ಪದಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಒಂದಾಗಿ ಮಾಡ ಲ್ಪಟ್ಟ (ಪದ). 4. ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಕ್ಷೇಪ ವಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಸಮಸ್ಯ ಸಮಸ್ಥ** (ವಿಂ) 1. ಸಮಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರುವ. ಸಮೇ ತಿಷ್ಠತಿ - ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಕಃ" (೩-೨-೪) | 2. ಸಮಾನವಾಗಿರುವ, ಏಕರೂಪವಾಗಿರುವ. 3. ಸಮ ವಾಗಿರುವ, ಹಳ್ಳತಿಟ್ಟಿಲ್ಲದ, ಒಂದೇ ಮಟ್ಟದಲ್ಲಿರುವ.

**ಸಮಸ್ಯಲ ಸಮಸ್ಥಲ** (ನಂ) ಸಮಭೂಮಿ, ಹಳ್ಳತಿಟ್ಟಿಲ್ಲದ ನೆಲ.

**ಸಮಸ್ಯಲಿ ಸಮಸ್ಥಲೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗಾ-ಯಮುನಾ ನದಿ ಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ದೇಶ, ಅಂತರ್ವೇದಿ.

**ಸಮಸ್ಯಾ ಸಮಸ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಶ್ಲೋಕಗಳನ್ನು ಪೂರ್ಣ ಮಾಡಲು ಕವಿಗಳಿಗೆ ಕೊಡುವ ಶ್ಲೋಕದ ಒಂದು ಪಾದ ಅಥವಾ ಶ್ಲೋಕದ ಅರ್ಧ ಭಾಗ, ಕವಿಗಳನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸಲು (ಶ್ಲೋಕ ಪೂರ್ತಿಮಾಡಲು) ಅವರಿಗೆ ಕೊಡುವ ಶ್ಲೋಕದ ಒಂದು ಭಾಗ. "ಸಮಸ್ಯಾ ತು ಸಮಾಸಾರ್ಥಿ" ಅಮಂ | 2. ಅಪೂರ್ಣವಾಗಿರುವುದನ್ನು ಪೂರ್ಣಮಾಡುವುದು.



ಸಮಾ ಸಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವರ್ಷ, ಸಂವತ್ಸರ. ಸಮಂತಿವಿಕ್ಲವಂ ಕುर्वಂತಿ ಸರ್ವಮ್—ವಮ (ವಿಕ್ಲವ್ಯ) “ಅವ್” (೩-೧-೧೩೪)। “ಹಾಯನೋಸ್ತೃ ಶರತ್ಸಮಾ:” ಎಂದು ಬಹುವಚನ ನಿರ್ದೇಶಿಸಿರುವುದರಿಂದ ಇದು ನಿತ್ಯಬಹುವಚನಾಂತ ಶಬ್ದ. ಆದರೆ “ಸಮಾ ಸಮಾ ವಿಜಾಯತೇ” (೪-೨-೧೨) ಎಂದು ನಿರ್ದೇಶವಿರುವುದರಿಂದ ಏಕವಚನಾಂತವೂ ಉಂಟು. “ಮಾನಿಷಾದ-ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ತ್ವಮಗಮ: ಶಾಶ್ವತೀ: ಸಮಾ:। ಯತ್ಕೌಶಮಿಬುನಾದೇಕ-ಮವಳಿ: ಕಾಮಮೋಹಿತಮ್” ರಾಮಾಂ।

ಸಮಾಂಶ ಸಮಾಂಶ (ಪುಂ) ಸಮನಾದ ಭಾಗ, ಸಮಪಾಲು. ಸಮಂಜಾ:।

ಸಮಾಂಶಹಾರಿನ್ ಸಮಾಂಶಹಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಸಮಪಾಲನ್ನು ಪಡೆಯುವವನು, ಸಮವಾದ ಭಾಗವನ್ನು ಪಡೆಯಲು ಹಕ್ಕುಳ್ಳವನು. ಸಮಾಂಶ ಹರತಿ—ಹ್ವ (ಹರಣ) “ಗಿಣಿ:” (೩-೧-೧೩೪)।

ಸಮಾಂಶಿಕ ಸಮಾಂಶಿಕ (ವಿಂ) ಸಮಪಾಲನ್ನು ಪಡೆಯಲು ಹಕ್ಕುಳ್ಳವನು. ಸಮಾಂಶೋಽಸ್ತಿ “ಠನ್” (೪-೨-೧೧೫)। “ಯದಿ ಕುರ್ಯಾತ್ಸಮಾನಾಂಶಾನ್ ಪತ್ಯ: ಕಾರ್ಯಾ: ಸಮಾಂಶಿಕಾ:”।

ಸಮಾಸಮೀನಾ ಸಮಾಸಮೀನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರತಿವರ್ಷವೂ ಕರುಹಾಕುವ ಹಸು, ವರ್ಷಕಂತಿ. ಸಮಾಸಮಾಸಾಂ ವಿಜಾಯತೇ ಪ್ರತಿವರ್ಷಂ ಗರ್ಭಂ ವಿಮುಚ್ಛತಿ। ಸಮಾಸಮಾಸಾಂ ವಿಜಾಯತೇ “ಃ:” (೪-೨-೧೨)। उत्तरदले टाव्विभक्त्योलोप: पूर्वदले यलोप एव। यलोपोऽवशिष्टविभक्तेरलुक् च निपा०। “ಸಮಾಸಮೀನಾ ಸಾ ಯೇವ ಪ್ರತಿವರ್ಷಂ ಪ್ರಸೂಯತೇ” ಅಮಂ।

ಸಮಾಕರ್ಷಿನ್ ಸಮಾಕರ್ಷಿನ್ (ಪುಂ) ಬಹಳ ದೂರದವರೆಗೂ ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವ ಪರಿಮಳ. ಸಮಾಕರ್ಷತಿ ಮನ:—ಸಮ್+ಆ+ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) “ಗಿಣಿ:” (೩-೩-೧೭೧)। “ಸಮಾಕರ್ಷಿ ತು ನಿರ್ಹಾರಿ ಸುರಭಿಘ್ರಣಿತರ್ಪಣ:” ಅಮಂ।

ಸಮಾಕೀರ್ಣ ಸಮಾಕೀರ್ಣ (ವಿಂ) ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್+ಆ+ಕೃ (ವಿಕ್ಷೇಪ) “ಕ್ವ:” (೩-೨-೧೦೨)। “ಶ್ಲೋಕಸಾರ ಸಮಾಕೀರ್ಣ ಸರ್ಗಕಲ್ಲೋಲಸಂಕುಲಮ್”।

ಸಮಾಕುಲ ಸಮಾಕುಲ (ವಿಂ) 1. ಭಯಭ್ರಾಂತರಾದ, ಹೆದರಿದ. ಸಮ್+ಆ+ಕುಲ (ಸಂಸ್ಥಾನೇ ಬಂಧುಪು ಚ) “ಕ್ವ:” (೩-೧-೧೩೫)। “ಆಗಚ್ಛತೋಽನ್ವಿ ಗಜಸ್ಯ ಷಂಟಯೋ: ಸ್ವನಂ ಸಮಾಕರ್ಣ್ಯ ಸಮಾಕುಲಾಙ್ಗನಾ:” ಮಾಘಂ ೧೨-೩೪। 2. ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ, ತುಂಬಿರುವ. “ಸಹಸಾ ಸಸಂಭ್ರಮವಿಲೋಲಸಂಕಂಜನತಾಸಮಾಕುಲಮ್” ಮಾಘಂ ೧೫-೭೪। 3. ಕ್ಷೋಭೆಗೊಂಡ, ಒರಳಿದ, ಉದ್ರೇಕಗೊಂಡ. “ಸಮಾಕುಲೇ

ಸದಸಿ ತಪಾಪಿ ವಿಕ್ರಿಯಾ ಮನೋಜಗಮನುರಭಿದ: ಪುರೋದಿತ:” ಮಾಘಂ ೧೭-೧೮।

ಸಮಾಕ್ರಮಣ ಸಮಾಕ್ರಮಣ (ನಂ) ಮುಕ್ತಿಗೆ ಹಾಕುವುದು, ಆಕ್ರಮಿಸುವುದು. ಸಮ್+ಆ+ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

ಸಮಾಖ್ಯಾ ಸಮಾಖ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯಶಸ್ಸು, ಕೀರ್ತಿ. ಪ್ರಖ್ಯಾತಿ. ಸಮ್+ಆ+ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕರ್ಷಣೆ) “ಅಙ್” (೩-೩-೧೦೬)। 2. ಹೆಸರು, ನಾಮಧೇಯ.

ಸಮಾಖ್ಯಾತ ಸಮಾಖ್ಯಾತ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಪಡೆದಿರುವ, ಕೀರ್ತಿಯನ್ನು ಗಳಿಸಿರುವ. ಸಮ್+ಆ+ಖ್ಯಾ (ಪ್ರಕರ್ಷಣೆ) “ಕ್ವ:” (೩-೪-೭೨)। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು.

ಸಮಾಗತ ಸಮಾಗತ (ವಿಂ) 1. ಬಂದಿರುವ, ಬಂದು ತಲುಪಿರುವ. ಸಮ್+ಆ+ಗಮ್ಲ (ಗತೀ) “ಕ್ವ:” (೩-೪-೭೨)। “ಶೋರೆ: ಪ್ರತಾಪೋಪನತೇರಿತಸ್ತತ: ಸಮಾಗತ: ಪ್ರಶ್ರಯನ-ಮೃತಿಭಿ:” ಮಾಘಂ ೧೨-೩೩। 2. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ. 3. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಬಂದಿರುವ. “ಸ್ವಕೇತುಭಿ: ಪಾಣ್ಡುರನೀಲಪಾಟಲ: ಸಮಾಗತಾ: ಶಕ್ರವನು:ಪ್ರಭಾಮಿದ:” ಕಿರಾಂ ೧೬-೫೮।

ಸಮಾಗತಿ ಸಮಾಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಗಮನ, ಬರುವುದು, ಬಂದು ಸೇರುವುದು. ಸಮ್+ಆ+ಗಮ್ಲ (ಗತೀ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೧೪)। 2. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕಲಿತು ಬರುವುದು. 3. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬರುವುದು.

ಸಮಾಗಮ ಸಮಾಗಮ (ಪುಂ) 1. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬರುವುದು. ಸಮ್+ಆ+ಗಮ್ಲ (ಗತೀ) “ಅಪ್” (೩-೩-೫೮)। 2. ಬಂದು ಸೇರುವುದು, ತಲುಪುವುದು. 3. ಒಬ್ಬರನ್ನೊಬ್ಬರು ಸಂಧಿಸುವುದು, ಪರಸ್ಪರ ಒಟ್ಟುಗೂಡುವುದು. “ವಲ್ಲಭಾಮಿರೂಪಸೃತ್ಯ ಚಕ್ರೀ ಸಾಮಿಭುಕ್ತವಿಷಯಾ: ಸಮಾಗಮಾ:” ರಘುಂ ೧೯-೧೬। 4. ಗ್ರಹಗಳು ಒಂದು ಕಡೆ ಸೇರುವುದು.

ಸಮಾಧಾತ ಸಮಾಧಾತ (ಪುಂ) 1. ಯುದ್ಧ, ಸಮರ. ಸನಾಹ್ಯತೇಽತ್ರ—ಸಮ್+ಆ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ: “ಛ:” (೩-೩-೧೧೮)। 2. ವಧೆ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. “ಸಮಾಧಾತೋ ವಧೇ ಯುಧೇ” ಮೇದಿಂ।

ಸಮಾಚರಣ ಸಮಾಚರಣ (ನಂ) ಅನುಷ್ಠಾನ, ಆಚರಿಸುವುದು, ನಡೆಸುವುದು. ಸಮ್+ಆ+ಚರ (ಗತೀ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)।

ಸಮಾಚರಣೀಯ ಸಮಾಚರಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಅನುಷ್ಠಿಸಲ್ಪಡುವ, ನಡೆಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಅನುಷ್ಠಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಅನುಷ್ಠಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 4. ಆಚರಿಸಬಹುದಾದ. ಸಮ್+ಆ+ಚರ (ಗತೀ) “ಅನೀಯ್” (೩-೧-೯೬)।



ಸಮಾಚರತ್ ಸಮಾಚರತ್ (ವಿಂ) ಅನುಷ್ಠಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅಚರಿಸುತ್ತಿರುವ, ನಡಸುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಆ + ಚರ (ಗತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಚರಂತಿ -ಚರಂತೀ.

ಸಮಾಚಾರ ಸಮಾಚಾರ (ಪುಂ) ವಾರ್ತೆ, ವರ್ತಮಾನ. ಸಮ್ + ಆ + ಚರ (ಗತೌ) "ಘಕ್" (೩-೩-೧೮)। "ಪುಣ್ಯಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಸಮಾಚಾರಂ ಶ್ರೋತುಮಿಚ್ಛಾಮಿ ತತ್ವತಃ" ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ. 1.

ಸಮಾಜ ಸಮಾಜ (ಪುಂ) 1. ಪಶು ಪ್ರಾಣಿಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಬೇರೆಯಾದ ದೇವ ಮನುಷ್ಯಾದಿಗಳ ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು, ಸಂಘ. ಸಂವೀಯತೇಜ-ಸಮ್ + ಅಜ (ಗತೀಕ್ಷೇಪಣಯೋಃ) "ಘಕ್" (೩-೩-೧೯)। "ಧರ್ಮಾಂತಿಕರ್ಮೋಹಸ್ಯ ಸಮಾಜಸ್ಯ ಧ್ರುವಂ ಭವೇತ್ | ಯತ್ರಾಧರ್ಮಃ ಸಮುತ್ಪಿಷ್ಟೇತ್ ನ ಸ್ಯೇಯಂ ತತ್ರ ಕಹಿಹಿತ್" ಭಾಗಂ ೧೦-೪೪-೯। 2. ಗುಂಪು, ರಾಶಿ. "ಸಮಾಜಮಿವ ಸಿದ್ಧಿಣಾಂ ಸ ತಥೌವತಮಗ್ರಹೀತ್" ಯಾದಂ ೧೬-೧೪೧। 3. ಕೂಟ, ಅಚಲವಾದ ವಸ್ತುಗಳ ಪುಂಡ. "ಸಮಾಜಮಿವ ಶೈಲಾನಾಂ ವಿಶ್ವರೂಪಮಿವ ಪ್ರಭುಮ್" ಯಾದಂ ೨೨-೧೧೫। 4. ಸಭೆ, ಗೋಷ್ಠಿ, ಪರಿಷತ್ತು. "ವಿಶೇಷತಃ ತತ್ವವಿದಾಂ ಸಮಾಜೇ ವಿಮೂಢಾಂ ಮೌನಮಪಿಂಡಿತಾನಾಂ" ಭರ್ತಂ ೧-೭।

ಸಮಾಜಾ ಸಮಾಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಶಸ್ಸು, ಕೀರ್ತಿ. ಸಮ್ + ಆ + ಜಾ (ಅವಬೋಧೇ) "ಅಙ್" (೩-೩-೧೦೬)।

ಸಮಾಧಾನ ಸಮಾಧಾನ (ನಂ) 1. ಸರಿಯಾಗಿ ಸ್ವೀಕರಿಸುವುದು, ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಸಮ್ + ಆ + ಡುಡಾಕ್ (ದಾನೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಯೋಗ್ಯವಾದ ದಾನವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವುದು. 3. ಬೌದ್ಧರ ನಿತ್ಯಕರ್ಮಾಚರಣೆ. "ಸಮಾಧಾನಂ ಸಮೀचीनग्रहणं सौगताह्निके" ಮೇದಿಂ. 1.

ಸಮಾವಿಶತ್ ಸಮಾವಿಶತ್ (ವಿಂ) ಅಜ್ಞೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಅಪ್ಪಣೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಆ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ವಿಶಂತಿ -ವಿಶಂತೀ.

ಸಮಾದೇಶ ಸಮಾದೇಶ (ಪುಂ) ಅಜ್ಞೆ, ಅಪ್ಪಣೆ. ಸಮ್ + ಆ + ದಿಶ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ಘಕ್" (೩-೩-೧೮)।

ಸಮಾಧಾನ ಸಮಾಧಾನ (ನಂ) 1. ಸರಿಯಾಗಿ ಇಡುವುದು, ಸರಿಯಾದ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಇರಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಆ + ಡುಡಾಕ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಚಿತ್ತೈಕಾಗ್ರತೆ, ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲಿ ಒಂದೇ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಇಟ್ಟಿರುವುದು. 3. ನಿಶ್ಚಲವಾದ ಚಿತ್ತದಿಂದ ತಪಸ್ಸು

ನ್ನಾಚರಿಸುವುದು. 4. ಚಿತ್ತಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯ, ಮನಸ್ಸಿನ ನೆಮ್ಮದಿ, ಶಾಂತತೆ. 5. ಸಂದೇಹವನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವುದು, ಮಾಡಿದ ಪೂರ್ವಪಕ್ಷಕ್ಕೆ ಸಮಂಜಸವಾಗಿ ಉತ್ತರ ಹೇಳುವುದು. 6. ಸಮ್ಮತಿ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. 7. ವಿವಾದವನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು.

ಸಮಾಧಿ ಸಮಾಧಿ (ಪುಂ) 1. ಏಕವಸ್ತುವಿಷಯಕ ನಿರಂತರ ಧ್ಯಾನ. ಎಂಟು ವಿಧ ಯೋಗಾಂಗಗಳಿಲ್ಲೊಂದು. ಏಕಾಗ್ರತಯಾ ಮನಸಃ ಸ್ಥಾಪನರೂಪೋ ಧ್ಯೇಯಮಾತ್ರಸ್ಫುರಣರೂಪಃ ಧ್ಯಾನವಿಶೇಷಃ | ಸಮಾಧೀಯತೇಽಸ್ಮಿನ್ ಮನೋ ಜನಃ - ಸಮ್ + ಆ + ಡುಡಾಕ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕಿಃ" (೩-೩-೯೨)। ಸಮಾಧಿಯು ಸಂಪ್ರಜಾತಃ ಮತ್ತು ಅಸಂಪ್ರಜಾತಃ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ["ಅಸಂಪ್ರಜಾತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ಆತ್ಮೇಶ್ವರಾಣಾಂ ನ ಹಿ ಜಾತು ವಿಜ್ಞಾಃ ಸಮಾಧಿಭೇದಪ್ರಭವೋ ಭವಂತಿ" ಕುಮಾಂ ೩-೪೦। 2. ಧ್ಯಾನ. 3. ತಪಸ್ಸು. "ಅಥೋಪಯಂತಾರಮಲಂ ಸಮಾಧಿನಾ ನ ರತ್ನಮನ್ವಿಷ್ಯತಿ ಸ್ಥಾಯತೇ ಹಿ ತತ್" ಕುಮಾಂ ೫-೪೫। 4. ಅಂಗೀಕಾರ, ಸಮ್ಮತಿ. "ಅಯಾಚ-ತಾರಣ್ಯನಿವಾಸಮಾತ್ಮನಃ ಕಲೋದಯಾಂತಾಯ ತಪಃಸಮಾಧಯೇ" ಕುಮಾಂ ೫-೬। 5. ಅಶಕ್ಯವಾದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಪ್ರಯತ್ನ. 6. ಮೌನ, ಮಾತನಾಡದಿರುವುದು. 7. ಧ್ಯಾನದ ಕೊರತೆಯ ನಿಮಿತ್ತ ಕೊಳ್ಳುವವರ ಪೈಪೋಟಿ. 8. ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿರಬೇಕಾದ ಶಬ್ದಗುಣಗಳಿಲ್ಲೊಂದು, ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿನ ಒಂಥ (ಪದರಚನೆ) ಗುಣ. "ಆರೋಹಾವರೋಹಕ್ರಮಃ ಸಮಾಧಿಃ" ಕಾವ್ಯಾಂ ಸುಂ ೩-೧೨। ದೀರ್ಘಾದಿ ಗುರು ವರ್ಣಗಳು ಅಧಿಕವಾಗಿರುವುದು ಆರೋಹ. ಲಘು ವರ್ಣಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಶೈಥಿಲ್ಯವು ಅವರೋಹ. ಆರೋಹವಿರುವಲ್ಲಿ ಅವರೋಹದ ಪರಿತ್ಯಾಗ. ಅವರೋಹವಿರುವಲ್ಲಿ ಆರೋಹದ ಪರಿತ್ಯಾಗವೇ ಸಮಾಧಿ. 9. ಕಾರಣ ವಸ್ತು. ಸಮಾಧೀಯತೇಜೇನ-ಸಮ್ + ಆ + ಡಾಕ್ ಕರಂ "ಕಿಃ" (೩-೩-೯೨)। "ತಂ ವೇದಾ ವಿದಧೇ ನೂನಂ ಮಹಾಭೂತಸಮಾಧಿನಾ" ರಘುಂ ೧-೨೯। 10. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಕೈಗೊಂಡ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಬೇರೆ ಕಾರಣಗಳಿಂದಲೂ ಸೌಕರ್ಯ ವರ್ವಡುವಲ್ಲಿ "ಸಮಾಧಿ" ಅಲಂಕಾರ. "ಸಮಾಧಿಃ ಕಾರ್ಯಸೌಕರ್ಯ ಕಾರಣಾಂತರಸನ್ನಿಧಿಃ"। ತದಾಃ "ಉತ್ಕಂಠಿತಾ ಚ ಕುಲಟಾ ಜಗಾಮಾಸ್ತಂ ಚ ಭಾನುಮಾನ್" ಚಂದ್ರಾಂ 11. ಕುತ್ಸಿಗಯನ್ನು ಪ್ರಯಾಸವಿಲ್ಲದೆ ಸಮ್ಯಕ್ತಿಯಲ್ಲಿಟ್ಟು ಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಅಸಾವಧವ್ಯವಂತಿ ಸಮಾಧಿಃ ಶಿರೋ-ಧರಾಕಾ ರಹಿತಪ್ರಯಾಸಃ" ಕಿರಾಂ ೧೬-೨೧। 12. ಸಮಾಧಾನ, ದೈವಾನುಗ್ರಹದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಸಂತೋಷ, ಕೃಪೆ.



**ಸಮಾಧಿಸ್ಥ ಸಮಾಧಿಸ್ಥ** (ವಿಂ) ತಪಸ್ಸಿನಲ್ಲಿರುವವನು, ಹೃದಯಕಮಲದಲ್ಲಿರುವ ಪರಮಾತ್ಮನ ಧ್ಯಾನದಿಂದ ತಲ್ಲೀನನಾಗಿರುವವನು. ಸಮಾಧಿ ತಿಷ್ಠತಿ—ಷಾ (ಗತಿ-ನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ:" (3-2-8) ।

**ಸಮಾನ ಸಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಏಕರೂಪವಾದ, ಸದೃಶವಾಗಿರುವ, ಸಮವಾಗಿರುವ. ಸಹ ಮಾನೇನ ವರ್ತತೆ ಸಮಾನ ಮಾನಮಸ್ಯ ಇತಿ ವಾ । "ಸಮಾನಪ್ರೇಮಾಣಂ ಜನಮಸುಲಭಂ ಪ್ರಾಪಿತವತೋ ವಿಧಿ ವಾಮಾರಂಭೇ ಮಮ ಸಮುಚಿತೇಷಾ ಪರಿಣತಿ:" ಮಾಲತೀಂ ೪-೪ । 2. ಸರ್ವರಿಗೂ ಸಮವಾದ, ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಸೇರಿದ, ಸಾಮಾನ್ಯವಾದ. 3. ಅಭಿನ್ನವಾದ, ಅದೇ ಆಗಿರುವ, ಒಂದೇ ಆಗಿರುವ. "ನೌಪಗಂಚೇತ್ ಪ್ರಮತ್ತೋಽಪಿ ಸ್ವಿತ್ರಯಮಾರ್ತವದಶನೇ । ಸಮಾನಶಯನೇ ಚೈವ ನ ಶಯತಿ ತಯಾ ಸಹ" ಮನುಂ ೪-೪೦ । (ಪುಂ) 4. ಶರೀರದೊಳಗಿನ ಪಂಚಪ್ರಾಣವಾಯುಗಳ ಲ್ಲೊಂದು. ಸಮಂತಾದನಿತ್ಯನೇನ — ಸಮ್ + ಅನ್ (ಪ್ರಾಣನೇ) "ಘಜ್" (3-3-121) । ಈ ಪ್ರಾಣವಾಯುವು ನಾಭಿ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿರುವುದು. "ಸಮಾನೋ ನಾಭಿಸಂಸ್ಥಿತ:" ಅಮಂ ।

**ಸಮಾನಕಾಲಿಕ ಸಮಾನಕಾಲಿಕ** (ವಿಂ) ಒಂದೇ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಸಮಾನಕಾಲೇ ಭವ: "ಠಜ್" (೪-3-11) ।

**ಸಮಾನಾಧಿಕರಣ ಸಮಾನಾಧಿಕರಣ** (ವಿಂ) ಏಕಾಧಿಕರಣ ವುಳ್ಳ, ಒಂದೇ ವಿಧಕ್ರಿಯೆ ಸಂಬಂಧವುಳ್ಳ, ಒಂದೇ ಆಶ್ರಯವುಳ್ಳ. ಸಮಾನಮಧಿಕರಣಂ ಯಯೋ: । ನೆಲೆಗೆ ಏತ: ಎಂಬಲ್ಲಿ ನೀಲ ಮತ್ತೂ ಘಟ ಪದಗಳು ಏಕಧರ್ಮ (ಆಶ್ರಯ) ಬೋಧಕಪದಗಳಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಇವು ಸಮಾನಾಧಿಕರಣ ಪದಗಳು. ಇಲ್ಲಿ ಕರ್ಮಧಾರಯ ಸಮಾಸ. "ಸತ್ಪುರುಷ: ಸಮಾನಾಧಿಕರಣ: ಕರ್ಮವಾರಯ:" ಪಾಂ ಸುಂ 1-2-42 ।

**ಸಮಾನೋದಯ ಸಮಾನೋದಯ** (ಪುಂ) ಸಹೋದರ, ಒಡಹುಟ್ಟಿದವನು. ಸಮಾನೇ ತದರೇ ಶಯಿತ: "ಯತ್" (೪-೪-106) । "ಸಮಾನೋದಯಮಸ್ಮಾಕಂ ಜಟಾಯು ಚ ಸ್ತುತಾ-ದರಾತ್" ಮಡಿಂ ೭-೮೬ ।

**ಸಮಾಪಕ ಸಮಾಪಕ** (ವಿಂ) ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಮಾಡುವವನು, ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸುವವನು, ಪೂರೈಸುವವನು. ಸಮ್ + ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತಿ) "ಫ್ವಲ್" (3-1-133) । "ಏಕ ಏವ ವಸು ಯದ್ದೌ ನೃಪಸ್ತಸಮಾಪಕಮತರ್ಕಯತ ಕ್ರತೋ:" ಮಾಘಂ 14-೪೦ ।

**ಸಮಾಪತಿ ಸಮಾಪತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆಕಸ್ಮಿಕವಾಗಿ ಸಂಧಿಸುವುದು, ಯಾದೃಚ್ಛಿಕ ಸಮಾಗಮ. ಸಮ್ + ಆ + ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94) । "ತಯೋ: ಸಮಾಪತಿಷ್ಠ ಕಾತರಾಣಿ ಕಿಂಚಿದ್ವಚಸ್ಯಾಪಿತಸಂಹೃತಾನಿ" ಕುಮಾಂ ೭-೭೫ । 2. ಸಂಧಿ, ಸಮಾಗಮ.

**ಸಮಾಪನ ಸಮಾಪನ** (ನಂ) 1. ಪೂರ್ತಿಗೊಳಿಸುವುದು, ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತಿ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114) । "ಆದಿಷ್ಟಿ ನೋದಕಂ ಕುರ್ಯಾದಾತ್ರತಸ್ಯ ಸಮಾಪನಾತ್" ಮನುಂ ೫-೮೮ । 2. ಪರಿಚ್ಛೇದ, ಅಧ್ಯಾಯ, ಗ್ರಂಥದ ಒಂದು ಭಾಗ. 3. ವಧೆ. "ಸಮಾಪನಂ ಪರಿಚ್ಛೇದೇ ಸಮಾಪ್ತಿವಧಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ । 4. ಸಮಾಧಾನ. "ಸಮಾಪ-ನಮ್ । ಪರಿಚ್ಛೇದೇ ಸಮಾಪ್ತೌ ಚ ಸಮಾಧಾನೇ ಪ್ರಮಾಪಣೇ" ವಿಶ್ವಂ ।

**ಸಮಾಪನೀಯ ಸಮಾಪನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಪೂರ್ತಿಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಪೂರೈಸಬೇಕಾದ. 3. ಪೂರೈಸಬಹುದಾದ. 4. ಪೂರೈಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ಸಮ್ + ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತಿ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) । "ತವ್ಯ:" । ಸಮಾಪಿತವ್ಯಮ್ ಸಮಾಪಿತವ್ಯಮ್ ।

**ಸಮಾಪನ್ನ ಸಮಾಪನ್ನ** (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಆ + ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತ:" (3-2-102) । 2. ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸಮಾಪ್ತಿಹೊಂದಿದ. 4. ಬಹಳ ಕಷ್ಟವಾದ. 5. ಸಂಭವಿಸಿದ. "ಸಮಾಪನ್ನ ಸಮಾಪ್ತ ಸ್ಯಾತ್ಪ್ರಾಪ್ತೇ ಕಿಲಂಟೇ ವಧೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ । (ನಂ) 6. ವಧೆ. 7. ಸಮಾಪ್ತಿ, ಕೊನೆ.

**ಸಮಾಪಿಕಾ ಸಮಾಪಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಾಕ್ಯವನ್ನು ಪೂರ್ತಿ ಮಾಡುವ ಕ್ರಿಯಾಪದ ಮೊದಲಾದುದು. ಕೆಲವೆಡೆ ಕ್ರಿಯಾಪದದಿಂದಲೂ ಕೆಲವೆಡೆ ಕೃದಂತಪದಗಳಿಂದಲೂ ವಾಕ್ಯ ಪೂರ್ತಿ ಆಗುವುದು. ಕ್ರಿಯಾಪದ: "ರಮ್ಯೋಮಿ ತ್ರಿದಶನದೀ ಯಬಲಾನಿ" ಕಿರಾಂ ೭-೯ । "ತದ್ವಿಶಿತಾ: ಪ್ರಾಜ್ಞಜಲಯ: ಪ್ರಣೇಮು:" ಕುಮಾಂ ೭-೪೫ । ಕೃದಂತ: "ಅಮುಷ್ಠಿತೋ ಗುರೋ: ಸಂದೇಶ:" ಶಾಕುಂ ೫ । "ಪಶ್ಚಾತ್ ಕೋಪಯಿತುಮಾಯುಷ್ಮಂತಂ ತಥಾ ಕೃತವಾನಸ್ಮಿ" ಶಾಕುಂ ೬ ।

**ಸಮಾಪಿತ ಸಮಾಪಿತ** (ವಿಂ) ಪೂರ್ಣಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪೂರೈಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತಿ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102) ।

**ಸಮಾಪ್ತ ಸಮಾಪ್ತ** (ವಿಂ) ಪೂರ್ಣವಾದ, ಪೂರ್ತಿಯಾದ. ಸಮ್ + ಆಪ್ (ವ್ಯಾಪ್ತಿ), "ಕ್ತ:" (3-೪-೭೨) ।

**ಸಮಾಪ್ತಪುನರಾಸ್ಥ ಸಮಾಪ್ತಪುನರಾಸ್ಥ** (ನಂ) ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಭವಿಸುವ ಒಂದು ವಾಕ್ಯದೋಷ. ವಾಕ್ಯಾರ್ಥವು ಪೂರ್ಣವಾದನಂತರ ಆಕಾಂಕ್ಷಾರಹಿತವಾದ ವಿಶೇಷ ಪದಕ್ಕೆ ಮತ್ತೆ ಆಕಾಂಕ್ಷೆಯಿಂದ ವಿಶೇಷಣ ಪದಗಳನ್ನು ಹೇಳುವಲ್ಲಿ "ಸಮಾಪ್ತಪುನರಾಸ್ಥವಮ್" ಎಂಬ ವಾಕ್ಯದೋಷ. "ನಾಶಯಂತೋ ಧನಶ್ವಾಂತಂ ತಾಪಯಂತೋ ವಿಯೋಗಿನ: । ಪತಂತಿ



ಶಶಿನಃ ಪಾದಾ ಭಾಸಯಂತಃ ಕ್ಷಮಾತಲಮ್" ಇಲ್ಲಿ ಭಾಸಯಂತಃ-  
ಕ್ಷಮಾತಲಮ್ ಎಂದು ವಿಶೇಷಣಾಂತರವನ್ನು ಹೇಳಿರುವುದು  
ಸಮಾಪ್ತಪುನರಾತ್ಮತಾ ದೋಷಯುಕ್ತ.

**ಸಮಾಪ್ತಿ ಸಮಾಪ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೊನೆ, ಕಡೆ, ಸಮಗ್ರತೆ.  
ಸಮ್ + ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಕ್ವಿನ್" (3-3-94) ।  
2. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಬೆಳವಣಿಗೆ. "ಸದಃ ಪ್ರವಾಲೋದ್ಗಮಚಾರುಪತ್ರೇ  
ನೀತೇ ಸಮಾಪ್ತಿ ನವಚತುರ್ಬಾಣೇ" ಕುಮಾಂ 3-27 । 3.  
ಸಮರ್ಥನೆ, ಸ್ಥಿರಪಡಿಸುವುದು.

**ಸಮಾಪ್ತವ ಸಮಾಪ್ತವ** (ಪುಂ) 1. ಸ್ಥಾನ. ಸಮ್ + ಆ + ಪ್ಲುಟ್  
(ಗತೌ) "ಅಪ್" (3-3-49) । ವಾ "ಘಜ್" (3-3-40) ।  
-ಆಪ್ಲಾವಃ - ಅಪ್ಲಾವಃ. 2. ನೀರನ್ನು ಚಿಮ್ಮಿಸುವುದು.  
-ಆಪ್ಲವನಮ್ - ಅಪ್ಲವನಮ್. ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) ।

**ಸಮಾಪ್ತತ ಸಮಾಪ್ತತ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ಥಾನಮಾಡಿದವನು.  
ಸಮ್ + ಆ + ಪ್ಲುಟ್ (ಗತೌ) "ಕ್ವಿನ್" (3-3-92) ।  
2. ನೀರು ಚಿಮ್ಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ಕ್ವಿನ್" (3-3-102) ।

**ಸಮಾಭಾಷಣ ಸಮಾಭಾಷಣ** (ನಂ) ಪರಸ್ಪರಮಾತನಾಡುವುದು.  
ಸಮ್ + ಆ + ಭಾಷ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) ।  
"ಕಶ್ಚಿದ್ವಿವೃತ್ತತಿಕಭಿನ್ನಹಾರಃ ಸುಹೃತ್ಸಮಾಭಾಷಣತತ್ಪರೋಽಭೂತ್" ರಘುಂ 6-16 ।

**ಸಮಾನ್ಯಾಯ ಸಮಾನ್ಯಾಯ** (ಪುಂ) 1. ಸಾಂಪ್ರದಾಯಿಕ ವರ್ಣಗಳ ಸಮೂಹ, "ಅ" ಕಾರದಿಂದ "ಹ" ಕಾರದ ವರೆಗಿನ ಅಕ್ಷರಗಳ ಸಮೂಹ, ವರ್ಣಮಾಲೆ. 2. ಪುನರಾವೃತ್ತಿ, ಪುನರುಚ್ಚಾರ. ಸಮ್ + ಆ + ಮ್ನಾ (ಅಮ್ಯಾಸೇ) "ಘಜ್" (3-3-18) । ಯುಕ್ (3-3-33) । "ಯೇನಾಕ್ಷರ-ಸಮಾನ್ಯಾಯಮಧಿಗಮ್ಯ ಮಹೇಶ್ವರಾತ್ । ಕೃತ್ಸನಂ ವ್ಯಾಕರಣಂ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ತಸ್ಮೈ ಪಾಣಿನಯೇ ನಮಃ" ಸಿಂ ಕೌಂ । 3. ಪದಗಳ ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. "ಅಶ್ವೋಽಶ್ವ ಇತಿ ನಾಮ ಪಶು-ಸಮಾನ್ಯಾಯೇ ಸಾಂಗ್ರಾಮಿಕೇ ಚ ಪಠ್ಯತೇ" ತಂ ರಾಂ 4 ।

**ಸಮಾಯುಕ್ತ ಸಮಾಯುಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಸಂಬಂಧಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್ + ಆ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ಕ್ವಿನ್" (3-3-102) । 2. ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಸಿದ್ಧಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಬಾಣಸಂಧಾನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು (ಧನುಸ್ಸು). 4. ಅಣಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಸಜ್ಜುಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 5. ನಿಯಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಒಂದು ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ನೇಮಕ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು.

**ಸಮಾಯುತ ಸಮಾಯುತ** (ವಿಂ) ಮಿಶ್ರವಾಗಿರುವ, ಬೆರೆತಿರುವ. ಸಮ್ + ಆ + ಯು (ಮಿಶ್ರಣೇ) "ಕ್ವಿನ್" (3-3-92) ।

**ಸಮಾಯೋಗ ಸಮಾಯೋಗ** (ಪುಂ) 1. ಸಂಯೋಗ, ಸಂಬಂಧ. ಸಮ್ + ಆ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗೇ) "ಘಜ್" (3-3-18) ।  
"ಕ್ಷೇತ್ರಬೀಜಸಮಾಯೋಗಾತ್ ಸಮ್ಮವಃ ಸರ್ವದೇಹಿನಾಮ್" ಮನುಂ 9-33 । 2. ಅಣಿಮಾಡುವುದು, ಸಿದ್ಧಗೊಳಿಸುವುದು. 3. ಕಾರ್ಯ ಕಾರಣಗಳಿಗಿರುವ ಸಂಬಂಧ, ಅವಯವ-ಅವಯವಿ ; ಗುಣಗುಣ ಇವುಗಳಿಗಿರುವ ಸಂಬಂಧ, ಸಮವಾಯುಸಂಬಂಧ. 4. ಪ್ರಯೋಜನ. "ಸಮಾಯೋಗಸ್ತು ಸಂಯೋಗೇ ಸಮವಾಯೇ ಪ್ರಯೋಜನೇ" ಮೇದಿಂ । 5. ಧನುಸ್ಸಿಗೆ ಬಾಣವನ್ನು ಹೊಡೆುವುದು. 6. ತಯಾರಿಸುವುದು, ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವುದು. 7. ಒಂದು ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ನೇಮಕ ಮಾಡುವುದು.

**ಸಮಾರಬ್ಧ ಸಮಾರಬ್ಧ** (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಉಪಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್ + ಆ + ರಭ (ರಾಭಸ್ಯೇ) "ಕ್ವಿನ್" (3-3-102) । "ವಾಜಿನಃ ಶತ್ರುಸಂತ್ಯಸ್ಯ ಸಮಾರಬ್ಧ ನವಾಜಿನಃ" ಮಾಧಂ 19-62 । 2. ಕೈಗೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು.

**ಸಮಾರಂಭ ಸಮಾರಂಭ** (ಪುಂ) 1. ಉಪಕ್ರಮ, ಪ್ರಾರಂಭ, ತೊಡಗುವುದು. ಸಮ್ + ಆ + ರಭ (ರಾಭಸ್ಯೇ) "ಘಜ್" (3-3-18) । 2. ಉದ್ಯಮ, ಪ್ರಯತ್ನ. 3. ಕಾರ್ಯ, ಕೆಲಸ. ಸಮ್ + ಆ + ರಭ "ಘಜ್" (3-3-19) । "ಭವ್ಯ-ಮುಖ್ಯಾಃ ಸಮಾರಂಭಾಃ ಪ್ರತ್ಯವೇಕ್ಷ್ಯಾ ನಿರಸ್ತವಾಃ" ರಘುಂ 13-43 ।

**ಸಮಾರಾಧನ ಸಮಾರಾಧನ** (ನಂ) 1. ಸೇವೆ, ಶುಕ್ರೋಪ, ಉಪಚಾರ. ಸಮ್ + ಆ + ರಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । "ಅವ್ಯಾಹತಃ ಸ್ವೇರಗತಃ ಸ ತಸ್ಯಾಃ ಸಮ್ರಾಟ್ ಸಮಾರಾಧನತತ್ಪರೋಽಭೂತ್" ರಘುಂ 2-4 । 2. ಸಂತೋಷ ಪಡಿಸುವ ಉಪಾಯ, ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸುವ ಸಾಧನ. ಸಮ್ + ಆ + ರಾಧ ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) । "ತೃಗುಣ್ಯೋಽಶ್ವ-ಮತ್ರ ಲೋಕಚರಿತಂ ನಾನಾರಸಂ ದೃಶ್ಯತೇ ನಾಡ್ಯಂ ಭಿನ್ನರಚೇರ್ಜನಸ್ಯ ಬಹುಧಾಪ್ಯೇಕಂ ಸಮಾರಾಧನಮ್" ಮಾಲಂ 1-4 ।

**ಸಮಾರಾಧ್ಯ ಸಮಾರಾಧ್ಯ** (ವಿಂ) ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವವನು, ಆರಾಧಿಸಲ್ಪಡುವವನು. ಸಮ್ + ಆ + ರಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧೌ) "ಘಜ್" (3-3-18) । "ಸರ್ವಕರ್ಮಸಮಾರಾಧ್ಯ, ಭವತಪನ-ತಾಪಿತಭಕ್ತಜನಭದ್ರಾರಾಮ ಶ್ರೀರಾಮಭದ್ರ" ರಘುಂ 70 ।

**ಸಮಾರುಕ್ಷಾ ಸಮಾರುಕ್ಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತುಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಸಮ್ + ಆ + ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮನಿ ಪ್ರಾದುರಭಿವಿ ಚ) + ಸನ್ "ಅಃ" (3-3-102) ।

**ಸಮಾರುಕ್ಷು ಸಮಾರುಕ್ಷು** (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. ಸಮ್ + ಆ + ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದಿ) + ಸನ್ "ಃ" (3-3-102) ।



ಸಮಾಕೃತ ಸಮಾರೋಹ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಿರು ವವನು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತಿರುವವನು. ಸಮ್ + ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। 2. ಹತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ, ಏರಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಸಮಾರೋಪ ಸಮಾರೋಹ (ಪುಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತಿಸು ವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) + ಣಿಕ್ "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। ಪ: (೭-೩-೪೩)। 2. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಮತ್ತೊಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಜ್ಞಾನ, ಭ್ರಾಂತಿ, ಅದಲ್ಲದ ವಸ್ತುವನ್ನು ಅದನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯುವುದು. ಶುಕ್ತಿಯನ್ನು ರಜತವನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯುವುದು, ಶುಕ್ತಿಯಲ್ಲಿ ರಜತತ್ವ ಸಮಾರೋಹ. 3. ಸಮಾಪ್ತಿಗೊಳಿಸುವುದು, ಕೊನೆ ಮುಟ್ಟಿಸುವುದು. ಮಾತೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। -ಆರೋಪಣಮ್ -ಅರೋಹಣಮ್.

ಸಮಾರೋಪಿತ ಸಮಾರೋಹಿತ (ವಿಂ) 1. ಆರೋಪಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಲ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। ಪ: (೭-೩-೪೩)। 2. ಏರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹತ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಭ್ರಾಂತಿಯಿಂದ ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ, ತಪ್ಪಾಗಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸಮಸ್ಯ ಸಮಾಧಯತಾ ಗುಣಿರಿಸಾಂ ತ್ವಯಾ ಸಮಾರೋಪಿತಭಾರ ಭಾರತೀಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೪-೬।

ಸಮಾರೋಹ ಸಮಾರೋಹ (ಪುಂ) 1. ಹತ್ತುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರುವುದು. ಸಮ್ + ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ಬೀಜವು ಅಂಕುರಿಸಿ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳು ವುದು.

ಸಮಾರೋಹಣ ಸಮಾರೋಹಣ (ನಂ) 1. ಹತ್ತುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರುವುದು. ಸಮ್ + ಆ + ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಬೀಜವು ಅಂಕುರಿಸಿ ಬೆಳೆಯುವುದು.

ಸಮಾಲಂಬ ಸಮಾಲಂಬ (ಪುಂ) ಆಧಾರ, ಆಸರೆ. ಸಮ್ + ಆ + ಲಬಿ (ಅವಕ್ಷಸನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। -ಆಲಂಬನಮ್ -ಅಲಂಬನಮ್.

ಸಮಾಲಂಬಿತ ಸಮಾಲಂಬಿತ (ವಿಂ) ತೂಗುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸಮಾಲಂಬಿನ್ ಸಮಾಲಂಬಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಆಸರೆ ಹೊಂದಿ ರುವ, ಆಶ್ರಯ ಪಡೆದಿರುವ. ಸಮ್ + ಆ + ಲಬಿ (ಅವಕ್ಷಸನೆ) "ಣಿನ್" (೩-೧-೧೩೪)। 2. ಜೋಲಾಡುವ, ತೂಗಾಡುವ.

ಸಮಾಲಂಬ ಸಮಾಲಂಬ (ಪುಂ) 1. ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯಗಳಿಂದ ಮೈಗೆ ಲೇಪನ ಮಾಡುವುದು. ಸಮ್ + ಆ + ತುಲಮಃ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮)। ನುಮಾಗಮ: (೭-೧-೬೭)। "ಸಮಾಲಂಬೋ ವೀಲೇಪನಮ್" ಅಮಂ। 2. ಮಾರಣ, ಕೊಲ್ಲು ವುದು. "ವೃಥಾ ಪಶುಸಮಾಲಂಬಂ ನೇವ ಕುರ್ಯಾನ್ ಕಾರಯೇತ್" ಭಾಂ ಅನುಂ।

ಸಮಾಲಂಬನ ಸಮಾಲಂಬನ (ನಂ) 1. ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯ ಗಳಿಂದ ಮೈಗೆ ಲೇಪನಮಾಡುವುದು. ಸಮ್ + ಆ + ತುಲಮಃ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। ನುಮಾಗಮ: (೭-೧-೬೭)। "ಸಜ್ಜಾ ಭವ। ಯಾವನ್ಮಜ್ಜಲಸಮಾಲಂಬನಂ ವಿರಚಯಾವಃ" ಶಾಕ್ತುಂ ೪। 2. ಮಾರಣ, ಕೊಲ್ಲುವುದು.

ಸಮಾಲಾಪ ಸಮಾಲಾಪ (ಪುಂ) ಸಂಭಾಷಣೆ, ಪರಸ್ಪರ ಮಾತಾಡುವುದು.

ಸಮಾವರ್ತನ ಸಮಾವರ್ತನ (ನಂ) ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಯು ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಪೂರ್ತಿಯಾದನಂತರ ಗುರುಕುಲದಿಂದ ಹೊರಟುಬರುವ ಸಮಾರಂಭ. -ಒಂದು ಸಂಸ್ಕಾರ. ಇದು ಪೋಷಕಸಂಸ್ಕಾರಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಸಮ್ + ಆ + ವೃತ್ತ (ವರ್ತನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। ಇದು ವೇದಾಧ್ಯಯನಾ ನಂತರ ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮಸ್ವೀಕಾರಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಒಂದು ಕರ್ಮ. ಇದು ವಿವಾಹ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ವಿವಾಹಕ್ಕೆ ಮುಂಚಿತ ವಾಗಿ ನಡೆಯುವ ವ್ರತಸಮಾವರ್ತನ.

ಸಮಾವಾಯ ಸಮಾವಾಯ (ಪುಂ) ಸಮೂಹ, ರಾಶಿ. "ಯಸ್ಮಿನ್ ಕರ್ಮಸಮಾವಾಯೋ ಯಥಾ ಯೇನೋಪಗೃಹ್ಯತೇ। ಗುಣಾನಾಂ ಗುಣಿನಾಂ ಚೈವ ಪರಿಣಾಮಮಭಿಪ್ರೇತಾಮ್" ಭಾಗಂ ೨-೮-೧೩।

ಸಮಾವಿಷ್ಟ ಸಮಾವಿಷ್ಟ (ವಿಂ) 1. ಒಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿದ. 2. ಆಕ್ರಮಿಸಿದ. 3. ವ್ಯಾಪಿಸಿದ. ಸಮ್ + ಆ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। 4. ಕೂಡಿಕೊಂಡಿ ರುವ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. 5. ಭೂತದಿಂದ ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಸಮಾವಿಷ್ಟಂ ಗ್ರಹಣೇವ ಗ್ರಾಹಣೇವಾಸ್ತಮರ್ಣವೇ" ಭट्टಿಂ ೬-೮೩।

ಸಮಾವೃತ ಸಮಾವೃತ (ವಿಂ) 1. ಸುತ್ತುವರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸುತ್ತುಗಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಆ + ವೃಕ್ (ವರಣ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಜಯ ತ್ವಂ ಕಾಲಿ ಸರ್ವೇಶ ಸರ್ವಭೂತ- ಸಮಾವೃತೇ"। 2. ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಚ್ಚಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ನಾಹಂ ಪ್ರಕಾಶಃ ಸರ್ವಸ್ಯ ಯೋಗಮಾಯಾ- ಸಮಾವೃತಃ" ಗೀತಾ ೯-೨೫।

ಸಮಾವೃತ ಸಮಾವೃತ (ವಿಂ) ಸಾಂಗ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿ ಗುರುಕುಲದಿಂದ ಹಿಂತಿರುಗಿದವನು, ಗುರುವಿನ



ಅಪ್ಪಣ ಪಡೆದು ಗುರುಕುಲವಾಸದಿಂದ ಮನೆಗೆ ಬಂದ  
ವನು. ಸಮಾವರ್ತೇ ಸಮ—ಸಮ್+ಆ+ವೃತು (ವರ್ತನೆ) “ಕು:”  
(೩-೪-೭೨)। ಅನಂತರ ಸ್ನಾತಕನಾಗಿದ್ದು ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮ  
ವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಬೇಕು. “ಅತಃ ಪರಂ ಸಮಾವೃತಃ ಕುರ್ಯಾದಾರ-  
ಪರಿಗ್ರಹಮ್”।

**ಸಮಾವೇಶ ಸಮಾವೇಶ** (ಪುಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು,  
ಒಂದು ಕಡೆ ಒಂದು ಸೇರುವುದು ಸಮ್+ಆ+ವಿಶ  
(ಪ್ರವೇಶನೆ) “ಘ” (೩-೩-೧೮)। 2. ಒಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸು  
ವುದು, ಒಳಕ್ಕೆ ನುಗ್ಗಿ ಹೋಗುವುದು. 3. ಮನೋ  
ವಿಕಾರ, ಭಾವೋದ್ರೇಕ. 4. ಭೂತದ ಆಕ್ರಮಣ, ದೆವ್ವ  
ಹಿಡಿಯುವುದು.

**ಸಮಾವೇಶಿತ ಸಮಾವೇಶಿತ** (ವಿಂ) 1. ಒಳಗೆ ಪ್ರವೇಶ  
ಪಡೆದವನು, ಒಳಕ್ಕೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿದವನು. ಸಮಾವೇಶೋಽಸ್ಯ  
ಸಂಜಾತಃ “ಇತ್” (೪-೨-೩೬)। 2. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿ  
ರುವ, ಒಂದು ಕಡೆ ಒಂದು ಸೇರಿರುವ.

**ಸಮಾವ್ರಜತ್ ಸಮಾವ್ರಜತ್** (ವಿಂ) ಆಗಮಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಬರುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್+ಆ+ವ್ರಜ (ಗತೌ) “ಶತ್”  
(೩-೨-೧೨೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಛಿಪ್” (೪-೧-೬)। -ಆವ್ರಜಂತಿ  
-ಅವ್ರಜಂತೀ. “ವಿಧಾಯ ತಾಕಯಿ ಗಗನಾಽಪಿಪಾತಂ ಸಾರ್ಥಂ  
ಮಯಾ ದೇವಿ ಸಮಾವ್ರಜಂತೀಮ್” ಯಾದಂ ೧೮-೧೧೬।

**ಸಮಾಶ್ರಯ ಸಮಾಶ್ರಯ** (ಪುಂ) 1. ಆಸರೆ, ಅವಲಂಬನೆ.  
ಸಮ್+ಆ+ಶ್ರಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) “ಅಚ್” (೩-೩-೫೬)।  
2. ರಕ್ಷಣೆ. 3. ರಕ್ಷಣೆಯ ಸ್ಥಾನ. 4. ಆಶ್ರಯಿಸುವುದು,  
ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಹೋಗಿ ಸೇರುವುದು. “ತಮರಣ್ಯಸಮಾಶ್ರಯೋನ್ಮುಖಂ  
ಶಿರಸಾ ವೇಷ್ಠನಶೋಭಿನಾ ನೃಪಃ” ರಘುಂ ೮-೧೨। 5. ವಾಸ  
ಸ್ಥಾನ, ಗೃಹ, ಮನೆ.

**ಸಮಾಶ್ರಯಣ ಸಮಾಶ್ರಯಣ** (ನಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ಆಶ್ರಯ  
ಪಡೆಯುವುದು. 2. ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಒಳ್ಳೆಯ ಸ್ಥಾನ ಸೇರು  
ವುದು. ಸಮ್+ಆ+ಶ್ರಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೫)।

**ಸಮಾಶ್ರಯಣೀಯ ಸಮಾಶ್ರಯಣೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಆಶ್ರಯ  
ಪಡೆಯಬೇಕಾದ. 2. ಆಶ್ರಯ ಪಡೆಯಲು ಅರ್ಹವಾದ.  
3. ಆಶ್ರಯಿಸಲ್ಪಡುವ. ಸಮ್+ಆ+ಶ್ರಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್)  
“ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬)। 4. ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಸೇರಲು  
ಯೋಗ್ಯವಾದ. 5. ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಸೇರಬೇಕಾದ. 6. ರಕ್ಷಣೆ  
ಗಾಗಿ ಸೇರಲ್ಪಡುವ.

**ಸಮಾಶ್ರಿತ ಸಮಾಶ್ರಿತ** (ವಿಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ಆಶ್ರಯ  
ಪಡೆದವನು, ಒಳ್ಳೆಯ ಆಸರೆ ಪಡೆದವನು. ಸಮ್+ಆ+

ಶ್ರಿ (ಸೇವಾಯಾಮ್) “ಕು:” (೩-೪-೭೨)। 2. ಒಳ್ಳೆಯ  
ರಕ್ಷಣೆ ಪಡೆದವನು. 3. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಕೈಗೊಂಡವನು.  
“ಸಮಾಶ್ರಿತರಾಹವಸತ್ರದೀಕ್ಷಾಮ್” ಯಾದಂ ೨೦-೬೬।

**ಸಮಾಶ್ಲಿಷ್ಠ ಸಮಾಶ್ಲಿಷ್ಠ** (ವಿಂ) 1. ಅಲಿಂಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟು,  
ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್+ಆ+ಶ್ಲಿಷ (ಅಲಿಂಗನೆ)  
“ಕು:” (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ,  
ಬೆರೆತಿರುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. ಕತಂ “ಕು:”  
(೩-೪-೭೨)।

**ಸಮಾಶ್ಲೇಷ ಸಮಾಶ್ಲೇಷ** (ಪುಂ) 1. ಅಲಿಂಗನ, ಚೆನ್ನಾಗಿ  
ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಸಮ್+ಆ+ಶ್ಲಿಷ (ಅಲಿಂಗನೆ)  
“ಘ” (೩-೩-೧೮)। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರು  
ವುದು, ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವುದು.

**ಸಮಾಶ್ವಸತ್ ಸಮಾಶ್ವಸತ್** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಉಸಿರಾಡು  
ತ್ತಿರುವ. ಸಮ್+ಆ+ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)।  
2. ಚೇತರಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. 3. ಧೈರ್ಯ ತೆಗೆದು  
ಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಸಮಾಧಾನಪಡುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ  
“ಛಿಪ್” (೪-೧-೬)। -ಆಶ್ವಸಂತಿ -ಅಶ್ವಸಂತೀ.

**ಸಮಾಶ್ವಸ್ತ ಸಮಾಶ್ವಸ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಸಮಾಧಾನಗೊಂಡಿ  
ರುವ, ಧೈರ್ಯಹೊಂದಿರುವ. ಸಮ್+ಆ+ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ)  
“ಕು:” (೩-೪-೭೨)। 2. ಚೇತರಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ.

**ಸಮಾಶ್ವಾಸ ಸಮಾಶ್ವಾಸ** (ಪುಂ) 1. ರಕ್ಷಣೆಯ ಭರವಸೆ.  
ಸಮ್+ಆ+ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) “ಘ” (೩-೩-೧೮)।  
2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಉಸಿರಾಡುವುದು. 3. ಚೇತರಿಸಿಕೊಳ್ಳು  
ವುದು. 4. ಸಮಾಧಾನ ಹೊಂದುವುದು, ಧೈರ್ಯ  
ಪಡೆಯುವುದು.

**ಸಮಾಶ್ವಾಸನ ಸಮಾಶ್ವಾಸನ** (ನಂ) 1. ಸಮಾಧಾನಗೊಳಿಸು  
ವುದು, ಸಂತೈಸುವುದು. ಸಮ್+ಆ+ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ)+ಞಿ  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಚೇತರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವಂತೆ  
ಮಾಡುವುದು. 3. ರಕ್ಷಣೆಯ ಭರವಸೆ ಕೊಡುವುದು.

**ಸಮಾಶ್ವಾಸಯತ್ ಸಮಾಶ್ವಾಸಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಸಮಾಧಾನ  
ಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸಂತೈಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಧೈರ್ಯವಂಟು  
ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಉಸಿರಾಡುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ.  
ಸಮ್+ಆ+ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ)+ಞಿ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಛಿಪ್” -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

**ಸಮಾಸ ಸಮಾಸ** (ಪುಂ) 1. ಅನೇಕ ಪದಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ  
ಒಂದು ಪದವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ಸಮಸ್ಯತೇ ಏಕೀಕೃತೇ  
ಅನೇಕಪದಮಿತಿ ಸಮಾಸಃ—ಸಮ್+ಅಸು (ಲೋಪಣಿ) ಕರ್ಮಂ  
“ಘ” (೩-೩-೧೯)। “ಪದಸಂಘಃ ಸಮಾಸಃ ಸ್ಯಾತ್



ಏಕಪದಮುಪಾಶ್ರಿತ:” । “ಶಬ್ದಶಾಸನವಿದ: ಸಮಾಸಯೋವಿಗ್ರಹಂ  
ವ್ಯವಸಸು: ಸ್ವರೇಣ ತೇ” ಮಾಧಂ ೧೪-೨೪ । ಏಕಾರ್ಥಿಭಾವ-  
ಲಕ್ಷಣಸಾಮರ್ಥ್ಯವಿಶಿಷ್ಟಪದಸಂಜ್ಞಾತ: ಸಮಾಸ: । ಸಮಾಸವು  
ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ನಿಯತ: ಅನಿಯತ: ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ.  
ಪ್ರವರ: ಕುಮ್ಮಕಾರ: ಇತ್ಯಾದಿ ನಿತ್ಯಸಮಾಸ. ರಾಜ: ಪುರುಷ: =  
ರಾಜಪುರುಷ: , ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ಯ ಕಮ್ಮಲೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಕಮ್ಮಲ: ಇತ್ಯಾದಿ  
ಅನಿತ್ಯಸಮಾಸ. ಸಮಾಸವು ಮತ್ತೆ (1) ಅವ್ಯಯಿಭಾವ:  
(2) ತತ್ಪುರುಷ: (3) ಕರ್ಮಧಾರಯ: (4) ಬಹುವ್ರೀಹಿ: (5) ದ್ವಿಗು:  
ಮತ್ತು (6) ಧ್ವನಿ: ಎಂದು ಆರು ವಿಧ. ಅವ್ಯಯೀ  
ಭಾವಸಮಾಸವು ನಾಮಪೂರ್ವಪದ ಮತ್ತು ಅವ್ಯಯ  
ಪೂರ್ವಪದ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ.

ಉದಾ: ಶಾಕಪ್ರತಿ ಯಶಾಶಕ್ತಿ ಇತ್ಯಾದಿ.

ತತ್ಪುರುಷಸಮಾಸವು ಎಂಟು ವಿಧ.

- (1) ಪ್ರಥಮಾತಪುರುಷ: —ಪೂರ್ವ: ಕಾಯಸ್ಯ = ಪೂರ್ವಕಾಯ:
- (2) ದ್ವಿತೀಯಾತಪುರುಷ: —ಕೃಷ್ಣಂ ಶ್ರಿತ: = ಕೃಷ್ಣಶ್ರಿತ:
- (3) ತೃತೀಯಾತಪುರುಷ: —ಧಾನ್ಯೇನ ಅರ್ಥ: = ಧಾನ್ಯಾರ್ಥ:
- (4) ಚತುರ್ಥಾತಪುರುಷ: —ಗವೇ ಹಿತಮ್ = ಗೌಹಿತಮ್
- (5) ಪञ्ಚಮೀತಪುರುಷ: —ವೃಕಾತ್ ಭೀತ: = ವೃಕಭೀತ:
- (6) ಷಷ್ಠೀತಪುರುಷ: —ರಾಜ: ಪುರುಷ: = ರಾಜಪುರುಷ:
- (7) ಸಪ್ತಮೀತಪುರುಷ: —ಸ್ಥಾಲ್ಯಾಂ ಪಕ್ವ: = ಸ್ಥಾಲೀಪಕ್ವ:
- (8) ನವ್ಮತಪುರುಷ: —ನ ಅಶ್ವ: = ಅನಶ್ವ:

ಕರ್ಮಧಾರಯಸಮಾಸವು ಏಳು ವಿಧ.

- (1) ವಿಶೇಷಣಪೂರ್ವಪದ-  
ಕರ್ಮಧಾರಯ:—ನೀಲಮುತ್ಪಲಮ್ = ನೀಲೋತ್ಪಲಮ್
- (2) ವಿಶೇಷ್ಯಪೂರ್ವಪದ-  
ಕರ್ಮಧಾರಯ:—ಕೃಷ್ಣಾಸೌ ಸಪಂಶ್ಚ = ಕೃಷ್ಣಸರ್ಪ:
- (3) ವಿಶೇಷಣೋಭಯಪದ-  
ಕರ್ಮಧಾರಯ:—ಶೀತಂ ಚ ತತ್ ಉಷ್ಣಂ ಚ = ಶೀತೋಷ್ಣಮ್
- (4) ಉಪಮಾನೋತ್ತರಪದ-  
ಕರ್ಮಧಾರಯ:—ಪುರುಷೋ ವ್ಯಾಘ್ರ ಇವ = ಪುರುಷವ್ಯಾಘ್ರ:
- (5) ಉಪಮಾನಪೂರ್ವಪದ-  
ಕರ್ಮಧಾರಯ:—ಘನ ಇವ ಶ್ಯಾಮ: = ಘನಶ್ಯಾಮ:
- (6) ಸಮ್ಮಾವನಾಪೂರ್ವಪದ-  
ಕರ್ಮಧಾರಯ:—ತಮಾಲ ಇತಿ ವೃಕ್ಷ: = ತಮಾಲವೃಕ್ಷ:
- (7) ಅವಧಾರಣಾಪೂರ್ವಪದ-  
ಕರ್ಮಧಾರಯ:—ವಿನಯ ಏವ ಧನಮ್ = ವಿನಯಧನಮ್

ಬಹುವ್ರೀಹಿಸಮಾಸವು ಏಳು ವಿಧ.

- (1) ದ್ವಿಪದಬಹುವ್ರೀಹಿ: —ಋತ: ರಥ ಯೇನ = ಋತರಥ:
- (2) ಬಹುಪದಬಹುವ್ರೀಹಿ: —ನೀಲಮುಜ್ಜ್ವಲಂ ವಪುರ್ಯಸ್ಯ =  
ನೀಲೋಜ್ಜ್ವಲವಪು:
- (3) ಸಡ್ವಯೋಭಯಪದ-  
ಬಹುವ್ರೀಹಿ: —ಪಶ್ಚ ವಾ ಷಡ್ ವಾ = ಪಶ್ಚಿಷಾ:
- (4) ಸಡ್ವಯೋತ್ತರಪದ-  
ಬಹುವ್ರೀಹಿ: —ದಶಾನಾಂ ಸಮೀಪೇ ಯೇ ಸಂತಿ ತೇ  
ಉಪದಶಾ:
- (5) ಸಹಪೂರ್ವಪದಬಹುವ್ರೀಹಿ: —ಪುತ್ರೇಣ ಸಹ ವರ್ತತೇ = ಸಪುತ್ರ:
- (6) ದಿಗಂತರಾಲಕ್ಷಣ-  
ಬಹುವ್ರೀಹಿ: —ಉತ್ತರಸ್ಯಾಶ್ಚ ಪೂರ್ವಸ್ಯಾಶ್ಚ  
ದಿಶೋರ್ಯದಂತರಾಲಮ್ ಸಾ  
ಉತ್ತರಪೂರ್ವಾ
- (7) ವ್ಯತಿಹಾರಾಲಕ್ಷಣ-  
ಬಹುವ್ರೀಹಿ: —ಕೇಶು ಕೇಶು ಗೃಹೀತ್ವೇದ ಯುದ್ಧ  
ಪ್ರವೃತ್ತಮ್ = ಕೇಶಾಕೇಶಿ

ದ್ವಂದ್ವಸಮಾಸವು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ.

- (1) ದ್ವಿಪದೇತೇತರಯೋಗಧ್ವನಿ:—ರಾಮಶ್ಚ ಕೃಷ್ಣಶ್ಚ ರಾಮಕೃಷ್ಣೌ
- (2) ಬಹುಪದೇತೇತರಯೋಗಧ್ವನಿ:—ವಾಪೀ ಚ ಕೂಟಶ್ಚ ತಟಾಕಶ್ಚ  
ವಾಪೀಕೂಪತಟಾಕಾ:
- (3) ದ್ವಿಪದಸಮಾಹಾರಧ್ವನಿ: —ಶೀತಂ ಚ ಉಷ್ಣಂ ಚ ತಯೋ:  
ಸಮಾಹಾರ: ಶೀತೋಷ್ಣಮ್
- (4) ಬಹುಪದಸಮಾಹಾರಧ್ವನಿ: —ಪಾಣಿ ಚ ಪಾದೌ ಚ ಗ್ರೀವಾ  
ಚ ತेषಾಂ ಸಮಾಹಾರ:  
ಪಾಣಿಪಾದಗ್ರೀವಮ್ ।

ದ್ವಿಗುಸಮಾಸವು ಎರಡು ವಿಧ.

ಇದು ಕರ್ಮಧಾರಯದಲ್ಲೇ ಉತ್ಪಾದಕ ಹೊಂದು  
ವುದು. ಪञ್ಚವಟೋ ಷಾಢ್ಮಾತುರ: ಇತ್ಯಾದಿ. 2. ಸಂಕ್ಷೇಪ,  
ಸಂಗ್ರಹ. “ಏಷಾ ಧರ್ಮಸ್ಯ ವೌ ಯೋನಿ: ಸಮಾಸೇನ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ”  
ಮನುಂ ೨-೨೫ । 3. ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಇರುವ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು  
ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸುವುದು. 4. ವ್ಯಾಜ್ಯ ಮನಸ್ಸಾವ ಮೊದ  
ಲಾದುವನ್ನು ಒಗೆಹರಿಸುವುದು, —ಪರಿಹರಿಸುವುದು.  
5. ಒಟ್ಟು, ಮೊತ್ತ.

ಸಮಾಸಕ್ತ ಸಮಾಸಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಬೆನ್ನಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿ  
ರುವ, ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ. ಸಮ್ + ಆ + ಪಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೆ)  
“ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨) । 2. ಒಟ್ಟುಗೂಡಿರುವ, ಒಟ್ಟಿಗೆ  
ಸೇರಿರುವ. 3. ಶ್ರದ್ಧೆಯುಳ್ಳ, ಆಸಕ್ತನಾದ, ತತ್ಪರನಾದ.



**ಸಮಾಸಕ್ತಿ ಸಮಾಸಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವಿಕೆ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವಿಕೆ. ಸಮ್ + ಆ + ಪಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೆ) "ಕ್ವಿನ್" (3-3-18). 2. ಒಟ್ಟು ಗೂಡಿರುವಿಕೆ. 3. ಶ್ರದ್ಧೆ, ತತ್ಪರತೆ.

**ಸಮಾಸಜ್ಞ ಸಮಾಸಂಗ** (ಪುಂ) "ಸಮಾಸಕ್ತಿ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

**ಸಮಾಸಜನ ಸಮಾಸಂಜನ** (ನಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು. ಸಮ್ + ಆ + ಪಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದುವುದು.

**ಸಮಾಸನ್ನ ಸಮಾಸನ್ನ** (ವಿಂ) 1. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ. ಸಮ್ + ಆ + ಪದಲ್ (ವಿಶರಣ-ಗತ್ಯವಸಾದನೇಷು) "ಕ್ವ:" (3-4-92). "ತಸ್ತೌ ಸಮಾಸನ್ನಕರಣಸುಕ್ತತಾನಿಯಂತರಿ ವ್ಯಾಕುಲಮುಕ್ತರಜ್ಜುಕೇ" ಮಾಘಂ 12-24. 2. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರುವ. "ಅಯ ವೇಲಾಸಮಾಸನ್ನಶೇಲರಧಾನುನಾದಿನಾ. ಸ್ವರೇಣೋವಾಚ ಭಗವಾನ್ಪರಿಮೃತಾಣವಧವನಿ:" ರಘುಂ 10-36.

**ಸಮಾಸಾವನ ಸಮಾಸಾದನ** (ನಂ) 1. ಹೊಂದುವುದು, ಸೇರುವುದು, ತಲುಪುವುದು. ಸಮ್ + ಆ + ಪದಲ್ (ವಿಶರಣ-ಗಾದೌ) + ಣಿಕ್ವ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ಪಡೆಯುವುದು, ಸಂಪಾದಿಸುವುದು. 3. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ತರುವುದು. 4. ನೆರವೇರಿಸುವುದು.

**ಸಮಾಸಾದಿತ ಸಮಾಸಾದಿತ** (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಆ + ಪದಲ್ (ವಿಶರಣಾದೌ) + ಣಿಕ್ವ "ಕ್ವ:" (3-3-102). "ಯಾ ಸಮಾಸಾದಿತಸಾಧನೇನ ಸುದುಶ್ಚರಾಮಾಚರತಾ ತಪಸ್ಯಾಮ್" ಕಿರಾಂ 3-22. 2. ಹೋಗಿ ಸೇರಲ್ಪಟ್ಟ, ತಲುಪಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ತರಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ನೆರವೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಸಮಾಸಾಘ ಸಮಾಸಾಘ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲ್ಪಡುವ, ತಲುಪಲ್ಪಡುವ. 2. ಹೋಗಿ ಸೇರಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 3. ಹೋಗಿ ಸೇರಬೇಕಾದ. ಸಮ್ + ಆ + ಪದಲ್ (ವಿಶರಣ-ಗಾದೌ) "ಘ್ಯತ್" (3-1-124). "ಪ್ರಾಪ್ಯಂ ಗಮ್ಯಂ ಸಮಾಸಾಘಮ್" ಅಮಂ. (ಅವ್ಯಂ) 4. ಹೋಗಿ ಸೇರಿ, ತಲುಪಿ, ಹೊಂದಿ. ಸಮ್ + ಆ + ಪದಲ್ "ಕ್ವಾ" (3-4-21). "ಲ್ಯಪ್" (9-1-39).

**ಸಮಾಸಾರ್ಥ ಸಮಾಸಾರ್ಥ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಮಸ್ಯೆ, ಬುದ್ಧಿಶಕ್ತಿ ಪರೀಕ್ಷೆಗಾಗಿ ಅಪೂರ್ಣ (ಸಂಕ್ಷೇಪ) ವಾಗಿ ಕೊಡುವ ವಾಕ್ಯ (ಸಮಸ್ಯೆ). ಕವಿಗಳ ಬುದ್ಧಿ ಪರೀಕ್ಷೆಗಾಗಿ ಅಪೂರ್ಣವಾದ ವಾಕ್ಯ (ಶ್ಲೋಕ) ವನ್ನು ಹೇಳಿ ಪೂರ್ತಿಮಾಡಲು ಕೊಡುವ

ಶ್ಲೋಕದ ಒಂದು ಭಾಗ. ಸಮಾಸ: ಸಂಕ್ಷೇಪ: ಅರ್ಥೋ ಯಸ್ಯಾ: | "ಸಮಸ್ಯಾ ತು ಸಮಾಸಾರ್ಥಾ" ಅಮಂ.

**ಸಮಾಸೀನ ಸಮಾಸೀನ** (ವಿಂ) ಕುಳಿತುಕೊಂಡಿರುವ. ಸಮ್ + ಆಸ (ಆಪವೇಶನೇ) "ಕ್ವ:" (3-4-92). "ಪಶ್ಚಿಮಾಂ ತು ಸಮಾಸೀನ:" |

**ಸಮಾಸೋಕ್ತಿ ಸಮಾಸೋಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಪ್ರಸ್ತುತ ವೃತ್ತಾಂತ ವರ್ಣನೆಯಿಂದ ಅಪ್ರಸ್ತುತ (ಅಪ್ರಕೃತ) ವಾದ ಅರ್ಥದ ಪ್ರತೀತಿಯಾಗುವಲ್ಲಿ ಸಮಾಸೋಕ್ತಿ ಅಲಂಕಾರ. "ಸಮಾಸೋಕ್ತಿ: ಪರಿಸ್ಕೃತಿ: ಪ್ರಸ್ತುತೇಪ್ರಸ್ತುತಸ್ಯ ಚೇತ್" | ಉದಾ: "ಅಯಮೇಂದ್ರೀಮುಖಂ ಪಶ್ಯ ರಕ್ತಶ್ಚುಂಬತಿ ಚಂದ್ರಮಾ:" |

**ಸಮಾಹರಣ ಸಮಾಹರಣ** (ನಂ) 1. ಸಂಗ್ರಹ, ಸಂಕ್ಷೇಪ. ಸಮ್ + ಆ + ಹ್ವ (ಹರಣೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸುವುದು, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸುವುದು. 3. ತರುವುದು.

**ಸಮಾಹತ್ ಸಮಾಹತ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸುವವನು, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸುವವನು. ಸಮ್ + ಆ + ಹ್ವ (ಹರಣೇ) "ತ್ವಕ್" (3-1-133). 2. ಸಂಗ್ರಹಿಸುವವನು, ಸಂಕ್ಷೇಪಮಾಡುವವನು. 3. ತರುವವನು.

**ಸಮಾಹಾರ ಸಮಾಹಾರ** (ಪುಂ) 1. ಸಮುಚ್ಚಯ, ಒಟ್ಟು ಗೂಡಿರುವುದು, ಒಂದೇ ಕಡೆ ಸೇರಿರುವುದು. ಸಮ್ + ಆ + ಹ್ವ (ಹರಣೇ) "ಘಕ್" (3-3-104). "ಹಂತ ಭೌ: ಏಕಸ್ಯಾಂ ತನಾವೇತಾವತೌ ಗುಣಸಮಾಹಾರಸ್ಯ ಸನ್ನಿವೇಶ: ಕಥಮಿವಾ-ಭೂತ್" ಮಾಲತೀಂ 9. 2. ತರುವುದು. 3. ಸಂಕ್ಷೇಪ, ಸಂಗ್ರಹ. "ಸಮಾಸಸ್ತು ಸಮಾಹಾರ: ಸಂಕ್ಷೇಪ: ಸಂಗ್ರಹೋಽಪಿ ಚ" | "ಸಮಾಹಾರಸ್ತು ಸಂಕ್ಷೇಪ: ಏಕವಕರಣೇಽಪಿ ಚ" ಹೇಮಂ. 4. ಸಮಾಸ, ಅನೇಕ ಪದಗಳು ಒಟ್ಟುಗೂಡುವುದು, ಒಂದಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಪದಗಳ ಸಮೂಹ.

**ಸಮಾಹಿತ ಸಮಾಹಿತ** (ವಿಂ) 1. ಸಮಾಧಿನಿಷ್ಠನಾದ, ಏಕಾಗ್ರಚಿತ್ತನಾದ, ಧ್ಯಾನಪರನಾದ. ಸಮ್ + ಆ + ತು ಧಾಕ್ (ಧಾರಣವಿಷಯೋ:) "ಕ್ವ:" (3-4-92). "ಸಮಾಹಿತೇರಪ್ಯ-ನಿಲಿಪಿತಸ್ತತ: ಪದಂ ದೃಶ: ಸ್ಯಾ: ಕಥಮಿಶ ಮಾದೃಶಾಮ್" ಮಾಘಂ 1-39. 2. ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಪ್ಪಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ನೆರವೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಸರಿಯಾಗಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಒಟ್ಟಿಗೆ ತರಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಮನಸ್ಸನ್ನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ನಿರ್ಧರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಸಮಾಹೃತ ಸಮಾಹೃತ** (ವಿಂ) ಕರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಆಹ್ವಾನಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಆ + ಹ್ವೇ (ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಾಂದೇ ಚ) "ಕ್ವ:"



(೩-೨-೧೦೨) । “ಅಹಂ ತ್ವಯಾ ದೂತಮುಖೇನ ದೂರಾತ್ ಸಾಖ್ಯಾ  
ಸಮಾಹುತ ಇಹೋಪಯಾತಃ” ಯಾದಂ ೧೩-೨೦ ।

ಸಮಾಹುತ ಸಮಾಹುತ (ವಿಂ) 1. ಒಂದು ಕಡೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು,  
ಒಂದು ಕಡೆಗೆ ಬರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್ + ಆ + ಹ್ವ (ಹರಣೇ)  
“ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । “ತತ್ರ ಸ್ವಯಂವರಸಮಾಹುತರಾಜಲೋಕಂ  
ಕನ್ಯಾಲಲಾಮ ಕಮನೀಯಮಜಸ್ಯ ಲಿಪ್ತೋಃ” ರಘುಂ ೪-೬೪ ।  
2. ನೆರವೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಸಂಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಸಂಕ್ಷೇಪ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ಸಂಕ್ಷೇಪವಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟು.

ಸಮಾಹುತಿ ಸಮಾಹುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಗ್ರಹ, ಸಂಕ್ಷೇಪ.  
ಸಮ್ + ಆ + ಹ್ವ (ಹರಣೇ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) ।  
2. ಸಂಕ್ಷೇಪವಾಗಿ ಹೇಳುವುದು, ಸಂಗ್ರಹವಾಗಿ ತಿಳಿಸು  
ವುದು. ಸಮಾಹುತೀತೇ ಸಂಕ್ಷೇಪೇಣ ಪ್ರತಿಪಾಢಿತೇ ಅನಯಾ—ಕರಣೇ  
“ಕ್ತಿನ್” । 3. ಒಂದು ಕಡೆ ಸೇರುವುದು. “ಶಶಕ್ವೇ  
ವಿಷ್ಮಯಾವಿಹಸ್ತಪ್ತಾಣವಸಮಾಹುತಿಮ್” ಯಾದಂ ೨೨-೨೦೩ ।

ಸಮಾಹುತ ಸಮಾಹುತಯ (ಪುಂ) 1. ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಆಹ್ವಾನ,  
ಕಾಳಗಕ್ಕೆ ಕರೆ. ಸಮ್ + ಆ + ಹ್ವ (ಸ್ಪರ್ಧಾಪ್ರಿಯಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ)  
“ಘಃ” (೩-೩-೧೧೮) । 2. ದೂತ, ಜೂಜು. ಸಮ್ಯ-  
ಗಾಹುತೇಷ್ವ — ಹ್ವ “ಘಃ” । 3. ಸಮರ, ಯುದ್ಧ.  
4. ಪಶು ಪಕ್ಷಿಗಳ ಯುದ್ಧ. 5. ಹೆಸರು.

ಸಮಾಹ್ವಾ ಸಮಾಹ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾಮಧೇಯ, ಹೆಸರು.  
ಸಮ್ + ಆ + ಹ್ವ (ಸ್ಪರ್ಧಾಪ್ರಿಯಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) “ಅಙ್”  
(೩-೩-೧೦೬) । “ರಥಚರಣಸಮಾಹ್ವಸ್ತಾವದೋತುಕ್ಯನುಷ್ಠಾ  
ಸರಿಧರತಯಾಂತಾದಾಗತಾ ಚಕ್ರವಾಕೀ” ಮಾಘಂ ೧೧-೨೬ ।

ಸಮಾಹ್ವಾನ ಸಮಾಹ್ವಾನ (ನಂ) 1. ಆಹ್ವಾನ, ಕರೆಯು  
ವುದು. ಸಮ್ + ಆ + ಹ್ವ (ಸ್ಪರ್ಧಾಪ್ರಿಯಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೧೧೫) । 2. ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಕರೆಯುವುದು, ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ  
ಆಹ್ವಾನ ಕೊಡುವುದು.

ಸಮಿತ್ ಸಮಿತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಮರ, ಯುದ್ಧ. ಸಮ್ + ಇನ್  
(ಗತೌ) “ಕ್ವಿಪ್” (ವಾಂ ೩-೩-೯೪) । ತುಗಾಗಮಃ  
(೬-೧-೭೧) ।

ಸಮಿತ ಸಮಿತ (ವಿಂ) ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿದಂತೆ ಬಂದಿರುವ.  
ಸಮ್ + ಇನ್ (ಗತೌ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) ।

ಸಮಿತಿ ಸಮಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಭೆ, ಕಾರ್ಯಕಲಾಪಗಳ  
ಪರಿಶೀಲನೆಗಾಗಿ ಜನರು ಒಂದು ಕಡೆ ಸೇರುವುದು.  
ಸಮಯಂತ್ಯಸ್ಯಾಮ್—ಸಮ್ + ಇ (ಗತೌ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) ।  
“ಸಮಿತೌ ರಭಸಾಧುಪಾಗತಂ ಸಗದಃ ಸಂಪ್ರತಿಪತ್ತುಮರ್ಹಸಿ”  
ಮಾಘಂ ೧೬-೧೩ । 2. ಸಮರ, ಯುದ್ಧ. 3. ಸಮೂಹ,  
ಗುಂಪು, ಮಂದೆ. “ಛುತಿ ಸಮಘಾಂ ಸಮಿತಿಗಂವಾಮಸಾವುಪೇತಿ

ಮನ್ತ್ರೇರಿವ ಸಂಹಿತಾಹುತಿಃ” ಕಿರಾಂ ೪-೩೨ । 4. ಸಾಮ್ಯ,  
ಹೋಲಿಕೆ, ಸಾದೃಶ್ಯ. 5. ಸಂಗಮ, ಸಂಧಿಸುವುದು,  
ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು. “ಸಮಿತಿಃ ಸಂಪರಾಢೇ ಸ್ಯಾತ್ ಸಮಾಘಾಂ  
ಸಂಜ್ಞಮೇವ ಚ” ಮೇದಿಂ । 6. ಒಂದು ಕಡೆ ಸೇರುವುದು,  
ಅನೇಕ ವಸ್ತುಗಳು ಒಂದು ಕಡೆ ಕಲೆತಿರುವುದು. “ಪ್ರವೃತ್ತಿ-  
ಲಕ್ಷಣೇ ನಿಷ್ಠಾ ಪುಮಾನ್ ಯಹಿ ಗೃಹಾಶ್ರಮೇ । ಸ್ವಘರ್ಷೇ ಚಾನುತಿಷ್ಠೇತ  
ಗುಣಾನಾಂ ಸಮಿತಿರ್ಹಿ ಸಾ” ಭಾಗಂ ೧೧-೨೪-೮ ।

ಸಮಿತ್ ಸಮಿತ್ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ. 2. ಯುದ್ಧ. ಸಮ್ + ಇನ್  
(ಗತೌ) “ಯಕ್” (ಛಂ ೨-೧೧) ।

ಸಮಿದ್ಧ ಸಮಿದ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಉರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್ + ಖಿ ಇನ್ಧಿ  
(ದೀಪ್ತೌ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨) । “ತಸ್ಮಾತ್ಸಮಿದ್ಧೇ  
ಹೊತವ್ಯಂ ನಾಸಮಿದ್ಧೇ ಕದಾಚನ” ಕಾತ್ಯಾಯನಃ । 2. ಕರಣ  
ಲ್ಪಟ್ಟು, ಉದ್ರೇಕಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. (ಪುಂ) 3. ಮುಷ್ಠಿ.  
ಸಮಿಧೋ ದಧತಿ—ಙ್ ಧಾನ್ (ಧಾರಣೇ) “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೩) ।  
“ಸಮಿದ್ಧಶರಣಾ ದೀಪ್ತಾ ದೇಹೇ ಲಕ್ಷ್ಮಾ ಮತೇಶ್ವರಾ” ಭದ್ರಿಂ  
೧೦-೭ ।

ಸಮಿದ್ಧಮಾನ ಸಮಿದ್ಧಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಉರಿಸಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಖಿ ಇನ್ಧಿ (ದೀಪ್ತೌ) ಕಮಂ “ಶಾನಕ್”  
(೩-೨-೧೨೪) । 2. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 3.  
ಅಭಿವೃದ್ಧಿಪಡಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತಿರುವ. “ಸ  
ತೇಜಸಾ ಯಾದವತಿಗ್ಮತೇಜಸಃ ಸಮಿದ್ಧಮಾನೇನ ನಿವಾರಿತೋ-  
ತ್ತತಿಃ” ಯಾದಂ ೨೪-೧೮ ।

ಸಮಿದ್ಧತ್ ಸಮಿದ್ಧತ್ (ವಿಂ) 1. ಸಮಿತುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ,  
ಸಮಿತುಗಳಿಂದ ಹೋಮ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ (ಅಗ್ನಿ). ಸಮಿಧಃ  
ಅಸ್ಯ ಸಂತಿ “ಮತುರ್” (೪-೨-೯೪) । “ಅಮಿ ವೇದಿ  
ಪರಿತಃ ಕಲ್ಪತಧಿಷ್ಣ್ಯಾಃ ಸಮಿದ್ಧಂತಃ ಪ್ರಾಂತಸಂಸ್ಥಿಗಂದರ್ಮಾಃ”  
ಶಾಕುಂ ೪-೭ । 2. ಯುದ್ಧದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ  
“ಙೀಪ್” (೪-೧-೬) । ಸಮಿದ್ಧತೀ ಸಮಿದ್ಧತೀ. “ಜ್ವಲ-  
ತ್ಪ್ರತಾಪಾನಲಜಾತದೀಪ್ತಿಃ ಸಮಿದ್ಧತೀ ಸಂಯಯುಗಸ್ಯ ಲೀಲಾ”  
ಯಾದಂ ೨೦-೬೩ ।

ಸಮಿಘ್ ಸಮಿಘ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ ಪಾತಾಶಕಾಷ್ಠ, ಇಂಧನ, ಹೋಮಕ್ಕಾಗಿ ತರುವ  
ಮುತ್ತುಗಳ ಕಡ್ಡಿ, ಪಾತಾಶಸಮಿತು. ಸಮಿಘ್ಯತೇಜನಯಾ—  
ಸಮ್ + ಖಿ ಇನ್ಧಿ (ದೀಪ್ತೌ) “ಕ್ವಿಪ್” । ತುಗಾಗಮಃ ।  
“ರಾಜನ್, ಸಮಿದಾಹರಣಾಯ ಪ್ರಸ್ಥಿತಾ ವಯಮ್ । ಏಷ ಖಲು  
ಕಪ್ತಸ್ಯ ಕುಲಪತೇಃ ಅನುಮಾಲಿನಿತಿರಮಾಶ್ರಮೋ ದೃಶ್ಯತೇ”  
ಶಾಕುಂ ೧ ।

ಸಮಿನ್ಧನ ಸಮಿನ್ಧನ (ನಂ) 1. ಸಮಿತು. ಸಮಿಘ್ಯತೇಜನೇನ  
—ಸಮ್ + ಖಿ ಇನ್ಧಿ (ದೀಪ್ತೌ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭) ।



“ತಪೋಮಹಿಷಿ: ಸವತೀ ಶರಾಗ್ನಿ: ಸಂಧ್ಯತಾ ನೋರ್-  
ಸಮಿಧನೇಷು” ಷಟ್ಠಿಂ ೨-೨೮. 2. ಉರಿಸುವುದು.

ಸಮೀರ ಸಮೀರ (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾಳಿ.

ಸಮೀಕ ಸಮೀಕ (ನಂ) ಸಮರ, ಯುದ್ಧ. ಪಮ (ವೆಕಲವ್ಯ)  
“ಕೀಕನ್” (೩೦ ೪-೨೫). “ಸುದೃಶ: ಸಮೀಕಗಮನಾಥ  
ಯುಭಿರಥ ಸಂಬಾಹಿರೇ” ಮಾಘಂ ೧೫-೮೩.

ಸಮೀಕರಣ ಸಮೀಕರಣ (ನಂ) 1. ಸಮವಾಗಿ ಮಾಡು  
ವುದು, ಮಟ್ಟವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. 2. ಸಮಾನವಾಗಿ  
ಮಾಡುವುದು, ಹೆಚ್ಚು ಕಡಮೆಯಿಲ್ಲದೆ ಮಾಡುವುದು.  
3. ಸದೃಶವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು.

ಸಮೀಕೃತ ಸಮೀಕೃತ (ವಿಂ) 1. ಸಮವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಹೆಚ್ಚು ಕಡಮೆಯಿಲ್ಲದೆ ಮಟ್ಟವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಸಮಾನ  
ವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೆಚ್ಚು ಕಡಮೆಯಿಲ್ಲದೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಅಸಮ: ಸಮ: ಕೃತ: 3. ಸಮಾನವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಸದೃಶವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. “ತೃಯಿಮಯಶ್ಚಂದ್ರಸಮೀಕೃತಚುತಿ:  
ಪ್ರಸೇದಿವಾನ್ ಪ್ರಾದುರಭೂದಿವಾಕರ:” ಯಾದಂ ೧೪-೧.

ಸಮೀಕ್ಷಣ ಸಮೀಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡುವುದು,  
ಸರಿಯಾಗಿ ನೋಡುವುದು. ಸಮ್ಯಗೀಕ್ಷಣಮ್—ಸಮ್+ईक्ष  
(ದರ್ಶನೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫). 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪರೀಕ್ಷಿಸಿ  
ನೋಡುವುದು.

ಸಮೀಕ್ಷಮಾಣ ಸಮೀಕ್ಷಮಾಣ (ವಿಂ) ಸರಿಯಾಗಿ ನೋಡು  
ತ್ತಿರುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್+ईಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ)  
“ಶಾನಕ್” (೩-೨-೧೨೪).

ಸಮೀಕ್ಷಾ ಸಮೀಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡುವುದು.  
ಸಮ್+ईಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) “ಅ:” (೩-೩-೧೦೩). 2. ತತ್ತ್ವ.  
3. ಬುದ್ಧಿ. “ಯಶ:ಪ್ರಾಣಹರಾನ್ ಧೋರಾನ್ ವ್ಯಾಮೋಹವಿಷ-  
ಪಾದಪಾನ್ | ಸಮೀಕ್ಷಾಶಾಣವೃಷ್ಟೇನ ಛತ ಶಾಸ್ತ್ರೇಣ ಶಸ್ತ್ರಿಣ:”  
ಯಾದಂ ೨೨-೩೬. “ಸಮೀಕ್ಷಾ ತು ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ತತ್ತ್ವೇ ಬುದ್ಧಾವಪಿ  
ನಿಭಾಲನೆ” ಮೇಡಿಂ. 4. ಪ್ರಯತ್ನ. 5. ಆತ್ಮವಿದ್ಯೆ.  
6. ಮೀಮಾಂಸಾಶಾಸ್ತ್ರ.

ಸಮೀಕ್ಷಿತ ಸಮೀಕ್ಷಿತ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಸಮ್+ईಕ್ಷ (ದರ್ಶನೆ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨). “ಸಮೀಕ್ಷಿತ-  
ಸ್ಯಾಪಿ ಸಹತ್ವಸಜ್ಞಾದ್ದುಷ್ಪ್ರಾಪಲೋಭಾದಪಿ ದ್ವಯಮಾನಾ” ಯಾದಂ  
೧೩-೫೯. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪರೀಕ್ಷಿಸಿ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸಮೀಚ ಸಮೀಚ (ಪುಂ) ಸಾಗರ, ಸಮುದ್ರ. ಸಂಯಂತಿ  
ನದೌ ಯಸ್ಮಿನ್—ಸಮ್+ಇನ್ (ಗತೌ) “ಚಟ್” (೩೦ ೪-೯೨).

ಸಮೀಚಕ ಸಮೀಚಕ (ಪುಂ) ಮೃಧುನ, ಸಂಭೋಗ.

ಸಮೀಚಿನ ಸಮೀಚೀನ (ವಿಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯದಾದ, ಚೆನ್ನಾಗಿ  
ರುವ. 2. ಸತ್ಯವಾದ, ಯಥಾರ್ಥವಾದ. ಸಮ್ಯಕ “ಸ:”  
(೫-೪-೮). (ನಂ) 3. ಸತ್ಯ, ಯಥಾರ್ಥ.

ಸಮೀನಿಕಾ ಸಮೀನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವರ್ಷಕಂತಿ ಹಸು,  
ಪ್ರತಿ ವರ್ಷವೂ ಕರು ಹಾಕುವ ಹಸು.

ಸಮೀಪ ಸಮೀಪ (ವಿಂ) 1. ಹತ್ತಿರದ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿರುವ.  
ಸಜ್ಜತಾ ಆಪೌ ಯಸ್ಮಿನ್—ಸಮ್+ಅಪ್ “ಅ:” (೫-೪-೭೪).  
ಇತ್ (೬-೩-೯೭). “ಸಮೀಪವೃಕ್ಷೇಷ್ವಿಹ ಬದ್ಧನಿಡಾ: ಶಿಕ್ಷೋಪ-  
ಪ್ರಾಂ ಶ್ರುತಿಮುದ್ಗುಣಂತ:” ಯಾದಂ ೧೮-೬೧. (ನಂ) 2.  
ಹತ್ತಿರ, ಸಾಮೀಪ್ಯ. “ತವ ಸಪದಿ ಸಮೀಪಮಾನಯೆ ತಾಮಹ-  
ಮಿತಿ ತಸ್ಯ ಮಯಾಪ್ರತೋಽಮ್ಯಧಾಯಿ” ಮಾಘಂ ೭-೭. “ಅತ:  
ಸಮೀಪೇ ಪರಿಣೇತುರೀಷ್ಯತೇ ಪ್ರಿಯಾಪ್ರಿಯಾ ವಾ ಪ್ರಮದಾ ಸ್ವಬಂಧುಭಿ:”  
ಶಾಕುಂ ೫-೧೭.

ಸಮೀಯಿವಸ್ ಸಮೀಯಿವಸ್ (ವಿಂ) ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬರು  
ತ್ತಿರುವ, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬರುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್+ಇನ್ (ಗತೌ)  
“ಕ್ವಸು:” (೩-೨-೧೦೯). “ಸಮೀಯಿವಾಂಸೋ ರಹಸಿ  
ಸ್ಮರಾರ್ತಾ ರಿರಂಸವೌ ಯತ್ರ ಸುರಾ: ಪ್ರಿಯಾಭಿ:” ಕುಮಾಂ  
೯-೪೫. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಛೋಪ್” (೪-೧-೬). —ಇಯುಷಿ  
—ಈಯುಷೀ.

ಸಮೀರ ಸಮೀರ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಸಮ್ಯಕ್ ಇತೆ  
ಗच्छति ईरयति प्रेरयति वा—ಸಮ್+ईರ (ಗತೌ) “ಅಚ್”  
(೩-೧-೧೩೪). “ಶೋತಾತಿ ಬಲವದುಪೇಯುಷೇವ ನೋರಾಸೇಕಾ-  
ಕ್ಷಿಶಿರಸಮೀರಕಮ್ಪಿತೇನ” ಮಾಘಂ ೮-೬೨. 2. ಶಮೀ  
ವೃಕ್ಷ.

ಸಮೀರಣ ಸಮೀರಣ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಸಮ್+ईರ  
(ಗತೌ) “ಯುಚ್” (೩-೨-೧೪೮). “ಆಹ್ಲಾದಿಕಹ್ಲಾರ-  
ಸಮೀರಣಾಹತೇ ಪುರ: ಪಪಾತಾಂಭಸಿ ಯಾಮುನೇ ರಜ:” ಮಾಘಂ  
೧೨-೬೬. 2. ಮರುಗ, ಮರುವಕ. 3. ಪಥಿಕ,  
ಪ್ರಯಾಣಿಕ. 4. ಪ್ರಾಣವಾಯು. (ನಂ) 5. ಎಸೆಯು  
ವುದು. ಸಮ್+ईರ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫). 6. ಪ್ರೇರಿಸು  
ವುದು. (ವಿಂ) 7. ಪ್ರೇರಿಸುವವನು.

ಸಮೀರಿತ ಸಮೀರಿತ (ವಿಂ) 1. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್+ईರ  
(ಗತೌ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨). “ಇತ್ಯಮಾದಿಕವಿನಾ  
ಸಮೀರಿತಾ ಸಾಂವಭಾವಿ ಕಿಲ ಸತ್ಯಭಾಮಯಾ” ಯಾದಂ  
೧೭-೪೪. 2. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
3. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸಮೀಹಾ ಸಮೀಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಆಸೆ, ಅಭಿಲಾಷೆ.  
ಸಮ್+ईಹ (ವೇಷ್ಟಾಯಾಮ್) “ಅ:” (೩-೩-೧೦೩).



ಸಮೀಹಿತ ಸಮೀಹಿತ (ವಿಂ) ಅಮೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್ + ಇಹ (ಚೇಷ್ಟಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । "ಸಮೀಹಿತೋ-  
ದಕಮಿದಂ ದ್ವಯೋರಿತಿ ಪ್ರಬೃಹಯಮಾನೋ ನ ನಿರೋಧಮಾದಧೇ" ಯಾದಂ  
೧೪-೯ ।

ಸಮುಕ್ಷಣ ಸಮುಕ್ಷಣ (ನಂ) ಸಿಂಹಿಸುವುದು. ಚಿಮುಕಿಸು  
ವುದು. ಸಮ್ + ಉಕ್ಷ (ಸೇಚನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

ಸಮುಚಿತ ಸಮುಚಿತ (ವಿಂ) ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಅರ್ಹವಾದ.  
ಸಮ್ಯಗುಚಿತಃ । "ತದೇತ್ ಕ್ಷಂತವ್ಯಂ ನ ಖಲು ಪಶುರೋಃ ಸಮುಚಿತಃ" ।  
"ಸೀತಕಾರಂ ಸಮುಚಿತಮುತರಂ ತರಣ್ಯಃ" ಮಾಘಂ ೮-೧೩ ।

ಸಮುಚ್ಚಯ ಸಮುಚ್ಚಯ (ಪುಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸುವುದು,  
ಒಂದುಗೂಡಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಉಚ್ + ಚಿನ್ (ಚಯನೆ)  
"ಅಚ್" (೩-೩-೫೬) । "ಸರ್ವೋಪಮಾದ್ರವ್ಯಸಮುಚ್ಚಯೇನ ಯಥಾಪ್ರದೇಶಂ  
ವಿನಿವೇಶಿತೇನ" ಕುಮಾರಂ ೧-೪೯ । 2. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ  
ಒಂದು ಭೇದ. ಅವಿರುದ್ಧವಾದ ಅನೇಕ ಪದಾರ್ಥಗಳ  
ಜೋಡಣೆ. "ಬಹುನಾಂ ಯುಗಪದ್ಭಾವಭಾಜಾಂ ಗುಂಘ್ರಃ ಸಮುಚ್ಚಯಃ" ।  
ಉದಾ : "ನಶ್ಯಂತಿ ಪಶ್ಚಾತ್ಪಶ್ಯಂತಿ ಭ್ರಮಂತಿ ಚ ತವಾಹಿತಾಃ"  
ಚಂದ್ರಾಂ । 3. ಪರಸ್ಪರ ನಿರಪೇಕ್ಷವಾದ ಅನೇಕ ವಸ್ತು  
ಗಳಿಗೆ ಒಂದೇ ಕ್ರಿಯೆಯಲ್ಲಿ ಅನ್ವಯ. "ದೇವದತ್ತೋ ಯಜ್ಞದತ್ತಶ್ಚ  
ಗಂಢತಿ" । ಪ್ರಾಯಶಃ ಚ ಕಾರವು ಸಮುಚ್ಚಯ  
ವಾಚಕ. ಕೆಲವೆಡೆ ತಥಾ ಮೊದಲಾದ ಶಬ್ದವೂ ಸಮುಚ್ಚಯ  
ವಾಚಕವಾಗುವುದು. ಇದು ಕ್ರಿಯಾಸಮುಚ್ಚಯ ಮತ್ತು  
ದ್ರವ್ಯಸಮುಚ್ಚಯಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. (1) ಚೈತ್ರೋ  
ಗಂಢತಿ ಪವತಿ ಚ । (2) ಇಶ್ವರಂ ಗುಹಂ ಚ ಭಜಸ್ವ ।

ಸಮುಚ್ಚಲತ್ ಸಮುಚ್ಚಲತ್ (ವಿಂ) ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಮುಂದೆ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಉತ್ + ಚಲ (ಕಂಪನೆ)  
"ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ನಿರಂತರಸ್ಥಗಿತದಿಗಂತರಂ  
ತತಃ ಸಮುಚ್ಚಲದ್ವಲಮವಲೋಕಯಜ್ಜನಃ" ಮಾಘಂ ೧೭-೩೦ ।

ಸಮುಚ್ಚಲನ ಸಮುಚ್ಚಲನ (ನಂ) ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವುದು,  
ಮುಂದೆ ಸಾಗುವುದು. ತಮ್ + ಉತ್ + ಚಲ (ಕಂಪನೆ)  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

ಸಮುಚ್ಚಾಯಕ ಸಮುಚ್ಚಾಯಕ (ವಿಂ) ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸುವ,  
ಒಂದೇ ಕಡೆ ಮೇಳೆ ಮಾಡಿಸುವ. ಸಮ್ + ಉತ್ + ಚಿನ್  
(ಚಯನೆ) + ಗಿನ್ "ಘ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

ಸಮುಚ್ಚಾರ ಸಮುಚ್ಚಾರ (ಪುಂ) ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಉಚ್ಚರಿಸುವಿಕೆ,  
ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬಾಯಿಂದ ಹೇಳುವಿಕೆ. ಸಮ್ + ಉತ್ + ಚರ (ಗತೌ)  
"ಘ್" (೩-೩-೧೮) ।

ಸಮುಚ್ಚಾರಣ ಸಮುಚ್ಚಾರಣ (ನಂ) ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕಲಿತು  
ಉಚ್ಚಾರ ಮಾಡುವುದು, ಎಲ್ಲರೂ ಸೇರಿ ಬಾಯಿಂದ ಸ್ಪಷ್ಟ

ವಾಗಿ ಹೇಳುವುದು. ಸಮ್ + ಉತ್ + ಚರ (ಗತೌ) + ಗಿನ್  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

ಸಮುಚ್ಚಿತ ಸಮುಚ್ಚಿತ (ವಿಂ) ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು,  
ಠಾಠಿ ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್ + ಉತ್ + ಚಿನ್ (ಚಯನೆ) "ಕ್ತಃ"  
(೩-೨-೧೦೨) ।

ಸಮುಚ್ಚಿತ್ತಿ ಸಮುಚ್ಚಿತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬುಡಸಹಿತ ಕಿತ್ತು  
ಹಾಕುವುದು, ಮೂಲೋತ್ಪಾಟನೆ ಮಾಡುವುದು. ಸಮ್ +  
ಉತ್ + ಚಿದಿರ್ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) ।

ಸಮುಚ್ಚಿತ್ತ ಸಮುಚ್ಚಿತ್ತ (ವಿಂ) 1. ಮೂಲೋತ್ಪಾಟನೆ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಬೇರುಸಹಿತ ಕಿತ್ತುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ನಾಶ  
ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್ + ಉತ್ + ಚಿದಿರ್ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ) "ಕ್ತಃ"  
(೩-೨-೧೦೨) ।

ಸಮುಚ್ಚೇದ ಸಮುಚ್ಚೇದ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾಪ್ರಳಯ,  
ಜಗತ್ತಿನ ಸರ್ವನಾಶ. ಸಮ್ + ಉತ್ + ಚಿದಿರ್ (ದ್ವಿಧೀಕರಣ)  
"ಘ್" (೩-೩-೧೮) । 2. ಬುಡಸಹಿತ ಕಿತ್ತುಹಾಕು  
ವುದು, ಮೂಲೋತ್ಪಾಟನೆ ಮಾಡುವುದು. "ವಂಶಲಕ್ಷ್ಮೀ-  
ಮನುಷ್ಯ ಸಮುಚ್ಚೇದೇನ ವಿಧಿಷಾಮ್ । ನಿರ್ವಾಣಮಪಿ ಮನ್ಯೇಷ್ಠ-  
ಮನ್ತರಾಯಂ ಜಯಶ್ರಿಯಃ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೬೯ ।

ಸಮುಚ್ಚಯ ಸಮುಚ್ಚಯ (ಪುಂ) 1. ಎತ್ತರ, ಔನ್ನತ್ಯ.  
ಸಮ್ + ಉತ್ + ಶ್ರಿನ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬) ।  
"ಕನಕಯುಪಸಮುಚ್ಚಯಶೋಭಿನೋ ವಿತಮಸಾ ತಮಸಾಸರಯುತಃ"  
ರಘುಂ ೯-೨೦ । 2. ಎರೋಧ, ದ್ವೇಷ. "ವಿರೋಧೇಽಪಿ  
ಸಮುಚ್ಚಯಃ" ಅಮಂ ।

ಸಮುಚ್ಚಾಯ ಸಮುಚ್ಚಾಯ (ಪುಂ) ಎತ್ತರ, ಔನ್ನತ್ಯ.  
ಸಮ್ + ಉತ್ + ಶ್ರಿನ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) ।

ಸಮುಚ್ಚಿತ ಸಮುಚ್ಚಿತ (ವಿಂ) ಉನ್ನತವಾದ, ಎತ್ತರ  
ವಾದ. ಸಮ್ + ಉತ್ + ಶ್ರಿನ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ"  
(೩-೪-೭೨) । "ಅವ್ಯಾಹತಕ್ಷಿಪ್ರಗತಃ ಸಮುಚ್ಚಿತಾನನುಜ್ಞಿತ-  
ದ್ರಾಧಿಮಭಿಗಂರೀಯಸಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೭೬ ।

ಸಮುಚ್ಚಸತ್ ಸಮುಚ್ಚಸತ್ (ವಿಂ) 1. ನಿಟ್ಟುಸಿರು ಬಿಡು  
ತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಉತ್ + ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ಶತ್"  
(೩-೨-೧೨೪) । 2. ಹುಟ್ಟುತ್ತಿರುವ, ಆವಿರ್ಭವಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. "ಅಭವನ್ ಯದಜ್ಞಗಮುಖಃ ಸಮುಚ್ಚಸನ್ನವಬಾಲ-  
ವಯಜಮಣಿಸ್ಥಲಾಡ್ಕುರಾಃ" ಮಾಘಂ ೧೩-೫೮ ।

ಸಮುಚ್ಚಾಸ ಸಮುಚ್ಚಾಸ (ಪುಂ) 1. ನಿಟ್ಟುಸಿರು. ಸಮ್ +  
ಉತ್ + ಶ್ವಸ (ಪ್ರಾಣನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) । 2. ಉತ್ಪತ್ತಿ,  
ಆವಿರ್ಭಾವ. ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) । -ಉಚ್ಚಾಸಿತಮ್  
-ಉಚ್ಚಾಸಿತಮ್.



ಸಮುಜ್ಜಿಹೋರ್ಷಿ ಸಮುಜ್ಜಿಹೀರ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಯ್ಯಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಸಮ್ + ತತ್ + ಹ್ರ (ಹರಣೆ) + ಸನ್ "ಅ:" (3-2-102)। 2. ರಕ್ಷಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರುಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ.

ಸಮುಜ್ಜಿಹೋರ್ಷಿ ಸಮುಜ್ಜಿಹೀರ್ಷಾ (ವಿಂ) 1. ಒಯ್ಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. ಸಮ್ + ತತ್ + ಹ್ರ (ಹರಣೆ) + ಸನ್ "ಃ:" (3-2-168)। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. 3. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರುಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. "ಸಮುಜ್ಜಿಹೋರ್ಷಿ ಜಗತಿ ಮಹಾಭರಾ ಮಹಾವರಾಹಂ ಮಹತೋರ್ಣವಾದಿವ" ಕಿರಾಂ 14-40।

ಸಮುಜ್ಜುಭಣ ಸಮುಜ್ಜುಂಭಣ (ನಂ) 1. ಅರಳುವುದು. ವಿಕಾಸ ಹೊಂದುವುದು. ಸಮ್ + ತತ್ + ಜು (ಗಾತ್ರವಿನಾಮೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-2-114)। 2. ಅರಳಿಸುವುದು. 3. ಪ್ರಯತ್ನಿಸುವುದು. 4. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುವುದು, ಮೇಲ್ಮಟ್ಟಕ್ಕೆ ಏರುವುದು.

ಸಮುಜ್ಜಿತ ಸಮುಜ್ಜಿತ (ವಿಂ) 1. ತೃಪ್ತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ತತ್ + ಜ (ತತ್ಸರ್ಗ) "ಕ್" (3-2-102)। "ಸಮುಜ್ಜಿತಜ್ಞಾತಿವಿಯೋಗವೇದಂ ತ್ವತ್ಸನ್ನಿಧಾವುಚ್ಚಿಸಿತಿವಿವೇಕಿತ:" ಕಿರಾಂ 3-8। 2. ಹೋಗಲು ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪ್ರಯೋಗಿಸಿ ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸಮುಜ್ಜಿತಾ ಯಾವದರಾತಿ ನಿಯಂತಿ ಸಹೇವ ಚಾಪಾನ್ಮುನಿಬಾಣಸಂಹತಿ:" ಕಿರಾಂ 14-56।

ಸಮುತ್ಕರ್ಷ ಸಮುತ್ಕರ್ಷ (ಪುಂ) 1. ಘನತೆಯುಂಟುಮಾಡುವುದು, ಮೇಲ್ಮಟ್ಟಕ್ಕೆ ಏರಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ತತ್ + ಕೃಷ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಘ" (3-2-118)। 2. ಅತಿಶಯ, ಹೆಚ್ಚಿಗೆ. 3. ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ, ಮೇಲ್ಮಟ್ಟ. 4. ಜುಬ್ಬುಕೊಳ್ಳುವುದು. "ಅನೃತಂ ಚ ಸಮುತ್ಕರ್ಷಂ ರಾಜಗಾಮಿ ಚ ಪೇಶುನಮ್। ಗುರೋಶ್ಚಾಲಿಕನಿಬಂಧ: ಸಮಾನಿ ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯಯಾ" ಮನುಂ 11-44।

ಸಮುತ್ಕೋಣ ಸಮುತ್ಕೋಣ (ವಿಂ) 1. ಕೊರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ರಂಧ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ತತ್ + ಕ (ವಿಕ್ಷೇಪ) "ಕ್" (3-2-102)। "ಮಣಿ ವಜ್ರಸಮುತ್ಕೋಣಂ ಸೂತ್ರಸ್ಯೇವಾಸ್ತಿ ಮೇ ಗತಿ:" ರಘುಂ 1-4। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಬ್ಬಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸಮುತ್ಕ್ರಮ ಸಮುತ್ಕ್ರಮ (ಪುಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತುವುದು. ಸಮ್ + ತತ್ + ಕ್ರಮ (ಪಾದವಿಕ್ಷೇಪ) "ಘ" (3-2-118)। ಭಾವ "ಲ್ಯುಟ್" (3-2-114)।  
-ಕ್ರಮಣಮ್ - ಕ್ರಮಣಮ್.

ಸಮುತ್ಕೋಶ ಸಮುತ್ಕೋಶ (ಪುಂ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗಿ ಕೊಳ್ಳುವುದು. 2. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕಿರುಚುವುದು. 3. ಕುರರ ಪಕ್ಷಿ, ಕುರವಕ ಹಕ್ಕಿ.

ಸಮುತ್ಕಿಪತ್ ಸಮುತ್ಕಿಪತ್ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ತತ್ + ಕ್ಷಿಪ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಶತ್" (3-2-124)। "ಸಮುತ್ಕಿಪನ್ ಯ: ಪೃಥಿವೀಭೃತಾಂ ವರಂ ವರಪ್ರದಾನಸ್ಯ ಚಕಾರ ಶೂಲಿನ:" ಮಾಘಂ 1-50।

ಸಮುತ್ಖನನ ಸಮುತ್ಖನನ (ನಂ) ಬುಡಸಹಿತ ಕಿತ್ತುಹಾಕುವುದು.

ಸಮುತ್ಖಾತ ಸಮುತ್ಖಾತ (ವಿಂ) ಬೇರುಸಹಿತ ಕೀಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಬುಡಸಮೇತ ಕಿತ್ತುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ತತ್ + ಖನ್ (ಅವದಾರಣೆ) "ಕ್" (3-2-102)। "ಆದೌ ಸಮುತ್ಖಾತ-ಪುನರ್ನಿಖಾತ: ಕೇಲಾಸಶೃಂಗೈರಿವ ಭಾತಿ ಸೌಧ:" ಆದಂ 18-26।

ಸಮುತ್ತರಣ ಸಮುತ್ತರಣ (ನಂ) 1. ನದಿ ಮೊದಲಾದುವು ಗಳನ್ನು ದಾಟುವುದು. ಸಮ್ + ತತ್ + ತ (ಫಲವನತರಣಯೋ:) ಭಾವ "ಲ್ಯುಟ್" (3-2-114)। "ಸಂಸಾರಸಾಗರಸಮುತ್ತರಣಕಪೋತ"। 2. ದಾಟುವ ಸಾಧನ, ತೆಪ್ಪು ದೋಣಿ ಮೊದಲಾದುವು. ಸಮುತ್ತರಣೇನ - ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (3-2-114)।

ಸಮುತ್ತರತ್ ಸಮುತ್ತರತ್ (ವಿಂ) ನದಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ದಾಟುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ತತ್ + ತ (ಫಲವನತರಣಯೋ:) "ಶತ್" (3-2-124)। "ಸಮುತ್ತರಂತಾವವ್ಯಯೋ ನದಾನ್ ಭಿಕ್ಷೋಃಸನ್ನಿಭಾನ್" ಭಟ್ಟಂ 6-49। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಛಿಪ್" (4-1-6)। -ಉತ್ತರಂತಿ -ಉತ್ತರಂತಿ.

ಸಮುತ್ತಾರಕ ಸಮುತ್ತಾರಕ (ವಿಂ) 1. ದಡವನ್ನು ಮುಟ್ಟಿಸುವವನು. 2. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರುಮಾಡುವವನು.

ಸಮುತ್ತಾರಣ ಸಮುತ್ತಾರಣ (ನಂ) 1. ನದಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ದಾಟಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ತತ್ + ತ (ಫಲವನತರಣಯೋ:) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-2-114)। 2. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರು ಮಾಡುವವನು.

ಸಮುತ್ಥಿಷತ್ ಸಮುತ್ಥಿಷತ್ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ತತ್ + ಷ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಶತ್" (3-2-124)।

ಸಮುತ್ಸೀರ್ಣ ಸಮುತ್ಸೀರ್ಣ (ವಿಂ) 1. ದಾಟಿದವನು, ಅಚ್ಚ ದಡವನ್ನು ಸೇರಿದವನು. 2. ಮುಂದೆ ಸಾಗಿದವನು, ಮುಂದೆ ನಡೆದವನು. 3. (ಪರೀಕ್ಷೆಯಲ್ಲಿ) ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಯು)



ತೇರ್ಗಡೆ ಹೊಂದಿದವನು, ಒಂದು ತರಗತಿಯಿಂದ ಮುಂದಿನ ತರಗತಿಗೆ ಹೋದವನು.

**ಸಮುತ್ಯ ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ** (ವಿಂ) 1. ಉದ್ಭವವಾದ, ಹುಟ್ಟಿದ. ಸಮ್+उत्+ष्ठा (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ್:" (3-2-4)। "अथ नयनसमुत्पत्त्यं ज्योतिरत्रैरिव द्यौः सुरसरिदिव तेजो वह्निनिष्ठयूतमेशम्" रघु० 2-95। 2. ಬೆನ್ನಾಗಿ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದು ಹರಡಿರುವ. "सं विव्युरम्बरविकाशि चमूसमुत्पत्त्यं पृथ्वीरजः करभकण्ठ-कडारमाशाः" भाष० 4-3।

**ಸಮುತ್ಥಾನ ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ** (ನಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳುವುದು. ಸಮ್+उत्+ष्ठा (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ಶಕ್ತಿ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಬಲ. "सर्वे हि स्वं समुत्थान-मुपजीवन्ति जन्तवः। अपि घाता विघाता च यथाय-मुदके बकः" भा० वन०। 3. ವ್ಯಾಧಿಯ ಸ್ವರೂಪದ ನಿರ್ಣಯ, ವ್ಯಾಧಿಯು ಗುಣವಾಗಬಹುದಾದ ಕಾಲ ನಿರ್ಣಯ. 4. ವ್ಯಾಧಿಯ ಉಪಶಮನ, ವ್ಯಾಧಿಯು ಗುಣ ವಾಗುವುದು, ರೋಗವು ವಾಸಿಯಾಗುವುದು. "अङ्गाव-पीडनायां च व्रणशोणितयोस्तथा। समुत्थानव्ययं दाप्यः सर्वदण्डमथापि वा" मनु० 6-287। 5. ಸಂಪೂರ್ಣ ವಾಗಿ ವಾಸಿಯಾಗುವುದು, ರೋಗವು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಗುಣವಾಗುವುದು. 6. ಉದ್ವೇಗಮನ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು. 7. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಿಸುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿಸುವುದು. "इन्द्रवज्रसमुत्थानं प्रमादान्न कृतं यदि। तदा द्वादशमे वर्षे कर्तव्यं नान्तरा पुनः"। 8. ಉತ್ಸಾಹ ದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಉದ್ಯೋಗ, ಚಟುವಟಿಕೆಯಿಂದ ನಡೆಯುವ ಉದ್ಯಮ.

**ಸಮುತ್ಥಿತ ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ** (ವಿಂ) 1. ಆಸನದಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದಿರುವ. ಸಮ್+उत्+ष्ठा (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ್:" (3-4-92)। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೊರಟಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿಬಂದಿರುವ. "उदधेरिव मन्येन पीडितस्य समुत्थितः" याद० 16-4। 3. ರೋಗ ಗುಣವಾಗಿ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದಿರುವ. 4. ಹುಟ್ಟಿದ, ಉತ್ಪನ್ನವಾದ. "समुत्थितेन त्रिदिवौकसां महाचमूरवेणाद्रितटान्तदारिणा" कुमा० 18-28।

**ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ** (ವಿಂ) 1. ಉದ್ಭವಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹುಟ್ಟುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್+उत्+पल (ಗತೌ) "ಶತ್" (3-2-124)। "सहात्मलाभेन समुत्पत्तिर्जति-स्वभावैरिव जीवलोकः" किरा० 19-19। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ

ಹೋಗುತ್ತಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "कौप्" (4-1-6)। -उत्पत्तौ -उत्पत्तौ.

**ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ** (ನಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವುದು. ಸಮ್+उत्+पल (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ಹುಟ್ಟುವುದು.

**ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ** (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿ ಹೋದ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗಿರುವ. ಸಮ್+उत्+पल (ಗತೌ) "ಕ್:" (3-4-92)।

**ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ** (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಸಮ್+उत्+पल (ಗತೌ) "इष्णुच्" (3-2-136)।

**ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹುಟ್ಟುವುದು, ಜನಿಸುವುದು. ಸಮ್+उत्+पद (ಗತೌ) "किन्" (3-3-94)। 2. ಆಗುವುದು, ಸಂಭವಿಸುವುದು.

**ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ** (ವಿಂ) 1. ಹುಟ್ಟಿದ, ಉದ್ಭವಿಸಿದ. ಸಮ್+उत्+पद (ಗತೌ) "ಕ್:" (3-4-92)। 2. ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ, ಒದಗಿದ, ಸಂಭವಿಸಿದ. "समुत्पत्तेषु कार्येषु बुद्धिर्यस्य न होयते। स एव दुर्गं तरति जलस्थो वानरो यथा" पञ्चत० 4-1।

**ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ** (ನಂ) ಬುಡಸಹಿತ ಕಿತ್ತು ಹಾಕುವುದು, ಬೇರಿನೊಡನೆ ತೆಗೆದುಹಾಕುವುದು. ಸಮ್+उत्+पद (ಭಾಷಾರ್ಥೆ)+णिच् "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

**ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ** (ವಿಂ) ಬುಡಸಹಿತ ಕಿತ್ತು ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್+उत्+पद (ಭಾಷಾರ್ಥೆ)+णिच् "ಕ್:" (3-2-102)।

**ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ** (ನಂ) ಉತ್ಪತ್ತಿ ಮಾಡುವುದು, ತಯಾರಿಸುವುದು, ಸೃಷ್ಟಿಸುವುದು. ಸಮ್+उत्+पद (ಗತೌ)+णिच् "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

**ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ** (ಪುಂ) 1. ಬಹಳ ವ್ಯಾಕುಲವಾದ ಸೈನ್ಯ, ಗಾಬರಿಯಿಂದ ಚಿಲ್ಲಾಪಿಲ್ಲಿಯಾದ ಸೈನ್ಯ. ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ—ಸಮ್+उत्+पिजि (हिंसायाम्)+णिच् "अच्" (3-3-46)। (ವಿಂ) 2. ಬಹಳವಾಗಿ ಗಾಬರಿಗೊಂಡ. ಪಿಜ್ಜಂ ಲಾತಿ—ಲಾ (ಆದಾನೆ) "ಕ್:" (3-2-3)। बाहुलकादलच् वा। -उत्पिजलः -उत्पिजलः.

**ಸಮುತ್ಸರ್ಗ ಸಮುತ್ಪತ್ತಿ** (ಪುಂ) 1. ಬಿಡುವುದು, ಪರಿತ್ಯಜಿಸುವುದು. ಸಮ್+उत्+सृज (विसर्गे) "घञ्" (3-3-10)। 2. ಎಸೆಯುವುದು, ಬಿಡುವುದು. 3. ಮಲವಿಸರ್ಜನೆ.



“ಮೂರ್ತೋಚ್ಚಾರಸಮುತ್ಸಾರಿ ದಿವಾ ಕುರ್ಯದ್ವಿಡ್‌ಮುಖಃ” ಮನುಂ ೪-೫೦ |  
 “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) | -ಉತ್ಸರ್ಜನಮ್ -ಉತ್ಸರ್ಜನಮ್.  
 4. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ.

ಸಮುತ್ಸಾರಣ ಸಮುತ್ಸಾರಣ (ನಂ) 1. ಜನರ ಗುಂಪನ್ನು  
 ಚಿದರಿಸುವುದು. 2. ದಾರಿಯನ್ನು ಬಿಡಿಸಿ ಓಡಿಸುವಿಕೆ.  
 ಸಮ್ + ಉತ್ + ಸ್ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) |  
 ಸಮುತ್ಸಾರಿತ ಸಮುತ್ಸಾರಿತ (ವಿಂ) 1. ಚಿದರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
 2. ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಉತ್ + ಸ್ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ “ಕ್”  
 (೩-೨-೧೦೨) |

ಸಮುತ್ಸುಕ ಸಮುತ್ಸುಕ (ವಿಂ) 1. ಉತ್ಸುಹದಿಂದ ಕೂಡಿದ.  
 ಸಮ್ + ಉತ್ + ಕ್ (ಪ್ರೇರಣೆ) “ಡುಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೧೮೦) |  
 “ಕನ್” (೪-೪-೫) | ಹ್ರಸ್ವ: (೭-೪-೧೩) | 2. ಇಷ್ಟ  
 ವಾದುದನ್ನು ಪಡೆಯಲು ತವಕಪಡುವ. “ನಿಹತ್ಸುಕಾನಾಮ-  
 ಭಿಯೋಗಭಾಜಾಂ ಸಮುತ್ಸುಕೇವಾಙ್ಕಮುಪೇತಿ ಸಿದ್ಧಿಃ” ಕಿರಾಂ  
 ೩-೪೦ | 3. ಇಷ್ಟವಾದುದನ್ನು ಪಡೆಯಲು ಪ್ರಯತ್ನ  
 ಪಟ್ಟ. “ವಿಪ್ರಪ್ರತೀಕಾರಪರೇಣ ಮಜ್ಜಲಂ ನಿಷೇವ್ಯತೇ ಭೂತಿ-  
 ಸಮುತ್ಸುಕೇನ ವಾ” ಕುಮಾಂ ೫-೭೬ |

ಸಮುತ್ಸೃಜತ್ ಸಮುತ್ಸೃಜತ್ (ವಿಂ) 1. ತ್ಯಜಿಸುತ್ತಿರುವ.  
 ಬಿಡುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಉತ್ + ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) “ಶತ್”  
 (೩-೨-೧೨೪) | 2. ಕೊಡುತ್ತಿರುವ, ದಾನಮಾಡು  
 ತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಜೀಪ್” (೪-೧-೬) | -ಉತ್ಸೃಜಂತಿ.  
 -ಉತ್ಸೃಜಂತಿ.

ಸಮುತ್ಸೃಷ್ಟ ಸಮುತ್ಸೃಷ್ಟ (ವಿಂ) 1. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಪೂರ್ಣ  
 ವಾಗಿ ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಉತ್ + ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) “ಕ್”  
 (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ, ದಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
 3. ಹೊರಗೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸಮುತ್ಸೇಧ ಸಮುತ್ಸೇಧ (ಪುಂ) 1. ಔನ್ನತ್ಯ, ಎತ್ತರ. ಸಮ್ +  
 ಉತ್ + ಷಿಧ (ಗತ್ಯಾಮ್) “ಘಬ್” (೩-೩-೧೮) | 2. ಸ್ಥೂಲ  
 ವಾಗಿರುವಿಕೆ, ದಪ್ಪವಾಗಿರುವಿಕೆ.

ಸಮುದಕ್ತ ಸಮುದಕ್ತ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ.  
 (ಬಾವಿಯಿಂದ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ (ನೀರು).  
 ಸಮುದಚ್ಯತೇ ಸಮ — ಸಮ್ + ಉತ್ + ಅಚ್ (ಗತೌ) “ಕ್ತಃ”  
 (೩-೨-೧೦೨) | “ಸಮುದಕ್ತೋದ್ಧತೇ ಸಮೇ” ಅಮಂ |

ಸಮುದಯ ಸಮುದಯ (ಪುಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದು ಬರುವುದು,  
 ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರುವುದು,  
 -ಹತ್ತುವುದು. ಸಮುದೀಯತೇ — ಸಮ್ + ಉತ್ + ಇನ್ (ಗತೌ)  
 “ಅಚ್” (೩-೩-೫೬) | 2. ಸಂಗಮ, ಸೇರುವುದು,  
 ಜೊತೆಗೂಡುವುದು. 3. ಸಂಘ, ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು.

4. ಯುದ್ಧ, ಸಮರ, ಕಾಳಗ. 5. ದಿವಸ, ಹಗಲು.  
 “ಮೇವತ್ ಸಮುದಯಃ ಸತ್ತ್ವೇ ಸತ್ತ್ವಮೇ ವ ಸಮುದಗಮೇ” ಮೇದಿಂ |  
 (ನಂ) 6. ಲಗ್ನ, ರಾಶಿಯ ಉದಯ.

ಸಮುದಾಗಮ ಸಮುದಾಗಮ (ಪುಂ) ಸಂಪೂರ್ಣ ಜ್ಞಾನ,  
 ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳ ಜ್ಞಾನ. ಸಮ್ + ಉತ್ + ಆ + ಗಮ್ (ಗತೌ)  
 “ಅಪ್” (೩-೩-೫೮) | “ಸಮಂತಾತ್ ಜ್ಞಾನಂ ಸ್ಯಾತ್  
 ಸಮುದಾಗಮಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಸಮುದಾಚಾರ ಸಮುದಾಚಾರ (ಪುಂ) ರೂಢಿಯಾಗಿ ಬಂದ  
 ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ, ಸಂಪ್ರದಾಯದ ನಡವಳಿಕೆ. ಸಮ್ + ಉತ್ +  
 ಆ + ಚರ (ಗತೌ) “ಘಬ್” (೩-೩-೧೮) |

ಸಮುದಾಯ ಸಮುದಾಯ (ಪುಂ) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು.  
 ಸಮ್ + ಉತ್ + ಆಡ್ + ಅಯ (ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) |  
 2. ಯುದ್ಧ, ಸಮರ. “ಸಮುದಾಯಃ ಸಮೂಹೇ ಸ್ಯಾವುದ್ಧೇ”  
 ಮೇದಿಂ | 3. ಹಿಂಗಾವಲು ಸೈನ್ಯ, ಸೈನ್ಯದ ಹಿಂಭಾಗದಲ್ಲಿ  
 ರುವ ಕಾವಲು ದಳ.

ಸಮುದಾಹರಣ ಸಮುದಾಹರಣ (ನಂ) ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು  
 ಬಹಿರಂಗವಾಗಿ ತಿಳಿಸುವುದು, ವಿಧ್ಯುಕ್ತವಾಗಿ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ  
 ಪ್ರಕಟಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಉತ್ + ಆ + ಹ್ವ (ಹರಣೆ) “ಲ್ಯುಟ್”  
 (೩-೩-೧೧೫) |

ಸಮುದಾಹತ ಸಮುದಾಹತ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಟಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ಪಷ್ಟ  
 ವಾಗಿ ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸಮುದಿತ ಸಮುದಿತ (ವಿಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿದ, ಒಟ್ಟು  
 ಗೂಡಿದ. ಸಮ್ + ಉತ್ + ಇನ್ (ಗತೌ) “ಕ್” (೩-೪-೭೨) |  
 “ಸಹಜವಲಸಮೇತ. ಶಕ್ತುರ್ವೇರಜಯಃ ಸಮುದಿತವಿಷಮಾಸ್ತ್ರಸ್ತಾ-  
 ದ್‌ಶಾನಂದಹೇತುಃ” ಯಾದಂ ೨೪-೯೪ | “ಸಮುದಿತಃ ಸರ್ವೋ ಗುಣಾನಾಂ  
 ಗಣಃ” ರತ್ನಾಂ ೧-೬ | 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಉದಯಿಸಿ ಮೇಲಕ್ಕೆ  
 ಬಂದಿರುವ. ಸಮ್ಯಗುದಿತಃ | 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದಿರುವ,  
 ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೊರಟಿರುವ. “ಸಮುದಿತಂ ನು ವಿಲಕ್ಷಯಿತುಂ  
 ನಮಃ” ಕಿರಾಂ ೫-೧ | 4. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ಹಿಡಿಯ  
 ಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಉತ್ + ವದ  
 (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಕ್” (೩-೪-೭೨) | 6. ಉತ್ಪನ್ನ  
 ವಾದ, ಉಂಟಾದ. “ಅಥ ಸಮುದಿತಹರ್ಷರಾದೃತೌ ಮನ್ವಿವೃದ್ಧಿಃ”  
 ಯಾದಂ ೧೩-೧೦೮ | 7. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಕೂಡಿರುವ.  
 “ಸಕಲೈವೈವೈಃ ಸಕಲದೋಷಸಮುದಿತಮಿದಂ ಗುಣೈಸ್ತವ” ಮಾಧಂ  
 ೧೫-೩೨ |

ಸಮುದೀರಣ ಸಮುದೀರಣ (ನಂ) ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಹೇಳುವುದು,  
 ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾತಾಡುವುದು. ಸಮ್ + ಉತ್ + ಇರ (ಗತೌ)  
 “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) |



ಸಮುದೀರಿತ ಸಮುದೀರಿತ (ನಂ) 1. ಮಾತು, ಸ್ವಪ್ನವಾದ ಉಚ್ಚಾರಣೆ. ಸಮ್ + ತತ್ + ಇರ (ಗತೌ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (3-3-114)। (ವಿಂ) 2. ಸ್ವಪ್ನವಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಃ" (3-2-102)।

ಸಮುದ್ಗ ಸಮುದ್ಗ (ಫಂ) ಯಮಕಾಲಾಂತರದ ಒಂದು ಭೇದ, ಭಿನ್ನಾರ್ಥಗಳಾದ ಒಂದೇ ಅನುಪೂರ್ವಿಯುಳ್ಳ ಶ್ಲೋಕದ ಪಾದಗಳು ಅಭ್ಯಸ್ತ (ಪುನರಾವೃತ್ತ) ವಾದರೆ ಸಮುದ್ಗವೆನಿಸುವುದು. ಇದು ಮೂರು ವಿಧ :

(1) ಪ್ರಥಮ-ತೃತೀಯ ಅಭ್ಯಸ್ತ (ಪುನರಾವೃತ್ತ) ದ್ವಿತೀಯ-ತುರೀಯ ವಾಗಿರುವುದು. ಪಾದಗಳು (ಸಮಾನವಾಗಿರುವುದು.)

(2) ಪ್ರಥಮ-ದ್ವಿತೀಯ ತೃತೀಯ-ತುರೀಯ ಪಾದಗಳು

(3) ಪ್ರಥಮ-ತುರೀಯ ದ್ವಿತೀಯ-ತೃತೀಯ ಪಾದಗಳು

"ಅರ್ಥಾಭಿಾಸಃ ಸಮುದ್ಗಃ ಸ್ಯಾದಸ್ಯ ಭೇದಾಸ್ತ್ರಯೋ ಮತಾಃ । ಪಾದಾಭಿಾಸೋಽಪ್ಯನೇಕಾತ್ಮಾ ವ್ಯಜ್ಯತೇ ಸ ನಿರ್ದರ್ಶನಃ" ಕಾವ್ಯಾಂ 3-43 ।

ಉದಾ:—(1) "ನಾಸ್ಥೇಯ (ಃ) ಸತ್ವಯಾವಜ್ಯಃ ಪರಮಾಯತ-ಮಾನಯಾ । ನಾಸ್ಥೇಯಃ ಸ ತ್ವಯಾ ವಜ್ಯಃ ಪರಮಾಯತಮಾನಯಾ" ॥ ಕಾವ್ಯಾಂ 3-44 ।

(2) "ನರಾ ಜಿತಾ ಮಾನನಯಾ ಸಮೇತ್ಯ ನ ರಾಜಿತಾ ಮಾನನಯಾಸಮೇತ್ಯ । ವಿನಾಶಿತಾ ವೈಭವತಾಽಪ್ಯನೇನ ವಿನಾಽಶಿತಾ ವೈಭವತಾಯನೇನ" ॥ ಕಾವ್ಯಾಂ 3-45 ।

(3) "ಕಲಾಪಿನಾಂ ಚಾರುತಯೋಪಯಾಂತಿ ವೃಂದಾನಿ ಲಾಪೋಢ-ಘನಾಗಮಾನಾಮ್ । ವೃಂದಾನಿಲಾಪೋಢಘನಾಗಮಾನಾಂ ಕಲಾಪಿನಾಂ ಚಾರುತಯೋಪಯಾಂತಿ" ॥ ಕಾವ್ಯಾಂ 3-46 ।

ಸಮುದ್ಗಕ ಸಮುದ್ಗಕ (ಫಂ) ಸಂಪುಟ, ಭರಣೆ. ಸಮುದ್ಗ-ಗಚ್ಛತಿ — ಸಮ್ + ತತ್ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (ವಾಂ 3-2-48)। ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (4-4-4)। "ಸಮುದ್ಗಕಃ ಸಂಪುಟಕಃ" ಅಮಂ ।

ಸಮುದ್ಗತ ಸಮುದ್ಗತ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಬೆಳೆದಿರುವ. ಸಮ್ + ತತ್ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (3-4-92)। 2. ಉದಯಿಸಿರುವ. 3. ಉತ್ಪನ್ನವಾದ, ಹುಟ್ಟಿದ.

ಸಮುದ್ಗಮ ಸಮುದ್ಗಮ (ಫಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳುವುದು. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೊರಡುವುದು. ಸಮ್ + ತತ್ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಅಪ್" (3-3-48)। 3. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ನಿರ್ಮಾಣ, ತಯಾರಿಸುವುದು. 4. ಮೊಳಕೆ, ಅಂಕುರ.

ಸಮುದ್ಗಾರ ಸಮುದ್ಗಾರ (ಫಂ) 1. ಕಕ್ಕುವುದು, ವಾಂತಿ ಮಾಡುವುದು. ಸಮ್ + ತತ್ + ಗ್ (ನಿಗರಣಂ) "ವಾನ್" (3-3-29)। 2. ಉದಾಹರಿಸುವುದು. 3. ತೇಗು.

ಸಮುದ್ಗಿರಣ ಸಮುದ್ಗಿರಣ (ನಂ) 1. ಕಕ್ಕುವುದು, ವಾಂತಿ ಮಾಡುವುದು. ಸಮ್ + ತತ್ + ಗ್ (ನಿಗರಣಂ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ತೇಗುವುದು. 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೊರಡಿಸುವುದು.

ಸಮುದ್ಗಿರತ್ ಸಮುದ್ಗಿರತ್ (ವಿಂ) 1. ಕಕ್ಕುತ್ತಿರುವ, ವಾಂತಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 2. ತೇಗುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ತತ್ + ಗ್ (ನಿಗರಣಂ) "ಶತ್" (3-2-124)। 3. ಹೇಳುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್" (4-2-6)। —ಉದ್ಗಿರಂತಿ —ಉದ್ಗಿರಂತಿ.

ಸಮುದ್ಗೋಣ ಸಮುದ್ಗೋಣ (ವಿಂ) 1. ಕಕ್ಕಲ್ಪಟ್ಟ, ವಾಂತಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ತತ್ + ಗ್ (ನಿಗರಣಂ) "ಕ್ತಃ" (3-2-102)। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸಮುದೇಶ ಸಮುದೇಶ (ಫಂ) 1. ಒಂದೊಂದಾಗಿ ನಮೂದಿಸಿ ಹೇಳುವುದು, ಒಂದೊಂದನ್ನೂ ಪ್ರತ್ಯೇಕಿಸಿ ಹೇಳುವುದು. 2. ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ವಿವರಿಸಿ ಹೇಳುವುದು. ಸಮ್ + ತತ್ + ದಿಶಾ (ಅತಿಸರ್ಜನೆ) "ವಾನ್" (3-3-18)। 3. ಪ್ರದೇಶ, ಜಾಗ, ಸ್ಥಳ.

ಸಮುದ್ವತ ಸಮುದ್ವತ (ವಿಂ) 1. ಅವಿನೀತ. 2. ಕೊಬ್ಬಿದ ವನು, ಗರ್ವವುಳ್ಳವನು. ಸಮ್ + ತತ್ + ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) "ಕ್ತಃ" (3-4-92)। "ಸಹಜಚಾಪಲದೋಷಸಮುದ್ವತಶ್ಚಲಿತ-ದ್ವುಬಲಪಕ್ಷಪರಿಸ್ಪ್ರಹಃ" ಮಾಘಂ 2-119। 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಮಾನ ವರ್ಯಾದೆಗಳಿಲ್ಲದ, ಲಜ್ಜೆಯಿಲ್ಲದ.

ಸಮುದ್ವರಣ ಸಮುದ್ವರಣ (ನಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವುದು. ಸಮ್ + ತತ್ + ಹನ್ (ಹರಣಂ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆಮಾಡುವುದು, ತೊಂದರೆಯಿಂದ ಪಾರುಮಾಡುವುದು. 3. (ಬಾವಿಯ ನೀರನ್ನು) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆಯುವುದು. 4. ಬುಡಸಹಿತ ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. 5. ಋಣ ಪರಿಹರಿಸುವುದು, ಸಾಲ ತೀರಿಸುವುದು. 6. ವಾಂತಿಮಾಡುವುದು.



ಸಮುದ್ರಗಣಿ ಸಮುದ್ರರಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಡುವ. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಬೇಕಾದ. 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. 4. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಬಹುದಾದ. ಸಮ್+ಉತ್+ಛ್ (ಹರಣಿ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। 5. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರುಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 6. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರುಮಾಡಬೇಕಾದ. 7. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರುಮಾಡಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 8. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರುಮಾಡಬಹುದಾದ. 9. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆಯಲ್ಪಡುವ. 10. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆಯ ಬೇಕಾದ. 11. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆಯಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. 12. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಬಹುದಾದ. 13. ಬುಡಸಹಿತ ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 14. —ನಾಶಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 15. —ನಾಶಪಡಿಸಬಹುದಾದ. 16. —ನಾಶಪಡಿಸಲು ಸಾಧ್ಯ ವಾದ.

ಸಮುದ್ರತು ಸಮುದ್ರತ್ಯು (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವವನು. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆಯುವವನು. ಸಮ್+ಉತ್+ಛ್ (ಹರಣಿ) "ತು" (೩-೧-೧೩೩)। 3. ನಾಶಪಡಿಸುವವನು. ಮೂಲೋತ್ಪಾಟನ ಮಾಡುವವನು. "ಅನಾಥಾಣಾಂ ಸಮುದ್ರತುಃ ತಸ್ಮಾತ್ ಸಿಂಧುರಯಾದಿವ। ಪ್ರಾಪ ತಾಲಿವನಶ್ಯಾಮಮುಕುಂ ಮಹೋದಧಿಃ" ರಘುಂ ೪-೩೪। 4. ಕಷ್ಟದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡುವವನು, ತೊಂದರೆಯಿಂದ ಪಾರುಮಾಡುವವನು, ರಕ್ಷಿಸುವವನು. 5. ಬೆದರಿಸುವವನು, ಹಿಡಿಸುವವನು.

ಸಮುದ್ರಾರ ಸಮುದ್ರಾರ (ಪುಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವುದು. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆಯುವುದು. ಸಮ್+ಉತ್+ಛ್ (ಹರಣಿ) "ಛ್" (೩-೩-೧೮)। 3. ಸಾಲ ತೀರಿಸುವುದು. 4. ಕಷ್ಟ ದಿಂದ ಪಾರುಮಾಡುವುದು.

ಸಮುದ್ರತ ಸಮುದ್ರತ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಬ್ಬಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಕದಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್+ಉತ್+ಛ್ (ಹರಣಿ) "ಛ್" (೩-೨-೧೦೨)। "ಅಮಿ ಸಮುದ್ರತಸರೋಜರೇಣುನಾ ಹುತಾ ಹುತಾಸಾರಕಣೇನ ವಾಯುನಾ" ಕಿರಾಂ ೪-೩೫। 2. ಅಲು ಗಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

ಸಮುದ್ರತ ಸಮುದ್ರತ (ವಿಂ) 1. ರಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಕಷ್ಟದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್+ಉತ್+ಛ್ (ಹರಣಿ) "ಛ್" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಟ್ಟು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆದು ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟು (ಬಾವಿಯ ನೀರು). 3. ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟು. "ಯೋಷಿಮನೋಜನ್ಮಸುಖೋದಯೇ ಸಮುದ್ರತಾಶ್ಚಮನೀಚಕಾಶಿ" ಮಾಘಂ ೬-೨೪। 4. ಬೆದರಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟು, ಹಿಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 5. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಮೂಲೋ ತ್ಪಾಟನೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು.

ಸಮುದ್ರವ ಸಮುದ್ರವ (ಪುಂ) 1. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟುವುದು, ಜನ್ಮಪಡೆಯುವುದು. ಸಮ್+ಉತ್+ಛ್ "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭)। 2. ಉತ್ಪತ್ತಿಗೆ ಕಾರಣ, ಮೂಲ. 3. ಉತ್ಪತ್ತಿಯ ಸ್ಥಾನ, ಮೂಲಸ್ಥಾನ. 4. ಪುತ್ರ, ಮಗ. "ಹರಿದಶ್ವ- ಸಮುದ್ರವಂ ಪ್ರದಾನೇ" ಯಾದಂ ೧೪-೩೩। (ವಿಂ) 5. ಹುಟ್ಟಿದ, ಜನ್ಮಪಡೆದ. "ವಸತಿ ನಂದಗೃಹೇ ವಿಬುಧದ್ವಿಷಾಂ ದಮಯಿತಾ ವಸುಧೇವಸಮುದ್ರವಃ" ಯಾದಂ ೩-೫೩।

ಸಮುದ್ರತ ಸಮುದ್ರತ (ವಿಂ) 1. ಹುಟ್ಟಿದ, ಜನ್ಮ ತಾಳಿದ. ಸಮ್+ಉತ್+ಛ್ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಛ್" (೩-೪-೭೨)। 2. ಉಂಟಾದ, ಸುಭವಿಸಿದ. 3. ಹುಟ್ಟಿದ, ಉತ್ಪನ್ನ ವಾದ. "ಪ್ರಜಾಪಿಡನಂತಾಪಾತ್ ಸಮುದ್ರತೋ ಹುತಾಶನಃ। ರಾಜಃ ಶ್ರಿಯಂ ಕುಲಂ ಪ್ರಾಣಾನ್ ನಾದೃಶ್ವಾ ವಿನಿವರ್ತತೇ" ಪञ्ಚತಂ ೧-೩೭೬।

ಸಮುದ್ರತ ಸಮುದ್ರತ (ವಿಂ) 1. ಯತ್ನಿಸಿರುವ, ತೊಡಗಿ ರುವ. ಸಮ್+ಉತ್+ಛ್ (ಉಪರಮೇ) "ಛ್" (೩-೪-೭೨)। "ಪ್ರಚುಕ್ತುಃ ಸಪದಿ ತದ್ಮುರಾಶಿನಾ ಸಮಂ ಮಹಾಪ್ರಲಯಸಮುದ್ರತಂ ಸದಃ" ಮಾಘಂ ೧೭-೧। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್+ಉತ್+ಛ್ (ಉಪರಮೇ) "ಛ್" (೩-೨-೧೦೨)।

ಸಮುದ್ರಮ ಸಮುದ್ರಮ (ಪುಂ) 1. ಉದ್ಯಮ, ಪ್ರಯತ್ನ. ಸಮ್+ಉತ್+ಛ್ (ಉಪರಮೇ) "ಛ್" (೩-೩-೧೮)। "ಕೇಮಯಾ ಸಹ ಯೋಧವ್ಯಮಸ್ಮಿನ್ ರಣಸಮುದ್ರಮೇ" ಗೀತಾ ೧-೨೨। 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವುದು. 3. ಪ್ರಾರಂಭ, ಕಾರ್ಯ ವನ್ನು ಕೈಗೊಳ್ಳುವುದು.

ಸಮುದ್ರೋಗ ಸಮುದ್ರೋಗ (ಪುಂ) 1. ಚಟುವಟಿಕೆಯಿಂದ ನಡೆಸುವ ಕಾರ್ಯ, ಉತ್ಸಾಹಪೂರ್ವಕ ಶ್ರಮವಹಿಸಿ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ. ಸಮ್+ಉತ್+ಛ್ (ಯೋಗಿ) "ಛ್" (೩-೩-೧೯)। 2. ಪ್ರಯತ್ನ.

ಸಮುದ್ರ ಸಮುದ್ರ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು, ಸಾಗರ. ಸಮುದ್ರ—ಸಮ್+ಉದ್ರಿ (ಕಲದನೆ) "ರಕ್" (೩-೨-೧೩)। ಸಮೀचीना उद्रा जलचरप्राणिनोऽत्र इति वा। मुद्रा मर्यादा तथा सह वर्तते इति वा। सम्यग्दुग्गतो रोगिणरत्र इति वा। मुदं राति इति मुद्रा रत्नम्— रत्नादिभिः सह वर्तते इति वा। "मव्येसमुद्रं ककुभः पिशङ्गीर्या कुर्वती काञ्चनवप्रभासा" माघं ३-३३। (1) लवणसमुद्रः (2) इक्षुसमुद्रः (3) सुरासमुद्रः (4) सर्पिस् (5) दधिसमुद्रः (6) क्षीरसमुद्रः मत्तु (7) जलसमुद्रः ಎಂದು ಏಳು ಸಮುದ್ರಗಳಿರುವುವು. ಈ ಸಪ್ತ ಸಮುದ್ರಗಳಿಂದ ಸಪ್ತ ದ್ವೀಪಗಳು ಸುತ್ತು



ಲಕ್ಷ್ಮಿರುವುದು. ಒಟ್ಟು ಭೂಭಾಗದ ಅರ್ಧಭಾಗವು  
ಲವಣಸಮುದ್ರದ ಉತ್ತರ ಭಾಗದಲ್ಲಿರುವುದು. ಅದೇ  
ಜುಬೂದ್ವೀಪ. ಉಳಿದ ಅರು ದ್ವೀಪಗಳೂ ಉಳಿದ ಅರ್ಧ  
ಭಾಗದಲ್ಲಿರುವುದು. "ಜಮ್ಬುಲಕ್ಷಾಹ್ವಯೋ ದ್ವೀಪೌ ಶಾಲ್ಮಲಿ-  
ಶ್ರಾಪರೋ ದ್ವಿಜಃ | ಕುಶಃ ಕ್ರೌಶ್ವಸ್ತಥಾ ಶಾಕಃ ಪುಷ್ಕರಶ್ಚೈವ  
ಸಪ್ತಮಃ | ಏತೇ ದ್ವೀಪಾಃ ಸಮುದ್ರೇ ಸುಪ್ತ ಸಪ್ತಭಿರಾವೃತಾಃ |  
ಲವಣೇಷು ಸುರಾಸಪಿರ್ದಧಿದುಘಜಲೈಃ ಸಮಮ್ | ಜಮ್ಬುದ್ವೀಪಃ  
ಸಮಸ್ತಾನಾಮೇತೇಷಾಂ ಮಧ್ಯಸಂಸ್ಥಿತಃ || ತಸ್ಯಾಪಿ ಮೇಹಮಂತ್ರೇ  
ಮಧ್ಯೇ ಕನಕಪರ್ವತಃ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ. [ಎವಂ ಕೃತ್ವಾ "ದ್ವೀಪ"  
ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ನಾಲ್ಕು ಸಂಖ್ಯೆ. 3. ಪರಶಿವ,  
ಪರಮೇಶ್ವರ. (ವಿಂ) 4. ಮುದ್ರಾಸಹಿತವಾದ. ಮುದ್ರಾ  
ಸಹ ವರ್ತತೆ |

ಸಮುದ್ರಕಫ ಸಮುದ್ರಕಫ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರದ ನೊರೆ.  
ಸಮುದ್ರಸ್ಯ ಕಫ ಇವ | -ಕನಃ -ಕೇನಃ.

ಸಮುದ್ರಕಾಂತಾ ಸಮುದ್ರಕಾಂತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನದಿ, ಹೊಳೆ.  
ಸಮುದ್ರಸ್ಯ ಕಾಂತಾ | 2. ವೃಕ್ಷಾ, ಸ್ತೃಕ್ಷಾ ಎಂಬ ಒಂದು  
ಗಂಧದ್ರವ್ಯ. -ದಯಿತಾ -ದಯಿತಾ. -ಪತ್ನಿ -ಪತ್ನೀ.

ಸಮುದ್ರಗಾ ಸಮುದ್ರಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಮುದ್ರವನ್ನು ಸೇರುವ  
ನದಿ. ಸಮುದ್ರಂ ಗच्छति -ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಓ" (ವಾಂ  
೩-೨-೪೮) |

ಸಮುದ್ರಗೃಹ ಸಮುದ್ರಗೃಹ (ನಂ) ಜಲಯುಕ್ತ ಗೃಹ,  
ಬೇಸಿಗೆಯಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡಲು ನೀರಿನ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿರ್ಮಿತ  
ವಾದ ಗೃಹ. "ಜಲಯನ್ತ್ರಗೃಹಂ ಧೀರೈಃ ಸಮುದ್ರಗೃಹಮುಚ್ಯತೆ"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಸಮುದ್ರಚುಲಕ ಸಮುದ್ರಚುಲಕ (ಪುಂ) ಅಗಸ್ತ್ಯ ಮಹರ್ಷಿ.  
ಸಮುದ್ರಃ ಚುಲಕ ಇವ ಯಸ್ಯ | "ದೀಪ್ತಾಗ್ನಿರೊಂಶೇಯಶ್ಚ ಸಮುದ್ರ-  
ಚುಲಕಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಸಮುದ್ರನವನೀತ ಸಮುದ್ರನವನೀತ (ನಂ) 1. ಅಮೃತ.  
2. ಚಂದ್ರ. ಸಮುದ್ರಸ್ಯ ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರಸ್ಯ ನವನೀತಮಿವ |  
"ಸಮುದ್ರನವನೀತಂ ಸ್ಯಾತ್ ಕಲಿಬಿಂ ಪಿಯೂಷಚಂದ್ರಯೋಃ" ಮೇದಿಂ |

ಸಮುದ್ರಮೇಖಲಾ ಸಮುದ್ರಮೇಖಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೃಥಿವಿ,  
ಭೂಮಿ. ಸಮುದ್ರಃ ಮೇಖಲೇವ ಯಸ್ಯಾಃ |

ಸಮುದ್ರಯಾತ್ರಾ ಸಮುದ್ರಯಾತ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಯಾನ -ಯಾನ  
(ನಂ) ಸಮುದ್ರದ ಮೂಲಕ ಮಾಡುವ ಪ್ರಯಾಣ,  
ಸಮುದ್ರದ ಮೂಲಕ ದೇಶಾಂತರಗಳಿಗೆ ಹೋಗುವುದು.  
ಸಮುದ್ರೇ ಯಾನಮ್ | "ಸಮುದ್ರಯಾನಕುಶಲಾ ದೇಶಕಾಲಾರ್ಥದರ್ಶಿನಃ |  
ಸ್ಥಾಪಯಂತಿ ತು ಯಾಂ ವೃದ್ಧಿ ಸಾ ತತ್ರಾಧಿಗಮಂ ಪ್ರತಿ" ಮನುಂ |  
ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ ದ್ವಿಜರಿಗೆ ಸಮುದ್ರಯಾತ್ರೆಯು ನಿಷಿದ್ಧ.

ಇವು ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ ನಿಷಿದ್ಧಃ : ಸಮುದ್ರಯಾನ  
ಕಮಂಡಲು ಧಾರಣ (ಸಂನ್ಯಾಸಾಶ್ರಮ) ಅಸರ್ವಣ ಕನ್ಯಾ  
ವಿವಾಹ ದೇವರನಿಂದ ಸುತೋತ್ಪತ್ತಿ. ಮಧುಪರ್ಕದಲ್ಲಿ  
ಪಶುವಧೆ. (ಶ್ರಾದ್ಧಗಳಲ್ಲಿ) ಮಾಂಸಭಕ್ಷಣ ವಾನಪ್ರಸ್ಥಾ  
ಶ್ರಮ ವಾಚಾದತ್ತ ಕನ್ಯೆಯನ್ನು ಬೇರೆ ವರನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು  
ಮಾಡುವ ವಿವಾಹ ದೀರ್ಘಕಾಲ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾಶ್ರಮ  
ದಲ್ಲಿರುವುದು ನರಮೇಧ ಮತ್ತು ಅಶ್ವಮೇಧ ಇವೆಲ್ಲವೂ  
ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ ನಿಷಿದ್ಧ. "ಸಮುದ್ರಯಾತ್ರಾಸ್ವೀಕಾರಃ ಕಮಂಡಲು-  
ವಿಧಾರಣಮ್ | ದ್ವಿಜಾನಾಮಸತ್ಯಗ್ನಿಸ್ತು ಕನ್ಯಾಸುಪಯಮಸ್ತಥಾ ||  
ದೇವರೇಣ ಸುತೋತ್ಪತ್ತಿಃ ಮಧುಪರ್ಕಂ ಪಶೋರ್ವಧಃ | ಮಾಂಸಾದನಂ ತಥಾ  
ಶ್ರಾದ್ಧೇ ವಾನಪ್ರಸ್ಥಾಶ್ರಮಸ್ತಥಾ || ದತ್ತಾಯಾಶ್ಚೈವ ಕನ್ಯಾಯಾ  
ಪುನರ್ದಾನಂ ವರಸ್ಯ ಚ | ದೀರ್ಘಕಾಲಂ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಂ ನರಮೇಧಾಶ್ಚ-  
ಮೇವಕೌ || ಇಮಾನ್ ವರ್ಮಾನ್ ಕಲಿಯುಗೇ ವರ್ಜ್ಯಾನಾಹುರ್ಮನೀಷಿಣಃ"  
ಬೃಹನ್ನಾರದೀಯಮ್ |

ಸಮುದ್ರಯಾತ್ರಿನ್ ಸಮುದ್ರಯಾತ್ರಿನ್ (ವಿಂ) ಸಮುದ್ರ  
ದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯಾಣಮಾಡುವವನು. ಸಮುದ್ರೇ ಯಾತಿ |

ಸಮುದ್ರವಹ್ನಿ ಸಮುದ್ರವಹ್ನಿ (ಪುಂ) ಬಡಬಾಗಿ. ಸಮುದ್ರಸ್ಯ  
ವಹ್ನಿಃ |

ಸಮುದ್ರಾ ಸಮುದ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಮೀವೃಕ್ಷ. ಬನ್ನಿಮರ.  
ಸಮ್ಯಗುದ್ಗತೋ ರೋ ವಹ್ನಿರಯಸ್ಯಾಃ |

ಸಮುದ್ರಾಂತ ಸಮುದ್ರಾಂತ (ನಂ) 1. ಜಾಯಿಕಾಯಿ. ಸಮುದ್ರ-  
ಸ್ಯಾಂತ ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) |  
2. ಸಮುದ್ರದ ದಡ, -ತೀರ.

ಸಮುದ್ರಾಂತಾ ಸಮುದ್ರಾಂತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತೀರಕಸಂಧಿ.  
ಸಮುದ್ರಸ್ಯ ಅಂತಃ ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಅಚ್"  
(೪-೨-೧೨೭) | 2. ಹತ್ತಿಗಿಡ. 3. ಸ್ತೃಕ್ಷಾ ಎಂಬ  
ಒಂದು ಗಂಧ ದ್ರವ್ಯ. "ಸಮುದ್ರಾಂತಾ ತು ಕಾರ್ಪಾಸೀಪೃಕ್ಷಾ-  
ದುರಾಲಭಾಸು ಚ" ಮೇದಿಂ | 4. ಭೂಮಿ.

ಸಮುದ್ರಾಂಬರಾ ಸಮುದ್ರಾಂಬರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೃಥಿವಿ, ಭೂಮಿ.  
ಸಮುದ್ರಃ ಅಂಬರಮಿವ ಯಸ್ಯಾಃ |

ಸಮುದ್ರಾರ ಸಮುದ್ರಾರು (ಪುಂ) 1. ಮೊಸಳೆ. 2. ಸೇತುವಿನ  
ಬಂಧನ, ಸೇತುವಿನ ನಿರ್ಮಾಣ. 3. ತಿಮ್ಮಿಂಗಿಲ. ಸಮುದ್ರಂ  
ಗच्छति -ಗ (ಗತೌ) "ಉ" ಬಾಹುಂ | "ಸಮುದ್ರಾರಃ  
ಪುಮಾನ್ ಗ್ರಾಹೇ ಸೇತುಬಂಧೇ ತಿಮಿಜ್ಜಿಲೇ" ಮೇದಿಂ |

ಸಮುದ್ರೀಯ ಸಮುದ್ರೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸಮುದ್ರಸಂಬಂಧವಾದ.  
2. ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿರುವ. ಸಮುದ್ರ "ಏ" (೪-೪-೧೧೮) |  
"ಓ" | ಸಮುದ್ರೀಯಃ ಸಮುದ್ರೀಯಃ |



ಸಮುದ್ರಹತ್ ಸಮುದ್ವಹತ್ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಿರುವ, ಹೊತ್ತಿರುವ, ವಹಿಸಿರುವ. ಸಮ್+ಉತ್+ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಶತ್" (3-2-124). 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುತ್ತಿರುವ.

ಸಮುದ್ರಹನ ಸಮುದ್ವಹನ (ನಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವುದು. 2. ಹೊರುವುದು, ವಹಿಸುವುದು.

ಸಮುದ್ರಗ ಸಮುದ್ವೇಗ (ಪುಂ) 1. ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ. ಸಮ್+ಉತ್+ಆ ವಿಜಿ (ಭಯಚಲನಯೋಃ) "ಘ್" (3-3-116). 2. ಕಳವಳ, ಗಾಬರಿ. 3. ಚಿಂತೆ. 4. ಕಂಪನ, ನಡುಕ.

ಸಮುದನ ಸಮುದನ (ನಂ) ತೇವ, ಒದ್ದೆ. ಸಮ್+ಉದ್ (ಕಲದನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

ಸಮುನ್ನ ಸಮುನ್ನ (ವಿಂ) ತೇವವಾಗಿರುವ, ಒದ್ದೆಯಾಗಿರುವ. ಸಮ್+ಉದ್ (ಕಲದನೇ) "ಕ್" (3-4-92). "ಸಮುನ್ನಮದ್ವಿನ ಸಮುನ್ನಮದ್ವಿ:" ಮಾಘಂ 4-14.

ಸಮುನ್ನತ ಸಮುನ್ನತ (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಎತ್ತರವಾದ. ಸಮ್+ಉತ್+ಞಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) "ಕ್" (3-4-92). "ಸಮುನ್ನತಃ ಕಾಶದುಕೂಲಶಾಲಿಭಿಃ ಪರಿವೃಣತಸಾರಸಪತ್ನಿ-ಮೇಖಲೆ:" ಕಿರಾಂ 6-9. 2. ಹಿರಿದಾದ, ದೊಡ್ಡದಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. 3. ಮುಂದಕ್ಕೆ ಚಾಚಿಕೊಂಡಿರುವ, ಮುಂದಕ್ಕೆ ಉಬ್ಬಿರುವ. 4. ಅಹಂಕಾರವುಳ್ಳವನು, ಗರ್ವವುಳ್ಳವನು. 5. ವಿನಯಶಾಲಿ, ಭಯಭಕ್ತಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದವನು, ಗಾಂಭೀರ್ಯಗುಣದಿಂದ ಶೋಭಿಸುವವನು.

ಸಮುನ್ನತಿ ಸಮುನ್ನತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಏಳಿಗೆ. ಸಮ್+ಉತ್+ಞಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94). "ವಿಧಿಹೇತುರಹೇತುರಾಗಸಾಂ ವಿನಿಶಿತೋಽಪಿ ಸಮಃ ಸಮುನ್ನತೇ:" ಕಿರಾಂ 2-34. 2. ಎತ್ತರ, ಔನ್ನತ್ಯ. "ಉಪಪನ್ನಮಿದಂ ಸರ್ವಮತಃ ಪರಮಪಿ ತ್ವಯಿ. ಮನಸಃ ಶಿಖರಾಣಾಂ ಚ ಸದೃಶೀ ತೇ ಸಮುನ್ನತಿ:" ಕುಮಾಂ 6-66. 3. ಗೌರವ, ಮರ್ಯಾದೆ, ಹಿರಿಮೆ, ಉತ್ಕೃಷ್ಟ. "ಸ ಜಾತೋ ಯೇನ ಜಾತೇನ ಯಾತಿ ವಂಶಃ ಸಮುನ್ನತಿಮ್" 4. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರುವುದು, ಘನತೆಯನ್ನು ಪಡೆಯುವುದು, ಜಯಪಡೆಯುವುದು. "ಗೌರವೇಣ ದದೃಶೇ ಸಮುನ್ನತೀಲಿಖವೇನ ಚ ನತಿಸ್ತದ್ಭೂತಮ್" ಧಾಂ 17-21. 5. ದುರಹಂಕಾರ, ದುರಭಿಮಾನ.

ಸಮುನ್ನದ ಸಮುನ್ನದ (ವಿಂ) 1. ತಾನು ಪಂಡಿತನೆಂದು ತಿಳಿದಿರುವವನು. ಸಮ್+ಉತ್+ಞಹ (ವೃಂದನೇ) "ಕ್" (3-2-102). 2. ಗರ್ವಿತ, ಅಹಂಕಾರವುಳ್ಳವನು. 3. ಹುಟ್ಟಿದ, ಉತ್ಪತ್ತಿಹೊಂದಿದ. "ಸಮುನ್ನದಃ ಸಮುನ್ನತೇ ಪಣ್ಡಿತಮನ್ಯದ್ವಯೋಃ" ವಿಶ್ವಂ.

ಸಮುನ್ನಮತ್ ಸಮುನ್ನಮತ್ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಾಗದೆ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಮೇಲೆ ಓಡಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್+ಉತ್+ಞಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) "ಶತ್" (3-2-124). "ಯತ್ರ-ಞ್ಜಿತಾಭಿಮುಹುರಸ್ವವಾಹೈಃ ಸಮುನ್ನಮದ್ವಿನ ಸಮುನ್ನಮದ್ವಿ:" ಮಾಘಂ 4-14. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏಳುತ್ತಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದು ಬರುತ್ತಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೊರಡುತ್ತಿರುವ. "ಅವಾಹತ ಶ್ರವಣಮುಖಂ ಸಮುನ್ನಮತ್ಪಯೋಧರಧ್ವನಿಗುರು ತ್ವಯಮಾನನೇ:" ಮಾಘಂ 17-38. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಘಿಪ್" (4-1-6). -ಉನ್ನಮಂತಿ -ಉನ್ನಮಂತೀ. "ಸಮುನ್ನಮಂತಿ ಕುಟಿಲಾಯತಾತ್ಮಾ ಶಶಾಂಕ-ಲೋದಯದ್ವಯಕೋಟಿ:" ಧಾಂ 2-46.

ಸಮುನ್ನಯ ಸಮುನ್ನಯ (ಪುಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆಯುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ತರುವುದು. ಸಮ್+ಉತ್+ಞಮ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಅಚ್" (3-3-46).

ಸಮುನ್ನಯತ್ ಸಮುನ್ನಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುತ್ತಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿ ತರುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್+ಉತ್+ಞಮ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಶತ್" (3-2-124). 2. ಉಹಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಸಮುನ್ನಯನ್ ಮೃತಿಮನಾರ್ಯಸಂಕ್ಲಮಾದ್ವರಂ ವಿರೋಧೋಽಪಿ ಸಮಂ ಮಹಾತ್ಮಮಿಃ:" ಕಿರಾಂ 1-6.

ಸಮುನ್ನಯನ ಸಮುನ್ನಯನ (ನಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎಳೆದು ತರುವುದು. ಸಮ್+ಉತ್+ಞಮ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ಉಹಿಸುವುದು. 3. ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು, ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವುದು.

ಸಮುನ್ನಿವತ್ ಸಮುನ್ನಿವತ್ (ವಿಂ) 1. ವಿಕಾಸಹೊಂದುತ್ತಿರುವ, ಅರಳುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್+ಉತ್+ಮಿಷ (ಸ್ಪರ್ಧಾಯಾಮ್) "ಶತ್" (3-2-124). 2. (ಕಣ್ಣು) ತೆರೆಯುತ್ತಿರುವ.

ಸಮುನ್ನಿವಿತ ಸಮುನ್ನಿವಿತ (ನಂ) 1. ನೋಟ, ವೀಕ್ಷಣ. ಸಮ್+ಉತ್+ಮಿಷ (ಸ್ಪರ್ಧಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಕ್" (3-3-114). 2. (ಕಣ್ಣು) ತೆರೆದಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 3. ಅರಳಿದ, ವಿಕಾಸ ಹೊಂದಿದ. 4. (ಕಣ್ಣು) ತೆರೆದಿರುವ. ಕರ್ತಂ "ಕ್" (3-4-92).

ಸಮುನ್ಮೀಲತ್ ಸಮುನ್ಮೀಲತ್ (ವಿಂ) 1. ಅರಳುತ್ತಿರುವ, ವಿಕಾಸಹೊಂದುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್+ಉತ್+ಮೀಲ (ನಿಮೇಷಣೆ) "ಶತ್" (3-2-124). 2. (ಕಣ್ಣು) ತೆರೆಯುತ್ತಿರುವ.

ಸಮುನ್ಮೀಲನ ಸಮುನ್ಮೀಲನ (ನಂ) 1. ವಿಕಾಸ, ಅರಳುವಿಕೆ. ಸಮ್+ಉತ್+ಮೀಲ (ನಿಮೇಷಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. (ಕಣ್ಣು) ತೆರೆಯುವಿಕೆ.



ಸಮುಮಿಲಿತ ಸಮುನ್ನೀಲಿತ (ವಿಂ) 1. ಅರಳಿದ. 2. ತೆರೆದಿರುವ (ಕಣ್ಣು). 3. ತೆರೆದಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಿಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸಮುನ್ಮಲನ ಸಮುನ್ಮೂಲನ (ನಂ) ಬುಡಸಹಿತ ಕಿತ್ತು ಹಾಕುವುದು, ಮೂಲೋತ್ಪತ್ತಿನ ಮಾಡುವುದು. ಸಮ್ +

ಉನ್ಮೂಲ (ನಾಮಧಾಂ) + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) 1

ಸಮುನ್ಮಲಿತ ಸಮುನ್ಮೂಲಿತ (ವಿಂ) ಬುಡಸಹಿತ ಕಿತ್ತು ಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಉನ್ಮೂಲ (ನಾಮಧಾಂ) + ಣಿಕ್ "ಕ್" (3-2-102) 1

ಸಮುನ್ಮೇಷ ಸಮುನ್ಮೇಷ (ಪುಂ) 1. (ಕಣ್ಣು) ತೆರೆಯುವುದು.

2. ಅರಳುವುದು. ವಿಕಾಸಹೊಂದುವುದು. ಸಮ್ + ಉತ್ + ಮಿಷ (ಸ್ಪರ್ಧಾಯಾಮ್) "ಛಕ್" (3-3-114) 1 3. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು.

ಸಮುನ್ಮೇಷಣ ಸಮುನ್ಮೇಷಣ (ನಂ) 1. ಅರಳುವುದು. ವಿಕಾಸಹೊಂದುವುದು. 2. (ಕಣ್ಣು) ತೆರೆಯುವುದು.

ಸಮ್ + ಉತ್ + ಮಿಷ (ಸ್ಪರ್ಧಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) 1

3. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವುದು.

ಸಮುನ್ಮೇಷಿನ್ ಸಮುನ್ಮೇಷಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ.

ಸಮ್ + ಉತ್ + ಮಿಷ (ಸ್ಪರ್ಧಾಯಾಮ್) "ಣಿನ್" (3-2-94) 1

2. ಅರಳಿಸುವ. ಸಮ್ + ಉತ್ + ಮಿಷ + ಣಿಕ್ "ಣಿನ್" (3-2-94) 1 ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (4-1-4) 1 -ಉನ್ಮೇಷಿಣೀ.

ಸಮುಪಗತ ಸಮುಪಗತ (ವಿಂ) 1. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ.

ಸಮ್ + ಉಪ + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಕ್" (3-4-92) 1

2. ಆಗಮಿಸಿರುವ, ಬಂದಿರುವ. 3. ತಿಳಿದಿರುವ. 4. ಕೃ ಸೇರಿರುವ, ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ. 5. ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುವ, ಸ್ವೀಕರಿಸಿರುವ.

ಸಮುಪಗಮ ಸಮುಪಗಮ (ಪುಂ) 1. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬರುವುದು, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬರುವುದು. ಸಮ್ + ಉಪ + ಗಮ್ (ಗತೌ)

"ಅಪ್" (3-3-94) 1 2. ತಿಳಿಯುವುದು. 3. ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಹೊಂದುವಿಕೆ, ಕೃಸೇರುವುದು. 4. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ.

ಸಮುಪಚಿತ ಸಮುಪಚಿತ (ವಿಂ) 1. ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿದ, ಅಧಿಕವಾದ. ಸಮ್ + ಉಪ + ಚಿಕ್ (ಚಯನೇ) "ಕ್" (3-4-92) 1 2. ಶೇಖರಿಸಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೂಡಿಸಿಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸಮುಪಚಿತಿ ಸಮುಪಚಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಬೆಳವಣಿಗೆ. ಸಮ್ + ಉಪ + ಚಿಕ್ (ಚಯನೇ) "ಕ್ಲಿನ್" (3-3-94) 1

2. ವೃದ್ಧಿ, ಹೆಚ್ಚುವಿಕೆ.

ಸಮುಪಜೋಷ ಸಮುಪಜೋಷಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಅನಂದ, ಸಂತೋಷ. ಸಮ್ + ಉಪ + ಜೃಷಿ (ಪ್ರೀತಿಶೇವನಯೋಃ) "ಅಮ್" 1

"ದಿಷ್ಟಾ ಸಮುಪಜೋಷಂ ಚೇತ್ಯಾನಂದೇ" ಅಮಂ 1

ಸಮುಪವಿಶತ್ ಸಮುಪವಿಶತ್ (ವಿಂ) ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಉಪ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೇ) "ಶತ್" (3-2-124) 1 ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (4-1-4) 1 -ಉಪವಿಶಂತೀ.

ಸಮುಪವಿಷ್ಠ ಸಮುಪವಿಷ್ಠ (ವಿಂ) ಕುಳಿತಿರುವ. ಸಮ್ + ಉಪ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೇ) "ಕ್" (3-4-92) 1

ಸಮುಪವೇಶ ಸಮುಪವೇಶ (ಪುಂ) ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಸಮ್ + ಉಪ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೇ) "ಛಕ್" (3-3-114) 1

"ಲ್ಯುಟ್" (4-1-12) 1 -ಉಪವೇಶನಮ್ -ಉಪವೇಶನಮ್.

ಸಮುಪವೇಶಿತ ಸಮುಪವೇಶಿತ (ವಿಂ) ಕುಳಿರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸಮ್ + ಉಪ + ವಿಶ (ಪ್ರವೇಶನೇ) + ಣಿಕ್ "ಕ್" (3-2-102) 1

ಸಮುಪಸಂಹತ ಸಮುಪಸಂಹತ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ (ಬಾಣ). ಸಮ್ + ಉಪ + ಸಮ್ + ಹ್ (ಹರಣೇ)

"ಕ್" (3-2-102) 1 2. ನಿಲ್ಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿರಾಮಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಶಾಂತಂ ಮಹಾಪುರುಷಸಜ್ಜದಿತಂ ನಿಶಮ್ಯ

ತದ್ಗೌರವಾತ್ ಸಮುಪಸಂಹತಸಂಪ್ರಹಾರಃ" ಉಂ ರಾಂ 6-9 1

ಸಮುಪಸಂಹತಿ ಸಮುಪಸಂಹತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರಯೋಗಿಸಿದ ಬಾಣವನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಸಮ್ + ಉಪ + ಸಮ್ + ಹ್ (ಹರಣೇ) "ಕ್ಲಿನ್" (3-3-94) 1

2. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು, ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ವಿರಾಮ ಕೊಡುವುದು.

ಸಮುಪಸ್ಥಾನ ಸಮುಪಸ್ಥಾನ (ನಂ) 1. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬರುವುದು. ಸಮ್ + ಉಪ + ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) 1

2. ಪೂಜೆ, ಆರಾಧನೆ, ಉಪಾಸನೆ.

3. ಸಮೀಪದ ಸ್ಥಳ, ಹತ್ತಿರದ ಜಾಗ. 4. ಸೇವೆ, ಶುಶ್ರೂಷೆ.

ಸಮುಪಸ್ಥಿತ ಸಮುಪಸ್ಥಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ. 2. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ. ಸಮ್ + ಉಪ + ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಕ್" (3-4-92) 1

3. ಲಬ್ಧವಾದ, ಒದಗಿ ಬಂದಿರುವ.

ಸಮುಪಸ್ಥಿತಿ ಸಮುಪಸ್ಥಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬರುವುದು. 2. ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವುದು. ಸಮ್ + ಉಪ + ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತೌ) "ಕ್ಲಿನ್" (3-3-94) 1

3. ಪೂಜೆ.

4. ಸೇವೆ, ಶುಶ್ರೂಷೆ.

ಸಮುಪಹರಣ ಸಮುಪಹರಣ (ನಂ) ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬರುವುದು, ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಕೊಡುವುದು. ಸಮ್ + ಉಪ + ಹ್ (ಹರಣೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) 1



ಸಮುಹರತ್ ಸಮುಪಹರತ್ (ವಿಂ) ಒಯ್ಯುತ್ತಿರುವ, ಹೋಗಿ ಕೊಡುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಉ + ಹ್ರ (ಹರಣಿ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಮರುದವನಿರುಹಂ ರಜೋ ವಭೂಮ್ಯಃ ಸಮುಹರನ್ ವಿಚಕಾರ ಕೋರಕಾಣಿ" ಮಾಘಂ ೭-೨೬ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) । -ಉಹರಂತಿ -ಉಪಹರಂತಿ.

ಸಮುಪಾಹುಡ ಸಮುಪಾಹುಡ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವ, ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿರುವ. ಸಮ್ + ಉ + ಆ + ಹು (ಬೀಜ-ಜನ್ಮಾದಿ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) । 2. ಸಂಭವಿಸಿದ, ಉಂಟಾದ. 3. ಹುಟ್ಟಿದ, ಉತ್ಪನ್ನವಾದ.

ಸಮುಪಾಲಬ್ಧ ಸಮುಪಾಲಬ್ಧ (ವಿಂ) ನಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ದೊರಕಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಉ + ಆ + ಡುಲಭ (ಪ್ರಾಪ್ತಿ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।

ಸಮುಪಾಲಮ್ಭ ಸಮುಪಾಲಮ್ಭ (ಪುಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ದೊರಕಿಸುವುದು, ನಂದಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಉ + ಆ + ಡುಲಭ (ಪ್ರಾಪ್ತಿ) "ಭಕ್" (೩-೩-೧೮) । "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । -ಉಪಾಲಮ್ಭನಮ್ -ಉಪಾಲಮ್ಭನಮ್.

ಸಮುಪಾಸನ ಸಮುಪಾಸನ (ನಂ) 1. ಪೂಜೆ, ಆರಾಧನೆ. ಸಮ್ + ಉ + ಆಸ (ಉಪವೇಶನ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಸೇವೆ, ಶೂಶ್ರೂಷೆ.

ಸಮುಪಾಸಿತ ಸಮುಪಾಸಿತ (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಆರಾಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಸೇವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಶೂಶ್ರೂಷೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಉ + ಆಸ (ಉಪವೇಶನ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।

ಸಮುಪಾಸ್ಯ ಸಮುಪಾಸ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಸೇವಿಸಲ್ಪಡುವ. ಸಮ್ + ಉ + ಆಸ (ಉಪವೇಶನ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) । (ಅವ್ಯಂ) 3. ಪೂಜಿಸಿ, ಆರಾಧಿಸಿ. 4. ಸೇವಿಸಿ, ಶೂಶ್ರೂಷೆಮಾಡಿ.

ಸಮುಪೇತ ಸಮುಪೇತ (ವಿಂ) 1. ಬಂದು ಸೇರಿದ, ಬಂದು ತಲುಪಿದ. ಸಮ್ + ಉ + ಇನ್ (ಗತೌ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) । 2. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿ ಬಂದಿರುವ, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿ ಬಂದಿರುವ. 3. ಯುಕ್ತವಾದ, ಕೂಡಿರುವ, ಹೊಂದಿರುವ.

ಸಮುಪೋಡ ಸಮುಪೋಡ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗಿರುವ. ಸಮ್ + ಉ + ವಹ (ಪ್ರಾಪಣಿ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) । 2. ಆಗಮಿಸಿರುವ, ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವ. "ಯೇಂದ್ರ-ವಾನಂದಂ ಬ್ರಜತಿ ಸಮುಪೋಡ ಕುಮುದಿನಿ ತಥೆವಾಸ್ಮಿನ್ ದೃಷ್ಟಿರ್ಮಮ ಕಲಹಕಾಮಃ ಪುನರಯಮ್" ಉಂ ರಾಂ ೫-೨೬ । 3. ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ತಂದಿರುವ.

ಸಮುಲ್ಲಸತ್ ಸಮುಲ್ಲಸತ್ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಉ + ಲಸ (ಕಾಂತಿ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಸುಮೇಖಲಾಃ ಸಿತತರದಂತಚಾರವಃ ಸಮುಲ್ಲ-ಸತ್ತನುಪರಿಧಾನಸಮ್ಮದಃ" ಮಾಘಂ ೧೭-೨೫ । 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹೋಗಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿ ಹೊರಟಿರುವ. "ಸಮುಲ್ಲಸ-ಚ್ಚಕಲಿತಪಾಟಲೋಪಲಃ ಸ್ಫುಲಿಂಗವಾನ್ ಸ್ಫುಟಮಿವ ಕೋಪ-ಪಾವಕಃ" ಮಾಘಂ ೧೭-೩ ।

ಸಮುಲ್ಲಾಸ ಸಮುಲ್ಲಾಸ (ಪುಂ) 1. ಸಂತೋಷ, ಹರ್ಷ. ಸಮ್ + ಉ + ಲಸ (ಶ್ಲೇಷಣಕೃತ್ಯನಯಃ) "ಭಕ್" (೩-೩-೧೮) । 2. ಪ್ರಕಾಶ, ಹೊಳಪು, ಕಾಂತಿ.

ಸಮುಲ್ಲಿಖತ್ ಸಮುಲ್ಲಿಖತ್ (ವಿಂ) 1. ಉಜ್ಜುಲಿಸುವ, ತಿಕ್ಕುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಉ + ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಸಾಣೆ ಹಿಡಿಯುತ್ತಿರುವ. 3. ಕೊರೆಯುತ್ತಿರುವ, ಗೀರುತ್ತಿರುವ. "ತುಷಾರಸಂಜ್ಞಾತ-ಶಿಲಾಃ ಕುರಾಗ್ರೇಃ ಸಮುಲ್ಲಿಖಂದಂಕಲಃ ಕಕುಬಾನ್" ಕುಮಾಂ ೧-೫೬ । 4. ಚಿತ್ರ ಬರೆಯುತ್ತಿರುವ.

ಸಮುಲ್ಲಿಖಿತ ಸಮುಲ್ಲಿಖಿತ (ವಿಂ) 1. ಉಜ್ಜುಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿಕ್ಕಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಉ + ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಸಾಣೆ ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಚಿತ್ರ ಕೊರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೆತ್ತಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಕೊರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಗೀರಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸಮೂ ಸಮೂ (ಪುಂ) ಹರಿಣ, ಜಿಂಕೆ.

ಸಮೂಡ ಸಮೂಡ (ವಿಂ) 1. ರಾಶಿಯಾಗಿರುವ, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿರುವ. ಸಮ್ + ವಹ (ಪ್ರಾಪಣಿ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) । "ನವಾನಖೋಘೋ ಬೃಹತಃ ಪಯೋಧರಾನ್ ಸಮೂಡಕಪುರಪರಾಗ-ಪಾಂಡುರಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೪ । 2. ಬಗ್ಗಿರುವ, ವಕ್ರವಾಗಿರುವ. 3. ಶಾಂತ, ನೆಮ್ಮದಿಯಿಂದಿರುವ. 4. ಮದುವೆಯಾಗಿರುವ. 5. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 6. ಆಗತಾನೆ ಹುಟ್ಟಿದ. "ಸಮೂಡಃ ಪುಂಜಿತೇ ಸುಗ್ಧೇ ಸದ್ವಿಜಾತೇನುಪಪ್ಲುತೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಸಮೂಹ ಸಮೂಹ (ಪುಂ) 1. ಗುಂಪು, ರಾಶಿ. ಸಮ್ + ಉಹ (ವಿತರ್ಕ) "ಭಕ್" (೩-೩-೧೯) । "ಭೃಗುಶ್ವೇಣೀಶ್ಯಾಮಭಾಸಾಂ ಸಮೂಹೈಃ ನಾರಾಚಾನಾಂ ವಿಧನೀರ್ನದ್ರದೇಹಃ" ಮಾಘಂ ೧೮-೪೧ । 2. ಒಂದೇ ಜಾತಿಯ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ತಂಡ, -ಹಿಂಡು. "ಗ್ರಾಮಜಾತಿಸಮೂಹೇಷು ಸಮಯವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಾಮ್" ಮನುಂ ೮-೨೨೧ ।

ಸಮೂಹತ್ ಸಮೂಹತ್ (ವಿಂ) ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಒಂದು ಕಡೆ ಗುಂಪಾಗಿ ಸೇರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಉಹ (ವಿತರ್ಕ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ದಿಶಾಃ ಸಮೂಹನಿವ



ವಿಕ್ಷಿಪನ್ನಿವ ಪ್ರಭಾ ರವೇರಾಕುಲಯನ್ನಿವಾನಿಲಮ್" ಕಿರಾಂ  
೧೪-೫೦ |

ಸಮೂಹನ ಸಮೂಹನ (ನಂ) 1. ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸುವುದು, ಸಂಗ್ರಹಿಸುವುದು, ಸಂಕಲನ. ಸಮೂಹತೇಜಃ—ಸಮ್+ಊಹ (ವಿತರ್ಕ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಿ ತರುವುದು.

ಸಮೂಹನಿ ಸಮೂಹನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೂರಕ, ಸಂವಾದನ. ಸಮೂಹ ಸಮೂಹ್ಯ (ಪುಂ) ಯಾಗದ ಅಗ್ನಿ. ಸಮೂಹತೇ — ಸಮ್+ಊಹ (ವಿತರ್ಕ) "ಞತ್" (೩-೧-೧೩೧) |

ಸಮೃದ್ಧ ಸಮೃದ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಐಶ್ವರ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಸಮ್+ಋಷು (ವೃದ್ಧಿ) "ಕ್" (೩-೪-೭೨) | 2. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿರುವ, ಉಚ್ಛ್ರಾಯಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರುವ. 3. ಅಧಿಕವಾಗಿರುವ, ಹೆಚ್ಚಿರುವ. 4. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿರುವ, ಪುಷ್ಕಲವಾದ, ಯಥೇಷ್ಟವಾದ.

ಸಮೃದ್ಧಿ ಸಮೃದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಪತ್ತು, ಅಧಿಕ, ಹೆಚ್ಚಿಗೆ. ಸಮ್+ಋಷು (ವೃದ್ಧಿ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | "ಮಧುರಯಾ ಮಧುಬೋಧಿತಮಾಘವೀಮಧುಸಮೃದ್ಧಿಸಮೇಧಿತಮೇಧಯಾ" ಮಾಘಂ ೬-೨೦ | 2. ಅರ್ಥಸಂಪತ್ತು, ಐಶ್ವರ್ಯ. "ಮಂತ್ರಿ ಚಾಪ್ರಣಯಾತ್ ಸಮೃದ್ಧಿರನಯಾತ್ ತ್ಯಾಗಾತ್ ಪ್ರಮಾದಾಢನಮ್" ಭರ್ತಂ ೧-೩೩ | 3. ಪುಷ್ಕಲವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಯಥೇಷ್ಟವಾಗಿರುವಿಕೆ.

ಸಮೇತ ಸಮೇತ (ವಿಂ) 1. ಸರಿಯಾಗಿ ಬಂದು ಸೇರಿದ. ಸಮ್+ಙ್ (ಗತೌ) "ಕ್" (೩-೪-೭೨) | 2. ಕೂಡಿರುವ, ಸಹಿತವಾದ. "ಪೃಥುನಾ ಭುಜಯುಷ್ಮೇನ ಭೋಗೀಂದ್ರ-ಪರಿಕರ್ಮಣಾ | ಮಂದರದ್ವಿತೀಯೇನೇವ ಸಮೇತೋ ರುಕ್ಮಪರ್ವತಃ" ಯಾದಂ ೧೬-೫೭ | 3. ಮಿಶ್ರಿತ, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿದ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿರುವ. "ತಂ ಶಾಸ್ತ್ರಪದಪ್ರಮುಖಾ ಮಹಾಂತಃ ಸಿಂಧವಿರೇ ಶೇಖರಯಃ ಸಮೇತಾಃ" ಯಾದಂ ೧೩-೭೪ | 4. ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ, ಲಭ್ಯವಾದ. "ನಯೋ ಮಹೀಯಾನಿವ ಶಕ್ತಿಭಿಃ ಸಮಂ ಸಮೇತಸಿದ್ಧಿಃ ಪ್ರಚಿಕಾಯ ಸಂಪದಮ್" ಯಾದಂ ೧೪-೭೪ |

ಸಮೇಧಿತ ಸಮೇಧಿತ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್+ಏಧ (ವೃದ್ಧಿ)+ಞಿವ್ "ಕ್" (೩-೨-೧೦೨) | "ಮಧುರಯಾ ಮಧುಬೋಧಿತಮಾಘವೀಮಧುಸಮೃದ್ಧಿ-ಸಮೇಧಿತಮೇಧಯಾ" ಮಾಘಂ ೬-೨೦ | 2. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿದ, ಹೆಚ್ಚಿದ. ಸಮ್+ಏಧ (ವೃದ್ಧಿ) ಕತಂ "ಕ್" (೩-೪-೭೨) |

ಸಮೋದಕ ಸಮೋದಕ (ನಂ) 1. ಅರ್ಥ ನೀರು ಬೆರಸಿದ ಮೊಸರು. ಸಮೋದಕಂ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಮೋದಕ ಸಹಿತವಾದ.

ಸಂಪತ್ತಿ ಸಂಪತ್ತಿ (ವಿಂ) 1. ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವ, ತಿರುಗಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್+ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಏಕದಾ ಹಲಧರಸ್ಯ ವಿಹಾರೇ ಸಂಪತ್ತಿಮಿತ ಚಾಪಲವೇಷ್ಠಃ | ದ್ವಾರಕೋಪವನಪಾದಪಭೇದೀ ವಿಶ್ವತಃ ಕಿಲ-ಕಿಲಾಂ ವಿತತಾನ" ಯಾದಂ ೨೧-೪೯ | 2. ಆಗಮಿಸುತ್ತಿರುವ, ಬರುತ್ತಿರುವ. "ಮಹದ್ವಿರಪಿ ತತ್ಸಂಯಂ ಸಂಪತ್ತಿಃ ಸುಹೃದಲಃ | ನ ವೃದ್ಧಿರಭವತ್ಯಾ ವರ್ಷತೋರೇವಾಮ್ಬುಧಿ" ಯಾದಂ ೨೨-೬೭ | 3. ಆಕ್ರಮಿಸುತ್ತಿರುವ, ಮುತ್ತಿಗೆ ಹಾಕುತ್ತಿರುವ. 4. ಸಂಭವಿಸುತ್ತಿರುವ, ಒದಗುತ್ತಿರುವ, ಉಂಟಾಗುತ್ತಿರುವ. 5. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳುತ್ತಿರುವ. 6. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುತ್ತಿರುವ.

ಸಂಪತ್ತಿನ ಸಂಪತ್ತಿನ (ನಂ) 1. ಆಗಮಿಸುವುದು, ಬಂದು ಸೇರುವುದು. ಸಮ್+ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಸಂಚರಿಸುವುದು. 3. ಆಕ್ರಮಿಸುವುದು. 4. ಮೇಲೆ ನಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯುವುದು. 5. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರುವುದು, ನೆಗೆಯುವುದು. 6. ಸಂಭವಿಸುವುದು.

ಸಂಪತ್ತಿ ಸಂಪತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಪತ್ತು, ಐಶ್ವರ್ಯ. ಸಮ್+ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | 2. ತುಂಬಿರುವಿಕೆ, ಪುಷ್ಕಲವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಐಶ್ವರ್ಯದ ಹೆಚ್ಚಳ. "ಸಂಪತ್ತಿ ಚ ವಿಪತ್ತಿ ಚ ಮಹತಾಮೇಕರೂಪತಾ" | 3. ಫಲಿಸುವುದು, ಕಾರ್ಯ ಸಿದ್ಧಿ ಸುವುದು, ಕಾರ್ಯ ಕೈಗೊಡುವುದು. 4. ಪರಿಪೂರ್ಣತೆ.

ಸಂಪದ್ ಸಂಪದ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಪತ್ತು, ಐಶ್ವರ್ಯ. ಸಮ್+ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್ವಿಪ್" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮) | "ಆಪತ್ತಾತಿಪ್ರಶಮನಫಲಾಃ ಸಂಪದೋ ಹ್ಯುತ್ತಮಾನಾಮ್" ಮೇಘಂ ೧-೫೩ | 2. ಪುಷ್ಕಲವಾಗಿರುವಿಕೆ, ತುಂಬಿರುವಿಕೆ. "ಸಮಪಾತ್ರಸತ್ತ್ವಾಸ್ತಾ ರೇಜುರಾಪಾಣ್ಡುರತ್ವಿಃ | ಅಂತಗಂತ-ಫಲಾರಂಭಾಃ ಸತ್ಯಾನಾಮಿವ ಸಂಪದಃ" ರಘುಂ ೧೦-೫೯ | 3. ಗುಣೋತ್ಕರ್ಷ, ಗುಣಗಳ ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ. "ಗುಣಸಂಪದಾ ಸಮಚಿಗಮ್ಯ ಪರಂ ಮಹಿಮಾನಮತ್ರ ಮಹಿತೇ ಜಗತಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೫-೨೪ | 4. ಅತಿರೇಕ, ಅಧಿಕ, ಅತಿಶಯವಾಗಿರುವಿಕೆ. "ಅಭಿತಾಪಸಂಪದಮಯೋಣ್ಯವಿಚಿನಿಜತೇಜಸಾಮಸಹ್ಮಾನ ಇವ" ಮಾಘಂ ೯-೧ | 5. ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ, ಮೇಲ್ಮೆ. "ತ್ವಷ್ಟುಃ ಸದಾಮ್ಯಾಸಗೃಹಿತಶಿಲ್ಪವಿಜ್ಞಾನಸಂಪತ್ತಸರಸ್ಯ ಸೀಮಾ" ಮಾಘಂ ೩-೩೫ | 6. ಸಾಧ್ಯ, ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ. "ನಿಮಿತ್ತ-ನೈಮಿತ್ತಿಕಯೋರಯಂ ಕ್ರಮಃ ತವ ಪ್ರಸಾದಸ್ಯ ಪುರಸ್ತು ಸಂಪದಃ" ಶಾಕುಂ ೭-೩೦ | 7. ಸಮೃದ್ಧಿ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಏಳಿಗೆ. "ತೇ ಭೃತ್ಯಾ ನೃಪತೇಃ ಕಲತ್ರಮಿತರೇ ಸಂಪತ್ಸು ಚಾಪತ್ಸು ಚ"



ಮುಕ್ತಾಂ ೧-೧೫। 8. ಅದೃಷ್ಟ. "ಪರಿಮಲವಿಷಯಸ್ತದ್ಭು-  
ತಾನಾಮನುಗಮನೇ ಕ್ವಲು ಸಮ್ಮದೋತ್ತರತಃ ಸ್ವಾಃ" ಮಾಘಂ ೭-೨೭।  
9. ಮುಕ್ತಾಹಾರ. 10. ಕಾಂತಿ, ಶೋಭೆ. "ಪ್ರತಾಪಜ್ವಲನ  
ಜ್ವಾಲಾಸಮ್ಮದಂ ಪ್ರತಿಪೇದಿರೆ" ಷಾದಂ ೨೨-೧೩೩।

ಸಮ್ಮನ ಸಂಪನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಸಂಪತ್ತಿನಿಂದ ಕೂಡಿದವನು.  
ಸಮೃದ್ಧವಾದ ಐಶ್ವರ್ಯವುಳ್ಳವನು. ಸಮ್+ಪದ (ಗತೌ)  
"ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨)। 2. ಪುಷ್ಕಳವಾದ, ಹೇರಳವಾದ.  
"ಆವರ್ತಿನಃ ಶುಭಕಲಪ್ರದಶುಕ್ತಿಯುಕ್ತಾಃ ಸಮ್ಮನದೇವಮಣಯೋ ಭೂತ-  
ರನ್ದ್ರಭಾಗಾಃ" ಮಾಘಂ ೫-೪। 3. ಸಾಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಫಲ  
ಪ್ರದವಾಗುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಸಂಪೂರ್ಣ ಪರಿಶ್ರಮ  
ವುಳ್ಳ, ನಿಷ್ಣಾತನಾದ. 5. ಆಗಿರುವ, ಪರಿಣಾಮ ಹೊಂದಿ  
ರುವ. "ಇದೃಶಃ ಸಮ್ಮನಃ ಕುಮಾರಃ"।

ಸಮ್ಮರಾಯ ಸಂಪರಾಯ (ಪುಂ) 1. ಯುದ್ಧ, ಕದನ, ಕಾಳಗ.  
ಸಮ್+ಪರಾ+ಇ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬)।  
2. ಉತ್ತರಕಾಲ, ಮುಂದಿನ ಕಾಲ. ಭವಿಷ್ಯತ್ತು. 3.  
ವಿಪತ್ತು, ತೊಂದರೆ.

ಸಮ್ಮರಾಯಕ ಸಂಪರಾಯಕ (ನಂ) ಯುದ್ಧ, ಕದನ.  
ಸಮ್+ಪರಾ+ಇ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬)। ಸ್ವಾರ್ಥ  
"ಕನ್" (೫-೪-೫)। "ಸಮೀಕಂ ಸಮ್ಮರಾಯಕಮ್" ಅಮಂ।

ಸಮ್ಮರ್ಕ ಸಂಪರ್ಕ (ಪುಂ) 1. ಸ್ಪರ್ಶ, ಸಂಬಂಧ. ಸಮ್+ಪೃಚಿ  
(ಸಮ್ಮರ್ಕ) "ಘಕ್" (೩-೩-೧೮)। "ಪ್ರಾಪ್ಯತಾಂ ವಿಶ್ವತಾಂ  
ಸಮ್ಮತ್ಸಮ್ಮರ್ಕಾದಿರೋಚಿಷಾಮ್। ಶಸ್ತ್ರೇದ್ವಿಷಚ್ಚಿರಶ್ಚೇದಪ್ರೋಚ್ಚ-  
ಲಚ್ಛೋಣಿತೋಚಿತಃ" ಮಾಘಂ ೨-೬೬। 2. ಸಂಬಂಧ.  
ಸಹವಾಸ. "ನ ಮೂರ್ಖಜನಸಮ್ಮರ್ಕಃ ಸುರೇಂದ್ರಭವನೇವಪಿ" ಭರ್ತುಂ।  
3. ಸ್ತ್ರೀಸಂಬಂಧ, ಸ್ತ್ರೀಸಮಾಗಮ. "ಸಮ್ಮರ್ಕಃ ಸುರತೇ  
ಪೃತೌ" ಹೇಮಂ।

ಸಮ್ಮರ್ಕಿನ್ ಸಂಪರ್ಕಿನ್ (ವಿಂ) ಸಂಬಂಧವುಳ್ಳ, ಸಹವಾಸ  
ವುಳ್ಳ. ಸಮ್+ಪೃಚಿ (ಸಮ್ಮರ್ಕ) "ಘಿನ್" (೩-೨-೧೪೨)।

ಸಮ್ಮಾಕ ಸಂಪಾಕ (ಪುಂ) 1. ಕಕ್ಕಿಗಿಡ. ಸಮ್ಯಕ್ ಪಾಕೋ  
ಯಸ್ಯ। "ಸಮ್ಮಾಕಶ್ರೇಯಸೋಪಪ್ತಪರ್ಯಾಮಾರ್ಗಪಾಲುಭಿಃ" ಸುಶ್ರುತಂ  
ಉತ್ತರತಂ। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪಕ್ವವಾಗುವುದು, ಪೂರ್ಣವಾಗಿ  
ಬೆಳೆಯುವುದು. (ವಿಂ) 3. ತೆಳುವಾದ, ಸಣ್ಣದಾದ.  
4. ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ನಿರೂಪಿಸುವವನು, ತರ್ಕಬದ್ಧವಾಗಿ  
ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವವನು. 5. ನೀಚ, ಅಯೋಗ್ಯ, ಅವಿನೀತ.  
"ಸಮ್ಮಾಕಸ್ತಕಂಕೇ ಧೃಷ್ಟೇ ತ್ರಿಷು ನಾ ಚತುರಂಗುಲೇ" ಮೇದಿಂ।

ಸಮ್ಮಾತ ಸಂಪಾತ (ಪುಂ) 1. ಬೀಳುವುದು, ಪತನ. ಸಮ್+  
ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಘಕ್" (೩-೩-೧೮)। 2. ರಾಶಿರಾಶಿ  
ಯಾಗಿ ಬೀಳುವುದು. "ಪ್ರವೃತ್ತೇ ಶಸ್ತ್ರಸಮ್ಮಾತೇ ಧನುರ್ದಮ್ಯ

ಪಾಂಡವಃ। ಹೃಷೀಕೇಶಂ ತದಾ ವಾಕ್ಯಮಿದಮಾಹ ಮಹೀಪತೇ"  
ಗೀತಾ ೧-೨೦। 3. ಹಕ್ಕಿಗಳ ಹಾರಾಟದ ಒಂದು ಭೇದ.

"ಸಮ್ಮಾತಂ ಚ ವಿಪಾತಂ ಚ ಮಹಾಪಾತಂ ನಿಪಾತನಮ್। ವಕ್ರಂ  
ತಿರ್ಯಕ್ ತಥಾ ಚೋರ್ಧ್ವಮಷ್ಟಮಂ ಲಘುಸಂಜ್ಞಕಮ್" ಪञ्ಚತಂ ೨-೬೦।  
4. ನಡೆಯುವುದು, ಚಲಿಸುವುದು. 5. ಮೇಲೆ ಹಾಯು  
ವುದು, ಎದುರಿಗೆ ಬಂದು ಡಿಕ್ಕಿಹೊಡೆಯುವುದು. 6.  
ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕಲೆಯುವುದು, ಪರಸ್ಪರ ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು.

ಸಮ್ಮಾತಿ ಸಂಪಾತಿ (ಪುಂ) ಗರುಡನ ಮಗ, ಗರುಡಂತ  
(ವೈನತೇಯ)ನ ಪುತ್ರ, ಜಹಾಯುವಿನ ಅಣ್ಣ. "ಸಮ್ಮಾತಿ-  
ನಾಮ ನಾಮ್ನಾ ತು ಚಿರಜೀವಿ ವಿಹಜ್ಜಮಃ। ಆತಾ ಜಟಾಪುಷಃ  
ಶ್ರೀಮಾನ್ ವಿಕ್ರಾಂತಬಲಪೌರುಷಃ" ರಾಮಾಂ।

ಸಮ್ಮಾದಕ ಸಂಪಾದಕ (ವಿಂ) 1. ಸಾಧಿಸುವವನು, ಸಂಪಾ  
ದಿಸಿ ಕೊಡುವವನು. ಸಮ್+ಪದ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಫುಲ್"  
(೩-೧-೧೩೩)। "ರಾಜ ಸಮ್ಮಾದಕಮಿಷ್ಠಸಿದ್ಧಃ ಸರ್ವಾಸು  
ದಿಕ್ವಪ್ರತಿಪಿಡ್ಧಮಾರ್ಗಮ್" ಮಾಘಂ ೩-೨೨। 2. ಹೊಂದುವ,  
ಪಡೆಯುವ.

ಸಮ್ಮಾದನ ಸಂಪಾದನ (ನಂ) 1. ಸಾಧಿಸುವುದು, ಸಂಪಾ  
ದನೆ ಮಾಡುವುದು, (ಕಾರ್ಯವನ್ನು) ಆಗಮಾಡುವುದು,  
(ಕಾರ್ಯವನ್ನು) ನಡೆಸಿಕೊಡುವುದು. ಸಮ್+ಪದ (ಗತೌ) +  
ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫)। "ಸಮ್ಮಾನ್ಯ ಸಿದ್ಧಚುಡಯ-  
ಮಾತ್ಮಚಿಕಿಷಿತಸ್ಯ ಸಮ್ಮಾದನಾಯ ಸುತರಾಂ ಜಗೃಹುಃ ಪ್ರಯತ್ನಮ್"  
ಕಥಾಸಂ। 2. ಪಡೆಯುವುದು, ಹೊಂದುವುದು.

ಸಮ್ಮಾದನೀಯ ಸಂಪಾದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸಂಪಾದಿಸ  
ಬೇಕಾದ, ನೆರವೇರಿಸಬೇಕಾದ. ಸಮ್+ಪದ (ಗತೌ) +  
ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। 2. ಪಡೆಯಬೇಕಾದ.  
3. ಪಡೆಯಬಹುದಾದ. 4. ನೆರವೇರಿಸಬಹುದಾದ.  
5. ನೆರವೇರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. 6. ಪಡೆಯಲು ಸಾಧ್ಯ  
ವಾದ. "ತವ್ಯಃ"। ಸಮ್ಮಾದಯಿತವ್ಯಃ ಸಂಪಾದಯಿತವ್ಯಃ।

ಸಮ್ಮಾದಯತ್ ಸಂಪಾದಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಕಾರ್ಯವನ್ನು  
ಸಾಧಿಸುತ್ತಿರುವ, ಫಲಪ್ರದವಾಗುವಂತೆ ಕಾರ್ಯವನ್ನು  
ನಡೆಸುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್+ಪದ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್"  
(೩-೨-೧೨೪)। "ಅಸಮ್ಮಾದಯತಃ ಕಶ್ಚಿದರ್ಥಂ ಜಾತಿಕ್ರಿಯಾ-  
ಗುಣಃ। ಯದ್ವಿಚ್ಛಾಶಬ್ದವತ್ಪುನಃ ಸಂಜಾಯೇ ಜನ್ಮ ಕೇವಲಮ್" ಮಾಘಂ  
೨-೪೭। 2. ಪಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ.

ಸಮ್ಮಾದಿತ ಸಂಪಾದಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಾಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಡೆಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ, ನೆರವೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್+ಪದ (ಗತೌ) + ಣಿಕ್  
"ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಂದ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸಮ್ಮಾದಿತಫಲಸ್ತೇನ ಸಪಕ್ಷಃ ಪರಭೇದನಃ। ಕಾಮುಕೇ-  
ಫೇವ ಗುಣಿನಾ ವಾಣಃ ಸಂಧಾನಮೇಷ್ಯತಿ" ಮಾಘಂ ೨-೯೭।



**ಸಮ್ಮಿಡ ಸಂಪೀಡ** (ಪುಂ) 1. ಪೀಡಿಸುವುದು, ತೊಂದರೆ ಪಡಿಸುವುದು. 2. ಮುಂದಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವುದು, ಮುಂದಕ್ಕೆ ನೂಕುವುದು. ಸಮ್ + ಪಿಡ (ಅವಗಾಹನೆ) "ಘ" (3-3-114). "ನಿ:ಸಜ್ಜಂ ಪ್ರಥಿಮಿರೂಪಾದೇ ವಿವೃತ್ತಿ: ಸಮ್ಮಿಡ-ಕ್ಷುಭಿತಜಲೇಶು ತೋಯದೇಶು" ಕಿರಾಂ 9-12. 3. ಸಂಕೋಚ ಹೊಂದುವುದು, ಚಿಕ್ಕದಾಗಿ ಅಡಕವಾಗುವುದು.

**ಸಮ್ಮಿಡನ ಸಂಪೀಡನ** (ನಂ) 1. ತೊಂದರೆಪಡಿಸುವುದು, ಪೀಡಿಸುವುದು, ನೋಯಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಪಿಡ (ಅವಗಾಹನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). 2. ಮುಂದಕ್ಕೆ ನೂಕುವುದು. 3. ಒತ್ತುವುದು, ಅದುಮುವುದು.

**ಸಮ್ಮಿಡಿತ ಸಂಪೀಡಿತ** (ವಿಂ) 1. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್ + ಪಿಡ (ಅವಗಾಹನೆ) "ಕ್" (3-2-102). "ಕಾಠೇ ಜಿರ್ಣಲತಾಪ್ರತಾನವಲಯೇನಾತ್ಯಯಸಮ್ಮಿಡಿತ:" ಶಾಕುಂ 9-11. 2. ಮುಂದಕ್ಕೆ ನೂಕಲ್ಪಟ್ಟು. 3. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಅದುಮಲ್ಪಟ್ಟು, ಒತ್ತಲ್ಪಟ್ಟು. "ದೇವೇನ ಸಮ್ಮಿಡಿತಯೋ-ಸ್ವಿಧಾನ್ತಾ ದೇವೇಂದ್ರಪೌರಾನ್ಯಪರಮ್ಪರೇವ" ಯಾದಂ 16-69.

**ಸಮ್ಮುಟ ಸಂಪುಟ** (ಪುಂ) 1. ಭರಣೆ, ಮುಚ್ಚಳವಿರುವ ಸಣ್ಣ (ಕೈ) ಪೆಟ್ಟಿಗೆ. ಸಮ್ + ಪುಟ (ತಂಶ್ಲೇಷಣೆ) "ಕ್" (3-1-134). 2. ಒಂದು ವಸ್ತುವಿನ ಒಳಗಿನ ಟೊಳ್ಳು ಭಾಗ. "ಪಾಪಂ ಪಾಪಂ ತವಾರೀಣಾಂ ಶೋಣಿತಂ ಕರಸಮ್ಮುಟ:" ಕಾವ್ಯಾಂ 2-266. 3. ಮುಳ್ಳುಗೋರಂಟಿ ಹೂವು.

**ಸಮ್ಮುಟಕ ಸಂಪುಟಿಕ** (ಪುಂ) ಸಂಪುಟ, ಭರಣೆ.

**ಸಮ್ಮುಟಿಕಾ ಸಂಪುಟಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣ್ಣ ಕೈ ಪೆಟ್ಟಿಗೆ, ಮುಚ್ಚಳವುಳ್ಳ ಭರಣೆ. "ಯಸ್ಯ ಸಮ್ಮುಟಿಕಾ ನಾಸ್ತಿ ಕುತಸ್ತಸ್ಯ ಸುಭಾಷಿತಮ್" ಪञ्ಚತಂ 2-194.

**ಸಮ್ಮುಜನ ಸಂಪೂಜನ** (ನಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪೂಜಿಸುವುದು. 2. ಸರಿಯಾಗಿ ಗೌರವಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಪೂಜ (ಪೂಜನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

**ಸಮ್ಮುಜಿತ ಸಂಪೂಜಿತ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. 2. ಸರಿಯಾಗಿ ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್ + ಪೂಜ (ಪೂಜನೆ) "ಕ್" (3-2-102).

**ಸಮ್ಮುಜ್ಯ ಸಂಪೂಜ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಪೂಜೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದವನು. 2. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವವನು. ಸಮ್ + ಪೂಜ (ಪೂಜನೆ) "ಞ್ಯತ್" (3-1-124). 3. ಸರಿಯಾಗಿ ಗೌರವಿಸಲ್ಪಡುವವನು. 4. ಗೌರವಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದವನು.

**ಸಮ್ಮೂರಕ ಸಂಪೂರಕ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತುಂಬುವವನು. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪೂರೈಸುವವನು. ಸಮ್ + ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೆ) + ಣಿಚ್ "ಞ್" (3-1-133).

**ಸಮ್ಮೂರಣ ಸಂಪೂರಣ** (ನಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತುಂಬುವುದು. 2. ಪೂರೈಸುವುದು. ಸಮ್ + ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114).

**ಸಮ್ಮೂರಿತ ಸಂಪೂರಿತ** (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್ + ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್" (3-2-102). ಇಡಭಾವಿ ವಾ (9-2-29) ನಿಪಾಂ. -ಪೂಂ: -ಪೂರ್ಣಃ.

**ಸಮ್ಮೂರ್ಣ ಸಂಪೂರ್ಣ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತುಂಬಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್ + ಪೂರಿ (ಆಪ್ಯಾಯನೆ) + ಣಿಚ್ ಇಡಭಾವಿ ವಾ ನಿಪಾಂ (9-2-29). ಪಕ್ಷೇ -ಪೂರಿತ: -ಪೂರಿತ: "ಪೂರ್ಣಸ್ತು ಪೂರಿತೇ" ಅಮಂ. 2. ಸಮಸ್ತ, ಎಲ್ಲಾ, ಸಕಲ, ಸಮಗ್ರ. 3. ನಿಬಿಡವಾದ, ದಟ್ಟವಾದ, ಸಾಂದ್ರವಾದ.

**ಸಮ್ಮುಕ್ತ ಸಂಪ್ರಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ನಿರಂತರವಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ನಿತ್ಯಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ. ಸಮ್ + ಪೃಚ್ಛಿ (ಸಮ್ಮರ್ಶ) "ಕ್" (3-4-92). "ವಾಗರ್ಥಾವಿವ ಸಮ್ಮುಕ್ತೌ ವಾಗರ್ಥ-ಪ್ರತಿಪತ್ತಯೇ. ಜಗತ: ಪಿತರೌ ವಂದೇ ಪಾರ್ವತೀಪರಮೇಶ್ವರೌ" ರಘುಂ 1-1. 2. ವಿಶ್ರೇಷ್ಠ, ಬೆರಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್ + ಪೃಚ್ಛಿ (ಸಮ್ಮರ್ಶ) "ಕ್" (3-2-102).

**ಸಮ್ಮಪ್ರಜ್ಞಾತ ಸಂಪ್ರಜ್ಞಾತ** (ವಿಂ) ಸಮೀಕ್ಷಿಸಿದ ಸಮಾಧಿ. ಸಮ್ಯಕ್ ಪ್ರಕರ್ಷಣ ಜಾತೌ ಭೇದೋ ಯತ್ರ. ಸಮಾಧಿಯು ಸಂಪ್ರಜ್ಞಾತ ಮತ್ತು ಅಸಂಪ್ರಜ್ಞಾತಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಜ್ಞಾನ ಜ್ಞೇಯ ಜ್ಞಾತೃಗಳ ಭೇದ ತೋರಿದರೂ ಧೈಯ ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಚಿತ್ತವು ಏಕಾಗ್ರವಾಗಿರುವುದು ಸಂಪ್ರಜ್ಞಾತ (ಸಮೀಕ್ಷಿಸಿದ) ಸಮಾಧಿ. ಇದು ಏಕಾಗ್ರಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳ ಚಿತ್ತಕ್ಕೆ ಮಾತ್ರ ಸಾಧ್ಯ. ["ಅಸಮ್ಮಪ್ರಜ್ಞಾತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಸಮ್ಮಪ್ರತಿ ಸಂಪ್ರತಿ** (ಅವ್ಯಂ) ಈಗ, ಈ ಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಈ ಸಮಯದಲ್ಲಿ. ಸಮ್ ಚ ಪ್ರತಿ ಚ ಅನಯೋ: ಸಮಾಹಾರ:। "ಸಮ್ಮಪ್ರತಿಸಾಮ್ಪ್ರತಂ ವಕ್ತುಮುಕ್ತೇ ಮುಸಲಪಾಣಿನಾ" ಮಾಘಂ 2-90.

**ಸಮ್ಮಪ್ರಣೀತ ಸಂಪ್ರಣೀತ** (ವಿಂ) ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ಣಿಚ್ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಕ್" (3-2-102). "ಉದ್ಯಮೇವೇಸ್ತತ ಉ ತೋಯಮಥ ಮುನೀಂದ್ರೀರಿವ ಸಮ್ಮಪ್ರಣೀತಾ:" ಮಾಘಂ 3-94.

**ಸಮ್ಮತಿಪತ್ತಿ ಸಂಪ್ರತಿಪತ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಪ್ಪಿಗೆ, ತಪ್ಪು, ಪಿಗ್ಗೆ, ಸಮ್ಮತಿಸಿ ಮೌನದಿಂದಿರುವುದು. ಸಮ್ + ಪ್ರತಿ + ಪದ (ಗತೌ) "ಕ್" (3-3-94). "ಮೌರ್ಯೇ ಭೂಷಣವಿಕ್ರಯಂ ನರಪತೌ ಕೌ ನಾಮ ಸಮ್ಮತಿಪತ್ತಿ ತಸ್ಮಾತ್ಸಮ್ಮತಿಪತ್ತಿರೇವ ಹಿ ವರಂ ನ ಗ್ರಾಹ್ಯಮತ್ರೋತ್ತರಮ್" ಮುಡ್ರಾಂ 4-16. 2. ಒಪ್ಪಂದ.



ಕರಾರು. 3. ಸಾಮನಸ್ಯ, ಸಂತೋಷಗೊಂಡ ಮನಸ್ಸಿನಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. "ನ ತಸ್ಯೋ ಭರ್ತುಃ ಪ್ರಾಪ್ತಮಾನ-ಸಂಪ್ರತಿಪತ್ತಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೯-೩೮. 4. ಸಹಕಾರ. 5. ಆಚರಣೆ, ಅನುಷ್ಠಾನ. 6. ಸೇರುವುದು, ಮುಟ್ಟುವುದು, ತಲುಪುವುದು. 7. ಸಂಪಾದಿಸುವುದು, ಪಡೆಯುವುದು.

**ಸಂಪ್ರತಿರೋಧಕ ಸಂಪ್ರತಿರೋಧಕ (ವಿಂ)** ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವ, ಪ್ರತಿಬಂಧಿಸುವ. ಸಮ್ + ಪ್ರತಿ + ರಿಧಿರ್ (ಆವರಣ) "ಋಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

**ಸಂಪ್ರತಿರೋಧಕ ಸಂಪ್ರತಿರೋಧಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ನಿರೀಕ್ಷಣೆ.

**ಸಂಪ್ರತಿರೋಧಕ ಸಂಪ್ರತಿರೋಧಕ (ವಿಂ)** 1. ಒಳ್ಳೆಯ ಖ್ಯಾತಿ ಪಡೆದವನು, ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಪಡೆದವನು, ಕೀರ್ತಿ ಸಂಪಾದಿಸಿದವನು. ಸಮ್ + ಪ್ರತಿ + ಇನ್ (ಗತೌ) "ಕ್" (೩-೪-೭೨) । 2. ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತಿರುಗಿಬಂದವನು. 3. ಗೌರವಾನ್ವಿತ.

**ಸಂಪ್ರತಿರೋಧಕ ಸಂಪ್ರತಿರೋಧಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ, ಖ್ಯಾತಿ. ಸಮ್ + ಪ್ರತಿ + ಇನ್ (ಗತೌ) "ಕ್" (೩-೩-೯೪) । "ವೀರ್ಯವಿದಾನೇಷ ಕೃತಾವಮರ್ಷಸ್ತನ್ವನ್ನಮೃತಮಿವ ಸಂಪ್ರತಿರೋಧಕಮ್" ಕಿರಾಂ ೩-೪೩. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ವಿಚಾರಿಸಿ ಗೊತ್ತುಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, -ಕಂಡುಹಿಡಿಯುವುದು.

**ಸಂಪ್ರತಿರೋಧಕ ಸಂಪ್ರತಿರೋಧಕ (ಪುಂ)** ದೃಢವಾದ ನಂಬಿಕೆ. ಸಮ್ + ಪ್ರತಿ + ಇನ್ (ಗತೌ) "ಅಕ್" (೩-೩-೫೬) ।

**ಸಂಪ್ರತಿರೋಧಕ ಸಂಪ್ರತಿರೋಧಕ (ವಿಂ)** ಧಾರಾಳವಾಗಿ ಕೊಡುವವನು, ಉದಾರವಾಗಿ ದಾನಮಾಡುವವನು. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ತಕ್" (೩-೧-೧೩೩) ।

**ಸಂಪ್ರತಿರೋಧಕ ಸಂಪ್ರತಿರೋಧಕ (ನಂ)** 1. ಉದಾರವಾಗಿ ದಾನಮಾಡುವುದು, ಧಾರಾಳವಾಗಿ ಕೊಡುವುದು. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಚತುರ್ಥೀ ವಿಭಕ್ತಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ ಒಂದು ಸಂಜ್ಞೆ, ಸಂಪ್ರದಾನ ಸಂಜ್ಞೆ. ಒಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು ದಾನಮಾಡಲು ದಾನಕರ್ಮದಿಂದ ಉದ್ದೇಶಿಸಿರುವ ವ್ಯಕ್ತಿಗೆ ಸಂಪ್ರದಾನಸಂಜ್ಞೆ ಬರುವುದು. ಸಂಪ್ರದಾನಸಂಜ್ಞೆ ಇರುವಲ್ಲಿ ಚತುರ್ಥೀ ವಿಭಕ್ತಿ ಬರುವುದು. "ಕರ್ಮಣಾ ಯಮಿಪ್ರತಿ ಸ ಸಂಪ್ರದಾನಮ್" (೧-೪-೩೨) । ದಾನಸ್ಯ ಕರ್ಮಣಾ ಯಮಿಪ್ರತಿ ಭೋಕ್ತೃವೇನಾಪ್ಯವಸ್ಯತಿ ಸ ಸಂಪ್ರದಾನಸಂಜ್ಞಃ ಸ್ಯಾತ್ । "ವಿಪ್ರಾಯ ಗಾಂ ದದಾತಿ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಗೋವಿನ ದಾನಕರ್ಮದಿಂದ ಉದ್ದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ವಿಪ್ರ ಪದಕ್ಕೆ ಸಂಪ್ರದಾನ ಸಂಜ್ಞೆ ಬಂದು ಚತುರ್ಥೀ ವಿಭಕ್ತಿಯು ಬಂದಿರುವುದು "ಚತುರ್ಥಿ ಸಂಪ್ರದಾನೇ" (೨-೩-೧೩) । ಹೀಗೆಯೇ ರಾಜ್ಯಾರ್ಥಕ ಧಾತುಯೋಗ

ವಿರುವಲ್ಲಿ "ಹರಯೇ ರಿಚತೇ ಭಕ್ತಿಃ" । ಆತ್ಮಶ್ಲಾಘನೆ (ಆತ್ಮಸ್ತುತಿ) ಅಪನಯನ ಸ್ಥಿತಿ ಮತ್ತು ಉಪಾಲಂಭ ಇವುಗಳಿಂದ ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ತಿಳಿಯಪಡಿಸಲು ಇಷ್ಟವಾದ ವ್ಯಕ್ತಿಯು ಸಂಪ್ರದಾನಸಂಜ್ಞೆ ಹೊಂದುವುದು. ಗೋಪಿ ಸ್ಮರಾತ್ ಕೃಣಾಯ ಇಲಾಘತೇ ಗೋಪಿಯು ಆತ್ಮಸ್ತುತಿಯಿಂದ ತನ್ನ ವಿರಹ ವೇದನೆಯನ್ನು ಕೃಷ್ಣನಿಗೆ ತಿಳಿಸುತ್ತಾಳೆ. —ಕ್ಷಣೇ ಸಪತ್ನಿಯ ಅಪನಯನದಿಂದ ತನ್ನ ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುತ್ತಾಳೆ. —ತಿರಣತೆ ತನ್ನ ಸ್ಥಿತಿಯಿಂದ ಮತ್ತು —ಶಪತೆ ಉಪಾಲಂಭದಿಂದ ತನ್ನ ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ಕೃಷ್ಣನಿಗೆ ತಿಳಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಹೀಗೆ ಬೋಧನೆಗೆ ಇಷ್ಟವಾದ ವ್ಯಕ್ತಿಯು ಸಂಪ್ರದಾನ ಸಂಜ್ಞೆ ಹೊಂದುವುದು. ಸ್ವಹ ಧಾತುವಿನ ಯೋಗವಿರುವಲ್ಲಿ ಆಸೆಗೆ ಕಾರಣವಾದ ವಸ್ತುವಿಗೆ ಕೃಪ ದ್ರಹ ಇತ್ಯ ಅಸೂನ್ (ಕಣ್ವಾದಿ) ಈ ಅರ್ಥಗಳ ಧಾತುಗಳ ಯೋಗವಿರುವಲ್ಲಿ ಕೋಪಾದಿಗಳಿಗೆ ವಿಷಯವಾದ ವ್ಯಕ್ತಿಗೆ ಸಂಪ್ರದಾನಸಂಜ್ಞೆ ಬಂದು ಚತುರ್ಥೀ ವಿಭಕ್ತಿಯು ಬರುವುದು. ಹರಯೇ ಕೃಷ್ಯತಿ ದ್ರಹ್ಯತಿ ಇತ್ಯತಿ ಅಸೂಯತಿ ವಾ ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಸಂಪ್ರದಾಯ ಸಂಪ್ರದಾಯ (ಪುಂ)** 1. ಹಿರಿಯರಿಂದ ಪರಂಪರೆಯಾಗಿ ಬಂದಿರುವ ಆಚಾರ, ಪೂರ್ವಾಚಾರ, ಸದುಪದೇಶ ಪರಂಪರೆ. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಧಕ್" (೩-೩-೧೮) । ಧುಕ್ (೨-೩-೩೩) । "ಸಂಪ್ರದಾಯವಿಗಮಾಧುಪಯುಷೀರೇಶ ನಾಶ-ಮವಿನಾಶಿವಿಗ್ರಹಃ । ಸಮರ್ತುಮಪ್ರತಿಹತಸ್ಮೃತಿಃ ಶ್ರುತೀದತ್ತ ಇತ್ಯಮವದತ್ತಿಗೋತ್ರಜಃ" ಮಾಘಂ ೧೪-೭೯ । 2. ಗುರು ಪರಂಪರಾಗತ ಸದುಪದೇಶವನ್ನು ಪಡೆದವರ ಸಮೂಹ. "ಸಂಪ್ರದಾಯಾನುರೋಧೇನ ಪೌರ್ವಪ್ರಿಯಾನುಸಾರತಃ । ಶ್ರೀಭಾಗವತ-ಭಾವಾರ್ಥದೀಪಿಕೆಯ ಪ್ರತನ್ಯತೆ" ॥

**ಸಂಪ್ರಧಾರಣಾ ಸಂಪ್ರಧಾರಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಇದು ಉಚಿತ ಇದು ಅನುಚಿತ ಎಂಬ ನಿಶ್ಚಯ, ಇದೇ ಸರಿಯೆಂದು ನಿಶ್ಚಯಿಸುವುದು, ಸಮರ್ಥನೆ. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ಧೃನ್ (ಧಾರಣೆ) + ಣಿಕ್ "ಯುಕ್" (೩-೩-೧೦೭) । "ಸಂಪ್ರಧಾರಣಾ ತು ಸಮರ್ಥನಮ್" ಅಮಂ ।

**ಸಂಪ್ರಧಾರಿತ ಸಂಪ್ರಧಾರಿತ (ವಿಂ)** ಇದೇ ಸರಿಯೆಂದು ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಇದು ಉಚಿತ ಇದು ಅನುಚಿತವೆಂದು ನಿರ್ಣಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ಧೃನ್ (ಧಾರಣೆ) + ಣಿಕ್ "ಕ್" (೩-೨-೧೦೨) ।

**ಸಂಪ್ರಧಾರ್ಯ ಸಂಪ್ರಧಾರ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಡುವ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ನಿಶ್ಚಯಿಸಿ. "ಸ ಸಂಪ್ರಧಾರ್ಯವಮಹಾರ್ಯಸಾರಃ ಸಾರಂ ವಿನೇಷ್ಯನ್ ಸಗಣಸ್ಯ ಶತ್ರುಃ" ಕಿರಾಂ ೧೬-೨೫ ।



**ಸಂಪ್ರಪದ ಸಂಪ್ರಪದ (ನಂ)** ಸಂಚಾರ, ಪರ್ಯಟನೆ. "ಸ್ವಪ್ಯಾತ್ ಭೂಮಿ ಶುಚಿ ರಾತ್ರಿ ದಿವಾ ಸಂಪ್ರಪದನೇಯೇತ್" ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೪೧ |

**ಸಂಪ್ರಯುಕ್ತ ಸಂಪ್ರಯುಕ್ತ (ವಿಂ)** 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಲೈಂಗಿಕ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ, ಲೈಂಗಿಕ ಕ್ರಿಯೆಗಾಗಿ ಒಟ್ಟುಗೂಡಿದ. 3. ದುರಭ್ಯಾಸಕ್ಕೆ ವಶನಾಗಿರುವ, ದುರ್ವ್ಯಸನಕ್ಕೆ ಒಳಪಟ್ಟಿರುವ.

**ಸಂಪ್ರಯುಜ್ ಸಂಪ್ರಯುಜ್ (ವಿಂ)** ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಕೂಡಿ ಕೊಂಡಿರುವ, ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) "ವಿವ್" (೩-೨-೭೬) | "ಲತಾವಿಧುಸಂಪ್ರಯುಜೋಽಧಿವೇಲಂ ಬಹುಕೃತಾನ್ ಸ್ವಾನಿವ ಪಶ್ಯತಿ ಸಮ" ಮಾಘಂ ೩-೭೧ |

**ಸಂಪ್ರಯೋಗ ಸಂಪ್ರಯೋಗ (ವಿಂ)** 1. ಸಂಬಂಧ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು, ಒಟ್ಟುಗೂಡುವುದು. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) "ವಿವ್" (೩-೨-೧೦೨) | "ಕಾಂತಾ ವಿಚಿನ್ಯ ಸುಲಭೇತರಸಂಪ್ರಯೋಗಾತ್" ಮಾಲಂ ೪-೩ | 2. ಸಂಬಂಧ, ಸಂಪರ್ಕ. "ಉಣ್ಣತವಮನ್ಯಾತಪಸಂಪ್ರಯೋಗಾತ್ ಸತ್ಯಂ ಹಿ ಯತಸಾ ಪ್ರಕೃತಿಜಲಸ್ಯ" ರಘುಂ ೪-೪೪ | 3. ಮೂಲಿಕೆಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ಸ್ತಂಭನ ಮೊದಲಾದ ಕಾರ್ಯ, ವಶೀಕರಣ ಕಾರ್ಯ. "ಸಂಪ್ರಯೋಗೋ ರತೇಽಪಿ ಸ್ಯಾದನ್ವಿತೋ ಕಾರ್ಮಣೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ | 4. ಸುರತಕಾರ್ಯ, ಸ್ತ್ರೀಸಂಭೋಗ.

**ಸಂಪ್ರಯೋಗಿನ್ ಸಂಪ್ರಯೋಗಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಐಂದ್ರಜಾಲಿಕ. ಮಂತ್ರವಾದಿ. 2. ಮನ್ಮಥ. (ವಿಂ) 3. ಕಾಮಾಸಕ್ತ. ವ್ಯಭಿಚಾರಿ, ಸ್ತ್ರೀಲಾಲಸ. ಸಂಪ್ರಯೋಗೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಐನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) | 4. ಸೇರಿಸುವವನು, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸುವವನು. "ಸಂಪ್ರಯೋಗಿ ಕಲಾಕೇಲೋ ಕಾಮುಕೇ ಸಂಪ್ರಯೋಜಕೇ" ಮೇದಿಂ |

**ಸಂಪ್ರಯೋಜಕ ಸಂಪ್ರಯೋಜಕ (ವಿಂ)** 1. ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸುವವನು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸುವವನು. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) "ವಿವ್" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಪ್ರೇರಿಸುವವನು, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗುವಂತೆ ಮಾಡುವವನು. 3. ಅಡ್ಡೆ ಮಾಡುವವನು. 4. ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವವನು.

**ಸಂಪ್ರವದನ ಸಂಪ್ರವದನ (ನಂ)** ಸಂಲಾಪ, ಪರಸ್ಪರ ಮಾತನಾಡುವುದು. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |

**ಸಂಪ್ರವರ್ತಕ ಸಂಪ್ರವರ್ತಕ (ವಿಂ)** 1. ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗುವಂತೆ ಮಾಡುವವನು, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರವೃತ್ತಿಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವವನು. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ವೃತ್ತ (ವರ್ತನೆ) +

ಗಿನ್ "ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | 2. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸದೆ ಮುಂದಕ್ಕೆ ನಡೆಸುವವನು. 3. ದುರ್ಬೋಧನೆಯಿಂದ ಚಿತಾವಣೆ ಮಾಡುವವನು. 4. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸುವವನು.

**ಸಂಪ್ರವರ್ತನ ಸಂಪ್ರವರ್ತನ (ನಂ)** 1. ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ವೃತ್ತ (ವರ್ತನೆ) + ಗಿನ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | 2. ಕಾರ್ಯದ ಪ್ರಾರಂಭ. 3. ಕಾರ್ಯದ ಮುನ್ನಡೆ, ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮುಂದಕ್ಕೆ ನಡೆಸಿಕೊಂಡು ಹೋಗುವುದು. 4. ದುರ್ಬೋಧನೆಯಿಂದ ಚಿತಾವಣೆ ಮಾಡುವುದು.

**ಸಂಪ್ರವರ್ತಯತ್ ಸಂಪ್ರವರ್ತಯತ್ (ವಿಂ)** 1. ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಪ್ರವೃತ್ತಿಯುಂಟುಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ವೃತ್ತ (ವರ್ತನೆ) + ಗಿನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | 2. ಕಾರ್ಯವು ಮುನ್ನಡೆಯುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ.

**ಸಂಪ್ರವರ್ತಯಿತ್ ಸಂಪ್ರವರ್ತಯಿತ್ಯ (ವಿಂ)** "ಸಂಪ್ರವರ್ತಕ" ಪದದ ಅರ್ಥ.

**ಸಂಪ್ರವರ್ಧನ ಸಂಪ್ರವರ್ಧನ (ನಂ)** 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆಯುವುದು, ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವುದು. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ವೃಧ್ (ವೃದ್ಧಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) | 2. ಅಧಿಕವಾಗುವುದು, ಹೆಚ್ಚುವುದು. (ವಿಂ) 3. ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವ, ಹೆಚ್ಚಿಸುವ. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ವೃಧ್ ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) |

**ಸಂಪ್ರವರ್ಧಯತ್ ಸಂಪ್ರವರ್ಧಯತ್ (ವಿಂ)** ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ವೃಧ್ (ವೃದ್ಧಿ) + ಗಿನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಶಾನಿನ್" | -ಪ್ರವರ್ಧಯಮಾನಃ.

**ಸಂಪ್ರವೃತ್ತ ಸಂಪ್ರವೃತ್ತ (ವಿಂ)** 1. ಒಂದು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿರುವ, ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿರುವ. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ವೃತ್ತ (ವರ್ತನೆ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | 2. ಪ್ರಾರಂಭವಾದ. 3. ಉಂಟಾದ, ಹುಟ್ಟಿದ. "ಉತ್ತಾಲತಾಲಿ ವನಸಂಪ್ರವೃತ್ತಸಮೀರಸೋಮಂತಿತಕೇತಕೀಕಾಃ" ಮಾಘಂ ೩-೭ |

**ಸಂಪ್ರವೃದ್ಧ ಸಂಪ್ರವೃದ್ಧ (ವಿಂ)** 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿರುವ. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ವೃಧ್ (ವೃದ್ಧಿ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | 2. ಅಧಿಕವಾಗಿರುವ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವ.

**ಸಂಪ್ರವೃದ್ಧಿ ಸಂಪ್ರವೃದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆಯುವುದು, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುವುದು. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ವೃಧ್ (ವೃದ್ಧಿ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) |



**ಸಂಪ್ರಸರಣ ಸಂಪ್ರಸರಣ (ನಂ)** 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹರಡುವುದು, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ಸ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ಸೈನ್ಯದ ಒಡಾಟ, ಸೇನೆಯು ಅಲ್ಲಿಂದಿಲ್ಲಿಗೆ ಸುತ್ತುವುದು. 3. ಮುಂದಕ್ಕೆ ಚಲಿಸುವುದು, ಮುಂದೆ ಸಾಗುವುದು.

**ಸಂಪ್ರಸರ್ಪಣ ಸಂಪ್ರಸರ್ಪಣ (ನಂ)** 1. ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದು. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ಸ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಹರಡುವುದು.

**ಸಂಪ್ರಸಾದ ಸಂಪ್ರಸಾದ (ಪುಂ)** 1. ಸ್ವಪ್ನಸ್ಥಾನ. ಸಂಪ್ರಸಾದ-ತ್ಯಸ್ಮಿನ್ (ಜೀವ:) ಇತಿ ಸಂಪ್ರಸಾದ: ಸ್ವಪ್ನಸ್ಥಾನಮ್। 2. ಜೀವಾತ್ಮ. ಸಂಪ್ರಸಾದಶಬ್ದ: ಸ್ವಪ್ನಸ್ಥಾನವಚನ: ಸನ್ ತಸ್ಮಿನ್ವಾತ್ ಜೀವಂ ಲಕ್ಷಯತಿ।

**ಸಂಪ್ರಸಾಧನ ಸಂಪ್ರಸಾಧನ (ನಂ)** 1. ಅಲಂಕರಿಸುವುದು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಶೃಂಗರಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ಸಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। (ವಿಂ) 2. ಅಲಂಕರಿಸುವವನು. ಕರ್ತಂ "ಲ್ಯು:" (3-1-134)।

**ಸಂಪ್ರಸಾಧಯತ್ ಸಂಪ್ರಸಾಧಯತ್ (ವಿಂ)** ಅಲಂಕರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಶೃಂಗರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ಸಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧೌ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124)।

**ಸಂಪ್ರಸಾರಣ ಸಂಪ್ರಸಾರಣ (ನಂ)** 1. ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ ಒಂದು ಸಂಜ್ಞೆ. ಯನ್ (ಯ ವ ರ ಲ) ವರ್ಣಗಳ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಇಕ್ (ಇ ಉ ಋ ಌ) ವರ್ಣಗಳು ಸಂಪ್ರಸಾರಣ ಸಂಜ್ಞೆಯನ್ನು ಹೊಂದುವುವು. "ಇಯಣ: ಸಂಪ್ರಸಾರಣಮ್" (1-1-44)। ಯ ಕಾರಕ್ಕೆ ಇ ಕಾರ ವ ಕಾರಕ್ಕೆ ಉ ಕಾರ ರೇಫಕ್ಕೆ ಋ ಕಾರ ಮತ್ತು ಌ ಕಾರಕ್ಕೆ ಳ ಕಾರಗಳು ಸಂಪ್ರಸಾರಣಗಳು. 2. ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು, ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವುದು.

**ಸಂಪ್ರಹಾರ ಸಂಪ್ರಹಾರ (ಪುಂ)** 1. ಯುದ್ಧ, ಕದನ, ಕಾಳಗ. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ಹ್ (ಹರಣೇ) "ಘ್" (3-3-114)। "ಶಾಂತಂ ಮಹಾಪುರುಷಸಂಜ್ಞಿತಂ ನಿಶಮ್ಯ ತದ್ಗೌರವಾತ್ಸಮುಪಸಂಹೃತಸಂಪ್ರಹಾರ:" ಉಂ ರಾಂ 6-7। 2. ಗಮನ, ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವುದು, ಮುಂದೆ ಚಲಿಸುವುದು. "ಸಂಪ್ರಹಾರೋ ಗತೌ ಯುಧೇ" ಮೇದಿಂ। 3. ಪರಸ್ಪರ ಹೊಡೆದಾಟ, ಬಡಿದಾಟ.

**ಸಂಪ್ರಾಪ್ತ ಸಂಪ್ರಾಪ್ತ (ವಿಂ)** 1. ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್" (3-2-102)। 2. ಸೇರಲ್ಪಟ್ಟ, ತಲುಪಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸೇರಿದ, ತಲುಪಿದ. ಕರ್ತಂ "ಕ್"। 4. ಹೊಂದಿದ, ಪಡೆದ, ಸಂಪಾದಿಸಿದ. 5. ಬಂದಿರುವ, ಆಗಮಿಸಿರುವ.

6. ಬಂದ, ಒದಗಿದ. 7. ಸಂಭವಿಸಿದ. "ಸಂಪ್ರಾಪ್ತೇ ಸನ್ನಿಹಿತೇ ಕಾಲೇ ನ ಹಿ ನ ಹಿ ರಕ್ಷತಿ ಡುಕ್ರವ್ ಕರಣೇ"।

**ಸಂಪ್ರಾಪ್ತಿ ಸಂಪ್ರಾಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಹೊಂದುವುದು, ಪಡೆಯುವುದು, ಸಂಪಾದಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ಆಪ್ಲ್ (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94)। 2. ಸೇರುವುದು, ತಲುಪುವುದು. "ಯಾದೋನಿಧಾನೇ ಯದುರಾಜಧಾನ್ಯಾ: ಸಂಪ್ರಾಪ್ತೇ ಸೇತುರಿದೋಪಕಲ್ಪತ:" ಯಾದಂ 26-110। 3. ಬರುವುದು, ಆಗಮಿಸುವುದು. 4. ಸಂಭವಿಸುವುದು.

**ಸಂಪ್ರೀಣನ ಸಂಪ್ರೀಣನ (ನಂ)** 1. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಪ್ರೀನ್ (ತರ್ಪಣೇ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। (ವಿಂ) 2. ಸಂತೋಷವುಂಟುಮಾಡುವ. ಸಮ್ + ಪ್ರೀನ್ + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯು:" (3-1-134)। "ಉಪಾಚರನ್ ವ್ಯೋಮಚರಾ ಯಥಾಹಂ ಸಂಪ್ರೀಣನೇಋತಸವಸಂವಿಧಾನೇ:" ಯಾದಂ 13-63।

**ಸಂಪ್ರೀಣಯತ್ ಸಂಪ್ರೀಣಯತ್ (ವಿಂ)** ಸಂತೋಷಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಪ್ರೀನ್ (ತರ್ಪಣೇ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124)। "ತಮಾಸಿ ಮಿತ್ವಾ ವಿಶದೇಮಯುಕ್ತ: ಸಂಪ್ರೀಣಯಂತಂ ವಿದುಷಶ್ಚಕೋರಾನ್" ಹ್ಯಗ್ರೀಂ। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್" (4-1-6)। -ಯಂತಿ -ಯಸ್ತು.

**ಸಂಪ್ರೀಣಿತ ಸಂಪ್ರೀಣಿತ (ವಿಂ)** ಸಂತೋಷಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಪ್ರೀನ್ (ತರ್ಪಣೇ) + ಣಿಚ್ "ಕ್" (3-2-102)। "ಕುರ್ವದ್ವಮುಪೇಕ್ಷ್ಯ ಜಾಹ್ನವೇಯಂ ಜಯಸಂಪ್ರೀಣಿತ-ಜಾಮದಗ್ನಿರಾಮಮ್" ಯಾದಂ 14-49।

**ಸಂಪ್ರೀಯಮಾಣ ಸಂಪ್ರೀಯಮಾಣ (ವಿಂ)** ಸಂತೋಷಪಡುತ್ತಿರುವ, ಆನಂದಪಡುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಪ್ರೀಡ್ (ಪ್ರೀತೌ) "ಶಾನ್" (3-2-124)। "ಸಂಪ್ರೀಯಮಾಣೋಽನುಬಂಭವ ತೀವ್ರಂ ಪರಾಕ್ರಮಂ ತಸ್ಯ ಪತಿಗಣಾನಾಮ್" ಕಿರಾಂ 17-13।

**ಸಂಪ್ರೀತ ಸಂಪ್ರೀತ (ವಿಂ)** 1. ಸಂತೋಷಪಟ್ಟಿರುವ, ತೃಪ್ತಿ ಹೊಂದಿರುವ. ಸಮ್ + ಪ್ರೀನ್ (ತರ್ಪಣೇ) "ಕ್" (3-4-62)। 2. ಪ್ರೀತಿಯಿಟ್ಟಿರುವ.

**ಸಂಪ್ರೇಕ್ಷಣ ಸಂಪ್ರೇಕ್ಷಣ (ನಂ)** 1. ಲಕ್ಷ್ಯವಿಟ್ಟು ನೋಡುವುದು, ಗಮನಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪರೀಕ್ಷಿಸಿ ನೋಡುವುದು. "ಸಂಪ್ರೇಕ್ಷಣಂ ಮಮ ನ ಯುಕ್ತಮಿತಿವ ಮತ್ವಾ" ಯಾದಂ 19-94।

**ಸಂಪ್ರೇಕ್ಷಾ ಸಂಪ್ರೇಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** "ಸಂಪ್ರೇಕ್ಷಣ" ಪದದ ಅರ್ಥ. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನೇ) "ಅ:" (3-3-103)।

**ಸಂಪ್ರೇಷ ಸಂಪ್ರೇಷ (ಪುಂ)** ಕಳುಹಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಪ್ರ + ಲೇಷ (ಗತೌ) "ಘ್" (3-3-114)। "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। -ಪ್ರೇಷಣಮ್ -ಪ್ರೇಷಣಮ್.



ಸಂಪ್ರೇಷ ಸಂಪ್ರೇಷ್ಯ (ಪುಂ) ದೂತ, ಸೇವಕ. ಸಮ್+ಪ್ರ+ಃಷ (ಉಚ್ಛೇ) "ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) ।

ಸಂಪ್ರೇಷ ಸಂಪ್ರೇಷ್ಯ (ಪುಂ) ಆದೇಶಮಾಡಿ ಕಳುಹಿಸುವುದು, ಅಪ್ಪಣೆಮಾಡಿ ಕಳುಹಿಸುವುದು. ಸಮ್+ಪ್ರ+ಃಷ (ಇಚ್ಛಾ-ಯಾಮ್) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) ।

ಸಂಪ್ರೇಷ ಸಂಪ್ರೇಷ್ಯ (ಪುಂ) ದೂತ, ಸೇವಕ, ಆಳು. ಸಮ್+ಪ್ರ+ಃಷ (ಗತೌ) "ಞ್ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) ।

ಸಂಪ್ರೋಕ್ಷಣ ಸಂಪ್ರೋಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ಸಿಂಪಿಸುವುದು, ಚಿಮುಕಿಸುವುದು. ಸಮ್+ಪ್ರ+ಃಷ (ಸೇಚನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಮಂತ್ರಪೂರ್ವಕ ಪ್ರೋಕ್ಷಿಸುವುದು, ಶುದ್ಧಿಗಾಗಿ ಮಂತ್ರೋಚ್ಚಾರಣಪೂರ್ವಕ ಮಂತ್ರಪೂತ ನೀರನ್ನು ಚಿಮುಕಿಸುವುದು.

ಸಂಪ್ಲವ ಸಂಪ್ಲವ (ಪುಂ) 1. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗುವುದು, ಪ್ರವಾಹದಲ್ಲಿ ಕೊಚ್ಚಿಹೋಗುವುದು. ಸಮ್+ಪ್ಲವ್ (ಗತೌ) "ಅಘ್" (೩-೧-೧೩೪) । 2. ನೀರಿನ ಮೇಲೆ ತೇಲುವುದು.

ಸಂಪ್ಲುತ ಸಂಪ್ಲುತ (ವಿಂ) 1. ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿದ. ಸಮ್+ಪ್ಲುತ್ (ಗತೌ) "ಕ್" (೩-೪-೭೨) । 2. ನೀರಿನ ಮೇಲೆ ತೇಲುವ.

ಸಂಪ್ಪಾಲ ಸಂಪ್ಪಾಲ (ಪುಂ) ಗಂಡು ಕುರಿ, ಟಗರು.

ಸಂಪ್ಪುಲ ಸಂಪ್ಪುಲ (ವಿಂ) ವಿಕಸಿತವಾದ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅರಳಿರುವ. ಸಮ್+ಪ್ಪುಲ (ವಿಕಸನೆ) "ಅಘ್" (ವಾಂ ೮-೨-೫೫) । "ಅನ್ಯನ್ ಗುಣಮಮೃತಸ್ಯ ಧಾರಯಂತಿ ಸಂಪ್ಪುಲ-ಸ್ಫುರಿಸರೋಹಾವತಂಸಾ" ಮಾಘಂ ೮-೫೨ ।

ಸಂಪ್ಪೇಟ ಸಂಪ್ಪೇಟೆ (ಪುಂ) ಅರಬ್ಬೀವೃತ್ತಿಯ ಒಂದು ಭೇದ, ಕುಪಿತರಾದ ಇಬ್ಬರು ವೀರರ ಹೋರಾಟದಿಂದ ಸುಭವಿಸುವ ಘಟನೆ. "ಸಂಪ್ಪೇಟೆ ಸಮಾಧಾತಃ ಕ್ಷುಡ್ರಸತ್ವ-ರಯೋದ್ವಯೋಃ" ಸಾಂ ೬-೧೩೫ ।

ಸಂಪ್ಪದ ಸಂಪ್ಪದ (ವಿಂ) 1. ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿದ. ಸಮ್+ಪ್ಪದ (ಬಂಧನೆ) "ಕ್" (೩-೪-೭೨) । 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ಯಕ್ ಬದ್ಧಃ ।

ಸಂಪ್ಪದ ಸಂಪ್ಪದ (ಪುಂ) 1. ಸಖಿ, ಮೈತ್ರಿ, ಸ್ನೇಹ. ಸಮ್+ಪ್ಪದ (ಬಂಧನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) । "ಸಂಪ್ಪದ-ಮಾಭಾಷಣಪೂರ್ವಮಾಹುಃ ವೃತ್ತಃ ಸ ನೌ ಸಂಪ್ಪದಯೋರ್ವನಾಂತೇ" ರಘುಂ ೨-೫೮ । 2. ವಿವಾಹ ಸಂಬಂಧ, ಬಾಂಧವ್ಯ, ಸಂಟತನ. "ವಿಕ್ರಿಯಾಯ ನ ಕಲ್ಪಂತೇ ಸಂಪ್ಪದಾಃ ಸದನುಷ್ಠಿತಾಃ" ಕುಮಾರಂ ೬-೨೯ । 3. ಸೇರಿಕೆ, ಸೇರುವ, ಕೂಡಿಸುವುದು. 4. ಸಂಸರ್ಗ. 5. ಸಮೃದ್ಧಿ. 6. ನ್ಯಾಯ. 7. ಸಂಪರ್ಕ. ಇದು ವಿಜ್ಞಾನಃ ಯೋಜನಃ ಪ್ರೀತಿಃ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ.

ಸಂಪ್ಪದ ಸಂಪ್ಪದ (ಪುಂ) 1. ಮಿತ್ರ, ಗೆಳೆಯ, ಸುಹೃತ್ತು. ಸಂಪ್ಪದೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫) ।

"ತದ್ಭೂತನಾಥಾನುಗ ನಾಹಸಿ ತ್ವಂ ಸಂಪ್ಪದಿನೋ ಮೇ ಪ್ರಣಯಂ ವಿಹಂತುಮ್" ರಘುಂ ೨-೫೮ । 2. ತಾಯಿಯ ಕಡೆಯ ಬಂಧು. [ಮಾತುಲ (ಸೋದರಮಾವ) ಚಿಕ್ಕಮ್ಮ ಮತ್ತು ದೊಡ್ಡಮ್ಮ ಅವರ ಮಕ್ಕಳು ಇತ್ಯಾದಿ.] 3. ಪತಿ ಮತ್ತು ಪತ್ನಿಯ ಕಡೆಯ ಬಂಧು. (ಅತ್ತೆ ಮಾವ ಭಾವಮೈದುನ ನಾದಿನಿ ಮುಂತಾದವರು). - "ವಿಪ್ರೋಷ್ಯ ತ್ವಪಸತ್ಪ್ರಾಹ್ಮಾ ಜ್ಞಾತಿಸಂಪ್ಪದಿಯೋಷಿತಃ" ಮನುಂ ೨-೧೩೨ । 4. ವಿವಾಹದ ಕಾರಣದಿಂದ ಉಂಟಾದ ಸಂಬಂಧವುಳ್ಳ ಬಂಧು. "ಏಷ ವಃ ಶ್ಲಾಘ್ಯಸಂಪ್ಪದಿ ಜನಕಾನಾಂ ಕುಲೋದ್ವಹಃ" ಉಂ ರಾಂ ೪-೯ । "ಸಂಪ್ಪದಿನೋ ವಸಿಷ್ಠಾದೀನೇಷ ತಾತಸ್ತವಾರ್ಚತಿ । ಗೌತಮಶ್ಚ ಶತಾನಂದೋ ಜನಕಾನಾಂ ಪುರೋಹಿತಃ" ಉಂ ರಾಂ ೧-೧೬ । ವಿವಾಹದ ಸಂಬಂಧದ ಬಂಧುಗಳು -ಬೀಗ (ಪುತ್ರೀ ಪುತ್ರರ ಮಾವ), ಅಳಿಯ, ಸೊಸೆ ಇತ್ಯಾದಿ. "ಸಂಪ್ಪದಿ ಶ್ಲಾಘ್ಯಃ ಪ್ರಿಯಮುಹೂದಸೌ ತತ್ತ್ವ ಹೃದಯಂ ಸಚಾನಂದಃ ಸಾಕ್ಷಾದಪಿ ಚ ನಿಖಿಲಂ ಜೀವಿತಫಲಮ್" ಉಂ ರಾಂ ೪-೧೩ । (ವಿಂ) 5. ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವ, ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ. 6. ಸಂಬಂಧವಿಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವ. "ನಾರ್ಥಸಂಪ್ಪದಿನೋ ನಾಪ್ತಾಃ

ನ ಸಹಾಯಾ ನ ವೇರಿಣಃ । ನ ದೃಷ್ಟದೋಷಾಃ ಕರ್ತವ್ಯಾ ನ ವ್ಯಾಖ್ಯಾತಾಃ ನ ದೃಷಿತಾಃ" ಮನುಂ ೮-೬೪ ।

ಸಂಪ್ಪದ ಸಂಪ್ಪದ (ಪುಂ) 1. ಇಕ್ಕಟ್ಟಾಗಿರುವ, ಸಂಚರಿ ಸಲು ಕಷ್ಟವಾಗಿರುವ. ಸಮ್ಯಕ್ ಬಾಂಧವ್ಯಂತೇ ಅತ್ರ-ಸಮ್+ಪ್ಪದ (ವಿಲೋಡನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೨೧) । "ಸಂಪ್ಪದೇವಿಪುಲತಯಾ ಮಿಥೋ ನಿತಮ್ಬಃ ಸಂಪ್ಪದಂ ಬೃಹದಪಿ ತದ್ಭೂವ ವರ್ಮ" ಮಾಘಂ ೮-೨ । 2. ಭಗ, ಯೋನಿ, ಸ್ತ್ರೀಯರ ಗುಹ್ಯೇಂದ್ರಿಯ. "ಸಂಪ್ಪದಃ ಸಂಪ್ಪದೇ ಭಗೇ" ಮೇದಿಂ । 3. ಭಯ. 4. ನರಕದ ಮಾರ್ಗ.

ಸಂಪ್ಪದ ಸಂಪ್ಪದ (ನಂ) 1. ಶೂಲದ ಅಗ್ರಭಾಗ, -ತುದಿ. 2. ಯೋನಿಮುಖ. 3. ದ್ವಾರಪಾಲಕ. 4. ದ್ವಾರ, ಬಾಗಿಲು.

ಸಂಪ್ಪದ ಸಂಪ್ಪದ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದುಕೊಂಡಿರುವ, ಸರಿಯಾಗಿ ಅರ್ಥಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವ. ಸಮ್+ಪ್ಪದ (ಅವಗಮನೆ) "ಕ್" (೩-೪-೭೨) । 2. ಬಹಳ ಬುದ್ಧಿ ಶಾಲಿ, ಮೇಧಾವಿ. 3. ಬಹಳ ಎಚ್ಚರಿಕೆಯಿಂದಿರುವ.

ಸಂಪ್ಪದ ಸಂಪ್ಪದ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಂಬಂಧಿನಿ, ಬೇರೆ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿರತನಾದವನನ್ನು ಮತ್ತೊಂದು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಲು ಅಭಿಮುಖೀಕರಣ. ಸಮ್+ಪ್ಪದ (ಅವ-



ಗಮನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) । ಹೇ ದೇವದತ್ತ ಹೇ ಯಜ್ಞದತ್ತ ಇತ್ಯಾದಿ. 2. ನಿಷ್ಕೃಷ್ಟವಾದ ಜ್ಞಾನ, ಸರಿಯಾದ ತಿಳಿವಳಿಕೆ. ಸಮ್ಯಕ್ ಬುದ್ಧಿ: 3. (ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ) ಸಂಬೋಧನ ವಿಭಕ್ತಿ. "ಸಮ್ಬುದ್ಧೌ ಶಾಕಲ್ಯಸ್ಯೇತಾವನಾರ್ಥ" ಪಾಂ ಸೂಂ ೧-೧-೧೬ ।

**ಸಮ್ಬೋಧ ಸಂಬೋಧ (ಪುಂ)** 1. ಬೋಧನೆ, ಉಪದೇಶ. ಸಮ್ + ಬುಧ (ಅವಗಮನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) । "ಜ್ಞಾನಂ ತತ್ವಾರ್ಥಸಮ್ಬೋಧಃ ಶಮಶ್ಚಿತ್ತಪ್ರಶಾಂತತಾ । ದಯಾ ಸರ್ವಸುಖೇ ಪಿತ್ವಮಾರ್ಜವಂ ಸಮಚಿತ್ತತಾ" ಭಾಂ । 2. ನಿಷ್ಕೃಷ್ಟ ಜ್ಞಾನ, ಸಂಪೂರ್ಣ ಜ್ಞಾನ. 3. ಎಸೆಯುವುದು. 4. ನಾಶ, ಪುಳಯ. "ಸಮ್ಬೋಧೋ ಬೋಧನೇ ಕ್ಷೇಪೇ" ಮೇದಿಂ ।

**ಸಮ್ಬೋಧನ ಸಂಬೋಧನ (ನಂ)** 1. ಸಂಬೋಧನ ವಿಭಕ್ತಿ. 2. ಅಭಿಮುಖವಾಗಲು ಒಬ್ಬನನ್ನು ಕರೆಯುವುದು. "ಸಮ್ಬೋಧನೋಕ್ತಿಪ್ರತ್ಯುಕ್ತೌ ಕುರ್ಯಾದಿಕಾಶಭಾಷಿತೇ" ಸಾಂ ದಂ । ಹೇ ದೇವದತ್ತ ಹೇ ಯಜ್ಞದತ್ತ ಇತ್ಯಾದಿ. ಸಮ್ + ಬುಧ (ಅವಗಮನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಉಪದೇಶಿಸುವುದು.

**ಸಮ್ಭಕ್ತ ಸಂಭಕ್ತ (ವಿಂ)** 1. ಭಾಗಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಅನುರಕ್ತನಾದ, ಅಸಕ್ತನಾದ, ಶ್ರದ್ಧೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಭಜ ಕರಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) ।

**ಸಮ್ಭಕ್ತಿ ಸಂಭಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಭಾಗಮಾಡುವುದು. 2. ಗೌರವಿಸುವುದು, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ನೋಡುವುದು. ಸಮ್ + ಭಜ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) ।

**ಸಮ್ಭವ ಸಂಭವ (ಪುಂ)** 1. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟುವುದು. ಸಮ್ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭) । "ವಯಸ್ಯ ಮಕರಂದ, ದುರ್ಲಭಃ ಖಲು ಜಗತಿ ತಾವತಃ ಸ್ನೇಹಸ್ಯ ಸಮ್ಭವಃ" ಮಾಲತೀಂ ೯ । 2. ವಿಷ್ಣು. ಸಮಂತಾತ್ ಭವೋ ಯಸ್ಯ । ತತ್ರ ತತ್ರ ಸರ್ವದೇಶಕಾಲಾದಿಷು ಮತ್ಸ್ಯಕೂರ್ಮವರಾಹನಾರಸಿಹಾದಿಭಿಃ ರೂಪೈಃ ಏಕೈಕಂ ಪುನರುಕ್ತೈಃ ಅಸಂಖ್ಯಯೈರಾವಿರ್ಭವತಿ ಇತ್ಯರ್ಥಃ । "ಸಮ್ಭವೋ ಭಾವನೋ ಭರ್ತಾ" ವಿಂ ಸಂ । 3. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಜನ್ಮಪಡೆಯುವುದು, ಹುಟ್ಟುವುದು. "ಪ್ರಿಯಸ್ಯ ಸುಹೃದೋ ಯತ್ರ ಮಮ ತತ್ರೈವ ಸಮ್ಭವಃ । ಭೂಯಾದಮುಷ್ಯ ಭೂಯಾಪಿ ಭೂಯಾಸ-ಮನುಸಂಚರಃ" ಮಾಲತೀಂ ೯-೪೧ । 4. ಹೇತು, ಕಾರಣ, ಮೂಲ. 5. ಆಧಾರಕ್ಕಿಂತಲೂ ಆಧೇಯವು ದೊಡ್ಡದಾಗದಿರುವಿಕೆ, ಆಧೇಯವು ಆಧಾರಕ್ಕೆ ಸಮವಾಗಿರುವಿಕೆ. 6. ಸಂಗತವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಹೊಂದಿಕೆಯಾಗಿರುವಿಕೆ, ಒಪ್ಪು ಮೆತ್ತಿರುವಿಕೆ. 7. ಮನುಷ್ಯನ ಹುಟ್ಟು ಮತ್ತು ಅನಂತರದ ಬೆಳೆವಣಿಗೆ. "ಯಂ ಮಾತಾಪಿತರೌ ಕಲೇಶಂ ಸಹೇತೇ ಸಮ್ಭವೇ

ನೃಣಾಮ್ । ನ ತಸ್ಯ ನಿಷ್ಕೃತಿಃ ಶಕ್ಯಾ ಕರ್ತುಂ ವರ್ಷಶತೇರಪಿ" ಮನುಂ ೨-೨೨೭ । 8. ಅಪಾಯ. 9. ಸಮಯ, ಸಂಕೇತ. 10. ಮಿಶ್ರಣ, ಬೆರಕೆ. "ಸಮ್ಭವೋ ಜನನೇ ಹೇತೌ ಮೇಲಕೇ ಚಾರುಜನ್ಮನಿ । ಆಧೇಯಸ್ಯಾಧಾರಾನತಿರೀಕೃತ್ವೇ ಸಮಯೇಽಪಿ ಚ" ಹೇಮಂ । (ವಿಂ) 11. ಉಂಟಾದ, ಹುಟ್ಟಿದ. "ತನೌ ಮಮುಸ್ತತ್ರ ನ ಕಂಡಮದ್ವಿಷಃ ತಪೋವನಾಮ್ಯಾಗಮಸಮ್ಭವಾ ಮುದಃ" ಮಾಘಂ ೧-೨೩ ।

**ಸಮ್ಭಾರ ಸಂಭಾರ (ಪುಂ)** 1. ಪೂಜಾ ವಿವಾಹ ಯಜ್ಞ ಮುಂತಾದ ಕಾರ್ಯಗಳಿಗೆ ಬೇಕಾದ ಸಾಮಗ್ರಿ, ಸಾಧನ, ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ ಉಪಕರಣ, ಸಲಕರಣೆ. ಸಮ್ + ಭೃ (ಭರಣ) "ಘ್" (೩-೩-೧೯) । "ಸಮ್ಭಾರಾಃ ಸಮಿಶ್ರಯಂತಾಂ ಮೇ ಗುರುಣಾಂ ವಚನಾದಿಹ । ಸಮರ್ಥಾಧಿಷ್ಠಿತಶ್ರಾವಾಃ ಸೌಪಾಧ್ಯಾಯೋ ವಿಮುಚ್ಯತಾಮ್" ರಾಮಾಂ । 2. ಸಂಗ್ರಹ, ಶೇಖರಿಸುವುದು. "ಪರ್ಯಾಯಸೇವಾಮುತ್ಸೃಜ್ಯ ಪುಷ್ಪಸಮ್ಭಾರತತ್ಪರಾಃ । ಉದಾನಪಾಲ-ಸಾಮಾನ್ಯಮೃತವಸ್ತುಮುಪಾಸತೇ" ಕುಮಾಂ ೨-೩೬ । 3. ಸಮೂಹ, ಸಂಘ. 4. ಸಂಪೂರ್ಣತೆ, ಪೂರ್ಣವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಸಮೃದ್ಧಿ. 5. ಐಶ್ವರ್ಯ.

**ಸಮ್ಭಾವನ ಸಂಭಾವನ (ನಂ)** ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಸಮ್ + ಭೂ + ಣಿಕ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । ವಿವಕ್ಷಿತವಾದ ಒಂದು ಕಾರ್ಯದ ಸಿದ್ಧಿಗಾಗಿ ಮಾಡುವ ಉಹ. ಹೀಗೆ ಅದರ ಅದು ಸಾಧ್ಯವಾಗಬಹುದೆಂದು ವರ್ಣನೆಯಿರುವಲ್ಲಿ "ಸಮ್ಭಾವನ" ಅಲಂಕಾರ. "ಸಮ್ಭಾವನಂ ಯದೀತ್ಯಂ ಸ್ಯಾದಿತ್ಯುಹೋನ್ಯಸ್ಯ ಸಿದ್ಧಯೇ । ಯದಿ ಶೇಷೋ ಭವೇದ್ವಕ್ಷಾ ಕಥಿತಾಃ ಸ್ಯುರ್ಗುಣಾಸ್ತವ" ಚಂದ್ರಾಂ ।

**ಸಮ್ಭಾವನಾ ಸಂಭಾವನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಉಹ, ಉತ್ಕಟ ಏಕೋಚಿತ ಸಂಶಯ. ಸಮ್ + ಭೂ + ಣಿಕ್ "ಯುಕ್" (೩-೩-೧೦೭) । "ಢಾಪ್" (೪-೧-೪) । ಉಪಮಾನ ವಸ್ತುವರ್ತಮಾ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಉಪಮೇಯ ವಸ್ತುವನ್ನು ಉಪಮಾನ ವಸ್ತುವನ್ನಾಗಿ ಊಹಿಸುವುದು "ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾ" ಅಲಂಕಾರ. ಅನ್ಯಧರ್ಮಸಮ್ಬಂಧೇನ ಹೇತುನಾ ಅನ್ಯಸ್ಯ ಅನ್ಯತಾ-ದಾತ್ಮ್ಯಸಮ್ಭಾವನಾ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾ । ಇದು ವಸ್ತುವಸ್ತುತ್ವನಾ ದೇಶಾತ್ವತ್ವನಾ ಭೇದಾತ್ವನಾ ಚ ಸಂಭಾವನಾ (ವಿತರ್ಕಃ) ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. "ಸಮ್ಭಾವನಾ ಸ್ಯಾದ್ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾ ವಸ್ತುಹೇತು-ಫಲಾತ್ಮನಾ" ಚಂದ್ರಾಂ । ಮೊದಲನೆಯ ವಸ್ತುವಸ್ತುತ್ವಕ್ಕೆ (ಸ್ವರೂಪೋತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆ) ಯು ಉಕ್ತವಿಷಯ ಮತ್ತು ಅನುಕ್ತ ವಿಷಯಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ.

ಉಕ್ತವಿಷಯಾ ಸ್ವರೂಪೋತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾ — "ಭೂಮಸ್ತೋಮಂ ತಮಶಾಕ್ಷಂ ಕೋಕೀವಿರಹಶುಷ್ಮಣಾಮ್" ।



ಅನುಕ್ತವಿಷಯಾ ಸ್ವರೂಪೋತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾ — “ಲಿಪ್ಯಂತೀವ ತಮೋ-  
ಜ್ಞಾನಿ ವರ್ಷಂತೀವಾಙ್ಮನಂ ನಮಃ” ।

ಎರಡು ಮತ್ತು ಮೂರನೆಯದಾದ ಹೇತು ಮತ್ತು  
ಫಲೋತ್ಪತ್ತೀಕ್ಷೆಗಳು ಸಿದ್ಧ ಮತ್ತು ಅಸಿದ್ಧ (ವಿದ್ಯಮಾನ  
ಅವಿದ್ಯಮಾನ) ವಿಷಯಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ.

ಸಿದ್ಧವಿಷಯಾ ಹೇತುತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾ — “ರಕ್ತೌ ತವಾಙ್ಮನಿ ಮೃದುಲೌ  
ಭುವಿ ವಿಕುಪಣಾತ್ ಧ್ರುವಮ್” ।

ಅಸಿದ್ಧವಿಷಯಾ ಹೇತುತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾ — “ತ್ವನ್ಮುಖಾಭೇಚ್ಛಯಾ ನೂನಂ  
ಪದ್ಮೇವೈರಾಯತೇ ಶಶಿ” ।

ಸಿದ್ಧವಿಷಯಾ ಫಲೋತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾ — “ಮಧ್ಯಃ ಕಿಂ ಕುಚಯೋವೃತ್ಯಂ  
ಬದ್ಧಃ ಕನಕದಾಮಭಿಃ” ।

ಅಸಿದ್ಧವಿಷಯಾ ಫಲೋತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾ — “ಪ್ರಾಯೋಜ್ಯಂ ತ್ವತ್ಪದೇನೈಕಂ  
ಪ್ರಾಪ್ತುಂ ತೋ ತಪಸ್ಯತಿ” ॥ ಈ ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗಳಲ್ಲೂ  
ಉತ್ಪತ್ತಿ ಏಕಕೋಟಿಕ ಸಂಶಯ (ಸಂಭಾವನೆ) ಇರುವುದು  
ರಿಂದ ಉತ್ಪತ್ತೀಕ್ಷಾಲಂಕಾರ. ಇದು ಪ್ರಥಮ ಭಾಗದ  
416 ನೇ ಪುಟದಲ್ಲಿರುವ “ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾ” ಪದದ ವಿವರಣೆಯ  
ಒಂದು ಭಾಗವೆಂದು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಬೇಕು. 2. ಗೌರವ,  
ಹಿರಿಮೆ, ಗಣ್ಯತೆ, ಮಾನ್ಯತೆ. “ಸಿದ್ಧಯಂತಿ ಕರ್ಮಸು  
ಮಹತ್ವಪಿ ಯತ್ರಿಯೋಜ್ಯಾಃ ಸಮ್ಮಾವನಾಗುಣಮವೇಹಿ ತಮೀಶ್ವರಾ-  
ಣಾಮ್” ಶಾಕುಂ ೭-೪. 3. ಯೋಗ್ಯತೆ, ಸ್ಥಾನಮಾನ.  
“ಮನಾಂ ದ್ವಿಪಚ್ಛಯಂತಿ ಪಶ್ಚುಭೂತೇ ಸಮ್ಮಾವನಾಂ ಭೂತಿಮಿವೋ-  
ದ್ಧರಿಸ್ಯನ್” ಕಿರಾಂ ೩-೨೯. 4. ಕಲ್ಪನೆ, ಭ್ರಾಂತಿ,  
ಅಧಾರವಿಲ್ಲದ ಊಹೆ.

ಸಮ್ಮಾವನೀಯ ಸಂಭಾವನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಗೌರವಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಗೌರವಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. ಸಮ್ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬). 4. ಊಹಿಸಲ್ಪಡುವ. “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬). -ಭಾವಯಿತವ್ಯಃ -ಭಾವಯಿತವ್ಯಃ.

ಸಮ್ಮಾವಿತ ಸಂಭಾವಿತ (ವಿಂ) 1. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಗೌರವಾರ್ಹ, ಸದ್ಗುಣಗಳಿಂದ ಮಾನ್ಯತೆ ಪಡೆದ. ಸಮ್ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೦೨). “ಅಕೀರ್ತಿ ಚಾಪಿ ಭೂತಾನಿ ಕಥಯಿಷ್ಯಂತಿ ತೇಜಯಾಮ್ । ಸಮ್ಮಾವಿತಸ್ಯ ಚಾಕೀರ್ತಿಮರಣಾದತಿರಿಚ್ಯತೇ” ಗೀತಾ ೨-೩೪. 3. ಊಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಂಶಯದಿಂದ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. “ಪಿತ್ರಾಹಂ ದೋಷು ಸಮ್ಮಾವಿತಃ” ಕಾದಂ. 4. ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸಮ್ಮಾವ್ಯ ಸಂಭಾವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಊಹಿಸಲ್ಪಡುವ, ಊಹಿಸಿ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ. ಸಮ್ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ “ಯತ್”

(೩-೧-೯೭). “ಸಮ್ಮಾವ್ಯಂ ಗೋಷು ಸಮ್ಪನ್ನಮ್” ಪञ್ಚತಂ. 2. ನಿರೀಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. “ಸಮ್ಮಾವ್ಯಂ ಜಾತೀತೋ ಭಯಮ್” ಪञ್ಚತಂ. 3. ಅಗಬಹುದಾದ, ಅಗಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ, ಸಂಭವಿಸಬಹುದಾದ. “ಸಮ್ಮಾವ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀಷು ಚಾಪತ್ಯಮ್” ಪञ್ಚತಂ. 4. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಗೌರವಿಸಬೇಕಾದ. “ಸಮ್ಮಾವ್ಯಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೇ ತಪಃ” ಪञ್ಚತಂ ೪-೭೭. (ಅವ್ಯಂ) 5. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಊಹಿಸಿ. 6. ತಿಳಿದು, ನಿರೀಕ್ಷಿಸಿ, ಪ್ರತೀಕ್ಷಿಸಿ. “ಸಮ್ಮಾವ್ಯ ತ್ವಾಮತಿಭರಕ್ಷಮಸ್ಕನ್ಧಂ ಸ ಬಾನ್ಧವಃ” ಮಾಘಂ ೨-೧೦೩.

ಸಮ್ಮಾಘಣ ಸಂಭಾಷಣ (ನಂ) ಸಂಲಾಪ, ಪರಸ್ಪರ ಮಾತನಾಡುವುದು. ಸಮ್ + ಭಾಷ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪).

ಸಮ್ಮಾಘಾ ಸಂಭಾಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಲಾಪ, ಮಾತನಾಡುವುದು. ಸಮ್ + ಭಾಷ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) “ಃ” (೩-೩-೧೦೩). “ಪರಸ್ಯ ಪತ್ನ्या ಪುರುಷಃ ಸಮ್ಮಾಘಾಂ ಯೋಜಯನ್ನರಃ । ಪೂರ್ವಮಾಕ್ಷಾರಿತೋ ದೋಷಃ ಪ್ರಾಪ್ನುಯಾತ್ಪೂರ್ವಸಾಹಸಮ್” ಮನುಂ ೮-೩೪೪.

ಸಮ್ಮಿಶ್ರ ಸಂಭಿನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಒಡೆದಿರುವ, ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಮುರಿದಿರುವ. ಸಮ್ + ಮಿಡಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨). “ಸಮ್ಮಿಶ್ರಕಾಂಸ್ಯವದೋಷೋ ನಿರೇತಿ ವದನಾದಯಮ್” । 2. ವಿಹಸಿತವಾದ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅರಳಿರುವ. “ನಿಷಿದ್ಧೇರಪ್ಯೆಭಿರ್ಲಲಿತಮಕರಂದೋ ಮಧುಕರಃ ಕರೇರಿಂದೋ-  
ರಂತಚ್ಛರತ ಇವ ಸಮ್ಮಿಶ್ರಮುಕ್ತುಲಃ” ವೇಣೀಂ ೧-೧. 3. ಇನ್ನೊಂದರೊಡನೆ ಬೆರೆತುಹೋಗಿರುವ, ಇನ್ನೊಂದರೊಡನೆ ಐಕ್ಯವಾಗಿರುವ. “ಸಮ್ಮಿಶ್ರಾಮವಿರಲಯಾತಿಭಿರ್ಮಯುಕ್ತ-  
ನೀಲಾನಾಂ ಭೂಮುಪಮೇಖಲಂ ಮಣಿನಾಮ್” ಕಿರಾಂ ೭-೨೩.

ಸಮ್ಮುತ ಸಂಭೂತ (ವಿಂ) ಹುಟ್ಟಿದ, ಉತ್ಪನ್ನವಾದ. ಸಮ್ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨).

ಸಮ್ಮುತಿ ಸಂಭೂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹುಟ್ಟುವುದು, ಜನ್ಮ. ಸಮ್ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪). “ಚತುರ್ಣಾಮಪಿ ವೇದಾನಾಂ ಸಮ್ಮುತೀಮಿವ ಭಾವಯನ್” ಯಾದಂ ೧೬-೪೨. 2. ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನ, ಹುಟ್ಟುವ ಸ್ಥಳ. “ಭರ್ಮಸ್ಯ ಸಮ್ಮುತಿರಿವಾಗ್ರತಸ್ತೇ ಸಾಂದೀಪಿನೇರಾಶ್ರಮಭೂಮಿರೇಷಾ” ಯಾದಂ ೧೮-೬೨.

ಸಮ್ಮುಖಸಮುತ್ಥಾನ ಸಂಭೂಯಸಮುತ್ಥಾನ (ನಂ) ಒಮ್ಮತದಿಂದ ಒಟ್ಟುಗೂಡಿ ವ್ಯಾಪಾರ (ವಾಣಿಜ್ಯ) ಮಾಡುವುದು, ಜೊತೆಗೂಡಿ ವರ್ತಕತನ ನಡೆಸುವುದು. ಸಮ್ಮುಖ ಮಿಲಿತವಾ ಸಮುತ್ಥಾನಮ್. ಇದು ಹದಿನೆಂಟು ವಿಧ ವಿವಾದಪದಗಳಲ್ಲೊಂದು.



**ಸಮ್ಮತ ಸಂಭೃತ (ವಿಂ)** 1. ಸಂಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಶೇಖರಿಸಿದ ಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೂಡಿಸಿದಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್+ಭೃ (ಭರಣೆ) "ಕ್ತು:" (3-2-102). "ಕಾಯೇನ ವಾಚಾ ಮನಸಾಪಿ ಶಬ್ದತ್ಯತ್ಸಮ್ಮತಂ ವಾಸವರ್ಯಲೋಪಿ" ರಘುಂ 4-4. 2. ಸಂಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊಂದಲ್ಪಟ್ಟ. "ವದನಸೌರಮಲೋಮಪರಿಭ್ರಮದ್-ಭ್ರಮರಸಮ್ಮತಸಮ್ಮತಸೌಮಯಾ" ಮಾಘಂ 6-14. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಧರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್+ಛುಮ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕ್ತು:" (3-2-102).

**ಸಮ್ಮತಿ ಸಂಭೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸುಭಾರ, ಸಾಮಗ್ರಿ, ಉಪಕರಣ, ಸಲಕರಣೆ. ಸಮ್+ಭೃ (ಭರಣೆ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94). "ಚಕಾರಾಮರದತ್ತೋತ್ರ ತದ್ವಿವಾಹಾಯ ಸಮ್ಮತಿಮ್" ಕಥಾಸಂ. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪೋಷಿಸುವುದು. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಧರಿಸುವುದು. 4. ಕೂಡಿಸಿಡುವುದು, ಶೇಖರಿಸಿಡುವುದು.

**ಸಮ್ಮೇದ ಸಂಭೇದ (ಪುಂ)** 1. ಒಡೆಯುವುದು, ತುಂಡು ಮಾಡುವುದು. ಸಮ್+ಮಿಡಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಭವ್" (3-3-100). 2. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಬೆರೆಯುವುದು, ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸೇರುವುದು. "ಸಮೇವ ಹೃಷೋದ್ವಿಗ-ಸಮ್ಮೇದ ಉನತಃ" ಮಾಲತೀಂ 6. 3. ನದಿಗಳ ಸಂಗಮ, ನದಿಗಳು ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಸೇರುವುದು. ಸಮ್ಮಿಶ್ರಂತೆ ಮಿಲಂತು - ಸಮ್+ಮಿಡಿರ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಭವ್" (3-3-101). "ತದ್ವುತ್ಪಿಷ್ಠಃ | ವರದಾಸಿನ್ಧುಸಮ್ಮೇದಮವಗಾಹ ನಗರೀಮೇವ ಪ್ರವಿಶಾವಃ" ಮಾಲತೀಂ 8. 4. ಏಕಾಸ ಹೊಂದುವುದು, ಅರಳುವುದು.

**ಸಮ್ಮೋಗ ಸಂಭೋಗ (ಪುಂ)** 1. ಒಕ್ಕೆಯ ಸೌಖ್ಯವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವುದು. ಸಮ್+ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) "ಭವ್" (3-3-100). 2. ಉಪಯೋಗಿಸುವುದು. "ಸಮ್ಮೋಗೋ ದೃಶ್ಯತೇ ಯತ್ರ ನ ದೃಶ್ಯತಾಗಮಃ ಕ್ವಚಿತ್ | ಆಗಮಃ ಕಾರಣಂ ತತ್ರ ನ ಸಮ್ಮೋಗ ಇತಿ ಸ್ಥಿತಿಃ" ಮನುಂ 6-200. 3. ಸ್ತೋತೃಮಾಗಮ, ರತಿಕ್ರೀಡೆ. "ಸಮ್ಮೋಗಸ್ತೇ ಮಮ ಸಮುಚಿತೋ ಹಸ್ತಸಂವಾಹನಾನಾಮ್" ಮೇಘಂ. 4. ಶೃಂಗಾರರಸದ ಒಂದು ಭೇದ. ಸಮ್+ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋಃ) "ಭವ್" (3-3-100). ಶೃಂಗಾರರಸವು ಸಂಭೋಗಶೃಂಗಾರ ಮತ್ತು ವಿಪ್ರಲಂಬಶೃಂಗಾರಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. [ವಿಪ್ರಲಂಬ ಶೃಂಗಾರಕ್ಕೆ "ವಿಪ್ರಲಂಬ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಸಂಭೋಗ ಶೃಂಗಾರ:** ವಿಲಾಸಿಗಳಾದ ನಾಯಿಕಾ ನಾಯಕರು ಅನೋನ್ಯ ಅನುರಕ್ತರಾಗಿ ದರ್ಶನ ಸ್ಪರ್ಶನಾದಿ ಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸಿ ಭೋಗಪಡುವುದು ಸಂಭೋಗ

ಶೃಂಗಾರ. ಅಧರಪಾನ ಚುಂಬನ ಆಲಿಂಗನ ರತಿಕ್ರೀಡೆ ಇವೆಲ್ಲವೂ ಸಂಭೋಗ ಶೃಂಗಾರದ ಅನುಭವಗಳು. "ದರ್ಶನ-ಸ್ಪರ್ಶನಾದಿನಿ ನಿಷೇವೇತೇ ವಿಲಾಸಿನೌ | ಯತ್ರಾನುರಕ್ತಾವನ್ಯೋನ್ಯ ಸಮ್ಮೋಗೋಽಯಮುದಾಹೃತಃ" || ಚುಂಬನ ಆಲಿಂಗನಾದಿ ಅನೇಕ ಭೇದಗಳಿರುವ ಕಾರಣ ಸಂಭೋಗ ಶೃಂಗಾರದ ಸಂಖ್ಯೆ ಯನ್ನು ಹೇಳಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗುವುದಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದ ಒಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಸಂಭೋಗ ಶೃಂಗಾರವು ಒಂದೇ ವಿಧ ಎಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕು. "ಸಕ್ಷಾತ್ಕಾತುಮಸಂಕಯತಯಾ ಚುಂಬನಪರಿಸಂಭ-ಣಾದಿಬಹುಮೇದಾತ್ | ಅಯಮೇಕ ಏವ ಧೀರಃ ಕಥಿತಃ ಸಮ್ಮೋಗ ಸೃಜ್ಜಾರಃ" ಸಾಂ ದಂ 3-211.

**ಸಂಭೋಗ ಶೃಂಗಾರದ ಉದ್ದೇಶನ ವಿಭಾವ ಗಳು:** ಪಡ್ಯತುಗಳು ಚಂದ್ರ ಸೂರ್ಯರ ಉದಯಾ ಸ್ತಮಯಗಳು ಜಲಕ್ರೀಡೆ ವನವಿಹಾರ ಪ್ರಾಕೃತಕಾಲ ಮಧುಪಾನ ರಾತ್ರಿ ಮೊದಲಾದುವು ಸಂಭೋಗ ಶೃಂಗಾ ರದ ಉದ್ದೇಶನ ವಿಭಾವಗಳು. "ತತ್ರ ಸ್ಥಾದೃತುಷಟ್ಕಂ ಚಂದ್ರಾ-ದಿತ್ಯೌ ತಥೋದಯಾಸ್ತಮಯಃ | ಜಲಕೇಲಿವನವಿಹಾರಪ್ರಮಾತ-ಮಬ್ಜುಪಾನಯಾಮಿನಿಪ್ರಭೃತಿಃ || ಅನುಲೇಪನಮುಖಾಶ್ಚಾ ವಾಚ್ಯಂ ಸುಚಿ ಮೇಷ್ಯಮನ್ಯಚ್ಚ" ಸಾಂ ದಂ 3-212, 13. ವಿಪ್ರ ಲಂಬವಿಲ್ಲದೆ ಸಂಭೋಗ ಶೃಂಗಾರಕ್ಕೆ ಪುಷ್ಟಿಯಿಲ್ಲವಾದುದ ರಿಂದ ಇದೂ ಪೂರ್ವರಾಗಾದಿ ಭೇದಗಳಿಂದ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ವೆಂದು ಕೆಲವರ ಮತ. "ನ ವಿನಾ ವಿಪ್ರಲಂಬೇನ ಸಮ್ಮೋಗಃ ಪುಷ್ಟಿಮಸ್ತುತೇ" | "ಕಥಿತಶ್ಚತುರ್ವಿಧೋಽಸಾವಾನಂತರ್ಯಾಂತು ಪೂರ್ವ-ರಾಗಾದೇಃ" ಸಾಂ ದಂ 3-213. "ಶೂನ್ಯಂ ವಾಸಗೃಹಂ ವಿಲೋಕ್ಯ ಶಯನಾದುತ್ಥಾಯ ಕಿಂಚಿಜ್ಞಾನಃ ನಿद्रಾವ್ಯಾಜಮುಪಾಗತಸ್ಯ ಸುಚಿರಂ ನಿರ್ವೃಷ್ಯ ಪತ್ಯುರ್ಮುಖಮ್ | ವಿಸ್ತೃಣ್ವಂ ಪರಿಚುಮ್ಬ್ಯ ಜಾತಪುಲಕಾ-ಮಾಲೋಕ್ಯ ಗಂಧಸ್ಥಳಿಂ ಲಜ್ಜಾನ್ಮಮುಖೀ ಪ್ರಿಯೇಣ ಹಸತಾ ಬಾಲಾ ಚಿರಂ ಚುಮ್ಬಿತಾ" ||

**ಸಮ್ಮೋಗಿನ್ ಸಂಭೋಗಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಭೋಗಪಡುವವನು, ಸೌಖ್ಯವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವವನು. ಸಮ್ಮೋಗೋಽ-ಸ್ಥಾಸ್ತಿ "ಇತಿಃ" (4-2-114). 2. ವಿಷಯಲಾಲಸ, ಭೋಗದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು, ಇಂದ್ರಿಯ ಸೌಖ್ಯವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು.

**ಸಮ್ಮೋಗ ಸಂಭ್ರಮ (ಪುಂ)** 1. ಸಡಗರ, ಅವಸರ, ಆತುರ, ತರಾತುರಿ. ಸಮ್+ಭ್ರಮ (ಚಲನೆ) "ಭವ್" (3-3-100). "ಅವತೀರ್ಣವಾನ್ ಪ್ರಥಮಮಾತ್ಮನಾ ಹರಿವಿನಯಂ ವಿಶೇಷಯತಿ ಸಮ್ಮೋಗೇನ ಸಃ" ಮಾಘಂ 13-9. 2. ಸುತ್ತುಲೂ ಸುತ್ತು ವುದು, ಸುತ್ತುಲೂ ತಿರುಗುವುದು. 3. ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ. "ಮುಹ್ಯತೇವ ಹಿ ಕೃತ್ಯೇಷು ಸಮ್ಮೋಗಜ್ವಲಿತಂ ಮನಃ" ಕಿರಾಂ 14-2. 4. ಅದರ, ಪ್ರೀತಿ, ಗೌರವ. 5. ಗಾಬರಿ,



ಕಳವಳ. "ಪ್ರತಿಕ್ಷಣಂ ಸಂಭ್ರಮಲೋಲದೃಷ್ಟಿರ್ದೀಪಿತವಿನ್ದೇನ  
ನಿವಾರಯಂತಿ" ಕುಮಾಂ ೩-೫೬ | 6. ಚಟುವಟಿಕೆ. 7.  
ಅಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಲ್ಲದಿರುವುದು.

**ಸಂಭ್ರಾಂತ ಸಂಧ್ಯಾಂಶ** (ವಿಂ) 1. ಗಾಬರಿಗೊಂಡವನು,  
ದಿಗ್ಭ್ರಮೆಹಿಡಿದವನು. ಸಮ್+ಭ್ರಮ (ಚಲನೆ) "ಕ್ಲ:"  
(೩-೪-೭೨) | 2. ಹೆದರಿ  
ದವನು. 3. ಭ್ರಮೆಗೊಂಡವನು, ತಪ್ಪಾಗಿ ತಿಳಿದವನು.

**ಸಂಭ್ರಾಂತಿ ಸಂಧ್ಯಾಂಶ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭ್ರಮೆ, ತಪ್ಪು  
ತಿಳಿವಳಿಕೆ. 2. ಗಾಬರಿ, ಕಳವಳ. ಸಮ್+ಭ್ರಮ (ಚಲನೆ)  
"ಕ್ಲಿನ್" (೩-೩-೯೪) | 3. ಹೆದರಿಕೆ, ಭಯ.

**ಸಮ್ಮತ ಸಮ್ಯಕ್** (ವಿಂ) 1. ಒಪ್ಪಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಂಗೀಕರಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್+ಮನ (ಜ್ಞಾನ) "ಕ್ಲ:" (೩-೨-೧೦೨) |  
"ಸಮಾಹಿತ: ಸಮ್ಮತಮುಢವಾಙೈ: ಪುರೋಹಿತಾಂ ಪೂಜನಮಾಚಾರ  
ಯಾದಂ ೧೩-೭೯ | 2. ಷಷ್ಟವಾದ, ಅಪೇಕ್ಷಿತವಾದ,  
ಪ್ರೀತಿಯ ಪಾತ್ರವಾದ. "ದ್ವೇಷ್ಯೋಽಪಿ ಸಮ್ಮತ: ಶಿಷ್ಟಸ್ತತ್ಸಾ-  
ತಸ್ಯ ಯಥೋಪಧಮ್" ರಘುಂ ೧-೨೮ | 3. ಗೌರವಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರ  
ನಾದ. "ಸಮ್ಮತೋಽಹಂ ಪ್ರಭೋನೀತಿಯಮಿತಿ ಮತ್ವಾ ವ್ಯತಿಕ್ರಮೇತ್ |  
ಕುಚ್ಛೇಷ್ವಪಿ ನ ಮರ್ಯಾದಾಂ ಸ ಭವೇದ್ರಾಜವಲ್ಲಭ:" ಪಶ್ಚತಂ  
೧-೫೯ | 4. ಪರ್ಯಾಯೋಚಿತವಾದ, ವಿಚಾರಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. (ನಂ) 5. ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

**ಸಮ್ಮತಿ ಸಮ್ಯಕ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಪ್ಪಂದ, ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಒಡಂಬಡಿಕೆ.  
ಸಮ್+ಮನ (ಜ್ಞಾನ) "ಕ್ಲಿನ್" (೩-೩-೯೪) | 2. ಗೌರವ,  
ಮರ್ಯಾದೆ, ಮಾನ್ಯತೆ "ಕಥಮಿವ ತವ ಸಮ್ಮತಿರ್ಮವಿಶ್ರೀ  
ಸಮಮೃತುಮಿರ್ಮುನಿನಾವಧೀರಿಸ್ತಸ್ಯ" ಕಿರಾಂ ೧೦-೩೬ | 3.  
ಅಭಿಪ್ರಾಯ, ಅಪೇಕ್ಷೆ. 4. ಅತ್ಯಜ್ಞಾನ. 5. ಅನುಜ್ಞೆ,  
ಅನುಮತಿ. "ಸಮ್ಮತಿವಿಚ್ಛಾನ್ತುಮಯೋ:" ಹೇಮಂ | 6.  
ಪ್ರೀತಿ, ಪ್ರೇಮ.

**ಸಮ್ಪದ ಸಮೃದ್ಧ** (ಪುಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು, ಸಂತೋಷ. ಸಮ್+ಮದಿ  
(ಹಬ್ಬೆ) "ಅಪ್" (೩-೩-೬೮) ನಿಪಾಂ | "ರಣಸಮ್ಮದೋ-  
ದಯವಿಕಾಸಿಬಲಕಲಕಲಾಕುಲೀಕೃತೇ" ಮಾಘಂ ೧೫-೭೭ |  
(ವಿಂ) 2. ಹೆಚ್ಚುವುಳ್ಳ, ಸಂತೋಷವುಳ್ಳ.

**ಸಮ್ಪದ ಸಮೃದ್ಧ** (ಪುಂ) 1. ಯುದ್ಧ, ಕದನ. ಸಮ್ಪದೇಶ  
—ಸಮ್+ಮದ (ಕ್ಷೋಧೆ) "ವಬ್" (೩-೩-೧೨೧) |  
2. ಪರಸ್ಪರ ತಿಕ್ಕಾಟ, —ಉಜ್ಜಾಡುವುದು. "ಯದ್ಗೋಪ್ರತರ-  
ಕಲ್ಪೋಽಮೃತ್ ಸಮ್ಪದೇಶ್ಚ ಮಜ್ಜತಾಮ್" ರಘುಂ ೧೫-೧೦೧ |

**ಸಮ್ಪದ ಸಮೃದ್ಧ** (ನಂ) 1. ಯುದ್ಧ. 2. ಉಜ್ಜಾ  
ಡುವುದು, ತಿಕ್ಕುವುದು. 3. ಚೂರ್ಣ ಮಾಡುವುದು.  
4. ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ಹೀಡಿಸುವುದು, 5. ನಾಶಪಡಿಸು  
ವುದು. 6. ಹಿಂಸಿಸುವುದು.

**ಸಮ್ಮಾದ ಸಮೃದ್ಧ** (ಪುಂ) ಮದ್ಯಪಾನದಿಂದ ಮದವೇರು  
ವುದು. ಕುಡಿತದಿಂದ ಅಮಲೇರುವುದು. ಸಮ್+ಮದ  
(ತೃಪ್ತಿಯೋಗ) "ವಬ್" (೩-೩-೧೮) |

**ಸಮ್ಮಾನ ಸಮೃದ್ಧ** (ಪುಂ) 1. ಗೌರವ, ಮರ್ಯಾದೆ.  
ಸಮ್+ಮಾನ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ವಬ್" (೩-೩-೧೮) | (ನಂ)  
2. ಅಳತೆ. ಸಮ್+ಮಾಙ್ (ಮಾನ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |  
3. ಹೋಲಿಕೆ, ತುಲನೆ.

**ಸಮ್ಮಾನನ ಸಮೃದ್ಧ** (ನಂ) 1. ಗೌರವಿಸುವುದು. 2.  
ಪೂಜಿಸುವುದು. ಸಮ್+ಮಾನ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೮) | 3. ಉಪದೇಶಿಸುವುದು, ವಿದ್ಯೆ ಕಲಿಸು  
ವುದು. ಸಮ್+ಮನ (ಜ್ಞಾನ)+ಗಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೮) |

**ಸಮ್ಮಾನಯತ್ ಸಮೃದ್ಧ** (ವಿಂ) 1. ಗೌರವಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. 2. ಪೂಜಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್+ಮಾನ (ಪೂಜಾಯಾಮ್)  
+ ಗಿಚ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |

**ಸಮ್ಮಾನಿತ ಸಮೃದ್ಧ** (ವಿಂ) 1. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
2. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ಮಾನೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತಚ್"  
(೫-೨-೩೬) | 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಸಮ್ಮಾನ್ಯ ಸಮೃದ್ಧ** (ವಿಂ) 1. ಗೌರವಿಸಲ್ಪಡುವವನು.  
2. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವವನು. ಸಮ್+ಮಾನ (ಪೂಜಾಯಾಮ್)  
"ಘಟ್" (೩-೧-೧೨೪) |

**ಸಮ್ಮಾರ್ಜಕ ಸಮೃದ್ಧ** (ಪುಂ) 1. ಕಸಬರಿಕೆ, ಪೊರಕೆ.  
ಸಮ್ಮಾರ್ಜಯತಿ — ಸಮ್+ಮೃಜು (ಶುದ್ಧಿ) "ಫ್ಲುಟ್"  
(೩-೧-೧೩೩) | (ವಿಂ) 2. ಶುದ್ಧಮಾಡುವವನು,  
ಚೊಕ್ಕಟಮಾಡುವವನು. 3. ಮೈತೊಳೆದು ಶುದ್ಧಮಾಡು  
ವವನು.

**ಸಮ್ಮಾರ್ಜನ ಸಮೃದ್ಧ** (ನಂ) 1. ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು,  
ಕಸ ಗುಡಿಸಿ ಚೊಕ್ಕಟಮಾಡುವುದು. ಸಮ್+ಮೃಜು (ಶುದ್ಧಿ)  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) — ಮಾರ್ಜನಾ — ಮಾರ್ಜನಾ.  
ಸಮ್+ಮೃಜು (ಶಿಶಾಲಕ್ಷಾರಯೋ:) + ಗಿಚ್ "ಯುಚ್"  
(೩-೩-೧೦೭) | 2. ಮೈತೊಳೆದು ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು.

**ಸಮ್ಮಾರ್ಜನ ಸಮೃದ್ಧ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೊರಕೆ. ಸಮ್ಮಾರ್ಜಯತೇನೆನ  
—ಸಮ್+ಮೃಜು (ಶುದ್ಧಿ) ಕರಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) |  
"ಸಮ್ಮಾರ್ಜನೋ ನೂನಮುಢಯಮಾನಾ ಭಾಂತಿ ಸಮೋಚ್ಚ: ಕೇತನಾನಾಂ  
ಪತಾಕಾ:" ಮಾಘಂ ೧೮-೮ |

**ಸಮ್ಮಾರ್ಜಿತ ಸಮೃದ್ಧ** (ವಿಂ) 1. ಗುಡಿಸಿ ಶುದ್ಧಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್+ಮೃಜು (ಶುದ್ಧಿ) "ಕ್ಲ:" (೩-೨-೧೦೨) |  
2. ತೊಳೆದು ಶುದ್ಧಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್+ಮೃಜು (ಶಿಶಾ-  
ಲಕ್ಷಾರಯೋ:) "ಕ್ಲ:" |



ಸಮ್ಮಿತ ಸಮ್ಮಿತ (ವಿಂ) 1. ಒಂದೇ ಅಳತೆಯುಳ್ಳ, ಸಮಾನವಾದ ಅಳತೆಯುಳ್ಳ. ಸಮ್ + ಮಾಡ್ (ಮಾನೇ) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। 2. ಸಮವಾದ, ಸಮಾನವಾದ, ಸದೃಶವಾದ. "ಜನಾಯ ಶುದ್ಧಾಂತರಾಯ ಶಂಸತೇ ಕುಮಾರ-ಜನ್ಮಾಮೃತಸಮ್ಮಿತಾಕ್ಷರಮ್" ರಘುಂ 3-16।

ಸಮ್ಮಿಲಿತ ಸಮ್ಮಿಲಿತ (ವಿಂ) 1. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿರುವ, ಒಂದು ಕಡೆ ಒಂದು ಕಡೆತಿರುವ. ಸಮ್ + ಮಿಲ (ಸಂಕ್ಲಮೇ) + "ಕ್ತ:" (3-4-62)। 2. ಬೆರೆತಿರುವ.

ಸಮ್ಮಿಶ್ರ ಸಮ್ಮಿಶ್ರ (ವಿಂ) 1. ಬೆರೆತಿರುವ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕಲೆತಿರುವ. ಸಮ್ + ಮಿಶ್ರ (ಸಂಯೋಜ್ಞಾ) + ಣಿವ್ "ಅಚ್" (3-1-134)। 2. ಒಂದುಗೂಡಿರುವ, ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ.

ಸಮ್ಮಿಶ್ರಿತ ಸಮ್ಮಿಶ್ರಿತ (ವಿಂ) 1. ಬೆರೆಸಲ್ಪಟ್ಟ, 2. ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಮಿಶ್ರ (ಸಂಯೋಜ್ಞಾ) + ಣಿವ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

ಸಮ್ಮೀಲತ್ ಸಮ್ಮೀಲತ್ (ವಿಂ) ಮುಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಸಂಕೋಚ ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ (ಪುಷ್ಪ). ಸಮ್ + ಮೀಲ (ನಿಮೇಷಣೆ) "ಶತ್" (3-2-124)।

ಸಮ್ಮೀಲನ ಸಮ್ಮೀಲನ (ನಂ) (ಪುಷ್ಪವು) ಸಂಕೋಚ ಹೊಂದುವುದು, ಮುಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಸಮ್ + ಮೀಲ (ನಿಮೇಷಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಸಮ್ಮುಖ ಸಮ್ಮುಖ (ವಿಂ) 1. ಎದುರುಮುಖವಾಗಿರುವ, ಎದುರಾಗಿರುವ. ಸಮ್ಯಕ್ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ। "ದಂತವಾಸಸಿ ಸಮಾನಗುಣಶ್ರೀ: ಸಮ್ಮುಖೋಽಪಿ ಪರಭಾಗಮವಾಪ" ಮಾಘಂ 10-66। (ಅವ್ಯಂ) 2. ಎದುರಾಗಿ, ಅಭಿಮುಖವಾಗಿ. "ಆಧಾವಂತ: ಸಮ್ಮುಖಂ ಧಾರಿತಾನಾಮನ್ಯೇರನ್ಯೇ ತೀಕ್ಷ್ಣಕೋಶಯಕಾ-ಣಾಮ್" ಮಾಘಂ 10-17। (ನಂ) 3. ಅಭಿಮುಖ, ಎದುರು. "ನಾಶಕತ್ ಸಮ್ಮುಖೇ ಸ್ಥಾತುಂ ಕಷ್ಟೋ ಹ್ಯವಿನಯ-ಕ್ರಮ:"। "ಪ್ರತಿಫಲತಿ ಕರೋವೇ ಸಮ್ಮುಖಾವಸ್ಥಿತಾಯಾಂ ರಜತಕಟಕಮಿತೌ ಸಾಂದ್ರಚಂದ್ರಾಂಶುಗೌರಿಯಾಮ್" ಮಾಘಂ 11-46। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜೀಷ್" (4-1-48)। "ಸಂಕ್ಷೇಪಚ್ಚುರಮಿಧಾತು-ಮನೀಶಾ ಸಮ್ಮುಖೀ ನ ಚ ಬಭೂವ ದಿದೃಕ್ಷು:" ಮಾಘಂ 10-41।

ಸಮ್ಮುಖಿನ್ ಸಮ್ಮುಖಿನ್ (ಪುಂ) ಕನ್ನಡಿ, ದರ್ಪಣ. ಸಮ್ಮುಖ-ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114)।

ಸಮ್ಮುಖೀನ ಸಮ್ಮುಖೀನ (ವಿಂ) ಅಭಿಮುಖವಾಗಿರುವ, ಎದುರುಮುಖವಾಗಿರುವ. ಸಮಂ ಚ ತತ್ ಮುಖಂ ಚ— ಸಮ್ಮುಖ: ಸರ್ವಸ್ಯ ಮುಖಸ್ಯ ದರ್ಶನ: "ಽಃ" (4-2-6)। ಸಮಶಬ್ದಸ್ಯ ಅಂತಲೋಪೋ ನಿಪಾಂ। "ಕಾಮಂ ನ ತಿಷ್ಠತಿ ಮದಾನನಸಮ್ಮುಖೀನಾ" ಶಾಕುಂ 1-29।

ಸಮ್ಮುಚ್ಛೇತ್ ಸಮ್ಮುಚ್ಛೇತ್ (ವಿಂ) 1. ಅಧಿಕವಾಗು ತ್ತಿರುವ, ಹೆಚ್ಚಾಗುತ್ತಿರುವ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಮುಚ್ಛಾ (ಮೋಹಸಮುಚ್ಛಾಯಯೋ:) "ಶತ್" (3-2-124)।

• "ಸಮ್ಮುಚ್ಛೇದುಚ್ಛೇಷ್ಠಲಶಾಸ್ತ್ರನಿ:ಸ್ವನ: ಸ್ವನ: ಪ್ರಯಾತೇ ಪಠಹಸ್ಯ ಶಾರ್ಙ್ಗಿಣಿ" ಮಾಘಂ 12-13। 2. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗೂ ಹರಡುತ್ತಿರುವ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ವ್ಯಾಪಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಫನೀಭೂತವಾಗುತ್ತಿರುವ, ಗೆಡ್ಡೆಕಟ್ಟುತ್ತಿರುವ.

ಸಮ್ಮುಚ್ಛೇನ ಸಮ್ಮುಚ್ಛೇನ (ನಂ) 1. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗೂ ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಹರಡುವುದು. ಸಮ್ + ಮುಚ್ಛಾ (ಮೋಹಸಮುಚ್ಛಾಯಯೋ:) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ಮೋಹ, ಅಜ್ಞಾನ. 3. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದುವುದು, ಹೆಚ್ಚಾಗುವುದು, ಅಧಿಕವಾಗುವುದು.

ಸಮ್ಮುಷ್ಠ ಸಮ್ಮುಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಶುದ್ಧಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಮುಷ್ಠ (ಶೌಚಾಲಕ್ಷಾರಯೋ:) "ಕ್ತ:" (3-2-102)। 2. ಶುಚಿಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೊಕ್ಕಟ ವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಶೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕತ್ತಲದಿಂದ ಬೇರ್ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ದ್ರವವಸ್ತು).

ಸಮ್ಮೋದ ಸಮ್ಮೋದ (ಪುಂ) 1. ಹರ್ಷ, ಆನಂದ. ಸಮ್ + ಮುದ (ಹರ್ಷ) "ಘ್" (3-3-10)। 2. ಪ್ರೀತಿ, ವಿಶ್ವಾಸ.

ಸಮ್ಮೋಹ ಸಮ್ಮೋಹ (ಪುಂ) 1. ಅವಿವೇಕ, ಕರ್ತವ್ಯಾಕರ್ತವ್ಯ ವಿವೇಕವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಮಾಡಬೇಕಾದ ಮತ್ತು ಮಾಡ ಬಾರದ ವಿವೇಚನೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಸಮ್ + ಮುಹ (ವೇಚಿತ್ಯೇ) "ಘ್" (3-3-10)। "ಕ್ರೋಧಾಢ್ವವತಿ ಸಮ್ಮೋಹ: ಸಮ್ಮೋ-ಹಾತ್ ಸ್ಮೃತಿವಿಭ್ರಮ:। ಸ್ಮೃತಿಭ್ರಂಶಾದ್ಬುದ್ಧಿನಾಶ: ಬುದ್ಧಿನಾಶಾ-ತ್ಪ್ರಣಶಯತಿ" ಗೀತಾ 2-63। 2. ಪ್ರಜ್ಞೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಯಾವ ಅರಿವೂ ಇಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ತಿಳಿವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಅಜ್ಞಾನ.

ಸಮ್ಮೋಹನ ಸಮ್ಮೋಹನ (ನಂ) 1. ಮಂತ್ರದಿಂದ ಜ್ಞಾನ ತಪ್ಪಿಸುವುದು. ಸಮ್ + ಮುಹ (ವೇಚಿತ್ಯೇ) + ಣಿವ್ "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)। 2. ಮಂತ್ರಧನ ಪಂಚೆ (ಐದು) ಬಾಣ ಗಳೊಂದು. 3. ತಬ್ಬಿಬ್ಬು ಮಾಡುವುದು. 4. ಬುದ್ಧಿಗೆ ಮಂಕು ಹಿಡಿಸುವುದು. (ವಿಂ) 5. ಮಂತ್ರ ಮಾಟ ಗಳಿಂದ ಜ್ಞಾನ ತಪ್ಪಿಸುವ. 6. ಭ್ರಮೆಯುಂಟುಮಾಡುವ. 7. ಮಂಕು ಹಿಡಿಸುವ. ಸಮ್ + ಮುಹ + ಣಿವ್ "ಲ್ಯು:" (3-1-134)।

ಸಮ್ಮೋಹಿತ ಸಮ್ಮೋಹಿತ (ವಿಂ) 1. ಜ್ಞಾನ ತಪ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಮಂಕು ಹಿಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಭ್ರಮೆಯುಂಟುಮಾಡ ಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ಮುಹ (ವೇಚಿತ್ಯೇ) + ಣಿವ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102)।



**ಸಮ್ಯಕ್(ಚ್) ಸಮ್ಯಕ್(ಚ್) (ನಂ) 1.** ಸತ್ಯವಚನ, ಸತ್ಯವಾದ ಮಾತು, ಸಂಗತವಾದ ಮಾತು. ಸಮಚ್ಛತಿ—ಸಮ್+ಅಚ್ಚು (ಗತೌ) “ಕ್ವಿನ್” (೩-೨-೫೯) । “ಸತ್ಯಂ ತಥ್ಯಮೃತಂ ಸಮ್ಯಕ್ ಅಮೃನಿ ತ್ರಿಷು ತದ್ವತಿ” ಅಮಂ । (ವಿಂ) 2. ಸಂಗತವಾದ, ಒಪ್ಪುವಂತಹ. 3. ಮನೋಹರವಾದ, ಸುಂದರವಾದ, ಉತ್ತಮವಾದ. 4. ನಿಜವಾದ, ಯಥಾರ್ಥವಾದ. “ಸಮ್ಯಕ್ ಸ್ವಾತ್ ವಾಚ್ಯಲಿಂಗ್ವಂತು ಮನೋಜಃ ಸಜ್ಜತೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೫) । ಸಮೀची ಸಮೀಚೀ. “ಪ್ರದಾಯ ತಾಮ್ಯಾಮುಪದಾಃ ಸಮೀचीಃ ಪ್ರತ್ಯಾಗತಾಃ ಸ್ವಾನಿ ಗೃಹಾಣಿ ಪೌರಾಃ” ಯಾದಂ ೧೩-೧೦೦ ।

**ಸಮ್ಯಕ್ಚಾರಿತ್ರ ಸಮ್ಯಕ್ಚಾರಿತ್ರ (ನಂ) ಸಂಸಾರ ಬಂಧ** ವೆಂಬ ಕರ್ಮದ ಛೇದನದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯತ್ನಿಸುವ ಪುರುಷನಲ್ಲಿ ಪಾಪಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಇರಬೇಕಾದ ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆ. ಅದು ಅಹಿಂಸಾ ಸುನೃತಮ್ ಅಸ್ತೇಯಮ್ ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಮ್ ಮತ್ಸು ಅಪರಿಗ್ರಹಃ ಎಂದು ಐದು ವಿಧ. ಇದು ಪುರುಷನ ರಾಗದ್ವೇಷರಹಿತ ವಾದ ವರ್ತನೆ. “ಸಮ್ಯಗ್ದರ್ಶನಜ್ಞಾನಚಾರಿತ್ರಾಣಿ ಮೋಕ್ಷಮಾರ್ಗಃ” ತತ್ವಾಂ ಸುಂ ೧-೧ ।

**ಸಮ್ಯಗ್ಜ್ಞಾನ ಸಮ್ಯಗ್ಜ್ಞಾನ (ನಂ) 1.** ಯಥಾರ್ಥಜ್ಞಾನ, ಸತ್ಯವಾದ ಜ್ಞಾನ. ಸಮ್ಯಕ್ ಜ್ಞಾನಮ್ । ನಿಜವಾದ ರಜತದಲ್ಲಿ ಇದು ರಜತವೆಂಬ ಜ್ಞಾನವು ಸಮ್ಯಕ್ಜ್ಞಾನ. 2. (ಬೌದ್ಧ ಮತದಲ್ಲಿ) ಸಮ್ಯಕ್ಜ್ಞಾನವು ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಮ್ ಮತ್ತು ಲೆಂಜ್ಞಿಕಮ್ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. 3. (ಆರ್ಹತಮತದಲ್ಲಿ) ಮತಿಃ ಶ್ರುತಮ್ ಅವಧಿಃ ಮನಃಪರ್ಯಾಯಃ ಕೇವಲಮ್ ಎಂದು ಐದು ವಿಧ. ಇದು ಜಿನೋಕ್ತ ತತ್ತ್ವಗಳ ಯಥಾವತ್ತಾದ ಜ್ಞಾನ.

**ಸಮ್ಯಗ್ದರ್ಶನ ಸಮ್ಯಗ್ದರ್ಶನ (ನಂ) 1.** ಜಿನೋಪದಿಷ್ಟ ವಾದ ದೇವ ಗುರು ಶಾಸ್ತ್ರ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಲ್ಲಿ ಇರುವ ಶ್ರದ್ಧೆ. “ಜಿನೋ ದೇವೋ ಗುರುಃ ಸಮ್ಯಕ್ ತತ್ವಜ್ಞಾನೋಪದೇಶಕಃ । ಜ್ಞಾನದರ್ಶನಚಾರಿತ್ರಾಣ್ಯಪವರ್ಗಸ್ಯ ವರ್ತನಿ” ಸಂ ದಂ ಸಂ । 2. ನಿಜವಾದ ಬ್ರಹ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ. “ಸಮ್ಯಗ್ದರ್ಶನಸಮ್ಯಗ್ಃ ಕರ್ಮಭಿರ್ನ ನಿಬಂಧ್ಯತೇ । ದರ್ಶನೇನ ವಿಹೀನಸ್ತು ಸಂಸಾರಂ ಪ್ರತಿಪದ್ಯತೇ” ಮನುಂ ೬-೭೪ ।

**ಸಮ್ರಾಟ್(ಜ್) ಸಮ್ರಾಟ್(ಜ್) (ಪುಂ) 1.** ಚಕ್ರವರ್ತಿ, ಸಾರ್ವಭೌಮ. (1) ರಾಜಸೂಯ ಯಾಗಮಾಡಿದ ರಾಜ. (2) ದ್ವಂದ್ವ ಶ ರಾಜಮಂಡಲದ ಅಧಿಪತಿ. (3) ಅಷ್ಟ ಯಿಂದ ಎಲ್ಲ ರಾಜರನ್ನೂ ಆಳುವವನು. ಸಮ್ಯಕ್ ರಾಜತೆ — ರಾಜ್ (ದೀಪ್ತೌ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೬೧) । “ಯೇನೇಷ ರಾಜಸೂಯೇನ ಮಂಡಲಸ್ಯೇಶ್ವರಶ್ಚ ಯಃ । ಶಾಸ್ತಿ ಯಶ್ಚಾಜ್ಞಯಾ ರಾಜಃ ಸ ಸಮ್ರಾಟ್” ಅಮಂ । “ಆಸ್ವಾದವದ್ವಿಃ ಕಬಲೇಸ್ತುಣಾನಾಂ

ಕಂಠ್ಯನಂದೇಶನಿವಾರಣೇಶ್ಚ । ಅವ್ಯಾಹತಃ ಸ್ವರಗತಃ ಸ ತಸ್ಯಾಃ ಸಮ್ರಾಟ್ ಸಮಾರಾಧನತತ್ಪರೋಽಸ್ಮತ್” ರಘುಂ ೨-೫ । 2. ಅಗ್ನಿ. 3. ಇಂದ್ರ. 4. ವಿಷ್ಣು. 5. ಸೂರ್ಯ. “ಸಮ್ರಾಜೋಽಗ್ನಿಂ ದ್ವಿವಿಷ್ಣುರ್ಕಾ ಯಶ್ಚ ಸ್ವಾನ್ಮಂಡಲೇಶ್ವರಃ । ರಾಜಸೂಯೇನ ಯೇನೇಷ ರಾಜಃ ಶಾಸ್ತಾಜ್ಞಯಾ ಚ ಯಃ” ನಾನಾರ್ಥರಂ ।

**ಸಯೋನಿ ಸಯೋನಿ (ಪುಂ) 1.** ಇಂದ್ರ. ಯೋನಿಮಿಃ ಸಹ ವರ್ತತೇ । (ವಿಂ) 2. ಸಮಾನವಾದ ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನವುಳ್ಳ, ಒಂದೇ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ. 3. ಚಿಮುಟ, ಚಿಮುಟ ದಂತಿರುವ ಕತ್ತರಿ.

**ಸರ ಸರ (ಪುಂ) 1.** ಗಮನ, ಚಲನೆ, ನಡೆಯುವುದು, ಹೋಗುವುದು. ಸ್ (ಗತೌ) “ಅಚ್” । 2. ದಧ್ಯಗ್ರ, ಮೊಸರಿನ ಮೇಲಿನ ಕೆನೆ. “ಸರೋ ದಧ್ಯಗ್ರಗತ್ಯೋನಿ” ಮೇದಿಂ । 3. ಶರ, ಬಾಣ. “ಸರೋ ದಧ್ಯಗ್ರಸಾಯಕೌ” ಹೇಮಂ । (ಪುಸ್ತಕೀಂ) 4. ನದಿಯ ಪ್ರವಾಹ. 5. ಲವಣ, ಉಪ್ಪು. 6. ಹಾರ, ಕಂಠಾಭರಣ. “ಅಯಂ ಬಾಹುಃ ಕಂಠೇ ಶಿಶಿರಮಸೃಣೋ ಮೌಕ್ತಿಕಸರಃ ಕಿಮಸ್ಯಾ ನ ಪ್ರೇಯೋ ಯದಿ ಪರಮಸಹ್ಯಸ್ತು ವಿರಹಃ” ಉಂ ರಾಂ ೧-೩೮ । (ನಂ) 7. ಜಲ, ನೀರು. 8. ಸರೋವರ. (ವಿಂ) 9. ಚಲಿಸುವವನು, ಹೋಗುವವನು. 10. ಮದ್ಯವನ್ನು ತಯಾರಿಸಲು ಬೇಕಾದ ವಸ್ತುಗಳು.

**ಸರಕ ಸರಕ (ಪುಸ್ತಕೀಂ) 1.** ಮದ್ಯದ ಪಾತ್ರೆ. ಸ್ (ಗತೌ) “ವುನ್” (ಉಂ ೫-೩೫) । 2. ಮದ್ಯಪಾನ. “ಪ್ರಾಪಿ ಚೇತಸಿ ಸವಿಪ್ರತಿಸಾರೇ ಸುಭುವಾಮವಸರಃ ಸರಕೇಣ” ಮಾಧಂ ೧೦-೨೦ । 3. ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. 4. ಒಂದೇ ನೇರವಾಗಿ ಹೋಗುವ (ರಸ್ತೆ) ಪ್ರಯಾಣಿಕರ ಸಾಲು. “ಸರಕೋಽಸ್ತೀ ಶಿಥುಪಾನೇ ಶಿಥುಪಾನೇಶಶಿಥುನೋಃ । ಅಚ್ಚಿತ್ತಾಽವಗಪಚ್ಚತೌ ಚ” ಮೇದಿಂ । (ನಂ) 5. ಗಮನ, ಹೋಗುವುದು, ಚಲಿಸುವುದು. 6. ಸರೋವರ. (ಪುಂ) 7. ಎರಡು ವೈಶ್ವ, ಹಗಲು ಗಿಡ. “ಉರಣ್ಡೇ ಕರಕಂತ್ವಸ್ತೀ ಶಿಥೌ ತತ್ಪಾತ್ರಪಾನಯೋಃ” ನಾನಾರ್ಥರಂ । (ವಿಂ) 8. ಗಮನಸ್ಪೃಹಾವ ದವನು. ಸ್ (ಗತೌ) “ವುನ್” (೩-೧-೧೪೯) ।

**ಸರಥಾ ಸರಥಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜೇನುಹುಳ.** ಸರಂ ಗತಿಮನ್ತಂ ಪಾತಯತಿ—ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) “ಛಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೧೦೧) । “ಮಲ್ಲಾಪವರ್ಜಿತೇಸ್ತೇಷಾಂ ಶಿರೋಭಿಃ ಶಮಶ್ರುಲೈರ್ಮಹೀಮ್ । ತಸ್ತಾರ ಸರಥಾವ್ಯಾಪ್ತಃ ಸ ಕ್ಷೌದ್ರಪಟಲೇರಿವ” ರಘುಂ ೪-೬೩ ।

**ಸರತ್ ಸರತ್ (ಪುಂ) 1.** ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 2. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಸ್ (ಗತೌ) “ಅಟಿಃ” (ಉಂ ೧-೧೩೧) । “ಸರತ್ ವಾತಮೇಧಯೋಃ । 3. ಕೃಕಲಾಸ, ಓತಿಕೇತ.



ಸರಟ ಸರಟಿ (ಪುಂ) ಕೃಕಲಾಸ, ಓತಿಕೇತ, ಹೆಂಟೆಗೊಡ್ಡ.  
ಸರತಿ—ಸೃ (ಗತೌ) “ಅಟನ್” (ಉಂ ೪-೮೧)। “ಲೂತಾ-  
ಹಿಸರಟಾನಾಂ ಚ ತಿರಶ್ವಾಂ ಚಾಂಬುಚಾರಿಣಾಮ್। ಹಿಲಾಣಾಂ ಚ  
ಪಿಶಾಚಾನಾಂ ಸ್ತೇನೋ ವಿಪ್ರಃ ಸಹಸ್ರಶಃ” ಮನುಂ ೧೨-೫೭।

ಸರಟಿ ಸರಟಿ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 2. ಮೇಘ,  
ಮೋಡ.

ಸರಣ ಸರಣಿ (ನಂ) 1. ಗಮನ, ನಡೆಯುವುದು, ಹೋಗು  
ವುದು. ಸೃ (ಗತೌ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। 2. ಲೋಹ  
ಮಲ, ಕಬ್ಬಿಣದ ಧೂಳು. (ವಿಂ) 3. ಗಮನಸ್ವಭಾವದ,  
ನಡೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಸೃ (ಗತೌ) “ಯುಕ್” (೩-೨-೧೫೦)।  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಸರಣಾ—ಸರಣಾ. ಮುಳ್ಳುಗಸೆ ಗಿಡ.

ಸರಣಿ ಸರಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಾರ್ಗ, ದಾರಿ. ಸರಣಿನಯಾ—ಸೃ  
(ಗತೌ) “ಅನಿಃ” (ಉಂ ೨-೧೦೨)। 2. ಪಜ್ಜೆ, ಸಾಲು.  
“ಸರಣಿಃ ಪಡ್ವತೌ ಮಾರ್ಗೇ ಚ” ಮೇದಿಂ। 3. ಮುಳ್ಳುಗಸೆ  
ಗಿಡ. ವಾ “ಜಿಷ್” (ಗಂ ೪-೧-೪೫)। ಸರಣಿ ಸರಣಿ.

ಸರಣಿ ಸರಣಿ (ಪುಂ) 1. ಕೃಕಲಾಸ, ಓತಿಕೇತ. 2. ಧೂತ.  
3. ವಿಷಯಾಲಾಸ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿ, ಕಾಮುಕ. 4. ಪಕ್ಷಿ,  
ಹಕ್ಕಿ. 5. ಒಂದು ವಿಧ ಅಭರಣ. “ಸರಣಿ ಸ್ತು ಕೃಕಲಾಸೇ  
ಭೂಷಣಾಂತರಭೂತಯೋಃ” ಹೇಮಂ।

ಸರಣ್ಯು ಸರಣ್ಯು (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 2. ವಾಯು,  
ಗಾಳಿ. ಸೃ (ಗತೌ) “ಅನ್ಯುಕ್” (ಉಂ ೩-೮೧)। “ಸರಣ್ಯು-  
ಮೇವಾತಯೋಃ” ಸಿಂ ಕೌಂ। “ಸರಣ್ಯುಸ್ತು ಪುಮಾನ್ ವಾರಿವಾಹೇ  
ಸ್ಯಾನ್ಮಾತರಿಶ್ವನಿ” ಮೇದಿಂ। 3. ಜಲ, ನೀರು. 4. ವಸಂತ  
ಋತು. 5. ಅಗ್ನಿ.

ಸರತ್ ಸರತ್ (ವಿಂ) ಹೋಗುತ್ತಿರುವ, ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ. ಸೃ (ಗತೌ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)।

ಸರಮಾ ಸರಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ನಾಯಿ. 2. ದೇವತೆ  
ಗಳ ನಾಯಿ. ಸರತಿ—ಸೃ (ಗತೌ) “ಅಮಃ” ಬಾಹುಂ।  
3. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸಿ, ವಿಭೀಷಣನ ಪತ್ನಿ. ಇವಳು ಅಶೋಕ  
ವನದಲ್ಲಿದ್ದ ಸೀತಾದೇವಿಗೆ ಆಗಾಗ್ಗೆ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರ ಕುಶಲ  
ವೃತ್ತಾಂತವನ್ನು ತಿಳಿಸುತ್ತ ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸುತ್ತಿದ್ದಳು.  
“ಸರಮಾ ಕುಕ್ಕುರೀ ದೇವಶುನ್ಯೋಃ ಸ್ಯಾದ್ರಾಕ್ಷಸೀಮಿದಿ” ಮೇದಿಂ।

ಸರಯು ಸರಯು (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಸರತಿ—ಸೃ  
(ಗತೌ) “ಅಯುಃ” (ಉಂ ೩-೨೨)। (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಯುಃ—ಯುಃ,  
—ಯುಃ—ಯುಃ. 2. ಸರಯು ನದಿ. ಇದು ಅಯೋಧ್ಯಾ  
ನಗರದ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ಪ್ರವಹಿಸುವುದು. “ಶಾಂತಾಕುಟುಂಬಿನಂ  
ಸಂಬಂಧಿನಂ ಮುನಿಮಾನೀಯ ವಸಿಷ್ಠಾದಿಷ್ಠಮಶ್ವಮೇಧಾಘ್ವರಂ ಸರಯು-  
ರೋಧಸಿ ವಿಧಾಯ ಪುತ್ರಿಯಾಮಿಷ್ಠಿ ಕರ್ತುಮಾರಭತ” ಚಂ ರಾಂ।

ಸರಲ ಸರಲ (ಪುಂ) 1. ಸರಳವೃಕ್ಷ, ಸರಳ ದೇವದಾರು  
ವೃಕ್ಷ. ಸರತಿ—ಸೃ (ಗತೌ) “ಕಲಕ್” (ಉಂ ೧-೧೦೮)।  
“ಕಪೋಲಕಣ್ಡಃ ಕರಿಭಿವಿವೇತುಂ ವಿವಿಧಿತಾನಾಂ ಸರಲದ್ರುಮಾಣಾಮ್”  
ಕುಮಾಂ ೧-೯। 2. ಅಗ್ನಿ. (ವಿಂ) 3. ಡೊಂಕಾಗಿಲ್ಲದೆ  
ನೇರವಾಗಿರುವ. 4. ಉದಾರವಾದ, ಧಾರಾಳ ಸ್ವಭಾವದ.

ಸರಲದ್ರವ ಸರಲದ್ರವ (ಪುಂ) ಸರಳವೃಕ್ಷದ ರಸ, ಹಾಲು  
ಮಾಡ್ಡಿ. ಸರಲಸ್ಯ ದ್ರವಃ।

ಸರಲಾ ಸರಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಂಪು ತಿಗಡೆ.

ಸರಸ್ ಸರಸ್ (ನಂ) ಸರೋವರ, ಕೊಳ. ಸ್ಥಿತೀ —ಸೃ  
(ಗತೌ) “ಅಸುನ್” (ಉಂ ೪-೧೮೯)। “ಉನ್ನಿಧ್ರಪ್ರಿಯಕ-  
ಮನೋರಮಂ ರಮಯಾಃ ಸರೇಜೇ ಸರಸಿ ವಪುಃ ಪ್ರಕಾಶಮೇವ” ಮಾಘಂ  
೮-೨೮।

ಸರಸ ಸರಸ (ನಂ) 1. ಸರೋವರ, ಕೊಳ. ರಸೇನ ಸಹ  
ವರ್ತತೇ। (ವಿಂ) 2. ರಸವತ್ತಾದ, ರುಚಿಯುಳ್ಳ, ಸವಿಯಾಗಿ  
ರುವ, ಸ್ವಾರಸ್ಯವಾದ. “ಕವಿತಾ ಕೋಮಲವನಿತಾ ಆಯಾತಾ  
ಸುಖದಾಯಿಕಾ। ಬಲಾದಾನೀಯಮಾನಾ ಸಾ ಸರಸಾ ವಿರಸಾ  
ಭವೇತ್”। 3. ರಸದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 4. ಒದ್ದೆಯಾದ,  
ತೇವವಾಗಿರುವ. “ಸರಸನಕ್ಷಪದಾಂತರ್ದೇಶಪ್ರಮೋಕಮ್”  
ಮಾಘಂ ೧೧-೫೪। 5. ಬೆವರಿರುವ, ಬೆವರು ಸುರಿಯು  
ತ್ತಿರುವ. “ತಂ ವೀಕ್ಷ್ಯ ವೇಪಥುಮತೀ ಸರಸಾ ಜ್ವಲಂತಿಕ್ಷೇಪಣಾಯ  
ಪದಮದ್ವತಮುಹುಂತೀ” ಕುಮಾಂ ೫-೮೫। 6. ಮನೋಹರ  
ವಾದ, ಸುಂದರವಾದ. 7. ನೂತನವಾದ, ಹೊಸದಾದ.  
8. ಶೃಂಗಾರಾದಿ ರಸಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಸರಸಿಜ ಸರಸಿಜ (ನಂ) ಪದ್ಮ, ಕೆಮಲ, ತಾವರೆ. ಸರಸಿ  
ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) “ಜಃ” (೩-೨-೯೭)।  
“ಸರಸಿಜಮನುವಿದ್ವಂ ಶೇವಲೇನಾಪಿ ರಮ್ಯಂ ಮಲಿನಮಪಿ ಹಿಮಾಂಶೋಃ  
ಲಕ್ಷಮ ಲಕ್ಷ್ಮೀ ತನೋತಿ” ಶಾಕುಂ ೧-೧೭।

ಸರಸೀ ಸರಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೊಡ್ಡ ಸರೋವರ, ಕೊಳ. ಮಹತ್  
ಸರಃ—ಗೌರಾಂ “ಜಿಷ್” (೪-೧-೪೧)। “ತೇ ಜಗ್ಮುರಾದ್ರ-  
ಪತಯಃ ಸರಸೀವಿಗಾಡುಮಾಕ್ಷಿಪ್ತಕೇತುಕುಶಸೇನ್ಯಗಜಚ್ಛಲೇನ”  
ಮಾಘಂ ೫-೩೧।

ಸರಸೀಹ ಸರಸೀಹ (ನಂ) ಕೆಮಲ, ತಾವರೆ. ಸರಸ್ಯಾಂ  
ರೋಹತಿ—ಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೫)।

ಸರಸ್ವತ್ ಸರಸ್ವತ್ (ಪುಂ) 1. ಸಾಗರ, ಸಮುದ್ರ. ಸರೋ  
ಜಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಪ್” (೫-೨-೧೫)। “ಸಮಂ ಸಮಂತತೋ  
ರಾಜಾಮಾಪತಂತೀ ರನೀಕಿನೀಃ। ಕಾರ್ಣಿಃ ಪ್ರತ್ಯಗ್ರಹೀದೇಕಃ  
ಸರಸ್ವಾನಿವ ನಿಮ್ನಗಾಃ” ಮಾಘಂ ೧೯-೧೦। 2. ಒಂದು  
ನದಿ, ಗಂಡುಹೆಣ್ಣು. (ವಿಂ) 3. ರಸಿಕ, ರಸಾನುಭವ



ಪಡೆಯುವವನು. "ಸರಸ್ವಾಶ್ಚ ನದೇ ಚಾಖ್ಯಾ ಮಾನ್ಯವದ್ರಸಿಕೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಸರಸ್ವತೀ ಸರಸ್ವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಾಹು, ಮಾತು, ಉತ್ತ. ಸರೋಸ್ತಯಸ್ಯಾ: "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪) । "ಉಚ್ಚಾರ ಪುರಸ್ತಸ್ಯ ಗುಡರೂಪಾ ಸರಸ್ವತೀ" ರಘುಂ ೧೪-೪೬ । 2. ವಾಗ್ಧಿ ದೇವತೆ, ವಿದ್ಯಾಧಿ ದೇವತೆ, ಬ್ರಹ್ಮನ ಪತ್ನಿ. "ಕರಬದರ- ಸದೃಶಮಖಿಲಂ ಭುವನತಲಂ ಯತ್ರಸಾದತ: ಕವಯ: । ಪಶ್ಯಂತಿ ಸುಷಮಮತಯ: ಸಾ ಜಯತಿ ಸರಸ್ವತೀ ದೇವೀ" । "ಧಾತುಶ್ಚತುರ್ಮುಖೀ- ಕಂಠಶ್ಚಕ್ಷಾರಕವಿಹಾರಿಣಿಮ್ । ನಿಯಂ ಪ್ರಗಲ್ಬವಾಚಾಲಾ- ಮುಪತಿಷ್ಠೇ ಸರಸ್ವತೀಮ್" । 3. ಒಂದು ನದಿ. 4. ಉತ್ತಮ ಹೆಂಗಸು, ಸ್ತ್ರೀರತ್ನ. 5. ಮನುವಿನ ಪತ್ನಿ. 6. ಗೋವು, ಹೆಸು. 7. ನದಿ. "ವಾಣೀ ಸ್ತ್ರೀರತ್ನವಾಗ್ಧೇವೀಗೋನದೀಷು ನದೀಮಿಹಿ । ಮನುಪತ್ನಿಯಾಮಪಿ" ಮೇದಿಂ । 8. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

ಸರಸ್ವತೀವಲ್ಲಭ ಸರಸ್ವತೀವಲ್ಲಭ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಸರಸ್ವತಿಯಾ ವಲ್ಲಭ: । "ಸರಸ್ವತೀವಲ್ಲಭ- ವಕ್ಷತ್ರಸಮ್ಮವೋ ಮಹಾಮನಾ: ಪೂರ್ಣಮನೋರಥೋಽಮೃತ್" ಯಾದಂ ೧೪-೪೫ ।

ಸರಾ ಸರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನದಿಯು ಪ್ರವಾಹ. 2. ಚಲನೆ.

ಸರಾವ ಸರಾವ (ಪುಂ) ಶರಾವ, ಶ್ರಾವೆ, ಮುಚ್ಚಳ. ಸರಾತ್ ಸರಣಾದವತಿ — ಅವ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।

ಸರಿ ಸರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನದಿಯು ಪ್ರವಾಹ.

ಸರಿತ್ ಸರಿತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನದಿ, ಹೊಳೆ. ಸರಿತಿ — ಸ್ (ಗತೌ) "ಇತಿ:" (೩ಂ ೧-೯೯) । "ಗಜಪತಿರ್ದಯಸೀರಪಿ ಹೈಮನಸ್ತುಹಿನಯನ್ ಸರಿತ: ಪೃಥತಾಂ ಪತಿ:" ಮಾಘಂ ೬-೪೫ । 2. ಸೂತ್ರ, ದಾರ. 3. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

ಸರಿತ್ಪತಿ ಸರಿತ್ಪತಿ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಸರಿತಾಂ ಪತಿ: । "ವರ್ಮಸ್ಯ ವಾಸಾ: ಪ್ರಥಿತಾ: ಪೃಥಿವ್ಯಾಂ ಸರಿತ್ಪತೌ ಗೋಷ್ಪದವದ್ಭವಂತಿ" ಯಾದಂ ೧೮-೧೧೮ । ಸರಿತಾಂ ಪತಿರ್ವಾ । —ನಾಥ: —ನಾಥ:

ಸರಿತ್ಸುತ ಸರಿತ್ಸುತ, —ಸುತು —ಸೂನು (ಪುಂ) ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯ. ಸರಿತ: ಗಜ್ಜಾಢಾ: ಸುತ: ಸುತುರ್ವಾ ।

ಸರಿಧರಾ ಸರಿಧರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನದಿಗಳಲ್ಲಿ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಗಂಗಾನದಿ ಸರಿತ್ಸು ವರಾ ಶ್ರೇಷ್ಠಾ ।

ಸರಿಮನ್ ಸರಿಮನ್ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಸರಿತಿ — ಸ್ (ಗತೌ) "ಇಮನಿಚ್" (೩ಂ ೪-೧೪೭) । 2. ಗಮನ, ನಡೆಯುವುದು.

ಸರಿಷಪ ಸರಿಷಪ (ಪುಂ) ಸರ್ಪಪ, ಸಾಸುಪ.

ಸರೀ ಸರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನದಿಯು ಪ್ರವಾಹ. ಸರಿತಿ — ಸ್ (ಗತೌ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೭) । "ಜಿಷ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫) । 2. ಜಲಪಾತ.

ಸರೀಸುಪ ಸರೀಸುಪ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಕುಟಿಲಂ ಸರ್ಪತಿ — ಸ್ಪಲ್ಟ (ಗತೌ) "ಯಜ್" (೩-೧-೨೩) । "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । ಯಜೋ ಲುಕ್ (೨-೪-೭೪) । (ವಿಂ) 2. ಚಲಿಸುವ, ಸಂಚರಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ.

ಸರು ಸರು (ಪುಂ) 1. ಖಡ್ಗದ ಮುಷ್ಟಿ, ಕತ್ತಿಯ ಹಿಡಿ. (ವಿಂ) 2. ತೆಳ್ಳಗಿರುವ, ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿರುವ.

ಸರೂಪ ಸರೂಪ (ವಿಂ) 1. ಸಮಾನವಾದ ರೂಪವುಳ್ಳ, ಸದೃಶವಾದ. ಸಮಾನಂ ರೂಪಂ ಯಸ್ಯ । "ಅಥೋರಗಾಹ್ಯಸ್ಯ ಪುರಸ್ಯ ನಾಥಂ ದೌವಾರಿಕಾ ದೇವಸರೂಪಮೇತ್ಯ" ರಘುಂ ೬-೪೯ । 2. ಸಮಾನವಾದ ಅನುಪೂರ್ವಿಯುಳ್ಳ ಶಬ್ದ ಪ್ರತ್ಯಯ ಮೊದಲಾದುವು. "ಸರೂಪಾಣಾಮೇಕಶೇಷ ಏಕವಿಭಕ್ತೌ" ಪಾಂ ಸುಂ ೧-೨-೬೪ ।

ಸರೂಪತಾ ಸರೂಪತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಮಾನತೆ, ಸಾದೃಶ್ಯ. ಸರೂಪಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) ।

ಸರೋಜ ಸರೋಜ (ನಂ) 1. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ. ಸರಸಿ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾದುಮವಿ) "ಜ:" (೩-೧-೯೭) । "ದಲಿತದಲಕಪಾಟ: ಷಟ್ಪದಾನಾಂ ಸರೋಜೇ ಸರಭಸ ಇವ ಗುಪ್ತಿ- ಸ್ಫೋಟಮರ್ಕ: ಕರೋತಿ" ಮಾಘಂ ೧೧-೬೦ । (ವಿಂ) 2. ಸರೋವರದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

ಸರೋಜನ್ಮನ್ ಸರೋಜನ್ಮನ್ (ನಂ) 1. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ. ಸರಸಿ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ । (ವಿಂ) 2. ಸರೋವರದಲ್ಲಿ ಜನ್ಮ ತಾಳಿದ, ಕೊಳದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

ಸರೋಜಿನ್ ಸರೋಜಿನ್ (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮ, ಕಮಲದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿ ದವನು. ಸರೋಜಮುತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ ।

ಸರೋಹ ಸರೋಹ (ನಂ) ಪದ್ಮ, ಕಮಲ, ತಾವರೆ. ಸರಸಿ ರೋಹತಿ — ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧) ।

ಸರೋಹ ಸರೋಹ (ನಂ) ಪದ್ಮ, ಕಮಲ, ತಾವರೆ. ಸರಸಿ ರೋಹತಿ — ರಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಕ:" (೩-೧-೨೩೬) । "ಅನ್ಯುನಂ ಗುಣಮಮೃತಸ್ಯ ವಾರಯಂತಿ ಸಂಫುಲ್ಲಸ್ಫುರಿಸರೋಹಾ- ವತಂಸಾ" ಮಾಘಂ ೮-೪೨ ।

ಸರೋವರ ಸರೋವರ (ನಂ) ಸರಸ್ಸು, ಕೊಳ.

ಸರ್ಕ ಸರ್ಕ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 2. ಮನಸ್ಸು.

ಸರ್ಗ ಸರ್ಗ (ಪುಂ) 1. ಸೃಷ್ಟಿ, ನಿರ್ಮಾಣ, ಉತ್ಪತ್ತಿ. ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) "ವಜ್" (೩-೩-೧೮) । "ಅಸ್ಯಾ: ಸರ್ಗವಿಧೌ



ಪ್ರಜಾಪತಿರಭೂತ್ ಚಂದ್ರೋ ನು ಕಾಂತಿಪ್ರದಃ ಸೃಜ್ಞಾರೇಕರಸಃ ಸ್ವಯಂ  
ನು ಮದನೋ ಮಾಸೋ ನು ಪುಷ್ಪಾಕರಃ" ವಿಕ್ರಂ ೧-೧೦ |  
2. ಸ್ವಭಾವ. 3. ನಿಶ್ಚಯ, ನಿರ್ಧಾರ. "ಗೃಹಾಣ ಶಸ್ತ್ರಂ  
ಯದಿ ಸರ್ಗಂ ಏಷ ತೇ ನ ಖಲ್ವನಿರ್ಜಿತೃ ರಘು ಕೃತೋ ಭವಾನ್"  
ರಘುಂ ೩-೪೧ | 4. ನಿರ್ಮೋಕ್ಷ, ವಿಸರ್ಜನೆ. "ರಾಜಮಾರ್ಗಂ  
ಗವಾಂ ಮಧ್ಯೆ ಧಾನ್ಯಮಧ್ಯೆ ಚ ವರ್ಮಿಣಃ | ನೋಪಸೇವಂತಿ ರಾಜೇಂದ್ರ  
ಸರ್ಗಂ ಸೂತ್ರಪುರೀಷಯೋಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ ೧೬೨-೩೪ | 5. ಗ್ರಂಥದ  
ಒಂದು ಭಾಗ. 6. ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿ. "ತಿಸ್ಮಿನ್ ಸ್ವಮ-  
ವಸ್ಥಾಭಿಃ ಮಹಿಮಾನಮುದೀರಯನ್ | ಪ್ರಲಯಸ್ಥಿತಿಸರ್ಗಣಾಮೇಕಃ  
ಕಾರಣತಾಂ ಗತಃ" ಕುಮಾಂ ೨-೬ | 7. ಅಂಗೀಕಾರ, ಸಮ್ಮತಿ,  
ಒಪ್ಪಿಗೆ. 8. ಮೋಹ. 9. ಉತ್ಸಾಹ. 10. ತೃಪ್ತಿಸು  
ವುದು, ಬಿಟ್ಟು ಬಿಡುವುದು. "ಸರ್ಗಸ್ತ್ಯಾಗಸ್ವಭಾವಯೋಃ |  
ಽಂತಃಸಾಹೇ ನಿಶ್ಚಯೇಷ್ಯಾಯೇ ಮೋಹಾನುಮತಿಸೃಷ್ಟಿಭು" ಹೇಮಂ |  
ಸರ್ಗಬಂಧ ಸರ್ಗಬಂಧ (ಪುಂ) ಮಹಾಕಾವ್ಯ, ಮಹಾಕಾವ್ಯ  
ಲಕ್ಷಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ ಎಂಟುಕೃತಲೂ ಅಧಿಕ ಸರ್ಗಗಳಿಂದ  
ರಚಿತವಾದ ಕಾವ್ಯ. ಸರ್ಗವ್ಯಾಯುಃ ಬಂಧೋ यस್ಯ | ಮಹಾ  
ಕಾವ್ಯ ಲಕ್ಷಣಃ ಮಹಾಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ದೇವತೆ ಅಥವಾ  
ಸತ್ಕುಲಪ್ರಸೂತನಾಗಿ ಧೀರೋದಾತ್ತಗುಣಗಳಿಂದ  
ಕೂಡಿದ ಕ್ಷತ್ರಿಯನು ನಾಯಕನಾಗಿರಬೇಕು. ಶೃಂಗಾರ  
ವೀರ ಶಾಂತ ರಸಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ರಸವು ಪ್ರಧಾನವಾಗಿಯೂ  
ಇತರ ಎಲ್ಲಾ ರಸಗಳೂ ಅಂಗರಸಗಳಾಗಿಯೂ ಇರಬೇಕು.  
ನಾಟಕದ ಎಲ್ಲಾ ಸಂಧಿಗಳೂ ಇತಿಹಾಸಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ  
ಅಥವಾ ಸತ್ಪುರುಷರ ಸಂಬಂಧವಾದ ಇತಿವೃತ್ತವೂ ಇರ  
ಬೇಕು. ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಅಶೀರೂಪ ನಮಸ್ಕಾರರೂಪ  
ಅಥವಾ ವಸ್ತುನಿರ್ದೇಶರೂಪವಾದ ಮಂಗಳಾಚರಣೆ  
ಯಿರಬೇಕು. ಪ್ರತಿಸರ್ಗದಲ್ಲೂ ಪ್ರಾರಂಭದ ಒಂದೇ  
ವೃತ್ತದ ಶ್ಲೋಕಗಳಿದ್ದು ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಬೇರೆ ಛಂದಸ್ಸಿನ  
ವೃತ್ತವೂ ಇರಬೇಕು. "ಸರ್ಗಬಂಧೋ ಮಹಾಕಾವ್ಯಂ ತತ್ರೇಕೋ  
ನಾಯಕಃ ಸುರಃ | ಸದೃಶಶಕ್ತಿಯೋ ವಾಪಿ ಧೀರೋದಾತ್ತ-  
ಗುಣಾನ್ವಿತಃ || ಸೃಜ್ಞಾರವೀರಶಾಂತಾನಾಮೇಕೋಽಜ್ಞೀ ರಸ ಇಷ್ಯತೇ |  
ಅಜ್ಞಾನಿ ಸರ್ವೇಽಪಿ ರಸಾ ಸರ್ವೇ ನಾಟಕಸಂವಯಃ || ಇತಿಹಾಸೋದ್ಭವ  
ವೃತ್ತಮನ್ಯಥಾ ಸಜ್ಜನಾಶ್ರಯಮ್ | ಆದೌ ನಮಸ್ಕ್ರಿಯಾಶೀರ್ವ  
ವಸ್ತುನಿರ್ದೇಶ ಏವ ವಾ || ಏಕವೃತ್ತಮಯಃ ಪದೇಶವಸಾನೇಜ್ಯವೃತ್ತಕಃ |  
ನಾತಿತ್ವಲ್ಪಾ ನಾತಿರ್ದೀರ್ಘಾಃ ಸರ್ಗಾ ಅಷ್ಟಾಧಿಕಾ ಇಹ" ಸಾಂ  
ದಂ ೬ | ದಂಡಿಯ ಕಾವ್ಯದರ್ಶದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ವಿಶೇಷ  
ಲಕ್ಷಣಃ ನಗರ ಅರ್ಣವ ಶೈಲ ಮತು ಸೂರ್ಯ  
ಚಂದ್ರರು ಉದ್ಯಾನ ಜಲಕ್ರೀಡೆ ಮದ್ಯಪಾನ ಸುರತೋ  
ತ್ಸವ ವಿಪ್ರಲಂಭ ವಿವಾಹ ಪುತ್ರೋತ್ಸವ ಇತ್ಯಾದಿ  
ವರ್ಣನೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರಬೇಕು. "ಸರ್ಗಬಂಧೋ ಮಹಾಕಾವ್ಯ-

ಮುಚ್ಯತೇ ತಸ್ಯ ಲಕ್ಷಣಮ್ | ..... | ನಗರಾಣ್ಯವ  
ಶೈಲೈಶ್ಚಂದ್ರಾರ್ಕೋದಯವರ್ಣನಃ | ಉದಾನಸಲಿಲಕ्रीडामधुपान-  
ರತೋತ್ಸವಃ || ವಿಪ್ರಲಂಭವಿವಾಹೇಶ್ಚ ಕುಮಾರೋದಯವರ್ಣನಃ" |  
ಇತ್ಯಾದಿ ಕಾವ್ಯಾಂ ೧ |

ಸರ್ಜ ಸರ್ಜ (ಪುಂ) ಸಾಲವೃಕ್ಷ, ಮತ್ತಿಮರ. ಸರ್ಜ (ಅರ್ಜನೆ) +  
ಣಿच् "ಅच्" (೩-೩-೪೬) |

ಸರ್ಜಕ ಸರ್ಜಕ (ಪುಂ) ಹೊನ್ನೆಮರ. ಸರ್ಜತೇ — ಸರ್ಜ  
(ಅರ್ಜನೆ) "ಕ್ವನ್" (೩ಂ ೨-೩೨) |

ಸರ್ಜಗಂಧಾ ಸರ್ಜಗಂಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾಶಿ.

ಸರ್ಜರಸ ಸರ್ಜರಸ (ಪುಂ) ಸಜ್ಜರಸ, ಸಾಲವೃಕ್ಷದ ಹಾಲು.

ಸರ್ಜಿಕಾಕ್ಷಾರ ಸರ್ಜಿಕಾಕ್ಷಾರ (ಪುಂ) ಸದೃಕ್ಷಾರ.

ಸರ್ಜಿ ಸರ್ಜೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸದೃಕ್ಷಾರ.

ಸರ್ಜ ಸರ್ಜೂ (ಪುಂ) 1. ವಿದ್ಯುತ್ತು. 2. ಹಾರ, ಸರ.  
3. ವರ್ತಕ. 4. ಅಭಿಮಾರ, ಸಂಕೇತ ಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ಹೋಗು  
ವುದು. "ಸರ್ಜವಿಣಿಜಿ ವಿಚ್ಛುತಿ" ಹೇಮಂ |

ಸರ್ಪ ಸರ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಹಾವು, ಫಣಿ. ಸರ್ಪತಿ — ಸೃಷ್ಟಿ  
(ಗತೌ) "ಅच्" (೩-೧-೧೩೪) | ಇವು ಕಶ್ಯಪನ ಪತ್ನಿ  
ಯಾದ ಕದ್ರುವಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವು. ಅನಂತ ತಕ್ಷಕ  
ಕಾಳಿಯ ಶೇಷ ವಾಸುಕಿ ಇವರೆಲ್ಲರೂ ಕದ್ರುವಿನ ಪುತ್ರ  
ರಾದ ಸರ್ಪರಾಜರು. ದೇವದಾನವರು ವಾಸುಕಿಯನ್ನು  
ಹಗ್ಗವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿ ಅಮೃತಕ್ಕಾಗಿ ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರವನ್ನು  
ಕಡೆದರು. ಶೇಷನು ತನ್ನ ಬಲತಾಯಿಯಾದ ವಿನತೆಯ  
ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ತಾಯಿಯು ಮಾಡಿದ ಅಪರಾಧಕ್ಕಾಗಿ ಬಹಳ  
ಸೊಂದು ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ಭೂಧಾರವನ್ನು ಹೊರುವ  
ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಪಡೆದು ಒಂದು ಅಂಶದಿಂದ ಪಾತಾಳದಲ್ಲಿಯೂ  
ಇನ್ನೊಂದು ಅಂಶದಿಂದ ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಹಾಸಿಗೆ  
ಯಾಗಿಯೂ ಇರುವನು. ಸರ್ಪಗಳಿಗೆ ದ್ವಿಜಿಹ್ವತ್ವ ಪ್ರಾಪ್ತಿ.  
["ಹಿಜಿಹ್ವ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಕದ್ರುವು ವಿನತೆ  
ಯನ್ನು ಮದ್ಯದಲ್ಲಿ ಸೋಲಿಸಲು ಪುತ್ರರ ಸಾಹಾಯ್ಯವನ್ನು  
ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದಾಗ ಎಲ್ಲರೂ ತಿರಸ್ಕರಿಸಲು ಜನಮೇಜಯನ  
ಸರ್ಪಯಾಗದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲಾ ಸರ್ಪಗಳೂ ಆಹುತಿಯಾಗು  
ವಂತೆ ಶಪಿಸಿದಳು. "ತತಃ ಪುತ್ರಸಹಸ್ರಂ ತು ಕದ್ಮಜಿಹ್ವಾ  
ಚಿಕಿರ್ದಂತಿ | ಆಜ್ಞಾಪಯಾಮಾಸ ತದಾ ಬಾಲಾ ಮೃತ್ವಾಂಜನಪ್ರಭಾ |  
ಅವಿಶಿಷ್ವ ಹೃಯಂ ಕ್ಷಿಪ್ರಂ ದಾಸೀ ನ ಸ್ಯಾಮಹಂ ಯಥಾ | ನಾವಪಣ್ತ  
ಯೇ ವಾಕ್ಯಂ ತಾನ್ ಶಶಾಪ ಭುಜ್ಞಮಾನ್ | ಸರ್ಪಸತ್ತೇ ವರ್ತಮಾನೇ  
ಪಾಪಕೋ ವಃ ಪ್ರಥಸ್ಯತಿ | ಜನಮೇಜಯಸ್ಯ ರಾಜರ್ಷಿಃ ಪಾಂಡುರೇಯಸ್ಯ  
ಧೀಮತಃ" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೦ | 2. ವಕ್ರವಾದ ಗತಿ,  
ಸರ್ಪದಂತೆ ಡೊಂಕುಡೊಂಕಾದ ನಡೆಗೆ. 3. ನಾಗಕೇಸರ  
ವೃಕ್ಷ. 4. ಅಶ್ಲೇಷಾನ್ವಕ್ಷತ್ರ. 5. ಮ್ಲೇಚ್ಛಜಾತಿ.



ಸರ್ಪಣ ಸರ್ಪಣ (ನಂ) ವಕ್ರವಾಗಿ ನಡೆಯುವುದು, ಡೊಂಕು ಡೊಂಕಾಗಿ ನಡೆಯುವುದು. ಸ್ಫುಲ್ (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

ಸರ್ಪಭುಜ್ (ಕ್) ಸರ್ಪಭುಜ್ (ಕ್) (ಪುಂ) 1. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. ಸರ್ಪ ಭುಜ್ವತೇ—ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ:) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೭೬) । 2. ಕೊಕ್ಕರೆ, ಬಕಪಕ್ಷಿ. (ವಿಂ) 3. ಸರ್ಪವನ್ನು ತಿನ್ನುವವನು.

ಸರ್ಪರಾಜ ಸರ್ಪರಾಜ (ಪುಂ) ಸರ್ಪಗಳ ಒಡೆಯ, ವಾಸುಕಿ. ಸರ್ಪಸತ್ರ ಸರ್ಪಸತ್ರ (ನಂ) ಸರ್ಪಗಳನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸಲು ಜನಮೇಜಯನು ನಡೆಸಿದ ಸರ್ಪಯಾಗ. ಸರ್ಪವಿನಾಶಕ ಸತ್ರಮ್ ।

ಸರ್ಪಹನ್ (ಹಾ) ಸರ್ಪಹನ್ (ಹಾ) (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. ಸರ್ಪ ಹನ್ತಿ "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೮೭) । ಉಪದನಿಯಮಸ್ಯ ಪ್ರಾಯಿಕತ್ವಾತ್ । 2. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮುಂಗುಸಿ.

ಸರ್ಪಾಕ್ಷಿ ಸರ್ಪಾಕ್ಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಈಶ್ವರಿ ಹೆಣ್ಣು.

ಸರ್ಪಾರಾತಿ ಸರ್ಪಾರಾತಿ, -ಅರಿ -ಅರಿ (ಪುಂ) ಸರ್ಪ ಗಳಿಗೆ ಶತ್ರುವಾದ (1) ಗರುಡ. (2) ಮುಂಗುಸಿ. ಸರ್ಪಾಣ-ಮರಾತಿರರ್ವಿ ।

ಸರ್ಪಾಶನ ಸರ್ಪಾಶನ (ಪುಂ) 1. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. 2. ಗರುಡ. ಸರ್ಪಾ ಅಶನಂ ಯಸ್ಯ ।

ಸರ್ಪಿಣಿ ಸರ್ಪಿಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣುಹಾವು. ಸರ್ಪ ಜಾತಿಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬೩) ।

ಸರ್ಪಿನ್ ಸರ್ಪಿನ್ (ವಿಂ) 1. ವಕ್ರವಾಗಿ ಚಲಿಸುವ, ಡೊಂಕು ಡೊಂಕಾಗಿ ಹೋಗುವ. ಸರ್ಪಿನ್—ಸ್ಫುಲ್ (ಗತೌ) "ಗಿನ್ತಿ:" (೩-೨-೭೮) । 2. ನಡೆಯುವ, ಹೋಗುವ. "ಸ ಏಷ ಕೇಲಾಸ ಉಪಾಂತಸರ್ಪಿಣಿ: ಕರೋತುಕಾಲಾಸ್ತಮಯಂ ವಿವಸ್ವತ:" ಕಿರಾಂ ೪-೩೫ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೫) । ಸರ್ಪಿಣಿ ಸರ್ಪಿಣಿ.

ಸರ್ಪಿಸ್ ಸರ್ಪಿಸ್ (ನಂ) ಫುತ, ತುಪ್ಪ. ಸ್ಫುಲ್ (ಗತೌ) "ಇಸಿ:" (೩-೨-೧೦೯) । "ಸಾಮವಾದಾ: ಸಕೋಪಸ್ಯ ತಸ್ಯ ಪ್ರತಿಯುತ ದೋಷಾ: । ಪ್ರತಪ್ತಸ್ಯೇವ ಸಹಸಾ ಸಪ್ರಿಷಸ್ತೋಯ-ವಿನ್ದವ:" ಮಾಘಂ ೨-೫೫ ।

ಸರ್ಪೆಷ್ಠ ಸರ್ಪೆಷ್ಠ (ನಂ) ಹರಿಚಂದನ. ಸರ್ಪಾಣಾಮಿಷ್ಠಮ್ ।

ಸರ್ವ ಸರ್ವ (ಪುಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. ಪರ್ವ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಪರ್ವಾಚ್ (೩-೧-೧೩೪) । "ಸರ್ವಸ್ತು ಶರ್ವೋ ಭಗವಾನ್ ಶಮ್ಮು: ಕಾಲಜ್ಜರ: ಶಿವ:" । 2. ಎಷ್ಟು, ನಾರಾಯಣ. ಸರ್ವವಯವಾನ್—ಸ (ಗತೌ) "ವನ್" (೩-೨-೧೫೧) ।

(೩-೨-೧೫೧) । "ಚರಾಚರಶರೀರೇಷು ವ್ಯಾಪ್ತಿಮಾನ್ ಸರ್ವ ಇರಿತ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿ: । "ಸರ್ವ: ಶರ್ವ: ಶಿವ: ಸ್ಥಾಪು:" ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ) 3. ಎಲ್ಲ, ಸಮಗ್ರ, ಸಂಪೂರ್ಣ, ಸಮಸ್ತ, ಸಕಲ. ಸ್ಮೃತಮನೇನ ವಿಶ್ವಮ್ । ಸರ್ವ ಶಬ್ದವು ಒಂದು ಸರ್ವನಾಮ ಸಂಜ್ಞೆಯುಳ್ಳ ಶಬ್ದ.

ಸರ್ವ: ಸರ್ವೋ ಸರ್ವೇ— "ಜಸ: ಶಿ" (೭-೧-೧೭) ।

ಸರ್ವಮ್ ಸರ್ವೋ ಸರ್ವಾನ್ ।

ಸರ್ವೇಣ ಸರ್ವಾಮ್ಯಾಮ್ ಸರ್ವೇ: ।

ಸರ್ವಸ್ಮಿ ಸರ್ವಾಮ್ಯಾಮ್ ಸರ್ವಸ್ಮಯ: ।

"ಸರ್ವನಾಮನ: ಸ್ಮಿ" (೭-೧-೧೪) ।

ಸರ್ವಸ್ಮಾತ್ ಸರ್ವಾಮ್ಯಾಮ್ ಸರ್ವಸ್ಮಯ: ।

"ಉಸಿಹಿಃ ಸ್ಮಾತ್ ಸ್ಮಿನಿ" (೭-೧-೧೫) ।

ಸರ್ವಸ್ಯ ಸರ್ವಯೋ: ಸರ್ವೇಷಾಮ್ ।

"ಆಮಿ ಸರ್ವನಾಮನ: ಸುಡ್" (೭-೧-೫೨) ।

ಸರ್ವಸ್ಮಿನ್ ಸರ್ವಯೋ: ಸರ್ವೇಷು । (೭-೧-೧೫) ।

ಹೀಗೆಯೇ ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಸರ್ವನಾಮ ಶಬ್ದಗಳ ರೂಪ ಗಳು. ನಮ ಪೂರ್ವ ಪರ ಅವರ ದಕ್ಷಿಣ ಅಪರ ಅಧರ ಇತ್ಯಾದಿ ಶಬ್ದಗಳ ರೂಪಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ವಲ್ಪ ವ್ಯತ್ಯಾಸವಿರುವುದು. "ಯಜತಾಂ ಪಾಂಡವ: ಸ್ವರ್ಗಮವತ್ವಿನ್ದ್ರ: ತಪತ್ವಿನ್ದ್ರ: । ವಯಂ ಹನಾಮ ದ್ವಿಪತ: ಸರ್ವ: ಸ್ವಾರ್ಥ ಸಮೀಹತೇ" ಮಾಘಂ ೨-೬೫ ।

ಸರ್ವಸಹ ಸರ್ವಸಹ (ವಿಂ) ಎಲ್ಲಾ ವಿಧ ಕಷ್ಟಗಳನ್ನೂ ಸಹಿಸುವ. ಸರ್ವ ಸಹತೇ ।

ಸರ್ವಸಹಾ ಸರ್ವಸಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ. ಸರ್ವ ಸಹತೇ—ಪಹ (ಮರ್ಣಂ) "ಸಚ್" (೩-೨-೪೧) । ಮುಗಾಗಮ: (೬-೩-೬೭) ।

ಸರ್ವಕ ಸರ್ವಕ (ವಿಂ) ಸಮಸ್ತ, ಸಕಲ, ಎಲ್ಲ.

ಸರ್ವಕಾಮದ ಸರ್ವಕಾಮದ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. 2. ಶಿವ.

ಸರ್ವಗ ಸರ್ವಗ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು, ನಾರಾಯಣ. ಸಂಹತಾನ್ ಸರ್ವಾನ್ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಃ:" (೩-೨-೪೮) । "ಧಾರಯನ್ ಸಂಹತಾನ್ ಯೋ ವಂ ಗಚ್ಛತೀತಿ ಸ ಸರ್ವಗ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿ: । "ಸರ್ವಗ: ಸರ್ವವಿದ್ವಾನ್:" ವಿಂ ಸಂ । 2. ಬ್ರಹ್ಮ. 3. ಶಿವ. (ನಂ) 4. ಜಲ, ನೀರು. (ವಿಂ) 5. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಹೋಗುವ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ವ್ಯಾಪಿಸುವ. -ಗಾ -ಗಾ. 6. ಪ್ರಿಯಂಗು ವೃಕ್ಷ, ಪ್ರೇಂಕಣ ಗಿಡ.

ಸರ್ವಗ್ರಂಥಿ ಸರ್ವಗ್ರಂಥಿ (ಪುಂ) ಹಿಪ್ಪಲಿಯ ಬೇರು.

ಸರ್ವಚರ್ಮಿಣಿ ಸರ್ವಚರ್ಮಿಣಿ (ವಿಂ) ಸಕಲವೂ ಚರ್ಮ ದಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ. ಸರ್ವ: ಚರ್ಮಣಾ ಕೃತ:—ಸರ್ವಚರ್ಮನ್ "ಸ:" (೫-೨-೫) ।



ಸರ್ವಜನೀನ ಸರ್ವಜನೀನ (ವಿಂ) ಸರ್ವಜನರಂಗೂ ಹಿತವಾದ, ಸರ್ವಜನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸರ್ವಜನಾಯ ಹಿತಮ್ "ಸ:" (ವಾಂ ೪-೧-೯) । "ಠ್" (ವಾಂ ೪-೧-೯) । ಸಾರ್ವಜನಿಕ: ಸರ್ವಜನಿಕಃ.

ಸರ್ವಜಿತ್ ಸರ್ವಜಿತ್ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಭವ ಮೊದಲಾದ ಅರುವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಇಪ್ಪತ್ತೊಂದನೆಯ ಸಂವತ್ಸರ. ಸರ್ವಾನ್ ಜಯತಿ — ಜಿ (ಜಯ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧) । (ವಿಂ) 2. ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಜಯಿಸಿದವನು.

ಸರ್ವಜ್ಞ ಸರ್ವಜ್ಞ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ಸರ್ವಾತ್ಮನಾಽಽತ್ಮಾನಂ ಜಾನಾತಿ — ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩) । "ಸರ್ವಾತ್ಮನಾ ಸ್ವಮಾತ್ಮಾನಂ ಯಶ್ಚ ಜಾನಾತಿ ಕೇವಲಮ್ । ಸರ್ವಜ್ಞ: ಸ ತು ವಿಜೇಯ: ಸಪ್ತಾರ್ಣಿ ಜ್ಞಾನದೊ ಮನು:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । "ಸರ್ವದರ್ಶಿ ನಿವೃತ್ತಾತ್ಮಾ ಸರ್ವಜ್ಞೋ ಜ್ಞಾನಮುತ್ತಮಮ್" ವಿ ಸಂ । 2. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಸರ್ವಂ ಜಾನಾತಿ — ಜ್ಞಾ "ಕ:" (೩-೨-೩) । 3. ಬುದ್ಧ. ಸರ್ವಂ ಜಾನಾತಿ — ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩) । ಸರ್ವಂ ಜ್ಞಾ ಯೇನ ಇತಿ ವಾ । "ಯಸ್ಯ ಭಾಸಾ ಸರ್ವಮಿದಂ ವಿಭಾತಿ" । (ವಿಂ) 4. ಸಕಲವನ್ನೂ ತಿಳಿದವನು. ಸರ್ವಂ ಜಾನಾತಿ । "ಸರ್ವಜ್ಞ ಇತಿ ಲೋಕೇಽಯಂ ಭವಂತಂ ಭಾಷತೇ ಮೃಷಾ । ಪರಮೇಕಂ ನ ಜಾನಾಸಿ ವಕ್ತುಂ ನಾಸ್ತೀತಿ ಯಾಚಕೇ" । "ಸರ್ವಜ್ಞಸ್ತ್ವಮವಿಜ್ಞಾತ: ಸರ್ವಯೋನಿಸ್ತ್ವಮಾತ್ಮಮ್:" ರಘುಂ ೧೦-೨೦ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಜ್ಞಾ —ಜ್ಞಾ. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. "ಸರ್ವಜ್ಞಾ ಸರ್ವವೇತ್ಯುತ್ವಾತ್ ಶಾಂತಿತ್ವಾತ್ ಶಾಂತಿರೂಚ್ಯತೇ" ।

ಸರ್ವತನ್ತ್ರ ಸರ್ವತನ್ತ್ರ (ವಿಂ) ಸಕಲ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನೂ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು. ಸರ್ವಾಣಿ ತನ್ತ್ರಾಪ್ಯಸ್ಯ ।

ಸರ್ವತಸ್ ಸರ್ವತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗಳಿಂದಲೂ, ಎಲ್ಲಾ ದಿಕ್ಕುಗಳಿಂದಲೂ. ಸರ್ವಸ್ಮಾತ್ — ಸರ್ವಂ "ತಸಿಲ್" (೪-೩-೮) । "ಸರ್ವತಶ್ಚಾಭಯಂ ಪ್ರಾಪ್ನೋತೇಽಚ್ಛಮ್ಯಸ್ತು ರಾವಣ: । ಫಲಂ ತಸ್ಯೇದಮಮ್ಯಾಯಾದ್ದುರೂಹಸ್ಯೇತಿ ಚಾಬ್ರುವನ್" ಭಟಿಂ ೧೭-೭೨ । 2. ಸುತ್ತಲೂ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗಳಲ್ಲೂ. "ಕಲಿಸಂಧಿಸಮಾಗ್ರಾತಂ ತ್ಯಜಂತ: ಕರ್ಮ ಕರ್ತುಮ್ । ಸದಸತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ ಸ್ಥಾತ ಸರ್ವತೋ ದತ್ತದೃಷ್ಟಯ:" ಯಾದಂ ೨೨-೩೮ । 3. ಸಕಲ, ಸಮಸ್ತ, ಎಲ್ಲ. ಸರ್ವಂ ಪ್ರಥಮಾರ್ಥಂ "ತಸಿ:" । "ಆಸೀದಿದಂ ತಮೋಭೂತಮಪ್ರಜ್ಞಾತಮಲಕ್ಷಣಮ್ । ಅಪ್ರತರ್ಕ್ಯಮವಿಜೇಯಂ ಪ್ರಸುಪ್ತಮಿವ ಸರ್ವತ:" ಮನುಂ ೧-೪ ।

ಸರ್ವತಶ್ಚಕ್ಷುಸ್ ಸರ್ವತಶ್ಚಕ್ಷುಸ್ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಟು. ಸರ್ವತ: ಸರ್ವೇಷಾಂ ಸರ್ವಾಣಿ ವಾ ಚಕ್ಷುಷಿ ಅಸ್ಮಿನ್ । "ತತ್ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರಕರ್ಮಾಣಿ ಸರ್ವಚಕ್ಷುಷ್ಯಪಿ ಸ್ವತ: । ಅತ: ಸ್ವಾತ್ಸರ್ವತಶ್ಚಕ್ಷು: ನವಾರ್ಗೋ ನೇತ್ರಶಕ್ತಿರಿದ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । "ಉದೀರ್ಣ:

ಸರ್ವತಶ್ಚಕ್ಷು:" ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ) 2. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ದೃಷ್ಟಿಯುಳ್ಳವನು, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಗಮನಿಸುವವನು.

ಸರ್ವತಾಪನ ಸರ್ವತಾಪನ (ಪುಂ) 1. ಮನ್ನಥ. ಕಾಮದೇವ. ಸರ್ವಾನ್ ತಾಪಯತಿ — ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) + ಣಿವ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) । (ವಿಂ) 2. ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಸಂತಾಪ ಗೊಳಿಸುವವನು.

ಸರ್ವತಿಕಾ ಸರ್ವತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಚಿಗಿಡ, ಗಣಕಿಗಿಡ.

ಸರ್ವತೋಭದ್ರ ಸರ್ವತೋಭದ್ರ (ಪುಂ) 1. ನಿಂಬವೃಕ್ಷ, ಬೇವಿನ ಮರ. ಸರ್ವತೋ ಭದ್ರಂ ಯಸ್ಮಾತ್ । "ಅರಿಷ್ಟ: ಸರ್ವತೋಭದ್ರೋ ಹಿಡ್ಗುನಿರ್ಯಾಸಮಾಲಕಾ:" ಅಮಂ । 2. ನಾಲ್ಕು ಕಡೆಗಳಲ್ಲೂ ದ್ವಾರಗಳಿರುವ ಸ್ಥಳ, ನಾಲ್ಕು ಕಡೆಗಳಲ್ಲೂ ಬಾಗಿಲುಗಳುಳ್ಳ ಗೃಹ. ನಾಲ್ಕು ಕಡೆಗಳಲ್ಲೂ ಲಕ್ಷಣವಾದ ಕೈಸಾಲೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಗೃಹವು ಸರ್ವತೋಭದ್ರ. ಇದು ರಾಜರು ಮತ್ತು ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಪ್ರಶಸ್ತವಾದುದು. "ಅಪ್ರತಿಷಿಡ್ಧಾಲಿಪ್ತಂ ಸಮಂತತೋ ವಾಸ್ತು ಸರ್ವತೋಭದ್ರಮ್ । ನೃಪ-ವಿಕ್ರಮಸಮೂಹಾನಾಂ ಕಾರ್ಯಂ ದ್ವಾರೇಶ್ವತುರ್ಭಿರಪಿ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೪೩-೩೧ । 3. ಒಂದು ವಿಧ ಚಿತ್ರಕಾವ್ಯ. ಉದಾ: "ಸಾ ಮಾಯಾಮಾಯಾಮಾಸಾ ಮಾರಾನಾಯಾನಾರಾಮಾ । ಯಾನಾವಾರಾ ರಾವಾನಾಯಾ ಮಾಯಾರಾಮಾ ಮಾರಾಯಾಮಾ" ಕಾವ್ಯಾಂ ೩-೮೨ । "ತದಿದಂ ಸರ್ವತೋಭದ್ರಂ ಭ್ರಮಣಂ ಯದಿ ಸರ್ವತ:" । "ದೇವಾಕಾನಿನಿ ಕಾವಾದೇ ವಾಹಿಕಾಸ್ವಸ್ವಕಾಹಿ ವಾ । ಕಾಕಾರೇಭಮರೇ ಕಾಕಾ ನಿಸ್ವಭವ್ಯವ್ಯಭಸ್ವನಿ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೨೪ । (ವಿಂ) 4. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗಳಲ್ಲೂ ಮಂಗಳವುಂಟುಮಾಡುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಭದ್ರಾ —ಭದ್ರಾ. 5. ಶೀವನೆಯ ಮರ. 6. ನರ್ತಕಿ.

"ಸರ್ವತೋಭದ್ರ ಇತ್ಯುಕ್ತ: ಕಾವ್ಯಚಿತ್ರೇ ಗೃಹಾಂತರೇ । ನಿಮ್ಬೇ ವಾ ಸರ್ವತೋಭದ್ರಾ ಗಾಂಧಾರೀನಟಯೋಷಿತೋ:" ಮೇದಿಂ ।

ಸರ್ವತೋಮುಖ ಸರ್ವತೋಮುಖ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಟು. ಸರ್ವತೋ ಮುಖಮಸ್ಯ । "ತತ್ತನ್ನಿಯಮಮುತ್ಸೃಜ್ಯ ಯೋ ಜ್ಞಾತುಂ ಶಕ್ಯತೇ ಬುಧಃ । ವ್ಯಾಜೇನ ಯೇನಕೇನಾಪಿ ಸ: ಸ್ಮೃತ: ಸರ್ವತೋಮುಖ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । "ಅಮೃತಾಶೋಽಮೃತವಪು: ಸರ್ವಜ್ಞ: ಸರ್ವತೋಮುಖ:" ವಿಂ ಸಂ । 2. ಪರಿಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. "ಸರ್ವಕಾಮವರಶ್ಚೇವ ಸರ್ವದ: ಸರ್ವತೋಮುಖ:" ಭಾಂ । 3. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚಿತ್ತಮುಖ. "ಅಥ ಸರ್ವಸ್ಯ ಧಾತಾರಂ ತೇ ಸರ್ವೇ ಸರ್ವತೋಮುಖಮ್ । ವಾಗೀಶಂ ವಾಗ್ಭಿರರ್ಥ್ಯಾಭಿ: ಪ್ರಣಿಪತ್ಯೋಪತಸ್ಥಿರೇ" ಕುಮಾಂ ೨-೩ । 4. ಜೀವಾತ್ಮ. 5. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. 6. ಸ್ವರ್ಗ. 7. ಅಗ್ನಿ. (ನಂ) 8. ಜಲ, ನೀರು. 9. ಗಗನ, ಆಕಾಶ. (ವಿಂ) 10. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಮುಖಗಳುಳ್ಳ. "ಸರ್ವತೋಮುಖ ಔಘೇ ಚ ಕ್ಷೇತ್ರಜಬ್ರಹ್ಮಣೋ: ಪುಮಾನ್ । ನಪುಂಸಕಂತು ಪಾನೀಯೇ ಸುರವತ್ಸಮ್ಯಪಿ ಸ್ಮೃತಮ್" ಮೇದಿಂ ।



**ಸರ್ವತ್ರ ಸರ್ವತ್ರ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಎಲ್ಲಾ ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿಯೂ. 2. ಎಲ್ಲಾ ಕಾಲಗಳಲ್ಲಿಯೂ. 3. ಎಲ್ಲಾ ಪ್ರದೇಶಗಳಲ್ಲಿಯೂ. ಸರ್ವ "ತ್ರಲ್" (೪-೩-೧೦)। "ಸರ್ವತ್ರ ದಯಿತಾಧೀನಂ ಸುವ್ಯಕ್ತಂ ರಾಮಣೀಯಕಮ್" ಭट्टಿಂ ೬-೭೫। "ಸರ್ವತ್ರ ಸಂವಾದಮವಾಚಮಾನೋ ರೂಪಶ್ರಿಯಾತಿಥ್ಯಕರಂ ಪರಂ ತೌ" ನೆಪಂ ೬-೫೪। "ತುತೋಪ ವೀರ್ಯತಿಶಯೇನ ವೃತ್ತಾಹಾ ಪದಂ ಹಿ ಸರ್ವತ್ರ ಗುಣನಿವಿಧೀಯತೇ" ರಘುಂ ೩-೬೨।

**ಸರ್ವತ್ರಗ ಸರ್ವತ್ರಗ** (ಪುಂ) 1. ವಾಯು. ಗಾಳಿ. ಸರ್ವತ್ರ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಙ:" (ವಾಂ ೩-೨-೪೮)। (ವಿಂ) 2. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗಳಲ್ಲೂ ಹೋಗುವ, ಎಲ್ಲಾ ಪ್ರದೇಶ ಕಾಲ ಮತ್ತು ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲೂ ಸಂಚರಿಸುವ. "ಯಥಾಕಾಶಾಸ್ಥಿತೋ ನಿಯಮಂ ವಾಯುಃ ಸರ್ವತ್ರಗೋ ಮಹಾನ್" ಗೀತಾ ೯-೬। -ಗಾಮಿನ್ -ಗಾಮಿನ್. ಗಮ್ಲ "ಗಿಮಿ:" (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಮ್" (೪-೧-೫)। -ಗಾಮಿನಿ -ಗಾಮಿನೀ.

**ಸರ್ವಥಾ ಸರ್ವಥಾ** (ಅವ್ಯಂ) ಎಲ್ಲಾ ಪ್ರಕಾರಗಳಿಂದಲೂ, ಎಲ್ಲಾ ರೀತಿಗಳಿಂದಲೂ. ಸರ್ವ "ಥಾಲ್" (೪-೩-೨೩)। "ಸರ್ವಥಾ ವ್ಯವಹರತವ್ಯಂ ಕುತೋ ಹ್ಯವಚನೀಯತಾ। ಯಥಾ ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ತಥಾ ವಾಚಾಂ ಸಾಧುತ್ವೇ ದುರ್ಜನೋ ಜನಃ" ತಂ ರಾಂ ೧-೫।

**ಸರ್ವದಮನ ಸರ್ವದಮನ** (ಪುಂ) 1. ಶಕುಂತಲೆಯ ಪುತ್ರ. ದುಷ್ಯಂತರಾಜನ ಕುಮಾರ, ಭರತಚಕ್ರವರ್ತಿ. ಸರ್ವಾನ್ ದಮಯತಿ—ದಮು (ಉಪಶಮೇ) + ಗಿಮ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। "ಹಂತ, ವರ್ಧತೇ ತವ ಸಂರಮ್ಭಃ। ಸ್ಥಾನೇ ಖಲು ಋಷಿಜನೇನ ಸರ್ವದಮನ ಇತಿ ಕೃತನಾಮಧೇಯೋಽಸಿ" ಶಾಕುಂ ೭। (ವಿಂ) 2. ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಶಿಕ್ಷಿಸುವವನು, ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ದಂಡಿಸುವವನು.

**ಸರ್ವದರ್ಶನ ಸರ್ವದರ್ಶನ** (ಪುಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಸರ್ವ ಸ್ವಮಹಿಮಾನಂ ದರ್ಶಯತಿ—ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) + ಗಿಮ್ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। "ಮಹಿಮಾನಂ ಸರ್ವಸಹಂ ತೇಷಾಂ ದರ್ಶಯತೀತಿ ಸಃ। ಸರ್ವದರ್ಶನ ಆಖ್ಯಾತೋ ನವಾಣಿಂ ಲೋಚನಪ್ರದಃ" ಇತಿ ನಿರಹಿ:। "ಅಹಃ ಸಂವತ್ಸರೋ ವ್ಯಾಲಃ ಪ್ರತ್ಯಯಃ ಸರ್ವದರ್ಶನಃ" ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 2. ಎಲ್ಲಕಾಲದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ನೋಡುವ.

**ಸರ್ವದರ್ಶನಸಂಘ್ರಹ ಸರ್ವದರ್ಶನಸಂಗ್ರಹ** (ಪುಂ) ಮಾರ್ಗವಾಚಾರ್ಯವಿರಚಿತ ಸಕಲ ದರ್ಶನಗಳ ಸಾರರೂಪವಾದ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ. ಸರ್ವದರ್ಶನಾನಾಂ ಸಂಘ್ರಹೋಽಸಿ।

**ಸರ್ವದರ್ಶಿನ್ ಸರ್ವದರ್ಶಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಸರ್ವಂ ಪ್ರವೃತ್ತಿನಿವೃತ್ತಿಭಿರ್ಮೌ ದ್ರಷ್ಟುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ—ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) "ಗಿಮಿ:" (೩-೨-೭೮)। "ಸರ್ವದರ್ಶಿಂ ಪಶ್ಯತಿ ಯಃ ಸರ್ವೇಷಾಂ

ಚ ಕೃತಾಕೃತಮ್" ಇತಿ ನಿರಹಿ:। "ಸರ್ವದರ್ಶಿಂ ನಿವೃತ್ತಾತ್ಮಾ" ವಿಂ ಸಂ। (ವಿಂ) 2. ಸಕಲವನ್ನೂ ನೋಡುವವನು. **ಸರ್ವದಾ ಸರ್ವದಾ** (ಅವ್ಯಂ) ಯಾವಾಗಲೂ, ಎಲ್ಲಾ ಕಾಲ ದಲ್ಲೂ. ಸರ್ವ "ದಾ" (೪-೩-೧೫)। "ಸರ್ವಾಭಿಃ ಸರ್ವದಾ ಚಂದ್ರಸ್ತಂ ಕಲಾಭಿನಿವೇಶತೇ" ಕುಮಾಂ ೨-೩೪।

**ಸರ್ವದುಃಖಕಷಯ ಸರ್ವದುಃಖಕ್ಷಯ** (ಪುಂ) 1. ಮೋಕ್ಷ. ಸಕಲ ದುಃಖನಿವೃತ್ತಿಯುಳ್ಳ, -ನಾಶವುಳ್ಳ ಮುಕ್ತಿ. ಸರ್ವದುಃಖಾನಾಂ ಕ್ಷಯೋ ನಾಶೋ ಯತ್ರ। 2. ಸಕಲ ವಿಧವಾದ ಕಷ್ಟಗಳ ನಾಶ.

**ಸರ್ವದೃಶ್ ಸರ್ವದೃಶ್** (ಪುಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಸರ್ವಾನ್ ಅನುಕೂಲ-ಪ್ರತಿಕೂಲತಟಸ್ಥಾನು ಯಥಾಹಂ ನಿಯಂತುಂ ಪಶ್ಯತಿ—ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೇ) "ವಿಮ್" (೩-೨-೬೦)। "ಅನುಕೂಲಾನ್ ತಟಸ್ಥಾನ್ ಪ್ರತಿಕೂಲಾನ್ ಪಿ ಸ್ವಯಮ್। ನಿಯಂತುಂ ಚ ಯಥಾಯೋಗ್ಯಂ ಯಃ ಪಶ್ಯತಿ ಸ ಸರ್ವದೃಕ್" ಇತಿ ನಿರಹಿ:। "ಅಮೃತ್ಯುಃ ಸರ್ವದೃಕ್ ಸಿಹಃ" ವಿಂ ಸಂ।

**ಸರ್ವದೇವಮುಖ ಸರ್ವದೇವಮುಖ** (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ. ಸರ್ವೇಷಾಂ ದೇವಾನಾಂ ಮುಖಮಿವ।

**ಸರ್ವದ್ರಚ್ಛ ಸರ್ವದ್ರಚ್ಛ** (ವಿಂ) ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಪೂಜಿಸುವವನು, ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಗೌರವಿಸುವವನು. ಸರ್ವಾನ್ ಅಪ್ಪತಿ—ಸರ್ವ + ಅಚ್ಛ (ಗತೌ ಪೂಜನೇ ಚ) ಅದ್ರಿಃ ಆದೇಶಃ (೬-೩-೯೨)।

**ಸರ್ವಧಾರಿನ್ ಸರ್ವಧಾರಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಭವ ಮೊದಲಾದ ಅರವತ್ತು ಸಂವತ್ಸರಗಳಲ್ಲಿ ಇಪ್ಪತ್ತೆರಡನೆಯ ಸಂವತ್ಸರ. (ವಿಂ) 2. ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಧರಿಸುವವನು. ಸರ್ವಂ ಧಾರಯತಿ—ಧೃ (ಧಾರಣೇ) + ಗಿಮ್ "ಗಿಮಿ:" (೩-೧-೧೩೪)।

**ಸರ್ವಧುರಾವಹ ಸರ್ವಧುರಾವಹ** (ಪುಂ) ಸಕಲ ಭಾರವನ್ನೂ ಹೊರಲು ಸಮರ್ಥವಾದ ವೃಷಭ ಮೊದಲಾದುದು. ಸರ್ವಾಂ ಚಾಸೌ ಧುಷ್ಠ ಸರ್ವಧುರಾ—ವಹತಿ—ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಸರ್ವಧುರಾಯಾ ವಹಃ। "ಸ ತು ಸರ್ವಧುರೀಣೋ ಯಃ ಭವೇತ್ಸರ್ವಧುರಾವಹಃ" ಅಮಂ।

**ಸರ್ವಧುರೀಣ ಸರ್ವಧುರೀಣ** (ಪುಂ) ಸಕಲ ಭಾರವನ್ನೂ ಹೊರಲು ಸಮರ್ಥವಾದ ವೃಷಭ ಮೊದಲಾದುದು. ಸರ್ವಾಂ ಚಾಸೌ ಧುಷ್ಠ ಸರ್ವಧುರಾ—ಸರ್ವಧುರಾಂ ವಹತಿ—"ಃ" (೪-೪-೭೮)।

**ಸರ್ವಪಥೀನ ಸರ್ವಪಥೀನ** (ವಿಂ) ಎಲ್ಲಾ ಮಾರ್ಗಗಳನ್ನೂ ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವ, ಎಲ್ಲಾ ದಾರಿಗಳಲ್ಲೂ ಹರಡಿರುವ. ಸರ್ವಪಥಾನ್ ವ್ಯಾಪ್ನೋತಿ—ಸರ್ವಪಥ "ಪಃ" (೪-೨-೭)। "ಸ ವ್ಯಾಪ್ತವತ್ಯಾ ಪರಿತೋಽಪಥಾನ್ಯಪಿ ಸ್ವಸೇನಯಾ ಸರ್ವಪಥೀನಯಾ ತಯಾ" ಮಾಧಂ ೧೨-೫೭।



ಸರ್ವಮಜ್ಜಲಾ ಸರ್ವಮಂಗಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾರ್ವತಿ, ದುರ್ಗಾ ದೇವಿ. ಸರ್ವಮ್ಯ: ಮಜ್ಜಲಾ, ಸರ್ವಾಣಿ ಮಜ್ಜಲಾನ್ಯಸ್ಯಾ: ಇತಿ ವಾ । “ಸರ್ವಮಜ್ಜಲಶಬ್ದಶ್ಚ ಸಂಪೂರ್ಣಾಶ್ವಯವಾಚಕ: । ಆಕಾರೋ ದಾತೃವಚನ: ತस्ಮಾತ್ ಸಾ ಸರ್ವಮಜ್ಜಲಾ ” ॥

ಸರ್ವರಸ ಸರ್ವರಸ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ವರಸ, ಮತ್ತಿಮರದ ಹಾಲು. ಸರ್ವರಸ್ಯತೇ—ರಸ (ಆಸ್ವಾದನೆ) + ಣಿಚ್ “ಘ್” (೩-೩-೧೯) । “ಯಕ್ಷಭುಪ: ಸರ್ವರಸೋ ರಾಲಸರ್ವರಸಾವಪಿ” ಅಮಂ । 2. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. ಸರ್ವೋ ರಸೋ ಯತ್ರ । 3. ಸಿಹಿ ಮೊದಲಾದ ಅರು ಭೋಜ್ಯ ರಸಗಳು. “ವಾಚಾಂ ವಹ್ನೇರ್ಮುಖಂ ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಚಂದಸಾಂ ಸಪ್ತಧಾತವ: । ಹವ್ಯಕವ್ಯಾಮೃತಾಶ್ವಾನಾಂ ಜಿಹ್ವಾ ಸರ್ವರಸಸ್ಯ ಚ” ಮಾಗಂ ೨-೬-೧ । 4. ಒಂದು ಎಧ ವೀಣೆ. 5. ಶೃಂಗಾರಾದಿ ಎಲ್ಲಾ ರಸಗಳು. (ವಿಂ) 6. ಎಲ್ಲಾ ರಸಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಸರ್ವರಸೋತ್ತಮ ಸರ್ವರಸೋತ್ತಮ (ಪುಂ) ಎಲ್ಲಾ ರಸ ಗಳಲ್ಲೂ ಪ್ರಧಾನವಾದ ಉತ್ತಮ ರಸ. ಸರ್ವರಸೇಷು ಉತ್ತಮ: । ಸರ್ವರಾತ್ರ ಸರ್ವರಾತ್ರ (ಪುಂ) ಸಂಪೂರ್ಣ ರಾತ್ರಿ. ಸರ್ವಾ ರಾತ್ರಿ: “ಅಚ್” (೪-೪-೮೭) । ಪುಸ್ತಕಮ್ (೨-೪-೨೯) । ಸರ್ವಲಾ ಸರ್ವಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಈಟಿ, ತೋಮರವೆಂಬ ಒಂದು ಆಯುಧ. ಸರ್ವಂ ಲಾತಿ—ಲಾ (ಆದಾನೆ) “ಕ:” (೩-೨-೩) । “ಸರ್ವಲಾ ತೋಮರೋಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” ಅಮಂ । ಗೋರಾಂ “ಡೀಫ್” (೪-೧-೪೧) । -ಲಿ -ಲೀ.

ಸರ್ವಲಿಜ್ಞಿನ್ ಸರ್ವಲಿಂಗಿನ್ (ಪುಂ) ಪಾಪಂ, ವೇದ ವಿರುದ್ಧವಾದ ನಡವಳಿಕೆಯುಳ್ಳವನು, ಇತರರನ್ನು ಮಂಚಿ ಸಲು ಇಷ್ಟಬಂದಂತೆ ವೇಷ ತಾಳುವವನು. ಸರ್ವೇಷಾಂ ಲಿಜ್ಞಾನಿ—ಸರ್ವಲಿಜ್ಞಾನಿ ಸನ್ಯಸ್ಯ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೫) । “ಪಾಷಂಡಾ: ಸರ್ವಲಿಜ್ಞಿನ:” ಅಮಂ ।

ಸರ್ವವಿದ್ ಸರ್ವವಿದ್ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣು. 2. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಸರ್ವಂ ವಿಂದತಿ—ವಿದ್ (ಲಾಭೆ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೬೧) । ಸರ್ವಂ ವೇದಿ—ವಿದ (ಜ್ಞಾನೆ) “ಕ್ವಿಪ್” ವಾ । “ಸರ್ವಗ: ಸರ್ವವಿದ್ಭಾನು:” ವಿಂ ಸಂ ।

ಸರ್ವವೇದ ಸರ್ವವೇದ (ಪುಂ) ಎಲ್ಲಾ ವೇದಗಳನ್ನೂ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದ ವಿಪ್ರ. ಸರ್ವವೇದಾನುಷೇತೆ—ಸರ್ವವೇದ “ಠಕ್” (೪-೨-೬೦) । ಠಕೋ ಲುಕ್ (ವಾಂ ೪-೨-೬೦) ।

ಸರ್ವವೇದಸ್ ಸರ್ವವೇದಸ್ (ಪುಂ) ಸರ್ವಸ್ವವನ್ನೂ ದಕ್ಷಿಣೆಯಾಗಿ ಕೊಟ್ಟು ಯಾಗಮಾಡಿದವನು, ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಗಮ ಮಾಡಿದವನು. ಸರ್ವಂ ಧನಂ ವೇದಯತಿ ನಿವೇದಯತಿ ಋತ್ವಿಗಮ್ಯ: —ವಿದ್ (ಲಾಭೆ) + ಣಿಚ್ “ಅಸುನ್” (೩೦ ೪-೧೮೯) । “ಸರ್ವವೇದಾ: ಸ ಯೇನೆಷ್ಟೋ ಯಾಗ: ಸರ್ವಸ್ವದಕ್ಷಿಣ:” ಅಮಂ ।

ಸರ್ವವೇಶಿನ್ ಸರ್ವವೇಶಿನ್ (ಪುಂ) ನಟ, ಅಧಿನಯಕಾರ.

ಸರ್ವೇಷಾಂ ವೇಶೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೫) ।

ಸರ್ವವ್ಯಾಪಿನ್ ಸರ್ವವ್ಯಾಪಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಪಂಚ ಪ್ರಾಣ ವಾಯುಗಳಲ್ಲೊಂದಾದ ಧನಂಜಯ ವಾಯು (ವ್ಯಾನ ವಾಯು). ಈ ವಾಯುವು ದೇಹದ ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವುದು. “ನ ಜಹಾತಿ ಮೃತಂ ವಾಪಿ ಸರ್ವವ್ಯಾಪಿ ಧನಂಜಯ:” । (ವಿಂ) 2. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಹರಡಿ ಕೊಂಡಿರುವ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗೂ ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವ.

ಸರ್ವಸಂಹನ ಸರ್ವಸಂಹನ (ನಂ) ಎಲ್ಲಾ ಸೇನೆಗಳೂ ಒಂದು ಕಡೆ ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿ ಯುದ್ಧಕ್ಕಾಗಿ ಹೊರಡುವುದು. ಸರ್ವೇಷಾಂ ಸಂಹನಮ್ ।

ಸರ್ವಸಹ ಸರ್ವಸಹ (ಪುಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಸ್ವಶಾಸನೇನ ಸರ್ವಂ ದೇವತಾಂತರಮಪಿ ಮಂದಾಧಿಕಾರಿಣಾಮಾರಾಧ್ಯತಯಾ ಸಹತೇ ವಿಭವತಿ —ಷಹ (ಮರ್ಷಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । “ಮಂದಾಧಿಕಾರಿಣಾಂ ಸರ್ವಮಾರಾಧ್ಯತ್ವೇನ ದೇವತಮ್ । ವಿಭವತಿ ಸಹತೇ ಯಸ್ತು ಸ ಸರ್ವಸಹ ಇರೀತ:” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । “ಅಪರಾಜಿತ: ಸರ್ವಸಹ:” ವಿಂ ಸಂ ।

ಸರ್ವಸಿದ್ಧಿ ಸರ್ವಸಿದ್ಧಿ (ಪುಂ) ಶ್ರೀಫಲ, ಬಿಲ್ವ ವೃಕ್ಷ. ಸರ್ವೇಷಾಂ ಸಿದ್ಧಿರಸ್ಮಾತ್ ।

ಸರ್ವಸ್ವ ಸರ್ವಸ್ವ (ನಂ) 1. ಸ್ಥಿರ ಮತ್ತು ಚರ ರೂಪವಾದ ಸಕಲ ವಿಧವಾದ ಆಸ್ತಿ, ಸ್ವತ್ತು. ಸರ್ವಂ ಸ್ವಮ್ । 2. ಸಾರಾಂಶ. “ಸರ್ವಸ್ವಮಿವ ಪುಷ್ಪಾಣಾಂ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯಮಿವ ಸಂಪದಾಮ್” ಯಾದಂ ೧೬-೧೪೧ ।

ಸರ್ವಾಜ್ಞಿಣ ಸರ್ವಾಜ್ಞಿಣ (ವಿಂ) ಎಲ್ಲಾ ಅವಯವ ಗಳಲ್ಲೂ ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವ, ಎಲ್ಲಾ ಅಂಗಗಳಲ್ಲೂ ಸೇರಿ ಕೊಂಡಿರುವ. ಸರ್ವಾಜ್ಞಿಣಾಂ ವ್ಯಾಪ್ನೋತಿ ಸರ್ವಾಜ್ಞ “ಃ” (೪-೨-೭) । “ವಸಾನಸ್ತನ್ವಕನಿಮೇ ಸರ್ವಾಜ್ಞಿಣೇ ತರ್ಹವೌ” ಮಹಿಂ ೪-೧೦ ।

ಸರ್ವಾನುಭೂತಿ ಸರ್ವಾನುಭೂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಳಿಯ ತಿಗಡೆ.

ಸರ್ವಾನುಭೂತಿ ಸರ್ವಾನುಭೂತಿ (ವಿಂ) ಎಲ್ಲಾ ವರ್ಣದವರ ಅನ್ನವನ್ನೂ ಭುಜಿಸುವವನು. ಸರ್ವಾನುಭೂತಾನಿ ಭುಜ್ಯತೇ —ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ:) “ಞಿನಿ:” (೩-೨-೭೮) । “ಸರ್ವಾನುಭೂತಸ್ತು ಸರ್ವಾನುಭೂತಿ” ಅಮಂ ।

ಸರ್ವಾನಿನ್ ಸರ್ವಾನಿನ್ (ವಿಂ) ಎಲ್ಲಾ ವರ್ಣದವರ ಅನ್ನವನ್ನೂ ಭುಜಿಸುವವನು. ಸರ್ವಾನಿನ್ ಮಕ್ಷಯತಿ “ಃ” (೪-೨-೯) । “ಸರ್ವಾನಿನ್ಸ್ತು ಸರ್ವಾನುಭೂತಿ” ಅಮಂ ।

ಸರ್ವಾಭಿಸಂಧಿನ್ ಸರ್ವಾಭಿಸಂಧಿನ್ (ಪುಂ) ಕಪಟಸಂನ್ಯಾಸಿ. ಸರ್ವಸ್ಮಿನ್ ವಿಷಯೇ ಅಭಿಸಂಧಾಽಸ್ಯ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೬) । “ಬೈಡಾಲವ್ರತಿಕ: ಸರ್ವಾಭಿಸಂಧಿ ಛತ್ರಾಪಸ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।



**ಸರ್ವಾಭಿಷಾರ ಸರ್ವಾಭಿಷಾರ** (ಪುಂ) ಚತುರಂಗ ಸೇನೆಯ ಸಿದ್ಧತೆ, ಎಲ್ಲಾ ಸೇನೆಗಳೂ ಸಜ್ಜಾಗಿ ಒಂದು ಕಡೆ ಸೇರಿಯುದ್ದಕ್ಕಾಗಿ ಹೊರಡುವುದು. ಸರ್ವೇಷಾಮಭಿಸಾರೋ ಯತ್ರ ।  
“ಸರ್ವಾಭಿಷಾರಃ ಸರ್ವೌಘಃ ಸರ್ವಸಂಹನಾರ್ಥಕಃ” ಅಮಂ ।

**ಸರ್ವಾರ್ಥಸಾಧಿಕಾ ಸರ್ವಾರ್ಥಸಾಧಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

**ಸರ್ವಾರ್ಥಸಿದ್ಧ ಸರ್ವಾರ್ಥಸಿದ್ಧ** (ಪುಂ) 1. ಬುದ್ಧದೇವ. 2. ಶಾಕ್ಯಮುನಿ. ಸರ್ವೇಷು ಅರ್ಥೇಷು ಸಿದ್ಧಃ । ಸರ್ವಾರ್ಥಃ ಸಿದ್ಧೋಽಸ್ಯ ಇತಿ ವಾ । (ವಿಂ) 3. ಸಕಲ ಕಾರ್ಯಗಳೂ ಕೈಗೊಂಡಿರುವವನು, ಸಕಲ ಕಾರ್ಯಗಳ ಸಿದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು.

**ಸರ್ವಾಸುನಿಲಯ ಸರ್ವಾಸುನಿಲಯ** (ಪುಂ) ಪರಮಾತ್ಮ. ಸರ್ವೇಷಾಮಾತ್ಮನಾಮ್ ಅಸುನಾಂ ಪ್ರಾಣಾನಾಂ ನಿಲಯಃ ಆಲಂಬನಮ್ ।  
“ಸರ್ವಾಸುನಿಲಯಃ ಸ ಸ್ಥಾತ್ ಸರ್ವಪ್ರಾಣಾವಲಂಬನಮ್” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । “ಭೂತಾಪಾಸೋ ವಾಸುದೇವಃ ಸರ್ವಾಸುನಿಲಯೋಽನಲಃ” ವಿಂ ಸಂ ।

**ಸರ್ವೇಶ್ವರ ಸರ್ವೇಶ್ವರ** (ಪುಂ) 1. ಸಕಲ ಚರಾಚರ ಜಗತ್ತಿಗೂ ನಿಯಾಮಕನಾದ ಪರಮಾತ್ಮ. ಸಮರ್ಥಾನಾಮಸಮರ್ಥಾನಾಂ ಚ ಸರ್ವೇಷಾಂ ಶರಣಾಗತಾನಾಂ ವೈರೂಪ್ಯಂ ಪರಿಹೃತುಂ ಆಶು ತಾನದನುತೇ ವ್ಯಾಪ್ನೋತಿ — ಅಶು (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) “ವರಡ್” (ಉಂ ೪-೪೭) ।  
ಉಪಾಧಾಯಾ ಇತ್ವಂ ಚ । “ಅಶಕ್ತಾನಾಂ ಚ ಶಕ್ತಾನಾಂ ವೈರೂಪ್ಯಂ ಶರಣೇಷಿಣಾಮ್ । ಅನುತೇ ಪರಿಹೃತುಂ ಯಃ ಸ ಸರ್ವೇಶ್ವರ ಇರೀತಿಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । “ಅಜಃ ಸರ್ವೇಶ್ವರಃ ಸಿದ್ಧಃ” ವಿಂ ಸಂ ।  
2. ಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. 3. ಸಾರ್ವಭೌಮ, ಚಕ್ರವರ್ತಿ, ರಾಷ್ಟ್ರದ ಸರ್ವಾಧಿಕಾರವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಪ್ರಭು.

**ಸರ್ವೌಘ ಸರ್ವೌಘ** (ಪುಂ) ಸಕಲ ಸೇನೆಗಳ ಸಿದ್ಧತೆ. ಸರ್ವಸ್ಯ ಔಘಃ । “ಸರ್ವಾಭಿಷಾರಃ ಸರ್ವೌಘಃ” ಅಮಂ ।

**ಸರ್ವೌಘಧಿಗಣ ಸರ್ವೌಘಧಿಗಣ** (ಪುಂ) ಸುರ ಜಟಾಮಾಸಿ ಮೊದಲಾದ ಓಷಧಿಗಳ ಸಮೂಹ. ಸರ್ವೌಘಧೀನಾಂ ಗಣಃ ।

**ಸರ್ಪ ಸರ್ಪ** (ಪುಂ) ಸಾಸವೆ (ಗಿಡ). ಸರತಿ ಸ್ನೇಹೋಽಸ್ಮಾತ್ — ಸೃ (ಗತೌ) “ಅಪಃ” ಷುಗಾಗಮಶ್ಚ (ಉಂ ೩-೧೪೧) ।  
“ಅಕಾರಣಸ್ನೇಹಮನೋಹರಾನನಃ ಶಿಖಾಲಲಾಟಾಪಿತಗೌರಸರ್ಪಃ” ಮಾಲತೀಂ ೧೦-೬ ।

**ಸಲ ಸಲ** (ನಂ) ಜಲ. ನೀರು. ಸರತಿ — ಸೃ (ಗತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । ರಸ್ಯ ಲಃ ।

**ಸಲಿಲ ಸಲಿಲ** (ನಂ) ನೀರು, ಜಲ. ಸಲತಿ ಗಚ್ಛತಿ — ಸಲ (ಗತೌ) “ಇಲಚ್” (ಉಂ ೧-೪೪) । “ಧ್ರುವಾನಾ ಕರಯುಗಮೀಕ್ಷಿತುಂ ವಿಲಾಸಾನ್ ಶೀತಾಲಃ ಸಲಿಲಗತೇನ ಸಿಂಚ್ಯತೇ ಸಮ” ಮಾಘಂ ೮-೧೯ ।

**ಸಲಿಲಕುಂತಲ ಸಲಿಲಕುಂತಲ** (ಪುಂ) ಪಾಚಿ, ಶೈವಾಲ. ಸಲಿಲಸ್ಯ ಕುಂತಲ ಇವ ।

**ಸಲಿಲನಿಧಿ ಸಲಿಲನಿಧಿ** (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ. ಸಲಿಲಸ್ಯ ನಿಧಿಃ, ಸಲಿಲಾನಿ ನಿಧೀಯಂತೇಽತ್ರ — ನಿ + ಛು ಛಾನ್ (ಧಾರಣೆ) “ಕಿಃ” (೩-೩-೯೩) । “ಕಲ್ಲೋಲಾಃ ಸಲಿಲನಿಧೇರವಾಪ್ಯ ಪಾರಂ ಶೀಯಂತೇ ನ ಗುಣಮಹೋಮಯಸ್ತದೀಯಾಃ” ಮಾಘಂ ೧೬-೮೨ ।  
-ರಾಶಿಃ - ರಾಶಿಃ. ಸಲಿಲಾನಾಂ ರಾಶಿರತ್ರ । “ಪಯಸಿ ಸಲಿಲರಾಶೇರ್ನಕ್ಷತ್ರಮಂತನಿಮಗ್ನಃ ಸ್ಫುಟಮನಿಗಮತಾಪಿ ಜ್ವಾಲಯಾ ಬಾಹವಾಗ್ನೇಃ” ಮಾಘಂ ೧೧-೪೪ ।

**ಸಲಿಲಾಶಯ ಸಲಿಲಾಶಯ** (ಪುಂ) ಜಲಾಶಯ, ನೀರನ್ನು ಶೇಖರಿಸಿಡಲು ಕಲ್ಲು ಇಟ್ಟಿಗೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ಕಟ್ಟಿದ ತೊಟ್ಟಿ, ಕೆರೆ ಕಟ್ಟಿ ಮೊದಲಾದುವು. ಸಲಿಲಸ್ಯ ಆಶಯಃ ।

**ಸಲಿಲೇಂದ್ರ ಸಲಿಲೇಂದ್ರ** (ಪುಂ) ಬಡಬಾಗಿ. ಸಲಿಲಮೇವ ಇಂದ್ರನಂ ಯಸ್ಯ । “ಬಡಬಾಗ್ನೌ ತು ಸಲಿಲೇಂದ್ರನಃ ಸ್ವಾಹವಾಮುಖಮ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಸಲಿಲ ಸಲಿಲ** (ವಿಂ) 1. ಲೀಲೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಕ್ರೀಡಾ ಸಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಆಟದ ಸ್ವಭಾವದ. ಲೀಲಯಾ ಸಹ ವರ್ತತೇ । “ಸಲಿಲಯಾತಾನಿ ನ ಭರ್ತುರಭ್ರಮೋಃ ನ ಚಿತ್ರಮುಚ್ಚೈಃ-ಶ್ರವಸಃ ಪದಕ್ರಮಮ್” ಮಾಘಂ ೧-೪೨ । (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 2. ಆಟದಿಂದ, ವಿನೋದದಿಂದ. “ನಾಗಂ ಪುನರ್ಮೃದು ಸಲಿಲ-ನಿಮಿಲಿತಾಕ್ಷಮ್” ಮಾಘಂ ೪-೬ ।

**ಸಲೋಕತಾ ಸಲೋಕತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಾಲ್ವೀಕ, ಪರಮಾತ್ಮ ನೊಡನೆ ಸಮಾನ ಲೋಕದಲ್ಲಿ (ವೈಕುಂಠದಲ್ಲಿ) ವಾಸ ಮಾಡುವಿಕೆ. ಸಮಾನೋ ಲೋಕಃ ಯಸ್ಯ । ತಸ್ಯ ಭಾವಃ “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯) । ಇದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ವೋಕ್ತೃಗಳ ಲ್ಲೊಂದು ವಿಧ.

**ಸಲಲಕಿ ಸಲಲಕಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನೇಬೇಲದ ಮರ. ಸತ್ಕೃತ್ಯ ಲಕ್ಯತೇ — ಲಕ (ಆಸ್ವಾದನೆ) “ಕುನ್” (ಉಂ ೨-೩೩) ।  
“ಮಹೇರಣಾ ಕುಂದುಕಿ ಸಲಲಕಿ ಹ್ಲಾದಿನೀತಿ ಚ” ಅಮಂ ।

**ಸವ ಸವ** (ಪುಂ) 1. ಯಜ್ಞ, ಯಾಗ. ಸುಯತೇ ಸೋಮೋಽತ್ರ — ಷುನ್ (ಅಭಿಷವೇ) “ಅಪ್” (೩-೩-೪೭) । “ರಾಜಸುಯಾ-ಶ್ರಮೇವಾಧೈಃ ಸೋಽಯಜದ್ಬಹುಭಿಃ ಸವೈಃ” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೯೪-೨೬ ।  
2. ಸಂತಾನ, ಸಂತತಿ. “ಸವೋ ಯಜ್ಞೇ ಚ ಸಂತಾನೇ” ಮೇದಿಂ ।  
3. ಸೂರ್ಯ. 4. ಚಂದ್ರ. 5. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

**ಸವನ ಸವನ** (ನಂ) 1. ಯಾಗ, ಯಜ್ಞ. ಷುನ್ (ಅಭಿಷವೇ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪) । “ಸಮರಪ್ರಿಯಯಾ ಸಹ ಧ್ವಜಿನಯಾ ಸವನಂ ತಸ್ಯ ಜಗಾಮ ತತ್ಪ್ರತೀಕ್ಷಯಃ” ಯಾದಂ ೧೪-೩೦ ।



2. ಯಾಗದ ನಿಯಮ ಸ್ಥಾನ. "ಪ್ರವೀಶ ಗಾಮಿವ ಕೃಷಸ್ಯ ನಿಯಮಸವನಾಯ ಗಚ್ಛತಃ" ಕಿರಾಂ ೧೨-೧೦. 3. ಸೋಮ ರಸವನ್ನು ತೆಗೆಯುವುದು, ಸೋಮಲತೆಯನ್ನು ಕುಟ್ಟಿ ರಸವನ್ನು ಹಿಂಡುವುದು. "ಸವನಂ ತ್ವಧ್ವರೇ ಸ್ನಾನೇ ಸೋಮ-ನಿರ್ದಲನೇಽಪಿ ಚ" ಮೇದಿಂ. 4. ಸೋಮರಸಪಾನ.

ಸವಯಸ್ ಸವಯಸ್ (ಪುಂ) 1. ಸಮಾನ ವಯಸ್ಸುಳ್ಳ ಮಿತ್ರ, ಗೆಳೆಯ. ಸಮಾನಂ ವಯಃ ಯಸ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಸಮಾನ ವಯಸ್ಸುಳ್ಳವನು. "ಸೂತಾತ್ಮಜಾಃ ಸವಯಸಃ ಪ್ರಥಿತಪ್ರಬಂಧಂ ಪ್ರಾಬೋಧಯನ್ತುಷಸಿ ವಾಗ್ಗಿರಿದಾರವಾಚಃ" ರಘುಂ ೪-೬೪. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಗೆಳತಿ, ಸಖಿ. ಸಮಾನಂ ವಯೋಽಸ್ಯಾಃ.

ಸವರ್ಣ ಸವರ್ಣ (ಪುಂ) 1. ಸಮಾನಸ್ಥಾನ ಮತ್ತು ಪ್ರಯತ್ನವುಳ್ಳ ವರ್ಣ, ಒಂದೇ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಮತ್ತು ಒಂದೇ ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಅಕ್ಷರ. ತಾಲ್ವಾದಿಸ್ಥಾನ-ಮಾನ್ಯಂತರಪ್ರಯತ್ನಶ್ಚೇತದ್ವಯಂ ಯಸ್ಯ ಯೇನ ತುಲ್ಯಂ ತನ್ಮಿಥಃ ಸವರ್ಣಸಂಜ್ಞಾ ಸ್ಯಾತ್. "ತುಲ್ಯಾಸ್ಯಪ್ರಯತ್ನಂ ಸವರ್ಣಮ್" ಪಾಂ ಸೂಂ ೧-೧-೯. ಈ ವರ್ಣಗಳು ಪರಸ್ಪರ ಸರ್ವರ್ಣಸಂಜ್ಞೆ ಹೊಂದುವುವು. (ವಿಂ) 2. ಸಮಾನವಾದ, ಸದೃಶವಾದ. "ಪ್ರಥಿತಮೋಲಿರಸೌ ವನಮಾಲಯಾ ತರಪಲಾಶಸವರ್ಣತನುಚ್ಛದಃ" ರಘುಂ ೯-೪೧. 3. ಸಮಾನ ವರ್ಣವುಳ್ಳ, ಒಂದೇ ವಿಧ ಬಣ್ಣವುಳ್ಳ. "ಉಚ್ಛೇರ್ಮಹಾರಜತರಾಜಿವಿರಾಜಿತಾಸೌ ದುರ್ವಣ-ಭಿತ್ತಿರಿಹ ಸಾಂದ್ರಸುಧಾಸವರ್ಣಾ" ಮಾಧಂ ೯-೨೮. 4. ಸಮಾನ ಜಾತಿಯ, ಒಂದೇ ಜಾತಿಯ. "ಪಾಣಿಗ್ರಹಣ-ಸಂಸ್ಕಾರಃ ಸವರ್ಣಾಸ್ಪದೀಕೃತೇ" ಮನುಂ ೩-೪೩.

ಸವರ್ಣ ಸವರ್ಣ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಮಾನ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು. ಸಮಾನೋ ವರ್ಣೋ ಜಾತಿಃ ಯಸ್ಯಾಃ. "ಉದ್ವಹೇತ ದ್ವಿಜೋ ಭಾರ್ಯಾ ಸವರ್ಣಾ ಲಕ್ಷಣಾನ್ವಿತಾಮ್" ಮನುಂ ೩-೪.

ಸವಿಕಲ್ಪಕ ಸವಿಕಲ್ಪಕ (ಪುಂ) ಸಮಾಧಿಯ ಒಂದು ಭೇದ, ಸಂಪ್ರಜ್ಞಾತ ಸಮಾಧಿ. ["ಸಂಪ್ರಜ್ಞಾತ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಸವಿತು ಸವಿತು (ಪುಂ) 1. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. ಸುವತಿ — ಷ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩). "ಮುಹುರಂತರಾಲ-ಭುವಮಸ್ತಗಿರೇಃ ಸವಿತುಷ್ಠ ಯೋಷಿದಮಿಮೀತ ದೃಶಾ" ಮಾಧಂ ೧-೨. "ದಿನಾಂತೇ ನಿಹಿತಂ ತೇಜಃ ಸವಿತೇವ ಹುತಾಶನಃ" ರಘುಂ ೪-೧. 2. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. 3. ಸೃಷ್ಟಿ ಕರ್ತನಾದ ಬ್ರಹ್ಮ. 4. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 5. ಇಂದ್ರ. 6. ವಿಷ್ಣು. ಸೂರ್ಯದ್ವಾರಾ ಸಸ್ಯಾದಿಕಂ ಸುತೇ. "ರವಿವಿರೋಚನಃ ಸೂರ್ಯಃ ಸವಿತಾ ರವಿಲೋಚನಃ" ವಿಂ ಸಂ.

ಸವಿತು ದೇವತ ಸವಿತು ದೈವತ (ಪುಂ) ಹಸ್ತನಕ್ಷತ್ರ. ಸವಿತಾ ದೇವತಮಸ್ಯ.

ಸವಿತ್ರ ಸವಿತ್ರ (ನಂ) ಪ್ರಸವಮಾಡಿಸುವ ಸಾಧನ. ಸುಯತೇ-ನೆನ-ಷುಙ್ (ಪ್ರಾಣಿಪ್ರಸವೇ) ಕರಂ "ಇತ್ರಃ" (೩-೨-೧೮೪).

ಸವಿತ್ರ ಸವಿತ್ರ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತಾಯಿ, ಜನ್ಮವನ್ನು ನೀಡಿದ ಮಾತೆ. ಷುಙ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭವಿಮೋಚನೇ) "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩). "ಜಿಪ್" (೪-೧-೪). "ತಯಾ ದುಹಿತಾ ಸುತರಾಂ ಸವಿತ್ರೀ ಸ್ಫುರತ್ಪ್ರಭಾಮಂಡಲತಯಾ ಚಕಾಸೇ" ಕುಮಾಂ ೧-೨೪. 2. ಗೋವು, ಆಕಳು, ಹೆಸು.

ಸವಿಧ ಸವಿಧ (ನಂ) 1. ಸಾಮೀಪ್ಯ, ಹತ್ತಿರ. ಸಮಾನಾ ವಿಧಾಽಸ್ಯ. "ಶ್ರೀಮುಖೇಂದುಸವಿಧೇಽಪಿ ಶೋಭತೇ ಯಸ್ಯ ನಾಭಿ-ಸರಸೀಸರೋಹಮ್" ಮಾಧಂ ೧೪-೬೯. (ವಿಂ) 2. ಹತ್ತಿರದ, ಸಮೀಪದ. "ಭೂಯೋ ಭೂಯಃ ಸವಿಧನಗರೀರಥ್ಯಯಾ ಪರ್ಯಂತಂ ದೃಷ್ಟಾ ದೃಷ್ಟಾ ಭವನವಲಮೀತುಜ್ಜವಾತಾಯನಸ್ಥಾ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೮.

ಸವ್ಯ ಸವ್ಯ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಸುತೇ ವಿಷ್ಣುಮ್—ಷುಙ್ (ಪ್ರಾಣಿ-ಗರ್ಭವಿಮೋಚನೇ) "ಯಃ" (೩ಂ ೪-೧೦೯). (ವಿಂ) 2. ಎಡಭಾಗದ, ಎಡಗಡೆಯ. "ಸವ್ಯೇ ಭವತ್ಯಾಸ್ಸರಯು-ಸಮೇತಾ ರಮ್ಯೇಯಮಾಭಾತಿ ಪುರೀ ರಘುಣಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೮-೬೪. 3. ಬಲಗಡೆಯ, ಬಲಭಾಗದ. "ಏಕೇನ ಸವ್ಯಪಾಣಿನಾ ವಿಶಿಖಮುತ್ವಾಯ ಕಿಮಾಹ ರಾವಣಃ" ಅನರ್ಥಂ. 4. ಪ್ರತಿಕ್ಕೂಲ ವಾದ, ವಿರುದ್ಧವಾದ. "ಸವ್ಯಂ ದಕ್ಷಿಣೇ. ವಾಮೇ ಚ ಪ್ರತಿಕೂಲೇ ಚ" ಹೇಮಂ.

ಸವ್ಯಸಾಚಿನ್ ಸವ್ಯಸಾಚಿನ್ (ಪುಂ) ಅರ್ಜುನ. ಸವ್ಯೇನ ವಾಮೇನಾಪಿ ಶರಸಚನಶೀಲಃ—ಷಚ (ಸಮವಾಯೇ) "ಣಿತ್ತಿಃ" (೩-೨-೭೮). "ಮಯೇವೇತೇ ನಿಹಿತಾಃ ಪೂರ್ವಮೇವ ನಿಮಿತ್ತಮಾತ್ರಂ ಭವ ಸವ್ಯಸಾಚಿನ್" ಗೀತಾ ೧೧-೩೩. "ಉಭೌ ಮೇ ದಕ್ಷಿಣೌ ಪಾಣೌ ಗಾಂಧೀವಸ್ಯ ವಿಕರ್ಷಣೇ. ತೇನ ದೇವಮನುಷ್ಯೇಷು ಸವ್ಯ-ಸಾಚೀತಿ ಮಾಂ ವಿದುಃ" ಮಾಂ ವಿರಾಂ ೪೪-೧೯.

ಸವ್ಯೇಠ ಸವ್ಯೇಠ (ಪುಂ) ಸಾರಥಿ. ಸವ್ಯೇ ವಾಮೇ ತಿಷ್ಠತಿ — ಣಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕಃ" (೩-೨-೪).

ಸವ್ಯೇಠ ಸವ್ಯೇಠ (ಪುಂ) ಸಾರಥಿ, ರಥವನ್ನು ನಡೆಸುವವನು. ಸವ್ಯೇ ವಾಮೇ ತಿಷ್ಠತಿ — ಣಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಋನ್" (೩ಂ ೨-೧೦೧). ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಅಲುಕ್ (೬-೩-೯).

ಸಸ್ಯ ಸಸ್ಯ (ನಂ) ಮರ ಗಿಡ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಹೆಣ್ಣು, ಕಾಯಿ ಮತ್ತು ಧಾನ್ಯ. ಸಸ್ತಿ — ಷಸ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಯಃ" (೩ಂ ೪-೧೦೯). "ಸುಖೇನ ಲಮ್ಯಾ ದಧತಃ ಕೃಷಿವಲೇರ-ಕೃಷ್ಣಪಚ್ಯಾ ಇವ ಸಸ್ಯಸಂಪದಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೧೭. "ಜೀರ್ಣ-ಮನ್ವಂ ಪ್ರಶಂಸೀಯಾತ್ ಭಾರ್ಯಾ ಚ ಗತಯೌವನಾಮ್. ರಣಾತ್ ಪ್ರತ್ಯಾಗತಂ ಶೂರಂ ಸಸ್ಯಂ ಚ ಗೃಹಮಾಗತಮ್" ಚಾಣಕ್ಯಂ.



ಸತ್ಯಕ ಸಸ್ಯಕ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ವಿಧ ಮಣ. 2. ಅಸಿ. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ.

ಸತ್ಯಮಂಜರೀ ಸಸ್ಯಮಂಜರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧಾನ್ಯದ ತೆನೆ. ಸತ್ಯಸ್ಯ ಮಂಜರೀ.

ಸತ್ಯಮಾರಿನ್ ಸಸ್ಯಮಾರಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾಮೂಷಕ, ಹೆಗ್ಗಣ. ಸತ್ಯಂ ಮಾರಯತಿ—ಮೃಙ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗೆ) + ಣಿಕ್ "ಣಿನಿ:" (3-2-96). (ವಿಂ) 2. ಧಾನ್ಯಗಳನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ.

ಸತ್ಯಶೂಕ ಸಸ್ಯಶೂಕ (ನಂ) ಧಾನ್ಯದ ಅಗ್ರಭಾಗ. ಧಾನ್ಯದ ಮುಳ್ಳು. ಸತ್ಯಸ್ಯ ಶೂಕಮ್.

ಸತ್ಯಸಂವರ ಸಸ್ಯಸಂವರ (ಪುಂ) ಸಾಲವೃಕ್ಷ, ಮತ್ತಿಮರ. ಸತ್ಯಃ ಸಂವ್ರಿಯತೇ—ಸಮ್+ವೃಜ್ (ವರಣೆ) "ಅಪ್" (3-3-46).

ಸಹ ಸಹ (ಪುಂ) 1. ಆಗ್ರಹಾಯಣಿಕ ಮಾಸ, ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷ ಮಾಸ. ಸಹತೇ—ಷಹ (ಮರ್ಷಣೆ) "ಅಚ್" (3-1-134). "ಮಾರ್ಗ ಸಹ: ಸಹಾ:" ಸಂದರ್ಶನವು. (ಪುಂ) 2. ಬಲ, ಶಕ್ತಿ. "ಸಹೋ ಬಲೇ ನ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಸ್ಯಾತ್" ಮೇದಿಂ. (ವಿಂ) 3. ಸಮರ್ಥ, ಶಕ್ತಿ. 4. (ಸಮಾಸದ ಅಂತ್ಯದಲ್ಲಿ) ಸಹಿಸಿ ಕೊಳ್ಳುವವನು, ತಾಳ್ಮೆಯುಳ್ಳವನು, ಸೈರಣೆಯುಳ್ಳವನು. ಭಾರಸಹ: (ಅವ್ಯಂ) 5. ಕೂಡ, ಸಂಗಡ, ಒಂದಿಗೆ. ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ. ಸಹತೇ—ಷಹ (ಮರ್ಷಣೆ) "ಅಚ್" (3-1-134). "ಯದ್ವಾಪಿರವಿಠ್ಠಲಚಂದ್ರಶಾಲ: ಸಹ ದಯಿತಾಭಿರನನ್ಯಮಾನ-ಸಾಫಿ:" ಯಾದಂ 24-9. 6. ಕಾತ್ಯಾಯಣಿ, ಸಾಕಲ್ಯ, ಸಂಪೂರ್ಣತೆ. 7. ವಿದ್ಯಮಾನ. 8. ಸುಬಂಧ. 9. ಸಾದೃಶ್ಯ. 10. ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಒಂದೇ ಸಮಯದಲ್ಲಿ. 11. ಯಶೋಪದ್ಯ, ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ. 12. ಸಮೃದ್ಧಿ. "ಸಹ ಸಮ್ಬಂಧಸಾದೃಶ್ಯಯೋಗಪದ್ಧತಿಸಮೃದ್ಧಿಷು. ಸಾಕಲ್ಯೇ ವಿವಿಧಾನೇ ಚ" ಹೇಮಂ.

ಸಹಕಾರ ಸಹಕಾರ (ಪುಂ) ಬಹಳ ಪರಿಮಳವುಳ್ಳ ಮಾವಿನ ಮರ, ಜೊತೆವೃಕ್ಷ. ಸಹ ಕಾರಯತಿ ಮೇಲಯತಿ ದ್ವಂದ್ವಮ್—ಠುಕ್ತು (ಕರಣೆ) + ಣಿಕ್ "ಅಚ್" (3-1-134). "ಮಂದೋತ್ಕಂಠಾ: ಕೃತಾಸ್ತೇನ ಗುಣಾಧಿಕತಯಾ ಗುರೌ. ಫಲೇನ ಸಹಕಾರಸ್ಯ ಪುಷ್ಪೋದ್ಗಮ ಇವ ಪ್ರಜಾ:" ರಘುಂ 4-9.

ಸಹಕಾರಿನ್ ಸಹಕಾರಿನ್ (ವಿಂ) ಜೊತೆಗೂಡಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕೆಲಸು ಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು. ಸಹ ಕರೋತಿ—ಕೃಙ್ (ಕರಣೆ) "ಣಿನಿ:" (3-2-96). ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (4-1-5). —ಕಾರಿಣಿ—ಕಾರಿಣೀ.

ಸಹಗಮನ ಸಹಗಮನ (ನಂ) ವೃತ್ತನಾದ ಪತಿಯೊಡನೆ [ತಾನೂ (ಪತ್ನಿಯೂ) ಚಿತೆಯನ್ನೇರಿ ಜೀವ ತ್ಯಜಿಸಿ] ಹೋಗುವುದು.

ಸಹಚರ ಸಹಚರ (ಪುಂ) 1. ಸುಹೃತ್ತು, ಗೆಳೆಯ. ಸಹ ಚರತಿ—ಚರ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (3-1-134). "ಯಾವದಿಹೋದಾನೇ ಮುಹುತಂ ವಿಶ್ರಮ್ಯ ಮಕರಂದಸಹಚರಂ ನಾಥಂ ಮಾಧವಂ ಪ್ರೇಕ್ಷಿಷ್ಯೇ" ಮಾಲತೀಂ 1. 2. ಪ್ರಿಯ, ಪತಿ. "ಸಹಚರಮುಚ್ಚಿತಗುಚ್ಛವಾಚ್ಛಯಾನ್ಯಾ" ಮಾಧಂ 9-49. 3. ಪ್ರತಿಬಂಧಕ. (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ನೀಲಿಹೂವಿನ ಗೋರಂಟಿ. 5. ಹಳದಿ ಹೂವಿನ ಗೋರಂಟಿ. "ಸಹಚರ: ಪುನಃಪ್ರಿಷ್ಟಾಂ ವಯಸ್ಯೇ ಪ್ರತಿಬಂಧಕೇ" ಹೇಮಂ. (ವಿಂ) 6. ಅನುಚರ, ಜೊತೆಗಾರ. "ಸಹಚರಮಧುಹಸ್ತನೃಪತೃತಾಡ್ಕುರಾಸ್ತ: ಶತ-ಮಖಮುಪತಸ್ಥೇ ಪ್ರಾಜ್ವಲಿ: ಪುಷ್ಪಧನ್ವಾ" ಕುಮಾರಂ 2-44. "ಭವೇತ್ ಸಹಚರೋ ಪ್ಲಿಷ್ಟಾಂ ದ್ವಯೋರನುಚರೇ ತ್ರಿಷು" ಮೇದಿಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಚರೀ—ಚರೀ. 7. ಹಳದಿ ಹೂವಿನ ಗೋರಂಟಿ. 8. ಗೆಳತಿ, ಸಖಿ. 9. ಪತ್ನಿ. "ಲಕ್ಷ್ಯೀಕೃತಸ್ಯ ಹರಿಣಸ್ಯ ಹರಿಪ್ರಭಾವ: ಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯ ಸ್ಥಿತಾಂ ಸಹಚರೀಂ ವ್ಯವಹಾಯ ದೇಹಮ್" ರಘುಂ 9-49.

ಸಹಚಾರ ಸಹಚಾರ (ಪುಂ) 1. ಸಾಮರಸ್ಯ, ಸಾಮಾನಾಧಿ ಕರಣ್ಯ, ಹೊಂದಿಕೆ. 2. ದೋಷರಹಿತವಾದ ಹೇತುವಿನ ಕಾರ್ಯಸಾಧನೆ.

ಸಹಚಾರಿನ್ ಸಹಚಾರಿನ್ (ಪುಂ) ಪತಿ, ಗಂಡ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಚಾರಿಣಿ—ಚಾರಿಣೀ. ಪತ್ನಿ.

ಸಹಜ ಸಹಜ (ಪುಂ) 1. ಸಹೋದರ, ಒಡಹುಟ್ಟಿದವನು. ಸಹ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಙ:" (3-2-101). "ಸಹಜಬಲಸಮೇತ: ಶಕ್ರಗುರ್ವೇಜಯ: ಸಮುದಿತವಿಷಮಾಸ್ತ್ರ-ಸ್ತಾದೃಶಾನಂದೇಹು:" ಯಾದಂ 24-94. 2. ಜನ್ಮಲಗ್ನದಿಂದ ಮೂರನೆಯ ಸ್ಥಾನ. (ವಿಂ) 3. ಸ್ವಾಭಾವಿಕವಾದ, ಸ್ವಭಾವಸಿದ್ಧವಾದ. 4. ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ, ಹುಟ್ಟು ವಾಗಲೇ ಉತ್ಪನ್ನವಾದ. "ಸಹಜ ನಯನಂ ಚ ಯತ್ತತೀಯಂ ಮುಜಗ್ರಮಂ ಚ ತವ ಸ್ಥಿತಾತಿರಿಕ್ತಮ್" ಯಾದಂ 14-99. 5. ಜನ್ಮಸಿದ್ಧವಾದ, ವಂಶಪರಂಪರೆಯಿಂದ ಬಂದ. "ಸಹಜಂ ಸಲೃ ಯದ್ವಿನಂದಿತಂ ನ ಸಲೃ ತತ್ಕರ್ಮ ವಿವರ್ಜನೀಯಮ್" ಶಾಕುಂ 6-1.

ಸಹಜಮಿತ್ರ ಸಹಜಮಿತ್ರ (ನಂ) ಸ್ವಭಾವವಾಗಿಯೇ ಮಿತ್ರ ನಾಗಿರುವವನು, ಉಪಕಾರ ಮಾಡಲಾದ ಯಾವ ಕಾರಣವೂ ಇಲ್ಲದೆ ಮಿತ್ರನಾಗಿರುವವನು. ಸಹಜ ಮಿತ್ರಮ್. ಅಕ್ಕ ತಂಗಿಯರ ಮಕ್ಕಳು, ತಾಯಿಯ ಸಹೋದರೆಯರ ಮಕ್ಕಳು ಮತ್ತು ತಂದೆಯ ಸಹೋದರ (ಸೋದರತ್ತೆ) ಯರ ಮಕ್ಕಳು ಸಹಜಮಿತ್ರರು.

ಸಹಜಶತ್ರು ಸಹಜಶತ್ರು (ಪುಂ) ಸ್ವಾಭಾವಿಕ ಶತ್ರು, ಅವಕಾರ ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲದೆ ಸ್ವಭಾವದಿಂದ ಆಗಿರುವ ಶತ್ರು.



ಸಹಜ: ಶತ್ರು: | ಸಪತ್ನೀ (ಸವತಿ) ಪುತ್ರರು, ತಂದೆಯ ಸಹೋದರರು ಮತ್ತು ಅವರ ಪುತ್ರರು ಸಹಜಶತ್ರುಗಳು.

ಸಹಜಾತ ಸಹಜಾತ (ಪುಂ) 1. ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು, ಅವಳಿಯಾಗಿ ಸಂಗಡ ಹುಟ್ಟಿದ ಸಹೋದರ. ಸಹ ಸಮ ಜಾತ: | (ವಿಂ) 2. ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.

ಸಹಜಾರಿ ಸಹಜಾರಿ (ಪುಂ) "ಸಹಜಶತ್ರು" ಪದದ ಅರ್ಥ.

ಸಹದೇವ ಸಹದೇವ (ಪುಂ) 1. ಮಾದ್ರಿಯ ಪುತ್ರ, ಐವರು ಪಾಂಡವರಲ್ಲಿ ಕಿರಿಯ ಸಹೋದರ, ನಕುಲನ ತಮ್ಮ, ಪಾಂಡುರಾಜನ ಐದನೆಯ ಮಗ. "ವಿನಯಾದವನಸ್ಯ ವಿಶ್ವಮತು: ಸಹದೇವ: ಸ್ವಯಮಾಹರತ್ಸಪರ್ಯಮ್" ಯಾದಂ ೧೫-೧೪ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ದೇವಾ -ದೇವಾ. 2. ಕಳ್ಳಂಗಡಲೆ. 3. ಸೊಗದೆ ಗಿಡ. 4. ದಂಡೋತ್ಪಲ. -ದೇವಿ -ದೇವೀ. 5. ಸರ್ಪಾಕ್ಷಿ, ಈಶ್ವರೀ ಹೆಂಟು. "ಸಹದೇವಾ ಬಲಾಢ್ಢೋತ್ಪಲಯೋಷಾರಿ-ವೋಷವೌ | ಸಹದೇವಿ ತು ಸರ್ಪಾಕ್ಷಿಯಾಂ ಪುಸಿ ಸ್ಯಾತ್ ಪಾಣ್ಡವೇ ಪುನ:" ಮೇದಿಂ |

ಸಹಧರ್ಮಚರೀ ಸಹಧರ್ಮಚರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಮದುವೆಯಾದ ಪತ್ನಿ, ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಗಳ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿದ್ದು ಭಾಗವಹಿಸುವ ಪತ್ನಿ. ಸಹ ಧರ್ಮ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಠ:" (೩-೨-೧೭) | "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | "ಸಹಧರ್ಮಚರೀ ಸದಾನುವೃತ್ತಾಂ ಸ್ವಯ-ಮುಹೀಪಯತಾ ತ್ವಯಾನುಕರ್ಮಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೫-೨೬ |

ಸಹಧರ್ಮಚಾರಿನ್ ಸಹಧರ್ಮಚಾರಿನ್ (ಪುಂ) ಪತ್ನಿ, ಗಂಡ. ಸಹ ಧರ್ಮ ಚರತುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ - ಚರ (ಗತೌ) "ಣಿನಿ:" (೩-೨-೭೮) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫) | -ಚಾರಿಣಿ -ಚಾರಿಣೀ.

ಸಹಧರ್ಮಿಣಿ ಸಹಧರ್ಮಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಧ್ಯುಕ್ತ ರೀತಿ ಯಲ್ಲಿ ಮದುವೆಯಾದ ಪತ್ನಿ, ಧರ್ಮ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿದ್ದು ಭಾಗವಹಿಸುವ ಪತ್ನಿ. ಸಹಧರ್ಮಾಸ್ತಿಯಸ್ಯಾ: "ಙಿನಿ:" (೫-೨-೧೩೨) | "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫) | "ಪತ್ನೀ ಪಾಣಿಗೃಹೀತೀ ಚ ದ್ವಿತೀಯಾ ಸಹಧರ್ಮಿಣಿ" ಅಮಂ |

ಸಹನ ಸಹನ (ನಂ) 1. ತಾಳ್ಮೆ, ಸ್ಥಿರಣೆ, ಸ್ಥಿರಿಸುವುದು. ಷಹ (ಮರ್ಷಣೆ) ಭಾವೆ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | "ಕಾರ್ಯಾಥ-ಮಪಮಾನಾದೇ: ಸಹನಂ ಖಲು ಯದ್ಭವೇತ್" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೦೭ | (ವಿಂ) 2. ಸ್ಥಿರಿಸುವವನು, ಸಹಿಸುವವನು. ಷಹ "ಯುಕ್" (೩-೨-೧೪೯) |

ಸಹಪಾಂಶುಕಿಲ ಸಹಪಾಂಶುಕಿಲ (ಪುಂ) ಗೆಳೆಯ, ಸ್ನೇಹಿತ. ಸಹ ಪಾಂಶುನಾ ರೇಣುನಾ ಕಿಲತಿ - ಕಿಲ (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೫) | "ಸಹಪಾಂಶುಕಿಲ: ಸ್ನೇಹೀ ವಯಸ್ಯ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಸಹಭಾವಿನ್ ಸಹಭಾವಿನ್ (ವಿಂ) ಸಾಹಾಯ್ಯ ಮಾಡುವವನು, ಒತ್ತಾಸೆ ಮಾಡುವವನು. ಸಹ ಭವತಿ - ಭೂ (ಸತಾಯಾಮ್) "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) | "ಆಕೀಯಾ: ಏಕಪಕ್ಷಾ: ಸ್ಯು: ಸಹಾಯಾ: ಸಹಭಾವಿನ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಸಹಭೋಜನ ಸಹಭೋಜನ (ನಂ) ಒಂದೇ ಕಡೆ ಕುಳಿತು ಊಟಮಾಡುವುದು, ಒಂದೇ ಗುಂಪಿನಲ್ಲಿ ಸೇರಿ ಊಟ ಮಾಡುವುದು. ಸಹ ಏಕತ್ರ ಮಿಲಿತವಾ ಭೋಜನಮ್ |

ಸಹಾಯಿನ್ ಸಹಾಯಾಯಿನ್ (ವಿಂ) ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಹೋಗುವವನು, ಸಂಗಡ ಹೋಗುವವನು. ಸಹ ಯಾತಿ - ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಣಿನಿ:" (೩-೧-೧೩೪) |

ಸಹವಾಸ ಸಹವಾಸ (ಪುಂ) ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವುದು. ಸಹ + ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ವಬ್" (೩-೩-೧೮) |

ಸಹವಾಸಿನ್ ಸಹವಾಸಿನ್ (ವಿಂ) ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ವಾಸ ಮಾಡುವ, ಯಾವಾಗಲೂ ಸಂಗಡ ಇರುವ. ಸಹ ವಸತಿ - ವಸ (ನಿವಾಸೇ) "ಣಿನಿ:" (೩-೨-೭೮) | "ಸಂಶಯ್ಯ ಕ್ಷಣಮಿತಿ ನಿಶ್ಚಿಕಾಯ ಕಶ್ಚಿದ್ವಿಜ್ಞೋಕೈರ್ವಕಸಹವಾಸಿನಾಂ ಪರೋಕ್ಷೇ:" ಮಾಘಂ ೮-೨೯ |

ಸಹಸ್ ಸಹಸ್ (ಪುಂ) 1. ಮಾರ್ಗಶೀರ್ಷ ಮೂಸ. ಸಹ್ಯತೇಜನ - ಷಹ (ಮರ್ಷಣೆ) "ಅಸುನ್" (೩ಂ ೪-೧೮೯) | "ಕಲ್ಪಯಿತುಂ ಕ್ಷಣಮಕ್ಷಮತಾಜ್ಞನಾ ನ ಸಹಸಾ ಸಹಸಾ ಕೃತವೇಪಥು:" ಮಾಘಂ ೬-೫೭ | (ಪುಂ) 2. ಬಲ, ಶಕ್ತಿ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. "ದ್ವಿವಿಣ ತರ: ಸಹೋಬಲಶೋಭಾಣಿ ಸ್ಥಾಮ ಶುಭಂ ಚ" ಅಮಂ | "ಸಹೋ ಬಲೇ ನ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಸ್ಯಾತ್" ಮೇದಿಂ |

ಸಹಸ ಸಹಸ (ವಿಂ) ಹಾಸ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಹಸೇನ ಹಾಸ್ಯೇನ ಸಹ ವರ್ತತಿ | "ಅಯೋ ಹಸ: | ಹಾಸೋ ಹಾಸ್ಯಂ ಚ" ಅಮಂ | "ನ ಸಹಸಾ ಸಹಸಾ ಕೃತವೇಪಥು:" ಮಾಘಂ ೬-೫೭ |

ಸಹಸಾ ಸಹಸಾ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಹಠಾತ್ತಾಗಿ, ನಿರೀಕ್ಷಣೆಯಿಲ್ಲದೆ, ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ. "ಸಹಸೋಪಗತ: ಸವಿಸ್ಮಯಂ ತಪಸಾಂ ಸ್ಮೃತಿರಸ್ಮೃತಿರಾಪದಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೫೬ | 2. ವಿಮರ್ಶೆಯಿಲ್ಲದೆ, ವಿಚಾರಮಾಡದೆ. "ಸಹಸೇತ್ಯಾಕಸ್ಮಿಕಾವಿಮರ್ಶಯೋ:" | "ಸಹಸಾ ವಿದಧೀತ ನ ಕ್ರಿಯಾಮವಿವೇಕ: ಪರಮಾಪದಾಂ ಪದಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೩೦ | 3. ಶೀಘ್ರವಾಗಿ. "ಪ್ರಿಯತಮೇನ ಯಯಾ ಸಹಸಾ ಸ್ಥಿತಂ ನ ಸಹಸಾ ಸಹಸಾ ಪರಿರಮ್ಯ ತಮ್" ಮಾಘಂ ೬-೫೭ | "ಕಕುಭಾಂ ಮುಖಾನಿ ಸಹಸೋಜ್ಜ್ವಲ-ಯನ್" ಮಾಘಂ ೯-೪೨ |

ಸಹಸಾನ ಸಹಸಾನ (ಪುಂ) 1. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. 2. ಯಜ್ಞ. ಸಹತೇ - ಷಹ (ಮರ್ಷಣೆ) "ಅಸಾನವ್" (೩ಂ ೨-೮೭) |



ಸಹಸ್ರ ಸಹಸ್ರ (ಪುಂ) ಪಿಷಮಾಸ, ಪಿಷಮಾಸ. ಸಹಸ್ರಿ  
ಬಲೇ ಸಾಧು: "ಯತ್" (೪-೪-೧೮) । "ಪೌಷೇ ತೇವಸಹಸ್ರಯೌ  
ದ್ವೌ" ಅಮಂ । "ನಿನಾಯ ಸಾತ್ಯಂತಹಿಮೋತ್ಕಿರಾನಿಲಾಃ  
ಸಹಸ್ರರಾತ್ರಿರ್ದವಾಸತತ್ಪರಾ" ಕುಮಾಂ ೪-೨೬ ।

ಸಹಸ್ರ ಸಹಸ್ರ (ನಂ) ಒಂದು ಸಾವಿರ, ಹತ್ತು ನೂರು  
ಸಂಖ್ಯೆ. "ಸಹಸ್ರಾಣಿ ದೃಶಾಮಿಶ: ಕೃತ್ಸಿತಾಜ್ಞಂ ಚ ಸಾದರಮ್"  
ಕುಮಾಂ ೧೦-೨ । "ಸಹಸ್ರಸಹಸ್ರಚಂಗನಂ ಶಿರೋಭಿ: ಪಾದೈರ್ಭುವಂ  
ವ್ಯಾಪ್ಯ ವೀತಿಷ್ಠಮಾನಮ್" ಮಾಘಂ ೪-೪ ।

ಸಹಸ್ರಕಿರಣ ಸಹಸ್ರಕಿರಣ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಸಹಸ್ರ  
ಕಿರಣಾ ಯಸ್ಯ । "ಕಿ ವಾಽಪಿವಿಷ್ಯದರ್ಶನಸ್ತಮಸಾಂ ವಿಮೇತಾ  
ತಂ ಚೇತಸಹಸ್ರಕಿರಣೋ ಭುರಿ ನಾಕರಿಷ್ಯತ್" ಶಾಕುಂ ೭-೪ ।

ಸಹಸ್ರಗುಣ ಸಹಸ್ರಗುಣ (ವಿಂ) ಒಂದು ಸಾವಿರದಷ್ಟು,  
ಒಂದು ಸಾವಿರಮಡಿ. ಸಹಸ್ರ ಗುಣಾ ಯಸ್ಮಿನ್ । "ಸಹಸ್ರ-  
ಗುಣಮುಕ್ತಪ್ರಮಾದತೇ ಹಿ ರಸಂ ರವಿ:" ರಘುಂ ೧-೧೮ ।

ಸಹಸ್ರದಂಟ ಸಹಸ್ರದಂಟ (ಪುಂ) ಸಾವಿರ ಕೋರೆಗಳುಳ್ಳ  
ಮತ್ಸ್ಯ, ಪಾಲಿನವೆಯ ಮೀನು. ಸಹಸ್ರ ದಂಟಾ ಯಸ್ಯ ।

ಸಹಸ್ರಧಾರ ಸಹಸ್ರಧಾರ (ಪುಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಚಕ್ರ,  
ಸುಂದರ್ಶನ. ಸಹಸ್ರ ಧಾರಾ ಯಸ್ಯ ।

ಸಹಸ್ರಧಾರಾ ಸಹಸ್ರಧಾರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವಿಗೆ ಅಧಿಷ್ಠಿತ  
ಮಾಡುವ ಸಾವಿರ ರಂಧ್ರಗಳಿರುವ ಪಾತ್ರೆಯಿಂದ ಬೀಳುವ  
ಜಲಧಾರೆ. ಸಹಸ್ರ ಧಾರಾ ಜಲಧಾರಾ ಯತ್ರ ।

ಸಹಸ್ರನಯನ ಸಹಸ್ರನಯನ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಸಾವಿರ  
ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ (ಇಂದ್ರ). ಸಹಸ್ರ ನಯನಾನಿ ಯಸ್ಯ । -ನೇತ್ರ:  
-ನೇತ್ರಃ. "ಕ್ರಿಯಾಪ್ರಬಂಧಾದಯಮಧ್ವರಾಣಾಮಜಸ್ಮಮಾಹುತಸಹಸ್ರ-  
ನೇತ್ರ:" ರಘುಂ ೬-೨೩ । 2. ಮಹಾವಿಷ್ಣು.

ಸಹಸ್ರಪತ್ರ ಸಹಸ್ರಪತ್ರ (ನಂ) ಪದ್ಮ, ತಾವರೆ, ಕಮಲ.  
ಸಹಸ್ರ ಪತ್ರಾಪ್ಯಸ್ಯ । "ವಿಲೋಲನೇತ್ರಭರಮರೇಗವಾಕ್ಷಾ: ಸಹಸ್ರ-  
ಪತ್ರಾಭರಣಾ ಇವಾಸನ್" ರಘುಂ ೭-೧೧ ।

ಸಹಸ್ರಪತ್ರಾಸನ ಸಹಸ್ರಪತ್ರಾಸನ (ಪುಂ) ಕಮಲವೇ ಆಸನ  
ವಾಗಿರುವ ಚತುರ್ಮುಖಿ, ಬ್ರಹ್ಮ. ಸಹಸ್ರಪತ್ರಂ ಆಸನಂ  
ಯಸ್ಯ । "ಸಹಸ್ರಪತ್ರಾಸನಪತ್ರಹಂಸವಂಶಸ್ಯ ಪತ್ರಾಣಿ ಪತತ್ರಿಣಃ  
ಸ್ಮ:" ನೆಪಂ ೩-೧೬ ।

ಸಹಸ್ರಪಾತ್ ಸಹಸ್ರಪಾತ್ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಸಹಸ್ರ  
ಪಾದಾ ಅಸ್ಯ — ಪಾದಶಬ್ದಸ್ಯಾನ್ತಲೋಪ: (೪-೪-೧೪೦) ।  
"ಸಹಸ್ರಶಿರ್ಮ ಪುರುಷ: । ಸಹಸ್ರಾಕ್ಷ: ಸಹಸ್ರಪಾತ್" ಶ್ರುತಿ: ।  
2. ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಶಿವ.

ಸಹಸ್ರಪಾದ ಸಹಸ್ರಪಾದ (ಪುಂ) 1. ಕಾರಂಡವ ಪಕ್ಷಿ.  
2. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. 3. ಮಹಾವಿಷ್ಣು. "ಸಹಸ್ರಂ ಪಾದಾ  
ಯಸ್ಯ । "ಸಹಸ್ರಪಾದ: ಕಾರಣ್ಡೇ ಭಾಸ್ಕರೇ ಯಜ್ಞಪೂರಣೇ" ಹೇಮಂ ।

ಸಹಸ್ರಬಾಹು ಸಹಸ್ರಬಾಹು (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತವೀರ್ಯಾರ್ಜುನ.  
2. ಬಾಹಾಸುರ. ಸಹಸ್ರ ಬಾಹುರಾಜ್ಯ. "ಬಾಣ: ಪುತ್ರಶತ-  
ಜ್ಯೇಷ್ಠೋ ಬಲೇರಾಸೀನ್ಮಹಾತ್ಮನ: । ಸಹಸ್ರಬಾಹುರ್ವಾಚನ ತಾಂಡವೇ-  
ತೋಷಯನ್ಮಡಮ್" ಭಾಗಂ ೧೦-೬೨-೨ । 3. ಪರಶಿವ.  
4. ಮಹಾವಿಷ್ಣು.

ಸಹಸ್ರಭುಜ ಸಹಸ್ರಭುಜ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಸಹಸ್ರ  
ಭುಜಾ ಅಸ್ಯ । "ಪಶ್ಯಂತ್ಯದೋರೂಪಮದಭ್ರಚಕ್ಷುಷಾ ಸಹಸ್ರಪಾದೋ-  
ಭುಜಾನನಾಡ್ಭುತಮ್ । ಸಹಸ್ರಮूर्ಧಶ್ರವಣಾಕ್ಷಿನಾಸಿಕಂ ಸಹಸ್ರ-  
ಮೌಲ್ಯಮ್ಬರಕುಂಡಲೋಲ್ಲಸತ್" ಭಾಗಂ ೧-೩-೪ । ಸಹಸ್ರಪಾದ:  
ಸಹಸ್ರಭುಜ: ಸಹಸ್ರಾನನ: ಸಹಸ್ರಮूर्ಧಾ ಸಹಸ್ರಶ್ರವಣ: ಸಹಸ್ರಾಕ್ಷ:  
ಸಹಸ್ರನಾಸಿಕ: ಸಹಸ್ರಮೌಲಿ: ಇತ್ಯಾದಿ ಪದಗಳೆಲ್ಲವೂ  
ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಾಚಕ ಪದಗಳು. 2. ಕಾರ್ತವೀರ್ಯ  
ಾರ್ಜುನ. 3. ಬಾಹಾಸುರ.

ಸಹಸ್ರಭುಜಾ ಸಹಸ್ರಭುಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿ. ಸಹಸ್ರ  
ಭುಜಾ ಯಸ್ಯಾ: ।

ಸಹಸ್ರರಶ್ಮಿ ಸಹಸ್ರರಶ್ಮಿ (ಪುಂ) ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. ಸಹಸ್ರ  
ರಶ್ಮಯೋ ಯಸ್ಯ । "ಅಶಕ್ತನುವನ್ ಸೋಮಧೀರಲೋಚನ: ಸಹಸ್ರ-  
ರಶ್ಮೇರಿವ ಯಸ್ಯ ದರ್ಶನಮ್ । ಪ್ರವೀಶ್ಯ ಹೇಮಾದ್ರಿಗುಹಾಗೃಹಾಂತರಂ  
ನಿನಾಯ ಬಿಂಶದ್ವಿವಸಾನಿ ಕೌಶಿಕ:" ಮಾಘಂ ೧-೪೩ ।

ಸಹಸ್ರವದನ ಸಹಸ್ರವದನ (ಪುಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಸಹಸ್ರ  
ವದನಾನಿ ಯಸ್ಯ ।

ಸಹಸ್ರವೀರ್ಯ ಸಹಸ್ರವೀರ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗರಿಕೆಹುಲ್ಲು.  
ಸಹಸ್ರ ವೀರ್ಯಾಪ್ಯಸ್ಯಾ: ।

ಸಹಸ್ರವೇಧಿನ್ ಸಹಸ್ರವೇಧಿನ್ (ನಂ) 1. ರಾಮಕ, ಹಿಂಗು.  
ಸಹಸ್ರ ವೇಧಿತು ಖಿಲಮಸ್ಯ — ವಿಷ (ವಿಧಾನೇ) "ಣಿನಿ:"  
(೩-೨-೭೮) । "ಸಹಸ್ರವೇಧಿ ಜತುಕಂ ಬಾಹ್ಲಿಕಂ ಹಿಡ್ಗು  
ರಾಮಕಮ್" ಅಮಂ । (ಪುಂ) 2. ಕಸ್ತೂರಿ. 3. ನೀರು  
ಹೆಚ್ಚು. "ಸಹಸ್ರವೇಧಿ ಕ್ಲಿಬಂ ಸ್ಯಾತ್ ರಾಮಕಂ ನಾಮ್ಬುವೇತಸೇ"  
ಮೇದಿಂ ।

ಸಹಸ್ರಾಂಶು ಸಹಸ್ರಾಂಶು (ಪುಂ) ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. ಸಹಸ್ರಮ್  
ಅಂಶವೋಜ್ಯ. "ತದೃಷ್ಟಮಮವದ್ವೇಮಂ ಸಹಸ್ರಾಂಶುಸಮಪ್ರಭಮ್"  
ಮನುಂ ೧-೧ ।

ಸಹಸ್ರಾರ ಸಹಸ್ರಾರ (ಪುಂ) ಶಿರಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಅಧೋಮುಖಿ  
ವಾಗಿರುವ ಸಹಸ್ರದಳ ಕಮಲ. ಸಹಸ್ರಮ್ ಅರಾಣಿ ಯಸ್ಯ ।

ಸಹಸ್ರಿನ್ ಸಹಸ್ರಿನ್ (ಪುಂ) ಒಂದು ಸಾವಿರ ಸೈನಿಕರ ಬಲ  
ವೆಳ್ಳವನು, ಒಂದು ಸಾವಿರ ಸೈನಿಕರ ಅಧಿಪತಿ. ಸಹಸ್ರ  
ಬಲಮಸ್ಯ । "ಬಲಿನೋ ಯೇ ಸಹಸ್ರೇಣ ಸಾಹಸ್ರಾಸ್ತೇ ಸಹಸ್ರಿಣ:"  
ಅಮಂ ।



ಸಹಾ ಸಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಹ ಗೋರಂಟಿ. ಸಹತೆ ಆತಪಮ್ —ಷಹ (ಮರ್ಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಸಹಾ ಕುಮಾರಿ-ತರಣಿ:" ಅಮಂ 1. ಕಾಡು ಹೆಸರು ಗಿಡ. 3. ದಂಡೋ ತ್ವಲ. 4. ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ. 5. ಸಖಭೇಷಜ (?). "ಸಹೋರ್ಯಾ ಸಹದೇವಾಯಾಂ ಕುಮಾರ್ಯಾ ನಖಮೇಷಜೇ । ಮುದ್ಗಪರ್ಣ್ಯಾ ಚ" ಹೇಮಂ 1.

ಸಹಾಯ ಸಹಾಯ (ವಿಂ) ಅನುಕೂಲವಾಗಿರುವವನು, ಜೊತೆಯಲ್ಲಿರುವವನು, ಜೊತೆಯಲ್ಲಿದ್ದು ಹಿತವಾದ ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವವನು. ಸಹ ಅಯತೆ —ಅಯ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) 1. "ಸಮ್ಮಾಂವ್ಯ ತ್ವಾಮತಿಭರಕ್ಷಮಸ್ಕಂಧಂ ಸ ಬಾಂಧವಃ । ಸಹಾಯಮಶ್ವರವುರಾಂ ಧರ್ಮರಾಜೋ ವಿವಕ್ಷತೇ" ಮಾಘಂ ೨-೧೦೩ 1.

ಸಹಾಯತಾ ಸಹಾಯತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಹಾಯಕರ ಸಮೂಹ. ಸಹಾಯಾನಾಂ ಸಮೂಹ: "ತಲ್" (ವಾಂ ೪-೨-೪೩) 1. 2. ಸಹಾಯ್ಯ, ಒತ್ತಾಸೆ. ಸಹಾಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) 1. "ಸ ಕಿಲ ಸಂಯುಗ್ಮಮುಢಿ ಸಹಾಯತಾಂ ಮಧವತಃ ಪ್ರತಿಪದ್ಯ ಮಹಾರಥಃ" ರಘುಂ ೯-೧೯ 1.

ಸಹಾಯತ್ವ ಸಹಾಯತ್ವ (ನಂ) ಸಹಾಯ್ಯ, ಒತ್ತಾಸೆ. ಸಹಾಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ತ್ವಃ" (೪-೧-೧೧೯) 1.

ಸಹಾರ ಸಹಾರ (ಪುಂ) 1. ಅಮ್ರ, ವೃಕ್ಷ, ಮಾವಿನ ಮರ. ಷಹ (ಮರ್ಣೆ) "ಆರನ್" (೩ಂ ೩-೧೩೯) 1. 2. ಜಗತ್ತಿನ ಮಹಾಪ್ರಳಯ. (ವಿಂ) 3. ಹಾರಸಹಿತವಾದ.

ಸಹಿತ ಸಹಿತ (ವಿಂ) 1. ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಕೂಡಿಕೊಂಡಿರುವ, ಜೊತೆಯಲ್ಲಿರುವ. ಸಮ್ + ಡು ಧಾನ್ (ಧಾರಣ-ಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) 1. "ಅಥ ಯಾದವ್ಯುಧೇನ ಸಹಿತಃ ಸಂಯುಗಪ್ರಿಯಃ । ಸಾತ್ಯಕಿಃ ಪ್ರವಿತೋತ್ತಮಃ ಪ್ರತಸ್ಥೇ ಮರ್ತುರಾಜಯಾ" ಯಾದಂ ೨೨-೫೫ 1. 2. ಸಹಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ, ಸೈರಣಿಯಿಂದಿರುವ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ಸಂಗಡ, ಕೂಡ.

ಸಹಿತ್ರ ಸಹಿತ್ರ (ನಂ) ಸಹಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಸೈರಣಿಯಿಂದಿರುವುದು. ಷಹ (ಮರ್ಣೆ) "ಇತ್ರಃ" (೩-೨-೧೮೪) 1.

ಸಹಿಷ್ಣು ಸಹಿಷ್ಣು (ವಿಂ) ಸಹನೆಯ ಸ್ವಭಾವದವನು, ಸೈರಣಿಯುಳ್ಳವನು. ಷಹ (ಮರ್ಣೆ) "ಇಣ್ಣುಚ್" (೩-೨-೧೩೬) 1. "ಸುಕರಸ್ತರುತ್ ಸಹಿಷ್ಣುನಾ ರಿಪುಹನ್ಮೂಲ-ಯಿತು ಮಹಾನಪಿ" ಕಿರಾಂ ೨-೫೦ 1.

ಸಹಿಷ್ಣುತಾ ಸಹಿಷ್ಣುತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೈರಣಿ, ಸಹನೆ, ತಾಳ್ಮೆ. ಸಹಿಷ್ಣುಭಾವಿ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) 1.

ಸಹುರಿ ಸಹುರಿ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ. ಷಹ (ಮರ್ಣೆ) "ಊರಿನ್" (೩ಂ ೨-೭೩) 1. "ಸಹಿರಾದಿತ್ಯಃ ಪೃಥಿವೀ ಚ" ಸಿಂ ಕೌಂ 1.

ಸಹದಯ ಸಹದಯ (ವಿಂ) 1. ಶುದ್ಧವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು, ಶುದ್ಧವಾದ ಅಂತಃಕರಣವುಳ್ಳವನು. ಹೃದಯೇನ ಸಹ ವರ್ತತೆ 1. (ಪುಂ) 2. ವಿದ್ಯಾವಂತ. 3. ಒಳ್ಳೆಯ ಅನುಭವ ಶಾಲಿ, ರಸಿಕ. "ಪರಿಕುರ್ವಂತವರ್ಥಾನ್ ಸಹದಯಧುರೀಣಾಃ ಕತಿಪಯೇ" ರಸಗಂ 1.

ಸಹೋಕ್ತಿ ಸಹೋಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಸಹದಯರ ಹೃದಯಕ್ಕೆ ಆಹ್ಲಾದಕರವಾದ ಸವಭಾವವು ವರ್ಣಿತವಾದಲ್ಲಿ "ಸಹೋಕ್ತಿ" ಅಲಂಕಾರ. "ಸಹೋಕ್ತಿಃ ಸಹಭಾವಶ್ಚೇದ್ಭಾಸತೇ ಜನರಂಜನಃ" 1. ಉದಾ: "ದಿಗಂತಮಗಮತಸ್ಯ ಕೌತಿಃ ಪ್ರತ್ಯರ್ಥಿಭಿಃ ಸಹ" ಚಂದ್ರಾಂ 1.

ಸಹೋಢ ಸಹೋಢ (ಪುಂ) 1. ಹನ್ನೆರಡು ವಿಧ ಪುತ್ರರ ಲ್ಲೊಬ್ಬ. ಗರ್ಭಿಣಿಯಾಗಿರುವ ವಿಷಯ ತಿಳಿಯದೆ ಮದುವೆಯಾದ ಹೆಂಗಸಿನಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು ಮದುವೆಯಾದವನ ಪುತ್ರನಾಗುವನು. ಈ ಪುತ್ರನು ಸಹೋಢನು. "ಯಾ ಗರ್ಭಿಣಿ ಸಂಸ್ಕ್ರಿಯತೇ ಜ್ಞಾತಾಜ್ಞಾತಾಪಿ ವಾ ಸತೀ । ವೌಡುಃ ಸ ಗರ್ಭೋ ಭವತಿ ಸಹೋಢ ಇತಿ ವೌಚ್ಯತೇ" ಮನುಂ ೯-೧೭೩ 1. (ವಿಂ) 2. ಕದ್ದ ವಸ್ತುವಿನೊಡನೆ ಇರುವ ಕಳ್ಳ, ಕದ್ದ ವಸ್ತುವಿನೊಡನೆಯೂ ಕಳ್ಳನು ಸಾಧನವಾದ ವಸ್ತುವಿನೊಡನೆಯೂ ಸಿಕ್ಕಿಬಿದ್ದ ಕಳ್ಳ. ಹೌಡೇನ ಸಹ ವರ್ತತೆ 1. "ನ ಹೌಡೇನ ವಿನಾ ಚೌರಂ ಘಾತಯೇದ್ವಾಮಿಕೋ ನೃಪಃ । ಸಹೋಢ ಸೌಪಕರಣಂ ಘಾತಯೇದವಿಚಾರಯನ್" ಮನುಂ ೯-೨೭೦ 1.

ಸಹೋದರ ಸಹೋದರ (ಪುಂ) ಒಡಹುಟ್ಟಿದವನು, ಒಂದೇ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು. ಉದರೇನ ಸಹ ವರ್ತತೆ 1. ಸಮಾನಮ್ ಉದರಂ ಯಸ್ಯ ಇತಿ ವಾ 1. "ಸಹೋದರನ್ಯಸ್ತಭರಸ್ತದಾತ್ಮಾ ಕುಮಾಣಿ ರತ್ನಾನಿ ಚ ರೌಹಿಣೀಯಃ" ಯಾದಂ ೧೩-೭೮ 1.

ಸಹೋರ ಸಹೋರ (ವಿಂ) ಸಾಧು, ಸತ್ಪುರುಷ. ಸಹತೆ ಸರ್ವಮ್ — ಷಹ (ಮರ್ಣೆ) "ಆರನ್" (೩ಂ ೧-೬೫) 1.

ಸಹ್ಯ ಸಹ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಸಹ್ಯಾದ್ರಿ, ಸಪ್ತಕುಲ ಪರ್ವತಗಳ ಸಾಲಿನಲ್ಲಿ ಒಂದು ಪರ್ವತ. ಸಹತೆ — ಷಹ (ಮರ್ಣೆ) "ಯತ್" (೩-೧-೯೭) 1. "ಅಸಹ್ಯವಿಕ್ರಮಃ ಸಹ್ಯಾ ದೂರಾನ್ಮುಕ್ತ-ಮುದನ್ವತಾ" ರಘುಂ ೪-೫೨ 1. (ನಂ) 2. ಆರೋಗ್ಯ, ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಯಾವ ವ್ಯಾಧಿಯೂ ಇಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ಪ್ರಿಯವಾದುದು, ಇಷ್ಟವಾದುದು. "ತತಸ್ತಂ ಪ್ರತ್ಯುಪಾಚಾಥ ಮಾರೀಚೋ ರಾಕ್ಷಸೇಶ್ವರಮ್ । ಕಿಂ ತೇ ಸಹ್ಯಾ ಮಯಾ ಕಾರ್ಯ ಕರಿಸ್ಯಾಮ್ಯವಶೋಽಪಿ ತತ್" ರಾಮಾಂ 1. (ವಿಂ) 4. ಸಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಸಹಿಸಬೇಕಾದ. 6. ಸಹಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. "ಸಹ್ಯಃ ಶೈಲಾಂತರೇ ಪುಮಾನ್ । ಸೌಡವ್ಯೋ ವಾಚ್ಯಲಿಙ್ಗಃ ಸ್ಯಾತ್ ಆರೋಗ್ಯೇ ತು ನಪುಂಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ 1.



ಸಾ ಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೌರಿ, ಪಾರ್ವತಿ. 2. ಲಕ್ಷ್ಮಿ, ಜಗನ್ನಾತೆ. "ಸಾ ಚ ಲಕ್ಷ್ಮೀಬಿಂಬಃ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಗೌರಿ ಸಾ ಚ ಸ ಇಶ್ವರ" ಏಕಾಂ. 3. ಪೂರ್ವೋಕ್ತ, ವಿಷಯಬೋಧಕ ಅಥವಾ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ವಿಷಯಬೋಧಕ ತಜ್ಞಬ್ಧದ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗದ ಪ್ರಥಮೈಕ ವಚನದ ರೂಪ. "ಗಿರಿಸಮುಪಚಾರ ಪ್ರತ್ಯಹಂ ಸಾ ಸುಕೇಶಿ ನಿಯಮಿತಪರಿವೇದಾ ತಚ್ಚಿತ್ತರಶ್ಚಂದ್ರಪಾದೇ:" ಕುಮಾಂ ೧-೬೦. 1.

ಸಾಂಯಾತ್ರಿಕ ಸಾಂಯಾತ್ರಿಕ (ಪುಂ) ಹಡಗಿನ ವರ್ತಕ, ಹಡಗಿನ ವ್ಯಾಪಾರ ಮಾಡುವವನು. ಸಂಯಾತ್ರಾ ದ್ವೀಪಾಂತರ-ಗಮನಮ್—ಸಾ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯). "ಸಾಂಯಾತ್ರಿಕ: ಪೋತವಣಿಕ್" ಅಮಂ. "ಜಾತೇ ಸಮುದ್ರೇಷಿ ಚ ಪೋತಮಜ್ಞೇ ಸಾಂಯಾತ್ರಿಕೋ ವಾಚ್ಯತೀತಿ ತತುಮೇವ" ಪञ್ಚತಂ ೧-೩೪೫. "ಸಾಂಯಾತ್ರಿಕಾನಾವಪತೋಽಭ್ಯನಂದತ್" ಮಾಘಂ ೩-೭೬. 1.

ಸಾಂಯುಗೀನ ಸಾಂಯುಗೀನ (ವಿಂ) ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೋರಾಡುವ, ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಪರಿಣತನಾದ. ಸಂಯುಗೇ ಸಾಧು:—ಸಂಯುಗ "ಽಽ" (೪-೪-೯೯). "ಸಾಂಯುಗೀನೋ ರಣೇ ಸಾಧು:" ಅಮಂ. "ಸಂಯುಗೇ ಸಾಂಯುಗೀನಂ ತಮುಖತಂ ಪ್ರಸಹೇತ ಕ:" ಕುಮಾಂ ೨-೫೭. 1.

ಸಾರಾವಿಣ ಸಾರಾವಿಣ (ಪುಂ) 1. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗಳಲ್ಲೂ ಹರಡುವಂತೆ ಕೂಗಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಎಲ್ಲಾ ದಿಕ್ಕುಗಳಿಗೂ ಕೇಳಿಸುವಂತೆ ಶಬ್ದಮಾಡುವುದು. ಸಮ್ + ಋ (ಋಌ) ಭಾವೇ "ಇನುಣ್" (೩-೩-೪೪). ಸಾರಾವಿನ್ "ಅಣ್" (೪-೪-೧೫). "ಉತ್ತಾಲಾ: ಕಠಪೂತನಾಪ್ರಮೃತಯ: ಸಾರಾವಿಣಂ ಕುರ್ವಂತೆ" ಮಾಲತೀಂ ೫-೧೧. 2. ಉಚ್ಚಕ್ಕಿಂಠದಿಂದ ಮಾತನಾಡುವುದು. "ಸಾರಾವಿಣಂ ನ ಕರ್ತವ್ಯಂ ಯಾವನ್ನಾಪಾತಿ ದರ್ಶನಮ್" ಭದ್ರಿಂ ೭-೪೩. 1.

ಸಾಂವತ್ಸರ ಸಾಂವತ್ಸರ (ಪುಂ) 1. ಜ್ಯೋತಿಷಿಕ, ಜೋಯಿಸ, ಶುಭವೇಳೆ ಮತ್ತು ಮುಹೂರ್ತಗಳನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ಸಂವತ್ಸರದ ಫಲಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು ಮತ್ತು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿದವನು. ಸಂವತ್ಸರಂ ತಜ್ಞಾನೋಪಯೋಗಿ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ವೇತ್ತಿ ಅಧೀತೇ ವಾ—ಸಂವತ್ಸರ "ಅಣ್" (೪-೨-೫೯). "ಮುಹೂರ್ತಂ ತಿಥಿನಕ್ಷತ್ರಮೃತವಶ್ರಾಯಣೇ ತಥಾ. ಸರ್ವಾಪ್ಯೇವಾಕುಲಾನಿ ಸ್ಯುರ್ನ್ ಸ್ಯಾತ್ ಸಾಂವತ್ಸರೋ ಯದಿ. ತಸ್ಮಾದ್ರಾಜಾಽಭಿಗಮಂತವ್ಯೋ ವಿಧ್ವಾನ್ ಸಾಂವತ್ಸರೋಽಗ್ರಣಿ: 1. ಜಯಃ ಶ್ರಿಯಂ ಭೋಗಾನ್ ಶ್ರೇಯಶ್ಚ ಸಮಭಿಪ್ರಾಪತಾ" ಬೃಹತ್ಸಂ ೨-೯, ೧೦. (ವಿಂ) 2. ಸಂವತ್ಸರ ಸಂಬಂಧವಾದ.

ಸಾಂವತ್ಸರಿಕ ಸಾಂವತ್ಸರಿಕ (ವಿಂ) ಪ್ರತಿಸಂವತ್ಸರದಲ್ಲೂ ಬರುವ, ಸಂವತ್ಸರೇ ಭವ: "ಠಕ್" (೪-೩-೧೧). 1.

ಸಾಂಶಯಿಕ ಸಾಂಶಯಿಕ (ವಿಂ) ಸಂಶಯಾತ್ಮಕ, ಸಂಶಯ ದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು, ಸಂಶಯ ಪಡುವವನು. ಸಂಶಯಮಾಪನ: "ಠಕ್" (೪-೧-೭೩). "ಸಾಂಶಯಿಕ: ಸಂಶಯಾಪನಮಾನಸ:" ಅಮಂ. ಆದರೆ ಸಂಶಯಕ್ಕೆ ಆಸ್ಪದವಾದ ವಿಷಯ "ಸಂಶಯವಿಷಯಿಭೂತೋಽರ್ಥ:" ಎಂದು ಸಿದ್ಧಾಂತಕೊಮುದಿ. "ಸಂಶಯಾಧಾರೆ ಸಂದೇಹರೀ ನಾಯಂ ಪ್ರತ್ಯಯ:" ಎಂದು ಬಾಲ ಮನೋರಮಾ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ.

ಸಾಂಸಾರಿಕ ಸಾಂಸಾರಿಕ (ವಿಂ) ಪ್ರಾಪಂಚಿಕ, ಲೌಕಿಕವಾದ, ಈ ಜನ್ಮದ ಫಲವಾದ. ಸಂಸಾರೇ ಭವ: "ಠಕ್" (೪-೩-೧೧). "ಆರಣ್ಯಕಾಶ್ಚ ಗೃಹಿಣಾಶ್ಚ ರತಾ: ಸ್ವಧರ್ಮೇ ಸಾಂಸಾರಿಕೇಷು ಚ ಸುಖೇಷು ವಯಂ ರಮತಾ:" ಉಂ ರಾಂ ೨-೨೨. 1.

ಸಾಂಸಿದ್ಧಿಕ ಸಾಂಸಿದ್ಧಿಕ (ವಿಂ) ಸ್ವಾಭಾವಿಕವಾದ, ಸ್ವಭಾವ ಸಿದ್ಧವಾದ.

ಸಾಂಸ್ಥಾನಿಕ ಸಾಂಸ್ಥಾನಿಕ (ವಿಂ) ಸಂಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ವ್ಯವಹರಿಸುವವನು. ಸಂಸ್ಥಾನೇ ವ್ಯವಹರತಿ—ಸಂಸ್ಥಾನ "ಠಕ್" (೪-೪-೭೨). ಒಂದೇ ಸಂಸ್ಥಾನ (ದೇಶ) ದಲ್ಲಿ ವ್ಯವಹಾರ ನಡೆಸುವವನು ಸಾಂಸ್ಥಾನಿಕ.

ಸಾಕಮ್ ಸಾಕಮ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಸಂಗಡ, ಕೂಡ, ಒಂದಿಗೆ, ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ. ಸಹ ಅವಕಾನಮ್—"ಅಮ್" ಸಹಸ್ಯ ಸಾಧೇಶ: 1. ಆಮೀಕ್ಷಣ್ಯೇ "ಣಮುಲ್" (೩-೪-೨೨) ವಾ. "ಅನ್ಯೋನ್ಯಂ ಸ್ಪರ್ಶಮಾನಾ ನ ಚ ಗೃಹಿಣಿಭವ: ಸ್ವಾಮಿನೋ ಮುಕ್ತಶಾಕ್ಷಾ: ಸಾಕಂ ಸ್ತ್ರೀಭಿರ್ಭಜಂತೇ ವಿಧಿಮಭಿಲಷಿತಂ ಪಾರ್ವಣಂ ಪೌರಮುಹ್ಯಾ:" ಮುದ್ರಾಂ ೩-೧೦. 2. ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಒಂದೇ ಸಮಯದಲ್ಲಿ.

ಸಾಕಲ್ಯ ಸಾಕಲ್ಯ (ನಂ) ಸಮುದಾಯ, ಸಂಪೂರ್ಣತೆ, ಮೊತ್ತ, ಒಟ್ಟು. ಸಕಲಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಽ" (೪-೨-೮೦). "ಯೋ ಯದೇಷಾಂ ಗುಣೋ ದೇಹೇ ಸಾಕಲ್ಯೇನಾತಿರೀಚ್ಯತೇ. ಸ ತದಾ ತದ್ಗುಣಪ್ರಾಪ್ತಂ ತಂ ಕರೋತಿ ಶರೀರಣಮ್" ಮನುಂ ೧೨-೨೫. 1.

ಸಾಕಾಕ್ಷ ಸಾಕಾಕ್ಷ (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದವನು, ಆಸೆಪಡುವವನು. ಆಕಾಕ್ಷಯಾ ಸಹ ವರ್ತಂತೆ. 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಇನ್ನೊಂದರ ಸಂಬಂಧವು ಅವಶ್ಯವಾಗಿರಬೇಕಾದ. ಚೇತ್ರಸ್ಯ ಗುರುಕುಲಮ್ ಮೇತ್ರಸ್ಯ ದಾಸಭಾರ್ಯಾ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸಾಕಾರ ಸಾಕಾರ (ವಿಂ) 1. ಒಂದು ಆಕಾರವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ, ಒಂದು ರೂಪವನ್ನು ಪಡೆದಿರುವ. ಆಕಾರೇಣ ಸಹ ವರ್ತಂತೆ. 2. ಸುಂದರ ರೂಪವುಳ್ಳವನು, ಲಕ್ಷಣವಾದ ಶರೀರ ಸಂಪತ್ತುಳ್ಳವನು. "ಸಾಕಾರೋ ನಿ:ಸ್ಪೃಹೋ ವಾಗ್ಮೀ ನಾನಾಶಾಸ್ತ್ರವಿಚಕ್ಷಣ: 1. ಪರಿಚಿತಾವಗಂತಾ ಚ ರಾಜೋ ದೃತ: ಸ ಇಷ್ಯತೇ" ಪञ್ಚತಂ ೩-೮೬. 1.



**ಸಾಕೃತ ಸಾಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ಅರ್ಥಗರ್ಭಿತವಾದ, ಅಂಶ ರಾರ್ಥವುಳ್ಳ, ಒಂದು ಅಶಯದಿಂದ ಕೂಡಿದೆ. ಆಕೃತನ ಸಹ ವರ್ತತೆ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಅರ್ಥಗರ್ಭಿತವಾಗಿ, ಅಭಿ ಪ್ರಾಯದಿಂದ ಕೂಡಿ, ಭಾವಗರ್ಭಿತವಾಗಿ, ಅರ್ಥಸೂಚನೆ ಯೊಡನೆ.

**ಸಾಕೇತ ಸಾಕೇತ** (ನಂ) 1. ಅಯೋಧ್ಯಾ ನಗರ, ಕೋಸಲ ದೇಶದ ರಾಜಧಾನಿ. "ಜನಸ್ಯ ಸಾಕೇತನಿವಾಸಿನಸ್ತೌ ದ್ವಾವಪ್ಯ-ಭೂತಾಮಭಿನಂದ್ಯಸತ್ತವೌ" ರಘುಂ ೪-೩೧. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 2. ಸಾಕೇತ ನಗರದ ಜನರು, ಅಯೋಧ್ಯಾ ನಗರದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವ ಜನರು.

**ಸಾಕ್ಷಾತ್ ಸಾಕ್ಷಾತ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ, ಕಣ್ಣು ನೆದುರಿಗೆ. ಅಕ್ಷೇಣ ಸಹ ವರ್ತತೆ ಸಾಕ್ಷಿ:— ಸಾಕ್ಷಮತತಿ— ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೆ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೧೭೮). "ಸಾಕ್ಷಾತ್-ದೃಷ್ಟೋಸಿ ನ ಪುನರ್ವಿವಸ್ತವಾಂ ವಯಮಂಜಸಾ" ಕುಮಾಂ ೬-೨೨. 2. ಸ್ವಸ್ವರೂಪದಿಂದ, ನಿಜರೂಪದಿಂದ. "ಸಾಕ್ಷಾತ್ಪ್ರಿಯಾ-ಮುಪಗತಾಮಪಹಾಯ ಪೂರ್ವಂ ಚಿತ್ರಾಪಿತಾಂ ಪುನರಿಮಾಂ ಬಹುಮನ್ಯಮಾನ:" ಶಾಕುಂ ೬-೧೬. 3. ಮುಖಿತ, ನೇರವಾಗಿ, ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ ವಾಗಿ. "ತತ್ಸಾಕ್ಷಾತ್ಪ್ರತಿಪೇಧ: ಕೋಪಾಯ ಶಿವಸ್ತ್ವಯಮುಪಾಯ:" ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೪. 4. ಸದೃಶ, ತುಲ್ಯ.

**ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಾತ್ಮಕ ಜ್ಞಾನ. 2. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗುವುದು.

**ಸಾಕ್ಷಿನ್ ಸಾಕ್ಷಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣು. "ಸೌಜ್ಞನುತೆ ಸರ್ವಾನ್ ಕಾಮಾನ್ ಸಹ | ಬ್ರಹ್ಮಣಾ ವಿಪಶ್ಚಿತಾ" | ಉಂ ಮುಕ್ತಾ-ನಾನಂದಯನ್ ಸ್ವಯಮಪಿ ತೃಪ್ಯನ್ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರೋತಿ ಇತಿ ಸಾಕ್ಷಿ | ಸಾಕ್ಷಾತ್ ಇತ್ಯವ್ಯಯಾತ್ "ಸಾಕ್ಷಾದ್ವಿಷ್ಟರಿ" (೪-೨-೧೧) ಇತಿ "ಇನಿ:" | "ಸ್ವಯಮಾನಂದಯನ್ ತೃಪ್ಯನ್ ಸಾಕ್ಷಿ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕ-ರೋತಿ ಸ:" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: | "ಅವ್ಯಯ: ಪುರುಷ: ಸಾಕ್ಷಿ" ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ) 2. ನೇರವಾಗಿ ನೋಡಿದವನು, ಎದುರಿಗೆ ನೋಡಿದವನು, ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ ನೋಡಿ ಸತ್ಯಾಂಶ ತಿಳಿದವನು. ಅಕ್ಷೇಣ ಇಂದ್ರಿಯೇಣ ಸಹ ವರ್ತತೆ ಯತ್ ತತ್ ಸಾಕ್ಷಮ್ | ಸಾಕ್ಷಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ ಇತಿ ಸಾಕ್ಷಿ—ಸಾಕ್ಷ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) | "ಸಮಾಂತ: ಸಾಕ್ಷಿಣ: ಪ್ರಾಪ್ತಾನರ್ಥಿಪ್ರತ್ಯಯಿಸನ್ನಿಧೌ | ಪ್ರಾಡ್ವಿ-ವಾಕೋಽನುಯುಜ್ಜಿತ ವಿಧಿನಾನೇನ ಸಾನ್ವಯನ್" ಮನುಂ ೮-೭೯ | 3. ಸ್ವರೂಪದಿಂದ ಅನುಸಂಧಾನ ಮಾಡುವವನು.

**ಸಾಕ್ಷ್ಯ ಸಾಕ್ಷ್ಯ** (ನಂ) ಸಾಕ್ಷಿಯ ಪ್ರಮಾಣ ವಚನ, ಸಾಕ್ಷಾ ತ್ತಾಗಿ ನೋಡಿ ತಿಳಿದುದನ್ನು ರೂಪವಾತುಪಡಿಸುವುದು. ಸಾಕ್ಷಿಣಿ ಭಾವ: ಕರ್ಮ ವಾ "ಫ್ಯಬ್" (೪-೧-೧೨೪) | ಸಾಕ್ಷಿಣಿ ಭವಮ್ "ಯತ್" (೪-೩-೪೪) ವಾ | "ತಮೇವ

ವಾಧಾಯ ವಿವಾಹಸಾಕ್ಷ್ಯೇ ವಧೂವರೌ ಸಂಜ್ಞಮಯಾಂವಕಾರ" ರಘುಂ ೭-೨೦ | "ಸತ್ಯಂ ಸಾಕ್ಷ್ಯೇ ಬ್ರುವನ್ ಸಾಕ್ಷಿ ಲೋಕಾನಾಪ್ನೋತಿ ಪುಷ್ಕಲಾನ್" ಮನುಂ ೮-೮೧ |

**ಸಾಗರ ಸಾಗರ** (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಸಾಗರಸ್ಯ ರಾಜೋಷ್ಯಮ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೨೦) | "ಯಚ್ಚಾಲಮುತ್ತುಙ್ಗತಯಾ ವಿಜೇತುಂ ದೂರಾದುದಸ್ಥಾಯಿತ ಸಾಗರಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೩-೪೦ | 2. ಸಗರಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಮಗ. ಸಾಗರಸ್ಯಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಅಣ್" (೪-೧-೧೨) | 3. ನಾಲ್ಕು ಸಂಖ್ಯೆ. 4. ಸಪ್ತ ಸಂಖ್ಯೆ. 5. ಹತ್ತು ಪದ್ಮ ಸಂಖ್ಯೆ, ೧೦೦೦೦೦೦೦೦೦೦೦೦೦೦೦.

**ಸಾಗರಗಾಮಿನಿ ಸಾಗರಗಾಮಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಮುದ್ರ ವನ್ನು ಸೇರುವ ನದಿ, ಹೊಳೆ, ಗಂಗಾನದಿ ಮೊದಲಾದುದು. ಸಾಗರಂ ಗಚ್ಛತಿ—ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೧-೧೩೪) | 2. ಸಮುದ್ರವನ್ನು ಸೇರುವ. "ಮಹೀವರಂ ಮಾರ್ಗವಶಾದುಪೇತಂ ಸ್ರೋತೌವಹಾ ಸಾಗರಗಾಮಿನೀವ" ರಘುಂ ೬-೪೨ |

**ಸಾಗರನೇಮಿ ಸಾಗರನೇಮಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ. ಸಾಗರೋ ನೇಮಿರಿವ ಯಸ್ಯಾ: | —ಮೇಖಲಾ —ಮೇಖಲಾ.

**ಸಾಗರಾಂಬರಾ ಸಾಗರಾಂಬರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ. ಸಾಗರ: ಅಂಬರಮಿಥಂ ಯಸ್ಯಾ: | "ನಿಧಾನಗರ್ಭಾಮಿವ ಸಾಗರಾ-ಂಬರಾಂ ಶಮೀಮಿವಾನ್ಯಂತರಲೀನಪಾವಕಾಮ್" ರಘುಂ ೩-೯ |

**ಸಾಡ್ಕರ್ಯ ಸಾಂಕರ್ಯ** (ನಂ) ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಬೆರೆತಿರು ವುದು, ಹಾಲು ಮತ್ತು ನೀರಿನಂತೆ ಮಿಶ್ರವಾಗಿರುವುದು. ಸಡ್ಕರಸ್ಯ ಭಾವ: "ಫ್ಯಬ್" |

**ಸಾಡ್ಕೇತಿಕ ಸಾಂಕೇತಿಕ** (ವಿಂ) ಸಂಪ್ರದಾಯಾನುಸಾರ ನಡೆಸುವ, ಪದ್ಧತಿಯಂತೆ ಆಚರಿಸುವ.

**ಸಾಡ್ಕಾಮಿಕ ಸಾಂಕ್ರಾಮಿಕ** (ವಿಂ) ಒಂದು ಕಡೆಯಿಂದ ಇನ್ನೊಂದು ಕಡೆಗೆ ಹೋಗಿ ಸೇರುವ, ಒಂದು ಕಡೆಯಿಂದ ಇನ್ನೊಂದು ಕಡೆಗೆ ಹೋಗಿ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದುವ (ವ್ಯಾಧಿ). ಸಡ್ಕಾಮ: ಪ್ರಯೋಜನ ಕಾರಣಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯) | ಪ್ರಯೋಜನ ಫಲ ಕಾರಣಂ ಚ ಸಿಂ ಕೌಂ | ರೋಗವು ಒಬ್ಬ ನಿಂದ ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಗೆ ಹೋಗಿ ಸೇರುವುದು ಸಾಂಕ್ರಾಮಿಕ. ಇಂತಹ ರೋಗಕ್ಕೆ ರೋಗದ ಸಂಕ್ರಾಮವೇ ಕಾರಣವಾದುದರಿಂದ ಸಾಂಕ್ರಾಮಿಕವೆಂದು ಹೆಸರು. ಪರಸ್ಪರ ಶರೀರ ಸ್ಪರ್ಶ ರೋಗಿಯು ನಿಶ್ವಾಸ ಸಹಭೋಜನ ಸಹಶಯ್ಯೆ ಏಕಾಸನದಲ್ಲಿ ಕೂಡುವುದು ರೋಗಿಯ ವಸ್ತ್ರಾದಿಗಳನ್ನು ಧರಿಸುವುದು ಇತ್ಯಾದಿಗಳಿಂದ ಕುಷ್ಠ ಜ್ವರ ಕ್ಷಯ ನೇತ್ರಾಭಿಷ್ಯಂದ (ಕಣ್ಣು ಸೋರುವುದು) ಔಷ್ಣಸರ್ಗಿಕ ರೋಗಗಳು (ಪೂರ್ವೋತ್ಪನ್ನವ್ಯಾಧಿಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ವ್ಯಾಧಿ) ಒಬ್ಬನಿಂದ ಇನ್ನೊಬ್ಬನ ಶರೀರವನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು.



“ಪ್ರಸಂಜ್ಞಾದ್ಗಾತ್ರಸಂಸ್ಪರ್ಶಾತ್ ನಿಶ್ವಾಸಾತ್ ಸಹಜೋಜನಾತ್ |  
ಸಹಶಯಾಸನಾನ್ವಾಪಿ ವಸ್ತ್ರಮಾಲ್ಯಾನುಲೇಪನಾತ್ | ಕುಠಂ ಜ್ವರಶ್ಚ  
ಶೋಷಶ್ಚ ನೇತ್ರಾಭಿಷ್ಯಂದ್ ಎವ ಚ | ಔಪಸಗಿಕರೋಗಾಶ್ಚ  
.. ಸತ್ಕ್ರಾಮಂತಿ ನರಾಶ್ಚರಮ್” ಸುಶ್ರುತಂ ನಿಧಾನಂ ೬-೩೩, ೩೪ |

ಸಾಕ್ಷ್ಯ ಸಾಂಖ್ಯ (೪ಂ) 1. ಸಾಂಖ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ತಿಳಿದ  
ವನು, ಅತ್ಮಜ್ಞಾನ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ಜ್ಞಾನನಿಷ್ಠ.  
ಸಾಕ್ಷ್ಯಾ ಬುದ್ಧಿ: — ತತ್ವಜ್ಞಾ: ಸಾಕ್ಷ್ಯಾ: | (ನಂ) 2. ಅತ್ಮ  
ಜ್ಞಾನಶಾಸ್ತ್ರ, ಜ್ಞಾನಯೋಗ, ಷಡ್ವರ್ತನಗಳಲ್ಲಿಂದಾದ  
ಸಾಂಖ್ಯದರ್ಶನ, ಸಮ್ಯಗ್ದರ್ಶನ. ಸಾಕ್ಷ್ಯಾ ಸಮ್ಯಗ್ಜ್ಞಾನಮ್—  
ಸಾಸ್ತೃತ್ಯ | ಸಾಕ್ಷ್ಯಯಾ ಬುದ್ಧಯಾ ಅವಧಾರಣೀಯಮ್ ಆತ್ಮತತ್ವಮ್  
ಸಾಕ್ಷ್ಯಮ್, ತದವಧಾರಣರೂಪಂ ಸಾಕ್ಷ್ಯಮ್ | ಆತ್ಮಜ್ಞಾನಶಾಸ್ತ್ರಮ್ |  
“ಬುದ್ಧಿರ್ಮತಿಶ್ಚ ಮೇವ ಸಾಕ್ಷ್ಯಾ ಸಂವಿತ್ತಿರೂಪಲಬ್ಧಿ:” | ವಸ್ತು  
ಗಳನ್ನು ಸಂಖ್ಯೆಮಾಡಿ ತತ್ತ್ವಗಳು ಇವುತ್ಪತ್ತಿದು ಪದಾರ್ಥ  
ಗಳು ಆಯವತ್ತು ಎಂದು ನಿರ್ಣಯಿಸಿರುವುದರಿಂದ ಇವರಿಗೆ  
(ಈ ಶಾಸ್ತ್ರಪ್ರವರ್ತಕರಿಗೆ) ಸಾಂಖ್ಯರೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ  
ಯುಂಟಾಯಿತು. ಸಂಖ್ಯಾಪದಕ್ಕೆ ಜ್ಞಾನವೆಂಬ ಅರ್ಥ  
ವಿರುವುದರಿಂದ ಸಾಂಖ್ಯರೆಂದರೆ ಜ್ಞಾನಶಾಸ್ತ್ರವಾದಿಗಳು  
ಎಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಇವರು ಯುಕ್ತಿಯಿಂದಲೂ  
ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿಯ ಆಗಮಗ್ರಂಥಮೂಲಕವಾಗಿಯೂ  
ಸಿದ್ಧಾಂತಸ್ಥಾಪನೆ ಮಾಡಿರುತ್ತಾರೆ. ಆದುದರಿಂದ ಈ  
ಶಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೆ ಕಾಪಿಲಸಿದ್ಧಾಂತವೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು.  
ದೇವಹೂತಿವೃತ್ತನಾದ ಕಪಿಲಮಹರ್ಷಿ ಮತ್ತು ಯೋಗ  
ಶಾಸ್ತ್ರಪ್ರವರ್ತಕ ಪತಂಜಲಿ ಇವರಿಬ್ಬರೂ ಆಸ್ತಿಕರು.  
“ಪञ्चमः कपिलो नाम सिद्धेशः कालविलुप्तम् । प्रोवाचा-  
सुरये साक्ष्यं तत्त्वज्ञानविनिर्णयम्” भाग० १-३-१० |  
ಈಶ್ವರವಾದಿಗಳಾದ ಕೆಲವು ದರ್ಶನಕಾರರು ನಿತ್ಯಸರ್ವಜ್ಞ  
ನಾದ ಒಬ್ಬ ವ್ಯಕ್ತಿಯನ್ನು ಅಂಗೀಕರಿಸಿ ಅವನೇ ಆನಂತ  
ಕೋಟಿಬ್ರಹ್ಮಾಂಡಗಳ ಸೃಷ್ಟಿಸ್ಥಿತಿ ನಾಶಗಳಿಗೆ ಕಾರಣನೆಂದು  
ಅಭಿಪ್ರಾಯಪಡುವರು. ನಿರೀಶ್ವರವಾದಿಗಳಾದ ಕೆಲವು  
ಸಾಂಖ್ಯರು ಪ್ರತಿಕಲ್ಪಕ್ಕೂ ಪ್ರಪಂಚನಿರ್ವಾಹಕರಾದ  
ಕಪಿಲಾದಿ ಯೋಗಿಗಳನ್ನು ಅಂಗೀಕರಿಸಿ ಅವರಿಂದ  
ಪ್ರಪಂಚದ ಅನುಗ್ರಹವುಂಟಾಗುವುದೆಂದು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ.  
ಶಾಶ್ವತನಾದ ಒಬ್ಬನೇ ಪರಮೇಶ್ವರನಿದ್ದರೆ ಎಂತಹ  
ಜ್ಞಾನಿಗೂ ಅವನ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಅಸೂಯೆ ಹುಟ್ಟುವ  
ದೆಂದೂ ನಿತ್ಯೇಶ್ವರನಿಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ಯಾರು ಬೇಕಾದರೂ ಸಿದ್ಧ  
ರಾಗಿ ಈಶ್ವರರಾಗಬಹುದೆಂದೂ ಈ ನಿರೀಶ್ವರವಾದಿಗಳು  
ಅಭಿಪ್ರಾಯಪಡುವರು. ಅಣಿಮಾದಿ ಸಿದ್ಧಿಯುಳ್ಳ ಕಪಿಲ  
ಮಹರ್ಷಿಯು ಲೋಕ ಕಲ್ಯಾಣಕ್ಕಾಗಿ ವೇದಾದಿ ಆಗಮ  
ಗಳನ್ನು ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಿದಕಾರಣ ಈಶ್ವರನ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿರು

ವನು. ಇಂತಹ ಸಿದ್ಧಪುರುಷರು ಪ್ರತಿಕಲ್ಪಕ್ಕೂ ಒಬ್ಬರು  
ಬರುವರು. ಶಾಶ್ವತವಾದ ಒಬ್ಬ ಈಶ್ವರನನ್ನು ಇವರು  
ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುವುದರಿಂದ ಇವರು ನಿರೀಶ್ವರವಾದಿಗಳಾ  
ದರು. ಇವರಲ್ಲಿ ಕೆಲವರು ಶಾಶ್ವತನಾದ ಈಶ್ವರನನ್ನು  
ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುವುದರಿಂದ ಸೇಶ್ವರಸಾಂಖ್ಯರಾದರು. ಇವರೇ  
ಪಾತಂಜಲಿಯೋಗ ಸಿದ್ಧಾಂತದವರು.

ತತ್ತ್ವಗಳು: ಪ್ರಕೃತಿ ಮಹತ್ ಅಹಂಕಾರ ಪಂಚ  
ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯಗಳು ಪಂಚಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಗಳು ಮನಸ್ಸು  
ಪಂಚತನ್ಮಾತ್ರಗಳು ಆಕಾಶಾದಿ ಪಂಚಭೂತಗಳು ಜೀವಾತ್ಮ  
ಇವು ಇವುತ್ಪತ್ತಿದು ತತ್ತ್ವಗಳು. ಇವನ್ನು ಭೂತಪಂಚಕ  
ತನ್ಮಾತ್ರಪಂಚಕ ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯಪಂಚಕ ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯ  
ಪಂಚಕ ಮತ್ತು ಅವಶಿಷ್ಟಪಂಚಕಗಳೆಂದು ಐದು ಪಂಚಕ  
ಗಳಾಗಿ ಹೇಳಿರುವರು. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಮೂಲ ಪ್ರಕೃತಿಯು  
ಮೊದಲನೆಯದು. ಇದಕ್ಕೆ ಪ್ರಧಾನವೆಂದು ಹೆಸರು.  
ಇದು ಸತ್ತ್ವರಜಸ್ತಮೋಗುಣಾತ್ಮಕವಾಗಿರುವುದರಿಂದ  
ತ್ರಿಗುಣವೆಂದು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ.

ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನ: ಮೂಲ ಪ್ರಕೃತಿಯಲ್ಲಿರುವ ಗುಣ  
ತ್ರಯವೂ ಸಕಲ ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಇದ್ದು ಸತ್ತ್ವದಿಂದ  
ಸೌಖ್ಯವೂ ರಜಸ್ಸಿನಿಂದ ದುಃಖವೂ ತಮಸ್ಸಿನಿಂದ  
ಮೋಹವೂ ಉಂಟಾಗುವವು. ರಜೋಗುಣದಿಂದ ಸಂಭವಿ  
ಸುವ ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ ಆಧಿಭೌತಿಕ ಆಧಿದೈವಿಕವೆಂಬ ದುಃಖವೇ  
ತಾಪತ್ರಯವೆನ್ನಲ್ಪಡುವುದು. ವೈದ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರ  
ಮತ್ತು ಮಂತ್ರಶಾಸ್ತ್ರಗಳು ಈ ಮೂರು ವಿಧವಾದ  
ದುಃಖಗಳ ನಿವೃತ್ತಿಗೆ ಉಪಾಯಗಳು. ಅನೇಕಜನ್ಮ  
ಭಾಸ ಮತ್ತು ಆಯಾಸಗಳಿಂದ ಪರಿಪೂರ್ಣವಾದ ತತ್ತ್ವ  
ಜ್ಞಾನವೇ ಅವಿವೇಕಜನ್ಯವಾದ ಈ ದುಃಖದ ಆತ್ಮಂತಿಕ  
ನಿವೃತ್ತಿಗೆ ಉಪಾಯವು.

ಪುರುಷಾರ್ಥ: ಪುರುಷಾರ್ಥವೆಂದರೆ ಸ್ವಾರ್ಥ.  
ಪ್ರಕೃತಿಯೆಂಬ ಮೂಲತತ್ತ್ವವು ಸ್ವಾರ್ಥಕ್ಕಾಗಿ ಯಾವ  
ವ್ಯಾಪಾರವನ್ನೂ ಮಾಡುವುದಿಲ್ಲ. ಪುರುಷಾರ್ಥಕ್ಕಾಗಿ  
ಯೂ ಪರಾರ್ಥಕ್ಕಾಗಿಯೂ ಮಾಡುವುದು. ಗೃಹ ವಸ್ತ್ರ  
ಪಾತ್ರೆ ಶಯನ ಮೊದಲಾದ ವಸ್ತುಗಳ ಉಪಯೋಗವು  
ಪರಾರ್ಥವೇ ಹೊರತು ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ವಾರ್ಥವಿಲ್ಲ. ಆದುದ  
ರಿಂದ ಪುರುಷನೆಂಬ ಜೀವಾತ್ಮನು ಇರಬೇಕು. ಸರ್ವವೂ  
ದೃಶ್ಯವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ದ್ರಷ್ಟೃ ಒಬ್ಬನಿದ್ದೇ ಇರಬೇಕು.  
ಈ ಜೀವಾತ್ಮನು ಅವಿದ್ಯೆ ಮೊದಲಾದ ಐದು ವಿಧ ಕ್ಲೇಶ  
ಗಳಿಗೂ ಒಳಗಾಗುವನು. [“ಅವಿद्या” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]  
ಅವನ ಭೋಗಕ್ಕೂ ಮೋಕ್ಷಕ್ಕೂ ಸಕಲ ವಸ್ತುಗಳೂ  
ಇರುವವು. ಪ್ರಕೃತಿ ಪುರುಷ ವಿವೇಕಖ್ಯಾತಿಯಿಂದ



ಅವಿವೇಕಶ್ಯಾತಿಮೂಲಕ ಉತ್ಪನ್ನವಾದ ಅಹಂಕಾರ ಮಮಕಾರಗಳನ್ನು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಪರಿಹರಿಸಿಕೊಂಡು ವಿವೇಕಶ್ಯಾತಿಯಲ್ಲೂ ಮಮಕಾರವಿಲ್ಲದೆ ಅದನ್ನು ಪರಿತ್ಯಜಿಸಿ ಜೀವಾತ್ಮನು ಮುಕ್ತನಾಗುವನು ಎಂದು ಇವರ ಸಿದ್ಧಾಂತ. ಅಜೀತನವಾದ ಪ್ರಕೃತಿಯು (ಪ್ರಧಾನವು) ಪುರುಷ ರೂಪಜೀತನ ಸುಬಂಧದಿಂದ ಮಹದಾದಿ ರೂಪವಾಗಿ ಪರಿಣಾಮಹೊಂದುವುದು. ಈ ಪ್ರಕೃತಿ ಪುರುಷ ಸಂಬಂಧವು ಪಂಗು ಮತ್ತು ಅಂಧ (ಹೆಳವ ಮತ್ತು ಕುರುಡ) ರಂತೆ ಪರಸ್ಪರ ಸಾಪೇಕ್ಷವಾಗಿ ಸೃಷ್ಟಿ ಮೊದಲಾದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಡೆಸುವುದು. "ಪುರುಷಸ್ಯ ದರ್ಶನಾರ್ಥ ಕೇವಲ್ಯಾರ್ಥತಃ ಪ್ರಧಾನಸ್ಯ | ಪಙ್ಗವನ್ವದುದುಭಯೋರಪಿ ಸಮ್ಬಂಧ- ಸ್ತತ್ಕೃತಃ ಸರ್ಗಃ" ಸಾಕ್ಷ್ಯಚಾರಿಕಾ |

**ಸಾಕ್ಷ್ಯವರ್ಣನ ಸಾಂಖ್ಯದರ್ಶನ** (ನಂ) ಆರು ವಿಧ ಆಸ್ತಿಕ ದರ್ಶನಗಳಲ್ಲೊಂದು ದರ್ಶನ. ["ಸಾಕ್ಷ್ಯ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಸಾಕ್ಷ್ಯಯೋಗ ಸಾಂಖ್ಯಯೋಗ** (ಪುಂ) ಜ್ಞಾನಯೋಗ, ಬ್ರಹ್ಮವಿದ್ಯೆ. ಸಾಕ್ಷ್ಯಶ್ರುತೋ ಯೋಗಃ |

**ಸಾಕ್ಷ್ಯ ಸಾಂಗ** (ವಿಂ) 1. ಅಂಗಗಳಿಂದಕೂಡಿದ. 2. ಎಲ್ಲಾ ಭಾಗಗಳಿಂದಲೂ ಪೂರ್ಣವಾದ. ಅಕ್ಷೈಃ ಸಹ ವರ್ತತೇ |

**ಸಾಕ್ಷ್ಯಗ್ರಾಮಿಕ ಸಾಂಗ್ರಾಮಿಕ** (ಪುಂ) 1. ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಕುತಲ ನಾದವನು, ಯುದ್ಧಮಾಡುವುದರಲ್ಲಿ ನಿಪುಣನಾದವನು. ಸಕ್ಷಗ್ರಾಮಾಯ ಪ್ರಭವತಿ—"ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೧) | (ವಿಂ) 2. ಸಂಗ್ರಾಮ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. "ಏಷ ಸಾಕ್ಷ್ಯಗ್ರಾಮಿಕೋ ನ್ಯಾಯಃ ಏಷ ಧರ್ಮಃ ಸನಾತನಃ" ಉಂ ರಾಂ ೪-೨೨ |

**ಸಾಚಿ ಸಾಚಿ** (ಅವ್ಯಂ) ತಿರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ, ವಕ್ರವಾಗಿ, ಅಡ್ಡ ವಾಗಿ. ಷಚ (ಸಮವಾಯೇ) "ಙ್" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮) | "ಸಾಚಿ ಲೋಚನಯುಗಂ ನಮಯಂತಿ ರುಧಿಂತಿ ದಯಿತವಕ್ಷಸಿ ಪಾತಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೪೪ |

**ಸಾಚಿವ್ಯ ಸಾಚಿವ್ಯ** (ನಂ) ಸಚಿವನ ಕಾರ್ಯ ಮತ್ತು ಸಚಿವತ್ವ. ಸಾಚಿವ್ಯಸ್ಯ ಭಾವಃ ಕರ್ಮ ವಾ (೪-೧-೧೨೪) | "ಚಂದ್ರೋಪಿ ಸಾಚಿವ್ಯಮಿವಾಸ್ಯ ಕುರ್ವನ್ ತಾರಾಗಣಂ ಮಧ್ಯಗತೋ ವಿರಾಜನ್" ರಾಮಾಂ |

**ಸಾಚೀಕೃತ ಸಾಚೀಕೃತ** (ವಿಂ) ವಕ್ರವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತಿರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅಸಾಚಿ ಸಾಚಿ ಕೃತಮ್ "ಚಿವಃ" (೪-೪-೪೦) | ದೀರ್ಘಃ (೭-೪-೨೬) | "ಪ್ರಾಲಮ್ಬ- ಮುಕ್ತುಷ್ಯ ಯಥಾವಕಾಶಂ ನಿರಾಯ ಸಾಚೀಕೃತವಾರುಹವಃ" ರಘುಂ ೬-೧೪ |

**ಸಾಜಾತ್ಯ ಸಾಜಾತ್ಯ** (ನಂ) ಒಂದೇ ಜಾತಿಯವನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಸಮಾನ ವರ್ಣದವನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಸಮಾನಾ ಜಾತಿಃ—ಸಜಾತೇ- ಭಾವಃ "ಽಥಕ್" (೪-೧-೧೨೪) |

**ಸಾಟೋಪ ಸಾಟೋಪ** (ವಿಂ) 1. ದರ್ಪದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಅಹಂಕಾರದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಆಟೋಪೇನ ಸಹ ವರ್ತತೇ | 2. ಆಡಂಬರಸಹಿತನಾದ. 3. ಸಡಗರದೊಡನೆ ಕೂಡಿರುವ. (ಅವ್ಯಂ) 4. ದರ್ಪದೊಡನೆ. 5. ಆಡಂಬರ (ಪ್ರದರ್ಶನ) ದೊಡನೆ. 6. ಸಡಗರದೊಡನೆ, ಸುರಂಭದೊಡನೆ. "ಸಾಟೋಪಮುಖೋಮನಿಶಂ ನದಂತೋ ಯಃ ಪ್ಲಾವಯಿಷ್ಯಂತಿ ಸಮಂತ- ತೋಮಿ" ಮಾಘಂ ೩-೭೪ |

**ಸಾತ ಸಾತ** (ನಂ) ಸುಖ.

**ಸಾತತ್ಯ ಸಾತತ್ಯ** (ನಂ) ಎಡೆಬಿಡದಿರುವುದು, ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನ ವಾಗಿರುವುದು, ನಿರಂತರವಾಗಿರುವುದು. ಸತತಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಽಥಕ್" (೪-೧-೧೨೪) |

**ಸಾತಲಾ ಸಾತಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಂಪು ಹಾಲಿನ ಮುಂಡಕ್ಕಳ್ಳಿ.

**ಸಾತಿ ಸಾತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. ಷಣು (ದಾನೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | ಆತ್ವಮ್ (೪-೪-೪೨) | 2. ಸಂಪತ್ತು, ಐಶ್ವರ್ಯ. ಷಣ (ಸಮ್ಮತ್ತೋ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | ಆತ್ವಮ್ (೬-೪-೪೨) | 3. ಅವಸಾನ, ಕೊನೆ. "ಸಾತಿತ್ವವಸಾನೇ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ | "ಸಾತಿ- ದಿನಾವಸಾನಯೋಃ" ಅಮಂ | 4. ತೀವ್ರವಾದ ವೇದನೆ.

**ಸಾತ್ವಿಕ ಸಾತ್ವಿಕ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಧರ್ಮಜ್ಞಾನವೈರಾಗ್ಯಶ್ರೇಯ- ರೂಪಫಲನಿಯಮನೇನ ಚ ಸತ್ವಮರ್ಹತಿ—"ಠಕ್" (೪-೧-೬೩) | "ವಿಜ್ಞಾನೇಶ್ವರೈರಾಗ್ಯಧರ್ಮರೂಪಫಲಂ ಸ್ವಯಮ್ | ನಿಯಮ್ಯಾಹತಿ ಸತ್ವಂ ಯಃ ಸಾತ್ವಿಕಃ ಪರಿಕೀರ್ತಿತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | "ಸತ್ವವಾನ್ ಸಾತ್ವಿಕಃ ಸತ್ಯಃ ಸತ್ಯಧರ್ಮಪರಾಯಣಃ" ವಿಂ ಸಂ | 2. ಸತ್ತ್ವಗುಣದ ಪ್ರಾಚುರ್ಯದಿಂದ ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಭಾವ. ಸತ್ವೇನ ನಿವೃತ್ತಃ "ಠಕ್" (೪-೧-೭೯) | "ಸತ್ವೋಕ್ತೇ ಮನಸಿ ಯೇ ಪ್ರಭವಂತಿ ಭಾವಾಸ್ತೇ ಸಾತ್ವಿಕಾ ಇತಿ ವಿದುರ್ಮುನಿಪುಂಜವಾಸ್ತೇ" | "ಯೇ ಚೈವ ಸಾತ್ವಿಕಾ ಭಾವಾ ರಾಜಸಾಸ್ತಾಮಸಾಶ್ಚ ಯೇ | ಮತ್ತ ಏವೇತಿ ತಾನ್ ವಿವಿಧಿ ನ ತ್ವಹಂ ತೇಷು ತೇ ಮಯಿ" ಗೀತಾ ೭-೧೨ | 3. ಸತ್ತ್ವಗುಣದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ನಾಯಕನ ಗುಣಗಳು. ಸತ್ವೇನ ಮನೋವೃತ್ತಯಾ ನಿವೃತ್ತಃ "ಠಕ್" | (1) ಶೋಭಾ (2) ವिलासः (3) माधुर्यम् (4) गाम्भीर्यम् (5) धैर्यम् (6) तेजः (7) ललितम् ಮತ್ತು (8) औदार्यम् ಇವು ನಾಯಕನ ಎಂಟು ಸಾತ್ವಿಕ ಗುಣಗಳು. "ಶೋಭಾ विलासो माधुर्यं गाम्भीर्यं धैर्यं तेजसी | ललितौदार्यमित्यष्टौ सत्त्वजाः पौरुषा गुणाः" ಸಾಂ ೧೦



೩-೪೦ | 4. ಸತ್ತ್ವಗುಣವಿಕಾರಭೂತವಾದ ನಾಯಿಕಾ ನಾಯಕ ಸಾಮಾನ್ಯವಾದ ಸಾತ್ತ್ವಿಕಗುಣಗಳು (1) ಸ್ತಮ್ಭ: (2) ಸ್ವೇದ: (3) ರೋಮಾಂಶ: (4) ಸ್ವರಭಜ್ಜ: (5) ವೇಪಥು: (6) ವೈವರ್ಣ್ಯಮ್ (7) ಅಶ್ರು ಮತ್ಸು (8) ಪ್ರಲಯ: | "ತದ್ಭೂರಿ- ಸಾತ್ವಿಕವಿಕಾರಮಪಾಸ್ತಧೈರ್ಮಾಚಾರ್ಯಕಂ ವಿಜಯಿ ಮಾನ್ಮಥ- ಮಾವಿರಾಸೀತ್" ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೯ | (ನಂ) 5. ಸಾತ್ತ್ವಿಕ ಶಾಸ್ತ್ರ, ಮಹಾವಿಷ್ಣು ವಿಷಯಕ ಶಾಸ್ತ್ರ. "ಯಾನಿ ಸತ್ವಪದಂ ವಿಷ್ಣು ವದಂತಿ ಪರಮೇಶ್ವರಮ್ | ತಾನಿ ಶಾಸ್ತ್ರಾಣಿ ಸರ್ವಾಣಿ ಸಾತ್ವಿಕಾನಿ ಮತಾನಿ ವೈ" ವೆಂ ಕೌಂ | (ವಿಂ) 6. ಸತ್ತ್ವ ಗುಣದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು, ಶುದ್ಧವಾದ ಸತ್ತ್ವಗುಣವುಳ್ಳ ವನು. "ಯಜಂತೇ ಸಾತ್ವಿಕಾ ದೇವಾನ್ ಯಜರಕ್ಷಾಸಿ ರಾಜಸಾ: | ಪ್ರೇತಾನ್ ಭೂತಗಣಾಂಶ್ಚಾನ್ಯೇ ಯಜಂತೇ ತಾಮಸಾ ಜನಾ:" ಗೀತಾ ೧೭-೪ |

**ಸಾತ್ತ್ವಿಕ ಕರ್ಮ :** ಅಭಿಮಾನ ರಾಗದ್ವೇಷಾದಿ ಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದೆ ಮಾಡುವ ಕರ್ಮ. "ನಿಯತಂ ಸಂಹರಹಿತಮರಾಗದ್ವೇಷತ: ಕೃತಮ್ | ಅಫಲಪ್ರೇಪ್ಸುನಾ ಕರ್ಮ ಯತ್ಸಾತ್ವಿಕಮುಚ್ಯತೇ" ಗೀತಾ ೧೮-೨೩ |

**ಸಾತ್ತ್ವಿಕ ತಪಸ್ಸು :** ಪರಮಪುರುಷನ ಆರಾಧನೆ ಯೆಂದು ತಿಳಿದು ಫಲಾಭಿಪ್ರಾಯವಿಲ್ಲದೆ ಶ್ರದ್ಧೆಯಿಂದ ಆಚರಿಸುವ ತಪಸ್ಸು. "ಶ್ರದ್ಧಯಾ ಪರಯಾ ತಪ್ತಂ ತಪಸ್ತತ್ತ್ವಿವಿಧಂ ನರೈ: | ಅಫಲಾಕಾಂಕ್ಷಿಭಿರೈಕೈ: ಸಾತ್ವಿಕಂ ಪರಿಚಕ್ಷತೇ" ಗೀತಾ ೧೭-೨ |

**ಸಾತ್ತ್ವಿಕ ದಾನ :** ದೇಶಕಾಲಪಾತ್ರಗಳನ್ನರಿತು ಪ್ರತ್ಯುಪಕಾರವನ್ನಪೇಕ್ಷಿಸದೆ ಮಾಡುವ ದಾನ. "ದಾತವ್ಯ- ಮಿತಿ ಯದಾನಂ ದೀಯತೇಜ್ಞುಪಕಾರಿಣಿ | ದೇಶೇ ಕಾಲೇ ಚ ಪಾತ್ರೇ ಚ ತದಾನಂ ಸಾತ್ವಿಕಂ ಸ್ಮೃತಮ್" ಗೀತಾ ೧೭-೨೦ |

**ಸಾತ್ತ್ವಿಕಾಹಾರ :** ಆಯುಸ್ಸು ಬಲ ಆರೋಗ್ಯ ಸುಖ ಸಂತೋಷ ಇವನ್ನು ಅಧಿಕಗೊಳಿಸುವ ಮತ್ತು ಆಸ್ವಾದ್ಯ ಸ್ನಿಗ್ಧ ಮತ್ತು ರಮಣೀಯವಾದ ಆಹಾರ. "ಆಯು:ಸತ್ವಬಲಾರೋಗ್ಯಸುಖಪ್ರೀತಿವಿವರ್ಧನಾ: | ರಸಾ: ಸ್ನಿಗ್ಧಾ: ಸ್ಥಿರಾ ಹೃದ್ಯಾ ಆಹಾರಾ: ಸಾತ್ವಿಕಪ್ರಿಯಾ:" ಗೀತಾ ೧೭-೮ |

**ಸಾತ್ವಿಕಿ ಸಾತ್ತ್ವಿಕಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ.**

**ಸಾತ್ಯಕಿ ಸಾತ್ಯಕಿ (ಪುಂ) ಯದುಮಂಶದ ಸತ್ಯಕನ ಪುತ್ರ.** ಇವನಿಗೆ ಯುಯುಧಾನನನೆಂದು ಹೆಸರು.

**ಸಾತ್ಯವತ ಸಾತ್ಯವತ (ಪುಂ) ಸತ್ಯವತೀಪುತ್ರನಾದ ವ್ಯಾಸ ಮಹರ್ಷಿ.** ಸತ್ಯವತ್ಯಾ ಅಯಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

**ಸಾತ್ಯವತೇಯ ಸಾತ್ಯವತೇಯ (ಪುಂ) ಸತ್ಯವತೀಪುತ್ರನಾದ ವೇದವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿ.** ಸತ್ಯವತ್ಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಢಕ್" (೪-೧-೧೨೦) |

**ಸಾತ್ವತ್ ಸಾತ್ವತ್ (ಪುಂ) ಯಾದವ.** "ಸಂಹತ್ಯಾ ಸಾತ್ವತಾಂ ಚೈವಂ ಪ್ರತಿ ಭಾಸ್ವರಸೇನಯಾ" ಮಾಘಂ ೧೯-೭೨ |

**ಸಾತ್ವತ ಸಾತ್ವತ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣು.** "ಹೇಮಶಕ್ತ: ಶತಾವರ್ತೀ ಮನುಸಾತ್ವತವಾರಿಷಾ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 2. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ. 3. ಬಲರಾಮ. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 4. ಯಾದವರು. "ಯದವಸ್ತು ದಶಾರ್ಹಿ: ಸ್ಯು: ಸಾತ್ವತಾ: ಕುಕುರಾಶ್ಚ ತೇ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | 5. ಸಾತ್ವತದೇಶ. 6. ಸಾತ್ವತದೇಶದ ಜನರು. "ಸುಚಿರಂ ಸಹ ಸರ್ವಸಾತ್ವತೇರ್ಭವ ವಿಶ್ವಸ್ತವಿಲಾಸಿನೀ- ಜನ:" ಮಾಘಂ ೧೬-೧೪ |

**ಸಾತ್ವತೀ ಸಾತ್ವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೃಶಿಕೇ ಮೊದಲಾದ ನಾಲ್ಕು ವೃತ್ತಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. ವೃತ್ತಿಯು (1) ಕೆಲಸಿಕೆ (2) ಸಾತ್ವತೀ (3) ಆರಭಟೆ ಮತ್ತು (4) ಭಾರತೀ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ಸಾತ್ವತೀವೃತ್ತಿಯು ವೀರರಸ ಪ್ರತಿಪಾದಕ ವಾದುದು. "ಶೃಂಗಾರೇ ಕೆಲಸಿಕೆ ವೀರೇ ಸಾತ್ವತೀಯಾರಭಟೆ ಪುನ: | ರಸೇ ರೋದ್ರೇ ಚ ಬಿಂಬತ್ಸೇ ವೃತ್ತಿ: ಸರ್ವತ್ರ ಭಾರತೀ" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೨೨ | ಈ ವೃತ್ತಿಗಳು ನಾಟಕ ಪ್ರಕರಣ ಮೊದಲಾದ ದ್ರವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ನಾಯಕ ಮೊದಲಾದವರ ವ್ಯಾಪಾರಗಳು. "ಚತುರೋ ವೃತ್ತಯೋ ಹ್ಯೇತಾ: ಸರ್ವನಾಟಕಸ್ಯ ಮಾತೃಕಾ: | ಸ್ಯುರ್ನಯಿ- ಕಾದಿವ್ಯಾಪಾರವಿಶೇಷಾ ನಾಟಕಾದಿಷು" ಸಾಂ ದಂ ೬-೧೨೩ | 2. ಶಿಶುಪಾಲನ ತಾಯಿ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಸೋದರತೆ. "ನ ದ್ವೇ ಸಾತ್ವತೀಸುನುಯಂಮಹ್ಯಮಪರಾವ್ಯತಿ" ಮಾಘಂ ೨-೧೧ |**

**ಸಾದ ಸಾದ (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕ, ಕೃತವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಷಡ್ಲ (ವಿಶರಣಾದಿ) "ಘ" (೩-೩-೧೮) | "ಶರೀರಸಾದಾ- ದಸಮಗ್ರಭೂಷಣಾ ಮುಖೇನ ಸಾಲಕ್ಷ್ಯತ ಲೋಭಪಾಂಡುನಾ" ರಘುಂ ೩-೨ | 2. ಆಯಾಸ, ದಣಿವು. "ಉದಿತೋಹಸಾದಮತಿವೇಪಥುಮ- ತ್ಸುದೃಶೋಽಭಿಮತು ವಿಧುರಂ ತ್ರಪಯಾ" ಮಾಘಂ ೯-೭೭ | 3. ಗತಿ, ಗಮನ, ಚಲನ, ನಡೆಯುವುದು.**

**ಸಾದನ ಸಾದನ (ನಂ) 1. ಸದನ, ಗೃಹ, ಮನೆ. ಷಡ್ಲ (ವಿಶರಣಾದಿ) + ಸ್ವಾರ್ಥೆ ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) | 2. ಉಡುವುದು, ತೊಡುವುದು. 3. ಆಯಾಸ, ಬಳಲಿಕೆ, ದಣಿವು. 4. ಅಳವಡಿಸುವುದು, ಕ್ರಮವಾಗಿಡುವುದು. 5. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು.**

**ಸಾದಿ ಸಾದಿ (ಪುಂ) 1. ಯುದ್ಧಮಾಡುವವನು. 2. ಸಾರಥಿ. ಷಡ್ಲ (ವಿಶರಣಾದಿ) "ಢ" (೩ಂ ೪-೧೨೪) | ಸಾದಿ: ಸಾರಥಿ: ಸಿಂ ಕೌಂ | 3. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. (ವಿಂ) 4. ಕಷ್ಟಕ್ಕೆ ಒಳಗಾದವನು.**

**ಸಾದಿತ ಸಾದಿತ (ವಿಂ) 1. ಕುಳ್ಳಿರಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನು. ಷಡ್ಲ (ವಿಶರಣಾದಿ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಕಷ್ಟ.**



ಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. "ಯೆ: ಸಾದಿತಾ ಲಕ್ಷಿತ-  
ಪೂರ್ವಕೇತುನ್ ತಾನೇವ ಸಾಮರ್ಪತಯಾ ವಿಜಙ್ತು:" ರಘುಂ ೭-೪೪।  
3. ನಡೆಸಲ್ಪಟ್ಟು. 4. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಜಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.  
"ಸಾದಿತಾಖಿಲನೃಪಂ ಮಹನ್ಮಹ: ಸಂಪ್ರತಿ ಸ್ವನಯಸಂಪದೇವ ತೇ"  
ಸಾವಂ ೧೪-೧೩।

**ಸಾಧಿನ್ ಸಾಧಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವಾರೋಹ, ಕುದುರೆಯ  
ಸವಾರ. ಸಿದ್ಧಾಂತವಶ್ಯಮ್—ಷಡ್ಲ (ವಿಶರಣಾಧಿ) "ಗಿರಿನಿ:"  
(೩-೩-೧೭೦)। "ನಿಮ್ನಾನಿ ದು:ಖಾದವತೀರ್ಯ ಸಾದಿಮಿ:  
ಸಯತ್ನಮಾಕುಷ್ಠಕಶಾ: ಶನೇ:ಶನೇ:" ಮಾಧಂ ೧೨-೩೧।  
2. ಮಾವಟಗ, ನಿಷಾದಿ, ಹಕ್ಕಿಪಕ್ಕ. 3. ಸಾರಥಿ, ರಥ  
ವನ್ನು ನಡೆಸುವವನು. "ಸಾದಿ ತುರಗ್ಗಮಾತಙ್ಗರಯಾರೋಹೇಷು  
ದೃಶ್ಯತೇ" ಮೇದಿಂ।

**ಸಾಧ್ಯ ಸಾಧ್ಯ** (ನಂ) ಹೋಲಿಕೆ, ಸಾಮ್ಯ. ಸದೃಶಸ್ಯ  
ಭಾವ: "ಽಪ್ಯನ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ಪರಸ್ಪರಾಕ್ಷಿಸಾಧ್ಯ-  
ಮದೂರೋಜ್ಜಿತವರ್ಮಸು। ಮೃಗದ್ವಂದ್ವೇಷು ಪಶ್ಯಂತೀ ಸ್ಯಂದನಾಬದ್ಧ-  
ದೃಷ್ಟಿಷು" ರಘುಂ ೧-೪೦। ಕವಿಸಮಯಸಿದ್ಧವಾದ  
ಕೆಲವು ಹೋಲಿಕೆಗಳು :

|                      |                              |
|----------------------|------------------------------|
| ಲಲಾಟಕ್ಕೆ (ಹಣಗೆ)      | ಅರ್ಧಚಂದ್ರ, ಫಲಕ               |
| ಹಬ್ಬುಗಳಿಗೆ           | ಖಡ್ಗ                         |
| ಕೇಶಪಾಶಕ್ಕೆ           | ಅಂಧಕಾರ                       |
| ನೇತ್ರಗಳಿಗೆ           | ಚಕ್ರೋರ ಮತ್ತು<br>ಹರಿಣಗಳ ಕಣ್ಣು |
| ತುಟಗಳಿಗೆ             | ಬಿಂಬಫಲ                       |
| ಸ್ಮಿತಕ್ಕೆ            | ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಅಮೃತ               |
| ಸೀಮಂತಕ್ಕೆ            | ರಸ್ತೆ, ಮಾರ್ಗ                 |
| ನಾಸಗೆ (ಮೂಗು)         | ತಾಳೆಹೂವು, ಸಂಪಿಗೆ<br>ಮೊಗ್ಗು   |
| ಶ್ವಾಸ (ಉಸಿರು) ಕೆ     | ಕಮಲದ ವಾಸನೆ                   |
| ಮುಖಕ್ಕೆ              | ಚಂದ್ರ, ಪದ್ಮ, ಕನ್ನಡಿ          |
| ಕಂಠಕ್ಕೆ              | ಶಂಖ                          |
| ಅಂಗುಳಿ (ಬೆರಳು) ಗಳಿಗೆ | ಪಲ್ಲವ (ಚಿಗುರು)               |
| ನಾಭಿಗೆ               | ಸಂಳಿ (ಅವರ್ತ)                 |
| ಊರುಗಳಿಗೆ             | ಕದಲೇಕಾಂಡ                     |
| ಪಾದಕ್ಕೆ              | ಕಮಲ                          |
| ನಖಗಳಿಗೆ              | ರತ್ನ ಇತ್ಯಾದಿ.                |

**ಸಾಧ್ಯ ಸಾಧ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ಸಾಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ನೆರವೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.  
ಸಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) "ಕ್ರ:" (೩-೨-೧೦೨)। (ನಂ) 2.  
ಸಾಧಿಸುವುದು, ನೆರವೇರಿಸುವುದು. ಸಾಧ ಭಾವೆ "ಕ್ರ:"  
(೩-೩-೯೪)।

**ಸಾಧಕ ಸಾಧಕ** (ವಿಂ) 1. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಸಾಧಿಸುವವನು,  
ಕೆಲಸವನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಡುವವನು. ಸಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) +  
ಗಿನ್ "ಫ್ಲು" (೩-೧-೧೩೩)। "ವಜ್ರಂ ತಪೋವೀರ್ಯಮಹತ್ಸು  
ಕುಂಠಂ ತ್ವಂ ಸರ್ವತೋಗಾಮಿ ಚ ಸಾಧಕಂ ಚ" ಕುಮಾಂ ೩-೧೨।  
2. ಉಪಾಸನೆಯಿಂದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನೆರವೇರಿಸುವವನು,  
ಅಲೌಕಿಕ ಮತ್ತು ಅದ್ಭುತ ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ (ಯೋಗಿ).  
"ಅವಿಚಲಿತಮನೋಮಿ: ಸಾಧಕೇಮೃಗಮಾಣ: ಸ ಜಯತಿ  
ಪರಿಣದ: ಶಕ್ತಿಮಿ: ಶಕ್ತಿನಾಥ:" ಮಾಲತೀಂ ೪-೧।

**ಸಾಧಕಾ ಸಾಧಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ, ಪಾರ್ವತಿ.

**ಸಾಧನ ಸಾಧನ** (ನಂ) 1. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಸಾಧಿಸುವುದು,  
ಕೆಲಸವನ್ನು ಈಡೇರಿಸುವುದು, ಕೆಲಸವನ್ನು ಪೂರೈಸುವುದು.  
ಸಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ವಾರ್ಷಿಕಂ  
ಸಂಜ್ಞಾಹಾರೆಂದ್ರೋ ಧನುರ್ಜೆತ್ರಂ ರಘುರ್ದಧಿ। ಪ್ರಜಾಪತಿಸಾಧನೇ ತೌ ಹಿ  
ಪರ್ಯಾಯೋದತಕಾರ್ಮುಕಿ" ರಘುಂ ೪-೧೬। 2. ಸಲಕರಣೆ,  
ಉಪಕರಣ. ಸಾಧ್ಯತೇಜೇನ—ಸಾಧ ಕರಣೆ "ಲ್ಯುಟ್"  
(೩-೩-೧೧೭)। "ಅಪಿ ಸ್ವಶಕ್ತ್ಯಾ ತಪಸಿ ಪ್ರವರ್ತತೇ ಶರೀರ-  
ಮಾಥಂ ಲಲು ಧರ್ಮಸಾಧನಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೩೩। 3. ಕಾರಣ,  
ಹೇತು. "ಔಷಧಾನ್ಯಗದೋ ವಿಧ್ಯಾ ದೇವೀ ಚ ವಿವಿಧಾ  
ಸ್ಥಿತಿ:। ತಪಸೇವ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಂ ತಪಸ್ತೇಷಾಂ ಹಿ ಸಾಧನಮ್"  
ಮನುಂ ೧೧-೨೩೭। 4. ಮಾರಣ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. "ಅಥಾ  
ಶರಸ್ತೇನ ಮದರ್ಯಮುಜ್ಜಿತ: ಫಲಂ ಚ ತಸ್ಯ ಪ್ರತಿಕಾಯಸಾಧನಮ್"  
ಕಿರಾಂ ೧೪-೧೭। 5. ಮೃತಸಂಸಾರ. 6. ಹೇತು,  
ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ ಲಿಂಗ. "ಸಾಧ್ಯೇ ನಿಶ್ಚಿತ-  
ಮನ್ವಯೇನ ಷಡಿತಂ ವಿಭ್ರಂ ಸಂಪನ್ನೇ ಸ್ಥಿತಂ ವ್ಯಾವೃತ್ತಂ ಚ ವಿಪಕ್ಷತೋ  
ಭವತಿ ಯತ್ ತತ್ ಸಾಧನಂ ಸಿದ್ಧಯೇ" ಮುಡ್ರಾಂ ೪-೧೦।  
7. ಗಮನ, ಹೊರಗಡೆ ಹೋಗುವುದು, ಹೊರಟು ಬರು  
ವುದು. 8. ಆಯುಧ, ಸಲಕರಣೆ. 9. ಭೂಮಿ ಮೊದ  
ಲಾದವುಗಳನ್ನು ದಾನಮಾಡಿಸುವುದು. 10. ಸಿದ್ಧಿಪಥ.  
11. ಮೇಧ, ಶಿಶ್ಯ. ಪುರುಷರ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ. 12.  
ಸಾಲದ ಮರುಪಾವತಿ ಮಾಡಿಸುವುದು. 13. ಅನುಗಮನ.  
14. ಧನ, ಐಶ್ವರ್ಯ, ಸಂಪತ್ತು. 15. ಸೈನ್ಯ. "ವ್ಯಾವೃತ್ತ  
ಚ ವಿಪಕ್ಷತೋ ಭವತಿ ಯತ್ ತತ್ ಸಾಧನಂ ಸಿದ್ಧಯೇ" ಮುಡ್ರಾಂ  
೪-೧೦। "ಸಾಧನಂ ಮೃತಸಂಸ್ಕಾರೇ ಸೈನ್ಯೇ ಸಿದ್ಧಿಷ್ಠಿ ಗತೀ।  
ನಿವೃತ್ತನೋಪಾಯಮೇಡ್ ದಾಪನೇನುಗಮೇ ಧನೇ" ಮೇದಿಂ। 16.  
ಮೈತ್ರಿ, ಸ್ನೇಹ. 17. ಪ್ರಮಾಣ. 18. ಉಪಾಯ.  
"ತಪೋಮಿ: ಸಾಧ್ಯತೇಷೋಽಪಿ ನಾಸಾಧ್ಯಂ ಹಿ ತಪಸ್ಯತ:।  
ದುರ್ಭಗ್ವಂ ವೃಥಾ ಲೋಕೋ ವಹತೇ ಸತಿ ಸಾಧನೇ"। 19. ಹಸು  
ಮೊದಲಾದವುಗಳ ಕೆಚ್ಚಲು. 20. ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ.  
21. ತಪಸ್ಸು. 22. ಸಾಹಾಯ್ಯ. 23. ಚಿಕ್ಕತನದಿಂದ



ಗುಣಪಡಿಸುವುದು. 24. ಜನ್ಮನಕ್ಷತ್ರದಿಂದ 6, 15 ಮತ್ತು 24 ನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು. “ಜನ್ಮಸಂಪದ್ವಿಪತ್ ಕ್ಷೇಮ ಪ್ರತ್ಯಕ್ ಸಾಧನನೇಧನಮ್ | ಮಿತ್ರಂ ಪರಮಮಿತ್ರಂ ಚ ಜನ್ಮ-ಕ್ಷಾದ್ಗಣಯೇತ್ ತ್ರಿಧಾ” |

**ಸಾಧನತಾ ಸಾಧನತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಲಕರಣೆ ಹೊಂದಿರುವಿಕೆ, ಉಪಕರಣ ಸಹಿತವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಸಾಧನಸ್ಯ ಭಾವ: “ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯) | “ಪ್ರತಿಕೂಲತಾನುಪಗತೇ ಹಿ ವಿಧೌ ವಿಫಲತ್ವ-ಮೇತಿ ಬಹುಸಾಧನತಾ” ಮಾಘಂ ೧-೬ |

**ಸಾಧನಾ ಸಾಧನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ನೆರವೇರಿಸುವುದು, ಕೆಲಸವನ್ನು ಪೂರ್ತಿಯಾಗಿ ನಡೆಸುವುದು. ಸಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್ “ಯುಚ್” (೩-೩-೧೦೭) | 2. ಉಪಾಸನೆ. 3. ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸುವುದು, ಪರಿಹರಿಸಿ ಒಲಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

**ಸಾಧನೀಯ ಸಾಧನೀಯ** (ವಿಂ) 1. ಸಾಧಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಸಾಧಿಸಬೇಕಾದ, ನೆರವೇರಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಸಾಧಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. 4. ಸಾಧಿಸಬಹುದಾದ. ಸಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) | “ತವ್ಯ:” | ಸಾಧ್ಯವ್ಯಮ್ ಸಾಧ್ಯವ್ಯಮ್.

**ಸಾಧಂತ ಸಾಧಂತ** (ಪುಂ) ಭಿಕ್ಷುಕ. ಸಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) “ಜ್ಞಚ್” (೩-೩-೧೨೮) | ಸಾಧಂತೋ ಭಿಕ್ಷು: ಸಿಂ ಕೌಂ |

**ಸಾಧಯತ್ ಸಾಧಯತ್** (ವಿಂ) 1. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಸಾಧಿಸುತ್ತಿರುವ, ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನೆರವೇರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) | 2. ಉಪಾಸನೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಜಿಪ್” (೪-೧-೬) | -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

**ಸಾಧಮ್ಯ ಸಾಧಮ್ಯ** (ನಂ) ಸಮಾನ ಧರ್ಮವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಸಾದೃಶ್ಯ. ಕಮಲಮಿವ ಸುಂದರಂ ಮುಖಮ್ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಕಮಲ ಮತ್ತು ಮುಖಗಳಿಗೆ ಸೌಂದರ್ಯವು ಸಾಧಮ್ಯ. “ವಾಲ್ಮೀಕೀರಹಿತರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣಾನಾಂ ಸಾಧಮ್ಯ ದಧತಿ ಗಿರಾಂ ಮಹಾಸರಸ್ಯ:” ಮಾಘಂ ೪-೫೯ |

**ಸಾಧಾರಣ ಸಾಧಾರಣ** (ವಿಂ) 1. ಸಮಾನವಾದ, ಸದೃಶವಾದ. ಸಾಧಾರಣಮ್ ಅವಿಶೇಷಣ ಕಾರ್ಯಭಾರಧಾರಣಮ್ — ತೇನ ಸಹ ವರ್ತತೇ | “ಅನ್ಯೋನ್ಯಸಂಭಾಷಣನಾಭಿವ್ಯಕ್ತಂ ಪರಸ್ಪರಂ ಭೂಷಣ-ಭೂಷಣಭಾವ:” ಕುಮಾರಂ ೧-೪೨ | 2. ಸರ್ವಸಮವಾದ, ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಅನ್ವಯಿಸುವ, ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಸರ್ವ ಸಾಮಾನ್ಯವಾದ. 3. ಬೆರೆತಿರುವ, ಮಿಶ್ರವಾಗಿರುವ, ಕಲೆತಿರುವ. “ಅಶ್ವೇವ ಶಕುಂತಲಾ ನಿಯತೇ ಇತ್ಯುತ್ಕಂಠಾಸಾಧಾರಣಂ ಪರಿತೋಷಮನುಭವಾಮಿ” ಶಾಕುಂ ೪ | 4. (ನೈಯಾಯಿಕ

ಮತದಲ್ಲಿ) ಹೇತ್ವಾಭಾಸ, ದುಷ್ಟಹೇತು. ಸಪಕ್ಷ ವಿಪಕ್ಷ ಗಳೆರಡರಲ್ಲೂ ಇರುವ ಹೇತುವು ದುಷ್ಟಹೇತು. ಇದು ಹೇತ್ವಾಭಾಸ. “ಪರ್ವತೋ ವಹ್ನಿಮಾನ್ ಪ್ರಮೇಯತ್ವಾತ್” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪ್ರಮೇಯತ್ವರೂಪಹೇತುವು ಸಪಕ್ಷವಾದ ಮಹಾನಸದಲ್ಲಿಯೂ ವಿಪಕ್ಷವಾದ ಮಹಾಹ್ರದದಲ್ಲಿಯೂ ಇರುವುದರಿಂದ ಹೇತ್ವಾಭಾಸ. ಇದು ಸಾಧಾರಣವಾಯಿತು. “ಯ: ಸಪಕ್ಷೇ ಚ ವಿಪಕ್ಷೇ ಚ ಸ ತು ಸಾಧಾರಣೋ ಮತ:” ಭಾಷಾಪಂ |

**ಸಾಧಾರಣಧರ್ಮ ಸಾಧಾರಣಧರ್ಮ** (ಪುಂ) 1. ಜನ ಸಾಮಾನ್ಯಕ್ಕೂ (ಚಾತುರ್ವರ್ಣ್ಯಕ್ಕೂ) ಉಕ್ತವಾದ ಸಮಾನವಾದ ಧರ್ಮ, ಮನುಷ್ಯರೆಲ್ಲರಿಗೂ ಉಕ್ತವಾದ ಕರ್ತವ್ಯಕಾರ್ಯ.

**ಸಾಮಾನ್ಯಕರ್ತವ್ಯಗಳು:** (1) ಅಹಿಂಸಾ (2) ಸತ್ಯಮ್ (3) ಅಸ್ತೇಯಮ್ (4) ಶೌಚಮ್ (5) ಇಂದ್ರಿಯಸಂಯಮ: (6) ದಮ: (7) ಕ್ಷಮಾ (8) ಆರ್ಜವಮ್ ಮತ್ತು (9) ದಾನಮ್ ಎಂದು ಒಂಬತ್ತು ವಿಧ. 2. (ಅಲಂಕಾರಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ) ಉಪಮಾನ ಮತ್ತು ಉಪಮೇಯಗಳೆರಡರಲ್ಲೂ ಇರುವ ಸಮಾನ ಧರ್ಮ. ಮುಖಂ ಕಮಲಮಿವ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಮುಖ-ಕಮಲ ಗಳೆರಡರಲ್ಲೂ ಇರುವ ಸೌಂದರ್ಯ ವೊಂದಲಾದುದು ಸಾಧಾರಣ ಧರ್ಮ.

**ಸಾಧಾರಣ್ಯ ಸಾಧಾರಣ್ಯ** (ನಂ) 1. ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿರುವಿಕೆ. 2. ಸದೃಶವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಸಾಧಾರಣಸ್ಯ ಭಾವ: “ಽಖ್ಯನ್” |

**ಸಾಧಿಕಾ ಸಾಧಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಸಾಧಿಸುವ ಹೆಂಗಸು, ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸುವ ಹೆಂಗಸು. ಸಾಧಯತಿ — ಸಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್ “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩) |

**ಸಾಧಿತ ಸಾಧಿತ** (ವಿಂ) ಕೊಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ತೆರಿಗೆ ಬಡ್ಡಿ ವೊಂದಲಾದುವು). ಸಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) + ಣಿಚ್ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) | “ದಾಯಿತೋ ದಾಪಿತೋಽಪಿ ಸ್ಯಾತ್ ಸಾಧಿತ: ಶೋಧಿತೋಽಪಿ ಚ” ಶಬ್ದರತ್ನಾವಲಿ: |

**ಸಾಧಿಷ್ಠ ಸಾಧಿಷ್ಠ** (ವಿಂ) 1. ಅತಿಶಯವಾದ, ಅತ್ಯುತ್ತಮವಾದ, ಬಹಳ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. ಅತಿಶಯೇನ ಬಾಹ: “ಽಠನ್” (೪-೩-೫೫) | ಬಾಹಸ್ಯ ಸಾಧಾಪೇಶ: (೪-೩-೬೩) | 2. ಬಹಳ ದೃಢವಾದ. “ಸಾಧಿಷ್ಠೋಽಯಥೇ ದೃಢತಮೇಽಪಿ ಚ” ಹೇಮಂ | 3. ಎಲ್ಲದಕ್ಕಿಂತ ಸಾಧುವಾದ.

**ಸಾಧೀಯಸ್ ಸಾಧೀಯಸ್** (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ, ಎರಡರಲ್ಲಿ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಒಂದು. ಅತಿಶಯೇನಾನಯೋಬ್ಧಿ: — “ಽಯಮ್” (೪-೩-೫೭) | ಸಾಧಾಪೇಶ: (೪-೩-೬೩) | 2. ಹೆಚ್ಚು ಸಾಧುವಾದ, ಇನ್ನೊಂದಕ್ಕಿಂತ ಸಾಧುವಾದ. 3. ಬಹಳ ದೃಢವಾದ. “ಸಾಧೀಯಸ್ತೇ ಯದ್ರಣಾಯಾದ್ರಿಯಂತೇ”



ಸಾಧು ೧೮-೬೩. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಯಸೀ  
-ಯಸೀ.

ಸಾಧು ಸಾಧು (ವಿಂ) 1. ಸಭ್ಯ, ಸತ್ಪುರುಷ, ಸತ್ಕುಲದಲ್ಲಿ  
ಜನಿಸಿದವನು, ಇತರರ ಹಿತವನ್ನು ಸಾಧಿಸುವವನು.  
ಸಾಧನೋತಿ ಪರಕಾರ್ಯಮ್—ಸಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) "ಉ" (೩-೧-೧) । ಯಾರನ್ನೂ ದ್ವೇಷಿಸದವನು ದಯಾಳು  
ಶಾಂತಚಿತ್ತ ಜಂಬ ಅಹಂಕಾರಗಳಿಲ್ಲದವನು ಯಾವುದಕ್ಕೂ  
ಅಸೆಪಡದವನು ವೀತರಾಗನು ಸಾಧುವೆನಿಸುವನು.  
"ನಿರ್ವೇರ: ಸದಯ: ಶಾಂತ: ದಂಭಾಹಂಕಾರವರ್ಜಿತ: । ನಿರಪೇಕ್ಷೋ  
ಮುನಿರ್ವೀರಾಗ: ಸಾಧುರಿಹೋಚ್ಯತೇ" ॥ ತನ್ನನ್ನು ಗೌರವಿಸಿ  
ದಾಗ ಸಂತೋಷದಿಂದ ಹಿಗ್ಗಿದಿರುವವನೂ, ಅಪಮಾನ  
ಸಂಭವಿಸಿದಾಗ ಕುಗ್ಗಿ ಕೋಪಿಸಿಕೊಳ್ಳದವನೂ ಕೋಪದಿಂದ  
ಕಠಿನವಾದ ಮಾತಾಡದವನೂ ಸಾಧುವೆನಿಸುವನು. "ನ  
ಪ್ರಹೃಷ್ಯತಿ ಸಮ್ಮಾನೇ ನಾವಮಾನೇನ ಕುಪ್ಯತಿ । ನ ಕ್ರುದ್ಧ: ಪರಃ  
ಬ್ರೂಯಾತೇತ್ ಸಾಧೋಸ್ತು ಲಕ್ಷಣಮ್" । "ಸಾಧುನಾಂ ಹಿ ಪರೋಪ-  
ಕಾರಕರಣೇ ನೋಪಾಧ್ಯಪೇಕ್ಷಾ ಮನ: " । "ಸಾಧುನಾಂ ದರ್ಶನಂ ಪುಣ್ಯಂ  
ತೀರ್ಥಭೂತಾ ಹಿ ಸಾಧವ: । ಕಾಲೇನ ಫಲತೇ ತೀರ್ಥ ಸದ: ಸಾಧುಸಮಾಗಮ:" । 2. ಸರಿಯಾದ, ದೋಷವಿಲ್ಲದ.  
"ಸಾಧು ವ್ಯಾಕರಣಂ ಹಿತಾಯ ವಿಶದಂ ಕಾವ್ಯಂ ಪಿಕ್ವಿಗೀತವತ್  
ಮೀಮಾಂಸಾ ಶ್ರುತೀತತಪರಾ ತದನುಗಂ ಸಾಕ್ಷ್ಯಂ ಸಪಾತಂಜಲಮ್" ।  
3. ಆಯಾ ಅರ್ಥಗಳಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಕರಣನಿಯಮದಂತೆ  
ವ್ಯತ್ಯಸ್ತವಾದ ಶಬ್ದ, ಪ್ರಯೋಗಾರ್ಹವಾದ ಶಬ್ದ. 4.  
ಯೋಗ್ಯನಾದ, ಒಳ್ಳೆಯ ಸ್ವಭಾವದ, ಉದಾರಹೃದಯ  
ನಾದ, ಸತ್ಯಸಂಧನಾದ. "ಅಥಾ ಶ್ರಿಯಂ ಪಾಲಿಸ್ತಸಂಜ್ಞರಾಯ  
ಪ್ರತ್ಯರ್ಪಯಿಷ್ಯತೀನವಾಂ ಸ ಸಾಧು:" ರಘುಂ ೧೩-೬೫ । 5.  
ದಯಾಳು, ಅರ್ತರನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವವನು, ಕನಿಕರವುಳ್ಳವನು.  
"ತದೋಯಮಾಕ್ರಂದಿತಮಾರ್ತಸಾಧೋಗುಹಾನಿಬದ್ಧಪ್ರತಿಶಬ್ದದೀರ್ಘಮ್"  
ರಘುಂ ೨-೨೮ । 6. ಪ್ರಿಯವಾದ, ಹಿತವಾದ, ಸಂತೋಷ  
ಕರವಾದ. "ಅತೋಽಹಸಿ ಕ್ಷಂತುಮಸಾಧು ಸಾಧು ವಾ ಹಿತಂ  
ಮನೋಹಾರಿ ಚ ದುರ್ಲಭಂ ವಚ:" ಕಿರಾಂ ೧-೪ । 7. ಧೈರ್ಯ  
ಶಾಲಿಯಾದವನು, ಕಿಚ್ಚಿದೆಯವನು. 8. ಬಡ್ಡಿಯಿಂದ  
ಜೀವಿಸುವವನು. 9. ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ,  
ರಮ್ಯವಾದ. "ಸಾಧುರ್ವಾಙ್ಮನಿಕೇ ಚಾರೌ ಸಜ್ಜನೇ ಚಾಭಿವೇಶ-  
ವತ್" ಮೇದಿಂ । 10. ಜಿನದೇವ. 11. ಮುನಿ. (ಅವ್ಯಂ)  
12. ಚೆನ್ನಾಗಿ, ಸೊಗಸಾಗಿ, ಮನೋಹರವಾಗಿ. "ಆಯೇ  
ಸಾಧು ಗೀತಮ್, ಅಹೋ ರಾಗಬದ್ಧಚಿತ್ತವೃತ್ತಿರಾಲಿಖಿತ ಇವ  
ಸರ್ವತೋ ರಙ್ಗ:" ಶಾಕುಂ ೧ । 13. ಚೆನ್ನಾಗಿ, ಸರಿಯಾಗಿ,  
ಸಮೀಚೀನವಾಗಿ, ದೋಷರಹಿತವಾಗಿ. "ಆಪರಿತೋಪಾ-  
ದ್ವಿಧುಷಾಂ ನ ಸಾಧು ಮನ್ಯೇ ಪ್ರಯೋಗವಿಜ್ಞಾನಮ್" ಶಾಕುಂ ೧-೨ ।

ಸಾಧುಜ ಸಾಧುಜ (ವಿಂ) ಸತ್ಕುಲದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು.  
ಸಾಧಿ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ "ಙ:" (೩-೧-೧೭) ।

ಸಾಧುತಾ ಸಾಧುತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸುಂದರವಾಗಿರುವಿಕೆ.  
2. ಸರಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ಶುದ್ಧವಾಗಿರುವಿಕೆ.

ಸಾಧುವಾದ ಸಾಧುವಾದ (ಪುಂ) ಒಳ್ಳೆಯದು ಒಳ್ಳೆಯದು  
ಎಂಬ ಮಾತು, ಸಾಧು ಸಾಧು ಎಂಬ ಮಾತು. ಸಾಧು  
ಇತಿ ವಾದ: । "ಏಕೋಽನೇನ ಸ್ವರ್ಣಪುಷ್ಪೇದ್ವಿಷಂತ: ಸಿದ್ಧಾ ಮಾಲೈ:  
ಸಾಧುವಾದೇದ್ವಯೇಽಪಿ" ಸಾಧುಂ ೧೮-೫೫ ।

ಸಾಧುವಾಹ ಸಾಧುವಾಹ (ಪುಂ) ಪಳಗಿದ ಕುದುರೆ, ತರಬೇತಿ  
ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ ಕುದುರೆ. ಸಾಧುಹತ್ತಮೋ ವಾಹ: ।

ಸಾಧುವಾಹಿನ್ ಸಾಧುವಾಹಿನ್ (ಪುಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪಳಗಿದ  
ಕುದುರೆ, ಸರಿಯಾಗಿ ಸವಾರನನ್ನು ಕುಳ್ಳಿರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ  
ಕುದುರೆ. ಸಾಧು ವಹತಿ — ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಗಿಣಿ:"  
(೩-೨-೭೮) । "ವಿನೀತಾ: ಸಾಧುವಾಹಿನ:" ಅಮಂ ।

ಸಾಧುವೃತ್ತ ಸಾಧುವೃತ್ತ (ವಿಂ) 1. ಸದಾಚಾರಸಂಪನ್ನನು,  
ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆಯುಳ್ಳವನು. ಸಾಧು ವೃತ್ತಂ ವರ್ತನಂ ಯಸ್ಯ ।  
"ಪ್ರಾಯೇಣ ಸಾಧುವೃತ್ತಾನಾಮಸ್ಥಾಯಿನ್ಯೋ ವಿಪತ್ತಯ:" ಭರ್ತುಂ ।  
(ನಂ) 2. ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆ. ಸಾಧು ವೃತ್ತಮ್ ।

ಸಾಧುವೃತ್ತಿ ಸಾಧುವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯೋಗ್ಯವಾದ  
ಜೀವನ, ಉತ್ತಮವಾದ ಜೀವನೋಪಾಯ. ಸಾಧುವಿ  
ವೃತ್ತಿ: । 2. ಉತ್ತಮವಾದ ವಿವರಣೆ. 3. ಸತ್ಪುರುಷನ  
ಜೀವನ. ಸಾಧು: ವೃತ್ತಿ: ।

ಸಾಧುತ ಸಾಧುತ (ನಂ) 1. ಅಂಗಡಿ ಬೀದಿ. 2. ನವಿಲುಗಳ  
ಗುಂಪು. 3. ಭಕ್ತಿ, ಕೊಡೆ.

ಸಾಧ್ಯ ಸಾಧ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಗಣದೇವತೆ. ಸಾಧ್ಯಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ  
"ಅಚ್" (೫-೨-೧೨೭) । "ಮಹಾರಾಜಿಕಸಾಧ್ಯಾಶ್ಚ ಕುರಾಶ್ಚ  
ಗಣದೇವತಾ:" ಅಮಂ । 2. ವಿಷ್ಣುಂಭ ಮೊದಲಾದ 27  
ಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ 22 ನೆಯ ಯೋಗ. 3. ಒಂದು ಮಂತ್ರ.  
(ನಂ) 4. ಕಾರ್ಯನಿರ್ವಹಣೆ, ಪೂರಯಿಕೆ. (ವಿಂ)  
5. ಸಾಧಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ಸಾಧಿಸಬೇಕಾದ. 7. ಸಾಧಿಸಲು  
ಶಕ್ತವಾದ. ಸಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) "ಉ" (೩-೧-೧೨೪) ।  
"ಪರ್ವತೋ ವಹ್ನಿಮಾನ್ ಭೂಮಾತ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ  
ವಹ್ನಿಮತ್ತವು ಸಾಧ್ಯ. ಅದುದರಿಂದ ಪರ್ವತವು ಪಕ್ಷ.  
"ಸಂದಿಗ್ಧಸಾಧ್ಯವಾನ್ ಪಕ್ಷ:" । "ಪ್ರತಿಜ್ಞಾದೋಷನಿರ್ಮುಕ್ತಂ  
ಸಾಧ್ಯಂ ಸತ್ಕಾರಣಾನ್ವಿತಮ್ । ನಿಶ್ಚಿತಂ ಲೋಕಸಿದ್ಧಂ ಚ ಪಕ್ಷಂ  
ಪಕ್ಷವಿದೋ ವಿದು:" । "ಸಾಧ್ಯೋ ಯೋಗೋ ಸಾಧನೀಯೋ ಗಣದೇವತ-  
ಭಿವ್ಯಪಿ" ಹೇಮಂ । 8. ನೆರವೇರಿಸಲ್ಪಡುವ. 9. ನೆರವೇರಿಸ  
ಬೇಕಾದ.



ಸಾಧವಸ ಸಾಧ್ಯಸ (ನಂ) ಧಯ, ಹೆದರಿಕೆ. ಸಾಧುನಾಮಸನಮ್ |

“ಪುನಃಜ್ಜಿತಸಾಧವಸಂ ದ್ವಿಷಾಮಭಿವತ್ತೇಸ್ಮ ವಚೋ ವಚೋಹರ:”

ಮಾಘಂ ೧೬-೩೮ |

ಸಾಧವಿ ಸಾಧ್ವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪತಿವ್ರತೆಯಾದ ಹೆಂಗಸು. ಸಾಧು

“ಜಿಷ್” (೪-೧-೪೪) | “ಅಹಂ ತ್ವಯಾ ದೂತಮುಖೇನ ದೂರಾತ್

ಸಾಧವ್ಯಾ ಸಮಾಹುತ ಇಹೋಪಯಾತ:” ಯಾದಂ ೧೩-೨೦ | “ಸಾಧವಿ

ಸ್ತ್ರೀ ಮಾತೃತುಲ್ಯಾ ಚ ಸರ್ವಥಾ ಹಿತಕಾರಿಣಿ” ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ |

ಸಾನಂದ ಸಾನಂದ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ

ವನು. ಆನಂದನ ಸಹ ವರ್ತೆ | (ಅವ್ಯಂ) 2. ಆನಂದ

ದಿಂದ, ಸಂತೋಷದಿಂದ. “ಸಾನಂದಂ ನಂದಿಹಸ್ತಾಹತಮುರಜ-

ರವಾಹುತಕೌಮಾರಬಹಿವಾಸಾತ್ರಾಸಾಭ್ರರಂಧ್ರಂ ವಿಶತಿ ಫಣಿಪತೌ

ಭೋಗಸಂಕೋಚಭಾಜಿ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೨ |

ಸಾನಸಿ ಸಾನಸಿ (ಪುಂ) ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ಸನ್ಯತೇ ದೀಯತೇ

ದಕ್ಷಿಣಾಣ್ಯಂ— ಷಣ್ಣು (ದಾನೇ) “ಅಸಿ:” ಉಪವಾವೃದ್ಧಿಶ್ಚ

ನಿಷಾಂ (೩೦ ೪-೧೦೭) | ಸಾನಸಿ ಹಿರಣ್ಯಮ್ ಸಿಂ ಕೌಂ |

ಸಾನು ಸಾನು (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪರ್ವತದ ಸಮಭೂಮಿ.

ಸನೋತಿ— ಷಣ್ಣು (ದಾನೇ) “ಬುಣ್” (೩೦ ೧-೩) |

“ಪಾಶ್ಚಾತ್ಯಭಾಗಮಿಹ ಸಾನುಷು ಸನ್ನಿವಿಷಣ್ಣಾ: ಪಶ್ಯಂತಿ ಶಾಂತಮಲ

ಸಾಂದ್ರತರಾಂಶುಜಾಲಮ್” ಮಾಘಂ ೪-೨೨ | 2. ಅರಣ್ಯ,

ಕಾಡು. 3. ಬಿರುಗಾಳಿ. 4. ಮಾರ್ಗ, ರಸ್ತೆ. 5. ಅಗ್ರ,

ತುದಿ. 6. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. “ಸಾನುರಸ್ತ್ರೀ ವನೇ ಪ್ರಸ್ಥೇ

ವಾತ್ಯಾಮಾಗ್ನಿಕೋವಿದೇ” ಮೇದಿಂ |

ಸಾನುಜ ಸಾನುಜ (ನಂ) 1. ಬಿಳಿ ನೈದಿಲೆ ಗೆಡ್ಡೆ. ಸಾನಿ

ಜಾಯತೇ— ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಮವಿ) “ಜ:” (೩-೨-೯೭) |

(ವಿಂ) 2. ಅನುಜ (ತಮ್ಮ) ನೊಡನೆ ಕೂಡಿದವನು.

ಅನುಜನ ಸಹ ವರ್ತೆ |

ಸಾನುಬಂಧ ಸಾನುಬಂಧ (ವಿಂ) ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾದ, ಎಡೆಬಿಡದ

ಸಂಬಂಧವುಳ್ಳ, ನಿರಂತರವಾದ. ಅನುಬಂಧನ ಸಹ ವರ್ತೆ |

“ಸಾನುಬಂಧಾ: ಕಥಂ ನ ಸ್ಯು: ಸಂಪದೋ ಮೇ ನಿರಾಪದ:” ರಘುಂ

೧-೬೪ |

ಸಾನುಮತ್ ಸಾನುಮತ್ (ಪುಂ) ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಸಾನು-

ರಸ್ಯಾಸ್ತಿ— “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪) | “ಉಪಸಂಖ್ಯಮಾಸ್ತ

ತನು ಸಾನುಮತ: ಶಿಖರೇಷು ತತ್ಕ್ಷಣಮಶೀತಕು:” ಮಾಘಂ ೯-೪ |

ಸಾಂತಪನ ಸಾಂತಪನ (ನಂ) 1. ಬಹಳ ಕಷ್ಟವಾದ ಒಂದು

ವ್ರತ. ಸಂತಾಪಯತಿ— ಸಮ್ + ತಪ (ಸಂತಾಪಿ) + ಣಿಚ್

“ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪) | ಸ್ವಾರ್ಥ “ಅಣ್” | ಗೋಮೂತ್ರ

ಗೋಮಯ ಕ್ಷೀರ ಮೊಸರು ತುಪ್ಪ ಮತ್ತು ಕುಶೋದಕ

ಇವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಸೇರಿಸಿ ಒಂದು ದಿನ ಆಹಾರವಾಗಿ ತೆಗೆದು

ಕೊಂಡು ಮರುದಿನ ಉಪವಾಸವಿರಬೇಕು. ಇದು

ಸಾಂತಪನ ವ್ರತ. “ಗೋಮೂತ್ರಂ ಗೋಮಯಂ ಕ್ಷೀರಂ ದಧಿ ಸರ್ಪಿ:

ಕುಶೋದಕಮ್ | ಏಕರಾತ್ರೋಪವಾಸಶ್ಚ ಕೃತ್ವಂ ಸಾಂತಪನಂ ಸ್ಮೃತಮ್”

ಮನುಂ ೧೧-೨೧೨ | (ವಿಂ) 2. ಸೂರ್ಯನ ಸಂಬಂಧ

ವಾದ. ಸಂತಪನಸ್ಯ ಸೂರ್ಯಸೇದಮ್ “ಅಣ್” (೪-೩-೧೨೦) |

ಸಾಂತರ ಸಾಂತರ (ವಿಂ) ವಿರಳವಾಗಿರುವ, ನಡುವೆ ಸ್ಥಳ

ಬಿಟ್ಟಿರುವ, ಮಧ್ಯೆ ಸಂದಾಂಗಳುಳ್ಳ. ಅಂತರೇಣ ಸಹ ವರ್ತೆ |

“ಯದಿ ತಾ: ಸ್ಯುರೇಕರೂಪಾ: ಶುಭಾಸ್ತತ: ಸಾಂತರಾಸ್ತು ನ ಶಿವಾಯ”

ಬೃಹತ್ಸಂ ೨೨-೩ |

ಸಾಂತಾನಿಕ ಸಾಂತಾನಿಕ (ಪುಂ) 1. ಸಂತಾನಕ್ಕಾಗಿ ವಿವಾಹ

ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ ವಿಪ್ರ. ಸಂತಾನಂ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ “ಠ್”

(೪-೧-೧೦೯) | (ವಿಂ) 2. ಸುತ್ತಲೂ ಹರಡಿಕೊಳ್ಳುವ,

ನಾಲ್ಕು ಕಡೆಗಳಲ್ಲೂ ವ್ಯಾಪಿಸುವ. 3. ಸಂತಾನ (ಕಲ್ಪ

ವೃಕ್ಷ) ಕೈ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.

ಸಾಂತವ ಸಾಂತವ (ನಂ) 1. ಬಹಳ ಮಧುರವಾದ ಮಾತು.

ಸಾಂತವಯತಿ— ಸಾಂತವ (ಸಾಮಪ್ರಯೋಗ) + ಣಿಚ್ “ಅವ್”

(೩-೧-೧೩೪) | “ಕಾನಿ ಸಾಂತವಾನಿ ಗೋವಿಂದ: ಸುತಪುತ್ರೇ

ಪ್ರಯುಕ್ತವಾನ್” ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೧೪೦-೨ | 2. ಸಾಮವಚನ,

ಹಿತವಾದ ಮಾತು, ಸಾಮೋಪಾಯ. “ಚತುರ್ಯೋಪಾಯಸಾಧ್ಯೇ

ತು ರಿಪೌ ಸಾಂತವಮಪಕ್ರಿಯಾ” ಮಾಘಂ ೨-೪೪ |

ಸಾಂತವನ ಸಾಂತವನ (ನಂ) 1. ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸುವುದು,

ಶಾಂತಗೊಳಿಸುವುದು. ಸಾಂತವ (ಸಾಮಪ್ರಯೋಗ) + ಣಿಚ್

“ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೪) | 2. ಸಾಮೋಪಾಯ, ಹಿತ

ವಾದ ಮಾತನ್ನಾಡುವುದು, ಹಿತವಾದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು

ಮಾಡುವುದು. “ನಾಸ್ಮೇ ದೇಯೋ ಹ್ಯಾನುನಯೋ ನಾಯಮಹಂತಿ

ಸಾಂತವನಮ್ | ಲೋಕವೃದ್ಧತಮೇ ಕೃಷ್ಣೇ ಯೋಽಹಂಗಳಾ ನಾಭಿಮನ್ಯತೇ”

ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೩೮-೬ | ಸಾಂತವ + ಣಿಚ್ “ಯುಚ್”

(೩-೩-೧೦೭) | -ನಾ -ನಾ. “ವಿಮತಿ ಭಜತಸ್ತದರ್ಹಣಾಯಾಂ

ನ ಚ ದೇಯೋಽನುನಯೋ ನ ಸಾಂತವನಾ ಚ” ಯಾದಂ ೧೪-೩೯ |

ಸಾಂದೀಪನಿ ಸಾಂದೀಪನಿ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಯುಷ್ಠಿ. ಸಾಂದೀಪನಸ್ಯ

ಅಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ “ಇವ್” (೪-೧-೯೪) | ಸಾಂದೀಪನಿ

ಯುಷ್ಠಿಯು ಬಲರಾಮ ಮತ್ತು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣರಿಗೆ ವಿದ್ಯಾಗುರು.

ಇಬ್ಬರೂ ಸಕಲ ಶಾಸ್ತ್ರಪಾರಂಗತರಾಗಿದ್ದರೂ ಲೋಕದಲ್ಲಿ

ಅಜ್ಞಾರ್ಯ-ಶಿಷ್ಯ ಭಾವವನ್ನು ಪ್ರಸಿದ್ಧಪಡಿಸಲು ಈ

ಯುಷ್ಠಿಯಲ್ಲಿ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸಮಾಡಿ ಅರಂಭಿಸಿದನಾಲ್ಕು ದಿನ

ಗಳಲ್ಲಿ ಸರಹಸ್ಸು ಧನುರ್ವೇದವನ್ನು ಕಲಿತು ತಮ್ಮ ಅದ್ಭುತ

ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಪ್ರದರ್ಶಿಸಿದರು. ಅಮಾನುಷವಾದ ಈ

ಅದ್ಭುತ ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಕಂಡು ಸಾಂದೀಪನಿಯುಷ್ಠಿಯು ಆ ದಿನ



ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿ ಲವಣಾರ್ಣವದಲ್ಲಿ ಮೃತನಾದ ತನ್ನ ಪುತ್ರನನ್ನು ಬದುಕಿಸಿ ಗುರುದಕ್ಷಿಣೆಯಾಗಿ ಒಪ್ಪಿ ಸೇವೆಕೆಂದು ಹೇಳಲು ಶಸ್ತ್ರಾಸ್ತ್ರಧಾರಿಗಳಾಗಿ ಹೊರಟ ಬಲರಾಮ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣರನ್ನು ನೋಡಿ ಸಮುದ್ರರಾಜನು ಸಾಂದೀಪನಿ ಪುತ್ರನನ್ನು ಪಂಚಜನನಂಬ ರಾಕ್ಷಸನು ಅಪಹರಿಸಿದನೆಂದೂ ಅವನು ಸಮುದ್ರದೊಳಗಿರುವನೆಂದೂ ತಿಳಿಸಿದನು. ಆಗ ಸಮುದ್ರದೊಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಪಂಚಜನನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನು ಅವನ ಅಸ್ಥಿಯಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಶಂಖವನ್ನು ಪಡೆದು ವೈವಸ್ವತನಗರಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಸಾಂದೀಪನಿಯ ಪುತ್ರನನ್ನು ತಂದು ಗುರುದಕ್ಷಿಣೆಯಾಗಿ ಒಪ್ಪಿಸಿದನು. "ತಸ್ಯ ಶಿಷ್ಯತ್ವಮಪ್ಯೇತ ಗುರುವೃತ್ತಿಪರೋ ಹಿ ತೌ | ದರ್ಶಯಾಂ ಚಕ್ರತುರ್ವಿರಾಚಾರಮಸ್ತೀಲೇ ಜನೇ || ಸರಹಸ್ಯಂ ಧನುರ್ವೇದ ಸಸಂಘ್ರಹಮಧೀಯತಾಂ | ಅಹೋರಾತ್ರೈಶ್ಚತುಃಪಟಾಚಾ ತದ್ಭೂತ-ಮಮುದ್ವಿಜ || ಋತುತ್ರಿವಿತಾಂ ಯಾ ತೇ ದಾತವ್ಯಾ ಗುರುದಕ್ಷಿಣಾ | ಸೌಂಧ್ಯತೀನ್ದ್ರಿಯಮಾಲೋಕ್ಯ ತಯೋಃ ಕರ್ಮ ಮಹಾಮತಿಃ || ಅಯಾಚತ ಮೃತಂ ಪುತ್ರಂ ಪ್ರಭಾತೇ ಲವಣಾರ್ಣವೇ || ಗೃಹೀತಾಸ್ತೌ ತತಸ್ತೌ ತು ಸಾರ್ಥಪಾತ್ರೋ ಮಹೋದಧಿಃ | ತವಾಚ ನ ಮಯಾ ಪುತ್ರೋ ಹುತಃ ಸಾಂದೀಪನೇರತಿ || ಇತ್ಯುಕ್ತೇಜ್ಜ್ವಲಂ ಗತ್ವಾ ಹತ್ವಾ ಪಶ್ಚಜನಂ ಚ ತಮ್ | ಕೃಷ್ಣೋ ಜಗ್ರಾಹ ತಸ್ಯಾಸ್ಥಿಪ್ರಭವಂ ಶಕ್ಷ್ಮಮುತಮಮ್ || ಬಲದೇವಶ್ಚ ಬಲವಾನ್ ಜಿತ್ವಾ ವೈವಸ್ವತಂ ಯಮಮ್ | ತಂ ಬಾಲಂ ಯಾತನಾಸಂಸ್ಥಂ ಯಥಾಪೂರ್ವಶರೀರಣಮ್ || ಪಿತ್ರೇ ಪ್ರದತ್ತವಾನ್ ಕೃಷ್ಣೋ ಬಲಶ್ಚ ಬಲಿನಾಂ ವರಃ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ ೪-೨೧ |

**ಸಾಂದೃಷ್ಟಿಕ ಸಾಂಧ್ಯಷ್ಟಿಕ** (ನಂ) ಸಂಧ್ಯಾಫಲ, ಕೂಡಲೆ ಲಭಿಸುವ ಫಲ. ಸಾಂದೃಷ್ಟಿ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ ಭವಮ್ "ಠಕ್" (ವಾಂ ೪-೨-೬೦) | "ಸಾಂದೃಷ್ಟಿಕಂ ಫಲಂ ಸದಾಃ" ಅಮಂ |

**ಸಾಂದ್ರ ಸಾಂಧ್ಯ** (ವಿಂ) 1. ನಿಬಿಡವಾದ, ನಿರಂತರವಾದ, ದಟ್ಟವಾದ. ಸಹ ಅಂದ್ರಯತೇ — ಅದಿ (ಬಂಧನ) "ರಕ್" ಬಾಹುಂ | "ಸಾಂದ್ರಃ ಸುರಾನೀಕರಜಾಂಭಿರಮ್ಬರೇ ನವಾಮ್ಬುದಾನೀಕ-ನಿರ್ಮರಭಿಷ್ರಿತೇ" ಕುಮಾಂ ೧೪-೩೬ | 2. ಒತ್ತುಗೊಡಿದ, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿ ಮುಂದವಾದ, ದಪ್ಪವಾದ. "ಅಥ ಸಾಂದ್ರ-ಸಾಂಧ್ಯಕಿರಣಾರುಣಿತಂ ಹರಿಹೇತಿಹೃತಿ ಮಿಥುನಂ ಪತತೌಃ" ಮಾಘಂ ೧-೧೫ | 3. ಅತಿಶಯವಾದ, ಬಲವತ್ತಾದ. "ತಾಸಾಂ ಮುಖೇರಾಸವಗಂಧಗಂಧ್ಯಾಪ್ತಾಂತರಾಃ ಸಾಂದ್ರಕುತುಹಲ-ನಾಮ್" ರಘುಂ ೭-೧೧ | 4. ಮೃದುವಾದ, ಮೆತ್ತಗಿರುವ. (ನಂ) 5. ವನ. "ಸಾಂದ್ರಂ ವನೇ ಧನೇ ಮೃದೌ" ಮೇದಿಂ |

**ಸಾಂದ್ರಸ್ಥಿಗಧ ಸಾಂಧ್ಯಸ್ಥಿಗಧ** (ವಿಂ) ದಟ್ಟವಾಗಿಯೂ ನುಣುಪಾಗಿಯೂ ಇರುವ. ಸಾಂದ್ರಃ ಸ್ಥಿಗಧಶ್ಚ | "ಸಾಂದ್ರ-ಸ್ಥಿಗಧಸ್ತು ಮೇದುರಃ" ಅಮಂ |

**ಸಾಂಧಿಕ ಸಾಂಧಿಕ** (ವಿಂ) ಮದ್ಯವನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು, ಬಟ್ಟೆ ಇಳಿಸುವವನು. ಸನ್ಧಾ ಮದ್ಯಸಂಜ್ಞೀಕರಣಂ ಶಿಲ್ಪಮಸ್ಯ — "ಠಕ್" (೪-೪-೫೫) |

**ಸಾಂಧಿವಿಗ್ರಹಿಕ ಸಾಂಧಿವಿಗ್ರಹಿಕ** (ಪುಂ) ಸಂಧಿವಿಗ್ರಹ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ನಿಯುಕ್ತನಾದ ಅಧಿಕಾರಿ, ನೆರೆಹೊರೆಯ ರಾಜ್ಯಗಳೊಡನೆ ಸ್ನೇಹ ಮತ್ತು ಯುದ್ಧ ಈ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುವ ವಿದೇಶ ವ್ಯವಹಾರಗಳ ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿ. ಸನ್ಧೀ ವಿಗ್ರಹೇ ಚ (ತನ್ನಿರ್ವಾಹಕಾರ್ಯ) ನಿಯುಕ್ತಃ "ಠಕ್" (೪-೪-೬೯) |

**ಸಾಂಧ್ಯ ಸಾಂಧ್ಯ** (ವಿಂ) ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲಸಂಬಂಧವಾದ, ಸಂಧ್ಯಾ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಏಕಿತವಾದ, ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲದಲ್ಲಿ ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ. ಸನ್ಧ್ಯಾಯಾಂ ಭವಃ "ಅನ್" (೪-೩-೧೬) | "ಗುರೋಃ ಸದಾರಸ್ಯ ನಿಪಿಡ್ಯ ಪಾದೌ ಸಮಾಪ್ಯ ಸಾಂಧ್ಯಂ ಚ ವಿಧಿ ದಿಲೀಪಃ" ರಘುಂ ೨-೨೩ |

**ಸಾಂಧ್ಯಹನಿಕ ಸಾಂಧ್ಯಹನಿಕ** (ವಿಂ) ಯೋಧರು ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಸಿದ್ಧರಾಗುವಂತೆ ಪ್ರೇರಿಸುವ. ಸಾಂಧ್ಯಹನಂ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ — "ಠಕ್" (೫-೧-೧೦೯) | "ಶೈಲಕಟಕಭಿನ್ನರವಃ ಪ್ರಣನಾದ ಸಾಂಧ್ಯಹನಿಕೋಜ್ಯ ವಾರಿಜಃ" ಮಾಘಂ ೧೫-೭೨ |

**ಸಾಂಧ್ಯಾ ಸಾಂಧ್ಯಾ** (ನಂ) ಹೋಮಕ್ಕಾಗಿ ಅಗ್ನಿಯ ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ತರಲ್ಪಡುವ ಹವಿಸ್ಸು. ಸಮ್ಯಕ್ ನಿಯತೇ ಹೋಮಾರ್ಥ-ಮಗ್ನಿ ಪ್ರತಿ-ಸಮ್+ಘ್ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಪ್ಯತ್" ಆಯಾदेशಃ ಸಮೋ ದೋಷಶ್ಚ ನಿಪಾಂ (೩-೧-೧೨೯) | "ಕೃತಗುರುದ್ವಿರಾಜ-ಽವಸಮವ್ಯಯವ್ಯಯೇಹಂತಮಯಮುಪಲಿಡೇ ಸಾಧು ಸಾಂಧ್ಯಾಮಗ್ನಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೧-೪೧ |

**ಸಾಂಧ್ಯಾ ಸಾಂಧ್ಯಾ** (ನಂ) 1. ಸನ್ನಿಧಿ, ಸಾಮೀಪ್ಯ, ಹತ್ತಿರ. ಸನ್ನಿಧಿರೇವ — ಸ್ವಾರ್ಥ "ಪ್ಯತ್" (ವಾಂ ೫-೧-೧೨೪) | "ಅರ್ಚಕಸ್ಯ ತಪೋಯೋಗಾತ್ ಅರ್ಚನಸ್ಯಾತಿಶಾಯನಾತ್ | ಆಭಿ-ರೂಪ್ಯಾಂಚ ಬಿಂಬಾನಾಂ ದೇವಃ ಸಾಂಧ್ಯಾಮೃಚ್ಛತಿ" | 2. ಸಮ್ಮುಖ, ಎದುರಿರುವುದು, ಎದುರಿಗೆ ಬಂದಿರುವುದು, ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವುದು, ಸನ್ನಿಧಾನ. "ಪರಿಕಲ್ಪಿತಸಾಂಧ್ಯಾ ಕಾಲೇ ಕಾಲೇ ಚ ವಂದಿಷು | ಸ್ತುತ್ಯ ಸ್ತುತಿಭಿರರ್ಥಾಭಿರೂಪತಸ್ಥೇ ಸರಸ್ವತೌ" ರಘುಂ ೪-೬ |

**ಸಾಂಧ್ಯಾಪಾತಿಕ ಸಾಂಧ್ಯಾಪಾತಿಕ** (ವಿಂ) ಸನ್ನಿಪಾತಕ್ಕೆ ನಿಮಿತ್ತವಾದ, ಸನ್ನಿಪಾತಜ್ವರಕ್ಕೆ ಸೂಚಕವಾದ ವಿಕಾರ. ಸಾಂಧ್ಯಾಪಾತಸ್ಯ ನಿಮಿತ್ತಮ್ "ಠಕ್" (ವಾಂ ೫-೧-೩೮) | ಪಾತ ಪಿತ್ತ ಶ್ಲೇಷ್ಮ ದೋಷಗಳ ಸಂಕರವು ಸನ್ನಿಪಾತಜ್ವರ. ಅದಕ್ಕೆ ಸೂಚಕವಾದ (ಕಾರಣವಾದ) ಅಪಧ್ಯಾಹಾರ ಸಂಬಂಧ ಮತ್ತು ಜಿಹ್ವಾಕಾಷ್ಣ್ಯಾದಿ ವಿಕಾರಗಳು



ಸಾಂಖ್ಯಾಸಿಕ. "ವೀರ್ಯವನ್ತ್ಯೌಷಧಾನಿವ ವಿಕಾರೆ ಸಾನ್ನಿಪಾತಿಕೇ" ಕುಮಾಂ ೨-೪೮.

ಸಾಂಖ್ಯಾಸಿಕ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ (ಪುಂ) ಸಂಸ್ಕೃತ, ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಯ ಅಶ್ರಮ ಸ್ವೀಕರಿಸಿದವನು. ಸಂನ್ಯಾಸ: ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯)।

ಸಾಪತ್ಯ ಸಾಪತ್ಯ (ನಂ) 1. ಶತೃ, ರಿಪು, ವೈರಿ. ಸಪತ್ನಿ ಎವ ಸಾಪತ್ಯ: — ಸ್ವಾರ್ಥ "ಘ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪)। 2. ಸಪತ್ನಿಯ ಪುತ್ರ, ಸಪತ್ನಿಯ ಮಗ. ಸಪತ್ನಿಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಘ್"। "ಪಿತ್ರಾ ಸಹ ವಿಭಕ್ತಾ ಯೇ ಸಾಪತ್ನಿಯಾ ವಾ ಸಹೋದರಾ:। ಇವನ್ಯಜಾಶ್ಚ ಯೇ ತೇಷಾಂ ಪಿತೃಭಾಗಹರಾಸ್ತು ತೇ" ದಾಯತತ್ವಮ್। 3. ಸಪತ್ನೀತ್ವ, ಸಪತ್ನೀಭಾವ, ಸಪತ್ನಿಯ ಕಾರ್ಯ. ಸಪತ್ನಿಯಾ: ಭಾವ: ಕರ್ಮ ವಾ "ಘ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ವ್ಯಕ್ತವ್ ನಿಯತಮನೇನ ನಿನ್ಯುರಸ್ಯಾ: ಸಾಪತ್ಯಂ ಕ್ಷಿತಿಸುತವಿಧಿಷೋ ಮಹಿಷ್ಯ:" ಮಾಘಂ ೮-೧೫।

ಸಾಪಿಂಡ್ಯ ಸಾಪಿಂಡ್ಯ (ನಂ) ಸಮಾನ ಪಿಂಡತ್ವ. ಸಪಿಂಡತ್ವವು ಸಪ್ತಪುರುಷಪರ್ಯಂತವಿರುವುದು. ಸಪ್ತಮ ಪುರುಷಾನಂತರ ಅದು ನಿಲ್ಲುವುದು. "ಸಪಿಂಡತಾ ತು ಪುರುಷೇ ಸಪ್ತಮೇ ವಿವಿವರ್ತತೇ" ಮನುಂ ೪-೬೦। "ಸಾಪಿಂಡ್ಯಂ ಸಾಪ್ತಪೌರುಷಮ್" ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ।

ಸಾಪ್ತಪದೀನ ಸಾಪ್ತಪದೀನ (ನಂ) ಸಪ್ತ, ಸ್ನೇಹ. ಸಪ್ತಭಿ: ಪದೇರವಾಪ್ಯಮ್ "ಖ್" (೪-೨-೨೨)। ಏಳು ಹೆಜ್ಜೆಗಳು ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಇಡುವಷ್ಟರಲ್ಲಿ ಅಥವಾ ಏಳು ಪದಗಳು (ಏಳು ಮಾತುಗಳು) ಅಡುವಷ್ಟರಲ್ಲಿ ಸ್ನೇಹವು ದೆಳೆಯುವುದು. "ಪ್ರಯುಕ್ತಸತ್ಕಾರವಿಶೇಷಮಾತ್ಮನಾ ನ ಮಾಂ ಪರಂ ಸಂಪ್ರತಿಪತ್ತಮಹಿಸಿ। ಯತ: ಸತಾಂ ಸತ್ತಗಾತ್ರಿ ಸಜ್ಜತಂ ಮನಿಷಿಭಿ: ಸಾಪ್ತಪದೀನಮುಚ್ಯತೇ" ಕುಮಾಂ ೪-೩೯।

ಸಾಪ್ತಪೌರುಷ ಸಾಪ್ತಪೌರುಷ (ವಿಂ) ಏಳು ತಲೆಮಾರೆಯ ವರೆಗೂ ಸೇರಿದವನು. ಸಪ್ತ ಪುರುಷೇಷು ಭವ: "ಅನ್" (೪-೩-೪೩)।

ಸಾಫಲ್ಯ ಸಾಫಲ್ಯ (ನಂ) 1. ಸಫಲತ್ವ, ಫಲವು ದೊರಕುವಿಕೆ, ಯಶಸ್ವಿ ಫಲಿಸುವಿಕೆ. ಸಫಲಸ್ಯ ಭಾವ: "ಘ್" (೪-೧-೧೨೪)। 2. ಫಲಸಹಿತವಾಗಿರುವಿಕೆ. "ಸಾಫಲ್ಯಮಸ್ತ್ರೇ ರಿಪುಸಾಯಕಸ್ಯ ಕೃತ್ವಾ ಗತೇ ಭಾಗ್ಯ ಇವಾಪವರ್ಗಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೬-೪೯।

ಸಾಮಕ ಸಾಮಕ (ಪುಂ) 1. ಸಾಣೆಕಲ್ಲು, ಮಸೆಯುವ ಕಲ್ಲು. "ತರ್ಕುಶಾಣಸ್ತು ಸಾಮಕ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 2. ಸಾಮವೇದವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು. ಸಾಮ ಅಧೀತೇ ವೇದ ವಾ — ಸಾಮನ್ "ವುನ್" (೪-೨-೬೧)। (ನಂ) 3. ಸಾಲ ಪಡೆದ ಅಸಲು ಹಣ.

ಸಾಮಗ ಸಾಮಗ (ಪುಂ) 1. ಸಾಮವೇದಾಧ್ಯಾಯಿ ವಿಪ್ರ, ಸಾಮವೇದ ಗಾನಮಾಡುವವನು. ಸಾಮ ಗಾಯತಿ — ಗೆ (ಶಬ್ದ) "ಟಕ್" (೩-೨-೮)। 2. ಮಹಾವಿಷ್ಣು. "ಸ್ವಯಮಪಿ ಸ್ವಾನುಭವಪ್ರೀತ್ಯಾ ಸಾಮಾನಿ ತಾದೃಶಿ ಗಾಯತಿ— ಸಾಮನ್ + ಗೆ (ಶಬ್ದ) "ಟಕ್" (೩-೨-೮)। "ಸ್ವಯಂ ಸ್ವಾನುಭವಪ್ರೀತ್ಯಾ ಗಾಯತೀತಿ ಚ ಸಾಮಗ:" ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತ:। "ತಿಸಾಮಾ ಸಾಮಗ: ಸಾಮ ನಿರ್ವಾಣಿಂ ಭೇಷಜಂ ಭಿಷಕ್" ವಿಂ ಸಂ।

ಸಾಮಗ್ರಿ ಸಾಮಗ್ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಾಧನ, ಸಲಕರಣೆ, ಉಪಕರಣ. 2. ಕಾರಣ. ಸಮಗ್ರಸ್ಯ ಭಾವ: "ಘ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ಕೃಷ್" (೪-೧-೪೧)। ಯಲೋಪ: (೬-೪-೧೫೦)। ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಕ್ಕೆ ಸಾಮಗ್ರಿಯು ಇಂದ್ರಿಯ ಸ್ಪರ್ಶಕರ್ಷಣ. ಅನುಮಿತಿಗೆ ಸಾಮಗ್ರಿಯು ವ್ಯಾಪ್ತಿಜ್ಞಾನ ಪರಾಮರ್ಶಾದಿಗಳು. ಘಟ ಮೊದಲಾದ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಕುಲಾಲದಂಡ ಚಕ್ರ ಮೊದಲಾದುವು. ಪಟಾದಿಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಕುವಿಂದ ತಂತು ತುರಿಸಂಯೋಗ ಮೊದಲಾದುವು.

ಸಾಮಗ್ರಚ ಸಾಮಗ್ರ್ಯ (ನಂ) ಸಂಪೂರ್ಣತೆ, ಪೂರ್ಣವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಸಮಗ್ರಸ್ಯ ಭಾವ: "ಘ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ಪ್ರಾಯೇಣ ಸಾಮಗ್ರಚವಿಧೌ ಗುಣಾನಾಂ ಪರಾಙ್ಮುಖೋ ವಿಶ್ವಸೃಜ: ಪ್ರವೃತ್ತಿ:" ಕುಮಾಂ ೩-೨೮।

ಸಾಮಜ ಸಾಮಜ (ಪುಂ) 1. ಗಜ, ಆನೆ. ಸಾಮನೋ ಸಾಮವೇದಾತ್ ಜಾಯತೇ — ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಭವಿ) "ಙ:" (೩-೨-೯೮)। "ನಾನಾವಿಧಾವಿಷ್ಣುತಸಾಮಜಸ್ವರ: ಸಹಸ್ರವತ್ಮಾ ಚಪಲೈರ್ಧುರ-ಹ್ಯಯ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೧೧। (ವಿಂ) 2. ಸಾಮವೇದದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ, ಸಾಮವೇದದಿಂದ ಉತ್ಪನ್ನವಾದ. "ಸಾಮಜಸ್ತು ಗಜೇ ಪುಸಿ ಸಾಮೋತ್ಯೇ ಪುನರನ್ಯವತ್" ಮೇದಿಂ। —ಜಾತ: —ಜಾತ: "ದಂತಾ ದಂತೇರಾಹತಾ: ಸಾಮಜಾನಾಂ ಭಜ್ಞಂ ಜಗಮುನ್ ಸ್ವಯಂ ಸಾಮಜಾತಾ:" ಮಾಘಂ ೧೮-೩೩।

ಸಾಮನೇದದಿಂದ ಗಜೋತ್ಪತ್ತಿ: ಪ್ರಜಾಪತಿಯು ಸೂರ್ಯನ ಎರಡು ಅಂಡ ಕಪಾಲಗಳನ್ನು ಕೈಯಲ್ಲಿಟ್ಟು ಕೊಂಡು ಸಪ್ತ ಸಾಮಗಳನ್ನು ಗಾನಮಾಡುತ್ತಿರಲು ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ಗಜಗಳು ಹುಟ್ಟಿ ಹೊರಬಂದುವು. "ಸೂರ್ಯಸ್ಯಾಂಡ-ಕಪಾಲೇ ದ್ವೇ ಸಮಾನೀಯ ಪ್ರಜಾಪತಿ:। ಹಸ್ತಾಭ್ಯಾಂ ಪರಿಗೃಹ್ಯಾಥ ಸಪ್ತಸಾಮಾನ್ಯಗಾಯತ|| ಗಾಯತೋ ಬ್ರಹ್ಮಣಸ್ತಸ್ಮಾತ್ ಸಮುತ್ಪೇತು-ರ್ಮತಜ್ಜಜಾ:" ||

ಸಾಮಂಜಸ್ಯ ಸಾಮಂಜಸ್ಯ (ನಂ) ಔಚಿತ್ಯ, ಹೊಂದಿಕೆ, ಯುಕ್ತವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಸಾಮಂಜಸ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: "ಘ್" (೪-೧-೧೨೪)।



ಸಾಮನ್ ಸಾಮನ್ (ನಂ) 1. ವೇದತ್ರಯದಲ್ಲೊಂದಾದ ಸಾಮವೇದ. ಸ್ವತಿ ಛಿನತಿ ಪಾಪಮ್—ಘಿ (ಅಂತರ್ಮಣಿ) “ಮನಿನ್” (೩-೨-೭೪)। ಸಾಮವೇದವು ಸೂರ್ಯನಿಂದ ಆವಿರ್ಭವಿಸಿತು. ಹಿಂದಿನ ಕಲ್ಪದಲ್ಲಿ ಸರ್ವಜ್ಞನಾದ ಪರಮಾತ್ಮಸ್ವರೂಪನಾದ ಬ್ರಹ್ಮನ ಸ್ಮೃತ್ಯಾರೂಢವಾದ ವೇದಗಳನ್ನೇ ಕಲ್ಪಾದಿಯಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮನು ಮೃಗ್ಯಜುಃಸಾಮ ವೇದಗಳನ್ನು ಅಗ್ನಿ, ವಾಯು ಮತ್ತು ರವಿಗಳಿಂದ ಆರ್ಪಿಸಿದನು. “ಅಗ್ನಿವಾಯುರವಿಮ್ಯಸ್ತು ತ್ರಯಂ ಬ್ರಹ್ಮ ಸನಾತನಮ್ | ದುದೋಹ ಯಜ್ಞಸಿದ್ಧಿರ್ಯಮಗ್ನಿಜುಃಸಾಮಲಕ್ಷಣಮ್” ಮನುಂ ೧-೨೩ | “ಅಗ್ನೇಶ್ವೇದೋ ವಾಯೋರ್ಯಜುರ್ವೇದ ಆದಿತ್ಯಾತ್ಸಾಮವೇದಃ” ಶ್ರುತಿಃ | “ಸಾಮಭಿಃ ಸಹಚರಾಃ ಸಹಸ್ರಶಃ ಸ್ಯಂದನಾಶ್ವಹೃದಯಕ್ಷಮಸ್ವನೇಃ” ಕುಮಾಂ ೮-೪೧ | ವೇದಗಳಲ್ಲಿ ಸಾಮವೇದಕ್ಕೆ ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಸ್ಥಾನವಿರುವುದು. ಗೀತಾಚಾರ್ಯನು “ವೇದಾನಾಂ ಸಾಮವೇದೋಽಸ್ಮಿ” ಎಂದು ಸಾಮವೇದಕ್ಕೆ ಮಹತ್ತ್ವವನ್ನು ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ ಅದನ್ನು ನಾವು ತಿಳಿಯಬಹುದು. ಸಾಮ ವೇದದ ಸಾರವಾದ ಉದ್ಗೀಥವು ಪ್ರಣವಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವುದು. ಸಾಮವೇದವು ಸಹಸ್ರ ಶಾಖೆಗಳಲ್ಲಿರುವುದೆಂದು ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. ಮಹಾಭಾಷ್ಯಕಾರರಾದ ಪತಂಜಲಿಮುನಿಯೂ “ಸಹಸ್ರವರ್ಮಾ ಸಾಮವೇದಃ” ಎಂದು ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ. ಸಹಸ್ರಶಾಖೆಗಳು ಎಂದು ಹೇಳಿದ್ದರೂ ಈಗ ಉಪಲಬ್ಧವಾಗಿರುವ ಹೆಸರುಗಳು : (1) ರಾಣಾಯನ (2) ಸತ್ಯಮುಗ್ರ (3) ವ್ಯಾಸಭಾಗುರಿ (4) ಔಲುಂಡಿ (5) ಗೌಲ್ಮಲವಿ (6) ಭಾನುಮಾನೌಪಮನ್ಯವ (7) ಕರಾಟಿ (8) ಮಶಕ (9) ಗಾರ್ಗ್ಯ (10) ವಾರ್ಷಗಣ್ಯ (11) ಕೌಠುಮಿ (12) ಶಾಲಿಹೋತ್ರ ಮತ್ತು (13) ಜೈಮಿನಿ ಈ 13 ಮಾತ್ರ. ಆದರೆ ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ರಾಣಾಯನೀಯ, ಕೌಠುಮಿ ಮತ್ತು ಜೈಮಿನೀಯ ಈ ಮೂರು ಶಾಖೆಗಳು ಮಾತ್ರ ಉಪಲಬ್ಧವಾಗಿವೆ. ಸಾಮವೇದದಲ್ಲಿ ಮಕ್ಕುಗಳ ಸಮೂಹವಾದ ಆರ್ಚಿಕಾ ಮತ್ತು ಉತ್ತರಾರ್ಚಿಕಾ ಎಂದು ಎರಡು ಭಾಗಗಳಿವೆ. ಮೊದಲನೆಯ ಆರ್ಚಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಆರು ಪ್ರಪಾಠಕ (ಅಧ್ಯಾಯ) ಗಳಿವೆ. ಉತ್ತರಾರ್ಚಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಒಂಬತ್ತು ಪ್ರಪಾಠಕ (ಅಧ್ಯಾಯ) ಗಳಿರುವುವು.

ಸಾಮವೇದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಗಳು 9 : (1) ತಾಂಡ್ಯ ಮಹಾಬ್ರಾಹ್ಮಣ (2) ಪಡ್ವಿಂಶ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ (3) ಸಾಮ ವಿಧಾನ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ (4) ಆರ್ಷೇಯ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ (5) ದೈವತ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ (6) ಉಪನಿಷದ್ಬ್ರಾಹ್ಮಣ (7) ಸಂಹಿತೋಪನಿಷದ್ಬ್ರಾಹ್ಮಣ (8) ವಂಶಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಮತ್ತು (9) ಜೈಮಿನೀಯ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ.

ಸಾಮವೇದದ ಉಪನಿಷತ್ತುಗಳು : (1) ಛಾಂದೋಗ್ಯ ಮತ್ತು (2) ಕೇನೋಪನಿಷತ್ತು. 2. ಸಾಮೋಪಾಯ, ಪ್ರಿಯವಾದ ಮಾತುಗಳಿಂದ ಕೋಪ ಶಮನಮಾಡುವುದು, ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತುಗಳಿಂದ ಸಮಾಧಾನ ಪಡಿಸುವುದು. ಇದು ನಾಲ್ಕು ಉಪಾಯಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ಉಪಾಯ. (1) ಗುಣಸಂಕ್ಷೇಪನಮ್ (2) ಸಂಬಂಧೋಪಾಖ್ಯಾನಮ್ (3) ಪರಸ್ಪರೋಪಕಾರಸಂದರ್ಶನಮ್ (4) ಆಯತಿ-ಪ್ರದರ್ಶನಮ್ ಮತ್ತು (5) ಆತ್ಮೋಪನಿವಾಹನಮ್ ಎಂದು ಉಪಾಯವು ಐದು ವಿಧ. ಧಾರ್ಮಿಕ ಪುರುಷನನ್ನು ಅವನ ಜಾತಿ ವಂಶ ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನ (ವಿದ್ಯೆ) ಸಚ್ಚಾರಿತ್ರಗಳನ್ನೂ ಅವನ ಪೂರ್ವಜರು ಮಾಡಿದ ಉಪಕಾರವನ್ನೂ ಮತ್ತು ಅಪಕಾರಮಾಡದಿರುವುದನ್ನೂ ಹೊಗಳಿ ಸಾಮೋಪಾಯದಿಂದ ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸಬೇಕು.

ಉತ್ಸಾಹಶೂನ್ಯನೂ ಯುದ್ಧದಿಂದ ಶ್ರಾಂತನೂ ಮಾಡಿದ ಸಾಮಾದ್ಯುಪಾಯಗಳ ಪೈಪಲ್ಯವುಳ್ಳವನೂ ವ್ಯಯ ಮತ್ತು ಕ್ಷಯಗಳಿಂದ ಅಭಿಭೂತನೂ ಶುದ್ಧ ಮನಸ್ಕರಾದ ಮಿತ್ರಲಾಭದಲ್ಲಿ ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನೂ ಎಲ್ಲರೊಡನೆಯೂ ಮೈತ್ರಿಯಿಂದಿರುವ ಅಭಿಲಾಷೆಯುಳ್ಳವನೂ ಆದ ಪುರುಷನನ್ನು ಸಾಮೋಪಾಯದಿಂದ ಸರಿಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು. “ಧಾರ್ಮಿಕಂ ಜಾತಿಕುಲಶ್ರುತಿವೃತ್ತಸ್ತವೇನ ಸಂಬಂಧೇನ ಪೂರ್ವಾಂ ತ್ರಿಕಾಲೋಪಕಾರಾನುಪಕಾರಾಮ್ಯಾಂ ವಾ ಸಾನ್ತವಯೇತ್ | ನಿವೃತ್ತೋತ್ಸಾಹಂ ವಿಗ್ರಹಶ್ಚಾನ್ತಂ ಪ್ರತಿಹತೋಪಾಯಂ ಕ್ಷಯವಯಾಮ್ಯಾಂ ಪ್ರವಾಸೇನ ಚ ಉಪತಪ್ತಂ ಶೇವಿತಾನ್ಯಂ ಲಿಪ್ಸಮಾನಂ ಮೇಶ್ರೀಪ್ರಧಾನಂ ವಾ ಕಲ್ಯಾಣಬುದ್ಧಿ ಸಾಮ್ನಾ ಸಾಧಯೇತ್” ಅರ್ಥಶಾಂ | “ಉಪಾಯ-ಮಾಸ್ಥಿತಸ್ಥಾಪಿ ನಶ್ಯಂತರ್ಯಾಃ ಪ್ರಮಾಢತಃ | ಹಂತಿ ನೋಪಶಯ-ಸ್ಥೋಽಪಿ ಶಯಾಲೂರ್ಮಗ್ನಯುರ್ಮಗ್ನಾನ್” ಮಾಘಂ ೨-೮೦ |

ಸಾಮನಿ ಸಾಮನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಸುವನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ.

ಸಾಮಂತ ಸಾಮಂತ (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಕದ ರಾಜ್ಯದ ದೊರೆ. ಸಂಲಗ್ನೋಂತ ಏಕದೇಶೋಽಸ್ಯಾಃ—ಸಮಂತಾಃ ಸ್ವದೇಶವ್ಯವಹಿತ-ಭೂಮೇರಯಮ್ “ಅಣ್” (೪-೩-೧೨೦) | ಸಮಂತಾತ್ ಭವಃ “ಅಣ್” ವಾ | “ಸಾಮಂತಸಮ್ಮಾಭವಯೇವ ಧೀರಃ ಕೇಲಾಸನಾಥಂ ತರಸಾ ಜಿಗೀಞಃ” ರಘುಂ ೪-೨೮ | (ವಿಂ) 2. ರಾಜ್ಯದ ಗಡಿಯೊಳಗೆ ವಾಸಿಸುವವನು. “ಸಾಕ್ಷ್ಯಭಾವೇ ತು ಚತ್ವಾರೋ ಗ್ರಾಮಾಃ ಸಾಮಂತವಾಸಿನಃ | ಸೀಮಾವಿನಿರ್ಣಯಂ ಕುರ್ಯುಃ ಪ್ರಯತಾ ರಾಜಸನ್ನಿಧೌ” ಮನುಂ ೮-೨೪೮ |

ಸಾಮನ್ಯ ಸಾಮನ್ಯ (ಪುಂ) ಸಾಮವೇದವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿ ಪ್ರವೀಣನಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಸಾಮನು ಸಾಧುಃ “ಯತ್” (೪-೪-೯೮) | ಅನಃ ಪ್ರಕೃತಿಭಾವಃ (೬-೪-೧೬೮) |



“ಋಗ್ವೇದಮಧೀಯಾನ್ ಸಾಮನ್ಯಾಶ್ಚ ಸಮರ್ವಯನ್ | ಬುಭುಜೇ  
ದೇವಸಾತ್ ಕೃತ್ವಾ ಶೂಲ್ಯಮುಖ್ಯಂ ಚ ಹೋಮವಾನ್” ಮಡಿಂ ೪-೯ |

**ಸಾಮಾಚಾರಿಕ ಸಾಮಾನ್ಯಾಚಾರಿಕ (ವಿಂ)** ಸಂಪ್ರದಾಯದ ಅನುಷ್ಠಾನವೇ ಪ್ರಯೋಜನವಾಗಿರುವ. ಸಮಾ-  
ಚಾರ: ಪ್ರಯೋಜನಮಯ “ಠಕ್” (೪-೧-೧೦೯) |

**ಸಾಮಯಿಕ ಸಾಮಾನ್ಯಿಕ (ವಿಂ)** 1. ಅನುಗುಣವಾದ ಸಮಯ ಒದಗಿರುವ, ಸಮಯ ಒದಗಿ ಬಂದಿರುವ. “ಸಮಯೋಪಯುಕ್ತ: “ಠಕ್” (೪-೧-೧೦೪) | “ನಿಜ ಧರ್ಮವಿರೋಧೇನ ಯಸ್ತು ಸಾಮಯಿಕೋ ಭವೇತ್” ಯಾಜ್ಞಂ ೨-೧೨೬ | “ಕಿಮಸಾಮಯಿಕಂ ವಿದವಂತಾ ಮನಸ: ಕೋಮಮುಪಾತ್ತರಹಸ:” ಕಿರಾಂ ೨-೪೦ | 2. ಸಂಪ್ರದಾಯಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾದ. 3. ನಿಯಮಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾದ.

**ಸಾಮಯೋನಿ ಸಾಮಾನ್ಯೋನಿ (ವಿಂ)** 1. ಗಣ, ಅನೇ. ಸಾಮ ಸಾಮವೇದ: ಯೋನಿ: ಕಾರಣಂ ಯಸ್ಯ | 2. ಬ್ರಹ್ಮ. ಸಾಮ: ಯೋನಿ: ಕಾರಣಮ್ | (ವಿಂ) 3. ಸಾಮವೇದದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ. “ಚತುರ್ಭುಜಾಂಶ್ರವಣ: ಸ ತೇಷಾಂ ದಾನಪ್ರವೃತ್ತೇರ್ನುಪಾರತಾನಾಮ್ | ಸುರವಿಪಾನಾಮಿವ ಸಾಮಯೋನಿಭಿಃಪ್ರೋಷ್ಣಾ ವಿಪ್ರಸಸಾರ ವಂಶ:” ರಘುಂ ೧೬-೩ | “ಸಾಮಯೋನಿಃ ಸಾಮೋತ್ಪತ್ತಿಃ ಬ್ರಹ್ಮಕುಂಜರ-ಯೋನಿಃ” ಮೇದಿಂ |

**ಸಾಮರಸ್ಯ ಸಾಮಾನ್ಯ (ನಂ)** 1. ಸಮಾನ ರಸದಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. ಸಾಮರಸ್ಯ ಭಾವ: “ಉಕ್” (೪-೧-೧೨೪) | 2. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಸಮಾನತೆ. “ತರುಣಾಂಕಂಪಾಸಾರಸಾಮರಸ್ಯ-ಜುಷಾ ತ್ವಿಷಾ” ಯಾದಂ ೧೬-೪೩ |

**ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಸಾಮಾನ್ಯ (ನಂ)** 1. ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಸಾಧಿಸುವ ಶಕ್ತಿ, ದಕ್ಷತೆ, ಯೋಗ್ಯತೆ. ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಭಾವ: “ಉಕ್” (೪-೧-೧೨೪) | 2. ಶಕ್ತಿ, ಬಲ, ಪರಾಕ್ರಮ. “ನಿಂದಂತ-ಸ್ತವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ತತೋ ದುಃಖತರಂ ನು ಕಿಮ್” ಗೀತಾ ೨-೩೬ | 3. ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಪದಗಳಿಗೆ ಸಮುದಾಯ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಒಂದು ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಶಕ್ತಿ. ರಾಜಪುರುಷ: ಎಂಬಲ್ಲಿ ರಾಜನ್ ಮತ್ತು ಪುರುಷ ಪದಗಳಿಗೆ ಸ್ವಾರ್ಥಪರ್ಯವಸಾಯಿಯಾದ ಅರ್ಥಗಳಿದ್ದರೂ ಸಮುದಾಯಶಕ್ತಿಯಿಂದ ರಾಜಪುರುಷ ನೆಂಬ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುವ ಶಕ್ತಿಯು ವಿಕಾರ್ಥಭಾವ ಲಕ್ಷಣ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. ಸತ್ಯತೋಷ: ಸಮರ್ಥ: | ಈ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವು ವ್ಯಪೇಕ್ಷಾಲಕ್ಷಣಮ್ ಮತ್ತು ಏಕಾರ್ಥಿಭಾವಲಕ್ಷಣಮ್ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. [ವಿವರಕ್ಕೆ ಆಯಾ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] “ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಯೋಗ್ಯತಾಂ ಸ್ಯಾಚ್ಚಕ್ಷಾಪಿ ನಪುಂಸಕಮ್” ಮೇದಿಂ |

**ಸಾಮವಾದ ಸಾಮಾನ್ಯ (ವಿಂ)** ಮೃದುವಚನ, ಸಮಾಧಾನ ಪಡಿಸುವ ಮಾತು, ಪ್ರಿಯವಾದ ಮಾತು. ಸಾಮನೋ ವಾದ: |

“ಸಾಮವಾದಾ: ಸಕೋಪಸ್ಯ ತಸ್ಯ ಪ್ರತ್ಯುತ ದೀಪಕಾ: | ಪ್ರತಪ್ತಸ್ಯೇವ ಸಹಸಾ ಸರ್ವಿಷಸ್ತೋಯವಿನ್ದವ:” ಮಾಧಂ ೨-೪೪ |

**ಸಾಮವಾಯಿಕ ಸಾಮಾನ್ಯಿಕ (ವಿಂ)** 1. ಗುಂಪನ್ನು ಸೇರಿ ಸುವ, ಸಮೂಹವನ್ನು ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸುವ. ಸಮವಾಯಾನ್ ಸಮವೇತಿ “ಠಕ್” (೪-೪-೪೩) | 2. ಒಂದು ಗುಂಪಿಗೆ ಸೇರಿದ. (ವಿಂ) 3. ಒಂದು ಸಂಘದ ಯಜಮಾನ, ಒಂದು ಸಂಸ್ಥೆಯ ಮುಖಂಡ. “ಭೇದಾ: ಶತ್ವೋರಭಿವ್ಯಕ್ತಶಾಸನೇ: ಸಾಮವಾಯಿಕಾ:” ಮಾಧಂ ೨-೧೧೩ |

**ಸಾಮವಿದ್ ಸಾಮಾನ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಸಾಮವೇದವನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ಸಾಮವೇದವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಸಾಮಾನಿ ವೇತ್ತಿ—ವಿದ (ಜ್ಞಾನ) “ಕಿವಿ” (೩-೨-೬೧) | 2. ಸಾಮವೇದಿಯಾದ ಉದ್ಗಾತೃ. “ಅವ್ಯಯದ್ಗಾತೃಹೋತಾರೋ ಯಜು:ಸಾಮವಿದ: ಕ್ರಮಾತ್” ಅಮಂ | “ಸಪ್ತಭೇದಕರಕಲ್ಪಿತ-ಸ್ವರಂ ಸಾಮ ಸಾಮವಿದಸಙ್ಗಮುಜ್ಜಗೌ” ಮಾಧಂ ೧೪-೨೧ |

**ಸಾಮವೇದ ಸಾಮಾನ್ಯ (ವಿಂ)** ವೇದತ್ರಯದಲ್ಲಿ ಮೂರನೆಯದಾದ ಸಾಮವೇದ. [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಸಾಮನ್” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಸಾಮಾಜಿಕ ಸಾಮಾನ್ಯ (ವಿಂ)** ಸಭೆಯಲ್ಲಿರುವವನು, ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ಸೇರಿರುವವನು, ಸಭ್ಯ. ಸಮವಾಯಂ ಸಮವೇತಿ — ಸಮಾಜ “ಠಕ್” (೪-೪-೪೩) | “ಅಯೇ, ಆವರ್ಜಿತಾನಿ ಚ ಮಯಾ ಸಕಲಸಾಮಾಜಿಕಾನಾಂ ಮನಾಂಸೀತಿ ಮೇ ನಿಶ್ಚಯ:” ರತ್ನಾಂ |

**ಸಾಮಾನ್ಯಾಧಿಕರಣ್ಯ ಸಾಮಾನ್ಯಾಧಿಕರಣ್ಯ (ನಂ)** ಸಮಾನ ವಾದ ಅಧಿಕರಣದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ. ಸಾಮಾನಾಧಿಕರಣ್ಯಂ ಯಯೋ: ತಯೋರ್ಭಿವ: “ಉಕ್” (೪-೧-೧೨೪) | ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳು ಒಂದೇ ಅಧಿಕರಣ (ಆಧಾರ, ಆಶ್ರಯ) ದಲ್ಲಿರುವುದು ಸಾಮಾನ್ಯಾಧಿಕರಣ್ಯ. ವಹಿ ಮತ್ತು ಧೂಮಗಳಿಗೆ ಮಹಾನಸ ಪರ್ವತಾದಿಗಳು ಆಶ್ರಯವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಸಾಮಾನ್ಯಾಧಿಕರಣ್ಯ. ಸಾಮಾನ್ಯಾಧಿಕರಣ್ಯವು ದೈಶಿಕ ಮತ್ತು ಕಾಲಿಕಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ವಹಿ ಮತ್ತು ಧೂಮಗಳಿಗೆ ಸಾಮಾನ್ಯಾಧಿಕರಣ್ಯವು ದೈಶಿಕ. ಘಟ ಪಟಾದಿಗಳು ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಕಡೆಯಿದ್ದರೂ ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ಅವುಗಳಿಗೆ ಕಾಲಿಕಸಾಮಾನ್ಯಾಧಿಕರಣ್ಯ. “ಸಾಮಾನ್ಯಾಧಿಕರಣ್ಯಂ ಹಿ ತೇಜಸ್ತಿಮಿರಯೋ: ಕೃತ:” ಮಾಧಂ ೨-೬೨ |

**ಸಾಮಾನ್ಯ ಸಾಮಾನ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಸರ್ವರಿಗೂ ಸಮಾನವಾದ, ಸಾರ್ವಜನಿಕವಾದ, ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಸೇರಿದ. 2. ಸಾಧಾರಣ



ವಾದ, ಏಕರೀತಿಯಾದ, ವಿಶೇಷರೀತಿಯದಲ್ಲದ. "ಏತೆ ಸತ್ಪುರುಷಾಃ ಪರಾರ್ಥವೃತ್ತಾಃ ಸ್ವಾರ್ಥಾನ್ ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ ಯೇ ಸಾಮಾನ್ಯಾಸ್ತು ಪರಾರ್ಥಮುದ್ಯಮಮೃತಃ ಸ್ವಾರ್ಥಾವಿರೋಧೇನ ಯೇ" ಭರ್ತೃಂ ೧-೬೪। "ಸಾಮಾನ್ಯಪ್ರತಿಪತ್ತಿಪೂರ್ವಕಮಿಧಂ ದಾರೆಣ ದೃಶ್ಯಾ ತ್ವಯಾ" ಶಾಕುಂ ೪-೧೬। 3. ಸಾಧಾರಣವಾದ, ಸಾರ್ವತ್ರಿಕವಾದ. "ಉಕ್ತಿಕರಣಾಂತರನ್ಯಾಸಃ ಸ್ವಾತ್ಸಾಮಾನ್ಯವಿಶೇಷಯಃ" ಚಂದ್ರಾಂ। 4. ಅಸಭ್ಯನಾದವನು, ಸಂಸ್ಕೃತಿಯಿಲ್ಲದವನು, ಕೀಳು ಮಟ್ಟದವನು. 5. ಸಾಧಾರಣವಾದ, ಸಮಾನವಾದ. "ಏಕೈವ ಮूर्ತಿರ್ಬಿಂಬಿಧೇ ತ್ರಿಧಾ ಸಾ ಸಾಮಾನ್ಯಮೇಷಾಂ ಪ್ರಥಮಾವರ್ತವತ್" ಕುಮಾರಂ ೭-೪೪। (ನಂ) 6. ಜಾತಿ, ಅನೇಕ ಸಮಾನ ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿರುವ ಘಟತ್ವ ಗೋತ್ವ ಮೊದಲಾದ ಜಾತಿ. ಸಮಾನಸ್ಯ ಭಾವಃ—ಸಮಾನ "ಏವ" (೪-೧-೧೨೪)। "ಜಾತಿಜಾತಿಂ ಚ ಸಾಮಾನ್ಯಂ ವ್ಯಕ್ತಿಸ್ತು ಪೃಥಗಾತ್ಮಿಕಾ" ಅಮಂ। "ನಿತ್ಯತ್ವೇ ಸತಿ ಅನೇಕಸಮವೇತಂ ಸಾಮಾನ್ಯಮ್"। 7. ಸಾದೃಶ್ಯ, ಸಮಾನತೆ. "ಸಾಮಾನ್ಯಮೃಷಿಭಿರ್ಗತ್ವಾ ಬ್ರಹ್ಮ-ಲೋಕನಿವಾಸಿಮಿಃ" ಭಾಂ। 8. ಸಾದೃಶ್ಯಪ್ರಯೋಜಕ ಧರ್ಮ. "ಮುಖಂ ಪದ್ಮಮಿವ ಸುಂದರಮ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಸೌಂದರ್ಯವು ಸಾಧಾರಣಧರ್ಮ. ಇದೇ ಸಾಮಾನ್ಯ. 9. ಅಧಿಕ ವಿಷಯಗಳಿಗೆ ಅನ್ವಯಿಸುವ ಮಾತು. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾಯ ದಧಿ ದೀಯತಾಮ್ ತತ್ರ ಕೌಣಿಡನ್ಯಾಯ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ದಧಿದಾನವು ಅಧಿಕ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ವಿಷಯಕವಾದುದರಿಂದ ಸಾಮಾನ್ಯ. ತತ್ರ ದಾನವು ವಿಶೇಷವಾಯಿತು. 10. ಸಾಮಾನ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗೂ ಅನ್ವಯಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ. ಈ ಸಾಮಾನ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರವು ವಿಶೇಷಶಾಸ್ತ್ರದಿಂದ ಬಾಧಿಸಲ್ಪಡುವುದು. ವಿಶೇಷ ಶಾಸ್ತ್ರವಿರುವಲ್ಲಿ ಸಾಮಾನ್ಯಶಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೆ ಪ್ರವೃತ್ತಿಯಿರುವುದಿಲ್ಲ. "ಮಾ ಹಿಸ್ಯಾತ್ ಸರ್ವಾ ಭೂತಾನಿ" ಎಂಬ ಸಾಮಾನ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೆ "ವಾಯವ್ಯಂ ಶ್ವೇತಮಾಲಮೇತ" ಎಂಬ ವಿಶೇಷ ಶಾಸ್ತ್ರದಿಂದ ಬಾಧೆಯುಂಟಾಗಿ ಅದು ವಿಶೇಷ ವಿಧಿಯಿರುವಲ್ಲಿ ಪ್ರವರ್ತಿಸುವುದಿಲ್ಲ. 11. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ, ಸಾಮಾನ್ಯಾಲಂಕಾರ. ಉಪಮಾನ ಮತ್ತು ಉಪಮೇಯಗಳಲ್ಲಿ ಪರಸ್ಪರ ಸಾದೃಶ್ಯದಿಂದ ವ್ಯಾವರ್ತಕ ಧರ್ಮವಿಲ್ಲದೆ ವಿಶೇಷವು ತಿಳಿಯದಿರುವ ಕಡೆ ಸಾಮಾನ್ಯಾಲಂಕಾರ. "ಸಾಮಾನ್ಯಂ ಯದಿ ಸಾದೃಶ್ಯಾದಿಶೇಷೋ ನೊಪಲಕ್ಷಯತೇ"। ಉದಾಃ "ಪದ್ಮಾಕರಂ ಪ್ರವಿಷ್ಟಾನಾಂ ಮುಖಂ ನಾಲಕ್ಷಿ ಸುಭುವಾಮ್" ಚಂದ್ರಾಂ।

**ಸಾಮಾನ್ಯಾ ಸಾಮಾನ್ಯಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂರು ವಿಧ ನಾಯಿಕೆಯ ರಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬಳಾದ ಸಾಧಾರಣ ನಾಯಿಕೆ, ವೇಶ್ಯ. "ಅಯ ನಾಯಿಕಾ ತ್ರಿಮೇಧಾ ಸ್ವಾನ್ಯಾ ಸಾಧಾರಣಿ ಸ್ತ್ರೀತಿ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೫೬। ಸುರತಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಅಭಿಜ್ಞಳೂ ನೃತ್ಯ ಗೀತ

ಮೊದಲಾದ ಕಲೆಗಳಲ್ಲಿ ನಿಪುಣಳೂ ಆದವಳು ಸಾಮಾನ್ಯ ನಾಯಿಕೆ. ಇವಳಿಗೆ ಗುಣವಂತರಲ್ಲಿ ಅನುರಾಗವಿಲ್ಲ. ಅಸಭ್ಯರೆಂದು ತಿಳಿದೂ ಇವಳು ಅವರನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸುವುದಿಲ್ಲ. ಧನ ಸಂಪಾದನೆಯನ್ನೇ ಪ್ರಧಾನವಾಗಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಕೇವಲ ಧನಿಕರನ್ನೇ ಪ್ರೀತಿಸುವಳು. "ಘೋರಾ ಕಲಾಪ್ರಗಲ್ಭಾ ಸ್ಯಾದ್ವೇಶ್ಯಾ ಸಾಮಾನ್ಯನಾಯಿಕಾ। ನಿರ್ಗುಣಾನಪಿ ನ ದ್ವೇಷಿತಿ ನ ರಜ್ಯತಿ ಗುಣಿಷ್ವಪಿ॥ ವಿದ್ವತ್ಪಾತ್ರಂ ಸಮಾಲೋಕ್ಯ ಸಾ ರಾಗಂ ದರ್ಶಯೇದ್ಬಹಿಃ" ಸಾಂ ದಂ ೩-೬೭, ೬೮। ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಸಾಮಾಸಿಕ ಸಾಮಾಸಿಕ** (ಪುಂ) 1. ತತ್ಪುರುಷ ಮೊದಲಾದ ಸಮಾಸಗಳ ಸಮೂಹ. ಸಮಾಸಾನಾಂ ಸಮೂಹಃ "ಠಕ್" (೪-೨-೪೭)। "ಅಕ್ಷರಾಣಾಮಕಾರೋಽಸ್ಮಿ ದ್ವಂದ್ವಃ ಸಾಮಾಸಿಕಸ್ಯ ಚ" ಗೀತಾ ೧೦-೩೩। 2. ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತವಾದ, ಸಂಗ್ರಹ ವಾದ. 3. ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸಿರುವ, ಒಂದಾಗಿರುವ.

**ಸಾಮಿ ಸಾಮಿ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅರ್ಥ. 2. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. ಸಾಮಯತಿ—ಸಾಮ (ಸಾನ್ವಪ್ರಯೋಗ) "ಃ" (೩ಂ ೪-೧೩೮)। "ಸಾಮಿ ತ್ವರ್ಣಂ ಜುಗುತಿಸ್ತೇ" ಅಮಂ। "ಏನುಷಾ ಶಾರ್ಙ್ಗಮೇನ ಸಾಮಿವಿಷ್ಕಾರಿತೇನ ಸಃ" ಯಾದಂ ೨೨-೧೮೭। "ಸಾಮಿ ನಿಂದಾರ್ಥಯೋರ್ಮತಮ್" ಮೇದಿಂ।

**ಸಾಮಿಕೃತ ಸಾಮಿಕೃತ** (ವಿಂ) ಅರ್ಥ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟದ. ಸಾಮಿ ಕೃತಮ್। "ಅಭಿವೀಕ್ಷ್ಯ ಸಾಮಿಕೃತಮಂಡನಂ ಯತೀಃ ಕರಹದ್ವನಿವಿಗಲದಂಶುಕಾಃ ಸ್ತ್ರೀಯಃ" ಮಾಘಂ ೧೩-೩೧।

**ಸಾಮಿಧೇನಿ ಸಾಮಿಧೇನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಮಿದಾಧಾನ ಮಾಡಿ ಅಗ್ನಿಯ ಪ್ರಜ್ವಲನೆಗೆ ಹೇಳುವ ಬಿಕ್ಕು (ಮಂತ್ರ). ಸಮಿಧಾಮಾಧಾನಿ—ಸಮಿಧ್ "ಷೇಷ್ಯ" (ವಾಂ ೪-೩-೧೨೦)। "ಜಿಷ್" (೪-೧-೪೧)। "ವಿಧಿವಿಹಿತವಿರೀಷ್ಠಃ ಸಾಮಿಧೇನೀರಧೀತ್ಯ" ಮಾಘಂ ೧೧-೪೧। 2. ಸಮಿತ್ತು. "ಸಾಮಿಧೇನಿ ಸಮಿದೃಶಿಃ" ಹೇಮಂ।

**ಸಾಮೀಚಿ ಸಾಮೀಚೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಂದನೆ, ಸ್ತುತಿ, ಸೋತ್ರ. "ಸಾಮೀಚಿ ವಂದನಾ ಮತಾ" ಹಾರಾಂ।

**ಸಾಮೀಪ್ಯ ಸಾಮೀಪ್ಯ** (ನಂ) 1. ಹತ್ತಿರ. ಸಮೀಪಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಏವ" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪)। 2. ಮುಕ್ತನಾದ ಜೀವನು ಪರಮಾತ್ಮನ ಕೈಂಕರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವುದು. ಇದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಮೋಕ್ಷಗಳಲ್ಲೊಂದು ಮತ್ತು ಸಾಯುಜ್ಯ ರೂಪಮೋಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಅಂತರ್ಗತವಾದ ಒಂದು ಧರ್ಮ.

**ಸಾಮುದ್ರ ಸಾಮುದ್ರ** (ನಂ) 1. ಸಮುದ್ರದ ಉಪ್ಪು. ಸಮುದ್ರೇ ಭವಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೫೩)। 2. ಶರೀರದ ಲಕ್ಷಣ



ವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಗ್ರಂಥ. ಸಮುದ್ರೇಣ ಮುನಿನಾ ಕೃತೋ ಗ್ರಂಥಃ — ಸಮುದ್ರ "ಅನ್" (೪-೩-೧೧೬)। 3. ಸಮುದ್ರದ ನೋರೆ. (ಪುಂ) 4. ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ ವರ್ತಕ. (ವಿಂ) 5. ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಸಮುದ್ರೇ ಭವಃ "ಅನ್"।

**ಸಾಮುದ್ರಿಕ ಸಾಮುದ್ರಿಕ** (ನಂ) 1. ಸಮುದ್ರದ ಉಪ್ಪು. ಸಾಮುದ್ರಿಕೇವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್"। 2. ಮನುಷ್ಯನ ಶರೀರದ ಲಕ್ಷಣವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಶಾಸ್ತ್ರ. ದೇಹದ ಲಕ್ಷಣವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ. ಮಹಾಪುರುಷನ ಲಕ್ಷಣಗಳು ಮೂವತ್ತೆರಡು. [ವಿವರಕ್ಕೆ "ದ್ವಾತ್ರಿಶಲ್ಲಕ್ಷಣ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಸಾಮುದ್ರಿಕ ಸಾಮುದ್ರಿಕ** (ಪುಂ) ಸಾಮುದ್ರಿಕ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು ಮತ್ತು ತಿಳಿದವನು. ಸಮುದ್ರೇಣ ಪ್ರೋಕ್ತಂ ಶಾಸ್ತ್ರಮಖೀತೇ ವೇತ್ತಿ ವಾ "ಠಕ್" (೪-೨-೪೯)।

**ಸಾಮೋದ ಸಾಮೋದ** (ವಿಂ) 1. ಹರ್ಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 2. ಪರಿಮಳದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಆಮೋದೇನ ಸಹ ವರ್ತತೇ। "ಸಾಮೋದಪುಷ್ಪಾಶುಗವಾಸಿತಾಙ್ಗೀಮ್ ದೇಹೋಪದೇಹಾತ್ಕರಣೈರ್ಮಣಿ-ನಾಮ್" ನೆಪಂ ೧೦-೯೭।

**ಸಾಮ್ಪರಾಯಿಕ ಸಾಂಪರಾಯಿಕ** (ನಂ) 1. ಯುದ್ಧ, ಕಾಳಗ, ಸಂಗ್ರಾಮ. ಸಾಮ್ಪರಾಯಾಯ ವಿವರೇ ಪ್ರಮವತಿ — ಸಾಮ್ಪರಾಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೧)। (ವಿಂ) 2. ಪಾರಲೋಕಿಕವಾದ, ಭವಿಷ್ಯತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಹಿಡುವಾದ. ಸಾಮ್ಪರಾಯೇ उत्तरकाले हितम् "ಠಕ್" (೪-೧-೪)। "ಪ್ರಭುಃ ಪ್ರಥಮಕಲ್ಪಸ್ಯ ಯೋಜನುಕಲ್ಪೇನ ವರ್ತತೇ। ನ ಸಾಮ್ಪರಾಯಿಕಂ ತಸ್ಯ ದುರ್ಮತೇವಿವೃತೇ ಫಲಮ್" ಮನುಂ ೧೧-೩೦। 3. ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ, ಯುದ್ಧ ಮಾಡಲು ಶಕ್ತವಾದ. ಸಾಮ್ಪರಾಯಂ ಯುದ್ಧಮರ್ಹತಿ — ಸಾಮ್ಪರಾಯ "ಠಕ್" (೪-೧-೬೩)। "ಪಿತ್ರಾ ಸಂವೃದ್ಧಿತೋ ನಿಯಂ ಕೃತಾಸ್ತ್ರಃ ಸಾಮ್ಪರಾಯಿಕಃ। ತಸ್ಯ ದೃಢವತೋ ದೃಢಃ ಸ್ವದೇಹಾನ್ ವ್ಯಶಿಷ್ಯತ" ರಘುಂ ೧೭-೬೨।

**ಸಾಮ್ಪ್ರತಮ್ ಸಾಂಪ್ರತಮ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಯುಕ್ತ, ಯೋಗ್ಯ. ತನು (ವಿಸ್ತಾರ) "ಛಮ್" ಪೂಂ। ಸಮೋ ದೀರ್ಘಃ। "ಸಾಮ್ಪ್ರತಮ್ ಸಾಮ್ಪ್ರತಂ ವಕ್ತುಮುಕ್ತೇ ಮುಸಲಪಾಣಿನಾ। ನಿರ್ವಾರಿತೇಽಥೇ ಲೇಖನೇನ ಖಲೂಕ್ತವಾ ಖಲು ವಾಚಿಕಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೭೦। 2. ಈಗ, ಈವರೆಗೆ. ಸಮ್ ಚ ಪ್ರತಿ ಚ ಅನಯೋಃ ಸಮಾಹಾರಃ, ತತಃ ಪ್ರಜ್ಞಾಂ "ಅನ್" (೪-೪-೩೮)। "ತ್ವದೀಕ್ಷಣಾತ್ಪ್ರಾಪ್ತ-ಫಲೋಽಸ್ಮಿ ಸಾಮ್ಪ್ರತಂ ಜರನ್ ಪುನಯೋವನಮಾಪ್ತವಾನಿವ" ಯಾದಂ ೧೪-೩೨। (ವಿಂ) 3. ಈಗ ಇರುವ, ಈ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಇರುವ. "ತಸ್ಯ ತೇ ಕೀರ್ತಯಿಷ್ಯಾಮಿ ಮನೋವೈವಸ್ವತಸ್ಯ

ಚ। ವಿಸಗಂ ಭರತಶ್ಚೇಠ ಸಾಮ್ಪ್ರತಸ್ಯ ಮಹಾಶ್ವತೇಃ" ಹರಿವಂ।

**ಸಾಮ್ಪ್ರತಿಕ ಸಾಂಪ್ರತಿಕ** (ವಿಂ) ಈಗ ಉಂಟಾದ, ಈ ಕಾಲಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ, ಈಗಿನ ಕಾಲದ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸಾಮ್ಪ್ರತಿ ಭವಮ್ "ಠಕ್" (೪-೩-೪೩)। "ವತ್ಸೇ, ಸಾಮ್ಪ್ರತಿಕ-ಮೇವೇತತ್। ಕರ್ತವ್ಯಾನಿ ಖಲು ದುಃಖಿತೈರ್ದುಃಖಿನಿರ್ವಾಪಿಣಾನಿ" ತಂ ರಾಂ ೩।

**ಸಾಮ್ಪ್ರದಾಯಿಕ ಸಾಂಪ್ರದಾಯಿಕ** (ವಿಂ) ಸಂಪ್ರದಾಯ ದಿಂದ ಬಂದ, ವಂಶಪರಂಪರೆಯಾಗಿ ಬಂದ.

**ಸಾಮ್ಪ್ರಸ್ಯ ಸಾಮ್ಪ್ರಸ್ಯ** (ನಂ) 1. ಎದುರಿಗೆ ಬಂದಿರುವುದು, ಎದುರಾಗಿ ಕುಳಿತಿರುವುದು. ಸಾಮ್ಪ್ರಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಉನ್" (೪-೧-೧೨೪)। 2. ಅನುಕೂಲವಾಗಿರುವಿಕೆ.

**ಸಾಮ್ಯ ಸಾಮ್ಯ** (ನಂ) 1. ಸಮಾನತೆ, ಒಂದೇ ರೀತಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ. ಸಮಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಉನ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ಭವಂತಿ ಸಾಮ್ಯೇಽಪಿ ನಿವಿಷ್ಟೇತಸಾಂ ವರ್ತುನಿಶೇಷೇವತಿಗೌರವಾಃ ಕ್ರಿಯಾಃ" ಕುಮಾಂ ೪-೩೧। 2. ಸದೃಶವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಹೋಲಿಕೆ, ಸಾದೃಶ್ಯ. "ಶೃಂಗಪ್ರೋತಪ್ರಾವೃಣ್ಯಾಮ್ಬುದಸ್ಯ ಸ್ಪಷ್ಟಂ ಪ್ರಾಪತ್ ಸಾಮ್ಯಮುರ್ವಿಧರಸ್ಯ" ಮಾಘಂ ೧೮-೩೮। 3. ಸಮಭಾವ, ಭೇದಭಾವವಿಲ್ಲದೆ ಎಲ್ಲಾ ಆತ್ಮರಲ್ಲೂ ಒಂದೇ ವಿಧವಾದ ಭಾವನೆ. "ಇಹೈವ ತೇಜಿತಸ್ಸಗೌ ಯೇಷಾಂ ಸಾಮ್ಯೇ ಸ್ಥಿತಂ ಮನಃ। ನಿರ್ದೋಷಂ ಹಿ ಸಮಂ ಬ್ರಹ್ಮ ತಸ್ಮಾತ್ ಬ್ರಹ್ಮಣಿ ತೇ ಸ್ಥಿತಾಃ" ಗೀತಾ ೪-೧೯।

**ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯ** (ನಂ) 1. ರಾಷ್ಟ್ರದ ಸರ್ವಾಧಿಕಾರ, ರಾಷ್ಟ್ರದ ಅಧಿಪತ್ಯ, ರಾಷ್ಟ್ರದ ಪ್ರಭುತ್ವ. ಸಾಮ್ರಾಜೋ ಭಾವಃ "ಉನ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ಪದ್ಮಾ ಪದ್ಮಾತಪತ್ರೇಣ ಭಂಜೇ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯದೀಕ್ಷಿತಮ್" ರಘುಂ ೪-೪। (ಪುಂ) 2. ಸಾರ್ವ ಭೌಮನ ಮಗ, ಸಮ್ರಾಟನ ಪುತ್ರ, ರಾಷ್ಟ್ರಾಧಿಪತಿಯ ಪುತ್ರ. ಸಾಮ್ರಾಜೋಽಪತ್ಯಮ್ "ಉನ್" (೪-೧-೧೪೧)।

**ಸಾಯಮ್ ಸಾಯಮ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಸಾಯಂಕಾಲ, ಹಗಲಿನ ಕೊನೆಯ ಭಾಗ. ಸ್ಯತಿ ಸಮಾಪಯತಿ ದಿನಮ್—ಷೋ (ಅಂತ-ಕರ್ಮಣಿ) "ಞಮ್" ಯುಗಾಗಮಃ (೭-೩-೩೩)। "ವಧೂರ್ಮತಿ-ಮತೀ ಚೈನಾಮ್ಚಿತಾಮಾತಪೋವನಾತ್। ಪ್ರಯತಾ ಪ್ರಾತರನ್ವೇತು ಸಾಯಂ ಪ್ರತ್ಯುದ್ವಜೇದಪಿ" ರಘುಂ ೧-೯೦। 2. ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲ. "ಸ ದುಃಪ್ರಾಪಯಶಾಃ ಪ್ರಾಪದಾಶ್ರಮಂ ಶ್ರಾಂತವಾಹನಃ। ಸಾಯಂ ಸಂಯಮಿನ-ಸ್ತಸ್ಯ ಮಹರ್ಷೇರ್ಮಹಿಷೀಸಖಃ" ರಘುಂ ೧-೪೮। (ಪುಂ) -ಯಃ -ಯಃ। 3. ಬಾಣ. ಸ್ಯತಿ — ಷೋ (ಅಂತಕರ್ಮಣಿ) "ಞಃ" (೩-೧-೧೪೧)। "ಸಾಯಃ ಕಾಣ್ಡೇ ದಿನಾಂತೇ ಚ" ಮೇದಿಂ।



ಸಾಯಿಕಾಲ ಸಾಯಂಕಾಲ (ಪುಂ) ಹಗಲಿನ ಕೊನೆಯ ಭಾಗ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಮೊದಲಾದ ಹಗಲಿನ ಐದು ಭಾಗಗಳಲ್ಲಿ ಕೊನೆಯ ಭಾಗ, ಸಾಯಂ ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲ. ಸಾಯಂ ಸಾಯಾಹ್ನ: ಕಾಲ:। "ಸಾಯಂಕಾಲೇ ವನಾಂತೇ ಕುಸುಮಿತಸಮಯೇ ಸೇಕತೇ ಚಂದ್ರಿಕಾಪಾಂ ತ್ರೈಲೋಕ್ಯಾಕರ್ಷಣಾನ್ ಸುರನರಗಣಿಕಾಮೋಹನಾ-ಪಾಂಜ್ಞಮೂರ್ತಿಮ್" ಕೃಷ್ಣಕರ್ಣಾಮೃತಮ್।

ಸಾಯಂಸಂಧ್ಯಾ ಸಾಯಂಸಂಧ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಾಯಂಕಾಲದಲ್ಲಿ ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ ಉಪಾಸನೆ. 2. ಸಾಯಂಕಾಲದಲ್ಲಿ ಉಪಾಸಿಸಲ್ಪಡುವ ದೇವತೆ. 3. ಸೂರ್ಯನ ಅಸ್ತಮಾನ ಕಾಲ. 4. ಸಂಧ್ಯಾವಂದನೆ ಮಾಡುವ ಕಾಲ. ಸಮ್ಯಕ್ ಧ್ಯಾಯಂತ್ಯಸ್ಯಾಮ್ — ಇತಿ ಸಂಧ್ಯಾ — ಸಾಯಂಕಾಲೇ ಸಂಧ್ಯಾ।

ಸಾಯಂಸಂಧ್ಯಾವೇದತಾ ಸಾಯಂಸಂಧ್ಯಾವೇದತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಸ್ಕೃತಿ.

ಸಾಯಕ ಸಾಯಕ (ಪುಂ) 1. ಬಾಣ, ಶರ, ಅಂಚು. ಸ್ಯತಿ ಚಿಂತಿ — ಷಿ (ಅಂತಕರ್ಮಣಿ) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಯುಕ್ (೭-೩-೩೩)। "ಬ್ರಾಣಾನಸೂತ ನಿಶಿತಾನ್ಯುಧಿ ಯಾನ್ಸುಜೈವಾಸ್ತೇ: ಸಾಯಕಾ ಬಿಮಿಡಿರೆ ಸಹಸಾ ಸುರಾರೆ:" ಕುಮಾಂ ೧೭-೨೨। 2. ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. 3. ಐದು ಸಂಖ್ಯೆ.

ಸಾಯಂತನ ಸಾಯಂತನ (ವಿಂ) ಸಾಯಂಕಾಲದಲ್ಲಿರುವ, ಸಾಯಂಕಾಲದ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸಾಯಂ ಭವ: "ಡ್ಯು:" ತುಡ್ ಚ (೪-೩-೨೩)। "ಅಲಿನಾಽರಮತಾಽಲಿನಿ ಶಿಲೀಂಧ್ರೇ ಸಹ ಸಾಯಂತನದೊಪಪಾಟಲಾಢೇ" ಮಾಘಂ ೬-೭೨। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ತನಿ -ತನೀ. "ಸಾಯಂತನಿ ತಿಥಿಪ್ರಣಯ: ಪಕ್ಷಜಾನಾಂ ದಿವಾತನಿಮ್। ಕಾಂತಿ ಕಾಂತ್ಯಾ ಸದಾತನ್ಯಾ ಹೇಪಯಂತಿ ಶುಚಿಃ ಸ್ಮಿತಾ" ಭದ್ರಿಂ ೫-೬೫।

ಸಾಯಾಹ್ನ ಸಾಯಾಹ್ನ (ಪುಂ) ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಮೊದಲಾದ ಹಗಲಿನ ಐದು ಭಾಗಗಳಲ್ಲಿ ಕೊನೆಯ (ಐದನೆಯ) ಭಾಗ. ಅಹ್ನ: ಸಾಯ: ಸಾಯಾಹ್ನ: (೬-೩-೧೧೦)। ಹಗಲಿನ ಐದು ಭಾಗಗಳು: (1) ಪ್ರಾತ: (2) ಸಂಜ್ಞವ: (3) ಮಧ್ಯಾಹ್ನ: (4) ಅಪರಾಹ್ನ: ಮತ್ತು (5) ಸಾಯಾಹ್ನ:। ಒಂದೊಂದು ಭಾಗದ ಕಾಲ ಮೂರು ಮುಹೂರ್ತಗಳು: "ಪ್ರಾತ:-ಕಾಲೋ ಮುಹೂರ್ತಾಸ್ತೀನ್ ಸಂಜ್ಞವಸ್ತಾವದೇವ ತು। ಮಧ್ಯಾಹ್ನಾಸ್ತ್ರಿ-ಮುಹೂರ್ತ ಸ್ಯಾದಪರಾಹ್ನಸ್ತತ:ಪರಮ್। ಸಾಯಾಹ್ನಾಸ್ತ್ರಿಮುಹೂರ್ತ ಸ್ಯಾತ್ ಶ್ರಾದ್ಧ ತತ್ರ ನ ಕಾರಯತ್। ರಾಕ್ಷಸೋ ನಾಮ ಸಾ ವೇಲಾ ಗರ್ಹಿತಾ ಸರ್ವಕರ್ಮಸು" ತಿಥ್ಯಾದಿತತ್ವಮ್।

ಸಾಯುಜ್ಯ ಸಾಯುಜ್ಯ (ನಂ) 1. ಮೋಕ್ಷ, ಸಹಯೋಗ, ಸಾಲೋಕ್ಯ ಮೊದಲಾದ ಐದು ವಿಧ ಮುಕ್ತಿಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ವಿಧ ಮುಕ್ತಿ. ಪರಮಾತ್ಮನೊಡನೆ ಇದ್ದು ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ

ಸಮಾನವಾದ ಗುಣಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವುದು ಸಾಯುಜ್ಯ ರೂಪ ಮೋಕ್ಷ. ಸಯುಜೋರ್ಭವ: "ಫುಲ್" (೫-೧-೧೨೪)। ಇದು ಭಕ್ತಿಪೂರ್ವಕ ಪರಮಾತ್ಮನ ಉಪಾಸನೆಯಿಂದ ಮೂತ್ರ ಸಾಧ್ಯ. "ಸಾಲೋಕ್ಯಸಾಷ್ಟಿಸಾಮೀಪ್ಯಸಾಹುರ್ಯೈಕ-ತ್ವಮಪ್ಯುತ। ದೀಯಮಾನಂ ನ ಗೃಹ್ಣಂತಿ ವಿನಾ ಮತ್ಸೇವನಂ ವಿನಾ" ಭಾಗಂ ೩-೨೯-೧೩। ಜೀವಾತ್ಮನು ಆಧೇಯತ್ವ ವಿಧೇಯತ್ವ ಶೇಷತ್ವ ಪರತಂತ್ರತ್ವ ಈ ಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವನು. ಪರಮಾತ್ಮನು ಸರ್ವಾಧಾರತ್ವ ಸರ್ವನಿಯಾಮಕತ್ವ ಸರ್ವೇಶ್ವರತ್ವ ಸರ್ವಶಕ್ತತ್ವ ದೋಷರಹಿತತ್ವ ಸರ್ವಜ್ಞತ್ವ ಮೊದಲಾದ ವಿಶೇಷ ಗುಣಗಳಿಂದ ವಿರಾಜಿಸುವನು. ಜೀವಾತ್ಮನಿಗೂ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೂ ಈ ಕೆಲವು ವಿಶೇಷ ಗುಣಗಳು ಹೊರತು ಉಳಿದೆಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲೂ ಸಾಮ್ಯವಿರುವುದು. "ಯತೋ ವಾ ಇಮಾನಿ ಭೂತಾನಿ ಜಾಯಂತೇ"। "एको ह वै नारायण आसीत्" ಇತ್ಯಾದಿ ಶ್ರುತಿ ವಾಕ್ಯಗಳಿಂದ ಜಗತ್ಕಾರಣತ್ವವನ್ನು ಪರಮಪುರುಷನಿಗೆ ಮಾತ್ರವೇ ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದಲೂ ಮುಕ್ತನಿಗೆ ಎಲ್ಲೂ ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದಲೂ ಜಗತ್ಸೃಷ್ಟ್ಯಾದಿ ಕಾರ್ಯವು ಪರಮಪುರುಷನಿಗೇ ಅಸಾಧಾರಣ ಲಕ್ಷಣವಾಗಿರುವುದು. ಉಳಿದ ಅನಂದಾನುಭವ ಮೊದಲಾದ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಮುಕ್ತನಿಗೆ ಪರಮಾತ್ಮನೊಡನೆ ಅತ್ಯಂತ ಸಾಮ್ಯವಿರುವುದು. "भोगमात्रसाम्यलिङ्गाच्च" ಬ್ರಂ ಸುಂ। "जगद्व्यापारवर्जं प्रकरणादसन्निहितत्वाच्च" ಬ್ರಂ ಸುಂ ೪-೩-೬। "निरञ्जनः परमं साम्यमुपैति"। "सायुज्यं मुभयोरत्र भोक्तव्यस्याविशिष्टता"। "सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह, ब्रह्मणा विपश्चिता"। समानेन गुणेन युक् सयुक् ब्रह्मणा समानगुणः, तस्य भावः सायुज्यम्। 2. ಐಕ್ಯ. "सायुज्यमृच्छति भवस्य भवाधियादस्तां पत्युरेत्य नगरीं नगराजपुत्र्याः" ನೆಪಂ ೧೧-೧೧೭।

ಸಾರ ಸಾರ (ಪುಂ) 1. ಬಲ, ವೀರ್ಯ, ಚೈತನ್ಯ, ದೇಹಶಕ್ತಿ. ಸರತಿ — ಸ್ತ (ಗತೌ) "ಫುಲ್" (೩-೩-೧೭)। "भुजे भुजङ्गेन्द्रसमानसारे भूयः स भूमेर्धुरमाससञ्ज" ರಘುಂ ೨-೭೪। 2. ಸ್ಥಿರಾಂಶ, ಸಾರಾಂಶ, ತಿರುಳು. "यन्मां विधेयविषये सभवान्नियुङ्क्ते स्नेहस्य तत्फलमसौ प्रणयस्य सारः" ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೨। 3. ಕೆಚ್ಚು, ಸತ್ತ್ವ ಮರದ ಚೀಗು. 4. ಎಲುವಿನ ನೆಣ, ಮೂಳೆಯ ಪೊಳ್ಳು ಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ ಕೊಬ್ಬು, ಶರೀರದೊಳಗಿನ ಒಂದು ಧಾತು, ಮಜ್ಜೆ. 5. ಮರದ ರಸ. 6. ಧೈರ್ಯ. 7. ಧನ. "राज्ञा हिमवतःसारो राजःसारो हिमाद्रिणा" ರಘುಂ ೪-೭೯। 8. ಅಮೃತ. "सारं पिबन्तस्त्रिदशाः कदापि



ದ್ರಾಘೀಯಸಿ ನಾನುಭವಂತಿ ನಿರಾಮ್" ಯಾದಂ ೧೮-೧೦೧ |  
 9. ನವನೀತ, ಹೊಸದಾಗಿ ತೆಗೆದ ಬೆಣ್ಣೆ. 10. ದೃಢತೆ.  
 11. ಮೊಸರಿನ ಮೇಲಿನ ಕೆನೆ. 12. ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ, ಉತ್ತಮ  
 ವಾಗಿರುವಿಕೆ. 13. ಗತಿ, ಗಮನ. "ಸಾರೋ ದ್ಯುಗ್ರಗತ್ಯೋನಿ"  
 ಮೇದಿಂ. 14. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 15. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ  
 ಒಂದು ಭೇದ. ಪೂರ್ವ ಪೂರ್ವ ವಿಷಯಗಳಿಗಿಂತ ಉತ್ತ  
 ರೋತ್ತರ (ಮುಂದು ಮುಂದಿನ) ವಿಷಯಗಳ ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ  
 (ಮೇಲ್ಮೈ)ಯ ವರ್ಣನೆಯಿರುವಲ್ಲಿ "ಸಾರಾಲಂಕಾರ".  
 "उत्तरोत्तरमुत्कर्षः सार इत्यभिधीयते" | उदा:  
 "मधुरं मधु पीयूषं तस्मात्तस्मात् कवेर्वचः" चन्द्राಂ |  
 (ನಂ) 16. ಜಲ, ನೀರು. 17. ನ್ಯಾಯ, ಯುಕ್ತ  
 ವಾಗಿರುವಿಕೆ. 18. ವ್ಯಾಧಿ, ರೋಗ. 19. ಲೋಹ,  
 ಕಬ್ಬಿಣ. (ವಿಂ) 20. ದೃಢವಾದ. 21. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ,  
 ಉತ್ತಮವಾದ. "चूतमालिरलिनामतिरागादक्षमिष्ट  
 मधुवासरसारम्" माध० ೬-೬೮ | "ಸಾರೋ ಮಜ್ಜಾಸ್ಥಿರಾ-  
 शयोः | बले श्रेष्ठे च सारं तु द्रविणन्यायवारिषु"  
 ಹೇಮಂ |

ಸಾರಕ ಸಾರಕ (ವಿಂ) ಎರೇಚನ ಮಾಡಿಸುವ, ಬೇಧಿ  
 ಮಾಡಿಸುವ. ಸಾರಯತಿ ಮಲಮ್—ಸೃ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್  
 "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) |

ಸಾರಗಂಧ ಸಾರಗಂಧ (ಪುಂ) ಗಂಧದ ಮರ, ಚಂದನ ವೃಕ್ಷ.  
 ಸಾರೋ ಗಂಧೋ यस್ಯ |

ಸಾರಗ್ರಾಹಿನ್ ಸಾರಗ್ರಾಹಿನ್ (ವಿಂ) ಸಾರವಾದ ವಿಷಯ  
 ವನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ಸಾರಂ ಗೃಹ್ಣಾತಿ—ಗ್ರಹ  
 (ಉಪಾದಾನೆ) "ಞಿನಿ:" (೩-೨-೭೮) |

ಸಾರಥ ಸಾರಥ (ನಂ) ಮಧು, ಜೇನುತುಪ್ಪ. ಸರಥಾಣಾ-  
 मिदम् "अण्" (೪-೩-೧೨೦) |

ಸಾರಜ್ಞ ಸಾರಂಜಿ (ಪುಂ) 1. ಮೈಮೇಲೆ ಚುಕ್ಕಿಗಳಿರುವ  
 ಜಿಂಕೆ. ಸರತಿ—ಸೃ (ಗತೌ) "अङ्गच्" ವೃದ್ಧಿಶ್ಚ (೩ಂ  
 ೧-೧೧೯) | "तवास्मि गीतरागेण हरिणा प्रसभं  
 हृतः | एष राजेव दुष्यन्तः सारङ्गेणातिरंहसा"  
 शाकु० ೧-೫ | 2. ಹರಿಣ, ಜಿಂಕೆ. 3. ಗಜ, ಆನೆ.  
 4. ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. "सारङ्गास्ते जललवमुचः  
 सूचयिष्यन्ति मार्गम्" मेघ० ೧-೨೧ | "सारङ्गः पुंसि  
 हरिणे चातके च मतङ्गजे | शबले त्रिषु" मेदि० |  
 5. ಚಾತಕ ಪಕ್ಷಿ. 6. ಮಯೂರ, ನವಿಲು. 7. ಭತ್ತಿ,  
 ಕೊಡೆ. 8. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. 9. ಮನ್ಮಥ. 10. ಧನುಸ್ಸು.  
 11. ಕೀಶ, ಕೂದಲು. 12. ಶಂಖ. 13. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ.

14. ಕರ್ಪೂರ. 15. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 16. ಕೋಗಿಲೆ.  
 17. ಸಿಂಹ. 18. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 19. ಭೂಮಿ.  
 20. ಪುಷ್ಪ. 21. ರಾಶಿ. 22. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು.  
 23. ಹಂಸ. (ವಿಂ) 24. ಚಿತ್ರವರ್ಣದ. "सारङ्गो  
 विहगान्तरे | चातके चञ्चरीके च द्विपेणशबलेषु च"  
 ಹೇಮಂ |

ಸಾರಜ್ಞಿಕ ಸಾರಂಜಿಕ (ಪುಂ) ಜಿಂಕೆಯನ್ನು ಬೇಟೆಯಾಡುವ  
 ವ್ಯಾಧಿ, ಬೇಟೆಗಾರ. ಸಾರಜ್ಞಾನ್ ಹಂತಿ—ಸಾರಜ್ಞ "ठक्"  
 (೪-೪-೩೫) |

ಸಾರಜ ಸಾರಜ (ನಂ) ನವನೀತ, ಬೆಣ್ಣೆ. ಸಾರಾತ್ ದ್ಯುಗ್ರಾತ್  
 जायते—जनी (प्रादुर्भावे) "ङः" (೩-೨-೯೮) |

ಸಾರಣ ಸಾರಣ (ಪುಂ) 1. ಅಮಟೆ ಮರ. 2. ರಾವಣನ  
 ಒಬ್ಬ ಮಂತ್ರಿ. 3. ಅತಿಸಾರ ರೋಗ. "सारणः  
 स्यादतीसारे दशकन्धरमन्त्रिणि" ಹೇಮಂ |

ಸಾರಣಿಕ ಸಾರಣಿಕ (ಪುಂ) ಪಥಿಕ, ಪ್ರಯಾಣಿಕ. ಸರಣಿ  
 "कन्" (೫-೧-೭೫) | "यदा सारणिकान् राजा  
 पुत्रवत् परिरक्षति | भिनत्ति च न मर्यादां स राज्ञो  
 धर्म उच्यते" भा० शांति० |

ಸಾರಣಿ ಸಾರಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುಳ್ಳುಗಡೆ ಗಿಡ. 2. ಸಣ್ಣ  
 ನದಿ, ಚಿಕ್ಕ ಹೊಳೆ. ಸೃ (ಗತೌ) + ಣಿಚ್ "अनिः"  
 (೩ಂ ೨-೧೦೨) | "सारणो राक्षसान्तरे | रुग्मेदे ना  
 प्रसारण्यां स्वल्पनद्यां च योषिति (सारणी)" मेदि० |  
 3. ಕಾಲುಪೆ. "केरलीचिकुरभङ्गिभङ्गुरं सारणीषु  
 पुनरम्बु दृश्यते" अनर्थ० |

ಸಾರಣ್ಡ ಸಾರಂಡ (ಪುಂ) ಹಾವಿನ ಮೊಟ್ಟೆ.

ಸಾರಥಿ ಸಾರಥಿ (ಪುಂ) ರಥವನ್ನು ನಡೆಸುವವನು, ಗಾಡಿ  
 ಓಡಿಸುವವನು. ಸರತ್ಯಶ್ವಾನ್—ಸೃ (ಗತೌ) (अन्तर्भावित-  
 णिच्) "घथिन्" (೩ಂ ೪-೮೯) | "गाढतां हरिरथस्य  
 बिभ्रतः सारथिश्च तुरगाश्च साहसम्" याद० ೧೭-೫೯ |  
 "मनोतिवेगेन तथेन सारथिप्रणोदितेन प्रचलन् महासुरः"  
 कुमा० ೧೫-೪೫ |

ಸಾರಥ್ಯ ಸಾರಥ್ಯ (ನಂ) 1. ಸಾರಥಿಯ ಕಾರ್ಯ, ರಥ  
 ವನ್ನು ನಡೆಸುವ ಕಾರ್ಯ. ಸಾರಥಿ: ಕರ್ಮ—ಸಾರಥಿ  
 "ष्यक्" (೫-೧-೧೨೪) | 2. ಸಾರಥಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ.  
 ಸಾರಥಿಭಾವ: "ष्यक्" | "सारथ्यसंविदवधीरितहेतिजुष्टः  
 सेनापरागपरिधूसरकुन्तलश्रीः" याद० ೨೩-೫೯ |

ಸಾರದ್ರಮ ಸಾರದ್ರಮ (ಪುಂ) ಖಿದಿರ ವೃಕ್ಷ, ಕಗ್ಗಲಿ  
 ಮರ.



**ಸಾರಮಿತಿ ಸಾರಮಿತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇದ. ಸಾರೋ ಯಥಾರ್ಥಂ  
ಮೀಯತೇ ಜಾಯತೇಜೇನ—ಮಾಙ್ (ಮಾನೇ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪)।  
**ಸಾರಮೇಯ ಸಾರಮೇಯ** (ಪುಂ) ಕುಕ್ಕುರ, ಶುನಕ, ನಾಯಿ.  
ಸರಮಾಯಾ ಅಪತ್ಯಂ “ಡಕ್” (೪-೧-೧೨೦)। “ಅನ್ಯೋನ್ಯಸ್ಯಾ-  
ವಲುಪ್ಪಂತಿ ಸಾರಮೇಯಾ ಇವಾಮಿಷಮ್” ಮಾಂ ಭಿಷ್ಠಂ।  
**ಸಾರಮೇಯಿ ಸಾರಮೇಯೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ನಾಯಿ.  
ಸರಮಾಯಾ ಅಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ “ಡಕ್” (೪-೧-೧೨೦)। “ಡೀಪ್”  
(೪-೧-೧೨೫)।  
**ಸಾರಲ್ಯ ಸಾರಲ್ಯ** (ನಂ) 1. ಸರಳತೆ, ಸರಳವಾಗಿರುವಿಕೆ,  
ನೇರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ನೆಟ್ಟಗಿರುವಿಕೆ. ಸರಲ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: “ಛಬ್”  
(೪-೧-೧೨೪)। 2. ಪುಜುವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ  
ನಾಗಿರುವಿಕೆ, ಕಪಟವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.  
**ಸಾರವ ಸಾರವ** (ವಿಂ) ಸರಯೂನದಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ,  
ಸರಯೂನದಿಯಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದು ಬಂದಿರುವ. ಸರವ್ಯಾ ಭವ:  
“ಅಙ್” (೪-೩-೪೩)। “ದೇವಿಕಾಯಾಂ ಸರವ್ಯಾಂ ಚ ಭವೇ  
ದಾವಿಕಸಾರವೌ” ಅಮಂ।  
**ಸಾರಸ ಸಾರಸ** (ಪುಂ) 1. ನೀರು ಹಕ್ಕಿ, ತಾವರೆ ಹಕ್ಕಿ.  
ಸರಸಿ ಭವ: “ಅಙ್” (೪-೩-೪೩)। “ಶ್ರುತಿಪಞ್ಚಮಧುರಾಣಿ  
ಸಾರಸಾನಾಮನುನದಿ ಶುಶ್ರುವಿರೇ ಸ್ತಾನಿ ತಾಮಿ:” ಮಾಘಂ  
೭-೨೪। 2. ಹಂಸಪಕ್ಷಿ. “ವಿಮಿಶ್ರಮಾನಾ ವಿಸಸಾರ  
ಸಾರಸಾನುದಸ್ಯ ತೀರೇಶು ತರಂಗಸಂಹತಿ:” ಕಿರಾಂ ೮-೩೧।  
3. ಚಂದ್ರ. (ನಂ) 4. ಕಮಲ, ಪದ್ಮ, ತಾವರೆ ಹೂವು.  
ಸರಸಿ ಭವಮ್ “ಅಙ್” (೪-೩-೪೩)। “ಸಾರಸ: ಪಕ್ಷಿ-  
ಭೇದೇಂದ್ರೋ: ಕಲಿಬಂತು ಸರಸೀಹೇ” ಮೇದಿಂ। 5. ಹೆಂಗಸರ  
ವಡ್ಡಾಣ, ಹೆಂಗಸರ ಸೊಂಟದ ಒಡವೆ (ಡಾಬು). (ವಿಂ)  
6. ಸರಸ್ವಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ. 7. ಸರಸ್ವಿನಲ್ಲಿರುವ ನೀರು  
ಮೊದಲಾದುದು. “ಕಾರಂ ಧನಂ ವಾತಕಫಾನುಕಾರಿ ತ್ವಗ್ದೋಷ-  
ಕೃತ್ ತತ್ಕಡು ದೀಪನಶ್ಚ। ಪ್ರೋಕ್ತಂ ವಿಪಾಕೇ ಭ್ರಮಶೋಷಕಾರಿ  
ಸ್ಯಾತ್ ಸಾರಸಂ ನೋ ಸುಖಕಾರಿ ವಾರಿ”।  
**ಸಾರಸನ ಸಾರಸನ** (ನಂ) 1. ಡಾಬು, ಹೆಂಗಸರ ವಡ್ಡಾಣ,  
ಹೆಂಗಸರ ಸೊಂಟದ ಒಡವೆ. ಸಾರಮುಕ್ತಾಷ್ಟಂ ಸನಮಸ್ಯ—ಷಣ  
(ಸಮ್ಮತೌ) “ವ:” (೩-೩-೧೧೮)। “ತವೋತ್ತರೀಯಂ  
ಕರಿಶಮ್ ಸಾ ಜ್ಞಜಂ ಜ್ವಲಮಣಿ: ಸಾರಸನಂ ಮಹಾನಹಿ:” ಕಿರಾಂ  
೧೮-೩೨। 2. ಕಟಿಸೂತ್ರ, ಉಡುದಾರ. “ಮುಕ್ತಾಮಯಂ  
ಸಾರಸನಾವಲಮ್ಬಿ ಭಾತಿ ಸ್ಮ ದಾಮಾಪ್ರಪದೀನಮಸ್ಯ” ಮಾಘಂ  
೩-೧೦।  
**ಸಾರಸೀ ಸಾರಸೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ಹಂಸ. ಸಾರಸ ಜಾತಿಂ  
“ಡೀಪ್” (೪-೧-೬೩)। “ಸಾರಸ್ಯ ಇವ ರಾಸನ್ಯ: ಪತಿತಾ:  
ಪಶ್ಯ ಭಾರತ” ಮಾಂ ಸ್ತ್ರೀಂ।

**ಸಾರಸ್ವತ ಸಾರಸ್ವತ** (ಪುಂ) 1. ಬಿಲ್ವಪತ್ರ ವೃಕ್ಷದ ದಂಡ.  
ಸರಸ್ವತೀ ದೇವತಾಸ್ಯ — “ಅಙ್” (೪-೨-೨೪)।  
2. ಸರಸ್ವತೀ ನದಿಯ ಸಮೀಪದ ಒಂದು ದೇಶ. ಸರಸ್ವತಾ  
ಅದ್ವರಭವ: “ಅಙ್” (೪-೨-೭೦)। 3. ಸಾರಸ್ವತ ದೇಶದ  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. “ಸಾರಸ್ವತಾ ಕಾನ್ಯಕುಜಾ ಗೌಡಮಂಥಿಲಕೋ-  
ತಕಲಾ:। ಪಶ್ಚ ಗೌಡಾ ಇತಿ ಖ್ಯಾತಾ ವಿನ್ಯಸ್ಯೋತ್ತರ-  
ವಾಸಿನ:”। 4. ಸರಸ್ವತೀ ಪೂಜೆಯ ಒಂದು ಕಲ್ಪ.  
(ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 5. ಸಾರಸ್ವತ ದೇಶದ ಜನರು. (ನಂ)  
6. ವಾಕ್ಸಂಪತ್ತು, ವಾಗ್ವೈಖರಿ, ಸಂದರ್ಭೋಚಿತವಾಗಿ  
ಭಾಷೆಯನ್ನು ನಿರ್ದೇಶವಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವುದು,  
ಭಾಷೆಯನ್ನು ಶಕ್ತಿಯುತವಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವುದು.  
(ವಿಂ) 7. ಸರಸ್ವತೀದೇವೀ ಸಂಬಂಧವಾದ. 8. ಸರಸ್ವತೀ  
ನದೀ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸರಸ್ವತಾ ಇದಮ್ “ಅಙ್”।

**ಸಾರಿಕಾ ಸಾರಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಹೆಣ್ಣು ಹಕ್ಕಿ.  
ಸರತಿ ಗಚ್ಛತಿ—ಸೃ (ಗತೌ) “ಫಲ್” (೩-೧-೧೩೩)।  
“ಪೃಚ್ಛಂತೀ ವಾ ಮಧುರವಚನಾ ಸಾರಿಕಾಂ ಪಂಜರಸ್ಥಾಂ  
ಕನ್ವಿಕ್ಷುತು: ಸ್ಮರಸಿ ರಸಿಕೇ ತ್ವಂ ಹಿ ತಸ್ಯ ಪ್ರಿಯೇತಿ” ಮೇಘಂ  
೨-೨೨।

**ಸಾರುಪ್ಯ ಸಾರೂಪ್ಯ** (ನಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಸಮಾನವಾದ  
ರೂಪ (ಹೊಂದುವುದು). ಇದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಮೋಕ್ಷ  
ಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಸಾರುಪ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: “ಛಬ್” (೪-೧-೧೨೪)।  
ಇದು ಭಗವತ್ಪ್ರಾಪ್ತಿಯುಜ್ಯರೂಪಮೋಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಅಂತರ್ಗತ  
ವಾದ ಒಂದು ಧರ್ಮ. 2. ಒಂದೇ ರೂಪದಿರುವುದು,  
ಸಮಾನವಾಗಿರುವುದು, ಸದೃಶವಾಗಿರುವುದು, ಸಮಾನ  
ವಾದ ಆಕಾರವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವುದು. 3. ಕಾರ್ಯವು  
ಕಾರಣದೊಡನೆ ಅನುರೂಪ ಹೊಂದುವುದು, ಕಾರ್ಯವು  
ಕಾರಣಕ್ಕೆ ಅನುರೂಪವಾಗಿರುವುದು.

**ಸಾಗಲ ಸಾಗಲ** (ವಿಂ) 1. ಅಗಳಿಮರದೊಡನೆ ಕೂಡಿರುವ.  
ಅಗಲೇನ ಸಹ ವತಂತೆ—ಇತಿ ಸಾಗಲಮ್। 2. ಪ್ರತಿಬಂಧಕ  
ಸಹಿತವಾದ, ಅಡ್ಡಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. “ಇಪ್ಸಿತಂ ತದವ-  
ಜ್ಞಾನಾದ್ವಿಧಿ ಸಾಗಲಮಾತ್ಮನ:” ರಘುಂ ೧-೭೯।

**ಸಾರ್ಥ ಸಾರ್ಥ** (ಪುಂ) 1. ಸಮಾನ ಜಾತಿಯ ಪ್ರಾಣಿಗಳ  
ಸಮೂಹ, ಒಂದೇ ಜಾತಿಯ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಗುಂಪು. ಸರತಿ  
—ಸೃ (ಗತೌ) “ಯನ್” ಣಿಚ್ಛ (೩ಂ ೨-೪)। “ಸಂಜ್ಞ-  
ಸಾರ್ಥೌ ತು ಜನ್ತುಭಿ:” ಅಮಂ। “ಅಥ ಕದಾಚಿತ್ ತೇರಿತ-  
ಸ್ತತೋ ಭ್ರಮದ್ವಿ: ಸಾರ್ಥಾತ್ ಭ್ರಷ್ಟ: ಕಥನಕೋ ನಾಮೋಷ್ಠೋ ದೃಷ್ಟ:”  
ಪಶ್ಚತಂ ೧। 2. ವರ್ತಕರ ಸಮೂಹ. “ವಾಪಿಷ್ವಿವ  
ಸ್ರವಂತೀಷು ವನೇಷುಪವನೇಷ್ವಿವ। ಸಾರ್ಥಾ: ಸ್ವೇರಂ ಸ್ವಕೀಯೇಷು



ಚೇತೋಮಸ್ವಿವಾದ್ರಿಘ್" ರಘುಂ ೧೭-೬೪ । 3. ಜನಂ ಗುಂಘು-  
 "ಸವೇ ಏವ ವಿಪರ್ಯಸ್ತಾ ಗ್ರಾಹ್ಯಾಃ ಸಾರ್ಥೇಷು ಘೋಷಿತಾಃ" ಬೃಹತ್ಸಂ  
 ೮೬ । "ಅತಿಸಂಧೀಯತೇ ಕಾಮಿಜನಸಾರ್ಥಃ" ಶಾಕುಂ ೩ ।  
 4. ಸಮೂಹ, ಗುಂಘು. "ಸಾರ್ಥೋ ವಣಿಕ್ಸಮೂಹೇ ಸ್ಯಾದಪಿ  
 ಸಜ್ಞಾತಮಾತ್ರಕೇ" ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ) 5. ಅರ್ಥದಿಂದ  
 ಕೂಡಿದ (ಪದ), ಅರ್ಥವತ್ತಾದ (ಶಬ್ದ). ಅರ್ಥೇನ ಸಹ  
 ವರ್ತತೇ ।

**ಸಾರ್ಥಕ ಸಾರ್ಥಕ** (ವಿಂ) 1. ಅರ್ಥವತ್ತಾದ, ಅರ್ಥಸಹಿತ  
 ವಾದ. ಅರ್ಥೇನ ಸಹ ವರ್ತತೇ "ಕನ್" । "ಶಬ್ದಾಂತರಮಪೇಕ್ಷಯಂ  
 ಸಾರ್ಥಕಃ ಸಾರ್ಥಬೋಧಕತ್ವಃ । ಪ್ರಕೃತಿಃ ಪ್ರತ್ಯಯಶ್ಚೇವ ನಿಪಾತಶ್ಚೇತಿ  
 ಸ ತ್ರಿವಿಧಾ" । 2. ಫಲಸಹಿತವಾದ, ಪ್ರಯೋಜನದಿಂದ  
 ಕೂಡಿದ, ಸಾಫಲ ಹೊಂದಿದ.

**ಸಾರ್ಥಕ ಸಾರ್ಥಕ** (ನಂ) ಫಲದಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ,  
 ಯತ್ನವು ಸಫಲವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಸಾರ್ಥಕಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಏನ್"  
 (೪-೧-೧೨೪) ।

**ಸಾರ್ಥವಾಹ ಸಾರ್ಥವಾಹ** (ಪುಂ) ವರ್ತಕ, ವರ್ತಕತನ ಮಾಡು  
 ವವನು, ಕ್ರಯ ವಿಕ್ರಯ ರೂಪ ವ್ಯಾಪಾರಮಾಡುವವನು.  
 ಸಾರ್ಥಂ वहति — वह (ಪ್ರಾಪणे) "ಅನ್" (೩-೨-೧) ।  
 "ಸಮುದ್ರವ್ಯವಹಾರೀ ಸಾರ್ಥವಾಹೋ ಧನಮಿತ್ರೋ ನಾಮ ನೌವ್ಯಸನೇ  
 ವಿಪನ್ನಃ" ಶಾಕುಂ ೬ ।

**ಸಾರ್ಥ ಸಾರ್ಥ** (ವಿಂ) ಒದ್ದೆಯಾದ, ತೇವವಾದ, ನೆನದ.  
 ಆದ್ರೇಣ ಸಹ ವರ್ತತೇ । "ಆದ್ರೆ ಸಾರ್ಥೆ ಕಿಲನ್ನ ತಿಮಿತಂ  
 ಸಮುತ್ರಮುತ್ಸಂ ಚ" ಅಮಂ ।

**ಸಾರ್ಥ ಸಾರ್ಥ** (ವಿಂ) 1. ಅರ್ಥಸಹಿತವಾದ, ಅರ್ಥದಿಂದ  
 ಕೂಡಿದ. ಅರ್ಥೇನ ಸಹ ವರ್ತತೇ । (ಅವ್ಯಂ) 2. ಸಂಗಡ, ಕೂಡ,  
 ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ, ಒಂದಿಗೆ. "ಸಾರ್ಥಂ ಕಥಂಚಿದ್ವಚಿತಃ ಪಿಚುಮರ್ದಪತ್ರ-  
 ರಾಸ್ಯಾಂತರಾಲಗತಮಾಶ್ರದಲಂ ಖದೋಯಃ" ಮಾಘಂ ೪-೬೬ ।

**ಸಾರ್ಥ ಸಾರ್ಥ** (ಪುಂ) ಸರ್ಪದೇವತಾಕವಾದ ಅಶ್ಲೇಷಾ ನಕ್ಷತ್ರ.  
 ಸರ್ಪೋ ದೇವತಾ ಅಸ್ಯ "ಅನ್" (೪-೨-೨೪) ।

**ಸಾರ್ಥ ಸಾರ್ಥ** (ವಿಂ) 1. ಫೃತ (ತುಪ್ಪ)ದಲ್ಲಿ ಬೇಯಿಸ  
 ಲ್ಪಟ್ಟ. ಸರ್ಪಿಣಿ ಸಂಸ್ಕೃತಮ್ "ಅನ್" (೪-೨-೧೬) ।  
 2. ಫೃತಸಂಬಂಧವಾದ. ಸರ್ಪಿಣಿ ಇದಮ್ "ಅನ್"  
 (೪-೩-೧೨೦) ।

**ಸಾರ್ಥ ಸಾರ್ಥ** (ವಿಂ) ತುಪ್ಪದಿಂದ ಸಂಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
 ಸರ್ಪಿಣಿ ಸಂಸ್ಕೃತಮ್ "ಠಕ್" (೪-೪-೩) । ಠಸ್ಯ "ಕಃ"  
 (೭-೩-೪೧) ।

**ಸಾರ್ಥ ಸಾರ್ಥ** (ಪುಂ) 1. ಒದ್ದದೇವ. 2. ಜಿನದೇವ. ಸರ್ವಸ್ಮ  
 ಹಿತಃ । (ವಿಂ) 3. ಸರ್ವರಿಗೂ ಹಿತವಾದ. ಸರ್ವಸ್ಮ

ಹಿತಮ್ ವಾ "ಞಃ" (ವಾಂ ೪-೧-೧೦) । "ಸಮ್ಮವಂತಿ  
 ಯದದೋಷದೃಷಿತೇ ಸಾರ್ವ! ಸರ್ವಗುಣಸಂಪದಸ್ತವಯಿ" ಮಾಘಂ  
 ೧೪-೪ । ಪಕ್ಷೇ ಸರ್ವೀಯಮ್ ।

**ಸಾರ್ವಕಾಮಿಕ ಸಾರ್ವಕಾಮಿಕ** (ವಿಂ) ಎಲ್ಲಾ ಇಷ್ಟಾರ್ಥ  
 ಗಳಿಗೂ ಪ್ರಯೋಜನವಾಗಿರುವ. ಸರ್ವೇ ಕಾಮಾಃ ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ  
 "ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯) । "ತೀರ್ಥನಸ್ತಿ ನ ಭವಾಣಿವಾಹ್ಯಂ  
 ಸಾರ್ವಕಾಮಿಕಮೃತೇ ಭವತಸ್ತತ್" ಕಿರಾಂ ೧೮-೨೪ ।

**ಸಾರ್ವಕಾಲಿಕ ಸಾರ್ವಕಾಲಿಕ** (ವಿಂ) ಎಲ್ಲಾ ಕಾಲದಲ್ಲೂ  
 ಇರುವ, ಎಲ್ಲಾ ಕಾಲದಲ್ಲೂ ಉಂಟಾಗುವ. ಸರ್ವೇಷು ಕಾಲೇಷು  
 ಭವಮ್ "ಠಕ್" (೪-೩-೧೧) ।

**ಸಾರ್ವತ್ರಿಕ ಸಾರ್ವತ್ರಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ  
 ಇರುವ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಉಂಟಾಗುವ. ಸರ್ವತ್ರ ಭವಃ  
 "ಠಕ್" (ವಾಂ ೪-೩-೬೦) । 2. ಎಲ್ಲಾ ಕಾಲದಲ್ಲೂ  
 ಇರುವ. 3. ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಗೂ ಅನ್ವಯಿಸುವ, ಎಲ್ಲರಿಗೂ  
 ಸಂಬಂಧಿಸುವ.

**ಸಾರ್ವಧಾತುಕ ಸಾರ್ವಧಾತುಕ** (ನಂ) ಧಾತೃಧಿಕಾರದಲ್ಲಿ  
 ಉಕ್ತವಾದ ತಿಡ್ ಮತ್ತೂ ಶಿತ್ (ಶ ಕಾರಕ್ಕೆ ಇತ್ ಸಂಜ್ಞೆ  
 ಯುಳ್ಳ) ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು. "ತಿಡ್ ಶಿತ್ ಸಾರ್ವಧಾತುಕಮ್"  
 ಪಾಂ ಸುಂ ೩-೪-೧೧೩ ।

**ಸಾರ್ವಜನಿಕ ಸಾರ್ವಜನಿಕ** (ವಿಂ) ಎಲ್ಲಾ ಜನರಿಗೂ ಹಿತ  
 ವಾದ. ಸರ್ವಜನಾಯ ಹಿತಮ್ "ಠಕ್" (ವಾಂ ೪-೧-೯) ।

**ಸಾರ್ವಜನೀನ ಸಾರ್ವಜನೀನ** (ವಿಂ) ಎಲ್ಲಾ ಜನರಿಗೂ  
 ಹಿತವಾದ. ಸರ್ವಜನಾಯ ಹಿತಮ್ "ಃ" (ವಾಂ ೪-೧-೯) ।  
 ಖಸ್ಯ ಇನಾದೇಶಃ (೭-೧-೨) ।

**ಸಾರ್ವಭೌಮ ಸಾರ್ವಭೌಮ** (ಪುಂ) 1. ಚಕ್ರವರ್ತಿ, ಚಕ್ರಾಧಿ  
 ಪತಿ, ರಾಷ್ಟ್ರದ ಅಧಿಪತಿ, ರಾಷ್ಟ್ರದ ಸರ್ವಾಧಿಕಾರ  
 ಹೊಂದಿರುವವನು. ಸರ್ವಭೂಮೇಶ್ವರಃ "ಅನ್" (೪-೧-೪೨) ।  
 "ಆಜ್ಞಾಭಿಷ್ಠಂ ಸಹಂತೇ ನೃವರ ನೃಪತಯಃ ತ್ವಾದೃಶಾಃ ಸಾರ್ವಭೌಮಾಃ"  
 ಮುद्रಾಂ ೪-೨೨ । 2. ಅಷ್ಟದಿಗ್ಗಜಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ದಿಗ್ಗಜ,  
 ಉತ್ತರ ದಿಕ್ಕಿನ ಗಜ. ಸರ್ವಸ್ಯಾ ಭೂಮಿ ವಿದಿತಃ "ಅನ್"  
 (೪-೧-೪೩) । ಉಭಯಪದವೃದ್ಧಿಃ (೭-೩-೨೦) ।

**ಸಾರ್ವವೈದ್ಯ ಸಾರ್ವವೈದ್ಯ** (ಪುಂ) ಎಲ್ಲಾ ವೇದಗಳನ್ನೂ  
 ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದ ವಿಪ್ರ. ಸರ್ವವೇದಾನುಧೀತೇ "ಅನ್"  
 (೪-೨-೪೯) । ಅಣಿ ಲುಕ್ (ವಾಂ ೪-೨-೪೯) । ಸರ್ವವೇದಃ  
 — ಸ ಏವ ಸಾರ್ವವೈದ್ಯಃ ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಏನ್" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪) ।

**ಸಾಲ ಸಾಲ** (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. 2. ಸರ್ಪವೃಕ್ಷ,  
 ಮತ್ತಿಮರ. 3. ಪ್ರಾಕಾರ, ಸುತ್ತುಗೋಡೆ, ಬೇಲಿ.  
 4. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು. ಸಲ್ಯತೇ — ಷಲ್ (ಗತೀ)



“ಛತ್” (೩-೩-೧೯) 1. “ಸಾಲ: ಪಾದಪಮಾತ್ರೇ ಸ್ವಾತ್ಪ್ರಾಕಾರೇ ಸರ್ಜಪಾದಪೇ” ಮೇದಿಂ 1.

ಸಾಲನ ಸಾಲನ (ಪುಂ) 1. ಸರ್ಜ ರಸ. 2. ಮರದ ಹಾಲು.

ಸಾಲ: ಕಾರಣತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ “ನ:” (೪-೨-೧೦೦) 1.

ಸಾಲನಿರ್ಯಾಸ ಸಾಲನಿರ್ಯಾಸ (ಪುಂ) 1. ಮರದ ಹಾಲು. 2. ಸರ್ಜ ರಸ.

ಸಾಲಪರ್ಣಿ ಸಾಲಪರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂರಲೆ ಹೊನ್ನೆ ಮರ.

ಸಾಲಸ್ಯ ಪರ್ಣಮಿವ ಪರ್ಣಮಸ್ಯಾ:—“ಙೀಪ್” (೪-೧-೬೪) 1.

ಸಾಲಭಜ್ಜಿಕಾ ಸಾಲಭಂಜಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪುತ್ಥಳಿಕೆ, ಬಟ್ಟೆ ಮರ ದಂತ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಬೊಂಬೆ. “ಪಾಶ್ಚಾಲಿಕಾ ತು ಪಾಶ್ಚಾಲಿ ಪುತ್ರಿಕಾ ಸಾಲ-ಭಜ್ಜಿಕಾ” ಕೊಶ: 1. “ದಾರುಸ್ತ್ರೀ ಸಾಲಭಜ್ಜಿಕಾ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1.

ಸಾಲವೇಷ್ಠ ಸಾಲವೇಷ್ಠ (ಪುಂ) ಸರ್ಜ ರಸ.

ಸಾಲಾತುರೀಯ ಸಾಲಾತುರೀಯ (ಪುಂ) ಪಾಣಿನಿ ಮುನಿ.

ಸಾಲಾ ಸಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗೃಹ, ಮನೆ. 2. ಗೋಡೆ.

ಸಾಲಾರ ಸಾಲಾರ (ನಂ) ಧನವನ್ನು ರಹಸ್ಯವಾಗಿಡಲು ಗೋಡೆಯಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ ಬೀರುವಿನ ಬೀಗ.

ಸಾಲಾವೃಕ ಸಾಲಾವೃಕ (ಪುಂ) 1. ಶ್ವಾನ, ನಾಯಿ. ಸಾಲಾಯಾ ವೃಕ ಇವ 1. 2. ಜಂಬುಕ, ನರಿ. 3. ಮರ್ಕಟ, ಕಪಿ.

“ಸಾಲಾವೃಕಾ: ಕಪಿಕೋಟುಶ್ವಾನ:” ಅಮಂ 1.

ಸಾಲೋಕ್ಯ ಸಾಲೋಕ್ಯ (ನಂ) 1. ಸಮಾನ ಲೋಕದಲ್ಲಿರು ವಿಕೆ, ಒಂದೇ ಲೋಕದಲ್ಲಿರುವಿಕೆ. ಸಮಾನೋ ಲೋಕೋ ಯಸ್ಯ— ಸಲೋಕಸ್ಯ ಭಾವ: “ಛತ್” (೪-೧-೧೨೪) 1. 2. ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಮೋಕ್ಷಗಳಲ್ಲೊಂದು ವಿಧ ಮೋಕ್ಷ. ಪರಮಾತ್ಮ ನೊಡನೆ ಸಮಾನಲೋಕ (ವೈಕುಂಠ) ದಲ್ಲಿರುವುದು ಸಾಲೋಕ್ಯ. ಇದು ಸಾಯುಜ್ಯ ರೂಪವಾದ ಮೋಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಅಂತರ್ಗತವಾದ ಒಂದು ಧರ್ಮ.

ಸಾಲವ ಸಾಲವ (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 1. ಒಂದು ದೇಶ. 2. ಆ ದೇಶದ ಜನರು. (ಪುಂ) 3. ಆ ದೇಶದ ರಾಜ. ಕಾಶಿರಾಜನ ಪುತ್ರಿಯಾದ ಅಂಬೆಯು ಈತನನ್ನು ವರಿಸಿ ದ್ದಳು. ಭೀಷ್ಮನು ಸ್ವಯಂವರ ಮಂಟಪದಿಂದ ಈಕೆಯನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿಕೊಂಡು ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಸಾಲವನು ಭೀಷ್ಮ ನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಮಾಡಿ ಸೋತನು. 4. ಪುಹಾವಿಷ್ಟು ವಿ ನಿಂದ ಹತನಾದ ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ.

ಸಾವಕಾಶ ಸಾವಕಾಶ (ವಿಂ) 1. ಕಾಲದ ಅಂತರವುಳ್ಳ, ಅವಕಾಶದೊಡನೆ ಕೂಡಿದ, ಮಧ್ಯೆ ಬಿಡುವುಳ್ಳ, ಮಧ್ಯೆ ವಿರಾಮವುಳ್ಳ, ಅವಕಾಶದ ಸಹಿತ: 1. 2. ಒಂದು ನೆಲೆ

ಯುಳ್ಳ, ಒಂದು ಆಶ್ರಯವುಳ್ಳ. (ಅವ್ಯಂ) 3. ವಿರಾಮ ವಾಗಿ, ಮಧ್ಯೆ ವಿರಾಮ ಮಾಡಿಕೊಂಡು.

ಸಾವಜ್ಞ ಸಾವಜ್ಞ (ವಿಂ) ತಿರಸ್ಕಾರದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಉಪೇಕ್ಷೆಗೆ ಗುರಿಯಾದ, ಅಪಮಾನ ಹೊಂದಿದ. ಅವಜ್ಞಯಾ ಸಹ ವರ್ತತೆ 1.

“ಯ ಸಾವಜ್ಞೋ ಮಾಧವಶ್ರೀನಿಯೋಗೇ ಪುಷ್ಪ: ಶಂಸತ್ಯಾದರ ತ್ವತ್ಪ್ರಯತನೇ” ಮಾಲಂ ೪-೮ 1.

ಸಾವಜ್ಞ ಸಾವಜ್ಞ (ವಿಂ) 1. ದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 2. ಪಾಪಸಹಿತವಾದ. 3. ಲಜ್ಜೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. 4. ದೂಷಣೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಸಾವಧಾನ ಸಾವಧಾನ (ವಿಂ) 1. ಎಚ್ಚರಿಕೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಲಕ್ಷ್ಯವಿಟ್ಟು ನೋಡುವ, ಸರಿಯಾಗಿ ಗಮನಿಸುವ. ಅವಧಾ-ನೆನ ಸಹಿತ: 1. 2. ಜಾಗರೂಕತೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಮುಂಜಾ ಗ್ರತೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. “ಸಾವಧಾನಮನಸಾಂ ಸಮಾಧಯ:” ಯಾದಂ ೧೭-೧೮ 1.

ಸಾವಧಿ ಸಾವಧಿ (ವಿಂ) 1. ಒಂದು ವಾಯಿದೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಮುಂದಿನಕಾಲದ ಗಡುವುಳ್ಳ. ಅವಧಿನಾ ಸಹ ವರ್ತತೆ 1. 2. ಒಂದು ಎಲ್ಲೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಒಂದು ಮೇರೆ ಯುಳ್ಳ. “ಸಾವಧಿಸ್ತೋಯರಾಶಿಸ್ತೇ ಯಶೋರಾಶೇಸ್ತು ನಾವಧಿ:” 1.

ಸಾವನ ಸಾವನ (ಪುಂ) 1. ಯಜ್ಞದ ಸಮಾಪ್ತಿ. ಸವನ-ಸ್ಯಾಯಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) 1. 2. ಯಜಮಾನ, ಯಾಗಮಾಡುವವನು. 3. ವರುಣ. 4. ಹಗಲು ರಾತ್ರಿ ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಒಂದು ದಿವಸ, ಸೂರ್ಯನ ಗತಿಯಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ದಿವಸ. ಒಂದು ತಿಥಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕಾಲವು ಚಾಂದ್ರಮಾನದ ದಿವಸ. ಸೂರ್ಯನ ಗತಿಯಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ಹಗಲು ಮತ್ತು ಒಂದು ರಾತ್ರಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕಾಲವು ಸಾವನ ದಿವಸ. “ತಿಥಿ-ನೇಕೇನ ದಿವಸಶ್ಚಾನ್ದ್ರಮಾನೇ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತ: 1. ಅಹೋರಾತ್ರೇಣ ಚೇಕೇನ ಸಾವನೋ ದಿವಸ: ಸ್ಮೃತ:” 1. 5. ಮೂವತ್ತು ದಿವಸ (ಅಹೋರಾತ್ರ) ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ವರಾಸ (ತಿಂಗಳು). “ತ್ರಿಶತಾ ಸೌರದಿವಸೇ: ಸಾವನ: ಪರಿಕೀರ್ತಿತ:” 1.

ಸಾರ್ವಣಿ ಸಾರ್ವಣಿ (ಪುಂ) ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಮನುಗಳಲ್ಲಿ ಎಂಟನೆಯ ಮನು, ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿಯಾದ ಸಂಜ್ಞಾ ದೇವಿಯ ಪ್ರತಿಬಿಂಬವಾದ ಛಾಯಾದೇವಿಯ ಪುತ್ರ. “ವಿವಸ್ವತಶ್ಚ ದ್ವೇ ಜಾಯೇ ವಿಶ್ವಕರ್ಮಸುತೇ ತುಭೇ 1. ಸಂಜ್ಞಾ ಛಾಯಾ ಚ ರಾಜೇಂದ್ರ ಯೇ ಪ್ರಾಗಭಿಹಿತೇ ತವ 1. ತೃತೀಯಾಂ ಬಡವಾಮೇಕೇ ತಾಸಾಂ ಸಂಜ್ಞಾಸುತಾಸ್ತ್ರಯ: 1. ಯಮೋ ಯಮೋ ಶ್ರಾದ್ಧದೇವಶ್ಚಾಯಾಶ್ಚ ಸುತಾನ್ ಸೃಣು 1. ಸಾರ್ವಣಿಸ್ತಪತೀ ಕನ್ಯಾ ಭಾರ್ಯಾ ಸಂವರಣಸ್ಯ ಯಾ 1. ಅಷ್ಟಮೇಂತರ ಆಯಾತೇ ಸಾರ್ವಣಿರ್ಭವಿತಾ ಮನು:” ಭಾಗಂ ೮-೧೩-೯, ೧೦ 1.



ಸಾಕರ್ಯ ಸಾಕರ್ಯ (ನಂ) ಒಂದೇ ವರ್ಣದಿಂದ ಕೂಡಿರು  
ವಿಕೆ, ಸಮಾನವರ್ಣವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಸರ್ವಸ್ಯ ಭಾವ: "ಅನ್"  
(೪-೧-೧೨೪)। "ಸಾಕರ್ಯಭಾಜಾಂ ಪ್ರನಿಮಾಗತಾಂ ಲಕ್ಷ್ಯಃ  
ಸ್ವರಾಪಾಣ್ಡುತಯಾ ಜ್ಞಾನಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೩-೪೭।

ಸಾವಿತ್ರ ಸಾವಿತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ವಿಷ್ಣು. ಸವಿತಾ  
ದೇವತಾಸ್ಯ "ಅನ್" (೪-೨-೨೪)। 2. ವಸು. 3.  
ಪರಮೇಶ್ವರ. 4. ಸೂರ್ಯ. 5. ಕರ್ಣ. ಸವಿತುರಪತ್ಯಂ  
ಪುಮಾನ್ "ಅನ್" (೪-೧-೧೨)। "ಸೌಜ್ಞವೀತ್ ಮೇಘಗಮ್ಭೀರ-  
ಸ್ವರೇಣ ವದತಾಂ ವರಃ। ಭ್ರಾತಾ ಭ್ರಾತರಮಜಾತಂ ಸಾವಿತ್ರಃ  
ಪಾಕಶಾಂತಿನಿಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೪೬-೮। 6. ಗರ್ಭ.  
ಜನನಕ್ಕೆ ಮೊದಲಿನ ರೂಪ, ಭ್ರೂಣ. (ನಂ) 7.  
ಯಜ್ಞೋಪವೀತ. ಸವಿತಾ ದೇವತಾಸ್ಯ "ಅನ್"  
(೪-೨-೨೪)। (ವಿಂ) 8. ಸೂರ್ಯನ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
ಸವಿತುರಿದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)। 9. ಸೂರ್ಯನ  
ಮಂಡಲದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು. "ಸಾವಿತ್ರಃ ಶಕ್ತುರೇ ವಸೌ"  
ಮೇದಿಂ। "ಯತ್ಸಾವಿತ್ರೇದೀಪಿತಂ ಭೂಮಿಪಾಲೈಃ ಲೋಕಪ್ರೇಷೈಃ ಸಾಧು  
ಶುಭಂ ಚರಿತಮ್" ತಂ ರಾಂ ೧-೪೨।

ಸಾವಿತ್ರಿ ಸಾವಿತ್ರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಾಲ್ವದೇಶದ ರಾಜನಾದ  
ದ್ಯುಮತ್ತೇನರಾಜನ ಪುತ್ರನಾದ ಸತ್ಯವಂತನ ಪತ್ನಿ, ಮದ್ರ  
ದೇಶದ ಅಶ್ವಪತಿರಾಜನ ಪುತ್ರಿ. ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಸೌದೆಯನ್ನು  
ತರಲು ಹೊರಟಿದ್ದ ಸತ್ಯವಂತನೊಡನೆ ತಾನೂ ಹೋಗಿ  
ಅಲ್ಲಿ ಮೃತನಾದ ತನ್ನ ಪತಿಯನ್ನು ಕೊಂಡೊಯ್ಯುತ್ತಿದ್ದ  
ಯಮನೊಡನೆ ಬಹಳ ಸಂವಾದಮಾಡಿ ಅವನನ್ನು ಪ್ರಸನ್ನ  
ನಾಗಿ ಮಾಡಿ ಪತಿಯನ್ನು ಬದುಕಿಸಿ ತನ್ನ ಮಾವನಿಗೆ  
ನೇತ್ರಶಕ್ತಿ ಬರುವಂತೆಯೂ ಶತ್ರುಗಳು ಅಪಹರಿಸಿದ್ದ  
ರಾಜ್ಯ ಲಭಿಸುವಂತೆಯೂ ತನಗೂ ತನ್ನ ತಂದೆಗೂ ಪುತ್ರ  
ಸಂತಾನವಾಗುವಂತೆಯೂ ಅವನಿಂದ ವರವನ್ನು ಪಡೆದು  
ಸತ್ಯವಂತನೊಡನೆ ಸುಖವಾಗಿ ಬಂದು ತನ್ನ ಅತ್ತೆ ಮತ್ತು  
ಮಾವನ ವಿಶ್ವಾಸಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರಳಾದಳು. 2. ಪಾರ್ವತಿ.  
3. ಬ್ರಹ್ಮನ ಪತ್ನಿ. "ಸಾವಿತ್ರಿ ಸತ್ಯವತ್ಪತ್ನಿಯಾಂ ಬ್ರಹ್ಮ-  
ಪತ್ನಿಯುರಪಿ" ಮೇದಿಂ। 4. ಗಾಯತ್ರಿ. 5. ಉಪನಯನ  
ಸಂಸ್ಕಾರ, ಬ್ರಹ್ಮೋಪದೇಶ. ಉಪನಯನವು ಗಾಯತ್ರೀ  
ಮಂತ್ರೋಪದೇಶಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದುದರಿಂದ ಸಾವಿತ್ರೀ  
ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಉಪನಯನ ರೂಪವಾದ ಕರ್ಮದಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷಣ.

ಸಾವಿತ್ರಿವ್ರತ ಸಾವಿತ್ರಿವ್ರತ (ನಂ) ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಕೃಷ್ಣ  
ಚತುರ್ದಶಿಯ ದಿನ ಹೆಂಗಸರು ಆಚರಿಸುವ ಒಂದು ವ್ರತ.  
"ಜ್ಯೇಷ್ಠಕೃಣವತುರ್ದಶ್ಯಾಂ ಸಾವಿತ್ರಿಮರ್ಚಯಂತಿ ಯಾಃ। ವರಮೂಲೇ  
ಸೋಪವಾಸಾ ನ ತಾ ವೇದವ್ಯಮಾನ್ಯುಃ"। "ಜ್ಯೇಷ್ಠೇ ಮಾಸಿ

ವತುರ್ದಶ್ಯಾಂ ಸಾವಿತ್ರಿವ್ರತಮುತ್ತಮಮ್। ಅವೇದವ್ಯಾಯ ಕುರ್ವಂತಿ  
ಸ್ತ್ರೀಃಶ್ರದ್ಧಾಸಮನ್ವಿತಾಃ"।

ಸಾವಿತ್ರಿವ್ರತ ಸಾವಿತ್ರಿವ್ರತ (ನಂ) ಬ್ರಹ್ಮಸೂತ್ರ,  
ಯಜ್ಞೋಪವೀತ. ಸಾವಿತ್ರೀಃ ಗಾಯತ್ರೀಃ: ಉಪದೇಶಕಾಲೇ  
ಧೃತಂ ಸೂತ್ರಮ್।

ಸಾಶಂಸ ಸಾಶಂಸ (ವಿಂ) 1. ಆಸೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಇಚ್ಛೆ  
ಸುವ, ಬಯಸುವ. ಆಶಂಸಯಾ ಸಹ ವರ್ತತೇ। (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ)  
2. ಸಂಪೂರ್ಣ ಭರವಸೆಯಿಂದ ಕೂಡಿ, ಬಹಳ ಆಸೆಯಿಂದ  
ಕೂಡಿ.

ಸಾಶಂಕ ಸಾಶಂಕ (ವಿಂ) ಭಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಶಂಕೆಪಡುವ,  
ಹೆದರುವ. ಆಶಂಕಯಾ ಸಹ ವರ್ತತೇ।

ಸಾಶಂಕ ಸಾಶಂಕ (ಪುಂ) ಕಂಬಳಿ.

ಸಾಶಂಕ ಸಾಶಂಕ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪತ್ನಿಯ ತಾಯಿ. 2.  
ಪತಿಯ ತಾಯಿ. "ಸ್ಯಾಲೋ ವಾರಕೀರೋಷ್ಯ ಸಾಶಂಕಾಃ।  
ಶ್ವಶ್ರುಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಸಾಶಂಕ ಸಾಶಂಕ (ಪುಂ) ವಿಧೇಯತೆಯಿಂದ ಅಂಗ  
ಗಳನ್ನು ಬಗ್ಗಿಸುವುದು, ಎಂಟು ಅಂಗಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ  
ನಮಸ್ಕಾರ. ಅಷ್ಟಾಂಗಗಳಿಂದ ಮಾಡುವ ನಮಸ್ಕಾರ.  
ಅಷ್ಟಾಂಗಿರಾಜಃ ಸಹಿತಃ। ನಮಸ್ಕಾರ ಮಾಡುವಾಗ ಎಂಟು  
ಅಂಗಗಳಿಗೂ ಭಾಸ್ವರ್ತವಾಗಬೇಕು. (1) ತೋಳುಗಳು (2)  
ಕಾಲುಗಳು (3) ಮಂಡಿಗಳು (4) ಎದೆ (5) ಶಿರಸ್ಸು  
(ತಲೆ) (6) ನೇತ್ರಗಳು (7) ಮನಸ್ಸು ಮತ್ತು (8)  
ವಚಸ್ಸು. ಇವು ಅಷ್ಟಾಂಗಗಳು. "ದೋಮ್ಯಾ ಪಙ್ಕ್ತಯಾಂ ಚ  
ಜಾನುಮ್ಯಾಮುರಸಾ ಶಿರಸಾ ದೃಶಾ। ಮನಸಾ ವಚಸಾ ಚೇತಿ  
ಪ್ರಣಾಮೋಷ್ಠಾಙ್ಗ ಇರೀತಿಃ" ವೇದನಾಂ ಆಹ್ನಿಕಂ।

ಸಾಸ ಸಾಸ (ವಿಂ) ಧನಂಸ್ಸನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ, ಬಿಲ್ಲನ್ನು  
ಹಿಡಿದಿರುವ. ಆಸೇನ ಧನುಷಾ ಸಹ ವರ್ತತೇ। "ಸ  
ಸಾಸಿಃ ಸಾಸುಸುಃ ಸಾಸಃ ಯೇಯೇಯಾಯಯಃ" ಕಿರಾಂ  
೧೪-೪।

ಸಾಸುಸು ಸಾಸುಸು (ವಿಂ) ಬಾಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವ.  
ಅಸುನ್ ಸುವಂತಿ ಪ್ರೇರಯಂತಿ ಇತಿ ಅಸುಸುವೋ ಬಾಣಾಃ, ಅಸುಸುಮಿಃ  
ಸಹ ವರ್ತತೇ ಇತಿ ಸಾಸುಸುಃ। "ಸ ಸಾಸಿಃ ಸಾಸುಸುಃ ಸಾಸಃ"  
ಕಿರಾಂ ೧೪-೪।

ಸಾಸುಯ ಸಾಸುಯ (ವಿಂ) 1. ಈರ್ಷ್ಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ,  
ಅಸೂಯೆ ಪಡುವ, ಕರುಬುವ, ಹೊಟ್ಟೆಕಿಚ್ಚು ಪಡುವ.  
ಅಸೂಯಯಾ ಸಹ ವರ್ತತೇ। (ಅವ್ಯಂ) 2. ಅಸೂಯೆಯಿಂದ,  
ಹೊಟ್ಟೆಕಿಚ್ಚಿನೊಡನೆ, ಅಸಹನೆಯೊಡನೆ. "ಮಾ ಗಾ ಇತ್ಯುಪ-  
ಹದಯಾ ಯದಪಿ ಸಾ ಸಾಸುಯಮುಕ್ತಾ ಸಖಿ" ಶಾಕುಂ ೨-೨।



ಸಾಸ್ನಾ ಸಾಸ್ನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗೆದೊಗಲು, ಹಸುಗಳ ಕತ್ತಿ  
ನಿಂದ ಜೋಲಾಡುವ ಚರ್ಮದ ಪದರ. ಸಸ್ತಿ — ಷಸ  
(ಸ್ವಪ್ನೇ) “ನ:” (೩೦ ೩-೧೪)। ನಿಪಾಂ। “ರೋಮನ್ಯ-  
ಮನ್ಯರಚಲದ್ಗುಸಾಸ್ನಮಾಸಾಂ ಚಕ್ರೇ ನಿಮಿಲದಲಸೇಕ್ಷಣಮೌಕ್ಷಕೇಣ”  
ಮಾಘಂ ೪-೬೨। “ಸಾಸ್ನಾ ತು ಗಲಕಮ್ಬಲ:” ಅಮಂ।

ಸಾಹಚರ್ಯ ಸಾಹಚರ್ಯ (ನಂ) 1. ಜೊತೆಯಲ್ಲಿರುವುದು,  
ಸಂಗಡ ಓಡುವುದು, ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುವುದು.  
ಸಹಚರಸ್ಯ ಭಾವ: ಕರ್ಮ ವಾ — “ಽಪ್ಯಜ್” (೪-೧-೧೨೪)।  
“ಮಧುಶ್ಚ ತೇ ಮನ್ಮಥ ಸಾಹಚರ್ಯದಸಾವನುಕ್ತೋಽಪಿ ಸಹಾಯ ಏವ”  
ಕುಮಾಂ ೩-೨೧। 2. ಯಾವಾಗಲೂ ಜೊತೆಯಲ್ಲೇ ಇರು  
ವುದು, ನಿರಂತರ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿರುವುದು. “ತಸ್ಯಾ:  
ಸ್ಪೃಷ್ಟೇ ಮನುಜಪತಿನಾ ಸಾಹಚರ್ಯಾ ಇಹ ಸ್ತೇ ಮಾಙ್ಗಲ್ಯೋರ್ಗವಲಯಿನಿ  
ಪುರ: ಪಾವಕಸ್ಯೋಚ್ಚಿತ್ತಸ್ಯ” ರಘುಂ ೧೬-೮೭।

ಸಾಹಚರ್ಯನಿಯಮ ಸಾಹಚರ್ಯನಿಯಮ (ಪುಂ) ಸರ್ವದಾ  
ಜೊತೆಯಲ್ಲೇ ಇರಬೇಕೆಂಬ ಒಂದು ಕಟ್ಟಳೆ, ಕಟ್ಟುಪಾಡು.  
ಸಾಹಚರ್ಯಸ್ಯ ನಿಯಮ:। ಧೂಮವಿದ್ದಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಯೂ ಇರ  
ಬೇಕು ಎಂಬ ಧೂಮ ಮತ್ತು ಅಗ್ನಿ ಇವೆರಡರ  
ಸಾಹಚರ್ಯವು ಅವಶ್ಯವಾಗಿರುವುದು. ಇದೇ ಸಾಹಚರ್ಯ  
ನಿಯಮ. ಇದೇ ವ್ಯಾಖ್ಯೆ. “ಯತ್ರ ಧೂಮಸ್ತತ್ರಾಗ್ನಿರಸ್ತಿ  
ಸಾಹಚರ್ಯನಿಯಮೋ ವ್ಯಾಪ್ತಿ:” ತಂ ಸಂ।

ಸಾಹಯ ಸಾಹಯ (ವಿಂ) ಸಹನೆಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡು  
ವವನು, ತಾಳ್ಮೆಯನ್ನು ಮೂಡಿಸುವವನು. ಷಹ (ಮರ್ಷಣೆ)  
+ ಣಿಚ್ “ಶ:” (೩-೧-೧೩೮)।

ಸಾಹಸ ಸಾಹಸ (ನಂ) 1. ದಂಡೋಪಾಯ, ಸಾಮ ಮೊದ  
ಲಾದ ನಾಲ್ಕು ಉಪಾಯಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಸಹಸಿ ಬಲ  
ಭವಮ್ “ಅಞ್” (೪-೩-೪೨)। ಸಹಸಾ ಬಲೇನ ನಿರ್ವೃತ್ತಮ್  
“ಅಞ್” (೪-೨-೬೮) ಇತಿ ವಾ। 2. ಸುಲಿಗೆ, ದರೋಡೆ.  
“ಪೇಶುನ್ಯ ಸಾಹಸಂ ದ್ರೋಹ ಇರ್ಷ್ಯಾಸುಯಾರ್ಥದ್ವೇಷಣಮ್। ವಾಗ್ದಂಡಜಂ ಚ  
ಪಾರುಷ್ಯಂ ಕ್ರೋಧಜೋಽಪಿ ಗಣೋಽಢಕ:” ಮನುಂ ೭-೪೮।  
3. ದುಡುಕು. “ತೃಣಮಿವ ತತ: ಪ್ರಾಣಾನ್ ಮೋಕ್ಷತು ಮನೋ ವಿಘೃತಂ  
ತಯಾ ಕಿಮಪರಮತೋ ನಿರ್ವ್ಯಥಂ ಯತ್ಕರಾರ್ಪಣಸಾಹಸಮ್” ಮಾಲತೀಂ  
೯-೧೦। 4. ಧೈರ್ಯ, ಧೃಷ್ಟತನ. 5. ಬಲಾತ್ಕಾರ  
ದಿಂದ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ, ತನ್ನ ಶಕ್ತಿಯನ್ನೂ ಮೀರಿ  
ನಡೆಸುವ ಕಾರ್ಯ. “ವೇಗರೋಧಾತ್ ಕ್ಷಯಾಚ್ಚೇವ ಸಾಹಸಾ-  
ದ್ವಿಪಮಾಶನಾತ್। ತ್ರಿದೋಷೋ ಜಾಯತೇ ಯಕ್ಷ್ಮಾ ಗದೋ ಹೇತುಚತುಷ್ಟ-  
ಯಾತ್”। 6. ಕ್ರೌರ್ಯ, ದಯೆಯಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಪರರನ್ನು  
ಪೀಡಿಸುವಿಕೆ, ವಿರುದ್ಧ ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ. “ತವ ಗೋಪ್ಯತೇ  
ಕಿಮಿವ ಕರ್ತುಮಿದಂ ನ ಸಹಾಸ್ಮಿ ಸಾಹಸಮಸಾಹಸಿಕೀ” ಮಾಘಂ

೯-೪೯। 7. ದಂಡನೆ, ಶಿಕ್ಷೆ, ಜುಲ್ಮಾನೆ. 8. ವಿಮರ್ಶಿಸದೆ  
ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ, ವಿವೇಚನೆಯಿಲ್ಲದೆ ನಡೆಸುವ ಕೆಲಸ.  
“ಯದೇತತ್ ಸಾಹಸಂ ತಾತ ಯದಿ ವಾ ದುಷ್ಟಕೃತಂ ಕೃತಮ್। ಪ್ರಿಯಂ  
ವಾಪ್ಯಪ್ರಿಯಂ ವಾ ತೇ ವಾಗುಕ್ತಾ ನ ಮೃಘಾ ಭವೇತ್” ಭಾಂ ಆದಿಂ।  
9. ದೋಷವೆಂದು ತಿಳಿಯದೆ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ,  
ಅಪರಾಧವೆಂದು ಅರೋಪಿಸದೆ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ.  
“ಮನುಷ್ಯಮಾರಣಂ ಸ್ತೇಯಂ ಪರದಾರಾಭಿಮರ್ಷಣಮ್। ಪಾರುಷ್ಯಮನೃತಂ  
ಚೈವ ಸಾಹಸಂ ಪञ್ಚಧಾ ಸ್ಮೃತಮ್”। 10. ಅಹರ್ಯ, ನೀಚ  
ಕಾರ್ಯ, ಪಾಪಕಾರ್ಯ. “ಸಾಹಸಂ ತು ಬಲಾತ್ಕಾರಕೃತಕಾರ್ಯಂ  
ದಮೇಽಪಿ ಚ” ಮೇದಿಂ। “ಸಾಹಸಂ ತು ದಮೇ ದುಷ್ಕರಕರ್ಮಣಿ।  
ಅವಿಮೃಶ್ಯ ಕೃತೌ ಧಾಷ್ಠ್ಯೇ” ಹೇಮಂ।

ಸಾಹಸಿಕ ಸಾಹಸಿಕ (ವಿಂ) 1. ಬಲಾತ್ಕಾರ ಮಾಡು  
ವವನು, ಒತ್ತಾಯ ಮಾಡುವವನು, ನಿರ್ಬಂಧಿಸುವವನು,  
ಹಿಂಸಿಸುವವನು. ಸಹಸಾ ಬಲೇನ ವರ್ತತೇ “ಠಕ್” (೪-೪-೨೭)।  
“ಸ್ತೇನಾ: ಸಾಹಸಿಕಾ ಭೃತಾ: ಕಿತವಾ ಯೋಧಕಾಶ್ಚ ಯೇ। ಅಸಾಕ್ಷಿ-  
ಣಸ್ತು ತೇ ದುಷ್ಠಾ: ತೇಷು ಸತ್ಯಂ ನ ವಿಧೃತೇ” ವ್ಯವಹಾರತತ್ವಮ್।  
2. ಜೋರ, ಕಳ್ಳ, ಪ್ರಾಣಾಪಾಯವನ್ನು ಲಕ್ಷಿಸದೆ  
ಕಾರ್ಯಮಾಡುವವನು. ಸಹಸಾ ವ್ಯಾಪ್ರಿಯತೇ — “ಠಕ್”  
(೪-೪-೨೭)। 3. ಧೈರ್ಯಶಾಲಿ, ಶಕ್ತಿಮೀರಿ ಸಾಹಸ  
ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವವನು. “ನಿರ್ವ್ಯಥವಿಷಮವ್ಯವಸಾಯ-  
ನಿಷ್ಠಾಪಿತಪ್ರಚಂಡಪಾಞ್ಡದೋದೃಢಸಾಹಸ: ಸಾಹಸಿಕ: ಸ್ವಲ್ಪೇಷ:”  
ಮಾಲತೀಂ ೬। 4. ಸುಲಿಗೆ ಮಾಡುವವನು, ದರೋಡೆ  
ಮಾಡುವವನು. “ನೋಪೇಕ್ಷೇತ ಕ್ಷಣಮಪಿ ರಾಜಾ ಸಾಹಸಿಕಂ  
ನರಮ್” ಮನುಂ ೮-೩೪೪।

ಸಾಹಸಿಕಯ ಸಾಹಸಿಕೈ (ನಂ) 1. ಸಾಹಸಿಕನ ಕಾರ್ಯ,  
ಶಕ್ತಿಮೀರಿ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ. ಸಾಹಸಿಕಸ್ಯ ಕರ್ಮ “ಽಪ್ಯಜ್”  
(೪-೧-೧೨೪)। “ಕ್ರಾಮನ್ ದಂತೀ ದಂತಿನ: ಸಾಹಸಿಕಯಾತ್  
ಇಷಾದೃಣಿ ಮೃತ್ಯುಶಯ್ಯಾತಲಸ್ಯ” ಮಾಘಂ ೧೮-೪೩। 2.  
ಒತ್ತಾಯಪಡಿಸುವುದು, ಬಲಾತ್ಕರಿಸುವುದು. 3. ಧೈರ್ಯ  
ದಿಂದ ಕೆಲಸಮಾಡುವುದು.

ಸಾಹಸಿನ್ ಸಾಹಸಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಕಠಿನ್, ನಿರ್ದಯ, ಕ್ರೂರ.  
ಸಾಹಸಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ — “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೪)। 2. ಶಕ್ತಿ  
ಮೀರಿ ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವವನು. 3. ಯೋಚಿಸದೆ  
ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವವನು, ವಿಮರ್ಶೆಯಿಲ್ಲದೆ ಕೆಲಸ ಮಾಡು  
ವವನು. 4. ಧೈರ್ಯದಿಂದ ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವವನು.

ಸಾಹಸ ಸಾಹಸ (ಪುಂ) 1. ಸಾವಿರ ಸೈನಿಕರಿಂದ ಬಲಶಾಲಿ  
ಯಾದ ರಾಜ. ಸಹಸ “ಅಞ್” (೪-೨-೧೦೩)। (ನಂ)  
2. ಸಾವಿರಗಳ ಗುಂಪು, ಸಾವಿರಗಳ ರಾಶಿ. ಸಹಸ್ರಾಣಾಂ



ಸಮೂಹ: "ಅನ್" (೪-೨-೩೮)। "ಏತಾವಂತಿ ಚ ದಾಸಾನಾಂ ಸಾಹಸ್ರಾಪ್ಯುತ ಸಂತಿ ಮೇ" ಭಾಂ 1. ಒಂದು ಸಾವಿರ. ಸಹಸ್ರ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅನ್" (ವಿಂ) 4. ಒಂದು ಸಾವಿರ ದಿಂದ ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಹಸ್ರಣ ಕ್ರೀತಮ್ "ಅನ್" (೪-೨-೨೭)। 5. ಸಾವಿರದ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸಹಸ್ರಸ್ಯ ಇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦)।

**ಸಾಹಾಯಕ ಸಾಹಾಯಕ** (ನಂ) ಸಾಹಾಯ್ಯ, ಸಹಾಯ ಕರ್ಮ, ಸಹಾಯನ ಕಾರ್ಯ. ಸಹಾಯಸ್ಯ ಭಾವ: ಕರ್ಮ ವಾ "ಬುನ್" (೪-೨-೧೩೨)। "ಮಹಾಭರತಭುಗನಶಿರ: ಸಹಸ್ರ-ಸಾಹಾಯಕವ್ಯಗ್ರಭುಜಂ ಪ್ರಸನ್ನೇ" ಮಾಘಂ ೩-೨೫।

**ಸಾಹಾಯ್ಯ ಸಾಹಾಯ್ಯ** (ನಂ) 1. ನೆರವು, ಒತ್ತಾಸೆ. ಸಹಾಯಸ್ಯ ಭಾವ: ಕರ್ಮ ವಾ "ಏನ್" (೪-೨-೧೨೪)। 2. ಸ್ನೇಹ, ಮೈತ್ರಿ.

**ಸಾಹಿತ್ಯ ಸಾಹಿತ್ಯ** (ನಂ) 1. ಗದ್ಯಪದ್ಯಾತ್ಮಕ ಕಾವ್ಯ, ಹಿತಾಹಿತಬೋಧಕ ವಾಕ್ಯಜಾಲ, ನಾನಾಶಾಸ್ತ್ರಗಳಿಂದ ಮೈಗೂಡಿರುವ ವಾಚ್ಛಯ. ಹಿತೇನ ಸಹ ವರ್ತತೇ ಇತಿ ಸಹಿತಮ್—ಸಹಿತಾನಾಂ (ಹಿತಾಹಿತೌಪಯಿಕವಿಷಯಾಣಾಂ) ಭಾವ: "ಏನ್" (೪-೨-೧೨೪)। ಸಾಹಿತ್ಯಪ್ರಧಾನಂ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಸಾಹಿತ್ಯ-ಶಾಸ್ತ್ರಮ್। ಕಾವ್ಯಗಳ ರಚನೆಗೆ ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಛಂದಃಶಾಸ್ತ್ರ "ಕಾವ್ಯಶೋಭಾಕರಾನ್ ಧರ್ಮನಿಲಕ್ಷಾರಾನ್ ಪ್ರವಕ್ಷತೇ" ಎಂದು ಕಾವ್ಯಕ್ಕೆ ಸೊಬಗನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ ಅಲಂಕಾರ ಶಾಸ್ತ್ರ "ಏಕ: ಶಬ್ದ: ಸಮ್ಯಗ್ಜಾತ: ಸುಪ್ರಯುಕ್ತ: ಸ್ವರ್ಗೋ ಲೋಕೇ ಕಾಮಧುಕ್ ಭವತಿ" ಎಂಬ ಶ್ರುತಿಯಿಂದ ಕವಿಗಳು ರಚಿಸುವ ಕಾವ್ಯ ಗಳಲ್ಲಿ ಶಬ್ದಸಾಧುತ್ವಕ್ಕಾಗಿ ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರ ಪದಾರ್ಥ ಗಳ ಜ್ಞಾನೋಪಯೋಗಿತರ್ಕಶಾಸ್ತ್ರ ಭರತನಾಟ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ ಕೌಟಿಲ್ಯನ ಅರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರ ಮುಂತಾದ ನಾನಾ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳ ಮೇಳನವೇ ಸಾಹಿತ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ. ಅದರಿಂದ ಸಹಿತಾನಾಂ ಭಾವ: ಸಾಹಿತ್ಯಮ್ ಎಂಬ ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಯು ಸಂಗತವಾಗುವುದು. "ಕಾವ್ಯಂ ಯಶಸೇಽಂಕೃತೇ ವ್ಯವಹಾರವಿಧೇ ಶಿವೇತರಕ್ಷತಯೇ। ಸದೃಶ: ಪರಿನಿವೃತಯೇ ಕಾಂತಾಸಮ್ಮಿತಯೋಪದೇಶಯುಜೇ" (ಕಾವ್ಯಪ್ರಂ) "ಕಾವ್ಯಮಾನಂದಾಯ ಯಶಸೇ ಕಾಂತಾತುಲ್ಯತಯೋಪದೇಶಾಯ ಚ" (ಹೇಮಚಂದ್ರ:) ಎಂಬ ವಾಕ್ಯಪ್ರಮಾಣದಿಂದ ಕಾವ್ಯವು ಅನೇಕ ಶ್ರೇಯಃಸಾಧನವಾಗಿರುವುದರಿಂದಲೂ ರಾಮಾದಿವದ್ವಿ-ತವ್ಯಮ್ ನ ರಾವಣಾದಿವತ್ ಎಂದು ಹಿತಾಹಿತಬೋಧಕ ವಾಗಿರುವುದರಿಂದಲೂ ಸಾಹಿತ್ಯಶಾಸ್ತ್ರವು ಹಿತಾಹಿತೌ ಪಯುಕ್ತ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಒಳಗೊಂಡು ಜನಜೀವನವನ್ನು ಸುಸಂಸ್ಕೃತವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಲು ಬಹಳ ಉಪಯುಕ್ತ ವಾಗಿರುವುದು. ದೃಶ್ಯಶ್ರವ್ಯಾದಿ ನಾನಾವಿಧ ಕಾವ್ಯಸ್ವರೂಪ ನಿರೂಪಣಪರವಾದ ಅಲಂಕಾರಶಾಸ್ತ್ರವು ಸಾಹಿತ್ಯಶಾಸ್ತ್ರದ

ಶರೀರ. "ತ: ಶರೀರಂ ಚ ಕಾವ್ಯಾನಾಮಲಕ್ಷಾರಾಶ್ಚ ದರ್ಶಿತಾ:। ಶರೀರಂ ತಾವದಿಷ್ಟಾರ್ಥವ್ಯವಕ್ಷಿತ್ತಾ ಪದಾವಳಿ" ಕಾವ್ಯಾಂ ೧-೧೦। ವ್ಯಾಕರಣದಲ್ಲಿ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯ. ತರ್ಕ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಅರ್ಥಕ್ಕೆ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯ. ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಇವೆರ ಡಕ್ಕೂ ಸಮವಾದ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯವಿರುವುದು. ಸಾಹಿತ್ಯಮ ಸಾಹ್ಯಮ್ ಇವೆಲ್ಲಾ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳು. "ಬ್ರಹ್ಮೈವ ರಸ:। ರಸೋ ವೇ ಸ:" ಎಂಬ ಶ್ರುತಿವಾಕ್ಯಗಳಿಂದ ರಸವು ಕಾವ್ಯಗಳ ಜೀವಾತುಮೆಂದು ಉಕ್ತವಾಗಿರುವುದ ರಿಂದ ರಸವೂ ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಧಾನವಾಗಿರಬೇಕು. ಮನುಷ್ಯನಾದವನು ವಿವೇಕದಿಂದ ಬಾಳಬೇಕಾದರೆ ವಿದ್ಯಾ ವಂತನಾಗಬೇಕು. ಇದು ಕಾವ್ಯಗಳ ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಯಿಂದ ಮಾತ್ರ ಸಾಧ್ಯ. "ನರತ್ವಂ ದುರ್ಲಭಂ ಲೋಕೇ ವಿद्या ತತ್ರ ಸುದುರ್ಲಭಾ। ಕವಿತ್ವಂ ದುರ್ಲಭಂ ತತ್ರ ಶಕ್ತಿಶ್ಚ ತತ್ರ ಚ ದುರ್ಲಭಾ। ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿದುರ್ಲಭಾ ತತ್ರ ವಿವೇಕಶ್ಚ ತತ್ರ ದುರ್ಲಭ:" ಎಂಬ ವಚನ ಗಳಿಂದ ಮನುಷ್ಯನ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ವಿವೇಕವು ಪ್ರಧಾನ ವಾದುದು.

ಸಾಹಿತ್ಯಶಾಸ್ತ್ರಾಲಂಕಾರಾದಿಗಳನ್ನು ಶ್ರುತಿಗಳಲ್ಲೂ ನಾವು ಕಾಣಬಹುದು. "ಅಭ್ರಾತೇವ ಪುಂಸ ಎತಿ ಪ್ರತಿವಿ-ಗರ್ತಾಶಿಗಿವ ಸನಯೇ ಧನಾನಾಮ್। ಜಾಯೇವ ಪತ್ಯ ಉಶತೀ ಸುವಾಸಾ ಉಪಮಾಲಂಕಾರವನ್ನೂ "ಪಂಚಸ್ರೋತೋಽಮ್ಬು ಪಂಚಯೋನ್ಯುಗ್ರ-ವಕ್ರಾಂ ಪಂಚಪ್ರಾಣೋಮಿ ಪಂಚಬುದ್ಧಿವಾದಿಮ್ಲಾಮ್। ಪಂಚಾವರ್ತಾ ಪಂಚದು:ಖಿಪವೇಗಾಂ ಪಂಚಾಶ್ವದೇವಾಂ ಪಂಚಪರ್ಮಿಮಿಮ:" ಎಂಬ ಶ್ಲೋಕಶ್ಲೋಕರೋಪನಿಷತ್ತಿನ ಮಂತ್ರದಲ್ಲಿ ರೂಪಾಲಂಕಾರ ವನ್ನೂ ನಾವು ಕಾಣಬಹುದು. ಅದುದರಿಂದ ವೇದ ಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಅಲಂಕಾರಗಳು ಪ್ರದರ್ಶಿತವಾಗಿರುವುದ ರಿಂದಲೂ ಆಗ್ನೇಯಪುರಾಣದಲ್ಲಿ "ಕಾವ್ಯಸ್ಯ ನಾಡಕಾಡೇಶ್ಚ ಅಲಕ್ಷಾರಾನ್ ವದಾಮ್ಯಹಮ್" ಎಂದು ಉಕ್ತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಸಾಹಿತ್ಯಶಾಸ್ತ್ರಪ್ರಸ್ತಾವವಿರುವುದ ರಿಂದಲೂ ಸಾಹಿತ್ಯಶಾಸ್ತ್ರವು ಅನಾದಿಯೆಂದು ನಾವು ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ. "ಅತ ಎವ ಮಹಾಕಾವ್ಯಂ ತತ್ಕರ್ತಾ ಚ ಮಹಾಕವಿ:। ವಾಗ್ವೈದಗವ್ಯಪ್ರಧಾನೇಽಪಿ ರಸ ಎವಾತ್ರ ಜೀವಿತಮ್" ಎಂದು ರಸಕ್ಕೆ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. 2. ಜೊತೆ ಯಲ್ಲಿರುವುದು, ಸಂಗಡ ಇರುವುದು. "ಏಕೇನಾಪಿ ಸುಪುತ್ರೇಣ ಸಿಹಿ ಸ್ವಪಿಪಿತಿ ನಿರ್ಮಯಮ್। ಸಹೈವ ದಶಭಿ: ಪುತ್ರೈ: ಭಾರಂ ವಹತಿ ಗರ್ವಿಣಿ" ಇಲ್ಲಿ ವರ್ತಮಾನಪದದ ಅಧ್ಯಾಹಾರ ದಿಂದ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿರುವುದು ಎಂದು ಸಾಹಿತ್ಯಪದದ ಅರ್ಥ.



3. ಏಕಕಾರಕಾನ್ವಯದಿಂದ ಸಮಾನವಾದ ಏಕಕ್ರಿಯಾನ್ವಯ ಹೊಂದಿರುವುದು. "ತುಲ್ಯವದೇಕಕ್ರಿಯಾನ್ವಯವತ್ವಮ್" ।  
 "ಸಾಹಿತ್ಯಪಾಠೋನಿಧಿಮನ್ಯನೋತ್ಯಂ ಕಾವ್ಯಾಮೃತಂ ರಕ್ತತ ಹೇ ಕವೀಂದ್ರಾಃ । ಯತಸ್ಯ ದೇಶಾ ಇವ ಲುಠನಾಯ ಕಾವ್ಯಾರ್ಥಚೋರಾಃ ಪ್ರಗುಣಿಮವಂತಿ" ॥ "ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತಸಾಹಿತ್ಯಕಲಾವಿಹೀನಃ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಪಶ್ಯಃ ಪುಂಜವಿಷಾಣಹೀನಃ" ॥ ಎಂದು ಸಾಹಿತ್ಯಶಾಸ್ತ್ರಾಭ್ಯಾಸದಿಂದಲೇ ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ವಿವೇಕದ ಜೀವನ ಲಭಿಸುವುದೆಂದು ಅಭಿಯುಕ್ತರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ.

**ಸಾಹ್ಯ ಸಾಹ್ಯ** (ನಂ) 1. ಜೊತೆಯಲ್ಲಿರುವುದು, ಸಂಗಡ ಇರುವುದು. ಸಹಸ್ಯ ಭಾವ: "ಷ್ಯತ್" (೪-೧-೧೨೪) ।  
 "ವಿಗ್ರಹೇಽಸ್ಮಿನ್ ಭವಾನ್ ಸಾಹ್ಯಂ ಮಮ ದಾತುಮಿಹಾರ್ಹಸಿ" ಮಾಂ ।  
 2. ಸಾಹಾಯ್ಯ, ಒತ್ತಾಸೆ, ನೆರವು. 3. ಸಾಹಿತ್ಯ.

**ಸಾಹ್ಯಕೃತ್ ಸಾಹ್ಯಕೃತ್** (ವಿಂ) ಸಾಹಾಯ್ಯ ಮಾಡುವವನು, ನೆರವು ನೀಡುವವನು. ಸಾಹ್ಯಂ ಕರೋತಿ-ಙ್ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಕಿವಿಪ್" (೩-೨-೬೧) ।

**ಸಾಹ್ಯಯ ಸಾಹ್ಯಯ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಕಾಳಗ, ಟಿಗರು ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಜೂಜು. ಆಹ್ವಯೇನ ಸಹ ವರ್ತತೆ ।  
 "ಮೇಷಾದಿಪ್ರಾಣಿಭೂತೇ ಸ್ಯಾತ್ ಸಾಹ್ಯಯಶ್ಚ ಸಮಾಹ್ವಯಃ" ಶಬ್ದರಂ ।  
 (ವಿಂ) 2. ಹೆಸರಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಹೆಸರನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ.

**ಸಿಹ ಸಿಂಹ** (ಪುಂ) 1. ಮೃಗಗಳ ಅಧಿಪತಿ, ಕೇಸರಿ. ಸಿಂಹತಿ - ಷಿವ (ಕರಣ) "ಕಃ" ಛಾತೋರನ್ತ್ಯಸ್ಯ ಹಕಾರಃ ನುಮ್ ಚ (೩೦ ೪-೬೨) । ಹಿನಸ್ತಿ-ಹಿಸಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । ಪುಷಿಂ । ಇತಿ ವಾ । "ಭವೇದ್ವರ್ಣಗಿಮಾಢ್ವಸಃ ಸಿಹೋ ವರ್ಣವಿಪರ್ಯಯಾತ್" । "ಸಿಹಾನಾಮಪಿ ಹಂತಾರಂ ಸಿಹ-ವಕ್ತ್ರವಿಮೂಷಣಃ" ಯಾದಂ ೧೬-೬ । "ಸಿಹೋ ಬಲಿ ದ್ವಿರದ-ಕುಂಜರಮಾಸಂಭೋಜಿ ಸಂವತ್ಸರೇಣ ಕುಸ್ತೇ ರತಿಮೇಕವಾರಮ್ । ಪಾರಾವತಃ ಖಲು ಶಿಲಾಕಣಮಾತ್ರಮಾಸಂಭೋಜಿ ಕಾಮಿ ಭವೇದನುದಿನಂ ವದ ಕೋತ್ರ ಹೇತುಃ" ? । 2. ಸಿಂಹರಾಶಿ, ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ 12 ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ 5ನೆಯ ರಾಶಿ. 3. (ಸಮಾಸಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ) ಉತ್ತಮ, ಶ್ರೇಷ್ಠ. "ಏಷ ಸಾಂಪ್ರಾಮಿಕೋ ನ್ಯಾಯಃ ಏಷ ಧರ್ಮಃ ಸನಾತನಃ । ಇಯಂ ಹಿ ರಘುಸಿಹಾನಾಂ ವೀರಚಾರಿತ್ರ-ಪದ್ಧತಿಃ" ೩೦ ರಾಂ ೪-೨೨ । "ಸಿಹಃ ಕಂಠೀರವೇ ರಾಶೌ ಸತ್ತಮೇ ಚೋತ್ತರಸ್ಥಿತಃ" ಮೇದಿಂ ।

**ಸಿಹತಲ ಸಿಂಹತಲ** (ಪುಂ) ಅಂಜಲಿ, ಬೊಗಸೆ, ತೆರೆದು ಜೋಡಿಸಿದ ಎರಡು ಹಸ್ತಗಳ ಸಂಪುಟ. ಸಿಹಸ್ಯೇವ ತಲಮಸ್ಯ ।

**ಸಿಹದ್ವಾರ ಸಿಂಹದ್ವಾರ** (ನಂ) ಗೃಹದ ಪ್ರವೇಶದ್ವಾರ, ಮನೆಯ ಪ್ರಧಾನವಾದ ಬಾಗಿಲು.

**ಸಿಹವನಿ ಸಿಂಹಧ್ವನಿ** (ಪುಂ) 1. ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ವೀರರ ಶಬ್ದ, ಸಿಂಹನಾದಕ್ಕೆ ಸಮಾನವಾದ ವೀರರ ಶಬ್ದ. ಸಿಹಸ್ಯೇವ ವನಿಃ । 2. ಸಿಂಹದ ಗರ್ಜನೆ. "ದೃಷ್ಟಃ ಕಥಂಚಿದ್ಗವಯ-ವಿವಿಗ್ನೇರಸೋಽಸಿಹವನಿರನ್ನನಾದ" ಕುಮಾಂ ೧-೪೬ । -ನಾದಃ -ನಾದಃ. "ಧ್ವೇಷಾ ತು ಸಿಹನಾದಃ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ ।

**ಸಿಹಪುಂಜ ಸಿಂಹಪುಂಜ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನರಿಬಾಲದ ಹುಲ್ಲು. 2. ನರಿಹೊನ್ನೆ ಗಿಡ.

**ಸಿಹಯಾನಾ ಸಿಂಹಯಾನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾರ್ವತಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

**ಸಿಹಲ ಸಿಂಹಲ** (ಪುಂ) 1. ಸಿಂಹಳ ದೇಶ, ಸಿಲೋನ್ ದೇಶ. ಇದೊಂದು ದ್ವೀಪ. (ಪಂ ೪೦ ೪೦) 2. ಸಿಂಹಲ ದ್ವೀಪದ ಜನರು. (ನಂ) 3. ತಗರ. 4. ಹಿತ್ತಾಳಿ. 5. ಮರದ ತೊಗಟೆ.

**ಸಿಹವಾಹನ ಸಿಂಹವಾಹನ** (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ, ಮಹಾದೇವ. -ವಾಹಿನಿ-ವಾಹಿನೀ. ಪಾರ್ವತಿ, ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

**ಸಿಹಸಂಹನ ಸಿಂಹಸಂಹನ** (ವಿಂ) 1. ಸರ್ವಾಂಗಸುಂದರ ರೂಪವುಳ್ಳವನು, ಸುಂದರವಾದ ಅಂಗ ಮತ್ತು ಆಕಾರ ವುಳ್ಳವನು. ಸಿಹಂ ಶ್ರೇಷ್ಠಂ ಸಂಹನಂ ಯಸ್ಯ । "ವರಾಹ-ರೂಪೋಪೇತೋ ಯಃ ಸಿಹಸಂಹನನೋ ಹಿ ಸಃ" ಅಮಂ । (ನಂ) 2. ಸಿಂಹವನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವುದು. ಸಿಹಸ್ಯ ಸಂಹನಮ್ ।

**ಸಿಹಾಲೋಕನ ಸಿಂಹಾಲೋಕನ** (ನಂ) ಸಿಂಹದಂತೆ ಹಿಂತಿರುಗಿ ನೋಡುವುದು. ಸಿಂಹವು ನಡೆದಾಡುವಾಗ ಸ್ವಲ್ಪ ದೂರ ಹೋಗಿ ಹಿಂದೆ ನೋಡಿಕೊಂಡು ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವುದು ಅದರ ಸ್ವಭಾವ. ಅದರಂತೆಯೇ ಮನುಷ್ಯನು ಹಿಂದೆ ತಾನು ಮಾಡಿದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮತ್ತೆ ಪರಿಶೀಲಿಸಿ ಮುಂದಿನ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರವೃತ್ತನಾಗುವನು. ಈ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ "ಸಿಂಹಾಲೋಕನ" ನ್ಯಾಯವು ಪ್ರವೃತ್ತವಾಗುವುದು.

**ಸಿಹಾಸನ ಸಿಂಹಾಸನ** (ನಂ) ಸುವರ್ಣ (ಚಿನ್ನ) ದಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಸಿಂಹಾಕಾರದ ರಾಜನ ಆಸನ. ಸಿಹಾಕಾರ-ಮಾಸನಮ್ ಸಿಹ ಇವಾಸನಮ್ ವಾ । "ನೃಪಾಸನಂ ತು ಯದ್ಭದ್ರಾಸನಂ ಸಿಹಾಸನಂ ತು ತತ್ । ಹೈಮಮ್" ಅಮಂ ।

**ಸಿಹಾಸ್ಯ ಸಿಂಹಾಸ್ಯ** (ಪುಂ) ಅಡುಸೋಗಿ. ಸಿಹಃ ಆಸ್ಯಮಸ್ಯ ।  
**ಸಿಹಿಕಾ ಸಿಂಹಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಾಹುವಿನ ತಾಯಿ. -ಸುತಃ -ಸುತಃ, -ಸುತುಃ -ಸೂನುಃ. (ಪುಂ) ರಾಹು.

**ಸಿಹಿ ಸಿಂಹೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಸಿಂಹ. ಸಿಹ "ಙೀಷ್" (೪-೧-೬೩) । 2. ರಾಹುವಿನ ತಾಯಿ ಸಿಂಹಿಕೆ. 3. ಅಡು ಸೋಗಿ. 4. ಬದನೆಗಿಡ.



ಸಿಕತಾ ಸಿಕತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮರಳು ಮಿಶ್ರವಾದ ಭೂಮಿ.

ಸಿಕ (ಸೆವನೆ) "ಅತಚ್" ಬಾಹುಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ ಬಂ ವಂ)

2. ಮರಳು, ಪುಲಿನ. "ಸಿಕತಾ ಸ್ತ್ರೀ ಸಿಕತೀಲೆ ವಾಲುಕಾಯಾಂ ತು ಭೂಮಿನಿ" ಮೇದಿಂ. "ಲಭೇತ ಸಿಕತಾಸು ತೇಲಮಪಿ ಯತನತ: ಪಿಡಯೇತ್" ಮರ್ತುಂ ೧-೫. (ವಿಂ) 3. ಮರಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪ್ರದೇಶ. ಸಿಕತಾ: ಸನ್ಯತ್ರ "ಅಣ್" (೫-೨-೧೦೪). ಅಣಿ ಲುಪ್ (೫-೨-೧೦೫). "ಸಿಕತಾ ಸ್ತ್ರೀ ಸಿಕತೀಲೆ ವಾಲುಕಾಯಾಂ ತು ಭೂಮಿನಿ" ಮೇದಿಂ.

ಸಿಕತಾಮಯ ಸಿಕತಾಮಯ (ನಂ) 1. ಮರಳಿನಿಂದ ತುಂಬಿದ ದಡ, ತೀರ. ಸಿಕತಾನಾಂ ವಿಕಾರ: "ಮಯಟ್" (೪-೩-೪೩).

2. ಮರಳುದಿಣ್ಣೆ.

ಸಿಕತಾವತ್ ಸಿಕತಾವತ್ (ವಿಂ) ಮರಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪ್ರದೇಶ. ಸಿಕತಾ: ಸನ್ಯತ್ರ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೧೦೫).

ಸಿಕತೀಲ ಸಿಕತೀಲ (ವಿಂ) ಮರಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪ್ರದೇಶ.

ಸಿಕತಾ: ಸನ್ಯತ್ರ — "ಇಲಚ್" (೫-೨-೧೦೫).

ಸಿಕ್ತ ಸಿಕ್ತ (ವಿಂ) 1. ಸೇಚನೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಿಂಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಪಿಚ (ಕರಣ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). "ಸಿಕ್ತಾ ಇವಾಮೃತಸೇನ ಮುಹುರ್ಜನಾನಾಂ ಕಲಾಂತಿಚ್ಚಿದೋ ವನವನಸ್ಪತಯ-ಸ್ತದಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ ೫-೧೬. 2. ಸ್ನಾನಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸಿಕ್ತಾಯಾ: ಕ್ಷಣಮಭಿಪಿಚ್ಯ ಪೂರ್ವಮನ್ಯಾಮನ್ಯಸ್ಯಾ: ಪ್ರಣಯವತಾ ವತಾಬಲಾಯಾ:" ೮-೪೩.

ಸಿಕ್ತವತ್ ಸಿಕ್ತವತ್ (ವಿಂ) ಸೇಚನೆ ಮಾಡಿದವನು, ಸಿಂಪಿಸಿದವನು, ಚಿಮುಕಿಸಿದವನು. ಪಿಚ (ಕರಣ) "ಕ್ತವತು:" (೩-೨-೧೦೨).

ಸಿಕ್ತ ಸಿಕ್ತ (ಪುಂ) 1. ಅನ್ನದ ಅಗಲು. ಪಿಚ (ಕರಣ) "ಯಕ್" (೩ಂ ೨-೭). 2. ಗ್ರಾಸ, ಅನ್ನದ ಒಂದು ತುತ್ತು. (ನಂ) 3. ಜೀನುಮೇಣ. "ಸಿಕ್ತಯೋ ಭಕ್ತಪುಲಾಕೇ ನಾ ಮಖಿಚ್ಚಿಷ್ಟೇ ನಪುಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ.

ಸಿಕ್ತಕ ಸಿಕ್ತಕ (ನಂ) ಜೀನುಮೇಣ. ಸಿಕ್ತ ಸ್ವಾಯೇ "ಕನ್" .

ಸಿಕ್ಷಣ ಸಿಕ್ಷಣ (ನಂ) 1. ನಾಸಾಮಲ, ಸಿಂಬಳ.

2. ಗಾಜಿನ ಪಾತ್ರೆ. 3. ಕಬ್ಬಿಣದ ಕಿಲುಬು, ತುಕ್ಕು.

"ಸಿಕ್ಷಣಂ ತು ಧ್ರಾಣಮಲೇಷ್ಯ:ಕಿಡ್ಡೇ ಕಾಚಭಾಜನೇ" ಹೇಮಂ.

ಸಿಕ್ಷಣಕ ಸಿಕ್ಷಣಕ (ನಂ) ನಾಸಾಮಲ, ಸಿಂಬಳ.

ಸಿಕ್ಷಿಣಿ ಸಿಕ್ಷಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾಸಿಕೆ, ಮೂಗು.

ಸಿಚಯ ಸಿಚಯ (ಪುಂ) 1. ವಸ್ತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ. 2. ಜೀರ್ಣ ವಸ್ತ್ರ, ಹಳೆಯ ಬಟ್ಟೆ. "ಪಟವರಂ ಜೀರ್ಣವಸ್ತ್ರಂ ಸಿಚಯಪ್ರಾಥ-ಶಾಟಕಾ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಸಿಚಯ ಸಿಚಯ (ವಿಂ) ಸೇಚನೆಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಚಿಮುಕಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಸಿಂಪಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಪಿಚ (ಕರಣ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪).

ಸಿಚತ್ ಸಿಂಚತ್ (ವಿಂ) 1. ಚಿಮುಕಿಸುತ್ತಿರುವ, ಪೋಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸಿಂಪಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪಿಚ (ಕರಣ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪). "ಪ್ರೇಮೋರ: ಪ್ರಣಯಿನಿ ಸಿಚತಿ ಪ್ರಿಯಾಯಾ ಸಂತಾಪಂ ನವಜಲವಿಪ್ರುಷೋ ಗೃಹೀತ್ವಾ" ಮಾಘಂ ೮-೪೦. 2. ನೀರು ಎರೆಯುತ್ತಿರುವ. "ವಿಶ್ರಾಂತ: ಸನ್ ವ್ರಜ ವನನದೀತೀರಜಾತಾನಿ ಸಿಚನ್" ಮೇಘಂ ೧-೨೬. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಸಿಚತೀ, -ಂತೀ. "ಸಿಚನ್ಯಾ: ಕಥಮಪಿ ಬಾಹುಮುಖಮಯ್ಯ ಪ್ರಯಾಸಂ ಮನಸಿಜದು:ಖದುರ್ಬಲಾಯಾ:" ಮಾಘಂ ೮-೩೪.

ಸಿಚಮಾನ ಸಿಂಚಮಾನ (ವಿಂ) ಸೇಚನೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಪೋಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸಿಂಪಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪಿಚ (ಕರಣ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪).

ಸಿಜ್ಜಾರವ ಸಿಂಜಾರವ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಭರಣಗಳ ಶಬ್ದ, ಒಡವೆಗಳ ಸದ್ದು.

ಸಿಜ್ಜಿತ ಸಿಂಜಿತ (ನಂ) ಅಭರಣಗಳ ಶಬ್ದ. ಸಿಜಿ (ಅವ್ಯಕ್ತ ಶಬ್ದ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪). "ವ್ಯನೀಯತ ಪ್ರತ್ಯುಪದೇಶಲುಬ್ಧೇರಾದಿಸುಭಿನ್ನಪುರಸಿಜ್ಜಿತಾನಿ" ಕುಮಾರಂ ೧-೩೪.

ಸಿತ ಸಿತ (ಪುಂ) 1. ಶುಕ್ಲವರ್ಣ, ಬಿಳಿಯ ಬಣ್ಣ. ಸಿನೋತಿ ಮನ:—ಪಿಚ್ (ಬಂಧನೆ) "ಕ್ತ:" (೩ಂ ೩-೮೯). 2. ಶುಕ್ಲವರ್ಣ, ಮಾಸದ ಮೊದಲನೆಯ ಅರ್ಧಭಾಗ. 3. ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯರು. 4. ಶರ, ಬಾಣ. (ನಂ) 5. ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ. 6. ಚಂದನ, ಗಂಧ. 7. ಮೂಲಂಗಿ ಗೆಡ್ಡೆ. (ವಿಂ) 8. ಬಿಳುಪಾದ, ಶುಕ್ಲವರ್ಣದ. "ಸಿತಚ್ಚ-ದಾನಾಮಪದಿಷ್ಯ ಧಾವತಾಂ ಕುತೇರಮಿಷಾಂ ಗ್ರಥಿತಾ: ಪತತ್ರಿಯಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೪-೩೦. ಪಿಚ್ (ಬಂಧನೆ) "ಕ್ತ:" (೩ಂ ೩-೮೯). "ಸಿತಂ ಸಿತಮ್ನಾ ಸುತರಾಂ ಮುನೇರ್ವಪುರ್ವಿಸಾರಿಭಿ: ಸೌಧಮಿವಾಥ ಲಮ್ಬಯನ್" ಮಾಘಂ ೧-೨೫. 9. ಸಮಾಪ್ತಿಹೊಂದಿದ, ಕೊನೆಮುಟ್ಟಿದ. ಪಿ (ಅಂತಕರ್ಮಿಣಿ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). 10. ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. ಪಿಚ್ (ಬಂಧನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨). "ಸಿತಸ್ತವಸಿತೇ ಬದ್ಧೇ ವರ್ಣೇ" ಹೇಮಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಿತಾ ಸಿತಾ. 11. ಸಕ್ಕರೆ. "ಸಿತಾ ತು ಶಕರಾ" ಹೇಮಂ.

ಸಿತಕರ ಸಿತಕರ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಸಿತಾ: ಕರಾ ಅಸ್ಯ. "ವಸನಮಿವ ಮುಖಸ್ಯ ಸ್ತಂತೇ ಸಮಪ್ರತೀದಂ ಸಿತಕರಕರಜಾಲಂ ವಾಸವಾಶಾಯುವತ್ಯಾ:" ಮಾಘಂ ೧೧-೧೬. 2. ಕಂಠಾರಂ.

ಸಿತಚ್ಚತ್ರ ಸಿತಚ್ಚತ್ರ (ನಂ) ಬಿಳಿಯ ಛತ್ರ, ಶ್ವೇತಚ್ಚತ್ರ.



ಸಿತಚ್ಚತ್ರಾ ಸಿತಚ್ಚತ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡುಸಬ್ಬುಸಿಗಿ. ಸಿತಂ  
ಶುಭ್ರಂ ಚತ್ರಮಸ್ಯಾಃ ।

ಸಿತಚ್ಚತ್ರಿತ ಸಿತಚ್ಚತ್ರಿತ (ವಿಂ) ಶ್ವೇತಚ್ಚತ್ರದಂತೆ ಮೂಡ  
ಲಿಟ್ಟು. ಸಿತಚ್ಚತ್ರಂ ಸಜ್ಜಾತಮಸ್ಯ "ಇತಚ್" (೪-೨-೩೬) ।  
ಸಿತಚ್ಚತ್ರಂ ಶ್ವೇತಾತಪತ್ರಮಿವಾಚರಂತಂ ಕೃತಂ ವಾ । "ನಲಃ  
ಸಿತಚ್ಚತ್ರಿತಕೀರ್ತಿಮಂಡಲಃ ಸ ರಾಶಿರಾಸೀನ್ಮಹಸಾಂ ಮಹೋ-  
ಜ್ಜ್ವಲಃ" ನೆಪಂ ೧-೧ ।

ಸಿತಚ್ಚದ ಸಿತಚ್ಚದ (ಪುಂ) ಹಂಸಪಕ್ಷಿ. ಸಿತೌ ಚದೌ ಪಕ್ಷೌ  
ಯಸ್ಯ । "ಸಿತಚ್ಚದಾನಾಮಪದಿಶ್ಯ ಭಾವತಾಂ ಕ್ತೇರಮೌಷಾಂ ಪ್ರಚಿತಾಃ  
ಪತತ್ರಿಣಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೪-೩೦ ।

ಸಿತಜಲಧಿ ಸಿತಜಲಧಿ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ. "ಸಿತ-  
ಜಲಧೌ ರವಿಮಂಡಲೇ ಚ ಸಿದ್ಧಾಮ್" ಯಾದಂ ೨೪-೪ ।

ಸಿತದೀಪಿತಿ ಸಿತದೀಪಿತಿ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಸಿತಾ  
ದೀಪಿತಯೋಷ್ಯ । "ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಪ್ರಿಯತಮಾಗತಯಃ ಸಿತ-  
ದೀಪಿತಾವುದಯವ್ಯಬಲಾಃ" ಮಾಧಂ ೯-೪೩ । 2. ಕರ್ಪೂರಂ.

ಸಿತಪುಷ್ಪ ಸಿತಪುಷ್ಪ (ನಂ) ಕೊನ್ನಾರಿಯು ಒಂದು ಭೇದ.  
ತುಂಗಮುಸ್ತ, ಕೈವರ್ತಮುಸ್ತಕ.

ಸಿತಮಾಘ ಸಿತಮಾಘ (ಪುಂ) ರಾಜಮಾಘ, ಅಲಸಂದೆ.  
ತಡಗುಣಿ. "ಸಿತಮಾಘೋ ರಾಜಮಾಘಃ" ಹಾರಾಂ ।

ಸಿತಶೂಕ ಸಿತಶೂಕ (ಪುಂ) ಯವಧಾನ್ಯ. ಸಿತಃ ಶೂಕೋ  
ಯಸ್ಯ ।

ಸಿತಸಪ್ತಿ ಸಿತಸಪ್ತಿ (ಪುಂ) 1. ಅರ್ಜುನ. ಸಿತಾಃ ಸಪ್ತಯೋ  
ಯಸ್ಯ । "ಕಿರೀಟಿ ಶ್ವೇತವಾಹನಃ" । "ಸ ಭವಸ್ಯ ಭವಕ್ಷಯೇಕ-  
ಹೇತೋಃ ಸಿತಸಪ್ತೇಶ್ಚ ವಿಧಾಸ್ಯತೋಃ ಸಹಾರ್ಥಮ್" ಕಿರಾಂ  
೧೩-೧೯ । 2. ಬಿಳಿಯ ಕುದುರೆ.

ಸಿತಸರ್ಪ ಸಿತಸರ್ಪ (ಪುಂ) ಬಿಳಿಯ ಸಾಸವೆ. ಸಿತಃ  
ಸರ್ಪಃ ।

ಸಿತಾ ಸಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಕ್ಕರೆ. ಸಿನೋತಿ — ಷಿಬ್ (ಬನ್ವನೆ)  
"ಕ್ತಃ" (೩೦ ೩-೮೯) । "ಶಕರಾ ಸಿತಾ" ಅಮಂ ।

ಸಿತಾಂಶು ಸಿತಾಂಶು (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಸಿತಾ ಧವಲಾ  
ಅಂಶವೋಷ್ಯ । "ತಕ್ಷಿಪ್ತಮುಚ್ಚಿತಸಿತಾಂಶುಕರಾವಲಮ್ಬೇಹತ-  
ಮ್ಹಿತೋಡುಭಿರತೀವತರಾಂ ಶಿರೋಭಿಃ" ಮಾಧಂ ೪-೨೫ ।  
2. ಕರ್ಪೂರಂ.

ಸಿತಾಚಲ ಸಿತಾಚಲ (ಪುಂ) ಕೈಲಾಸಪರ್ವತ. ಸಿತೋಚಲಃ ।  
"ತಮುನ್ಮದೋದಗ್ರವೃಷಾಧಿರೂಢಂ ಸಿತಾಚಲೇ ಭೇರುಮಿವ ಜ್ವಲಂತಮ್"  
ಯಾದಂ ೨೦-೨೯ ।

ಸಿತಾಜಾಜಿ ಸಿತಾಜಾಜಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಳಿಯ ಜೀರಿಗೆ.

ಸಿತಾನನ ಸಿತಾನನ (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ. ಪೈನತೇಯಂ.  
ಸಿತಮಾನನಮಸ್ಯ । (ವಿಂ) 2. ಬಿಳಿಯ ಮುಖವುಳ್ಳ.

ಸಿತಾಪಾಙ್ಗ ಸಿತಾಪಾಙ್ಗ (ಪುಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು.  
ಸಿತೌ ಅಪಾಙ್ಗೌ ಯಸ್ಯ । "ಪ್ರಚಲಾಕೌ ಸಿತಾಪಾಙ್ಗಶಿಖಾ-  
ಚಲಗಲವ್ರತಾಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಸಿತಾಭ್ರ ಸಿತಾಭ್ರ (ಪುಂ) ಕರ್ಪೂರಂ. ಸಿತಂ ಶುಕ್ಲಮಭ್ರತಿ  
ಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ—ಅಭ್ರ (ಗತೌ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) । "ಸಿತಾಭ್ರೋ  
ಹಿಮವಾಲುಕಾ" ಅಮಂ । "ಪ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) ।  
—ಅಭ್ರಕಮ್ — ಅಭ್ರಕಮ್.

ಸಿತಾಮ್ಬರ ಸಿತಾಮ್ಬರ (ಪುಂ) ಶ್ವೇತಾಂಬರ ಜೈನಸಂನ್ಯಾಸಿ,  
ಶ್ವೇತಾಂಬರ ಪಂಥದ ಜೈನಭಿಕ್ಷು. ಸಿತಮಮ್ಬರಂ ಯಸ್ಯ ।

ಸಿತಾನ್ಮೋಜ ಸಿತಾನ್ಮೋಜ (ನಂ) ಬಿಳಿಯ ಕಮಲ.

ಸಿತಾಸಿತ ಸಿತಾಸಿತ (ಪುಂ) 1. ಬಲರಾಮ. ವರ್ಣೇನ ಸಿತಃ  
ವಸ್ತ್ರೇಣ ಅಸಿತಃ । 2. ಬಿಳುಪು ಮಿಶ್ರವಾದ ಕೃಷ್ಣವರ್ಣ  
ವುಳ್ಳ. "ತೇ ಹಯಾ ಬಹ್ವಶೋಭಂತ ಮಿಶ್ರಿತಾ ವಾತರಂಹಸಃ ।  
ಸಿತಾಸಿತಾ ಮಹಾರಾಜ ಯಥಾ ವ್ಯೋಮಿನಿ ಬಲಾಹಕಾಃ" ಭಾಂ  
ದ್ರೋಣಂ ।

ಸಿತಾಸಿತಗುಣ ಸಿತಾಸಿತಗುಣ (ಪುಂ) ಸತ್ತ, ರಜಸ್ಸು  
ಮತ್ತು ತಮಸ್ಸು ಈ ಗುಣಗಳ ರೂಪವಾದ ಸೂತ್ರ  
(ದಾರ). ಸಿತಾಸಿತಗುಣಾ ಎವ ಸೂತ್ರಾಣಿ । ಸಿತತದಿತರಗುಣಾಃ  
ಸತ್ವರಜಸ್ತಮಾಸಿ ತ ಎವ ಗುಣಾಃ ಸಿತಾಸಿತಾನಿ ಸೂತ್ರಾಣಿ ।  
"ಸಿತಾಸಿತಗುಣಾರಂಭಃ ಪಾಶಜಾಲೇದ್ದುರತಯೈಃ" ಯಾದಂ  
೧೬-೧೧೮ ।

ಸಿತಾಹ್ವಯ ಸಿತಾಹ್ವಯ (ಪುಂ) ಬಿಳಿಯ ನುಗ್ಗೆಮರ.

ಸಿತಿ ಸಿತಿ (ವಿಂ) 1. ಬಿಳುಪಾಗಿರುವ. 2. ಕಪ್ಪಾಗಿರುವ.

ಸಿತಿಕಣ್ಠ ಸಿತಿಕಣ್ಠ (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಶಿವ.

ಸಿತಿಮನ್ ಸಿತಿಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಬಿಳುಪು, ಬಿಳಿಯ ಬಣ್ಣ.  
ಸಿತಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಇಮನಿವ್" (೪-೧-೧೨೨) । "ಸಿತಂ  
ಸಿತಿಮ್ನಾ ಸುತರಾಂ ಮುನೇರ್ವಪುರ್ವಿಸಾರಿಭಿಃ ಸೌಧಮಿವಾಥ ಲಮ್ಬಯನ್"  
ಮಾಧಂ ೧-೨೫ । 2. ಕಪ್ಪುಬಣ್ಣ.

ಸಿತಿವಾಸಸ್ ಸಿತಿವಾಸಸ್ (ಪುಂ) ಬಲರಾಮ. ಸಿತಿ ನೀಲಂ  
ವಾಸೋ ಯಸ್ಯ ।

ಸಿತೇತರ ಸಿತೇತರ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಬತ್ತ.  
ಸಿತಾದಿತರಃ । 2. ಹುರುಳಿ. (ವಿಂ) 3. ಕಪ್ಪು ಬಣ್ಣದ.  
"ನಿವಿಮತಿಕ್ರಮ್ಯ ಸಿತೇತರಸ್ಯ ತನ್ಮೇಖಲಾಮಧ್ಯಮಣೀರಿವಾಚಿಃ"  
ಕುಮಾಂ ೧-೩೮ । (ದ್ವಿವಂ) 4. ಬಲರಾಮ ಮತ್ತು  
ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ.



ಸಿತೋದರ ಸಿತೋದರ (ಪುಂ) ಕುಬೇರ. ಸಿತಮುದರಂ ಯಸ್ಯ ।  
ಸಿತೋದ್ರವ ಸಿತೋದ್ರವ (ನಂ) ಬಿಳಿಯ ಚಂದನ. ಸಿತಃ  
ಉದ್ರವೋ ಯಸ್ಯ ।

ಸಿತೋಪಲ ಸಿತೋಪಲ (ನಂ) 1. ಹರಳು, ಸ್ಫಟಿಕರೂಪದ  
ಶುದ್ಧ ಶಿಲೆ. (ಪುಂ) 2. ಸ್ಫಟಿಕ. -ಉಪಲಾ-ಉಪಲಾ.  
ಸಕ್ಕರೆ.

ಸಿದ್ಧ ಸಿದ್ಧ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆಗಳಿಂದ ಉತ್ಪತ್ತಿ ಪಡೆದವನು.  
ಸಿದ್ಧಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ ಅರ್ಥಾಂತಿಂ "ಅವ್" (4-2-129) । ಅಣಿ  
ಮಾಡಿ ಸಿದ್ಧಿಯನ್ನು ಪಡೆದುದರಿಂದ ಸಿದ್ಧರೆಂದು ಹೆಸರು.  
"ವೃಥೇ ಸಮರಸ್ತತ್ರ ಸುಭಗಸ್ವರ್ಗಸತ್ಕ್ರಮಃ । ಸಿದ್ಧಗಂಧರ್ವಯುತಾನಾಂ  
ಚಿತ್ತತಾಂಡವದೇಶಿಕಃ" ಯಾದಂ 22-223 । 2. ಪ್ರಭಾವ  
ಶಾಲಿಯಾದವನು, ಅಮಾನುಷ ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು, ವ್ಯಾಸ  
ಮಹರ್ಷಿ ಮೊದಲಾದವರು. 3. ವಿಷ್ಣುಂಭ ಮೊದಲಾದ  
ಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ 21ನೆಯ ಒಂದು ಯೋಗ. "ಜಿತೇಂದ್ರಿಯಃ  
ಸರ್ವಕಲಾನಿಧಾನೋ ಗೌರೋತ್ತಿಶೂರೋ ಮಧುರೋ ವಿನೀತಃ । ಸತ್ಯೋಪ-  
ಪನ್ನೋ ಕೃತಭೂರಿಭೋಗೋ ಯಸ್ಯ ಪ್ರಸುತೌ ಕಿಲ ಸಿದ್ಧಯೋಗಃ" ।  
4. ದೈವಜ್ಞ, ದೈವಸಂಕಲ್ಪವನ್ನು ತಿಳಿಸುವವನು, ಭವಿಷ್ಯ  
ತನ್ನು ತಿಳಿಸುವವನು. "ಅನ್ಯಥಾ ಕವ ಸಿದ್ಧಾದೇಶಪ್ರತೀಯ-  
ಪ್ರಾಪಿತಾಯಾಃ ಸಿಹಲೇಶ್ವರದುಹಿತುಃ ಸಮುದ್ರೇ ಫಲಕಾಸಾದನಮ್"  
ರತನಾಂ । 5. ಕರಿ ದತ್ತೂರಿ ಗಿಡ. 6. ಮೊಕದ್ದಮೆ,  
ವ್ಯಾಜ್ಯ, ನ್ಯಾಯಾಲಯದ ವ್ಯವಹಾರ. "ಸಿದ್ಧೋ ನಾ  
ವ್ಯಾಸಾದೌ ಭೇದೇ ಯೋಗಸ್ಯ ದೇವಯೋನೇಶ್ಚ" ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ) 7.  
ನಿಷ್ಪನ್ನವಾದ, ಉಂಟಾದ. "ಸಿದ್ಧಮಬಲ ಸವಲತ್ವಮಹೋ ತವ  
ರೋಹಿಣೀತನಯಸಾಹಚರ್ಯತಃ" ಮಾಧಂ 15-24 । 8. ಲೋಕ  
ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ. "ಏವಂ ತೌ ಲೋಕಸಿದ್ಧಾಭಿಃ ಕ್ಷಿಪ್ರಾಭಿಶ್ಚೇರತು-  
ರ್ವನೇ" ಭಾಗಂ 10-16-16 । "ನೈಸರ್ಗಿಕೀ ಸುರಭಿಃ  
ಕುಸುಮಸ್ಯ ಸಿದ್ಧಾ ಮೂರ್ಛಿ ಸ್ಥಿತಿರ್ನ ಚರಣೇರವತಾಡನಾನಿ"  
ತಂ ರಾಂ 1-14 । 9. ಮಂತ್ರಸಿದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. "ಸಮ್ಯ-  
ಗನುಷ್ಠಿತೋ ಮನ್ತ್ರೋ ಯದಿ ಸಿದ್ಧಿರ್ನ ಜಾಯತೇ । ಪುನಸ್ತೇನೈವ ಕರ್ತವ್ಯಂ  
ತತಃ ಸಿದ್ಧೋ ಭವೇದ್ಭುವಮ್" । 10. ಸಿದ್ಧವಾಗಿರುವ, ಸಜ್ಜಾ  
ಗಿರುವ. "ಸಿದ್ಧಮಗ್ರಂ ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ ಭಿಕ್ಷಾಮಹತಿ ದುರ್ಮತಿಃ" ।  
11. ನೆರವೇರಿಸಿದ. 12. ನಿತ್ಯವಾದ, ಶಾಶ್ವತವಾದ.  
13. ರುಜುವಾತಾದ, ದೃಢಪಟ್ಟಿರುವ. "ತಸ್ಮಾದಿಂದ್ರಿಯಂ  
ಪ್ರತೀಕ್ಷಪ್ರಮಾಣಮಿತಿ ಸಿದ್ಧಮ್" ತಂ ಸಂ । 14. ತೀರ್ಮಾನ  
ವಾದ, ಇತ್ಯರ್ಥವಾದ. 15. ಪಕ್ವವಾದ, ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ  
(ಅನ್ನ ಮೊದಲಾದುದು). "ಅಭ್ರಂಶಾಃ ಕ್ಷಲಪ್ರೀತಿಃ  
ಸಿದ್ಧಮಗ್ರಂ ಚ ಧೌಷಿತಃ । ಕಿಂಚಿತ್ಕಾಲೋಪಭೋಗ್ಯಾನಿ ಯೌವನಾನಿ  
ವನಾನಿ ಚ" ಪञ್ಚತಂ 2-120 । 16. ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾದ  
ವನು, ಪ್ರಾಪ್ತಪಡೆದವನು, ಕೀರ್ತಿಶಾಲಿ. 17. ಅಣಿಮಾಡಿ

32 ವಿಧ ಸಿದ್ಧಿ ಪಡೆದವನು. 18. ಮುಕ್ತಿ ಪಡೆದವನು.  
"ಅಹೋ ದಾನವ ಸಿದ್ಧೋಽಸಿ ಯಸ್ಯ ತೇ ಮತಿರೀದೃಶೀ" ಭಾಗಂ  
6-12-19 । "ಸಿದ್ಧಃ ಪುಮಾನ್ ದೇವಯೋನೌ ನಿಯತನಿಷ್ಪನ್ನಯೋ-  
ಸ್ತ್ರಿಷು" ನಾನಾರ್ಥರಂ ।

ಸಿದ್ಧಕ ಸಿದ್ಧಕ (ಪುಂ) 1. ಸಾಲವೃಕ್ಷ, ಮತ್ತಿಮರ. 2.  
ಲಕ್ಕಿ ಗಿಡ.

ಸಿದ್ಧಗಜ್ಞ ಸಿದ್ಧಗಂಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗಾನದಿ, ಸಿದ್ಧರಿಂದ  
ಸೇವಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ದೇವನದಿ. ಸಿದ್ಧಃ ಸೇವಿತಾ ಗಜ್ಞಾ । "ಕವಚಿತ್  
ಸಿದ್ಧಜನಾಕೀರ್ಣಂ ಪಶ್ಯ ಮಂದಾಕಿನೀಂ ನದೀಮ್" ರಾಮಾಂ ।

ಸಿದ್ಧದೇವ ಸಿದ್ಧದೇವ (ಪುಂ) ಮಹಾದೇವ, ಪರಶಿವ.

ಸಿದ್ಧಪುಷ್ಪ ಸಿದ್ಧಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) ಗನ್ನೇರಳೆ ಗಿಡ.

ಸಿದ್ಧರಸ ಸಿದ್ಧರಸ (ಪುಂ) 1. ಪಾದರಸ. 2. ಒಂದು ಖನಿಜ  
ಲೋಹ.

ಸಿದ್ಧಸಲಿಲ ಸಿದ್ಧಸಲಿಲ (ನಂ) ಗಂಜಿ, ಅಂಬಲಿ. ಸಿದ್ಧ  
ಏಕವಂ ಸಲಿಲಮ್ ।

ಸಿದ್ಧಸಾಧನ ಸಿದ್ಧಸಾಧನ (ನಂ) 1. ಸಿದ್ಧವಾದ ವಿಷಯ  
ವನ್ನೇ ಮತ್ತೆ ಸಾಧಿಸುವುದು. ಸಿದ್ಧಸ್ಯ ಸಾಧನಮ್ । ಪರ್ವತ  
ದಲ್ಲಿ ವಹ್ನಿಯಿರುವುದೆಂದು ನಿಶ್ಚಯವಾದ ನಂತರವೂ  
"ಪವಂತೋ ವಹ್ನಿಮಾನ್ ಭೂಮಾತ್" ಎಂದು ಮತ್ತೆ ಅದನ್ನು  
ಸಾಧಿಸಲು ಹೊರಟಿರುವುದು ಸಿದ್ಧಸಾಧನ. ಇದೊಂದು  
ದೋಷ. (ಪುಂ) 2. ಬಿಳಿಯ ಸಾಸವೆ.

ಸಿದ್ಧಸಿಂಧು ಸಿದ್ಧಸಿಂಧು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಕಾಶಗಂಗೆ, ಗಂಗಾನದಿ.  
ಸಿದ್ಧಸೇವಿತಾ ಸಿಂಧುಃ । "ಭೇಜೇಽಭಿತಃ ಪಾತುಕಸಿದ್ಧಸಿಂಧೋರ-  
ಭೂತಪೂರ್ವಾ ಕ್ವಮಮ್ಬುರಾಶಿಃ" ಮಾಧಂ 3-3 ।

ಸಿದ್ಧಸೇನ ಸಿದ್ಧಸೇನ (ಪುಂ) ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪಣ್ಡುಖ. ಸಿದ್ಧಾ  
ಸೇನಾ ಯಸ್ಯ ।

ಸಿದ್ಧಾ ಸಿದ್ಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬುದ್ಧಿ, ಐಶ್ವರ್ಯ. 2. ಒಬ್ಬ  
ಯೋಗಿನಿ.

ಸಿದ್ಧಾಂತ ಸಿದ್ಧಾಂತ (ಪುಂ) 1. ಪೂರ್ವಪಕ್ಷವನ್ನು ನಿರಸನ  
ಮಾಡಿ (ತಳ್ಳಿಹಾಕಿ) ಪ್ರಮಾಣಪೂರ್ವಕ ವಾದದಿಂದ ಸಿದ್ಧ  
ವಾದ ಪಕ್ಷವನ್ನು ಸ್ಥಾಪಿಸುವುದು. ಸಿದ್ಧಃ ಅಂತೋ ಯಸ್ಮಾತ್ ।  
2. ಪರೀಕ್ಷಕನಿಂದ ಅನೇಕ ವಿಧವಾಗಿ ಪರೀಕ್ಷಿಸಿ ಹೇತು  
ಗಳಿಂದ ಸಾಧಿಸಿ ನಿರ್ಣಯವನ್ನು ಸ್ಥಾಪಿಸುವುದು ಸಿದ್ಧಾಂತ.  
ಈ ಸಿದ್ಧಾಂತವು (1) ಸರ್ವತನ್ತ್ರಸಿದ್ಧಾಂತಃ (2) ಪ್ರತೀತನ್ತ್ರ-  
ಸಿದ್ಧಾಂತಃ (3) ಅಧಿಕರಣಸಿದ್ಧಾಂತಃ ಮತ್ತು (4) ಅಸ್ಯುಪಗಮ-  
ಸಿದ್ಧಾಂತಃ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. 3. ಮತತತ್ತ್ವ, ವಿಚಾರಕ್ಕೆ  
ಅಸ್ಪದವಿಲ್ಲದಂತೆ ಪ್ರಮಾಣವಚನಗಳಿಂದ  
ನಿರೂಪಿತವಾದ ತತ್ತ್ವ. 4. ಜೋತಿಷ ಗ್ರಂಥ. ಇದು



ಒಂಬತ್ತು ವಿಧ. (1) ಬ್ರಹ್ಮಸಿದ್ಧಾಂತ: (2) ಸೋಮಸಿದ್ಧಾಂತ: (3) ಸೂರ್ಯಸಿದ್ಧಾಂತ: (4) ಬೃಹಸ್ಪತಿಸಿದ್ಧಾಂತ: (5) ಗರ್ಗ-ಸಿದ್ಧಾಂತ: (6) ನಾರದಸಿದ್ಧಾಂತ: (7) ಪರಾಶರಸಿದ್ಧಾಂತ: (8) ಪುಲಸ್ತಿಸಿದ್ಧಾಂತ: ಮತ್ತು (9) ವಸಿಷ್ಠಸಿದ್ಧಾಂತ: ।

**ಸಿದ್ಧಾಂತಿನ್ ಸಿದ್ಧಾಂತಿನ್ (ಪುಂ)** 1. ವಾದಮಾಡಿ ತನ್ನ ಪಕ್ಷವನ್ನು ಸ್ಥಾಪಿಸುವವನು, ಪೂರ್ವಪಕ್ಷವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅಲಿಸಿ ಪ್ರಮಾಣೋಪನ್ಯಾಸಪೂರ್ವಕ ಅದನ್ನು ನಿರಸನ ಮಾಡಿ ತನ್ನ ಮತತತ್ತ್ವವನ್ನು ಸ್ಥಿರಪಡಿಸುವವನು. ಸಿದ್ಧಾಂತೋಪಾಸ್ತಿ "ಇತಿ:" (೪-೨-೧೧೪) । 2. ಮೀಮಾಂಸಕ.

**ಸಿದ್ಧಾಪಗಾ ಸಿದ್ಧಾಪಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಸಿದ್ಧ ಪುರುಷರಿಂದ ಸೇವಿಸಲ್ಪಡುವ ನದಿ, ಗಂಗಾನದಿ. ಸಿದ್ಧಸೇವಿತಾ ಆಪಗಾ ।

**ಸಿದ್ಧಾರ್ಥ ಸಿದ್ಧಾರ್ಥ (ಪುಂ)** 1. ಶಾಕ್ಯಸಿಂಹ, ಬುದ್ಧದೇವ. ಸಿದ್ಧಾರ್ಥೋ ಯಸ್ಯ । 2. ಬಿಳಿಯ ಸಾಸವೆ. ಸಿದ್ಧಾರ್ಥೋಽಸ್ಮಾತ್ ।

**ಸಿದ್ಧಿ ಸಿದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. (ಕಾರ್ಯ) ನಿಷ್ಪತ್ತಿ, ಕಾರ್ಯವು ಕೈಗೊಡುವುದು, ಕಾರ್ಯವು ನೆರವೇರುವುದು. ಷಿಘ್ರ (ಸಂಘಾತ) "ಕ್ರಿತ್" (೩-೩-೧೭೪) । "ಕ್ರಿಯಾಸಿದ್ಧಿ: ಸತ್ವೇ ಭವತಿ ಮಹತಾ ನೋಪಕರಣೇ" । 2. ಫಲ, ಒಳ್ಳೆಯ ಪರಿಣಾಮ. "ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಹಿ ನಿಶ್ಚಿತವಿಧಿಂ ಕ್ವ ನ ಸಿದ್ಧಿಮೇತಿ" ಮಾಘಂ ೪-೪೭ । 3. ಒಳ್ಳೆಯ ಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವ ಅಣಿಮಾಡಿ ಎಂಬ ಸಿದ್ಧಿಗಳು. ಅಣಿಮಾಡಿದ ಸಿದ್ಧಿ:— (1) ಅಣಿಮಾ — ಪರಮಾಣುವಿನಂತೆ ಬಹಳ ಸೂಕ್ಷ್ಮರೂಪ ಪಡೆಯುವುದು. (2) ಮಹಿಮಾ — ವಿಭುತ್ವಪ್ರಾಪ್ತಿ. (3) ಲವಿಮಾ — ಕಾರ್ಪಾಸ (ತೂಲ) ದಂತೆ ಬಹಳ ಲಘು ವಾಗುವುದು. (4) ಗರಿಮಾ — ಮೇರುಪರ್ವತದಂತೆ ಬಹಳ ದೊಡ್ಡದಾಗುವುದು. (5) ಪ್ರಾಪ್ತಿ: — ಚಂದ್ರಮಂಡಲಾದಿ ಗಮನ. (6) ಪ್ರಾಕಾಮ್ಯಮ್ — ಸತ್ಯಸಂಕಲ್ಪತ್ವ. (7) ವಶಿತ್ವಮ್ — ಸಕಲ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ನಿಯಂತ್ರಣ ಮತ್ತು (8) ಇಶಿತ್ವಮ್ — ಸಕಲ ಭೂತಗಳ ಉತ್ಪಾದನೆಯ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. "ಸಿದ್ಧಿ-ರಘು ದಿವದಿವ ತದಾ ಸೇವಿತಸ್ತಾಭಿರೇಕ: ಕ್ಷಿಪ್ರಾಯೋಗಿ ನಿರವಧಿಮಸೌ ನಿರ್ವೃತಿ ನಿರ್ವಿವೇಶ" ಯಾದಂ ೧೪-೭೮ । 4. ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ. "ಕಾಮಕ್ರೋಧೌ ತು ಸಂಯಮ್ಯ ತತ: ಸಿದ್ಧಿ ನಿಯಚ್ಛತಿ" ಮನುಂ ೧೨-೧೧ । 5. ನ್ಯಾಯಾಲಯದಲ್ಲಿ ವ್ಯವಹಾರದ (ಮೊಕದ್ದಮೆಯ) ತೀರ್ಪು. 6. ಔಷಧಗಳ ಯೋಜನೆ, ಮೂಲಿಕೆಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಔಷಧಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವುದು. 7. ವಿಷ್ಣುಭಾದಿ ಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಯೋಗ. 8. ಪಾದುಕೆ. 9. ವೃದ್ಧಿ. 10. ಬುದ್ಧಿ. 11. ಗೋಪನಮಾಡುವುದು, ಮರೆಮಾಡುವುದು, ಬಚ್ಚಿಡುವುದು. 12. ಯೋಗಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾದ ಐಶ್ವರ್ಯ.

"ತೇ ಸಮಾಧಾವುಪಸರ್ಗಾ ವ್ಯುತ್ಥಾನೇ ಸಿದ್ಧಯ: " । "ಜನ್ಮೋಪಧಿ ಮನ್ವತಪ:ಸಮಾಧಿಜಾ: ಸಿದ್ಧಯ:" ಪಾತಂ ಸುಂ । ಜನ್ಮನಾ ಸಿದ್ಧಿ:—ಯಕ್ಷಗಂಧರ್ವಾದಿಗಳಿಗೆ ಆಕಾಶಗಮನಾದಿ ಸಿದ್ಧಿ. ಅಂಶಭಿಃ ಸಿದ್ಧಿ:—ಅಸುರರ ಭವನದಲ್ಲಿ ಮಾಂಡವ್ಯಾದಿ ಮುನಿಗಳ ರಸಾಯನಾದಿಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಸಿದ್ಧಿ. ಮನ್ವೇಣ ಸಿದ್ಧಿ:—ಅಣಿಮಾಡಿ ಸಿದ್ಧಿ. ತಪಸಾ ಸಿದ್ಧಿ:—ತಪಸ್ಸಿನಿಂದ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮೊದಲಾದವರಿಗೆ ಲಭಿಸಿದ ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿತ್ವಾದಿ ಸಿದ್ಧಿ. ಸಮಾಧಿಜಾಸಿದ್ಧಿ:—ಪರಮಾಣು ಮೊದಲಾಗಿ ಮೂಲ ಪ್ರಕೃತಿಯವರೆಗಿನ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ ರೂಪ ಸಿದ್ಧಿ. 13. ಸಾಂಖ್ಯೋಕ್ತವಾದ ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ ಅಧಿ ದೈವಿಕ ಮತ್ತು ಆಧಿಭೌತಿಕರೂಪ ದುಃಖತ್ರಯದ ವಿಘಾತ ರೂಪ ಸಿದ್ಧಿ. 14. ನಿಶ್ಚಯ. ಉದಾ: ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಧೂಮದಿಂದ ವಹ್ನಿಯನ್ನು ಸಾಧಿಸುವುದಕ್ಕೆ ಪವಂತಿ ವಹ್ನಿಮಾನ್ ಎಂಬ ನಿಶ್ಚಯ. 15. ಮಂತ್ರಸಿದ್ಧಿ. ಇದು ತತ್ತಮಾ, ಮಧ್ಯಮಾ ಮತ್ತು ಅಥಮಾ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ಕ್ಲೇಶವಿಲ್ಲದೆ ಪರಕಾಯ ಪ್ರವೇಶವು ಉತ್ಪತ್ತಮ ಸಿದ್ಧಿ. ಪ್ರಾತಿ ವಾಹನ ಅಭರಣಾದಿ ಲಾಭವು ಮಧ್ಯಮ ಸಿದ್ಧಿ. ಧನಕನಕ ಪುತ್ರಗೃಹಾದಿ ಲಾಭವು ಅಥಮ ಸಿದ್ಧಿ. 16. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. 17. ಸಜ್ಜಾಗಿರುವುದು. 18. ಮುದ್ದಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಗಂದಿಗರ ದ್ರವ್ಯ. 19. ಐಶ್ವರ್ಯ, ಸಂಪತ್ತು. "ಸಿದ್ಧಿ: ಸ್ತ್ರೀ ಯೋಗಿನಿಷ್ಪತ್ತಿಪಾದುಕಾಂತದಿವ್ಯದಿವ್ಯ" ಮೇದಿಂ । 20. ರಾಜನ ಪ್ರಭುಸಿದ್ಧಿ ಮಂತ್ರಸಿದ್ಧಿ ಮತ್ತು ಉತ್ಸಾಹ ಸಿದ್ಧಿಗಳೆಂಬ ಸಿದ್ಧಿತ್ರಯ. 21. ಮಹಾವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ತಪಾಯೇರಯಮೇವ ಸಾಧ್ಯತೇ—ಷಿಘ್ರ (ಗತ್ಯಾಮ್) "ಕ್ರಿನ್" (೩-೩-೧೭೪) । "ಅಯಮೇವ ಹ್ಯುಪಾಯೇಷ ಸಿದ್ಧಿ: ಸ್ಯಾತ್ ಸಾಧ್ಯತೇ ಯತ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । "ಅಜ: ಸರ್ವೇಶ್ವರ: ಸಿದ್ಧ: ಸಿದ್ಧಿ: ಸರ್ವಾದಿರಚ್ಯುತ:" ವಿಂ ಸಂ ।

**ಸಿದ್ಧಿವ ಸಿದ್ಧಿವ (ಪುಂ)** ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಸಾಧಕರಿಗೆ ಅಣಿಮಾಡಿ ಅಷ್ಟಸಿದ್ಧಿಗಳನ್ನು ಕೊಡುವುದರಿಂದ ಈ ಹೆಸರು. ಅಣಿಮ-ಗರಿಮಾದಿಸಿದ್ಧಿ: ದದಾತಿ—ಓ ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩) । "ಸಿದ್ಧಿದೋ ಹ್ಯಣಿಮಾಡಿದಸಿದ್ಧಿದೇ: ಕಾಯದಾನತ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । "ಸಿದ್ಧಿದ: ಸಿದ್ಧಿಸಾಧನ:" ವಿಂ ಸಂ । -ದಾತ್ರಿ -ದಾತ್ರಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

**ಸಿದ್ಧಿಯೋಗ ಸಿದ್ಧಿಯೋಗ (ಪುಂ)** ಜ್ಯೋತಿಷೋಕ್ತವಾದ ತಿಥಿ ವಾರಗಳ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಒಂದು ಯೋಗ. ಶುಕ್ರವಾರ=ನಂದಾ (ಪ್ರಥಮಾ ಪಕ್ಷಿ ಮತ್ತು ವಿಕಾದಶೀ) ತಿಥಿಗಳು ಬುಧವಾರ — ಭದ್ರಾ (ದ್ವಿತೀಯಾ ಸಪ್ತಮೀ ಮತ್ತು ದ್ವಾದಶೀ) ತಿಥಿಗಳು ಕುಜವಾರ — ಜಯಾ (ತೃತೀಯಾ ಅಷ್ಟಮೀ ಮತ್ತು ತ್ರಯೋದಶೀ) ತಿಥಿಗಳು



ಶನಿವಾರ — ರಿಕ್ತಾ (ಚತುರ್ಥೀ ನವಮೀ ಮತ್ತು ಚತುರ್ದಶೀ) ತಿಥಿಗಳು ಗುರುವಾರ—ಪೂರ್ಣಾ (ಪಂಚಮೀ ದಶಮೀ ಮತ್ತು ಪೂರ್ಣಿಮಾ) ತಿಥಿಗಳು ಸೇರಿದಾಗ ಈ ಯೋಗ ಸಂಭವಿಸುವುದು.

**ಸಿದ್ಧಿಸಾಧನ ಸಿದ್ಧಿ ಸಾಧನ (ಪುಂ)** ಪರಮಾತ್ಮ. ಅಣಮಾದಿ ಸಿದ್ಧಿಗೆ ಕಾರಣನಾದುದರಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಸಿದ್ಧಿ ಸಾಧನ. ಅನುಠಾನವೇಲಾಯಾಮಪಿ ಪ್ರಿಯಚ್ಛರತಯಾ ಸಿದ್ಧಿಃ ತದ್ವೈ ಸಾಧನ-ಮಸ್ಯ । “ತತ್ತಿದ್ವೇಶ್ವಾಪಿ ಹೇತುತ್ವಾತ್ ಸಿದ್ಧಿಸಾಧನ ಇರಿತಃ” ಇತಿ ನಿಶ್ಚಿತಃ । “ಸಿದ್ಧಿದಃ ಸಿದ್ಧಿಸಾಧನಃ” ವಿಂ ಸಂ ।

**ಸಿಂಧು ಸಿದ್ಧ (ನಂ)** 1. ಚಿಟ್ಟು, ಚಮದಮೇಲಿನ ಹೊಪ್ಪಳೆ. ಪಿಠ (ಗತ್ಯಾಮ್) “ಮಕ್” ಬಾಹುಂ । 2. ಕುಷ್ಮರೋಗ.

**ಸಿಂಧುಲ ಸಿದ್ಧ (ವಿಂ)** 1. ಕುಷ್ಮರೋಗವುಳ್ಳವನು. ಸಿಂಧುಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಕನ್” (೪-೨-೧೭) । 2. ಮೈಯಲ್ಲಿ ಚಿಟ್ಟುಗಳುಳ್ಳವನು. “ಕಿಲಾಸೀ ಸಿಂಧುಲಃ” ಅಮಂ । “ಮತುಪ್” (೪-೨-೧೨೭) । ಸಿಂಧುವಾನ್ ಸಿದ್ಧವಾನ್. —ಸಾ —ಉ. ಒಣ್ಣಿದ ಮೀನು. “ಸಿಂಧುಲಾ ಶುಕ್ಲಮೀನೇ ಸ್ತ್ರೀ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಸಿಂಧು ಸಿದ್ಧ (ಪುಂ)** ಪುಷ್ಕನಕ್ಷತ್ರ. ಸಿಂಧುತ್ಯಸ್ಮಿನ್ನರ್ಥಃ—ಪಿಠ (ಸಂರಾಡೊ) “ಕಪ್” (೩-೧-೧೧೪) । ನಿಷಾಂ ।

**ಸಿಂಧು ಸಿದ್ಧ (ಪುಂ)** 1. ಸಾಧು, ಸತ್ಪುರುಷ. 2. ವೃಕ್ಷ, ಮರ.

**ಸಿಂಧುಕಾವಣ ಸಿದ್ಧಕಾವಣ (ನಂ)** ದೇವತೆಗಳ ಒಂದು ಉದ್ಯಾನವನ. “ದೇವೋದಾನಾನಿ ವೇದಾಜಂ ಮಿಶ್ರಕಂ ಸಿಂಧುಕಾವಣಮ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಸಿನ ಸಿನ (ಪುಂ)** 1. ಗ್ರಾಸ, ಬಾಯಿತುಂಬುವಷ್ಟು ಆಹಾರದ ಒಂದು ತುತ್ತು. ಸಿನೋತಿ—ಪಿನ್ (ಬನ್ವನೇ) “ನಕ್” (೩-೨-೨) । (ನಂ) 2. ದೇಹ, ಶರೀರ. ಸಿನೋತಿ ಬಹ್ನಾತ್ಯಾತ್ಮಾನಮ್—ಪಿನ್ “ನಕ್” । (ವಿಂ) 3. ಬೆಳ್ಳಗಿರುವ, ಬಿಳುಪಾಗಿರುವ.

**ಸಿನಿ ಸಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಬೆಳ್ಳಗಿರುವ ಹೆಂಗಸು. 2. ಬೆಳ್ಳಗಿರುವ ಚಂದ್ರನ ಕಲೆ.

**ಸಿನಿವಾಲಿ ಸಿನಿವಾಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಚತುರ್ದಶೀ ಸಂಭುಧ ದಿಂದ ಚಂದ್ರನ ಕಲೆಯು ಕಾಣುವ ಅವಸರಾಸ್ತೆ, ಚಂದ್ರನ ಒಂದು ಕಲೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ಅವಸರಾಸ್ತೆ, ಚತುರ್ದಶಿ ಯೊಡನೆ ಕೂಡಿದ ಅವಸರಾಸ್ತೆ. ಸಿನಿಂ ಚಂದ್ರಕಲಾಂ ವಲತಿ —ವಲ (ಸಂವರಣ) “ಅನ್” (೩-೨-೧) । “ಜಿಪ್” (೪-೧-೧೪) । “ಸಾ ದೃಷ್ಟೇತುಃ ಸಿನಿವಾಲಿ” ಅಮಂ ।

**ಸಿಂಧು ಸಿಂಧು (ಪುಂ)** ಗಜದ ಮದೋದಕ.

**ಸಿಂಧುಕ ಸಿಂಧುಕ (ಪುಂ)** ಲಕ್ಕಿಗಿಡ. ಸ್ಯಂದತೇ — ಸ್ಯಂದ್ (ಪ್ರಸವಣ) “ಃ” ಸಂಪ್ರಸಾರಣಂ ಚ (೩-೧-೧೧) । ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” ।

**ಸಿಂಧುವಾರ ಸಿಂಧುವಾರ (ಪುಂ)** ಲಕ್ಕಿಗಿಡ. ಸಿಂಧು ಗಜಮದ ವಾರಯತಿ —ವನ್ (ವರಣ) “ಅನ್” (೩-೨-೧) ।

**ಸಿಂಧುರ ಸಿಂಧುರ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ವೃಕ್ಷ. ಸ್ಯಂದತೇ — ಸ್ಯಂದ್ (ಪ್ರಸವಣ) “ಃ” (೩-೧-೧೧) । ಸಂಪ್ರಸಾರಣಂ ಚ । (ನಂ) 2. ಚಂದ್ರ, ಒಂದು ಕೆಂಪು ಚೂರ್ಣ. “ಸಿಂಧುರಸ್ತುರ್ಮೇದೇ ಸ್ಯಾತ್ಸಿಂಧುರಂ ರಕ್ತಚೂರ್ಣಕೇ” ಮೇದಿಂ । “ಸಿಂಧುರಸ್ತುತಿಮುಗಮೂರ್ವಿನಿ ವೃತಸ್ಕನ್ಧಾವಧಿ-ಶ್ಯಾಮಿಕೇ” ನೈಷಂ ೧೨-೩೬ ।

**ಸಿಂಧುರಕಾರಣ ಸಿಂಧುರಕಾರಣ (ನಂ)** ಸೀಸಲೋಹ. ಸಿಂಧುರಸ್ಯ ಕಾರಣಮ್ ।

**ಸಿಂಧುರತಲಕ ಸಿಂಧುರತಲಕ (ಪುಂ)** 1. ಗಜ, ಆನೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಸುಮಂಗಲಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು, ಪತಿಯು ಬದುಕಿರುವ ಹೆಂಗಸು. ಸಿಂಧುರಸ್ಯೇವ ತಲಕೋ ಯಸ್ಯ ಸಿಂಧುರಸ್ಯ ತಲಕೋ ಯಸ್ಯಾ ಇತಿ ವಾ ।

**ಸಿಂಧುರ ಸಿಂಧುರ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಕಪಿಲೆಹಿಟ್ಟು.

**ಸಿಂಧು ಸಿಂಧು (ಪುಂ)** 1. ಸಾಗರ, ಸಮುದ್ರ. ಸ್ಯಂದಂತೇ ಆಪೋಽನ್ — ಸ್ಯಂದ್ (ಪ್ರಸವಣ) “ಃ” ಧಃ ಸಂಪ್ರಸಾರಣಂ ಚ (೩-೧-೧೧) । “ಸಿಂಧುರ್ದೇವಮಯಂ ಪವಿತ್ರಮಸೃಜತತ್ಕೀರ್ತಿ-ಪೂರ್ತಾದಿಮುತಮ್” ನೈಷಂ ೧೨-೩೮ । 2. ಆನೆಯ ಸೊಂಡಿಲಿನಿಂದ ಬರುವ ತುಂತುರು. 3. ಸಿಂಧುದೇಶ. “ಯುಧಾಜಿತಶ್ಚ ಸಂದೇಶಾತ್ ಸ ದೇಶಂ ಸಿಂಧುನಾಮಕಮ್ । ದದೌ ದತ್ತಪ್ರಭಾವಾಯ ಭರತಾಯ ಭೂತಪ್ರಜಃ” ರಘುಂ ೧೪-೮೭ । 4. ಸಿಂಧುನದ. “ವಿನಿತಾಧ್ವಾಸ್ತಸ್ಯ ಸಿಂಧುತೀರವಿವೇಷ್ಠನಃ” ರಘುಂ ೪-೬೭ । 5. ಆನೆಯ ಮದೋದಕ. 6. ವರಾಣ. 7. ಬಿಳಿಗಾರ, ಒಂದು ವಿವಿಧ ಲವಣ. (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) 8. ಸಿಂಧುದೇಶದ ಜವರು. 9. ಸಂಗೀತದ ಒಂದು ರಾಗ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 10. ನದಿ, ಹೊಳೆ. “ತ್ವಯ್ಯಾದಾತುಂ ಜಲಮವನತೇ ಶಾಙ್ಗಿಣಿಂ ವರ್ಣಚೋರೇ ತಸ್ಯಾಃ ಸಿಂಧುಃ ಪೃಥುಮಪಿ ತನುಂ ದೂರ-ಭಾವಾತ್ಪ್ರವಾಹಮ್” ಮೇಘಂ ೧-೪೬ । “ಸಿಂಧುನದಾಂ ಗಜಮದೇಽಘೌ ದೇಶನದಭೇದಯೋಃ” ಹೇಮಂ । “ಸಿಂಧುರ್ದೇವಮಯದೇಶಾಭಿಧನದೇ ನಾ ಸರಿಸಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” ಮೇದಿಂ ।

**ಸಿಂಧುಕ ಸಿಂಧುಕ (ಪುಂ)** ಲಕ್ಕಿಗಿಡ.

**ಸಿಂಧುಕಫ ಸಿಂಧುಕಫ (ಪುಂ)** ಸಮುದ್ರದ ನೊರೆ. ಸಿಂಧುಃ ಕಫ ಇವ ।

**ಸಿಂಧುಜ ಸಿಂಧುಜ (ನಂ)** ಸಿಂಧುವಲವಾ. ಸಿಂಧುಜಯಿತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುಮವಿ) “ಃ” (೩-೨-೧೮) । —ಜನ್ಮ —ಜನ್ಮ.



ಸಿಂಧುಜನ್ಮನ್ ಸಿಂಧುಜನ್ಮನ್ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಸಿಂಧೋ:  
 ಕೀರಿಸಮುದ್ರಾತ್ ಜನ್ಮ ಯಸ್ಯ ।  
 ಸಿಂಧುಜಾ ಸಿಂಧುಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲಕ್ಷ್ಮಿ. ಸಿಂಧೋರ್ಜಾಯತೆ —  
 ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಙ:" (೩-೨-೯೮) ।  
 ಸಿಂಧುನಂದನ ಸಿಂಧುನಂದನ, -ಸುತ -ಸುತ, -ಸುನು  
 -ಸೂನು (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ.  
 ಸಿಂಧುನಾಥ ಸಿಂಧುನಾಥ (ಪುಂ) ಸಮುದ್ರ. ಸಿಂಧುನಾಥನಾಥ:  
 ಪತಿ: । "ಮತ್ಕುಣಾವಿವ ಪುರಾ ಪರಿಪ್ಲವೌ ಸಿಂಧುನಾಥಶಯನೇ  
 ನಿವೇದುಷ:" ಮಾಘಂ ೧೪-೬೮ ।  
 ಸಿಂಧುರ ಸಿಂಧುರ (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. ಸಿಂಧು ಮದೋದಕಂ  
 ರಾತಿ — ರಾ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩) । "ವ್ಯೋಮಾಂತ:-  
 ಸ್ಪೃಶಿ ಸಿಂಧುರೇಷ್ಯ ಸಮರಾರಮ್ಭೋದ್ದುರೇ ಧಾವತಿ" ನೆಪಂ  
 ೧೨-೩೬ ।  
 ಸಿಂಧುಲವಣ ಸಿಂಧುಲವಣ (ನಂ) ಸೈಂಧವಲವಣ. ಸಿಂಧು  
 ಜಾತಂ ಲವಣಮ್ ।  
 ಸಿಂಧುವಾರ ಸಿಂಧುವಾರ (ಪುಂ) 1. ಉತ್ತಮ ಜಾತಿಯ  
 ಕುದುರೆ. ಸಿಂಧು ವೃಣೋತಿ — ವೃನ್ (ವರಣ) "ಅನ್"  
 (೩-೨-೧) । 2. ಲಕ್ಷ್ಮಿಗಿಡ.  
 ಸಿಂಧುವಾರಕ ಸಿಂಧುವಾರಕ (ಪುಂ) ಲಕ್ಷ್ಮಿಗಿಡ.  
 ಸಿಂಧುಶಯನ ಸಿಂಧುಶಯನ (ಪುಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಸಿಂಧು:  
 ಶಯನಂ ಯಸ್ಯ ।  
 ಸಿಂಧುಸಂಜ್ಞಮ ಸಿಂಧುಸಂಜ್ಞಮ (ಪುಂ) ನದ ನದಿ ಮತ್ತು  
 ಸಮುದ್ರ ಇವು ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರುವುದು, ನದ (ಗಂಡುಹೊಳೆ)  
 ಮತ್ತು ನದಿಗಳು ಸಮುದ್ರದೊಡನೆ ಸೇರುವುದು.  
 ಸಿಂಧೋ: ನದೀನದಯೋ: ನದೀಸಮುದ್ರಯೋಶ್ಚ ಸಂಜ್ಞಮ: । "ಸಂಜ್ಞಮ:  
 ಸಿಂಧುಸಂಜ್ಞಮ:" ಅಮಂ ।  
 ಸಿಂಧುಪಲ ಸಿಂಧುಪಲ (ನಂ) ಸೈಂಧವಲವಣ. ಸಿಂಧೋ:  
 ಸಮುದ್ರಸ್ಯ ಉಪಲಮಿವ ।  
 ಸಿಪ್ರ ಸಿಪ್ರ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಪಿಚ (ಕ್ಷರಣ) "ಕಿವ್"  
 (೩-೨-೬೧) । ಕ್ಷಿಪಂ ರಾತಿ — ರಾ (ದಾನೇ) "ಕ:"  
 (೩-೨-೩) । "ಸುಭಾಜ್ಞಮೌ ದ್ವೌ ಮೃಗಪಿಪ್ಲುಪಕ್ಷಜೌ ದಶಾಶ್ವ-  
 ಸಿಪ್ರಪ್ರಹಿಣೇಮಿಚಂದಿರಾ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 2. ಸ್ವೇದ, ಬೆವರು.  
 (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪ್ರಾ -ಪ್ರಾ. ಒಂದು ನದಿ. "ಸಿಪ್ರೋ ನಿರ್ದಾಘ-  
 ಸಲಿಲೇ ಸಿಪ್ರಾ ತು ಸರಿವಂತರೇ" ಮೇದಿಂ । "ಅನೇನ ಯುನಾ ಸಹ  
 ಪಾರ್ಥಿವೇನ ರಮ್ಭೋಃ ಕಂಚಿನ್ಮನಸೋ ರುಚಿಸ್ತೇ । ಸಿಪ್ರಾತರಜ್ಞಾ-  
 ನಿಲಕಂಪಿತಾಸು ವಿಹೃತುಮುಪಾಪರಂಪರಾಸು" ರಘುಂ ೬-೩೫ ।  
 ಸಿಮ ಸಿಮ (ಪುಂ) ಎಲ್ಲಾ, ಸಕಲ, ಸಮಸ್ತ. ಪಿಚ್ (ಬನ್ಧನೆ)  
 "ಮನ್" (ಉಂ ೧-೧೪೧) । ನೇಮ ಸಮ ಸಿಮ ಇತ್ಯಾದಿ

ಸರ್ವಾದಿ ಗಣದಲ್ಲಿ ಸೇರಿದ ಪದ. ಸಮುದಾಯವಾಚಕ  
 ಶಬ್ದ.  
 ಸಿಮ್ಬಾ ಸಿಮ್ಬಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧಾನ್ಯ ಮತ್ತು ಕಾಯಿಗಳ ಸಿಪ್ಪೆ.  
 ಸಮತಿ—ಪಮ (ವೆಕಲವ್ಯ) "ಬನ್" (ಉಂ ೪-೯೫) ।  
 ಸಿಮ್ಬಿ ಸಿಮ್ಬಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧಾನ್ಯ ಮತ್ತು ಕಾಯಿಗಳ ಸಿಪ್ಪೆ.  
 ಸಿರ ಸಿರ (ಪುಂ) ಹಿಪ್ಪಲಿಯ ಬೇರು.  
 ಸಿರಾ ಸಿರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನರ, ಶರೀರದಲ್ಲಿರುವ ನಾಡಿ, ದೇಹ  
 ದೊಳಗಿರುವ ಧಮನಿ. ಪಿಚ್ (ಬನ್ಧನೆ) "ರಕ್" ಬಾಹುಂ ।  
 "ವ್ಯಾಪ್ತುವನ್ತ್ಯಭಿತೋ ದೇಹಂ ನಾಭಿತ: ಪ್ರಸೃತಾ: ಸಿರಾ: । ಪ್ರತಾನಾ:  
 ಪಚಿನೀಕಂದಾತ್ ಬಿಸಾದೀನಾಂ ಯಥಾ ಜಲಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ  
 ಶಾರೀರಂ ೭-೨೩ । [ವಿವರಕ್ಕೆ "ನಾಡಿ" ಪದದಲ್ಲಿ  
 ನೋಡಿ.]  
 ಸಿಪಾಧಯಿಷಾ ಸಿಪಾಧಯಿಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಾಧಿಸುವ  
 ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಸಾಧನೇಚ್ಛೆ. ಸಾಧಯಿತುಮಿಚ್ಛಾ—ಸಾಧ (ಸಂಸಿಧೌ)  
 + ಪಿಚ್+ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨) । ಅನುಮಿತಿವಿಷಯಿ-  
 ಣಿಚ್ಛಾ । ಅನುಮಿತಿಸ್ವಪ್ರಕಾರೇಚ್ಛಾ । ಪರ್ವತೇ ವಹ್ನಯನುಮಿತಿಮ್  
 ಭೂದಿತೀಯಾಕಾರಿಕೇಚ್ಛಾ ಸಿಪಾಧಯಿಷಾ । "ಸಿಪಾಧಯಿಷಯಾ  
 ಶೂನ್ಯಾ ಸಿದ್ಧಿರ್ಯತ್ರ ನ ವಿಹತೇ । ಸ ಪಕ್ಷಸ್ತತ್ರ ವೃತ್ತಿಸ್ವಜ್ಞಾನಾ-  
 ದನುಮಿತಿಮೇವೇತ್" ಭಾಷಾಪಂ ೭೦ । ಸಿಪಾಧಯಿಷಾವಿರಹ  
 ವಿಶಿಷ್ಟಸಿದ್ಧಿಭಾವ: ಪಕ್ಷತಾ, ತದ್ವಾನ್ ಪಕ್ಷ: । ಇತಿ ಭಾಷಾ-  
 ಪರಿಚ್ಛೇದ: ।  
 ಸಿಠಾಸತ್ ಸಿಠಾಸತ್ (ವಿಂ) ಸ್ನಾನಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸು  
 ತಿರುವ. ಣಾ (ಶೌಚ) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) ।  
 ಸಿಠಾಸಾ ಸಿಠಾಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ನಾನಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ.  
 ಸ್ನಾನಮಾಡುವ ಇಚ್ಛೆ. ಸ್ನಾತುಮಿಚ್ಛಾ—ಣಾ (ಶೌಚ) + ಸನ್  
 "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨) । "ಸಿಠಾಸಯೇವ ಸಿತಭಾನುರೂಪೇತಿ  
 ಸಿಂಧುಮ್" ಯಾದಂ ೧೯-೧೩ ।  
 ಸಿಠಾಸು ಸಿಠಾಸು (ವಿಂ) ಸ್ನಾನಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ,  
 ಮೈ ತೊಳೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ. ಣಾ (ಶೌಚ) + ಸನ್  
 "ಉ:" (೩-೨-೧೬೮) ।  
 ಸಿಸಿಕತ್ ಸಿಸಿಕತ್ (ವಿಂ) ಸೇಚನೆಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸು  
 ತಿರುವ, ನೀರೆರೆಚಲು ಇಚ್ಛಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸೇಕ್ತುಮಿಚ್ಛನ್—  
 ಪಿಚ್ (ಕ್ಷರಣ) + ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) ।  
 ಸಿಸಿಕಾ ಸಿಸಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೇಚನೆಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ,  
 ಸಿಂಪಿಸಲು ಇಚ್ಛೆ. ಸೇಕ್ತುಮಿಚ್ಛಾ — ಪಿಚ್ (ಕ್ಷರಣ) + ಸನ್  
 "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨) । "ಕಂದರ್ಪಪ್ರವಣಮನಾ: ಸಖೀಸಿಸಿಕಾ-  
 ಲಕ್ಷ್ಯೇಣ ಪ್ರತಿಯುಕ್ತಮಂಜಲಿಂ ಚಕಾರ" ಮಾಘಂ ೮-೩೫ ।



ಸಿಸಿಖ್ ಸಿಸಿಕ್ಖ್ (ವಿಂ) ಸೇಚನೆಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಸಿಂಪಿಸಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ. ಪಿವ (ಕ್ಷರಣೆ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮) ।

ಸಿಸ್ಸುಕ್ಖತ್ ಸಿಸ್ಸುಕ್ಖತ್ (ವಿಂ) ಸೃಷ್ಟಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ, ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿಯನ್ನು ಇಚ್ಛಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೨೪) ।  
"ಸಿಸ್ಸುಕ್ಖತಸ್ತೇ ಭುವನಾನಿ ಸಪ್ತ ಪ್ರಸಾದತೋ ನಾಥ ಬಭೂವ ವೇಶಾಃ" ಯಾದಂ ೨೦-೮೧ ।

ಸಿಸ್ಸುಕ್ಖಾ ಸಿಸ್ಸುಕ್ಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೃಷ್ಟಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ಉತ್ಪತ್ತಿ ಮಾಡಲು ಇಚ್ಛೆ. ಸೃಜಮಿಚ್ಛಾ - ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೦೨) ।

ಸಿಸ್ಸುಕ್ಖ ಸಿಸ್ಸುಕ್ಖ್ (ವಿಂ) ಸೃಷ್ಟಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಜಗತ್ತಿನ ನಿರ್ಮಾಣಕಾರ್ಯವನ್ನು ಇಚ್ಛಿಸುವ. ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) + ಸನ್ "ಃ" (೩-೨-೧೬೮) ।

ಸಿಹ್ಣುಡ ಸಿಹುಂಡ (ಪುಂ) ಸ್ನುಹೀವೃಕ್ಷ, ಕಳ್ಳಿಗಿಡ.

ಸಿಹ್ಣ ಸಿಹ್ಣ (ಪುಂ) ಲೋಬಾನ, ತುರುಷ್ಕದೇಶದ ವಾಸನಾ ದ್ರವ್ಯ. ಸ್ನಿಹ್ಯತಿ - ಣಿಗ್ಹ (ಪ್ರೀತೌ) + ಣಿವ್ (ಅಂತ-ಭಾವಿತಃ) "ಲ್" ಬಾಹುಂ । ಪೃಷಂ ।

ಸಿಹ್ಣಕ ಸಿಹ್ಣಕ (ಪುಂ) ಲೋಬಾನ. ಸಿಹ್ಣ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" ।

ಸೀಕರ ಸೀಕರ (ಪುಂ) ಜಲಕಣ, ತುಂತುರು. ಪ್ರಾಣಾಶ್ರಯ ತಾಲವ್ಯಾದಿಃ ಸೀಕರಃ । ತಥಾಪಿ ರಘುवंಶೇ ಸೀಕರ ಇತಿ ಪ್ರಯುಕ್ತಃ । "ಸ ನರ್ಮದಾರೋಪಸಿ ಸೀಕರಾರ್ಧಮರ್ದಿರಾನತೀತನಕಮಾಲೇ" ರಘುಂ ೪-೪೨ ।

ಸೀತಾ ಸೀತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನೇಗಿಲಿನ ಗೀರು, ನೇಗಿಲಿನಿಂದ ಉಳಲ್ಪಟ್ಟ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ನೇಗಿಲಿನ ಗೀಳು. ಪಿನ್ (ಬಂಧನ) "ಕ್" (೩-೨-೧೦೨) । ಪೃಷಂ । "ಸೀತಾ ಲಾಙ್ಗಲಪದ್ಧತಿಃ" ಅಮಂ । 2. ಸೀತಾದೇವಿ, ಜನಕರಾಜನ ಪುತ್ರಿ, ಶ್ರೀರಾಮನ ಪತ್ನಿ. ಜನಕಮಹಾರಾಜನು ಪುತ್ರಾರ್ಥಿಯಾಗಿ ಯಾಗಮಾಡಲು ಯಾಗಭೂಮಿಯನ್ನು ಶುದ್ಧಮಾಡಲು ಯತ್ನಿಸಿದಾಗ ಸೀತೆ (ನೇಗಿಲು ಗೀರಿದ ಸಾಲು) ಯಿಂದ ಆವಿರ್ಭವಿಸಿದ ಕಾರಣ ಇವಳಿಗೆ ಸೀತೆ ಯೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. "ಅಥ ಮೇ ಕೃಷತಃ ಕ್ಷೇತ್ರ ಲಾಙ್ಗಲಾ-ದ್ವಿತ್ಯತಾ ತತಃ । ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಶೋಷಯತಾ ಲಬ್ಧಾ ನಾಮ್ನಾ ಸೀತೇತಿ ವಿಶ್ರುತಾ । ಭೂತಲಾದ್ವಿತ್ಯತಾ ಸಾ ತು ವ್ಯವರ್ಥತ ಮಮಾತ್ಮಜಾ । ವೀರ್ಯಶುಲೇತಿ ಮೇ ಕನ್ಯಾ ಸ್ಥಾಪಿತೇಯಮಯೋನಿಜಾ" ರಾಮಾಂ । ಜನಕಮಹಾರಾಜನು ತನ್ನ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ನ್ಯಾಸವಾಗಿಟ್ಟಿದ್ದ ಶಿವಧನುಸ್ಸಿಗೆ ಹೆದೆಯನ್ನು ಏರಿಸಿದ ವೀರನಿಗೆ ತನ್ನ ಕನ್ಯೆ

ಯನ್ನು ಕೊಡುವುದಾಗಿ ನಿಶ್ಚಯಿಸಿದ್ದನು. ಈ ಉದ್ದೇಶ ದಿಂದಲೇ ಜನಕನ ಆಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ತನ್ನನ್ನು (ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು) ಕರೆತಂದ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಮಹರ್ಷಿಯ ಸೂಚನೆಯಂತೆ ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನು, ಜನಕನು ಪಣವಾಗಿಟ್ಟಿದ್ದ ಶಿವಧನುಸ್ಸಿಗೆ ಹೆದೆಯೇರಿಸಿ ಸುಮಂಹೂರ್ತದಲ್ಲಿ ಸೀತಾದೇವಿಯನ್ನು ಮದುವೆಯಾದನು. "ಇಯಂ ಸೀತಾ ಮಮ ಸುತಾ ಸಹಧರ್ಮಚರೀತವ । ಪ್ರತೀಚ್ಛತೇನಾಂ ಭದ್ರಂ ತೇ ಪಾಣಿ ಗೃಹ್ಣೀಷ್ವ ಪಾಣಿನಾ" ॥  
"ಜನಕಾನಾಂ ಕುಲೇ ಕೀರ್ತಿಮಾಹರಿಸ್ಯತಿ ಮೇ ಸುತಾ । ಸೀತಾ ಭರ್ತರಿಸಾಸಾಥ ರಾಮಂ ದಶರಥಾತ್ಮಜಮ್" ರಾಮಾಂ । ಸೀತಾ ವಿವಾಹಾನಂತರ ದಶರಥನು ಎಲ್ಲರೊಡನೆ ಆಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಬಂದು ಶ್ರೀರಾಮನ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕಕ್ಕೆ ಏರ್ಪಾಡು ಮಾಡುತ್ತಿರಲು ಕೈಕೇಯಿಯು ಅದನ್ನು ತಪ್ಪಿಸಿ ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು ವನವಾಸಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸಲು ಸೀತೆಯೂ ಶ್ರೀರಾಮನೊಡನೆ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಹೊರಟಳು. ಅಲ್ಲಿ ಸುಖವಾಗಿದ್ದ ಸೀತೆಯು ಅತ್ರಿಮಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿಯಾದ ಅನಸೂಯೆಯಿಂದ ದಿವ್ಯಾಭರಣಗಳನ್ನು ಪಡೆದು ಚಿತ್ರಕೂಟದಲ್ಲಿ ಕೆಲಕಾಲ ವಿದ್ವಾ ಮುಂದೆ ದಂಡಕಾರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಬಂದಾಗ ಸಮೀಪದ ಜನಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿದ್ದ ಶೂರ್ಪಣಖೆಯೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸಿಯು ರಾಮ ಲಕ್ಷ್ಮಣರನ್ನು ವಂಚಿಸಲು ಬಂದು ಕರ್ಣನಾಸಾಚ್ಯದನ ರೂಪವಾದ ಶಿಕ್ಷೆಗೆ ಗುರಿಯಾದಳು. ಈ ವಿಷಯ ತಿಳಿದ ಲಂಕೇಶ್ವರನಾದ ರಾವಣನು ಮಾರೀಚನ ಸಾಹಾಯ್ಯದಿಂದ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರನ್ನು ಸೀತೆಯಿಂದ ದೂರಮಾಡಿ ಏಕಾಕಿಣಿಯಾಗಿದ್ದ ಸೀತೆಯನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿಕೊಂಡೊಯ್ದನು. ಇತ್ತ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರು ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯಿಲ್ಲದುದನ್ನು ಕಂಡು ಬಹಳ ದುಃಖಿತರಾಗಿ ಅಲ್ಲಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುತ್ತ ರಾವಣನ ಪ್ರಹಾರದಿಂದ ನರಳುತ್ತಿದ್ದ ಜಟಾಯುವಿನ ಮೂಲಕ ಸೀತೆಯ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿದು ಋಷ್ಯಮೂಕ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿದ್ದ ಹನುಮಂತನ ಮೂಲಕ ಶ್ರೀರಾಮನು ಸುಗ್ರೀವನ ಸಖ್ಯವನ್ನು ಬೆಳೆಸಿ ಅಣ್ಣನಾದ ವಾಲಿಯಿಂದ ಹೊರದೂಡಲ್ಪಟ್ಟಿದ್ದ ಸುಗ್ರೀವನಿಗೆ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ದೊರಕಿಸಿ ಕೊಟ್ಟನು. ತನ್ನ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯಂತೆ ಸುಗ್ರೀವನು ಸೀತಾ ನ್ವೇಷಣೆಗಾಗಿ ಹನುಮಂತನನ್ನು ಕಳುಹಲು ಹನುಮಂತನು ಲಂಕೆಯಲ್ಲಿ ಅಶೋಕವನದಲ್ಲಿದ್ದ ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಂಡು ಅವಳನ್ನು ಸಂತೈಸಿ ಅವಳಿಂದ ಚೂಡಾಮಣಿಯನ್ನು ಪಡೆದು ಶ್ರೀರಾಮನಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿದನು. ಶ್ರೀರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರು ಸುಗ್ರೀವಸೈನ್ಯದೊಡನೆ ಲಂಕೆಗೆ ಹೊರಟುಬಂದು ಅಲ್ಲಿ ಇವರನ್ನು ಎದುರಿಸಿದ ಕುಂಭಕರ್ಣ ಇಂದ್ರಜಿತ್ತು ಮೊದಲಾದ ರಾಕ್ಷಸರನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದರು. ಇದರಿಂದ ಕುಪಿತನಾಗಿ ಬಂದ ರಾವಣನನ್ನು ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀರಾಮನು



ಸಂಪರಿಸಿ ಸೀತೆಯೊಡನೆ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಬಂದು ವತ್ಸಾಭಿ  
ಷಿಕ್ತನಾದನು. 3. ಗಂಗಾನದಿ. 4. ಪಾರ್ವತೀದೇವಿ.  
5. ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿ. 6. ಮದಿರೆ, ಮದ್ಯ. 7. ನೇಗಿಲಿ  
ನಿಂದ ಉತ್ಪತ್ತಿ. 8. ಸಸ್ಯ, ಪೈರು. "ಸೀತಾ ಸಸ್ಯೇ ನಮೋನಮಾ  
ಜಾನಕ्याಂ ಲಾಙ್ಗಲಾಘವಿನಿ" ನಾನಾರ್ಥಂ. "ಸೀತಾ ಲಾಙ್ಗಲ-  
ರೇಖಾ ಸ್ಥಾತ್ ವ್ಯೋಮಗಜ್ಞಾ ಚ ಜಾನಕೀ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಸೀತಾಪತಿ ಸೀತಾಪತಿ (ಪುಂ) ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರ, ಸೀತಾಯಾಃ  
ಪತಿಃ.

ಸೀತಕಾರ ಸೀತಕಾರ (ಪುಂ) ಚಳಿಯಿಂದ ಅಥವಾ ದಂತ  
ಕ್ಷುತಾದಿಗಳಿಂದ ಬಾಯಲ್ಲಿ ಉಸಿರನ್ನು ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವಾಗ  
ಉಂಟಾಗುವ ಶಬ್ದ, ನಿಟ್ಟುಸಿರು ಬಿಡುವಾಗ ಉಂಟಾಗುವ  
ಶಬ್ದ. ಸೀತ್+ಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಕೃ" (೩-೩-೧೮).  
"ಪ್ರಾಣೇಶಾನಭಿ ವಿದಧುವಿವೃತಹಸ್ತಾಃ ಸೀತಕಾರಂ ಸಮುಚಿತಮುತ್ತರಂ  
ತರಣ್ಯಃ" ಮಾಘಂ ೮-೧೩. -ಕೃತಮ್ -ಕೃತಮ್. ಭಾವೇ  
"ಕೃ" (೩-೩-೧೧೪). "ವಿದಧತಿ ದಶನಾನಾಂ ಸೀತಕೃತಾ-  
ವಿಷ್ಣುತಾನಾಮಭಿನವರವಿಭಾಸಃ ಪದಾರಾಗಾನುಕಾರಮ್" ಮಾಘಂ  
೧೧-೫೪.

ಸೀತ ಸೀತ (ನಂ) ನೇಗಿಲಿನಿಂದ ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಭೂಮಿ, ನೇಗಿಲಿನ  
ಗೇರಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ಭೂಮಿ. ಸೀತಯಾ ಸಮಿತಮ್ - ಸೀತಾ  
"ಯತ್" (೪-೪-೯೧). "ಸೀತಯಾ ಕೃಷ್ಣಂ ಚ ಹಲ್ಯವತ್"  
ಅಮಂ.

ಸೀತ ಸೀತ (ನಂ) ಅಲಸ್ಯ, ಸೋಮಾರಿತನ.

ಸೀತ ಸೀತ (ಪುಂ) ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. ಸೀತು ಪೃಷ್ಠಂ ಶಸ್ಯ  
ಸಃ.

ಸೀಮನ್ ಸೀಮನ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಡಿ, ಎಲ್ಲ. ಸೀಯತೇ-ಪಿಬ್  
(ಬನ್ಧನ) "ಮನಿನ್" (೩ಂ ೪-೧೫೧). ನಿಪಾಂ. 1.  
ಸೀಮಾ ಸೀಮಾನೌ ಸೀಮಾನಃ. ವಾ "ಛಾಪ್" (೪-೧-೧೩).  
ಪಕ್ಷೇ ಸೀಮಾ ಸೀಮೇ ಸೀಮಾಃ. "ಯಸ್ಯಾಮಜಿಹ್ವಾ ಮಹತೀಮಪಜ್ಞಾಃ  
ಸೀಮಾನಮತ್ಯಾಯತಯೋಽಪ್ಯಜಂತಃ" ಮಾಘಂ ೩-೫೭. 2. ವೃಷಾ,  
ಅಂಡಕೋಶ. 3. ಸ್ಥಿತಿ. 4. ಕ್ಷೇತ್ರ. "ಸೀಮಾಽಽಘಾಡೇ  
ಸ್ಥಿತೀ ಕ್ಷೇತ್ರೇ" ಹೇಮಂ. "ಸೀಮಾಽಽಘಾಡಸ್ಥಿತೀಕ್ಷೇತ್ರೇಽಪ್ಯಜಂತಃ  
ಕೋಶೇಽಪಿ ಚ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ. 5. ಹೆಕ್ಕುತ್ತು.

ಸೀಮಂತ ಸೀಮಂತ (ಪುಂ) ಹೆಂಗಸರ ಬೈತಲೆ. ಸೀಮಂತೋತ್ತರಃ  
ಶಕಂ. "ಅಪಶ್ಯಂತ ತಥಾ ಯಾಂತಮಾಕಾಶೇ ನಾಗಮುತಮಮ್.  
ಸೀಮಂತಮಿವ ಕುರ್ವಾಣಿ ನಮಸಃ ಪದ್ಮವರ್ಚಸಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ.

"ಸೀಮಂತೇ ಚ ತ್ವದ್ವಿಗಮಜಂ ಯತ್ರ ನಾಪಿ ವಧುನಾಮ್" ಮೇಘಂ  
೨-೨.

ಸೀಮಂತಕ ಸೀಮಂತಕ (ಪುಂ) 1. ನೆರಕವಾಸ. (ನಂ) 2.  
ಸಿಂಧೂರ.

ಸೀಮಂತಿನಿ ಸೀಮಂತಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಂಗಸು. ಸೀಮಂತೋಽಸ್ಯಾ  
ಅಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫). "ಛೀಪ್" (೪-೧-೫).  
"ಶ್ರೋಷ್ಯತಸ್ಮಾತ್ಪರಮವಹಿತಾ ಸೌಮ್ಯ ಸೀಮಂತಿನೀನಾಮ್"  
ಮೇಘಂ ೨-೩೭.

ಸೀಮಂತೋತ್ತರ ಸೀಮಂತೋತ್ತರ (ನಂ) ಮೊಂಡೆ  
ಸಂಸ್ಕಾರಗಳಲ್ಲೊಂದು ಸಂಸ್ಕಾರ. ಸೀಮಂತಸ್ಯ ಉತ್ತರಮ್  
ಉತ್ತರಂ ಯತ್ರ.

ಸೀಮಾವಿವಾದ ಸೀಮಾವಿವಾದ (ಪುಂ) ಗಡಿಯ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ  
ಉದ್ಭವಿಸುವ ವ್ಯವಹಾರ, ಗ್ರಾಮ ಮತ್ತು ನಗರಗಳ ಎಲ್ಲ  
ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾಗುವ ಕಲಹ. ಸೀಮಾಯಾಃ ವಿವಾದಃ.

ಸೀರ ಸೀರ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. ಸಿನೋತಿ-ಪಿಬ್ (ಬನ್ಧನ)  
"ಕೃನ್" ದೋಷಶ್ಚ (೩ಂ ೨-೨೬). 2. ಹಲ, ನೇಗಿಲಿ.  
"ಸದ್ವಿಃ ಸೀರೋತ್ಕರ್ಷಣಸುರಭಿ ಕ್ಷೇತ್ರಮಾರುಹ್ಯ ಮಾಲಂ ಕಿಂಚಿತ್ಪಶ್ಚಾದ್-  
ವ್ರಜ ಲಘುಗತಿರ್ಮಯ ಏವೋತ್ತರೇಣ" ಮೇಘಂ ೧-೧೬. "ಸೀರೋ-  
ಕಂಹಲಯೋಃ ಪುಂಸಿ" ಮೇದಿಂ. 3. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

ಸೀರಧ್ವಜ ಸೀರಧ್ವಜ (ಪುಂ) ಜನಕಮಹಾರಾಜ.

ಸೀರಪಾಣಿ ಸೀರಪಾಣಿ (ಪುಂ) ಬಲರಾಮ. ಸೀರಃ ಪಾಣೌ  
ಯಸ್ಯ.

ಸೀರಭೃತ್ ಸೀರಭೃತ್ (ಪುಂ) ಬಲರಾಮ. ಸೀರಂ ಹಲಂ ವಿಭಜತಿ  
-ಛೀಪ್ (ಧಾರಣಾಪೋಷಣಯೋಃ) "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೭೬).  
"ಉದಯತಾಲಧ್ವಜಮೇತದಗ್ರೇ ಸೀಮಾಂತರಂ ಸೀರಭೃತೋ ಗುರೋಃ"  
ಯಾದಂ ೧೮-೧೨೩.

ಸೀರಾಯುಧ ಸೀರಾಯುಧ (ಪುಂ) ಬಲರಾಮ. ಸೀರಃ ಆಯುಧ-  
ಮಸ್ಯ. "ಆಕೃಷ್ಯತೇ ಚರಮಶೇಲವನೇ ವಿಹತುಂ ಸೀರಾಯುಧೇನ  
ಯಮುನೇವ ಸುಭಾಂಶುನೇಯಮ್" ಯಾದಂ ೧೯-೪೨.

ಸೀರಿನ್ ಸೀರಿನ್ (ಪುಂ) ಬಲರಾಮ. ಸೀರೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ  
"ಇನಿಃ" (೫-೨-೧೧೫). "ಸಾರ್ಧಮುಡ್ಧವಸೀರಿನ್ಮಯಾಮಯಾ-  
ಸಾವಾಸದತ್ಸದಃ" ಮಾಘಂ ೨-೨.

ಸೀವನ ಸೀವನ (ನಂ) 1. ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ನೇಯುವುದು  
ಪಿಬ್ (ತನ್ತುಸಂತಾನ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫). ಪೃಷ್ಠಂ  
ದೀಪಃ. 2. ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ಹೊಲಿಯುವುದು.

ಸೀವನಿ ಸೀವನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಿಶುಗ್ರಹ ಹೊದಿಕೆಯ ಚರ್ಮ.

ಸೀಸ ಸೀಸ (ನಂ) ಸೀಸಲೋಹ. ಸೀಸವು ತೆಗರದ ಮೇಲೆ  
"ಸುವರ್ಣಸ್ಯ ಮಲಂ ರೂಪ್ಯಂ ರೂಪ್ಯಸ್ಯಾಪಿ ಮಲಂ ತ್ರಪು. ಜೇಯಂ"



ತಪುಮಲಂ ಸೀಸಂ ಸೀಸಸ್ಯಾಪಿ ಮಲಂ ಮಲಮ್" ಭಾಂ ತಜ್ಜೋಗಂ ।

ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" । ಸೌಪತ್ರ ಸೀಸಕಮ್

ಸೌಪತ್ರ ಸೀಸಪತ್ರ (ನಂ) ಸೀಸಲೋಹ.

ಸೌಪತ್ರ ಸೀಹುಂಡ (ಪುಂ) ಸ್ನುಹೀವೃಕ್ಷ, ಮುಂಡಗಳ್ಳಿ, ಗಿಡ. "ಸೌಪತ್ರೋ ವಜ್ರದ್ರುಃ ಸ್ನುಹೀವೃಕ್ಷೋ ಗುಡಾ" ಅಮಂ ।

ಸು ಸು (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಸವ, ಗರ್ಭಧಾರಣೆ. 2. ಗರ್ಭ ವಿಮೋಚನೆ. ಹೆರುವುದು. "ಸುಸ್ತು ಪ್ರಸವೇ ಗರ್ಭಮೋಚನೆ" ಮೇದಿಂ । (ಅವ್ಯಂ) 3. ಪೂಜೆ. 4. ಆತಿಥೆಯ, ಹೆಚ್ಚಿಗೆ. 5. ಅನುಮತಿ. 6. ಕೃಚ್ಛ, ಕಷ್ಟ. 7. ಸಮೃದ್ಧಿ.

"ಸು ಪೂಜಾಯಾ ಭೂಶಾಸ್ತ್ರಾನುಮತಿಕೃತ್ಸಮೃದ್ಧಿಃ" ಮೇದಿಂ ।

ಈ ಉಪಸರ್ಗಾವ್ಯಯವು ನಾಮಪದ ಮತ್ತು ವಿಶೇಷಣ ಪದಗಳೊಡನೆ ಸೇರಿದಾಗ ಈ ಕೆಳಗಿನ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಕೊಡುವುದು. (1) ಶುಭ, ಶೋಭನೆ, ಒಳ್ಳೆಯ. "ಶುಚಿನಾ ಸತ್ಯಸಂಧೇನ ಯಥಾ ಶಾಸ್ತ್ರಾನುಸಾರಿಣಾ । ಪ್ರಣತುಂ ಶಕ್ಯತೇ ದೃಢಃ ಸುಸಹಾಯೇನ ಧೀಮತಾ" ಮನುಂ ೭-೩೧ । "ತ್ರೈಲೋಕ್ಯೇ ದೀಪಕೋ ಧರ್ಮಃ ಸುಪುತ್ರಃ ಕುಲದೀಪಕಃ" । "ಸುಭ್ರುವಾಮಧಿಪಯೋಧರಪೀಠಮ್" ಮಾಘಂ ೧೦-೮೭ । (2) ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ. "ಸಂದೃಶ್ಯತೇ ಸಾಗರಮೇಖಲಾಃ ಸುಮಧ್ಯಮೇ ಮಧ್ಯಮಿದಂ ಧರಣಿಃ" ಯಾದಂ ೧೮-೧೦ । (3) ಚೆನ್ನಾಗಿ, ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ, ಪೂರ್ಣಿಯಾಗಿ. "ಸುಜೀರ್ಣಮತ್ರ ಸುವಿವಕ್ಷಣಃ ಸುತಃ ಸುಶಾಸಿತಾ ಸ್ತ್ರೀ ನೃಪತಿಃ ಸುಸೇವಿತಃ । ಸುಚಿಂತ್ಯ ಚೋಕ್ತಂ ಸುವಿಚಾರ್ಯ ಯತ್ಕೃತಂ ಸುದೀರ್ಘಕಾಲೇಽಪಿ ನ ಯಾತಿ ವಿಕ್ರಿಯಾಮ್" ಹಿತಂ ೧-೨೨ । (4) ಸುಖವಾಗಿ, ಸುಲಭವಾಗಿ. "ಸುಲಭಃ ಸದಾ ನಯವತಾಽಯವತಾ ನಿಧಿಗುಹ್ಯಾಕಾಞ್ಞಿಪರಮಃ ಪರಮಃ" ಕಿರಾಂ ೪-೨೦ । (5) ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅಧಿಕವಾದ. "ತುಙ್ಗವಜ್ರವ್ರಣಾಙ್ಕನ ಸುವಿಸ್ತೀರ್ಣೇನ ವಕ್ಷಸಾ" ಯಾದಂ ೧೬-೪೬ ।

ಸುಕುಂಡಕಾ ಸುಕುಂಡಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲೋಳಿಸರ, ಕತ್ತಾಳೆ. ಸುಕುಂಡ ಕುಂಡಕೋಷ್ಠಾಃ ।

ಸುಕುಂಡ ಸುಕುಂಡು (ಪುಂ) ನವೆ, ಕಡ್ಡಿ, ತುರಿ.

ಸುಕುಂದ ಸುಕುಂದ (ಪುಂ) 1. ಈರುಳ್ಳಿ. 2. ಅಲೂಗೆಡ್ಡೆ. ಸು ಸುಕು ಸುಂದರಃ ಕುಂದೋ ಯಸ್ಯ ।

ಸುಕುಂದಕ ಸುಕುಂದಕ (ಪುಂ) 1. ಈರುಳ್ಳಿ, ಪಲಾಂಡು. 2. ಅಲೂಗೆಡ್ಡೆ. 3. ಹಂದಿಗೆಡ್ಡೆ. ಸುಕುಂದ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" ।

ಸುಕುನ್ಯಾ ಸುಕುನ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚೈವನಮಹರ್ಷಿಯ ಪತ್ನಿ, ಶರ್ಯಾತಿರಾಜನ ಮಗಳು. [ಶರ್ಯಾತಿರಾಜನು ಒಂದು ದಿನ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಬೇಟೆಗೋಸ್ಕರ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಸುಕುನ್ಯೆಯು ಅವನ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಹೋಗಿದ್ದಳು. ಇವಳು ತನ್ನ ಸಂಗಾತಿಯರೊಡನೆ ಆಟವಾಡುತ್ತ ಒಂದು ಹುಟ್ಟಿದ

ಬಳಿ ಬಂದಾಗ ಆ ಹುಟ್ಟಿದ ಎರಡು ಬಿಲಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಬೆಳಕನ್ನು ಕಂಡಳು. ಚೈವನಮಹರ್ಷಿಯು ತಪಸ್ಸಿಗೆ ಕುಳಿತಾಗ ಅವನ ಮೇಲೆ ಹುಟ್ಟುವ ಬೆಳೆದುಬಂದಿತ್ತು. ಅದರೊಳಗೆ ಋಷಿಯ ಎರಡು ಕಣ್ಣುಗಳು ಮಾತ್ರ ಕಾಣುತ್ತಿದ್ದು ಅದನ್ನು ತಿಳಿಯದೆ ಸುಕುನ್ಯೆಯು ಮುಳ್ಳಿನಿಂದ ಎರಡು ಕಣ್ಣುಗಳನ್ನೂ ತಿವಿದಳು. ಋಷಿಯು ಕುರುಡನಾದನು. ಸುಕುನ್ಯೆಯು ಎಲ್ಲರೊಡನೆ ಬಿಡಾರಕ್ಕೆ ಬಂದಾಗ ರಾಜನ ಪರಿವಾರದವರಿಗೆಲ್ಲಾ ಮಲಮೂತ್ರಗಳು ನಿಂತು ಹೋಗಿ ಬಹಳ ಕಷ್ಟಕ್ಕೊಳಗಾದರು. ಆಗ ರಾಜನು ಆ ಋಷಿಯ ಬಳಿಗೆ ಬಂದು ತನ್ನ ಮಗಳ ಅಪರಾಧಕ್ಕಾಗಿ ಕ್ಷಮೆ ಬೇಡಿದನು. ಋಷಿಯು ಅಂಧನೂ ಮುದುಕನೂ ಆದ ತನ್ನ ಉಪಚಾರಕ್ಕೆ ಸುಕುನ್ಯೆಯನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಮದುವೆ ಮಾಡುವೆಯಾದರೆ ಎಲ್ಲರೂ ಕಷ್ಟದಿಂದ ಪಾರಾಗುವರೆಂದೂ ಇಲ್ಲದಿದ್ದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲರೂ ಮೃತಿಹೊಂದುವರೆಂದೂ ಹೇಳಲಾಗಿ ರಾಜನು ಅದಕ್ಕೆ ಸಮ್ಮತಿಸಿ ಮದುವೆಮಾಡಿ ಕೊಟ್ಟನು. ಬಳಿಕ ಎಲ್ಲರ ಕಷ್ಟವೂ ಮಾಯವಾಯಿತು. ಪತಿವ್ರತಾಶಿರೋಮಣಿಯಾದ ಸುಕುನ್ಯೆಯು ಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಪತಿಶುಶ್ರೂಷೆ ಮಾಡುತ್ತಾ ಒಂದು ದಿನ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದ ಅಶ್ವಿನೀದೇವತೆಗಳ ಮೂಲಕ ತನ್ನ ಪತಿಗೆ ಯೌವನವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಟ್ಟಳು.] "ವಲ್ಮೀಕೀರ್ದೇವದೃಶೋ ಲೋಕೋತ್ಥಿತೇ ಇವ ಜ್ಯೋತಿಷಿ । ತೇ ದೇವಕೋದಿತಾ ಬಾಲಾ ಜ್ಯೋತಿಷಿ ಕಂಠಕೇನ ವಂ ॥ ಅವಿಧ್ಯನ್ಮುಗ್ಧಭಾವೇನ ಸುಸ್ರಾವಾಸಕ್ ತತೋ ಬಹು । ಸತ್ಯನ್ಮುನಿರೋಷೋಽಭೂತ್ ಸೈನಿಕಾಣಾಂ ಚ ತತ್ಕ್ಷಣಾತ್ ॥ ರಾಜಾಪಿ-ಸ್ತದ್ಬಾಲಕಸ್ಯ ಪುರುಷಾನ್ ವಿस्ಮಿತೋಽಜ್ಞವೀತ್ । ಸುಕುನ್ಯಾ ಪ್ರಾಹ ಪಿತರಂ ಭೀತಾ ಕಿಂಚಿತ್ ಕೃತಂ ಮಯಾ ॥ ದುಹಿತುಸ್ತದ್ವಚಃ ಶ್ರುತ್ವಾ ಶರ್ಯಾತಿರಾಜತಿಸಾಧವಸಃ । ಮುನಿ ಪ್ರಸಾದಯಾಮಾಸ ವಲ್ಮೀ-ಕಾಂತಹಿತಂ ಶನೇ ॥ ತದಭಿಪ್ರಾಯಮಾಜ್ಞಾಯ ಪ್ರಾದಾತ್ ದುಹಿತರಂ ಮುನಃ । ಸುಕುನ್ಯಾ ಚೈವನಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ಪತಿಂ ಪರಮಕೋಪನಮ್ ॥ ಪ್ರೀಣಯಾಮಾಸ ಚಿತ್ತಜ್ಞಾ ಅಪ್ರಮತ್ತಾನುವೃತ್ತಿಮಿಃ । ಕಸ್ಯಚಿತ್ತವಥ ಕಾಲಸ್ಯ ನಾಸತ್ಯಾವಾಶ್ರಮಾಮತೋ ॥ ತೌ ಪೂಜಯಿತ್ವಾ ಪ್ರೋವಾಚ ವಯೋ ಮೇ ದತ್ತಮಿಶ್ವರೋ । ಕ್ರಿಯತಾಂ ಮೇ ವಯೋ ರೂಪಂ ಪ್ರಮದಾಣಾಂ ಯದೀಪ್ಸಿತಮ್ ॥ ಬಾಹ್ಮಿನ್ಯುಚತುರ್ವಿಪ್ರಮಭಿನಂದ್ಯ ಮಿಷಕ್ತಮೋ" ಭಾಗಂ ೧-೩ ।

ಸುಕರ ಸುಕರ (ವಿಂ) ಸುಖವಾಗಿ ಮಾಡಬಹುದಾದ, ಸುಲಭವಾಗಿ ಸಾಧಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಸು+ಕೃ (ಕರಣ) "ಕಲ್" (೩-೩-೧೨೬) । "ಸುಕರಸ್ತರವತ್ಸಹಿಷ್ಣುನಾ ರಿಪುಹ್ಮಮೂಲಯಿತುಂ ಮಹಾನಪಿ" ಕಿರಾಂ ೨-೪೦ ।

ಸುಕರಾ ಸುಕರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಾಧುವಾದ ಹೆಸು. ಸು ಸುಖಂ ಕರೋತಿ—ಕೃ (ಕರಣ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।



ಸು ಕ್ರಿಯತೇ ವಾ — ಸು + ಕೃನ್ "ಕ್ರಲ್" (೩-೩-೧೨೬) ।  
"ಸ್ಯಾದವೃದ್ಧಿ ತು ಸುಕರಾ" ಅಮಂ ।

ಸುಕರ್ಮನ್ ಸುಕರ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಶ್ವಕರ್ಮ, ದೇವತೆಗಳ ಶಿಲ್ಪಿ. 2. ವಿಷ್ಣುಂಭ ಮೊದಲಾದ 27 ಯೋಗಗಳಲ್ಲಿ ಏಳನೆಯ ಒಂದು ಯೋಗ. ಸು ಶೋಭನ ಕರ್ಮ ಯಸ್ಮಾತ್ ।  
"ಪರೋಪಕಾರಿ ಕುಶಲಃ ಕಲಾಸು ಹರ್ಷಣ ಯುಕ್ತೋ ನಿತರಾಂ ಯಶಸ್ವಿಃ । ಪ್ರಸೂತಿಕಾಲೇ ಯದಿ ಚೇತ್ಸುಕರ್ಮಾ ನರಃ ಸುಕರ್ಮಾ ಭವತಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧಃ" । (ವಿಂ) 3. ಒಳ್ಳೆಯ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡುವವನು, ಶುಭ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವ ದವನು. ಸು ಶೋಭನ ಕರ್ಮ ಯಸ್ಯ । "ಸುಕರ್ಮಾ ತು ಪುಮಾನ್ ಯೋಗಭೇದೇ ಸ್ಯಾದೇವಶಿಲ್ಪಿನಿ" ।

ಸುಕಲ ಸುಕಲ (ವಿಂ) ಧಾರಾಳವಾಗಿ ದಾನಮಾಡುವವನು, ಒಳ್ಳೆಯ ಕೊಡುಗೆಯುಳ್ಳವನು ಮತ್ತು ಭೋಗಪಡು ವವನು. ಸುಕ್ಲ್ಯತೇ — ಕಲ (ಶಬ್ದಸಂಸ್ಥಾನಯೋಃ) "ಕ್ರಲ್" (೩-೩-೧೨೬) । "ಸುಕ್ಲೋ ದಾತೃಭೋಕ್ತರಿ" ಅಮಂ ।

ಸುಕಾಂಡ ಸುಕಾಂಡ (ಪುಂ) 1. ಹಾಗಲದ ಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಹಾಗಲದ ಕಾಯಿ.

ಸುಕಾಮಾ ಸುಕಾಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೊಡಸರಿ, ನೀರಾಮೆ ಬಳ್ಳಿ. ಸುಷ್ಟು ಕಾಮ್ಯತೇತಸೌ — ಸು + ಕಮ್ (ಕಾಂತೌ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ರಲ್" (೩-೩-೧೨೬) । 2. ಒಳ್ಳೆಯದನ್ನು ಅವೇಕ್ಷಿಸುವ ಹೆಂಗಸು. ಶೋಭನಃ ಕಾಮೋ ಯಸ್ಯಾಃ ।

ಸುಕುಮಾರ ಸುಕುಮಾರ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠನಾದ ಬಾಲಕ, ಗುಣಶಾಲಿಯಾದ ಬಾಲಕ. 2. ಪುಂಡ್ರವಿರುವ ಕಬ್ಬು, ಪೆಟ್ಟಿಗೆಯಿರುವ ಕಬ್ಬು, ಪಟಾಪಟ ಕಬ್ಬು. "ಸುಕುಮಾರೋ ಮೃದೋ ತ್ರಿಷು । ಪುಂಸಿ ಪುಂಡ್ರಾಭಿವಾನೇಕೌ" ಮೇದಿಂ । 3. ಸಾವೆ ಧಾನ್ಯ. 4. ಕಾಡುಸಂಪಿಗೆ. (ವಿಂ) 5. ಬಹಳ ಕೋಮಲ ವಾದ, ಬಹಳ ನುಣುಪಾದ, ಬಹಳ ಮೃದುವಾದ. ಸುಷ್ಟು ಕುಮಾರ್ಯತೇ — ಕುಮಾರ (ಕೌಡಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ "ಕ್ರಲ್" (೩-೩-೧೨೬) । "ಸುಭೂನಾಸಾಕ್ಷಿಕೇಶಾಂತಂ ಸುಕುಮಾರನೃಪತ್ವ-ಚಮ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ । "ಕುಮುದಾದಪಿ ಸ್ಮಿತದೃಶಃ ಸುತರಾಂ ಸುಕುಮಾರಮಜ್ಜಮಿತಿ ನಾಪರಯಾ" ಮಾಧಂ ೯-೬೭ ।

ಸುಕುಮಾರಕ ಸುಕುಮಾರಕ (ಪುಂ) 1. ಬತ್ತ. 2. ಸುಂದರ ನಾದ ಬಾಲಕ. ಸುಕುಮಾರ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ್ರಲ್" । "ಸಿಹಃ ಪ್ರಸೇನಮವಧೀತ್ ಸಿಹೋ ಜಾಮ್ಬವತಾ ಹತಃ । ಸುಕುಮಾರಕ ಮಾ ರೋದಿಃ ತವ ಹ್ಯೇಷ ಸ್ಯಮಂತಕಃ" ಹರಿವಂ । (ನಂ) 3. ಸ್ತ್ರೀಯರು ಹಣಗೆ ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವ ಬೊಟ್ಟು.

ಸುಕುಮಾರಾ ಸುಕುಮಾರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಾಳೆಗಿಡ. 2. ಜಾಜಿ ಗಿಡ. 3. ಕಾಡಿರುವಂತಿಗೆ ಗಿಡ. 4. ಸ್ವಲ್ಪಕ್ಕಾ ಎಂಬ ಗಂಧದ್ರವ್ಯ.

ಸುಕುಮಾರಿ ಸುಕುಮಾರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೋಮಲ ಶರೀರ ವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. "ಸುಕುಮಾರಿ ಚ ಬಾಲಾ ಚ ಸತತಂ ಚ ಸುಖೋಚಿತಾ । ನೇಯಂ ವನಸ್ಯ ಯೋಗ್ಯೇತಿ ಸತ್ಯಮಾಹ ಗುಹರ್ಮಮ" ರಾಮಾಂ । 2. ಕಾಡಿರುವಂತಿಗೆ ಗಿಡ.

ಸುಕ್ರುತ್ ಸುಕ್ರುತ್ (ವಿಂ) 1. ಪುಣ್ಯಶಾಲಿ. ಸುಷ್ಟು ಕರೋತಿ — ಡುಕ್ರುತ್ (ಕರಣೇ) "ಕ್ರಲ್" (೩-೨-೮೯) । "ಸದ್ವಾ ಏವ ಸುಕ್ರುತಾಂ ಹಿ ಪಚ್ಯತೇ ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷಫಲವಾಮಿ ಕಾಙ್ಕಿತಮ್" ರಘುಂ ೧೧-೪೦ । 2. ಅದೃಷ್ಟಶಾಲಿ. 3. ಬುದ್ಧಿ ವಂತ. 4. ಧರ್ಮಶ್ರದ್ಧೆಯುಳ್ಳವನು, ಧರ್ಮಬುದ್ಧಿ ಯುಳ್ಳವನು.

ಸುಕ್ರುತ ಸುಕ್ರುತ (ನಂ) 1. ಭಾಗ್ಯ, ಅದೃಷ್ಟ, ಪುಣ್ಯದ ಫಲ. "ಅಗಮಯತ ಗತಾಗತಾನ್ಯಮೀಕ್ಷಣಂ ಸುಕ್ರುತಜುಷಸ್ವಯಮಜ್ಞನಾಃ ಸ್ವತನ್ತ್ರಃ" ಯಾದಂ ೨೪-೨೬ । 2. ಪುಣ್ಯ. "ಸುಕ್ರುತೋಪಚಯೇನ ಜಾತಸಿದ್ಧಿಸ್ತ್ವದಸೌ ಕಶ್ಚಿದುಪಸ್ಥಿತಾಪರಾಧಃ" ಯಾದಂ ೧೪-೧೫ । 3. ಶುಭ, ಮಂಗಳ. 4. ಸತ್ಕಾರ್ಯ, ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯ, ಜ್ಯೋತಿಷ್ಯೋಮಾದಿ ಕಾರ್ಯಾನುಷ್ಠಾನ. "ಸ್ವರ್ಗಾಭಿಸಂಧಿಸುಕ್ರುತಂ ವಶನಾಮಿವ ಮೇನಿರೇ" ಕುಮಾಂ ೬-೪೭ । "ಸುಕ್ರುತಂ ದುಷ್ಟತಂ ಲೋಕೇ ಗಚ್ಛಂತಮನುಗಚ್ಛತಿ । ತಸ್ಮಾದ್ವಿತ್ತಂ ಸಮಾಸಾಞ್ಚ ದೇವಾದ್ವಾ ಪೌರುಷಾದಪಿ । ದಕ್ಷಾತ್ಸಮ್ಯಕ್ ದ್ವಿಜಾತಿಮ್ಯಃ ಕೀರ್ತನಾನಿ ಚ ಕಾರಯೇತ್" । (ವಿಂ) 5. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸುಷ್ಟು ಕೃತಮ್ । "ಸುಕ್ರುತಂ ತು ಶುಭಂ ಪುಣ್ಯೇ ಕಲಿಬಂ ಸುವಿಹಿತೇ ತ್ರಿಷು" ಮೇದಿಂ ।

ಸುಕ್ರುತಿ ಸುಕ್ರುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ಕಾರ್ಯ. 2. ಪುಣ್ಯ ಕಾರ್ಯ. ಸು+ಡುಕ್ರುತ್ (ಕರಣೇ) "ಕ್ರಲ್" (೩-೩-೯೪) । 3. ಶುಭಕಾರ್ಯ, ಮಂಗಳ ಕಾರ್ಯ.

ಸುಕ್ರುತಿನ್ ಸುಕ್ರುತಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಪುಣ್ಯಶಾಲಿ, ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯ ಮಾಡಿದವನು. ಸುಕ್ರುತಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) । "ಚತುರ್ವಿಧಾ ಭಜಂತೇ ಮಾಂ ಜನಾಃ ಸುಕ್ರುತಿನೋಽರ್ಜುನ । ಆರ್ತೋ ಜಿಜ್ಞಾಸುರರ್ಯಾಥೀ ಜಾನಾತಿ ಚ ಭರತರ್ಷಭ" ಗೀತಾ ೭-೧೬ । 2. ಅದೃಷ್ಟವಂತ, ಭಾಗ್ಯವಂತ. "ಸುಕ್ರುತೀ ಪುಣ್ಯವಾನ್ ಧನ್ಯಃ" ಅಮಂ । 3. ಶುಭಕಾರ್ಯ ಮಾಡಿದವನು. "ಸಂತಃ ಸಂತು ನಿರಾಪದಃ ಸುಕ್ರುತಿನಾಂ ಕೀರ್ತಿಶ್ಚಿರಂ ವರ್ಧತಾಮ್" ಹಿತೋಂ ೪-೧೩೨ ।

ಸುಕೇಶಿ ಸುಕೇಶೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ವರ್ಗದ ವೇಶ್ಯೆಯರಲ್ಲೊಬ್ಬಳು, ದೇವತೆಗಳ ಒಬ್ಬ ವೇಶ್ಯೆ. 2. ಒಳ್ಳೆಯ ಕೇಶವಾಶ ವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಸು ಶೋಭನಾಃ ಕೇಶಾ ಯಸ್ಯಾಃ ।

ಸುಖ ಸುಖ (ನಂ) 1. ಸಂತೋಷ, ಆನಂದ. ಸುಖಯತಿ — ಸುಖ ದುಃಖ (ತತ್ಕರ್ಮಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ "ಕ್ರಲ್" (೩-೩-೫೬) ।



“ಯೋಷಿದಿವ್ಯಭಿಲಾಷ ನೆ ಹಾಲಾಂ ದುಸ್ತಯಜಃ ಕ್ವಲ ಸುಖಾದಪಿ  
 ಮಾನಃ” ಮಾಘಂ ೧೦-೨೧ । “ಯದನ್ಯುಗ್ರಹನಿಗ್ರಹಪ್ರಯುಕ್ತೇ ಸುಖ-  
 ದುಃಖೇ ಶ್ರೇಣುಮಃ ಸ್ವಯಮ್ಭವೋಽಪಿ” ಯಾದಂ ೧೪-೬೯ । “ಸುಖ-  
 ದುಃಖೇ ಸಮೇ ಕೃತ್ವಾ ಲಾಭಾಲಾಭೌ ಜಯಾಜಯೌ” ಗೀತಾ ೨-೩೮ ।  
 2. ಸುಲಭ್ಯ, ಸುಕರ್ಯ. 3. ಅನುಕೂಲವಾದ ಅನುಭವ.  
 4. ಧರ್ಮ ಮಾತ್ರವೇ ಅಸಾಧಾರಣಕಾರಣವಾಗಿರುವ  
 ಒಂದು ಗುಣ. ಧರ್ಮದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದರಿಂದ ಸುಖವು  
 ಧರ್ಮಜನ್ಯ. “ಸುಖಂ ತು ಜಗತಾಮೇವ ಕಾಮ್ಯಂ ಧರ್ಮೇಣ  
 ಜನ್ಯತೇ । ಅಧರ್ಮಜನ್ಯಂ ದುಃಖಂ ಸ್ಯಾತ್ ಪ್ರತಿಕೂಲಂ ಸಚೇತಸಾಮ್” ।  
 5. (ನೈಯಾಯಿಕ ಮತದಲ್ಲಿ) ಆತ್ಮಧರ್ಮ. 6. (ಸಾಂಖ್ಯ  
 ಮತದಲ್ಲಿ) ಚಿತ್ತಧರ್ಮ. ಈ ಚಿತ್ತಧರ್ಮವು ಪ್ರತಿಬಿಂಬ  
 ರೂಪದಿಂದ ಆತ್ಮನಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ಆತ್ಮಧರ್ಮವೂ  
 ಆಯಿತು. 7. (ಮೀಮಾಂಸಕರ ಮತದಲ್ಲಿ) ಸ್ವರ್ಗ. 8. ದುಃಖವಿಲ್ಲದಿರುವುದು,  
 ದುಃಖಾಭಾವ, ಕಷ್ಟವಿಲ್ಲದಿರು  
 ವುದು. ಭಾರವನ್ನು ಹೊತ್ತಿರುವವನು ದುಃಖ (ಕಷ್ಟ)  
 ವೆಂದು ಹೇಳುವನು, ಆ ಭಾರವನ್ನು ಕೆಳಗೆ ಇಳಿಸಿದನಂತರ  
 ಸುಖವೆಂದು ತಿಳಿಯುವನು. ಅದುದರಿಂದ ದುಃಖಾಭಾವವು  
 ಸುಖವೆಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕು. 9. ಮದ್ದಿಯೆಂಬ ಒಂದು  
 ಔಷಧ. 10. ಜಲ, ನೀರು. 11. ಆರೋಗ್ಯ. 12.  
 ರೂಪ ರಸ ಮೊದಲಾದ 24 ಗುಣಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಗುಣ.  
 ಇದು ನಿತ್ಯ ಮತ್ತು ಜನ್ಯ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ.  
 ಪರಮಾತ್ಮನ ವಿಶೇಷ ಗುಣಗಳಲ್ಲಿ ಸೇರಿರುವುದು ನಿತ್ಯ  
 ಸುಖ. ಜೀವಾತ್ಮನ ವಿಶೇಷ ಗುಣಗಳಾದ ಶುಭಾ  
 ದೃಷ್ಟೋತ್ಪನ್ನವಾದ ಧನಲಾಭ ಮಿತ್ರಲಾಭ ಆರೋಗ್ಯ  
 ಲಾಭ ಪುತ್ರಲಾಭ ಪಾಂಡಿತ್ಯಪ್ರಾಪ್ತಿ ಕುಟುಂಬನೀ  
 ಪರಿಷ್ಕಂಭಾದಿಗಳಿಂದ ಉಂಟಾದುದು ಜನ್ಯ (ಅನಿತ್ಯ).  
 ಈ ಸುಖವು ಕ್ಷಣಿಕವಾದುದು. ನ್ಯಾಯಮತದಲ್ಲಿ ಸುಖವು  
 (1) ವೈಯಕ್ತಿಕ (2) ಆಭಿಮಾನಿಕ (3) ಮಾನೋರಥಿಕ  
 ಮತ್ತು (4) ಆರ್ಮಾಸಿಕ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. ವಿಷಯ  
 ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಸುಖವು ವೈಯಕ್ತಿಕ.  
 ರಾಜ್ಯಾಧಿಪತ್ಯ ಪಾಂಡಿತ್ಯ ಗರ್ವಾದಿಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ  
 ಸುಖವು ಆಭಿಮಾನಿಕ. ವಿಷಯಗಳ ಧ್ಯಾನದಿಂದ ಉಂಟಾ  
 ಗುವುದು ಮಾನೋರಥಿಕ ಸುಖ. ಸೂರ್ಯನಮಸ್ಕಾರಾದಿ  
 ಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಸುಖವು ಆರ್ಮಾಸಿಕ. ಮೀಮಾಂಸಕರ  
 ಮತದಲ್ಲಿ ಸುಖವು (1) ಸಾಂಸಾರಿಕ ಮತ್ತು (2) ಪಾರ-  
 ಮಾಥಿಕ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಉಂಟಾ  
 ಗುವ ಸುಖವು ಸಾಂಸಾರಿಕ. ಸ್ವರ್ಗವು ಪಾರಮಾರ್ಥಿಕ.  
 ಸುಖವು (1) ಸಾತ್ವಿಕ (2) ರಾಜಸ ಮತ್ತು (3) ತಾಮಸ  
 ಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ.

ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಆಯಾಸದಿಂದ ಸಾಧ್ಯವಾಗುವುದರಿಂದ  
 ವಿಷದಂತೆ ಬಹಳ ದುಃಖಕರವಾಗಿ ಅನಂತರ ಅಭ್ಯಾಸಬಲ  
 ದಿಂದ ಪಕ್ವವಾಗಿ ಪ್ರಕೃತಿವಿಮುಕ್ತವಾದ ಆತ್ಮಸ್ವರೂಪವು  
 ಅನುಭವಕ್ಕೆ ಬಂದಾಗ ಅಮೃತದಂತೆ ಸಂತೋಷಕರವಾಗು  
 ವುದರಿಂದ ಈ ಸುಖವು ಸಾತ್ವಿಕ. “ಯತ್ತದಗ್ರೇ ವಿಷಮಿವ  
 ಪರಿಣಾಮೇಽಮೃತೋಪಮಮ್ । ತತ್ಸುಖಂ ಸಾತ್ವಿಕಂ ಪ್ರೋಕ್ತಮಾತ್ಮಬುದ್ಧಿ-  
 ಪ್ರಸಾದಜಮ್” ಗೀತಾ ೧೮-೩೭ ।

ಇಂದ್ರಿಯ ಮತ್ತು ವಿಷಯಗಳ ಸಂಬಂಧದಿಂದ  
 ವಿಷಯಾನುಭವಕಾಲದಲ್ಲಿ ಅಮೃತದಂತೆ ಸಂತೋಷಕರ  
 ವಾಗಿದ್ದು ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಅವುಗಳ ಕಾರಣ ನಿವೃತ್ತವಾದಾಗ  
 ವಿಷದಂತೆ ದುಃಖಕರವಾದುದು ರಾಜಸಸುಖ. “ವಿಷಯ-  
 ನ್ದ್ರಿಯಸಂಯೋಗಾತ್ ಯತ್ತದಗ್ರೇಽಮೃತೋಪಮಮ್ । ಪರಿಣಾಮೇ ವಿಷಮಿವ  
 ತತ್ಸುಖಂ ರಾಜಸಂ ಸ್ಮೃತಮ್” ಗೀತಾ ೧೮-೩೮ ।

ಅನುಭವ ಸಮಯದಲ್ಲೂ ಪರಿಣಾಮದಶೆಯಲ್ಲಿಯೂ  
 ಮೋಹಗೊಳಿಸುವ ಮತ್ತು ನಿದ್ರೆ ಆಲಸ್ಯ ಮತ್ತು  
 ಪ್ರಮಾದಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಸುಖವು ತಾಮಸಸುಖ.  
 “ಯದಗ್ರೇ ಚಾನುಬಂಧೇ ಚ ಸುಖಂ ಮೋಹನಮಾತ್ಮನಃ । ನಿರ್ದ್ರಾಲಸ್ಯ  
 ಪ್ರಮಾದೋಽಪಿ ತತ್ತಾಮಸಮುದಾಹೃತಮ್” ಗೀತಾ ೧೮-೩೯ । 13.  
 ದುಃಖಿನಾಶ, ಮೋಕ್ಷ. (ವಿಂ) 14. ಸುಖಕರವಾದ,  
 ಅನಂದವನ್ನಂಟುಮಾಡುವ, ಹಿತವಾದ, ಆಹ್ಲಾದಕರ  
 ವಾದ. “ದಿಶಃ ಪ್ರಸೇದುಃ ಮಹತೋ ವರುಃಸುಖಾಃ ಪ್ರದಕ್ಷಿಣಾರ್ಚಿ-  
 ಹೈವಿರಗ್ನಿರಾದೇ” ರಘುಂ ೩-೧೪ । 15. ಸುಲಭವಾದ.  
 (ಅವ್ಯಂ) 16. ಕ್ಲೇಶವಿಲ್ಲದೆ, ಸುಖವಾಗಿ. “ಕಷ್ಠಿತಸುಖ  
 ಪ್ರಾಪ್ತುಮನಾಃ ಸುಸಾರಥಿ ರಥಿ ಯುಯೋಜಾವಿಭುರಾ ವಘ್ಮಮಿವ”  
 ಮಾಘಂ ೧೨-೮ । 17. ಸುಖವಾಗಿ, ಸಂತೋಷದಿಂದ.  
 18. ಸುಲಭವಾಗಿ, ಸರಾಗವಾಗಿ. “ಅಜ್ಞಃ ಸುಖಮಾರಾಘ್ಯಃ  
 ಸುಖತರಮಾರಾಘ್ಯತೇ ವಿಶೇಷಜ್ಞಃ । ಜ್ಞಾನಲವದ್ವಿವಿಧಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಪಿ  
 ನರಂ ನ ರಂಜಯತಿ” ಭರ್ತುಂ ೧-೩ ।

ಸುಖಕರ ಸುಖಕರ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷವನ್ನಂಟು  
 ಮಾಡುವ, ಆಹ್ಲಾದಕರವಾದ. ಸುಖಂ ಕರ್ತುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ —  
 ಡುಕ್ಲಂ (ಕರಣಂ) “ಠಃ” (೩-೨-೨೦) । 2. ಸುಖವಾಗಿ  
 (ಕ್ಲೇಶವಿಲ್ಲದೆ) ಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ “ಢೀಪ್”  
 (೪-೧-೪) । -ಕರೀ -ಕರೀ. ಸುಖಕರೀ ವಿಧಾ । “ವಿಧಾ  
 ಭೋಗಕರೀ ಯಶಃಸುಖಕರೀ ವಿಧಾ ಗುಣಾ ಗುರುಃ” ಭರ್ತುಂ  
 ೧-೧೬ ।

ಸುಖಚಾರ ಸುಖಚಾರ (ಪುಂ) 1. ಉತ್ತಮವಾದ ಅಶ್ವ,  
 ಶ್ರೇಷ್ಠಜಾತಿಯ ಕುದುರೆ. ಸುಖೇನ ಚರತೀನೇನ — ಚರ  
 (ಗತೀ) “ಘ್” (೩-೩-೧೨೧) । 2. ಸುಖವಾದ  
 ಸಂಚಾರ.



ಸುಖಜಾತ ಸುಖಜಾತ (ನಂ) ಸುಖದ ಉತ್ಪತ್ತಿ. ಸುಖಸ್ಯ ಜಾತಮ್ ಉತ್ಪತ್ತಿ: । "ಏತಯ ಮುಜವನ್ವನಂ ಜನಯ ರದಖಂಡನಂ ಯೇನ ವಾ ಭವತಿ ಸುಖಜಾತಮ್" ಗೀತಗೋಂ ।

ಸುಖದ ಸುಖದ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಅಮಾನವಮುಖೇನ ಸ್ಪೃಷ್ಟಾ ಸವಾಸನಂ ಸಂಸಾರಮುತ್ಸಾರ್ಯ ಸುಖಂ ಸ್ವಪ್ರಾಪ್ತಿಸುಖಂ ದದಾತಿ — ಡು ದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕ:" (೩-೨-೩) । "ಅಮಾನವ-ಕರಸ್ಪರ್ಶಾತಿ ಭವಮುತ್ಸಾರ್ಯ ಸತ್ವರಮ್ । ಸ್ವಪ್ರಾಪ್ತಿಸುಖಮುಖಂ ದದಾತಿ ಸುಖದಶ್ಚ ಸ:" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: । "ಅನಂತಹುತಭುಕ್ ಭೋಕ್ತಾ ಸುಖದೋ ನೇಕದೋಷಜ:" ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ) 2. ಸುಖವನ್ನು ಕೊಡುವವನು. ಸುಖಂ ದದಾತಿ—ದಾನ್ "ಕ:" । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ದಾ-ದಾ. 3. ಗಂಗಾನದಿ. "ಸದಾ: ಪಾತಕಸಂಹರ್ತೃ ಸದೌ ದು:ಖವಿನಾಶಿನಿ । ಸುಖದಾ ಮೋಕ್ಷದಾ ಗಜ್ಞಾ ಗಜ್ಜೈವ ಪರಮಾ ಗತಿ:" । 4. ಸುಖವನ್ನು ಕೊಡುವ ಹೆಗ್ಗಸು.

ಸುಖದೋಹಾ ಸುಖದೋಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುಖವಾಗಿ ಹಾಲು ಕರೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಹಸು. ಸುಖೇನ ದೋಹಾ ।

ಸುಖಬೋಧ ಸುಖಬೋಧ (ಪುಂ) 1. ಸುಖವಾದ ಜ್ಞಾನ. ಕ್ಲೇಶವಿಲ್ಲದೆ ಉಂಟಾಗುವ ಜ್ಞಾನ. ಸುಖಾಯ ಬೋಧ: ಮೋಕ್ಷೋಪ-ಯೋಗಿ ಜ್ಞಾನಮ್ । 2. ಸುಖವಾಗಿ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥ ಜ್ಞಾನ. ಕ್ಲೇಶವಿಲ್ಲದೆ ಉಂಟಾಗುವ ಪದಾರ್ಥಗಳ ಜ್ಞಾನ. ಸುಖೇನ ಬೋಧ: । "ಬಾಲಾನಾಂ ಸುಖಬೋಧಾಯ ಕ್ರಿಯತೇ ತರ್ಕ-ಸಙ್ಗ್ರಹ:" ತಂ ಸಂ ।

ಸುಖಸಂದೋಹಾ ಸುಖಸಂದೋಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಾಧುವಾದ ಹಸು, ಸುಖವಾಗಿ ಹಾಲು ಕರೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಹಸು. ಸುಖೇನ ಸಂದೋಹಾ । "ಸುಖತಾ ಸುಖಸಂದೋಹಾ" ಅಮಂ ।

ಸುಖಸಾಧ್ಯ ಸುಖಸಾಧ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕಷ್ಟವಿಲ್ಲದೆ ಸಾಧಿಸ ಲ್ಪಡುವ. 2. ಕಷ್ಟವಿಲ್ಲದೆ ಸಾಧಿಸಬಹುದಾದ. ಸುಖೇನ ಸಾಧ್ಯಮ್ । ಸಾಧ (ಸಂಸಿದ್ಧಿ) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) । 3. ಸುಖವಾಗಿ ಸಾಧಿಸಬೇಕಾದ. 4. ಸುಖವಾಗಿ ಚಿಕಿತ್ಸೆ ಯಿಂದ ಗುಣಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. — ಗುಣಪಡಿಸಬಹು ದಾದ. 6. — ಗುಣಪಡಿಸಬೇಕಾದ.

ಸುಖಸ್ಪರ್ಶ ಸುಖಸ್ಪರ್ಶ (ಪುಂ) ಹಿತವಾದ ಸ್ಪರ್ಶ, ಅಹ್ಲಾದ ಕರವಾದ ಸ್ಪರ್ಶ. ಸುಖ: ಪ್ರಿಯ: ಸ್ಪರ್ಶ: । "ಸೇವ್ಯಮಾನಿ ಸುಖಸ್ಪರ್ಶ: ಸಾಲನಿರ್ಯಾಸಗನ್ಧಿಭಿ:" ರಘುಂ ೧-೩೮ ।

ಸುಖಾ ಸುಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವರುಣದೇವನ ನಗರ. ಸುಖಮಸ್ಯಾ-ಮಸ್ತಿ — "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) । "ಸುಖಂ ಶರ್ಮಣಿ ನಾಕೇ ಚ ಸುಖಾ ಪುರ್ಯಾ ಪ್ರವೇಶತ:" ಮೇದಿಂ ।

ಸುಖಾಧಾರ ಸುಖಾಧಾರ (ಪುಂ) ಸ್ವರ್ಗ. ಸುಖಸಾಧಾರ: ।

ಸುಖಾಪ್ತವ ಸುಖಾಪ್ತವ (ಪುಂ) ಸ್ನಾನಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಸುಖವಾದ ಸ್ನಾನಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ.

ಸುಖಾವಹ ಸುಖಾವಹ (ವಿಂ) 1. ಸುಖವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ಸೌಖ್ಯವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಡುವ. ಸುಖಂ ಸೌಖ್ಯಮ್ ಆನಂದಮ್ ಆವಹತಿ — ಸುಖ + ಆ + वह (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ತಂ ದೃಷ್ಟಾ ಶತ್ರುಹಂತಾರಂ ಮಹರ್ಷಿಣಾಂ ಸುಖಾ-ವಹಮ್ । ಬಭೂವ ಹೃಷಾ ವೇದೇಹಿ ಭರ್ತಾರಂ ಪರಿಪಸ್ವಜೇ" ರಾಮಾಂ । 2. ಆನಂದವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. "ಸುಖಾವಹಾ: ಸ್ವರ್ಗವಿಲಾಸಿನಿನಾಂ ವಿಹಾರಶಯ್ಯಾಮಪಿ ವೀರಲೋಕೇ" ಯಾದಂ ೨೦-೬೪ ।

ಸುಖಾಶ ಸುಖಾಶ (ಪುಂ) 1. ವರುಣದೇವ. ಸುಖಾ ಆಶ್ರಯತ್ವೇ ನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಶ:" (೪-೨-೧೦೦) । 2. ನೆಮ್ಮಿ ಗಿಡ. 3. ಸುಖಭೋಜನ. ಸುಖೇನ ಆಶ: ಮೋಜನಮ್ — ಅಶ (ಮೋಜನೇ) "ಏಷ್" (೩-೩-೧೮) । "ಸುಖಾಶೋ ವರುಣೇ ರಾಜತಿನಿಶೇ ಸುಖಮೋಜನೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಸುಖಿನ್ ಸುಖಿನ್ (ವಿಂ) ಸಂತೋಷದಿಂದಿರುವವನು, ಆನಂದ ಪಡುವವನು. ಸುಖಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ — "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) । "ಸವಧೂಕಾ: ಸುಖಿನೋಽಸ್ಮಿನ್ನನವರತಮಮಂದರಾಗತಾಮರಸದೃಶ:" ಮಾಧಂ ೪-೪೧ । "ಸ್ವಜನಂ ಹಿ ಕಥಂ ಹತ್ವಾ ಸುಖಿನ: ಸ್ಯಾಮ ಮಾಧವ" ಗೀತಾ ೧-೩೭ ।

ಸುಗ ಸುಗ (ನಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಮಲ, ಪುರೀಷ. ಸುಖೇನ ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಡ:" (ಬಾಂ ೩-೨-೪೮) । (ವಿಂ) 2. ಸುಖವಾಗಿ ಸಂಚರಿಸಬಹುದಾದ (ಪ್ರದೇಶ). ಸುಖೇನ ಗಚ್ಛತ್ಯತ್ರ — ಸು + ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಡ:" (ಬಾಂ ೩-೨-೪೮) । "ಸುಗೇಷು ದುರ್ಗೇಷು ಚ ತುಲ್ಯವಿಕ್ರಮೇರ್ಜವಾದಹಂಪ್ರವಿಕಯಾ ಯಿಯಾಸುಮಿ:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೩೨ । 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನಡೆಯುವವನು. 4. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹಾಡುವವನು. ಸು ಸುಂದರಂ ಗಾಯತಿ — ಗೈ (ಶಬ್ದೇ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೬) । "ಗೀತೆ: ಗಾ ವಾಕ್ಯಧರಾಶ್ಚ ವಾಕ್ಯಕೆ: ಸ್ತವೇಶ್ಚ ವಿಪ್ರಾ ಜಯನಿಶ್ವನೇರ್ಗಣಾ:" ಭಾಗಂ ೧೦-೧೨-೩೪ । 5. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅರ್ಥಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವವನು (ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವವನು).

ಸುಗಣ್ ಸುಗಣ್ (ವಿಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ಲೆಕ್ಕಗ, ಗಣಕ, ಕರಣಿಕ. ಸು ಸುಕೃತು ಗಣಯತಿ — ಗಣ (ಸಂಖ್ಯಾಚಾನೇ) "ವಿಚ್" (೩-೨-೭೪) ।

ಸುಗತ ಸುಗತ (ಪುಂ) 1. ಬುದ್ಧದೇವ. ಸು ಸುಕೃತು ಗತಂ ಜಾನ-ಮಸ್ಯ । 2. ಬೌದ್ಧ ಮತಾನುಯಾಯಿ. (ವಿಂ) 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನಡೆಯುವವನು. ಸು ಸುಂದರಂ ಗತಂ ಗಮನಂ ಯಸ್ಯ ।

ಸುಗತಿ ಸುಗತಿ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನಡೆಯುವವನು. ಸು ಸುಂದರಾ ಗತಿಯಸ್ಯ । "ಸುಗತೀರವಿಕ್ರತೋ ಜಯಾನ್ವಿತ: ಕೃತಯುಗ-



ರೂಪಕರ: ಸಿತಾಕ್ಷಯ: " ಬೃಹತ್ಸಂ ೧-೪೫ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಸದ್ಗತಿ, ಮೋಕ್ಷ. "ಯತ್ರ ಧರ್ಮ ಸಮಾಶ್ರಿತೃ ವಿಧುರ: ಸುಗತಿ ಗತ: " ಭಾಂ ಆದಿಂ |

ಸುಗಂಧ ಸುಗಂಧ (ಪುಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ಪರಿಮಳ. 2. ಅಪಣ, ಅಂಗಡಿ. ಸು ಶೋಮನಾ: ಗಂಧಾ: ದ್ರವ್ಯಾಪ್ಯಸ್ಯ | (ನಂ) 3. ಅನೇಬೇಲ. 4. ಗಂಧಕ. 5. ಜೀರಿಗೆ. (ವಿಂ) 6. ಒಳ್ಳೆಯ ಪರಿಮಳದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಶೋಮನೋ ಗಂಧೋ ಯಸ್ಯ | "ಆಗ್ರಾಪಿ ವಾನ್ ಗಂಧವಹ: ಸುಗಂಧ: " ಮೃದ್ವಿಂ ೨-೧೦ |

ಸುಗಂಧಕ ಸುಗಂಧಕ (ಪುಂ) 1. ಗಂಧಕ. ಸುಗಂಧ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" | 2. ಕೆಂಪು ತುಲಸಿ. 3. ಕಿತ್ತಲೆ ಗಿಡ.

ಸುಗಂಧಾ ಸುಗಂಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಣ್ಣರಾಶಿ. ಸು ಶೋಮನೋ ಗಂಧೋ ಯಸ್ಯಾ: | 2. ಕಚೋರ. 3. ಕಾಡುಸಬ್ಬಸಿಗೆ. 4. ಈಶ್ವರೀಹಂಬು. 5. ಸಲ್ಲೀಗಿಡ, ಅನೇಬೇಲ. 6. ತೀಟಕಸಂಧಿ. 7. ಹೆಜ್ಜಾಜಿ, ವೀರಜಾಜಿ ಗಿಡ. 8. ತುಲಸಿ ಗಿಡ. 9. ಮಾದಳದ ಗಿಡ. 10. ಕಾಡಿರುವಂತಿಗೆ.

ಸುಗಂಧಿ ಸುಗಂಧಿ (ಪುಂ) 1. ಪರಮಾತ್ಮ. 2. ಒಳ್ಳೆಯ ಪರಿಮಳದಿಂದ ಕೂಡಿದ ವಾಯು. ಸು ಶೋಮನೋ ಗಂಧೋ ಯಸ್ಯ—ಇಕಾರಾದೇಶ: (೪-೪-೧೩೪) | (ವಿಂ) 3. ಸುವಾಸನೆಯುಳ್ಳ, ಒಳ್ಳೆಯ ಪರಿಮಳವುಳ್ಳ. "ಸುಗಂಧಿನಿಶ್ವಾಸ-ವಿವೃಡತೃಣಮ್" ಕುಮಾಂ ೩-೪೬ | (ನಂ) 4. ಸುರುಸುರುಕೆ ಗಿಡ. "ಸುಗಂಧಿ: ಸ್ಯಾದಿಷ್ಟಗಂಧೇ ತ್ರಿಪು ಕಲಿಬ್ ತು ವಾಲ್ಮುಕೇ" ಮೇದಿಂ | 5. ಹಿಪ್ಪಲಿಯ ಬೇರು. 6. ಮುಸೈ, ಕೊನ್ನಾರಿ ಗೆಡ್ಡೆ. 7. ಕೊತ್ತಂಬರಿ ಬೀಜ.

ಸುಗಂಧಿಕ ಸುಗಂಧಿಕ (ಪುಂ) 1. ಗಂಧಕ. 2. ಹಾಲು ಮಡ್ಡಿ. ಶೋಮನೋ ಗಂಧೋ ಯಸ್ಯ | (ನಂ) 3. ಬಿಳಿಯ ತಾವರೆ.

ಸುಗಂಧಿತಾ ಸುಗಂಧಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೌರಭ್ಯ, ಒಳ್ಳೆಯ ಪರಿಮಳ. ಸುಗಂಧಿಭಾವಿ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) |

"ಸುಗಂಧಿತಾಮಪ್ರತಿಯಲಪೂರ್ವಾ ವಿಭ್ರಂತಿ ಯತ್ರ ಪ್ರಮದಾಯ ಪುಂಸಾಮ್" ಮಾಧಂ ೩-೪೪ | "ತ್ವ: " | ಸುಗಂಧಿತ್ವಮ್ ಸುಗಂಧಿತ್ವಮ್.

ಸುಗಂಧಿಮೂಲ ಸುಗಂಧಿಮೂಲ (ನಂ) ಲಾಮಂಚದ ಬೇರು. ಸುಗಂಧಿ ಮೂಲಮಸ್ಯ |

ಸುಗಂಧ ಸುಗಂಧ (ವಿಂ) 1. ಸುಖವಾಗಿ ಹೋಗಬಹುದಾದ, ಕ್ಲೇಶವಿಲ್ಲದೆ ಹೋಗಿ ಸೇರಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ಸುಖೇನ ಗಮ್ಯತೇ —ಸು + ಗಮ್ (ಗತೌ) "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬) | 2. ಸುಲಭವಾದ, ಕ್ಲೇಶವಿಲ್ಲದ. 3. ಸುಖವಾಗಿ ತಿಳಿಯಬಹುದಾದ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ.

ಸುಗಂಧ ಸುಗಂಧ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಜ್ಞಶಾಲೆಯ ಸುತ್ತಲೂ ಹಾಕುವ ಬೇಲಿ, ದಟ್ಟವಾಗಿ ಹಾಕುವ ಬೇಲಿ, ಯಜ್ಞ

ಶಾಲೆಯು ಅಶುಚಿಯಾಗದಿರಲು ಎಲ್ಲರ ಪ್ರವೇಶವನ್ನೂ ತಡೆಗಟ್ಟುವ ಒಂದು ಪ್ರಾಕಾರ.

ಸುಗಂಧಿತ ಸುಗಂಧಿತ (ವಿಂ) ಅಭಿಮಾನದಿಂದ ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಹಳ ಆಸೆಯಿಂದ ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಸುಗಂಧಿತ: |

ಸುಗಂಧಿತನಾಮನ್ ಸುಗಂಧಿತನಾಮನ್ (ವಿಂ) ಗೌರವದಿಂದ ಮತ್ತು ಅಭಿಮಾನದಿಂದ ಕರೆಯಲ್ಪಡುವ ಹೆಸರುಳ್ಳವನು, ಪುಣ್ಯಶಾಲೆಯೆಂದು (ಶ್ರೇಯಸ್ಕರವೆಂದು) ತಿಳಿದು ಕರೆಯಲ್ಪಡುವ ನಾಮಧೇಯವುಳ್ಳವನು. ಸುಗಂಧಿತ ನಾಮ ಯಸ್ಯ | "ತತ್ರಭವತೋ ವಾಜಪೇಯಾಜಿನೋ ಮಹಾಕವಿ: ಪಂಚಮ: ಸುಗಂಧಿತನಾಮನೋ ಮೃಗೋಪಾಲಸ್ಯ ಪೌತ್ರ: ಶ್ರೀಕಂಠಪದಲಾಙ್ಛನ: ಭವಮುನಿರನಿಮಿ ಜಾತುಕರ್ಣಿಪುತ್ರ: ಕವಿ: " ಮಂ ಬಿಂ ೧ |

ಸುಗಂಧ ಸುಗಂಧ (ಪುಂ) ರುಚಿಯಾದ ಆಹಾರದ ತುತ್ತು, ಸವಿಯಾದ ಕಬಳ. ಶೋಮನೋ ಗ್ರಾಸ: |

ಸುಗಂಧ ಸುಗಂಧ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯನ ಪುತ್ರ, ವಾನರಾಧಿಪತಿ, ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯ ದೊರೆ. ಶೋಮನಾ ಗ್ರೀವಾಸ್ಯ | [ಅಣ್ಣನಾದ ವಾಲಿಯು ಸುಗಂಧವನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸಿ ರಾಜ್ಯದಿಂದ ಹೊರಕ್ಕೆ ಅಟ್ಟಿದನು. ಶ್ರೀರಾಮನು ಸೀತಾವಿರಹದಿಂದ ದುಃಖಿತನಾಗಿ ಅಲ್ಲಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಮುಷ್ಯಮೂಲಕ ವರ್ಷದಲ್ಲಿ ಅಂಜನೇಯನನ್ನು ಕಂಡನು. ಅವನ ಮೂಲಕ ಸುಗಂಧನ ವಿಷಯ ತಿಳಿದು ಅಲ್ಲಿ ಶ್ರೀರಾಮನು ಸುಗಂಧನೊಡನೆ ಸ್ನೇಹ ಬೆಳೆಸಿ ಸುಗಂಧನಿಗೆ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಕೊಡಿಸುವುದಾಗಿ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಮಾಡಿ ಭ್ರಾತೃದ್ರೋಹಿಯಾದ ವಾಲಿಯನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ಸುಗಂಧನಿಗೆ ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿ ಪಟ್ಟ ಕಟ್ಟಿದನು. ಅನಂತರ ಸುಗಂಧನು ತನ್ನ ಸೇನೆಗಳನ್ನು ಸೀತಾ ಸ್ವೇಷಣೆಗಾಗಿ ಕಳುಹಿಸಿ ಅಂಜನೇಯನ ಮೂಲಕ ಸೀತೆಯ ವಿಷಯ ತಿಳಿದು ಶ್ರೀರಾಮನೊಡನೆ ಲಂಕೆಗೆ ಪ್ರಯಾಣ ಮಾಡಿ ರಾವಣನ ವಧೆ ಮತ್ತು ಸೀತಾಪರಿಗ್ರಹಾನಂತರ ಶ್ರೀಸೀತಾರಾಮರೊಡನೆ ಆಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಬಂದು ಶ್ರೀರಾಮಂ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕಮಹೋತ್ಸವದಲ್ಲಿ ಭಾಗವಹಿಸಿ ಶ್ರೀರಾಮನ ಅನುಮತಿ ಪಡೆದು ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಗೆ ತೆರಳಿದನು.] "ದೀಪ್ಯಮಾನಂ ತತೋ ವಹ್ನಿಂ ಪುಷ್ಪೇರಮ್ಯಚ್ಚ ಸತ್ಕೃತಮ್ | ತಯೋರ್ಮಧ್ಯೆ ತು ಸುಗಂಧಿವಿಂ ನಿರದಿಶ್ಯ ಸುಸಮಾಹಿತ: || ತತೋರ್ಗ್ನಿಂ ದೀಪ್ಯಮಾನಂ ತೌ ಚಕ್ರತುಷ್ಪ್ರ ಪ್ರದಕ್ಷಿಣಮ್ | ಸುಗಂಧಿವಿಂ ರಾಘವಶ್ಚೈವ ವಯಸ್ಯತ್ವಮುಪಾಗತೌ" ರಾಮಾಂ | "ಸುಗಂಧಿವಿಂ ಮುಮುಕ್ಷುರ್ದೇವಾ: ಸಾಕ್ಷಿವತ್ಯುಚು: ಸವಿಸ್ಮಯಾ:" ಮೃದ್ವಿಂ ೧೪-೩೮ | 2. ಪರಮೇಶ್ವರ. 3. ಇಂದ್ರ. 4. ರಾಜಹಂಸ. 5. ಒಂದು ಅಸ್ತ್ರ. 6. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ನಾಲ್ಕು ಅಶ್ವಗಳಲ್ಲೊಂದು ಅಶ್ವ. (ವಿಂ) 7. ಲಕ್ಷ್ಮಣನಾದ ಕುರವುಳ್ಳವನು. ಶೋಮನಾ ಗ್ರೀವಾ ಕಂಠೋ ಯಸ್ಯ |



**ಸುಗ್ರೀವಿ ಸುಗ್ರೀವೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೃಷ್ಣವನಪತ್ನಿಯಾದ ತಾಮ್ರಯು ಮೌಳಿ. ಶೋಭನಾ ಗ್ರೀವಾಽಸ್ಯಾ: "ಕೀಪ್". "ಶುಕೀ ಶ್ಯೇನೀ ಚ ಭಾಸೀ ಚ ಸುಗ್ರೀವೀ ಶುಚಿಗೃಧಿಕಾ | ಶುಕೀ ಶುಕಾನಜನಯತ್ ತುಲಕೀ ಪ್ರತಿಯುಲಕಿಕಾನ್ | ಶುಚ್ಯೌದಕಾನ್ ಪಕ್ಷಿಗಣಾನ್ ಸುಗ್ರೀವೀ ತು ವ್ಯಜಾಯತ".

**ಸುಗ್ರ ಸುಗ್ರ** (ವಿಂ) ಬಹಳ ಬಳಲಿದವನು, ಆಯಾಸಪಟ್ಟವನು, ಉತ್ಸಾಹ ಕುಂದಿದವನು, ಬೇಸರಗೊಂಡವನು. ಸು + ಗ್ರ (ಹರ್ಷಣಯೇ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೬) |

**ಸುಚಕ್ಷುಸ್ ಸುಚಕ್ಷುಸ್** (ಪುಂ) 1. ಸೂಕ್ಷ್ಮಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು, ಬಹಳ ಬುದ್ಧಿವಂತ, ಜ್ಞಾನಿ. (ವಿಂ) 2. ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ನೇತ್ರವುಳ್ಳವನು. ಶೋಭನಂ ಚಕ್ಷುರ್ಯಸ್ಯ |

**ಸುಚರಿತ ಸುಚರಿತ** (ನಂ) 1. ಸದಾಚಾರ, ಒಳ್ಳೆಯ ವ್ಯಾಪಾರ, ಶ್ಲಾಘ್ಯವಾದ ಕಾರ್ಯ, ವಿಹಿತವಾದ ಕಾರ್ಯ. ಸು ಶೋಭನಂ ಚರಿತಮ್ | "ಯಃ ಪ್ರಾಣಯೇತ್ ಸುಚರಿತಃ ಪಿತರಂ ಸ ಪುತ್ರಃ ಯದ್ಭರ್ತುರೇವ ಹಿತಮಿಚ್ಛತಿ ತತ್ ಕಲತ್ರಮ್" ಭರ್ತೃಂ ೧-೫೯ | 2. ಪುಣ್ಯ, ಭಾಗ್ಯ. "ತವ ಸುಚರಿತಮಙ್ಗುಲೀಯ ನೂನಮ್" ಶಾಕುಂ ೬-೧೧ | (ವಿಂ) 3. ಸದಾಚಾರಸಂಪನ್ನ. ಶೋಭನಂ ಚರಿತಂ ಯಸ್ಯ |

**ಸುಚರಿತ್ರಾ ಸುಚರಿತ್ರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಾಧ್ವಿ, ಪತಿವ್ರತೆ. ಸು ಶೋಭನಂ ಚರಿತ್ರಂ ಯಸ್ಯಾಃ | "ಸುಚರಿತ್ರಾ ತು ಸತೀ ಸಾಧ್ವೀ ಪತಿವ್ರತಾ" ಅಮಂ |

**ಸುಚಿತ್ರಕ ಸುಚಿತ್ರಕ** (ಪುಂ) ಮೈಮೇಲೆ ಮಚ್ಚೆಗಳಿರುವ ಹಾವು.

**ಸುಚಿರಮ್ ಸುಚಿರಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ಬಹಳ ದೀರ್ಘಕಾಲ. "ಅನಿತರಜನಲಮ್ಯಾಂ ಪ್ರೀತಿಮಾಸೇದುಷಿಭಿಃ ಸುಚಿರಮನುಬಮ್ಭವೇ ಸ್ವರ್ಗಮೋಕ್ಷಾತಿಶಾಯಿ" ಯಾದಂ ೨೪-೯೩ |

**ಸುಚಿರಾಯುಸ್ ಸುಚಿರಾಯುಸ್** (ಪುಂ) ದೇವತೆ. ಸುಚಿರಮ್ ಆಯುರ್ಯಸ್ಯ |

**ಸುಚುಟಿ ಸುಚುಟೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತುಂಡಸ, ಇಕ್ಕುಳ. 2. ಚಿಮುಟಿ.

**ಸುಚಲಕ ಸುಚಲಕ** (ಪುಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ವಸ್ತ್ರ, ಸುಂದರವಾದ ವಸ್ತ್ರ. ಶೋಭನಂ ಚಲಮ್—ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೪-೪-೪) | "ಸುಚಲಕಃ ಪಟೋಽಸ್ಮಿ ಸ್ಥಾತ್" ಅಮಂ | (ವಿಂ) 2. ಸುಂದರವಾದ ವಸ್ತ್ರ ಧರಿಸಿರುವವನು.

**ಸುಜನ ಸುಜನ** (ಪುಂ) 1. ಸತ್ಪುರುಷ, ಸತ್ಕುಲದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು, ಗೌರವಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದವನು. ಸು ಶೋಭನೋ ಜನಃ | "ಸತ್ಯನಿಯತವಚಸಂ ವಚಸಾ ಸುಜನಂ ಜನಾಶ್ರಲಯಿತುಂ ಕ ಇಶತೇ" ಮಾಘಂ ೧೪-೪೦ | (ವಿಂ) 2. ಉಪಕಾರದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು, ಧರ್ಮಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು.

**ಸುಜನತಾ ಸುಜನತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಪಕಾರಬುದ್ಧಿ, ಧರ್ಮಬುದ್ಧಿ. ಸುಜನಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) | "ಔಶ್ವರ್ಯಸ್ಯ ವಿಮೂಢಂ ಸುಜನತಾ ಶೌರ್ಯಸ್ಯ ವಾಕ್ಸಂಯಮೋ ಜ್ಞಾನಸ್ಯೋಪಶಮಃ ಶ್ರುತಸ್ಯ ವಿನಯೋ ವಿಸ್ತಸ್ಯ ಪಾತ್ರೇ ವ್ಯಯಃ" ಭರ್ತೃಂ ೧-೮೦ | "ಧಿಗಸ್ತ್ವೇತಾಂ ವಿಧ್ಯಾಂ ಧಿಗಪಿ ಕವಿತಾಂ ಧಿಕ್ ಸುಜನತಾಂ ವಯೋ ರೂಪಂ ವಾ ಧಿಕ್ ಧಿಗಪಿ ಚ ಯಶೋ ನಿರ್ಧನವತಾಮ್ | ಅಸೌ ಜಿಯಾದೇಕಃ ಸಕಲಗುಣಹೀನೋಽಪಿ ಧನವಾನ್ ಬಹಿರ್ಯಸ್ಯ ದ್ವಾರೆ ತೃಣಲವಸಮಾಃ ಸಂತಿ ಗುಣಿನಃ" ತದ್ಭಟಃ |

**ಸುಜನ್ಮನ್ ಸುಜನ್ಮನ್** (ವಿಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ಜನ್ಮ ಪಡೆದಿರುವ, ಗೌರವಾನ್ವಿತವೆಂಬಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿರುವ, ಪುಣ್ಯಮಾಡಿ ಹುಟ್ಟಿರುವ. "ಯಾ ಕೌಮುದಿ ನಯನಯೋರ್ಭವತಃ ಸುಜನ್ಮಾ ತಸ್ಯಾ ಭವಾನಪಿ ಮನೋರಥಬನ್ಧವನ್ತುಃ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೩೭ |

**ಸುಜಾತ ಸುಜಾತ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೆಳೆದು ನಿಂತಿರುವ. ಸು ಸುಕೃತ ಜಾತಃ | 2. ಸುಂದರವಾದ, ರಮಣೀಯವಾದ. "ತಿರಸ್ವಕಾರ ಭರಮರಾಮಿಲಿನಯೋಃ ಸುಜಾತಯೋಃ ಪಕ್ಷ್ಮಜಕೋಶಯೋಃ ಶ್ರಿಯಮ್" ರಘುಂ ೩-೮ |

**ಸುಜಾತಾ ಸುಜಾತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೋಗಿ ಗಿಡ.

**ಸುತ ಸುತ** (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. ಸುಯತೇ ಸ್ಮ—ಋ (ಪ್ರಸವೇ) "ಕ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ಅನನ್ಯತನ್ತ್ರಸ್ಯ ಪಿತುಃ ಪಿತಾಮಹಃ ಸುತಸ್ಯ ಚಾರಾಭಮವೇಕ್ಷ್ಯ ಸಂಯುಗಮ್ | ಸಮೀಹಿತೋದಕಮಿದಂ ದ್ವಯೋರಿತಿ ಪ್ರಬುಧ್ಯಮಾನೋ ನ ನಿರೋಧಮಾದಧೇ" ಯಾದಂ ೧೪-೯ | 2. ರಾಜ, ದೊರೆ. "ಸುತಃ ಪುತ್ರೇ ನೃಪೇ" ಮೇದಿಂ | (ನಂ) 3. ಸೋಮರಸ. (ವಿಂ) 4. ಹಿಂಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಂಡಿ ಹೊರಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಸೋಮರಸ). 5. ಉತ್ಪನ್ನವಾದ, ಉತ್ಪತ್ತಿಹೊಂದಿದ.

**ಸುತಜ್ಞಮ ಸುತಂಗಳಮ** (ಪುಂ) ತಂದೆ

**ಸುತನು ಸುತನು** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೋಮಲ ಶರೀರವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಶೋಭನಾ ತನುರ್ಯಸ್ಯಾಃ | 2. ಸುಂದರವಾದ ಶರೀರ, ಕೋಮಲವಾದ ದೇಹ. (ವಿಂ) 3. ಸುಂದರವಾದ ಶರೀರವುಳ್ಳ. ಶೋಭನಾ ತನುಃ ಶರೀರಂ ಯಸ್ಯ | "ಸ್ಮರಸಿ ಸುತನು ತಸ್ಮಿನ್ ಪರ್ವತೇ ಲಕ್ಷ್ಮಣೇನ ಪ್ರತಿವಿಹಿತಸರ್ಪಾಸುಸ್ಥಯೋಸ್ತಾನ್ಯಹಾನಿ" ತಂ ರಾಂ ೧-೨೬ |

**ಸುತಪಸ್ ಸುತಪಸ್** (ಪುಂ) 1. ತಪಸ್ವಿ, ಮುನಿ. ಸು ಶೋಭನಂ ತಪೋಽಸ್ಯ | 2. ಮಹಾವಿಷ್ಣು. "ಹಿರಣ್ಯನಾಮಃ ಸುತಪಾಃ ಪದ್ಮನಾಮಃ ಪ್ರಜಾಪತಿಃ" ವಿಂ ಸಂ | 3. ಸೂರ್ಯ. ಸು ಸುಕೃತ ತಪತಿ—ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) "ಅಸಿಃ" (ತಂ ೪-೨೨೬) | (ನಂ) 4. ಉಗ್ರವಾದ ತಪಸ್ಸು. (ವಿಂ) 5. ಉಗ್ರವಾದ ತಪಸ್ಸನ್ನಾಚರಿಸುವ.



ಸುತರಾಮ್ ಸುತರಾಮ್ (ಅವ್ಯಂ) ಅತ್ಯಂತವಾಗಿ, ಬಹಳವಾಗಿ. ಸು + "ತರ" (೪-೩-೪೭)। ಆಮು: (೪-೪-೧೧)।

"ಸಿತಂ ಸಿತಮ್ನಾ ಸುತರಾಂ ಮುನೇವಂಪುರ್ವಿಸಾರಿಭಿಃ ಸೌಮಿವಾಸ್ಯ ಲಮ್ಬಯನ್" ಮಾಘಂ ೧-೨೪।

ಸುತರ್ದನ ಸುತರ್ದನ (ಪುಂ) ಕೋಗಿಲೆ. ಸುಠ್ಠ ತರ್ದತಿ — ತರ್ದ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪)। "ಮಧುಕಣಠಿ ಘೋಷಯಿತ್ನು: ಕಾಮತಾಲ: ಸುತರ್ದನ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಸುತಲ ಸುತಲ (ಪುಂ) 1. ಭೂಲೋಕದ ಕೆಳಗಿರುವ ಸಪ್ತ ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ಅರನೆಯ ಲೋಕ. ಸು ಸುಠ್ಠ ತಲಂ ಯಸ್ಯ॥ ಇದು ಬಲಿಷ್ಠವರ್ತಿಯ ವಾಸಸ್ಥಾನ. ಪರಮಾತ್ಮನಾದ ಮಹಾವಿಷ್ಣುವು ಬಲಿಷ್ಠವರ್ತಿಗೆ ಪಾತಾಲದಲ್ಲಿರುವಂತೆ ಅದೇಶ ನೀಡಿ ತಾನು ಅಲ್ಲಿ ದ್ವಾರಪಾಲಕನಾಗಿರುವನು. "ಇಂದ್ರಾದಿವೈಯಲಕ್ಷಾ ಯಾ ಸಾ ಶ್ರೀಸ್ತಮನುಬರತೇ। ತಮೇವ ದೇವದೇಶಮಾರಾಧಯತಿ ಭಕ್ತಿತ:॥ ವ್ಯಪೇತಸಾವಿಸೌಷ್ಠಾಪಿ ವರತೇ ಸುತಲಾಧಿಪ:। ಏವ ದೈತ್ಯಪತಿ: ಸೌಖ್ಯಂ ಬಲಿ: ಪರಮ-ಪೂಜಿತ:॥ ಸುತಲೇ ವರತೇ ಯಸ್ಯ ದ್ವಾರಪಾಲೋ ಹರಿ: ಸ್ವಯಮ್" ದೇವಿಮಾಂ। 2. ದೊಡ್ಡ ಮಹಡಿಮನೆಯ ತಳಪಾಯ, —ಅಡಿಪಾಯ.

ಸುತಶ್ರೇಣಿ ಸುತಶ್ರೇಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಲಿಯಾಲದ ಮರ, ಇಲಿಕವಿಯ ಗಿಡ. ಸುತಾನಾಂ ಶ್ರೇಣಿ ಯಸ್ಯಾ:। "ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಶ್ರೇಣಿ ಸುತಶ್ರೇಣಿ ರಣಾ ಮುಷಿಕಪರ್ಯಪಿ" ಅಮಂ।

ಸುತಹಿಬುಕಯೋಗ ಸುತಹಿಬುಕಯೋಗ (ಪುಂ) ವಿವಾಹಕ್ಕೆ ಬಹಳ ಶುಭವಾದ ಒಂದು ಯೋಗ. ವಿವಾಹಲಗ್ನ ಲಗ್ನ ದಿಂದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಸ್ಥಾನ ಐದನೆಯ ಒಂಬತ್ತನೆಯ ಅಥವಾ ಹತ್ತನೆಯ ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ಗುರು ಅಥವಾ ಶುಕ್ರ ನಿದ್ಧಲ್ಲಿ ಸುತಹಿಬುಕಯೋಗವಾಗುವುದು. ಇದು ಬಹಳ ಶುಭಕರ. "ಲಗ್ನೇ ತತ್ಪಶ್ಚಮೇ ತುರ್ಯೇ ನವಮೇ ದಶಮೇ ತಥಾ। ಗುರುಗುರ್ವಾ ದೋಷಿಣಿ ವಿವಾಹೇ ವರ್ಧತೇ ಶುಭಮ್" ಜ್ಯೋತಿಸ್ತತ್ವಮ್।

ಸುತಾ ಸುತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಗಳು. ಸುಯತೇ ಸಮ—ಛ (ಪ್ರಸವೇ) "ಕ್ತು:" (೩-೨-೧೦೨)। "ಠಾಪ್" (೪-೧-೪)। "ಅಪಾಚಿತಾರಂ ನ ಹಿ ದೇವದೇವಮದ್ರಿಃ ಸುತಾಂ ಗ್ರಾಹಯಿತ್ವುಂ ಶಾಶಾಕ" ಕುಮಾಂ ೧-೪೨।

ಸುತಾತ್ಮಜ ಸುತಾತ್ಮಜ (ಪುಂ) 1. ಪೌತ್ರ, ಪುತ್ರನ ಪುತ್ರ. 2. ದೌಹಿತ್ರ, ಪುತ್ರಿಯ ಮಗ. ಸುತಸ್ಯ ಸುತಾಯಾ ವಾ ಆತ್ಮಜ:। —ಆತ್ಮಜಾ —ಆತ್ಮಜಾ. 1. ಪೌತ್ರಿ, ಪುತ್ರನ ಮಗಳು. 2. ದೌಹಿತ್ರಿ, ಮಗಳ ಮಗಳು. ಸುತಸ್ಯ ಸುತಾಯಾ ವಾ ಆತ್ಮಜಾ।

ಸುತಿನ್ ಸುತಿನ (ವಿಂ) ಮಕ್ಕಳುಳ್ಳವನು, ಸಂತಾನವಡೆದವನು. ಸುತೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)। ಸ್ತ್ರೀಯಾ

"ಜೀಪ್" (೪-೧-೪)। —ನೀ —ನೀ. "ಗುಣಿಗಣಗಣನಾರಮ್ಭೇ ನ ಪತತಿ ಕಠಿನಿ ಸಸಮ್ಭ್ರಮಾಘಸ್ಯ। ತೇನಾಮ್ಬಾ ಯದಿ ಸುತಿನಿ ವದ ವನ್ಯಾ ಕೀದೃಶಿ ಭವತಿ"॥

ಸುತೀಕ್ಷಣ ಸುತೀಕ್ಷಣ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಮುಖ. ದಂಡಕಾರಣ್ಯ ದಲ್ಲಿ ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಈ ಮುಖಿಯು ಸೂಚನೆಯಂತೆ ಶ್ರೀರಾಮನು ಸೀತಾಲಕ್ಷ್ಮಣರೊಡನೆ ಆಗಸ್ಯಮಹರ್ಷಿಯ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಹೋದನು. "ಹವಿರ್ಭುಜಾಮೇವತಾಂ ಚತುರ್ಣಾಂ ಮಧ್ಯೆ ಲಲಾಠಂತಪಸ್ತಪಸ್ತಿ:। ಅಸೌ ತಪಸ್ಯತೃಪಸ್ತಪಸ್ವಿ ನಾಮ್ನಾ ಸುತೀಕ್ಷಣಶ್ಚರितೇನ ದಾಂತ:" ರಘುಂ ೧೩-೪೧। (ವಿಂ) 2. ಬಹಳ ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ, ಬಹಳ ಉಗ್ರವಾದ. "ಸುತೀಕ್ಷಣದಂಡೋ ಬಲವಾಂಶ್ಚ ವಾನರ:" ರಾಮಾಂ।

ಸುತುಜ್ಞ ಸುತುಂಜ (ಪುಂ) 1. ನಾರಿಕೇಳ ವೃಕ್ಷ, ತೆಂಗಿನ ಮರ. ಸುಠ್ಠ ತುಜ್ಞ:। (ವಿಂ) 2. ಬಹಳ ಎತ್ತರವಾದ.

ಸುತೇಜಸ್ ಸುತೇಜಸ್ (ವಿಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ತೇಜಸ್ವಿಯಾದ. 2. ಒಳ್ಳೆಯ ಪ್ರಕಾಶದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ. ಸುಠ್ಠ ತೇಜೋ ಯಸ್ಯ।

ಸುತ್ಯಾ ಸುತ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೋಮರಸವನ್ನು ಹಿಂಡುವುದು, ಸೋಮಲತೆಯನ್ನು ಹಿಂಡಿ ರಸವನ್ನು ತೆಗೆಯುವುದು. ಷ್ಠ್ (ಅಭಿಷವೇ) "ಕೃಪ್" (೩-೩-೯೯)। "ಸುತ್ಯಾಮಿಷವ: ಸವನಂ ಚ ಸಾ" ಅಮಂ।

ಸುತ್ರಾಮನ್ ಸುತ್ರಾಮನ್ (ಪುಂ) ಸುರಪತಿ, ದೇವೇಂದ್ರ. ಸುಠ್ಠ ತ್ರಾಯತೇ — ತ್ರೈಙ್ (ಪಾಲನೆ) "ಮನಿನ್" (೩-೨-೭೪)। "ಸುತ್ರಾಮಾ ಗೌತ್ರಮಿಹಿವೃಜಿ ವಾಸವೋ ವೃತ್ರಹಾ ವೃಷಾ" ಅಮಂ।

ಸುತ್ವನ್ ಸುತ್ವನ್ (ಪುಂ) ಸ್ನಾತಕ, ಯಜ್ಞಾಂಗವಾದ ಅವಭೃಥ ಸ್ನಾನ ಮಾಡಿದವನು. ಷ್ಠ್ (ಅಭಿಷವೇ) "ಙ್ವನಿಪ್" (೩-೨-೧೦೩)। ತುಕ್ (೬-೧-೭೧)। "ಸುತ್ವಾತ್ವಮಿಷವೇ ಕೃತೇ" ಅಮಂ।

ಸುದಕ್ಷಿಣ ಸುದಕ್ಷಿಣ (ವಿಂ) ಸರಳ ಹೃದಯವುಳ್ಳವನು, ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ, ಸತ್ಯಸಂಧ. ಸುಠ್ಠ ದಕ್ಷಿಣ:।

ಸುದಕ್ಷಿಣಾ ಸುದಕ್ಷಿಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೂರ್ಯವಂಶದ ದಿಲೀಪ ವಂಶಾರಾಜನ ಪತ್ನಿ.

ಸುದಾತ ಸುದಾತ (ಪುಂ) ವೇತ್ರ, ಬೆತ್ತ. ಸುಠ್ಠ ದಾತೋ ಯಸ್ಮಾತ್।

ಸುದತ್ ಸುದತ್ (ವಿಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ಲಕ್ಷಣವಾದ ಎಲ್ಲಾ ದಂತ ಗಳುಳ್ಳವನು. ಸು ಶೋಭನಾ: ಸಮಸ್ತಾ ದಂತಾ ಯಸ್ಯ — ದಂತ "ದತ್" (೪-೪-೧೪೧)। ಸ್ತ್ರೀಯಾ ಸುದತ್ತಿ ಸುದತ್ತೀ. ಸು ಶೋಭನಾ: ಸಮಸ್ತಾ ದಂತಾ: ಯಸ್ಯಾ:। ಸುದತ್ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೬)। ಎಳ್ಳೆಯ ವಯಸ್ಸು ತೋರುವಲ್ಲಿ ದತ್ ಅದೇಶ.



“ವಯಸಿ ದಂತಸ್ಯ ದತ್” । “ಸುಧತೀಜನಮಜ್ಜನಾಪಿತೇ-  
ಛುಸುಣೈಶ್ಚ ಕೃಷಾಯಿತಾಶಯಾ” ನೆಪಂ ೨-೨೭ ।

ಸುಧನ್ತ ಸುಧಂತ (ಪುಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ದಂತವುಳ್ಳ ಗಜ. 2. ಒಳ್ಳೆಯ ದಂತಗಳುಳ್ಳವನು. ಶೋಮನಾ ದಂತಾ: ವಸ್ಯ । ಎಳೆಯ ವಯಸ್ಸು ತೋರದಿರುವಲ್ಲಿ ದತ್ ಆದೇಶ ಬರುವುದಿಲ್ಲ.

ಸುಧರ್ಶನ ಸುಧರ್ಶನ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಚಕ್ರಾಯುಧ. ಶೋಮನಂ ದರ್ಶನಮಸ್ಯ । “ತಸ್ಯ ನೇಷ್ಯತಿ ವಪು: ಕಬಂಧತಾಂ ಬಂಧುರೇಷ ಜಗತಾಂ ಸುಧರ್ಶನ:” ಮಾಘಂ ೧೪-೧೬ । ಈ ಚಕ್ರಚಿಹ್ನೆಯನ್ನು ವೈಷ್ಣವರು ತಮ್ಮ ದೇಹದಲ್ಲಿ ಧರಿಸಬೇಕು. “ಕೃತ್ವಾ ಧಾತುಮಯಿಂ ಮುಧ್ರಾಂ ತಾಪಯಿತ್ವಾ ಸ್ವಕಾಂ ತನುಮ್ । ಚಕ್ರಾದಿಚಿಹ್ನಿತಾಂ ಭೂಪ ಧಾರಯೇದ್ವೇಣವೋ ನರ:” ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡಪುಂ । (ಪುಂ) 2. ಸುಮೇರು ಪರ್ವತ. 3. ಜಂಬು ವೃಕ್ಷ. ನೇರಳೆ ಮರ. 4. ಶಿವ. ಪರಮೇಶ್ವರ. “ಸುಧರ್ಶನೋ ಹರೇಶ್ವರೇ ಮೇರುಜಮ್ಬುದ್ರುಮೇ ಪುಮಾನ್ । ನ ದ್ವಯೋ: ಶಕ್ರನಗರೇ” ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ) 5. ನೋಡಲು ರಮ್ಯವಾದ, ಸುಖವಾಗಿ ನೋಡಬಹುದಾದ, ಸುಂದರವಾಗಿ ಕಾಣುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ನಾ -ನಾ. 6. ಅಮರಾವತಿ.

ಸುಧರ್ಶನಾ ಸುಧರ್ಶನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಇಂದ್ರನ ನಗರ. ಅಮರಾವತಿ. 2. ಆಜ್ಞೆ, ಶಾಸನ, ಕಟ್ಟಳೆ. 3. ಅಮೃತ ಬಳ್ಳಿ. 4. ಮೇರುಪರ್ವತ. 5. ಜಂಬು ವೃಕ್ಷ. ಮೇದಿನೀ ಕೋಶದಲ್ಲಿ ಮೇರು ಮತ್ತು ಜಂಬು ಎರಡೂ ಪುಂಲಿಂಗ ದಲ್ಲಿವೆ. “ಮೇರುಜಮ್ಬುದ್ರುಮೇ ಪುಮಾನ್” ಮೇದಿಂ । ವಿಶ್ವಕೋಶ ದಲ್ಲಿ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗದಲ್ಲಿವೆ. “ಆಜ್ಞಾಯಾಮೋಷಧಿಭೇದೇ ಮೇರುಜಮ್ಬುಂ ಸುಧರ್ಶನಾ” ವಿಷ್ಣುಂ ।

ಸುಧರ್ಶನೀ ಸುಧರ್ಶನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಮರಾವತಿ. ಇಂದ್ರನ ನಗರ. ಕೃಷ್ಣ ದರ್ಶನಂ ವಸ್ಯಾ: । ಸುಧರ್ಶನಾ “ಕೀಪ್” ।

ಸುಧಾಮನ್ ಸುಧಾಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಕುಚೇಲ. ಬಲರಾಮ ಮತ್ತು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ ಇಬ್ಬರೂ ಸಾಂದೀಪನಿಯಲ್ಲಿ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಸುಧಾಮನೂ ಅವರ ಸಹಪಾಠಿಯಾಗಿದ್ದನು. ಇವರೆಲ್ಲರೂ ಸಹೋದರ ಪ್ರೇಮದಿಂದ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದರು. [ವಿವರಕ್ಕೆ “ಕುಚೇಲ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] 2. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಸುಧಾ ದದಾತಿ —ಹುಡುಗ (ದಾನೇ) “ಮನಿನ್” (೩-೨-೨೪) । 3. ಒಂದು ಪರ್ವತ. “ಸುಧಾಮಾ ತು ಪುಮಾನ್ ವಾರಿಧರಪವಂತಭೇದಯೋ:” ಮೇದಿಂ । 4. ಐರಾವತ, ಇಂದ್ರನ ಗಜ. “ಹಸ್ತಿಮಲ್ಲ-ಶ್ಚತುರ್ದಂತೋ ಭದ್ರೇಣುಮಂದಾವರ: । ಇವೇತದ್ವಿಪ: ಸುಧಾಮಾ” ತ್ರಿಕಾಂಕ್ಷಂ । (ವಿಂ) 5. ಉದಾರವಾಗಿ ದಾನಮಾಡುವವನು. ಸುಧಾ ದದಾತಿ —ವಾಕ್ “ಮನಿನ್” ।

ಸುಧಾಯ ಸುಧಾಯ (ಪುಂ) 1. ವಿವಾಹಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಗಳಿಗೂ ಅಳಿಯನಿಗೂ ಕೊಡುವ ಬಳುವಳಿ. ಸುಧಾ ದೀಯತೇ—ಹುಡುಗ (ದಾನೇ) “ವಾಕ್” (೩-೩-೧೯) । “ಯಿತಕಾದಿ ತು ಯದೇಯಂ ಸುಧಾಯೋ ಹರಣಂ ಚ ತತ್” ಅಮಂ । 2. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ.

ಸುಧಿ ಸುಧಿ (ಅವ್ಯಂ) ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷ.

ಸುಧಿನ ಸುಧಿನ (ನಂ) ಶುಭ ದಿವಸ, ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ ದಿವಸ. ಸು ಶೋಮನಂ ದಿನಮ್ । ಸುಧಿನ ದುಧಿನಗಳು ಕರ್ಮದಿಂದ ಪ್ರಾಪ್ತವಾದುವು. “ಸುಧಿನಂ ದುಧಿನಂ ಚೈವ ಸರ್ವ ಕರ್ಮೋದ್ಭವಂ ಭವ । ತತ್ಕರ್ಮ ತಪಸಾ ಸಾಧ್ಯಂ ಕರ್ಮಣಾ ಚ ಶುಭಾಶುಭಮ್” ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ ।

ಸುಧಿನಾಹ ಸುಧಿನಾಹ (ನಂ) ಶುಭ ದಿವಸ, ಪ್ರಶಸ್ತ ದಿವಸ. ಧಿನಂ ಪ್ರಶಸ್ತಮಹ: । ಸುಧಿನಶಬ್ದ: ಪ್ರಶಸ್ತವಾಚಿ ಸಿಂ ಕೌಂ (೪-೪-೯೦) ।

ಸುಧೀರ್ಘ ಸುಧೀರ್ಘ (ವಿಂ) ಬಹಳ ದೀರ್ಘವಾದ, ಬಹಳ ವಿಸ್ತಾರವಾದ. ಸುಧಾ ದೀರ್ಘ: ।

ಸುಧೀರ್ಘಾ ಸುಧೀರ್ಘಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂತೆಗಿಡ.

ಸುಧು:ಖಿತ ಸುಧು:ಖಿತ (ವಿಂ) ಬಹಳ ದು:ಖದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು.

ಸುಧುಲಭ ಸುಧುಲಭ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಕಷ್ಟದಿಂದ ಹೊಂದಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ಸು + ಧು + ಲಭ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬) ।

ಸುಧುವಹ ಸುಧುವಹ (ವಿಂ) ವಹಿಸಲು ಬಹಳ ಕಷ್ಟವಾದ. ಸುತರಾ ದು:ಖೇನ ಬಾಧುಂ ಶಕ್ಯಮ್ । “ತದಮೋಖಂ ಸುಧುವಹಮ್” ಕುಮಾಂ ೧೦-೧೨ ।

ಸುಧುಶ್ಚರ ಸುಧುಶ್ಚರ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಕಷ್ಟದಿಂದ ಆಚರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ಸು + ಧು + ಚರ (ಗತೌ) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬) ।

ಸುಧುಕರ ಸುಧುಕರ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಕಷ್ಟದಿಂದ ಮಾಡಬಹುದಾದ. ಸು + ಧು + ಕರ (ಕರಣಂ) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬) ।

ಸುಧುಸ್ತರ ಸುಧುಸ್ತರ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಕಷ್ಟದಿಂದ ದಾಟಬಹುದಾದ. ಸು + ಧು + ತ (ಫಲವನತರಣಯೋ: ) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬) ।

ಸುಧುಸ್ತಯಜ ಸುಧುಸ್ತಯಜ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಕಷ್ಟದಿಂದ ಬಿಡಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ, ತ್ಯಜಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ. ಸು + ಧು + ತ್ಯಜ (ಹಾನೌ) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬) । “ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ ಸುಧುಸ್ತಯಜ-ಸುರೇಷಿತರಾಜ್ಯಲಕ್ಷ್ಮಿಂ ವಮಿಷ್ಠ ಆರ್ಯವಚಸಾ ಯದಗಾದರಣ್ಯಮ್ ।



ಮಾಯಾಮೃಗಂ ದಯಿತಯೇಷಿತಮನ್ವಧಾವದ್ವಂದೆ ಮಹಾಪುರುಷ ತೇ ಚರಣಾರ-  
ವಿಂದಮ್" ಭಾಗಂ ।

ಸುಧುರ ಸುಧೂರ (ವಿಂ) ಬಹಳ ದೂರವಾದ. ಸು ಅತ್ಯಂತ  
ದೂರಮ್ ।

ಸುಧುರ ಸುಧುರ (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ದೃಢವಾದ, ಬಹಳ ಗಟ್ಟಿ  
ಯಾದ, ಸ್ಥಿರವಾದ, ಭದ್ರವಾದ. (ನಂ) 2. ಅತಿಶಯ.

ಸುಧುಶ್ ಸುಧುಶ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸುಂದರವಾದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ  
ಹೆಂಗಸು. ಸು ಶೋಭನಾ ದಕ್ ಯಸ್ಯಾ: । "ವಿನಯತಿ ಸುಧುಶೋ  
ದಶ: ಪರಾಗಂ ಪ್ರಣಯಿನಿ ಕೌಸುಮಮಾನನಾನಿಲೇನ" ಮಾಧಂ  
೭-೫೭ । (ವಿಂ) 2. ಸುಂದರವಾದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ.

ಸುಧನ್ವನ್ ಸುಧನ್ವನ್ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಸು ಶೋಭನಂ  
ಧನ್ಯಸ್ಯ—“ಅನಡ್” (೨-೨-೩೨) । “ಸುಶೋಭನಂ ಧನ್ಯಸ್ಯ  
ಸುಧನ್ವಾ ಪರಿಕೀರ್ತಿತ:” ಇತಿ ನಿರ್ಹಕ್ತಿ: । “ಸುಧನ್ವಾ ಲಘು-  
ಪರಶು:” ವಿಂ ಸಂ । 2. ವಿಶ್ವಕರ್ಮ. “ಸುಧನ್ವಾ ಪ್ರೌಢ-  
ಧಾನುಕೇ ತ್ರಿಷು ನಾ ವಿಶ್ವಕರ್ಮಣಿ” ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ)  
3. ಒಳ್ಳೆಯ ಬಿಲ್ಲುಗಾರ, ಪರಿಣತನಾದ ಬಿಲ್ಲುಗಾರ.  
4. ಒಳ್ಳೆಯ ಧನುಸ್ಸನ್ನು ಹಿಡಿದಿರುವ. “ಸುಧನ್ವಾ ಸುರ-  
ಸುಭ್ರವಾಮ್” ಯಾದಂ ೧೬-೧೩ ।

ಸುಧರ್ಮನ್ ಸುಧರ್ಮನ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವತೆಗಳ ಸಭೆ. ಸು  
ಶೋಭನೋ ಧರ್ಮೋಽಸ್ಯಾಮ್ “ಅನಿಚ್” (೫-೪-೧೨೪) । ಸುಧರ್ಮಾ  
ಸುಧರ್ಮಣೌ ಸುಧರ್ಮಣಿ: । ವಾ ಡಾಪ್ (೪-೧-೧೩) । ಪಕ್ಷೇ ಸುಧರ್ಮಾ  
ಸುಧರ್ಮೆ ಸುಧರ್ಮಾ: । “ಯಯಾವುದೇರಿತಾಲೋಕ: ಸುಧರ್ಮನಿವಮಾಂ  
ಸಭಾಮ್” ರಘುಂ ೧೭-೨೭ ।

ಸುಧಾ ಸುಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೀಯೂಷ, ಅಮೃತ. ಸುಖೇನ  
ಧೀಯತೇ—ವೇಡ್ (ಪಾನೇ) “ಅಡ್” (೩-೩-೧೦೩) । “ಸುಖಯಂತಂ  
ಸ್ವಮೂರ್ತ್ಯಾ ಚ ಸುಧಾಂ ಶುಭಾನುಭಾವ್ಯಯಾ” ಯಾದಂ ೧೬-೧೩ ।  
2. ಗಂಗಾನದಿ. 3. ಸುಣ್ಣ, ಗೋಡೆಗೆ ಲೇಪಿಸುವ ಒಂದು  
ದ್ರವ್ಯ. “ಸೇನಾ ಸುಧಾಕ್ಷಾಲಿತಸೌಧಸಂಪದಾಂ ಪುರಾಂ ಬಹುನಾಂ  
ಪರಭಾಗಮಾಪ್ತಾ” ಮಾಧಂ ೧೨-೬೨ । 4. ಇಟ್ಟಿಗೆ.  
5. ಸ್ನೋಹೀ ವೃಕ್ಷ, ಮುಂಡುಗಳ್ಳಿ ಗಿಡ. “ಸುಧಾ ಸ್ತ್ರೀಲೇಪನೇ  
ಮೂರ್ತ್ಯಾ ಸ್ನುಹೀಗಜ್ಜೇಷ್ಠಕಾಮೃತೇ” ಮೇದಿಂ । 6. ಕುರಟೆಗೆ ಗಿಡ.  
7. ಎದುತ್ತು, ಮಿಂಚು. 8. ಜಲ, ನೀರು. “ರಸಾಯನ-  
ಮಿವರ್ಷಿಣಾಂ ದೇವಾನಾಮಮೃತಂ ಯಥಾ । ಸುಧೇವೋತ್ತಮನಾಗಾಂ ಮಂಜಯ-  
ಮಿದಮಸ್ತು ತೇ” ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೩-೨ । 9. ಮೆಕರಂದ,  
ಪುಷ್ಪರಸ. 10. ಮಧು, ಜೇನುತುಪ್ಪ. 11. ಅಳಲೆ  
ಕಾಯಿ. 12. ಅಮಲಕ, ನೆಲ್ಲಿಕಾಯಿ.

ಸುಧಾಂಶು ಸುಧಾಂಶು (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಸುಧಾಯುಕ್ತಾ ಅಂಶವೋ  
ಯಸ್ಯ । “ಸುಧಾಂಶುರೇಷು ಪ್ರಥಮೋ ಭೂವೀತಿ ಸ್ವರೋ ದ್ವಿತೀಯ

ಕಿಮಸಾವಿತಿಮಮ್ । ದಕ್ಷಸ್ತುತೀಯೋಽಯಮಿತಿ ಕ್ಷಿತಿಶಾ: ಸ್ತುತಿ  
ಚ್ಛಲಾನ್ಮತಸಾರಿಣೋ ನಿನಿಂದು:” ನೆಪಂ ೧೦-೪೧ । 2.  
ಕರ್ಪೂರ.

ಸುಧಾಂಶುತಲ ಸುಧಾಂಶುತಲ (ನಂ) ಕರ್ಪೂರ ತೈಲ.

ಸುಧಾಂಶುರತ್ನ ಸುಧಾಂಶುರತ್ನ (ನಂ) ಚಂದ್ರನಿಗೆ ಪ್ರಿಯ  
ವಾದ ರತ್ನ. ಸುಧಾಂಶೋ: ಪ್ರೀತಿಕರಂ ರತ್ನಮ್ ।

ಸುಧಾಕರ ಸುಧಾಕರ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಸುಧಾಯುಕ್ತಾ: ಕರಾ  
ಅಸ್ಯ ।

ಸುಧಾಜೀವಿನ್ ಸುಧಾಜೀವಿನ್ (ಪುಂ) ಸುಣ್ಣ ಬಳಿಯು  
ವವನು, ಸುಣ್ಣ ಬಳಿದು ಜೀವಿಸುವವನು.

ಸುಧಾಧಾರ ಸುಧಾಧಾರ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಸುಧಾಯಾ ಆಧಾರ: ।  
-ನಿಧಿ: -ನಿಧಿ:.

ಸುಧಾಪಾಣಿ ಸುಧಾಪಾಣಿ (ಪುಂ) ಧನ್ವಂತರಿ. ಸುಧಾ ಪಾಣಿ  
ಯಸ್ಯ ।

ಸುಧಾಭುಜ್ ಸುಧಾಭುಜ್ (ಪುಂ) ದೇವತೆ. ಸುಧಾಂ ಭುಜ್ಕತೇ—  
ಭುಜ (ಪರಿವಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ: ) “ಕಿವಪ್” (೩-೨-೭೬) ।

ಸುಧಾಮಯ ಸುಧಾಮಯ (ಪುಂ) 1. ರಾಜಗೃಹ, ರಾಜನ  
ಅರಮನೆ. ಸುಧಾ “ಮಯತ್” (೫-೪-೨೧) । (ವಿಂ)  
2. ಸುಧೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಅಮೃತದಿಂದ ತುಂಬಿದ.  
“ಸೋತೋಭಿರಸ್ಯಾ: ಪರಿಪೂರ್ಯಮಾಣ: ಸುಧಾಮಯಂ ಸಿಂಧುಮಿವಾದಧಾನೇ:”  
ಯಾದಂ ೧೮-೪೫ ।

ಸುಧಾಮೋದಕ ಸುಧಾಮೋದಕ (ಪುಂ) ಕರ್ಪೂರ.

ಸುಧಾಯಮಾನ ಸುಧಾಯಮಾನ (ವಿಂ) ಅಮೃತದಂತೆ  
ತೋರುತ್ತಿರುವ. ಸುಧಾವದಾಚರನ್—ಸುಧಾ+ಕೃತ್ “ಶಾಂತಿ”  
(೩-೨-೧೨೪) । “ಸುಧಾಯಮಾನಾಂ ಭನದಸ್ಯ ಸೌಖ್ಯೇ ಸ್ವಾಭಾವಿಕೀ-  
ಮಸ್ಯ ಗಿರೇರಭಿಖ್ಯಾಮ್” ಯಾದಂ ೧೮-೨೦ ।

ಸುಧಾರ್ವಿನ್ ಸುಧಾರ್ವಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ. 2.  
ಚಂದ್ರ. 3. ಕರ್ಪೂರ. ಸುಧಾಂ ವರ್ಷತಿ—ವೃಷ (ಸೇವನೇ)  
“ಞಿತಿ:” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಸುಧಾವಾಸ ಸುಧಾವಾಸ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. 2. ಕರ್ಪೂರ.  
ಸುಧಾಯಾ ಆವಾಸ: । “ಜ್ಯೋತ್ಸನಾಃ ಪತಯೇ ತುಭ್ಯಂ ಜ್ಯೋತಿಷಾಂ  
ಪತಯೇ ನಮ: । ನಮಸ್ತೇ ರೋಹಿಣೀಕಾಂತ ಸುಧಾವಾಸ ನಮೋಽ-  
ಸ್ತು ತೇ” ॥

ಸುಧಾಸಿತ ಸುಧಾಸಿತ (ವಿಂ) 1. ಅಮೃತದಂತೆ ಸ್ವಚ್ಛವಾಗಿ  
ರುವ. 2. ಸುಣ್ಣದಂತೆ ಬೆಳ್ಳಗಿರುವ. 3. ಅಮೃತದಿಂದ  
ಬದ್ಧನಾದ, ಅಮೃತಪ್ರಿಯನಾದ. ಸುಧಾವತ್ ಸಿತ:  
ಸ್ವಚ್ಛ: , ಸುಧಾವತ್ ಲೇಪನದ್ರವ್ಯವತ್ ಸಿತ: ಧವಲ: , ಸುಧಯಾ  
ಸಿತ: ಬಹು:—ವಿಖ (ಬಂಧನೇ) “ಕ:” (೩-೨-೧೦೨) ।



“ಜಗತೀಶರಣೇ ಯುಕ್ತೋ ಹರಿಕಾಂತಃ ಸುಖಾಸಿತಃ | ದಾನವರ್ಷಿ  
ಕೃತಾಶಂಸೋ ನಾಗರಾಜ ಇವಾಬಮಿ” ಕಿರಾಂ ೧೫-೪೫ |

ಸುಖಾಸಾರ ಸುಧಾಸಾರ (ವಿಂ) ಅಮೃತಮಯವಾದ.

“ಸುಖಾಸಾರೇರಿವಾಮೋಭಿರಭಿಷಿಕ್ತೋ ಹುತಾಶನಃ” ಕುಮಾಂ  
೧೦-೩೯ |

ಸುಖಾಸಿಂಧು ಸುಧಾಸಿಂಧು (ಪುಂ) ಸುಧಾಸಾಗರ, ಅಮೃತ  
ಸಮುದ್ರ. ಸುಧಾಃ ಸಿಂಧುಃ | “ವೃಷಗಿರಿಸುಖಾಸಿಂಧೌ  
ಜನ್ತುರ್ದಯೇ ನಿಹಿತಸ್ತ್ವಯಾ ಭವಭಯಪರೀತಾಪಚ್ಛಿತ್ತಯೈ ಭಜನಧ-  
ಮರ್ಷಣಮ್” ದಯಾಶಂ |

ಸುಖಾಸುತಿ ಸುಧಾಸೂತಿ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಸುಧಾಃ  
ಸುತಿಯೆಸ್ಮಾತ್ | 2. ಯಜ್ಞ. “ಸುಖಾಸುತಿಃ ಪುಮಾನ್ ಮಖೇ |  
ಚಂದ್ರೇ” ಮೇದಿಂ | 3. ಪದ್ಮ, ಕಮಲ.

ಸುಖಾಸ್ಯಂದಿನ್ ಸುಧಾಸ್ಯಂದಿನ್ (ವಿಂ) ಅಮೃತವನ್ನು  
ಸುರಿಸುವ, ಅಮೃತವನ್ನು ಹರಿಸುವ. ಸುಖಾಂ ಸ್ಯಂದಯತಿ—  
ಸ್ಯಂದ್ (ಪ್ರಸವಣಂ) + ಣಿಕ್ “ಣಿನಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) |  
“ಮಾಧುರ್ಯಂ ಮಧುಬಿಂದುನಾ ರಚಯಿತುಂ ಕ್ಷೀರಾಮ್ಬುಧೇರೀಹತೇ ಮೂರ್ಖಾನ್  
ಯಃ ಪ್ರತಿನೇತುಮಿಚ್ಛತಿ ಬಲಾತ್ ಸುಕ್ತೇಃ ಸುಖಾಸ್ಯಂದಿಭಿಃ”  
ಮತುಂ ೧-೬ |

ಸುಖಾಸ್ರವಾ ಸುಧಾಸ್ರವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಿರುನಾಲಗೆ. ಸುಧಾಃ  
ಸ್ರವಾ |

ಸುಖಾಹರ ಸುಧಾಹರ (ಪುಂ) ಗರುಡಂತ, ಗರುಡ. ಹರತಿ  
—ಹ್ರ (ಹರಣಂ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) | ಸುಧಾಃ ಹರಃ |  
“ಪಕ್ಷಿಸಿಹಿ ಉತ್ತಮೀಶೋ ವಜ್ರತುಂಡಃ ಸುಖಾಹರಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |  
—ಹ್ರತ್—ಹೃತ್.

ಸುಖೋ ಸುಧೀ (ಪುಂ) 1. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. ಸುಖಃ ಧ್ಯಾಯತಿ  
—ವ್ಯ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) “ಕಿವಪ್” ಸಂಪ್ರಸಾರಣಂ ಚ (ವಾಂ  
೩-೨-೧೭೭) | ಸು ಶೋಭನಾ ಧೀರಸ್ಯ ಇತಿ ವಾ | (ವಿಂ) 2. ಒಳ್ಳೆಯ  
ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿಯಾದವನು, ಚುರುಕುಬುದ್ಧಿ  
ಯುಳ್ಳವನು. “ಮಾತ್ರಾತಿಮಾತ್ರಂ ಶುಭಯೇವ ಬುದ್ಧಯಾ ಚಿರಂ  
ಸುಧೀರಸ್ಯಾಧಿಕಂ ಸಮಾಧಾತ್” ಮಡಿಂ ೧೨-೬ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಒಳ್ಳೆಯ  
ಬುದ್ಧಿ. ಶೋಭನಾ ಬುದ್ಧಿಃ |

ಸುಖೋದ್ಭವ ಸುಧೋದ್ಭವ (ಪುಂ) 1. ಧನ್ಯಂತರಿ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
—ಉದ್ಭವಾ—ಉದ್ಭವಾ. 2. ಅಳಲಿಕಾಯಿ.

ಸುನಂದ ಸುನಂದ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರೇಷ್ಠವ್ಯನ ಒಬ್ಬ ಪಾರ್ವದ,  
ಸಂಗಡಿಗ, ಸಂಗಾತಿ. “ಸುನಂದನಂದ್ರಪ್ರಮುಖೈಃ ಸ್ವಪಾರ್ವದೇಃ  
ಚಕ್ರಾದಿಭಿರ್ಮುತಿಧರೇನಿಜಾಯುಧೈಃ” ಭಾಗಂ ೧೦-೮೯-೫೬ |  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) —ನಂದಾ—ನಂದಾ. 2. ಪಾರ್ವತಿ. 3.  
ಗೋರೋಚನ. “ಸುನಂದಾ ರೋಚನಾಮಯೋಃ” ಮೇದಿಂ |

4. ದಂಷ್ಕಂತರಾಜನ ಪುತ್ರನಾದ ಭರತನ ಪತ್ನಿ. 5.  
ಹೆಂಗಸು. “ಸುನಂದಾ ರೋಚನಾಮಯೋಃ” ವಿಶ್ವಂ |

ಸುನಯನ ಸುನಯನ (ಪುಂ) 1. ಮೃಗ, ಜಿಂಕೆ. ಸು ಶೋಭನೆ  
ನಯನೇ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 2. ಸುಂದರವಾದ ಕಣ್ಣುಗಳಿಳ್ಳ  
ವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ನಯನಾ—ನಯನಾ. 3. ಹೆಂಗಸು.  
ಶೋಭನೇ ನಯನೇ ಯಸ್ಯಾಃ |

ಸುನಾಭ ಸುನಾಭ (ಪುಂ) 1. ಮೃಗಾಕಪರ್ವತ. “ಇಂದ್ರಕೀಲಃ  
ಸುನಾಭಶ್ಚ ತಥಾ ದಿವ್ಯೌ ಚ ಪರ್ವತೌ” ಭಾಂ ವನಂ | (ನಂ) 2. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಚಕ್ರ. ಸು ಸುಷ್ಠು ನಾಭಿಶ್ಚಕ್ರಮವ್ಯ-  
ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ | “ಸುತಂ ಮಧೇ ಕ್ಷಂ ವಪುಷಾ ಪ್ರಸಂತಂ ದಷ್ಟಾ ಸುನಾ-  
ಭೋನ್ಮಥಿತಂ ಧರಿದ್ರ್ಯಾ | ಆಮನ್ವಿತಸ್ತತ್ತನಯಾಯ ಶೇಖಂ ದತ್ವಾ  
ತದಂತಃಪುರಮಾವಿವೇಶ” ಭಾಗಂ ೩-೩-೬ | (ವಿಂ) 3.  
ಚಕ್ರದ ಸುಂದರವಾದ ಮಧ್ಯಭಾಗವುಳ್ಳ. “ತತ್ತೇಜಸಾ ಕೃತಂ  
ಚಕ್ರಂ ಸುನಾಭಂ ವಿಶ್ವಕರ್ಮಣಾ” ಭಾಂ ವನಂ |

ಸುನಾರ ಸುನಾರ (ಪುಂ) 1. ಹೆಣ್ಣುನಾಯಿಯ ಹಾಲು.  
2. ಸರ್ಪದ ಮೊಟ್ಟೆ, ಹಾವಿನ ತತ್ವ. 3. ಚಟಕ,  
ಗುಬ್ಬಿಚ್ಚಿ. “ಸುನಾರಸ್ತು ಶುನೀಸ್ತನ್ಯೇ ಸರ್ಪಾಂಡಕಲವಿಕ್ಲವಯೋಃ”  
ಮೇದಿಂ |

ಸುನಾಸಿಕಾ ಸುನಾಸಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸುಂದರವಾದ  
ಮೂಗು. ಸು ಶೋಭನಾ ನಾಸಿಕಾ | 2. ಕಾಗೆತೊಂಡ.

ಸುನಾಸೀರ ಸುನಾಸೀರ (ಪುಂ) ದೇವೇಂದ್ರ. ಸು ಸುಷ್ಠು ನಾಸೀರಂ  
ಸೇನಾಮುಖಂ ನಾಸೀರಾ ಅಗ್ರೇಸರಾ ವಾಽಸ್ಯ |

ಸುನಿಭೃತ ಸುನಿಭೃತ (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ರಹಸ್ಯವಾದ, ಬಹಳ  
ಗುಟ್ಟಾದ. ಸುಷ್ಠು ನಿಭೃತಮ್ | (ಅವ್ಯಂ) 2. ಬಹಳ  
ರಹಸ್ಯವಾಗಿ.

ಸುನಿಷಣ್ಣಕ ಸುನಿಷಣ್ಣಕ (ನಂ) ನೀರು ಚೆಂಡಲಿ, ನಸುವಲು  
ಗಿಡ. “ವಿತುಂ ಸುನಿಷಣ್ಣಕಮ್” ಅಮಂ |

ಸುನೀತಿ ಸುನೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ನೀತಿ. ಸು ಶೋಭನಾ  
ನೀತಿಃ | “ಕ್ರಿಯಾಫಲಾನಿವ ಸುನೀತಿಭಾಜಂ ಸಂನ್ಯಾನಿ ಸೀಮಾನ್ವಯ-  
ಮನ್ವಯುಸ್ತಮ್” ಮಾಧಂ ೩-೨೬ | 2. ಧ್ರುವಕುಮಾರನ  
ತಾಯಿ. “ಜಾಯೇ ಉತ್ತಾನಪಾದಸ್ಯ ಸುನೀತಿಃ ಸುಕಚಿಸ್ತಯೋಃ |  
ಸುಕಚಿಃ ಪ್ರೇಯಸೀ ಪತ್ಯುಃ ನೇತರಾ ಯತ್ಸುತೋ ಧ್ರುವಃ” ಭಾಗಂ  
೪-೮-೮ | “ಸುನೀತಿಃ ಶೋಭನನಯೇ ಧ್ರುವಮಾತರೀ ಯೋಷಿತಿ”  
ಮೇದಿಂ |

ಸುನೀಶ ಸುನೀಶ (ಪುಂ) 1. ಬಾಹ್ಮಣ. ಸು + ಣೀಶ್  
(ಪ್ರಾಪಣಂ) “ಕಯನ್” (೩ಂ ೨-೨) | (ವಿಂ) 2. ಧರ್ಮ  
ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. ಸುಷ್ಠು ನಯತಿ ಧರ್ಮಮ್—ಣೀಶ್  
“ಕಯನ್” |



ಸುನೀಲ ಸುನೀಲ (ಪುಂ) 1. ದಾಳಿಬೆ ಗಿಡ. (ನಂ) 2. ಲಾಮಂಚದ ಬೇರು. 3. ಒಳ್ಳೆಯ ನೀಲಿಬಣ್ಣ. ಸು ಅತಿಶಯೋ ನೀಲ: |

ಸುನೀಲಕ ಸುನೀಲಕ (ಪುಂ) 1. ಗರಗದ ಸೊಪ್ಪು. ಸುನೀಲ ಸ್ವಾಣೆ "ಕನ್" | 2. ಹೊನ್ನೆ ಮರ.

ಸುನೀಲಾ ಸುನೀಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಗಸೆ ಗಿಡ. 2. ವಿಷ್ಣು ಕಾಂತ.

ಸುನು ಸುನು (ನಂ) ಜಲ. ನೀರು. ಸು ಶೋಮನಾ ನೋಯತ |

ಸುಂದ ಸುಂದ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಸು ಸುಷ್ಠು ಅಸುರಮನಾಸಿ ಉನಕ್ತಿ — ಉಂದಿ (ಕಲೇದನೆ) "ಅಚ್" (3-1-134) | ಉಕಾರಲೋಪ: | ಪೃಷೋಂ | "ಉನಕ್ತಿ ಸುಷ್ಠು ಚೇತಾಸಿ ರಕ್ಷಸಾಂ ಸುಂದ ಔರಿತ:" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: | "ಉದ್ಭವ: ಸುಂದರ: ಸುಂದ:" ವಿಂ ಸಂ | 2. ಸುಗ್ರೀವನ ಸೈನ್ಯದಲ್ಲಿದ್ದ ಒಬ್ಬ ವಾನರ. "ಜಾಮ್ಬವಾನ್ ಶ್ವಭ: ಸುಂದ: ವಮ್ಮ: ಶತಬಲಿ: ಪೃಥು:" ರಾಮಾಂ | 3. ನಿಕುಂಭನೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನ ಮಗ. ಉಪಸುಂದನು ಇವನ ತಮ್ಮ. ಸುಂದೋಪಸುಂದರು ತಮಗೆ ತಮ್ಮಿಬ್ಬರ ಹೊರತು ಮತ್ತಾರಿಂದಲೂ ಸಾವು ಕೂಡದೆಂಬ ವರವನ್ನು ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ಪಡೆದು ಅದರ ಬಲ ದಿಂದ ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಹೀಡಿಸತೊಡಗಿದರು. ಇಂದ್ರನು ಬಹಳ ಸುಂದರಿಯಾದ ತಿಲೋತ್ತಮೆಯನ್ನು ಇವರಲ್ಲಿಗೆ ಕಳುಹಿಸಿದಾಗ ಇವರಿಬ್ಬರೂ ಅವಳಿಗಾಗಿ ಪೈಪೋಟಿಯಿಂದ ಹೊಡೆದಾಡಿ ಅಸುವನ್ನು ನೀಗಿದರು.

ಸುಂದರ ಸುಂದರ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ವಿಶ್ವಾತಿಶಾಯಿಸೋಮಾನ್ಯ-ಶಾಲಿತಯಾ ದೃಷ್ಟಿಮನೋಹರ: | ಸು+ದ್ (ವಿದಾರಣೆ) "ಅಪ್" (3-3-46) | ಪೃಷೋಂ | "ಸ ಸ್ಥಾತ್ ಸುಂದರ ಉದ್ವಿಷ್ಟ: ತೇಷಾಂ ದೃಷ್ಟಿಮನೋಹರ:" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: | "ಉದ್ಭವ: ಸುಂದರ: ಸುಂದ:" ವಿಂ ಸಂ | 2. ಕಾಮದೇವ, ಮನ್ಮಥ. (ವಿಂ) 3. ಮನೋಹರವಾದ, ಚಿತ್ತವನ್ನು ಆಕರ್ಷಿಸುವ. ಸು ಸುಷ್ಠು ಉನಕ್ತಿ ಚಿತ್ತಮ್—ಉಂದಿ (ಕಲೇದನೆ) "ಅರ:" ಬಾಹುಂ | ಶಕಂ |

ಸುಂದರೀ ಸುಂದರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸುಂದರ ಹೆಂಗಸು, ಚೆಲುವೆ ಯಾದ ಹೆಂಗಸು. ಸುಂದರ ಗೌರಾಂ "ಓಃ" (4-1-41) | "ವ್ರಜಂತಿ ವಿಶ್ವಾಧರಸುಂದರೀಣಾಮನಙ್ಗಲೇಖಕ್ರಿಯೋಪಯೋಗಮ್" ಕುಮಾಂ 1-9 | 2. ಹರಿದ್ರೆ, ಅರಿಶಿನ. 3. ಒಂದು ವೃಕ್ಷ. "ಸುಂದರೀ ತರುಭಿನ್ನಾರೀಭಿದೋ: ಸ್ತ್ರೀ ರುಚಿರೇಶ್ಯವತ್" ಮೇದಿಂ |

ಸುನ್ವತ್ ಸುನ್ವತ್ (ವಿಂ) ಸೋಮಯಾಜಿ, ಸೋಮರಸ ವನ್ನು ಹಿಂಡುತ್ತಿರುವವನು. ಷುನ್ (ಅಭಿಷೇಕ) "ಶತ್" (3-2-124) | "ಏಕ ಏವ ಸುಸ್ತುಷ ಸುನ್ವತಾಂ ಶೌರಿ-ರಿಯುಮಿನಯಾದಿವೋಚಕ:" ಮಾಯಂ 14-42 |

ಸುಪ್ ಸುಪ್ ಇದು ತತ್ವಾನ್ (ತೌಪ್ ತೌಪ್ ಮತ್ತು ತೌನ್ ಪ್ರತ್ಯಯಾಂತ) ಆವಾನ್ (ಉಪ್ ಉಪ್ ಮತ್ತು ಉಪ್ ಪ್ರತ್ಯಯಾಂತ) ಮತ್ತು ಪ್ರಾತಿಪದಿಕಗಳ ಮುಂದೆ ವಿಧಿಸಲ್ಪಡುವ ಏಕವಿಂಶತಿ ವಿಭಕ್ತಿಪ್ರತ್ಯಯಗಳ ಸಂಜ್ಞೆ. ಪ್ರಥಮಾವಿಭಕ್ತಿಯ ಏಕವಚನದ ಸ್ವ ಮತ್ತು ಸಪ್ತಮಿ ವಿಭಕ್ತಿಯ ಬಹುವಚನದ ಸ್ವ ಪ್ರತ್ಯಯದ 9 ಕಾರಗಳ ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರದಿಂದ ಏಳು ವಿಭಕ್ತಿಗಳ 21 ಪ್ರತ್ಯಯಗಳಿಗೂ ಗ್ರಹಣ.

ಏಕವಿಂಶತಿ ವಿಭಕ್ತಿಪ್ರತ್ಯಯಗಳು :

|                 |      |      |       |
|-----------------|------|------|-------|
| ಪ್ರಥಮಾ ವಿಭಕ್ತಿ: | ಸು   | ಓ    | ಜಸ್   |
| ದ್ವಿತೀಯಾ        | ಅಮ್  | ಔಟ್  | ಶಸ್   |
| ತೃತೀಯಾ          | ಠಾ   | ಮ್ಯಾ | ಮಿಸ್  |
| ಚತುರ್ಥಿ         | ಠೆ   | ಮ್ಯಾ | ಮ್ಯಸ್ |
| ಪಂಚಮಿ           | ಠಿಸಿ | ಮ್ಯಾ | ಮ್ಯಸ್ |
| ಷಷ್ಠಿ           | ಠಸ್  | ಔಸ್  | ಆಮ್   |
| ಸಪ್ತಮಿ          | ಠಿ   | ಔಸ್  | ಸುಪ್  |

ಹೀಗೆಯೇ ಧಾತುಗಳ ಮುಂದೆ ವಿಧಿಸಲ್ಪಡುವ ತಿಙ್ (ಪರಸ್ಪೃಪದದ 9 ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು ಮತ್ತು ಆತ್ಮನೇ ಪದದ 9 ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು) (18) ಹದಿನೆಂಟು ವಿಭಕ್ತಿ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳ ಸಂಜ್ಞೆ. ಪ್ರಥಮಪುರುಷದ ಏಕವಚನದ ತಿ ಮತ್ತು ಉತ್ತಮಪುರುಷದ ಬಹುವಚನದ ಮಹಿಙ್ ಪ್ರತ್ಯಯದ 3 ಕಾರಗಳ ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರದಿಂದ ಉಭಯ ಪದಗಳ 18 ಪ್ರತ್ಯಯಗಳಿಗೂ ಗ್ರಹಣ.

ಹದಿನೆಂಟು ಪ್ರತ್ಯಯಗಳು :

| ಪರಸ್ಪೃಪದಮ್ | ಆತ್ಮನೇಪದಮ್  |
|------------|---|
| ಎಂವಂ       | ದ್ವಿವಂ  |
| ಬಂವಂ       | ಏವಂ   |
| ಪ್ರಂಪುಂ    | ತಿಪ್  |
| ತಸ್        | ಜಿ  |
| ತ          | ಆತಾಮ್   |
| ಜ          | ಮಂಪುಂ   |
| ಸಿಪ್       | ಥಸ್   |
| ಥ          | ಥಾಸ್  |
| ಆತಾಮ್      | ಠವಮ್  |
| ಠವಮ್       | ಉಂಪುಂ   |
| ಮಿಪ್       | ವಸ್   |
| ಮಸ್        | ಐಟ್   |
| ವಹಿ        | ಮಹಿಙ್   |
| ಮಹಿಙ್      | ಈ ಎಲ್ಲಾ ಪ್ರತ್ಯಯಗಳೂ ವಿಭಕ್ತಿ ಸಂಜ್ಞೆಯನ್ನು ಹೊಂದು ವುವು. "ವಿಮಕ್ತಿಸ್ತ್ರ" (1-4-104)   ಸುಪ್ತಿಡೀ ವಿಮಕ್ತಿಸಂಜ್ಞೆ ಸ್ತ:   ಸಿಂ ಕೀಂ |

ಸುಪಕವ ಸುಪಕವ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹಣ್ಣಾಗಿರುವ. (ಪುಂ) 3. ಒಳ್ಳೆಯ ವಾಸನೆಯುಳ್ಳ ಮಾವಿನ ಮರ.

ಸುಪಥ ಸುಪಥ (ಪುಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾರ್ಗ, ಒಳ್ಳೆಯ ದಾರಿ. ಸು + ಪಥಿನ್ "ಅ" (4-4-94) | "ವಿಷಯಾಕ್ರಮ್ಯಮಾಣಾ ಹಿ ತಿಷ್ಠಂತಿ ಸುಪಥೇ ಕಯಮ್" ಕಥಾಸಂ |



ಸುಪಥಿನ್ ಸುಪಥಿನ್ (ಪುಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾರ್ಗ, ಒಳ್ಳೆಯ ದಾರಿ. ಸು ಶೋಭನ: ಪನ್ಥಾ: | ಸುಪನ್ಥಾ: |

ಸುಪರ್ಣ ಸುಪರ್ಣ (ಪುಂ) 1. ಗರುಡಂತ, ಗರುಡ. ಸು ಸುಪ್ಪರ್ಣ ಪಕ್ಷೋಽಸ್ಯ | "ಸುಪರ್ಣವೇಗಾನಿಲವಿಪ್ರಕೀರ್ಣ: ಸುರದ್ವಂ-  
-ಂತರೀತ: ಸುಮೇರು: " ಯಾದಂ ೧೮-೪ | 2. ವಿಷ್ಣು.  
"ಮರೋಚಿದಮನೋ ಹಂಸ: ಸುಪರ್ಣೋ ಭುಜಗೋತ್ತಮ:" ವಿಂ ಸಂ |  
3. ಕೆಕ್ಕಿಗಿಡ. 4. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. "ನಾಗಾನ್ ಸರ್ಪಾನ್ ಸುಪರ್ಣಾಶ್ಚ  
ಪಿತೃಣಾಂ ಚ ಪೃಥಗ್ಗಣಾನ್" ಮನುಂ ೧-೩೭ | (ವಿಂ) 5.  
ಒಳ್ಳೆಯ ರೆಕ್ಕಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. 6. ಸುಂದರವಾದ  
ಎಲೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಸುಪರ್ಣಕ ಸುಪರ್ಣಕ (ಪುಂ) 1. ಎಳೆಲೆ ಬಾಳೆ ಗಿಡ. 2. ಕೆಕ್ಕಿ  
ಗಿಡ. 3. ಗರುಡ.

ಸುಪರ್ಣಕೇತು ಸುಪರ್ಣಕೇತು (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಸುಪರ್ಣ: ಕೇತು  
ಯಸ್ಯ |

ಸುಪರ್ಣಿ ಸುಪರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎನತಾದೇವಿ, ಗರುಡಂತನ  
ತಾಯಿ. 2. ಪದ್ಮಿನಿ, ಕಮಲಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ದೇಶ.  
ಸು ಶೋಭನಾನಿ ಪರ್ಣಾನಿ: "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೩೪) |  
"ಸುಪರ್ಣಿ ಕಮಲಿನ್ಯಾಂ ಚ ವೇನತೇಯಸ್ಯ ಮಾತರಿ" ಮೇದಿಂ |

ಸುಪರ್ವನ್ ಸುಪರ್ವನ್ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ, ಸುರ. ಸು ಸುಪ್ಪರ್ವ  
ಪರ್ವ ಅಮಾವಾಸ್ಯಾದಿವರಿತಮ್ ಅಭ್ಯುತ್ಯಾದಿಗ್ರನ್ಥಿ: ತತ್ಸರ್ವೋ ವಾ  
ಯಸ್ಯ | "ಸುಪರ್ವಣಾಂ ಯತ್ರ ಸಮಾಂ ಸುಪರ್ವಾ ಭೂಮೇಹಂ ಭೂಷಣತಾ-  
ಮನೇಷಮ್" ಯಾದಂ ೧೮-೭೦ | 2. ಶರ, ಬಾಣ.  
3. ಬಿದಿರು. 4. ಪರ್ವ, ಗೆಣ್ಣು. 5. ಧೂಮ, ಹೊಗೆ.  
6. ಪರ್ವದಿನ, ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಪಕ್ಷದ ಅಷ್ಟಮಿ ಚತುರ್ದಶಿ  
ಹುಣ್ಣಿಮೆ ಮತ್ತು ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ. "ಸುಪರ್ವಾ ನಾ ಶರೇ ವಂಶೇ  
ಪರ್ವಧೂಮಸುರೇಷವಪಿ" ಮೇದಿಂ | (ವಿಂ) 7. ಒಳ್ಳೆಯ ಗೆಣ್ಣು  
ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಸುಪರ್ವಿ ಸುಪರ್ವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆಳೆಯ ಗಿಡೆ. ಸು ಶೋಭನಾನಿ  
ಪರ್ವಾಣಿ ಯಸ್ಯಾ: |

ಸುಪಾತ್ರ ಸುಪಾತ್ರ (ನಂ) 1. ಯೋಗ್ಯವಾದವನು, ದಾನಾದಿ  
ಗಳಿಗೆ ಅರ್ಹನಾದವನು. ಸು ಸುಪ್ಪಾತ್ರ ಯೋಗ್ಯ ಪಾತ್ರಮ್ |  
ಪಾತ್ರ ಶಬ್ದವು ನಿತ್ಯನಪುಂಸಕಲಿಂಗ. 2. ಯೋಗ್ಯವಾದ  
ಪಾತ್ರ.

ಸುಪಾರ್ಶ್ವ ಸುಪಾರ್ಶ್ವ (ಪುಂ) 1. ಸಂಪಾತಿಯ ಪುತ್ರ, ಒಂದು  
ಪಕ್ಷಿ. ಸುಪ್ಪಾರ್ಶ್ವ ಯಸ್ಯ | "ಚಿರಾನ್ನಿಪತಿಸ್ತೋ ವೃದ್ಧ: ಕ್ಷೀಣ-  
ಪ್ರಾಣಪರಾಕ್ರಮ: | ತಂ ಮಾಮೇವ ಗತಂ ಪುತ್ರ: ಸುಪಾರ್ಶ್ವೋ ನಾಮ  
ನಾಮತ: | ಆಹಾರೇಣ ಯಥಾಕಾಲಂ ವಿಭರ್ತಿ ಪತತಾಂ ವರ:"  
ರಾಮಾಂ | 2. ಪಕ್ಷಿಪಕ್ಷಿ, ಬಸುರಿಮರ.

ಸುಪಾರ್ಶ್ವಕ ಸುಪಾರ್ಶ್ವಕ (ಪುಂ) ಬಸುರಿಮರ. ಸುಪ್ಪಾ  
ಪಾರ್ಶ್ವ ಯಸ್ಯ | "ಗರ್ಧಭಾಢೇ ಕಂದರಾಲಕಪೊತನಸುಪಾರ್ಶ್ವಕಾ:"  
ಅಮಂ |

ಸುಪೊಡನ ಸುಪೊಡನ (ನಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹಿಂಡುವುದು.  
2. ಬಹಳ ಹಿಂಸಿಸುವುದು.

ಸುಪೊಡಿತ ಸುಪೊಡಿತ (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹಿಂಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಸು+ಪೊಡ (ಅವಗಾಹನೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) |  
2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಬಹಳ ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸುಪೊವನ್ ಸುಪೊವನ್ (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪಾನಮಾಡುವವನು,  
ಸರಿಯಾಗಿ ಕುಡಿಯುವವನು. ಸು ಪಿಬತಿ-ಸು+ಪಾ (ಪಾನೇ)  
"ವನಿಪ್" (೩-೨-೭೪) |

ಸುಪುಷ್ಪ ಸುಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಹವಳದ ಗಿಡ. 2. ಶಿರೀಷ  
ವೃಕ್ಷ, ಬಾಗೆ ಮರ. (ನಂ) 3. ಲವಂಗ. 4. ಸ್ತ್ರೀಯರ  
ರಜಸ್ಸು, ಮುಟ್ಟು.

ಸುಪೂರ ಸುಪೂರ (ಪುಂ) 1. ಮಾದಳದ ಗಿಡ. (ವಿಂ)  
2. ಸುಲಭವಾಗಿ ತುಂಬಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. "ಸುಪೂರಾ ಸ್ಯಾತ್  
ಕುನದಿಕಾ ಸುಪೂರೋ ಮುಷಿಕಾಂಜಲಿ: | ಸುಸಂತುಷ್ಟ: ಕಾಪುರೂಪ:  
ಸ್ವಲ್ಪಕೇನಾಪಿ ತುಷ್ಯತಿ" ಪञ್ಚತಂ ೧-೨೬ |

ಸುಪೂರಕ ಸುಪೂರಕ (ಪುಂ) ಬಹುಪುಷ್ಪವೃಕ್ಷ. \  
ಸುಪ್ತ ಸುಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ನಿದ್ರಿಸಿದವನು, ನಿದ್ರೆಮಾಡಿದ  
ವನು. ನಿಷ್ವಪ್ (ಶಯೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | "ಕ್ಷುಧಿತ:  
ತೃಪಿತ: ಕಾಮೀ ವಿಧಾರ್ಥಿ ಕೃಷಿಕಾರಕ: | ಭಾಂಡಾರಿ ಚ  
ಪ್ರವಾಸೀ ಚ ಸಪ್ತ ಸುಪ್ತಾನ್ ಪ್ರಬೋಧಯತ್" | (ನಂ) 2. ನಿದ್ರೆ.  
ನಿಷ್ವಪ್ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) | "ನಹಿ ಸುಪ್ತಸ್ಯ  
ಸಿಂಹಸ್ಯ ನಿಪತಂತಿ ಮುಖೇ ಮೃಗಾ:" ಪञ್ಚತಂ ೨-೧೩೮ |

ಸುಪ್ತಜನ ಸುಪ್ತಜನ (ಪುಂ) 1. ಅರ್ಧರಾತ್ರಿ. ಸುಪ್ತಾ ಜನಾ  
ಯತ್ರ | 2. ಮಲಗಿ ನಿದ್ರಿಸುವ ಜನ. ಸುಪ್ತೋ ಜನ: |

ಸುಪ್ತಜ್ಞಾನ ಸುಪ್ತಜ್ಞಾನ (ನಂ) ಸ್ವಪ್ನ, ಕನಸು. ಸುಪ್ತೆ  
ನಿದ್ರಾಂ ಜ್ಞಾನಮ್ |

ಸುಪ್ತಿ ಸುಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಿದ್ರೆ. ನಿಷ್ವಪ್ (ಶಯೆ)  
"ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | 2. ಮುಟ್ಟಿದರೂ ತಿಳಿಯದಿರು  
ವಿಕೆ, ಸ್ವರ್ಪದ ಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. 3. ವಿಶ್ವಾಸ, ನಂಬಿಕೆ.  
4. ಸ್ವಪ್ನ, ಕನಸು. 5. ಶಯನ, ಮಲಗುವುದು. "ಸುಪ್ತಿ:  
ಸ್ಪರ್ಶಜಿತಾನಿದ್ರಾವಿಷಮ್ನೇ ಶಯನೇ ಸ್ವಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ |

ಸುಪ್ರತಿಭಾ ಸುಪ್ರತಿಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೆದ್ದ, ಹೆಂಡ. ಸು ಸುಪ್ಪಾ  
ಪ್ರತಿಭಾ ಯಸ್ಯಾ: |

ಸುಪ್ರತಿಷ್ಠ ಸುಪ್ರತಿಷ್ಠ (ವಿಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ಪ್ರಾತಿಯನ್ನು  
ಪಡೆದಿರುವ, ಒಳ್ಳೆಯ ಕೀರ್ತಿಯನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿರುವ.  
ಸು ಸುಪ್ಪಾ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ಯಸ್ಯ |



**ಸುಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ಸುಪ್ರತಿಷ್ಠಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರೋಕ್ತೆ ವಾದ ಐದು ಅಕ್ಷರಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ಛಂದಸ್ಸು. "ತುಕಾ-  
ನುಕ್ತಾ ತಥಾ ಮಯಾ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಸ್ಯಾ ಸುಪ್ರವಿಕಾ" ವೃಂ ೨೦ |  
2. ಪಾತಿ, ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ. 3. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವಿಕೆ, ಸ್ಥಿರ  
ವಾಗಿರುವಿಕೆ.

**ಸುಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಸುಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ** (ಪುಂ) 1. ಉದುಂಬರ ವೃಕ್ಷ,  
ಅತ್ತಿಮರ. (ವಿಂ) 2. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಂತಿರುವ, ಸ್ಥಿರವಾಗಿ  
ನೆಲೆಗೊಂಡಿರುವ. ಸುಷ್ಠು ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ: | "ಯೇಷಾಮಿಂದಿವರ-  
ಸ್ಯಾಮೋ ಹೃದಯೇ ಸುಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ:" | 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪ್ರತಿಷ್ಠೆ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ, ಮಂತ್ರಪೂರ್ವಕ ಆವಾಹನಾದಿಗಳಿಂದ  
ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ. "ಅಹ್ಮಾಪಿ ಯಾತಿ  
ದೇವತ್ವಂ ಮಹದ್ವಿ: ಸುಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ:" |

**ಸುಪ್ರತಿಷ್ಠಾತ ಸುಪ್ರತಿಷ್ಠಾತ** (ವಿಂ) ಶುದ್ಧವಾದ, ಪವಿತ್ರ  
ವಾದ. ಸು+ಪ್ರತಿ+ಷ್ಠಾ (ಶೋಚೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) |  
ಶುದ್ಧವಾದ ಸೂತ್ರ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಷತ್ವ ಬರುವುದು  
(೮-೩-೯೦) | ಪ್ರತಿಷ್ಠಾತಂ ಸೂತ್ರಮ್ | ಶುದ್ಧಮಿತ್ಯರ್ಥ: ಸಿಂ  
ಕೌಂ | "ಸುಪ್ರತಿಷ್ಠಾತಸೂತ್ರಾಣಾಂ ಕಪಿಷ್ಠಲಸಮತ್ವಿಷಾಮ್ |  
ಸ್ಥಿತಾಂ ವೃತ್ತೇ ದ್ವಿಜಾತೀನಾಂ ರಾತ್ರಾವೇಷತ ಮೆಥಿಲಿಮ್" ಭಟಿಂ  
೯-೮೩ |

**ಸುಪ್ರತೀಕ ಸುಪ್ರತೀಕ** (ಪುಂ) 1. ಈಶಾನ್ಯ ದಿಕ್ಕಿನ ಗಜ,  
ಅಷ್ಟದಿಗ್ಗಜಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಸು ಶೋಭನಾ: ಪ್ರತೀಕಾ: ಅಜ್ಞಾನಿ  
ಯಸ್ಯ | "ಮದಪದ್ಮಿನಿನದದ್ವಿಬೋಧಿತೋ ರಾಜಹಂಸ: ಸುರಗಜ ಇವ  
ಗಾಂಕ್ಷಂ ಸೇಕತಂ ಸುಪ್ರತೀಕ:" ರಘುಂ ೪-೭೫ | 2. ಕಾಮ,  
ಮನ್ಮಥ. 3. ಶಿವ, ಮಹಾದೇವ. (ನಂ) 4. ಸುಂದರ  
ವಾದ ಅಂಗ, -ಅವಯವ. ಸು ಶೋಭನಂ ಪ್ರತೀಕಮ್ |  
(ವಿಂ) 5. ಸುಂದರವಾದ ಅಂಗಗಳುಳ್ಳವನು.

**ಸುಪ್ರಭಾತ ಸುಪ್ರಭಾತ** (ನಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯದನ್ನು ಸೂಚಿ  
ಸುವ ಪ್ರಾತಃಕಾಲ, ಶುಭಸೂಚಕವಾದ ಪ್ರಾತಃಕಾಲ.  
ಸು ಶೋಭನಂ ಪ್ರಭಾತಮ್ | 2. ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿ ಪರಿಸರವೇಕಾದ  
ಮಂಗಳಕರ ಶ್ಲೋಕಗಳು. "ಬ್ರಹ್ಮಾಪುರಾಣಿಪುರಾಣಾಂತಕಾರಿ  
ಭಾನು: ಶಶಿ ಭೂಮಿಸುತೋ ಬೃಷಶ್ಚ | ಗುರು: ಸಶುಕ್ರ: ಸಹ ಭಾನುಜೇನ  
ಕುರ್ವಂತು ಸರ್ವೇ ಮಮ ಸುಪ್ರಭಾತಮ್" || "ಶ್ರೀಪದ್ಮನಾಭ ಪುರುಷೋತ್ತಮ  
ವಾಸುದೇವ ವೈಕುಂಠ ಮಾಧವ ಜನಾರ್ದನ ಚಕ್ರಪಾಣಿ | ಶ್ರೀವತ್ಸಚಿಹ್ನ  
ಶರಣಾಗತಪಾರಿಜಾತ ಶ್ರೀವೇಂಕಟಾಚಲಪತೇ ತವ ಸುಪ್ರಭಾತಮ್" ||  
"ಕಥಂ ರಘುನಾಥ ಏವ | ದಿಷ್ಟಯಾ ಸುಪ್ರಭಾತಮವ ಯದಯಂ ದೇವೋ  
ದೃಷ್ಟ:" ತಂ ರಾಂ ೬ | "ಸುಪ್ರಭಾತಮಭೂತಾಸಾಂ ಸುದಿನಂ ವ  
ತಮೋಪಹಮ್" ಯಾದಂ ೧೬-೧೩೯ |

**ಸುಪ್ರಭಾತಾ ಸುಪ್ರಭಾತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ಮಹಾನದಿ.  
"ಅಕ್ಷಾ ನೃಪಾಽಽಙ್ಗಿರಸೀ ಸಾವಿತ್ರಿ ಸುಪ್ರಭಾತಾ ಕೃತಮ್ಬರಾ

ಸತ್ಯಮ್ಬರೇತಿ ಮಹಾನದಿ:" ಭಾಗಂ ೪-೨೦-೪ | 2. ಒಳ್ಳೆಯ  
ಪ್ರಭಾತದಿಂದ ಕೂಡಿದ ರಾತ್ರಿ.

**ಸುಪ್ರಯುಕ್ತ ಸುಪ್ರಯುಕ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಗುರಿಯಿಟ್ಟು  
ಪ್ರಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಬಾಣ). 2. ಶುದ್ಧವಾಗಿ ಉಪ-  
ಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಶಬ್ದ). "ಏಕ: ಶಬ್ದ: ಸುಪ್ರಯುಕ್ತ: ಸಮ್ಯ-  
ಜ್ಞಾತ: ಸ್ವರ್ಗ ಲೋಕೇ ಕಾಮಧುಮವತಿ" | 3. ಸರಿಯಾಗಿ  
ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಚತುರತೆಯಿಂದ ನಡೆಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
"ಸುಪ್ರಯುಕ್ತಸ್ಯ ದಂಭಸ್ಯ ಬ್ರಹ್ಮಾಪ್ಯಂತಂ ನ ಗಚ್ಛತಿ" ಪೌಷ್ಕತಂ  
೧-೨೧೮ |

**ಸುಪ್ರಯುಕ್ತವಿಶಿಷ್ಠ ಸುಪ್ರಯುಕ್ತವಿಶಿಷ್ಠ**, -ಬಾಣ -ಬಾಣ  
(ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಗುರಿಯಿಟ್ಟು ಬಾಣಪ್ರಯೋಗ ಮಾಡ  
ಬಲ್ಲ (ಬಿಲ್ಲುಗಾರ). ಸುಪ್ರಯುಕ್ತ: ವಿಶಿಷ್ಠ: ಬಾಣೋ ವಾ ಯೇನ |

**ಸುಪ್ರಯೋಗವಿಶಿಷ್ಠ ಸುಪ್ರಯೋಗವಿಶಿಷ್ಠ**, -ಬಾಣ -ಬಾಣ  
(ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಗುರಿಯಿಟ್ಟು ಬಾಣಪ್ರಯೋಗ ಮಾಡ  
ಬಲ್ಲ (ಬಿಲ್ಲುಗಾರ). ಶೋಭನ: ಪ್ರಯೋಗೋಽಸ್ಯ ಸುಪ್ರಯೋಗ:  
ಸುಪ್ರಯೋಗೋ ವಿಶಿಷ್ಠೋ ಬಾಣೋ ವಾಽಸ್ಯ |

**ಸುಪ್ರಲಬ್ಧ ಸುಪ್ರಲಬ್ಧ** (ಪುಂ) ಸುಖವಾಗಿ ಹೊಂದಲು  
ಸಾಧ್ಯವಾದ, ಕ್ಲೇಶವಿಲ್ಲದೆ ಪಡೆಯಲು ಶಕ್ಯವಾದ. ಸು+ಪ್ರ+  
ಲಬ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಲಬ್" (೩-೩-೧೨೬) | ನುಮ್  
(೭-೧-೬೭) |

**ಸುಪ್ರಲಾಪ ಸುಪ್ರಲಾಪ** (ಪುಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತು, ಮಂಗಳ  
ಕರವಾದ ಮಾತು. ಸುಷ್ಠು ಪ್ರಕೃಷ್ಠಂ ಲಪನಮ್ | ಸು+ಪ್ರ+  
ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ) ವಾಕಿ "ಲಪ್" (೩-೩-೧೮) | "ಸುಪ್ರಲಾಪ:  
ಸುವಚನಮ್" ಅಮಂ |

**ಸುಪ್ರಸನ್ನ ಸುಪ್ರಸನ್ನ** (ವಿಂ) 1. ಸುಪ್ರೀತನಾದ, ಬಹಳ  
ಸಂತೋಷಗೊಂಡ. ಸು+ಪ್ರ+ಪದ್ (ವಿಶರಣಾದೌ)  
"ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | 2. ದಯೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ,  
ಅನುಗ್ರಹದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ. 3. ಬಹಳ ತಿಳಿಯಾದ,  
ನಿರ್ಮಲವಾದ. 4. ಶುದ್ಧವಾದ. ಮೇಘ ಮೊದಲಾದುವು  
ಗಳಿಂದ ಮುಚ್ಚಲ್ಪಡದಿರುವ (ಆಕಾಶ).

**ಸುಪ್ರಸರಾ ಸುಪ್ರಸರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಾರಣೆ ಗಿಡ, ಮುಳ್ಳುಗಸೆ  
ಗಿಡ.

**ಸುಪ್ರಸಾದ ಸುಪ್ರಸಾದ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಶೋಭನ:  
ಪ್ರಸಾದೋಽಸ್ಯ | "ಪ್ರಸಾದಪರಮತ್ವಾಚ್ಚ ಸುಪ್ರಸಾದ: ಪ್ರಕೀರ್ತಿತ:"  
ಇತಿ ನಿರೂಪಿತ: | "ಸುಪ್ರಸಾದ: ಪ್ರಸನ್ನಾತ್ಮಾ" ವಿಂ ಸಂ |  
2. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಸುಷ್ಠು ಪ್ರಸಾದೋಽಸ್ಯ | 3. ದಯೆ,  
ಅನುಗ್ರಹ. 4. ಒಳ್ಳೆಯ ಪ್ರೀತಿ, ಸಂತೋಷ. 5.  
ನೈರ್ಮಲ್ಯ, ತಿಳಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ. (ವಿಂ) 6. ಪ್ರಸನ್ನತೆ



ಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವ. "ಕ್ಷಿಪ್ರಕಾರಿ ಜಿತಕ್ರೋಧಃ ಸುಪ್ರಸಾಧೋ  
ಮಹಾಮನಾಃ" ಭಾಂ. ಶಾಂತಿಂ.

ಸುಪ್ರಾತ ಸುಪ್ರಾತ (ವಿಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ಪ್ರಾತಃಕಾಲವುಳ್ಳ  
ಯಾವ ವಿಧವಾದ ತೊಂದರೆಯೂ ಇಲ್ಲದ ಪ್ರಾತಃಕಾಲವು  
ಸುಪ್ರಾತ. ಶೋಭನಂ ಪ್ರಾತಃದಿನಮುಖಂ ಯಸ್ಯ ನಿರಪದ್ರವತ್ವಾತ್ |  
"ಸುಪ್ರಾತಮಾಸಾದಿತಸಮ್ಮದಂ ತದ್ವಂದಾರುಹಿಃ ಸಂಸ್ತುತಮಮ್ಯಯೋಧ್ಯಮ್"  
ಭದ್ರಿಂ ೨-೪೯.

ಸುಪ್ರಿಯ ಸುಪ್ರಿಯ (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಪ್ರಿಯವಾದ, ಬಹಳ  
ಇಷ್ಟವಾದ. ಸುಷ್ಠು ಪ್ರಿಯಃ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪ್ರಿಯಾ -ಪ್ರಿಯಾ.  
2. ಬಹಳ ಸುಂದರಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು.

ಸುಫಲ ಸುಫಲ (ವುಂ) 1. ದಾಳಿಂಬೆ ಗಿಡ. 2. ಎಲಚಿ  
ಗಿಡ. 3. ಹೆಸರು. 4. ಕಪಿತ್ತ, ಬೇಲದ ಮರ. ಸುಷ್ಠು  
ಫಲಂ ಯಸ್ಯ | (ವಿಂ) 5. ಒಳ್ಳೆಯ ಫಲಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಸುಫಲಾ ಸುಫಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕುಂಬಳದ ಗಿಡ. 2. ಬಾಳೆ  
ಗಿಡ. 3. ಶೀವನೆಯ ಮರ. 4. ಹಾವುಮೆಕ್ಕೆ.

ಸುಖಲ ಸುಖಲ (ವುಂ) 1. ಮಹಾಭಾರತದ ಶಕುನಿಯ ತಂದೆ.  
2. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. (ವಿಂ) 3. ಬಹಳ ಶಕ್ತಿವಂತ  
ನಾದ, ಬಹಳ ಬಲಿಷ್ಠನಾದ.

ಸುಖಾಹ ಸುಖಾಹು (ವುಂ) ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ, ತಾಟಕಿಯ ಮಗ,  
ಮಾರೀಚನ ಸಹೋದರ. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಮಹರ್ಷಿಯು  
ಸಿದ್ಧಾಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಯಜ್ಞ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಇವನು  
ಯಾಗಕ್ಕೆ ಬಹಳ ವಿಘ್ನವುಂಟುಮಾಡುತ್ತಿರಲು ವಿಶ್ವಾ  
ಮಿತ್ರನು ರಾಮನ ಮೂಲಕ ಇವನನ್ನು ಕೊಲ್ಲಿಸಿದನು.

ಸುಖೋಪ ಸುಖೋಪ (ವುಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ಸಲಹೆ, ಒಳ್ಳೆಯ  
ಉಪದೇಶ. 2. ಸುಖವಾಗಿ ಅರ್ಥವಾಗುವಿಕೆ, ಕ್ಲೇಶ  
ವಿಲ್ಲದೆ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಸುಖಾಪ್ಯ ಸುಖಾಪ್ಯ (ವುಂ) ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪಣ್ಣುಖ.

ಸುಖಗ ಸುಖಗ (ವಿಂ) 1. ಅತಿಶಯವಾದ ಪ್ರಯತ್ನವುಳ್ಳ.  
ಸು ಅತಿಶಯಃ ಭಗಃ ಪ್ರಯತ್ನೋ ಯತ್ರ | "ಸುಖಗಸಲಿಲಾವಗಾಹಾಃ  
ಪಾಟಲಿಸಂಸಗಿಸುರಭಿವನವಾತಾಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೩ | 2. ಒಳ್ಳೆಯ  
ಸೊಬಗಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ, ನೋಡಲು ರಮಣೀಯವಾದ.  
ಸುಷ್ಠು ಭಗಂ ಶ್ರೀ. ಕಾಂತಿರಸ್ಯ | "ಕೇವಲೋಪಿ ಸುಖಗೋ  
ನವಾಮ್ಬುದಃ ಕಿಂ ಪುನಸ್ತ್ರಿದಶಚಾಪಲಾಽಞ್ಜಿತಃ" ರಘುಂ ೧೧-೮೦ |  
3. ವೀರ್ಯವಂತ, ಪರಾಕ್ರಮಶಾಲಿ. 4. ವಿರಕ್ತ,  
ವೈರಾಗ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. 5. ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ, ಧನಿಕ.  
6. ಕೀರ್ತಿವಂತ. 7. ಜ್ಞಾನಿ, ಒಳ್ಳೆಯ ಜ್ಞಾನ ಸಂಪಾ  
ದಿಸಿದವನು. 8. ಮಹಾತ್ಮ. 9. ಅದೃಷ್ಟವಂತ,  
ಭಾಗ್ಯಶಾಲಿ. 10. ಇಚ್ಛಿಸುವವನು, ಬಯಸುವವನು.

11. ಧರ್ಮಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. 12. ಒಳ್ಳೆಯ ತಪಸ್ವಿ.  
"ಭಗಂ ಶ್ರೀಯೋನಿವೀರ್ಯೇಚ್ಛಾಜ್ಞಾನವೈರಾಗ್ಯಕೀರ್ತಿಷು | ಸಾಹಾಸ್ಯ-  
ಶ್ರೇಯಸ್ತೇಷು ಧರ್ಮೋ ಮೋಕ್ಷೇ ಚ ನಾ ರವಿ" ಮೇದಿಂ | "ಭಗಂ  
ಯೋನಾಂ ಭಗೋ ವತ್ಸಲೇ ಯಶೋವೀರ್ಯಕೀರ್ತಿಷು | ಕಾಂತೀಚ್ಛಾಜ್ಞಾನ-  
ವೈರಾಗ್ಯಧರ್ಮಶ್ರೇಯಸ್ತಪಸ್ಸು ಚ" ವೇಜಂ | (ವುಂ) 13. ಶಕುನಿಯ  
ಸಹೋದರ, ಸುಖಲನ ಮಗ. 14. ಚಂಪಕವೃಕ್ಷ, ಸುಖಿಗೆ  
ಮರ. 15. ಅಶೋಕವೃಕ್ಷ.

ಸುಖಗಾ ಸುಖಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪತಿಯ ಪ್ರೀತಿಗೆ ಪಾತ್ರಳಾದ  
ಹೆಂಗಸು. 2. ಅದೃಷ್ಟಶಾಲಿನಿಯಾದ ಹೆಂಗಸು, ಭಾಗ್ಯವತಿ  
ಯಾದ ಹೆಂಗಸು. 3. ತುಲಸಿ. 4. ಅರಿಶಿನ. 5. ಪ್ರಿಯಂಗು  
ಲತೆ. 6. ಕಾಡುಮಲ್ಲಿಗೆ. 7. ತುಂಗಮುಸೆ, ಕೊನ್ನಾರಿಯ  
ಭೇದ. 8. ಮೂರಲೆ ಹೊನ್ನೆ.

ಸುಖಗಾಸುತ ಸುಖಗಾಸುತ (ವುಂ) ಭಾಗ್ಯವತಿಯಾದ ಹೆಂಗಸಿನ  
ಮಗ. ಸುಖಗಾಃ ಸುತಃ |

ಸುಖರಕ ಸುಖರಕ (ವುಂ) 1. ವಿಮಾನ, ದೇವತೆಗಳ ರಥ.  
ಸುಷ್ಠು ಭದ್ರಮಸ್ಮಾತ್ | "ವ್ಯೋಮಯಾನಂ ದಿವ್ಯರಥಃ ವಿಮಾನೋಽಸ್ಮಿ  
ಸುಖರಕಃ" ಶಬ್ದರಂ | 2. ಬಿಲ್ವಪತ್ರ ಮರ. 3. ದೇವರ  
ಬ್ರಹ್ಮೋತ್ಸವದ ರಥ.

ಸುಖರಾ ಸುಖರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರ್ಜುನನ ಪತ್ನಿ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ  
ತಂಗಿ, ದೇವಕಿ-ವಸುದೇವರ ಪುತ್ರಿ, ಅಭಿಮನ್ಯುವಿನ  
ತಾಯಿ. ಅರ್ಜುನನು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಸೂಚನೆಯಂತೆ ಯತಿ  
ರೂಪದಿಂದ ಸುಭದ್ರೆಯ ಅಂತಃಪುರದಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡು  
ತ್ತಿದ್ದು ಅವಳನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿಕೊಂಡು ಮದುವೆಯಾದನು.  
ಸುಭದ್ರೆಯು ಅಭಿಮನ್ಯುವೆಂಬ ವೀರಪುತ್ರನನ್ನು ಪಡೆದಳು.

ಸುಖಾಪಿತ ಸುಖಾಪಿತ (ನಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತು, ಹಿತ  
ವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ ಮಾತು, ಮನುಷ್ಯನ ಜೀವನ  
ವನ್ನು ಹಸನಾಗಿ ಮಾಡುವ ಮಾತು. ಸುಷ್ಠು ಶೋಭನಂ  
ಭಾಷಿತಮ್ | ಮಹಾವಿದ್ವಾಂಸರೂ ಜ್ಞಾನಿಗಳೂ ತಮ್ಮ  
ಕಷ್ಟಸುಖಮಯವಾದ ಜೀವನದ ಸುದೀರ್ಘ ಕಾಲದ  
ಅನುಭವಗಳನ್ನು ಸುಖಾಪಿತಗಳ ಮೂಲಕ ಜನತೆಯ  
ಸುಖಮಯ ಜೀವನ ಹಾಗೂ ವಿವೇಕಯುತ ಜೀವನದ  
ಸಲುವಾಗಿ ಕಾವ್ಯ ನಾಟಕ ಪುರಾಣೇತಿಹಾಸಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿ  
ಪಾದಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಸುಖಾಪಿತಗಳಲ್ಲಿ ಧರ್ಮ ನೀತಿ ಶೃಂಗಾರ  
ವೈರಾಗ್ಯ ಹಾಸ್ಯ ಮುಂತಾದ ನಾನಾ ವಿಷಯಗಳು ಸೇರಿರು  
ತ್ತವೆ. ಇವುಗಳ ಪಠನದಿಂದ ಮನುಷ್ಯನು ಧರ್ಮಶೀಲ  
ನಾಗಬಹುದು. ನೀತಿಮತನಾಗಬಹುದು. ಶೃಂಗಾರಾದಿ  
ನವರಸಾನುಭವಗಳನ್ನು ಪಡೆಯಬಹುದು. ವಿವೇಕದ  
ಜೀವನ ನಡೆಸಬಹುದು. ಧರ್ಮ ಅರ್ಥ ಕಾಮ ಮೋಕ್ಷ



ರೂಪವಾದ ಪುರುಷಾರ್ಥಚತುಷ್ಟಯವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಬಹುದು. ಆನಂದಪಡಬಹುದು. ಭಕ್ತಿ ಜ್ಞಾನವೈರಾಗ್ಯಗಳನ್ನು ಪಡೆಯಬಹುದು. ಶತ್ವಜ್ಞಾನ ಸಂಪಾದಿಸಬಹುದು. ಈ ಸುಭಾಷಿತಗಳೆಲ್ಲವೂ ಬಹಳ ಮಧುರವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಎಷ್ಟು ಖೇದವಾಗಿದ್ದರೂ ಉಲ್ಲಾಸವುಂಟಾಗುವುದು. "ಭಾಷಾಸು ಮುಖ್ಯಾ ಮಧುರಾ ದಿವ್ಯಾ ಗೀರ್ವಾಣಭಾರತೀ। ತಸ್ಮಾದ್ವಿ ಕಾವ್ಯಂ ಮಧುರಂ ತಸ್ಮಾದಪಿ ಸುಭಾಷಿತಮ್ ॥ ಸುಭಾಷಿತೇನ ಗೀತೇನ ಯುವತೀನಾಂ ಚ ಲೀಲಯಾ। ಮನೋ ನ ಮಿಶ್ರತೇ ಯಸ್ಯ ಸ ಯೋಗೀಶ್ವರವಾ ಪಶುಃ" ॥ "ಹಸ್ತಸ್ಯ ಭೂಷಣಂ ದಾನಂ ಸತ್ಯಂ ಕಂಠಸ್ಯ ಭೂಷಣಮ್। ಶ್ರೋತ್ರಸ್ಯ ಭೂಷಣಂ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಭೂಷಣಂ: ಕಿಂ ಪ್ರಯೋಜನಮ್ ॥ ದಾನೇನ ಭೋಗಿ ಮವತಿ ಮೇಧಾವಿ ವೃದ್ಧಸೇವಯಾ। ಅಹಿಸಯಾ ಚ ದೀರ್ಘಾಯುರೀತಿ ಪ್ರಾಹುರ್ಮನೀಷಿಣಃ ॥ ಮಮೇತಿ ಪರಮಂ ದುಃಖಂ ನ ಮಮೇತಿ ಪರಂ ಸುಖಮ್। ದ್ವೇ ಹಿ ಬಂಧಸ್ಯ ಮೋಕ್ಷಸ್ಯ ಮಮೇತಿ ನ ಮಮೇತಿ ಚ ॥ ಅಜೋರ್ಮೇಧಜಂ ವಾರಿ ಜೋರ್ಮೇಧವಾರಿ ಬಲಪ್ರದಮ್। ಅಮೃತಂ ಭೋಜನಾರ್ಥಂ ತು ಭುಕ್ತಸ್ಯೋಪರಿ ತದ್ವಿಷಮ್ ॥ ಯಥಾ ಚಿತ್ತೇ ತಥಾ ವಾಚಿ ಯಥಾ ವಾಚಿ ತಥಾ ಕ್ರಿಯಾಃ। ಚಿತ್ತೇ ವಾಚಿ ಕ್ರಿಯಾಃ ಚ ಸಾಧುನಾಮೇಕರೂಪತಾ" ॥ (ವಿಂ) 2. ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತುಗಳನ್ನಾಡುವವನು. 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವವನು. ಸು ಶೋಭನಂ ಭಾಷಿತಂ ಯಸ್ಯ।

**ಸುಖಿಕ ಸುಖಿಕ** (ವಿಂ) 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಭಿಕ್ಷೆ ಲಭಿಸುವ (ಕಾಲ). 2. ಸುಖವಾಗಿ ಭಿಕ್ಷೆ ನೀಡಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗುವ (ಧಾನ್ಯ). ಸು ಸುಖೇನ ಲಭ್ಯಾ ಮಿಕಾ ಯತ್ರ। (ನಂ) 3. ಧಾನ್ಯದ ಸಮೃದ್ಧಿ. ಅಹಾರದ ದ್ರವ್ಯಗಳ ಸಮೃದ್ಧಿ. "ಸುಖಿಕಾಣಿ ವಿಚಿತ್ರಾಣಿ ಶಿಥಿಲಾಃ ಪೌರಯೋಷಿತಃ। ಏಕೋ ದೋಷೋ ವಿವೇಶಸ್ಯ ಸ್ವಜಾತಿಯದ್ವಿರೂಪತೇ" ಪಂಚತಂ ೪-೭೮।

**ಸುಖಿಕಾ ಸುಖಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರೆಹೂವು, ಮರಾಟೆ ಮೊಗ್ಗು. ಸು ಸುಖಿಕಾ ಮಿಶ್ರತೇಽಸೀ-ಮಿಶ್ರ (ಮಿಶ್ರಾಯಾಮಲಾಭೇ ಲಾಭೇ ಚ) "ಖಲ್" (೩-೩-೧೯)। "ಅಗ್ನಿಜ್ವಾಲಾಸುಖಿಕೇ ಚ ಧಾತಕೀಧಾತುಪುಷ್ಪಿಕಾ" ಅಮಂ।

**ಸುಖೀಕ ಸುಖೀಕ** (ಪುಂ) ಪಲಾಶವೃಕ್ಷ, ಮುತ್ತಗದ ಮರ.

**ಸುಖೀಕ ಸುಖೀಕ** (ಪುಂ) ಬಿಲ್ವಪತ್ರ ಮರ.

**ಸುಖ ಸುಖ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸುಂದರವಾದ ಹುಬ್ಬು. ಸು ಸುಖ ಭೂಃ। 2. ಸುಂದರವಾದ ಹುಬ್ಬುಗಳುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಸು ಶೋಭನಾಃ ಭೂಃ ಯಸ್ಯಾಃ। "ಗುಡಸುಚಿತರಹಸ್ಯಸಹಾಸಃ ಸುಖಿವಾಂ ಪ್ರವೃತ್ತೇ ಪರಿಹಾಸಃ" ಮಾಘಂ ೧೦-೧೨। "ಮುಕುಲಯತಿ ಚ ತೇನ ಸರ್ವಥಾ ಸುಖಿ ಕೇದಃ" ಮಾಲತೀಂ ೩-೮।

**ಸುಖ ಸುಖ** (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. 2. ಕರ್ಪೂರ. ಸುಖ ಮಾತಿ ಸೌಂದರ್ಯಮ್-ಮಾಹ್ (ಮಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೧-೧೩೫)। (ನಂ) 3. ಪುಷ್ಪ, ಹೂವು.

**ಸುಖಜಲ ಸುಖಜಲ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಕೋಳೇ ಸೊಪ್ಪು. ಸುಖ ಮಜ್ಜಲಂ ಯಸ್ಯಾಃ।

**ಸುಖಜಲ ಸುಖಜಲ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುವಾಸಿನಿ, ಸೌಭಾಗ್ಯವತಿ, ಮಂಗಳಕರ ವೇಷಭೂಷಣಾದಿಗಳುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಸುಖ ಮಜ್ಜಲಂ ಯಸ್ಯಾಃ-ಗೌರಾಂ "ಕೇಫ" (೪-೧-೪೧)।

**ಸುಖ ಸುಖ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ಬುದ್ಧಿ, ಧರ್ಮ ಬುದ್ಧಿ, ಉಪಕಾರ ಮಾಡುವ ಬುದ್ಧಿ. ಸು ಶೋಭನಾ ಮತಿಃ। 2. ಸಗಂಧಕೃತವರ್ತಿಯ ಒಬ್ಬ ಪತ್ನಿ. "ಪುರೀಮಯೋಚ್ಯಾ-ಮಧ್ಯಾಸ್ತ ಸಾವಿತ್ರಃ ಸಗರೋ ನೃಪಃ। ಕೇಶಿನೀಸುಖಮಿತ್ಯಾಂ ಚ ಲಕ್ಷಿತಪ್ರಥಮಾಶ್ರಮಃ" ಚಂ ರಾಂ। 3. ವಿಷ್ಣುಯಶಸ್ಸಿನ ಪತ್ನಿ, ಕಲ್ಪಿಯ ಅವತಾರವೆತ್ತಿದ ವಿಷ್ಣುವಿನ ತಾಯಿ. "ಶಂಭಲೇ ವಿಷ್ಣುಯಶಸೋ ಗೃಹೇ ಪ್ರಾಹುರ್ಮವಾಮ್ಯಹಮ್। ಸುಖಮಾತರೀ ವಿಮೋಃ ಕನ್ಯಾಯಾಂ ತನ್ನಿವೇಶತಃ। ಚತುರ್ಮಿಶ್ರತೃಭಿರ್ದೇವ ಕರಿಷ್ಯಾಮಿ ಕಲಿಕಷಯಮ್"। (ವಿಂ) 4. ಧರ್ಮಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು, ಉಪಕಾರದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. ಸು ಶೋಭನಾ ಮತಿಯಸ್ಯ।

**ಸುಖದ ಸುಖದ** (ಪುಂ) ಆಮ್ರವೃಕ್ಷ, ಮಾವಿನ ಮರ. ಸುಖ ಮದಯತಿ ಕೋಕಿಲಾದಿನ್।

**ಸುಖದ ಸುಖದ** (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಮಧುರವಾದ, ಬಹಳ ಸಿಹಿಯಾದ. 2. ಬಹಳ ಸೌಮ್ಯವಾದ, ಕಠಿನವಲ್ಲದ, ಮೃದುವಾದ (ಮಾತು).

**ಸುಖದ ಸುಖದ** (ವಿಂ) 1. ತೆಳುವಾದ ಸೊಂಟವುಳ್ಳ. ಸು ಮಧ್ಯಮಮವಲಗನಂ ಯಸ್ಯ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಮಾ-ಮಾ. 2. ತೆಳುವಾದ ಮತ್ತು ಸುಂದರವಾದ ಸೊಂಟವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಸು ಶೋಭನಂ ಮಧ್ಯಮಮವಲಗನಂ ಯಸ್ಯಾಃ। "ಸಂದೃಶ್ಯತೇ ಸಾಗರಮೇಖಲಾಯಾ ಸುಖದಮೇ ಮಧ್ಯಮಿದಂ ಧರಣ್ಯಾಃ" ಯಾದಂ ೧೮-೧೦।

**ಸುಖ ಸುಖ** (ಪುಂ) 1. ಗೋಧಿ. ಸುಖ ಮನ್ಯತೇ-ಮನ (ಜ್ಞಾನೇ) "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಗೋಧೂಮಃ ಸುಖಃ ಸಮೌ" ಅಮಂ। 2. ದತ್ತೂರಿ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 3. ಮನೋಹರವಾದ, ಸುಂದರವಾದ.

**ಸುಖ ಸುಖ** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ, ಮರ. ಸು ಶೋಭನಂ ಮನೋ ಯಸ್ಯ। "ಮಧುಮರ್ದನಕಾರ್ಮುಕಪ್ರಣಾದಃ ಸುಖಃ ಶ್ರೋತ್ರಸುಖಾ-ರಸಾಯಮಾನಃ" ಯಾದಂ ೧೫-೧೧೫। 2. ಪಂಡಿತ. 3. ಗೋಧಿ. 4. ತಪಸಿ ಗಿಡ. 5. ಬೇವಿನ ಮರ. (ವಿಂ) 6. ಒಳ್ಳೆಯ



ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು, ಒಳ್ಳೆಯ ಹೃದಯವುಳ್ಳವನು, ಧರ್ಮ ಶೀಲ.

**ಸುಮನಸ್ ಸುಮನಸ್** (ಸ್ತ್ರೀಂ ಬಂವಂ) 1. ಪುಷ್ಪ, ಕುಸುಮ, ಹೂವು. ಸುಷ್ಣು ಮನ್ಯಂತೇ ಆಭಿ:—ಮನ (ಜ್ಞಾನ) "ಅಸುನ್" (ತಂ ೪-೧೮೯). "ಜಗತಿ ಸುಮನಸಸ್ತದಾದಿ ನೂನ ದಧತಿ ಪರಿಸ್ಕುಟಮರ್ಥತೋಽಭಿಧಾನಮ್" ಮಾಘಂ ೭-೨೮. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಜಾಜಿ ಗಿಡ. "ಸುಮನಾ: ಪುಷ್ಪಮಾಲಯೋ: ಸ್ತ್ರಿಯಾ ನಾ ಧೀರದೇವಯೋ:" ಮೇದಿಂ. ಸುಮನಾ ಎಂದೂ ಆ ಕಾರಾಂತ ಪ್ರಯೋಗವೂ ಉಂಟು. "ಸುಮನಾಽಪಿ ಪತ್ರಾಣಿ ಪಟೋ-ಲಾರಿಷ್ಟಯೋಸ್ತಥಾ" ಸುಶ್ರುತಂ. 3. ಜಾಯಿಕಾಯಿ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 4. ಒಳ್ಳೆಯ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ, ಧರ್ಮಬುದ್ಧಿ ಯುಳ್ಳ. ಸು ಶೋಭನಂ ಮನೋ ಯಸ್ಯ. "ತತಸ್ತೇ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾ: ಸರ್ವೇ ಬಕಂ ದಾಲ್ಮಯಮಪೂಜಯನ್. ಯುಧಿಷ್ಟಿರೇ ಸ್ತೂಯಮಾನೇ ಭುಯ: ಸುಮನಸೋಽಭವನ್" ಭಾಂ ವನಂ ೨೬-೨೧.

**ಸುಮನ:ಪತ್ರಿಕಾ ಸುಮನ:ಫಲ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಾಯಿಪತ್ರಿ. **ಸುಮನ:ಫಲ ಸುಮನ:ಫಲ** (ನಂ) 1. ಜಾಯಿಕಾಯಿ. (ಪುಂ) 2. ಕಪಿತ್ತವೃಕ್ಷ, ಬೇಲದ ಮರ.

**ಸುಮನಾ ಸುಮನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಾಜಿಯ ಗಿಡ, ಮಾಲತೀ ಗಿಡ. "ಸುಮನಾಽಪಿ ಪತ್ರಾಣಿ ಪಟೋಲಾರಿಷ್ಟಯೋಸ್ತಥಾ" ಸುಶ್ರುತಂ.

**ಸುಮನೋರಜಸ್ ಸುಮನೋರಜಸ್** (ನಂ) ಪುಷ್ಪದ ಧೂಳು, ಪರಾಗ.

**ಸುಮಂತು ಸುಮಂತು** (ಪುಂ) ಅಧರ್ವವೇದದ ಶಾಖಾ ಪ್ರಚಾರಕರಾದ ಒಬ್ಬ ಮುನಿ. "ತತ್ರಗ್ವೇದಧರ: ಪೆಲ: ಸಾಮಗೋ ಜೈಮಿನಿ: ಕವಿ: ವೆಂಶಮ್ಪಾಯನ ಏವೈಕೋ ನಿಷ್ಣಾತೋ ಯಜುಷಾಮುತ. ಅಯರ್ವಾಙ್ಗಿರಸಾಮಾಸೀತ್ ಸುಮಂತುರ್ದಾಣೋ ಮುನಿ: ಇತಿಹಾಸ-ಪುರಾಣಾನಾಂ ಪಿತಾ ಮೇ ರೋಮಹರ್ಷಣ:" ಭಾಗಂ ೧-೪-೨೧, ೨೨.

**ಸುಮನ್ತ್ರ ಸುಮನ್ತ್ರ** (ಪುಂ) 1. ದಶರಥಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಒಬ್ಬ ಮಂತ್ರಿ ಮತ್ತು ಸಾರಥಿ. "ತತ್ ಶ್ರುತ್ವಾ ಮನ್ತ್ರಿಣೋ ವಾಕ್ಯಂ ರಾಜಾ ಮನ್ತ್ರಿಣಮಬ್ರವೀತ್. ಸುಮನ್ತ್ರ ರಾಮಂ ದ್ರಕ್ಷಯಾಮಿ ಶೀಘ್ರಮಾನಯ ಸುಂದರಮ್" ರಾಮಾಂ. 2. ಕಲ್ಪಿಯ ಹಿರಿಯ ಸಹೋದರ. "ಕಲ್ಕೇಜ್ಯೆಷ್ಟಾಸ್ತ್ರಯ: ಶೂರಾ: ಕವಿಪ್ರಾಜ್ಞಸುಮನ್ತ್ರಕಾ: ತಾತ-ಮಾತೃಪ್ರಿಯಕರಾ ಗುಹವಿಪ್ರಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಾ:" ಕಲ್ಕಿಪುಂ.

**ಸುಮರ್ಷಣ ಸುಮರ್ಷಣ** (ವಿಂ) ಸುಖವಾಗಿ ಸಹಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ, ಸುಖವಾಗಿ ಸಹಿಸಬಹುದಾದ. ಸುಖೇನ ಮೃಷ್ಯತೇ —ಮೃಷ (ತೀತಿಸ್ತಾಥಾಮ್) "ಯುಕ್" (ವಾಂ ೩-೩-೧೨೮). "ದ್ವಿಷತಾಮುದಯ: ಸುಮೇಧಸಾ ಗುಹರಸ್ವಂತತರ: ಸುಮರ್ಷಣ:" ಕಿರಾಂ ೨-೮.

**ಸುಮಿತ್ರಾ ಸುಮಿತ್ರಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಶರಥಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಒಬ್ಬ ಪತ್ನಿ, ಲಕ್ಷ್ಮಣ-ಶತ್ರುಘ್ನರ ತಾಯಿ.

**ಸುಮುಖ ಸುಮುಖ** (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ್ಮಂತನ ಪುತ್ರ. "ವೇನತೇಯಸುತೇ:ಸುತ ಷಟ್ಪ್ರಭಿಃಸ್ತತಮಿದಂ ಕುಲಮ್. ಸುಮುಖೇನ ಸುನಾಮ್ನಾ ಚ ಸುನೇತ್ರೇಣ ಸುವರ್ವಸಾ. ಸುಕುಚಾ ಪಕ್ಷಿರಾಜೇನ ಸುಬಲೇನ ಚ ಮಾತಲೇ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ. 2. ಗಣಪತಿ. 3. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. 4. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. (ನಂ) 5. ಉಗುರಿನ ಗಾಯ, ನಖಕ್ಷತ. 6. ಸುಂದರವಾದ ಮುಖ. "ಸುಮುಖೇನ ವದಂತಿ ವಲ್ಗುನಾ ಪ್ರಹರನ್ತ್ಯೇವ ಶಿತೇನ ಚೇತಸಾ" ಪञ್ಚತಂ ೧-೧೯೯. (ವಿಂ) 7. ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ, ರಮ್ಯವಾದ. 8. ಸುಂದರವಾದ ಮುಖವುಳ್ಳವನು. ಸುಷ್ಣು ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ.

**ಸುಮುಖಾ ಸುಮುಖಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುಂದರ ಮುಖವುಳ್ಳ ಒಬ್ಬ ಹೆಂಗಸು. ಸು ಶೋಭನಂ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯಾ: ಸಂಜ್ಞೆಯಾದರೆ "ಜಿಬ್" ಪ್ರತ್ಯಯ ಬರುವುದಿಲ್ಲ. (೪-೧-೪೮). ಸುಂದರ ವಾದ ಮುಖವುಳ್ಳವಳು ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ "ಜಿಬ್" (೪-೧-೪೪) ವಿಕಲ್ಪವಾಗಿ ಬಂದು ಸುಮುಖಾ ಸುಮುಖಿ ಎಂದೂ ರೂಪಗಳಾಗುವುವು. "ಉಮೇತಿ ಮಾತ್ರಾ ತಪಸೋ ನಿಷಿದ್ಧಾ ಪಶ್ಚಾದ್ವಿಮಾಘಾ ಸುಮುಖಿ ಜಗಾಮ" ಕುಮಾಂ ೧-೨೬.

**ಸುಮೇಖಲ ಸುಮೇಖಲ** (ಪುಂ) 1. ಮುಂಜಮೆಂಬ ಹುಲ್ಲು. ಸು ಶೋಭನಾ ಮೇಖಲಾ ಯಸ್ಮಾತ್. (ವಿಂ) 2. ಒಳ್ಳೆಯ ನಿತಂಬ ಪ್ರದೇಶವುಳ್ಳ, -ತಪ್ಪಲು ಪ್ರದೇಶವುಳ್ಳ.

**ಸುಮೇಧಸ್ ಸುಮೇಧಸ್** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಆರಾಧಕೇಷು ಸುಸಾಧುಬುದ್ಧಿತಯಾ ಸುಶೋಭನಾ ಮೇಧಾ ಧಾರಣಾವತೀ ಮೇಧಾ ಧೀರಸ್ಯ —ಸಮಾಸಾಂತ: "ಅಸಿಚ್" (೪-೪-೧೨೨). "ಬುದ್ಧಿ: ಸುಶೋಭನಾ ಯಸ್ಯ ಸುಮೇಧಾ: ಪರಿಕೀರ್ತಿತ:" ಇತಿ ನಿರುಕ್ತಿ: "ಸುಮೇಧಾ ಮೇಧಜೋ ಧನ್ಯ:" ವಿಂ ಸಂ. (ವಿಂ) 2. ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿ, ಜಾಣ, ಪ್ರಜ್ಞಾವಂತ. ಸುಷ್ಣು ಮೇಧಾ ಧೀರಸ್ಯ "ಅಸಿಚ್" (೪-೪-೧೨೨). 3. ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು, ಚುರುಕುಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. "ದ್ವಿಷತಾಮುದಯ: ಸುಮೇಧಸಾ ಗುಹರಸ್ವಂತತರ: ಸುಮರ್ಷಣ:" ಕಿರಾಂ ೨-೮.

**ಸುಮೇರು ಸುಮೇರು** (ಪುಂ) ಮೇರುಪರ್ವತ, ಹೇಮಾದ್ರಿ, ಸ್ವರ್ಣಪರ್ವತ. ಸುಷ್ಣು ಮಿನೋತಿ ಉಚ್ಚತ್ವಾತ್ಪ್ರಾಕ್ಷಿಪತಿ ಜ್ಯೋತೀರ್ಷಿ —ಸು + ಛುಮಿಷ್ (ಪ್ರಕ್ಷೇಪಣ) "ಃ" (ತಂ ೪-೧೦೧). "ವಪ್ರಾಭಿಧಾತಮೀತಸ್ಯ ಸುಮೇರೋಪದಾಮಿವ" ಯಾದಂ ೧೬-೧೬. ಮೇರುಪರ್ವತವು ಸಪ್ತದ್ವೀಪಗಳ ಲ್ಲೊಂದಾದ ಮತ್ತು ಸಪ್ತ ಸಮುದ್ರಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವ



ಜಂಬುದ್ವೀಪದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿರುವುದು. "ಜಂಬುದ್ವೀಪಃ  
ಸಮಸ್ತಾನಾಮೇತೇಷಾಂ ಮಧ್ಯಸಂಸ್ಥಿತಃ | ತಸ್ಯಾಪಿ ಮೇಘವೇಯ  
ಮಧ್ಯೆ ಕನಕಪರ್ವತಃ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ. | ಈ ಮೇರುಪರ್ವತವು  
ಶಿಖರದಲ್ಲಿ ಮೂವತ್ತೆರಡುಸಹಸ್ರಯೋಜನವಿಸ್ತಾರ  
ವಾಗಿಯೂ ಬುಡದಲ್ಲಿ ಹದಿನಾರುಸಹಸ್ರಯೋಜನ ಮತ್ತು  
ಭೂಮಿಯೊಳಗೆ ಹದಿನಾರುಸಹಸ್ರ ಯೋಜನ ವಿಸ್ತೀರ್ಣ  
ವುಳ್ಳದ್ದಾಗಿಯೂ ಇರುವುದು. "ಸೌವರ್ಣಃ ಕನಕಗಿರಿರಾಜೋ  
ಮೇಘವೇಯಮಸಮುತ್ಸಾಹಃ ಕರ್ಣಿಕಾಭೂತಃ ಕುವಲಯಕಮಲಸ್ಯ  
ಮೂರ್ಧನಿ ದ್ವಾತ್ರಿಂಶತ್ಸಹಸ್ರಯೋಜನವಿತತಃ ಮೂಲೇ ಷೋಡಶಸಹಸ್ರ  
ತಾವತಾಂತರ್ಮುಖ್ಯಾಂ ಪ್ರವಿಷ್ಟಃ" भाग० ५-१६-७ | "ಮುಡೆ  
ಮುರಾರೇರಮರಃ ಸುಮೇರೋರಾಣೀಯ ಯಸ್ಯೋಪಚಿತಸ್ಯ ಶೃಂಗೈಃ"  
माघ० ४-१० |

**ಸುಯಾಮನ ಸುಯಾಮಾನ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಸು ಶೋಭನಂ  
ಪಾವನಂ ಯಾಮುನಂ ಯಮುನಾಸಂಬಂಧಿಜಲಕೇಲಿಪುಷ್ಪಾಪಚಯರಾಸಕ್ರೋಡಾ-  
ದಿಕಮಸ್ಯ | "ಗೋಪಿಭಿರ್ಯಮುನಾಃ ತು ಶೋಭನಂ ಪಾವನಂ ಮಹತ್ |  
ಜಲಕ್ರೋಡಾದಿ ಯಸ್ಯೇತಿ ಸುಯಾಮುನ ಇತಿ ರೀತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ |  
"ಶೂರಸೇನೋ ಯದುಶ್ರೇಷ್ಠಃ ಸನ್ನಿವಾಸಃ ಸುಯಾಮುನಃ" ವಿಂ ಸಂ |  
2. ಒಂದು ಪರ್ವತ. 3. ಪ್ರಾಸಾದ, ರಾಜಗೃಹ, ದೇವಸ್ಥಾನ. 4. ವತ್ಸರಾಜ. "ಸುಯಾಮುನೋ ಜನಾರ್ದನೇ |  
ಪ್ರಾಸಾದೇ ವತ್ಸರಾಜೇಽದ್ವಿಭೇದೇ" ಹೇಮಂ | 5. ಒಂದು ವೇದಪದ. "ಸುಯಾಮುನೋ ವತ್ಸರಾಜೇ ಪ್ರಾಸಾದೇಽಭ್ರಾಂತರೇಽಚ್ಯುತೇ" ಮೇದಿಂ |

**ಸುಯೋಧನ ಸುಯೋಧನ** (ಪುಂ) ದುರ್ಯೋಧನ. ಸುಖೇನ  
ಯುಧತೇ—ಸು + ಯುಧ (ಸಂಪ್ರಹಾರೇ) "ಯುಚ್" (ವಾಂ  
३-३-१२८) | [ಎವಂಶಕ್ಯ "ದುರ್ಯೋಧನ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]  
"ನಲಿನೀ ನಿಗೂಢಸಲಿಲಾ ಚ ಯತ್ರ ಸಾ ಸ್ಥಲಮಿತ್ಯಘಪತತಿ  
ಯಾ ಸುಯೋಧನೇ" ಮಾಘಂ १३-५९ |

**ಸುರ ಸುರ** (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ, ನೀರ್ವಾಹಿ. ಸುರತಿ—ಪುರ  
(ಏಶ್ವರೈರಪೀಡ್ಯೋಃ) "ಕಃ" (१-१-१३५) | ಸುಪ್ತು ರಾತಿ  
ದದಾತುಭೀಷ್ಠಮ್—ರಾ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (३-१-१३६) |  
ಸುರಾ ಅಸ್ತಿಸ್ಯ "ಅಚ್" (५-२-१२७) | ಸುಪ್ತು ರಾಜತೇ—  
ರಾಜ್ (ದೀಪ್ತೀ) "ಙಃ" (३-२-१०१) | ಸುನೋತಿ—ಪು  
(ಅಭಿಷೇಕೇ) "ಕನ್" (३० २-२४) | ಇತಿ ವಾ |  
"ಸುರೇಶೋಪೇರಪಿ ಜಾತರೋಃ ಸ ದುರ್ಜಯಾನ್ ಭೀಷ್ಮಮುಖಾನ್  
ಜಿಗಾಯ | ಸಹಾಯಶಕ್ತಿಯಾ ಯುಧಿ ಸಂಯಸಾಚಿ ಕಿ ದುಷ್ಕರಂ  
ಕೇಶವಮಾಶ್ರಿತಾನಾಂ" ಯಾದಂ २३-४४ | "ಸುರಾಪ್ರತಿಗ್ರಹಾ-  
ದೇವಾಃ ಸುರಾ ಇತ್ಯಭಿವಿಶ್ರುತಾಃ" ರಾಮಾಂ | 2. ಮೂವತ್ತು  
ಮೂರು ಸಂಖ್ಯೆ.

**ಸುರಕಾರ ಸುರಕಾರ** (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳ ಶಿಲ್ಪ, ವಿಶ್ವಕರ್ಮ. ಸುರಾಣಾಂ ಕಾರಃ ಶಿಲ್ಪಿ |

**ಸುರತ ಸುರತ** (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಅನುರಾಗಹೊಂದಿರುವ, ಬಹಳ ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ. 2. ಹೆಚ್ಚು ಕೆಂಪಾಗಿರುವ.

**ಸುರಗುಹ ಸುರಗುರು** (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳ ಗುರು, ಬೃಹಸ್ಪತಿ, ಚಾರ್ಯರು. ಸುರಾಣಾಂ ಗುಹಃ |

**ಸುರಗ್ರಾಮಣಿ ಸುರಗ್ರಾಮಣೀ** (ಪುಂ) ದೇವೇಂದ್ರ, ದೇವತೆಗಳ ಒಡೆಯ. ಸುರಾಣಾಂ ಗ್ರಾಮಣಿಃ ನೇತಾ |

**ಸುರಜ್ಞ ಸುರಂಜ** (ಪುಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಗಿಡ. ಸುಪ್ತು ರಜ್ಞೋ ಯಸ್ಮಾತ್ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಜ್ಞಾ -ಜ್ಞಾ. 2. ಕನ್ನ, ಕಳ್ಳನು ಒಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಗೋಡೆಯಲ್ಲಿ ಕೊರೆಯುವ ರಂಧ್ರ. "ಲುಪ್ತಾಕೋ ಹಾರಕೋ ಮೋಷಾಸುರಜ್ಞಾ ಸಂಧಿರಪ್ಯಥ" ಅಮಂ | 3. ಭೂಮಿಯೊಳಗೆ ನಿರ್ಮಿಸಿರುವ ಮಾರ್ಗ, ಭೂಮಿಯೊಳಗೆ ತೋಡಿ ಮಾಡಿರುವ ದಾರಿ. "ಪುನರಪಿ ನಂದ-ರಾಜ್ಯಪ್ರತ್ಯಾನಯನಾಯ ಸುರಜ್ಞಯಾ ಬಹಿರಪಗತೇಷು ಯುಷ್ಮಾಸು" ಮುದ್ರಾಂ २ |

**ಸುರಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸುರಜ್ಯೇಷ್ಠ** (ಪುಂ) ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಸುರೇಷು ಜ್ಯೇಷ್ಠಃ | "ಬ್ರಹ್ಮಾಽಽಮಃ ಸುರಜ್ಯೇಷ್ಠಃ" ಅಮಂ |

**ಸುರಜ್ಜನ ಸುರಂಜನ** (ಪುಂ) ಕ್ರಮುಕ್ತ ವೃಕ್ಷ, ಅಡಕೆ ಮರ. ಸುಪ್ತು ರಜ್ಜಯತಿ—ರಜ್ಜ (ರಾಗೇ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ" (३-१-१३४) |

**ಸುರತ ಸುರತ** (ನಂ) ರತಿಕ್ರೀಡೆ, ಸಂಭೋಗ. ಸುಪ್ತು ರತಮ್ ಯತ್ರ | "ಪ್ರಾಪ್ಯ ಮನ್ಮಥರಸಾದತಿಮೂರ್ತಿ ದುರ್ವಹಸ್ತನಮರಾಃ ಸುರತಸ್ಯ" ಮಾಘಂ १०-८० | -ತಾ -ತಾ. ದೇವತೆ, ದೇವತೆಯ ಭಾವ. ಸುರಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (५-१-११९) | "ತ್ವಃ" | ಸುರತವಮ್ ಸುರತವಮ್. "ಸುರತಂ ಸ್ಥಾನಿಧಿಭುವನೇ ದೇವತ್ವೇ ಸುರತಾ ಸ್ಮೃತಾ" ಮೇದಿಂ |

**ಸುರತತಾಲಿ ಸುರತತಾಲೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೂತಿ. ಸುರತಂ ತಾಲಯತಿ—ತಲ (ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಯಾಮ್) + ಣಿಚ್ "ಅಞ್" (३-२-१) | 2. ತಲೆಗೆ ಮುಡಿದುಕೊಳ್ಳುವ ಹೊವಿನ ಸರ. "ಮೇವತ್ ಸುರತತಾಲಿ ತು ದ್ವಿತಿಕಾಃ ಶಿರಃಸಜ್ಜಿ" ಮೇದಿಂ |

**ಸುರತರು ಸುರತರು** (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳ ವೃಕ್ಷ, ದೇವತೆಗಳ ಉದ್ಯಾನವನದ ವೃಕ್ಷ. -ವೃಮಃ -ವೃಮಃ. ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷ.

**ಸುರತೋಷಕ ಸುರತೋಷಕ** (ಪುಂ) ಕೌಸ್ತುಭಮಣಿ.

**ಸುರದೀಧಿಕಾ ಸುರದೀರ್ಘಿಕಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ವರ್ಗನದಿ, ಗಂಗಾ ನದಿ. ಸುರಾಣಾಂ ದೀಧಿಕೇವ | "ಸ್ವರ್ಗದೀ ಸುರದೀಧಿಕಾ" ಅಮಂ |

**ಸುರದ್ವಿಪ ಸುರದ್ವಿಪ** (ಪುಂ) 1. ಐರಾವತ. 2. ದೇವತೆಗಳ ಆನೆ. "ಸುರದ್ವಿಪಾಸ್ಕಾಲನಕಂಕಾಶಾಙ್ಗುಲಿ" ರಘುಂ ३-५५ |



ಸುರದ್ವಿಷ ಸುರದ್ವಿಷ್ (ಪುಂ) 1. ಅಸುರ, ದಾನವ. ಸುರಾನ್  
ದ್ವೇಷಿ — ದ್ವಿಷ (ಅಪ್ರೀತೌ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧) ।  
"ಸುರದ್ವಿಷೋಪಪ್ಲುತಮೇವಮೇತದ್ವನಂ ಬಲಸ್ಯ ದ್ವಿಷತೋ ಗತಶ್ಚಿ"  
ಕುಮಾಂ ೧೩-೩೪ । 2. ರಾಹು. "ಸುರದ್ವಿಷಶ್ಚಾನ್ದಮಸೀ  
ಸುಧೇವ" ರಘುಂ ೨-೩೯ ।

ಸುರಧನುಸ್ ಸುರಧನುಸ್ (ನಂ) ಇಂದ್ರನ ಧನುಸ್ಸು.  
"ಸನ್ಧಾನ್ ಸುರಧನುಃ ಪ್ರಭಾ ಮಣೀನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೭-೧೬ ।  
ಸುರನದೀ ಸುರನದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವನದಿ, ಗಂಗಾನದಿ.  
ಸುರಾಣಾಂ ನದೀ । -ನಿಮ್ನಗಾ -ನಿಮ್ನಗಾ.

ಸುರಪತಿ ಸುರಪತಿ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆಗಳ ಪ್ರಭು, ದೇವತೆ  
ಗಳ ಒಡೆಯ, ದೇವೇಂದ್ರ. ಸುರಾಣಾಂ ಪತಿಃ । 2. ದೇವತೆ  
ಗಳ ಒಡೆಯರಾದ ಇಂದ್ರ ವರುಣ ಮೊದಲಾದವರು.  
"ಬಹುವಿಧಮುಪಹಾರಜಾತಮಗ್ರಥಂ ಸುರಪತಿಃಃ ಸ್ವಯಮಾಹುತ  
ಮಕುಂದಃ ಪಾದಂ ೨೪-೨೦ ।

ಸುರಪಥ ಸುರಪಥ (ನಂ) ಗಗನ, ಆಕಾಶ, ದೇವತೆಗಳು  
ಸಂಚರಿಸುವ ಮಾರ್ಗ. ಸುರಾಣಾಂ ಪಥಾಃ — ಪಥಿನ್ "ಅಃ"  
(೪-೪-೭೪) ।

ಸುರಪಾದಪ ಸುರಪಾದಪ (ಪುಂ) ದೇವೋದ್ಯಾನದ ವೃಕ್ಷ,  
ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷ. ಸುರಾಣಾಂ ಪಾದಪಃ ।

ಸುರಪುತ್ರಾಗ ಸುರಪುತ್ರಾಗ (ಪುಂ) ಸುರಗಿಮರ, ಸುರಹೊನ್ನೆ  
ಮರ.

ಸುರಪುರೀ ಸುರಪುರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಇಂದ್ರನ ನಗರ, ಅಮರಾವತಿ.  
ಸುರಸ್ಯ ಪುರೀ ।

ಸುರಪ್ರಿಯ ಸುರಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. 2. ಬೃಹಸ್ಪತಿ.  
ಸುರಾಣಾಂ ಪ್ರಿಯಃ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪ್ರಿಯಾ -ಪ್ರಿಯಾ. 1. ಜಾಜಿ  
ಹೊಪ್ಪ. 2. ರಂಭೆ.

ಸುರಭಿ ಸುರಭಿ (ಪುಂ) 1. ವಸಂತಮತು. 2. ಚಂಪಕ ವೃಕ್ಷ.  
ಸಂಪಿಗೆಮರ. 3. ಸುರುಸುರುಕೆ ಗಿಡ. 4. ಜಾಯಿಕಾಯಿ  
(ಗಿಡ). 5. ಶಮೀವೃಕ್ಷ, ಬನ್ನಿವರ. 6. ಕದಂಬವೃಕ್ಷ.  
7. ವಕುಳವೃಕ್ಷ, ಪವಳದ ಗಿಡ. 8. ರಾಳ, ಸರ್ಜರಸ.  
9. ಚೈತ್ರಮಾಸ. ಸು+ರಭ (ರಾಭಸ್ಯೇ) "ಇನ್" (೩ಂ  
೪-೧೧೬) । 10. ಸುವಾಸನೆ, ಪರಿಮಳ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
11. ಸಲ್ಲಕೀವೃಕ್ಷ, ಅನೇಬೇಲ. 12. ಮುರೆಯೆಂಬ ಒಂದು  
ಗಂಧದ್ರವ್ಯ. 13. ಗೋವು, ಕಾಮಧೇನು. "ಸುತಾಂ ತದೀಯಾಂ  
ಸುರಭೇಃ ಕೃತ್ವಾ ಪ್ರತಿರ್ನಿಧಿ ಶುಚಿಃ । ಆರಾಧಯ ಸಪತ್ನೀಕಃ  
ಪ್ರೀತಾ ಕಾಮದುಘಾ ಹಿ ಸಾ" ರಘುಂ ೧-೮೧ । (ನಂ) 14.  
ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 15. ಗಂಧಕ. (ದಿಂ) 16. ಪರಿಮಳವುಳ್ಳ,  
ಒಳ್ಳೆಯ ವಾಸನೆಯುಳ್ಳ. "ಸುರಭಿಣಿ ಶ್ವಸಿತೇ ದಧತಸ್ತುಃ

ನವಸುಧಾಮಧುರೇ ಚ ತವಾಧರೇ" ಮಾಘಂ ೬-೧೨ । 17. ರಮ್ಯ  
ವಾದ, ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ. "ನಿವರ್ತ್ಯ  
ರಾಜಾ ದಯಿತಾಂ ದಯಾಲ್ಯುಸ್ತಾಂ ಸೀರಭೆಯಿ ಸುರಭಿರಯೋಭಿಃ"  
ರಘುಂ ೨-೩ । 18. ಪ್ರಖ್ಯಾತನಾದ, ಕೀರ್ತಿಶಾಲಿಯಾದ.

ಸುರಭಿತ್ವಚ್ ಸುರಭಿತ್ವಚ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೊಡ್ಡ ಯಾಲಕ್ಕಿ  
ಕಾಯಿ. ಸುರಭಿ ತ್ವಕ್ ಯಸ್ಯಾಃ ।

ಸುರಭಿದಾಹ ಸುರಭಿದಾಹು (ಪುಂ) ಸರಳ ದೇವದಾರು ವೃಕ್ಷ.  
ಸುರಭಿ ಸುಗಂಧಿ ದಾಹು ಯಸ್ಯ ।

ಸುರಭಿಬಾಣ ಸುರಭಿಬಾಣ (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ.

ಸುರಭಿಮಾಸ ಸುರಭಿಮಾಸ (ಪುಂ) ಚೈತ್ರಮಾಸ, ವಸಂತ  
ಕಾಲ.

ಸುರಭೀ ಸುರಭೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗುಗ್ಗುಳ, ಲೋಬಾನ.  
2. ಕಾಮಧೇನು. 3. ಸಲ್ಲಕೀವೃಕ್ಷ, ಅನೇಬೇಲ.

ಸುರಭೀರಸಾ ಸುರಭೀರಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಲ್ಲಕೀವೃಕ್ಷ, ಅನೇಬೇಲ.

ಸುರಭೂಯ ಸುರಭೂಯ (ನಂ) ಸುರತ್ವ, ದೇವಭಾವ. ಸುರಾಣಾಂ  
ಭಾವಃ—ಸುರ+ಭೂ "ಕೃಪ್" (೩-೧-೧೦೭) । "ದಧತೋಽಪಿ  
ರಣೇ ಭೀಮಮಭೀಕ್ಷಣಂ ಭಾವಮಾಸುರಮ್ । ಹತಾಃ ಪರೇರಭಿಮುಕ್ತಾಃ  
ದೇವಭೂಯಮುಪಾಯುಃ" ಮಾಘಂ ೧೯-೭೩ ।

ಸುರಭೂಹ ಸುರಭೂಹು (ಪುಂ) 1. ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷ. 2. ದೇವ  
ದಾರು ವೃಕ್ಷ.

ಸುರರ್ಷಿ ಸುರರ್ಷಿ (ಪುಂ) ನಾರದ ಮೊದಲಾದ ದೇವಯುಷಿ  
ಗಳು. ಸುರಾಶ್ಚ ತೇ ಋಷಯಶ್ಚ । ಯುಷಿಗಳು (1) ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿಃ  
(2) ದೇವರ್ಷಿಃ (3) ಮಹರ್ಷಿಃ (4) ಪರಮರ್ಷಿಃ (5) ಕಾಂಡರ್ಷಿಃ  
(6) ಶ್ರುತರ್ಷಿಃ ಮತ್ತು (7) ರಾಜರ್ಷಿಃ ಎಂದು ಏಳು ವಿಧ.

ಸುರಲತಾ ಸುರಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಹಾಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತೀಲತೆ.

ಸುರಲೋಕ ಸುರಲೋಕ (ಪುಂ) ದೇವಲೋಕ, ಸ್ವರ್ಗ.  
ಸುರಾಣಾಂ ಲೋಕಃ ।

ಸುರವತ್ಸಮ್ ಸುರವತ್ಸಮ್ (ನಂ) ಗಗನ, ಆಕಾಶ, ಅಂತರಿಕ್ಷ.  
ಸುರಾಣಾಂ ವತ್ಸಮ್ ।

ಸುರವಲ್ಲಭಾ ಸುರವಲ್ಲಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಳಿಗಂಕೆ. ಸುರಾಣಾಂ  
ವಲ್ಲಭಾ ।

ಸುರವಲ್ಲಿ ಸುರವಲ್ಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತುಲಸಿ.

ಸುರವಿದ್ವಿಷ್ ಸುರವಿದ್ವಿಷ್ (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳ ಶತ್ರು,  
ಅಸುರ, ದಾನವ. ಸುರಾಣಾಂ ವಿದ್ವಿಡ್ । -ವೀರಿನ್ -ವೈರಿನ್,  
-ಶತ್ರು -ಶತ್ರು.

ಸುರಶಾಖಿನ್ ಸುರಶಾಖಿನ್ (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳ ಉದ್ಯಾನ  
ವನದ ವೃಕ್ಷ, ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷ.



ಪುರಸ ಸುರಸ (ಪುಂ) 1. ಲಿಂಗ. ಶೋಭನೋ ರಸೋ ಯಸ್ಯ | 2. ತುಲಸಿ ಗಿಡ. "ಪಿತ್ತಕೃತ್ ಪಾರ್ಶ್ವಶೂಲಧನಃ ಪುರಸಃ ಸಮುದಾಹುತಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸ್ವಂ ೪೬-೨೩೪ | (ನಂ) 3. ಕಮಗುಗುರ. 4. ಲಮಂಗಪಟ್ಟಿ, ದಾಲ್ಚಿನ್ನಿ. 5. ಬಾಣಂತಿ ಬೋಳ. (ವಿಂ) 6. ಬಹಳ ಮಧುರವಾದ, ಬಹಳ ಸಿಹಿಯಾದ. "ಪುರಸಂ ತು ತ್ರಿಪು ಸ್ವಾದೌ ಪರ್ಣಸಿ ತು ನಪುಂಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ |

ಪುರಸವನ್ ಸುರಸದ್ವನ್ (ನಂ) ಸ್ವರ್ಗಲೋಕ, ದೇವತೆಗಳ ವಾಸಸ್ಥಾನ. ಪುರಾಣಾ ಸತ್ರ |

ಪುರಸರಿತ್ ಸುರಸರಿತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವನದಿ, ಗಂಗಾನದಿ. ಪುರಾಣಾ ಸರಿತ್ |

ಪುರಸಾ ಸುರಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತುಲಸಿ. ಶೋಭನೋ ರಸೋ ಯಸ್ಯಾಃ | 2. ಸಣ್ಣ ರಾಶಿ. 3. ಸರ್ಪಾಕ್ಷಿ, ಈಶ್ವರೀ ಹೆಂಚು. "ನಾಕುಲಾ ಪುರಸಾ ನಾಗಸುಗಂಧಾ ಗಂಧನಾಕುಲಿ | ನಕುಲೇಷಾ ಮುಜ್ಜಾಕ್ಷಿ" ಅಮಂ | 4. ನಾಗಮಾತೆ. "ಸ್ತ್ರೀ ರಾಸ್ತಾನಾಗಮಾತ್ರೋಶ್ಚ" ಮೇದಿಂ |

ಪುರಸಿನ್ಧು ಸುರಸಿಂಧು (ಪುಂ) ದೇವನದಿ, ಗಂಗಾನದಿ. ಪುರಾಣಾ ಸಿನ್ಧುಃ | "ಶಿರಸೌಘಮವತ್ ಶಕ್ರಃ ಪುರಸಿನ್ಧೋ-ಮಂಜುಜಿತಮಙ್ಗಲಿಣಾ" ಮಾಘಂ ೧೬-೪೬ |

ಪುರಸಿನ್ಧುಸುತ ಸುರಸಿಂಧುಸುತ (ಪುಂ) ಗಂಗಾಪುತ್ರರಾದ ಭೀಷ್ಮಾಚಾರ್ಯರು. "ಪುರಸಿನ್ಧುಸುತಂ ಶಶಂಪುರನೈ" ಯಾದಂ ೧೫-೭೬ |

ಪುರಸುಂದರೀ ಸುರಸುಂದರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೇವಾಂಗನ, ಸ್ವರ್ಗಲೋಕದ ಹೆಂಗಸು. ಪುರಾಣಾ ಸುಂದರೀ | "ಸ್ತ್ರೀಯಶ್ಚ ಪತ್ನೌ ಪುರಸುಂದರೀಭಿಃ ಸಮಾ ನವಪ್ರೇಮಣಿ ಸಾನುರಾಗಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೨೭ | 2. ಅಪ್ಸರಸ್ಸು.

ಪುರಾ ಸುರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮದ್ಯ, ಹೆಂಡ. ಪುನ್ (ಅಭಿಷೇಕ) "ಕ್ರನ್" (೩ಂ ೨-೨೫) | "ಆಯಯುಃ ಸುಖದಿತಾನಿ ಪುರಾಃ ಪಾತ್ರತಾಂ ಪ್ರಿಯತಮಾವದನಾನಿ" ಮಾಘಂ ೧೦-೧ | 2. ಜಪಕ, ಪಾನಪಾತ್ರೆ. ಸುಷ್ಣ ರಾಯನ್ಯತಯಾ-ರೆ (ಶಬ್ದ) "ಅಙ್" (೩-೩-೧೦೬) | "ಪುರಾ ಚಪಕಮವಯೋಃ" ಮೇದಿಂ |

ಪುರಾಃ ಸುರಾಃ (ಪುಂ) ಧೇಹ, ಐಶ್ವರ್ಯವಂತ. ಪು ಶೋಭನೋ ರಾಃ ಧನಂ ಯಸ್ಯ |

ಪುರಾಕರ ಸುರಾಕರ (ಪುಂ) 1. ತೆಂಗಿನ ಮರ. ಪುರಾಃ ಆಕರಃ | 2. ಸುರಾರ್ಣವ, ಸುರಾಸಮುದ್ರ, ಸಪ್ತ ಸಮುದ್ರಗಳಲ್ಲೊಂದು ಸಮುದ್ರ. 3. ಮದ್ಯವನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ ಸ್ಥಳ.

ಪುರಾಜ್ಞನಾ ಸುರಾಂಗನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದೇವತೆಗಳ ಪತ್ನಿ ಯರು. ಪುರಾಣಾಮಜ್ಞನಾಃ | "ಶ್ರೀಮದ್ವಿಃ ಸರಥಗಜಃ ಪುರಾಜ್ಞನಾಂ ಗುಪ್ತಾನಾಮಥ ಸಚಿವೇಸ್ವಿಲೋಕಮರ್ತುಃ" ಕಿರಾಂ ೭-೧ | "ಕುಮತಿ ಚ" (೮-೪-೧೩) | ಸೂತ್ರದಿಂದ ಣತ್ವ ಪು ವಿಕಲ್ಪವಾಗಿ ಬಂದು ಪುರಾಜ್ಞನಾ ಸುರಾಂಗನಾ ಎಂದು ರೂಪವಾಗುವುದು. "ಪುರಾಜ್ಞನಾಂ ಜಲಕೇಲಿಮಾಜಾಂ ಪ್ರಕ್ಷಾಲಿತಃ ಸಂತತಮಜ್ಞರಾಗಃ" ಕುಮಾಂ ೧೩-೨೪ | 2. ಅಪ್ಸರಸ್ಸು.

ಪುರಾಚಾರ್ಯ ಸುರಾಚಾರ್ಯ (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳ ಗುರು, ಬೃಹಸ್ಪತ್ಯಾಚಾರ್ಯರು. ಪುರಾಣಾಮಾಚಾರ್ಯಃ | "ಬೃಹಸ್ಪತಿಃ ಪುರಾಚಾರ್ಯಃ" ಅಮಂ |

ಪುರಾಜನ್ ಸುರಾಜನ್ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಜಾಸಂರಕ್ಷಣಾದಿ ಗುಣ ಗಳುಳ್ಳ, ಒಳ್ಳೆಯ ದೊರೆ, ಧರ್ಮಾತ್ಮನಾದ ರಾಜ. ಶೋಭನೋ ರಾಜಾ ಪುರಾಜಾ — "ನ ಪೂಜನಾತ್" (೫-೪-೬೯) | ಸಮಾ ಸಾಂತ "ಠಕ್" ಪ್ರತ್ಯಯವಿಲ್ಲ. "ತತ್ಪುರಾಜಿ ಮವತಿ ಸ್ಥಿತೇ ಪುನಃ ಕಃ ಕ್ತುಂ ಯಜತು ರಾಜಲಕ್ಷಣಮ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೧೪ | (ವಿಂ) 2. ಧರ್ಮಾತ್ಮನಾದ ರಾಜನನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ದೇಶ ಮೊದಲಾದುದು. ಪು ಶೋಭನೋ ರಾಜಾ ಯತ್ರ | "ಪುರಾಜಿ ದೇಶೋ ರಾಜನ್ವಾನ್" ಅಮಂ |

ಪುರಾಜೀವಿನ್ ಸುರಾಜೀವಿನ್ (ಪುಂ) ಮದ್ಯದ ತಯಾರಿಕೆ ಮತ್ತು ಮಾರಾಟಮಾಡುವವನು. ಪುರಾ ಜೀವತಿ—ಜೀವ (ಪ್ರಾಣಧಾರಣ) "ಪಿಪಿಃ" (೩-೨-೭೮) |

ಪುರಾಧಿಪ ಸುರಾಧಿಪ (ಪುಂ) ದೇವತೆಗಳ ಒಡೆಯ, ದೇವೇಂದ್ರ. ಪುರಾಣಾಮಧಿಪಃ | "ಪುರಾಧಿಪಾಧಿಷ್ಠಿತಹಸ್ತಿ-ಮಲ್ಲಲಿಲಾಂ ದಧೌ ರಾಜತಗಂಧಶೈಲಃ" ಮಾಘಂ ೪-೧೩ | —ಅಧಿಪತಿಃ—ಅಧಿಪತಿಃ, —ಅಧೀಶಃ—ಅಧೀಶಃ, —ಅವೀಶ್ವರಃ—ಅಧೀಶ್ವರಃ. "ಪುರಾಃಪುರಾಧೀಶಪುರಃಪುರಾಣಾಂ ಸಮೀಪುಷಾಂ ವಃ ಸಮಪಾತುರಾಣಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೧೨-೪೦ |

ಪುರಾಪ ಸುರಾಪ (ಪುಂ) ಮದ್ಯಪಾನ ಮಾಡುವವನು, ಮದ್ಯ ಪಾನದಿಂದ ಮತ್ತನಾಗಿರುವವನು. ಪುರಾ ಪಿಬತಿ—ಪಾ (ಪಾನ) "ಠಕ್" (ವಾಂ ೩-೨-೮) | "ಪುರಾಪೇರಿವ ಪೂರ್ಣದ್ವಿಃ ಶಾಖಿಭಿಃ ಪವನಾಹತಃ" ಮೃದ್ವಿಂ ೬-೯೦ | ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | ಪುರಾಪಿ ಸುರಾಪಿಃ. ಸುರಾಪಾನವಿಲ್ಲದ ಕಾರಣ ಪುರಾ ಪಾತಿ—ಪಾ (ರಕ್ಷಣ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | ಪುರಾಪಾ ಸುರಾಪಾ ಎಂದು ರೂಪವಾಗುವುದು.

ಪುರಾಪಗಾ ಸುರಾಪಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವನದಿ, ಗಂಗಾನದಿ. ಪುರಾಣಾಮಾಪಗಾ | "ಕಾಲಿಂದೀಜಲಜನಿತಶ್ರೀಯಃ ಶ್ರಯಂತೇ ವೇದಾಧೀಮಿಹ ಸರಿತಃ ಪುರಾಪಗಾಃ" ಮಾಘಂ ೪-೨೬ |



ಸುರಾಪಾಣ ಸುರಾಪಾಣ (ಪುಂ. ಬಂ. ವಂ) ಪೂರ್ವದೇಶದವರು.

ಸುರಾ ಪಾನಂ ಯೇನಾಂ ತೇ—ನಸ್ಯ ಣತ್ವಮ್ (೮-೪-೯) | ಸುರಾಪಾಣಾಃ ಪ್ರಾಚ್ಯಾಃ | (ನಂ) —ಪಾನಂ—ಪಾನಮ್, —ಪಾಣಮ್—ಪಾಣಮ್. ವಾ ಣತ್ವಮ್ | ಸುರಾಪಾಣಾಃ ಪಾನಮ್—ಭಾದ್ರೇ ಕರಣೇ ಚ ವಿಕಲ್ಪೇನ ಣತ್ವಮ್ (೮-೪-೧೦) | “ಸುರಾಪಾಣಪರಿಕ್ಷೀವಂ ರಿಪುದರ್ಪಹರೋದಯಮ್” ಭट्टಿಂ ೯-೯೬ |

ಸುರಾಪಾಣಮ್ ಸುರಾಪಾಣಮ್ (ನಂ) ಮದ್ಯದ ಪಾತ್ರೆ.

ಸುರಾಪಾಣ ಸುರಾಪಾಣಮ್ (ನಂ) ಮದ್ಯದ ಮೇಲಿನ ಕೆನೆ.

ಸುರಾರಾತಿ ಸುರಾರಾತಿ (ಪುಂ) } ದೈತ್ಯ, ದಾನವ, ರಾಕ್ಷಸ.  
ಸುರಾರಿ ಸುರಾರಿ (ಪುಂ) }

ಸುರಾಣಾಮರಾತಿಃ ಅರಿವಾ | “ಸುರಾರಿಲಕ್ಷ್ಮೀಪರಿಕರ್ಮಹೇತವೋ ದಿಕ್ಚಕ್ರವಾಲಪ್ರತಿಪಾದಮೇದುರಾಃ” ಕುಮಾರಂ ೧೪-೧೭ |

ಸುರಾಲಯ ಸುರಾಲಯ (ಪುಂ) 1. ಮೇರುಪರ್ವತ. 2. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ. ಸುರಾಣಾಮಾಲಯಃ | “ಸುರಾಲಯಪ್ರಾಪ್ತಿನಿಮಿತ್ತಮಮ್ಭಸ್ತ್ರೇತೋತಮಂ ತೌಲುಲಿತಂ ವಂದೇ” ರಘುಂ ೧೬-೩೪ | 3. ದೇವಾಲಯ, ದೇವಸ್ಥಾನ. “ಪೂರ್ತ ಸುರಾಲಯಾರಾಮಕುಪಾಜಿವ್ಯಾದಿಲಕ್ಷಣಮ್” ಭಾಗಂ ೭-೧೫-೪೯ | 4. ಮದ್ಯದ ಅಂಗಡಿ. ಸುರಾಪಾಣ ಅಲಯಃ |

ಸುರಾಪಾಣ ಸುರಾಪಾಣ (ಪುಂ) ಸುರಾಪಾಣದೇಶ. ಸು ಶೋಭನಂ ರಾಷ್ಟ್ರಮ್ | ಈಗಿನ ಸೂರತ್. ಇದು ಭಾರತದ ಪಶ್ಚಿಮ ಭಾಗದಲ್ಲಿರುವುದು.

ಸುರಾಪಾಣ ಸುರಾಪಾಣ (ನಂ) 1. ತೋಗರಿ ಗಿಡ. ಸುರಾಪಾಣೇ ದೇಶೇ ಜಾಯತೇ—ಜನೀ (ಪ್ರಾಚ್ಯಮವಿ) “ಹಃ” (೩-೨-೯೭) | “ಕಾಕ್ಷೀ ಮೃತ್ನಾ ತುವರಿಕಾ ಭೃತಾಲಕಸುರಾಪಾಣೇ” ಅಮಂ | (ಪುಂ) 2. ಕರಿಯ ಹೆಸರುಗಳು. 3. ಒಂದು ವಿಧ ವಿಷ. —ಜಾ—ಜಾ. ತೋಗರಿಗಳು.

ಸುರಾಪಾಣ ಸುರಾಪಾಣ (ಪುಂ) ದೇವದಾಸರು ವೃಕ್ಷ.

ಸುರಾಪಾಣ ಸುರಾಪಾಣ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೂಮಿಯೊಳಗೆ ತೋಡಿ (ಕೋರಿದು) ಮಾಡಿದ ಮಾರ್ಗ, ಸುರಾಪಾಣ. “ಜಾತವಾ ತು ತದ್ಗೃಹಂ ಸರ್ವಮಾದೀಪ್ತಂ ಪಾಂಡುನಂದನಾಃ | ಸುರಾಪಾಣಾ ವಿವಿಶುಸ್ತುರ್ಣ ಮಾತ್ರಾ ಸಾಕಮರಿಂದಮಾಃ” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೪೬-೧೧ |

ಸುರಾಪಾಣ ಸುರಾಪಾಣ (ಪುಂ) 1. ವಿದ್ಯಾಪ, ಪಂಡಿತ. ಸು ಶೋಭನಂ ರೂಪಂ ಯಸ್ಯ | “ಧೀಮಾನ್ ಸುರೀಃ ಕೃತಿಃ ಕೃಷ್ಣಿಲಂಧವರ್ಣೋ ವಿವಕ್ಷಣಃ | ಪ್ರಾಪ್ತರೂಪಸುರಾಪಾಣಿರೂಪದ್ವರದಾಃ ಸಮಾಃ” ಜಟಾಕರಃ | (ನಂ) 2. ಕಾರ್ಯಸ, ಹತ್ತಿ. (ವಿಂ) 3. ಸುಂದರವಾದ ಆಕಾರವುಳ್ಳ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ರೂಪಾ—ರೂಪಾ. 4. ಭಾರಂಗಿ ಗಿಡ. 5. ಮೂರೇಲಿ ಹೊನ್ನೆ ಮೆರೆ. ರಾಜನಿಂ | “ಸುರಾಪಾಣವು ವೃಧೇ ರಮ್ಯೇ ಪ್ರಾಪ್ತರೂಪಾಭಿರೂಪವತ್” ಹೇಮಂ |

ಸುರೇಜ್ಯ ಸುರೇಜ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಬೃಹಸ್ಪತ್ಯಾಚಾರ್ಯರು. ಸುರಾಪಾಣಿಜ್ಯಃ | “ವಿಷ್ಣುಃ ಸುರೇಜ್ಯೋ ಬಲಮಿದುತಾಶಸ್ವಣೋತ್ತರಪ್ರೋಠಪದಾವಿಪಶ್ಚ” ಬೃಹತ್ಸಂ ೮-೨೩ | (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಇಜ್ಯಾ—ಇಜ್ಯಾ. 2. ತುಲಸಿ.

ಸುರೇಂದ್ರ ಸುರೇಂದ್ರ (ಪುಂ) 1. ದೇವೇಂದ್ರ. ದೇವತೆಗಳ ರಾಜ. ಸುರೇಷು ಇಂದ್ರಃ | 2. ಲೋಕಮಾಲ, ದಿಕ್ಪಾಲಕ. “ಸುರೇಂದ್ರಮಾತ್ರಾಶ್ರಿತಗರ್ಭಗೌರವಾತ್ ಪ್ರಯತ್ನಮುಕ್ತಾಸನಯಾ ಮೃಹಾಗತಃ” ರಘುಂ ೩-೧೧ |

ಸುರೇಂದ್ರಜಿತ್ ಸುರೇಂದ್ರಜಿತ್ (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ, ಗರುಡತಂತ್ರ. 2. ಇಂದ್ರಜಿತ್, ರಾವಣನ ಮಗ.

ಸುರೇಶ ಸುರೇಶ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆಗಳ ದೊರೆ, ಇಂದ್ರ. ಸುರಾಣಾಮೇಶಃ | 2. ವಿಷ್ಣು. ಬ್ರಹ್ಮಾದೀನಾಂ ಸುರಾಣಾಮೇಶಃ | “ಬ್ರಹ್ಮಾದೀನಾಂ ಫಲಗುಪದಲಿಪ್ತುನಾಂ ತ್ರಿವಿಧವೀಕಸಾಮ್ | ಸಂವಿಧಾತಾ ಸುರೇಶಶ್ಚ ಪ್ರಾಚ್ಯತೇ ವಿವಿಧೋತ್ತಮಃ” ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | “ಸುರೇಶಃ ಶರಣಂ ಶರಮ್” ವಿಂ ಸಂ | —ಇಶ್ವರಃ—ಈಶ್ವರಃ. “ನರೇಂದ್ರಸುತುಃ ಪ್ರತಿಸಂಹರಣಿಷು ಪ್ರಿಯವದಃ ಪ್ರತ್ಯವದತ್ಸುರೇಶ್ವರಮ್” ರಘುಂ ೩-೬೪ | 3. ರುದ್ರ, ಶಿವ. ಪರಮೇಶ್ವರ.

ಸುರೇಶ್ವರಿ ಸುರೇಶ್ವರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಂಗಾನದಿ. 2. ದುರ್ಗಾ ದೇವಿ.

ಸುರೇಷ ಸುರೇಷ (ಪುಂ) 1. ಸಾಲವೃಕ್ಷ, ಸರ್ಪತರು. ಸುರಾಪಾಣಿಮಿಷ್ಠಃ | 2. ಬಕಪುಷ್ಪ. 3. ಸುರಹೊನ್ನೆ. ರಾಜನಿಂ | —ಇಷ್ಠಾ—ಇಷ್ಠಾ. ಹೊನ್ನೆಗೊನೆ ಸೊಪ್ಪು.

ಸುರೋತ್ತಮ ಸುರೋತ್ತಮ (ಪುಂ) ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. ಸುರೇಷು ಉತ್ತಮಃ | “ಸುರೋತ್ತಮೋ ಧಾಮನಿಧಿಃ” ಅಮಂ |

ಸುರೋತ್ತರ ಸುರೋತ್ತರ (ಪುಂ) ಶ್ರೀಗಂಧ, ಚಂದನ.

ಸುರೋದ ಸುರೋದ (ಪುಂ) ಸುರಾಸಮುದ್ರ. “ಕಾರೋದೇಕ್ಷುರಸೋದಸುರೋದವೃತೋದಕ್ಷೋರೋದದಧಿಮಣ್ಣೋದಶುಕ್ಷೋದಾಃ ಸಪ್ತ ಜಲಧಯಃ ಸಪ್ತದ್ವೀಪಪರಿಕ್ಷಾ ಇವ” ಭಾಗಂ ೫-೧-೩೩ |

ಸುಲಕ್ಷಣ ಸುಲಕ್ಷಣ (ವಿಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ಲಕ್ಷಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಸು ಶೋಭನಾನಿ ಲಕ್ಷಣಾನಿ ಯಸ್ಯ |

ಸುಲಭ ಸುಲಭ (ವಿಂ) 1. ಸುಖವಾಗಿ ಹೊಂದಲ್ಪಡುವ, ಕ್ಷೇಪವಿಲ್ಲದೆ ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗುವ. ಸುಖೇನ ಲಭ್ಯತೇ—ಓ ಲಭ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬) | “ಜ್ವಲನಂ ತ್ವಿಷಃ ಕಥಮಿವೇತರಥಾ ಸುಲಭೋಜ್ಯಜನ್ಮನಿ ಸ ಏವ ಪತಿಃ” ಮಾಘಂ ೯-೧೩ | 2. ಯೋಗ್ಯವಾದ, ಅರ್ಹವಾದ, ಅನುರೂಪವಾದ. “ನಿಷ್ಕೃತಶ್ಚರಣೋಪಭೋಗಸುಲಭೋ ಲಾಕ್ಷಾರಸಃ ಕೇನಚಿತ್” ಶಾಕುಂ ೪-೪ | 3. ನಿಸ್ಸರ್ಗವಾದ, ಸ್ವಭಾವ ಸಿದ್ಧವಾದ. “ಮಾನುಷತಾಮುಲಭೋ ಲಭಿಮಾ” ಕಾದಂ |



**ಸುಲೋಚನ ಸುಲೋಚನ (ನಂ)** 1. ಕನ್ನಡಕ. ಸುಲೋಚನ ಯಸ್ಮಾತ್. (ಪುಂ) 2. ಹರಿಣ, ಜಿಂಕೆ. ಸು ಶೋಭನಂ ಲೋಚನಂ ಯಸ್ಯ. (ವಿಂ) 3. ಸುಂದರವಾದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳವನು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲೋಚನಾ-ಲೋಚನಾ. 1. ಸುಂದರವಾದ ನೇತ್ರಗಳುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. 2. ಇಂದ್ರಜಿತನ ಹೆಂಡತಿ.

**ಸುಲೋಹಕ ಸುಲೋಹಕ (ನಂ)** ಹಿತ್ತಾಳೆ. ಸುಲೋಹಮ್. "ಕನ್".

**ಸುಲೋಹಿತ ಸುಲೋಹಿತ (ನಂ)** 1. ಕೆಂಪುಬಣ್ಣ. ಸುಲೋಹಿತಮ್. (ವಿಂ) 2. ಬಹಳ ಕೆಂಪಾಗಿರುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲೋಹಿತಾ-ಲೋಹಿತಾ. 3. ಅಗ್ನಿಯ ಸಪ್ತ ಜಿಹ್ವೆಗಳ ಲ್ಲೊಂದು ಜಿಹ್ವೆ. ಕಾಲಿ ಕರಾಲಿ ಚ ಮನೋಜವಾ ಚ ಸುಲೋಹಿತಾ ಯಾ ಚ ಸುಬ್ರಹ್ಮವರ್ಣಾ. ಸ್ಕುಲಿಜ್ಞಿನಿ ವಿಶ್ವರೂಪಿ ಚ ದೇವಿ ಲೋಲಾಯಮಾನಾ ಇತಿ ಸಪ್ತ ಜಿಹ್ವಾಃ" ಮುಂಡಕಂ. ಅಗ್ನಿಯ ಜಿಹ್ವೆಯ ಹೆಸರುಗಳು ಒಂದೊಂದು ಗ್ರಂಥದಲ್ಲಿಯೂ ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿವೆ.

**ಸುಲಕ್ಷ್ಮ ಸುಲಕ್ಷ್ಮ (ವಿಂ)** ಸುಂದರವಾದ ಮುಖವುಳ್ಳವನು. ಸು ಶೋಭನಂ ವಕ್ಷತ್ರಂ ಯಸ್ಯ.

**ಸುಲಕ್ಷನ ಸುಲಕ್ಷನ (ನಂ)** 1. ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತು, ಪರಿಶುದ್ಧವಾದ ಮಾತು, ದೋಷವಿಲ್ಲದ ಮಾತು. ಸು ಶೋಭನಂ ವಚನಮ್. "ಸುಪ್ರಲಾಪಃ ಸುಲಕ್ಷನಮ್" ಅಮಂ. "ಏತಾನಿ ತೇ ಸುಲಕ್ಷನಾನಿ ಸರೋಹಾಸಿ ಕರ್ಣಾಮೃತಾನಿ ಮನಸಾ ರಸಾಯನಾನಿ" ಛಂ ರಾಂ ೧-೩೬. (ವಿಂ) 2. ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತನಾಡುವವನು.

**ಸುಲಕ್ಷಸ್ ಸುಲಕ್ಷಸ್ (ನಂ)** 1. ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತು, ಪರಿಶುದ್ಧವಾದ ಮಾತು. ಸು ಶೋಭನಂ ವಚಃ. (ವಿಂ) 2. ಪರಿಶುದ್ಧವಾದ ಮಾತನಾಡುವವನು. ಸು ಶೋಭನಂ ವಚೋ ಯಸ್ಯ.

**ಸುಲನ ಸುಲನ (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಅಗ್ನಿ, ವಹ್ನಿ. 3. ಚಂದ್ರ. ಸುತೇ ವಿಶ್ವಮ್ - ಷಟ್ (ಪ್ರಾಣಿಗಮವಿಮೋಚನೇ) "ಕಯುನ್" (ಛಂ ೨-೮೧).

**ಸುಲಯಸ್ ಸುಲಯಸ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಪ್ರಪ್ತವಯಸ್ಸಿನ ಹೆಂಗಸು, ಪ್ರೌಢೆಯಾಗಿರುವ ಹೆಂಗಸು.

**ಸುಲವಲಾ ಸುಲವಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ. "ವಸರೇಣುರ್ಮಹಾವೀರ್ಯಾತಿ ಸುರ್ಯಾ ವಲವಲಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 2. ಅಗಸೆ ಗಿಡ. 3. ಹೊನ್ನಗೊನೆ ಸೊಪ್ಪು.

**ಸುಲವಸ್ ಸುಲವಸ್ (ವಿಂ)** ಒಳ್ಳೆಯ ತೇಜಸ್ವಿಯಾದವನು, ಒಳ್ಳೆಯ ವರ್ತಮಾನದ ಕೂಡಿದವನು. ಸು ಶೋಭನಂ ವರ್ತಮಾನಂ ಯಸ್ಯ.

**ಸುಲವ ಸುಲವ (ನಂ)** 1. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ, ಕನ್ನಡ. ಸು ಶೋಭನಂ ವರ್ಣಂ ಯಸ್ಯ. ಸುಲವ ವರ್ಣತೇ - ವರ್ಣ (ವರ್ಣನೆ) + ಣಿವ್ "ಅವ್" (೩-೩-೪೬). "ಸುಲವಸುತಾಕಲಿತಾ-ವರಾಂವರಾಂ ವಿಶ್ವಾಂತಂ ಶಿತಿವಾಸಸಸ್ತನುಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೬. 2. ಒಂದು ಕರ್ಷ ಅಥವಾ 16 ಅದ್ಯ ಮೂಷಕಗಳ ತೂಕ. 3. ಒಂದು ಯಾಗ. 4. ಕೃಷ್ಣಾಗುರು. 5. ಸುವರ್ಣದ ನಾಣ್ಯ. 6. ವಿತ್ತ, ಧನ. ಸುಲವ ಕಾಶ್ಚನೇ ಕರ್ಣೇ ಸುಲವಾಲಿ ಮಲಾಂತರೇ. ಕೃಣಾಗುಣಿಣಿ ವित्ते च" ಹೇಮಂ. (ಪುಂ) 7. ದತ್ತಾರಿ ಗಿಡ. 8. ಒಳ್ಳೆಯ ಬಣ್ಣ. 9. ಉತ್ತಮ ವರ್ಣ. 10. ಸ್ವರ್ಣಪಾತ್ರೆ. (ವಿಂ) 11. ಒಳ್ಳೆಯ ಬಣ್ಣವುಳ್ಳ.

**ಸುಲವಕ ಸುಲವಕ (ನಂ)** 1. ಹಿತ್ತಾಳೆ. ಸುಲವಮಿವ - "ಕನ್" ಇವಾರ್ಥ. 2. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್". (ಪುಂ) 3. ಕಕ್ಕಿಗಿಡ.

**ಸುಲವಕದಲಿ ಸುಲವಕದಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಬಾಳೆಗಿಡ.

**ಸುಲವಕಾರ ಸುಲವಕಾರ (ಪುಂ)** ಅಕ್ಕಸಾಲೆ, ಚಿನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿಯ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವವನು. ಸುಲವ ಸುಲವಾಮರಣದಿಕಂ ಕರೋತಿ - ಡುಕ್ವ (ಕರಣ) "ಅನ್" (೩-೨-೧). "ರಾಜಾನ್ ತೇಜ ವಾದತೇ ಸುಲವನ್ ಬ್ರಹ್ಮವರ್ತಮ್. ಆಯುಃ ಸುಲವಕಾರಾನ್ ಯಶಸ್ವಿಮವಿಕರ್ತಿನಃ" ಮನುಂ ೪-೨೧೮.

**ಸುಲವಜೀವಿಕ ಸುಲವಜೀವಿಕ (ಪುಂ)** ಚಿನ್ನದ ವ್ಯಾಪಾರದಿಂದ ಜೀವಿಸುವ ವರ್ತಕ. ಸುಲವ ಜೀವಿಕಾ ಯಸ್ಯ. "ಗಾಂಧಿಕಃ ಶಾಸ್ತ್ರೀಕರವೇವ ಕಾಂಠಿಕೋ ಮಣಿಕಾರಕಃ. ಸುಲವ-ಜೀವಿಕರವೇವ ಪಂಚವೇತೇ ವಗಿಜಃ ಸ್ಮೃತಾಃ".

**ಸುಲವಪ್ರಸರ ಸುಲವಪ್ರಸರ (ನಂ)** ಸುರುಸುರುಕೆ ಗಿಡ. ಸುಲವವಿಂದು ಸುಲವವಿಂದು (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು.

**ಸುಲವವಣಿಕ್ ಸುಲವವಣಿಕ್ (ಪುಂ)** ಚಿನ್ನದ ಮಾರಾಟ ಮಾಡುವ ವರ್ತಕ, ಸುಲವದ ಕ್ರಯ ವಿಕ್ರಯ ಮಾಡುವ ವಣಿಕ. ಇವನು ಅಂಬಪ್ಪನಿಂದ ವೈಶ್ಯ ಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಂದು ಸಂತರ (ಬೆರಕೆ) ಜಾತಿಯವನು.

**ಸುಲವಯಿ ಸುಲವಯಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಹೊಂಬಣ್ಣದ ಕಾಡುಮಲ್ಲಿಗೆ. "ಯುತಿಕಾ ಗಣಿಕಾಮೃತಾ ಸಾ ಪೀತಾ ಹೇಮಗುಣಿಕಾ" ಅಮಂ.

**ಸುಲವವರ್ಣ ಸುಲವವರ್ಣ (ಪುಂ)** 1. ವಿಷ್ಣು. ಕನಕನಿಕಷ-ನಿರೋಪಜ್ಜವಲವರ್ಣತಯಾ ಸುಲವವೇವ ವರ್ಣಂ ರೂಪಗುಣೋಽಸ್ಯ. "ಗುಣಸುಲವನಿಕ ನಿರೋಪಜ್ಜವಲವರ್ಣತಃ. ಸುಲವವರ್ಣ-ಇತ್ಯುಕ್ತಃ ನವಾರ್ಣೋ ಭಕ್ತಕಾಮದಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿ. "ಸುಲವ-



- ವರ್ಣಿ ಹೇಮಾಕ್ಷಿ ವರಾಕ್ಷಿ ಸಂದನಾಕ್ಷಿ "ವಿಂ ಸಂ 1 (ವಿಂ)  
2. ಚಿನ್ನದ ಬಣ್ಣದಂತೆ ಬಣ್ಣವುಳ್ಳ. -ವರ್ಣಿ -ನರ್ಣಾ.  
3. ಹರಿದ್ರ, ಅರಿಶಿನ.

ಸುಖರ್ಣಿ ಸುವರ್ಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕೃಷ್ಣಾಗುರು. ಸು ಸುಖ  
ವರ್ಣಿ ಯಸ್ಯಾಃ 1. ಕಳ್ಳಂಗಡಲೆ. 3. ಹರಿದ್ರ, ಅರಿಶಿನ.  
4. ಕಂಕೋಪ್ಪ, ಘಂಟಾಮಣಿ ಸೊಪ್ಪು.

ಸುಖಲಿ ಸುವಲ್ಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಹುಜಿಗೆ ಗಿಡ.

ಸುಖಸಂತಕ ಸುವಸಂತಕ (ಪುಂ) 1. ಹಿತವಾದ ವಸಂತ  
ಯುತು. 2. ಮದನೋತ್ಪದ. ಶೋಭನಿ ವಸಂತಿ ಯತ್ರ  
"ಕಪ್" 1.

ಸುಖ ಸುವಹ (ವಿಂ) 1. ಸುಖವಾಗಿ ಹೊರಲು ಸಾಧ್ಯ  
ವಾದ. ಸುಖೇನ ಉಹತೇ -ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಖಲ್"  
(3-3-126) 1. 2. ಚಿನ್ನಾಗಿ ಹೊರುವವನು. ಸು ಸುಖ  
ವಹತಿ-ವಹ "ಅವ್" (3-1-134) 1. -ವಹಾ -ವಹಾ.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಕರಿಯಲಕ್ಕಿ. 4. ಸಣ್ಣರಾಶಿ. 5. ಸಲ್ಲಕಿ  
ವೃಕ್ಷ, ಅನೇಬೇಲ. 6. ಸರ್ಪಾಕ್ಷಿ, ಈಶ್ವರೀಹಂಬು.  
7. ಹಂಸಪಾದೀ ಗಿಡ. 8. ವೀಣೆ. "ಸುಖಾ ಸಲ್ಲಕೀಲಾ-  
ಪರ್ಣಿಗೋಧಾಪದೀಷು ವೀಣಾಯಾಮ್ 1. ರಾಸನಾಶೋಕಾಲಿಕಯೋಃ ಸ್ತ್ರೀ  
ಸುಖಾಹೋಜ್ಯಲಿಂಗಃ ಸ್ಯಾತ್" ಮೇದಿಂ 1.

ಸುಖಾಸಿನಿ ಸುವಾಸಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸುಮಂಗಲಿ, ಸೌಖ್ಯವತಿ,  
ಪ್ರಿಯನ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿ ಸುಖವಾಗಿ ಅವ  
ನೊಡನೆ ವಾಸಿಸುವ ಹೆಂಗಸು. ಸುಖೇನ ವಸತಿ -ವಸ  
(ನಿವಾಸೇ) "ಣಿಣಿ:" (3-2-94) 1. "ಸುಖಾಸಿನಿಃ  
ಕುಮಾರೀಶ್ಚ ರೋಗಿಣಿ ಗರ್ಭಿಣಿಃ ಸ್ತ್ರೀಯಃ 1. ಅತಿಶಯೋಽ  
ಏವೇತಾನ್ ಭೋಜಯೇದವಿಚಾರಯನ್" ಮನುಂ 3-114 1.

ಸುಖಿದ್ ಸುಖಿದ್ (ಪುಂ) 1. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. ಸುಖ  
ವೇತ್ತಿ-ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ) "ವಿವ್" (3-2-61) 1. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
2. ಜಾಣೆಯಾದ ಹೆಂಗಸು, ಸಕಲಗುಣಾಲಂಕೃತಳಾದ  
ಹೆಂಗಸು.

ಸುಖಿದ ಸುಖಿದ (ಪುಂ) ಕಂಚುಕಿ. ಸುಖಿ ವೇತ್ತಿ-ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ)  
"ಕ:" (3-1-136) 1.

ಸುಖಿದತ್ ಸುಖಿದತ್ (ಪುಂ) ರಾಜ, ದೊರೆ. ಸುಖಿದಮತತಿ  
-ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನೇ) "ವಿವ್" (3-2-61) 1.

ಸುಖಿದತ್ರ ಸುಖಿದತ್ರ (ನಂ) 1. ಕುಟುಂಬ. 2. ಐಶ್ವರ್ಯ,  
ಸಂಪತ್ತು. ಸುಖಿದ್ "ಕತ್ರನ್" (3-3-104) 1.

ಸುಖಿದಲ ಸುಖಿದಲ (ಪುಂ) 1. ಕಂಚುಕಿ, ಅಂತಃಪುರದ  
ಕಾವಲುಗಾರ. (ನಂ) 2. ಅಂತಃಪುರ.

ಸುಖಿದಲಾ ಸುಖಿದಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮದುವೆಯಾದ ಹೆಂಗಸು.

ಸುಖಿನೀತ ಸುಖಿನೀತ (ವಿಂ) 1. ಚಿನ್ನಾಗಿ ಪಳಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
2. ಬಹಳ ವಿನಯದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು. ಸುಖಿ ವಿನೀತಃ  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ವಿನೀತಾ -ವಿನೀತಾ. ಸಾಧುವಾದ ಹೆಸರು.

ಸುಖಿಹಿತ ಸುಖಿಹಿತ (ವಿಂ) 1. ಸರಿಯಾಗಿ ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ.  
2. ಚಿನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸರಿಯಾಗಿ ನೆರವೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಸುಖಿ ವಿಹಿತಮ್ 1.

ಸುಖೀಯ ಸುಖೀಯ (ನಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ಪರಾಕ್ರಮ.  
ಸುಖಿ ವೀರ್ಯಮ್ 1. 2. ವೀರರ ಸಮೃದ್ಧಿ, ವೀರರ ಸಂಪತ್ತು.  
3. ಬೋರೆಹಣ್ಣು, ಎಲಚಿಹಣ್ಣು.

ಸುಖಿತ ಸುಖಿತ (ನಂ) 1. ಸದಾಚಾರ, ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆ.  
ಸು ಶೋಭನಂ ವೃತ್ತಮ್ 1. "ಭರ್ತುಃಶ್ಚಿತ್ತಾನುವೃತ್ತಿವಂ ಸುಖಿತಂ ಚಾನು-  
ಜೀವಿನಾಮ್" ಪೃಷ್ಠಂ 1-24 1. (ಪುಂ) 2. ಸೂರಣಗಡ್ಡೆ.  
(ವಿಂ) 3. ಸದಾಚಾರಸಂಪನ್ನ, ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆಯುಳ್ಳ  
ವನು. ಸು ಸುಖಿ ವೃತ್ತಂ ಚರಿತಂ ಯಸ್ಯ 1. 4. ಚಿನ್ನಾಗಿ  
ವರ್ತುಲವಾಗಿರುವ, ಗುಂಡಾಗಿರುವ. "ಸುಖೋಽಪಿ  
ಸುಖಿತೋಽಪಿ ಸನ್ಮಾರ್ಗಪತಿಸ್ತೋಽಪಿ ಚ 1. ಮಹತಾಂ ಪಾದಲಗನೋಽಪಿ  
ವ್ಯಥಯತ್ಯೇವ ಕಷ್ಟಕಃ" 1. "ಉದಗ್ರಸದೃಶಭುವೋ ಮಿಥಃಸಮಾಃ  
ಸುಖಿತಮುಕ್ತಾಫಲಸಾಮ್ಯತಾಂ ಯಯುಃ" ಧಾತಂ 14-99 1.

ಸುಖಿತಾ ಸುಖಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆಯುಳ್ಳ  
ಪತ್ನಿ, ಸದಾಚಾರ ಸಂಪನ್ನಳಾದ ಪತ್ನಿ. ಸು ಸುಖಿ ವೃತ್ತಂ  
ಯಸ್ಯಾಃ 1. 2. ಸುಖವಾಗಿ ಕರೆಯಲ್ಪಡುವ ಗೋಷ್ಠಿ, ಕ್ಲೇಶ  
ವಿಲ್ಲದೆ ಹಾಲು ಕರೆಯಬಹುದಾದ ಹೆಸರು.

ಸುಖೇಲ ಸುಖೇಲ (ಪುಂ) 1. ಸುಖೇಲಪರ್ವತ. ಸುಖತಾ ವೇಲಾ  
ಸಮುದ್ರಕೂಲಯತ್ರ 1. "ಶ್ರುತ್ವಾ ದಾಶರಥಿ ಸುಖೇಲಕಟಕೇ ಸಾಟೋಪಮಥೇ  
ಧನುಷ್ಠಾಕ್ಷರೈಃ ಪರಿಪೂರ್ಯಂತಿ ಕಕ್ರುಭಃ ಪ್ರೋಚ್ಛಂತಿ ಕೌಕ್ಷೇಯಕಾನ್"  
ಅನರ್ವಂ 1. (ವಿಂ) 2. ಶಾಂತ, ನೆಮ್ಮದಿಯಿಂದಿರುವವನು.  
3. ನಮ್ರ, ವಿನಯದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು, ಅಹಂಕಾರವಿಲ್ಲ  
ದವನು. "ಸುಖೇಲಃ ಪ್ರಣತೇ ಶಾಂತೇ ತ್ರಿಷು ನಾ ಪರ್ವತಾಂತರೇ"  
ಮೇದಿಂ 1.

ಸುಖೇಷ ಸುಖೇಷ (ಪುಂ) 1. ಬೆಳ್ಳಿಯ ಕಬ್ಬು. ಶೋಭನಿ ವೇಷ  
ಯಸ್ಯ 1. (ವಿಂ) 2. ಒಳ್ಳೆಯ ವೇಷದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು,  
ಸುಂದರವಾದ ವೇಷವುಳ್ಳವನು. "ಸುಖೇಷಂ ಪುರುಷಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ  
ಭ್ರಾತರಂ ಯದಿ ವಾ ಸುತಮ್ 1. ಯೋನಿಃ ಸ್ವಿಚ್ಛತಿ ನಾರೀಣಾಂ ಸತ್ಯ  
ಸತ್ಯಂ ಹಿ ನಾರದ" ಭಾಂ 1.

ಸುಖೇಷಿನ್ ಸುಖೇಷಿನ್ (ವಿಂ) ಅಂದವಾದ ವೇಷವನ್ನು  
ಧರಿಸಿರುವವನು. ಸುಖೇಷೋಽಸ್ಮಿ "ಇನಿಃ" (4-2-114) 1.

ಸುಖಿತ ಸುಖಿತ (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಷಣ್ಮುಖ. "ಸುಖಿತೋ  
ಲಲಿತಶ್ಚೈವ ಬಾಲಕೀಡನಕಪ್ರಿಯಃ" 1. 2. ಒಬ್ಬ, ಅಹಂಕಾರ.



ಶೋಭನ ವ್ರತಮಸ್ಯ । (ವಿಂ) 3. ಒಳ್ಳೆಯ ವ್ರತವನ್ನು ಆಚರಿಸುವವನು.

**ಸುಖತಾ ಸುಖತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸುಖವಾಗಿ ಹಾಲು ಕರೆಯಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಹಸು. ಶೋಭನ ವ್ರತಮಸ್ಯಾಃ । "ಸುಖತಾ ಸುಖಸಂದೋಹಾ" ಅಮಂ । "ಅಥ ಸುಖತಾ । ಸುಖ-ಸಂದೋಹಸೌರಭೇಷ್ಯಾ ಸುಖತೋರ್ಹತಿ ಸದ್ವ್ರತೇ" ಹೇಮಂ । 2. ಪತಿವ್ರತೆಯಾದ ಹೆಂಗಸು, ಒಳ್ಳೆಯ ವ್ರತವನ್ನು ಆಚರಿಸುವ ಗುಣವುಳ್ಳ ಪತ್ನಿ. 3. ಕಚೋರ. "ಶಶಿ ಪಲಾಶಿ ಷಡ್ರನ್ಯಾ ಸುಖತಾ ಗಂಧಮೃತ್ತಿಕಾ । ಗಂಧಾರಿಕಾ ಗಂಧವರ್ವಧುಃ ಪೃಥು-ಪಲಾಶಿಕಾ" ಭಾವಪ್ರಂ ।

**ಸುಖಕ ಸುಖಕ (ವಿಂ)** ಸುಖವಾಗಿ ಮಾಡಲು ಶಕ್ಯವಾದ.

**ಸುಖಮನ್ ಸುಖಮನ್ (ಪುಂ)** 1. ಒಬ್ಬ ರಾಜ. (ವಿಂ) 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹಿಂಸಿಸುವವನು. ಸು ಸ್ವಗಾತಿ-ಶ್ಚ (ಹಿಸಾ-ಯಾಮ್) "ಮನಿನ್" (3-2-94) । 3. ಒಳ್ಳೆಯ ಸುಖವುಳ್ಳವನು. ಸು ಶೋಭನ ಶಮ ಯಸ್ಯ ।

**ಸುಖಲ ಸುಖಲ (ಪುಂ)** ಖದಿರವೃಕ್ಷ, ಕಗ್ಗಲಿಮರ. ಸು ಸುಷ್ಕ ದೃಢ ಶಲ್ಯ ಕಂಠಕ ಯಸ್ಯ ।

**ಸುಖಾಕ ಸುಖಾಕ (ನಂ)** ಹಸಿಶುಂಠಿ.

**ಸುಖಾಸಿತ ಸುಖಾಸಿತ (ವಿಂ)** 1. ಚೆನ್ನಾಗಿ ನಿಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಡಿತದಲ್ಲಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಂಕೆಯಲ್ಲಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸು + ಶಾಸು (ಅನುಷಿಷ್ಟಿ) + ಣಿच् "ಕುಃ" (3-2-102) । 2. ಶರಬೇತಿ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಸುಖಿ ಸುಖಿ (ಪುಂ)** 1. ವಜ್ರ, ಅಗ್ನಿ. ಸು ಶೋಭನಾಃ ಶಿಖಾಃ ಅಸ್ಯ । (ವಿಂ) 2. ಸುಂದರವಾದ ಶಿಖೆಯುಳ್ಳವನು. -ಶಿಖಾ -ಶಿಖಾ. 3. ಸುಂದರವಾದ ಶಿಖೆ.

**ಸುಖಿತ ಸುಖಿತ (ಪುಂ)** 1. ಹಬ್ಬಿಗಿಡ. 2. ಜಳ್ಳಿಮರ. (ನಂ) 3. ಹೆಚ್ಚು ಚಳಿ, ಶೈತ್ಯ, ಕುಳಿರು. (ವಿಂ) 4. ಶೀತಲವಾದ, ತಣ್ಣನೆಯ. 5. ಅಲಸ, ಸೋಮಾರಿ, ಚಟುವಟಿಕೆಯಿಲ್ಲದವನು. "ಶಾಂತಿ ಹಿಮಗುಣೇ ಕಲಿಬಿ ಸುಖಿತಾ-ಲಗುಯೋಸ್ತ್ರಿಪ್ತುಃ । ವಾನೀರೇ ಬ್ರಹ್ಮವಾರೆ ನಾ" ಮೇದಿಂ ।

**ಸುಖಿತಲ ಸುಖಿತಲ (ನಂ)** ಬಹಳ ತಣ್ಣಗಿರುವ, ಕೊರೆಯು ವಜ್ರ ಶೀತಗುಣದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಸು ಸುಷ್ಕ ಶೀತಲಮ್ । "ನಿರ್ಮಲಸ್ವಾದು ಸಲಿಲಂ ಮನೋಹಾರಿ ಸುಖಿತಲಮ್ । ಸುಪರಿ-ಶ್ರಾಂತವಾಹಸ್ತೇ ನಿವೇಶಾಯ ಮನೋ ದಧುಃ" ಭಾಂ ವನಂ ।

**ಸುಖಿಮ ಸುಖಿಮ (ಪುಂ)** 1. ಚಳಿ, ಕುಳಿರು, ಶೈತ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಹೆಚ್ಚು ಶೈತ್ಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

**ಸುಖಿಲ ಸುಖಿಲ (ನಂ)** 1. ಒಳ್ಳೆಯ ಸ್ವಭಾವ. ಸು ಶೋಭನ ಶೀಲಮ್ । "ತ್ವಯಾ ಸುಖಿಲವ್ರತಮುಪಯುಕ್ತಯಾ ಸಮುದೃತ ಸಾಙ್ಗಿ

ಪುನಃ ಕುಲಿನಯಾ" ಭಾಂ ವನಂ 2-2-88 । (ವಿಂ) 2. ಒಳ್ಳೆಯ ಸ್ವಭಾವವುಳ್ಳವನು. "ಸಧೀವಿ ನೌ ಹ್ಯಂ ಲೋಕೇ ಪನ್ಯಾಃ ಕೇಮೋಽಕುತೋಮಯಃ । ಸುಖಿಲಾಃ ಸಾಧವೌ ಯತ್ರ ನಾರಾಯಣಪರಾಯಣಾಃ" ಭಾಗಂ 6-1-17 ।

**ಸುಖಿಲತಾ ಸುಖಿಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಒಳ್ಳೆಯ ಸ್ವಭಾವ. ಸುಖಿಲಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್" (4-1-119) । "ತ್ವಃ" । -ಶೀಲತ್ವಮ್ -ಶೀಲತ್ವಮ್.

**ಸುಖಿಲಾ ಸುಖಿಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಒಬ್ಬ ಪತ್ನಿ. 2. ಯಮಧರ್ಮರಾಯನ ಪತ್ನಿ.

**ಸುಖೀಕ ಸುಖೀಕ (ವಿಂ)** 1. ಒಳ್ಳೆಯ ಕಾಂತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. 2. ಒಳ್ಳೆಯ ಸಂಪತ್ತಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಸು ಶೋಭನಾ ಶ್ರೀಯಸ್ಯ ಯತ್ರ ವಾ । "ಸಮ್ಮಷ್ಟರಥ್ಯಾ ಸುಖೀಕಾ ಬಹುರತ್ನೋಪಶಾಂತಿತಾಮ್" । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಶ್ರೀಕಾ -ಶ್ರೀಕಾ. 3. ಸಲ್ಲಕೀ ವೃಕ್ಷ.

**ಸುಖಿತ ಸುಖಿತ (ಪುಂ)** ಆಯುರ್ವೇದದ ಚಿಕಿತ್ಸಾಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಬರೆದ ಒಬ್ಬ ಮುಷಿ. ಈ ಮುಷಿಯು ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮಹರ್ಷಿಯ ಪುತ್ರರು. "ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಸುತಃ ಶ್ರೀಮಾನ್ ಸುಖಿತಃ ಪರಿಪುಚ್ಛತಿ" ಸುಖಿತಂ ಉತ್ತರತಂ 66 । ಈ ಮುಷಿಯು ರಚಿಸಿದ ಚಿಕಿತ್ಸಾಶಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೆ "ಸುಖಿತಸಂಹಿತಾ" ಎಂದು ಹೆಸರು. ಧನ್ವಂತರಿಯು ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಅಂಶದಿಂದ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಅವತರಿಸಿ ಮನುಷ್ಯರಿಗೆ ಸಂಭವಿಸಬಹುದಾದ ಜರೆ ರೋಗ ಮೃತ್ಯು ಮುಂತಾದವುಗಳನ್ನು ಪರಿಹರಿಸಲು ಬಂದಿರುವುದಾಗಿ ಸುಖಿತದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ. "ಅಹಂ ಹಿ ಧನ್ವಂತರೀರಾದಿದೇವೌ ಜರಾಹಜಾಮೃತ್ಯುಹರೌಽಮರಾಣಾಮ್ । ಶಲ್ಯಾಙ್ಗಮಙ್ಗೇರಪರೇರಪೇತಂ ಪ್ರಾಪ್ತೋಽಸ್ಮಿ ಗಾಂ ಭೂಯ ಇಹೋಪದೇಶ್ಚಮ್" ಸುಖಿತಂ ಸೂತ್ರಂ 1-21 । ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮಹರ್ಷಿಯು ತಮ್ಮ ಪುತ್ರರಾದ ಸುಖಿತರನ್ನು ಆಯುರ್ವೇದಶಾಸ್ತ್ರದ ಅಧ್ಯಯನಕ್ಕಾಗಿ ಕಾಶಿರಾಜನಾದ ದಿವೋದಾಸ (ಧನ್ವಂತರಿ) ನಲ್ಲಿಗೆ ಕಳುಹಿಸಿಕೊಟ್ಟಿರುತ್ತಾರೆ. "ಅಥ ಜ್ಞಾನದೃಶಾ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಪ್ರಭೃತಯೋಽವದನ್ । ಅಯಂ ಧನ್ವಂತರಿಃ ಕಾಶ್ಯಾಂ ಕಾಶಿರಾಜೋಽಪ್ಯಮುಚ್ಯತೇ । ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರೋ ಮುನಿಸ್ತೇಷು ಪುತ್ರಂ ಸುಖಿತಮುಕ್ತವಾನ್ । ವತ್ಸ ವಾರಾಣಸೀ ಗಚ್ಛ ತ್ವಂ ವಿಶ್ವೇಶ್ವರವಲ್ಲಭಾಮ್ । ತತ್ರ ನಾಮ್ನಾ ದಿವೋದಾಸಃ ಕಾಶಿರಾಜೋಽಸ್ತಿ ಬಾಹುಜಃ । ಸ ಹಿ ಧನ್ವಂತರಿಃ ಸಾಕ್ಷಾದಾಯುರ್ವೇದ-ವಿದಾಂ ವರಃ । ಆಯುರ್ವೇದ ತತೋಽಪ್ಯೌತ್ಯ ಲೋಕೋಪಕೃತಿಹೇತವೇ । ಸರ್ವಪ್ರಾಣಿದಯಾತೀಯಮುಪಕಾರೋ ಮಹಾಮಖಃ । ಪಿತುರ್ವಚನ-ಮಾಕರ್ಣ್ಯ ಸುಖಿತಃ ಕಾಶಿಕಾಂ ಗತಃ" ಭಾವಪ್ರಂ । ಕಾಶಿಗೆ ಬಂದು ಸುಖಿತಮುಷಿಯು ಧನ್ವಂತರಿಯ ಚರಣಗಳಿಗೆ ನಮಸ್ಕರಿಸಿ ಆಯುರ್ವೇದಶಾಸ್ತ್ರದ ಉಪದೇಶಕ್ಕಾಗಿ



ಪ್ರಾಧಿಕೃತಂ. "ವ್ಯವರ್ತಾರ ಭರ್ಮಭೂತಾ ವರಿಷ್ಠಮೃತಾ-  
 ಧ್ರುವಮ್ | ಚರಣಾಭುಪಸತ್ಯಗೃಹ ಸುಖತಃ ಪರಿಪುಷ್ಠತಿ" ನಿರ್ದಾನಂ  
 ೧ | ಧನ್ವಂತರಿಯು ಸುಶ್ರುತ ಮೊದಲಾದ ಶಿಷ್ಯರಿಗೆ  
 ಆಯುರ್ವೇದಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸಿದರು. "ವ್ಯವರ್ತಾರಿಃ  
 ಕಾಶಿಪತಿಃ ತಪೋಧರ್ಮಭೂತಾ ವರಃ | ಸುಶ್ರುತಪ್ರಭೃತೀನ್ ಶಿಷ್ಯಾನ್  
 ಶಾಸಾಹತಶಾಸನಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ಕಲ್ಪಂ ೧ | ಧನ್ವಂತರಿ  
 ಯಿಂದ ಉಪದೇಶ ಪಡೆದು ಸುಶ್ರುತಯುಷಿಯು ಶಲ್ಯ  
 ಶಾಲಾಕಯ ಕಾಯಚಿಕಿತ್ಸಾ ಭೂತವಿಜ್ಞಾ ಕೌಮಾರಭೂತಮ್ ಅಗದ-  
 ತನ್ತ್ರಮ್ ರಸಾಯನತನ್ತ್ರಮ್ ವಾಜೀಕರಣತನ್ತ್ರಮ್ ಎಂಬ ಅಷ್ಟಾಂಗ  
 ಗಳುಳ್ಳ ಆಯುರ್ವೇದಚಿಕಿತ್ಸಾಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ರಚಿಸಿದರು.  
 ಇದೇ "ಸುಶ್ರುತಸಂಹಿತಾ" ಎಂಬ ಮಹಾಗ್ರಂಥ. ಈ ಸುಶ್ರುತ  
 ಸಂಹಿತೆಯನ್ನು ಸ್ವಸ್ಥಾನಮ್ ನಿರ್ದಾನಸ್ಥಾನಮ್ ಶಾರೀರಸ್ಥಾನಮ್  
 ಚಿಕಿತ್ಸಾಸ್ಥಾನಮ್ ಕಲ್ಪಸ್ಥಾನಮ್ ಉತ್ತರತನ್ತ್ರಮ್ ಎಂದು ಆರು  
 ಭಾಗಗಳಲ್ಲಿ ರಚಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಅಥರ್ವವೇದದ ಉಪಾಂಗ  
 ವಾದ ಬೃಹದ್ರೂಪದ ಆಯುರ್ವೇದಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು  
 ಭೂಲೋಕದ ಮನುಷ್ಯರ ಅಲ್ಪವಾದ ಆಯುಃಪ್ರಮಾಣ  
 ವನ್ನು ಆಲೋಚಿಸಿ ಮತ್ತು ಶಲ್ಯಶಾಲಾಕಾದಿ ಅಷ್ಟಾಂಗ  
 ಸಹಿತವಾದ ಆಯುರ್ವೇದಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ರಚಿಸಲಾಯಿತು.  
 ಆಯುರ್ವೇದದ ಅಷ್ಟಾಂಗಗಳ ವಿವರ :

ಶಲ್ಯಮ್ — ಶರೀರದೊಳಗೆ ಸೇರುವ ನಾನಾವಿಧವಾದ  
 ತೃಣ ಕಾಷ್ಠ ಪಾಷಾಣ ಪಾಂಶು ಲೋಹ ಲೋಷ್ಣ ಅಸ್ಥಿ  
 ಮುಂತಾದುವುಗಳ ಉದ್ಧರಣಕ್ಕಾಗಿ ಯಂತ್ರ ಶಸ್ತ್ರ ಮೊದ  
 ಲಾದುವುಗಳ ಚಿಕಿತ್ಸೆ. "ಅತಿಪ್ರವೃದ್ಧಂ ಮಲದೋಷಜಂ ವಾ  
 ಶರೀರಿಣಾಂ ಸ್ಥಾವರಜಙ್ಗಮಾನಾಮ್ | ಯತ್ಕಿಂಚಿದಾಬಾಧಕಂ  
 ಶರೀರೇ ತತ್ಸರ್ವಮೇವ ಪ್ರವದಂತಿ ಶಲ್ಯಮ್" | "ಶಲ್ಯಂ ನಾಮ  
 ವಿವಿಧತೃಣಕಾಷ್ಠಪಾಷಾಣಪಾಂಶುಲೋಹಲೋಷ್ಣಾಸ್ಥಿಬಾಲನಖಪುಷ್ಪಾ-  
 ಸ್ತವದ್ವಿವಿಧವಿಷಯಾಂತರ್ಗತಶಲ್ಯೋದ್ಧರಣಾರ್ಥಮ್, ಯನ್ವಶಸ್ತ್ರಕ್ಷಾರಾಗ್ನಿ-  
 ಪ್ರತಿಧಾನವ್ರಣವಿನ್ಯಾಸಾರ್ಥಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೧-೭ (೧) |

ಶಾಲಾಕಯಮ್ — ಹೆಗಲಸಂಧಿಯ ಮೇಲುಭಾಗದ ಕೆಳ  
 ಕಣ್ಣು ವದನಕುಹರ ಮೂಗು ಮುಂತಾದುವುಗಳ ವ್ಯಾಧಿ  
 ಗಳ ಉಪಶಮನಕ್ಕಾಗಿ ನಡೆಸುವ ಚಿಕಿತ್ಸೆ. "ಶಾಲಾಕಯ  
 ನಾಮ ಋಜ್ವಜ್ರಗತಾನಾಂ ಶ್ರವಣನಯನವದನಗ್ರಾಣಾದಿಸಂಶ್ರಿತಾನಾಂ  
 ವ್ಯಾಧಿನಾಮುಪಶಮನಾರ್ಥಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೧-೭ (೨) |

ಕಾಯಚಿಕಿತ್ಸಾ — ದೇಹದ ಎಲ್ಲಾ ಅಂಗಗಳಲ್ಲಿಯೂ  
 ಸಂಭವಿಸಬಹುದಾದ ಜ್ವರ ರಕ್ತಪಿತ್ತ ಕ್ಷಯ ಉನ್ನಾದ  
 ಅಪಸ್ಮಾರ ಕುಷ್ಠ ಮೇಹ ಅತಿಸಾರ ಮೊದಲಾದ ವ್ಯಾಧಿ  
 ಗಳ ಉಪಶಮನಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಚಿಕಿತ್ಸೆ. "ಕಾಯ-  
 ಚಿಕಿತ್ಸಾನಾಮ ಸರ್ವಾಙ್ಗಸಂಶ್ರಿತಾನಾಂ ವ್ಯಾಧಿನಾಂ ಜ್ವರರಕ್ತಪಿತ್ತ-

ಶೋಖೋನ್ಮಾದಾಪಸ್ಮಾರಕುಷ್ಠಮೇಹಾಲಿಸಾರಾದಿನಾಮುಪಶಮನಾರ್ಥಮ್"  
 ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೧-೭ (೩) |

ಭೂತವಿಜ್ಞಾ — ದೇವತೆಗಳು ಅಸುರರು ಗಂಧರ್ವ ಯಕ್ಷ  
 ರಾಕ್ಷಸ ಪಿತೃಕುಲ ಮೊದಲಾದ ಗ್ರಹಗಳ ಆಕ್ರಮಣದಿಂದ  
 ಹೀದಿತರಾದವರಿಗೆ ಶಾಂತಿಕಾರ್ಯ ಬಲಿಹರಣ ಮೊದ  
 ಲಾದ ಗ್ರಹೋಪಶಮನರೂಪ ಚಿಕಿತ್ಸೆ. "ಭೂತವಿಜ್ಞಾನಾಮ  
 ದೇವಾಸುರಗಂಧರ್ವಯಕ್ಷರಕ್ಷ:ಪಿತೃಪಿಶಾಚನಾಗ್ರಹಾಣುಪಸೃಷ್ಟವೇತಸಾಂ  
 ಶಾಂತಿಕರ್ಮಬಲಿಹರಣಾದಿಗ್ರಹೋಪಶಮನಾರ್ಥಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ  
 ೧-೭ (೪) |

ಕೌಮಾರಭೂತಮ್ — ಮಕ್ಕಳ ಯೋಗಕ್ಷೇಮವನ್ನು ನೋಡಿ  
 ಕೊಳ್ಳುವ ದಾದಿಯರ ಕ್ಷೇರದೋಷ ಮತ್ತು ದೋಷ  
 ಯುಕ್ತಸ್ತನ್ಯ ಮತ್ತು ದುಷ್ಪ್ರಗ್ರಹ ಇವುಗಳಿಂದ ಉಂಟಾ  
 ಗುವ ವ್ಯಾಧಿಗಳ ಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ನಡೆಸುವ ಚಿಕಿತ್ಸೆ.  
 "ಕೌಮಾರಭೂತಂ ನಾಮ ಕುಮಾರಭರಣವಾತ್ರಿಕೀರದೋಷಸಂಶೋಧನಾರ್ಥ  
 ದೃಷ್ಟಸ್ತನ್ಯಗ್ರಹಸಮುತ್ಥಾನಾಂ ಚ ವ್ಯಾಧಿನಾಮುಪಶಮನಾರ್ಥಮ್"  
 ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೧-೭ (೫) |

ಅಗದತನ್ತ್ರಮ್ — ಸರ್ಪ ಚೀಳು ಮೊದಲಾದ ಕೀಟ ಜೇಡರ  
 ಹುಳ ಇಲಿ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ದಂಶನದಿಂದ ವ್ಯಾಧಿಸುವ  
 ವಿಷ ಮತ್ತು ಅನೇಕ ವಿಧ ವಿಷಗಳ ಸಂಬಂಧದಿಂದಂಟಾ  
 ಗುವ ದೋಷಪರಿಹಾರಾರ್ಥ ನಡೆಸುವ ಚಿಕಿತ್ಸೆ. "ಅಗದತನ್ತ್ರಂ  
 ನಾಮ ಸರ್ಪಕೀಟಲತಾಮೂಷಕಾದಿದೃಷ್ಟವಿಷವ್ಯಾಙ್ಮನಾರ್ಥಂ ವಿವಿಧ-  
 ವಿಷಸಂಯೋಗೋಪಶಮನಾರ್ಥಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೧-೭ (೬) |

ರಸಾಯನತನ್ತ್ರಮ್ — ವಯಸ್ಸಾಪನ (ನೂರು ವರ್ಷಗಳ  
 ಆಯುಸ್ಸನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಡುವುದು) ಆಯುಸ್ಸು ಬುದ್ಧಿ  
 ಇವುಗಳ ಬಲವೃದ್ಧಿ ಮತ್ತು ರೋಗಪರಿಹಾರಸಮರ್ಥ  
 ವಾದ ಚಿಕಿತ್ಸೆ. "ರಸಾಯನತನ್ತ್ರಂ ನಾಮ ವಯಸ್ಥಾಪನಮಾಯುರ್ಮೇಧಾ-  
 ಬಲಕರಂ ರೋಗಾಪಹರಣಸಮರ್ಥಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೧-೭ (೭) |

ವಾಜೀಕರಣತನ್ತ್ರಮ್ — ಸ್ವಭಾವವಾಗಿ ಅಲ್ಪಧಾತುಶಕ್ತಿ  
 ಕ್ಷೀಣರೇತಸ್ಸು ದುಷ್ಪ್ರೇತಸ್ಸು ಶುಷ್ಕರೇತಸ್ಸು ಇವುಗಳನ್ನು  
 ಹೊಂದಿರುವವರಿಗೆ ಆಪ್ಯಾಯನ ಪ್ರಸಾದ ಉಪಚಯಗಳು  
 ಉಂಟಾಗಲು ಮತ್ತು ಮನಸ್ಸಿನ ಉಲ್ಲಾಸವುಂಟಾಗಲು  
 ನಡೆಸುವ ಚಿಕಿತ್ಸೆ. "ವಾಜೀಕರಣತನ್ತ್ರಂ ನಾಮ ಅಲ್ಪದೃಷ್ಟ-  
 ಕ್ಷೀಣವಿಶುಷ್ಕರೆತಸಾಮಾಪ್ಯಾಯನಪ್ರಸಾದೋಪಚಯಜನನಿನಿಮಿತ್ತಂ  
 ಪ್ರಹರ್ಷಜನನಾರ್ಥಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೧-೭ (೮) |

ಸುಷಮ ಸುಷಮ (ವಿಂ) 1. ಸುಂದರವಾದ, ಅಂದವಾದ,  
 ಮನೋಹರವಾದ. ಸು ಶೋಭನಂ ಸಮ ಸರ್ವಮಸ್ಯ — ಷಟ್ವಮ್  
 (೮-೩-೮೮) | 2. ಸಮನಾದ, ವ್ಯತ್ಯಾಸವಿಲ್ಲದ, ಅದೇ  
 ರೀತಿಯ, ಒಂದೇ ರೀತಿಯ.



ಸುಷಮಾ ಸುಷಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಧಿಕವಾದ ಕಾಂತಿ. ಅತ್ಯಂತ ಹೊಳಪು. ಉಜ್ಜ್ವಲವಾದ ಪ್ರಕಾಶ. ಸು ಶೋಭನಂ ಸಮಂ ಸರ್ವಮನಯಾ । ಷತ್ವಮ್ (೮-೩-೮೮) । “ಸುಷಮಾವಿಷಯೇ ಪರೀಕ್ಷಣೇ ನಿಖಿಲಂ ಪದ್ಮಮಭಾಜಿ ತನ್ಮುಖಾತ್” ನೆಪಂ ೨-೨೭ ।

“ಸುಷಮಾಽತ್ಯಂತಶೋಭಾಂ ಸ್ತ್ರೀ ಚಾರೌ ಚ ಸಮೇತ್ರಿಭು” ಮೇದಿಂ ।

ಸುಷವೀ ಸುಷವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಾಗಲಗಿಡ. ಸು ಸುವತಿ—ಘ (ಪ್ರೇರಣೆ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । ಷತ್ವಮ್ (೮-೩-೬೪) । ಗೌರಾಂ “ಙೀಘ್” (೪-೧-೪೧) । “ಅಥ ಕಾರವೇಲ್ಲ: ಕಟಿಲ್ಲಕ: । ಸುಷವೀ ಚ” ಅಮಂ । 2. ಕರಿಜೀರಿಗೆ. ಘ (ಪ್ರೇರಣೆ) “ಅಘ್” (೩-೩-೪೭) । 3. ಜೀರಿಗೆ. ಸುಷವೀ ಕಾರವೇಲ್ಲೆ ಸ್ವಾತ್ ಕೃಷ್ಣಜೀರಕಜೀರಯೋ:” ಮೇದಿಂ ।

ಸುಷಿ ಸುಷಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಲ, ಛಿದ್ರ, ಕುಹರ. ಷಿ (ಅಂತ-ಕರ್ಮಣಿ) “ಕಿ:” ಬಾಹುಂ ।

ಸುಷಿರ ಸುಷಿರ (ನಂ) 1. ಬಿಲ, ಕುಹರ. ಸುಷಿರಸ್ವಾಸ್ತಿ— “ರ:” (೪-೨-೧೦೭) । ಪೃಷಂ । (ವಿಂ) 2. ರಂಧ್ರ ವುಳ್ಳ, ವಿವರವುಳ್ಳ, ಬಿಲಗಳುಳ್ಳ.

ಸುಷೀಮ ಸುಷೀಮ (ವಿಂ) 1. ಶೀತಲವಾದ, ಬಹಳ ತಣ್ಣಗಿ ರುವ. ಸುಷು ಸೀಮಾ ಮರ್ಯಾದಾ ಯಸ್ಯ । ಷತ್ವಮ್ (೮-೩-೯೮) । 2. ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ. (ಪುಂ) 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಸರ್ಪ. “ಸುಷೀಮ: ಶೀತಲೇ ಚಾರೌ ತ್ರಿಭು ನಾ ಪನ್ನಾಗಾಂತರೇ” ಮೇದಿಂ । 4. ಚಂದ್ರಕಾಂತ ಮಣಿ.

ಸುಷುಪ್ತ ಸುಷುಪ್ತ (ನಂ) 1. ಸುಷುಪ್ತಿಯ ಅವಸ್ಥೆ, ಜೀವನು ನಿದ್ರಿಸುವಾಗ ಇಂದ್ರಿಯ ವ್ಯಾಪಾರಗಳೆಲ್ಲವೂ ನಿಂತು ಸ್ವಪ್ನ ವನ್ನೂ ಕಾಣದಿರುವ ಒಂದು ಅವಸ್ಥೆ. ಸು+ಷಿ ಷಪ್ (ಶಯೇ) “ಕ್ತ:” (೩-೩-೧೧೪) । “ಯೋ ಜಾಗರೇ ಬಹಿರನುಕ್ಷಣಧರ್ಮಿಣೋಽ-ರ್ಥಾನ್ ಭುಂಕ್ತೇ ಸಮಸ್ತಕರಣಂ ಹೃದಿ ತತ್ಸದೃಶಾನ್ । ಸ್ವಪ್ನೇ ಸುಷುಪ್ತ ಉಪಸಂಹರತೇ ಸ ಏಕ: ಸ್ಮೃತ್ಯನ್ವಯಾತ್ರಿಗುಣವೃತ್ತಿರ್ದಿಗಿಂಧ್ರಿ-ಯೇಶ:” ಭಾಗಂ ೧೧-೧೩-೩೪ । (ವಿಂ) 2. ಸುಷುಪ್ತಿಯ ಅವಸ್ಥೆಯುಳ್ಳವನು. “ಯಥಾ ಸುಷುಪ್ತ: ಪುರುಷೋ ವಿಶ್ವಂ ಪಶ್ಯತಿ ಚಾತ್ಮನಿ । ಆತ್ಮಾನಮೇಕದೇಶಸ್ಥಂ ಮನ್ಯತೇ ಸ್ವಪ್ನ ಉತ್ಥಿತ:” ಭಾಗಂ ೬-೧೬-೪೩ ।

ಸುಷುಪ್ತಿ ಸುಷುಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತವೇದಾಂತ ದಲ್ಲಿ ಸಕಲೇಂದ್ರಿಯವ್ಯಾಪಾರಗಳ ಉಪರತಿ, ಕರಚರಣ ಮೊದಲಾದ ಇಂದ್ರಿಯಗಳ ಕಾರ್ಯಗಳ ವಿಶ್ರಾಂತಿ, ಯಾವ ರೀತಿಯ ಸ್ವಪ್ನವನ್ನೂ ಕಾಣದಿರುವ ನಿದ್ರಾವಸ್ಥೆ. ಸು+ಷಿ ಷಪ್ (ಶಯೇ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) । ಇದು ಸತ್ತ್ವಪ್ರಧಾನವಾದ ಅಜ್ಞಾನ. ಪುರಿತತ್ ಪ್ರದೇಶ ದೊಡನೆ ಮನಸ್ಸಿನ ಸಂಯೋಗವು ಸುಷುಪ್ತಿ. “ಪ್ರದೇಶ-

ವಿಶೇಷಾವಸ್ಥಿತಮನ:ಸಯೋಗ: ಸುಷುಪ್ತಿ:” ನೀಲಕಂಠಿ । ಜ್ಞಾನಸಾಮಾನ್ಯಕ್ಕೂ ತ್ವಜ್ಞಾನ:ಸಂಯೋಗವು ಕಾರಣವಾದುದು ದಿಂದ ಪುರಿತತ್ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ತ್ವಗಿಂದ್ರಿಯವಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಅಲ್ಲಿರುವ ಮನಸ್ಸಿಗೆ ತ್ವಕ್ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ ಕಾರಣ ಸುಷುಪ್ತಿಯ ಅವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ಯಾವ ವಿಧವಾದ ಜ್ಞಾನವೂ ಉಂಟಾಗುವುದಿಲ್ಲ. “ಅಥ ಯದಾ ಸುಪ್ತೋ ಭವತಿ ತದಾ ನ ಕಸ್ಯಚನ (ನ ಕಂಚನ) ವೇದ । ಹಿತಾ ತಾಮ ನಾಡಯೋ ದ್ವಾಸಪ್ತತಿಸಹಸ್ರಾಣಿ ಹೃದಯಾತ್ಪುರಿತತಮಭಿಪ್ರತಿಠಂತೇ । ತಾಭಿ: ಪ್ರತ್ಯವಸೃಷ್ಯ ಪುರಿತತಿ ಶೇತೇ” ಶತಂ ಬ್ರಾಂ । ಅದ್ವೈತ ವೇದಾಂತಿಗಳು ಜ್ಞಾನಶೂನ್ಯವಾದ ಜೀವನ ಅವಸ್ಥೆಯನ್ನವರು. “ಯತ್ರ ಸುಪ್ತೋ ನ ಕಚನ ಕಾಮಂ ಕಾಮಯತೇ ನ ಕಂಚನ ಸ್ವಪ್ನಂ ಪಶ್ಯತಿ ತತ್ ಸುಪ್ತಮ್” ಬೃಹದಾಂ । ಸಾಂಖ್ಯ ಮತದಲ್ಲಿ (1) ಅರ್ಪಣೆಯ ಮತ್ತು (2) ಸಮಪ್ರಲಯ ಗಳೆಂದು ಸುಷುಪ್ತಿಯು ಎರಡು ವಿಧ. ದ್ವೈತ ವೇದಾಂತಿ ಗಳು “ಪ್ರಿಯಾ ಸ್ತ್ರಿಯಾ ಸಂಗರಿಷ್ವಕ್ತೋ ನ ಬಾಹ್ಯಂ ಕಿಂಚನ ವೇದ ನಾಂತರಮ್” ಎಂಬ ಶ್ರುತಿಯಿಂದ ಜೀವನು ಸುಷುಪ್ತಿಯ ಅವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಜ್ಞ ಎಂಬ ಪರಮಾತ್ಮನ ಆಲಿಂಗವನ್ನು ಹೊಂದುತ್ತಾನೆ ಎನ್ನುವರು. ಯೋಗದರ್ಶನಕಾರರು “ಪ್ರಬೋಧಸಹಕಾರ್ಯಭಾವೇನ ಕಲೇಶಸ್ಥಾನಭಿವ್ಯಕ್ತಿ:” ಎಂದು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ.

ಸುಷುಪ್ತಾ ಸುಷುಪ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಲಗಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ, ನಿದ್ರೆ ಮಾಡಲು ಇಚ್ಛೆ. ಸ್ವಪ್ನಮಿಚ್ಛಾ—ಷಿ ಷಪ್ (ಶಯೇ) + ಸನ್ “ಅ:” (೩-೩-೧೦೨) । ಸನ್: “ಹರಿವಿದ—” (೧-೨-೮) । ಕಿತ್ವಾತ್ ಸಂಪ್ರಸಾರಣಮ್ ।

ಸುಷುಪ್ತು ಸುಷುಪ್ತು (ವಿಂ) ಮಲಗಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ನಿದ್ರೆ ಸಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ. ಸ್ವಪ್ನಮಿಚ್ಛು—ಷಿ ಷಪ್ (ಶಯೇ) + ಸನ್ “ಃ” (೩-೨-೧೩೮) । “ಸಾವಜ್ಞಾನುಗಾತ್ಯ ವಲೋಚನೇ ಸಕೃತ್ಕ್ಷಣಂ ಮೃಗೇಂದ್ರೇಣ ಸುಷುಪ್ತುನಾ ಪುನ:” ಮಾಘಂ ೧೨-೪೨ ।

ಸುಷುಮ್ನಾ ಸುಷುಮ್ನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವದೊಳಗೆ ಇಡಾ ಮತ್ತು ಪಿಂಗಲಾನಾಡಿಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಇರುವ ವೈಣಾಲತಂತುಸದೃಶ ವಾದ ಒಂದು ನಾಡಿ. ಮುಕ್ತರಾಗುವ ಯೋಗಿಗಳ ಪ್ರಯಾಣಮಾರ್ಗ. ಸುಷು ಇತ್ಯವ್ಯಕ್ತಶಬ್ದ ಮನತಿ—ಮ್ನಾ (ಅಮ್ಯಾಸೇ) । “ಕ:” (೩-೨-೩) । ಆಸನ ಜಾಲಂಧರ ಬಂಧಾದಿ ವಿಧಿಯುಕ್ತ ಪ್ರಾಣಾಯಾಮಗಳಿಂದ ನಾಡೀ ಚಕ್ರವು ನಿರ್ಮಲವಾದಾಗ ಮಾರುತವು ಇಡಾಪಿಂಗಲಾ ನಾಡಿಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಇರುವ ಸುಷುಮ್ನಾನಾಡಿಯ ವದನ ವನ್ನು ಭೇದಿಸಿಕೊಂಡು ಅದರೊಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸುವುದು. “ವಿಧಿವತ್ಪ್ರಾಣಸಯಾಮೇರ್ನಾಚಕ್ರ ವಿಶೋಧಿತೇ । ಸುಷುಮ್ನಾವದನಂ ಭಿತ್ವಾ ಸುಖಾದಿಶತಿ ಮಾರುತ:” ಹೃತಂ ೨-೪೧ ।



ಸುಖೇ ಸುಖೇಣ (ಪುಂ) 1. ಕರಮದೇವ ವೃಕ್ಷ, ಕಮರಿಕೆ ಗಿಡ.

2. ವಿಷ್ಣು. ಸು ಶೋಭನಾ ಶುದ್ಧಪದ್ಧತಮಯೋ ಬಹುಕುಶಲತಯ-  
ವಿಜಯೋಪಕರಣತಯಾ ಸೇನೇವ ಪಂಚೋಪನಿಷತ್ಕಾಯೋ ಯಸ್ಯ |  
“ಪಂಚೋಪನಿಷದ್ಭವತ್ವಾನ್ ಸುಖೇಣ: ಪರಿಕೀರ್ತಿತ:” ಇತಿ  
ನಿರೂಪಿತ: | “ಮಹಾವರಾಹೋ ಗೋವಿಂದ: ಸುಖೇಣ: ಕನಕಾಂಜಲಿ”  
ವಿಂ ಸಂ | 3. ಸುಗ್ರೀವನ ವೈದ್ಯ. “ಸುಖೇಣ: ಕರಮದೇ  
ಸ್ಯಾತ್ ವಿಷ್ಣುಸುಗ್ರೀವವೈದ್ಯಯೋ:” ಮೇದಿಂ | 4. ವೇತಸ ವೃಕ್ಷ,  
ಹೆಬ್ಬೆಗಿಡ. 5. ಶೂರಸೇನ ದೇಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. “ಸಾ  
ಶೂರಸೇನಾಧಿಪತಿ ಸುಖೇಣಮುಹಿಸ್ಯ ಲೋಕಾಂತರಗೀತಕೀರ್ತಿಮ್”  
ರಘುಂ ೬-೪೫ |

ಸುಖೇನಿಕಾ ಸುಖೇಣಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಯು ತಿಗಡೆ. ಸುಖು  
ಸೇನಯಾ ಯಾತಿ — ಸೇನಾ + ಣಿಕ್ “ಅಕ್” (೩-೧-೧೩೪) |  
ಪತ್ವಮ್ (೮-೩-೯೯) | ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” (೫-೩-೭೫) |

ಸುಖು ಸುಖು (ಅವ್ಯಂ) 1. ಸರಿಯಾಗಿ. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ, ಸಂದರ  
ವಾಗಿ. 3. ಅಧಿಕವಾಗಿ, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ, ಬಹಳವಾಗಿ. ಸು  
ತಿಷ್ಠತಿ — ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) “ಕ್ರು:” (೩ಂ ೧-೨೬) |  
“ಸುಖು ಪ್ರಶಂಸನೇಷಿ ಸ್ಯಾದತ್ಯರ್ಥೇ ಚ ನಿಗದ್ಯತೇ” ಮೇದಿಂ |  
“ಸುಖು ಶೋಭಸೇ ಆರ್ಯಮಿತ್ರ, ಏತೇನ ವಿನಯಮಾಹಾತ್ಮಯೇನ”  
೩ಂ ರಾಂ | 4. ಸತ್ಯ, ನಿಷ. “ಪೃಯೋಸ್ತತ್ಸುಖಮಾಕುರ್ಯ ಸಾರಂ  
ಸುಖು ಮಿತಂ ಮಧು” ಭಾಗಂ ೪-೨೨-೧೭ |

ಸುಖಮ ಸುಖಮ (ನಂ) ರಜ್ಜು, ಹೆಗ್ಗ.

ಸುಸಂಯತ ಸುಸಂಯತ (ವಿಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ಸಂಯಮದಿಂದ  
ಕೂಡಿದ, ನಿಯಮಬದ್ಧನಾದ. ಸು+ಸಮ್+ಯಮ (ಉಪರಮೇ)  
“ಕ್ರು:” (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟವನು.

ಸುಸಂಸ್ಕೃತ ಸುಸಂಸ್ಕೃತ (ವಿಂ) 1. ತುಪ್ಪ ವೊದಲಾದುವು  
ಗಳಿಂದ ಸುಸ್ಕಾರವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತುಪ್ಪ ಎಣ್ಣೆ  
ಮುಂತಾದವುಗಳಿಂದ ಒಗ್ಗರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ವ್ಯಂಜನ. 2. ತುಪ್ಪ  
ವೊದಲ ದವುಗಳಿಂದ ಪಾಕಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಎಣ್ಣೆ ತುಪ್ಪ  
ಗಳಿಂದ ಕೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಸುಖು ಸಂಸ್ಕೃತೇ — ಸು+ಸಮ್+ಡುಕ್ರು  
(ಕರಣೇ) “ಕ್ರು:” (೩-೨-೧೦೨) | ಆಪ್ತೇ ಸುಸಂಸ್ಕೃತಾ:  
ಆಪ್ತಾ ಯವಾ: | “ಪ್ರಯಸ್ತಂ ಸ್ಯಾತ್ ಸುಸಂಸ್ಕೃತಮ್” ಅಮಂ |

ಸುಸವಿ ಸುಸವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಾಗಲಗಿಡ.

ಸುಸಹ ಸುಸಹ (ವಿಂ) ಸುಖವಾಗಿ ಸಹಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ,  
ಕಷ್ಟವಿಲ್ಲದೆ ಸಹಿಸಬಹುದಾದ. ಸುಖೇನ ಸಹ್ಯತೇ — ಸು+ಪಹ  
(ಮರ್ಷಣೆ) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬) |

ಸುಸಾರ ಸುಸಾರ (ಪುಂ) 1. ಕೆಂಪು ಕೆಗ್ಗಲಿಮರ. ಸುಖು  
ಸಾರೋಜ್ಯ | 2. ಒಳ್ಳೆಯ ಸತ್ತ್ವ, ಒಳ್ಳೆಯ ಬಲ.  
3. ತಿರುಳು. (ವಿಂ) 4. ಅಧಿಕ ಬಲವುಳ್ಳವನು, ಹೆಚ್ಚು  
ಬಲಶಾಲಿಯಾದವನು.

ಸುಸಿಕತಾ ಸುಸಿಕತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಕ್ಕರೆ.

ಸುಸ್ಥ ಸುಸ್ಥ (ವಿಂ) 1. ಭದ್ರವಾಗಿ ನೆಲೆಸಿರುವವನು. ಸುಖೇನ  
ತಿಷ್ಠತಿ — ಸು+ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) “ಕ್ರು:” (೩-೨-೪) |  
2. ಆರೋಗ್ಯದಿಂದಿರುವವನು, ರೋಗವಿಲ್ಲದೆ ಸುಖವಾಗಿರು  
ವವನು. “ತ್ವತ್ಪಾದಾಂಜಂ ಪ್ರಾಪ್ಯ ಯದ್ವಚ್ಚಯಾಃ ಸುಸ್ಥ: ಶೇತೇ  
ಮೃತ್ಯುರಸ್ಮಾದಪೇತಿ” ಭಾಗಂ ೧೦-೩-೨೭ |

ಸುಸ್ಥಿತಾ ಸುಸ್ಥಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭದ್ರವಾಗಿ ನೆಲೆಸಿರುವಿಕೆ.  
ಸುಸ್ಥಸ್ಯ ಭಾವ: “ತಲ್” (೫-೧-೧೧೯) | 2. ಆರೋಗ್ಯ  
ದಿಂದಿರುವಿಕೆ.

ಸುಸ್ಥಿತ ಸುಸ್ಥಿತ (ವಿಂ) 1. ಭದ್ರವಾಗಿ ನಿಂತಿರುವ, ದೃಢ  
ವಾಗಿ ನೆಲೆಸಿರುವ. 2. ಒಳ್ಳೆಯ ಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರುವ, ನೆಮ್ಮದಿ  
ಯಿಂದ ಮತ್ತು ಸಂತೋಷದಿಂದಿರುವ. ಸುಖು ಸ್ಥಿತ: |  
3. ಆರೋಗ್ಯದಿಂದಿರುವ.

ಸುಸ್ಥಿತಿ ಸುಸ್ಥಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ಸ್ಥಿತಿ. 2. ನೆಮ್ಮದಿ  
ಮತ್ತು ಸಂತೋಷ. ಸುಖು ಸ್ಥಿತಿ: | 3. ಆರೋಗ್ಯ.

ಸುಸ್ಥಿರ ಸುಸ್ಥಿರ (ವಿಂ) ದೃಢವಾದ, ಭದ್ರವಾದ. ಸುಖು  
ಸ್ಥಿರ: | “ನ ಹ್ಯೇಕಸ್ಮಾದ್ಗುರೋರ್ಜನಂ ಸುಸ್ಥಿರಂ ಸ್ಯಾತ್ ಸುಪುಂ-  
ಲಮ್” ಭಾಗಂ ೧೧-೯-೩೧ |

ಸುಸ್ಥಿರಮನ್ಯ ಸುಸ್ಥಿರಮನ್ಯ (ವಿಂ) ಭದ್ರವಾಗಿರುವ  
ನೆಂದು ತಿಳಿದಿರುವವನು. ಸುಸ್ಥಿರಮಾತ್ಮನಾನ್ ಮನ್ಯತೇ — ಮನ  
(ಜ್ಞಾನೇ) “ಖಲ್” (೩-೨-೮೩) | “ಸಂಪದಾ ಸುಸ್ಥಿರಮನ್ಯೋ  
ಭವತಿ ಸ್ವಲ್ಪಯಾಪಿ ಯ:” ಮಾಘಂ ೨-೩೨ |

ಸುಸ್ನಾತ ಸುಸ್ನಾತ (ವಿಂ) 1. ಯಾಗದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಅವಶ್ಯಕ  
ಸ್ನಾನಮಾಡಿದವನು. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸ್ನಾನಮಾಡಿದವನು.  
ಸುಖು ಸಮ್ಯಕ್ ಸ್ನಾತ: |

ಸುಹಿತ ಸುಹಿತ (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಹಿತವಾಗಿರುವ. 2. ಬಹಳ  
ತೃಪ್ತಿಹೊಂದಿರುವ. ಸು ಡುಖಾತ್ (ಧಾರಣಾಪೂರ್ಣಯೋ:  
“ಕ್ರು:” (೩-೪-೭೨) | “ಸುಹಿತೋಸ್ತಿಹಿತೇ ತೃಪ್ತೇ” ವಿಷ್ಣುಂ |  
3. ಅನುಕೂಲವಾಗಿರುವ, ಪ್ರಯೋಜನಕರವಾದ.

ಸುಹಿತಾ ಸುಹಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಯ ಒಂದು ಜ್ವಾಲೆ.

ಸುಹೃದ್ ಸುಹೃದ್ (ಪುಂ) ಮಿತ್ರ, ಗೆಳೆಯ. ಸು ಶೋಭನಂ ಹೃದಯಂ  
ಯಸ್ಯ — ಹೃದಯಸ್ಯ ಹೃದ್ರಾವೋ ನಿಪಾತ್ಯತೇ (೫-೪-೧೫೦) |  
“ಸುಹೃದಿ ಗುಣನಿಶಾಸೇ ಪ್ರೇಯಸಿ ಪ್ರಾಣನಾಥೇ ಕಥಮಿವ ಸಹಪಾಂಸು-  
ಕ್ರೋಡನಪ್ರೋಢಸಹ್ಯೇ” ಮಾಲತೀಂ ೯-೨೮ | “ಛಂದಾನುವೃತ್ತಿ-  
ದು:ಸಾಘ್ಯಾ: ಸುಹೃದೋ ವಿಮನೀಕೃತಾ:” ಮಾಘಂ ೨-೧೦೫ |

ಸುಹೃದಯ ಸುಹೃದಯ (ವಿಂ) ಶುದ್ಧವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ  
ವನು, ಕಷ್ಟವಿಲ್ಲದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು, ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ  
ಹೃದಯವುಳ್ಳವನು. ಸು ಶೋಭನಂ ಹೃದಯಂ ಯಸ್ಯ | ಮಿತ್ರತ್ವ



ಎವಕ್ಷಿಯಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಹೃದ್ಯಾವಲ್ಲ. "ಹೃದ್ಯಾಃ ಸುಹೃದಯಃ" ಅಮಂ ।

ಸೂಕ ಸೂಕ (ಪುಂ) 1. ಬಾಣ, ಶರ. 2. ಉತ್ಪಲ, ಕನ್ನೆದಿಲೆ.

3. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. "ಸೂಕೋ ಬಾಣಾನಿಲೋತ್ಪಲೇ" ವಿಶ್ವಂ ।

ಸೂಕರ ಸೂಕರ (ಪುಂ) ವರಾಹ, ಹಂದಿ. ಷಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭ-ವಿಮೋಚನೆ) "ವಿವಿ" (ವಾಂ ೩-೩-೧೦೮) । ಸುವಂ ಪ್ರಸವಂ ಕರೋತಿ—ಡುಕ್ತು (ಕರಣೆ) "ಠಃ" (೩-೨-೨೦) । ಯದಾ ಸು ಇತಿ ಶಬ್ದಂ ಕರೋತಿ "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) ।

ಸೂಕರೀ ಸೂಕರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ತ್ರೀವರಾಹ, ಹೆಣ್ಣು ಹಂದಿ. ಸೂಕರ ಜಾತಿಂ "ಡೀಫ್" (೪-೧-೬೩) । "ಪತಲೋಕಂ ನ ಸಾ ಯತಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಿ ಯಾ ಸುರಾಂ ಪಿಬೇತ್ । ಇಹೇವ ಸಾ ಶುನಿ ಗೃಧ್ರಿ ಸೂಕರೀ ಚೋಪಜಾಯತೇ" ಯಾಜಂ ೩-೨೫ ।

ಸೂಕ್ತ ಸೂಕ್ತ (ನಂ) 1. ವೇದೋಕ್ತವಾದ ಸೂತ್ರರೂಪ ಮಂತ್ರ. ಪುರುಷಸೂಕ್ತಂ ಶ್ರೀಸೂಕ್ತಂ ಭೂಸೂಕ್ತಂ ಅಗ್ನಿಸೂಕ್ತಂ ಇತ್ಯಾದಿ. (ನಂ) 2. ಮಧುರವಾದ ಮಾತು, ಅಮೃತ ವನ್ನು ಸುರಿಸುವ ಮಾತು. "ಮಾಧುರ್ಯಂ ಮಧುಬಿಂದುನಾ ರಚಯಿತುಂ ಕ್ಷೀರಾಮ್ಬುಧೇರಾಹತೇ ಮೂಲಿನ್ ಯಃ ಪ್ರತಿನೇತುಮಿच्छತಿ ಬಲಾತ್ ಸೂಕ್ತಃ ಸುಧಾಸ್ಯಂದಿಭಿಃ" ಭರ್ತಂ ೧-೬ । (ವಿಂ) 3. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮಧುರವಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಹಿತವಾಗಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ. ಸುಷ್ಠು ಉಕ್ತಂ ।

ಸೂಕ್ತಾ ಸೂಕ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಾರಿಕಾಪಕ್ಷಿ.

ಸೂಕ್ಷಮ ಸೂಕ್ಷ್ಮ (ಪುಂ) 1. ಕಡಕದ ಬೀಜ, ಚಿಲ್ಲದ ಬೀಜ. 2. ಅಣು, ಅತಿ ಸಣ್ಣ ಭಾಗ. ಸೂಚ್ಯತೇ—ಸೂಚ (ಪೈಶುನ್ಯ) "ಸ್ಮತ್" (ಉಂ ೪-೧೭೭) । "ನ ತಸ್ಯಾಃ ಸೂಕ್ಷಮಪ್ಯಸ್ತಿ ಯದ್ಗಾತ್ರೇ ರೂಪಸಂಪದಾ । ನಿಯುಕ್ತಾ ಯತ್ರ ವಾ ದೃಷ್ಟಿಃ ನ ಸಜ್ಜತಿ ನಿರೀಕ್ಷಿತಾಂ" ಗಾಂ ಆದಿಂ ೨೧೦-೧೬ । (ನಂ) 3. ಕೈತವ, ಕಪಟ, ಮಂಚನೆ. 4. ಅಧ್ಯಾತ್ಮ, ಪರಬ್ರಹ್ಮ ವಿಷಯ. 5. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಒಬ್ಬನ ನೇತ್ರಾದಿ ಚೇಷ್ಟೆಯಿಂದ ಅವನ ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ತಿಳಿದು ಅದಕ್ಕೆ ಉತ್ತರವಾಗಿ ತನ್ನ ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ತಿಳಿಸಲು ಅಭಿಪ್ರಾಯ ಸೂಚಕವಾಗಿ ಮಾಡುವ ಚೇಷ್ಟೆ (ಸಂಜ್ಞೆ). "ಸೂಕ್ಷಮಂ ಪರಾಶಯಾಭಿಜೇತರಸಾಕೂತಚೇಷ್ಟಿತಮ್ । ಮಯಿ ಪಶ್ಯತಿ ಸಾ ಕೇಶಃ ಸೀಮಂತಮಣಿಮಾವೃಣೋತ್" ಚಂದ್ರಾಂ । (ವಿಂ) 6. ಅಲ್ಪವಾದ, ಕೊಂಚವಾದ, ಸಣ್ಣದಾದ. "ಸೂಕ್ಷಮಾಭಿರಾಮ-ನಿಜದೀಪಿತಿಸೂತ್ರಲಂಬಿ ಪರ್ಯಂತಲಾನತಿಮಿರಾಲಕದರ್ಶನೀಯಃ" ಯಾದಂ ೧೯-೪೪ । "ಸೂಕ್ಷಮಂ ಸ್ಯಾತ್ ಕೇತವೇಽಧ್ಯಾತ್ಮೇ ಪುಸ್ಯಣಿ ತ್ರಿಫಲಾಲ್ಪಕೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಸೂಕ್ಷಮಕೃಷ್ಣಫಲಾ ಸೂಕ್ಷ್ಮಕೃಷ್ಣಫಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಂಬು ವೃಕ್ಷ, ನೇರಳೆ ಮರ. ಸೂಕ್ಷಮಂ ಕೃಷ್ಣಂ ಚ ಫಲಂ ಯಸ್ಯಾಃ ।

ಸೂಕ್ಷಮತಂಡುಲ ಸೂಕ್ಷ್ಮತಂಡುಲ (ಪುಂ) ಗಸಗಸೆ. ಸೂಕ್ಷಮ ತಂಡುಲಂ ಬೀಜಂ ಯಸ್ಯ । -ತಂಡುಲಾ-ತಂಡುಲಾ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಪ್ಪಲಿ.

ಸೂಕ್ಷಮದರ್ಶಿನ್ ಸೂಕ್ಷ್ಮದರ್ಶಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಸೂಕ್ಷ್ಮ ವಾಗಿ ನೋಡುವವನು, ಚುರುಕುದೃಷ್ಟಿಯುಳ್ಳವನು. ಸೂಕ್ಷಮಂ ಪಶ್ಯತಿ—ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣೆ) "ಗಿಣಿಃ" (೩-೨-೭೮) । 2. ಬಹಳ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿ ವಿಚಾರಮಾಡುವವನು, -ವಿಮರ್ಶಿಸುವವನು, ಬಹಳ ಬುದ್ಧಿಶಾಲಿಯಾದವನು. "ನ ವಿದुर್ಯಸ್ಯ ಭವನಮಾದಿತಯಾಃ ಸೂಕ್ಷಮದರ್ಶಿನಃ । ಸ ಕಥಂ ನರಮಾತ್ರೇಣ ಶಕ್ಯೋ ಜ್ಞಾತುಂ ಸತಾಂ ಗತಿಃ" ಭಾಂ ।

ಸೂಕ್ಷಮಪತ್ರ ಸೂಕ್ಷ್ಮಪತ್ರ (ಪುಂ) 1. ಕೊತ್ತುಂಬರಿ ಬೀಜ, ಧನಿಯ. ಸೂಕ್ಷಮಾಣಿ ಪತ್ರಾಣಿ ಯಸ್ಯ । 2. ಕಾಡುಜೀರಿಗೆ. 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಸಾಸವೆ. 4. ಕೆಂಪು ಕಬ್ಬು.

ಸೂಕ್ಷಮಪಿಪ್ಪಲಿ ಸೂಕ್ಷ್ಮಪಿಪ್ಪಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡು ಹಿಪ್ಪಲಿ. ಸೂಕ್ಷಮಾ ಪಿಪ್ಪಲಿಃ ।

ಸೂಕ್ಷಮಬೀಜ ಸೂಕ್ಷ್ಮಬೀಜ (ಪುಂ) ಗಸಗಸೆ ಗಿಡ.

ಸೂಕ್ಷಮಬುದ್ಧಿ ಸೂಕ್ಷ್ಮಬುದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಚುರುಕುಬುದ್ಧಿ, ತೀಕ್ಷ್ಣಬುದ್ಧಿ. (ವಿಂ) 2. ತೀಕ್ಷ್ಣಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು, ಚುರುಕುಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು, ಬಹಳ ಬುದ್ಧಿವಂತ. ಸೂಕ್ಷಮಾ ಬುದ್ಧಿಃ । ಸೂಕ್ಷಮಾ ಬುದ್ಧಿರ್ಯಸ್ಯ ವಾ । -ಮತಿಃ-ಮತಿಃ.

ಸೂಕ್ಷಮಮಕ್ಷಿಕಾ ಸೂಕ್ಷ್ಮಮಕ್ಷಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಶಕ, ಸೊಳ್ಳೆ. ಸೂಕ್ಷಮಾ ಮಕ್ಷಿಕಾ ಮಕ್ಷಿಕಾಕೃತಿಯಸ್ಯ ।

ಸೂಕ್ಷಮವಸ್ತ್ರ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಸ್ತ್ರ (ನಂ) ಬಹಳ ತೆಳುವಾದ ಮತ್ತು ನೂಣುವಾದ ವಸ್ತ್ರ.

ಸೂಕ್ಷಮಶಾಖ ಸೂಕ್ಷ್ಮಶಾಖ (ಪುಂ) ಭಾರಂಗಿ ಗಿಡ.

ಸೂಕ್ಷಮಾ ಸೂಕ್ಷ್ಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಣ್ಣ ಜಾತಿಯ ಯಾಲಕ್ಕಿ. 2. ಕಾಡುಮಲ್ಲಿಗೆಯ ಒಂದು ಭೇದ. 3. ಮರಳು.

ಸೂಕ್ಷಮಲಾ ಸೂಕ್ಷ್ಮಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣ್ಣ ಜಾತಿಯ ಯಾಲಕ್ಕಿ.

ಸೂಚ ಸೂಚ (ಪುಂ) ದರ್ಭೆಯ ಅಗ್ರಭಾಗ. ಸಿಂಹ್ಯತಿ ಚರಣೌ—ಪಿಶು (ತನ್ತುಜ್ಞತಾನೆ) "ಚಟ್" ಧಾತೌಃ ಡೇಹತ್ವಂ ಚ (ಉಂ ೪-೯೩) । ಸೂಚೋ ದರ್ಭಾಡ್ಕುರಃ ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ಸೂಚಕ ಸೂಚಕ (ಪುಂ) 1. ದುರ್ಜನ, ಚಾಡಿಕೋರ, ಚಾಡಿ ಹೇಳುವವನು. ಸೂಚ್ಯತಿ—ಸೂಚ (ಪೈಶುನ್ಯ) + ಣಿಚ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । "ಲೋಪಮದೀ ತೃಣಚ್ಛೇದಿ ತಲಖಾದೀ ಚ ಯೋ ನರಃ । ಸ ವಿನಾಶಂ ಬ್ರಜತ್ಯಾಶು ಸೂಚಕೋಽ-ಶುಚಿರೇವ ಚ" ಮನುಂ ೪-೭೧ । 2. ಸೂಚನೆಕೊಡುವವನು, ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವವನು. 3. ಸೂಚಿ, ಬಟ್ಟೆಯನ್ನು ಹೊಲಿ



ಯುವ ಒಂದು ಸಾಧನ. — ಪಿವು (ತನ್ಮು  
ಸಂತಾನೇ) “ಚಡ್” ಪಾತಾ. ಟ: ಉ ಚ (೩೦-೧೩) ।  
ಸ್ವಾರ್ಥ ಕನ್ । 4. ಶಿಕ್ಷಕ. ಉಪಾಧ್ಯಾಯ, ಬೋಧಕ.  
5. ಶ್ವಾಸ, ನಾಯಿ. 6. ಬುದ್ಧ. 7. ಮಾರ್ಜಾರ, ಬಕ್ಕ.  
8. ಪಿಶಾಚಿ. 9. ಕಥೆ ಹೇಳುವವನು. 10. ವಾಯುಸ.  
ಕಾಗೆ. “ಸೂಚಕ: ಶುನಿ ದುರ್ಜನೇ । ಕಥಕೇ ಸೀವನದ್ರವ್ಯೇ ಮಾಜರಿ  
ವಾಯುಸೇಪಿ ಚ” ಹೇಮಂ । 11. ಸೂತ್ರಧಾರ. 12. ಸಣ್ಣ  
ಅಕ್ಕಿ.

**ಸೂಚನ ಸೂಚನೆ (ನಂ)** ಸೂಚಿಸುವುದು, ಸೂಚನೆ ಕೊಡು  
ವುದು, ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವುದು, ಸಂಕ್ಷೇಪವಾಗಿ ಹೇಳುವುದು.  
ಸೂಚ (ಪೆಶುನ್ಯೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) । “ಮಜ್ಜಿ-  
ಸೂಚನವಿಧಿ ವಿಶಾರದೋ ನಾರದೋ ಮುನಿರದರ್ಶನಂ ಯಯಿ”  
ಕಥಾಸಂ ।

**ಸೂಚನಾ ಸೂಚನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಅಭಿನಯ. 2. ಸೂಚನೆ,  
ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವುದು. 3. ದೃಷ್ಟಿ. 4. ಉಪದೇಶ,  
ಬೋಧನೆ. 5. ಜ್ಞಾಪಿಸುವುದು, ನೆನಪುಂಟುಮಾಡುವುದು.  
ಸೂಚ (ಪೆಶುನ್ಯೆ) + ಣಿಚ್ “ಯುಚ್” (೩-೩-೧೦೭) । “ಯತ್ರ  
ಸ್ಯಾದ್ಭಕ್ತು ಏಕಸ್ಮಿನ್ ಅಜ್ಞಾನಾಂ ಸೂಚನಾಖಿಲಾ । ತದ್ಭಕ್ತುಮುಖ-  
ಮಿತ್ಯಾಹು: ಬಿಜಾರ್ಥವ್ಯಾಪಕಂ ಚ ತತ್” ಸಾಂ ದಂ ೬-೫೯ ।  
6. ಸುಳಿವು. 7. ರಂಧ್ರಮಾಡುವುದು.

**ಸೂಚನೀಯ ಸೂಚನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಸೂಚಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ಸೂಚಿಸಬೇಕಾದ, ಸಂಗ್ರಹವಾಗಿ ತಿಳಿಸಬೇಕಾದ.  
3. ತಿಳಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಸೂಚ (ಪೆಶುನ್ಯೆ) + ಣಿಚ್  
“ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । “ತಥ್ಯ:” । -ಯಿತವ್ಯ:  
-ಯಿತವ್ಯ:.

**ಸೂಚಯತ್ ಸೂಚಯತ್ (ವಿಂ)** 1. ಸೂಚಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ತಿಳಿವಳಿಕೆ ಕೊಡುತ್ತಿರುವ. ಸೂಚ (ಪೆಶುನ್ಯೆ) + ಣಿಚ್ “ಸತು”  
(೩-೨-೧೨೪) । 2. ಸೂಚಿಸುತ್ತಿರುವ, ಲಕ್ಷಣವನ್ನು  
ತೋರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸ್ವಭಾವವನ್ನು ಪ್ರಕಟಿಸುತ್ತಿರುವ.  
“ಪ್ರಕಟಂ ಮೃದು ನಾಮ ಜಲ್ಪತ: ಪಠ್ಯಂ ಸೂಚಯತೀರ್ಥಮನ್ತರಾ”  
ಮಾಘಂ ೧೬-೧೯ । 3. ನೆನಪನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುತ್ತಿರುವ,  
ಜ್ಞಾಪಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಬೋಧಿಸುತ್ತಿರುವ, ಉಪದೇಶಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. 5. ಸುಳಿವು ಕೊಡುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಜಿಪ್”  
(೪-೧-೬) । -ಯಂತಿ-ಯಂತಿ.

**ಸೂಚಿ(ವಿ) ಸೂಚಿ(ವಿ) (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸೂಚಿ, ಬಟ್ಟೆ,  
ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಹೊಲಿಯುವ ಸಾಧನ. ಸೂಚಯತೀರ್ಥಯಾ  
-ಸೂಚ (ಪೆಶುನ್ಯೆ) + ಣಿಚ್ “ಃ” (೩೦ ೪-೧೩೮) ।  
ವಾ “ಜಿಪ್” (೧೦ ೪-೧-೪೫) । 2. ರಂಧ್ರ ಕೊರೆಯುವ

ಬೈರಿಗೆ. 3. ಒಂದು ವಿಧ ಅಂಗಿಕ ಅಭಿನಯ. 4. ಸುರತದ  
ಒಂದು ಭೇದ. “ಸೂಚಿ: ಸುರತಭೇದಭಿನಯೇ ವಯನಸಾಧನೇ”  
ನಾನಾಭರಂ । 5. ಬಹಳ ಚೂಪಾದ ಅಗ್ರಭಾಗ, ಬಹಳ  
ಮೊನಚಾದ ತುದಿ. 6. ಒಂದು ವಿಧ ಸೇನಾವ್ಯೂಹ ರಚನೆ.  
“ದಂಡವ್ಯೂಹೇನ ತನ್ಮಾರ್ಗಂ ಯಾಪಾತು ಶಕತೇನ ವಾ । ವರಾಹ-  
ಮಕರಾಭ್ಯಾಂ ವಾ ಸೂಚ್ಯಾ ವಾ ಗಢೇನ ವಾ” ಮನುಂ ೭-೧೮೭ ।  
7. ಅನುಕ್ರಮಣಿಕೆ. ವಿಷಯಗಳ ಅನುಕ್ರಮವನ್ನು ತೋರಿ  
ಸುವ ಪಟ್ಟಿ, ಆಕಾರಾದಿ ಪದಗಳ ಅಥವಾ ಶ್ಲೋಕಗಳ  
ಕ್ರಮ ಪಟ್ಟಿ. 8. ಶಲಾಕೆ, ಶಿಖೆ, ಜ್ವಾಲೆಯಂತಿರುವ ಕಾಂತಿ.  
“ಪರಾಮಿಮಾಂಶೋ ನ ತವಾಸ್ತಿ ಕ: ಕರಂ ಪ್ರಸಾರಯೇತ್ ಪನ್ನಗರತನ-  
ಸೂಚಯೇ” ಕುಮಾಂ ೫-೪೩ । 9. ಕೇತಕೀಪುಷ್ಪ, ಕೇದಗೆ  
ಪುಷ್ಪ. 10. ವಿಷಯಾನುಕ್ರಮವಾಗಿ ರಚಿಸಿದ ಪುಸ್ತಕ  
ಗಳ ಪಟ್ಟಿ (Catalogue).

**ಸೂಚಿಕ ಸೂಚಿಕ (ಪುಂ)** ದರ್ಜೆಯವನು, ಹೊಲಿಗೆ ಕಾರ್ಯ  
ಮಾಡುವವನು. “ಹಸ್ತೇ ನಾಪಿತವಾಕ್ರಿಕಚೌರಭಿಷಕ್-  
ಸೂಚಿಕಾ ದ್ವಿಪಗ್ರಾಹಾ: । ಬಂಧಕಯ: ಕೌಸಲಕಾ ಮಾಲಾಕಾರಾಶ್ಚ  
ಪಿಡಯಂತೇ” ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೦-೯ । -ಕಾ-ಕಾ. 1. ಸೂಚಿ,  
ಬಟ್ಟೆ ಹೊಲಿಯುವ ಸಾಧನ. ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್” । 2.  
ಅನೆಯ ಸೊಂಡಿಲು.

**ಸೂಚಿಕಾಧರ ಸೂಚಿಕಾಧರ (ಪುಂ)** ಗಜ, ಆನೆ.

**ಸೂಚಿಕಾಮುಖ ಸೂಚಿಕಾಮುಖ (ನಂ)** ಶುಖ.

**ಸೂಚಿತ ಸೂಚಿತ (ವಿಂ)** 1. ರಂಧ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತೂತು  
ಕೊರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಸೂಚ (ಪೆಶುನ್ಯೆ) + ಣಿಚ್ “ಕ:”  
(೩-೨-೧೦೨) । 2. ಸೂಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,  
ನೆನಪುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸಂಗ್ರಹವಾಗಿ ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
“ಅಜ್ಞಾಂತೇ ಸೂಚಿತ: ಪಾತ್ರ: ತದ್ಭಕ್ತಸ್ಯಾವಿಭಾಗತ: । ಯತ್ರಾಜ್ಞೋ-  
ವತರತ್ಯೇಷೋಜ್ಞಾವತಾರ ಇತಿ ಸ್ಮೃತ:” ಸಾಂ ದಂ ೬ ।  
4. ಬೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಪದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 5. ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ,  
ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ತಮಸೀವ ಹಸ್ತಪರಿಮಾಂಸಸೂಚಿತಾ:” ಮಾಘಂ  
೧೩-೫೩ ।

**ಸೂಚಿಪುಷ್ಪ ಸೂಚಿಪುಷ್ಪ (ಪುಂ)** ತಾಳೆಮರ, ಕೇತಕೀ ವೃಕ್ಷ.  
ಸೂಚ್ಯಾಕಾರಂ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ ।

**ಸೂಚಿಮಿತ್ರ ಸೂಚಿಮಿತ್ರ (ವಿಂ)** (ಕುಟ್ಮಲದ) ಅಗ್ರಭಾಗ  
ದಲ್ಲಿ ಏಕಸಿತವಾಗಿರುವ, (ಮೊಗ್ಗಿನ) ತುದಿಯಲ್ಲಿ ಅರಳಿ  
ರುವ. ಸೂಚಿಮಿತ್ರ ಮಿತ್ರಾನಿ ವಿಕಸಿತಾನಿ । “ಪಾಣ್ಯ-  
ಚ್ಚಾಯೋಪವನವೃತಯ: ಕೇತಕ: ಸೂಚಿಮಿತ್ರ:” ಮೇಘಂ ೧-೨೩ ।

**ಸೂಚಿಮೇಧ ಸೂಚಿಮೇಧ (ವಿಂ)** 1. ಬಹಳ ದಟ್ಟವಾದ,  
-ನಿಬಿಡವಾದ. 2. ಸೂಚಿಯ ತುದಿಯಿಂದ ಭೇದಿಸ



ಲೃಡುವ, ಸೂಚಿಯ ಮೊನೆಯಿಂದ ಭೇದಿಸಬಹುದಾದ. ಸುಚಿಮಿ: ಭೇದಮ್. "ಗಂಠಂತೀನಾಂ ರಮಣವಸತಿ ಯೋಷಿತಾಂ ತತ್ರ ನಕ್ತಂ ಕಡಾಲೋಕೇ ನರಪತಿಪಥೇ ಸುಚಿಮೇವೇಸ್ತಮೋಭಿ:" ಮೇವಂ ೧-೩೭. 3. ಮುಟ್ಟಬಹುದಾದ, ಮುಟ್ಟಿ ತಿಳಿಯ ಬಹುದಾದ, ಸ್ಪರ್ಶದಿಂದ ವೇದ್ಯವಾಗುವ.

ಸುಚಿಮುಖ ಸೂಚಿಮುಖ (ಪುಂ) 1. ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. 2. ಬಿಳಿಯ ದರ್ಭೆಹುಲ್ಲು. (ನಂ) 3. ವಜ್ರ. (ವಿಂ) 4. ಮೊನ ಚಾದ ಅಗ್ರಭಾಗವುಳ್ಳ, ಚೂಪಾದ ತುದಿಯುಳ್ಳ. ಸುಚಿವತ್ ಸೂಕ್ಷಮಂ ಮುಖಂ ಯಸ್ಯ.

ಸುಚಿರೋಮನ್ ಸೂಚಿರೋಮನ್ (ಪುಂ) ವರಾಹ, ಹಂದಿ. ಸುಚಿವತ್ ರೋಮಾಣ್ಯಸ್ಯ.

ಸುಚಿಶಾಲಿ ಸೂಚಿಶಾಲಿ (ಪುಂ) ಸಣ್ಣ ಜಾತಿಯ ಬತ್ತ.

ಸೂಚ್ಯ ಸೂಚ್ಯ (ವಿಂ) 1. ತಿಳಿಯುವದಿಸಬಹುದಾದ. 2. ತಿಳಿಯುವದಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಜ್ಞಾಪಿಸ ಬಹುದಾದ. ಸೂಚ (ಪೇಶುನ್ಯ) "ಘತ್" (೩-೧-೧೨೪) 1. 5. ಜ್ಞಾಪಿಸಬೇಕಾದ. 6. ತಿಳಿಸಬೇಕಾದ.

ಸೂತ ಸೂತ (ಪುಂ) 1. ಸಾರಥಿ, ರಥವನ್ನು ನಡೆಸುವವನು. ಷ (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) 1. "ಸಯತನಸೂತಾಯತ-ರಶಿಮಭುನ್ಯತೀವಾಗ್ರಸಂಸಕ್ತಯುಗೈಸ್ತುರಜ್ಞ:" ಮಾಧಂ ೩-೬೮. 2. ಪಾರದ, ಪಾದರಸ. 3. ಬಡಗಿ, ಮರದ ಕೆಲಸದವನು. 4. ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಂದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. "ಕ್ಷತ್ರಿಯಾಽಪ್ರಕನ್ಯಾಃ ಸೂತೋ ಭವತಿ ಜಾತೀತ:" ಮನುಂ ೧೦-೧೧. "ಸೂತೋ ವಾ ಸೂತಪುತ್ರೋ ವಾ ಯೋ ವಾ ಕೋ ವಾ ಭವಾಮ್ಯಹಮ್" ವೇಣೀಂ ೩-೩೩. 5. ವೈಶ್ಯನಿಂದ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಸ್ತ್ರೀಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಬ್ಬ ದೇಶಕ್ಕೆ ಜಾತಿಯವನು. ಸೂತಿ ಪಾಠಕ, ಹೊಗಳಬಹುದು. "ಸೂತಾತ್ಮಜಾ: ಸವಯಸ: ಪ್ರಥಿತ-ಪ್ರಬೋಧಂ ಪ್ರಾಬೋಧಯತುಷಸಿ ವಾಗ್ಗಿರಿದಾರವಾಚ:" ರಘುಂ ೫-೬೫. 6. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. 7. ಮುಷ್ಕಿಗಳಿಗೆ ಪುರಾಣಗಳನ್ನು ಹೇಳಿದ ಒಬ್ಬ ಮಹರ್ಷಿ. (ವಿಂ) 8. ಹುಟ್ಟಿದ, ಉತ್ಪತ್ತಿ ಹೊಂದಿದ. 9. ಪ್ರೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಂದಕ್ಕೆ ನಡೆಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸೂತಸ್ತು ಸಾರಥೀ ತಕ್ಷಿಣ ಕ್ಷತ್ರಿಯಾದ್ಬ್ರಾಹ್ಮಣೀ-ಸುತೇ | ವಂದಿಪಾರದಯೋ: ಪುಂಸಿ ಪ್ರಸುತೇ ಪ್ರೇರಿತೇ ತ್ರಿಘ್ನ" ಮೇದಿಂ. 10. ಸೂತಕ ಸೂತಕ (ಪುಂ) 1. ಪಾರದ, ಪಾದರಸ. ಸೂತ ಸ್ವಾರ್ಥ ಕನ್. (ನಂ) 2. ಹುಟ್ಟುವುದು, ಜನ್ಮ (ಪಡೆಯುವುದು), ಉತ್ಪತ್ತಿ (ಹೊಂದುವುದು). ಷಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಪ್ರಸವೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) 1. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" 1. 3. ಜನನಾ ಶಿಷ್ಟ, (ಜ್ಞಾತಿಗಳಲ್ಲಿ) ಪುತ್ರ ಜನನದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅಶಿಷ್ಟ. ಸೂತಕಂ ಜನ್ಮ ಕಾರಣವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಅಚ್"

(೫-೨-೧೨೭) 1. 4. ಮೃತಾಶಿಷ್ಟ. "ಸರ್ವಂ ಗೋತ್ರಮಸಂಸ್ಪೃಶ್ಯ ತತ್ರ ಸ್ಯಾತ್ಸೂತಕೇ ಸತಿ" 1. ಅಶಿಷ್ಟವು ಪ್ರತಿಬಂಧಕವಾಗ ದಿರುವ ಪ್ರಕರಣಗಳು. ವ್ರತ ಯಜ್ಞ ವಿವಾಹ ಶ್ರಾದ್ಧ ಹೋಮ ಪೂಜೆ ಜಪ ಇವು ಪ್ರಾರಂಭವಾಗಿದ್ದಲ್ಲಿ ಸೂತಕವು (ಅದು ಪೂರ್ತಿಯಾಗುವವರೆಗೂ) ಪ್ರತಿಬಂಧಕವಾಗುವುದಿಲ್ಲ. (ಅಶಿಷ್ಟವಿಲ್ಲ). "ವ್ರತಯಜ್ಞವಿವಾಹೇಷು ಶ್ರಾದ್ಧೇ ಹೋಮೇಶ್ವನೇ ಜಪೇ | ಆರಾಧ್ಯೇ ಸೂತಕಂ ನ ಸ್ಯಾದನಾರಾಧ್ಯೇ ತು ಸೂತಕಮ್" ತಿಥ್ಯಾದಿತತ್ವಮ್. 5. ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರರ ಗ್ರಹಣ, ಉಪರಾಗ. "ಶ್ಯಹಂ ನ ಕೀರ್ತಯೇತ್ ಬ್ರಹ್ಮ ರಾಜೋ ರಾಹೋಶ್ಚ ಸೂತಕೇ" ಮನುಂ ೪-೧೧೦.

ಸೂತಕಾ ಸೂತಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸದ್ಯ: (ಆಗತಾನೆ) ಪ್ರಸವಿಸಿದ ಹೆಂಗಸು. ಷಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಪ್ರಸವೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) 1. "ದಾಪ್" 1. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" 1. ವಾ ಇತ್ವಮ್ (ವಾಂ ೭-೩-೪೪) 1. ಪಕ್ಷಿ ಸುತಿಕಾ ಸೂತಿಕಾ. "ದಿವಾಕೀರ್ತಿಮುದಕಯಾಂ ಚ ಪತಿಸ್ತ ಸುತಿಕಾಂ ತಥಾ" ಮನುಂ ೫-೮೫.

ಸೂತಕಾಗೃಹ ಸೂತಕಾಗೃಹ (ನಂ) ಹೆಂಗೆಯ ಮನೆ, ಪ್ರಸವಿ ಸುವ ಮನೆ. ಸೂತಕಾಃ ಗೃಹಮ್.

ಸೂತತನಯ ಸೂತತನಯ, -ಪುತ್ರ -ಪುತ್ರ, -ಸುತ -ಸೂತ, -ಸುನು -ಸೂನು (ಪುಂ) ರಾಧೇಯ, ಕರ್ಣ. ಸೂತಸ್ಯ ತನಯ: ಪುತ್ರ: ಸುತ: ಸುತುರ್ವಾ. "ಸರ್ವಮಾನಸ್ತು ಪಾರ್ಥೇನ ಸೂತಪುತ್ರೋಽಪ್ಯಮರ್ಷಣ:" ಭಾಂ ಆದಿಂ.

ಸೂತರಾಜ್ ಸೂತರಾಜ್ (ಪುಂ) ಪಾರದ, ಪಾದರಸ. ಸೂತ: ಸನ್ ರಾಜತೇ-ರಾಜ್ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕ್ವಿಪ್" 1.

ಸೂತಾ ಸೂತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸದ್ಯ: ಪ್ರಸವಿಸಿದ ಹೆಂಗಸು.

ಸೂತಿ ಸೂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜನ್ಮ, ಹುಟ್ಟು, ಉತ್ಪತ್ತಿ. ಷಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಪ್ರಸವೇ) "ಕ್ವಿನ್" (೩-೩-೧೧೪) 1. 2. ಸೋಮರಸ ವನ್ನು ಹಿಂಡುವ ಸ್ಥಳ. ಷಡ್ (ಅಭಿಷೇಕೇ) ಅಧಿಂ "ಕ್ವಿನ್" (೩-೩-೧೧೪) 1. ಅಭಿಷೇಕಯತೇ ಕಂಡಯತೇ ಸೋಮಾತ್ರ 1. 3. ವಸ್ತ್ರ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಹೊಲಿಯುವುದು. 4. ಉತ್ಪತ್ತಿ ಸ್ಥಾನ. "ಸಹಸೋಪಗತ: ತವಿಸ್ಮಯಂ ತಪಸಾಂ ಸೂತಿರಸೂತಿ-ರಾಪದಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೫೬. 5. ಸಂತಾನ.

ಸೂತಿಕಾ ಸೂತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸದ್ಯ: ಪ್ರಸವಿಸಿದ ಹೆಂಗಸು. ಷಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಪ್ರಸವೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) 1. ಸೂತಾ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" 1. ವಾ ಇತ್ವಮ್ (ವಾಂ ೭-೩-೪೪) 1.

ಸೂತಿಕಾಗೃಹ ಸೂತಿಕಾಗೃಹ (ನಂ) ಪ್ರಸವದ ಮನೆ, ಹೆಂಗೆಯ ಮನೆ. ಸೂತಿಕಾಃ ಗೃಹಮ್. ಸೂತಿಕಾಗೃಹದ ಆಕಾರ : ಎಂಟು ಮೊಳ ಉದ್ದವಾಗಿಯೂ ನಾಲ್ಕು ಮೊಳ ಅಗಲವಾಗಿಯೂ ಇದ್ದು ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಮತ್ತು ಉತ್ತರ



ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ದ್ವಾರಗಳಿರಬೇಕು. "ಅಷ್ಟಹಸ್ತಾಯತಃ ಚಾರ  
ಚತುರ್ಹಸ್ತವಿಶಾಲಕಮ್ । ಪ್ರಾಚೀದ್ವಾರಮುದ್ವಾರಂ ವಿದ್ಯಾತ್  
ಸ್ಮೃತಿಕಾಗೃಹಮ್" ಭಾವಪ್ರಂ । -ಗೃಹಮ್ -ಗೃಹಮ್, -ಭವನಮ್  
-ಭವನಮ್.

ಸ್ಮೃತಿಗೃಹ ಸೂತಿಗೃಹ, -ಗೃಹ -ಗೃಹ (ನಂ) ಪ್ರಸವಿಸುವ  
ಮನೆ, ಹರಿಗೆಯ ಮನೆ. ಸ್ಮೃತಾಃ ಗೃಹಮ್ ಗೃಹಂ ವಾ ।

ಸ್ಮೃತಿಮಾಸ ಸೂತಿಮಾಸ (ಪುಂ) ಹುಟ್ಟಿದ ತಿಂಗಳು. ಸ್ಮೃತಃ  
ಪ್ರಸವಸ್ಯ ಮಾಸಃ । "ಸ್ಮೃತಿಮಾಸೋ ವೈಜನನಃ" ಅಮಂ ।

ಸ್ಮೃತಕಾರ ಸೂತ್ರಾರ (ಪುಂ) ಸೂತ್ ಎಂದು (ಅನುಕರಣ)  
ಶಬ್ದ ಮಾಡುವುದು. ಸ್ಮೃತ್ ಇತಿ ಶಬ್ದಸ್ಯ ಕಾರಃ ಕರಣಮ್ ।  
"ನಸ್ಯಾಗೃಹೋತೋಽಪಿ ಭುವನ್ ವಿಷಾಣಯೋರ್ಯುಗಂ ಸಮೃತಕಾರವಿವರ್ತಿತ-  
ತ್ರಿಕಃ" ಮಾಘಂ ೧೨-೧೦ ।

ಸ್ಮೃತಕೃತ ಸೂತ್ರಕೃತ (ನಂ) ಸೂತ್ರಾರ. "ವಸ್ತೌ ಸಮಾಸತ್ರ-  
ಕರಣಸ್ಮೃತಕೃತಾತ್" ಮಾಘಂ ೧೨-೨೪ । -ಕೃತಿಃ -ಕೃತಿಃ.

ಸ್ಮೃತಾನ ಸೂತ್ರಾನ (ವಿಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯ ಪ್ರಯತ್ನ ನಡೆಸು  
ವವನು, ಉದ್ಯೋಗಗಿಳಿ, ಸರ್ವದಾ ಕಾರ್ಯನಿರತನಾಗಿರು  
ವವನು. ಸು ಸ್ತುತು ತ್ವಾನಂ ತದೋಗೋ ಯಸ್ಯ । (ನಂ) 2.  
ಒಳ್ಳೆಯ ಉದ್ಯೋಗ, ಚಟುವಟಿಕೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ  
ಪ್ರಯತ್ನ. "ದಕ್ಷೇ ತು ಚತುರಪೇಶಲಪಟವಃ ಸ್ಮೃತಾನ ತುಣಶ್ಚ"  
ಅಮಂ ।

ಸ್ಮೃತಪರ ಸೂತ್ರಾರ (ನಂ) ಮದ್ಯಸಂಧಾನ, ಬಟ್ಟೆಯಿಳಿಸು  
ವುದು.

ಸ್ಮೃತ ಸೂತ್ರ (ನಂ) 1. ತಂತು, ದಾರ. ಸೀವ್ಯತೇ ಅನೇನ—  
ಪಿವು (ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) "ಛದ್ನ್" ಟೆಹ್ವಂ ಚ (ತಂ ೪-೧೬೨) ।  
"ಮಣಿ ವಜ್ರಸಮುಕ್ತೀಣಿ ಸ್ಮೃತಸ್ಯೇವಾಸ್ತಿ ಮೇ ಗತಿಃ" ರಘುಂ  
೧-೪ । 2. ನಾರು, ಎಳೆ. "ಮನ್ಯೇ ಯಥಾ ಶ್ಯಾಮಮುಖಸ್ಯ  
ತಸ್ಯ ಮೃಣಾಲಸ್ಮೃತಾಂತರಮಪ್ಯಲಮ್ಯಮ್" ಕುಮಾಂ ೧-೪೦ ।  
3. ಯಜ್ಞಸೂತ್ರ, ಜನಿವಾರ. 4. ಶಾಸ್ತ್ರಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿ  
ಸಿದ ಬದ್ಧರ್ಥಗಳನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ವಾಕ್ಯ. ಈ  
ಶಾಸ್ತ್ರೀಯ ಸೂತ್ರಗಳು (1) ಬ್ರಹ್ಮಸೂತ್ರಮ್ (2) ಭರ್ಮಸೂತ್ರಮ್  
(3) ನ್ಯಾಯಸೂತ್ರಮ್ (4) ವೈಶೇಷಿಕಸೂತ್ರಮ್ (5) ಸಾಂಖ್ಯಸೂತ್ರಮ್  
ಮತ್ತು (6) ಯೋಗಸೂತ್ರಮ್ ಎಂದು ಆರು ವಿಧ. "ಅಲ್ಪಾಕ್ಷರ-  
ಮಸಂದಿಗ್ಧಂ ಸಾರವದ್ವಿಶ್ವತೋಮುಖಮ್ । ಅಸ್ತೋಮಮನವತ್ಯಂ ಚ ಸ್ಮೃತಂ  
ಸ್ಮೃತವಿದೋ ವಿದುಃ" । ಅನೇಕ ವಿಷಯಗಳ ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದಿ  
ರುವ ವಿಸ್ತಾರವಾದ ವಿಷಯವನ್ನು ಅತ್ಯಂತ ಸಂಗ್ರಹವಾಗಿ  
(ಕೆಲವೇ ಅಕ್ಷರಗಳಿಂದ) ತಿಳಿಸುವ ಸಾರವತ್ತಾಗಿರುವ ಅರ್ಥ  
ವತ್ತಾಗಿರುವ ಇರುವ ಶಾಸ್ತ್ರೀಯ ವಾಕ್ಯವು ಸೂತ್ರ.  
ವೈಯಾಕರಣರು—(1) ಸಂಜ್ಞಾ (2) ಪರಿಭಾಷಾ (3) ವಿಧಿ:

(4) ನಿಯಮಃ (5) ಅತಿರೇಕಃ ಮತ್ತೆ (6) ಅಧಿಕಾರಃ  
ಈ ರೀತಿ ಸೂತ್ರವು ಆರು ವಿಧ ಎಂದು ಹೇಳುವರು.

5. ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯಾದ್ಯಾಶ್ರಮಗಳಲ್ಲಿ ಅನುಷ್ಠಿಸಬೇಕಾದ  
ಧರ್ಮಾದಿಗಳನ್ನು ನಿರೂಪಿಸುವ (ಸೂತ್ರ) ಗ್ರಂಥ. ಇವು  
ಆಶ್ರಮಾಯನ ಅಪಸ್ತಂಬ ಗೌತಮ ಮೊದಲಾದವರಿಂದ  
ರಚಿತವಾದ ಭರ್ಮಸೂತ್ರಮ್ ಗೃಹಸೂತ್ರಮ್ ಶ್ರೀತಸೂತ್ರಮ್ ಮೊದಲಾ  
ದುವು. 6. ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ನಾಟಕೀಯ ವಸ್ತುವನ್ನು  
ಸೂಚಿಸುವ ಪ್ರಸ್ತಾವ. ಈ ಪ್ರಸ್ತಾವ ಮಾಡುವವನಿಗೆ  
ಸೂತ್ರಧಾರಃ ಎಂದು ಹೆಸರು. ಸೂತ್ರಂ ಪ್ರಯೋಗಾನುಷ್ಠಾನಂ ಧಾರಯತಿ  
ಇತಿ ಸೂತ್ರಧಾರಃ । 7. ನಾಟ್ಯೋಪಕರಣ. 8. ತಂತಿ,  
ಕಂಬಿ. "ಸುವರ್ಣಸೂತ್ರಾಕಲಿತಾಧರಾಮ್ಬರಾಂ ವಿಡಂಬಯಂತಿ ಶಿತಿ-  
ವಾಸಸಸ್ತನುಮ್" ಮಾಘಂ ೧-೬ ।

ಸೂತ್ರಕಥ ಸೂತ್ರಕಂಠ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಮೊದಲನೆಯ  
ವರ್ಣದವನು. ಸೂತ್ರಂ ಯಜ್ಞಸೂತ್ರಂ ಕಂಠೇ ಯಸ್ಯ । 2. ಕಪೋತ,  
ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ. 3. ಖಿಜರೀಟಪಕ್ಷಿ, ಕಾಡಿಗೆ  
ಸೊಗಸಿನ ಹಕ್ಕಿ. "ಸೂತ್ರಕಥಃ ಪುಮಾನ್ ವಿಪ್ರೇ ಕ್ಷಜ್ಜರೀಟ-  
ಕಪೋತಯೋಃ" ಮೇದಿಂ ।

ಸೂತ್ರಕಾರ ಸೂತ್ರಕಾರ (ಪುಂ) ಸೂತ್ರಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದವರು,  
ವ್ಯಾಸ ಆಶ್ರಮಾಯನ ಅಪಸ್ತಂಬ ಗೌತಮ ಪಾಣಿನಿ ಕಣ್ವಾದ  
ಮುನಿ ಮೊದಲಾದವರು. ಸೂತ್ರಾಣಿ ಕರೋತಿ — ಟುಕೃತ್  
(ಕರಣೇ) "ಅಗ್" (೩-೨-೧) । "ವಾಕ್ಯಕಾರಂ ವರಹಚಿ  
ಭಾಷ್ಯಕಾರಂ ಪತಂಜಲಿಮ್ । ಪಾಣಿನಿ ಸೂತ್ರಕಾರಂ ಚ ಪ್ರಣತೋಽಸ್ಮಿ  
ಮುನಿತ್ರಯಮ್" ॥

ಸೂತ್ರಕೋಣ ಸೂತ್ರಕೋಣ (ಪುಂ) ಡಮರುಕವಾದ್ದು,  
ಬುಡುಬುಡಿಕೆ. ಸೂತ್ರರೂಪಃ ಕೋಣೋ ಯಸ್ಯ । ಸ್ವಾರ್ಥೇ "ಕನ್" ।  
-ಕೋಣಕಃ -ಕೋಣಕಃ.

ಸೂತ್ರಗಣಿಕಾ ಸೂತ್ರಗಂಡಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಸ್ತ್ರವನ್ನು  
ನೇಯುವವನು ನೇಯಿಗೆಯ ಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿ  
ಸುವ ಕೋಲು, ವಾಯದಂಡ, ನೇಯುವ ಕೊಳವಿ. ಸೂತ್ರ  
ಗಣಯತಿ — ಗಡಿ (ವದನೈಕದೇಶ) + ಣಿಚ್ "ಞ್ವಲ್"  
(೩-೧-೧೩೩) ।

ಸೂತ್ರತರ್ಕುಟಿ ಸೂತ್ರತರ್ಕುಟೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕದಿರು, ಕದಿರಣಿಗೆ,  
ಚರಕದಲ್ಲಿ ನೂಲು ತಿರುಚುವ ಮತ್ತು ಸುತ್ತುವ ಕದಿರು  
ಕಂಬಿ. ಸೂತ್ರಸ್ಯ ತರ್ಕುಟಿ ।

ಸೂತ್ರಧಾರ ಸೂತ್ರಧಾರ (ಪುಂ) 1. ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ನಾಂದಿಯ  
ನಂತರ ರಂಗಭೂಮಿಗೆ ಬಂದು ಕಥೆಯ ವಸ್ತುವನ್ನು  
ಸೂಚಿಸುವ ನಟ, ಸ್ಥಾಪಕ. ಸೂತ್ರಧಾರನು ನಾಂದಿ  
ಯನ್ನು ಪೂರಿಸಿ ತೆರಳಿದ ನಂತರ ಸೂತ್ರಧಾರನ ಲಕ್ಷಣ



ವಿರುವ ಮತ್ತೊಬ್ಬ ನಟನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿ ಕವಿ ಕಾವ್ಯಗಳ ವಿಷಯವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವನು. ಇವನು ಪ್ರಧಾನ ನಟ. "ಪೂರ್ವರಂಗ ವಿಧಾಯಾದೌ ಸೂತ್ರಧಾರೆ ವಿನ್ಯಾಸೇ | ಪ್ರವಿಷ್ಯ ತದ್ವದರಃ ಕಾವ್ಯಮಾಸ್ಥಾಪಯೇತ್ತತಃ" || "ನಾಟಕೋಪಕರಣಾದಿನಿ ಸೂತ್ರಮಿತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ | ಸೂತ್ರಂ ಧಾರಯತೀತ್ಯರ್ಥೇ ಸೂತ್ರಧಾರೋ ನಿಗದ್ಯತೇ" | "ರಂಗರಂಗನದಸ್ಯಾಸ್ಯ ಸೂತ್ರಧಾರ ಇವಾಭವತ್" | ಯಾದಂ ೨೨-೧೪೦ | 2. ದೇವೇಂದ್ರ, ಸುರಪತಿ, ಶಬೀಪತಿ. 3. ಶಿಲ್ಪಿ. 4. ಸೂತ್ರಗ್ರಂಥವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಮುನಿ. "ಸೂತ್ರಧಾರಃ ಶಬೀಪತೀ | ನಾನ್ಯನಂತರಸಂಚಾರಿಪಾತ್ರಶಿಲ್ಪಿ-ಪ್ರಭೇದಯೋಃ" | ಮೇದಿಂ |

**ಸೂತ್ರಪುಷ್ಪ ಸೂತ್ರಪುಷ್ಪ** (ಪುಂ) ಕಾರ್ಪಾಸ, ಹತ್ತಿಯ ಗಿಡ. ಸೂತ್ರಾರ್ಥ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ |

**ಸೂತ್ರಯನ್ತ್ರ ಸೂತ್ರಯಂತ್ರ** (ನಂ) 1. ಲಾಳಿ, ನೇಯಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಹಾಸುದಾರಗಳ ನಡುವೆ ಹೊಕ್ಕುದಾರಗಳನ್ನು ಹಾಯಿಸುವ ಒಂದು ಸಲಕರಣೆ. 2. ನೇಯಿಗೆಯವನ ಯಂತ್ರ, ಬಟ್ಟೆ ನೇಯುವ ಯಂತ್ರ, ಮಗ್ಗ. 3. ದಾರವನ್ನು ಸುತ್ತುವ ಅಟ್ಟಿ.

**ಸೂತ್ರಲಾ ಸೂತ್ರಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕದಿರು ಕಂಬಿ, ಕದಿರಣಿಗೆ, ನೂಲನ್ನು ತಿರುಚುವ ಮತ್ತು ಸುತ್ತುವ ಕದಿರು. ಸೂತ್ರ ಲಾತಿ — ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) |

**ಸೂತ್ರವೇಷ್ಠನ ಸೂತ್ರವೇಷ್ಠನ** (ನಂ) 1. ದಾರವನ್ನು ಸುತ್ತುವುದು. ಸೂತ್ರಸ್ಯ ವೇಷ್ಠನಮ್ | (ಪುಂ) 2. ದಾರವನ್ನು ಸುತ್ತುವ ಅಟ್ಟಿ.

**ಸೂತ್ರಿತ ಸೂತ್ರಿತ** (ವಿಂ) ಸೂತ್ರರೂಪದಲ್ಲಿ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಸೂತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ವಿವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಸೂತ್ರಿನ್ ಸೂತ್ರಿನ್** (ವಿಂ) ದಾರವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು. ಸೂತ್ರಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ — "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) |

**ಸೂದ ಸೂದ** (ಪುಂ) 1. ಪಾಚೆ, ಅಡಿಗೆಯವನು. ಸೂದತಿ ಡಾಗಾದಿನ್ — ಷೂದ (ಕ್ಷರಣೇ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಸೂದಾ ಆದಿನಿಕಾ ಗುಣಾಃ" | ಅಮಂ | "ಆಹುಯ ವಚನಂ ದ್ರೋಣೋ ರಹಃ ಸೂದಮಭಾಷತ" | ಭಾಂ | 2. ವ್ಯಂಜನ, ಅನ್ನದ ಪರಿಕರ. ಷೂದ (ಕ್ಷರಣೇ) + ಣಿಚ್ "ಅಚ್" (೩-೩-೫೬) | "ಸೂದಸ್ತು ಕಥಿತಃ ಸೂಪಕಾರೇ ವ್ಯಂಜನಾಂತರೇ" | ಮೇದಿಂ | 3. ಸೂಪ, ದ್ರವರೂಪದ ಸಾಂಬಾರು. 4. ಅಪರಾಧ. 5. ಲೋಧ್ರವೃಕ್ಷ. (ವಿಂ) 6. ಹಿಂಸಿಸುವವನು, ಪೀಡಿಸುವವನು. 7. ನಾಶಪಡಿಸುವವನು.

**ಸೂವನ ಸೂವನ** (ನಂ) 1. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. 2. ಅಂಗೀಕಾರ, ಒಪ್ಪಿಗೆ. 3. ಅಟ್ಟುವುದು, ಹೊರದೂಡುವುದು,

ಹಿಡಿಸುವುದು. 4. ಹಿಂಸಿಸುವುದು. "ಸೂದನೇರಲಭಯಚ್ಚ ಖರಿತ್ರಿಮ್" | ಯಾದಂ ೨೧-೬೫ | (ವಿಂ) 5. ನಾಶಪಡಿಸುವವನು. 6. ಹೊರದೂಡುವವನು, ಅಟ್ಟುವವನು. ಷೂದ (ಕ್ಷರಣೇ) | ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) | ವಾ |

**ಸೂದಾಧ್ಯಕ್ಷ ಸೂದಾಧ್ಯಕ್ಷ** (ಪುಂ) ಪಾಕಶಾಲೆಯ ಅಧಿಕಾರಿ, ಅಡಿಗೆಮನೆಯ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕ. ಸೂದಾನಾಮಧ್ಯಕ್ಷಃ |

**ಸೂನ ಸೂನ** (ನಂ) 1. ಪೈಷ್ಪ, ಹೂವು. ಸೂಯತೇ ಸ್ಮ — ಷೂಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಪ್ರಸವೇ) "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) | "ನವಕರನಿಕರಣೇ ಸ್ಪಷ್ಟಬನ್ವುಕಸೂನಸ್ತವಕರಚಿತಮೇತೇ ಶೇಖರಂ ವಿಭ್ರತೀವ" | ಮಾಘಂ ೧೧-೪೬ | 2. ಅಂಕುರ, ಮೊಳಕೆ. 3. ಪ್ರಸವ, ಹರಿಗೆ. (ವಿಂ) 4. ವಿಕಸಿತವಾದ, ಅರಳಿರುವ. 5. ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಹೊಂದಿದ, ಹುಟ್ಟಿದ. 6. ಶೂನ್ಯ, ಬರಿದಾದ. "ಸೂನಂ ವಾಚ್ಯವದ್ದುನೇಷು ಸೂನಂ ಪ್ರಸವಪುಷ್ಪಯೋಃ" | ವಿಶ್ವಂ |

**ಸೂನಾಯಕ ಸೂನನಾಯಕ** (ಪುಂ) ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. "ಸೂನಾಯಕನಿರ್ದೇಶವಿಭ್ರಮೇರಪ್ರತೀತಚರವೇದನೋದಯಮ್" | ನೈಷಂ ೧೮-೧೨೯ |

**ಸೂನವತ್ ಸೂನವತ್** (ವಿಂ) ಉತ್ಪತ್ತಿಹೊಂದಿದ, ಹುಟ್ಟಿದ. ಷೂಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಪ್ರಸವೇ) "ಕ್ತವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨) |

**ಸೂನಾ ಸೂನಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪುತ್ರಿ, ಮಗಳು. 2. ಕಿರು ನಾಲಗೆ. 3. ವಧಸ್ಥಾನ. ಸೂಯತೇ — ಷೂಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಭ-ವಿಮೋಚನೇ) ಕರ್ಮಣಿ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) | "ಸೂನಾ ಪುತ್ರಾ ವಧಸ್ಥಾನಗಲಗುಣಿಡಕಯೋರಪಿ" | ವಿಶ್ವಂ | "ಪಂಚ ಸೂನಾ ಗೃಹಸ್ಥಸ್ಯ ಚುಲ್ಲೋಪೇಷಯುಪಸ್ಕರಃ | ಕಂಡನಿ ಚೋದ-ಕುಂಭಶ್ಚ ವಚ್ಯತೇ ಯಾಸ್ತು ವಾಹಯನ್" | ಮನುಂ ೩-೬೮ | 4. ಮೃಗ ಮತ್ತು ಪಕ್ಷಿಗಳ ಮಾಂಸದ ಮಾರಾಟ.

**ಸೂನಿನ್ ಸೂನಿನ್** (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಾಧಿ, ಬೇಡರವನು. ಸೂನಾ-ಸ್ಯಸ್ಯ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೬) | 2. ಮಾಂಸದ ಮಾರಾಟ ಮಾಡುವವನು. "ಪ್ರತಿಗ್ರಹೇ ಸೂನಿಚ್ಚಿಕ್ವಿಜಿವೇಷ್ಯಾನರಾ-ವಿಧಾಃ | ದೃಷ್ಟಾ ದಶಗುಣಂ ಪೂರ್ವಾಪ್ತವಾದೀತೇ ಯಥಾಕ್ರಮಮ್" | ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೧೪೧ |

**ಸೂನು ಸೂನು** (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. ಸೂಯತೇ — ಷೂಡ್ (ಪ್ರಾಣಿಪ್ರಸವೇ) "ನುಃ" (೩ಂ ೩-೩೫) | "ಸೂನುಃ ಸೂನುತವಾಕ್-ಸೃಷ್ಟವಿಸಸಜ್ಜಿತಶ್ರಿಯಮ್" | ರಘುಂ ೧-೯೩ | 2. ಅನುಜ, ತಮ್ಮ. 3. ಸೂರ್ಯ. 4. ಕಿರಣ, 5. ಅರ್ಹವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕಡ ಗಿಡ. "ಸೂನುಃ ಪುತ್ರೇಜುಜೇಕೇ ನಾ ಸೂನುಃ ಕಿರಣಸೂರ್ಯಯೋಃ" | ಮೇದಿಂ | 6. ದೊಡ್ಡ, ಮಗಳ ಮಗ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 7. ಕನ್ಯೆ, ಮಗಳು.



**ಸುನಿತ ಸೂನೃತ (ನಂ) 1.** ಸತೃವೃ ಪ್ರಯವೃ ಆದ ಮಾತು. ಸುಠು ನೃತ್ಯನೇನ — ಸು + ನೃತೀ (ಗಾತ್ರವಿಕ್ಷೇಪೇ) ಧನರ್ಥ "ಕ:" (ವಾಂ ೩-೩-೪೮)। "ತೇನಾಪ್ತೌ ಪರಿಗಮಿತಾ: ಸಮಾ: ಕಥಂಚಿತ್ ಬಾಲತ್ವಾತ್ ವಿತಥಸುನೃತೇನ ಸುನೌ:" ರಘುಂ ೮-೯೨। 2. ಮಂಗಳ, ಶುಭ. (ವಿಂ) 3. ಪ್ರಯವೃ ಸತೃವೃ ಆದ. "ಸುನು: ಸುನೃತವಾಕ್ಸಪ್ತು: ವಿಸಸರ್ಜೌಜಿತ-ಶ್ರಿಯಮ್" ರಘುಂ ೧-೯೩। 4. ಮಂಗಳಕರವಾದ, ಶುಭ ವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. "ಪ್ರಣಮ್ಯ ಮೂರ್ನವಿಹಿತ: ಕೃತಾಂಜಲಿ-ನೃತ್ವಾ ಗಿರಾ ಸುನೃತಯಾನ್ವಪೃಚ್ಛತ್" ಭಾಗಂ ೧-೧೯-೩೧। 5. ವಿನಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ನಮ್ರತೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಪ್ರಯವಾದ. "ತೃಣಾನಿ ಭೂಮಿಋದಕಂ ವಾಕ್ ಚತುರ್ಥಿ ಚ ಸುನೃತಾ" ಮನುಂ ೩-೧೦೧।

**ಸುನೃತಗಿರ್ ಸೂನೃತಗಿರ್ (ವಿಂ)** ಪ್ರಯವೃ ಸತೃವೃ ಆದ ಮಾತುಳ್ಳವನು. ಸುನೃತಾ ಗೀರ್ಯಸ್ಯ। "ತತ್ರ ಸುನೃತಗಿರಶ್ಚ ಸೂರಯ: ಪುಷ್ಯಮೃಗ್ಯಜುಷಮವ್ಯಗೀಯತ" ಮಾಘಂ ೧೪-೨೧।

**ಸುಪ ಸೂಪ (ಪುಂ)** 1. ಒಂದು ವಿಧ ವ್ಯಂಜನ. ಷು (ಅಭಿಷವೇ) "ಪ:" ದೀರ್ಘಶ್ಚ (ಉಂ ೩-೨೬)। 2. ಸೂದ, ಪಾಚಕ, ಅಡಿಗೆಯವನು. "ಸುಪೌ ವ್ಯಂಜನಸೂದಯೋ:" ಮೇದಿಂ। 3. ಪಾತ್ರೆ. 4. ಆಹಾರಕ್ಕೆ ರುಚಿಕೊಡುವ ಸಾಂಬಾರ, ಮಸಾಲೆ. 5. ಬಾಣ. 6. ತೊವ್ವೆ.

**ಸುಪಕಾರ ಸೂಪಕಾರ (ಪುಂ)** ಪಾಚಕ, ಅಡಿಗೆಯವನು. ಸುಪಂ ಕರೋತಿ — ಡುಕೃತ್ (ಕರಣ) "ಅಞ್" (೩-೨-೧)। "ಇಕ್ಷಿತಾಕಾರತತ್ವಜ್ಞೋ ಬಲವಾನ್ ಮಿಠ್ಯಪಾಚಕ:। ಸುಪಕಾರಿಣಿಶ್ಚೈವ ಸುಪಕಾರ: ಸ ಉಚ್ಯತೇ"॥

**ಸುಪಧೂಪನ ಸೂಪಧೂಪನ (ನಂ)** ಹಿಂಗು. ಸುಪಸ್ಯ ಧೂಪನ-ಮಸ್ಮಾತ್।

**ಸುಪಾಙ್ಗ ಸೂಪಾಙ್ಗ (ನಂ)** ಹಿಂಗು.

**ಸುಮ ಸೂಮ (ನಂ)** 1. ಕ್ಷೀರ, ಹಾಲು. 2. ಅಕಾಶ, ಗಗನ. ಷು (ಪ್ರಾಣಿಗರ್ಮವಿಮೋಚನೇ) "ಮಕ್" (ಉಂ ೧-೧೪೨)। "ಸುಮಂ ಕ್ಷೀರೇ ಚ ನಮಸಿ" ಮೇದಿಂ। 3. ಜಲ, ನೀರು. ಶಬ್ದರಂ।

**ಸುರ ಸೂರ (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯ, ರವಿ. ಸುವತಿ ಪ್ರೇರಯತಿ ಕರ್ಮಣಿ ಲೋಕಮ್ — ಷು (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಕ್ರನ್" (ಉಂ ೨-೨)। 2. ಅರ್ಹವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

**ಸುರಣ ಸೂರಣ (ಪುಂ)** 1. ಚೂರಣದ ಗಿಡ. "ಮಕರೇ ಮೂಲಕಂ ಚೈವ ಸಿಂಹೇ ಚಾಲಾಬುಕಂ ತಥಾ। ಕಾರ್ತಿಕೇ ಸುರಣಂ ಚೈವ ಸದ್ಯೋ ಗೋಮಾಸಮಕ್ಷಣಮ್"॥ 2. ಚೂರಣ ಗಡ್ಡೆ. "ಅಶೋಧನ: ಸುರಣ: ಕಂದ:" ಅಮಂ।

**ಸುರತ ಸೂರತ (ವಿಂ)** 1. ದಯಾಳು, ದಯೆಯುಳ್ಳವನು, ಕನಕರವುಳ್ಳವನು. ಸುಠು ರಮತೇ — ರಮು (ಕೃಡಾಯಾಮ್) "ಕ್ರ:" (ಉಂ ೪-೧೪)। 2. ಉಪಶಾಂತ. "ಸ್ಯಾದ್ಯಾಲು: ಕಾರುಣಿಕ: ಕೃಪಾಲು: ಸುರತ: ಸಮಾ:" ಅಮಂ।

**ಸುರಸುತ ಸೂರಸುತ, -ಸುನು-ಸೂನು (ಪುಂ)** ಶನೈಶ್ಚರ, ಸೂರ್ಯನ ಮಗ. ಸುರಸ್ಯ ಸುತ: ಸುನುರ್ವಾ।

**ಸುರಸುತ ಸೂರಸೂತ (ಪುಂ)** ಸೂರ್ಯನ ಸಾರಥಿ. ಸುರಸ್ಯ ಸುತ:।

**ಸುರಿಸ ಸೂರಿ (ಪುಂ)** ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. ಷು (ಪ್ರಸವೇ) "ಕ್ರಿ:" (ಉಂ ೪-೬೪)। "ತತ್ರ ಸುನೃತಗಿರಶ್ಚ ಸೂರಯ: ಪುಷ್ಯಮೃಗ್ಯಜುಷಮವ್ಯಗೀಯತ" ಮಾಘಂ ೧೪-೨೧। "ಅಥವಾ ಕೃತವಾಗ್ದಾರೆ ವಂಶೇಽಸ್ಮಿನ್ ಪೂರ್ವಸುರಿಸಿ:" ರಘುಂ ೧-೪।

**ಸುರಿನ್ ಸೂರಿನ್ (ಪುಂ)** ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. ಸುರ: ಸೂರ್ಯ: ಉಪಸ್ಯತಯಾಸ್ತಯಸ್ಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪)।

**ಸುರೀ ಸೂರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸಾಸವೆ. ಷು (ಪ್ರಸವೇ) "ಕ್ರಿ:" (ಉಂ ೪-೬೪)। 2. ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ. 3. ಕುಂತಿ.

**ಸುಕ್ಷಣ ಸೂಕ್ಷಣ (ನಂ)** 1. ಆದರ, ಗೌರವ. 2. ಪ್ರೀತಿ, ಎಶ್ವಾಸ. ಸುಕ್ಷ (ಆದರೇ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪)।

**ಸುಕ್ಷ್ಯ ಸೂಕ್ಷ್ಯ (ಪುಂ)** ಮಾಷ, ಉದ್ದು. ಸುಕ್ಷ್ಯತೇ ಅನಾದ್ರಿಪತೇ — ಸುಕ್ಷ್ಯ (ईर्ष्यायाम्) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೧೪)।

**ಸುರ್ಯ ಸೂರ್ಯ (ಪುಂ)** 1. ರವಿ, ಗ್ರಹಗಳ ಅಧಿಪತಿ. ಸುವತಿ ಕರ್ಮಣಿ ಲೋಕಂ ಪ್ರೇರಯತಿ — ಷು (ಪ್ರೇರಣೆ) "ಕೃಪ್" ದೀರ್ಘಶ್ಚ ನಿಪಾತ್ಯತೇ (೩-೧-೧೧೪)। "ವಿಭಿನ್ನವರ್ಣಾ ಗರ್ಹಾ-ಗ್ರಜೇನ ಸುರ್ಯಸ್ಯ ರಶ್ಮಯಾ: ಪರಿತ: ಸ್ಫುರಂತಯಾ" ಮಾಘಂ ೪-೧೪। ಸೂರ್ಯನಿಗೆ ಸಂಜ್ಞಾದೇವಿಯಲ್ಲಿ ಯಮ ಮನು ಮತ್ತು ಯಮನೆಯೆಂಬ ಮೂವರು ಮಕ್ಕಳೂ ಛಾಯಾದೇವಿಯಲ್ಲಿ ಸಾವರ್ಣಿ ಮತ್ತು ಶನೈಶ್ಚರರೆಂಬ ಇಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳೂ ಜನಿಸಿದರು. ಸಂಜ್ಞಾದೇವಿಯು ಕುದುರೆಯ ರೂಪವಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಅಶ್ವಿನೀದೇವತೆಗಳೂ ಜನಿಸಿದರು. ಇವೆರಲ್ಲದೆ ಕುಂತಿಯಲ್ಲಿ ಕಣನೂ ಅಂಶದಿಂದ ಸುಗ್ರೀವನೂ ಜನಿಸಿದರು. ಸೂರ್ಯನು ಅನವರತವೂ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವನು. ಇವನ ರಥಕ್ಕೆ ಸಪ್ತವೆಂಬ ಒಂದೇ ಕುದುರೆ. "ಸಪ್ತ ಯುಜಂತಿ ರಥಮೇಕವಕ್ರಮೇಕೋಽವೋ ವಹತಿ ಸಪ್ತನಾಮಾ" ಋಂ। ಒಂದೇ ಚಕ್ರ. "ಏಕವಕ್ರೋ ರಥೋ ಯಸ್ಯ ದಿವ್ಯ: ಕನಕಮೃಗಣ:। ಸ ಮೇ ಭವತು ಸುಪ್ರೀತ: ಪದಹಸ್ತೋ ದಿವಾಕರ:"। ಮೇಷಾದಿ ದ್ವಾದಶ ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನು ಒಂದು ವರ್ಷಕಾಲ ಸಂಚರಿಸುವನು. ಸಿಂಹರಾಶಿಯು ಸೂರ್ಯನ ಕ್ಷೇತ್ರ. ಮೇಷರಾಶಿಯು ಉಚ್ಚಸ್ಥಾನ. ತುಲಾರಾಶಿಯು



ನೀಚಸ್ಥಾನ. ಸೂರ್ಯನು ಹನ್ನೆರಡು ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿ ಸುವ ಕಾಲಕ್ಕೆ ಸೌರವರ್ಷವೆಂದು ಹೆಸರು. ಸೂರ್ಯನ ವರ್ಣವು ರಕ್ತವರ್ಣ. ಬ್ರಾಹ್ಮಣಜಾತಿಯ ಗ್ರಹ. ಸೂರ್ಯದಶಾಕಾಲ 6 ವರ್ಷಗಳು. ಸೂರ್ಯನಿಗೆ ಬುಧನು ಸಮ. ಶುಕ್ರ ಮತ್ತು ಶನಿ ಶತ್ರುಗಳು. ಚಂದ್ರ ಕುಜ ಮತ್ತು ಗುರು ಇವರು ಮಿತ್ರರು. ಸೂರ್ಯನು ಪಿತೃ ಆತ್ಮ ಪ್ರಭಾವ ಮತ್ತು ಶಕ್ತಿ ಇವುಗಳಿಗೆ ಕಾರಕನು. ಸೂರ್ಯನು ಕ್ರೂರಗ್ರಹ ಮತ್ತು ಪುರುಷಗ್ರಹ. ಸೂರ್ಯನು 3, 6 ಮತ್ತು 11ನೆಯ ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿರುವಾಗ ಶುಭಫಲಪ್ರದನು.

ಇತರ ಗ್ರಹಗಳ ದಶೆಗಳಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನ ಅಂತರ್ದಶಾ (ಭುಕ್ತಿ)ಮಾನ :

| ದಶೆ               | ವರ್ಷ | ಮಾಸಗಳು | ದಿನಗಳು |
|-------------------|------|--------|--------|
| ಸೂರ್ಯದಶೆ (ಸ್ವದಶೆ) | 0    | 3      | 18     |
| ಚಂದ್ರದಶೆ          | 0    | 6      | 0      |
| ಕುಜದಶೆ            | 0    | 4      | 6      |
| ರಾಹುದಶೆ           | 0    | 10     | 24     |
| ಗುರುದಶೆ           | 0    | 9      | 18     |
| ಶನಿದಶೆ            | 0    | 11     | 12     |
| ಬುಧದಶೆ            | 0    | 10     | 6      |
| ಕೇತುದಶೆ           | 0    | 4      | 6      |
| ಶುಕ್ರದಶೆ          | 1    | 0      | 0      |

ಸೂರ್ಯ ದಶೆಯಲ್ಲಿ ತನ್ನ (ಸ್ವ) ಮತ್ತು ಇತರ ಗ್ರಹಗಳ ಅಂತರ್ದಶಾ (ಭುಕ್ತಿ)ಮಾನ :

| ಭುಕ್ತಿ      | ವರ್ಷ | ಮಾಸಗಳು | ದಿನಗಳು |
|-------------|------|--------|--------|
| ಸ್ವಭುಕ್ತಿ   | 0    | 3      | 18     |
| ಚಂದ್ರಭುಕ್ತಿ | 0    | 6      | 0      |
| ಕುಜಭುಕ್ತಿ   | 0    | 4      | 6      |
| ರಾಹುಭುಕ್ತಿ  | 0    | 10     | 24     |
| ಗುರುಭುಕ್ತಿ  | 0    | 9      | 18     |
| ಶನಿಭುಕ್ತಿ   | 0    | 11     | 12     |
| ಬುಧಭುಕ್ತಿ   | 0    | 10     | 6      |
| ಕೇತುಭುಕ್ತಿ  | 0    | 4      | 6      |
| ಶುಕ್ರಭುಕ್ತಿ | 1    | 0      | 0      |

ಮಾಸಭೇದದಿಂದ ಸೂರ್ಯನ ಹನ್ನೆರಡು ಹೆಸರುಗಳು :

"ವರೂಣೋ ಮಾಧಮಾಸೇ ತು ಸೂರ್ಯಃ ಪೂಷಾ ತು ಫಾಲ್ಗುಣೇ । ಚೈತ್ರೇ ಮಾಸಿ ಭವೇದೀಶಾಃ ಧಾತಾ ವೈಶಾಖತಾಪನಃ । ಜ್ಯೇಷ್ಠಮೂಲೇ ಭವೇದಿನ್ದ್ರಃ ಆಷಾಡೇ ಸವಿತಾ ರವಿಃ । ವಿವಸ್ವಾನ್ ಶ್ರಾವಣೇ

ಮಾಸಿ ಪ್ರೋಷ್ಠವಾ ಭಗಃ ಸ್ಮೃತಃ" ॥ 2. ಅರ್ಕವರ್ಣ, ಎಕ್ಕದ ಎಲೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೂರ್ಯ ಸೂರ್ಯಾ. 1. ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ. ಸೂರ್ಯ ಮಾಯಾ । 2. ಇಂದ್ರವಾರುಣೇ. 3. ಸೂರ್ಯನ ಪುತ್ರಿ, -ಮಗಳು. 4. ನವೋದಯಾದ ಕನ್ಯೆ, ಸದ್ಯಃ ಮದುವೆಯಾದ ಕನ್ಯೆ. 5. ಒಂದು ಔಷಧ.

"ಸೂರ್ಯೋರ್ವಣೇ ತಪನೇ ಸ್ತ್ರೀ ತದ್ವಾಯೋರ್ವಿಭಿಮದೋ" ಮೇದಿಂ ।

ಸೂರ್ಯಕಾಂತ ಸೂರ್ಯಕಾಂತ (ಪುಂ) 1. ಸ್ಪಟಿಕ. 2. ಸೂರ್ಯ ಕಾಂತ ಶಿಲೆ, ಸೂರ್ಯಕಾಂತ ಮಣಿ. ಸೂರ್ಯಃ ಕಾಂತೋ ಯಸ್ಯ ।

"ಶಮಪ್ರಧಾನೇಷು ತಪೋವೇಷು ಗೃಹಂ ಹಿ ದಾಹಾತ್ಮಕಮಸ್ತಿ ತೇಜಃ । ಸ್ಪರ್ಶಾನುಕೂಲಾ ಇವ ಸೂರ್ಯಕಾಂತಾಃ ತದನ್ಯತೇಜೋಽಭಿಭವಾತ್ಮಮಸ್ತಿ" ಶಾಕುಂ ೨-೩ ।

ಸೂರ್ಯಕಾಂತಿ ಸೂರ್ಯಕಾಂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಆತಪ, ಬಿಸಿಲು.

ಸೂರ್ಯಕಾಂತಿಃ । 2. ಸೂರ್ಯಕಾಂತಿ ಪುಷ್ಪ. ಈ ಪುಷ್ಪ ಸೂರ್ಯೋದಯವಾದ ನಂತರ ಬಿಸಿಲು ಕಂಡಾಗ ಅರಳುವುದು, ಸೂರ್ಯಾಸ್ತವಾದನಂತರ ಮುಕುಳಿತವಾಗುವುದು.

ಸೂರ್ಯಜ ಸೂರ್ಯಜ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯನ ಪುತ್ರ—1. ಕರ್ಣ. 2. ಸುಗ್ರೀವ. 3. ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. 4. ಮನು. 5. ಶನಿಗ್ರಹ. ಸೂರ್ಯಾತ್ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃಮವಿ) "ಙಃ" (೩-೨-೧೮) । -ಜಾ -ಜಾ. ಯಮುನಾನದಿ.

ಸೂರ್ಯತನಯ ಸೂರ್ಯತನಯ, -ಪುತ್ರ-ಪುತ್ರ, -ಸುತ-ಸುತ, -ಸುನ್ಯ-ಸೂನು (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯನ ಪುತ್ರ—1. ಕರ್ಣ. 2. ಶನಿಗ್ರಹ. 3. ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. 4. ಸುಗ್ರೀವ. 5. ಮನು. ಸೂರ್ಯಸ್ಯ ತನಯಃ ಪುತ್ರಃ ಸುತಃ ಸುನ್ಯವಾ ।

ಸೂರ್ಯತನಯಾ ಸೂರ್ಯತನಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಮುನಾನದಿ. -ಪುತ್ರಿ-ಪುತ್ರಿ.

ಸೂರ್ಯಭಕ್ತ ಸೂರ್ಯಭಕ್ತ (ಪುಂ) 1. ದಾಸಿವಾಳದ ಗಿಡ. ಸೂರ್ಯಸ್ಯ ಭಕ್ತಃ ಪ್ರಿಯಃ । (ವಿಂ) 2. ಸೂರ್ಯನ ಉಪಾಸಕ, ಸೂರ್ಯನನ್ನು ಆರಾಧಿಸುವವನು, ಸೂರ್ಯನನ್ನು ಪೂಜಿಸುವವನು. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" । -ಭಕ್ತಕಃ -ಭಕ್ತಕಃ.

ಸೂರ್ಯಮಣಿ ಸೂರ್ಯಮಣಿ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯಕಾಂತಶಿಲೆ. ಸೂರ್ಯಪ್ರಿಯೋ ಮಣಿಃ ।

ಸೂರ್ಯಮಂಡಲ ಸೂರ್ಯಮಂಡಲ (ನಂ) ಸೂರ್ಯಬಿಂಬದ ವರ್ತುಲಾಕಾರದ ರೇಖೆ, -ವೃತ್ತರೇಖೆ. ಸೂರ್ಯಸ್ಯ ಮಂಡಲಮ್ ।

ಸೂರ್ಯಲೋಕ ಸೂರ್ಯಲೋಕ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯನ ಅಧಿಪತ್ಯಕ್ಕೆ ಸೇರಿದ ಒಂದು ಲೋಕ. ಸೂರ್ಯಸ್ಯ ಲೋಕಃ ।

ಸೂರ್ಯವಂಶ ಸೂರ್ಯವಂಶ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯನ ಸಂತತಿ. ಸೂರ್ಯನ ಕುಲ. ಸೂರ್ಯಸ್ಯ ವಂಶಃ । ಪರಮಾತ್ಮನ ನಾಭಿ ಕಮಲದಿಂದ ಚತುರ್ಮುಖಿನ ಉತ್ಪತ್ತಿ. ಚತುರ್ಮುಖಿನ



ಮಾನಸ ಪುತ್ರ ಮರೀಚಿ. ಮರೀಚಿಯ ಪುತ್ರ ಕಶ್ಯಪ. ಕಶ್ಯಪನಿಂದ ಅದಿತಿಯಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನು ಜನಿಸಿದನು. ಸೂರ್ಯನಿಗೆ ಸಂಜ್ಞಾದೇವಿಯಲ್ಲಿ ಮನು ಮತ್ತು ಯಮ ಎಂಬ ಪುತ್ರರೂ ಮನುವಿಗೆ ಶ್ರದ್ಧಾದೇವಿಯಲ್ಲಿ—  
(1) ಇಕ್ಷ್ವಾಕು: (2) ನಗ: (3) ಶರ್ಯಾತಿ: (4) ದಿಷ್ಠ: (5) ಭೃಷ್ಠ: (6) ಕರುಣಕ: (7) ನರೀಷ್ಯಂತ: (8) ಪೃಷ್ಠ: (9) ನಾಭಾಗ: ಮತ್ತು (10) ಕವಿ: ಎಂಬ ಹತ್ತು ಮಂದಿ ಪುತ್ರರು ಜನಿಸಿದರು. ಇದೇ ಸೂರ್ಯವಂಶ. ಈ ಸೂರ್ಯ ವಂಶದ ಇಕ್ಷ್ವಾಕುರಾಜನ ವಂಶದ ಚಕ್ರವರ್ತಿಗಳು ಅಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ರಾಜ್ಯವಾಳಿದರು.

**ಸೂರ್ಯಸಂಜ್ಞ ಸೂರ್ಯಸಂಜ್ಞ (ನಂ) 1.** ಕುಂಕುಮ ಕೇಸರಿ. ಸೂರ್ಯಸಂಜ್ಞಾ ಯಸ್ಯ | (ಪುಂ) 2. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ. **ಸೂರ್ಯಸಾರಥಿ ಸೂರ್ಯಸಾರಥಿ (ಪುಂ)** ಸೂರ್ಯನ ರಥ ವನ್ನು ನಡೆಸುವ ಅರುಣ.

**ಸೂರ್ಯಹೃದಯ ಸೂರ್ಯಹೃದಯ (ನಂ)** ಅದಿತ್ಯಹೃದಯ, ಸೂರ್ಯನ ಹೃದಯ. ಸೂರ್ಯಸ್ಯ ಹೃದಯಮಿವ | “ನಮಸ್ತೇ ಭೃಣಿಣೇ ತುಮ್ಯ ಸೂರ್ಯಾ ಬ್ರಹ್ಮರೂಪಿಣೇ | ತ್ವಮೇವ ಬ್ರಹ್ಮಾ ಪರಮಮಾಪೌ ಜ್ಯೋತೀ ರಸೋಮೃತಮ್ || ಮುರ್ಭುವ: ಸ್ವಸ್ತ್ವಮೋಕ್ಷಾರ: ಸರ್ವೇ ರುದ್ರಾ: ಸನಾತನಾ: | ನಮೋ ರುದ್ರಾಯ ಸೂರ್ಯಾ ತ್ವಾಮಹಂ ಶರಣಂ ಗತ: || ಪ್ರವೇತಸೇ ನಮಸ್ತುಮ್ಯಮುಮಾಃ ಪತಯೇ ನಮ: | ನಮೋ-ನಮಸ್ತೇ ರುದ್ರಾಯ ತ್ವಾಮಹಂ ಶರಣಂ ಗತ: || ಏಕಚಕ್ರೋ ರಥೋ ಯಸ್ಯ ದಿವ್ಯ: ಕನಕಭೂಷಣ: | ಸ ಮೇ ಭವತು ಸುಪ್ರೀತ: ಪದ್ಮಹಸ್ತೋ ದಿವಾಕರ:” || ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಸೂರ್ಯ ಸೂರ್ಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ, ಸಂಜ್ಞಾದೇವಿ. 2. ನವೋದಯ, ಸದ್ಯ: ಮದುವೆಯಾದ ಕನ್ಯೆ. “ತಸ್ಯಾಂ ಹಿ ಕಹಿಚಿಚ್ಛೌರಿವಸುಧೇವ: ಕೃತೋದ್ವಹ: | ದೇವಕ್ಯಾ ಸೂರ್ಯಾ ಸಾರ್ಥಂ ಪ್ರಯಾಣೇ ರಥಮಾರುಹತ್” ಭಾಗಂ ೧೦-೧-೨೯ | 3. ವಾಕ್ಯ, ಮಾತು. ಸು ಸುಷ್ಠು ಇಯಂತೇ ಉಚ್ಚಾರಯಂತೇ—ಸು+ಇರ (ಗತೌ) ಕರ್ಮಣಿ “ಕಯಪ್” (೩-೩-೧೧೩) | ಸೂರೀಷು ಸಾಧು: “ಯತ್” (೪-೪-೯೮) | ಸರತಿ ಗಚ್ಛತಿ ಕರ್ಣ-ಶಾಂಕುಲಿಂ ಸ್ತೋತುನ್ ಪ್ರತಿ ವಾ—ಸೃ (ಗತೌ) “ಕಯಪ್” ಸರ್ತೇ ಕೃತ್ವಂ ಚ ನಿಪಾಂ (೩-೧-೧೧೪) | ಇತಿ ವಾ |

**ಸೂರ್ಯಾಲೋಕ ಸೂರ್ಯಾಲೋಕ (ಪುಂ)** ಅತಪ, ಬಿಸಿಲು. ಸೂರ್ಯಾಲೋಕ: |

**ಸೂರ್ಯಾಶಮನ್ ಸೂರ್ಯಾಶಮನ್ (ಪುಂ)** ಸೂರ್ಯಕಾಂತಮಣಿ. ಸೂರ್ಯಪ್ರಿಯೋಷ್ಮಾ |

**ಸೂರ್ಯಾಸ್ತಿ ಸೂರ್ಯಾಸ್ತಿ (ನಂ)** ಸೂರ್ಯನು ಅಸ್ತಪರ್ವತ ವನ್ನು ಸೇರುವುದು. ಸೂರ್ಯಾಸ್ತಮ್ ಅಸ್ತಪರ್ವತಗಮನಮ್ |

**ಸೂರ್ಯಾಸ್ತಿ ಸೂರ್ಯಾಸ್ತಿ (ನಂ) 1.** ತಾಮ್ರಲೋಹ. ಸೂರ್ಯಸ್ಯ ಆಹ್ವಾ ಯಸ್ಯ | (ಪುಂ) 2. ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ, ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ.

**ಸೂರ್ಯೇಂದ್ರಸಂಜ್ಞ ಸೂರ್ಯೇಂದ್ರಸಂಜ್ಞ (ಪುಂ)** ಸೂರ್ಯ ಮತ್ತು ಚಂದ್ರ ಇವರು ಒಂದೇ ಕಡೆ ಸೇರುವುದು. ಸೂರ್ಯಸ್ಯ ಇಂದೋಷ ಸಂಜ್ಞಮ: ಏಕರಾಶ್ಯವಸ್ಥಾನಂ ಯತ್ರ | ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರರು ಒಂದೇ ರಾಶಿಯಲ್ಲಿ ಸೇರುವುದು ದರ್ಶನ. ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ. “ದರ್ಶ: ಸೂರ್ಯೇಂದ್ರಸಂಜ್ಞಮ:” ಅಮಂ |

**ಸೂರ್ಯೋದಯ ಸೂರ್ಯೋದಯ (ಪುಂ)** ಸೂರ್ಯಾಸ್ತಕಾಲದಲ್ಲಿ ಒಂದ ಅತಿಥಿ. “ಸೂರ್ಯೋದಯ ಸಂಪ್ರಾಪ್ತೋ ಯ: ಸೂರ್ಯಸ್ತಂ ಗತೇತಿಥಿ:” ಹೇಮಂ |

**ಸೂರ್ಯೋದಯ ಸೂರ್ಯೋದಯ (ಪುಂ)** ಸೂರ್ಯನು ಹುಟ್ಟುವುದು, ಸೂರ್ಯನು ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಸೂರ್ಯಸ್ಯ ಉದಯ: | “ಸೂರ್ಯೋದಯೇ ಚಾಸ್ತಮಯೇ ಚ ಶಾಯಿನಂ ವಿಮುಚ್ಛತಿ ಶ್ರೀರೇಪಿ ಚಕ್ರಪಾಣಿನಮ್” ಶ್ರೀಲಕ್ಷ್ಮೀಚಂ |

**ಸೃ-ಗತೌ (ಋಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಅನಿಂ)** ಸರತಿ ಸರತ: ಸರಂತಿ | ಸಸಾರ ಸಸ್ರತು: ಸಸ್ರು: | ಸಸರ್ಯ ಸಸ್ರತು: ಸಸ್ರ | ಸಸಾರ, ಸಸರ ಸಸ್ರವ ಸಸ್ರಮ | ಸರ್ತಾ | ಸರೀಷ್ಯತಿ | ಸರತು | ಅಸರತ್ | ಸರೇತ್ | ಸ್ರಿಯಾತ್ ಸ್ರಿಯಾಸ್ತಾಮ್ | ಅಸಾರ್ಪಿತ್ | ಅಸರೀಷ್ಯತ್ | ಚಲಿಸು, ನಡೆ, ಮುಂದೆ ಸಾಗು. ಶೀಘ್ರಗತಿಯ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಸರ್ತೇ: ಭೀರಾದೇಶ: (೭-೩-೭೮) | ಧಾವತಿ | ಧಾವತು | ಅಧಾವತ್ | ಧಾವೇತ್ |

**ಭಾವೇ:—**ಸ್ರಿಯತೇ | ಸಸ್ರೇ, ಪ್ರಸಸ್ರೇ | ಸರ್ತಾ, ಸಾರಿತಾ | ಸರೀಷ್ಯತೇ, ಸಾರೀಷ್ಯತೇ | ಸ್ರಿಯತಾಮ್ | ಅಸ್ರಿಯತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಗಿಚಿ:—**ಸಾರಯತಿ, -ತೇ | ಸಾರಯಾಂ ಚಕಾರ, -ಚಕ್ರೇ -ಬಮುವ, -ಆಸ | ಸಾರಯಿತಾ | ಸಾರಯಿಷ್ಯತಿ, -ತೇ | ಸಾರಯತು, -ತಾಮ್ | ಅಸಾರಯತ್, -ತ | ಸಾರಯೇತ್, -ತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

**ಕೃತು:—**ಸರ್ತವ್ಯಮ್ | ಸರಣೀಯಮ್ | ಸಾರಯಮ್ | ಸೃತಮ್ | ಪ್ರಸೃತ: | ಸೃತವಾನ್ | ಸರನ್, -ಂತಿ | ಶೀಘ್ರಗತಿಯ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಧಾವನ್, -ಂತಿ | ಸೃತಮ್ | ಸರಣಮ್ | ಸೃತ್ವಾ, ಅಭಿಸೃತ್ಯ | ಸಾರಮ್ ಸಾರಮ್, ಸೃತ್ವಾ ಸೃತ್ವಾ | 1. ಚಲಿಸು, ನಡೆ, ಮುಂದೆ ಸಾಗು. “ಮೃಗಾ: ಪ್ರದಕ್ಷಿಣಂ ಸಸ್ರು: ಶಿವಾ: ಸಮ್ಯಕ್ ವವಾಶಿರೇ | ಅವಾಮೇ: ಪುಸ್ಕುರೇ ದೇಹೈ: ಪ್ರಸೇದೇ ಚಿತ್ತ-ವೃತ್ತಿಭಿ:” ಮದ್ವಿಂ ೧೪-೧೪ | 2. ವೇಗವಾಗಿ ಹೋಗು, ಶೀಘ್ರವಾಗಿ ಚಲಿಸು, ಓಡಿಹೋಗು. “ಪಥಿ ನಯನಯೋ: ಸ್ಥಿತ್ವಾ ಸ್ವಪ್ನೇ ತಿರೋಭವತಿ ಕ್ಷಣಾತ್ಸರತಿ ಸಹಸಾ ಬಾಹ್ಲೋ-ಮಧ್ಯಂ ಗತಾಪಿ ಸಖಾ ತವ” ಮಾಲಂ ೪-೧೧ | 3. ಅಕ್ರಮಣ ಮಾಡು. ಮುಟ್ಟಿಗೊಡು. “ಸಸಾರಾಭಿಮುಖ: ಕ್ಷುರ: ಶಾರ್ದೂಲ ಇವ ಕುಂಜರಮ್” ಭಾಂ |



સદર મુ.દર (પાં) સર્વ, વાવ.



ಸೃದಾಕು ಸೃದಾಕು (ಪುಂ) 1. ದಾಯು, ಗಾಳಿ. ಸೃ (ಗತೌ)  
"ಕಾಕು:" ದುಗಾಗಮತ್ರ (ಠಂ ೩-೭೮)। 2. ಪಜ್ಜಾಯುಧ.  
3. ಅಗ್ನಿ. 4. ಸೂರ್ಯನ ಪ್ರತಿಬಿಂಬ. "ಸೃದಾಕುರನಿಲೇ  
ವಜ್ರೇ ಜ್ವಲನೇ ಪ್ರತಿಸೂರ್ಯಕೇ" ಮೇಡಿಂ। (ಸ್ತ್ರೀಂ) 5. ನದಿ.  
ಹೊಳೆ.

ಸೃಪಾಟ ಸೃಪಾಟಿ (ಪುಂ) ಒಂದು ಅಳತೆ.

ಸೃಪಾಟಿಕಾ ಸೃಪಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಕ್ಕಿಯ ಕೊಕ್ಕು,  
ಪಕ್ಷಿಯ ಮೂತಿ.

ಸೃಪಾಟಿ ಸೃಪಾಟೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಅಳತೆ.

ಸೃಪ ಸೃಪ (ಪುಂ) ಚುದ್ರ. ಸೃಪ್ (ಗತೌ) "ರಕ್" (ಠಂ  
೨-೧೨)।

ಸೃಮರ ಸೃಮರ (ಪುಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಚಮರಿ ಮೃಗ.  
ಸೃ (ಗತೌ) "ಕಮರವ್" (೩-೨-೧೬೦)। (ವಿಂ) 2.  
ನವೆಯುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಸಂಚರಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ. "ಸೃಮರೋ  
ಮಙ್ಗುರಪ್ರಜ್ಞ:" ಮಡಿಂ ೭-೨೨।

ಸೃಷ್ಠ ಸೃಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) "ಕ:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಯುಕ್ತ  
ವಾದ. 3. ನಿಶ್ಚಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಾದ.  
"ಸೃಷ್ಠ ತು ನಿರ್ಮಿತೇ ಯುಕ್ತನಿಶ್ಚಿತಯೋ: ಪ್ರಾಜ್ಯೇ ತ್ರಿಪು" ಮೇಡಿಂ।  
(ನಂ) 5. ಸೃಷ್ಟಿ, ನಿರ್ಮಾಣ. ಸೃಜ ಭಾವೇ "ಕ:"  
(೩-೨-೧೧೪)।

ಸೃಷ್ಠವತ್ ಸೃಷ್ಠವತ್ (ವಿಂ) ಸೃಷ್ಟಿಸಿದವನು, ನಿರ್ಮಾಣ  
ಮಾಡಿದವನು. ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) "ಕವತು:" (೩-೨-೧೦೨)।  
"ವೃತ್ತಾನುಪ್ಪೇ ಚ ನ ಚಾತಿರ್ದೀರ್ಘೇ ಜಹ್ನು ಶುಭೇ ಸೃಷ್ಠವತಸ್ತದೀಯೇ"  
ಕುಮಾಂ ೧-೩೫।

ಸೃಷ್ಟಿ ಸೃಷ್ಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಿರ್ಮಾಣ, ಉತ್ಪತ್ತಿ. ಸೃಜ  
(ವಿಸರ್ಗ) "ಕ್ಲಿನ್" (೩-೩-೯೪)। "ಯಾ ಸೃಷ್ಟಿ:  
ಸೃಷ್ಟರಾಢಾ ಬಹತಿ ವಿಧಿಹುತಂ ಯಾ ಹವಿರ್ಯಾ ಚ ಹೋತೀ" ಶಾಕುಂ  
೧-೧। 2. ಸ್ವಭಾವ. "ಸೃಷ್ಟಿ: ಸ್ವಭಾವೇ ನಿರ್ಮಾಣಿ"  
ಹೇಮಂ।

ಜಗತ್ತಿನ ಸೃಷ್ಟಿ: ಮಹಾಪ್ರಳಯಾನಂತರ ಈ ಜಗ  
ತ್ತೆಲ್ಲವೂ ತಮಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ (ಪ್ರಕೃತಿಯಲ್ಲಿ) ಸೂಕ್ಷ್ಮರೂಪ  
ದಿಂದ ಲೀನವಾಗಿ ಅಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿಯೂ (ಯಾವ ಇಂದ್ರಿ  
ಯಕ್ಕೂ ಗೋಚರವಿಲ್ಲದೆಯೂ) ಅನುಮಾನದಿಂದ ತಿಳಿ  
ಯಲೂ ಮತ್ತು ಊಹಿಸಲೂ ಅಸಾಧ್ಯವಾಗಿಯೂ  
ಯಾವಕಾರ್ಯಕ್ಕೂ ಅಸಮರ್ಥವಾಗಿಯೂ ಬ್ರಹ್ಮರೂಪ  
ದಿಂದ ಇದ್ದಿತು. "ಆಸೀದಿದಂ ತಮೋಭೂತಮಪ್ರಜ್ಞಾತಮಲಕ್ಷಣಮ್।  
ಅಪ್ರತರ್ಕ್ಯಮವಿಜ್ಞೇಯಂ ಪ್ರಸುಪ್ತಮಿವ ಸರ್ವತ:" ಮನುಂ ೧-೫।

"ಸದೇವ ಸೌಮ್ಯೇದಮಗ್ರ ಆಸೀತ್ — ಏಕಮೇವಾದ್ವಿತೀಯಮ್"  
ಶಾಂದೋಗ್ಯಂ ೬-೨-೧।

ಬಾಹ್ಯೇಂದ್ರಿಯಗಳಾವುದಕ್ಕೂ ಆಗೋಚರನಾದ  
ಪರಮಾತ್ಮನು ಅವ್ಯಕ್ತಾವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿದ್ದ ಈ ಜಗತ್ತನ್ನು  
ಸ್ಥೂಲರೂಪದಿಂದ ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಲು ಮಹದಾದಿಕಾರ್ಯ  
ರೂಪದಿಂದ ಅವಿರ್ಭವಿಸಿದನು. "ಯೋಸಾವತೀಂದ್ರಿಯಗ್ರಾಹ್ಯ:  
ಸೂಕ್ಷ್ಮೋಽವ್ಯಕ್ತ: ಸನಾತನ:। ಸರ್ವಭೂತಮಯೋಽಚಿಂತ್ಯ: ಸ ಏವ  
ಸ್ವಯಮುದ್ಭವಿ" ಮನುಂ ೧-೭। "ಅಸದ್ವಾ ಇದಮಗ್ರ ಆಸೀತ್।  
ತತೋ ವೇ ಸದಜಾಯತ। ತದಾತ್ಮಾನೇ ಸ್ವಯಮಕುರತ" ತೇಂ ೮ಂ।

ಅನಂತರ ಪ್ರಳಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ತನ್ನಲ್ಲಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿದ್ದ  
ಅಚಿತ್ತಮಾನವಾದ ಜಂತುಗಳನ್ನು ನೋಡಿ ಕರುಣೆಯಿಂದ  
ಆ ಜಂತುಗಳಿಗೆ ಕಾರ್ಯಕ್ಷಮವಾದ ಶರೀರ ಮತ್ತು  
ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ಕೊಡಲು ಸಂಕಲ್ಪಿಸಿದನು, "ಅಚಿದವಿ-  
ಶಿಷ್ಟಾನ್ ಪ್ರಲಯೇ ಜನ್ತುನವಲೋಕಯ ಜಾತನಿವೇದಾ। ಕರಣ-  
ಕಲೇಬರಯೋಗಂ ವಿತರಸಿ ವೃಷಶೇಲನಾಥಕರುಣೇ ತ್ವಮ್" ದಯಾಶಂ।

ಈ ಜಂತುಗಳನ್ನು ತನ್ನ ಶರೀರದಿಂದ ಸೃಷ್ಟಿಸುವ  
ಸಂಕಲ್ಪದಿಂದ ಮೊದಲು ಸಕಲಜಂತುಜೀವಾತುಮಾದ  
ಜಲವನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ಅದರಲ್ಲಿ ಶಕ್ತಿರೂಪವಾದ ಬೀಜ  
ವನ್ನು ಸೇರಿಸಿದನು, "ಸೌಮಿಷ್ಯಾಯ ಶರೀರಾತ್ ಸ್ವಾತ್  
ಸಿಸೃಕ್ಷಾವಿವಿಧಾ: ಪ್ರಜಾ:। ಅಪ ಏವ ಸಸರ್ಜಾದೌ ತಾಸು  
ವೀರ್ಯಮವಾಸೃಜತ್" ಮನುಂ ೧-೮। "ತದೇಕತ ಬಹು ಸ್ಯಾಂ  
ಪ್ರಜಾಯೇತಿ" ಶಾಂದೋಗ್ಯಂ ೬-೨-೩।

ಆ ಶಕ್ತಿರೂಪವಾದ ಬೀಜವು ಒಂದು ಅಂಡವಾಯಿತು.  
ಆ ಅಂಡದಲ್ಲಿ ಹಿರಣ್ಯಗರ್ಭರೂಪದಿಂದ ಅವಿರ್ಭವಿಸಿದ  
ಬ್ರಹ್ಮನು ಅದನ್ನು ಎರಡು ಭಾಗಮಾಡಿದನು. ಆ ಎರಡು  
ಭಾಗಗಳಿಂದ ಸ್ವರ್ಗ ಮತ್ತು ಭೂಲೋಕಗಳನ್ನೂ ಅವುಗಳ  
ಮಧ್ಯೆ ಅಂತರಿಕ್ಷವನ್ನೂ ಎಂಟು ದಿಕ್ಕುಗಳನ್ನೂ ನಿರ್ಮಿಸಿ  
ದನು. "ತಾಮ್ಯಾಂ ಸ ಶಕಲಾಮ್ಯಾಂ ಚ ದಿವಂ ಭೂಮಿಂ ಚ  
ನಿರ್ಮಮೇ। ಮಧ್ಯೇ ವ್ಯೋಮ ದಿಶಶ್ಚಾಷ್ಟಾವಪಾಂ ಸ್ಥಾನಂ ಚ ಶಾಶ್ವತಮ್"  
ಮನುಂ ೧-೧೩।

ಅನಂತರ ಮಹತ್ ಅಹಂಕಾರ ಮನಸ್ಸು ವಿಷಯ  
ಗ್ರಾಹಕ ಮಂಜುಷ್ಣನೇಂದ್ರಿಯಗಳು ಪಂಚಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯಂ  
ಗಳು ಮತ್ತು ಪಂಚತನ್ಮಾತ್ರಗಳು ಇವನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದನು.  
ಅನಂತರ ಅಹಂಕಾರ ಮತ್ತು ತನ್ಮಾತ್ರಗಳ ಸೂಕ್ಷ್ಮಾವ  
ಯವಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಸಮಸ್ತ ಭೂತಗಳನ್ನೂ (ಮನುಷ್ಯ  
ತೀರ್ಯಕ್ ಮತ್ತು ಸ್ಮಾವರಗಳನ್ನೂ) ಸೃಷ್ಟಿಸಿದನು.  
"ತೇಷಾಂ ತ್ವವಯವಾನ್ ಸೂಕ್ಷ್ಮಾನ್ ಷಣ್ಣಾಮಪ್ಯಮಿತಿಜಸಾಮ್।  
ಸನ್ನಿವೇಶ್ಯಾತ್ಮಮಾತ್ರಾಸು ಸರ್ವಭೂತಾನಿ ನಿರ್ಮಮೇ" ಮನುಂ ೧-೧೬।



ಈ ರೀತಿ ಸೃಷ್ಟವಾದ ಮನುಷ್ಯ ತಿರ್ಯಕ್ ಸ್ಥಾವರಗಳ ಹೆಸರುಗಳನ್ನು ಗೋಚಾರಿಗೆ ಗೆ: ಎಂದೂ ಅಶ್ವಜಾತಿಗೆ ಅಶ್ವ: ಎಂದೂ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ವೇದಾಧ್ಯಯ ನಾದಿಕಾರ್ಯ ಕ್ಷತ್ರಿಯನಿಗೆ ಪ್ರಜಾಪರಿಪಾಲನಾದಿಕಾರ್ಯ ಎಂದೂ ಬೇರೆಬೇರೆಯಾಗಿ ವೇದಶಬ್ದಗಳಿಂದಲೇ ತೆಗೆದು ನಿರ್ಮಿಸಿದನು. "ಸर्वेषां स तु नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक् । वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे" ಮನುಂ ೧-೨೧ ।

ಅನಂತರ ಯಜ್ಞಸಿದ್ಧಿಗಾಗಿ ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ಋಗ್ವೇದ ವನ್ನೂ ವಾಯುವಿನಿಂದ ಯಜುರ್ವೇದವನ್ನೂ ರವಿಯಿಂದ ಸಾಮವೇದವನ್ನೂ ಆಕರ್ಷಿಸಿದನು. ಬಳಿಕ ಸೂರ್ಯಾದಿ ಗ್ರಹಗಳ ಸಂಚಾರ ರೂಪವಾದ ಕಾಲ ತಿಂಗಳು ಆಯನ ಮತ್ತು ಚತುರ್ಮುಖ ರೂಪವಾದ ಕಾಲವಿಭಾಗ ನಕ್ಷತ್ರಗಳು ಗ್ರಹಗಳು ನದಿಗಳು ಪರ್ವತಗಳು ಮತ್ತು ಸಮ ಮತ್ತು ವಿಷಮಪ್ರದೇಶಗಳನ್ನೂ ಸೃಷ್ಟಿಸಿದನು. "अग्निवायु-रविम्यश्च त्रयं ब्रह्म सनातनम् । द्रुदोह यज्ञसिद्धयर्थ-मृग्यजुःसामलक्षणम्" ಮನುಂ ೧-೨೩ । "कालं काल-विभक्तीश्च नक्षत्राणि ग्रहास्तथा । सरितः सागराञ्छैलान् समानि विषमाणि च" ಮನುಂ ೧-೨೩, ೨೪ ।

ಮುಂದೆ ಪ್ರಜೆಗಳನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸುವ ಮೊದಲು ತಪಸ್ಸು ವಾಕ್ಯ ರತಿ (ಮನಃಪರಿತೋಷ) ಕಾಮ (ಇಚ್ಛೆ) ಕ್ರೋಧ ಇವುಗಳನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದನು. ಮನುಷ್ಯನು ವಿವೇಕದಿಂದ ಬಾಳಲು ಅವಶ್ಯವಾದ ಧರ್ಮ ಮತ್ತು ಅಧರ್ಮಗಳನ್ನು ಹೇಳಿ ಅವುಗಳನ್ನು ಧರ್ಮಾಧರ್ಮಗಳ ಫಲವಾದ ಸುಖ ದುಃಖಗಳ ದ್ವಂದ್ವದೊಡನೆ ಸೇರಿಸಿದನು. ಭೂಮಿ ಮೊದಲಾದ ಲೋಕಗಳ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಗಾಗಿ ಮುಖದಿಂದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ನನ್ನೂ ಬಾಹುಗಳಿಂದ ಕ್ಷತ್ರಿಯನನ್ನೂ ಊರು (ತೊಡೆ) ವಿನಿಂದ ವೈಶ್ಯನನ್ನೂ ಪಾದಗಳಿಂದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ವರ್ಣ ದವನನ್ನೂ ಸೃಷ್ಟಿಸಿದನು. "ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् । बाहू राजन्यः कृतः । ऊरू तदस्य यद्वैश्यः । पद्भ्यां शूद्रोऽजायत" ಶ್ರುತಿ: । ಅನಂತರ ಮನುಚಕ್ರವರ್ತಿಯು ಉದ್ಭವಿಸಿ ಪ್ರಜಾಸೃಷ್ಟಿಯ ಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ದಶಪ್ರಜಾಪತಿ ಗಳನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದನು.

ದಶಪ್ರಜಾಪತಿಗಳು : (1) ಮರೀಚಿ: (2) ಅತ್ರಿ: (3) ಅಜ್ಞಿರಾ: (4) ಪುಲಸ್ತ್ಯ: (5) ಪುಲಹ: (6) ಕ್ರುತು: (7) ಪ್ರವೇತಾ: (8) ವಸಿಷ್ಠ: (9) ಮೃಗು: ಮತ್ತು (10) ನಾರದ: । ಈ ಪ್ರಜಾಪತಿಗಳು ಸಪ್ತ ಮನುಗಳನ್ನೂ ದೇವತೆಗಳನ್ನೂ ದೇವತೆಗಳ ವಾಸಸ್ಥಾನವಾದ ಸ್ವರ್ಗವನ್ನೂ

ಮಹರ್ಷಿಗಳನ್ನೂ ಯಕ್ಷರಕ್ಷ:ಪಿಶಾಚಗಳು ಗಂಧರ್ವರು ಅಪ್ಸರಸ್ಸು ಅಸುರರು ವಾಸುಕಿ ಮೊದಲಾದ ಸರ್ಪಗಳು ಗರುಡ ಮೊದಲಾದ ಪಕ್ಷಿಗಳು ಪಿತ್ರುಗಳೂ ವಿದ್ಯುತ್ತು ವಜ್ರಾಯುಧ ಮೇಘಗಳು ಇಂದ್ರಧನುಸ್ಸು ಉತ್ಪಾತಗಳು ಕಿನರರು ವಾನರ ಮತ್ತು ಪಕ್ಷಿಗಳು ಪಶು ಮೃಗ ಮನುಷ್ಯರು ಮುಂತಾದವರನ್ನೂ ಕ್ರಿಮಿಕೀಟಗಳು ಜರಾ ಯುಜ ಅಂಡಜ ಸ್ತೇದಜ ಮತ್ತು ಉದ್ಭಿಜ್ಜಗಳು ವನಸ್ಪತಿ ವೃಕ್ಷಗಳು ಮುಂತಾದವನ್ನೂ ಸೃಷ್ಟಿಸಿದರು. ಈ ಸಂತತಿಯ ವಿವರಕ್ಕೆ ["कश्यप" ಪದ ಮತ್ತು "दक्ष" (2) ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ]. "कर्मणां च विवेकाथं धर्माधर्मौ व्यवचयत् । इन्द्रैरयोजयच्चेमा: सुखदुःखा-दिभि: प्रजा: ॥ लोकानां तु विवृद्धयर्थं मुखबाहूरुपादत: । ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्तयत्" ॥ "अहं (मनु:) प्रजा: सिसृक्षुस्तु तपस्तप्त्वा सुदुश्चरम् । पतीन् प्रजानामसृजं महर्षीनादितो दश ॥ मरीचिमथ्यज्जिरसौ पुलस्त्यं पुलहं क्रतुम् । प्रचेतसं वसिष्ठं च मृगुं नारदमेव च ॥ एते मनुस्तु सप्तान्यानसृजन् भूरितेजस: । देवान् देवनिकायांश्च महर्षींश्चामतीजस: ॥ यक्षरक्ष:पिशा-चांश्च गन्धर्वाप्तिरसोऽसुरान् । नागान् सर्पान् सुपर्णांश्च पितॄणां च पृथग्गणान् ॥ ಇತ್ಯಾದಿ ಮನುಂ ೧ ।

ಸೃಷ್ಟಿಕ್ರಮ: : ಯೋಗನಿದ್ರೆಯಿಂದ ಎಚ್ಚರಗೊಂಡ ಪರಮಾತ್ಮನಿಂದ ಪ್ರಥಮತಃ ಮನಃಸೃಷ್ಟಿ. ಮನಸ್ಸಿನಿಂದ ಆಕಾಶ. ಆಕಾಶದಿಂದ ವಾಯು. ವಾಯುವಿನಿಂದ ಅಗ್ನಿ. ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ಜಲ. ಜಲದಿಂದ ಪೃಥ್ವಿ (ಭೂಮಿ) ಯ ಸೃಷ್ಟಿಯಾಯಿತು. ಇದು ಸೃಷ್ಟಿಕ್ರಮ. "तस्य सोऽहनिशस्यान्ते प्रसुप्तः प्रतिबुध्यते । प्रतिबुद्धश्च सृजति मनः सदसदात्मकम् ॥ मनः सृष्टिं विकृते चोद्यमानं सिसृक्षया । आकाशं जायते तस्मात्तस्य शब्दं गुणं विदुः । आकाशात् विकुर्वाणात्सर्वगन्धवहः शुचिः । बलवान् जायते वायुः स वै स्पर्शगुणो मतः ॥ वायोरपि विकुर्वाणाद्वಿरोचिष्णु तमोनुदम् । ज्योतिरुत्पद्यते भास्व-त्तद्रूपगुणमुच्यते ॥ ज्योतिषश्च विकुर्वाणादापो रसगुणाः स्मृताः । अद्भ्यो गन्धगुणा भूमिरित्येषा सृष्टिरादितः" ಮನುಂ ೧-೭೪, ೭೫, ೭೬, ೭೭, ೭೮ । "तस्माद्वा एत-स्मादात्मन आकाशः सम्भूतः । आकाशाद्वायुः । वायो-रग्निः । अग्नेरापः । अद्भ्यः पृथिवी" ತೆಂ ೩೫೦ । "एतस्माज्जायते प्राणो मनः सर्वेन्द्रियाणि च । स वायुर्ज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य धारिणी" ಮುಂಡಕಂ ೨-೧-೩ ।



ಸೃಷ್ಟಿಕರ್ತ ಸೃಷ್ಟಿಕರ್ತ (ಪುಂ) ಪರಮಾತ್ಮ. ["ಸೃಷ್ಟಿ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಸೇಕ ಸೇಕ (ಪುಂ) 1. (ನೀರು) ಸುರಿಯುವುದು, ಗಡೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಗೆ ನೀರು ಹಾಕುವುದು. ಷಿಚ (ಕರಣ) "ಘ" (೩-೩-೧೮). "ಸೇಕಾಂತೇ ಮುನಿಕನ್ಯಾಭಿಃ ತತ್ಕ್ಷಣೋ-ಜ್ಜಿತವೃಕ್ಷಕಮ್" ರಘುಂ ೧-೫೧. 2. ಚಿಮುಕಿಸುವುದು, ಸಿಂಪಿಸುವುದು. "ಇಲಕ್ಷಣಂ ಯತ್ಪರಿಹಿತಮೇತಯೋಃ ಕಿಲಾಂತ-ಘನಾರ್ಥ ತದ್ವದಕಸೇಕಸಕ್ತಮೂರ್ವೋಃ" ಮಾಘಂ ೮-೬೫. 3. ಸ್ತಂಭಿಸುವುದು, ಸೋರುವುದು. "ತಸ್ಯ ದ್ವಿಪಾನಾಂ ಮದವಾರಿಸೇಕಾ-ತ್ಕುರಾಮಿಘಾತಾಂಚ ತುರಗ್ಗಮಾಣಾಮ್" ರಘುಂ ೧೬-೩೦. 4. ವೀರ್ಯಸ್ರಾವ, ರೇತಸ್ಸು ಸೋರುವುದು, ರೇತಸ್ಸಿನ ತಡೆಯಿಲ್ಲದ ಸೋರಿಕೆ.

ಸೇಕಪಾತ್ರ ಸೇಕಪಾತ್ರ (ನಂ) 1. ನೀರು ಸುರಿಯುವ ಪಾತ್ರೆ, ಗಡೆಗಳಿಗೆ ನೀರು ಹಾಕುವ ಬಾಣ. ಸೇಕಾಯ ಸೇಕನಾಯ ಪಾತ್ರಮ್. 2. ಸಿಂಪಿಸುವ ಪಾತ್ರೆ, ಚಿಮುಕಿಸುವ ಪಾತ್ರೆ.

ಸೇಕಿಮ ಸೇಕಿಮ (ವಿಂ) 1. ಜಲ ಸೇಚನೆಯಿಂದ ಉಂಟಾದ, ನೀರು ಹಾಕುವುದರಿಂದ ಉಂಟಾದ. ಸೇಕೇನ ಜಲಸೇಚನೇನ ನಿವೃತ್ತಮ್—ಸೇಕ "ಇಮಪ್" (ವಾಂ ೪-೪-೨೦). (ನಂ) 2. ಮೂಲಂಗಿ.

ಸೇಕ್ತ ಸೇಕ್ತ (ಪುಂ) 1. ಪತಿ, ಗಂಡ. ಸಿಂಚತಿ ರೇತಃ—ಷಿಚ (ಕರಣ) "ತು" (೩-೧-೧೩೩). (ವಿಂ) 2. ಸೇಚನೆ ಮಾಡುವವನು, ನೀರು ಸುರಿಯುವವನು. 3. ನೀರು ಚಿಮುಕಿಸುವವನು, ಸಿಂಪಿಸುವವನು. 4. ನೀರು ಎರಚುವವನು. ಷಿಚ (ಕರಣ) "ತು" (೩-೧-೧೩೩).

ಸೇಕ್ತ ಸೇಕ್ತ (ನಂ) 1. ಸೇಚನೆ ಪಾತ್ರೆ, ನೀರೆರೆಯುವ ಪಾತ್ರೆ, ಗಡೆಗಳಿಗೆ ನೀರು ಹಾಕುವ ಪಾತ್ರೆ. ಸಿಂಚತೀನೇನ—ಷಿಚ (ಕರಣ) ಕರಣ "ಫ್ಲನ್" (೩-೨-೧೮೨). 2. ಸಿಂಪಿಸುವ ಪಾತ್ರೆ, ಚಿಮುಕಿಸುವ ಪಾತ್ರೆ.

ಸೇಚಕ ಸೇಚಕ (ಪುಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೋಡ. ಷಿಚ (ಕರಣ) "ಫ್ಲಲ್" (೩-೧-೧೩೩). 2. ಪತಿ, ಗಂಡ. (ವಿಂ) 3. ನೀರು ಎರೆಯುವವನು, ಗಡೆಗಳಿಗೆ ನೀರು ಹಾಕುವವನು. 4. ನೀರು ಸಿಂಪಿಸುವವನು, ನೀರು ಚಿಮುಕಿಸುವವನು. 5. ನೀರನ್ನು ಎರಚುವವನು. "ಸೇಚಕಃ ಸ್ಯಾತ್ ಪುಮಾನ್ ಮೇಘೇ ವಾಚ್ಯಲಿಂಗಸ್ತು ಸೇಕಾರಿ" ಮೇದಿಂ.

ಸೇಚನ ಸೇಚನ (ನಂ) 1. ನೀರನ್ನು ಎರೆಯುವುದು, ಗಡೆಗಳಿಗೆ ನೀರನ್ನು ಹಾಕುವುದು. ಷಿಚ (ಕರಣ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫). "ವೃಕ್ಷಸೇಚನೇ ದ್ವೇ ಧಾರಯಸಿ ಮೇ" ಶಾಕುಂ ೧. 2. ಸಿಂಪಿಸುವುದು, ಚಿಮುಕಿಸುವುದು. 3. ರಕ್ಷಣೆ.

4. ವೀರ್ಯಸೇಚನೆ. 5. ಸುರಿಯುವುದು. 6. ಹಡಗಿನಿಂದ ನೀರನ್ನು ಹೊರಗೆ ಚೆಲ್ಲುವ ಪಾತ್ರೆ. "ಸೇಚನಂ ರಕ್ಷಣೇ ಸೇಕೇ ನೌಕಾಯಾಃ ಸೇಕಮಾಜನೇ" ಮೇದಿಂ.

ಸೇಚನೀಯ ಸೇಚನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸೇಚನಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಸೇಚನೆ ಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ಸೇಚನೆ ಮಾಡಬಹುದಾದ. ಷಿಚ (ಕರಣ) "ಘನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬). "ತಖ್ಯಃ". ಸೇಕ್ತಖ್ಯಮ್ ಸೇಕ್ತಖ್ಯಮ್.

ಸೇತು ಸೇತು (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ ನದಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ದಾಟಲು ನಿರ್ಮಿಸುವ ಸೇತುವೆ. ಸಿನೋತಿ—ಷಿಚ (ಬಂಧನ) "ತುನ್" (೩ಂ ೧-೬೯). "ಮೇನಾಕಮಹಸಾ ದೀಪ್ತಂ ಸೇತು-ಸೀಮಂತಿತೋದಕಮ್. ದಮಿತಂ ರಘುವೀರೇಣ ದದರ್ಶಿಷ್ವ ಸ ದಕ್ಷಿಣಮ್" ಯಾದಂ ೨೨-೧೭೭. 2. ನದಿಯ ನೀರನ್ನು ತಡೆದಿಡಲು ಹಾಕುವ ಕಟ್ಟೆ, ಅಡೆಕಟ್ಟು. "ಸಮೀಯತುರ್ದೇ-ವಿಸರ್ಪಿವೋಘೌ ಮಿತ್ರೇಕಸೇತು ಪಯಸಾಮಿವೋಘೌ" ಕುಮಾರಂ ೭-೫೨. "ಲಲಿತಂ ನಿಗಂತೇ ನೇರೇ ಸೇತುಮೇವ ಚಿಕೀರ್ಷತಿ" ಚಂದ್ರಾಂ. 3. ವರಾಣವೃಕ್ಷ, ವಲಸೆಗಿಡ.

ಸೇತುಕ ಸೇತುಕ (ಪುಂ) ವಲಸೆಗಿಡ, ವರಾಣವೃಕ್ಷ. ಸೇತು ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್".

ಸೇತುಬಂಧ ಸೇತುಬಂಧ (ಪುಂ) ಸೇತುವೆಯನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸುವುದು. ಸೇತುಬಂಧಃ. ಶ್ರೀರಾಮನು ಸೈನ್ಯದೊಡನೆ ಲಂಕೆಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಲು ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಸೇತುವೆಯ ಬಂಧನ.

ಸೇತುವೃಕ್ಷ ಸೇತುವೃಕ್ಷ (ಪುಂ) ವರಾಣವೃಕ್ಷ, ವಲಸೆಗಿಡ. ಸೇತುನಾಮಾ ವೃಕ್ಷಃ.

ಸೇತ್ರ ಸೇತ್ರ (ನಂ) ನಿಗಡ, ಅನೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟಿಹಾಕುವ ಸರಪಳಿ. ಷಿಚ (ಬಂಧನ) "ಫ್ಲನ್" (೩-೨-೧೮೨).

ಸೇದಿವಸ್ ಸೇದಿವಸ್ (ವಿಂ) ಕುಳಿತುಕೊಂಡಿರುವವನು. ಷಡ್ಲ್ (ವಿಶರಣಾದಿ) "ಕವಸ್ತುಃ" (೩-೨-೧೦೮).

ಸೇದು ಸೇದು (ಪುಂ) ಕರಬೂಜದ ಹಣ್ಣು. "ಲತಾಪನ-ನಾಟಾಂ ಸೇದುರ್ವಾಸಿತಸ್ತು ಯಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಸೇನ ಸೇನ (ವಿಂ) ಒಬ್ಬ ಯಜಮಾನನನ್ನು ಹೊಂದಿರುವವನು, ಪ್ರಭುವಿನೊಡನೆ ಇರುವವನು. ಇನೇನ ಸ್ವಾಮಿನಾ ಸಹ ವರ್ತತೇ.

ಸೇನಾ ಸೇನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಂಡ, ಪಡೆ, ದಳ. ಇನೇನ ಪ್ರಮುಣಾ ಸಹ ವರ್ತತೇ. ಸಿನೋತಿ—ಷಿಚ (ಬಂಧನ) "ನಃ" (೩ಂ ೩-೧೦). "ಸೇನಾ ಮುರಾರೇಃ ಪಥ ಏವ ಸಾ ಪುನರ್ಮಹಾ-ಮಹೋಧ್ರಾನ್ ಪರಿತೋಷ್ಯರೋಹಯತ್" ಮಾಘಂ ೧೨-೪೬. 2. ರಾಜನ ಚತುರಂಗ ಬಲ. "ಸೇನಾ ಪರಿಚ್ಛದಸ್ತಸ್ಯ ದ್ವಯಮೇವಾರ್ಥ-



ಸಾಧನಮ್ । ಶಾಸ್ತ್ರೇಷ್ವವ್ಯಾಹತಾ ವೃದ್ಧಿಮೌರ್ವಿ ಭನುಷಿ ಚಾತತಾ ”  
ರಘುಂ ೧-೧೯ ।

ಸೆನಾಜ್ಞ ಸೇನಾಂಗ (ನಂ) ಗಜ ಅಶ್ವ ರಥ ಪದಾತಿ  
(ಕಾಲಾಳು) ರೂಪವಾದ ಚತುರಂಗಬಲದ ಸಮೂಹ.  
ಸೆನಾಯಾ ಅಜ್ಞಮ್ । “ಹಸ್ತಶ್ಚರಥಪಾದಾತಂ ಸೆನಾಜ್ಞಂ ಸ್ಯಾ-  
ಚ್ಚತುಷ್ಟಯಮ್” ಅಮಂ ।

ಸೆನಾನಿವೇಶ ಸೇನಾನಿವೇಶ (ಪುಂ) ಸೇನೆಯ ಬಿಡಾರ,  
ಸೇನೆಯ ವಾಸಸ್ಥಾನ, ಬರುವ ಸೇನೆಯು ಇಳಿದುಕೊಳ್ಳುವ  
ಸ್ಥಳ. ಸೆನಾಯಾ ನಿವೇಶಃ । “ರಾಮಾಪರಿವಾಣವಿಹಸ್ತಯೋಽಂ  
ಸೆನಾನಿವೇಶಂ ತುಮುಲಂ ಚಕಾರ” ರಘುಂ ೪-೪೯ ।

ಸೆನಾನಿ ಸೇನಾನೀ (ಪುಂ) 1. ಸೇನೆಯ ಯಜಮಾನ,  
ಸೇನಾಧಿಪತಿ. ಸೆನಾಂ ನಪತಿ—ನೀತ್ (ಪ್ರಾಪಣ) “ಕಿವ್”  
(೩-೨-೬೧) । “ಸುನಂದನಂ ನಂದನಮಾತ್ಮನೋ ನಃ ಸೆನಾನ್ಯಮೇತಂ  
ಸ್ವಯಮಾದಿಶ ತ್ವಮ್” ಕುಮಾಂ ೧೨-೪೯ । 2. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ,  
ಷಣ್ಮುಖ. “ಸೆನಾನೀರಗಿನಿಭೂಗುಹಃ” ಅಮಂ । “ಸೆನಾನಿಃ  
ಸೇವ್ಯಪೇ ಗುಹೇ” ಹೇಮಂ । “ಅಯನಮದ್ರೇಸ್ತನಯಾ ಶುಶೋಚ ಸೆನಾನ್ಯ-  
ಮಾಲೀಡಮಿವಾಸುರಾಸ್ತ್ರೇಃ” ರಘುಂ ೨-೩೭ ।

ಸೆನಾಪತಿ ಸೇನಾಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಸೇನೆಯ ಯಜಮಾನ,  
ಸೇನೆಯ ಮುಂದಾಳು. ಸೆನಾಯಾ ಪತಿಃ । “ಸೆನಾಪತಿ  
ನಂದನಮನ್ವಕದ್ವಿಪೋ ಯುಧೇ ಪುರಸ್ಕೃತ್ಯ ಬಲಸ್ಯ ಶಾತ್ರವಃ” ಕುಮಾಂ  
೧೪-೧ । 2. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಷಣ್ಮುಖ.

ಸೆನಾಮುಖ ಸೇನಾಮುಖ (ನಂ) ಸೇನೆಯ ಒಂದು ಗುಂಪು,  
ಪತ್ತಿಗೆ ಮೂರರಷ್ಟು ಸೇನೆಯ ಸಮೂಹ. ಪತ್ತಿಃ  
ಒಂದು ಆನೆ ಒಂದು ರಥ ಮೂರು ಕುದುರೆಗಳು ಮತ್ತು  
ಐದು ಕಾಲಾಳುಗಳು ಸೇರಿದ ಸೇನೆಯ ಗುಂಪು. ಸೆನಾಯಾ  
ಮುಖಮ್ ಉಪಕ್ರಮಃ । “ಏಕೇಕೇಕರಥಶ್ಚಾ ಪತಿಃ ಪञ್ಚ-  
ಪದಾತಿಕಾ । ಪತ್ಯಜ್ಞೇಸ್ತ್ರಿಗುಣಃ ಸರ್ವೇಃ ಕ್ರಮಾದಾಖ್ಯಾ ಯಥೋತ್ತರಮ್ ।  
ಸೆನಾಮುಖಂ ಗುಲ್ಮಗಣಿ ವಾಹಿನಿ ಪೃತನಾ ಚಮುಃ” ಅಮಂ ।

ಸೆನಾರಕ್ಷ ಸೇನಾರಕ್ಷ (ಪುಂ) ಸೇನೆಯನ್ನು ಕಾಡಿರುವವನು,  
ದಂಡನ್ನು ಕಾದು ರಕ್ಷಿಸುವವನು. ಸೆನಾಂ ರಕ್ಷತಿ—ರಕ್ಷ  
(ಪಾಲನೆ) “ಅನ್” (೩-೨-೧) । “ಸೆನಾರಕ್ಷಾಸ್ತು ಸೇನಿಕಾಃ”  
ಅಮಂ ।

ಸೆಮಂತಿ ಸೇಮಂತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೇವಂತಿಗೆ ಹೂವು.  
“ಚಂಪಕಾನಾಂ ಪುಷ್ಪಶತಾತ್ ಅಶೋಕಂ ಪುಷ್ಪಮುತ್ತಮಮ್ । ಅಶೋಕಾನಾಂ  
ಸಹಸ್ರಾದಿ ಸೆಮಂತೀಪುಷ್ಪಮುತ್ತಮಮ್” ।

ಸೆರಾಹ ಸೇರಾಹ (ಪುಂ) ಅವ್ಯತದಂತೆ ಶುಭ್ರವಾಗಿರುವ  
ಅಶ್ವ, ಹಾಲಿನಂತೆ ಬೆಳ್ಳಗಿರುವ ಕುದುರೆ.

ಸೇರ ಸೇರಾ (ಪಿಂ) ಭದ್ರವಾಗಿ ಕಟ್ಟುವವನು, ಬಿಗಿಯಾಗಿ  
ಕಟ್ಟುಹಾಕುವವನು ಪಿನ್ (ಬಿಗಿಸುವ) “ಕಃ” (೩-೨-೧೪೯) ।

ಸೇರ್ಯ ಸೇರ್ಯ (ಪಿಂ) 1. ಹೊಚ್ಚಿಕಟ್ಟುವವನು,  
ಇತರರ ಎಳಿಗೆಯನ್ನು ಸಹಿಸುವವನು. 2. ಅಸೂಯೆಯಿಂದ  
ಕೂಡಿರುವವನು. ಇರ್ಯಯಾ ಸಹಿತಃ ।

ಸೇಲ್ಯ ಸೇಲ್ಯ (ಪುಂ) ಶ್ಲೇಷ್ಮಾತಕವೃಕ್ಷ, ಚಳ್ಳೆಮರ.

ಸೇವ ಸೇವ (ನಂ) 1. ಸೇವಿನ ಹಣ್ಣು. 2. ಬದರ ಫಲ,  
ಬೋರಹಣ್ಣು.

ಸೇವಕ ಸೇವಕ (ಪುಂ) 1. ಚಾರಕ, ಭೃತ್ಯ, ಆಳು. ಷೇವ್  
(ಸೇವಾಯಾಮ್) “ಫಲ್” (೩-೧-೧೩೩) । “ಸೇವಕಃ ಸ್ವಾಮಿನಂ  
ದ್ವೇಷಿ ಕೃಪಣ-ಪರಪಾಕ್ಷರಮ್” ಪञ್ಚತಂ ೧-೪೧ । 2. ಬಿಡಿರಿಸ  
ತಟ್ಟಿ, ಮಕ್ಕರಿ, ಸಿಬ್ಬಲು. “ಸೇವಕೋಽನ್ಯುಗಂ ಪ್ರಸೇವೇ”  
ಹೇಮಂ ।

ಸೇವನ ಸೇವನ (ನಂ) 1. ಸೇವೆ, ಶುಶ್ರೂಷೆ, ಉಪಚಾರ.  
ಷೇವ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) । “ಪಾತ್ರಿ-  
ಕೃತಾತ್ಮಾ ಗುರುಸೇವನೇನ ಸ್ಪಷ್ಟಾಕೃತಿಃ ಪತ್ರರಥೇಂದ್ರಕೇತೋಃ” ರಘುಂ  
೧೮-೩೦ । 2. ಪೂಜೆ, ಆರಾಧನೆ, ಉಪಾಸನೆ. “ಕಪಿಲೋ  
ನಾರದೋ ದತ್ತೋ ಯೋಗೇಶಃ ಸನಕಾದಯಃ । ತಮನ್ವೀಯುರ್ಮಗವತಾ ಯೇ  
ಚ ತತ್ಸೇವನೋತ್ಸುಕಾಃ” ಭಾಗಂ ೪-೧೯-೬ । 3. ಉಪ  
ಭೋಗ, ಅನುಭವಿಸುವುದು, ಇಂದ್ರಿಯ ಸೌಖ್ಯ ಹೊಂದು  
ವುದು. “ಯತ್ಕರೋತ್ಯೇಕರಾತ್ರೇಣ ವೃಷಲೀಸೇವನಾದ್ವಿಜಃ । ತದ್ಭಕ್ಷ  
ಭುಜಗತ್ತಿತ್ಯಂ ತ್ರಿಭಿವಂಶೈರ್ವಿಪೋಹತಿ” ಮನುಂ ೧೧-೧೭೮ । 4.  
ನೀಚರ ಆಶ್ರಯಪಡೆಯುವುದು, ನೀಚರನ್ನು ಸೇರುವುದು.  
ನೀಚರ ಉಪಚಾರಮಾಡುವುದು. ಸತ್ಯಾನೃತಂ ವಾಣಿಜ್ಯಂ  
ಶ್ವಗೃತಿರ್ನಿವಸೇವನಮ್ । ವಜ್ರೇಪ್ತಾಂ ಸದಾ ವಿಪ್ರೋ ರಾಜನ್ಯಶ್ಚ  
ಜುಗುಪ್ಸಿತಾಮ್” ಭಾಗಂ ೭-೧೧-೨೦ । 5. ಸೂಜಿಯಿಂದ  
ಬಟ್ಟೆ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಹೊಲಿಯುವುದು. ಪಿವು (ತನ್ತು-  
ಸಂತಾನ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) । “ಸೇವನಂ ಸೀವನೋ-  
ಪಾಸ್ತಯೋಃ” ಮೇದಿಂ ।

ಸೇವನಿ ಸೇವನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೂಜಿ, ಬಟ್ಟೆ ಮೊದಲಾದವು  
ವನ್ನು ಹೊಲಿಯುವ ಸಾಧನ. ಸೀವ್ಯತನಯಾ — ಪಿವು  
(ತನ್ತುಸಂತಾನ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭) । “ಡೀಪ್”  
(೪-೧-೧೪) । 2. ಶರೀರದೊಳಗಿನ ಅವಯವಗಳ  
ಸಾಯೋಗ. ಅವಯವಗಳು ಸೇರುವ ಸಂದು, ಅವಯವ  
ಗಳ ಸೇರುವೆ. “ಸೇವನ್ಯಃ ಸಪ್ತ ತಾಸಾಂ ತು ಭವೇಯುಃ ಪञ್ಚ  
ಮಸ್ತಕೇ । ಏಕಃ ಶೇಕಸಿ ಜಿಹ್ವಾಭಾಷೇಕಃ” ಭಾವಪ್ರಂ ।  
3. ಬಟ್ಟೆಯ ಎರಡು ತುದಿಗಳ ಅಂಚುಗಳನ್ನೂ ಸೇರಿಸಿ  
ಹೊಲಿಯುವ ರೇಖೆ (ಸೇರುವೆ).



**ಸೇವನೀಯ ಸೇವನೀಯ (ವಿಂ)** 1. ಸೇವಿಸಲ್ಪಡುವ, ಉಪಚರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಸೇವಿಸಬೇಕಾದ, ಶುಶ್ರೂಷಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ಶುಶ್ರೂಷಮಾಡಬಹುದಾದ. ಷೆವ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) ಕರ್ಮದಿ "ಅನೀಯ್" (3-1-96) । 4. ಉಪಾಸಿಸಲ್ಪಡುವ, ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ, ಆರಾಧಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಪೂಜಿಸಬೇಕಾದ, ಆರಾಧಿಸಬೇಕಾದ. 6. ಪೂಜಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ, ಆರಾಧಿಸಬಹುದಾದ. 7. ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುವ. 8. ಉಪಯೋಗಿಸಬೇಕಾದ. 9. ಉಪಯೋಗಿಸಬಹುದಾದ. 10. ಆಶ್ರಯಿಸಲ್ಪಡುವ. 11. ಆಶ್ರಯಿಸಬೇಕಾದ. 12. ಆಶ್ರಯಿಸಬಹುದಾದ. 13. ಹೊಲಿಯಲ್ಪಡುವ. 14. ಹೊಲಿಯಬೇಕಾದ. 15. ಹೊಲಿಯಬಹುದಾದ. 16. ಹೊಲಿಯಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ಷಿವು (ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) ಕರ್ಮದಿ "ಅನೀಯ್" (3-1-96) । ತವ್ಯಃ । ಸೇವಿತವ್ಯಮ್ ಸೇವಿತವ್ಯಮ್. "ಸೇವಿತವ್ಯೋ ಮಹಾವೃಕ್ಷಃ ಫಲಂಶಯಾಸಮನ್ವಿತಃ । ಯದಿ ದೇವಾತ್ಮಕಂ ನಾಸ್ತಿ ಚ್ಚಾಯಾ ಕೇನ ನಿವಾರ್ಯತೇ" ಹಿತೋ 3-10 ।

**ಸೇವಮಾನ ಸೇವಮಾನ (ವಿಂ)** 1. ಸೇವಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಶೂಶ್ರೂಷೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಉಪಚರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಷೆವ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಶಾನಕ್" (3-2-124) । "ಪ್ರಾಯೋ ಭೃತ್ಯಾಸ್ತಜಂತಿ ಪ್ರವಲಿತವಿಭವಂ ಸ್ವಾಮಿನಂ ಸೇವಮಾನಾಃ" ಮುಡಾಂ 4-22 । 2. ಪೂಜಿಸುತ್ತಿರುವ, ಆರಾಧಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಉಪಯೋಗಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಮತ್ತೊಬ್ಬನ ಆಶ್ರಯ ಪಡೆಯುತ್ತಿರುವ.

**ಸೇವಾ ಸೇವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** 1. ಶುಶ್ರೂಷೆ, ಉಪಚಾರ, ಸೇವೆ. ಷೆವ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಅಃ" (3-3-103) । "ಅಹಿಸಾಗುಹುಸೇವಾ ಚ ನಿಶ್ರೇಯಸಕರಂ ಪರಮ್" ಮನುಂ 12-62 । 2. ನಿಚರ ಸೇವೆ, ಅಧಮರಿಗೆ ಮಾಡುವ ಉಪಚಾರ, ಶ್ವವೃತ್ತಿ. "ಸೇವಾ ಲಾಭವಕಾರಿಣೀಮ್ ಕೃತಧಿಯಃ ಸ್ಥಾನೇ ಶ್ವವೃತ್ತಿ ವಿಧುಃ" ಮುಡಾಂ 3-14 । 3. ಪ್ರಶಂಸೆ, ಮುಖಿಸುತ್ತಿ, ಹೊಗಳಿಕೆ. "ಅಲಂ ಸೇವಯಾ, ಮವ್ಯಸ್ಥತಾಂ ಪರಿಗೃಹ್ಯ ಭಜ" ಮಾಲಂ 3 ।

**ಸೇವಿ ಸೇವಿ (ನಂ)** ಎಲಚಿಹಣ್ಣು, ಬೋರೆಹಣ್ಣು.

**ಸೇವಿಕಾ ಸೇವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ದಾಸಿ, ಪರಿಚಾರಿಕೆ.

**ಸೇವಿತ ಸೇವಿತ (ವಿಂ)** 1. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಆರಾಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಷೆವ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಕಃ" (3-2-102) । 2. ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಪಭೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಅಸ್ಯ ನೂನಮಮೃತಾಃ ಫಲೈಃ ಸೇವಿತೇನುದಿನಂ ದಿವ್ಯೀಕಮಾಮ್" ಯಾದಂ 16-36 । 3. ಆಶ್ರಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಶುಶ್ರೂಷೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಉಪಚರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಸೇವಿತು ಸೇವಿತು (ಪುಂ)** 1. ಸೇವಿಸುವವನು, ಶುಶ್ರೂಷೆ ಮಾಡುವವನು. 2. ಆಶ್ರಯಿಸುವವನು. 3. ಪೂಜಿಸುವವನು. 4. ಉಪಯೋಗಿಸುವವನು. ಷೆವ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ತುಕ್" (3-1-133) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ತೀಪ್" (4-1-5) । **ಸೇವಿತ್ರಿ ಸೇವಿತ್ರಿ.**

**ಸೇವಿನ್ ಸೇವಿನ್ (ವಿಂ)** 1. ಸೇವಕ, ಆಳು. 2. ಪೂಜಿಸುವವನು. 3. ಉಪಯೋಗಿಸುವವನು. ಸೇವತೇ — ಪೇವ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) "ಣಿನಿಃ" (3-1-134) ।

**ಸೇವ್ಯ ಸೇವ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಸೇವೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದ. 2. ಪೂಜೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದ, ಆರಾಧನೆಗೆ ಯೋಗ್ಯನಾದ. ಷೆವ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) ಅಹೆ "ಞ್ಯತ್" (3-3-169) । "ಅಹಂ ತಂ ಸೇವ್ಯಮನ್ಯೇಷಾಂ ಕರಿಷ್ಯಾಮಿಶ್ವರಂ ಜಞಾತ್" ಕಥಾಸಂ । 3. ಆಶ್ರಯಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. 4. ಉಪಯೋಗಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. (ಪುಂ) 5. ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿ ಮರ. 6. ನೀರುಹಲಸಿನ ಗಿಡ. (ನಂ) 7. ಲಾಮುಂಚೆದ ಬೇರು. "ಸೇವ್ಯಂ ಕಲಿಬಮುಶೀರೇ ಸ್ಯಾತ್ಸೇವಾಹ್ ಪುನರನ್ಯವತ್" ಮೇದಿಂ । "ಅಭಯಂ ನಲದಂ ಸೇವ್ಯಮಮೃಣಾಲಂ ಜಲಾಶಯಮ್" ಅಮಂ । 8. ಲಾಮುಂಚೆ. —ವ್ಯಾ-ವ್ಯಾ. 9. ಬದನಿಕೆ ಗಿಡ.

**ಸೇವ್ಯಮಾನ ಸೇವ್ಯಮಾನ (ವಿಂ)** 1. ಸೇವಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಉಪಚರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಷೆವ್ (ಸೇವಾಯಾಮ್) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (3-2-124) । "ಸೇವ್ಯಮಾನೋ ಸುಖಸ್ಪರ್ಶಃ ಸಾಲನಿಯಾಸಿಗಾಂಧಿಭಿಃ" ರಘುಂ 1-36 । 2. ಆಶ್ರಯಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 4. ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

**ಸೆಹ ಸೈಂಹ (ವಿಂ)** ಸಿಂಹಸಂಬಂಧವಾದ. ಸಿಹಸ್ಯೇದಮ್ — ಸಿಹ "ಅನ್" (4-3-120) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ತೀಪ್" (4-1-5) । **ಸೆಹಿ ಸೈಂಹೀ.** "ಸಡಾಚ್ಛಟಾಭಿವ್ರಜನೇನ ವಿಭ್ರತಾ ನೃಸಿಹ ಸೆಹಿಮತನುಂ ತನುಂ ತ್ವಯಾ" ಮಾಘಂ 1-49 ।

**ಸೆಹಿಕ ಸೈಂಹಿಕ (ಪುಂ)** ಸಿಂಹಿಕೆಯೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ರಾಹು. ಸಿಹಿಕಾಯಾಂ ಭವಃ "ಅನ್" (4-3-53) ।

**ಸೆಹಿಕೇಯ ಸೈಂಹಿಕೇಯ (ಪುಂ)** ರಾಹು, ಸಿಂಹಿಕೆಯ ಮಗ. ಸಿಹಿಕಾಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ "ಡಕ್" (4-1-120) । "ಪುರಃ ಕಿಲನಾತಿ ಸೋಮಂ ಹಿ ಸೆಹಿಕೇಯೋಽಪುರದ್ವಹಾಮ್" ಮಾಘಂ 2-39 ।

**ಸೆಹಿತ ಸೈಹಿತ (ನಂ)** 1. ಮರಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ ದಡ, ಮರಳು ರಾಶಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ತೀರಪ್ರದೇಶ. ಸಿಕತಾಃ ಸನ್ಯತ್ರ — ಸಿಕತ "ಅನ್" (4-2-104) । "ಸೆಹಿತಂ ಸಿಕತಾಮಯಮ್" ಅಮಂ । "ಮಂದಾಕಿನೀಸೆಹಿತವೇದಿಕಾಭಿಃ ಸಾ ಕಾಡುಕೈಃ ಕೃತ್ರಿಮಪುತ್ರಿಕೈಃ" ಕುಮಾಂ 1-29 । (ವಿಂ)



2. ಮರಳಿನಿಂದ ತುಂಬಿರುವ, ಮರಳಿನಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ.  
“ಮಿತ್ವಾ ಮಿತ್ವಾ ಪ್ರಸರತಿ ಬಲಾತ್ ಕೋಽಪಿ ಚೇತೋವಿಕಾರಃ  
ತೋಸ್ಯೇವಾಪ್ರತಿಹರಯಃ ಸೈಕತಂ ಸೇತುಮೋಃ” ಉಂ ರಾಂ  
೩-೩೬ |

ಸೈಕತಿಕ ಸೈಕತಿಕ (ಪುಂ) 1. ಸಂನ್ಯಾಸಿ, ಭಿಕ್ಷು. 2. ತಪಸ್ವಿ.  
(ನಂ) 3. ಮಂಗಲಸೂತ್ರ, ಕಂಕಣ. (ವಿಂ) 4. ಜೀವಿತ  
ದಲ್ಲಿ ಸಂಶಯವುಳ್ಳವನು, ಜೀವಮಾನದಲ್ಲಿ ಧೈರ್ಯ  
ಕಳೆದುಕೊಂಡವನು.

ಸೈಕತೇಷ್ಠ ಸೈಕತೇಷ್ಠ (ನಂ) ಹಸಿರು. ಸೈಕತಂ ಸ್ಥಾನಮಿಷ್ಟ-  
ಮಸ್ಯ |

ಸೈತವಾಹಿನಿ ಸೈತವಾಹಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಹುದಾಸದಿ.

“ಬಾಹುದಾ ಸೈತವಾಹಿನಿ” ಅಮಂ | ಸಿತವಾಹನಸ್ಯಾರ್ಜುನಸ್ಯೇಯಮ್  
“ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) |

ಸಿದ್ಧಾಂತಿಕ ಸೈದ್ಧಾಂತಿಕ (ವಿಂ) 1. ಸಿದ್ಧಾಂತವನ್ನು ತಿಳಿದ  
ವನು, ನಿಜಾಂಶವನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ತತ್ತ್ವವನ್ನು ತಿಳಿದ  
ವನು. ಸಿದ್ಧಾಂತಂ ವೇತ್ತಿ—ಸಿದ್ಧಾಂತ “ಠಕ್” (೪-೨-೬೦) |  
2. ಜ್ಯೋತಿಷಸಿದ್ಧಾಂತವನ್ನು ತಿಳಿದವನು, ಜ್ಯೋತಿಷದ  
ಸಿದ್ಧಾಂತ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದವನು.

ಸೈನಾಪತ್ಯ ಸೈನಾಪತ್ಯ (ನಂ) 1. ಸೈನಾಪತಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ.  
2. ಸೈನಾಪತಿಯ ಕಾರ್ಯ. ಸೈನಾಪತೇಃ ಭಾವಃ ಕರ್ಮ ವಾ—  
ಸೈನಾಪತಿ “ಯಕ್” (೪-೧-೧೨೮) | “ಸೈನಾಪತ್ಯೇಽಭಿವಿಚ್ಯ  
ಭವಂತಮಿಚ್ಛಾಮಿ ಸಮರಭುವಮವತಾರಯಿತುಮ್” ವೇಣೀಂ ೩ |  
(ವಿಂ) 3. ಸೈನಾಪತಿ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸೈನಾಪತಿ “ಞಃ”  
(೪-೧-೮೫) |

ಸೈನಿಕ ಸೈನಿಕ (ಪುಂ) 1. ಗಜ ಅಶ್ವ ರಥ ಮತ್ತು ಪದಾತಿ  
(ಕಾಲಾಳು) ರೂಪವಾದ ಸೈನೆಯನ್ನು ಸೇರಿಸುವವನು,  
ಭಟ. ಸೈನಾ ಸಮವೇತಿ—ಸೈನಾ “ಠಕ್” (೪-೪-೧) |  
“ಋತೋಽವೇಗಂ ಯುಗಪದ್ವಯಜಿಗೀಷಂತ ಸೈನಿಕಾಃ” ಮಾಘಂ ೧೯-೩೨ |  
2. ಸೈನೆಯ ರಕ್ಷಕ, ಸೈನೆಯನ್ನು ಕಾದಿರುವವನು. “ಸೈನಾ-  
ರಕ್ಷಾಸ್ತು ಸೈನಿಕಾಃ” ಅಮಂ | (ವಿಂ) 3. ಸೈನೆಯ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. “ಏವಂ ತಂ ನಿಹತಂ ಸಙ್ಖ್ಯೇ ದದೃಶು ಸೈನಿಕೋ  
ಜನಃ” ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ |

ಸೈನ್ಯವ ಸೈನ್ಯವ (ಪುಂ) 1. ಜಯದ್ರಥ, ಸಿಂಧುದೇಶದ  
ರಾಜನಾದ ವೃದ್ಧಕೃತನ ಮಗ, ದುರ್ಯೋಧನನ ತಂಗಿ  
ಯಾದ ದುಶ್ಯಳಿಯ ಗಂಡ. [ಇವನು ಪಾಂಡವರು ವಾಸ  
ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಕಾಮ್ಯಕ ವನಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಅವರು ಬೇಟೆಗೆ  
ಹೋಗಿದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ದ್ರೌಪದಿಯನ್ನು ಬಲಾತ್ಕಾರ  
ದಿಂದ ಎತ್ತಿಕೊಂಡು ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಈ ವಿಷಯ

ತಿಳಿದ ಭೀಮಸೇನನು ಅವನನ್ನು ನಗ್ರಹಿಸಿ ದ್ರೌಪದಿಯನ್ನು  
ಬಿಡಿಸಿಕೊಂಡು ಬಂದನು. ಯುಧಿಷ್ಠಿರನ ಮಾತಿನಂತೆ  
ಸೈನ್ಯವನನ್ನು ಜೀವಿಸಹಿತ ಕಳುಹಿಸಿದನು.] 2. ಅಶ್ವ,  
ಕುದುರೆ. ಸಿಂಧುರಭಿಜನೋಽಸ್ಯ ಸಿಂಧು “ಅನ್” (೪-೩-೯೩) |  
“ಸ ಏಕದಾ ಮಹಾರಾಜ ವಿಚರನ್ ಮೃಗಯಾಂ ವನೇ | ವೃತಃ  
ಕತಿಪಯಾಮಾತ್ಯೇರಶ್ವಮಾರುಹ್ಯ ಸೈನ್ಯವಮ್” ಭಾಗಂ ೯-೧ |  
(ಪುಂ) 3. ಸಿಂಧುದೇಶದ ಲವಣ. ಸಿಂಧುಭು ಭವಃ “ಅನ್”  
(೪-೨-೧೩೩) | “ಸೈನ್ಯವೋಽಸ್ತೌ ಶೀತಶಿವಂ ಮಣಿಮನ್ಯಂ ಚ  
ಸಿಂಧುಜೇ” ಅಮಂ | (ವಿಂ) 4. ಸಿಂಧುದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ.  
5. ಸಿಂಧು ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೧೫) |  
ಸೈನ್ಯವ ಸೈನ್ಯವ.

ಸೈನ್ಯ ಸೈನ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಸೈನೆಯನ್ನು ಸೇರಿಸುವ ಭಟ. ಸೈನಾಂ  
ಸಮವೇತಿ—ಸೈನಾ ವಾ “ಞಃ” (೪-೪-೪೫) | ಪಕ್ಷೆ “ಠಕ್”  
(೪-೪-೧) | ಸೈನಿಕಃ ಸೈನಿಕಃ. ಗಜ ಅಶ್ವ ರಥ ಪದಾತಿ  
ಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಸೈನೆಯನ್ನು ಸೇರಿಸಿದ ಭಟನು ಸೈನ್ಯಃ  
ಮತ್ತು ಸೈನಿಕಃ ಎನ್ನಲ್ಪಡುವನು. “ಸೈನ್ಯಾಃ ಶ್ರಿಯಾಮನುಪ-  
ಭೋಗನಿರರ್ಯಕತ್ವದೋಷಪ್ರವಾದಮೃಜಗ್ಗಗನಿಮ್ನಗಾನಾಮ್” ಮಾಘಂ  
೪-೨೮ | (ನಂ) 2. ಸೈನ, ದಳ, ದಂಡು. ಸೈನೇವ—  
ಸೈನಾ “ಞಃ” (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪) | “ಸೈನ್ಯೇಽಪಂತೀತಿ  
ಸುರದಿಷಾಂ ಪುರೋಭೂತ್ ಕಿವದಂತಿ ಹೃದಯಪ್ರಕಮ್ಪಿನಿ” ಕುಮಾಂ  
೧೫-೧ |

ಸೈನ್ಯಪುಂಠ ಸೈನ್ಯಪುಂಠ (ನಂ) ಪುಂಠಕ್ಕೆ ಹಿಂದಿರುವ ಸೈನ,  
ಸೈನೆಯ ಹಿಂಭಾಗ. ಸೈನ್ಯಸ್ಯ ಪುಂಠಂ ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಗಃ |

ಸೈರೀಧೀ ಸೈರೀಧೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅನ್ಯರ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಹೊಲಿಗೆ  
ಕೊಂಡಿ ಮುಂತಾದ ಕೆಲಕುಶಲಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುತ್ತ  
ಸ್ವತಂತ್ರಳಾಗಿರುವ ಹೆಂಗಸು. ಸ್ವೇರಂ ಸ್ವಾಚ್ಛನ್ಯಂ ಧರತಿ—  
ಧೃವ್ (ಧಾರಣೆ) “ಕಃ” (ವಾಂ ೩-೨-೫) | ಪೃಷೋಂ |  
ಗೌರಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೪೧) | “ಸೈರೀಧೀ ಪರವೇಶಮಸ್ಥಾ  
ಸ್ವವಶಾ ಶಿಲ್ಪಕಾರಿಕಾ” ಅಮಂ | 2. ದ್ರೌಪದಿ. 3. ಒಬ್ಬ  
ಸುಕರ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು. 4. ರಾಜನ ಅಂತಃಪುರದಲ್ಲಿ  
ರುವ ಒಬ್ಬ ಸೇವಕಿ. “ಸೈರೀಧೀ ಪರವೇಶಮಸ್ಥಾಶಿಲ್ಪಕೃತ್ಸ್ವವಶಾ-  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ | ವರ್ಣಸಂಕ್ಷರಸಮ್ಮತಸ್ತೌಮಹಾಲಿಕಯೋರಪಿ” ಹೇಮಂ |

ಸೈರೀಕ ಸೈರೀಕ (ಪುಂ) 1. ನೇಗಿಲಿನಿಂದ ನೆಲವನ್ನು ತೋಡು  
ವವನು. ಸೈರೀಕ ಖನತಿ—ಸೈರೀಕ “ಠಕ್” (೪-೪-೨) |  
2. ನೇಗಿಲನ್ನು ಹೊರುವ ಎತ್ತು. ಸೈರೀಕ ವಹತಿ—ಸೈರೀಕ  
“ಠಕ್” (೪-೪-೮೧) | (ವಿಂ) 3. ನೇಗಿಲ ಸಂಬಂಧ  
ವಾದ. ಸೈರೀಕದಮ್—ಸೈರೀಕ “ಠಕ್” (೪-೩-೧೨೪) |  
“ಖನತಿ ತೇನ ತದ್ವಿಗಾಸ್ಯೇದಂ ಹಾಲಿಕಸೈರೀಕೀ” ಅಮಂ |



ಸೇರಿಂಧ್ರಿ ಸೈರಿಂಧ್ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಸೇರಿಂಧ್ರಿ" ಪದದ ಅಕ್ಷ.

ಸ್ವೇರಂ ಸ್ವಾತನ್ತ್ರ್ಯಂ ಧರತಿ - ಷ (ಧಾರಣೆ) "ಕ:" (ಕಾಂ 3-2-4) । ಪೂಂ ।

ಸೇರಿಂಧ್ರಿ ಸೈರಿಂಧ್ರಿ (ಪುಂ) 1. ಮಹಿಷ, ಎಮ್ಮೆ, ಕೋಣ.

ಸೀರಿಣಾಂ ಕರ್ಷಕಾಣಾಮಿಮ ಇವ । ಶಕಂ । ಸೇರಿಂಧ್ರಿ "ಅಣ್" ಸ್ವಾರ್ಥೆ (4-4-38) । "ಲುಲಾಯೋ ಮಹಿಷೋ ವಾಹದ್ವಿಷ-ತ್ಕಾಸರಸೇರಿಭಾ:" ಅಮಂ । 2. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ.

"ಮಂದರ: ಸೇರಿಂಧ್ರಿ: ಶಕ್ರಭವನಂ ಕ್ವಂ ದಿವಂ ನಮ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಸೇರಿ(ರೆ)ಯಕ ಸೈರಿಂಧ್ರೀಯಕ (ಪುಂ) ಮುಳ್ಳು ಗೋರಂಟಿ.

ಸೇರೇಯ ಸೈರಿಂಧ್ರೀಯ (ಪುಂ) ಮುಳ್ಳು ಗೋರಂಟಿ. ಸೇರ "ಡಕ್" (4-2-99) ।

ಸೋಡ ಸೋಡ (ನಂ) 1. ಸಹನೆ, ಸೈರಣೆ. (ವಿಂ) 2. ಸಹಿಸ ಲ್ಪಟ್ಟು, ಸೈರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಷಹ (ಮರ್ಷಣೆ) "ಕ್ವ:" (3-2-102) । ಆತ್ (6-3-112) । "ಆಹತಂ ಕುಚತದೇನ ತರಣ್ಯಾ: ಸಾವು ಸೋಡಮಮುನೇತಿ ಪಪಾತ" ಮಾಘಂ 10-94 ।

ಸೋಡವತ್ ಸೋಡವತ್ (ವಿಂ) ಸಹಿಸಿಕೊಂಡಿರುವವನು. ಷಹ (ಮರ್ಷಣೆ) "ಕ್ವತು:" (3-2-102) । "ಸೋಡವಾಂಶೋ ದಶಮಂತ್ಯಾಂ ಜ್ವಾಪಾನೇವ ಗುಣಪ್ರಿಯ: । ಸುಲಭೋ ಹಿ ದ್ವಿಷಾಂ ಭಜ್ಞೋ ದುರ್ಲಭಾ ಸತ್ಸವವಾಚ್ಯತಾ" ಕಿರಾಂ 11-53 ।

ಸೋಡವ್ಯ ಸೋಡವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸಹಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಸಹಿಸ ಬೇಕಾದ. 3. ಸಹಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ಸಹ (ಮರ್ಷಣೆ) "ತವ್ಯ:" (3-1-96) । ತಸ್ಯ ಆತ್ (6-3-112) । "ಅಪರಾಧ: ಸಹದ್ಭರ್ತಾ ಸೋಡವ್ಯ: ಸ್ವಪ್ರಜಾಕೃತ:" ಭಾಗಂ 10-16-51 ।

ಸೋಡ್ ಸೋಡ್ (ವಿಂ) ಸಹಿಸಿಕೊಳ್ಳುವವನು, ಸೈರಣೆಯುಳ್ಳವನು. ಷಹ (ಮರ್ಷಣೆ) "ತುಚ್" (3-1-133) ।

ಸೋತ್ಕಂಠ ಸೋತ್ಕಂಠ (ವಿಂ) ಉತ್ಕಂಠದಿಂದ ಕೂಡಿರುವವನು. ಉತ್ಕಂಠಯಾ ಸಹ ವರ್ತತೆ । "ಸೋತ್ಕಂಠೇರಮರಗಣೇರನು-ಪ್ರಕೀರ್ಣಾನಿರ್ಯಾಯಿ ಜ್ವಲಿತರವ: ಪುರಾನ್ಮಥೋನ:" ಕಿರಾಂ 7-2 ।

ಸೋತ್ಪ್ರಾಸ ಸೋತ್ಪ್ರಾಸ (ಪುಂ) 1. ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ನಗುತ್ತಾ, ಮಾಡುವ ಹಾಸ್ಯ. ಉತ್ಪ್ರಾಸೇನ ಸಹ ವರ್ತತೆ । (ನಂ) 2. ಉಪಹಾಸ್ಯದೊಡನೆ ಆಡುವ ಮಾತು, ವ್ಯಂಗ್ಯವಾಗಿ ಆಡುವ ಮಾತು, ಮುಗುಳುನಗೆಯೊಡನೆ ಆಡುವ ಮಾತು. "ಸೋಲ್ಪಂಠನಂ ತು ಸೋತ್ಪ್ರಾಸಮ್" ಅಮಂ ।

ಸೋತ್ಸಾಹ ಸೋತ್ಸಾಹ (ವಿಂ) ಉತ್ಸಾಹದೊಡನೆ ಕೂಡಿದ. ಉತ್ಸಾಹೇನ ಸಹ ವರ್ತತೆ ।

ಸೋದರ ಸೋದರ (ಪುಂ) ಒಡಹುಟ್ಟಿದವನು, ಒಬ್ಬ ತಾಯಿಯು ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು. ಸಹ ಸಮಾನಮುದರಂ ಯಸ್ಯ । ಸಹಸ್ಯ ವಾ ಸಭಾವ: (6-3-62) । ಪಕ್ಷೇ ಸಹೋದರ: । "ಅಪನ್ಯಾನಂ ತು ಗಚ್ಛಂತಂ ಸೋದರೋಽಪಿ ವಿಮುಚ್ಛತಿ" ।

ಸೋದರಾ ಸೋದರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಡಹುಟ್ಟಿದವಳು, ಅಕ್ಕ ಅಥವಾ ತಂಗಿ. ಸಹ ಸಮಾನಮುದರಂ ಯಸ್ಯಾ: — ಸಹಸ್ಯ ವಾ ಸಭಾವ: (6-3-62) । ಪಕ್ಷೇ ಸಹೋದರಾ ।

ಸೋದರ್ಯ ಸೋದರ್ಯ (ಪುಂ) ಒಡಹುಟ್ಟಿದವನು, ಒಬ್ಬ ತಾಯಿಯು ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು. ಸೋದರ "ಯ:" (4-4-109) । "ಸ ಹತ್ವಾ ಲವಣಂ ವೀರಸ್ತದಾ ಮೇನ ಮಹೋಜಸ: । ಭ್ರಾತು: ಸೋದರ್ಯಮಾತ್ಮಾನಮಿन्द्रಜಿಹ್ವಶೋಭಿನ:" ರಘುಂ 14-26 ।

ಸೋಪದ್ರವ ಸೋಪದ್ರವ (ವಿಂ) ತೊಂದರೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಹಿಂಸೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಉಪದ್ರವೇನ ಸಹಿತ: ।

ಸೋಪಧ ಸೋಪಧ (ವಿಂ) 1. ಉಪಾಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಉಪಧಯಾ ಸಹ ವರ್ತತೆ । 2. ಮಂಚನೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಮೋಸದಿಂದ ಕೂಡಿದ.

ಸೋಪಧಾನ ಸೋಪಧಾನ (ವಿಂ) ವಿಶೇಷ ಗುಣಗಳುಳ್ಳ, ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಉಪಧಾನೇನ ಸಹ ವರ್ತತೆ । "ಉಪಧಾನಂ ವಿಶೇಷೇ ಸ್ಯಾತ್" ವಿಶ್ವಂ । "ಸೋಪಧಾನಾಂ ಧಿಯಂ ಧೀರಾ: ಸ್ಥೇಯಸೀ ಸದೃಶ್ಯಂತಿ ಯೇ । ತತ್ರಾನಿಶಂ ನಿಷಣ್ಣಾಸ್ತೇ ಜಾನಂತೇ ಜಾತು ನ ಸ್ವಯಮ್" ಮಾಘಂ 2-99 ।

ಸೋಪಧಿ ಸೋಪಧಿ (ವಿಂ) 1. ಮೋಸದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಮಂಚನೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. (ಅವ್ಯಂ) 2. ಕಪಟದಿಂದ ಕೂಡಿ, ಮೋಸದಿಂದ ಕೂಡಿ, ಮಂಚಿಸಿ, ಮೋಸವಡಿಸಿ. ಉಪಧಿನಾ ಸಹ ಯಸ್ಮಿನ್ ಕರ್ಮಣಿ ಭವತಿ ಯಥಾ ತಥಾ । "ಅರಿಷ್ಠು ಹಿ ವಿಜಯಾಥಿನ: ಕ್ಷಿತಿಶಾ ವಿದಧತಿ ಸೋಪಧಿ ಸಂವಿಧೂಷಣಾನಿ" ಕಿರಾಂ 1-45 ।

ಸೋಪ್ಲವ ಸೋಪ್ಲವ (ಪುಂ) 1. ರಾಹುಗ್ರಸ್ತ ಚಂದ್ರ ಮತ್ತು ಸೂರ್ಯ. ಉಪ್ಲವೇನ ಸಹ ವರ್ತತೆ । "ರಾಹುಗ್ರಸ್ತೇ-ತ್ವಿಂದೌ ಚ ಪೂರ್ಣಿ ಚ । ಸೋಪ್ಲವೋಪರಕ್ತೌ ದ್ವೌ" ಅಮಂ । (ವಿಂ) 2. ಅನರ್ಥಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗಿರುವ, ವಿಪತ್ತಿಗೆ ತುತ್ತಾಗಿರುವ.

ಸೋಪಸಗ್ ಸೋಪಸಗ್ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂಸೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಪೀಡೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. 2. ಉತ್ಪಾತದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಅಶುಭ ಫಲವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ನಿಮಿತ್ತಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ, ದೊಡ್ಡ ವಿಪತ್ತಿಗೆ ಒಳಗಾಗಿರುವ, ಉಪಸರ್ಗೇನ ಸಹ ವರ್ತತೆ ।



**ಸೋಪಾಧಿ ಸೋಮಾಧಿ (ವಿಂ)** 1. ಧರ್ಮಚಿಂತೆಯುಳ್ಳವನು. ಧರ್ಮದ ವಿಚಾರಮಾಡುವವನು. ಉಪಾಧಿನಾ ಸಹ ವರ್ತತೆ । “ವಿನೋಪಾಧಿ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ತೃಣತುಷ್ಣುಸಪ್ರಸ್ಯಮಧುನಾ” । 2. ಕಾರಣ ಸಹಿತವಾದ. 3. ಕಪಟದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು.

**ಸೋಪಾನ ಸೋಮಾನ (ನಂ)** ಮೆಟ್ಟಿಲು, ಕೆಳಗಿನಿಂದ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಿ ಹೋಗುವ (ಶಿಲೆ ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ) ಮಾರ್ಗ. ಸಹ ವಿद्यಮಾನಃ ಉಪ ಉಪರಿ ಆನೌ ಗಮನಮನೇನ । “ಆರೋಹಣಾರ್ಥಂ ನವಯೌವನೇನ ಕಾಮಸ್ಯ ಸೋಪಾನಮಿವ ಪ್ರಯುಕ್ತಮ್” ಕುಮಾಂ ೧-೩೯ ।

**ಸೋಮ ಸೋಮ (ಪುಂ)** 1. ಚಂದ್ರ. ಸೌತಿ ಅಮೃತಮ್ — ಪು (ಪ್ರಸವೇಶ್ವರಯೋಃ) “ಮನ್” (ಉಂ ೧-೧೩೭) । “ಸ್ತ್ರಿಯಃ ಪೂರ್ವಂ ಸುರೇಶ್ವರಾಃ ಸೋಮಗಂಧರ್ವವಹ್ನಿಭಿಃ । ಭುಂಜತೇ ಮಾನುಷಾಃ ಪಶ್ಚಾತ್ ತಸ್ಮಾದ್ವಿಂಶತಿ ನ ವಿಧತೇ ॥ ಸೋಮಸ್ತಾಸಾಂ ದದೌ ಶಾಂಚಿ ಗಂಧರ್ವಾಃ ಶಿಕ್ಷಿತಾಂ ಗಿರಮ್ । ಪಾವಕಃ ಸರ್ವಮೇಷ್ಯತ್ವಂ ತಸ್ಮಾನ್ನಿಷಕ್ತಮೃಷಾಃ ಸ್ತ್ರಿಯಃ” ಪಶ್ಚತಂ ೩-೨೦೦ । 2. ವಾನರ, ಕಪಿ. 3. ಕುಬೇರ. 4. ಯಮಧರ್ಮರಾಯ, ಪಿತೃ ದೇವತೆ. 5. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. 6. ಅಷ್ಟವಸುಗಳ ಲೋಬ್ಯ ವಸು. 7. ಕಪೂರ. 8. ಜಲ, ನೀರು. 9. ಸೋಮಲತೆ. “ಸೋಮಸ್ತು ಹಿಮದೀಪಿತೌ । ವಾನರೇ ಚ ಕುಬೇರೇ ಚ ಪಿತೃದೇವೇ ಸಮೀರಣೇ । ವಸುಪ್ರಭೇದೇ ಕರ್ಪುರೇ ನೇರೇ ಸೋಮಲತೀಷಧೌ” ಮೇದಿಂ ।

**ಸೋಮಕಾಂತ ಸೋಮಕಾಂತ (ಪುಂ)** 1. ಚಂದ್ರಕಾಂತ ಶಿಲೆ. (ವಿಂ) 2. ಚಂದ್ರನಂತೆ ಸುಂದರವಾಗಿರುವ. ಸೋಮ ಇವ ಕಾಂತಃ ।

**ಸೋಮಕಯ ಸೋಮಕಯ (ಪುಂ)** ಅಮಾವಾಸ್ಯೆ. ಸೋಮಕಯ ಕಯೋ ಯತ್ರ ।

**ಸೋಮಗರ್ಭ ಸೋಮಗರ್ಭ (ಪುಂ)** ವಿಷ್ಣು. “ಸೋಮಗರ್ಭಾದಿದೇವಾದಿವರಾಹಸ್ವರ್ಣಬಿನ್ದವಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಸೋಮಧಾರಾ ಸೋಮಧಾರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗಗನ, ಆಕಾಶ, ದೇವತೆಗಳ ಮಾರ್ಗ. “ಛಾಯಾಪಥೋ ದೇವಪಥಃ ಸೋಮಧಾರಾ ನಮಃಸರಿತ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

**ಸೋಮಪಾಃ ಸೋಮಪಾಃ (ಪುಂ)** ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಸೋಮರಸ ಪಾನಮಾಡುವವನು. ಸೋಮ ಪಿಬತಿ—ಪಾ (ಪಾನೇ) “ಕಿವಿಪ್” (೩-೨-೭೬) ।

**ಸೋಮಪೀತಿನ್ ಸೋಮಪೀತಿನ್ (ಪುಂ)** ಸೋಮರಸವನ್ನು ಪಾನಮಾಡಿದವನು. ಸೋಮಸ್ಯ ಪೀತಂ ಪಾನಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ— “ಛಿನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪) । —ಪೀಯಿನ್—ಪೀಥಿನ್. “ಸೋಮಪೀಥಿನಯಾದ್ವಾಹ್ಯಾ ಸ್ವಧರ್ಮಾಽವರಮಾಸ್ಥಿತಃ” ಯಾದಂ ೨೨-೧೧ ।

**ಸೋಮಬಂಧು ಸೋಮಬಂಧು (ಪುಂ)** 1. ಬಂಧುಗ್ರಹ. 2. ಬಿಳಿಯ ನೈದಿಲೆ. 3. ಸೂರ್ಯ. ಸೋಮೋ ಬಂಧುರಸ್ಯ । **ಸೋಮಭೂ ಸೋಮಭೂ (ಪುಂ)** ಬುಧಗ್ರಹ. ಸೋಮಾತ್ ಭೂತಪ್ರತಿಯಸ್ಯ ।

**ಸೋಮಯಾಜಿನ್ ಸೋಮಯಾಜಿನ್ (ಪುಂ)** ಸೋಮಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡಿದವನು. ಸೋಮೇನ ಯಜತೇ—ಯಜ (ದೇವಪೂಜಾಯಾಮ್) “ಞಿನಿಃ” (೩-೨-೭೬) ।

**ಸೋಮರಾಜಿನ್ ಸೋಮರಾಜಿನ್ (ಪುಂ)** ಬಾಹುಜಿಗಿ ಗಿಡ. ಸೋಮೇನ ರಾಜತೇ—ರಾಜ (ದೀಪ್ತೌ) “ಞಿನಿಃ” (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಸೋಮರಾಜಿ ಸೋಮರಾಜೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಬಾಹುಜಿಗಿ ಗಿಡ. ಸೋಮೇನ ರಾಜತೇ—ರಾಜ (ದೀಪ್ತೌ) “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) । ಗೌರಾಂ “ಕೀಘ್” (೪-೧-೪೧) । “ಶ್ವೇತಾಂ ಸಂಪೂರ್ಣಕೋಶಾಂ ಕಡಂಭರಾತ್ರಾಯಮಾಣಸಹದೇವೀಃ । ನಾಗಕುಸುಮಂ ಸ್ವಗುಪ್ತಾಂ ಶತಾವರೀಂ ಸೋಮರಾಜೀಂ ಚ” ಬೃಹತ್ಸಂ ೪೪-೧೦ ।

**ಸೋಮಲತಾ ಸೋಮಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಗುಡೂಚಿ, ಅಮೃತ ಬಳ್ಳಿ. ಸೋಮ ಏವ ಲತಾ । ಇವಾರ್ಥ “ಕನ್” (೪-೩-೯೬) । —ಲತಿಕಾ —ಲತಿಕಾ.

**ಸೋಮವಂಶ ಸೋಮವಂಶ (ಪುಂ)** ಚಂದ್ರನ ಸಂತತಿ, ಚಂದ್ರನ ಪೀಳಿಗೆ. ಸೋಮಸ್ಯ ವಂಶಃ ಸಂತಾನಃ । ಚಂದ್ರವಂಶದ ವಿವರ — ಆತ್ರಿಮಹರ್ಷಿಯ ಪುತ್ರ ಸೋಮ (ಚಂದ್ರ). ಚಂದ್ರನ ಪುತ್ರ ಬುಧ. ಬುಧನ ಪುತ್ರ ಪುರೂರವಸ್ಸು.

- |                     |               |
|---------------------|---------------|
| ಪುರೂರವಸ್ಸಿನ ಪುತ್ರರು | (1) ಶೃತಾಯುಧ   |
|                     | (2) ವಿಶ್ವಾವಸು |
|                     | (3) ಶತಾಯು     |
|                     | (4) ಧೀಮಂತ     |
|                     | (5) ಆಯು ಮತ್ತು |
|                     | (6) ದೃಢಾಯು.   |

- ಈ ರೀತಿ ಬೆಳೆದುಬಂದ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಪಾಂಡುರಾಜ ಪಾಂಡುರಾಜನ ಪುತ್ರರು
- |                |
|----------------|
| (1) ಯುಧಿಷ್ಠಿರ  |
| (2) ಭೀಮಸೇನ     |
| (3) ಅರ್ಜುನ     |
| (4) ನಕುಲ ಮತ್ತು |
| (5) ಸಹದೇವ.     |

- |                |           |
|----------------|-----------|
| ಅರ್ಜುನನ ಪುತ್ರ  | ಅಭಿಮನ್ಯು  |
| ಅಭಿಮನ್ಯುವಿನ .. | ಪರೀಕ್ಷಿತು |
| ಪರೀಕ್ಷಿತನ ..   | ಜನಮೇಜಯ    |

ಇತ್ಯಾದಿ ಸೋಮಸಂತತಿಯವರು.



ಸೌಗಂಧಿಕ ಸಂಗಂಧಿಕ (ಪುಂ) 1. ಗಂಧಕ, ಗಂಧಪಾಪಾಣ.  
 ಸು ಶೋಭನೋ ಗಂಧೋಽಸ್ಯ ಸುಗಂಧಃ—ಸ್ವಾರ್ಥ. “ಠಕ್”  
 (೪-೪-೩೪)। “ಗಂಧಾಶಮನಿ ತು ಗಂಧಕಃ। ಸೌಗಂಧಿಕಶ್ಚ”  
 ಅಮಂ। 2. ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯಗಳ ವ್ಯಾಪಾರಮಾಡು  
 ವವನು. (ನಂ) 3. ಬಳಿಯ ತಾವರೆ. ಅತ್ಯುತ್ತಮ



ಪರಿಮಳವನ್ನು ಬೀರುತ್ತಿದ್ದ ಈ ಸೌಗಂಧಿಕಪುಷ್ಪವನ್ನು ತನಗೆ ತಂದುಕೊಡಬೇಕೆಂದು ದ್ರೌಪದಿಯು ಭೀಮಸೇನನನ್ನು ಕೇಳಿಕೊಳ್ಳಲು ಅವನು ಅದಕ್ಕಾಗಿ ಗಂಧಮಾದನ ಪರ್ವತಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಸೌಗಂಧಿಕಸರೋವರವನ್ನು ಕಂಡು ಅದರೊಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಅಲ್ಲಿನ ಕಾವಲುಗಾರರು ಇವನನ್ನು ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸಿ ಕುಬೇರನಿಗೆ ತಿಳಿಸಿದರು. ಕುಬೇರನ ಸಮ್ಮತಿಯಿಂದ ಪುಷ್ಪಗಳನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಕುಬೇರನಿಂದ ಸತ್ಕೃತನಾಗಿ ಬಂದು ಆ ಪುಷ್ಪಗಳನ್ನು ದ್ರೌಪದಿಗೆ ತಂದುಕೊಟ್ಟನು. ಭಾಂ. ವನಂ. 4. ನೀಲೋತ್ಪಲ, ಕನ್ನದಿಲೆ. 5. ಕಾಚಿ ಹುಲ್ಲು. ಸುಗಂಧ: ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (4-1-109). 6. ಪದ್ಮರಾಗ. "ಸೌಗಂಧಿಕಂ ತು ಕಕ್ಷಾರೇ ಪದ್ಮರಾಗೇಷಿ ಕರ್ತೃಣಿ. ಪುಲಿಂಕ್ಷೋ ಗಂಧಪಾಷಾಣಿ ಸುಗಂಧಿವ್ಯವಹಾರಿಣಿ" ಮೇದಿಂ.

**ಸೌಗಂಧ್ಯ ಸೌಗಂಧ್ಯ** (ನಂ) ಸುವಾಸನೆ, ಒಳ್ಳೆಯ ಪರಿಮಳ. ಸುಗಂಧಸ್ಯ ಭಾವ: "ಉತ್" (4-1-124). "ಸೌಗಂಧ್ಯಂ ದಧದಪಿ ಕಾಮಮಜ್ಜನಾನಾಮ್" ಮಾಘಂ 6-48.

**ಸೌಗಂಧ್ಯ ಸೌಗಂಧ್ಯ** (ನಂ) 1. ಕ್ಲೇಶವಿಲ್ಲದೆ ಸುಲಭವಾಗಿ ತಿಳಿಯಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗುವಿಕೆ. 2. ಕ್ಲೇಶವಿಲ್ಲದೆ ಹೋಗಲು (ನೆಡೆಯಲು) ಸಾಧ್ಯವಾಗುವಿಕೆ. ಸುಗಂಧಸ್ಯ ಭಾವ: "ಉತ್" (4-1-124).

**ಸೌಚಿ ಸೌಚಿ** (ಪುಂ) ದರ್ಜೆ, ಹೊಲಿಗೆ ಕಾರ್ಯದವನು.

**ಸೌಚಿಕ ಸೌಚಿಕ** (ಪುಂ) ದರ್ಜೆ, ಹೊಲಿಗೆ ಕಾರ್ಯದವನು.

ಸೂಕ್ತಿ ಶಿಲ್ಪಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (4-4-44). "ತುನ್ನವಾಯಸ್ತು ಸೌಚಿಕ:" ಅಮಂ.

**ಸೌಜನ್ಯ ಸೌಜನ್ಯ** (ನಂ) ಸೌಹಾರ್ದ, ಒಳ್ಳೆಯವನಾಗಿರುವಿಕೆ, ದೊಡ್ಡಸ್ತಿಕೆ. ಸಭ್ಯವಾದ ನಡವಳಿಕೆಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವಿಕೆ. ಸುಜನಸ್ಯ ಭಾವ: "ಉತ್" (4-1-124). "ಪ್ರಾಯ ಮಿಮಮಸೌ ಜನ್ಯಂ ಸೌಜನ್ಯಂ ದಧದಾನೇ" ಮಾಘಂ 19-13.

**ಸೌಂಡಿ ಸೌಂಡೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಪ್ಪಲಿ.

**ಸೌತ್ರಾಂತಿಕ ಸೌತ್ರಾಂತಿಕ** (ಪುಂ) ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಬೌದ್ಧ ಸಂಪ್ರದಾಯಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಸಂಪ್ರದಾಯದವರು. ಇವರು ಬಾಹ್ಯಾಂತರವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಅಂಗೀಕರಿಸಿ ಅವುಗಳಿಗೆ ಕ್ಷಣಿಕತ್ವವನ್ನು ಹೇಳುವರು. ["ಬೌದ್ಧ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಸೌದಾಮಿನಿ ಸೌದಾಮಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು. ಸುದಾಮಿನಿ ಮೇಘ ಭವಾ "ಅನ್" (4-3-43). ಸುದಾಮಾ ಪರ್ವತ:, ತೇನ ಏಕದಿಕ್ (ಏಕಸ್ಯಾಂ ದಿಶಿ ವಿಜ್ಞಮಾನಾ) "ಅನ್" (4-3-112). "ತದಿತ್ಸೌದಾಮಿನಿ ವಿಜ್ಞುತ್" ಅಮಂ. "ಸೌದಾಮಿನ್ಯಾ ಕನಕನಿಕಷಸ್ತಿಗ್ಧಯಾ ದರ್ಶಯೋರ್ಮಿ"

ಮೇಘಂ 1-39. 2. ಒಂದು ವಿಧ ಮಿಂಚು. 3. ಒಬ್ಬ ಅಪರಸ್ತ. "ಸೌದಾಮಿನ್ಯಪರೋಮೇದೇ ತದಿತ್ತದ್ಭೇದಯೋ: ಸ್ವಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ. ಸೌದಾಮಿನಿ ಸೌದಾಮಿನಿ ಎಂಬ ಪಾಠಗಳೂ ಉಂಟು.

**ಸೌದಾಯಿಕ ಸೌದಾಯಿಕ** (ವಿಂ) ಸ್ತೋಧನ, ವಿವಾಹ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕನ್ಯೆಗೆ ತಾಯಿ ತಂದೆ ಮತ್ತು ಬಂಧುಗಳಿಂದ ಬಂದ ಬಳುವಳಿ. ಸುದಾಯೇಮ್ಯ: ಪಿತುರ್ಮಾತುರ್ಬಂಧುಜನೇಮ್ಯ: ಆಗತಮ್ "ಠಕ್" (4-3-94). "ಋತಯಾ ಕನ್ಯಯಾ ವಾಪಿ ಪತ್ಯು: ಪಿತುಗೃಹೇಷ್ವಾ. ಭರ್ತು: ಸಕಾಶಾತ್ ಪಿತ್ರೋರ್ವಾ ಲಬ್ಧಂ ಸೌದಾಯಿಕಂ ಸ್ಮೃತಮ್" ||

**ಸೌದಾಸ ಸೌದಾಸ** (ಪುಂ) ಇಕ್ಷ್ವಾಕುವಂಶದ ಒಬ್ಬ ದೊರೆ. ಇವನಿಗೆ ಕಲ್ಯಾಣಪಾದನೆಂಬ ನಾಮಾನ್ತರವೂ ಉಂಟು. ["ಕಲ್ಮಾಷಪಾದ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

**ಸೌಧ ಸೌಧ** (ಪುಂ) 1. ರಾಜನ ಗೃಹ, ಅರಮನೆ. ಸುಧಾಲೇಪೋ-ಸ್ಥಾಸ್ತಿ "ಅನ್" (ವಾಂ 4-2-103). "ಸ್ಕುರತುಷಾರಾಂಶು-ಮರೀಚಿಜಾಲೇವಿನಿಹ್ನುತಾ: ಸ್ಫಾಟಿಕಸೌಧಪಡ್ವತೀ:" ಮಾಘಂ 3-43. 2. ಸುಣ್ಣ ಬಳಿದಿರುವ (ಮನೆ). ಸುಧಯಾ ಲಿಪ್ತಮ್. "ಕಲಾ ದಧಾನ: ಸಕಲಾ: ಸ್ವಭಾಭಿರುದ್ಧಾಸಯನ್ ಸೌಧಸಿತಾಮಿ-ರಾಶಾ:" ಮಾಘಂ 3-60. 3. ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ. 4. ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಬಣ್ಣಗಳನ್ನು ತೋರುವ ಒಂದು ವಿಧ ಬೆಣಚುಕಲ್ಲು. (ವಿಂ) 5. ಸುಧಾಸಂಬಂಧವಾದ. "ಪ್ರಾಸಾದಮಾಲಾಸಂಯುಕ್ತಾ: ಸೌಧಪ್ರಾಕಾರಸಂವೃತಾ:" ರಾಮಾಂ.

**ಸೌನಂದ ಸೌನಂದ** (ನಂ) ಬಲರಾಮನ ಮುಸಲಾಯುಧ.

**ಸೌನಂದಿನ್ ಸೌನಂದಿನ್** (ಪುಂ) ಬಲರಾಮ. ಸೌನಂದಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114). "ಬಲಭದ್ರಸ್ತು ಹಾಲ: ಸ್ಯಾತ್ ಸೌನಂದಿ ಹಲತಾಲಭತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

**ಸೌನಿಕ ಸೌನಿಕ** (ಪುಂ) ಪ್ರಾಣಹಿಂಸೆಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು, (ಪಶುಗಳಿಗೆ ವಧೆಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ತಿರುಗುತ್ತ) ಪಶುಪಕ್ಷಿ ಮೊದಲಾದವುಗಳ ಮಾಂಸವನ್ನು ಮಾರುವವನು. ಸುನಯಾ ಜೀವತಿ—ಸುನಾ "ಠಕ್" (4-4-12). "ಛದನಾ ಪರಿದದಾಮಿ ಮೃತ್ಯವೇ ಸೌನಿಕೇ ಗೃಹಕುಂತಿಕಾಮಿವ" ತಂ ರಾಂ 1-44.

**ಸೌಂದರ್ಯ ಸೌಂದರ್ಯ** (ನಂ) ಸೊಗಸು, ಅಂದ, ಲಾವಣ್ಯ, ರಮಣೀಯತೆ. ಸುಂದರಸ್ಯ ಭಾವ: "ಉತ್" (4-1-124). "ಸಾ ನಿರ್ಮಿತಾ ವಿಶ್ವಸೃಜಾ ಪ್ರಯತ್ನಾದೇಕಸ್ಥಸೌಂದರ್ಯದಿದೃಕ್ಷಯೇವ" ಕುಮಾಂ 1-49.

**ಸೌಪರ್ಣ ಸೌಪರ್ಣ** (ನಂ) 1. ಮಂರಕತಮಂಥ, ಪಚ್ಚಿ. ಸುಪರ್ಣ ಗೃಹ ತದ್ವರ್ಣಮರ್ಹತಿ "ಅನ್". 2. ಶುಭಿ. 3. ಗರುಡ



ಸೌಭಾಗ್ಯತೃತೀಯಾ ಸ್ತೋತ್ರಾಗೃಹ್ಯತೀರ್ಥಯಾ (ಸ್ತೌ.೦) ಭದ್ರಪದ  
ಶುಕ್ಲ (ತೃ.ತೀ.ಯೆ) ತದಿತಿ.



ಸೌಭಾಗ್ಯವತೀ ಸೌಭಾಗ್ಯವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪತಿಯ ವಾಲ್ಮಹಿ, ವುಳ್ಳವಳು, ಪತಿಯ ಪ್ರೀತಿಗೆ ಪಾತ್ರಳಾದ ಹೆಂಗಸು. ಸೌಭಾಗ್ಯಮಸ್ಯಾ ಅಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೧೪)। "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬)।

ಸೌಭಿಕ್ ಸೌಭಿಕ್ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರಜಾಲ ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ಅರಿತ ವನು, ಯಕ್ಷಿಣಿಯವನು, ಗಾರುಡಿಗ. ಸೌಭಿ ನಗರಾದಿ- ನಿರ್ಮಾಣ ಶಿಲ್ಪಮಸ್ಯ "ಠಕ್" (೪-೪-೫೫)।

ಸೌಭ್ರಾತ್ರ ಸೌಭ್ರಾತ್ರ (ನಂ) ಭ್ರಾತೃಭಾವ, ಸೌಹಾರ್ದಯುತ ಸೋದರತ್ವ, ಅನ್ಯೋನ್ಯಪ್ರೀತಿವಿಶ್ವಾಸಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಸಹೋದರತ್ವ. ಸುಭ್ರಾತೃಣಾಂ ಭಾವ: "ಅಞ್" (೪-೧-೧೩೦)। "ಸಮಾನೇಽಪಿ ಹಿ ಸೌಭ್ರಾತ್ರೇ ಯಥೋಮೌ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣೌ। ತಥಾ ಭರತಶತ್ರುಘ್ನೌ ಪ್ರೀತ್ಯಾ ದ್ವಂದ್ವಂ ಬಭೂವತು:" ರಘುಂ ೧೦-೮೧। "ಸೌಭ್ರಾತ್ರಮೇಷಾಂ ಹಿ ಕುಲಾನುಸಾರಿ" ರಘುಂ ೧೬-೧।

ಸೌಮನಸ ಸೌಮನಸ (ವಿಂ) ಪುಷ್ಪ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸುಮನಸ: ಕುಸುಮಸ್ಯ ಇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)। "ಅಲಮಲೇರಿವ ಗಂಧರಸಾವಮ್ ಮಮ ನ ಸೌಮನಸೌ ಮನಸೌ ಮುದೇ" ಮಾಘಂ ೬-೧೨।

ಸೌಮನಸಾ ಸೌಮನಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಾಯಿಪತ್ರೆ.

ಸೌಮನಸ್ಯ ಸೌಮನಸ್ಯ (ನಂ) 1. ಮನಸ್ಸು ಪ್ರಸನ್ನವಾಗಿರು ಎಕೆ, ತೃಪ್ತಿ, ಸಮಾಧಾನ, ಸಂತೋಷ. ಸುಮನಸೌ ಭಾವ: "ಞ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ರಥಚರಣವರಾಜ್ಞನಾಕರಾಜ್ಞ- ವ್ಯತಿಕರಸಂಪದ್ವಿಪಾತ್ತಸೌಮನಸ್ಯಾ:" ಮಾಘಂ ೭-೨೮। 2. ದೇವತ್ವ, ದೇವಭಾವ. "ಸಹಸಾ ನರದೇವಾಸ್ತೇ ಸೌಮನಸ್ಯಂ ಪ್ರಪೇದಿರೇ" ಯಾದಂ ೨೨-೫೧।

ಸೌಮನಸ್ಯಾಯಿನಿ ಸೌಮನಸ್ಯಾಯಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಾಜಿ ಹೊವಿನ ಮೊಗ್ಗು. ಸೌಮನಸ್ಯಸ್ಯ ಪ್ರಸನ್ನಚಿತ್ತತಾಯಾ ಅಯಿನಿ। "ಮಾಲತೀಪುಷ್ಪಕಲಿಕಾಂ ಸೌಮನಸ್ಯಾಯಿನೀಂ ವಿದ್ರು:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ಸೌಮಿತ್ರ ಸೌಮಿತ್ರ (ಪುಂ) ಸುಮಿತ್ರೆಯ ಪುತ್ರ ಲಕ್ಷ್ಮಣ. ಸುಮಿತ್ರಾಯಾ ಅಯಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)।

ಸೌಮಿತ್ರಿ ಸೌಮಿತ್ರಿ (ಪುಂ) ಸುಮಿತ್ರೆಯ ಪುತ್ರ ಲಕ್ಷ್ಮಣ. ಸುಮಿತ್ರಾಯಾ ಅಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್-ಸುಮಿತ್ರಾ "ಇಞ್" (೪-೧-೯೬)। "ಸೌಮಿತ್ರೇರಪಿ ಪತ್ರಿಣಾಮವಿಷಯೇ ತತ್ರ ಪ್ರಿಯೇ ಕ್ವಾಸಿ ಮೇ" ಉಂ ರಾಂ ೩-೪೫।

ಸೌಮೇರವ ಸೌಮೇರವ (ವಿಂ) ಸುಮೇರುರ್ವರ್ಷ ಸಂಬಂಧ ವಾದ. ಸುಮೇರೋರಯಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ರವೀ -ರವೀ. "ಸೌಮೇರವೀ- ಮಧಿಗತೇನ ನಿತಂಬಶೋಭಾಮೇತೇನ ಭಾರತಮಿಲಾವೃತವದಿಮಾತಿ" ಮಾಘಂ ೪-೩೧।

ಸೌಮೇರಕ ಸೌಮೇರಕ (ನಂ) ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ.

ಸೌಮ್ಯ ಸೌಮ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಬುಧಗ್ರಹ, ಸೋಮನ ಪುತ್ರ. ಸೌಮ ಇವ ಸೌಮ್ಯ:-ಸೌಮ "ಯ:" (೪-೩-೧೦೩)। ಸೌಮ್ಯ "ಅಞ್" (೪-೪-೩೮)। 2. ಉದಯರ ವೃಕ್ಷ, ಅತ್ತಿಮರ. 3. ಆಶೀರ್ವಾದ ಮಾಡುವಾಗ ಹಿರಿಯರು ಸಂಬೋಧಿಸಿ ಹೇಳುವ ಪದ. "ಆಯುಷ್ಮಾನ್ ಭವ ಸೌಮ್ಯೇತಿ ವಿಪ್ರೋ ವಾಚ್ಯೋಽಭಿವಾದನೇ" ಮನುಂ ೨-೧೨೫। 4. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ, ವಿಪ್ರ. 5. ಚಂದ್ರ ಬುಧ ಗುರು ಮತ್ತು ಶುಕ್ರ ಗ್ರಹ ಗಳು. 6. ವೃಷಭ ಕರ್ಕಾಟಕ ಕನ್ಯಾ ವೃಶ್ಚಿಕ ಮಕರ ಮತ್ತು ಮೀನ ರಾಶಿಗಳು. "ಕೂರೋಽಪಿ ಸೌಮ್ಯ: ಪುಣ್ಯೋಽ- ಜ್ಞಾನಾ ಚ ಅಜ್ಞೋಽಪಿ ಯುಗಂ ವಿಷಮ: ಸಮಶ್ಚ। ಚರಸ್ಥಿರ- ದ್ವಯಾತ್ಮಕನಾಮಧೇಯಾ ಮೇಷಾದಯೋಽಸ್ಮಿ ಕ್ರಮಶ: ಪ್ರದಿಷ್ಟಾ:"। 7. ಸೌಮ್ಯಕೃಚ್ಚ್ರವೆಂಬ ಒಂದು ವ್ರತ. 8. ಸೋಮರಸ ವನ್ನು ಪಾನಮಾಡುವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. 9. ಒಂದು ಪಿತೃಗಣ. (ವಿಂ) 10. ಶಾಂತಚಿತ್ತನಾದ, ಪ್ರಸನ್ನವಾದ ಹೃದಯ ವುಳ್ಳ, ಕೋಪಹಿತಗಳಿಲ್ಲದ ಹೃದಯವುಳ್ಳ. "ಅಪೇತ- ಯುಧಾಭಿನಿವೇಶಸೌಮ್ಯೋ ಹರಿಹರಿಸ್ಥಮಥ ಪ್ರತಸ್ಥೇ" ಮಾಘಂ ೩-೧। 11. ಸೋಮದೇವತಾಕವಾದ. ಸೌಮೋ ದೇವತಾಽಸ್ಯ- ಸೌಮ "ಏಞ್" (೪-೨-೩೦)। 12. ಸುಂದರವಾದ, ಅಂದ ವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ. 13. ಭಕ್ತ. "ನಮಸ್ತಸ್ಮೈ ಭಗವತೇ ವಾಸುದೇವಾಯ ವೇದಸೇ। ಪಪುರ್ಜಾನಮಯಂ ಸೌಮ್ಯಾ ಯನ್ಮುಖಾ- ಮ್ಬುರಹಾಸವಮ್" ಭಾಗಂ ೨-೪-೨೪। 14. ಪ್ರಕಾಶಮಾನ ವಾದ.

ಸೌಮ್ಯಕೃಚ್ಚ್ರ ಸೌಮ್ಯಕೃಚ್ಚ್ರ (ಪುಂ) ಒಂದು ವ್ರತ.

ಸೌಮ್ಯಗ್ರಹ ಸೌಮ್ಯಗ್ರಹ (ಪುಂ) ಶುಭಗ್ರಹ. ಪಾಪಗ್ರಹ ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದ ಬುಧ ಪೂರ್ಣಚಂದ್ರ ಗುರು ಮತ್ತು ಶುಕ್ರ ಇವರು ಶುಭ ಗ್ರಹಗಳು.

ಸೌಮ್ಯಧಾತು ಸೌಮ್ಯಧಾತು (ಪುಂ) ಕಫ, ಶ್ಲೇಷ್ಮ.

ಸೌಮ್ಯವಾರ ಸೌಮ್ಯವಾರ, -ವಾಸರ -ವಾಸರ (ಪುಂ) ಬುಧವಾರ.

ಸೌಮ್ಯಾ ಸೌಮ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದುರ್ಗಾದೇವಿ. (ಪುಂ ಬಂ ಬಂ) 2. ಮೃಗಶಿರಃನಕ್ಷತ್ರದ ಶಿರಸ್ಸಿನಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ನಕ್ಷತ್ರ ಪುಂಜ. ಸೌಮ್ಯಾ: ಸೌಮಾತ್ಮಜೇಽನುಗ್ರೇ ಮನೋಜೇ ಸೌಮದೇವತೇ। ಸೌಮ್ಯಾ: ಪುನರ್ಮೃಗಶಿರ:ಶಿರಸ್ಥಾ: ಪೃಷ್ಠತಾರಕಾ:" ಹೇಮಂ।

ಸೌರ ಸೌರ (ಪುಂ) 1. ಶನೈಶ್ಚರ, ಶನಿಗ್ರಹ. ಸೂರಸ್ಯ ಸೂರಸ್ಯ ಅಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಅಞ್" (೪-೧-೯೨)। "ಬಹುಲಾಸ್ಥಂ ಪಿಡುಯಂತೇ ಸೌರೇಽನ್ಯುಪಜೀವಿನಶ್ಚಮಪಾಶ್ಚ। ರೋಹಿಣ್ಯಾ ಕೌಸಲಮದ್ರಕಾಶಿಪಾಶ್ಚಾಲಶಾಕಟಿಕಾ:" ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೦-೪।



2. ಸೂರ್ಯನಮಾಸ, ಸೂರ್ಯನು ಒಂದು ರಾಶಿಯಲ್ಲಿ ಇರುವಷ್ಟು ಕಾಲ. "ಆದಿತ್ಯರಾಶಿಭೋಗೇನ ಸೌರೋ ಮಾಸಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಃ" 3. ಯಮಧರ್ಮರಾಯ. 4. ಸೂರ್ಯನ ಉಪಾಸನೆ ಮಾಡುವವನು. (ನಂ) 5. ಒಂದು ಉಪ ಪುರಾಣ. (ವಿಂ) 6. ಸೂರ್ಯನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸುರಸ್ಯದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) 7. ಸುರ ಸಂಬಂಧ ವಾದ, ದೇವತೆಗಳ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸುರಸ್ಯದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) 8. ಸೂರ್ಯನೇ ದೇವತೆಯಾಗಿರುವ. ಸುರೋ ದೇವತಾಸ್ಯ.

ಸೌರದಿನ ಸೌರದಿನ (ನಂ) ಸೂರ್ಯನು ಒಂದು ರಾಶಿಯ ಮೂವತ್ತನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗದಲ್ಲಿರುವ ಕಾಲ.

ಸೌರಭ ಸೌರಭ (ನಂ) 1. ಸೌಗಂಧ್ಯ, ಸುವಾಸನೆ, ಪರಿಮಳ. "ವದನಸೌರಮಲೋಪರಿಭ್ರಮದ್ಭ್ರಮರಸಂಭ್ರಮಸಂಭ್ರಮಶೋಭಯಾ" ಮಾಘಂ ೬-೧೪. "ಸಮೇಷಮದೇಶದಾಪಣೆ ತುಲಯನ್ ಸೌರಮ-ಲೋಭನಿಶ್ಚಲಮ್" ನೆಪಂ ೨-೯೨. 2. ಕುಂಕುಮ ಕೇಸರಿ. ಸೌರಮಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) (ವಿಂ) 3. ಪರಿಮಳದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಸುವಾಸನೆಯುಳ್ಳ. "ಸರಿ-ತ್ಸರೋಭಿರಚ್ಛೋದೇ: ಪುಲಿನೇರ್ಮಣಿಶಾಲುಕೇ: ದೇವಸ್ತೋಮಜ್ಜನಾ-ಮೋದಸೌರಮಾಂಬವನಿಲೈಯುತಃ" ಭಾಗಂ ೮-೨-೮.

ಸೌರಭೇಯ ಸೌರಭೇಯ (ಪುಂ) ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. ಸುರಮ್ಯಾ: ಅಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ - ಸುರಮಿ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೦) 1. "ಮಾ ಸೌರಭೇಯಾತ್ರ ಶುಚೋ ವ್ಯೇತು ತೇ ವೃಷಲಾಽಽಯಮ್" ಭಾಗಂ ೧-೧೭-೯.

ಸೌರಭಯಿ ಸೌರಭೇಯೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋವು, ಹಸು. ಸುರಮೇ-ರಪತ್ಯಮ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೦) 1. "ಮಾಹೇಯಿ ಸೌರಭಯಿ ಗೌ:" ಅಮಂ. "ನಿವರ್ತ್ಯ ರಾಜಾ ದಯಿತಾ ದಯಾಲು: ತಾಂ ಸೌರಭಯಿ ಸುರಭಿಯಶೋಭಿ:" ರಘುಂ ೨-೩.

ಸೌರಮ್ಯ ಸೌರಮ್ಯ (ನಂ) 1. ಸೌಗಂಧ್ಯ, ಪರಿಮಳ. ಸುರಮೇ-ಭಾವಿ: "ಫ್ಯಜ್" (೪-೧-೧೨೪) 1. "ಸ್ವಾಭಾವಿಕಂ ಪರಗುಣೇನ ವಿಭಾತವಾಯು: ಸೌರಮ್ಯಮೌಪ್ಸುರಿವ ತೇ ಮುಖಮಾಸ್ತಸ್ಯ" ರಘುಂ ೪-೬೯. 2. ರಾಮಾಣೀಯಕೆತೆ. 3. ಕೀರ್ತಿ, ಯಶಸ್ಸು, ಪ್ರಖ್ಯಾತಿ. "ಸೌರಮ್ಯಂ ಗುಣಗೌರವೇ. ಸೌಗಂಧ್ಯೇ ಚಾರುತಾಯಾಂ ಚ" ಹೇಮಂ. (ಪುಂ) 4. ಕುಬೇರ. ಸೌರಮ್ಯಂ ಗುಣಗೌರವ-ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) 1.

ಸೌರಮಾಸ ಸೌರಮಾಸ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯನು ಒಂದು ರಾಶಿ ಯಲ್ಲಿರುವಷ್ಟು ಕಾಲ. ಸೌರ: ಸೂರ್ಯಸ್ಯ ಏಕರಾಶಿಭೋಗಾ-ವಚ್ಛಿತ್ರೋ ಮಾಸಃ. "ಏಕರಾಶೀ ರವಿರ್ಯಾವತ್ಕಾಲಂ ಮಾಸಃ ಸ ಮಾಸ್ಕರಃ" 1.

ಸೌರಸಂವತ್ಸರ ಸೌರಸಂವತ್ಸರ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯನು 12 ರಾಶಿಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವಷ್ಟು ಕಾಲ. ಸೌರ: ಸಂವತ್ಸರಃ.

"ಸೌರಸಂವತ್ಸರಸ್ಯಾಂತೇ ಮಾನೇನ ಶಶಿಜೇನ ತು 1. ಏಕಾದಶಾತಿ-ರಿಚ್ಯಂತೇ ದಿನಾನಿ ಭೃಗುನಂದನ" 1.

ಸೌರಸೇಯ ಸೌರಸೇಯ (ಪುಂ) 1. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪೂರ್ಣಿಮೆ, ಸೃಂದ. 2. ಸುರಸೇಯ ಮಗ. ಸುರಸಾಯಾ ಅಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಠಕ್" (೪-೧-೧೨೦) 1.

ಸೌರಸೇನವ ಸೌರಸೇನವ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯನ ಕುಮಾರ. ಸೌರ: ಸೂರ್ಯಸಂಬಂಧಿ ಸೇನವ: (ವಿಂ) 2. ಸುರಸೇನವ (ಗಂಗಾನದಿ) ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸುರಸೇನವೋರಿದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) 1. "ಋತೇ ಹಿಮಾಚಲಗುಹಾಮುಖೋಮುಖ: ಪಯಸಾಂ ಪ್ರವಾಹ ಇವ ಸೌರಸೇನವಃ" ಮಾಘಂ ೧೩-೨೭.

ಸೌರಾಜ್ಯ ಸೌರಾಜ್ಯ (ನಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ರಾಜನನ್ನು ಹೊಂದಿರುವಿಕೆ, (ದೇಶದಲ್ಲಿ) ಒಳ್ಳೆಯ ರಾಜನಿರುವಿಕೆ. ಸು ಶೋಭನೋ ರಾಜಾ ಯಸ್ಯ ದೇಶಸ್ಯ ಸ ದೇಶಃ ಸುರಾಜಾ, ತಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಫ್ಯಜ್" (೪-೧-೧೨೪) 1. "ಏಕೋ ಯಯಿ ಚೈತ್ರಯಪ್ರದೇಶಾನ್ ಸೌರಾಜ್ಯ-ರಮ್ಯಾನಪರೋ ವಿದರ್ಮಾನ್" ರಘುಂ ೪-೬೦.

ಸೌರಾಢ್ಯ ಸೌರಾಢ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ದೇಶ. ಸುರಾಢ್ಯ ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಅಞ್" (೪-೪-೩೮) 1. 2. ಕುಂದುರುಷ್ಟು ವೆಂಬ ಒಂದು ಗಂದಿಗರ ಸರಕು. (ಪುಂ ಬಂವಂ) 3. ಸೌರಾಢ್ಯದೇಶದ ಜನರು. (ನಂ) 4. ಕಂಚು (ಲೋಹ). "ಕಾಸ್ಯಂ ಪ್ರಭಾಸಂ ಸೌರಾಢ್ಯಂ ಮಾದೂರಾಽಪ್ಯಮಿತ್ಯಪಿ" ಅಮಂ.

ಸೌರಾಢ್ಯಕ ಸೌರಾಢ್ಯಕ (ಪುಂ) ಕಂಚುಲೋಹ. ಸುರಾಢ್ಯೇ ಭವಃ.

ಸೌರಾಢ್ಯಾ ಸೌರಾಢ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತೋಗರಿ ಗಿಡ.

ಸೌರಾಢ್ಯಕ ಸೌರಾಢ್ಯಕ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧವಿಷ. ಸೌರಾಢ್ಯೇ ದೇಶೇ ಭವಃ "ಠಕ್" (ವಾಂ ೪-೩-೬೦) 1. "ಸೌರಾಢ್ಯಕಃ ಶೌಕಿಲಕೇಯೋ ಬ್ರಹ್ಮಪುತ್ರಃ ಪ್ರದೀಪನಃ" ಅಮಂ.

ಸೌರ ಸೌರ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯನ ಪುತ್ರ. (1) ಶಸ್ತೃಶ್ಚರ. "ಕೃಷ್ಣದ್ರವ್ಯೈ: ಸೌರ: ಸೌಮ್ಯೋ ಮಣಿರಜತತಿಲಕಕುಸುಮಗುಹ: ಪರಿಪೀತಕೇ:" ಬೃಹತ್ಸಂ ೧೦೪-೪೭. (2) ಯಮಧರ್ಮ ರಾಯ. (3) ಕರ್ಣ. (4) ಸುಗ್ರೀವ. ಇವರು ಸೂರ್ಯನ ಪುತ್ರರು. ಸುರಸ್ಯ ಸೂರ್ಯಸ್ಯಾಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್ "ಫ್ಯಜ್" (೪-೧-೯೪) 1.

ಸೌರಕ ಸೌರಕ (ಪುಂ) 1. ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ. ಸುರೇಭ್ಯೋ ಹಿತಃ. 2. ಶನಿಗ್ರಹ. 3. ಮದ್ಯದ ಮಾರಾಟ ಮಾಡುವವನು. (ವಿಂ) 4. ಸುರಾಸಂಬಂಧವಾದ, ಮದ್ಯನಿಮಿತ್ತ ವಾದ. "ಪ್ರಾತಿಭಾವ್ಯಂ ವೃಥಾದಾನಮಾಕ್ಷಿಕಂ ಸೌರಕಂ ಚ ಯತ್. ದೃಢಶುಲ್ಕಾವಶೇಷಂ ಚ ನ ಪುತ್ರೋ ದಾತುಮರ್ಹತಿ" ಮನುಂ ೮-೧೪೯.

ಸೌರರತ್ನ ಸೌರರತ್ನ (ನಂ) ನೀಲಮಣಿ, ಪ್ರಶಸ್ತವಾದ ಇಂದ್ರನೀಲಶಿಲೆ. ಸೌರ: ಶನಿಶ್ವರಸ್ಯ ರತ್ನಮ್.



ಸೊರೆ ಸೌರೀ (ಸ್ತಂ) ಸೂರ್ಯನ ಮಗಳು. ಸೂರ್ಯಸ್ಥಾಪಯ  
ಸ್ತಂ—ಸೂರ್ಯ “ಅನ್” (೪-೧-೯೨)। ಯಲೋಪ: (೬-೪-೧೪೯)।  
“ಛೀಘ್” (೪-೧-೪೧)।

ಸೌರೀಯ ಸೌರೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸೂರ್ಯನಿಗೆ ಹಿತವಾದ.  
ಸೂರ್ಯ ಹಿತಮ್—ಸೂರ್ಯ “ಛ:” (೪-೧-೪)। 2. ಸೂರ್ಯನ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸೂರ್ಯಸ್ಯದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦)।  
ಸೌರೀಯ ತೇಜ:—ಸೌರೀಯ ಭವ: ಸೌರೀಯ:—ಯಲೋಪ: (೬-೪-೧೪೯)।  
ಸೌರೀಯ ಸೌರೀಯ (ವಿಂ) ಸೂರ್ಯನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸೂರ್ಯಸ್ಯ-  
ದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦)।

ಸೌವ ಸೌವ (ವಿಂ) 1. ತನ್ನ ಸಂಬಂಧವಾದ, ತನಗೆ ಸಂಬಂಧ  
ಸಿದ. ಸ್ವಸ್ಯ ಇದಮ್—ಸ್ವ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦)।  
ಅತ್ರ ವಕಾರಾತ್ ಪೂರ್ವಮ್ “ಏಚ್” ಆಗಮ:— (೭-೩-೩)।  
ಔಕಾರ:। ಸೌವೋ ಭಾವ:—ಸ್ವಾಭಿಪ್ರಾಯ ಇತ್ಯರ್ಥ:। 2.  
ಸ್ವರ್ಗ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸ್ವ: ಇದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦)।  
ಅತ್ರ ನ ಆದಿವೃದ್ಧಿ: ಕಿಂತು ಏಜಾಗಮ:—ವಕಾರಾತ್ ಪೂರ್ವಮ್  
ಔಕಾರ: (೭-೩-೪)।

ಸೌವಗ್ರಾಮಿಕ ಸೌವಗ್ರಾಮಿಕ (ವಿಂ) ತನ್ನ ಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿ  
ರೂಪ ವಸ್ತು. ಸ್ವಗ್ರಾಮೇ ಭವಮ್ “ಠಕ್”।

ಸೌವರ ಸೌವರ (ವಿಂ) ಸ್ವರಸಂಬಂಧವಾದ. ಸ್ವರಸ್ಯ ಇದಮ್  
“ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦)। ಏಜಾಗಮ: (೭-೩-೩)।

ಸೌವರ್ಗ ಸೌವರ್ಗ (ಪುಂ) ಸ್ವರ್ಗದಲ್ಲಿರುವ ದೇವತೆ. ಸ್ವರ್ಗ  
ಭವ:—ಸ್ವರ್ಗ “ಅನ್” (೪-೩-೪೩)। ವಕಾರಸ್ಯ ಔಕಾರ:  
(೭-೩-೩)। “ಸೌವರ್ಗವರ್ಗಮೃತಂ ನಿಪಾಯ ಕೃತೋಜ್ಞಿ ತುಚ್ಛ:  
ಶಶಲಾಂಛನೋಷ್ಯಮ್” ನೆಪಂ ೨೨-೧೨೧।

ಸೌವರ್ವಲ ಸೌವರ್ವಲ (ನಂ) 1. ಸರ್ವಜ್ಞರ. 2. ಒಂದು  
ಲವಣ. ಸುಷ್ಣ ವರ್ಚಯತೇ ದೀಪ್ಯತೇ—ವರ್ವ (ದೀಪ್ತೌ) “ಕಲವ್”  
(೩೦ ೧-೧೦೬)। “ಸೌವರ್ವಲಂ ಸರ್ವಜ್ಞೇ ಲವಣಾಂತರೇ”  
ಮೇದಿಂ 1 -

ಸೌವರ್ಣ ಸೌವರ್ಣ (ವಿಂ) ಸ್ವರ್ಣಮಯವಾದ. ಸೌವರ್ಣ  
(ಚಿನ್ನ) ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸೌವರ್ಣಸ್ಯದಮ್ “ಅನ್”  
(೪-೩-೧೨೦)। “ಸೌವರ್ಣ ವಲಯಮವಾಗಲತಕರಾಗ್ರಾತ್ ಲಾವಣ್ಯ-  
ಶ್ರಿಯ ಇವ ಶೇಷಮಜ್ಞನಾಯಾ:” ಮಾಘಂ ೮-೩೪।

ಸೌವಸ್ತಿಕ ಸೌವಸ್ತಿಕ (ಪುಂ) 1. ಪುರೋಹಿತ. ಸ್ವಸ್ತಿ-  
ಕರಣ ಸಾಧು: “ಠಕ್”। ಏಜಾಗಮ: (೭-೩-೩)। (ವಿಂ)  
2. ಸ್ವಸ್ತಿ ಸಂಬಂಧವಾದ.

ಸೌವಾಸ್ತವ ಸೌವಾಸ್ತವ (ವಿಂ) 1. ಸುಂದರವಾದ ನಿವೇಶನ  
ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸುವಾಸ್ತೋರಿದಮ್—ಸುವಾಸ್ತು “ಅನ್”  
(೪-೨-೭೭)। 2. ಸುವಾಸ್ತುವಿಗೆ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ.  
ಸುವಾಸ್ತೋರದ್ವರಭವಮ್ “ಅನ್”।

ಸೌವಿದ ಸೌವಿದ (ಪುಂ) ರಾಜನ ಅಂತಃಪುರದ ದ್ವಾರಪಾಲಕ,  
ಅಂತಃಪುರವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವವನು. ಸುಷ್ಣ ವೇತ್ತಿ—ವಿದ (ಜ್ಞಾನೇ)  
“ಕ:” (೩-೧-೧೩೪)। ಸ್ವಾರ್ಥ “ಅನ್” (೪-೪-೩೮)।

ಸೌವಿದಲ್ಲ ಸೌವಿದಲ್ಲ (ಪುಂ) ಕಂಚುಕಿ, ಅಂತಃಪುರ ರಕ್ಷಕ.  
ಸುಷ್ಣ ವಿದಂತಂ ವಿದಾಂಸಮಪಿ ಲಾತಿ ವಶವತಿನಂ ಕರೋತಿ—  
ಸುವಿದತ್+ಲಾ (ಆದಾನೇ) “ಕ:” (೩-೨-೩)। ಸುವಿದಲ್ಲಾ  
ಸ್ತಂ—ತಸ್ಯಾ ಅಯಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦)। “ಯಾನಾ-  
ಜನ: ಪರಿಜನೇರವತಾರ್ಯಮಾಣಾ ರಾಜೀನರಾಪನಯನಾಕುಲಸೌವಿ-  
ದಲ್ಲಾ: ಮಾಘಂ ೪-೧೭।

ಸೌವೀರ ಸೌವೀರ (ನಂ) 1. ಎಲಚಿಹಣ್ಣು, ಬೋರೆಹಣ್ಣು.  
ಸುವೀರದೇಶ ಭವಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೪೩)। 2. ಸೌವೀ  
ರಾಂಜನ, ಸೋತೋಂಜನ. 3. ಗಂಜಿ, ಅಂಬಲಿ. (ಪುಂ)  
4. ಸೌವೀರದೇಶ. ಸುಷ್ಣ ವೀರಾ ಯತ್ರ। “ಸೌವೀರಂ ಕಾಂಜಿಕೇ  
ಸೋತೋಂಜನೇ ಚ ಬದರೀಕಲೇ। ನಾ ತು ನೇವೃತಿ” ಮೇದಿಂ 1।

ಸೌವೀರಕ ಸೌವೀರಕ (ಪುಂ) 1. ಎಲಚಿ ಮರ, ಬೋರೆ ಗಿಡ.  
ಸೌವೀರ ಸಂಜಾಯಾಮ್ “ಕನ್”। (ನಂ) 2. ಗಂಜಿ, ಅಂಬಲಿ.  
ಸೌವೀರ ಸೌವೀರ (ನಂ) ಹೆಚ್ಚು ವೀರಯ್ಯ, ಹೆಚ್ಚು  
ಪರಾಕ್ರಮ. ಸುವೀರಸ್ಯ ಭಾವ: “ಏಚ್” (೪-೧-೧೨೪)।

ಸೌಶೀಲ್ಯ ಸೌಶೀಲ್ಯ (ನಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ಸ್ವಭಾವ, ಉತ್ತಮ  
ವಾದ ಪ್ರಕೃತಿ, ಉತ್ತಮವಾದ ಮನೋಧರ್ಮ. ಸುಶೀ-  
ಲಸ್ಯ ಭಾವ: “ಏಚ್” (೪-೧-೧೨೪)।

ಸೌಷ್ಠವ ಸೌಷ್ಠವ (ನಂ) 1. ಉತ್ಕೃಷ್ಟತೆ, ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ. ಸುಷ್ಣ  
ಭಾವ: “ಅಚ್” (೪-೧-೧೨೯)। 2. ಸೌಂದರ್ಯ,  
(ದೇಹ) ಕಾಂತಿ, (ದೇಹದ) ಸೊಬಗು. “ನನು ಸ್ವಾಕ್ಷ-  
ಸೌಷ್ಠವಾತಿಶಯಮುಭಯೋದೃಷ್ಟವತೀ ಭಗವತೀ” ಮಾಲಂ ೧।  
3. (ಶಬ್ದ) ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, (ಶಬ್ದ) ಶಕ್ತಿ. “ಸ ಸೌಷ್ಠ-  
ವೌದಾರ್ಯವಿಶೇಷಶಾಲಿನೀಮ್” ಕಿರಾಂ ೧-೩। 4. ಜಾಣತನ,  
ಬುದ್ಧಿವಂತಿಕೆ, ಕೌಶಲ್ಯ, ನೈಪುಣ್ಯ. “ತುಲ್ಯೇಷ್ವಸ್ತ್ರೋಪದೇಶೇಷು  
ಸೌಷ್ಠವೇನ ಚ ವೀರಯಾನ್। ಏಕ: ಸರ್ವಕುಮಾರಾಣಾಂ ಬಮ್ವಾತಿ-  
ರಯೋಜ್ಜುನ:” ಭಾಂ ಆದಿಂ ೧೪೨-೭೪।

ಸೌಸ್ನಾತಿಕ ಸೌಸ್ನಾತಿಕ (ವಿಂ) ತಾಸ್ಮೋಕ್ತವಾದ ಸ್ನಾನವು  
ಅಯಿತೆ ಎಂದು ಕೇಳುವವನು. ಸುಸ್ನಾತಂ ಪೃಚ್ಛತಿ—ಸುಸ್ನಾತ  
“ಠಕ್” (ವಾಂ ೭-೩-೭)। “ಪ್ರೋತ್ಯಾಶ್ರಮೇಧಾವಭೃಥಾದ್ರಮೃತೇ:  
ಸೌಸ್ನಾತಿಕೋ ಯಸ್ಯ ಭವತ್ಯಗಸ್ತಯ:” ರಘುಂ ೬-೬೧।

ಸೌಹಾರ್ದ ಸೌಹಾರ್ದ (ಪುಂ) 1. ಸುಹೃತ್ತಿನ ಪ್ರತಿ, ಗೆಳೆಯನ  
ಮಗ. ಸುಹೃದೋಪತ್ಯಮ್ “ಅನ್” (೪-೧-೯೨)। ತಮಯಪದ-  
ವೃದ್ಧಿ: (೭-೩-೧೯)। (ನಂ) 2. ಸುಹೃದ್ಭಾವ, ಸಖ್ಯೆ,  
ಮೈತ್ರಿ, ಸ್ನೇಹ. ಸುಹೃದೋ ಭಾವ: “ಅನ್” (೪-೧-೧೩೦)।



ಅಭಯಪದವೃದ್ಧಿ: (೭-೩-೧೯)। "ಎತತ್ ಕೃತ್ವಾ ಪ್ರಿಯಮನುಚಿತ-  
ಪ್ರಾರ್ಥನಾರ್ವತಿನೋ ಮೇ ಸೌಹಾರ್ದಾದ್ವಿ ವಿಧುರ ಇತಿ ವಾ ಮಯ್ಯನುಕ್ರೋಶ-  
ಬುದ್ಧಯಾ" ಮೇಘಂ ೨-೪೨।

ಸೌಹಾರ್ದ ಸೌಹಾರ್ದ್ಯ, ಸೌಹರ್ದ ಸೌಹರ್ದ, ಸೌಹರ್ದಯ್ಯ  
ಸೌಹರ್ದಯ್ಯ (ನಂ) ಸ್ನೇಹ, ಸಖ್ಯ, ಮೈತ್ರಿ. ಸೌಹರ್ದಸ್ಯ  
ಭಾವ: "ಽಯನ್"। ವಾ ಹೃದ್ಭಾವ: (೬-೩-೪೧)। ಪಕ್ಷ  
ಸೌಹರ್ದಯ್ಯಮ್।

ಸೌಹರ್ದ ಸೌಹರ್ದ್ಯ (ನಂ) 1. ತೃಪ್ತಿ, ತುಷ್ಟಿ, ಸಮಾಧಾನ.  
ಸುಹಿತಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಯನ್" (೪-೧-೧೨೪)। "ತೃತೀರ್ಣ-  
ಭಾರಲಘುನಾಪ್ಯಲಘೂಪಸೌಹರ್ದಯಿನಿ:ಸಹತರೇಣ ತರೋರಧಸ್ತಾತ್"  
ಮಾಘಂ ೪-೬೨। 2. ಪೂರ್ತಿ, ಪೂರ್ಣತೆ, ತುಂಬಿರುವುದು.  
"ಸೌಹರ್ದಯಿ ತರ್ಪಣಂ ತೃಪ್ತಿ:" ಅಮಂ।

ಸೌಹರ್ದ ಸೌಹರ್ದ (ನಂ) ಸ್ನೇಹ, ಸಖ್ಯ, ಮೈತ್ರಿ. ಸುಹರ್ದೋ  
ಭಾವ: ಕರ್ಮ ವಾ "ಅನ್" (೪-೧-೧೩೦)। "ಯದುಪುಜ್ಜವ  
ಬಂಧುಸೌಹರ್ದಾತ್ ತ್ವಯಿ ಪಾತಾ ಸಸುರೋ ನ ವಾಸವ:" ಮಾಘಂ  
೧೬-೧೨।

ಸ್ಕಂದ ಸ್ಕಂಧ (ಪುಂ) 1. ಪಟ್ಟಾಭಿ, ಕಾರ್ತಿಕೇಯ. ಸ್ಕಂದತಿ  
—ಸ್ಕಂದಿರ್ (ಗತಿಶೋಷಣಯೋ:) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೨೪)।  
"ಯೋ ಹೇಮಕುಮ್ಮಸ್ತನನಿ:ಸೃತಾನಾಂ ಸ್ಕಂದಸ್ಯ ಮಾತು: ಪಯಸಾಂ  
ರಸಜ:" ರಘುಂ ೨-೩೬। ["ಕಾರ್ತಿಕೇಯ" ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.] 2. ಪಾರದ, ಪಾದರಸ. 3. ಶರೀರ, ದೇಹ.  
"ಪಿಂಡೋಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಕಲಂ ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಶರೀರಂ ಸ್ಕಂದಪಂಜರಂ"  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 4. ನದಿಯು ತೀರ. 5. ಬುದ್ಧಿವಂತ, ಜಾಣ.  
6. ಒಂದು ಬಾಲಗ್ರಹ. 7. ಪರಮೇಶ್ವರ. 8. ರಾಜ,  
ದೊರೆ. 9. ನೆಗೆಯುವುದು, ಎಗರುವುದು.

ಸ್ಕಂದತ್ ಸ್ಕಂಧತ್ (ವಿಂ) 1. ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಹೋಗು  
ತ್ತಿರುವ. ಸ್ಕಂದಿರ್ (ಗತಿಶೋಷಣಯೋ:) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)। 2. ಒಣಗುತ್ತಿರುವ. 3. ಕಳಚಿ ಬೀಳು  
ತ್ತಿರುವ, ಜಾರಿ ಬೀಳುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್"  
(೪-೧-೬)। —ಸ್ತೀ-೧೨೦.

ಸ್ಕಂದನ ಸ್ಕಂಧನ (ನಂ) 1. ಗಮನ, ನಡೆಯುವುದು.  
ಸ್ಕಂದಿರ್ (ಗತಿಶೋಷಣಯೋ:) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪)।  
2. ಶೋಷಿಸುವುದು, ಒಣಗಿಸುವುದು. 3. ವಿರೇಚನ,  
ಭೇದಿಯಾಗುವುದು. "ಸ್ಕಂದನರೇಚನೆ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। "ಚತು-  
ವಿಧಂ ಯದೇತದ್ವಿ ಉಧಿರಸ್ಯ ನಿವಾರಣಮ್। ಸಂಧಾನಂ ಸ್ಕಂದನಂ  
ಚೈವ ಪಾಚನಂ ದಹನಂ ತಥಾ" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ।

ಸ್ಕಂದನೀಯ ಸ್ಕಂಧನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಒಣಗಬೇಕಾದ.  
2. ಒಣಗಿಸಲ್ಪಡುವ. 3. ಒಣಗಿಸಬಹುದಾದ. ಸ್ಕಂದಿರ್

(ಗತಿಶೋಷಣಯೋ:) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। 4. ನಡೆಯು  
ಬೇಕಾದ. 5. ನಡೆಯಬಹುದಾದ. 6. ನಡೆಯಲು  
ಶಕ್ತವಾದ. "ತವ್ಯ:" ಸ್ಕಂದನೀಯ: ಸ್ಕಂಧನೀಯಃ।

ಸ್ಕಂದಪಠಿ ಸ್ಕಂಧಪಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಚೈತ್ರಶುಕ್ಲ ಪಕ್ಷಿ.

ಸ್ಕಂದ ಸ್ಕಂಧ (ವಿಂ) 1. ಒಣಗಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ನಡೆಯಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. ಸ್ಕಂದಿರ್ (ಗತಿಶೋಷಣಯೋ:) ಕರ್ಮಂ "ಽಯತ್"  
(೩-೧-೧೨೪)।

ಸ್ಕಂದ ಸ್ಕಂಧ (ಪುಂ) 1. ಅಂಸಪ್ರದೇಶ, ಹೆಗಲು. ಸ್ಕಂದತ  
—ಸ್ಕಂದಿರ್ (ಗತಿಶೋಷಣಯೋ:) "ಘನ್" (೩-೩-೧೯)।  
ಘ: ಬಾಹುಂ। "ಅಸುನ್" (೩-೪-೨೦೬)। ಸರ್ವೆ ಸಾಂತಾ  
ಅದಂತಾಶ್ಚ। 2. (ವೃಕ್ಷದ) ಬೇರಿನಿಂದ ಮೊದಲುಗೊಂಡು  
ರಂಬೆಗಳವರೆಗಿನ ವೃಕ್ಷದ ದೂಲ. "ತಂ ಚಿದ್ರಾಯಿ ಸರತಿ  
ಸರಲಸ್ಕಂದಸಹಜಜನ್ಮಾ" ಮೇಘಂ ೧-೪೩। 3. ರಾಜ,  
ದೊರೆ. 4. ಸಮೂಹ. 5. ಯುದ್ಧ. 6. ಆಧ್ಯಾಯ,  
ಗ್ರಂಥದ ಸರ್ಗ ಉಚ್ಚಾಸ್ತ ಉಲ್ಲಾಸ ಮೊದಲಾದುದು.  
7. ಶರೀರ, ದೇಹ. 8. ವ್ಯೂಹ, ಗುಂಪು, ಸೈನ್ಯದ  
ಒಂದು ತಂಡ. "ಪ್ರತಾಪೋಽಘ್ರೇ ತತ: ಶಬ್ದ: ಪರಾಗಸ್ತದನಂತರಮ್।  
ಯಯಿ ಪಶ್ಚಾದ್ರಥಾದೀತಿ ಚತುಸ್ಕಂದೇವ ಸಾ ಚಮು:" ರಘುಂ ೪-೩೦।  
9. ಪೌದ್ಧರು ಅಂಗೀಕರಿಸಿರುವ ಐಹಿಕವಾದ ಪ್ರಜ್ಞೆ  
(ಜ್ಞಾನ). ಇದು—(1) ರೂಪಸ್ಕಂದ: (2) ವೇದನಾಸ್ಕಂದ:  
(3) ವಿಜ್ಞಾನಸ್ಕಂದ: (4) ಸಂಜ್ಞಾಸ್ಕಂದ: ಮತ್ತು (5) ಸಂಸ್ಕಾರ-  
ಸ್ಕಂದ: ಎಂದು ಐದು ವಿಧ. ವಿಷಯಪ್ರಪಂಚೋ ರೂಪಸ್ಕಂದ:।  
ತಜ್ಞಾನಪ್ರಪಂಚೋ ವೇದನಾಸ್ಕಂದ:। ಆಲಯವಿಜ್ಞಾನಸಂತಾನೋ  
ವಿಜ್ಞಾನಸ್ಕಂದ:। ನಾಮಪ್ರಪಂಚೋ ಸಂಜ್ಞಾಸ್ಕಂದ:। ವಾಸನಾ-  
ಪ್ರಪಂಚ: ಸಂಸ್ಕಾರಸ್ಕಂದ:। ಈ ಐದನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬೇರೆ  
ಆತ್ಮನೇ ಇಲ್ಲವೆಂದು ಇವರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. "ಸರ್ವಕಾರ್ಯ-  
ಶರೀರೇಷು ಮುಕ್ತವಾಙ್ಗಸ್ಕಂದಪಂಚಕಮ್। ಸೌಗತಾನಾಮಿವಾತ್ಮಾನ್ಯೋ  
ನಾಸ್ತಿ ಮನ್ತ್ರೋ ಮಹೀಮತಾಮ್" ಮಾಘಂ ೨-೨೮। 10.  
ಮಾರ್ಗ, ರಸ್ತೆ, ದಾರಿ. 11. ರೆಂಬೆ, ಶಾಖೆ, ಕೊಂಬೆ.  
12. ಒಂದು ಛಂದಸ್ಸು.

ಸ್ಕಂದಚಾಪ ಸ್ಕಂಧಚಾಪ (ಪುಂ) ಅಡ್ಡ (ಶಿಕ್ಟ) ಯನ್ನು  
ತೂಗುಹಾಕುವ ಬಿದಿರಿನ ಅಡ್ಡಕೋಲು, ಕಾವಡಿಗೆ ಆಧಾರ  
ವಾಗಿರುವ ತೂಗಾಸರೆ. ಸ್ಕಂದೇ ಚಾಪ ಇವ। "ಸ್ಕಂದ-  
ಚಾಪೋ ವಿಹೃಜ್ಜಿಕಾ" ಹಾರಾಂ।

ಸ್ಕಂದತರ ಸ್ಕಂಧತರು (ಪುಂ) ನಾರಿಕೇಳವೃಕ್ಷ, ತೆಂಗಿನ  
ಮರ. ಸ್ಕಂದಪ್ರಧಾನಸ್ತರ:।

ಸ್ಕಂದದೇಶ ಸ್ಕಂಧದೇಶ (ಪುಂ) ಹೆಗಲು, ಅಂಸಪ್ರದೇಶ.  
ಸ್ಕಂದಸ್ಯ ದೇಶ:।



ಸ್ಕಂಧಫಲ ಸ್ಕಂಧಫಲ (ನಂ) 1. ತೆಂಗಿನ ಮರ, ನಾರಿಕೇಳ  
ವೃಕ್ಷ. ಸ್ಕಂಧಫಲಮಸ್ಯ | 2. ಬಿಲ್ಲುವೃಕ್ಷ.

ಸ್ಕಂಧಮಲ್ಲಕ ಸ್ಕಂಧಮಲ್ಲಕ (ಪುಂ) ಉದ್ದದ ಕಾಲಿನ  
ಒಂದು ವಿಧ ನೀರಿನ ಹಕ್ಕಿ.

ಸ್ಕಂಧವಹ ಸ್ಕಂಧವಹ (ಪುಂ) ವಟುವೃಕ್ಷ. ಅಲದಮರ.  
ಸ್ಕಂಧಾತ್ ರೋಹಿತಿ — ಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದಿ) “ಕ:”  
(3-1-134) |

ಸ್ಕಂಧವಾಹ ಸ್ಕಂಧವಾಹ (ಪುಂ) ಹೆಗಲಿನಿಂದ ಗಾಡಿ ಮೊದ  
ಲಾದುವನ್ನು ಹೊತ್ತು ಸಾಗಿಸುವ ವೃಷಭ (ಎತ್ತು)  
ಮೊದಲಾದುವು. ಸ್ಕಂಧೇನ ವಾಹಯತಿ — ಸ್ಕಂಧ + वह  
(ಪ್ರಾಪಣೆ) + ಗಿच् “अच्” (3-1-134) | “ಸ್ಕಂಧ-  
ವಾಹಸ್ತು ಶಕ್ತುश्च शृङ्गी गौरक्षधृतिलः” ಹಾರಾಂ |

ಸ್ಕಂಧವಾಹಕ ಸ್ಕಂಧವಾಹಕ (ಪುಂ) ಗಾಡಿ ಮೊದಲಾದುವು  
ವನ್ನು ಹೆಗಲಿನಿಂದ ಹೊರುವ ವೃಷಭ (ಎತ್ತು). ಸ್ಕಂಧೇನ  
ವಹತಿ — वह (ಪ್ರಾಪಣೆ) “ण्वल्” (3-1-133) |

ಸ್ಕಂಧಶಾಖಾ ಸ್ಕಂಧಶಾಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೃಕ್ಷದ ಬುಡದಿಂದ  
ಮೊದಲು ಹೊರಟಿರುವ ರೆಂಬೆ. ಸ್ಕಂಧಜಾ ಶಾಖಾ |  
“ಸ್ಕಂಧಶಾಖಾಶಾಲೆ” ಅಮಂ | “यथा हि स्कन्धशालानां  
तरोर्मूलावसेचनम् | एवमारोधने विष्णोः सर्वेषा-  
मात्मनश्च हि” भाग० ८-५-४९ |

ಸ್ಕಂಧಾವಾರ ಸ್ಕಂಧಾವಾರ (ಪುಂ) 1. ರಾಜಧಾನಿ, ರಾಜನ  
ಆವಾಸ. 2. ಸೈನ್ಯ. ಸ್ಕಂಧೇನ ಸೈನ್ಯವ್ಯುಹೇನ ರಾಜಾ ವಾ  
ಆವ್ರಿಯತೇ — ಆ + वृञ् (ಆವರಣೆ) “घञ्” (3-3-19) |  
“एतस्मिन्नन्तरे चक्रुः स्कन्धावारनिवेशनम्” रामा० |  
“अवस्कन्ध यदुश्रेष्ठः स्कन्धावारं न्यवीविशत्” याद०  
२२-१०५ |

ಸ್ಕಂಧಿನ್ ಸ್ಕಂಧಿನ್ (ಪುಂ) 1. ವೃಕ್ಷ, ಮರ. ಸ್ಕಂಧೋ-  
ಸ್ಯಾಸ್ತಿ “इनिः” (५-२-११५) | (ವಿಂ) 2. ರೆಂಬೆ  
ಗಳುಳ್ಳ.

ಸ್ಕಂತ್ರ ಸ್ಕಂತ್ರ (ವಿಂ) 1. ಜಾರಿಬಿದ್ದ, ಕಳಚಿಬಿದ್ದ. ಸ್ಕಂತ್ರತೇ  
— ಸ್ಕಂದಿರ್ (ಗತಿಶೋಷಣಯೋಃ) “क्” (3-२-१०२) |  
2. ಸ್ರವಿಸಿದ, ಸೋರಿದ. “स्कन्नमात्रं च तद्रेतो वृक्षपत्रेण  
भूमिपः | प्रतिजग्राह मिथ्या मे न पतेत् रेत इत्युत”  
भा० आदि० ६४-६४ | 3. ಶುಷ್ಕವಾದ, ಒಣಗಿದ.  
4. ಹೊರಟುಹೋದ. 5. ವಿಸರ್ಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೊರಗೆ  
ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸ್ಕಂತ್ರವತ್ ಸ್ಕಂತ್ರವತ್ (ವಿಂ) 1. ಹೊರಟುಹೋದ. 2.  
ಜಾರಿಬಿದ್ದ, ಕಳಚಿಬಿದ್ದ. 3. ಸ್ರವಿಸಿದ, ಸೋರಿದ.

ಸ್ಕಂದಿರ್ (ಗತಿಶೋಷಣಯೋಃ) “क्” (3-२-१०२) |  
4. ಒಣಗಿದ, ಶುಷ್ಕವಾದ.

ಸ್ಕಾನ್ದ ಸ್ಕಾನ್ದ (ನಂ) ಸ್ಕಾನ್ದಪುರಾಣ. ಸ್ಕಾನ್ದಪುರಾಣವು  
ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಅಷ್ಟಾದಶಪುರಾಣಗಳ  
ಲೊಂದು. ಸ್ಕಂದಸ್ಯೇದಮ್ “अण्” (४-३-१२०) |  
ಇದು ತಾಮಸಪುರಾಣಗಳ ವರ್ಗಕ್ಕೆ ಸೇರಿದುದು. “मात्स्यं  
कौर्मं तथा लङ्गं शैवं स्कान्दं तथैव च | आग्नेयं च  
षडेतानि तामसानि निबोधत” || ಸ್ಕಾನ್ದಪುರಾಣವು  
ಸಪ್ತಖಂಡಗಳಲ್ಲಿ ಎಂಬತ್ತೊಂದು ಸಹಸ್ರಗ್ರಂಥಗಳಿಂದ  
(ಶ್ಲೋಕಗಳಿಂದ) ರಚಿತವಾಗಿರುವುದು. “स्कान्दाह्वयस्तत्र  
खण्डाः सप्तैव परिकल्पिताः | एकाशीतिसहस्रं तु स्कान्दं  
सर्वाधिकृन्तनम् ||

ಇದರ ಸಪ್ತಖಂಡಗಳು : (1) ಮಾಹೇಶ್ವರಖಂಡಃ  
(2) ವೆಣ್ಣವಖಂಡಃ (3) ಬ್ರಹ್ಮಖಂಡಃ (4) ಕಾಶಿಖಂಡಃ  
(5) ಅವಂತಿಖಂಡಃ (6) ನಾಗರಖಂಡಃ ಮತ್ತು (7) ಪ್ರಭಾಸ-  
ಖಂಡಃ |

ಮಾಹೇಶ್ವರಖಂಡದಲ್ಲಿ — ಪುರಾಣೋಪಕ್ರಮ  
ಸ್ಕಂದನ ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯವರ್ಣನೆ ದಕ್ಷಯಜ್ಞಕಥೆ ಶಿವ  
ಲಿಂಗಾರ್ಚನೆಯ ಫಲ ದೇವೇಂದ್ರನ ಚರಿತ್ರೆ ಸಮುದ್ರ  
ಮಥನಾಖ್ಯಾನ ಪಾರ್ವತಿಯ ಉಪಾಖ್ಯಾನ ಪಾರ್ವತೀ  
ಪರಮೇಶ್ವರರ ವಿವಾಹ. ಕುಮಾರೋತ್ಪತ್ತಿ ತಾರಕಾಸುರ  
ನೊಡನೆ ಯುದ್ಧ ಪಾಶುಪತಾಖ್ಯಾನ ಚಂಡಿಯ ಆಖ್ಯಾನ  
ನಾರದಸಮಾಗಮ ಕುಮಾರಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ ನದೀಸಾಗರ  
ಕೀರ್ತನ ತಾರಕಾಸುರವಧಿ ವಾಸುದೇವಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ ಅನೇಕ  
ತೀರ್ಥಗಳ ವರ್ಣನೆ ಪಾಂಡವರ ಪುಣ್ಯಕಥೆ ಇತ್ಯಾದಿ  
ವಿಷಯಗಳ ವರ್ಣನೆ.

ನೈಷ್ಠವಖಂಡದಲ್ಲಿ — ಭೂಮಿ-ವರಾಹೋಪಾಖ್ಯಾನ  
ಕಮಲಾ-ಶ್ರೀನಿವಾಸರ ಕಥೆ, ಭರದ್ವಾಜಕಥೆ ಮಾರ್ಕಂಡೇ  
ಯಾಖ್ಯಾನ ಪುರುಷೋತ್ತಮಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ ಅಂಬರೀಷ  
ಕಥೆ ಇಂದ್ರದ್ಯುಮೋಪಾಖ್ಯಾನ ಜೈಮಿನಿಯ ಉಪಾಖ್ಯಾನ  
ನಾರದೋಪಾಖ್ಯಾನ ನೀಲಕಂಠೋಪಾಖ್ಯಾನ ನಾರಸಿಂಹ  
ವರ್ಣನೆ ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕಗತಿ ರಥಯಾತ್ರಾವಿಧಿ ಶಯ  
ನೋತ್ಸವಕೀರ್ತನ ದಕ್ಷಿಣಾಮೂರ್ತಿಯ ಉಪಾಖ್ಯಾನ  
ಡೋಲೋತ್ಸವ ದಶಾವತಾರಕಥೆ ಬದರಿಕ್ಷೇತ್ರದ  
ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ ಕಾರ್ತಿಕ ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ ಮಚಾಮೃತ ಸ್ನಾನ  
ಪುಣ್ಯ ಘಂಟಾನಾದಾದಿ ಫಲ ನೈವೇದ್ಯಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ ಹರಿ  
ವಾಸರ ಕೀರ್ತನ ಅಖಂಡ್ಯಕಾದಶೀ ಪುಣ್ಯ ಜಾಗರಣೆಯ  
ಫಲ ಶ್ರೀಮದ್ಭಗವತಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ ಮಾಘಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ  
ಇತ್ಯಾದಿ ವರ್ಣನೆ.



ಬ್ರಹ್ಮಖಂಡದಲ್ಲಿ — ಸೇತುಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ ಚಕ್ರ  
ತೀರ್ಥಾದಿ ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ ಬ್ರಹ್ಮಕುಂಡಾದಿ ವರ್ಣನೆ  
ರಾಮತೀರ್ಥಲಕ್ಷ್ಮೀತೀರ್ಥ ಶಂಖಾದಿ ತೀರ್ಥಗಳ ಮಹಿಮೆ.  
ಧನುಷೋಚ್ಚಾದಿ ಮಹಿಮೆ. ರಾಮನಾಥನ ಮಹಿಮೆ  
ಶತ್ವಜ್ಞಾನೋಪದೇಶ ಯಾತ್ರಾವಿಧಾನಕಥನ ವರ್ಣಗಳ  
ಮತ್ತು ಆಶ್ರಮಗಳ ಧರ್ಮತತ್ವನಿರೂಪಣೆ ದೇವಸ್ಥಾನ  
ವಿಭಾಗ ಜಾತಿಭೇದಕಥನ ಸ್ಮೃತಿಧರ್ಮಗಳ ನಿರೂಪಣೆ  
ವೈಷ್ಣವಧರ್ಮ ದಾನಪ್ರಶಂಸೆ ಇತ್ಯಾದಿ ವರ್ಣನೆ.

ಬ್ರಹ್ಮಖಂಡೋತ್ತರ ಭಾಗದಲ್ಲಿ — ಪರಶಿವನ  
ಅದ್ಭುತವಾದ ಮಹಿಮೆ ಪುಜಾರ್ಥಕರ ಮಹಿಮೆ ಗೋಕರ್ಣ  
ಮಹಿಮೆ ಶಿವರಾತ್ರಿಯ ಮಹಿಮೆ ಪ್ರದೋಷವ್ರತ  
ಕೀರ್ತನ ಉಮಾಮಾಹೇಶ್ವರ ವ್ರತ ರುದ್ರಾಕ್ಷಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ  
ಇತ್ಯಾದಿ ವರ್ಣನೆ.

ಕಾಶೀಖಂಡದಲ್ಲಿ — ಪತಿವ್ರತಾಚರಿತ್ರೆ ಸಪ್ತರ್ಷಿಗಳ  
ಧೃವಕುಮಾರನ ಮತ್ತು ತಪೋಲೋಕದ ವರ್ಣನೆ  
ವಾರಾಣಸೀಪ್ರಶಂಸೆ ಪಿಶಾಚಮೋಕ್ಷಾಖ್ಯಾನ ಇತ್ಯಾದಿ  
ವರ್ಣನೆ.

ಅನಂತೀಖಂಡದಲ್ಲಿ — ಮಹಾಕಾಲವನದ ಉಪಾ  
ಖ್ಯಾನ ಶಿವಸ್ತೋತ್ರ ನಾಗಪಂಚಮಿಯ ಮಹಿಮೆ ಗೌರೀ  
ವ್ರತೋಪಾಖ್ಯಾನ ನಾನಾತೀರ್ಥಗಳ ವರ್ಣನೆ ದುಂಧು  
ಮಾರೋಪಾಖ್ಯಾನ ಇತ್ಯಾದಿ ವರ್ಣನೆ.

ನಾಗರಖಂಡದಲ್ಲಿ — ಲಿಂಗೋತ್ಪತ್ತಿಸಮಾಖ್ಯಾನ  
ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರ ಕಥೆ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ ತ್ರಿಶಂಕುವಿನ  
ಸ್ವರ್ಗಾರೋಹಣ ಹುಟಕೇಶ್ವರ ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ ವೃಷಾಸುರ  
ವಧೆ ವಿಷ್ಣುವಾದ ಗೋಕರ್ಣ ಜಮದಗ್ನಿವಧಾಖ್ಯಾನ  
ವಾರಣಾಸಿ ದ್ವಾರಕಾ ಅವಸ್ಥೀ ನಗರಗಳು ಬೃಂದಾವನ  
ಗಂಗಾ ನರ್ಮದಾ ಮತ್ತು ಸರಸ್ವತೀ ನದಿಗಳು ದ್ವಾದಶಾ  
ದಿತ್ಯರು ಇತ್ಯಾದಿ ವರ್ಣನೆ.

ಪ್ರಭಾಸಖಂಡದಲ್ಲಿ — ಸೋಮೇಶ ವಿಶ್ವೇಶ ಸಿದ್ಧೇ  
ಶ್ವರ ಮೊದಲಾದವರ ಆಖ್ಯಾನ ಸರಕೇಶ್ವರ ಸಂವರ್ತೇಶ  
ನಿಧೀಶ್ವರರ ಕಥೆ ಇತ್ಯಾದಿ ವರ್ಣನೆ.

ಸ್ಕಾಂದಪುರಾಣ ಸ್ಕಾಂದಪುರಾಣ (ನಂ) "ಸ್ಕಾಂದ" ಪದದಲ್ಲಿ  
ನೋಡಿ.

ಸ್ವದನ ಸ್ಪದನ (ನಂ) 1. ಅಟ್ಟುವುದು, ಓಡಿಸುವುದು.  
ಸ್ವದ (ಸ್ವದನೆ) ಸ್ವದನ ವಿಧಾವಣಮ್ । 2. ಕತ್ತರಿಸು  
ವುದು. 3. ಹಿಂಸಿಸುವುದು. 4. ಸ್ಫೋರ್ಯ.

ಸ್ವದನೀಯ ಸ್ಪದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಅಟ್ಟಲ್ಪಡುವ, ಓಡಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. 2. ಅಟ್ಟಬೇಕಾದ, ಓಡಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಅಟ್ಟ  
ಬಹುದಾದ. 4. ಅಟ್ಟಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ಸ್ವದ (ಸ್ವದನೆ)

"ಬನೀಯ" (3-1-16) । "ತವ್ಯ:" । ಸ್ವದಿತವ್ಯ:  
ಸ್ಪದಿತವ್ಯ: ।

ಸ್ವದಮಾನ ಸ್ಪದಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಅಟ್ಟುತ್ತಿರುವ. ಸ್ವದ  
(ಸ್ವದನೆ) "ಶಾನಕ್" (3-2-124) । 2. ಕತ್ತರಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. 3. ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಸಿರಗೊಳಿಸು  
ತ್ತಿರುವ.

ಸ್ವನ ಸ್ಪನ್ನ (ವಿಂ) 1. ಅಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಓಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸ್ವದ  
(ಸ್ವದನೆ) "ಕ್ವ:" (3-2-102) । ಧಾತೋ: ದಕಾರಸ್ಯ  
ದಕಾರಾತ್ ಪರಸ್ಯ ನಿಷಾತಸ್ಯ ಚ ನ: (4-2-42) ।  
2. ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಸ್ಥಿರಪಡಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸ್ವಲತ್ ಸ್ಪಲತ್ (ವಿಂ) 1. ಜಾರುತ್ತಿರುವ, ನೆಲೆತಪ್ಪು  
ತ್ತಿರುವ, ಜಾರಿ ಬೀಳುತ್ತಿರುವ. ಸ್ವಲ (ಸಚಲನೆ)  
"ಶತ್" (3-2-124) । "ಶಿಲಿಷ್ಯಾಕ್ಷಿರನ್ಯೋನ್ಯಮುಖಾಗ್ರ-  
ಸಂಜ್ಞಸ್ವಲತ್ವಲಿನಂ ಹರಿಭಿವಿಲೋಲ:" ಮಾಘಂ 3-66 ।  
2. ಬಿಕ್ಕುತ್ತಿರುವ, ಉಗ್ಗುತ್ತಿರುವ. 3. ಎಡವುತ್ತಿರುವ,  
ಮುಗ್ಗರಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಸ್ವಲತೋ ಹಿ ಕರಾಲಂಬ: ಸುಹ-  
ತ್ಸಾವಿವಚೇಷಿತಮ್" ಹಿತೋ 3-134 । "ಸ್ವಲನ್ಮಹೇಮಂ ಪ್ರಪ-  
ತುರಜ್ಞಮಂ ಪರಸ್ಪರಾಶ್ಲಿಷಜನಂ ಸಮಂತತ:" ಕುಮಾಂ 14-23 ।  
4. ರೇಗುತ್ತಿರುವ, ಉದ್ರೇಕಗೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. 5. ತಪ್ಪು  
ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ನಡೆಯು  
ತ್ತಿರುವ. 6. ಉಲ್ಲಂಘಿಸುತ್ತಿರುವ, ಮೀರಿ ನಡೆಯು  
ತ್ತಿರುವ, ಅಜ್ಞಾಭಂಗಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 7. ತೊದಲು  
ತ್ತಿರುವ, ತೊದಲು ಮಾತಾಡುತ್ತಿರುವ. "ವದನಕಮಲಕಂ  
ಶಿಶೋ: ಸ್ಮರಾಮಿ ಸ್ವಲದಸಮಂಜಸಮಂಜುಜಲಿತಂ ತೇ" ತಂ  
ರಾಂ 4-4 । 8. ಕುಂಠಿತವಾಗುತ್ತಿರುವ, ಕುಗ್ಗುತ್ತಿರುವ.  
9. ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೊರಳಾಡುತ್ತಿರುವ. "ವ್ಯಚಲನ್  
ವಿಶ ಕ್ಷುಡಕದೀರಕಸ್ಥಲೀಶಿಖರಸ್ವಲನ್ಮುಖರಮೇಖಲಾಕ್ರುಲಾ:"  
ಮಾಘಂ 13-34 । ಸ್ವಿಯಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-6) । -ಂತೀ  
-ಶ್ವೀ. "ಮಾಲೇವಾಜ್ಞಾ ಸಪುಷ್ಪಾ ನತನೃಪತಿಶತೇರಹ್ಯತೇ ಯಾ  
ಶಿರೋಮಿ: ಸಾ ಮಯೇವ ಸ್ವಲಂತೀ ಪ್ರಥಯತಿ ವಿನಯಾಶ್ಚಕ್ರತಂ ತೇ  
ಪ್ರಮುತ್ವಮ್" ಮದ್ರಾಂ 3-24 । 10. ಉಪಾಯದಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಿ  
ಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ.

ಸ್ವಲನ ಸ್ಪಲನ (ನಂ) 1. ಎಡವುವುದು, ಮುಗ್ಗರಿಸುವುದು.  
ಸ್ವಲ (ಸಚಲನೆ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114) ।  
2. ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ನಡೆಯುವುದು, ತಪ್ಪುದಾರಿಯಲ್ಲಿ  
ನಡೆಯುವುದು. "ಯಸ್ಯಾಮಜಿಹ್ವಾ ಮಹತೀಮಪಕ್ಷಾ: ಸೀಮಾನ-  
ಮತ್ಯಾಯತಯೋಜ್ಯಜಂತ: । ಜನೇರಜಾತಸ್ವಲನೇನಂ ಜಾತು ದ್ವಯೇ-



ಪ್ರಮುಖ್ಯಂತ ವಿನೀತಮಾರ್ಗಿ:" ಮಾಘಂ ೩-೪೭ 1. 3. ಹೊಡೆತ, ಅಪ್ಪಳಿಸುವುದು. "ಕಲಹರಪರಿಣಾಮಶ್ಯಾಮಜಮ್ಬು-ನಿಕುಂಜಸ್ವಲನಮುಖರಮೂರಿಸ್ತೋತಸೋ ನಿಶ್ಚರಿಸ್ಥಿ:" ತಂ ರಾಂ ೨-೨೦ 1. 4. ಉಲ್ಲಂಘಿಸುವುದು, ಅಜ್ಜೆ ಮೀರಿ ನಡೆಯುವುದು. 5. ತೊಡಲುವುದು, ತೊಡಲು ಮಾತಾಡುವುದು. 6. ಜಾರುವುದು, ನೆಲೆತಪ್ಪಿ ಬೀಳುವುದು. 7. ಕುಂಠಿತವಾಗುವುದು, ಕುಗ್ಗುವುದು, ಕಡಮೆಯಾಗುವುದು. 8. ಚಲಿಸುವುದು, ಹೊರಳಾಡುವುದು, ಚುಚಲವಾಗಿರುವುದು. 9. ಹರಿದಾಡುವುದು, ಮೆಲ್ಲಗೆ ನಡೆಯುವುದು, ಅಂಚೆ ಗಾಲಿಡುವುದು, ತೆವಳುವುದು. "ಶ್ರಮಸ್ವಲನದೋಷಂ ಸ್ಯವಿರೇ ಚ ಪ್ರಶಸ್ಯತೇ | ಸತ್ವೋತ್ಸಾಹಬಲಸ್ಯೇಯವೀರ್ಯವಿವರ್ಧನಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಚಿಕಿತ್ಸಾಂ ೨೪-೭೭ 1. 10. ಉಪಾಯದಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಸ್ವಲಿತ ಸ್ಪಲಿತ (ನಂ) 1. ಎಡವುವುದು, ಮುಗ್ಗರಿಸುವುದು. ಸ್ವಲ (ಸವಲನೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) 1. 2. ಜಾರಿಬೀಳುವುದು. 3. ಉಪಾಯದಿಂದ ಜಾರಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. 4. ಕೆಳಗೆ ಸೋರುವುದು, ಸ್ರವಿಸುವುದು. 5. ತೆವಳುವುದು, ಅಂಚೆಗಾಲಿಡುವುದು. 6. ಅಪ್ಪಳಿಸುವುದು, ಹೊಡೆತ. "ನಿಜಪಾಣಿ-ಪಲ್ಲವತಲಸ್ವಲನಾದಭಿನಾಸಿಕಾವಿವರಮುತ್ಪತ್ತಿ:" ಮಾಘಂ ೯-೪೨ 1. 7. ಅಜ್ಜೆ ಮೀರಿ ನಡೆಯುವುದು, ಉಲ್ಲಂಘಿಸುವುದು. 8. ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. 9. ಮಾತಾಡುವಾಗ ತೊಡಲುವುದು. 10. ಮಾರ್ಗ ತಪ್ಪಿ ನಡೆಯುವುದು, ತಪ್ಪುಮಾಡುವುದು. "ಉತ್ತಗೋತ್ರಸ್ವಲಿತೇಷು ಬನ್ವನಮ್" ಕುಮಾಂ ೪-೮ 1. 11. ಮಂಚನೆ, ಮೋಸ. (ವಿಂ) 12. ಚಲಿಸಿದ, ಸ್ಥಾನಬಿಟ್ಟು ಹೊರಟಿರುವ. ಸ್ವಲ ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) 1. 13. ಸೋರಿದ, ಸ್ರವಿಸಿದ, ಜಿನುಗಿದ. 14. ಕೆಳಗೆ ಜಾರಿಬಿದ್ದ. 15. ಎಡವಿದ, ಮುಗ್ಗರಿಸಿದ. "ಸ್ವಲಿತಾಭಿರಪ್ಯನುಪದಂ ಪ್ರಮದಾ: ಪ್ರಣಯಾತಿಭೂಮಿಮಗಮನ್ ಗತಿभि:" ಮಾಘಂ ೯-೭೮ 1. 16. ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) 1. "ಕಲಯತ್ರಪಿ ಸವ್ಯಥೋಜ್ವತಸ್ಥೇಷಾಕುನೆನ ಸ್ವಲಿತ: ಕಿಲೇತ-ರೋಽಪಿ" ಮಾಘಂ ೯-೮೩ 1. "ಬಲಿಷ್ಠ ತಸ್ಯಾ: ಸ್ವಲಿತಾ: ಪ್ರಪೇದಿರೇ ಚಿರೇಣ ನಾಽಪಿ ಪ್ರಯಮೋದಬಿನ್ದವ:" ಕುಮಾಂ ೪-೨೪ 1.

ಸ್ತನ ಸ್ತನ (ಪುಂ) ಎದೆ, ಸ್ತನ, ಮೊಲೆ, ಪಯೋಧರ. ಸ್ತನತಿ ಕಥಯತಿ ಯೌವನೋದಯಮ್ ಸ್ತನಯತೇ ಶಬ್ದತೇ ಕಾಮಕುರಿಸಿತಿ ವಾ—ಛನ (ಶಬ್ದ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) 1. ಪುंसಿ ಸಂಜಾಯಾಂ "ಘ:" (೩-೩-೧೧೮) ವಾ 1. "ಸುತನೋ: ಸ್ತನೋ ಚ ದಯಿತೋಪಗಮೇ ತನುರೋಮರಾಜಿಪಥವೇಪಥವೇ" ಮಾಘಂ ೯-೨೨ 1.

"ಪನ್ಥಾನಮಾಸ್ತು ವಿಜಹೀಹಿ ಪುರ: ಸ್ತನೋ ತೇ ಪಶ್ಯನ್ ಪ್ರತಿ-ದ್ವಿರದಕುಂಭವಿಶಿಷ್ಟೇತಾ:" ಮಾಘಂ ೪-೩೪ 1.

ಸ್ತನತ್ ಸ್ತನತ್ (ವಿಂ) ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಛನ (ಶಬ್ದ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) 1. "ಉದ್ದೇಲವೇಗಾನ್ ಸ್ತನತೋ ಗಮೀರಂ ಔವಂಪ್ರತಿಚ್ಛಂದವಿದೀಪ್ತದೃಷ್ಟಿನ್" ಯಾದಂ ೨೦-೧೪ 1.

ಸ್ತನತಃ ಸ್ತನತಃ (ವಿಂ) ಪಯೋಧರಗಳ ಮೇಲುಭಾಗ, ಸ್ತನಗಳ ಮೇಲಿನಿಂದ ಕೆಳಗಿನವರೆಗಿರುವ ಇಳಿಜಾರು ಪ್ರದೇಶ. ಸ್ತನಯೋ: ತದಮ್ "ಸೀಮಂತಂ ನಿಜಮನುಬಂಧನತೀ ಕರಾಮ್ಯಾಮಾಲಕ್ಯಸ್ತನತಃ ಬಾಹುಮೂಲಭಾಗಾ" ಮಾಘಂ ೮-೬೯ 1.

ಸ್ತನನ ಸ್ತನನ (ನಂ) 1. ಶಬ್ದಮಾಡುವುದು. ಛನ (ಶಬ್ದ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) 1. 2. ಗುಡುಗು, ಮೇಘದ ಗರ್ಜನೆ. 3. ಸಂಕಟದಿಂದ ನರಳುವುದು. ಛನ + ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" 1. 4. ಶಬ್ದಮಾಡುವುದು. 5. ನರಳಿಸುವುದು.

ಸ್ತನನೀಯ ಸ್ತನನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದಮಾಡಬೇಕಾದ. 2. ಶಬ್ದಮಾಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಛನ (ಶಬ್ದ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) 1. 3. ಶಬ್ದಮಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ. ಛನ + ಣಿच् "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) 1. 4. ಶಬ್ದಮಾಡಿಸಬಹುದಾದ. 5. ಶಬ್ದಮಾಡಿಸಬೇಕಾದ. "ತವ್ಯ:" 1. ಸ್ತನಿತವ್ಯ: ಸ್ತನಿತವ್ಯ: 1. ಣಿच् + "ತವ್ಯ:" 1. ಸ್ತನಯಿತವ್ಯ: ಸ್ತನಯಿ ತವ್ಯ: 1.

ಸ್ತನನ್ವಯ ಸ್ತನನ್ವಯ (ಪುಂ) 1. ಸ್ತನನ್ವಯವನ್ನು ಮಾಡುವ ಶಿಶು, ತಾಯಿಯ ಹಾಲನ್ನು ಕುಡಿಯುವ ಮಗು. ಸ್ತನಂ ವಯತಿ ಪಿಬತಿ — ಘಟ್ (ಪಾನ) "ಽಶ್" (೩-೨-೨೯) 1. ಮುಮ್ (೬-೩-೬೭) 1. "ಅಸಂಶಯಂ ಪ್ರಾಕ್ತನಯೋಪಪತ್ತೇ: ಸ್ತನ-ನ್ವಯಪ್ರೀತಿಮವಾಪ್ಸ್ಯಸಿ ತ್ವಮ್" ರಘುಂ ೧೪-೭೮ 1. 2. ಹಾಲು ಕುಡಿಯುವ ಕರು. "ಪ್ರೀತ್ಯಾ ನಿಯುಕ್ತಾಂಲಿಹತೀ: ಸ್ತನನ್ವಯಾನ್ ನಿಗೃಹ್ಯ ಪಾರಿಮುಖೇನ ಜಾನುನೋ: | ವರ್ಧಿಷ್ಣುಧಾರಾಽವನಿ ರೋಹಿಣಿ: ಪಯಶ್ಚಿರಂ ನಿರ್ದಯೈ ದುಹತ: ಸ ಗೋದುಹ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೪೦ 1. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೪) 1. —ಽಯಿ —ಽಯೀ.

ಸ್ತನಪ ಸ್ತನಪ (ಪುಂ) 1. ತಾಯಿಯ ಹಾಲನ್ನು ಕುಡಿಯುವ ಶಿಶು. ಸ್ತನೋ ಪಿಬತಿ—ಪಾ (ಪಾನ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೩) 1. (ವಿಂ) 2. ಎದೆಯ ಹಾಲನ್ನು ಕುಡಿಯುವ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಪಾ —ಪಾ ತಾಯಿಯ ಹಾಲನ್ನು ಕುಡಿಯುವ ಹೆಣ್ಣು ಶಿಶು.

ಸ್ತನಪಾನ ಸ್ತನಪಾನ (ನಂ) ತಾಯಿಯ ಎದೆಹಾಲನ್ನು ಕುಡಿಯುವುದು.

ಸ್ತನಪಾಯಿನ್ ಸ್ತನಪಾಯಿನ್ (ವಿಂ) ತಾಯಿಯ ಎದೆ ಹಾಲನ್ನು ಕುಡಿಯುವ. ಸ್ತನೋ ಪಿಬತಿ —ಪಾ (ಪಾನ)



“ಫಿನಿ:” (೩-೧-೧೩೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಫಿನ್” (೪-೧-೫) |  
-ಪಾಪಿನಿ - ಪಾಪಿನಿ.

ಸ್ತನಭರ ಸ್ತನಭರ (ಪುಂ) (ಸ್ಥೂಲವಾದ) ಸ್ತನಗಳ ಭಾರ.  
ಸ್ತನಯೋ: ಭರ: ಭಾರ: | “ಸ್ತನಭರೇಣ ಜಿತಸ್ತಬಕಾನಮತ್ರವಲತೇ  
ವಲತೇಽಭಿಮುಖಂ ತವ” ಮಾಘಂ ೬-೧೧ |

ಸ್ತನಭವ ಸ್ತನಭವ (ಪುಂ) ರತಿಬಂಧದ ಒಂದು ಭೇದ.  
“ಸ್ವಜಜ್ಞಾಪ್ರಮಥೇ ತು ಕೃತ್ವಾ ಯೋಷಿತ್ಪದದ್ವಯಮ್ | ಸ್ತನೌ  
ಧೃತ್ವಾ ರಮೇತ್ಕಾಮಿ ಬಂಧ: ಸ್ತನಭವ: ಸ್ಮೃತ:” ಸ್ಮರದೀಂ |

ಸ್ತನಮುಖ ಸ್ತನಮುಖ (ನಂ) ಕುಚಾಗ್ರ, ಚೂಚುಕ, ಸ್ತನ  
ಗಳ ಅಗ್ರಭಾಗ.

ಸ್ತನಯತ್ ಸ್ತನಯತ್ (ವಿಂ) ಶಬ್ದ ಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಸದು ಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಷನ್ (ಶಬ್ದ) + ಣಿಚ್ “ಶತ್”  
(೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಫಿನ್” (೪-೧-೬) | -ಯಂತಿ  
-ಯಂತಿ.

ಸ್ತನಯಿತ್ನು ಸ್ತನಯಿತ್ನು (ವಿಂ) 1. ಮೇಘ, ಮೇಘ.  
ಸ್ತನ (ದೇವಶಬ್ದ) + ಣಿಚ್ “ಇತ್ನುಚ್” (೩ಂ ೩-೨೯) |  
ಘೇರಯಾದೇಶ: (೬-೪-೫೫) | “ಸ್ತನಯಿತ್ನೋರ್ಮಯೀವ ಚಕಿತೋ-  
ಕ್ತಂ ಸ್ಥಿತಾ” ೩ಂ ರಾಂ ೩-೭ | 2. ಮೇಘದ ಶಬ್ದ,  
ಗುಡುಗು. “ಸ್ತನಯಿತ್ನು: ಪುಮಾನ್ ವಾರಿಧರೇಽಪಿ ಸ್ತನಿತೇಽಪಿ  
ಚ” ಮೇದಿಂ | 3. ವ್ಯಾಧಿ, ರೋಗ. 4. ಮೃತ್ಯು.  
“ಸ್ತನಯಿತ್ನು: ಪಯೋಮುಚಿ | ಮೃತ್ಯೌ ಸ್ತನಿತೇ ರೋಗೇ ಚ”  
ಹೇಮಂ | “ಯದವಸ್ತತ್ರ ನಿಶ್ವಾಸಾ ಯವನೇ: ಸ್ತನಯಿತ್ನುಮಿ:”  
ಯಾದಂ ೨೨-೯೨ | 5. ಕೊನ್ನಾರಿ ಗೆಡ್ಡೆ.

ಸ್ತನವೃತ್ತ ಸ್ತನವೃತ್ತ (ನಂ) ಸ್ತನಾಗ್ರ, ಚೂಚುಕ.

ಸ್ತನಾಪ್ರ ಸ್ತನಾಪ್ರ (ನಂ) ಚೂಚುಕ, ಸ್ತನಗಳ ತುದಿ.

ಸ್ತನಾಂತರ ಸ್ತನಾಂತರ (ನಂ) ಸ್ತನಗಳ ಮಧ್ಯಭಾಗ,  
ಹೃದಯ. ಸ್ತನಯೋರಂತರಮ್ ಮಧ್ಯಭಾಗ: | “ವಿಭ್ರತಯಾ  
ಕೌಸ್ತುಭನಾಸಂ ಸ್ತನಾಂತರವಿಲಿಖಿತಮ್” ರಘುಂ ೧೦-೬೨ |

ಸ್ತನಾಭೋಗ ಸ್ತನಾಭೋಗ (ಪುಂ) 1. (ಸ್ಥೂಲವಾದ) ಸ್ತನ  
ಗಳ ಭಾರ. ಸ್ತನಯೋರಾಭೋಗ: | 2. ಸ್ತನಗಳು ಪೂರ್ಣ  
ವಾಗಿ ಬೆಳೆದಿರುವಿಕೆ.

ಸ್ತನಿತ ಸ್ತನಿತ (ನಂ) 1. ಮೇಘದ ಶಬ್ದ, ಗುಡುಗು.  
ಸ್ತನ (ದೇವಶಬ್ದ) ಮಾವೆ “ಕ್ತ:” (೩-೩-೧೧೪) | “ತೋ-  
ತ್ಸರ್ಗಸ್ತನಿತಮುಖರೋ ಮಾಸ್ಮ ಭವಿಷ್ಯತ್ವಾಸ್ತಾ:” ಮೇಘಂ ೧-೩೭ |  
(ವಿಂ) 2. ಶಬ್ದಮಾಡಿದ, ಕೂಗಾಡಿದ, ಗದ್ದಲಮಾಡಿದ.  
ಷನ್ (ಶಬ್ದ) ಕರ್ತಂ “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨) | “ವಿಚಿಕ್ಷೋಮ-  
ಸ್ತನಿತವಿಹಗ್ರಾಞ್ಚಿಗುಣಾಃ ಸಂಸರ್ಪಂತಾ: ಸ್ವಲಿತ-  
ಸುಭಗಂ ದಕ್ಷಿಣಾವರ್ತನಾಃ” ಮೇಘಂ ೧-೨೮ | 3. ಶಬ್ದ  
ಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಷನ್ + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) |

ಸ್ತನಿತವತ್ ಸ್ತನಿತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದಮಾಡಿದವನು,  
ಕೂಗಾಡಿದವನು, ಗದ್ದಲ ಮಾಡಿದವನು. ಷನ್ (ಶಬ್ದ)  
“ಕ್ತವತು:” (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಶಬ್ದಮಾಡಿಸಿದವನು.  
ಷನ್ + ಣಿಚ್ “ಕ್ತವತು:” (೩-೨-೧೦೨) |

ಸ್ತನೈ ಸ್ತನೈ (ನಂ) 1. ತಾಯಿಯ ಎದೆಹಾಲು. ಸ್ತನೇ ಭವಮ್  
“ಯತ್” (೪-೩-೫೫) | “ಅಶೇಷಲೋಕತ್ರಯಮಾತುರಸ್ಯಾ:  
ಘಾಮಾತುರ: ಸ್ತನೈಸುಧಾಮವಾಸೀತ್” ಕುಮಾರಂ ೧೧-೨೪ |  
2. ಕ್ಷೀರ, ಹಾಲು. “ಸ ನಂದಿನೀಸ್ತನೈರ್ಮನಿನಂದಿತಾತ್ಮಾ  
ಸದ್ವತ್ಸಲೋ ವತ್ಸಹಿತಾವಶೇಷಮ್” ರಘುಂ ೨-೬೯ |

ಸ್ತಬಕ ಸ್ತಬಕ (ಪುಂ) 1. ಗುಚ್ಛ, ಹೂವಿನ ಗೊಂಚೆಲು.  
ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) “ಅಬಕ:” ಧಾತು: ಸ್ತಾದೇಶಃ (೩ಂ  
೪-೯೬) | “ಸ್ಯಾದ್ಗುಚ್ಛಕಸ್ತು ಸ್ತಬಕ:” ಅಮಂ | “ನವ-  
ಕರನಿಕರೇಣ ಸ್ಪಷ್ಟಬಂಧುಕಸುನಸ್ತಬಕರಚಿತಮೇತೇ ಶೇಖರಂ  
ವಿಭ್ರತೀವ” ಮಾಘಂ ೧೧-೪೬ | 2. ಗ್ರಂಥದ ಒಂದು  
ಭಾಗ, ಅಧ್ಯಾಯ, ಸರ್ಗ.

ಸ್ತಬ್ಧ ಸ್ತಬ್ಧ (ವಿಂ) 1. ಚಲಿಸದೆ ಇರುವ, ಅಲುಗಾಡದೆ  
ನಿಂತಿರುವ. ಸ್ತನ್ಮು (ರೋಧನೆ) ಸೌತ್ರೋ ಧಾತು: “ಕ್ತ:”  
(೩-೪-೭೨) | 2. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ಒಂದೇ ಕಡೆ ಇರುವ,  
ಸಂಚರಿಸದೆ ಇರುವ. “ಸ್ತಬ್ಧಸ್ಯ ನಶ್ಯತಿ ಯಶೋ ವಿಷಮಸ್ಯ  
ಮೆತ್ರಿ” ಹಿತಂ ೨-೧೦೮ |

ಸ್ತಬ್ಧರೋಮನ್ ಸ್ತಬ್ಧರೋಮನ್ (ಪುಂ) ಪರಾಹ, ಹಂದಿ.  
ಸ್ತಬ್ಧಾನಿ ರೋಮಾಣಿ ಯಸ್ಯ |

ಸ್ತಬ್ಧ ಸ್ತಬ್ಧ (ಪುಂ) ಅಜ, ಅಡು, ಮೇಕೆ. ಸ್ತನ್ಮು (ರೋಧನೆ)  
“ಕ್ತ:” (ವಾಂ ೩-೨-೫) | “ಸ್ತಬ್ಧಚ್ಛಾಗಬಸ್ತಚ್ಛಾಗಲಕಾ  
ಅಜೇ” ಅಮಂ |

ಸ್ತಂಬ ಸ್ತಂಬ (ಪುಂ) 1. ಹುಲ್ಲು ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಕಂತೆ.  
ತಿಷ್ಠತಿ—ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) “ಅಂಬವ್” (೩ಂ ೪-೯೬) |  
“ಆರಣ್ಯಕೋಪಾತ್ತಫಲಪ್ರಸುತಿ: ಸ್ತಂಬೇನ ನಿವಾರ ಇವಾ-  
ವಶಿಷ್ಠ:” ರಘುಂ ೫-೧೫ | 2. ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ದೂಲವಿಲ್ಲದ  
ಗಡೆ. 3. ಹುಲ್ಲು ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಅಗೆಯುವ ಸಾಧನ,  
ಗುದ್ದಲಿ, ಕಳೆ ಗುದ್ದಲಿ.

ಸ್ತಂಬಕರಿ ಸ್ತಂಬಕರಿ (ಪುಂ) 1. ಧಾನ್ಯ. ಸ್ತಂಬಂ ಕರೋತಿ  
—ಸ್ತಂಬ + ಡುಕ್ರವ್ (ಕರಣ) “ಇನ್” (೩-೨-೨೪) |  
“ಧಾನ್ಯಂ ಕ್ರಿಹಿ: ಸ್ತಂಬಕರಿ:” ಅಮಂ | (ವಿಂ) 2. ಹುಲ್ಲಿನ  
ಕಂತೆಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವವನು. “ಅನ್” (೩-೨-೧) | -ಕಾರ:  
-ಕಾರಿ.

ಸ್ತಂಬಕರಿತಾ ಸ್ತಂಬಕರಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹುಲ್ಲುಗಳ ಕಂತೆ  
ಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವವಳು. ಸ್ತಂಬಕರೇಭಿವ: “ತಲ್” (೫-೧-೧೧೯) |



2. ಸೊಂಪಾಗಿ ಬೆಳೆಯುವುದು. “ನ ಶಾಲೇ: ಸ್ತಂಭಕರಿತಾ  
ವಪುರ್ಗುಣಮಪೇಕ್ಷತೇ” ಮುद्रಾಂ ೧-೩.

ಸ್ತಂಭನ ಸ್ತಂಭನ (ಪುಂ) ಕಳೆಗುದ್ದಲಿ, ಕಳೆಗಳನ್ನು  
ಕೀಳುವ ಸ್ತಂಭ ಗುದ್ದಲಿ. ಸ್ತಂಭೋ ಹನ್ಯತೇ ಯೇನ—ಸ್ತಂಭ+ಹನ  
(ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) “ಅಪ್” ಧನಾದೇಶಶ್ಚ (೩-೩-೮೩).

ಸ್ತಂಭನ ಸ್ತಂಭನ (ಪುಂ) ಕಳೆಗುದ್ದಲಿ, ಕಳೆಗಳನ್ನು  
ಕೀಳುವ ಸ್ತಂಭ ಗುದ್ದಲಿ. ಸ್ತಂಭೋ ಹನ್ಯತೇ ಯೇನ—ಸ್ತಂಭ+ಹನ  
(ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) “ಕ:” (೩-೩-೮೩).

ಸ್ತಂಭನ ಸ್ತಂಭನ (ಪುಂ) ಕಳೆಗುದ್ದಲಿ, ಕಳೆಗಳನ್ನು  
ಕೀಳುವ ಸ್ತಂಭ ಗುದ್ದಲಿ. ಸ್ತಂಭೋ ಹನ್ಯತೇ ಯೇನ—ಸ್ತಂಭ+ಹನ  
(ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) ಕರಂ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೭).

ಸ್ತಂಭನ ಸ್ತಂಭನ (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. ಸ್ತಂಭೇ ರಮತೇ  
—ರಮ (ಕ್ರೋಡಾಯಾಮ್) “ಅಚ್” (೩-೨-೧೩). “ಅವೋ-  
ದಯನ್ ದಾನವವಪ್ರಮಜ್ಞೇ ಸ್ತಂಭೇರಮಾನ್ ಸಾಗರಪೊತಕಲ್ಪಾನ್”  
ಯಾದಂ ೨೦-೧೫. “ಸ್ತಂಭೇರಮ: ಪರಿಣಿನ್ಮುರಸಾವುಪೇತಿ”  
ಮಾಘಂ ೫-೩೪.

ಸ್ತಂಭ ಸ್ತಂಭ (ಪುಂ) 1. ಸ್ತಂಭ, ಕಂಬ. ಸ್ತಂಭ (ರೋಧನೆ)  
ಸೌತ್ರೋ ಧಾತು: “ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪). “ಯಸ್ಯಾಂ ಕಪೋಲೆ:  
ಕಲವೌತಧಾಮಸ್ತಂಭೇಷು ಭೇಜೇ ಮಣಿರ್ದರ್ಪಣಶ್ರೀ:” ಮಾಘಂ ೩-೪೭.  
2. ಅಲುಗಾಡುವೆ ಇರುವುದು, ಯಾವಕಾರ್ಯವನ್ನೂ  
ಮಾಡದೆ ಜಡವಾಗಿರುವುದು. “ಗಾತ್ರಸ್ತಂಭ: ಸ್ತನಮುಕ್ತುಲಯೋ-  
ಹಪ್ರಬಂಧ: ಪ್ರಕಮ್ಪ:” ಮಾಲತೀಂ ೨-೫. 3. ಜಡವಾಗಿ  
ಮಾಡುವುದು, ಮುಕುಮಾಡುವುದು. 4. ಅಡ್ಡಿ, ಪ್ರತಿ  
ಬಂಧ. “ಸೌಪ್ತಶ್ಯತ್ ಪ್ರಣಿವಾನೇನ ಸಂತತೇ: ಸ್ತಂಭಕಾರಣಮ್”  
ರಘುಂ ೧-೭೪. 5. ಅಡ್ಡಿ, ನಿಗ್ರಹ, ಹತೋಟಿ. 6. ಕಾಂಡ,  
ದಾಟು. 7. ಕಾರ್ಯದ ಪ್ರತಿಫಲಾತ, ಕಾರ್ಯದ ಪ್ರತಿ  
ಬಂಧ. ಇದೊಂದು ಸಾತ್ವಿಕಭಾವ. “ಸ್ತಂಭ: ಚೇಷ್ಠಾ-  
ಪ್ರತಿವಾತ: ಭಯಹರ್ಷಮಯಾದಿಭಿ:” ಸಾಂ ದಂ ೩-೧೩೬.

ಸ್ತಂಭನ ಸ್ತಂಭನ (ನಂ) 1. ಜಡಗೊಳಿಸುವುದು, ಮುಕು  
ಮಾಡುವುದು, ನಿಶ್ಚೇಷ್ಟವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ಸ್ತಂಭ  
(ರೋಧನೆ) ಸೌತ್ರೋ ಧಾತು: + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫).  
ಅಗ್ನಿಸ್ತಂಭನಮ್ ಜಲಸ್ತಂಭನಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ. 2. ತಡೆಗಟ್ಟು  
ವುದು, ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸುವುದು. “ವೆಲೊಲೊಲಕ್ಷುಮಿತಕಣ್ಣೋ-  
ಜ್ಜಮ್ಭಣಸ್ತಂಭನಾರ್ಥಮ್” ಉಂ ರಾಂ ೩-೩೬. 3. ಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯ,  
ಶಾಂತಿ, ಸಮಾಧಾನ. “ಪರಾಙ್ಮುಖೇಽಪಿ ದೇವೇಽ ಕೃತ್ಯಂ  
ಕಾರ್ಯಂ ವಿಪಶ್ಚಿತ್ತಾ. ಆತ್ಮದೋಷವಿನಾಶಾಯ ಸ್ವಚಿತ್ತಸ್ತಂಭನಾಯ  
ಚ” ಪಂಚತಂ ೧-೩೯೧. (ಪುಂ) 4. ಮನ್ನಣೆ ಪಂಚ  
ಭಾಣಗಳೊಂದು. ಸ್ತಂಭಯತಿ—ಸ್ತಂಭ+ಣಿಚ್ “ಲ್ಯು:”

(೩-೧-೧೩೪). ಮನ್ನಣೆ ಐದು ಭಾಣಗಳು—(1)  
ಉಪಾಸನ: (2) ಶೋಷಣ: (3) ತಾಪನ: (4) ಸ್ತಂಭನ:  
ಮತ್ತು (5) ಸಮ್ಮೋಹನ:.

ಸ್ತಂಭನ ಸ್ತಂಭನೀಯ (ವಿಂ) 1. ತಡೆಗಟ್ಟಲ್ಪಡುವ,  
ಅಡ್ಡಿಯುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ತಡೆಗಟ್ಟಬೇಕಾದ.  
3. ಅಡ್ಡಿಯುಂಟುಮಾಡಬಹುದಾದ. 4. ತಡೆಗಟ್ಟಲು  
ಶಕ್ತವಾದ. ಸ್ತಂಭ (ರೋಧನೆ) ಸೌತ್ರೋ ಧಾತು: + ಣಿಚ್ “ಅನೀಯರ್”  
(೩-೧-೧೬). 5. ಜಡವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಮುಕು  
ಹಿಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ಮುಕುಹಿಡಿಸಬಹುದಾದ. 7. ಜಡ  
ವಾಗಿ ಮಾಡಲು ಶಕ್ತವಾದ. 8. ಮುಕುಹಿಡಿಸಬೇಕಾದ.  
“ತವ್ಯ:” (೩-೧-೧೬). ಸ್ತಂಭಿತವ್ಯ: ಸ್ತಂಭಿತವ್ಯ:.

ಸ್ತಂಭಿತ ಸ್ತಂಭಿತ (ವಿಂ) 1. ತಡೆಗಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ, ಅಡ್ಡಿ  
ಯುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸ್ತಂಭ (ರೋಧನೆ) “ಕ್ಲ:”  
(೩-೨-೧೦೨). “ಅವನ್ಯತಪಸಾ ವಿದ್ಯ: ಸ್ತಂಭಿತ:  
ಕುಮ್ಮಜನ್ಮನಾ” ಯಾದಂ ೨೨-೨೧೮. 2. ಸಮಾಧಾನ  
ಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಚಿತ್ತಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯವುಂಟುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸ್ತಂಭ ಸ್ತಂಭ (ಪುಂ) 1. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಕಲ್ಲು ಮಣ್ಣು ಮೊದ  
ಲಾದುವುಗಳ ಪದರ, ಮಣಿ. ಸ್ತಂಭಯೇ—ಸ್ತಂಭ (ಆಚ್ಛಾದನೆ)  
“ಅಪ್” (೩-೩-೫೭). 2. ಹಾಸಿಗೆ. (ನಂ) 3. ಹರಡು  
ವುದು.

ಸ್ತಂಭ ಸ್ತಂಭ (ನಂ) ಹರಡುವುದು, ಹಾಸುವುದು. ಸ್ತಂಭ  
(ಆಚ್ಛಾದನೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫).

ಸ್ತಂಭ ಸ್ತಂಭ (ಪುಂ) ತಲ್ಪ, ಹಾಸಿಗೆ. ಸ್ತಂಭ  
(ಆಚ್ಛಾದನೆ) “ಇಮನಿಚ್” (ಉಂ ೪-೧೪೭).

ಸ್ತಂಭ ಸ್ತಂಭ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬಂಜೆ ಹಸು, ಗೊಡ್ಡು ಹಸು.  
2. ಧೂಮ, ಹೊಗೆ. ಸ್ತಂಭಾತಿ—ಸ್ತಂಭ (ಆಚ್ಛಾದನೆ)  
“ಕಿ:” (ಉಂ ೩-೧೫೮).

ಸ್ತಂಭ ಸ್ತಂಭ (ಪುಂ) 1. ಕೊಂಡಾಡುವುದು, ಹೊಗಳುವುದು,  
ಸ್ತೋತ್ರ. ಸ್ತಂಭ (ಸ್ತುತೌ) “ಅಪ್” (೩-೩-೫೭).  
“ತೋಷಮೇತಿ ವಿತಥೇ: ಸ್ತಂಭ: ಪರಸ್ತೇ ಚ ತಸ್ಯ ಸುಲಭಾ:  
ಶರೀರಿಮಿ:” ಮಾಘಂ ೧೪-೩. 2. ಪ್ರಶಂಸಿಸುವುದು,  
ಶ್ಲಾಘಿಸುವುದು. ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕ:” ಸ್ತಂಭಕ:.

ಸ್ತಂಭ ಸ್ತಂಭ (ನಂ) ಸ್ತುತಿ, ಹೊಗಳುವುದು, ಕೊಂಡಾಡು  
ವುದು. ಸ್ತಂಭ (ಸ್ತುತೌ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫).

ಸ್ತಂಭ ಸ್ತಂಭ (ವಿಂ) 1. ಸ್ತುತಿಗೆ ಅರ್ಪನಾದ, ಹೊಗಳಲು  
ಅರ್ಪನಾದ, ಕೊಂಡಾಡಕ್ಕೆ ಅರ್ಪನಾದ. ಸ್ತಂಭಮಹಂತಿ—  
ಸ್ತಂಭ “ಯ:” (೫-೧-೬೬). 2. ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಲು  
ಅರ್ಪಿತೆಯುಳ್ಳ, ಸ್ತುತಿಸಲು ಯೋಗ್ಯತೆಯುಳ್ಳ. “ತಾ



ಪ್ರಾಪ್ಯ ಚಿತ್ರಾಮಿವ ತಾರಕೇಶ: ಸ್ತವ್ಯ: ಸ್ತುತೌ ವಂದಿಮಂರಮೌಮೈ:"  
ಯಾದಂ ೧೩-೭೨ ।

ಸ್ತಾವ ಸ್ತಾವ (ಪುಂ) ಸ್ತುತಿ, ಹೊಗಳುವುದು, ಕೊಂಡಾಡುವುದು. ಷ್ಠ್ (ಸ್ತುತೌ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) ।

ಸ್ತಾವಕ ಸ್ತಾವಕ (ವಿಂ) ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡುವವನು, ಹೊಗಳುವವನು, ಕೊಂಡಾಡುವವನು. ಷ್ಠ್ (ಸ್ತುತೌ) "ಘ್" (೩-೧-೧೩೩) । "ಸ್ತಾವಕಾಸ್ತಾನಭಿಪ್ರೇತ್ಯ ಪೃಥುರ್ವ್ಯ: ಪ್ರತಾಪವಾನ್ । ಮೇಘನಿಹ್ನಾದಿಯಾ ವಾಚಾ ಪ್ರಹಸನ್ನಿದ-ಮಬ್ರವೀತ್" ಮಾಗಂ ೪-೧೪-೨೧ ।

ಸ್ತಿಮಿತ ಸ್ತಿಮಿತ (ವಿಂ) 1. ಅಲುಗಾಡದಿರುವ, ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವ, ಚಲಿಸದಿರುವ, ಒಂದೇ ಕಡೆ ನಿಂತಿರುವ. "ಪ್ರಸನ್ನಸಿಹಸ್ತಿಮಿತಂ ಚ ವೀಕ್ಷಿತಂ ಧ್ವನಿಶ್ಚ ಮಾಙ್ಗಲ್ಯ-ಮೃದ್ವಜ್ಜಮಾಸಲ:" ತಂ ರಾಂ ೬-೨೪ । 2. ಆದ್ರವಾಗಿರುವ, ಒದ್ದೆಯಾಗಿರುವ, ತೇವವಾಗಿರುವ. ಸ್ತಿಮ್ಯತಿ — ಷ್ಟಿಮ (ಆದ್ರಿಭಾವೇ) "ಕ್" (೩-೪-೭೨) । 3. ಪ್ರಶಾಂತವಾದ, ಅರ್ಪಣೆಯಿಲ್ಲದ. "ಕ್ಷುಭಿತಮುಕ್ತಕಲಿಕಾತರಲಂ ಮನ: ಪಯ ಇವ ಸ್ತಿಮಿತಸ್ಯ ಮಹೋದಧೇ:" ಮಾಲತೀಂ ೩-೧೦ । 4. ಮುಚ್ಚಲ್ಪಟ್ಟು. "ಇತಿ ವಿಜ್ಞಾಪಿತೌ ರಾಜಾ ಧ್ಯಾನ-ಸ್ತಿಮಿತಲೋಚನ:" ರಘುಂ ೧-೭೩ । "ಸ್ತಿಮಿತೌಚ್ಚಲಾ-ದ್ರವ್ಯೋ:" ಮೇದಿಂ । "ಸ್ತಿಮಿತೌ ಕಿಲನ್ನಿನಿಶ್ಚಲೌ" ಹೇಮಂ ।

ಸ್ತಿಮಿ ಸ್ತಿಂಘಿ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಸಾಗರ. ಸ್ತಮ್ನಾತಿ—ಸ್ತಮ್ (ರೋಧನೆ) ಸೌತ್ರೋ ಘಾತು: "ಇನ್" ಘಾತೋರಕಾರಸ್ಯ ಇಚ್ಚ (ತಂ ೪-೧೨೧) । ಸ್ತಿಮಿ: ಸಮುದ್ರ: ಸಿಂ ಕೌಂ । 2. ಗೊಂಡಲು, ಗೊನೆ. 3. ಅಡ್ಡಿ, ಅಡಚಣೆ, ತಡೆ. 4. ಜಲ, ನೀರು. 5. ಇಂದ್ರ.

ಸ್ತೀವಿ ಸ್ತೀರ್ವಿ (ಪುಂ) 1. ಅಪ್ಪೆಯು, (ಯಾಗದಲ್ಲಿ) ಯಜುರ್ವೇದವನ್ನು ತಿಳಿದು ಪುಟ್ಟಿಕ್ಕು. ಸ್ತೌ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) "ವಿವನ್" (ತಂ ೪-೪೬) । 2. ಆಕಾಶ, ಗಗನ. 3. ರಕ್ತ. 4. ಜಲ, ನೀರು. 5. ಇಂದ್ರ.

ಸ್ತುತ ಸ್ತುತ (ವಿಂ) 1. ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಹೊಗಳಲ್ಪಟ್ಟು, ಕೊಂಡಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಷ್ಠ್ (ಸ್ತುತೌ) "ಕ್" (೩-೨-೧೦೨) । "ವಚೋಭಿಮಂಘುರೈ: ಸಾರ್ಥೈ: ವಿನಮ್ರೇಣ ಮಯಾ ಸ್ತುತ: । ಪ್ರೀತಿಮಾನಭವಹೇವ: ಸ್ತೋತ್ರಂ ಕಸ್ಯ ನ ತುಷ್ಠಯೇ" ಕುಮಾಂ ೧೦-೧ । 2. ಪ್ರಶಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟು, ಶ್ಲಾಘಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

ಸ್ತುತಿ ಸ್ತುತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ತೋತ್ರ, ಹೊಗಳುವುದು, ಕೊಂಡಾಡುವುದು. ಷ್ಠ್ (ಸ್ತುತೌ) "ಕ್" (೩-೩-೧೪) । "ಸ್ತುತಿಯಾ ಪುರಾಸ್ತಾಭಿರೂಪಾಸಿತೇನ ಪಿತಾಮಹೇನೇತಿ ನಿರೂಪಿತಂ ನ: । ಸೇನಾಪತಿ: ಸಂಯತಿ ದೈತ್ಯಮೇತಂ ಪುರ: ಸ್ಮರಾರಾತಿಸುತೌ ನಿಹಂತಿ" ಕುಮಾಂ ೧೨-೪೭ । 2. ಪ್ರಶಂಸೆ, ಶ್ಲಾಘನೆ.

"ಸ್ತುತಯಂ ಸ್ತುತಿಭಿರರ್ಥ್ಯಾಭಿರೂಪತಸ್ಯೇ ಸರಸ್ವತೀ" ರಘುಂ ೪-೬ । 3. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

ಸ್ತುತಿಪಾಠಕ ಸ್ತುತಿಪಾಠಕ (ಪುಂ) ರಾಜನ ಹೊಗಳು ಭಟ. ಸ್ತುತಿ ಪಠತಿ—ಪಠ (ವ್ಯಕ್ತಿಯಾ ವಾಚಿ) "ಘ್" (೩-೧-೧೩೩) । -ವ್ರತ:- ವ್ರತ: ಸ್ತುತಿರೇವ ವ್ರತಂ ಯಸ್ಯ ।

ಸ್ತುತ ಸ್ತುತ (ವಿಂ) 1. ಸ್ತುತಿಗೆ ಅರ್ಪಣಾದ, ಹೊಗಳಿಕೆಗೆ ಯೋಗ್ಯನಾದ. ಸ್ತುತಿಮಹಂತಿ—ಸ್ತುತಿ "ಯತ್" (೪-೧-೬೬) । "ಸ್ತುತಯಂ ಸ್ತುತಿಭಿರರ್ಥ್ಯಾಭಿರೂಪತಸ್ಯೇ ಸರಸ್ವತೀ" ರಘುಂ ೪-೬ । 2. ಪ್ರಶಂಸೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದ, ಶ್ಲಾಘನೆಗೆ ಯೋಗ್ಯನಾದ.

ಸ್ತುಮ ಸ್ತುಮ (ಪುಂ) ಅಜ, ಅಡು, ಹೋತ. ಸ್ತುಮ್ನಾತಿ—ಸ್ತುಮ್ (ರೋಧನೆ) "ಕ್" (ವಾಂ ೩-೨-೪) ।

ಸ್ತುಪೇಯ ಸ್ತುಪೇಯ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ಷ್ಠ್ (ಸ್ತುತೌ) "ಕ್" (ತಂ ೩-೧೯) ।

ಸ್ತುಪ ಸ್ತುಪ (ಪುಂ) 1. ಮಣ್ಣಿನ ರಾಶಿ. ಸ್ತುಪತೇ—ಷ್ಠ್ (ಸ್ತುತೌ) "ಪ:" ಘಾತೋ: ದೀರ್ಘಶ್ಚ (ತಂ ೩-೨೪) । 2. ಬೌದ್ಧ ಸಾಧುಸಂತರ ಜ್ಞಾಪಕಾರ್ಥ ಪೂಜ್ಯವಸ್ತುವಾಗಿ ಕಾಡಿಟ್ಟು ಅಮೆಗೆ ಸೇರಿದ ವಸ್ತುಗಳ ಭಾಗ. 3. ಸಮೂಹ, ರಾಶಿ, ಗುಂಪು. 4. ಶಕ್ತಿ, ಬಲ.

ಸ್ತುಯಮಾನ ಸ್ತುಯಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಸ್ತುತಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಹೊಗಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಷ್ಠ್ (ಸ್ತುತೌ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಹೊಗಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಕೊಂಡಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. "ಅಥ ಸಮುದಿತಹರ್ಷೇರಾದೃತೌ ಮನ್ವಿ-ವೃದ್ಧೈ: ಸುರಪತಿರದಿತಾಭಿ: ಸ್ತುಯಮಾನಾಪದಾನ:" ಯಾದಂ ೧೩-೧೦೮ । 3. ಪ್ರಶಂಸಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಶ್ಲಾಘಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

ಸ್ತೇನ ಸ್ತೇನ (ಪುಂ) 1. ಜೋರ, ತೆಸುರ, ಕಳ್ಳ. ಸ್ತೇನಯತಿ—ಸ್ತೇನ (ಚೌರ್ಯ) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ನ ತಂ ಸ್ತೇನಾ ನ ಚಾಮಿತ್ರಾ ಹರಂತಿ ನ ಚ ನಶ್ಯತಿ । ತಸ್ಮಾದ್ರಾಜಾ ನಿಧಾತವ್ಯೌ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೇಷ್ವಕ್ಷಯೌ ನಿಧಿ:" ಮನುಂ ೭-೮೩ । 2. ದೇವರಿಗೆ ನಿವೇದನ ಮಾಡದೆ ಭುಜಿಸುವವನು. "ಇಷ್ಟಾನ್ ಭೋಗಾನ್ ಹಿ ವೌ ದೇವಾ: ದಾಸ್ಯಂತೇ ಯಜ್ಞಭಾವಿತಾ: । ತೇದತ್ತಾನಪ್ರದಾಯೇಮ್ಯೌ ಯೌ ಭುಂಕ್ತೇ ಸ್ತೇನ ಏವ ಸ:" ಗೀತಾ ೩-೧೨ ।

ಸ್ತೇಮ ಸ್ತೇಮ (ಪುಂ) ಒದ್ದೆಯಾಗಿರುವಿಕೆ, ತೇವ, ಆದ್ರವ. ಷ್ಟಿಮ (ಆದ್ರಿಭಾವೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) । "ತೇಮಸ್ತೇಮೌ ಸಮುದನೇ" ಅಮಂ ।

ಸ್ತೇಯ ಸ್ತೇಯ (ನಂ) ಕಳ್ಳತನ, ಕದಿಯುವುದು. ಸ್ತೇನಸ್ಯ ಭಾವ: ಕರ್ಮ ವಾ "ಯತ್" ನಕಾರಲೋಪಶ್ಚ (೪-೧-೧೨೪) ।



“ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಂ ವಾ ಪರೋಕ್ಷಂ ವಾ ರಾತ್ರೌ ವಾ ಯದಿ ವಾ ದಿವಾ ।  
ಯತ್ ಪರದ್ರವ್ಯಹರಣಂ ಸ್ತೇಯಂ ತತ್ಪರಿಕೀರ್ತಿಸಮಂ” ।

ಸ್ತೇಯಿನ್ ಸ್ತೋಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಜೋರ, ಕಳ್ಳ, ತಸ್ಕರ. ಸ್ತೇಯ-  
ಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ—“ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೫) । 2. ಸ್ವರ್ಣಕಾರ,  
ಅಕ್ಕಸಾಲಿಗ.

ಸ್ತೇನೈ ಸ್ತೋನೈ (ನಂ) 1. ಚೋರ್, ಕಳ್ಳ, ತಸ್ಕರ. ಸ್ತೇನಸ್ಯ  
ಭಾವ: ಕರ್ಮ ವಾ “ಽಯಮ್” (೪-೧-೧೨೪) । (ಪುಂ) 2.  
ಜೋರ, ಕಳ್ಳ, ತಸ್ಕರ. ಸ್ತೇನ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಽಯಮ್” ।

ಸ್ತೇಮಿತೈ ಸ್ತೋಮಿತೈ (ನಂ) 1. ಜಡವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಯಾವ  
ಕಾರ್ಯವನ್ನೂ ಮಾಡದಿರುವಂತೆ ಮಂಕಾಗಿರುವಿಕೆ.  
ಸ್ತೇಮಿತಸ್ಯ ಭಾವ: “ಽಯಮ್” (೪-೧-೧೨೪) । 2. ಅರ್ಧ-  
ವಾಗಿರುವಿಕೆ, ತೇವವಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ಅಲುಗಾಡದಿರುವಿಕೆ,  
ಚಲಿಸದಿರುವಿಕೆ. 4. ಶಾಂತತೆ, ನೆಮ್ಮದಿ, ಸಮಾಧಾನ.

ಸ್ತೋಕ ಸ್ತೋಕ (ಪುಂ) 1. ಅಲ್ಪಪ್ರಮಾಣ, ಬಿಂದು, ಹನಿ,  
ತೊಟ್ಟು. ಸ್ತುಚ್ಯತೇ—ಛ್ರೀ (ಪ್ರಸಾದೇ) “ಽಯಮ್” (೩-೩-೧೯) ।  
“ಸ್ಪೃಶಂತಿ ಶರವತೀಕ್ಷಣಾ: ಸ್ತೋಕಮಂತವಿಶಂತಿ ಚ” ಮಾಘಂ  
೨-೭೮ । 2. ಚಾತಕಪಕ್ಷಿ. (ವಿಂ) 3. ಅಲ್ಪವಾದ,  
ಸ್ವಲ್ಪವಾದ. ಸ್ತೋಕೇನೋಪತಿಮಾಪಾತಿ ಸ್ತೋಕೇನಾಯಾತ್ಯಘೋ-  
ಗತಿಮ್” ಪञ್ಚತಂ ೧-೧೬೧ । 4. ಸಣ್ಣದಾದ, ಚಿಕ್ಕದಾದ.  
“ಮಸ್ಮಸ್ತೋಕಪವಿತ್ರಲಾಂಛನಮುರೋ ಧತ್ತೇ ತ್ವಚಂ ರೋರವೀಮ್” ಉಂ  
ರಾಂ ೪-೨೦ । (ಕ್ರಿಂ ವಿಂ) 5. ಅಲ್ಪವಾಗಿ, ಸ್ವಲ್ಪವಾಗಿ.  
“ಸ್ತೋಕಾವಶೇಷಿತಸದಾಭರಣಪ್ರಬಂಧಾ” ಯಾದಂ ೧೯-೧೬ ।  
“ಸ್ತೋಕಸ್ತ್ರಿಷ್ವಲ್ಪೇ ಚಾತಕೇ ಪುಮಾನ್” ಮೇದಿಂ ।

ಸ್ತೋಕಕ ಸ್ತೋಕಕ (ಪುಂ) ಚಾತಕಪಕ್ಷಿ. ಸ್ತೋಕ ಕಾಯತಿ  
—ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) “ಕ:” (೩-೨-೩) । ಸ್ತೋಕ ಕಂ ಜಲಮಸ್ಯ  
ಇತಿ ವಾ । “ಸ್ತೋಕಕಸ್ಯ ಸ್ವಲ್ಪಂ ಚಂಚುಪುಡೇನ ಮ್ಲಾನಿಹಲ್ಲಸತಿ  
ತದ್ಧನಸಂಕ್ಷೇ” ನೆಪಂ ೪-೧೨೭ ।

ಸ್ತೋತವ್ಯ ಸ್ತೋತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸ್ತುತಿಸಲ್ಪಡುವ, ಸ್ತೋತ್ರ  
ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಸ್ತುತಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಸ್ತುತಿಗೆ  
ಅರ್ಹನಾದ, ಕೊಂಡಾಡಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ. 4. ಸ್ತುತಿಸ  
ಬೇಕಾದ. ಛ್ರೀ (ಸ್ತುತೌ) “ತವ್ಯ:” (೩-೧-೯೬) ।

ಸ್ತೋತೃ ಸ್ತೋತೃ (ವಿಂ) 1. ಸ್ತುತಿಸುವವನು, ಕೊಂಡಾಡು  
ವವನು. ಛ್ರೀ (ಸ್ತುತೌ) “ತೃ” (೩-೧-೧೩೩) ।  
2. ಪ್ರಶಂಸಿಸುವವನು, ಶ್ಲಾಘಿಸುವವನು.

ಸ್ತೋತ್ರ ಸ್ತೋತ್ರ (ನಂ) 1. ಸ್ತುತಿ, ಹೊಗಳುವುದು,  
ಕೊಂಡಾಡುವುದು. ಛ್ರೀ (ಸ್ತುತೌ) “ಛ್ರೀ” (೩-೨-೧೮೨) ।

ಅಸ್ತಿ ನ: ಸ್ತುತಿವಚೋಜ್ಞತಂ ತವ ಸ್ತೋತ್ರಯೋಷ್ಯ ನ ಚ ತೇನ  
ತುಪ್ಯಸಿ” ಮಾಘಂ ೧೪-೩ । 2. ಪ್ರಶಂಸೆ, ಶ್ಲಾಘನೆ.

ಸ್ತೋಮ ಸ್ತೋಮ (ಪುಂ) 1. ತಡೆಯುವುದು, ಅಡ್ಡಿಯುಂಟು  
ಮಾಡುವುದು. ಸ್ತುಮ್ (ರೋಧನೇ) “ಽಯಮ್” (೩-೩-೧೮) ।  
2. ಸಾಮವೇದದ ಒಂದು ಭಾಗ.

ಸ್ತೋಮ ಸ್ತೋಮ (ಪುಂ) 1. ಸಮೂಹ, ಗುಂಪು. ಛ್ರೀ  
(ಸ್ತುತೌ) “ಮನ್” (೩-೧-೧೩೩) । “ಶ್ರುಷೀಣಾಮುಪತಪಸಾಂ  
ಯಮನಾತೀರವಾಸಿನಾಮ್ । ಲವಣತ್ರಾಸಿತ: ಸ್ತೋಮಸ್ತಾತಾರಂ  
ತ್ವಾಮುಪಸ್ಥಿತ:” ಉಂ ರಾಂ ೧-೫೧ । 2. ಅಧ್ವರ, ಯಾಗ.  
3. ಸ್ತೋತ್ರ, ಸ್ತುತಿ. “ಸ್ತೋಮ: ಸ್ತೋತ್ರೇಷ್ವರೇ ವೃಂದೇ”  
ಅಮಂ । (ನಂ) 4. ಆಹುತಿ. 5. ಐಶ್ವರ್ಯ, ಸಂಪತ್ತು.  
6. ಕಬ್ಬಿಣದ ಅಗ್ರಭಾಗವುಳ್ಳ ದಂಡ, -ಕೋಲು. (ವಿಂ)  
7. ವಕ್ರವಾದ, ಕುಟಿಲವಾದ.

ಸ್ತಾನ ಸ್ತಾನ (ನಂ) 1. ಸಾಂದ್ರತೆ, ಘನವಾಗಿರುವಿಕೆ,  
ವೃದ್ಧಿ, ವೈಪುಲ್ಯ. ಸ್ತೈ (ಶಬ್ದಸಂಜ್ಞಾತಯೋ:) “ಕ:”  
(೩-೩-೧೧೪) । “ದಧತಿ ಕುಹರಭಾಜಾಮತ್ರ ಮಲ್ಲಕಯುನಾ-  
ಮನುರಸಿತಗುಣಿ ಸ್ತಾನಮಮ್ಬಕೃತಾನಿ” ಉಂ ರಾಂ ೨-೨೧ ।  
2. ಪ್ರತಿಧ್ವನಿ. 3. ನುಣುಪು, ನಯ. 4. ಅಲಸ್ಯ,  
ಸೋಮಾರಿತನ. “ಸ್ತಾನಂ ಸ್ತಿಗ್ಧೇ ಪ್ರತಿಶ್ವಾನೇ ಧನತ್ವಾ-  
ಲಸ್ಯಥೋರಪಿ” ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ) 5. ತೇವವಾಗಿರುವ,  
ಒಣಗದೆ ಇರುವ. “ಸ್ತಾನಾಪವಿಧ್ವನಶೋಣಿತಶೋಣಾಪಿ-  
ಹುತಮಭಿಷ್ಯತಿ ಕಚಾನ್ ತವ ದೇವಿ ಭೀಮ:” ವೇಣಿಂ ೧-೨೧ ।  
6. ನಯವಾಗಿರುವ, ನುಣುಪಾಗಿರುವ. ಸ್ತೈ ಕತಂ  
“ಕ:” (೩-೪-೭೨) । 7. ಶಬ್ದಮಾಡುವವನು. 8. ಘನ  
ವಾಗಿರುವ, ದಪ್ಪವಾಗಿರುವ. 9. ರಾಶಿಹಾಕುವವನು,  
ಗುಂಪು ಕೂಡಿಸುವವನು.

ಸ್ತೋ ಸ್ತೋ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಂಗಸು, ವನಿತೆ, ಮಹಿಳೆ. ಸ್ತಾಯತಿ  
ಗರ್ಭೋಽಸ್ಯಾಮ್—ಸ್ತೈ (ಶಬ್ದಸಂಜ್ಞಾತಯೋ:) “ಛ್ರೀ” (೩-  
೪-೧೬೫) । “ಸ್ತ್ರೀಣಾಮಶಿಸಿತಪಃಪ್ರವೃತ್ತಮಾನುಷೀಷು ಸಂದೃಶ್ಯತೇ  
ಕಿಮುತ ಯಾ: ಪ್ರತಿಬೋಧಯ:” ಶಾಕುಂ ೪-೨೨ । ಮಹಿಳೆಗೆ  
ಪತಿಯೇ ಪ್ರಿಯತಮ ಪತಿಯೇ ಮಿತ್ರ ಪತಿಯೇ ಸಕಲ  
ಬಂಧುವರ್ಗ. ಆಪೇಕ್ಷಿತವಾದ ಎಲ್ಲಾ ಇಷ್ಟವಿಷಯಗಳೂ  
ಪತಿಯೇ. ಪತಿಯೇ ನಿಧಿ. ಪತಿಯೇ ಅವಳ ಜೀವಿತ.  
ಹೀಗೆಯೇ ಪುರುಷನಿಗೂ ಧರ್ಮಪತ್ನಿಯೇ ಸರ್ವಸ್ವ.  
ಈ ವಿಷಯವನ್ನು ಸ್ತೋಪುರುಷರೊಬ್ಬರೂ ಅನ್ಯೋನ್ಯ  
ತಿಳಿದುಕೊಂಡಿರುವುದು ಅವಶ್ಯವಾದುದು. “ಪ್ರೇಯೋ ಮಿತ್ರಂ  
ವಧುತಾ ವಾ ಸಮಗ್ರಾ ಸರ್ವೇ ಕಾಮಾ: ಶೇವಧಿರ್ಜೀವಿತಂ ಚ ।  
ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಭರ್ತೃ ಧರ್ಮದಾರಾಃ ಪುಂಸಾಮಿತೃನ್ಯನ್ಯಂ ವತ್ಸಯೋರ್ಜಾತಿ-  
ಮಸ್ತು” ಮಾಲತೀಂ ೬-೧೮ । [“ಪದ್ಮಿನಿ” ಮೊದಲಾದ  
ನಾಲ್ಕು ವಿಧ (ಜಾತಿಯ) ಸ್ತ್ರೀಯರ ವಿವರಕ್ಕೆ “ಚಿತ್ರಣಿ”  
ಪದ್ಧದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಸ್ತ್ರೀಯರು ಯಾವಾಗಲೂ



ಆಸ್ವತಂತ್ರರು. ಅವರು ಕೆಲವು ನಿಯಮಗಳಿಗೆ ಬದ್ಧರಾಗಿ ದ್ದರೆ ಮಾತ್ರ ದಾಂಪತ್ಯ ಸೌಖ್ಯದ ಸವಿಯನ್ನು ಅನುಭವಿಸ ಬಹುದು. ಪತಿಯಾದವನು ಸ್ತ್ರೀಯನ್ನು ಸ್ವತಂತ್ರಳಾಗಿ ರಲು ಅವಕಾಶ ಕೊಡಕೂಡದು. "ಅಸ್ವತನ್ತ್ರಾಃ ಸ್ತ್ರೀಃ ಕಾರ್ಯಾಃ ಪುರುಷಃ ಸ್ವೇದಿವಾನಿಶಮ್ | ವಿಷಯೇಷು ಚ ಸಜ್ಜನ್ತಯಃ ಸಂಸ್ಥಾಪ್ಯಾ ಆತ್ಮನೋ ವಶಃ" ಮನ್ವಂ ೧-೨ | ಪತಿಯು ತನ್ನ ಧರ್ಮಪತ್ನಿಗೆ ಅರ್ಧಸಂಗ್ರಹಣ (ಧನವನ್ನು ಕೂಡಿ ಸಿಡುವುದು) ಅದರ ವೆಚ್ಚ ದೇವರು ಮತ್ತು ಅತಿಥಿಗಳಿ ಗಾಗಿ ಪಾಕ ಮನೆಯಲ್ಲಿರುವ ಅಭರಣ ಶಯನ ಆಸನ ಮೊದಲಾದ ಗೃಹೋಪಕರಣಗಳ ಆವೇಕ್ಷಣ ಇತ್ಯಾದಿ ಗೃಹಕೃತ್ಯಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ನಿಯೋಜಿಸಿ ಆ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಅವಳಿಗೆ ಸಂಪೂರ್ಣ ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ ಕೊಡಬೇಕು. "ಅರ್ಥಸ್ಯ ಸತ್ಪ್ರದೇಶೇ ಚೈನಾಂ ವ್ಯಯೇ ಚೈವ ನಿಯೋಜಯೇತ್ | ಶೌಚೇ ವರ್ಷಸಂ- ಪಕ್ತ್ಯಾಂ ಚ ಪಾರಿಣಾಹ್ಯಸ್ಯ ವೇಕ್ಷಣಃ" ಮನ್ವಂ ೧-೧೧ | ಇದು ಈಚಿನ ಕಾಲದ ಮಹಿಳಾಮಣಿಗಳಿಗೆ ಕಹಿಯಾಗಿರಬಹುದು. ಆದರೆ ಪ್ರಾಚೀನರ ಉಕ್ತಿಯನ್ನು ಉಲ್ಲಂಘಿಸಿ ವರ್ತಿಸುವ ನಾರೀಮಣಿಯರು ಈಗ ಪ್ರತಿಕ್ಷಣದಲ್ಲೂ ಅನುಭವಿಸು ತ್ತಿರುವ ಕಹಿಯು ಸರ್ವವಿದಿತವಾಗಿದೆ. ಶ್ರೀಮದ್ಭಗವ ದ್ಗೀತೆಗೆ ಮಾನ್ಯತೆ ಕೊಡುವವರಾದರೆ "ಅಥರ್ಮಾಭಿಮವಾತ್ ಕೃಷ್ಣ ಪ್ರದುಷ್ಯಂತಿ ಕುಲಸ್ತ್ರೀಃ | ಸ್ತ್ರೀಷು ದುಷ್ಠಾಸು ವಾರ್ಷ್ಣೇಯ ಜಾಯತೇ ವರ್ಷಸಂಕರಃ" ಗೀತಾ ೧-೪೧ | "ಸಂಕರಸ್ಯ ಚ ಕರ್ತಾ ಸ್ಯಾಮುಪ- ಹನ್ಯಾಮಿಮಾಃ ಪ್ರಜಾಃ" ಗೀತಾ ೩-೨೪ || ಇದನ್ನು ಅನು ಸಂಧಾನಮಾಡುತ್ತಿರಬೇಕು. ಸ್ತ್ರೀಯರಿಗೆ ಸಕಲಧಾರ್ಮಿಕ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲೂ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯವಿರುವುದು. ಅವಳ ಸಹಕಾರ ವಿಲ್ಲದಿದ್ದಲ್ಲಿ ಪುರುಷನು ಯಾವ ಧರ್ಮಕಾರ್ಯಕ್ಕೂ ಅರ್ಹನಲ್ಲ. ಇದರಿಂದ ಸ್ತ್ರೀಯು ಧರ್ಮಪತ್ನಿಯಾಗು ವಳು. "ಸತ್ಯಾಮನ್ಯಾಂ ಸರ್ವರ್ಣಾಂ ವರ್ಮಕಾರ್ಯಂ ನ ಕಾರಯೇತ್ | ಸರ್ವರ್ಣಾಸು ವಿಧೌ ಧರ್ಮ್ಯಂ ಜ್ಯೇಷ್ಠಯಾ ನ ವಿನೇತರಾ" ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೬೬ |

ಶುಭಲಕ್ಷಣವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು : ದೇಹದಲ್ಲಿ ಸುವರ್ಣ ಕಾಂತಿ ಹಸ್ತಗಳಲ್ಲಿ ನಸುಗೆಂಪು ಈ ಲಕ್ಷಣಗಳಿರುವ ಹೆಂಗಸರು ಬಹಳ ವಿರಳ. ಇದು ಶುಭಲಕ್ಷಣ. "ಯಾ ಚ ಕಾಂಕ್ಷನವರ್ಣಾಭಾ ರಣಹಸ್ತಸರೋಹಾ | ಸಹಸ್ರಾಣಾಂ ತು ನಾರೀಣಾಂ ಭವೇತ್ಸಾಪಿ ಪತಿವ್ರತಾ" || ಹಸ್ತದಲ್ಲಿ ಅಂಕುಶ ಕುಂಡಲ ಮತ್ತು ಚಕ್ರಗಳ ಚಿಹ್ನೆಯಿರುವ ಹೆಂಗಸು ರಾಜನನ್ನು ಮದುವೆಯಾಗುವಳು. "ಅತ್ಯುಕ್ತಂ ಕುಂಡಲಂ ಚಕ್ರಂ ಯಸ್ಯಾಃ ಪಾಣಿತಲೇ ಭವೇತ್ | ಪುತ್ರಂ ಪ್ರಸೂಯತೇ ನಾರೀ ತರೆಂದ್ರಂ ಲಭತೇ ಪತಿಮ್" | ಬೆವರದೆಯೂ ಮೃದುವಾಗಿಯೂ ಇರುವ ಉಂಗುಲಗಳೂ ರೋಮರಹಿತವಾದ ಮೊಳಕಾಲುಗಳೂ

ಅನೆಯ ಸೊಂಡಲಿನ ಆಕಾರದ ತೊಡೆಗಳೂ ಇರು ವುದು ಸ್ತ್ರೀಯರ ಶುಭಲಕ್ಷಣ. "ಅಸ್ವೇದಿನೌ ಮೃದತಲೌ ಪ್ರಶಸ್ತೌ ಖರಣೌ ಸ್ತ್ರೀಯಾಃ | ಶುಭೇ ಜಜ್ಞೇ ವಿರೋಮೇ ಚ ಊ ಹಸ್ತಿಕರೋಪಮೌ" || ಪತಿಯು ಜೀವಿಸಿರುವಾಗ ಉಪವಾಸ ಮಾಡಿ ವ್ರತವನ್ನು ಆಚರಿಸುವ ಹೆಂಗಸು ಪತಿಯು ಆಯುಸ್ಸಿನ ಕ್ಷಯಕ್ಕೆ ಕಾರಣಳಾಗುವಳು. "ಪತ್ನೌ ಜೀವತಿ ಯಾ ನಾರೀ ಉಪವಾಸ ವ್ರತಮಾಚರೇತ್ | ಆಯುಃ ಸಂಹರತೇ ಪತ್ನುಃ ಸಾ ನಾರೀ ನರಕಂ ವ್ರಜೇತ್" ||

ಗೃಹೀಣೀಧರ್ಮ : ಗೃಹೀಣಿಯು ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಎದ್ದು ಪತಿಯನ್ನು ನಮಸ್ಕರಿಸಿ ಅಂಗಳವನ್ನು ಗೋಮಯದ ನೀರಿನಿಂದ ಶುದ್ಧಮಾಡಿ ರುಗವಲ್ಲಿಯಿಂದ ಅಲಂಕರಿಸಿ ಗೃಹಕೃತ್ಯವನ್ನು ಗಮನಿಸಬೇಕು. ಅನಂತರ ಮಡಿಯುಟ್ಟು ಕೊಂಡು ಪತಿ ಗುರು ಮತ್ತು ಬ್ರಾಹ್ಮಣರನ್ನು ಮಂದಿಸಿ ಗೃಹದೇವತೆಯನ್ನು (ಮನೆಯ ದೇವರನ್ನು) ಪೂಜಿಸ ಬೇಕು. ಗೃಹಕೃತ್ಯವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ನಿರ್ವಹಿಸಿ ಅತಿಥಿಗಳಿಗೂ ಪತಿಗೂ ಭೋಜನ ಮಾಡಿಸಿದ ನಂತರ ತಾನೂ ಭೋಜನ ಮಾಡಬೇಕು. "ಸಾ ಶುದ್ಧಾ ಪ್ರಾತಃಕಾಲಾಯ ನಮಸ್ಕೃತ್ಯ ಪತಿ ಸುರಮ್ | ಪ್ರಾಜ್ಞಾಣೇ ಮೃಗಲಂ ದಕ್ಷಾತ್ ಗೋಮಯೇನ ಜಲೇನ ಚ || ಗೃಹಕೃತ್ಯಂ ಚ ಕೃತ್ವಾ ಚ ಸ್ನಾತ್ವಾಗತ್ಯ ಗೃಹಂ ಸತೀ | ಗೃಹಂ ವಿಪ್ರಂ ಪತಿ ನತ್ವಾ ಪೂಜಯೇತ್ ಗೃಹದೇವತಾಮ್ || ಗೃಹಕೃತ್ಯಂ ಸುನಿವೃತ್ಯ ಭೋಜಯಿತ್ವಾ ಪತಿ ಸತೀ | ಅತಿಥಿಂ ಪೂಜಯಿತ್ವಾ ಚ ಸ್ವಯಂ ಭುಂಕ್ತೇ ಸುಖಂ ಸತೀ" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ | 2. ಎರಡನೇ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಎರಡು ಅಕ್ಷರಗಳ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಅತ್ಯುಕ್ತಾಯಾಮ್ "ಗೌ ಸ್ತ್ರೀ" ವೃಂ ೨೦ | ಪ್ರತಿಪಾದದಲ್ಲಿಯೂ ಎರಡು ಗುರು ವರ್ಣಗಳಿರುವುದು ಸ್ತ್ರೀವೃತ್ತ. ಉದಾ : ಸಾಧ್ವಿ ಯಾ ಸ್ಯಾತ್ | ಮಾನ್ಯಾ ಸಾ ಸ್ತ್ರೀ | 3. ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗ. "ಶ್ರುತಿಃ ಸ್ತ್ರೀ ವೇದ ಆಮ್ನಾಯಃ" ಅಮಂ |

ಸ್ತ್ರೀಗವೀ ಸ್ತ್ರೀಗವೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಧೇನು, ಆಕಳು, ಹಸು.

ಸ್ತ್ರೀಗುರ ಸ್ತ್ರೀಗುರು (ಪುಂ) ಮಂತ್ರಗಳನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸುವ ಮತ್ತು ಮಂತ್ರಗಳ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಮಾಡುವ ಹೆಂಗಸು. ಸ್ತ್ರೀ ಚಾಸೀ ಗುರಾಃ |

ಸ್ತ್ರೀಘೋಷ ಸ್ತ್ರೀಘೋಷ (ಪುಂ) ಪ್ರಭಾತ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲ. ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಘೋಷೋ ಯತ್ರ |

ಸ್ತ್ರೀಚಿಹ್ನ ಸ್ತ್ರೀಚಿಹ್ನ (ನಂ) ಸ್ತ್ರೀತ್ವದ ಲಕ್ಷಣ, ಯೋನಿ ಸ್ತನ ಮುಂತಾದುವು.

ಸ್ತ್ರೀಚೌರ ಸ್ತ್ರೀಚೌರ (ಪುಂ) 1. ಕಾಮುಕ, ಜಾರ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ- ಇಚೌರಃ | "ಸ್ತ್ರೀಚೌರೋ ರತಹಿಂಸಕಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | (ವಿಂ) 2. ಹೆಂಗಸರನ್ನು ಅಪಹರಿಸುವವನು.



ಸ್ತ್ರೀತಾ ಸ್ತ್ರೀತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ತ್ರೀತ್ವ, ಸ್ತ್ರೀಭಾವ, ಹೆಂಗಸಾಗಿರು  
ವಿಕೆ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯). "ತ್ವ:"  
ಸ್ತ್ರೀತ್ವಮ್ ಸ್ತ್ರೀತ್ವಮ್.

ಸ್ತ್ರೀಧನ ಸ್ತ್ರೀಧನ (ನಂ) ಹೆಂಗಸಿನ ಆಸ್ತಿ, ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯ  
ದಲ್ಲೂ ಹೆಂಗಸಿಗೆ ಅಧಿಕಾರವುಳ್ಳ ಧನ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ: ಧನಮ್ |  
ಸ್ತ್ರೀಧನವು ಆರು ವಿಧ. "ಅಧ್ಯಗನ್ಯಯಾಬಾಹನಿಕಂ ದತ್ತಂ ಚ  
ಪ್ರೀತಿಕರ್ಮಣಿ | ಭ್ರಾತೃಮಾತೃಪಿತೃಪ್ರಾಪ್ತಂ ಷಡ್ವಿಧಂ ಸ್ತ್ರೀಧನಂ  
ಸ್ಮೃತಮ್' ಮನುಂ ೯-೧೯೪ | (1) ವಿವಾಹಸಮಯದಲ್ಲಿ  
ಅಗ್ನಿಯ ಸನ್ನಿಧಿಯಲ್ಲಿ ತಂದೆ ಮೊದಲಾದವರಿಂದ ಕೊಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ ಧನ ಅಧ್ಯಗ್ನಿ. "ವಿವಾಹಕಾಲೇ ಯತ್ ಸ್ತ್ರೀಮ್ಯೋ ದೀಯತೇ  
ಹ್ಯಗ್ನಿಸನ್ನಿವೌ | ತದಧ್ಯಗ್ನಿಕೃತಂ ಸದ್ವಿಧಃ ಸ್ತ್ರೀಧನಂ ಪರಿಕೀರ್ತಿ-  
ತಮ್" | (2) ತಂದೆಯಮನೆಯಿಂದ ಪತಿಯ ಗೃಹಕ್ಕೆ  
ಹೊರಟುಬರುವಾಗ ಕೊಟ್ಟ ಧನ ಅಧ್ಯಾಬಾಹನಿಕ.  
"ಯತ್ಪುನಲಂಭತೇ ನಾರೀ ನಿಯಮನಾ ತು ಪತೃಕಾತ್ | ಅಧ್ಯಾ-  
ಬಾಹನಿಕಂ ನಾಮ ತತ್ ಸ್ತ್ರೀಧನಮುದಾಹೃತಮ್" | ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ  
(3) ಪತಿ (4) ಸಹೋದರ (5) ತಾಯಿ ಮತ್ತು  
(6) ತಂದೆ ಇವರಿಂದ ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ ಧನ. ಸ್ತ್ರೀಧನವನ್ನು  
ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದಕ್ಕಾಗಲಿ ಅವನ್ನು ಖರ್ಚುಮಾಡುವುದ  
ಕ್ಕಾಗಲಿ ಪತಿ ಸುತ ತಂದೆ ಸಹೋದರ ಇವರಾರಿಗೂ  
ಅಧಿಕಾರವಿಲ್ಲ. "ನ ಭರ್ತಾ ನೈವ ಚ ಸುತೋ ನ ಪಿತಾ ಭ್ರಾತರೋ  
ನ ಚ | ಆದಾನೇ ವಾ ವಿಸರ್ಗೋ ವಾ ಸ್ತ್ರೀಧನೇ ಪ್ರಭವಿಷ್ಯವಃ"  
ಕಾತ್ಯಾಯನಃ | ಸಂತಾನವಿಲ್ಲದೆ ಮೃತಳಾದ ಹೆಂಗಸಿನ  
ಮಾತಾಪಿತೃದತ್ತವಾದ ಸ್ಥಿರಾಸ್ತಿಯು ಸಹೋದರರಿಗೆ  
ಸೇರತಕ್ಕದ್ದು. "ಪಿತೃಮ್ಯಾಂ ಚೈವ ಯದ್ವತ್ ದುಹಿತುಃ ಸ್ಥಾವರಂ  
ಧನಮ್ | ಅಪ್ರಜಾಯಾಮತೀತಾಯಾಂ ಭ್ರಾತೃಗಾಮಿ ಚ ಸರ್ವದಾ"  
ಕಾತ್ಯಾಯನಃ |

ಸ್ತ್ರೀಧರ್ಮ ಸ್ತ್ರೀಧರ್ಮ (ಪುಂ) 1. ಹೆಂಗಸಿನ ರಜಸ್ಸು,  
ಮುಟ್ಟು. ಸ್ತ್ರಿಯಾ ಧರ್ಮಃ | 2. ಹೆಂಗಸಿನ ಕರ್ತವ್ಯ.

ಸ್ತ್ರೀಧರ್ಮಿಣಿ ಸ್ತ್ರೀಧರ್ಮಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಜಸ್ವಲೆ, ಋತುಮತಿ  
ಯಾದ ಹೆಂಗಸು. ಸ್ತ್ರೀಧರ್ಮಿ ರಜೋಸ್ತಯಸ್ಯಾ: "ಇನಿ:"  
(೪-೨-೧೧೫) | "ಙೀಪ್" (೪-೧-೫) | "ಸ್ತ್ರೀಧರ್ಮಿಣಿ  
ವರಾರೋಹಾ ಶೋಣಿತೇನ ಪರಿಪ್ಲುತಾ | ಏಕವಸ್ತ್ರಾಥ ಪಾಶ್ಚಾಲಿ  
ಪಾಂಡವಾನಮ್ಯವೇಕ್ಷತ" ಭಾಂ ಸಭಾಂ ೧೦೩-೧೪ |

ಸ್ತ್ರೀಪಣ್ಯೋಪಜೀವಿನ್ ಸ್ತ್ರೀಪಣ್ಯೋಪಜೀವಿನ್ (ಪುಂ)  
ಹೆಂಡತಿಯನ್ನು ವ್ಯಭಿಚಾರಕ್ಕೆ ಬಿಟ್ಟು ಆ ಹೆಣ್ಣಿನಿಂದ  
ಜೀವಿಸುವವನು, ಹೆಂಗಸು ವ್ಯಭಿಚಾರದಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಿದ  
ದ್ರವ್ಯದಿಂದ ಜೀವನ ನಡೆಸುವವನು. ಸ್ತ್ರೀಪಣ್ಯೇನ ಉಪ-  
ಜೀವತಿ—ಉಪ + ಜೀವ (ಪ್ರಾಣವಾರಣೆ) "ಗಿತಿ:"  
(೩-೨-೭೮) |

ಸ್ತ್ರೀಪರ ಸ್ತ್ರೀಪರ (ಪುಂ) ವಿಟ, ಕಾಮುಕ. ಸ್ತ್ರೀಪು ಪರಃ |

ಸ್ತ್ರೀಪುಂಧರ್ಮ ಸ್ತ್ರೀಪುಂಧರ್ಮ (ಪುಂ) ಸ್ತ್ರೀ ಮತ್ತು ಪುರುಷರ  
ವ್ಯವಹಾರ. ಸ್ತ್ರೀ ಚ ಪುಂಶ್ಚ ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸೌ ತಯೋರ್ದರ್ಮಃ | ಇದು  
ಅಷ್ಟಾದಶ ವಿವಾದಪದಗಳಲ್ಲೊಂದು.

ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸಲಕ್ಷಣಾ ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸಲಕ್ಷಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ತ್ರೀಮೀಸೆ  
ಮೊದಲಾದ ಸ್ತ್ರೀ ಪುರುಷರ ಲಕ್ಷಣವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು.  
ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸಯೋರ್ದಕ್ಷಣಂ ಯಸ್ಯಾಃ |

ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸೌ ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸೌ (ಪುಂ ದ್ವಿಂ) 1. ಹೆಂಗಸು ಮತ್ತು  
ಗಂಡಸು. ಸ್ತ್ರೀ ಚ ಪುಂಶ್ಚ ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸೌ "ಅಚ್" (೪-೪-೭೭)  
ನಿಪಾಂ | "ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸಾಬಾತ್ಮಭಾಗೌ ತೇ ಮಿಶ್ರಮೂರ್ತೆಃ ಸಿಸೃಕ್ಷಯಾ"  
ಕುಮಾಂ ೨-೭ | 2. ಹೆಂಗಸು ಮತ್ತು ಗಂಡಸು ಇವರ  
ಯುಗ್ಮ, ದ್ವಂದ್ವ. "ಏಷೋದಿತಾ ಲೋಕಯಾತ್ರಾ ನಿಯಂ  
ಸ್ತ್ರೀಪುಂಸಯೋಃ ಶುಭಾ" ಮನುಂ ೯-೮೫ |

ಸ್ತ್ರೀಪೂರ್ವ ಸ್ತ್ರೀಪೂರ್ವ (ಪುಂ) ಎಲ್ಲಾ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲೂ ಹೆಂಗ  
ಸನ್ನು ಮುಂದಾಳಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವವನು. ಸ್ತ್ರೀ ಪೂರ್ವ  
ಪ್ರಾಧಾನ್ಯೇನ ಅಗ್ರಗಾಮಿನಿ ಯಸ್ಯ |

ಸ್ತ್ರೀರಂಜನ ಸ್ತ್ರೀರಂಜನ (ನಂ) ತಾಂಬೂಲ. ಸ್ತ್ರಿಯಂ  
ರಂಜಯತಿ—ರಂಜ (ರಾಜೆ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) |

ಸ್ತ್ರೀರತ್ನ ಸ್ತ್ರೀರತ್ನ (ನಂ) ಶ್ರೇಷ್ಠ ಹೆಂಗಸು, ಉತ್ಕೃಷ್ಟ  
ಹೆಂಗಸು. "ಸ್ತ್ರೀರತ್ನಸೃಷ್ಟಿರಪರಾ ಪ್ರತಿಭಾತಿ ಸಾ ಮೇ"  
ಶಾಕುಂ ೨-೯ |

ಸ್ತ್ರೀಸಮ ಸ್ತ್ರೀಸಮ (ನಂ) ಸ್ತ್ರೀಯರ ಸಭೆ. ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ನಾರೀಣಾಂ  
ಸಭಾ | ಸಭಾಶಬ್ದಸ್ಯ ನಪುಂಸಕತ್ವಮ್ (೨-೪-೨೪) |

ಸ್ತ್ರೇಣ ಸ್ತ್ರೇಣ (ನಂ) 1. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಸಮೂಹ. ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ  
ಸಮೂಹಃ "ನಬ್" (೪-೧-೮೭) | 2. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಸಂಬಂಧ  
ವಾದ, ಸ್ತ್ರೀಯರಿಗೆ ಸಹಜವಾದ. ಸ್ತ್ರೀಣಾಮಿದಮ್—ಸ್ತ್ರೀ  
"ನಬ್" (೪-೧-೮೭) | "ಕರ್ಣೇಪರಾಹಿತರಾಜ್ಯಲೋಭಾ  
ಸ್ತ್ರೇಣೇನ ನೇತಾ ವಿಕೃತಿ ಲಭಿಮ್ನಾ" ಮಡಿಂ ೩-೭ |  
3. ಸ್ತ್ರೀಯರಲ್ಲಿರುವ. ಸ್ತ್ರೀಪು ಭವಃ "ನಬ್" (೪-೧-೮೭) |  
4. ಸ್ತ್ರೀಯರಿಂದ ಬಂದ. ಸ್ತ್ರೀಮ್ಯಃ ಆಗತಃ—ಸ್ತ್ರೀ "ನಬ್"  
(೪-೧-೮೭) | 5. ಸ್ತ್ರೀಯರಿಗೆ ಹಿತವಾದ. ಸ್ತ್ರೀಮ್ಯೋ  
ಹಿತಮ್ "ನಬ್" (೪-೧-೮೭) |

ಸ್ವಗ ಸ್ವಗ (ವಿಂ) ಧೂರ್ತ, ವಂಚಕ, ಮೋಸಗಾರ. ಸ್ವಗೇ  
(ಸಂವರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |

ಸ್ವಗನ ಸ್ವಗನ (ನಂ) 1. ಮರೆಮಾಡುವುದು, ಮುಚ್ಚಿಡು  
ವುದು. ಸ್ವಗೇ (ಸಂವರಣೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) |  
ಸ್ವಗ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) "ಲ್ಯುಡ್" ವಾ | 2. ಅಂತರ್ಧಾನ  
ಮಾಡುವುದು, ಮರೆಯಾಗುವುದು,



ಸ್ವಗನೀಯ ಸ್ಥಗನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಮುಚ್ಚಿಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಮುಚ್ಚಿಡಬೇಕಾದ. 3. ಮುಚ್ಚಿಡಬಹುದಾದ. ಸ್ವಗ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) "ಗಿನ್" "ಅನೀಯ" (3-1-96) 1. 4. ಮರೆಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 5. ಮರೆಮಾಡಬೇಕಾದ. 6. ಮರೆಮಾಡಬಹುದಾದ.

ಸ್ವಗಯತ್ ಸ್ಥಗಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಮುಚ್ಚುತ್ತಿರುವ. 2. ಮರೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸ್ವಗ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) + ಗಿನ್ "ಯತ್" (3-2-124) 1. ಸ್ವಿನ್ಯಾ "ಡೀಪ್" (4-1-6) 1. -ಯನ್ತೀ -ಯನ್ತೀ.

ಸ್ವಗಿತ ಸ್ಥಗಿತ (ವಿಂ) 1. ಮುಚ್ಚಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಮರೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸ್ವಗ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) + ಗಿನ್ "ಕ್" (3-2-102) 1. "ನ ಪುಷಿತಾತ್ರ ಸ್ವಗಿತಾರ್ಕಶಮಾವನಂತ-ತಾನೇ ಕತಮಾ ಲತಾಽಲಮ್" ಮಾಘಂ 4-39. "ಸ್ವಗಿತಾ-ಸ್ವರಕ್ಷಿತತೀಲೇ ಪರಿತಸ್ತಿಮಿರೇ ಜನಸ್ಯ ದೃಗಮನ್ವಯತಿ" ಮಾಘಂ 9-21. ಸ್ವಗ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) ಚೌರಾದಿಕ: ಇತಿ ಮಾಘಂ 4-24 ವ್ಯಾಖ್ಯಾನೇ 1.

ಸ್ವಗೀ ಸ್ಥಗೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಾಂಬೂಲ ಕರಂಡ, ತಾಂಬೂಲದ ಪಾತ್ರೆ. ಸ್ವಗಯತೇಜನಯಾ - ಸ್ವಗ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) + ಗಿನ್ "ಕ್" (ವಾಂ 3-3-56) 1. ಗೌರಾಂ "ಡೀಪ್" (4-1-41) 1.

ಸ್ವಞ್ಞಿಲ ಸ್ಥಂಞಿಲ (ನಂ) 1. ಯಾಗಕ್ಕಾಗಿ ಮಂತ್ರದಿಂದ ಪುಷ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಭೂಮಿ. ಸ್ವಲಂತ್ಯಸ್ಮಿನ್ - ಞ್ಞಿಲ (ಸ್ಥಾನೇ) "ಞ್ಞಿಲ್" (3-1-49) 1. ನಿಶಾಂ 1. "ಯಶೇ ಪರಿಣ್ಕುತ-ಸ್ಥಾನೇ ಸ್ಥಾತಾಂ ಸ್ವಞ್ಞಿಲಚತ್ತವೇ" ಶಬ್ದರಂ 1. "ನಿತ್ಯಂ ನೈಮಿತ್ತಿಕಂ ಕಾರ್ಯಂ ಸ್ವಞ್ಞಿಲೇ ವಾ ಸಮಾಚರೇತ್ 1. ಹಸ್ತಮಾತ್ರಂ ತು ತತ್ಕುರ್ಯಚ್ಚಿತ್ತರಸ್ತಂ ಸಮಂತತಃ" 11 2. ದೇವರ ಧ್ಯಾನ (ತಪ) ಕಾಗಿ ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿ ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಿದ ಸ್ಥಳ. "ಅಶೇತ ಸಾ ಬಾಹುಲತೋಪಧಾಯಿನಿ ನಿಷೇದುಷಿ ಸ್ವಞ್ಞಿಲ ಏವ ಕೇವಲಮ್" ಕುಮಾಂ 4-12. 3. ಬಂಜರು ಭೂಮಿ.

ಸ್ವಞ್ಞಿಲಶಾಯಿನ್ ಸ್ಥಂಞಿಲಶಾಯಿನ್ (ವಿಂ) ಪ್ರತಕ್ಕಾಗಿ ಕೇವಲ ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಮಲಗುವವನು. ಸ್ವಞ್ಞಿಲೇ ಶೇತೇ - ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಗಿನ್" (3-2-60) 1. ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ವಾ ಅಲುಕ್ (6-3-14) 1. ಪಕ್ಷೇ ಸ್ವಞ್ಞಿಲೇಶಾಯಿ ಸ್ಥಂಞಿಲೇ ಶಾಯಿನ್. "ಮಂಡಲತ್ಯಾಗಮೇವೇಚ್ಛದೀಕ್ಯ ಸ್ವಞ್ಞಿಲಶಾಯಿನಃ" ನೈಷಂ 19-166 1.

ಸ್ವಞ್ಞಿಲೇಶಯ ಸ್ಥಂಞಿಲೇಶಯ (ಪುಂ) ಪ್ರತಕ್ಕಾಗಿ ಕೇವಲ ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಮಲಗುವವನು. ಸ್ವಞ್ಞಿಲೇ ಶೇತೇ - ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಅನ್" (3-2-14) 1. ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ವಾ ಅಲುಕ್ 1. ಪಕ್ಷೇ ಸ್ವಞ್ಞಿಲೇಶಯಃ ಸ್ಥಂಞಿಲೇಶಯಃ.

ಸ್ವಪತಿ ಸ್ಥಪತಿ (ಪುಂ) 1. ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಯಾಗ ಮಾಡಿ ದವನು. ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕ್" (ವಾಂ 3-3-56) 1.

ಸ್ವ: ಪತಿ: 1. ಕಂಚುಕ. 3. ಶಲ್ಮಿ. 4. ರಾಜ. ದೊರೆ. 5. ಕುಬೇರ. 6. ಸಾರಥಿ. "ಸ್ವಪತಿ: ಶಿಲ್ಪಿ-ಭೇದೇಪಿ ಸ್ವಪತಿ: ಕಚ್ಚುಕಿನ್ಯಪಿ 1. ಜೀವೇಷ್ಟಿಯಾಜಕೇ ಸ್ತೇಷಪಿ" ವಿಷ್ವಂ 1. (ವಿಂ) 7. ಮುಖ್ಯ, ಪ್ರಧಾನ, ಶ್ರೇಷ್ಠ. ತಿಷ್ಠಂತಿ ಸ್ವಧರ್ಮೇ ಸ್ಥಾ: ಸಂತ:-ತೇಷಾಂ ಪತಿ: 1. "ಬೃಹಸ್ಪತಿ-ಸವೇನೆಷ್ಟಂ ಯೇನಾಸೌ ಸ್ವಪತಿರ್ಮತ: 1. ಪ್ರಾಸಾದಾದಿಕರ: ಶಿಲ್ಪಿ ಸ್ವಪತಿ: ಕಚ್ಚುಕೀ ಮತ:" ಶಾಶ್ವತಂ 1.

ಸ್ವಪುಟ ಸ್ಥಪುಟ (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಕಷ್ಟಪರಿಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರುವವನು, ವಿಷಮಾಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿದ್ದು ಜೀವಿಸುವವನು. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಲ್ಪಟ್ಟು ಮತ್ತೆ ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟವನು.

ಸ್ಥಲ ಸ್ಥಲ (ನಂ) 1. ಕೃತ್ರಿಮವಾದ ಭೂಪ್ರದೇಶ, ತೇವ ಎಲ್ಲದೆ ಒಡಗಿಸಿದ ಭೂಮಿ. ಸ್ಥಲತಿ - ಞ್ಞಿಲ (ಸ್ಥಾನೇ) "ಅನ್" (3-1-134) 1. "ನಲಿನಿ ನಿಗೂಢಸಲಿಲಾ ಚ ಯತ್ರ ಸಾ ಸ್ಥಲಮಿತ್ಯಥ: ಪತತಿ ಯಾ ಸುಯೋಧನೇ" ಮಾಘಂ 13-49. 2. ನೆಲ, ಭೂಮಿ. "ಪಾರಸೀಕಾಂತತೋ ಜೇತುಂ ಪ್ರತಸ್ಥೇ ಸ್ಥಲವರ್ಮನಾ" ರಘುಂ 4-60. 3. ಪ್ರದೇಶ, ಜಾಗ. "ಉವಾಚ ವಾಗ್ಮೀ ದಶನಪ್ರಭಾಭಿ: ಸಂವರ್ಧಿತೋ:-ಸ್ಥಲತಾರಹಾರ: ರಘುಂ 4-42. 4. ಪಟವಾಸ, ವಸ್ತುಗೃಹ, ಡೇರೆ, ಗುಡಾರ. "ಪಟವಾಸ: ಪಟಮಯಂ ದೃಢಂ ವಸ್ತ್ರಗೃಹಂ ಸ್ಥಲಮ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ 1. (ಸ್ತ್ರೀನಂ) -ಲಾ -ಲಾ. ಕೃತ್ರಿಮ ಭೂಮಿ. -ಲೀ -ಲೀ. ಅಕೃತ್ರಿಮಭೂಮಿ. ಸ್ಥಲೀ ಅಕೃತ್ರಿಮಾ ಚೇತ್ 1. ಸ್ಥಲಾನ್ಯಾ 1. ಸಿಂ ಕೌಂ 1. "ಡೀಪ್" (4-1-42) 1.

ಸ್ಥಲಕಮಲ ಸ್ಥಲಕಮಲ (ನಂ) ನೆಲದಾವರೆ, ಬೆಟ್ಟದಾವರೆ. ಸ್ಥಲಸ್ಯ ಕಮಲಮ್ 1.

ಸ್ಥಲಕಮಲಿನಿ ಸ್ಥಲಕಮಲಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬೆಟ್ಟದಾವರೆಯ ಬಳ್ಳಿ. 2. ಬೆಟ್ಟದಾವರೆ. "ಸಾಂಪ್ರೇಕ್ಷ್ಯೈವ ಸ್ಥಲಕಮಲಿನಿಂ ನ ಪ್ರಬುದ್ಧಾಂ ನ ಸುಪ್ತಾಮ್" ಮೇಘಂ 2-23 1.

ಸ್ಥಲಕುಮುದ ಸ್ಥಲಕುಮುದ (ಪುಂ) ಕರವೀರ ವೃಕ್ಷ, ಗನ್ನೇರಕೆ. ಸ್ಥಲಚರ ಸ್ಥಲಚರ (ವಿಂ) ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಸಂಚರಿಸುವವನು, ನೆಲದಲ್ಲಿ ತಿರುಗಾಡುವವನು. ಸ್ಥಲೇ ಚರತಿ - ಚರ (ಗತೌ) "ಠ:" (3-2-16) 1.

ಸ್ಥಲಪದ್ಮ ಸ್ಥಲಪದ್ಮ (ನಂ) ನೆಲದಾವರೆ, ಬೆಟ್ಟದಾವರೆ. "ಕೂಲಾನಿ ಸಾಮರ್ಭತಯೇವ ತೇನು: ಸರೋಜಲಕ್ಷ್ಮೀ ಸ್ಥಲಪದ್ಮಾಹಾಸೇ:" ಭट्टಿಂ 2-3 1.

ಸ್ಥಲಮಾರ್ಗ ಸ್ಥಲಮಾರ್ಗ (ಪುಂ) ನೆಲದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುವ ದಾರಿ. -ವರ್ಮನ್ -ವರ್ಮನ್. (ನಂ) ಭೂಮಾರ್ಗ. "ಪಾರಸೀಕಾಂತತೋ ಜೇತುಂ ಪ್ರತಸ್ಥೇ ಸ್ಥಲವರ್ಮನಾ" ರಘುಂ 4-60 1.



ಸ್ವಲ್ಪಶುದ್ಧಿ ಸ್ಥಲಕುದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೂಕುದ್ಧಿ, ಅಶುದ್ಧ  
ವಾದ ನೆಲವನ್ನು ಶುದ್ಧಮಾಡುವುದು.

ಸ್ವಲ್ಪಶೃಂಗಾಟಕ ಸ್ಥಲಕೃಂಗಾಟಕ (ಪುಂ) ನೆಗ್ಗಿಲು ಗಿಡ.

ಸ್ವಲ್ಪಸೀಮನ್ ಸ್ಥಲಸೀಮನ್ (ಪುಂ) ಭೂಮಿಯ ಸರಹದ್ದು,  
ಮರ್ಯಾದೆ, ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ. ಸ್ವಲ್ಪಸ್ಯ ಸೀಮಾ.

ಸ್ವಲ್ಪಾ ಸ್ಥಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೃತ್ರಿಮ ಭೂಮಿ, ಸಮಮಾಡಿ  
ಒಣಗಿಸಿದ ಭೂಮಿ. -ಲಿ-ಲೀ. ಅಕೃತ್ರಿಮ ಭೂಮಿ,  
ಸ್ವಭಾವವಾಗಿ ಒಣಗಿದ ಭೂಮಿ. "ಸೇಷಾ ಸ್ವಲ್ಪಾ ಯತ್ರ  
ವಿಚಿನ್ವತಾ ತ್ವಾಂ ಚಾಪ್ತಂ ಮಯಾ ನೃಪರಮೇಕಮುರ್ವಾಮ್ | ಅದೃಶ್ಯತ  
ತ್ವಚ್ಚರಣಾರವಿನ್ದವಿಶ್ಲೇಷದ್ವು:ಖಾದಿವ ಬದ್ಮಮಾನಮ್" ಸಾಂ ೬೦ |

ಸ್ವಲ್ಪದೇವತಾ ಸ್ಥಲೀದೇವತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗ್ರಾಮದೇವತೆ,  
ಗ್ರಾಮಗಳಲ್ಲಿ ಪೂಜಿಸುವ ದೇವತೆ. ಸ್ವಲ್ಪಾ ದೇವತಾ |

"ಪಶ್ಯಂತೀನಾಂ ನ ಸಲಃ ಬಹುಶೋ ನ ಸ್ವಲ್ಪದೇವತಾನಾಂ ಮುಕ್ತಾ-  
ಸ್ವಲ್ಪಾಸ್ತರಹಿಸಲಯೇಷ್ವಶ್ರೇಷ್ಠಾ: ಪತಂತಿ" ಮೇಘಂ ೨-೪೩ |

ಸ್ವಲ್ಪೇಶಯ ಸ್ಥಲೇಶಯ (ವಿಂ) 1. ನೆಲದ ಮೇಲೆ ಮಲಗು  
ವವನು. ಸ್ವಲ್ಪೇ ಶೇತೇ - ಶೀಡ್ (ಸ್ವಪ್ನೇ) "ಅಚ್"  
(೩-೨-೧೪) | ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಅಲುಕ್ (೬-೩-೧೮) | 2. ನೆಲದ  
ಮೇಲೆ ಮಲಗುವ ಪ್ರಾಣಿ.

ಸ್ವಲ್ಪವಿ ಸ್ಥಲವಿ (ಪುಂ) 1. ಕುಮಿದ, ನೇಯಿಗೆಯವನು. ಷಾ  
(ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕಿವನ್" (೮೦ ೪-೪೬) | ಹ್ರಸ್ವೋ  
ನಿಪಾತ್ಯತೇ | ಸ್ವಲ್ಪವಿ: ತನ್ತುವಾಯ: ಸಿಂ ಕೌಂ | 2. ಸ್ವರ್ಗ.  
3. ಜಂಗಮವಸ್ತು, ಸಂಚರಿಸುವ ವಸ್ತು, ಚಲಿಸುವ  
ದಾದ ವಸ್ತು.

ಸ್ವಲ್ಪವಿರ ಸ್ಥಲವಿರ (ಪುಂ) 1. ವೃದ್ಧ, ಹೆಚ್ಚು ವಯಸ್ಸಾದವನು,  
ಮುದುಕ. ತಿಷ್ಠತಿ - ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕಿರಚ್"  
ಘಾತೋ: ದುಕ್ ಆಕಾರಸ್ಯ ಹ್ರಸ್ವಶ್ಚ ನಿಪಾಂ (೮೦ ೧-೪೩) |  
"ಊರ್ವಂ ಪ್ರಾಣಾಹಚ್ಯುತಕ್ರಮಂತಿ ಯುನಾಂ ಸ್ವಲ್ಪವಿರ ಆಗತೇ |  
ಪ್ರತ್ಯುತ್ಥಾನಾಭಿವಾದಾಮ್ಯಾಂ ಪುನಸ್ತಾನ್ ಪ್ರತಿಪದಂತೇ" ಮನುಂ  
೨-೧೨೦ | 2. ಬ್ರಹ್ಮ. 3. ಭಿಕ್ಷುಕ, ಯಾಚಕ. (ವಿಂ)  
4. ಸ್ಥಿರವಾದ, ದೃಢವಾದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ರಾ-ರಾ. ವೃದ್ಧಿ,  
ಮುದುಕ, ಹೆಚ್ಚು ವಯಸ್ಸಾಗಿರುವ ಹೆಂಗಸು.

ಸ್ವಲ್ಪವಿಠ ಸ್ಥಲವಿಠ (ವಿಂ) ಬಹಳ ದೊಡ್ಡದಾದ, ಅತಿ  
ದೊಡ್ಡದಾದ. ಅಯಮೇಷಾಮ್ ಅತಿಶಯೇನ ಸ್ಥೂಲ: - ಸ್ಥೂಲ  
"ಇಠನ್" (೪-೩-೪೪) | ಪರಮೃತಯಗೋ ಲೋಪ: ಪೂರ್ವಸ್ಯ ಗುಣ:  
(೬-೪-೧೪೬) |

ಸ್ವಲ್ಪವೀಯಸ್ ಸ್ಥಲವೀಯಸ್ (ವಿಂ) ಎರಡರಲ್ಲಿ ದೊಡ್ಡದಾದ  
ಒಂದು. ಅನಯೋರಯಮತಿಶಯೇನ ಸ್ಥೂಲ: - ಸ್ಥೂಲ "ಇಯಸುನ್"  
(೪-೩-೪೭) | ಲಸ್ಯ ಲೋಪ: ಪೂರ್ವಸ್ಯ ಗುಣ: (೬-೪-೧೪೬) |

ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೬) | -ಯಸಿ-ಯಸೀ. "ಮುಹು:  
ಪ್ರತಿಸ್ವಲಿತಪರಾಯುಧಾ ಯುಧಿ ಸ್ವಲ್ಪವೀಯಸೀ ಸ್ವಲ್ಪನಿತಮ್ಬನಿರ್ಹಾರಾ:"  
ಮಾಘಂ ೧೭-೨೧ |

ಸ್ಥಾಣು ಸ್ಥಾಣು (ಪುಂ) 1. ಕುಶ್ಠರ, ಪರಿಶವ. ತಿಷ್ಠತಿ -  
ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಣು:" (೮೦ ೩-೩೭) | "ಸ್ಥಾಣು-  
ದಧವಪುಷಸ್ತಪೋವನ ಪ್ರಾಪ್ಯ ದಾಶರಥಿರಾತ್ಮಕಾರ್ಮುಕ:" ರಘುಂ  
೧೧-೧೩ | "ಸ ಸ್ಥಾಣು: ಸ್ಥಿರಭಕ್ತಿಯೋಗಸುಲಭೋ ನಿ:ಶ್ರೇಯ-  
ಸಾಯಾಸ್ತು ವ:" ವಿಕ್ರಂ ೧-೧ | 2. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ.  
"ಬ್ರಹ್ಮಾ ಸುರಗು: ಸ್ಥಾಣು: ಮನು: ಕ: ಪರಮೇಷ್ಠಯ" ಭಾಂ  
ಆದಿಂ ೧-೪೪ | 3. ಗಂಟು, ಮೊಳೆ, ಅಣ. "ಸ್ಥಾಣೋ  
ನಿಷಜ್ಞಿಷ್ಯನಸಿ ಕ್ಷಣಂ ಪುರ: ಶುಶೋಚ ಲಾಭಾಯ ಕೃತಕ್ರಯೋ ವಣಿಕ್"  
ಮಾಘಂ ೧೨-೨೬ | (ಪುನಂ) 4. ರೆಂಬೆಗಳಿಲ್ಲದ ಮೋಟು  
ಮರ. "ಸ್ಥಾಣುರಸ್ತ್ರೋ ಧ್ರುವ: ಸಡ್ಕು:" ಅಮಂ | 5. ಕುಟಿ,  
ಭಿಕ್ಷು. 6. ವಿಷ್ಣು. ದೃಢಾನುಗ್ರಹಸ್ತಿಷ್ಠತಿ ಇತಿ ಸ್ಥಾಣು: |  
"ಸಂಜ್ಞಾಂ ನವಂ ವಿಶ್ರಾಢ್ಯಾಪಿ ಶಿವಂ ಬಹು | ಸ್ವಯಂ ನ  
ವಿಶ್ರಾಢ್ಯಾಂ ನ ಸ ಸ್ಥಾಣು: ಪರಿಕೀರ್ತಿತ:" ಇತಿ ನಿರಹ್ತಿ: |  
"ಸರ್ವ: ಶಬ್ದ: ಶಿವ: ಸ್ಥಾಣು:" ವಿಂ ಸಂ | (ವಿಂ)  
7. ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವ, ದೃಢವಾಗಿರುವ, ಚಲಿಸದಿರುವ.  
"ಅವ್ಯಯಂ ಚ ವ್ಯಯಂ ಚೈವ ಯದಿದಂ ಸ್ಥಾಣುಜ್ಞಮಮ್ | ತತ್  
ಸಸರ್ಜತದಾ ಬ್ರಹ್ಮಾ ಭಗವಾನಾದಿಹೃದ್ವಿಭು:" ವಿಷ್ಣುಪುಂ |

ಸ್ಥಾಣಿಲ ಸ್ಥಾಣಿಲ (ವಿಂ) ಪ್ರತ್ಯಾಗ್ನಿ ನೆಲದ ಮೇಲೆ  
ಮಲಗಿರುವವನು. ಸ್ಥಾಣಿಲೇ ಶೇತೇ - ಸ್ಥಾಣಿಲ "ಅಣ್"  
(೪-೨-೧೪) | "ಯ: ಸ್ಥಾಣಿಲೇ ವ್ರತವಶಾಂಚೇತೇ ಸ್ಥಾಣಿಲ-  
ಶಾಪ್ಯಸೌ | ಸ್ಥಾಣಿಲಶ್ಚ" ಅಮಂ |

ಸ್ಥಾತವ್ಯ ಸ್ಥಾತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಇರಬೇಕಾದ, ನಿಲ್ಲಬೇಕಾದ.  
2. ಇರಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ, ನಿಲ್ಲಲು ಅರ್ಹವಾದ.  
3. ಇರಬಹುದಾದ, ನಿಲ್ಲಬಹುದಾದ. ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ)  
"ತವ್ಯ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ವಾಣಿಜ್ಯೇನ ಗತ: ಸ ಮೇ  
ಗೃಹಪತಿ: ವಾರ್ತಾಪಿ ನ ಶ್ರೂಯತೇ ಪ್ರಾತಸ್ತಜ್ಜನನಿ ಪ್ರಸೂತತನಯಾ  
ಜಾಮಾತೃಗೃಹಂ ಗತಾ | ಬಾಲಾಹಂ ನವಯೌವನಾ ನಿಶಿ ಕಥಂ  
ಸ್ಥಾತವ್ಯಮಸ್ಮದ್ಗೃಹೇ ಸಾಯಂ ಸಂಪ್ರತಿ ವರ್ತತೇ ಪಥಿಕ ಹೇ  
ಸ್ಥಾನಾಂತರೇ ಗಮ್ಯತಾಮ್" ಶೃಂಗಾರತಿಂ |

ಸ್ಥಾತು ಸ್ಥಾತು (ವಿಂ) ಚಲಿಸದೆ ನಿಲ್ಲುವವನು, ನಿಂತುಬಿಡು  
ವವನು. ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ತುಚ್" (೩-೧-೧೩೩) |  
"ಅವೇಷ್ಟಮಾನಪ್ರಕೃತೀನ್ಯಯಾಸಿ ಸ್ಥಾತಾಪ್ಯಯಸ್ಕಾಂತ ಇವಾಮಿ-  
ಮುಕ್ಯಾತ್" ಯಾದಂ ೨೦-೮೨ |

ಸ್ಥಾನ ಸ್ಥಾನ (ನಂ) 1. ಸ್ಥಳ, ಪ್ರದೇಶ, ಜಾಗ. ಸ್ಥಾಯಿತೇಷ  
- ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೭) |



“ಸ್ತೋತ್ರಸಂಸ್ಥಾನಜುಷಾ ಪ್ರಕೃತ್ಯಾ ಸ್ಥಾನೇನ ಚಿಹ್ನೇನ ಚ  
ಲಕ್ಷಣೀಯಾ” ಯಾದಂ ೧೩-೧೦೬। 2. ಗೃಹ, ಮನೆ.  
“ಯಥಾರ್ಯಶೀರ್ಯಾ ಯದುವೀರ ಯೋಧಾಃ ಸ್ಥಾನಾನಿ ಚಿತ್ತಾನಿ ಚ  
ದಾನವಾನಾಮ್” ಯಾದಂ ೨೦-೧೮। 3. ಪ್ರದೇಶ, ಸನ್ನಿವೇಶ.  
“ಸ್ಥಾನಾನುರೂಪಂ ಪ್ರಸುತೇ: ಪ್ರವಾಹೇ: ಮಹದ್ವಿರೇಷಾ ಮಧುರಾವದಾತೇ:”  
ಯಾದಂ ೧೮-೪೭। 4. ಸ್ಥಿತಿ, ಇರುವಿಕೆ. “ನ ಖಲು ಭವತಾಂ  
ದೇವ್ಯಾಃ ಸ್ಥಾನಂ ಗೃಹೇಭಿಮತಂ ತತಃ ತೃಣಮಿವ ವನೇ ಶೂನ್ಯೇ ತ್ಯಕ್ತಾ  
ನ ಚಾಪ್ಯನುಶೋಚಿತಾ” ತಂ ರಾಂ ೩-೨೨। 5. ರಾಜನ  
ಉಪಚಾರ ಮತ್ತು ಅಪಚಾರಭಾವ, ರಾಜನು ಶತ್ರುವು  
ಸಮಾನಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರುವಿಕೆ, ಸಾಮ್ಯವಸ್ಥಿತಿ. ರಾಜನೀತಿ  
ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞರು ಹೇಳಿರುವ ತ್ರಿವರ್ಗದಲ್ಲಿ ರಾಜನ ಉಪಚಾರ  
ಪಚಾರಭಾವಗಳು ಸ್ಥಾನವೆನಿಸುವುದು. “ಕ್ಷಯಃ ಸ್ಥಾನಂ ಚ  
ವೃದ್ಧಿಶ್ಚ ತ್ರಿವರ್ಗಂ ನೀತಿವೇದಿನಾಮ್” ಅಮಂ। ಪಾಡುಣ್ಯ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವುದರಿಂದ ವೃದ್ಧಿಯಾಗಲಿ ಕ್ಷಯವಾಗಲಿ  
ಉಂಟಾಗುವುದಿಲ್ಲವೋ ಆ ಗುಣಾನುಷ್ಠಾನವು, ಕೋಶ  
ದಂಡಗಳು ಇದ್ದದ್ದು ಇದ್ದಂತೆಯೇ ಇರುವುದಕ್ಕೆ ಕಾರಣ  
ವಾಗುವುದರಿಂದ ಅದು ಸ್ಥಾನವಾಗುವುದು. “ಯಸ್ಮಿನ್  
ವಾ ಗುಣೇ ಸ್ಥಿತಃ ಸ್ವಕರ್ಮವೃದ್ಧಿ ಕ್ಷಯಂ ವಾ ನಾಭಿಪಸ್ಯೇತ್ ಏತತ್  
ಸ್ಥಾನಮ್” ಅರ್ಯಶಾಂ ಅಧಿಂ ೭ ಅಧ್ಯಾಂ ೧। 6. ಸಾದೃಶ್ಯ.  
7. ಯೋಗ್ಯವಾದ ಸ್ಥಳ, ತಕ್ಕದಾದ ಸ್ಥಳ, ಅವರವರಿಗೆ  
ಅರ್ಹವಾದ ಸ್ಥಳ. “ಸ್ಥಾನೇಷ್ವೇವ ನಿಯೋಕ್ತವ್ಯಾ ಭೃತ್ಯಾಶ್ಚಾ-  
ಭರಣಾನಿ ಚ। ನ ಹಿ ಚೂಡಾಮಣಿಃ ಪಾದೇ ಪ್ರಮವಾಮಿತಿ  
ಬದ್ಧಯತೇ” ಪಂಚತಂ ೧-೭೮। 8. ಗ್ರಂಥದ ಒಂದು ಭಾಗ,  
ಅಧ್ಯಾಯ ಸರ್ಗ ಪಟಲ ಪರಿಚ್ಛೇದ ಅಶ್ವಾಸ ಇತ್ಯಾದಿ.  
“ಪಟಲಃ ಕಾಂಡಮಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್। ಸ್ಥಾನಂ ಪ್ರಕರಣಂ ಪರ್ವಿಹ್ನಿಕಂ  
ಚ ಗ್ರಂಥಸಂವಯಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ। 9. ಶ್ರೇಷ್ಠ, ದರ್ಜೆ, ವರ್ಗ.  
ಮಂಡಲಾಧಿಪತಿತ್ವಸ್ಥಾನಮ್। ನ್ಯಾಯಾಧೀಶಸ್ಥಾನಮ್। ಪ್ರಾಂಶುಪಾಲ-  
ಸ್ಥಾನಮ್। ಸಚಿವಸ್ಥಾನಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ. 10. ಕಾರಣ,  
ಪ್ರಯೋಜಕ. “ಗುಣಾಃ ಪೂಜಾಸ್ಥಾನಂ ಗುಣಿಭು ನ ಚ ಲಿಜ್ಞಂ  
ನ ಚ ವಯಃ” ತಂ ರಾಂ ೪-೧೧। 11. ಅವಕಾಶ, ಸಂದರ್ಭ.  
“ಬಹಿಃ ಸರ್ವಾಕಾರಪ್ರವಣರಮಣೀಯಂ ವ್ಯವಹರನ್ ಪರಾಮ್ಪೂಹ-  
ಸ್ಥಾನಾನ್ಯಪಿ ತನುತರಾಣಿ ಸ್ಥಗಯತಿ” ಮಾಲತೀಂ ೧-೧೭।  
12. ರಾಜ್ಯದ ದಂಡ ಕೋಶ ಪುರ ಮತ್ತು ರಾಷ್ಟ್ರ  
ಇವುಗಳ ಶಕ್ತಿ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ದಾಂಡ್ಯ, ಸತ್ತ್ವ. “ತೇಃ  
ಸಾರ್ವಂ ಚಿಂತಯೇನ್ನಿತ್ಯಂ ಸಾಮಾನ್ಯಂ ಸನ್ನಿವಿಗ್ರಹಮ್। ಸ್ಥಾನಂ  
ಸಮುದಯಂ ಗುಪ್ತಿ ಲಬ್ಧಪ್ರಶಮನಾನಿ ಚ” ಮನುಂ ೭-೫೬।  
13. ಸಾಧ್ಯವಾಗುವ ವಿಷಯ. “ಸ್ಥಾನೇ ಶಮವತಾಂ ಶಕ್ತ್ಯಾ  
ವ್ಯಾಯಾಮೇ ವೃದ್ಧಿರಜ್ಞಿನಾಮ್। ಅಯಥಾಬಲಮಾರಮ್ಭೋ ನಿವಾಂ  
ಕ್ಷಯಸಂಪದಃ” ಮಾಘಂ ೨-೯೪। 14. ವರ್ಣ (ಅಕ್ಷರ)

ಗಳ ಉಚ್ಚಾರಣೆಯ ಸ್ಥಳ. ಈ ಉಚ್ಚಾರಣೆಯ ಸ್ಥಾನಗಳು  
ಎಂಟು. (1) ಉರಸ್ಸು (ವಕ್ಷಸ್ಥಲ) (2) ಕಂಠ (3) ಶಿರಸ್ಸು  
(4) ಜಿಹ್ವಾಮೂಲ (5) ದಂತ (6) ನಾಸಿಕೆ (ಮೂಗು)  
(7) ಓಷ್ಠ (ತುಟೆ) ಮತ್ತು (8) ತಾಲು (ದವಡೆ).  
“ಅಷ್ಟೈ ಸ್ಥಾನಾನಿ ವರ್ಣಾನಾಮುರಃ ಕಂಠಃ ಶಿರಸ್ತಥಾ।  
ಜಿಹ್ವಾಮೂಲಂ ಚ ದಂತಾಶ್ಚ ನಾಸಿಕೋಷ್ಠೈ ಚ ತಾಲು ಚ” ಪಾಂ  
ಶಿಂ।

ಸ್ಥಾನಕ ಸ್ಥಾನಕ (ನಂ) 1. ಅಲವಾಲ, ಗಿಡಗಳ ಪಾತಿ,  
ಗಿಡಮರಗಳಿಗೆ ನೀರು ಹಾಕುವ ಸ್ಥಳ. ಸ್ಥಾನೇ ಕಂ ಜಲಂ  
ಯತ್ರ। 2. ಸ್ಥಾನ ಪದದ ಅರ್ಥ. ಸ್ಥಾನ ಸ್ವಾರ್ಥ “ಕನ್”।  
3. ನಗರ, ಪಟ್ಟಣ. 4. ನೋರೆ.

ಸ್ಥಾನಚ್ಯುತ ಸ್ಥಾನಚ್ಯುತ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಥಾನಭ್ರಷ್ಟ, ಪದವಿ  
ಯಿಂದ ಕೆಳಗಿಳಿದಿರುವ. ಸ್ಥಾನಾತ್ ಚ್ಯುತಃ। 2. ಒಂದು  
ಸ್ಥಳದಿಂದ ಕೆಳಗೆ ಬಿದ್ದಿರುವ. -ಅಪಠಃ -ಅಪಠಃ।

ಸ್ಥಾನಪಾಲ(ಕ) ಸ್ಥಾನಪಾಲ(ಕ) (ಪುಂ) ಕಾವಲುಗಾರ,  
ಸ್ಥಳವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವವನು. ಸ್ಥಾನಂ ಪಾಲಯತಿ—ಪಾಲ  
(ರಕ್ಷಣೆ) + ಣಿಕ್ “ಅನ್” (೩-೨-೧)। “ಫುಲ್”  
(೩-೧-೧೩೩)। -ಪಾಲಕಃ -ಪಾಲಕಃ।

ಸ್ಥಾನಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ ಸ್ಥಾನಮಾಹಾತ್ಮ್ಯ (ನಂ) ಸ್ಥಳದ  
ಮಹಿಮೆ, ಸ್ಥಳದ ಗೌರವ.

ಸ್ಥಾನಾಧ್ಯಕ್ಷ ಸ್ಥಾನಾಧ್ಯಕ್ಷ (ಪುಂ) ಸ್ಥಳದ ಯಜಮಾನ,  
ಒಂದು ಸ್ಥಳದ ಯೋಗಕ್ಷೇಮವನ್ನು ನೋಡಿಕೊಳ್ಳು  
ವವನು. ಸ್ಥಾನಸ್ಯ ಅಧ್ಯಕ್ಷಃ।

ಸ್ಥಾನಿಕ ಸ್ಥಾನಿಕ (ಪುಂ) ಸ್ಥಾನಾಧ್ಯಕ್ಷ, ಸ್ಥಳದ ಯಜ  
ಮಾನ. ಸ್ಥಾನಮಸ್ಯಸ್ಯ “ಠನ್” (೪-೨-೧೧೫)।

ಸ್ಥಾನಿನ್ ಸ್ಥಾನಿನ್ (ವಿಂ) ಸ್ಥಾನವಿಶಿಷ್ಟವಾದ, ಸ್ಥಾನದ  
ಧರ್ಮಹೊಂದಿರುವ. ಸ್ಥಾನಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿಃ”  
(೪-೨-೧೧೫)। ಯಾವುದರ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಮತ್ತೊಂದು  
ವಿಧಿಸಲ್ಪಡುವುದೋ ಅದು ಸ್ಥಾನಿ. “ಸ್ಥಾನಿವದಾದೇಶೋಽ-  
ನಲ್ವಿಧೌ” (೧-೧-೫೬)।

ಸ್ಥಾನೀಯ ಸ್ಥಾನೀಯ (ನಂ) 1. ನಗರ, ಪಟ್ಟಣ. ಸ್ಥಾನಾಯ  
ಹಿತಮ್—ಸ್ಥಾನ “ಠಃ” (೪-೧-೫)। (ವಿಂ) 2. ಒಂದು  
ಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.

ಸ್ಥಾನೇ ಸ್ಥಾನೇ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಯುಕ್ತ, ನ್ಯಾಯ, ಸರಿ.  
“ಸ್ಥಾನೇ ವಿಧಿರ್ವಾ ಮದನಸ್ಯ ಸಖ್ಯಂ ಸ ಶಮ್ಭುನೇತ್ರೇ ಜ್ವಲತಿ  
ಪ್ರಲೀನಃ” ನೈಷಂ ೨೨-೮೭। 2. ಕಾರಣ. 3. ಇನ್ನೊಂದರ  
ಜಾಗದಲ್ಲಿ. “ವಾತೋಃ ಸ್ಥಾನ ಇವಾದೇಶ ಸುಗ್ರೀವಂ ಸಂಯವೇಶಯತ್”  
ರಘುಂ ೧೨-೫೮। 4. ಸಾದೃಶ್ಯ. 5. ಸತ್ಯ, ನಿಜ.



ಸ್ಥಾಪಕ ಸ್ಥಾಪಕ (ವಿಂ) 1. ಸೂತ್ರಧಾರ, ರಂಗಸ್ಥಳದ ವ್ಯವಸ್ಥಾಪಕ, ರಂಗಮಂಟಪದ ಕಾರ್ಯಕಲಾಪಗಳನ್ನು ಸಜ್ಜುಗೊಳಿಸುವವನು. ಸ್ಥಾಪಯತಿ—ಛಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಣಿच् "ಫಲ್" (3-1-133). 2. ಒಂದು ಶಾಲೆ ಸಂಸ್ಥೆ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸುವವನು. 3. ದೇವಾಲಯಗಳಲ್ಲಿ ದೇವರನ್ನು ಪ್ರತಿಷ್ಠೆ ಮಾಡಿಸುವವನು.

ಸ್ಥಾಪಯ ಸ್ಥಾಪಯ (ನಂ) ಕಂಚುಕ, ರಾಜನ ಅಂತಃಪುರದ ದ್ವಾರಪಾಲಕ. ತಿಷ್ಠಂತ್ಯೇ ಪುರುಷಾಃ—ಛಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕಃ" (ವಾಂ 3-3-44). ಸ್ಥಾನಾ ದಾರಾಣಾಂ ಪತಯಃ ಪಾಲಕಾಃ ಸ್ಥಪತಯಃ—ಸ್ಥಪತಯ ಏವ—ಸ್ವಾರ್ಥ "ಽಽಃ" (4-1-124). "ಸ್ಥಾಪಯಂತೆ ಸಮ ವಿದ್ವಂತೇ ವರ್ಷಾಸ್ವಕಲ-ತರೇಃ" ನೆಪಂ 20-132.

ಸ್ಥಾಪನ ಸ್ಥಾಪನ (ನಂ) 1. ಪುಂಸವನ, ಗರ್ಭಿಣಿಸ್ತ್ರೀಗೆ ಪುತ್ರಸಂತಾನದ ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ನಡೆಸುವ ಒಂದು ಸಂಸ್ಕಾರ. 2. ಸರಿಯಾಗಿ ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಿಸಿ ನೆಟ್ಟಿಗೆ ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು. 3. ಸಮಾಧಿ, ಮನಸ್ಸನ್ನು ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲಿಸುವುದು, ಬಾಹ್ಯವಸ್ತುಗಳಿಂದ ಹಿಂತಿರುಗಿಸಿ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಧೈಯದೊಡನೆ ಸೇರಿಸುವುದು. ಛಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). "ಸ್ಥಾಪನಂ ರೋಪಣಂ ಪುಂಸವನೇ" ಮೇದಿಂ. 4. ಇಡುವುದು, ಇರಿಸುವುದು. "ನೂನಮಸ್ಯ ಮಣಿಭೂತಾ ಸಹ ಸ್ಥಾಪನಂ ನಿಜನಿವೇಶನಿಕುಟೇ" ಯಾದಂ 13-40.

ಸ್ಥಾಪನಾ ಸ್ಥಾಪನಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಇರಿಸುವುದು. ಛಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಣಿच् "ಯುಕ್" (3-3-103). 2. ರಂಗಸ್ಥಳದ ಯಾಜಮಾನ್ಯ. 3. ಪ್ರತಿಷ್ಠಿಸುವುದು.

ಸ್ಥಾಪನೀ ಸ್ಥಾಪನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಗುರುಶುಂಠಿ. ಸ್ಥಾಪಯತೀ-ನಯಾ—ಛಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಣಿच् "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114). "ಛೀಪ್" (4-1-14). "ಪಾಠಾಂವಿಷ್ಠಾ ವಿದ್ವಕರ್ಣಿ ಸ್ಥಾಪನೀ ಶ್ರೇಯಸೀ ರಸಾ" ಅಮಂ.

ಸ್ಥಾಪನೀಯ ಸ್ಥಾಪನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಥಾಪಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಸ್ಥಾಪಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಸ್ಥಾಪಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. 4. ಸ್ಥಾಪಿಸಲು ಶಕ್ತವಾದ. ಛಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಣಿच् "ಅನೀಯರ್" (3-1-94). 5. ಇರಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ಇರಿಸಬೇಕಾದ. 7. ಇರಿಸಬಹುದಾದ. 8. ಇರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ.

ಸ್ಥಾಪಯತ್ ಸ್ಥಾಪಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಇರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಛಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಣಿच् "ಶತ್" (3-2-124). 2. ಸಂಸ್ಥೆ ಶಾಲೆ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸುತ್ತಿರುವ.

3. ಇನ್ನೊಂದರೊಡನೆ ಸೇರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್" (4-1-6). -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

ಸ್ಥಾಪಿತ ಸ್ಥಾಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಥಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಛಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಣಿच् "ಕಃ" (3-2-102). "ಸ್ಥಾಪಿತಾಮುಪರಿ ಸ್ವಸ್ಯ ತಾಂ ಹೃದಾ ಸ ಮುದಾ ವಹನ್" ನೆಪಂ 20-144. 3. ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಟ್ಟ (ಶಾಲೆ ಸಂಸ್ಥೆ ಮೊದಲಾದವು). 4. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಇನ್ನೊಂದರಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಲೋಕಶ್ರೇಷ್ಠೇ ಗುಣವತಿ ವರೇ ಸ್ಥಾಪಿತಾ ತ್ವಂ ಮಯೇವ" ಮಾಲತೀಂ 10-4.

ಸ್ಥಾಪ್ಯ ಸ್ಥಾಪ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಇಡಲ್ಪಡುವ, ಇರಿಸಲ್ಪಡುವ. ಛಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) + ಣಿच् "ಯತ್" (3-1-93). 2. ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲ್ಪಡುವ (ಶಾಲೆ ಸಂಸ್ಥೆ ಮೊದಲಾದವು).

ಸ್ಥಾಮನ್ ಸ್ಥಾಮನ್ (ನಂ) 1. ಶಕ್ತಿ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಬಲ. ತಿಷ್ಠಂತ್ಯೇನ—ಛಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಮನಿನ್" (3-4-144). 2. ನಾದ, ಧ್ವನಿ. ಅಶ್ವತ್ಥಾಮನು ಜನಿಸಿದಾಗ ಕುದುರೆಯಂತೆ ಕೂಗಿದುದರಿಂದ ಅವನಿಗೆ ಈ ಹೆಸರಾಯಿತು. ಅಶ್ವಸ್ಯೇವ ಸ್ಥಾಮ ನಾದಃ ಸ್ಯಾತ್. ಈ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಅವನಿಗೆ ಈ ಹೆಸರುಂಟಾಯಿತು. "ಸ ಜಾತಮಾತ್ರೋ ವ್ಯನದದ್ವಯೇವೋಚ್ಚೇಶ್ವರಾ ಹಯಃ. ತಚ್ಚಕ್ಷುತ್ವಾಂತರಹಿತಂ ಭೂತಮಂತರೀಕ್ಷಸ್ಯಮವವೀತ್. ಅಶ್ವಸ್ಯೇವಾಸ್ಯ ಯತ್ ಸ್ಥಾಮ ನದತಃ ಪ್ರದಿಶೋ ಗತಮ್. ಅಶ್ವತ್ಥಾಮೇವ ಬಾಲೋಽಯಂ ತಸ್ಮಾನ್ನಾಸ್ತು ಮವಿಷ್ಯತಿ" ಭಾಂ ಆದಿಂ 140-49.

ಸ್ಥಾಯಿನ್ ಸ್ಥಾಯಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಅಂತಃಕರಣವೃತ್ತಿರೂಪವಾದ ರತಿ ಮೊದಲಾದ ಭಾವಗಳು. ತಿಷ್ಠತಿ—ಛಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಣಿನಿಃ" (3-2-64). ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿರೂಪವಾದ ಈ ಭಾವವು ವಿನಾಶಹೊಂದುವ ಸ್ವಭಾವದ್ದಾಗಿದ್ದರೂ ಚಿರಕಾಲ ಇರುವುದರಿಂದಲೂ ರಸಪ್ರೀತಿಯ ಕಾಲದವರೆಗೂ ಅನುಸಂಧಾನಮಾಡುವುದರಿಂದಲೂ ಇದು ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ. ಇದು ವಿರುದ್ಧ ಮತ್ತು ಅವಿರುದ್ಧವಾದ ಯಾವ ಭಾವಗಳಿಂದಲೂ ವಿಚ್ಛಿತ್ತಿಹೊಂದುವುದಿಲ್ಲವಾದುದರಿಂದಲೂ ಇತರ ಭಾವಗಳನ್ನು ತನಗೆ ಉಪಪ್ಪಂಭಕ (ಪೋಷಕ) ವಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದರಿಂದಲೂ ಇದು ಸ್ಥಾಯಿಭಾವವಾಯಿತು. "ಅವಿರುದ್ಧಾ ವಿರುದ್ಧಾ ವಾ ಯಂ ತಿರೋಧಾತುಮಕ್ಷಮಾಃ. ಅಸ್ವಾಧಾತ್ಮಕುರಕಂದೋಽಸೌ ಭಾವಃ ಸ್ಥಾಯೀತಿ ಸಮ್ಮತಃ" ಸಾಂ 40-3-194. "ಛಕ್ಸುತ್ವತ್ಯಾ ಭಾವಾನಾಮನ್ಯೇಷಾಮನುಗಾಮಕಃ. ನ ತಿರೋಧೀಯತೇ ಸ್ಥಾಯೀ ತೇರಸೌ ಪುಷ್ಯತೇ ಪರಮ್" || "ಚಿರಂ ವಿದ್ವಂತಿಷ್ಠಂತೇ ಸಮ್ಬಂಧಂತೇ-ನುಬಂಧಿಭಿಃ. ರಸತ್ವಂ ಯೇ ಪ್ರಪದಂತೇ ಪ್ರಸಿದ್ಧಾಃ ಸ್ಥಾಯಿನೋಽಸ್ಮಿನ್" || ಪ್ರಜೆಗಳಿಗೆ ರಾಜನಂತೆಯೂ ಶಿಷ್ಯರಿಗೆ ಗುರುವೆ



ನಂತೆಯೂ ಈ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವವು ಎಲ್ಲಾ ಭಾವಗಳಿಗೂ ಪ್ರಧಾನವಾಗಿರುವುದು. “ಯಥಾ ನರಾಣಾಂ ನೃಪತಿಃ ಶಿಷ್ಯಾಣಾಂ ಚ ಯಥಾ ಗುರುಃ। एवं ಹಿ ಸರ್ವಭಾವಾನಾಂ ಭಾವಃ ಸ್ಥಾಯಿ ಮಹಾನಿಹ” ನಾಟಕಶಾಸ್ತ್ರಮ್। ಸ್ಥಾಯಿಭಾವವು (1) ರತಿಃ (2) ಹಾಸಃ (3) ಶೌಕಃ (4) ಕ್ರೋಧಃ (5) ಉತ್ಸಾಹಃ (6) ಭಯಮ್ (7) ಜುಗುಪ್ಸಾ (8) ವಿಸ್ಮಯಃ ಎಂದು ಎಂಟು ವಿಧ. ಶಮಃ ಎಂದು ಒಂಬತ್ತನೆಯ ಭಾವವನ್ನೂ ಕೆಲವರು ಅಂಗೀಕರಿಸುತ್ತಾರೆ. “ರತಿಹಾಸಶ್ರೀ ಶೌಕಶ್ರೀ ಕ್ರೋಧೋತ್ಸಾಹೋ ಭಯಃ ತಥಾ। ಜುಗುಪ್ಸಾ ವಿಸ್ಮಯಃ ಕೇವಲಮಷ್ಟೌ ಪ್ರೋಕ್ತಾಃ ಶಮೋಽಪಿ ಚ” ಸಾಂ ೧೦ ೩-೧೭೫। “ಸ್ಥಾಯಿನೋಽರ್ಥೇ ಪ್ರವರ್ತಂತೇ ಭಾವಾಃ ಸಂಚಾರಿಣೋ ಯಥಾ। ರಸಸ್ಯೈಕಸ್ಯ ಭೂತಾಃ ತಥಾ ನೇತುರ್ಮಹಿ-ಭೂತಃ” ಮಾಘಂ ೨-೮೭। (1) ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ಪರಸ್ಪರ ಪ್ರೇಮರೂಪವಾದ ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿಯು ರತಿಃ ಇದು ಶೃಂಗಾರರಸದ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ. (2) ಮಾತು ಅಂಗಳ ವಿಹಾರದರ್ಶನದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಚಿತ್ತವಿಕಾಸವು ಹಾಸಃ ಇದು ಹಾಸ್ಯರಸದ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ. (3) ಪುತ್ರಮಿತ್ರಾದಿ ವಿಯೋಗ ಮತ್ತು ಇಷ್ಟವಸ್ತುವಿನಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಚಿತ್ತವೈಕ್ಲವ್ಯವು ಶೌಕಃ ಇದು ಕರುಣರಸದ ಸ್ಥಾಯಿ ಭಾವ. (4) ಗುರು ಬಂಧುಗಳು ಮೊದಲಾದವರಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಅವರಾಧದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ರಜೋಗುಣವು ಕ್ರೋಧವಾಗಿ ಪರಿಣಮಿಸುವುದು ಇದು ರೌದ್ರರಸದ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ. (5) ಶತ್ರುವಿನ ಪರಾಕ್ರಮ ಇತರರ ಔದಾರ್ಯಾತಿಶಯ ಇವುಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಚಿತ್ತ ವೃತ್ತಿಯು ಔನ್ನತ್ಯವು ಉತ್ಸಾಹ ಇದು ವೀರರಸದ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ. (6) ವ್ಯಾಘ್ರ ಮೊದಲಾದ ದುಷ್ಟ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ದರ್ಶನದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಚಿತ್ತವೈಕ್ಲವ್ಯವು ಭಯಃ ಇದು ಭಯಾನಕರಸದ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ. (7) ಅಸಹ್ಯವಸ್ತು ದರ್ಶನದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ವಿಚಿತ್ತಾರೂಪ ಚಿತ್ತ ವೃತ್ತಿಯು ಜುಗುಪ್ಸೆ ಇದು ಜೀವತ್ಸರಸದ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ. (8) ಅಲೌಕಿಕವಸ್ತುದರ್ಶನದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಆಶ್ಚರ್ಯವು ವಿಸ್ಮಯಃ ಇದು ಆದ್ಭುತರಸದ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ. (9) ಸಕಲ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲೂ ನೈಸ್ಪೃಹ್ಯಹೊಂದಿ ಪರಮಾತ್ಮನ ಧ್ಯಾನ ದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಸೌಖ್ಯವು ಶಮಃ ಇದು ಶಾಂತರಸದ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ. (ವಿಂ) 2. ಸ್ಥಿರವಾದ, ಚಿರಕಾಲವಿರುವ. 3. ಇರುವ, ನಿಂತಿರುವ, ಉಳಿದಿರುವ, ವಾಸಮಾಡಲು ಬಂದು ಸೇರಿರುವ. “ಸಂಪ್ರಸ್ಯಂತೇ ಕತಿಪಯದಿನಸ್ಥಾಯಿಹಂಸಾ ದಕ್ಷಾಣಿಃ” ಮೇಘಂ ೧-೨೩। ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಜೀವ್” (೪-೧-೧೫)। ಸ್ಥಾಯಿನಿ ಸ್ಥಾಯಿನೀ. “ಮದಕುಚಿಮಣೀನೋದ್ಗಚ್ಛತಾ ಲಿಂಗಿ-ತಸ್ಯ ತ್ಯಜತ ಇವ ಚಿರಾಯ ಸ್ಥಾಯಿನಿಮಾಶು ಲಜ್ಜಾಮ್” ಮಾಘಂ ೧೧-೧೬।

ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ (ಪುಂ) “ಸ್ಥಾಯಿನ್” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಸ್ಥಾಯುಕ ಸ್ಥಾಯುಕ (ಪುಂ) 1. ಗ್ರಾಮಾಧಿಪತಿ, ಒಂದು ಗ್ರಾಮದ ಯಜಮಾನ. ಸ್ಥಾತುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ — ಷಾ (ಗತಿ-ನಿವೃತ್ತಿ) “ಉಕ್ವ” (೩-೨-೧೫೪)। “ಸ್ಥಾಯುಕೋ-ಧಿಕೃತೋ ಗ್ರಾಮೇ” ಅಮಂ। (ವಿಂ) 2. ಇರುವ ಸ್ಥಾಯವದ, ನಿಲ್ಲುವ ಸ್ಥಾಯವದ. “ಆಯೋಧನೇ ಸ್ಥಾಯುಕಮನ್ವಜಾತಮಮೌಘ-ಮನ್ಯರ್ಣಮಹಾಹವಾಯ” ಯಾದಂ ೨-೨೨।

ಸ್ಥಾಲ ಸ್ಥಾಲ (ನಂ) 1. ದಂತಮೂಲದ ಅಸ್ಥಿ. ಸ್ಥಾಲತಿ ತಿಷ್ಠತ್ಯನ್ವಾದಿಕಮತ್ರ—ಠಲ (ಸ್ಥಿತಿಯ) “ವತ್” (೩-೩-೧೨೧)। “ಸ್ಥಾಲಃ ಸಹ ಚತುಃಪೃಷ್ಠಿದಂತಾ ವೈ ವಿಂಶತಿರ್ನಿಷ್ಠಾಃ” ಯಾಜ್ಞಂ ೩-೮೫। 2. ಲೋಹದ ಭೋಜನ ಪಾತ್ರೆ.

ಸ್ಥಾಲಿ ಸ್ಥಾಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಡಿಗೆಯ ಪಾತ್ರೆ, ಅನ್ನ ಮೊದಲಾದವನ್ನು ಬೇಯಿಸುವ ಪಾತ್ರೆ. ತಿಷ್ಠತ್ಯನ್ವಾದಿನಾದಿ — ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) “ಆಲವ್” (೩-೧-೧೧೩)। “ಜೀವ್” (೪-೧-೬೩)। “ಪಿಠರಃ ಸ್ಥಾಲ್ಯುಕ್ತಾ ಕುಂಡಮ್” ಅಮಂ। “ಸ್ಥಾಲ್ಯಾ ವೈದ್ಯಮಯ್ಯಾಂ ಪಚತಿ ತಿಲಕ್ಷಲಂ ಚಾಂದನ-ರಿನ್ಧನಿಃ ಸೌವರ್ಣಲಾಙ್ಗಲಾಗ್ನಿವಿಲಿಕ್ಷತಿ ವಸುಧಾಮಕಂತುಲಸ್ಯ ಹೇತುಃ। ಛಿತ್ವಾ ಕರ್ಪೂರಖಂಡಾನ್ ವೃತ್ತಿಮಿಹ ಕುರತೇ ಕೋದ್ರವಾಣಾಂ ಸಮಂತಾತ್ಪ್ರಾಪ್ಯಮಾಂ ಕಮಂಭೂಮಿ ನ ಭಜತಿ ಮನುಜೋ ಯಸ್ತಪೋ ಮಂದಭಾಗ್ಯಃ” ಮತ್ಯಂ ೧-೧೬। 2. ಹಸಿರು ಪಾದರಿ. “ಸ್ಥಾಲಂ ಭಾಜನಭೇದೇಽಪಿ ಸ್ಥಾಲಿ ಸ್ಯಾತ್ ಪಾಟಲೋಪಯೋಃ” ಮೇದಿಂ।

ಸ್ಥಾಲಿಪುಲಾಕ ಸ್ಥಾಲೀಪುಲಾಕ (ಪುಂ) ಸ್ಥಾಲಿಯಲ್ಲಿರುವ ಅನ್ನದ ಅಗಲು. ಸ್ಥಾಲೀಸ್ಥಃ ಪುಲಾಕಃ।

ಸ್ಥಾಲಿಪುಲಾಕನ್ಯಾಯ ಸ್ಥಾಲೀಪುಲಾಕನ್ಯಾಯ (ಪುಂ) ಸ್ಥಾಲೀಪುಲಾಕವೆಂಬ ಒಂದು ನ್ಯಾಯ. ಸ್ಥಾಲಿಯಲ್ಲಿರುವ ಅನ್ನದಲ್ಲಿ ಪಕ್ವವಾದ ಒಂದು ಪುಲಾಕವನ್ನು ನೋಡಿ ಅದರಂತೆಯೇ ಎಲ್ಲವೂ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪಕ್ವವಾಗಿರುವುದೆಂದು ತಿಳಿಯುವಂತೆ ಒಂದು ಸಮೂಹದಲ್ಲಿ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಒಂದು ಭಾಗವನ್ನು ನೋಡಿ ಅದರಂತೆಯೇ ಎಲ್ಲವೂ ಸಮೀಚೀನ ವಾಗಿರುವುದೆಂದು ತಿಳಿಯುವ ಒಂದು ನ್ಯಾಯ. ಸ್ಥಾಲೀಸ್ಥಃ ಪುಲಾಕೋ ಭಕ್ತಗುಲಿಕಾ ಯತ್ರ।

ಸ್ಥಾಲಿಬಿಲ ಸ್ಥಾಲೀಬಿಲ (ನಂ) ಅಡಿಗೆಯ ಪಾತ್ರದ ಒಳ (ಅಕಾಶ) ಭಾಗ. ಸ್ಥಾಲ್ಯಾ ಬಿಲಮ್।

ಸ್ಥಾಲಿಬಿಲಿಯ ಸ್ಥಾಲೀಬಿಲೀಯ (ಪುಂ) ಅಡಿಗೆ ಯೋಗ್ಯ ವಾದ ಅಕ್ಕಿ ಮೊದಲಾದುದು. ಸ್ಥಾಲಿಬಿಲಮಹಂತಿ — ಸ್ಥಾಲಿಬಿಲ “ಛಃ” (೫-೧-೭೦)। “ಯತ್” ಚ। ಸ್ಥಾಲಿಬಿಲಿಯಃ ಸ್ಥಾಲೀಬಿಲೀಯಃ।



ಸ್ಯಾವರ ಸ್ಥಾವರ (ಪುಂ) 1. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ಒಂದೇ ಕಡೆ ಇರುವ ಸ್ವಭಾವದ ಪರ್ವತ ವೃಕ್ಷ ಲತೆ ಮೊದಲಾದವು. ಚಲಿಸುವ (ಸಂಚರಿಸುವ) ಸ್ವಭಾವದ ಗೋವು ಆಶ್ವ ಗಜ ಮಹಿಷ ಮೊದಲಾದ ಪ್ರಾಣಿಗಳಿಗಿಂತ ಇವು ಭಿನ್ನವಾದವು. ಷಾ (ಗತಿनिवृत्ती) "वरच्" (३-२-१७५)। "यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः" ಗೀತಾ १०-२५। "मान्यः स मे स्थावरजङ्गमानां सर्गस्थितिप्रत्यवहारहेतुः" ರಘುಂ २-४४। (ನಂ) 2. ಸ್ಥಿರವಾದ ಆಸ್ತಿ, ಗೃಹ ಕ್ಷೇತ್ರ ಮೊದಲಾದವು. ಸ್ಥಿರವಾದ ಆಸ್ತಿಯನ್ನು ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವವರನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬೇರೊಬ್ಬರಿಗೆ ಮಾರಕೂಡದು. "स्थावरं धनमन्यस्मै स्थिते सान्निध्यवर्तिनि। योग्ये क्षेत्रे विक्रेतुं न शक्तः स्थावराधिपः"। (ವಿಂ) 3. ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವ, ಶಾಶ್ವತವಾಗಿರುವ. "रोदोरुध्रं व्यश्रुवानानि लोलैरङ्गस्यान्तर्मपितैः स्थावराणि" ಮಾಘಂ १८-१५। 4. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ಒಂದೇ ಕಡೆ ನಿಂತಿರುವ. "काठिन्यं स्थावरे काये भवता सर्वमपितम्। इदं तु ते भक्तिनम्रं सतामाराधनं वपुः" ಕುಮಾಂ ६-७३। 5. ಸ್ಥಾವರ ವಿಷ. ವಿಷವು ಸ್ಥಾವರ ಮತ್ತು ಜಂಗಮ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. ಸ್ಥಾವರ ವಿಷವು ಬೇರು ಎಲೆ ಫಲ ಪುಷ್ಪ ತ್ಯಕ್ತ (ತೊಗಟೆ) ಗಿಡದ ಹಾಲು ರಸ ಸಾರ ಧಾತು ಮತ್ತು ಗೆಡ್ಡೆ ಇವುಗಳಲ್ಲಿರುವುದು. "स्थावरं जङ्गमं चैव द्विविधं विषमुच्यते। दशाधिष्ठानमाद्यं तु द्वितीयं षोडशाश्रयम्॥ मूलं पत्रं फलं पुष्पं त्वक् क्षीरं सार एव च। निर्यासो घातवश्चैव कन्दश्च दशमः स्मृतः" ಸುಶ್ರುತಂ ಕಲ್ಪಂ २-४। ಈ ಸ್ಥಾವರ ವಿಷವು ಐವತ್ತೈದು ವಿಧ. "इत्येवं पञ्चपञ्चाशत् स्थावरविषाणि भवन्ति" ಸುಶ್ರುತಂ ಕಲ್ಪಂ २-५।

ಸ್ಥಾವರಾದಿ ಸ್ಥಾವರಾದಿ (ನಂ) ವತ್ಸನಾಭವೆಂಬ ವಿಷ. ಸ್ಥಾವರಮ್ ಆದಿ: ಕಾರಣಂ ಯಸ್ಯ।

ಸ್ಥಾವಿರ ಸ್ಥಾವಿರ (ನಂ) ಸ್ಥವಿರತ್ವ, ಮುದಿತನ, ಮುದುಕ ನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಸ್ಥಾವಿರಸ್ಯ ಭಾವ: "अण्" (५-१-१३०)। "गाहस्थ्येऽप्यथवा बाल्ये यौवने स्थाविरेऽपि वा। यथा फलं समश्नाति तथा त्वं कथयस्व मे" ಮಾಂ।

ಸ್ಥಾಸಕ ಸ್ಥಾಸಕ (ಪುಂ) 1. ಮೈಗೆ ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯಗಳನ್ನು ಬಳಿಯುವುದು. ತಿಷ್ಠತಿ — ಷಾ (ಗತಿनिवृत्ती) "सः" बाहु०। ಸ್ವಾತ್ "कन्" (५-४-५)। 2. ಜಲ ಮದ್ಯ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ನೊರೆಯ ಆಕಾರದಲ್ಲಿ ಬರೆಯುವ ಮಂಡಲ, ಬುದ್ಬದಾಕಾರದ ಮಂಡಲ. "रौक्मा रेजुः स्थासकः मूर्तिभाजो दर्पस्येव व्याप्तदेहस्य शेषाः" ಮಾಘಂ १८-५।

ಸ್ಥಾಸ್ತು ಸ್ಥಾಸ್ತು (ವಿಂ) 1. ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಹೆಚ್ಚು ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವ. ತಿಷ್ಠತಿ — ಷಾ (ಗತಿनिवृत्ती) "कन्" (३-२-१३९)। "षाड्गुण्यमुपयुञ्जीत शक्यपेक्षो रसायनम्। भवन्त्यस्यैवमङ्गानि स्थास्ತುनि बलवन्ति च" ಮಾಘಂ २-९३। 2. ಶಾಶ್ವತವಾದ, ಎಂದೆಂದಿಗೂ ಇರುವ. "अभिमानघनस्य गत्वरैरसुभिः स्थास्ತु यशश्चिवीषतः। अचिरांशुविलासचञ्चला ननु लक्ष्मीः फलमानुषङ्गिकम्" ಕಿರಾಂ २-१९। 3. ಸ್ಥಾವರ, ವೃಕ್ಷ ಮೊದಲಾದುದು. "यदाणुमात्रिको भूत्वा बीजं स्थास्ತु चरिणु च। समाविशति संसृष्टस्तदा मूर्ति विमुञ्चति" ಮನುಂ १-५६।

ಸ್ಥಿತ ಸ್ಥಿತ (ವಿಂ) 1. ಚಲಿಸದೆ ನಿಂತಿರುವ, ನಿಂತಲ್ಲಿಯೇ ನಿಂತಿರುವ. ಷಾ (ಗತಿनिवृत्ती) ಕತಂ "कः" (३-४-७२)। "स्थितः स्थितामुच्चलितः प्रयातां निषेदुषीमासनबन्ध-धीरः" ರಘುಂ २-६। 2. ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವ, ನೆಲಸಿರುವ. "ममात्र भावैकरसं मनः स्थितं न कामवृत्तिर्वचनीय-मीक्षते" ಕುಮಾಂ ५-८२। 3. ನೆಲೆಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವ, ಸ್ಥಾನವನ್ನು ಪಡೆದಿರುವ. "धन्या केयं स्थिता ते शिरसि शशिकला किं नु नामैतदस्याः नामैवास्यास्तदेतत्परिचित-मपि ते विस्मृतं कस्य हेतोः" ಮುದ್ರಾಂ १-१। 4. ಇರುವ, ಕುಳಿತಿರುವ. "मृणालसूत्रामलमन्तरेण स्थितश्चलच्चा-मरयोद्वयं सः" ಮಾಘಂ ३-३। 5. ಉನ್ನತವಾದ, ಎತ್ತರವಾದ. 6. ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಗೆ ಬದ್ಧನಾಗಿರುವ. "स्थितं प्रतिज्ञातवति चोर्ध्वनिश्चलयोरपि" ಮೇದಿಂ। (ನಂ) 7. ಇರುವಿಕೆ. ಷಾ ಭಾವೇ "कः" (३-३-११४)। "प्रियतमेन यथा सख्या स्थितं न सह सा सहसा परिरम्य तम्" ಮಾಘಂ ६-५७।

ಸ್ಥಿತಧಿ ಸ್ಥಿತಧೀ (ವಿಂ) ಸ್ಥಿತಪ್ರಜ್ಞ, ದುಃಖಕ್ಕೆ ಎಷ್ಟೇ ಕಾರಣಗಳಿದ್ದರೂ ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಉದ್ವೇಗವಿಲ್ಲದೆ ಸುಖ ಸಾಧನಗಳು ಸನ್ನಿಹಿತವಾಗಿದ್ದರೂ ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಕಿಂಚಿತ್ತೂ ಆಸೆಯಿಲ್ಲದೆ ರಾಗ ಭಯ ಕ್ರೋಧಗಳನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿ ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲೇ ನೆಟ್ಟಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು. ಸ್ಥಿತಾ ಪರಮಾ-ತ್ಮನಿ ಪ್ರತಿಠಿತಾ ಧಿ: ಯಸ್ಯ। "दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः। वीतरागभयक्रोधःस्थितधीर्मुनि-रुच्यते" ಗೀತಾ २-५६।

ಸ್ಥಿತಪ್ರಜ್ಞ ಸ್ಥಿತಪ್ರಜ್ಞ (ವಿಂ) ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನೇ ಧ್ಯಾನಿಸುತ್ತ ಆದರಿಂದ ಸಂತೋಷಗೊಂಡು ವ್ಯತಿರಿಕ್ತ ವಾದ ಸಕಲ ಕಾಮನೆಗಳನ್ನೂ ತ್ಯಜಿಸಿದವನು. ಸ್ಥಿತಾ



ಪರಮಾತ್ಮನಿ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಾ ಪ್ರಜಾ ಯಸ್ಯ । “ಪ್ರಜಹಾತಿ ಯದಾ  
ಕಾಮಾನ್ ಸರ್ವಾನಿ ಪಾಥಂ ಮನೋಗತಾನ್ । ಆತ್ಮನೈವಾತ್ಮನಾ ತುಷ್ಠಃ  
ಸ್ಥಿತಪ್ರಜಸ್ತದೋಚ್ಯತೇ” ಗೀತಾ ೨-೫೫ ।

ಸ್ಥಿತವತ್ ಸ್ಥಿತಿವತ್ (ವಿಂ) 1. ನಿಂತಿರುವವನು. ಷಾ  
(ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) “ಕ್ತುಃ” (೩-೪-೭೨) । 2. ಇರುವವನು,  
ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವವನು. “ಇತ್ಯುದೀರಿತಗಿರಂ ನೃಪಸ್ತ್ವಯಿ ಶ್ರೇಯಸಿ  
ಸ್ಥಿತವತಿ ಸ್ಥಿರಾ ಮಮ” ಮಾಧಂ ೧೪-೧೭ । 3. ನೆಲೆ  
ಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವವನು, ಸ್ಥಾನವನ್ನು ಪಡೆದಿರುವವನು.  
4. ಕುಳಿತಿರುವವನು.

ಸ್ಥಿತಿ ಸ್ಥಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅವಸ್ಥಾನ, ಇರುವಿಕೆ. ಷಾ  
(ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೫) । “ರಕ್ತೋಗೃಹಸ್ಥಿತಿ-  
ಮೂಲಮಗ್ನಿಶುದ್ಧಿವಿನಿಶ್ಚಯಃ” ಉಂ ರಾಂ ೧-೬ । 2. ಚಲಿಸದೆ  
ನಿಲ್ಲುವುದು. “ಪ್ರಸ್ಥಿತಾಃ ಪ್ರತಿಷ್ಠೇಃ ಸ್ಥಿತಾಃ ಸ್ಥಿತಿ-  
ಮಾಚರೇ” ರಘುಂ ೧-೮೯ । 3. ಸ್ಥಿರತೆ, ಸ್ಥಿರವಾಗಿರುವಿಕೆ.  
“ಸ ಮಾನಸೀ ಮೇಹಸಕ್ತಃ ಪಿತುಣಾಂ ಕನ್ಯಾಂ ಕುಲಸ್ಯ ಸ್ಥಿತಯೇ  
ಸ್ಥಿತಿಸ್ತುಃ” ಕುಮಾರಂ ೧-೧೮ । 4. ಸ್ವಭಾವ, ಪ್ರಕೃತಿ,  
ಹುಟ್ಟುಗೂಡು. “ದೇವ, ನ ಶಕ್ತಾಸ್ಪದಮೇತತ್ । ಯತೋಸ್ತೌ  
ಮಹಾಶಯೋ ದೂರದರ್ಶಿಃ । ಅಥವಾ ಸ್ಥಿತೀರಿಯಂ ಮಂದಮತೀನಾಮ್”  
ಹಿತೋಂ ೪ । 5. ಜೀವನೋಪಾಯ. “ಜಗದಾರ್ಥೇನೈವ  
ಸಲ್ಲಕೀಕಿಸಲಯೇರಸ್ಯಾಃ ಸ್ಥಿತಿ ಕಲ್ಪಯನ್” ಮಾಲತೀಂ  
೧-೩೨ । 6. ಮರ್ಯಾದೆ, ಗೌರವ, ಸಭ್ಯತೆ, ವಿನಯ.  
“ಅಮಂಸ್ತ ಚಾನೇನ ಪರಾರ್ಥಜನ್ಮನಾ ಸ್ಥಿತೇರಮೇತಾ ಸ್ಥಿತೀಮಂತ-  
ಮನ್ವಯಮ್” ರಘುಂ ೩-೨೭ । 7. ಮರ್ಯಾದೆ, ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ.  
“ಸ್ಥಿತಿಃ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮವಸ್ಥಾನೇ ಮರ್ಯಾದಾಃ ಚ ಸೋಮನಿ” ಮೇದಿಂ ।  
8. ಪರಿಸ್ಥಿತಿ, ಅವಸ್ಥೆ, ಸನ್ನಿವೇಶ, ಸಂದರ್ಭ. 9. ಕುಳಿತಿರು-  
ವಿಕೆ. “ಆಸ್ಯಾತ್ವಾಸನಾ ಸ್ಥಿತಿಃ” ಅಮಂ । 10. ಪಾಲನೆ,  
ರಕ್ಷಣೆ, ಕಾಪಾಡುವುದು. “ಮಾನ್ಯಃ ಸ ಮೇ ಸ್ಥಾವರಜಙ್ಗಮಾನಾಂ  
ಸರ್ಗಸ್ಥಿತೀಪ್ರತ್ಯವಹಾರಹೇತುಃ” ರಘುಂ ೨-೪೪ । 11. ನಿಯಮ  
ಪಾಲನೆ, ಶಿಸ್ತಿನ ಪಾಲನೆ. “ಸ್ಥಿತೀ ದೃಢಯತೋ ದೃಢಯಾನ್  
ಪರಿಣೇತುಃ ಪ್ರಸೂತಯೇ । ಅಪ್ಯರ್ಥಕಾಮೋ ತಸ್ಯಾಸ್ತಾಂ ಧರ್ಮಂ ಏವ  
ಮನೀಷಿಣಃ” ರಘುಂ ೧-೨೫ । 12. ನ್ಯಾಯಪರಿಸ್ಥಿತಿ.  
13. ಶಾಸನ, ವಿಧಿ, ಕಟ್ಟಳೆ. 14. ಎಲ್ಲೆ, ಮೇರೆ,  
ಮಿತಿ. “ಚಲನ್ ಸಮುದ್ರೋಪಿ ಸಮುಜ್ಜಾತಿ ಸ್ಥಿತೀಮ್” ಮಾಧಂ  
೧೨-೩೬ । 15. ಘನತೆ, ಗಾಂಭೀರ್ಯ, ಪ್ರಾಮಾಣಿಕತೆ.

ಸ್ಥಿತೀಮತ್ ಸ್ಥಿತಿಮತ್ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಥಿರವಾದ, ಅಚಲ  
ವಾದ, ಚಿರಸ್ಥಾಯಿಯಾದ. ಸ್ಥಿತೀರಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಮತುಃ”  
(೫-೨-೯೪) । “ಅಮಂಸ್ತ ಚಾನೇನ ಪರಾರ್ಥಜನ್ಮನಾ ಸ್ಥಿತೇ-  
ರಮೇತಾ ಸ್ಥಿತೀಮಂತಮನ್ವಯಮ್” ರಘುಂ ೩-೨೭ । 2. ಶೀಲ  
ಮಂತ, ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ.

ಸ್ಥಿರ ಸ್ಥಿರ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆ. 2. ಮೋಕ್ಷ, ಮುಕ್ತಿ.  
3. ಶನಿಗ್ರಹ. 4. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು. 5. ವೃಕ್ಷ.  
6. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪಟ್ಟಾಬಿ, 7. ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ.  
8. (ಜ್ಯೋತಿಷದಲ್ಲಿ) ವೃಷಭ ಸಿಂಹ ವೃಶ್ಚಿಕ ಮತ್ತು  
ಕುಂಭರಾಶಿಗಳು. “ಚರಸ್ಥಿರದ್ವಯಾತ್ಮಕನಾಮಧೇಯಾ ಮೇಘಾ-  
ದಯೋಮಿ ಕ್ರಮಶಃ ಪ್ರದಿಷ್ಟಾಃ” । (ವಿಂ) 9. ಶಾಶ್ವತ  
ವಾದ, ಅಲುಗಾಡದಿರುವ, ಅಚಲವಾದ. ಷಾ (ಗತಿ-  
ನಿವೃತ್ತಿ) “ಕಿರವ್” ಟಿಲೋಪಶ್ಚ ನಿಪಾಂ (೩ಂ ೧-೫೩) ।  
“ಇತ್ಯುದೀರಿತಗಿರಂ ನೃಪಸ್ತ್ವಯಿ ಶ್ರೇಯಸಿ ಸ್ಥಿತವತಿ ಸ್ಥಿರಾ  
ಮಮ” ಮಾಧಂ ೧೪-೧೭ । 10. ಶಾಶ್ವತವಾದ, ಎಂದೆಂದಿಗೂ  
ನಾಶವಿಲ್ಲದೆ ಇರುವ. “ಜಗದೇಕಪತೇರಮುಖ್ಯಾ ಪೂಜಾ ಸ್ಥಿರ-  
ಧರ್ಮದ್ರುಮಮೂಲಸೇಕರೂಪಾಮ್” ಯಾದಂ ೧೫-೩೮ । 11. ಪ್ರಾಮಾ-  
ಣಿಕ, ನಂಬಿಕೆಗೆ ಅರ್ಹನಾದವನು. 12. ಗುಣಶಾಲಿ,  
ಒಳ್ಳೆಯ ಸ್ವಭಾವದವನು. 13. ಕಠಿಣಹೃದಯವುಳ್ಳ  
ವನು. “ಅಹೋ ಸ್ಥಿರಃ ಕೋಽಪಿ ತವೇಪ್ಸಿತೋ ಯುವಾ ಚಿರಾಯ  
ಕರ್ಣೋತ್ಪಲಶೂನ್ಯತಾಂ ಗತೇ । ತಪೇಕ್ಷತೇ ಯಃ ಕಲ್ಪಯತುಃ ಸ್ವಿನಿಜಂತಾಃ  
ಕಪಾಲದೇಶೋ ಕಲಮಾಗ್ರಪಿಙ್ಗಲಾಃ” ಕುಮಾರಂ ೫-೪೭ । 14.  
ದೃಢವಾದ, ನಿಶ್ಚಲವಾದ, ಭದ್ರವಾದ. “ಅಧಿಕಾರ-  
ವಿಲಿಖಿತಾ ಪವಗಂಸ್ಥಿರಸಙ್ಗಾದಪಕೌತುಕಸ್ವಿವಗಂ” ಯಾದಂ  
೧೫-೭ । 15. ಚಲಿಸದೆ ಇರುವ, ಒಂದೇ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿರುವ,  
ಸ್ಥಾವರ. “ಸ್ಥಿರವಸವಿಭಕ್ತಂ ತೇ ಚಿದಾಚಿದ್ವೇದಚಿತ್ರತಮ್ ।  
ಸ್ವಸೃಷ್ಟಿಮಿದಮುಪಾನ್ ತ್ವದನ್ಯೋ ನಾಸ್ತಿ ರಕ್ಷಿತುಮ್” ಯಾದಂ  
೧೬-೧೧೬ । 16. ಸ್ಥಿರವಾದ ವಸ್ತುಗಳು :—ಧರ್ಮ  
ಅಧರ್ಮ ಸತ್ಪುರುಷರ ಬುದ್ಧಿ ಪಾಪವ್ರತ ಕೀರ್ತಿ ಇತ್ಯಾದಿ.  
ಅಸ್ಥಿರವಾದ ವಸ್ತುಗಳು :—ಯೌವನ ಧನ (ಪಶ್ಚಾದ್ಯಂ)  
ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಜೀವಿತ ಇತ್ಯಾದಿ. ಪುತ್ರಕಳತ್ರಾದಿಗಳು.  
“ಅಸ್ಥಿರಂ ಜೀವಿತಂ ಲೋಕೇ ಅಸ್ಥಿರಂ ಧನಯೌವನಮ್ । ಅಸ್ಥಿರಂ  
ಪುತ್ರದಾರಾಢ್ಯಂ ಧರ್ಮಃ ಕೀರ್ತಿಯಶಃ ಸ್ಥಿರಮ್” ।

ಸ್ಥಿರಚಿತ್ತ ಸ್ಥಿರಚಿತ್ತ (ವಿಂ) ದೃಢವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳ  
ವನು. ಸ್ಥಿರಂ ಚಿತ್ತಂ ಯಸ್ಯ ।

ಸ್ಥಿರತರ ಸ್ಥಿರತರ (ವಿಂ) ಎರಡರಲ್ಲಿ ದೃಢವಾದ ಒಂದು,  
ಇಬ್ಬರಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ದೃಢವಾದ ಒಬ್ಬ. ಅನಯೋರತಿಶಯೇನಾಯಂ  
ಸ್ಥಿರಃ—ಸ್ಥಿರ “ತರಃ” (೫-೩-೫೭) ।

ಸ್ಥಿರತಾ ಸ್ಥಿರತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಎಂದೆಂದಿಗೂ ಇರುವಿಕೆ.  
ಶಾಶ್ವತವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಸ್ಥಿರಸ್ಯ ಭಾವಃ “ತಲ್” (೫-೧-೧೧೯) ।  
2. ಧೈರ್ಯ, ಸ್ಥೈರ್ಯ. “ತತ್ಪದಮಣೋನೃಪಯೋರಪರ-  
ವೃತ್ತಿ ಬಾಣಂ ಕುಃ ಸ್ಥಿರತಯಾ ವಿಹಿತಾನುಬಂಧಮ್” ಶಾಕುಂ  
೪-೧೪ । “ತ್ವಃ” (೫-೧-೧೧೯) । ಸ್ಥಿರತಾಮ್ ಸ್ಥಿರತಾಮ್.



ಸ್ಥಿರವಂಶ ಸ್ಥಿರವಂಶ (ಪುಂ) 1. ವರಾಹಾವತಾರವನ್ನೆತ್ತಿದ ಎಷ್ಟು. 2. ಸರ್ವ, ಭುಜಂಗಮ. "ಸ್ಥಿರವಂಶೋ ಮುಜ್ಜೇ ಚ ವರಾಹಾಕೃತಿಶಾಙ್ಗಿಣಿ" ಹೇಮಂ ।

ಸ್ಥಿರವಂಶ ಸ್ಥಿರವಂಶ (ವಿಂ) ನಿಶ್ಚಲವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು. ಸ್ಥಿರಾ ವೀರಸ್ಯ । "ನ ಚ ಯೋಗವಿಧೇನೇತರಃ ಸ್ಥಿರವಂಶ-ರಾಪರಮಾತ್ಮದರ್ಶನಾತ್" ರಘುಂ ೮-೨೨ ।

ಸ್ಥಿರಪುಷ್ಪ ಸ್ಥಿರಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಚಂಪಕ ವೃಕ್ಷ, ಸಂಹಿಗೆ ಮರ. ಸ್ಥಿರಾಣಿ ಪುಷ್ಪಾಣಿ ಯಸ್ಯ । 2. ವಕುಳ ವೃಕ್ಷ.

ಸ್ಥಿರಪ್ರತಿಜ್ಞ ಸ್ಥಿರಪ್ರತಿಜ್ಞ (ವಿಂ) 1. ತಾನು ಮಾಡಿದ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯಂತೆ ನಡೆಯುವವನು. 2. ಮಾಡಿದ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯಂತೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು, ಕೊಟ್ಟ ಮಾತಿಗೆ ತಪ್ಪದೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ಸ್ಥಿರಾ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ ಯಸ್ಯ ।

ಸ್ಥಿರಪ್ರತಿಬಂಧ ಸ್ಥಿರಪ್ರತಿಬಂಧ (ವಿಂ) ಶಾಶ್ವತವಾದ ಅಡಚಣೆಯುಳ್ಳ, ನಿರಂತರವಾದ ವಿಘ್ನವುಳ್ಳ. ಸ್ಥಿರಃ ಪ್ರತಿಬಂಧೋ ಯಸ್ಯ । "ಸಖೇ, ಸ್ಥಿರಪ್ರತಿಬಂಧೋ ಭವ । ಅಹಂ ತಾವತ್ ಸ್ವಾಮಿನಃ ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿಮನುವರ್ತಿಷ್ಯೇ" ಶಾಕುಂ ೨ ।

ಸ್ಥಿರಬುದ್ಧಿ ಸ್ಥಿರಬುದ್ಧಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಿಶ್ಚಲವಾದ ಬುದ್ಧಿ. ಸ್ಥಿರಾ ಬುದ್ಧಿಃ । (ವಿಂ) 2. ನಿಶ್ಚಲವಾದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು. ಸ್ಥಿರಾ ಬುದ್ಧಿರಸ್ಯ । -ಮತಿಃ-ಮತಿಃ. "ಸ್ಥಿರಮತಿಃ ಸುಮತಿಃ ಕಮನೀಯತಾಂ ಕುಶಲತಾಂ ಹಿ ನೃಣಾಮುಪಭೋಗಿತಾಮ್" ।

ಸ್ಥಿರಯೌವನ ಸ್ಥಿರಯೌವನ (ಪುಂ) 1. ಎದ್ದಾಧರ. ಸ್ಥಿರಂ ಯೌವನಂ ಯಸ್ಯ । "ವಿದ್ಯಾಧರಃ ಕಾಮರೂಪಿ ಸ್ತೇಶ್ವರಃ ಸ್ಥಿರ-ಯೌವನಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । (ನಂ) 2. ಎಂದೆಂದಿಗೂ ಶಾಶ್ವತವಾಗಿರುವ ಪ್ರಾಯ. ಸ್ಥಿರಂ ಯೌವನಮ್ । "ತಸ್ಯ ತೇ ವೈ ಫಲರಸಂ ಪಿಬಂತಃ ಪುರುಷಾಃ ಸದಾ । ಸ್ಥಿರಯೌವನಸಂಪನ್ನಾಃ ಸ್ತ್ರೀಯಶ್ಚೋತ್ಪಲಗಂಧಿಕಾಃ" ಮಾರ್ಕಂ । (ವಿಂ) 3. ಸ್ಥಿರವಾದ ಪ್ರಾಯವುಳ್ಳ, ಎಂದೆಂದಿಗೂ ಶಾಶ್ವತವಾದ ಪ್ರಾಯವುಳ್ಳ. ಸ್ಥಿರಂ ಯೌವನಂ ಯಸ್ಯ । "ಸತ್ಯಭಾಮೋತ್ತಮಾ ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಸುಖಗಾ ಸ್ಥಿರಯೌವನಾ । ಜರಾಂ ನ ಯಾಸ್ಯತಿ ವಧೂರ್ಯಾವಿತ್ವಂ ಕೃಷ್ಣ ಮಾನುಷಃ" ವಿಷ್ಣುಪುಂ ।

ಸ್ಥಿರಾ ಸ್ಥಿರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭೂಮಿ, ಪೃಥಿವಿ. ತಿಷ್ಠತಿ — ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕಿರಕ್" (೩ಂ ೧-೫೩) । ಟಿಲೋಪೋ ನಿಪಾಂ । 2. ಮೂರಲಿ ಹೊನ್ನೆ. "ಸ್ಥಿರಾ ಭೂಸಾಲ-ಪರ್ಯಾಶ್ರ" ಕೋಶಃ । "ಸಾಲಪರ್ಣಿ ಸ್ಥಿರಾ ಧ್ರುವಾ" ಅಮಂ ।

ಸ್ಥಿರಾಯು ಸ್ಥಿರಾಯು (ಪುಂ) 1. ಶಾಶ್ವತ ವೃಕ್ಷ, ಬೂರುಗದ ಮರ. (ವಿಂ) 2. ಪೂರ್ಣವಾದ ಆಯುಸ್ಸುಳ್ಳ. ಸ್ಥಿರಂ ಆಯುರಸ್ಯ । "ಏಷಿಠ ವರ್ಷಸಹಸ್ರಾಣಿ ವನೇ ಜೀವತಿ ಶಾಲ್ಮಲಿಃ" ।

ಸ್ಥಿರೀ ಸ್ಥಿರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊರೆಯನ್ನು ಹೊರುವ ಕುದುರೆ.

ಸ್ಥೂಲ ಸ್ಥೂಲ (ವಿಂ) ದೀರ್ಘವಾದ, ಉದ್ದವಾದ. "ಶುಕ್ಲೇಃ ಸತಾರೇಮ್ಕುಲೀಕೃತೇಃ ಸ್ಥೂಲೇಃ ಕುಮುದತೀನಾಂ ಕುಮುದಾಕರೇರಿವ" ಮಾಧಂ ೧೨-೪ ।

ಸ್ಥೂಣಾ ಸ್ಥೂಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮನೆಯ ಕಂಬ. ತಿಷ್ಠತಿ — ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ನಃ" ಧಾತೋಃ ಉತ್ವಂ ನಸ್ಯ ಣತ್ವಂ ಚ ನಿಪಾಂ (೩ಂ ೩-೧೫) । "ಯಾ ಕಾಚಿತ್ಸಹಸ್ರಾ ಮಹಾ ಸುರಗೃಹಸ್ಥೂಣಾ ಪಿತಾಮಹಾಭೂತ್" ದಶಾವಂ । 2. ಲೋಹದ ಪ್ರತಿಮೆ, ಲೋಹದ ವಿಗ್ರಹ. "ಸ್ಥೂಣಾ ಸ್ಥಾತ್ ಸೂರ್ಯಾ ಸ್ತಮ್ಭೇ ಗೃಹಸ್ಯ ಚ" ಮೇದಿಂ ।

ಸ್ಥೂರ ಸ್ಥೂರ (ಪುಂ) 1. ಮನುಷ್ಯ. ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕರನ್" (೩ಂ ೫-೪) । ಸ್ಥೂರೋ ಮನುಷ್ಯಃ ಸಿಂ ಕೌಂ । 2. ವೃಷಭ, ಎತ್ತು.

ಸ್ಥೂರಿನ್ ಸ್ಥೂರಿನ್ (ಪುಂ) ಮೂಟೆ ಹೊರುವ ಕುದುರೆ. ಸ್ಥೂರಿಪೃಠ ಸ್ಥೂರಿಪೃಠ (ಪುಂ) ಹೊಸದಾಗಿ ಎರಲ್ಪಟ್ಟ ಕುದುರೆ, ತರಬೇತಿ ಪಡೆಯದಿರುವ ಕುದುರೆ. "ಮಿತ್ವಾ ಧೋನಾಮಾಯಸೇನಾಧಿವಕ್ಷಃ ಸ್ಥೂರಿಪೃಠೋ ಗಾಂಧರ್ವಕ್ಷೇಣ ವಿಹ್ವಃ" ಮಾಧಂ ೧೮-೨೨ ।

ಸ್ಥೂಲ ಸ್ಥೂಲ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು. ಸರ್ವಮಪ್ಯವಹಿತಮ್ ಏಕತ್ರ ಸ್ಥಿತವಾ ಸ್ಪ್ರಷ್ಟುಂ ಶಕ್ತಿಃ ಪ್ರಾಪ್ತಿಃ ತಯಾತಿಪ್ರಕೃಷ್ಟಯಾ ವಿಶಿಷ್ಟಃ । "ಸ್ಥಿತವೇಕತ್ರಾಖಿಲಂ ಸ್ಪ್ರಷ್ಟುಂ ಶಕ್ತಿಯಾ ಮಹತೀ ಸದಾ । ತಯಾ ಪ್ರಕೃಷ್ಟಯಾ ಶಕ್ತಿಯಾ ವಿಶಿಷ್ಟಃ ಸ್ಥೂಲಃ ಉಚ್ಯತೇ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿಃ । "ಅಣುಬೃಹತ್ಕೃಷ್ಣಃ ಸ್ಥೂಲಃ" ವಿಂ ಸಂ । 2. ಹಲಸಿನ ಮರ. (ನಂ) 3. ಪರ್ವತದ ಶಿಖರ. (ವಿಂ) 4. ಬೃಹತ್ತಾದ, ದೊಡ್ಡದಾದ. "ಸ್ಥೂಲೇಂದ್ರನಿಲಶಕಲಾವಲಿಕೋಮಲೇನ ಕಂಠೇ ಗುಣತ್ವಮಲಿನಾಂ ವಲಯೇನ ಭೇಜೇ" ಮಾಧಂ ೫-೪೬ । 5. ದಪ್ಪ ನಾಗಿರುವ, ಕೊಬ್ಬಿದ, ಬೊಜ್ಜು ದೇಹದ. 6. ಮಂದ ಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳ, ಜಡ. "ಬಹುಸ್ಪೃಶಾಪಿ ಸ್ಥೂಲೇನ ಸ್ಥೀಯತೇ ಬಹಿರಶಮವತ್" ಮಾಧಂ ೨-೪೮ । 7. ಮಹತ್ತಾದ, ದೊಡ್ಡ ಸ್ವರೂಪದ. "ಸ್ಥೂಲಾಸ್ತಾವತ್ ಪ್ರಾವಹನ್ ದಾನಕುಲ್ಯಾಃ" ಮಾಧಂ ೧೮-೨೬ । 8. ವಿಸ್ತಾರವಾದ, ಅಗಲವಾದ, ವ್ಯಾಪಕವಾದ. "ಉದ್ಭೂತಾಮಿವ ಮೂರ್ತಮೇಷತ ಸ್ಥೂಲನಾಸಿಕವಪು-ರ್ವಸುಂಧರಾಮ್" ಮಾಧಂ ೧೪-೪೧ । 9. ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಗೆ ಗೋಚರವಾಗುವಷ್ಟು ಅಕಾರವುಳ್ಳ. "ದ್ರವಃ ಸಂಕ್ಷಾತ-ಕಠಿಣಃ ಸ್ಥೂಲಃ ಸೂಕ್ಷ್ಮೋ ಲಘುಗುಹಃ" ಕುಮಾಂ ೨-೧೧ ।

ಸ್ಥೂಲಕ ಸ್ಥೂಲಕ (ವಿಂ) 1. ದೊಡ್ಡದಾದ, ಬೃಹತ್ತಾದ, ದೊಡ್ಡ ಅಕಾರದ. ಸ್ಥೂಲ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" । 2. ದೊಡ್ಡ ವಸ್ತುವಿನಂತಿರುವ, ಬೃಹದಾಕಾರವಾಗಿ ಕಾಣುತ್ತಿರುವ. ಸ್ಥೂಲ "ಕನ್" (೫-೪-೩) । "ಸ್ಥೂಲಾದಿಭ್ಯಃ ಪ್ರಕಾರವಚನೇ ಕನ್" ಪ್ರಕಾರೋ ಭೇದಃ ಸಾದೃಶ್ಯಂ ಚ ।



ಸ್ಥೂಲಕಂದ ಸ್ಥೂಲಕಂದ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾಕಂದ, ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳಿ.  
ಸ್ಥೂಲ: ಕಂದ: | 2. ಚೂರಣದ ಗೆಡ್ಡೆ.

ಸ್ಥೂಲಕ್ಷೇಪ ಸ್ಥೂಲಕ್ಷೇಪ (ಪುಂ) ಶರ, ಬಾಣ.

ಸ್ಥೂಲಜಿಹ್ವ ಸ್ಥೂಲಜಿಹ್ವ (ಪುಂ) ಮತ್ಸ್ಯ, ಮೀನು.

ಸ್ಥೂಲಜೀರಕ ಸ್ಥೂಲಜೀರಕ (ಪುಂ) ಕರಿ ಜೀರಿಗೆ.

ಸ್ಥೂಲನಾಸಿಕ ಸ್ಥೂಲನಾಸಿಕ (ಪುಂ) 1. ವರಾಹ, ಹಂದಿ.  
ಸ್ಥೂಲ ನಾಸಿಕಾ ಯಸ್ಯ | "ಸುಚೀರೋಮಾ ಬಹುಸೂರಾ ಕ್ಷನಿಕ:  
ಸ್ಥೂಲನಾಸಿಕೋ ಭೂಕ್ಷಿತ್" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ | (ವಿಂ) 2. ದಪ್ಪ  
ಮೊಗುಳ್ಳವನು.

ಸ್ಥೂಲಪಾದ ಸ್ಥೂಲಪಾದ (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. ಸ್ಥೂಲ: ಪಾದೋ  
ಯಸ್ಯ |

ಸ್ಥೂಲಫಲ ಸ್ಥೂಲಫಲ (ಪುಂ) 1. ಬೂದುಕುಂಬಳದ ಗಿಡ.  
ಸ್ಥೂಲಂ ಫಲಂ ಯಸ್ಯ | 2. ಬೂರುಗದ ಮರ. (ನಂ) 3.  
ಬೂದುಕುಂಬಳಕಾಯಿ. ಸ್ಥೂಲಂ ಫಲಮ್ |

ಸ್ಥೂಲಲಕ್ಷ್ಯ ಸ್ಥೂಲಲಕ್ಷ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಉದಾರವಾಗಿ ದಾನ  
ಮಾಡುವವನು, ಕೈತುಂಬ ಕೊಡುವವನು. ಸ್ಥೂಲ: ಮಹದ್ವಿ:  
ಲಕ್ಷಯತೇ—ಸ್ಥೂಲ + ಲಕ್ಷ (ದರ್ಶನಾ ಕ್ಷುಣ್ಯಯೋ:) ಕರ್ಮಂ "ಞ್ಯತ್"  
(3-1-124) | "ಅವಿಕಲ್ಪನೋ ಮಾನಯಿತಾ ಸ್ಥೂಲಲಕ್ಷ್ಯ:  
ಪ್ರಿಯವದ: | ಸುಹೃದಶ್ಚಾನುಪಾನೇನ ವಿವಿಧೇನಾಭಿವರ್ಷತಿ" ಭಾಂ |  
2. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ.

ಸ್ಥೂಲವೇದೇಹಿ ಸ್ಥೂಲವೇದೇಹೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಜಹಿಪ್ಪಲಿ.

ಸ್ಥೂಲಶಾಟಕ ಸ್ಥೂಲಶಾಟಕ (ಪುಂ) ದಪ್ಪವಸ್ತ್ರ, ದುಪ್ಪಟೆ.  
ಸ್ಥೂಲ: ಶಾಟಕ: | -ಶಾಟಿಕಾ-ಶಾಟಿಕಾ.

ಸ್ಥೂಲಶಾಟಿ ಸ್ಥೂಲಶಾಟೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಪ್ಪವಸ್ತ್ರ, ದುಪ್ಪಟೆ.  
ಸ್ಥೂಲಾ ಶಾಟಿ |

ಸ್ಥೂಲಶಿರಸ್ ಸ್ಥೂಲಶಿರಸ್ (ಪುಂ) 1. ಒಬ್ಬ ಮುಷಿ. ಸ್ಥೂಲಂ  
ಶಿರೋ ಯಸ್ಯ | "ಬಕೋ ದಾಲ್ಮ್ಯ: ಸ್ಥೂಲಶಿರಾ: ಕೃಷ್ಣಾಕ್ಷಪಾಯನ:  
ಶುಕ:" ಭಾಂ ಸಭಾಂ | (ನಂ) 2. ದೊಡ್ಡ ಶಿರಸ್ಸು.  
ಸ್ಥೂಲಂ ಶಿರ: | (ವಿಂ) 3. ದೊಡ್ಡ ಶಿರಸ್ಸುಳ್ಳವನು,  
ದಪ್ಪ ತಲೆಯುಳ್ಳವನು.

ಸ್ಥೂಲಶೀರ್ಷಿಕಾ ಸ್ಥೂಲಶೀರ್ಷಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೈಗಿಂತ  
ದಪ್ಪವಿರುವ ತಲೆಯುಳ್ಳ ಇರುವೆ. ಸ್ಥೂಲಂ ಶೀರ್ಷಂ ಯಸ್ಯ |  
ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" |

ಸ್ಥೂಲಹಸ್ತ ಸ್ಥೂಲಹಸ್ತ (ಪುಂ) ಆನೆಯ ಸೊಂಡಿಲು.  
"ದಿಙ್ನಾಗಾನಾಂ ಪಥಿ ಪರಿಹರನ್ ಸ್ಥೂಲಹಸ್ತಾವಲೇಪಾನ್" ಮೇಘಂ  
1-14 |

ಸ್ಥೂಲಾ ಸ್ಥೂಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗಜಹಿಪ್ಪಲಿ. 2. ಸೌತೆ ಗಿಡ.

ಸ್ಥೂಲಾಸ್ಯ ಸ್ಥೂಲಾಸ್ಯ (ಪುಂ) ವಿಶಾಲವಾದ ಮುಖವುಳ್ಳ  
ಸರ್ಪ. ಸ್ಥೂಲಾಸ್ಯಂ ಯಸ್ಯ |

ಸ್ಥೂಲಿನ್ ಸ್ಥೂಲಿನ್ (ಪುಂ) ಉಷ್ಣ, ಒಂಟೆ.

ಸ್ಥೂಲೇರಾಡ ಸ್ಥೂಲೇರಾಡ (ಪುಂ) ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಹರಳು  
ಗಿಡ. ಸ್ಥೂಲ ಉರಾಡ: |

ಸ್ಥೂಲೇಲಾ ಸ್ಥೂಲೇಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ  
ಯಾಲಕ್ಕಿ.

ಸ್ಥೂಲೋಚಯ ಸ್ಥೂಲೋಚಯ (ಪುಂ) 1. ಆನೆಯ ಮಧ್ಯಮ  
ಗಮನ, ಆನೆಯ ಒಂದು ರೀತಿಯ ನಡೆಗೆ. "ಸ್ಥೂಲೋಚಯೇನಾ-  
ಗಮದಂತಿಕಾಗತಾಂ ಗಜೋಽಯಾತಾಪ್ರಕರ: ಕರಣುಕಾಮ್" ಮಾಘಂ  
12-16 | 2. ಬೆಟ್ಟದಿಂದ ಜಾರಿಬಿದ್ದ ದೊಡ್ಡ ಬಂಡೆ.  
3. ಅಸಾಕಲ್ಯ, ಪೂರ್ಣವಾಗದಿರುವಿಕೆ, ಅಸಮಗ್ರತೆ.  
4. ಆನೆಯ ಕೊಂಬಿನ ರಂಧ್ರ. 5. ವರಂಡ, ಮುಖದ  
ಮೇಲೆ ಏಳುವ ಮೊಡವೆ. "ಸ್ಥೂಲೋಚಯೋ ವರಂಡಕೇ |  
ಗಜಾನಾಂ ಮಧ್ಯಮಗತೇ ಗಂಡಾಕಮಾಕಾತ್ಸರ್ಯಯೋರಪಿ" ಹೇಮಂ |

ಸ್ಥೇಮನ್ ಸ್ಥೇಮನ್ (ನಂ) 1. ಸ್ಥಿತಿ, ಪಾಲನೆ. ಷಾ (ಗತಿ-  
ನಿವೃತ್ತಿ) "ಇಮನಿನ್" ಬಾಹುಂ | "ಅಖಿಲಮುಖಜನ್ಮ-  
ಸ್ಥೇಮಭಜ್ಞಾದಿಲೀಲೇ ವಿನತವಿವಿಧಭೂತವ್ರಾತರಕ್ಷಕದೀಕ್ಷೇ"  
ಶ್ರೀಭಾಷ್ಯಮ್ | ಷಾ ಧಾತುವಿಗೆ ಮೂತ್ರ ಇಮನಿನ್ ಪ್ರತ್ಯಯ  
ದಿಂದ ಈ ರೂಪವಾಗುವುದು. 2. ಸ್ಥೈರ್ಯ, ಸ್ಥಿರವಾ  
ಗಿರುವಿಕೆ. ಸ್ಥಿರ "ಇಮನಿನ್" (4-1-122) | ಸ್ಥಿರ-  
ಶಬ್ದಸ್ಯ "ಸ್ಯಾ" ಆದೇಶ: (6-4-149) | "ಬ್ರಾಧೀಯಾಸ:  
ಸಹತಾ: ಸ್ಥೇಮಭಾಜಶ್ಚಾರೂದ್ರಾಸ್ತೀಕ್ಷಣತಾಮತ್ಯಜಂತ:" ಮಾಘಂ  
16-33 |

ಸ್ಥೇಯ ಸ್ಥೇಯ (ಪುಂ) 1. ನ್ಯಾಯವನ್ನು ನಿರ್ಣಯಿಸುವವನು,  
ವಿವಾದದಲ್ಲಿ ತೀರ್ಪುಕೊಡಲು ಬಂದ ಮಧ್ಯಸ್ಥ. ತಿರ್ಠತಿ  
ವಿವಾದನಿರ್ಣಯಾರ್ಥಮ್—ಷಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಯತ್"  
(3-1-99) | "ಸ್ಥೇಯಾಭ್ಯಾಂ ಗೃಧ್ರಚಕ್ರಾಭ್ಯಾಂ ವಾಚಾ ಸನ್ಧಿ:  
ಕೃತ: ಕ್ಷಣಾತ್" ಹಿತಂ 4-1 | 2. ಪುರೋಹಿತ. "ಸ್ಥೇಯೋ  
ವಿವಾದಪಕ್ಷಸ್ಯ ನಿರ್ಣೇತರಿ ಪುರೋಹಸಿ" ಮೇದಿಂ | (ವಿಂ)  
3. ಸ್ಥಿರತರವಾದ, ಹೆಚ್ಚು ದೃಢವಾದ, ಭದ್ರವಾದ.  
4. ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳಬೇಕಾದ, ಕೂಡಬೇಕಾದ. ಷಾ (ಗತಿ-  
ನಿವೃತ್ತಿ) "ಯತ್" (3-1-99) | "ಬಲಿನ: ಸನ್ನಿಕರ್ಷ  
ತು ನ ಸ್ಥೇಯಂ ಪಂಡಿತೇನ ವೇ" ಹರಿವಂ |

ಸ್ಥೇಯಸ್ ಸ್ಥೇಯಸ್ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚು ಸ್ಥಿರವಾದ. ಅಯಮನ-  
ಯೋರತಿಶಯೇನ ಸ್ಥಿರ:—ಸ್ಥಿರ "ಐಯಸುನ್" (4-3-49) |  
ಸ್ಥಿರಶಬ್ದಸ್ಯ ಸ್ಥಾಪೇಶ: (6-4-149) | 2. ಹೆಚ್ಚು  
ದೃಢವಾದ. ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಕೀಪ್" (4-1-6) | -ಸೀ-ಸೀ.



“ಸೋಪಾನಾಂ ಧೀಯಂ ಧೀರಾಃ ಸ್ಥೇಯಸೀ ಖಡ್ಗಯಂತಿ ಯೇ” ಮಾಘಂ ೨-೭೭. 3. ಶಾಶ್ವತವಾದ, ಅಚಲವಾದ.

ಸ್ಥೇಠ ಸ್ಥೇಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಅತಿ ಸ್ಥಿರವಾದ. 2. ಬಹಳ ದೃಢವಾದ. ಅಯಮೇವಾಮತಿಶಯೇನ ಸ್ಥಿರಃ—ಸ್ಥಿರ “ಇಠನ್” (೪-೩-೪೪) ।

ಸ್ಥೇಯ ಸ್ಥೇಯಃ (ನಂ) 1. ಸ್ಥಿರತೆ, ಭದ್ರವಾಗಿರುವಿಕೆ. 2. ದೃಢವಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ಅಚಲವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಸ್ಥಿರಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಷ್ಯತ್” (೪-೧-೧೨೪) । “ಮಹೇಂದ್ರಸದೃಶಃ ಶೌರ್ಯೇ ಸ್ಥೇಯೇ ಚ ಹಿಮವಾನಿವ” ಭಾಂ ಭೀಷಂ ೧೩-೮ ।

ಸ್ಥೋಣೇಯ ಸ್ಥೋಣೇಯಃ (ನಂ) ಮಾಚಪತ್ರ. ಸ್ಥೂಣಾಯಾ ಅಪತ್ಯಮ್ “ಠಕ್” (೪-೧-೧೨೦) । “ಗ್ರನ್ಥಿಪರ್ಣಂ ಶುಕ್ ಬಹಿಪುಷ್ಪಂ ಸ್ಥೋಣೇಯಕುಕ್ಕುರೇ” ಅಮಂ ।

ಸ್ಥೋಣೇಯಕ ಸ್ಥೋಣೇಯಕಃ (ನಂ) ಒಂದು ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯ. ಸ್ಥೌರ ಸ್ಥೌರ (ನಂ) ಬಲ, ಶಕ್ತಿ.

ಸ್ಥೌರಿನ್ ಸ್ಥೌರಿನ್ (ಪುಂ) ಭಾರವನ್ನು ಹೊರಲು ಅಗಲ ವಾದ ಹೆಗಲುಳ್ಳ ಕುದುರೆ. ಸ್ಥೌರಂ ಬಲಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ “ಇನಿಃ” (೪-೨-೧೧೪) । “ಪೃಠಃ ಸ್ಥೌರಿ” ಅಮಂ ।

ಸ್ಥೌಲ್ಯ ಸ್ಥೌಲ್ಯ (ನಂ) 1. ದಪ್ಪನಾಗಿರುವಿಕೆ. 2. ಬೊಜ್ಜು ಬೆಳೆದಿರುವಿಕೆ. ಸ್ಥೂಲ್ಯಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಷ್ಯತ್” (೪-೧-೧೨೪) । 3. ದೊಡ್ಡದಾಗಿರುವಿಕೆ. “ಏವಂ ಕಾಲೋಽಪ್ಯನುಮಿತಃ ಸೌಕಮ್ಯೇ ಸ್ಥೌಲ್ಯೇ ಚ ಸತ್ತಮ” ಭಾಗಂ ೩-೧೧-೩ ।

ಸ್ತನಪನ ಸ್ತನಪನ (ನಂ) 1. ಸ್ನಾನ, ಮಜ್ಜನ. ಣಾ (ಶೌಚೇ) + ಣಿವ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) । “ಸ್ವಚ್ಛಾಮ್ಭಃಸ್ತನಪನ-ವಿಧೌತಮಙ್ಗಮೌಠಸ್ತಾಮ್ಬಲವೃತ್ತಿವಿಶದೌ ವಿಲಾಸಿನೀನಾಮ್” ಮಾಘಂ ೮-೭೦ । “ಗ್ಲಾಸ್ನಾವನುವಮಾಂ ಚ” (ಗಂ ೧೯೦) । ಅನೇನ ವಾ ಮಿತ್ತವಮ್ । ಪಕ್ಷೇ ಸ್ನಾಪನಮ್ । 2. ಸ್ನಾನ ಮಾಡಿಸುವುದು.

ಸ್ತನಪನೀಯ ಸ್ತನಪನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸ್ನಾನಮಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಸ್ನಾನಮಾಡಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಸ್ನಾನಮಾಡಿಸಬಹುದಾದ. ಣಾ (ಶೌಚೇ) + ಣಿವ್ “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । ವಾ ಮಿತ್ತವಮ್ (ಗಂ ೧೯೦) । ಪಕ್ಷೇ ಸ್ನಾಪನೀಯಮ್ ಸ್ತನಪನೀಯಮ್. “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬) । ಸ್ತನಪಯಿತವ್ಯಃ ಸ್ತನಪಯಿತವ್ಯಃ. ಪಕ್ಷೇ ಸ್ನಾಪಯಿತವ್ಯಃ ಸ್ತನಪಯಿತವ್ಯಃ.

ಸ್ತನಪಿತ ಸ್ತನಪಿತ (ವಿಂ) 1. ಸ್ನಾನಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಣಾ (ಶೌಚೇ) + ಣಿವ್ “ಕ್” (೩-೨-೧೦೨) । 2. ಸೇಚನೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಿಂಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಅರುಣಿತಮಕಠೋರೈವೇಷಮ ಕಾಶ್ಮೀರಜಾಮ್ಭಃಸ್ತನಪಿತಮಿವ ತದೇತತ್ ಭಾನ್ತುಭಿರ್ಮಿತಿ ಭಾನೋಃ” ಮಾಘಂ ೧೧-೪೩ । ಣಾ + ಣಿವ್ “ಕ್” (೩-೨-೧೦೨) । ವಾ ಮಿತ್ತವಮ್ । ಪಕ್ಷೇ ಸ್ನಾಪಿತಃ ಸ್ತನಪಿತಃ.

ಸ್ನವ ಸ್ನವ (ಪುಂ) ಸ್ಮರಿಸುವುದು, ಸೋರುವುದು, ಜಿನುಗುವುದು. ಸ್ನು (ಪ್ರಸವಣೇ) “ಏಪ್” (೩-೩-೪೭) । “ಸ್ನವಃ ಸ್ನವೇ” ಅಮಂ ।

ಸ್ನಸಾ ಸ್ನಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ನಾಯುರಜ್ಜು, ಸ್ನಾಯುವಿನ ಮಾಂಸಲ ಭಾಗದ ಕೊನೆಯದಾದ ಗಟ್ಟಿತಂತು.

ಸ್ನಾತ್ ಸ್ನಾತ್ (ವಿಂ) ಸ್ನಾನಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಸ್ನಾನಕ್ಕಾಗಿ ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಇಳಿಯುತ್ತಿರುವ. ಣಾ (ಶೌಚೇ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಠೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ಂತೀ -೨೬. “ಸ್ನಾಂತೀನಾಂ ಬೃಹದಮಲೋದಬಿಂದುಚಿತ್ರೌ ರೇಜಾತೇ ಕ್ವಚಿರ-ದೃಶಾಮುರೋಜಕುಮ್ಮಿ” ಮಾಘಂ ೮-೪೩ ।

ಸ್ನಾತ ಸ್ನಾತ (ವಿಂ) 1. ಸ್ನಾನಮಾಡಿದವನು. ಸ್ನಾತಿ ಸ್ಮ —ಣಾ (ಶೌಚೇ) ಕರ್ತಂ “ಕ್” (೩-೪-೭೨) । “ಸ್ನಾತೋ-ಧಿಕಾರಿ ಭವತಿ ದೇವೇ ಪತ್ರೇ ಚ ಕರ್ಮಣಿ” । “ಸ್ನಾತಾ ತಿಷ್ಠತಿ ಕುಂತಲೇಶ್ವರಸುತಾ ವಾರೋಽಙ್ಗರಾಜಸ್ವಸುಃ ಕ್ಷುತೇ ರಾತ್ರಿ-ರಿಯಂ ಜಿತಾ ಕಮಲಯಾ ದೇವೀ ಪ್ರಸಾದಾನ್ ಚ” । 2. ವಿದ್ಯಾ ಭ್ಯಾಸವನ್ನು ಪೂರ್ತಿಮಾಡಿ ಬೇರೆ ಆಶ್ರಮವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸದಿರುವವನು, ಸ್ನಾತಕ, ವೇದಾಭ್ಯಾಸಮಾಡಿ ವ್ರತಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸದಿರುವವನು.

ಸ್ನಾತಕ ಸ್ನಾತಕ (ಪುಂ) 1. ವೇದಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿ ವ್ರತವನ್ನು ಆಚರಿಸದಿರುವವನು. ಣಾ (ಶೌಚೇ) ಕರ್ತಂ “ಕ್” (೩-೪-೭೨) । ಸಂಜ್ಞಾಪಾಂ “ಕನ್” (೪-೩-೭೪) । “ವಿಷಯಾ ಸ್ನಾತೀತ್ಯೇಕೇ” ಆಪಂ ಷಂ ೧-೩೦-೧ । “ವಿಷ್ಣಾ ವ್ರತೇನ ಚೇತ್ಯೇಕೇ” ೧-೩೦-೩ । “ತೇಷು ಸರ್ವೇಷು ಸ್ನಾತಕವತ್ ವೃತ್ತಿಃ” ೧-೩೦-೪ । “ಸ ವಿಧಿಪೂರ್ವ ಸ್ನಾತ್ವಾ ಭಾರ್ಯಾಮಿಧಿಗಮ್ಯ ಗೃಹಸ್ಥ-ಧರ್ಮಾನ್ ಪ್ರಯುಜ್ಜಾನ್ ಇಮಾನಿ ವ್ರತಾನಿ ಅನುಕರ್ಷತ್ ಸ್ನಾತಕಃ” ಗೌತಮಃ ೧-೧ । “ಸ್ನಾತಕಂ ಘಾತಕಂ ಜಜ್ಞೇ ಜಜ್ಞೌ ದಾಂತಂ ಕೃತಾಂತವತ್ । ವಾಚ್ಯಮಸ್ಯ ದೃಷ್ಟಯೇವ ಯಮಸ್ಯೇವ ವಿಭಾಯ ಸಃ” ನೆಷಂ ೧೭-೧೮೪ । 2. ಬ್ರಹ್ಮಚರ್ಯವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿ ಗೃಹಸ್ಥಾಶ್ರಮವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದವನು. ಸ್ನಾತಕನು ಮೂರು ವಿಧ. (1) ವೇದಾಧ್ಯಯನಕ್ಕೆ ವಿಹಿತವಾದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿ ಅದು ಪೂರ್ಣವಾಗುವ ಮುಂಚೆ ಗೃಹಸ್ಥನಾಗುವವನು ವ್ರತಸ್ನಾತಕ. (2) ವೇದಾಧ್ಯಯನಮಾಡಿ ಗುರವಿನಲ್ಲಿಯೇ ವೇದಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡುವವನು ವಿದ್ಯಾಸ್ನಾತಕ. (3) ವ್ರತವನ್ನು ಸರಿಯಾಗಿ ಪಾಲಿಸಿ ಸುಪೂರ್ಣ ವೇದಾಭ್ಯಾಸಮಾಡಿ ಗೃಹಸ್ಥನಾಗುವವನು ಉಭಯಸ್ನಾತಕ. “ಸ್ನಾತಕಂ ಗುಹಮಭೀಷ್ಠ-ಮೃತ್ವಿಜಂ ಸಂಯುಜಾ ಚ ಸಹ ಮೇದಿನೀಪತಿಮ್ । ವರ್ಷಮಾಜ ಇತಿ ಕೀರ್ತಯಂತಿ ಷಟ್ ತೇ ಚ ತೇ ಯುಗಪದಾಗತಾಃ ಸದಃ” ಮಾಘಂ ೧೪-೪೪ ।



ಸ್ನಾತ ಸ್ನಾತೃ (ವಿಂ) ಸ್ನಾನ ಮಾಡುವವನು. ಣಾ (ಶೀಛೆ)  
“ತೃ” (೩-೧-೧೩೩)। “ಸ್ನಾತೃಣಾಂ ತಿಲಕೇನೇ ಸ್ವಮಸ್ತ-  
ದೀರ್ಘಮೇವ ಸಃ। ಕೃಪಾಣಿಭೂಯ ಹೃದಯಂ ಪ್ರವಿಷ್ಟೇರಿವ ತತ್ರ ತೈಃ”  
ನೈಷಂ ೧೭-೧೭೦।

ಸ್ನಾನ ಸ್ನಾನ (ನಂ) 1. ಸ್ನಾನ, ಮಜ್ಜನ. ಣಾ (ಶೀಛೆ)  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫)। “ಸಾ ಮಜ್ಜಲಸ್ನಾನವಿಶುದ್ಧಗಾತ್ರೀ  
ಗೃಹಿತವತ್ಯುದ್ಗಮನೀಯವಸ್ತ್ರಾ। ನಿವೃತ್ತಪರ್ಜನ್ಯಜಲಾಭಿಷೇಕಾ  
ಪ್ರಫುಲ್ಲಕಾಶಾ ವಸುಧೇವ ರೇಜೆ” ಕುಮಾರಂ ೭-೧೧। ಸ್ನಾನವು  
(1) ಮಾನ್ವಮ್ (2) ಭೌಮಮ್ (3) ಆಗ್ನೇಯಮ್ (4) ವಾಯವ್ಯಮ್  
(5) ದಿವ್ಯಮ್ (6) ವಾರುಣಮ್ ಮತ್ತೂ (7) ಮಾನಸಮ್ ಎಂದು  
ಸಪ್ತ ವಿಧ. “ಮಾನ್ವಂ ಭೌಮಂ ತಯಾಗ್ನೇಯಂ ವಾಯವ್ಯಂ ದಿವ್ಯಮೇವ  
ಚ। ವಾರುಣಂ ಮಾನಸಂ ಚೈವ ಸಪ್ತ ಸ್ನಾನಂ ಪ್ರಕೀರ್ತಿಸಮ್”।  
ಆಪೋಹಿಷ್ಠೇತಿ ವೈ ಮಾನ್ವಂ ಮೃದಾಲಮ್ನಸ್ತು ಪಾಥಿವಮ್। ಆಗ್ನೇಯಂ  
ಮಸ್ಮನಾ ಸ್ನಾನಂ ವಾಯವ್ಯಂ ಗೋರಜಃ ಸ್ಮೃತಮ್। ಯತ್ನು ಸಾತಪ-  
ವರ್ಷೇಣ ಸ್ನಾನಂ ತದಿವ್ಯಮುಚ್ಯತೇ। ವಾರುಣಂ ಚಾವಗಾಹ್ಯಂ ಚ  
ಮಾನಸಂ ವಿಷ್ಣುಚಿಂತನಮ್”॥ ಎದ್ದು ಸರಿಯಾಗಿ ಸ್ನಾನ  
ಮಾಡಲು ಶಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದವರಿಗೆ ಅವರವರ ಶಕ್ತಿಯನುಸಾರ  
ಮಾತ್ರ ಮೊದಲಾದ ಸ್ನಾನವು ವಿಹಿತವಾಗಿದೆ. ಎಲ್ಲ  
ಶಕ್ತಿಯೂ ವಾರುಣಸ್ನಾನವು ಉತ್ತಮ. “ಸಮಸ್ತಂ  
ಸ್ನಾನಮುದ್ವಿಷ್ಟಂ ಮನ್ವಸ್ನಾನಕ್ರಮೇಣ ತು। ಕಾಲದೋಷಾದಸಾಮರ್ಥ್ಯಾತಿ  
ಸರ್ವಂ ತಸ್ಯ ಫಲಂ ಸ್ಮೃತಮ್”॥ ದೇಹದ ನೈರ್ಮಲ್ಯ ಮತ್ತೂ  
ಮನಃಶುದ್ಧಿಗಾಗಿ ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಸ್ನಾನವು ವಿಹಿತವಾಗಿರು  
ವುದು. “ನೈರ್ಮಲ್ಯಂ ಭಾವಶುದ್ಧಿಶ್ಚ ವಿನಾ ಸ್ನಾನಂ ನ ಜಾಯತೇ।  
ತಸ್ಮಾನ್ಮನೋವಿಶುದ್ಧಯೈ ಸ್ನಾನಮಾದೌ ವಿಧೀಯತೇ”॥ 2.  
ಪ್ರೋಕ್ಷಣ, ಶುದ್ಧಿಗಾಗಿ ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ ಮಂತ್ರಪೂರ್ವಕ  
ಪ್ರೋಕ್ಷಿಸುವುದು. 3. ದೇವರಿಗೆ ಮಾಡುವ ಅಭಿಷೇಕ.  
4. ಸ್ನಾನಕ್ಕಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ವಸ್ತು. ಸ್ನಾತೃನೇನ—  
ಣಾ ಕರಂ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೭)।

ಸ್ನಾನಚಿಕಿತ್ಸಕ ಸ್ನಾನಚಿಕಿತ್ಸಕ (ಪುಂ) 1. ಚಾತುರ್ಮಾಸ್ಯ  
ವ್ರತವನ್ನು ಆಚರಿಸುವವನು. (ನಂ) 2. ಸ್ತ್ರೀಯರ  
ರಜಸ್ಸು, ಮುಟ್ಟು. 3. ತಪಶ್ಚರ್ಯ, ತಪಶ್ಚರಣೆ.  
“ಸ್ನಾನಚಿಕಿತ್ಸಕಶ್ಚಾತುರ್ಮಾಸ್ಯವ್ರತಕರೇನರೇ। ಸ್ನಾನಚಿಕಿತ್ಸಕಂ  
ಪ್ರೋಕ್ತಂ ನಾರೀಪುಷ್ಪತಪಸ್ವಯೋಃ” ಹೈಮಂ 1.

ಸ್ನಾನೀಯ ಸ್ನಾನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸ್ನಾನಕ್ಕೆ ಹಿತವಾದ.  
ಸ್ನಾನಾಯ ಹಿತಮ್ “ಛಃ” (೫-೧-೫)। “ಗಜ್ಜಾದೀನಾಂ ಚ  
ತೀರ್ಥಾನಾಂ ವಾರಿ ಕುಮ್ಮಪ್ರಪೂರಿತಮ್। ಸ್ನಾನೀಯಂ ತೇ ಪ್ರಯಚ್ಛಾಮಿ  
ಸ್ನಾನಂ ಕುರು ತ್ರಿಲೋಚನೇ”। 2. ಸ್ನಾನಮಾಡುವಾಗ ಉಡುವ  
(ವಸ್ತ್ರ). “ಸ್ನಾನೀಯವಸ್ತ್ರಾಕ್ರಿಯಾ ಪತ್ರೋಂ ವೋಪಯುಜ್ಯತೇ”

ಮಾಲಂ ೫-೧೨। (ನಂ) 3. ಸ್ನಾನಕ್ಕಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿ  
ಸುವ ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯ ಅಥವಾ ನೀರು.

ಸ್ನಾಪಕ ಸ್ನಾಪಕ (ಪುಂ) ಯಜಮಾನನಿಗೆ ಸ್ನಾನಮಾಡಿಸುವ  
ಸೇವಕ. ಣಾ (ಶೀಛೆ) + ಣಿಞ್ “ಞ್” (೩-೧-೧೩೩)।

ಸ್ನಾಯಿನ್ ಸ್ನಾಯಿನ್ (ವಿಂ) ಮಂತ್ರಪೂರ್ವಕ ನೀರಿನಲ್ಲಿ  
ಇದು ಅವಗಾಹನ ಸ್ನಾನ ಮಾಡುವವನು. ಸ್ನಾತಿ — ಣಾ  
(ಶೀಛೆ) “ಣಿಞಿ” (೩-೧-೧೩೪)। “ಸ್ನಾಯಿನಃ ಕರಸರೋ-  
ಹಯುಗ್ಮಂ ತಸ್ಯ ಗರ್ಭವೃತದರ್ಮಮರಾಜತ್” ನೈಷಂ ೨೧-೯।

ಸ್ನಾಯು ಸ್ನಾಯು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇಹದಲ್ಲಿ ವಾಯುವನ್ನು  
ಒಯ್ಯುವ ನಾಡಿ. ಸಿರೆ, ಸ್ನಾಯುರಜ್ಜು. ದೇಹದಲ್ಲಿ  
ಆಗ ಪ್ರತ್ಯಂಗಗಳ ಸಂಧಿಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸುವ ಗಟ್ಟಿ ರಜ್ಜು.  
ಣಾ (ಶೀಛೆ) “ಞ್” ಬಾಹುಂ। “ಖರ್ಜೂರ್ದುಮದಧನಜಜ್ಞ-  
ಮಸಿತತ್ವಹ್ನದ್ವಿವಿವೃತತಸ್ನಾಯುಗ್ರನ್ವಿಧನಾಸ್ಥಿಪಂಜರಜರ-  
ತಕ್ವಾಲ್ಮಲಾಲೋಕಯತೇ” ಮಾಲತೀಂ ೫-೧೪।

ಸ್ನಾವನ್ ಸ್ನಾವನ್ (ಪುಂ) ರಸಿಕ. ಣಾ (ಶೀಛೆ)  
“ವನಿಞ್” (೩ಂ ೪-೧೧೨)। ಉಪಾಧೀಪಃ: ನಲೋಪಶ್ಚ  
ನಿಪಾಂ 1.

ಸ್ನಿಗ್ಧ ಸ್ನಿಗ್ಧ (ಪುಂ) 1. ಸಮಾನ ವಯಸ್ಸಿನ ಮಿತ್ರ,  
—ಸುಹೃತ್ತು. ಸ್ನಿಗ್ಧಾತಿ — ಣಿಹ (ಪ್ರೀತೌ) “ಕ್ವಃ”  
(೩-೪-೭೨)। (ವಿಂ) 2. ಪ್ರೇಮದಿಂದ ಕೂಡಿದ,  
ಸ್ನೇಹದಿಂದ ಕೂಡಿದ. “ಸೀತಕೃತಾನಿ ಮಣಿತಂ ಕರುಣಾಕ್ರಿಃ  
ಸ್ನಿಗ್ಧಮುಕ್ತಮಲಮರ್ಯವಚಾಸಿ” ಮಾಘಂ ೧೦-೭೫। 3. ನುಣು  
ಪಾಗಿರುವ, ಸ್ನೇಹಯುಕ್ತವಾದ, ಜಿಡ್ಡಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ.  
“ಉತ್ಪ್ರಯಾಮಿ ತ್ವಯಿ ತಟಗತೇ ಸ್ನಿಗ್ಧಮಿತ್ರಾಂಜನಾಭೇ ಸದ್ಯಃ  
ಕೃತದ್ವಿರದದಶನಚ್ಛೇದಗೋರಸ್ಯ ತಸ್ಯ” ಮೇಘಂ ೧-೫೯। 4.  
ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ಹೊಳೆಯುವ. “ಸೀದಾಮನ್ಯಾ ಕನಕನಿಕಷ-  
ಸ್ನಿಗ್ಧಯಾ ದರ್ಶಯೋರ್ವಿ ತೋಯೋತ್ಸರ್ಗಸ್ತನಿತಮುಖರೋ ಮಾ ಸ್ಮ  
ಭವಿಷ್ಯವಾಸ್ತಾಃ” ಮೇಘಂ ೧-೩೭। 5. ಹಿತವಾದ, ಸಹೃದ್ವ  
ವಾದ, ವಿನಯದಿಂದ ಕೂಡಿದ. “ಪ್ರೀತಿಸ್ನಿಗ್ಧವೈರ್ಜನಪದ-  
ವಘ್ನಲೋಚನೈಃ ಪ್ರಿಯಮಾನಃ” ಮೇಘಂ ೧-೧೬। 6. ನಿಬಿಡವಾದ,  
ಸಾಂದ್ರವಾದ, ಒತ್ತುಗೊಡಿದ, ದಟ್ಟವಾದ. “ಸ್ನಿಗ್ಧಾ-  
ಂಜನಶ್ಯಾಮತನುಭಿರುತ್ತತೈರ್ನಿರಂತರಾಲಾ ಕರಿಣಾಂ ಕದಂಬಕೈಃ”  
ಮಾಘಂ ೧೨-೬೨। 7. ಮಧುರವಾದ, ಕಿವಿಗೆ ಹಿತವಾದ,  
ಹೃದಯಂಗಮವಾದ, ಮನಸ್ಸನ್ನು ಸೆಳೆಯುವ (ಶಬ್ದ,  
ಧ್ವನಿ). “ಸ್ನಿಗ್ಧಗಮ್ಭೀರನಿರ್ವಿಘ್ನಮೇಕಂ ಸ್ಯಂದನಮಾಸ್ಥಿತೌ”  
ರಘುಂ ೧-೩೬। 8. ಮೃದುವಾದ, ಕೋಮಲವಾದ.  
“ನಾದಸ್ತಾವಹ್ನಿಕಲಕುರೂರಿಕೃಜಿತಸ್ನಿಗ್ಧತಾರಃ” ಮಾಲತೀಂ  
೫-೨೦।



ಸ್ನಿಗ್ಧಜನ ಸ್ನಿಗ್ಧಜನ (ಪುಂ) ಸ್ನೇಹಿತ, ಮಿತ್ರ, ಗೆಲೆಯ.

ಸ್ನಿಗ್ಧೋ ಜನಃ । "ಸ್ನಿಗ್ಧಜನಸಂವಿಮಕ್ತಂ ಹಿ ದುಃಖಂ ಸಹಜವೇದನಂ  
ಭವತಿ" ಶಾಕುಂ ೩ ।

ಸ್ನಿಗ್ಧತಾ ಸ್ನಿಗ್ಧತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪ್ರೇಮ. ಸ್ನಿಗ್ಧಸ್ಯ  
ಭಾವಃ "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) । "ತವಃ" ಸ್ನಿಗ್ಧತ್ವಮ್  
ಸ್ನಿಗ್ಧತ್ವಮ್. 2. ಸ್ನೇಹ.

ಸ್ನಿಗ್ಧಫಲಾ ಸ್ನಿಗ್ಧಫಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸರ್ವಾಕ್ಷಿ, ಈಶ್ವರೀ  
ಹಂಭು.

ಸ್ನಿಹ್ಯಾತ್ ಸ್ನಿಹ್ಯಾತ್ (ವಿಂ) ಸ್ನೇಹವನ್ನು ಪ್ರದರ್ಶಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ಪ್ರೀತಿಯನ್ನು ತೋರ್ಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಣಿಹ  
(ಪ್ರೀತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್"  
(೪-೧-೬) । ಸ್ನಿಹ್ಯಂತೀ ಸ್ನಿಹ್ಯಂತೀ. "ಸ್ನಿಹ್ಯಂತೀ ದೃಶ-  
ಮಪರಾ ನಿಘಾಯ ಪೂರ್ಣ ಮೂರ್ತೇನ ಪ್ರಣಯರಸೇನ ವಾರಿಣೇವ" ಮಾಘಂ  
೮-೩೫ ।

ಸ್ನು ಸ್ನು (ಪುಂ) ಪರ್ವತದ ಸಮಪ್ರದೇಶ. ಣು (ಪ್ರಸ್ರವಣೇ)  
"ಙುಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೧೮೦) ।

ಸ್ನುತ ಸ್ನುತ (ವಿಂ) ಸ್ರವಿಸಿದ, ಸೋರಿದ, ಜನುಗಿದ. ಣು  
(ಪ್ರಸ್ರವಣೇ) "ಕುಃ" (೩-೪-೭೨) ।

ಸ್ನುವತ್ ಸ್ನುವತ್ (ವಿಂ) ಸ್ರವಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸೋರುತ್ತಿರುವ.  
ಸ್ನು (ಪ್ರಸ್ರವಣೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಸ್ನುವತಾಮುನಾ  
ಸ್ತನಯುಗೇನ ಜನಿತಜನನಿಜನಾದರಾ" ಮಾಘಂ ೧೫-೨೩ ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) ।

ಸ್ನುಷಾ ಸ್ನುಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೋಸೆ, ಪುತ್ರನ ಪತ್ನಿ. ಸ್ನೀತಿ—  
ಣು (ಪ್ರಸ್ರವಣೇ) "ಸಃ" (೩ಂ ೩-೬೬) । "ಸಮುಪಾಸ್ಯತ  
ಪುತ್ರಭೋಗ್ಯಯಾ ಸ್ನುಷಯೇವಾವಿಕ್ರತೇಂದ್ರಿಯಃ ಶ್ರಿಯಾ" ರಘುಂ ೮-೧೪ ।

ಸ್ನುಹಿ ಸ್ನುಹಿ } (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಂಡಾಳಿ. ಣುಹ (ಉದ್ಗಿರಣೇ)  
ಸ್ನುಹೀ ಸ್ನುಹೀ }  
"ಙುಃ" (೩ಂ ೪-೧೧೭) । ವಾ "ಜಿಪ್" (ಗಂ ೪-೧-೪೫) ।  
ಭಾಗುರಿಮತೆ "ಠಾಪ್" ಸ್ನುಹಾ ಸ್ನುಹಾ. "ಆಪಂ ಚೈವ ಹಲಂತಾನಾಂ  
ಯಥಾ ವಾಚಾ ನಿಶಾ ದಿಶಾ" ಭಾಗುರಿಃ । "ಮಲ್ಲಿ ಚೂತ-  
ವನಾದಿಹ ಸ್ನುಹಿವನೇ ಮ್ಲೇಚ್ಛೇನ ಸಂಸ್ಥಾಪಿತಾಂ ಮಾಲಾಂ ದೇವಕುಲಾದಿ-  
ವಾಮಿಷಧಿಯಾ ಕ್ಷಿಪ್ತಾಂ ಇಮಶಾನೇ ಶುನಾ" ಚಂ ರಾಂ ।

ಸ್ನೇಹ ಸ್ನೇಹ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರೀತಿ, ಮಿತ್ರಾಸ, ಸ್ನೇಹಾರ್ಥ.  
ಣಿಹ (ಪ್ರೀತೌ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) । "ಪಾತುಂ ನ ಪ್ರಥಮಂ  
ವ್ಯವಸ್ಯತಿ ಜಲಂ ಯುಷ್ಮಾಸ್ವಪೀತೇಷು ಯಾ ನಾದತ್ತೇ ಪ್ರಿಯಮಂಜನಾಪಿ  
ಭವತಾಂ ಸ್ನೇಹೇನ ಯಾ ಪಲ್ಲವಮ್" ಶಾಕುಂ ೪-೮ । "ದರ್ಶನೇ  
ಸ್ಪರ್ಶನೇ ವಾಪಿ ಶ್ರವಣೇ ಭಾಷಣೇವಾಪಿ ವಾ । ಯತ್ರ ದ್ರವತ್ಯಂತರಜ್ಞಃ  
ಸ ಸ್ನೇಹ ಇತಿ ಕथ್ಯತೇ" । 2. ತೈಲ, ಎಣ್ಣೆ ಮೊದಲಾದ

ಜಡ್ಡಿರುವ ವಸ್ತು. ಣಿಹ (ಸ್ನೇಹೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೯) ।  
"ಮೃದುವ್ಯವಹಿತಂ ತೇಜೋ ಭೋಕ್ತುಮರ್ಯಾನ್ ಪ್ರಕಲ್ಪತೇ । ಪ್ರದೀಪಃ ಸ್ನೇಹ-  
ಮಾದತ್ತೇ ದಶಯಾಮ್ಯಂತರಸ್ಥಯಾ" ಮಾಘಂ ೨-೮೫ । 3. ಜಲ  
ದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ವಿಶೇಷ ಗುಣ. ಈ ಗುಣವು ಜೋರ್  
ವನ್ನು ಮುದ್ದೆಯಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. ಬತ್ತಿಯ ಮೂಲಕ  
ದೀಪವು ಪ್ರಜ್ವಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ಎಣ್ಣೆಯಲ್ಲಿ  
ರುವ ಈ ಪ್ರಕೃತ್ಯಗುಣವು ದೀಪವು ಉರಿಯುವಂತೆ  
ಮಾಡುವುದು. ಜಲದಲ್ಲಿರುವ ಸ್ನೇಹವು ವಹಿಯನ್ನು  
ಆರಿಸುವುದು. ಜಲದ ಪರಮಾಣುವಿನಲ್ಲಿರುವ ಈ ಗುಣವು  
ನಿತ್ಯ. ಉಳಿದೆಡೆಗಳಲ್ಲಿ ಇದು ಅನಿತ್ಯ. "ಸ್ನೇಹೋ ಜಲೇಷು  
ನಿತ್ಯೋಽಪಿ ನಿತ್ಯೋಽಪಿ ನಿತ್ಯೋಽಪಿ ನಿತ್ಯೋಽಪಿ । ತೇಲಾಂತರೇ ತತ್ಪ್ರಕರ್ಷಾತ್  
ದಹನಸ್ಯಾ ಸುಕೂಲತಾ" ಭಾಷಾಪಂ । "ಅವಿಶೇಷಗುಣೇ ಸ್ನೇಹ-  
ಸ್ತೇಲಸೋಹಾರ್ದಯೋರಪಿ" ನಾನಾರ್ಥರಂ ।

ಸ್ನೇಹನ್ ಸ್ನೇಹನ್ (ಪುಂ) 1. ಸ್ನೇಹಿತ, ಮಿತ್ರ, ಗೆಲೆಯ.  
ಸ್ನಿಹ್ಯತಿ—ಣಿಹ (ಪ್ರೀತೌ) "ಕನಿನ್" (೩ಂ ೧-೧೫೭) ।  
2. ಚೆಂದ್ರ. 3. ಒಂದು ರೋಗ.

ಸ್ನೇಹನ ಸ್ನೇಹನ (ನಂ) 1. ಎಣ್ಣೆ ತುಪ್ಪ ಮೊದಲಾದುದು  
ವನ್ನು ಹಾಕಿ ಮರ್ದಿಸುವುದು. ಣಿಹ (ಸ್ನೇಹೇ) + ಣಿಕ್  
"ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಎಣ್ಣೆ ಹಚ್ಚುವುದು,  
ಎಣ್ಣೆಯೊತ್ತುವುದು. (ವಿಂ) 3. ನುಣುಪಾಗಿ ಮಾಡುವ,  
ನಯವಾಗಿ ಮಾಡುವ. 4. (ಯುಕ್ತವು) ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿರುಗು  
ವಂತೆ ಮಾಡುವ. ಣಿಹ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) ।

ಸ್ನೇಹಪ್ರವೃತ್ತಿ ಸ್ನೇಹಪ್ರವೃತ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ನೇಹದ ಬೆಳವಣಿಗೆ,  
ಸ್ನೇಹರೂಪವಾದ ಪ್ರವಾಹ, ಸ್ನೇಹವು ಬೆಳೆದುಬಂದ  
ಕ್ರಮ. ಸ್ನೇಹಸ್ಯ ಪ್ರವೃತ್ತಿಃ । "ಅಸ್ಮಾ ಸಾಧು ವಿಚಿಂತ್ಯ  
ಸಂಯಮಧನಾಗುಚೈಃ ಕುಲಂ ಚಾತ್ಮನಃ ತ್ವಯ್ಯಸ್ಯಾಃ ಕಥಮಪ್ಯವಾನ್ವ-  
ಕೃತಾಂ ಸ್ನೇಹಾವೃತ್ತಿಃ ಚ ತಾಮ್" ಶಾಕುಂ ೪-೧೬ ।

ಸ್ನೇಹಪ್ರಿಯ ಸ್ನೇಹಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) ದೀಪ. ಸ್ನೇಹಃ ಪ್ರಿಯೋ ಯಸ್ಯ ।  
(ವಿಂ) ಎಣ್ಣೆ ತುಪ್ಪ ಮೊದಲಾದುವೇ ಪ್ರಿಯವಾಗಿರು  
ವವನು.

ಸ್ನೇಹಭೂ ಸ್ನೇಹಭೂ (ಪುಂ) 1. ಶ್ಲೇಷ್ಣ, ಕಫ. ಸ್ನೇಹಾತ್  
ಮೂತ್ಪತ್ತಿಃ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಸ್ನೇಹದಿಂದ ಕೂಡಿದ  
ಭೂಮಿ, ಎಣ್ಣೆಯು ಉತ್ಪತ್ತಿಯಾಗುವ ಭೂಮಿ. (ವಿಂ)  
3. ಸ್ನೇಹಯುಕ್ತವಾದ ಭೂಮಿಯುಳ್ಳ. ಸ್ನೇಹಾನ्वಿತಾ  
ಭೂಮಿಃ ।

ಸ್ನೇಹಭೂಮಿ ಸ್ನೇಹಭೂಮಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸ್ನೇಹ (ಎಣ್ಣೆ)  
ದಿಂದ ಕೂಡಿರುವ ಭೂಮಿ, ಎಣ್ಣೆ ಉತ್ಪತ್ತಿಯಾಗುವ  
ಭೂಮಿ. ಸ್ನೇಹಾನ्वಿತಾ ಭೂಮಿಃ । (ವಿಂ) 2. ಸ್ನೇಹಕ್ಕೆ  
(ಪ್ರೀತಿಗೆ) ಆಶ್ರಯವಾದವನು, ಪ್ರೀತಿಗೆ ಪಾತ್ರನಾದವನು.



ಸ್ನೇಹರತ್ನ ಸ್ನೇಹರಂಗ (ಪುಂ) ತಿಲ, ಎಳ್ಳು.

ಸ್ನೇಹವತ್ ಸ್ನೇಹವತ್ (ವಿಂ) ಸ್ನೇಹವುಳ್ಳವನು, ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳವನು. ಸ್ನೇಹೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಃ" (೪-೨-೯೪) ।

"ಎವಮುಕ್ತೌ ತತಸ್ತೇನ ಪಿತ್ರಾ ಸ್ನೇಹವತಾ ತುತೌ । ಗತ್ವಾ ತಸ್ಯ ಪುರಂ ಸಖ್ಯರೇಮಾತೇ ತೇನ ಭೀಮತಾ" ಮಾರ್ಕಂ । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಜೀಃ" (೪-೧-೬) । -ವತೀ -ವತೀ.

ಸ್ನೇಹವಸ್ತಿ ಸ್ನೇಹಬಸ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಏಜಕಾರಿ ಪ್ರಯೋಗ, ದ್ರವವಸ್ತುವನ್ನು ಮಲನಾಳದೊಳಕ್ಕೆ ಸೇರಿಸುವುದು, ಏಜಕಾರಿಯಿಂದ ಔಷಧ ಕೊಡುವುದು. 2. ಔಷಧ ಪ್ರಯೋಗಮಾಡುವ ಕೊಳವೆ. "ವಸ್ತಿವಿಧಿವಾನ್ಯುವಾಸಾಖ್ಯೋ ನಿರುಹಶ್ಚ ತತಃ ಪರಃ । ಯಃ ಸ್ನೇಹೇದೀಯತೇ ತತ್ಸ್ಯಾದನುವಾಸನ-ನಾಮಕಃ" ಭಾವಪ್ರಂ ।

ಸ್ನೇಹವ್ಯಕ್ತಿ ಸ್ನೇಹವ್ಯಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ನೇಹದ ಪ್ರದರ್ಶನ, ಸ್ನೇಹದ ತೋರಿಕೆ, ಪ್ರೇಮವನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು. ಸ್ನೇಹಸ್ಯ ವ್ಯಕ್ತಿಃ । "ಕಾಲೇ ಕಾಲೇ ಭವತಿ ಭವತೌ ಯಸ್ಯ ಸಂಯೋಗಮೇತ್ಯ ಸ್ನೇಹವ್ಯಕ್ತಿಶ್ಚಿರವಿರಹಜ್ಞಂ ಮುಚ್ಛತೌ ಬಾಷ್ಪಮುಷ್ಣಮ್" ಮೇಘಂ ೧-೧೨ ।

ಸ್ನೇಹಾಶ ಸ್ನೇಹಾಶ (ಪುಂ) ದೀಪ. ಸ್ನೇಹಮಸ್ತಾತಿ - ಸ್ನೇಹ + ಅಶ (ಭೋಜನೆ) "ಅಞ್" (೩-೨-೧) ।

ಸ್ನೇಹಿತ ಸ್ನೇಹಿತ (ಪುಂ) 1. ಮಿತ್ರ, ಗೆಳೆಯ. ಸ್ನೇಹೋಽಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ - ಸ್ನೇಹ "ಇತ್" (೪-೨-೩೬) । (ವಿಂ) 2. ವಿಶ್ವಾಸವುಳ್ಳ, ಪ್ರೀತಿಯುಳ್ಳ.

ಸ್ನೇಹು ಸ್ನೇಹು (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಾಧಿ, ರೋಗ. ಣಿಹ (ಪ್ರೀತೌ) "ಃ" (೩ಂ ೧-೧೦) । 2. ಚಂದ್ರ. ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ಸ್ಪಂದ ಸ್ಪಂದ (ಪುಂ) 1. ಸ್ವಲ್ಪ ಚಲಿಸುವುದು, ಕೊಂಚ ಮುಂದೆ ಹೋಗುವುದು. ಸ್ಪದಿ (ಕಿಂಚಿಚ್ಚಲನೆ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) । 2. ಕಂಪಿಸುವುದು, ಮಿಡಿಯುವುದು, ಕಣ್ಣು ಮತ್ತು ಇತರ ಅವಯವಗಳ ಮಿಡಿತ. ಈ ಮಿಡಿತವು ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ಶುಭಾಶುಭಫಲಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸುವುದು. ಶರೀರದ ದಕ್ಷಿಣ (ಬಲ) ಭಾಗವು ಸ್ಪಂದಿಸಿದರೆ ಶುಭ. ವಾಮ (ಎಡ) ಭಾಗವು ಹೃದಯ ಮತ್ತು ಬೆನ್ನುಗಳು ಸ್ಪಂದಿಸಿದರೆ ಪ್ರಶಸ್ತವಲ್ಲ. "ಅಜ್ಞದಕ್ಷಿಣಭಾಗೇ ತು ಶಸ್ತಂ ಪ್ರಸ್ಕುರಣಂ ಭವೇತ್ । ಅಪ್ರಶಸ್ತಂ ಯಥಾ ವಾಮೇ ಪೃಷ್ಠಸ್ಯ ಹೃದಯಸ್ಯ ಚ" ಮತ್ಸ್ಯಪುಂ । "ಪೃಥ್ವಿಲಾಭೋ ಭವೇನ್ಮೂರ್ಛಿಣಿ ಲಲಾಟೇ ರವಿನಂದನ । ಸ್ಥಾನಂ ವಿವೃದ್ಧಿಮಾಪ್ನೋತಿ ಭೂನಸೌಃ ಪ್ರಿಯ-ಸಂಜ್ಞಮಃ" ॥

ಸ್ಪಂದನ ಸ್ಪಂದನ (ನಂ) 1. ಮಿಡಿಯುವುದು, ಸ್ವಲ್ಪ ಕಂಪಿಸುವುದು. ಸ್ಪದಿ (ಕಿಂಚಿಚ್ಚಲನೆ) "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) ।

2. ಸ್ವಲ್ಪ ಚಲಿಸುವುದು, ಹೊರಳಾಡುವುದು. "ಗರ್ಭಾ-ಧಾನಮೃತೌ ಪುಂಃ ಸವನಂ ಸ್ಪಂದನಾತ್ ಪುರಾ । ಪಠ್ಯೇಷ್ಠಮೇ ವಾ ಸೀಮಂತೋ ಮಾಸ್ಯತೇ ಜಾತಕರ್ಮಂ ಚ" ಯಾಜಂ ।

ಸ್ಪಂದಮಾನ ಸ್ಪಂದಮಾನ (ವಿಂ) 1. ಸ್ವಲ್ಪ ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸ್ವಲ್ಪ ಅದಿರುತ್ತಿರುವ. ಸ್ಪದಿ (ಕಿಂಚಿಚ್ಚಲನೆ) "ಶಾನಃ" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಮಿಡಿಯುತ್ತಿರುವ.

ಸ್ಪಂದಯತ್ ಸ್ಪಂದಯತ್ (ವಿಂ) ಸ್ವಲ್ಪ ಚಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸ್ಪದಿ (ಕಿಂಚಿಚ್ಚಲನೆ) + ಣಿಞ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಪ್ರವಹತಿ ಪವಮಾನಃ ಸ್ಪಂದಯನ್ ಮಂದಮಂದಮ್" ಥಾದಂ ೧೯-೭೭ ।

ಸ್ಪಂದಿತ ಸ್ಪಂದಿತ (ವಿಂ) 1. ಚಲಿಸಿದ, ಸ್ವಲ್ಪ ದೂರ ಮುಂದೆ ಹೋದ. 2. ಅದಿರಿದ, ಮಿಡಿದ. (ನಂ) 3. ಅದಿರುವುದು, ಕಂಪಿಸುವುದು, ಮಿಡಿಯುವುದು. ಸ್ಪದಿ (ಕಿಂಚಿಚ್ಚಲನೆ) ಕರ್ತಂ "ಕ್ತಃ" (೩-೪-೭೨) । ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) ।

ಸ್ಪರ್ಧನ ಸ್ಪರ್ಧನ (ನಂ) ಮೇಲಾಟ, ಪೈಪೋಟಿ, ಪೋಟಾ ಪೋಟಿ, ಮೀರಲು ಯತ್ನಿಸುವುದು. ಸ್ಪರ್ಧ (ಸಂಕ್ಷರ್ಪ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪) ।

ಸ್ಪರ್ಧನೀಯ ಸ್ಪರ್ಧನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಪೈಪೋಟಿ ನಡೆಸಬೇಕಾದ. 2. ಪೈಪೋಟಿ ನಡೆಸಬಹುದಾದ. 3. ಪೈಪೋಟಿ ನಡೆಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ಸ್ಪರ್ಧ (ಸಂಕ್ಷರ್ಪ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । 4. ಮೇಲಾಟ ನಡೆಸುವಂತೆ ಮಾಡಬೇಕಾದ. 5. - ಮಾಡಬಹುದಾದ. 6. - ಮಾಡಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ಸ್ಪರ್ಧ + ಣಿಞ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) ।

ಸ್ಪರ್ಧಮಾನ ಸ್ಪರ್ಧಮಾನ (ವಿಂ) ಪೈಪೋಟಿ ನಡೆಸುತ್ತಿರುವ. ಇನ್ನೊಬ್ಬನನ್ನು ಮೀರಲು ಯತ್ನಿಸುತ್ತಿರುವ, ಮೇಲಾಟ ನಡೆಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ಪರ್ಧ (ಸಂಕ್ಷರ್ಪ) "ಶಾನಃ" (೩-೨-೧೨೪) ।

ಸ್ಪರ್ಧಾ ಸ್ಪರ್ಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮೇಲಾಟ, ಪೈಪೋಟಿ, ಇನ್ನೊಬ್ಬನನ್ನು ಸೋಲಿಸಲು ಪ್ರಯತ್ನ. ಸ್ಪರ್ಧ (ಸಂಕ್ಷರ್ಪ) "ಅಙ್" (೩-೩-೧೦೪) । 2. ಸಾಮ್ಯ, ಸಮತೆ, ಸಮನಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ಪ್ರತಿಭಟನೆ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಅವಿಧೇಯತೆಯ ಪ್ರದರ್ಶನ. 4. ಕ್ರಮವಾದ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಕ್ರಮವಾಗಿ ಉಂಟಾಗುವ ಏಳಿಗೆ. "ಸ್ಪರ್ಧಾ ಸಂಕ್ಷರ್ಪಣೇ ಸಾಮ್ಯೇ ಸ್ಪರ್ಧಾ ಕ್ರಮಸಮುಪ್ಪತ್ತೌ" ವಿಶ್ವಂ । 5. ಕ್ರೋಧ, ಕೋಪ. "ಪಶ್ಯಂತಃ ಸ್ಪರ್ಧಯಾ ಸದ್ವಃ ಸ್ವಯಂ ಪಂಚತ್ವಮಾಯಯಃ" ಮಾಘಂ ೧೯-೧೧೭ ।

ಸ್ಪರ್ಧಿತ ಸ್ಪರ್ಧಿತ (ನಂ) 1. ಮೇಲಾಟ, ಪೈಪೋಟಿ. ಸ್ಪರ್ಧ (ಸಂಕ್ಷರ್ಪ) ಭಾವೇ "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) । (ವಿಂ) 2.



ಪೈಪೋಟಿ ನಡಸಿದ, ಪೋಟಾಪೋಟಿ ನಡಸಿದ, ಒಬ್ಬನನ್ನು ಸೋಲಿಸಲು ಯತ್ನಿಸಿದ. ಸ್ಪರ್ಶ ಕರ್ತಂ "ಕ್" (3-4-92) । 3. ಪೈಪೋಟಿ ನಡಸುವಂತೆ ಮಾಡಿದ. ಸ್ಪರ್ಶ + ಣಿच् "ಕ್" (3-4-92) । "ಕ್ವತು:" (3-2-102) । -ವತ್ -ವತ್.

ಸ್ಪರ್ಶಿತವ್ಯ ಸ್ಪರ್ಶಿತವ್ಯ (ವಿಂ) "ಸ್ಪರ್ಶನೀಯ" ಪದದ ಶುದ್ಧ ಮತು, ಣಿಜಂತದ ಅರ್ಥ. "ತವ್ಯ:" (3-1-96) ।

ಣಿಚಿ ಸ್ಪರ್ಶಿತವ್ಯ: ಸ್ಪರ್ಶಯಿತವ್ಯ.

ಸ್ಪರ್ಶಿನ್ ಸ್ಪರ್ಶಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಪೈಪೋಟಿ ನಡಸುವವನು, ಇನ್ನೊಬ್ಬನನ್ನು ಸೋಲಿಸುವ ಯತ್ನವುಳ್ಳವನು. ಸ್ಪರ್ಶಿ- ಸ್ತಸ್ಯ — ಸ್ಪರ್ಶಿ "ಇತಿ:" (4-2-116) । 2. ಸಮಾನ ವಾದ, ಸದೃಶವಾದ. "ತವಾಧರಸ್ಪರ್ಶಿಣಿ ವಿಧುಮೇಶು ಪಯಸ್ತ- ಮೇತಸಹಸೋಮಿವೇಗಾತ್" ರಘುಂ 13-13 । "ಮುಕ್ತಾಫಲಸ್ಪರ್ಶಿಣಿ ಶಿಕರೇಶು" 16-62 ।

ಸ್ಪರ್ಶ ಸ್ಪರ್ಶ (ಪುಂ) 1. ತೃಗಿಂದ್ರಿಯದಿಂದ ತಿಳಿಯಲ್ಪಡುವ ಒಂದು ಗುಣ. ಸ್ಪರ್ಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೆ) "ಘ" (3-3-18) । ಈ ಗುಣವು ಶೀತ ಉಷ್ಣ ಮತ್ತು ಅನುಷ್ಣಾಶೀತ ಎಂದೂ ಮೂರು ವಿಧ. ಈ ಮೂರು ಗುಣಗಳೂ ಪೃಥಿವಿ ಜಲ ತೇಜಸ್ಸು ಮತ್ತು ವಾಯುಗಳಲ್ಲಿರುವವು. "ತ್ವಗಿन्द्रಿಯ- ಮಾತ್ರಗ್ರಾಹ್ಯೋ ಗುಣ: ಸ್ಪರ್ಶ: । ಸ ತ್ರಿವಿಧ: — ಶೀತೋಷ್ಣಾನುಷ್ಣಾ- ಶೀತಭೇದಾತ್ । ಪೃಥಿವ್ಯಪ್ತೇಜೋವಾಯುತ್ವತಿ:" । ಜಲದಲ್ಲಿ ಶೀತ ಗುಣವೂ ತೇಜಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಉಷ್ಣ ಗುಣವೂ ಪೃಥಿವೀ ಮತ್ತು ವಾಯುಗಳಲ್ಲಿ ಅನುಷ್ಣಾಶೀತ ಗುಣವೂ ಇರುವವು. "ತತ್ರ ಶೀತಂ ಜಲೇ । ತಣಸ್ತೇಜಸಿ । ಅನುಷ್ಣಾಶೀತ: ಪೃಥಿವೀ- ವಾಯೋ:" ತಂ ಸಂ । "ಸ್ಪರ್ಶಸ್ತ್ವಗಿन्द्रಿಯಗ್ರಾಹ್ಯಸ್ತ್ವಚ: ಸ್ಯಾದುಪಕಾರಕ: । ಅನುಷ್ಣಾಶೀತಶೀತೋಷ್ಣಭೇದಾತ್ ಸ ತ್ರಿವಿಧೋ ಮತ:" ಭಾಷಾಪಂ । 2. ಇಂದ್ರಿಯ ಮತ್ತು ವಿಷಯಗಳ ಸಂಬಂಧ, ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಗೂ ವಿಷಯಗಳಿಗೂ ಆಗುವ ಸಂಪರ್ಕ. ಈ ಸಂಪರ್ಕದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಶೀತ ಉಷ್ಣ ಕಾರಿನ್ಯ ಮುಂತಾದುವುಗಳಿಂದ ಸುಖದುಃಖಗಳು ಉಂಟಾ ಗುವವು. "ಮಾತ್ರಾಸ್ಪರ್ಶಸ್ತು ಕೌಂತೇಯ ಶೀತೋಷ್ಣಸುಖದುಃಖದಾ:" ಗೀತಾ 2-14 । 3. ಇಂದ್ರಿಯಕ್ಕೆ ಗೋಚರವಾಗುವ ವಸ್ತು, ವಿಷಯ. 4. (ವೈಯಾಕರಣರ ಮತದಲ್ಲಿ) "ಕ್" ಕಾರ ಮೊದಲುಗೊಂಡು "ಮ" ಕಾರದವರೆಗಿನ ವರ್ಣ (ಅಕ್ಷರ) ಗಳು. ಇವು ಸ್ವರ್ಶಗುಣವುಳ್ಳ ವರ್ಣಗಳು. "ಕಾದಯೋ ಮಾವಸಾನಾ: ಸ್ಪರ್ಶಾ:" । "ಸ್ವರಾ ವಿಶತೀರೇಕಶ್ಚ ಸ್ಪರ್ಶಾನಾಂ ಪञ्चविंशति: । ಯಾದಯಶ್ಚ ಸ್ಮೃತಾಃಪ್ರಾಣಿ ಚತ್ವಾರಶ್ಚ ಯಮಾ: ಸ್ಮೃತಾ:" ಪಾಂ ಶಿಂ । 5. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. 6. ಯುದ್ಧ. 7. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. 8. ಮುಟ್ಟುವುದು,

ಸೋಕುವುದು. "ವಾಶಕ್ತುಸೇ ಯದಗ್ನಿ ತದಿದಂ ಸ್ಪರ್ಶಕಮ್ ರತ್ನಮ್" ಶಾಕುಂ 1-24 । 9. ಗೂಢಪುರುಷ, ರಹಸ್ಯ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿಯುಕ್ತನಾದ ಚಾರ, ಪ್ರಣಿಧಿ. 10. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. (ವಿಂ) 11. ಸ್ಪರ್ಶಮಾಡುವವನು, ಮುಟ್ಟುವವನು. "ಸ್ಪರ್ಶೋ ರಜಾಃ ದಾನೇ ಚ ಸ್ಪರ್ಶನೇ ಸ್ಪರ್ಶಕೇಽಪಿ ಚ । ಸ್ಪರ್ಶ: ಸ್ಯಾತ್ ಸಂಪರಾಢೇ ಚ ಪ್ರಣಿಧಾವಪಿ ಪುಸ್ಯಯಮ್" ಮೇದಿಂ ।

ಸ್ಪರ್ಶಕ ಸ್ಪರ್ಶಕ (ವಿಂ) 1. ಮುಟ್ಟು ವವನು, ಸ್ಪರ್ಶಮಾಡು ವವನು. ಸ್ಪರ್ಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೆ) "ಫ್ಲು" (3-1-133) । 2. ದಾನಮಾಡುವವನು.

ಸ್ಪರ್ಶನ ಸ್ಪರ್ಶನ (ಪುಂ) 1. ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಸ್ಪರ್ಶತಿ — ಸ್ಪರ್ಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೆ) "ಯು" (3-2-98) । (ನಂ) 2. ದಾನ, ಕೊಡುಗೆ. ಸ್ಪರ್ಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶ) "ಲ್ಯು" (3-3-114) । 3. ಸ್ಪರ್ಶ, ಮುಟ್ಟುವುದು. 4. ಸಂಬಂಧ. "ಮಹೀತಲಸ್ಪರ್ಶನಮಾತ್ರಭಿನ್ನಮುಷ್ಣಂ ಹಿ ರಾಜ್ಯಂ ಪದಮೇಂದ್ರಮಾಹು:" ರಘುಂ 2-40 । "ಸ್ಪರ್ಶನೋ ಮಾಹತೇ ಪುಸಿ ದಾನೇ ಸ್ಪರ್ಶಂ ತಪುಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ । "ವಿಶ್ರಾಣನಂ ವಿತರಣಂ ಸ್ಪರ್ಶನಂ ಪ್ರತಿ- ಪಾದನಮ್" ಅಮಂ ।

ಸ್ಪರ್ಶ ಸ್ಪರ್ಶ (ಪುಂ) 1. ಗೂಢಚಾರ, ಪ್ರಣಿಧಿ, ರಹಸ್ಯಕಾರ್ಯ ದಲ್ಲಿ ನಿಯುಕ್ತನಾದವನು. ಸ್ಪರ್ಶತಿ — ಸ್ಪರ್ಶ (ವಾಚನ- ಸ್ಪರ್ಶನಯೋ:) "ಅ" (3-1-134) । "ನಿರಾಕೃತೇ ಯದುಭಿರೀತಿ ಪ್ರಕೋಪಿಮಿ: ಸ್ಪರ್ಶೇ ಶನೇಗಂತವತಿ ತತ್ರ ವಿಧಿಷಾಮ್" ಮಾಘಂ 16-20 । 2. ಯುದ್ಧ, ಕಾಳಗ. 3. ಕಾಡು ಮೃಗಗಳೊಡನೆ ಯುದ್ಧ ಮಾಡುವವನು, ಕ್ರೂರ ಪ್ರಾಣಿ ಗಳೊಡನೆ ಹೋರಾಡುವವನು. "ಸ್ಪರ್ಶ: ಪ್ರಣಿಧಿಯುಧಯೋ:" ವಿಶ್ವಂ । "ಚಾರಾಹವೌ ಸ್ಪರ್ಶಿ" ನಾನಾರ್ಥರಂ ।

ಸ್ಪರ್ಶ ಸ್ಪರ್ಶ (ವಿಂ) 1. ವ್ಯಕ್ತವಾದ, ಸ್ಪೃಟವಾದ, ಸಂದೇ ಹಕ್ಕೆ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದ. ಸ್ಪರ್ಶತೇ — ಸ್ಪರ್ಶ (ವಾಚನಸ್ಪರ್ಶ- ನಯೋ:) + ಣಿच् "ಕ್" (3-2-102) । ನಿಪಾಂ (3-2-29) । "ಭೋ: ಸುತ ಹೇ ಮಾಗಧ ಸೌಮ್ಯ ಬಂದಿನ್ ಲೋಕಧುನಾ ಸ್ಪರ್ಶಗುಣಸ್ಯ ಮೇ ಸ್ಯಾತ್" ಭಾಗಂ 4-12-22 । 2. ಸ್ಪೃಟವಾದ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕಾಣಿಸುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಿಳಿಯ ಲಾಗುವ, ಸರಿಯಾಗಿ ಗ್ರಹಿಸುವುದಕ್ಕಾಗುವ. 3. ಸ್ಪೃಟ ವಾದ, ನಿಜವಾದ, ಸಹಜವಾದ, ಸ್ವಾಭಾವಿಕವಾದ. "ಪಾತ್ರಿಕೃತಾತ್ಮಾ ಗುಹೇವನೇನ ಸ್ಪರ್ಶಾಕೃತಿ: ಪತ್ರರಥೇಂದ್ರಕೇತೋ:" ರಘುಂ 18-30 । (ಅವ್ಯಂ) 4. ಸ್ಪೃಟವಾಗಿ, ವ್ಯಕ್ತವಾಗಿ, ಸಂದೇಹವಿಲ್ಲದೆ. "ಸ್ಪರ್ಶಮೇವ ದಲತ: ಪ್ರತಿನಾರ್ಯಸ್ತಿತ್ವಮ- ತ್ವಮಭವದ್ಭದ್ರದಯಸ್ಯ" ಮಾಘಂ 10-46 । 5. ಮುಚ್ಚುಮರೆ ಯಿಲ್ಲದೆ, ಮನಬಿಟ್ಟು, ಬಹಿರಂಗವಾಗಿ,



ಸ್ಪರ್ಶ ಸ್ಪೃಷ್ಟ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ರೀತಿ. ಸ್ಪರ್ಶ (ಬಾಧನ-  
ಸ್ಪರ್ಶನಯೋಃ) "ತತ್" (3-1-133). (ವಿಂ) 2. ಬಾಧಿ  
ಸುವ, ತೊಂದರೆ ಕೊಡುವ. 3. ಸ್ಪರ್ಶಮಾಡುವವನು,  
ಮುಟ್ಟುವವನು.

ಸ್ಪೃಕಾ ಸ್ಪೃಕ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ಗಂಧದ್ರವ್ಯ. ಸ್ಪೃಶ್ಯತೇ  
— ಸ್ಪೃಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೇ) "ಕಕ್" ಬಾಹುಂ.

ಸ್ಪೃಶತ್ ಸ್ಪೃಶತ್ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಪರ್ಶಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಮುಟ್ಟು  
ತ್ತಿರುವ. ಸ್ಪೃಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೇ) "ಶತ್" (3-2-124).

"ಸ್ಪೃಶನ್ ಸಶಕ್ತಃ ಸಮಯೇ ಶುಚಾವಪಿ ಸ್ಥಿತಃ ಕರಾಗ್ರೇ ಸಮಗ್ರ-  
ಪಾತಿಮಿಃ" ಭಾಷಂ 1-56. "ರಜಸ್ವಲೇ ತು ಯೇ ನಾರ್ಯಾ-  
ವನ್ಯೋನ್ಯಂ ಸ್ಪೃಶತೋ ಯದಿ | ಸರ್ವಣಿ ಪಶ್ಯಗವ್ಯಂ ತು ಬ್ರಹ್ಮಕುರ್ಮತಃ  
ಪರಮ್" | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜಿಪ್" (4-1-6). —ಶತೀ —ಶತೀ.  
2. ಮುಟ್ಟುತ್ತಿರುವ, ತಲುಪುತ್ತಿರುವ, ಸೇರುತ್ತಿರುವ.

ಸ್ಪೃಶ್ಯ ಸ್ಪೃಶ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಪರ್ಶಮಾಡಬಹುದಾದ, ಮುಟ್ಟು  
ಬಹುದಾದ. ಸ್ಪೃಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೇ) "ಕಪ್" (3-3-169).

2. ಸ್ಪರ್ಶಕ್ಕೆ ಅರ್ಹನಾದ, ಮುಟ್ಟಲು ಯೋಗ್ಯನಾದ.

ಸ್ಪೃಶ್ಯಮಾನ ಸ್ಪೃಶ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ಸ್ಪರ್ಶಮಾಡಲ್ಪಡು  
ತ್ತಿರುವ. ಸ್ಪೃಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಕ್" (3-2-124).

ಸ್ಪೃಷ್ಠ ಸ್ಪೃಷ್ಠ (ಪುಂ) 1. ಕಂಠಾದಿಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ವರ್ಣ  
(ಅಕ್ಷರ)ಗಳು ಹುಟ್ಟಲು ನಡೆಯುವ ಒಂದು ಪ್ರಯತ್ನ.  
ಈ ಪ್ರಯತ್ನವು ಆಮ್ಯಂತರಃ ಮತ್ತು ಬಾಹ್ಯಃ ಎಂದು  
ಎರಡು ವಿಧ. ಅಭ್ಯಂತರ ಪ್ರಯತ್ನವು ಸ್ಪೃಷ್ಠ ಈಷತ್  
ಸ್ಪೃಷ್ಠ ವಿವೃತ ಮತ್ತು ಸಂವೃತಗಳೆಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧ.  
ಸ್ಪೃಷ್ಠ (ಪ್ರಯತ್ನ) ವು ಸ್ಪರ್ಶ (ಕಾದಿ ಮಾತ) ವರ್ಣಗಳ  
ಉಚ್ಚಾರಣೆಗೆ ನಡೆಯುವ ಒಂದು ಪ್ರಯತ್ನ. ಕಂಠಾದಿ  
ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ವರ್ಣಗಳು ಹುಟ್ಟಲು ಐದು ವಿಧ ಕಾರಣ  
ಗಳಿರುವವು. "ಸ್ವರತಃ ಕಾಲತಃ ಸ್ಥಾನಾತ್ ಪ್ರಯತ್ನಾನು-  
ಪ್ರದಾನತಃ | ಇತಿ ವರ್ಣವಿದಃ ಪ್ರಾಹುಃ ನಿಪುಣಂ ತಂ ನಿಬೋಧತ" |  
ಪಾಂ ಶಿಂ | "ಸ್ಪೃಷ್ಠಂ ಪ್ರಯತನಮ್ ಸ್ಪರ್ಶಿನಾಮ್" | (ವಿಂ)  
2. ಸ್ಪರ್ಶಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಮುಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ. ಸ್ಪೃಶ (ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೇ)  
"ಕ್" (3-2-102). 3. ಆವಿಷ್ಟವಾದ, ಆಕ್ರಮಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. "ಶಕ್ವಾಸ್ಪೃಷ್ಠಾ ಇವ ಜಲಮುಚಸ್ತ್ವಾದೃಶಾ ಜಾಲಮಾಗ್ಃ" |  
ಮೇಘಂ 2-6. 4. ಅನ್ವಯಿಸುವ, ಸೇರುವ, ಸಂಬಂಧ  
ಪಡುವ. "ಅಗ್ನಿಮಾದಿಗುಣೋಪೇತಮಸ್ಪೃಷ್ಠಪುರುಷಾಂತರಮ್" ಕುಮಾಂ  
6-95.

ಸ್ಪೃಷ್ಠಾಸ್ಪೃಷ್ಠ ಸ್ಪೃಷ್ಠಾಸ್ಪೃಷ್ಠ (ನಂ) ಅನ್ಯೋನ್ಯ ಸಂಪರ್ಕ  
ಸುವುದು, ಪರಸ್ಪರ ಸ್ಪರ್ಶಮಾಡುವುದು. ಸ್ಪೃಷ್ಠೇನ ಆ  
ಸ್ಪೃಷ್ಠಮ್ |

ಸ್ಪೃಷ್ಠಾಸ್ಪೃಷ್ಠ ಸ್ಪೃಷ್ಠಾಸ್ಪೃಷ್ಠ (ವ್ಯಂ) ಪರಸ್ಪರ ಸ್ಪರ್ಶ.  
ಒಬ್ಬರಿಗೊಬ್ಬರು ಮುಟ್ಟುವುದು. ಸ್ಪೃಷ್ಠೇನ ಸ್ಪೃಷ್ಠೇನ ಯದ್ಭವತಿ  
ತತ್ | ಕರ್ಮವ್ಯತಿಹಾರೇ "ಇಕ್" (4-4-129). ಪೂರ್ವ-  
ಪದಾಂತಸ್ಯ ದೀರ್ಘಃ | "ತೀರ್ಥೇ ವಿವಾಹೇ ಯಾತ್ರಾयां ಸಙ್ಗ್ರಾಮೇ  
ದೇಶವಿಪ್ಲವೇ | ನಗರಗ್ರಾಮದಾಹೇ ಚ ಸ್ಪೃಷ್ಠಾಸ್ಪೃಷ್ಠಿನ್ ದುಷ್ಯತಿ" |  
ಬೃಹಸ್ಪತಿಃ |

ಸ್ಪೃಷ್ಠಿ ಸ್ಪೃಷ್ಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ಪರ್ಶ, ಮುಟ್ಟುವುದು. ಸ್ಪೃಶ  
(ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೇ) "ಕ್ರಿನ್" (3-3-94).

ಸ್ಪೃಹಣೀಯ ಸ್ಪೃಹಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. 3. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಬಹು  
ದಾದ. ಸ್ಪೃಹ (ಇಪ್ಸಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್"  
(3-1-96). "ವನ್ಯಾ ತ್ವಮೇವ ಜಗತಃ ಸ್ಪೃಹಣೀಯಸಿದ್ಧಿರೇವಂ-  
ವಿಧೇವಿಲಸಿತೇರತಿಬೋಧಿಸತ್ವಃ" | ಮಾಲತೀಂ 10-21. 4.  
ಶ್ಲಾಘ್ಯವಾದ. "ಸ್ಪೃಹಣೀಯಗುಣೇಮಹಾತ್ಮಮಿಶ್ವರೀತೇ ವರಮನಿ"  
ಕಿರಾಂ 2-34.

ಸ್ಪೃಹಯತ್ ಸ್ಪೃಹಯತ್ (ವಿಂ) ಅಸೆವಡುತ್ತಿರುವ, ಅಪೇಕ್ಷಿ  
ಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ಪೃಹ (ಇಪ್ಸಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (3-2-124).

ಸ್ಪೃಹಯಾಲ್ಯ ಸ್ಪೃಹಯಾಲ್ಯ (ವಿಂ) ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಅಸೆವಡುವ.  
ಸ್ಪೃಹ (ಇಪ್ಸಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ "ಆಲ್ಯಕ್" (4-2-156).  
ಣೇರಯಾದೇಶಃ (6-4-55). "ವಾತಾಶನೋಽಹಮಿತಿ ಕಿ  
ವಿನತಾಸುತಸ್ಯ ಶ್ವಾಸಾನಿಲೇನ ಭುಜಗಃ ಸ್ಪೃಹಯಾಲ್ಯತಾಲ್ಯಃ"  
ಚಂ ರಾಂ |

ಸ್ಪೃಹಾ ಸ್ಪೃಹಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಸೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಸ್ಪೃಹ (ಇಪ್ಸಾಯಾಮ್)  
+ ಣಿಕ್ "ಅಙ್" (3-3-106). "ಕಥಮನ್ಯೇ ಕರಿಷ್ಯಂತಿ  
ಪುತ್ರಮ್ಯಃ ಪುತ್ರಿಣಃ ಸ್ಪೃಹಾಮ್" ವೇಣೀಂ 3-31. "ತಪೋ ಧನಂ  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾನಾಂ ತಪಃ ಕಲ್ಪತರಸ್ತಥಾ | ತಪಸ್ಯಾ ಕಾಮಧೇನುಶ್ಚ  
ಸಂತತಂ ತಪಸಿ ಸ್ಪೃಹಾ" || "ಕ್ಷತ್ರಿಯಾಣಾಂ ಚ ತಪಸಿ  
ಸ್ಪೃಹಾತೀವ ಪ್ರಶಂಸಿತಾ | ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾನಾಂ ವಿವಾಧೇಃ ಸ್ಪೃಹಾತೀವ  
ವಿನಿಂದಿತಾ" ||

ಸ್ಪೃಹ್ಯ ಸ್ಪೃಹ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಅಪೇಕ್ಷಿಸ  
ಬಹುದಾದ. ಸ್ಪೃಹ (ಇಪ್ಸಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ "ಅಕ್" (3-1-99). 3. ಮಾತುಲುಂಗ ವೃಕ್ಷ, ಮಾದಳದ ಗಿಡ.

ಸ್ಪೃಷ್ಠ ಸ್ಪೃಷ್ಠ (ವಿಂ) ಸ್ಪರ್ಶಮಾಡುವ, ಮುಟ್ಟುವ. ಸ್ಪೃಶ  
(ಸಂಸ್ಪರ್ಶನೇ) "ತತ್" (3-1-133). ವಾ ಅಮ್ (6-1-59).  
ಸ್ಪೃಷ್ಠ ಸ್ಪೃಷ್ಠ. "ಘಾತಾ ಮಕ್ಷಯಿತಾ ದ್ರಷ್ಟಾ ಸ್ಪೃಷ್ಠಾ ಶ್ರೋತಾ  
ಚ ಪಂಚಮಃ | ಮನ್ತಾ ಬೋಧಾ ಚ ಸಪ್ತಮೇ ಭವಂತಿ ಪರಮರ್ತ್ವಿಜಃ"  
ಭಾಂ ಆಶ್ವಂ |



ಸ್ಕಟಾ ಸ್ಫುಟಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸರ್ಪದ ಹೆಡೆ. ಸ್ಕುಟ (ವಿಕಸನೆ)

“ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪)। ಪೃಷಂ ।

ಸ್ಕಟಿಕ ಸ್ಫುಟಿಕ (ಪುಂ) 1. ಸ್ಫುಟಿಕ ಶಿಲೆ, ಸ್ಫುಟವೂ ಪಾರದರ್ಶಕವೂ ಆದ ಒಂದು ಖನಿಜ. 2. ಸೂರ್ಯಕಾಂತ ಶಿಲೆ. “ನವನಗವನಲೇಖಾಸ್ಯಾಮಮಯಾಭಿರಾಭಿಃ ಸ್ಕಟಿಕ-ಕಟಕಭೂಮಿನಿರ್ದಯತೀಶ ಶೈಲಃ” ಮಾಘಂ ೪-೬೫ ।

ಸ್ಕಟಿಕಾಚಲ ಸ್ಫುಟಿಕಾಚಲ (ಪುಂ) ಸ್ಫುಟಿಕದಂತೆ ಸ್ಫುಟವಾದ ಪರ್ವತ, ಶುಭ್ರವಾದ ಪರ್ವತ, ಕೈಲಾಸಪರ್ವತ. ಸ್ಕಟಿಕವತ್ ಶುಭ್ರೋಚಲಃ ।

ಸ್ಕಟಿಕಾದ್ರಿ ಸ್ಫುಟಿಕಾದ್ರಿ (ಪುಂ) ಕೈಲಾಸಪರ್ವತ. ಸ್ಕಟಿಕ-ವತ್ ಶುಭ್ರೋದ್ರಿಃ ।

ಸ್ಕಟಿಕಾಭ್ರ ಸ್ಫುಟಿಕಾಭ್ರ (ಪುಂ) ಕರ್ಪೂರ.

ಸ್ಕಟಿಕ ಸ್ಫುಟಿಕ (ನಂ) 1. ಸ್ಫುಟಿಕ. ಸ್ಕಟಿಕ ಸ್ವಾತ್ “ಅಣ್” (೫-೪-೩೮) । (ವಿಂ) 2. ಸ್ಫುಟಿಕಸಂಬಂಧವಾದ. “ಸ್ಕುರತುಪಾರಾಶುಮರೀಚಿಜಾಲೇವಿನಿಹ್ನುತಾಃ ಸ್ಕಟಿಕ-ಸಿಂಧುಪತ್ನೀಃ” ಮಾಘಂ ೩-೪೩ ।

ಸ್ಕಾತ ಸ್ಫುಟ (ವಿಂ) 1. ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿದ. 2. ಹೇರಳವಾದ, ಪುಷ್ಕಳವಾದ.

ಸ್ಕಾತಿ ಸ್ಫುಟಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಭಿವೃದ್ಧಿ, ಬೆಳವಣಿಗೆ. ಸ್ಕಾಯಿ (ವೃದ್ಧಿ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೯೪) । 2. ಹೇರಳ, ಸಮೃದ್ಧಿ, ಪುಷ್ಕಳವಾಗಿರುವಿಕೆ.

ಸ್ಕಾರ ಸ್ಫುಟ (ಪುಂ) 1. (ಕರಗಿಸಿದ) ಸಂವರ್ಣ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ನೋರೆ, -ಬುದ್ಬದ, -ಗುಳ್ಳೆ. ಸ್ಕಾಯಿ (ವೃದ್ಧಿ) “ರಕ್” (೩-೨-೧೩) । ಸ್ಕುರ (ಚಲನೆ) “ಘನ್” (೩-೩-೧೮) । ಘನಿ ಆತ್ಮಮ್ (೬-೧-೪೭) । 2. ಹೆಚ್ಚುವುದು, ವೃದ್ಧಿಹೊಂದುವುದು, ದೊಡ್ಡದಾಗುವುದು. 3. ಉಬ್ಬಿಕೊಂಡಿರುವುದು. 4. ಕಂಪಿಸುವುದು, ಅದಿರುವುದು, ನಡುಗುವುದು, ವೇಗವಾಗಿ ಮಿಡಿಯುವುದು. (ವಿಂ) 5. ದೊಡ್ಡದಾದ, ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿದ, ಹೆಚ್ಚಿದ. 6. ಅಗಲವಾದ, ವಿಸ್ತಾರವಾದ. “ಸ್ಕಾರಸ್ತು ಕನಕಾದಿನಾಂ ಬುದ್ಬದೇ ವಿಪುಲೇಷಿ ಚ” ಹೇಮಂ । 7. ದೊಡ್ಡ ಧ್ವನಿಯು, ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೇಳಿಸುವ, ಎತ್ತರದ ಸ್ವರದ.

ಸ್ಕಾರಣ ಸ್ಫುಟಣ (ನಂ) ಕಂಪಿಸುವುದು, ಅದಿರುವುದು, ಮಿಡಿಯುವುದು.

ಸ್ಕಾಲ ಸ್ಫುಟ (ಪುಂ) ನಡುಗುವುದು, ಅದಿರುವುದು, ಮಿಡಿಯುವುದು.

ಸ್ಕಾಲನ ಸ್ಫುಟನ (ನಂ) 1. ನಡುಗಿಸುವುದು, ಅದಿರುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. 2. ಹೊಡೆತ, ಅಪ್ಪಳಿಸುವುದು. “ಅನವರತ

ಘನುರ್ಜಾಸ್ಕಾಲನಕ್ರೂರಪೂರ್ವ ರವಿಕಿರಣಸಹಿಷ್ಣುಸ್ವೇದಲೇಶೈರಮಿತ್ರಮ್” ಶಾಕುಂ ೨-೪ । 3. ವಿಶ್ವಾಸದಿಂದ ಮೆಲ್ಲಗೆ ಬೆನ್ನು ತಟ್ಟುವುದು.

ಸ್ಕಿಚ್ ಸ್ಫಿಚ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಿರೆ, ನಿತಂಬ, ಅಂಡು. ಸ್ಕಾಯಿ (ವೃದ್ಧಿ) “ಡಿಚ್” ಬಾಹುಂ । “ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಸ್ಕಿಚೌ ಕಟಿಪ್ರಯೌ” ಅಮಂ । “ಕಟಾಂ ಕೃತಾಂಜ್ಞಾ ನಿರ್ವಾಸ್ಯಃ ಸ್ಕಿಚಂ ವಾಸ್ಯಾ-ವಕರ್ತಯೇತ್” ಮನುಂ ೮-೨೮೧ ।

ಸ್ಕಿರ ಸ್ಫಿರ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುವ, ದೊಡ್ಡದಾಗಿರುವ. ಸ್ಕಾಯಿ (ವೃದ್ಧಿ) “ಕಿರಚ್” (೩-೧-೫೩) । 2. ಅಧಿಕವಾಗಿರುವ, ವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿರುವ. “ಸ್ಕಿರಂ ಭಯಶ್ಚ ಭೀರಿಚ್” ಅಮಂ ।

ಸ್ಕೀತ ಸ್ಫೀತ (ವಿಂ) 1. ಹೆಚ್ಚಿದ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿಹೊಂದಿದ. ಸ್ಕಾಯಿ (ವೃದ್ಧಿ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) । ಸ್ಕೀಭಾವಃ (೬-೧-೨೨) । 2. ದೊಡ್ಡದಾಗಿರುವ. “ಸ್ಕೀತಾನ್ ಜನ-ಪದಾಂತಃ ಪುರಾಣಮವಜಾಕರಾನ್ । ಕ್ಷೇತಖರ್ವದವಾಟೀಶ್ಚ ವನಾನ್ಯುಪ-ವನಾನಿ ಚ” ಭಾಗಂ ೧-೬-೧೧ ।

ಸ್ಕುಟ ಸ್ಫುಟಿ (ವಿಂ) 1. ಎಕಸಿತವಾದ, ಅರಳಿದ. ಸ್ಕುಟ (ವಿಕಸನೆ) “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೫) । “ನವಪಲಾಶಪಲಾಶ-ವನಂ ಪುರಃ ಸ್ಕುಟಪರಾಗಪರಾಗತಪಕ್ಷಜಮ್” ಮಾಘಂ ೬-೨ । 2. ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ವ್ಯಕ್ತವಾಗಿರುವ. “ಪರವೃದ್ಧಿಮಿ-ರಾಹಿತವ್ಯಯಃ ಸ್ಕುಟನಿರ್ಮಿತ್ತದುರಾಶಯೋಷಮಃ” ಮಾಘಂ ೧೬-೨೩ । 3. ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ, ಎಲ್ಲರಿಗೂ ತಿಳಿದಿರುವ. “ಪ್ರಕೃತಿ-ಸ್ಯಮೇವ ನಿಪುಣಾಗಮಿತಂ ಸ್ಕುಟನೃತ್ಯಲೀಲಮಮವತ್ಸುತನೋಃ” ಮಾಘಂ ೯-೭೯ । 4. ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ, ನಿರ್ವಿಫಲವಾದ. “ಗುಣಂ ಪ್ರವಾಲೋಪಹಿತಂ ಯದಿ ಸ್ಯಾತ್ ಮುಕ್ತಾಫಲಂ ವಾ ಸ್ಕುಟವಿಧ್ರಮಸ್ಯಮ್” ಕುಮಾರಂ ೧-೪೪ । 5. ಹರಡಿರುವ, ಬೆದರಿರುವ, ಪ್ರಸರಿಸಿರುವ. 6. ಭಿನ್ನವಾಗಿರುವ, ಒಡೆದಿರುವ, ಸಿಡಿದಿರುವ. ಸ್ಕುಟಿರ್ (ವಿಶರಣೆ) “ಕಃ” (೩-೧-೧೩೫) । 7. ನಿಶ್ಚಯವಾದ. 8. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾದ, ಪ್ರಕಟವಾದ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕಾಣಿಸುವ. “ತೇ ಹಾಡಕಃ ಸ್ಕುಟವರಾಡಕಗೌರಗರ್ಭಾಃ” ನೈಷಂ ೧೧-೧೧೦ । (ಅವ್ಯಂ) 9. ನಿಶ್ಚಯವಾಗಿ. “ಸ ಮಾಂ ನ ಕಾಂತಃ ಸ್ಕುಟಮನ್ತಃಪ್ರಜ್ಞಿತಾ ನ ತಂ ಮನಸ್ತನ್ವ ನ ಕಾಯವಾಯವಃ” ನೈಷಂ ೯-೯೪ । 10. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ, ವ್ಯಕ್ತವಾಗಿ, ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ. “ಪ್ರಕಟೀಕೃತಾ ಜಗತಿ ಯೇನ ಖಲು ಸ್ಕುಟಮಿನ್ದ್ರತಾಚ ಮಯಿ ಗೋವಿಭಿದಾ” ಮಾಘಂ ೯-೮೦ । 11. ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿ, ಎಲ್ಲರಿಗೂ ತಿಳಿದಿರುವಂತೆ.

ಸ್ಕುಟತ್ ಸ್ಫುಟಿತ್ (ವಿಂ) 1. ಎಕಸಿತವಾಗುತ್ತಿರುವ, ಅರಳುತ್ತಿರುವ. ಸ್ಕುಟ (ವಿಕಸನೆ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) ।



2. ಒಡೆಯುತ್ತಿರುವ, ಭಿನ್ನವಾಗುತ್ತಿರುವ, ಹೋಳಾಗುತ್ತಿರುವ. ಸ್ಕುಟಿರ್ (ವಿಶರಣೆ) "ಶತ್" । "ಸ್ಕುಟತಿ ಹಾರಮಣಿ ಮದನೋಷ್ಮಣಾ ಹೃದಯಮಪ್ಯನಲಂಕೃತಮಥ ತೇ" ನೆಪಂ ೪-೧೦೯ । 3. ವ್ಯಕ್ತವಾಗುತ್ತಿರುವ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗುತ್ತಿರುವ.

**ಸ್ಕುಟತಾ ಸ್ಪುಟಿತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿರುವಿಕೆ, ವ್ಯಕ್ತವಾಗಿರುವಿಕೆ, ವಿಶದವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಸ್ಕುಟಸ್ಯ ಭಾವ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯) । "ಸ್ಕುಟತಾ ನ ಪದೇರಪಾಕೃತಾ ನ ಚ ನ ಸ್ವೀಕೃತಮರ್ಥಗೌರವಮ್" ಕಿರಾಂ ೨-೨೭ ।

**ಸ್ಕುಟಿ ಸ್ಪುಟಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಲು ಬಿರಿಯುವುದು.

**ಸ್ಕುಟಿತ ಸ್ಪುಟಿತ** (ವಿಂ) 1. ವಿಕಸಿತವಾದ, ಅರಳಿರುವ. ಸ್ಕುಟ (ವಿಕಸನೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) । "ಉತ್ಕಿಷ್ಠ-ಸ್ಕುಟಿತಸರೋಹಾರ್ಯಮುಚ್ಚೈ: ಸಸ್ನೇಹಂ ವಿಹಗಸ್ತೇರಿವಾಲಪಂತಿ" ಮಾಘಂ ೮-೧೪ । 2. ಒಡೆದಿರುವ, ಸೇರಿರುವ. ಸ್ಕುಟಿರ್ (ವಿಶರಣೆ) "ಕ್ತ:" । "ಅಸದೃಶಜನಸಂಪ್ರಯೋಗಮೀರೋಹೃದಯಮಿವ ಸ್ಕುಟಿತಂ ಮಹಾಗೃಹಸ್ಯ" ಮುಚ್ಚಂ ೩-೨೨ । 3. ವ್ಯಕ್ತವಾದ, ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ.

**ಸ್ಕುಟೀಕೃತ ಸ್ಪುಟೀಕೃತ** (ವಿಂ) 1. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕಾಣಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕೇಳಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ.

**ಸ್ಕುಟೀಭವತ್ ಸ್ಪುಟೀಭವತ್** (ವಿಂ) ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಆಗುತ್ತಿರುವ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕೇಳಿಸುವಂತೆ ಆಗುತ್ತಿರುವ. ಅಸ್ಕುಟಾ ಸ್ಕುಟಾ ಭವಂತಿ ಸ್ಕುಟ + ಭೂ (ಸತ್ತಾಯಾಮ್) "ಚ್ವಿ:" (ವಾಂ ೪-೪-೪೦) । ದೀರ್ಘ: (೭-೪-೩೩) । "ಸ್ಕುಟೀ-ಭವದ್ಭ್ರಾಮವಿಶೇಷಮುಚ್ಚಂತಾಮವೇಕ್ಷಮಾಣಂ ಮಹತೀಂ ಮುಹುರ್ಮುಹು:" ಮಾಘಂ ೧-೧೦ ।

**ಸ್ಕುಟಕರ ಸ್ಪುಟಕರ** (ಪುಂ) ಆಗಿ. ಸ್ಕುತ್ ಇತಿ ಅವ್ಯಕ್ತ-ಶಬ್ದಸ್ಯ ಕರ: ।

**ಸ್ಕುಟಕಾರ ಸ್ಪುಟಕಾರ** (ಪುಂ) ಸ್ಪುಟ ಎಂಬ ಅನುಕರಣ ಶಬ್ದ. ಸ್ಕುತ್ ಇತಿ ಕಾರ: ಅನುಕರಣಶಬ್ದ: ।

**ಸ್ಕುರ ಸ್ಪುರ** (ಪುಂ) 1. ಕಂಪನ, ಅದಿರುವುದು, ಮಿಡಿಯುವುದು. ಸ್ಕುರ (ಸಂಚಲನೆ) ಭಾವೇ "ಖ್" (೩-೩-೧೮) । 2. ಪ್ರಕಾಶ. 3. ಹೊಳೆಯುವುದು, ಸ್ಫುರಿಸುವುದು, ಬುದ್ಧಿಗೆ ತೋರುವುದು. ಸ್ಕುರ (ಸ್ಫುರಣೆ) "ಖ್" ।

**ಸ್ಫುರಣ ಸ್ಪುರಣ** (ನಂ) 1. ಕಂಪಿಸುವುದು, ಅದಿರುವುದು, ಮಿಡಿಯುವುದು. ಸ್ಫುರ(ಸಂಚಲನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) । ಅಂಗಗಳ ಮಿಡಿತವು ಶುಭಾಶುಭ ಫಲಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸುವುದು. 2. ಬುದ್ಧಿಗೆ ಹೊಳೆಯುವುದು, ಮನಸ್ಸಿಗೆ

ತೋರುವುದು, ಸ್ಫುರಿಸುವುದು. 3. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವುದು, ಹೊಳೆಯುವುದು. 4. ಹೊರಳಾಡುವುದು.

**ಸ್ಫುರತ್ ಸ್ಪುರತ್** (ವಿಂ) 1. ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅದಿರುತ್ತಿರುವ, ಕಂಪಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ಫುರ (ಸಂಚಲನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಸ್ವೇರಂ ಕೃತಾಸ್ಕಾಲನಲಾಲಿತಾನ್ ಪುರ: ಸ್ಫುರತ್ತನುನ್ ದರ್ಶಿತಲಾಭವಕ್ರಿಯಾ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೬ । 2. ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ. "ಸ್ಫುರದಂಶುಜಾಲ-ಮಥ ಶೀತಠ್ವ: ಕಕುಭಂ ಸಮಸ್ಕುರುತ ಮಾಘವನೀಮ್" ಮಾಘಂ ೯-೨೪ । 3. ಚಂಚಲವಾದ, ಅಲುಗಾಡುತ್ತಿರುವ. "ವಕ್ರೇಣ ರೇಜೇ ಯಮುನಾಜಲೌಖ: ಸ್ಫುರನ್ಮಹಾವತಂ ಇವೇಕಬಾಹು:" ಮಾಘಂ ೩-೧೭ । 4. ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ, ಬುದ್ಧಿಗೆ ತೋರುತ್ತಿರುವ. 5. ಎಚ್ಚರಗೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಎಳುತ್ತಿರುವ (ಪುಲಕ, ರೋಮಾಂಚ). "ಸ್ಫುರತ್ತನುರೂಪ-ಪಾಣಿನಾ" ಮಾಘಂ ೧೭-೧೧ । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಂತಿ -೨೬. "ವಿಭಿನ್ನವರ್ಣಾ ಗಠಾಘ್ರಜೇನ ಸೂರ್ಯಸ್ಯ ರಥ್ಯಾ: ಪರಿತ: ಸ್ಫುರಂತ್ಯಾ" ಮಾಘಂ ೪-೧೪ ।

**ಸ್ಫುರಮಾಣ ಸ್ಪುರಮಾಣ** (ವಿಂ) ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅಲುಗಾಡುತ್ತಿರುವ, ಕಂಪಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ಫುರ (ಸಂಚಲನೆ) "ಶಾನತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಸ್ಫುರಮಾಣನೆತ್ರಕುಸುಮೋಠದಲ-ಮಮೃತ ಭೂಮದ್ಭಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೪-೬೦ ।

**ಸ್ಫುರಿತ ಸ್ಪುರಿತ** (ನಂ) 1. ಅದಿರುವುದು, ಕಂಪಿಸುವುದು, ಚಲಿಸುವುದು. ಸ್ಫುರ (ಸ್ಫುರಣೆ) ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) । 2. ಪ್ರಕಾಶಿಸುವುದು, ಹೊಳೆಯುವುದು. 3. ಮನಸ್ಸಿಗೆ ತೋರುವುದು, ಬುದ್ಧಿಗೆ ಹೊಳೆಯುವುದು. 4. ಅಲುಗಾಡುವುದು. (ವಿಂ) 5. ಪ್ರಕಾಶಮಾನವಾದ, ಉಜ್ಜ್ವಲವಾದ. "ಅನ್ಯೂನಂ ಗುಣಮಮೃತಸ್ಯ ಧಾರಯಂತಿ ಸಂಫುಲ-ಸ್ಫುರಿತಸರೋಹಾವತಂಸಾ" ಮಾಘಂ ೮-೪೨ । 6. ಪ್ರತಿಫಲಿಸಿದ, ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿಸಿದ. "ದ್ವಿರದದಂತವಲಕ್ಷಮಲಕ್ಷಯತ ಸ್ಫುರಿತ-ಭೃಗ್ಮಗುಣ್ಣವಿ ಕೇತಕಮ್" ಮಾಘಂ ೬-೩೪ । 7. ಅದಿರಿದ, ಕಂಪಿಸಿದ, ಮಿಡಿದ. 8. ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಹೊಳೆದ, ಬುದ್ಧಿಗೆ ತೋರಿದ. 9. ಅಲುಗಾಡಿದ.

**ಸ್ಫುಲ ಸ್ಪುಲ** (ನಂ) ವಸ್ತ್ರಗೃಹ, ಗುಡಾರ, ಡೇರೆ. ಸ್ಫುಲ (ಸಂಚಲನೆ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೪) ।

**ಸ್ಫುಲನ ಸ್ಪುಲನ** (ನಂ) 1. ಕಂಪಿಸುವುದು, ಚಲಿಸುವುದು, ಅದಿರುವುದು. ಸ್ಫುಲ (ಸಂಚಲನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) । 2. ಅಲುಗಾಡುವುದು.

**ಸ್ಫುಲಿಜ್ಞ ಸ್ಪುಲಿಂಗ** (ಪುಂ) ಆಗ್ನಿಯ ಕಣ, ಬೆಂಕಿಯ ಕಿಡಿ. ಸ್ಫುಲ (ಸಂಚಲನೆ) "ಕ:" (೩-೧-೧೩೪) । ಸ್ಫು ಇತ್ಯನುಕರಣ-



ಶಬ್ದ:— ಸ್ಕುನಾ ಫುಕಾರೇಣ ಲಿಙ್ಗತಿ—ಲಿಗಿ (ಗತೌ)  
“ಅಚ್” (೩-೧-೧೩೪) ಇತಿ ವಾ । “ಸ್ಕುಲಿಜ್ಞಾವಸ್ಥಯಾ  
ವಹ್ನೇರಧಾಪೇಕ್ಷ ಇವ ಸ್ಥಿತ:” ಶಾಕುಂ ೭-೧೫ ।

ಸ್ಕುಲಿಜ್ಞಾನಿ ಸ್ಕೃಲಿಂಗಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಯ ಸಪ್ತದಿಹೈ  
ಗಲಿಲ್ಲೊಂದು. ಸ್ಕುಲಿಜ್ಞಾಸ್ತಾಸ್ತಿ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೫) ।  
“ಜಿಪ್” (೪-೧-೫) ।

ಸ್ಕೂರ್ಜಕ ಸ್ಕೂರ್ಜಕ (ಪುಂ) ತೂಬರಿಗಿಡ. ಸ್ಕೂರ್ಜತಿ—ತೂಬಿ  
ಸ್ಕೂರ್ಜ (ವಜ್ರನಿರ್ಧಾಣಿ) “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) ।

ಸ್ಕೂರ್ಜತು ಸ್ಕೂರ್ಜತು (ಪುಂ) ಸಿಡಿಲಿನ ಧ್ವನಿ. ತೂಬಿ ಸ್ಕೂರ್ಜ  
(ವಜ್ರನಿರ್ಧಾಣಿ) “ಅಥುಚ್” (೩-೩-೮೯) ।

ಸ್ಕೂರ್ತಿ ಸ್ಕೂರ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅದಿರಾಡುವುದು, ಕಂಪನ,  
ಸ್ಪಂದನ. ಸ್ಕೂರ್ (ಸಂಚಲನೆ) “ಫಿನ್” (೩-೩-೯೪) ।  
2. ಬುದ್ಧಿಗೆ ಹೊಳೆಯುವುದು. 3. ವಿಶಾಸಹೊಂದು  
ವುದು. 4. ತೋರ್ಕೆ, ಪ್ರದರ್ಶನ.

ಸ್ಕೂರ್ಯಸ್ ಸ್ಕೂರ್ಯಸ್ (ವಿಂ) ಅತಿಶಯವಾದ. ಸ್ಕೂರ್  
“ಇಯಸುನ್” (೪-೩-೫೭) । ಸ್ಕೂರ್ಯ: (೬-೪-೧೫೭) ।

ಸ್ಕೂರ್ಯ ಸ್ಕೂರ್ಯ (ವಿಂ) ಎಲ್ಲಕ್ಕಿಂತಲೂ ಅತಿಶಯವಾದ.  
ಸ್ಕೂರ್ “ಇಠನ್” (೪-೩-೫೫) । ಸ್ಕೂರ್ಯ: (೬-೪-೧೫೭) ।

ಸ್ಕೂರ್ಯ ಸ್ಕೂರ್ಯ (ಪುಂ) 1. ವರ್ಣಾತ್ಮಕ ಶಬ್ದಾಭಿವ್ಯಂಜ್ಯ  
ವಾದ ಅರ್ಥಪ್ರಕಾಶಕ ವ್ಯಾಪಾರ, ವರ್ಣಾಭಿವ್ಯಂಜ್ಯವಾದ  
ಅರ್ಥಪ್ರಕಾಶಕ ನಿತ್ಯಶಬ್ದ. ಸ್ಕೂರ್ಯತೇ ವ್ಯವ್ಯತೇ ವರ್ಣ: ಇತಿ  
ಸ್ಕೂರ್ಯಾರ್ಥೋಽಸ್ಮಾತ್ ಇತಿ ವಾ । ಇದು ಯೌಗಿಕ ಶಬ್ದಾಭಿ  
ವ್ಯಂಜ್ಯವಾದ ಶಬ್ದಬ್ರಹ್ಮಸೂಚಕವಾದುದು. ಸ್ಕೂರ್ಯಮಿ-  
ವ್ಯಕ್ತಿಭವಾರ್ಥೋಽಸ್ಮಾತ್ ಎಂಬ ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಯಿಂದ  
ಸ್ಕೂರ್ಯವು ಅರ್ಥಪ್ರಕಾಶಕವಾಯಿತು. ಈ ಪ್ರಕಾಶವೇ  
ಜ್ಞಾನ. ಸ್ಕೂರ್ಯವು (1) ವರ್ಣಸ್ಕೂರ್ಯ: (2) ಪದಸ್ಕೂರ್ಯ:  
(3) ವಾಕ್ಯಸ್ಕೂರ್ಯ: (4) ಅಕ್ಷರಪದಸ್ಕೂರ್ಯ: (5) ಅಕ್ಷರವಾಕ್ಯ-  
ಸ್ಕೂರ್ಯ: (6) ವರ್ಣಜಾತಿಸ್ಕೂರ್ಯ: (7) ಪದಜಾತಿಸ್ಕೂರ್ಯ: ಮತ್ತು  
(8) ವಾಕ್ಯಜಾತಿಸ್ಕೂರ್ಯ: ಎಂದು ಎಂಟು ವಿಧ. ವೈಯಾ  
ಕರಣರು ವಾಕ್ಯಸ್ಕೂರ್ಯವನ್ನು ಮಾತ್ರ ಅಂಗೀಕರಿಸಿರು  
ತ್ತಾರೆ. “ಅಕ್ಷರಾಣಾಮಕಾರಸ್ತ್ವಂ ಸ್ಕೂರ್ಯಸ್ತ್ವಂ ವರ್ಣಸಂಶ್ರಯ:”  
ಹರಿವಂ । 2. ವಿದಾರಣ, ಒಡೆಯುವುದು, ಸೇಳುವುದು.  
ಸ್ಕೂರ್ತಿ (ವಿಶರಣ) ಭಾವೇ “ಫುಲ್” (೩-೩-೧೮) । “ಶಬ್ದ:  
ಸಮವದ್ದೋರೋ ವೇಣುಸ್ಕೂರ್ಯಸಮೋ ಯುಧಿ” ಭಾಂ ವನಂ ।  
3. ಸ್ಕೂರ್ಯಕ, ಸಿಡುಬು. ಸ್ಕೂರ್ಯತಿ—ಸ್ಕೂರ್ತಿ “ಅಚ್”  
(೩-೧-೧೩೪) । 4. ಉಡ, ಬಾವು, ಗೆಡ್ಡೆ. “ಗುಣಸ್ಯೋಪರಿ  
ಸ್ಕೂರ್ಯ:” ।

ಸ್ಕೂರ್ಯಕ ಸ್ಕೂರ್ಯಕ (ಪುಂ) ಸಿಡುಬುರೋಗ. ಸ್ಕೂರ್ತಿ  
(ವಿಶರಣ) “ಫುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) ।

ಸ್ಕೂರ್ಯ ಸ್ಕೂರ್ಯ (ನಂ) 1. ಒಡೆಯುವುದು, ಸೇಳುವುದು.  
ಸ್ಕೂರ್ತಿ (ವಿಶರಣ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) । “ಶಬ್ದ-  
ಸ್ಕೂರ್ಯವತ್ಸಯ ಯಸ್ಮಾತ್ತೀವಾಶ್ಚ ವೇದನಾ:” ಸುಶ್ರುತಂ । 2.  
ಬೆರಳುಗಳ ಗಿಣ್ಣುಗಳನ್ನು ಬಗ್ಗಿಸು (ಮುರಿಯು)ವುದರಿಂದ  
ಆಗುವ ಶಬ್ದ. 3. ಚುಟುಕಾಡುವುದು. 4. ಸಂಯುಕ್ತ  
ವರ್ಣ (ಅಕ್ಷರ)ಗಳನ್ನು ಪ್ರತ್ಯೇಕಿಸುವುದು, —ಬಿಡಿಸಿ  
ಹೇಳುವುದು. 5. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುವುದು, ಶಬ್ದಮಾಡು  
ವುದರ ಮೂಲಕ ಕೋಪವನ್ನು ಪ್ರಕಟಿಸುವುದು. “ಭವಿ-  
ಭಜ್ಜೋಽನಿರ್ದೇಶಬಾಹುಸ್ಕೂರ್ಯನತರ್ಜನಾ:” ಸಾಂ ದಂ ೩-೨೩೨ ।  
(ವಿಂ) 6. ಭೇದಿಸುವವನು, ಒಡೆಯುವವನು, ಸೇಳು  
ವವನು, ಮುರಿಯುವವನು. ಸ್ಕೂರ್ತಿ (ವಿಶರಣ)  
“ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಸ್ಕೂರ್ಯ ಸ್ಕೂರ್ಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಿಡುಸುರುಳಿಯ ಬೈರಿಗೆ.  
ಸ್ಕೂರ್ಯ ಸ್ಕೂರ್ಯ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸರ್ಪದ ಘಟೆ, ಹಾವಿನ ಹೆಡೆ.

ಸ್ಕೂರ್ಯ ಸ್ಕೂರ್ಯ (ವಿಂ) ಸೇಳಲ್ಪಟ್ಟ, ತುಡುಮಾಡ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. ಸ್ಕೂರ್ತಿ (ವಿಶರಣ) + ಣಿಚ್ “ಕ:” (೩-೨-೧೦೨) ।  
“ಸ್ವಂ ವಕ್ಷ: ಸ್ವಯಮಸ್ಕೂರ್ಯ ಕಿಮದ: ಶಸ್ತ್ರಾದಪಿ ಸ್ಕೂರ್ಯಮ್”  
ನಿಷಂ ೧೫-೮೫ ।

ಸ್ಮ ಸ್ಮ (ಅವ್ಯಂ) 1. ವರ್ತಮಾನಕಾಲದ ಕ್ರಿಯಾಪದ  
ದೊಡನೆ ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವ ಒಂದು (ಅವ್ಯಯ) ಪ್ರತ್ಯಯ,  
ಭೂತಕಾಲದ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡಲು ವರ್ತಮಾನಕಾಲದ  
ಕ್ರಿಯಾಪದದೊಡನೆ ಸೇರಿಸುವ ಒಂದು ಪ್ರತ್ಯಯ. “ಅಮೃತ-  
ದ್ರವೈವಿದ್ಯದಂಜದೃಶಾಮಪಮಾರ್ಗಮೋಷಿಪತಿ: ಸ್ಮ ಕರೇ: । ಪರಿತೋ  
ವಿಸರ್ಪಿ ಪರಿತಾಪಿ ಭುಷಂ ವಪುಷೋಜ್ವತಾರಯತಿ ಮಾನವಿಷಮ್”  
ಮಾಘಂ ೯-೩೬ । 2. ಪಾದಪೂರ್ತಿಗಾಗಿ ಸೇರಿಸುವ ಒಂದು  
(ಅವ್ಯಯ) ಪದ, ಅರ್ಥವಿಲ್ಲದೆ ಸೇರಿಸುವ ಒಂದು ಅನವಶ್ಯ  
ವಾದ ಅಧಿಕಪದ. “ತು ಹಿ ಚ ಸ್ಮ ಹ ವೈ ಪಾದಪೂರ್ಣಂ” ಅಮಂ ।  
“ಸನಾ ನಿಯೇ ಬಹಿರ್ವಾಹ್ಯೇ ಸ್ಮಾತೀತೇಽಸ್ತಮದರ್ಶನೇ” ಅಮಂ ।

ಸ್ಮಯ ಸ್ಮಯ (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ಚರ್ಯ, ಅದ್ಭುತ. ಫಿಡ್  
(ಇಷ್ಟಸನೆ) “ಅಚ್” (೩-೩-೫೬) । 2. ಗರ್ವ, ಕೊಬ್ಬು,  
ಅಹಂಕಾರ. “ನ ಚಿಕಿರ್ಮತಿ ಯ: ಸ್ಮಯೋದತೋ ನೃಪತಿಃ-  
ಚ್ಚರಣೋಪಗಂ ಶಿರ:” ಮಾಘಂ ೧೬-೬೮ ।

ಸ್ಮಯಮಾನ ಸ್ಮಯಮಾನ (ವಿಂ) ನಗುತ್ತಿರುವ. ಫಿಡ್  
(ಇಷ್ಟಸನೆ) “ಶಾನಚ್” (೩-೨-೧೨೪) । “ಕುತುಹಲಾ-  
ಚ್ಚಾಹ ಸಿಲೋಪವೇಶಂ ಕಾಕುತ್ಸುಹ ಇಷತ್ ಸ್ಮಯಮಾನ ಆಸ್ತ”  
ಮಹಿಂ ೨-೧೧ ।

ಸ್ಮರ ಸ್ಮರ (ಪುಂ) 1. ಮನ್ನಣೆ, ಕಾಮದೇವ. ಸ್ಮರಯತಿ  
ಉತ್ಕಂಠಯತಿ—ಸ್ಮ (ಆಧ್ಯಾನೇ) + ಣಿಚ “ಅಚ್”



(೩-೧-೧೩೪)। “ಜಗದ್ವಿಶ್ವಕರ್ಮಿಣಿಮಾಃ ಸ್ಮರಸ್ಯ ಪ್ರಭಾವನೀಕೇ  
ತನವೇ ಜಯಂತಿಃ” ಮಾಘಂ ೬-೬೯। “ಸ್ಮರ ಎವ  
ತಾಪಹೇತುರ್ನಿರ್ವಾಪಯಿತಾ ಸ ಎವ ಮೇ ಜಾತಃ” ಶಾಕುಂ ೩-೯।  
2. ಸ್ಮರಣೆ, ನೆನಪು.

ಸ್ಮರಕೃಪಕ ಸ್ಮರಕೂಪಕ (ಪುಂ) ಭಗ, ಯೋನಿ. ಸ್ಮರಸ್ಯ  
ಕೃಪ ಇವ “ಕನ್”।

ಸ್ಮರಗುಹ ಸ್ಮರಗುರು (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು. ಸ್ಮರಸ್ಯ ಗುಹಃ ಜನಕಃ।

ಸ್ಮರಗುಹ ಸ್ಮರಗೃಹ (ನಂ) ಭಗ, ಯೋನಿ. ಸ್ಮರಸ್ಯ ಗೃಹಮ್।  
-ಮನ್ವಿರಮ್-ಮಂದಿರಮ್, -ಸದ್-ಸದ್, ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸ್ಮರಚಕ್ರ ಸ್ಮರಚಕ್ರ (ಪುಂ) ಒಂದು ವಿಧ ರತಿಬಂಧ. ಸ್ಮರಸ್ಯ  
ಚಕ್ರಮಿವಾಸ್ಯಾಕೃತಿಃ।

ಸ್ಮರಚಕ್ರ ಸ್ಮರಚಕ್ರ (ನಂ) ಭಗ, ಯೋನಿ.

ಸ್ಮರಣ ಸ್ಮರಣ (ನಂ) 1. ಸ್ಮೃತಿ, ನೆನಪು. ಸ್ಮ (ಆಧ್ಯಾನೇ)

“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪)। “ಪ್ರಿಯಮಿತಿ ವನಿತಾ ನಿತಾಂತ-  
ಮಾಗಃ ಸ್ಮರಣಸರೋಪಕರ್ಷಾಯಿತಾಯತಾಕ್ಷಿ” ಮಾಘಂ ೭-೧೧।

2. ನಿರಂತರ ಧ್ಯಾನ, ಅನವರತವೂ ಧ್ಯಾನಮಾಡುವುದು.

“ಭಕ್ತಿಮಂತ ಇಹ ಭಕ್ತವತ್ಸಲೇ ಸಂತತಸ್ಮರಣರೋಗಕಲ್ಮಷಾಃ”

ಮಾಘಂ ೧೪-೬೩। “ಕೇವಲಂ ಸ್ಮರಣೇನೈವ ಪುನಾಸಿ ಪುರುಷಂ  
ಯತಃ” ರಘುಂ ೧೦-೨೯। 3. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು

ಭೇದ. ಸಮಾನವಾದ ವಸ್ತುವಿನ ಅನುಭವದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ

ಒಂದು ವಿಷಯದ ಸ್ಮೃತಿಯು ಸ್ಮರಣಾಲಂಕಾರ.

“ಸದ್ಭಾಷಾಭವಾದ್ವಸ್ತುಸ್ಮೃತಿಃ ಸ್ಮರಣಮುಚ್ಯತೇ” ಸಾಂ ೬೦

೧೦-೨೭। ತದಾಃ “ಪೂರ್ಣೇಂದ್ರನಾ ಮೇಘಲವಾಕ್ಷಿತೇನ ಛಾಂ ಮುದ್ರಿತಾಂ  
ಸುಂದರಿ ವೀಕ್ಷಮಾಣಃ। ವಿವಾಹೋಮಾನಿಲಮಲೇಖಾಮಿಲ-  
ತಕಪಾಲಾಂ ಭವತೀ ಸ್ಮರಾಮಿ”।

ಸ್ಮರಣಾಪತ್ಯತರ್ಪಕ ಸ್ಮರಣಾಪತ್ಯತರ್ಪಕ (ಪುಂ) ಸ್ಮರಣೆ

ಯಿಂದಲೇ ತನ್ನ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ತೃಪ್ತಿಯುಂಟುಮಾಡುವ

(ಕಚ್ಚುಪ, ಆಮೆ). ಸ್ಮರಣೇನೈವ ಅಪತ್ಯಂ ತರ್ಪಯತಿ—ತೃಪ್

(ಪ್ರೀಣನೆ) “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩)।

ಸ್ಮರಣೀಯ ಸ್ಮರಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ನೆನೆಯಲ್ಪಡುವ, ನೆನಪು

ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಡುವ. 2. ಜ್ಞಾಪಿಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕಾದ.

3. ನೆನಪುಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಬಹುದಾದ. ಸ್ಮ (ಆಧ್ಯಾನೇ)

“ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬)। “ರಾಜರ್ಷಿಣಾ ಸಂಪ್ರಸ್ಥಿತೇನ  
ಸ್ವನಾಮಧೇಯಾಕ್ಷಿತಮಂಜುಲೀಯಕಂ ಸ್ಮರಣೀಯಮಿತಿ ಸ್ವಯಂ  
ಪಿತೃಮ್” ಶಾಕುಂ ೪। “ತವ್ಯಃ”। ಸ್ಮರಣೀಯಮ್ ಸ್ಮರಣೀಯಮ್.

ಸ್ಮರತ್ ಸ್ಮರತ್ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಮರಿಸುತ್ತಿರುವ, ನೆನೆಯು

ತ್ತಿರುವ. ಸ್ಮ (ಆಧ್ಯಾನೇ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪)।

2. ಚಿಂತಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ಮ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) “ಶತ್”।

ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಛೀಪ್” (೪-೧-೬)। -ಸ್ತೀ-೨೯. “ತದೀಕ್ಷಣೇ  
ಭರ್ತುರಿವ ಸ್ಮರಂತ್ಯಾ ಕನ್ಯಾದಶಾಂ ಕಾಮವಶಾದ್ಭಜಂತ್ಯಾ” ಯಾದಂ  
೧೩-೪೪।

ಸ್ಮರದಶಾ ಸ್ಮರದಶಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನ್ಮಥನ ಸಂಬಂಧದಿಂದ

ಉಂಟಾಗುವ ಅವಸ್ಥೆ. ಸ್ಮರಸ್ಯ ದಶಾ। ಈ ದಶೆಯು

ಹತ್ತು ವಿಧ. “ದೃಢಮನಃಸಜ್ಜಸಂಕಲ್ಪಾ ಜಾಗರಃ ಕೃಷತಾಽ-  
ರತಿಃ। ಹೀತ್ಯಾಗೋನ್ಮಾದಮೂರ್ಛಾಂತಾ ಇತ್ಯನೃಜ್ಞದಶಾ ದಶ”।

ಸ್ಮರಛವಜ ಸ್ಮರಛವಜ (ಪುಂ) 1. ಪುರುಷನ ಜನನೇಂದ್ರಿಯ.

2. ಒಂದು ವಾದ್ಯ. ಸ್ಮರಸ್ಯ ಛವಜ ಇವ। (ನಂ) 3.

ಸ್ತ್ರೀಯಾರ ಗುಹ್ಯಪ್ರದೇಶ, ಯೋನಿ, ಭಗ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)

-ಜಾ-ಜಾ. ಚಂದ್ರಿಕೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ರಾತ್ರಿ.

ಸ್ಮರಪತ್ನಿ ಸ್ಮರಪತ್ನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮನ್ಮಥನ ಪತ್ನಿ, ರತಿದೇವಿ.

-ಪ್ರಿಯಾ-ಪ್ರಿಯಾ. ಸ್ಮರಸ್ಯ ಪತ್ನಿ ಪ್ರಿಯಾ ವಾ।

ಸ್ಮರವೀಥಿಕಾ ಸ್ಮರವೀಥಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೇಶ್ಯೆ, ಸೊಳೆ.

ಸ್ಮರಸಖ ಸ್ಮರಸಖ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ, ಮನ್ಮಥನ ಮಿತ್ರ.

ಸ್ಮರಸ್ಯ ಸಖಾ—“ಛತ್” (೪-೪-೯೧)।

ಸ್ಮರಸ್ಮರ್ಯ ಸ್ಮರಸ್ಮರ್ಯ (ಪುಂ) ಗರ್ವಭ, ಕೆತ್ತೆ.

ಸ್ಮರಹರ ಸ್ಮರಹರ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಸ್ಮರಂ

ಹರತಿ—ಹ್ರ (ಹರಣೆ) ಅನುಕ್ರಮಣೆ “ಅಚ್” (೩-೨-೯)।

“ಅಥ ದಾನವವೈರಿಣಾ ಗಿರಿಜಯಾಪ್ಯಥ ಶಿವಸ್ಯಾಹುತಂ ದೇವತ್ವಂ  
ಜಗತೀತಲೇ ಸ್ಮರಹರಾಭಾವೇ ಸಮುನ್ಮೀಲತಿ। ಗಜ್ಞಾ ಸಾಗರಮಂಜರಂ  
ಶಶಿಕಲಾ ಶೇಷಶ್ಚ ಪೃಥ್ವೀತಲಂ ಸರ್ವಜ್ಞತ್ವಮಧೀಶ್ವರತ್ವಮಗಮತ್ವಾಂ  
ಮಾಂ ಚ ಭಿಕ್ಷಾಟನಮ್”।

ಸ್ಮರಾಗಾರ ಸ್ಮರಾಗಾರ (ನಂ) ಭಗ, ಯೋನಿ. ಸ್ಮರಸ್ಯ

ಕಾಮಸ್ಯ ಅಗಾರಮ್।

ಸ್ಮರಾಡ್ಕುಶ ಸ್ಮರಾಡ್ಕುಶ (ಪುಂ) ನಖ, ಉಗುರು. ಸ್ಮರ-

ಸ್ಯಾಡ್ಕುಶ ಇವ।

ಸ್ಮರತ್ ಸ್ಮರತ್ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಮರಿಸುವವನು, ನೆನಪುಮಾಡಿ

ಕೊಳ್ಳುವವನು. ಸ್ಮ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) “ತೃಚ್” (೩-೧-೧೩೩)।

2. ಧ್ಯಾನಮಾಡುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಛೀಪ್” (೪-೧-೪)।

-ಸ್ತೀ-೨೯.

ಸ್ಮಾರಕ ಸ್ಮಾರಕ (ವಿಂ) 1. ನೆನಪುಂಟುಮಾಡುವ, ಜ್ಞಾಪಿ

ಸುವ. ಸ್ಮ (ಆಧ್ಯಾನೇ)+ಞಿಚ್ “ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩)।

2. ಚಿಂತೆಯುಂಟುಮಾಡುವ. ಸ್ಮ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್)+ಞಿಚ್

“ಫ್ವಲ್” (೩-೧-೧೩೩)।

ಸ್ಮಾರಣ ಸ್ಮಾರಣ (ನಂ) 1. ಜ್ಞಾಪಿಸುವುದು, ನೆನಪಿಗೆ

ತರುವುದು. ಸ್ಮ (ಆಧ್ಯಾನೇ)+ಞಿಚ್ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪)।

2. ಚಿಂತೆಯುಂಟುಮಾಡುವುದು.



ಸ್ಮಾರಣೀಯ ಸ್ಮಾರಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಡುವ, ನೆನಪಿಗೆ ತರಲ್ಪಡುವ. ಸ್ಮ (ಆಧ್ಯಾನೇ) + ಣಿच् "ಅನೀಯರ್" (3-1-96). 2. ಜ್ಞಾಪಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಜ್ಞಾಪಿಸಬಹುದಾದ. 4. ಜ್ಞಾಪಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ. "ತವ್ಯ:" (3-1-96). -ಯಿತವ್ಯ: -ಯಿತವ್ಯ.

ಸ್ಮಾರಯತ್ ಸ್ಮಾರಯತ್ (ವಿಂ) ಜ್ಞಾಪಿಸುತ್ತಿರುವ, ನೆನಪಿಗೆ ತರುತ್ತಿರುವ. ಸ್ಮ (ಆಧ್ಯಾನೇ) + ಣಿच् "ಶತ್" (3-2-124). ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (4-1-6). -ಯಂತೀ -ಯಂತೀ.

ಸ್ಮಾರಯಿತ್ ಸ್ಮಾರಯಿತ್ (ವಿಂ) ಜ್ಞಾಪಿಸುವವನು, ನೆನಪುಂಟುಮಾಡುತ್ತಿರುವವನು. ಸ್ಮ (ಆಧ್ಯಾನೇ) + ಣಿच् "ತೃ" (3-1-133). ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (4-1-6). -ಯಿತ್ರಿ -ಯಿತ್ರಿ.

ಸ್ಮಾರಿತ ಸ್ಮಾರಿತ (ವಿಂ) ಜ್ಞಾಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನೆನಪುಂಟು ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸ್ಮ (ಆಧ್ಯಾನೇ) + ಣಿच् "ಕ್:" (3-2-102). "ಯ ಏವ ದುಃಸಹ: ಕಾಲ: ತಮೇವ ಸ್ಮಾರಿತಾ ವಯಮ್" ಉಂ ರಾಂ 6-34.

ಸ್ಮಾರ್ತ ಸ್ಮಾರ್ತ (ನಂ) 1. ಸ್ಮೃತಿಗಳಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾದ ಕರ್ಮ. ಸ್ಮೃತೇರಿದಮ್ "ಅನ್" (4-3-120). "ಶ್ರುತಿ ಸ್ಮೃತಿವಿರೋಧೇ ಶ್ರುತಿರೇವ ಗರೀಯಸೀ. ಅವಿರೋಧೇ ಸದಾ ಕಾರ್ಯ ಸ್ಮಾರ್ತ ವೈದಿಕವತ್ ಸತಾ" (ವಿಂ) 2. ಸ್ಮೃತಿಗಳಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವ, ಸ್ಮೃತಿಸಂಬಂಧವಾದ. ಸ್ಮೃತೇರಿದಮ್ "ಅನ್". "ಆಚಾರ: ಪ್ರಥಮೋ ಧರ್ಮ: ಶ್ರುತೃಕ್ತ: ಸ್ಮಾರ್ತ ಏವ ಚ. ತಸ್ಮಾದಸ್ಮಿನ್ ಸದಾ ಯುಕ್ತ: ನಿಯಮ ಸ್ಯಾದಾತ್ಮವಾನ್ ದ್ವಿಜ:" ಮನುಂ 1-106. 3. ಸ್ಮೃತುಕ್ತವಾದ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸುವವನು.

ಸ್ಮಿತ ಸ್ಮಿತ (ನಂ) 1. ಕಿರುನಗೆ, ಮಂದಹಾಸ. ಷ್ಮಿಡ್ (ಔಪದಸನೆ) "ಕ್:" (3-3-114). "ಸ್ಮಿತಸ್ತುತಸುಧಾಧರಾ ಮದಶಿಖಂಡಿಬಹ್ಲಿಕ್ವಿತಾ ವಿಶಾಲನಯನಾಂಬುಜಾ ಬ್ರಜವಿಲಾಸಿನಿವಾಸಿತಾ:" ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಕಂ 3-49. (ವಿಂ) 2. ಮಿಡಿಸಿದವಾದ, ಪ್ರಪುಲ್ಲವಾದ, ಆರಳಿದ. ಷ್ಮಿಡ್ ಕರ್ತಂ "ಕ್:" (3-4-62). "ಸ್ಮಿತಸರೋಹನೇತ್ರಸರೋಜಲಾಮತಿಸಿತಾಙ್ಗವಿಹಂಗುಹಸದ್ವಿವಮ್" ಮಾಘಂ 6-54.

ಸ್ಮಿತಿ ಸ್ಮಿತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಿರುನಗೆ, ಮಂದಹಾಸ. ಷ್ಮಿಡ್ (ಔಪದಸನೆ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94).

ಸ್ಮೃತ ಸ್ಮೃತ (ವಿಂ) 1. ಧ್ಯಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸ್ಮ (ಆಧ್ಯಾನೇ) "ಕ್:" (3-2-102). 2. ಸ್ಮರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನೆನೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಸ್ಮ (ಚಿಂತಾಯಾಮ್) "ಕ್:" (3-2-102). 3. ನಿರ್ದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ನಮೂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರಸ್ಮೃತಿಭಾಜ: ಸರ್ಗಸ್ಯ

ತಾವೇವ ಪಿತರೀ ಸ್ಮೃತೀ" ಕುಮಾಂ 2-9. 4. ಉದ್ದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗೊತ್ತುಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಗುರಿಯಿಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಸಹ್ಯುಸ್ತೇ ಸ ಕಿಲ ಶತಶತೋರಜಯಸ್ತಸ್ಯ ತ್ವಂ ರಣಶಿರಸಿ ಸ್ಮೃತೋ ನಿಹಂತಾ" ಶಾಕುಂ 6-30.

ಸ್ಮೃತಿ ಸ್ಮೃತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಧ್ಯಾನ. ಸ್ಮ (ಆಧ್ಯಾನೇ) "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94). 2. ಸ್ಮರಣೆ, ನೆನಪು. "ಅಶ್ವತ್ಥಾಮಾ ಕರಧೃತಧನು: ಪಾಂಡುಪಾಶ್ವಾಲಸೇನಾತೂಲೋತ್ಕೋಪಪ್ರಲಯವನ: ಕಿಂ ನ ಯಾತ: ಸ್ಮೃತಿ ತೇ" ವೇಣೀಂ 3-23. 3. ಅನುಭವಸಂಸ್ಕಾರದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಜ್ಞಾನ. "ಸಂಸ್ಕಾರಮಾತ್ರಜನ್ಯಂ ಜ್ಞಾನಂ ಸ್ಮೃತಿ:" ತಂ ಸಂ. 4. ಚಿಂತೆ. "ಅನುಭೂತಂ ಪ್ರಿಯಾದೀನಾಮರ್ಶನಾಂ ಚಿಂತನಂ ಸ್ಮೃತಿ: ತತ್ರ ಕರ್ಮಾಙ್ಗವೈವಶ್ಯಬಾಷ್ಪನಿಶ್ಚಿಸಿತಾದಯ:" || 5. ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ, ವೇದಾರ್ಥಸ್ಮರಣ ಪೂರ್ವಕ ರಚಿತವಾದುದರಿಂದ ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರವು ಸ್ಮೃತಿ ಯಾಯಿತು. ಸ್ಮರಯತೇ ವೇದಾರ್ಥೋಜಯಾ - ಸ್ಮ (ಆಧ್ಯಾನೇ) ಕರಂ "ಕ್ತಿನ್" (3-3-94). ಮನುಸ್ಮೃತಿ: ಯಾಶ್ವಲ್ಕಯ-ಸ್ಮೃತಿ: ಪರಾಶರಸ್ಮೃತಿ: ಇತ್ಯಾದಿ. ಈ ಸ್ಮೃತಿಯು ಸಾತ್ವಿಕ ರಾಜಸ ಮತ್ತು ತಾಮಸಭೇದದಿಂದ ಮೂರು ವಿಧ. "ತಥೈವ ಸ್ಮೃತಯ: ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಋಷಿಭಿಃ ಸ್ವಿಗುಣಾನ್ವಿತಾ: ಸಾತ್ವಿಕಾ ರಾಜಸಾಶ್ಚೈವ ತಾಮಸಾ: ಶುಭದರ್ಶನೇ" ಪಾದೋತ್ತರ-ಖಂಡ: 1. "ಶ್ರುತಿಃ ಸ್ತು ವೇದೋ ವಿಜ್ಞೇಯೋ ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರಂ ತು ವೈ ಸ್ಮೃತಿ: ತೇ ಸರ್ವಾರ್ಥೇಭ್ಯಮಿಮಾಂಸ್ಯೇ ತಾಮ್ಯಾಂ ಧರ್ಮೋ ಹಿ ನಿರ್ವಹಿ" ಮನುಂ 2-10.

ಸ್ಮೃತಿಪಥ ಸ್ಮೃತಿಪಥ (ಪುಂ) ಸ್ಮೃತಿ ವಿಷಯ, ಸ್ಮರಣೆಗೆ ವಿಷಯವಾದ ವಸ್ತು.

ಸ್ಮೃತಿಭ್ರಂಶ ಸ್ಮೃತಿಭ್ರಂಶ (ಪುಂ) ಸ್ಮರಣಶಕ್ತಿಯು ನಾಶ. ಸ್ಮೃತೇ: ಭ್ರಂಶ: 1. "ಕ್ರೋಧಾದ್ಭವತಿ ಸಂಮೋಹ: ಸಂಮೋಹಾತ್ ಸ್ಮೃತಿ-ವಿಭ್ರಮ: ಸ್ಮೃತಿಭ್ರಂಶಾದ್ಬುದ್ಧಿನಾಶ: ಬುದ್ಧಿನಾಶಾತ್ಪ್ರಾಣಸ್ಯತಿ" ಗೀತಾ 2-63. -ವಿಭ್ರಮ: -ವಿಭ್ರಮ:

ಸ್ಮೃತಿಮತ್ ಸ್ಮೃತಿಮತ್ (ವಿಂ) ಸ್ಮರಣೆಯು ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳವನು, ನೆನಪಿನಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವವನು. ಸ್ಮೃತಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (4-2-94). "ಅನುರಕ್ತ: ಶುಚಿದಕ್ಷ: ಸ್ಮೃತಿ-ಮಾನ್ ದೇಶಕಾಲವಿತ್. ವಪುಷ್ಮಾನ್ ವೀತಭಿರ್ವಾಗ್ಮೀ ದೂತೋ ರಾಜ: ಪ್ರಶಸ್ಯತೇ" ಮನುಂ 9-64.

ಸ್ಮೃತಿರೋಧ ಸ್ಮೃತಿರೋಧ (ಪುಂ) ಸ್ಮರಣೆಗೆ ಪ್ರತಿಬಂಧ, ನೆನಪಿಗೆ ಉಂಟಾಗುವ ಅಡ್ಡಿ. ಸ್ಮೃತೇ: ಸ್ಮರಣಸ್ಯ ರೋಧ: 1. "ಶಾಪಾದಸಿ ಪ್ರತಿಹತಾ ಸ್ಮೃತಿರೋಧರೂಪೋ ಮರ್ತಯಪೇತತಮಸಿ ಪ್ರಭುತಾ ತವೇವ" ಶಾಕುಂ 9-32.

ಸ್ಮೃತಿಶಾಸ್ತ್ರ ಸ್ಮೃತಿಶಾಸ್ತ್ರ (ನಂ) ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ, ಧರ್ಮ ಸಂಹಿತೆ. ಸ್ಮೃತಿರೂಪ ಶಾಸ್ತ್ರಮ್.



ಸ್ಮೃತಿಹೇತು ಸ್ಯುತಿಹೇತು (ಪುಂ) ಸ್ಮೃತಗ್ಗಿ ಕಾರಣವಾದುದು.

ಸ್ಮೃತೇ: ಸ್ಮರಣಸ್ಯ ಹೇತು: |

ಸ್ಮೇರ ಸ್ಯೇರ (ವಿಂ) 1. ಸ್ತುತದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಕಿರುನಗೆ ಯಿಂದ ಕೂಡಿದ. ಷಿಮ್ (ಇಷದಸನೆ) "ರ:" (೩-೨-೧೬೭) |

"ಸ್ವೇದಾಮ್ಬ:ಕಣಭೂಷಿತೇನ ಕಿಮಪಿ ಸ್ಮೇರೇಣ ವಕ್ತ್ರೇಂದುನಾ ಪಾದಾ-  
ಮ್ಭೋಜಮುದುಪಚಾರಸುಭಗಂ ಪಶ್ಯಾಮಿ ದೃಶ್ಯಂ ಮಹ:" ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಕಂ  
೩-೨೮ | 2. ಎಕಸಿತವಾದ, ಅರಳಿರುವ. "ಸ್ಮರಶರ-  
ಪರತನ್ವಸ್ಮೇರನೇತ್ರಾಮ್ಬುಜಾಭಿ: ವ್ರಜಯುತಿಭಿರವ್ಯಾಧ್ವಹ್ಯಾ ಸಂವೇ-  
ಷಿತಂ ನ:" ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಕಂ ೩-೪೮ |

ಸ್ಮೇರವಿಚ್ಛಿಕರ ಸ್ಯೇರವಿಷ್ಠಿಕರ (ಪುಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು.

ಸ್ಮೇರಾನನ ಸ್ಯೇರಾನನ (ಪುಂ) ಮಂದಹಾಸದಿಂದ ಕೂಡಿದ  
ಮುಖವುಳ್ಳ. ಸ್ಮೇರಮಾನನಂ ಯಸ್ಯ | "ಸ್ಮೇರಾನನಂ ಸ್ಮರತಿ  
ಗೋಪವತ್ಕಿಶೋರಮ್" ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಕಂ ೨-೨೪ |

ಸ್ಯದ ಸ್ಯದ (ಪುಂ) ವೇಗ, ಚುರುಕು, ರಫಸ, ಜೋರು.  
ಸ್ಯಂದತೇಜೇನ — ಸ್ಯಂದ್ (ಪ್ರಸವಣೇ) "ಘ್" (೩-೪-೨೮) |  
ನಲೋಪ: ನಿಪಾಂ | ವೇಗಮಿತ್ರಾರ್ಥೇ ಸ್ಯಂದ: |

ಸ್ಯನ್ವ ಸ್ಯಂದ (ಪುಂ) 1. ಸೋರುವುದು, ಜಿನುಗುವುದು,  
ಸ್ರವಿಸುವುದು. ಸ್ಯಂದ್ (ಪ್ರಸವಣೇ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) |  
2. ಬೆವರುವುದು. "ಯತ್ರೋದೇತಿ ತಸ್ಯ ಹ ಸಮಾನಸೂತ್ರನಿಪಾತೇ  
ನಿಮ್ಲೋಚತಿ ಯತ್ರ ಕ್ವಚನ ಸ್ಯಂದೇನಾಮಿತಪತಿ" ಭಾಗಂ  
೪-೨೧-೯ | 3. ಒಂದು ರೋಗ.

ಸ್ಯಂದನ ಸ್ಯಂದನ (ಪುಂ) 1. ರಫ. ಸ್ಯಂದತೇ — ಸ್ಯಂದ್  
(ಪ್ರಸವಣೇ) "ಯು" (೩-೨-೧೪೮) | "ಮೃಗದ್ವಂದೇಷು ಪಶ್ಯಂತೌ  
ಸ್ಯಂದನಾಬದ್ಧದೃಷ್ಟಿಭು" ರಘುಂ ೧-೪೦ | (ಪುಂ) 2. ವಾಯು,  
ಗಾಳಿ. 3. ತಿನಿಶವೃಕ್ಷ, ನೆಮ್ಮಿಗಿಡ. (ವಿಂ) 4. ವೇಗ  
ವಾದ, ಶೀಘ್ರಗತಿಯುಳ್ಳ. "ಸ್ಯಂದನಾ ಚತುರಗಾ: ಸುರೇಭಾ  
ವಾವಿಪತ್ತಯ:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೯೬ | (ನಂ) 5. ಸೋರು  
ವುದು, ಸ್ರವಿಸುವುದು. 6. ವೇಗವಾಗಿ ಹರಿಯುವುದು,  
ಪ್ರವಹಿಸುವುದು. 7. ಜಲ, ನೀರು. "ಸ್ಯಂದನಂ ತು  
ಸ್ಮೃತೌ ನೋರೇ ತಿನಿಶೋ ನಾ ರಥೇಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ |

ಸ್ಯಂದನದ್ರುಮ ಸ್ಯಂದನದ್ರುಮ (ಪುಂ) ತಿನಿಶವೃಕ್ಷ, ನೆಮ್ಮಿ  
ಗಿಡ. ಸ್ಯಂದನ ಏವ ದ್ರುಮ: |

ಸ್ಯಂದನಾರೋಹ ಸ್ಯಂದನಾರೋಹ (ಪುಂ) ರಫದಲ್ಲೇ ಕುಳಿತು  
ಯುದ್ಧ ಮಾಡುವವನು. ಸ್ಯಂದನಮಾರೋಹತಿ — ಆ + ರಹ  
(ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) | "ರಥಿನ: ಸ್ಯಂದನಾ-  
ರೋಹ:" ಅಮಂ |

ಸ್ಯಂದಮಾನ ಸ್ಯಂದಮಾನ (ವಿಂ) ಸ್ರವಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸೋರು  
ತ್ತಿರುವ. ಸ್ಯಂದ್ (ಪ್ರಸವಣೇ) "ಶಾನ" (೩-೨-೧೨೪) |

ಸ್ಯಂದಿನ್ ಸ್ಯಂದಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಸ್ರವಿಸುವ, ಸೋರುವ,  
ಜಿನುಗುವ. ಸ್ಯಂದತೇ — ಸ್ಯಂದ್ (ಪ್ರಸವಣೇ) "ಗಿನಿ:"  
(೩-೧-೧೩೪) | "ಬಾಹುರೇಂದ್ರಮಯುಕ್ತವುಮ್ಬಿತಸ್ಯಂದಿವಂದ್ರಮಗಿ-  
ಹಾರವಿಭ್ರಮ:" ಉಂ ರಾಂ ೧-೩೪ | 2. ಹೋಗುತ್ತಿರುವ,  
ಚಲಿಸುವ.

ಸ್ಯಂದಿನಿ ಸ್ಯಂದಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಲಾಲಾರಸ, ಜೊಲ್ಲು.  
ಅವಶ್ಯಂ ಸ್ಯಂದತೇ — ಸ್ಯಂದ್ (ಪ್ರಸವಣೇ) "ಗಿನಿ:"  
(೩-೩-೧೭೦) | "ಸೃಣಿಕಾ ಸ್ಯಂದಿನಿ ಲಾಲಾ" ಅಮಂ |

ಸ್ಯನ್ವ ಸ್ಯನ್ವ (ವಿಂ) ಸ್ರವಿಸಿದ, ಸೋರಿಹೋದ. ಸ್ಯಂದತೇ —  
ಸ್ಯಂದ್ (ಪ್ರಸವಣೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ಸ್ಯನ್ವಂ ರೀಣಂ  
ಸ್ತುತಂ ಸ್ತುತೇ" ಅಮಂ | "ಅಥಾಪಾಸ್ಯನ್ ಕಪಾಪಾಕ್ಷ: ಸ್ಯನ್ವಸ್ವೇದ-  
ಕಣೋಲ್ಬಣ:" ಭಟಿಂ ೪-೮೩ |

ಸ್ಯಮಂತಕ ಸ್ಯಮಂತಕ (ಪುಂ) ಸ್ಯಮಂತಕಮಂಡ, ಅನರ್ಘ್ಯ  
ವಾದ ಒಂದು ರತ್ನ. ["ಸತ್ರಾಜಿತ್" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಸ್ಯಮೀಕ ಸ್ಯಮೀಕ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ವೃಕ್ಷ. 2. ವಲ್ಮೀಕ,  
ಹುತ್. 3. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 4. ಕಾಲ, ಸಮಯ.  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಕಾ-ಕಾ. ನೀಲೀ ಗಿಡ. "ಸ್ಯಮೀಕಾ ನೇಲಿ-  
ಕಾಯಾಂ ಸ್ತ್ರೀ ಸ್ಯಮೀಕೋ ನಾಕುಬೃಕ್ಷಯೋ:" ಮೇದಿಂ |

ಸ್ಯಾಲ ಸ್ಯಾಲ (ಪುಂ) ಭಾವಮೈದ, ಪತ್ನಿಯ ಸಹೋದರ.  
"ಸ್ಯಾಲಾ: ಸ್ಯುಭ್ರಾತರ: ಪತ್ನಯಾ:" ಅಮಂ |

ಸ್ಯೂತ ಸ್ಯೂತ (ಪುಂ) 1. ಬಿದಿರಿನ ಮಕ್ಕರಿ. 2. ಬಟ್ಟೆ  
ನಾರು ಮೊದಲಾದುವುಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಚೀಲ.  
ಶಿವು (ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | (ವಿಂ)  
3. ದಾರದಿಂದ ಹೊಲಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಶಿವು (ತನ್ತುಸಂತಾನೇ)  
"ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | 4. ಪೋಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ನೀಲೋಪಲ-  
ಸ್ಯೂತವಿಚಿತ್ರವಾತುಮಸೌ ಗಿರಿರೇವತಕಂ ದದರ್ಶ" ಮಾಘಂ ೪-೧ |

ಸ್ಯೂತಿ ಸ್ಯೂತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೊಲಿಯುವುದು. ಶಿವು (ತನ್ತು-  
ಸಂತಾನೇ) "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) | 2. ಸಂತತಿ. "ಸ್ಯೂತಿ:  
ಸೀವನಸಂತತಯೋ:" ಮೇದಿಂ | 3. ಪೋಷಿಸುವುದು.

ಸ್ಯೂನ ಸ್ಯೂನ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯ. 2. ಕಿರಣ. 3. ಕೈಚೀಲ.  
ಶಿವು (ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) "ನ:" ಡೇ:ಯು ಇತ್ಯಾದೇಶ: (ಉಂ ೩-೯) |  
ಸ್ಯೂನ ಆದಿತಯ: ಸಿಂ ಕೌಂ |

ಸ್ಯೂಮ ಸ್ಯೂಮ (ಪುಂ) 1. ಕಿರಣ, ಮಯೂಖ. ಶಿವು  
(ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) "ಮನ್" ಉಚ (ಉಂ ೧-೧೪೧) | ಸ್ಯೂಮೋ  
ರಶಿಮ: ಸಿಂ ಕೌಂ | (ನಂ) 2. ಜಲ, ನೀರು.

ಸ್ಯೂತ ಸ್ಯೂತ (ಪುಂ) ಕೈಚೀಲ.

ಸ್ಯೂನ ಸ್ಯೂನ (ಪುಂ) 1. ರಶ್ಮಿ, ಕಿರಣ. 2. ಸೂರ್ಯ.  
3. ಕೈಚೀಲ. ಶಿವು (ತನ್ತುಸಂತಾನೇ) "ನ:" ಉಚ



ಬಾಹ್ಯಂ ಗುಣಃ (ತಂ ೩-೯) | (ನಂ) 4. ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ.  
(ವಿಂ) 5. ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ.

ಸಂಸ ಸ್ತಂಸ (ಪುಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುವುದು, ಜಾರಿಬೀಳುವುದು, ಕೈಯಿಂದ ಕಳಚಿಬೀಳುವುದು. ಸಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ) "ಘಜ್" (೩-೩-೧೮) | 2. ಶಿಥಿಲಬಂಧ, ಸಡಿಲವಾಗಿರುವಿಕೆ.

ಸಂಸನ ಸ್ತಂಸನ (ನಂ) 1. ಮೇಲಿನಿಂದ ಕೆಳಗೆ ಕಳಚಿಬೀಳುವುದು. ಸಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ವಿರೇಚನಮಾಡಿಸುವುದು, ಮೇಲಿನಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳಿಸುವುದು, ಕೆಳಗೆ ಜಾರಿಬೀಳುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. "ಪಿತ್ತಸ್ಪಂದೇ ಪೆತ್ತಿಕೇ ಚಾಧಿಮನ್ಯೇ ರಕ್ಷಾಸ್ತಾವಃ ಸಂಸನಂ ಚಾಪಿ ಕಾರ್ಯಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ೨೨-೩ | (ವಿಂ) 3. ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುವಂತೆ ಮಾಡುವ. ಸಂಸಯತಿ-ಸಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ" (೩-೧-೧೩೪) | "ಸಂಸನಂ ಕಡುಕಂ ಪಾಕೇ ಲಘುವಾತ-ಕಫಾಪಹಮ್" ಸುಶ್ರುತಂ ಸೂತ್ರಂ ೪೬-೨೭೮ |

ಸಂಸನೀಯ ಸ್ತಂಸನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಗೆ ಬೀಳಿಸಬೇಕಾದ, ಮೇಲಿನಿಂದ ಕೆಳಕ್ಕೆ ತಳ್ಳಬೇಕಾದ. 2. ಕೆಳಗೆ ಬೀಳಿಸಬಹುದಾದ. ಸಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) | "ತವ್ಯಃ" | -ಯಿತವ್ಯಃ -ಯಿತವ್ಯಃ.

ಸಂಸಮಾನ ಸ್ತಂಸಮಾನ (ವಿಂ) ಜಾರುತ್ತಿರುವ, ಜಾರಿ ಕೆಳಗೆ ಸರಿಯುತ್ತಿರುವ. ಸಂಸತೇ-ಸಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ) "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಸಂಸಮಾನಮುಪಯಂತಿರ ವಧ್ವಾಃ ಕ್ಷಿಪ್ತ-ವತ್ಯುಪಸಪತ್ತಿ ರಸೇನ" ಮಾಘಂ ೧೦-೪೫ |

ಸಂಸಿನ್ ಸ್ತಂಸಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಶಿಥಿಲ ಬಂಧವುಳ್ಳ, ಸಡಿಲವಾದ. ಸಂಸೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) | ಸಂಸತೇ -ಸಂಸು (ಅವಸಂಸನೆ) "ಣಿನಿಃ" (೩-೧-೧೩೪) ಇತಿ ವಾ | "ತಿಮಿರಮಿವ ದಧಾನಾಃ ಸಂಸಿನಃ ಕೇಶಪಾಶಾನವನಿಪತಿಗೃಹ್ಮಯೋ ಯಾನ್ಯಮುರ್ವಾರವಚ್ಛವಃ" ಮಾಘಂ ೧೧-೨೦ | 2. ಕೆಳಗೆ ಬೀಳುವ.

ಸಂಸಿನ್ ಸ್ತಂಸಿನ್ (ವಿಂ) ಹೊವಿನ ಮಾಲೆಯನ್ನು ಧರಿಸಿರುವವನು. ಸಂಸಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ-ಸಂಕ್ "ವಿನಿಃ" (೪-೨-೧೨೧) | "ಆಮುಕ್ತಾಭರಣಃ ಸಂಸಿನ್ ಹಂಸಚಿಹ್ನುಕೂಲವಾನ್" ರಘುಂ ೧೭-೨೫ |

ಸಂಜ್ ಸ್ತಂಜ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪುಷ್ಪದ ಮಾಲೆ, ಹೊವಿನ ಸರ. ಸೃಜತಿ ಶೋಭಾಮ್-ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) "ಕ್ವಿನ್" (೩-೨-೫೯) | "ಸಂಜಾ ಸಮಾಲಿಂಗಯಿತುಂ ಪ್ರಿಯಂ ಸಾ ರಸಾದಧತ್ತೇವ ಬಹುಪ್ರಯತ್ನಮ್" ನೆಪಂ ೧೪-೨೬ | "ಉಪಾತಹೌ ಚ ವಾಸಶ್ಚ ಧೃತಮನ್ಯನಂ ಧಾರಯೇತ್ | ಉಪಾತಹೌ ಮಲಜ್ವರಂ ಸಂಜಂ ಕರಕಮೇವ ಚ" ಮನುಂ ೪-೬೬ | 2. ಮಾಲೆ, ಹಾರ.

ಸಂಜ್ ಸ್ತಂಜ್ (ವಿಂ) ಮಾಲೆಯನ್ನು ಧರಿಸಿರುವವನು. ಸಂಜೋ ವರಃ | ಸ್ತ್ರಿಯಾ -ವರಾ -ಧರಾ.

ಸಂಧರಾ ಸ್ತಂಧರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವೃತ್ತರತ್ನಾಕರೋಕ್ತವಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೊಂದನೆಯ ಛಂದಸ್ಸಿನ ವೃತ್ತ. ಸ ರ ಮ ನ ಯ ಯ ಯ ಗಣಗಳುಳ್ಳ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಲಕ್ಷಣಃ : ಸಂಧರಾ ನಾಂ ತ್ರಯೇಣ ತ್ರಿಮುನಿಯತಿಯುತಾ ಸಂಧರಾ ಕೀರ್ತಿಯಮ್" ವುಂ ೨೦ | ಗಣವಿನ್ಯಾಸಃ :

ಸ ರ ಮ ನ ಯ ಯ ಯ |

೦೦೦ ೦೧೦ ೦೧೧ ೧೧೧ ೧೦೦ ೧೦೦ ೧೦೦

ಪ್ರತಿ ಏಳು ವರ್ಣಗಳಿಗೆ ಒಂದರಂತೆ (7, 14 ಮತ್ತು 21 ನೇ ವರ್ಣಗಳಿಗೆ) ಯತಿಯಿರಬೇಕು.

ಸಂಜ್ ಸ್ತಂಜ್ (ಪುಂ) 1. ಸೃವಿಸುವುದು, ಸೋರುವುದು. ಸ್ತು (ಗತೌ) "ಅಪ್" (೩-೩-೫೭) | 2. ಪ್ರವಹಿಸುವುದು, ಹರಿಯುವುದು. "ವಿಪುಲೀ ಸ್ತನಪಯಂತೀ ಸಾ ಸ್ತನೀ ನೇತ್ರಜಲ-ಸ್ರವಃ" ರಾಮಾಂ |

ಸಂಜ್ ಸ್ತಂಜ್ (ನಂ) 1. ಸೃವಿಸುವುದು, ಸೋರುವುದು. ಸ್ತು (ಗತೌ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಬೆವರುವುದು, ಬೆವರು ಸುರಿಯುವುದು. 3. ಮೂತ್ರ.

ಸಂಜ್ ಸ್ತಂಜ್ (ವಿಂ) 1. ಸೃವಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸೋರುತ್ತಿರುವ, ಜಿನುಗುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತು (ಗತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | 2. ಹರಿಯುತ್ತಿರುವ, ಪ್ರವಹಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) | -ಂತಿ -೨೭.

ಸಂಜ್ ಸ್ತಂಜ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗರ್ಭಪಾತವಾದ ಹೆಸು. ಸಂಜನ್ ಗರ್ಭಾ ಯಸ್ಯಾಃ | 2. ಗರ್ಭಪಾತವಾದ ಹೆಂಗಸು.

ಸಂಜ್ ಸ್ತಂಜ್ (ಪುಂ) ಪಣ್ಯವೀಧಿ. ಅಂಗಡಿಬೀದಿ. ಸಂಜನ್ ರಜ್ಞೋ ಯತ್ರ |

ಸಂಜ್ ಸ್ತಂಜ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನದಿ, ಹೊಳೆ. ಸ್ತು (ಗತೌ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) | "ಫಲಮರ-ಪರಿಣಾಮಸ್ಯಾಮಜಮ್ಬುನಿಕುಂಜಸ್ವಲನತನುತರಜ್ಞಾಮುತರೇಣ ಸಂಜಂತಿಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೯-೨೪ | 2. ಗುಲ್ಮಪ್ರದೇಶ, ಹೊಟ್ಟೆಯ ಎಡಭಾಗದಲ್ಲಿ ಅನ್ನಕೋಶದ ಹಿಂದಿರುವ ಮಾಂಸಗ್ರಂಥಿ. 3. ಒಂದು ಓಷಧಿ. "ಸಂಜಂತಿ ತು ತರಜ್ಞಿಷ್ಯಾ ಗುಲ್ಮಸ್ಥಾನೋಪಧಿಭಿದೋಃ" ಮೇದಿಂ |

ಸಂಜ್ ಸ್ತಂಜ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕುಂಭಕ ಗಿಡ. ಸಂಜತಿ - ಸ್ತು (ಗತೌ) "ಅಪ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಮೂರ್ವಿ ದೇವಿ ಮಧುರಸಾ ಸೋರಡಾ ತೇಜನೀ ಸಂಜಾ" ಅಮಂ | 2. ಸೀಹಾಲೆ ಗಿಡ. "ಜೀವಂತಿ ಜೀವನಿ ಜೀವಾ ಜೀವನೀಯಾ ಮಧುಃ ಸಂಜಾ" ಅಮಂ |

ಸಂಜ್ ಸ್ತಂಜ್ (ಪುಂ) 1. ಸೃಷ್ಟಿಸುವ ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಸೃಜತಿ-ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗ) "ತವ್" (೩-೧-೧೩೪) |



“ಬಹ್ವಾರಂಭಸಂಯೋಜಿತವೇ ರುಪೇ: ಸ್ವಾಪ್ತು: ಸೃಷ್ಟಿಕಮನ್ತಿ-  
ಶಾಲಾ” ಮಾಘಂ ೧೮-೭೯. 2. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ.  
3. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.

ಅಸ್ತ ಸ್ತು (ವಿಂ) 1. ಜಾರಿಬಿದ್ದ, ಕಳಚಿಬಿದ್ದ. ಅಸ್ತು  
(ಅವಸ್ತನೆ) “ಕ್ತು:” (೩-೨-೧೦೨). “ಸಾವಶೇಷಪದ-  
ಮುಕ್ತಮುಪೇಕ್ಷಾ ಅಸ್ತಮಾಲ್ಯವಸನಾಭರಣೇಷು” ಮಾಘಂ ೧೦-೧೬. 2. ಸಡಿಲವಾದ, ಬಿಚ್ಚಿಹೋಗಿರುವ, ಶಿಥಿಲವಾದ.  
“ಅಸ್ತಾಂಜ್ಞಸಂಧಿ ವಿಗತಾಕ್ಷಪಾಟವೇ ರಜಾ ನಿಕಾಮಂ ವಿಕಲೀಕೃತೇ  
ರಥೇ” ಮಾಘಂ ೧೨-೨೪. 3. ಶಿಥಿಲವಾಗಿ ಜೋಲಾಡು  
ತ್ತಿರುವ, ಸಡಿಲವಾಗಿ ತೂಗಾಡುವ. “ಅಸ್ತಾಂಸಾವತಿಮಾತ್ರ-  
ಲೋಹಿತತಲೌ ಬಾಹು ಷಡೋಕ್ಷೇಪಣಾತ್” ಶಾಕುಂ ೧-೩೦.

ಅಸ್ತರ ಸ್ತುರ (ಪುಂ) ಒರಗಿಕೊಂಡು ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವ  
ಆಸನ, ಮಂಚ ಮೆತ್ತನೆಯ ಆಸನ ಮೊದಲಾದುವು.  
“ಗೋಷ್ವೋಡ್ರಯಾನಪ್ರಾಸಾದಸ್ತರೇಷು ಕಟೇಶು ಚ” ಮನುಂ ೨-೨೦೪.

ಅಕ್ ಸ್ತುಕ್ (ಅವ್ಯಂ) ಶೀಘ್ರವಾಗಿ, ಬೇಗ, ಜಾಗ್ರತೆ  
ಯಾಗಿ, ವೇಗವಾಗಿ.

ಅವ ಸ್ತು (ಪುಂ) 1. ಸೋರುವುದು, ಸ್ರವಿಸುವುದು.  
ಸ್ತು (ಗತೌ) “ವಜ್” (೩-೩-೧೮). 2. ಪ್ರವಾಹ,  
ಹರಿಯುವುದು. “ತತೋ ಮುಹೂರ್ತೇಭಿರನ್ಯನ್ ರಜೋ ಭೂಮಿಂ ಸಮುತ್ಥಿ-  
ತಮ್ | ವಿವಿಧೈ: ಶೋಣಿತಸ್ತಾವೈ: ಪ್ರಶಾಂತಂ ಪುರುಷರ್ಷಮ್” ಭಾಂ  
ಶಲ್ಯಂ ೧೭. 3. ಒಂದು ವಿಧ ನೇತ್ರರೋಗ.

ಅವಣ ಸ್ತು (ನಂ) 1. ಸುರಿಸುವುದು. ಸ್ತು (ಗತೌ) +  
ಣಿ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫). 2. ಸೋರುವಂತೆ  
ಮಾಡುವುದು.

ಅವಣೀಯ ಸ್ತು (ವಿಂ) 1. ಸ್ರವಿಸುವಂತೆ ಮಾಡ  
ಲ್ಪಡುವ. 2. ಸ್ರವಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ಸ್ರವಿಸು  
ವಂತೆ ಮಾಡಬಹುದಾದ. ಸ್ತು (ಗತೌ) “ಅನೀಯರ್”  
(೩-೧-೧೬). “ತವ್ಯ:” | ಅವಯಿತವ್ಯ: ಸ್ತು (ವಯಿತವ್ಯ:).

ಅವಯತ್ ಸ್ತು (ವಿಂ) 1. ಸೋರುವಂತೆ ಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ. ಸ್ತು (ಗತೌ) + ಣಿ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪). 2. ಪ್ರವಹಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸ್ವಿಗಳ “ಡೀಪ್”  
(೪-೧-೬). -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

ಅವಯಮಾಣ ಸ್ತು (ವಿಂ) ಸೋರುವಂತೆ  
ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತು (ಗತೌ) + ಣಿ “ಶಾನ್”  
(೩-೨-೧೨೪).

ಅವಿತ ಸ್ತು (ನಂ) 1. ಸ್ರವಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು.  
ಸ್ತು (ಗತೌ) + ಣಿ “ಕ್ತು:” (೩-೩-೧೧೪).

(ವಿಂ) 2. ಸೋರುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಸ್ರವಿಸುವಂತೆ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಸ್ತು (ಗತೌ) + ಣಿ “ಕ್ತು:” (೩-೨-೧೦೨).

ಅವ್ಯ ಸ್ತು (ವಿಂ) 1. ಸೋರಲು ಅರ್ಹವಾದ. 2.  
ಸ್ರವಿಸಬಹುದಾದ. ಸ್ತು (ಗತೌ) + ಣಿ “ಪ್ಯತ್”  
(೩-೧-೧೨೫).

ಅವ್ಯ ಸ್ತು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಜ್ಞದ ಒಂದು ಪಾತ್ರೆ. ಸ್ತು (ಗತೌ)  
“ಚಿಕ್” (೩ಂ ೨-೬೨). “ಧ್ರುವೋಪಮೃಜ್ಜುಹುರ್ನಾ ತು ಸ್ತುವೋ  
ಭೇದಾ: ಸ್ತು: ಸ್ವಿ:” ಅಮಂ.

ಅವ್ಯ ಸ್ತು (ವಿಂ) 1. ಸ್ರವಿಸಿದ, ಸೋರಿದ. ಸ್ತು (ಗತೌ)  
“ಕ್ತು:” (೩-೨-೧೦೨). “ಸರಾಗಯಾ ಸ್ತುತವನಧರ್ಮತೋಯಯಾ  
ಕರಾಹಿತವನಿತಪಠ್ಯಾಠಯಾ” ಮಾಘಂ ೧೭-೨. 2.  
ಹೊರಟುಹೋದ. 3. ಪ್ರವಹಿಸಿದ.

ಅವ್ಯ ಸ್ತು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸೋರುವುದು, ಸ್ರವಿಸುವುದು.  
ಸ್ತು (ಗತೌ) “ಕ್ತಿನ್” (೩-೩-೧೪). “ಅತ್ಯಾಕ್ಷು: ಸ್ನಪನ-  
ಗಲ್ಜಲಾನಿ ಯಾನಿ ಸ್ಥೂಲಾಶ್ರುಸ್ತುತಿಭಿರರೋದಿ ತೈ: ಸ್ತುವೇವ”  
ಮಾಘಂ ೮-೬೬. 2. ಪ್ರವಾಹ. 3. ಸಸ್ಯಗಳಿಂದ ಸ್ರವಿ  
ಸುವ ಒಂದು ಅಂಟು, ರಾಳ.

ಅವ್ಯ ಸ್ತು (ಪುಂ) 1. ನಾಲ್ಕು ವಿಧ ಯಜ್ಞಪಾತ್ರೆಗಳ  
ಒಂದು ಪಾತ್ರೆ. ಅವತಿ — ಸ್ತು (ಸವಣಿ) “ಕ್ತು:”  
(೩ಂ ೨-೬೧). “ಧ್ರುವೋಪಮೃಜ್ಜುಹುರ್ನಾ ತು ಸ್ತುವೋ ಭೇದಾ:  
ಸ್ತು: ಸ್ವಿ:” ಅಮಂ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ಸಲ್ಲಕೆವೃಕ್ಷ,  
ಅನೆಬೇಲ. 3. ಕುರಟಗೆ ಗಿಡ. “ಸ್ತುವೋ ದ್ವಯೋರ್ಜಪಾತ್ರೇ  
ಸಲ್ಲಕೀಮೂರ್ವಯೋ: ಸ್ವಿಯಾಮ್” ಭೇದಿಂ.

ಅವ್ಯ ಸ್ತು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಒಂದು ಯಜ್ಞಪಾತ್ರೆ. ಅವತೃತೌ  
ಘಟಾದಿಕಮ್ — ಸ್ತು (ಗತೌ) “ಕ್ವಿಪ್” ದೀರ್ಘ (೩ಂ ೨-೫೭).  
2. ಊಟ, ಬುಗ್ಗೆ, ಚಿಲುಮೆ. 3. ಗಿರಿನದಿಯ ಪ್ರವಾಹ.  
“ಸ್ತು: ಸ್ತುವೇ ನಿಷ್ಕರೇಪಿ ಚ” ಹೇಮಂ.

ಅವ್ಯ ಸ್ತು (ನಂ) ಪ್ರವಾಹ, ಹೊನಲು, ಹರಿವು.  
“ಪತಿಸೋಕಾಕುಲಾಂ ದೀನಾಂ ಶುಷ್ಕಸ್ತೋತಾಂ ನದೀಮಿವ” ಭಾಂ ವನಂ.

ಅವ್ಯ ಸ್ತು (ನಂ) 1. ನದಿ, ಹೊಳೆ. ಅವತಿ — ಸ್ತು  
(ಗತೌ) “ಅಸುನ್” ತುಡ್ ಚ (೩ಂ ೪-೨೦೨). “ಸ್ತೋತೌ-  
ಮ್ಬಸರಣಂ ಸ್ವತ:” ಅಮಂ. “ಜ್ಞಾಪಾಣಾಂ ಮಕರಶ್ಚಾಸ್ಮಿ ಸ್ತೋತ-  
ಸಾಮಸ್ಮಿ ಜಾಹ್ನವೀ” ಗೀತಾ ೧೦-೩೧. 2. ಪ್ರವಾಹ,  
ಹೊನಲು, ಹರಿವು. “ವ್ಯಾಲಮ್ಬೇಶಾ: ಸುರಭಿತನಯಾಲಮ್ಬಜಾಂ  
ಮಾನಯಿಷ್ಯನ್ ಸ್ತೋತೌಮೂರ್ತ್ಯಾ ಭುವಿ ಪರಿಣತಾಂ ರಂತಿದೇವಸ್ಯ  
ಕೀರ್ತಿಮ್” ಮೇಘಂ ೧-೪೫. 3. ಇಂದ್ರಿಯ. “ಸ್ತೋತ  
ಇಂದ್ರಿಯೇ ನಿಮ್ನಗಾರಯೇ” ಅಮಂ. “ತ್ವನ್ನಿಷ್ಯದ್ವಿಚ್ಛವಸಿತ-  
ವಮುಧಾಗನ್ವಸಂಪರ್ಕರಮ್ಯ: ಸ್ತೋತೌರನ್ಧ್ರವನಿತಸುಭಗಂ ದಂತಿಭಿ:



ಪೀಯಮಾನ್ಮ" ಮೇಘಂ ೧-೪೨. 4. ನೀರು, ಜಲ. 5. ನೀರು ಹೊರಗೆ ಹೋಗುವ ಮಾರ್ಗ. "ಸ್ರೋತೋಽಮ್ಬುನಿರ್ಗಮದ್ವಾರೆ ಪ್ರವಾಹೇಂದ್ರಿಯಯೋರ್ಜಲೇ" ನಾನಾರ್ಥಂ.

ಸ್ರೋತಶಿಕ್ಷೆ ಸ್ರೋತಶಿಕ್ಷೆ (ಪುಂ) ನದಿಗಳ ಪತಿ, ಸಮುದ್ರ. ಸ್ರೋತಸಿಕ ಸ್ರೋತಸಿಕ (ಪುಂ) ಶೈವಮತಾನುಯಾಯಿ. "ಔರ್ವ್ವ: ಸ್ರೋತಸಿಕ: ಶೈವ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ.

ಸ್ರೋತಸ್ಯ ಸ್ರೋತಸ್ಯ (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 2. ಜೋರ, ಕಳ್ಳ. ಸ್ರೋತಸ್ "ತಚ:" (೪-೪-೧೧೩). (ವಿಂ) 3. ನದಿಯಲ್ಲಿರುವ. 4. ಪ್ರವಾಹದಲ್ಲಿರುವ.

ಸ್ರೋತಸ್ವತ್ ಸ್ರೋತಸ್ವತ್ (ವಿಂ) 1. ನದಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವ. 2. ಪ್ರವಾಹದಿಂದ ಕೂಡಿರುವ. ಸ್ರೋತೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪).

ಸ್ರೋತಸ್ವತೀ ಸ್ರೋತಸ್ವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನದಿ, ಹೊಳೆ. ಸ್ರೋತೋಽಸ್ಯಾಸ್ಯಾಮ್—ಸ್ರೋತಸ್ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪). "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬).

ಸ್ರೋತಸ್ವಿನೀ ಸ್ರೋತಸ್ವಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನದಿ, ಹೊಳೆ. ಸ್ರೋತೋಽಸ್ಯಾಸ್ಯಾಮ್—ಸ್ರೋತಸ್ "ವಿನಿ:" (೪-೨-೧೨೧).

ಸ್ರೋತೋಽಜ್ಜನ ಸ್ರೋತೋಽಜ್ಜನ (ನಂ) ಸ್ನಾನಾರಂಜನ. ಸ್ರೋತೋಽಜ್ಜನಮ್. ಶಾಕಪಾಂ. ಯಮುನಾಯಾ: ಸ್ರೋತೋಽಜ್ಜನವಾತ್ ಸ್ರೋತೋಽಜ್ಜನಮ್.

ಸ್ರೋತೋಽರಂಧ್ರ ಸ್ರೋತೋಽರಂಧ್ರ (ನಂ) ಅನೆಯ ಘ್ರಾಣೇಂದ್ರಿಯದ ರಂಧ್ರ. ಸ್ರೋತಸೋ ರಂಧ್ರಮ್. "ಸ್ರೋತೋಽರಂಧ್ರವನಿತ-ಸುಭಗಂ ದಂತಿಭಿ: ಪೀಯಮಾನ್ಮ" ಮೇಘಂ ೧-೪೨.

ಸ್ರೋತೋವಹ ಸ್ರೋತೋವಹ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನದಿ, ಹೊಳೆ. ವಹತಿ—ವಹ (ಪ್ರಾಪಣ) "ಅಚ್" (೩-೧-೩೪). ಸ್ರೋತಸೋ ವಹಾ. "ಸ್ರೋತೋವಹಾಂ ಪಥಿ ನಿಕಾಮಜಲಾಮತೀತ್ಯ ಜಾತ: ಸಖೇ ಪ್ರಣಯವಾನ್ ಮೃಗತುಣಿಣಿಕಾಯಾಮ್" ಶಾಕುಂ ೬-೧೬.

ಸ್ವ ಸ್ವ (ಪುಂ) 1. ಜ್ಞಾತಿ, ಬಂಧು. ಸ್ವನತಿ—ಸ್ವನ (ಶಬ್ದ) "ತ:" (೩-೨-೧೦೧). 2. ಆತ್ಮ, ತಾನು. "ಸೇಯಂ ಸ್ವದೇಹಾರ್ಪಣನಿಷ್ಕರಣೇ ನ್ಯಾಯಾ ಮಯಾ ಮೋಚಯಿತುಂ ಭವತ:" ರಘುಂ ೨-೫೫. (ಪುಂ) 3. ಧನ, ವಿತ್ತ, ಐಶ್ವರ್ಯ. (ವಿಂ) 4. ಆತ್ಮೀಯ, ತನ್ನದಾದ, ತನಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ. "ಪ್ರೇಯಸಾಮವರರಾಗರಸೇನ ಸ್ವಂ ಕಿಲಾಧರಮುಪಾಲಿ ರರಜ್ಜು:" ಮಾಘಂ ೧೦-೨೬. "ಪ್ರಾಪ ಧಾಮ ಸ್ವಮೇವ" ಮಾಘಂ ೧೧-೬೦. "ಸ್ವೋ ಜ್ಞಾತಾವಾತ್ಮನಿ ಸ್ವಂ ತ್ರಿಜ್ವಾತ್ಮೀಯೇ ಸ್ವೋಽಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಧನೇ" ಅಮಂ.

ಸ್ವಕ ಸ್ವಕ (ವಿಂ) ತನ್ನದಾದ, ಆತ್ಮೀಯವಾದ. ಸ್ವಮೇವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ".

ಸ್ವಕಮ್ಪನ ಸ್ವಕಮ್ಪನ (ಪುಂ) ವಾಯು, ಗಾಳಿ. ಸ್ವೇನೇವ ಕಮ್ಪತೇ—ಕಪಿ (ಚಲನೆ) "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪).

ಸ್ವಕರ್ಮನ್ ಸ್ವಕರ್ಮನ್ (ನಂ) ತಾನು ಮಾಡಿದ ಕಾರ್ಯ, ತಾನು ಮಾಡಿದ ಪುಣ್ಯ ಮತ್ತು ಪಾಪಕರ್ಮ. ಸ್ವಸ್ಯ ಕರ್ಮ. "ಸ್ವಕರ್ಮಕಲನಿರ್ದಿಷ್ಟಾಂ ಯಾಂ ಯಾಂ ಯೋನಿಂ ಬ್ರಜಾಮ್ಯಹಮ್. ತಸ್ಯಾಂ ತಸ್ಯಾಂ ಹೃಷೀಕೇಶ ತ್ವಯಿ ಭಕ್ತಿರ್ದೃಢಾಸ್ತು ಮೇ" ||

ಸ್ವಕೀಯ ಸ್ವಕೀಯ (ವಿಂ) 1. ತನ್ನದೇ ಆಗಿರುವ, ತನ್ನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಸ್ವಸ್ಯೇದಮ್—ಸ್ವ "ತ:" (೪-೨-೧೩೮). ಕುಕ್ ಚ. -ಯಾ -ಯಾ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ತನ್ನ ಪತ್ನಿ, ಮೂರು ವಿಧ ನಾಯಿಕೆಯರಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ನಾಯಿಕೆ.

ಸ್ವಕ್ಷ ಸ್ವಕ್ಷ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಸು ಶೋಭನೇ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಅಸ್ಯ—"ಷಕ್" (೪-೪-೧೧೩). ಶೋಭನಮಕ್ಷಿ ತದ್ವಿಲಕ್ಷಿತಂ ಚ ಕರಣಜಾತಮಸ್ಯ ಇತಿ ವಾ. "ಶ್ರೀಸೋಂದರ್ಯ-ಸುಧಾಸಿಂಧುರಪಾರಕರಣೋ ಹಿ ಯ: "ಸ್ವಕ್ಷ:" ಇತಿ ನಿರಹ್ತಿ: "ಸ್ವಕ್ಷ: ಸ್ವಜ್ಞ: ಶತಾನಂದ:" ವಿಂ ಸಂ. (ವಿಂ) 2. ಸುಂದರವಾದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳವನು. ಸು ಶೋಭನೇ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯ—"ಷಕ್" (೪-೪-೧೧೩). 3. ಒಳ್ಳೆಯ ದೂರಿಯುಳ್ಳ ರಥ, -ಗಾಡಿ. 4. ಒಳ್ಳೆಯ ಇಂದ್ರಿಯಗಳುಳ್ಳ. "ಸ್ವಕ್ಷಂ ಸುಪತ್ರಂ ಕನಕೋಜ್ಜ್ವಲಬೃತಿ ಜವೇನ ನಾಗಾನ್ ಜಿತವಂತ-ಮುಚ್ಚಕೇ:" ಮಾಘಂ ೧೨-೨.

ಸ್ವಗತ ಸ್ವಗತ (ನಂ) ಬೇರೆ ಯಾರಿಗೂ ತಿಳಿಯದಂತೆ ತನ್ನೊಳಗೇ ಮಾತನಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಸ್ವಸ್ಮಿನ್ ಗತಮ್. ಇದೊಂದು ನಾಟ್ಯೋಕ್ತಿ. "ಸರ್ವಶ್ರಾವ್ಯಂ ಪ್ರಕಾಶಂ ಸ್ಯಾದಶ್ರಾವ್ಯಂ ಸ್ವಗತಂ ಮತಮ್" "ರಾಜಾ (ಸ್ವಗತಮ್) ರಾಜಭಾವಸ್ತ್ವಭಿ-ಜ್ಞಾತೋ ಭವೇತ್. ಭವತು. एवं ತಾವದಭಿಧಾಸ್ಯೇ" ಶಾಕುಂ ೧.

ಸ್ವಜ್ಞ ಸ್ವಜ್ಞ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಸು ಸ್ಪೃಹಣೀಯ-ದಿವ್ಯದೇಹತಯಾ ಶೋಭನಮಜ್ಞಮಸ್ಯ. "ಶ್ರಿಯ: ಸ್ಪೃಹಣೀಯ-ದಿವ್ಯಾಜ್ಞ: ಸ್ವಜ್ಞ ಉಚ್ಯತೇ" ಇತಿ ನಿರಹ್ತಿ: "ಸ್ವಕ್ಷ: ಸ್ವಜ್ಞ: ಶತಾನಂದ:" ವಿಂ ಸಂ. (ವಿಂ) 2. ಸುಂದರವಾದ ಅಂಗಗಳುಳ್ಳವನು. ಸು ಶೋಭನಾನ್ಯಜ್ಞಾನಿ ಯಸ್ಯ.

ಸ್ವಚ್ಛ ಸ್ವಚ್ಛ (ಪುಂ) 1. ಸ್ಪಟಿಕಮಣಿ, ಸ್ಪಟಿಕಶಿಲೆ. ಸು ಅಚ್ಛ: ನಿರ್ಮಲ: (ವಿಂ) 2. ಬಹಳ ನಿರ್ಮಲವಾದ. "ಆರೂಢಂ ಪತಿತ ಇತಿ ಸ್ವಸಮ್ಮವೋಽಪಿ ಸ್ವಚ್ಛಾನಾಂ ಪರಿಹರ-ಣೀಯತಾಮುಪೇತಿ" ಮಾಘಂ ೮-೫೪. 3. ಬಿಳುಪಾಗಿರುವ. (ನಂ) 4. ಮುತ್ತು.

ಸ್ವಚ್ಛಂದ ಸ್ವಚ್ಛಂದ (ಪುಂ) 1. ತನ್ನ ಅಭಿಪ್ರಾಯ, ಸ್ವಂತ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. ಸ್ವಸ್ಯ ಛಂದ: ಅಭಿಪ್ರಾಯ: (ವಿಂ) 2. ತನ್ನ ಅಭಿಪ್ರಾಯದಂತೆ ನಡೆದ, ತನ್ನ ಇಷ್ಟಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ



ನಡೆದ. ಸ್ವಸ್ಯ ಛಂದೋಭಿಪ್ರಾಯೋ ಯತ್ರ । “ಮನ್ಯೇ ಸ ಏವ  
ಮದನಸ್ಯ ನಿಶಾಚರಸ್ಯ ಸ್ವಚ್ಛಂದಸೌಪ್ತಿಕನಿವೃತ್ತಿಮಮಿ-  
ವ್ಯನಕ್ತಿ” ಯಾದಂ ೧೯-೨೧ । 3. ಸ್ವತಂತ್ರ. ಬೇರೆ  
ಯಾರಿಗೂ ಅಧೀನನಲ್ಲದವನು. (ಅವ್ಯಂ) 4. ತನಗೆ ಇಷ್ಟ  
ಬಂದಂತೆ, ಯಾವ ಅಡ್ಡಿ ಆತಂಕಗಳೂ ಇಲ್ಲದೆ. “ಸ್ವಚ್ಛಂದ-  
ವನಜಾತೇನ ಶಾಕೇನಾಪಿ ಪ್ರಪುಯಂತೇ” ಹಿತಂ ೧-೬೮ ।

ಸ್ವಚ್ಛಮಣಿ ಸ್ವಚ್ಛಮಣಿ (ಪುಂ) ಸ್ವಚ್ಛಮಣಿ.

ಸ್ವಚ್ಛಾ ಸ್ವಚ್ಛಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಳಿಯ ಗಂಗೆ.

ಸ್ವಜ ಸ್ವಜ (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. ಸ್ವಸ್ಮಾಜ್ಜಾಯತೇ —  
ಜನಿ (ಪ್ರಾಕೃತಮಿ) “ಙ:” (೩-೨-೯೮) । (ವಿಂ) 2.  
ತನ್ನಿಂದ ಉಂಟಾದ, ತನ್ನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ. (ಸ್ತ್ರೀಂ)  
-ಜಾ -ಜಾ. ಪುತ್ರಿ, ಮಗಳು.

ಸ್ವಜನ ಸ್ವಜನ (ಪುಂ) ಬಂಧು, ತನ್ನ ಕಡೆಯ ನಂಟರು.  
ಸ್ವ: ಆತ್ಮೀಯ: ಜನ: । “ಇತ: ಪ್ರತ್ಯಾದೇಶಾತ್ ಸ್ವಜನಮನುಗಂತುಂ  
ವ್ಯವಸಿತಾ ಮುಹುಸ್ತಿಷ್ಠೇತೃಚ್ಛೇದದತಿ ಗುರುಶಿಷ್ಯೇ ಗುರುಸಮೇ”  
ಶಾಕುಂ ೬-೯ ।

ಸ್ವಜ್ಜ ಸ್ವಜ್ಜ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ. 2. ರುದ್ರ. “ಸ್ವಜ್ಜೋ  
ವಿಧಿ ರದ್ರೇ” ಮೇದಿಂ ।

ಸ್ವತನ್ತ್ರ ಸ್ವತಂತ್ರ (ವಿಂ) ಬೇರೆ ಯಾರಿಗೂ ಅಧೀನನಲ್ಲದ  
ವನು, ಒಬ್ಬನ ಅಧಿಕಾರಕ್ಕೆ ಒಳಪಡದವನು. ಸ್ವ: ಆತ್ಮಾ  
ತನ್ತ್ರಂ ಪ್ರಧಾನಂ ಯಸ್ಯ ।

ಸ್ವತಸ್ ಸ್ವತಸ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ತನ್ನಿಂದ, ತನ್ನವರಿಂದ, ತನ್ನ  
ಕಡೆಯಿಂದ. ಸ್ವ “ತಸಿ:” (ವಾಂ ೪-೪-೪೪) । “ಸ್ವತ:  
ಸಿದ್ಧಂ ಶುದ್ಧಸ್ಫಟಿಕಮಣಿಭೂತಪ್ರತಿಭಟಂ ಸುಧಾಸಂಧಿಚಿಮಿಚ್ಛುತಿ-  
ಭಿರಪತಾಪತ್ರಿಭುವನಮ್” ಹ್ಯಗ್ರೀಂ । 2. ಧನದಿಂದ, ಹಣ  
ದಿಂದ. “ಗ್ರಹೀತಾ ಯದಿ ನಷ್ಟ: ಸ್ಯಾತ್ ಕುಟುಂಬಾರ್ಥೇ ಕೃತೋ  
ವ್ಯಯ: । ದಾತವ್ಯಂ ಬಾಂಧವೈಸ್ತತ್ಸ್ಯಾತ್ ಪ್ರವಿಭಕ್ತೇರಪಿ ಸ್ವತ:”  
ಮನುಂ ೮-೧೬೬ । 3. ನಿಸರ್ಗವಾಗಿ, ಸ್ವಭಾವವಾಗಿ.  
“ಸ್ವತ: ಸಿದ್ಧಂ ಯಸ್ಮಿನ್ನಿತರದ್ವರವಾಪಂ ವಿಜಯತೇ ಸುಮಿತ್ರಾಪುತ್ರ-  
ತ್ವಾದಪಿ ಜಗತಿ ರಾಮಾನುಜಪದಮ್” ಚಂ ರಾಂ ।

ಸ್ವತ:ಸಿದ್ಧ ಸ್ವತ:ಸಿದ್ಧ (ವಿಂ) 1. ತನ್ನಿಂದಲೇ ಉಂಟಾದ,  
ತನ್ನಿಂದಲೇ ಉತ್ಪನ್ನವಾದ. ಸ್ವತ: ಆತ್ಮನ: ಸಿದ್ಧಮ್ ।  
“ಸ್ವತ:ಸಿದ್ಧಂ ಶುದ್ಧಸ್ಫಟಿಕಮಣಿಭೂತಪ್ರತಿಭಟಂ ಸುಧಾಸಂಧಿಚಿಮಿ-  
ಚ್ಛುತಿಭಿರಪತಾಪತ್ರಿಭುವನಮ್” ಹ್ಯಗ್ರೀಂ । 2. ತಾನಾಗಿಯೇ  
ಯಜುವಾತಾಗಿರುವ, ಸ್ವಭಾವವಾಗಿ ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
“ಸ್ವತ:ಸಿದ್ಧಂ ಯಸ್ಮಿನ್ನಿತರದ್ವರವಾಪಂ ವಿಜಯತೇ” ಚಂ ರಾಂ ।

ಸ್ವತಃ ಸ್ವತಃ (ನಂ) 1. ಯಜಮಾನನಾಗಿರುವಿಕೆ, ಸ್ವಾಮಿತ್ವ,  
ಒಡೆಯನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಸ್ವಸ್ಯ ಭಾವ: “ತ್ವ:” (೪-೧-೧೧೯) ।

ಆಸ್ತಿಯ ನ್ಯಾಯಸಮ್ಮತವಾದ ವಿನಿಯೋಗದಲ್ಲಿ  
ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ ಅಧಿಕಾರಹೊಂದಿರುವಿಕೆಯು ಸ್ವಾಮಿತ್ವ.  
“ತಲ್” (೪-೧-೧೧೯) । ಸ್ವತಾ ಸ್ವತಾ. “ನ ಕೇವಲಂ ಯ:  
ಸ್ವತಯಾ ಮುರಾರೇರನನ್ಯಸಾಧಾರಣತಾಂ ದಧಾನ್.” ಮಾಧಂ ೩-೧೯ ।  
2. ಜ್ಞಾತಿತ್ವ. “ವ್ರಜತಿ ಸ್ವತಾಮನುಚಿತೋಽಪಿ ಸವಿನಯ-  
ಮುಪಾಸಿತೋ ಜನೈ:” ಮಾಧಂ ೧೪-೪ ।

ಸ್ವದನ ಸ್ವದನ (ನಂ) ಸವಿನೋಡುವುದು, ರುಚಿನೋಡು  
ವುದು. ಷದ (ಆಸ್ವಾದನೆ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೪) ।

ಸ್ವದನೀಯ ಸ್ವದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ರುಚಿನೋಡಲ್ಪಡುವ.  
2. ರುಚಿನೋಡಬೇಕಾದ. 3. ರುಚಿನೋಡಬಹುದಾದ.  
ಷದ (ಆಸ್ವಾದನೆ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) । “ತವ್ಯ:”  
(೩-೧-೯೬) । ಸ್ವದಿತವ್ಯಮ್ ಸ್ವದಿತವ್ಯಮ್.

ಸ್ವದಮಾನ ಸ್ವದಮಾನ (ವಿಂ) ಸವಿನೋಡುತ್ತಿರುವ, ರುಚಿ  
ನೋಡುತ್ತಿರುವ. ಷದ (ಆಸ್ವಾದನೆ) “ಶಾನಚ್”  
(೩-೨-೧೨೪) ।

ಸ್ವದಿತ ಸ್ವದಿತ (ವಿಂ) 1. ರುಚಿನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಷದ  
(ಆಸ್ವಾದನೆ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೧೦೨) । (ನಂ) 2. ಪಿತ್ತ  
ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿಮಂತ್ರಿತರಾದವರು ಉತ್ತರರೂಪದಲ್ಲಿ  
ಹೇಳುವ ಮಾತು. ಸ್ವದಿತಮಿತಿ ಬ್ರೂತ ಎಂದು ಹೇಳಿದಾಗ  
ಅಸ್ತು ಸ್ವದಿತಮ್ ಎಂಬ ಉತ್ತರ.

ಸ್ವಧರ್ಮ ಸ್ವಧರ್ಮ (ಪುಂ) ತನಗೆ ವಿಹಿತವಾದ ಧರ್ಮ,  
ತಾನು ಅನುಷ್ಠಿಸಬೇಕಾದ ಆಚಾರ. ಸ್ವಸ್ಯ ಧರ್ಮ: । ತನಗೆ  
ವಿಹಿತವಾದ ಆಚಾರವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿ ಪರಧರ್ಮವನ್ನು  
ಆಚರಿಸುವುದು ಶ್ರೇಯಸ್ಸಿಗೆ ಕಾರಣವಾಗುವುದಿಲ್ಲ. ತನ್ನ  
ಧರ್ಮದಲ್ಲಿ ಕಿಂಚಿತ್ ನ್ಯೂನತೆಯಿದ್ದರೂ ಪರಧರ್ಮಾನು  
ಷ್ಠಾನವು ಅಶ್ರೇಯಸ್ಸಿಗೆ ಕಾರಣ. “ಶ್ರೇಯಾನ್ ಸ್ವಧರ್ಮೋ  
ವಿಗುಣ: ಪರಧರ್ಮಾತ್ ಸ್ವನುಷ್ಠಿತಾತ್ । ಸ್ವಧರ್ಮೋ ನಿವೃತ್ತಂ ಶ್ರೇಯ:  
ಪರಧರ್ಮೋ ಭಯಾವಹ:” ಗೀತಾ ೩-೩೫ ।

ಸ್ವಧಾ ಸ್ವಧಾ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಇಂದ್ರಾದಿ ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಹವಿ  
ಸ್ಸನ್ನು ಅರ್ಪಿಸುವ ಮಂತ್ರ. ಸ್ವದತ್ತೇ—ಷದ (ಆಸ್ವಾದನೆ)  
“ಆ” ಪ್ರತ್ಯಯ: । ದರಯ ಧ: ಪೃಷಂ । “ಸ್ವಾಹಾ ದೇವಹವಿ-  
ದಾನಿ ಶ್ರೀಷತ್ವೌಷತ್ವೌಷತ್ ಸ್ವಧಾ” ಅಮಂ । 2. ಪಿತ್ತಗಳಿಗೆ  
ಆಹಾರವನ್ನು ಕೊಡುವ ಮಂತ್ರ. “ನೂನಂ ಮತ್ತ: ಪರಂ  
ವಶ್ಯಾ: ಪಿಂಡವಿಚ್ಛೇದದರ್ಶಿನ: । ನ ಪ್ರಕಾಮಭುಜ:ಶ್ರಾದ್ಧೇ ಸ್ವಧಾ-  
ಸತ್ಯಗ್ರಹತತ್ಪರಾ:” ರಘುಂ ೧-೬೬ ।

ಸ್ವಧಾ ಸ್ವಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ದಕ್ಷನ ಪತ್ರಿ, ಪಿತ್ತದೇವತೆಗಳ  
ಪತ್ರಿ. 2. ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಾನಸ ಪತ್ರಿ. “ಬ್ರಹ್ಮಾ ಚ ಮಾನಸೀ  
ಕನ್ಯಾ ಸಸೃಜೇ ತಾಂ ಮನೋರಮಾಂ । ರೂಪಯೌವನಸಂಪನ್ನಾಂ ಶತ-



ಚಂದ್ರಸಮಪ್ರಭಾಮ್ ॥ ವಿಶ್ವಾವತೀ ಗುಣವತೀಮತಿರಪವತೀ ಸತೀಮ್ ।  
ಸ್ವೇತಚಂಪಕವರ್ಣಿಭಾ ರತ್ನಮೃಣಮೃಷಿತಾಮ್ ॥ ವಿಶುದ್ಧಾ  
ಪ್ರಕೃತೇರಣಾ ಸಮ್ಮಿತಾ ವರದಾ ಶುಭಾಮ್ । ಸ್ವಧಾಭಿಧಾನಾ ಸುದತೀ  
ಲಕ್ಷ್ಮೀಲಕ್ಷಣಸಂಯುತಾಮ್ ॥ ಪಿತೃಮೃತಾ ದದೌ ಬ್ರಹ್ಮಾ ತುಷ್ಠೇಷ್ಯ-  
ಸ್ತುಷ್ಠಿರೂಪಿಣೀಮ್ ” ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ ।

ಸ್ವಧಾಕಾರ ಸ್ವಧಾಕಾರ (ಪುಂ) ಪಿತ್ತಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಹೇಳುವ  
ಸ್ವಧಾ ಶಬ್ದ, ಸ್ವಧಾ ಎಂದು ಎತ್ತರ ಧ್ವನಿಯಲ್ಲಿ ಹೇಳು  
ವುದು.

ಸ್ವಧಾಪ್ರಿಯ ಸ್ವಧಾಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ. 2. ಕರಿ ಎಳ್ಳು.  
ಸ್ವಧಾಭುಜ ಸ್ವಧಾಭುಜ (ಪುಂ) ಪಿತ್ತಗಣ. ಸ್ವಧಾ ಭುಜವೇ  
— ಭುಜ (ಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ) “ವಿವ್” (೩-೨-೭೬) ।

ಸ್ವಧಿತ ಸ್ವಧಿತ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪರಶು, ಕೊಡಲಿ. ಸ್ವ  
ಧಿತ — ಧಿ (ಧಾರಣೆ) “ಕ್ವಿ” (೩-೩-೧೭೪) ।

ಸ್ವಧಿತೀಹಿತ ಸ್ವಧಿತೀಹಿತ (ಪುಂ) ಕೊಡಲಿಯೇ  
ಆಯುಧವಾಗಿರುವ ಯೋಧ.

ಸ್ವನ ಸ್ವನ (ಪುಂ) ಧ್ವನಿ, ಶಬ್ದ. ಸ್ವನ (ಶಬ್ದ) ವಾ “ಅಪ್”  
(೩-೩-೬೨) । ಪಕ್ಷ “ಘ” (೩-೩-೧೮) । ಸ್ವಾನಃ ।  
“ಅಸ್ಮಿನ್ ಮೃದುವ್ರತನಗಮಂತರೀಯರ್ದನಿರ್ಯತ್ಸವನಶ್ರುತಿಸುಖಾದಿವ  
ನೋಸಹಂತೆ” ಮಾಘಂ ೪-೪೩ ।

ಸ್ವನತ್ ಸ್ವನತ್ (ವಿಂ) ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಸದ್ದುಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ. ಸ್ವನ (ಶಬ್ದ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) ।  
“ಆಯಾಸಾದಲಘುತರಸ್ತನಃ ಸ್ವನದ್ವಿಃ ಶ್ರಾಂತಾನಾಮವಿಕಚ-  
ಲೋಚನಾರವಿಂದಃ” ಮಾಘಂ ೮-೧ । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್”  
(೪-೧-೬) । —ನೀ-೨೭೦.

ಸ್ವನನ ಸ್ವನನ (ನಂ) ಶಬ್ದಮಾಡುವುದು. ಸದ್ದುಮಾಡು  
ವುದು. ಸ್ವನ (ಶಬ್ದ) ಭಾವ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) ।

ಸ್ವನನೀಯ ಸ್ವನನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದಮಾಡಬೇಕಾದ.  
2. ಶಬ್ದಮಾಡಬಹುದಾದ. ಸ್ವನ (ಶಬ್ದ) “ಅನೀಯರ್”  
(೩-೧-೯೬) । “ತವ್ಯಃ” ಸ್ವನಿತವ್ಯಮ್ ಸ್ವನಿತವ್ಯಮ್.

ಸ್ವನಿತ ಸ್ವನಿತ (ನಂ) 1. ಶಬ್ದ. ಧ್ವನಿ. ಸ್ವನ (ಶಬ್ದ)  
“ಕ್ವಃ” (೩-೩-೧೧೪) । “ಋತುಭುಜಯುಗಗಲದ್ವಯಸ್ವನಿತಂ  
ಪ್ರತಿಕ್ಷುತಮಿವೋಪಶುಶ್ರುವೇ” ಮಾಘಂ ೧೫-೧೧ । (ವಿಂ) 2.  
ಶಬ್ದಮಾಡಿದ, ಸದ್ದುಮಾಡಿದ. ಸ್ವನ “ಕ್ವಃ” (೩-೪-೭೨) ।

ಸ್ವನಿತವತ್ ಸ್ವನಿತವತ್ (ವಿಂ) ಶಬ್ದಮಾಡಿದ, ಸದ್ದು  
ಮಾಡಿದ. ಸ್ವನ (ಶಬ್ದ) “ಕ್ವತುಃ” (೩-೨-೧೦೨) ।

ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೧-೬) । —ವತೀ-೨೭೦.

ಸ್ವಪಕ್ಷ ಸ್ವಪಕ್ಷ (ಪುಂ) ತನ್ನಪಕ್ಷ, ತನ್ನಕಡೆಯವರ ಗುಂಪು.  
ಸ್ವಸ್ಯ ಆತ್ಮನಃ ಪಕ್ಷಃ । “ಕಾಮಃ ಸ್ವೀರನುಶಯವಾನಿವ

ಸ್ವಪಕ್ಷವ್ಯಾಧಾತಾದಿತಿ ಸುತರಾಂ ಚಕಾರ ಚಾರುಃ” ಮಾಘಂ  
೮-೬೧ ।

ಸ್ವಪತ್ ಸ್ವಪತ್ (ವಿಂ) ಮಲಗಿರುವ, ನಿದ್ರೆಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ. ನಿ ಷ್ವಪ್ (ಶಯೆ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) ।  
“ಸ್ವಪತಃ ಕಿಲ ಜಾಗ್ರತಶ್ಚ ತಸ್ಯ ತ್ವಯಿ ವೇರೇಣ ವಿದೀಪ್ತಚಿತ್ತ-  
ವೃತ್ತಃ” ಯಾದಂ ೧೫-೨೮ ।

ಸ್ವಪನ ಸ್ವಪನ (ನಂ) ಮಲಗಿ ನಿದ್ರಿಸುವುದು. ನಿ ಷ್ವಪ್  
(ಶಯೆ) ಭಾವ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । “ಮೇದಃಸ್ವೇದಕಫ-  
ರಸರಕ್ತಶ್ರೀಣಾನಾಂ ಅಜೀರ್ಣಿನಾಂ ಚ ಮುಹುತಂ ದಿವಾಸ್ವಪನಮಪ್ರತಿ-  
ವಿಧಮ್” ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ ೪ ।

ಸ್ವಪ್ನ ಸ್ವಪ್ನ (ಪುಂ) 1. ನಿದ್ರೆ. ನಿ ಷ್ವಪ್ (ಶಯೆ) “ನನ್”  
(೩-೩-೯೧) । “ತಸ್ಮಾನ್ನ ಜಾಗೃಯಾದ್ರಾತ್ರೌ ದಿವಾಸ್ವಪ್ನಂ ಚ  
ವರ್ಜಯೇತ್ । ಜಾತ್ವಾ ದೋಷಕರಾವೇತೌ ಬುಧಃ ಸ್ವಪ್ನಂ ಮಿತಂ ಚರೇತ್”  
ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ । 2. ಕನಸು, ನಿದ್ರಿಸುವಾಗ ಪೂರ್ವಾನು  
ಭೂತವಾದ ವಿಷಯಗಳ ಅನುಭವ. ನಿದ್ರಿಸುತ್ತಿರುವಾಗ  
ಪಾಂಚಭೌತಿಕಶರೀರಕ್ಕೆ ನಿಯಾಮಕನಾದ ಜೀವಾತ್ಮನು  
ಪೂರ್ವಜನ್ಮ ಮತ್ತು ಈ ಜನ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಅನುಭವಿಸಿದ  
ಶುಭಾಶುಭವಿಷಯಗಳನ್ನು ರಜೋಗುಣಪ್ರೇರಿತವಾದ  
ಮನಸ್ಸಿನಿಂದ ಅನುಭವಿಸುತ್ತಾನೆ. ಇದೇ ಕನಸು. “ಪೂರ್ವ-  
ದೇಹಾನುಭೂತಾಸ್ತು ಭೂತಾತ್ಮಾ ಸ್ವಪತಃ ಪ್ರಭುಃ । ರಜಯುಕ್ತೇನ  
ಮನಸಾ ಗೃಹ್ಣಾತ್ಯರ್ಥಾನ್ ಶುಭಾಶುಭಾನ್” ಸುಶ್ರುತಂ ಶಾರೀರಂ  
೪-೩೬ । “ಸ್ವಪ್ನೋ ನು ಮಾಯಾ ನು ಮತಿಭ್ರಮೋ ನು ಕಿಲಿಷ್ಠಂ ನು  
ತಾವತ್ಕಲಮೇವ ಪುಣ್ಯಮ್” ಶಾಕುಂ ೬-೧೦ । 3. ದರ್ಶನ.  
“ಸ್ವಪ್ನಃ ಸ್ವಾಪೇ ಪ್ರಸುಪ್ತಸ್ಯ ವಿಜ್ಞಾನೇ ದರ್ಶನೇ ಪುಮಾನ್” ಮೇದಿಂ ।  
ಸ್ವಪ್ನವು ಫಲಕೊಡುವ ಕಾಲಃ ರಾತ್ರಿ ಪ್ರಥಮ  
ಯಾಮದ ಸ್ವಪ್ನವು ಒಂದು ವರ್ಷದಲ್ಲಿಯೂ ದ್ವಿತೀಯ  
ಯಾಮದ ಸ್ವಪ್ನವು ಎಂಟು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿಯೂ ತೃತೀಯ  
ಯಾಮದ ಸ್ವಪ್ನವು ಮೂರು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿಯೂ ತುರೀಯ  
ಯಾಮದ ಸ್ವಪ್ನವು 15 ದಿನಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಫಲವನ್ನು  
ಕೊಡುವುದು. “ಸ್ವಪ್ನಸ್ತು ಪ್ರಥಮೇ ಯಾಮೇ ಸಂವತ್ಸರಫಲಪ್ರದಃ ।  
ದ್ವಿತೀಯೇ ಚಾಷ್ಟಮಿಸಿಃ ತ್ರಿಮಿಸಿಃ ತೃತೀಯಕೇ । ಚತುರ್ಥೇ  
ಚಾರ್ಧಮಾಸೇನ ಸ್ವಪ್ನಃ ಸ್ಯಾತ್ಕು ಫಲಪ್ರದಃ” । ಅರುಣೋದಯ  
ಕಾಲದ ಸ್ವಪ್ನವು ಹತ್ತು ದಿನಗಳೊಳಗೆ ಫಲವನ್ನು ಕೊಡು  
ವುದು. “ದಶಾಹೇ ಫಲದಃ ಸ್ವಪ್ನೋಽಪ್ಯರ್ಣೋದಯದರ್ಶನೇ” ।  
ಪ್ರಾತಃಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸ್ವಪ್ನವನ್ನು ಕಂಡು ಕೊಡಲೆ ನಿದ್ರೆಯಿಂದ  
ಎಚ್ಚಿತ್ತರೆ ಅದು ಸದ್ಯಃ ಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವುದು. “ಪ್ರಾತಃ  
ಸ್ವಪ್ನಶ್ಚ ಫಲದಸ್ತತ್ಕ್ಷಣಂ ಯದಿ ಬೋಧಿತಃ” । ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ  
ನಾನಾವಿಧ ಯೋಚನೆ ಮತ್ತು ರೋಗರುಜಿನಾದಿಗಳಿಂದ



ಕೂಡಿರುವಾಗ ಕಂಡ ಸ್ವಪ್ನವು ಫಲವನ್ನು ಕೊಡಲಾರದೆ.

“ಚಿಂತಾಬ್ಯಾಧಿಸಮಾಯುಕ್ತೋ ನರಃ ಸ್ವಪ್ನಂ ಚ ಪश्यತಿ । ತತ್ಸರ್ವಂ ನಿರ್ಫಲಂ ತಾತ ಪ್ರಯಾತ್ಯೇವ ನ ಸಂಶಯಃ” ॥ ರಾತ್ರಿ ಸ್ವಪ್ನವನ್ನು ಕಂಡು ಮತ್ತೆ ನಿದ್ರೆಮಾಡಿದರೂ ಆ ಸ್ವಪ್ನದ ವಿಷಯವನ್ನು ರಾತ್ರಿಯೇ ಯಾರೊಡನಾದರೂ ಹೇಳಿದರೂ ಅದಕ್ಕೂ ಫಲವಿಲ್ಲ. “ದೃಷ್ಟಾ ಸ್ವಪ್ನಂ ಚ ನಿರ್ದಾಲ್ಯುಃ ಯದಿ ನಿರ್ದ್ರಾ ಪ್ರಯಾತಿ ಚ । ವಿಮೂಢೋ ವಕ್ತಿ ಚೇದ್ರಾತ್ರೋ ನ ಲಭೇತ್ ಸ್ವಪ್ನಜ್ಞಂ ಫಲಮ್” ॥ ಕನಸಿನಲ್ಲಿ ಗಜ ರಾಜ ಸ್ವರ್ಣವೃಷಭ ಧೇನು ದೀಪ ಅನ್ನ ಹಣ್ಣು ಪುಷ್ಪ ಕನ್ಯೆ ಭತ್ತ ರಥ ಧ್ವಜ ಇವನ್ನು ನೋಡಿದರೆ ಅಪರಿಮಿತವಾದ ಐಶ್ವರ್ಯವನ್ನೂ ಕೀರ್ತಿಯನ್ನೂ ಪಡೆಯುತ್ತಾನೆ. “ಗಜಂ ನೃಪಂ ಸುರ್ವಣಂ ಚ ವೃಷಮಂ ಧೇನುಮೇವ ಚ । ದೀಪಮನ್ತ್ರಂ ಫಲಂ ಪುಷ್ಪಂ ಕನ್ಯಾಂ ಛತ್ರಂ ರಥಂ ಕ್ವಜಮ್ । ಕುಡುಮ್ಬಂ ಲಭತೇ ದೃಷ್ಟಾ ಕೀರ್ತಿಂ ಚ ವಿಪುಲಾಂ ಶ್ರಿಯಮ್” ॥ ಸ್ವಪ್ನದಲ್ಲಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನು ಅಶೀರ್ವಾದ ಮಾಡಿದರೆ ಅವನು ಹೇಳಿದುದೆಲ್ಲಾ ಫಲಿಸುವುದು ಮತ್ತು ಅತುಲವಾದ ಐಶ್ವರ್ಯವನ್ನೂ ಹೊಂದುತ್ತಾನೆ. “ಯಂ ಸ್ವಪ್ನೇ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ ನಂದ ಕರೋತಿ ಚ ಶುಭಾಶಿಷಮ್ । ಯದ್ದದತಿ ಭವೇತ್ತಸ್ಯ ತಸ್ಯೇಶ್ವರೈರ್ಮವೇದ್ಧ್ರವಮ್” ॥ ಸ್ವಪ್ನದಲ್ಲಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನು ಪುಣ್ಯಶಾಲಿಯಾದವನೊಬ್ಬನಿಗೆ ಪುಸ್ತಕವನ್ನು ಕೊಟ್ಟರೆ ಅದನ್ನು ಪಡೆದವನು ಜಗದ್ವಿಖ್ಯಾತನಾದ ಪಂಡಿತನಾಗಿಯೂ ಉತ್ತಮ ಕವಿಯಾಗಿಯೂ ಆಗುವನು. “ದದಾತಿ ಪುಸ್ತಕಂ ಸ್ವಪ್ನೇ ಯಸ್ಮೈ ಪುಣ್ಯವತೇ ದ್ವಿಜಃ । ಸ ಭವೇದ್ವಿಶ್ವವಿಖ್ಯಾತಃ ಕವೀಂದ್ರಃ ಪಂಡಿತೇಶ್ವರಃ” ॥ ಸ್ವಪ್ನದಲ್ಲಿ ದಿವ್ಯವನಿತೆಯು ನೀನು ನನಗೆ ಸ್ವಾಮಿಯಾಗಬೇಕೆಂದು ಹೇಳಿದಾಗ ಅವಳನ್ನು ನೋಡಿದವನು ಕೂಡಲೆ ಎಚ್ಚರಗೊಂಡರೆ ಸಂಶಯವಿಲ್ಲದೆ (ನಿಜವಾಗಿಯೂ) ರಾಜನಾಗುವನು. “ದಿವ್ಯಾ ಸ್ತ್ರೀ ಯಂ ಪ್ರವದತಿ ಮಮ ಸ್ವಾಮಿ ಭವಾನ್ ಭವ । ಸ್ವಪ್ನೇ ದೃಷ್ಟಾ ಚ ಜಾಗತಿ ಸ ಚ ರಾಜಾ ಭವೇತ್ ಧ್ರುವಮ್” ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ ।

**ಸ್ವಪ್ನಜ್ಞ ಸ್ವಪ್ನಜ್ಞ** (ವಿಂ) ಯಾವಾಗಲೂ ನಿದ್ರೆಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ತ್ರಿವಿಧ (ಶಯ) “ನಜಿಡ್” (೩-೨-೧೭೨) । “ಅಹಂ ಸ್ವಪ್ನಕ್ಪ್ರಸಾದೇನ ತವ ವಂದಾರುಮಿಃ ಸಹ । ಅಮೀರವಸಂ ಸ್ತ್ರೀಭಿರಾಸುರಾಭಿರಿದೇಶ್ವರಃ” ಭಟ್ಟಿಂ ೭-೨೫ ।

**ಸ್ವಭಾವ ಸ್ವಭಾವ** (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಕೃತಿ, ಸಹಜವಾದ ಗುಣ, ಹುಟ್ಟುಗುಣ. ಸ್ವೋ ಭಾವಃ । ಸ್ವಸ್ಯ ಭಾವೋ ವಾ । “ಭವಂತಿ ನಮ್ರಾಸ್ತರವಃ ಫಲಾಗಮೈಃ ನವಾಮ್ಬುಮಿರ್ದೂರವಿಲಿಂಬಿನೋ ಭನಾಃ । ಅನುಡತಾಃ ಸತ್ಪುರುಷಾಃ ಸಮೃದ್ಧಿಭಿಃ ಸ್ವಭಾವ ಏವೈಷ ಪರೋಪಕಾರಿಣಾಮ್” ಶಾಕುಂ ೪-೧೨ । 2. ಇತರ ಯಾವ ಕಾರಣವನ್ನೂ ಅಪೇಕ್ಷಿಸದೆ ಅವಿರ್ಭವಿಸುವುದು. “ಬಹಿ-

ಹೇತುನಪೇಕ್ಷಾ ತು ಸ್ವಭಾವೋಽಪಿ ಪ್ರಕೀರ್ತತಃ । ನಿಸರ್ಗಾಽಪಿ ಸ್ವರೂಪ-  
ಽನ್ವೇತ್ಯೇಷೋಽಪಿ ಭವತಿ ದ್ವಿಧಾ” ॥

**ಸ್ವಭಾವೋಕ್ತಿ ಸ್ವಭಾವೋಕ್ತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಾತಿಕ್ರಿಯಾ ಗುಣಗಳಲ್ಲಿರುವ ಸ್ವಭಾವದ ವರ್ಣನೆಯು “ಸ್ವಭಾವೋಕ್ತಿ” ಅಲಂಕಾರ. “ಸ್ವಭಾವೋಕ್ತಿಃ ಸ್ವಭಾವಸ್ಯ ಜಾತ್ಯಾದಿಸ್ಥಸ್ಯ ವರ್ಣನಮ್ । ಉದಾ : “ಕುರಜ್ಜೇತರಜ್ಜಾಕೈಃ ಸ್ತಂಭಕರ್ಣೇರ್ದೀಕ್ಷಿತಮ್” ಚಂದ್ರಾಂ ।

**ಸ್ವಭೂ ಸ್ವಭೂ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ಪರಮಾತ್ಮ. ಸ್ವತಃ ಭವತಿ — ಭೂ “ವಿವ್” (೩-೨-೧೭೯) । 2. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖಿ. “ತಾನ್ವಭಾಷೇ ಸ್ವಭೂಃ ಪುತ್ರಾನ್ ಪ್ರಜಾಃ ಸೃಜತ ಪುತ್ರಕಾಃ” ಭಾಗಂ । 3. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.

**ಸ್ವಯಮ್ ಸ್ವಯಮ್** (ಅವ್ಯಂ) ತಾನೇ. ಸು ಸುಷ್ಠು ಅಯತೇ — ಅಯ (ಗತೀ) “ಅಮ್” ಬಾಹುಂ । “ವಿನಿಪಾತನಿದಾನಾನಿ ಸ್ವಯಮನ್ವೀಕ್ಷ್ಯ ಸುಖ್ಯತ” ಯಾದಂ ೨೨-೩೪ । 2. ತನ್ನಿಂದ. “ಸಿಕ್ತಂ ಸ್ವಯಮಿವ ಸ್ನೇಹಾತ್ ವನ್ಧ್ಯಮಾಶ್ರಮವೃಕ್ಷಕಮ್” ರಘುಂ ೧-೭೦ । 3. ತಾನಾಗಿಯೇ, ಅವನಾಗಿಯೇ. “ವಿಷ-  
ವೃಕ್ಷೋಽಪಿ ಸಂವರ್ಯ ಸ್ವಯಂ ಛೇತುಮಸಾಂಪ್ರತಮ್” ।

**ಸ್ವಯಂಕೃತ ಸ್ವಯಂಕೃತ** (ವಿಂ) ತನ್ನಿಂದಲೇ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. **ಸ್ವಯಂಗುಪ್ತಾ ಸ್ವಯಂಗುಪ್ತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶೂಕಶಿಂಬಿ, ನಸುಗುನ್ನಿ ಗಿಡ.

**ಸ್ವಯಂಗ್ರಾಹ ಸ್ವಯಂಗ್ರಾಹ** (ವಿಂ) ತಾನಾಗಿ ತನ್ನ ಕೈಗಳಿಂದ ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳುವ. ಸ್ವಯಂ ಗೃಹ್ಣಾತಿ—ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೇ) ವಾ “ಗಃ” (೩-೧-೧೪೩) । “ನಿತಮ್ಬಿನೀಮಿಕ್ಷುತಿಸಿ ಮುಕ್ತಲಜ್ಜಾಂ ಕಠೇ ಸ್ವಯಂಗ್ರಾಹನಿಷಕ್ತಬಾಹುಮ್” ಕುಮಾಂ ೩-೭ । ಪಕ್ಷಿ ಗ್ರಹಃ । ವರನನ್ನು ಆರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ತಾನಾಗಿ ತನ್ನ ತೋಳುಗಳನ್ನು ವರನ ಹೆಗಲಿನ ಮೇಲೆ ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಿಂದ ಇಟ್ಟು ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳುವವಳು ಸ್ವಯಂಗ್ರಾಹಳು.

**ಸ್ವಯಂವರ ಸ್ವಯಂವರ** (ಪುಂ) 1. ವಧುವು ವರನನ್ನು ವರಿಸುವ ಸಮಾರಂಭ. ಸ್ವಯಂ ವೃಣೀತೇಽನ್—ವೃಜ್ (ಸಂಭಕ್ತೀ) “ಅಪ್” (೩-೩-೪೮) । “ಸ್ವಯಂವರಂ ಭೀಮನರೇಂದ್ರಜಾಯಾ ದಿಶಃ ಪತಿಃ ನ ಪ್ರವಿವೇಶ ಶೇಷಃ” ನೈಷಂ ೧೦-೧೪ । 2. ವಧುವು ವರನನ್ನು ಆರಿಸುವುದು. ಸ್ವಯಂ ವ್ರಿಯತೇ—ವೃಜ್ (ವರಣೇ) “ಅಪ್” (೩-೩-೪೮) । “ಸ್ವಯಂವರಮಹೇ ಭೀಮೀವರಣಾಯ ತ್ವರಾಮಹೇ । ತದಸ್ಮಾನನುಮನ್ಯಧ್ವಮಧ್ವನೇ ತತ್ರ ಭಾವಿನೇ” ನೈಷಂ ೧೭-೧೧೪ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ವರಾ —ವರಾ. ಪತಿಯನ್ನು ತಾನೇ ವರಿಸುವ (ಆರಿಸುವ) ಹೆಂಗಸು.

**ಸ್ವಯಂವತ್ ಸ್ವಯಂವತ್** (ಪುಂ) ಹನ್ನೆರಡು ಮಂದಿ ಪುತ್ರರೊಬ್ಬ, ತಾಯಿ ತಂದೆಗಳಿಂದ ಪರಿತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ತಾನಾಗಿ



स्वरित स्फुरित (१०) बन्दु स्फुर. लुदात्तत्त्व मत्तु  
 अनुदात्तत्त्व ए वरदो धर्मगणुल्लु बन्दु स्फुर  
 वर्ण. स्वरोऽस्य सञ्जातः "इतच्" (५-२-३६)।



ಸ್ವರಿತದ ಆದಿಭಾಗ (ಪೂರ್ವಭಾಗ) ದಲ್ಲಿ ಅರ್ಧ ಹ್ರಸ್ವವು ಉದಾತ್ತ. ಉತ್ತರಭಾಗವು ಅನುದಾತ್ತ. ಸ್ವರಿತ-ಸ್ಯಾದಿತೋರ್ವಮುದಾತ್ತಮ್ | ತತ್ತರಾಶ್ಚ ತು ಪರಿಶೇಷಾದನುದಾತ್ತಮ್." ಸಿಂ ಕೌಂ | "ತತ್ತ್ವೇದಾತ್ತ:" "ನೀಚೇರನುದಾತ್ತ:" "ಸಮಾ-ಹಾರ: ಸ್ವರಿತ:" (೧-೨-೨೯, ೩೦, ೩೧) |

ಸ್ವರಾಜ್ ಸ್ವರಾಜ್ (ಪುಂ) ಒಂದು ವೈದಿಕ ಛಂದಸ್ಸು.

ಸ್ವರ ಸ್ವರು (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧ. ಸ್ವರತಿ — ಸ್ವ (ಶಬ್ದೋಪತಾಪಯೋ:) "ತ:" (ತಂ ೧-೧೧) | 2. ಯಾಗದ ಯೂಪಸ್ತಂಭದ ತುಂಡು. 3. ಬಾಣ. 4. ಯಾಗ. "ಸ್ವರ: ಪುಸಿ ಯುಪವಣಿ ಮಿದುರೇಷ್ಯವರೇ ಶರೇ" ಮೇದಿಂ | 5. ಸೂರ್ಯನ ಪ್ರಕಾಶ.

ಸ್ವರಸ್ ಸ್ವರುಸ್ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧ.

ಸ್ವರೂಪ ಸ್ವರೂಪ (ನಂ) 1. ಸ್ವಭಾವ, ಪ್ರಕೃತಿ, ಸಹಜವಾದ ಗುಣ. ಸ್ವ ರೂಪಮ್ | 2. ತನ್ನ ನಿಜವಾದ ರೂಪ, ನಿಜವಾದ ಆಕೃತಿ. ಸ್ವಸ್ಯ ರೂಪಮಾಕಾರ: | 3. ಸ್ವಭಾವ ಸಿದ್ಧವಾದ ಪದವಿ, -ದರ್ಜೆ, -ಸ್ಥಿತಿ. "ಸ್ವರೂಪಶೋಭ-ಕಫಲಾನಿ ನಾಕಿನಾಂ ಗಣಯಮಾಶಕ್ಯಂ ತದಾದಿ ಚಕ್ರೀ" ಮಾಘಂ ೧-೪೫ | (ವಿಂ) 4. ವಿದ್ಯಾವಂತ. 5. ಸುಂದರವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ. "ಪ್ರಾಪ್ತರೂಪಸ್ವರೂಪಾಭಿರೂಪಾ ಬುಧಮನೋಜಯೋ:" ಅಮಂ |

ಸ್ವರೇಣು ಸ್ವರೇಣು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೂರ್ಯನ ಪತ್ನಿ. "ಸ್ವರೇಣು-ಶ್ಚುಮಯಿ ತ್ವಾಷ್ಟ್ರಿ ಪ್ರಿಯಾಶ್ಚೇತೇ ವಿವಸ್ವತ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಸ್ವರೋದಯ ಸ್ವರೋದಯ (ಪುಂ) 1. ಧ್ವನಿಯ ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಶಬ್ದವು ಹುಟ್ಟುವುದು. ಸ್ವರಸ್ಯ ಶಬ್ದಸ್ಯ ಉದಯ: | 2. ಸಂಗೀತದ (ನಿಷಾದ ಮೊದಲಾದ) ಸಪ್ತ ಸ್ವರಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಗ್ರಂಥ.

ಸ್ವರ್ಗ ಸ್ವರ್ಗ (ಪುಂ) 1. ಸುಖ. 2. ದೇವಲೋಕ, ದೇವತೆಗಳ ವಾಸಸ್ಥಾನ. ಸು ಸುಖಂ ಅರ್ಜಯೇ — ಅರ್ಜ (ಅರ್ಜನೆ) "ಖಜ್" (೩-೩-೧೯) | ಸ್ವರ್ಗಲೋಕವು ಭೂರಾದಿ ಸಪ್ತ ಉರ್ಧ್ವಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ಮೂರನೆಯ ಲೋಕ.

ಸಪ್ತ ಉರ್ಧ್ವಲೋಕಗಳು: (1) ಭೂಲೋಕ: (2) ಭುವಲೋಕ: (3) ಸ್ವಲೋಕ: (4) ಮಹಲೋಕ: (5) ಜನಲೋಕ: (6) ತಪಾಲೋಕ: ಮತ್ತು (7) ಸತ್ಯಲೋಕ: | ಜ್ಯೋತಿಷೋಮಯಾಗದಿಂದ ಸ್ವರ್ಗ ಪ್ರಾಪ್ತಿಯಾಗುವುದು. "ಜ್ಯೋತಿಷೋಮೇನ ಸ್ವರ್ಗಕಾಮೋ ಯಜೇತ" | ರೋಗ ಜರೆ ಶೋಕ ಮೊದಲಾದ ದುಃಖಸ್ವರ್ತವಿಲ್ಲದ ಸುಖಾನುಭವಕ್ಕಾಗಿ ಸ್ವರ್ಗಪ್ರೇಕ್ಷೆಯುಂಟಾಗುವುದು. ಸ್ವರ್ಗವು (ಸುಖವು) ಯಾಗ ದಾನ ಧರ್ಮ ತಪಸ್ಸು ಮೊದಲಾದ ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯಗಳಿಂದ ಲಭ್ಯ.

ಸ್ವರ್ಗದ ಗುಣಗಳು: ಸ್ವರ್ಗದಲ್ಲಿ ರೋಗ ಜರೆ ಮೃತ್ಯು ಶೋಕ ಕ್ಷುತೆ ಮತ್ತು ತೃಷ್ಣೆ ಹಿಮಾದಿಬಾಧೆ ಮುಂತಾದ ಯಾವ ದುಃಖಾನುಭವವೂ ಇರುವುದಿಲ್ಲ. ಮನುಷ್ಯರು ತಾವು ಮಾಡಿದ ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯಗಳ ಫಲವನ್ನು ಅನುಭವಿಸಲು ಸ್ವರ್ಗಕ್ಕೆ ತೆರಳುತ್ತಾರೆ. ಅಪ್ಸರಸ್ಸುಗಳೊಡನೆ ಸುಖವಾಗಿ ವಿಹರಿಸುತ್ತಾರೆ. ಸ್ವರ್ಗದಲ್ಲಿ ನಯನಾನಂದಕರವಾದ ದಿವ್ಯೋದ್ಯಾನಗಳೂ ಸಕಲ ಇಷ್ಟಾರ್ಥಗಳನ್ನೂ ನೀಡುವ ಫಲಪ್ರಪ್ತಿಸಮೃದ್ಧವಾದ ವೃಕ್ಷಗಳೂ ಚಂದ್ರಮಂಡಲದಂತೆ ಶುಭ್ರವಾದ ಸ್ವರ್ಣಮಯ ಮಂಚ ಮತ್ತು ಆಸನಗಳೂ ವಿರಾಜಿಸುವುವು. ಅಲ್ಲಿ ಪುಣ್ಯಶಾಲಿಗಳಾದ ಪುರುಷರೂ ಎಲ್ಲೆಲ್ಲೂ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿರುವರು. ನಾಸ್ತಿಕರು ತಪ್ಪುರೂ ಇಂದ್ರಿಯನಿಗ್ರಹವಿಲ್ಲದವರು ಘಾತುಕರು ಚಾಡಿಕೋರರು ಕೃತಘ್ನರು ಅಹಂಕಾರಿಗಳು ಇವರಾರಿಗೂ ಸ್ವರ್ಗಕ್ಕೆ ಪ್ರವೇಶವಿಲ್ಲ. "ನಂದನಾದಿನಿ ದಿವ್ಯಾನಿ ರಮ್ಯಾಣಿ ವಿವಿಧಾನಿ ಚ | ತತ್ರೋದಾನಾನಿ ಪುण्याನಿ ಸರ್ವಕಾಮಶುಭಾನಿ ಚ || ಸರ್ವಕಾಮಫಲವೈಷ್ಣವೈ: ಶೋಭಿತಾನಿ ಸಮಂತತ: | ಚಂದ್ರಮಂಡಲಶುಭ್ರಾಣಿ ಹೇಮಶಯಾಸನಾನಿ ಚ | ಸರ್ವಕಾಮಸಮೃದ್ಧಾಶ್ಚ ಸುಖದುಃಖವಿವರ್ಜಿತಾ: || ನರಾ: ಸುಕೃತಿನಸ್ತೇ ತು ವಿಚರಂತಿ ಯಥಾಸುಖಮ್ | ನ ತತ್ರ ನಾಸ್ತಿಕಾ ಯಂತಿ ನ ಸ್ತೇಯಾ ನಾಜಿತೇಂದ್ರಿಯಾ: | ನ ನೃಶಂಸಾ ನ ಪಿಶುನಾ: ಕೃತಘ್ನಾ ನ ಚ ಮಾನಿನ: || ಯಜ್ವಾನೋ ದಾನಶೀಲಾಶ್ಚ ತತ್ರ ಗಚ್ಛಂತಿ ತೇ ನರಾ: | ನ ರೋಗೋ ನ ಜರಾ ಮೃತ್ಯು: ನ ಶೋಕೋ ನ ಹಿಮಾದಯ: | ನ ತತ್ರ ಕ್ಷುತಿಪಾಪಾ ಚ ಕಸ್ಯ ಗ್ಲಾನಿನಂ ದೃಶ್ಯತೇ || "ಸ್ವರ್ಗೋ ಸತಾಂ ಶರ್ಮ ಪರಂ ನ ಧರ್ಮಾ ಭವಂತಿ ಭೂಮಾವಿಹ ತತ್ತ್ವ ತೇ ಚ" ನೈಷಂ ೬-೯೮ |

ಸ್ವರ್ಗದಲ್ಲಿ ಸಂಭವಿಸುವ ದೋಷಗಳು: ಮನುಷ್ಯನು ತಾನು ಮಾಡಿದ ಪುಣ್ಯಕಾರ್ಯಗಳ ಫಲವಾದ ಸಕಲಸೌಖ್ಯಗಳನ್ನೂ ಅನುಭವಿಸಿ ಅವೆಲ್ಲಾ ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಕ್ಷಯಿಸಿದ ನಂತರ ಮತ್ತೆ ಭೂಲೋಕಕ್ಕೆ ಬಂದು ಸೇರುವನು. "ಕ್ಷೀಣೇ ಪುಣ್ಯೇ ಮರ್ತ್ಯಲೋಕಂ ವಿಶಂತಿ" ಶ್ರುತಿ: | "ಶುಭಸ್ಯ ಕರ್ಮಣ: ಕೃತ್ಸನ್ ಫಲಂ ತತ್ರೈವ ಭುಜ್ಯತೇ | ನ ಚಾತ್ರ ಕ್ರಿಯತೇ ಭುಯ: ಸೋಽತ್ರ ದೋಷೋ ಮಹಾನ್ ಶ್ರುತ: || ಅಸಂತೋಷಶ್ಚ ಭವತಿ ದೃಷ್ಟಾ ದೀಪ್ತಾಂ ಪರಶ್ಚಿಯಮ್ | ಸಮ್ಪ್ರಾಪ್ತೇ ಕರ್ಮಣಾಮಂತೇ ಸಹಸಾ ಪತನ್ ತಥಾ || ಇಹ ಯತ್ಕ್ರಿಯತೇ ಕರ್ಮ ಫಲಂ ತತ್ರೈವ ಭುಜ್ಯತೇ | ಕರ್ಮಭೂಮಿರಿಯಂ ರಾಜನ್ ಫಲಭೂಮಿಃ ಸ್ವಸೌ ಸ್ಮೃತಾ" ಪಾಶ್ವಪುಂ | [ಸಪ್ತಲೋಕಗಳ ವಿವರಕ್ಕೆ "ಸತ್ಯ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಸ್ವರ್ಗಜ್ಞ ಸ್ವರ್ಗಂಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ವರ್ಗಲೋಕದ ನದಿ, ಮುಂದಾಕಿನೀ, ಗಂಗಾನದಿ. ಸ್ವ: ಸ್ವರ್ಗಸ್ಯ ಗಜ್ಞಾ | "ಹಂಸೀವ



ಕೃಣ್ಣ ತೇ ಕೀರ್ತಿಃ ಸ್ವರ್ಗಜ್ಞಾಮವಗಾಹತೇ" ಚಂದ್ರಾಂ । "ಸ್ವರ್ಗಜ್ಞಾ-  
ಮ್ಬುನಿ ವಂದಿನಾಂ ಕೃತದಿನಾರಮ್ಭಾಪ್ಲುತಿಭೂಪತಿಃ" ನೆಪಂ  
೧೯-೬೬ ।

ಸ್ವರ್ಗತರ ಸ್ವರ್ಗತರು (ಪುಂ) ದೇವಲೋಕದ ವೃಕ್ಷ, ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷ.  
ಸ್ವರ್ಗಪತಿ ಸ್ವರ್ಗಪತಿ (ಪುಂ) ಸ್ವರ್ಗಲೋಕದ ಒಡೆಯ,  
ದೇವೇಂದ್ರ. ಸ್ವರ್ಗಸ್ಯ ಪತಿಃ ।

ಸ್ವರ್ಗಲೋಕೇಶ ಸ್ವರ್ಗಲೋಕೇಶ, -ಈಶ್ವರಃ -ಈಶ್ವರಃ  
(ಪುಂ) ಸ್ವರ್ಗಲೋಕದ ಅಧಿಪತಿ. ದೇವಲೋಕದ ಸ್ವಾಮಿ  
ಯಾದ ಇಂದ್ರ.

ಸ್ವರ್ಗವಧು ಸ್ವರ್ಗವಧೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪ್ಸರಸ್ಸು.

ಸ್ವರ್ಗಪಿಗಾ ಸ್ವರ್ಗಪಿಗಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ವರ್ಗಲೋಕದ ನದಿ.

"ಸ್ವರ್ಗಪಿಗಾಸಲಿಲಸೀಕರಿಣಿ ಸಮಂತಾತ್" ಕುಮಾಂ ೧೭-೫೩ ।

ಸ್ವರ್ಗಿನ್ ಸ್ವರ್ಗಿನ್ (ಪುಂ) ದೇವತೆ. ಸ್ವರ್ಗೋಸ್ಥಸ್ಯ ಭೋಗ್ಯತ್ವೇನ  
—ಸ್ವರ್ಗ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) । "ಭಕ್ತಿಭಾರತಯಾ  
ಸದೋತ್ತಮಃ ಸ್ವರ್ಗಿಣಾಂ ಪರಿಷದಾ ಯದ್ವಹಃ" ಯಾದಂ ೧೭-೪ ।

ಸ್ವರ್ಗೈಕಸ್ ಸ್ವರ್ಗೈಕಸ್ (ಪುಂ) ದೇವತೆ. ಸ್ವರ್ಗಃ ಒಕೋ  
ಯಸ್ಯ । "ಸ್ವರ್ಗೈಕಸಃ ಸ್ವರ್ಗಪರಿಚ್ಯುತಾಃ ಕಿ ಸ್ವಪುಷ್ಯರಾಶೌ  
ಸುಮಹತ್ತಮೇಷು" ಕುಮಾಂ ೧೨-೩೬ ।

ಸ್ವರ್ಗ್ಯ ಸ್ವರ್ಗ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸ್ವರ್ಗಕ್ಕೆ ನಿಮಿತ್ತವಾದ, ಸ್ವರ್ಗ  
ವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಡುವ, ಸ್ವರ್ಗದ ಪ್ರವೇಶವನ್ನು ಗಳಿಸಿ  
ಕೊಡುವ. ಸ್ವರ್ಗಸ್ಯ ನಿಮಿತ್ತಂ "ಯತ್" (೪-೧-೩೯) ।  
2. ಸ್ವರ್ಗಸಂಬಂಧವಾದ. ಸ್ವರ್ಗಸ್ಯ ಸಂಯೋಗಃ ।

ಸ್ವರ್ಗಜ ಸ್ವರ್ಗಜ (ಪುಂ) ಸದ್ಯಕ್ಷರ.

ಸ್ವರ್ಣ ಸ್ವರ್ಣ (ನಂ) 1. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ, ಬಂಗಾರ. ಸ್ವರ್ಣ  
(ಗತೌ) "ಘ್" (೩-೩-೧೮) । ಅರ್ಣಃ — ಶೋಭನಾರ್ಣಃ  
ಗತಿರನೇನ । "ಸ್ವರ್ಣವಿತಿರ್ಣಃ ಕರವಾಮ ವಾಮನೇಶ್ವರೇ ಭವತ್ಯಾ  
ಕಿಮುಪಾಸನಾಸು । ಅಜ್ಞ ತ್ವದಜ್ಞಾನಿ ನಿಪಿತ್ತಪಿತ್ತದರ್ಪಾಣಿ ಪಾಣಿಃ  
ಖಲು ಯಾಚತೇ ನಃ" ನೆಪಂ ೮-೯೮ ।

ಸ್ವರ್ಣದ ಉತ್ಪತ್ತಿಃ ಒಂದು ದಿನ ದೇವತೆಗಳೆಲ್ಲರೂ  
ಒಂದು ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ಸೇರಿದ್ದಾಗ ಅಪ್ಸರಸ್ಸುಗಳು ನರ್ತನ  
ಮಾಡಿ ಗಾನಮಾಡಲು ತೊಡಗಿದರು. ಆಗ ಅಗ್ನಿದೇವನು  
ರಂಭಿಯನ್ನು ನೋಡಿ ಮೋಹಿಸಲು ರೇತಸ್ಪಲನ  
ವಾಯಿತು. ಆಗ ಲಜ್ಜೆಯಿಂದ ಆದನ್ನು ವಸ್ತ್ರದಿಂದ  
ಅಚ್ಚಾದನೆಮಾಡಿ ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎದ್ದನು. ಆ ರೇತಸ್ಸು  
ಕ್ರಮೇಣ ದೊಡ್ಡದಾಗುತ್ತ ಕೊನೆಗೆ ಸುಮೇರುಪರ್ವತ  
ವಾಯಿತು. "ಏಕದಾ ಸರ್ವದೇವಾಃ ಸಮೂಘಃ ಸ್ವರ್ಗಸಂಸದಿಃ ।  
ತತ್ರ ಕೃತ್ವಾ ಚ ನೃತ್ಯಂ ಚ ಗಾಯಂತ್ಯಪ್ಸರಸಾಂ ಗಣಃ । ವಲಿಲೋಕ  
ರಮ್ಯಾಂ ಸುಖೋಗ್ಯಾಂ ಸಕಾಮೋ ವಹ್ನಿರೇವ ಚ । ಪಪಾತ ವೀರ್ಯಂ

ಚಕ್ಷಾದ ಲಂಜಯಾ ವಾಸಸಾ ತಥಾ । ತತ್ತಸ್ಥೌ ಸ್ವರ್ಣಪುಂಜಃ  
ವಸ್ತ್ರಂ ಕ್ಷಿಪ್ತ್ವಾ ಜ್ವಲತ್ಪ್ರಭಃ । ಕ್ಷಣೇನ ವರ್ಧಯಾಮಾಸ ಸ ಸುಮೇರು-  
ವೆಭೂವ ಹ । ಹಿರಣ್ಯರೇತಸಂ ವಹ್ನಿಃ ಪ್ರವದಂತಿ ಮನೀಷಿಣಃ"   
ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ । 2. ದತ್ತೂರಿ ಗಿಡ. 3. ನಾಗಕೇಸರ.

ಸ್ವರ್ಣಕಾಯ ಸ್ವರ್ಣಕಾಯ (ಪುಂ) 1. ಗರುಡ, ಗರುಡತ್ವಂತ್.  
ಸ್ವರ್ಣಮಿವ ಕಾಯೋ ದೇಹೋ ಯಸ್ಯ । (ವಿಂ) 2. ಸುವರ್ಣ  
ಮಯವಾದ ಶರೀರವುಳ್ಳ.

ಸ್ವರ್ಣಕಾರ ಸ್ವರ್ಣಕಾರ (ಪುಂ) ಅಕ್ಕಸಾಲಿಗ, ಚಿನ್ನದ  
ಅಭರಣಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. ಸ್ವರ್ಣ ಸ್ವರ್ಣಾಭರಣಾ-  
ದಿಕಂ ಕರೋತಿ — ಡುಕ್ರಾ (ಕರಣಂ) "ಅಙ್" (೩-೨-೧) ।

ಸ್ವರ್ಣಕೃತ್ ಸ್ವರ್ಣಕೃತ್ (ಪುಂ) ಸ್ವರ್ಣಕಾರ, ಅಕ್ಕಸಾಲಿಗ,  
ಚಿನ್ನದ ಅಭರಣಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. ಸ್ವರ್ಣ ಸ್ವರ್ಣಾ-  
ಲಕ್ಷಾರಂ ಕರೋತಿ — ಡುಕ್ರಾ (ಕರಣಂ) "ಕ್ವಿಪ್" (೩-೨-೬೧) ।

ಸ್ವರ್ಣಕೇತಕಿ ಸ್ವರ್ಣಕೇತಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಳದಿಬಣ್ಣದ ತಾಳೆ  
ಹೂವು. ಸ್ವರ್ಣವರ್ಣಾ ಕೇತಕಿ ।

ಸ್ವರ್ಣಕ್ಷೀರಿ ಸ್ವರ್ಣಕ್ಷೀರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಂಕೋಷ್ಠ, ಫಂಟಾ  
ಮಣಿ ಸೊಪ್ಪು. ಸ್ವರ್ಣವರ್ಣಾ ಕ್ಷೀರಿ ।

ಸ್ವರ್ಣಜ ಸ್ವರ್ಣಜ (ನಂ) ತಗರ.

ಸ್ವರ್ಣದೀಪಿತಿ ಸ್ವರ್ಣದೀಪಿತಿ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ. ಸ್ವರ್ಣವತ್  
ದೀಪಿತಿಃ ಕಿರಣಃ ಯಸ್ಯ ।

ಸ್ವರ್ಣದೀ ಸ್ವರ್ಣದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೇವಲೋಕದ ನದಿ, ಗಂಗಾ  
ನದಿ. ಸ್ವಃ ಸ್ವರ್ಗಸ್ಯ ನದಿ ।

ಸ್ವರ್ಣಪುಷ್ಪ ಸ್ವರ್ಣಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಚಂಪಕ ವೃಕ್ಷ, ಸಂಪಿಗೆ  
ಮರ. 2. ಕಕ್ಕಿಗಿಡ.

ಸ್ವರ್ಣವಣಿಕ್ (ಜ್) ಸ್ವರ್ಣವಣಿಕ್ (ಜ್) (ಪುಂ) ಚಿನ್ನದ  
ವ್ಯಾಪಾರ ಮಾಡುವವನು, ಒಬ್ಬ ಸಂಕರ ಜಾತಿಯವನು.  
ಸ್ವರ್ಣಸ್ಯ ವಣಿಕ್ ।

ಸ್ವರ್ಣಭೃಂಗಾರ ಸ್ವರ್ಣಭೃಂಗಾರ (ಪುಂ) 1. ಚಿನ್ನದ ಗಿಂಡಿ.  
2. ಗರಗದ ಸೊಪ್ಪು.

ಸ್ವರ್ಣಯುತ ಸ್ವರ್ಣಯುತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಳದಿಯ ತಾರೆಗಿಡ.  
ಸ್ವರ್ಣಲತಾ ಸ್ವರ್ಣಲತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜ್ಯೋತಿಷ್ಮತೀಲತೆ,  
ಕಂಗೊಂಗಿ ಗಿಡ.

ಸ್ವರ್ಣವರ್ಣ ಸ್ವರ್ಣವರ್ಣಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹರಿದ್ರೆ, ಅರಿಶಿನ.  
ಸ್ವರ್ಣವತ್ ವರ್ಣೋ ಯಸ್ಯಾಃ ।

ಸ್ವರ್ಣಾಭ ಸ್ವರ್ಣಾಭ (ಪುಂ) ಸ್ವರ್ಣಾಭವತಿಯಾದ ಇಂದ್ರ.  
ಸ್ವಃ ನಾಥಃ । "ರವೇರ್ಗುಣಾಸ್ಕಾಲಭವಃ ಸ್ಮರಸ್ಯ ಸ್ವರ್ಣಾಭಕರ್ಣಿ  
ಬಧಿರಾವಮುತಾಮ್" ನೆಪಂ ೮-೬೮ ।



ಸ್ವರ್ಗಾರಿ ಸ್ವರ್ಗಾರಿ (ಪುಂ) ಗಂಧಕ.

ಸ್ವರ್ಗಾರಿ ಸ್ವರ್ಗಾರಿ (ಪುಂ) ಉಪಗ್ರಹ. ಸ್ವ: ಆಕಾಶ  
ವಿಪರೀತಲಕ್ಷಣಯಾ ಭಾತಿ — ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) “ನು:” (ಉಂ  
೩-೩೨)। “ತುಲ್ಯಾಪರಾಧೇ ಸ್ವರ್ಗಾರಿ: ಭಾನುಮಂತಂ ಚಿರೇಣ ಯತ್ ।  
ಹಿಮಾಂಶುಮಾಶು ಪ್ರಸತೇ ತನ್ಮದಿಮ್ನ: ಸ್ಕುಟಂ ಫಲಮ್” ಮಾಘಂ  
೨-೪೯ ।

ಸ್ವರ್ಲೋಕ ಸ್ವರ್ಲೋಕ (ಪುಂ) ಸ್ವರ್ಗ, ದೇವಲೋಕ. ಸ್ವರೇವ  
ಲೋಕ:। “ಸ್ವರ್ಲೋಕಮಸ್ಮಾಭಿರತ: ಪ್ರಯಾತೇ: ಕೇಲಿಷು ತದ್ಗಾನ-  
ಗುಣಾನ್ನಿಪೀಯ” ನೆಪಂ ೩-೨೭ । “ಭೂಲೋಕ: ಕಲ್ಪಿತ: ಪದ್ಮಾಂ  
ಭುವರ್ಲೋಕೋಽಸ್ಯ ನಾಭಿತ: । ಸ್ವರ್ಲೋಕ: ಕಲ್ಪಿತೋ ಮೂರ್ಛಾ  
ಇತಿ ವಾ ಲೋಕಕಲ್ಪನಾ” ಭಾಗಂ ೨-೪-೪೨ ।

ಸ್ವರ್ವಧು ಸ್ವರ್ವಧು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪ್ಸರಸ್ಸು. ಸ್ವ: ವಧು: ।

ಸ್ವರ್ವಾಪಿ ಸ್ವರ್ವಾಪಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗಾನದಿ.

ಸ್ವರ್ವೇಶ್ಯಾ ಸ್ವರ್ವೇಶ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ವರ್ಗಲೋಕದ ವೇಶ್ಯಾ,  
ಉಪವಿಶಿ ಮೊದಲಾದ ಅಪ್ಸರಸ್ಸುಗಳು. ಸ್ವ: ವೇಶ್ಯಾ ।  
“ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಬಹುವ್ರಸ್ತರಸ: ಸ್ವರ್ವೇಶ್ಯಾ ಋವಂಶಿಮುಖಾ:”  
ಅಮಂ ।

ಸ್ವರ್ವೇಶ್ಯಾ ಸ್ವರ್ವೇಶ್ಯಾ (ಪುಂ ಬಂ ವಂ) ದೇವಲೋಕದ  
ವೈದ್ಯರು, ಅಶ್ವಿನಿ ಕುಮಾರರು. ಸ್ವ: ಸ್ವರ್ಗಸ್ಯ ವೈದ್ಯ ।

ಸ್ವಲ್ಪ ಸ್ವಲ್ಪ (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಕೊಂಚವಾದ. 2. ಬಹಳ  
ಸಂಖ್ಯೆಯಾದ. ಸುಷ್ಕ ಅಲ್ಪ: । “ನೆಹಾಭಿಕ್ರಮನಾಶೋಽಸ್ತಿ  
ಪ್ರತ್ಯವಾಯೋ ನ ವಿಶ್ವತೇ । ಸ್ವಲ್ಪಮಪ್ಯಸ್ಯ ಧರ್ಮಸ್ಯ ತ್ರಾಯತೇ  
ಮಹತೋ ಭಯಾತ್” ಗೀತಾ ೨-೪೦ । “ಸಂಪದಾ ಸುಸ್ಥಿರಮನ್ಯೋ  
ಭವತಿ ಸ್ವಲ್ಪಯಾಪಿ ಯ:” ಮಾಘಂ ೨-೩೨ ।

ಸ್ವಲ್ಪಕೇಸರಿನ್ ಸ್ವಲ್ಪಕೇಸರಿನ್ (ಪುಂ) ಕೋವಿದಾರ ವೃಕ್ಷ,  
ಕೆಂಗಾಂಜಾಳ ಗಿಡ.

ಸ್ವಸ್ ಸ್ವಸ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಹೋದರ, ಒಡಹುಟ್ಟಿದವಳು,  
ಅಕ್ಕ, ಅಥವಾ ತಂಗಿ. “ದಮಸ್ವಸು: ಪಾಣಿಮಮುಷ್ಯ ಗೃಹ್ಣತ:  
ಪುರೋಧಸಾ ಸಂವಿದಧೇತರಾಂ ವಿಧೇ:” ನೆಪಂ ೧೬-೪೪ ।

ಸ್ವಸ್ತನಿ ಸ್ವಸ್ತನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭೂಮಿ. “ರತ್ನಗರ್ಭಾ ಚ  
ಮೇದಿನಿ । ಸ್ವಸ್ತನಿ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಸ್ವಸ್ತಿ ಸ್ವಸ್ತಿ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಕ್ಷೇಮ, ಕುಶಲ. ಸ್ವಸ್ತಿ —  
ಸು + ಅಸ (ದೀಪ್ತೌ) “ಕ್ವಿ” (೩-೩-೧೭೪) । “ಸ್ವಸ್ತಿ  
ವಾಸ್ತೋಪತೇ ತುಮ್ಯಂ ಶಿಖಿಶ್ವಸ್ತಿ ನ ಶಿಖಿತಾ” ನೆಪಂ  
೧೭-೧೧೩ । 2. ಆಶೀರ್ವಾದ, ಶುಭವನ್ನು ಕೋರುವುದು,  
ಹಿತವನ್ನು ಬಯಸುವುದು. “ಸ್ವಸ್ತಯಸ್ತು ತೇ ನಿಗಂಲಿತಾಂಬು-  
ಗಮ್ ಶರದ್ವನಂ ನಾರ್ವತಿ ಚಾತಕೋಽಪಿ” ರಘುಂ ೪-೧೭ ।  
3. ಶುಭ, ಮಂಗಳ. 4. ಪುಣ್ಯ. “ಸ್ವಸ್ತಿ ಸ್ಯಾನ್ಮಜ್ಜಲೇ

ಪುಣ್ಯಾಪ್ಯಾಶಂಸಾಯಾಮಪಿ ಕ್ವಚಿತ್” ಮೇದಿಂ । “ಸ್ವಸ್ತಿ  
ಮಜ್ಜಲಾಶೀರ್ವಾದಪಾನಿರ್ಜನಾದಿಷು” ಇತಿ ಭಾಗುರಿ: ।

ಸ್ವಸ್ತಿಕ ಸ್ವಸ್ತಿಕ (ಪುಂ) 1. ಮಂಗಳವಸ್ತು. ಸ್ವಸ್ತಿ  
ಕಾಯತಿ — ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) “ಕ:” (೩-೨-೩) । 2. ವಕ್ಷು:  
ಸ್ಥೂಲವು ಮುಚ್ಚುವಂತೆ ಎರಡು ತೋಳುಗಳನ್ನು ಒಂದರ  
ಮೇಲೆ ಒಂದು ಬರುವಂತೆ ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವುದು. “ಹಚಿರ-  
ಕನಕಕುಮ್ಮಶ್ರೀಮದಾಭಾಗತುಜ್ಜಸ್ತನವಿನಿಹಿತಹಸ್ತಸ್ವಸ್ತಿಕಾಭಿ-  
ವಕ್ಷುಭಿ:” ಮಾಲತೀಂ ೪-೧೦ । 3. ನಾಲ್ಕು ರಸ್ತೆಗಳು  
ಕೂಡುವ ಸ್ಥಳ. 4. ಧನಕರ ಗೃಹ. “ಸ್ವಸ್ತಿಕೇ  
ಮಜ್ಜಲದ್ರವ್ಯೇ ಚತುಷ್ಕಗೃಹಭೇದಯ:” ಮೇದಿಂ । 5. ಬೆಳ್ಳುಳ್ಳಿ.  
“ಶ್ರೀಮಸ್ತಕ: ಸ್ವಸ್ತಿಕ: ಸ್ಯಾದ್ರಾಹುಚ್ಚಿಷ್ಟೋ ರಸೋನಕ:”  
ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 6. ಸರ್ಪದ ಹೆಡೆಯಲ್ಲಿರುವ ನೀಲಿ  
ಬಣ್ಣದ ರೇಖೆ. “ಶಿರೋಭಿ: ಪೃಥುಮಿರ್ನಾಗಾ: ವ್ಯಕ್ತಸ್ವ-  
ಸ್ತಿಕಲಕ್ಷಣ:” ರಾಮಾಂ । 7. ಅಪೂವ, ರೊಟ್ಟಿ.  
8. ಸ್ತ್ರೀಲೋಲ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿ. 9. ಯೋಗಾಸನದ ಒಂದು  
ಭೇದ.

ಸ್ವಸ್ತಿಮತ್ ಸ್ವಸ್ತಿಮತ್ (ವಿಂ) ಕ್ಷೇಮದಿಂದ ಕೂಡಿದ,  
ಕುಶಲಿಯಾದ. ಸ್ವಸ್ತಿ ಅಸ್ಯಾಸ್ತಿ ಸ್ವಸ್ತಿ “ಮತುಪ್”  
(೪-೨-೧೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಜೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ಮತೀ  
—ಮತೀ. “ಭೂತಾನುಕ್ರಮಾ ತವ ವೇದಿಯಂ ಪೌರೇಕಾ ಭವತ್ಸ್ವಸ್ತಿ-  
ಮತೀ ತ್ವದಂತೇ” ರಘುಂ ೨-೪೮ ।

ಸ್ವಸ್ತಿಮುಖ ಸ್ವಸ್ತಿಮುಖ (ಪುಂ) 1. ಲೇಖ, ಪತ್ರ, ಕುಶಲ  
ಪತ್ರ. ಸ್ವಸ್ತಿ ಮುಖೇ ಪ್ರಾರಂಭೇ ಯಸ್ಯ । ಕುಶಲಪತ್ರದ  
ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಸ್ವಸ್ತಿ ಷೋಮ ಇತ್ಯಾದಿ ಮಂಗಳಕರ ಶಬ್ದ  
ಪ್ರಯೋಗಿಸಬೇಕು. 2. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಸ್ವಸ್ತಿ ಮುಖೇ ವದನೇ  
ಯಸ್ಯ । ಬ್ರಾಹ್ಮಣನು ಯಾವಾಗಲೂ ಮಂಗಳಕರ  
ಮಾತನ್ನು ಆಡುತ್ತಿರಬೇಕು. (ವಿಂ) 3. ಸುತ್ತಿಪಾಠಕ,  
ಹೊಗಳುಬಿಟ್ಟು. “ಭವೇತ್ ಸ್ವಸ್ತಿಮುಖೋ ಲೇಖೇ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೇ  
ವಂದಿನಿ ತ್ರಿಪು” ಮೇದಿಂ ।

ಸ್ವಸ್ತಿವಾಚನ ಸ್ವಸ್ತಿವಾಚನ (ನಂ) ಶುಭಕಾರ್ಯದ  
ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಹಿರಿಯರು ಮತ್ತು ಸುವಾಸಿನಿಯರಿಂದ  
ಸಾಂಪ್ರದಾಯಿಕವಾಗಿ ಪ್ರೀತ್ಯಭಿಮಾನಗಳಿಂದ ಹೇಳಿಸುವ  
ಆಶೀರ್ವಚನ, ಹಿರಿಯರಿಂದ ಆಶೀರ್ವಾದ ಮಾಡಿಸುವುದು.  
ಸ್ವಸ್ತಿ ಮಜ್ಜಲಸ್ಯ ವಾಚನಮ್ । “ಸಂಪೂಜ್ಯ ಗಂಧಪುಷ್ಪಾಣಿ:  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾನ್ ಸ್ವಸ್ತಿ ವಾಚಯೇತ್ । ಧರ್ಮ ಕರ್ಮಣಿ ಮಾಜ್ಞತೀ  
ಸಹಗ್ರಾಮಾಡ್ಭುತದರ್ಶನೇ” ।। “ಅಲಕ್ಷಿತೋಽಸ್ಮಿನ್ ರಹಸಿ ಮಾಮ-  
ಕೇರಪಿ ಗೋವ್ರಜೇ । ಕುರು ದ್ವಿಜಾತಿಸಂಸ್ಕಾರಂ ಸ್ವಸ್ತಿವಾಚನ-  
ಪವಂಕಮ್” ಭಾಗಂ ೧೦-೮-೧೦ ।



ಸ್ವಸ್ತಿವಾಚನಿಕಾ ಸ್ವಸ್ತಿವಾಚನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಂಶ ಪರಂಪರೆಯಾಗಿ ಸ್ವಸ್ತಿವಾಚನಕ್ಕೆ ಅಧಿಕಾರಿಯಾದ ಸುವಾಸಿನಿ. ಸ್ವಸ್ತಿವಾಚನಮಹಂತಿ "ಠಕ್" (೪-೧-೬೩) ।

"ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತನಿವಾರಹಸ್ತಾಭಿಃ ಸ್ವಸ್ತಿವಾಚನಿಕಾಭಿಃ ತಾಪ- ಸಿಂಭಿರಭಿನಂದಮಾನಾ ಶಕ್ತುಂತಲಾ ತಿಷ್ಠತಿ" ಶಾಕುಂ ೪ ।

ಸ್ವಸ್ಥ ಸ್ವಸ್ಥ (ವಿಂ) 1. ಸರಿಯಾದ ಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರುವವನು, ಪರಾಧೀನತೆಯಿಲ್ಲದೆ ಸ್ವತಂತ್ರನಾಗಿರುವವನು. ಸ್ವಸ್ಥಿನ್ ತಿಷ್ಠತಿ—ಛಾ (ಗತಿನಿವೃತ್ತಿ) "ಕಃ" (೩-೨-೪) । 2. ಸರಿಯಾದ ಆರೋಗ್ಯದಿರುವವನು, ವಾತ ಪಿತ್ತ ಕಫಗಳು ಸಮವಾಗಿದ್ದು ಅಗ್ನಿಶಕ್ತಿ ಸಮವಾದ ಧಾತುಬಲ ಆತ್ಮ ಇಂದ್ರಿಯಗಳು ಮತ್ತು ಮನಸ್ಸು ಇವುಗಳ ಪ್ರಸನ್ನತೆ ಇವುಗಳಿರುವವನು ಸ್ವಸ್ಥನು. "ಸಮದೋಃ ಸಮಾಗ್ನಿಶ್ಚ ಸಮಧಾತುಮಲಕ್ರಿಯಃ । ಪ್ರಸನ್ನಾತ್ಮೇಂದ್ರಿಯಮನಾಃ ಸ್ವಸ್ಥ ಇತ್ಯಭಿಧೀಯತೇ" ಸುಶ್ರುತಂ ೩-೨-೬೪ ।

ಸ್ವಸ್ತೀಯ ಸ್ವಸ್ತೀಯ (ಪುಂ) ಒಡಹುಟ್ಟಿದವಳ ಮಗ, ಸಹೋದರೆಯ ಮಗ. ಸ್ವಸ್ತುಃ ಅಪತ್ಯಂ ಪುಮಾನ್—ಸ್ವಸ್ತು "ಛಃ" (೪-೧-೧೪೩) । "ಮಾತಾಮಹಂ ಮಾತುಲಂ ಚ ಸ್ವಸ್ತೀಯಂ ಶ್ವಶುರಂ ಗೃಹಮ್ । ದೌಹಿತ್ರಂ ವಿತ್ಪತಿ ಬಂಧುಮೃತ್ವಿಗ್ಯಾಜ್ಯೌ ಚ ಭೋಜಯೇತ್" ಮನುಂ ೩-೧೪೮ । —ಯಾ—ಯಾ, (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಹೋದರೆಯ ಮಗಳು.

ಸ್ವಾಕ್ಷಪಾದ ಸ್ವಾಕ್ಷಪಾದ (ಪುಂ) ನೈಯಾಯಿಕ, ನ್ಯಾಯ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು. ಅಕ್ಷ- ಪಾದಸ್ಯೇದಮ್ ಅಕ್ಷಪಾದಮ್ ನ್ಯಾಯಶಾಸ್ತ್ರಮ್—ಸುಷ್ಠು ಅಕ್ಷಪಾದ- ಮಧೀತೇ "ಅಞ್" (೪-೨-೪೯) ।

ಸ್ವಾಕ್ಷರ ಸ್ವಾಕ್ಷರ (ಪುಂ) 1. ತನ್ನ ಹಸ್ತಾಕ್ಷರ, ಸ್ವಂತ ಬರವಣಿಗೆ. ಸ್ವಸ್ಥ ಅಕ್ಷರಾಣಿ ಯತ್ರ । 2. ಸಹಿ, ರುಜು.

ಸ್ವಾಗತ ಸ್ವಾಗತ (ನಂ) ಸುಖವಾದ ಆಗಮನ, ಸುಖವಾಗಿ ಬರುವುದು. ಸ್ವಾಗತ ಪದವನ್ನು ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಬಂಧು ಮಿತ್ರರ ಆಗಮನದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಕುಶಲಪ್ರಶ್ನೆ ಮಾಡು ವಾಗ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ವಾಡಿಕೆ. ಸುಖೇನ ಆಗತಮ್ । "ಸ ಪ್ರತ್ಯಗ್ರೈಃ ಕುಟಜಕುಸುಮೈಃ ಕಲ್ಪಿತಾರ್ಥೈಃ ತಸ್ಮೈ ಪ್ರೀತಃ ಪ್ರೀತಿಪ್ರಮುಖವಚನಂ ಸ್ವಾಗತಂ ವ್ಯಾಜಹಾರ" ಮೇಘಂ ೧-೪ ।

ಸ್ವಾಗತಸೂಕ್ತಿ ಸ್ವಾಗತಸೂಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಶಲಪ್ರಶ್ನೆ, ಸುಖಾಗಮನದ ಪ್ರಶ್ನೆ. ಸ್ವಾಗತಸ್ಯ ಸೂಕ್ತಿಃ । "ಸ್ವಕಾಂತಿ- ಸಾಮ್ಯಾದಿವ ಜಾತಸಂಜ್ಞಃ ಶೌರಿಸ್ತದಾ ಸ್ವಾಗತಸೂಕ್ತಿಗರ್ಭಃ" ಯಾದಂ ೧೩-೧೨ ।

ಸ್ವಾಡ್ವಿಕ ಸ್ವಾಡ್ವಿಕ (ಪುಂ) ಮೃದಂಗವನ್ನು ಬಾರಿಸಂ ವವನು, ಮದ್ದಲೆಯ ವಾದನ ಮಾಡುವವನು, ಮೃದಂಗ ವನ್ನು ತೊಡೆಯ ಮೇಲಿಟ್ಟು ವಾದಿಸುವವನು.

ಸ್ವಾಚ್ಛಂದ್ಯ ಸ್ವಾಚ್ಛಂದ್ಯ (ನಂ) ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ, ತನ್ನ ಇಷ್ಟಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು, ಅಡ್ಡಿ ಆತಂಕಗಳಿಲ್ಲದೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಸ್ವಸ್ಥ ಛಂದೋಽಭಿಲಾಷಃ ಯಸ್ಯ ಸ್ವಚ್ಛಂದಃ ಸ್ವತಂತ್ರಃ—ತಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಛ್ಯಬ್" (೪-೧-೧೨೪) । "ಸ್ವಾಚ್ಛಂದ್ಯಮಾನಂದಪರಂಪರಾಣಾಂ ಭೆಮಿ ತಮಾಲೋಕ್ಯ ಕಿಮಪ್ಯ- ವಾಪ" ನೇಪಂ ೮-೮ ।

ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ (ನಂ) ಸ್ವತಂತ್ರನಾಗಿರುವಿಕೆ, ಇತರ ರಿಗೆ ಅಧೀನನಾಗಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ. ಸ್ವತಂತ್ರಸ್ಯ ಭಾವಃ "ಛ್ಯಬ್" (೪-೧-೧೨೪) । "ಪಿತಾ ರಕ್ಷತಿ ಕೌಮಾರೇ ಭರ್ತಾ ರಕ್ಷತಿ ಯೌವನೇ । ಪುತ್ರೋ ರಕ್ಷತಿ ವಾರ್ಧಕ್ಯೇ ನ ಸ್ತ್ರೀ ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯಮಹಂತಿ" ಮನುಂ ೯-೩ । [ಇದು ಎರಡು ಶತಮಾನಗಳ ಹಿಂದಿನ ಮಾತು. ಈಗ ಎಲ್ಲರೂ ಸ್ವತಂತ್ರರು.]

ಸ್ವಾತಿ ಸ್ವಾತಿ } (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ವಾತಿ ನಕ್ಷತ್ರ, ಅಶ್ವಿನಿ ಸ್ವಾತಿ ಸ್ವಾತಿ } ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಹದಿನೈದನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ. ಸು ಶೋಭನಮತತಿ—ಅತ (ಸಾತತ್ಯಗಮನ) "ಛ್ಯ" (೩ಂ ೪-೧೩೧) । "ಸ್ವಾತಿ ಸಪತ್ನೀ ಕಿಲ ತಾರಕಾಣಾಂ ಮುಕ್ತಾಫಲಾನಾಂ ಜನನೀತಿ ರೋಷಾತ್ । ಸಾ ರೋಹಿಣಿ ನೇಲಮಸೂತ ರತ್ನಂ ಕೃತಾಸ್ಪದಂ ಗೋಪವತ್ಕುಚೈಃ" ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಕಂ ೨-೬೬ । ಸ್ವಾತೀನಕ್ಷತ್ರವು ಮಹಾನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಇದು ವಾಯುದೇವತಾಕವಾದುದು. ಮಹಿಷಯೋನಿಗೂ ದೇವ ಗಣಕ್ಕೂ ಸೇರಿದುದು. ಈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವರಿಗೆ ಜನ್ಮಕಾಲದಲ್ಲಿ ರಾಹುದಶೆಯು ಪ್ರಾರಂಭವಾಗುವುದು. ಈದಶೆಯು ಪ್ರಮಾಣ 18 ವರ್ಷಗಳು. ಸ್ವಾತೀನಕ್ಷತ್ರವು ತುಲಾರಾಶಿಗೆ ಸೇರಿದುದು.

ಸ್ವಾದ ಸ್ವಾದ (ಪುಂ) 1. ರಸವನ್ನು ಹೀರುವುದು, ರುಚಿ ನೋಡುವುದು. ಷ್ವದ (ಆಸ್ವಾದನ) "ಛಬ್" (೩-೩-೧೮) । 2. ರುಚಿ, ಸವಿ. "ಅನ್ಯಮನ್ಯದಿವ ಯಮಧು ಯುನಃ ಸ್ವಾದಮಿಷ್ಠ- ಮತನಿಷ್ಠ ತದೇವ" ಮಾಘಂ ೧೦-೭ । 3. ಪ್ರೀತಿಸುವುದು. 4. ರಸ.

ಸ್ವಾದನ ಸ್ವಾದನ (ನಂ) 1. ರಸವನ್ನು ಹೀರುವುದು, ಕುಡಿದು ರುಚಿ ನೋಡುವುದು. ಷ್ವದ (ಆಸ್ವಾದನ) + ಸ್ತಾರ್ಥೆ ಣಿಚ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) । "ಸ್ವಾದನೇನ ಸುತನೋರವಿಚಾರಾದೋಷತಃ ಸಮವರಿಷ್ಠ ರಸೋಽತ್ರ" ಮಾಘಂ ೧೦-೭ । 2. ಪ್ರೀತಿಸುವುದು.

ಸ್ವಾದನೀಯ ಸ್ವಾದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ರುಚಿ ನೋಡಲ್ಪಡುವ, ಸವಿಯಲ್ಪಡುವ. ಷ್ವದ (ಆಸ್ವಾದನ) + ಣಿಚ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । 2. ರುಚಿ ನೋಡಬೇಕಾದ. 3. ರುಚಿ ನೋಡ



ಬಹುದಾದ. 4. ಪ್ರೀತಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಪ್ರೀತಿಸಬೇಕಾದ.  
6. ಪ್ರೀತಿಸಬಹುದಾದ.

ಸ್ವಾದಯತ್ ಸ್ವಾದಯತ್ (ವಿಂ) 1. ರುಚಿ ನೋಡುತ್ತಿರುವ, ರಸವನ್ನು ಹೀರುತ್ತಿರುವ. ಷದ (ಆಸ್ವಾದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124)। 2. ಪ್ರೀತಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಸ್ವಾದಯನ್ ರಸಮನೇಕಸಂಸ್ಕೃತ-ಪ್ರಾಕೃತೇರಕೃತಪಾತ್ರಸಂಕ್ಷರೇ:" ಮಾಘಂ 14-40। "ಶಾನಚ್" (3-2-124)। -ಯಮಾನ: -ಯಮಾನಃ.

ಸ್ವಾದವತ್ ಸ್ವಾದವತ್ (ವಿಂ) 1. ರಸಯುಕ್ತವಾದ. 2. ರುಚಿಯಾಗಿರುವ, ಸಿಹಿಯಾಗಿರುವ. ಸ್ವಾದೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ - "ಮತುಪ್" (4-2-94)।

ಸ್ವಾದಿತ ಸ್ವಾದಿತ (ವಿಂ) 1. ಹೀರಲ್ಪಟ್ಟ, ಕುಡಿದು ರುಚಿ ನೋಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಷದ (ಆಸ್ವಾದನೆ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102)। "ಸ್ವಾದಿತ: ಸಕೃದಿವಾಸವ ಏವ ಪ್ರತ್ಯುತ ಖಣವಿದಂಶಪದೇಽಭೂತ್" ಮಾಘಂ 10-10। 2. ಪ್ರೀತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸ್ವಾದೀಯಸ್ ಸ್ವಾದೀಯಸ್ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ರುಚಿಯಾಗಿರುವ, ಹೆಚ್ಚು ಮಧುರವಾಗಿರುವ. ಅತಿಶಯೇನ ಸ್ವಾದು: - ಸ್ವಾದು "ಔಪುನ್" (4-3-49)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಔಪ್" (4-1-6)। -ಯಸೀ -ಯಸೀ.

ಸ್ವಾದು ಸ್ವಾದು (ಪುಂ) 1. ಮಧುರವಾದ ರಸ, ಸಿಹಿ. ಷದ (ಆಸ್ವಾದನೆ) "ಔಪ್" (3-1-1)। 2. ಗುಡ, ಬೆಲ್ಲ. "ಗುಡೋಲಂ ಸ್ಯಾದ್ಗುಡ: ಸ್ವಾದು:" ತ್ರಿಕಾಣ್ಡಂ। 3. ಕಾಕಂಬಿ, ಕೆಚ್ಚು ಸಕ್ಕರೆಯಿಂದ ಮಾಡಿದ ಪಾಕ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 4. ದ್ರಾಕ್ಷಿ. (ವಿಂ) 5. ಮಧುರವಾದ, ಸಿಹಿಯಾದ. "ಸ್ವಾದುನಿ ಪ್ರಣದಿತಾಲಿನಿ ಶೀತೇ ನಿವೇವಾರ ಮಧುನೀಂದ್ರಿಯವರ್ಗ:" ಮಾಘಂ 10-3। 6. ಶುಕ್ರಾಂ ಮಧುರವಾದ, ಕೇಳಲು ಕಿವಿಗೆ ಇಂಪಾಗಿರುವ. "ಕೃಷ್ಣಸಾರಮೃಗಶೃಂಗಮಜ್ಜುರಾ ಸ್ವಾದುರಜ್ಜವಲ-ರಸೇಕಸಾರಿಣಿ" ನೆಪಂ 16-19। 7. ಇಷ್ಟವಾದ, ಪ್ರೀತಿಕರವಾದ. 8. ಮನೋಹರವಾದ, ಮನಸ್ಸನ್ನು ಆಕರ್ಷಿಸುವ. "ಸ್ವಾದುಸ್ತು ಸುಂದರೇ। ಮೃಷ್ಠೇ" ಹೇಮಂ।

ಸ್ವಾದುಕುಟಕ ಸ್ವಾದುಕುಟಕ (ಪುಂ) 1. ಹುಳಿಬೇಲ. 2. ನೆಗ್ಗಿಲು ಗಿಡ.

ಸ್ವಾದುಕಂದಾ ಸ್ವಾದುಕಂದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೊಳವಳಿಗೆ ಗಿಡ.

ಸ್ವಾದುಗಂಧಾ ಸ್ವಾದುಗಂಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೆಲಗುಂಬಳ. ಸ್ವಾದು-ಗಂಧೋ ಯಸ್ಯಾ:।

ಸ್ವಾದುಧನ್ವನ್ ಸ್ವಾದುಧನ್ವನ್ (ಪುಂ) ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ. ಸ್ವಾದು ಧನ್ಯುರಸ್ಯ।

ಸ್ವಾದುಪರ್ಣಿ ಸ್ವಾದುಪರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಾಲುತುಟ್ಟಿನ ಗಿಡ.

ಸ್ವಾದುಪಾಕ ಸ್ವಾದುಪಾಕ (ಪುಂ) ಕಾಚಿ ಗಿಡ, ಗಣಕಿ ಗಿಡ.

ಸ್ವಾದುಮೂಲ ಸ್ವಾದುಮೂಲ (ನಂ) ಕೆಂಪು ಮೂಲಂಗಿ.

ಸ್ವಾದುರಸಾ ಸ್ವಾದುರಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಕೋಳಿ ಸೊಪ್ಪು.

ಸ್ವಾದುಮೂಲ ಸ್ವಾದುಮೂಲ (ಪುಂ) ದಾಳಿಂಬಿ ಗಿಡ. "ದಾಡಿಮ್ಬ: ಪರ್ವಸ್ಯ ಸ್ಯಾತ್ಸ್ವಾದುಮೂಲ: ಶುಕವಲ್ಲಭ:" ತ್ರಿಕಾಣ್ಡಂ।

ಸ್ವಾದ್ವಿ ಸ್ವಾದ್ವಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದ್ರಾಕ್ಷಿ. ಸ್ವಾದ್ವಿ-ಷದ (ಆಸ್ವಾದನೆ) "ಔಪ್" (3-1-1)। "ಮೃದ್ವಿಕಾ ಗೋಸ್ತನಿ ದ್ರಾಕ್ಷಾ ಸ್ವಾದ್ವಿ ಮಧುರಸೇತಿ ಚ" ಅಮಂ।

ಸ್ವಾಧಿಠಾನ ಸ್ವಾಧಿಠಾನ (ನಂ) ದೇಹದೊಳಗಿರುವ ಅಂಶ ಚಕ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡನೆಯ ಚಕ್ರ.

ಸ್ವಾಧೀನ ಸ್ವಾಧೀನ (ವಿಂ) ಸ್ವತಂತ್ರನಾಗಿರುವವನು, ತನ್ನ ವಶದಲ್ಲೇ ತಾನಿರುವವನು, ತನಗೇ ಅಧೀನನಾಗಿರುವವನು. ಸ್ವಸ್ಯ ಅಧೀನ:। "ಪ್ರಾಬೋಧಿಕೀಭಿರಪಸೇದುರೀತಿವ ವಾಗ್ಮಿ: ಸ್ವಾಧೀನಮರ್ಯತನಯಂ ಶ್ರುತಿವಂದಿನಸ್ತಮ್" ಯಾದಂ 19-1।

ಸ್ವಾಧೀನಕುಶಲ ಸ್ವಾಧೀನಕುಶಲ (ವಿಂ) ಕುಶಲವನ್ನು ತಮ್ಮ ಅಧೀನದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವ. ಸ್ವಾಧೀನಂ ಕುಶಲಂ ಯಸ್ಯ। ಲೋಕೋತ್ತರವಾದ ತಪಶ್ಚಕ್ರಿಯುಳ್ಳವರಿಗೆ ಎಂದೆಂದಿಗೂ ಕುಶಲವು ಕರಗತವಾಗಿರುವುದು. "ಸ್ವಾಧೀನ-ಕುಶಲಾ: ಸಿದ್ಧಿಮಂತ:" ಶಾಕುಂ 4।

ಸ್ವಾಧೀನಪತಿಕಾ ಸ್ವಾಧೀನಪತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪತಿಯನ್ನು ತನ್ನ ಅಧೀನದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವ ನಾಯಿಕೆ, ತನ್ನ ರತಿ ಚಾತುರ್ಯದಿಂದ ತನ್ನನ್ನು ಬಿಟ್ಟುಹೋಗದೆ ಯಾವಾಗಲೂ ತನ್ನ ಸಮೀಪದಲ್ಲೇ ಇರುವ ಪತಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ನಾಯಿಕೆ. ಸ್ವಾಧೀನ: ರತಿಗುಣೇನ ಆಕೃಷ್ಣ: ಪತಿ: ಯಸ್ಯಾ:। -ಭರ್ತೃಕಾ -ಭರ್ತೃಕಾ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) "ಕಾಂತೋ ರತಿಗುಣಾಕೃಷ್ಣೋನ ಜಹಾತಿ ಯದಂತಿಕಮ್। ವಿವಿತ್ರವಿಭ್ರಮಾ-ಸಕ್ತಾ ಸಾ ಸ್ಯಾತ್ಸ್ವಾಧೀನಭರ್ತೃಕಾ" ಸಾಂ 10-3-94।

ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯ ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯ (ಪುಂ) ಅವೈತ್ತಮಾಡಿ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವುದು. ಅವೈತ್ತಮಾಡುವ ವೇದಾಧ್ಯಯನ. ಸು ಸುಕೃತಾ ಆವೃತ್ಯಾ ಅಧ್ಯಾಯ:। "ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯ: ಸ್ಯಾಜ್ಜಪ:" ಅಮಂ।

ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯಿನ್ ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯಿನ್ (ವಿಂ) ವೇದಾಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು. ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (4-2-114)। "ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾ: ಸಾಗ್ನಿಹೋತ್ರಾಶ್ಚ ತಥೈವ ಚ ನಿರಗ್ನಯ:। ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯಿನೋ ಭಿಕ್ಷವಶ್ಚ ತಥೈವ ವನವಾಸಿನ:" ಭಾಂ 10-1।

ಸ್ವಾನ ಸ್ವಾನ (ಪುಂ) ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ. ಸ್ವನನಮ್ - ಸ್ವನ (ಶಬ್ದ) "ವಬ್" (3-3-14)। "ಯಾ ಬಿಮರ್ಶತಿ ಕಲ-ವಲ್ಲಕೀಗುಣಸ್ವಾನಮಾನಮತಿಕಾಲಿಮಾಽಲ್ಯಾ" ಮಾಘಂ 4-49।



ಸ್ವಾನಮ ಸ್ವಾನಮಂ (ವಿಂ) ಸುಖವಾಗಿ ಬಗ್ಗಿಸಲು ಶಕ್ತವಾದ. ಸುಖೇನಾನಮಯಿತುಂ ಶಕ್ಯ:—ಸು + ಆ + ನಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) “ಖಲ್” (೩-೩-೧೨೬) । “ನಾತ್ರ ಕಾಂತಮುಪಗೀತಯಾ ತಯಾ ಸ್ವಾನಮಾ ನಮತಿ ಕಾಠಲಿಮಾಲಯಾ” ಮಾಘಂ ೪-೪೭ ।

ಸ್ವಾಂತ ಸ್ವಾಂತಂ (ನಂ) 1. ಮೂನಸ, ಮನಸ್ಸು, ಚಿತ್ತ. ಸ್ವನ್ಯತೇ ಸ್ವ—ಸ್ವನ (ಶಬ್ದ) “ಕ್ತಾ:” (೭-೨-೧೮) । ನಿಪಾಂ । “ಅಧಿವಹ್ನಿ ಪತಜ್ಜತೇಜಸೋ ನಿಯತಸ್ವಾಂತಸಮರ್ಥ-ಕರ್ಮಣ:” ಮಾಘಂ ೧೬-೪ । 2. ಗಂಜುರ, ಗಂಜಿ, ಗಂಜೆ. “ಸ್ವಾಂತಂ ಚೇತಸಿ ಗಂಜುರೇ” ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ) 3. ಶಬ್ದ ಮೂಡಿದ.

ಸ್ವಾಪ ಸ್ವಾಪಂ (ಪುಂ) 1. ನಿದ್ರೆ, ನಿದ್ರೆ. ತ್ರಿಪ್ವಪ್ (ಶಬ್ದ) “ಘ್” (೩-೩-೧೮) । 2. ಶಯನ, ಮಲಗುವುದು. “ಸ್ವಾಪಹೇತುರನುಪಾಶ್ರಿತೋಜ್ಯಯಾ ರಾಮಬಾಹುರೂಪವಾನಮೇಶ ತೇ” ತಂ ರಾಂ ೧-೩೭ । 3. ಸ್ವರ್ತಮೂಡಿದರೂ ತಿಳಿಯದಿರುವಿಕೆ, ಮುಟ್ಟಿದರೂ ಅರಿವಾಗದಿರುವಿಕೆ. 4. ಅಜ್ಞಾನ, ತಿಳಿಗೇಡಿ ತನ. “ಸ್ವಾಪ: ಶಯನನಿರ್ದ್ರಯೋ: । ಸ್ಪಶಶಿತಾಯಾಮಜ್ಞಾನೇ” ಮೇದಿಂ ।

ಸ್ವಾಪತೇಯ ಸ್ವಾಪತೇಯಂ (ನಂ) ದ್ರವ್ಯ, ಧನ, ಐಶ್ವರ್ಯ, ಆಸ್ತಿ. ಸ್ವಪತೌ ಸಾಧು—ಸ್ವಪತಿ “ಠ್” (೪-೪-೧೦೪) । “ಸ್ವಾಪತೇಯಮಧಿಗಮ್ಯ ಧರ್ಮತ: ಪರ್ಯಪಾಲಯಮವಿವೃಥಂ ಚ ಯತ್ । ತೀರ್ಥಗಾಮಿ ಕರವೇ ವಿಧಾನತ: ತಜ್ಜುಷಸ್ವ ಜುಹ್ವಾನಿ ಚಾನಲೇ” ಮಾಘಂ ೧೪-೯ ।

ಸ್ವಾಭಾವಿಕ ಸ್ವಾಭಾವಿಕಂ (ವಿಂ) 1. ಸ್ವಭಾವಸಿದ್ಧವಾದ, ತಾನಾಗಿಯೇ ಹುಟ್ಟಿದ, ಹುಟ್ಟಿನಿಂದಲೇ ಬಂದಿರುವ. ಸ್ವಭಾವೇ ಭವ: “ಠ್” (೪-೩-೪೩) । “ಸ್ವಾಭಾವಿಕಾ-ನವಧಿಕಾತಿಶಯೇಶಿತೃತ್ವಮ್” ಸ್ತೋಂ ೨೦ । 2. ಒಂದು ವಿಧ ವ್ಯಾಧಿ. ವ್ಯಾಧಿಯು (1) ಆಗಂತವ: (2) ಶಾರೀರ: (3) ಮಾನಸ: ಮತ್ತು (4) ಸ್ವಾಭಾವಿಕ: ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧಗಳಾಗಿರುವುವು. ಕ್ಷುತ್ (ಹಸಿವು) ಪಿಪಾಸಾ (ಬಾಯಾರಿಕೆ) ಜರಾ (ಮುಂದಿತನ) ಮೃತ್ಯು: ನಿद्रಾ ಮೊದಲಾದವು ಸ್ವಾಭಾವಿಕ ವ್ಯಾಧಿಗಳು. “ಸ್ವಾಭಾವಿಕಾ: ಕ್ಷುತ್ಪಿಪಾಸಾಜರಾಮೃತ್ಯುನಿದ್ರಾ-ಪ್ರಭೃತಯ:” ಸುಶ್ರುತಂ ಸ್ತಂ ।

ಸ್ವಾಮಿತ್ವ ಸ್ವಾಮಿತ್ವಂ (ನಂ) 1. ಯಜಮಾನನಾಗಿರುವಿಕೆ, ಪ್ರಭುವಾಗಿರುವಿಕೆ. 2. ಪತಿಯಾಗಿರುವಿಕೆ. 3. ಆಚಾರ್ಯ ನಾಗಿರುವಿಕೆ. ಸ್ವಾಮಿನೋ ಭಾವ: “ತ್ವ:” (೪-೧-೧೨೯) । 4. ರಾಜನಾಗಿರುವಿಕೆ.

ಸ್ವಾಮಿನ್ ಸ್ವಾಮಿನ್ (ಪುಂ) 1. ಪ್ರಭು, ಯಜಮಾನ, ಒಡೆಯ. ಸ್ವಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ—ಸ್ವ “ಆಮಿನಚ್” (೪-೨-೧೨೬) ।

“ಸ್ವಾಮಿನೋ ನಿಷ್ಕಮ್ ಗಂತುಮಾವಿಷ್ಕತಬಲ: ಕಪಿ:” ಷಡ್ವಿಂ ೯-೬೧ । 2. ಕಾರ್ತಿಕೇಯ, ಪಟ್ಟಾಬಿ. “ಸ್ವಾಮಿ ಪ್ರಮೌ ಗುಹೇ” ಹೇಮಂ । “ಕುಮಾರಸ್ತು ಸ್ವಾಮಿ ದ್ವಾದಶಲೋಚನ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 3. ರಾಜ, ದೊರೆ. “ಸ್ವಾಮ್ಯಮಾತ್ಯಶ್ಚ ರಾಷ್ಟ್ರಂ ಚ ದುರ್ಗಂ ಕೌಶೋ ಬಲಂ ಸುಹೃತ್ । ರಾಜ್ಯಾಜ್ಞಾನಿ ಪ್ರಕೃತಯ: ಪೌರಾಣಾಂ ಶ್ರೇಣಯೋರ್ನಿಪಿ ಚ” । “ಪ್ರಕೃತಿ: ಸ್ವಾಮಿನಂ ತ್ಯಕ್ತ್ವಾ ಸಮೃದ್ಧಾಪಿ ನ ಜೀವತಿ” । 4. ಪತಿ, ಗಂಡ. “ಸ್ವಾಮಿ ಮುಘತರೋ ವನಂ ಧನಮಿದಂ ಬಾಲಾಹ್ಮೇಕಾಕಿನಿ ಕ್ಷೋಣಿಮಾವೃಣುತೇ ತಮಾಲ-ಮಲಿನಿಚ್ಚಾಯಾ ತಮ:ಸಂತತಿ: । ತನ್ಮೇ ಸುಂದರ ಮುಖ ಕೃಷ್ಣ ಸಹಸಾ ವರ್ಮೇತಿ ಗೋಪ್ಯಾ ಗಿರ: ಶ್ರುತ್ವಾ ತಾಂ ಪರಿರಮ್ಯ ಮನ್ಮಥ-ಕಲಾಸಕ್ತೋ ಹರಿ: ಪಾತು ವ:” । “ಸ್ವಾಮಿ ಭರ್ತರಿ ಷಷ್ಠಮುಖೇ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 5. ಪಂಡಿತ, ವಿದ್ವಾಂಸ. 6. ಪರಮೇಶ್ವರ. ಶಿವ. 7. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. 8. ಗುರು, ಆಚಾರ್ಯ. 9. ವಾತ್ಸ್ಯಾಯನಮುಖಿ. “ವಾತ್ಸ್ಯಾಯನೋ ಮಂದನಾಗ: ಪಕ್ಷಿಲಸ್ವಾಮಿನಾವಪಿ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । 10. ಗಂಡ. (ವಿಂ) 11. ಪಾಲಕ. 12. ನಾಯಕ.

ಸ್ವಾಮ್ಯ ಸ್ವಾಮ್ಯಂ (ನಂ) 1. ಯಜಮಾನ, ಒಡೆತನ. ಸ್ವಾಮಿನೋ ಭಾವ: “ಘ್” (೪-೧-೧೨೪) । 2. ಪ್ರಭುತ್ವ. ಅಧಿಪತ್ಯ, ದೊರೆತನ, ಅಧಿಕಾರ.

ಸ್ವಾಯಮ್ಭುವ ಸ್ವಾಯಂಭುವಂ (ಪುಂ) 1. ಮೊದಲನೆಯ ಮನು, ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಮನುಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ ಮನು. ಈ ಮನುವು ಬ್ರಹ್ಮನ ದಕ್ಷಿಣಾಂಗುಷ್ಠ (ಬಲ ಹೆಬ್ಬೆರಳು) ದಿಂದ ಜನಿಸಿದನು. ಸ್ವಯಮ್ಭುವೋಽಪತ್ಯಮ್ “ಅನ್” (೪-೧-೯೨) । ಸ್ವಾಯಂಭುವಮನುವಿನ ಪತ್ನಿ ಶತರೂಪಾದೇವಿ. ಪ್ರಿಯವ್ರತ ಮತ್ತು ಉತ್ತಾನಪಾದ ಇವರಿಬ್ಬರೂ ಸ್ವಾಯಂಭುವ ಮನುವಿನ ಪುತ್ರರು. “ಶತರೂಪಾಂ ಚ ತಾಂ ನಾರೀಂ ತಪೋನಿರ್ಭೂತಕಲ್ಮಷಾಮ್ । ಸ್ವಾಯಮ್ಭುವೋ ಮನುರ್ದೇವ: ಪತ್ನೀತ್ವೇ ಜಗೃಹೇ ಪ್ರಮು: ॥ ತಸ್ಮಾಚ್ಚ ಪುರುಷಾತ್ ಪುತ್ರೀ ಶತರೂಪಾ ವ್ಯಜಾಯತ । ಪ್ರಿಯವ್ರತೋತ್ತಾನಪಾದೌ ಪ್ರಸ್ಮಾತಾತ್ಮಕರ್ಮಭಿ:” ॥ (ವಿಂ) 2. ಸ್ವಯಂಭುವಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ. “ತಸ್ಮಿನ್ ವಿಪ್ರಕೃತಾ: ಕಾಲೇ ತಾರಕೇಣ ದಿವೌಕಸ: । ತುರಾಸಾಹಂ ಪುರೋಧಾಯ ಧಾಮ ಸ್ವಾಯಮ್ಭುವಂ ಯಯು:” ಕುಮಾಂ ೨-೧ ।

ಸ್ವಾರಸಿಕ ಸ್ವಾರಸಿಕಂ (ವಿಂ) ಸರ್ವಸಾಧಾರಣವಾದ, ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಸಮೃತವಾದ, ಸಕಲರಿಂದಲೂ ಆಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸ್ವಾರಸ್ಯ ಸ್ವಾರಸ್ಯಂ (ನಂ) 1. ಸೊಬಗು, ಸೊಗಸು, ಅಂದ, ಸ್ವರಸವಾಗಿರುವಿಕೆ. ಸ್ವರಸಸ್ಯ ಭಾವ: “ಘ್” (೪-೧-೧೨೪) । 2. ಸ್ವಭಾವಸಿದ್ಧವಾದ ಮೇಲ್ಮೈ, ಸಹಜವಾಗಿರುವ ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ.



ಸ್ವಾರಾಜ್ಯ ಸ್ವಾರಾಜ್ಯ (ನಂ) ಸ್ವರ್ಗರೂಪವಾದ ರಾಜ್ಯ.

“ಸ್ವಾರಾಜ್ಯಮಜಯಸಿ ನ ಶ್ರಿಯಮೇತದೀಯಾಮ್” ನೆಪಂ ೧೧-೨೮.

ಸ್ವಾರಾಡ್(ಜ್) ಸ್ವಾರಾಟ್(ಜ್) (ಪುಂ) ಇಂದ್ರ. ಸ್ವ: ಸ್ವರ್ಗಂ ರಾಜತೇ. ದೀರ್ಘ: (೬-೩-೧೧೧).

ಸ್ವಾರೋಚಿಷ ಸ್ವಾರೋಚಿಷ (ಪುಂ) ಹದಿನಾಲ್ಕು ಮಂದಿ ಮನುಗಳಲ್ಲಿ ಎರಡನೆಯ ಮನು. ಸ್ವಾರೋಚಿಷೋಪನಿಷತ್ “ಅನ್” (೪-೧-೧೨). ಸ್ವಾರೋಚಿಷಮನ್ವಂತರದ ಇಂದ್ರ ರೋಚನ.

ಸ್ವಾರ್ಥ ಸ್ವಾರ್ಥ (ಪುಂ) 1. ಅಭಿಧಾಪ್ಯತಿಯಿಂದ ಬೋಧ್ಯವಾಗುವ ವಾಚ್ಯಾರ್ಥ, ಶಬ್ದಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಪ್ರತಿಪಾದ್ಯವಾದ ಮುಖ್ಯಾರ್ಥ. ಸ್ವಸ್ಯ ಅರ್ಥ: 2. ತನ್ನ ಸ್ವಂತ ಧನ. 3. ಸ್ವಪ್ರಯೋಜನ. 4. ತನ್ನ ವಸ್ತು. ಸ್ವಸ್ಯ ಅರ್ಥ: ಅಮಿಷಯಾ ಪ್ರತಿಪಾದ್ಯಾರ್ಥ: ಸ್ವಸ್ಯ ಅರ್ಥ: ಧನಮ್ ಸ್ವಸ್ಯ ಅರ್ಥ: ಪ್ರಯೋಜನಮ್ ಸ್ವಸ್ಯ ಅರ್ಥ: ಕರುಣಾ. “ಯಜತಾಂ ಪಾಂಡವ: ಸ್ವರ್ಗಮವತ್ವಿನ್ದ್ರಸ್ತಪತ್ವಿನ್: | ವಯಂ ಹನಾಮ ದ್ವಿಪತ: ಸರ್ವ: ಸ್ವಾರ್ಥ ಸಮೀಹತೇ” ಮಾಘಂ ೨-೬೫. 5. ಪ್ರತ್ಯಯಕ್ಕೂ ಇರುವ ಪ್ರಕೃತಿಯ ಅರ್ಥ. ಈ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ವಿಹಿತವಾಗುವುದು ಸ್ವಾರ್ಥಪ್ರತ್ಯಯ. ಪ್ರಜಾ ಎವ ಪ್ರಾಜಾ: ಇಲ್ಲಿ ಪ್ರಜಾ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ವಿಹಿತವಾದ “ಅನ್” ಪ್ರತ್ಯಯವು ಪ್ರಜಾ ಶಬ್ದದ ಅರ್ಥವನ್ನೇ ಹೇಳುವುದರಿಂದ “ಅನ್” ಪ್ರತ್ಯಯವು ಸ್ವಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ವಿಹಿತವಾಗಿದೆ. ಚೋರಯತಿ ಇತ್ಯಾದಿ ಸ್ವಾರ್ಥ ಲೇಖನ.

ಸ್ವಾರ್ಥಪರ ಸ್ವಾರ್ಥಪರ (ವಿಂ) ತನ್ನ ಹಿತವೇ ಮುಖ್ಯವಾಗಿರುವವನು, ತನ್ನ ಪ್ರಯೋಜನದಲ್ಲೇ ಆಸಕ್ತನಾಗಿರುವವನು. ಸ್ವಾರ್ಥಸ್ವಪ್ರಯೋಜನೇ ಪರ: | -ಪರಾಧನ: -ಪರಾಧನ: “ನ ವಿದವ್ಯುರಶಾಕ್ಷಮಪ್ರಿಯಂ ಮಹತ: ಸ್ವಾರ್ಥಪರಾ: ಪರೇ ಕಥಮ್” ಮಾಘಂ ೧೬-೫೫.

ಸ್ವಾರ್ಥಪರತಾ ಸ್ವಾರ್ಥಪರತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತನ್ನ ಪ್ರಯೋಜನದಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತನಾಗಿರುವಿಕೆ, ತನ್ನ ಹಿತದಲ್ಲೇ ಉದ್ದೇಶವಿರುವಿಕೆ. ಸ್ವಾರ್ಥಪರಸ್ಯ ಭಾವ: “ತಲ್” (೫-೧-೧೧೧).

“ಪರಾರ್ಥಾನುಷ್ಠಾನೇ ಜಡಯತಿ ನೃಪ ಸ್ವಾರ್ಥಪರತಾ” ಮುಕ್ತಾಂ ೩-೪.

ಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯ ಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯ (ನಂ) 1. ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಉಂಟಾಗುವ ಹರ್ಷ, ಸಂತೋಷ, ನೆಮ್ಮದಿ. ಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯಸ್ಯ ಭಾವ: “ಆಖ್” (೫-೧-೧೨೪). “ಶಕ್ತುಂತಲಾಂ ಪತಿಕುಲಂ ವಿಸೃಜ್ಯ ಲಘುಮಿದಾನಿ ಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯಮ್” ಶಾಕುಂ ೪. 2. ಆರೋಗ್ಯ. 3. ಧೈರ್ಯ, ಸ್ಥೈರ್ಯ. 4. ಸುಖವಾಗಿರುವಿಕೆ. “ವಾಚ್ಛಾ-ವಿಚ್ಛೇದನಂ ಪ್ರಾಹು: ಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯಂ ಶಾಂತಾ ಮಹರ್ಷಯ:” ಪञ्ಚತಂ ೨-೧೬೩.

ಸ್ವಾಹಾ ಸ್ವಾಹಾ (ಅವ್ಯಂ) ಅಗ್ನಿಪುರುಷನ ರಾಣಿ. -ಪತ್ನಿ. ಸುಕೃತಾಹುಯಂತೇ ದೇವಾ ಅನಯಾ | ಸ್ವಾಹಾದೇವಿಯು ದಕ್ಷ ಬ್ರಹ್ಮನ ಪತ್ನಿ. ಅಗ್ನಿಯು ಸಪ್ತರ್ಷಿಗಳ ಪತ್ನಿಯರನ್ನು ಮೋಹಿಸಿದಾಗ ಸ್ವಾಹಾದೇವಿಯು ಅರುಂಧತಿಯ ಹೊರತು ಉಳಿದ ಮಹಿಷಪತ್ನಿಯರ ರೂಪವನ್ನು ತಾಳಿ ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸಿದಳು.

ಸ್ವಾಹಾಪತಿ ಸ್ವಾಹಾಪತಿ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ. ಸ್ವಾಹಾಯಾ: ಪತಿ: | -ಪ್ರಿಯ: -ಪ್ರಿಯ:

ಸ್ವಾಹಾಭುಕ್(ಜ್) ಸ್ವಾಹಾಭುಕ್(ಜ್) (ಪುಂ) ದೇವತೆ. ಸ್ವಾಹಾ ಭುಕ್ತೇ - ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ: ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬). “ಸ್ವಾಹಾಭುಜಶ್ಚ ವಸುಲಾ: ಪೂಜಿತಾಶ್ಚ ಚಿರಾಯುಷ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಸ್ವಿತ್ ಸ್ವಿತ್ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಪ್ರಶ್ನೆ ಮಾಡುವುದು, ಕೇಳುವುದು. ಸುಕೃತಾಹುಯಂತೇ-ಇನ್ (ಗತೌ) “ಕ್ವಿಪ್” (೩-೨-೭೬). “ಕಿಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾ ವೇ ಶ್ರೇಯಾಂಸೋ ದಿತೀಜಾ: ಸ್ವಿದಿರೋಚನ” ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ | 2. ವಿತರ್ಕ, ಊಹೆ. “ಕಾ ಸ್ವಿದವಗುಣತವತಿ ನಾತಿಪರಿಸ್ಪೃಶ್ಯಶರೀರಲಾಘವಾ” ಶಾಕುಂ ೫-೧೩. 3. ಪಾದಪೂರಣಕ್ಕಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಪದ. “ಸ್ವಿತ್ ಪ್ರಶ್ನೇ ಚ ವಿತರ್ಕೇ ಚ ತಥೈವ ಪಾದಪೂರಣೇ” ಮೇದಿಂ |

ಸ್ವಿಚ್ಛತ್ ಸ್ವಿಚ್ಛತ್ (ವಿಂ) ಬೆವರುತ್ತಿರುವ, ಬೆವರು ಸುರಿಯುತ್ತಿರುವ. ತ್ರಿವಿಧಾ (ಗಾತ್ರಕ್ಷರಣೇ) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪). “ಸ್ವಿಚ್ಛತ್ಕರಾಜ್ಞಲಿಲುಪ್ತಕಸ್ತೂರೀಲೇಪ-ಮುಧ್ರಯಾ | ಪೂರ್ವಾರ್ಥಪೀಠನೌ ಚಕ್ರೇ ಸ ಸಖೀಭು ಪ್ರಿಯಾಸ್ತನೌ” ನೆಪಂ ೨೦-೧೪೫.

ಸ್ವಿನ್ ಸ್ವಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಬೆವರಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಬೆವರಿನಿಂದ ತೇವವಾದ. ತ್ರಿವಿಧಾ (ಗಾತ್ರಕ್ಷರಣೇ) “ಕ್ತ:” (೩-೪-೭೨). “ಸ್ವಿನ್ನಾಜ್ಞಲಿವಿನಿವೇಶೋ ರೇಖಾಪ್ರಾಂತೇಷು ದೃಶ್ಯತೇ ಮಲಿನ:” ಶಾಕುಂ ೬-೧೫. 2. ಪಕ್ಕವಾದ, ಬೆನ್ನಾಗಿ ಬೇಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. “ಶಸ್ಯಂ ಕ್ಷೇತ್ರಗತಂ ಪ್ರಾಹು: ಸತುಷಂ ಧಾನ್ಯಮುಚ್ಯತೇ | ಆಮಂ ವಿತುಷ-ಮಿತುಕ್ತಂ ಸ್ವಿನ್ಮಮಮುದಾಹುತಮ್” ||

ಸ್ವೀಕರಣ ಸ್ವೀಕರಣ (ನಂ) 1. ತನ್ನದಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. 2. ಅಂಗೀಕರಿಸುವುದು, ಸಮ್ಮತಿಸುವುದು. 3. ವಿವಾಹ, ಮದುವೆ. “ಭೋಸ್ತಪೋ-ಧನಾ: ! ಚಿಂತಯನ್ನಪಿ ನ ಖಲು ಸ್ವೀಕರಣಮತ್ರಭವತ್ಯಾ: ಸ್ಮರಾಮಿ” ಶಾಕುಂ ೫.

ಸ್ವೀಕರಣ ಸ್ವೀಕರಣ (ವಿಂ) 1. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು, ತನ್ನದಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವವನು. 2. ಅಂಗೀಕರಿಸುವವನು, ಸಮ್ಮತಿಸುವವನು. ಸ್ವ + ಛುಕ್ತು (ಕರಣೇ)



“ತು” (೩-೨-೨೩೩) । “ಛಿ:” (೪-೪-೪೦) ।  
ದೀರ್ಘ: (೭-೪-೨೬) । 3. ವಿವಾಹ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವವನು.  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೨-೪) । -ಕರ್ತೃ -ಕೃತ್.

ಸ್ವೀಕಾರ ಸ್ವೀಕಾರ (ಪುಂ) “ಸ್ವೀಕರಣ” ಪದದ ಅರ್ಥ.  
ಸ್ವ + ಡುಕ್ತು (ಕರಣ) “ಘ” (೩-೩-೨೮) । “ಛಿ:”  
(೪-೪-೪೦) । ದೀರ್ಘ: (೭-೪-೨೬) । “ಕ್ತಿನ್” ।  
ಸ್ವೀಕೃತಿ: ಸ್ವೀಕೃತಿ.

ಸ್ವೀಕೃವತ್ ಸ್ವೀಕೃವತ್ (ವಿಂ) 1. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ,  
ತನ್ನದಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ಸ್ವ+ಡುಕ್ತು (ಕರಣ)  
“ಶತ್” (೩-೨-೨೨೪) । “ಛಿ:” (೪-೪-೪೦) ।  
ದೀರ್ಘ: (೭-೪-೨೬) । 2. ಸಮ್ಮತಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ವಿವಾಹ  
ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ಡೀಪ್” (೪-೨-೬) ।  
-ಕುರ್ವಂತಿ -ಕುರ್ವಂತಿ. “ಶಾನತ್” (೩-೨-೨೨೪) ।  
-ಕುರ್ವಾಣ: ಕುರ್ವಾಣ: “ಭವಾದೃಶದಿಶಾಮೀಶ: ಸ್ಮಯಮಾಣಾಂ  
ಮೃಗಕ್ಷಣಾಮ್ । ಸ್ವೀಕುರ್ವಾಣ: ಕಥಂ ಸೌಢ: ಕೃತರೀಡಸ್ತೃಣಂ ನಲ:”  
ನೃಪಂ ೧೭-೨೨೮ ।

ಸ್ವೀಕೃತ ಸ್ವೀಕೃತ (ವಿಂ) 1. ತನ್ನದಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಸ್ವ+ಡುಕ್ತು (ಕರಣ) “ಕ್ತ:” (೩-೨-೨೦೨) । “ಛಿ:”  
(೪-೪-೪೦) । ದೀರ್ಘ: (೭-೪-೨೬) । “ಸ್ವದೇಶಾದವಿಶೇಷಣ  
ಸ್ವೀಕೃತೇ ಶತ್ರುಮಂಜಲೇ । ನ ಯೋಧಾ ಜಗೃಹಸ್ತತ್ರ ಕಿಂಚಿದಸ್ವಾಮಿ-  
ಸಮ್ಮತಮ್” ಯಾದಂ ೨೨-೭೯ । 2. ಸಮ್ಮತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 3. ವಿವಾಹ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ.

ಸ್ವೀಯ ಸ್ವೀಯ (ವಿಂ) ತನ್ನದಾದ, ತನ್ನ ಸಂಬಂಧವಾದ.  
ಸ್ವಸ್ಯ ಇದಮ್ ಸ್ವ “ಛ:” (೪-೨-೨೩೮) । ಸ್ವಶಬ್ದೋಪಿ  
ಗಹಾದಿ: ।

ಸ್ವೀಯಾ ಸ್ವೀಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೂರು ವಿಧ ನಾಯಿಕೆಯಲ್ಲಿ  
ಒಬ್ಬ ನಾಯಿಕೆ. ನಾಯಿಕೆಯು (1) ಸ್ವಾ (2) ಅನ್ಯಾ  
ಮತ್ತು (3) ಸಾಧಾರಣಿ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ವಿನಯಾದಿ  
ಗುಣಸಂಪನ್ನಳಾಗಿ ಗೃಹಕೃತ್ಯಗಳನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸುತ್ತ  
ಪತಿವ್ರತೆಯಾಗಿರುವ ಹೆಂಗಸು ಸ್ವೀಯನಾಯಿಕೆ. “ವಿನಯಾ-  
ಜಿವಾದಿಯುಕ್ತಾ ಗೃಹಕರ್ಮಪರಾ ಪತಿವ್ರತಾ ಸ್ವೀಯಾ” ಸಾಂ ದಂ  
೩-೪೭ । ಈ ಸ್ವೀಯನಾಯಿಕೆಯು (1) ಮೃಗಾ (2) ಮಧ್ಯಾ  
ಮತ್ತು (3) ಪ್ರಗಲ್ಭಾ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. “ಸಾಪಿ  
ಕಥಿತಾ ತ್ರಿಭೇದಾ ಮೃಗಾ ಮಧ್ಯಾ ಪ್ರಗಲ್ಭೇತಿ” ಸಾಂ ದಂ  
೩-೪೭ । [ಮೃಗಾ ಮಧ್ಯಾ ಮತ್ತು ಪ್ರಗಲ್ಭಾ ಪದಗಳಲ್ಲಿ  
ಇವರ ವಿವರಕ್ಕೆ ನೋಡಿ.]

ಸ್ವೇಚ್ಛಾ ಸ್ವೇಚ್ಛಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತನ್ನ ಅಪೇಕ್ಷೆ, ತನ್ನ ಇಷ್ಟ.  
ಸ್ವಸ್ಯ ಇಚ್ಛಾ । “ಆಶಿತಮ್ಭವಮುತ್ಕೃಷ್ಟಂ ವಲಗಿತಂ ಶಯಿತಂ

ಸ್ಥಿತಮ್ । ಬಹುಮನ್ಯತ ಕಾಕುತ್ಸ್ಥ: ಕಪಿಣಾಂ ಸ್ವೇಚ್ಛಯಾ  
ಕೃತಮ್” ಭಟ್ಟಂ ೬-೨೦೬ । 2. ತನ್ನ ಬುದ್ಧಿ, ತನ್ನ ಪ್ರತಿಭೆ.  
“ಬಹುಪಿ ಸ್ವೇಚ್ಛಯಾ ಕಾಮಂ ಪ್ರಕೀರ್ಣಮಭಿವಿಧೀಯತೇ” ಮಾಘಂ  
೨-೭೩ ।

ಸ್ವೇಚ್ಛಾಚಾರ ಸ್ವೇಚ್ಛಾಚಾರ (ಪುಂ) ತನ್ನ ಇಷ್ಟದಂತೆ  
ಮಾಡುವುದು, ಇಷ್ಟಬುದ್ಧಿಯಂತೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಸ್ವೇದ ಸ್ವೇದ (ಪುಂ) 1. ಬೆವರು. ಸ್ವಿಚ್ಛತೇಜನಾಂ—ಋಷಿವಿದಾ  
(ಗಾತ್ರಕ್ಷರಣ) “ಘ” (೩-೩-೨೨೨) । “ಸ್ವೇದಾಪ್ಲವ-  
ಪ್ರಣಯಿನಿ ನವರೋಮರಾಜಿ ರತ್ಯೇ ಯದಾ ಚರತಿ ಜಾಗರಿತವ್ರತಾನಿ” ।  
“ಆಭಾಸಿ ತೇನ ನರನಾಥ ಮಧುತ್ಯಸಾನ್ದ್ರಮಗ್ನಾಸಮೇಷುಶರಕೇಸರ-  
ದಂತುರಾಜ್ಞ:” ನೃಪಂ ೨೧-೨೩೭ । “ದ್ವಿಪದ್ವೇಷೋಪರಕ್ಷಾಜ್ಞ-  
ಸಜ್ಜಿನಿ: ಸ್ವೇದವಿಪ್ರುಷ:” ಮಾಘಂ ೨-೨೮ । 2. ವಾಯುವಿ  
ನಲ್ಲಿಯು ತೇವ, ಹಬೆ. 3. ಉಷ್ಣತೆ, ಬಿಸಿ, ಶಾಖ.  
4. ತಾಪ. 5. ಬೆವರುವುದು. “ಸ್ವೇದಸ್ತು ಸ್ವೇದನೇ ಧರ್ಮೇ”  
ಮೇದಿಂ ।

ಸ್ವೇದಚೂಷಕ ಸ್ವೇದಚೂಷಕ (ಪುಂ) ಶೀತಲವಾತ, ತಂಗಾಳಿ.

ಸ್ವೇದಜ ಸ್ವೇದಜ (ಪುಂ) ಶಾಖದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಕೃಮಿ  
ನೋಣ ಮುಂತಾದವು. ಸ್ವೇದಾಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾಡುರ್ಮವಿ)  
“ಛ:” (೩-೨-೨೮) । “ಸ್ವೇದಜಾ: ಕೃಮಿದಶಾಘಾ:”  
ಅಮಂ ।

ಸ್ವೇದನ ಸ್ವೇದನ (ನಂ) 1. ಬೆವರುವುದು. ಋಷಿವಿದಾ  
(ಗಾತ್ರಕ್ಷರಣ) ಭಾವೇ “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೨೨೪) । 2. ಬೆವರು  
ವಂತೆ ಮಾಡುವುದು. ಋಷಿವಿದಾ + ಣಿಕ್ “ಲ್ಯುಟ್”  
(೩-೩-೨೨೪) । 3. ಬೆವರುವಂತೆ ಮಾಡುವ. ಋಷಿವಿದಾ  
+ ಣಿಕ್ “ಲ್ಯು:” (೩-೨-೨೩೪) ।

ಸ್ವೇದನಿಕಾ ಸ್ವೇದನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾವಲಿ. ಸ್ವೇದನ-  
ಮಸ್ತಕಸ್ಯಾ: — ಸ್ವೇದನ “ಠನ್” (೪-೨-೨೨೪) । 2. ಹುರಿ  
ಯುವ ಓಡು, ಬಾಣಲಿ. 3. ಹುರಿಯುವ ಮನೆ.

ಸ್ವೇದನಿ ಸ್ವೇದನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾವಲಿ. ಸ್ವಿಚ್ಛತೇಜಸ್ಯಾಂ —  
ಋಷಿವಿದಾ (ಸ್ನೇಹನೆ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೨೨೪) । “ಕನ್ದುರ್ವಾ  
ಸ್ವೇದನಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್” ಅಮಂ ।

ಸ್ವೇದವಿಪ್ರದ ಸ್ವೇದವಿಪ್ರದ (ಪುಂ) ಬೆವರಿನ ಹನಿ, ಸ್ವೇದಜಲದ  
ಕಣ, —ತೊಟ್ಟು.

ಸ್ವೇದವಿಪ್ರದ (ಘ) ಸ್ವೇದವಿಪ್ರದ (ಘ) (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆವರಿನ  
ಬಿಂದು, —ಹನಿ. ಸ್ವೇದಸ್ಯ ವಿಪ್ರದ್ ।

ಸ್ವೇದಾಂಜ ಸ್ವೇದಾಂಜ (ನಂ) ಬೆವರಿನ ಜಲ. —ತಡಕಮ್  
—ಉದಕಮ್. “ನಾಜಾನಾದಭಿಮತಮಂತಿಕೇಶಭಿವಿಧ್ಯ  
ಸ್ವೇದಾಂಜದ್ರವಮಭವತ್ತರಾಂ ಪುನಸ್ತತ್” ಮಾಘಂ ೮-೬೮ ।



ಸ್ವೇದಿನ್ ಸ್ವೇದಿನ್ (ವಿಂ) ಬೆವರಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಸ್ವೇದ  
ದಿಂದ ನೆನದಿರುವ. ಸ್ವೇದೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇತಿ:" (೪-೨-೧೧೫)।  
"ಲೀನವೀನಾಂಶುಕಂ ಸ್ವೇದಿ ದರಾಲೋಕಯಂ ವಲೋಕಯನ್" ನೆಪಂ  
೨೦-೧೪೯।

ಸ್ವೇದ ಸ್ವೇದ್ಯ (ವಿಂ) ದೇಹದಲ್ಲಿ ಬೆವರು ಉಂಟಾಗಲು  
ಅರ್ಹವಾದ, ದೇಹವು ಬೆವರುವಂತೆ ಮಾಡಲು ಅರ್ಹ  
ವಾದ. ಸ್ವೇದ ಸ್ವೇದನಮಹಂತಿ—ಸ್ವೇದ "ಯತ್" (೪-೧-೬೬)।  
"ಸ್ವೇದಮಾಮಜ್ವರಂ ಪ್ರಾಜ್ಞಃ ಕೋಽಽಮಸಾ ಪರಿಷಿಷ್ಟತಿ" ಮಾಘಂ  
೨-೫೪।

ಸ್ವೇರ ಸ್ವೇರ (ವಿಂ) 1. ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯದಿಂದ ನಡೆಯುವ,  
ತನ್ನ ಇಷ್ಟಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ ನಡೆಯುವ. ಸ್ವೇನ  
ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯೇಣ ಇತಿ—ಇರ (ಗತೌ ಕಂಪನೇ ಚ) "ಅಚ್"  
(೩-೧-೧೩೪)। "ಅವ್ಯಾಹತಃ ಸ್ವೇರಗತಃ ಸ ತಸ್ಯಾಃ ಸಮ್ರಾಡ್  
ಸಮಾರಾಧನತತ್ಪರೋಽಮೃತ್" ರಘುಂ ೨-೫। 2. ಮಂದ, ಅಲಸ,  
ಸೋಮಾರಿ. 3. ನಿಧಾನವಾದ. "ಪಾದಸ್ಯಾವಿರ್ಭವಂತಿ-  
ಮವನತಿಮವನೇರಕ್ಷತಃ ಸ್ವೇರಪಾತಃ" ಮುದ್ರಾಂ ೧-೨।  
4. ವ್ಯರ್ಥವಾದ ಮಾತು, ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ ಮಾತು.  
"ನಾಹಂ ಮೃಣಾ ಬ್ರವೀಮ್ಯೇವ ಸ್ವೇರೇಷ್ವಪಿ ಕುತಃ ಶಪನ್" ಭಾಂ  
ವಿರಾಂ। (ಅವ್ಯಂ) 5. ಮೆತ್ತಗೆ, ನಿಧಾನವಾಗಿ. "ಗತ್ಯುನ-  
ಮಾರ್ಗಗತಯೋಽಪಿ ಗತೋಽಮಾರ್ಗಃ ಸ್ವೇರಂ ಸಮಾಚಕ್ಷುಷಿರೇ ಭುವಿ  
ವೇಲ್ಲನಾಯ" ಮಾಘಂ ೫-೫೩। 6. ಸ್ವಚ್ಛಂದವಾಗಿ, ಸ್ವತಂತ್ರ  
ವಾಗಿ. "ಸ್ವಪ್ತುಮಾಪ್ತಶಯನೀಯಯೋಃ ಸ್ವೇರಮಾಖ್ಯತ ವಚಃ  
ಪ್ರಿಯಾಂ ಪ್ರಿಯಃ" ನೆಪಂ ೧೮-೧೪೩। 7. ತನಗೆ ಇಷ್ಟ  
ಬಂದಂತೆ, ತನಗೆ ತೋರಿದಂತೆ. "ಸಾರ್ಥಾಃ ಸ್ವೇರಂ ಸ್ವಕೀಯೇಷು  
ಚೇಹವೇಶಮಸಿವವಾದ್ರಿಷು" ರಘುಂ ೧೭-೬೪। 8. ಮೆಲ್ಲಗೆ,  
ಮೆತ್ತಗೆ, ಸಣ್ಣದ್ದನಿಯಲ್ಲಿ, ಕುಗ್ಗಿದ ಕೆಂಠದಲ್ಲಿ. "ಸ್ವೇರಂ  
ಶೇಷೇ ಗಜ ಇತಿ ಕಿಲ ವ್ಯಾಹತಂ ಸತ್ಯವಾಚಾ" ವೇಣೀಂ ೩-೧೧।

ಸ್ವೇರತಾ ಸ್ವೇರತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ವತಂತ್ರವಾಗಿರುವಿಕೆ, ತನ್ನ  
ಇಷ್ಟಾನುಸಾರವಾಗಿ ಇರುವಿಕೆ. ಸ್ವೇರಸ್ಯ ಭಾವಃ "ತಲ್"  
(೪-೧-೧೧೯)।

ಸ್ವೇರಿಣಿ ಸ್ವೇರಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ, ಯಾರ ಅಧೀನ  
ದಲ್ಲೂ ಇಲ್ಲದೆ ಸ್ವತಂತ್ರವಾಗಿ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವವಳು.

ಸ್ವೇನ ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯೇಣ ಇರಿಸ್ತುಂ ಗತುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯಾಃ—ಇರ  
(ಗತೌ) "ಗಿಣಿತಿಃ" (೩-೨-೭೮)। ವೃದ್ಧಿಃ (ವಾಂ  
೬-೧-೮೯)। "ಅಕ್ಷತಾ ಚ ಕ್ಷತಾ ಚೇವ ಪುನರ್ಮುಃ ಸಂಸ್ಕೃತಾ  
ಪುನಃ। ಸ್ವೇರಿಣಿ ಯಾ ಪತಿ ಹಿತ್ವಾ ಸರ್ವಣಂ ಕಾಮತಃ ಶ್ರಯೇತ್"  
ಯಾಜ್ಞಂ ೧-೬೭।

ಸ್ವೇರಿತಾ ಸ್ವೇರಿತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ವಚ್ಛಂದವಾಗಿ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳು-  
ವಿಕೆ, ತನ್ನ ಇಷ್ಟದಂತೆ ವರ್ತಿಸುವಿಕೆ. ಸ್ವೇರಿಣಿ ಭಾವಃ  
"ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। "ಯದ್ವಚ್ಛಾ ಸ್ವೇರಿತಾ"  
ಅಮಂ।

ಸ್ವೇರಿನ್ ಸ್ವೇರಿನ್ (ವಿಂ) ಸ್ವತಂತ್ರವಾಗಿರುವವನು, ತನ್ನ  
ಇಷ್ಟದಂತೆ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. ಸ್ವೇನ ಇರಿಸ್ತುಂ ಶೀಲಮಸ್ಯ  
—ಇರ (ಗತೌ) "ಗಿಣಿತಿಃ" (೩-೨-೭೮)। "ಸಿದ್ಧಿವಾದೇಷು  
ಸಂಸಿದ್ಧಾಸ್ತಥಾ ವನನಿವಾಸಿನಃ। ಸ್ವೇರಿಣಿ ದಾರಸಂಯುಕ್ತಾಸ್ತೇಷಾಂ  
ಧರ್ಮಃ ಕಥಂ ಸ್ಮೃತಃ" ಭಾಂ ಅನುಂ।

ಸ್ವೇರಿನ್ದ್ರಿ ಸ್ವೇರಿನ್ದ್ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪರಗೃಹದಲ್ಲಿ ಶಿಲ್ಪ  
ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡುತ್ತ ಸ್ವತಂತ್ರವಾಗಿರುವ ಹೆಂಗಸು.  
ಸ್ವೇರಂ ಸ್ವಾಚ್ಛಂದ್ಯಂ ವರತಿ—ಇತಿ ಸ್ವೇರಿನ್ದ್ರೀ—ಧರ್ಮ (ಧಾರಣೆ)  
"ಕಃ" (ವಾಂ ೩-೨-೫)। ಪೃಷಂ। ಗೌರಾಂ "ಕೌಷ್"  
(೪-೧-೪೧)।

ಸ್ವೋಪಾಜಿತ ಸ್ವೋಪಾಜಿತ (ವಿಂ) ತನ್ನಿಂದಲೇ ಸಂಪಾ-  
ದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಸ್ವೇನ ತಪಾಜಿತಮ್। ಸ್ವೋಪಾಜಿತವು ಎರಡು ವಿಧ.  
ಪಿತೃಪಾಜಿತ ಅಸ್ತಿಯಿಂದ ಬಂದ ದ್ರವ್ಯದಿಂದ ಅದ ಅಸ್ತಿ  
ಮತ್ತು ತನ್ನ ಸ್ವಂತ ಸಂಪಾದನೆಯಿಂದ ಮಾಡಿದ ಅಸ್ತಿ.  
ತನ್ನ ಸ್ವಂತ ಸಂಪಾದನೆಯಿಂದ ಮಾಡಿದ ಅಸ್ತಿಯಲ್ಲಿ  
ದಾಯಾದಿಗಳಿಗೆ ಪಾಲು ಕೊಡಬೇಕಾಗಿಲ್ಲ. "ಅನಾಶ್ರಿತ್ಯ  
ಪಿತುರ್ದ್ರವ್ಯಂ ಸ್ವಶಕ್ತಿಯಾಪ್ನೋತಿ ಯದ್ವನಮ್। ದಾಯಾದೇಭ್ಯೋ ನ ತದ್ವತ್  
ವಿಶಾಲಂ ಚ ಯದ್ವೇತ್" ಇತಿ ವ್ಯಾಸಃ।

ಸ್ವೋವಸೀಯ ಸ್ವೋವಸೀಯ (ನಂ) 1. ಸಂತೋಷ. 2.  
ಮಂಗಳ, ಶುಭ. ಕಲ್ಯಾಣ. ಸ್ವಃ (ಶ್ವಃ) ಪ್ರಾಸ್ತಃ  
ವಸೀಯಃ (೪-೪-೮೦)। (ವಿಂ) 3. ಮಂಗಳಕರವಾದ.  
4. ಸಂತೋಷಕರವಾದ.

ಇತಿ "ಸ" ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್।



ಹ

ಹ ಹ ಇದು ವರ್ಣಸಮಾಮ್ಯಾದಲ್ಲಿ ಅವರ್ಗೀಯ ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ ಎಂಟನೆಯ ವರ್ಣ. ಈ ವರ್ಣವು ಕಂಠಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ವಿವೃತಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಒಂದು ಉಷ್ಣವರ್ಣ. "ಅಕುಹವಿಸರ್ಜನೀಯಾನಾಂ ಕಠಃ" | "ಶಷಸಹಾ ಋಮಾಣಃ" | "ವಿವೃತಮೂಷ್ಮಣಾಂ ಸ್ವರಾಣಾಂ ಚ" ಸಿಂ ಕೌಂ |

ಹ ಹ (ಪುಂ) 1. ಎಷ್ಟು, ನಾರಾಯಣ. 2. ಪರಶಿವ, ಶಂಕರ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 3. ಹಂಸ. 4. ರಣ, ಯುದ್ಧ. 5. ರೋಮಾಂಚ, ಮೈಮೇಲಿನ ಕೂದಲೇಳುವುದು. 6. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. 7. ಗರ್ವ, ಅಹಂಕಾರ. 8. ವರುಣ. "ಹಃ ಶಕ್ತುರೇ ಹರೌ ಹಂಸರಣರೋಮಾಂಚವಾಜಿಷು | ಗವೇ ಪ್ರಚೇತಸಿ" ನಾನಾರ್ಥರಂ | 9. ಕೋಪ. 10. ಗಜ, ಆನೆ. "ಹಃ ಕೋಪೇ ವಾರಣೇ ಹೃಷಿ ತಥಾ ಶೂಲಿ ಪ್ರಕೌತಿತಃ" ಏಕಾಂ | 11. ಜಲ, ನೀರು. 12. ಶೂನ್ಯ, ಸೊನ್ನೆ. 13. ಶುಭ, ಮಂಗಳ. 14. ರಕ್ತ, ನೆತ್ತರು. 15. ಸ್ವರ್ಗ. 16. ಧಾರಣ. 17. ಆಕಾಶ, ಗಗನ. 18. ನಕುಲೀಶ. "ಹಃ ಶಿವೇ ಸಲಿಲೇ ಶೂನ್ಯೇ ಧಾರಣೇ ಮಜ್ಜಲೇಽಪಿ ಚ | ಗಗನೇ ನಕುಲೀಶೇ ಚ ರಕ್ತೇ ನಾಕೇ ಚ ವರ್ಣ್ಯತೇ" ಮೇದಿಂ | (ನಂ) 19. ಅಸ್ಮ, ಆಯುಧ. 20. ಆನಂದ, ಹರ್ಷ, ಸುಖ. 21. ವಿಷ್ಣುನಾದ. 22. ರತ್ನಕಾಂಠಿ. 23. ಪರಬ್ರಹ್ಮ. 24. ಆಮಂತ್ರಣ, ಕರೆ. "ಹಂ ಕಲಿಬ್ರಹ್ಮಸುಖಯೋಃ ಕವಣಿತೇ ಮಣಿರೋಚಿಷಿ | ಪರಬ್ರಹ್ಮಾಮನ್ತ್ರಣಯೋಃ ತ್ರಿಷು ತುತಾನಹಾಸ್ಯಯೋಃ" ನಾನಾರ್ಥರಂ | (ವಿಂ) 25. ಮೇಲುಮುಖವಾದ. 26. ಹಾಸ್ಯಮಾಡುವ, ನಗುವ. (ಅವ್ಯಂ) 27. ಸಂಬೋಧನೆ. 28. ಪಾದಪೂರಣ. 29. ನಿಯೋಗ. 30. ನಿಗ್ರಹ. 31. ನಿಂದೆ. 32. ಎಸೆಯುವುದು. "ಹ ಸ್ಯಾತ್ ಸಮ್ಬೋಧನೇ ಪಾದಪೂರಣೇ ಚ ವಿನಿಗ್ರಹೇ | ನಿಯೋಗೇ ಕ್ಷಿಪಾಯಾಂ ಸ್ಯಾತ್ ಕುತ್ಸಾಯಾಮಪಿ ದೃಶ್ಯತೇ" ಮೇದಿಂ |

ಹಂಸ ಹಂಸ (ಪುಂ) 1. ಹಂಸಪಕ್ಷಿ. ಹಂತಿ ಗಚ್ಛತಿ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) "ಅನ್" (೩-೧-೧೩೪) | "ಭವೇದ್ವರ್ಣಗಮಾಢ್ಢಸಃ ಸಿಹೋ ವರ್ಣವಿಪರ್ಯಯಾತ್" ಇತಿ ಸಕ್ | "ಹಂಸಂ ತನೌ ಸನ್ನಿಹಿತಂ ಚರಂತಂ ಮುನೇರ್ಮನೋವೃತ್ತಿರಿವ ಸ್ವಿಕಾಯಾಮ್" ನೆಪಂ ೩-೪ | ಜಲಮಿಶ್ರವಾದ ಹಾಲಿನಲ್ಲಿ ಹಾಲಿನ ಭಾಗವನ್ನು ಮಾತ್ರ ಎಳೆದುಕೊಳ್ಳುವ ಒಂದು ಅಸಾಧಾರಣ ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಹಂಸವು ಪಡೆದಿರುವುದು. "ಹಂಸೋ ಹಿ ಕ್ಷೀರಮಾದತ್ತೇ ತನ್ಮಿಶ್ರಾ ವರ್ಜಯಂತ್ಯಪಃ" ಶಾಕುಂ ೬-೨೮ | "ಹಂಸಃ ಸ್ವೇತೋ ಬಕಃ ಸ್ವೇತಃ ಕೌ ಮೇದೋ ಬಕಹಂಸಯೋಃ | ನೋರಕ್ಷೀರವಿಭಾಗೇ ತು ಹಂಸೋ ಹಂಸೋ

ಬಕೋ ಬಕಃ" || 2. ಆಸೆಯಿಲ್ಲದ ರಾಜ, ಆಸೆಯನ್ನು ತೊರೆದಿರುವದೊರೆ. 3. ಎಷ್ಟು. ಹಂತಿ ಮನೋಹರಂ ಗಚ್ಛತಿ ಹಂತಿ ಸ್ಮಯತೇ ವಾ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋಃ) "ಸಃ" (೩ಂ ೩-೨-೨೧) | "ಹಂಸಃ ಸಂಸಾರಬಂಧಸ್ಯ ಹಂತಾ ತಾದಾತ್ಮ್ಯ-ಮಾವಿತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ | "ಮರೀಚಿದಮನೋ ಹಂಸಃ" ವಿಂ ಸಂ | 4. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. 5. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. 6. ಪರಮಾತ್ಮ. 7. ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ. 8. ಮತ್ಸರ, ದ್ವೇಷ, ಹಗೆತನ. 9. ಒಂದು ಮಂತ್ರ. 10. ಪಂಚ ಪ್ರಾಣವಾಯುಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ವಾಯು. 11. ಜೀವಾತ್ಮ. 12. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕುದುರೆ. 13. ಯತಿ. 14. ಬಿಳಿಯ ಎತ್ತು. "ಹಂಸಃ ಸ್ಮರೇ ಸ್ವಗೇ ವಿಷ್ಣುಯತೌ ನಿರ್ಲಪ-ಭೂಭುಜಿ | ಜೀವೇಽಕೇಽಶ್ವೇ ಸ್ವೇತವೃಷೇ ಸ್ಯಾನ್ಮನ್ವರಪರಮಾತ್ಮನೋಃ" ನಾನಾರ್ಥರಂ | "ಹಂಸಃ ಸ್ಯಾನ್ಮಾನಸೌಕಸಿ | ನಿರ್ಲೋಭನೃಪ-ವಿಷ್ಣುಕಂ ಪರಮಾತ್ಮನಿ ಮತ್ಸರೇ | ಯೋಗಿಭೇದೇ ಮನ್ವರಭೇದೇ ಶರೀರ-ಮಹದಂತರೇ | ತುರಗ್ಗಮಪ್ರಭೇದೇಽಪಿ" ಮೇದಿಂ | (ವಿಂ) 15. ಶ್ರೇಷ್ಠ.

ಹಂಸಕ ಹಂಸಕ (ಪುಂ) 1. ಕಾಲುತೊಡಿಗೆ, ನೂಪುರ, ಕಾಲಿನ ಗೊಲಸು. ಹಂಸ ಇವ ಕಾಯತಿ — ಕಂ (ಶಬ್ದ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) | 2. ಹಂಸಪಕ್ಷಿ. ಹಂಸ ಏವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ" | "ಸರಿತ ಇವ ಸವಿಭ್ರಮಪ್ರಯಾತಪ್ರಣದಿತಹಂಸಕಭೂಷಣಾ ವಿರೇಜುಃ" ಮಾಘಂ ೭-೨೩ | 3. ಒಂದು ತಾಳದ ಭೇದ. "ಲಘುಗುರು-ಲಘುತ್ವತ್ರ ಸ ತಾಲೋ ಹಂಸಕಃ ಸ್ಮೃತಃ" ಸಂಗೀತದಾಮೋದರಃ |

ಹಂಸಕೋಲಕ ಹಂಸಕೋಲಕ (ಪುಂ) ಸಂಭೋಗ ಕಾಲದ ಒಂದು ಒಂಥ.

ಹಂಸಕೂಟ ಹಂಸಕೂಟ (ಪುಂ) ಹಿಮಾಲಯದ ಶಿಖರ.

ಹಂಸಗತಿ ಹಂಸಗತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಂಸದಂತೆ ಗಂಭೀರವಾದ ನಡನೆ. (ವಿಂ) 2. ಹಂಸದಂತೆ ಗಂಭೀರವಾದ ನಡನೆ ಯುಳ್ಳ. ಹಂಸ ಇವ ಗತಿಯೆಸ್ಯ |

ಹಂಸಗದ್ಗದಾ ಹಂಸಗದ್ಗದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಂಸದಂತೆ ಮಧುರವಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವ ಹೆಂಗಸು.

ಹಂಸಗಾಮಿನಿ ಹಂಸಗಾಮಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಂಸದಂತೆ ಮಂದಗಮನವುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಹಂಸ ಇವ ಗಚ್ಛತಿ — ಗಮ್ಲ (ಗತೌ) "ಗಿಗಿ" (೩-೨-೨೮) | 2. ಬ್ರಹ್ಮನ ಪತ್ನಿ, ಸರಸ್ವತಿ. ಹಂಸೇನ ಗಚ್ಛತಿ |

ಹಂಸತೂಲ ಹಂಸತೂಲ (ಪುಂ) ಬಾತುಕೋಳಿ ಅಥವಾ ಹಂಸ ಪಕ್ಷಿಯ ರೆಕ್ಕೆಯ ಒಳಭಾಗದ ಮೈದುವಾದ ಗೆರಿ.



ಹೆಸತುಲಿಕಾ ಹಂಸತೂಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಂಸದ ಮೆದುವಾದ ಗರಿಯಂತೆ ಇರುವ ಹಾಸಿಗೆ, ಹಂಸದ ಮೆದುವಾದ ಗರಿಯಂತೆ ಇರುವ ಹತ್ತಿಯಿಂದ ತಯಾರಿಸಿದ ಹಾಸಿಗೆ.

ಹೆಸವಾಹನ ಹಂಸವಾಹನ (ನಂ) ಅಗುರು.

ಹೆಸನಾದಿನಿ ಹಂಸನಾದಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತಮ ಲಕ್ಷಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹೆಂಗಸು. ಹೆಸ ಇವ ನದತಿ — ಗದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) “ಗಿರಿನಿ:” (೩-೧-೧೩೪)। ಗಜದಂತೆ ಗಮನ ಕೋಕಿಲದಂತೆ ಕಂಠ ವಿಶಾಲವಾದ ನಿತಂಬ ಇವುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಹೆಂಗಸು ಹಂಸನಾದಿನಿ. “ಗಜೇಂದ್ರಗಮನಾ ತನ್ವೀ ಕೋಕಿಲಾನಾಂ ಸ್ತಾನಿವಿತಾ | ನಿತಂಬಗುರ್ವಿಣಿ ಯಾ ಸಾ ಕಥ್ಯತೇ ಹೆಸನಾದಿನಿ” ||

ಹೆಸಪದೀ ಹಂಸಪದೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಂಸಪಾದಿ ಲತೆ. ಹೆಸಸ್ಯೇವ ಪಾದಾ ಅಸ್ಯಾ: | -ಪಾದೀ -ಪಾದೀ.

ಹೆಸಮಾಲಾ ಹಂಸಮಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಂಸಪಕ್ಷಿಗಳ ಪಚ್ಚು, ಹಂಸಗಳ ತಂಡ. -ಗುಂಪು. ಹೆಸಾನಾಂ ಮಾಲಾ | “ತಾಂ ಹೆಸಮಾಲಾ: ಶರದೀವ ಗಜ್ಞಾಂ ಮಹಿಷಾಂ ನ ಕಮಿವಾತ್ಮಭಾಸ:” ಕುಮಾರಂ ೧-೩೦ |

ಹೆಸಮಾಷ ಹಂಸಮಾಷ (ಪುಂ) ಮಾಪಪರ್ಷ, ಕಾಡುದ್ದಿನ ಗಿಡ.

ಹೆಸರಥ ಹಂಸರಥ (ಪುಂ) ಹಂಸವೇ ವಾಹನವಾಗಿರುವ ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ. ಹೆಸೋ ರಥೋ ವಾಹನಂ ಯಸ್ಯ | -ವಾಹನ: -ವಾಹನ: “ತಪಂತಂ ತಪಸಾ ಲೋಕಾನ್ ಯಥಾ-ಭ್ರಾಪಿಹಿತಂ ರವಿಮ್ | ವೀಲಕಯ ವಿಸ್ಮಿತ: ಪ್ರಾಹ ಪ್ರಹಸನ್ ಹೆಸವಾಹನ:” ಭಾಗಂ ೭-೩-೧೬ |

ಹೆಸಲೋಹಕ ಹಂಸಲೋಹಕ (ನಂ) ಹಿತ್ತಾಳೆ, ಹೆಸ ಶ್ರೇಷ್ಠ ಲೋಹಮಿವ |

ಹೆಸೀ ಹಂಸೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣು ಹಂಸಪಕ್ಷಿ. ಹೆಸಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ “ಹೀಷ್” (೪-೧-೬೩) | “ಹೆಸೀವ ಕೃಷ್ಣಾ ತೇ ಕೀರ್ತಿ: ಸ್ವರ್ಗಜ್ಞಾಮವಗಾಹತೇ” ಚಂದ್ರಾಂ |

ಹೆಹೋ ಹಂಹೋ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಸಂಬೋಧನ. “ಹೆಹೋ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ! ಯದಿ ತವೋಪಾಧ್ಯಾಯ: ಸರ್ವಂ ಜಾನಾತಿ, ಜಾನಾತು ತಾವತ್ ಕಸ್ಯ ಚಂದ್ರೋಜಭಿಪ್ರೇತ ಇತಿ” ಮುಡ್ರಾಂ ೧ | 2. ಪ್ರಶ್ನೆ. 3. ನಿಂದೆ, ದೂಷಣೆ. 4. ದಂಭ, ಅಹಂಕಾರ.

ಹೆಹಕ ಹೆಹ್ಕ (ಪುಂ) ಅನೆಯನ್ನು ಕರೆಯುವುದು. ಹೆಹ್ ಇತ್ಯ-ವ್ಯಕ್ತಶಬ್ದೇನ ಕಾರ್ಯತಿ — ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) “ಕ:” (೩-೨-೩) |

ಹೆಜ್ಜಿಕಾ ಹಂಜಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭಾರಂಗಿ ಗಿಡ. “ಹೆಜ್ಜಿಕಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೀ ಪಚಾ ಭಾರ್ಗೀ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಯಶ್ವಿಹಿಕಾ” ಅಮಂ |

ಹೆಜ್ಜೆ ಹಂಜೆ (ಅವ್ಯಂ) (ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ) ಚೇಟಿಯ ಸಂಬೋಧನ. “ಹೆಜ್ಜೆ ಹೆಜ್ಜೆ ಹಲಾಹ್ಲಾನೇ ನೆಚಾಂ ಚೆಡೆ ಸಲೆಂ ಪ್ರತಿ” ಅಮಂ | “ಹೆಜ್ಜೆ ಮದೇಣ ಕಿಲಾಯಮಾಣಂ ಅತ್ತಾಣಂ ಅಜ್ಜ-ಉತ್ತಸ್ಸ ದಂಸಣೇ ಹಿಅಮಂ ತುವರೇದಿ” ಮಾಲಂ ೩ |

ಹೆಜ್ಜೆ ಹೆಜ್ಜೆ (ಪುಂ) ಮೂರುಹೆಜ್ಜೆ, ಕ್ರಿಯೆ ಮತ್ತು ವಿಕ್ರಯದ ಜಾಗ, ಅಂಗಡಿಯಿಡಿ. ಹೆಜ್ಜೆ—ಹೆಜ್ಜೆ (ದೀಪ್ತಿ) “ತ:” ಬಾಹುಂ | “ಹೆಜ್ಜೆಯಾರೋಹಿ ಜನ್ಯಂ ಗ್ರಾಮಮುಖಂ ಚ ತತ್” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಹೆಜ್ಜೆಯಾರಕ ಹೆಜ್ಜೆಯಾರಕ (ಪುಂ) ಅಂಗಡಿಯಿಡಿಯಲ್ಲಿ ಕದಿಯುವ ಜೋರ.

ಹೆಜ್ಜೆವಿಲಾಸಿನಿ ಹೆಜ್ಜೆವಿಲಾಸಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಖವೆಂಬ ಒಂದು ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ. ಹೆಜ್ಜೆ ವಿಲಾಸತಿ — ವಿ + ಲಸ (ಕ್ರೀಡಾಯಾಮ್) “ಗಿರಿನಿ:” (೩-೨-೭೮) |

ಹೆಜ್ಜೆ ಹೆಜ್ಜೆ (ಪುಂ) 1. ಬಲಾತ್ಕಾರ. ಹೆಜ್ಜೆ (ಪ್ಲೂತಿಶಾಠ್ಯಯೋ: ) “ಜ:” (೩-೩-೧೧೮) | “ಪ್ರಸಮಂ ತು ಬಲಾತ್ಕಾರೋ ಹೆಜ್ಜೆ:” ಅಮಂ | 2. ಹೆಜ್ಜೆಯೋಗ. “ಹೆಜ್ಜೆಯೋಗ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

ಹೆಜ್ಜೆಯೋಗ ಹೆಜ್ಜೆಯೋಗ (ಪುಂ) ಪ್ರಾಣಾಯಾಮಾದಿ ಕ್ರಿಯಾಬಲದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಪರಮಾತ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರರೂಪವಾದ ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿನಿರೋಧ. ಹೆಜ್ಜೆಯೋಗ ಬಲಾತ್ಕಾರೇಣ ಯೋಗ: ಚಿತ್ತವೃತ್ತಿನಿರೋಧ: | ಇದು ರಾಜಯೋಗವಿಲ್ಲದೆಯೂ ಸಾಧ್ಯವಾಗುವುದು. ಈ ಹೆಜ್ಜೆಯೋಗವು ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕಾದಿ ತಾಪತ್ರಯದಿಂದ ಸುತಪ್ತರಾದವರಿಗೆ ಅಶ್ರಯವಾಗಿರುವುದು. ಮಂತ್ರಯೋಗ ಕರ್ಮಯೋಗಾದಿಯುಕ್ತರಾದವರಿಗೆ ಈ ಹೆಜ್ಜೆಯೋಗವು ಆಧಾರವಾದ ಕರ್ಮಪ್ರಾಯವಾಗಿರುವುದು. “ಅಶೇಷತಾಪತಪ್ತಾನಾಂ ಸಮಾಶ್ರಯಮಥೋ ಹೆಜ್ಜೆ: | ಅಶೇಷಯೋಗಯುಕ್ತಾನಾಮಾಧಾರಕಮಥೋ ಹೆಜ್ಜೆ:” ಹೆಜ್ಜೆಂ ೧-೧೦ | ಅಣಮಾದಿ ಸಿದ್ಧಿಗಳನ್ನು ಅಥವಾ ಕೈವಲ್ಯವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವರು ಈ ಹೆಜ್ಜೆಯೋಗವನ್ನು ಬಹಳ ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ರಕ್ಷಿಸಿಕೊಂಡಿದ್ದರೆ ಅದು ಬಹಳ ವೀರ್ಯವತ್ತಾಗಿ ಸಿದ್ಧಿಯುಂಟಾಗುವುದು. ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸಿದರೆ ಅದು ನಿರ್ವೀರ್ಯವಾಗುವುದು. “ಹೆಜ್ಜೆವಿಜ್ಞಾ ಪರಂ ಗೋಪ್ಯಾ ಯೋಗಿನಾ ಸಿದ್ಧಿ-ಮಿಶ್ರತಾ | ಭವೇದ್ವಿರೈವತೀ ಗುಪ್ತಾ ನಿರ್ವಿರೈ ತು ಪ್ರಕಾಶಿತಾ” ಹೆಜ್ಜೆಂ ೧-೧೧ | ಹೆಜ್ಜೆಯೋಗಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ಪ್ರದೇಶ: ಸ್ವಧರ್ಮಪರಾಯಣನಾದ ರಾಜನ ರಾಜ್ಯಧಾರ್ಮಿಕದೇಶ (ಅನುಕೂಲವಾದ ಆಹಾರಾದಿ ಲಾಭಕ್ಕಾಗಿ) ಸುಭಿಕ್ಷದೇಶ (ಅನಾಯಾಸವಾಗಿ ಆಹಾರಲಾಭಕ್ಕಾಗಿ) ಯಾವರೀತಿಯ ಉಪದ್ರವವೂ ಇಲ್ಲದ (ಜೋರವ್ಯಾಘ್ರಾದಿ ತೊಂದರೆಯಿಲ್ಲದ) ಸುತ್ತಲೂ ನಾಲಾರು



ಮಾರುಗಳ ದೂರದವರೆಗೂ ಶಿಲೆ ಅಗ್ನಿ ಮತ್ತು ಜಲ ಇವು ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲದ ಮತ್ತು ವಿವಿಕ್ತವಾದ (ಕಲಹಾದಿಗಳಿಗೆ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದ) ಪ್ರದೇಶವು ಹಠಾಭ್ಯಾಸಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದುದು. "ಸುರಾಜ್ಯೇ ಧಾರ್ಮಿಕೇ ದೇಶೇ ಸುಖಿಕೇ ನಿರಪದ್ರವೇ | ಧನುಃಪ್ರಮಾಣಪರ್ಯಂತಂ ಶಿಲಾಗ್ನಿಜಲವಜಿತೇ || ಏಕಾಂತಮಠಿಕಾಮಯೇ ಸ್ಥಾತವ್ಯಂ ಹಠಯೋಗಿನಾ" ಹಠಂ ೧-೧೨ | ಅಧಿಕವಾದ ಆಹಾರ ಆಯಾಸಕರವಾದ ಕಾರ್ಯ ಹೆಚ್ಚು ಮಾತನಾಡುವುದು ರಾತ್ರಿಭೋಜನ ಜನರ ಸಹವಾಸ ಚಿತ್ತ ಚಾಂಚಲ್ಯ ಇವೆಲ್ಲವೂ ಯೋಗಾಭ್ಯಾಸಕ್ಕೆ ಪ್ರತಿಬಂಧಕಗಳು. "ಅತ್ಯಾಹಾರಃ ಪ್ರಾಸಾಶ್ಚ ಪ್ರಜಲ್ಪೋ ನಿಯಮಗ್ರಹಃ | ಜನಸಂಕ್ಲಾಶ್ಚ ಲೌಲ್ಯಂ ಚ ಷಡ್ಭಿರ್ಯೋಗೋ ವಿನಶ್ಯತಿ" ಹಠಂ ೧-೧೫ | ಉತ್ಸಾಹ (ವಿಷಯಾಸಕ್ತವಾದ ಮನಸ್ಸನ್ನು ನಿರೋಧಿಸುವೆನೆಂಬ ಪ್ರಯತ್ನ) ಸಾಹಸ (ಸಾಧ್ಯತ್ವಾಸಾಧ್ಯತ್ವಗಳನ್ನು ವಿಮರ್ಶಿಸಿ ಪ್ರವರ್ತಿಸುವುದು) ಧೈರ್ಯ (ಯಾವ ಜೀವವೂ ಇದು ಸಿದ್ಧಿಸುವುದು ಎಂಬ ಗುಂಡಿಗೆ) ತತ್ತ್ವಜ್ಞಾನ (ಪರಮಾತ್ಮ ಸತ್ಯತ್ವಜ್ಞಾನ) ಶಾಸ್ತ್ರ ಗುರುವಾಕ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವಾಸ ಜನತೆಯ ಸಹವಾಸಪರಿತ್ಯಾಗ ಇವುಗಳು ಸಿದ್ಧಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವುವು. "ಉತ್ಸಾಹಾತ್ಸಾಹಸಾಫ್ರಯತಿ ತತ್ವಜ್ಞಾನಾಂಚ ನಿಶ್ಚಯಾತ್ | ಜನಸಂಕ್ಲಾಪರಿಯಾಗಾತ್ ಷಡ್ಭಿರ್ಯೋಗಃ ಪ್ರಸಿದ್ಧಯತಿ" ಹಠಂ ೧-೧೬ |

ಹಡಿ ಹಡಿ (ಪುಂ) ಮರದ ಬೇಡಿ. "ನಿಗಡೋ ಲೋಹಬಂಧೇಸ್ತ್ರೀ ಹಡಿಃ ಕಾಂಠಸ್ಯ ಯನ್ತ್ರಣೇ" ಶಬ್ದಮಾಲಾ |

ಹುಡಾ ಹಂಡಾ (ಅವ್ಯಂ) (ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ) 1. ನೀಚಪಾತ್ರ ಸಂಬೋಧನ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ದೊಡ್ಡದಾದ ಮೃತ್ಪಾತ್ರ, ಮಣ್ಣಿನ ಗುಡಾಣ. 3. ಹಂಡೆ, ಕಡಾಯಿ.

ಹುಡಿಕಾ ಹಂಡಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಣ್ಣಿನ ಗುಡಾಣ, ದೊಡ್ಡದಾದ ಮೃತ್ಪಾತ್ರ.

ಹುಡೆ ಹಂಡೇ (ಅವ್ಯಂ) (ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ) ನೀಚಪಾತ್ರದ ಸಂಬೋಧನ. "ಹುಡೆ ಹುಜೆ ಹಲಾಹ್ಲಾನೇ ನಿಕಾಂ ಚೇದಿ ಸಖಿ ಪ್ರತಿ" ಅಮಂ |

ಹತ ಹತ (ವಿಂ) 1. ಮನಸ್ಸು ಕೆಟ್ಟಿರುವವನು, ಉತ್ಸಾಹ ಕುಗ್ಗಿರುವವನು. ಹನ್ಯತೇ ಸಮ—ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಹು: " (೩-೨-೧೦೨) | "ಕರೋ ವ್ಯಾಘ್ರನ್ವಯಾಃ ಪಿಬಿಸಿ ರತಿ-ಸರ್ವಸ್ವಮಧರಂ ವಯಂ ತತ್ವಾನ್ವೇಷಾನ್ಮಧುಕರ ಹತಾಸ್ತ್ವಂ ಖಲು ಕೃತೀ" ಶಾಕುಂ ೧-೨೦ | 2. ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟ. "ಹತೇ ಹಿಡ್ವರಿಪ್ರಣಾ ರಾಜಿ ದ್ವೇಷಾತುರೇ ಯುಧಿ" ಮಾಘಂ ೨-೬೦ | 3. ಗುಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹೆಚ್ಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಗಣನಾ ನ ಬಭೂವ ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷೇ ಹತಭಗನಾದಿ-ವಿಕಲ್ಪಿತೇಷು ತಸ್ಮಿನ್" ಯಾದಂ ೧೫-೧೨೪ | 4. ದುರದೃಷ್ಟವುಳ್ಳ, ಭಾಗ್ಯರಹಿತ. "ಅನುಶಯದ್ವಾಪಾದಂ ಹತಹೃದಯಂ

ಸಂಪ್ರತಿ ವಿಬುದ್ಧಮ್" ಶಾಕುಂ ೬-೪ | 5. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಲಂಘಸ್ತೇವಪಿ ಚಕ್ಷುರಾದಿಭು ಹತಾಃ ಸ್ವಾರ್ಥವಿಬೋಧಕಿರ್ಯಾಃ" ಮುದ್ರಾಂ ೩-೧ | 6. ಅಡ್ಡಿಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. 7. ಖಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. (ನಂ) 8. ಗುಣನ, ಹೆಚ್ಚಿಸುವಿಕೆ. 9. ಖಡೆ, ತೊಂದರೆ. 10. ಅಡ್ಡಿ, ತಡೆ. 11. ವಧೆ, ಕೊಲೆಮಾಡುವಿಕೆ ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) ಹನ ಭಾವೇ "ಹು: " (೩-೩-೧೧೪) |

ಹತಕ ಹತಕ (ವಿಂ) ನೀಚ. ಹತ ಏವ ಹತಕಃ | "ದुरಾತ್ಮನ್ ದುರ್ಯೋಧನಹತಕ, ಆಗಾಂಕ್ಷಾಗಾಂಕ್ಷ | ಅಪನಯಾಮಿ ತೇ ಗದಾಕೌಶಲ-ಸಂಭೂತಂ ಭುಜದರ್ಪಂ ಶಿಲೀಮುಖಾಸಾರೇಣ" ವೇಣೀಂ ೬ |

ಹತತ್ವಿಡ್ (ಷ) ಹತತ್ವಿಟ್ (ಷ್) (ವಿಂ) ಕುಂದಿದ ಕಾಂತಿಯುಳ್ಳ, ಕಡಮೆಯಾದ ಪ್ರಕಾಶವುಳ್ಳ. ಹತಾಃ ತ್ವಿಷಃ ಯಸ್ಯ | "ನಿಶ್ಚಿಂತದೀಪಾಃ ಸಹಸಾ ಹತತ್ವಿಷೋ ಬಭೂವುರಾಲೇಖ್ಯ-ಸಂಪಿತಾ ಇವ" ರಘುಂ ೩-೧೫ |

ಹತವೀರ್ಯ ಹತವೀರ್ಯ (ವಿಂ) ಕುಂದಿದ ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ, ಶಕ್ತಿಯು ಕಡಮೆಯಾಗಿರುವ. ಹತಂ ವೀರ್ಯಂ ಯಸ್ಯ | "ಮನ್ತ್ರೇಣ ಹತವೀರ್ಯಸ್ಯ ಫಣಿನೋ ದೇವ್ಯಮಾಶ್ರಿತಃ" ಕುಮಾರಂ ೨-೨೧ |

ಹತಭಾಗ್ಯ ಹತಭಾಗ್ಯ (ವಿಂ) ದುರದೃಷ್ಟದವನು, ಭಾಗ್ಯ ಶೂನ್ಯ. ಹತಂ ಭಾಗ್ಯಂ ಯಸ್ಯ |

ಹತಲಕ್ಷಣ ಹತಲಕ್ಷಣ (ವಿಂ) ಶುಭಲಕ್ಷಣಗಳಿಲ್ಲದವನು, ಶುಭಸೂಚಕವಾದ ಚಿಹ್ನೆಗಳಿಲ್ಲದವನು. ಹತಂ ಲಕ್ಷಣಂ ಯಸ್ಯ |

ಹತಸಂಪದ್ ಹತಸಂಪದ್ (ವಿಂ) ಐಶ್ವರ್ಯವನ್ನು ಕಳೆದು ಕೊಂಡಿರುವ, ಬಡತನ (ದಾರಿದ್ರ್ಯ)ಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗಿರುವ. ಹತಾ ಸಂಪದ್ ಯಸ್ಯ |

ಹತಸಾಧವಸ ಹತಸಾಧವಸ (ವಿಂ) ಭಯವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದವನು, ಭಯವಿಲ್ಲದವನು. ಹತಂ ಸಾಧವಸಂ ಯಸ್ಯ |

ಹತಾಶ ಹತಾಶ (ವಿಂ) 1. ಆಶೆಯ ಭಂಗ ಹೊಂದಿದವನು, ಆಸೆಯಿಲ್ಲದವನು, ಆಸೆಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟವನು. ಹತಾ ಆಶಾ ಯಸ್ಯ | 2. ದಯೆಯಿಲ್ಲದವನು, ಕರುಣೆಯಿಲ್ಲದವನು. 3. ದುರ್ಜನ, ಚಾಡಿಕೋರ. 4. ಫಲ ಕೊಡದಿರುವ, ಬೆಳೆಯಲಾಗದ, ಬಂಜರಾಗಿರುವ. "ಹತಾಶೋ ನಿರ್ದಯೇ ವಾಶಾರಹಿತೇ ಪಿಶುನೇಷು ಚ" ಮೇದಿಂ |

ಹತಿ ಹತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಪಕರ್ಷ, (ಗುಣದಲ್ಲಿ) ಕಡಮೆಯಾಗಿರುವುದು, ಹೀನವಾಗಿರುವುದು. ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಹಿನ್" (೩-೩-೧೪) | 2. ವಧೆ, ಹತ್ಯೆ, ಕೊಲ್ಲುವುದು. ಕೊಲೆಮಾಡುವುದು. 3. ನಾಶ, ಅಳಿವು. "ಕರ್ಮಾಣ್ಯಾರ-ಭಮಾಣಾನಾಂ ದುಃಖಹತ್ಯೇ ಸುಖಾಯ ಚ | ಪಶ್ಯೇತ್ಪಾಕವಿಪರ್ಯಾಸಿಂ ಮಿಥುನೀ ಚಾರಿಣಾಂ ನೃಣಾಮ್" ಭಾಗಂ ೧೧-೩-೧೮ | 4. ಏಟು,



ಹೊಡೆತ, ಪೆಟ್ಟು. 5. ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದು, ವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವುದು, ಅಧಿಕಪಡಿಸುವುದು.

ಹನ್ತು ಹೆತ್ತು (ಪುಂ) 1. ಪಾಠ್ಯ, ರೋಗ. ಹನ್ತಿ ಶರೀರम्—ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಕ್ತು:" (ಛಂ ೩-೩೦). 2. ಅಸ್ತು, ಶಸ್ತ್ರ, ಆಯುಧ. ಹನ್ತುರ್ವ್ಯಾಧಿ: ಶಸ್ತ್ರಂ ಚ" ಸಿಂ ಕೌಂ.

ಹತ್ಯಾ ಹತ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೊಲ್ಲುವುದು, ಕೊಲೆಮಾಡುವುದು. ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಯತ್" (೩-೧-೧೦೮). ನಿರೂಪದಂ ಹತ್ಯೇತಿ ತು ಅಸಾಧ್ಯೇವ — ಬಾಲಮನೋರಮಾವ್ಯಾಖ್ಯಾ. ಸೋಪದ ಹನ ಧಾತುವಿನ ರೂಪ ಹತ್ಯಾ. "ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯಾ ಸುರಾಪಾನಂ ಸ್ತೇಯಂ ಗುರ್ವಜ್ಞನಾಗಮ: | ಮಹಾನ್ತಿ ಪಾತಕಾನ್ಯಾಹು: ಸಂಸಂಗಂಶ್ರಾಪಿ ತೆ: ಸಹ" ||

ಹಥ ಹಥ (ಪುಂ) ದುಃಖಗೊಂಡವನು, ಬೇದವುಳ್ಳವನು, ಉತ್ಸಾಹ ಕುಗ್ಗಿದವನು. ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಕಥ:" (ಛಂ ೨-೨).

ಹವನ ಹವನ (ನಂ) ಪುರೀಷೋತ್ಸರ್ಗ, ಮಲವಿಸರ್ಜನೆ. ಹದ (ಪುರೀಷೋತ್ಸರ್ಗ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫).

ಹದಾ ಹದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೇಷ ಮೊದಲಾದ ಲಗ್ನಗಳ ತ್ರಿಂಶಶಂಶ (ಮೂವತ್ತನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ.)

ಹನ - ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ: (ಅದಾಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) |

|                      |             |           |
|----------------------|-------------|-----------|
| ಹನ್ತಿ                | ಹತ:         | ಛನಂತಿ     |
| ಹಂಸಿ                 | ಹಥ:         | ಹಥ        |
| ಹನ್ಮಿ                | ಹನ್ವ:       | ಹನ್ಮ:     |
| ಜಘಾನ್                | ಜಘನತು:      | ಜಘ್ನು:    |
| ಜಘನಿಷ್ಯ  <br>ಜಗನ್ಯ } | ಜಘನಿಷ್ಯು:   | ಜಘನ್      |
| ಜಘಾನ್  <br>ಜಘನ್ }    | ಜಘನ್ವ       | ಜಘನ್ಮ     |
| ಹಂತಾ                 | ಹಂತಾರಿ      | ಹಂತಾರ:    |
| ಹನಿಷ್ಯತಿ             | ಹನಿಷ್ಯತ:    | ಹನಿಷ್ಯಂತಿ |
| ಹಂತು  <br>ಹಂತಾತ್ }   | ಹಂತಾಮ್      | ಛಂತು      |
| ಜಹಿ  <br>ಹಂತಾತ್ }    | ಹಂತಮ್       | ಹಂತ       |
| ಹನಾನಿ                | ಹನಾವ        | ಹನಾಮ      |
| ಅಹನ್                 | ಅಹಂತಾಮ್     | ಅಛಂತನ್    |
| ಹನ್ಯಾತ್              | ಹನ್ಯಾತಾಮ್   | ಹನ್ಯು:    |
| ವಙ್ಯಾತ್              | ವಙ್ಯಾಸ್ತಾಮ್ | ವಙ್ಯಾಸು:  |
| ಅವಧಿತ್               | ಅವಧಿಷ್ಠಾಮ್  | ಅವಧಿಷ್ಠು: |
| ಅಹನಿಷ್ಯತ್            | ಅಹನಿಷ್ಯತಾಮ್ | ಅಹನಿಷ್ಯನ್ |

1. ಕೊಲ್ಲು, ಕೊಲೆಮಾಡು. "ಹನ್ತಿ ನೋಪಶಯಸ್ಥೋಽಪಿ ಶಯಾಲ್ಮುಗಯುಗ್ಮಗಾನ್" ಮಾಘಂ ೨-೮೦. 2. ಹೊಡೆ, ಪೆಟ್ಟು ಕೊಡು. "ಜಘಾನ್ತಾವಿಷ್ಯ ವದನಂ ನಿಯಾತಿ ಭಿತ್ವೋದರಂ ದ್ರುತಮ್" ಮೃದ್ವಿಂ ೮-೫. 3. ನಾಶಪಡಿಸು, ಅಳಿದುಹಾಕು. "ಕಪಪಕ್ಷ ಇವೇಂದವೀ: ಕಲಾ: ಸಕಲಾ ಹನ್ತಿ ಸ ಶಕ್ತಿಸಂಪದ:" ಕಿರಾಂ ೨-೩೭. ಆಡ್ ಪೂರ್ವಕ ಹನ ಧಾತುವು ಅತ್ಯಂತೇಪದಿಯಾಗುವುದು.

ಆಹತೇ ಆಘಾತೇ ಆಘನತೇ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಆಜಘ್ನೇ ಆಜಘ್ನಾತೇ ಆಜಘ್ನವಿರೇ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕರ್ಮಣಿ:—ಹನ್ಯತೇ | ಜಘ್ನೇ | ಘಾನಿತಾ, ಹಂತಾ | ಘಾನಿಷ್ಯತೇ, ಹನಿಷ್ಯತೇ | ಹನ್ಯತಾಮ್ | ಆಹನ್ಯತ | ಹನ್ಯತ | ಘಾನಿಷಿಷ್ಠ, ವವಿಷಿಷ್ಠ | ಅಘಾನಿ, ಅವಧಿ | ಅಘಾನಿಷ್ಯತ | ಣಿಚಿ:—ಘಾತಯತಿ, ಘಾತಯತೇ | ಘಾತಯಾ—ಚಕಾರ, —ಚಕ್ರೇ, —ಬಭೂವ, —ಆಸ | ಘಾತಯಿತಾ | ಘಾತಯಿಷ್ಯತಿ, —ತೇ | ಘಾತಯತು, —ತಾಮ್ | ಅಘಾತಯತ್, —ತ | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಸನಿ:—ಜಿಘಾಂಸತಿ | ಜಿಘಾಂಸಾಂ ಚಕಾರ, —ಬಭೂವ, —ಆಸ | ಜಿಘಾಂಸಿತಾ | ಜಿಘಾಂಸಿಷ್ಯತಿ | ಜಿಘಾಂಸತು | ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತು:—ಹಂತವ್ಯ: | ಹನನೀಯ: | ವಙ್ಯ:, ಘಾತಯ: | ಹತ: | ಹತವಾನ್ | ಛಂತು, ಛಂತಿ | ಹನಿಷ್ಯತು, —ಂತಿ | ಹಂತುಮ್ | ಹಂತಮ್ | ಹನನಮ್ | ಹಂತಾ | ನಿಹತ್ಯ | ಘಾತಂ ಘಾತಮ್ | ಹಂತಾ ಹಂತಾ |

ಹನ ಧಾತುವಿಗೆ ಉಪಸರ್ಗಗಳ ಯೋಗದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಅರ್ಥಭೇದಗಳು:

(1) ಅಭಿ + ಹನ = ಅಭಿಹನ್ತಿ | ಅಭಿಘಾತ: | ಏಟು, ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಹೊಡೆತ. "ಅಭಿಹನ್ತಿ ಹಂತ ಕಥಮೇಷ ಮಾಧವಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೧-೩೯. "ತಥಾಭಿಘಾತಾದಿವ ಲಗ್ನಪಕ್ಷೇ ಧುನ್ವನ್ ಮುಹು: ಪ್ರೋತಘನೇ ವಿಷಾಣೇ" ಕುಮಾರಂ ೭-೪೯.

(2) ಅವ + ಹನ = ಅವಹನ್ತಿ | ಅವಹನನಮ್ | ಬಡ್ತಿ ಮೊದಲಾದವುಗಳ ಹೊಟ್ಟನ್ನು ತೆಗೆಯಲು ಕುಟ್ಟುವುದು. ಬ್ರಿಹೀನವಹನ್ತಿ | ಅವಹನನಾಯೋಲೂಲಮ್ |

(3) ಆ + ಹನ = ಆಹತೇ | ಆಜಘ್ನೇ | ಆಘಾತ: | 1. ಏಟು, ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳ ಸಂಬಂಧದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಹೊಡೆತ. "ಆಜಘ್ನೇ ವಿಷಮವಿಲೋಚನಸ್ಯ ವಕ್ಷ:" ಕಿರಾಂ ೧೭-೬೩. "ಅಮ್ಯಸ್ಯಂತಿ ತಥಾಘಾತಂ ನಿಜಿತಂ-ರಾವತಾ ಗಜಾ:" ಕುಮಾರಂ ೨-೫೦. 2. ಹೊಡೆಯುವುದು, ಬಡಿಯುವುದು. "ತ್ವದ್ಗಮ್ಭೀರಛವನಿಷು ಶತಕೈ: ಪುಷ್ಕರೇಷ್ವಾ-ಹತೇಷು" ಮೇಘಂ ೨-೩ |



(4) ಪ್ರತಿ + ಆ + ಹನ = ಪ್ರತ್ಯಾಹಂತಿ । ಪ್ರತ್ಯಾಹತ: । ಪ್ರತಿಬಂಧಿಸು, ತಡೆ, ಅಡ್ಡಿಯುಂಟುಮಾಡು. "ಪ್ರತ್ಯಾಹತಾಸ್ತೋ ಗಿರಿಶಪ್ರಭಾವಾತ್ ಆತ್ಮನೈವಜ್ಞಾಂ ಶಿಥಿಲೋಚಕಾರ" ರಘುಂ ೨-೪೧ ।

(5) ವಿ + ಆ + ಹನ = ವ್ಯಾಹಂತಿ । ವ್ಯಾಹತ: । 1. ವ್ಯರ್ಥಪಡಿಸು. "ಮಹೋಮಿಭಿರ್ವ್ಯಾಹಿತವಾಙ್ಮಿತಾರ್ಥ:" ಮಾಘಂ ೩-೪೦ । 2. ಭಂಗಪಡಿಸು, (ಅಡ್ಡಿಯನ್ನು) ಮುರಿ, ಉಲ್ಲಂಘಿಸು. "ರಾಜ್ಞಿ ರಾಜ್ಯಂ ವಿಧಿವದಶಿಷತ್ ಭರ್ತುರವ್ಯಾಹತಾಜ್ಞಾ" ರಘುಂ ೧೯-೫೭ ।

(6) ಉ + ಹನ = ಉಹಂತಿ: । ಉಹತ: । 1. ಗರ್ವ ಹೊಂದು, ದರ್ಪ ತೋರಿಸು. "ಮದೋದ್ಧತಾ: ಪ್ರತ್ಯನಿಲಂ ವಿಚೇಕ್ಷ್ಯನಸ್ಥಲೋರ್ಮರಪತ್ರಮೋಕ್ಷಾ:" ಕುಮಾರಂ ೩-೩೧ । 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರು, ಮೇಲಕ್ಕೆ ನೆಗೆ. "ನ ಲಕ್ಷ್ಯಯಾಮಾಸ ಮಹಾಜನಾನಾಂ ಶಿರಾಂಸಿ ನೇವೋದ್ಧತಿಮಾಜಗಾಮ" ಮಾಘಂ ೩-೨೮ । 3. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತು. "ಲಾಙ್ಗೂಲಮುದ್ಧತಂ ಧ್ರುವನ್" ಮೃದ್ವಿಂ ೧-೭ । 4. ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ. "ಉದ್ಧಾತ: ಪ್ರಣವೋ ಯಾಸಾಮ್" ಕುಮಾರಂ ೨-೧೨ ।

(7) ಉ + ಉ + ಹನ = ಉಪೋದ್ಧಾತ: । 1. ಪ್ರಾರಂಭಿಸು, ಮೊದಲುಮಾಡು. 2. ಸಾಧನೆ, ಸಲಹೆರಹೆ, ಉಪಾಯ. "ತತ್ಪ್ರತಿಚ್ಛಂದಕಮುಪೋದ್ಧಾತೇನ ಮಾಧವಾಂತಿಕಮುಪೇಯಾತ್" ಮಾಲತೀಂ ೧ ।

(8) ನಿ + ಹನ = ನಿಹಂತಿ । 1. ಕೊಲ್ಲು, ಕೊಲೆ ಮಾಡು, ನಾಶಪಡಿಸು. "ನಿಹಂತ್ಯರೀನೇಕಪದೇ ಯ ಉದಾತ್ತ: ಸ್ವರಾನಿವ" ಮಾಘಂ ೨-೯೫ । 2. ಹೊಡೆ, ಎಟುಕೊಡು. "ತಾನೇವ ಸಾಮರ್ಪತಯಾ ನಿಜಙ್ತು:" ರಘುಂ ೭-೪೪ । 3. ನಿವಾರಿಸು, ಹೋಗಲಾಡಿಸು. "ಬದ್ಧಾಂ ಬದ್ಧಾಂ ಭಿತ್ತಿಶಙ್ಕಾಮಮುಷ್ಮಿನ್ ಆವಾನಾವಾನ್ಮಾತರಿಶ್ವಾ ನಿಹಂತಿ" ಕಿರಾಂ ೫-೩೬ । 4. ಎದುರಿಸು, ತಡೆಗಟ್ಟು. "ವಚಸೇವ ತಯೋರ್ವಾಕ್ಯಮಸ್ತ್ರಮಸ್ತ್ರೇಣ ನಿಜಂತೋ:" ರಘುಂ ೧೨-೯೨ । 5. ಹೊಡೆ, ಬಡಿ, ಬಾರಿಸು. "ಕಮ್ಬುನಥ ಸಮಾದಹ್ಮು: ಕೋಣೈರೈರ್ಯೋ ನಿಜಙ್ತೀರೆ" ಮೃದ್ವಿಂ ೧೪-೨ ।

(9) ಪ್ರತಿ + ಹನ = ಪ್ರತಿಹಂತಿ । ಪ್ರತಿಹತ: । 1. ತಡೆ ಗಟ್ಟಿ, ಪ್ರತಿಬಂಧಿಸು. "ರಮ್ಯಾಸ್ತಪೋಷನಾನಾಂ ಪ್ರತಿಹತವಿಧ್ನಾ: ಕ್ರಿಯಾ: ಸಮವಲೋಕಯ" ಶಾಕುಂ ೧-೧೩ । 2. ನಾಶ ಪಡಿಸು, ಹೋಗಲಾಡಿಸು, ನಿವಾರಿಸು. "ಯದ್ವತ್ ಪಾಪಂ ಪ್ರತಿಜಹಿ ಜಗನ್ನಾಥ ನಮ್ರಸ್ಯ ತನ್ಮೇ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೩ ।

(10) ಸಮ್ + ಹನ = ಸಂಹತ: । ಸಂಹತಿ: । ಗುಂಪು ಕಟ್ಟು, ಒಟ್ಟುಗೂಡಿಸು, ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿಸು. "ಹೂತ ಏವ ಹಿ ಸಂಧತೇ ಭಿನ್ನತ್ಯೇವ ಚ ಸಂಹತಾನ್" ಮನುಂ ೭-೬೬ ।

"ನ ಸಂಹತಾಸ್ತಸ್ಯ ನ ಮಿಶ್ರವೃತ್ತಯ: ಪ್ರಿಯಾಣಿ ವಾಙ್ಮನ್ಯಸುಭಿ: ಸಮೀಹಿತುಮ್" ಕಿರಾಂ ೧-೧೯ ।

ಹನ ಹನ (ಪುಂ) ಕೊಲ್ಲುವವನು, ಕೊಲೆಮಾಡುವವನು ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । ವಾ ದ್ವಿತ್ವಮ್ ಅಮ್ಯಾಸಸ್ಯ ಆಕ್ ಚ । ಅಮ್ಯಾಸಸ್ಯ ಘತ್ವಂ ಉತ್ತರಪದಸ್ಯ ಕೃತ್ವಮ್ (೭-೩-೫೫) । ಧನಾಧನ: । ಪಕ್ಷೇ ಹನ: ।

ಹನನ ಹನನ (ನಂ) ಕೊಲ್ಲುವುದು, ಕೊಲೆಮಾಡುವುದು. ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । "ರಕ್ಷೋವಧೋ ಜಲಧಿಬಂಧನಮಸ್ತ್ರಪೂಗೇ: ಕಿಂ ತಸ್ಯ ಶತ್ರುಹನನೇ ಕಪಯ: ಸಹಾಯಾ:" ಭಾಗಂ ।

ಹನು ಹನು (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ನಖವೆಂಬ ಒಂದು ಸುಗಂಧದ್ರವ್ಯ. ಹಂತಿ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಃ" (೩ಂ ೧-೧೦) । 2. ರೋಗ, ವ್ಯಾಧಿ. 3. ಮೃತ್ಯು. 4. ಅಸ್ತು. (ಪುಂಸ್ತ್ರೀಂ) 5. ಕಪೋಲದ — ಕೆನ್ನೆಯ ಕೆಳಭಾಗ. "ಹನುಹಂತ್ರಿ-ವಿಲಾಸಿನ್ಯಾಂ ಮೃತ್ಯಾವಸ್ತ್ರೇ ಗದೇ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ । ದ್ವಯೋ: ಕಪೋಲಾವಯವೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಹನುಮತ್ ಹನುಮತ್ (ಪುಂ) ಹನುಮಂತ, ಅಂಜನೇಯ. ಪ್ರಶಸ್ತಾ ಹನುರಸ್ಯಾಸ್ತಿ — ಹನು ಪ್ರಶಂಸಾಂ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪) । "ಅನ್ಯೇಷಾಮಪಿ ದೃಶ್ಯತೇ (೬-೩-೧೩೭) ಇತಿ ಸೂತ್ರೇಣ ವಾ ದೀರ್ಘ: । ಹನುಮಾನ್ ಹನೂಮಾನ್. "ಮಾಗೋ" ಸಮ್ಯಕ್ಮಮ ಹನುಮತಾ ವರ್ಣಿತೌ ದ್ವೌ ತಯೋಸ್ತೇ ಸಹ್ಯಾಸತ್ರೋಽಪ್ಯನಥಸುಭಗ: ಪಶ್ಚಿಮೋ ನಿದ್ರಾವರ್ಭ:" ಹಸಂ ೧-೧೮ । ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧದ ಪ್ರಹಾರದಿಂದ ಉಂಟಾದ ವೀರತ್ವಸೂಚಕ ಗಾಯದ ಗುರುತಿರುವುದರಿಂದ ಹನುಮಂತನೆಂಬ ಹೆಸರಾಯಿತು. "ಮತ್ಕರೋತ್ಸೃಷ್ಟವಜ್ರೇಣ ಹನುಸ್ತಸ್ಯ ತದಾ ಕತ: । ನಾಮ್ನೇಷ ಹರಿಶಾರ್ದೂಲ: ಭವಿತಾ ಹನುಮಾನಿತಿ" ರಾಮಾಂ ಉತ್ತರಕಾಂಡ: ।

ಹನು ಹನೂ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಪೋಲದ — ಕೆನ್ನೆಯ ಕೆಳಭಾಗ. ಹನು ಪಕ್ಷೇ ದೀರ್ಘ: ।

ಹನುಮತ್ ಹನೂಮತ್ (ಪುಂ) ಹನುಮಂತ, ಅಂಜನೇಯ. ಪ್ರಶಸ್ತಾ ಹನುರಸ್ಯಾಸ್ತಿ — ಹನು ಪ್ರಶಂಸಾಂ "ಮತುಪ್" (೫-೨-೯೪) । "ತಾ ಹನುಮಾನ್ ಪರಾಕುರ್ವನ್ ಅಗಮತ್ ಪುಷ್ಪಕಂ ಪ್ರತಿ" ಮೃದ್ವಿಂ ೮-೫೦ । "ಹನುಮಾನಪಿ ವಿಕ್ರಾಂತ: ಸರ್ವಂ ಶುಶ್ರಾವ ತತ್ತ್ವತ: । ಸೀತಾಯಾಸ್ತ್ರಿಜಟಾಯಾಶ್ಚ ರಾಕ್ಷಸೀನಾಂ ಚ ತರ್ಜನಮ್" ರಾಮಾಂ ।

ಹನುಷ ಹನೂಷ (ಪುಂ) ರಾಕ್ಷಸ. ಹಂತಿ ಮಾನುಷಾನ್ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) "ಞಪ್" (೩ಂ ೪-೭೩) । ಹನುಷೋ ರಾಕ್ಷಸ: ಸಿಂ ಕೌಂ । "ಸಂಖ್ಯಾಬಲೋ ರಾತ್ರಿಮತೋ ಹನುಷ: ಶಮನೀಷದ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।



**ಹಂತ ಹಂತ** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಹಂಃ, ಸಂತೋಷ. ಹಂತಿ—ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) “ತ:” ಬಾಹುಂ 1. 2. ಖೇದ. ವ್ಯಸನ, ದುಃಖ. “ಭವಾದೃಶಾಶ್ವೇದಧಿಕುರ್ವತೇ ರತಿ ನಿರಾಶ್ರಯಾ ಹಂತ ಹತಾ ಮನಸ್ವಿತಾ” ಕಿರಾಂ 1-43. 3. ಅನುಕಂಪ, ದಯೆ. “ಹಂತ ತೇ ಕಥಯಿಷ್ಯಾಮಿ ವಿಭೂತೀರಾತ್ಮನ: ಶುಭಾ:” ಗೀತಾ 10-19. 4. ಸಂಭ್ರಮ, ಸಡಗರ. 5. ಆಯಾಸ, ದಣವು. 6. ವಾಕ್ಯಾರಂಭ. “ಹಂತ ಹರ್ಷಾನುಕಂಪಾಢಾಂ ವಾಕ್ಯಾರಮ್ಭವಿಷಾದಯೋ:” ಅಮಂ 1. 7. ನಿಶ್ಚಯ. 8. ದಾನ. “ಹಂತ ದಾನೇನುಕಂಪಾಢಾಂ ವಾಕ್ಯಾರಮ್ಭವಿಷಾದಯೋ: ನಿಶ್ಚಯೇ ಚ ಪ್ರಮೋದೇ ಚ” ಹೇಮಂ 1.

**ಹಂತಕಾರ ಹಂತಕಾರ** (ಪುಂ) 1. ಅತಿಥಿಗೆ ಕೊಡುವ ದಾನ. 2. “ಹಂತ” ಎಂದು ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗುವುದು.

**ಹಂತು ಹಂತು** (ಪುಂ) 1. ಕೊಲೆ, ವಧೆ. 2. ಮೃತ್ಯು. 3. ವಿನಾಶ, ಅಳಿವು.

**ಹಂತು ಹಂತು** (ವಿಂ) 1. ಕೊಲ್ಲುವವನು, ಕೊಲೆಮಾಡುವವನು, ನಾಶಪಡಿಸುವವನು. ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) “ತೃ” (3-1-133). “ತೃ:ಸಪ್ತಕೃತ್ವೋ ಜಗತೀಪತೀನಾಂ ಹಂತಾ ಗುರ್ಯಸ್ಯ ಸ ಜಾಮದಗ್ನಯ:” ಕಿರಾಂ 3-14. 2. ಹೊಡೆಯುವವನು. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಜಿಪ್” (4-1-4). -ಸ್ತ್ರೀ-ಶ್ರು.

**ಹನ್ತ ಹನ್ತ** (ವಿಂ) 1. ಪುರೀಷದ ವಿಸರ್ಜನೆ ಮಾಡಿದವನು, ಮಲವಿಸರ್ಜನೆ ಮಾಡಿದವನು. ಹದ (ಪುರೀಷೋತ್ಸರ್ಗೇ) “ಕ್ತ:” (3-4-32). 2. ವಿಸರ್ಜನೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಮಲ. ಹೃತೇ ಸ್ಮ—ಹದ (ಪುರೀಷೋತ್ಸರ್ಗೇ) “ಕ್ತ:” (3-2-102). “ಗುನಂ ಹನ್ತೇ” ಅಮಂ 1.

**ಹನ್ಯಮಾನ ಹನ್ಯಮಾನ** (ವಿಂ) 1. ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಡುವ, ಕೊಲೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ಹೊಡೆಯಲ್ಪಡುವ. ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) ಕಮಂ “ಶಾನ್ತ” (3-2-124). “ಅಜೌ ನಿಯ: ಶಾಶ್ವತೋಽಯಂ ಪುರಾಣೌ ನ ಹನ್ಯತೇ ಹನ್ಯಮಾನೇ ಶರೀರೇ” ಗೀತಾಂ 2-30.

**ಹಮ್ ಹಮ್** (ಅವ್ಯಂ) 1. ಕೋಪದಿಂದ ಆಡುವ ಮಾತು. 2. ಅನುನಯ, ಅನುಸರಣೆ. “ಹಮ್ ಕೃಪಾಕಾವನುನಯೇ” ಮೇದಿಂ 1.

**ಹಮ್ಬಾ ಹಮ್ಬಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋವಿನ ಶಬ್ದ, ಆಕಳುವಿನ ಕೂಗು. “ಕ್ರೋಧರಕ್ತೇಷಣಾ ಸಾ ಗೌ: ಹಮ್ಬಾರವಧನಸ್ವನಾ. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಸ್ಯ ತತ್ಸೇನ್ಯಂ ವ್ಯದ್ರಾವಯತ ಸರ್ವತ:” ಭಾಂ ಆದಿಂ 1.

**ಹಯ ಹಯ** (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವ. ಕುದುರೆ. ಹಯ (ಗತೌ) “ಅವ” (3-1-134). “ಹಯಾ ಜಿಹೇಷಿರೇ ಹರ್ಷಾದ್ಗಂಭೀರಂ

ಜಗಜುರ್ಗಜಾ:” ಮಡಿಂ 14-4. 2. ಸವ್ಯ (7) ಸಂಖ್ಯೆ. “ಹಯದಶಭಿರ್ನಜೌ ಭಜಜಲಾಗತಿ ನತ್ಕುಟಕಮ್” ವೃಂ 20.

**ಹಯಗನ್ಧಾ ಹಯಗಂಧಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಶ್ವಗಂಧಿ ಗಿಡ. ಹಯಸ್ಯೇವ ಗಂಧೋ ಯಸ್ಯಾ: 1. 2. ಅಜವಾನ, ಓಮ, ವಾದಕ್ಕಿ.

**ಹಯಗ್ರೀವ ಹಯಗ್ರೀವ** (ಪುಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಒಂದು ಅವತಾರ. ಹಯಸ್ಯ ಗ್ರೀವೇವ ಗ್ರೀವಾ ಯಸ್ಯ 1. ಮಧುಕೈಟಭ ರಾಕ್ಷಸರು ಅವಹರಿಸಿದ ವೇದವನ್ನು ಉದ್ಧಾರಮಾಡಲು ಮಹಾವಿಷ್ಣುವು ಹಯಗ್ರೀವಾವತಾರವನ್ನು ತಾಳಬೇಕಾಯಿತು. ಪರಮೇಶ್ವರಿಯು ನಾಲ್ಕು ವೇದಗಳನ್ನು ಸುಂದರವಾದ ನಾಲ್ಕು ವಿಗ್ರಹಗಳನ್ನಾಗಿ ಸೃಷ್ಟಿಸಲು ಮಧುಕೈಟಭ ರಾಕ್ಷಸರು ಆ ವಿಗ್ರಹರೂಪವಾದ ವೇದಗಳನ್ನು ಅವಹರಿಸಿ ಪಾತಾಳಕ್ಕೆ ಕೊಂಡೊಯ್ದರು. ಬ್ರಹ್ಮನು ಆಗ ಬಹಳ ದುಃಖಿತನಾಗಿ ಮಹಾವಿಷ್ಣುವನ್ನು ಸ್ತುತಿಸಲಾಗಿ ಪರಮಾತ್ಮನು ಹಯಗ್ರೀವಾವತಾರವತ್ತಿ ಆ ರಾಕ್ಷಸರನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ವೇದಗಳನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಿದನು. “ತತೋ ವಿಗ್ರಹವಂತೌ ತೌ ವೇದಾನ್ ದೃಷ್ಟಾಸುರೋತ್ತಮೌ 1. ಸಹಸಾ ಜಗೃಹ್ತುರ್ವೇದಾನ್ ಬ್ರಹ್ಮಣ: ಪಶ್ಯತಸ್ತದಾ 1. ಅಥ ತೌ ದಾನವಶ್ರೇಷ್ಠೌ ವೇದಾನ್ ಗೃಹ್ಯ ಸನಾತನಾನ್ 1. ರಸಾಂ ವಿವಿಶತುಸ್ತೂರ್ಣಮುದಕಪೂರ್ವಂ ಮಹೋದಧೌ 1. ತತೋ ಹೃತೇಷು ವೇದೇಷು ಬ್ರಹ್ಮಾ ಕಶ್ಮಲಮಾವಿಶತ್ 1. ತತೋ ವಚನಮಿಶಾನಂ ಪ್ರಾಹ ವೇದೇವಿನಾಶತ: 1. ಆಂ ನಮಸ್ತೇ ಬ್ರಹ್ಮಹೃದಯ ನಮಸ್ತೇ ಮಮ ಪೂರ್ವಜ 1. ಲೋಕಾಽಽ ಭುವನಶ್ರೇಷ್ಠ ಸಾಂಖ್ಯಯೋಗನಿಧೇ ಪ್ರಭೌ 1. ತ್ವಯಾ ವಿನಿಮಿತೋಽಹಂ ವೇದವಕ್ಷುರ್ವಯೋತಿಗ: 1. ತೇ ಮೇ ವೇದಾ ಹೃತಾಶ್ಚಕ್ಷುರನ್ಧ್ರೌ ಜಾತೌಽಸ್ಮಿ ಜಾಗೃಹಿ 1. ದದಸ್ವ ಚಕ್ಷುಷಿ ಮಮ ಪ್ರಿಯೋಽಹಂ ತೇ ಪ್ರಿಯೋಽಸಿ ಮೇ 1. ಏವಂ ಸ್ತುತ: ಸ ಭಗವಾನ್ ಪುರುಷ:ಸರ್ವತೋಮುಖ: 1. ಅಂತರ್ದಹೌ ಸ ವಿಶ್ವೇಶ: ವಿವೇಶ ಚ ರಸಾಂ ಪ್ರಭು: 1. ರಸಾಂ ಪುನ: ಪ್ರವಿಷ್ಟಶ್ಚ ಯೋಗಂ ಪರಮಮಾಸ್ಥಿತ: 1. ತತಸ್ತಾವಸುರೌ ಕೃತ್ವಾ ವೇದಾನ್ ಸಮಯಬಂಧನಾನ್ 1. ರಸಾತಲೇ ವಿನಿಕ್ಷಿಪ್ಯ ಯತ: ಶಬ್ದಸ್ತತೌ ಗತೌ 1. ಏತಸ್ಮಿನ್ನಂತರೇ ರಾಜನ್ ದೇವೌ ಹಯಶಿರೋಧರ: 1. ಜಗ್ರಾಹ ವೇದಾನ್ ಕಿಲಾನ್ ರಸಾತಲಗತಾನ್ ಹರಿ: 1. ಪ್ರಾದಾಚ್ಚ ಬ್ರಹ್ಮಣೇ ಭುಯ: ತತ: ಸ್ವಾಂ ಪ್ರಕೃತಿ ಗತ: 1. ಆಗ ವೇದಗಳನ್ನಿಟ್ಟಿದ್ದ ಜಾಗದಲ್ಲಿ ವೇದಗಳನ್ನು ಕಾಣದೆ ಆ ರಾಕ್ಷಸರು ಪರಮಾತ್ಮನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಮಾಡಿ ಹತರಾದರು. ಭಾಂ ಶಾಂತಿಂ 346. 2. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. ಈ ರಾಕ್ಷಸನು ಆದಿಶಕ್ತಿಯನ್ನು ತಪಸ್ಸಿನಿಂದ ಮೆಚ್ಚಿಸಿ ತನಗೆ ಎಂದೆಂದಿಗೂ ಮರಣ ಬಾರದಂತೆ ವರವನ್ನು ಕೇಳಲು ದೇವಿಯು ಅದಕ್ಕೆ ಸಮ್ಮತಿಸಲಿಲ್ಲ. ಆಗ ತನ್ನ ಹೆಸರಿನವನಿಂದಲೇ ಮರಣವಾಗಬೇಕೆಂದು ಕೇಳಿಕೊಳ್ಳಲು ಆಗಲಿ ಎಂದು ದೇವಿಯು ವರವನ್ನಿತ್ತಳು. ಅದರಿಂದ ಕೊಬ್ಬಿದ ಈ ರಾಕ್ಷಸನು ದೇಶವನ್ನು ಕ್ಷೋಭೆಗೊಳಿಸಲು ಆರಂಭಿಸಿ



ದನು. ಆಗ ಮಹಾವಿಷ್ಣು ಪು ಹಯಗ್ರೀವಾವತಾರವತ್ತಿ,  
ಈ ರಾಕ್ಷಸನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದನು. 3. ಒಬ್ಬ ದೊರೆ.  
● (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಗ್ರೀವಾ -ಗ್ರೀವಾ. 4. ದುರ್ಗಾದೇವಿ.  
ಹೃದಯಕುಂಭ (ಪುಂ) ಮಾತಲಿ, ಇಂದ್ರನ ಸಾರಥಿ.  
ಹೃದಯಕುಂಭಃಶ್ರವಣಂ ಕುಪತಿ - ಕುಪ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಕುಪ್"  
(ಬಾಹುಂ) । "ಮಾತಲಿಸ್ತು ಹೃದಯಕುಂಭಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।  
ಹೃದಯಕುಂಭ (ಪುಂ) ಮಹಿಷ, ಎಮ್ಮೆ.  
ಹೃದಯಕುಂಭ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಾಪಪರ್ವಲತೆ,  
ಕಂಡುದ್ದಿನ ಗಿಡ. ಹೃದಯಕುಂಭಮಿವ ಆಕಾರೋಽಸ್ಯಾಃ ।  
ಹೃದಯಪ್ರಿಯ (ಪುಂ) 1. ಜವೆ, ಯವಧಾನ್ಯ.  
ಹೃದಯಪ್ರಿಯಃ । -ಪ್ರಿಯಾ -ಪ್ರಿಯಾ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2.  
ಖರ್ಜೂರದ ಗಿಡ. 3. ಅಶ್ವಗಂಧಿ ಗಿಡ.  
ಹೃದಯಮಾರಕ (ಪುಂ) ಗನ್ನೇರಳೆ ಗಿಡ. ಹೃದಯ  
ಮಾರಕಃ । ಹೃದಯ ಮಾರಯತಿ - ಮೃಡ್ (ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗಂ) + ಣಿಕ್  
"ಫುಲ್" (3-1-133) । "ಲ್ಯುಃ" (3-1-134) ।  
-ಮಾರಣಃ -ಮಾರಣಃ. ಅಶ್ವತ್ಥವೃಕ್ಷ, ಅರಳಿಮರ.  
ಹೃದಯಮೇಧ (ಪುಂ) ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗ. ಹೃದಯಃ  
ಮೇಧಯೇತ ಪ್ರಧಾನತಯಾ ಹಿಸ್ಯತೇ - ಮೇಧ (ಮೇಧಾಹಿಸನಯೋಃ)  
"ವಕ್" (3-3-121) ।  
ಹೃದಯವಾಹನ (ಪುಂ) 1. ಸೂರ್ಯಪುತ್ರನಾದ  
ರೇವಂತ. ಹೃದಯವಾಹನಮಸ್ಯ । "ರೇವಂತಸ್ತವಕೇರೇತೋಜಃ ಲವಗೋ  
ಹೃದಯವಾಹನಃ" ಅಭಿಂ ಚಿಂ । (ವಿಂ) 2. ಕುದುರೆಯು  
ವಾಹನವಾಗಿರುವ.  
ಹೃದಯಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುದುರೆಯ ಶಾಲಾ.  
ಹೃದಯಶೀರ್ಷ (ಪುಂ) ಹಯಗ್ರೀವಾವತಾರವತ್ತಿದ  
ಮಹಾವಿಷ್ಣು.  
ಹೃದಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಶ್ವಗಂಧಿಲತೆ. ಹೃದಯಃ ಹೃದಯಗಂಧೋಽ-  
ಸ್ತಯಸ್ಯಾಃ ।  
ಹೃದಯಾಧ್ಯಕ್ಷ (ಪುಂ) ಕುದುರೆಯಾದ ಯಜ  
ಮಾನ, ಕುದುರೆಯ ರಕ್ಷಣೆ ಮೊದಲಾದ ಕಾರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ  
ನೇಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಅಧಿಕಾರಿ. ಹೃದಯಾ ರಕ್ಷಣಾರ್ಥ ನಿಯುಕ್ತಃ  
ಅಧ್ಯಕ್ಷಃ ।  
ಹೃದಯಾರಿ (ಪುಂ) ಗನ್ನೇರಳೆ ಗಿಡ. ಹೃದಯಾರಿಃ ।  
ಹೃದಯಾರೋಹ (ಪುಂ) 1. ಕುದುರೆಯ ಸವಾರ.  
ಹೃದಯಾರೋಹಿ - ಆ + ರೂ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೌ) "ಅನ್"  
(3-2-1) । 2. ಕುದುರೆಯ ಸವಾರಿ. ಭಾವೇ "ವಕ್"  
(3-3-14) । (ವಿಂ) 3. ಕುದುರೆಯ ಸವಾರಿ ಮಾಡು

ವವನು. ಹೃದಯ ಆರೋಹಃ - ಆ + ರೂ "ವಕ್" (3-1-134) ।  
(ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಆರೋಹಾ -ಆರೋಹಾ. ಅಶ್ವಗಂಧಿ ಗಿಡ.

ಹೃದಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣುಕುದುರೆ.

ಹರ ಹರ (ಪುಂ) 1. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ, ರುದ್ರ. ಹರತಿ  
ಪಾಪಾನಿ - ಹ್ರ (ಹರಣೇ) "ವಕ್" (3-1-134) ।  
"ಶ್ರುತಾಪ್ಸರೋಗೀತಿರಪಿ ಕುಣೇಽಸ್ಮಿನ್ ಹರಃ ಪ್ರಸಹ್ಯಾಪರೋ  
ಬಭೂವ" ಕುಮಾರಂ 3-39 । 2. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 3. ಗರ್ವಧ,  
ಕತ್ತೆ. "ಹರೋ ರಾಸಭರದ್ರಯೋಃ । ವೇಶ್ವಾನರೇಽಪಿ" ಹೇಮಂ ।  
"ಹರ" ಪದವು ಸಮಾಸಾತ್ಯದಲ್ಲಿ ಕೊಡುವ ಅರ್ಥಃ  
(1) ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ, ನಿವಾರಿಸುವ. ಕ್ಷೇದಹರಃ ।  
ಶೋಕಹರಃ । (2) ಸಂಪಾದಿಸಿ ಕೊಡುವ, ಹೊಂದಿಸುವ,  
ತರುವ. "ತೇಷಾಂ ಶುಭಂಕೇವಿಕಾ ದುಷ್ಟವೃತ್ತಿಹರಾಽಭವತ್"  
ರಘುಂ 12-41 । (3) ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು. 3. ಪಾಲು  
ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಹಕ್ಕುದಾರ. ಅಂಶಹರಃ, ಭಾಗಹರಃ ।  
ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಠಾಪ್" (4-1-4) । -ಹರಾ -ಹರಾ.

ಹರಗೌರಿ ಹರಗೌರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರ್ಧನಾರೀಶ್ವರ ವಿಗ್ರಹ.  
ಹರೇಣ ಯುಕ್ತಾ ಗೌರಿ । ಯಾವಾಗಲೂ ನಿನ್ನ ಛಾಯೆಯಂತೆ  
ನಾನು ನಿನ್ನೊಡನೆರಲು ಸಾಹಚರ್ಯವನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸಬೇಕೆಂದು  
ಪಾರ್ವತಿಯು ಕೇಳಿಕೊಳ್ಳಲು ಪರಮೇಶ್ವರನು ತನ್ನ ಅರ್ಧ-  
ದೇಹವನ್ನು ಪಾರ್ವತಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು ಪಾರ್ವತಿಯ ಅರ್ಧ-  
ದೇಹವನ್ನು ತಾನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿ ಅರ್ಧನಾರೀಶ್ವರನಾದನು.  
"ಯಥಾ ತವಾಹಂ ಸತತಂ ಛಾಯೇವಾನುಗತಾ ಹರ । ಭವೇಯಂ  
ಸಾಹಚರ್ಯೇಣ ತಥಾ ಮಾಂ ಕರ್ತುಮಹಂಸಿ ॥ ರೋಚತೇ ತನ್ಮಹ್ಯಮಪಿ  
ಯತ್ವಮಿಚ್ಛಸಿ ಭಾಮಿನಿ । ತತ್ರೋಪಾಯಮಹಂ ವಕ್ಷ್ಯೇ ಯದಿ  
ಶಕ್ನೋಷಿ ತತ್ಕುರು ॥ ಅಥ ಮಮ ಶರೀರಸ್ಯ ಗೃಹಾಣ ತ್ವಂ  
ಮನೋಹರೇ । ಅಥ ಭವತು ಮೇ ನಾರೀ ತಥೈವಾರ್ಥ ಪುಮಾನಿತಿ ॥  
..... ಅಥ ಗೌರಿ ತದಾ ಪೂರ್ವಮನುಭೂತಂ ತಪಃಸ್ಥಿತೀ ।  
ಯೋಗನಿದ್ರಾಸ್ವರೂಪಂ ತತ್ ಆತ್ಮನೋಽಚಿಂತಯತ್ತದಾ । ಹರಂ ಪ್ರಣಮ್ಯ  
ಪ್ರಥಮಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಣಂ ಚ ತತಃ ಪರಮ್ । ತತಃಸ್ತ್ರಿಜಗತಾಮೀಶಂ ಹರಿಂ  
ನಾರಾಯಣಂ ಪ್ರಭುಮ್ । ಚಿಂತಯಿತ್ವಾ ತಥಾ ತೇಷಾಮೇಕತಾಂ ಸಾ  
ಜಗನ್ಮಯೀ । ದಕ್ಷಿಣೇ ಸ್ವಶರೀರಸ್ಯ ಭಾಗಾರ್ಥಂ ಶಶಭದ್ರಭೂತಃ ।  
ಶರೀರಸ್ಯ ತಥಾ ವಾಮಮತಿಪ್ರೇಕ್ಷಾ ನಿಜಂ ಹರೇ । ಹರೋಽಪಿ  
ಸ್ವಶರೀರಾರ್ಥಂ ಗೌರಿಕಾಯೇ ತದಾ ಸ್ವಯಮ್ । ಪ್ರೇಕ್ಷಾ ನಿವೇಶಯತ್  
ತಸ್ಯಾಶ್ಚಿಕೀರ್ಷುಃ ಪ್ರಿಯಮದ್ಭೂತಮ್" ಕಾಲಿಕಾಪುರಾಣಮ್ ।

ಹರಚ್ಚೂಡಾಮಣಿ ಹರಚ್ಚೂಡಾಮಣಿ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಹರಸ್ಯ  
ಚ್ಚೂಡಾಮಣಿರಿವ ।

ಹರಣ ಹರಣ (ನಂ) 1. ಕನ್ನೆಗೆ ತಾಯಿ ತಂದೆಗಳು ಬರುವಳಿ  
ಯಾಗಿ ಕೊಡುವ ಧನ ಮೊದಲಾದುದು. ಹರಣೀ - ಹರ



(ಹರಣಿ) ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩) । "ಯಿತಕಾದಿ  
ತು ಯದೇಯಂ ಸುರಾಯೋ ಹರಣಂ ಚ ತತ್" ಅಮಂ । "ಸತ್ವಾನು-  
ರೂಪಾಹರಣೀಕೃತಶ್ರೀಃ ಪ್ರಸ್ಥಾಪಯದ್ರಾಚವಮನ್ವಗಾಚ್ಚ" ರಘುಂ  
೭-೩೨ । 2. ಒಯ್ಯುವುದು, ಸಾಗಿಸುವುದು. 3. ಭಾಗಿಸು-  
ವುದು. ಹುನ್ ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) । 4. ಭುಜ,  
ಹೆಗಲು. "ಹರಣಂ ಯಿತಕಾದೀನಾಂ ದ್ರವ್ಯೇ ಭುಜೇ ಹುತಾವಪಿ"  
ಮೇದಿಂ । 5. ಕಾಯಿಸಿ ತಣ್ಣಗಾದ ನೀರು. "ಹರಣಂ  
ಯಿತಕದ್ರವ್ಯೇ ತಪ್ತಶೀತಜಲೇ ಹುತೌ" ನಾನಾರ್ಥರಂ । 6. ಸ್ವೀಕಾರ.  
7. ಕಳ್ಳತನ, ಕದಿಯುವುದು. 8. ನಾಶಪಡಿಸುವುದು.  
ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ಹರಣಿ ಹರಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೀರಿನ ಕಾಲುವೆ. "ಯೋವಹಾ ।  
ಸರಣಿ ಹರಣಿಃ" ವೇಜಂ ।

ಹರಣೀಯ ಹರಣೀಯ (ವಿಂ) ["ಹರಣೀ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ].

ಹರತ್ ಹರತ್ (ವಿಂ) 1. ಸ್ವೀಕರಿಸುತ್ತಿರುವ. ಹುನ್ (ಹರಣಿ)  
"ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಹೋಗಲಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ.  
"ಇಷ್ಟೇವ ಹರತಾ ಹ್ರಿಯಮಾಸಾಂ ತದ್ಗುಣಃ ಸ್ವಯಮಕಾರಿ ಮದೇನ"  
ಮಾಘಂ ೧೦-೩೦ । 3. ಕದಿಯುತ್ತಿರುವ. 4. ಒಯ್ಯು-  
ತ್ತಿರುವ, ಸಾಗಿಸುತ್ತಿರುವ. 5. ನಾಶಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ.  
6. ನಿವಾರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಪರಿಹರಿಸುತ್ತಿರುವ. "ಸಕ್ಷಾಶತಂ  
ವಿತರತಾ ಹರತಾ ಪುನಸ್ತತ್ ತನ್ಮಾದಿನೇವ ಮನಸೇಯಮಿದಂ ತದಾಹ"  
ನೈಷಂ ೧೩-೪೧ । 7. (ಮನಸ್ಸನ್ನ) ಆಕರ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಮೋಹಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ. 8. ಕಡಮೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ.  
ಕಳೆಗುಂದಿಸುತ್ತಿರುವ, ಕುಗ್ಗಿಸುತ್ತಿರುವ. 9. ಭಾಗಿಸು-  
ತ್ತಿರುವ, ಭಾಗಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಪಾಲಮಾಡುತ್ತಿರುವ.  
10. ಮದುವೆಯಾಗುತ್ತಿರುವ, ವಿವಾಹ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳು-  
ತ್ತಿರುವ. "ಪಿತ್ರೇ ನ ದತ್ತಾತ್ ಶುಲ್ಕಂ ತು ಕನ್ಯಾಂ ಕೃತುಮತೀಂ  
ಹರನ್ । ಸ ಹಿ ಸ್ವಾಮ್ಯಾದತಿಕಾಮೇತ್ ಕೃತುನಾಂ ಪ್ರತಿರೋಧನಾತ್"  
ಮನುಂ ೯-೯೩ । 11. ಕದ್ದು ಒಯ್ಯುತ್ತಿರುವ, ಅಪಹರಿಸಿ  
ಕರೆದುಕೊಂಡು ಹೋಗುತ್ತಿರುವ. "ತ್ವಯಾ ವಿಪ್ರಕೃತಶ್ಚೈವೋ  
ಕೃಷಿಮಣಿಂ ಹರತಾ ಹರೇ" ಮಾಘಂ ೨-೩೮ । 12. ಸ್ವಾಧೀನ  
ಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ತನ್ನದಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ.  
ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಹಿಂ" (೪-೧-೬) । -ಂತಿ-೨೨೦. "ಅವಸರ-  
ಮಧಿಗಮ್ಯ ತಂ ಹರಂತ್ಯೋ ಹೃದಯಮಯತನಕೃತೋಜ್ವಲಸ್ವರೂಪಾಃ"  
ಮಾಘಂ ೭-೩ । "ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕೃತ್ಯಾಽಭಿಮನ್ಯೇಹಂ ತ್ವಾಂ ಹರಂತೀಂ  
ಶ್ರಿಯಂ ಶ್ರಿಯಃ" ಮೃತ್ಯುಂ ೪-೭೧ । "ಶಾನಚ್" (೩-೨-೧೨೪) ।  
ಹರಮಾಣಃ ಹರಮಾಣಃ ।

ಹರತೇಜಸ್ ಹರತೇಜಸ್ (ನಂ) 1. ಪಾದರಸ. ಹರಸ್ಯ ತೇಜಃ ।  
2. ಪರಮೇಶ್ವರನ ವೀರ್ಯ. -ವೀಜಮ್ -ವೀಜಮ್,  
-ವೀರ್ಯಮ್ -ವೀರ್ಯಮ್ ।

ಹರತೇಜಸ್ ಹರತೇಜಸ್ (ನಂ) 1. ಪರಮೇಶ್ವರನ ಕಣ್ಣು.  
2. ಮೂರು ಸಂಖ್ಯೆ. ಹರಸ್ಯ ನೇತ್ರಮ್ ।

ಹರಶೇಖರಾ ಹರಶೇಖರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಂಗಾನದಿ.

ಹರಸುತ ಹರಸುತ, -ಸುತು -ಸೂನು (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರನ  
ಪುತ್ರನಾದ ಪುಣ್ಯಮ್ ।

ಹರಿ ಹರಿ (ಪುಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣು. ಹರತಿ ಪಾಪಾನಿ-ಹುನ್  
(ಹರಣಿ) "ಇಃ" (೩ಂ ೪-೧೩೯) । "ಹರಿಹರತಿ ಪಾಪಾನಿಂ  
ದುಷ್ಟಚಿತ್ತೇರಪಿ ಸ್ಮೃತಃ । ಅನಿಚ್ಛಯಾಪಿ ಸಂಸ್ಪೃಷ್ಠೋ ದಹತ್ಯೇವ  
ಹಿ ಪಾಪಕಃ" । "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೪೮) ವಾ । "ಅಪೇತ-  
ಯುಕ್ತಾಭಿನಿವೇಶಸೌಮ್ಯೋ ಹರಿಹರಿಪ್ರಸ್ಥಮಥ ಪ್ರತಸ್ಥೇ" ಮಾಘಂ  
೩-೧ । 2. ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ, ರುದ್ರ. 3. ಬ್ರಹ್ಮ,  
ಚತುರ್ಮುಖ. 4. ಭರ್ತೃಹರಿ. 5. ದೇವೇಂದ್ರ, ಸ್ವರ್ಗದ  
ಪ್ರಭು. "ದದೃಶೋ ಲಲಾಟತಟಹಾರಿ ಹರೇಹರಿತೋ ಮುಖೇ ತುಹಿತ-  
ರಶ್ಮಿದಲಮ್" ಮಾಘಂ ೯-೨೮ । 6. ಸಿಂಹ, ಮೃಗರಾಜ.  
"ಹರಿಸಾಕ್ಷಮಣೇನ ಸಂನತಿ ಕಿಲ ಬಿಭ್ರತಿ ಬಿಭೇತ್ಯಸಂಭವಃ"  
ಮಾಘಂ ೧೬-೩೪ । 7. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. "ದಂತಾಲಿಕಾ-  
ಧರಣಿನಿಶ್ಚಲಪಾಣಿಯುಗ್ಮಮರ್ಷಾದಿತೋ ಹರಿಸಿವೋಷಮಿತಾಪ್ರಕಾಶಃ"  
ಮಾಘಂ ೪-೪೬ । 8. ಹಯ, ಕುದುರೆ. "ದಿಲಿಪ್ಯದ್ವಿ-  
ರನ್ಯೋನ್ಯಮುಖಾಪ್ರಸಕ್ತಸ್ತಲತ್ವಲಿನಂ ಹರಿಭಿವಿಲೋಲಃ" ಮಾಘಂ  
೩-೬೬ । 9. ಪಾಯು, ಗಾಳಿ. 10. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ.  
"ದಮವೋಷಸುತೇನ ಕಶ್ಚನ ಪ್ರತಿಶಿಷ್ಟಃ ಪ್ರತಿಭಾನವಾನಥ ।  
ಉಪಗಮ್ಯ ಹರಿ ಸದಸ್ಯದಃ" ಮಾಘಂ ೧೬-೧ । "ನಿತ್ಯಂ  
ಹರೇಃ ಸನ್ನಿಹಿತಾ ನಿಕಾಮಂ ಕೌಮೋದಕೀ ಮೋದಯತಿ ಸ್ಮ ಚೇತಃ"  
ಮಾಘಂ ೩-೧೮ । 11. ಶುಕ, ಗಿಣಿ. 12. ಭೇಕ,  
ಕಪ್ಪೆ, ಮಂಡೂಕ. 13. ಯಮಧರ್ಮರಾಜ. 14.  
ವಾನರ, ಕಪಿ. "ವ್ಯರ್ಥಂ ಯತ್ರ ಕಪಿನ್ದ್ರಸತ್ಯಮಪಿ ಮೇ ವೀರ್ಯಂ  
ಹರೀಣಾಂ ವೃಥಾ ಪ್ರಜ್ಞಾ ಜಾಮ್ಬವತೋ ನ ಯತ್ರ ನ ಗತಿಃ ಪುತ್ರಸ್ಯ  
ವಾಯೋರಪಿ" ೩ಂ ರಾಂ ೩-೪೪ । 15. ಸರ್ಪ, ಹಾವು.  
16. ಕಿರಣ. 17. ಚಂದ್ರ. 18. ಅಗ್ನಿ. 19. ಮಯೂರ,  
ನವಿಲು. 20. ಹಸಿರುಬಣ್ಣ. 21. ಕೆಂಪುಬೆರತ ಹಳದಿ  
ಬಣ್ಣ. 22. ಹಸಿರುಕಾಳು. ವೇಜಂ । (ವಿಂ) 23.  
ಹಸಿರುಬಣ್ಣದ. "ಶತೇಸ್ತಮಕ್ಷಣಾಮನಿಮೇಷವೃತ್ತಿಭಿಃ ಹರಿಂ  
ವಿದಿತ್ವಾ ಹರಿಮಿಶ್ರ ವಾಜಿಭಿಃ" ರಘುಂ ೩-೪೩ । 24.  
ಕೆಂಪುಬೆರತ ಹಳದಿಬಣ್ಣದ. "ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರಾಕಂವಾತಾಶ್ಚಶುಕ್-  
ಶೇಕಯಮಾಹಿಷು । ಕಪಿ ಸಿಂಹೇ ಹರೇಜೈಶಿ ಶಕ್ರೇ ಲೋಕಾಂತರೇ  
ಪುಮಾನ್ । ವಾಚ್ಯವತ್ ಪಿಚ್ಛಹರಿತೋಃ" ಮೇದಿಂ । ಬ್ರಹ್ಮ  
ವಿಷ್ಣು ಮಹೇಶ್ವರರಿಗೆ ಸತ್ತ್ವಾದಿ ಗುಣಗಳಿಂದ ಭೇದವೇ  
ಹೊರತು ಮೂರು ರೂಪಗಳಿಗೂ ಮತ್ತೆ ಯಾವ



ಭೇದವೂ ಇಲ್ಲ. ಅಭೇದವೇ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. “ನಾರಾಯಣಃ ಪರೋ ದೇವಃ ಸತ್ವರೂಪೋ ಜನಾರ್ದನಃ | ತ್ರಿವಿಧಾತ್ಮಾನಂ ಸ ಭಗವಾನ್ ಸಸರ್ಜ ಪರಮೇಶ್ವರಃ” || ರಜೋಗುಣ ಮತ್ತು ತಮೋಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪರಮಾತ್ಮನು ತನ್ನ ನಾಭಿಕಮಲದಿಂದ ರಜಸ್ಸು ಮತ್ತು ಸತ್ತ್ವಪ್ರಚುರವಾಗಿರುವ ಚತುರ್ಮುಖ (ಬ್ರಹ್ಮ)ನನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದನು. “ರಜಸ್ತಮೋಮ್ಯಾ ಯುಕ್ತೋಭೂತ್ ರಜಃಸತ್ವಾಧಿಕಂ ಪ್ರಭುಃ | ಸಸರ್ಜ ನಾಭಿಕಮಲಾತ್ ಬ್ರಹ್ಮಾಣಂ ಕಮಲಾಸನಮ್” || ರಜಸ್ಸು ಮತ್ತು ತಮಸ್ಸುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ನನ್ನನ್ನು (ಪರಮೇಶ್ವರನನ್ನು) ಆ ಪರಮಾತ್ಮನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದನು. “ರಜಸಾ ತಮಸಾ ಯುಕ್ತಂ ಸೌಽಪಿ ಮಾಂ (ಪರಮೇಶ್ವರಮ್) ತ್ವಸೃಜತ್ ಪ್ರಭುಃ | ಸತ್ತ್ವಗುಣ ಪ್ರಚುರನಾಗಿರುವವನೇ ಶ್ರೀಹರಿ (ಮಹಾವಿಷ್ಣು). ಆದುದರಿಂದ ಈ ಮೂರು ಮೂರ್ತಿಗಳಲ್ಲಿ ಮತ್ತು ಪಾರ್ವತಿ ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿಗಳಲ್ಲಿ ಭೇದವನ್ನು ಗ್ರಹಿಸುವವನು ಪರಮನಾಸ್ತಿಕನೆನಿಸುವನು. “ಯಾ ಶ್ರೀಃ ಸಾ ಗಿರಿಜಾ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಯೋ ಹರಿಃ ಸ ತ್ರಿಲೋಚನಃ | एवं ಸರ್ವೇಷು ಶಾಸ್ತ್ರೇಷು ಪುರಾಣೇಷು ಚ ಪಠ್ಯತೇ | ಏತಸ್ಮಾದನ್ಯಥಾ ಯಸ್ತು ಬ್ರೂತೇ ಶಾಸ್ತ್ರಂ ಪೃಥಕ್ತಯಾ | ತಂ ನಾಸ್ತಿಕಂ ವಿಜಾನೀಯಾತ್ ಸರ್ವಧರ್ಮ-ಬಹಿಷ್ಕೃತಮ್” ವರಾಹಪುಂ. | ತ್ರಿಮೂರ್ತಿಗಳಿಗೂ ಅಭೇದವು ವೇದಗಳಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಭೇದವನ್ನು ಹೇಳುವವನು ಪರಮಪಾಪಿಯಾಗುವನು. “ವೇದತ್ರಯೇಽಪಿ ಯಜ್ಞೋ-ಸ್ಮಿನ್ ಪೃಥಿವೀವೇವ ನಿಶ್ಚಯಃ | ಯೋ ಭೇದಂ ಕುರುತೇಽಸ್ಮಾಕಂ ತ್ರಯಾಣಾಂ ದ್ವಿಜಸತ್ತಮ || ಸ ಪಾಪಕಾರಿ ದುಷ್ಟಾತ್ಮಾ ದುರ್ಗತಿ ಸಮವಾಪ್ನುಯಾತ್” ವರಾಹಪುಂ. |

ಹರಿಕೇಶ ಹರಿಕೇಶ (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ.

ಹರಿಕ್ರಾಂತಾ ಹರಿಕ್ರಾಂತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಿಷ್ಣುಕ್ರಾಂತ ಗಿಡ.

ಹರಿಚಂದನ ಹರಿಚಂದನ (ಪುಂ) 1. ದೇವತೆಗಳ ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಚಂದಯತಿ ಆಹ್ಲಾದಯತಿ—ಚದಿ (ಆಹ್ಲಾದನೆ) + ಣಿಚ್ “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪) | “ಪಶ್ಚೇತೇ ದೇವತರವೋ ಮಂದಾರಃ ಪಾರಿಜಾತಕಃ | ಸಂತಾನಃ ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷಶ್ಚ ಪುಂಸಿ ವಾ ಹರಿಚಂದನಮ್” ಅಮಂ. | 2. ಶ್ರೀಗಂಧದ ವೃಕ್ಷ. “ಇಹ ಮದಸ್ತನಪಿತೃನುಮೀಯತೇ ಸುರಗಜಸ್ಯ ಗತಂ ಹರಿಚಂದನೇಃ” ಕಿರಾಂ ೪-೪೭ | 3. ಶ್ರೀಗಂಧ. “ತತಃ ಪ್ರಕೋಠೇ ಹರಿಚಂದನಾಕ್ಷಿತೇ ಪ್ರಮಥ್ಯಮಾನಾಣವಧೀರನಾದಿನೀಮ್” ರಘುಂ ೩-೪೯ | (ನಂ) 4. ಕುಂಕುಮಕೇಸರಿ. 5. ಜ್ಯೋತ್ಸ್ನಾ, ಚಂದ್ರಿಕೆ, ಬೆಳದಿಂಗಳು. 6. ತಾವರೆಯ ಕೇಸರ, ಪದ್ಮದ ಕುಸುಮ. “ಹರಿಚಂದನಮಸ್ತೃ ಸ್ಯಾತ್ ದೇವತಾನಾಂ ಮಹೀರಹೇ | ನಪುಂಸಕಂ ತು ಗೋಷ್ಠೀರ್ಷೇ ಜ್ಯೋತ್ಸ್ನಾ ಕುಡ್ಕುಮಯೋರಪಿ” ಮೇದಿಂ. |

ಹರಿಣ ಹರಿಣ (ಪುಂ) 1. ಮೃಗ, ಸಾರಂಗ, ಜಿಂಕೆ. ಹರಿತಿ ಮನಃ—ಹ್ರಿ (ಹರಣೇ) “ಇನಚ್” (೩ಂ ೨-೪೬) | “ರಸನಾಗ್ರಲಗ್ನಕಿರಣಾಡ್ಕುರಾನ್ ಜನೋ ಹರಿಣಾನ್ ಗೃಹೀತ-ಕವಲಾನಿವೇಕ್ಷತ” ಮಾಧಂ ೧೩-೪೬ | ಜಿಂಕೆಗಳಲ್ಲಿ (1) ಋಷ್ಯಃ (2) ಖಜ್ಜಃ (3) ಕುಹಃ (4) ಪುಷತಃ ಮತ್ತು (5) ಮೃಗಃ ಎಂದು ಐದು ಭೇದಗಳಿವೆ. “ಹರಿಣಶ್ಚಾಪಿ ವಿಜ್ಞೇಯಃ ಪಶ್ಚ-ಭೇದೋಽನ್ವ ಭೇದಃ | ಋಷ್ಯಃ ಖಜ್ಜೋ ಕುಹಶ್ಚೇವ ಪುಷತಶ್ಚ ಮೃಗಸ್ತಥಾ | ಏತೇ ಬಲಿಪ್ರದಾನೇಷು ಚರ್ಮದಾನೇ ಚ ಕೀರ್ತಿತಾಃ” || 2. ಶ್ವೇತ ವರ್ಣ, ಬಿಳಿಯ ಬಣ್ಣ. “ಹರಿಣಃ ಪಾಂಡುರಃ ಪಾಂಡುಃ” ಅಮಂ. | 3. ಸೂರ್ಯ. 4. ವಿಷ್ಣು. 5. ಪರಮೇಶ್ವರ. 6. ಹಂಸ. (ವಿಂ) 7. ಬಿಳಿಯ ಬಣ್ಣದ. 8. ಹಳದಿ ಬೆರತ ಬಿಳಿಯ ಬಣ್ಣದ. “ಕಥಿತೋ ಧೃತರಾಷ್ಟ್ರಸ್ಯ ವಿವರ್ಣೋ ಹರಿಣಃ ಕೃಷಃ” ಭಾಂ ಆದಿಂ. |

ಹರಿಣಹೃದಯ ಹರಿಣಹೃದಯ (ವಿಂ) ಭೇರು, ಭಯದ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಹರಿಣಸ್ಯೇವ ಭೀತಂ ಹೃದಯಂ ಯಸ್ಯ | “ಭೀರುಸ್ತು ಭೀಲೋ ಹರಿಣಹೃದಯಃ ಸ್ಯಾತ್ಪಲಂಕಟಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. |

ಹರಿಣಾಕ್ಷಿ ಹರಿಣಾಕ್ಷೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿಂಕೆಯಂತೆ ಸುಂದರವಾದ ನೇತ್ರಗಳುಳ್ಳ ಹೆಂಗಸು. ಹರಿಣಸ್ಯ ಅಕ್ಷಿಣಿವ ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯಾಃ | “ಷಚ್” (೪-೪-೧೧೩) | “ಙೀಷ್” (೪-೧-೪೧) |

ಹರಿಣಾಕ್ಷು ಹರಿಣಾಂಕ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಹರಿಣಃ ಅಕ್ಷುಷ್ಣಿಹ್ನಂ ಯಸ್ಯ |

ಹರಿಣಿ ಹರಿಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಜಿಂಕೆ. ಹರಿಣಸ್ಯ ಸ್ತ್ರೀ “ಙೀಷ್” (೪-೧-೪೮) | “ನೃತ್ಯಂ ಮಯೂರಾಃ ಕುಸುಮಾನಿ ವೃಕ್ಷಾಃ ದರ್ಶನುಪಾತ್ತಾನ್ ವಿಜಹುರ್ಹರಿಣಿಃ” ರಘುಂ ೧೪-೬೯ | 2. ಸುವರ್ಣದ ಪ್ರತಿಮೆ, ಚಿನ್ನದ ವಿಗ್ರಹ. 3. ಚಿತ್ರಣೇ ಜಾತಿಯ ಹೆಂಗಸು. 4. ಹಳದಿ ಜಾತಿಯ ಹೆಣ್ಣು. 5. ಗರಿಕೆಹುಲ್ಲು. 6. ಚಿನ್ನದ ಬಣ್ಣದ ಹೆಂಗಸು. “ಹರಿಣಿ ಚಾಹ್ಯೋಷಿತಿ | ಸುವರ್ಣಪ್ರತಿಮಾಂ ಚ” ಹೇಮಂ. | 7. ಹದಿನೇಳನೇ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಒಂದು ವೃತ್ತ. ಇದರ ಲಕ್ಷಣಃ “ರಸಯುಗಹೃಯಂತಿ” ತ್ರಿ ಸ್ತೋ ಗೋ ಯದಾ ಹರಿಣಿ ತದಾ” ವೃಂ ೨೦ | ಇದರ ಗಣವಿನ್ಯಾಸಃ :

ನ ಸ ಮ ರ ಸ ಲ ಗು |

||| ||| ||| ||| ||| ||| ||| |||

ಆರು ನಾಲ್ಕು ಮತ್ತು ಏಳನೇ ಅಕ್ಷರಗಳಲ್ಲಿ ಯತಿ ಇರಬೇಕು. “ಹರಿಣಿ ಹರಿತಾಂ ಚ ನಾರೀಭಿಃ ಪದ್ಧತಃ” ಮೇದಿಂ. |

ಹರಿತ್ ಹರಿತ್ (ಪುಂ) 1. ಕಪ್ಪು ಮತ್ತು ಹಳದಿ ಮಿಶ್ರವಾದ ಬಣ್ಣ. ಹರಿತಿ ಮನಃ—ಹ್ರಿ (ಹರಣೇ) “ಇತಿಃ”



(ತಂ ೧-೨೭) 1. ಹಸಿರು ಬಣ್ಣ. "ಸತ್ಯಮ್, ಅತೀತ್ಯ ಹರಿತೋ ಹರೀಶ್ಚ ವರ್ತಂತೇ ವಾಜಿನಃ" ಶಾಕುಂ ೧. 3. ಅಶ್ವ. ಕುದುರೆ. 4. ಸೂರ್ಯ. 5. ಸೂರ್ಯನ ಕುದುರೆ. "ಉತ್ಪಾಡ್ಯ ಮೇಶ್ವಜ್ಞಾಣಿ ಕ್ಷುಣ್ಣಾನಿ ಹರಿತಾಂ ಕುರೇ" ಕುಮಾಂ ೨-೪೩. "ಹರಿತ್ ಸೂರ್ಯೇ ಚ ಸೂರ್ಯಾಶ್ವೇ ವರ್ಣೇ ಚ ಹರಿತೇ ದಿಶಿ" ವಿಷ್ಣುಂ. 6. ಎಷ್ಟು. 7. ಸಿಂಹ. 8. ಹಸಿರುಕಾಳು, ಮುದ್ದು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 9. ದಿಕ್ಕು. "ತತಾರ ವಿಜ್ಞಾಃ ಪವನಾತಿ-ಪಾತಿಭಿಃ ದಿಶೋ ಹರಿದ್ವಿಹರಿತಾಮಿವೇಶ್ವರಃ" ರಘುಂ ೩-೩೦. 10. ಅರಿಶಿನ. (ಪುಂ) 11. ತೃಣ, ಹುಲ್ಲು. (ವಿಂ) 12. ಹಸಿರುಬಣ್ಣದ. 13. ಕಪ್ಪು ಹಳದಿ ಮಿಶ್ರವರ್ಣದ. "ಹರಿದಿಶಿ ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಪುಸಿ ಹೃದ್ಯವರ್ಣವಿಶೇಷಯೋಃ. ಅಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ಸ್ಥಾತುಣೇ ಚ" ಮೇದಿಂ.

ಹರಿತ ಹರಿತ (ಪುಂ) 1. ಹಸಿರು ಬಣ್ಣ. ಹರಿತ ಮನಃ—ಹೃದ್ (ಹರಣೇ) "ಇತನ್" (ತಂ ೩-೨೩). 2. ಸಿಂಹ. "ಕಂಠೀರವೋ ಮಗರೀಪುಸ್ತುಗನ್ವಿಹರಿತೋ ಹರಿತ್" ವೇಜಂ. 3. ಸೂರ್ಯನ ಕುದುರೆ. "ಸ ಪಶ್ಚಿಮದ್ರಃ ಸೂರ್ಯಾಶ್ವೋ ವಾತಾಹರಿತೋ ಸಮೋ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. 4. ಹಸಿರುಕಾಳು. "ಮೃದಗಸ್ತು ಪ್ರಥನೋ ಲೋಮ್ಯೋ ಬಲಾಙ್ಗೋ ಹರಿತೋ ಹರಿಃ" ವೇಜಂ. 5. ಹಳದಿಬಣ್ಣ. 6. ನೀಲಿ ಮತ್ತು ಹಳದಿ ಬೆರತ ಬಣ್ಣ. ವೇಜಂ. (ವಿಂ) 7. ಹಸಿರುಬಣ್ಣದ. "ಹರಿತಪತ್ರಮಯೀವ ಮಹದ್ಗಣಃ ಸ್ರಗವನಢಮನೋರಮಪಲ್ಲವಾ" ಮಾಧಂ ೬-೫೩. "ಹರಿತತೃಣೋದ್ಗಮಶಚ್ಛಯಾ ಮೃಗೀಭಿಃ" ಕಿರಾಂ ೫-೩೮. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ ವಾ "ಡೀಪ್" ನಕಾರಾದೇಶಶ್ಚ (೪-೧-೩೯). ಹರಿಣಿ ಹರಿಣೀ. ಪಕ್ಷೆ ಹರಿತಾ ಹರಿತಾ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹರಿತಾ ಹರಿತಾ. 8. ಗಂಟೆ ಹುಲ್ಲು. "ಹರಿತಾ ಸ್ತ್ರೀ ಚ ದ್ವರ್ಯಾಂ ಹರಿದ್ವರ್ಣಯುತೇ-ನ್ಯವತ್" ಮೇದಿಂ.

ಹರಿತಕ ಹರಿತಕ (ನಂ) 1. ಕೇರಸಿಂಪು. 2. ಗಂಟೆ ಹುಲ್ಲು. ಹರಿತೇನ ವರ್ಣೇನ ಕಾಯತಿ—ಕೆ (ಶಬ್ದೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩). "ಅಶ್ರಾವಿ ಭೂಮಿಪತಿಭಿಃ ಕ್ಷಣವೀತನಿರ್ದೇ-ರಣನ್ ಪುರೋ ಹರಿತಕಂ ಮುದಮಾದಧಾನಃ. ಗ್ರೋವಾಗ್ರಲೋಕಲ-ಕಿಙ್ಕಣಿಕಾನಿನಾದಮಿಶ್ರಂ ದಧದ್ವನನವರ್ಚುರಶಬ್ದಮಶ್ವಃ" ಮಾಧಂ ೫-೫೮.

ಹರಿತಾಲ ಹರಿತಾಲ (ನಂ) 1. ಹರಿದಳ, ಹಳದಿಬಣ್ಣದ ಒಂದು ಖನಿಜ, ಒಂದು ಉಪಧಾತು. ಹರಿತೇನ ಅಲತಿ—ಅಲ (ಭೂಷಣಾದೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪). "ಅವಲ ಣ್ವ ಭವಾನಿವ ರಾಜತೇ ಸ ಹರಿತಾಲಸಮಾನನವಾಂಶುಕಃ" ಮಾಧಂ ೪-೨೧. 2. ಹಳದಿಬಣ್ಣದ ಪಾರಿವಾಳ ಹಕ್ಕಿ. ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕಃ". —ತಾಲಕಮ್—ತಾಲಕಮ್.

ಹರಿತಾಲಿಕಾ ಹರಿತಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭಾದ್ರಪದ ಶುಕ್ಲಚತುರ್ಥಿ. 2. ಗಂಟೆ ಹುಲ್ಲು.

ಹರಿತಾಶಮನ್ ಹರಿತಾಶಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಮರಕತಶಿಲೆ, ಪಚ್ಚೆ. ಹರಿತವರ್ಣಃ ಅಶಮಾ. (ನಂ) 2. ರಸಾಂಜನ. "ತೃಣವಾಚ್ಛಯಾ ಮಹುರವಾಚ್ಛಿತಾನನಾನ್ವಿಚಯೇಷು ಯತ್ರ ಹರಿತಾಶಮ-ವೇಶಮನಾಮ್" ಮಾಧಂ ೧೩-೫೬.

ಹರಿದಶ್ಚ ಹರಿದಶ್ಚ (ಪುಂ) 1. ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. ಹರಿದ್ವರ್ಣೋ-ಶ್ವೋಽಸ್ಯ. "ಪ್ರವಿಘಾಟಯಿತಾ ಸಮುತ್ಪತ್ತನ್ ಹರಿದಶ್ಚಃ ಕಮಲಾ-ಕರಾನಿವ" ಕಿರಾಂ ೨-೪೬. 2. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ ಗಿಡ.

ಹರಿದಾಸ ಹರಿದಾಸ (ಪುಂ) ಶ್ರೀವಿಷ್ಣು ಭಕ್ತ, ವಿಷ್ಣುವನ್ನು ಆರಾಧಿಸುವವನು.

ಹರಿದಿನ ಹರಿದಿನ (ನಂ) ವಿಷ್ಣುವಿಗೆ ಪ್ರಿಯವಾದ ಏಕಾದಶೀ ಮತ್ತು ದ್ವಾದಶೀ ತಿಥಿಗಳು.

ಹರಿದೇವ ಹರಿದೇವ (ಪುಂ) 1. ಶ್ರವಣನಕ್ಷತ್ರ. ಶ್ರವಣ ನಕ್ಷತ್ರವು ವಿಷ್ಣುದೇವತಾಕವಾದುದು. ಹರಿಃ ದೇವೋ ಅಧಿಷ್ಠಾತೃದೇವತಾ ಯಸ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ವಿಷ್ಣುವೇ ಉಪಾಸ್ಯ ದೇವತೆಯಾಗಿ ಉಳ್ಳವನು. ಹರಿದೇವೋ ಯಸ್ಯ.

ಹರಿದ್ರಾ ಹರಿದ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅರಿಶಿನ. ಹರಿತಂ ಪೀತವರ್ಣ ರಾತಿ—ರಾ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩).

ಹರಿದ್ರಾಗಣೇಶ ಹರಿದ್ರಾಗಣೇಶ (ಪುಂ) ಹಳದಿಬಣ್ಣದ ಗಣಪತಿ. ಹರಿದ್ರಾವರ್ಣೋ ಗಣೇಶಃ.

ಹರಿದ್ರಾಙ್ಗ ಹರಿದ್ರಾಙ್ಗ (ಪುಂ) ಹಳದಿಬಣ್ಣದ ಪಾರಿವಾಳ. ಹರಿದ್ರಾಯಾ ಇವ ಅಜ್ಞಮಸ್ಯ.

ಹರಿದ್ರಾಭ ಹರಿದ್ರಾಭ (ಪುಂ) 1. ಹೊನ್ನೆಮರ. ಹರಿದ್ರಾಯಾ ಆಭಾ ಇವ ಆಭಾಸ್ಯ. 2. ಹೊಂಬಣ್ಣ, ಹಳದಿ ಬಣ್ಣ. ಹರಿದ್ರೇವ ಆಭಾತಿ—ಆ+ಭಾ (ದೀಪ್ತೌ) "ಕಃ" (೩-೨-೪). 3. ಶತಾವರಿ. (ವಿಂ) 4. ಹೊಂಬಣ್ಣದ, ಹಳದಿಯ ಬಣ್ಣದ. "ಹರಿದ್ರಾಭಂ ಚತುರ್ವಾಹುಂ ಹಾರಿದ್ರಚವಸನಂ ವಿಭುಮ್" ತನ್ವಸಾಂ.

ಹರಿದ್ರಾರಾಗ ಹರಿದ್ರಾರಾಗ (ಪುಂ) 1. ಸ್ಥಿರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲದ ಸ್ವೇಹ. ಹರಿದ್ರಾಯಾ ರಾಗ ಇವ ರಾಗಃ. 2. ಹಳದಿಯ ಬಣ್ಣ. ಹರಿದ್ರಾಯಾ ರಾಗಃ. (ವಿಂ) 3. ಅಸ್ಥಿರವಾದ ಸ್ವೇಹವುಳ್ಳವನು, ಬಹಳಕಾಲ ನಿಲ್ಲದ ಸ್ವೇಹವುಳ್ಳವನು. ಹರಿದ್ರಾಯಾ ರಾಗ ಇವ ರಾಗೋ ಯಸ್ಯ. "ಕ್ಷಣಮಾತ್ರಾನುರಾಗೀ ಚ ಹರಿದ್ರಾರಾಗ ಉಚ್ಯತೇ" ಹಲಾಂ.

ಹರಿಹಾರ ಹರಿಹಾರ (ನಂ) ಒಂದು ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ, ಒಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಯಾತ್ರಾಸ್ಥಳ. ಹರೇಃ ಹರಿಪದಪ್ರಾಪ್ತೇಃ ದ್ವಾರಮಿವ.



ಈ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಪ್ರವಹಿಸುವ ಗಂಗಾನದಿಯಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ ಸ್ನಾನವು ಕಾಶಿಯಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವೇಶ್ವರನ ಸನ್ನಿಧಿಯಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ ಗಂಗಾಸ್ನಾನದ ಫಲವನ್ನು ಕೊಡುವುದು. "ಗಜ್ಞಾಂ ಚೈವ ಯತ್ಪುಷ್ಪಂ ಕಾಶ್ಯಾಂ ವಿಶ್ವೇಶ್ವರಾಗ್ರತಃ | ಪ್ರಯಾಗೇ ಮುಂಡನಾಂ ಚೈವ ಹರಿಧಾರೆ ಹರೇಗೃಹೇ" || ಈ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ಗಂಗೆಯು ಅವತರಣ ವಾದುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ "ಗಜ್ಞಾಧಾರಮ್" ಎಂಬ ಹೆಸರೂ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ.

**ಹರಿನಾಮನ್ ಹರಿನಾಮನ್** (ಪುಂ) 1. ಮುದ್ದು, ಹೆಸರುಕಾಳು. ತ್ರಿಕಾಂಡಂ. (ನಂ) 2. ಶ್ರೀಹರಿಯ ನಾಮೋಚ್ಚಾರಣೆ. ಹರೇ: ನಾಮ ನಾಮೋಚ್ಚಾರಣಮ್ | ಹರಿನಾಮಸಂಕೀರ್ತನಕ್ಕೆ ಕಾಲದೇಶಾದಿ ಯಾವ ನಿಯಮವೂ ಇಲ್ಲ. "ನ ಕಾಲ-ನಿಯಮಸ್ತತ್ರ ನ ದೇಶನಿಯಮಸ್ತಥಾ | ನೋಚ್ಚಿಷ್ಟಾದೌ ನಿಷೇಧೋಽಸ್ತಿ ಹರೇನಾಮಿನಿ ಲುಬ್ಧಕಃ | ಜ್ಞಾನಂ ದೇವಾರ್ಚನಂ ಧ್ಯಾನಂ ಧಾರಣಾ ನಿಯಮೋ ಯಮಃ | ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರಃ ಸಮಾಧಿಶ್ಚ ಹರಿನಾಮಸಮಂ ನ ಚ" ಪಾಞ್ಚೆ |

"ಹರೇ ರಾಮ ಹರೇ ರಾಮ ರಾಮ ರಾಮ ಹರೇ ಹರೇ |

ಹರೇ ಕೃಷ್ಣ ಹರೇ ಕೃಷ್ಣ ಕೃಷ್ಣ ಕೃಷ್ಣ ಹರೇ ಹರೇ ||

ಈ ಹರೇ ಮತ್ತು ರಾಮ ಕೃಷ್ಣ ನಾಮಗಳ ರಹಸ್ಯ: "ಹಕಾರಸ್ತು ಸುತಶ್ರೇಷ್ಠ ಶಿವಃ ಸಾಕ್ಷಾತ್ ಸಂಶಯಃ | ರೇಫಸ್ತು ತ್ರಿಪುರಾದೇವಿ ಮಮ ಮೂರ್ತಿಯೇ ಸದಾ || ಏಕಾರಶ್ಚ ಭಗಂ ವಿಧಾತ್ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಪೂರ್ಣಿ ತಪೋಧನ | ಏಕಾರಃ ಶೂನ್ಯರೂಪಿ ಚ ರೇಫೋ ವಿಗ್ರಹಧಾರಿಣಃ | ಹರೇ ತು ತ್ರಿಪುರಾ ಸಾಕ್ಷಾತ್ ಮಮ ಮೂರ್ತಿನ ಸಂಶಯಃ || ಕಕಾರಃ ಕಾಮದಾ ಕಾಮರೂಪಿಣಿ ಸ್ಫುರದಖ್ಯಯಮ್ | ಋಕಾರಶ್ಚ ಸುತಶ್ರೇಷ್ಠ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ಶಕ್ತಿರೀತಿರೀತಾ || ಕಕಾರಶ್ಚ ಋಕಾರಶ್ಚ ಕಾಮಿನಿ ವೇಣವೀ ಕಲಾ | ಷಕಾರಶ್ಚಂದ್ರಮಾ ದೇವಃ ಕಲಾಪೋಡಶಸಂಯುತಃ || ಣಕಾರಶ್ಚ ಸುತವರ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಪೂರ್ಣಿ-ರೂಪಿಣಿ" ||

**ಹರಿನೆತ್ರ ಹರಿನೆತ್ರ** (ನಂ) 1. ಎಷ್ಟು ಎನ ಕಣ್ಣು. 2. ಶ್ವೇತ ಕಮಲ, ಬಿಳಿಯ ತಾವರೆ. ಹರೇನೆತ್ರಮಿವ | "ವಿಬೋಧನಾಥಯಿ ಹರೇಹರಿನೆತ್ರಕುತಾಲಯಾಮ್ | ವಿಶ್ವೇಶ್ವರೀಂ ಜಗದ್ವಾತ್ಮೀಂ ಸ್ಥಿತಿ-ಸಂಹಾರಕಾರಿಣೀಮ್" ಮಾರ್ಕಂ. (ಪುಂ) 3. ಘೊಕ, ಗೂಬೆ.

**ಹರಿನ್ಮಣಿ ಹರಿನ್ಮಣಿ** (ಪುಂ) ಮಂಕುಳ, ಪಚ್ಚಿ. ಹರಿನ್ಮಣಿ ಮಣಿಃ | "ಗೋಪಾನಸೀಘ್ರ ಕ್ಷಣಮಾಸ್ಥಿತಾನಾಮಾಲಮ್ಬಿಮಿಶ್ರಾನ್ದ-ಕಿಣಾಂ ಕಲಾಪೈಃ | ಹರಿನ್ಮಣಿಷ್ಯಾಮತೃಣಾಭಿರಾಮಗೃಹಾಣಿ ನೋಽಗ್ರೇವ ಯತ್ರ ರೇಜುಃ" ಮಾಘಂ ೩-೪೯ |

**ಹರಿಪರ್ಣ ಹರಿಪರ್ಣ** (ನಂ) ಮೂಲಂಗಿ. ಹರಿಪರ್ಣ ಪರ್ಣಮಸ್ಯ |

**ಹರಿಪ್ರಸ್ಥ ಹರಿಪ್ರಸ್ಥ** (ನಂ) ಇಂದ್ರಪ್ರಸ್ಥನಗರ, ಈಗಿನ ದೇಹಲಿ. ["ಇಂದ್ರಪ್ರಸ್ಥ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] "ಹರಿ-ಹರಿಪ್ರಸ್ಥಮಥ ಪ್ರತಸ್ಥೇ" ಮಾಘಂ ೩-೧ |

**ಹರಿಪ್ರಿಯ ಹರಿಪ್ರಿಯ** (ಪುಂ) 1. ಕದಂಬ ವೃಕ್ಷ, ಈಚೆಲು ಮರ. 2. ಶಂಖ. 3. ಗನ್ನೇರಳೆ. 4. ದಾಸಿವಾಳ. ಹರೇ: ಪ್ರಿಯಃ | (ನಂ) 5. ಲಾವುಚೆದ ಬೇರು. (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪ್ರಿಯಾ -ಪ್ರಿಯಾ. 6. ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿ. 7. ತುಲಸಿ. 8. ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ. 9. ದ್ವಾದಶೀ ತಿಥಿ.

**ಹರಿಭಕ್ತ ಹರಿಭಕ್ತ** (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣುಭಕ್ತ, ವಿಷ್ಣುವನ್ನು ಪೂಜಿಸುವವನು. ಹರೇ: ಭಕ್ತಃ | "ಸರ್ವಜೀವೇಷು ಯೋ ವಿಷ್ಣುಂ ಭಾವಯೇತ್ ಸಮತಾಧಿಯಾ | ಹರೌ ಕರೋತಿ ಭಕ್ತಿಂ ಚ ಹರಿಭಕ್ತಃ ಸ ಚ ಸ್ಮೃತಃ" ಬ್ರಹ್ಮವೇಂ | ಸಕಲ ಪ್ರಾಣಿಗಳಲ್ಲೂ ಸಮ ಭಾವನೆಯಿಂದಿರುವವನು ವಿಷ್ಣುಭಕ್ತನು.

**ಹರಿಭದ್ರ ಹರಿಭದ್ರ** (ನಂ) ಸುರಸುರುಕೆ ಗಿಡ.

**ಹರಿಭುಕ್(ಜ್) ಹರಿಭುಕ್(ಜ್)** (ಪುಂ) ಸರ್ಪ, ಹಾವು. ಹರಿ ಮಂಡುಕಂ ಭುಂಕ್ತೇ - ಭುಜ "ಕಿವಪ್" (೩-೨-೬೧) |

**ಹರಿಮನ್ಯಕ ಹರಿಮನ್ಯಕ** (ಪುಂ) ಚಣಕ, ಕಡಲೆ. ಹರಿಮಿ: ಅಶ್ವೇ: ಮಧ್ಯತೇ - ಮಧೇ (ವಿಲೋಡನೇ) ಕರ್ಮಂ "ಧಜ್" (೩-೩-೧೯) | ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" (೪-೪-೪) | "ವಣಕೋ ಹರಿಮನ್ಯಕಃ" ಅಮಂ |

**ಹರಿಲೋಚನ ಹರಿಲೋಚನ** (ಪುಂ) 1. ಎಡಿ, ನಳ್ಳು. 2. ಘೊಕ, ಗೂಬೆ.

**ಹರಿವಂಶ ಹರಿವಂಶ** (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಾಸಮಹರ್ಷಿವಿರಚಿತ ಮಹಾಭಾರತದ ಒಂದು ಪರಿಶಿಷ್ಟ ಭಾಗ, ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಸಂತತಿಯನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ. ಹರೇ: ವಂಶೋ ವರ್ಣ್ಯತ್ವೇನಾಸ್ತಸ್ಯ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) | "ವಸುಧೇವಾತು ದೇವಕಯಾ ವಾಸುಧೇವೋ ಬಲೋಽಭವತ್ | ಋಷಿಮಣಿ ಸತ್ಯಭಾಮಾ ದ್ವಾ ಅಷ್ಟೌ ಪತ್ನಯೋ ಹರೇ: ಪುರಾ | ಷೋಡಶಸ್ತ್ರೀಸಹಸ್ರಾಣಿ ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಸನ್ ಮಾತುರ್ಮನಃ | ತಾಸಾಂ ಪುತ್ರಾಶ್ಚ ಪೌತ್ರಾದ್ಯಾಃ ಶತಶೋಽಪಿ ಸಹಸ್ರಶಃ || ಋಷಿಮಣ್ಯಾಂ ಚೈವ ಪ್ರಚ್ಯುತಃ ನ್ಯವಧೀತ್ ಶಮ್ಬರಂ ಚ ಯಃ | ತಸ್ಯ ಪುತ್ರೋಽನಿರುದ್ಧೋಽಭವತ್ ಉಪಾ ಬಾಣಸುತಾಪತಿಃ" ಇತ್ಯಾದಿ. 2. ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಸಂತತಿ. ಹರೇ: ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಸ್ಯ ವಂಶಃ |

**ಹರಿವಲ್ಲಭಾ ಹರಿವಲ್ಲಭಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಪತ್ನಿ, ಲಕ್ಷ್ಮಿ. ಹರೇ: ವಲ್ಲಭಾ | 2. ತುಲಸಿ.

**ಹರಿವಾಸರ ಹರಿವಾಸರ** (ಪುಂ) ಹರಿದಿನ, ಎಕಾದಶೀ ಮತ್ತು ದ್ವಾದಶೀ ತಿಥಿಗಳು. ಹರೇ: ವಾಸರಃ | "ಏಕಾದಶಿ ದ್ವಾದಶಿ ಚ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ಶ್ರೀಚಕ್ರಾಣಿಣಃ | ಏಕಾದಶಿಮುಪೋಷ್ಯೈವ ದ್ವಾದಶಿಂ ಸಮುಪೋಷಯೇತ್ || ನ ಚಾತ್ರ ವಿವಿಲೋಪಃ ಸ್ಯಾತ್ ಉಭಯೋರ್ದೇವತಾ ಹರಿಃ" || ದ್ವಾದಶಿಯ ಮೊದಲ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗವು ಹರಿವಾಸರ. "ದ್ವಾದಶ್ಯಾ: (ಪ್ರಥಮೋಭಾಗಃ) ಪ್ರಥಮಃ ಪಾದಃ ಹರಿವಾಸರಸಂಜ್ಞಕಃ | ತಮತಿಕರ್ಮ್ಯ ಕುರ್ವೀತಿ ಪಾರಣಂ"



ವಿಷ್ಣುತತ್ಪರ: "ವಿಂ ಛಂ । ಹರಿವಾಹನದಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯೆ ಮೊದಲಾದ ಸಕಲ ಪಾಪಗಳೂ ಅನ್ನದಲ್ಲಿ ಸೇರಿರುವುವು. ಆ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಭೋಜನವು ಪಾಪವನ್ನು ಭುಜಿಸಿದಂತೆ. "ಯಾನಿ ಕಾನಿ ಚ ಪಾಪಾನಿ ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯಾದಿ-ಕಾನಿ ಚ । ಅನ್ನಮಾಶ್ರಿತಂ ಸರ್ವಾಣಿ ತಿಷ್ಠಂತಿ ಹರಿವಾಹನೇ । ಅಥ ಸ ಕೇವಲಂ ಭುಕ್ತೇ ಯೋ ಭುಕ್ತೇ ಹರಿವಾಹನೇ" ॥

**ಹರಿವಾಹನ ಹರಿವಾಹನ (ಛಂ) 1.** ಗರುಡ, ವೈನತೇಯ. ಹರೇ:ವಾಹನ: । "ವೇನತೇಯ: ಪಕ್ಷಿಸಿಂಹ: ಶಾಲ್ಮಲಿ ಹರಿವಾಹನ:" ಹಾರಾಂ । ವಾಹನ ಶಬ್ದವು "ಸರ್ವಂ ಸ್ಯಾದ್ವಾಹನಂ ಯಾನಂ ಯುಗಂ ಪತ್ರಂ ಚ ಖೋರಣಮ್" ಎಂದು ಅಮರಕೋಶದಲ್ಲಿ ನಪುಂಸಕ ವಾಗಿ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. ಹಾರಾವಳಿಯಲ್ಲಿ ಪುಂಲಿಂಗವಾಗಿ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. 2. ಇಂದ್ರ. ಹರಿ: ತತ್ತ್ವ:ಶ್ರವಾ: (ಅಶ್ವ:) ವಾಹನಂ ಯಸ್ಯ । "ಎವಂ ಸ್ತುತಸ್ತದಾ ಕದ್ರಾ ಭಗವಾನ್ ಹರಿ-ವಾಹನ: । ನೇಲಜಿಮೂತಸಂಜ್ಞಾತ: ಸರ್ವಮಂಭರಮಾವೃಣೋತ್" ಭಾಂ ಆದಿಂ ೨೬-೧ । 3. ಸೂರ್ಯ. "ಹರಿವಾಹನಸ್ತು ಪುಂಸಿ ಸ್ಯಾತ್ ಶಚೀಪತಿವಿವಸ್ವತೋ:" ಮೇದಿಂ ।

**ಹರಿಶಯನ ಹರಿಶಯನ (ನಂ) ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಶಯನ, -ನಿದ್ರೆ.** ಏಕಾದಶಿಯ ದಿನ ಮಧ್ಯಾಹ್ನ ಆದಿಶೇಷನ ಪರ್ಯಂಕವನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸಿ ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು ಪೂಜಿಸಿ ದ್ವಾದಶಿಯ ದಿವಸ ರಾತ್ರಿ ಆ ತಲ್ಪದಲ್ಲಿ ಮಲಗಿಸಬೇಕು. ಆದುದರಿಂದ ಆ ಏಕಾದಶಿ ಮತ್ತು ದ್ವಾದಶಿ ತಿಥಿಗಳು ಶಯನೈಕಾದಶಿ ಮತ್ತು ಶಯನದ್ವಾದಶಿಗಳಾದುವು. "ಏಕಾದಶ್ಯಾಂ ಜಗತ್ಸಾಮಿಶಯನಂ ಪರಿಕಲ್ಪಯೇತ್ । ಶೇಷಾಹಿ-ಭೋಗಪರ್ಯಂಕ್ಲಂ ಕೃತ್ವಾ ಸಂಪೂಜ್ಯ ಕೇಶವಮ್ । ಅನುಜ್ಞಾಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೇಮ್ಯಶ್ಚ ದ್ವಾದಶ್ಯಾಂ ಪ್ರಯತ: ಶುಚಿ: । ಲಙ್ಕವಾ ಪೀತಾಂಭರಧರಂ ದೇವಂ ನಿद्रಾಂ ಸಮಾನಯೇತ್ ॥" ವಾಮನಪುರಾಣಮ್ । ಭವಿಷ್ಯಪುರಾಣದಲ್ಲಿ "ಮೇಶಾಕ್ಷಪಾದೇ ಸ್ವಪಿತ್ತಿಹ ವಿಷ್ಣು: ವೇಣವ್ಯಮಂಶ್ಯೇ ಪರಿವರ್ತತೇ ಚ । ಪೌಷ್ಣಾವಸಾನೇ ಚ ಸುರಾರಿಹಂತಾ ಪ್ರಬುಧ್ಯತೇ ಮಾಸಚತುಷ್ಠ-ಯೇನ" ಎಂದು ವಿಷ್ಣುವಿನ ಶಯನ ಮತ್ತು ಉತ್ಥಾನ ಕಾಲಗಳು ಉಕ್ತವಾಗಿವೆ. (ಮೇವಮ್-ಅನೂರಾಧಾ, ವೇಣವ್ಯಮ್ - ಶ್ರವಣಾ, ಪೌಷ್ಣ - ರೇವತಿ) ಕಾರ್ತಿಕಶುಕ್ಲಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು ವಿಜೋಧಗೋಳಿಸಬೇಕು. ಅದರ ಮಂತ್ರ: "ಉತ್ತಿಷ್ಠೋತ್ತಿಷ್ಠ ಗೋವಿಂದ ತ್ಯಜ ನಿದ್ರಾಂ ಜಗತ್ಪತೇ । ತ್ವಯಾ ಚೋತ್ಥೀಯಮಾನೇನ ಉತ್ಥಿತಂ ಭುವನತ್ರಯಮ್" ॥

**ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರ ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರ (ಛಂ) ಸೂರ್ಯವಂಶದ ತ್ರಿಶಂಕುವಿನ ಪುತ್ರ.** ಇಕ್ಷ್ವಾಕುವಂಶದ ಒಬ್ಬ ಚಕ್ರವರ್ತಿ. ಹರಿ:ಚಂದ್ರ ಇವ । ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರನ ಪತ್ನಿ ಚಂದ್ರಮತಿ. ವರುಣನ ವರದಿಂದ ಚಂದ್ರಮತಿಯಲ್ಲಿ ರೋಹಿತನೊಬ್ಬ ಪುತ್ರನು ಜನಿಸಿದನು. ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರನು ಮೊದಲು ವಾಗ್ದಾನ ಮಾಡಿ

ದ್ವಂತೆ ಅವನ ಪುತ್ರನನ್ನು ಪಶುವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿ ಯಾಗ ಮಾಡಬೇಕೆಂದು ವರುಣನು ಅನೇಕ ಸಲ ಬಂದು ಕೇಳು ತ್ತಿರಲು ಪುತ್ರಪ್ರೇಮದಿಂದ ಮಗನಿಗೆ ಹಲ್ಲು ಹುಟ್ಟಿ ಬೇಕು ಹಲ್ಲು ಬೀಳಬೇಕು ಇತ್ಯಾದಿ ಸಬೂಬುಗಳನ್ನು ಹೇಳುತ್ತ ಕಾಲ ತಳ್ಳುತ್ತಿದ್ದನು. ಅದರಿಂದ ಕುಪಿತನಾದ ವರುಣನ ಕ್ರೋಧಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರನಾಗಿ ಜಲೋದರರೋಗ ಗ್ರಸ್ತನಾಗಿ ನರಳುತ್ತಿರಲು ಪುತ್ರನಾದ ರೋಹಿತಾಶ್ವನು ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸಿ ಒಬ್ಬ ಶುನಃಶೇಫನನ್ನು ಕ್ರಯಕ್ಕೆ ತಂದು ತಂದೆಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿದನು. ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರನು ನರವೇಧ ಮಾಡಿ ವರುಣನನ್ನು ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸಿ ರೋಗದಿಂದ ವಿಮುಕ್ತ ನಾದನು. ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರನು ಪ್ರಾಮಾಣಿಕತೆ, ಔದಾರ್ಯ ಮತ್ತು ಸತ್ಯಸಂಧತೆ ಇವುಗಳಿಂದ ಒಳ್ಳೆಯ ಕೀರ್ತಿ ಪಡೆದಿದ್ದನು. ಒಂದು ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಇವನ ಕುಲಪುರೋಹಿತ ರಾದ ವಸಿಷ್ಠಮಹರ್ಷಿಯು ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರರ ಎದುರಿಗೆ ಇವನ ಗುಣಗಾನ ಮಾಡಿದರು. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಯುಷಿಯು ಇವನನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸಿದರೆ ಗೆಲ್ಲಲಾರನೆಂದು ತಿಳಿದು ಬಹಳ ಕಠಿಣವಾದ ಪರೀಕ್ಷೆಗೆ ಒಳಪಡಿಸಿ ನಾನಾ ವಿಧವಾದ ಕ್ಲೇಶ ಗಳನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಿದರು. ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರನು ತನ್ನ ಅಚಲವಾದ ಧೈರ್ಯ ಸ್ಥೈರ್ಯಗಳಿಂದ ಅವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಎದುರಿಸಿ ತನ್ನ ಸತ್ಯಸಂಧತೆಯನ್ನು ಪಾಲಿಸಲು ತಾನು ತನ್ನ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಬಿಟ್ಟುಹೋದ ಮೇಲೆ ಪತ್ನೀಪುತ್ರ ರನ್ನು ವಿಕ್ರಯಿಸಿ ಕೊನೆಗೆ ತನ್ನನ್ನೂ ಒಬ್ಬ ಚಂಡಾಲ ನಿಗೆ ಮಾರಿಕೊಂಡು ಸಹಿಸಲಸಾಧ್ಯವಾದ ಕಷ್ಟಕಾರ್ಪಣ್ಯ ಗಳಿಗೆ ಈಡಾಗಿ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಯುಷಿಯ ಪರೀಕ್ಷೆಯಲ್ಲಿ ಜಯ ಶೀಲನಾದನು. ಹೀಗೆ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಯುಷಿಯ ವೆಂಚ್ಚುಗೆಗೆ ಪಾತ್ರನಾಗಿ ಮತ್ತೆ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಪಡೆದು ರಾಜಸೂಯ ಯಾಗ ಮಾಡಿ ಎಲ್ಲರೊಡನೆ ಸದ್ಗತಿಯನ್ನು ಪಡೆದನು. ಮಾರ್ಕಂ ।

**ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರನಗರ ಹರಿಶ್ಚಂದ್ರನಗರ (ನಂ) ಶಾಭಪುರ.** **ಹರಿಸಂಕ್ಷೀತನ ಹರಿಸಂಕ್ಷೀತನ (ನಂ) ಶ್ರೀಮಹಾವಿಷ್ಣು** ವಿನ ನಾಮಸಂಕ್ಷೀತನ, ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ನಾಮೋಚ್ಚಾರಣೆ. ಹರೇ: ಸಂಕ್ಷೀತನಮ್ । "ದಾನಂ ವ್ರತಂ ತಪೋ ಯಜ್ಞ: ಶ್ರಾದ್ಧಂ ವಾ ಪಿತೃತರ್ಪಣಮ್ । ಸಕಲಂ ನಿರ್ಫಲಂ ರಾಜನ್ ಹರಿಸಂಕ್ಷೀತನಂ ವಿನಾ" ॥

**ಹರಿಸುತ ಹರಿಸುತ, -ಸುತು -ಸೂನು (ಛಂ) ಅರ್ಜುನ.** **ಹರಿಹಯ ಹರಿಹಯ (ಛಂ) 1.** ಇಂದ್ರ. ಹರಿಹಯೋ ಯಸ್ಯ । ತ್ವಕ್ಕು (ಚರ್ಮ) ಕೂದಲು ಬಾಲದ ಕೂದಲು ಎಲ್ಲವೂ ಸುರ್ವಣದಂತಿರುವುದರಿಂದ ಇಂದ್ರನ ಕುದುರೆಯು ಹರಿ. ಈ ಹರಿಯ (ಹಳದಿಯ ಬಣ್ಣದ) ಕುದುರೆಯುಳ್ಳ



ಇಂದ್ರನು ಹರಿಹರನು. "ವಕ್ತೃಕೇಶವಾಲರೋಮಾಣಿ ಸುವರ್ಣ-  
ಭಾನಿ ಯಸ್ಯ ತು | ಹರಿಃ ಸ ವರ್ಣತೋಷ್ವಸ್ತು ಪಿತೃಕೌಶೇ-  
ಸಪ್ರಭಃ" || "ಉಪಗತೋ ವಿವಿಧವಿಧಿವಿಧಿ ಪ್ರಜಾ ಹರಿಹರೋಽರಿಹ-  
ಯೋಗವಿಚಕ್ಷಣಃ" ರಘುಂ ೧-೧೮ | 2. ಸೂರ್ಯ. 3.  
ಕಾರ್ತಿಕೇಯ. 4. ಗಣಪತಿ.

**ಹರಿಹರ ಹರಿಹರ (ಪುಂ)** ವಿಷ್ಣು ಮತ್ತು ಈಶ್ವರ ಇವರ  
ಸಂಯುಕ್ತಮೂರ್ತಿ. ಹರಿಣಾ ಸಹ ಹರಃ | ದೇವತೆ  
ಗಳೆಲ್ಲರೂ ಒಟ್ಟುಗೂಡಿ ಒಂದು ಈಶ್ವರನೆಲ್ಲಿರುವನು  
ಅವನನ್ನು ನಾವು ಪೂಜಿಸಬೇಕು ಎಂದು ಕೇಳಲು ವಿಷ್ಣುವು  
ತನ್ನ ಹೃದಯಕಮಲದಲ್ಲಿ ಶಯನಿಸಿರುವನೆಂದು ಹೇಳಿ  
ತೋರಿಸಲು ಎಲ್ಲರೂ ಈಶ್ವರನಿಗೆ ಕ್ಷೀರಾಭಿಷೇಕಮಾಡಿ  
ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಾಗಿ ಪೂಜಿಸಿದರು. "ವಿಮುಕ್ತಪಾಪಾ ದೇವೇಶ  
ವಾಸುದೇವಮಥಾಬ್ರವತ್ | ಕ್ವಾಸೌ ವದ ಜಗನ್ನಾಥ ಶಂಭುಸ್ತಿಷ್ಠತಿ  
ಕೇಶವ || ಯಂ ಕ್ಷೀರಾದಿಭಿಃಕೇಣ ಸ್ನಾಪಯಾಮೋ ವಿಧಾನತಃ |  
ಅಥೋವಾಚ ಸುರಾನ್ ವಿಷ್ಣುರೇಷ ತಿಷ್ಠತಿ ಶಂಕರಃ || ಮದೇಹೇ  
ಕಿಂ ನ ಪಶ್ಯತ್ಯವಂ ಯೋಗಪ್ರಾಪಂ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಮ್ | ತಮ್ಚುರ್ನೈವ ಪಶ್ಯಾ-  
ಮಸ್ತ್ವತ್ತೋ ವೈ ತ್ರಿಪುರಾಂತಕಮ್ || ಸತ್ಯಂ ವದ ಸುರೇಶಾನ  
ಮಹೇಶಾನಃ ಕ್ವ ತಿಷ್ಠತಿ | ತತೋಽವ್ಯಯಾತ್ಮಾ ಸ ಹರಿಃ  
ಸ್ವಹೃತ್ಪಕ್ಷಜಶಾಯಿನಮ್ || ದರ್ಶಯಾಮಾಸ ದೇವಾನಾಂ ಸುರಾರಿಲಿಂಗ-  
ಮೆಶ್ವರಮ್ | ತತಃ ಸುರಾಃ ಕ್ರಮೇಣೈವ ಕ್ಷೀರಾದಿಭಿರನಂತರಮ್ ||  
ಸ್ನಾಪಯಾಂಚಕ್ರೀರೇ ಲಿಂಗಂ ಶಾಶ್ವತಂ ಧ್ರುವಮವ್ಯಯಮ್" ವಾಮನ-  
ಪುರಾಣಮ್ |

**ಹರಿಹರಾತ್ಮಕ ಹರಿಹರಾತ್ಮಕ (ಪುಂ)** 1. ಗರುಡ. ಹರಿಹರೋ  
ಆತ್ಮಾನೋ ಯಸ್ಯ | 2. ಪರಮೇಶ್ವರನ ವ್ಯವಸ್ಥೆ. (ನಂ)  
3. ಹರಿಹರಕ್ಷೇತ್ರ.

**ಹರಿತಕಿ ಹರಿತಕೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ)** ಅಳಲೆಗಿಡ. ಹರಿಃ ಪಿತೃವರ್ಣಃ  
ಇತೋ ಯಸ್ಯಾಮ್ | ಸಂಜಾಪಾಂ "ಕನ್" (೪-೨-೭೪) | "ಕೀಃ"  
(೪-೧-೪೧) | "ಹರಿತಕಿ ಹೇಮವತೀ ರೇವತೀ ಶ್ರೇಯಸೀ ಶಿವಾ"  
ಅಮಂ | ಅಳಲೆ ಗಿಡಗಳಲ್ಲಿ (1) ವಿಜಯಾ (2) ರೋಹಿಣಿ  
(3) ಪೂತನಾ (4) ಅಮೃತಾ (5) ಅಮಯಾ (6) ಜೀವಂತಿ  
ಮತ್ತು (7) ಚೇತಕಿ ಎಂದು ಏಳು ಭೇದಗಳಿರುವವು.  
"ವಿಜಯಾ ರೋಹಿಣಿ ಚೈವ ಪೂತನಾ ಚಾಮೃತಾಭಯಾ | ಜೀವಂತಿ  
ಚೇತಕಿ ಚೇತಿ ನಾಮನಾ ಸಪ್ತವಿಧಾ ಸ್ಮೃತಾ" || **ಹರಿತಕೀ**  
**ಪದದ ಅರ್ಥವಿವರಣೆ:** "ಹರಿತೇ ಪ್ರಸಭಂ ವ್ಯಾಪಿನ್  
ಭೂಯಸ್ತಕತಿ ಯದ್ವಃ | ಹರಿತಕಿ ತು ಸಾ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ತಕತಿರ್ದೀಪ್ತ-  
ವಾಚಿಕಾ" ರಾಜನಿಂ | **ಅಳಲೆಗಿಡದ ಉತ್ಪತ್ತಿ:**  
ಇಂದ್ರನು ಅಮೃತಪಾನ ಮಾಡುವಾಗ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದ  
ಅಮೃತದ ಬಿಂದುವು ಅಳಲೆಗಿಡವಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿತು. ಈ  
ಅಳಲೆಗಿಡವು ವಿಜಯಾ ರೋಹಿಣಿ ಮುಂತಾದ ಏಳು ಜಾತಿ

ಗಳಲ್ಲಿರುವುದು. ಹರಿತಕಿ (ಅಳಲೆಕಾಯಿ) ಯು ಕಾಮಾಲೆ  
ಶೂಲ ಹೊಟ್ಟೆಯಬ್ಬರ ಗುಲ್ಮವ್ಯಾಧಿ ಯಕ್ಕತ್ತು  
(ಉದರದ ಬಲಭಾಗದ ಮಾಂಸಗ್ರಂಥಿ) ಮೂತ್ರರೋಗ  
ಮುಂತಾದ ವ್ಯಾಧಿಗಳನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವುದು. "ಕಾಮಾಲಾಂ  
ಶೂಲಮಾನಾಹಂ ಪ್ಲಿಹಾನ್ ಚ ಯಕ್ರುತ್ ತಥಾ | ಅಹಮರೀಮುತ್ರಕುಚ್ಛಂ  
ಚ ಮುತ್ರಾಪಾತಂ ಚ ನಾಶಯೇತ್" ಭಾವಪ್ರಂ |

**ಹರೇಣು ಹರೇಣು (ಪುಂ)** 1. ನೆಲೆಗಡಲೆ ಗಿಡ. ಹ್ರ (ಹರಣೆ)  
"ಉಃ" (೩ಂ ೨-೧) | (ಸ್ತ್ರೀಂ) 2. ರೇಣುಕೆಯೆಂಬ  
ಒಂದು ಗಂಧದ್ರವ್ಯ. 3. ಕುಲವಧು, ಸತ್ಕುಲದಲ್ಲಿ  
ಜನಿಸಿದ ಹೆಂಗಸು, ಗೌರವಾನ್ವಿತ ಹೆಂಗಸು. "ಹರೇಣುನಾ  
ಸತೀನೇ ಸ್ಯಾತ್ ರೇಣುಕಾಕುಲಯೋಚಿತಃ" ಮೇದಿಂ |

**ಹರೈವ ಹರ್ತವ್ಯ (ವಿಂ)** 1. ಒಯ್ಯಲ್ಪಡುವ, ಸಾಗಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. 2. ಒಯ್ಯಬೇಕಾದ, ಸಾಗಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಒಯ್ಯ  
ಬಹುದಾದ, ಸಾಗಿಸಬಹುದಾದ. 4. ಒಯ್ಯಲು ಸಾಧ್ಯ  
ವಾದ, ಸಾಗಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 5. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಡುವ,  
ಸ್ವೀಕರಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ಸ್ವೀಕರಿಸಬಹುದಾದ. 7. ಸ್ವೀಕರಿಸ  
ಬೇಕಾದ. 8. ಕದಿಯಬಹುದಾದ, ಅಪಹರಿಸಬಹುದಾದ.  
9. ಕದಿಯಲ್ಪಡುವ, ಅಪಹರಿಸಲ್ಪಡುವ. 10. ಕದಿಯಲು  
ಸಾಧ್ಯವಾದ, ಅಪಹರಿಸಲು ಶಕ್ಯವಾದ. 11. ನಾಶಪಡಿಸ  
ಲ್ಪಡುವ. 12. ನಾಶಪಡಿಸಬಹುದಾದ. ಹ್ರ (ಹರಣೆ)  
"ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬) | ಹರಣಂ ಪ್ರಾಪಣಂ ಸ್ವೀಕಾರಃ ಸ್ತೇಯಂ  
ನಾಶನಂ ಚ ಸಿಂ ಕೌಂ | "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) |  
ಹರಣೀಯಮ್ ಹರಣೀಯಮ್.

**ಹರೈ ಹರ್ತವ್ಯ (ಪುಂ)** 1. ಸೂರ್ಯ. ಹರತಿ ಧ್ವಾಂತಮ್ — ಹ್ರ  
(ಹರಣೆ) "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೧೩೩) | "ಲೋಕಸಾಕ್ಷಿ ತ್ರಿಲೋಕೇಶಃ  
ಕರ್ತಾ ಹರ್ತಾ ತಮಿತ್ರಹಾ | ತಪನಸ್ತಾಪನಶ್ಚೈವ ಶುಚಿಃ ಸಪ್ತಾಶ್ವ-  
ವಾಹನಃ" || 2. ಜೋರ, ಕಳ್ಳ. ಹರತಿ ಅಪಹರತಿ —  
ಹ್ರ "ತವ್ಯಃ" | (ವಿಂ) 3. ಒಯ್ಯುವವನು, ಸಾಗಿಸು  
ವವನು. 4. ಸ್ವೀಕರಿಸುವವನು, ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು.  
5. ಕದಿಯುವವನು. "ಯ ಇಂದ್ರಮಶ್ವಹರ್ತಾರಿಂ ವಿಧ್ವಾಂಸಯಿಷ್ಯತಿ ನ  
ಜಘ್ನಿವಾನ್" ಭಾಗಂ ೪-೨೪-೪ | 6. ನಾಶಪಡಿಸುವವನು.  
"ಹರಣಂ ಪ್ರಾಪಣಮ್ ಸ್ವೀಕಾರಃ ಸ್ತೇಯಮ್ ನಾಶನಂ ಚ" ಸಿಂ  
ಕೌಂ | ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಕೀಃ" (೪-೧-೬) | -ತ್ರಿ -೨೯ಃ.

**ಹರ್ಮಡ ಹರ್ಮಟ (ಪುಂ)** 1. ಕಚ್ಚುಪ, ಕಮಠ, ಆಮ. "ಹರ್ಮಡಃ  
ಕಚ್ಛಪೇ ಪ್ರೋಕ್ತಃ ಸಹಸ್ರಕಿರಣೋಽಪಿ ಚ" ಹೇಮಂ | 2. ಸೂರ್ಯ.  
**ಹರ್ಮನ್ ಹರ್ಮನ್ (ನಂ)** ಜಂಭಣ, ಅಕಳೆ. ಹರತಿ  
ಗ್ಲಾನಿಮ್ | ಹ್ರ (ಹರಣೆ) "ಮನಿನ್" (೩ಂ ೪-೧೪೪) |  
ಬಾಹಂ |



**ಹಮಿತ ಹರ್ಷಿತ** (ವಿಂ) 1. ಅಕಳಿಸಿದವನು. ಹರ್ಮ ಸಂಜಾತ-  
ಮಸ್ಯ "ಇತಚ್" (೪-೨-೩೬)। 2. ಎಸೆಯಲ್ಪಟ್ಟು.  
3. ಸುಡಲ್ಪಟ್ಟು. "ಹಮಿತಂ ಕ್ಷಿಪ್ತದಧಯೋಃ" ಹೇಮಂ।

**ಹರ್ಮ್ಯ ಹರ್ಯ** (ನಂ) ಧನಿಕರ ವಾಸದ ಗೃಹ. ಹರತಿ ಮನಃ  
—ಹವ್ (ಹರಣೆ) "ಯಕ್" ಮುಡ್ ಚ (ಓಂ ೪-೧೧೨)।  
"ಹರ್ಮ್ಯಾದಿ ಧನಿನಾಂ ವಾಸಃ" ಅಮಂ। "ಯತ್ರ ಸ್ಫಟಿಕಹರ್ಮ್ಯಾಃ  
ನಕ್ರಮಾಪಾನಭೂಮಿಃ। ಜ್ಯೋತಿಷಾಂ ಪ್ರತಿಬಿಂಬಾನಿ ಪ್ರಾಪ್ನು-  
ವನ್ಯುಪಹಾರತಾಮ್" ಕುಮಾಂ ೬-೪೨।

**ಹರ್ಮ್ಯ ಹರ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಸಿಂಹ. ಹರಿಣಿ ಪಿಙ್ಗಲೇ  
ಅಕ್ಷಿಣಿ ಯಸ್ಯ—"ಷಕ್" (೪-೪-೧೧೩)। 2. ಕುಬೇರ.  
ಹರಿ ಪಿಙ್ಗಲೇಕಂ ಅಕ್ಷಿ ಅಸ್ಯ—"ಷಕ್" (೪-೪-೧೧೩)।  
(ವಿಂ) 3. ಹಳದಿಯ ಬಣ್ಣದ ಕಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳವನು.

**ಹರ್ಮ್ಯ ಹರ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಅಶ್ವ, ಕುದುರೆ. ಹರ್ಮ (ಗತೌ)  
"ಅತಚ್" (ಓಂ ೩-೧೧೦)। ಹರ್ಮತೋಽಶ್ವಃ ಸಿಂ ಕೌಂ।  
2. ಅಶ್ವಮೇಧ ಯಾಗಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ ಕುದುರೆ.

**ಹರ್ಮ್ಯ ಹರ್ಯ** (ಪುಂ) 1. ಇಂದ್ರ. ಹರಿಃ ಹರಿವರ್ಣೋಽಶ್ವೋ  
ಯಸ್ಯ। "ಹರೀನ್ ದಶಶತಾನ್ಯಾಜೌ ಹರ್ಮ್ಯಾಸ್ಯ ಬಲಃ ಶರಃ।  
" ನಾವಿಕಿರ್ದೇವಾಸ್ಯ ಸಾಧುನಕಮಹರಾಜಃ" ಸಾಂ ೧-೨೧೨೨೨೨।  
2. ಇಂದ್ರನ ಕುದುರೆ. ಉಚ್ಚೈಃಶ್ರವಸ್ಸು. ಹರಿನಾಮಾ  
ಅಶ್ವಃ ಹರಿವರ್ಣೋ ವಾ ಅಶ್ವಃ।

**ಹರ್ಮ ಹರ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಸಂತೋಷ, ಆನಂದ. ಹೃಷ (ತುಷ್ಟೌ)  
"ಷಕ್" (೩-೩-೧೮)। "ಹರ್ಮವಿಸ್ಮಿತಸರ್ವಾಜ್ಞಿ ಹನುಮಂತ-  
ಮಥಾಬ್ರವೀತ್" ರಾಮಾಂ। "ಹರ್ಮವಿಶೇಷನಿರ್ಭರಣ ಮನಸಾ  
ತ್ವರ್ಮಾಣಃ" ಕಾದಂ। 2. ಇಷ್ಟವಾದ ವಸ್ತುವಿನ  
ಪ್ರಾಪ್ತಿಯಿಂದ ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಉಂಟಾಗುವ ಉಲ್ಲಾಸ. "ಹರ್ಮ-  
ಸ್ತಿವಿಷ್ಠಾವಾಪ್ತೇಃ ಮನಃಪ್ರಸಾದೋಽಶ್ರುಗದ್ಗದಾದಿಕರಃ" ಸಾಂ ೬ಂ  
೩-೧೬೪। ಇದು ಮೂವತ್ತಮೂರು ವ್ಯಭಿಚಾರಿಭಾವ  
ಗಳಲ್ಲೊಂದು. 3. ರೋಮಾಂಚ, ಮೈಮೇಲಿನ ಕೂದಲು  
ಎಚ್ಚರಗೊಳ್ಳುವುದು. 4. ರತ್ನಾವಳಿ ನುಟಿಕಾಕಂಠನಾದ  
ಶ್ರೀಹರ್ಷಕವಿ. ರತ್ನಾವಳಿಯನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಕವಿ  
ಯಾರು? ಗ್ರಂಥದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀಹರ್ಷದೇವನು ಇದನ್ನು  
ರಚಿಸಿದನೆಂದು ಹೇಳಲು "ಅಸ್ಮತ್ಸಾಮಿನಾ ಶ್ರೀಹರ್ಮದೇವನಾ-  
ಪೂರ್ವವಸ್ತುರಚನಾಲಕ್ಷಿತಾ ರತ್ನಾವಳಿ ನಾಮ ನಾಟಕಾ ಕೃತೇಯ-  
ಮಿತ್ಯಸ್ಮಾಭಿಃ ಶ್ರೋತ್ರಪರಮ್ಪರಯಾ ಶ್ರುತಾ" ಮತ್ತು "ಶ್ರೀಹರ್ಮೋ  
ನಿಪುಣಃ ಕವಿಃ ಪರಿಷದಪ್ಯೇಷಾ ಗುಣಗ್ರಾಹಿಣಿ ಲೋಕೇ ಹಾರಿ ಚ  
ವತ್ಸರಾಜಚರಿತಂ ನಾಟಕೇ ಚ ದಕ್ಷಾ ವಯಮ್" ರತ್ನಾಂ ೧-೪।  
ಈ ಪ್ರಜ್ಞಿಗಳು ಆಧಾರವಾಗಿರುವುದು. ಆದರೆ ಕಾವ್ಯ  
ಪ್ರಕಾಶಕಾರನಾದ ಮಮ್ಮಟ ಕವಿಯು "ಶ್ರೀಹರ್ಮವಿಧಿವಿ-

ಕಾದೀನಾಮಿವ ಷಮಮ್" ಎಂಬ ಆಧಾರರಹಿತವಾದ ವಾಕ್ಯ  
ದಿಂದ ರತ್ನಾವಳಿಯನ್ನು ರಚಿಸಿದವನು ಧಾವಕಕವಿಯೆಂದೂ  
ಧನದ ಆಸೆಯಿಂದ ಕವಿಯು ಗ್ರಂಥದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀಹರ್ಷ ರಾಜನ  
ಹೆಸರನ್ನು ಹೇಳಿರುವನೆಂದೂ ಅರ್ಥವಾಗುವುದು. ಆದರೆ  
ಕವಿಯು ಪಾಂಡಿತ್ಯಕ್ಕೆ ಮೆಚ್ಚಿದ ರಾಜನು ಕವಿಗೆ ಅತುಲ  
ವಾದ ಧನವನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಗೌರವಿಸಿರಬಹುದೆಂದೂ ಗ್ರಂಥ  
ವನ್ನು ಶ್ರೀಹರ್ಷನೇ ರಚಿಸಿರುವನೆಂದೂ ತಿಳಿಯಬಹು-  
ದಾಗಿದೆ.

**ಹರ್ಮ ಹರ್ಷ** (ವಿಂ) ಸಂತೋಷವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವವನು.

ಹರ್ಮಯತಿ—ಹೃಷ (ತುಷ್ಟೌ) + ಣಿಚ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)।

**ಹರ್ಮ ಹರ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣುಭಾದಿ 27 ಯೋಗಗಳ  
ಲ್ಲೊಂದು. ["ಯೋಗ" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.] ಹರ್ಮಯತಿ  
ಅಭೀಷ್ಟದಾನಾತ್—ಹೃಷ (ತುಷ್ಟೌ) + ಣಿಚ್ "ಲ್ಯುಃ"  
(೩-೧-೧೩೪)। (ನಂ) 2. ಆನಂದ, ಸಂತೋಷ. ಹೃಷ  
(ತುಷ್ಟೌ) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೪)। "ತಚ್ಚಿರಃ  
ಸಿಂಧುರಾಜಸ್ಯ ಶರೇವಂದಮವಾಹಯತ್। ದುರ್ಹದಾಮಹರ್ಮಯಿ ಸುಹದಾಂ  
ಹರ್ಮಣಾಯ ಚ"॥ ಭಾಂ ದ್ರೋಣಂ। 3. ಒಂದು ವಿಧ ನೇತ್ರ  
ರೋಗ. 4. ಶ್ರಾದ್ಧದೇವ. (ವಿಂ) 5. ಸಂತೋಷ  
ವುಂಟುಮಾಡುವ. ಹೃಷ + ಣಿಚ್ ಕರ್ಮಂ "ಲ್ಯುಃ"  
(೩-೧-೧೩೪)। "ಹರ್ಮಣೋಽಕ್ಷಿಗಗಾಂತರೇ। ಹರ್ಮಕೇ ಯೋಗ  
ಚ ಶ್ರಾದ್ಧದೇವೇಽಪಿ ಚ ಕ್ವಚಿತ್" ಮೇದಿಂ।

**ಹರ್ಮ ಹರ್ಷ** (ವಿಂ) ಸಂತೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿ  
ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು. ಸಂತೋಷಪಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು  
ಹೃಷ (ಅಲೋಕೇ) "ಚಾನಶ್" (೩-೨-೧೨೯)। "ಹರ್ಮಾ  
ವಿಕುರ್ವಾಣಃ ಪ್ರಮನಾ ಹೃಷ್ಟಮಾನಸಃ" ಅಮಂ।

**ಹರ್ಮಯಿತ್ಯು ಹರ್ಷಯಿತ್ಯು** (ಪುಂ) 1. ಪುತ್ರ, ಮಗ. ಹರ್ಮಯ  
—ಹೃಷ (ತುಷ್ಟೌ) + ಣಿಚ್ "ಇನ್ಯುಚ್" (ಓಂ ೩-೨೯)  
(ನಂ) 2. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. "ಹರ್ಮಯಿತ್ಯುಃ ಪುಮಾನ್ ೪  
ಕಾಂಚನೇ ಚ ನಪುಸಕಮ್" ಮೇದಿಂ। (ವಿಂ) 3. ಸಂತೋ  
ಷಪಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು.

**ಹರ್ಮಸ್ವನ ಹರ್ಷಸ್ವನ** (ಪುಂ) ಸಂತೋಷವನ್ನು ಸೂಚಿಸು-  
ಶಬ್ದ. ಹರ್ಮಸ್ವನಕಃ ಸ್ವನಃ।

**ಹರ್ಮಿತ ಹರ್ಷಿತ** (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಗೊಂಡಿರುವವನು  
ಆನಂದದಿಂದಿರುವವನು. ಹರ್ಮಿತಸ್ಯ ಸಂಜಾತಃ "ಇತಚ್"  
(೪-೨-೩೬)। 2. ಸಂತೋಷಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಹೃಷ + ಣಿ  
"ಕಃ" (೩-೨-೧೦೨)।

**ಹರ್ಮಲ ಹರ್ಷಲ** (ಪುಂ) 1. ಮೃಗ. ಹೃಷ (ತುಷ್ಟೌ) "ಉಲ-  
(ಓಂ ೧-೯೮)। 2. ಕಾಮುಕ. "ಹರ್ಮಲೋ ಮೃಗಕಾಮಿನೋಃ



ಸಿಂ ಕೌಂ । 3. ಋಧಗ್ರಹ. "ಅಥ ಹರ್ಷುಲಃ । ಬುಃ  
ಶ್ಯಾಮಾಙ್ಗ ಏಕಾಙ್ಗಃ" ವೇಜಂ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಲಾ -ಲಾ.  
4. ರೋಗಾಗ್ರಸ್ತು ಕನ್ಯೆ, ವಿವಾಹಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯಳಲ್ಲದ ಕನ್ಯೆ.  
"ಹರ್ಷುಲಾ ವಿಕಲಾ ಸರ್ವ" ವೇಜಂ ।

**ಹಲ್ ಹಲ್** — ವ್ಯಂಜನವರ್ಣಗಳು, "ಕ" ಕಾರದಿಂದ "ಹ"  
ಕಾರದವರೆಗಿನ ಅಕ್ಷರಗಳು. "ಅಚ್" (ಸ್ವರ) ವರ್ಣ  
ಗಳು ಅಸ್ಪೃಷ್ಯ ವರ್ಣಗಳು. ವ್ಯಂಜನವರ್ಣಗಳು ಸ್ಪೃಷ್ಯ  
ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಉಚ್ಚರಿಸಲ್ಪಡುವವು. ವ್ಯಂಜನವರ್ಣ  
ಗಳಲ್ಲಿ ಯ್ (ಯ ರ ಲ ವ) ವರ್ಣಗಳು ಈಷತ್ ಸ್ಪೃಷ್ಯ  
ವರ್ಣಗಳು. ಶರ್ (ಶ ಷ ಸ) ವರ್ಣಗಳು ಅರ್ಧಸ್ಪೃಷ್ಯ  
ವರ್ಣಗಳು. ಉಳಿದ ವರ್ಣಗಳು ಸ್ಪೃಷ್ಯವರ್ಣಗಳು.  
ಸ್ಪೃಷ್ಠಂ ಪ್ರಯತನಂ ಸ್ಪರ್ಶಿನಾಮ್—ಕಾದಯೋ ಮಾವಸಾನಾಃ ಸ್ಪರ್ಶಾಃ ।  
ಈಷತ್ ಸ್ಪೃಷ್ಠಮಂತಸ್ಥಾನಾಮ್—ಯರಲವಾ ಅಂತಸ್ಥಾಃ ಸಿಂ ಕೌಂ ।  
"ಅಚೋಸ್ಪೃಷ್ಠಾ ಯಣಸ್ತ್ವೀಷನ್ಮೇಸ್ಪೃಷ್ಠಾಃ ಶರಸ್ತಥಾ । ಶೇಷಾಃ  
ಸ್ಪೃಷ್ಠಾ ಹಲ್ಃ ಪ್ರೋಕ್ತಾ ನಿಬೋಧಾನುಪ್ರದಾನತಃ" ಪಾಂ ಶಿಂ ।  
ವರ್ಣಸಮಾಮ್ನಾಯ (ಚತುರ್ದಶ ಸೂತ್ರ) ದಲ್ಲಿ ಹ್ಯವರಡ್  
ಸೂತ್ರದಿಂದ ಹಲ್ ಸೂತ್ರದವರೆಗಿನ ಹಲ್ ಪ್ರತ್ಯಾಹಾರ  
ದಿಂದ ವ್ಯಂಜನವರ್ಣಗಳು ಬೋಧಿಸಲ್ಪಡುವವು. ಅದುದ  
ರಿಂದ "ಹಲ್" ಎಂದರೆ ವ್ಯಂಜನವರ್ಣಗಳು. ಅಚಃ  
ಅಸ್ಪೃಷ್ಠಾಃ । ಯಣಃ (ಯವರಲಾಃ) ಈಷತ್ ಸ್ಪೃಷ್ಠಾಃ । ಶರಃ  
(ಶಷಸಾಃ) ನೇಮ (ಅರ್ಚೆ) ಸ್ಪೃಷ್ಠಾಃ । ಶೇಷಾಃ ಸ್ಪೃಷ್ಠಾಃ ಹಲ್ಃ  
ಪ್ರೋಕ್ತಾಃ । ಪಾಂ ಶಿಂ ।

**ಹಲ್ ಹಲ** (ನಂ) ನೇಗಿಲು. ಹಲತಿ — ಹಲ (ವಿಲೇಖನೆ)  
"ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ಲಾಙ್ಗಲಂ ಹಲಮ್" ಅಮಂ ।  
"ಹಲಹತಿಭೀತಿಮಿಲಿತಯಮುನಾಭಮ್" ಗೀತಗೋಂ । ಕೃಷಿಗಾಗಿ  
ನೇಗಿಲಿಗೆ ಎತ್ತು (ವೃಷಭ) ಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟಿದಾಗ ಎತ್ತುಗಳು  
ಆಹಾರವನ್ನು ಸೇವಿಸಿದರೆ ಆ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ದ್ವಿಗುಣವಾದ  
ವೈರು ಬೆಳೆದು ಸಮೃದ್ಧವಾದ ಧಾನ್ಯವು ಲಭಿಸುವುದು.  
"ಹಲೇ ತು ಯೋಜಿತೇ ಯತ್ರ ಕ್ಷೇತ್ರೇ ಗ್ರಾಸಂ ಕರೋತಿ ಗೌಃ । ತತ್ರ  
ಸ್ಯಾತ್ ದ್ವಿಗುಣಂ ಶಸ್ಯಮವಶ್ಯಂ ಗರ್ಗಭಾಷಿತಮ್" ಕೃತ್ಯಚಿಂ ।

**ಹಲಧರ ಹಲಧರ** (ಪುಂ) 1. ಬಲರಾಮ. ಧರತಿ — ಧ್ವಜ  
(ಧಾರಣೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । ಹಲಸ್ಯ ಧರಃ ।  
"ಹಲಧರಪರಿಧಾನಶ್ಯಾಮಲೇರಮ್ಬುವಾಹೈಃ" ಮಾಘಂ ೪-೬೮ ।  
(ವಿಂ) 2. ರೈತ, ಬೇಸಾಯಗಾರ. "ಸಾಲಕ್ಷಾರೋ ಹಲಧರಃ  
ಸಗ್ನಿಷ್ಠ ಪೂಜಿತಂ ಹಲಮ್" ಜ್ಯೋತಿಷಂ ।

**ಹಲಭೂತಿ ಹಲಭೂತಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೃಷಿಕಾರ್ಯದಿಂದ ಲಭಿ  
ಸುವ ಸಂಪತ್ತು, ನೇಗಿಲುಗಳಿಂದ ಸಾಧ್ಯವಾಗಬಹುದಾದ  
ಖಜ್ನಾರ್ಥ. ಹಲಾತ್ ಭೂತಿಃ — ಹಲಸಾಧ್ಯಾ ಭೂತಿಃ । "ಅಥ

ಸೇವಾ ಭವತಿಃ ಸ್ಯಾತ್ ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಕೃಷಿಷ್ಠ ಕರ್ಷಣಮ್ । ಕರ್ಷೋಽಮೃತಂ  
ಚ ಪ್ರಕೃತಂ ಹಲಭೂತಿಮಹಾಧನಮ್" ಶಬ್ದರತ್ನಾವಲಿ ।

**ಹಲಭೂತ್ ಹಲಭೂತ್** (ಪುಂ) ಬಲರಾಮ. ಹಲಂ ವಿಭತಿ —  
ಛುಮ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ವಿವಪ್" (೩-೨-೬೧) ।  
"ಶೋಭಾಮದ್ರೇಃ ಸ್ತಿಮಿತನಯನಪ್ರೇಕ್ಷಣೀಯಾಂ ಭವಿತ್ರಿಮಸನ್ಯಸ್ತೇ  
ಸತಿ ಹಲಭೂತೋ ಮೇವಕೇ ವಾಸಸೀವ" ಮೇಘಂ ೧-೫೯ ।

**ಹಲಾ ಹಲಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ. 2. ಜಲ,  
ನೀರು. 3. ಸಖಿ, ಗೆಳತಿ. (ಅವ್ಯಂ) (ನಾಟಕದಲ್ಲಿ)  
4. ಸಖಿಯ ಸಂಬೋಧನೆ, ಸಖಿಯನ್ನು ಕರೆಯುವುದು.  
"ಹಣ್ಡೆ ಹಜ್ಜೆ ಹಲಾಹ್ಲಾನೆ ನೆಚಿಂ ಚೆಡಿಂ ಸಖಿಂ ಪ್ರತಿ" ಅಮಂ ।

**ಹಲಾಯುಧ ಹಲಾಯುಧ** (ಪುಂ) 1. ಬಲದೇವ, ಬಲರಾಮ.  
ಹಲಮಾಯುಧಮಸ್ಯ । "ಕಾಮಪಾಲೋ ಹಲಾಯುಧಃ" ಅಮಂ ।  
"ಹಲಾಯುಧೋತ್ಕಿಪ್ತರಶೌಘಪೂರ್ಣಂ ಸಮೀಕ್ಷ್ಯ ದೇವಾಃ ಸಹಸ್ರಾಂತ-  
ರಿಕ್ಷಮ್" ಯಾದಂ ೨೦-೪೪ । 2. ಒಬ್ಬ ನಿಘಂಟುಗಾರ.

**ಹಲಾಹಲ ಹಲಾಹಲ** (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ವಿಷ, ವಿಷಗಳಲ್ಲಿ  
ಒಂದು ಭೇದ. ಹಲಮಿವ ಆಸಮಂತಾತ್ ಹಲತಿ — ಹಲ  
(ವಿಲೇಖನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) । "ಪುಂಸಿ ಕಲಿಬೇ ಚ  
ಕಾಕೋಲಕಾಲಕೂಡಹಲಾಹಲಾಃ" ಅಮಂ । (ಪುಂ) 2. ಬ್ರಹ್ಮ  
ಸರ್ಪ. ಹಲಾಹಲೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಅಚ್" (೪-೨-೧೨೭) ।

**ಹಲಿ ಹಲಿ** (ಪುಂ) 1. ದೊಡ್ಡ ನೇಗಿಲು. ಹಲತಿ ಭೂಮಿಮ್ —  
ಹಲ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಇನ್" (೩ಂ ೪-೧೧೮) । 2. ಕೃಷಿ  
ಕಾರ್ಯ, ಬೇಸಾಯ.

**ಹಲಿನ್ ಹಲಿನ್** (ಪುಂ) 1. ಬಲದೇವ, ಬಲರಾಮ. ಹಲ-  
ಮಾಯುಧತ್ವೇನಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) । 2. ಕೃಷಿ  
ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವವನು, ಬೇಸಾಯಗಾರ.

**ಹಲಿನಿ ಹಲಿನೀ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬೆಣ್ಣೆ ಬಿದಿರುಸೊಪ್ಪು. ಹಲಮಿವಾ-  
ಸ್ಯಾಕಾರೋಽಸ್ಯಾಃ — "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೫) । "ಛಿಪ್"  
(೪-೧-೫) ।

**ಹಲಿಪ್ರಿಯ ಹಲಿಪ್ರಿಯ** (ಪುಂ) 1. ಕದಂಬ ವೃಕ್ಷ, ಈಚಲು  
ಮರ. ಹಲಿನಃ ಪ್ರಿಯಃ । (ಸ್ತ್ರೀಂ) -ಪ್ರಿಯಾ -ಪ್ರಿಯಾ.  
2. ಮದಿರೆ, ಮದ್ಯ.

**ಹಲೀನ ಹಲೀನ** (ಪುಂ) ತೇಗದ ಮರ.

**ಹಲೀಶಾ (ಫಾ) ಹಲೀಶಾ (ಫಾ)** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನೇಗಿಲಿನ ಉದ್ದದ  
(ಈಚೆ) ಮರ. ಹಲಸ್ಯ ಇಶಾ (ಫಾ) । "ಇಶಾ ಲಾಙ್ಗಲ-  
ದೃಢಃ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ ।

**ಹಲ್ಯ ಹಲ್ಯ** (ನಂ) ಉತ್ತ ಭೂಮಿ, ಕೃಷಿಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ ಕ್ಷೇತ್ರ.  
ಹಲೇನ ಕೃಷ್ಣಮ್ — ಹಲ್ "ಯತ್" (೪-೪-೯೭) ।



ಹಲ್ಯಾ ಹಲ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಲ್ಯಾಳ ಸಮೂಹ. ಹಲ್ಯಾ ನಾಂ ಸಮೂಹ:  
“ಯ:” (೪-೨-೪೯) ।

ಹಲ್ಲಕ ಹಲ್ಲಕ (ನಂ) ಕೆಂಪು ನೈದಿಲೆ. ಹಲ್ಲತಿ — ಹಲ್ಲ  
(ವಿಕಸನೆ) “ಫ್ಲುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) । “ಹಲ್ಲಕಂ ರಕ್ತ-  
ಸಂಖ್ಯಕಮ್” ಅಮಂ ।

ಹಲ್ಲಿಶ ಹಲ್ಲಿಶ (ನಂ) ಒಂದು ಉಪರೂಪಕ, ಒಂದು  
ಏಕಾಂಕ ಉಪರೂಪಕ.

ಹಲ್ಲಿಶಕ ಹಲ್ಲಿಶಕ (ನಂ) 1. ಸ್ತ್ರೀಯರು ವರ್ತುಲಾಕಾರ  
ವಾಗಿ ನಿಂತು ಮಾಡುವ ಸೃತ್ಯ. “ಮಂಡಲೇನ ತು ಯಸ್ಮತ್ಯಂ  
ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಹಲ್ಲಿಶಕಂ ತು ತತ್” ಹೇಮಚಂದ್ರ: । 2. ರಾಸಕ್ರೀಡೆ.  
ಒಬ್ಬ ಪುರುಷ ಮತ್ತು ಅನೇಕ ಸ್ತ್ರೀಯರು ಸೇರಿ ಆಡುವ  
ಕ್ರೀಡೆ. “ಗೋಪಿನಾಂ ಮಂಡಲೀನೃತ್ಯವಂಶೇ ಹಲ್ಲಿಶಕಂ ವಿಧು:” ।

ಹವ ಹವ (ಪುಂ) 1. ಯಾಗ, ಯಜ್ಞ. ಹ (ದಾನಾದನಯೋ:  
“ಅಪ್” (೩-೩-೭೫) । 2. ಆಹ್ವಾನ, ಕರೆ. ಹ್ವೆ  
(ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) “ಅಪ್” (೩-೩-೭೫) । ಸಂಪ್ರಸಾರ-  
ಣಮ್ ಚ । 3. ಆಜ್ಞೆ, ಅಪ್ಪಣೆ, ನಿರ್ದೇಶ. “ಹವ ಆಜ್ಞಾ-  
ಧರಾಹ್ವಾನೇ” ಮೇದಿಂ । 4. ಹೋಮ.

ಹವನ ಹವನ (ನಂ) 1. ಹೋಮ. ಹ (ದಾನಾದನಯೋ:  
“ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಯಾಗ. 3. ಆಹ್ವಾನ,  
ಕರೆ. 4. ಪ್ರಾರ್ಥನೆ.

ಹವನಾಯುಸ್ ಹವನಾಯುಸ್ (ಪುಂ) ವಹಿ, ಅಗ್ನಿ. ಹವನ-  
ಮೇವಾಯುಸ್ಯ ।

ಹವನೀ ಹವನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಯ ಕುಂಡ.

ಹವನೀಯ ಹವನೀಯ (ನಂ) 1. ಹೋಮಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ  
ದ್ರವ್ಯ, ಹೋಮದ್ರವ್ಯ. ಹ (ದಾನಾದನಯೋ:) “ಅನೀಯರ್”  
(೩-೧-೯೬) । (ವಿಂ) 2. ಹೋಮಮಾಡಲ್ಪಡುವ.  
3. ಹೋಮಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ. 4. ಹೋಮಮಾಡುಹು  
ದಾದ. “ಪ್ರಾಶುರಾಶು ಹವನೀಯಮತ್ರ ಯತ್ತೇನ ದೀಪಮಮರತ್ವ-  
ಮಧ್ಯಗು:” ಮಾಘಂ ೧೪-೩೧ ।

ಹವಿತ್ರೀ ಹವಿತ್ರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಾಗದ ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಪ್ರತಿಷ್ಠೆ  
ಸುವ ಹೋಮಕುಂಡ.

ಹವಿರಶನ ಹವಿರಶನ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ. ಹವಿರಶನಮಸ್ಯ ।  
(ವಿಂ) 2. ಹವಿಸ್ಸನ್ನು ತಿನ್ನುವವನು, ಹೋಮದ್ರವ್ಯ  
ವನ್ನು ನುಂಗುವವನು.

ಹವಿಗೃಹ ಹವಿಗೃಹ (ನಂ) ಯಜ್ಞಶಾಲೆ, ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯ  
ಮಾಡುವ ಮನೆ. ಹವಿಘೋ ಗೃಹಮ್ ।

ಹವಿಭುಕ್ (ಜ್) ಹವಿಭುಕ್ (ಜ್) (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ. ಹವಿಘಿ  
ಭುಕ್ತೇ — ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಮ್ಯವಹಾರಯೋ:) “ಕ್ವಿಪ್”

(೩-೨-೧೭೮) । “ವರ್ಣಸಂಪದಮತಿಸ್ಫುಟಾ ದಧನ್ಯಾಮ ಚೋಜ್ಜ್ವಲ-  
ಮಮೃದವಿಭುಜ:” ಮಾಘಂ ೧೪-೨೬ ।

ಹವಿಷಮತ್ ಹವಿಷ್ಮತ್ (ವಿಂ) ಹವಿಸ್ಸಿನಿಂದ ಕೂಡಿದ  
(ಅಗ್ನಿ).

ಹವಿಷ್ಯ ಹವಿಷ್ಯ (ನಂ) ಹವಿಸ್ಸಿಗೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ಅನ್ನ  
ತುಪ್ಪ ಮೊದಲಾದುದು. ಹವಿಷೇ ಹಿತಮ್ — ಹವಿಸ್ “ಯತ್”  
(೫-೧-೨) । “ದರ್ಶಿ: ಪವಿತ್ರಂ ಪೂರ್ವಾಹ್ನಿ ಹವಿಷ್ಯಾಣಿ ಚ  
ಸರ್ವಶ:” ಮನುಂ ೩-೨೫೬ ।

ಹವಿಷ್ಯಾನ್ ಹವಿಷ್ಯಾನ್ (ನಂ) ವ್ರತಾಚರಣೆಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ಭುಜಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾದ ಆಹಾರ. ಹವಿಷ್ಯಮಗ್ನಮ್ ।

ಹವಿಸ್ ಹವಿಸ್ (ನಂ) ಹೋಮದ್ರವ್ಯ, ಅನ್ನ ತುಪ್ಪ ಮೊದ  
ಲಾದುದು. ಹೃಯತೇ — ಹ (ದಾನಾದನಯೋ:) “ಇಸಿ:” (೩ಂ  
೨-೧೦೮) । “ತತ್ರ ಮನ್ತ್ರಪವಿತಂ ಹವಿ: ಕೃತಾವಶತೋ ನ  
ವಪುರೇವ ಕೇವಲಮ್ । ವರ್ಣಸಂಪದಮತಿಸ್ಫುಟಾ ದಧನ್ಯಾಮ ಚೋಜ್ಜ್ವಲ-  
ಮಮೃದವಿಭುಜ:” ಮಾಘಂ ೧೪-೨೬ । “ಹವಿಷಾಂ ಭೋಕ್ತರಿ  
ದತ್ತಸನ್ನಿಧಾನೇ” ಯಾದಂ ೧೫-೩೨ ।

ಹವ್ಯ ಹವ್ಯ (ನಂ) ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಅರ್ಪಿಸುವ ಹೋಮ  
ದ್ರವ್ಯ, ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಹೋಮಮಾಡುವ  
ಅನ್ನ ಮೊದಲಾದುದು. ಹೃಯತೇ ಪ್ರಕ್ಷಿಪ್ಯತೇ — ಹ (ದಾನಾ-  
ದನಯೋ:) “ಯತ್” (೩-೧-೯೭) । “ನಶ್ಯಂತಿ ಹವ್ಯಕವ್ಯಾನಿ  
ನರಾಣಾಮವಿಜಾನತಾಮ್ । ಮಸ್ಮಿಂಭೂತೇಷು ವಿಪ್ರೇಷು ಮೋಹಾದತ್ತಾನಿ  
ದಾತೃಭಿ:” ಮನುಂ ೩-೯೭ । “ಗಂಧತೋಷಿಪಿ ಹುತಹವ್ಯಸಮ್ಮವಾತ್  
ದೇಹಿನಾಮಹದೋಷಮಹಸಾಮ್” ಮಾಘಂ ೧೪-೨೭ ।

ಹವ್ಯಕವ್ಯ ಹವ್ಯಕವ್ಯ (ನಂ) ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಅರ್ಪಿಸುವ  
ಅನ್ನ ಮತ್ತು ಪಿತೃಗಳಿಗೆ ಅರ್ಪಿಸುವ ಅನ್ನ (ಕ್ರಮವಾಗಿ).

ಹವ್ಯಪಾಕ ಹವ್ಯಪಾಕ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಹೋಮಮಾಡ  
ತಕ್ಕ ಪಕ್ಷಾನ್ನ, ಚರ್ಮ. ಹವ್ಯಸ್ಯ ಪಾಕ: ।

ಹವ್ಯವಹ ಹವ್ಯವಹ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ. ವಹತಿ — ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ)  
“ಅವ್” (೩-೧-೧೩೪) । ಹವ್ಯಸ್ಯ ವಹ: । “ವಿಕಚ್ಚಿಕಿಶುಕ-  
ಸಂಹಿತೀಕುಕೇರದವಹದವಹವ್ಯವಹಶ್ರಿಯಮ್” ಮಾಘಂ ೬-೨೧ ।

ಹವ್ಯವಾಡ್ (ಹ್) ಹವ್ಯವಾಡ್ (ಹ್) (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ.

ಹವ್ಯವಾಹ ಹವ್ಯವಾಹ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ. ಹವ್ಯಂ ವಹತಿ — ವಹ  
(ಪ್ರಾಪಣೆ) “ಅನ್” (೩-೨-೧) । “ಹವ್ಯವಾಹ ತ್ವಯಾಸಾದಿ  
ದುರ್ದಶಯಂ ದಶಾ ಕುತ:” ಕುಮಾರಂ ೧೦-೫ ।

ಹವ್ಯವಾಹನ ಹವ್ಯವಾಹನ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ. ಹವ್ಯಂ ವಾಹಯತಿ —  
ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) + ಣಿಕ್ “ಲ್ಯು:” (೩-೧-೧೩೪) । “ನ  
ಹೇತತ್ ಕಾರಣಂ ಬ್ರಹ್ಮಗ್ನತ್ಯಂ ಸಂಪ್ರತಿಭಾತಿ ಮೇ । ಯದ್ವದಾಹ  
ಸುಸಂಕ್ರುದ: ಸ್ವಾಹವಂ ಹವ್ಯವಾಹನ:” ಶಾಂ ಆದಿಂ ।







**ಹಸ್ತವಿಂಬ ಹಸ್ತವಿಂಬ** (ನಂ) ಸ್ಥಾಪಕ, ಮೈಗೆ ಗಂಧ ಮೊದಲಾದುವುಗಳ ಲೇಪನ. ಹಸ್ತಸ್ಯ ವಿಂಬಂ ಯತ್ರ ।

**ಹಸ್ತವಾರಣ ಹಸ್ತವಾರಣ** (ನಂ) ಕೊಲೆಮಾಡಲು ಬಂದವ ನನ್ನು ತಡೆದು ರಕ್ಷಿಸುವುದು. ಹಸ್ತೇನ ಹಸ್ತಸ್ಯ ವಾ ವಾರಣಮ್ ।

**ಹಸ್ತಲಾಘವ ಹಸ್ತಲಾಘವ** (ನಂ) 1. ಕೈಚಳಕ, ಕೈಕಾರ್ಯ ದಲ್ಲಿ ನಿಪುಣತೆ. ಹಸ್ತಸ್ಯ ಲಾಘವಮ್ । 2. ಗಾರುಡಿ, ಇಂದ್ರ ಜಾಲ.

**ಹಸ್ತಸಂವಾಹನ ಹಸ್ತಸಂವಾಹನ** (ನಂ) ಕೈಗಳಿಂದ ತೀಡು ವುದು, ನೀವುವುದು, ಮರ್ದನಮಾಡುವುದು. ಹಸ್ತೇನ ಸಂವಾಹನಮ್ । "ಸಂಭೋಗಾಂತೇ ಮಮ ಸಮುಚಿತೋ ಹಸ್ತಸಂವಾಹನಾ- ನಾಮ್" ಮೇಘಂ ೨-೩೩ ।

**ಹಸ್ತಸಿದ್ಧಿ ಹಸ್ತಸಿದ್ಧಿ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೈಕಾರ್ಯಗಳಿಂದ ಬರುವ ಕೊಲಿ. ಹಸ್ತಸ್ಯ ಸಿದ್ಧಿಃ ।

**ಹಸ್ತಸೂತ್ರ ಹಸ್ತಸೂತ್ರ** (ನಂ) ಉಪನಯನ ವಿವಾಹ ಮೊದಲಾದ ಶುಭಕರ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಕೈಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಕಂಕಣ. ಹಸ್ತಸ್ಯ ಸೂತ್ರಮ್ । "ಬಂಧು ಚಾಕ್ಷಾಕುಲದೃಷ್ಟಿರಸ್ಯಾಃ ಸ್ಥಾನಾಂತರೇ ಕಲ್ಪಿತಸಂನಿವೇಶಮ್ । ಖಾತ್ಯಜ್ಞಗುಲಿಭಿಃ ಪ್ರತಿಸಾರ್ಯಮಾಣ- ಮೂರ್ಣಮಯಂ ಕೌತುಕಹಸ್ತಸೂತ್ರಮ್" ಕುಮಾರಂ ೭-೨೫ ।

**ಹಸ್ತಾ ಹಸ್ತಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅತ್ತಿನಿ ಮೊದಲಾದ ಇಪ್ಪತ್ತೇಳು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಹದಿಮೂರನೆಯ ನಕ್ಷತ್ರ. ಇದು ಹಸ್ತದ ಆಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಐದು ನಕ್ಷತ್ರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು. ಈ ನಕ್ಷತ್ರದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವನು ದಾನಶೀಲನೂ ಯಶಸ್ವಿಯೂ ಉದಾರವಾದ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನೂ ದೇವಬ್ರಾಹ್ಮಣರ ಪೂಜಾನಿರತನೂ ನೀತಿಜ್ಞನೂ ಆಗಿರುವನು. ಸಕಲ ಸಂಪತ್ತೂ ಇವನಿಗೆ ಹಸ್ತಗತವಾಗಿರುವುದು. "ದಾತಾ ಯಶಸ್ವೀ ಸುತರಾಂ ಮನಸ್ವೀ ಭೂದೇವಾರ್ಚನಕೃತ್ಯಯಃ । ಪ್ರಸೂತಿ- ಕಾಲೇ ಕಿಲ ಯಸ್ಯ ಹಸ್ತಾ ಹಸ್ತಸ್ಥಿತಾ ತಸ್ಯ ಸಮಸ್ತಸಮ್ಯಕ್" ॥

**ಹಸ್ತಾಮಲಕ ಹಸ್ತಾಮಲಕ** (ನಂ) ಅಂಗೈಯಲ್ಲಿರುವ ನೆಲ್ಲಿ ಕಾಯಿ. ಹಸ್ತಸ್ಥಿತಮಾಮಲಕಮ್ । ಒಂದು ವಸ್ತುವನ್ನು ಅಥವಾ ವಿಷಯವನ್ನು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ನೋಡಲೂ ಮತ್ತು ತಿಳಿಯಲೂ ಸಾಧ್ಯವೆಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಈ ಪದ ಪ್ರಯೋಗ. "ಕರತಲಾಮಲಕಫಲವದಖಿಲಂ ಜಗದವಲೋಕ- ಯತಾಮ್ ।

**ಹಸ್ತಾವಾಪ ಹಸ್ತಾವಾಪ** (ಪುಂ) ಬಲ್ಲಿನ ಹೆದೆಯು ಕೈಯನ್ನು ಕೊರೆಯದಂತೆ ಹಾಕಿಕೊಳ್ಳುವ ಚರ್ಮದ ಚೀಲ. "ಭರ್ತಃ ಏತದ್ವಸ್ತಾವಾಪಸಹಿತಂ ಶರಾಸನಮ್" ಶಾಕುಂ ೬ ।

**ಹಸ್ತಾಹಸ್ತಿ ಹಸ್ತಾಹಸ್ತಿ** (ಅವ್ಯಂ) ಕೈಗಳಿಂದ ಪರಸ್ಪರ ಹೊಡೆದು ನಡೆದ ಯುದ್ಧ. ಹಸ್ತೇನ ಹಸ್ತೇನ ಪರಸ್ಪರಂ ಪ್ರಹತ್ಯ ಪ್ರವೃತ್ತಂ ಯುದ್ಧಮ್ । "ಇಚ್" (೪-೪-೧೨೭) ।

**ಹಸ್ತಿಕಕ್ಷ ಹಸ್ತಿಕಕ್ಷ** (ಪುಂ) 1. ಸಿಂಹ. 2. ವ್ಯಾಘ್ರ, ಹೆಲಿ.

**ಹಸ್ತಿಕರ್ಣ ಹಸ್ತಿಕರ್ಣ** (ಪುಂ) 1. ಹೆರಳುಗಿಡ. 2. ಗಣ ದೇವತೆ. 3. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಪಲಾಶವೃಕ್ಷ. "ಹಸ್ತಿ- ಕರ್ಣಶ್ಚೋರವಕೇ ಪಲಾಶಗಣಭೇದಯೋಃ" ಮೇದಿಂ ।

**ಹಸ್ತಿಕರ್ಣಕ ಹಸ್ತಿಕರ್ಣಕ** (ಪುಂ) ಮುತ್ತುಗದ ಒಂದು ಭೇದ. ಹಸ್ತಿನಃ ಕರ್ಣ ಇವ ಪರ್ಣಮಸ್ಯ । "ಕಪ್" ।

**ಹಸ್ತಿಗಿರಿ ಹಸ್ತಿಗಿರಿ** (ಪುಂ) 1. ಕಾಂಚೀಪುರ. ಹಸ್ತಿಪ್ರಧಾನೋ ಗಿರಿಯತ್ರ 2. ಕರಿಗಿರಿ. ಹಸ್ತಿಪ್ರಧಾನೋ ಗಿರಿಃ । -ಶೈಲಃ -ಕೈಲಾಃ. "ತಸ್ಯಾಸ್ತೀರೇ ಸರಸಿಜಭುವಸ್ಸೌಮ್ಯವೇತಾನವೇದಿದಿವ್ಯ ಕುರ್ವನ್ ದ್ರಮಿಡವಿಷಯಂ ದೃಶ್ಯತೇ ಹಸ್ತಿಶೈಲಃ" ಹಂಸಂ ೧-೩೧ ।

**ಹಸ್ತಿಘೋಷ ಹಸ್ತಿಘೋಷಾ** (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಬ್ಬಸಿಗ್ಗಿ. ಹಸ್ತೀವ ಬೃಹತೀ ಘೋಷಾ ।

**ಹಸ್ತಿಘ್ನ ಹಸ್ತಿಘ್ನ** (ಪುಂ) ಅನೆಯನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವ ಮನುಷ್ಯ, ಅನೆಯನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲು ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳ ಮನುಷ್ಯ. ಹಸ್ತಿನಂ ಹಂತುಂ ಶಕ್ತಃ-ಹಸ್ತಿನ್+ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) ಶಕ್ತೌ "ಠಕ್" (೩-೨-೪೪) । ಹಸ್ತಿಘ್ನೋ ನಾ ಸಿಂ ಕೌಂ ।

**ಹಸ್ತಿದಂತ ಹಸ್ತಿದಂತ** (ಪುಂ) 1. ಅನೆಯ ಕೊಂಬು. ಹಸ್ತಿನೋ ದಂತಃ । 2. ಬಟ್ಟಿ ಅಂಗಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ತಗಲುವಾಕಲು ಗೋಡೆಯಲ್ಲಿ ಹಾಕಿರುವ ಮರದ ಗೂಟ. (ನಂ) 3. ದಂತ.

**ಹಸ್ತಿನ್ ಹಸ್ತಿನ್** (ಪುಂ) ಗಜ, ಆನೆ. ಹಸ್ತಃ ಶುಣ್ಡಾಽ- ಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೩೩) । "ನಿರ್ಮಿಕತ್ವಾದಾಹವೇಽ- ನಾಹತೇಂಶೋ ಹೃಣ್ಯನ್ ಹಸ್ತೀಹೃಷ್ಣರೋಮೇವ ರೇಜೆ" ಮಾಘಂ ೧೮-೪೧ । (1) ಛೇರಾವತಃ (2) ಪುಂಡರೀಕಃ (3) ವಾಮನಃ (4) ಕುಮುದಃ (5) ಅಜ್ಜನಃ (6) ಪುಷ್ಪದಂತಃ (7) ಸಾರ್ವಭೌಮಃ ಮತ್ತು (8) ಸುಪ್ರತೀಕಃ ಈ ಎಂಟು ದಿಗ್ಗಜಗಳ ವಂಶಗಳಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಗಜಗಳು ಎಂಟು ವಿಧಗಳಾಗಿರುವುವು.

**ಹಸ್ತಿನಖ ಹಸ್ತಿನಖ** (ಪುಂ) ನಗರದ ಮಹಾದ್ವಾರ ಅಥವಾ ಕೋಟೆಬಾಗಿಲಲ್ಲಿ ಗಂಟುಮೂಟೆಗಳನ್ನು ಇಳಿಸಲು ಹಾಕಿ ರುವ ಮಣ್ಣಿನ ದಿಣ್ಣೆ. ಹಸ್ತಿನೋ ನಖ ಇವ । "ಕೂಠಂ ಪೂರ್ವೀರ ಯದ್ವಹಸ್ತಿನಖಸ್ತಸ್ಮಿನ್" ಅಮಂ । "ಶನೇರನೀಯಂತ ರಯಾ- ತ್ಪತಂತೋ ರಯಾಃ ಕ್ಷಿತಿಂ ಹಸ್ತಿನಖಾದಿವೇದಃ । ಸಯನಸ್ಮತಾಯತ- ರಶ್ಮಿಭುಗ್ನಗ್ರಿವಾಗ್ರಸಂಸಕ್ತಯುಗೇಸ್ತುರಜ್ಞಃ" ಮಾಘಂ ೩-೬೮ ।

**ಹಸ್ತಿನಪುರ ಹಸ್ತಿನಪುರ** (ನಂ) ಹಸ್ತಿನಾಪುರ.

**ಹಸ್ತಿನಾಪುರ ಹಸ್ತಿನಾಪುರ** (ನಂ) ಚಂದ್ರವಂಶದ ರಾಜ ನಾಗಿದ್ದ ಹಸ್ತಿಯಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ನಗರ. ಇದು ನವದೆಹಲಿಗೆ ಉತ್ತರ-ಪೂರ್ವ (ಈಶಾನ್ಯ) ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ.



ಹಸ್ತಿನಿ ಹಸ್ತಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹೆಣ್ಣು ಅನ. ಹಸ್ತಿನ: ಸ್ತ್ರೀ । ಹಸ್ತ: ಶುಭಾಸ್ತಯಸ್ಯಾ: "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) । "ಹೀಪ್" (೪-೧-೫) । 2. ನಾಲ್ಕು ಚಾತಿಯ ಹೆಂಗಸರ ಲ್ಲೊಬ್ಬಳು. ಚಿತ್ರಿಣಿ ಹಸ್ತಿನಿ ಶಕ್ಷಿಣಿ ಮತ್ತು ಪಶಿಣಿ ಎಂದು ಸ್ತ್ರೀಯರಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕು ವಿಧ. "ಸ್ಥೂಲಾಘರಾ ಸ್ಥೂಲ-ನಿತम्ಬಮಾಘ ಸ್ಥೂಲಾಙ್ಗುಲೋ ಸ್ಥೂಲಕುಚಾ ಸುಶೀಲಾ । ಕಾಮೋತ್ಸುಕಾ ಗಾಢರತಿಪ್ರಿಯಾ ಚ ನಿತम्ಬಖರ್ವಾ ಖಲು ಹಸ್ತಿನೋ ಸ್ಯಾತ್:" ರತಿಮಂ ।

ಹಸ್ತಿನಿಪುರ ಹಸ್ತಿನೀಪುರ (ನಂ) ಹಸ್ತಿನಾಪುರ.

ಹಸ್ತಿಪ ಹಸ್ತಿಪ (ಪುಂ) ಮಾವಟಗ. ಅನೆಯ ಸವಾರ. ಹಸ್ತಿನಂ ಪಾತಿ — ಪಾ (ರಕ್ಷಣೆ) "ಕ:" (೩-೨-೩) । ಸ್ವಾರ್ಥೆ "ಕನ್" (೫-೪-೫) । ಹಸ್ತಿಪಕ: — ಹಸ್ತಿಪಕಃ. "ಜಜ್ಞೇ ಜನೇರ್ಮುಕುಲಿತಾಕ್ಷಮನಾದದಾನೇ ಸಂರಬ್ಧಹಸ್ತಿಪಕನಿಷ್ಠು-ರವೋದನಾಭಿ:" ಮಾಘಂ ೫-೪೯ ।

ಹಸ್ತಿಪರ್ಣಿ ಹಸ್ತಿಪರ್ಣೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುರಟಗಿ ಗಿಡ.

ಹಸ್ತಿಮದ ಹಸ್ತಿಮದ (ಪುಂ) ಅನೆಯ ಮದೋದಕ, ಅನಗೆ ಮದವೇರಿದಾಗ ಗಂಡಸ್ಥಲದಿಂದ ಸ್ರವಿಸುವ ಮದಜಲ. ಹಸ್ತಿನೋ ಮದ: ।

ಹಸ್ತಿಮಲ್ಲ ಹಸ್ತಿಮಲ್ಲ (ಪುಂ) 1. ಐರಾವತ, ಇಂದ್ರನ ಗಜ. ಹಸ್ತಿಷು ಮಲ್ಲ: । 2. ಗಣಪತಿ, ವಿನಾಯಕ.

ಹಸ್ತಿವಾಹ ಹಸ್ತಿವಾಹ (ಪುಂ) 1. ಅಕುಶ, ಅನೆಯನ್ನು ನಡೆಸಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಮುಳ್ಳುಕೋಲು. ಹಸ್ತಿನಂ ವಾಹಯತಿ — ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) + ಣಿಚ್ "ಅಣ್" (೩-೨-೧) । 2. ಮಾವಟಗ.

ಹಸ್ತಿಶಾಲಾ ಹಸ್ತಿಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನೆಯ ಕರವಟ್ಟಿಗೆ. ಹಸ್ತಿನಾಂ ಶಾಲಾ ।

ಹಸ್ತಿಸ್ನಾನ ಹಸ್ತಿಸ್ನಾನ (ನಂ) ಗಜಸ್ನಾನ. ಹಸ್ತಿನ: ಸ್ನಾನಮ್ । ನಿಷ್ಕಲವಾದ ಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಗಜಸ್ನಾನವ ಸಾಮ್ಯ ಕೊಡುವುದುಂಟು. "ಅವಶೇಂದ್ರಿಯಚಿತ್ತಾನಾಂ ಹಸ್ತಿಸ್ನಾನಮಿವ ಕ್ರಿಯಾ" ಹಿತಂ ।

ಹಸ್ತ ಹಸ್ತ (ವಿಂ) 1. ಕೈಯಿಂದ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಹಸ್ತೇನ ಕಾರ್ಯಮ್ । 2. ಕೈಯಿಂದ ಕೊಡಲ್ಪಡುವ. ಹಸ್ತೇನ ದೀಯತೆ — ಹಸ್ತ "ಯತ್" (೫-೧-೯೮) ।

ಹಸ್ತಾಭ್ಯಾಕ್ಷ ಹಸ್ತಾಭ್ಯಾಕ್ಷ (ಪುಂ) ಗಜಾಭ್ಯಾಕ್ಷ, ಅನಗಳ ಯೋಗ ಕ್ಷೇಮವನ್ನು ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಅಧಿಕಾರಿ.

ಹಸ್ತಾಯುರ್ವೇದ ಹಸ್ತಾಯುರ್ವೇದ (ಪುಂ) ಅನಗಳ ಚಿತ್ತೈ ಯನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಆಯುರ್ವೇದ. ಹಸ್ತಿನಾಮಾಯುರ್ವೇದ: ।

ಹಸ್ತಾರೋಹ ಹಸ್ತಾರೋಹ (ಪುಂ) ಮಾವಟಗ. ಅನೆಯ ಸವಾರ. ಹಸ್ತಿನಮಾರೋಹತಿ — ಆ + ರಹ (ಬಿಜಜನ್ಮಾದಿ) "ಅಣ್" (೩-೨-೧) ।

ಹಸ್ತ ಹಸ್ತ (ವಿಂ) ಮೂರ್ಖ, ಮೂಢ, ವಿವೇಕವಿಲ್ಲದವನು. ಹಸ್ತತಿ ನಿರರ್ಥಕಮ್ — ಹಸೇ (ಹಸನೆ) "ರಕ್" (೩ಂ ೨-೧೩) । ಹಸ್ತೋ ಮೂಃ: ಸಿಂ ಕೊಂ ।

ಹಹಲ ಹಹಲ (ನಂ) ಹಲಾಹಲವೆಂಬ ವಿಷದ ಒಂದು ಭೇದ.

ಹಹಾ ಹಹಾ (ಪುಂ) ಹಹಾ ಎಂಬ ಒಬ್ಬ ಗಂಧರ್ವ.

ಹಾ ಹಾ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಶೋಕ, ದುಃಖ. 2. ಖಂಡ, ನೋವು. 3. ವಿಷಾದ. "ಹಾ ವಿಷಾದಶುಗಾತಿಷು" ಅಮಂ । "ಹಾ ಶುಗ್ಧು:ಖವಿಷಾದೇಷು" ಹೇಮಂ । 4. ನಂದೆ.

ಹಾಡಕ ಹಾಟಕ (ನಂ) 1. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ, ಬಂಗಾರ. ಹಡತಿ ಶೋಮತೆ — ಹಡ (ದೋಪ್ತೌ) "ಫಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । "ನವಹಾಡಕೇಡಕಚಿತಂ ದದರ್ಶ ಸ ಕ್ಷಿತಿಪಸ್ಯ ಪಸ್ಯಮಥ ತತ್ರ ಸಂಸದಿ" ಮಾಘಂ ೧೩-೬೩ । (ಪುಂ) 2. ದತ್ತೂರಿ ಗಿಡ. (ವಿಂ) 3. ಸ್ವರ್ಣಮಯವಾದ, ಸುವರ್ಣದಿಂದ ನಿರ್ಮಿತ ವಾದ. "ಕಾಕುತ್ಸಯೋಽಪ್ಯಥ ರಕ್ಷಸಾಮಧಿಪತೇ: ವಾಗ್ವಾಗುರಾ-ವೇಷ್ಟಿತೇ ಕೃತ್ವಾ ಹಾಡಕತಾಡಕೇಽಹರಿಣಿ ಶಾರ್ದೂಲವಿಕ್ರೀಡಿತಮ್" ಚಂ ರಾಂ ।

ಹಾಡಕಮಯ ಹಾಟಕಮಯ (ವಿಂ) ಸುವರ್ಣಮಯವಾದ. ಹಾಡಕ ಪ್ರಾಚುರ್ಯ "ಮಯತ್" (೫-೪-೨೧) ।

ಹಾಡಕಗಿರಿ ಹಾಟಕಗಿರಿ (ಪುಂ) ಸುಮೇರು ಪರ್ವತ. — ಪರ್ವತ: — ಪರ್ವತಃ, — ಶಿಲ: — ಶಿಲಾ:.

ಹಾಡಕೇಶ್ವರ ಹಾಟಕೇಶ್ವರ (ಪುಂ) ಗೋದಾವರಿ ತೀರದಲ್ಲಿರುವ ಪರಮೇಶ್ವರ.

ಹಾತವ್ಯ ಹಾತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಡುವ, ತೊರೆದು ಬಿಡಲ್ಪಡುವ. ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೆ) "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) । 2. ತ್ಯಜಿಸಬೇಕಾದ. 3. ತ್ಯಜಿಸಬಹುದಾದ. "ಹಾತವ್ಯೋಽ-ಯಮಸಾರ ಉವಿರಸ: ಸಂಸಾರ ಇತ್ಯಾದಿಕಂ ಸರ್ವಸ್ಯೇವ ಹಿ ವಾಚಿ ಚೇತಸಿ ಪುನ: ಕಸ್ಯಾಪಿ ಪುಣ್ಯಾತ್ಮನ:" ॥ 4. ಹೋಗ ಬೇಕಾದ. 5. ಪಡೆಯಬೇಕಾದ. "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । ಹಾನೀಯ: ಹಾನೀಯು:.

ಹಾತ್ರ ಹಾತ್ರ (ಪುಂ) 1. ರಾಕ್ಷಸ. (ನಂ) 2. ವೇತನ, ಕೂಲಿ. ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೆ) "ಛನ್" (೩ಂ ೪-೧೫೮) । 3. ಮರಣ, ನಿಧನ. ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯಾ:) "ಛನ್" ವೃದ್ಧಿಷ (೩ಂ ೪-೧೫೧) । 4. ಕೊಲ್ಲುವುದು.

ಹಾನ ಹಾನ (ನಂ) 1. ತ್ಯಜಿಸುವುದು, ತೊರೆದುಬಿಡುವುದು. ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೆ) "ಹ್ನ:" (೩-೩-೧೧೪) । 2. ಬಿಡು



ಗಡೆ, ಎವೋಚನೆ. 3. ಹೋಗುವುದು. 4. ಹೊಂದುವುದು, ಪಡೆಯುವುದು. ಆ ಹಾಡ್ (ಗತೌ) "ಕ್" ।

ಹಾನಿ ಹಾನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ತೊರೆದುಬಿಡುವುದು, ಬಿಟ್ಟು ಬಿಡುವುದು. ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೆ) "ನಿ:" (ಉಂ ೪-೫೧) । 2. ನಾಶ, ವ್ಯರ್ಥ, ಹಾಳು. "ಮಾಮಕ್ಷಮಂ ಮಂಡನಕಾಲ ಹಾನೇವೇತ್ತಿವ ಬಿಂಬಾಧರಬಹುಣ್ಣಮ್" ರಘುಂ ೧೩-೧೬ । 3. ಕೇಡು, ನಷ್ಟ, ಅಪಾಯ. 4. ಕೊರತೆ, ನ್ಯೂನತೆ, ಕೊರೆ. "ಅತ್ರಾಮೃತಂ ಸುರೈಃ ಪೀತ್ವಾ ನಿಹಿತಂ ನಿಹಿತಾರಿಭಿಃ । ಅತಃ ಸೋಮಸ್ಯ ಹಾನಿಶ್ಚ ವೃದ್ಧಿಶ್ಚೈವ ಪ್ರದೃಶ್ಯತೇ" ಭಾಂ ಉದ್ಯೋಗಂ ೯೯-೪ ।

ಹಾನು ಹಾನು (ಪುಂ) ದಂತ, ಹಲ್ಲು. "ದಂತಃ ಕರುಣಕುರೋ ಜಮ್ಭೋ ಹಾನುಃಪ್ರಜಸ್ತಥಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಹಾನ್ವ ಹಾನ್ವ (ನಂ) ಮರಣ, ನಿಧನ. ಹನ್ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) "ಘ್" (ಉಂ ೪-೧೫೯) ।

ಹಾಪನ ಹಾಪನ (ನಂ) ಓಡಿಸುವುದು, ಅಟ್ಟಿಸುವುದು, ಹೊರಗೆ ಹೊರಡಿಸುವುದು. ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೆ) + ಣಿನ್ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

ಹಾಪುತ್ರಿಕಾ ಹಾಪುತ್ರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಡಿಗೆಸೊಗಸಿನ ಹೆಕ್ಕು, ಕಂಬೂತದ ಹೆಕ್ಕು. "ಹಾಪುತ್ರಿಕಾ ಕ್ಷಜ್ಜನಿಕಾ ತುಲಿಕಾ-ಸ್ಕೊಟಿಕೇ ಸಮೇ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಹಾಫಿಕಾ ಹಾಫಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಕ್ಕಿಕ್ಕೆ.

ಹಾಯನ ಹಾಯನ (ಪುಂ) 1. ಸಂವತ್ಸರ, ವರ್ಷ. ಜಹಾತಿ ಮಾವಾನ್— ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೆ) "ಘ್" (೩-೧-೧೪೮) । "ವಸ್ತೇಕಹಾಯನಕುರಜ್ಜವಿಲೋದೃಷ್ಟೇಸ್ತಸ್ಯಾಃ ಪರಿಸ್ಫುರಿತಗಂಭೀರಾಲಸಾಯಾಃ" ಉಂ ರಾಂ ೩-೨೮ । (ಪುಂ) 2. ಅಗ್ನಿಯ ಶಿಖೆ, ಅಗ್ನಿಯ ಜ್ವಾಲೆ. 3. ಒಂದು ವಿಧ ಧಾನ್ಯ (ಬತ್ತ). "ಹಾಯನೋ ನ ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ವರ್ಷೇ ಪುಂಸ್ಯಾಚಿವ್ರಿಹಿಭೇದಯೋಃ" ಮೇದಿಂ ।

ಹಾರ ಹಾರ (ಪುಂ) 1. ಸರ, ಮಾಲೆ. ಹ್ರಿಯತೇ ಮನೋಜೇನ— ಹ್ರ (ಹರಣೇ) "ಘ" (೩-೩-೧೧೯) । "ಆಹತಂ ಕುಚತಡೇನ ತರಣ್ಯಾಃ ಸಾಧು ಸೋಡಮಮುನೇತಿ ಪಪಾತ । ಧೃತಚತಃ ಪ್ರಿಯತಮೋರಸಿ ಹಾರಾತ್ ಪುಷ್ಪವೃಷ್ಟಿರಿವ ಮೌಕ್ತಿಕವೃಷ್ಟಿಃ" ಮಾಧಂ ೧೦-೭೪ । 2. ಯುದ್ಧ. ಹ್ರಿಯಂತೇ ಪ್ರಾಣಾ ಯತ್ರ— ಹ್ರ (ಹರಣೇ) "ಘ" (೩-೩-೧೨೧) । "ಹಾರೋ ಮುಕ್ತಾವಲಿ ಯುಧಿ" ಮೇದಿಂ । 3. ತಪ್ಪಿಸುವುದು, ನಿವಾರಣೆ ಮಾಡುವುದು. "ಹಂಸ್ಯುನ್ಮಾಗಾನ್ ಹಿಸಯಾ ವರ್ತಮಾನಾನ್ ಜನ್ಮೇತತ್ತೇ ಮಾರಹಾರಾಯ ಭೂಮೇಃ" ಭಾಗಂ ೧೦-೬೩-೨೭ । (ವಿಂ) 4. ಸಾಗಿಸುವವನು, ಒಯ್ಯುವವನು. 5. ನಾಶಪಡಿಸುವವನು, ನಿವಾರಿಸುವವನು. ಹರತಿ— ಹ್ರ (ಹರಣೇ) "ಅಚ್"

(೩-೧-೧೩೪) । ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಞ್" (೫-೪-೩೮) । 6. ಹರಿಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಹರೇರಿದಮ್ ।

ಹಾರಕ ಹಾರಕ (ಪುಂ) 1. ಕಪಟ, ಮಂಚಿಕ, ಮೋಸಗಾರ. ಹರತಿ— ಹ್ರ (ಹರಣೇ) "ಘ್" (೩-೧-೧೩೩) । 2. ಚೋರ, ಕಳ್ಳ, ತಸ್ಕರ. 3. ಭಾಜಕ, ಶೇಷವಿಲ್ಲದಂತೆ ಮತ್ತೊಂದು ಸಂಖ್ಯೆಯನ್ನು ಭಾಗ ಮಾಡುವ ಸಂಖ್ಯೆ. 4. ಗದ್ಯದ ಒಂದು ಭೇದ. "ಹಾರಕಃ ಕಿತವೇ ಚೋರೇ ಗದ್ಯ-ವಿಜ್ಞಾನಭೇದಯೋಃ" ಮೇದಿಂ । (ವಿಂ) 5. ಅಪಹರಿಸುವವನು, ಕದಿಯುವವನು. 6. ಒಯ್ಯುವವನು, ಸಾಗಿಸುವವನು.

ಹಾರಗುಡಿಕಾ ಹಾರಗುಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುತ್ತು, ಮಣಿ, ರತ್ನ. "ನಿಖಿತಹಾರಗುಡಿಕಾವಿಶವಂ ಹಿಮಾಮ್ಭಃ" ರಘುಂ ೫-೭೦ ।

ಹಾರಯಣಿ ಹಾರಯಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಂಠಾಭರಣ, ಮುಕ್ತಾ ಹಾರ. ಹಾರಃ ಯಣಿರಿವ ।

ಹಾರಹಾರಾ ಹಾರಹಾರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೊಂಬಣ್ಣದ ದ್ರಾಕ್ಷೆ.

ಹಾರಹೂರಾ ಹಾರಹೂರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದ್ರಾಕ್ಷೆ. "ಮೃದ್ವಿಕಾ ಹಾರಹೂರಾ ಚ ಗೋಸ್ತನಿ ಚಾಪಿ ಕೀರ್ತಿತಾ" ಭಾವಪ್ರಂ ।

ಹಾರಾವಲಿ ಹಾರಾವಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಮುತ್ತಿನ ಹಾರ, ಮುಕ್ತಾಹಾರದ ಸಮೂಹ. ಹಾರಸ್ಯ ಆವಲಿ । "ತರುಣಿ-ಸ್ತನ ಏವ ದೀಪ್ಯತೇ ಮಣಿಹಾರಾವಲಿರಾಮಣೀಯಕಮ್" ನೈಷಂ ೨-೪೪ । 2. ಪುರುಷೋತ್ತಮ ಪಂಡಿತ ವಿರಚಿತ ಒಂದು ನಿಘಂಟು. "ಮುಕ್ತಾಮಯಾತಿಮಧುರಾ ಮಸೃಣಾವದಾತಕ್ಷಯಾಧಿ-ರಾಗತರಲಾಮಲಸದ್ಗುಣಶ್ರೀಃ । ಸಾಂಖ್ಯಿ ಸತಾಂ ಭಜತು ಕುಠಮಸಿ ಪ್ರಿಯೇವ ಹಾರಾವಲಿ ವಿರಚಿತಾ ಪುರುಷೋತ್ತಮೇನ" ಹಾರಾಂ ।

ಹಾರಿ ಹಾರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ವರ್ತಕರ ಅಥವಾ ಪ್ರಯಾಣಕರ ತಂಡ. 2. ಜೂಜಿನಲ್ಲಿ ಪರಾಜಯ. ಹ್ರ (ಹರಣೇ) "ಇಚ್" ಬಾಹುಂ । (ವಿಂ) 3. ಮನೋಹರವಾದ. 4. ಪ್ರಿಯವಾದ. 5. ಸಂತೋಷವಂಟುಮಾಡುವ. "ಹಾರಿಃ ಪಥಿಕಸಂತಾನಬೃತಾದಿಭಿಃ ಸ್ತ್ರೀಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ ।

ಹಾರಿಕಣ್ಠ ಹಾರಿಕಣ್ಠ (ಪುಂ) 1. ಕೋಗಿಲೆ. ಹಾರಿ ಮನೋಹರಃ ಕಣ್ಠೋಽಸ್ಯ । (ವಿಂ) 2. ಮುಕ್ತಾಹಾರದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕಂಠ, ಹಾರವನ್ನು ಧರಿಸಿರುವ ಕಂಠ. ಹಾರಿ ಹಾರಯುಕ್ತಃ ಕಣ್ಠಃ । "ಹಾರಿಕಣ್ಠಃ ಪಿಕೇ ಪುಸಿ ಹಾರಾನ್ವಿತಗಲೇ ತ್ರಿಷು" ಮೇದಿಂ ।

ಹಾರಿಣ ಹಾರಿಣ (ನಂ) 1. ಜಿಂಕೆಯ ಮೂಂಸ. (ವಿಂ) 2. ಜಿಂಕೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಹರಿಣಸ್ಯೇದಮ್ "ಅಞ್" (೪-೩-೧೨೦) ।



ಹಾರಿಣಿಕ ಹಾರಿಣಿಕ (ಪುಂ) ವ್ಯಾಧಿ, ಬೇಟೆಗಾರ. ಹರಿಣಿ  
ಹಂತಿ — ಹರಿಣಿ "ಠಕ್" (೪-೪-೩೫) ।

ಹಾರಿತ ಹಾರಿತ (ಪುಂ) 1. ಪಾರಿವಾಳ ಪಕ್ಷಿಯ ಒಂದು ಭೇದ.  
2. ಹಸಿರು ಬಣ್ಣ.

ಹಾರಿತಕ ಹಾರಿತಕ (ನಂ) ತರಕಾರಿ, ಕಾಯಿಪಲ್ಯ. ಹರಿತಕ-  
ಮೇವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಅಞ್" ।

ಹಾರಿದ್ರ ಹಾರಿದ್ರ (ಪುಂ) 1. ಕದಂಬ ವೃಕ್ಷ, ಈಚಲು ಮರ.  
(ವಿಂ) 2. ಅರಿಶಿನದಿಂದ ಬಣ್ಣ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ (ವಸ್ತ್ರ).  
ಹರಿದ್ರಯಾ ರಕ್ತಮ್ "ಅಞ್" (ವಾಂ ೪-೨-೨) । "ಹಾರಿದ್ರಂ  
ಹರಿದ್ರಾರಂಜಿತೇ ತ್ರಿಫಲಾ ನಾ ನೀಪವೃಕ್ಷೇ" ಮೇದಿಂ ।

ಹಾರಿನ್ ಹಾರಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಹಾರದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು,  
ಹಾರ ಹಾಕಿಕೊಂಡಿರುವವನು. ಹಾರೋಸ್ತಯಸ್—"ಇನಿ:"  
(೪-೨-೧೧೫) । 2. ಒಯ್ಯುವವನು, ಸಾಗಿಸುವವನು.  
3. ಅಪಹರಿಸುವವನು. ಹರಿತಿ—ಹ್ರ (ಹರಣಿ) "ಗಿನಿ:"  
(೩-೧-೧೩೪) । 4. ಮನೋಹರವಾದ, ಮನಸ್ಸನ್ನು  
ಆಕರ್ಷಿಸುವ. "ತವಾಸ್ಮಿ ಗೀತರಾಗೇಣ ಹಾರಿಣಾ ಪ್ರಸಮಂ  
ಹೃತಃ । ಏಷ ರಾಜೇವ ದುಷ್ಯಂತಃ ಸಾರಂಜ್ಞೇನಾತಿರಂಹಸಾ"  
ಶಾಕುಂ ೧-೫ ।

ಹಾರಿ ಹಾರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುತ್ತು.

ಹಾರಿತ ಹಾರಿತ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಪಕ್ಷಿ,  
ಪಾರಿವಾಳದ ಹಕ್ಕಿ. "ಮಾರೀಚೋದ್ಭ್ರಾಂತಹಾರಿತಾ ಮಲಯಾದ್ರೇ-  
ಫತಿಕಾ" ರಘುಂ ೪-೪೬ । 2. ಧರ್ಮಶಾಸ್ತ್ರ ಪ್ರವರ್ತಕ  
ರಾದ ಒಬ್ಬ ಮುನಿ, ಒಬ್ಬ ಸ್ತುತಿಕಾರರು. 3. ಕೃತವ,  
ಕಪಟ. 4. ಆಯುರ್ವೇದ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಒಬ್ಬ  
ಯತಿ. "ಹಾರಿತೋ ಮುನಿಮೇದೇ ಸ್ಯಾತ್ಕೃತವೇ ವಿಹಗಾಂತರೇ"  
ಹೇಮಂ । ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" । ಹಾರಿತಕ: ಹಾರಿತಕ:

ಹಾರ್ದ ಹಾರ್ದ (ನಂ) 1. ಪ್ರೇಮ, ಸ್ನೇಹ. ಹೃದಯಸ್ಯ ಭಾವಃ  
ಕರ್ಮ ವಾ — ಹೃದಯ "ಅಞ್" (೪-೧-೧೩೦) । ಹೃದಯಸ್ಯ  
ಹೃದಾದೇಶ: (೬-೩-೫೦) । "ಅಮರ್ಷಶೂನ್ಯೇನ ಜನಸ್ಯ ಜನ್ತುನಾ  
ನ ಜಾತಹಾರ್ದೇನ ನ ವಿವಿಷಾದರ:" ಕಿರಾಂ ೧-೩೩ । 2.  
ದಯೆ, ಅನುಕಂಪ, ಕನಿಕರ. 3. ಅಭಿಪ್ರಾಯ, ಆಶಯ.  
"ಅರ್ಜುನಃ ಸಹಸಾಜಾಯ ಹರೇಹರ್ದಿಮಯಾಸಿನಾ" ಭಾಗಂ ೧-೨-೫೫ ।  
4. ಇಚ್ಛೆ, ಅಪೇಕ್ಷೆ.

ಹಾರ್ದಿನ್ ಹಾರ್ದಿನ್ (ವಿಂ) ಪ್ರೇಮವುಳ್ಳ, ಸ್ನೇಹದಿಂದ  
ಕೂಡಿದ. ಹಾರ್ದಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) ।

ಹಾರ್ಯ ಹಾರ್ಯ (ಪುಂ) 1. ವಿಭೀತಕವೃಕ್ಷ, ತಾರಗಿಡ.  
(ವಿಂ) 2. ಕದಿಯಲ್ಪಡುವ. ಹ್ರ (ಹರಣಿ) "ಯತ್"  
(೩-೧-೧೨೪) । 3. ಒಯ್ಯಲ್ಪಡುವ, ಸಾಗಿಸಲ್ಪಡುವ.

4. ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲ್ಪಡುವ, ಸ್ವೀಕರಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ನಾಶ  
ಪಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ವಹಿಸಲ್ಪಡುವ. "ಯದ್ವಯಾ ವಾರಣ-  
ರಾಜಹಾರ್ಯಾ" ಕುಮಾಂ ೫-೭೦ ।

ಹಾಲ ಹಾಲ (ಪುಂ) 1. ಅಲಿವಾಹನ ರಾಜ. 2. ಬಲರಾಮ.  
ಹಲೇನ ಕ್ರೀಡತಿ — "ಅಞ್" । ಹಲ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಞ:"  
(೩-೧-೧೪೦) ವಾ । 3. ನೇಗಿಲು. 4. ಚಂದ್ರ. "ಹಾಲೋ  
ಹಲೇ ಪುಮಾನ್ ಹಾಲಾ ಮದಿರಾಃ ಚ ಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ ।

ಹಾಲಕ ಹಾಲಕ (ಪುಂ) ಹಳದಿ ಮೆತ್ತು, ಹಸಿರುಮಿಶ್ರ  
ವರ್ಣದ ಕುದುರೆ. "ಹರಿತಃ ಪೀತಹರಿತಚ್ಚಾಯಃ ಸ ಏವ  
ಹಾಲಕಃ" ಹೇಮಂ ।

ಹಾಲಹಲ ಹಾಲಹಲ (ನಂ) ವಿಷ. ["ಹಾಲಾಹಲ" ಪದ  
ದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಹಾಲಾ ಹಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮದಿರೆ, ಮದ್ಯ. ಹಲ್ಯತೇ ಕೃಷ್ಯತ  
ಇವ ಮನೋಜಯಾ — ಹಲ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಯಃ" (೩-೩-೧೨೧) ।  
"ಯೋಷಿದಿತ್ಯಮಿಲಲಾಫ ನ ಹಾಲಾಂ ದುಸ್ತಯಜಃ ಖಲು ಸುಖಾದಪಿ  
ಮಾನಃ" ಮಾಧಂ ೧೦-೨೧ ।

ಹಾಲಾಹಲ ಹಾಲಾಹಲ (ನಂ) 1. ಒಂದು ವಿಷ. ಹಾಲಾಮಪಿ  
ಹಲತಿ — ಹಲ (ವಿಲೇಖನೆ) "ಯಃ" (೩-೧-೧೩೪) ।  
"ಹಾಲಾಹಲಂ ಹಾಲಹಲಂ ವದಂತ್ಯಪಿ ಹಾಲಾಹಲಮ್" ದ್ವಿರೂಪಂ ।  
ಉವಾ: "ಸ್ನಿಗ್ಧಂ ಭವತ್ಯಮೃತತುಲ್ಯಮಹೋ ಕಲತ್ರಂ ಹಾಲಾಹಲಂ  
ವಿಷಮಿವಾಪ್ರಗುಣಂ ತದೇವ" । "ಕಾಮಮಪಾಯಿ ಮಯೇಂದ್ರಿಯಕುಣ್ಡೇ-  
ಯಂವಪಿ ದುಷ್ಕೃತಹಾಲಹಲೋಽಃ" । "ಮಧು ತಿಷ್ಠತಿ ವಾಚಿ  
ಯೋಷಿತಾಂ ಹೃದಯೇ ಹಾಲಹಲಂ ಮಹಾವಿಷಮ್" । "ಕಸ್ಯ ಸಹ್ಯೋ  
ಹಾಲಾಹಲಃ" । 2. ಮದ್ಯ.

ಹಾಲಾಹಲಧರ ಹಾಲಾಹಲಧರ (ಪುಂ) ಸರ್ಪ, ಹಾವು.  
ಧರತಿ — ಧೃ (ಧಾರಣಿ) "ಯಃ" (೩-೧-೧೩೪) । ಹಾಲಾ-  
ಹಲಸ್ಯ ಧರಃ ।

ಹಾಲಾಹಲಾ ಹಾಲಾಹಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣ್ಣ ಜಾತಿಯ ಇಲಿ,  
ಚಿಟ್ಟಿಲಿ.

ಹಾಲಾಹಲಿ ಹಾಲಾಹಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮದ್ಯ, ಮದಿರೆ.

ಹಾಲಿಕ ಹಾಲಿಕ (ಪುಂ) 1. ನೇಗಿಲಿನಿಂದ ತೋಡುವವನು,  
ನೇಗಿಲಿನಿಂದ ಭೂಮಿಯನ್ನು ಉಳುವವನು. ಹಲೇನ ಖನತಿ  
— ಹಲ "ಠಕ್" (೪-೪-೨) । 2. ನೇಗಿಲನ್ನು ಹೊರುವವನು.  
ಹಲಂ ವಹತಿ — ಹಲ "ಠಕ್" (೪-೪-೮೧) ।  
(ವಿಂ) 3. ನೇಗಿಲಿನ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಹಲಸ್ಯದಮ್ "ಠಕ್"  
(೪-೩-೧೨೪) । "ಖನತಿ ತೇನ ತದ್ವಿವಾಸ್ಯೇದಂ ಹಾಲಿಕ-  
ಸೇರಿಕೋ" ಅಮಂ ।

ಹಾಲಿನಿ ಹಾಲಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದೊಡ್ಡ ಜಾತಿಯ ಹಲ್ಲಿ,  
—ಗಾಳಿ.



ಹಾಲಿ ಹಾಲಿ (ಸ್ವೀಂ) ಪತ್ತಿಯ ಕಿರಿಯ ಸಹೋದರ.

ಹಾಲು ಹಾಲು (ಪುಂ) ದುಡ, ಹಲ್ಲು. ಹಲ್ಯತೇನೆನ — ಹಲ್  
“ಉ” (ಉಂ ೧-೧) ।

ಹಾವ ಹಾವ (ಪುಂ) 1. ಸ್ತ್ರೀಯರ ಶೃಂಗಾರ ಭಾವದ ಕಾರ್ಯ,  
ಹೆಂಗಸರ ವಿಲಾಸ ಮೊದಲಾದ ಶೃಂಗಾರದ ಕ್ರಿಯೆ,  
ಶೃಂಗಾರದ ಚೇಷ್ಟೆ, ರತಿ ಮೊದಲಾದ ಭಾವಗಳಿಂದ  
ಉಂಟಾದ ಶಾರೀರ ಚೇಷ್ಟೆ. ಹವನಮ್—ಕೃ (ದಾನಾದನಯೋಃ)  
“ವಜ್” (೩-೧-೧೮) । ಹ್ಯಂತೇ ರಾಗಿನೋಽ — ಹ್ಯಂ  
ಅಧಿಂ “ವಜ್” (೩-೩-೧೨೧) । ಹ್ಯಂತೇ ಯುವಾನಃ ಕಾಮಾನ್ಮಾ-  
ವನೇನ—ಕರಣಂ “ವಜ್” ವಾ । ಭೂ ನೇತ್ರ ಇವುಗಳ ವಿಚಾರ  
ಗಳಿಂದ ಸಂಭೋಗದ ಅಪೇಕ್ಷೆಯನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಭಾವವು  
ಹಾವ. “ಭೂನೇತ್ರಾದಿವಿಕಾರೇಸ್ತು ಸಂಭೋಗೇಚ್ಛಾಪ್ರಕಾಶಕಃ ।  
ಭಾವ ಎವಾಲಪಸಂಲಕ್ಷ್ಯವಿಕಾರೋ ಹಾವ ಉಚ್ಯತೇ” ಸಾಂ ದಂ  
೩-೧೪ । “ಆಜ್ಞಾಂ ಪ್ರತೀಪುರ್ವಿನಯಾದುಪಾಸ್ಥುರ್ಜಗುಃ ಸರಾಗಂ ನನೃತುಃ  
ಸಹಾವಮ್” ಭಟಿಂ ೩-೪೩ । “ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ವಿಲಾಸವಿಜ್ವಲ-  
ವಿಭ್ರಮಾ ಲಲಿತಂ ತಥಾ । ಹೇಲಾ ಲೀಲೇತಮಿ ಹಾವಾಃ ಕ್ರಿಯಾಃ  
ಶೃಂಗಾರಭಾವಜಾಃ” ಅಮಂ । ಹಾವವು ಸ್ತ್ರೀಯರ ಯೌವನ  
ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸತ್ತ್ವದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಇಚ್ಛಾಶಕ್ತಿ  
ಅಲಂಕಾರಗಳಲ್ಲೊಂದು. “ಯೌವನೇ ಸತ್ವಜಾಸ್ತಾಸಾಂ (ನಾಯಿ-  
ಕಾನಾಂ) ಅಷ್ಟಾವಿಂಶತಿಸಂಖ್ಯಕಾಃ । ಅಲಂಕಾರಾಸ್ತತ್ರ ಭಾವ-  
ಹಾವಹೇಲಾಸ್ತ್ರಯೋಽಕ್ಷಜಾಃ” ಸಾಂ ದಂ ೩ । 2. ಅಹ್ವಾನ,  
ಕರೆ.

ಹಾಸ ಹಾಸ (ಪುಂ) 1. ಹಾಸ್ಯರಸ. ಹಸೇ (ಹಸನೇ) “ವಜ್”  
(೩-೩-೧೮) । “ಅಯೋ ಹಸಃ । ಹಾಸೋ ಹಾಸ್ಯಂ ಚ” ಅಮಂ ।  
2. ನಗೆ, ನಗು. “ಸಂರಮ್ಭಂ ಮೆಥಿಲಿಹಾಸಃ ಧನಸೋಮ್ಯಾಂ  
ನಿನಾಯ ತಾಮ್ । ನಿವಾತಸ್ತಿಮಿತಾಂ ವೇಲಾಂ ಚಂದ್ರೋದಯ ಇವೋದಯಃ”  
ರಘುಂ ೧೨-೩೬ । 3. ಅಂಗವಿಕಾರಾದಿ ದರ್ಶನದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಚಿತ್ತವಿಕಾಸ. ಇದು ಹಾಸ್ಯರಸದ ಸ್ಥಾಯಿ  
ಭಾವ. “ವಿಕೃತಾಕಾರವಾಗ್ವೇಷೇಷಾಡೇಃ ಕುಹಕಾಽದ್ಭವೇತ್ ।  
ಹಾಸ್ಯೋ ಹಾಸಸ್ಥಾಯಿಭಾವಃ ಶ್ವೇತಃ ಪ್ರಮಥದೇವತಃ” ಸಾಂ ದಂ  
೩-೨೧೪ । 4. ವಿಕಾಸ, ಅರಳುವುದು. “ಕೂಲಾನಿ ಸಾಮರ್ಥ-  
ತಯೇವ ತೇನುಃ ಸರೋಜಲಕ್ಷ್ಮಾಂ ಸ್ಥಲಪತ್ರಹಾಸೇಃ” ಭಟಿಂ ೨-೩ ।  
5. ಉಲ್ಲಾಸ, ನಲಿವು, ವಿನೋದ. 6. ಪರಿಹಾಸ್ಯ, ಗೇಲಿ.

ಹಾಸಕರ ಹಾಸಕರ (ವಿಂ) 1. ನಗುವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ.  
2. ವಿಕಾಸವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ, ಅರಳಿಸುವ. 3. ಉಲ್ಲಾಸ  
ವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ. 4. ಪರಿಹಾಸ್ಯವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ.  
ಹಾಸಂ ಕರೋತಿ — ಡುಕ್ತಾ (ಕರಣಂ) ತಾಂಡೀತ್ಯೇ “ಠಃ”  
(೩-೨-೨೦) । “ಹಾಸಕರಮಘಟತೇ ನಿತರಾಂ ಶಿರಸೀವ  
ಕಂಠಮಪೇತಮುರ್ದಜೇ” ಮಾಧಂ ೧೫-೩೩ ।

ಹಾಸಸ್ ಹಾಸಸ್ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಅಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ)  
“ಅಸುನ್” (ಉಂ ೪-೨೨೦) ।

ಹಾಸ್ತಿಕ ಹಾಸ್ತಿಕ (ನಂ) 1. ಗಜಗಳ ಸಮೂಹ, ಅನೆಗಳ  
ಹಿಂದು. ಹಸ್ತಿನಾಂ ಸಮೂಹಃ—ಹಸ್ತಿನ “ಠಕ್” (೪-೨-೪೭) ।  
“ಖೇದಾಯತಶ್ಚಸಿತವೇಗನಿರಸ್ತಮುಧಮುಧನ್ಯರಲನಿಕರೇರಿವ  
ಹಾಸ್ತಿಕಾನಿ” ಮಾಧಂ ೫-೩೦ । (ವಿಂ) 2. ಅನೆಯ  
ಮೇಲೆ ಕುಳಿತು ಸಂಚರಿಸುವವನು. ಹಸ್ತಿನಾ ಚರತಿ —  
ಹಸ್ತಿನ “ಠಕ್” (೪-೪-೮) ।

ಹಾಸ್ತಿನ ಹಾಸ್ತಿನ (ನಂ) ಹಸ್ತಿನಾಪುರ. ಹಸ್ತಿನಾ ನೃಪತಿನಾ  
ನಿವೃತ್ತಮ್ — ಹಸ್ತಿನ “ಅನ್” (೪-೨-೬೮) ।

ಹಾಸ್ತಿನಪುರ ಹಾಸ್ತಿನಪುರ (ನಂ) ಹಸ್ತಿನಾಪುರ. “ಸ ಗತ್ವಾ  
ಹಾಸ್ತಿನಪುರಂ ಭೃತರಾಷ್ಟ್ರಂ ಸಮೇತ್ಯ ಚ । ಉಕ್ತವಾನ್ ವಚನಂ ತಥ್ಯಂ  
ಹಿತಂ ಚೇವ ವಿಶೇಷತಃ” ಭಾಂ ಶಲ್ಯಂ ।

ಹಾಸ್ಯ ಹಾಸ್ಯ (ನಂ) 1. ನಗೆ. ನಗು. ಹಸೇ (ಹಸನೇ)  
“ಫ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪) । 2. ಉಲ್ಲಾಸ, ವಿನೋದ.  
“ಛೃತಮೇತತ್ ಪುರಾಕಲ್ಪೇ ದೃಷ್ಟಂ ವೇರಕರಂ ಮಹತ್ । ತಸ್ಮಾದ್ಛೃತಂ  
ನ ಸೇವೇತ್ ಹಾಸ್ಯಾರ್ಥಮಪಿ ಬುದ್ಧಿಮಾನ್” ಮನ್ವಂ ೯-೨೨೭ ।  
3. ಹಾಸ್ಯರಸ. ಹಾಸ್ಯರಸಕ್ಕೆ ಹಾಸ್ಯವು ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ.  
“ವಿಕೃತಾಕಾರವಾಗ್ವೇಷೇಷಾಡೇಃ ಕುಹಕಾಽದ್ಭವೇತ್ । ಹಾಸ್ಯೋ ಹಾಸ-  
ಸ್ಥಾಯಿಭಾವಃ ಶ್ವೇತಃ ಪ್ರಮಥದೇವತಃ” ಸಾಂ ದಂ ೩-೨೧೪ ।  
(ವಿಂ) 4. ಪರಿಹಾಸ್ಯಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ. “ಸಂಹದ್ವೇಷಸ್ಯ  
ಮೃಗೇಂದ್ರ ಕಾಮಂ ಹಾಸ್ಯಂ ವಚಸ್ತದ್ಭವಂ ವಿವಕ್ಷುಃ” ರಘುಂ ೨-೪೩ ।

ಹಾಸ್ಯರಸ ಹಾಸ್ಯರಸ (ಪುಂ) ಹಾಸ್ಯ ಸ್ಥಾಯಿಭಾವವುಳ್ಳ  
ಹಾಸ್ಯರಸ, ಶೃಂಗಾರಾದಿ ಎಂಟು ರಸಗಳಲ್ಲೊಂದು ರಸ.  
ಹಾಸ್ಯರಸಕ್ಕೆ ಹಾಸ್ಯವು ಸ್ಥಾಯಿಭಾವ. ವಿಕಾರವಾದ ಆಕಾರ  
ವಾಕ್ಯ, ಚೇಷ್ಟೆ ಇವುಗಳೆಲ್ಲ ವ್ಯಕ್ತಿಯು ಅಲಂಕಾರ  
ವಿಭಾವ. ಆಕಾರ ವೇಷ ಚೇಷ್ಟೆಗಳು ಉದ್ದೇಶವನ  
ವಿಭಾವ. ಶ್ರಮಾದಿಗಳು ಸಂಚಾರಿಭಾವಗಳು. ಹಾಸ್ಯರಸವು  
ಶ್ವೇತವರ್ಣವುಳ್ಳದ್ದು. “ವಿಕೃತಾಕಾರವಾಗ್ವೇಷೇಷಾಡೇಃ  
ಕುಹಕಾಽದ್ಭವೇತ್ । ಹಾಸ್ಯೋ ಹಾಸಸ್ಥಾಯಿಭಾವಃ ಶ್ವೇತಃ ಪ್ರಮಥ-  
ದೇವತಃ ।। ವಿಕೃತಾಕಾರವಾಗ್ವೇಷೇಷಾಡೇಃ ಯಮಾಲೋಕ್ಯ ಹಸೇಜನಃ ।  
ತದಬ್ರಾಲಂಬನಂ ಪ್ರಾಹುಸ್ತಶ್ಚೇಷೋದೀಪನಂ ಮತಮ್ ।। ಅನುಭಾವೋಽ-  
ಕ್ಷಿಸಂಕೋಚವದನಸ್ಮೇರತಾದಯಃ । ನಿರ್ದಾಲಸ್ಯಾವಹಿತಾಶ್ಚಾ ಅವ-  
ಸ್ಯವ್ಯಂಭಿಚಾರಿಣಃ” ಸಾಂ ದಂ ೩ ।

ಹಾಹಲ ಹಾಹಲ (ನಂ) ಹಿಂದು ವಿಧ ವಿಷ.

ಹಾಹಾ ಹಾಹಾ (ಪುಂ) ದೇವಗಂಧರ್ವ, ದೇವಗಾಯಕ.  
ಹಾ ಇತಿ ಶೋಕವ್ಯಂಜಕಂ ಶಬ್ದಂ ಜಹಾತಿ—ಅಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೇ)  
“ವಿಚ್” (೩-೨-೭೨) ।



ಹಾಹಾಕಾರ ಹಾಹಾಕಾರ (ಪುಂ) 1. ಯುದ್ಧ ಕಲಹ ಮೊದಲಾದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಕೇಳಬರುವ ಶಬ್ದ. ಹಾ ಹಾ ಇತಿ ಶಬ್ದಸ್ಯ ಕಾರಃ । "ಹಾಹಾಕಾರಃ ಸಮಭವತತ್ರ ತತ್ರ ಸಹಸ್ರಶಃ । ಅನ್ಯೋಯಂ ಚಿಂತತಾಂ ಶಸ್ತ್ರೇರಾದಿತೈ ಲೋಹಿತಾಯತಿ" ಭಾಂ । 2. ದುಃಖದ ಶಬ್ದ. ದುಃಖಸೂಚಕವಾದ ಧ್ವನಿ.

ಹಿ ಹಿ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಹೇತು, ಕಾರಣ. "ವಿದಿತೇಜ್ಞಿತೇ ಹಿ ಪುರ ಏವ ಜನೇ ಸಪದೀರಿತಾಃ ಸ್ವಲ್ಪ ಲಗಂತಿ ಗಿರಃ" ಮಾಘಂ ೧-೬೯ । 2. ಅವಧಾರಣ, ನಿಶ್ಚಯ. "ನ ಹಿ ಕಮಲಿನಿ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಗ್ರಾಹಮವೇಕ್ಷತೇ ಮತಃಪ್ರಜಃ" ಮಾಲಂ ೩ । 3. ಪಾದ ಪೂರಣ, ಪಾದವನ್ನು ಪೂರ್ಣಗೊಳಿಸುವ ಒಂದು ಅವ್ಯಯ. "ತು ಹಿ ಚ ಸ್ವ ಹ ವೇ ಪಾದಪೂರಣೇ" ಅಮಂ । 4. ಪ್ರಶ್ನಾರ್ಥಕ. "ಕಿಂ ಚ ತೇವ ತು ಭೂಮಿ ತ್ವಂ ವತ್ಸ ಕಿಂ ಕುಪಿತೋಹ್ಯಸಿ" ರಾಮಾಂ । 5. ಉದಾಹರಣೆ. "ಸಹಸ್ರಗುಣಮುತ್ಪತ್ತಿಮಾದತ್ತೇ ಹಿ ರಸ ರವಿಃ" ರಘುಂ ೧-೧೮ । 6. ಸಾಧ್ಯಮ್. 7. ಅಸೂಯೆ. 8. ವಿಶೇಷ. "ಹಿ ಪಾದಪೂರಣೇ ಹೇತು ವಿಶೇಷವ್ಯವಧಾರಣೇ । ಪ್ರವೇಶೇ ಹೇತವ್ಯದೇಶೇ ಚ ಸಮಭ್ರಮಾಸುಯಯೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ ।

ಹಿಸಕ ಹಿಂಸಕ (ಪುಂ) 1. ಇತರ ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನು ತಿನ್ನುವ ಹಿಂಸ್ರಪ್ರಾಣಿ. 2. ಶತ್ರು. (ವಿಂ) 3. ಹಿಂಸಿಸುವವನು, ಹಿಂಸಿಸುವವನು, ತೊಂದರೆಕೊಡುವವನು. ಹಿನಸ್ತಿ — ಹಿಸಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಫುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) । "ಭಾರ್ಯಾ ಪ್ರಿಯಸಖೀ ಯಸ್ತು ಸಾಧವೀ ಹಿಸತಿ ನಿರ್ಭುಣಃ । ನ ತೇಽಮೃತಂ ಪ್ರಾಪ್ನುವಂತಿ ಹಿಸಕಾ ದುಷ್ಟಯೋನಿಜಾಃ" ವರಾಹಪುಂ ।

ಹಿಸಿನ ಹಿಂಸಿನ (ನಂ) 1. ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ಹಿಂಸಿಸುವುದು, ತೊಂದರೆಕೊಡುವುದು. ಹಿಸಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) ಭಾವೇ "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಕೊಲ್ಲುವುದು. "ಮೇದಾಂಧ್ರಚುಚ್ಚು-ಮದ್ಗುನಾಮಾರಾಧನಾಹಿಸಿನಮ್" ಮನುಂ ೧೦-೪೮ ।

ಹಿಸಾ ಹಿಂಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಿಂಸೆ, ತೊಂದರೆ, ಕೆಡುಕು. ಹಿಸಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩) । 2. ಬಂಧನ. 3. ಹೆದರಿಕೆ. 4. ಹೊಡೆಯುವುದು. 5. ಕಳ್ಳತನ.

ಹಿಸಾಕರ್ಮನ್ ಹಿಂಸಾಕರ್ಮನ್ (ನಂ) ತೊಂದರೆ ಕೊಡುವ ಕಾರ್ಯ, ಇನ್ನೊಬ್ಬನಿಗೆ ಕೇಡುಂಟುಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯ, ಅಭಿಚಾರಿಕರ್ಮ, ಮಾಟ ಶೂನ್ಯ ಮುಂತಾದುದು. ಹಿಸಾಜನಕಂ ಕರ್ಮ । "ಹಿಸಾಕರ್ಮಾಭಿಚಾರಃ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ ।

ಹಿಸಾರ ಹಿಂಸಾರಾ (ಪುಂ) ವ್ಯಾಘ್ರ, ಹುಲಿ. "ಹಿಸಾರಃ ಶ್ವಾಪದೋ ವ್ಯಾಘ್ರಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಹಿಸಾಲು ಹಿಂಸಾಲು (ವಿಂ) 1. ಕೊಲ್ಲುವವನು. 2. ಹಿಂಸಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದವನು.

ಹಿಸಾಲುಕ ಹಿಂಸಾಲುಕ (ಪುಂ) ಹಿಂಸಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಹಿಸಾಲು ಸಂಭಾಷಣೆ "ಕನ್" ।

ಹಿಸಿತ ಹಿಂಸಿತ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಹಿಸಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಃ" (೩-೨-೧೦೨) । "ಯಸ್ತು ಭಾಗವತಾನ್ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ಭೂತಾ ಭಾಗವತಃ ಶುಚಿಃ । ಅಭ್ಯುತ್ಥಾನಂ ನ ಕುर्वೀತ ಅಹಂ ತೇನಾಪಿ ಹಿಸಿತಃ" । (ನಂ) 2. ಹಿಂಸೆ, ಹಿಂಸೆ, ತೊಂದರೆ. ಹಿಸಿ ಭಾವೇ "ಃ" (೩-೩-೧೧೪) ।

ಹಿಸೀರ ಹಿಂಸೀರ (ಪುಂ) 1. ದುಷ್ಟ, ದುರ್ಜನ 2. ವ್ಯಾಘ್ರ, ಹುಲಿ. ಹಿಸಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಇರನ್" (೩ಂ ೪-೧೮) । "ಹಿಸೀರೋ ವ್ಯಾಘ್ರದುಷ್ಟಯೋಃ" ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ಹಿಸ್ಯ ಹಿಂಸ್ಯ (ವಿಂ) ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಡುವ, ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಡುವ. ಹಿಸಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಯತ್" (೩-೧-೧೨೪) ।

ಹಿಸ್ತ ಹಿಂಸ್ರ (ಪುಂ) 1. ಹಿಂಸಿಸುವ ಸ್ವಭಾವದ ವ್ಯಾಘ್ರ ಮೊದಲಾದ ದುಷ್ಟ ಪ್ರಾಣಿ. ಹಿನಸ್ತಿ — ಹಿಸಿ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಃ" (೩-೨-೧೬೦) । "ಸಾ ದುಷ್ಪ್ರಧರ್ಷಾ ಮನಸಾಪಿ ಹಿಸೇರೀತೃದ್ರಿಸೋಭಾಪ್ರಹಿತೇಧಾಣೇನ" ರಘುಂ ೨-೨೭ । 2. ಭೀಮಸೇನ. 3. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. (ವಿಂ) 4. ಘಾತಕ, ಕೊಲ್ಲುವವನು. "ಹಿಸ್ತಃ ಸ್ಯಾದ್ಘಾತುಕೇ" ಹೇಮಂ ।

ಹಿಸ್ತಾ ಹಿಂಸ್ರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಗುಲಗಂಜಿ ಗಿಡ. 2. ಜಟಾ ಮಾಸಿ. 3. ಕೊಬ್ಬು. "ಹಿಸ್ತಾ ಮಾಸೀ ಕಾಕಾದನೀ ವಸಾ" ಹೇಮಂ । 4. ಕಾಡುಗೋಧಿ. 5. ನಾಡಿ, ಧಮನಿ.

ಹಿಕ್ಕಾ ಹಿಕ್ಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಕ್ಕುಲು, ಬಿಕ್ಕುಳಿಕೆ. ಹಿಕ್ಕ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಅಃ" (೩-೩-೧೦೩) । ಹಿನಸ್ತಿ ಇತಿ ಹಿಕ್ಕಾ ಪೂಂ । ಹಿಗತಿ ಕಾಶತಿ ಶಬ್ದಂ ಕರೋತಿ ಇತಿ ವಾ । ವಾತವ್ಯ ಉರ್ಧ್ವಮುಖವಾದಾಗ ಹೊರಡುವ ಶಬ್ದ. "ಸಿಂಧಕಾ ಸಾರಿಕಾ ಹಿಕ್ಕಾ ಪ್ರಾಚಿಕೋಲ್ಕಾ ಪಿಪಿಲಿಕಾ" ಅಮಂ । ಬಿಕ್ಕುಳಿಕೆಗೆ ಔಷಧ. "ಕುಲುತ್ಯಃ ಶ್ವಾಸಹಿಕ್ಕಾನ್ಯುತ್ ಕಕಗುಲ್ಕಾನಿಲಾಪಹಃ । ತ್ರಿದೋಷಹ್ನಂ ಮಧು ಪ್ರೋಕ್ತಂ ವಾತಲಂ ಚ ಪ್ರಕೀರ್ತಿಸಮ್" । ಬಿಕ್ಕುಳಿಕೆಗೆ ಕಾರಣಃ ಕಫಮೋಡನೆ ಕೊಡಿದ ವಾಯುವು ಬಿಕ್ಕುಳಿಕೆಯನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವುದು. ಇದು (1) ಅನ್ನಜಾ (2) ಯಮಲಾ (3) ಕ್ಷುರಾ (4) ಗಂಭೀರಾ ಮತ್ತು (5) ಮಹತೀ ಎಂದು ಐದು ವಿಧ. "ವಾಯುಃ ಕಫೇನಾನುಗತಃ ಪञ्च ಹಿಕ್ಕಾಂ ಕರೋತಿ ಹಿ । ಅನ್ನಜಾಂ ಯಮಲಾಂ ಕ್ಷುರಾಂ ಗಂಭೀರಾಂ ಮಹತೀಂ ತಥಾ" ।

(1) ಅನ್ನಜಾ ಹಿಕ್ಕಾಃ—ಕೂಡಿದ ನೀರು ಮತ್ತು ಅನ್ನ ಇವು ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸೇರಿದಾಗ ಒಡನೆ ಒತ್ತಡದಿಂದ ಪ್ರಾಣ ವಾಯುವು ಉರ್ಧ್ವಮುಖವಾಗಿ ಹೊರಡುವ ಶಬ್ದವು ಅನ್ನಜ ಬಿಕ್ಕುಳಿಕೆ. "ಪಾನಾನೇರತಿಸಂಯುಕ್ತಃ ಸಹಸಾ ಘೌಡಿತೋ-ನಿಲಃ । ಹಿಕ್ಕಾಯತ್ಪೂರ್ವಗೋ ಭೂತಾ ತಾಂ ವಿಚ್ಛಾದನಾಂ ಭಿಷಕ್" ।



(2) ಯಮಲಾ:—ಬಹಳ ವೇಗವಾಗಿ ಹೊರಟ ವಾಯುವಿನಿಂದ ಕುತ್ತಿಗೆ ಮತ್ತು ತಲೆಗಳನ್ನು ನಡುಗಿಸಿ ಬರುವ ಬಿಕ್ಕಳಿಕೆಯು ಯಮಲಾ. “ಚಿರೇಣ ಯಮಲೇವೇಗೈಃ ಯಾ ಹಿವ್ಕಾ ಸಂಪ್ರವರ್ತತೇ | ಕಂಪಯಂತೀ ಶಿರೋಗ್ರೀವಂ ಯಮಲಾ ತಾಂ ವಿವಿಧಿಸೇತ್” |

(3) ಧುಡ್ಕಾ:—ಬಹಳ ಮಂದಗತಿಯಿಂದ ಜಠ್ರವಿನ (ಕಂಠ ಮತ್ತು ವಕ್ಷಸ್ಸುಗಳ ಸುಧಿ) ಕೆಳಪ್ರದೇಶದಿಂದ ಹೊರಡುವ ಬಿಕ್ಕಳಿಕೆಯು ಧುಡ್ಕಾ. “ವಿಕ್ಟಾಕಾಲೇಯಾ ವೇಗೈಃ ಮಂದೈಃ ಸಮಭಿವರ್ತತೇ | ಧುಡ್ಕಾ ನಾಮ ಸಾ ಹಿವ್ಕಾ ಜಠ್ರಮೂಲಾತ್ ಪ್ರಧಾವತಿ” |

(4) ಗಂಭೀರಾ:—ಗಂಭೀರವಾದ ಶಬ್ದದೊಡನೆ ಅನೇಕ ಉಪದ್ರವಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ ಭಯಂಕರವಾಗಿ ನಾಭಿಪ್ರದೇಶದಿಂದ ಹೊರಡುವ ಬಿಕ್ಕಳಿಕೆಯು ಗಂಭೀರಾ. “ನಾಭಿಪ್ರವೃತ್ತಾ ಯಾ ಹಿವ್ಕಾ ಧೋರಾ ಗಂಭೀರನಾದಿನೀ | ಅನೇಕೋಪದ್ರವಂತೀ ಗಂಭೀರಾ ನಾಮ ಸಾ ಸ್ಮೃತಾ” |

(5) ಮಹತೀ:—ಬಹಳ ಹೃದಯ ಶಿರಸ್ಸು ಮುಂತಾದವುಗಳಿಗೆ ಬಹಳ ಹಿಂಸೆಯುಂಟುಮಾಡುತ್ತ ದೇಹವನ್ನು ನಡುಗಿಸುತ್ತ ಅನವರತವೂ ಹೊರಡುತ್ತಿರುವ ಬಿಕ್ಕಳಿಕೆಯು ಮಹತೀ. “ಮರ್ಮಾಘಾತೀಭವಂತೀವ ಸತತಂ ಯಾ ಪ್ರವರ್ತತೇ | ಮಹಾಹಿವ್ಕೇತಿ ಸಾ ಜೇಯಾ ಸರ್ವಗಾತ್ರಪ್ರಕಂಪನೀ” | ಭಾವಪ್ರಂ |

ಹಿಡ್ಕಾರ ಹಿಂಕಾರ (ಪುಂ) ಪಾಠ್ಯ, ಹುಲಿ. ಹಿ ಇತಿ ಅವ್ಯಕ್ತ-ಶಬ್ದಂ ಕರೋತಿ—ಡುಕ್ತಾ (ಕರಣ) “ಅನ್” (೩-೨-೧) |

ಹಿಡ್ಗು ಹಿಂಗು (ನಂ) ಇಂಗು, ರಾಮಠ. ಹಿ (ಗತೀ ವೃದ್ಧಿ ಚ) “ಕು:” (೩-೧-೩೭) |

ಹಿಡ್ಗುನಿರ್ಯಾಸ ಹಿಂಗುನಿರ್ಯಾಸ (ಪುಂ) 1. ಬೇವಿನ ಮರ. ಹಿಡ್ಗುತ ಇವ ನಿರ್ಯಾಸೋಸ್ಯ | “ಅರಿಷ್ಟ: ಸರ್ವತೋಮುಖಃ ಹಿಡ್ಗುನಿರ್ಯಾಸಮಾಲಕಾ:” ಅಮಂ | 2. ಹಿಂಗಿನ ರಸ.

ಹಿಡ್ಗುಪತ್ರ ಹಿಂಗುಪತ್ರ (ಪುಂ) ಇಂಗುದೀವೃಕ್ಷ.

ಹಿಡ್ಗುಲ ಹಿಂಗುಲ (ಪುಂ) ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣದ ರಸಗಂಧಕ. ಸಿಂಧೂರ, ಇಂಗಲೀಕ.

ಹಿಡ್ಗುಲಿಕಾ ಹಿಂಗುಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣಿನ ಗಿಡ.

ಹಿಡ್ಗುಲಿ ಹಿಂಗುಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬದನೆ ಗಿಡ.

ಹಿಜ್ಜಲ ಹಿಜ್ಜಲ (ಪುಂ) ನೀರುಹಲಿಸಿನ ಗಿಡ. “ಇಜ್ಜಲೋ ಹಿಜ್ಜಲಶ್ಚಾಪಿ ನಿಜ್ಜಲಶ್ಚಾಮ್ಬುಜಸ್ತಥಾ | ಜಲವೇತಸವದ್ವೇದೋ ಹಿಜ್ಜಲೋಽಯಂ ವಿಷಾಪಹ:” |

ಹಿಜ್ಜೀರ ಹಿಂಜೀರ (ಪುಂ) ಅನೆಯ ಕಾಲಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗ. “ಹಿಜ್ಜೀರಶ್ಚ ಪಾದಪಾಶೋ ವಾರಿಸ್ತು ಗಜವಾಹನಾ:” | ಇತಿ ಹೇಮವದ್ರ: |

ಹಿಡ್ಕಿಬ ಹಿಡಿಂಬ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ, ಹಿಡಿಂಬಿಯ ಅಣ್ಣ. ಹಿಡ್ಕಿಬಜಿತ್ ಹಿಡಿಂಬಜಿತ್ (ಪುಂ) ಹಿಡಿಂಬ ರಾಕ್ಷಸನನ್ನು ಜಯಿಸಿದ ಭೀಮಸೇನ. —ನಿಷ್ಕದನ: —ನಿಷ್ಕದನ, —ನಿಷ್ಕದನ, —ನಿಷ್ಕದನ, —ನಿಷ್ಕದನ.

ಹಿಡ್ಕಿಬಾ ಹಿಡಿಂಬಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಡಿಂಬರಾಕ್ಷಸನ ತಂಗಿ, ಭೀಮಸೇನನ ಹೆಂಡತಿ.

ಹಿಂಡನ ಹಿಂಡನ (ನಂ) 1. ಅಲ್ಲಿಂದಿಲ್ಲಿಗೆ ತಿರುಗಾಡುವುದು, —ಅಡ್ಡಾಡುವುದು. ಹಿಡಿ (ಗತೀ) “ಲ್ಯುಟ್” (೩-೩-೧೧೫) |

2. ರತ, ರತಿಕ್ರೀಡೆ, ಸುಭೋಗ. “ಹಿಂಡನಂ ಭ್ರಮಣಂ ರತೇ” | ಮೇದಿಂ |

ಹಿಂಡಿಕ ಹಿಂಡಿಕ (ಪುಂ) ಜೋಯಿಸ, ಜ್ಯೋತಿಷಿಕ, ದೈವಜ್ಞ.

ಹಿಂಡಿ ಹಿಂಡಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದುರ್ಗಾದೇವಿ.

ಹಿಂಡೀರ ಹಿಂಡೀರ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರದ ನೋರೆ. ಹಿಂಡೀರೇ ಇತಸ್ತತೋ ಗಂಚತಿ—ಹಿಡಿ (ಗತೀ) “ಇರ್ನ್” (೩-೪-೭೦) | “ಹಿಂಡೀರವಿಂಡೀರವಿಚಿತ್ತಮರೇಚಿವಿವಿವಮ್” | ಸಾಂ ೧೦ | 2. ಬದನೆ ಗಿಡ. 3. ಮನುಷ್ಯ. “ಹಿಂಡೀರ: ಕೇನವಾತ್ಕಿಪುರಾಣೇ” | ಮೇದಿಂ | (ನಂ) 4. ಸದ್ಯಕ್ಷಾರ. 5. ದಾಳಿಂಬ ಹಣ್ಣು.

ಹಿತ ಹಿತ (ವಿಂ) 1. ಪಥ್ಯವಾದ, ಆರೋಗ್ಯಕರವಾದ. ಒಳ್ಳೆಯ ಪರಿಣಾಮವುಂಟುಮಾಡುವ. ಹಿ (ಗತೀ ವೃದ್ಧಿ ಚ) “ಕು:” (೩-೪-೭೨) | “ಅತೋಹಂಸಿ ಕ್ಷಾಂತುಮಸಾಧು ಸಾಧು ವಾ ಹಿತಂ ಮನೋಹಾರಿ ಚ ದೂಲಭಂ ವಚ:” | ಕಿರಾಂ ೧-೪ | 2. ಅರ್ಪವಾದ, ಯೋಗ್ಯವಾದ, ತಕ್ಕುದಾದ. 3. ಅಪ್ಪ, ಮಿತ್ರ. “ಹಿತಗಿರಂ ನ ಶೃಣೋಪಿ ಕಿಮಾಶ್ರವೇ ಪ್ರಸಭಮಪ್ಯವ ಜೀವಿತಮಾತ್ಮನ:” | ನೈಫಂ ೪-೧೦೩ | 4. ಅನುಕೂಲವಾದ. 5. ಪ್ರಯೋಜನಕರವಾದ. 6. ಹೊರಟುಹೋದ, ತೆರಳಿದ. 7. ಕಳುಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 8. ಇಡಲ್ಪಟ್ಟ. “ಹಿತಂ ಪಥ್ಯೇ ಗತೇ ಧೃತೇ” | ಮೇದಿಂ | “ಹಿತಂ ಪ್ರಹಿತಪಥ್ಯಯೋ:” | ನಾನಾರ್ಯಂ | (ನಂ) 9. ಪ್ರಯೋಜನ.

ಹಿತಕ ಹಿತಕ (ಪುಂ) ಶಿಶು, ಮಗು. ಹಿತಮಹತಿ—ಸಂಜ್ಞಾಧಾಂ “ಕನ್” |

ಹಿತಕರ ಹಿತಕರ (ವಿಂ) 1. ಹಿತವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದವನು. ಹಿತಸ್ಯ ಕರ: | ಹಿತಂ ಕರೋತಿ—ಡುಕ್ತಾ (ಕರಣ) “ಕು:” (೩-೨-೨೦) | —ಕರ್ತೃ, —ಕಾರಕ:, —ಕಾರಿನ್—ಡುಕ್ತಾ “ಕು:” (೩-೧-೧೩೩) | “ಕುಲ್” (೩-೧-೧೩೩) | “ಗಿಣಿ:” (೩-೨-೭೮) | 2. ಪ್ರಯೋಜನವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ. 3. ಶುಭವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ. 4. ಅನುಕೂಲಕರವಾದ.



ಹಿತಕಾಮ ಹಿತಕಾಮಾ (ವಿಂ) 1. ಒಳ್ಳೆಯದನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. 2. ಪ್ರಯೋಜನವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. 3. ಉಪಕಾರವನ್ನು ಬಯಸುವ. 4. ಸ್ನೇಹವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ.

ಹಿತಕಾಮ್ಯಾ ಹಿತಕಾಮ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಿತವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ ಅಪೇಕ್ಷೆ. 2. ಹಿತವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು.

ಹಿತಪ್ರಣಿ ಹಿತಪ್ರಣೀ (ಪುಂ) ಹಿತವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ ಚಾರ. ಹಿತಂ ಪ್ರಣಯತಿ — ಪ್ರ + ಣಿಜ್ (ಪ್ರಾಪಣಿ) “ವಿವ್ರ” (೩-೨-೬೧) ।

ಹಿತವಾಕ್ಯ ಹಿತವಾಕ್ಯ (ನಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತು, ಸ್ನೇಹದಿಂದ ಹೇಳುವ ಮಾತು, ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಮಾಡುವ ಸಲಹೆ.

ಹಿತೇಚ್ಛಾ ಹಿತೇಚ್ಛಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಳ್ಳೆಯದನ್ನು ಬಯಸುವಿಕೆ.

ಹಿತೈಷಿನ್ ಹಿತೈಷಿನ್ (ವಿಂ) ಹಿತವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. ಶುಭವನ್ನು ಕೋರುವವನು. ಹಿತಮಿಚ್ಛತಿ—ಇಪ್ (ಇಚ್ಛಾ-ಯಾಮ್) “ಗಿತಿ:” (೩-೨-೭೮) । “ನ ವಿವ್ರಯೇ ತಸ್ಯ ಮನೋ ನ ಹಿ ಪ್ರಿಯಂ ಪ್ರವಕ್ತುಮಿಚ್ಛಂತಿ ಮೃಗಾ ಹಿತೈಷಿಣಿ:” ಕಿರಾಂ ೧-೨ । ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ “ಛೀಪ್” (೪-೧-೪) । ಹಿತೈಷಿಣಿ ಹಿತೈಷಿಣೀ.

ಹಿತೋಕ್ತಿ ಹಿತೋಕ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಿತವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ ಮಾತು, ಒಳ್ಳೆಯ ಪರಿಣಾಮವನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುವ ಮಾತು, ಪಥ್ಯವಾದ ಮಾತು. 2. ಮಿತ್ರನ ಮಾತು, ಸ್ನೇಹಿತನ ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತು.

ಹಿತೋಪದೇಶ ಹಿತೋಪದೇಶ (ಪುಂ) 1. ಹಿತವಾದ ಮಾತನ್ನಾಡುವುದು, ಅನುಕೂಲವಾದ ಸಲಹೆಯನ್ನು ಕೊಡುವುದು. ಹಿತ: ಉಪದೇಶ: । 2. ಮಿತ್ರನ ಸಲಹೆ, ಸ್ನೇಹಿತನ ಪಥ್ಯವಾದ ಮಾತು. ಹಿತಸ್ಯ ಉಪದೇಶ: । 3. ನಾರಾಯಣ ಪಂಡಿತನಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಒಂದು ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರಗ್ರಂಥ. ಸುಂದರ್ಶನನೆಂಬ ರಾಜನು ವಿದ್ಯಾವಿಹೀನರಾಗಿ ಅದರಿಂದ ಉನ್ಮಾದಗ್ರಾಸವಾಗುವ ತನ್ನ ಮಕ್ಕಳ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಬಹಳ ನೋಂದ ಮನಸ್ಸಿನಿಂದ ತನ್ನ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ವಿದ್ಯಾದಾನ ಮಾಡಿ ಸನ್ಮಾರ್ಗಕ್ಕೆ ತರುವ ಸಮರ್ಥ ಪಂಡಿತರು ಯಾರು ಎಂದು ಪಂಡಿತರ ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ಕೇಳಲು ನಾರಾಯಣ ಪಂಡಿತನೆಂಬ ಪಂಡಿತೋತ್ತಮನು ಎದ್ದು ನಿಂತು ಆರು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ರಾಜಕುಮಾರರಿಗೆ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿಸಿ ನೀತಿಶಾಸ್ತ್ರ ವಿಶಾರದರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವ ವಿಶ್ವಾಸವನ್ನು ಪ್ರಕಟಿಸಿ (1) ಮಿತ್ರಲಾಭ: (2) ಸುಹೃದ್ವೇದ: (3) ವಿಗ್ರಹ: (4) ಸನ್ನಿಧಿ: ಎಂಬ ನಾಲ್ಕು ಕಥೆಗಳನ್ನೊಳಗೊಂಡ “ಹಿತೋಪದೇಶ:” ಎಂಬ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ರಚಿಸಿದನು. ಹಿತೋಪದೇಶವು ಪಂಚತಂತ್ರ ಮತ್ತು ಇತರ ಗ್ರಂಥಗಳಿಂದ ವಿಷಯಗಳನ್ನು

ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ರಚಿಸಿದ ಗ್ರಂಥ. “ಮಿತ್ರಲಾಭ: ಸುಹೃದ್ವೇದೋ ವಿಗ್ರಹ: ಸನ್ನಿಧಿರೇವ ಚ । ಪञ್ಚತನ್ತ್ರಾತ್ಪ್ರಾಜ್ಞಸ್ಮಾತ್ ಗ್ರಂಥಾದಾಕೃಷ್ಯ ಲಿಖ್ಯತೇ” ಹಿತೋಂ ೧ । “ಪ್ರಾಲೇಯಾದ್ರೇ: ಸುತಾಗಾ: ಪ್ರಣಯನಿವಸತಿ: ಚಂದ್ರಮೌಲಿ: ಸ ಯಾವತ್ ಯಾವಲ್ಲಕ್ಷ್ಮೀಮುರಾರೇ-ಜಲದ ಇವ ತಡಿನ್ಮಾನಸೇ ವಿಸ್ಫುರಂತಿ । ಯಾವತ್ ಸ್ವರ್ಣಾ-ವಲೋಷ್ಯ ದವದಹನಸಮೋ यस್ಯ ಸೂರ್ಯ: ಸ್ಫುಲಿಂಗಸ್ತಾವನ್ನಾರಾಯ-ಣೇನ ಪ್ರವರತು ರಚಿತ: ಸತ್ಯಗ್ರಹೋಷ್ಯ ಕಥಾನಾಮ್” ಹಿತೋಂ ೪-೧೩೩ । ಇದು ಹಿತೋಪದೇಶದ ಉಪಾಂತ್ಯ ಶ್ಲೋಕ.

ಹಿಂತಾಲ ಹಿಂತಾಲ (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ತೃಣದ್ರೂಮ. ಹಿನೋಜ್ವಲಸ್ತಾಲ:—ಪೃಷೋಂ । “ಏತೇ ಚ ಹಿಂತಾಲಸಹಿತಾಸ್ತ್ರಯ: । ಖರ್ಜೂರ: ಕೇತಕೀ ತಾಲೀ ಖರ್ಜೂರೀ ಚ ತೃಣದ್ರೂಮಾ:” ಅಮಂ ।

ಹಿಂದು ಹಿಂದು (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿ. ಹಿನಂ ದೂಪಯತಿ — ದುಃ (ವೈಕಲ್ಯೇ) “ಡು:” । ಪೃಷೋಂ । “ಪञ್ಚ ಖಾನಾ: ಸಪ್ತ ಮೋರಾ ನವ ಶಾಹಾ ಮಹಾಬಲಾ: । ಹಿಂದುಧರ್ಮಪ್ರಲೋಪಾರೋ ಜಾಯಂತೇ ಚಕ್ರವರ್ತಿನ: । । ಹಿನಂ ಚ ದೂಪಯತೀವ ಹಿन्दುರಿಸ್ಯುಚ್ಯತೇ ಪ್ರಿಯೇ । ಪೂರ್ವಮ್ನಾಯೇ ನವಶತಂ ಪಡಶೀತಿ: ಪ್ರಕೀರ್ತಿತಾ:” ಮೇಘತನ್ಮಮ್ ।

ಹಿಂದೋಲ ಹಿಂದೋಲ (ಪುಂ) ಶ್ರಾವಣ ಶುಕ್ಲ ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ವಿಹಿತವಾದ ಒಂದು ಯಾತ್ರೆ.

ಹಿಂದೋಲಕ ಹಿಂದೋಲಕ (ಪುಂ) ಉಯ್ಯಾಲೆ.

ಹಿಂದೋಲಾ ಹಿಂದೋಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉಯ್ಯಾಲೆ.

ಹಿಮ ಹಿಮ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) “ಮಕ್” ಖಾತೋ: ಹಿರಾದೇಶ: (ತಂ ೧-೧೪೪) । 2. ಹಿಮಾಚಲ, ಹಿಮವತ್ ಪರ್ವತ. 3. ಕರ್ಪೂರ. ರಾಜನಿಂ । 4. ಚಂದನ ವೃಕ್ಷ, ಗಂಧದ ಮರ. 5. ಹೇಮಂತ ಮೃತು. “ಹಿಮಶಿಶಿರ-ವಸಂತಗ್ರೀಷ್ಮವರ್ಷಾಶಿರಸ್ತು ಸ್ತನತಪನವನಾಂಭೋಹ್ಮ್ಯಗೋಧೀರ-ಪಾನೇ:” ಇತುಸಂಂ । (ನಂ) 6. ಮಂಜು, ಇಬ್ಬನಿ. “ಸಸುರ-ವಾಪಮನೇಕಜಗಿಪ್ರಭೇರಪಯೋವಿಶದಂ ಹಿಮಪಾಣ್ಡುಭಿ:” ಕಿರಾಂ ೪-೧೨ । “ಹಿಮಗೀರೇರಚಲಾಧಿಪ: ಶಿರೋಭಿ:” ಕಿರಾಂ ೪-೧೭ । “ಹಿಮಂ ನ ಸೌಭಾಗ್ಯವಿಲೋಪಿ ಜಾತಮ್” ಕುಮಾಂ ೧-೩ । (ವಿಂ) 7. ಕೊರೆಯುವ ಚಳಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಶೀತವಾದ. “ಹಿಮಂ ತು ಸಾರೇ ಶೀತೇ ಚ ಹಿಮಶ್ಚಂದನಪಾದೇ” ಹೇಮಂ । 8. ತಣ್ಣಗಿರುವ, ಶೀತಲವಾಗಿರುವ. “ವಪುರ್ಮ್ಬು-ವಿಹಾರಹಿಮಂ ಶುಚಿನಾ ಶುಚಿರಂ ಕಮನೀಯತರಾ ಗಮಿತಾ” ಮಾಘಂ ೬-೭೧ ।

ಹಿಮಕ ಹಿಮಕ (ಪುಂ) ಹಲು ಮಾಣಿಕ ಗಿಡ, ಹುಳಿ ಬೇಲದ ಮರ. ಹಿಮೇನ ಕಾಯತಿ ।

ಹಿಮಕರ ಹಿಮಕರ (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಹಿಮ: ಶೀತಲ: ಕರ: ಕಿರಣೋಜ್ವಲ. “ವನೇ ವಾ ಹಮ್ಯೇ ವಾ ಸಮಕರನಿಪಾತೋ ಹಿಮಕರ:” ಆನಂದಲಂ । 2. ಕರ್ಪೂರ.



ಹಿಮಕೂಟ ಹಿಮಕೂಟ (ಪುಂ) 1. ಶಿಖರವೆಂತು. ಹಿಮಸ್ಯ ಕೂಟೋ ಯತ್ರ | 2. ಹಿಮವತ್ಪರ್ವತ. ಹಿಮಸ್ಯ ಕೂಟಃ |

ಹಿಮಗಿರಿ ಹಿಮಗಿರಿ (ಪುಂ) ಹಿಮಾಲಯಪರ್ವತ. ಹಿಮ-ಪ್ರಧಾನೋ ಗಿರಿಃ | "ಆಗ್ನೇಯಾ ವಿನ್ಯಶಲಾಘಾಃ ಸೌಮ್ಯೋ ಹಿಮಗಿರಿರ್ಮತಃ" |

ಹಿಮಗು ಹಿಮಗು (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಹಿಮಾ ಗೌತಾ ಗೌತಸ್ಯ |

ಹಿಮಜ ಹಿಮಜ (ಪುಂ) ಹಿಮವಂತನ ಪುತ್ರನಾದ ಮೈನಾಕ ಪರ್ವತ. ಹಿಮಾತ್ ಹಿಮಾಚಲಾತ್ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಙ್" (೩-೨-೯೮) | -ಜಾ -ಜಾ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) | 1. ಪಾರ್ವತಿ, ಹಿಮವಂತನ ಪುತ್ರಿ. 2. ಶಚೀದೇವಿ. "ಹಿಮಜಾ ತು ಶಚೀಗೌತಯೋಃ ಪುಂಸಿ ಮೇನಾಕಪರ್ವತೇ" ಮೇದಿಂ |

ಹಿಮತೈಲ ಹಿಮತೈಲ (ನಂ) ಕರ್ಪೂರ ತೈಲ. ಹಿಮಾಜ್ಜಾತಂ ತೈಲಮ್ |

ಹಿಮದೀಧಿತಿ ಹಿಮದೀಧಿತಿ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಹಿಮಾಃ ಸೌತಲಾಃ ದೀಧಿತಯೋಸ್ಯ | "ಪ್ರಥಮಂ ಕಲಾಽಭವದಧಾರ್ವಮಥೋ ಹಿಮದೀಧಿತಿರ್ಮಹದಭೂದುದಿತಃ" ಮಾಘಂ ೧-೨೯ | -ಛುತಿಃ -ಝಃ | ಹಿಮಾ ಛುತಯೋಸ್ಯ |

ಹಿಮದುಗ್ಧಾ ಹಿಮದುಗ್ಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಾಲೆಗಿಡ.

ಹಿಮದುರ್ಧಿನ ಹಿಮದುರ್ಧಿನ (ನಂ) ಹಿಮಪಾತದಿಂದ ಕಷ್ಟವಾದ ದಿವಸ, ಹಿಮದ ಚಳಿಯಿಂದ ಸಹಿಸಲು ಕಷ್ಟವಾದ ದಿವಸ. ಹಿಮಪಾತೇನ ದುರ್ಧಿನಮ್ |

ಹಿಮದ್ರುಮ ಹಿಮದ್ರುಮ (ಪುಂ) ಬೇವಿನ ಮರ.

ಹಿಮಧಾತು ಹಿಮಧಾತು (ಪುಂ) ಹಿಮಾಚಲ. ಹಿಮೋ ಧಾತು-ರಿವ ಯತ್ರ |

ಹಿಮಧವಸ್ತ ಹಿಮಧವಸ್ತ (ವಿಂ) ಹಿಮದಿಂದ ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.

ಹಿಮಪ್ರಸ್ಥ ಹಿಮಪ್ರಸ್ಥ (ಪುಂ) ಹಿಮಾಚಲ. ಹಿಮಾಚ್ಛಾದಿತಃ ಪ್ರಸ್ಥೋ ಯತ್ರ |

ಹಿಮರಶ್ಮಿ ಹಿಮರಶ್ಮಿ (ಪುಂ) ಚಂದ್ರ. ಹಿಮಾ ರಶ್ಮಯೋಸ್ಯ | "ವಿಕಸತಿ ಹಿ ಪತಙ್ಗಸ್ಯೋದಯೇ ಪುಂಡರೀಕಂ ದ್ರವತಿ ಚ ಹಿಮರಶ್ಮಾವುದಗತೇ ಚಂದ್ರಕಾಂತಃ" ತಂ ರಾಂ ೬-೧೨ | -ಠ್ವಿಃ -ಝಃ | "ಹಿಮಠ್ವಿರಠ್ವಿಗಮ್ನಾ ರಾಜತೇ ರಜ್ಯಮಾನಃ" ಮಾಘಂ ೧೧-೧೪ |

ಹಿಮವತ್ ಹಿಮವತ್ (ಪುಂ) 1. ಹಿಮಾಚಲ. ಹಿಮಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ —ಹಿಮ "ಮತುಪ್" (೪-೨-೯೪) | "ರಾಜಾ ಹಿಮವತಃ ಸಾರೋ ರಾಜಃ ಸಾರೋ ಹಿಮಾದ್ರಿಣಾ" ರಘುಂ ೪-೭೯ | (ವಿಂ) 2. ಹಿಮದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಇಬ್ಬನೆಯಿಂದ ತುಂಬಿರುವ.

ಹಿಮವತ್ಕುಕ್ಷಿ ಹಿಮವತ್ಕುಕ್ಷಿ (ಪುಂ) ಹಿಮಾಚಲದ ನಡುವಣ ಕಣವೆ, —ಕಂದರ.

ಹಿಮವತ್ಪುರ ಹಿಮವತ್ಪುರ (ನಂ) ಹಿಮವಂತನ ನಗರ, ಹಿಪಥಿ ಪ್ರಸ್ಥ. "ತತ್ಪ್ರಯಾತೌಪಧಿಪ್ರಸ್ಥಂ ಸಿದ್ಧಯೇ ಹಿಮವತ್ಪುರಮ್" ಕುಮಾಂ ೬-೩೩ |

ಹಿಮವತ್ಸುತ ಹಿಮವತ್ಸುತ (ಪುಂ) ಹಿಮವಂತನ ಪುತ್ರನಾದ ಮೈನಾಕ ಪರ್ವತ. ಹಿಮವತಃ ಸುತಃ | -ಸುತಾ -ಸುತಾ. 1. ಪಾರ್ವತಿ. 2. ಗಂಗಾನದಿ.

ಹಿಮವಾಲುಕ ಹಿಮವಾಲುಕ (ಪುಂ) ಕರ್ಪೂರ. "ಪುಂಸಿ ಕ್ಲಿಬೇ ಚ ಕರ್ಪೂರಃ ಸಿತಾಶ್ರೋ ಹಿಮವಾಲುಕಃ" ಭಾವಪ್ರಂ | "ಪ್ರನೀರನೀರಂ ಹಿಮವಾಲುಕಾ ಚ ಮಿತ್ರಂ ನೃಣಾಂ ಸ್ಯಾತ್ ಸತಿ ಮೂತ್ರಕೃಚ್ಛೇ" | -ವಾಲುಕಾ -ವಾಲುಕಾ.

ಹಿಮಶೈಲ ಹಿಮಶೈಲ (ಪುಂ) ಹಿಮವತ್ಪರ್ವತ, ಹಿಮಾಲಯ. ಹಿಮಪ್ರಧಾನಃ ಶೈಲಃ | -ಶೈಲಜಾ -ಶೈಲಜಾ. ಪಾರ್ವತಿ. ಹಿಮಶೈಲಾಜ್ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಙ್" (೩-೨-೯೮) | ಹಿಮಸಂಹತಿ ಹಿಮಸಂಹತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಮದ ಸಮೂಹ, ಮಂಜಿನ ರಾಶಿ. ಹಿಮಸ್ಯ ಸಂಹತಿಃ |

ಹಿಮಸರಸ್ ಹಿಮಸರಸ್ (ನಂ) ಹಿಮದಿಂದ ತುಂಬಿದ ಸರೋವರ.

ಹಿಮಹಾಸಕ ಹಿಮಹಾಸಕ (ಪುಂ) ವಿಜೃಂಭದ ಗಿಡ.

ಹಿಮಾ ಹಿಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಸಣ್ಣ ಜಾತಿಯ ಯಾಲಕ್ಕಿ. 2. ರೇಣುಕಾ ಎಂಬ ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯ. 3. ಭದ್ರಮುಷ್ಠಿ, ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣದ ಕೊನ್ನಾರಿ. 4. ಹೇಮಂತ ಋತು.

ಹಿಮಾಂಶು ಹಿಮಾಂಶು (ಪುಂ) 1. ಚಂದ್ರ. ಹಿಮಾ ಅಂಶವೋಸ್ಯ | "ವಿಪ್ರಕೃಷ್ಟವಿವರಂ ಹಿಮಾಂಶುನಾ ಚಕ್ರವಾಕಮಿಥುನಂ ವಿಡಮ್ಯತೇ" ಕುಮಾಂ ೮-೬೧ | 2. ಕರ್ಪೂರ.

ಹಿಮಾಂಶುಭಿಕ್ಷು ಹಿಮಾಂಶುಭಿಕ್ಷು (ನಂ) ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ. ಹಿಮಾಂಶೋರಿವ ಅಭಿಕ್ಷುಯಾ ಕಾಂತಿರಸ್ಯ |

ಹಿಮಾಗಮ ಹಿಮಾಗಮ (ಪುಂ) ಹೇಮಂತ ಋತು. ಹಿಮಸ್ಯ ಆಗಮೋ ಯತ್ರ | "ಕೌಮುದೇ ಮಾಸಿ ರೇವತಿಯಾಂ ಶರದಂತೇ ಹಿಮಾಗಮೇ | ಸ್ಫೀತಶಸ್ಯಸುಖೇ ಕಾಲೇ ಕಲ್ಯಃ ಸತ್ಯವತಾಂ ವರಃ" ಭಾಂ ತತ್ವೋಗಂ |

ಹಿಮಾಚಲ ಹಿಮಾಚಲ (ಪುಂ) ಹಿಮವತ್ಪರ್ವತ. ಹಿಮ-ಪ್ರಧಾನೋಽಚಲಃ | "ಠ್ವಿಃ ಹಿಮಾಚಲಗುಹಾಮುಖೋಽನುಖಃ ಪಯಸಾಂ ಪ್ರವಾಹ ಇವ ಸೌರಸೇನ್ಧವಃ" ಮಾಘಂ ೧೩-೨೭ | -ಅದ್ರಿಃ -ಅದ್ರಿಃ. ಪ್ರಸ್ಥಂ ಹಿಮಾದ್ರೇಮಂಗನಾಭಿಗಮ್ನಿ ಕಿಂಚಿತ್ ಕ್ವಣ-ತ್ಕಿನರಮಭ್ಯುವಾಸ" ಕುಮಾಂ ೧-೪೪ | -ಆಲಯಃ -ಆಲಯಃ. "ತಾಮಸ್ಮದರ್ಥೇ ಗುಹಾಭಿರ್ಯಾಚಿತವ್ಯೋ ಹಿಮಾಲಯಃ" ಕುಮಾಂ



೬-೨೯ । “ದ್ವಿರಿವ ಪ್ರತಿಶಬ್ದೇನ ವ್ಯಾಜಹಾರ ಹಿಮಾಲಯಃ”  
ಕುಮಾಂ ೬-೬೪ ।

ಹಿಮಾದ್ರಿಜಾ ಹಿಮಾದ್ರಿಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪಾರ್ವತಿ. 2.  
ಗಂಗಾನದಿ. ಹಿಮಾದ್ರಿ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) “ಙ್ಕಃ”  
(೩-೨-೯೭) । -ತನಯಾ -ತನಯಾ.

ಹಿಮಾನಿ ಹಿಮಾನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಮದ ಸಮೂಹ, ಮಂಜಿನ  
ರಾಶಿ. ಮಹದ್ರಿಮಂ ಹಿಮಾನಿ—ಹಿಮ ಆನುಕ್ “ಙೀಪ್” ಚ  
(ವಾಂ ೪-೨-೪೯) । “ತಮತನುವನರಾಜಿಷ್ಯಾಮಿತೋಪತ್ಯಕಾಂತಂ  
ನಗಮುಪರಿ ಹಿಮಾನಿಗೌರಮಾಸಾಞ್ ಜಿಣ್ಣುಃ” ಕಿರಾಂ ೪-೩೮ ।

ಹಿಮಾಜ್ಜ ಹಿಮಾಜ್ಜ (ನಂ) ನೈದಿಲಿ.

ಹಿಮಾರಾತಿ ಹಿಮಾರಾತಿ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ, ಬೆಂಕಿ. 2.  
ಸೂರ್ಯ. ಹಿಮಸ್ಯಾರಾತಿಃ । “ಹಿಮಾರಾತಿಃ ಪುಮಾನ್ ವೀತಿ-  
ಹೋತ್ರೇ ಕಿರಣಮಾಲಿನಿ” ಮೇದಿಂ । 3. ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದ  
ಗಿಡ. 4. ಹರಳುಗಿಡ.

ಹಿಮಾವತೀ ಹಿಮಾವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ವರ್ಣಕ್ಷೇರಿ. ಘಂಟಾವಾಣಿ  
ಸೇಷ್ಠ್ಯ. ಹಿಮಮಸ್ಯಸ್ಯಾಃ “ಮತುಪ್” (೪-೨-೯೪) ।  
ದೀರ್ಘಃ (೬-೩-೧೨೦) ।

ಹಿಮಾಹ್ವ ಹಿಮಾಹ್ವ (ಪುಂ) ಕರ್ಪೂರ. ಹಿಮಮಪಿ ಆಹ್ವಯತೇ  
ಸ್ಪರ್ಧಂತೆ ವರ್ಣೇನ—ಆ+ಹ್ವೇ (ಸ್ಪರ್ಧಾಯಾಮ್ ಶಬ್ದೇ ಚ) “ಕಃ”  
(ವಾಂ ೩-೨-೪) । -ಆಹ್ವಯಃ -ಆಹ್ವಯಃ.

ಹಿಮಿಕಾ ಹಿಮಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಡ್ಡೆಕಟ್ಟಿದ ಹಿಮ, ಘನೀಭೂತ  
ವಾದ ಮಂಜು. “ಪ್ರಾಲೇಯಂ ಹಿಮಿಕಾ” ಅಮಂ ।

ಹಿಮೇಲು ಹಿಮೇಲು (ವಿಂ) ಹಿಮದಿಂದ ಹೀಡಿತನಾದವನು,  
ಹಿಮದಿಂದ ಕ್ಷೇಶಪಡುವವನು. ಹಿಮಂ ನ ಸಹತೇ—ಹಿಮ  
“ಚೇಲ್ಯಃ” (ವಾಂ ೪-೨-೧೨೧) ।

ಹಿಮೋದ್ಭವಾ ಹಿಮೋದ್ಭವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಚೋರ. ಹಿಮೇ  
ಹೇಮಂತಕೃತೌ ಉದ್ಭವೌ ಯಸ್ಯಾಃ ।

ಹಿಮ್ಯ ಹಿಮ್ಯ (ಪುಂ) ಪರ್ವತ, ಬೆಟ್ಟ. ಬಹುಲಂ ಹಿಮಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ  
—ಹಿಮ “ಯಪ್” (ವಾಂ ೪-೨-೧೨೦) । ಹಿಮ್ಯಾಃ ಪರ್ವತಾಃ  
ಸಿಂ ಕೌಂ ।

ಹಿರಣ್ಗು ಹಿರಂಗು (ಪುಂ) ರಾಹು.

ಹಿರಣ ಹಿರಣ (ನಂ) 1. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. 2. ರೇತಸ್ಸು,  
ವೀರ್ಯ. 3. ಕವಚ. “ಹಿರಣಂ ರೇತಸಿ ಸ್ವರ್ಣೇ ವರಾಡೇ ಚ  
ನಪುಂಸಕಮ್” ಮೇದಿಂ ।

ಹಿರಣ್ಮಯ ಹಿರಣ್ಮಯ (ಪುಂ) 1. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚತುರ್ಮುಖ.  
(ವಿಂ) 2. ಸ್ವರ್ಣಮಯವಾದ, ಸ್ವರ್ಣವಿಕಾರವಾದ,  
ಚಿನ್ನದಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಹಿರಣ್ಮಯಸ್ಯ ವಿಕಾರಃ “ಮಯತ್”  
(೬-೪-೧೭೪) । ನಿಪಾಂ । “ಋಜದಪಿ ಲಘುತಾಂ ಬಭವ

ಭಾರಃ ಸಪದಿ ಹಿರಣ್ಮಯಮಭಿಷಂ ಸಪತ್ನ्याಃ” ಮಾಘಂ ೭-೪೯ ।  
“ಹಿರಣ್ಮಯಃ ಸುರಜ್ಯೇಷ್ಠೇ ನಾ ಸುರ್ವರ್ಣಮಯೇ ತ್ರಿಪು” ಮೇದಿಂ ।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ “ಙೀಪ್” (೪-೧-೧೪) । -ಮಯಿ -ಮಯೀ.  
“ಹಿರಣ್ಮಯಿ ಸಾಲಲತೇವ ಜಙ್ಗಮಾ ಚ್ಯುತಾ ದಿವಃ ಸ್ಥಾಸ್ತುರೀವಾಽ-  
ಚಿರಪ್ರಭಾ” ಭಟಿಂ ೨-೪೭ ।

ಹಿರಣ್ಯ ಹಿರಣ್ಯ (ನಂ) 1. ಸ್ವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ. ಹೃಯತಿ—ಹೃಯ  
(ಗತಿಕಾಂತ್ಯೋಃ) “ಕನ್ಯನ್” ಪ್ರಕೃತೇಃ ಹಿರಣ್ (ತಂ ೪-೪೪) ।  
“ಹಿರಣ್ಯಧಾನ್ಯರತ್ನಾನಿ ಯಾನಾನಿ ತ್ರಿವಿಧಾನಿ ಚ । ತಥಾಽ-  
ನ್ಯದಪಿ ಯತ್ಕಿಂಚಿತ್ಪ್ರಜಾಭ್ಯಃ ಸ್ಯಾನ್ಮಹೀಪತೇಃ” ಪञ್ಚತಂ  
೧-೨೪೭ । 2. ವಿತ್ತ, ಧನ. “ಭೂಮಿಮಿತ್ರಂ ಹಿರಣ್ಯಂ ಚ  
ವಿಪ್ರಹಸ್ಯ ಫಲತ್ರಯಮ್ । ನಾಸ್ತೇಕಮಪಿ ಯದ್ವಿಧಂ ನ ತಂ ಕುರ್ಯತ್  
ಕಥಂಚನ” ಪञ್ಚತಂ ೧-೨೪೯ । 3. ರಜತ, ಬೆಳ್ಳಿ.  
4. ಚಿನ್ನ ಬೆಳ್ಳಿ ರೂಪವಾದ ಲೋಹ. 5. ವರಾಟಕ,  
ಕವಚ. 6. ರೇತಸ್ಸು, ವೀರ್ಯ. 7. ಒಂದು ಅಳತೆ.  
8. ದತ್ತಾಂಶಾಯಿ. 9. ಅಕ್ಷಯ. “ಹಿರಣ್ಯಂ ರೇತಸಿ  
ದ್ರವ್ಯೇ ಶಾತಕುಂಭವರಾಡಯೋಃ । ಅಶಯೇ ಮಾನಭೇದೇ ಸ್ವಾದಕುಪ್ಯೇ  
ಚ ನಪುಂಸಕಮ್” ಮೇದಿಂ ।

ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪು ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪು (ಪುಂ) ಕಶ್ಯಪನ ಮಗ,  
ದಿಶಿಯ ಪುತ್ರ, ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ. ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವಿನ  
ಸಹೋದರ ಹಿರಣ್ಯಾಕ್ಷ. ಸಿಂಹಿಯು ಇವನ ತಂಗಿ. ಪತ್ನಿ  
ಕಯಾಧು. ಪ್ರಹ್ಲಾದ ಸಹೋದರ ಅನುಹ್ಲಾದ ಶಿವಿ  
ಮತ್ತು ಬಾಪ್ಪಲ ಈ ಐವರೂ ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವಿನ ಮಕ್ಕಳು.  
ಈ ಐವರಲ್ಲಿ ಪ್ರಹ್ಲಾದನು ಪರಮವಿಷ್ಣುಭಕ್ತನಾಗಿದ್ದನು.

ವಿಷ್ಣುವಿನ ದ್ವಾರಪಾಲಕರಾದ್ದ ಜಯ ವಿಜಯರು  
ವೈಕುಂಠದ ದ್ವಾರದಲ್ಲಿ ದ್ವಾರವನ್ನು ಕಾಯುತ್ತ ನಿಂತಿದ್ದಾಗ  
ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಸಂದರ್ಶನಕ್ಕಾಗಿ ಆಗಮಿಸಿದ ಸನಕಾದಿ  
ಮುನಿಗಳನ್ನು ತಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸಿದುದರಿಂದ ಭೂಲೋಕದಲ್ಲಿ  
ರಾಕ್ಷಸರಾಗಿ ಹುಟ್ಟುವಂತೆ ಶಾಪ ಪಡೆದು ಒಂದನೇ ಜನ್ಮ  
ದಲ್ಲಿ ಹಿರಣ್ಯಾಕ್ಷ-ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುಗಳಾಗಿಯೂ ಎರಡನೇ  
ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ರಾವಣ-ಕುಂಭಕರ್ಣರಾಗಿಯೂ ಮೂರನೇ  
ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಶಿಶುಪಾಲ-ದಂತವಕ್ತೃರಾಗಿಯೂ ಹುಟ್ಟಿ ವಿಷ್ಣು  
ವನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸುತ್ತಾ ಆ ಪರಮಾತ್ಮನಿಂದಲೇ ಹತರಾದರು.

ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವು ಯಾವಾಗಲೂ ತನ್ನ ದ್ವೇಷಿಯಾದ  
ವಿಷ್ಣುವಿನ ನಾಮಸಂಕೀರ್ತನ ಮತ್ತು ಪೂಜೆಗಳನ್ನು  
ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಪ್ರಹ್ಲಾದನಿಗೆ ಶಾಂಬರಮಾಯಿ ಅಭಿಷಾರಿಕ  
ಕೃತ್ಯ ಸರ್ವದಂಶನ ಸಮುದ್ರಪಾತನ ಮೊದಲಾದ ನಾನಾ  
ರೂಪವಾದ ಶಿಕ್ಷೆಗಳನ್ನು ಕೊಡುತ್ತಿದ್ದನು. ಹೇಗಾದರೂ  
ತನ್ನ ದಾರಿಗೆ ತರಬೇಕೆಂದು ಮಾಡಿದ ಪ್ರಯತ್ನಗಳೆಲ್ಲವೂ  
ವಿಫಲವಾದುದರಿಂದ ಕೊನೆಗೆ ಅವನನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವುದ



ಕಾಂಗಿ ಖಡ್ಗವನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಎತ್ತಿದಾಗ ಯಾವ ದೇವದಾನವನುನುಷ್ಠಿಯುಕ್ತಪ್ರಾಣಿಗಳಿಂದಲೂ ತನಗೆ ಮಂರಣಪುಂಜಾಗಕೂಡದೆಂದು ವರವನ್ನು ಪಡೆದಿದ್ದ ಹಿರಣ್ಯ ಕಶಿಪುವನ್ನು ಪರಮಾತ್ಮನು ನೃಸಿಂಹಾವತಾರವನ್ನು ತಾಳಿ ಸಂಹರಿಸಿದನು. "ಯಸ್ತ್ವಯಾ ಮಂದಭಾಗ್ಯೋ ಮದನ್ಯೋ ಜಗದೀಶ್ವರಃ । ಕ್ವಾಸೌ ಯದಿ ಸ ಸರ್ವತ್ರ ಕಸ್ಮಾತ್ ಸ್ತಮ್ಭೇ ನ ದೃಶ್ಯತೇ ॥ ಸೌಹೃದ್ವಿಕತ್ಯಮಾನಸ್ಯ ಶಿರಃ ಕಾಯಾಢ್ಯರಾಮಿ ತೇ । ಗೋಪಾಪೇತ ಹರಿಸ್ತ್ವಾಢ್ಯ ಯಸ್ತೇ ಶರಣಮೀಪ್ಸಿತಮ್ ॥ ಏವಂ ದುಃಕೃತೈರ್ಮಹುರ್ದಯನ್ ಕೃಣಾ ಸುತಂ ಮಹಾಭಾಗವತಂ ಮಹಾಸುರಃ । ಖಜ್ಜಂ ಪ್ರಗೃಹ್ಯೋತ್ಪತ್ತಿತೋ ವರಾಸನಾನ್ ಸ್ತಮ್ಭಂ ತತಾಙಾತಿವಲಃ ಸ್ವಮುಷ್ಠಿನಾ ॥ ತದೇವ ತಸ್ಮಿನ್ ನಿನದೋಽತಿಭೀಷಣೋ ಬಭೂವ ಯೇನಾಙ್ಕಕಟಾಹಮಸ್ಫುಟತ್ ॥ ಸತ್ಯಂ ವಿಧಾತುಂ ನಿಜಭೃತ್ಯಭಾಷಿತಂ ವ್ಯಾಪ್ತಿ ಚ ಭೂತೇಷ್ವಖಿಲೇಷು ಚಾತ್ಮನಃ । ಅದೃಶ್ಯತಾತ್ಯದ್ಭುತರೂಪಮುದ್ಭವನ್ ಸ್ತಮ್ಭೇ ಸಮಾಪ್ತಾ ನ ಮೃಗಂ ನ ಮಾನುಷಮ್ ॥ ಸ ಸತ್ತ್ವಮೇನಂ ಪರಿತೋಽಪಿ ಪಶ್ಯನ್ ಸ್ತಮ್ಭಸ್ಯ ಮಧ್ಯಾದನು ನಿಜಿಹಾನಮ್ । ನಾಯಂ ಮೃಗೋ ನಾಪಿ ನರೋ ವಿಚಿತ್ರಮಹೋ ಕಿಮೇತನ್ಮೃಗೇಂದ್ರರೂಪಮ್ ॥ ಮೀಮಾಂಸಮಾನಸ್ಯ ಸಮುತ್ಥಿತೋಽಪ್ರತೋ ನೃಸಿಂಹರೂಪಸ್ತದಲಂ ಭಯಾನಕಮ್ । ಪ್ರತಪ್ತ-ಚಾಮೋಕರಚಂಡಲೋಚನಂ ಸ್ಫುರತ್ಸಟಾಕೇಸರಜ್ಜುಮ್ಭಿತಾನನಮ್ ॥ .....ಪ್ರಾಪೇಣ ಮೇಽಯಂ ಹರಿಣೋರ್ಮಾಯಯಾ ವಧಃ ಸ್ಮೃತೋಽನೇನ ಸಮುತ್ಥಿತೇನ ಕಿಮ್ । ಏವಂ ಬ್ರುವಂಸ್ತ್ವಭ್ಯಪತತ್ ಗದಾಯುಧೋ ನದನ್ ನೃಸಿಂಹಂ ಪ್ರತಿ ದೇತ್ಯಕುಂಜರಃ ॥ ಅಲಕ್ಷಿತೋಽನೌ ಪತಿತಃ ಪತಜ್ಜಮೋ ಯಥಾ ನೃಸಿಂಹೋಜಸಿ ಸೌಽಸುರಸ್ತದಾ । ವಿಷ್ವಕ್ ಸ್ಫುರಂತಂ ಗ್ರಹಣಾತುರಂ ಹರಿಃ ವ್ಯಾಲೋ ಯಥಾಖುಂ ಕುಲಿಶಾಕ್ಷತ-ತ್ವಚಮ್ ॥ ದ್ವಾರ್ಯೂರ ಆಪತ್ಯ ದದಾರ ಲೋಲಯಾ ನಖೈರ್ಯಥಾಹಿ ಗಢೋ ಮಹಾವಿಷಮ್" ಭಾಗಂ ೭-೮ ।

ಹಿರಣ್ಯಕೋಶ ಹಿರಣ್ಯಕೋಶ (ಪುಂ) ಕರಗಿಸಿದ ಮತ್ತು ಕರಗಿಸಿದ ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿರುವ ಚಿನ್ನ ಮತ್ತು ಬೆಳ್ಳಿ. "ಸ್ಯಾತ್ಕೋಶಶ್ಚ ಹಿರಣ್ಯಂ ಚ ಹೇಮರೂಪೇ ಕೃತಾಕೃತೇ" ಅಮಂ ।

ಹಿರಣ್ಯಗರ್ಭ ಹಿರಣ್ಯಗರ್ಭ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. ಹಿರಣ್ಯಸಾಮ್ಯಾತ್ ಹಿತಂ ರಮಣೀಯಂ ವಾ ಹಿರಣ್ಯಂ ಪರಮಂ ಧಾಮ — ತಸ್ಯ ಗರ್ಭಭೂತಃ ತತ್ರ ನಿಯಮಾಸಾತ್ । "ಹಿರಣ್ಯಂ ಪರಮಂ ಧಾಮ ಹಿರಣ್ಯಸ್ಯ ಸಮಾನತಃ । ಹಿರಣ್ಯಗರ್ಭಃ ಸ ಪ್ರೋಕ್ತಃ ತಸ್ಮಿನ್ ವಸತಿ ಯಃ ಸದಾ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । "ಹಿರಣ್ಯಗರ್ಭೋ ಭೂಗರ್ಭಃ" ವಿಂ ಸಂ । 2. ಬ್ರಹ್ಮ, ಚಿತ್ತಮೂರ್ತಿ. ಹಿರಣ್ಯಂ ಹೇಮ-ಮಯಾಙ್ಕಂ ಗರ್ಭಃ ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನಮಸ್ಯ । "ಸೌಮಿಧ್ಯಾಯ ಶರೀರಾ-ತ್ಸತ್ವಾತ್ ಸಿಸ್ತುಷ್ಕವಿವಿಧಾಃ ಪ್ರಜಾಃ । ಅಪ ಏವ ಸಸರ್ಜಾದೌ ತಾಸು ವೀರ್ಯಮವಾಸೃಜತ್ ॥ ತದಙ್ಕಮಭವದ್ವೈಮಂ ಸಹಸ್ರಾಂಶುಸಮ-ಪ್ರಭಮ್ । ತಸ್ಮಿನ್ ಜನ್ತೇ ಸ್ವಯಂ ಬ್ರಹ್ಮಾ ಸರ್ವಲೋಕಪಿತಾಮಹಃ" ಮನುಂ ೧-೮, ೯ ।

ಹಿರಣ್ಯದ ಹಿರಣ್ಯದ (ಪುಂ) 1. ಸಮುದ್ರ, ಕಡಲು. ಹಿರಣ್ಯಂ ದದಾತಿ — ದೃದಾನ್ (ದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) । (ವಿಂ) 2. ಸುವರ್ಣವನ್ನು ಕೊಡುವವನು. "ಭೂಮಿದೌ ಭೂಮಿ-ಮಾನ್ಯೋತಿ ದೀರ್ಘಮಾಯುಹಿರಣ್ಯದಃ । ಗೃಹದೋಽಪ್ರಾಣಿ ವೇಶಮಾನಿ ರೂಪದೌ ರೂಪಮುತ್ತಮಮ್" ಮನುಂ ೪-೨೩೦ । -ದಾ -ದಾ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) 3. ಪೃಥ್ವಿ, ಭೂಮಿ.

ಹಿರಣ್ಯನಾಭ ಹಿರಣ್ಯನಾಭ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ಹಿರಣ್ಯಂ ಮೇಹರೂಪಂ ರೂಪಮ್ ನಾಭಾಭಸ್ಯ — "ಅನ್" (೪-೪-೭೫) । "ಹಿರಣ್ಯನಾಭಃ ಸೌಂದರ್ಯನಾಭಿರಸ್ಯೇತಿ ಸ ಸ್ಮೃತಃ" ಇತಿ ನಿರೂಪಿತಃ । "ಹಿರಣ್ಯನಾಭಃ ಸುತಪಾಃ" ವಿಂ ಸಂ । 2. ಮೈಸೂರು ಪರ್ವತ. "ಹಿರಣ್ಯನಾಭೋ ಮೇನಾಕಃ ಸುದಾರುಃ ಪಾರಿವಾತ್ರಕಃ" ವೇಜಂ ।

ಹಿರಣ್ಯವಾಹು ಹಿರಣ್ಯವಾಹು (ಪುಂ) 1. ಶಿವ. 2. ಶೋಣಿತದ.

ಹಿರಣ್ಯರೆತಸ್ ಹಿರಣ್ಯರೆತಸ್ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ. ಹಿರಣ್ಯಂ ರೇತೋಽಸ್ಯ । "ಜ್ವಲಿತಂ ನ ಹಿರಣ್ಯರೆತಸಂ ಚಯಮಾಸ್ಕಂದತಿ ಭಸ್ಮನಾಂ ರಜಃ । ಅಭಿಭೂತಿಮಯಾದಮುನತಃ ಸುಖಮುಜ್ಜಂತಿ ನ ಧಾಮ ಮಾನಿನಃ" ಕಿರಾಂ ೨-೨೦ । 2. ಸೂರ್ಯ. "ಹಿರಣ್ಯರೆತಾಃ ಪುಂಸಿ ಸ್ಯಾದಿವಾಕರಹವಿರ್ಭುಜೋಃ" ಮೇದಿಂ । 3. ಶಿವ, ಈಶ್ವರ. 4. ಪರಶುರಾಮ. 5. ಚಿತ್ರಮೂರ್ತಿದ.

ಹಿರಣ್ಯವರ್ಣಿ ಹಿರಣ್ಯವರ್ಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನದಿ, ಹೊಳೆ. "ನದೀ ಸ್ತೋತಸ್ವಿನೀ ಕುಲ್ಯಾ ಸ್ತವಂತೀ ನಿಮ್ನಗಾ ಸರಿತ್ । ಹಿರಣ್ಯವರ್ಣಿ ಗಿರಿಜಾ ರೋಧೋವಕ್ತ್ರಾ ಪಯಸ್ವಿನೀ" ವೇಜಂ ।

ಹಿರಣ್ಯವಾಹು ಹಿರಣ್ಯವಾಹು (ಪುಂ) ಶೋಣಿತದ. ಹಿರಣ್ಯಂ ವಹತಿ — ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) । "ಶೋಣಿ ಹಿರಣ್ಯವಾಹಃ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ ।

ಹಿರಣ್ಯಾಕ್ಷ ಹಿರಣ್ಯಾಕ್ಷ (ಪುಂ) ದಿತಿ-ಕಶ್ಯಪರ ಮಗ, ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವಿನ ಸಹೋದರ. ಇವನು ಉಗ್ರವಾದ ತಪಸ್ಸನ್ನು ಮಾಡಿ ಬ್ರಹ್ಮನಿಂದ ಅನೇಕ ವರಗಳನ್ನು ಪಡೆದು ಜಗತ್ತೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಪೀಡಿಸುತ್ತಿದ್ದನು. ತನ್ನ ವೀರ್ಯವು ದಿಂದ ಇವನು ಭೂಮಿಯನ್ನು ಬಲಾತ್ಕಾರವಾಗಿ ಹಿಡಿದು ಸಮುದ್ರದೊಳಗಿರಿಸಿದನು. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವು ವರಾಹಾವತಾರವನ್ನು ತಾಳಿ ಇವನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ಭೂಮಿಯನ್ನು ಉದ್ಧರಿಸಿದನು.

ಹಿರಣ್ಯ ಹಿರಣ್ಯ (ಅವ್ಯಂ) 1. ವಿನಾ, ಹೊರತು. 2. ಸಮೀಪ. 3. ಮಧ್ಯ. "ಹಿರಣ್ಯಶಬ್ದೋ ವಿನಾಶೇ ಚ ಮಧ್ಯಾರ್ಥೇಽಪಿ ಚ ದೃಶ್ಯತೇ" ಮೇದಿಂ ।



ಹಿಲಮೊಚಿ ಹಿಲಮೋಚಿ  
ಹಿಲಮೊಚಿಕಾ ಹಿಲಮೋಚಿಕಾ } (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೀರೆಸೋಪ್ಪು.  
ಹಿಲಮೊಚಿ ಹಿಲಮೋಚೀ

ಹಿಲ ಹಿಲ (ಪುಂ) ಸರಕುಟ ಹಕ್ಕಿ.

ಹಿಲ್ಲೊಲ ಹಿಲ್ಲೊಲ (ಪುಂ) 1. ಅಲೆ, ತರೆ. 2. ಒಂದು ವಿಧ ರತಿಬಂಧ.

ಹಿವು(ಬು)ಕ ಹಿವು(ಬು)ಕ (ನಂ) ಒಂದು ಲಗ್ನದಿಂದ ಮುಂದಿನ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಲಗ್ನ.

ಹೀ ಹೀ (ಅವ್ಯಂ) 1. ವಿಸ್ಮಯ, ಆಶ್ಚರ್ಯ. "ಹೀ ತ್ರಿವಿಂಶತಿ ಲಕ್ಷಮಣೋದೇ ರಾವಣಿಷ್ಠ ತಿರೋದಧೇ" ಭಟಂ ೧೪-೩೯. 2. ಹೇತು, ಕಾರಣ. 3. ದಣವು, ಆಯಾಸ, ಬಳಲಿಕೆ. 4. ದುಃಖ, ಕಷ್ಟ. 5. ವಿಷಾದ. "ಹೀ ದುಃಖೇ ಹೇತು-ವಾಖ್ಯಾತೋ ವಿಪಾದೇ ವಿಸ್ಮಯೇಷಿ ಚ" ಮೇದಿಂ. 1.

ಹೀನ ಹೀನ (ವಿಂ) 1. ದುರ್ಬಲನಾದವನು, ಶಕ್ತಿ ಕುಂದಿ ದವನು. ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೆ) "ಹ್ನ:" (೩-೪-೭೧). "ಹೀನ: ಶತ್ರುನಿಹತವ್ಯೋ ಯಾವನ್ನ ಬಲವಾನ್ ಭವೇತ್" ಪञ्ಚತಂ ೩-೧೨೮. 2. ಉನ್ನತನಾಗಿರುವ, ರಹಿತನಾಗಿರುವ, ಹೊರ ತಾಗಿರುವ. "ತಯಾ ಹೀನಂ ವಿಧಾತಮಾ ಕಥಂ ಪಶ್ಯನ್ನ ದ್ವಯಸೇ. ಸಿವತಂ ಸ್ವಯಮಿವ ಸ್ತೇಹಾದ್ವಿಧ್ಯಮಾಶ್ರಮವೃಕ್ಷಕಮ್" ರಘುಂ ೧-೭೦. 3. ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ, ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 4. ಕಡಮೆಯಾಗಿರುವ, ನ್ಯೂನವಾಗಿರುವ, ಕೊರತೆಯಿರುವ. "ಹೀನಾಕ್ಷಿವಾಹಿ-ಕಾಕ್ಷಿ ವಾ ಯಾ ಭವೇತ್ಕನ್ಯಕಾ ನೃಣಾಮ್" ಪञ್ಚತಂ ೪-೯೦. "ಹೀನಾತಿರಿಕ್ತಗಾತ್ರೋ ವಾ ತಮಪ್ಯಪನಯೇತ್ಪುನ:" ಮನುಂ ೩-೨೪೨. 5. ಅಧಮನಾದ, ನೀಚನಾದ. 6. ಕಡಮೆಗುಣದ, ಕೆಳ ದರ್ಜೆಯ. "ಹೀನಾನವಸ್ತ್ರವೇಷ: ಸ್ಯಾತ್ ಸರ್ವದಾ ಗುರುಸನ್ನಿಧಿ. ತತ್ಪಿಠೇಪ್ರಥಮಂ ಚಾಸ್ಯ ಚರಮಂ ಚೈವ ಸಂವಿಶೇತ್" ಮನುಂ ೨-೧೯೪. 7. ಐದು ವಿಧ ಪ್ರತಿವಾದಿಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ ಪ್ರತಿ ವಾದಿ. (1) ಅನ್ಯವಾದಿ (2) ಕ್ರಿಯಾದ್ವೇಷಿ (3) ನೊಪಸ್ಥಾಯಿ (4) ನಿರುತ್ತರ: ಮತ್ತು (5) ಆಹುತಪ್ರವಲಾಯಿ ಎಂದು ಪ್ರತಿ ವಾದಿಯು ಐದು ವಿಧ.

ಹೀನಕುಲ ಹೀನಕುಲ (ನಂ) ನೀಚವಂಶ.

ಹೀನಕುಲಜ ಹೀನಕುಲಜ (ವಿಂ) ನೀಚವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ವನು. ಹೀನಕುಲೇ ಜಾಯತೇ—ಜನಿ (ಪ್ರಾದುರ್ಭವಿ) "ಹ್ನ:" (೩-೨-೯೭) 1.

ಹೀನವರ್ಣ ಹೀನವರ್ಣ (ವಿಂ) ನಿಮ್ಮವರ್ಗದವನು.

ಹೀನವಾದ ಹೀನವಾದ (ಪುಂ) ಅಸಂಬಂಧವಾದ ವಾದ, ಅಸಂಗತವಾದ ವಾದ, ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಸಾಕ್ಷ್ಯ ಹೇಳುವುದು.

ಹೀನವಾದಿನ್ ಹೀನವಾದಿನ್ (ವಿಂ) ಅಸಂಬಂಧವಾಗಿ ವಾದಿಸುವವನು, ಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದೆ ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಮಾತಾಡು ವವನು. ಹೀನಂ ವದತಿ—ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾ ವಾಚಿ) "ಗಿಣಿ:" (೩-೨-೭೮) 1. ಪೂರ್ವಾಪರಸಂಬಂಧವಿಲ್ಲದೆ ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವುದು ಹೀನವಾದ. ಹಾಗೆ ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಹೇಳಿ ಋಜುವಾತು ಮಾಡಲು ಯತ್ನಿಸು ವವನು ಹೀನವಾದಿ. "ಪೂರ್ವವಾದಂ ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ ಯೋನ್ಯ-ಮಾಲಮ್ಬತೇ ಪುನ: 1. ವಾದಸಂಕ್ರಮಣಾತ್ ತ್ರಯೋ ಹೀನವಾದೀ ಸ ತ್ರಿ ನರ:" 1.

ಹೀನಸಹ್ಯ ಹೀನಸಹ್ಯ (ನಂ) ನೀಚನೊಡನೆ ಸ್ನೇಹ, ಅಸಭ್ಯ ನೊಡನೆ ಮಾಡುವ ಸ್ನೇಹ.

ಹೀನಾಕ್ಷ ಹೀನಾಂಗ (ವಿಂ) ಉನ್ನತವಾದ ಅಂಗವುಳ್ಳವನು, ಅವಯವಗಳ ಕೊರತೆಯುಳ್ಳವನು. ಹೀನಮಕ್ಷಂ ಯಸ್ಯ 1. ಕೀಳುವರ್ಣದವನೆಂದು ದರಿದ್ರನೆಂದು ಕುರೂಪನೆಂದು ಅಸಮರ್ಥನೆಂದು ಅಂಗವಿಕಲನೆಂದು ಅಧಿಕಾಂಗನೆಂದು ತಿಳಿದು (ನೋಡಿ) ಯಾರನ್ನೂ ಪರಿಹಾಸ ಮಾಡಕೂಡದು. "ಜಾತಿಹೀನಂ ವಿದ್ವಾನ್ ರೂಪಹೀನಮದಕ್ಷಿಣಮ್ 1. ಹೀನಾಕ್ಷ-ಮತಿರಿಕ್ತಾಕ್ಷಂ ತೇನ ದೋಷೇಣ ನಾಕ್ಷಿಪೇತ್ 11

ಹೀನಾಕ್ಷಿ ಹೀನಾಂಗೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಣ್ಣಜಾತಿಯ ಇರುವ. ಹೀನಮಕ್ಷಂ ಯಸ್ಯ—ವಾ "ತೀಪ್" (೪-೧-೪೪) 1.

ಹೀಯಮಾನ ಹೀಯಮಾನ (ವಿಂ) ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ತೊರೆಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಆ ಹಾಕ್ (ತ್ಯಾಗೆ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪) 1.

ಹೀರ ಹೀರ (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ಹರತಿ ಸರ್ವಂ ಪ್ರಲಯೇ—ಹ್ರಸ್ವ (ಹರಣಿ) "ಅವ್" (೩-೧-೧೩೪) 1. ಪೃಥಂ 1. 2. ಶ್ರೀಹರ್ಷನ ತಂದೆ. "ಶ್ರೀಹರ್ಷ ಕವಿರಾಜರಾಜಿಮುಕ್ತುಡಾ-ಲಕ್ಷ್ಮೀಹೀರ: ಸುತಂ ಶ್ರೀಹೀರ: ಸುಪುತ್ರೇ ಜಿತೇಂದ್ರಿಯವಯಂ ಮಾಮಲ್ಲದೇವಿ ಚ ಯಮ್" ನೆಪಂ ೧-೧೪೪. ಹೀಗೆ ಹೀರಕವಿಯ ಹೆಸರು ನೈಪಥಕಾವ್ಯದ ಪ್ರತಿಸರ್ಗದ ಕೊನೆಯ ಶ್ಲೋಕದ ಪೂರ್ವಾರ್ಧದಲ್ಲಿ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. 3. ಸರ್ಪ, ಹಾವು. 4. ಹಾರ, ಸರ. (ಪುಂ) 5. ವಜ್ರಾಯುಧ. "ಹೀರ: ಶಂಕರವಜ್ರಯೋ:" ಮೇದಿಂ 1. 6. ಸಂಹ.

ಹೀರಕ ಹೀರಕ (ಪುಂ) ವಜ್ರ. ಹೀರ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕನ್" 1. "ವಜ್ರೋಸ್ತೀ ಹೀರಕ: ಪುಮಾನ್" ವೈಜಂ 1.

ಹೀರಾ ಹೀರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಕ್ಷ್ಮಿ. 2. ಪಿಪೀಲಿಕೆ, ಇರುವೆ. "ಹೀರಾ ತೈಲಾವುಕಾಲಕ್ಷ್ಮಯೋ: ಪುಸಿ ಶಂಕರವಜ್ರಯೋ:" ಮೇದಿಂ 1. 3. ಶೀವನೆಯ ಮರ. "ಕಾಶ್ಮೀರೀ ಕಾಶ್ಮೀರೀ ಹೀರಾ ಕಶ್ಮರೈ: ಪೀತರೋಹಿಣಿ:" ಭಾವಪ್ರಂ 1.



ಹೊರಾಕ್ಷ ಹೀರಾಂಕ (ಪುಂ) ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧ.

ಹೊರಾಕ್ಷೇವ ಕಠಿನಮಜ್ಜಂ ಯಸ್ಯ |

ಹೊಲ ಹೀಲ (ನಂ) ವೀರ್ಯ, ರೇತಸ್ಸು.

ಹೊಹಿ ಹೀಹೀ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಅಶ್ವರ್ಯ. 2. ಹಾಸ್ಯ.

"ಹೊಹಿಶಬ್ದೋ ವಿಸ್ಮಯಹಾಸ್ಯಯೋಃ" ಮೇದಿಂ |

ಹು - ದಾನಾದನಯೋಃ (ಜುಹೋಂ ಪರಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ) |

ಜುಹೋತಿ ಜುಹುತಃ ಜುಹ್ವತಿ |

ಜುಹೋಪಿ ಜುಹುತಃ ಜುಹುತಃ |

ಜುಹೋಮಿ ಜುಹುವಃ ಜುಹುಮಃ |

ಜುಹವಾಂ ಚಕಾರ, -ವಭೂವ, -ಆಸ |

ಜುಹಾವ ಜುಹುವತುಃ ಜುಹುವುಃ |

ಜುಹವಿಥ } ಜುಹುವತುಃ ಜುಹುತಃ |

ಜುಹಾವ } ಜುಹುವಿವ ಜುಹುವಿಮ |

ಹೊತಾ | ಹೊಪ್ಯತಿ | ಜುಹೋತು, ಜುಹುತಾತ್ ಜುಹುತಾಮ್ ಜುಹ್ವತು |  
ಜುಹುಧಿ, ಜುಹುತಾತ್ ಜುಹುತಂ ಜುಹುತ | ಜುಹವಾನಿ ಜುಹವಾವ  
ಜುಹವಾಮ | ಅಜುಹೋತ್ | ಜುಹುಯಾತ್ | ಇತ್ಯಾದಿ. ಹೋಮಂ  
ಮಾಡು, ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಹವಿಸ್ಸನ್ನು ಅರ್ಪಿಸು. "ವಿಹಾಯ-  
ಲಕ್ಷ್ಮೀಪತೀಲಕ್ಷ್ಮಮ ಕಾರ್ಮುಕಂ ಜಟಾಧರಃ ಸನ್ ಜುಹುಧೀಹ ಪಾವಕಮ್"  
ಕಿರಾಂ ೧-೪೪ |

ಕರ್ಮಣಿಃ-ಹೂಯತೇ | ಜುಹವಾಂ ಚಕ್ರ, -ವಭೂವ, -ಆಸೇ |  
ಜುಹುವೇ | ಹಾವಿತಾ, ಹೊತಾ | ಹಾವಿಪ್ಯತೇ, ಹೊಪ್ಯತೇ | ಹೂಯತಾಮ್ |  
ಅಹೂಯತ | ಇತ್ಯಾದಿ. "ತೇಹೇವಿಂಷಿ ಜುಹವಾಂ ವಭೂವಿರೇ"  
ಮಾಘಂ ೧೪-೨೨ |

ಕೃತುಃ-ಹೊತವ್ಯಮ್ | ಹವನೀಯಮ್ | ಹವ್ಯಮ್, ಹಾವ್ಯಮ್ |  
ಹುತಃ | ಹುತವಾನ್ | ಜುಹ್ವತ್, -ತೀ | ಹುತಮ್ | ಹವನಮ್ |

ಹುಡ ಹುಡ (ಪುಂ) 1. ಮೇಷ, ಟಗರು. 2. ಕಳ್ಳರು  
ಪ್ರವೇಶಿಸದಂತೆ ತಡೆಯಲು ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ನೆಟ್ಟಿರುವ  
ಜೊಪಾದ ಕಬ್ಬಿಣದ ಸಲಾಕೆ (ಗೂಟ) ಗಳು. 3. ಕೋಲು,  
ದೊಣ್ಣೆ. 4. ಮೇಘ, ಮೋಡ. 5. ಬೇಲಿ.

ಹುಡಕ ಹುಡಕು } (ಪುಂ) 1. ಕಂಚಿನ ಗೋಮುಖವೆಂಬ  
ಹುಡುಕ ಹುಡುಕು } ವಾದ್ಯ. 2. ಮದ್ದಳೆ. "ವಾಘಪ್ರಭೇದಾ ಡಮಹಮಡ್ಡುಡಿಞ್ಡಿಮ-  
ಸರ್ಜರಾಃ | ಮರ್ದಲಃ ಪಣವೋಜ್ಯೇ ಚ" ಅಮಂ | "ಹುಡುಕಕಸ್ತು  
ಹುಡಕಕೋಜ್ಯೇ ಸಮೋ ಪಣವಮರ್ದಲೋ" ವೇಜಂ | "ವಿಪಚ್ಚಿರಾ-  
ಚ್ಛಾದಿ ನ ವೇಣುಭಿರ್ನ ತೇ ಪ್ರಣೀತಗೀತೇರ್ನ ಚ ತೇಽಪಿ ವರ್ಜಿತಃ |  
ನ ತೇ ಹುಡುಕೇನ ನ ಸೋಽಪಿ ಡಕಕಯಾ ನ ಮರ್ದಲೈಃ ಸಾಪಿ ನ  
ತೇಽಪಿ ಡಕಕಯಾ" ನೈಷಂ ೧೫-೧೭ | 3. ಮೆತ್ತ, ಮೆದಿಸಿದ

ವನು. 4. ದಾತೂಹ ಪಕ್ಷಿ. ನೀರುಕೋಳಿ. "ಹುಡುಕಕೋ  
ಮದಮತೇ ಸ್ಯಾಹಾಪೂಹೇ ವಾಘಭಿಛಪಿ" ಹೇಮಂ |

ಹುಡತ್ ಹುಡತ್ (ನಂ) 1. ವೃಷಭದ ಧ್ವನಿ, ಎತ್ತಿನ ಶಬ್ದ.  
2. ಬೆದರಿಕೆಯ ಶಬ್ದ.

ಹುಡ ಹುಡು (ಪುಂ) ಮೇಷ, ಟಗರು. ಪಂಚತಂ ೧-೧೬೨ |

ಹುಡುಮ್ಬ ಹುಡುಂಬ (ಪುಂ) ಹುರಿದ ಅವಲಕ್ಕಿ, ಅವಲಕ್ಕಿ ಪುರಿ.

ಹುಣ ಹುಣ (ಪುಂ) ವಿಷ್ಣು, ಶ್ರೀಪತಿ, ಅಚ್ಯುತ. "ಪೀತಾಮ್ಬರೋ  
ಹುಣಿಕೇಶೋ ವಿಷ್ಣುಕೇಶೇನಶ್ಚತುರ್ಭುಜಃ | ಶ್ರೀವತ್ಸಃ ಶ್ರೀಪತಿಃ ಶಾಕ್ಷೋ  
ಶ್ರೀವತ್ಸಾ ಛೋಜ್ಯತೋ ಹುಣಃ" ವೇಜಂ |

ಹುಡ ಹುಂಡ (ಪುಂ) 1. ವ್ಯಾಘ್ರ, ಹುಲಿ. 2. ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ  
ಬೆಳೆದ ವರಾಹ, ಗ್ರಾಮ್ಯಸೂಕರ. 3. ಮೂರ್ಖ.  
4. ಮೇಷ, ಟಗರು. 5. ಒಬ್ಬ ರಾಕ್ಷಸ.

ಹುತ ಹುತ (ನಂ) 1. ಹೋಮ, ಆಹುತಿ, ನೈವೇದ್ಯ, ಬಲಿ.

ಹು (ದಾನಾದನಯೋಃ) "ಕ್ತಃ" (೩-೩-೧೧೪) | "ಮನ್ವೋಽ-  
ಹಮಹಮೇವಾಜ್ಯಮಹಮಗ್ನಿರಹಂ ಹುತಮ್" ಗೀತಾ ೯-೧೬ | "ನಿಧತೇ  
ಹುತಮರ್ಕಯ ಸ ಪರ್ಜನ್ಯೋಽಭಿವರ್ಧತಿ" ಕುಮಾಂ ೧೦-೨೦ |  
2. ಹೋಮಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಅರ್ಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಹು "ಕ್ತಃ"  
(೩-೨-೧೦೨) | "ಗಂಧತೋಽಪಿ ಹುತಹವ್ಯಸಮ್ಭವಾಽದೇಹಿನಾ-  
ಮದಹದೋಷಮಹಸಾಮ್" ಮಾಘಂ ೧೪-೨೭ | 3. ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪ್ರದಕ್ಷಿಣೀಕೃತ್ಯ ಹುತಂ ಹುತಾಶಮನಂತರಂ ಭರ್ತುರಹುಧತೀಂ  
ಚ | ಧೇನುಂ ಸವತ್ಸಾಂ ಚ ನೃಪಃ ಪ್ರತಸ್ಥೇ ಸನ್ಮಜ್ಜಲೋದಗ್ರತರ-  
ಪ್ರಭಾವಃ" ರಘುಂ ೨-೭೧ |

ಹುತಭುಕ್ಪ್ರಿಯಾ ಹುತಭುಕ್ ಪ್ರಿಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಯ ಪತ್ನಿ,  
ಸ್ವಾಹಾದೇವಿ. ಹುತಭುಜಃ ಪ್ರಿಯಾ | "ಅಗ್ನಾಯಿ ಸ್ವಾಹಾ ಚ  
ಹುತಭುಕ್ಪ್ರಿಯಾ" ಅಮಂ |

ಹುತಭುಕ್ (ಜ್) ಹುತಭುಕ್ (ಜ್) (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ ಹುತಂ  
ಭುನಕ್ತಿ - ಭುಜ (ಪರಿಪಾಲನಾಭ್ಯವಹಾರಯೋಃ) "ವಿವಪ್"  
(೩-೨-೧೭೮) | "ಆವಿಭುತೇ ಶಶಿನಿ ತಮಸಾ ರಿಚ್ಯ-  
ಮಾನೇವ ರಾತ್ರಿಃ ನೇಶಸ್ಯಾಚಿಹುತಭುಜ ಇವ ಛಿನ್ನಭೂಯಿಷ್ಠಧೂಮಾ"  
ವಿಕ್ರಂ ೧-೯ | 2. ವಿಷ್ಣು, ನಾರಾಯಣ. 3. ಶಿವ,  
ಪರಮೇಶ್ವರ. 4. ಹೆರಳು ಗಿಡ.

ಹುತವಹ ಹುತವಹ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ. ವಹತಿ - ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೆ)  
"ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) | ಹುತಸ್ಯ ವಹಃ | "ತಥಾಪಿ ದಂ  
ಶಶ್ವತ್ಪರಿಚಿತವಿವಿಕ್ತೇನ ಮನಸಾ ಜನಾಕೀರ್ಣಂ ಮನ್ಯೇ ಹುತವಹ-  
ಪರೀತಂ ಗೃಹಮಿವ" ಶಾಕುಂ ೫-೧೦ |

ಹುತಾಶ ಹುತಾಶ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ. ಹುತಮಶನಾತಿ - ಅಶ  
(ಭೋಜನೆ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) | "ಹವಿಂಷಿ ಮನ್ವಪೂತಾನಿ  
ಹುತಾಶ ತ್ವಯಿ ಜುಹ್ವತಃ | ತಪಸ್ವಿನಃ ತಪಸ್ವಿಸಿದ್ಧಿ ಯಾಂತಿ ತ್ವಂ  
ತಪನಾಂ ಪ್ರಭುಃ" ಕುಮಾಂ ೧೦-೧೯ | 2. ಅಗ್ನಿವೇಶಮುನಿ.



ब्रह्मा त्वामिषो रमः" वैज० ।



ಹೃತ್ಕಮ್ಪ ಹೃತ್ಕಮ್ಪ (ಪುಂ) ಎದೆಯ ನಡುಕ, ಹೃದಯದ ಬಡಿತ.

ಹೃತ ಹೃತ (ವಿಂ) 1. ಒಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಾಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಹೃ (ಹರಣೆ) "ಹೃ:" (೩-೨-೧೦೨)। 2. ಅಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ತೊಡೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ತುಷ್ಟವಂ ಸಪದಿ ಹೃತೇಪಿ ತತ್ರ ತೇಪಿ ಕಸ್ಯಾಶ್ಚಿತ್ಸುತನಖಲಕ್ಷಣಃ ಸಪತ್ನಾ" ಮಾಘಂ ೮-೪೧। 3. ತೆಗೆದುಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಳಚಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ. "ಪಯಂಚ್ಛೇ ಸರಸಿ ಹೃತೇಷಾಂಕೇ ಪಯೋಭಿಲೋಲಾಕ್ಷೇ ಸುರತಗುರಾವಪತ್ರಪಿಣ್ಣೋ:" ಮಾಘಂ ೮-೪೬। "ಹೃತೋತ್ತರೀಯಾಂ ಪ್ರಸಭಂ ಸಭಾಯಾಮಾಗತಹ್ರಿಯಃ। ಮರ್ಮಚ್ಛಿದಾ ನೋ ವಚಸಾ ನಿರತಕ್ಷತ್ರಾತಯಃ" ಕಿರಾಂ ೧೧-೪೯। 4. ಅಪಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕದಿಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ಹೃತರತ್ನಶ್ಚ್ಯುತೋ-ದ್ಯೋಗೋ ರಕ್ಷೋಮ್ಯಃ ಕರದೋದಿವಿ" ಮೃದ್ವಿಂ ೫-೨೮। 5. ತೆಗೆದು ಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ, ಸ್ವಾಧೀನಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ. "ಹೃತಸರ್ವಸ್ವ-ದಿನಾನಾಂ ವ್ರಿಡಾಮಪನುದನ್ನಿವ। ಅದಿಶತ್ ಕ್ಷೋಮಾಶಾನಾಂ ಯಶೋಭಿಹಸಲಕ್ಷಣಃ" ಯಾದಂ ೨೨-೨೩೩। 6. ಸಮೃದ್ಧಿಸ್ಥ, ಅಂಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಒಪ್ಪಲ್ಪಟ್ಟ. 7. ಆಕರ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೋಹಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 8. ದೂರಕ್ಕೆ ಒಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟ. "ತವಾಸ್ಮಿ ಗೀತರಾಗೇಣ ಹಾರಿಣಾ ಪ್ರಸಭಂ ಹೃತಃ" ಶಾಕುಂ ೧-೫। 9. ಹೋಗಲಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಕಡಮೆಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. "ಹೃತೇಪಿ ಭಾರೆ ಮಹತ್ಸ್ವರಾಭರಾಡುಬಾಹ ದುಃಖೇನ ಭೃಶಾಂತಂ ಶಿರಃ" ಮಾಘಂ ೧-೫೭। 10. ನಾಶಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 11. ಭಾಗಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. 12. ವಿವಾಹ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲ್ಪಟ್ಟ.

ಹೃತಧನ ಹೃತಧನ (ವಿಂ) ಧನವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಕಳೆದುಕೊಂಡವನು. ಹೃತಂ ಧನಮ್ ಯಸ್ಯ।

ಹೃತವತ್ ಹೃತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಅಪಹರಿಸಿದವನು, ಕದ್ದೊಯ್ದವನು. ಹೃ (ಹರಣೆ) "ಹೃತುಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಹೃತವತ್ಯಪಿ ಭೀಷ್ಮಕಾತ್ಮಜಾಂ ತ್ವಯಿ ಚಕ್ಷಾಮ ಸಮರ್ಥಂ ಉ-ತತ್" ಮಾಘಂ ೧೬-೪೮। 2. ಸಾಗಿಸಿದವನು, ಸ್ವಲ್ಪಾಂತರಕ್ಕೆ ಒಯ್ದವನು. 3. ಆಕರ್ಷಿಸಿದವನು, ವಶಪಡಿಸಿಕೊಂಡವನು. 4. ಕಡಮೆಮಾಡಿದವನು. 5. ನಾಶಪಡಿಸಿದವನು. 6. ಸ್ವಾಧೀನಪಡಿಸಿಕೊಂಡವನು. 7. ತೆಗೆದು ಹಾಕಿದವನು, ಕಳಚಿಹಾಕಿದವನು. 8. ಭಾಗಮಾಡಿದವನು. 9. ವಿವಾಹಮಾಡಿಕೊಂಡವನು. 10. ತೆಗೆದುಕೊಂಡವನು, ಸ್ವೀಕರಿಸಿದವನು. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಹೃತುಃ" (೪-೧-೬)। -ವತೀ-ವತೀ.

ಹೃತಾಧಿಕಾರ ಹೃತಾಧಿಕಾರ (ವಿಂ) ಅಧಿಕಾರವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡವನು, ಅಧಿಕಾರದಿಂದ ತೆಗೆಯಲ್ಪಟ್ಟವನು. ಹೃತೋ-ಧಿಕಾರೋ ಯಸ್ಯ।

ಹೃತ್ಕಮಲ ಹೃತ್ಕಮಲ (ನಂ) ಹೃದಯಕಮಲ, ದೇಹದೊಳಗೆ ಮೋಡತನಾಡೀ ಚಕ್ರದ ಮಧ್ಯಭಾಗ. -ಪದ್ಯಮ್-ಪದ್ಯಮ್. ಈ ಹೃದಯಕಮಲದಲ್ಲಿರುವ ಪರಮಾತ್ಮನೇ ಧೈಯ ವಸ್ತು. "ನಿತ್ಯಂ ನ್ಯಸ್ತಪಿಡಜ್ಜವಕ್ರನಿಹಿತಂ ಹೃತ್ಪದ್ಯ-ಮವ್ಯೋದಿತಂ ಪಶ್ಯಂತಿ ಶಿವರೂಪಿಣಂ ಲಯವಶಾದಾತ್ಮಾನಮಸ್ಯಾ-ಗತಾ" ಮಾಲತೀಂ ೫-೨। -ಪದ್ಯಮ್-ಪದ್ಯಮ್.

ಹೃದ್ ಹೃದ್ (ನಂ) 1. ಚಿತ್ತ, ಮನಸ್ಸು, ಅಂತಃಕರಣ. ಹರತಿ-ಹೃ (ಹರಣೆ) "ಹೃದ್" (೩-೨-೧೭೮)। ತುಕ್ (೬-೧-೭೧)। ತಸ್ಯ ದಃ। "ಹೃತಸ್ಯ ಯನ್ಮನ್ವಯತೇ ರಹಸ್ತ್ವಾಂ ತದ್ವಚಕ್ರಮಾ-ಮನ್ವಯತೇ ಮುಖಂ ಯತ್" ನೈಷಂ ೩-೧೦೭। 2. ಹೃದಯ, ಎದೆ, ವಕ್ಷಸ್ಸು. "ಸ್ವಾನುರಾಗಮನಃ ಕಮಲಾಯಾಂ ಸುಚಯನ್ವಪಿ ಹೃದಿ ನ್ಯಸನೇನ" ನೈಷಂ ೨೧-೫೦। "ಹೃದಾಽಸ್ಯಾ ವಿಸ್ತ-ವಕ್ಷಸೋಃ" ವಿಶ್ವಂ।

ಹೃದಯ ಹೃದಯ (ನಂ) 1. ಮನಸ್ಸು, ಚಿತ್ತ, ಅಂತಃಕರಣ. ಹ್ರಿಯತೇ ವಿಷಯಃ-ಹೃ (ಹರಣೆ) "ಹೃದಯ" ದುಗಾಗಮಶ್ಚ (೩ಂ ೪-೧೦೦)। "ಹೃದಯ ಏವ ತವಾಸ್ತಿ ಸ ವಲ್ಲಭಸ್ತದಪಿ ಕಿಂ ದಮಯಂತಿ ವಿಷಾದಸಿ" ನೈಷಂ ೪-೧೦೮। 2. ವಕ್ಷಸ್ಸು, ಎದೆ. "ವಿರಹಿಣಾಂ ಹೃದಯಸ್ಯ ಭಿದಾಭೃತಃ ಕಪಿಶಿತಂ ಪಿಶಿತಂ ಮದನಾಗ್ನಿನಾ" ಮಾಘಂ ೬-೫। 3. ಹೃದಯಕಮಲ, ನ್ಯಾಸದ ಪಡಂಗಗಳಲ್ಲೊಂದು, ಮೋಡತನಾಡೀಚಕ್ರದ ಮಧ್ಯಭಾಗ. "ಪಿಡವಿಕದಶನಾಡೀಚಕ್ರಮವ್ಯಸ್ಥಿತಾತ್ಮಾ" ಮಾಲತೀಂ ೫-೧। ನಾಡೀಚಕ್ರದ ಮಧ್ಯಭಾಗವೇ ಹೃದಯ. ಆ ಹೃದಯಕಮಲದಲ್ಲಿರುವ ಆತ್ಮನನ್ನೇ ಉಪಾಸಕರು ಧ್ಯಾನಮಾಡುವರು. "ನಿತ್ಯಂ ನ್ಯಸ್ತಪಿಡಜ್ಜವಕ್ರನಿಹಿತಂ ಹೃತ್ಪದ್ಯಮವ್ಯೋದಿತಂ ಪಶ್ಯಂತಿ ಶಿವರೂಪಿಣಂ ಲಯವಶಾದಾತ್ಮಾನಮ-ಸ್ಯಾಗತಾ" ಮಾಲತೀಂ ೫-೨।

ಹೃದಯಕಮ್ಪ ಹೃದಯಕಮ್ಪ (ಪುಂ) ಎದೆಯ ನಡುಕ.

ಹೃದಯಗ್ರಂಥಿ ಹೃದಯಗ್ರಂಥಿ (ಪುಂ) ಹೃದಯದ ಬಂಧ, ಅವಿದ್ಯಾಸಂಬಂಧದಿಂದ ವಿಕಾಸಕ್ಕೆ ಪ್ರತಿಬಂಧಕವಾದ ಪ್ರಕೃತಿ ಸಂಬಂಧ, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಅಂಟಿಕೊಂಡಿರುವ ರಾಗಾದಿಗಳು. ಹೃದಯಸ್ಯ ಗ್ರಂಥಿಃ। "ಭಿಕ್ಷುತೇ ಹೃದಯಗ್ರಂಥಿಃ ಚಿತ್ತಂತೇ ಸರ್ವಸಂಶಯಾಃ। ಕ್ಷೀಯಂತೇ ಚಾಸ್ಯ ಕರ್ಮಾಣಿ ದೃಷ್ಟ-ಏವಾತ್ಮನೀಶ್ವರೇ" ಭಾಗಂ ೧-೨-೨೧।

ಹೃದಯಗ್ರಾಹಿನ್ ಹೃದಯಗ್ರಾಹಿನ್ (ವಿಂ) ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಒಪ್ಪುವ, ಸಂಗತವಾದ, ಮನೋಹರವಾದ. ಹೃದಯಂ ಗ್ರಾಹೀತಿ-ಗ್ರಹ (ಉಪಾದಾನೆ) "ಗ್ರಾಹಿನ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ಅಪವರ್ಜಿತ-ವಿಪ್ಲವೇ ಶುಚಿ ಹೃದಯಗ್ರಾಹಿಣಿ ಮಜ್ಜಲಾಸ್ಪದೇ" ಕಿರಾಂ ೨-೨೬।

ಹೃದಯಜ್ಞಮ ಹೃದಯಜ್ಞಮ (ವಿಂ) 1. ಮನೋಹರವಾದ, ಸುಂದರವಾದ. ಹೃದಯಂ ಗಂಜತಿ-ಗಂಜ (ಗತೀ)



"ಸತ್" (೩-೨-೪೭) । ಮುಗಮ: (೬-೩-೬೭) ।

"ಅಹಂ ತು ತಸ್ಯಾ: ಸರ್ವಾಕಾರಹೃದಯಜ್ಞಮಾಃ ಸಮಾವ್ಯಮಾನ ಸ್ನೇಹರಸೇನ ಸನ್ನಿಧಿತಾ ವಿಧೇಯೀಕೃತೋಽಪಿ" ಮಾಲತೀಂ ೧ ।

2. ಮನಸ್ಸನ್ನು ಆಕರ್ಷಿಸುವ, ಮಧುರವಾದ, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಸಂತೋಷಕರವಾದ. "ಇತಿ ತೇಮ್ಯ: ಸ್ತುತೀ: ಶ್ರುತ್ವಾ ಯಾರ್ಥಾ

—ಹೃದಯಜ್ಞಮಾ:" ಕುಮಾಂ ೨-೧೬ । 3. ಪ್ರಿಯ, ಪ್ರೀತಿ ಪಾತ್ರ. (ನಂ) 4. ಸಂಗತವಾದ ಮಾತು, ಯುಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದ ವಾಕ್ಯ, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಒಪ್ಪುವ ಮಾತು. "ಸಜ್ಜತಂ ಹೃದಯಜ್ಞಮಮ್" ಅಮಂ ।

ಹೃದಯಚಿಹ್ನೆ ಹೃದಯಚಿಹ್ನೆ (ವಿಂ) ಎದೆಯನ್ನು ಭೇದಿಸುವ, ಎದೆ ಬಿರಿಯುವ, ಮನಸ್ಸನ್ನು ಕೆತ್ತರಿಸುವ. ಹೃದಯ ಚಿಹ್ನೆ—ಚಿಹ್ನೆ (ವಿಂ) (ವಿಂ) "ಕಿವಿ" (೩-೨-೬೧) । —ವೇದಿನ್ —ವೇದಿನ್.

ಹೃದಯವತ್ ಹೃದಯವತ್ (ವಿಂ) ಸಹೃದಯ, ಒಳ್ಳೆಯ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು, ಶುದ್ಧವಾದ ಅಂತಃಕರಣವುಳ್ಳವನು. ಪ್ರಶಸ್ತಂ ಹೃದಯಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ — ಹೃದಯ "ಮತು" (೪-೨-೯೪) ।

ಹೃದಯಸ್ಥಾನ ಹೃದಯಸ್ಥಾನ (ನಂ) ವಕ್ಷಸ್ಸು, ಎದೆ. ಹೃದಯಸ್ಯ ಸ್ಥಾನಮ್ ।

ಹೃದಯಾಲ್ಪ ಹೃದಯಾಲ್ಪ (ವಿಂ) ಸಹೃದಯ, ಒಳ್ಳೆಯ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು, ಶುದ್ಧವಾದ ಅಂತಃಕರಣವುಳ್ಳವನು. ಪ್ರಶಸ್ತಂ ಹೃದಯಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ — ಹೃದಯ ವಾ "ಆಲ್ಪ:" (ವಾಂ ೪-೨-೧೨೧) । ಪಕ್ಷೇ ಇನಿಠನೌ ಮತುಃ ಚ । ಹೃದಯಿನ್ ಹೃದಯಿಕ ಹೃದಯವತ್ । ಹೃದಯಿ ಹೃದಯಿಕ: ಹೃದಯವಾನ್ ।

ಹೃದಯಿಕ ಹೃದಯಿಕ (ವಿಂ) ಶುದ್ಧವಾದ ಅಂತಃಕರಣವುಳ್ಳವನು, ಒಳ್ಳೆಯ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು. ಪ್ರಶಸ್ತಂ ಹೃದಯಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಠನ್" (೪-೨-೧೧೪) ।

ಹೃದಯಿನ್ ಹೃದಯಿನ್ (ವಿಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು, ಶುದ್ಧವಾದ ಅಂತಃಕರಣವುಳ್ಳವನು. ಪ್ರಶಸ್ತಂ ಹೃದಯಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ — ಹೃದಯ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) ।

ಹೃದಯೇಶ ಹೃದಯೇಶ (ಪುಂ) ಪತಿ, ಯಜಮಾನ, ಗಂಡ. ಹೃದಯಸ್ಯ ಇಶ: । —ಇಶ್ವರ: —ಈಶ್ವರ: । "ಹೃದಯೇಶೋ ರತಗುರು:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ । "ಗ್ರಂಥಿಮುದ್ರಯಯಿತುಂ ಹೃದಯೇಶೇ ವಾಸಸ: ಸ್ಪೃಶತಿ ಮಾನಧನಾಃ" ಮಾವಂ ೧೦-೬೩ ।

ಹೃದಯೇಶಯ ಹೃದಯೇಶಯ (ಪುಂ) ಕಾಮ, ಮನ್ಮಥ. ಹೃದಯೇ ಶೇತೆ—ಶೀಘ್ರ (ಸ್ವಪ್ನೇ) ಅಥಿಂ "ಅಬ್" (೩-೨-೧೪) । ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಅಲ್ಪಕ್ (೬-೩-೧೮) । "ಉಪನಮನ್ ಸುಹೃದಂ ಹೃದಯೇಶಯಂ ವಿಧುರಿವಾಕ್ಯಗತೋಽಪರಿಗ್ರಹ:" ನೆಪಂ ೪-೨೮ ।

ಹೃದಯೇಶ ಹೃದಯೇಶ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪತ್ನಿ, ಹೆಂಡತಿ. ಹೃದಯಸ್ಯ ಇಶಾ । —ಇಶ್ವರಾ —ಈಶ್ವರಾ. "ಹೃದಯೇ ಹೃದಯೇಶರಾವಕಾಶಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೦-೪೪ ।

ಹೃದಯವತ್ ಹೃದಯವತ್ (ಪುಂ) ಕುದುರೆಯು ಎದೆಯಲ್ಲಿರುವ ಸುಳಿ.

ಹೃದಿಸ್ಪಕ್ (ಶ್) ಹೃದಿಸ್ಪಕ್ (ಶ್) (ವಿಂ) 1. ಹೃದಯ ವನ್ನು ಮುಟ್ಟುವ, ಮನೋಹರವಾದ. 2. ಪ್ರಿಯವಾದ. ಹೃದಿ ಹೃದಯೇ ಸ್ಪೃಶತಿ — ಹೃದಯಸ್ಯ ಹೃದಾದೇಶ: (೬-೧-೬೩) । ಸಪ್ತಮ್ಯಾ ಅಲ್ಪಕ್ (ವಾಂ ೮-೩-೯೪) । ಕರ್ಮಣಿ ಸಪ್ತಮಿ । 3. ಸುಂದರವಾದ.

ಹೃದ ಹೃದ್ಯ (ಪುಂ) 1. ವೇದಮುತ್ರ. (ವಿಂ) 2. ಮನೋಹರವಾದ. ಹೃದಯಸ್ಯ ಪ್ರಿಯ: "ಯತ್" (೪-೪-೯೪) । ಹೃದಾದೇಶ: (೬-೩-೪೦) । "ಆಮತ್ಸಕೋಕಿಲಸ್ತವ್ಯಾಥಿತಾ ತು ಹೃದಾಮ್" ಮಾಲತೀಂ ೮-೪ । 3. ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಒಪ್ಪುವ, ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಹಿತವಾದ, ಆಹ್ಲಾದಕರವಾದ. "ಹೃದಗಂಧವಹ ಭೋಗವತೀಶ: ಶೇಖರೂಪಮಪಿ ವಿಭ್ರದಶೇಪ:" ನೆಪಂ ೨೧-೮೪ । 4. ಇಷ್ಟವಾದ, ಪ್ರಿಯವಾದ, ಹಿತವಾದ. "ರಸ್ಯಾ: ಸ್ನಿಗ್ಧಾ: ಸ್ಥಿರಾ ಹೃದಾ:" ಗೀತಾ ೧೭-೮ । 5. ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. (ನಂ) 6. ಬಿಳಿಯ ಜೀರಿಗೆ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಹಾ —ಹಾ. 7. ಮುದ್ದಿಯೆಂಬ ಒಂದು ಗಂದಿಗರ ವಸ್ತು, ಒಂದು ಔಷಧ. "ಹೃದಂ ಜವನೇಽಪಿ ತ್ರಿಪು ಹೃಜ್ಜಹೃದಿತಹೃತ್ಪ್ರಿಯೇ । ವಶಾಃಪ್ರದಮನ್ತ್ರೇ ನಾ ವೃದ್ಧಿನಾಮೌಷಧೇ ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" ಮೇದಿಂ ।

ಹೃದಗಂಧ ಹೃದಗಂಧ (ಪುಂ) 1. ಬಿಲ್ಲವೃಕ್ಷ. (ನಂ) 2. ಸಣ್ಣಜಾತಿಯ ಜೀರಿಗೆ. 3. ಸೌವರ್ಣ್ಯ ಲವಣ. (ಸ್ತ್ರೀಂ) —ಗಂಧಾ —ಗಂಧಾ. 4. ಜಾಜಿಗಡ.

ಹೃದಗಂಧಿ ಹೃದಗಂಧಿ (ನಂ) ಸಣ್ಣಜಾತಿಯ ಜೀರಿಗೆ.

ಹೃಲ್ಲಾಸ ಹೃಲ್ಲಾಸ (ಪುಂ) ಬಿಕ್ಕುಳ. ಹೃದಯಸ್ಯ ಹೃದಾದೇಶ: (೬-೧-೬೩) । "ಭಮನೀಸ್ಥೇ ಸಫೇನಂ ರಕ್ತಮೀರಯತ್ತನಿಲ: ಸಶಬ್ದೋ ನಿಗಂಚ್ಛತ್ಯಜ್ಞಮರ್ದ: ಪಿಪಾಸಾ ಹೃಲ್ಲಾಸಃ" ಸುಶ್ರುತಂ ।

ಹೃಲ್ಲೇಖ ಹೃಲ್ಲೇಖ (ಪುಂ) 1. ಜ್ಞಾನ. 2. ತರ್ಕ, ಉಹ. 3. ಹೃದಯಶೂಲ, ಎದೆಯ ನೋವು. —ಲೇಖಾ —ಲೇಖಾ. 4. ತವಕ, ಕಾತರ, ಕಳವಳ. ಹೃದಯಂ ಲಿಖತಿ —ಲಿಖ (ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ) "ಅನ್" (೩-೨-೧) । ಹೃದಯಸ್ಯ ಹೃದಾದೇಶ: (೬-೧-೬೩) ।

ಹೃಷ - ಕುಟುಂಬ (ದಿವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ) । ಹೃಷ್ಯತಿ । ಜಹೃಷ್ । ಹೃಷಿತಾ । ಹೃಷಿಷ್ಯತಿ । ಹೃಷ್ಯತು । ಅಹೃಷ್ಯತ್ । ಹೃಷ್ಯತ್ । ಇತ್ಯಾದಿ. ಸಂತೋಷಪಡು, ಅನಂದಿಸು. "ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಸಪತ್ನಯೋ ಜಹೃಷು: ಪ್ರಭಾತೇ ಮಂದಾಯಮಾನಾಃ ನುಶಯಮನೋಭಿ:" ಮೃದ್ವಿಂ ೧೧-೨೭ ।



ಹುಸು:—ಹುಷಿತವ್ಯಮ್ | ಹುಷಣೀಯಮ್ | ಹುಷ್ಯಮ್ | ಹುಷಿತಃ |  
ಹುಷಿತವಾನ್ | ಹುಷ್ಠಮ್ | ಹುಷಿತಮ್ ನಿಷ್ಠಾಢಾಂ ವಾ ಇತ್ |  
ಹುಷ್ಠೋ ಹುಷಿತೋ ಮೇತ್ರಃ | ಹುಷಣಮ್ |

ಹು - ಅಲೀಕೆ (ಢ್ವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ) | ಹುಷಂತಿ | ಅಹುಷಂ |  
ಹುಷಿತಾ | ಹುಷಿಷ್ಯತಿ | ಹುಷಂತು | ಅಹುಷಂತು | ಇತ್ಯಾದಿ |  
ಸುಷಾಂಗಿ ಮಾಡು, ವಿಷ್ಣುಯಾಗಿ ಮಾಡು |

ಹುಸು:—ಹುಷಿತವ್ಯಮ್ | ಹುಷಣೀಯಮ್ | ಹುಷ್ಯಮ್ | ಹುಷ್ಠಃ |  
ಹುಷ್ಠವಾನ್ ನಿಷ್ಠಾಢಾಂ ನೆಡ್ | ಹುಷಂತು | ಹುಷಣಮ್ |

ಹುಷಿತ ಹುಷಿತ (ವಿಂ) 1. ಅಶ್ಚರ್ಯಗೊಂಡವನು. 2. ಸಂತೋಷದಿಂದಿರುವವನು. 3. ರೋಮಾಂಚವೆದ್ದಿರುವ. 4. ಬಗ್ಗಿರುವ. 5. ಭಂಗಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ವಿಫಲಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. "ಹುಷಿತಂ ವಿಷ್ಠಿತೇ ಪ್ರೀತೇ ಪ್ರಹತೇ ಹುಷ್ಠಲೋಮನಿ" ಮೇದಿಂ | "ಹುಷಿತಂ ವಿಷ್ಠಿತೇ ಪ್ರೀತೇ ಪ್ರಣತೇ ಹುಷ್ಠರೋಮನಿ" ಹೇಮಂ |

ಹುಷಿಕ ಹುಷಿಕ (ನಂ) ಇಂದ್ರಿಯ. ಹುಷ್ಯಂತಯನೇನ — ಹುಷ (ತುಷ್ಠಿ) "ಹುಷಿನ್" (ತಂ ೪-೧೭) | "ನ ಭಾರತೀ ಮೇಙ್ಗ ಮೃಘೋಪಲಕ್ಷಯತೇ ನ ವೇ ಕವಚಿನ್ಮೇ ಮನಸೋ ಮೃಘಾ ಗತಿಃ | ನ ಮೇ ಹುಷಿಕಾಣಿ ಪತಂತ್ಯಸತ್ಪಥೇ ಯನ್ಮೇ ಹುಡುಕುಣ್ಠಯವತಾ ಧೃತೋ ಹರಿಃ" ಭಾಗಂ ೨-೬-೩೨ |

ಹುಷಿಕೇಶ ಹುಷಿಕೇಶ (ಪುಂ) ಎಷ್ಟು, ನಾರಾಯಣ. ಹುಷಿಕಾಣಾಮಿನ್ದ್ರಿಯಾಣಾಮಿಶಃ | "ಎವಮುಕ್ತೋ ಹುಷಿಕೇಶೋ ಗುಡಾಕೇಶೇನ ಭಾರತ | ಸೇನಯೋರಮಯೋರ್ಮಧ್ಯೇ ಸ್ಥಾಪಯಿತ್ವಾ ರಘೋತ್ತಮಮ್" ಗೀತಾ ೧-೨೪ | ಹುಷಿಕಾ ಜಗತ್ಪ್ರೀತಿಕರಾಃ ಕೇಶಾ ರಘುಯೋಜ್ಯ — ಸೂರ್ಯಚಂದ್ರರೂಪ ಪರಮಾತ್ಮ. ಪುಷಂ |

ಹುಷ್ಠ ಹುಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಗೊಂಡಿರುವ, ಪ್ರೀತನಾದ. ಹುಷ (ತುಷ್ಠಿ) "ಹುಷ್ಠಃ" (೩-೪-೭೨) | 2. ರೋಮಾಂಚಿತನಾದವನು. 3. ವಿಫಲನಾದವನು. 4. ಅಶ್ಚರ್ಯಗೊಂಡವನು. "ಹುಷ್ಠೋ ರೋಮಾಂಚಿತೇಽಪಿ ಚ | ಜಾತಹುಷೇ ಪ್ರತಿಹತೇ ವಿಷ್ಠಿತೇಽಪ್ಯಭಿಷೇಯವತ್" ಮೇದಿಂ |

ಹುಷ್ಠಮಾನಸ ಹುಷ್ಠಮಾನಸ (ವಿಂ) ಸಂತೋಷಗೊಂಡ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು. ಹುಷ್ಠಂ ಪ್ರಮುದಿತಂ ಮಾನಸಂ ಯಸ್ಯ | "ಪ್ರಮನಾ ಹುಷ್ಠಮಾನಸಃ" ಅಮಂ |

ಹುಷ್ಠರೋಮನ್ ಹುಷ್ಠರೋಮನ್ (ವಿಂ) ರೋಮಾಂಚವೆದ್ದಿರುವ, ಮೈಕೊಡಲು ಎಚ್ಚರಗೊಂಡಿರುವ.

ಹುಷ್ಠಿ ಹುಷ್ಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜ್ಞಾನ. 2. ಅನಂದ, ಪ್ರಮೋದ. ಹುಷ (ತುಷ್ಠಿ) "ಹುಷಿನ್" (೩-೩-೯೪) | 3. ಗರ್ವ, ಅಭಿಮಾನ. ಹುಷ (ಅಲೀಕೆ) "ಹುಷಿನ್" (೩-೩-೯೪) |

ಹುಷ್ಯತ್ ಹುಷ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಸಂತೋಷಪಡುತ್ತಿರುವ, ಅನಂದವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುತ್ತಿರುವ. ಹುಷ (ತುಷ್ಠಿ) "ಹುಷ್ಠಃ" (೩-೨-೧೨೪) | "ವಿದಮೇರಾಜೋಽಪಿ ಸಮಂ ತನುಜಯಾ ಪ್ರವಿಷ್ಯ ಹುಷ್ಯವರೋಧಮಾತ್ಮನಃ" ನೈಷಂ ೧೪-೪ | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಹುಷಿನ್" (೪-೧-೬) | —ಂತಿ-೨೭.

ಹೇ ಹೇ (ಅವ್ಯಂ) ಸಂಜೋಧನೆ. ಹಿನೋತಿ — ಹಿ (ಗತೌ) "ಹಿನ್" (೩-೩-೭೪) | "ಅಥ ಸಮ್ಬೋಧನಾರ್ಥಕಾಃ | ಸ್ಯುಃ ಪಾಡ್ ಪ್ಯಾಡ್ಜ್ಜ ಹೇ ಹೇ ಮೋಃ" ಅಮಂ | "ಜಾಯಾ ವಾ ಜನಯಿತ್ರೀ ವಾ ಸಮ್ಭವಃ ಸ್ತ್ರೀಕೃತೋ ನೃಣಾಮ್ | ಹೇ ಕೃತಧ್ನಾಸ್ತಯೋ ನಿನ್ದಾಂ ಕುರ್ವಂತಾ ವಃ ಕುತಃ ಸುಖಮ್" ಬೃಹತ್ಸಂ |

ಹೇಕಾ ಹೇಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಿಕ್ಕುಳಕೆ.

ಹೇಠ ಹೇಠ (ಪುಂ) 1. ಬಾಧೆ, ಹಿಂಸೆ. 2. ಅಡ್ಡ, ತಡೆ. ಅತಂಕ. "ಹೇಠೋ ಬಾಧಾವಿಹೇಠಯೋಃ" ಮೇದಿಂ |

ಹೇಡ ಹೇಡ (ಪುಂ) ಅನಾದರ, ತಿರಸ್ಕಾರ, ಆಗರವ. ಹೇಡ (ಅನಾದರೇ) "ಹುಷ್" (೩-೩-೧೮) |

ಹೇಡಜ ಹೇಡಜ (ಪುಂ) ಕೋರ, ಕೋಪ. ಹೇಡಾಜ್ಜಾಯತೇ — ಜನೋ (ಪ್ರಾದುರ್ಮವಿ) "ಹುಷ್" (೩-೩-೯೮) |

ಹೇಡಾಯುಕ್ತ ಹೇಡಾಯುಕ್ತ (ಪುಂ) ಕುದುರೆಯ ವ್ಯಾಪಾರ ಮಾಡುವವನು.

ಹೇತಿ ಹೇತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಅಸ್ತು, ಅಯುಧ. ಹನ್ಯತೇಜನಯಾ — ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) "ಹಿನ್" (೩-೩-೯೪) | ಹನ್ತಿ ಹಿನೋತಿ ವಾ | ಹಿ (ಗತೌ) "ಹಿನ್" (೩-೩-೯೭) ವಾ | "ಅಥಾಭಿಪಶ್ಯನ್ನಿವ ವಿದ್ವಿಷಃ ಪುರಃ ಪುರೋಽಸಾರೋಪಿತ-ಹೇತಿಸಂಹತಿಃ" ಕಿರಾಂ ೩-೪೬ | 2. ಸೂರ್ಯನ ಕಿರಣ. 3. ಅಗ್ನಿಯ ಜ್ವಾಲೆ. "ಹೇತಿಃ ಸ್ಯಾದಾಯುಧಜ್ವಾಲಾಸೂರ್ಯತೇಜಃ ಸುಯೋಷಿತಿ" ಮೇದಿಂ | 4. ತೇಜಸ್ಸು. 5. ಸಾಧನೆ, ಸಲಕರಣೆ. "ಸಂಖ್ಯಾನ್ಯುನಿಯಮ್ಯ ಯತಯೋ ಯಮಕರ್ತೇತಿ ಜಹ್ಯುಃ ಸ್ವರಾಡಿವ ನಿಪಾನಖನಿತ್ರಮಿನ್ದ್ರಃ" ಭಾಗಂ ೨-೭-೪೮ | 6. ಪ್ರಕಾಶ, ಬೆಳಕು.

ಹೇತು ಹೇತು (ಪುಂ) 1. ಕಾರಣ. ಹಿನೋತಿ ವ್ಯಾಪ್ನೋತಿ ಕಾರ್ಯಮ್ — ಹಿ (ಗತೌ) "ಹುನ್" (ತಂ ೧-೭೩) | "ಮಯಾ ಮೃಗಾನ್ ಹನ್ತುರನೇನ ಹೇತುನಾ ವಿರುದ್ಧಮಾಕ್ಷೇಪವಚಸ್ತಿತಿಕ್ಷಿತಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೪-೨೪ | 2. ಮೂಲಸ್ಥಾನ, ಉತ್ಪತ್ತಿಸ್ಥಾನ. "ಸ ಪಿತಾ ಪಿತರಸ್ತಾಸಾಂ ಕೇವಲಂ ಜನ್ಮಹೇತವಃ" ರಘುಂ ೧-೨೪ | 3. (ನ್ಯಾಯ ಪುತದಲ್ಲಿ) ಕರಣ, ಲಿಂಗ, ಜ್ಞಾಪಕ. ಪರ್ವತೋ ವಹ್ನಿಮಾನ್ ಧುಮಾತ್ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ವಹ್ನಿಯನ್ನು ಸಾಧಿಸಲು ಧೂಮವು ಕರಣ (ಹೇತು, ಲಿಂಗ). "ಹೇತುರಪದೇಶೋ ಲಿಂಗಮ್ ಪ್ರಮಾಣಮ್ ಕರಣಮಿತ್ಯನರ್ಥಾಂತರಮ್"



ವೆಂ ಸುಂ ೧-೨-೪। ಈ ಹೇತುವು ಸದ್ವೇತು: ಅಸದ್ವೇತು: ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧ. "ಪವಂತೋ ವಹ್ನಿಮಾನ್ ಭೂಮಾತ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಧೂಮವು ಸದ್ವೇತು. ಹೇತುಭಾಸ (ದುಷ್ಪ್ರಹೇತು) ವು ಅಸದ್ವೇತು. 4. ಕಾರಣ, ಉತ್ಪಾದಕ. ಘಟನಿರ್ಮಾಣ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಮೃತ್ತು ಉತ್ಪಾದಕ (ಕಾರಣ) ವಾಗುವುದು. ಮೃತ್ ಘಟಸ್ಯ ಹೇತು: 1. 5. (ವೈಯಾಕರಣರ ಮತದಲ್ಲಿ) ಫಲಸಾಧನಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ವಸ್ತು. "ಧನೇನ ಕೃಷಲಮ್" "ವಿದ್ಯಯಾ ಯಶ:" ಇತ್ಯಾದಿ ಸ್ಥಲಗಳಲ್ಲಿ ಕುಶಲ ಮತ್ತು ಯಶಸ್ಸು ಇತ್ಯಾದಿ ರೂಪ ಫಲಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದುದು ತೃತೀಯಾರ್ಥ. ಹೇತುತ್ವದಲ್ಲಿ ತೃತೀಯಾವಿಧಕ್ಕೆ ಬಂದಿರುವುದು. "ಘಟೇನ ಘಟ:" "ಗುಣೇನ ದೃಷ್ಟಿ ಹರಿ:" ಇತ್ಯಾದಿ ಸ್ಥಲಗಳಲ್ಲಿ ಫಲವೂ ಹೇತುವಾಗುವುದು. "ಹೇತು" (೨-೩-೨೩)। ಅಭ್ಯಯನೇನ ವಸತಿ ಎಂಬಲ್ಲಿ ತೃತೀಯಾರ್ಥವಾದ ಫಲವು ಅಧ್ಯಯನ. 6. (ಅಲಂಕಾರಿಕರ ಮತದಲ್ಲಿ) ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. ಹೇತುಲಂಕಾರ. ಕಾರ್ಯದೊಡನೆ ಕಾರಣದ ಸಂಬಂಧವರ್ಣನೆಯಿರುವಲ್ಲಿ ಹೇತುಲಂಕಾರ.

ಲಕ್ಷಣಮ್:—ಹೇತುಹೇತುಮತಾ ಸಾರ್ಥ ವರ್ಣನಂ ಹೇತುಕುಚ್ಯತೇ"।

ಉದಾ:—"ಅಸಾವುದೇತಿ ಶೀತಾಂಶುಮಾನಿಮೇದಾಯ ಸುಖವಾಮ್" ಚಂದ್ರಾಂ। ಇಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರನ ಉದಯರೂಪವಾದ ಕಾರಣಕ್ಕೆ ಸ್ತ್ರೀಯರ ಮಾನಭಂಗರೂಪವಾದ ಕಾರ್ಯದೊಡನೆ ಸಂಬಂಧವು ವರ್ಣಿತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಹೇತುಲಂಕಾರ ವಾಯಿತು.

ಕಾರ್ಯಕಾರಣಗಳಿಗೆ ಐಕ್ಯವರ್ಣನೆಯೂ ಹೇತುಲಂಕಾರ. "ಕಾರ್ಯಕಾರಣಯೋರೇಕ್ಯಂ ಹೇತು ಕೇಚಿತ್ಪ್ರಚಕ್ಷತೇ। ಲಕ್ಷ್ಮೀವಿಲಾಸಾ ವಿಧುಷಾ ಕಟಾಕ್ಷಾ ವೇಕ್ಷತಪ್ರಭೋ:" ಇಲ್ಲಿ ವೇಂಕಟೇಶ್ವರನ ಕಟಾಕ್ಷವೇ ಲಕ್ಷ್ಮೀವಿಲಾಸವೆಂದು ಕಾರ್ಯಕಾರಣಗಳಿಗೆ ಅಭೇದವು ಉಕ್ತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಹೇತುಲಂಕಾರ.

ಹೇತುಕ ಹೇತುಕ (ಪುಂ) 1. ಕಾರಣ. ಹೇತುರೇವ ಸ್ವಾರ್ಥ "ಕ:"।

(ವಿಂ) 2. ಕಾರಣಸಂಬಂಧವಾದ. ಹೇತುರಸ್ಯಾಸ್ತಿ—ಹೇತು "ಠ್" (೪-೨-೧೧೪)। ಠಸ್ಯ ಕ: (೭-೩-೪೧)।

ಹೇತುತಾ ಹೇತುತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾರಣದ ಭಾವ, ಹೇತುತ್ವ.

ಹೇತುಭಾವಿ: "ತಲ್" (೪-೧-೧೧೯)। "ತ್ವ:" (೪-೧-೧೧೯)।

ಹೇತುತ್ವಮ್ ಹೇತುತ್ವಮ್. "ಸಪ್ರಸಜ್ಞ ಉಪೋದ್ವಾತೋ ಹೇತುತಾ-ವಸಸ್ತಥಾ। ನಿರ್ವಾಹಿಕಕಾರ್ಯತ್ವೇ ಷೋಡಾ ಸಜ್ಞತಿರಿಷ್ಯತೇ"॥

ಹೇತುಮತ್ ಹೇತುಮತ್ (ವಿಂ) ಕಾರಣವುಳ್ಳ, ಕಾರಣ ಸಹಿತ

ವಾದ (ಕಾರ್ಯ). ಹೇತುರಸ್ಯಾಸ್ತಿ—ಹೇತು "ಮತುಃ" (೪-೨-೯೪)। "ಹೇತುಹೇತುಮತೋರೇಕ್ಯಂ ಹೇತು ಕೇಚಿತ್ಪ್ರಚಕ್ಷತೇ"।

ಹೇತುಭಾಸ ಹೇತುಭಾಸ (ಪುಂ) 1. ಹೇತು ದೋಷ.

2. ಅಸದ್ವೇತು, ದುಷ್ಪ್ರಹೇತು. ಹೇತುವದಾಭಾಸತೇ—ಆ +

ಭಾಸ (ದೀಪ್ತ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। ಹೇತು: ಹೇತು

ವಾ ಆಭಾಸ:—ಹೇತುದೋಷ ಇತ್ಯರ್ಥ:। "ಅನುಮಿತಿಪ್ರತಿಬಂಧಕೀ-

ಭೂತಯಥಾರ್ಥಜ್ಞಾನವಿಷಯತ್ವಮ್ ಹೇತುಭಾಸ:। ಹೇತುಭಾಸವು

(1) ಸಂಖ್ಯಾಭಿಚಾರ: (2) ವಿರುದ್ಧ: (3) ಸತ್ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಿತ:

(4) ಅಸಿದ್ಧ: ಮತ್ತು (5) ಬಾಧಿತ: ಎಂದು ಐದು ವಿಧ.

ಈ ಐದು ಹೇತುಭಾಸಗಳೂ ಕ್ರಮವಾಗಿ ವ್ಯಾಖ್ಯಾರ:

ವಿರೋಧ: ಸತ್ಪ್ರತಿಪಕ್ಷ: ಅಸಿದ್ಧ: ಬಾಧ: ಎಂಬ ಐದು

ದೋಷಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುತ್ತವೆ. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಬಾಧವೂ

ಸತ್ಪ್ರತಿಪಕ್ಷವೂ ಸಾಕ್ಷಾದನುಮಿತಿಗೂ ಉಳಿದುವು ಅದಕ್ಕೆ

ಕಾರಣವಾದ ವ್ಯಾಪ್ತಿಜ್ಞಾನಕ್ಕೂ ಪ್ರತಿಬಂಧಕಗಳಾಗು

ವುವು. ಅನುಮಿತಿಗೆ ಪ್ರತಿಬಂಧಕವಾದ ಯಥಾರ್ಥಜ್ಞಾನ

ದಲ್ಲಿ ವಿಷಯವಾಗಿ ತೋರುವುದೇ ಹೇತುಭಾಸಗಳು.

"ಅನುಮಿತಿಸ್ತರ್ಕಣಾನ್ಯತರಪ್ರತಿಬಂಧಕಯಥಾರ್ಥಜ್ಞಾನವಿಷಯತ್ವಮ್"

ಇತಿ ಹೇತುಭಾಸಸಾಮಾನ್ಯಲಕ್ಷಣಮ್।

ಹೇತು ದೋಷಗಳು

ದುಷ್ಪ್ರಹೇತುಗಳು

(1) ವ್ಯಾಖ್ಯಾರ:

.. ಸಂಖ್ಯಾಭಿಚಾರ:

(2) ವಿರೋಧ:

.. ವಿರುದ್ಧ:

(3) ಸತ್ಪ್ರತಿಪಕ್ಷ:

.. ಸತ್ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಿತ:

(4) ಅಸಿದ್ಧ:

.. ಅಸಿದ್ಧ:

(5) ಬಾಧ:

.. ಬಾಧಿತ:

(1) ಸಂಖ್ಯಾಭಿಚಾರ:—ಇದಕ್ಕೆ ಅನೈಕಾಂತಿಕ ಎಂದು ಹೆಸರು. ಇದು ಸಾಧಾರಣ ಅಸಾಧಾರಣ ಮತ್ತು ಅನುಪಸಂಹಾರಿ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧ. ಸಾಧ್ಯಾಭಾವ-ವದೃತ್ತಿತ್ವಂ ಸಂಖ್ಯಾಭಿಚಾರ:। "ಪವಂತೋ ವಹ್ನಿಮಾನ್ ಪ್ರಮೇಯತ್ವಾತ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಪ್ರಮೇಯತ್ವವು ಹೇತುವಾಗುವುದು. ಪ್ರಮೇಯತ್ವವು ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಇರುವುದರಿಂದ ಸಾಧ್ಯವಾದ ವಹ್ನಿಯು ಇಲ್ಲದಿರುವ ಜಲಾಶಯ (ಹ್ರದ)ದಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಪ್ತಿ ಜ್ಞಾನ ಬಾರದಿರುವ ಕಾರಣ ಸಾಧ್ಯಾಭಾವವದೃಶ್ಯತ್ವ ರೂಪ ದೋಷ ಜ್ಞಾನದಿಂದ ವ್ಯಾಪ್ತಿಜ್ಞಾನ ಪ್ರತಿಬಂಧಕ ವಾಗುವುದು. ಇದು ಸಾಧಾರಣ ಹೇತು. (ಸಾಧಾರಣಾನೆ-ಕಾಂತಿಕ:).।

ಅಸಾಧಾರಣಹೇತು:—ಪಕ್ಷಮಾತ್ರವೃತ್ತಿರಸಾಧಾರಣಾನೆಕಾಂತಿಕ-ಹೇತು:। "ಶಬ್ದೋ ನಿಯತ: ಶಬ್ದತ್ವಾತ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಶಬ್ದತ್ವವು ಆಕಾಶ ಘಟ ಮೊದಲಾದ ನಿತ್ಯಾನಿತ್ಯ ಎಲ್ಲದಿಂದಲೂ ವ್ಯಾವೃತ್ತವಾಗಿ ಶಬ್ದಮಾತ್ರದಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದ ಅಸಾಧಾರಣಾನೈಕಾಂತಿಕ ಹೇತು.



ಅನುಪಸಂಹಾರಿ:— “ಅನ್ವಯವ್ಯತಿರೇಕವ್ಯಾಪ್ತಿರಹಿತೋಽನುಪಸಂಹಾರಿ । “ಸರ್ವಮನಿತ್ಯಂ ಪ್ರಮೇಯತ್ವಾತ್” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಅನ್ವಯ ಮತ್ತು ವ್ಯತಿರೇಕ ದೃಷ್ಟಾಂತಗಳಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಅನ್ವಯ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯಾಗಲಿ ವ್ಯತಿರೇಕವ್ಯಾಪ್ತಿಯಾಗಲಿ ಬರುವುದಿಲ್ಲ. “ಎಲ್ಲವೂ ಅನಿತ್ಯಪ್ರಮೇಯತ್ವದಿಂದ” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲವೂ ಎಂಬುದು ಪಕ್ಷವಾಗಿ ಅದಕ್ಕಿಂತ ಬೇರೆಯಾದ ದೃಷ್ಟಾಂತ ವಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಅನುಪಸಂಹಾರಿ ಅನೈಕಾಂತಿಕ ಹೇತು.

(2) ವಿರಹ:—“ಸಾವ್ಯಾಮಾವ್ಯಾಪ್ತೋ ಹೇತುವಿರಹ:” । “ಶಬ್ದೋ ನಿತ್ಯ: ಕೃತಕತ್ವಾತ್” ಎಂಬಲ್ಲಿ ನಿತ್ಯತ್ವಭಾವ ದಿಂದ ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ ಕೃತಕತ್ವರೂಪ ಹೇತುವು ಶಬ್ದದಲ್ಲಿದ್ದರೆ ಶಬ್ದವು ನಿತ್ಯ ಎಂಬ ಅನುಮಿತಿಯು ಉಂಟಾಗುವುದಿಲ್ಲ ವಾದ ಕಾರಣ ಕೃತಕತ್ವ ಹೇತುವು ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಹೇತುವು ದುಷ್ಪವಾಯಿತು. ಇದು ವಿರುದ್ಧ ಹೇತು.

(3) ಸತ್ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಿತ:—(ಹೇತ್ವಾಭಾಸದ ಒಂದು ಭೇದ.) ಸಮಾನಬಲವುಳ್ಳ ಸ್ಥಲದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಸತ್ಪ್ರತಿ ಪಕ್ಷವಾಗುವುದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ “ಪ್ರಕರಣಸಮ” ಎಂದು ಹೆಸರು. ಯಾವ ಹೇತುವಿಗೆ ಸಾಧ್ಯಾಭಾವವನ್ನು ಸಾಧಿ ಸುವ ಮತ್ತೊಂದು (ಪ್ರತಿಪಕ್ಷವಾಗಿರುವ) ಹೇತುವಿರು ವುದೋ ಅದು ಸತ್ಪ್ರತಿಪಕ್ಷ. “ಸನ್ ವಿಚ್ಛಿಮಾನ: ಪ್ರತಿಪಕ್ಷೋ ವಿರೋಧಿವ್ಯಾಪ್ತ್ಯಾದಿಮತ್ತಯಾ ಪರಾಮೃಶ್ಯಮಾನೋ ಹೇತು: ಯಸ್ಯ ಪರಾಮೃಶ್ಯಮಾನಸ್ಯ ಹೇತು: ಅಸೌ ಸತ್ಪ್ರತಿಪಕ್ಷ:” । “ಶಬ್ದೋ ನಿತ್ಯ: ಶ್ರಾವಣತ್ವಾತ್ ಶಬ್ದವತ್”, “ಶಬ್ದೋಽನಿತ್ಯ: ಕಾರ್ಯತ್ವಾತ್ ಷಡವತ್” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಶ್ರಾವಣತ್ವ ಹೇತುವಿನಿಂದ ಶಬ್ದದಲ್ಲಿ ನಿತ್ಯತ್ವವನ್ನು ಸಾಧಿಸಲು ಹೊರಟರೆ ಅನಿತ್ಯತ್ವರೂಪ ಸಾಧ್ಯಾಭಾವವನ್ನು ಸಾಧಿಸುವ ಕಾರ್ಯತ್ವರೂಪ ಪ್ರತಿಪಕ್ಷ ಹೇತುವು ಅಲ್ಲೇ ಇರುವುದರಿಂದ ಶ್ರಾವಣತ್ವವು ಸತ್ಪ್ರತಿ ಪಕ್ಷವಾಗುವುದು. ಶಬ್ದದಲ್ಲಿ ಸಾಧ್ಯಾಭಾವ ವ್ಯಾಪ್ತವಾದ ಇನ್ನೊಂದು ಹೇತುವಿರುವುದರಿಂದ ಶಬ್ದೋ ನಿತ್ಯ: ಎಂಬ ಅನುಮಿತಿಯುಂಟಾಗುವುದಿಲ್ಲ. ಅದರಿಂದ ಇದಕ್ಕೆ “ಪ್ರಕರಣಸಮ” ಎಂಬ ಹೆಸರು. ಇದು ಸತ್ಪ್ರತಿಪಕ್ಷ ವೆಂಬ ದುಷ್ಪ ಹೇತು.

(4) ಅಸಿದ್ಧ:—ಅಸಿದ್ಧವು (1) ಆಶ್ರಯಾಸಿದ್ಧ, (2) ಸ್ವರೂಪಾಸಿದ್ಧ ಮತ್ತು (3) ವ್ಯಾಪ್ತಾಸಿದ್ಧಗಳೆಂದು ಮೂರು ವಿಧ.

(1) ಆಶ್ರಯಾಸಿದ್ಧ:—“ಗಗನಾರವಿಂದಂ ಸುರಭಿ ಅರವಿಂದ-ತ್ವಾತ್, ಸರೋಜಾರವಿಂದವತ್” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಅರವಿಂದತ್ವಕ್ಕೆ ಆಶ್ರಯವಾಗಿರಬೇಕಾದ ಗಗನಾರವಿಂದವೇ ಇಲ್ಲದಿರುವುದ ರಿಂದ ಆಶ್ರಯಾಸಿದ್ಧರೂಪವಾದ ಹೇತುದೋಷ. ಈ ದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿರುವ ಹೇತುವು ದುಷ್ಪ ಹೇತು.

(2) ಸ್ವರೂಪಾಸಿದ್ಧ:—ಪಕ್ಷದಲ್ಲಿ ಹೇತುವಿಲ್ಲದಿರುವುದು ಸ್ವರೂಪಾಸಿದ್ಧ. “ಶಬ್ದೋ ಗುಣ: ಚಾಕ್ಷುಷತ್ವಾತ್” ಎಂಬಲ್ಲಿ (ಶ್ರಾವಣತ್ವವಿರುವ) ಶಬ್ದದಲ್ಲಿ ಚಾಕ್ಷುಷತ್ವವಿಲ್ಲದಿರುವುದ ರಿಂದ ಸ್ವರೂಪಾಸಿದ್ಧರೂಪದೋಷ. ಈ ದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿರುವ ಹೇತುವು ಸ್ವರೂಪಾಸಿದ್ಧ ದುಷ್ಪಹೇತು. “ಅಸಿದ್ಧ ಮತ್ತು ಅಸಿದ್ಧಿ” ಪದಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

(3) ವ್ಯಾಪ್ತಾಸಿದ್ಧ:—ಉಪಾಧಿಸಹಿತವಾದ ಹೇತುವು ವ್ಯಾಪ್ತಾಸಿದ್ಧವಾಗುವುದು. ಇದು ವ್ಯಾಪ್ತಿಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಪ್ರತಿಬಂಧಕ. “ಸಾಧ್ಯವ್ಯಾಪಕತ್ವೇ ಸತಿ ಸಾಧನಾವ್ಯಾಪಕ-ತ್ವಮುಪಾಧಿ:” । “ಪವಂತೋ ಭೂಮಿವಾನ್ ಬಹ್ನಿಮತ್ವಾತ್” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಆದ್ರೇಂಧನಸಂಯೋಗ (ಹಸಿಕಟ್ಟಿಗೆಯ ಸಂಬಂಧ) ವು ಉಪಾಧಿ. ಹೇತುವಾದ ವಹ್ನಿಮತ್ವವು ಸೋಪಾಧಿಕ (ಆದ್ರೇಂಧನಸಂಯೋಗರೂಪವಾದ ಉಪಾಧಿಸಹಿತ) ವಾದುದರಿಂದ ಹೇತುವು ವ್ಯಾಪ್ತಾಸಿದ್ಧರೂಪ ದೋಷಾ ಕ್ರಾಂತವಾಯಿತು. ಈ ದೋಷದಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು ವ್ಯಾಪ್ತಾಸಿದ್ಧ. ಇದೊಂದು ಹೇತ್ವಾಭಾಸ.

(5) ಬಾಧಿತ:—ಯಾವ ಹೇತುವಿನ ಸಾಧ್ಯಾಭಾವವು ಪ್ರಮಾಣಾಂತರಗಳಿಂದ ನಿಶ್ಚಿತವಾಗಿರುವುದೋ ಅದು ಬಾಧಿತ. “ಯಸ್ಯ ಸಾಧ್ಯಾಭಾವ: ಪ್ರಮಾಣಾಂತರೇಣ ನಿಶ್ಚಿತ: ಸ: ಬಾಧಿತ:” । “ಬಹ್ನಿರನುಣೋ ದ್ರವ್ಯತ್ವಾತ್ ಜಲವತ್” ಎಂಬಲ್ಲಿ ಉಷ್ಣತ್ವವಿಲ್ಲವೆಂದು ಸಾಧಿಸಲು ಉಪಾತ್ತವಾದ ದ್ರವ್ಯತ್ವರೂಪ ಹೇತುವಿಗೆ ಉಷ್ಣತ್ವವು ವಹ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಇರುವುದೆಂದು ಸ್ಪರ್ಶಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಪ್ರಮಾಣದಿಂದ ನಿಶ್ಚಿತವಾಗಿ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ ವಾಗಿ ಸಾಧ್ಯಾಭಾವದ ನಿಶ್ಚಯವು ವಹ್ನಿಯಲ್ಲಿರುವಾಗ ಸಾಧ್ಯಾನುಮಿತಿಯು ಬರುವುದಿಲ್ಲ. “ಬಹ್ನಿರನುಣ:” ಎಂಬ ಅನುಮತಿಗೆ ಸಾಧ್ಯಾಭಾವದ ನಿಶ್ಚಯವು ಪ್ರತಿ ಬಂಧಕವಾಗಿದೆ. ಸಾಧ್ಯವು ಬಾಧಿತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಹೇತುವು ಬಾಧಿತವಾಗಿ ಬಾಧಿತ ಹೇತ್ವಾಭಾಸವಾಗಿದೆ.

ಹೇಮ ಹೇತು (ಛಂ) 1. ಕೃಷ್ಣವರ್ಣದ ಕುದುರೆ. 2. ಒಂದು ಮಾಜೆತೂಕದ ಚಿನ್ನ. 3. ಬುಧಗ್ರಹ.

ಹೇಮಕಂದಲ ಹೇತುಕಂದಲ (ಛಂ) ಪ್ರವಾಳ, ಹವಳ. ಹೇಮವರ್ಣ ಕಂದಲ ನವಾಡಕುರೋಷ್ಯ ।

ಹೇಮಕರಕ ಹೇತುಕರಕ (ಛಂ) ಚಿನ್ನದ ಗಿಂಡಿ. “ಮೃತ್ತಾರೋ ಹೇಮಕರಕ:” ವೈಜಂ ।

ಹೇಮಕಾಂತಿ ಹೇತುಕಾಂತಿ (ಸ್ತಂ) 1. ದಾರುಹರಿದ್ರ, ಮರದರಿತನ. ಹೇಮವತ್ ಕಾಂತಿರಸ್ಯಾ: । (ವಿಂ) 2. ಚಿನ್ನ ದಂತೆ ಕಾಂತಿಯುಳ್ಳ. ಹೇಮವತ್ ಕಾಂತಿರಸ್ಯ । “ಹೇಮಕಾಂತಿ-ರಸ್ಯವಾ ಗುಣವರ್ಣ: ಸಸ್ಯಕೇನ ಮೃಣಿತಾ ಸದೃಶೋ ವಾ” ಬೃಹತ್ಸಂ ।



ಹೆಮಕಾರ ಹೇಮಕಾರ (ಪುಂ) ಸುವರ್ಣದ ಅಭರಣಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ ಸ್ವರ್ಣಕಾರ, ಚಿನ್ನದ ಒಡವೆಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವ ಅಕ್ಕಸಾಲಿಗ. ಹೇಮ ಹೇಮಯಮಾಭರಣಂ ಕರೋತಿ—ಕುಕ್ರಮ್ (ಕರಣಂ) “ಅನ್” (೩-೨-೧) ।

ಹೆಮಕೂಟ ಹೇಮಕೂಟ (ಪುಂ) ಒಂದು ಪರ್ವತ. ಹೇಮನ: ಕೂಟೋ ರಾಶಿರ್ಯತ್ರ । “ಆಘ್ರ ಖಲು ಹೇಮಕೂಟೋ ನಾಮ ಕಿಪುರೂಪವಂತಸ್ತಪ:ಸಂಸಿದ್ಧಿಕೇಶಮ್” ಶಾಕುಂ ೭ ।

ಹೆಮಕೇಲಿ ಹೇಮಕೇಲಿ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ. ಹೇಮವರ್ಣ: ಕೇಲಿಯಸ್ಯ ।

ಹೆಮಕೇಶ ಹೇಮಕೇಶ (ಪುಂ) ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ.

ಹೆಮಕ್ಷೀರೀ ಹೇಮಕ್ಷೀರೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಘಂಟಾಮಣಿ ಸೊಪ್ಪು, ಕಂಕೋಷ್ಠ. ಹೇಮೇವ ಪೀತವರ್ಣಂ ಕ್ಷೀರಂ ನಿರ್ಯಾಸೋ ಯಸ್ಯಾ: ।

ಹೆಮಗಂಧಿನೀ ಹೇಮಗಂಧಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರೇಣುಕೆಯೆಂಬ ಒಂದು ಸುಗಂಧ ದ್ರವ್ಯ.

ಹೆಮಗ್ನ ಹೇಮಗ್ನ (ನಂ) ಸೀಸಲೋಹ. “ಯವನೇಷ್ಠಂ ಸಮೋಲಕಂ ಹೇಮಗ್ನಂ ಭೂತಲೋದ್ಭವಮ್” ವೇಜಂ ।

ಹೆಮಚಂದ್ರ ಹೇಮಚಂದ್ರ (ಪುಂ) ನಿಘಂಟುಕಾರನಾದ ಒಬ್ಬ ಜೈನ ಕವಿ. [ಈತನ ಗ್ರಂಥಗಳು ಮತ್ತು ಜೀವನಚರಿತ್ರೆಯ ವಿವರಕ್ಕೆ ಪರಿಶಿಷ್ಟ II ರಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಹೆಮಜ್ವಾಲ ಹೇಮಜ್ವಾಲ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿ. ಹೇಮವರ್ಣಾ ಜ್ವಾಲಾಸ್ಯ ।

ಹೆಮದುಗ್ಧಕ ಹೇಮದುಗ್ಧಕ (ಪುಂ) ಉದುಂಬರ ವೃಕ್ಷ, ಅತ್ತಿಮರ. ಹೇಮವರ್ಣಂ ದುಗ್ಧಮಸ್ಯ । “ತದುಂಬರೋ ಜನ್ತುಫಲೋ ಯಶಾಙ್ಗೋ ಹೇಮದುಗ್ಧಕ:” ಅಮಂ ।

ಹೆಮಧಾರಣ ಹೇಮಧಾರಣ (ನಂ) ಎಂಟು ಪಲಗಳ ಚಿನ್ನದ ತೂಕ. “ಧಾರಣಂ ತು ಪಲಾನ್ಯಷ್ಟೋ ಹೇಮಸ್ತಾತ್ರಸ್ಯ ಸಪ್ತತಿ:” ವೇಜಂ ।

ಹೆಮದುಗ್ಧಾ ಹೇಮದುಗ್ಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಘಂಟಾಮಣಿ ಸೊಪ್ಪು. ಹೇಮವರ್ಣಂ ದುಗ್ಧಂ ನಿರ್ಯಾಸೋಽಸ್ಯಾ: । —ಕುಳಿ —ದುಗ್ಧೀ.

ಹೇಮನ್ ಹೇಮನ್ (ನಂ) 1. ಸುವರ್ಣ, ಚಿನ್ನ, ಬಂಗಾರ. ಹಿನೋತಿ — ಹಿ (ಗತೌ ವೃದ್ಧೌ ಚ) “ಮನಿನ್” (ತಂ ೪-೧೪೪) । “ಹೇಮನ: ಸಂಲಕ್ಷ್ಯತೇ ಹ್ಯಗ್ನೋ ವಿಶುದ್ಧಿ: ಕ್ಷಾಮಿಕಾಪಿ ವಾ” ರಘುಂ ೧-೯ । 2. ದತ್ತಾಂಶಿ ಗಿಡ. “ಹೇಮ-ನಾಮಕತರಸಸೇವೇನ ತ್ರ್ಯಮ್ಬಕಸ್ತದ್ವಿಪಕಲ್ಪಿತಪೂಜ: । ಆತ್ತಯಾ ಯುಧಿ ವಿಜಿತಯ ರತೀಶಂ ರಾಜಿತ: ಕುಸುಮಕಾಹಲಯೇವ” ನೆಪಂ ೨೧-೩೪ । 3. ಹಿಮ. (ಪುಂ) 4. ಬುಧಗ್ರಹ. “ಕುಳಿ ಹೇಮಾ ರಾಜಪುತ್ರ ಏಕದೇಹ: ಪ್ರಹರ್ಷಣ:” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಹೇಮಂತ ಹೇಮಂತ (ಪುಂ) ಹೇಮಂತ ಋತು, ವಸಂತ ಮೊದಲಾದ ಆರು ಋತುಗಳಲ್ಲೊಂದು ಋತು, ಮಾರ್ಗಶಿರ-

ಪುಷ್ಯ ಮಾಸಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಋತು. ಹಂತಿ ಲೋಕಾನ್ ಕೌತ್ಯೇನ—ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋ:) “ಜನ್” ಹಿರಾದೇಶ: ಮುಡಾಗಮಶ್ಚ (ತಂ ೩-೧೨೯) । ಗುಣ: (೭-೩-೮೪) ।

ಹೇಮಂತನಾಥ ಹೇಮಂತನಾಥ (ಪುಂ) ಕಪಿತ್ಥವೃಕ್ಷ. ಬೇಲದ ಮರ. ಹೇಮಂತೇ ನಾಥ್ಯತೇ—ನಾಥ್ ಕರ್ಮಂ “ಜನ್” (೩-೩-೧೯) ।

ಹೇಮಪರ್ವತ ಹೇಮಪರ್ವತ (ಪುಂ) ಸುಮೇರು ಪರ್ವತ, ಬಂಗಾರದ ಗಿರಿ. ಹೇಮಯ: ಪರ್ವತ: ।

ಹೇಮಪುಷ್ಪ ಹೇಮಪುಷ್ಪ (ಪುಂ) 1. ಅಶೋಕವೃಕ್ಷ. 2. ಲೋಧ್ರವೃಕ್ಷ. (ನಂ) 3. ಅಶೋಕವೃಕ್ಷ. 4. ದಾಸಿ ವಾಳದ ಹೂವು. “ಹೇಮಪುಷ್ಪಮಶೋಕೇಽಪಿ ಜಪಾಪುಷ್ಪೇ ನಪುಂಸಕಮ್” ಮೇದಿಂ ।

ಹೇಮಪುಷ್ಪಕ ಹೇಮಪುಷ್ಪಕ (ಪುಂ) 1. ಚಂಪಕ ವೃಕ್ಷ. ಸಂಪಿಗೆ ಮರ. 2. ಲೋಧ್ರವೃಕ್ಷ. ಹೇಮವರ್ಣಂ ಪುಷ್ಪಮಸ್ಯ । —ಪುಷ್ಪಿಕಾ —ಪುಷ್ಪಿಕಾ. ಕಾಡುಮಲ್ಲಿಗೆಯ ಒಂದು ವಿಧ. “ಸ್ಯಾದ್ವೇಮಪುಷ್ಪಿಕಾ ಯುಧ್ಯಾಮ್” ಮೇದಿಂ ।

ಹೇಮಪುಷ್ಪಿ ಹೇಮಪುಷ್ಪಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂಜಿಷ್ಠಿ.

ಹೇಮಮಾಲಾ ಹೇಮಮಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಯಮಧರ್ಮ ರಾಯನ ಪತ್ನಿ. 2. ಬಂಗಾರದ ಮಾಲೆ, ಚಿನ್ನದ ಸರ.

ಹೇಮಮಾಲಿನ್ ಹೇಮಮಾಲಿನ್ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. ಹೇಮೇವ ಕಿರಣಾನಾಂ ಮಾಲಾಸ್ಯಾಸ್ತಿ — ಮಾಲಾ “ಇನಿ:” (೪-೨-೧೧೬) ।

ಹೇಮಯುಧಿಕಾ ಹೇಮಯುಧಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ವಿಧ ಕಾಡುಮಲ್ಲಿಗೆ. ಹೇಮವರ್ಣಾ ಯುಧಿಕಾ ।

ಹೇಮರಾಗಿನಿ ಹೇಮರಾಗಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹರಿದ್ರೆ, ಅರಿಶಿನ. “ವರ್ಷಣಿ ಹೇಮರಾಗಿನೀ ಹರಿದ್ರಾ ಪೀತವಾಲ್ಮುಕಾ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಹೇಮಲ ಹೇಮಲ (ಪುಂ) 1. ಸ್ವರ್ಣಕಾರ, ಅಕ್ಕಸಾಲಿಗ. ಚಿನ್ನದ ಒಂದು ಭಾಗವನ್ನು ತೆಗೆದಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವವನು. ಹೇಮ ತದಂಶಂ ಲಾತಿ — ಲಾ (ಆದಾನೇ) “ಕ:” (೩-೨-೩) । 2. ಕೃಕಲಾಸ, ಹಿತಿಕೇತ. 3. ಬರೆಗಲ್ಲು. “ಹೇಮಲ: ಸ್ವರ್ಣ-ಕಾರೇ ಸ್ಯಾತ್ ಕೃಕಲಾಸೇ ಶಿಲಾಂತರೇ” ಮೇದಿಂ ।

ಹೇಮಶಕ್ಷ ಹೇಮಶಂಖ (ಪುಂ) ಸ್ವರ್ಣದ ಶಂಖವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ವಿಷ್ಣು.

ಹೇಮಶಿಖಾ ಹೇಮಶಿಖಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಘಂಟಾಮಣಿ ಸೊಪ್ಪು, ಕಂಕೋಷ್ಠ. ಹೇಮವರ್ಣಾ ಶಿಖಾಸ್ಯಾ: ।

ಹೇಮಸಾರ ಹೇಮಸಾರ (ನಂ) ಮೈಲತುತ್ತು. ಹೇಮ ಸಾರಯತಿ — ಸೃ (ಗತೌ) + ಣಿನ್ “ಅನ್” (೩-೨-೧) । “ತುತ್ಯಕೇ ತು ಶಿಖಿಗ್ರೀವಂ ಹೇಮಸಾರಂ ಮಯೂರಕಮ್” ರಸಘಂ ।



ಹೈಮ ಹೈಮ (ಪುಂ) 1. ಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. "ಹೈಮೋ ಹೈಮಕರೋ  
ಯಜ್ಞಃ ಸರ್ವಧಾರಿ ಪರೋತ್ತಮಃ" ಭಾಂ. ಮಹಾಪ್ರಾಂ. 2. ಸ್ವರ್ಗದೇವ.



(ನಂ) 3. ಮುಂಜಾನೆಯ ಮಂಜಿನ ಜಲ. (ವಿಂ) 4. ಹಿಮದಿಂದ ಉಂಟಾದ. "ಲಘಾಂತರಾ ಸಾವರಣೇಽಪಿ ಗೌಹೇ ಯೋಗಪ್ರಭಾವೋ ನ ಚ ಲಕ್ಷಯತೇ ತೇ | ವಿಭರ್ಷಿ ಚಾಕಾರಮನಿವೃತ್ತಾಂ ಮೃಣಾಲಿನಿ ಹೈಮಮಿವೋಪರಾಗಮ್" ರಘುಂ ೧೬-೭ | 5. ಸ್ವರ್ಣಮಯವಾದ, ಬಂಗಾರದಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ. "ತೀರ್ಯ-ಗ್ವಿಸಂಸರ್ಪಿನಃ ಪ್ರಭೇಣ ಪಾದೇನ ಹೈಮಂ ವಿಲಿಲೇಷ ಪೀಠಮ್" ರಘುಂ ೬-೧೫ | 6. ಹಿಮದಲ್ಲಿರುವ.

ಹೈಮನ ಹೈಮನ (ಪುಂ) 1. ಮರ್ಯಾದೆರ ಮರ್ಯಾ. (ಪುಂ) 2. ಹೇಮಂತ ಋತು. (ವಿಂ) 3. ಹೇಮಂತ ಋತುವಿಗೆ ಅನುಕೂಲವಾದ. ಹೈಮಂತೇ ಸಾಧು: — ಹೈಮಂತ "ಅನ್" ವಾ ತಲೋಪಶ್ಚ (೪-೩-೨೨) | "ಜಹ್ನು ರಾಘವನಮೋಕ್ಷಲೋಪಂ ಹೈಮನೇನಿವಸನೇ: ಸುಮಧ್ಯಮಾ:" ರಘುಂ ೧೯-೪೧ | 4. ಹೇಮಂತ ಋತುವಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. ಹೈಮಂತೇ ಜಾತ: | 5. ಹೇಮಂತ ಋತುವಿನಲ್ಲಿರುವ. "ಅಭ್ಯುತ್ಥಿತಸ್ಯಾದ್ರಿಪತೇನಿತಮ್ಬಮಕಸ್ಯ ಪಾದಾ ಇವ ಹೈಮನಸ್ಯ" ಕಿರಾಂ ೧೭-೧೨ | 6. ಹೇಮಂತ ಋತು ಸಂಬಂಧವಾದ. ಹೈಮಂತಸ್ಯೇದಮ್ | ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೫) | —ಮನಿ—ಮನೀ. "ಪ್ರೇಮ್ನಾ ಮನ:ಸು ರಜನಿ-ಷ್ವಪಿ ಹೈಮನೀಷು ಕೇ ಶೇರತೇ ಸಮ ರಸಹಾಸವತೋಪಿತೇನ" ಮಾಘಂ ೬-೭೭ | ತಲೋಪಾಭಾವೇ ಹೈಮಂತಮ್ ಹೈಮಂತಮ್.

ಹೈಮಂತ ಹೈಮಂತ (ಪುಂ) 1. ಹೇಮಂತ ಋತು. ಹೈಮಂತ "ಅನ್" (೪-೩-೧೬) | (ವಿಂ) 2. ಹೇಮಂತ ಋತು ಸಂಬಂಧವಾದ. ಹೈಮಂತಸ್ಯೇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) |

ಹೈಮಂತಿಕ ಹೈಮಂತಿಕ (ನಂ) 1. ಶಾಲಿಧಾನ್ಯ, ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯುವ ಬತ್ತ ಮೊದಲಾದ ಧಾನ್ಯ. (ವಿಂ) 2. ಹೇಮಂತ ಋತುವಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. —ಹುಟ್ಟಿದ.

ಹೈಮವತ ಹೈಮವತ (ಪುಂ) 1. ಒಂದು ವಿಧ ವಿಷ. 2. ಒಂದು ದೇಶ. ಹೈಮವತೋದ್ಭವೋ ದೇಶ: "ಅನ್" (೪-೨-೭೦) | (ನಂ) 3. ಭಾರತವರ್ಷ. (ವಿಂ) 4. ಹಿಮವತ್ ಪರ್ವತ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಹೈಮವತ: ಇದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) | ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೫) | —ವತೀ—ವತೀ.

ಹೈಮವತೀ ಹೈಮವತೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಹಿಮವಂತನ ಪುತ್ರಿ ಯಾದ ಪಾರ್ವತಿ. ಹೈಮವತ: ಅಪತ್ಯಂ ಸ್ತ್ರೀ—ಹೈಮವತ್ "ಅನ್" (೪-೧-೯೨) | "ಜಿಪ್" (೪-೧-೧೫) | 2. ಗಂಗಾನದಿ. ಹೈಮವತ: ಪ್ರಭವತಿ ಪ್ರಥಮಂ ಪ್ರಕಾಶತೇ—ಹೈಮವತ್ "ಅನ್" (೪-೩-೮೩) | ಹೈಮವತ: ಪ್ರಭವತಿ ಹೈಮವತೀ ಗಜ್ಞಾ ಸಿಂ ಕೌಂ | 3. ಸ್ವರ್ಣಕ್ಷೀರೀ, ಫುಟಾಮಣಿ ಸೊಪ್ಪು. 4. ಬಿಳಿಯ ಬಣ್ಣ. 5. ಅಳಲೆ ಗಿಡ. "ಹೈಮವತ್ಯದ್ವಿಜಾ ಸ್ವರ್ಣಕ್ಷೀರೀ ಸುಕಲವಚಾಽಭಯಾ" ಹೈಮಂ | 6. ಹೊಂಬಣ್ಣದ

ದ್ರಾಕ್ಷ. 7. ಅಗಸೆ ಗಿಡ. 8. ರೇಣುಕೆಯೆಂಬ ಗಂಧ ದ್ರವ್ಯ. "(ವಚಾ) ಶುಕ್ಲಾ ಹೈಮವತೀ" ಅಮಂ |

ಹೈಯಜ್ಞವೀನ ಹೈಯಂಗಳವೀನ (ನಂ) ಸದ್ಯ: ಕಡೆದ ಬೆಣ್ಣೆ, ಮೊದಲದಿನದ ಹಾಲಿನಿಂದ ಕಡೆದ ಬೆಣ್ಣೆ, ನವನೀತ. ಹೈ-ಗೋದೋಹೋದ್ಭವಮ್—ಹೈಗೋದೋಹ—ಹೈಯಜ್ಞಗುರಾದೇಶ: ವಿಕಾರಾಞ್ "ಖನ್" ಚ ನಿಪಾಂ (೪-೨-೨೩) | "ಹೈಯಜ್ಞವೀನಮಾದಾಯ ಧೋಷವೃದ್ಧಾನುಪಸ್ಥಿತಾನ್ | ನಾಮಧೇಯಾನಿ ಪುಂಚಂತೀ ವನ್ಯಾನಾಂ ಮಾರ್ಗಶಾಖಿನಾಮ್" ರಘುಂ ೧-೪೫ |

ಹೈರಿಕ ಹೈರಿಕ (ಪುಂ) ಚೋರ, ಕಳ್ಳ, ತಸ್ಕರ. ಹೈರಮ್ ಆಸುರೀ ಮಾಯಾ ತಜ್ಜಾನಾತಿ "ಠಕ್" |

ಹೈಹಯ ಹೈಹಯ (ಪುಂ) ಕಾರ್ತವೀರ್ಯಾರ್ಜುನ, ಹೈಹಯ ದೇಶದ ದೊರೆ. ಹೈಹಯಾ: ತದೇಶವಾಸಿನ:—ತೇಷಾಂ ರಾಜಾ—ಹೈಹಯ "ಅನ್" (೪-೧-೧೬೬) | "ಧೇನುವತ್ಸಹರಣಾಚ್ಚ ಹೈಹಯಸ್ತ್ವಂ ಚ ಕೀರ್ತಿಮಪಹರ್ತುಮುಚ್ಯತ:" ರಘುಂ ೧೧-೭೪ |

ಹೊ ಹೋ (ಅವ್ಯಂ) 1. ಸಂಬೋಧನೆ. ಹೈಹಯೇ—ಹೈಹ (ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) ಡೋಪ್ರತ್ಯಯ: | 2. ಕರೆಯುವುದು. "ಹೇ ಹೇ ವ್ಯಸ್ತೀ ಸಮಸ್ತೀ ಚ ಹೃತಿಸಮ್ಬೋಧನಾರ್ಥಯೋ: | ಹೊ ಹೊ ವೈವಿಧ್ಯೋ ಜೇಯೋ ಸಮ್ಬುದ್ಧಾಹ್ವಾನಯೋರಪಿ" ವಿಶ್ವಂ | 3. ವಿಸ್ಮಯ, ಆಶ್ಚರ್ಯ. "ನನ್ ಹೊ ಮಥನಾ ರಾಘೋ ಧೋರಾ ನಾಥಮಹೋ ನು ನ" ಕಿರಾಂ ೧೫-೨೦ |

ಹೊಡ ಹೋಡ (ಪುಂ) ತಪ್ಪ, ನೀರನ್ನು ದಾಟಲು ಮರದ ದಿಮ್ಮಿಗಳಿಂದ ತಯಾರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ತೇಲು ಬಾಕಟ್ಟು. ಹೊಡತೆ ಗಚ್ಛತಿ—ಹೊಡ್ (ಗತೌ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪) |

ಹೊಡ್ ಹೋಡ್ (ಪುಂ) ತಸ್ಕರ, ಕಳ್ಳ, ಚೋರ.

ಹೊತ್ ಹೋತ್ (ಪುಂ) 1. ಮುಗ್ಧವಾದವನ್ನು ತಿಳಿದ ಮುತ್ಸಿಕು. ಜುಹೋತಿ—ಹು (ದಾನಾದನಯೋ:) "ತನ್" (೩ಂ ೨-೯೫) | (ವಿಂ) 2. ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರ ಮಾಡುವವನು, ಹೋಮ ಮಾಡುವವನು. "ಇತಿ ವಾದಿನ ಏವಾಸ್ಯ ಹೋತುರಾಹುತಿ-ಸಾಧನಮ್ | ಅನಿನ್ದಾ ನಂದಿನಿ ನಾಮ ಧೇನುರಾವವೃತೇ ವನಾತ್" ರಘುಂ ೧-೮೨ | ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) | "ಯಾ ಸೃಷ್ಟಿ: ಸೃಷ್ಟುರಾಘಾ ವಹತಿ ವಿಧಿಹೃತಂ ಯಾ ಹವಿರ್ಯಾ ಚ ಹೋತ್ರೀ" ಶಾಕುಂ ೧-೧ | ಹೋತ್ರೀ ಯಜಮಾನರೂಪಾ |

ಹೋತ್ರ ಹೋತ್ರ (ನಂ) 1. ಅಜ್ಜ (ತುಪ್ಪ) ಮೊದಲಾದ ಹವಿಸ್ಸು. ಹೈಹಯೇ—ಹು (ದಾನಾದನಯೋ:) "ತನ್" (೩ಂ ೪-೧೬೭) | 2. ಹೋಮ.

ಹೋತ್ರಿನ್ ಹೋತ್ರೀನ್ (ಪುಂ) ಹೋಮ ಮಾಡುವವನು, ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವವನು. ಹೋತ್ರಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೫) | ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೫) |



-ತ್ರಿ -ತ್ರಿ. ಯಜಮಾನರೂಪವಾದ ಪರಮೇಶ್ವರನ ಮೂರ್ತಿ. "ಯಾ ಹವಿರ್ಯಾ ಚ ಹೋತ್ರಿ" ಶಾಕ್ರುಂ ೧-೧. ಹೊಮ ಹೋಮ (ಪುಂ) ಒಂದು ಯಜ್ಞ, ಗೃಹಸ್ಥನು ಪ್ರತಿದಿನ ಆಚರಿಸಬೇಕಾದ ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞಗಳಲ್ಲೊಂದು, ದೇವ ಯಜ್ಞ. ಹವನಮ್ - ಹ (ದಾನಾದನಯೋಃ) "ಮನ್" (ಉಂ ೧-೧೩೭). ಪಂಚಮಹಾಯಜ್ಞಗಳು : (೧) ಬ್ರಹ್ಮಯಜ್ಞ : (ಅಧ್ಯಾಪನಮ್) (೨) ಪಿತೃಯಜ್ಞ : (ತರ್ಪಣಮ್) (೩) ದೇವಯಜ್ಞ : (ಹೊಮಃ) (೪) ಭೂತಯಜ್ಞ : (ಬಲಿಃ) ಮತ್ತು (೫) ನೃಯಜ್ಞ : (ಅತಿಥಿಪೂಜನಮ್) ।

ಹೊಮಕ ಹೋಮಕ (ಪುಂ) ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವವನು. ಹೊಮ ಸಂಜ್ಞಾಯಾಂ "ಕನ್" ।

ಹೊಮಕುಂಡ ಹೋಮಕುಂಡ (ನಂ) ಯಾಗದ ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಪ್ರತಿಷ್ಠೆ ಮಾಡಲು ನೆಲದಲ್ಲಿ ತೋಡಿರುವ ಗುಳಿ. ಹೊಮಾರ್ಥ ಕುಂಡಮ್ ।

ಹೊಮಧಾನ್ಯ ಹೋಮಧಾನ್ಯ (ನಂ) ತಿಲ, ಎಳ್ಳು.

ಹೊಮಶಾಲಾ ಹೋಮಶಾಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಜ್ಞಶಾಲೆ.

ಹೊಮಾಗ್ನಿ ಹೋಮಾಗ್ನಿ (ಪುಂ) ಯಾಗಕ್ಕಾಗಿ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿಸುವ ಅಗ್ನಿ.

ಹೊಮಿ ಹೋಮಿ (ಪುಂ) ೧. ಅಗ್ನಿ. ಹೃಯತೇ ಅಸ್ಮಿನ್ - ಹ (ದಾನಾದನಯೋಃ) "ಇನ್" ಮುಡಾಗಮಶ್ಚ । ೨. ಫೃತ, ಅಜ್ಯ, ತುಪ್ಪ. ಹೃಯತೇಜೇನ - ಹ "ಇನ್" ಮುಡಾಗಮಶ್ಚ । "ಹೊಮಿನಾಂ ಪಾವಕೇ ಧೃತೇ" ಮೇದಿಂ । ೩. ಜಲ, ನೀರು.

ಹೊಮಿನ್ ಹೋಮಿನ್ (ಪುಂ) ಹೋಮಮಾಡುವವನು, ಅಗ್ನಿಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವವನು. ಹೊಮೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ - ಹೊಮ "ಇನಿಃ" (೪-೨-೧೧೪) । ಜುಹೋತಿ - ಹ (ದಾನಾದನಯೋಃ) "ಮಿನಿಃ" (ಉಂ ೩-೮೪) । ಇತಿ ನಿಪಾಂ ಇತಿ ವಾ ।

ಹೊಮ್ಯ ಹೋಮ್ಯ (ನಂ) ೧. ಫೃತ, ತುಪ್ಪ. ಹೊಮಾಯ ಹಿತಮ್ - ಹೊಮ "ಯತ್" (೪-೧-೪) । ೨. ಹೋಮದ ದ್ರವ್ಯ, ಹೋಮಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ ಮತ್ತು ಹೋಮ ಸಂಬಂಧವಾದ ದ್ರವ್ಯ.

ಹೊರಾ ಹೋರಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ೧. ಅಗ್ನಿ, ಮೇಷ ವೃಷಭ ಮೊದಲಾದ ರಾಶಿಗಳ ಉದಯ. ಹೃಯತೇ - ಹ (ಹಿಸಾ-ಸಂವರಣಯೋಃ) "ಘ" (೩-೩-೧೯) । ರಲ್ಯೋರಭೇದಃ । ೨. ರಾಶಿಯ ಅರ್ಧಭಾಗ. ೩. ರೇಖೆ, ಗೆರೆ, ಒಂದು ಗುರುತು. ೪. ಒಂದು ಜ್ಯೋತಿಷಶಾಸ್ತ್ರ. "ಹೊರಾ ಲಗನಾಪಿ ರಾಶ್ಯರ್ಥೇ ರೇಖಾಶಾಸ್ತ್ರಾಭಿದೋರಪಿ" ಮೇದಿಂ ।

ಹೊಲಕ ಹೋಲಕ (ಪುಂ) ಅರ್ಧ ಹುರಿದಿರುವ ಶಮೀಧಾನ್ಯ, ಹುಲ್ಲಿನ ಕಾವಿನಲ್ಲಿ ಅರ್ಧಮಾತ್ರ ಹುರಿದಿರುವ ಉದ್ದು

ಕಡಲೆ ಮೊದಲಾದ ಸಿಪ್ಪೆಯ ಧಾನ್ಯ. "ಅರ್ಧಪಕ್ವಃ ಶಮೀ-ಧಾನ್ಯಃ ತೃಣಭ್ರಷ್ಟಶ್ಚ ಹೊಲಕಃ । ಹೊಲಕೋಲ್ಪಾನಿಲೋ ಮೇದಃ ಕಫದೋಷಶಮಾಪಹಃ ॥ ಭವೇದ್ಯೋ ಹೊಲಕೋ ಯಸ್ಯ ಸ ಚ ತತ್ತದ್ಗುಣೋ ಭವೇತ್" ಭಾವಪ್ರಂ ।

ಹೊಲಾಕಾ ಹೋಲಾಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಸಂತೋತ್ಸವ, ಹೋಲಿ ಹಬ್ಬ. ಹ (ದಾನಾದನಯೋಃ) "ವಿ" (೩-೨-೭೪) । ಹುಂ ಲಾತಿ - ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಕಃ" (೩-೨-೩) । ಸಂಜ್ಞಾಯಾಂ ಕನ್ ।

ಹೊಹಿ ಹೋಹಿ (ಅವ್ಯಂ) ೧. ಸಂಜೋರ್ಧನ. ಹೃಯತೇಜೇನ - ಹ "ಹಿಃ" । ೨. ಆಹ್ವಾನ, ಕರೆಯುವುದು. "ಹೇಹೇ ಸಮ್ಬೋಧನೇ ಹೃತೀ ಹೊಹಿ ಶಬ್ದೌ ತರ್ಪತಯೋಃ" ಮೇದಿಂ ।

ಹೊತುಕ ಹೊತುಕ (ವಿಂ) ಹೋತೃವಿನಿಂದ ಬಂದ, ಹೋತೃ ಸಂಬಂಧವಾದ. ಹೊತುರಾಗತಮ್ - ಹೊತು "ತು" (೪-೩-೭೮) ।

ಹೊತ್ರ ಹೊತ್ರ (ವಿಂ) ಹೋತೃಸಂಬಂಧವಾದ. ಹೊತುರಿದಮ್ "ಅನ್" (೪-೩-೧೨೦) ।

ಹ್ಲವ ಹ್ಲವ (ಪುಂ) ಮುಚ್ಚಿಡುವುದು, ಮರೆಮಾಚುವುದು, ಬಚ್ಚಿಡುವುದು. ಹ್ಲವ (ಅಪನಯನೇ) "ಘ" (೩-೩-೧೮) ।

ಹ್ಲತಿ ಹ್ಲತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಚ್ಚಿಡುವುದು, ಬಚ್ಚಿಡುವುದು, ಮರೆಮಾಚುವುದು. ಹ್ಲವ (ಅಪನಯನೇ) "ಕ್ಲಿನ್" (೩-೩-೯೪) ।

ಹ್ಲಾಲ-ಚಲನೇ (ಭವಾಂ ಪರಂ ಅಕಂ ಸಂ) । ಹ್ಲಾಲತಿ । ಜಹ್ಲಾಲ । ಹ್ಲಾಲಿತಾ । ಹ್ಲಾಲಿಷ್ಯತಿ । ಹ್ಲಾಲತು । ಅಹ್ಲಾಲತ್ । ಇತ್ಯಾದಿ. ಚಲಿಸು.

ಹ್ಲಸ್ತುಃ - ಹ್ಲಾಲಿತವ್ಯಮ್ । ಹ್ಲಾಲನೀಯಮ್ । ಹ್ಲಾಲಿತಃ । ಹ್ಲಾಲಿತವತ್ । ಹ್ಲಾಲತ್ । ಹ್ಲಾಲಿತಮ್ । ಹ್ಲಾಲನಮ್ ।

ಹ್ಲಸ್ ಹ್ಲಸ್ (ಅವ್ಯಂ) ಕಳೆದ ದಿನ, ಹಿಂದಿನ ದಿನ, ನಿನ್ನೆಯ ದಿನ. ಯಾತಮಹಃ ಪೃಷೋಂ । "ಹ್ಯೋಜ್ಞೀತೇ (ಅಹನಿ)" ಅಮಂ ।

ಹ್ಲಸ್ತನ ಹ್ಲಸ್ತನ (ವಿಂ) ನಿನ್ನೆಯ ದಿನದ, ನಿನ್ನೆ ದಿನ ನಡೆದ. ಹ್ಯೋ ಭವಮ್ - ಹ್ಲಸ್ "ಠ್ಯುಃ" (೪-೩-೨೩) ।

ಹ್ಲಸ್ತಸ್ಯ ಹ್ಲಸ್ತಸ್ಯ (ವಿಂ) ನಿನ್ನೆಯ ದಿನದ, ನಿನ್ನೆ ದಿನ ನಡೆದ. ಹ್ಯೋ ಭವಮ್ "ತ್ಯಪ್" ವಾ (೪-೨-೧೦೪) । ಪಕ್ಷೇ ಹ್ಲಸ್ತನಮ್ ಹ್ಲಸ್ತನಮ್ ।

ಹ್ಲಣಿಯಾ ಹ್ಲಣೀಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಿಂದೆ, ಅಕ್ಷೇಪಣೆ, ದೋಷಾ ರೋಪಣೆ.

ಹ್ಲದ ಹ್ಲದ (ಪುಂ) ನೀರಿನ ಮಡು, ಆಳವಾದ ನೀರಿನ ಮಡು, ಬಹಳ ಆಳವಾದ ಜಲಾಶಯ. ಹ್ಲಾದತೇ ಹ್ಲಾದ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಲಬ್ಧೇ) "ಅ" (೩-೧-೧೩೪) । ಪೃಷೋಂ । "ಹ್ಲದೇ ಗಮೀರೇ ಹ್ಲದಿ ಚಾವಗಾಢೇ ಷಂಸಂತಿ ಕಾರ್ಯಾವಿತರೇ ಹಿ ಸಂತಃ" ನೈಷಂ ೩-೪೩ ।



ಹ್ರದ್ರಹ ಹ್ರದ್ರಹ (ಪುಂ) ಮೊಸಳೆ. ಹ್ರದ್ರಹ ಪ್ರಹಃ |  
ಹ್ರದಿನಿ ಹ್ರದಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನದಿ, ಹೊಳೆ. ಹ್ರದೋಽಸ್ಯಾ  
ಅಸ್ತಿ "ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) | "ಜಿಪ್" (೪-೧-೪) |  
"ತತ್ಕೃತ್ಯೇತಿವಿಷಯೇವಿಲೋಲಜಿಹ್ಮಮುಚ್ಚಾಟಯಿಷ್ಯದುರಗಂ  
ವಿಹರನ್ ಹ್ರದಿನ್ಯಾಮ್" ಭಾಗಂ ೨-೭-೨೮ |

ಹ್ರಸಿಮನ್ ಹ್ರಸಿಮನ್ (ಪುಂ) ಹ್ರಸ್ವವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಚಿಕ್ಕದಾಗಿ  
ರುವಿಕೆ, ತುಂಡಾಗಿರುವಿಕೆ. ಹ್ರಸ್ವಸ್ಯ ಭಾವಃ ವಾ "ಇಮನಿಚ್"  
(೪-೧-೧೨೨) | ವಕಾರಸ್ಯ ಲೋಪಃ (೬-೪-೧೪೬) |

ಹ್ರಸಿಠ ಹ್ರಸಿಠ (ವಿಂ) ಬಹಳ ಹ್ರಸ್ವವಾಗಿರುವಿಕೆ, ಬಹಳ  
ಚಿಕ್ಕದಾಗಿರುವಿಕೆ, ಬಹಳ ತುಂಡಾಗಿರುವಿಕೆ. ಅಯಮೇಷಾಮ್  
ಅತಿಶಯೇನ ಹ್ರಸ್ವಃ—ಹ್ರಸ್ವ "ಐಠನ್" (೪-೩-೪೪) |  
ವಕಾರಸ್ಯ ಲೋಪಃ (೬-೪-೧೪೬) |

ಹ್ರಸೀಯಸ್ ಹ್ರಸೀಯಸ್ (ವಿಂ) ಸ್ವಲ್ಪ ಚಿಕ್ಕದಾಗಿರುವ,  
ಎರಡು ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ವಲ್ಪ ತುಂಡಾಗಿರುವ ಒಂದು  
ವಸ್ತು. ಅಯಮನಯೋರತಿಶಯೇನ ಹ್ರಸ್ವಃ—ಹ್ರಸ್ವ "ಐಯುನ್"  
(೪-೩-೪೭) | ವಕಾರಲೋಪಃ (೬-೪-೧೪೬) |

ಹ್ರಸ್ವ ಹ್ರಸ್ವ (ಪುಂ) 1. ವಾಮನ, ಕುಳ್ಳಿ, ಗಿಡ್ಡ. ಹ್ರಸ  
(ಶಬ್ದ) "ವಃ" ಬಾಹುಂ | 2. ಏಕಮಾತ್ರಕಾಲದಲ್ಲಿ  
ಉಚ್ಚರಿಸಬಹುದಾದ ಸ್ವರಮಾರ್ಗ. "ಏಕಮಾತ್ರೋ ಭವೇತ್ಸ್ರವಃ" |  
(ನಂ) 3. ಸಣ್ಣ ಪ್ರಮಾಣ, ಸಣ್ಣ ಅಳತೆ. "ಅನುದೀರ್ಘ  
ಮಹದ್ರಸ್ವಮ್" | (ವಿಂ) 4. ಚಿಕ್ಕದಾಗಿರುವ, ತುಂಡಾಗಿ  
ರುವ. ಸಣ್ಣದಾದ, ಪುಟ್ಟದಾದ.

ಹ್ರಸ್ವಗವೇಧುಕಾ ಹ್ರಸ್ವಗವೇಧುಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಬೋಳೆ  
ಗಡಲೆ. 2. ಹೀರೆ ಗಿಡ.

ಹ್ರಸ್ವದರ್ಭ ಹ್ರಸ್ವದರ್ಭ (ಪುಂ) ಬಿಳಿಯ ದರ್ಭೆ.  
ಹ್ರಸ್ವಫಲಾ ಹ್ರಸ್ವಫಲಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಂಬುವೃಕ್ಷ, ನೇರಿಳೆ  
ಮರ.

ಹ್ರಸ್ವಮೂಲ ಹ್ರಸ್ವಮೂಲ (ಪುಂ) ಕೆಂಪುಜಾತಿಯ ಕಬ್ಬು.  
ಹ್ರಸ್ವಾ ಹ್ರಸ್ವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಕಾಡುಹೆಸರಿನ ಗಿಡ. 2.  
ಬೋಳೆಗಡಲೆ. 3. ಹೀರೆ ಗಿಡ. 4. ಗಿಡ್ಡ ಹೆಂಗಸು,  
ಕುಳ್ಳಿ ಹೆಂಗಸು.

ಹ್ರಸ್ವಾಗ್ನಿ ಹ್ರಸ್ವಾಗ್ನಿ (ಪುಂ) ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ, ಎಕ್ಕದೆ ಗಿಡ.  
ಹ್ರಸ್ವೋರ್ಜನರಸ್ಮಾತ್ |

ಹ್ರಸ್ವಾಙ್ಗ ಹ್ರಸ್ವಾಙ್ಗ (ಪುಂ) ವಾಮನ, ಕುಳ್ಳಿ, ಗಿಡ್ಡ.  
ಹ್ರಸ್ವಾನ್ಯಜ್ಞಾನಿ ಯಸ್ಯ |

ಹ್ರಾದ ಹ್ರಾದ (ಪುಂ) 1. ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ. ಹ್ರಾದ (ಅವ್ಯಕ್ತ  
ಶಬ್ದ) "ಘ್ರ" (೩-೩-೧೮) | "ಸತ್ತ್ವಭೃಂಗಾದಿವ  
ಮುಚ್ಚಿತಾನಿ ಹ್ರಾದ ನಿಗುಹಂತಿ ನ ದುಂದುಮೀನಾಮ್" ಕಿರಾಂ

೧೬-೮ | "ಹ್ರಾದೇನ ಗಜಘಟಾನಾಂ ಶಕ್ತಾನಾಂ ನಿರ್ದೇನ ಚ"  
ಶಾಂ ದ್ರೋಣಂ | 2. ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವಿನ ಒಬ್ಬ ಮಗ.

ಹ್ರಾದತ್ ಹ್ರಾದತ್ (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ,  
ಗರ್ಜಿಸುತ್ತಿರುವ. ಹ್ರಾದ (ಅವ್ಯಕ್ತ ಶಬ್ದ) "ಶತ್"  
(೩-೨-೧೨೪) | 2. ಅರಚುತ್ತಿರುವ, ಗದ್ದಲಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಜಿಪ್" (೪-೧-೬) | -ಸ್ತೀ -ಸ್ತೀ.

ಹ್ರಾದನ ಹ್ರಾದನ (ನಂ) 1. ಶಬ್ದಮಾಡುವುದು, ಗರ್ಜಿಸು  
ವುದು. ಹ್ರಾದ (ಅವ್ಯಕ್ತ ಶಬ್ದ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೪) |  
2. ಅರಚುವುದು, ಕಿರಿಚುವುದು, ಗದ್ದಲಮಾಡುವುದು.  
(ವಿಂ) 3. ಶಬ್ದಮಾಡುವ, ಗರ್ಜಿಸುವ, ಭೋಗರ್ಥ  
ಯುವ. ಹ್ರಾದ "ಲ್ಯು:" (೩-೧-೧೩೪) |

ಹ್ರಾದನೀಯ ಹ್ರಾದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದಮಾಡಬೇಕಾದ.  
2. ಶಬ್ದಮಾಡಬಹುದಾದ. ಹ್ರಾದ (ಅವ್ಯಕ್ತ ಶಬ್ದ)  
"ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೬) | "ತಯಃ" (೩-೧-೧೬) |  
ಹ್ರಾದಿತವ್ಯಃ ಹ್ರಾದಿತವ್ಯಃ.

ಹ್ರಾದಿತ ಹ್ರಾದಿತ (ವಿಂ) 1. ಅವ್ಯಕ್ತ ಶಬ್ದಮಾಡಿದವನು.  
ಹ್ರಾದ (ಅವ್ಯಕ್ತ ಶಬ್ದ) "ಕ್ರಃ" (೩-೪-೭೨) | 2. ಅರಚಿದ,  
ಕಿರಿಚಿದ. (ನಂ) 3. ಶಬ್ದಮಾಡುವುದು. 4. ಅರಚು  
ವುದು, ಕಿರಿಚುವುದು.

ಹ್ರಾದಿನ್ ಹ್ರಾದಿನ್ (ವಿಂ) ಶಬ್ದದಿಂದ ಕೂಡಿದ, ಶಬ್ದ  
ಮಾಡುವ, ಸದ್ದುಮಾಡುವ. ಹ್ರಾದೋಽಸ್ಯಾಸ್ತಿ—ಹ್ರಾದ  
"ಇನಿ:" (೪-೨-೧೧೪) | "ಯಾಃ ಪञ್ಚಶತಾಶ್ಚಾನ್ಯ  
ಹ್ರಾದಿನಶ್ಚ ಸುರ್ವಮಿಣಃ" ಶಾಂ ಕರ್ಣಂ |

ಹ್ರಾದಿನಿ ಹ್ರಾದಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧ.  
ಹ್ರಾದೇ—ಹ್ರಾದ (ಅವ್ಯಕ್ತ ಶಬ್ದ) "ಗಿಢಿ:" (೩-೨-೭೮) |  
"ಹ್ರಾದಿನಿ ವಜ್ರಮಸ್ತ್ರೀ ಸ್ಯಾತ್" ಅಮಂ | 2. ವಿಮೃತ್ತ,  
ಮಿಂಚು. "ಹ್ರಾದಿನ್ಯ ಇವ ಮೇವೇಮ್ಯಃ ಶಲ್ಯಸ್ಯ ನ್ಯಪತನ್  
ಶರಾಃ" ಶಾಂ ಶಲ್ಯಂ | 3. ಸಲ್ಲಕಿವೃಕ್ಷ, ಅನೆಬೇಲ.  
"ಮಹೇರಣಾ ಕುಂದುಕೀ ಸಲ್ಲಕೀ ಹ್ರಾದಿನೀತಿ ಚ" ಅಮಂ |  
4. ನದಿ, ಹೊಳೆ. "ತಟಿನಿ ಹ್ರಾದಿನಿ ಧುನಿ" ಅಮಂ |  
"ಹ್ರಾದಿನಿ ವಜ್ರತಡಿತೋಃ" ಮೇದಿಂ |

ಹ್ರಾಸ ಹ್ರಾಸ (ಪುಂ) 1. ಶಬ್ದ, ಧ್ವನಿ, ಸದ್ದು. ಹ್ರಸ  
(ಶಬ್ದ) "ಘ್ರ" (೩-೩-೧೮) | 2. ಕಡಮೆಯಾಗು  
ವುದು, ಕ್ಷಯಹೊಂದುವುದು. "ಅನ್ಯೇ ಕೃತಯುಗೇ ಧರ್ಮಸ್ತೀತಾಯಾ  
ದ್ವಾಪರೇಽಪರೇ | ಅನ್ಯೇ ಕಲಿಯುಗೇ ನೃಣಾಂ ಯುಗಹ್ರಾಸಾನುರೂಪತಃ"  
ಮನುಂ ೧-೮೪ |

ಹ್ರಿಣಿಯಾ ಹ್ರಿಣೀಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಲಡ್ಡೆ, ನಾಚಿಕೆ  
2. ನೀದೆ, ಅಕ್ಷೇಪಣೆ, ದೋಷಾರೋಪ.



ಹಿ ಹ್ರೀ (ಸ್ತಂ) 1. ಲಜ್ಜೆ, ತಪ್ಪುಮಾಡಿದ ಅರಿವಿನಿಂದ ಉಂಟಾದ ನಾಚಿಕೆ, ಹಿಂಯರಲ್ಲಿ ಮರ್ಯಾದೆ ಮೀರಿ ನಡೆದುದರ ಜ್ಞಾನದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ನಾಚಿಕೆ. ಹಿ (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್) "ಕಿವ್" (ವಾಂ 3-3-94). "ತಂ ವಿಚಿಂತ್ಯ ವಿನಯವ್ಯಯಂ ಹಿವಾ ನ ಸ್ಮ ವೇದ ಕರವಾಣಿ ಕೀದೃಶಮ್" ನೆಪಂ 18-31. 2. ಲಜ್ಜೆ, ಅವಮಾನ, ನಾಚಿಕೆ. "ವಾಸರೇ ವಿರಹನಿ:ಸಹಾ ನಿಶಾಂ ಕಾಂತಸಂಕ್ರಮಯಂ ಸಮೇಹತ | ಸಾ ಹಿವಾ ನಿಶಿ ಪುನರಿದನೋದಯಂ ವಾಚ್ಛತಿ ಸ್ಮ ಪತಿಕೇಲಿಲಜ್ಜಿತಾ" ನೆಪಂ 18-44. 3. ಗಾಂಭೀರ್ಯ, ಗರ್ವವಿಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ.

ಹಿಹಾ ಹ್ರೀಹಾ (ಸ್ತಂ) 1. ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ. ಹಿ (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್) "ಕನ್" ದೀರ್ಘ: ರೇಫಸ್ಯ ವಾ ಲ: (ಉಂ 3-48). ಪಕ್ಷೆ ಹಿಹಾ ಹ್ರೀಹಾ. 2. ಲಜ್ಜೆ, ನಾಚಿಕೆ, ಅವಮಾನ.

ಹಿಹು ಹ್ರೀಹು (ಪುಂ) 1. ಮುಳ್ಳುಗಸೆಗಿಡ, ಸಾರಣೆಗಿಡ. 2. ಅಸಗು. (ವಿಂ) 3. ನಾಚಿಕೆಗೊಂಡವನು, ಲಜ್ಜೆಯುಂಟಾದವನು. ಹಿ (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್) "ಕುಕ್" ಛಾತೊ: ರೇಫಸ್ಯ ವಾ ಲ: (ಉಂ 3-49). ಪಕ್ಷೆ ಹಿಹು: ಹ್ರೀಹು.

ಹಿಜಿತ ಹ್ರೀಜಿತ (ವಿಂ) ಲಜ್ಜೆಯಿಂದ ಜಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನು. ಹಿವಾ ಜಿತ: |

ಹಿಣ ಹ್ರೀಣ (ವಿಂ) ಲಜ್ಜೆಯುಂಟಾದವನು, ನಾಚಿಕೆಗೊಂಡವನು. ಹಿ (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್) "ಹ:" (3-2-102). ವಾ "ನ:" (4-1-44). ಪಕ್ಷೆ ಹಿಣ: ಹ್ರೀಣ: "ಹಿಣಾ ಚ ಸಮಯಮಾನಾ ಚ ನಮಯಂತಿ ಪುನರ್ಮುಖಮ್ | ದಮಯಂತಿ ಮೃದೇ ಪಠ್ಯಕುರ್ವೇರಪ್ಯಭವತ್ತದಾ" ನೆಪಂ 20-42.

ಹಿಬೇರ ಹ್ರೀಬೇರ (ನಂ) ಮುಡಿವಾಳ.

ಹಿಮತ್ ಹ್ರೀಮತ್ (ವಿಂ) 1. ಲಜ್ಜೆಯುಳ್ಳವನು, ನಾಚಿಕೆಗೊಂಡವನು. ಹಿರಸ್ಯಾಸ್ತಿ—ಹಿ "ಮತುಪ್" (4-2-94). "ಬ್ರಿಡಮೇತಿ ನ ತವ ಪ್ರಿಯಂ ವದನ್ ಹಿಮತಾಶ್ಚಭವತೇವ ಭೂತೇ" ಮಾಘಂ 14-2. 2. ಸಂಕೋಚವುಳ್ಳವನು. "ಹಿಮಾನ-ಮದ್ಭೂಮಿಘರೋ ಹರೇಣ ಶೈಲೋಕವನ್ಧನೇನ ಕೃತಪ್ರಣಾಮ:" ಕುಮಾರಂ 6-44. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಹಿಪ್" (4-1-6). -ಮತೀ -ಮತೀ. "ಹಿಮತೀ ವ್ಯತರದುತ್ತರಂ ವಪು: ಪಾಣಿಪಶ್ಚುಹಿ ದರ್ಪಣಾರ್ಪಣಾಮ್" ನೆಪಂ 18-126.

ಹೇತವ್ಯ ಹ್ರೇತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಲಜ್ಜೆ ಪಡಬೇಕಾದ, ನಾಚಿಕೆ ಪಡಬೇಕಾದ. 2. ಲಜ್ಜೆ ಪಡುಹುದಾದ. 3. ನಾಚಿಕೆ ಪಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಹಿ (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್) "ತವ್ಯ:" (3-1-96). "ಅನೀಯರ್" (3-1-96). ಹ್ರಯಣೀಯ:

ಹೇಪಣ ಹ್ರೇಪಣ (ನಂ) ಲಜ್ಜೆಗೊಳಿಸುವುದು, ನಾಚಿಕೆಗೊಳಿಸುವುದು, ಅವಮಾನಪಡಿಸುವುದು. ಹಿ (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್) + ಣಿವ್ "ಲ್ಯಟ್" (3-3-114).

ಹೇಪಣೀಯ ಹ್ರೇಪಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ನಾಚಿಕೆಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ನಾಚಿಕೆಪಡಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. 3. ನಾಚಿಕೆಪಡಿಸಬೇಕಾದ. ಹಿ (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್) + ಣಿವ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96). "ತವ್ಯ:" (3-1-96). ಹೇಪಣಿತವ್ಯ: ಹ್ರೇಪಯಿತವ್ಯ:

ಹೇಪಯತ್ ಹ್ರೇಪಯತ್ (ವಿಂ) ಲಜ್ಜೆಯುಂಟುಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ನಾಚಿಕೆಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಹಿ (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್) + ಣಿವ್ "ಘತ್" (3-2-124). "ಹೇಪಯತಹಿಮತೇಜಸಂ ತ್ವಿವಾ ಸ ತ್ವಮಿತ್ಯಮುಪವತ್ಸಪೀಠಃ" ಕಿರಾಂ 13-41. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಹಿಪ್" (4-1-6). -ಯಂತಿ -ಯಂತೀ. "ಶಾನವ್" (3-2-124). ಹೇಪಯಮಾಣ: ಹ್ರೇಪಯಮಾಣ:

ಹೇಷಾ ಹ್ರೇಷಾ (ಸ್ತಂ) ಕುಂದುರೆಯ ಶಬ್ದ, ಕುಂದುರೆಯು ಕೊಗುವ ಶಬ್ದ, ಕುಂದುರೆಯ ಕೆನೆತ. ಹೇಷ್ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಅ:" (3-3-103). "ಕಶ್ಯಂ ತು ಮಕಯಮಶ್ವಾನಾಂ ಹೇಷಾ ಹೇಷಾ ಚ ನಿಶ್ವನ:" ಅಮಂ |

ಹ್ಲಾವ ಹ್ಲಾದ (ಪುಂ) ಆಹ್ಲಾದ, ಆನಂದ, ಸಂತೋಷ. ಹ್ಲಾದೀ (ಸುತೇ ಚ) "ವವ್" (3-3-18).

ಹ್ಲಾವನ ಹ್ಲಾದನ (ನಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡುವುದು, ಆನಂದ ಪಡುವುದು. ಹ್ಲಾದೀ (ಸುತೇ ಚ) "ಲ್ಯಟ್" (3-3-114). 2. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವುದು, ಆನಂದವುಂಟುಮಾಡುವುದು. ಹ್ಲಾದೀ + ಣಿವ್ "ಲ್ಯಟ್" (3-3-114). (ವಿಂ) 3. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವ, ಆನಂದವುಂಟುಮಾಡುವ. ಹ್ಲಾದೀ + ಣಿವ್ "ಲ್ಯು:" (3-1-134).

ಹ್ಲಾವನೀಯ ಹ್ಲಾದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡಿಸಬೇಕಾದ. ಹ್ಲಾದೀ (ಸುತೇ ಚ) + ಣಿವ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96). 2. ಸಂತೋಷಪಡಿಸಬಹುದಾದ. 3. ಸಂತೋಷಪಡಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. 4. ಸಂತೋಷಪಡಬಹುದಾದ. 5. ಸಂತೋಷಪಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. 6. ಸಂತೋಷಪಡಬೇಕಾದ. ಹ್ಲಾದೀ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96). "ತವ್ಯ:" (3-1-96). ಹ್ಲಾದಿತವ್ಯ: ಹ್ಲಾದಯಿತವ್ಯ: ಹ್ಲಾದಯಿತವ್ಯ:

ಹ್ಲಾವಮಾನ ಹ್ಲಾದಮಾನ (ವಿಂ) ಸಂತೋಷಪಡುತ್ತಿರುವ, ಆನಂದಪಡುತ್ತಿರುವ. ಹ್ಲಾದೀ (ಸುತೇ ಚ) "ಶಾನವ್" (3-2-124). ಹ್ಲಾದೀ + ಣಿವ್ "ಘತ್" (3-2-124). ಹ್ಲಾವಯತ್ ಹ್ಲಾದಯತ್, ಆನಂದಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ.



ಹಾಹಿತ ಹ್ಲಾದಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಟ್ಟಿರುವ. ಹ್ಲಾದಿ (ಸುಖೇ ಚ) "ಕ್" (3-4-92)। 2. ಸಂತೋಷವುಂಟಾಗಿರುವ. ಹ್ಲಾದೋಸ್ಯ ಸಂಜಾತ: "ಇತಕ್" (4-2-36)। 3. ಸಂತೋಷಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಹ್ಲಾದ + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

ಹ್ಲಾದಿನ್ ಹ್ಲಾದಿನ್ (ವಿಂ) 1. ಅನಂದವುಳ್ಳ, ಸಂತೋಷವುಳ್ಳ. ಹ್ಲಾದೋಸ್ಯಾಸ್ತಿ — "ಇನಿ:" (4-2-114)। 2. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವ. ಹ್ಲಾದಿ (ಸುಖೇ ಚ) + ಣಿಚ್ "ಣಿತಿ:" (3-1-134)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (4-1-4)। -ದಿನೋ -ದಿನೀ.

ಹ್ಲಾದಿನಿ ಹ್ಲಾದಿನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಇಂದ್ರನ ವಜ್ರಾಯುಧ. 2. ತಟಿತು, ವಿದ್ಯುತ್ತು, ಮಿಂಚು. "ಹ್ಲಾದಿನಿ ವಜ್ರತಟಿತೋ:" ಮೇದಿಂ.

ಹ್ಲೀಕಾ ಹ್ಲೀಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭಯ, ಹೆದರಿಕೆ. 2. ಲಜ್ಜೆ, ನಾಚಿಕೆ. ಹ್ಲೀ (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್) "ಕ್ನ್" ದೀರ್ಘ: ರಸ್ಯ ವಾ ಲ: (3-4-8)। ಪಕ್ಷೆ ಹ್ಲೀಕಾ ಹ್ಲೀಕಾ.

ಹ್ಲೀಕು ಹ್ಲೀಕು (ಪುಂ) 1. ಮುಳ್ಳುಗಸೆ ಗಿಡ, ಸಾರಣೆ ಗಿಡ. 2. ಅರಗು. 3. ತವರ. ಹ್ಲೀ (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್) "ಕ್ವಕ್" ಧಾತೋ: ರೇಫಸ್ಯ ವಾ ಲ: (3-4-8)। ಪಕ್ಷೆ ಹ್ಲೀಕು: ಹ್ಲೀಕಾಃ.

ಹ್ವಯತ್ ಹ್ವಯೆತ್ (ವಿಂ) 1. ಕರೆಯುತ್ತಿರುವ, ಹೆಸರು ಹಿಡಿದು ಕೂಗುತ್ತಿರುವ. ಹ್ವೇ (ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಶತ್" (3-2-124)। 2. ಮೇಲಾಡುತ್ತಿರುವ, ಸರಿಸಮಾನವಾಗಲು ಸ್ಪರ್ಧಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಙೀಪ್" (4-1-4)। -ಯಂತೀ -ಯಂತೀ. "ಶಾನಕ್" (3-2-124)। -ಮಾನ: -ಮಾನಾಃ.

ಹ್ವಾತವ್ಯ ಹ್ವಾತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಕರೆಯಲ್ಪಡುವ. 2. ಕರೆಯಬೇಕಾದ. 3. ಕರೆಯಬಹುದಾದ. ಹ್ವೇ (ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ತವ್ಯ:" (3-1-96)। "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। -ನೀಯ: -ನೀಯಾಃ. 4. ಸ್ಪರ್ಧಿಸಬೇಕಾದ. 4. ಸ್ಪರ್ಧಿಸಬಹುದಾದ.

ಹ್ವಾನ ಹ್ವಾನ (ನಂ) 1. ಕರೆಯುವುದು, ಹೆಸರು ಹಿಡಿದು ಕೂಗುವುದು. 2. ಕರೆಯುವುದು, ಆಹ್ವಾನ ಕೊಡುವುದು. 3. ವಿವಾದಕ್ಕೆ ಎಳೆಯುವುದು. 4. ಸರಿಸಮಾನವಾಗಲು ಮೇಲಾಟವಾಡುವುದು. ಹ್ವೇ (ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಲ್ಯುಡ್" (3-3-114)।

ಹ್ವೇ - ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ (ಮ್ವಾಂ ತಮಂ ಸಕಂ ಅನಿಂ)

ಹ್ವಯತಿ, ಹ್ವಯತೇ। ಜುಹಾವ ಜುಹವತು: ಜುಹವು:।

ಜುಹೋಯ } ಜುಹವಯು: ಜುಹವು:।  
ಜುಹವಿವಿ } ಜುಹವಯು: ಜುಹವು:।

ಜುಹಾವ } ಜುಹವಿವಿ ಜುಹವಿಮು:।  
ಜುಹವ } ಜುಹವಿವಿ ಜುಹವಿಮು:।

ಜುಹವೇ ಜುಹವಾತೇ ಜುಹವಿರೇ।

ಜುಹವಿವೇ ಜುಹವಾತೇ ಜುಹವಿವೇ।

ಜುಹವೇ ಜುಹವಿವಹೇ ಜುಹವಿಮಹೇ।

ಹ್ವಾತಾ ಹ್ವಾತಾರೀ ಹ್ವಾತಾರ:।

ಹ್ವಾಸ್ಯತಿ, -ತೇ। ಹ್ವಾಯತು, -ತಾಮ್।

ಅಹ್ವಯತು, ಅಹ್ವಯತು:।

1. ಕರೆ, ಆಹ್ವಾನಕೊಡು. 2. ಹೆಸರುಹಿಡಿದು ಕರೆ.

"ತಾಂ ಪಾರ್ವತೀತ್ಯಾಭಿಜನೇನ ನಾಮ್ನಾ ಬನ್ಧುಪ್ರಿಯಾಂ ಬನ್ಧುಜನೋ ಜುಹಾವು:। ತಮೇತಿ ಮಾತ್ರಾ ತಪಸೋ ನಿಷಿದ್ಧಾ ಪಶ್ಚಾದುಮಾಹ್ಯಾಂ ಸುಮುಖೀ ಜಗಾಮ" ಕುಮಾಂ 1-26।

ಕರ್ಮಣಿ:—ಹ್ವಯತೇ। ಜುಹವೇ। ಹ್ವಾಯಿತಾ। ಹ್ವಯತಾಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕೃತ್ಯು:—ಹ್ವಾತವ್ಯ:। ಹ್ವಾನೋಯ:। ಹ್ವೇಯ:। ಹ್ವತ:। ಹ್ವತವಾನ್। ಹ್ವಯತ್, -ಂತೀ। ಹ್ವಯಮಾನ:। ಹ್ವತಮ್। ಹ್ವಾನಮ್। ಹ್ವತ್ವಾ। ಆಹ್ವಯು:। "ಆಹ್ವಯ ರಾಮಂ ವಿನಯಾಭಿರಾಮಮಾವಿ: ಪ್ರಮೋದ: ಪ್ರಭುರೇವಮುಚೇ। ತವೋತ್ತಮಾಂಜ್ಞೇ ಮುಕ್ತುಂ ವಿಧಾತುಮಹ್ವಾಯ ತಿಷ್ಠೇ ದಿವಸೇ ಯತಿಷ್ಠೇ" ಚಂ ರಾಂ।

ಹ್ವೇ ಹ್ವೇಯಂ (ವಿಂ) 1. ಕರೆಯಲ್ಪಡುವ, 2. ಕರೆಯಬೇಕಾದ. 3. ಕರೆಯಬಹುದಾದ. ಹ್ವೇ (ಸ್ಪರ್ಧಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಯತ್" (3-1-96)। 4. ಸ್ಪರ್ಧಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಮೇಲಾಟ ಮಾಡಬೇಕಾದ. 6. ಮೇಲಾಟವಾಡಬಹುದಾದ.

ಇತಿ "ಹ" ಕಾರಾದಿಪದಾರ್ಥನಿರೂಪಣಮ್।



श्री:

शब्दार्थकौस्तुभः

संस्कृत-कर्णाटक शब्दकोशः

ಸಂಸ್ಕೃತ-ಕನ್ನಡ ಶಬ್ದಕೋಶ

SAMSKRITA-KANNADA DICTIONARY

---

परिशिष्टभागः

- I. ಬಿಟ್ಟುಹೋಗಿರುವ ಹೊಸ ಪದಗಳು.
- II. ನಿಘಂಟುಗಳು ಮತ್ತು ನಿಘಂಟುಕಾರರು.
- III. ಅಡಳಿತಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಪದಗಳು.







ಶ್ರೀ:

ಶ್ರೀಮತೇ ಹೃದ್ರಾಶ್ರಯ ನಮಃ

परिशिष्टम् १

ಪರಿಶಿಷ್ಟ ೧

APPENDIX I

ಸಂಸ್ಕೃತ ವಾಚ್ಛಯರತ್ನಾಕರವು ಅಪಾರವಾದುದು. ಅದರ ಇಯತ್ತೆಯನ್ನು ಕಂಡುಹಿಡಿಯಲು ಯಾರಿಗೂ ಸಾಧ್ಯವಾಗದು. ಗಭೀರವಾದ ಈ ರತ್ನಾಕರದಲ್ಲಿ ಎಷ್ಟೇ ಅವಗಾಹನ ಮಾಡಿ ನೋಡುತ್ತಿದ್ದರೂ ಅಕ್ಷಯವಾದ ಶಬ್ದರತ್ನರಾಶಿಗಳು ಸಿಗುತ್ತಲೇ ಇರುವುವು. ಸಂಸ್ಕೃತ ನಿಘಂಟನ್ನು ಬರೆಯುವ ಯಾರಾದರೂ ನಿಘಂಟು ಪುಸ್ತಕವಾಚ್ಛಯವಾಯಿತೆಂದು ಸಮಾಧಾನಪಡುವಂತಿಲ್ಲ. ಈ ಅಪಾರಶಬ್ದರಾಶಿಗೆ ಇಯತ್ತೆಯೇ ಇಲ್ಲ. ವ್ಯಾಕರಣವಂಹುಭಾಷ್ಯಕಾರರಾದ ಪತಂಜಲಿಮುನಿಯು “बृहस्पतिरिन्द्राय दिव्यं वर्षसहस्रं शब्दपारायणं प्रोवाच-नान्तं जगाम” ಎಂದು ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ. ಅದುದರಿಂದ ಕೇವಲ ಪ್ರಾಯಶಃಕ ಶಬ್ದಗಳಿಗೆ ಮಾತ್ರ ವಿವರಣೆ ಕೊಟ್ಟು ಸಮಗ್ರವಾಯಿತೆಂದು ಸಮಾಧಾನಪಡುವುದಾದರೂ ಇನ್ನೂ ಅಂತಹ ಉಪಯುಕ್ತವಾದ ಕೆಲವು ಪದಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸುವುದು ಅವಶ್ಯವೆಂದು ತೋರಿದುದರಿಂದ ಪರಿಶಿಷ್ಟ Iರಲ್ಲಿ ಆ ಪದಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಲಾಗಿದೆ.







## ಪರಿಶಿಷ್ಟಮ್ ೧

ಅ

ಅಟಾಡಮಾನ ಅಟಾಟ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ಬಹಳವಾಗಿ ಸುಚರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅತಿಯಾಗಿ ತಿರುಗಾಡುತ್ತಿರುವ. ಅಟ (ಗತಿ) + ಇಡ್ (ವಾಂ ೭-೪-೮೨) । “ಶಾನಕ್” (೩-೨-೧೨೪) । “ಅಟಾಡಮಾನೋಽರ್ಪಣಾಂತಿ ಸಸೀತಃ ಸಹ-ಲಕ್ಷ್ಮಣಃ” ಮಡಿಂ ೪-೨ ।

ಅತಿಶಯಾಲ್ಯ ಅತಿಶಯಾಲಾ (ವಿಂ) ಮೀರುವ ಸ್ವಭಾವದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ. ಅತಿ + ಶೀಙ್ (ಸ್ವಪ್ನೆ) “ಆಲುಕ್” (ವಾಂ ೩-೨-೧೫೮) । “ಪ್ರಾಸಾದಶೋಭಾತಿಶಯಾಲ್ಯುಃ ಪಥಿ ಪ್ರಭೋ-ನಿವಾಸಾಃ ಪಟವೇಶಮಿವಿಭುಃ” ಮಾಘಂ ೧೨-೬೩ ।

ಅಧೀಯತ್ ಅಧೀಯತ್ (ವಿಂ) ಸುಖವಾಗಿ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವ, ಶ್ರಮವಿಲ್ಲದೆ ಜಪಿಸುವ. ಅಧಿ + ಇಡ್ (ಅಧ್ಯಯನ) ಕರ್ತರಿ “ಶತ್” (೩-೨-೧೩೦) । “ಅಧೀಯ-ತ್ವಾತ್ಮವಿದ್ ವಿಶ್ವಾಂ ವಾರಯನ್ ಮುಕ್ತರಿವ್ರತಮ್” ಮಡಿಂ ೫-೬೩ ।

ಅಧೀಯಾನ್ ಅಧೀಯಾನ್ (ವಿಂ) ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡು ತ್ತಿರುವ. ಅಧಿ + ಇಡ್ (ಅಧ್ಯಯನ) “ಶಾನಕ್” (೩-೨-೧೨೪) ।

ಅಧ್ಯಾಪಯಿತ್ ಅಧ್ಯಾಪಯಿತ್ಯ (ವಿಂ) ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿಸು ವವನು, ಎದೆಯನ್ನು ಕಲಿಸುವವನು. ಅಧಿ + ಇಡ್ (ಅಧ್ಯಯನ) + ಣಿಕ್ “ತುಕ್” (೩-೧-೧೩೩) ।

ಅಧ್ಯೇತ್ ಅಧ್ಯೇತ್ಯ (ವಿಂ) ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು, ಎದೆಯನ್ನು ಕಲಿಯುವವನು, ಎದ್ಯಾರ್ಥಿ. ಅಧಿ + ಇಡ್ (ಅಧ್ಯಯನ) “ತುಕ್” (೩-೧-೧೩೩) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ತೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ಶ್ರೀ-೨೨೯.

ಅನುಕರ್ಮಿನ್ ಅನುಕರ್ಮಿನ್ (ವಿಂ) ದಯೆಯುಳ್ಳವನು, ದಯೆತೋರಿಸುವವನು. ಅನು + ಕರ್ಮಿ (ಚಲನೆ) “ಣಿತಿ” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಅನುಗರ್ಜನ್ ಅನುಗರ್ಜನ್ (ನಂ) ಪ್ರತಿಶಬ್ದಕೊಡುವುದು, ಪ್ರತಿಧ್ವನಿಸುವುದು.

ಅನುಗರ್ಜಿತ ಅನುಗರ್ಜಿತ (ನಂ) 1. ಪ್ರತಿಧ್ವನಿ, ಮರುದನಿ, ಮಾರ್ದನ. ಅನುಸೃತ್ಯ ಗರ್ಜಿತಮ್ । ಅನು + ಗರ್ಜ (ಶಬ್ದ) ಭಾವೇ “ಕ್ತಃ” (೩-೩-೧೧೪) । “ಅನುಗರ್ಜಿತಸಂದಿಗ್ಧಾಃ ಕರಣೇರ್ಮುರಜಸ್ವನಾಃ” ಕುಮಾರಂ ೬-೪೦ । (ವಿಂ) 2. ಪ್ರತಿ ಧ್ವನಿಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಎದುರುಶಬ್ದಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಅನು + ಗರ್ಜ ಕರ್ಮಂ “ಕ್ತಃ” (೩-೨-೧೨೨) ।

ಅನುಮೋದಿನ್ ಅನುಮೋದಿನ್ (ವಿಂ) ಅನುಮೋದಿಸು ವವನು, ಸಮ್ಮತಿಸುವವನು, ಒಪ್ಪಿಗೆ ಕೊಡುವವನು.

ಅನುಮೋದತೇ—ಅನು + ಮುದ (ಹರ್ಷ) “ಣಿತಿ” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಅನುಯಾನ್ ಅನುಯಾನ್ (ನಂ) ಹಿಂಬಾಲಿಸಿ ಹೋಗುವುದು, ಅನುಸರಿಸಿ ಹೋಗುವುದು. ಅನು + ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) ।

ಅನುಯೋಗ ಅನುಯೋಗ (ವಿಂ) ಪ್ರಯತ್ನ. ಅನು + ಯುಜಿರ್ (ಯೋಗ) “ಯಜ್” (೩-೩-೧೮) । “ನ ದೇವಮಿತಿ ಸಚ್ಚಿಂತ್ಯ ತ್ಯಜೇನ್ನೋದ್ಯೋಗಮಾತ್ಮನಃ । ಅನುಯೋಗಂ ವಿನಾ ತೈಲಂ ತಿಲಾನಾಂ ನೋಪಜಾಯತೇ” ಪञ್ಚತಂ ೨-೧೪೭ ।

ಅಪಜಾನಾನ್ ಅಪಜಾನಾನ್ (ವಿಂ) ಅಪಹ್ನವ ಮಾಡು ತ್ತಿರುವ, ಮರೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಮರೆಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಅಪ + ಜಾ (ಅವಬೋಧನೆ) “ಶಾನಕ್” (೩-೨-೧೨೪) । “ಆತ್ಮಾನಮಪಜಾನಾನ್ ಶಶಮಾತ್ರೋಜಯದಿನಮ್” ಮಡಿಂ ೮-೨೬ ।

ಅಪವೃತ್ತ ಅಪವೃತ್ತ (ವಿಂ) ಕೆಳಮುಖವಾದ, ತಲೆಕೆಳಗಾದ. ಅಪ + ವೃತ್ತ (ವರ್ತನೆ) “ಕ್ತಃ” (೩-೪-೭೨) । “ಸಂಸಕ್ತ-ತ್ವುಡಿತವಿವರ್ತಿಸಾನ್ವಜಾಲವ್ಯಾಕೀರ್ಣಸ್ಕುರದಪವೃತ್ತರೂಪಮುಂಡಾಃ” ಮಾಲತೀಂ ೩-೧೭ ।

ಅಪಾಕೃತ್ ಅಪಾಕೃತ್ (ವಿಂ) ಪಾಕಮಾಡಬೇಕಾಗಿಲ್ಲದ, ಬೇಯಿಸಬೇಕಾಗಿಲ್ಲದ. ಇ ಪಚ್ (ಪಾಕ) “ಞ್ಯತ್” (೩-೧-೧೨೪) । ನಂ ತಂ । “ಪಿತೃಣಾಂ ಕುರೂಣ ಕಾರ್ಯಮಪಾಕಯೈಃ ಸ್ವಾಧುಃಃ ಫಲೈಃ” ಮಡಿಂ ೬-೬೩ ।

ಅಮಿತಮ್ಪಚ ಅಮಿತಂಪಚ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಅಡಿಗೆ ಮಾಡು ವವನು, ಯಾಗಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ಜನಸಮೂಹಕ್ಕೆ ಭೋಜನ ಮಾಡಿಸಲು ಹೆಚ್ಚು ಆಹಾರವನ್ನು ಬೇಯಿಸುವವನು. ಅಮಿತಂ ಪಚತಿ—ಇ ಪಚ್ (ಪಾಕ) “ಖಶ್” (೩-೨-೩೪) । “ಅಮಿತಮ್ಪಚಮೀಶಾನಂ ಸರ್ವಭೋಗಿಣಮುತ್ತಮಮ್ । ಆವಯೋಃ ಪಿತರಂ ವಿಧಿ ಕ್ಷಯಾತಂ ದಶರಥಂ ಭುವಿ” ಮಡಿಂ ೬-೯೭ ।

ಅರಿಸುದನ್ ಅರಿಸುದನ್ (ವಿಂ) ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸು ವವನು, ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಧ್ವಂಸಮಾಡುವವನು. ಅರೀನ್ ಸುದಯತಿ—ಉದ (ಹರಣ) + ಣಿಕ್ “ಲ್ಯುಃ” (೩-೧-೧೩೪) ।

ಅರ್ಚತ ಅರ್ಚತ (ವಿಂ) ಪೂಜಿಸುತ್ತಿರುವ, ಆರಾಧಿಸು ತ್ತಿರುವ. ಅರ್ಚ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾ “ತೀಪ್” (೪-೧-೬) । -ಶ್ರೀ-೨೨೯.



ಅರ್ಚನೀಯ ಅರ್ಚನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಪೂಜೆಮಾಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಪೂಜೆಮಾಡಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಪೂಜೆಮಾಡಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. ಅರ್ಚ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। "ತವ್ಯಃ" (3-1-96)। -ಯಿತವ್ಯಃ -ಯಿತವ್ಯಃ।

ಅರ್ಚಯತ್ ಅರ್ಚಯತ್ (ವಿಂ) ಪೂಜೆಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ಅರ್ಚ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಶೀಪ್" (4-1-6)। -ಯಂತಿ -ಯಂತಿಃ। "ಶಾನವ್" (3-2-124)। -ಯಮಾನಃ -ಯಮಾನಃ।

ಅರ್ಚಿತವ್ಯ ಅರ್ಚಿತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಪೂಜಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. 3. ಪೂಜಿಸಬೇಕಾದ. ಅರ್ಚ (ಪೂಜಾಯಾಮ್) "ತವ್ಯಃ" (3-1-96)।

ಅರ್ಚತ್ ಅರ್ಚತ್ (ವಿಂ) ಸಂಪಾದಿಸುತ್ತಿರುವ. ಅರ್ಚ (ಅರ್ಚನೆ) "ಶತ್" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಶೀಪ್" (4-1-6)। -ಯಂತಿ -ಯಂತಿಃ।

ಅರ್ಚನೀಯ ಅರ್ಚನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸಂಪಾದಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಸಂಪಾದಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಸಂಪಾದಿಸಲು ಶಕ್ತವಾದ. 4. ಸಂಪಾದಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ. ಅರ್ಚ (ಅರ್ಚನೆ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। "ತವ್ಯಃ" (3-1-96)। ಅಜಿತವ್ಯಮ್ ಅರ್ಚಿತವ್ಯಮ್।

ಅರ್ಚ್ಯ ಅರ್ಚ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸಂಪಾದಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಸಂಪಾದಿಸಬೇಕಾದ. ಅರ್ಚ (ಅರ್ಚನೆ) "ಞ್ಯತ್" (3-1-124)।

ಅಲ್ಪಪಚ ಅಲ್ಪಪಚ (ವಿಂ) ಸ್ವಲ್ಪಮಾತ್ರ ಪಾಕಮಾಡುವವನು, ಕೊಂಚ ಅಡಿಗೆ ಮಾಡುವವನು (ಅತ್ಯಾಹಾರದಿಂದ ತೃಪ್ತಪಡುವವನು). ಅಲ್ಪಂ ಪವತಿ—ತು ಪವತ್ (ಪಾಕೇ) "ಪವತ್" (3-2-34)। ಮುಮಾಗಮಃ। "ಏವ ವಿಹನ್ ಪಿತುಃ ಕಾಮಾತ್ಪಾನ್ತಾವಲ್ಪಪಚಾನ್ಮುನೀನ್" ಮಡಿಂ 6-96।

ಅವಕಲಕನ ಅವಕಲಕನ (ನಂ) ಮಿಶ್ರಣ, ಬೆರೆಕೆ.

ಅವಶ್ಯಪಾಠ್ಯ ಅವಶ್ಯಪಾಠ್ಯ (ವಿಂ) ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಮಂತ್ರಾದಿಗಳಿಂದ ಪಠಿಸಲ್ಪಡಬೇಕಾದ. ಅವಶ್ಯ+ಪಾಠ್ಯ (ಪವನೆ) "ಞ್ಯತ್" (3-1-124)। "ಅವಶ್ಯಪಾಠ್ಯಂ ಪವಸೇ ಕಚ್ಚಿತ್ ತ್ವಂ ದೇವಭಾಗವಿಃ" ಮಡಿಂ 6-64।

ಅವ್ಯರ್ಣ ಅವ್ಯರ್ಣ (ವಿಂ) ಓದಿಸಲ್ಪಡದಿರುವ, ತೊಂದರೆ ಪಡಿಸಲ್ಪಡದಿರುವ. ನ ಅವ್ಯರ್ಣಃ। "ಅವ್ಯರ್ಣೋ ಗಿರಿಕೂಟಾನಾಮ್ಯರ್ಣಾನಾದಿವದ್ಭುತಮ್" ಮಡಿಂ 9-19।

## ಆ

ಆಖ್ಯಾಯನ ಆಖ್ಯಾಯನ (ಪುಂ) ಮೂಲಕ ವಾಹನನಾದ ಗಣಪತಿ, ವಿನಾಯಕ. "ಶ್ರೀಮಾತುರಃ ಪರಗುರುಬಾಹುಯಾನೋ ಗಣಾಧಿಪಃ" ವೇಜಂ 1.

ಆಸೋರ ಆಸೋರ (ಪುಂ) ಗ್ರೀಷ್ಮಕಾಲ, ಬೇಸಿಗೆಯ ಕಾಲ.

"ಪುಷ್ಕಕಾಲೋಽಪಿಷಮಸ್ತೀ ಪಿಷಮಸ್ತಾಸೋರ ಕರ್ಮಕಃ" ವೇಜಂ 1.

ಆಖ್ಯಾಯನಿ ಆಖ್ಯಾಯನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂದೇಶ, ಹೇಳಿಕೆಯಾದ ಬಾಯಿಮಾತು. "ಆಖ್ಯಾಯನೀ ತು ಸನ್ದೇಶೋ ದಿಷ್ಟಂ ಸಂವದನಂ ಚ ತತ್" ವೇಜಂ 1.

ಆಗರ್ಜತ್ ಆಗರ್ಜತ್ (ವಿಂ) ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಗರ್ಜನೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಉಚ್ಚಕಂಠದಿಂದ ಶಬ್ದ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಆ+ಗರ್ಜ (ಶಬ್ದೇ) "ಶತ್" (3-2-124)। "ಆಗರ್ಜದ್ಗಿರಿ-ಕುಂಜಕುಂಜರವದಾನಿಸ್ತೀರ್ಣಕರ್ಣಂ ಪರಜ್ಯಾನಿರ್ಥೋಷಮಮದ್ಗು-ಮಿರವೇರಾಘಾತಮುಜ್ಜಮಯನ್" ತಂ ರಾಂ 4-6।

ಆಗ್ನಿಧ್ರ ಆಗ್ನಿಧ್ರ (ಪುಂ) ಸ್ವಾಯಂಭುವಮನುವಿನ ಪುತ್ರನಾದ ಪ್ರಿಯವ್ರತರಾಜನ ಹತ್ತು ಮಂದಿ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲೊಬ್ಬ. ["ಶೀಪ್" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಆಗ್ನಾನ ಆಗ್ನಾನ (ವಿಂ) ಹೊಡೆಯುತ್ತಿರುವ. ಆ+ಹನ (ಹಿಸಾಗತ್ಯೋಃ) "ಶಾನವ್" (3-2-124)। ತಪಾಕೋಪಃ (6-4-96)। ಕುತ್ವಮ್ (7-3-44)। "ಆಗ್ನಾನ ಇವ ಸಂದೀಪ್ತೇರಲಾತಃ ಸಂವತೋ ಮುಹಃ" ಮಡಿಂ 6-14.

ಆಚಾಮ್ಯ ಆಚಾಮ್ಯ (ನಂ) ಆಚಮನ. ಆ+ಚಮ (ಅವನೆ) "ಞ್ಯತ್" (3-1-124)। "ಆಚಾಮ್ಯಂ ಸಂಖ್ಯಯೋಃ ಕಚ್ಚಿತ್ ಸಮ್ಯಕ್ ತೇ ನ ಪ್ರಹೋಯತೇ" ಮಡಿಂ 6-64.

ಆಚ್ಛಿಂಧತ್ ಆಚ್ಛಿಂಧತ್ (ವಿಂ) ಬಲಾತ್ಕಾರದಿಂದ ಎಳೆದು ಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಬಲಾತ್ಕಾರವಾಗಿ ಅಪಾಯದಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಡುತ್ತಿರುವ. ಆ+ಚ್ಛಿದಿ (ದ್ವೇಷೀಕರಣೇ) "ಶತ್" (3-2-124)। "ರಾಹೋಽನ್ದ್ರಕಲಾಮಿವಾನನವರೀ ದೇವಾತ್ಸಮಾಸಾಘ್ರಮೇ ದಸ್ಯೋರಸ್ಯ ಕೃಪಾಪಾತವಿವಯಾದಾಚ್ಛಿಂಧತಃ ಪ್ರೇಯಸೀಮ್" ಮಾಲತೀಂ 4-26.

ಆಜಾನಿಕ ಆಜಾನಿಕ (ವಿಂ) ಸ್ವಭಾವಬದ್ಧವಾದ, ಸಹಜವಾದ. ಜನನಂ ಜನಃ—ನ ಜನೋಜನಃ—ಅಜನೇನ ನಿವೃತ್ತಃ "ಠಕ್" (4-1-99)। "ವಿಶೇಷತೀರ್ಥೇರಿವ ಜಹ್ನುನಂದಿನೀ ಗುಣೇರಿವಾಜಾನಿಕರಾಗಮಮಿತಾ" ನೈಷಂ 14-44.

ಆಜಿಹಾನ ಆಜಿಹಾನ (ವಿಂ) ಬರುತ್ತಿರುವ. ಆ+ಆಹ (ಗತೀ) "ಶಾನವ್" (3-2-124)। "ಅಗ್ರಾಕ್ಷು-ರಾಜಿಹಾನಂ ತೇ ಸ್ಮರಮಗ್ರೇಸರಂ ಸುರಾಃ" ನೈಷಂ 17-14.

ಆಡಕುಷ ಆಡಕುಷ (ಪುಂ) ಆಡುಸೋಗಿ ಸೊಪ್ಪು. "ವಾಸಕೇ ತ್ವಾಡಕುಷಃ ಸ್ಯಾತ್ ಸಿಂಹಾಸ್ಯೋ ವಾಜಿದಂತಕಃ" ವೇಜಂ 1.

ಆತಿಪಾತಿಕ ಆತಿಪಾತಿಕ (ವಿಂ) ಸದ್ಯಃ, ವಿಕ್ರಯಿಸಬೇಕಾದ, ಕೊಡಲೇ ಮಾರಾಟವಾಗಬೇಕಾದ, ಕಾಲಾತಿಕ್ರಮವನ್ನು ಸಹಿಸದಿರುವ (ತರಕಾರಿ ಹಣ್ಣು ಮೊದಲಾ



ದಂವು). "ಆತಿಪಾತಿಕಾನಾಂ ಪಞ್ಚಾನಾಮನ್ಯಜ ವಿಶೇಷಮಿತ್ಯ-  
ವಿರೋಧೇನಾನುಷ್ಠಾನೋ ದೇಯಃ" ಅರ್ವಾಂ ೩-೧೫।

ಆದೇಶನ ಅದೇಶನ (ವಿಂ) ಸ್ವೀಕರಿಸುತ್ತಿರುವ, ತೆಗೆದು  
ಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ಆ+ಓ ದಾಃ (ದಾನೇ) "ದಾಃ" (೩-೨-೧೨೪)। "ಜಲಮಿಲಾಪಿ ಜಲಮಾದಾನಾಂ ತಾಃ  
ತಾಂ ಮುಪತಿರನ್ವಯಚ್ಛತ್" ರಘುಂ ೨-೬।

ಆದೇಶಿತ ಅದೇಶಿತ (ವಿಂ) ಅದೇಶ ಹೊಂದಿರುವವನು,  
ಅದೇಶ ಪಡೆದವನು. ಆದೇಶೋಕ್ತ ಸಂಜ್ಞಾತಃ "ಇತ್ಯ" (೫-೨-೩೬)। "ಆದೇಶಿತಾಮಪ್ಯಬಲೋಕ್ಯ ಮನ್ವಂ ಮನ್ವಂ  
ನಲಸ್ಯೇವ ದಿಶಾ ಚಲಂತೀಮ್" ನೆಪಂ ೧೪-೩೮।

ಆಧಾನಿಕ ಅಧಾನಿಕ (ನಂ) ಪೂರ್ವವನ ಸಂಸ್ಕಾರ, ಮೊಂಡೆ  
ಸಂಸ್ಕಾರಗಳೆಂದು ಸಂಸ್ಕಾರ. "ಆಧಾನಿಕಂ ಪುಸ್ತಕವನಂ  
ಪೌಸ್ತಮಪ್ಯಪ ಗಾಢಿಣಮ್" ವೆಂಜಂ ೧।

ಆಧಾರಣ ಅಧಾರಣ (ನಂ) ಹೆಚ್ಚು ಕಡೆಯಲ್ಲಿರುವ ಕಾರ್ಯ  
ಮತ್ತು ವಹಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಸಮಾನವಾಗಿ ಕಾರ್ಯಮಾಡುವುದು  
ಹಂಚಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಆಧಿಕಾರಿಕ ಅಧಿಕಾರಿಕ (ವಿಂ) ಅಧಿಕಾರವೇ ಪ್ರಯೋಗ  
ಪಡೆದಿರುವ. "ಅಧಿಕಾರಃ ಪ್ರಯೋಗವನಂ — ಅಧಿಕಾರ  
"ಠ್" (೫-೧-೧೦೯)। "ಆಧಿಕಾರಿಕಪದೇಶು ತೇ ವಯಂ  
ಸ್ವೇಷು ಯಾವದಧಿಕಾರಮಾಹಿತಾಃ" ವಾದಂ ೧೭-೧೪।

ಆನುಪ್ಯ ಅನುಪ್ಯ (ವಿಂ) ಬಹುಗುಪ್ತದೇಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ,  
ನೀರಿನಿಂದ ತುಂಬಿರುವ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದ. ಅನುಪ್ಯ  
ಜಲಪ್ರಾಯದೇಶೇ ಭವಃ। "ಮಹತ್ಯವಕಾಶೇ ಹಿ ಸ್ವಾತ್ಮಾಃಪ್ರಾನ್ಯುಪ್ಯಾ-  
ಶ್ಚೌಷಧಯೋ ಭವಂತಿ" ಅರ್ವಾಂ ೭-೧೧।

ಆಂತರ ಅಂತರ (ವಿಂ) ಒಳಗಡೆ ಅಡಗಿಕೊಂಡಿರುವ, ಒಳಗಡೆ  
ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ಗೊಡ್ಡವಾಗಿರುವ. ಅಂತಃ  
ಭವಃ — ಅಂತರ್ "ಅ" (೪-೩-೫೩)। "ಅಂತಿವಚತಿ  
ಪದಾರ್ಥಾನಾಂತರಃ ಕೋಪಿ ಹೇತುಃ ನ ಸಲಃ ಬಹಿಃಪಾಪಿನ್ ಪ್ರೀತಯಃ  
ಸಂಭವಂತೇ" ಮಾಲತೀಂ ೧-೨೭।

ಆಪಿಡಯತ್ ಅಪಿಡಯತ್ (ವಿಂ) ಹೀಡುತ್ತಿರುವ,  
ತೆಗೆದುಕೊಂಡುಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಿರುವ. ಆ + ಪಿಡ  
(ಅವಗಾಹನೆ) + ಚಿತ್ "ಛತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಆಪಿಡಯನ್  
ಬಲಂ ಶತ್ರುಜಿಗೃಹಪುರತಿಶೋಭೇತ್" ಹಿತಂ ೩-೮-೧೧।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛಿ" (೪-೧-೬)। —ಯಂತಿ —ಯಾಃ।

ಆಮಕ ಅಮಕ (ವಿಂ) ದೇಹವಾಗದಿರುವ ದೇಹ  
ಲೃಡದ ಅಹಾರ, ಅದೇಹವನ್ನು. "ಕೃತ್ವಿಪಾಸಾ-  
ಪ್ವಕ್ಲಾಂತಂ ಅಪಾಸಿತಂ ಆಮಕಾಸಿತಂ ದುರ್ವಂ ವಾ ನ ಕರ್ಮ  
ಕಾರಯೇತ್" ಅರ್ವಾಂ ೪-೮।

ಆಮನ್ವಜಿಕ ಅಮಂತ್ರಣಿಕ (ನಂ) ೧. ಪೂರ್ವವನಂತರ  
ನಡೆಯಬೇಕಾದ ಸೀಮಂತ ಸಂಸ್ಕಾರ. ೨. ನಾಮಕರಣ.  
"ಸೀಮಂತೋಪನಯನಂ ನಾಮಕರ್ಮಮನ್ವಜಿಕೇ ಸಮೇ" ವೆಂಜಂ ೧।

ಆಮೃತತ್ ಅಮೃತತ್ (ವಿಂ) ಅಮರನ ಸೇವೆಯನ್ನು ಮಾಡುತ್ತಿರುವ,  
ಹೊನ್ನಾಗಿ ದೃಷ್ಟಿಸಿ ನೋಡುತ್ತಿರುವ. ಆ + ಮೃಶ (ಆಮರನೇ)  
"ಛತ್" (೩-೨-೧೨೪)। "ಆಮೃತಾಃಪ್ರೀತತೋ ಬಲಿವೀಚಿ-  
ಲೋಲಮಾನವಿತತಾಃಪ್ರೀತತಃ" ಮಾಘಂ ೧೦-೫೯।

ಆಮೃತಯತ್ ಅಮೃತಯತ್ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತಿರುವ,  
ಅಧೀನಗೊಳಿಸುತ್ತಿರುವ.

ಆಯತ್ ಆಯತ್ (ವಿಂ) ಆಗಮಿಸುತ್ತಿರುವ, ಎದುರಾಗಿ  
ಬರುತ್ತಿರುವ. ಆ + ಇನ್ (ಗತೌ) "ಛತ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛಿ" (೪-೧-೬)। —ಯಂತಿ —ಯಾಃ।  
"ಆಯಂತೀನಾಮವಿರತರವಂ ರಾಜಕಾನೀಕಿನೀನಾಮ್" ಮಾಘಂ  
೧೮-೮೦।

ಆಯಾತ್ ಆಯಾತ್ (ವಿಂ) ಆಗಮಿಸುತ್ತಿರುವ, ಬರು  
ತ್ತಿರುವ. ಆ + ಯಾ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಛತ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛಿ" (೪-೧-೬)। —ಯಂತಿ —ಯಾಃ।  
"ಆಯಾನ್ಯಾಂ ನಿಜಯುತೌ ವನಾತ್ಸಪ್ತಾಃ ಬಹಿಷಾಮಪರ-  
ಶಿಕ್ಷಣಿಣಿಣಿಂ ಮರೇಶ" ಮಾಘಂ ೮-೧೧।

ಆಯಾನ ಅಯಾನ (ನಂ) ೧. ಅಲಂಕಾರ, ಭೂಷಣ, ಒಡವೆ,  
ಅಭರಣ. "ಆಯಾನಂ ಸ್ಯಾದಲಕ್ಷಾರಃ" ವೆಂಜಂ ೧. ೨. ಬರು  
ವುದು.

ಆರಾಜ್ಯ ಅರಾಜ್ಯ (ನಂ) ರಾಜನಲ್ಲದಿರುವಿಕೆ, ಅರಾಜಕತೆ.  
"ಅನಿಷ್ಟೇರ್ದುತೋತ್ಪಾತಃ ಪರಸ್ಯೋದ್ವೇಗಮಾಚರೇತ್। ಆರಾಜ್ಯಾಪೇತಿ  
ನಿರ್ವಾದಃ ಸಮಾನಃ ಕೋಪ ಉಚ್ಯತೇ" ಅರ್ವಾಂ ೧೪-೨।

ಆರ್ಜನ ಅರ್ಜನ (ನಂ) ಸಂಪಾದಿಸುವುದು, ಗಳಿಸುವುದು.  
ಆ + ಅರ್ಜ (ಪ್ರತಿಯಲನೆ) + ಚಿತ್ "ಛತ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
ಆರ್ಜಿತ ಅರ್ಜಿತ (ವಿಂ) ಸಂಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಗಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಆ + ಅರ್ಜ (ಪ್ರತಿಯಲನೆ) + ಚಿತ್ "ಛ" (೩-೨-೧೦೨)।

ಆವಾಹಿತ ಆವಾಹಿತ (ವಿಂ) ಆವಾಹನ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ,  
ಸನ್ನಿಧ್ಯಾಹ್ನಿ ಮಂತ್ರಗಳಿಂದ ಕರೆಯಲ್ಪಟ್ಟ. ಆ + ವಹ  
(ಪ್ರಾಪಣೇ) + ಚಿತ್ "ಛಃ" (೩-೨-೧೦೨)। "ಆವಾಹಿತಾಂ  
ಹಿಜೇಸ್ತತ್ರ ಗಾಯತ್ರೀಮಕಮಷ್ಟಲಾತ್। ಸ ಸಂನಿಧಯತೀಂ ಪಶ್ಯನ್ದೃಷ್ಟ-  
ನಷ್ಟೋಪವಿಶ್ವಾ" ನೆಪಂ ೧೭-೧೭।

ಆಶಾಸ್ತಿ ಅಶಾಸ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಶಾಂತತೆ, ಅಸಮತೆ. ಆ +  
ಶಾಸ್ತು (ಇಚ್ಛಾಯಾಮ್) "ಛಿನ್" (೩-೨-೧೪)। "ಸಮೇಶಾ-  
ಶಾಸ್ತಿಮಿಶ್ರಾಭಿಮತಾನಾಮಜ್ಜವಿಶ್ವಾ ಶಿಷ್ಯಸಂಜ್ಞಾಮಿಶ್ರ



ಕರ್ಮಾಭಿಜನೇಷ್ವಸಿತಾನ್ಯಾದಿಶೋದಪಲಾಭಮ್" ಅರ್ಯಶಾಂ ೧-೧೧೧.

ಆಷ್ಠಮ ಅಷ್ಟಮ (ಪುಂ) ಎಂಟನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ. ಆಷ್ಠಮ ವಾ "ಋ:" (೪-೩-೪೦) | ಪಕ್ಷೆ ಆಷ್ಠಮ: ಅಷ್ಟಮಃ.

ಆಸಾಖ್ಯ ಅಸಾವ್ಯ (ವಿಂ) ಯಾಗಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ, ಯಜ್ಞಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ. ಆ+ಉನ್ (ಅಭಿಷೇ) "ಘತ್" (೩-೧-೧೨೬) | "ಆಸಾಖ್ಯಮಘವೇ ಸೋಮಂ ದ್ವಿಜೈ: ಕಚ್ಚಿ-ತ್ರಮಸ್ಯಸಿ" ಮೃತ್ರಿಂ ೬-೬೪ |

ಆಸಿತ ಅಸಿತ (ವಿಂ) 1. ಕುಳಿತುಕೊಂಡವನು. ಆಸ (ಆಪವೇಶನ) ಕರ್ತಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) | "ಆಸಿತೋ ಮುಕ್ತುಂದ:" | (ನಂ) 2. ಆಸನ. ಆಸ್ಯತೇ ಅಸ್ಮಿನ್ — ಆಸ ಅಧಿಂ "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೬) | "ಮುಕ್ತುಂದಸ್ಯಾಸಿತ-ಮಿದಮಿದಂ ಯತಂ ರಮಾಪತೇ: | ಭುಕ್ತಮೇತದನಂತಸ್ಯೇತ್ಯುಚುರ್ಗಂಘ್ರೋ ದಿದಕ್ಷವ:" | 3. ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಆಸ ಭಾವೇ "ಕ್ತ:" (೩-೩-೧೧೪) |

ಆಸ್ತರಕ ಅಸ್ತರಕ (ವಿಂ) ಹಾಸಿಗೆಯನ್ನು ಸಜ್ಜುಗೊಳಿಸುವವನು, ಹಾಸಿಗೆಗೆ ಅಲಂಕಾರ ಮಾಡುವವನು. ಆ+ಸ್ತೃನ್ (ಆಚ್ಛಾದನೆ) "ಫ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | "ಸೂದಾರಾಲಿಕ-ಸ್ತಾಪಕಸಂವಾಹಕಾಸ್ತರಕಕಲ್ಪಕಪ್ರಸಾಧಕೋದಕಪರಿಚಾರಕಾ ರಸದಾ:" ಅರ್ಯಶಾಂ ೧-೧೨ |

ಆಸ್ವಾದನಿ ಅಸ್ವಾದನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಆಸ್ವಾದನೆ ಮಾಡುವ, ರುಚಿ ನೋಡುವ, ನಾಲಗೆಯಿಂದ ನೆಕ್ಕುವ. ಆ + ಷ್ವದ (ಆಸ್ವಾದನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೩) | "ಡೀಪ್" (೪-೧-೧೫) | "ಆಸ್ವಾದನೀ ದಾನವಶೋಗಿತಾನಾಮಕುಣ್ಠಿತಾ-ಮದ್ರಿವಿದಾರಣೇಽಪಿ" ಯಾದಂ ೨೦-೩೧ |

ಆಹ್ವಾಯಕ ಅಹ್ವಾಯಕ (ವಿಂ) ಆಹ್ವಾನಿಸುವವನು, ಕರೆಯುವವನು. ಆ+ಹ್ವೇನ್ (ಸ್ಪರ್ಶಾಂ ಶಬ್ದೇ ಚ) "ಫ್ಲುಲ್" (೩-೧-೧೩೩) | "ಆರ್ಯ, ಕಿನಾಮಧೇಯಮಾಹ್ವಾಯತಮಾಹ್ವಾಯಕ:" | ಉಂ ರಾಂ ೫ |

ಇ

ಇಕ್ಷುಸುನಿಕಾ ಇಕ್ಷುಸೂನಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಬ್ಬಿನ ಜಲ್ಲೆಯನ್ನು ಅರೆಯುವ ಯಂತ್ರದ ಒಂದು ಉಪಕರಣ. "ಇಕ್ಷುಪೀಡನ-ಯನ್ತ್ರಸ್ಯ ಶಾಲಿಕಾತ್ವಿಕ್ಷುಸುನಿಕಾ" ವೇಜಂ |

ಇಜ್ಜತ್ ಇಂಗೆತ್ (ವಿಂ) ಜಂಗಮ, ಚಲಿಸುವ. "ಜಗತ್ಸ-ಚರಪ್ರಾಣಮಿಷದಿಜ್ಜಚ್ಚ ಜಜ್ಜಮ್" ವೇಜಂ |

ಇತ್ವಾಸ ಇತ್ವಾಸ (ಪುಂ) ಕೈವರ್ತಮುಸ್ತಕ, ತುಂಗಮುಸ್ತಕ, ಕೊನ್ನಾರಿಯ ಒಂದು ಭೇದ. "ಕೈವರ್ತಮುಸ್ತಕೇತ್ವಾಸೌ" ವೇಜಂ |

ಇಂದ್ರಚಕ್ರವ ಇಂದ್ರಚಕ್ರವ (ಪುಂ) ಮುಕ್ತಾಹಾರದ ಒಂದು ಭೇದ. "ಯಷ್ಟೀನಾಮಷ್ಟಸಹಸ್ರಮಿಂದ್ರಚಕ್ರವ:" ಅರ್ಯಶಾಂ ೨-೧೧ |

ಉ

ಉಗ್ರಾಂಕುಶ (ವಿಂ) 1. ಬಹಳ ಕ್ರೂರದೃಷ್ಟಿ ಯಿಂದ ನೋಡುವ. 2. ಪಾಪವೆಂದು ತಿಳಿಯುವ. ಉಗ್ರಂ ಪಶ್ಯತಿ — ದೃಶಿರ್ (ಪ್ರೇಕ್ಷಣ) "ಽಶ್" (೩-೨-೩೭) | ಪಶ್ಯಾದೇಶ: (೩-೧-೧೩೭) | "ಉಗ್ರಾಂಕುಶೇನ ಸುಗ್ರೀವಸ್ತೇನ ಭ್ರಾತೃ ನಿರಾಕೃತ:" ಮೃತ್ರಿಂ ೬-೧೦೦ |

ಉಚ್ಚೂಡ ಉಚ್ಚೂಡ (ಪುಂ) ಉದ್ವೇಗಮುಖವಾದ ಧ್ವಜ, ಮೇಲುಮುಖವಾದ ಪತಾಕೆ. "ಪತಾಕಾ ತು ಛವಜೋ-ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ | ಅಸ್ಯೋಚ್ಚೂಡಾವಚ್ಛೂಡೌ ದ್ವಾವುಚ್ಛಾವುಚ್ಛೂಡೌ" ವೇಜಂ |

ಉಜ್ಜಿಹಾನ ಉಜ್ಜಿಹಾನ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹಾರಿ ಹೋಗು ತಿರುಮ. ಉ+ಊ ಹಾಡ್ (ಗತೌ) "ಜಾನಕ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಶ್ವೇತಂ ಶೈಲಂ ಫಣಿಪತಿಮಿವ ಕ್ಷಮಾತಲಾದುಜ್ಜಿಹಾನಮ್" ಹಂಸಂ ೧-೩೮ |

ಉತ್ಕಾರಿಕಾ ಉತ್ಕಾರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹಿಟ್ಟಿನಿಂದ ಮಾಡಿದ ರೊಟ್ಟಿ. "ಉತ್ಕಾರಿಕಾ ಕ್ಷುಣ್ಣಪು" ವೇಜಂ |

ಉದ್ಗಾಲ ಉದ್ಗಾಲ (ಪುಂ) ವಮನ, ವಾಂತಿ. "ಉದ್ಗಾಲೋ ವಮಯ್ದಗಾರಿ" ವೇಜಂ |

ಉದ್ವಚ ಉದ್ವಚ (ಪುಂ) ನದ, ಗಂಡುಹೊಳೆ. ಉದ್ವಚಯುಧಕಮ್ — ಉದ್ವಚ (ಉತ್ಸರ್ಗ) "ಕೃಪ್" (೩-೧-೧೧೫) | ನಿಪಾಂ | "ತೋದಾಗಮ ಇವೋದ್ವಚಮಿಷಯೋನಿಮಿಷೇಯಸದೃಶಂ ವಿಚೇಷ್ಟಿತಮ್" ರಘುಂ ೧೧-೮ |

ಉದ್ವೇಲನ ಉದ್ವೇಲನ (ನಂ) ದಡವನ್ನು ಮೀರುವುದು, ದಡವನ್ನು ದಾಟಿ ಬರುವುದು. ಉ+ವೇಲ್ (ಚಲನೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) |

ಉದ್ವೇಲಯತ್ ಉದ್ವೇಲಯತ್ (ವಿಂ) ತಡವನ್ನು ಮೀರಿ ಹೊರಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ದಡವನ್ನು ದಾಟಿ ಬರುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಉ+ವೇಲ್ (ಚಲನೆ) + ಣಿಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) |

ಉದ್ವೇಲಿತ ಉದ್ವೇಲಿತ (ವಿಂ) ತಡವನ್ನು ಮೀರಿ ಬರುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ದಡವನ್ನು ಉಲ್ಲಂಘಿಸಿ ಬರುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಉ+ವೇಲ್ (ಚಲನೆ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:" (೩-೨-೧೦೨) | "ಉದ್ವೇಲಿತಾದ್ವಚುಮಿರೆ ಮಹಾಣ್ವಾ: ನಭ:ಕ್ಷವಂತಿ ಸಹಸಾಭ್ಯ-ವರ್ಧತ" ಕುಮಾಂ ೧೫-೧೧ |



ಉಪಲಿಪ್ತು ಉಪಲಿಪ್ತು (ವಿಂ) ಹೊಂದಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳ, ಪಡೆಯಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ. ಉಪಲಬ್ಧಮಿಚ್ಛು: "ಪ್ರಾವಿಶ-  
ಗ್ರಾಹವಪ್ರಜಾ ಆಹಾವಮುಪಲಿಪ್ತವ:" ಭದ್ರಿಂ ೭-೬೦ ।

ಉಪಲಿಪ್ತು ಉಪಲಿಪ್ತು (ವಿಂ) ಪಡೆಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸ  
ಲ್ಪಟ್ಟು. ಉಪಲಬ್ಧಮಿಚ್ಛು: "ಸಾವಲೇಪಮುಪಲಿಪ್ತೀ ಪರಂ-  
ರಮ್ಯುಪೇತಿ ವಿಕೃತಿ ರಜಸ್ಯಪಿ" ಕಿರಾಂ ೧೩-೫೬ ।

ಉಪಶಾಯಿಕಾ ಉಪಶಾಯಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸರದಿಯಿಂದ  
ಮೆಲಗುವುದು. "ತವೋಪಶಾಯಿಕಾ ಯಾವದ್ರಾಕ್ಷಸ್ಯಶ್ವೇತಯಂತಿ  
ನ । ಪ್ರತಿಸಂದಿಷ್ಯತಾಂ ತಾವದ್ಭೃತು: ಶಾಸ್ತ್ರಸ್ಯ ಮೇಥಿಲಿ"  
ಭದ್ರಿಂ ೮-೧೨೩ ।

ಊ

ಊರ್ಣವಾಹಿನ್ ಊರ್ಣವಾಹಿನ್ (ಪುಂ) ಜೇಡರ ಹುಳ.  
ಊರ್ಣಸೂಚಿಕಾ ಊರ್ಣಸೂಚಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಬಾಗಿಲಿನ  
ಮೇಲುಭಾಗ. "ಸೂಚಿಸ್ವಯೋರ್ಗಲೇಷಾ ವೇದ್ ದ್ವಾರೋರ್ವೇ ತುರ್ಣ-  
ಸೂಚಿಕಾ" ವೇಜಂ ।

ಊವದ್ವಚ ಊವದ್ವಚ (ನಂ) ಅಪಾನವಾಯು, ಗುದದಿಂದ  
ಹೊರಡುವ ವಾಯು. "ಸ್ಥಿರಸ್ವಾಶ್ವಾಸ ಏತೀ ವ  
ಸ್ಯಾದ್ವದ್ವಚ ಗುದಾನಿಲೆ" ವೇಜಂ ।

ಋ

ಋಷ್ಯಕೇತು ಋಷ್ಯಕೇತು (ಪುಂ) ಅನಿರುದ್ಧ, ಪ್ರದ್ಯುಮ್ನನ  
ಮಗ, ಉಪಯು ಪತಿ. "ಬ್ರಹ್ಮಸೂರನಿರೂಢ: ಸ್ಯಾದ್ಋಷ್ಯಕೇತು-  
ರೂಪಪತಿ:" ವೇಜಂ ।

ಋಷಣಿ ಋಷಣಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಬ್ಬಸಿಗ.

ಌ

ಌಠುಡಕ ಌಠುಡಕ (ಪುಂ) ಮನೆಯ ಬಾಗಿಲಿನ ಹೊಸ್ತಿಲು.  
"ಉತ್ತರಾಶ್ವಿ ತುರ್ವದಾರು ದ್ವಾರಸ್ಯಌಠುಡಕ: ಪುನ: । ಗೃಹಾವಗ್ರಹಣಿ  
ದೇಹಲ್ಯಮ್ಮರೋದುಂಬರೋಂಬುರಾ" ವೇಜಂ ।

ಋ

ಋರಾಲ ಋರಾಲ (ಪುಂ) ಹಳದಿ ಮತ್ತು ಕಪ್ಪು ಬೆರತ ಬಣ್ಣ.  
"ಪೀತಶ್ಯಾಮಲ ಋರಾಲೋ ಗೌರ: ಸ್ಯಾತ್ಪೀತಲೋಹಿತ:" ವೇಜಂ ।

ಋಲಕ ಋಲಕ (ಪುಂ) 1. ಕೇರಸೊಪ್ಪು. "ಕಾಣಮಾರಿಷ  
ಋಲಕ:" ವೇಜಂ । 2. ಮಧುರರಸವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು  
ಬಿಟ್ಟುಗೂಡಿದ ಉಳಿದ ರಸಗಳು. "ಸ್ವಾದುಮೇಕಂ ವಿಹಾಯಾನ್ಯೇ

ಯುಷಾ: ಪಶ್ಚ ಸ್ಯುರಾಲಕ:" ವೇಜಂ । 3. ಕಾರರಸವನ್ನು  
ಬಿಟ್ಟು ಬಿಟ್ಟುಗೂಡಿದ ಉಳಿದ ಐದು ರಸಗಳು. "ಋಲಕ:  
ಕಡುಕಂ ಹಿತ್ವಾ" । 4. ಕೇರಸವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬಿಟ್ಟು  
ಗೂಡಿದ ಇತರ ಐದು ರಸಗಳು. "ವಿನಾ ತಿಕ್ತೇನ  
ಋಲಕ:" ವೇಜಂ ।

ಋಸರ ಋಸರ (ಪುಂ) ಸಣ್ಣ ಜಾತಿಯ ಜೀರಿಗೆ. "ಸೂಕ್ಷಮೋಷಿ  
ಕಣಜೀರಣ ಋಸರ:" ವೇಜಂ ।

ಋ

ಋಪಶಾಯಿಕ ಋಪಶಾಯಿಕ (ಪುಂ) ಶಯನಗೃಹದ ಅಧಿ  
ಕಾರಿ. "ಪಾದಪಾಶಿಕಕುಟೋರಕ್ಷಕೋಪಶಾಯಿಕಾದಿ:" ಅರ್ಥಶಾಂ ।

ಋಪಸ್ಯಾಯಿಕ ಋಪಸ್ಯಾಯಿಕ (ಪುಂ) ಕೂಲಿಯಾಳು. ಕೂಲಿ  
ಯಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. "ಕುಟೋರಕ್ಷಕೋಪಶಾಯಿಕಾದಿ:  
ಋಪಸ್ಯಾಯಿಕವರ್ಗ:" ಅರ್ಥಶಾಂ ।

ಋಪ್ತಿಕಾ ಋಪ್ತಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜ್ಯೇಷ್ಠ ಸಹೋದರ.  
ಹಿರಿಯಕ್ಕ. "ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ಸ್ವಸೌಪ್ತಿಕಾ" ವೇಜಂ ।

ಕ

ಕಕಖಟ ಕಕಖಟ (ವಿಂ) ಬಹಳ ದೃಢವಾದ, ಕಠಿನವಾದ.  
"ಕಠೋರಿಣಿಠುರಕೂರದೃಢದಾಣಕಕಖಟಾ:" ವೇಜಂ ।

ಕಟವಾನಕ ಕಟವಾನಕ (ನಂ) ಮೃಗರೋಮದಿಂದ ನಿರ್ಮಿತ  
ವಾದ ಅರು ವಿಧ ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಸಂಪುಟಿಕಾ ಚತುರಶ್ರಿಕಾ  
ಲಂಬರಾ ಕಟವಾನಕಮ್ ಪ್ರಾವರಕ: ಸತ್ತಲಿಕಾ ಎಂದೂ ಮೃಗ  
ರೋಮಜವು ಅರು ವಿಧ. ಅರ್ಥಶಾಂ ।

ಕಡೂರ ಕಡೂರ (ಪುಂ) ಸೂರಣ, ಚೂರಣದ ಗಿಡ.  
"ಋಲ್ಠ: ಕಡೂರಸೂರಣಿ" ವೇಜಂ ।

ಕನ್ಯಾಟಿಕಾ ಕನ್ಯಾಟಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಛಿಂದಿಬಟ್ಟೆ, ಹರುಕಂ  
ಬಟ್ಟೆ. "ಶಿವರಂ ಭಿಕ್ಷುಸಂಘಾತಿ ಕನ್ಯಾ ಕನ್ಯಾಟಿಕೇ ಸಮೇ"  
ವೇಜಂ ।

ಕರ್ಣಿಕ ಕರ್ಣಿಕ (ಪುಂ) ಮೇಲಿನ ಕಿವಿಗೆ ಹಾಕಿಕೊಳ್ಳುವ  
ಚಂದ್ರಮೂರುವೆಂಬ ಒಂದು ಅಭರಣ. "ಋಕ್ಷಾಪ್ತಿಕಾ  
ತು ಕರ್ಣಿಕ:" ವೇಜಂ ।

ಕಾವಾರಿ ಕಾವಾರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಾಳೆಗರಿ ಅಥವಾ ಹುಲ್ಲಿನಿಂದ  
ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಕೊಡೆ. "ಕಾವಾರಿ ಜಙ್ಗಮಕುಟಿ ಭ್ರಮಕುಟಿ"  
ಪ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಕಿನಾಡಕ ಕಿನಾಡಕ (ನಂ) ಸಾರ, ಸ್ಕರಾಂಶ, ಮಜ್ಜೆ.  
"ಮಜ್ಜಾ ಸಾರ: ಕಿನಾಡಕಮ್" ವೇಜಂ ।



ಕುಲಸಾಯಿಕ ಕುವಲಾಯಿಕ (ಪುಂ) ಚರ್ಮಾಶ ಪಕ್ಷಿ.  
 ಕೇಕಾಲಿ ಕೇಕಾಲಿ (ಪುಂ) ಮಯೂರ, ನವಿಲು.  
 ಕೇಕಲಕ ಕೇಕಲಕ (ಪುಂ) ವನ್ಯಶರಸ್ವಾಣ.  
 ಕೊಡಕ ಕೋಟಿಕ (ಪುಂ) ಕಲ್ಲುಕುಟಕನಿಂದ ಕುಬಾರ ಹೆಂಗಸಿ  
 ನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ ಬೆರಕೆ ಜಾತಿಯವನು.  
 ಕೊಡ್ಲ ಕೋದ್ರಂಗ (ನಂ) ಪಲ್ಲಂಗ, ಮತ್ತನೆಯ  
 ಕುರ್ಚಿ.  
 ಕೊಡಕ ಕೋಡಕ (ನಂ) ಗೃಹದ್ವಾರ, ಮನೆಯ ಬಾಗಿಲು.  
 "ಕೊಡಕಾ ಕ್ಷಣವರ್ಜನಾಮಗ್ನಿಕುಡ್ಡನಶಾಲಯಃ" ಖಂಶಾಂ 1  
 ಕೌಂಡಿನ್ಯಕ ಕೌಂಡಿನ್ಯಕ (ಪುಂ) ಮಲಮೂತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ವಿಷ  
 ಏರುವ ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಕೀಟ.  
 ಕೌನ್ತಿಕ ಕೌನ್ತಿಕ (ಪುಂ) ಶರ, ಕೆಪಟ, ಮಚಿ,  
 ಅಪ್ರಾಮಾಣಿಕ.  
 ಕೌಲಕುಲ ಕೌಲಕುಲ (ನಂ) ಮುಷ್ಕಗಳನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸಿ  
 ಮಾಡುವ ತಪಸ್ಸು. "ಕೌಲಕುಲಾಂ ತಪಃ" ಯತತ್ ಕೌಲಕುಲಂ  
 ಕುಲಂ ಚ ತತ್" ವೇಜಂ 1  
 ಕೌಲಿನ್ಯ ಕೌಲಿನ್ಯ (ನಂ) ಒಳ್ಳೆಯ ಮತದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟು  
 ವಿಕೆ, ಸದ್ವಂತದಲ್ಲಿ ಜನಿಸುವಿಕೆ. ಕುಲಿನಸ್ಯ ಭಾವ: "ಽಯಮ್"  
 (೪-೧-೧೨೪) 1 "ನ ಕೌಲಿನ್ಯಾಞ್ ಸೌಹಾರ್ವಾಪೋ ವಾಕ್ಯೇ  
 ಪ್ರವರ್ತತೇ 1 ಮನ್ವಿಣಾಂ ಯಾವದಮ್ಯೇತಿ ವ್ಯಸನಂ ಖೋಕಮೇವ ಚ"  
 ಪೌಷ್ಕತಂ ೧-೧೨೭ 1  
 ಕ್ರಿಮಿರ ಕ್ರಿಮಿರ (ಪುಂ) ಬಿಳುವು ಕೆಂಪು ಬೆರಕೆ ಬಣ್ಣ.  
 "ಕ್ರಿಮಿರ: ಸಿತಲೋಹಿತ:" ವೇಜಂ 1  
 ಕ್ಷೀರೋದ್ವತ್ ಕ್ಷೀರೋದ್ವತ್ (ಪುಂ) ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರ,  
 ಪಾಲ್ಕಡಲು. "ಕ್ಷೀರೋದ್ವತ್ಪಾ: ಪ್ರಮಥ್ಯ ಮಥಿತಾದೇಶಂ-  
 ಮರೇನಿಮಿತೇ" ನೆಪಂ ೧೨-೭೪ 1  
 ಕ್ಷೋಮಯತ್ ಕ್ಷೋಮಯತ್ (ವಿಂ) ಕಲಕುತಿರುವ, ಚಲಿಸು  
 ಮತೆ ಮೂಸುತಿರುವ. ಕ್ಷುಮ (ಸಚಲನೆ)+ಗಿವ್ "ಕೌ" (೩-೨-೧೨೪) 1 "ಕ್ಷೋಮಯನ್ ಜಲನಿಖಿನನುಲೇನ ಪ್ಲಾವಯಂ  
 ವಸುಧಾಂ ಪ್ರಜಹರ್ಷ" ಯಾದಂ ೨೧-೪೭ 1  
 ಕ್ಷೋಮ್ಯ ಕ್ಷೋಮ್ಯ (ನಂ) 1. ತ್ರವ್ಯ, ತವರ. "ರಕ್ಷಾಂ ಬಕ್ಷಾಂ  
 ತ್ರಪು ಕ್ಷೋಮ್ಯಮ್" ವೇಜಂ 1 (ವಿಂ) 2. ಕಲಕುತಿರುವ,  
 ಚಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ಕ್ಷುಮ (ಸಚಲನೆ) "ಪ್ಯತ್"  
 (೩-೧-೧೨೪) 1 3. ಕಲಕುತಿರುವದಾದ.  
 ಕ್ಷೇಲ ಕ್ಷೇಲ (ಪುಂ) ವಿಷ. "ಗರಲಸ್ತು ವಿಷಂ ಕ್ಷೇಲ:"  
 ವೇಜಂ 1

ಕ

ಕಜಕ ಖಜಕ (ಪುಂ) ಮುತ್ತು, ಕಡಗೋಲು. "ಮಮ್ಯಸ್ತು  
 ಮಮಾ ಮಮಾನೋ ವೇಶಾಸ್ತ: ಕಜಕೋಽಪಿ ಚ" ವೇಜಂ 1  
 ಕಡಾಸ ಖಡ್ವಾಸ (ಪುಂ) ಪುನುಗು ಬೆಕ್ಕು. "ಕಾಲಿವಾತಸ್ತು  
 ಕಡಾಸ: ಪುತಿ:" ವೇಜಂ 1  
 ಕಡವಿಕಕಾ ಖಡಕೃಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಕ್ಷದ್ವಾರ, ಪಾರ್ಶ್ವಕೃ  
 ತೆಯುವ ಬಾಗಿಲು. "ಶಾ:ಸ್ತ್ರೀ ದ್ವಾರಂ ಪಕ್ಷಕಂ ತು ಪಕ್ಷದ್ವಾರಂ  
 ಕಡವಿಕಕಾ" ವೇಜಂ 1  
 ಕಪ್ಪಕಂಡ ಖಂಡಪರ್ಕಟ (ನಂ) ಅಡಕಾಯಿ. "ಕಪ್ಪ-  
 ಪರ್ಕಡಮುಧ್ರೆಗಂ ತಾಮ್ಬಲಂ ಮುಷ್ಕಮುಷ್ಕಮ್" ವೇಜಂ 1  
 ಕತಿಕಲ ಖತಿಕಲ (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ.  
 ಕರಮಂಜರಿ ಖರಮಂಜರಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತರೇಶ ಗಿಡ.  
 ಕರಾ ಮಂಜರೀರಸ್ಯಾ: 1 ಗೌರಾಂ "ಕೀಪ್" ವಾ 1 "ಪ್ರತ್ಯ-  
 ಕ್ಷಣಿ ಕೀಶಪಣಿ ಕಿವಿಹಿ ಕರಮಂಜರಿ" ಅಮಂ 1  
 ಕರಲ ಖರಲ (ಪುಂ) ನಖ, ಉಗುರು. "ಮಹಾರಾಜ:  
 ಪುನರ್ಮವ: 1 ಕರಲ: ಕರಜಭಾವ" ವೇಜಂ 1  
 ಕಾಡು ಕಾಡು (ಪುಂ) ರವಿ, ಸೂರ್ಯ. "ಕಾಡ್ವನೀನ:  
 ಕತಿಕಲ: ಕಗ: ಕಾಡ್ವಸ್ತಮೋರಿಪು:" ವೇಜಂ 1

ಗ

ಗಜ್ಜೇಷಿ ಗಂಗೆಷ್ಠಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮೌಕೃಕ, ಮುತ್ತು.  
 "ಮುಕ್ತಾಫಲಂ ಶೌಕಿಕೇಯಂ ಗಜ್ಜೇಷಿ: ಕಡಶಕೇರಾ" ವೇಜಂ 1  
 ಗಣ್ಡಕಾಲಿ ಗಂಡಕಾಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮುಟ್ಟಿದರೆ ಮುನಿವ  
 ಗಿಡ. "ಲಜ್ಜಾಲ್ಪಸ್ತು ನಮಸ್ಕಾರಿ ವದರ್ಯಂಜಲಿಕಾರಿಕಾ 1  
 ಗಣ್ಡಕಾಲಿ" ವೇಜಂ 1  
 ಗಣ್ಡಿಕಾ ಗಂಡಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನದಿ ಮೊದಲಾದುವನ್ನು  
 ದಾಟಲು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ತೆಲುಮಾರ. "ವಲಾವುಚಮಂ-  
 ಕರಗಡ್ಡತಿ-ಲಗಣ್ಡಿಕಾವೇಜಿಕಾಮಿಷ್ಠೋದಕಾನಿ ತಾರಯೇತ್"  
 ಖಂಶಾಂ 1  
 ಗಂಭೀರಕ ಗಂಭೀರಕ (ವಿಂ) ಅಗಾಧವಾದ, ಅಳವಾದ.  
 "ಅಗಾಧಮತಲಸ್ಪರ್ಶಮಸ್ಥಾನಂ ಗಂಭೀರಕಮ್" ವೇಜಂ 1  
 ಗರ್ಜ ಗರ್ಜಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅನೆಯ ಗರ್ಜನೆ. ಗರ್ಜ (ಶಬ್ದ)  
 "ಜ:" (೩-೩-೧೦೩) 1 "ಅಜಹದ್ಮುಃಗೀತೇನ ಗರ್ಜಾಹಿಂಬರ-  
 ಜೋಮಿನಾ 1 ತ್ವಕಾನ್ಯಾ ಕರ್ಣತಾಲೇನ ವಸ್ತುಪ್ರಸಕ್ತಿತಲೇನಮ್"  
 ಯಾದಂ ೧೬-೯ 1



ಗಾಣನಿಕ ಗಾಣನಿಕ (ವಂ) ರಾಜ್ಯದ ಆಯವ್ಯಯಗಳನ್ನು ಸರಿಯಾಗಿ ನೋಡಿಕೊಳ್ಳಲು ನಿಯುಕ್ತನಾದವನು. ಗಣನೆ ನಿಯುಕ್ತ: "ಠಕ್" (೪-೪-೬೯) ।

ಗಾಣನಿಕಯ ಗಾಣನಿಕ (ನಂ) ಆಯವ್ಯಯಗಳನ್ನು ಸರಿಯಾಗಿ ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಅಧಿಕಾರಿಯ ಕಾರ್ಯ. ಗಾಣನಿಕಸ್ಯ ಕರ್ಮ "ಘ್ನ" (೪-೧-೧೨೪) । "ವಸಪಟಲೇ ಗಾಣನಿಕಯಮ್" ಅರ್ಥಶಾಂ ।

ಗುಡಾಜಿವಾ ಗೂಢಾಜೀವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪತಿ ಇದ್ದರೂ ದಾರಿದ್ರ್ಯ ನಿಮಿತ್ತ ವ್ಯಭಿಚಾರದಿಂದ ಜೀವಿಸುವ ಹೆಂಗಸು. "ವಾಢ್ಯ-ವಿವಿಧಾ ಗುಡಾಜಿವಾ ಯೋಗಸ್ತ್ರಿಯೋ ವಾ ದಾಯನಿಕೋಪಾರ್ಥ ವಿವರ-ಮಾನಾ" ಅರ್ಥಶಾಂ ೧೧-೧ ।

ಛ

ಛನಪದ ಛನಪದ (ನಂ) ಛಲ, ನೀರು. "ವಿವಿಧ ಪಾಪೋ ಛನಪದ ಮೃಗನ ಜೀವನ ವನಮ್" ವೈಜಂ ।

ಛನವಾಸಕ ಛನವಾಸಕ (ವಂ) ಕುಂಬಳದ ಗಿಡ. "ಕರ್ಕಾ-ರಘನವಾಸಕ: । ಕುಪ್ಪಾಪಕ: ಪುಷ್ಪಕಲ:" ವೈಜಂ ।

ಛರಿನ್ ಛರಿನ್ (ವಂ) ಮಾಷ, ಉದ್ದು. "ಮಾಪಸ್ತು ಮಲ್ವೋ ನಂದಿ ಛರಿ ಬೀಜವರೋ ಬಲಿ" ವೈಜಂ ।

ಛಾತಯತ್ ಛಾತಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಿರುವ. 2. ಕೊಲ್ಲಿಸುತ್ತಿರುವ. ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:) + ಣಿವ್ "ಛತ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

ಛಾತನೀಯ ಛಾತನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಕೊಲ್ಲಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಕೊಲ್ಲಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಕೊಲ್ಲಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. 4. ಕೊಲ್ಲಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದ. ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:) + ಣಿವ್ "ಛನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । "ತಥ್ಯ:" (೩-೨-೯೬) । -ಯಿತಥ್ಯ: -ಯಿತವ್ಯ: 5. ಹಿಂಸಿಸಲ್ಪಡುವ. 6. ಹಿಂಸಿಸಬೇಕಾದ. 7. ಹಿಂಸಿಸಲು ಅರ್ಹನಾದವನು. 8. ಹಿಂಸಿಸಲು ಶಕ್ತನಾದವನು.

ಛಾತಿಸ ಛಾತಿಸ (ವಿಂ) 1. ಕೊಲ್ಲಿಸಲ್ಪಟ್ಟು. ಹನ (ಹಿಸಾಗ-ತಯೋ:) + ಣಿವ್ "ಛ:" (೩-೨-೧೦೨) । "ವನ್ಮಮುಕ್ತ-ನಿವನಾಯ ಯುಷ್ಮತ್ಪ್ರಯುಕ್ತಯಾ ವಿಷಕನ್ಯಯಾ ಛಾತಿಸಿ ತಪಸ್ವಿನಿ ಪವತೇಶ್ವರೇ" ಮುಕ್ತಾಂ ೨ । (ನಂ) 2. ಕೊಲ್ಲಿಸುವುದು. ಹನ+ಣಿವ್ ಭಾವೇ "ಛ:" (೩-೩-೧೧೪) ।

ಛಾತಯ ಛಾತಯ (ವಿಂ) 1. ಕೊಲ್ಲಿಸಲ್ಪಡುವವನು. 2. ಕೊಲ್ಲಿಸಬೇಕಾದವನು. ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:) "ಛತ್" (೩-೧-೧೨೪) । 3. ಕೊಲ್ಲಿಸಲ್ಪಡುವ. 4. ಕೊಲ್ಲಿಸಬೇಕಾದ. ಹನ+ಣಿವ್ "ಯತ್" (೩-೧-೯೬) ।

ಛನತ್ ಛನತ್ (ವಿಂ) 1. ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಿರುವ. ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಿರುವ. ಹನ (ಹಿಸಾಗತಯೋ:) "ಛತ್" (೩-೨-೧೨೪) । 2. ಕೊಲ್ಲಿಸುತ್ತಿರುವ. "ತತೋ ಮಾಯಾಮಯಿ ಸೀತಾ ಛನತ್ ಛಜ್ಜೇನ ವಿಯದಗತ:" ಭದ್ರಿಂ ೧೭-೨೦ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ತೀ -ತೀ.

ಛ

ಛಕ್ರಿಸ ಚಕ್ರಿಸ (ವಿಂ) ಮಂಡಲಾಕಾರವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ವರ್ತುಲಾಕಾರವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು. ಛಕ್ರ "ಛತ್" (೪-೨-೩೬) । "ಛಕ್ರಾಣಿವಿಜಯಾಯ ಛಕ್ರಿತಾಢ್ಮಿಮಧೋ-ಪಲಿತಾಪಿಲಪ್ರತೇ:" ವಾದಂ ೧೭-೪೩ ।

ಛಲಯತ್ ಛಲಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಚಲಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಕದಲುಮಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 2. ನಡುಗುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ನಡುಗಿಸುತ್ತಿರುವ. ಛಲ (ಕಮಾನೇ) + ಣಿವ್ "ಛಲ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಮುನಿಪ್ರಚಾಲ ಷಯಕಾಲ-ವಾಣ: ಪಿಪಿತಿ ಸಸೌಕಾಂ ಛಲಯಪ್ರವೇಷುಮಿ:" ಕಿರಾಂ ೧೪-೪೦ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

ಛಾತಿಕ ಛಾತಿಕ (ವಂ) ರಾಜನನ್ನು ಎಬ್ಬಿಸಲು ಗಂಟೆಯನ್ನು ಹೊಡೆಯುವವನು, ಗಂಟೆಯನ್ನು ಹೊಡೆದು ಹೊಗಳುವ ಸುತ್ತಿಪಾಠಕ. "ಮಾಗವೋ ಮಧುಕೋ ಛಾತಾತಾಢ್ ಛಾತಿಕಛಾತಿಕೋ" ವೈಜಂ ।

ಛಿಕ್ಕಾಣ ಛಿಕ್ಕಾಣ (ನಂ) ನವಕ ಧಾನ್ಯ. "ಛಿಕ್ಕಾಣ-ಕಙ್ಗುನಿ ಕಙ್ಗು:" ವೈಜಂ ।

ಛಿತ್ರೋಪಪ್ಪಾ ಛಿತ್ರೋಪಪ್ಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಶಿಶಿರ ಮುತ್ತುವಿನ ರಾತ್ರಿ. "ತಾಮಸೀ ಸಾತ್ವಿಕೀ ಛಿತ್ರಾ ಛಿತ್ರೋಪಪ್ಪಾ ವ ರಾಜಸೀ । ಲಿಪಿಹಿತಾ ವೇತಿ ಶರವ್ಯ: ಪ್ರಾವೃಡಾಢ್ವತುಷು ಕ್ರಮಾತ್" ವೈಜಂ ।

ಛಿಂತಯತ್ ಛಿಂತಯತ್ (ವಿಂ) 1. ಯೋಚಿಸುತ್ತಿರುವ. ಛಿತಿ (ಸ್ಮತ್ಯಾಮ್) + ಣಿವ್ "ಛತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಛಿಂತಯಸಿತಯಮುತ್ಪುಜ್ಜೆ: ಪ್ರಾವಯಂತಿ ದಿವಂ ಛನೆ:" ಭದ್ರಿಂ ೮-೪೯ । 2. ಧ್ಯಾನಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಚಿಂತನೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. 3. ಸ್ಮರಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಯಂತಿ -ಯಂತಿ.

ಛಿಂತಯಮಾಣ ಛಿಂತಯಮಾಣ (ವಿಂ) 1. ಚಿಂತಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಸ್ಮರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಛಿತಿ (ಸ್ಮತ್ಯಾಮ್) + ಣಿವ್ ಕರ್ಮಂ "ಛಾನ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಜೀವತ್ಸು ತಾತಪಾದೇಷು ನೃತನೇ ದಾಸಸಂಘೇ । ಮಾತೃಭಿಃಪ್ರಿನ್ಯಮಾನಾನಾಂ ತೇ



ಹಿ ನೋ ದಿವಸಾ ಗತಾ: " ತಂ ಸಂ ೧-೧೯ | 3. ಧ್ಯಾನ  
ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ.

ಶಿಕ್ಷೆ ಚೌಕ (ವಿಂ) ಮನೋಹರವಾದ, ಸುಂದರವಾದ,  
ಅಂದವಾದ. "ಶೋಭನಂ ಸುಪಮಂ ಚಾರು ಹೃದಯಂ ಚೌಕಂ ಮನೋಹರಮ್"  
ವೇಜಂ |

ಜ

ಜಕ್ಷಾ ಜಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಭಕ್ಷಿಸುವುದು, ಉಟಿಮಾಡು  
ವುದು. ಜಕ್ಷ (ಭಕ್ಷಹಸನಯೋ:) "ಅ:" (೩-೩-೧೦೩) |  
"ಜಕ್ಷಾ ಸ್ವಾದನಭಕ್ಷಣಂ" ವೇಜಂ | 2 ನಗುವುದು.

ಜಪ್ತಿ ಜಪ್ತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಜಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಮಂತ್ರ. ಜಪ್ಯತೇ—  
ಜಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) ಕರ್ಮಂ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) |  
"ಪುಷ್ಪೇಣಾ ಧ್ರುವಮನುಷುವರ್ಷಜಪ್ತಿಹುಂಕಾರಮನ್ವಬಲಮಸ್ಮಿತ-  
ಶಾಂತವಾಕ್ಯತೀನ್" ನೆಪಂ ೧೧-೨೬ | 2. ಜಪಿಸುವುದು. ಜಪ  
ಭಾವೇ "ಕ್ತಿನ್" (೩-೩-೯೪) |

ಜಲವಾಲಕ ಜಲವಾಲಕ (ಪುಂ) ವಿಂಧ್ಯಪರ್ವತ. "ವಿಂಧ್ಯಸ್ತು  
ಜಲವಾಲಕ:" ವೇಜಂ |

ಜಾನಾನ ಜಾನಾನ (ವಿಂ) ತಿಳಿದಿರುವ, ಅರಿತಿರುವ. ಜ್ಞಾ  
(ಅವವೋಚನೆ) "ಶಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ನಿತ್ಯಮುಚ್ಚ-  
ಮಾನಾಃ ಸ್ಮರಸಂಭೋಗಮಸು | ಜಾನಾನಾಃ ಸ್ಮರಸಂಭೋಗಮಾನ್  
ಕಿಲಕಿಚ್ಚಿತವಿಭ್ರಮಾನ್" ಭಟ್ಟಂ ೮-೪೭ |

ಜ

ಜಾಣಾಲಿ ಯಾಂಜಾಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಡವಲಗಿಡ. "ಜಾಲಿ  
ಪಟಾಲಿ ಜಾಣಾಲಿಕೋಶಾತಕಿ" ವೇಜಂ |

ಜಾಣಪ್ಪ ಯಾಂಜಪ್ಪ (ಪುಂ) ಆಮ್ರೇಡನ, ಹೇಳಿದ್ದನ್ನೇ ಮತ್ತೆ  
ಹೇಳುವುದು.

ಜಾಣಪ್ಪಿ ಯಾಂಜಪ್ಪಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಯಾಂಜಪ್ಪಿ, ಕೃತಾಂ. "ಜಾಣಪ್ಪಿ  
ಜಾಣಪ್ಪಿ: ಕ್ಷುಬ:" ವೇಜಂ |

ಟ

ಟಡ್ಡರ ಟಡ್ಡರ (ಪುಂ) ಭೇದಿಯ ಶಬ್ದ. "ಬೇರಿನಾದೇ ತು ಟಡ್ಡರ:"  
ವೇಜಂ |

ಡ

ಡಿಂಡಿಶ ಡಿಂಡಿಶ (ಪುಂ) ಮಹಾದೇವ. ಪರಮೇಶ್ವರ.  
"ಸ್ಯಾಲೋ ಡಿಂಡಿಶ ಡಿಂಡಿಶ: ಕಂಠಕಾಲೋ ಮಹಾವ್ರತ:" ವೇಜಂ |

ಡ

ಡಂಡುಕ ಡಂಡುಕ } (ಪುಂ) ಕಪಟ, ಮಂಡಕ, ಮೋಸಗಾರ.  
ಡೌಂಡುಕ ಡೌಂಡುಕ }  
"ಡೌಂಡುಕೋ ಡಂಡುಕಃ" ವೇಜಂ |

ಡಾರಿಕಾ ಡಾರಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜರಿ, ಲಕ್ಷ್ಮೀ ಚೇಳು. "ಆಡಾ  
ಶತಪದೀ ಕರ್ಣಜಲೂಕಾ ಡಾರಿಕಾಪಿ ಚ" ವೇಜಂ |

ತ

ತಮರಕ ತಮರಕ (ನಂ) ತಾರ. "ಗುರುಪತ್ರಂ ತಗರಕಂ ಧನಂ  
ಸಲವಣಂ ರಜ:" ವೇಜಂ |

ತಮಾ ತಮಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ತಂತ್ರ. "ವಾಸ್ತವ್ಯೋ ಯಾ ನಿಶಾಖ್ಯಾ  
ಚ ವಾಸತೇಯಿ ತಮಾನಿಶೌ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ತಮ್ಬಾ ತಮ್ಬಾ } (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗೋವು, ಆಕಳು, ಹಸು. "ಅನನ್ದ-  
ತಮ್ಬಾ ತಮ್ಬಾ }  
ವಾಹನಃ ಪುತ್ರಾ ತಮ್ಬಾ ತಮ್ಬಾ ನಿಲಿಮ್ಪಿಕಾ" ವೇಜಂ |

ತರ್ದಿ ತರ್ದಿ (ಪುಂ) ಪೀಡೆ, ಹಿಂಸೆ. ತರ್ದೆ (ಹಿಸಾಯಾಮ್) "ಓನ್"  
(ತಂ ೪-೧೧೭) |

ತರ್ಪಯತ್ ತರ್ಪಯತ್ (ವಿಂ) 1. ತೃಪ್ತಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ.  
2. ಸಂತೋಷಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ. ತೃಪ (ಪ್ರೀಣನೆ) + ಣಿಕ್  
"ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ತೃಪ್" (೪-೧-೬) |  
-ಯಂತಿ -ಯಂತೀ.

ತರ್ಪಿತ ತರ್ಪಿತ (ವಿಂ) 1. ತೃಪ್ತಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. 2. ಸಂತೋಷ  
ಗೊಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ತೃಪ (ಪ್ರೀಣನೆ) + ಣಿಕ್ "ಕ್ತ:"  
(೩-೨-೧೦೨) |

ತರ್ಪು ತರ್ಪು (ಪುಂ) ಸೂರ್ಯ. "ತರ್ಪುಮಾರ್ತಿಸ್ತುಮುಂಡೀರ-  
ಪಾಥಿಪೇಯಗಮಸ್ತಯ:" ವೇಜಂ |

ತಲಿಚ್ಚಕ ತಲಿಚ್ಚಕ (ನಂ) ಕುರಿಯ ತುಪ್ಪಟದಿಂದ  
ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಕಂಬ. "ತುರಗಾಸ್ತರಣಂ ವರ್ಣಕಂ ತಲಿಚ್ಚಕಂ  
ವಾರವಾಣ: ಪರಿಸ್ತೋಮ: ಸಮಂತಭದ್ರಂ ಚ ಆವಿಕಮ್" ಅರ್ಥಶಾಂ |

ತಾದಾತ್ವಿಕ ತಾದಾತ್ವಿಕ (ವಿಂ) ತತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಇರುವ,  
ಆಗಿನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಇರುವ. ತತ್ಕಾಲೇ ಭವಮ್ "ತಕ್"  
(೪-೩-೫೩) | "ಯೋ ಯದ್ವತ್ಪದ್ಯತೇ ತತ್ತದ್ವತ್ಪದ್ಯತೇ ಸ  
ತಾದಾತ್ವಿಕ:" ಅರ್ಥಶಾಂ |

ತಾಮ್ರಕರ್ಷ ತಾಮ್ರಕರ್ಷ (ನಂ) ಚಿನ್ನದ ಒಂದು ತೂಕ,  
ಹದಿನಾರು ಅದ್ಯಮಾಪಕಗಳ ತೂಕ ಒಂದು ಕರ್ಷ. ಕರ್ಷದ  
ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗದ ತೂಕ ತಾಮ್ರಕರ್ಷ.



“ಹೆಮ್ನೋಽಘ್ರೇ ವಿಶ್ವವಾರಟೌ | ಪಾದಿಕಂ ತಾಮ್ರಕಪಂ ಸ್ಯಾತ್”  
ವೆಂಜಂ |

ತಿಸ್ತುಚ್ಚವನ ತಿಕ್ತಚ್ಚದನ (ಪುಂ) ಕಾರವೇಲ್ಲ, ಹಾಗಲಗಿಡ.

“ಸುಖ್ಯಾಂ ತಿಸ್ತುಚ್ಚದನಃ ಕಾರವೇಲ್ಲಃ ಕಠಿಲ್ಲಕಃ” ವೆಂಜಂ |

ತಿಸ್ತುಚ್ಚವನ ತಿಕ್ತವಲ್ಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುರಟಗಿಡ. “ಮಘ್ಲಿಕಾ

ತಿಸ್ತುಚ್ಚವನ ಪಿಲುನಿ ತೇಜನಿ ಸ್ವಾ” ವೆಂಜಂ |

ತುಜ್ಜಿಮನ್ ತುಂಗಿಮನ್ (ಪುಂ) 1. ಔನ್ನತ್ಯ, ಎತ್ತರ.

ತುಜ್ಜಸ್ಯ ಭಾವಃ “ಇಮನಿ” (೪-೧-೧೨೨) | 2. ಸ್ಥೂಲ

ವಾಗಿರುವಿಕೆ, ದಪ್ಪನಾಗಿರುವಿಕೆ. “ಋತನಿಶ್ಚಯಿನೋ ವನ್ಶಾಃ

ತುಜ್ಜಿಮಾ ನ ಪ್ರಶಸ್ಯತೇ” ಪೃಷ್ಠತಂ ೨-೧೪೯ |

ತುಷ್ಟವತ್ ತುಷ್ಟವತ್ (ವಿಂ) ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಲು

ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಸ್ತೋತುಮಿಚ್ಛತ್—ಷ್ಟು (ಸ್ತುತೌ) +

ಸನ್ “ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) | “ರತ್ನಕರ್ಮಾಪತಿರನಪಾದು

ಭವತೀ ತುಷ್ಟವತೋ ಮೇ ಜವಾತ್” ಪಾದುಂ ಸಂ |

ತುಷ್ಟವಾ ತುಷ್ಟವಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ,

ಸ್ತುತಿಸಲು ಇಚ್ಛೆ. ಸ್ತೋತುಮಿಚ್ಛಾ—ಷ್ಟು (ಸ್ತುತೌ) + ಸನ್

“ಅಃ” (೩-೩-೧೦೨) |

ತುಷ್ಟವಾ ತುಷ್ಟವಾ (ವಿಂ) ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ,

ಸ್ತುತಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ಸ್ತೋತುಮಿಚ್ಛಾ—ಷ್ಟು (ಸ್ತುತೌ) +

ಸನ್ “ಃ” (೩-೨-೧೬೮) |

ತುಪ್ತವತ್ ತುಪ್ತವತ್ (ವಿಂ) 1. ತೃಪ್ತಿ ಹೊಂದಿದವನು.

2. ಸಂತೋಷಪಟ್ಟವನು. ತೃಪ (ಪ್ರೀಣನೆ) “ಕವತುಃ”

(೩-೨-೧೦೨) | ಸ್ತ್ರೀಯಾ “ಕೀಪ್” (೪-೧-೬) | -ವತೀ

-ವತಿ.

ತುಪ್ತವತ್ ತುಪ್ತವತ್ (ವಿಂ) 1. ತೃಪ್ತಿ ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ.

2. ಸಂತೋಷಪಡುತ್ತಿರುವ. ತೃಪ (ಪ್ರೀಣನೆ) “ಶತ್”

(೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರೀಯಾ “ಕೀಪ್” (೪-೧-೬) | -ಂತೀ

-ಂತೀ.

ತುಪ್ತವತ್ ತುಪ್ತವತ್ (ವಿಂ) ಬಾಯಾರುತ್ತಿರುವ, ನೀರು ಕುಡಿದ

ಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ತೃಪ (ಪಿಪಾಸಾಯಾಮ್)

“ಶತ್” (೩-೨-೧೨೪) | “ತುಪ್ತವತ್ಃ ಪ್ರತಿಸೂರ್ಯಕೇರಜ-

ಗರಸ್ವೇದದ್ರವಃ ಪೀಯತೇ” ತಂ ರಾಂ ೨-೧೬ |

ತೃಪಣ ತೃಪಣ (ನಂ) ಲಜ್ಜೆ ಪಡುವುದು, ನಾಚಿಕೆ ಪಡು

ವುದು. ತೃಪ (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) |

ತೃಪಣೀಯ ತೃಪಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ನಾಚಿಕೆ ಪಡಬೇಕಾದ.

2. ನಾಚಿಕೆ ಪಡಬಹುದಾದ. ತೃಪ (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್)

“ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) | “ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬) |

ತೃಪಣೀಯ ತೃಪಣೀಯ, ತೃಪಣೀಯ ತೃಪಣೀಯ.

ತೃಪಣೀಯ ತೃಪಣೀಯ (ವಿಂ) ನಾಚಿಕೆ ಪಡುತ್ತಿರುವ.

ತೃಪ (ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್) “ಶಾನ್” (೩-೨-೧೨೪) |

ತೃಪ್ತ ತೃಪ್ತ (ವಿಂ) 1. ನಾಚಿಕೆಗೊಂಡವನು. ತೃಪ (ಲಜ್ಜಾ-

ಯಾಮ್) “ಕಃ” (೩-೪-೭೨) | (ನಂ) 2. ನಾಚಿಕೆ,

ಲಜ್ಜೆ. ತೃಪ್ತ ಭಾವೆ “ಕಃ” (೩-೩-೧೧೪) |

ತೃಪ್ತವತ್ ತೃಪ್ತವತ್ (ವಿಂ) ನಾಚಿಕೆಗೊಂಡವನು. ತೃಪ್ತ

(ಲಜ್ಜಾಯಾಮ್) “ಕವತುಃ” (೩-೨-೧೦೨) |

ತೃಪ್ತವ್ಯ ತೃಪ್ತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡಬೇಕಾದ.

2. ತೃಪ್ತಪಡಬೇಕಾದ. ತೃಪ (ಪ್ರೀಣನೆ) “ತವ್ಯಃ”

(೩-೧-೯೬) |

ತೃಪ್ತವ್ಯ ತೃಪ್ತವ್ಯ (ಪುಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. “ಅಗ್ರಜನ್ಮಾ-

ವೇದಗಮಃ ಬಾಹವಶ್ಚ ತೃಪ್ತವ್ಯಃ” ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ತೃಪ್ತ ತೃಪ್ತ (ವಿಂ) ಹರಿಯುತ್ತಿರುವ, ಕತ್ತರಿಸು

ತ್ತಿರುವ, ತುಂಡುಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ತೃಪ (ಚೇದನೆ) “ಶತ್”

(೩-೨-೧೨೪) | ಸ್ತ್ರೀಯಾ “ಕೀಪ್” (೪-೧-೬) | -ಂತೀ

-ಂತೀ.

ತೃಪ್ತ ತೃಪ್ತ (ನಂ) ಹರಿಯುವುದು, ತುಂಡುಮಾಡು

ವುದು. ತೃಪ (ಚೇದನೆ) “ಲ್ಯುಡ್” (೩-೩-೧೧೫) |

ತೃಪ್ತನೀಯ ತೃಪ್ತನೀಯ (ವಿಂ) 1. ತುಂಡುಮಾಡಲ್ಪಡುವ,

ಹರಿಯಲ್ಪಡುವ. ತೃಪ (ಚೇದನೆ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) |

2. ಹರಿಯಬೇಕಾದ, ತುಂಡುಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ಹರಿಯ

ಬಹುದಾದ, ತುಂಡುಮಾಡಬಹುದಾದ. “ತವ್ಯಃ”

(೩-೧-೯೬) | -ದಿತವ್ಯಮ್ -ದಿತವ್ಯಮ್.

ತೃಪ್ತ ತೃಪ್ತ (ವಿಂ) ಪರಮೇಶ್ವರನ ಸಂಬಂಧವಾದ.

ತೃಪ್ತವ್ಯ ಇದಮ್ “ಅನ್” (೪-೩-೧೨೦) |

ತೃಪ್ತ ತೃಪ್ತ (ನಂ) ಬ್ರಾಹ್ಮಣಾರಿಯು ಮಾಡಬೇಕಾದ

ಸಮಿದಾಧಾನ. “ತೃಪ್ತ ಸಮಿದಾಧಾನಮ್” ವೆಂಜಂ |

ದ

ದದನೀಯ ದದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಕೊಡಲ್ಪಡುವ, ದಾನ

ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. ದದ (ದಾನೆ) “ಅನೀಯರ್” (೩-೧-೯೬) |

2. ದಾನಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ದಾನಮಾಡಬಹುದಾದ.

“ತವ್ಯಃ” (೩-೧-೯೬) | ದದಿತವ್ಯಃ ದದಿತವ್ಯಃ.

ದದಿತ ದದಿತ (ವಿಂ) 1. ದಾನಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟ.

ದದ (ದಾನೆ) “ಕಃ” (೩-೨-೧೦೨) | (ನಂ) 2. ದಾನ,

ಕೊಡುಗೆ. ದದ ಭಾವೆ “ಕಃ” (೩-೩-೧೧೪) |



ದಯನ ದಯನ (ನಂ) 1. ದಯೆತೋರಿಸುವುದು. 2. ದಾನ ಮಾಡುವುದು. 3. ರಕ್ಷಿಸುವುದು. 4. ಹಿಂಸಿಸುವುದು. 5. ಚಲಿಸುವುದು, ಮುಂದೆಸಾಗುವುದು. ದಯ (ದಾನಗತಿ-ರಕ್ಷಣಾಹಿಸಾದಾನೇಷು) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) ।

ದಯನೀಯ ದಯನೀಯ (ವಿಂ) 1. ದಯೆತೋರಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ದಯೆತೋರಿಸಲು ಅರ್ಹನಾಗಿರುವ. 3. ದಯೆ ತೋರಿಸಬಹುದಾದ. 4. ರಕ್ಷಿಸಬಹುದಾದ. ದಯ (ದಾನ-ಗತ್ಯಾದಿಷು) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) । "ಯದಿ ಮೇ ನ ದಯಿಷ್ಯಸೇ ತತೋ ದಯನೀಯಸ್ತವ ನಾಥ ದುರ್ಮತಃ" ಸ್ತೋಂ ೨೦ । "ತವ್ಯಃ" (3-1-96) । -ಯಿತವ್ಯಃ -ಯಿತವ್ಯಃ ।

ದಯಮಾನ ದಯಮಾನ (ವಿಂ) 1. ದಯೆ ತೋರಿಸುತ್ತಿರುವ, ಕೃಪೆಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವ. ದಯ (ದಾನಾದಿ) "ಶಾನಚ್" (3-2-124) । "ಅವತಂಸಯಂತಿ ದಯಮಾನಾಃ ಪ್ರಮದಾಃ ಶಿರೀಷಕುಸುಮಾನಿ" ಶಾಕುಂ ೧-೪ । 2. ರಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. 3. ಚಲಿಸುತ್ತಿರುವ. 4. ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಿರುವ.

ದವುರೀಕ ದವುರೀಕ (ಪುಂ) 1. ಅಗ್ನಿ. 2. ವಾದ್ಯ. "ದವುರೀಕೋಜಲೇ ವಾಘೇ" ವೇಜಂ ।

ದವನ ದವನ (ನಂ) ಹಿಡಿಸುವುದು, ಹಿಂಸಿಸುವುದು. ದೃ ದೃ (ಉಪತಾಪೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114) ।

ದವನೀಯ ದವನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಹಿಡಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಹಿಡಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಹಿಡಿಸಬಹುದಾದ. 4. ಹಿಡಿಸಲು ಸಾಧ್ಯನಾದ. ದೃ ದೃ (ಉಪತಾಪೇ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96) । "ತವ್ಯಃ" (3-1-96) । ದೀಪ್ಯಮಾನ್ ದೀಪ್ಯಮಾನ್.

ದೀಪಯತ್ ದೀಪಯತ್ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಪಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಬೆಳಗುತ್ತಿರುವ. ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೀ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124) । "ದೀಪಯತಃ ನಮಃ ಕಿರಣಿಧಿಃ ಕುಕ್ರುಮಾ-ಕುಪಯೋರಗೌರಃ" ಕಿರಾಂ ೧-೨೩ ।

ದೀಪ್ಯಮಾನ ದೀಪ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೊಳೆಯುತ್ತಿರುವ. ದೀಪಿ (ದೀಪ್ತೀ) "ಶಾನಚ್" (3-2-124) ।

ದೀಪ್ಯಮಾನ ದೀಪ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ಪ್ರಯೋಗಿಸಲು ಶಕ್ತನಾದ, (ಬಾಣವನ್ನು) ಬಿಡುವ ಸ್ಥಳವಾದ. ದಿವು (ಕೃತಾದಿ) ಪಾತುನಾಮನೇಕಾರ್ಥತ್ವಾತ್ ಕ್ಷೇಪ್ತುಂ ಕ್ಷೇಪ್ತುಂ "ಶಾನಚ್" (3-2-124) । "ದೀಪ್ಯಮಾನಂ ಶಿತಾನ್ ಬಾಣಾನ್ ತಸ್ಯಮಾನಂ ಮಹಾಗದಾಃ" ಮಹಿಂ ೪-೮೧ ।

ದ್ವಿತವತ್ ದ್ವಿತವತ್ (ವಿಂ) ಹಿಡಿಸಿದವನು, ಹಿಂಸಿಸಿದವನು. ದೃ ದೃ (ಉಪತಾಪೇ) "ಕವತುಃ" (3-2-102) ।

ದ್ವಿಭುಷತ್ ದ್ವಿಭುಷತ್ (ವಿಂ) (ಧನಸ್ಸನ್ನು) ಅಸ್ಥಾಲನ ಮಾಡಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಭುಷ್ (ಕಂಪನೆ) + ಸನ್ "ಶತ್" (3-2-124) । "ಪತಸ್ತು ಶಾಸ್ತ್ರೇಷು ವಿತತ್ಯ ರೋದಸಿ ಸಮಂತತಸ್ತಸ್ಯ ಧನುರ್ಭುಷತಃ" ಕಿರಾಂ ೧೪-೪೯ ।

ದ್ವಿಭುಷಾ ದ್ವಿಭುಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) (ಧನಸ್ಸನ್ನು) ಅಲಂಕರಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಭುಷ್ (ಕಂಪನೆ) + ಸನ್ "ಅಃ" (3-3-102) । ದ್ವಿಭುಷು ದ್ವಿಭುಷು (ವಿಂ) (ಧನಸ್ಸನ್ನು) ಅಲಂಕರಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು. ಭುಷ್ (ಕಂಪನೆ) + ಸನ್ "ಃ" (3-2-102) ।

ದ್ವಿವತ್ ದ್ವಿವತ್ (ವಿಂ) ಹಿಡಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹಿಂಸಿಸುತ್ತಿರುವ. ದೃ ದೃ (ಉಪತಾಪೇ) "ಶತ್" (3-2-124) । "ತದಿವುಮಿಃ ಕುಸುಮೇರಪಿ ದ್ವಿವತಾ ಸುವಿವತಂ ವಿವುಧೇನ ಮನೋ-ಮುಖಾ" ನೇಷಂ ೪-೨೩ । ಸ್ತ್ರೀಯಾ "ಕೀಪ್" (೪-೧-೬) । ದ್ವಿವತೀ ದ್ವಿವತೀ.

ದ್ವಿಗಾಯುಷ ದ್ವಿಗಾಯುಷ (ಪುಂ) ಪರಶಿವ, ಪರಮೇಶ್ವರ. ದ್ವಿಕ್ ಆಯುಷಮಸ್ಯ । "ಮಗನೇವಾಂತಕೋ ಭೀಮಸ್ತ್ರಿಪುರಾರಿ-ದ್ವಿಗಾಯುಷಃ" ವೇಜಂ ।

ದ್ವಿಪ್ರಸಾದಿನಿ ದ್ವಿಪ್ರಸಾದಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಳುತ್ಕಾಂಕ್ಷನ. ಕಲ್ಪದ್ರೂಂ ೧೦-೬೦೮ ।

ದ್ವಿಪ್ರಸಾದಾ ದ್ವಿಪ್ರಸಾದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕುಳುತ್ಕಾಂಕ್ಷನ. "ದ್ವಿಪ್ರಸಾದಾ ಮಹಾಬಲಾ" ಕಲ್ಪದ್ರೂಂ ।

ದ್ವಿಪ್ರಸಾದ ದ್ವಿಪ್ರಸಾದ (ಪುಂ) ನಾಸಾಗ್ರ, ಮೂಗಿನ ತುದಿಯ ಭಾಗ. "ವಮನಿ ನಾಸಿಕಾಪುಟಿ । ನಾಸಾಗ್ರೇ ದ್ವಿಪ್ರ-ಸಾದಃ" ವೇಜಂ ।

ದ್ವಿಪ್ರಸಾದ ದ್ವಿಪ್ರಸಾದ (ನಂ) ಎಂಟು ಮಾಪಕಗಳ ತೂಕ. ದ್ವಿಪ್ರಸಾದ ದ್ವಿಪ್ರಸಾದ (ನಂ) ಎಂಟು ಮಾಪಕಗಳ ತೂಕ. "ದ್ವಿಪ್ರಸಾದ ದ್ವಿಪ್ರಸಾದ ಕೋಲಂ ವಟಕಂ ಚಾಪ್ತಮಾಪಕೇ" ವೇಜಂ ।

ದ್ವಿವಾಗತಿ ದ್ವಿವಾಗತಿ (ಪುಂ) ಎಡಿ, ನಳ್ಳು. "ವಿಲ್ವಕೋಷ-ಪ್ರಹರಣಃ ಪೊಡಶಾಙ್ಗಿವಿವಾಗತಿಃ" ವೇಜಂ ।

ದ್ವಿವಪರಿಚಾರಕ ದ್ವಿವಪರಿಚಾರಕ (ಪುಂ) ಎರಡು ಕಾಯಗಳಿಗೂ ಪಕ್ಷಿ ಮೊವತಾದುವುಗಳ ಪರಿಚಾರಕ, ಪಕ್ಷಿ ಮೊವತಾದುವುಗಳನ್ನು ಉಪಚರಿಸಿ ರಕ್ಷಿಸುವವನು. "ಚತುರ್ವದದ್ವಿವಪರಿಚಾರಕೋ ಪಾರಿಕರ್ಮಿಕೋಪಸಾಧಿಕಪಾಲಕ-ವಿಷ್ಣಿವತ್ಸವಾಃ ಪಶ್ಚಿವೇತನಾಃ" ಅಥರ್ವಾಂ ।

ದ್ವಿರಾಜ್ಯ ದ್ವಿರಾಜ್ಯ (ನಂ) ಇಬ್ಬರು ರಾಜರ ಅಧೀನಕ್ಕೆ ಒಳಪಟ್ಟಿರುವುದು, ಇಬ್ಬರು ಯಜಮಾನರನ್ನು ಹೊಂದಿರುವುದು. "ದ್ವಿರಾಜ್ಯವಿರಾಜ್ಯಯೋಃ ದ್ವಿರಾಜ್ಯಮನ್ಯೋನ್ಯಪಕ್ಷಪಾನ್-ರಾಗಾನ್ಯಾಂ ಪರಸ್ಪರಸತ್ಕರ್ಷಣೇನ ವಾ ವಿನಿಶ್ಚಯತಿ" ಅಥರ್ವಾಂ ।



ಛ

ಛಯನ ಧಯನ (ನಂ) ಧಯವುದು. ಛಿ (ಚಾರಣ) "ಛುಡ್" (3-3-114) ।

ಛಯನೀಯ ಧಯನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಧಯಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಧಯಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಧಯಿಸಬಹುದಾದ. 4. ಧಯಿಸಲು ಶಕ್ತವಾದ. ಛಿ (ಚಾರಣ) "ಛನೀಯರ್" (3-1-96) । "ತಖ್ಯ:" (3-1-96) । ಛೇತವ್ಯಮ್ ಧೇಶವ್ಯಮ್.

ಛಾರಣಿಕ ಧಾರಣಿಕ (ವಿಂ) ಅಧಮಣ್, ಸಾಲ ಪಡೆದ ವನು. ಛಾರಣಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಛನ್" (4-2-114) । "ರಾಜನ್ಯ-ಯೋಗೋಮವಹೇ ತು ಛನಿಕಛಾರಣಿಕಯೋಽಪರಿಶ್ರಮವೇಕ್ಷೇತ" ಅರ್ಥಶಾಂ ।

ಛಿತ ಧಿತ (ವಿಂ) ಧಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟ. ಛಿ (ಚಾರಣ) "ಛ:" (3-2-102) ।

ಛಿಯತ್ ಧಿಯತ್ (ವಿಂ) ಧಯಿಸುತ್ತಿರುವ, ಧಾರಣೆ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಛಿ (ಚಾರಣ) "ಛತ್" (3-2-124) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ -ಯತಿ -ಯತಿಃ, -ಂತಿ -ಂತಿಃ.

ಛೀಕಮಿಕ ಧೀಕಮಿಕ (ವಿಂ) ಬುದ್ಧಿಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವವನು. ಛೀಕಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ - "ಛ್" (4-2-114) । "ಹೃಢೇ ಛೀಕಮಿಕ:" ವೈಜಂ ।

ಛೀತಾ ಧೀತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) 1. ಪುತ್ರಿ, ಮಗಳು. 2. ಬುದ್ಧಿ. "ಛೀತಾ ಸುತಾयां ಬುದ್ಧಿ ಚ" ವೈಜಂ ।

ಛೀತಿ ಧೀತಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾನಮಾಡುವುದು, ಕುಡಿಯುವುದು. "ಛೀತಿस्तು ಛಯನಂ ಪಾನಮ್" ವೈಜಂ ।

ಛೀರಣ ಧೀರಣ (ನಂ) ಕುದುರೆಯ ನಾಗಾಲೋಟದ ಒಂದು ಭೇದ, "ಛೀರಿತಂ ಛೀರಣಂ ಚ ತತ್" ವೈಜಂ ।

ನ

ನಡಿತ ನಟಿತ (ವಿಂ) 1. ನರ್ತನ ಮಾಡಿದವನು, ಕುಣಿದಾಡಿದವನು. ನಟ (ನೃತ್ಯ) "ಛ:" (3-4-92) । (ನಂ) 2. ನರ್ತನ, ಕುಣಿದಾಟ. ನಟ ಭಾವೇ "ಛ:" (3-3-114) ।

ನಡಿತವತ್ ನಟಿತವತ್ (ವಿಂ) ನರ್ತನ ಮಾಡಿದವನು. ನಟ (ನೃತ್ಯ) "ಛವತು:" (3-2-102) ।

ನಡಿತವ್ಯ ನಟಿತವ್ಯ (ವಿಂ) ನೃತ್ಯ ಮಾಡಬೇಕಾದ, ಕುಣಿಯಬೇಕಾದ. ನಟ (ನೃತ್ಯ) "ತಖ್ಯ:" (3-1-96) ।

ನತವತ್ ನತವತ್ (ವಿಂ) ನಮಸ್ಕಾರ ಮಾಡಿದವನು. ನಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) "ಛವತು:" (3-2-102) ।

ನಗವತ್ ಸಂದತ್ (ವಿಂ) ಸಂತೋಷಪಡುತ್ತಿರುವ, ಅನಂದ ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನೃ ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) "ಛತ್" (3-2-124) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್" (4-1-6) । -ಂತಿ -ಂತಿಃ.

ನನ್ವನೀಯ ಸಂದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡಬೇಕಾದ. 2. ಸಂತೋಷಪಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. 3. ಸಂತೋಷಪಡಬಹುದಾದ. ನೃ ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) "ಛನೀಯರ್" (3-1-96) । "ತಖ್ಯ:" (3-1-96) । ನನ್ವಿತತಖ್ಯ: ಸಂದಿತವ್ಯಃ.

ನನ್ವಿತ ಸಂದಿತ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಟ್ಟಿರುವ. ನೃ ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) "ಛ:" (3-4-92) । (ನಂ) 2. ಸಂತೋಷ, ಅನಂದ. ನದಿ ಭಾವೇ "ಛ:" (3-3-114) ।

ನನ್ವಿತವತ್ ಸಂದಿತವತ್ (ವಿಂ) ಸಂತೋಷಪಟ್ಟವನು. ನೃ ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) "ಛವತು:" (3-2-102) ।

ನನ್ವ ಸಂದ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡಬೇಕಾದ. 2. ಸಂತೋಷಪಡಲು ಅರ್ಹವಾದ. 3. ಸಂತೋಷಪಡಬಹುದಾದ. ನೃ ನದಿ (ಸಮೃದ್ಧಿ) "ಛವ್" (3-1-96) ।

ನಪ್ರ ನಪ್ರ (ಪುಂ) ನಟ, ನರ್ತಕ. "ರಕ್ಷಾಜೀವೋ ನೃತುನಪ್ರ: ನಪ್ರೋ ರಕ್ಷಾವತಾರ್ಯಪಿ" ವೈಜಂ ।

ನಮಿತವತ್ ನಮಿತವತ್ (ವಿಂ) ನಮಸ್ಕಾರ ಮಾಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟವನು. ನಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) + ನಿವ್ "ಛವತು:" (3-2-102) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್" (4-1-6) । -ಂತಿ -ಂತಿಃ.

ನಮ್ಯಮಾನ ನಮ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ನಮಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ನಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ ಶಬ್ದೇ) ಕರ್ಮಂ "ಛಾನವ್" (3-2-124) ।

ನಾಪತ್ ನಾಪತ್ (ವಿಂ) ಬೇಡುತ್ತಿರುವ, ಯಾಚಿಸುತ್ತಿರುವ. ನಾಪ್ (ಯಾಚ್ಛಾದಿ) "ಛತ್" (3-2-124) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಛೀಪ್" (4-1-6) । -ಂತಿ -ಂತಿಃ.

ನಾಪನ ನಾಪನ (ನಂ) ಯಾಚಿಸುವುದು, ಬೇಡುವುದು. ನಾಪ್ (ಯಾಚ್ಛಾದಿ) "ಛುಡ್" (3-3-114) ।

ನಾಪ್ಯ ನಾಪ್ಯ (ವಿಂ) ಯಾಚಿಸಲ್ಪಡುವವನು, ಬೇಡಲ್ಪಡುವವನು. ನಾಪ್ (ಯಾಚ್ಛಾದಿ) "ಛಯತ್" (3-1-124) ।

ನೀಡಿನ್ ನೀಡಿನ್ (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿ, ಹಕ್ಕಿ. ನೀಡಮಸ್ಯಾಸ್ತಿ "ಛನಿ:" (4-2-114) । "ನೀಡೋಽವ: ಷುಕೋ ನೀಡೀ ಮಲೂಕೋ ವಿಪ್ರುಷೋ ಮಸನ್" ವೈಜಂ ।

ನಿಮನ್ತ್ರಣಿಕ ನಿಮಂತ್ರಣಿಕ (ಪುಂ) ಭೋಜನಕ್ಕಾಗಿ ಆಹ್ವಾನ ಕೊಡುವ ಯಜಮಾನ. "ನಿಮನ್ತ್ರಣಿಕ: ಪರಮಾಶ್ವೇನ ರಾಜರಹಸ್ಯೇನ ಸ್ಫುಟಸ್ಯ ಶಕ್ತೋಮಿ ಜನಾಕೀರ್ಜಕೀರ್ತನೇನ ಆತ್ಮನೋ ಜಿಹ್ವಾಂ ಪಾರಯಿತುಮ್" ವಿಕಂ 2 ।



ನಿವಿಡಿ ನಿವಿಡಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಿವೃತ್ತಿ, ಹಿಂತಿರುಗುವುದು.  
ನಿ + ವಿಧ (ಗತ್ಯಾಮ್) "ಕ್ವಿನ್" (೩-೩-೨೪)। "ನು-  
ಮುಖಮತಿ ಯಜ್ವನಾ ಪತಿ: ಶಾರ್ವರಸ್ಯ ತಮಸೋ ನಿವಿಡ್ಯೇ"  
ಕುಮಾಂ ೮-೫೮।

ನಿಫುಲ ನಿಫುಲ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಿಸುವ, ತೇಜಸ್ವಿಯಾದ,  
ತೇಜಸ್ವಿನಿಂದ ಹೊಳೆಯುವ. ನಿಫುಲತಿ ದೀಪ್ಯತಿ—ನಿಫುಲ  
ಫುಲ (ಸಂಚಲನೆ) "ಅಚ್" (೩-೧-೧೩೪)। "ವಿಫುಲದ್ವಿಃ  
ಗೃಹಿತೋಸ್ತೌ ನಿಫುಲ: ಪುರುಷಾಶನ:" ಭೃಂ ೯-೭೬।

ನೀಲಶೀರ್ಷ ನೀಲಶೀರ್ಷ (ಪುಂ) ನೀಲಮುಖವುಳ್ಳ, ಹಿಂದು  
ಜಾತಿಯ ವಾನರ. "ನೀಲಂ ಶೀರ್ಷಮಸ್ಯ। "ಬಲಿಮುಖೋ  
ವನೌಕಾ: ಸ ಗೋಲಙ್ಗುಲೋಸ್ತಾನನ:। ನೀಲಶೀರ್ಷ:" ವೈಜಂ।

ನೃತು ನೃತು (ಪುಂ) ನಟ, ಅಭಿನಯಿಸುವವನು. "ರಜ್ಜಾಜಿವೋ  
ನೃತುನಪ್ರ:" ವೈಜಂ।

ನೈಕೃತ ನೈಕೃತ } (ವಿಂ) ಮೂರ್ಖ, ಶಠ, ವಂಚಕ,  
ನೈಕೃತಿಕ ನೈಕೃತಿಕ }  
ಮೋಸಗಾರ. "ನೈಕೃತ: ಸ್ಯಾನೈಕೃತಿಕ: ಶಠೋ ಕೌನೃತಿಕೋ-  
ನೃಜು:" ವೈಜಂ।

ನೈಶ್ರೇಯಸ ನೈಶ್ರೇಯಸ (ವಿಂ) ಮೋಕ್ಷಸಂಬಂಧವಾದ.  
ನಿ:ಶ್ರೇಯಸಸ್ಯ ಇದಮ್ "ಅಣ್" (೪-೩-೧೨೦)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್  
"ಙೀಪ್" (೪-೧-೧೫)। -ಶ್ರೇಯಸಿ -ಶ್ರೇಯಸೀ. "ನಿವೃತ್ತಿ-  
ವರ್ಮೆ ನಿಯತಸ್ಥಿತಿತೀನಾ ನೈಶ್ರೇಯಸಿ ಪದ್ಧತಿಮಾಹುರೇನಾಮ್" ಯಾದಂ  
೧೮-೧೧೯।

ಪ

ಪಚತ್ ಪಚತ್ (ವಿಂ) ಬೇಯಿಸುತ್ತಿರುವ, ಅಡಿಗೆ ಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ. ಡು ಪಚಪ್ (ಪಾಕೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಙೀಪ್" (೪-೧-೬)। -ಂತಿ -ಂತೀ. "ಶಾನಪ್"  
(೩-೨-೧೨೪)। ಪಚಮಾನ: ಪಚಮಾನಃ।

ಪಚನೀಯ ಪಚನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಬೇಯಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ಬೇಯಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಬೇಯಿಸಬಹುದಾದ. ಡು ಪಚಪ್  
(ಪಾಕೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬)। "ತವ್ಯ:"  
(೩-೧-೯೬)। ಪಕ್ತವ್ಯಮ್ ಪಕ್ತವ್ಯಮ್।

ಪತನೀಯ ಪತನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯಬೇಕಾದ.  
2. ಕೆಳಕ್ಕೆ ಬೀಳಬೇಕಾದ. ಪಲ್ (ಗತೌ) "ಅನೀಯರ್"  
(೩-೧-೯೬)। "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬)। ಪತಿತವ್ಯಮ್  
ಪತಿತವ್ಯಮ್।

ಪರಾಕುರ್ವತ್ ಪರಾಕುರ್ವತ್ (ವಿಂ) ತಿರಸ್ಕರಿಸುತ್ತಿರುವ.  
ಪರಾ + ಡುಕೃತ್ (ಕರಣೇ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪)।

"ತಾ ಹನುಮಾನ್ ಪರಾಕುರ್ವನ್ ಅಗಮತ್ ಪುಷ್ಪಕಂ ಪ್ರತಿ" ಭೃಂ  
೮-೫೦।

ಪರಾರಿತ್ತಮ್ ಪರಾರಿತ್ತಮ್ (ಅಭ್ಯಂ) ಪೂರ್ವತರವತರ  
ದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ, ಹಿಂದಿನ ಎರಡನೆಯ ವರ್ಷದಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ.  
ಪರಾರಿ ಜಾತಮ್ "ತನ:" (ವಾಂ ೪-೩-೨೩)।

ಪರಿಗ್ಲಾನ ಪರಿಗ್ಲಾನ (ವಿಂ) ಕ್ಷುದ್ಧಾದೆಯಿಂದ ಪರಿತಪ್ತ  
ನಾದ, ಹಸಿವಿನಿಂದ ಬಾಡಿಹೋಗಿರುವ. "ಅಸ್ಮಾನತು-  
ಮಿತೋಮ್ಯೇತಿ ಪರಿಗ್ಲಾನೋ ಬುಭುಕ್ಷಯಾ" ಭೃಂ ೭-೮೪।

ಪರಿಚಾಯಕ ಪರಿಚಾಯಕ (ವಿಂ) ಪರಿಚಯವನ್ನುಂಟು  
ಮಾಡುವ. ಪರಿ + ಚಿವ್ (ಚಯನೇ) + ಣಿವ್ "ಫ್ವಲ್"  
(೩-೧-೧೩೩)।

ಪರಿಧಾಪಕ ಪರಿಧಾಪಕ (ವಿಂ) ವಸ್ತ್ರವನ್ನು ಉಡಿಸುವ,  
ವಸ್ತ್ರವನ್ನು ಧರಿಸುವ. ಪರಿ + ಡುಧಾಪ್ (ಧಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ)  
+ ಣಿವ್ "ಫ್ವಲ್" (೩-೧-೧೩೩)। ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಢಾಪ್"  
(೪-೧-೪)। -ಧಾಪಿಕಾ -ಧಾಪಿಕಾ. "ಯಾಚತೇ ಸ್ಮ  
ಪರಿಧಾಪಿಕಾ: ಸಖೀ: ಸಾ ಸ್ವನಿವಿನಿಬಿಡಕ್ರಿಯಾಂ ಯದಾ"  
ನೈಷಂ ೧೮-೫೧।

ಪರಿಪಚೇಲಿಮ ಪರಿಪಚೇಲಿಮ (ವಿಂ) ಪರಿಪಕ್ವವಾಗಿರುವ,  
ಫಲೋನ್ನಮಿವಾದ. ಪರಿ + ಡು ಪಚಪ್ (ಪಾಕೆ) "ಕೇಲಿಮರ್"  
(ವಾಂ ೩-೧-೯೬)। "ಸ್ನಾತ್ವಾ ತತ್ರ ಸುಲಮ್ಯಾಯಾಂ ಭಾಗ್ಯೇ:  
ಪರಿಪಚೇಲಿಮ:" ಕುಮಾಂ ೧೦-೫೩।

ಪರಿವಾಹಿನ್ ಪರಿವಾಹಿನ್ (ವಿಂ) ಪ್ರವಹಿಸುವ, ಹರಿ  
ಯುವ. ಪರಿ + ವಹ (ಪ್ರಾಪಣೇ) "ಗಿಹಿ:" (೩-೧-೧೩೪)।  
"ಏಷ ತೇ ಆನಂದಪರಿವಾಹಿಣಾ ಚಕ್ಷುಷಾ ಪರಿವಜಮಾನ ಇವ  
ಗುರುಪಸ್ಥಿತ:। ಆಚಾರಂ ತಾವತ್ಪ್ರತಿಪದ್ಯಸ್ವ" ಶಾಕುಂ ೪।

ಪರ್ಯಡ್ವಿಕಾ ಪರ್ಯಡ್ವಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಂಚ. "ಯದ್ವಿಕ್ಷೇಪಣ  
ಸಂಸ್ಕೃತೋದಧಿಪಯ:ಪ್ರೇಕ್ಷೋಲಪರ್ಯಡ್ವಿಕಾನಿತ್ಯಾರೋಹಣನಿವೃತೋ ವಿಹ-  
ರತೇ ದೇವ: ಸಹೇವ ಶ್ರಿಯಾ" ದಶಾವಂ।

ಪಲಾಯನ ಪಲಾಯನ (ನಂ) ಓಡಿಹೋಗುವುದು, ತಪ್ಪಿಸಿ  
ಕೊಂಡು ಓಡುವುದು. "ನಾಶಸ್ತ್ವಪಕ್ರಮೋಪಾಯೋ ವಿಪ್ರಯಾಣಂ  
ಪಲಾಯನಮ್" ವೈಜಂ।

ಪಾಕ್ಷಿಕ ಪಾಕ್ಷಿಕ (ಪುಂ) ಪಕ್ಷಿಗಳನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವವನು.  
ಪಕ್ಷಿಣೋ ಹಂತಿ—ಪಕ್ಷಿನ್ "ಠಕ್" (೪-೪-೩೫)।

ಪಾಪಸ್ವಿನಿ ಪಾಪಸ್ವಿನಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನದಿ, ಹೊಳೆ. ಪಾಪಾಂತಿ  
ಸನ್ಯಸ್ಯಾಮ್—ಪಾ (ರಕ್ಷಣೇ) "ಅಸುನ್" ಷುಟ್ ಚ (ಽಂ  
೪-೨೦೪)। ಪಾಪಸ್ "ವಿಹಿ:" (೫-೨-೧೨೧)। "ಙೀಪ್"  
(೪-೧-೫)।



ಪಿಪಿತ್ ಹಿಂಷತ್ (ವಿಂ) ಉಜ್ಜುತಿರುವ, ತೀಡುತಿರುವ.  
ಪಿಪಿಲ್ (ಸಂಚುರ್ಣನೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಪರಸ್ಪರಂ  
ಪರಿಕುಪಿತಸ್ಯ ಪಿಪಿತ್: ಕ್ಷತೋಮಿಕಾಕನಕಪರಾಗಪಿಪಿಲಮ್"  
ಮಾಘಂ ೧೭-೮ ।

ಪಿಪಿತ್ ಪೀಷ್ಠ (ವಿಂ) 1. ಅರೆಯಲ್ಪಡುವ. 2. ಅರೆಯ  
ಬೇಕಾದ. 3. ಅರೆಯಬಹುದಾದ. ಪಿಪಿಲ್ (ಸಂಚುರ್ಣನೆ)  
"ಘತ್" (೩-೧-೧೨೪) । 4. ಬೀಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಬೀಸ  
ಬೇಕಾದ.

ಪ್ರಚ್ಛನ ಪ್ರಚ್ಛನ (ನಂ) ಪ್ರಶ್ನಮಾಡುವುದು, -ಕೇಳುವುದು.

ಪ್ರಚ್ಛಯ ಪ್ರಚ್ಛಯ (ವಿಂ) 1. ಕೇಳಲ್ಪಡುವ. 2. ಕೇಳಬೇಕಾದ.  
ಪ್ರಚ್ಛ (ಜಿಹ್ವಾಸಾಯಾಮ್) "ಘತ್" (೩-೧-೧೨೪) । "ಜಿಹ್ವಾ  
ಜನ: ಕಾರ್ಯವಿದಸ್ತು ವಸ್ತು ಪ್ರಚ್ಛಯಾ ನಿಜೇಕ್ಷಾಪದವೀ ಮದಸ್ತು"  
ನೇಷಂ ೬-೧೦೭ ।

ಪ್ರಜನಿಷ್ಠ ಪ್ರಜನಿಷ್ಠ (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹುಟ್ಟುವ ಸ್ವಭಾವದ.  
ಪ್ರ+ಜನಿ (ಪ್ರಾಕುರ್ಭವಿ) "ಘ್ನುತ್" (೩-೨-೧೨೬) ।  
"ತರ್ಪಣಂ ಪ್ರಜನಿಷ್ಠಾನಾಂ ಸಸ್ಯಾನಾಮಮಲಂ ಪಯ: । ರೋಚಿಷ್ಯವ:  
ಸವಿಷ್ಕರ್ಜಾ ಮುಮುಚುಃಪ್ರವದಧನಾ: " ಮೃದ್ವಿಂ ೭-೨ ।

ಪ್ರಣಮನೀಯ ಪ್ರಣಮನೀಯ (ವಿಂ) 1. ನಮಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡುವ.  
2. ನಮಸ್ಕರಿಸಬೇಕಾದ. 3. ನಮಸ್ಕರಿಸಲು ಯೋಗ್ಯ  
ನಾದ. ಪ್ರ+ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೧೨೬) ।

ಪ್ರಣಮ್ಯಮಾನ ಪ್ರಣಮ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ನಮಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಡು  
ತಿರುವ. ಪ್ರ+ಣಮ (ಪ್ರಹ್ಲವೇ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನಿತ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

ಪ್ರತಿಪಿಪಿತ್ ಪ್ರತಿಪಿಪಿತ್ (ವಿಂ) ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯಲು  
ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ. ಪ್ರತಿ+ಪಿಪಿಲ್ (ಗತೌ)+ಸನ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

ಪ್ರತಿಪಿಪಿತ್ ಪ್ರತಿಪಿಪಿತ್ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ.  
ಪ್ರತಿ + ಪಿಪಿಲ್ (ಗತೌ) + ಸನ್ "ಅ:" (೩-೩-೧೦೨) ।

ಪ್ರತಿಪಿಪಿತ್ ಪ್ರತಿಪಿಪಿತ್ (ವಿಂ) ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ  
ಯುಳ್ಳ, ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯಲು ಅಸೆಪಡುವ. ಪ್ರತಿ + ಪಿಪಿಲ್  
(ಗತೌ) + ಸನ್ "ತ:" (೩-೨-೧೨೬) ।

ಪ್ರತಿಭಿನ್ನ ಪ್ರತಿಭಿನ್ನ (ವಿಂ) ವಿಶೇಷವಾದ, ಅತಿಶಯ  
ವಾದ. ಪ್ರತಿ+ಭಿನ್ನಿ (ವಿವಾರಣೆ) "ಕ್ತ:" (೩-೪-೭೨) ।  
"ಸಾ ಗೌರಿಸಿದ್ಧಾರ್ಯನಿವೇಶವಚಿ: ದ್ವಾರಿಪ್ರವಾಲ: ಪ್ರತಿಭಿನ್ನ-  
ಶೋಭಮ್" ಕುಮಾಂ ೭-೭ ।

ಪ್ರತುಷ್ಟು ಪ್ರತುಷ್ಟು (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ,  
ಉಪಕ್ರಮಿಸಲು ಅಸೆ. ಪ್ರ + ಷ್ಟು (ಸ್ತುತೌ) + ಸನ್ "ಅ:"  
(೩-೩-೧೦೨) ।

ಪ್ರತುಷ್ಟು ಪ್ರತುಷ್ಟು (ವಿಂ) ಪ್ರಾರಂಭಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ  
ಸುವ, ಉಪಕ್ರಮಿಸಲು ಅಸೆಪಡುವ. ಪ್ರ + ಷ್ಟು (ಸ್ತುತೌ)  
+ ಸನ್ "ತ:" (೩-೨-೧೨೬) । "ಪ್ರತುಷ್ಟು: ಪುನರ್ಯುಕ್ತ-  
ಮಾಸಿಷ್ಠಜಯಿಷುಭಯಮ್" ಮೃದ್ವಿಂ ೯-೬೯ ।

ಪ್ರಪಂಚ ಪ್ರಪಂಚ (ಪುಂ) 1. ಸ್ಥಾವರಜಂಗಮಾತ್ಮಕವಾದ  
ಈ ಜಗತ್ತು. 2. ವಿಸ್ತಾರ. 3. ಸಂಸಾರ, ಪ್ರಕೃತಿ-  
ಪುರುಷರ ಸಂಸರ್ಗರೂಪವಾದ ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನ ಸಂಸರಣ  
ಪ್ರವಾಹ. 4. ವಿಶದಪಡಿಸುವುದು. 5. ಸಮೃದ್ಧಿ,  
ಹೇರಳ.

ಪ್ರಭವತ್ ಪ್ರಭವತ್ (ವಿಂ) ಅಧಿಕಾರವನ್ನು ಪಡೆದಿರುವ,  
ಅಧಿಕಾರ ನಡೆಸುವ.

ಪ್ರರೋಹಕ ಪ್ರರೋಹಕ (ಪುಂ) ಕುದುರೆಯು ಹುರುಳಿ ಮೊದ  
ಲಾದ ಅಹಾರವನ್ನು ತಿನ್ನುವ ಬೇಲ.

ಪ್ರಾಧಾನಿಕ ಪ್ರಾಧಾನಿಕ (ನಂ) ವಿವಾಹಕ್ಕೆ ಪರ್ಯಾಯ  
ವಾದ ಧನ, ಮದುವೆಗೆ ಸಾಕಾಗುವಷ್ಟು ಹಣ. "ಸನ್ನಿವಿಷ್ಟ-  
ಸಮಂ ಅಸನ್ನಿವಿಷ್ಟೇಷ್ಯೋ ನೇವೇಶನಿಕಂ ದಧು: ಕನ್ಯಾಮ್ಯಾ  
ಪ್ರಾಧಾನಿಕಮ್" ಅರ್ಥಶಾಂ ।

ಪ್ರಾಪ್ತಿಕ ಪ್ರಾಪ್ತಿಕ (ವಿಂ) 1. ಸ್ಥಾವರ ಜಂಗಮಾತ್ಮಕ  
ವಾದ ಈ ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಉಂಟಾದ. 2. ಸಂಸಾರದಲ್ಲಿ  
ಉಂಟಾದ, ಸಂಸಾರದಲ್ಲಿ ಇರುವ. ಪ್ರಪಂಚೇ ಜಾತ: ಭವೋ  
ವಾ ।

ಪ್ರಾಧಾದಿಕ ಪ್ರಾಧಾದಿಕ (ವಿಂ) ಸುದ್ದಿಯನ್ನು ಹರಡು  
ವವನು, ವದನೆಯನ್ನು ಹರಡುವವನು, ಲೋಕವಾದ  
ವನ್ನು ಪ್ರಚಾರಮಾಡುವವನು. ಪ್ರವಾದ: ಪ್ರಯೋಜನಮಸ್ಯ  
"ಠಕ್" (೪-೧-೧೦೯) । "ತುಲ್ಯಶೀಲಪುಂಶ್ಚಲಿಪ್ರಾಧಾದಿಕ-  
ಕಥಾವಕಾಶಭೋಜನದಾತುಭಿರಪಸರ್ಪಯೇತ್" ಅರ್ಥಶಾಂ ।

ಪ್ರೋಷ್ಯ ಪ್ರೋಷ್ಯ (ಪುಂ) ಪಥಿಕ, ಪ್ರಯಾಣಿಕ. "ಸರಲ:  
ಪ್ರೋಷ್ಯ: ಪಥಿಕ: ಸಮೀचीन: ಸಮಂಜಸ:" ಕಲ್ಪದ್ವಂ ।

ಪ್ರಕ್ಷಜಾತಾ ಪ್ರಕ್ಷಜಾತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸಂಸ್ಕೃತಿ. "ವೇದಾಪ್ರಜಾ  
ಬ್ರಹ್ಮಮುತಾ ಪ್ರಕ್ಷಜಾತಾ ಚ ವಾಕ್ಪದಾ" ಕಲ್ಪದ್ವಂ ।

## ಕ

ಕಲಕಂದ ಕಲಕಂದ (ಪುಂ) ಸೂರಣಕಂದ, ಚೂರಣದ  
ಗಡ್ಡೆ. "ಅಶೌಹಿತಾಮ್ಲಿಕಾಕಂದ: ಕಲಕಂದಾಪಿ ಚೇಷ್ಯತೇ"  
ಕಲ್ಪದ್ವಂ ।

ಕಾಲಿಕ ಕಾಲಿಕ (ಪುಂ) ಅದಿ, ಬಿಟ್ಟು, ಪರ್ವತ. "ಬನ್ವಾಕಿ:  
ಕಾಲಿಕ: ಕುಪ್ರ:" ವೇಜಂ ।



भीषयत् धीर्यं यः कः (वि०) धीर्यं यः कः  
 विधी (भवे) + णिच् "कृत्"  
 (३-२-१२४)। "एवं सुरगणान् क्रुद्धो भीषयन् वपुषा  
 रिपून्" भाव० ६-११-६। "ज्ञानम्" (३-२-१२४)।  
 -ब्रह्मणः-यः कः। "क्षत्रं भीषयमाणं तं रामं  
 विस्मापयेत कः" मट्टि० ५-५८।



ಮಹ ಭೇಷ (ಪುಂ) ಚಿಗರು, ಕುರಿ. "ಮೇಷಸ್ತು ರೋಮಶಃ | ಸಂಸ್ಕಾಲಹುಡುಮೇಷಾಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಮೋಗಾವಲಿ ಭೋಗಾವಲೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೋತ್ರಮಾಲಿಕೆ, ಸೋತ್ರಗ್ರಂಥ. "ಮೋಗಾವಲಿ ವಂದಿಪಾಠಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಮ

ಮಂಡಪೀಠಿಕಾ ಮಂಡಪೀಠಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ದಿಗ್ಗುಗ್ಗು, ಎರಡು ದಿಗ್ಗುಗಳು. "ದಿಗ್ಗುಮೇ ಮಂಡಪೀಠಿಕಾ" ವೇಜಂ |

ಮಂಡುಕ ಮಂಡುಕ (ನಂ) ಗುರಾಣಿಯ ಹಿಡಿ. "ವಾಮು- ಕಾಂತಾತ್ ಸಾಯಕೇನಾಯತೇನ ಸ್ಯತೇ ಬಾಹೌ ಮಂಡುಕವಿಲಿಪ್ತಮುಷ್ಠಿಃ" ಮಾಘಂ ೧೮-೨೧ |

ಮತ್ತವತ್ ಮತ್ತವತ್ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಗೊಂಡವನು. ಮದಿ (ಹವೆ) "ಕವತುಃ" (೩-೨-೧೦೨) | 2. ಕುಡಿದು ಅಮಲೇರಿದವನು. 3. ಅವಿವೇಕ, ವಿವೇಕವಿಲ್ಲದವನು.

ಮವನ ಮದನ (ನಂ) 1. ಸಂತೋಷಗೊಳ್ಳುವುದು. ಮದಿ (ಹವೆ) ಭಾವ "ಸ್ಯುಡ್" (೩-೩-೧೧೫) | 2. ಅಮಲೇರು ವುದು.

ಮವನೀಯ ಮದನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡಬೇಕಾದ. 2. ಸಂತೋಷಪಡಬಹುದಾದ. ಮದಿ (ಹವೆ) "ಜನೀಯ್" (೩-೧-೯೬) | 3. ಅಮಲೇರಿಸಬೇಕಾದ. ಮದಿ + ನಿವ್ "ಜನೀಯ್" (೩-೧-೯೬) | 4. ಸಂತೋಷಪಡಿಸಬೇಕಾದ. 5. ಸಂತೋಷಪಡಿಸಬಹುದಾದ. "ತವ್ಯಃ" -ವಿಸ್ತರಣಮ್ -ದಿಶನ್ಯಮ್.

ಮಧುಕೇಶವ ಮಧುಕೇಶವ (ಪುಂ) ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ. "ಇಂದಿವಿರಃ ಪುಣ್ಯಕೀಡೋ ಮಧುಕೋ ಮಧುಕೇಶವಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಮಧುರ ಮಧುದ್ರ (ಪುಂ) ಭ್ರಮರ, ದುಂಬಿ.

ಮಧುರಾಜ್ಞಕ ಮಧುರಾಂಗಳ (ಪುಂ) ಕಷಾಯರಸ. "ಕಷಾ- ಯೋಸ್ತ್ರೀ ಸ್ವಪ್ರತಿಷ್ಠಸ್ತುರೋ ಮಧುರಾಜ್ಞಕಃ" ವೇಜಂ |

ಮಧುಷಿಕಾ ಮಧುಷಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಮಧುರಾಂಗಳ. "ದಾರಕಾ ತು ದಾರವತೀ ಮಧುರಾ ತು ಮಧುಷಿಕಾ" ವೇಜಂ |

ಮವನಿ ಮದನೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪಾದರಕ್ಷೆ.

ಮಹೀಮಾನ ಮಹೀಮಾನ (ವಿಂ) ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡು ತ್ತಿಯವ. ಮಹೀಡ್ (ಪೂಜಾಯಾಮ್ -ಕರ್ತವ್ಯಾದಿ) + ಯಕ್ (೩-೧-೨೭) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪) | "ಮಹೀಮ- ಮಾನಾ ಭವತಾಽತಿಮಾತ್ರಂ ಸುರಾಶ್ವರೇ ವಸ್ತರಜಿತ್ವರೇಣ" ಮೃದ್ಲಂ ೨-೩೮ |

ಮುಸುಂಡಿ ಮುಸುಂಡೀ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗದ. "ತಾಸು ಪಾಪಾಣಕುಡಾಲ- ಕುಠಾರಿಕಾಂಡಕಲ್ಪನಾಃ | ಮುಸುಂಡಿ ಮುದಗರಾ ದಂಡವಕ್ರಯನ್- ವತಃ" ವರ್ಣಶಾಂ |

ಮುಗಾವಿವ್ ಮುಗಾವಿವ್ (ಪುಂ) ವ್ಯಾಧ, ಬೆಟೆಗಾರ. ಮುಗಾವ್ ವಿವಿಧಿ -ವ್ಯವ (ತಾಡನೆ) "ವಿವಿ" (೩-೨-೭೬) | ಸಂಪ್ರಸಾರಣಮ್ (೬-೧-೧೬) | ದೀಪಃ (೬-೩-೧೧೬) | "ವಾಕರ್ಣಯವ್ರತುಕಹಂಸನಾದಾನ್ ಲಕ್ಷ್ಯೇ ಸಮಾಧಿ ನ ದಧೇ ಮುಗಾ- ವಿವ್" ಮೃದ್ಲಂ ೨-೭ |

ಮೇಘಜ್ವರ ಮೇಘಜ್ವರ (ವಿಂ) ಮೇಘವನ್ನು ಉಂಟು ಮಾಡುವ. ಮೇಘ ಕರೋತಿ -ಝಙ್ (ಕರಣ) "ಜಙ್" (೩-೨-೪೩) | "ಮೇಘಜ್ವರಮಿವಾಯಾಂತಮುತಂ ರಾಮಂ ಕಲಮಾ- ನ್ವಿತಃ | ದೃಷ್ಟಾ ಮೇನ ನ ಸುಗ್ರೀವೋ ಬಾಲಿಮಾನ್ ಭಯಜ್ವರಮ್" ಮೃದ್ಲಂ ೬-೧೦೪ |

ಮೇತ್ರೇಯಕ ಮೇತ್ರೇಯಕ (ಪುಂ) ಸುತ್ತಿಪಾಠಕ, ಹೊಗಳಿ ಭಟ. "ಮೇತ್ರೇಯಕಃ ಪ್ರಶಂಸೇಘ್ನನ್ ವಶಾತಾಡೋಽಘೋದಯೇ" ವೇಜಂ |

ಮೇಹಿನ್ ಮೇಹಿನ್ (ಪುಂ) ಸಣ್ಣ ಹಾತಿಯ ಹುಲಿ. "ಝಙ್- ಖಾಲ್ಪಸ್ವಯಂ ದ್ವಿಪಿ ಚುಲುಕೋ ಮೇಹಿನ್" ವೇಜಂ |

ಮೌಕಲ್ಯ ಮೌಕಲ್ಯ (ಪುಂ) ಬಟ್ಟಿಯ ಹೊಲಿಗೆ ಮತ್ತು ಬಣ್ಣ ಹಾಕುವುದರಿಂದ ಜೀವಿಸುವವನು. "ಮೌಕಲ್ಯೋ ರಾಮಕೋ ವಸ್ತ್ರಸ್ಯುತಿರಂಜನಜೀವನಾತ್" ವೇಜಂ |

ಮೌಂಡಿಕ ಮೌಂಡಿಕ (ನಂ) ಭದ್ರಾಕರಣ, ಆಯುಷ್ಯಮ್. "ಮೌಂಡಿಕಂ ಭದ್ರಾಕರಣಂ ವಪನಂ ಪರಿವಾಪಣಮ್" ವೇಜಂ |

ಮೌಹನಿಕ ಮೌಹನಿಕ (ಪುಂ) ಚೈತ್ರಮಾಸ. "ವೇತ್ರೇ ಮೌಹನಿಕೋ ಮಃ" ವೇಜಂ |

ಯ

ಯದವ ಯದವ (ವಿಂ) ಉತ್ತರವಿಲ್ಲದವನು, ಉತ್ತರ ಹೇಳ ದವನು. "ಯದವಃ ಸ್ಯಾದನುತರಃ" ವೇಜಂ |

ಯಮೇಕಾ ಯಮೇಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಒಂದು ವಿಧ ವಾದ್ಯ. "ನಾಲಿಘಟಿ ಯಾಮನಾಲಿ ದಂಡವಕಾ ಯಮೇಕಾ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ |

ಯುಗಾಸಾರ ಯುಗಾಸಾರ (ನಂ) ಮೂರು ಯುಗಗಳು. "ತ್ರಿಯುಗಂ ತು ಯುಗಾಸಾರಂ ದ್ವಯಾಯಂ ತು ಯುಗದ್ವಯಮ್" ವೇಜಂ |

ಯುವಜಾನಿ ಯುವಜಾನಿ (ಪುಂ) ಯುವತಿಯ ಪತಿ, ತರುಣಿಯ ಪತಿ. ಯುವತಿಃ ಯೌವನವತೀ ಜಾಯಾ ಯಸ್ಯ "ನಿಹ್" (೬-೧-೭೬) | "ಯುವಜಾನಿರ್ವನುಷ್ಠಾಪಿಭೂಮಿಠಃ ಸ್ವವಿ- ಚಾರಿಣಃ" ಮೃದ್ಲಂ ೫-೧೩ |



ಯೋಜ್ಯ ಯೋಜ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಯುದ್ಧಮಾಡಬೇಕಾದ.  
2. ಯುದ್ಧಮಾಡಬಹುದಾದ. ಯುಧ (ಸಂಪ್ರಹಾರೇ) "ತವ್ಯ:"  
(3-1-96)। "ಅನೀಯರ್"। -ಛನೀಯಮ್- ಛನೀಯಮ್.  
ಯೋನಿಪೋಷಕ ಯೋನಿಪೋಷಕ (ವಿಂ) ಮೃಗ ಪಕ್ಷಿ  
ಮೊದಲಾದುವನ್ನು ಸಾಕುವವನು.

ರ

ರತಿಮದಾ ರತಿಮದಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಪ್ಸರಸ್ಸು. "ಸ್ಪರ್ಶನಿಂದಾ  
ರತಿಮದಾಪ್ಸರಸಃ ಸುಮದಾತ್ಮಜಾಃ" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ।

ರತ್ನಹಸ್ತ ರತ್ನಹಸ್ತ (ಪುಂ) ಕಂಬೇರ. "ಇಚ್ಛಾವಸೂರನ-  
ಗರ್ಭೋ ರತ್ನಹಸ್ತೋ ಸಿತೋದರಃ" ವೇಜಂ।

ರಮಣ ರಮಣ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡುತ್ತಿರುವ.  
2. ಶ್ರೇಷ್ಠಿಸುತ್ತಿರುವ. ರಮ (ಕೃಡಾಯಾಮ್) "ಶಾನಕ್"  
(3-2-124)।

ರಿಕ್ಷ ರಿಂಖ (ಪುಂ) ಉಯ್ಯಾಲೆ, ತೂಗುಮಂಚ.  
ರಿಕ್ಷೋಲ ರಿಂಖೋಲ (ನಂ) ಉಯ್ಯಾಲೆ, ತೂಗುಮಂಚ.  
ರಿಕ್ಷೋಲನ ರಿಂಖೋಲನ (ನಂ) ಉಯ್ಯಾಲೆ, ತೂಗುಮಂಚ.  
"ಪ್ರೇಕ್ಷೋಲನಂ ತು ಪ್ರೇಕ್ಷೋಲಂ ಪ್ರೇಕ್ಷೋ ರಿಕ್ಷೋಲನಾಪಿ" ವೇಜಂ।

ರಿಕ್ಷಿ ರಿಂಗಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಗಮನ. ನಡೆಯುವುದು, ಹೋಗು  
ವುದು. ರಿಗಿ (ಗತೀ) "ಇನ್" (3-4-116)।

ರಿರಕ್ಷತ್ ರಿರಕ್ಷತ್ (ವಿಂ) ರಕ್ಷಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಿರುವ.  
ರಕ್ಷಿತುಮಿಚ್ಛನ್ - ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) + ಸನ್ "ಶತ್"  
(3-2-124)।

ರಿರಕ್ಷಾ ರಿರಕ್ಷಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ರಕ್ಷಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ರಕ್ಷಿತುಮಿಚ್ಛಾ  
- ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) + ಸನ್ "ಅಃ" (3-3-102)।

ರಿರಕ್ಷು ರಿರಕ್ಷು (ವಿಂ) ರಕ್ಷಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ. ರಕ್ಷಿತು-  
ಮಿಚ್ಛುಃ - ರಕ್ಷ (ಪಾಲನೆ) + ಸನ್ "ಃ" (3-2-166)।

ರಂಧಾನ ರಂಧಾನ (ವಿಂ) 1. ತಡೆಯುವ, ಅಡ್ಡಿಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ, ಪ್ರತಿಬಂಧಿಸುತ್ತಿರುವ. ರಂಧಿರ್ (ಆವರಣ)  
"ಶಾನಕ್" (3-2-124)। 2. ತಡೆಹಿಡಿಯುತ್ತಿರುವ,  
ಹಿಡಿದು ನಿಲ್ಲಿಸುತ್ತಿರುವ.

ರೆಡಿ ರೇಡಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಅಗ್ನಿಯ ಶಬ್ದ. "ರೆಡಿವೆಹ್ಲೇಶ್ಚ ರೆಡಿತಮ್"  
ವೇಜಂ।

ರೋಚನೀಯ ರೋಚನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರೀತಿಸಲು ಅರ್ಹ  
ವಾದ. 2. ಪ್ರೀತಿಸಬೇಕಾದ. ರುಚ (ದೀಪ್ತಾವಭಿಪ್ರೀತೀ  
ಶ್ಚ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। "ತವ್ಯಃ" (3-1-96)।  
-ಚಿತವ್ಯಃ - ಚಿತವ್ಯಃ.

ರೋಪಣೀಯ ರೋಪಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಿಸ  
ಬೇಕಾದ. 2. ನೆಡೆಸಬೇಕಾದ, ನೆಡೆಸಿ ಬೆಳೆಸಬೇಕಾದ.  
ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೀ) + ಣಿಕ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)।  
ವಾ "ಪಃ"। ಪಕ್ಷೇ ರೋಪಣೀಯಮ್ ರೋಪಣೀಯಮ್.  
"ತವ್ಯಃ" (3-1-96)। -ಪಯಿತವ್ಯಃ - ಪಯಿತವ್ಯಃ,  
-ಹಯಿತವ್ಯಃ - ಹಯಿತವ್ಯಃ.

ರೋಪಯತ್ ರೋಪಯತ್ (ವಿಂ) ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತಿಸುತ್ತಿರುವ. ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೀ)  
+ ಣಿಕ್ "ಶತ್" (3-2-124)। ವಾ "ಪಃ" (3-3-43)।  
ಪಕ್ಷೇ ರೋಪಯತ್ ರೋಪಯತ್. ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (4-1-6)।  
-ಂತೀ -ಂತೀ.

ರೋಷಣ ರೋಷಣ (ಪುಂ) 1. ಒರೆಗಲ್ಲು, ಸುವರ್ಣದ  
ಬಣ್ಣವನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸುವ ಕಲ್ಲು. "ರೋಷಣಸ್ತು ಧೃವಿಭೃಂಶೋ  
ಹೇಮಾದಿನಿಕಷಾಢ್ಮನಿ" ವೇಜಂ। 2. ಪಾರದ, ಪಾದರಸ.  
"ರೋಷಣೋ ರೋಷಣೇ ಸ್ವರ್ಣಧರ್ಮಣಗ್ರಾಣಿ ಪಾರದೇ" ವೇಜಂ।

ರೋಹಣೀಯ ರೋಹಣೀಯ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತ  
ಬೇಕಾದ, ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಬೇಕಾದ. 2. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತ  
ಬಹುದಾದ. 3. ಬೆಳೆಯಬಹುದಾದ, ವೃದ್ಧಿಹೊಂದು  
ಬಹುದಾದ. 4. ಬೆಳೆಯಬೇಕಾದ. ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೀ)  
"ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। "ತವ್ಯಃ"। ರೋಹಣೀಯಮ್  
ರೋಹಣೀಯಮ್.

ರೋಹತ್ ರೋಹತ್ (ವಿಂ) 1. ಮೇಲಕ್ಕೆ ಹತ್ತುತ್ತಿರುವ,  
ಏರುತ್ತಿರುವ. 2. ಬೆಳೆಯುತ್ತಿರುವ, ವೃದ್ಧಿಹೊಂದು  
ತ್ತಿರುವ. ರುಹ (ಬೀಜಜನ್ಮಾದೀ) "ಶತ್" (3-2-124)।  
ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ "ಙೀಪ್" (4-1-6)। -ಂತೀ -ಂತೀ.

ರೌಚ್ಯ ರೌಚ್ಯ (ಪುಂ) ಬಿಲ್ವದಂಡ, ಬಿಲ್ವಪತ್ರೆ ಮರದ ದಂಡ.  
ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ವಟುವು ಹಿಡಿಯಬೇಕಾದ ದಂಡ. "ಬ್ರಾಹ್ಮಣೋ  
ಬೇಲ್ವಪಾಲಾಶೀ ಕ್ಷತ್ರಿಯೋ ವಟಸ್ತಾದಿರೌ" ಮನುಂ 2-45।

ಲ

ಲಗನೀಯ ಲಗನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸೇರಬೇಕಾದ, ಸಂಬಂಧ  
ಹೊಂದಬೇಕಾದ. 2. ಸೇರಬಹುದಾದ, ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದ  
ಬಹುದಾದ. ಲಗ (ಸಂಜ್ಞೆ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)।  
"ತವ್ಯಃ" (3-1-96)। -ಗಿತವ್ಯಮ್ - ಗಿತವ್ಯಮ್.

ಲಗಿತವತ್ ಲಗಿತವತ್ (ವಿಂ) ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುವ, ಸಂಬಂಧ  
ಹೊಂದಿರುವ. ಲಗ (ಸಂಜ್ಞೆ) "ಕ್ತವತುಃ" (3-2-102)।



ಲಗತ್ ಲಗತ್ (ವಿಂ) ಸೇರುತ್ತಿರುವ, ಸಂಬಂಧಹೊಂದು  
ತ್ತಿರುವ. ಲಗ (ಸಜ್ಜೆ) "ಶತ್" (3-2-124)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಛಿಪ್" (4-1-6)। -ಂತಿ -ಸ್ತೀ.

ಲಕ್ಷ್ಮಣಾನ ಲಂಘನಾನ (ವಿಂ) 1. ದಾಟುತ್ತಿರುವ.  
2. ಉಪವಾಸ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಲಘಿ (ಗತೌ) "ಶಾನಚ್" (3-2-124)।

ಲಕ್ಷಿಧಮ ಲಬ್ಧಿಮ (ವಿಂ) ಲಬ್ಧಿರುವ, ಹೊಂದಿರುವ,  
ಪಡೆದಿರುವ. ಡುಲಮಷ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ವಿತ್ರ:" (3-2-66)।  
"ಮಮ್" (4-4-30)। "ತಸ್ಮಿಸ್ತೇ ಲಕ್ಷಿಧಮಃ ಫಲಃ"  
ಮಢಿಂ 9-64।

ಲಬ್ಧಮಾನ ಲಭಮಾನ (ವಿಂ) ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ, ಪಡೆಯು  
ತ್ತಿರುವ. ಡುಲಮಷ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಶಾನಚ್" (3-2-124)।

ಲಬ್ಧನೀಯ ಲಂಘನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಲ್ಪಡುವ.  
2. ಪಡೆಯಬೇಕಾದ. 3. ಪಡೆಯಬಹುದಾದ. 4. ಪಡೆ  
ಯಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ಡುಲಮಷ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। 5. ಪಡೆಯುವಂತೆ ಮಾಡಬೇಕಾದ.  
6. ಪಡೆಯುವಂತೆ ಮಾಡಬಹುದಾದ. 7. ಪಡೆಯು  
ವಂತೆ ಮಾಡಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ಡುಲಮಷ್ + ಣಿಚ್ "ಅನೀ-  
ಯರ್" (3-1-96)। "ತವ್ಯ:" (3-1-96)। -ಯಿತವ್ಯಃ  
-ಯಿತವ್ಯಃ।

ಲಬ್ಧಯತ್ ಲಂಘಯತ್ (ವಿಂ) ಪಡೆಯುವಂತೆ ಮಾಡು  
ತ್ತಿರುವ. ಡುಲಮಷ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) + ಣಿಚ್ "ಶತ್" (3-2-124)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಛಿಪ್" (4-1-6)। -ಯಂತಿ -ಯಸ್ತೀ.  
"ಶಾನಚ್" (3-2-124)। -ಯಮಾನಃ -ಯಮಾನಃ।

ಲಬ್ಧಿಮತ ಲಂಘಿತ (ವಿಂ) ಹೊಂದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಪಡೆಯುವಂತೆ  
ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಡುಲಮಷ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) + ಣಿಚ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

ಲಬ್ಧಿ ಲಂಘ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹೊಂದಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಹೊಂದಿಸ  
ಬೇಕಾದ. 3. ಹೊಂದಿಸಬಹುದಾದ. ಡುಲಮಷ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ)  
+ ಣಿಚ್ "ಯತ್" (3-1-96)।

ಲಾತ್ ಲಾತ್ (ವಿಂ) ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ, ಸ್ವೀಕರಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. ಲಾ (ಆದಾನೇ) "ಶತ್" (3-2-124)।  
ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಛಿಪ್" (4-1-6)। -ಂತಿ -ಸ್ತೀ.

ಲಾನ ಲಾನ (ನಂ) ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಲಾ (ಆದಾನೇ)  
"ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಲಾಪಯಮಾನ ಲಾಪಯಮಾನ (ವಿಂ) ಮಾತನಾಡಿಸು  
ತ್ತಿರುವ. ಲಪ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾ ವಾಚಿ) + ಣಿಚ್ "ಶಾನಚ್" (3-2-124)।

ಲಿಪ್ಸನ ಲಿಪ್ಸನ (ನಂ) ಪಡೆಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು,  
ಹೊಂದಲು ಅಸೆಪಡುವುದು. ಡುಲಮಷ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) + ಸನ್  
"ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।

ಲಿಪ್ಸನೀಯ ಲಿಪ್ಸನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಪಡೆಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸ  
ಬಹುದಾದ. 2. ಪಡೆಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. ಡುಲಮಷ್  
(ಪ್ರಾಪ್ತೌ) + ಸನ್ "ಅನೀಯರ್" (3-1-96)। "ತವ್ಯ:"  
(3-1-96)। -ಪ್ಸಿತವ್ಯಮ್ -ಪ್ಸಿತವ್ಯಮ್.

ಲಿಪ್ಸಮಾನ ಲಿಪ್ಸಮಾನ (ವಿಂ) ಪಡೆಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ಹೊಂದಲು ಅಸೆಪಡುತ್ತಿರುವ. ಡುಲಮಷ್  
(ಪ್ರಾಪ್ತೌ) + ಸನ್ "ಶಾನಚ್" (3-2-124)।

ಲಿಪ್ಸಿತ ಲಿಪ್ಸಿತ (ವಿಂ) ಹೊಂದಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  
ಡುಲಮಷ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) + ಸನ್ "ಕ್ತ:" (3-2-102)।

ಲಿಪ್ಸಮಾನ ಲಿಪ್ಸಮಾನ (ವಿಂ) ಲೇಪನ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ,  
ಸುಣ್ಣವನ್ನು ಬಳಿಯುತ್ತಿರುವ. ಲಿಪ (ಉಪದೇಹ) "ಶಾನಚ್" (3-2-124)।

ಲೃಕ್ ಲೃಕ್ (ಪುಂ) ಮಾದಳದ ಗಿಡ. "ಬೀಜಪುರೇ ಮಾತು-  
ಲೃಕ್ ಲೃಕ್: ಸುಫಲಪುರಕೌ" ವೈಜಂ।

ವ

ವಕ್ಷಃಕವ ವಕ್ಷಃಕವ (ಪುಂ) ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ತೊಡುವ ಕವಚ.  
"ಮಾತಿ: ಸ್ತ್ರೀ ಜಾಗರೋ ವಕ್ಷಃಕವ: ಸನ್ನಾಹಕಃ ಕೃತೌ" ವೈಜಂ।

ವಚೋಹರ ವಚೋಹರ (ಪುಂ) ದೂತ. ವಚ: ಹರತಿ—ಹವ್  
(ಹರಣೆ) "ಅಚ್" (3-2-9)। "ಪುನಃಜ್ಜಿತಸಾವವಸಂ  
ಹಿಷಾಮಭಿವತ್ತೇ ಸ್ಮ ವಚೋ ವಚೋಹರ:" ಮಾಘಂ 16-36।

ವರಸೀಯ ವರಸೀಯ (ವಿಂ) ವತ್ಸ (ಕರಂ) ಗಳಿಗೆ ಹಿತವಾಗಿ  
ರುವ, ಕರುಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿಯಿಟ್ಟಿರುವ. ವರಸೀಯೋ ಹಿತ:  
"ಕ್ತ:" (4-1-4)। ಹಸುವನ್ನು (ಹಾಲನ್ನು) ಕರೆಯು  
ವಾಗ ಕರುಗಳಿಗೆ ಬೇಕಾಗುವಷ್ಟು ಕೆಚ್ಚಲಲ್ಲಿ ಬಿಟ್ಟು ಹಾಲು  
ಕರೆಯುವವನು, -ಗೋಪಾಲಕ.

ವರಮಾನ ವರಮಾನ (ವಿಂ) ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹೊಳೆಯು  
ತ್ತಿರುವ. ವರ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾ ವಾಚಿ) "ಶಾನಚ್" (3-2-124)।  
"ಲಕ್ಷಾಂ ಸಮಾವಿಶದ್ರಾವೀ ವರಮಾನೋಽತಿವುಗಮಾಮ್" ಮಢಿಂ  
6-29।

ವಿಕ್ರಮಮಾಣ ವಿಕ್ರಮಮಾಣ (ವಿಂ) ಕಾಲಿನಿಂದ ಸಂಚರಿಸು  
ತ್ತಿರುವ, ನಡೆದಾಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಕ್ರಮ್ (ಪಾದವಿಕೋಪೇ)  
"ಶಾನಚ್" (3-2-124)। "ಜಲೇ ವಿಕ್ರಮಮಾಣಾಯಾ  
ಹನುಮಾನ್ ಸತಯೋಜನಮ್" ಮಢಿಂ 6-24।



ವಿಜ್ಞಾನಾಸಾ ವಿಜ್ಞಾಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಚ್ಚು ವಿಷಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ವಿಶೇಷಣ ಜಾತುಮಿಶ್ರಣ — ವಿ + ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) + ಸನ್ "ಜ್ಞ:" (೩-೩-೧೦೨) ।

ವಿಜ್ಞಾನಾಸು ವಿಜ್ಞಾಸು (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಅಸೆಯುಳ್ಳವನು. ವಿ + ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) + ಸನ್ "ಜ್ಞ:" (೩-೨-೧೬೮) ।

ವಿಜ್ಞಾನಾಸ್ಯ ವಿಜ್ಞಾಸ್ಯ (ವಿಂ) ಹೆಚ್ಚು ತಿಳಿಯಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಲ್ಪಡುವ. ವಿ + ಜ್ಞಾ (ಅವಬೋಧನೆ) + ಸನ್ "ಜ್ಞತ್" (೩-೧-೧೨೪) ।

ವಿಜಿತಾತ್ಮನ್ ವಿಜಿತಾತ್ಮನ್ (ಪುಂ) 1. ವಿಷ್ಣು. ವಿಜಿತ: ಸ್ವಸ್ಯ ಲಕ್ಷ್ಮೀಕಮನೀಯತ್ವಸಂಪದ್ವಿಜ್ಞಲಮನಸ್ತ್ವೇಪಿ ಪ್ರಣಮೇ: ಪ್ರವಣೀಕೃತ: ಆತ್ಮಾ ಮನೋಽಸ್ಯ । "ಮಾನಸಂ ಪ್ರಣತೇಯಸ್ಯ ವಿಜಿತಾತ್ಮಾಜಿತಃ ಪ:" ಇತಿ ನಿರ್ದಿಷ್ಟ: । "ವಿಜಿತಾತ್ಮಾ ವಿವೇಚಾತ್ಮಾ" ವಿಂ ಸಂ । (ವಿಂ) 2. ಮನಸ್ಸನ್ನು ಜಯಿಸಿದವನು, ಮನಸ್ಸನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸಿದವನು. ವಿಜಿತ: ಆತ್ಮಾ ಮನೋ ಯೇನ ।

ವಿಪ್ರಲಿಪ್ತಾ ವಿಪ್ರಲಿಪ್ತಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ವಂಚಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆ. ಮೋಸಮಾಡಲು ಅಸೆ. ವಿ + ಪ್ರ + ಲುಪ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) + ಸನ್ "ಜ್ಞ:" (೩-೩-೧೦೨) ।

ವಿಪ್ರಲಿಪ್ತು ವಿಪ್ರಲಿಪ್ತು (ವಿಂ) ವಂಚಿಸಲು ಅಪೇಕ್ಷೆಯುಳ್ಳವನು. ವಿ + ಪ್ರ + ಲುಪ್ (ಪ್ರಾಪ್ತೌ) + ಸನ್ "ಜ್ಞ:" (೩-೨-೧೬೨) ।

ವಿಪ್ರವದಮಾನ ವಿಪ್ರವದಮಾನ (ವಿಂ) ಪರಸ್ಪರ ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ ಮಾತನಾಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಪ್ರ + ವದ (ವ್ಯಕ್ತಾಯಾಂ ವಾಚಿ) "ಜ್ಞಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಏತ್ ವಿಪ್ರವದಮಾನೇಸ್ತಾಂ ಸಯುಕ್ತಾಂ ಬಹಿರಾಕ್ಷಸೇ:" ಷಡ್ಠಿಂ ೮-೩೦ ।

ವಿಮಿಶ್ರಮಾನ ವಿಮಿಶ್ರಮಾನ (ವಿಂ) ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಅನೇಕವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಮಿಶ್ರಿ (ವಿವಾರಣೆ) ಕರ್ಮಂ ಯಕ್ "ಜ್ಞಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಕಾಶೀಯ ದೋಷಾವತಲೋಚನಾನಾಂ ವಿಮಿಶ್ರಮಾನ: ಪೃಥಗಾಬರಾಸೇ" ಕಿರಾಂ ೧೭-೨೧ ।

ವಿಲಕ್ಷುಯಮಾನ ವಿಲಂಘ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) 1. ದಾಟಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. 2. ಅತಿಕ್ರಮಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಲಿಘಿ (ಗತೌ) ಕರ್ಮಂ ಯಕ್ "ಜ್ಞಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

ವಿವೃತ್ತತ್ ವಿವೃತ್ತ್ಯತ್ (ವಿಂ) ಇರಲು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವ, ಕೂಡಲು ಇಚ್ಛಿಸುವ. ವರ್ತಿಸುಮಿಶ್ರಣ—ವಿ + ವೃತ್ (ವರ್ತನೆ) + ಸನ್ "ಜ್ಞತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಕೌತಾಂತಿಕೇ ವಿವೃತ್ತತ್ ವರ್ತಿಸುಮಿಶ್ರಣಿ" ಷಡ್ಠಿಂ ೮-೬೦ ।

ವಿಶಿಷ್ಟಜ್ಞಾನ ವಿಶಿಷ್ಟಜ್ಞಾನ (ವಿಂ) ಶಬ್ದಮಾಡುತ್ತಿರುವ, ಚಲಿಪಲಿಗುಟ್ಟುತ್ತಿರುವ. ವಿ + ಶಿಜಿ (ಅವ್ಯಕ್ತೇ ಶಬ್ದೇ) "ಜ್ಞಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ವೇದಾಂತಸೇಮ್ಯ: ಶ್ರುತರಾಮ-ವಾರ್ತಾಸ್ತಿತೌ ವಿಶಿಷ್ಟಜ್ಞಾನಪತತ್ತಿಸಕ್ಷಮ್ । ಅಶ್ವಿಲಿಹಾಪ್ರ-ರವಿಮಾರ್ಗಮಜ್ಞಮಾನಂಹೀರೇರ್ಷಿ ಪ್ರತಿಚಿತ್ರಕೂಟಮ್" ಷಡ್ಠಿಂ ೩-೪೬ ।

ವಿಷ್ಣು ವಿಷ್ಣು (ವಿಂ) 1. ವ್ಯಾಪಿಸಿರುವ, ಹರಡಿರುವ. ವಿಷ್ಣು (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಜ್ಞ:" (೩-೪-೭೨) । (ನಂ) 2. ಹರಡುವಿಕೆ, ವ್ಯಾಪಿಸುವಿಕೆ.

ವಿಷ್ಣವತ್ ವಿಷ್ಣವತ್ (ವಿಂ) ವ್ಯಾಪಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ, ಎಲ್ಲಾ ಕಡೆಯಲ್ಲೂ ಹರಡಿರುವ. ವಿಷ್ಣು (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಜ್ಞವತು:" (೩-೨-೧೦೨) ।

ವಿರೋಧಕ್ತು ವಿರೋಧಕ್ತು (ಪುಂ) ಶರ, ಬಾಣ. "ಚಿತ್ರಪುಕ್ಷೋ ವಿರೋಧಕ್ತು: ಸರೋ ರೋಷ ಇವುನಂ ಷನ್" ವೇಜಂ ।

ವಿರೋಧಕ್ತು ವಿರೋಧಕ್ತು (ಪುಂ) ಮಹಿಷ, ಎಮ್ಮೆ. "ವಿರೋಧ: ಕಲ್ಪು: ಪೌಶ್ವಿ ವಿರೋಧಕ್ತು ರಜಸ್ವಲ:" ವೇಜಂ ।

ವಿವಿವತ್ ವೇವಿವತ್ (ವಿಂ) ವ್ಯಾಪಿಸುತ್ತಿರುವ, ಹರಡುತ್ತಿರುವ.

ವಿವಿವತ್ ವೇವಿವತ್ (ನಂ) ವ್ಯಾಪಿಸುವುದು, ಹರಡುವುದು. ವಿಷ್ಣು (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ವ್ಯುತ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

ವಿವಿವತ್ ವೇವಿವತ್ಯಯ (ವಿಂ) 1. ವ್ಯಾಪಿಸಬೇಕಾದ. 2. ವ್ಯಾಪಿಸಬಹುದಾದ. ವಿಷ್ಣು (ವ್ಯಾಪ್ತೌ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । "ತವ್ಯ:" । ವೇದವ್ಯಮ್ ವೇವಿವತ್ಯಯ.

ವಿವಿವತ್ ವೇವಿವತ್ಯಯ (ವಿಂ) 1. ಸುತ್ತಲ್ಪಡುವ. ವೇದ (ವೇದನೆ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । 2. ಸುತ್ತವರೆಯಬೇಕಾದ. 3. ಸುತ್ತವರೆಯಬಹುದಾದ. "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) । ವೇದವ್ಯಮ್ ವೇವಿವತ್ಯಯ.

ವಿವಿವತ್ ವೇವಿವತ್ಯಯ (ವಿಂ) ಸುತ್ತವರೆಯುತ್ತಿರುವ, ಸುತ್ತಗುಟ್ಟುತ್ತಿರುವ. ವೇದ (ವೇದನೆ) "ಜ್ಞಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪) ।

ವಿವಿವತ್ ವೇವಿವತ್ಯಯ (ಪುಂ) ಕುಚುಗಾರ, ಹತ್ತಾಳ ತಾಮ್ರ ಮೊದಲಾದ ರೋಹಗಳ ಪಾತ್ರೆಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸುವವನು. "ವಿವಿವತ್ಯಯ ಲೋಹಕಾರಕ:" ವೇಜಂ ।

ವಿವಿವತ್ ವೇವಿವತ್ (ನಂ) ಗೋಷ್ಠದಲ್ಲಿ ಒಂದು ತಿಂಗಳು ಕಾಲ ಪಯ:ಪಾನ ಮಾಡುವ ಒಂದು ಗೋಷ್ಠ. "ಮಾಸಂ ಗೋಷ್ಠೇ ಪಯ:ಪಾನಂ ನೋವತಂ ವಾಚಿಕಂ ಚ ಷನ್" ವೇಜಂ ।



ಶ

ಶಕ್ತುನ ಶಂಕನ (ನಂ) 1. ಸಂಶಯಪಡುವುದು, ಶಂಕಿಸುವುದು. ಶಕಿ (ಶಕ್ತಿಯಾಮ್) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।  
2. ಉಂಟಿಸುವುದು.

ಶಕ್ತುಪಾಲ ಶಂಖಪಾಲ (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಸರ್ಪ.  
"ಶಕ್ತುಪಾಲೋ ಮಹಾಪರಾ: ಕಾಕೋದರ ಇತೀದೃಶಾ:" ವೆಂ. 1.

ಶತಪಾಕೃತ ಶತಪಾಕೃತ (ವಿಂ) ಮೂರು ಸಲ ಕುದಿಯಿಸಿ ಸಂಸ್ಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.

ಶಯಪಡಕ ಶಯಂಪಡಕ (ಪುಂ) ಉಡ. "ಶಯಾ ನಿಹಾಕಾ ಮುಸಲಿ ವೃಕ್ಷಜಾ ಸಾ ಶಯಪಡಕ:" ವೆಂ. 1.

ಶಯ್ಯ ಶಯ್ಯ (ನಂ) ಗೃಹ, ಮನೆ. "ಶಯ್ಯ ನಿವಸನಂ ಸದಾ ಬುಂದಿರಂ ವೇಷ ಮಂದಿರಮ್" ವೆಂ. 1.

ಶರಭಾ ಶರಭಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಸೊಂಗೆ ಕುಗ್ಗಿದ ದೇಹವುಳ್ಳ ಹೆಂಗೆಸು. "ಶರಭಾ ತು ವಿಶೋರ್ಜಾಸ್ತೀ ಸ್ವಲ್ಪದೇಹಾ ಮಹಿಷಿಕಾ" ವೆಂ. 1.

ಶಸ್ಯಮಾನ ಶಸ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ಸುತ್ತಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಹೊಗಳಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಶಸ್ತು (ಸ್ತುತೌ) ಕಮಂ "ಶಾನವ್" (3-2-124)। "ಬಹುಶ್ರಮಮುಜಾಂತರಯುಗಂ ಶಸ್ಯಮಾನ-ಮನುಜಿವಿಜನೇನ" ಬಾದಂ 21-4.

ಶಾನ ಶಾನ (ನಂ) 1. ಸಣ್ಣದಾಗಿ ಮಾಡುವುದು, ತೆಳ್ಳಗೆ ಮಾಡುವುದು. ಶೌ (ತನುಕರಣೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (3-3-114)।  
2. ಹರಿತವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು, ತೀಕ್ಷ್ಣವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು.

ಶಾನೀಯ ಶಾನೀಯ (ವಿಂ) 1. ತೆಳುವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ, ಸಣ್ಣದಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 2. ತೆಳುವಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ. 3. ತೆಳುವಾಗಿ ಮಾಡಬಹುದಾದ. 4. ತೆಳುವಾಗಿ ಮಾಡಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ಶೌ (ತನುಕರಣೆ) "ಬನೀಬರ್" (3-1-96)। "ತವ್ಯ:" (3-1-96)। -ತವ್ಯ:-ಕವ್ಯ: 5. ಹರಿತವಾಗಿ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ, 6. ಹರಿತವಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾದ. 7. ಹರಿತವಾಗಿ ಮಾಡಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. 8. ಹರಿತವಾಗಿ ಮಾಡಬಹುದಾದ.

ಶಿಲ್ಪಾ ಶಿಲ್ಪಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ನಾಟಕ ಗೃಹ. "ವಪನಿ ಸ್ಪಾತ್ ಸರಕುಟಿ ಶಿಲ್ಪಾ" ವೆಂ. 1.

ಶಿಷ್ಯಾಶಿತ ಶಿಷ್ಯಾಶಿತ (ನಂ) ಶಿಷ್ಯನಂತೆ ಆಚರಿಸುವುದು. ಶಿಷ್ಯವದಾಚರಿಸು - ಶಿಷ್ಯ "ಕವ್ಯ" ಮಾತೆ "ಕ:" (3-3-114)। "ಶಾಸು ವೃತ್ತಿಮನಯೋರಭಿಗಮ್ಯ ವೃನ್ ಶಿಷ್ಯಾಶಿತಂ ತ್ವದವರೋಚನಿತಮಿತಿಶಿಷ್ಯ:" ಬಾದಂ 19-33.

ಶಿಖ್ರಾಶ್ರಮಾಶ್ರ ಶಿಖ್ರಾಶ್ರಮಾಶ್ರ (ವಿಂ) ಚುರುಕಾಗಿ ಆಗುತ್ತಿರುವ (ಶಿಖ್ರವಾಗಿ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ) ಶಿಖ್ರ +

ಕವ್ಯ "ಶಾನವ್" (3-2-124)। "ಶಿಖ್ರಾಶ್ರಮಾಶ್ರ: ಕಕ್ತುಮೋ-ಸ್ತುವಾನೇ: ಜನೇರಪನ್ಯಾನಮುಪೇತ್ಯ ಸುಪ್ತೆ:" ಮಹಿಂ 3-37.

ಶುಭ್ರತ್ ಶುಭ್ರತ್ (ವಿಂ) 1. ಶುದ್ಧವಾಗುತ್ತಿರುವ. 2. ಚೊಕ್ಕಟವಾಗುತ್ತಿರುವ. ಶುಭ (ಶೋಭೆ) "ಶತ್" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಶಿಪ್" (4-1-6)। -ಸ್ತೀ -ಶಿಪ್.

ಶುಭ್ರತ್ ಶುಭ್ರತ್ (ವಿಂ) ಒಣಗುತ್ತಿರುವ. ಶುಭ (ಶೋಭೆ) "ಶತ್" (3-2-124)। ಸ್ತ್ರಿಯಾ "ಶಿಪ್" (4-1-6)। -ಸ್ತೀ -ಶಿಪ್.

ಶುಲಾಯುಧ ಶುಲಾಯುಧ (ಪುಂ) ಪರಮೇಶ್ವರ, ಪರಶಿವ. ಶುಲಮಾಯುಧಮಸ್ಯ। "ಶರವ್ಯಮೃತಪುರೇಷ್ಯಮೋಷಂ ಶುಲಾಯುಧೇ ಶೌಯಮವೇಷ್ಯ ಶೌರೇ:" ಬಾದಂ 20-34.

ಶೋಮನೀಯ ಶೋಮನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಪ್ರಕಾಶಿಸಬೇಕಾದ. 2. ಪ್ರಕಾಶಿಸಬಹುದಾದ. 3. ಪ್ರಕಾಶಿಸಲು ಶಕ್ತವಾದ. ಶುಮ (ಶೋಮನಿ) "ಬನೀಬರ್" (3-1-96)। 4. ಪ್ರಕಾಶ ಗೊಳಿಸಲ್ಪಡುವ. 5. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸಬಹುದಾದ. 6. ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸಲು ಶಕ್ತವಾದ. ಶುಮ + ವಿಶ್ "ಬನೀಬರ್" (3-1-96)। "ತವ್ಯ:"। -ಮಿತವ್ಯಮ್ -ಕವ್ಯಮ್. "ವಿಶ್"। -ಮಯಿತವ್ಯಮ್ -ಕವ್ಯಮ್.

ಶೋಷ ಶೋಷ (ವಿಂ) 1. ಒಣಗಿಸಲ್ಪಡುವ. ಶುಷ (ಶೋಷಣೆ) "ಶತ್" (3-1-124)। 2. ಒಣಗಿಸಬೇಕಾದ. 3. ಒಣಗಿಸಬಹುದಾದ. 4. ಒಣಗಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ.

ಶಾಲಿ ಶಾಲಿ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಹೆಣ್ಣುವಾಯಿ. "ಶುನಿ ತು ಶರಭಾ ಶಾಲಿ" ವೆಂ. 1.

ಶಾಸಾ ಶಾಸಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕೆಂಪುತಿಗಡೆ ಮರ. "ಶೇವನಿ ಮಹತಿ ಶಾಸಾ ಮಾಯಾ ಕುಠರಣಾ" ವೆಂ. 1.

ಶ

ಶಬ್ದಮು ಸ್ವಾಮ್ಯಮು (ಪುಂ) 1. ಜಲ, ನೀರು. 2. ಚಂದ್ರ. "ಶಬ್ದಮುಸುಮಿ ಜಲೇ ಚಂದ್ರೇ" ವೆಂ. 1.

ಸ

ಸಂವತ್ ಸಂವತ್ (ವಿಂ) ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬೀಸುತ್ತಿರುವ, ಸಮ+ವಾ (ವತಿಕವನಯೋ:) "ಶತ್" (3-2-124)। "ಸಂವಾದ್ವಿ: ಸಕುಸುಮರೇಣುಮಿ: ಸಮೀರೇಶಾನಸಂಬಂಧುಫಲವಾರಿಮಿವನಾಂತೆ:" ಮಹಿಂ 21-22.



ಸಂವಾದನ ಸಂವಾದನ (ನಂ) ಸಂದೇಶ, ಬಾಯಲ್ಲಿ ಹೇಳಿ ಕಳುಹಿಸುವ ಮಾತು, ವಾಚಿಕ. "ಸಂವಾದನಂ ವಾಚಿಕಂ ಚ" ವೇಜಂ ।

ಸಂವಾಪ ಸಂವಾಪ (ಪುಂ) ಸ್ವಾಪ, ನಿಮ್ರ. "ಸಂವಾಪಃ ಶಯನಂ ಸ್ವಾಪಃ" ವೇಜಂ ।

ಸಂಸರ್ಗವಿಜ್ಞಾ ಸಂಸರ್ಗವಿಜ್ಞಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಕಾಮಶಾಸ್ತ್ರ ಮತ್ತೂ ನೃತ್ಯ ಗೀತ ಮೊದಲಾದ ವಿದ್ಯೆ. ಅರ್ಥಶಾಂ ।

ಸಂಜತ್ ಸಂಜತ್ (ವಿಂ) ಸಂಬಂಧಿಸುತ್ತಿರುವ, ಸಂಬಂಧ ಹೊಂದುತ್ತಿರುವ. ಷಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೆ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ಂತಿ-ನೀಂ.

ಸಂಜನ ಸಂಜನ (ನಂ) ಸಂಬಂಧಹೊಂದುವುದು, ಸೇರಿಕೊಳ್ಳುವುದು. ಷಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೆ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) ।

ಸಂಜನೀಯ ಸಂಜನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸೇರಿಸಲ್ಪಡುವ, ಸಂಬಂಧಹೊಂದಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಸಂಬಂಧಹೊಂದಿಸ ಬೇಕಾದ. 3. ಸಂಬಂಧಪಡಿಸಬಹುದಾದ. 4. ಸೇರಿ ಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ಷಜ್ಜ (ಸಜ್ಜೆ) + ಣಿವ್ "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । "ತವ್ಯಃ" (೩-೧-೯೬) । ಸಂಜಯಿತವ್ಯಃ ಸಂಜಯಿತವ್ಯಃ.

ಸಂತನ್ಯಮಾನ ಸಂತನ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ಮಾಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ತನ್ತು (ವಿಸ್ತಾರೇ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಸಂತನ್ಯಮಾನಮಪರಾಧಗಣಂ ವಿಚಿಂತ್ಯ ತಸ್ಯಾಪಿ ಹಂತ ಭವತೀ ಚ ವಿಭಾವಯಾಮಿ" ದಯಾಂ ।

ಸಂತಪ್ಯಮಾನ ಸಂತಪ್ಯಮಾನ (ವಿಂ) ದಹಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ, ಸುಡಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ತಪ (ಸಂತಾಪೇ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ನಮಂತಿ ಶತ್ರುಃ ಚ ಬಂಧು-ವೃದ್ಧಿ ಸಂತಪ್ಯಮಾನೇಹೈರ್ದಯಃ ಸಹಂತಿ" ಭೃಂ ೧೨-೭೯ ।

ಸಂದೇಶ ಸಂದೇಶ (ವಿಂ) ಸಂದೇಹಪಡುವ ಸ್ವಭಾವದ. ಸಮ್ + ದಿಹ (ಉಪಚಯೇ) "ತನ್" (೩-೨-೧೩೫) । "ಸಂಶಯಾಲ್ವಸ್ತು ಸಂದೇಶಾ" ವೇಜಂ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೫) । -ಗ್ರೀ-ನೀಂ.

ಸನ್ನಿಧಾಪಿತ ಸನ್ನಿಧಾಪಿತ (ವಿಂ) ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬರುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವಂತೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟ. ಸಮ್ + ನಿ + ಡುಧಾನ್ (ವಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) + ಣಿವ್ "ಕ್ತಃ" (೩-೨-೧೦೨) । "ಕಿಂ ನು ಕ್ಷಲು ಭಗವತಾ ವಾಲ್ಮೀಕಿನಾ-ಸಬ್ರಹ್ಮಾಕ್ಷತ್ರಪೋರಜಾನಪದಾಃ ಪ್ರಜಾಃ ಸಚರಾಚರೋ ಭೂತಗ್ರಾಮಃ ಸ್ವಪ್ರಭಾವೇಣ ಸನ್ನಿಧಾಪಿತಃ" ಉಂ ರಾಂ ೭ ।

ಸನ್ನಾಮ ಸನ್ನಾಮ (ಪುಂ) ಬೇರೆ ರೀತಿಯಾಗಿ ಮಾಡುವುದು, ವ್ಯತಿರಿಕ್ತವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು. "ಸನ್ನಾಮಸ್ತ್ವನ್ಯಥಾಕೃತಿಃ" ವೇಜಂ ।

ಸನ್ನಿಕ್ಷೇಪ್ತ ಸನ್ನಿಕ್ಷೇಪ್ತ (ವಿಂ) ಸರಿಯಾದ ಸಾಕ್ಷಿಯ ಎದುರಿಗೆ ನಿಧಿಯ ನಿಕ್ಷೇಪವ್ಯವಹಾರ ಮಾಡುವವನು. "ಅರ್ಥಪ್ರಕಾರಾಃ ಕಾರುಣಾಸಿತಾರಃ ಸನ್ನಿಕ್ಷೇಪ್ತಾರಃ ಸ್ವವಿತ್ತ-ಕಾರವಃ ಶ್ರೇಣಿಪ್ರಮಾಣಾಃ ನಿಕ್ಷೇಪಂ ಗೃಹ್ಣೀಯುಃ" ಅರ್ಥಶಾಂ ।

ಸಮಂತಿಕ ಸಮಂತಿಕ (ನಂ) ಎಲ್ಲೆ, ಗಡಿ. "ಸಮಂತಂ ತು ಸಮಂತಿಕಮ್" ವೇಜಂ ।

ಸಮುಪವೃತ್ ಸಮುಪವೃತ್ (ವಿಂ) ಉತ್ಪತ್ತಿ ಮಾಡು ತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಉಪ + ಡುಧಾನ್ (ವಾರಣಪೋಷಣಯೋಃ) "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಪರಿಸುರಪತಿಸುನುಧಾಮ ಸಖಃ ಸಮುಪವೃತ್ಸುಕುಲಾನಿ ಮಾಲತೀನಾಮ್" ಕಿರಾಂ ೧೦-೨೦ । ಸ್ತ್ರಿಯಾಂ "ಜೀಪ್" (೪-೧-೬) । -ದತೀ -ದಧತೀ.

ಸಮೇಧಾ ಸಮೇಧಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಭವಿಷ್ಯತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಲಭ್ಯ ವಾಗುವ ಸಂವತ್ಸರ.

ಸಮೇಧಾಶಾಸ್ತಿ ಸಮೇಧಾಶಾಸ್ತಿ (ಪುಂ) ಭವಿಷ್ಯತ್ ಸಂಪತ್ತನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವವನು. "ಸಮೇಧಾಶಾಸ್ತಿಮಿಷ್ಟಾಭಿ-ಗತಾನಾಂ ಅಕ್ಷವಿಜಯಾ ಶಿಷ್ಯಸಂಜ್ಞಾಭಿಷ್ಠ ಕರ್ಮಾಪ್ಯವಸಿತಾನಿ ಆದಿಶೇತ್" ಅರ್ಥಶಾಂ ।

ಸಮೋಲಕ ಸಮೋಲಕ (ಪುಂ) ಕಷಾಯ ರಸವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಉಳಿದ ಐದು ರಸಗಳು. "ವಿನಾ ತಿಕ್ತೇನ ಚೋಲಕಃ । ಸಮೋಲಕಃ ಕಷಾಯೇಣ" ವೇಜಂ ।

ಸಮ್ಮಿಶ್ರಮಾನ ಸಮ್ಮಿಶ್ರಮಾನ (ವಿಂ) ಮತ್ತೆ ಬಂದು ಸೇರುತ್ತಿರುವ. ಸಮ್ + ಮಿಶ್ರಿರ್ (ವಿದಾರಣೇ) ಕರ್ಮಂ "ಶಾನವ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಅಮುಗ್ನಭಾಗಾಂತರೀತಃ ಪಯೋಮಿಃ ಸಮ್ಮಿಶ್ರಮಾನೇರಿಯಮಂತರೇಷು" ಯಾದಂ ೧೮-೪೪ ।

ಸರ್ಜನ ಸರ್ಜನ (ನಂ) 1. ದಾನಮಾಡುವುದು, ಕೊಡುವುದು. ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗೇ) "ಲ್ಯುಟ್" (೩-೩-೧೧೫) । 2. ಸೃಷ್ಟಿಸುವುದು, ಉತ್ಪತ್ತಿಮಾಡುವುದು. "ತಸ್ಮಾ-ದೀಶ್ವರಸ್ಯ ಜಗತ್ಸರ್ಜನಂ ನ ಯುಜ್ಯತೇ" ಅಕ್ಷಪಾದದರ್ಶನಮ್ ।

ಸರ್ಜನೀಯ ಸರ್ಜನೀಯ (ವಿಂ) 1. ಸೃಷ್ಟಿಸಲ್ಪಡುವ. 2. ಸೃಷ್ಟಿಸಬೇಕಾದ. ಸೃಜ (ವಿಸರ್ಗೇ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । 3. ದಾನಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 4. ದಾನಮಾಡಬೇಕಾದ. 5. ದಾನಮಾಡಬಹುದಾದ.

ಸರ್ವೀಯ ಸರ್ವೀಯ (ವಿಂ) ಸರ್ವರಿಗೂ ಹಿತವಾಗಿರುವ. ಸರ್ವೇಭ್ಯೋ ಹಿತಮ್ — ಸರ್ವ "ಃ" (೫-೧-೫) ।



ಸಹಪಾನಕ ಸಹಪಾನಕ (ನಂ) ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ಪಾನ ಮಾಡುವುದು. "ಶುಂಡಾಪಾನಂ ಮದಸ್ಥಾನಂ ಸಪೀತಿ: ಸಹಪಾನ-ಕಮ್" ವೈಜಂ ।

ಸಹಪಾಸುಕಿಲ ಸಹಪಾಸುಕಿಲ (ಪುಂ) ಮಿತ್ರ, ಗೆಳೆಯ, ಸ್ನೇಹಿತ. "ಸಹಪಾಸುಕಿಲ: ಸ್ನೇಹೀ ವಯಸ್ಯ:" ತ್ರಿಕಾಂಡಂ ।

ಸಹಾಧ್ಯಾಯಿನ್ ಸಹಾಧ್ಯಾಯಿನ್ (ಪುಂ) ಒಬ್ಬ ಗುರುವಿನಲ್ಲಿ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡುವವನು, ಧರ್ಮಭ್ರಾತೃ, ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುವವನು. "ಧರ್ಮಭ್ರಾತಾ ಸಹಾಧ್ಯಾಯಿ" ವೈಜಂ ।

ಸಾಂವನನಿಕೀ ಸಾಂವನನಿಕೀ (ವಿಂ) ವಶೀಕರಣಕ್ಕೆ ಕಾರಣ ವಾದ, ವಶೀಕರಣಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾದ. "ಜಾತಕಾಮ್ ವಾ ಸಿದ್ಧವ್ಯಜ್ಜನ: ಸಾಂವನನಿಕೀಭಿರೋಷಧಿಭಿ: ಸಂವಾಸ್ಯ ರಸೇನ ಅತಿಸಂವಾಸ್ಯಾಪಗಚ್ಛೇತ್" ಅರ್ಥಶಾಂ ।

ಸಾಂವ್ಯವಹಾರಿಕ ಸಾಂವ್ಯವಹಾರಿಕ (ವಿಂ) ಇತರರ ವಸ್ತು ಗಳನ್ನು ಮಾರಿ ಜೀವಿಸುವವನು. "ಸಾಂವ್ಯವಹಾರಿಕೇಷು ವಾ ಪ್ರಾತರ್ಯಿಕೇಷ್ವರಾಜವಾಚ್ಯೇಷು ಭ್ರೇಷೋಪನಿಪಾತಾಮ್ಯಾಂ ನಷ್ಟಂ ವಿನಷ್ಟಂ ವಾ ಮೂಲ್ಯಮಪಿ ನ ದದ್ಯು:" ಅರ್ಥಶಾಂ ೩-೧೨ ।

ಸಾದ್ಗುಣ್ಯ ಸಾದ್ಗುಣ್ಯ (ನಂ) 1. ಸದ್ಗುಣಗಳು, ಶುಭ ಗುಣಗಳು. ಸದ್ಗುಣ ಸ್ವಾರ್ಥ "ವ್ಯಖ್ಯ" (ವಾಂ ೪-೧-೧೨೪) । 2. ಸದ್ಗುಣಗಳ ಭಾವ. ಸದ್ಗುಣಾನ್ ಭಾವ: "ವ್ಯಖ್ಯ" (೪-೧-೧೨೪) ।

ಸಾಂದೇಶಿಕ ಸಾಂದೇಶಿಕ (ಪುಂ) ದೂತ, ಸಂದೇಶವನ್ನು ಒಯ್ಯುವವನು. "ವಾತಿಕ: ಸಂದೇಶಹರೋ ದೂತ: ಸಾಂದೇಶಿಕೋ ರಮ್:" ವೈಜಂ ।

ಸಾರತಮ ಸಾರತಮ (ವಿಂ) ಎಲ್ಲಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚು ಸಾರ ವಾದ.

ಸಾರಿಠ ಸಾರಿಠ (ವಿಂ) ಸಾರತಮವಾದ, ಹೆಚ್ಚು ಸಾರ ವಾದ. ಅಯಮೇಷಾಮತಿಶಯೇನ ಸಾರ:—ಸಾರ "ಇಠನ್" (೪-೩-೪೪) । "ಯತ್ತು ಪರಸ್ಯ ದುರ್ಬಲಂ ವೀತಹಸ್ತಸ್ವಂ ದೂಷ್ಯಾ-ಮಾತ್ಯಕಂ ಕೃತೋಪಜಾಪಂ ವಾ ತತ್ಪ್ರಭುತಸಾರೇಣಾಭಿಹನ್ಯಾತ್ । ಯದಾ ಪರಸ್ಯ ಸಾರಿಠಂ ತದ್ವಿಗುಣಸಾರೇಣಾಭಿಹನ್ಯಾತ್" ಅರ್ಥಶಾಂ ೧೦-೪ ।

ಸಿತಕಾಚ ಸಿತಕಾಚ (ಪುಂ) 1. ಪಾರದರ್ಶಕವಾದ ಹೊಳ ಪಾಗಿರುವ ಮೈಯುಳ್ಳ ಒಂದು ಬಗೆಯ ಮಣ್ಣು. 2. ಈ ಮಣ್ಣಿನಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಪಾತ್ರೆ ಮೊದಲಾದವು, ಪಿಂಗಾಣ, ಪಿಂಗಾಣ ಪಾತ್ರೆ. "ಸಿತಕಾಚಸ್ತು ಪಿಂಗಾಣ:" ವೈಜಂ ।

ಸಿತಾಯುಷ ಸಿತಾಯುಷ (ಪುಂ) ಒಂದು ಜಾತಿಯ ಮೀನು.

ಸೀಮಂತಯತ್ ಸೀಮಂತಯತ್ (ವಿಂ) ಮಧ್ಯೆ ರೇಖೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದುದನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ. ಸೀಮಂತವತ್ + ಣಿच् (ಗಂ ೨೦೪) । ಮತುಪೋ ಲುಕ್ "ಶತ್" (೩-೨-೧೨೪) । "ಮಹೀಯಸೋ ವೇಗವಶೇನ ಮಧ್ಯೆ ಸೀಮಂತಯತ್ನೇಪ ಶರತ್ಪಯೋದಾನ್" ಯಾದಂ ೧೮-೧೭ ।

ಸುಜಯ ಸುಜಯ (ವಿಂ) ಸುಖವಾಗಿ ಜಯಿಸಲು ಸಾಧ್ಯ ವಾಗುವ. ಸುಖೇನ ಜೇತುಂ ಶಕ್ಯ:—ಸು+ಜಿ (ಜಯೇ) "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬) । "ಸುಜಯ: ಸಲ ತಾದೃಗಂತರೇ ವಿಪದಂತಾ-ಹ್ಯವಿನೀತಸಮ್ಮದ:" ಕಿರಾಂ ೨-೪೨ ।

ಸುದಮ ಸುದಮ (ವಿಂ) ಸುಖವಾಗಿ ನಿಗ್ರಹಿಸಲು ಸಾಧ್ಯ ವಾದ, ಕಷ್ಟವಿಲ್ಲದೆ ದಮನಮಾಡಲು ಸಾಧ್ಯವಾದ. ಸುಖೇನ ದಮ್ಯತೇ—ಸು—ದಮ್ (ಉಪಶಮೇ) "ಖಲ್" (೩-೩-೧೨೬) ।

ಸುಖ್ಯಾ ಸುಖ್ಯಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಜಿಗಣೆ, ರಕ್ತವನ್ನು ಹೀರುವ ಒಂದು ಜಲಜಂತು. "ಜಲೂಕಾ ತು ಜಲಾಲೋಕಾ ಸುಖ್ಯಾ ಭೂಮಿ ಜಲೋಕಸ:" ವೈಜಂ ।

ಸೇಮ್ಯ ಸೇಮ್ಯ (ಪುಂ) ತುಷಾರ, ಹಿಮ, ಮಂಜು, ಇಬ್ಬನಿ, "ತುಷಾರ: ಶಿಶಿರ: ಸ್ಕೀತ: ಸೇಮ್ಯ: ಸೀಮೋ ಹಿಮೋಽಪಿ ಚ" ವೈಜಂ ।

ಸ್ಯಾಲಿಕಾ ಸ್ಯಾಲಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಪತ್ನಿಯ ಕನಿಷ್ಠ ಸಹೋದರ, ಪತ್ನಿಯ ತಂಗಿ. "ಪತ್ನ्याಸ್ತು ಭಗಿನಿ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾ ಜ್ಯೇಷ್ಠಾಶ್ಚ: ಕುಲೀತಿ ಚ । ಕನಿಷ್ಠಾ ಸ್ಯಾಲಿಕಾ ಹಾಲಿ ಪತ್ನಿಣಿ ಕೇಲಿ-ಕುಚಿಕಾ" ವೈಜಂ ।

ಸ್ವಮನಿಷಿಕಾ ಸ್ವಮನಿಷಿಕಾ (ಸ್ತ್ರೀಂ) ಉತ್ತರೇಕ್ಷೆ. "ಉತ್ತರೇಕ್ಷಾ ಸ್ವಮನಿಷಿಕಾ" ವೈಜಂ ।

ಹ

ಹರಕ ಹರಕ (ಪುಂ) ಖಡ್ಗ, ಕತ್ತಿ. "ಹರಕಸ್ತರವಾರಿ: ಸ್ತ್ರೀ" ವೈಜಂ ।

ಹರಾದ್ರಿ ಹರಾದ್ರಿ (ಪುಂ) ಕೈಲಾಸ ಪರ್ವತ. "ರಜತಾದ್ರಿಸ್ತು ಕೇಲಾಸೋ ಹರಾದ್ರಿಮಹಿತಶ್ಚ ಸ:" ವೈಜಂ ।

ಹುಣ್ಣಿವ ಹುಣ್ಣಿವ (ವಿಂ) 1. ಸಂತೋಷಪಡಬೇಕಾದ. 2. ಸಂತೋಷಪಡಬಹುದಾದ. ಹುಣ್ಣಿವ (ತುಷ್ಟಿ) "ಅನೀಯರ್" (೩-೧-೯೬) । "ತವ್ಯ:" (೩-೧-೯೬) । —ವಿತವ್ಯಮ್ —ಹುಣ್ಣಿವಮ್.



ಹಿತಾನುಬಂಧಿನ್ ಹಿತಾನುಬಂಧಿನ್ (ವಿಂ) ಹಿತದ ಸಂಬಂಧ  
ವುಳ್ಳ, ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಹಿತವಾಗಿರುವ, (ಕಾರ್ಯದ) ಕೊನೆ  
ಯಲ್ಲಿ ಶುಭವಾಗಿರುವ. ಹಿತಮನುಬಂಧಾತಿ—ಬಂಧ (ಬಂಧನೆ)  
“ಗಿತಿ:” (೩-೧-೧೩೪)। “ಮಹೋದಯಸ್ತಸ್ಯ ಹಿತಾನು-  
ಬಂಧಿಮಿ: ಪ್ರತೀಯತೇ ಪಾತುರಿವೇಹಿತಂ ಫಲೇ:” ಕಿರಾಂ  
೧-೨೦।

ಹೃಷವತ್ ಹೃಷವತ್ (ವಿಂ) ಸಂತೋಷವೊಂಡವನು.  
ಹೃಷ (ತುಷ್ಟಿ) “ಹೃಷತು:” (೩-೨-೧೦೨)। “ಹೃಷವಾನ್  
ಸ ದ್ವಿಜಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ನಿಯತನೈಮಿತ್ತಿಕಲ್ಯಾಣಮ್” ನೆಪಂ ೧೭-೨೦೧।

ಹೊತವ್ಯ ಹೋತವ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಹೋಮಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ  
ದ್ರವ್ಯ. ಹೋಮದ್ರವ್ಯ. ಹೃ (ದಾನಾದನಯೋ:) “ತವ್ಯ:”  
(೩-೧-೧೬)। 2. ಹೋಮ ಮಾಡಲ್ಪಡುವ. 3.  
ಹೋಮಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ. 4. ಹೋಮ ಮಾಡಬಹುದಾದ;  
ಹ್ಲಾಘ ಹ್ಯಾದ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಶಬ್ದ ಮಾಡಬಹುದಾದ. 2. ಶಬ್ದ  
ಮಾಡಬೇಕಾದ. ಹ್ಲಾಘ (ವ್ಯಕ್ತಿಯ ಕೃಂದೆ) “ಘತ್”  
(೩-೧-೧೨೪)।  
ಹ್ಲಾಘ ಹ್ಯಾದ್ಯ (ವಿಂ) 1. ಸುಖವಡಬಹುದಾದ. 2. ಸುಖ  
ಪಡಬೇಕಾದ. ಹ್ಲಾಘ (ಸುಖೇ ವ) “ಘತ್” (೩-೧-೧೨೪)।

ಇತ್ಯಂ ಸಂಸ್ಕೃತಶಬ್ದಾನಾಮರ್ಥಬೋಧಾಯ ನಿರ್ಮಿತ:।

ಲಕ್ಷ್ಮೀಹಯಾಸ್ಯಶೋಭಾಯ ಭೂಯಾತ್ ಶಬ್ದಾರ್ಥಕೌಸ್ತುಭ:

॥ ೧ ॥

ಜೀಯಾತ್ ಶ್ರೀಕಮಲಾಸಲೋ ಹೃಯಮುಖ: ಸುಜ್ಞಾನದ: ಸರ್ವದಾ

ಜೀಯಾತ್ ಶ್ರೀಸುರಭಾರತೀ ರಸವಿದಾಂ ಸಂಮೋದದಾ ಸರ್ವದಾ।

ಜೀಯಾತ್ ಶ್ರೀಸುರಭಾರತೀ ಸುಮಧುರಾ ಸಂಸ್ಥಾಪಿತಾಂ ವಾಕ್ಪ್ರದಾ

ಜೀಯಾತ್ ಛಾತ್ರಗಣಪ್ರಬೋಧಜನನ: ಶಬ್ದಾರ್ಥಕೋಶ: ಸದಾ

॥ ೨ ॥

ಶ್ರೀವಾಸಭೋಪಸುಖಿಯಾ ಭಾಷಾಸಂಪದೇವನೇಚ್ಛುನಾ।

ರಚಿತ: ಶಬ್ದಕೋಶೋಽಯಂ ಜೀಯಾತ್ ಶಬ್ದಾರ್ಥಕೌಸ್ತುಭ:

॥ ೩ ॥

ವಾತ್ಸವಶ್ರೀವಾಸಗೋಪಾಲಸುಖಿಯಾ ಮಾಧವಾಜ್ಞಯಾ।

ರಚಿತ: ಶಬ್ದಕೋಶೋಽಯಂ ಭಾತು ಭೂಮಿತಲೇ ಸದಾ

॥ ೪ ॥

ಇತಿ ಶುಭಮ್

ಶ್ರೀಲಕ್ಷ್ಮೀಹಯವರನಪರಿಪೂರ್ಣನಿರವಧಿಹೃದಿವ್ಯಾನುಗ್ರಹೇನ ಸಮಾಪ್ತೋಽಯ

ಶಬ್ದಾರ್ಥಕೌಸ್ತುಭನಾಮಾ ಶಬ್ದಕೋಶ:।



परिशिष्टम् २

ಪರಿಶಿಷ್ಟ ೨

APPENDIX II

(1) ನಿಘಂಟುಗಳು

(2) ನಿಘಂಟುಕಾರರು







ಶ್ರೀ:

ಶ್ರೀಮತೇ ಹೃದ್ರೀವಾಯ ನಮಃ

ಅಮೋಘಜ್ಞಾಪರಿಷ್ವಕ್ತುಸ್ತುಭಾವಲಮೃತೇ ।

ನಮೋ ವಾಚಾಮಘೀಶಾಯ ಸರ್ವಸಿದ್ಧಿಪ್ರದಾಯಿನೇ ॥

## ಪರಿಶಿಷ್ಟಂ ೨

### (1) ನಿಘಂಟುಗಳು

ಸ್ಥಾವರಜಂಗಮಾತ್ಮಕವಾದ ಈ ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಮನುಷ್ಯ ಜನ್ಮವು ಬಹಳ ದುರ್ಲಭ. ಜೀವನು ಜನ್ಮಜನ್ಮಾಂತರಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ ಪಾಪಕರ್ಮಗಳ ಫಲವನ್ನು ಕೈಮಿ ಕೀಟಾದಿ ಅನೇಕ ಜನ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಅನುಭವಿಸಿ ಆ ಪಾಪರಾಶಿಯ ಕ್ಷಯವಾದ ನಂತರ ಮನುಷ್ಯಜನ್ಮವನ್ನು ಪಡೆಯುವನು. ಆದರೆ ಈ ಮನುಷ್ಯ ಜನ್ಮವನ್ನು ಸಾರ್ಥಕಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು ಪ್ರಾಜ್ಞನ ಸದ್ವರ್ತನಾದಿಗಳಿಂದ ಮಾತ್ರ ಸಾಧ್ಯ. ಪರಮಕಾರುಣಿಕನಾದ ಪರಮಾತ್ಮನು ಮಾನವನಿಗೆ ಅಸಾಧಾರಣವಾದ ಜ್ಞಾನವನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿ ಸದ್ಗತಿಯ ಸಂಪಾದನೆಗಾಗಿ ಅನೇಕ ಸಚ್ಚಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿ ಕೈವೇತೋರಿರುವನು. ಈ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಸದುಪಯೋಗಪಡಿಸಿಕೊಂಡು ಪರಮಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ದೃಷ್ಟಿಯಿಟ್ಟು ಆತ್ಮೋದ್ಧಾರಕ್ಕಾಗಿ ಆತ್ಮಜ್ಞಾನ ಸಂಪಾದಿಸಿದರೆ ವಿವೇಕಶಾಲಿಯಾಗುವನು. ಆತ್ಮಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಶಾಸ್ತ್ರವು ಕಾರಣ. ಆತ್ಮಜ್ಞಾನವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವುದೇ ಶಾಸ್ತ್ರ. ಇದೇ ವಿದ್ಯೆ. ಈ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳು ವಾಚ್ಯವಾಗಿರುವುವು. ಈ ವಾಚ್ಯವಾದ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳು ಇಲ್ಲದಿದ್ದಲ್ಲಿ ಧರ್ಮ-ಅಧರ್ಮಗಳು, ಸತ್ಯ-ಅಸತ್ಯಗಳು, ಸಾಧು-ಅಸಾಧು ಮತ್ತು ಪರಸ್ಪರ ಅಭಿಪ್ರಾಯಗಳು ಇವುಗಳ ಪರಿಜ್ಞಾನವೇ ಇರುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ. ವಾಕ್ಯ ಮಾತ್ರ ಇವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ತಿಳಿಸುವುದರಿಂದ ವಾಕ್ಯ (ಶಬ್ದಬ್ರಹ್ಮ) ಬಹಳ ಅವಶ್ಯವಾಯಿತು. “ಯಥೈ ವಾತ್ಸನಾಮವಿಷಯತ್ ಧರ್ಮೋ ನಾಧರ್ಮೋ ವ್ಯಜ್ಞಾಪಯಿಷ್ಯತ್ । ನ ಸತ್ಯಂ ನಾನೃತಂ ನ ಸಾಧು ನಾಸಾಧು ನ ಹೃದಯಜ್ಞೋ ನಾಹೃದಯಜ್ಞಃ ವಾಗ್ವೇತತ್ಸರ್ವಂ ವಿಜ್ಞಾಪಯತಿ । ವಾಚಮುಪಾಸ್ವ” ಅಂದೋಷಂ ೭-೨-೧ ।

ಧರ್ಮಾಧರ್ಮಗಳನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ ವೇದಗಳೆಲ್ಲವೂ ವಾಚ್ಯವಾದುವು. ಈ ವೈದಿಕ ಶಬ್ದಗಳ ಅರ್ಥಪರಿಜ್ಞಾನಕ್ಕಾಗಿ ವೈದಿಕನಿಘಂಟುವಿಗೆ ಯಾಸ್ಯರು ನಿರುಕ್ತವೆಂಬ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ (ಭಾಷ್ಯ) ವನ್ನು ರಚಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಈ ನಿರುಕ್ತವು ಐದು ಭಾಗಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದೆ. ನಿರುಕ್ತವು ಆರು ವೇದಾಂಗಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಇದೆ. ವೈದಿಕಶಬ್ದಗಳ ಅರ್ಥನಿರ್ವಚನ

ಕ್ಕಾಗಿಯೇ ರಚಿತವಾದುದರಿಂದ ಇದರ ಅಧ್ಯಯನವು ಅವಶ್ಯವಾದುದು. [ವಿವರಕ್ಕೆ “ನಿರುಕ್ತ” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ವೇದವಾಚ್ಯವು ಕಾಲಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಜನರ ಅಭಿರುಚಿಗೆ ತಕ್ಕಂತೆ ಲೌಕಿಕ ಸಂಸ್ಕೃತಭಾಷೆಯಾಗಿ ಪರಿಣಾಮಹೊಂದಿತು. ಈ ಲೌಕಿಕ ಸಂಸ್ಕೃತವು ಪುರಾಣ ಇತಿಹಾಸ ಕಾವ್ಯ ನಾಟಕಾದಿ ರೂಪಗಳಲ್ಲಿದ್ದು ಸಂಸ್ಕೃತಸಾಹಿತ್ಯವಾಗಿ ಜನತೆಯ ಐಹಿಕ ಮತ್ತು ಆಮುಷ್ಮಿಕಜ್ಞಾನಸಂಪಾದನೆಗಾಗಿ ಮೂಲಾಧಾರವಾಯಿತು. ಸಂಸ್ಕೃತ ಸಾಹಿತ್ಯವು ಮನುಷ್ಯನ ಶುದ್ಧ ಜೀವನದ ಮಾರ್ಗವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವುದು. ಸತ್ಯಾವ್ಯಸೇವನೆಯಿಂದ ವಿವೇಕಶಾಲಿಯಾಗಿ ಜೀವನ ನಡೆಸಿ ಆತ್ಮೋದ್ಧಾರಕ್ಕಾಗಿ ಪ್ರಯತ್ನಿಸಿ ಸದ್ಗತಿಯನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಲು ಸಂಸ್ಕೃತ ಸಾಹಿತ್ಯದ ಅಧ್ಯಯನವು ಬಹಳ ಮುಖ್ಯವಾದುದು. ಸಂಸ್ಕೃತ ಸಾಹಿತ್ಯದ ಅಧ್ಯಯನಕ್ಕೆ ಶಬ್ದಜ್ಞಾನವು ಮೂಲಭೂತವಾದುದು. ಶುದ್ಧ ಶಬ್ದಪ್ರಯೋಗವು ಬಹಳ ಶ್ರೇಯಸ್ಕರ. “ಏಕಃ ಶಬ್ದಃ ಸಮ್ಯಕ್ ಜ್ಞಾತಃ ಸ್ವಲ್ಪ ಪ್ರಯುಕ್ತಃ ಸರ್ವಂ ಲೋಕೇ ಕಾಮಧ್ಯುಮವತಿ” । ವ್ಯಾಕರಣಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದೆ ಶುದ್ಧವಾದ ಶಬ್ದಜ್ಞಾನವು ದುರ್ಲಭ. ವ್ಯಾಕರಣಜ್ಞಾನಕ್ಕಾಗಿ ಪಾಣಿನಿ ಕಾತ್ಯಾಯನ ಪತಂಜಲಿ ಮುನಿಗಳು ಶಬ್ದಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ರಚಿಸಿ ಪರಮೋಪಕಾರ ಮಾಡಿರುತ್ತಾರೆ. ಆಜ್ಞಾನಿಗಳ ಹಿತ್ತೈಗಿಳಾದ ಪ್ರಾಚೀನ ಪಂಡಿತಪ್ರಕಾಂಡರನೇಕರು ಏಕಾರ್ಥವನ್ನು ಬೋಧಿಸುವ ಪರ್ಯಾಯ ಶಬ್ದಗಳನ್ನೂ ಅನೇಕಾರ್ಥಗಳನ್ನು ಕೊಡುವ ಶಬ್ದಗಳನ್ನೂ ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಅವನ್ನು ವರ್ಗೀಕರಿಸಿ ಉತ್ತಮೋತ್ತಮ ನಿಘಂಟುಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿ ಜಿಜ್ಞಾಸುಗಳಿಗೆ ಮಹೋಪಕಾರ ಮಾಡಿರುತ್ತಾರೆ.

ಲೋಕೋಪಕಾರಕವಾದ ಜ್ಞಾನಪ್ರದವಾದ ವೇದ ಮೊದಲಾದ ಸಕಲಶಾಸ್ತ್ರಗಳೂ ಸಂಸ್ಕೃತಮಯವಾದುದರಿಂದ ಸಂಸ್ಕೃತವಿದ್ಯಾಭಾಸವು ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ಅತ್ಯಮೂಲ್ಯವಾದುದು. ನಿತ್ಯಕರ್ತವ್ಯದಲ್ಲಿ ಬುದ್ಧಿಯನ್ನು ವಿಕಾಸಗೊಳಿಸಿ ವಿಶದಗೊಳಿಸಿ ಸ್ಥಿರಗೊಳಿಸುವುದು. “ಧರ್ಮಧರ್ಮಿ” ಇತ್ಯಾದಿ ।



अर्थनिर्णयवाक्याम् । नयापनयो दण्डनीत्याम् । एतासां  
बलावले हेतुभिरन्वीक्षमाणा आन्वीक्षिकी लोकस्योपकरोति ।  
व्यसने अभ्युदये च बुद्धिमवस्थापयति । प्रज्ञावाक्यक्रिया-  
वंशारहं च करोति" अर्थशा० । "प्रदीपः सर्वविद्याना-  
मुपायः सर्वकर्मणाम् । आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वी-  
क्षिकी मता" ॥ "धर्ममर्थं च कामं च प्रवर्तयति पाति च ।  
अधर्मानर्थविद्वेषानिदं शास्त्रं निहन्ति च" अर्थशा० ।

भाषा : ಜಗತ್ತಿನ ಎಲ್ಲಾ ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಸ್ಕೃತಕ್ಕೆ  
ಪರಮೋಚ್ಚಸ್ಥಾನವನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಎಲ್ಲಾ ದೇಶದ ವಿದ್ವಾಂ  
ಸರೂ ಗೌರವಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಎಲ್ಲಾ ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲೂ ಶಬ್ದಗಳು  
ಪರಿಪೂರ್ಣವಾಗಿರುವುದೆಂದು ಹೇಳಲಾಗುವುದಿಲ್ಲ. ಅನೇಕ  
ಭಾಷೆಗಳು ಸಂಸ್ಕೃತದನ್ನವೆಂದು ಹೇಳಿದರೂ ತಪ್ಪಾಗ  
ಲಾರದು. ಸಂಸ್ಕೃತ ಭಾಷಾವಿಶ್ರಣವಿಲ್ಲದೆ ಕೆಲವು ಭಾಷೆಗಳು  
ಸ್ವತಂತ್ರವಾಗಿರಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ. ಕೆಲವು ಭಾಷೆಗಳು ಪರಿಪೂರ್ಣ  
ವಾಗಿರುವುದೆಂದು ತಿಳಿದರೂ ಸಂಸ್ಕೃತ ಭಾಷೆಯ ಸಾಹಚರ್ಯ  
ದಿಂದ ಮಹತ್ವವನ್ನು ಪಡೆದಿರುವುವು. ಸಂಸ್ಕೃತ ಭಾಷೆಯಲ್ಲಿ  
ರುವ ಸೌಷ್ಠವ ಸೌಂದರ್ಯ ಮಾಧುರ್ಯ ಗಾಂಭೀರ್ಯ  
ಲಾಲಿತ್ಯ ಮುಂತಾದ ಗುಣಗಳೇ ಇತರ ಭಾಷಾಗ್ರಂಥಗಳು  
ಸಂಸ್ಕೃತ ಪದಗಳ ಸಾಹಚರ್ಯವನ್ನು ಪಡೆಯಲು ಕಾರಣ.  
ಕೆಲವು ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿ ಶಬ್ದಗಳ ಕೊರತೆಯೂ ಸಂಸ್ಕೃತ ಪದಗಳ  
ಉಪಯೋಗಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗಿರಬಹುದು.

ಹಿಂದೀ ಭಾಷೆ : "परमदुर्लभ मनुष्ययोनिप्राप्तिके  
मुख्य साधन दो प्रकार के हैं । प्रथम कठोरतम तपश्चरणादि  
तथा द्वितीय सुखमयजीवन व्यतीत करते हुए सत्काव्य  
सेवन । इनमें-से प्रथमसाधन नानाविध विघ्न-बाधाओं से

भरा हुआ अतिशय कष्टसाध्य है तथा सत्काव्य-सेवनरूप  
द्वितीय साधन पूर्वपिक्षया अधिक सरल एवं सुखसाध्य है" ।  
ಇಲ್ಲಿ ಸಂಸ್ಕೃತ ಪದಗಳಿಷ್ಟವೆಯೆಂದು ನೋಡಬಹುದು.

ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆ : ಕನ್ನಡಕುಲಮೂರ್ಧನ್ಯರಾಗಿದ್ದ ದಿ||  
ಶ್ರೀಮಾನ್ ವೆಂಕಣ್ಣಯ್ಯನವರು "ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಗ್ರಂಥರಚನೆ  
ಯಾಗುವ ಹೊತ್ತಿಗೆ ಸಂಸ್ಕೃತವು ಸಮಗ್ರ ಭರತಖಂಡದ  
ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ಭಾಷೆಯಾಗಿ ಏರ್ಪಟ್ಟು ವಿಶೇಷವಾದ ಪ್ರಾಬಲ್ಯ  
ವನ್ನು ಪಡೆದಿತ್ತು. ಸಂಸ್ಕೃತಸಾಹಿತ್ಯವೇ ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ  
ರಚನೆಗೆ ಪ್ರೇರಕವೂ ಪೋಷಕವೂ ಆಗಿತ್ತೆಂದು ಹೇಳಬಹುದು.  
ಕಾವ್ಯಕ್ಕೆ ತಕ್ಕ ವಿಷಯವಾವುದು, ಅದನ್ನು ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಯಾವ  
ರೀತಿ ನಿರೂಪಿಸಬೇಕು ಎಂಬುದನ್ನು ಕನ್ನಡ ಕವಿಗಳು ಸಂಸ್ಕೃತ  
ಕವಿಗಳಿಂದ ಕಲಿತರು. ಸಂಸ್ಕೃತ ಸಾಹಿತ್ಯವು ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯಕ್ಕೆ  
ಸಾಹಿತ್ಯ ಭಂಡಾರವಾದದ್ದು ಮಾತ್ರವಲ್ಲದೆ ಕನ್ನಡ ಕವಿಗಳಿಗೆ  
ಕನ್ನಡಿಯೂ ಕೈದೀವಿಗೆಯೂ ಆಯಿತು"—ಹೀಗೆ ಕರ್ಣಾಟಕ  
ಕಾದಂಬರೀಸಂಗ್ರಹವ ಪೀಠಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಬರೆದಿರು  
ತ್ತಾರೆ. ಈ ಕೆಳಗಿನ ಪದ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಂಸ್ಕೃತ ಪದಗಳು ಎಷ್ಟಿವೆ  
ಎಂದು ನೋಡಬಹುದು.

ಶ್ರೀಮನ್ನಾಗೇಂದ್ರಭೋಗಸ್ಪುರದರಾಣ-  
ಮಣದ್ಯೋತಿ ಸಂಧ್ಯಾನಿಬದ್ಧ ಪ್ರೇಮಂ  
ಪ್ರೋದ್ಯತ್ತರಂಗೋಚ್ಚರದಮರಸದೀ  
ಶೀಕರೋದಾರತಾರಾರಾಮಂ ಹೇಮಪ್ರಭಾ  
ಪ್ರಸ್ಫುರಿತಗಿರಿಶಚುಚೆಜ್ಜಟಾಜಾಲಜೂಟ,  
ವ್ಯೋಮಪ್ರೋದ್ಯಾಸಿಚಂದ್ರಂ ತ್ರಿಭುವನ  
ಜನಕಾನಂದಮಂ ಮಾಡುಗಿಂದಂ ॥



## परिशिष्टम् २

### (2) निष्ठांशकारರು

निष्ठाಂಶ ಮತ್ತು ನಿರುಕ್ತ : ಕ್ಲಿಷ್ಟವಾದ ಅನೇಕ ವೈದಿಕಶಬ್ದಗಳನ್ನೆಲ್ಲಾ ಪೃಥಕ್ಕಾಗಿ ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ರಚಿಸಿರುವ ಗ್ರಂಥವು ನಿಷ್ಠಾಂಶ. ಯಾಸ್ಯಮುನಿ ರಚಿತವಾದ ನಿರುಕ್ತವು ವೈದಿಕ ಪದಗಳ ಅರ್ಥನಿರ್ವಚನಕ್ಕಾಗಿಯೇ ರಚಿತವಾದುದರಿಂದ ನಿಷ್ಠಾಂಶಗ್ರಂಥಕ್ಕೆ ಭಾಷ್ಯರೂಪವಾಗಿರುವುದು. ತೈಗುಣ್ಯ ವಿಷಯಾ ವೇದಾಃ ಎಂದು ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ ವೇದವು ಕರ್ಮಕಾಂಡ ಮತ್ತು ಜ್ಞಾನಕಾಂಡಗಳೆಂದು ಎರಡು ವಿಧವಾಗಿರುವುದು. ಗುಣತ್ರಯಾತ್ಮಕರಾದ ಜನರು ತಮಗೆ ಬೇಕಾದುದನ್ನು ಈ ವೇದದಿಂದ ಸಾಧಿಸಿಕೊಳ್ಳಬಹುದು. ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ಆಚರಿಸಿ ಪರಿಮಿತಫಲಗಳನ್ನು ಕರ್ಮಕಾಂಡದಿಂದ ಪಡೆಯಬಹುದು. ಪರಿಮಿತ ಫಲಗಳಲ್ಲಿ ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಲ್ಲದವರು ಸ್ಥಿರವಾದ ಫಲವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿ ಅದನ್ನು ಜ್ಞಾನಕಾಂಡದಿಂದ ಪಡೆಯಬಹುದು. ಹೀಗೆ ಸಕಲ ಪುರುಷಾರ್ಥ ಸಾಧಕವಾದ ವೇದಗಳ ಪರಿಜ್ಞಾನವು ಸಕಲರಿಗೂ ಅವಶ್ಯವಾದುದು.

ಋಷಿಗಳು ತಪಃಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರಿಸಿಕೊಂಡ ದಿವ್ಯ ಜ್ಞಾನವನ್ನು ಅಜ್ಞಾನಿಗಳಾದ ಜನರಿಗೆ ಉಪದೇಶಿಸಿದರು. ಋಷಿಗಳಿಂದ ಉಪದಿಷ್ಟವಾದ ಈ ದಿವ್ಯಜ್ಞಾನವೇ ಅನಂತ ವೇದಗಳಾದುವು. ಈ ದಿವ್ಯಜ್ಞಾನದಿಂದ ಆತ್ಮಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವೂ ಲಭಿಸುತ್ತದೆ. ಕಾಲಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ವೇದಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಪಾದ್ಯವಾದ ವಿಷಯಗಳು ಎಲ್ಲರಿಗೂ ತಿಳಿಯಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗಲಿಲ್ಲ. ಅದುದರಿಂದ ವೇದಗಳಿಂದ ಲಭ್ಯವಾದ ಆ ದಿವ್ಯಜ್ಞಾನವನ್ನು ತಿಳಿಯಲು ಆಸಕ್ತರಾದವರಿಗಾಗಿ ಅನೇಕ ಮಾರ್ಗಗಳನ್ನು ಕಂಡುಹಿಡಿದರು. ಈ ಮಾರ್ಗ (ಉಪಾಯ) ಗಳೇ ವೇದಾಂಗಗಳು. ಇವುಗಳ ಸಾಹಾಯ್ಯದಿಂದ ವೇದಗಳಲ್ಲಿ ಅಡಗಿರುವ ಜ್ಞಾನವನ್ನು ಆರಿತುಕೊಳ್ಳಲು ಅವಕಾಶ ದೊರಕಿತು. ಪರಮಜ್ಞಾನಿಗಳಾದ ಮಹರ್ಷಿಗಳೂ ಕ್ಲಿಷ್ಟವಾದ ಅನೇಕ ವೈದಿಕ ಪದಗಳನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ರಚಿಸಿದ ನಿಷ್ಠಾಂಶವಿನ ಅರ್ಥ ಪರಿಜ್ಞಾನಕ್ಕಾಗಿ ಯಾಸ್ಯಮುನಿಯಿಂದ ನಿರುಕ್ತವು ರಚಿತವಾಯಿತು. ಇದು ಆರು ವೇದಾಂಗಗಳಲ್ಲೊಂದು.

ವೇದಾಂಗಗಳ ಪರಿಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದೆ ಸಕಲಪುರುಷಾರ್ಥ ಸಾಧಕವಾದ ವೇದಗಳನ್ನು ಅರ್ಥಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದೂ ಅಸಾಧ್ಯ. ಇದಕ್ಕಾಗಿಯೇ ಈ ಸಕಲಪುರುಷಾರ್ಥಸಾಧಕವಾದ ವೇದಗಳನ್ನು ಸಾಂಗವಾಗಿ ಅಧ್ಯಯನವೊಡಬೇಕಾಯಿತು,

(1) शिक्षा (2) व्याकरणम् (3) छन्दः (4) निरुक्तम् (5) ज्योतिषम् ಮತ್ತು (6) कल्पः ಇವು ಆರು ವೇದಾಂಗಗಳು. ಇವೆಲ್ಲವೂ ವೇದಗಳ ಅರ್ಥಪರಿಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಸಹಾಯಕವಾಗಿರುವುವು. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ವೇದಗಳ ಅರ್ಥನಿರ್ವಚನಕ್ಕಾಗಿಯೇ ರಚಿತವಾದ ನಿರುಕ್ತದ ಅಧ್ಯಯನವು ಬಹಳ ಮುಖ್ಯವಾದುದು. ಈ ನಿರುಕ್ತವು ವೈದಿಕಶಬ್ದಗಳ ನಿಷ್ಠಾಂಶವಿನ ಭಾಷ್ಯ. ಈ ನಿರುಕ್ತವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಯಾಸ್ಯಮುನಿಯು ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರಪ್ರವರ್ತಕರಾದ ಪಾಣಿನಿಮಹರ್ಷಿಗಿಂತಲೂ ಪ್ರಾಚೀನರು. ಇವರ ದೇಶಕಾಲಾದಿಗಳನ್ನು ತಿಳಿಯಲು ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ ಯಾವ ಆಧಾರವೂ ಕಂಡುಬರುವುದಿಲ್ಲ. [ನಿರುಕ್ತದ ವಿವರಕ್ಕೆ "निरुक्त" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ವೈದಿಕ ನಿಷ್ಠಾಂಶಗಳು : ನಿಷ್ಠಾಂಶವನ್ನು ಯಾಸ್ಯರಿಗಿಂತಲೂ ಪ್ರಾಚೀನರು ರಚಿಸಿದ್ದರೆಂದು ಈ ಕೆಳಗಿನ ಪ್ರಮಾಣಗಳಿಂದ ತಿಳಿಯಬಹುದು. "तमिसं समाख्यां निषादव इत्याचक्षते" ಎಂದು ಯಾಸ್ಯರು ಹೇಳಿರುವರು. ಈ ಪದಗಳ ಸಮಾವೂಯವೇ ನಿಷ್ಠಾಂಶ ಎಂದು ಅಭಿಯುಕ್ತರ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. "ते निगन्तव एव सन्तः निगमनां निषादव उच्यन्ते इति औपमन्यवः" ಎಂದು ಔಪಮನ್ಯವರೇಬ ಆಚಾರ್ಯರ ಮತ. ಇದರಿಂದ ಯಾಸ್ಯರಿಗಿಂತಲೂ ಪ್ರಾಚೀನವಾದುದು ನಿಷ್ಠಾಂಶ ಎಂದು ಹೇಳಬಹುದು. "नमः वास्कराय नमो वास्काय" ಎಂಬ ನಿರುಕ್ತದ ನಿಗಮನದ ಆಧಾರದಿಂದ ನಿಷ್ಠಾಂಶಕಾರರು ಯಾಸ್ಯರಿಗಿಂತಲೂ ಹಿಂದೆ ಇದ್ದರೆಂದೂ ಈ ಯಾಸ್ಯರಿಗಿಂತ ಅವರು ಭಿನ್ನರು ಎಂದೂ ತಿಳಿಯಬಹುದು. ನಿಷ್ಠಾಂಶಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಥಮತಃ ರಚಿತವಾದುದು ವೈದಿಕ ನಿಷ್ಠಾಂಶ. ಯಾಸ್ಯರು ರಚಿಸಿದ ನಿರುಕ್ತವು ಈ ವೈದಿಕ ನಿಷ್ಠಾಂಶವಿನ ಭಾಷ್ಯ. ಯಾಸ್ಯರು ಈ ನಿರುಕ್ತವನ್ನು ರಚಿಸುವುದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಪೂರ್ವದಲ್ಲೇ ನಿಷ್ಠಾಂಶ ರಚಿತವಾಗಿತ್ತೆಂದು ನಾವು ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ. ["निषाद" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.]

ಇದನ್ನು ವಿದ್ಯಾಇಲಾಖೆಯಲ್ಲಿ ಉಪನಿರ್ದೇಶಕರಾಗಿದ್ದು ನಿವೃತ್ತರಾಗಿರುವ ವೇದಾಂತವಿದ್ವಾನ್ ಡಾ|| ಎನ್. ಎಸ್. ಅನಂತರಂಗಾಚಾರ್ಯ, B.A. (Hons.), B.Ed., Ph.D. ಇವರ ನಿರುಕ್ತಗ್ರಂಥದ ಆಧಾರದ ಮೇಲೆ ಬರೆಯಲಾಗಿದೆ.



ಯಾಸ್ಯಮುನಿಯಂತೆ ವೈದಿಕ ನಿಘಂಟುವಿಗೆ ದಕ್ಷಿಣಾಪಥದಲ್ಲಿರುವ ರಂಗೇಶಪುರಿಯ ವಾಸ್ತವ್ಯನಾದ ದೇವರಾಜಯಜ್ಞನೆಂಬ ಪಂಡಿತನು ವ್ಯಾಖ್ಯಾನವನ್ನು ಬರೆದಿರುವನು ಎಂದು "ಯಜ್ಞಾ ರಕ್ಷೇಶಪುರೀಪರ್ಯಂತಗ್ರಾಮವಾಸ್ತವ್ಯಃ | ವಿರಚಯತಿ ದೇವರಾಜೋ ನೆಘಂಟುಕಾಂಡನಿರ್ವಚನಮ್" || "ನಿಗಮಶ್ಚ ದಕ್ಷಿಣಾಪಥವಾಸಿಭಿರಣೀತೇಷು ವೇದೇಷು ಪರಿವ್ಯಯಮಾನಸ್ತತ್ತಜ್ಞಾಘಾಞಿ ನಿರೀಕ್ಷ್ಯ ತತ್ರ ತತ್ರ ಪ್ರದರ್ಶಯಂತಿ" || ಈ ವಾಕ್ಯಗಳಿಂದ ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ.

**ಲೌಕಿಕ ಶಬ್ದಗಳ ನಿಘಂಟುಗಳು :** ವೈದಿಕಶಬ್ದಗಳ ನಿಘಂಟುವಿನಂತೆಯೇ ಲೌಕಿಕ ಶಬ್ದಗಳಿಗೂ ಅನೇಕ ವಿದ್ವಾಂಸರು ನಿಘಂಟುಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿ ಸಂಸ್ಕೃತಭಾಷಾಭಾಷ್ಯಗಳಿಗೆ ಉಪಕಾರ ಮಾಡಿರುತ್ತಾರೆ. ಶಬ್ದಗಳನ್ನು ವರ್ಗೀಕರಿಸಿ ಆಯಾ ವರ್ಗಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳನ್ನು ಲಿಂಗನಿರ್ದೇಶದೊಡನೆ ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ನಿಘಂಟುಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುವುದು ಒಂದು ವಿಧ. ನಾಮಲಿಂಗಾನುಗಾಸನಮ್ (ಅಮರಕವಿ ವಿರಚಿತ) ಹೇಮಚಂದ್ರವಿರಚಿತ ಅಭಿಧಾನಚಿಂತಾಮಣಿ: ಪುರುಷೋತ್ತಮದೇವವಿರಚಿತ ಹಾರಾವಲಿ: ಮತ್ತು ತ್ರಿಕಾಂಡಶೇಷ: ಕೇಶವಪಂಡಿತ ವಿರಚಿತ ಕಲ್ಪದ್ರುಕೋಶ: ಇತ್ಯಾದಿ ಈ ಶ್ರೇಣಿಗೆ ಸೇರಿದುವು. ವರ್ಗಗಳ ಕ್ರಮವಿಲ್ಲದೆ ಕ ಕಾರಾದಿ ವರ್ಣಾಂತ ಅನೇಕಾರ್ಥ ಪದಗಳನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಕಂಕಮ್ ಕದ್ವಿಕಮ್ ಕತ್ರಿಕಮ್

ಈ ರೀತಿ ಹ ಕಾರಾಂತಪರ್ಯಂತ ಲಿಂಗನಿರ್ದೇಶದೊಡನೆ ನಿಘಂಟುಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುವುದು ಇನ್ನೊಂದು ವಿಧ. ಮೇದಿನೀ-ಕೋಶ: (ನಾನಾರ್ಥಶಬ್ದಕೋಶ:) ವಿಶ್ವಪ್ರಕಾಶ: (ಮಹೇಶ್ವರ ವೈದ್ಯ ವಿರಚಿತ) ಇರುಗಪದಂಡಾಧಿನಾಥ ವಿರಚಿತ ನಾನಾರ್ಥರತ್ನಮಾಲಾ ಹೇಮಚಂದ್ರವಿರಚಿತ ಅನೇಕಾರ್ಥಸಂಕ್ಷಿಪ್ತ: ಶಾಶ್ವತವಿರಚಿತ ಅನೇಕಾರ್ಥಸಮುಚ್ಚಯ: ಇತ್ಯಾದಿ. ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳ ವರ್ಗೀಕರಣ ಮತ್ತು ಅನೇಕಾರ್ಥಶಬ್ದಗಳ ಸಂಗ್ರಹ ಈ ರೀತಿ ಉಚ್ಚ ಯಾತ್ಯಕವಾದ ನಿಘಂಟುಗಳನ್ನು ಕೆಲವು ವಿದ್ವಾಂಸರು ರಚಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಯಾದವ ಪ್ರಕಾಶಾಚಾರ್ಯರ ಕೃಷ್ಣಾಂತಿ ಕೋಶ ಮುಂತಾದುವು.

ಹೀಗೆಯೇ ಅನೇಕ ವಿದ್ವಾಂಸರು ನಾನಾರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಲೌಕಿಕ ಸಂಸ್ಕೃತ ಶಬ್ದಗಳ ನಿಘಂಟುಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ["ನಿಘಂಟು ಮತ್ತು ನಿಘಂಟುಕಾರರು" ನೋಡಿ.]

ಈ ಲೌಕಿಕ ಸಂಸ್ಕೃತ ಶಬ್ದಗಳಿಗೆ ರಚಿತವಾದ ನಿಘಂಟುಗಳು ಮತ್ತು ನಿಘಂಟುಕಾರರಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯವಾದ ಕೆಲವು ನಿಘಂಟುಗಳ ವಿವರಗಳನ್ನು ಕೊಡಲಾಗಿದೆ.

ನಾಮಲಿಂಗಾನುಗಾಸನಮ್ ತ್ರಿಕಾಂಡಶೇಷ: ಹಾರಾವಲಿ ಮತ್ತು ಅನೇಕಾರ್ಥಸಮುಚ್ಚಯ: ಇವುಗಳ ವಿವರಕ್ಕೆ "ನಿಘಂಟು" ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

### ಲೌಕಿಕ ಸಂಸ್ಕೃತ ನಿಘಂಟುಗಳು ಮತ್ತು ನಿಘಂಟುಕಾರರು

| ನಿಘಂಟುಗಳು              | ನಿಘಂಟುಕಾರರು        |
|------------------------|--------------------|
| (1) ಅನೇಕಾರ್ಥಸಂಕ್ಷಿಪ್ತ: | .. ಹೇಮಚಂದ್ರ:       |
| (2) ಅಭಿಧಾನಚಿಂತಾಮಣಿ:    | .. "               |
| (3) ಅಭಿಧಾನರತ್ನಮಾಲಾ     | .. ಹಲಾಯುಧ:         |
| (4) ಅನೇಕಾರ್ಥಧ್ವನಿಮಂಜರಿ | .. ಗದಸಿಂಹ:         |
| (5) ಅನೇಕಾರ್ಥತೀಲಕಮ್     | .. ಪ್ರದೀಪ:         |
| (6) ನಾನಾರ್ಥರತ್ನಮಾಲಾ    | .. ಇರುಗಪದಂಡಾಧಿನಾಥ: |
| (7) ನಾನಾರ್ಥಸಂಕ್ಷಿಪ್ತ:  | .. ಅಜಯಪಾಲ:         |
| (8) ಅನೇಕಾರ್ಥಸಮುಚ್ಚಯ:   | .. ಶಾಶ್ವತ:         |
| (9) ಏಕಾಕ್ಷರಕೋಶ:        | .. ಪುರುಷೋತ್ತಮದೇವ:  |
| (10) ದ್ವಿರೂಪಕೋಶ:       | .. "               |
| (11) ಹಾರಾವಲಿ           | .. "               |
| (12) ತ್ರಿಕಾಂಡಶೇಷ:      | .. "               |
| (13) ಕಲ್ಪದ್ರುಕೋಶ:      | .. ಕೇಶವ:           |



## संस्कृत

## संस्कृत

|      |                    |    |                   |
|------|--------------------|----|-------------------|
| (14) | अव्ययकोशः          | .. | महादेवः           |
| (15) | नामलिङ्गानुशासनम्  | .. | अमरसिंहः          |
| (16) | शब्दचन्द्रिका      | .. | चक्रपाणिः         |
| (17) | नाममाला            | .. | धनञ्जयः           |
| (18) | शब्दरत्नावली       | .. | मधुरेशपण्डितः     |
| (19) | नानार्थशब्दकोशः    | .. | मेदिनीकरः         |
| (20) | विश्वप्रकाशः       | .. | महेश्वरवैद्यः     |
| (21) | शब्दमाला           | .. | रामेश्वरशर्मा     |
| (22) | राजनिघण्टुः        | .. | नरसिंहकालीपण्डितः |
|      |                    |    | (नरहरिः)          |
| (23) | पर्यायनानार्थकोशः  | .. | जटाधराचार्यः      |
| (24) | भावप्रकाशः         | .. | भावमिश्रः         |
| (25) | लिङ्गानुशासनम्     | .. | हेमचन्द्रः        |
| (26) | नाममालानिघण्टुः    | .. | वरदराजः           |
| (27) | वैजयन्ती           | .. | यादवप्रकाशाचार्यः |
| (28) | नाममाला            | .. | भोजराजः           |
| (29) | शब्दार्णवः         | .. | दुर्गादासः        |
| (30) | शब्दसंग्रहनिघण्टुः | .. | अगस्त्यः          |
| (31) | लघुनिघण्टुसारः     | .. | केशवः             |
| (32) | शब्दार्णवः         | .. | काशीनाथः          |
| (33) | नामावली            | .. | गोवर्धनः          |
| (34) | शब्दसागरः          | .. | गोविन्दशर्मा      |
| (35) | अभिधानतन्त्रम्     | .. | जटाधराचार्यः      |
| (36) | मदनपालनिघण्टुः     | .. | मदनपालः           |
| (37) | लोकप्रकाशः         | .. | क्षेमेन्द्रः      |
| (38) | नानार्थसमुच्चयः    | .. | धरणीशः            |
| (39) | वर्णाभिधानम्       | .. | नन्दनभट्टाचार्यः  |
| (40) | रत्नकोशः           | .. | नरसिंहमुनिः       |
| (41) | भूरिप्रयोगः        | .. | पद्मनाभः          |
| (42) | शब्दचन्द्रिका      | .. | बाणभट्टः          |
| (43) | त्रिरूपकोशः        | .. | बिल्लणः           |
| (44) | एकाक्षरनिघण्टुः    | .. | साधवः             |
| (45) | उणादिकोशः          | .. | रामशर्मा          |



ಸಂಪಾದಕ

ಸಂಪಾದಕ

- (46) ಏಂದ್ರನಿಘಂಟು:  
 (47) ಕವಿರೋಪಿಕಾನಿಘಂಟು:  
 (48) ಶಬ್ದಾರ್ಥಚಿಂತಾಮಣಿ:  
 (49) ಶಬ್ದಾರ್ಥಕಲ್ಪತರು:  
 (50) ಕೋಶಕಲ್ಪತರು:  
 (51) ಶಿವಕೋಶ:  
 (52) ಏಕಾಕ್ಷರನಿಘಂಟು:  
 (53) ಏಕಾರ್ಥನಾಮಮಾಲಾ  
 (54) ದ್ವಿಪಕ್ಷರನಾಮಮಾಲಾ  
 (55) ದ್ವಿರೂಪಕೋಶ:  
 (56) ಅನೇಕಾರ್ಥತೀಲಕಮ್  
 (57) ಶಬ್ದರತ್ನಾಕರ:  
 (58) ಮಹಾಕೋಶ:  
 (59) ಪದಚಂದ್ರಿಕಾ  
 (60) ನಾಮಸಂಘ್ರಹಮಾಲಾ  
 (61) ಶಬ್ದಭೇದಪ್ರಕಾಶ:  
 (62) ಭುವನಪ್ರದೀಪಿಕಾ  
 (63) ಕವಿದರ್ಪಣನಿಘಂಟು:  
 (64) ನಿಘಂಟು:  
 (65) ಧನ್ವಂತರಿನಿಘಂಟು:  
 (ಒಂಟು, ಎಂಟು, ಹತ್ತು)  
 (66) ಗಣಿತರತ್ನಮಾಲಾ  
 (67) ಪರ್ಯಾಯರತ್ನಮಾಲಾ  
 (68) ರುಗ್ವಿನಿಶ್ಚಯ:  
 (69) ಪರ್ಯಾಯಮುಕ್ತಾವಳಿ  
 (70) ನಿಘಂಟುಶೇಷ:  
 (71) ನ್ಯಾಯಕೋಶ:  
 (72) ವಾಚಸ್ಪತಿಯಮ್  
 (73) ಶಬ್ದಕಲ್ಪದ್ರುಮ:

- .. ವರಹಚಿ:  
 .. ತ್ರಿವಿಕ್ರಮಾದಿತ್ಯ:  
 .. ವಿಠಲಾಚಾರ್ಯ:  
 .. ವೇಣುಕುಟ:  
 .. ವಿಶ್ವನಾಥ:  
 .. ಶಿವದತ್ತ:  
 .. ಸದಾಚಾರ್ಯ:  
 .. ಸೋಮರಿ:  
 .. "  
 .. ಶ್ರೀಹರ್ಷ:  
 .. ಸೋಮಭವ:  
 .. ಸುಂದರಗಣಿ:  
 .. ಮಹಾಕವಿ:  
 .. ಮಯೂರಭಟ್ಟ:  
 .. ಅಪ್ಪಯದೀಕ್ಷಿತ:  
 .. ಮಹೇಶ್ವರ:  
 .. ಸಾರ್ವಭೌಮಮಿಶ್ರ:  
 .. ರಾಮ:  
 .. ಜೈಮಿನಿ:  
 .. ಧನ್ವಂತರಿ:  
 .. ಹರದತ್ತ:  
 .. ಮಾಧವಕರ:  
 .. "  
 .. —  
 .. ಹೇಮಚಂದ್ರ:  
 .. ಭೋಮಾಚಾರ್ಯ:  
 .. ತಾರಾನಾಥತರ್ಕವಾಚಸ್ಪತಿ:  
 .. ರಾಧಾಕಾಂತದೇವ ಬಹಾದುರ:

ಇವುಗಳೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಕೂಡಿಸಿ ಒಂದೇ ಕೆಲಸವನ್ನೇ ಗುರುತಿಸಿದ  
 ಇವುಗಳೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಕೂಡಿಸಿ ಒಂದೇ ಕೆಲಸವನ್ನೇ ಗುರುತಿಸಿದ  
 ಇವುಗಳೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಕೂಡಿಸಿ ಒಂದೇ ಕೆಲಸವನ್ನೇ ಗುರುತಿಸಿದ

ಪದರತ್ನಾಕರ ಕೋಶಸಾರ: ಸಂಸಾರವರ್ತ: ಸರಸಶಬ್ದಸರಣಿ:  
 ಶರಕೋಶ: ಶಬ್ದತರಂಗಿಣಿ ಶಬ್ದಸಾರನಿಘಂಟು: ಸಾರಸತಾಪಿ-  
 ಬಾಲಮ್ ವಿಜಯನಿಘಂಟು: ೧೯೩೨ ೧೯೩೩.



ಕೆಲವು ನಿಘಂಟುಗಳು ಮತ್ತು ನಿಘಂಟುಕಾರರ  
ನಿವರ:

ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನಮ್-ಅಮರಸಿಂಹ:-[ಇದು ನಿಘಂಟು  
ಪದದಲ್ಲಿ ವಿವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದ್ದರೂ ಇನ್ನೂ ಹೆಚ್ಚು ವಿಷಯಗಳನ್ನು  
ತಿಳಿಸಲು ಇಲ್ಲಿ ಪುನಃ ಪ್ರಸಕ್ತವಾಗಿದೆ.]

ಅಮರಸಿಂಹನು ರಚಿಸಿರುವ ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನವು  
ಮೂರು ಕಾಂಡಗಳಾಗಿ ವಿಂಗಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. ಪ್ರತಿಯೊಂದು  
ಕಾಂಡದಲ್ಲಿಯೂ ಶಬ್ದಗಳು ವರ್ಗೀಕೃತವಾಗಿ ಅನೇಕ ವರ್ಗ  
ಗಳಾಗಿರುವುವು. ಇದರಲ್ಲಿ ಪರ್ಯಾಯ ಪದಗಳೂ ನಾನಾರ್ಥ  
ಶಬ್ದಗಳೂ ಸೇರಿವೆ.

ಪ್ರಥಮ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ : ಸ್ವರ್ಗವರ್ಗ ವೈಮವರ್ಗ  
ದಿಗ್ವರ್ಗ ಕಾಲವರ್ಗ ಧೀವರ್ಗ ವಾಗ್ವರ್ಗ ಶಬ್ದಾದಿವರ್ಗ  
ನಾಟ್ಯವರ್ಗ ಪಾತಾಳವರ್ಗ ಭೋಗಿವರ್ಗ ನರಕವರ್ಗ ಮತ್ತು  
ವಾರಿವರ್ಗಗಳೂ

ದ್ವಿತೀಯ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ : ಭೂವರ್ಗ ಪುರವರ್ಗ ಶೈಲ  
ವರ್ಗ ವನೋಪಧಿವರ್ಗ ಸಿಂಹಾದಿವರ್ಗ ಮನುಷ್ಯವರ್ಗ ಬ್ರಹ್ಮ  
ವರ್ಗ ಕ್ಷತ್ರಿಯವರ್ಗ ವೈಶ್ಯವರ್ಗ ಮತ್ತು ಶೂದ್ರವರ್ಗಗಳೂ

ತೃತೀಯ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ : ವಿಶೇಷನಿಷ್ಠವರ್ಗ ಸಂಕೀರ್ಣ  
ವರ್ಗ ನಾನಾರ್ಥವರ್ಗ ನಾನಾರ್ಥಾವ್ಯಯವರ್ಗ ಅವ್ಯಯವರ್ಗ  
ಲಿಂಗಾದಿಸಂಗ್ರಹವರ್ಗಗಳೂ ಇರುವುವು.

ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನಕ್ಕೆ ಅನೇಕ ಪಂಡಿತರು  
ಮಾಡಿರುವ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಮತ್ತು ಟೀಕೆಗಳು :

- (1) ಅಮರಪಂಜಿಕಾ
- (2) ರತ್ನಾಚಾರ್ಯಕೃತ: ಅಮರಪದಮುಕ್ತುರ:
- (3) ಅಮರವಿವೇಕ:
- (4) ಬೃಹತ್ಕೃತಿ:
- (5) ಅಚ್ಯುತೋಪಾಧ್ಯಾಯಕೃತ: ವ್ಯಾಖ್ಯಾಪ್ರದೀಪ:
- (6) ಅಪ್ಪಯದೀಕ್ಷಿತಕೃತಾ ಟೀಕಾ
- (7) ಆಶಾಧರಕೃತ: ಕ್ರಿಯಾಕಲಾಪ:
- (8) ಕಾಶೀನಾಥಸ್ಯ ಕಾಶಿಕಾ
- (9) ಕೀರಸ್ವಾಮಿಕೃತಮ್ ಅಮರಕೋಶೋದ್ಘಾಟನಮ್
- (10) ಗೋಸ್ವಾಮಿಕೃತಾ ಬಾಲಬೋಧಿನಿ
- (11) ಕೌಮುದಿ
- (12) ನಾರಾಯಣಕೃತಾ ಅಮರಕೋಶಪಂಜಿಕಾ
- (13) ನಾರಾಯಣವಿಜಯವಿನೋದಸ್ಯ ಶಬ್ದಾರ್ಥಸಂದೀಪಿಕಾ
- (14) ನೇಲಕಂಠಸ್ಯ ಸುಬೋಧಿನಿ
- (15) ಅಮರಕೋಶಮಾಲಾ ಪದ್ಮನಾಭಕೃತಾ

- (16) ಬೃಹಸ್ಪತಿಕೃತಾ ಅಮರಕೋಶಮಾಲಾಪಂಜಿಕಾ
- (17) ಭರತಸೇನಸ್ಯ ಮುಖಬೋಧಿನಿ
- (18) ಮಾನುಜೀವೀಕ್ಷಿತರಾಮಾಶ್ರಮಸ್ಯ ವ್ಯಾಖ್ಯಾಸುಬಾ
- (19) ಗುರುಬಾಲಪ್ರಬೋಧಿಕಾ
- (20) ಗುರುಬಾಲಪ್ರಬೋಧಿನಿ
- (21) ಮಧುರೇಶವಿಜಯಾಚಾರ್ಯಕೃತಾ ಸಾರಸುಂದರಿ
- (22) ಮಲ್ಲಿನಾಥಸ್ಯ ಅಮರಪಾರಿಜಾತ:
- (23) ಮಹಾದೇವತೀಯಸ್ಯ ವಿವರ್ಮನೋಹರಾ
- (24) ಅಮರಕೋಶವಿವೇಕೋ ಮಹೇಶ್ವರಕೃತ:
- (25) ತ್ರಿಕಾಂಡಚಿಂತಾಮಣಿ: ರಘುನಾಥಚಕ್ರವರ್ತಿನ:
- (26) ರಾಮನಾಥಕೃತ: ತ್ರಿಕಾಂಡವಿವೇಕ:
- (27) ರಾಮಪ್ರಸಾದಕೃತಾ ವೈಷಮ್ಯಕೌಮುದಿ
- (28) ರಾಮಶರ್ಮಕೃತಾ ಟೀಕಾ
- (29) ರಾಮಸ್ವಾಮಿಕೃತಾ ಟೀಕಾ
- (30) ರಾಮೇಶ್ವರಸ್ಯ ಪ್ರದೀಪಮಂಜರಿ
- (31) ರಾಯಮುಕ್ತಬೃಹಸ್ಪತೇ: ಪದಚಂದ್ರಿಕಾ
- (32) ಲಿಂಗಭಟ್ಟಕೃತಾ ಟೀಕಾ
- (33) ಲಿಂಗಮಸೂರಿಕೃತಾ ಟೀಕಾ
- (34) ಅಮರಕೋಶಪದವಿವೃತಿ:
- (35) ಲೋಕನಾಥಕೃತಾ ಪದಮಂಜರಿ
- (36) ಶ್ರೀಕರಾಚಾರ್ಯಸ್ಯ ವ್ಯಾಖ್ಯಾಮೃತಮ್
- (37) ಶ್ರೀಧರಕೃತಾ ಟೀಕಾ
- (38) ಸರ್ವಾನಂದಸ್ಯ ಟೀಕಾಸರ್ವಸ್ವಮ್

ಈ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಮತ್ತು ಟೀಕೆಗಳಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ಮಂಡವಾತ್ಮಕ  
ವಾಗಿಯೂ ಕೆಲವು ಖಂಡವಾತ್ಮಕವಾಗಿಯೂ ಇರುವುವು.

ವರರುಚಿ ಭಾಗುರಿ ಮೊದಲಾದವರ ಕೋಶಗಳು ಬಹಳ  
ದೊಡ್ಡದಾಗಿಯೂ ಬಹಳ ಗಹನವಾಗಿಯೂ ಇದ್ದುದರಿಂದ  
ಅವುಗಳನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ವರ್ಗೀಕರಿಸಿ ಈ ನಾಮಲಿಂಗಾನು  
ಶಾಸನವು ರಚಿತವಾಗಿದೆ ಎಂದು ಅಮರಸಿಂಹನು ಹೇಳಿರು  
ತ್ತಾನೆ. "ಸಮಾಹೃತ್ಯಾನೃತನ್ವಾಣಿ ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತೆ: ಪ್ರತಿಸಂಸ್ಕೃತೆ: |  
ಸಂಪೂರ್ಣಮುಚ್ಯತೇ ವರ್ಗನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನಮ್" ಅಮಂ |

ಧನ್ವಂತರಿ ಮೊದಲಾದವರು ರಚಿಸಿರುವ ವೈದ್ಯಕೀಯ  
ಮತ್ತು ಸಸ್ಯವಿಜ್ಞಾನ ನಿಘಂಟುಗಳ ಸಾಹಾಯ್ಯದಿಂದ ನಾಮ  
ಲಿಂಗಾನುಶಾಸನವು ರಚಿತವಾಗಿದೆ. ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನ  
ದಲ್ಲಿ ಪುಂಸ್ತ್ರೀನಪುಂಸಕಲಿಂಗಗಳನ್ನು ಪ್ರಾಯಶಃ ವಿಸರ್ಗ  
ದೀರ್ಘ ಮತ್ತು ಅನುಸ್ವಾರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಶಬ್ದಗಳ  
ರೂಪಭೇದಗಳಿಂದಲೂ ಕೆಲವು ಕಡೆ ಲಿಂಗವ್ಯವಸ್ಥೆಯುಳ್ಳ  
ಮತ್ತೊಂದು ಪದದ ಸಾಹಚರ್ಯದಿಂದಲೂ ಮತ್ತು ಇಂತಹ  
ಲಿಂಗವೆಂದು ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಹೇಳುವುದರಿಂದಲೂ ತಿಳಿಯಬಹುದು



ದಾಗಿದೆ. "ಪ್ರಾಯಶೋ ಕ್ಷಮೇದೇನ ಸಾಹಚರ್ಯಾನ್ವ ಕುತ್ರಚಿತ್ |  
ಸ್ತನಿಂಪುಂಸಕಂ ಜ್ಞೇಯಂ ತದ್ವಿಶೇಷವಿಧೇ: ಕ್ವಚಿತ್" ಅಮಂ |

ಈ ಕೋಶದಲ್ಲಿ ಲಿಂಗನಿರ್ಣಯಕ್ಕಾಗಿ ದ್ವಂದ್ವಸಮಾಸ  
ವನ್ನಾಗಲಿ ಏಕಶೇಷವನ್ನಾಗಲಿ ಪ್ರಕೃತವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದೆ.  
ಪದಗಳ ಹೊರತು ಅಪ್ರಕೃತವಾದ ಪದಗಳ ಸಾಂಕರ್ಯ  
ವನ್ನಾಗಲಿ ಮಾಡಿರುವುದಿಲ್ಲ. "ಭೇದಾಖ್ಯಾನಾಯ ನ ಧ್ವನೋ  
ನೈಕಶೇಖೋ ನ ಸಂಕರ: | ಕೃತೋತ್ತರ ಮಿಶ್ರಲಿಂಗಾನಾಮನುಕ್ತಾನಾಂ  
ಕ್ರಮಾದೃತೇ" ಅಮಂ |

ತ್ರಿಲಿಂಗಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಎಂದು ಹೇಳಲು ತ್ರಿವು ಎಂಬ ಪದ  
ವನ್ನೂ ಪುಂಸ್ತ್ರಿಲಿಂಗಗಳೆರಡರಲ್ಲೂ ಎಂದು ಹೇಳಲು ಧ್ವಯಃ  
ಎಂಬ ಪದವನ್ನೂ ಕೊಡಲಾಗಿದೆ. "ತ್ರಿಲಿಂಗಾಂ ತ್ರಿವಿತಿ  
ಪದಂ ಮಿಥುನೇ ತು ಧ್ವಯೋರಿತಿ" | ಅಸ್ತ್ರಿವಾಂ ಎಂದು ನಿಷೇಧಿಸಿ  
ಲ್ಪಟ್ಟ ಲಿಂಗವು ಉಳಿದ ಲಿಂಗಗಳಿಗಾಗಿ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ.  
"ನಿಷಿದ್ಧಲಿಂಗಂ ಶೇಷಾರ್ಥಮ್" | ತು ಎಂಬ ಅವ್ಯಯವು ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ  
ರುವ ಪದಗಳೂ ಅಥವಾ ಎಂಬ ಅವ್ಯಯವು ಅದಿಯಲ್ಲಿರುವ ಪದ  
ಗಳೂ ಹಿಂದಿನ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸುವುದಿಲ್ಲ.  
"ತ್ವಂತಾಥಾದಿ ನ ಪೂರ್ವಭಾಗ್" ಅಮಂ | ಈ ರೀತಿ ನಿಯಮ  
ಬದ್ಧವಾಗಿ ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನವು ರಚಿತವಾಗಿದೆ.

ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನಕ್ಕೆ ನಲವತ್ತಕ್ಕೂ ಹೆಚ್ಚುಮಂದಿ  
ವಿದ್ವಾಂಸರು ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಬರೆದಿರುವುದರಿಂದ ಬಹು ಜನಪ್ರಿಯ  
ವಾಗಿರುವುದೆಂದೂ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸಿಗಳಿಗೆ ಇದು ಹೆಚ್ಚು ಉಪಕಾರಕ  
ವಾಗಿರುವುದೆಂದೂ ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ. ಸಂಸ್ಕೃತ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ  
ಗಳು ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಕೋಶಗಳ  
ಕಂಠಪಾಠಮಾಡುವ ಪದ್ಧತಿಯು ಪ್ರಾಚೀನಕಾಲದಿಂದಲೂ  
ಇತ್ತೆಂದೂ ಇನ್ನೂ ಅನೇಕ ಕೋಶಗಳು ರಚಿತವಾಗಿದ್ದರೂ  
ಅಮರಸಿಂಹನ ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನವನ್ನೇ ಮುಖ್ಯವಾಗಿ  
ಕಂಠಪಾಠಮಾಡಿ ಶಬ್ದಾರ್ಥಜ್ಞಾನ ಸಂಪಾದಿಸುವ ಕ್ರಮವನ್ನು  
ಈಗಲೂ ಅನುಸರಿಸುತ್ತಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಕೋಶದ ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯ  
ಮತ್ತು ಸರ್ವೋತ್ತಮತ್ವದ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಹೇಳ  
ಬೇಕಾಗಿಲ್ಲ.

ಅಮರಸಿಂಹನು ಗ್ರಂಥದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ದೇವತಾ  
ಸಾಮಾನ್ಯವಾಚಕಪದಗಳನ್ನು ಹೇಳಿ ದೇವತೆಗಳ ವಿಶೇಷ  
ನಾಮಗಳನ್ನು ಹೇಳುವಾಗ "ಸರ್ವಜ್ಞ: ಸುಗತೋ ಬೃಹ: ಧರ್ಮರಾಜ-  
ಸ್ತಥಾಗತ:" ಎಂದು ಬುದ್ಧನ ಹೆಸರುಗಳನ್ನು ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ  
ಈತನು ಬೌದ್ಧಮತಾನುಯಾಯಿಯೆಂದು ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ.

ಅಮರಸಿಂಹನು ವಿಕ್ರಮಾದಿತ್ಯನ ಆಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿದ್ದ ನವಮಣಿ  
ಗಳಲ್ಲೊಬ್ಬ ಮಹಾಪಂಡಿತನಾಗಿದ್ದನು ಎಂದೂ ವಿಕ್ರಮಾದಿತ್ಯನ  
ಸಮಕಾಲಿಕನೆಂದೂ ತಿಳಿಯಬಹುದು. "ಖವಂತರಿಕ್ಷಪಣಕಾ-

ಮರಸಿಂಹಶತಕುಬೇತಾಲಬದ್ಧಕರ್ಪರಕಾಲಿದಾಸಾ: | ಖ್ಯಾತೋ ವರಾಹ-  
ಮಿಹಿರೋ ನೃಪತೇ: ಸಮಾಘಾಂ ರತ್ನಾನಿ ವೈ ವರಕಿರ್ನಿವ ವಿಕರಮಸ್ಯ" ||

ಈ ಪಂಡಿತನು ಮಹಾವೈಯಾಕರಣನೆಂದು "ಇಂದ್ರಶ್ವಂದ್ರ:  
ಕಾಶಕೃತ್ಸನಾಪಿಶಾಲಿ:ಶಾಕಟಾಯನ: | ಪಾಣಿನ್ಯಮರಜೇಂದ್ರಾ:  
ಜಯನ್ಯಕಟಾದಿಶಾಬ್ದಿಕಾ:" ಎಂಬ ಶ್ಲೋಕದಿಂದ ತಿಳಿದುಬರು  
ವುದು. "ಅಮರಸಿಂಹೋ ಹಿ ಪಾಪೀಯಾನ್ ಸರ್ವಂ ಭಾಷ್ಯಮಚ್ಛುರತ್"  
ಎಂಬ ಶ್ಲೋಕದಿಂದ ಈತನ ವೈಯಾಕರಣತ್ವವು ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ  
ವಾಗುವುದು.

ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಗಳಲ್ಲಿ ಕ್ಷೀರಸ್ವಾಮಿ  
ಕೃತ ಅಮರಕೋಶೋದ್ಭೂತನ ಭಟ್ಟೋಜದೀಕ್ಷಿತಕೃತ  
ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಸುಧಾ ಗುರುಬಾಲಪ್ರಭೋಧಿಕಾ ಮುಂತಾದ ಕೆಲವು  
ಮಾತ್ರ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿವೆ. ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನವು ಎಲ್ಲಾ  
ವಿಷಯಗಳಲ್ಲೂ ಸರ್ವೋಪಕಾರಕವಾಗಿ ಒಂದು ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ  
ಸ್ಥಾನವನ್ನು ಪಡೆದಿರುವುದು ಎಂದು ಹೇಳಬಹುದು.

ವ್ಯಾಖ್ಯೆ: ವ್ಯಾಡಿಯು ರಚಿಸಿರುವ ಲಿಂಗಾನುಶಾಸನವು  
ಅಮರಸಿಂಹಕೃತ ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನದಂತೆ ಪರ್ಯಾಯ  
ಪದಗಳ ವರ್ಗೀಕರಣ ರೀತಿಯಲ್ಲಿರುವುದು. "ಮೃಗೋ ಬಿಂದು:  
ಪೃಷ್ಠಂ ಪೃಷ್ಠತಃ ಪ್ರಕೀರ್ತಿತ:" | "ಆಕರಸ್ತು ಖನಿ: ಖಾನಿ:"  
ಇತ್ಯಾದಿ. ವ್ಯಾಡಿಯು ಕೆಲವೆಡೆ ಶಬ್ದಗಳ ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿ ಪ್ರದರ್ಶನ  
ಪೂರ್ವಕ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ವಿವರಿಸಿರುತ್ತಾನೆ. "ಅರ್ಥಾನ್ ನಿಷಠ-  
ಯಸ್ಯಸ್ಮಾತ್ ನಿಷಠ್ಠ: ಪರಿಕೀರ್ತಿತ:" — ಹೇಮಚಂದ್ರನ  
ಅಭಿಧಾನಚಿಂತಾಮಣಿಯ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನದಲ್ಲಿ ಇದು ಉಕ್ತ  
ವಾಗಿದೆ.

ತ್ರಿಕಾಂಡಕೋಶ:-ಭಾಗುರಿ:-ಸರ್ವಾನಂದ ರಾಯಮುಕುಟ  
ಮತ್ತು ಇತರರು ಉದ್ಧರಿಸಿರುವ ವಾಕ್ಯಗಳ ಆಧಾರದಿಂದ  
ತ್ರಿಕಾಂಡಕೋಶವು ಭಾಗುರಿಯಿಂದ ರಚಿತವಾದುದೆಂದು  
ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ. ಭಾಗುರಿಯು ಉದ್ಧರಿಸಿರುವ ಕೆಲವು  
ವಿಷಯಗಳಿಗೂ ತ್ರಿಕಾಂಡಕೋಶಕ್ಕೂ ಇರುವ ಹಲವಾರು  
ಸಂವಾದಗಳಿಂದ ತ್ರಿಕಾಂಡಕೋಶವು ರಚಿತವಾದುದೆಂಬುದನ್ನು  
ತಳ್ಳಿಹಾಕುವಂತಿಲ್ಲ. ಸರ್ವಾನಂದನು ತ್ರಿಕಾಂಡಕೋಶದಲ್ಲಿ  
ಲಿಂಗನಿರ್ದೇಶನವಿಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳಿರುತ್ತಾನೆ. "ಅನ್ಯತನ್ವಾಣಿ  
ವ್ಯಾಖ್ಯೆವರಕಿಪ್ರಭೃತೀನಾಂ ತನ್ವಾಣಿ ಸಮಾಹೃತೃ ಏಕೀಕೃತೃ | ಅತ  
ಏವ ಸಂಪೂರ್ಣಮಿದಮ್, ಯತಸ್ತ್ರಿಕಾಂಡೋತ್ಪಲಿನ್ಯಾದಿನಾಮಮಾತ್ರತನ್ವಾಣಿ  
ವ್ಯಾಖ್ಯೆವರಕಿಪ್ರಭೃತಿಭಿ: ಪ್ರಣೀತಾನಿ ತು ಲಿಂಗಮಾತ್ರತನ್ವಾಣಿ"  
ಇತಿ ಸರ್ವಾನಂದ: | ಭಾಗುರಿಯು ಹೇಳಿರುವ ವಾಕ್ಯಗಳಲ್ಲಿಯೂ  
ಲಿಂಗವನ್ನು ನಿರ್ದೇಶಿಸುವ ಪದಗಳೂ ಕಂಡುಬರುವುದಿಲ್ಲ.  
ಭಾಗುರಿಯು ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳನ್ನು ಮಾತ್ರ ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ  
ಅನುಷ್ಠುಪ್ಪವೃತ್ತದಲ್ಲಿ ತ್ರಿಕಾಂಡಕೋಶವನ್ನು ರಚಿಸಿರುತ್ತಾನೆ.



“ಮಹೀರಹಃ ಕೃಜೌ ವೃಷಃ ವನಸ್ಪತೀರನೋಹಃ । ಆಗೌ ನಗೌ-  
ಗಮಶ್ಚೈವ ಶಾಖೀ ದ್ವೌಷ್ಣ ತಃ ಸ್ಮೃತಃ” ಇತ್ಯಾದಿ. ಆದುದರಿಂದ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳೂ ಅನೇಕಾರ್ಥಪದಗಳೂ ಲಿಂಗನಿರ್ದೇಶನವೂ ಇರುವ ಅವರಸಿಂಹನ ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನಕ್ಕಿಂತಲೂ ಕೇವಲ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳ ಸಂಕಲನವಿರುವ ತ್ರಿಕಾಂಡಕೋಶವು ಭಿನ್ನವಾದುದೆಂದು ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತಿಳಿಯಬಹುದು.

**ಶಬ್ದಾರ್ಣವಃ - ವಾಚಸ್ಪತಿಃ** - ಶಬ್ದಾರ್ಣವವು ವಾಚಸ್ಪತಿಯಿಂದ ಪಂಡಿತ ವಿರಚಿತವಾದುದು. ಪುರುಷೋತ್ತಮದೇವನ “ಶಬ್ದಾರ್ಣವಃ: उत्पलिनी संसारावतः इत्यादिकोशाः वाचस्पतिव्याकि विक्रमादित्यनिर्मिताः” ಎಂಬ ವಾಕ್ಯದಿಂದ ಶಬ್ದಾರ್ಣವವು ಈ ಕವಿರಚಿತವಾದುದೆಂದು ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ. ಶಬ್ದಾರ್ಣವವೆಂಬ ಕೋಶದ ಹೆಸರಿಗೆ ತಕ್ಕಂತೆ ಕವಿಯು ಸಾಧ್ಯವಾದಷ್ಟು ಅನೇಕ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಅಲ್ಲಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ಪದಗಳಿಗೆ ರೂಪಾಂತರಗಳನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಕೋಶವನ್ನು ರಚಿಸಿರುತ್ತಾನೆ. “अपि गन्धर्वगान्धर्वदिव्यगायनगातवः” । “कृष्णपाकफलः कृष्णफलपाको वनालकः । कृष्णपाकः पाककृष्णः फलकृष्णो वनालयः ॥ पाककृष्णफलः पाकफलकृष्णकरामलकः । फलपाकः पाकफलो बोलः कृष्णफलो रसः” ॥ ಇತ್ಯಾದಿ. ವಾಚಸ್ಪತಿಯ ಕೋಶದಿಂದ ಉದ್ಧರಿಸಿದ ವಾಕ್ಯಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಇದೇ ರೀತಿಯ ವೈಲಕ್ಷಣ್ಯವು ಕಂಡುಬರುವುದು.

**ನಾಮಮಾಲಾ-ಕಾತ್ಯ**:-ಪುರುಷೋತ್ತಮದೇವನ ತ್ರಿಕಾಂಡಶೇಷದಲ್ಲಿ “अथ मेधाजित् कात्यः कात्यायनश्च सः । पुनर्वसुर्वररुचिः” ಎಂದು ಕಾತ್ಯಕಾತ್ಯಾಯನ ಮತ್ತು ವರರುಚಿ ಈ ಮೂರೂ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳೆಂದೂ ಒಬ್ಬರೇ ಮಹರ್ಷಿಯ ಹೆಸರೆಂದೂ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. ವ್ಯಾಕರಣವಾರ್ತಿಕಕಾರರೇ ಈ ವರರುಚಿಯೆಂದೂ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಯಿದೆ. ಸಿದ್ಧಾಂತಕೌಮುದಿಯ ಬಾಲಮನೋರಮಾವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕಾರರು ವ್ಯಾಖ್ಯಾನದ ಮಂಗಳಶ್ಲೋಕದಲ್ಲಿ ವರರುಚಿಗೆ ನಮಸ್ಕಾರ ಎಂದು ಹೇಳಿ ವಾರ್ತಿಕಕಾರರಾದ ವರರುಚಿಯನ್ನೇ ನಿರ್ದೇಶಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. “वाक्यकारं वररुचि भाष्यकारं पतञ्जलिम्” । ವ್ಯಾಕರಣಶಾಸ್ತ್ರಾಧ್ಯಯನದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ “ओं नमः पाणिनिकात्यायनपतञ्जलिभ्यो मुनिभ्यो महर्षभ्यो गुरुभ्यः” ಎಂದು ಆಚಾರ್ಯರುಗಳಿಗೆ ಸಾಂಪ್ರದಾಯಿಕ ನಮಸ್ಕಾರ ಮಾಡಿ ಅಧ್ಯಯನ ಪ್ರಾರಂಭಿಸುವ ಪದ್ಧತಿಯು ಈಗಲೂ ಇದೆ. ವೈಜಯಂತಿಕೋಶದಲ್ಲೂ “कात्यायनो वररुचिः मेधाजिच्च पुनर्वसुः” ಎಂದು ಎರಡನ್ನೂ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳಾಗಿ ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ. ಕಲ್ಪದ್ರೂಕೋಶದಲ್ಲೂ “कात्यायनो वररुचिः कायोऽपि च पुनर्वसुः” ಎಂದು ಪರ್ಯಾಯಪದ

ಗಳಾಗಿ ಉಕ್ತವಾಗಿದೆ. ಈ ಕಾರಣಗಳಿಂದ ಕಾತ್ಯಕಾತ್ಯಾಯನ ಮತ್ತು ವರರುಚಿ ಈ ಮೂರು ಪದಗಳೂ ಒಬ್ಬ ಮಹರ್ಷಿಯ ಹೆಸರೆಂದೇ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗುವುದು.

ಆದರೆ ಕ್ಷೀರಸ್ವಾಮಿ ಮತ್ತು ಹೇಮಚಂದ್ರರು ಕಾತ್ಯಕರ ಕೋಶದಿಂದಲೇ ಆಗಾಗ್ಗೆ ಉದ್ಧರಿಸಿರುವುದರಿಂದ ಇಬ್ಬರೂ ಕವಿಗಳು ಬೇರೆ ಬೇರೆಯೆಂದು ಹೇಳಬೇಕಾಗುವುದು. ಕಾತ್ಯಕರ ಕೋಶದಲ್ಲಿ ಅವರಸಿಂಹನ ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನದಂತೆ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳನ್ನು ಸೇರಿದಂತೆ ಹೇಳದೆ ಅಲ್ಲಲ್ಲಿ ಪದಗಳ ಅರ್ಥ ವಿವರಣಾಪೂರ್ವಕ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳನ್ನೂ ನಾನಾರ್ಥ ಪದಗಳನ್ನೂ ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಕೋಶವನ್ನು ರಚಿಸಲಾಗಿದೆ. “क्षुद्र-च्छिद्रसमोपेतं चालनं तितरः पुमान्” ।

“नाममाला” ಕೋಶವು ಕಾತ್ಯಾಯನಪ್ರಣೀತವಾದುದು. ವಾಮನನು ತನ್ನ ಕಾವ್ಯಾಲಂಕಾರಸೂತ್ರವೃತ್ತಿಯಲ್ಲಿ ನಾಮಮಾಲಾಕೋಶದ ಒಂದು ಭಾಗವಾದ “नीवीसंग्रथनं नार्या जघनस्थस्य वाससः” ಎಂಬುದನ್ನು ಉದ್ಧರಿಸಿ “नाममाला-प्रतीकमपश्यतः” ಎಂದು ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ ನಾಮಮಾಲಾ ಕೋಶವು ಕಾತ್ಯಾಯನಪ್ರಣೀತವೆಂದು ತಿಳಿದುಬರುವುದು.

**ಪುರೂಷೋತ್ತಮದೇವಃ-ತಸ್ಯ ಕೋಶಃ**:-ಪುರುಷೋತ್ತಮದೇವನು ಪಾಣಿನಿಯ ಅಷ್ಟಾಧ್ಯಾಯಿಗೆ ಭಾಷ್ಯವೃತ್ತಿಯೆಂಬ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನವನ್ನು ಬರೆದಿರುತ್ತಾನೆ ಮತ್ತು ಹಾರಾವಲಿಃ ತ್ರಿಕಾಂಡಶೇಷಃ: वर्णदेशना एकाक्षरकोशः ಮತ್ತು ದ್ವಿರೂಪಕೋಶಃ ಇವನ್ನು ರಚಿಸಿರುತ್ತಾನೆ. ದೊರೆಯಾದ ಲಕ್ಷ್ಮಣಸೇನನ ಆಜ್ಞೆಯ ಮೇರೆಗೆ ಪುರುಷೋತ್ತಮದೇವನು ಭಾಷ್ಯವೃತ್ತಿಯನ್ನು ಬರೆದುದಾಗಿ ಸೃಷ್ಟಿಧರಾಚಾರ್ಯನು ಭಾಷ್ಯವೃತ್ತಿಯ ಮೊದಲನೆಯ ಶ್ಲೋಕದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನದಲ್ಲಿ ತಿಳಿಸಿರುತ್ತಾನೆ. 1179 ರಿಂದ 1200 ರವರೆಗೆ ರಾಜ್ಯವಾಳಿದ ಲಕ್ಷ್ಮಣಸೇನನು 1169ರ ನಂತರ ಸಿಂಹಾಸನಾರೋಹಣಮಾಡಿ ರಾಜನಾದುದರಿಂದ ಅನಂತರ ಪುರುಷೋತ್ತಮದೇವನು ಭಾಷ್ಯವೃತ್ತಿಯನ್ನು ರಚಿಸಿರಬಹುದೆಂದು ತಿಳಿದುಬರುವುದು. “वैदिक-प्रयोगानिधिनो राज्ञो लक्ष्मणसेनस्य आज्ञया प्रकृते कर्मणि प्रसज्जन् वृत्तेर्लघुतायां हेतुमाह भाषायामिति” भाषावृत्तिः ।

**ತ್ರಿಕಾಂಡಶೇಷಃ** - ಇದು ಪುರುಷೋತ್ತಮದೇವರಚಿತವಾದುದು. ವಿವರಕ್ಕೆ “निघण्टु” ಪದದಲ್ಲಿ ನೋಡಿ.

**ಹಾರಾವಲಿಃ**:-ಹಾರಾವಲಿಕೋಶವು ಪುರುಷೋತ್ತಮದೇವ ವಿರಚಿತವಾದುದು. ಅನೇಕ ಪಂಡಿತರು ಕೋಶಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದರೂ ಅವೆಲ್ಲವೂ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಿಷಯಗಳ ವ್ಯವಹಾರಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದುದರಿಂದ ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲರಿಗೂ ವಿಸ್ಮಯವುಂಟು ಮಾಡುವ ಪದಗಳನ್ನೊಳಗೊಂಡ ಕೋಶವನ್ನು ರಚಿಸುವುದಾಗಿ ಗ್ರಂಥಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಕವಿಯು ಹೇಳಿರುತ್ತಾನೆ. “किं नैव सन्नि



ಸುಖಿಯಾಮಿಧಾನಕೋಶಾ: ಕಿಂತು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಿಷಯವ್ಯವಹಾರಭಾಜ: |  
ಗೋಷಿಃ ವಾದಪರಮೋಹಲಾಸು ಕೇಶಾ ಹಾರಾವಲಿ ನ ವಿದವಾತಿ  
ವಿದವಿಧಮಾನಮ್" ಹಾರಾಂ | ಹಾರಾವಳಿಯಲ್ಲಿ 270 ಶ್ಲೋಕ  
ಗಳಿರುವವು. ಈ ಕೋಶವು ಎರಡು ಭಾಗಗಳಾಗಿ ವಿಂಗಡಿಸಿ  
ಲ್ಪಟ್ಟು ರಚಿತವಾಗಿದೆ. ಮೊದಲನೆಯ ಭಾಗವನ್ನು ಮೂರಾಗಿ  
ವಿಂಗಡಿಸಿ 1ನೆಯ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಸಂಪೂರ್ಣ ಶ್ಲೋಕಗಳಿಂದಲೂ  
2ನೆಯ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಅರ್ಧಶ್ಲೋಕಗಳಿಂದಲೂ 3ನೆಯ ಭಾಗ  
ದಲ್ಲಿ ಪಾದ (ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗ) ಶ್ಲೋಕಗಳಿಂದಲೂ  
ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ರಚಿಸಿರುತ್ತಾನೆ.  
"ಆವ್ಯಾಪಕಶಬ್ದತ: ಸ್ಲೋಕೇರ್ದೇವತಾಲಿನಾತ್ತತ: | ಶಬ್ದಾ: ಪಾದ-  
ವಿಬೋಧಯಾ: ಪ್ರಾಗ್ನೇಕಾರ್ಥತಸ್ತತ:" ಹಾರಾಂ | ಎರಡನೆಯ  
ಭಾಗವನ್ನು ಮೂರಾಗಿ ವಿಂಗಡಿಸಿ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಪದದ  
ಅನೇಕಾರ್ಥಗಳನ್ನು 1ನೆಯ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಅರ್ಧಶ್ಲೋಕ  
ಗಳಿಂದಲೂ 2ನೆಯ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಪಾದಶ್ಲೋಕಗಳಿಂದಲೂ  
3ನೆಯ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಪ್ರತ್ಯೇಕಪದಗಳಿಂದಲೂ ತಿಳಿಸಲಾಗಿದೆ.

(1) ಪೂರ್ಣಶ್ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳು —  
"ಯದೀಯತೇ ತು ದೇವಮ್ಯ: ಮನೋರಾಜ್ಯಸ್ಯ ಸಿದ್ಧಯೇ | ಉಪಾಚಿತಕಂ  
ದಿವ್ಯದೋಹದಂ ತದ್ವಿದುರ್ಬುಧಾ:" |

(2) ಅರ್ಧಶ್ಲೋಕಗಳಿಂದ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳು —  
"ಕೂಷ್ಮಾಂಡಕ: ಪುಷ್ಪಫಲೋ ಧನವಾಸಶ್ಚ ವೇಷ್ಠಕ:" |

(3) ಪಾದಶ್ಲೋಕಗಳಿಂದ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳು —  
"ಮೇಠೋ ಹಸ್ತಿಪಕ: ಸ್ಮೃತ:" | ಇತ್ಯಾದಿ. ಕವಿಗೆ ಹಾರಾವಳಿ  
ಯನ್ನು ರಚಿಸಲು 12 ತಿಂಗಳ ಕಾಲ ಬೇಕಾಯಿತು.

**ವರ್ಣವೇಶನಾ** — ಇದು ಗದ್ಯರೂಪದಲ್ಲಿರುವುದು. ಶಬ್ದ  
ಪ್ರಯೋಗದ ಪರಿಚಯವಿಲ್ಲದೆ ಅನುಭವಪಡೆಯದವರ  
ಭ್ರಾಂತಿನಿವಾರಣೆಗಾಗಿ ಸಂಪ್ರದಾಯಬದ್ಧವಾದ ವರ್ಣ  
(ಅಕ್ಷರ)ಗಳನ್ನು ಮಾರ್ಪಡಿಸಿ ಪದಗಳನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸುವ  
ವಿಷಯ ಇದರಲ್ಲಿ ನಿರೂಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. "ಅತ್ರ ಹಿ ಪ್ರಯೋಗ-  
ಬಹುದೃಶನಾಂ ಶ್ರುತಿಸಾಧಾರಣ್ಯಮಾತ್ರೇಣ ಗೃಹ್ಯತಾಂ ಕುರಕ್ಷುರಪ್ರಾದೌ ಲಕಾರ-  
ಽಕಾರಯೋ: ಸಿಹಾಶಿಕ್ಷಣಕಾದೌ ಹಕಾರಽಕಾರಯೋ: ತಥಾ ಗೌಡಾದಿ-  
ಲಿಪಿಸಾಧಾರಣ್ಯಾತ್ ಹಿಂಙೀರಗುಡಾಕೇಶಾದೌ ಹಕಾರಽಕಾರಯೋ:  
ಭ್ರಾಂತಯ ಉತ್ಪದಂತೇ | ಅತ: ತದ್ವಿವೇಚನಾಥ ಕ್ವಚಿತ್ ಷಾತು-  
ಪಾರಾಯಣೇ ಷಾತುವೃತ್ತಿಪೂಜಾದಿಷು ಪ್ರವ್ಯಕ್ತಲಿಖನೇನ ಪ್ರಸಿದ್ಧೋಪದೇಶೇನ  
ಷಾತುಪ್ರತ್ಯಯೋನಾದಿವ್ಯಾಖ್ಯಾಲಿಖನೇನ ಕ್ವಚಿದಾಪ್ತವಚನೇನ ವರ್ಣ-  
ವೇಶನೇನ ಮಾರ್ಭಯತೇ" ಎಂದು ಗ್ರಂಥಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಗ್ರಂಥಕಾರನು  
ತಿಳಿಸಿರುತ್ತಾನೆ.

**ಅಭಿಧಾನರತ್ನಮಾಲಾ** — ಹಲಾಯುಧ: — ಅಭಿಧಾನರತ್ನ  
ಮಾಲೆಯು ಹಲಾಯುಧಭಟ್ಟಕವಿಯಿಂದ ರಚಿತವಾದುದು.

ಈ ಕೋಶವು ಐದು ಕಾಂಡಗಳಾಗಿ ವಿಂಗಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಮೊದಲ  
ನೆಯ ನಾಲ್ಕು ಕಾಂಡಗಳಲ್ಲಿ (1) ಸ್ವರ್ಗ (2) ಭೂಮಿ  
(3) ಪಾತಾಳ ಮತ್ತು (4) ಸಾಮಾನ್ಯ ವಿಷಯಗಳಿಗೆ  
ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳೂ 5ನೆಯ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ  
ಅನೇಕಾರ್ಥಪದಗಳೂ ಮತ್ತು ಅವ್ಯಯಗಳೂ ಸೇರಿಸಿ  
ಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ.

ಕವಿಯು ಲಿಂಗನಿರ್ದೇಶನಕ್ಕಾಗಿ ಪದಗಳ ರೂಪಭೇದ  
ಗಳನ್ನು ಉಪಾಯವಾಗಿ ಇಟ್ಟು ಕೊಂಡಿರುತ್ತಾನೆ. ಉಳಿದ  
ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಅಮರಸಿಂಹನ ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನದ  
ಪದ್ಧತಿಯನ್ನೇ ಅನುಸರಿಸಿರುತ್ತಾನೆ. ಅಭಿಧಾನರತ್ನಮಾಲೆ  
ಯಲ್ಲಿ ಸುಮಾರು 900 ಶ್ಲೋಕಗಳಿರುವವು. ಇವು ವಿವಿಧ  
ವೃತ್ತಗಳಲ್ಲಿ ರಚಿತವಾಗಿವೆ.

ಹಲಾಯುಧನ ಅಭಿಧಾನರತ್ನಮಾಲೆಯು ಅಮರದತ್ತ  
ವರರುಚಿ ಭಾಗುರಿ ಬೋಪಾಲಿತ ಇವರ ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು  
ಪ್ರಮಾಣವಾಗಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ರಚಿತವಾಗಿರುವುದೆಂದು ತಿಳಿಸಿರು  
ತ್ತಾನೆ. "ಛಯಮರದತ್ತವರಶ್ಚಿಭಾಗುರಿಬೋಪಾಲಿತಾದಿಶಾಸ್ತ್ರೇಮ್ಯ: |  
ಅಭಿಧಾನರತ್ನಮಾಲಾ ಕವಿಕಾಂಡವಿಭೂಷಣಾರ್ಥಮುದ್ವಿಧಯತೇ" |

ಹಲಾಯುಧಭಟ್ಟಕವಿಯು ತನ್ನ ಗ್ರಂಥರಚನಾಕೌಶಲ್ಯ  
ದಿಂದ 10ನೆಯ ಶತಮಾನದ ಮಧ್ಯಭಾಗದಲ್ಲಿ ಒಳ್ಳೆಯ  
ಖ್ಯಾತಿಯನ್ನು ಪಡೆದಿದ್ದನು. ಈ ಕವಿಯು ಅಭಿಧಾನರತ್ನಮಾಲೆ  
ಯಲ್ಲದೆ ಮಾನ್ಯಪೀತದ ದೊರೆಯಾಗಿದ್ದ ಕೃಷ್ಣರಾಜನ  
ಗೌರವಾರ್ಥ "ಕವಿರಹಸ್ಯಮ್" ಎಂಬ ಗ್ರಂಥವನ್ನೂ ಧಾರಾ  
ನಗರದ ಮಂಜವಾಕ್ಯತಿರಾಜನ ಗೌರವಾರ್ಥ "ಮೃತಸಂಜೀವಿನಿ-  
ವೃತ್ತಿ:" ಎಂಬ ಗ್ರಂಥವನ್ನೂ ರಚಿಸಿದನು.

**ವೈಜಯಂತೀಕೋಶವು** — ವೈಜಯಂತೀಕೋಶವು  
ಯಾದವ ಪ್ರಕಾಶಾಚಾರ್ಯರಿಂದ ರಚಿತವಾದುದು. ಇದರಲ್ಲಿ  
ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳು ಮತ್ತು ಅನೇಕಾರ್ಥಪದಗಳು ಎಂದು  
ಎರಡು ಭಾಗಗಳಿರುವವು. ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳು ಸ್ವರ್ಗ:  
ಅಂತರಿಕ್ಷಮ್ ಭೂಮಿ: ಪಾತಾಲಮ್ ಮತ್ತು ಸಾಮಾನ್ಯಮ್ ಎಂಬ ಐದು  
ಕಾಂಡಗಳಲ್ಲಿಯೂ ನಾನಾರ್ಥಪದಗಳು ಛಂದಶ್ಚರಮ್ ಅಕ್ಷರಮ್  
ಮತ್ತು ಶೇಖ: ಎಂದು ಮೂರು ಕಾಂಡಗಳಲ್ಲಿಯೂ ವಿವರಿಸಿ  
ಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಕಾಂಡದಲ್ಲಿಯೂ ಅನೇಕ ಅಧ್ಯಾಯ  
ಗಳಿರುವವು.

ವೈಜಯಂತೀಕೋಶವು ಅಮರಸಿಂಹನ ನಾಮಲಿಂಗಾನು  
ಶಾಸನಕ್ಕಿಂತಲೂ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳ ಮತ್ತು ನಾನಾರ್ಥ  
ಪದಗಳ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಪರಿಪೂರ್ಣತೆಯನ್ನು ಪಡೆದಿರುವುದು.

ನಾನಾರ್ಥಗಳನ್ನು ವಿವರಿಸುವಾಗ ಕವಿಯು ಇಕಾರಾದಿ  
ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಪದಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ನೂತನಮಾರ್ಗವೊಂದನ್ನು  
ಅನುಸರಿಸಿರುತ್ತಾನೆ. ನಾನಾರ್ಥಪದಗಳು ದ್ವ್ಯಕ್ಷರ ತ್ರ್ಯಕ್ಷರ



ಮತ್ತು ಇನ್ನೂ ಅಧಿಕ ವರ್ಣಗಳ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ಮೂರು ಕಾಂಡಗಳಾಗಿ ವಿಂಗಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. ಈ ಮೂರು ಕಾಂಡಗಳೂ ಮತ್ತೆ ಲಿಂಗಗಳಿಗನುಸಾರವಾಗಿ ಪುಲಿಕ್ಷಾಖ್ಯಾಯ: ಸ್ತೀಲಿಕ್ಷಾಖ್ಯಾಯ: ಮತ್ತು ನಫುಸಕಲಿಕ್ಷಾಖ್ಯಾಯ: ಎಂದು ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿ ವರ್ಗೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. ಕೊನೆಯದಾದ ಐದನೆಯ ಕಾಂಡಕ್ಕೆ ಮತ್ತೆ ನಾಲ್ಕು ಅಧ್ಯಾಯಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಒಂದನೆಯ ಅಧ್ಯಾಯದಲ್ಲಿ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಕೆಲವು ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳನ್ನೂ ಎರಡನೆಯ ಅಧ್ಯಾಯದಲ್ಲಿ ನಾನಾರ್ಥವ್ಯಯಪದಗಳನ್ನೂ ಮೂರನೆಯ ಅಧ್ಯಾಯದಲ್ಲಿ ಅವ್ಯಯಪರ್ಯಾಯಪದಗಳನ್ನೂ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಅಧ್ಯಾಯದಲ್ಲಿ ಲಿಂಗಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಸಾಮಾನ್ಯ ನಿಯಮಗಳನ್ನೂ ಸೇರಿಸಲಾಗಿದೆ. ವೈಜಯಂತೀಕೋಶದಲ್ಲಿ ಪಾರಿಭಾಷಿಕಪದಗಳು ಅಮರಕೋಶದಂತೆಯೇ ಇದ್ದರೂ ನಪುಂಸಕಲಿಂಗವನ್ನು ಸೂಚಿಸಲು ಣ್ ಕಲಿ ನಫು ಎಂಬ ಕೆಲವು ಸಂಕೇತ ಪದಗಳು ಉಪಯೋಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ.

ವೈಜಯಂತೀಕೋಶಕಾರರಾದ ಯಾದವಪ್ರಕಾಶಾಚಾರ್ಯರು ಮೊದಲು ಅದ್ವೈತಿಗಳಾಗಿದ್ದು ಅನಂತರ ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತಮತವನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿದರು. ಕಾಂಚೀಪುರದ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಗೃಧ್ರಸರಸ್ಸು ಇವರ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ. 11ನೆಯ ಶತಮಾನದ ಮಧ್ಯಭಾಗದಲ್ಲಿ ಇವರು ವೈಜಯಂತೀಕೋಶವನ್ನು ರಚಿಸಿದರು.

**ಹೇಮಚಂದ್ರ:**—ಜೈನಕವಿಯಾದ ಹೇಮಚಂದ್ರನು (1) ಅಮಿ-  
ಖಾನಚಿಂತಾಮಣಿ: (2) ಅನೇಕಾರ್ಥಸಂಗ್ರಹ: (3) ನಿಖರದೃಶೋ:  
ಮತ್ತು (4) ದೇಶಿನಾಮಮಾಲಾ ಎಂಬ ನಾಲ್ಕು ಕೋಶಗಳನ್ನು  
ರಚಿಸಿರುತ್ತಾನೆ. ಈ ಕೋಶಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯದು  
ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳ ಕೋಶ. ಎರಡನೆಯದಾದ ಅನೇಕಾರ್ಥ  
ಸಂಗ್ರಹವು ನಾನಾರ್ಥಪದಗಳ ಕೋಶ. ಮೂರನೆಯದು  
ಸಸ್ಯವಿಜ್ಞಾನ ಕೋಶ. ನಾಲ್ಕನೆಯದು ಪ್ರಾಕೃತಶಬ್ದಗಳ  
ಕೋಶ.

**(1) ಅಮಿಖಾನಚಿಂತಾಮಣಿ:**—ಅಭಿಧಾನಚಿಂತಾಮಣಿಯು  
ದೇವಾಧಿದೇವಕಾಂಡ: ದೇವಕಾಂಡ: ಮರ್ತ್ಯಕಾಂಡ: ಅಮಿಕಾಂಡ: ನರಕ-  
ಕಾಂಡ: ಮತ್ತು ಸಾಮಾನ್ಯಕಾಂಡ: ಎಂದು ಆರು ಕಾಂಡಗಳಾಗಿ  
ವಿಭಾಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ.

ಮೊದಲನೆಯ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಜೈನದೇವತೆಗಳು ಮತ್ತು ಜೈನ  
ಮತ ಸಂಬಂಧವಾದ ವಿಷಯ  
ಗಳೂ

ಎರಡನೆಯ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಮತ್ತು ಬೌದ್ಧ  
ದೇವತೆಗಳೂ

ಮೂರನೆಯ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಮನುಷ್ಯರಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ  
ವಿಷಯಗಳೂ

ನಾಲ್ಕನೆಯ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ

ಐದನೆಯ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ

ಆರನೆಯ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ

ತೀರ್ಥಕ್ಷೇತ್ರಗಳೂ

ಪಾತಾಳಲೋಕಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ  
ವಿಷಯಗಳೂ

ಸಾಮಾನ್ಯ ವಿಷಯಗಳು ಮತ್ತು  
ಅವ್ಯಯಗಳೂ

ವಿವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. ಶಬ್ದಗಳ ಲಿಂಗಾದಿ ವಿವರಗಳು ಈ ಕವಿಯ  
ಲಿಂಗಾನುಶಾಸನವು ಪ್ರಮಾಣವಾಗಿದೆ. ಈ ಕೋಶವರನಾದ  
ಹೇಮಚಂದ್ರನು ಈ ಕೋಶದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನದಲ್ಲಿ ಸುಮಾರು  
80ಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚು ಪ್ರಮಾಣವಚನಗಳನ್ನು ಉದ್ಧರಿಸಿ  
ಹೇಳಿರುತ್ತಾನೆ. ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯವಾದುವು ವಾಸುಕಿ ವ್ಯಾಡಿ  
ಧನಪಾಲ ಮತ್ತು ವಾಚಸ್ಪತಿ ಇವರ ಕೋಶಗಳು. ಈ  
ಕೋಶದ ರಚನೆಯಲ್ಲಿ ಅಮರಸಿಂಹ ಕಾತ್ಯ ದುರ್ಗ ಧನ್ವಂತರಿ  
ಭಾಗುರಿ ಭೋಜ ಶಾಶ್ವತ ಹಲಾಯುಧ ಮಾಲಾಕಾರ ಮತ್ತು  
ಯಾದವ ಇವರ ಕೃತಿಗಳನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸಿಕೊಂಡು  
ಅಭಿಧಾನಚಿಂತಾಮಣಿಯ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನವನ್ನು ರಚಿಸಿರುತ್ತಾನೆ.  
ಈ ಕೋಶದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ್ಕೆ ಈ ಕವಿಯ ಶೇಷಸಂಗ್ರಹದ  
ಶ್ಲೋಕಗಳು ಅನುಬಂಧ (ಪೂರಕ) ವಾಗಿರುವುವು. ಅಭಿಧಾನ  
ಚಿಂತಾಮಣಿಗೆ ಸೂರ್ಯಸಿಂಹರಾಜನ ಆಶ್ರಯದಲ್ಲಿದ್ದ  
ವಾಚನಾಚಾರ್ಯವಾದಿಶ್ರೀವಲ್ಲಭನ ಸಾರೋದ್ಧಾರ ದೇವ  
ಸಾಗರಗಣಿಯ ವೃತ್ತತ್ತಿರತ್ತಾಕರಗಳೆಂಬ ಎರಡು ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ  
ಗಳಿವೆ.

ಅಭಿಧಾನಚಿಂತಾಮಣಿಯ ಆಧಾರದಿಂದ ಶುಭಶೀಲಗಣಿಯ  
ಪಂಚವರ್ಗನಾಮಸಂಗ್ರಹ: ಭಾನುಚಂದ್ರಗಣಿಯ ವಿವಿಕ್ಷನಾಮಸಂಗ್ರಹ:  
ಮತ್ತು ಜಿನದೇವಮುನೀಶ್ವರನ ಅಮಿಖಾನಚಿಂತಾಮಣಿಶಿಲೋ-  
ಕ್ಷಣಮ್ ಎಂಬ ಈ ಮೂರೂ ಗ್ರಂಥಗಳು ರಚಿತವಾಗಿವೆ.

**(2) ಅನೇಕಾರ್ಥಸಂಗ್ರಹ:**—ಹೇಮಚಂದ್ರನ ಅನೇಕಾರ್ಥ  
ಸಂಗ್ರಹಕೋಶದಲ್ಲಿ ಸುಮಾರು 2000 ಶ್ಲೋಕಗಳಿವೆ.  
ಇದು ಏಕಸ್ವರದ್ವಿಸ್ವರತ್ವಿಸ್ವರಚತು:ಸ್ವರಪಂಚಸ್ವರಷಡ್ಸ್ವರ ಗಳುಳ್ಳ  
ಪದಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ ಆರು ಕಾಂಡಗಳಾಗಿ ವಿಂಗಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ.  
ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಅವ್ಯಯವರ್ಗವೂ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ  
ಆಕಾರಾದಿಪದಗಳ ಸೂಚಿಯೂ ಇರುವುದು. ಅನೇಕಾರ್ಥಸಂಗ್ರಹದ  
ರಚನೆಯ ಪೂರ್ವದಲ್ಲೇ ಈ ಕವಿಯು  
“एकांशब्दसंग्रहः” ಎಂಬ ಕೋಶವನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದನೆಂದು  
ಈ ಗ್ರಂಥದ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ “व्यात्वाहंतः कृतैकांशब्द-  
सन्दीपसंग्रहः । एकस्वरादिषट्काण्ड्या कुर्वेनेकांशसंग्रहम्”  
ಎಂಬ ಶ್ಲೋಕದಿಂದ ತಿಳಿದುಬರುವುದು. ಕಲಿಕಾಲಸರ್ವಜ್ಞ  
ನೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾಗಿದ್ದ ಹೇಮಚಂದ್ರಕವಿಯು ಈ ಮೇಲೆ  
ಹೇಳಿದ ಕೋಶಗಳಲ್ಲದೆ ಕಾವ್ಯಾನುशासनम् लिङ्गानुशासनम्



ಶಾಸ್ತ್ರಾನ್ಯಾಸನಮ್ ಅನ್ಯೋನ್ಯಾಸನಮ್ ವಾದಾನ್ಯಾಸನಮ್ ಯೋಗಶಾಸ್ತ್ರಮ್  
ಇವೇ ಮೊದಲಾದ ಅನೇಕ ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದನೆಂದೂ  
ಅನೇಕಾರ್ಥಸಂಗ್ರಹದ ಉಪೋದ್ಘಾತದಲ್ಲಿ ತಿಳಿಸಿರುತ್ತಾನೆ.  
ಮೂರೂವರೆ ಕೋಟಿ ಶ್ಲೋಕಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ ಅನೇಕ ಗ್ರಂಥ  
ಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುವುದಾಗಿಯೂ ಅನೇಕಾರ್ಥಸಂಗ್ರಹದ  
ಉಪೋದ್ಘಾತದಲ್ಲಿ ತಿಳಿಸಿರುತ್ತಾನೆ.

ಹೇಮಚಂದ್ರನ ಅನೇಕಾರ್ಥಸಂಗ್ರಹಕೋಶಕ್ಕೆ ಈತನ  
ಶಿಷ್ಯನಾದ ಮಹೇಂದ್ರಸೂರಿ ರಚಿತವಾದ "ಅನೇಕಾರ್ಥಕೇರವಾಕರ-  
ಕೌಮುದಿ" ಎಂಬ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನವೊಂದಿರುವುದು. ಈ ವ್ಯಾಖ್ಯಾ  
ಕಾರನು ವ್ಯಾಖ್ಯಾನವನ್ನು ತನ್ನ ಗುರುವಿನ ಹೆಸರಿನಲ್ಲೇ  
ಮಾಡಿದುದಾಗಿ "ಶ್ರೀಹೇಮಸೂರಿಣಿಷ್ಯಣ ಶ್ರೀಮಹೇಂದ್ರಸೂರಿಣಾ |  
ಭಕ್ತಿನಿಷ್ಠೇನ ಟೀಕೆಯ ತಜ್ಞಾನ್ವಯ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಾ" ಎಂಬ ಶ್ಲೋಕದಲ್ಲಿ  
ಹೇಳಿರುತ್ತಾನೆ. ಈ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕ್ಕೆ ವಿಶ್ವಪ್ರಕಾಶ ಶಾಸ್ತ್ರ  
ರಚನಾ ಅವರಸಿಂಹ ಮುಖ ಹುಗ್ಗಿ ವ್ಯಾಡಿ ಧನಪಾಲ ಭಾಗುರಿ  
ವಾಚಸ್ಪತಿ ಯಾದವ ಮತ್ತು ಧನ್ವಂತರಿ ಇವರ ಗ್ರಂಥ  
ಗಳು ಮತ್ತು ಕೋಶಗಳನ್ನು ಪ್ರಮಾಣವಾಗಿಟ್ಟುಕೊಂಡು  
ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ರಚಿಸಿದುದಾಗಿ ಪ್ರಸ್ತಾವನೆಯ ಶ್ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ  
ತಿಳಿಸಿರುತ್ತಾನೆ.

(3) ನಿಘಂಟುಶೇಷ: — ಹೇಮಚಂದ್ರರಚಿತವಾದ ಈ  
ನಿಘಂಟುಶೇಷವು ಸಸ್ಯವಿಜ್ಞಾನದ ಒಂದು ಕೋಶವಾಗಿರು  
ವುದು. ಇದು ಅಭಿಧಾನಚಿಂತಾಮಣಿಗೆ ಒಂದು ಅನುಬಂಧ  
ರೂಪವಾಗಿರುವುದು. ಇದರಲ್ಲಿ 396 ಶ್ಲೋಕಗಳಿವೆ. ಈ  
ಕೋಶವು ವೃಕ್ಷಕಾಂಡ: ಗುಲ್ಮಕಾಂಡ: ಲತಾಕಾಂಡ: ಶಾಕಕಾಂಡ:  
ತುಣಕಾಂಡ: ಮತ್ತು ಧಾನ್ಯಕಾಂಡ: ಎಂದು ಆರು ಕಾಂಡಗಳಾಗಿ  
ವಿಭಾಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ.

(4) ಬೇಶಿನಾಮಮಾಲಾ — ಈ ಕೋಶವು ದೇಶಭೇದದಿಂದ  
ಉಂಟಾಗುವ ಪ್ರಾಕೃತಭಾಷೆಗಳ ಭೇದವನ್ನು ತತ್ಸಮ ಮತ್ತು  
ತದ್ಭವ ಪದಗಳಿಂದ ತಿಳಿಸುವುದು.

ವಿಷಯಪ್ರಕಾಶ: — ಮಹೇಶ್ವರ: — ವಿಶ್ವಪ್ರಕಾಶಕೋಶವು  
ಮಹೇಶ್ವರಪಂಡಿತ ವಿರಚಿತವಾದುದು. ಇದೊಂದು ನಾನಾರ್ಥ  
ಕೋಶ. ಇದು ಮೇದಿನೀಕೋಶದಂತೆ ಆಕಾರಾದಿ ಕ್ರಮ  
ದಲ್ಲಿ ಪದಗಳನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ರಚಿತವಾಗಿಲ್ಲ. ಈ ನಾನಾರ್ಥ  
ಸಂಗ್ರಹರೂಪವಾದ ಕೋಶವನ್ನು ರಚಿಸಿ ವಿದ್ವಾಂಸರಿಗೆ  
ಅನೇಕ ಪುಸ್ತಕಗಳ ಸಂಗ್ರಹದ ಭಾರವನ್ನು ತಪ್ಪಿಸಿದುದಾಗಿ  
ಕೋಶಕಾರನು ಗ್ರಂಥದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುತ್ತಾನೆ. "ಸತಾಂ ಪುಸ್ತಕ-  
ಸಮ್ಮಾರಭಾರಮೋಕ್ಷ: ಕೃತೌ ಮಯಾ | ನಾಮಾನುಶಾಸನಮಿದಂ ಸಮ್ಪೂರ್ಣಂ  
ತ್ವತ್ವತಾದ್ಭುತಮ್" ವಿಷಯಂ |

ಕರಾರಂತಾದಿ ವರ್ಗಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವ ನಾನಾರ್ಥ  
ಸಂಗ್ರಹರೂಪವಾದ ಈ ಕೋಶವು ಏಕದ್ವಿವಿಚಿತ್ರ:ಪಂಚಪದ್

ವರ್ಣಗಳ ಅನುಕ್ರಮದಿಂದ ರಚಿತವಾಗಿದೆ. "ಏಕದ್ವಿವಿಚಿತ್ರ:-  
ಪಂಚಪದ್ವರ್ಣಾನುಕ್ರಮೋಜ್ಜ್ವಲ: | ಕಾಂತಾದಿವರ್ಣನಿರ್ನಾಸತ್ಯಹೋಷ್ಯ  
ವಿತನ್ಯತೇ" ವಿಷಯಂ | ಯಾವುದೊಂದು ಕ್ರಮವನ್ನೂ ಅನು  
ಸರಿಸದೆ ಪದಗಳನ್ನು ಒಂದರ ಹಿಂದೆ ಒಂದರಂತೆ ಜೋಡಿಸ  
ಲಾಗಿದೆ. ಕೋಶದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಅವ್ಯಯಪದಗಳೂ ಇದೇ  
ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಸಂಗ್ರಹಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. ಪದಗಳ ಲಿಂಗನಿರ್ದೇಶನ  
ಕ್ಕಾಗಿ ಅವಶ್ಯವಾದ ಕೆಲವು ಕಡೆ ಅವುಗಳ ಲಿಂಗಭೇದವನ್ನು  
ತೋರಿಸಲು ಪದಗಳನ್ನು ಪುನರಾವರ್ತನ ಮಾಡಲಾಗಿದೆ.  
"ಸುರತಂ ಸ್ಯಾನ್ನಿಭುವನೇ ದೇವತ್ವೇ ಸುರತಾ ಮತಾ" | ಗರ್ಜಿತೋ ಮತ್ತ-  
ಮಾತಕ್ಷೇ ಗರ್ಜಿತಂ ಜಲದಛವನಿ" | "ತ್ರಿಗತಂ: ಸ್ಯಾಜ್ಜನಪದೇ  
ತ್ರಿಗತಂ ಗಣಿತಾಂತರೇ | ಮವೇದ್ ಧರ್ಮಿಕಾಯಾಂ ತು ತ್ರಿಗತಾ  
ಕಾಮುಕಸ್ತ್ರಿಯಾಮ್" | "ಶೋಭನೋ ಗ್ರಹಯೋಗೇ ಸ್ಯಾತ್ ಶೋಭನಂ ಸುಂದರೇ-  
ನ್ಯವತ್" ಇತ್ಯಾದಿ. "ಸ್ಪಷ್ಟಾಯ ಲಿಙ್ಗಭೇದಸ್ಯ ಕ್ವಾಪ್ಯತ್ರ  
ಪುನರೂಕ್ತತಾ" ವಿಷಯಂ | ಈ ಕೋಶದ ರಚನೆಗೆ ಭೋಗೀಂದ್ರ  
ಕಾತ್ಯಾಯನ ಸಾಹಸಾಂಕ ವಾಚಸ್ಪತಿ ವ್ಯಾಡಿ ವಿಶ್ವರೂಪ  
ಅವರ ಮಂಗಳ ಬೋಪಾಲಿತ ಇವರ ಗ್ರಂಥಗಳಿಂದ  
ಪ್ರಭಾವಿತನಾಗಿ ಇವರನ್ನು ಪ್ರಮಾಣವಾಗಿಟ್ಟುಕೊಂಡು  
ಕೋಶವನ್ನು ರಚಿಸಿದುದಾಗಿ ವಿಶ್ವಪ್ರಕಾಶದ ಪೀಠಿಕಾಪ್ರಕರಣ  
ದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿಕೊಂಡಿರುತ್ತಾನೆ. "ಭೋಗೀಂದ್ರಕಾತ್ಯಾಯನಸಾಹಸಾಂಕ-  
ವಾಚಸ್ಪತಿವ್ಯಾಡಿಪುರ:ಸರಾಣಾಮ್ | ಸವಿಶ್ವರೂಪಾಮರಮಜ್ಜಲಾನಾಂ  
ಶುಮಾಂಜ್ಜಬೋಪಾಲಿತಭಾಗುರೀಣಾಮ್ | ಕೋಶಾವಕಾಶಾತ್ ಪ್ರಕಟಪ್ರಭಾವ-  
ಸಮ್ಮಾವಿತಾಽನರ್ಥಗುಣ: ಸ ಏಷ:" ವಿಷಯಂ |

ವಿಶ್ವಪ್ರಕಾಶಕೋಶಕ್ಕೆ ಅನುಬಂಧವಾಗಿ ಇದೇ ಕೋಶಕಾರ  
ನಿಂದ "ಶಬ್ದಭೇದಪ್ರಕಾಶ:" ಎಂಬ ಒಂದು ಗ್ರಂಥ ರಚಿತ  
ವಾಗಿದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಶಬ್ದಭೇದ: ಬಕಾರಭೇದ: ಋಷಭಭೇದ: ಮತ್ತು  
ಲಿಙ್ಗಭೇದ: ಎಂಬ ನಾಲ್ಕು ಭಾಗಗಳಿವೆ. ಇದಕ್ಕೆ ಜ್ಞಾನವಿಮಲ  
ಗಣಯಿಂದ ಒಂದು ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ರಚಿತವಾಗಿದೆ.

ನಾನಾರ್ಥಶಬ್ದಕೋಶ: — ಮೇದಿನೀಕರ: — ನಾನಾರ್ಥಶಬ್ದ  
ಕೋಶವು ಮೇದಿನೀಕರ ಪಂಡಿತನಿಂದ ವಿರಚಿತವಾಗಿ ಈ ಪಂಡಿ  
ತನ ಹೆಸರಿನಿಂದಲೇ "ಮೇದಿನೀಕೋಶ:" ಎಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ.  
ಅನೇಕ ಪ್ರಾಚೀನಾಚಾರ್ಯರ ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನೂ ಶಬ್ದಶಾಸ್ತ್ರ  
ವನ್ನೂ ಪರಿಶೀಲಿಸಿ ಈ ಕೋಶವನ್ನು ರಚಿಸಿದುದಾಗಿ ಗ್ರಂಥದ  
ಪೀಠಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಕವಿಯು ಹೇಳಿರುತ್ತಾನೆ. "ಪೂರ್ವಾನಿರ್ವಹಿತೀರ್ವೀಕ್ಷ್ಯ  
ಶಬ್ದಶಾಸ್ತ್ರಂ ನಿರೂಪ್ಯ ಚ | ನಾನಾರ್ಥಶಬ್ದಕೋಶೋಽಯಂ ಲಿಙ್ಗಭೇದೇನ  
ಕಲ್ಪಿತಃ" ಮೇದಿಂ | ಈ ಮೇದಿನೀಕೋಶವು ಯಾವುದೊಂದು  
ರೀತಿ ನಿಯಮಗಳಿಲ್ಲದೆ ಕೇವಲ ಶಬ್ದಸಂಗ್ರಹ ಮಾಡಿರುವ  
ವಿಶ್ವಪ್ರಕಾಶಕೋಶದ ಒಂದು ಪರಿಷ್ಕೃತ ಸುಂದರವಾದ  
ರೂಪದಂತಿರುವುದು. ವಿಶ್ವಪ್ರಕಾಶಕೋಶದಲ್ಲಿ ನಾನಾರ್ಥ  
ಶಬ್ದಗಳು ಎಲ್ಲಾ ಪ್ರಥಮಾಂತಗಳಾಗಿವೆ. ಲಿಂಗಭೇದವನ್ನು



ತಿಳಿಸಲು ಪದಗಳ ಪುನರಾವರ್ತನವಾಗಿರುವುದು. "ಸ್ವರಾಶ್ರಯ ಲಿಙ್ಗಭೇದಾಯ ಕವಾಪ್ಯತ್ರ ಪುನರೂತತಾ" ವಿಶ್ವಂ. ಮೇದಿನೀ ಕೋಶದಲ್ಲಿ ಸ್ತ್ರೀ ಪುಮಾನ್ ದ್ವಯೋಃ ಕಲಿವೇ ನಪುಂಸಕೇ ಇತ್ಯಾದಿ ಪದಗಳಿಂದ ಲಿಂಗನಿರ್ದೇಶನ ಮಾಡಲಾಗಿದೆ. "ಕಲಿವೇ ನಪುಂಸಕೇ ಪುंसಿ ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಯೋಷಿತಿ ಚ ದ್ವಯೋಃ. ತ್ರಿಭು ಚೇತ್ಯಾದಿ ಯದ್ವಪ್ ತಲಿಙ್ಗಸ್ಯೇವ ವಾಚಕಮ್. ನಾನಾರ್ಥಃ ಪ್ರಥಮಾಂತೋತ್ರ ಸರ್ವತ್ರಾದೌ ಪ್ರದರ್ಶಿತಃ" ಮೇದಿಂ. ವಿಶ್ವಪ್ರಕಾಶ-ಮೇದಿನೀಕೋಶಗಳೆರಡರಲ್ಲಿಯೂ ಕೇಕಮ್ ಕದ್ವಿಕಮ್ ಕತ್ರಿಕಮ್ ಕಚತುಷ್ಕಮ್ ಮುಂತಾದ ಕ್ರಮವು ಸಮಾನವಾಗಿದೆ. "ಕಾಂತಾದಿವರ್ಗೇನಾನಾರ್ಥಸಂಘ್ರಹೋಪ್ಯ ವಿತನ್ಯತೇ" ವಿಶ್ವಂ. "ಸ್ವರಕಾಡಾದಿಕಾಡಾಂತವರ್ಗೇನಾನಾರ್ಥ-ಸಂಘ್ರಹಃ" ಮೇದಿಂ.

ನಾನಾರ್ಥಗಳ ಅನೇಕ ಕೋಶಗಳ ಸಂಗ್ರಹದ ಭಾರವನ್ನು ತಪ್ಪಿಸಲು ಈ ಕೋಶವನ್ನು ರಚಿಸಿದುದಾಗಿ ಇಬ್ಬರೂ ಕವಿಗಳು ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ. "ಸತಾಂ ಪುಸ್ತಕಸಮ್ಮಾರಭಾರಮೋಕ್ಷಃ ಕೃತೋ ಮಯಾ. ನಾಮಾನುಶಾಸನಮಿದಂ ಸಂಪೂರ್ಣಂ ತನ್ವತಾಽದ್ಭುತಮ್" ವಿಶ್ವಂ. "ನಾನಾರ್ಥಕೋಶಪುಸ್ತಕಮಾರಾಜನದುಃಖಹಾನಯೇ ಕೃತಿನಃ. ಮೇದಿನೀ-ಕರಕೃತಕೋಶೋ ವಿಶುದ್ಧಲಿಙ್ಗೋಽಭಿಲಿಖ್ಯತಾಮೇಕಃ" ಮೇದಿಂ. ಮೇದಿನೀಕರಪಂಡಿತನು उत्पलिनी ಶಬ್ದಾರ್ಣವಃ ಸಂಸಾರಾವರ್ತಃ ನಾಮಮಾಲಾ ಮತ್ತು ಭಾಗುರಿ ವರರಂಜಿ ಶಾಶ್ವತ ಬೋಪಾಲಿತ ಮೊದಲಾದ ಕವಿಗಳ ಕೋಶಗಳನ್ನೂ ಕಾತ್ಯಾಯನ ವಾಮನ ಚಂದ್ರಗೋಮಿ ಮುಂತಾದವರಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಲಿಂಗಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನೂ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪರಿಶೀಲಿಸಿ ಮೇದಿನೀಕೋಶವನ್ನು ರಚಿಸಿದುದಾಗಿಯೂ, 600 ಗಾದೆಗಳ ಕೋಶವೊಂದನ್ನು ರಚಿಸಿರುವುದಾಗಿಯೂ ಮೇದಿನೀಕೋಶದ ಉಪಸಂಹಾರ ಶ್ಲೋಕದಿಂದ ತಿಳಿದುಬರುವುದು. "उत्पलिनीशब्दार्णवसंसारवर्तनाम-मालाख्यान्। भागुरिवररञ्जिशाश्वतबोपालितरन्तिदेवहर-कोशान्। हारावलयमिधानं त्रिकाण्डशेषं च रत्नमालां च। अपि बहुदोषं विश्वप्रकाशकोशं च सुविचार्य। पाणिनिपदानुशासनपुराणकाव्यादिकं च सुनिर्णय। षट्शत-गाथाप्रणयनविख्यातकौशलेनायम्। मೇदಿನೀಕರೇಣ ಕೋಶಃ ಪ್ರಾಣಕರಸುನುನಾ ರಚಿತಃ" ಮೇದಿಂ. ಈ ಕಾರಣದಿಂದ ರಾಯ ಮಂಕುಟನು ಮೇದಿನೀಕರನ ಕಾಲವು 1431 ಎಂದು ಹೇಳಿರುತ್ತಾನೆ. ಇಬ್ಬರೂ ಕವಿಗಳು ವಿಶ್ವಪ್ರಕಾಶ ಮತ್ತು ಮೇದಿನೀ ಕೋಶಗಳಲ್ಲಿ ನಾನಾರ್ಥಶಬ್ದಗಳ ನಿರೂಪಣಾನಂತರ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಅವ್ಯಯಪದಗಳನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಅವ್ಯಯಕೋಶಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುತ್ತಾರೆ.

**ನಾನಾರ್ಥರತ್ನಮಾಲಾ-ಇರಗಪದ್ಧತನಾಥಃ**:-ಇದು ಇರುಗಪದ್ಧತನಾಥಪಂಡಿತನಿಂದ ರಚಿತವಾದುದು. ಈ ಕವಿಯು 14 ನೆಯ ಶತಮಾನದ ಉತ್ತರಾರ್ಧದಲ್ಲಿ ವಿಜಯನಗರದ

ಎರಡನೆಯ ಹರಿಹರರಾಜನ ಆಶ್ರಯದಲ್ಲಿದ್ದನೆಂದು ತಿಳಿದು ಬರುವುದು. ನಾನಾರ್ಥಶಬ್ದಮಾಲೆಯಲ್ಲಿ ನಾನಾರ್ಥಶಬ್ದಗಳು ಸಲಿಂಗ ಮತ್ತು ನಿಲಿಂಗಗಳೆಂದು ಎರಡು ಭಾಗಗಳಾಗಿವೆ. "कथिताःकेऽपि नानार्थशब्दाः तत्रान्तराश्वना। अमी सल्लिङ्गनिलिङ्गभेदात् द्वेषा भवन्ति हि"॥ ಪುಂಲಿಂಗ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗ ನಪುಂಸಕಲಿಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ತ್ರೀಯಾಂ ಪುंसಿ ಪುನಪುंसಕೇ ಸ್ತ್ರೀಪುंसयोಃ ಕಲಿವಪುंसोಃ ಸ್ತ್ರೀನಪುंसकयोಃ ತ್ರಿಭು ಎಂದೂ ಏಳು ವಿಧ ಸಲಿಂಗಶಬ್ದಗಳನ್ನೂ ಆಲಿಂಗ (ನಿಯತಲಿಂಗ) ಶಬ್ದಗಳನ್ನೂ ಏಕಾಕ್ಷರಕಾಂಡ ಮತ್ತು ಕಕಾರಾಂತಾದಿ ದ್ವ್ಯಕ್ಷರ ಕಾಂಡ ತ್ರ್ಯಕ್ಷರಕಾಂಡ ಚತುರಕ್ಷರಕಾಂಡ ಸಂಕೀರ್ಣ ಮತ್ತು ಅವ್ಯಯಕಾಂಡಗಳೆಂಬ ಆರು ಕಾಂಡಗಳಲ್ಲಿ ವಿವರಿಸಿರುತ್ತಾನೆ. "सल्लिङ्गान् सप्तधा कृत्वा स्त्रियां पुंसि नपुंसके। स्त्री-पुंसयोः कलिवपुंसोः स्त्रीनपुंसकयोस्त्रिभु। शब्दान् पुंसः स्त्रियः कलिवान् नानालिङ्गानिलिङ्गकान्। प्रायः कमात् प्रवक्ष्यामि कान्तादीन् द्व्यक्षरादिभु" ನಾನಾರ್ಥಂ. ಲಿಂಗಗಳನ್ನು ರೂಪಭೇದಗಳಿಂದಲೂ ಪದಗಳ ಸಾಹಚರ್ಯದಿಂದಲೂ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಮಾಡಿರುವ ಲಿಂಗನಿರ್ದೇಶನದಿಂದಲೂ ತಿಳಿಯಬೇಕು. ಅಥಾದಿ ಮತ್ತು ತ್ವಂತ ಪದಗಳು ಹಿಂದಿನ ಪದಗಳೊಡನೆ ಸೇರುವುದಿಲ್ಲ. "रूपभेदात् साहचर्यात् कणोक्त्या वा विभावयेत्। लिङ्गान्यथादित्वन्तं वा पदं पूर्वेण नान्वयि" ನಾನಾರ್ಥಂ. ತ್ರಿಭು ಎಂದಿರುವಲ್ಲಿ ಮೂರು ಲಿಂಗಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಎಂದೂ ದ್ವಂದ್ವ ಎಂದಿರುವಲ್ಲಿ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗ ಮತ್ತು ಪುಂಲಿಂಗಗಳೆರಡರಲ್ಲೂ ಎಂದೂ ಬೇರೆ ಲಿಂಗನಿಷೇಧವಿರುವಲ್ಲಿ ಉಳಿದ ಲಿಂಗಗಳಲ್ಲಿಂದೂ ತಿಳಿಯಬೇಕು. "त्रिविविति त्रिभु लिङ्गेषु ज्ञेयं द्वन्द्वे द्वयोरिति। लिङ्गान्तरनिषेधोऽत्र शेषलिङ्गविधायकः" ನಾನಾರ್ಥಂ.

**ಅನೇಕಾರ್ಥಕೋಶಃ-ಮಜ್ಜಕವಿಃ**:- ಅನೇಕಾರ್ಥಕೋಶವು ಮಂಖಕವಿ ರಚಿತವಾದುದು. ಈ ಕೋಶವು ಭಾಗುರಿ ಕಾತ್ಯ ಹಲಾಯುಧ ಹುಗ್ಗ ಅಮರಸಿಂಹ ಶಾಶ್ವತ ಮತ್ತು ಧನ್ವಂತರಿ ಇವರ ಕೋಶಗಳನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪರಿಶೀಲಿಸಿ ರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. "भागुरिकात्यहलायुधहुगामरसिंहशाश्वतादिकृतान्। कोशा-त्रिरीक्ष्य निपुणं धन्वन्तरिनिर्मितं निषण्टं च"। ಈ ಕೋಶವು ಆಕಾರಾದಿವರ್ಣಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಪದಗಳನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ರಚಿತವಾಗಿದೆ. ಈ ಕೋಶಕ್ಕೆ ಮಂಖಕವಿ ಅಥವಾ ಅವನ ಶಿಷ್ಯನೊಬ್ಬನಿಂದ ಮಜ್ಜಕವಿ ಎಂಬ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನವೊಂದು ರಚಿತವಾಗಿದೆಯೆಂದು ಮಹೇಂದ್ರಸೂರಿಯು ಹೇಳುವುದರನ ಅನೇಕಾರ್ಥಸಂಗ್ರಹದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನದಲ್ಲಿ ತಿಳಿಸಿರುತ್ತಾನೆ.



ಮಂಖಕವಿಯು (1129-1149) ಕಾಶ್ಮೀರದ ದೊರೆ  
ಜಯಸಿಂಹನ ಆಶ್ರಯದಲ್ಲಿದ್ದ ಶ್ರೀಕಂಠಚರಿತಗ್ರಂಥಕಾರನ  
ಸಮಕಾಲಿಕನೆಂದೂ ತಿಳಿದುಬರುವುದು.

**ನಾನಾರ್ಥಾರ್ಥವಸಂಕ್ಷೇಪ:-ಕೇಶವಸ್ವಾಮಿ - ಕೇಶವಸ್ವಾಮಿಯ**  
ನಾನಾರ್ಥಾರ್ಥವಸಂಕ್ಷೇಪವು ಒಂದು ಅನೇಕಾರ್ಥಶಬ್ದಗಳ  
ಕೋಶವಾಗಿದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಸುಮಾರು 5800 ಶ್ಲೋಕಗಳಿವೆ.  
ಈ ಕೋಶವು ಅಕ್ಷರಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ ಆರು ಕಾಂಡ  
ಗಳಾಗಿ ವಿಭಾಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಕಾಂಡದಲ್ಲಿಯೂ  
ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗ ಪುಲಿಂಗ ನಪುಂಸಕಲಿಂಗ ವಾಚ್ಯಲಿಂಗ ಮತ್ತು  
ನಾನಾಲಿಂಗಗಳೆಂದು ಐದು ಅಧ್ಯಾಯಗಳಿವೆ. ಈ ಕ್ರಮವನ್ನು  
ನಾವು ವೈಜಯಂತೀಕೋಶದಲ್ಲಿಯೂ ಕಾಣಬಹುದು. ಸಂಸ್ಕೃತ  
ಸಾಹಿತ್ಯಕಾರರು ಕೋಶಕಾರರು ವೈಯಾಕರಣರು ಕವಿಗಳು  
ವೈದಿಕವಿದ್ವಾಂಸರು ಭಂಡಾರಾಸ್ತ್ರಕಾರರು ವೇದಗಳು ಮತ್ತು  
ಸಮಾವರ್ಣಯ ವೊದಲಾದ ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿ  
ಸಿದ ಸುಮಾರು ಮೂವತ್ತು ಮಂದಿ ವಿದ್ವಾಂಸರನ್ನು  
ಪ್ರಮಾಣವನ್ನಾಗಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ತನ್ನ ಗ್ರಂಥದಲ್ಲಿ ಹೆಸರಿಸಿರು  
ವುದು ಈ ಕೋಶದ ಒಂದು ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯ. ಇಲ್ಲಿಯವರೆಗೂ  
ನಮಗೆ ತಿಳಿದುಬಂದಿರುವ ಅನೇಕ ಕೋಶಗಳಲ್ಲಿ ಇದೊಂದು  
ಅತಿಬೃಹತ್ತಾದ ನಾನಾರ್ಥಕೋಶವಾಗಿದೆ.

ಕೇಶವಸ್ವಾಮಿಯು ಕುಲೋತ್ತಂಗಕೋಲರಾಜನ ಪುತ್ರನಾದ ರಾಜರಾಜಕೋಲನ ಆಶ್ರಯದಲ್ಲಿದ್ದನೆಂದು ತಿಳಿದುಬರುವುದು. ಈ ಕವಿಯು 12 ನೆಯ ಮತ್ತು 13 ನೆಯ ಶತಮಾನಗಳಲ್ಲಿದ್ದ ಈ ಇಬ್ಬರು ರಾಜರ ಕಾಲದಲ್ಲಿದ್ದಿರಬಹುದೆಂದು ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ. ರಘುವಂಶದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾರನಾದ ಮಲ್ಲಿನಾಥ ಮತ್ತು ಕುಮಾರಸಂಭವಕಾವ್ಯದ ವ್ಯಾಖ್ಯಾರನಾದ ಅರುಣಾಚಲನಾಥ ಇವರಿಬ್ಬರೂ ತಮ್ಮ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಗಳಲ್ಲಿ ಕೇಶವಸ್ವಾಮಿಯ ಹೆಸರನ್ನು ಎತ್ತಿ ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ.

ಕಲ್ಪದ್ವಕೋಶ:-ಕೇಶವ:-ಕೇಶವಪಂಡಿತವರಚಿತ ಕಲ್ಪದ್ವ  
ಕೋಶವು ಇಲ್ಲಿಯವರೆಗೆ ನಾವು ನೋಡಿರುವ ಕೋಶಗಳೆಲ್ಲಾ  
ಬೃಹತ್ತಮವಾದ ಕೋಶವಾಗಿದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ 4000 ಶ್ಲೋಕ  
ಗಳಿವೆ. ಪರ್ಯಾಯಶಬ್ದಗಳ ಸಂಗ್ರಹವು ಬಹಳ ದೊಡ್ಡ  
ಪ್ರಮಾಣದಲ್ಲಿದೆ. ಭೂಮಿಯ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳು 64.  
ಅಗ್ನಿಯ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳು 114 ಇವೆ. ಈ ಕೋಶವು  
(1) ಭೂಮಿಕಾಂಡ: (2) ಅಗ್ನಿಕಾಂಡ: ಮತ್ತು (3) ಸರ್ವಕಾಂಡ:  
ಎಂದು ಮೂರು ಸ್ತಂಭಗಳಾಗಿ ವಿಭಾಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. ಈ  
ಮೂರು ಸ್ತಂಭಗಳೆಲ್ಲಾ ಅನೇಕ ಪ್ರಕಾಂಡಗಳಿವೆ.

ಭೂಮಿಸ್ತಂಭದಲ್ಲಿ ದೇಶಪ್ರಕಾಂಡ: ಪು:ಪ್ರಕಾಂಡ: ನರಾದಿ-  
ಪ್ರಕಾಂಡ: ಋಷಿಗೌತ್ರಬ್ರಹ್ಮಪ್ರಕಾಂಡ: ಕ್ಷತ್ರಿಯಪ್ರಕಾಂಡ: ಮೊದಲಾದ  
ಹದಿನೆಂಟು (18) ಪ್ರಕಾಂಡಗಳೂ

ಭಿನ್ನಾಸ್ಕಂಧದಲ್ಲಿ ಸಾಧಾರಣಪ್ರಕಾಂಡ: ಮುಖ್ಯದೇವಪ್ರಕಾಂಡ:  
ನರ್ಮುಖ್ಯದೇವಪ್ರಕಾಂಡ: ಕಾಲಪ್ರಕಾಂಡ: ಮತ್ತು ನಾಟಕಪ್ರಕಾಂಡ:  
ಎಂದು ಐದು (5) ಪ್ರಕಾಂಡಗಳಿಲ್ಲ

• ಸ್ವರ್ಗಸ್ತಂಭದಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯಾಧಿಪ್ರಕಾಂಡ: ಬ್ರಹ್ಮಾಪ್ರಕಾಂಡ: ಅವ್ಯಯ-  
ಪ್ರಕಾಂಡ: ಸ್ವರ್ಯಾದಿಲಿಂಗಪ್ರಕಾಂಡ: ಎಂದು ನಾಲ್ಕು (4)  
ಪ್ರಕಾಂಡಗಳೂ ಸೇರಿ ಒಟ್ಟು 27 ಪ್ರಕಾಂಡಗಳು ಇರುವುವು.

ಈ ಕೋಶದಲ್ಲಿ ಶಬ್ದಗಳ ರೂಪಭೇದದಿಂದಲೂ ಸಾಹಚರ್ಯ  
ದಿಂದಲೂ ವಿಶೇಷವಿಧಿಯಿಂದಲೂ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗ ಪುಂಲಿಂಗ  
ನಪುಂಸಕಲಿಂಗಪ್ರಕೃತಿಗಳನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಬೇಕು.  
'रूपोक्त्या साहचर्याद्वा विशेषविधितः क्वचित् । स्त्रीपुं-  
क्लीबप्रकृतयो ज्ञेयास्तत्र स्त्रियां स्त्रियि ॥ स्त्री पुंसि ना  
नरि पुमान् पुं क्लीबे षण् नपुंसकम् । युग्मे द्वयोस्त्रिप्रकृतौ  
त्रिषु शेषार्थवाचकम् ॥ ಎಂದು ಲಿಂಗನಿರ್ದೇಶಕ ಸಂಕೇತ  
ಪದಗಳನ್ನು ಹೇಳಿರುತ್ತಾನೆ.

ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳನ್ನು ಹೇಳುವಾಗ ಸಾಧ್ಯವಾದಷ್ಟು  
ಶಬ್ದಗಳನ್ನು ಕಡಮೆ ಮಾಡಲು ಸಮಸ್ತಪದದಲ್ಲಿರುವ ಪೂರ್ವ  
ಪದದ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳೊಡನೆ ಉತ್ತರಪದದ ಪರ್ಯಾಯ  
ಪದಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಹೇಳಿದರೆ ಅನೇಕ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳು  
ಆಗುವುವು ಎಂದು ಪದಗಳ ಸಂಗ್ರಹವನ್ನು ತೋರಿಸಿಕೊಟ್ಟಿರು  
ತ್ತಾನೆ. ಉದಾ. :- "ಭೂಮಿಪರ್ಯಾಯದೇವಾರ್ಥೋ ಮಾಠರಃ ಕಠಾಡವೋ"  
ಇಲ್ಲಿ ಭೂಮಿ ಪದದ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳಾದ ಭೂ ಭರಾ ಭರಿಶ್ರೀ  
ಖೋಗಿಃ ಕ್ಷಿತಿಃ ಇತ್ಯಾದಿ ಪದಗಳೊಡನೆ ಸೇರಿಸಿ ಹೇಳುವ  
ದೇವ ಪದದ ಅರ್ಥಗಳು ಭೂದೇವಃ ಭೂಸುರಃ ಭರಾದೇವಃ ಇತ್ಯಾದಿ  
ಅನೇಕ ಬ್ರಾಹ್ಮಣವಾಚಕ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳನ್ನು ಕೊಡು  
ವುವು. ಹೀಗೆಯೇ "ವಕ್ಷಃಪರ್ಯಾಯಃ ಕೂಚಿ ಕುಚಾ-  
ವಪಿ" । ವಕ್ಷೋರುಹಃ ವಕ್ಷೋಜಃ ಇತ್ಯಾದಿ ಪದಗಳೂ "ರಾಜಪರ್ಯಾಯಃ  
ಮಾರ್ಗಾರ್ಥಿಃ ಸ ಪುರಸ್ಥೋಪನಿಷ್ಕರಮ್" ಎಂಬಲ್ಲಿ ರಾಜಮಾರ್ಗಃ ನೃಪಮಾರ್ಗಃ  
ಇತ್ಯಾದಿ ಪದಗಳೂ "ಇಂದ್ರಪರ್ಯಾಯಃ ವಾಲೀ ವಾಲಿದ್ವಂದುಮಿದರ್ಪಹಾ"  
ಎಂಬಲ್ಲಿ ಇಂದ್ರಜಃ ಪುರಂದರಜಃ ಪುರುಹೂತಜಃ ಇತ್ಯಾದಿ ಪದಗಳೂ  
"ಸೂರ್ಯಪರ್ಯಾಯಃ ಸುಪ್ರೀವೋ ವಾನರೇಶ್ವರಃ" ಎಂಬಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯಪುತ್ರಃ  
ಸೂರ್ಯಸುನುಃ ರವಿತನಯಃ ರವಿಸುತಃ ಇತ್ಯಾದಿ ಅನೇಕ ಪರ್ಯಾಯ  
ಪದಗಳೂ ಆಗುವುವು. ಕ್ರಮಬದ್ಧವಾದ ಈ ಪದ್ಧತಿಯು  
ಅಲಂಕಾರಿಕರ ಶೀಘ್ರಗತಿಗೆ ಅಡಚಣೆಯುಂಟುಮಾಡುವು  
ದಾದರೂ ಪದಗಳ ಸಂಗ್ರಹಕ್ಕೆ ಬಹಳ ಉಪಯುಕ್ತವಾಗಿದೆ.  
"ಅಪಾರಮ್ನೇಶಪರ್ಯಾಯಪರಿವೃತ್ತಿಪ್ರಸಕ್ತಃ । ಪರ್ಯಾಯಪದಮಾರಮ್ಯ  
ಜೇಯಂ ನಾಮಾತ್ರ ಸರ್ವತಃ ॥ ಸಮಸ್ತಪದಪರ್ಯಾಯಪರಿವರ್ತನಮತ್ರ ತು ।  
ಆಲಂಕಾರಿಕಸಿದ್ಧಾಂತಾಸಹೃತ್ವೇಽಪಿ ವिलोक्यताम् ॥ येषां  
नातिप्रसिद्धानां शब्दानामिह संग्रहः । तेषां महाकविग्रन्थैः  
संवादोज्ज्वलीयताम् " ಎಂದು ಕವಿಯು ಗ್ರಂಥದ ಬೀರಿಕೆ



ಪ್ರಕರಣದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುತ್ತಾನೆ. ಕಾತ್ಯ ವಾಚಸ್ಪತಿ ವ್ಯಾಡಿ ಭಾಗುರಿ ಅಮರಸಿಂಹ ಮಂಗಳ ಸಾಹಸಾಂಕ ಮಹೇಶ ಮತ್ತು ಜಿನ ಇವರ ಕೋಶಗಳನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪರಿಶೀಲಿಸಿ ಪರ್ಯಾಯ ಲೋಚಿಸಿ ಇವುಗಳ ಆಧಾರದಿಂದ ಕಲ್ಪದ್ರುಕೋಶವನ್ನು ರಚಿಸಿದುದಾಗಿ ಕೇಶವಪಂಡಿತನು ಈ ಕೋಶದ ಪೀಠಿಕಾ ಪ್ರಕರಣದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುತ್ತಾನೆ. "ಕಾತ್ಯವಾಚಸ್ಪತಿಯಾಚಿ-  
ಭಾಗ್ಯಮರಮಂಜಲಾಃ । ಸಾಹಸಾಂಕಮಹೇಶಾಃ ವಿರಾಜಂತೆ ಜಿನಾ-  
ಂತಿಮಾಃ । ಸಮಾಲೋಕ್ಯ ಮತಾನ್ಯेषಾಂ ಕಲ್ಪದ್ವಾರವಿಲಾಸದಃ । ಕ್ರಿಯತೆ  
ಕೇಶವೇನಾಯಾಂ ನಾಮಪ್ರಕೃತಿಬೋಧನಃ" ಕಲ್ಪದ್ವಂ ೨-೩ ।

**ತರ್ಜನಿಕೋಶಃ** - ಉಣಾದಿಪ್ರತ್ಯಯಾಂತಪದಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸಲು ಅನೇಕ ಪಂಡಿತರು ಉಣಾದಿಕೋಶಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ಕೋಶಗಳು ಮತ್ತು ಆ ಕೋಶ ಕಾರರ ಹೆಸರುಗಳನ್ನು ಇಲ್ಲಿ ಕೊಡಲಾಗಿದೆ :

(1) **ಲಕ್ಷ್ಮೀನಿವಾಸಾಭಿಧಾನಿಕೋಶಃ** - ಇದು 18 ನೆಯ ಶತಮಾನದಲ್ಲಿ ಶಿವರಾಮನೆಂಬ ಪಂಡಿತನಿಂದ ವಿರಚಿತವಾಗಿದೆ.

(2) **ತರ್ಜನಿಕೋಶಃ** - ಇದು ರಾಮಶರ್ಮ ಪಂಡಿತ ವಿರಚಿತ.

(3) **ತರ್ಜನಿಕೋಶಃ** - ಇದು 15 ನೆಯ ಶತಮಾನದ ಉತ್ತರಾರ್ಧದಲ್ಲಿ ಶುಭಶೈಲಗಣಿಯಿಂದ ವಿರಚಿತವಾಗಿದೆ.

(4) **ಶಬ್ದಾಕ್ಷಿಪತಿ** - ರಾಮಗೋವಿಂದ ವಿರಚಿತ.

(5) **ನಾನಾರ್ಥಶಬ್ದರತ್ನಕೋಶಃ** - ಕಾಲಿದಾಸ ವಿರಚಿತ. ಇದಕ್ಕೆ ನಿಘಂಟುಯೋಗೀಂದ್ರನು ವ್ಯಾಖ್ಯಾನವನ್ನು ರಚಿಸಿರುವನು.

**ಶಬ್ದಕಲ್ಪದ್ವಂ** - ಇದು ರಾಜಾರಾಧಾಕಾಂತದೇವ ವಿರಚಿತ. ಆಧುನಿಕ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ರಚಿಸಿರುವ ಶಬ್ದಕೋಶಗಳಲ್ಲಿ ಇದು ಮೊದಲನೆಯದು. ಇದರಲ್ಲಿ ಶಬ್ದಗಳು ಅಕಾರಾದಿ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಸಂಗ್ರಹಿಸಲಾಗಿದೆ. ಗ್ರಂಥಕಾರನು ಎಲ್ಲಾ ಸಾಹಿತ್ಯ ಗ್ರಂಥಗಳ ಮತ್ತು ಶಾಸ್ತ್ರಗಳ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಬಹಳ ವಿವರವಾಗಿ ಕೊಟ್ಟಿರುತ್ತಾನೆ. ಈ ಕೋಶವು ಸಕಲಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನವನ್ನು ನೀಡುವ ಒಂದು ವಿಶ್ವಕೋಶವಾಗಿರುವುದು. ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಈ ಕೋಶದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಅನೇಕ ಶಬ್ದಗಳಿಗೆ ಪರ್ಯಾಯ ಪದಗಳನ್ನೂ ಮತ್ತು ಅವುಗಳಿಗಿರುವ ನಾನಾರ್ಥಗಳನ್ನೂ ಕೊಡಲಾಗಿದೆ. ಅವಶ್ಯವಾದ ಮತ್ತು ಮುಖ್ಯವಾದ ಪದಗಳಿಗೆ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳ ಆಧಾರವನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಅವನ್ನು ವಿವರಿಸಲಾಗಿದೆ. ಅನೇಕ ಮುಖ್ಯವಾದ ಪದಗಳಿಗೆ ಪುರಾಣೀತಿಹಾಸ ಮತ್ತು ಶಾಸ್ತ್ರಗಳ ಆಧಾರದ ಮೇಲೆ ಪ್ರಾಮಾಣ್ಯವನ್ನು ಕೊಡಲಾಗಿದೆ. ಧಾತು ಮತ್ತು ಪ್ರತ್ಯಯಗಳ ನಿರೂಪಣೆಯೊಡನೆ ಮುಖ್ಯವಾದ ಕೆಲವು ಪದಗಳಿಗೆ ನಿಷ್ಪತ್ತಿಕ್ರಮವನ್ನು ಕೈಗೊಳ್ಳಲಾಗಿದೆ. ಈ ಗ್ರಂಥದಲ್ಲಿ ಲೌಕಿಕಸಂಸ್ಕೃತಶಬ್ದ

ಗಳಿಗೆ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯವೇ ಹೊರತು ವೈದಿಕಶಬ್ದಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಸಾಧ್ಯವಾದಷ್ಟೂ ಶಬ್ದಗಳಿಗೆ ಅನೇಕ ಕಡೆ ಸಾಹಿತ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರ ಪುರಾಣ ಮತ್ತು ಇತಿಹಾಸಗಳಿಂದ ಉದಾಹರಣೆಗಳನ್ನು ಕೊಡಲಾಗಿದೆ. ಇದು ನಾನಾವಿಧದಲ್ಲಿಯೂ ಶಾಸ್ತ್ರ ಮತ್ತು ಸಾಹಿತ್ಯ ಗ್ರಂಥಕರ್ತರಿಗೂ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳಿಗೂ ಬಹಳ ಉಪಯುಕ್ತವಾಗಿರುವುದು.

**ವಾಚಸ್ಪತಿಯಮ್** - ಇದು ತಾರಾನಾಥತರ್ಕವಾಚಸ್ಪತಿವಿರಚಿತವಾದುದು. ಈ ಕೋಶದಲ್ಲಿ ಶಬ್ದಕಲ್ಪದ್ರುಮದಂತೆಯೇ ವಿಷಯನಿರೂಪಣೆಯಿದ್ದರೂ ಅದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಇದರಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಶಬ್ದಗಳನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಲಾಗಿದೆ. ಪದಗಳ ರೂಪನಿಷ್ಪತ್ತಿ ನಾನಾರ್ಥಗಳು ಮತ್ತು ಅವುಗಳ ವಿಷಯನಿರೂಪಣೆ ಶಾಸ್ತ್ರ ಮತ್ತು ಸಾಹಿತ್ಯಗ್ರಂಥಗಳಿಂದ ಉದಾಹರಣೆಗಳು ಶಾಸ್ತ್ರ ಪುರಾಣ ಇತಿಹಾಸಗಳಿಂದ ಪ್ರಾಮಾಣ್ಯಪ್ರದರ್ಶನ ಎಲ್ಲವೂ ಶಬ್ದಕಲ್ಪದ್ರುಮದಂತೆಯೇ ಇರುವುವು. ಇದರಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ವೈದಿಕಪದಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿರುವುದು ಇದರ ಪ್ರಾಶಸ್ತ್ಯಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗಿರುವುದು. ಶಬ್ದಕಲ್ಪದ್ರುಮಕ್ಕಿಂತಲೂ ಶಬ್ದಗಳ ರೂಪನಿಷ್ಪತ್ತಿಯ ಕ್ರಮವು ಇದರಲ್ಲಿ ವಿಶೇಷವಾಗಿದೆ. ಇದೊಂದು ಆಧುನಿಕ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ರಚಿತವಾದ ಬೃಹತ್ತಾದ ಶಬ್ದಕೋಶವಾಗಿದೆ.

**ಶಬ್ದಾರ್ಥಚಿಂತಾಮಣಿಃ** - ಈ ಕೋಶವು ಸುಖಾವಂದನಾಥ ವಿರಚಿತವಾದುದು. ಶಬ್ದಾರ್ಥಚಿಂತಾಮಣಿಯು ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯದಲ್ಲೂ ರಾಧಾಕಾಂತದೇವನ ಶಬ್ದಕಲ್ಪದ್ರುಮ ಮತ್ತು ತಾರಾನಾಥತರ್ಕವಾಚಸ್ಪತಿಯ ವಾಚಸ್ಪತ್ಯವನ್ನು ಹೋಲುವ ಒಂದು ಶಬ್ದಕೋಶ. ಇದು 1864 ರಿಂದ 1885 ರ ಅವಧಿಯಲ್ಲಿ ರಚಿತವಾದುದೆಂದು ತಿಳಿದುಬರುವುದು.

**ಚಂದ್ರಶೇಖರನಿಘಂಟುಃ** - ಚಂದ್ರಶೇಖರನಿಘಂಟುಃ - ವೈದ್ಯ ಮತ್ತು ಸಸ್ಯ ವಿಜ್ಞಾನಗಳ ವಿಷಯವಾಗಿ ಅನೇಕರು ನಿಘಂಟುಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಈ ನಿಘಂಟುಗಳು ಅನೇಕ ವಿಧವಾದ ಗಿಡ ಮೂಲಿಕೆ ಬೇರು ಪ್ರಾಣಿಗಳು ಖನಿಜಗಳು ಮತ್ತು ಮನುಷ್ಯನ ದೇಹಕ್ಕೆ ಹಿತವಾದ ಆಹಾರ ಮತ್ತು ಔಷಧಗಳನ್ನು ಪರ್ಯಾಯಶಬ್ದಗಳಿಂದ ತಿಳಿಸುವುವು. ಈ ನಿಘಂಟುಗಳಲ್ಲಿ ಪರಮಪ್ರಾಚೀನವಾದುದು ಧನ್ವಂತರಿನಿಘಂಟು. ಈ ನಿಘಂಟು ಒಂಬತ್ತು (9) ಅಧ್ಯಾಯಗಳಲ್ಲಿ ರಚಿತವಾಗಿರುವುದು. ನಾಮ ಲಿಂಗಾನುಶಾಸನಕೋಶಕಾರನಾದ ಅಮರಸಿಂಹನು ಧನ್ವಂತರಿ ಮೊದಲಾದವರು ರಚಿಸಿದ ವೈದ್ಯಕೀಯ ಮತ್ತು ಸಸ್ಯವಿಜ್ಞಾನ ಗ್ರಂಥಗಳ ಸಾಹಾಯ್ಯದಿಂದ ತನ್ನ ಕೋಶವನ್ನು ರಚಿಸಿರುವುದಾಗಿ ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ ಧನ್ವಂತರಿಗಿಂತ ಅಮರಸಿಂಹನು ಅರ್ಘ್ಯಾಚೀನನೆಂದು ತಿಳಿದುಬರುವುದು. ಧನ್ವಂತರಿನಿಘಂಟು



ಇತ್ತೀಚಿನ ಎಲ್ಲಾ ನಿಘಂಟುಗಳಿಗೂ ಆಧಾರವಾಗಿದೆ. ಔಷಧೋಪಯುಕ್ತವಾದ ದ್ರವ್ಯಗಳ ಮತ್ತು ಔಷಧಗಳ ಸಂಖ್ಯೆಯು ಅನಂತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ನಾನಾನಿಘಂಟುಗಳ ಆತ್ಮಪಯುಕ್ತ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಈ ನಿಘಂಟನ್ನು ರಚಿಸಿರುವುದಾಗಿ ಹೇಳಲಾಗಿದೆ. “ಅನೇಕದೇಶಾಂತರಭಾಷಿತೇಷು ಸರ್ವೇಷು ಪ್ರಾಕೃತಸಂಸ್ಕೃತೇಷು | ಗುಣೈವಗುಣೈಶ್ಚ ನಾಸ್ತಿ ಸಂಖ್ಯಾ ದ್ವಯಾಭಿಧಾನೇಷು ತಥೌಪಧೌ || ಪ್ರಯೋಜನಂ ಯಸ್ಯ ತು ಯಾವದೇವ ತಾವತ್ಸ ಗೃಹ್ಣಾತಿ ಯಥಾಮ್ಬುಕುಪಾತ್ | ತಥಾ ನಿಘಂಟುವಿಮುನಿಘೇ-  
ರನಂತಾತ್ ಗೃಹ್ಣಾಮ್ಯಹಂ ಕಿಂಚಿದಿಹೈಕದೇಶಮ್” ಧನ್ವಂ ನಿಂ |

ಈ ಮೇಲೆ ಹೇಳಿದ ಕೋಶಗಳಲ್ಲದೆ ಇನ್ನೂ ಅನೇಕ ವಿದ್ವಾಂಸರು ರಚಿಸಿರುವ ನಿಘಂಟುಗಳ ವಿವರವನ್ನು ಸಂಗ್ರಹವಾಗಿ ಈ ಮುಂದೆ ಕೊಡಲಾಗಿದೆ.

**ಶತವರತನಾಕರ:-**ಇದು ಮಹಿಮವಿರಚಿತ. ಈ ಕೋಶದ ನಾನಾರ್ಥಶಬ್ದಗಳ ಭಾಗಕ್ಕೆ ಅನೇಕಾರ್ಥ ಅಥವಾ ನಾನಾರ್ಥ ತಿಲಕ ಎಂಬ ಹೆಸರನ್ನಿಡಲಾಗಿದೆ.

**ಭೂರಪ್ರಯೋಗ:-**ಇದು ಪದ್ಮನಾಭಭಟ್ಟವಿರಚಿತ. ಇದರಲ್ಲಿ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳ ಭಾಗವು ಬಹಳ ಚಿಕ್ಕದಾಗಿಯೂ ನಾನಾರ್ಥಪದಗಳ ಭಾಗವು ವಿಸ್ತರವಾಗಿಯೂ ಇರುವುದು. ಈ ಕೋಶಕಾರನು ಪೃಷ್ಠೋದರಾದಿವೃತ್ತಿಯನ್ನು ಬರೆದಿರುತ್ತಾನೆ.

**ಶಬ್ದಮಾಲಾ -**ಇದು ರಾಮೇಶ್ವರಶರ್ಮವಿರಚಿತ. ಈ ಕೋಶವು ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲೂ ಭೂರಿ ಪ್ರಯೋಗಕೋಶವನ್ನೇ ಹೋಲುವುದು.

**ಅಭಿಧಾನತತ್ತ್ವಮ್ :-**ಜಟಾಧರಕವಿವಿರಚಿತವಾದ ಈ ಕೋಶವು ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳ ಮತ್ತು ನಾನಾರ್ಥಪದಗಳ ಒಂದು ನಿಘಂಟು. ಇದರ ಹೆಚ್ಚು ಭಾಗವು ಅಮರಸಿಂಹನ ನಾಮಲಿಂಗಾನುಶಾಸನದ ಶ್ಲೋಕಗಳಿಂದಲೇ ರಚಿತವಾಗಿದೆ.

**ಅನೇಕಾರ್ಥ: ಅಥವಾ ನಾನಾರ್ಥವಿನಿಮಜ್ಜರೀ -**ಇದು ಗದಸಿಂಹವಿರಚಿತವಾದುದು. ಸುಮಾರು 88 ಶ್ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ರಚಿತವಾದ ಇದು ಒಂದು ನಾನಾರ್ಥಶಬ್ದಗಳ ಕೋಶ. ಈ ಕೋಶಕಾರನು ರುದ್ರ ಗಂಗಾಧರ ಧರಣಿ ಮತ್ತು ರತ್ನ ಕೋಶ ಈ ಎಲ್ಲಾ ಹೆಸರುಗಳನ್ನೂ ತನ್ನ ಕೋಶದಲ್ಲಿ ನಮೂದಿಸಿರುತ್ತಾನೆ. ಇದೇ ಹೆಸರಿನ ಇನ್ನೊಂದು ಕೋಶವು ಕಾಶ್ಮೀರದ ಮಹಾಕ್ಷಪಣಕನ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿರುವುದು. ಇದು ಶ್ಲೋಕಾಧಿಕಾರ ಅರ್ಥಶ್ಲೋಕಾಧಿಕಾರ ಮತ್ತು ಪಾದಶ್ಲೋಕಾಧಿಕಾರ ಎಂಬ ಮೂರು ಭಾಗಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದೆ. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ಭಾಗವು ಗದಸಿಂಹನ ಕೃತಿಯ ಅನೇಕ ಶ್ಲೋಕಗಳನ್ನೊಳಗೊಂಡಿರುವುದು.

**ಏಕಾಕ್ಷರಕೋಶಗಳು -** ಏಕಾಕ್ಷರಕೋಶಗಳು ಆಕಾಶಾದಿ ಒಂದೇ ಅಕ್ಷರದ ಶಬ್ದಗಳ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಕೊಡುವುವು. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯವಾದ ಕೆಲವು ಕೋಶಗಳನ್ನು ಈ ಮುಂದೆ ವಿವರಿಸಲಾಗಿದೆ.

**ಏಕಾಕ್ಷರಕೋಶ:-**ಪುರುಷೋತ್ತಮದೇವ:- ಈ ಕೋಶವು ಪುರುಷೋತ್ತಮದೇವವಿರಚಿತ. ಇದರಲ್ಲಿ ಏಕಾಕ್ಷರಪದಗಳ ಪರ್ಯಾಯ ಮತ್ತು ಅನೇಕಾರ್ಥಗಳು ವಿವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. “ಅಕಾರೋ ವಾಸುದೇವ: ಸ್ಯಾತ್ ಆಕಾರಸ್ತು ಪಿತಾಮಹ: | ಪೂಜಾಯಾಮಪಿ ಮಾಜ್ಞಲ್ಯೇ ಆಕಾರ: ಪರಿಕೀರ್ತಿತ: || ಇಂಕಾರ: ಕಥ್ಯತೇ ಕಾಮೋ ಲಕ್ಷ್ಮೀರೀಕಾರ ಉಚ್ಯತೇ | ಉಕಾರ: ಶಕ್ತುರ: ಪ್ರೋಕ್ತ: ಉಕಾರಶ್ಚಾಪಿ ಲಕ್ಷಣಂ | ರಕ್ಷಣಂ ಚಾಪಿ ಉಕಾರ: ಉಕಾರೋ ಬ್ರಹ್ಮಣಿ ಸ್ಮೃತ:” ಇತ್ಯಾದಿ. ಈ ಕೋಶವೂ ವರರುಚಿಯ ಏಕಾಕ್ಷರಾಭಿಧಾನ ಕೋಶವೂ ಅನೇಕ ವಿಷಯಗಳಲ್ಲಿ ಸಮಾನವಾಗಿವೆ.

**ಏಕಾಕ್ಷರನಾಮಮಾಲಾ -**ಸುಧಾಕಲಶ:- ಈ ಕವಿಯು 14ನೆಯ ಶತಮಾನದ ಪೂರ್ವಾರ್ಧದಲ್ಲಿ ಈ ಕೋಶವನ್ನು ರಚಿಸಿದನು.

**ಏಕಾಕ್ಷರರತ್ನಮಾಲಾ-**ಮಾಧವ:- ಈ ಕೋಶವು ಮಾಧವ ಪಂಡಿತವಿರಚಿತ. ಈ ಮಾಧವಪಂಡಿತನು ಹರಿಹರದ ದೊರೆಯ ಮಂತ್ರಿಯಾಗಿದ್ದ ಮಾಯಣನ ಪುತ್ರ. ಈ ಕೋಶದಲ್ಲಿ ಸ್ವರಕಾಂಡ: ವ್ಯಂಜನಕಾಂಡ: ಮತ್ತು ಸಂಯುಕ್ತಕಾಂಡ: ಎಂಬ ಮೂರು ಕಾಂಡಗಳಿವೆ.

**ಅನೇಕಾರ್ಥಸಾರ:-**ವರಣಿವಾಸ:- ಧರಣಿದಾಸಕೃತವಾದ ಅನೇಕಾರ್ಥಸಾರವೆಂಬ ಈ ಕೋಶವು ಧರಣಿ ಅಥವಾ ಧರಣಿ ಕೋಶ ಎಂದು ವ್ಯವಹರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಗಳಲ್ಲಿ ಇತಿ ವರಣಿ: ಎಂದು ಕವಿಯು ಹೆಸರಿನಿಂದಲೇ ಈ ಕೋಶವನ್ನು ನಿರ್ದೇಶಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಅಜಯಕೋಶದಂತೆ “ಞ” ವರ್ಣವನ್ನು ಪತ್ಯೇಕವರ್ಣವೆಂದೇ ಪರಿಗಣಿಸಲಾಗಿದೆ. ಸರ್ವಾನಂದನು ಈ ಕವಿಯನ್ನು ಅನೇಕ ಸಲ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಕವಿಯು 12 ನೇ ಶತಮಾನಕ್ಕಿಂತಲೂ ಪೂರ್ವದಲ್ಲೇ ಇದ್ದಿರಬಹುದೆಂದು ತಿಳಿಯಲು ಸಾಧ್ಯ.

**ನಿಗಮಾಭಿಧಾನಮ್ -**ಈ ಕೋಶದಲ್ಲಿ ಅಮರಕೋಶದಂತೆಯೇ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳೂ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ನಾನಾರ್ಥಪದಗಳೂ ಇರುವುವು.

**ಬೋಪಾಲಿತ:-**ಬೋಪಾಲಿತನ ಹೆಸರಿನಲ್ಲೇ ಈ ಕೋಶವು ರಚಿತವಾಗಿದೆ. ಈ ಕವಿಯು ಹಲಾಯುಧ ಮಹೇಶ್ವರ ಮೇದಿನೀಕರ ಮತ್ತು ಅನೇಕ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕಾರರಿಂದ ಪ್ರಮಾಣವಾಗಿ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವನು. ಈತನ ಕೋಶವು ಲಿಂಗ ನಿರ್ದೇಶನಪೂರ್ವಕವಾಗಿಯೇ ರಚಿತವಾಗಿರುವುದು. “ಬಕೀಕ:



ಪಟಲಪ್ರಾಂತೆ" ಎಂದು ಪುಂಸ್ಕಾಂಡದಲ್ಲಿಯೂ "ಗರ್ವತೃಣಿ ನರೌ  
ಛದೇ" ಎಂದು ಕ್ಲೇಬಕಾಂಡದಲ್ಲಿಯೂ ಲಿಂಗನಿರ್ದೇಶನಗಳು  
ಇರುವುವು. ಇದರ ಕೆಲವು ಭಾಗಗಳು ಆರ್ಯಾವೃತ್ತದಲ್ಲಿ  
ರಚಿತವಾಗಿದೆ.

**ನಾನಾರ್ಥಸಂಘ್ರಹಃ - ಅಜಯಪಾಲಃ -** ನಾನಾರ್ಥಸಂಗ್ರಹ  
ವನ್ನು ರಚಿಸಿದ ಅಜಯಪಾಲನು ಒಬ್ಬ ಬೌದ್ಧಕವಿ. ಸರ್ವಾ  
ನಂದ ಕೇಶವಸ್ವಾಮಿ ಮತ್ತು ಇನ್ನೂ ಅನೇಕರು ಈ ಕವಿಯನ್ನು  
ಗಣರತ್ನಮಹೋದಧಿಯಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಿರುವರು. ಈ ಕೋಶ  
ದಲ್ಲಿ 1730 ಪದಗಳಿವೆ. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಅನೇಕಪದಗಳು  
ಶಾಶ್ವತಕೋಶದಲ್ಲಿ ಕಂಡುಬರುವುವು. ಇದಂ ಅಧ್ಯಾಯಗಳಾಗಿ  
ವಿಂಗಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟು ಪೂರ್ಣಶ್ಲೋಕಗಳಿಂದಲೂ ಅರ್ಧಶ್ಲೋಕ  
ಗಳಿಂದಲೂ ಅರ್ಥವು ವಿವರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. ಅವ್ಯಯಪದಗಳು  
ಇತರ ಕೋಶಗಳಂತೆ ಗ್ರಂಥದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿರದೆ ಅಧ್ಯಾಯಗಳ  
ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. ಇದರಲ್ಲಿಯೂ "ಕ" ವು  
ಪ್ರತ್ಯೇಕವರ್ಣವೆಂದೇ ಪರಿಗಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ.

**ಏಕವರ್ಣಾರ್ಥಸಂಘ್ರಹಃ - ಭರತಸೇನಃ -** ಏಕವರ್ಣಾರ್ಥ  
ಸಂಗ್ರಹ ಕೋಶವು ಭರತಸೇನಪಂಡಿತವಿರಚಿತವಾದುದು. ಈ  
ಪಂಡಿತನು 16ನೆಯ ಶತಮಾನದಲ್ಲಿ ಈ ಕೋಶವನ್ನು ರಚಿಸಿದ  
ದಾಗಿ ತಿಳಿದುಬರುವುದು.

**ಅವ್ಯಯಕೋಶಃ - ಮಹಾದೇವಭಟ್ಟನ** ಅವ್ಯಯಕೋಶ  
ಮತ್ತು ಜಯದೇವಭಟ್ಟಾರಕನ ಅವ್ಯಯಾರ್ಣವ ಇವು ಈ  
ಶ್ರೇಣಿಗೆ ಸೇರಿದುವು. ಅವ್ಯಯಾರ್ಣವ ಕೋಶವು ಮೂರು  
ತರಂಗಗಳಲ್ಲಿ ರಚಿತವಾಗಿದೆ.

**ದ್ವಿರೂಪಕೋಶಃ - ಪುರುಷೋತ್ತಮದೇವನ** ದ್ವಿರೂಪ  
ಕೋಶವು ಶಬ್ದಗಳ ಎರಡೆರಡು ರೂಪಗಳನ್ನು ತೋರಿಸು  
ವುದು. ಹ್ರಸ್ವ ದೀರ್ಘ ಮತ್ತು ಅಕ್ಷರಗಳ ಭೇದಗಳಿಂದ  
ಈ ರೂಪಗಳಾಗುವುವು. ಇದಕ್ಕೆ "ಶಬ್ದಭೇದಪ್ರಕಾಶಃ" ಎಂದೂ  
ಹೆಸರು. "ಅಠಕುಟಶ್ಚಾಠಕುಟೋಽಪ್ಯವಸ್ಯೋಽವ್ಯಯಃ ಏವ ಚ | ಪ್ರತಿ-  
ಶ್ವಯಃ | ಪ್ರತಿಶ್ವಯಾಯಿ ಮಲ್ಲಕೋ ಮಲ್ಲಕೋಽಪಿ ಚ || ಜ್ಯೋತಿಷಂ  
ಜ್ಯೋತಿಷಂ ಚಾಪಿ ಷೇವನಂ ಷೇವನಂ ತಥಾ | ಸೂತ್ರಾಮಾಪಿ ಚ ಸೂತ್ರಾಮಾ  
ಹನುಮಾನ ಹನುಮಾನಪಿ || ಬನ್ಧುರಂ ಬನ್ಧುರಂ ಚ ಸ್ಯಾದ್ವಿರೂಪತಮುರಿ-  
ಕೃತಮ್ | ಬಾಹ್ಲಿಕಂ ಬಾಹ್ಲಿಕಂ ಚಾಪಿ ಗಾಣ್ಡೀವಂ ಗಾಣ್ಡೀವಂ ತಥಾ "

ಇತ್ಯಾದಿ.

**ದ್ವಿರೂಪಕೋಶಃ - ಶ್ರೀಹರ್ಷಃ -** ಈ ದ್ವಿರೂಪಕೋಶವು ನೈಷ  
ಧೀಯ ಚರಿತಕಾರನಾದ ಶ್ರೀಹರ್ಷಕವಿ ವಿರಚಿತವಾದುದು.

**ಋಷಿವಿವೇಕಃ - ಗರ್ವಸಿಂಹಃ -** ಗದಸಿಂಹವಿರಚಿತ ಈ ಊಷಃ  
ವಿವೇಕವು ಊಷ್ಮ (ಶಬ್ದಸಹ) ವರ್ಣಗಳ ಪದಗಳ ವಿಷಯ  
ದಲ್ಲಿ 112 ಶ್ಲೋಕಗಳಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಒಂದು ಕೋಶ.

**ಶ್ರೀಶಬ್ದರತ್ನಾಕರಃ - ಸಾಧುಸುಂದರಗಣಿಃ -** ಇದು 1000  
ಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚು ಶ್ಲೋಕಗಳಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಒಂದು ಕೋಶ.  
ಈ ಕೋಶದಲ್ಲಿ ಹೇಮಚಂದ್ರನ ಅಭಿಧಾನಚಿಂತಾಮಣಿ  
ಯಂತೆಯೇ ಕ್ರಮ ಮತ್ತು ವಿಭಾಗಗಳು ಇರುವುವು.

**ನಾನಾರ್ಥಪದಪೇಟಿಕಾ - ಶಬ್ದಲಿಂಗಾರ್ಥಚಂದ್ರಿಕಾ - ಸುಜನಃ -**  
ಈ ಎರಡು ಕೋಶಗಳೂ ಸಂಜನಪಂಡಿತನಿಂದ ರಚಿತವಾದುವು.  
ಇವು ನಾನಾರ್ಥಶಬ್ದಗಳ ಕೋಶ. ಶಬ್ದಲಿಂಗಾರ್ಥಚಂದ್ರಿಕೆಯು  
ಏಕಲಿಂಗಕಾಂಡಃ ದ್ವಿಲಿಂಗಕಾಂಡಃ ಮತ್ತು ತ್ರಿಲಿಂಗಕಾಂಡಃ  
ಎಂದು ಮೂರು ಕಾಂಡಗಳಾಗಿ ವಿಭಾಗಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ.

**ವಿವರಮೇದಿನಿ - ಸಾರಸ್ವತಮಿಶ್ರಃ -** ವಿಶ್ವಮೇದಿನೀಕೋಶವು  
ಸಾರಸ್ವತಮಿಶ್ರವಿರಚಿತ. ಇದರಲ್ಲಿ ನಾನಾರ್ಥಕಾಂಡಃ ಪರ್ಯಾಯಕಾಂಡಃ  
ಮತ್ತು ಅವ್ಯಯಕಾಂಡಃ ಎಂದು ಮೂರು ಕಾಂಡಗಳಿವೆ. ಈ  
ಕವಿಯು ಇದರಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಇನ್ನೊಂದು ಕೃತಿಯಾದ ಹೇಮ  
ಮೇದಿನೀಕೋಶವನ್ನು ಎತ್ತಿ ಹೇಳಿರುತ್ತಾನೆ.

ಇವಲ್ಲದೆ ಇನ್ನೂ ಅಸಂಖ್ಯಾತ ನಿಘಂಟುಗಳು ಹಲವಾರು  
ಕವಿಗಳಿಂದ ರಚಿತವಾಗಿವೆ. ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ಈ ಕೆಳಗೆ  
ಕೊಡಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ :

ಕವಿದರ್ಪಣನಿಘಂಟುಃ ಏಕಾಕ್ಷರಾಭಿವಾಹನಮ್ ಧನಂಜಯನಾಮಮಾಲಾ  
ಕವಿಜೀವನಕೋಶಃ ಜ್ಯೋತಿಷನಿಘಂಟುಃ ತದ್ವಿತಕೋಶಃ ಅಭಿವಾಹನ-  
ಸಮುಚ್ಚಯಃ ತನ್ತ್ರಕೋಶಃ ದಾಮೋದರಕೋಶಃ ದ್ರವ್ಯಗುಣಾದರ್ಶನಿಘಂಟುಃ  
ಗಣಿತನಾಮಮಾಲಾ ಕವಿಸಂಜೀವನಿಕೋಶಃ ದೇಶೀಯರಾಜಶೇಖರಕೋಶಃ  
ಗುಣವಿಜ್ಞಾನನಿಘಂಟುಃ ವರ್ಣಮೇವಃ ಶಬ್ದಾಂವಿಃ ಸಂಹಾರತನ್ತ್ರಕೋಶಃ  
ಸಂಜೀವನಿಕೋಶಃ ಶ್ರೋತವಾದಾರ್ಥನಿರ್ವಚನಮ್ ಶಬ್ದಶಬ್ದಾರ್ಥಮಂಜುಷಾ  
ಶಬ್ದಸಂಗ್ರಹನಿಘಂಟುಃ ಉಕ್ತಿರತ್ನಾಕರಃ ಇತ್ಯಾದಿ ಇನ್ನೂ ಅಸಂಖ್ಯ  
ಕೋಶಗಳು ರಚಿತವಾಗಿವೆ. ಗ್ರಂಥವಿಸ್ತರಭಯದಿಂದ ಕೋಶ  
ಗಳ ವಿವರಗಳ ಉಪಸಂಹಾರ ಮಾಡಲಾಗಿದೆ.







परिशिष्टम् ३

ಪರಿಶಿಷ್ಟ ೩

APPENDIX III

ಅಡಳಿತಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಪದಗಳು :

ಇಂಗ್ಲಿಷ್—ಸಂಸ್ಕೃತ—ಕನ್ನಡ

Administrative Words :

English—Sanskrita—Kannada







### APPENDIX III

ಆಡಳಿತಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಇಂಗ್ಲಿಷ್ ಪದಗಳಿಗೆ ಸಂಸ್ಕೃತ ಮತ್ತು ಕನ್ನಡಗಳಲ್ಲಿ ಅರ್ಥ ಬರೆಯಲು ಆಯಾ ಅರ್ಥಗಳು ಬರುವ ಯೌಗಿಕ ಮತ್ತು ರೂಢವಾದ ಕೆಲವು ಸಂಸ್ಕೃತದ ಪದಗಳನ್ನು ಕೊಡ ಬೇಕಾಗುವುದು ಅನಿವಾರ್ಯ. ಹಾಗೆಯೇ ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಅರ್ಥ ಬರೆಯುವಾಗ ಅನೇಕ ಪದಗಳಿಗೆ ಸಂಸ್ಕೃತ ಪದಗಳನ್ನೂ ಮಹಮ್ಮದೀಯರ ಆಳ್ವಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಬಳಕೆಯಲ್ಲಿದ್ದ ಹಲವಾರು ಉರ್ದು ಪದಗಳನ್ನೂ ಉಪಯೋಗಿಸುವುದೂ ಅನಿವಾರ್ಯವಾಗುವುದು.







## APPENDIX III

**ಆಡಳಿತಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಪದಗಳು ಮತ್ತು ಅವುಗಳ ಸಮಾನಾರ್ಥಕ  
ಸಂಸ್ಕೃತ-ಕನ್ನಡ ಪದಗಳು**

**ADMINISTRATIVE WORDS WITH THEIR EQUIVALENTS IN  
SAMSKRITA AND KANNADA LANGUAGES**

### A

| <i>English</i>       | <i>Sanskrita</i>   | <i>Kannada</i>                                   |
|----------------------|--------------------|--|
| Abatement            | उपशमनम्            | ತಗ್ಗಿಸುವುದು, ಕಡಮೆ ಮಾಡುವುದು.                      |
| Abbreviation         | संक्षेपणम्         | ಚಿಕ್ಕದಾಗಿ ಮಾಡುವುದು, ಸಂಕ್ಷೇಪ<br>ಮಾಡುವುದು.         |
| Abdication           | परित्यागः          | ಹಕ್ಕನ್ನು ತೊರೆದುಬಿಡುವುದು.                         |
| Abeyance             | स्थगनम्            | ತಡೆಗಟ್ಟುವುದು, ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಗೆ ತರದೆ<br>ತಡೆಗಟ್ಟುವುದು. |
| Abiding              | दृढविश्वासः        | ಅಚಲವಾದ ನಂಬಿಕೆ.                                   |
| Ability              | सामर्थ्यम्, बक्षता | ಸಮರ್ಥನಾಗಿರುವಿಕೆ, ಬುದ್ಧಿಶಕ್ತಿಯಿಂದ<br>ಕೂಡಿರುವಿಕೆ.  |
| Abkari               | मादकवस्तुनिर्माणम् | ಮದ್ಯ ಸಾರಾಯಿ ಮೊದಲಾದವುಗಳ ತಯಾರಿಕೆ                   |
| Able                 | समर्थः, दक्षः      | ಬುದ್ಧಿಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿದವನು.                        |
| Abode                | गृहम्, वसतिः       | ಮನೆ, ವಾಸಸ್ಥಳ.                                    |
| Abolisher            | उच्छेदकः, उत्सादकः | ರದ್ದುಪಡಿಸುವವನು.                                  |
| Abolishment          | उत्सादनम्          | ರದ್ದುಮಾಡುವುದು, ವಜಾಮಾಡುವುದು.                      |
| Abolition            | "                  |  |
| Abolition of post    | स्थानोच्छेदनम्     | ಸ್ಥಾನವನ್ನು ರದ್ದುಪಡಿಸುವುದು.                       |
| Abolition of slavery | दास्यनिर्मूलनम्    | ಜೀತದ ಪದ್ಧತಿಯನ್ನು ತೊಡೆದುಹಾಕುವುದು.                 |
| Aboriginal tribes    | मूलनिवासिनः        | ಮೊದಲೇ ಅಲ್ಲಿ ವಾಸಮಾಡುತ್ತಿದ್ದವರು,<br>ಆದಿವಾಸಿಗಳು.    |
| Abortion             | गर्भत्यागः         | ಬಸುರನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವುದು.                           |
| Abortive             | अकालप्रसूतः        | ಕಾಲಕ್ಕೆ ಮುಂಚೆ ಹುಟ್ಟಿದ.                           |
| Abortive medicine    | गर्भत्यागकौषधम्    | ಗರ್ಭವನ್ನು ನಾಶಪಡಿಸುವ ಔಷಧ.                         |
| Abortive trial       | निष्फलः प्रयत्नः   | ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲದ ಪ್ರಯತ್ನ, ವ್ಯರ್ಥವಾದ<br>ಪ್ರಯತ್ನ.     |
| Abortus              | अकालप्रसूतः शिशुः  | ಪ್ರಸವಕಾಲ ತುಂಬುವ ಮುಂಚೆ ಹುಟ್ಟಿದ<br>ಮಗು.            |



|                            |   |   |
|----------------------------|---|---|
| Above                      | उपरि                                    | ಮೇಲೆ, ಮೇಲುಗಡೆ.  |
| Above cited                | उपरि उद्धृतम्                           | ಮೇಲುಗಡೆ ಎತ್ತಿ ತೋರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.                                |
| Above mentioned            | उपरि निर्दिष्टः                         | ಮೇಲುಗಡೆ ಸೂಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ಮೇಲೆ ತಿಳಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.                    |
| Above said                 | उपर्युक्तः, पूर्वोक्तः                  | ಮೇಲೆ ಹೇಳಲ್ಪಟ್ಟ.   |
| Abridgement                | संक्षेपः, संग्रहः                       | ಸಂಗ್ರಹ, ಸಾರಾಂಶ, ಗೋಷ್ವಾರೆ.                                 |
| Abrogated                  | निराकृतः                                | ತಳ್ಳಿಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ.   |
| Abrogation                 | निराकरणम्                               | ನಿರಾಕರಿಸುವುದು, ತಳ್ಳಿಹಾಕುವುದು.                             |
| Abrogator                  | निराकर्ता                               | ತಳ್ಳಿಹಾಕುವವನು, ವಜಾ ಮಾಡುವವನು.                              |
| Absconded                  | पलायितः                                 | ಪರಾರಿಯಾದವನು, ತಲೆ ಮರೆಸಿಕೊಂಡವನು.                            |
| Absconder                  | पलायनकर्ता                              | ಪರಾರಿಯಾಗುವವನು, ತಲೆಮರೆಸಿಕೊಂಡು ಓಡಿಹೋಗುವವನು.                 |
| Absconding offender        | पलायितः अपराधी                          | ತಲೆಮರೆಸಿಕೊಂಡ ಅಪರಾಧಿ.                                      |
| Absence                    | अनुपस्थितिः                             | ಗೈರುಹಾಜರಿ.  |
| Absence without permission | अनुमति विना अनुपस्थितिः                 | ಅನುಮತಿಯಿಲ್ಲದೆ ಗೈರುಹಾಜರಿ.                                  |
| Absent                     | अनुपस्थितः                              | ಗೈರುಹಾಜರಾದವನು, ಬಾರದೆ ಇರುವವನು.                             |
| Absent minded              | अन्यमनस्कः                              | ಬೇರೆ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಮನಸ್ಸುಳ್ಳವನು.                              |
| Absentee                   | अनुपस्थितः                              | ಹಾಜರಾಗಿಲ್ಲದವನು, ಬಾರದೆ ಇರುವವನು.                            |
| Absentee-statement         | अनुपस्थितानां विवरणपत्रम्               | ಗೈರುಹಾಜರಾದವರ ವಿವರಣ ಪಟ್ಟಿ.                                 |
| Absent on tour             | प्रवासनिमित्तमनुपस्थितः                 | ಪ್ರವಾಸನಿಮಿತ್ತ, ಗೈರುಹಾಜರಾದವನು, ಪ್ರವಾಸ ನಿಮಿತ್ತ ಬಾರದಿರುವವನು. |
| Absent voter               | अनुपस्थितवरिता (मतदाता)                 | ಹಾಜರಾಗದಿರುವ ಮತದಾರ.  |
| Absent voting              | अनुपस्थितस्य मतदानम्                    | ಹಾಜರಾಗದವನ ಮತದಾನ.  |
| Absolute                   | निरपेक्षः, संपूर्णः, श्रेष्ठः           | ಶುದ್ಧವಾದ, ಅಪ್ಪಟವಾದ, ಸಮಗ್ರವಾದ, ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ.                 |
| Absolute authority         | (१) पूर्णाधिकारः<br>(२) वरिष्ठाधिकारी   | (1) ಸ್ವತಂತ್ರವಾದ ಅಧಿಕಾರ.<br>(2) ಸ್ವತಂತ್ರಾಧಿಕಾರವುಳ್ಳವನು.    |
| Absolute acceptance        | सम्पूर्णाङ्गीकारः,<br>सम्पूर्णानुमोदनम् | ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಂಪೂರ್ಣ ಸಮ್ಮತಿ.                       |
| Absolute assignment        | सम्पूर्णाधिकारप्रापणम्                  | ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಅಧಿಕಾರವನ್ನು ವಹಿಸಿಕೊಡುವುದು.                    |
| Absolute conviction        | दृढविश्वासः                             | ದೃಢವಾದ ನಂಬಿಕೆ.  |
| Absolute discretion        | सम्पूर्णविवेचनम्                        | ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ವಿವೇಚನೆ ಮಾಡುವುದು.                               |
| Absolute law               | सम्पूर्णनियमः,<br>निरङ्कुशनियमः         | ಪಕ್ಕಾ ನಿಯಮ, ಪಕ್ಕಾ ಕಾನೂನು.                                 |



| English                 | Sanskrit   | Kannada  |
|-------------------------|--|--|
| Absolute monarch        | स्वतन्त्रः प्रभुः, निरङ्कुशः<br>प्रभुः               | ಸಂಪೂರ್ಣಾಧಿಕಾರವುಳ್ಳ ಸ್ವತಂತ್ರನಾದ ದೊರೆ.                                 |
| Absolute monopoly       | एकैकस्वाम्यम्  | ಒಬ್ಬನ ಸಂಪೂರ್ಣ ಯಾಜಮಾನ್ಯ.  |
| Absolute owner          | स्वामी, यजमानः                                       | ಸಂಪೂರ್ಣ ಯಾಜಮಾನ್ಯವುಳ್ಳ ಮಾಲೀಕ.   |
| Absolute property       | अनुपद्रुतं स्वम्                                     | ಅಬಾಧಿತ ಸ್ವತ್ತು.  |
| Absolute right          | सम्पूर्णधिकारः                                       | ಸಂಪೂರ್ಣವಾದ ಹಕ್ಕು, ತಕರಾರಿಲ್ಲದ ಹಕ್ಕು.                                  |
| Absolution              | विमुक्तिः, कैवल्यम्                                  | ಮೋಕ್ಷ, ಬಿಡುಗಡೆ.  |
| Absolve                 | बोधाद्विमुक्तिः                                      | ದೋಷದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ.   |
| Absolver                | विमोचकः, विमोक्ता                                    | ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡುವವನು.  |
| Absorbed                | (१) चूषितः<br>(२) लीनः                               | (1) ಹೀರಲ್ಪಟ್ಟ.<br>(2) ಲೀನವಾದ, ಐಕ್ಯವಾಗಿರುವ.                           |
| Abstract                | संक्षेपः, संग्रहः, सारः                              | ಸಂಗ್ರಹ, ಗೋಷ್ಠಾರ.   |
| Abstract bill           | संक्षिप्तविक्रयपत्रम्                                | ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತ ಬೆಲೆ ಪಟ್ಟಿ.  |
| Abstract budget         | संक्षिप्तमायव्ययपत्रम्                               | ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತ ಆಯ ಮತ್ತು ವೆಚ್ಚದ ಮುಂಗಡ ಪತ್ರ.                                |
| Abuse                   | दुर्व्यवहारः, दुरुपयोगः                              | ತಪ್ಪಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸುವುದು.<br>ದುರುಪಯೋಗ.                                   |
| Academic                | (१) विद्यासम्बन्धी<br>(२) शिक्षणसंस्थासम्बन्धी       | (1) ಶಿಕ್ಷಣ ಸಂಬಂಧವಾದ.<br>(2) ಶಿಕ್ಷಣ ಸಂಸ್ಥೆಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ.               |
| Academic Institution    | (१) विद्यासंस्था<br>(२) विद्याशाला                   | (1) ವಿದ್ಯಾಸಂಸ್ಥೆ.<br>(2) ವಿದ್ಯಾಶಾಲೆ.                                 |
| Academy                 | पण्डितमण्डलम्  | ಪಂಡಿತರ ಸಮಿತಿ.  |
| Accede                  | अनुमन्यस्व   | ಅನುಮತಿ ಕೊಡು, ಒಪ್ಪಿಗೆ ಕೊಡು.   |
| Accept                  | अङ्गीकुरुष्व   | ಅಂಗೀಕರಿಸು, ಸಮ್ಮತಿಸು.   |
| Acceptance              | अङ्गीकारः, स्वीकारः                                  | ಸ್ವೀಕರಿಸುವುದು, ಅಂಗೀಕರಿಸುವುದು.  |
| Acceptance on condition | सोपाधिकाङ्गीकारः                                     | ಪರತ್ತಿನ ಮೇಲೆ ಅಂಗೀಕಾರ.  |
| Acceptance note         | अङ्गीकारपत्रम्                                       | ಸಮ್ಮತಿಯ ಪತ್ರ.  |
| Accepted                | अङ्गीकृतम्   | ಒಪ್ಪಲ್ಪಟ್ಟ, ಸಮ್ಮತಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.   |
| Acceptor                | अङ्गीकर्ता   | ಅಂಗೀಕರಿಸುವವನು, ಸಮ್ಮತಿಸುವವನು.   |
| Access                  | (१) प्रवेशः<br>(२) प्रवेशाधिकारः                     | (1) ಪ್ರವೇಶ.<br>(2) ಪ್ರವೇಶಾಧಿಕಾರ.                                     |
| Accession               | (१) प्रवेशः, प्राप्तिः<br>(२) उपगमनम्<br>(३) वृद्धिः | (1) ಪ್ರವೇಶ, ಪ್ರಾಪ್ತಿ.<br>(2) ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬರುವುದು,<br>(3) ಆಸ್ತಿಯ ವೃದ್ಧಿ. |



| English                      | Sanskrita                   | Kannada  |
|------------------------------|-----------------------------|--|
| Accession of property        | सम्पदः अनुवृद्धिः           | ಆಸ್ತಿಯ ಆನುವೃದ್ಧಿ.                                      |
| Accessory                    | अपराधसहायकः                 | ಅಪರಾಧ ಮಾಡಲು ಸಹಾಯಮಾಡುವವನು.                              |
| Accessory to Adultery        | व्यभिचारसहायकः              | ವ್ಯಭಿಚಾರಕ್ಕೆ ಸಹಾಯ ಮಾಡುವವನು.                            |
| Accident                     | अपघातः                      | ಆಕಸ್ಮಿಕ ವಿಪತ್ತು.                                       |
| Accidental                   | आकस्मिकः                    | ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾದ.   |
| Accommodation                | (१) वसतिः<br>(२) आनुकूल्यम् | (1) ವಾಸಸ್ಥಳ.<br>(2) ಅನುಕೂಲ ಮಾಡಿಕೊಡುವುದು.               |
| Advisory committee           | वसत्युपदेशकसमितिः           | ವಸತಿಸಲಹಾಸಮಿತಿ.   |
| Accomplishment               | निर्वर्तनम्                 | ನೆರವೇರಿಕೆ, ಪೂರೈಕೆ.                                     |
| Accordance                   | अनुसारम्                    | ಅನುಗುಣವಾಗಿ.  |
| Accordance with law          | न्यायानुसारम्               | ವಿಧಿಗನುಸಾರವಾಗಿ.  |
| According to order           | आदेशानुसारम्                | ಆದೇಶಕ್ಕೆ ಅನುಸಾರವಾಗಿ.                                   |
| According to rule            | नियमानुसारम्                | ನಿಯಮಕ್ಕೆ (ಕಟ್ಟಳೆಗೆ) ಅನುಗುಣವಾಗಿ.                        |
| Account                      | लेखा                        | ಲೆಕ್ಕ.   |
| Accountancy                  | गणनशास्त्रम्, लेखाशास्त्रम् | ಲೆಕ್ಕದ ಶಾಸ್ತ್ರ, ಗಣಿತ ಶಾಸ್ತ್ರ.                          |
| Account book                 | लेखापुस्तकम्                | ಲೆಕ್ಕದ ಪುಸ್ತಕ.   |
| Accounts clerk               | लेखाकायस्थः, लेखालिपिकः     | ಲೆಕ್ಕದ ಗುಮಾಸ್ತ.  |
| Account current              | चललेखा                      | ಚಾಲ್ತಿಲೆಕ್ಕ.   |
| Accountant                   | लेखापालः                    | ಕರಣಕ, ಲೆಕ್ಕಗ.  |
| Accountant chartered         | शासनाधिकृतलेखापालः          | ಸನ್ನದು ಪಡೆದ ಲೇಖಾಪಾಲ.                                   |
| Accountant General           | महालेखापालः                 | ಮಹಾಲೇಖಾಪಾಲ.  |
| Accounts Officer             | लेखाधिकारी                  | ಲೆಕ್ಕದ ಅಧಿಕಾರಿ.  |
| Accumulated                  | सञ्चितः                     | ಕೂಡಹಾಕಲ್ಪಟ್ಟ.  |
| Accumulation                 | संग्रहः                     | ಕೂಡಹಾಕುವುದು, ಶೇಖರಿಸಿಡುವುದು.                            |
| Accumulator                  | संग्राहकः                   | ಕೂಡಹಾಕುವವನು.   |
| Acknowledged                 | ज्ञापितस्वीकृतिः            | ಸ್ವೀಕರಿಸಿದುದನ್ನು ತಿಳಿಸುವ, ಸಂದಿರುವುದನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ರಶೀದಿ. |
| Acknowledgement              | स्वीकृतिज्ञापनम्            | ಸ್ವೀಕರಿಸಿದುದನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದು.                           |
| Acknowledgement of signature | हस्ताक्षरस्वीकारः           | ಹಸ್ತಾಕ್ಷರವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವುದು.                          |
| Acquired                     | उपाजितः                     | ಗಳಿಸಿದ.  |
| Acquirement                  | उपाजनम्, प्राप्तिः          | ಗಳಿಕೆ, ಸಂಪಾದಿಸುವುದು.                                   |
| Acquisition                  | आजनम्                       | ಸಂಪಾದನೆ.   |
| Acquisition of land          | भूसंग्रहः                   | ಭೂಮಿಯನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸುವುದು.                                |



|                       |                                      |  |
|-----------------------|--------------------------------------|--|
| Acquittal             | ವಿಮುಕ್ತಿ:                            | ಬಿಡುಗಡೆ, ಮಿಲಾಸೆ.                                       |
| Acquittance           | ನಿस्तಾರ:                             | ಮಣ ಪರಿಹಾರ, ಸಾಲ ತೀರಿಸುವುದು.                             |
| Acquittance Roll      | ವೇತನವಿತರಣಪುಸ್ತಕಮ್                    | ವೇತನದ ಬಟವಾಡೆ ಪುಸ್ತಕ.                                   |
| Acquitted             | ವಿಮುಕ್ತ:                             | ಬಿಡುಗಡೆ ಹೊಂದಿದ, ಮಿಲಾಸೆಯಾದ.                             |
| Act                   | ಅಧಿನಿಯಮ:                             | ಕಾಯಿದೆ.  |
| Acting                | ಕಾರ್ಯಕಾರಿ                            | ಬದಲಿಯವನು.  |
| Acting together       | ಸಹಕಾರ್ಯಕರಣಮ್                         | ಒಟ್ಟಿಗೆ ಕಲೆತು ಕಾರ್ಯಮಾಡುವುದು.                           |
| Action                | ಅಭಿಯೋಗ:                              | ದಾವೆ.  |
| Action civil          | ನಾಗರಕಾಭಿಯೋಗ:                         | ನಾಗರಕ ವ್ಯವಹಾರದ ದಾವೆ.                                   |
| Actionable            | ಅಭಿಯೋಜ್ಯ:                            | ವ್ಯವಹಾರಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯನಾದವನು.                               |
| Action for debt       | ಋಣಾಭಿಯೋಗ:                            | ಸಾಲದ ದಾವೆ.   |
| Active                | ಕ್ರಿಯಾಶೀಲ:                           | ಕಾರ್ಯಮಾಡುವ ಸ್ವಭಾವದ.                                    |
| Act of god            | ದೈವಘಟನಾ                              | ದೇವರ ನಿಗ್ರಹ ಮತ್ತು ಅನುಗ್ರಹ,<br>ದೇವತೆಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಕಾರ್ಯ |
| Act of grace          | ಕ್ಷಮಾದಾನಮ್                           | ಕ್ಷಮೆಯನ್ನು ನೀಡುವುದು.                                   |
| Act of law            | ಶಾಸನಕಾರ್ಯಮ್                          | ಕಟ್ಟಳೆಯ ಕಾರ್ಯ.   |
| Act of supremacy      | ಸಾರ್ವಭೌಮತ್ವಾಧಿನಿಯಮ:                  | ಸರ್ವಾಧಿಕಾರತ್ವದ ನಿಯಮ.                                   |
| Actual                | ವಾಸ್ತವಿಕ:                            | ಯಥಾರ್ಥವಾದ, ನಿಜವಾದ.                                     |
| Actual cost           | ವಾಸ್ತವಿಕಮೌಲ್ಯಮ್                      | ನಿಜವಾದ ಬೆಲೆ.   |
| Actually              | ವಸ್ತುತ:                              | ನಿಜವಾಗಿ, ಯಥಾರ್ಥವಾಗಿ.                                   |
| Actual rent           | ವಾಸ್ತವಿಕಭಾಡಕಮ್                       | ನಿಜವಾದ ಬಾಡಿಗೆ.   |
| Actual service        | ವಾಸ್ತವಿಕಸೇವಾ                         | ನಿಜವಾಗಿ ನಡೆದಿರುವ ಸೇವೆ.                                 |
| Actual weight         | ವಾಸ್ತವಿಕತುಲಾಮಾನಮ್                    | ಸರಿಯಾದ ತೂಕ.  |
| Adaptation            | ಯೋಜನಮ್                               | ಹೊಂದಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಅಳವಡಿಸಿ<br>ಕೊಳ್ಳುವುದು.              |
| Adapter               | ಯೋಜಕ:                                | ಅಳವಡಿಸುವವನು.   |
| Addition              | (೧) ಸಂಯೋಜನಮ್, ಸಂಕಲನಮ್<br>(೨) ಅಧಿಕಯಮ್ | (1) ಜೊತೆಗೆ ಸೇರಿಸುವುದು, ಕೂಡುವುದು.<br>(2) ಅಧಿಕ, ವೃದ್ಧಿ.  |
| Additional            | ಅತಿರಿಕ್ತ:, ಅಧಿಕ:                     | ಅಧಿಕವಾದ, ಹೆಚ್ಚಿನ.                                      |
| Additional agenda     | ಅತಿರಿಕ್ತ:ಕಾರ್ಯಕ್ರಮ:                  | ಅಧಿಕವಾದ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮ.                                     |
| Additional benefit    | ಅಧಿಕಲಾಭ:                             | ಹೆಚ್ಚಿನ ಲಾಭ.   |
| Additional invoice    | ಅತಿರಿಕ್ತ ಮೂಲ್ಯಪತ್ರಮ್                 | ಹೆಚ್ಚಿನ ಬೆಲೆಯ ಪಟ್ಟಿ.                                   |
| Additional production | ಅಧಿಕೋತ್ಪಾದನಮ್                        | ಅಧಿಕವಾಗಿ ಬೆಳೆಯುವುದು, ಹೆಚ್ಚಾಗಿ<br>ತಯಾರಿಸುವುದು.          |



| English                 | Sanskrita                                     | Kannada                                   |
|-------------------------|---|---|
| Additional secretary    | अतिरिक्त:कार्यदर्शी                           | ಹೆಚ್ಚಿನ ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿ.                       |
| Address                 | (१) सम्बोधनम्<br>(२) पत्रसंज्ञा<br>(३) भाषणम् | (1) ಸಂಬೋಧನೆ.<br>(2) ವಿಳಾಸ.<br>(3) ಭಾಷಣ.   |
| Address of welcome      | स्वागतभाषणम्                                  | ಸ್ವಾಗತಭಾಷಣ.                               |
| Address presented to    | मानपत्रम्                                     | ಬಿನ್ನವತ್ತಳೆ.                              |
| Adequacy                | पर्याप्ति:                                    | ಸಾಕಾಗುವಷ್ಟಿರುವಿಕೆ.                        |
| Adequate                | पर्याप्त:                                     | ಸಾಕಾಗುವಷ್ಟು.                              |
| Ad hoc                  | तदर्थ समिति:                                  | ಒಂದು ಉದ್ದೇಶಕ್ಕಾಗಿ ರಚಿಸಿದ ಸಮಿತಿ.           |
| Ad hoc payment          | तदर्थ वितरणम्                                 | ಒಂದು ಉದ್ದೇಶಕ್ಕಾಗಿ ಮಾಡುವ ಪಾವತಿ.            |
| Adjournment             | व्याक्षेप:                                    | ಮುಂದಕ್ಕೆ ಹಾಕುವುದು, ಮುಂದೂಡುವುದು.           |
| Adjudged                | निर्णत:                                       | ನಿರ್ಣಯಿಸಲ್ಪಟ್ಟು.                          |
| Adjudication            | न्यायनिर्णय:                                  | ನ್ಯಾಯವನ್ನು ನಿರ್ಣಯಿಸುವುದು.                 |
| Adjudicator             | न्यायनिर्णेत                                  | ನ್ಯಾಯವನ್ನು ನಿರ್ಣಯಿಸುವವನು.                 |
| Adjuration              | प्रमाणकरणम्                                   | ಪ್ರಮಾಣ ಮಾಡುವುದು.                          |
| Adjust                  | समीकुरु                                       | ಹೊಂದಿಕೊ.                                  |
| Adjustment              | समीकरणम्                                      | ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಹೊಂದಿಕೊಳ್ಳುವುದು. |
| Administration          | प्रशासनम्                                     | ಆಡಳಿತ.                                    |
| Administration branch   | प्रशासनशाखा                                   | ಆಡಳಿತ ಶಾಖೆ.                               |
| Administrative          | प्रशासनीय:                                    | ಆಡಳಿತದ, ಆಡಳಿತ ಸಂಬಂಧವಾದ.                   |
| Administrative division | प्रशासनविभाग:                                 | ಆಡಳಿತ ವಿಭಾಗ.                              |
| Administrative expenses | प्रशासनकार्यनिर्वाह्यय:                       | ಆಡಳಿತ ಕಾರ್ಯದ ವೆಚ್ಚ.                       |
| Administrative orders   | प्रशासनादेश:                                  | ಆಡಳಿತ ವಿಭಾಗದ ಆದೇಶಗಳು.                     |
| Administrator           | प्रशासक:                                      | ಆಡಳಿತಗಾರ.                                 |
| Administratorship       | प्रशासकत्वम्                                  | ಆಡಳಿತಗಾರಿಕೆ.                              |
| Admissible              | ग्राह्यम्, उपादेयम्                           | ಸ್ವೀಕಾರಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ.                      |
| Admissibility           | अङ्गीकारयोग्यता                               | ಅಂಗೀಕಾರಾರ್ಹತೆ.                            |
| Admission               | प्रवेश:                                       | ಸೇರಿಕೊಳ್ಳುವುದು.                           |
| Admission fee           | प्रवेशशुल्कम्                                 | ಪ್ರವೇಶಶುಲ್ಕ.                              |
| Admittable              | प्रवेशार्ह:                                   | ಪ್ರವೇಶಕ್ಕೆ ಅರ್ಹತೆಯುಳ್ಳವನು.                |
| Admittance              | प्रवेश:                                       | ಸೇರಿಕೊಳ್ಳುವುದು.                           |
| Adopt                   | (१) अङ्गीकुरु<br>(२) स्वीकुरु                 | (1) ಅಂಗೀಕರಿಸು.<br>(2) ತೆಗೆದುಕೊ.           |



| English               | Sanskrita                     | Kannada  |
|-----------------------|-------------------------------|--|
| Adopted               | ಸ್ವೀಕೃತ:                      | ಸ್ವೀಕರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.  |
| Adopter               | ದತ್ತಸ್ಯ ಸ್ವೀಕರ್ತಾ             | ದತ್ತು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವವನು.  |
| Adoption              | ಸ್ವೀಕಾರ:                      | ಸ್ವೀಕಾರ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು.<br>ದತ್ತು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು.                     |
| Adoptive father       | ದತ್ತಗ್ರಾಹಕಪಿತಾ                | ದತ್ತು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ ತಂದೆ.  |
| Adult                 | ವಯಸ್ಕ:                        | ವಯಸ್ಸಾದವನು.  |
| Adult education       | ವಯಸ್ಕವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ:             | ವಯಸ್ಸಾದವನ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ.   |
| Adulterer             | ಜಾರ:, ಉಪಪತಿ:                  | ಹಾದರ ಮಾಡುವವನು.   |
| Adultery              | ಪರಸ್ತ್ರೀಗಮನಮ್                 | ಬೇರೊಬ್ಬ ಹೆಂಗಸಿನ ಸಂಬಂಧ.   |
| Advance               | (೧) ಅಗ್ರಿಮಧನಮ್<br>(೨) ಪ್ರಗತಿ: | (1) ಮುಂಗಡ.<br>(2) ಬೆಳವಣಿಗೆ.  |
| Advancement           | (೧) ಪ್ರಗತಿ:<br>(೨) ಆದಿಮದಾನಮ್  | (1) ಅಭಿವೃದ್ಧಿ. ಬೆಳವಣಿಗೆ.<br>(2) ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಆಸ್ತಿ ಹಂಚುವಾಗ ಮಾಡುವ ಮೊದಲ ದಾನ. |
| Advance of pay        | ಅಗ್ರತೋ ದೀಯಮಾನಂ ವೇತನಮ್         | ಮುಂಗಡವಾಗಿ ಕೊಡುವ ವೇತನ (ಸಂಬಳ).   |
| Advantage             | ಆನುಕೂಲ್ಯಮ್                    | ಪ್ರಯೋಜನ.   |
| Adversary             | ಪ್ರತಿಯರ್ಥಿ, ರಿಪು:             | ವೈರಿ, ಹಗೆ, ಶತ್ರು.  |
| Adverse               | ಪ್ರತಿಕೂಲ:                     | ಅನುಕೂಲವಾಗಿಲ್ಲದ.  |
| Advice                | ಉಪದೇಶ:                        | ಸಲಹೆ.  |
| Adviser               | ಉಪದೇಶಾ                        | ಸಲಹೆಗಾರ.   |
| Advisory committee    | ಸೂಚನಾಸಮಿತಿ:                   | ಸಲಹೆ ಕೊಡುವ ಸಮಿತಿ.  |
| Advocate              | ನ್ಯಾಯವಾದಿ                     | ವಕೀಲ.  |
| Affection             | ಅನುರಾಗ:                       | ಪ್ರೀತಿ, ಪ್ರೇಮ.   |
| Affirmance            | ಸ್ಥಿರೀಕರಣಮ್                   | ಸ್ಥಿರಪಡಿಸುವುದು.  |
| Aforesaid             | ಉಪರ್ಯುಕ್ತ:, ಪೂರ್ವೋಕ್ತ:        | ಮೇಲೆ ಹೇಳಿದ.  |
| Against               | ಪ್ರತಿಕೂಲಮ್                    | ವ್ಯತಿರಿಕ್ತವಾಗಿ, ವಿರುದ್ಧವಾಗಿ.   |
| Age                   | ವಯ:                           | ವಯಸ್ಸು.  |
| Agenda                | ಕಾರ್ಯಸೂಚಿ                     | ಕಾರ್ಯಕ್ರಮದ ಪಟ್ಟಿ.  |
| Age of majority       | ವ್ಯವಹಾರಯೋಗ್ಯ ವಯ:              | ಲೋಕವ್ಯವಹಾರಕ್ಕೆ ತಕ್ಕ ವಯಸ್ಸು.  |
| Age of superannuation | ನಿವೃತ್ತಿಕಾಲ:                  | ನಿವೃತ್ತಿಹೊಂದುವ ವಯಸ್ಸು.   |
| Agent                 | ಪ್ರತಿನಿಧಿ:                    | ಪ್ರತಿನಿಧಿ, ಕಾರ್ಯಭಾರಿ.  |
| Agreeable             | ಅಜ್ಞೀಕಾರಾಹ:                   | ಸಮ್ಮತಿಸಲು ಅರ್ಹವಾದ.   |
| Agreement             | ಸಮ್ಮತಿ:                       | ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಒಪ್ಪಂದ.   |



| English          | Sanskrita                             | Kannada                                      |
|------------------|---------------------------------------|--|
| Aid              | ಸಾಹಾಯ್ಯಮ್                             | ಒತ್ತಾಸೆ, ನೆರವು.                              |
| Aircraft         | ವಿಮಾನಮ್                               | ವಿಮಾನ.                                       |
| Air port         | ವಿಮಾನಪತ್ತನಮ್                          | ವಿಮಾನ ಪಟ್ಟಣ, -ನಗರ.                           |
| Air route        | ವಾಯುಮಾರ್ಗ:                            | ವಿಮಾನವು ಸಂಚರಿಸುವ ಮಾರ್ಗ.                      |
| Allegation       | ಆರೋಪಣಮ್                               | ಆರೋಪ, ತಪ್ಪು ಹೊರಿಸುವುದು.                      |
| Allocation       | ವಿಭಜನಮ್                               | ನಿಗದಿ ಮಾಡುವುದು.                              |
| Allopathy        | ಆಙ್ಗಲವೈದ್ಯಪದ್ಧತಿ:                     | ಇಂಗ್ಲಿಷ್ ವೈದ್ಯ ಪದ್ಧತಿ.                       |
| Allotment        | ವಿಭಜನಮ್                               | ಹಂಚಿಕೆ.                                      |
| Allottee         | ಭೋಕ್ತಾ                                | ಹಂಚಿಕೆಯಾದವನು.                                |
| Allowance        | (1) ಅನುಮತಿ: (2) ವೇತನಮ್<br>(3) ಉದ್ಧಾರ: | (1) ಅನುಮತಿ. (2) ವೇತನ.<br>(3) ಮಾಫಿ.           |
| Alphabet         | ವರ್ಣಮಾಲಾ                              | ಅಕ್ಷರಮಾಲೆ.                                   |
| Alterable        | ಪರಿವರ್ತನೀಯ:                           | ಬದಲಾಯಿಸಬಹುದಾದ.                               |
| Always           | ಸರ್ವದಾ                                | ಯಾವಾಗಲೂ, ಎಲ್ಲಾ ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲೂ.                 |
| Ambassador       | ರಾಜದೂತ:                               | ರಾಯಭಾರಿ.                                     |
| Ambulance        | ರೋಗಿವಾಹನಮ್                            | ರೋಗಿಯನ್ನು ಕರೆತರುವ ವಾಹನ.                      |
| Amendment        | ವಿಶುದ್ಧಿ:                             | ತಿದ್ದುಪಡಿ.                                   |
| Amenities        | ಸೌಕರ್ಯಮ್                              | ಸೌಕರ್ಯಗಳು.                                   |
| Amount           | ಸಮ್ಪೂರ್ಣವನಮ್                          | ಒಂದು ಮೊತ್ತದ ಮೊಬಲಗು.                          |
| Analogy          | ಸಾದೃಶ್ಯಮ್                             | ಹೋಲಿಕೆ, ಸಾಮ್ಯ.                               |
| Ancestor         | ಪೂರ್ವಜಃ, ಮೂಲಪುರುಷ:                    | ವಂಶದ ಹಿರಿಯವನು, ವಂಶದಲ್ಲಿ ಮೊದಲು<br>ಹುಟ್ಟಿದವನು. |
| Ancestral        | ಪೂರ್ವಜರಾಜಿತಮ್, ಪಿತ್ರಾಜಿತಮ್            | ಪೂರ್ವಿಕರಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಲ್ಪಟ್ಟ,<br>ಪಿತೃರ್ಜಿತವಾದ.  |
| Ancient          | ಪ್ರಾಚೀನಮ್, ಪ್ರಾಕೃಕಾಲಿಕಮ್              | ಪೂರ್ವ ಕಾಲದ.                                  |
| Animal           | ಪಶು:                                  | ಹಸು, ಎಮ್ಮೆ, ಕುದುರೆ ಮೊದಲಾದ<br>ಪ್ರಾಣಿಗಳು.      |
| Animal husbandry | ಪಶುಪರಿಪಾಲನಮ್                          | ಪಶುಗಳ ಪೋಷಣೆ.                                 |
| Annexure         | ಅನುಬಂಧ:                               | ಜತೆಗೆ ಸೇರಿಸುವುದು, ಪೂರಕವಾಗಿ ಸೇರಿಸು<br>ವುದು.   |
| Announcement     | ಘೋಷಣಾ, ಪ್ರಕಟನಮ್                       | ಘೋಷಿಸುವುದು, ಡಂಗೂರ ಹೊಡೆಯಿಸಿ<br>ಪ್ರಕಟಿಸುವುದು.  |
| Annual           | ವಾರ್ಷಿಕಮ್                             | ವರ್ಷದ, ವರ್ಷಕಾಲದ.                             |



| English                    | Sanskrit  | Kannada   |
|----------------------------|---|---|
| Annual financial statement | ವಾರ್ಷಿಕವಿತ್ತಿಯ<br>ವಿವರಣೋಪಪಾದನಮ್                           | ಹಣಕಾಸಿನ ವಿತರಣೆಯ ವಾರ್ಷಿಕ ವಿವರಣೆ.   |
| Annual general meeting     | ಸರ್ವಸದಸ್ಯಾಣಾಂ<br>ವಾರ್ಷಿಕಾಧಿವೇಶನಮ್                         | ಸಕಲ ಸದಸ್ಯರ ವಾರ್ಷಿಕಾಧಿವೇಶನ.  |
| Annual net profit          | (ಖಯಮಪಹಾಯ) ಶುದ್ಧ:<br>ವಾರ್ಷಿಕ ಆಯ:                           | ಖರ್ಚು ಕಳೆದು ನಿವ್ವಳ ವಾರ್ಷಿಕ ಆದಾಯ.  |
| Annual report              | ವಾರ್ಷಿಕವೃತ್ತಿನಿವೇದನಮ್                                     | ವಾರ್ಷಿಕ ವರದಿ.   |
| Annual return              | ವಾರ್ಷಿಕಲೇಖಾವಿವರಣಮ್  | ವಾರ್ಷಿಕ ಲೆಕ್ಕ ವಿವರಣೆ.   |
| Annuity                    | ವರ್ಷಾಶನಮ್   | ವರ್ಷಾಶನ, ವರ್ಷದಲ್ಲಿ ಜೀವನಕ್ಕೆ<br>ಬೇಕಾಗುವಷ್ಟು ಧನ ಮೊದಲಾದುದು.                                    |
| Anonymous                  | ಅನಾಮಧೇಯ:  | ಹೆಸರಿಲ್ಲದ, ಹೆಸರನ್ನು ತಿಳಿಸದ.   |
| Answerable                 | ಉತ್ತರಣೀಯ:   | ಉತ್ತರ ಹೇಳಬಹುದಾದ.  |
| Anticipation               | ನಿರೀಕ್ಷಣಮ್ ಪ್ರತೀಕ್ಷಣಮ್                                    | ಪ್ರತೀಕ್ಷಣೆ, ನಿರೀಕ್ಷಿಸುವುದು.   |
| Anti-corruption            | ಉತ್ಕೊಚನಿರೋಧ:  | ಉಚ್ಚ ನಿರೋಧ.   |
| Any other party            | ಕೌಽಪಿ ಇತರಪಕ್ಷ:  | ಬೇರೆ ಯಾವುದೋ ಒಂದು ಪಕ್ಷ.  |
| Apology                    | ಕ್ಷಮಾಯಾಚನಾ  | ಕ್ಷಮೆಯ ಬೇಡಿಕೆ.  |
| Appeal                     | ಪುನರ್ವಿಮರ್ಶಾಂ ಪ್ರಾರ್ಥನಾ                                   | ಪುನರ್ವಿಮರ್ಶೆಗಾಗಿ ಬೇಡಿಕೆ (ಮನವಿ).   |
| Appearance                 | ಪುರತಃ ಉಪಸ್ಥಿತಿ:   | ಎದುರಿಗೆ ಹಾಜರಾಗುವುದು. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ<br>ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು.                                     |
| Appellant                  | ಪುನರ್ವಿಮರ್ಶಾಪೀಕ್ಷಿ  | ಮೇಲ್ಮನವಿ ಮಾಡುವ ಅರ್ಜಿದಾರ.  |
| Appendix                   | ಪರಿಶಿಷ್ಟಮ್, ಅನುಬಂಧ:                                       | ಅನುಬಂಧ.   |
| Application                | (1) ಆವೇದನಪತ್ರಮ್<br>(2) ಯಾಚನಾ<br>(3) ಲೇಪನಮ್<br>(4) ಸಮನ್ವಯ: | (1) ಅರ್ಜಿ, ದರಖಾಸ್ತು.<br>(2) ಮನವಿ.<br>(3) ಲೇಪನ, ಹೆಚ್ಚುವುದು.<br>(4) ಅನ್ವಯಿಸುವುದು.             |
| Appointment                | (1) ನಿಯುಕ್ತಿಃ, ನಿಯೋಗ:<br>(2) ಆಜ್ಞಾ<br>(3) ಅಧಿಕಾರ:         | (1) ನೇಮಕ.<br>(2) ಶಾಸನ.<br>(3) ಅಧಿಕಾರ.   |
| Appreciation               | (1) ಗುಣಗ್ರಹಣಮ್<br>(2) ಮೂಲ್ಯವಿಜ್ಞಾನಮ್<br>(3) ಮೂಲ್ಯವೃದ್ಧಿ:  | (1) ಮೆಚ್ಚುಗೆ, ಯೋಗ್ಯತೆಯನ್ನು<br>ಗೊತ್ತುಮಾಡುವುದು.<br>(2) ಬೆಲೆ ಕಟ್ಟುವುದು.<br>(3) ಬೆಲೆ ಏರಿಸುವುದು. |
| Approach                   | (1) ಉಪಾಗಮನಮ್<br>(2) ಸಮೀಪಮಾರ್ಗ:                            | (1) ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬರುವುದು.<br>(2) ಹತ್ತಿರದ ದಾರಿ.  |



| English       | Sanskrita  | Kannada   |
|---------------|--|---|
| Appropriation | ವಿನಿಯೋಗ:   | ಬಳಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು.   |
| Approval      | ಅನುಮೋದನಮ್  | ಒಪ್ಪಿಗೆ, ಸಮ್ಮತಿ.  |
| Approver      | (೧) ಅನುಮೋದಕ:<br>(೨) ಸಾಕ್ಷಾರ್ಥ ನಿಯುಕ್ತ:<br>ಅಪರಾಧಿ | (1) ಸಮ್ಮತಿಸುವವನು, ಒಪ್ಪಿಗೆಕೊಡುವವನು.<br>(2) ಮಾಘಿಸಾಕ್ಷಿ.               |
| Approximation | (೧) ಸಾಮೀಪ್ಯಮ್<br>(೨) ಉಪಗಮನಮ್                     | (1) ಸಾಮೀಪ್ಯ.<br>(2) ಹತ್ತಿರಕ್ಕೆ ಬರುವುದು, ಸರಿಸುವುದು<br>ಬರುವುದು, ಉಪಸಮ. |
| Apt           | ಸಮುಚಿತ:  | ಹೊಂದುವ, ಸರಿಯಾದ.   |
| Apt words     | ಸಮುಚಿತವಚನಾನಿ                                     | ತಕ್ಕ ಮಾತುಗಳು, ಸರಿಹೊಂದುವ ಮಾತುಗಳು.                                    |
| Arbitration   | ಮಾಧ್ಯಸ್ಥ್ಯಮ್, ಮಧ್ಯಸ್ಥನಿರ್ಣಯ:                     | ಪಂಚಾಯತಿ.  |
| Arbitrator    | ಮಧ್ಯಸ್ಥ:   | ಪಂಚಾಯತಿದಾರ.   |
| Arch          | ತೋರಣಮ್   | ಕಮಾನು.  |
| Arch bridge   | ಚಾಪಸೇತು:   | ಕಮಾನು ಸೇತುವೆ.   |
| Archaeology   | ಪ್ರಾಚೀನವಸ್ತುಶೋಧನಶಾಸ್ತ್ರಮ್                        | ಪುರಾತನ ವಸ್ತುಶೋಧನ ಶಾಸ್ತ್ರ.   |
| Architect     | ವಾಸ್ತುಶಿಲ್ಪಿ                                     | ಕಟ್ಟಡಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಕಲಾಪಂಡಿತ.  |
| Archives      | ಪ್ರಾಚೀನಪತ್ರಾಗಾರಮ್                                | ಸಾರ್ವಜನಿಕ ಹಳೆಯ ಕಾಗದಪತ್ರಗಳ ಸ್ಥಳ.                                     |
| Area          | ಪ್ರದೇಶ:  | ಕ್ಷೇತ್ರ, ಮೈದಾನ.   |
| Areca-nut     | ಕ್ರಮುಕ:  | ಅಡಕೆ  |
| Argument      | ವಾದ:   | ವಾದಮಾಡುವುದು.  |
| Arm           | (೧) ಆಯುಧಮ್<br>(೨) ಭುಜ:<br>(೩) ಶಾಖಾ               | (1) ಆಯುಧ, ಶಸ್ತ್ರ.<br>(2) ತೋಳು, ಭುಜ.<br>(3) ಮರದ ರೆಂಬೆ.               |
| Armour        | ಯುದ್ಧಕವಚ:  | ಯುದ್ಧಕವಚ, ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ತೊಡುವ ಅಂಗಿ.                                    |
| Armoury       | ಶಸ್ತ್ರಾಗಾರಮ್                                     | ಆಯುಧಶಾಲೆ.   |
| Arm pit       | ಬಾಹುಮೂಲಮ್, ಕಕ್ಷ:                                 | ಬಾಹುಮೂಲ, ಕಂಕಳು.   |
| Army          | ಸೇನಾ, ಸೈನ್ಯಮ್                                    | ಸೇನೆ, ದಂಡು, ಪಡೆ.  |
| Arrangement   | ವ್ಯವಸ್ಥಾಪನಮ್                                     | ಏರ್ಪಡಿಸುವುದು, ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವುದು.                                       |
| Arrest        | ಬಂಧನಮ್   | ಕೈದು, ಸೆರೆಹಿಡಿಯುವುದು, ದಸ್ತಗಿರಿ<br>ಮಾಡುವುದು.                         |
| Arrival       | ಆಗಮನಮ್   | ಬರುವುದು.  |
| Art           | (೧) ಕಲಾ (೨) ಶಿಲ್ಪಮ್<br>(೩) ವಿಜ್ಞಾ (೪) ಕರಕೌಶಲಮ್   | (1) ಕಲೆ (2) ಶಿಲ್ಪ.<br>(3) ವಿದ್ಯೆ (4) ಕೈ ಕಸಬು.                       |



| English                                     | Sanskrita                                   | Kannada   |
|---|---|---|
| Artery                                      | ರಕ್ತನಾಲಮ್                                   | ರಕ್ತಕೋಶದ ಕಡೆಯಿಂದ ಇತರ ಭಾಗಗಳಿಗೆ ರಕ್ತವನ್ನು ಸಾಗಿಸುವ ರಕ್ತನಾಳ.                |
| Article                                     | (೧) ವಿಷಯ:<br>(೨) ದ್ರವ್ಯಮ್                   | (1) ವರ್ತಮಾನಪತ್ರಿಕೆಗಳಿಗೆ ಬರೆದು ಕಳುಹಿಸುವ ಲೇಖನ, ವಿಷಯ.<br>(2) ಸರಕು, ಪದಾರ್ಥ. |
| Artificial                                  | ಕೃತ್ರಿಮಮ್                                   | ಸ್ವಭಾವದಲ್ಲದ, ಕಲ್ಪಿತವಾದ.   |
| Artist                                      | ಶಿಲ್ಪಿ                                      | ಕುಶಲಕಾರ್ಯ ಮಾಡುವವನು.   |
| Ascendants                                  | ಪೂರ್ವಜಾ:                                    | ಮೂಲಪುರುಷರು, ವಂಶದ ಹಿರಿಯರು.   |
| As follows                                  | ಅಧೋನಿರ್ದಿಷ್ಟಪ್ರಕಾರೇಣ                        | ಈ ಕೆಳಗೆ ಕಂಡಂತೆ.   |
| Assassin                                    | ಘಾತಕ:                                       | ಕೊಲೆಗಾರ.  |
| Assassination                               | ಹನನಮ್, ಹತ್ಯಾ                                | ಕೊಲೆ, ಹತ್ಯೆ.  |
| Assembly                                    | ಸಭಾ   | ಕೂಟ, ಸಂಸತ್ತು.   |
| Assent                                      | (೧) ಅನುಜ್ಞಾ<br>(೨) ಅನುಮತಿ:<br>(೩) ಅಜ್ಞೀಕಾರ: | (1) ಸಮ್ಮತಿ.<br>(2) ಅನುಮತಿ.<br>(3) ಒಪ್ಪಿಗೆ.                              |
| Assimilation                                | ಸಮೀಕರಣಮ್                                    | ಸಮರೂಪವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು, ಹೋಲುವಂತೆ ಮಾಡುವುದು.                                  |
| Assimulation                                | ಛದ್ಯ, ಕಪಟ:                                  | ಕಪಟ, ವಂಚನೆ.   |
| Assistance                                  | ಸಾಹಾಯ್ಯಮ್                                   | ಉಪಕಾರ, ಒತ್ತಾಸೆ, ನೆರವು.  |
| Assistant                                   | ಸಹಾಯಕ:                                      | ಜತೆಗೂಡಿ ಕಾರ್ಯಮಾಡುವವನು.  |
| Assistant Accountant                        | ಸಹಾಯಕಲೇಖಾಪಾಲ:                               | ಸಹಾಯಕಕರಣಿಕ. ಸಹಾಯಕಲೆಕ್ಕಗ.  |
| Assistant Accountant General                | ಸಹಾಯಕಮಹಾಲೇಖಾಪಾಲ:                            | ಸಹಾಯಕಮಹಾಲೇಖಾಪಾಲ.  |
| Assistant Auditor                           | ಸಹಾಯಕಲೇಖಾಪರೀಕ್ಷಕ:                           | ಸಹಾಯಕಲೆಕ್ಕತನಿಖಾಧಿಕಾರಿ.  |
| Assistant Architect                         | ಸಹಾಯಕವಾಸ್ತುಶಿಲ್ಪಿ                           | ಸಹಾಯಕ ಕಟ್ಟಡಗಳ ಕಲಾ ಪಂಡಿತ.  |
| Assistant Commissioner                      | ಸಹಾಯಕ ಆಯುಕ್ತ:                               | ಆಯುಕ್ತರ ಪೂರ್ಣಾಧಿಕಾರದ ಇಲಾಖೆಯ ಪ್ರತಿನಿಧಿ.                                  |
| Assistant Commissioner—<br>Crime and Excise | ಸಹಾಯಕ ಆಯುಕ್ತ:-<br>ಅಪರಾಧೋತ್ಪಾದನಶುಲ್ಕಶಾಖಾ     | ಆಪರಾಧ ಮತ್ತು ಉತ್ಪಾದನ ತೆರಿಗೆ ಶಾಖೆಯ ಸಹಾಯಕ ಆಯುಕ್ತ.                          |
| Assistant Commissioner—<br>Food Supplies    | ಸಹಾಯಕ ಆಯುಕ್ತ:-<br>ಆಹಾರಸಮ್ಭಾರೋಪಾಹರಣಶಾಖಾ      | ಆಹಾರಸಾಮಗ್ರಿಗಳ ಸರಬರಾಜು ಶಾಖೆಯ ಸಹಾಯಕ ಆಯುಕ್ತ.                               |
| Assistant Commissioner—<br>Income Tax       | ಸಹಾಯಕ ಆಯುಕ್ತ:-<br>ಆಯಕರಶಾಖಾ                  | ವರಮಾನ ತೆರಿಗೆಯ ಸಹಾಯಕ ಆಯುಕ್ತ.   |
| Assistant Commissioner—<br>Sales Tax        | ಸಹಾಯಕ ಆಯುಕ್ತ:-<br>ವಿಕ್ರಯಕರಶಾಖಾ              | ಮಾರಾಟ ತೆರಿಗೆ ಶಾಖೆಯ ಸಹಾಯಕ ಆಯುಕ್ತ.  |



| English                                 | Sanskrit   | Kannada   |
|---|--|---|
| Assistant Controller<br>General         | ಸಹಾಯಕಮಹಾನಿಯಂತ್ರಕ:  | ಸಹಾಯಕ ಮಹಾನಿಯಂತ್ರಣಾಧಿಕಾರಿ.   |
| Assistant Controller<br>Stores          | ಸಹಾಯಕ ಸಂಗ್ರಹಾಗಾರ ನಿಯಂತ್ರಕ:                                   | ಸಹಾಯಕ ದಾಸ್ತಾನು ನಿಯಂತ್ರಣಾಧಿಕಾರಿ.                                   |
| Assistant Development<br>Officer        | ಸಹಾಯಕ ವಿಕಾಸಾಧಿಕಾರಿ   | ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಶಾಖೆಯ ಸಹಾಯಕ ಅಧಿಕಾರಿ.                                    |
| Assistant Director                      | ಸಹಾಯಕನಿರ್ದೇಶಕ:   | ಸಹಾಯಕ ನಿರ್ದೇಶಕ.   |
| „ „ Agriculture                         | „ „ ಕೃಷಿ ಶಾಖಾ  | ಸಹಾಯಕ ನಿರ್ದೇಶಕ—ವ್ಯವಸಾಯ ವಿಭಾಗ.                                     |
| „ „ Public Health                       | „ „ ಲೋಕಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯ ಶಾಖಾ  | ಸಹಾಯಕ ನಿರ್ದೇಶಕ—ಜನಾರೋಗ್ಯ ವಿಭಾಗ.                                    |
| „ „ Purchase                            | „ „ ಕ್ರಯವಿಭಾಗ:   | ಸಹಾಯಕ ನಿರ್ದೇಶಕ—ಕ್ರಯ ವಿಭಾಗ.  |
| Assistant Electrical<br>Inspector       | ಸಹಾಯಕವಿದ್ಯುತಾವೇಷಕ:   | ಸಹಾಯಕ ವಿದ್ಯುತ್ ಪರೀಕ್ಷಾಧಿಕಾರಿ.                                     |
| Assistant Electrical<br>Engineer        | ವಿದ್ಯುತ್ಸಹಾಯಕಾಭಿಯಂತಾ   | ಸಹಾಯಕ ವಿದ್ಯುತ್ ಯಂತ್ರಶಿಲ್ಪಿ.                                       |
| Assistant Food<br>Procurement Inspector | ಆಹಾರಸಂಪಾದನ<br>ಸಹಾಯಕಾವೇಷಕ:                                    | ಸಹಾಯಕ ಆಹಾರ ಸಂಪಾದನಾಧಿಕಾರಿ.   |
| Assistant Geologist                     | ಸಹಾಯಕಭೌತಿಕವಿಜ್ಞ:   | ಸಹಾಯಕ ಭೂವಿಜ್ಞಾನಿ.   |
| Assistant Godown<br>Superintendent      | ಸಹಾಯಕಕೋಠಾಗಾರಾಧೀಕ್ಷಕ:   | ಸಹಾಯಕ ಉಗ್ರಾಣದ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕ.   |
| Assistant Health Officer                | ಸಹಾಯಕಾರೋಗ್ಯಾಧಿಕಾರಿ   | ಸಹಾಯಕ ಆರೋಗ್ಯಾಧಿಕಾರಿ.  |
| Assistant Horticulturist                | ಸಹಾಯಕ ಔದ್ಯಾನಿಕವಿಜ್ಞ:   | ತೋಟಗಾರ ಸಹಾಯಕ ವಿಜ್ಞಾನಿ.  |
| Assistant Inspector                     | ಸಹಾಯಕಾವೇಷಕ:  | ಸಹಾಯಕ ತನಿಖಾಧಿಕಾರಿ.  |
| Assistant Manager                       | ಸಹಾಯಕವ್ಯವಸ್ಥಾಪಕ:   | ಸಹಾಯಕ ಕಾರ್ಯನಿರ್ವಾಹಕ.  |
| Assistant Superintendent<br>Association | ಸಹಾಯಕಾಧೀಕ್ಷಕ:<br>(1) ಸಂಸ್ಥಾ (2) ಸಮಾಜ:<br>(3) ಸಂಘ: (4) ಸಂಬಂಧ: | ಸಹಾಯಕ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕ.<br>(1) ಸಂಸ್ಥೆ. (2) ಸಮಾಜ.<br>(3) ಸಂಘ. (4) ಸಂಬಂಧ. |
| Assurance                               | (1) ಆಶ್ವಾಸನಮ್<br>(2) ನಾಶಭಯೋತ್ತಾರಣಮ್                          | (1) ಸಮಾಧಾನವಚನ.<br>(2) ವಿಮೆ.                                       |
| Assure                                  | (1) ರಕ್ಷಣಮ್<br>(2) ಆಶ್ವಾಸನಮ್                                 | (1) ರಕ್ಷಣೆ.<br>(2) ಸಮಾಧಾನದ ಮಾತು.                                  |
| Atmosphere                              | (1) ವಾಯುಮಂಡಲಮ್<br>(2) ವಾತಾವರಣಮ್                              | (1) ಆಕಾಶ.<br>(2) ವಾತಾವರಣ.   |
| Atom                                    | ಪರಮಾಣು:  | ಪರಮಾಣು.   |
| Atom bomb                               | ಪರಮಾಣುಲೋಹಮಯಾಗ್ನಿಗೋಲ:   | ಪರಮಾಣು ಬಾಂಬು.   |
| Atomic Energy                           | ಅಣುಶಕ್ತಿ:  | ಪರಮಾಣು ಶಕ್ತಿ.   |



| English          | Sanskrit  | Kannada  |
|------------------|---|--|
| Atomic warfare   | ಅಣುಯುದ್ಧಮ್                                      | ಪರಮಾಣು ಯುದ್ಧ.                                      |
| Attachment       | (1) ಭಕ್ತಿ: (2) ಅನುರಾಗ: (3) ಸಂಬಂಧ: (4) ಆಸಕ್ತಿ:   | (1) ಭಕ್ತಿ. (2) ಪ್ರೇಮ. (3) ಸಂಬಂಧ. (4) ಆಸಕ್ತಿ.       |
| Attainment       | (1) ಲಾಭ:, ಪ್ರಾಪ್ತಿ: (2) ಅಧಿಗಮ:                  | (1) ಪಡೆಯುವುದು, ಹೊಂದುವುದು. (2) ತಲುಪುವುದು, ಸೇರುವುದು. |
| Attempt          | ಪ್ರಯತ್ನ:  | ಯತ್ನ.  |
| Attemptable      | ಯತ್ನಸಾಧ್ಯಮ್                                     | ಪ್ರಯತ್ನದಿಂದ ಸಾಧಿಸಬಹುದಾದ.                           |
| Attendance       | उपस्थिति:                                       | ಹಾಜರಾತಿ.   |
| Attendant        | अनुचर:  | ಸೇವಕ.  |
| Attention        | लक्ष्यम्, अवधानम्                               | ಗಮನ, ಎಚ್ಚರಿಕೆ.                                     |
| Attestation      | प्रमाणीकरणम्                                    | ಸಾಕ್ಷಿಯನ್ನು ದೃಢಪಡಿಸುವುದು.                          |
| Attorney         | न्यायवादी                                       | ವ್ಯವಹಾರ ಪ್ರತಿನಿಧಿ, ವಕೀಲ.                           |
| Attorney General | महान्यायवादी                                    | ಸರ್ಕಾರಿ ವಕೀಲ.                                      |
| Auction          | घोषणापूर्वको विक्रय:                            | ಹರಾಜು,   |
| Audience         | (1) श्रोतृवर्ग: (2) श्रवणम्                     | (1) ಸಭಾಸದರು. (2) ಶ್ರವಣ, ಕೇಳುವುದು.                  |
| Audit            | लेखापरीक्षा                                     | ಲೆಕ್ಕಪರಿಶೋಧನೆ.                                     |
| Audited account  | परिशोधितलेखा, परीक्षितलेखा                      | ಪರಿಶೋಧಿಸಿ ಶೋಧಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಲೆಕ್ಕ.                       |
| Auditor          | लेखापरीक्षक:                                    | ಲೆಕ್ಕಗಣ ಪರಿಶೀಲಕ.                                   |
| Audit report     | लेखापरिशोधनावेदनम्                              | ಲೆಕ್ಕಪರಿಶೀಲನ ವರದಿ.                                 |
| Author           | लेखक:, ग्रन्थकर्ता                              | ಗ್ರಂಥವನ್ನು ರಚಿಸುವವನು.                              |
| Authorisation    | प्रमाणीकरणम्, अनुमतिप्रदानम्                    | ಪ್ರಾಧಿಕಾರ ಕೊಡುವುದು, ಹೆಚ್ಚು ಅಧಿಕಾರ ನೀಡುವುದು.        |
| Authorised       | अधिकृत:   | ಅಧಿಕಾರ ಪಡೆದಿರುವವನು.                                |
| Authorship       | लेखकत्वम्                                       | ಗ್ರಂಥ ಕರ್ತೃತ್ವ, ಗ್ರಂಥ ಬರೆಯುವ ಉದ್ಯೋಗ.               |
| Authority        | (1) प्राधिकार: (2) प्रमाणवाक्यम्, प्रमाणग्रन्थ: | (1) ಅಧಿಕಾರ, ವಿಧಾಯಕ ಶಕ್ತಿ. (2) ಪ್ರಮಾಣ ಗ್ರಂಥ.        |
| Autograph        | स्वहस्तलिपि:                                    | ಸ್ವಹಸ್ತಾಕ್ಷರ.                                      |
| Autonomous       | स्वतन्त्र:, स्वायत्त:                           | ಸ್ವತಂತ್ರಾಧಿಕಾರವುಳ್ಳ, ಸ್ವಾಯತ್ತ.                     |
| Average          | मध्यमप्रमाणम्                                   | ಸರಾಸರಿ.  |
| Avoidable        | (1) परिहरणीय: (2) परित्याज्य:                   | (1) ಪರಿಹಾರಕ್ಕೆ ಆರ್ಹವಾದ. (2) ಪರಿತ್ಯಜಿಸಬಹುದಾದ.       |
| Award            | न्यायनिणय:                                      | ತೀರ್ಪು, ಪಂಚಾಯತಿ ತೀರ್ಮಾನ.                           |



## B

| English       | Sanskrit   | Kannada   |
|---------------|--|---|
| Baby          | ಶಿಶುಃ, ಸ್ತನನ್ವಯಃ   | ಎಳೆಯಮಗು, ಹಸುಗೂಸು.   |
| Back          | (1) ಪಶ್ಚಾತ್<br>(2) ಪೃಥದೇಶಃ   | (1) ಹಿಂದುಗಡೆ.<br>(2) ಹಿಂಭಾಗ, ಬೆನ್ನ.   |
| Backbone      | ಪೃಥವಂಶಃ  | ಬೆನ್ನುಮೂಳೆ.   |
| Background    | (1) ಪಶ್ಚಾದ್ಭೂಮಿಃ<br>(2) ಪ್ರಾಕ್ತನಪರಿಸ್ಥಿತಿಃ<br>(3) ಪ್ರಾಧಾನ್ಯಪ್ರದಾತೃತ್ವಮ್  | (1) ಹಿಂದುಗಡೆಯ ಭೂಮಿ.<br>(2) ಹಿನ್ನೆಲೆ.<br>(3) ಮುಂದುಗಡೆ ಇರುವ ವ್ಯಕ್ತಿಗೆ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯ ಕೊಡುವುದು. |
| Backward      | (1) ಪರಾಡ್ಘ್ಮುಖಃ, ವಿಮುಖಃ<br>(2) ಮಂದಮತಿಃ<br>(3) ಪಶ್ಚಾತ್ ಸ್ಥಿತಃ             | (1) ವಿಮುಖನಾದವನು, ಮನಸ್ಸಿಲ್ಲದವನು.<br>(2) ಮಂದಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು.<br>(3) ಹಿಂದಿಳಿದವನು.           |
| Bad behaviour | ದುರ್ವರ್ತನಮ್  | ಕೆಟ್ಟನಡತೆ.  |
| Badge         | ಚಿಹ್ನಮ್  | ಲಾಂಛನ, ಗುರುತಿನ ಬಿಲ್ಲೆ.  |
| Bag           | ಭಸ್ತ್ರಿಕಾ  | ಕೈಚೀಲ.  |
| Bail          | ಲಗನಕಃ  | ಜಾಮೀನುದಾರ.  |
| Bail bond     | ಪ್ರತಿಭೂವಂಧಪತ್ರಮ್   | ಜಾಮೀನು ಪತ್ರ.  |
| Balance       | (1) ಶೇಷಃ<br>(2) ಸಮತೋಲನಮ್   | (1) ಬಾಕಿ, ಶಿಲ್ಕು.<br>(2) ಸರಿತೂಗಿಸುವುದು.   |
| Balcony       | ಚಂದ್ರಶಾಲಾವಿರ್ತದಿಃ  | ಉಪ್ಪರಿಗೆಯ ಮೊಗಸಾಲೆ.  |
| Bale          | ಭಾರಃ   | ಮೂಟೆ.   |
| Ballot        | ಗುಪ್ತಮತದಾನಮ್   | ರಹಸ್ಯವಾಗಿ ಮತ ಕೊಡುವುದು.  |
| Ballot paper  | ಮತದಾನಪತ್ರಮ್  | ಮತ ನೀಡುವ ಪತ್ರ.  |
| Banishment    | ದೇಶಾದ್ವಹಿಷ್ಕಾರಃ  | ದೇಶದಿಂದ ಗಡೀಪಾರು.  |
| Bank          | (1) ವित्तकोशः,<br>वित्तव्यवहारस्थलम्<br>(2) तीरम्, तटम्                  | (1) ಹಣಕಾಸಿನ ವ್ಯವಹಾರ ಗೃಹ.<br>(2) ತೀರ, ದಡ.  |
| Bank cheque   | वित्तकोशधनादेशपत्रम्   | ಬ್ಯಾಂಕಿನ ಧನಾದೇಶಪತ್ರ.  |
| Banking       | वित्तकोशव्यवहारः   | ಬ್ಯಾಂಕಿನ ವ್ಯವಹಾರ.   |
| Banner        | ध्वजः, पताका   | ಬಾವುಟ.  |
| Bar           | (1) न्यायवादिनां संघः<br>(2) न्यायालये विचारण-<br>समये, वन्दिनां स्थानम् | (1) ವಕೀಲರ ಸಂಘ.<br>(2) ನ್ಯಾಯಾಲಯದಲ್ಲಿ ವಿಚಾರಣೆಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕೈದಿಯು ನಿಲ್ಲುವ ಕುಕ್ಕಿ.            |



## English

## Sanskrita

## Kannada

|                 |                           |                             |
|-----------------|---------------------------|-----------------------------|
|                 | (3) ಲೋಹಶಾಲಾಕಾ             | (3) ಕಬ್ಬಿಣದ ಸಲಾಕೆ.          |
|                 | (4) ಮಘಶಾಲಾ, ಮದಿರಾಗೃಹಮ್    | (4) ಹೆಂಡದ ಅಂಗಡಿ.            |
| Barbarian       | ಅನಾಗರಕಃ, ಅಸಮ್ಯ:           | ಒರಟು ಮನುಷ್ಯ, ಅನಾಗರಕ, ಕ್ರೂರ. |
| Barbarity       | ಕ್ರೌರ್ಯಮ್                 | ಕ್ರೂರತನ.                    |
| Bargain         | ವಿಕ್ರಯವ್ಯವಹಾರ:            | ವ್ಯಾಪಾರದಲ್ಲಿ ಮಾಡುವ ಚೌಕಾಸಿ.  |
| Barren land     | ವನ್ಧ್ಯಭೂಮಿಃ, ಮೋಘಭೂಮಿಃ     | ಬಂಜರು ಭೂಮಿ, ಬೆಳೆಯದ ಜಮೀನು.   |
| Barter          | ವಸ್ತುವಿನಿಮಯ:              | ಅದಲು ಬದಲು ಮಾಡುವುದು.         |
| Barterer        | ವಸ್ತುವಿನಿಮಯಕರ್ತಾ          | ಅದಲು ಬದಲು ಮಾಡುವವನು.         |
| Base            | ಮೂಲಭಾಗ:                   | ಮೂಲಸ್ಥಾನ.                   |
| Baseless        | ಆಧಾರರಹಿತ:                 | ಆಧಾರವಿಲ್ಲದ.                 |
| Basic           | ಮೂಲಭೂತ:                   | ಆಧಾರಭೂತವಾದ.                 |
| Basic education | ಮೂಲಶಿಕ್ಷಣಮ್               | ಮೂಲ ಶಿಕ್ಷಣ.                 |
| Basic pay       | ಮೂಲವೇತನಮ್                 | ಮೂಲ ವೇತನ.                   |
| Batch           | ಗಣಃ, ಸಮೂಹ:                | ಒಂದು ತಂಡ, ಗುಂಪು.            |
| Battle          | ಯುದ್ಧಮ್, ಸಮರ:             | ಯುದ್ಧ, ಕಾಳಗ.                |
| Bawd            | ಕುಡ್ಡನಿ                   | ತಲೆಹಿಡುಕೆ.                  |
| Bawdy house     | ವೇಷ್ಯಾಗೃಹಮ್               | ವೈಭಿಚಾರ ಗೃಹ.                |
| Beating         | (1) ಸ್ಪಂದನಮ್              | (1) ಸ್ಪಂದನ.                 |
|                 | (2) ತಾಡನಮ್                | (2) ಹೊಡೆತ.                  |
| Bed             | ಶಯ್ಯಾ                     | ಹಾಸಿಗೆ.                     |
| Beggary         | ಭಿಕ್ಷಾವೃತ್ತಿ:             | ಭಿಕ್ಷುಕನ ವೃತ್ತಿ.            |
| Beginning       | ಪ್ರಾರಂಭಃ, ಉಪಕ್ರಮ:         | ಪ್ರಾರಂಭ, ಉಪಕ್ರಮ.            |
| Behaviour       | ವರ್ತನಮ್, ಚರಿತಮ್           | ನಡವಳಿಕೆ, ವರ್ತನೆ.            |
| Belief          | ವಿಶ್ವಾಸಃ, ಪ್ರತ್ಯಯ:        | ನಂಬಿಕೆ.                     |
| Bell            | ಘಂಟಾ                      | ಗಂಟೆ.                       |
| Bench           | (1) ನ್ಯಾಯಾಲಯಃ, ನ್ಯಾಯಪೀಠಮ್ | (1) ನ್ಯಾಯಪೀಠ.               |
|                 | (2) ನ್ಯಾಯಾಧೀಶಕಾರ್ಯಮ್      | (2) ನ್ಯಾಯಾಧೀಶನ ಉದ್ಯೋಗ.      |
|                 | (3) ಫಲಕಾಸನಮ್              | (3) ಮರದ ಉದ್ದದ ಕಾಲ್ಮಣ.       |
| Bencher         | ನ್ಯಾಯವಾದಿಸಂಘಸ್ಯ ಸದಸ್ಯ:    | ವಕೀಲರ ಸಂಘದ ಸದಸ್ಯ.           |
| Benediction     | ಆಶೀರ್ವಚನಮ್                | ಆಶೀರ್ವಾದ.                   |
| Beneficial      | (1) ಲಾಭದಾಯಕಮ್             | (1) ಲಾಭಕರವಾದ.               |
|                 | (2) ಹಿತಕರಮ್               | (2) ಹಿತಕರವಾದ.               |
| Benefit         | (1) ಲಾಭಃ (2) ಹಿತಮ್        | (1) ಲಾಭ. (2) ಹಿತ.           |



| English              | Sanskrita  | Kannada   |
|----------------------|--|---|
| Benevolent           | हितैषಿ   | ಹಿತವನ್ನು ಕೋರುವವನು.  |
| Benevolent intention | ಹಿತಚಿಂತನಮ್   | ಹಿತವನ್ನು ಚಿಂತಿಸುವುದು.   |
| Bepraise             | ಶ್ಲಾಘನಮ್,<br>ಅತಿಶಯಪ್ರಶಂಸಾ  | ಹೆಚ್ಚು ಶ್ಲಾಘಿಸುವುದು,<br>ಅತಿಯಾಗಿ ಪ್ರಶಂಸಿಸುವುದು.  |
| Best                 | ಸರ್ವೋತ್ತಮಮ್  | ಬಹಳ ಉತ್ತಮವಾದ.   |
| Bestower             | ಅರ್ಪಯಿತಾ   | ಸಮರ್ಪಿಸುವವನು.   |
| Betterment           | ಅಭಿವೃದ್ಧಿ:   | ಉನ್ನತಿ, ಏಳಿಗೆ.  |
| Betting              | ಘೃತಮ್  | ಜೂಜು.   |
| Beyond               | (1) ಅವಧೇರನಂತರಮ್<br>(2) ಅತಿಮಾತ್ರಮ್, ಅಸ್ಯಧಿಕಮ್   | (1) ಅವಧಿಯ ತರುವಾಯ.<br>(2) ಹೆಚ್ಚಾದ, ಅಧಿಕವಾದ.  |
| Bibliographer        | ಗ್ರಂಥಕರ್ತಾ   | ಗ್ರಂಥದ ಲೇಖಕ.  |
| Bibliography         | (1) ಗ್ರಂಥಚರಿತಮ್,<br>ಗ್ರಂಥವಿವರಣಮ್<br>(2) ಗ್ರಂಥಸೂಚಿ  | (1) ಗ್ರಂಥಗಳ ವಿವರಣೆ.<br>(2) ಗ್ರಂಥಗಳ ಸೂಚಿ.  |
| Bilingual            | ದ್ವಿಭಾಷಾಸಂಬಂಧಿ   | ಎರಡು ಭಾಷೆಗಳ ಸಂಬಂಧವಾದ.   |
| Bilinguist           | ದ್ವಿಭಾಷಿ, ಭಾಷಾಭಿಜ್ಞ:   | ಎರಡು ಭಾಷೆಗಳನ್ನು ಅಡುವವನು.  |
| Bill                 | (1) ಚಕ್ರು: (2) ವಿಕ್ರಯಪತ್ರಮ್<br>(3) ಘೋಷಣಾಪತ್ರಮ್<br>(4) ವ್ಯವಸ್ಥಾಪತ್ರಮ್<br>(5) ವಿನಿಮಯಪತ್ರಮ್<br>(6) ವಿಧೇಯಕಮ್ | (1) ಹಕ್ಕಿಯ ಕೊಕ್ಕು. (2) ಬೆಲೆಪಟ್ಟಿ.<br>(3) ಗೋಡೆಯ ಮೇಲೆ ಅಂಟಿಸುವ ಪ್ರಕಟನ<br>ಪತ್ರ. (4) ವ್ಯವಸ್ಥಾಪತ್ರ.<br>(5) ವಿನಿಮಯಪತ್ರ,<br>(6) ವಿಧೇಯಕ. |
| Bill book            | (1) ವಿಕ್ರಯಪತ್ರಪುಸ್ತಕಮ್<br>(2) ವಿನಿಮಯಪತ್ರಪುಸ್ತಕಮ್   | (1) ಬೆಲೆಪಟ್ಟಿಯ ಪುಸ್ತಕ.<br>(2) ವಿನಿಮಯ ಪತ್ರಗಳ ಪುಸ್ತಕ.   |
| Bill broker          | ವಿನಿಮಯಪತ್ರ<br>ಕ್ರಯವಿಕ್ರಯಪ್ರಯೋಜಕ:   | ದಳಾಳಿ.  |
| Bill of cost         | ಮೂಲ್ಯಪತ್ರಮ್  | ಬೆಲೆಯ ಪಟ್ಟಿ.  |
| Bill of exchange     | ವಿನಿಮಯಪತ್ರಮ್   | ವಿನಿಮಯ ಪತ್ರ.  |
| Birth                | ಜನ್ಮ, ಜನನಮ್  | ಹುಟ್ಟು, ಉತ್ಪತ್ತಿ.   |
| Birth domicile       | ವಾಸಸ್ಥಾನಮ್, ವಸತಿ:  | ನಿವಾಸ, ಅಧಿವಾಸ.  |
| Birth control        | ಜನನನಿರ್ವಹಣಮ್, ಜನನನಿರೋಧ:  | ಜನನದ ನಿರೋಧ.   |
| Birthday             | ಜನ್ಮದಿನಮ್  | ಹುಟ್ಟುಹಬ್ಬ.   |
| Birth land           | ಜನ್ಮಭೂಮಿ:  | ಹುಟ್ಟಿದ ಸ್ಥಳ.   |
| Birth place          | ಜನ್ಮಸ್ಥಾನಮ್  | ಹುಟ್ಟಿದ ಸ್ಥಳ.   |



| English              | Sanskrit                        | Kannada                                       |
|----------------------|---------------------------------|---|
| Birth right          | ಜನ್ಮಸಿದ್ಧಾಧಿಕಾರ:                | ಜನ್ಮತಃ ಬಂದಿರುವ ಅಧಿಕಾರ.                        |
| Bitterness           | ತಿಕ್ತತಾ, ಕಡ್ಡುತಾ                | ಕಹಿ, ಕಟು.                                     |
| Biweekly             | ಪಾಷಿಕಮ್, ಅರ್ಧಮಾಸಿಕಮ್            | ಹದಿನೈದು ದಿನಗಳಿಗೊಂದು ಸಲ ಬರುವ (ಪತ್ರಿಕೆ).        |
| Blame                | ದೂಷಣಮ್, ನಿಂದಾ                   | ದೂಷಣೆ, ನಿಂದೆ, ತೆಗಳಿಕೆ.                        |
| Blank                | ಶೂನ್ಯಮ್                         | ಖಾಲಿ.   |
| Blockade             | ದಿಗ್ಬಂಧನಮ್                      | ದಿಗ್ಬಂಧನ.                                     |
| Blood                | ರೂಢಿರಮ್                         | ರಕ್ತ, ನೆತ್ತರು.                                |
| Blood circulation    | ರಕ್ತಸಂಚಲನಮ್                     | ರಕ್ತಸಂಚಾರ.                                    |
| Blood relation       | ರಕ್ತಸಂಬಂಧ:                      | ರಕ್ತಸಂಬಂಧ.                                    |
| Board                | (1) ಮಂಡಲಮ್ (2) ಫಲಕಮ್ (3) ಭೋಜನಮ್ | (1) ಮಂಡಲಿ. (2) ಹಲಗೆ. (3) ಊಟ.                  |
| Board of Agriculture | ಕೃಷಿಮಂಡಲಮ್, ಕೃಷಿಪರಿಷತ್          | ವ್ಯವಸಾಯ ಮಂಡಲಿ.                                |
| Board of Education   | ವಿದ್ಯಾಪರಿಷತ್                    | ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸದ ಮಂಡಲಿ.                           |
| Board of Examination | ಪರೀಕ್ಷಾಮಂಡಲಮ್                   | ಪರೀಕ್ಷೆಗಳ ಸಮಿತಿ.                              |
| Board of Examiners   | ಪರೀಕ್ಷಕ ಸಮಿತಿ:                  | ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಮಿತಿ.                               |
| Board of Studies     | ಪಠ್ಯಪುಸ್ತಕನಿರ್ಣಾಯಕ ಸಮಿತಿ:       | ಪಠ್ಯಪುಸ್ತಕಗಳ ಆಯ್ಕೆ ಸಮಿತಿ.                     |
| Body                 | ಶರೀರಮ್, ದೇಹ:                    | ದೇಹ, ಶರೀರ.                                    |
| Body of letter       | ಪತ್ರಸ್ಯವಿಷಯ:                    | ಪತ್ರದಲ್ಲಿರುವ ವಿಷಯ.                            |
| Bombing              | ಪರಮಾಣುಶಸ್ತ್ರಪಾತನಮ್              | ಅಣುಬಾಂಬನ್ನು ಹಾಕುವುದು.                         |
| Bomb proof           | ಪರಮಾಣುಶಸ್ತ್ರಪ್ರತಿರೋಧಕ:          | ಅಣುಬಾಂಬನ್ನು ತಡೆಯುವ ಸಾಧನ.                      |
| Bonafide             | ಪ್ರಾಮಾಣಿಕಃ, ವಿಶ್ವಾಸಾರ್ಹಃ        | ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ, ಕಪಟವಿಲ್ಲದವನು.                      |
| Bond                 | (1) ಬಂಧನಮ್ (2) ಋಣಪತ್ರಮ್         | (1) ಕಟ್ಟುಪಾಡಿನ ಪತ್ರ. (2) ಸಾಲದ ಪತ್ರ, ಯಜ್ಞಪತ್ರ. |
| Bondage              | ದಾಸ್ಯಮ್, ಬಂಧನಮ್                 | ಬಂಧನ, ನಿರ್ಬಂಧ, ಗುಲಾಮಗಿರಿ.                     |
| Bonus                | ಅಧಿಲಾಭಾಂಶ:                      | ಅಧಿಕ ಲಾಭದ ಭಾಗ.                                |
| Book                 | ಪುಸ್ತಕಮ್, ಗ್ರಂಥ:                | ಪುಸ್ತಕ.                                       |
| Book account         | ಲೇಖಾಪುಸ್ತಕಮ್                    | ವಿಶದವಾದ ಲೆಕ್ಕಗಳ ಪುಸ್ತಕ.                       |
| Book adjustment      | ಪುಸ್ತಕಸಮಾಯೋಜನಮ್                 | ನಗದು ಪಾವತಿ ಮಾಡಿದ ಲೆಕ್ಕದ ಹೊಂದಾಣಿಕೆ.            |
| Book keeping         | ಲೇಖಾಪಾಲನಮ್                      | ಸರಿಯಾದ ಲೆಕ್ಕ ಇಡುವುದು.                         |
| Book post            | ವಿವೃತಪತ್ರಮ್, ಅಪಾವೃತಪತ್ರಮ್       | ತೆರೆದ ಅಂಚೆ.                                   |
| Border               | ಸೀಮಾ, ಮರ್ಯಾದಾ                   | ಎಲ್ಲೆ, ಸರಹದ್ದು.                               |
| Borrower             | ಋಣಕಾರ:                          | ಸಾಲ ಪಡೆಯುವವನು.                                |



| English           | Sanskrit                             | Kannada                              |
|-------------------|--------------------------------------|--------------------------------------|
| Botany            | ಸಸ್ಯವಿಜ್ಞಾನಮ್                        | ಸಸ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ.                         |
| Bottom            | ತಲಮ್                                 | ತಳಭಾಗ.                               |
| Bound             | ಸೀಮಾ, ಮರ್ಯಾದಾ                        | ಎಲ್ಲೆ, ಸರಹದ್ದು.                      |
| Boundary          | ಸೀಮಾರೆಖಾ                             | ಗಡಿಯ ಗೆರೆ.                           |
| Boundary dispute  | ಸೀಮಾವಿವಾದಃ                           | ಗಡಿಯ ವಿವಾದ.                          |
| Boundary guard    | ಸೀಮಾರಕ್ಷಕಃ                           | ಗಡಿಯ ಕಾವಲುಗಾರ.                       |
| Boy               | ಬಾಲಕಃ                                | ಹುಡುಗ.                               |
| Boycott           | ಬಹಿಷ್ಕಾರಃ                            | ಹೊರಗೆ ಇಡುವುದು.                       |
| Boyhood           | ಬಾಲ್ಯಮ್                              | ಬಾಲ್ಯ, ಹುಡುಗತನ.                      |
| Bracket           | ಆವರಣಚಿಹ್ನಮ್                          | ಆವರಣದ ಗುರುತು.                        |
| Branch            | ಶಾಖಾ                                 | ಶಾಖೆ, ರೆಂಬೆ.                         |
| Brand             | ಲಾಙ್ಛನಮ್                             | ಗುರುತು, ಚಿಹ್ನೆ.                      |
| Brandy            | ಸುರಾ, ಮದ್ಯಮ್                         | ಸಾರಾಯಿ, ಹೆಂಡ.                        |
| Bravery           | ವೀರ್ಯಮ್, ಪರಾಕ್ರಮಃ, ಶಕ್ತಿಃ            | ವೀರ್ಯ, ಪರಾಕ್ರಮ, ಶಕ್ತಿ.               |
| Breadth           | ವಿಸ್ತಾರಃ                             | ಅಗಲ.                                 |
| Break             | ಮಙ್ಗಲಃ                               | ಒಡೆಯುವುದು, ಮುರಿಯುವುದು.               |
| Breast            | ವಕ್ಷಃ, ತರಃ, ಹೃದಯಮ್                   | ಎದೆ.                                 |
| Breath            | ಶ್ವಾಸಃ, ಪ್ರಾಣವಾಯುಃ                   | ಶ್ವಾಸ, ಉಸಿರು.                        |
| Bribe             | ಉತ್ತಕೋಚಃ                             | ಲಂಚ.                                 |
| Bribery           | ಉತ್ತಕೋಚವ್ಯವಹಾರಃ                      | ಲಂಚದ ವ್ಯವಹಾರ.                        |
| Bride             | ವಧುಃ                                 | ಕನ್ಯೆ.                               |
| Bridegroom        | ಪರಿಣೇತಾ                              | ವರ, ಮದುವಣಿಗ.                         |
| Bridge            | ಸೇತುಃ                                | ಸೇತುವೆ.                              |
| Broil             | ಕಲಹಃ                                 | ಜಗಳ.                                 |
| Budget            | ಆಯವ್ಯಯಪತ್ರಮ್                         | ವರಮಾನ ಮತ್ತು ವೆಚ್ಚದ ಮುಂಗಡ ಪತ್ರ.       |
| Budget deficit    | ವ್ಯಯಾಧಿಕರ್ಯಾವ್ಯಯಪತ್ರಮ್               | ಅಧಿಕ ವೆಚ್ಚದ ಮುಂಗಡ ಪತ್ರ.              |
| Budget surplus    | ಆಯಾಧಿಕರ್ಯಾವ್ಯಯಪತ್ರಮ್                 | ಅಧಿಕ ವರಮಾನವುಳ್ಳ ಮುಂಗಡ ಪತ್ರ.          |
| Budget allotment  | ಆಯವ್ಯಯವಿಭಜನಮ್                        | ಆಯವ್ಯಯಗಳ ಹಂಚಿಕೆ.                     |
| Budget estimate   | ಆಯವ್ಯಯಮೂಲ್ಯನಿರ್ಣಯಃ, ಆಯವ್ಯಯಸ್ಥೂಲಮಾನಮ್ | ಆಯವ್ಯಯಗಳ ಅಂದಾಜು ಪಟ್ಟಿ.               |
| Budget grant      | ಆಯವ್ಯಯವಿತರಣಮ್, ಆಯವ್ಯಯೋತ್ಸರ್ಗಃ        | ವರಮಾನ ಮತ್ತು ವ್ಯಯಗಳ ಉತ್ಸರ್ಗ, —ವಿತರಣೆ. |
| Budget memorandum | ಆಯವ್ಯಯಸಂಬಂಧಿ ಜ್ಞಾಪನಪತ್ರಮ್            | ಆಯವ್ಯಯ ಸಂಬಂಧವಾದ ಜ್ಞಾಪಕ ಪತ್ರ.         |



| English         | Sanskrita                        | Kannada                            |
|-----------------|----------------------------------|------------------------------------|
| Builder         | निर्माता                         | ರಚಿಸುವವನು, ನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡುವವನು.       |
| Building        | गृहम्                            | ಮನೆ, ಕಟ್ಟಡ.                        |
| Bulk            | स्थूलपरिमाणम्                    | ರಾಶಿ, ಸಗಟು.                        |
| Bulk sale       | स्थूलपरिमाणविक्रयः               | ಸಗಟು ಮಾರಾಟ.                        |
| Bull            | वृषभः                            | ಎತ್ತು.                             |
| Bullet          | सीसकगुलिका                       | ಸೀಸದ ಗುಂಡು, ಗೋಲಿ.                  |
| Bulletin        | अधिकारिकृतम् प्रकटनम्            | ಅಧಿಕಾರಿಯ ಲಘು ಪ್ರಕಟನೆ.              |
| Bullion         | अनाहतं स्वर्णम्,<br>अनाहतं रजतम् | ಚಿನ್ನ.<br>ಬೆಳ್ಳಿ.                  |
| Bumper crops    | प्रभूतसस्यागमः                   | ಹುಲುಸಾದ ಬೆಳೆ.                      |
| Bungle          | महापराधः                         | ದೊಡ್ಡ ತಪ್ಪು.                       |
| Bureau          | (१) कार्यालयः (२) विभागः         | (1) ಕಚೇರಿ (2) ವಿಭಾಗ.               |
| Burglary        | सन्धिचौर्यम्                     | ಕನ್ನ ಕೊರೆದು ಕದಿಯುವುದು.             |
| Business        | व्यापारः, व्यवहारः               | ವ್ಯಾಪಾರ, ಜೀವಿಕೆಯ ವ್ಯವಹಾರ.          |
| Business place  | व्यापारस्थलम्                    | ವ್ಯಾಪಾರ ಮಾಡುವ ಸ್ಥಳ.                |
| Business hours  | व्यापारवेला                      | ವ್ಯಾಪಾರ ಮಾಡುವ ಕಾಲ.                 |
| Business letter | व्यापारपत्रम्                    | ವ್ಯಾಪಾರಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಕಾಗದಪತ್ರಗಳು. |
| Busy            | कार्यमग्नः                       | ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಮಗ್ನನಾಗಿರುವವನು.         |
| Buyer           | क्रेता                           | ಕೊಳ್ಳುವವನು.                        |
| By-election     | उपनिर्वाचनम्                     | ಉಪಚುನಾವಣೆ.                         |
| By-instalment   | अंशार्पणेन                       | ಕಂತಿನ ಮೂಲಕ.                        |
| By-land         | भूमार्गेण                        | ಭೂಮಾರ್ಗವಾಗಿ.                       |

## C

|              |   |  |
|--------------|---|--|
| Cabinet      | मन्त्रिमण्डलम्                          | ಸಚಿವ ಸಂಪುಟ.                                    |
| Cable        | समुद्रमध्यस्थतन्त्री                    | ಸಮುದ್ರದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಹಾಕಿರುವ ತಂತಿ.                |
| Calendar     | दिनाङ्कसूची,<br>तिथिवारनक्षत्राणां सूची | ತಿಥಿ ವಾರ ನಕ್ಷತ್ರಗಳ ಪ್ರದರ್ಶಿನಿ,<br>ದಿನಾಂಕ ಸೂಚಿ. |
| Call bell    | आह्वानघण्टा                             | ಕರೆಗಂಟೆ.                                       |
| Call book    | अवधिपुस्तकम्                            | ವಾಯಿದೆ ಪುಸ್ತಕ.                                 |
| Call out     | उच्चैराह्वानम्                          | ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗಿ ಕರೆಯುವುದು.                      |
| Calumniation | मिथ्यारोपणम्                            | ಸುಳ್ಳು ಆಪಾದನೆ, ಕಳಂಕಾರೋಪಣ.                      |
| Canal        | कृत्या                                  | ಕಾಲುವೆ.  |



| English                     | Sanskrita                                       | Kannada   |
|-----------------------------|---|---|
| Cantonment                  | ಸೇನಾನಿವೇಶ:                                      | ಸೇನೆಯ ಶಿಬಿರ.  |
| Canvasser                   | (1) ವಸ್ತುಪ್ರಚಾರಕ:<br>(2) ಮತಯಾಚಕ:                | (1) ವ್ಯಾಪಾರಪ್ರಚಾರಕ.<br>(2) ಮತ ಕೋರುವವನು.               |
| Capacity                    | ಸಾಮರ್ಥ್ಯಮ್                                      | ಶಕ್ತಿ.  |
| Capital                     | (1) ರಾಜಧಾನಿ<br>(2) ಮೂಲಧನಮ್                      | (1) ರಾಜಧಾನಿ.<br>(2) ಮೂಲಧನ, ಬಂಡವಾಳ.                    |
| Capitalist                  | ಮಹಾಧನವಾನ್, ಲಕ್ಷಾಧೀಶ:,<br>ಕೊಡುತಾಳಿದವನು:          | ಬಂಡವಾಳಗಾರ, ಸಾಹುಕಾರ, ಲಕ್ಷಾಧಿಪತಿ,<br>ಕೋಟ್ಯಾಧೀಶ್ವರ.      |
| Capitulation                | ಶರಣಾಗತಿ:  | ಶರಣಾಗತನಾಗುವುದು.                                       |
| Case                        | (1) व्यवहार:<br>(2) अभियोग:<br>(3) विचारणीयोंश: | (1) ವಾದ.<br>(2) ದಾವೆ.<br>(3) ವಿಚಾರಕ್ಕೆ ಯೋಗ್ಯವಾದ ವಿಷಯ. |
| Cash                        | मुद्रा, टङ्का:                                  | ನಗದು, ಹಣ.   |
| Cashier                     | कोशाध्यक्ष:                                     | ನಗದು ಗುಮಾಸ್ತೆ.  |
| Cash purchase               | रोककय:  | ನಗದು ಕ್ರಯ, ನಗದು ವ್ಯಾಪಾರ.                              |
| Caste                       | वर्णः, जातिः, कुलम्                             | ಜಾತಿ, ಕುಲ.  |
| Casting vote                | मतप्रदानम्                                      | ಮತ ಕೊಡುವುದು.  |
| Casual election             | आकस्मिकनिर्वाचनम्,<br>आकस्मिकवरणम्              | ಆಕಸ್ಮಿಕ ಚುನಾವಣೆ.                                      |
| Casualty                    | अपघात:  | ದುರ್ಘಟನೆ, ದೈವಿಕ ವಿಪತ್ತು.                              |
| Cattle                      | पशुसमूहः  | ಜಾನುವಾರು.   |
| Cause                       | कारणम्  | ಕಾರಣ.   |
| Caution                     | जागरुकता  | ಎಚ್ಚರಿಕೆ.   |
| Celebration                 | आचरणम्  | ನೆರವೇರಿಸುವುದು.  |
| Census                      | जनगणिति:  | ಜನರ ಎಣಿಕೆ.  |
| Central Board               | केन्द्रमण्डलम्                                  | ಕೇಂದ್ರ ಮಂಡಲಿ.   |
| „ of Irrigation             | केन्द्रजलप्रदानमण्डलम्                          | ಕೇಂದ್ರ ನೀರಾವರಿ ಮಂಡಲಿ.                                 |
| „ of Revenue                | केन्द्रराजस्वमण्डलम्                            | ಕೇಂದ್ರ ರಾಜಕರ ಮಂಡಲಿ.<br>ಕೇಂದ್ರ ರಾಜಧನ ಮಂಡಲಿ.            |
| Central Government          | केन्द्रशासनपदम्                                 | ಕೇಂದ್ರ ಸರ್ಕಾರ.  |
| Central Intelligence Bureau | केन्द्रीयगुप्तवार्ता विभागः                     | ಕೇಂದ್ರೀಯ ರಹಸ್ಯ ವಾರ್ತಾ ಶಾಖೆ.                           |
| Central Revenue             | केन्द्रराजस्वम्                                 | ಕೇಂದ್ರ ರಾಜಾದಾಯ.                                       |
| Certificate                 | (1) प्रमाणपत्रम्<br>(2) योग्यतापत्रम्           | (1) ಪ್ರಮಾಣಪತ್ರ.<br>(2) ಯೋಗ್ಯತಾಪತ್ರ.                   |



| English                     | Sanskrita   | Kannada  |
|-----------------------------|---|--|
| Certified Chamber           | प्रमाणिकृतः, दृढीकृतः<br>कक्ष्या, अपवरकः,<br>गृहप्रकोष्ठकः                                | ಪ್ರಮಾಣಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, ದೃಢಪಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ.<br>ಕೋಣೆ, ಕೊಠಡಿ.   |
| Chamber of Commerce Charge  | वाणिज्यमण्डलम्<br>(१) व्ययः<br>(२) दोषारोपणम्<br>(३) अधिकारः<br>(४) नियोगः<br>(५) मूल्यम् | ವರ್ತಕರ ಮಂಡಲಿ.<br>(1) ಖರ್ಚು, ವೆಚ್ಚ.<br>(2) ದೋಷವನ್ನು ಹೊರಿಸುವುದು.<br>(3) ಅಧಿಕಾರ.<br>(4) ನಿಯೋಗ.<br>(5) ಬೆಲೆ. |
| Charge sheet                | दोषारोपणपत्रम्  | ತಪ್ಪನ್ನು ಹೊರಿಸುವ ಪತ್ರ.   |
| Chaste                      | (१) पतिव्रता, साध्वी<br>(२) शुद्धः, शिष्टः  | (1) ಪತಿವ್ರತೆಯಾದ ಹೆಂಗಸು.<br>(2) ಸುಶೀಲನಾದ ಪುರುಷ.   |
| Chartered Accountant        | शासनाधिकृतलेखापालः  | ಸನ್ನದು ಪಡೆದ ಲೇಖಾಪಾಲ.   |
| Charitable                  | दानशीलः   | ಧರ್ಮಬುದ್ಧಿಯುಳ್ಳವನು.  |
| Charity                     | (१) दानम् (२) दया<br>(३) प्रीतिः<br>(४) औदार्यम्  | (1) ಕೊಡುಗೆ. (2) ಕನಿಕರ.<br>(3) ವಿಶ್ವಾಸ, ಪ್ರೀತಿ.<br>(4) ಔದಾರ್ಯ, ಹೃದಯವೈಶಾಲ್ಯ,<br>ದಾನಶೀಲತೆ.                  |
| Cheating                    | प्रतारणम्   | ವಂಚನೆ, ಮೋಸ.  |
| Chemist                     | रसायनशास्त्राभिज्ञः   | ರಸಾಯನಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ತಿಳಿದವನು.  |
| Chemistry                   | रसायनशास्त्रम्  | ರಸಾಯನಶಾಸ್ತ್ರ.  |
| Cheque                      | धनादेशपत्रम्  | ಇದರಲ್ಲಿರುವ ಮೊಬಲಗನ್ನು ಇವರಿಗೆ<br>ಕೊಡಬೇಕೆಂಬ ಧನಾದೇಶ ಚೀಟಿ.  |
| Cheque book                 | धनादेशपत्रपुस्तकम्  | ಧನಾದೇಶ ಪತ್ರಗಳ ಪುಸ್ತಕ.  |
| Chief Accountant            | मुख्यलेखापालः   | ಪ್ರಧಾನ ಲೇಖಾಪಾಲ.  |
| Chief Commissioner          | मुख्यायुक्तः  | ಶ್ರೇಷ್ಠ ಆಯುಕ್ತ.  |
| Chief Conservator of Forest | मुख्यारण्यसंरक्षकः  | ಪ್ರಧಾನ ಅರಣ್ಯಪಾಲಕ.  |
| Chief Court                 | उच्चन्यायालयः   | ಉಚ್ಚ ನ್ಯಾಯಾಲಯ.   |
| Chief Customs Authority     | मुख्यसीमाशुल्काधिकारी   | ಮುಖ್ಯ ಗಡಿಯ ತೆರಿಗೆ ಅಧಿಕಾರಿ.   |
| Chief Director of Purchase  | मुख्यक्रयनिर्देशकः  | ಮುಖ್ಯ ಕ್ರಯನಿರ್ದೇಶಕ.  |
| Chief election commissioner | मुख्यनिर्वाचनायुक्तः  | ಮುಖ್ಯ ಚುನಾವಣೆಯ ಆಯುಕ್ತ.   |
| Chief Engineer              | मुख्याभिधन्ता   | ಮುಖ್ಯ ಅಭಿಯಂತ, ಮುಖ್ಯ ಶಿಲ್ಪಿ.  |
| Chief Forest Officer        | मुख्यारण्याधिकारी   | ಮುಖ್ಯ ಅರಣ್ಯಾಧಿಕಾರಿ.  |



| English                                | Sanskrita   | Kannada   |
|--|---|---|
| Chief Inspector                        | मुख्यनिरीक्षकः  | ಪ್ರಧಾನ ನಿರೀಕ್ಷಕ.  |
| Chief Judge                            | श्रेष्ठन्यायाधिपतिः   | ಮುಖ್ಯ ನ್ಯಾಯಾಧೀಶ.  |
| Chief Justice                          | मुख्यन्यायाधिपतिः   | ಉಚ್ಚ ನ್ಯಾಯಾಲಯದ ನ್ಯಾಯಾಧಿಪತಿ.                               |
| Chief Minister                         | मुख्यमन्त्री  | ಮುಖ್ಯಮಂತ್ರಿ.  |
| Chief Press Adviser                    | पत्रिकामुख्योपदेष्टा  | ಮುಖ್ಯ ಪತ್ರಿಕಾ ಸಲಹಾಧಿಕಾರಿ.                                 |
| Chief Revenue Authority                | मुख्यराजस्वाधिकारी  | ಮುಖ್ಯ ರಾಜಾದಾಯಾಧಿಕಾರಿ.                                     |
| Chief Secretary                        | मुख्यकार्यदर्शी   | ಮುಖ್ಯ ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿ.   |
| Chief Tax Collector                    | मुख्यकरसंग्राहकः  | ಮುಖ್ಯ ತೆರಿಗೆ ವಸೂಲಿ ಅಧಿಕಾರಿ.                               |
| Chief Traffic Manager                  | मुख्यसञ्चारनिर्वाहकः  | ಮುಖ್ಯ ಸಂಚಾರ ಕಾರ್ಯದ ನಿರ್ವಾಹಕ<br>ಮಾಡುವವನು.                  |
| Chief Transportation<br>Superintendent | मुख्यपरिवाहकः,<br>मुख्यसञ्चाराधीक्षकः                             | ಮುಖ್ಯ ಸಂಚಾರಾಧೀಕ್ಷಕ.                                       |
| Circle                                 | वृत्तम्, मण्डलम्  | ವೃತ್ತ, ವಲಯ.   |
| Circuit court                          | सञ्चारिन्यायालयः  | ಸಂಚರಿಸುವ ನ್ಯಾಯಾಲಯ.  |
| Circuit judge                          | सञ्चारिन्यायाधीशः   | ಸಂಚಾರಿ ನ್ಯಾಯಾಧೀಶ.   |
| Circular                               | (१) परिपत्रम्, प्रसारणपत्रम्<br>(२) वर्तुलम्<br>प्रसारः, परिचलनम् | (1) ಸುತ್ತೋಲೆ.<br>(2) ವರ್ತುಲವಾದ, ವೃತ್ತಾಕಾರವುಳ್ಳ<br>ಚಲಾವಣೆ. |
| Circulation                            | परिस्थितिः  | ಸಂದರ್ಭ.   |
| Circumstance                           | पौरः  | ನಗರವಾಸಿ, ಪಟ್ಟಣಿಗ.   |
| Citizen                                | पौरत्वम्  | ಪ್ರಜೆತನ, ಪಟ್ಟಣಿಗರ ಸೌಲಭ್ಯಗಳನ್ನು<br>ಅನುಭವಿಸುವುದು.           |
| Citizenship                            | पट्टणम्   | ನಗರ.  |
| City                                   | नगरसभा  | ನಗರಸಭೆ.   |
| City council                           | नगरन्यायालयः  | ನಗರ ನ್ಯಾಯಾಸ್ಥಾನ.  |
| City court                             | नगरपालिका   | ನಗರಸಭೆ, ಪುರಸಭೆ.   |
| City municipality                      | पौरनीतिः  | ಪೌರನೀತಿ.  |
| Civics                                 | सत्याग्रहः  | ಅಸಹಕಾರ ಚಳವಳಿ.   |
| Civil disobedience<br>movement         | देशे अशान्तिः   | ದೊಂಬಿ, ಸಾಮಾನ್ಯ ಹಿಂಸಾಚಾರ.                                  |
| Civil disorder                         | नागरकता   | ನಾಗರಕತೆ.  |
| Civilization                           | प्रजास्वातन्त्र्यम्   | ಪ್ರಜಾಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ.   |
| Civil liberty                          | अधिकारिसूची   | ಅಧಿಕಾರಿಗಳ ಪಟ್ಟಿ.  |
| Civil list                             | प्रजाप्रभुत्वाधिकारिणः  | ಪ್ರಜಾಪ್ರಭುತ್ವಾಧಿಕಾರಿಗಳು.                                  |
| Civil officers                         |   |   |



| English                    | Sanskrita  | Kannada /  |
|----------------------------|--|--|
| Classification             | ವರ್ಗೀಕರಣಮ್   | ವಿಂಗಡಿಸುವುದು, ವಿಂಗಡಣೆ.   |
| Classification of area     | ಕ್ಷೇತ್ರವರ್ಗೀಕರಣಮ್  | ಕ್ಷೇತ್ರಗಳ ವಿಂಗಡಣೆ.   |
| Client                     | ಆಶ್ರಿತಃ, ಅವಲಂಬಿ,<br>ಪ್ರತಿನಿಧಿದ್ವಾರಾ ವ್ಯವಹಾರಾರ್ಥಿ                               | ಕಕ್ಷಿಗಾರ, ಪ್ರತಿನಿಧಿಯ ಮೂಲಕ ವ್ಯವಹಾರ ನಡೆಸುವವನು.   |
| Closing balance            | ವ್ಯವಹಾರಾಂತೆ ಅವಶಿಷ್ಟಂ ಧನಮ್  | ವ್ಯವಹಾರಾನಂತರ ಉಳಿದ ಹಣ, ಶಿಲ್ಕು.  |
| Code of civil procedure    | ನಾಗರಕ ವ್ಯವಹಾರಪ್ರಕ್ರಿಯಾಸಂಹಿತಾ   | ವ್ಯವಹಾರ ಪ್ರಕ್ರಿಯಾಸಂಹಿತೆ.   |
| Code of criminal procedure | ದण्डಪ್ರಕ್ರಿಯಾಸಂಹಿತಾ  | ಶಿಕ್ಷೆಯ ಪ್ರಕ್ರಿಯಾಸಂಹಿತೆ.   |
| Co-employee                | ಸಹೋದ್ಯೋಗಿ  | ಜತೆಗಾರನೊಕರ.  |
| Colleague                  | ಸಹೋದ್ಯೋಗಿ  | ಜತೆಗಾರನೊಕರ.  |
| Collectively               | ಸಂಘಶಃ  | ಸಾಮೂಹಿಕವಾಗಿ, ಗುಂಪು ಗುಂಪಾಗಿ.  |
| Collector                  | (1) ಮण्डलाधिकारी<br>(2) संग्राहकः  | (1) ಜಿಲ್ಲಾಧಿಕಾರಿ.<br>(2) ಸಂಗ್ರಹಿಸುವವನು.  |
| Collectorate               | मण्डलाधिकारिकार्यक्षेत्रम्   | ಜಿಲ್ಲಾಧಿಕಾರಿಯ ಕಾರ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ.  |
| Command                    | (1) अधिकारः, प्रभुत्वम्<br>(2) आज्ञा, शासनम्                                   | (1) ಅಧಿಕಾರ, ಪ್ರಭುತ್ವ.<br>(2) ಆಜ್ಞೆ, ಶಾಸನ.  |
| Commandant                 | आज्ञापकः   | ಆಜ್ಞೆ ಮಾಡುವವನು.  |
| Commentary                 | व्याख्यानम्  | ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ, ಟೀಕೆ.   |
| Commentator                | व्याख्याकारः, भाष्यकारः  | ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಮಾಡುವವನು.  |
| Commerce                   | वाणिज्यम्  | ವಾಣಿಜ್ಯ, ವ್ಯಾಪಾರ.  |
| Commercial                 | वाणिज्यसम्बन्धी  | ವ್ಯಾಪಾರ ಸಂಬಂಧವಾದ.  |
| Commercial court           | वाणिज्यन्यायालयः   | ವ್ಯಾಪಾರ ಸಂಬಂಧವಾದ ನ್ಯಾಯಾಲಯ.   |
| Commercial development     | वाणिज्याभिवृद्धिः  | ವ್ಯಾಪಾರದ ವಿಕಾಸ, ವ್ಯಾಪಾರದ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ.  |
| Commission                 | आयोगः  | ಆಯೋಗ.  |
| Commissioner of Income tax | आयकरायुक्तः  | ಆದಾಯ ತೆರಿಗೆಯ ಆಯುಕ್ತ.   |
| Commissioner of Police     | आरक्षकायुक्तः  | ಆರಕ್ಷಕಾಯುಕ್ತ.  |
| Commissioner of Revenue    | राजस्वायुक्तः  | ಭೂಕಂದಾಯದ ಆಯುಕ್ತ.   |
| Commitment                 | (1) आसेधः, आश्रुतम्<br>(2) प्रतिरोधनम्<br>(3) विचारणार्थं कारागारे<br>निक्षेपः | (1) ಕಟ್ಟುಪಾಡು, ಮಾತುಕೊಟ್ಟ ನಿರ್ಬಂಧ<br>(2) ಅಡ್ಡಿ ಪಡಿಸುವುದು.<br>(3) ವಿಚಾರಣೆಗಾಗಿ ಬಂದಿಖಾನೆಯಲ್ಲಿಡು<br>ವುದು. |
| Committee                  | समितिः   | ಸಮಿತಿ, ಮಂಡಲಿ.  |
| Committee of enquiry       | विचारणासमितिः  | ವಿಚಾರಣೆಯ ಸಮಿತಿ.  |
| Commodity                  | पण्यवस्तु  | ವ್ಯಾಪಾರದ ಸರಕು.   |



| English                         | Sanskrita   | Kannada  |
|---------------------------------|---|--|
| Commodity committee             | पण्यवस्तुसमितिः   | ವ್ಯಾಪಾರದ ಸರಕಿನ ಸಮಿತಿ.  |
| Common lands                    | सार्वजनिकभूमिः  | ಊರೊಟ್ಟಿನ ಜಮೀನು.  |
| Common law                      | सामान्यविधिः  | ಜನಸಾಮಾನ್ಯಕ್ಕೂ ಅನ್ವಯಿಸುವ ಕಾನೂನು.  |
| Common sense                    | व्यवहारज्ञानम्  | ಪ್ರಪಂಚದ ವ್ಯವಹಾರ ಜ್ಞಾನ.   |
| Commonwealth                    | जनहितराज्यसमुदायः   | ಪ್ರಜೆಗಳ ಹಿತವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವ ರಾಜ್ಯಗಳ ಸಮುದಾಯ.  |
| Communal                        | मतीयः, जातिसम्बन्धी                                       | ಮತ ಸಂಬಂಧವಾದ, ಜಾತಿ ಸಂಬಂಧವಾದ.  |
| Communication                   | (१) सन्देशपत्रम्<br>(२) व्यवहारपत्रम्<br>(३) निवेदनपत्रम् | (1) ಸಮಾಚಾರವನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಪತ್ರ.<br>(2) ವ್ಯವಹಾರ ಪತ್ರ.<br>(3) ನಿವೇದನ ಪತ್ರ.                 |
| Communist                       | साम्यवादी   | ಸರ್ವಸಮಾನತೆಯನ್ನು ಹೇಳುವವನು.  |
| Community                       | जनसमुदायः, जनता   | ಜನಸಮಾಜ.  |
| Commutation                     | (१) परिवर्तनम्<br>(२) लघूकरणम्<br>(३) राशीकरणम्           | (1) ವಿನಿಮಯ, ಬದಲಾವಣೆ.<br>(2) ಲಘುವಾಗಿ ಮಾಡುವುದು.<br>(3) ರಾಶಿಯಾಗಿ ಮಾಡುವುದು, ರಾಶಿ ಹಾಕುವುದು. |
| Company                         | (१) साहचर्यम्<br>(२) मण्डलम्<br>(३) जनबन्धः               | (1) ಒಡನಾಡಿತನ.<br>(2) ಸಂಸ್ಥೆ.<br>(3) ಜನ ಸಮೂಹ.   |
| Compensation                    | परिहारः, निस्तारः   | ಪ್ರತಿಫಲ.   |
| Competent                       | दक्षः, समर्थः   | ದಕ್ಷ, ಸಮರ್ಥ.   |
| Compilation                     | संकलनम्, संप्रहणम्  | ಸೇರಿಸುವುದು, ಸಂಗ್ರಹಿಸುವುದು.   |
| Complaint                       | (१) अभियोगः<br>(२) रोगः<br>(३) कष्टप्रकाशनम्              | (1) ಛೇದನಾಡು.<br>(2) ರೋಗ.<br>(3) ಕಷ್ಟವನ್ನು ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳುವುದು.                              |
| Completion                      | पूर्तिः, पूरणम्   | ಪೂರ್ತಿ.  |
| Complimentary                   | प्रशंसात्मकः, गौरवपूर्वकः                                 | ಪ್ರಶಂಸಾತ್ಮಕ, ಗೌರವಪೂರ್ವಕ.   |
| Comply                          | अनुमन्यस्व  | ಅನುಮತಿಸು.  |
| Comprehensive                   | व्यापकः, विशालः   | ಬಹಳ ವಿಸ್ತಾರವಾದ, ಎಲ್ಲಾ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಒಳಗೊಂಡಿರುವ.   |
| Compromise                      | मिथःसन्धानम्  | ಪರಸ್ಪರ ರಾಜಿ.   |
| Comptroller                     | नियन्त्रकः  | ಹತೋಟಿಯಲ್ಲಿಡುವ ಅಧಿಕಾರಿ.   |
| Comptroller and Auditor General | नियन्त्रकः, तथा महालेखा-परीक्षकः                          | ಹತೋಟಿಯ ಅಧಿಕಾರಿ ಮತ್ತು ಮಹಾಲೇಖಾಪರೀಕ್ಷಕ.   |



## English

## Sanskrita

## Kannada

Compulsory

ಅನಿವಾರ್ಯಮ್, ಸನಿಬಂಧಮ್

ಕಡ್ಡಾಯವಾಗಿ, ನಿರ್ಬಂಧವಾಗಿ.

Concurrence

ಸಮ್ಮತಿ:

ಒಪ್ಪಿಗೆ.

Condition

(1) ಉಪಾಧಿ:

(1) ಪರತ್ತು.

(2) ಸಮವಸ್ಥಾ, ಪರಿಸ್ಥಿತಿ:

(2) ಪರಿಸ್ಥಿತಿ.

Condonation

ಕ್ಷಮಾ

ಕ್ಷಮಾಪಣೆ.

Conduct

ವರ್ತನಮ್

ನಡವಳಿಕೆ. ನಡತೆ.

Confidence

ವಿಶ್ವಾಸ:

ನಂಬಿಕೆ.

Confirmation

ಸ್ಥಿರೀಕರಣಮ್

ಸ್ಥಿರಪಡಿಸುವುದು.

Consent

ಸಮ್ಮತಿ:

ಒಪ್ಪಿಗೆ.

Consideration

ವಿಮರ್ಶಾ, ವಿಚಾರ, ಪರಿಗಣನಮ್

ಪರಿಶೀಲನೆ.

Construction

(1) ನಿರ್ಮಾಣಮ್

(1) ರಚನೆ.

(2) ಪರಸ್ಪರಮನ್ವಯ:

(2) ಅನ್ಯೋನ್ಯ ಸಂಬಂಧ.

Contempt

ಅವಮಾನನಾ, ತಿರಸ್ಕಾರ:

ಅವಮಾನಪಡಿಸುವುದು, ಅವಹೇಳನ.

Contents

ಅಂತರ್ವಸ್ತು

ಒಳಗಿರುವ ವಿಷಯ.

Control

ನಿಯಂತ್ರಣಮ್

ಹತೋಟಿ, ಹಿಡಿತ.

Controller

ನಿಯಂತ್ರಕ:

ಹತೋಟಿಯಲ್ಲಿಡುವವನು.

Convenience

ಸೌಕರ್ಯಮ್

ಸೌಕರ್ಯ.

Conversation

ಸಂಭಾಷಣಮ್

ಸಲ್ಲಾಪ.

Convocation

ಪದವಿಪ್ರದಾನಸಮಾರಂಭ:

ಪಟ್ಟಿಪ್ರದಾನ ಸಮಾರಂಭ.

Co-operation

ಸಹಕಾರ:

ಸಹಕರಿಸುವುದು.

Copy

(1) ಪ್ರತिलिपि:

(1) ಪ್ರತಿ, ನಕಲು, ಪ್ರತಿರೂಪ.

(2) ಅನುಕರಣಮ್

(2) ಅನುಕರಣ.

Copyright

ಗ್ರಂಥಸ್ವಾಮ್ಯಮ್

ಗ್ರಂಥದ ಸರ್ವವಿಧವಾದ ಹಕ್ಕು.

Correspondence

(1) ಪ್ರವ್ಯವಹಾರ:

(1) ಕಾಗದ ಪತ್ರಗಳ ವ್ಯವಹಾರ.

(2) ಸಾಂಖ್ಯಮ್, ಸಂವಾದ:

(2) ಹೋಲಿಕೆ, ತಾಳೆ.

Cost

(1) ವ್ಯಯ:

(1) ವೆಚ್ಚ.

(2) ಮೂಲ್ಯಮ್

(2) ಬೆಲೆ.

Cost of cultivation

ಕೃಷಿವ್ಯಯ:

ಕೃಷಿಕಾರ್ಯದ ವೆಚ್ಚ.

Cost of living

ಜೀವನವ್ಯಯ:

ಜೀವನದ ವೆಚ್ಚ.

Cost of maintenance

ಪೋಷಣವ್ಯಯ:

ಪಾಲನೆಯ ಖರ್ಚು.

Cost of reproduction

ಪುನಃಪ್ರಾಪ್ತವ್ಯಯ:

ಪುನಃ ಉತ್ಪತ್ತಿಯ ಖರ್ಚು.

ಪುನಃ ತಯಾರಿಕೆಯ ವೆಚ್ಚ.

Council of Ministers

ಮಂತ್ರಿಪರಿಷತ್

ಮಂತ್ರಿಗಳ ಸಭೆ.



| English             | Sanskrita  | Kannada   |
|---------------------|--|---|
| Counter signature   | प्रतिहस्ताक्षरम्                                       | ಮೇಲು ರುಜು.  |
| Country             | देशः   | ದೇಶ.  |
| Court               | न्यायालयः  | ನ್ಯಾಯಾಸ್ಥಾನ.  |
| „ Civil             | नागरिकव्यवहारन्यायालयः                                 | ಪ್ರಜೆಗಳ ವ್ಯವಹಾರನ್ಯಾಯಾಲಯ.                              |
| „ Criminal          | अपराधिदण्डन्यायालयः                                    | ಅಪರಾಧಿಯನ್ನು ಶಿಕ್ಷಿಸುವ ನ್ಯಾಯಾಲಯ                        |
| „ District          | मण्डलन्यायालयः   | ಜಿಲ್ಲಾ ನ್ಯಾಯಾಲಯ.                                      |
| „ Magistrate        | दण्डाधिकारिन्यायालयः                                   | ಶಿಕ್ಷೆ ವಿಧಿಸುವ ನ್ಯಾಯಾಲಯ.                              |
| Court of revision   | पुनःपरिशीलनन्यायालयः                                   | ಪುನರ್ವಿಮರ್ಶೆಯ ನ್ಯಾಯಾಲಯ.                               |
| Credit control      | ऋणनियन्त्रणम्  | ಸಾಲವನ್ನು ಹಿಡಿತದಲ್ಲಿಡುವುದು.                            |
| Currency            | (१) प्रसारः, प्रवाहः,<br>प्रचलनम्<br>(२) प्रचलितमुद्रा | (1) ಚಲಾವಣೆ.<br>(2) ಚಲಾವಣೆಯಲ್ಲಿರುವ ನಾಣ್ಯ<br>ಮೊದಲಾದುದು. |
| Customer            | ग्राहकः  | ಗಿರಾಕಿ, ಕೊಳ್ಳುವವನು.                                   |
| Customs declaration | शुल्कबद्धवस्तुनां घोषणम्                               | ಶುಲ್ಕಕ್ಕೆ ಒಳಪಟ್ಟ ವಸ್ತುಗಳ ಘೋಷಣೆ.                       |
| Customs house       | सीमाशुल्कालयः  | ಸುಂಕದ ಕಟ್ಟಿ.  |

## D

|                 |                            |                                   |
|-----------------|----------------------------|-----------------------------------|
| Dairy           | क्षीरोत्पादननिलयः          | ಹಾಲನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿಡುವ ಮನೆ.         |
| Dairy-farm      | क्षीरक्षेत्रम्             | ಹೈನುಮನೆ.                          |
| Date            | दिनाङ्कः                   | ತೇದಿ.                             |
| Daughter        | पुत्री                     | ಮಗಳು.                             |
| Daughter-in-law | स्तुषा                     | ಸೊಸೆ, ಪುತ್ರನ ಪತ್ನಿ.               |
| Deal            | व्यवहारः                   | ವ್ಯವಹಾರ.                          |
| Dealer          | (१) व्यवहर्ता<br>(२) वणिक् | (1) ವ್ಯವಹರಿಸುವವನು,<br>(2) ವರ್ತಕ.  |
| Dealing         | व्यापारः                   | ವ್ಯಾಪಾರ ನಡೆಸುವುದು.                |
| Debenture       | ऋणपत्रम्                   | ಸಾಲದ ಪತ್ರ.                        |
| Debility        | दौर्बल्यम्                 | ಅಶಕ್ತತೆ, ಶಕ್ತಿಹೀನವಾಗಿರುವಿಕೆ.      |
| Debit           | विकलनम्                    | ಖರ್ಚು ಹಾಕುವುದು, ಖರ್ಚು ತೋರಿಸುವುದು. |
| Debt            | ऋणम्                       | ಸಾಲ.                              |
| Debt conversion | ऋणपरिवर्तनम्               | ಸಾಲದ ಪರಿವರ್ತನೆ.                   |



Englis

Sanskrita

Kannada

Deceiver

ವಾಚಕ:

ಮೋಸಗಾರ.

Declaration

ಘೋಷಣಾ

ಡಂಗೂರ ಹೊಡೆದು ತಿಳಿಯಪಡಿಸುವುದು,  
ಸಾರುವುದು.

Declaratory suit

ಘೋಷಣಾತ್ಮಕವ್ಯವಹಾರ:

ಘೋಷಣಾತ್ಮಕ ದಾವೆ.

Decree

ಆಜ್ಞಾಪ್ತಿ:

ಆಜ್ಞೆ.

Dedication

(೧) ಸಮರ್ಪಣಮ್

(1) ಸಮರ್ಪಣೆ.

(೨) ಸಮರ್ಪಣಪತ್ರಮ್

(2) ಸಮರ್ಪಣೆಯ ಪತ್ರಿಕೆ.

Deed

ವಿಲೇಖ:

ಪತ್ರ.

Deed of gift

ದಾನಪತ್ರಮ್

ದಾನಪತ್ರ.

Deed of sale

ಕ್ರಯಪತ್ರಮ್

ಕ್ರಯಪತ್ರ.

Defalcation

ದ್ರವ್ಯಾಪಹಾರ:

ಹಣವನ್ನು ದುರುಪಯೋಗಪಡಿಸುವುದು.

Defaulter

ದ್ರೋಹಿ, ದೋಷಿ

ಮಂಚಕ, ಅಪರಾಧಿ, ಕರ್ತವ್ಯಲೋಪ  
ಮಾಡಿದವನು.

Defect

ದೋಷ:

ದೋಷ, ಲೋಪ.

Deficient

ನ್ಯೂನ:

ನ್ಯೂನವಾದ, ಕೊರತೆಯುಳ್ಳ.

Deficit

ನ್ಯೂನತಾ

ಕೊರತೆ.

Deliberation

ವಿಮರ್ಶ:

ವಿಮೇಚನೆ.

Department

ವಿಭಾಗ:, ಶಾಲಾ

ವಿಭಾಗ, ಇಲಾಖೆ.

Dependent

ಆಶ್ರಿತ:

ಪರಾಧೀನ.

Deposit

ನಿಧಿ:, ನಿಕ್ಷೇಪ:

ಭದ್ರವಾಗಿಟ್ಟ ವಸ್ತು.

Deputation

ನಿಯೋಗ:

ಪ್ರತಿನಿಯುಕ್ತಿ.

Deputy

ಪ್ರತಿನಿಯುಕ್ತ:

ಪ್ರತಿ, ಉಪ.

Designation

ಅಧಿಕಾರನಾಮ

ಅಧಿಕಾರದ ಹೆಸರು,

ಪದಾಭಿಧಾನಮ್

ಹುದ್ದೆಯ ಹೆಸರು.

Determination

ನಿರ್ಧಾರಣಮ್

ನಿಶ್ಚಯ.

Development

ಅಭಿವೃದ್ಧಿ:

ಅಭಿವೃದ್ಧಿ.

Dictionary

ಶಬ್ದಕೋಶ:

ನಿಘಂಟು.

Dignity

ಗೌರವಮ್

ಘನತೆ.

Disagreement

ಅಸಮ್ಮತಿ:

ಒಪ್ಪದಿರುವಿಕೆ.

Discharge

ವಿಮುಕ್ತಿ:

ಬಿಡುಗಡೆ, ಮಿಲಾಸೆ.

Discharge of duties

ಕರ್ತವ್ಯನಿರ್ವಹಣಮ್

ಕರ್ತವ್ಯವನ್ನು ಪೂರೈಸುವುದು.

Disciple

ಶಿಷ್ಯ:

ಗುರುವಿನ ಅನುಯಾಯಿ.

Discipline

ನೀತಿಪಾಲನಮ್

ಶಿಸ್ತು, ವಿನಯ.



| English               | Sanskrit   | Kannada  |
|-----------------------|--|--|
| Document              | लेख्यम्  | ದಸ್ತಾವೇಜು.   |
| Donation              | दानम्  | ಕೊಡುಗೆ.  |
| Donor                 | दाता   | ದಾನ ಮಾಡುವವನು.  |
| Drought               | अनावृष्टिः   | ಬರ.  |
| Duty                  | (१) शुल्कम्<br>(२) कर्तव्यम्                                 | (1) ಶುಲ್ಕ, ತರಿಗೆ.<br>(2) ಕಾರ್ಯ, ಕೆಲಸ.  |
| <b>E</b>              |  |  |
| Eager                 | सोत्साहः   | ಉತ್ಸಾಹದಿಂದ ಕೂಡಿದವನು.   |
| Earl                  | सामन्तः  | ಸಾಮಂತರಾಜ.  |
| Economic              | अर्थशास्त्रम्  | ಅರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರ.   |
| Economy               | (१) मितव्ययः<br>(२) निर्वहणम्<br>(३) अर्थनियमः, अर्थव्यवस्था | (1) ಮಿತವ್ಯಯ, ಖರ್ಚಿನಲ್ಲಿ ಹಿಡಿತ.<br>(2) ಆರ್ಥಿಕ ಆಡಳಿತ.<br>(3) ಹಣಕಾಸಿನ ವ್ಯವಸ್ಥೆ. |
| Effective             | साधकम्   | ಫಲಕಾರಿಯಾದ.   |
| Election              | निर्वाचनम्   | ಚುನಾವಣೆ.   |
| Election Commissioner | निर्वाचनायुक्तः  | ಚುನಾವಣೆಯ ಆಯುಕ್ತ.   |
| Electoral             | निर्वाचनसम्बन्धि   | ಚುನಾವಣೆಯ ಸಂಬಂಧವಾದ.   |
| Electricity           | विद्युच्छक्तिः   | ವಿದ್ಯುಚ್ಛಕ್ತಿ.   |
| Embassy               | राजदौत्यम्   | ರಾಜದೂತೃ, ರಾಯಭಾರಿಯ ಉದ್ಯೋಗ   |
| Emblem                | (१) लाञ्छनम्, संकेतः<br>(२) प्रतीकम्                         | (1) ಚಿಹ್ನೆ.<br>(2) ಮಾದರಿ.  |
| Emergency             | अवसरस्थितिः, संकटस्थितिः                                     | ತುರ್ತುಸ್ಥಿತಿ.  |
| Emperor               | सम्राट्, चक्रवर्ती   | ಚಕ್ರವರ್ತಿ, ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯಾಧಿಪತಿ.  |
| Employee              | उद्योगी  | ನೌಕರ.  |
| Employment            | उद्योगः  | ನೌಕರಿ.   |
| Enemy                 | वैरी, शत्रुः   | ವೈರಿ, ಹಗೆ.   |
| Engineer              | शिल्पी, अभियन्ता   | ಶಿಲ್ಪಿ, ಯಂತ್ರಕಾರ, ಅಭಿಯಂತ.  |
| Enquiry               | अन्वेषणम्, विमर्शः   | ವಿಚಾರಣೆ, ವಿಮರ್ಶಿಸುವುದು.  |
| Entertainment         | (१) सत्कारः<br>(२) विनोदः                                    | (1) ಆದರದಿಂದ ಗೌರವಿಸುವುದು.<br>(2) ಮನರಂಜನೆ.                                     |
| Enumeration           | गणनम्, संख्यानम्   | ಎಣಿಕೆ.   |



| English             | Sanskrita                                  | Kannada   |
|---------------------|--|---|
| Equal               | ಸಮಾನಮ್                                     | ಸಮವಾದ.  |
| Equitable           | ನೀತಿಸಮ್ಮತಮ್                                | ನ್ಯಾಯಸಮ್ಮತವಾದ.  |
| Equity              | ಧರ್ಮಃ, ಸಾರಾಸಾರವಿಚಾರಃ                       | ಧರ್ಮ, ನ್ಯಾಯ.  |
| Essence             | ಸಾರಃ                                       | ತಿರುಳು.   |
| Essential           | ಶುದ್ಧಃ ಸಾರಭೂತಃ                             | ಸಾರಪತ್ಯಾದ.  |
| Establishment       | (೧) ಸ್ಥಾಪನಮ್<br>(೨) ಭೂತೃವರ್ಗಃ              | (1) ಸ್ಥಾಪಿಸುವುದು.<br>(2) ಸಿಬ್ಬಂದಿ.                            |
| Estate              | ಸಂಪತ್ತಿಃ                                   | ಆಸ್ತಿ.  |
| Estate duty         | ಸಂಪತ್ತಿಶುಲ್ಕಮ್                             | ಆಸ್ತಿಯ ತೆರಿಗೆ.  |
| Estimation          | ಮೂಲಕಲ್ಪನಮ್                                 | ಅಂದಾಜುಪಟ್ಟಿ ತಯಾರಿಸುವುದು.                                      |
| Estimator           | ಮೂಲನಿರ್ಣೇತಾ                                | ಅಂದಾಜುಪಟ್ಟಿ ತಯಾರಿಸುವವನು.                                      |
| Eviction            | ನಿಃಸಾರಣಮ್                                  | ಹೊರಹಾಕುವುದು.  |
| Evidence            | ಸಾಕ್ಷ್ಯಮ್                                  | ಪ್ರಮಾಣ.   |
| Examination         | ಪರೀಕ್ಷಾ                                    | ಪರೀಕ್ಷೆ.  |
| Excess              | (೧) ಉತ್ಕರ್ಷಃ<br>(೨) ಅತಿಶಯಃ<br>(೩) ಅಧಿಕೃತಮ್ | (1) ಮೇಲ್ಮೈ.<br>(2) ಮಿತಿ ಮೀರುವುದು.<br>(3) ಅತಿರೇಕ, ಹೆಚ್ಚಳ.      |
| Exchange            | ವಿನಿಮಯಃ                                    | ಬದಲಾವಣೆ, ಅದಲುಬದಲು.  |
| Excise              | ಉತ್ಪಾದನಶುಲ್ಕಮ್                             | ಅಬ್ಕಾರಿ ತೆರಿಗೆ.   |
| Excise Commissioner | ಉತ್ಪಾದನಶುಲ್ಕಾಯುಕ್ತಃ                        | ಅಬ್ಕಾರಿ ತೆರಿಗೆ ಇಲಾಖೆಯ ಅಯುಕ್ತ.                                 |
| Excise Department   | ಉತ್ಪಾದನಶುಲ್ಕವಿಭಾಗಃ                         | ಉತ್ಪಾದನ ಶುಲ್ಕದ ಇಲಾಖೆ, ಅಬ್ಕಾರಿ ಇಲಾಖೆ.                          |
| Excitement          | ಉದ್ರೇಕಃ, ಕ್ರೋಧಃ                            | ಕೆರಳುವುದು, ರೇಗುವುದು.  |
| Execution           | ಕಾರ್ಯನಿರ್ವಹಣಮ್                             | ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನೆರವೇರಿಸುವುದು.                                     |
| Executive           | ಕಾರ್ಯನಿರ್ವಾಹಕಃ ಕಾರ್ಯಪಾಲಃ                   | ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನೆರವೇರಿಸುವವನು.                                     |
| Executive Committee | ಕಾರ್ಯನಿರ್ವಾಹಕಸಮಿತಿಃ                        | ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನೆರವೇರಿಸುವ ಸಮಿತಿ,<br>ಕಾರ್ಯಕಲಾಪಗಳನ್ನು ನಡೆಸುವ ಸಮಿತಿ. |
| Executive Engineer  | ಕಾರ್ಯನಿರ್ವಾಹಕಾಭಿವೃದ್ಧಿ,<br>ಕಾರ್ಯಪಾಲಃ       | ಕಾರ್ಯಪಾಲಕ.  |
| Exemption           | ನಿಯಮಶಂಖಿತೃತಮ್                              | ವಿನಾಯಿತಿ, ರಿಯಾಯಿತಿ.   |
| Expansion           | ವಿಸ್ತರಣಮ್                                  | ವಿಸ್ತರಿಸುವುದು.  |
| Expenditure         | ವ್ಯಯಃ                                      | ವ್ಯಯ, ಖರ್ಚು, ವೆಚ್ಚ.   |
| Explanation         | ಸ್ಪಷ್ಟೀಕರಣಮ್                               | ವಿವರಣೆ, ವಿವರವಾಗಿ ತಿಳಿಸುವುದು.                                  |
| Expert              | ಪರಿಣತಃ, ತಜ್ಞಃ                              | ನಿಪುಣ, ನಿಪುಣತ.  |



| English       | Sanskrit         | Kannada                        |
|---------------|------------------|--------------------------------|
| Export        | देशान्तरप्रेषणम् | ರಫ್ತು, ಹೊರದೇಶಕ್ಕೆ ಕಳುಹಿಸುವುದು. |
| Extension     | विस्तरणम्        | ವಿಸ್ತರಿಸುವುದು.                 |
| Extraordinary | असाधारणम्        | ಅಸದೃಶ.                         |
| Extra work    | अधिककार्यम्      | ಹೆಚ್ಚಳ ಕೆಲಸ.                   |

## F

|                        |  |   |
|------------------------|--|---|
| Facility               | सौकर्यम्, सौलभ्यम्                                       | ಸೌಕರ್ಯ.   |
| Fair                   | (१) यात्रा<br>(२) सुन्दरम्<br>(३) शुद्धः<br>(४) न्याय्यः | (1) ಜಾತ್ರೆ.<br>(2) ಚೆಲುವಾದ, ಸುಂದರವಾದ.<br>(3) ಶುದ್ಧವಾದ, ಶುಭ್ರವಾದ.<br>(4) ನ್ಯಾಯವಾದ. |
| Fair abridgement       | तृप्तिकरः संग्रहः  | ಸರಿಯಾದ ಸಂಗ್ರಹ.  |
| False statement        | मिथ्योपन्यासः  | ಸುಳ್ಳು ಹೇಳಿಕೆ.  |
| Family                 | (१) कुटुम्बम्<br>(२) कुलम्                               | (1) ಸಂಸಾರ.<br>(2) ಕುಲ, ವಂಶ.   |
| Farmer                 | कृषिकः   | ರೈತ, ಬೇಸಾಯಗಾರ.  |
| Favourable             | अनुकूलः  | ಅನುಕೂಲಕರವಾದ.  |
| Federation             | राज्यसमुदायः   | ಸಂಯುಕ್ತ ರಾಜ್ಯ.  |
| Felony                 | महापराधः, महापातकम्                                      | ದೊಡ್ಡ ಅಪರಾಧ.  |
| Finance                | वित्तम्  | ಹಣಕಾಸು.   |
| Financial              | वित्तीय  | ಹಣಕಾಸು ಸಂಬಂಧವಾದ.  |
| Financial condition    | वित्तपरिस्थितिः  | ಹಣಕಾಸಿನ ಪರಿಸ್ಥಿತಿ.  |
| Financial statement    | वित्तीयविवरणम्   | ಹಣಕಾಸಿನ ವಿವರಣ ಪತ್ರ.   |
| Financing              | वित्तसाहाय्यकरणम्  | ಹಣ ಒದಗಿಸುವುದು.  |
| Fixed deposit          | सावधिनिधिनक्षेपः   | ಸಾವಧಿ ಠೇವಣಿ.  |
| Flag                   | ध्वजः  | ಬಾವುಟ.  |
| Foe                    | वैरी   | ಶತ್ರು, ಹಗೆ.   |
| Food grains            | आहारधान्यम्  | ಆಹಾರ ಧಾನ್ಯಗಳು.  |
| Food production        | आहारोत्पादनम्  | ಆಹಾರದ ಉತ್ಪತ್ತಿ.   |
| Footnote               | टीका, टिप्पणिः   | ಟೀಕೆ, ಅಡಿಟಿಪ್ಪಣಿ.   |
| Foreign Administration | विदेशीयप्रशासनम्   | ವಿದೇಶದ ಆಡಳಿತ.   |
| Foreign affairs        | विदेशीयव्यवहारः  | ವಿದೇಶೀಯ ವ್ಯವಹಾರಗಳು.   |



## English

## Sanskrita

## Kannada

Forgery

ಕೂಟಕಾರ್ಯಮ್

ಸುಳ್ಳು ಕಾಗದ ಪತ್ರಗಳ ಸೃಷ್ಟಿ.

ಕಳ್ಳ ರುಜು ಮೊದಲಾದ ಕೂಟಕಾರ್ಯ.

Foreword

ಪುರೋವಚನಮ್

ಮುನ್ನುಡಿ.

Freedom

ಸ್ವಾತನ್ತ್ರ್ಯಮ್

ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ.

Freedom of speech

ವಾಕ್ಸ್ವಾತನ್ತ್ರ್ಯಮ್

ವಾಕ್ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ.

Fulfilment

ಸಂಸಿದ್ಧಿ:

ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿ. ಕಾರ್ಯನಿಷ್ಪತ್ತಿ.

Future estate

ಭಾವಿನಿ ಸಂಪತ್ತಿ:

ಮುಂದೆ ಬರಲಿರುವ ಆಸ್ತಿ.

## G

Gain

ಲಾಭಃ, ಪ್ರಾಪ್ತಿ:

ಲಾಭ. ಪಾಪ್ತಿ.

Gambling

ಛೂತಮ್

ಜೂಜು.

Game

ಕ್ರೀಡಾ

ಆಟ.

Gazette

ರಾಜ್ಯಪತ್ರಮ್

ಸರ್ಕಾರದ ಪ್ರಕಟನ ಪತ್ರ.

Gazetted Officer

ರಾಜ್ಯಪತ್ರಾಡ್ವಿತಾಧಿಕಾರಿ

ರಾಜ್ಯದ ಪ್ರಕಟನ ಪತ್ರದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಅಧಿಕಾರಿ

General

(೧) ಸಾಮಾನ್ಯಮ್

(1) ಸರ್ವಸಾಮಾನ್ಯವಾದ.

(೨) ಸೇನಾನಿಃ, ಸೇನಾಧ್ಯಕ್ಷಃ

(2) ಸೇನೆಯ ಅಧ್ಯಕ್ಷ.

General Administration

ಸಾಮಾನ್ಯಪ್ರಶಾಸನಮ್

ಸಾಮಾನ್ಯಾಡಳಿತ.

General Election

ಸಾರ್ವತ್ರಿಕನಿರ್ವಾಚನಮ್

ಸಾರ್ವತ್ರಿಕ ಚುನಾವಣೆ.

General Meeting

ಸಾಮಾನ್ಯಾಧಿವೇಶನಮ್

ಸಾಮಾನ್ಯ ಸಭೆ.

Generation

ಸಂತತಿ:

ಪೀಳಿಗೆ, ವಂಶ.

Geology

ಭೂಗರ್ಭಶಾಸ್ತ್ರಮ್, ಭೂವಿಜ್ಞಾನಮ್

ಭೂಗರ್ಭಶಾಸ್ತ್ರ, ಭೂವಿಜ್ಞಾನ.

Gift

ಬಹುಮಾನಮ್

ಬಹುಮಾನ.

God

ಪರಮಾತ್ಮಾ

ದೇವರು.

Godown

ವಸ್ತುಸಂಗ್ರಹಸ್ಥಾನಮ್

ಉಗ್ರಾಣ, ಮಳಿಗೆ.

Gold

ಸ್ವರ್ಣಮ್

ಚಿನ್ನ.

Goldmine

ಸ್ವರ್ಣಖನಿ:

ಚಿನ್ನದ ಗಣಿ.

Good behaviour

ಸದ್ವರ್ತನಮ್

ಒಳ್ಳೆಯ ನಡತೆ.

Good condition

ಸುಸ್ಥಿತಿ:

ಒಳ್ಳೆಯ ಪರಿಸ್ಥಿತಿ.

Goods

ವಸ್ತುನಿ

ವಸ್ತುಗಳು, ಸರಕುಗಳು.

Government

ಶಾಸನಪದಮ್

ಸರ್ಕಾರ.

Government of a State

ರಾಜ್ಯಪ್ರಶಾಸನಮ್

ರಾಜ್ಯ ಸರ್ಕಾರ.

Government of India

ಭಾರತದೇಶಪ್ರಶಾಸನಮ್

ಭಾರತ ಸರ್ಕಾರ.



| English          | Sanskrita                                   | Kannada                                      |
|------------------|---|--|
| Government Order | प्रशासनादेशः                                | ಸರ್ಕಾರದ ಆದೇಶ.                                |
| Governor         | राज्यपालः                                   | ರಾಜ್ಯಪಾಲ.                                    |
| Gradation        | श्रेणिः, परम्परा                            | ಶ್ರೇಣಿ.                                      |
| Gradation list   | श्रेणिसूची                                  | ಶ್ರೇಣಿಯ ಪಟ್ಟಿ.                               |
| Grain            | धान्यम्                                     | ಧಾನ್ಯ, ಕಾಳು.                                 |
| Grain produce    | धान्योत्पत्तिः                              | ಧಾನ್ಯದ ಉತ್ಪತ್ತಿ.                             |
| Granage          | धान्यागारम्                                 | ಕಣಜ.   |
| Grant            | अनुदानम्                                    | ಅನುದಾನ.                                      |
| Grant-in-aid     | सहायकानुदानम्                               | ಸಹಾಯ ದ್ರವ್ಯದಾನ.                              |
| Gross            | समग्रम्                                     | ಸಕಲ, ಸಮಸ್ತ, ಒಟ್ಟು.                           |
| Gross assets     | समग्रसम्पत्तिः                              | ಸಂಪೂರ್ಣ ಆಸ್ತಿ.                               |
| Ground           | (१) भूमिः<br>(२) कारणम्<br>(३) आधारः, मूलम् | (1) ಭೂಮಿ, ನೆಲ.<br>(2) ಕಾರಣ.<br>(3) ಮೂಲ, ಬುಡ. |
| Group            | समूहः, वर्गः                                | ವರ್ಗ.  |
| Group system     | वर्गपद्धतिः                                 | ವರ್ಗಪದ್ಧತಿ.                                  |
| Guarantee        | आश्वासनम्                                   | ಭರವಸೆ. ಖಾತರಿ.                                |
| Guard            | (१) रक्षकः<br>(२) रक्षणम्                   | (1) ಕಾಪಾಡುವವನು.<br>(2) ರಕ್ಷಣೆ, ಪಾಲನೆ.        |
| Guidance         | मार्गदर्शनम्                                | ಮಾರ್ಗದರ್ಶನ.                                  |

## H

|             |   |
|-------------|---|
| Habit       | (१) अग्न्यासः (२) स्वभावः (1) ರೂಢಿ, ಬಳಕೆ. (2) ಚಟ. ಚಾಳಿ.<br>(३) वासः (४) वेषः (3) ವಾಸಮಾಡುವುದು. (4) ವೇಷ.<br>(५) वसनम् (5) ಬಟ್ಟೆ, ಉಡುಪು. |
| Habitable   | वासयोग्यम्<br>ವಾಸಕ್ಕೆ ಅರ್ಹವಾದ.  |
| Habitation  | वसतिः, गृहम्<br>ಗೃಹ, ಮನೆ.   |
| Handicrafts | शिल्पकर्म<br>ಶಿಲ್ಪಕಾರ್ಯ, ಕೈಕಸಬು.  |
| Handwriting | स्वहस्ताक्षरम्<br>ಸ್ವಂತ ಕೈಬರಹ.  |
| Harbour     | नौकाश्रयः<br>ಬಂದರು. ರೇವು.   |
| Hard case   | किल्टविषयः<br>ಕಠಿನವಾದ ವಿಷಯ  |
| Hardship    | कष्टम्, क्लेशः<br>ಕಷ್ಟ, ಆಯಾಸ.   |



## English

## Sanskrita

## Kannada

Head clerk  
Head of Department  
Headquarters  
Health Officer  
Heir  
Heir General  
Hereditary  
Heritage  
High Court  
His Excellency the  
Governor  
Historian  
Homeopathy  
Honorarium  
Honour  
Horticulture  
Hospitality  
Hostel  
House breaker  
Household  
House tax  
Human Welfare  
Husbandman  
Hydroelectric  
Hydrology  
Hygiene  
Hypothetical

ಮುಖ್ಯಲಿಪಿಕ:  
ವಿಭಾಗಮುಖ್ಯಾಧಿಕಾರಿ  
ಕೇಂದ್ರಕಾರ್ಯಸ್ಥಾನಮ್  
ಆರೋಗ್ಯಾಧಿಕಾರಿ  
ದಾಯಾಡ:  
ಸಾಮಾನ್ಯದಾಯಾಡ:  
ಕುಲಪರಂಪರಾಗತ:  
ಪಿತೃಸಂಪತ್ತಿ:, ಪೌತೃಕಧನಮ್  
ಉಚ್ಚನ್ಯಾಯಾಲಯ:  
ಗೌರವಾನ್ವಿತರಾಜ್ಯಪಾಲ:  
ಚರಿತ್ರಕಾರ:  
ಅಣುವೈದ್ಯಶಾಸ್ತ್ರಮ್  
ಗೌರವಧನಮ್  
ಗೌರವಮ್  
ಉದ್ಯಾನವಿಜ್ಞಾನ  
ಆತಿಥ್ಯಮ್  
ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿವಸತಿಗೃಹಮ್  
ಸಂಧಿಚೋರ:  
ಕುಟುಂಬಮ್  
ಗೃಹಶುಲ್ಕಮ್  
ಮಾನವಕಲ್ಯಾಣಮ್  
ಕೃಷಿವಲ:  
ಜಲವಿದ್ಯುತ್  
ಜಲವಿಜ್ಞಾನಮ್  
ಆರೋಗ್ಯಶಾಸ್ತ್ರಮ್  
ಕಾಲ್ಪನಿಕಮ್

ಹಿರಿಯ ಗುಮಾಸ್ತ.  
ಇಲಾಖೆಯ ಮುಖ್ಯಾಧಿಕಾರಿ.  
ಮುಖ್ಯ ಕಾರ್ಯಾಲಯ.  
ಆರೋಗ್ಯಾಧಿಕಾರಿ.  
ಪಾಲುದಾರ.  
ಸಾಮಾನ್ಯ ಹಕ್ಕುದಾರ.  
ವಂಶಪರಂಪರೆಯಿಂದ ಬಂದಿರುವ.  
ಪಿತೃಧನ.  
ಶ್ರೇಷ್ಠ ನ್ಯಾಯಾಲಯ.  
ಘನವೆತ್ತು ರಾಜ್ಯಪಾಲ.  
ಇತಿಹಾಸಕಾರ.  
ಆಣುವೈದ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ.  
ಗೌರವ ಸಂಭಾವನೆ.  
ಮನ್ನಣೆ.  
ತೋಟಗಾರಿಕೆ.  
ಆತಿಥಿ ಸತ್ಕಾರ.  
ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ ನಿಲಯ.  
ಮನೆಗೆ ಕನ್ನಿಕೊರೆಯುವ ಕಳ್ಳ.  
ಕುಟುಂಬ, ಸಂಸಾರ.  
ಮನೆಗಂದಾಯ.  
ಮನುಷ್ಯನ ಅಭ್ಯುದಯ.  
ರೈತ, ಬೇಸಾಯಗಾರ.  
ಜಲವಿದ್ಯುತ್ತು.  
ಜಲವಿಜ್ಞಾನ.  
ಆರೋಗ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ.  
ಕಲ್ಪಿತವಾದ

## I

Idea  
Identification  
Identity  
Idol

ಭಾವ:, ಅಭಿಪ್ರಾಯ:  
ಅಭಿಜ್ಞಾನಮ್  
ಸಮತಾ  
ಮूर्ತಿ:

ಅಭಿಪ್ರಾಯ.  
ಗುರುತು.  
ಸಮಾನತೆ.  
ವಿಗ್ರಹ.



| English              | Sanskrit                                  | Kannada                                |
|----------------------|---|--|
| Ignorance            | अज्ञानम्                                  | ಅಜ್ಞಾನ, ಅರಿವಿಲ್ಲದಿರುವುದು.              |
| Illegal              | न्यायविरुद्धम्, विधिविरुद्धम्             | ನ್ಯಾಯವಿರುದ್ಧ, ನ್ಯಾಯ ವಿರುದ್ಧವಾದ.        |
| Ill-treatment        | अनादरः                                    | ಅನಾದರ, ತಿರಸ್ಕಾರ.                       |
| Immediate            | तत्क्षणम्                                 | ಆ ಕೂಡಲೆ, ತ್ವರಿತವಾಗಿ.                   |
| Impartial            | निष्पक्षपातम्                             | ಪಕ್ಷಪಾತವಿಲ್ಲದೆ.                        |
| Imperative           | अनुलङ्घनीयम्                              | ಉಲ್ಲಂಘಿಸಲಾಗದ, ಮೀರಲಾಗದ.                 |
| Imperfect            | (१) अपूर्णः<br>(२) दोषोपेतः               | (1) ಪೂರ್ಣವಾಗದಿರುವ.<br>(2) ದೋಷಯುಕ್ತವಾದ. |
| Imperialism          | साम्राज्यतत्त्वम्,<br>चक्रवर्तिप्रभुत्वम् | ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯ ತತ್ತ್ವ.                      |
| Import               | आयातः, देशान्तर<br>पणानयनम्               | ಹೊರದೇಶಗಳಿಂದ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ತರುವುದು.       |
| Importance           | प्राधान्यम्                               | ಪ್ರಾಧಾನ್ಯ.                             |
| Important            | प्रधानम्                                  | ಮುಖ್ಯವಾದ.                              |
| Indulgence           | इच्छापूर्तिः                              | ತೃಪ್ತಿಪಡಿಸುವುದು.                       |
| Industrial           | औद्योगिकः                                 | ಕೈಗಾರಿಕೆಯ                              |
| Industrialist        | उद्यमी                                    | ಉದ್ಯಮವನ್ನು ಕೈಗೊಂಡಿರುವವನು.              |
| Industry             | उद्यमः                                    | ಕೈಗಾರಿಕೆ, ಕಸಬು.                        |
| Inferior             | अवकृष्टम्                                 | ಕೆಳ ದರ್ಜೆಯ.                            |
| Information          | वार्ता                                    | ಸಮಾಚಾರ.                                |
| Inhabitant           | निवासी                                    | ವಾಸಮಾಡುವವನು.                           |
| Initial              | प्रथमः, आद्यः                             | ಮೊದಲನೆಯ, ಪ್ರಾರಂಭದ.                     |
| Initial pay          | प्रारम्भवेतनम्                            | ಪ್ರಾರಂಭದ ಸಂಬಳ.                         |
| Injustice            | अन्यायः                                   | ಅಧರ್ಮ.                                 |
| Innocent             | निर्दोषः, मुग्धः                          | ಯಾವ ದೋಷವೂ ಇಲ್ಲದ.                       |
| Inquiry              | अन्वेषणम्                                 | ವಿಚಾರಣೆ.                               |
| Inspection           | निरीक्षणम्                                | ತನಿಖೆ, ಪರೀಕ್ಷೆ.                        |
| Inspector            | निरीक्षकः                                 | ತನಿಖೆಯ ಅಧಿಕಾರಿ.                        |
| Inspector General    | महानिरीक्षकः                              | ಮುಖ್ಯ ತನಿಖೆಯ ಅಧಿಕಾರಿ.                  |
| Inspector of Schools | शालानिरीक्षकः                             | ಶಾಲೆಗಳ ತನಿಖಾಧಿಕಾರಿ.                    |
| Instalment           | अंशार्पणम्                                | ಕಂತು, ಕಿಸ್ತು.                          |
| Insurance            | नाशभयोत्तारणम्                            | ವಿಮೆ.                                  |
| Irrigation           | जलप्रदानम्                                | ನೀರಾವರಿ.                               |



Irrigation canal

ಕುಲ್ಯಾ

ಕಾಲುವೆ.

Island

ದ್ವೀಪ:

ದ್ವೀಪ, ನಡುಗಡೆ.

Issue

ನಿರ್ಗಮನಮ್

ಹೊರಡುವುದು.

Issue price

ಮುಖಮೌಲ್ಯಮ್

ನೀಡಿಕೆ ಬೆಲೆ.

## J

Jackets

ಪುಸ್ತಕಕವಚಮ್

ಪುಸ್ತಕದ ಹೊರಕವಚ.

Jail

ಕಾರಾಗಾರಮ್

ಬಂದೀಖಾನೆ.

Joint

(೧) ಸಂಯುಕ್ತ:

(1) ಜಂಟಿ.

(೨) ಪರ್ವ

(2) ಸಂಧಿ.

Joint account

ಸಂಯುಕ್ತಲೇಖಾ

ಜಂಟಿ ಲೆಕ್ಕ.

Joint family

ಸಂಯುಕ್ತಕುಟುಂಬಮ್

ಒಟ್ಟುಗೂಡಿದ ಸಂಸಾರ, ಭಾಗವಾಗದಿರುವ

ಅವಿಭಕ್ತಕುಟುಂಬಮ್

ಕುಟುಂಬ.

Joint property

ಸಂಯುಕ್ತಸ್ವತ್ತವಮ್

ಸಂಯುಕ್ತ ಕುಟುಂಬದ ಆಸ್ತಿ.

Joint Secretary

ಸಂಯುಕ್ತಕಾರ್ಯದರ್ಶಿ

ಜಂಟಿ ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿ.

Journal

ಪತ್ರಿಕಾ

ಪತ್ರಿಕೆ.

Journey

ಪ್ರವಾಸ:

ಪ್ರವಾಸ.

Judge

ನ್ಯಾಯಾಧೀಶ:

ನ್ಯಾಯಾಧಿಪತಿ.

Judgement

ನಿರ್ಣಯ:

ತೀರ್ಪು

Judgement hall

ನ್ಯಾಯಾಧಿಕರಣಮ್

ನ್ಯಾಯ ನೀಡುವ ಭವನ.

Judicial

ವ್ಯವಹಾರವಿಷಯ:

ವ್ಯವಹಾರ ಸಂಬಂಧವಾದ.

Junction

ಸಂಧಿ:

ಕೂಡುವುದು, ಕೂಡಲು.

Junior

ಅವರ:

ಕಿರಿಯ.

Junior Court

ಅವರನ್ಯಾಯಾಲಯ:

ಕಿರಿಯ ನ್ಯಾಯಾಲಯ.

Jurisdiction

ಅಧಿಕಾರಕ್ಷೇತ್ರಮ್

ಅಧಿಕಾರದ ಕ್ಷೇತ್ರ.

Justice

ನ್ಯಾಯಾಧಿಪತಿ:

ನ್ಯಾಯಮೂರ್ತಿ.

Justice Chief

ಶ್ರೇಷ್ಠನ್ಯಾಯಾಧಿಪತಿ:

ಮುಖ್ಯ ನ್ಯಾಯಾಧಿಪತಿ

Justification

ಔಚಿತ್ಯಸಮರ್ಥನಮ್

ಸಮರ್ಥನೆ

## K

Key

(೧) ಕುಚ್ಚಿಕಾ,

(1) ಬೀಗದಕೈ

(೨) ಮೂಲಮ್

(2) ಮೂಲ



| English          | Sanskrit                                     | Kannada  |
|------------------|--|--|
| Kidnap           | अपहरणम्                                      | ಅಪಹರಿಸುವುದು.   |
| King             | राजा   | ದೊರೆ.  |
| Kinship          | बन्धुत्वम्                                   | ನೆಂಟತನ.  |
| Knowledge        | ज्ञानम्                                      | ಅರಿವು, ತಿಳಿವಳಿಕೆ.  |
| Known            | ज्ञातम्                                      | ತಿಳಿದಿರುವ.   |
| Knownmade        | वेदितः                                       | ತಿಳಿಯಪಡಿಸಿದ.   |
| <b>L</b>         |  |  |
| Laboratory       | प्रयोगशाला                                   | ಪ್ರಯೋಗಶಾಲೆ.  |
| Labour           | (१) परिश्रमः<br>(२) उद्यमः<br>(३) प्रसववेवना | (1) ದುಡಿತ.<br>(2) ಉದ್ಯಮ.<br>(3) ಪ್ರಸವ ಮೇದನೆ.                 |
| Labourer         | कार्मिकः                                     | ಕೂಲಿಕಾರ.   |
| Laborious        | श्रमसाध्यः                                   | ಶ್ರಮದಿಂದ ಸಾಧ್ಯವಾದ.   |
| Land acquisition | भूस्वाधीनता                                  | ಭೂಮಿಯ ಸ್ವಾಧೀನತೆ.   |
| Land mortgage    | भूम्याधिः, भूमेः बन्धकः                      | ಭೂಮಿಯ ಆಡಮಾನ.   |
| Land revenue     | भूराजस्वम्                                   | ಭೂಕಂದಾಯ.   |
| Land surveyor    | भूमापकः                                      | ಭೂಮಿಯನ್ನು ಅಳೆಯುವವನು,<br>ಮೋಜಿನಿದಾರ.                           |
| Land tax         | भूराजस्वम्                                   | ಭೂಕಂದಾಯ, ನೆಲತೆರಿಗೆ.  |
| Lapse            | अत्ययः, भ्रंशः                               | ತಪ್ಪಿಹೋಗುವುದು, ಕೈಬಿಟ್ಟುಹೋಗುವುದು.                             |
| Lapse of grant   | अनुदानस्य भ्रंशः                             | ಅನುದಾನವು ಕೈತಪ್ಪುವುದು.  |
| Law              | विधिः, नियमः, न्यायः                         | ವಿಧಿ, ನಿಯಮ, ಕಾನೂನು.  |
| Law breaker      | विधिभञ्जकः                                   | ನಿಯಮವನ್ನು ಉಲ್ಲಂಘಿಸುವವನು, ನಿಯಮ<br>ವನ್ನು ಮೀರಿ ನಡೆಯುವವನು.       |
| Lawful           | विधिसम्मतः                                   | ಧರ್ಮಸಂಮತವಾದ.   |
| Lawful interest  | विधिसम्मतवृद्धिः                             | ಧರ್ಮಸಂಮತವಾದ ಬಡ್ಡಿ, ನ್ಯಾಯವಾದ<br>ಬಡ್ಡಿ.                        |
| Law Secretary    | नियमविभागकार्यदर्शी                          | ನಿಯಮ (ಕಾನೂನು) ವಿಭಾಗದ ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿ,<br>ನ್ಯಾಯ ಇಲಾಖೆಯ ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿ. |



| English              | Sanskrit                         | Kannada  |
|----------------------|----------------------------------|--|
| Legal                | ಶಾಸನಬದ್ಧಃ, ವಿಧಿಸಮ್ಮತಃ            | ಕಾನೂನು ಸಂಮತವಾದ, ನ್ಯಾಯಸಂಮತ ವಾದ.                             |
| Legal Adviser        | ನ್ಯಾಯೋಪದೇಷ್ಠಾ                    | ಕಾನೂನಿನ ಸಲಹೆಗಾರ.   |
| Legal profession     | ನ್ಯಾಯವಾದಿವೃತ್ತಿಃ                 | ವಕೀಲವೃತ್ತಿ.  |
| Legal representative | ಶಾಸನಮಾನ್ಯಪ್ರತಿನಿಧಿಃ              | ವಿಧಿಮಾನ್ಯ ಪ್ರತಿನಿಧಿ.                                       |
| Legislation          | ವಿಧಿರಚನಾ,<br>ಶಾಸನವ್ಯವಸ್ಥಾಪನಮ್    | ವಿಧಾನ, ಶಾಸನ ರಚನೆ.  |
| Legislative Assembly | ಶಾಸನಸಭಾ, ವಿಧಾನಸಭಾ                | ವಿಧಾನಸಭೆ.  |
| Legislative Council  | ವಿಧಾನಪರಿಷತ್                      | ವಿಧಾನ ಪರಿಷತ್ತು.  |
| Lexicographer        | ಕೋಶಕಾರಃ, ನಿಘಂಟುಕಾರಃ              | ಕೋಶಕಾರ, ನಿಘಂಟುವಿನ ಲೇಖಕ.                                    |
| Liberty              | ಸ್ವಾತನ್ತ್ರ್ಯಮ್                   | ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ.   |
| Life Insurance       | ಜೀವರಕ್ಷಣಮ್,<br>ಜೀವನಾಶಭಯೋತ್ತಾರಣಮ್ | ಜೀವವಿಮೆ.   |
| Limitation           | (೧) ಅವಧಿಃ<br>(೨) ಮಿತಿಃ, ಸೀಮಾ     | (1) ವ್ಯವಹಾರದ ಒಂದು ಅವಧಿ, ಮಾಯಿದೆ.<br>(2) ಮಿತಿ, ಒಂದು ಪರಿಮಿತಿ. |
| Literary work        | ಸಾಹಿತ್ಯರಚನಾ                      | ಸಾಹಿತ್ಯ ಕೃತಿ.  |
| Literature           | ಸಾಹಿತ್ಯಮ್                        | ಸಾಹಿತ್ಯ.   |
| Loan                 | ಶ್ರುಣಮ್                          | ಸಾಲ, ಕಡ.   |
| Lucky                | ಭಾಗ್ಯಶಾಲಿ                        | ಅದೃಷ್ಟಶಾಲಿ.  |

## M

|             |                   |                                       |
|-------------|-------------------|---------------------------------------|
| Machine     | ಯಂತ್ರಮ್           | ಯಂತ್ರ.                                |
| Magistrate  | ವೃಂದಾಧಿಕಾರಿ       | ಸುಸ್ಥಿತಿ ಪಾಲಕನಾದ ನ್ಯಾಯಾಧಿಪತಿ.         |
| Maintenance | ಪೋಷಣಮ್, ನಿರ್ವಹಣಮ್ | ಪೋಷಣೆ, ಪಾಲನೆ                          |
| Malpractice | ಅಕಾರ್ಯಮ್          | ತಪ್ಪು ಕೆಲಸ.                           |
| Manager     | ಕಾರ್ಯನಿರ್ವಾಹಕಃ    | ಕಾರ್ಯವನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸುವವನು, ವ್ಯವಸ್ಥಾಪಕ. |
| Manual      | ಸಂಹಿತಾ, ಸಾರಗ್ರಂಥಃ | ಕೈಪಿಡಿ.                               |
| Manufacture | ನಿರ್ಮಾಣಮ್         | ತಯಾರಿಕೆ.                              |
| Maturity    | ಪಕ್ವತಾ, ಪರಿಣಾಮಃ   | ಪಕ್ವಾವಸ್ಥೆಗೆ ಬರುವುದು.                 |



| English                | Sanskrita                                   | Kannada                           |
|------------------------|---|-----------------------------------|
| Memorandum             | स्मरणपत्रम्, ज्ञापनपत्रम्                   | ಸ್ತರಣೆಯ ಪತ್ರ, ಜ್ಞಾಪನೆಯ ಪತ್ರ.      |
| Military               | (१) सैनिकः समरसम्बन्धी<br>(२) सेना, सैन्यम् | (1) ಸಿಪಾಯಿಗಳ.<br>(2) ಸೇನೆ, ಸೈನ್ಯ. |
| Most Honourable        | परममाननीयः                                  | ಹೆಚ್ಚು ಗೌರವಾರ್ಹನಾದ.               |
| Most immediate         | बहुत्वरितम्                                 | ಬಹಳ ತ್ವರಿತವಾಗಿ.                   |
| Municipal              | नगरीयः, नगरसभा सम्बन्धी                     | ಪೌರಸಭೆಯ.                          |
| Municipal act          | पौरसभाधिनियमः                               | ಪೌರಸಭೆಯ ಅಧಿನಿಯಮ.                  |
| Municipal area         | पौरसभाक्षेत्रम्                             | ನಗರಸಭೆಗೆ ಒಳಪಟ್ಟ ಪ್ರದೇಶ.           |
| Municipal commissioner | पौरसभाया आयुक्तः                            | ನಗರಸಭೆಯ ಆಯುಕ್ತ.                   |
| Municipal corporation  | पौरसभानिगनः                                 | ಪೌರಸಭೆಯ ನಿಗಮ (ಸಂಸ್ಥೆ).            |
| Municipal council      | पौरसभापरिषत्                                | ನಗರಸಭಾಪರಿಷತ್ತು.                   |
| Municipality           | नगरपालिका                                   | ನಗರಪಾಲಿಕೆ.                        |

सर्वलक्षणसम्पन्ना सर्वसंस्कृतिरक्षिणी ।

समग्रे भारते देशे भातु गोर्वाणिभारती ॥

इति शुभम्

ಇಲ್ಲಿಗೆ ಶಬ್ದಕೋಶದ 3000 ಪುಟಗಳು ಪೂರ್ತಿಯಾಗುವುದರಿಂದ ಅಡಕಿತಶಬ್ದಗಳನ್ನು ಇಷ್ಟಕ್ಕೇ ಸಾಕುವುದಾಗಿದೆ.